

PĀIA-SADDA-MAHAṆṆAVO

A COMPREHENSIVE PRAKRIT-HINDI DICTIONARY

with Sanskrit equivalents, quotations

AND

complete references

BY

PANDIT HARGOVIND DAS T. SHETH,

Nyaya-Vyakarana-tirtha, Lecturer in Sanskrit, Prakrit and Gujrati,

Calcutta University, Author of "Haribhadrāsuri Charitra"

Late Editor of 'Yashovijaya Jaina Granthamala',

"Jaina Vividha Sahitya Shastra-

mala" etc. etc.

GENERAL EDITORS

Dr. V. S. AGRAWALA,

Banaras Hindu University.

Pt. DALSUKH BHAI MALVANIA,

Lalbhāi Dalpatbhāi Vidyā Bhavan, Ahmedabad.

PRAKRIT TEXT SOCIETY

V A R A N A S I - 5

SECOND EDITION

1963

Published by
DALSUKH MALVANIA
Secretary
PRAKRIT TEXT SOCIETY,
VARANASI-5

SECOND EDITION—1963
ALL RIGHTS RESERVED

Students Edition Rs. 20/-
Library Edition Rs. 30/-

Available from :—

1. MOTILAL BANARASI DASS, NEPALI KHAPRA, POST BOX 75, VARANASI.
2. CHOWKHAMBA VIDYABHAVAN, CHOWK, VARANASI,
3. GURJAR GRANTHARATNA KARYALAYA, GANDHI ROAD, AHMEDABAD-1
4. SARASWATI PUSTAK BHANDAR, RATANPOLE, HATHIKHANA, AHMEDABAD-1

Printed at
THE TARA PRINTING WORKS
VARANASI

पाइअ-सइ-महरणावो

(प्राकृत-शब्द-महार्णवः)

अर्थात्

विविध प्राकृत भाषाओं के शब्दों का संस्कृत प्रतिशब्दों से युक्त,
हिन्दी अर्थों से अलंकृत, प्राचीन ग्रन्थों के अनुरूप अवतरणों
और परिपूर्ण प्रमाणों से विभूषित बृहत्कोष

कर्ता—

गुर्जरदेशान्तर्गत-राधनपुर-नगर-वास्तव्य, कलकत्ता-विश्वविद्यालय के संस्कृत,
प्राकृत और गुजराती भाषा के अध्यापक, “हरिमद्रसुरिचरित” के कर्ता,
“पद्मोविजय-जैन-शास्त्रमाला” और “जैन-विविध-साहित्य-
शास्त्रमाला” के भूतपूर्व संपादक, न्याय-व्याकरण-तीर्थ

स्व० पंडित हरगोविन्ददास त्रिकमचंद सेठ

संपादक

डा० वासुदेव शरण अग्रवाल

प्राध्यापक, काशी विश्वविद्यालय

पं० दलसुख भाई मालवणिया

संचालक, लालभाई दलपतभाई विद्याभवन, अहमदाबाद-१

प्रकाशिका

प्राकृत ग्रन्थ परिपद,

वाराणसी-६

प्रकाशक
दलसुख मालवणिया
अन्त्री, प्राकृत टेक्स्ट सोसायटी
वाराणसी-५.

द्वितीय संस्करण—१९६३

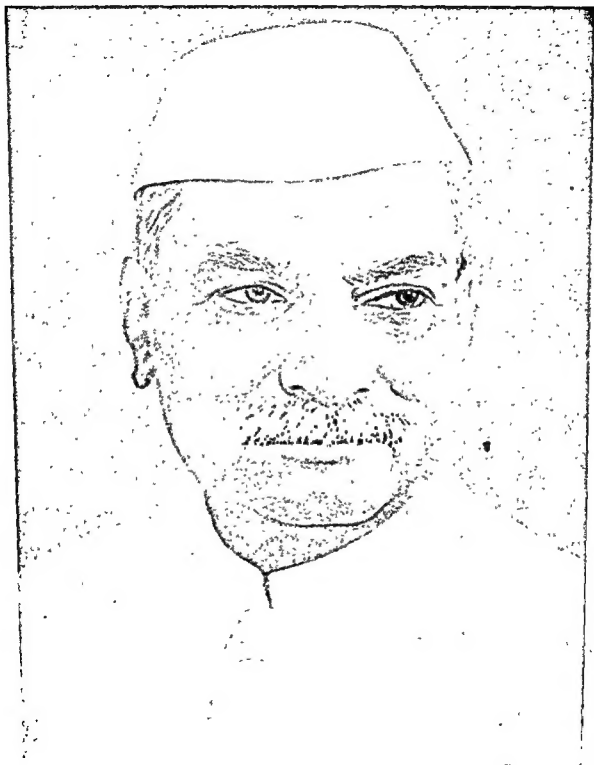
सर्व स्वत्व संरक्षित

मूल्य—साधारण संस्करण २०)
पुस्तकालय संस्करण ३०)

प्राप्ति स्थान

१. मोतीलाल बनारसीदास, नेपाली बाबा, पोस्ट बक्स ७५, वाराणसी ।
२. चौखम्बा विद्या भवन, लौक, वाराणसी ।
३. गुजैर ग्रन्थ रत्न कार्यालय, गांधी मार्ग, लहमदाबाद-१
४. सरस्वती पुस्तक भंडार, रतनपोल, हाथीखाना, लहमदाबाद-१

मुद्रक
चारा प्रिंटिंग प्रेस,
कमच्छा, वाराणसी-१



डॉ० राजेन्द्रप्रसाद जी

समर्पण

प्राकृत भाषा का यह महाकोश
स्वतन्त्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति तथा प्राकृत-ग्रंथ-परिपद (प्रा०टे०सो०) के
संस्थापक एवं प्रधान संरक्षक, भारतीय संस्कृति के अतन्य श्रद्धानु देशरत्न

स्व० डॉ० श्रीराजेन्द्र प्रसाद जी

को सादर समर्पित है,

जिनकी अध्यक्षता में इस कोश के पुनः मुद्रण का निश्चय किया

गया और जिनके करकमलों से इसका प्रकाशन समारोह

सम्पन्न होना प्रस्तावित था, किन्तु दैवेच्छ से २८

फरवरी १९६३ को जिनका स्वर्गवास हो जाने

के कारण अब परिपद की ओर से यह

श्रद्धाञ्जलि रूप में समर्पित किया

जा रहा है ।

—प्राकृत ग्रन्थ परिपद के सदस्य

their literally value has to be assessed specially from the point of view of new words and meanings incorporated in them. The interpretation of the texts already known when the first edition of the Dictionary was compiled has also progressed and the technical meanings of many words have been recovered. They need to be incorporated in a revised edition or in a new presentation of word material of the Prakrit language as recorded in its literature. The problem is no doubt vast requiring stout organization and finances but the work has to be done. The Govt of India, various Universities, Prakrit Institutes and the All-India Oriental Conference should put their heads together for evolving a scheme for the accomplishment of this task viz the preparation of an up-to-date dictionary on scientific principles of the Prakrit and Apabhramsa literatures which have contributed so much to the Middle Indo-Aryan languages and which truly hold the key to the problem of etymology and semantics relating to the many literary dialects of the medieval and modern period.

It is gratifying that a rich literature of such magnitude as that of Prakrit has been preserved as our heritage and it is high time when we should wake up to our responsibility. The Prakrit Text Society is keenly alive to this need but it has already committed itself to the publication of the critical texts of the Āgamas and their commentaries and therefore its resources for some years cannot be diverted to the needs, however urgent they may be, of a fresh dictionary of Prakrit language as envisaged above.

I cannot close this short statement without making a special appeal to those friends who are engaged on an intensive study of the difficult texts of Old-Hindi, Old Gujarati etc. They should cultivate the habit of going to the Prakrit and Apabhramsa sources for recovering the meanings of the obscure vocabulary used in those texts which were written at a time when Prakrit and Apabhramsa words found a predominant place in the linguistic consciousness of the people. I would give a few examples —

1. "परतो सरल जति पर चोड"। (Padmavat 1494) The crux of the meaning of the simple line like this lies in the word *para* meaning to turn as चात्वादेश of Skt *bhrama* (परद = घनति, Hemchandra, 4.16, Pasadda)—the earth and the sky both are turning like a mill.

2. "नाइत नाइत भैर हति गोवा । सरजे कहा नद यह जोवा ॥" This is one of the most difficult lines of the Padmavat and it had never been correctly understood by any previous translator. The secret of the meaning lies in the word नाइत (wrongly translated previously as 'bends') which as recorded in the Pasadda, denoted a naval merchant. The meaning is that to take a sea-faring merchant in the midst of the ocean and there to kill him, is a mean thing, said Suraj (the Chief of Alaaddin). The meaning of this word is recorded in the Pasadda with only one reference to Haribhadra Suri (8th century), but I thought that its usage in the Padmavat in the 16th century must be evident in the literature of the intervening period. My search proved fruitful and I found it in the Bhavisyata Kaba of Dhanapala (तो नव निजय दाय सइतई । अडिख मिलिय सयल नाइतई ॥ Bhavisyata Kaba 8311, Baroda edition, p 52—then the sea merchants met together and began to discuss joyfully their problems of sale and purchase. The word has also been used in the Apabhramsa poem Pauma-chariu-पावार बुएहि गुर पाइवेण (Pauma-chariu 817 1, Singh Jain Granthamali). On an inscription from Anhilavada dated VS 1348 its Skt form *Nau vittaka* has been used (Indran Antiquary, 1912, p. 21), and

Muni Chandra in his commentary on Haribhadra's Upades-pada record a नौवित्तक as the Skt. form of *Nayatta*. This accumulation of evidence is the proper field of a dictionary and it is of value to show how our correct understanding of the old-texts may benefit from utilizing the Prākṛit and Apabhraṃśa sources. I should like to reinforce this point by drawing attention to some other words from the Avahatta text, Kīrtitāt of which in the recently published Sanjivani commentary* much valuable assistance from the Pāraśadda mahānava has been taken. To take another pointed example :

- * ६ उरइ = समीप आता है। सं उप + इ > प्रा० उवे, उवि = पास आना। उवेइ उवइ (पासह०)।
 १३ माण = अनुमद करना, जानना। सं मान् + > प्रा० माण (पासह०)।
 ३२ साहइ—सं साध = वश में करना > प्रा० साह > अव० साहइ (पासह०)।
 ४० चप्परि—सं धा + क्त्वं (आक्रमण करना, दबाना) का धात्वादेश चप्, चप्परि = आक्रमण करके (पासह०)।
 ४३ सम्पजो—सं सम् + जर्प् = अर्थण करना, देना > प्रा० सम्पज > अप० सम्प, सपजो (पासह०)।
 ६५ पेल्जिअ—सं पूर्य (> पूरा करना) का धात्वादेश पेल्, पेल्ज (पासह०)। प्राकृत में पेल् धातु के चार अर्थ हैं—१ सं गिप का धात्वादेश पेल् = पँकना। २ सं प्रेर्य का धात्वादेश पेल् = प्रेरित करना। ३ सं पीड्य का धात्वादेश पेल् = दबाना। ४ सं पूर्य का धात्वादेश पेल् = पूरा करना, भरना।
 ७६ डूर—सं छुड़ > प्रा० छुड > अप० डूर = छुड़ना लौटना (पासह०)।
 ६६ रिज—सं रिप > प्रा० अप० रिज्क = रोकना, प्रसन्न होना, रिज्कइ (पासह०)।
 १२३ छाहर = मुन्दर। सं छाया (= वाति, शोभा) > प्रा० छाया (पासह०)।
 १२४ विव्परि—विपुरे हुए। सं विस्तु > प्रा० विवर = फैलाना, बढ़ाना (पासह०)।
 १२४ धारे—गर्वित, गर्वित, झरमाना, रोवदाव काते। सं स्तम्भ > प्रा० बड्ड (पासह०) > बड्डु > पाह > धार + अ = धारा, धारे।
 १२६ गिवागिअ = निवट गया, चुक गया। सं भुच् (= भुक्ता, चुक्ता) का प्रा० धात्वादेश गिम्बल (पासह०)।
 २३६ चप्परि सं आक्रम्य का धात्वादेश चप् = आक्रमण करना, दबाना (पासह०)।
 २४३ सहि सं धा ना का प्रा० धात्वादेश सह ड्डुम देना, दादेश करना, करमान। सहइ (पासह०)।
 २५२ पनु—सं प्रवट्य का धात्वादेश पप (पासह०)। सं पत् वा भी अप० में पत् धात्वादेश होता है (= पड़ना, गिरना)।
 २५७ नवावहि—सं ज्ञा धातु का धात्वादेश एषा, एषाण = पहचानना (पासह०)।
 २६५ दरमलिअ = मर्दि, चुलित। सं मर्दय का धात्वादेश प्रा० अप० दरमन् = चूर्ण करना, दलना, मलना (पासह०)।
 २६१ घल—प्रा० घल्ल (सं गिप का धात्वादेश) = फँकना, डालना घालना (पासह०)।
 ४८ बोलय—सं व्यतिक्रम धातु का धात्वादेश प्रा० बोल = बलघन करना, छोटना। बोलइ, बोलय (पासह०)।
 ७४ झूल = झान्दोलन, शोर। सं खड 'झान्दोल' का प्रा० धात्वादेश झुल (पासह०)।
 ८० छाज सं राज वा धात्वादेश छज = शोभना, शोभित करना (दे० ४।१००)।
 ८१ बोद—सं भूय का धात्वादेश बोत = चलना, गमन करना (पासह०)।
 ८७ बड्वा = पड़ने हुए। प्रा० कडइ = पड़ना, उधारण करना, सं भूय वा धात्वादेश बडड = पड़ना, उधारण करना (दे० ४।१८७, पासह०), भोजपुरी में 'कड़ाव, बड़ावा कड़ावो' अर्थात् पीत उधारण करो, अभी ठक बड़ा जाना है।
 १६१ पारइ—सं शक् का प्राकृत धात्वादेश पार = सनना, समय होना (हेम० ४।८६)।
 १६१ पेल्जिमई—सं पूर्य का प्रा० धात्वादेश पेल् = पूरना, भरना (पासह०)।
 १७० मँप—सं विलप् का धात्वादेश प्रा० अप० मझ = विनाश।
 २२३ तसप्य—सं तप् का धात्वादेश तसप = तनना, गर्म होना (पासह०)।
 २७१ पमपयइ = बहने लगा। सं प्रवह्य का धात्वादेश पयप = बहना, बहना। पयपए पर्यइ (पासह०)।
 २७२ पापरे = पीछे पर सगाह बसकर, बंध को बन्ध से संजित करके। सं सनाह्य का धात्वादेश पप्पर (पासह०)।
 २८२ मेरा—सं भुव का धात्वादेश प्रा० धप० मिज़् = छोड़ना, त्यागना।
 २८४ मेम-दए = सहारे को धूनी। सं गिल का धात्वादेश गिप, मेम > मेज = टेक, सहारा (पासह०)।

PREFACE

The Pāṇi-sadda-mahannavo (पाणि-सद् महन्वो) is a comprehensive Prakrit-Hindi Dictionary which was compiled by Pandit Hargovind Das T Seth, Professor of Prakrit at the Calcutta University, as a result of painstaking scholarship extending over many years. Its first edition was printed in 1928 and since then it served the needs of a practical Prākṛit dictionary for all students of this great language and literature of India. The book had been out of print for many years and rare copies were offered at fabulous prices. During my preparation of the Saṃvāṇī commentaries on two old Hindi texts, viz Padmāvat of Mahk Mohmad Jayasī (1627 A.D.) and Kirtilata of Vidyāpati (circa 1420 A.D.), I was confronted with the problem of discovering the meaning of hundreds of old-Hindi words which no existing Hindi dictionary records or explains. It was then that the Pāṇi-sadda-mahannavo to which I turned as the wish-fulfilling thesaurus seldom failed me. I then realised that the knowledge of Prakrit is an ambrosia for understanding not only the Old-Hindi literature but also the literature in Old Rajasthani, Old Gujarati, Old-Marathi, Old-Bengali, Old Maithili etc., and in fact for all the languages of the Middle Indo-Aryan group. I then decided in my mind that a new edition of the Pāṇi-sadda-mahannavo should be brought out so as to make it accessible to the general students and teachers of this language in the Indian Universities where the number of persons working on these texts is happily on the increase from year to year. I broached this topic at a meeting of the Prakrit Text Society held in April, 1963 at Rāṣṭra-pati Bhavan, New Delhi, under the chairmanship of the Society's Chief Patron, the Late Dr. Rajendra Prasadji. As a supporter of all good causes he readily agreed to the proposal and it was then decided that this valuable dictionary of the Prakrit language should be reprinted. I volunteered to organise its printing work at Varanasi under my own direction. Happily this became possible with the ready co-operation of Pt Dalsukhabhai Malavania, Secretary of the Prakrit Text Society. For this purpose the proprietors of the well established Tara Printing Works, Varanasi, placed the resources of their press at our disposal with the result that within the space of six months a Dictionary of such magnitude has completely been printed off. In this edition some new words have been inserted by the courtesy of Pt Dalsukhabhai Malavania. Another fact worth recording is that the matter amounting to 78 pages printed as Paṇiṣiṣṭa in the first edition has now been incorporated in its proper place under an alphabetical arrangement, and the instructions given in 15 pages of Corrigenda (Suddhipatra) have also been carried out in the body of the Dictionary.

The present editors gratefully remember the pioneer work of Sri Hargovind Das Seth whose single-minded devotion and indefatigable labour created a Dictionary of such thorough-going extent. But they are also conscious of the fact that a new scientific dictionary of the Prākṛit language, which should include also the Apabhraṃśa language and literature is required. Since 1923 when Sri Seth put down his pen, a whole library of new Prākṛit and Apabhraṃśa texts with commentaries has come to light. It is a veritable treasure for new words, phrases and references, and quite a number of these texts are still in manuscript form preserved in the Jaina Bhandars at different centres in India. Their critical editions have to be undertaken and

their literally value has to be assessed specially from the point of view of new words and meanings incorporated in them. The interpretation of the texts already known when the first edition of the Dictionary was compiled has also progressed and the technical meanings of many words have been recovered. They need to be incorporated in a revised edition or in a new presentation of word material of the Prakrit language as recorded in its literature. The problem is no doubt vast requiring stout organization and finances but the work has to be done. The Govt of India, various Universities, Prakrit Institutes and the All-India Oriental Conference should put their heads together for evolving a scheme for the accomplishment of this task, viz the preparation of an up-to-date dictionary on scientific principles of the Prakrit and Apabhramśa literatures which have contributed so much to the Middle Indo-Aryan languages and which truly hold the key to the problem of etymology and semantics relating to the many literary dialects of the medieval and modern period.

It is gratifying that a rich literature of such magnitude as that of Prakrit has been preserved as our heritage and it is high time when we should wake up to our responsibility. The Prakrit Text Society is keenly alive to this need but it has already committed itself to the publication of the critical texts of the Āgamas and their commentaries and therefore its resources for some years cannot be diverted to the needs, however urgent they may be, of a fresh dictionary of Prakrit language as envisaged above.

I cannot close this short statement without making a special appeal to those friends who are engaged on an intensive study of the difficult texts of Old-Hindi, Old Gujarati etc. They should cultivate the habit of going to the Prakrit and Apabhramśa sources for recovering the meanings of the obscure vocabulary used in those texts which were written at a time when Prakrit and Apabhramśa words found a predominant place in the linguistic consciousness of the people. I would give a few examples :—

1. "धरती सरल जल पर दोड़"। (Padmāvat 149 4) The crux of the meaning of the simple line like this lies in the word *para* meaning to turn as *पारदोष* of Skt *dhrama* (परद = प्रपत्ति, Hemachandra, 4.16, Pasadda)—the earth and the sky both are turning like a mill.

2. "नाइल नाइल भैर हति गोदा । सरनै कहा मय यह गोवा ॥" This is one of the most difficult lines of the Padmāvat and it had never been correctly understood by any previous translator. The secret of the meaning lies in the word *नाइल* (wrongly translated previously as 'bends') which as recorded in the Pasadda, denoted a naval merchant. The meaning is that to take a sea-faring merchant in the midst of the ocean and there to kill him, is a mean thing, said Sarj (the Chief of Alauddin). The meaning of this word is recorded in the Pasadda with only one reference to Haribhadra Suri (8th century), but I thought that its usage in the Padmāvat in the 16th century must be evident in the literature of the intervening period. My search proved fruitful and I found it in the Bhavisyata Kahā of Dhanapala (दो कय विषय दय सरतई । अहिदुव नितिय सयल नारतई ॥ Bhavisyata Kahā, 8311, Baroda edition, p. 52—then the sea merchants met together and began to discuss joyfully their problems of sale and purchase. The word has also been used in the Apabhramśa poem Paum-chariu-vaṣar *पूहि गुर पादोष* (Paum-chariu 317. 1, Singh Jain Granthamālā). On an inscription from Anhilwada dated VS 1349 its Skt form *Nau-vittaka* has been used (Indian Antiquary, 1912, p. 21), and

Muni Chandra in his commentary on Haribhadra's Upadeś-pada record a नौवित्तक as the Skt. form of *Nayatta*. This accumulation of evidence is the proper field of a dictionary and it is of value to show how our correct understanding of the old-texts may benefit from utilizing the Prakrit and Apabhramśa sources. I should like to reinforce this point by drawing attention to some other words from the Avahatta text, Kirtulatī of which in the recently published Sanjivani commentary* much valuable assistance from the Pīṇa-sadda-mahannavo has been taken. To take another pointed example :

- ५८० ६ उवड = समीप जाता है। स० उष+ इ> प्रा० उवे, उवि = पास आना। उवेइ उवड (पासह०)।
- १३ माण = अनुभव करना, जानना। स० मानय्> प्रा० माण (पासह०)।
- ३२ साहव = स० साथ = वरा में करना> प्रा० साह> अव० साहव (पासह०)।
- ४० चप्परि = स० प्रा+ ऋप् (आक्रमण करना, दबाना) का धात्वादेश चप्, चप्परि = आक्रमण करके (पासह०)।
- ४३ सम्पजो = स० सम्+अर्पय् = अर्पण करना, देना> प्रा० सम्पय> अप० सम्प, सपजी (पासह०)।
- ६५ पेळ्झ = स० पूरय् (> पूरा करना) का धात्वादेश पेळ्, पेळ्झ (पासह०)। प्राकृत म पेळ् धातु के चार अर्थ हैं—१ सं० लिप का धात्वादेश पेळ् = फेंकना। २ सं० प्रेरय का धात्वादेश पेळ् = प्रेरित करना। ३ सं० पीडय का धात्वादेश पेळ् = दबाना। ४ सं० पूरय का धात्वादेश पेळ् = पूरा करना, भरना।
- ७६ छूर = स० छुड> प्रा० छुड> अप० छूर = छुडकना लोटवा (पासह०)।
- ६६ रिज = स० रिध> प्रा० अप० रिळ = रीझना, प्रसन्न होना, रिःझद (पासह०)।
- १२३ छाहर = सुन्दर। स० छाया (= कान्ति, सोया)> प्रा० छाया (पासह०)।
- १२४ विष्परि = विष्टुरे हुप। स० विस्तु> प्रा० वित्तर = फैलाना, बढ़ाना (पासह०)।
- धारे = गविलि, गविल, भरमाना, रोसबाध वाले। स० तस्य> प्रा० पड्ड (पासह०)> षड्> षाड> धार + अ = धारा, धारे।
- १८६ जिवाविज = निजट गया, चुक गया। स० मुप् (= चुकना, चुकना) का प्रा० धात्वादेश जिम्बस (पासह०)।
- २३६ चप्परि स० आक्रम का धात्वादेश चप् = आक्रमण करना, दबाना (पासह०)।
- २४३ सहि सं० मा जा का प्रा० धात्वादेश सह हुकुम देना, बाधे करना, फरमाना। सहइ (पासह०)।
- २५२ पछु = स० प्रकटय् का धात्वादेश पल (पासह०)। स० पत् का भी अप० मे पल धात्वादेश होता है (= पडना, गिरना)।
- २५७ मचावहि = स० जा धातु का धात्वादेश एचा, एचाण = पहुँचाना (पासह०)।
- २६४ दरमसिज = मरित, वर्णित। स० मर्यप् का धात्वादेश प्रा० अप० दरमल = चूना करना, दलना मलना (पासह०)।
- २६१ पल = प्रा० पल्ल (स० लिप् का धात्वादेश) = फेंकना, डालना धासना (पासह०)।
- ४८ बोलए = स० व्यतिक्रम धातु का धात्वादेश प्रा० बोल = उत्सवधन करना, छोटना। बोलइ, बोलए (पासह०)।
- ७७ धूल = आन्वोलन, शोर। स० शब्द 'आन्वोल' का प्रा० धात्वादेश मुल्ल (पासह०)।
- ६० छाज स० राज का धात्वादेश छाज = रोमना, रोमित करना (हे० ४।१००)।
- ६१ मोन = स० गम् वा धात्वादेश मोल = चलना, गमन करना (पासह०)।
- ६७ कड़ा = पड़ते हुप। प्रा० कडड = पड़ना, उच्चारण करना, सं० कृप का धात्वादेश कडड = पड़ना, उच्चारण करना (हे० ४।१८७, पासह०)। भोजपुरी में 'कडान, कडाना कडाभा' अर्थात् पीत उच्चारण करो, अगो तक बहा जाता है।
- १६१ पारइ = स० शक् का प्राकृत धात्वादेश पार = सकना, समय होना (हे० ४।८६)।
- १६३ पेळ्झ = स० पूरय का प्रा० धात्वादेश पेळ् = पूरना, भरना (पासह०)।
- १७० मंय = सं० विलप् का धात्वादेश प्रा० अप० मझ = मिलाप।
- २२३ तसप्य = सं० तप् का धात्वादेश तल्लप = तपना, गर्म होना (पासह०)।
- २७१ पमपयइ = कटते लगा। स० प्रजल्प का धात्वादेश पयप = कटना, मोनना। पयपए पर्यपइ (पासह०)।
- २७२ पापरे = छोटे पर सप्ताह कसकर, अथ को कवच से सज्जित करने। स० सनाहृप् का धात्वादेश पव्वर (पासह०)।
- २८२ मेरा = सं० मुन् वा धात्वादेश प्रा० धप = मिला; मेळ् = छोटना, धारण।
- २८४ वेम्-वडइ = सहारे की बूती। स० विपल का धात्वादेश विप्प, वेप्प> वेव्व = टेव, सहारा (पासह०)।

"मपद्म नरावद दोम जलो हाप ददस दस गारओ ॥" (Kīrtīlātā 2.190, Saṃjvānī edition) In this line all seven words excepting the first depend on their meaning on a good Prākṛit dictionary, e. g.

नरावद—स० नरकपति = प्रा० नरयवद, नरखवद, नरावद—अवहट्ट नरावद = नरकपाल, king of hell,

दोम = to cause pain, from Sanskrit root दृ—Prākṛit दालादेश दूम (Jemchandra 4.23),

जलो—Skt. यत्—Prākṛit जलो,

हाप = hastily, in quick succession, deśyā Prākṛit हल (Desināma-mīlā, 8.59, See Pāsaddā).

Such a seemingly simple word cannot be understood without the help of Prākṛit. In Hindi it means a hand, but its Prākṛit meaning was also as shown above, and that alone suits the context.

ददस—an Avahatta form of Arabic *hadās* signifying *hazrat* or showing the spirits

दस = shows, from Skt. दस्य—Prākṛit दस्स—Avahatta दस.

गारओ = spirits living in hell, from Skt. नारक > Prākṛit गारव (Pā-sadda)

The line thus means—the Makhḍūm (religious priest) like the king of hell was frightening the people when quickly he was showing the spirits by performing *hadās*. This is an example which brings home how the problem of understanding the Middle Indo-Aryan literature is closely connected with our understanding of the Prākṛit and Apabhraṃśa literature. For this purpose the Pāsa-Sadda-Mahannavo Dictionary will prove of inestimable help. With this hope it is now being offered in a Second edition which the Prākṛit Text Society is making available in an accessible form.

The editors wish to record their grateful thanks to Shri Kapil Deva Giri, Sahityacharya, Asstt. Research Scholar P. T. S. and Pt. Madhvacharya, Farkatirtha, Munanacharya who have put in their best efforts in correcting the proofs of the work with praiseworthy devotion.

24-8-1963.

VASUDEVA S. AGRAWALA
Professor,
BANARAS HINDU UNIVERSITY

संकेत—सूची

प्र	=	प्रव्यय ।
प्रक	=	प्रक्रमक धातु ।
(प्र)	=	प्रगप्र य भाषा ।
(प्रश्री)	=	प्रशोक शिवालेख ।
उम	=	सकर्मक तथा प्रकर्मक धातु ।
कर्म	=	कर्मणि वाच्य ।
कवकृ	=	कर्मणि-वर्तमान-कृदन्त ।
कृ	=	कृत्य-प्रत्ययान्त ।
क्रि	=	क्रियापद ।
क्रिवि	=	क्रिया विशेषण ।
गु०	=	गुञ्जराती ।
(वृषे)	=	वृषिकापेक्षाधी भाषा ।
त्रि	=	त्रिसिङ्ग ।
[दे]	=	देश्य शब्द ।
न	=	नपुंसकलिङ्ग ।
पुं	=	पुंसिङ्ग ।
पुंन	=	पुंसिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग ।
पुंछी	=	पुंसिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग ।

(वै)	=	पेक्षाधी भाषा ।
प्रयो	=	प्रेरणार्थक एवञ्जन्त ।
ब	=	बहुवचन ।
भकृ	=	भविष्यत्कृदन्त ।
भवि	=	भविष्यत्काल ।
भूक	=	भूतकाल ।
भूकृ	=	भूत-कृदन्त ।
(मा)	=	मातृभाषा ।
वकृ	=	वर्तमान कृदन्त ।
वि	=	विशेषण ।
(शी)	=	शीतरेखी भाषा ।
म	=	सर्वनाम ।
सकृ	=	सकर्मक कृदन्त ।
सक	=	सकर्मक धातु ।
स्त्री	=	स्त्रीलिङ्ग ।
स्त्रीन	=	स्त्रीलिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग ।
हेकृ	=	हेत्वर्थ कृदन्त ।

प्रमाण-ग्रन्थों [रेफरेन्सेज] के संकेतों का विवरण

संकेत	ग्रन्थ का नाम	संस्करण आदि	जिसके अंक दिए गए हैं वह
अ.ग	= अंगविवक्षा	प्राकृत ग्रन्थ परिपक्व, चारणसी—५, १६५७	
अ.ग	= अंगवृत्तिशा	हस्तलिखित ।	
अंत	= अंतर्गदसामो	॥ १ रॉयल एसियाटिक सोसाइटी, लंडन, १६०७ २ आगमोदय-संमिति, बम्बई, १६२०	... पत्र
अब्जु	= अब्जुसमर्थ	वाणीविनास प्रेस, मद्रास, १८७२	... गाथा
अभि	= अभिप्रसविषय	स्व-संपादित, कलकत्ता, संवत् १६७८	... "
अभ्रम	= अभ्यासमत्तपरीक्षा	१ श्रीमद्विह माणक, संवत् १६१३ २ लैन आर्यालन्द सभा, भावनगर	... "
अणु	= अणुभोगदारमुक्त	१ राय घनपतिविहारी बहादुर, कलकत्ता, संवत् १६३३ २ आगमोदय संमिति, १६२४ बम्बई,	... पत्र
अनु	= अनुत्तरीयवाहमदसा	॥ १ रॉयल एसियाटिक सोसाइटी, लंडन, १६०७ २ आगमोदय-संमिति, बम्बई, १६२०	... पत्र
अभि	= अभिज्ञानशालाकुल	नियुत्तसार प्रेस, बम्बई, १६१६	... छंद
अभि	= अभिमारक	त्रिवेन्द्र सस्कृत विरोध	... "
आठ	= आठरपञ्चलाणपत्रो	१ लैन-वर्म-प्रसारक सभा, भावनगर, संवत् १६१६ २ शा. बालाभाई कर्नलभाई, अहमदाबाद, संवत् १६६२	... गाथा
आक	= १ आचरमकथा २ आचरमक-परश्यानुग	हस्तलिखित डॉ. ड. लुमेन-संपादित, लाहौरजिग, १८६७	... छंद
आक्षय	= आक्षयानवयणिनीश	प्राकृत ग्रन्थ परिपक्व, चारणसी—५	
आषा	= आषाढगमू	॥ १ डॉ. अब्जु. सुविष्णु संपादित, साहजिक, १६१० + २ आगमोदय-संमिति, बम्बई, १६१६ ३ श्री. रत्नजीभाई वैद्यरान-संपादित, रावकोट, १६०६	... मुद्रितकथा, सार०
आषा	= आषाढग-निष्ठा	आगमोदय-संमिति, बम्बई, १६१६	... "
आशु	= आशुपरमवृष्टि	हस्तलिखित	... गाथा
आम	= आर्यसंवीधुलक	↑ हस्तलिखित	... अभ्ययन
आमहि	= आर्यसंवीधुलक-पुष्पक	"	... गाथा
आम्यानु	= आर्यसंवीधुलक-मुक्त	"	... "
आनि	= आचरमक-निष्ठा	१ यशोविजय लैन-अभ्ययन, बनारस । २ हस्तलिखित ।	...

॥ ऐसी निर्यानी गाने संस्करणों में अन्तर्गत रूप से शब्द सूची दी गई है, इससे ऐसे संस्करणों के कुछ आदि के धर्मों का अन्वेषण प्रत्युत हीत में बढा नहीं दिया गया है, क्योंकि पठन उस शब्द सूची से ही समझाया जा सकेगा कि पुराने या नए हैं। जहाँ किसी विशेष प्रयोजन में अर्थ देने की आवश्यकता प्रतीत हो गई है, वहाँ पर उगी ग्रन्थ की पद्धति में अनुसार आ दिए गए हैं, जिससे जिज्ञासु को अभीष्ट रूपाने में विशेष सुविधा हो ।

+ इन संस्करणों में प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष और अपेक्ष के अङ्क गणना होने पर भी सूचों के अङ्क विभक्त-मिश्र हैं। इससे इस रूप में निम्न संस्करण में जो शब्द दिया गया है उसी का अनुवाद यहाँ पर दिया गया है। अर्थ की निम्नी जहाँ उद्देश्य का अभ्ययन के प्रथम सूत्र से आरम्भ की गई है।

↑ अर्धेय श्रीमत् रत्नसागरभाई श्रेष्ठन्त मोदी, बी. ए., एम् एम्, बी. से प्राह ।

संकेत	ग्रन्थ का नाम	संस्करण आदि	जिसके श्रंक दिए गए हैं वह
आप	= आराधनाप्रकरण	शा. बालाभाई वक्रतभाई, ग्रहमदाबाद, संवत् १९६२	गाथा
आरा	= आराधनासार	मानिकचंद-दिगंबर-जैन-ग्रंथमाला, संवत् १९७३	"
आव	= आवश्यकसूत्र	हस्तलिखित ---	"
आवटि	= आवश्यक टिप्पण	देवचन्द लालभाई	"
आवदो	= आवश्यक दीपिका	विजयदाससुरि ग्रंथमाला (हरिमद्र टीका)	"
आवपगा	= आवश्यकसूत्र पत्रे गाथा	हस्तलिखित ---	"
आवम	= आवश्यकसूत्र यलयगिरि टीका	भोमसिंह भाएके, बम्बई, संवत् १९६८	गाथा
ईदि	= इन्द्रियपराजयघातक	डा. डबल्यु. किरफेल-कुल, लाइपजिग, १९२०	"
इक	= दि शोस्मोप्राफी देर डवेर	१ राय घनपतिसिंह बहादुर, बलवत्ता, संवत् १९३६	ग्रन्थमन, गाथा
उत्त	= उत्तराध्ययनसूत्र	२ स्व-संपादित, बलवत्ता, १९२३	"
		+ ३ हस्तलिखित ---	"
उत्त	= उत्तराध्ययन सूत्र	देवचन्द लालभाई	"
उत्त का	= " "	डो. जे कारवेंटिभर संपादित, १९२१	"
उत्तमि	= उत्तराध्ययननियुक्ति	हस्तलिखित ---	"
उत्तर	= उत्तररामचरित	निरुपेयसागर प्रेस, बम्बई, १९१५	पृष्ठ
उप	= उपदेशपद	हस्तलिखित ---	गाथा
उप दी	= उपदेशपद-टीका	हस्तलिखित ---	मूल-गाथा
उपप	= उपदेशपचारिका	† " "	गाथा
उप पृ	= उपदेशपद	जैन विद्या-प्रचारक वगै, पासीवाणा	पृष्ठ
उर	= उपदेशरत्नाकर	देवचन्द लालभाई पुस्तकोद्धार फंड, बम्बई, १९१४	अष्ट, तरंग
उव	= उवएसमासा	डा. एल्. पी. टेलेटोरि-संपादित, १९१२	"
उवकु	= उवदेशकुलक	† हस्तलिखित	गाथा
उवर	= उवदेशरहस्य	मनमुखभाई भगुभाई, ग्रहमदाबाद, संवत् १९६७	"
उवा	= उवासगदसामो	● एसियाटिक सोसाइटी, बंगाल, कलकत्ता, १८६०	"
ऊव	= ऊवएस	विदेन्द्र संस्कृत-संस्करण ---	पृष्ठ
ओष	= ओषनियुक्ति	भागमोदय समिति, बम्बई, १९१९	गाथा
ओष भा	= ओषनियुक्ति-भाष्य	---	"
ओष	= ओषपत्रितमसूत्र	● डॉ. ह्यूमेन्स-संपादित, लाइपजिग, १८८३	"
वप्प	= वप्पसूत्र	● डॉ. एच्. जेकोबी-संपादित, लाइपजिग, १८७९	"
वप्पु	= वप्पुसज्जरी	● हार्वर्ट्-ओरिएण्टल सिरीज, १९०१	"
कम्म १	= कर्मग्रंथ पहला	● आत्मानन्द-जैन-मुक्तक-प्रचारक मण्डल, भागल, १९१८	गाथा
कम्म २	= " दूसरा	● " " " " " "	"
कम्म ३	= " तीसरा	● " " " " " "	१९१९ "
कम्म ४	= " चौथा	● " " " " " "	१९२३ "

+ गुप्तबोधा नामक श्रावत-वहल टीका से विभूषित यह उत्तराध्ययन सूत्र हो हस्त-लिखित प्रति आचार्य श्रीविजय-नेपथूरजी के भण्डार से थयेय श्रीगुरु ने. प्रे. मोदी द्वारा प्राप्त हुई थी, इस प्रति के पन् १८६ हैं।

† थयेय श्रीगुरु ने. प्रे. मोदी द्वारा प्राप्त।

रूकेत ।	श्रव का नाम	सत्कररा आदि	जितके श्रक दिए गए हैं वह	
चम्प ५	=	कलशाय पवित्रा	१ श्रीमसिंह भाणेक बम्बई, संवत् १९६८ २ जैन धर्म प्रसारक समा भावनगर, संवत् १९६८	गाथा "
चम्प ६	=	, छठवीं	"	"
चम्प ७	=	कलशाय	जैन धर्म प्रसारक समा, भावनगर १९१७	पत्र
धर	=	कलशायप्रभुप्रभ	आत्मानन्द जैन समा भावनगर, १९१९	पुस्त
कल	=	कलशाय	त्रिवेन्द्र सस्कृत सिरीज	,
कल	=	कलशाय (आण)	गायकवाड श्रीरिएटल सिरीज न ८ १९१८	"
कल	=	कलशाय	† हस्त लिखित	गाथा
कलशाय	=	कलशाय	आत्मानन्द समा	
गा०	=	, गाथा		
कल	=	(हरि) कलशाय	७ डा डबल्यु शुद्धि संपादित, साहजिक, १९०५	
कल	=	कलशाय	अनुवित	
कल	=	कलशाय	सामान्याचार्य टोका बुक्त नियुक्तगर प्रेस बम्बई	पुस्त
कल	=	कलशाय	७ डॉ एच जकोबी संपादित जेड् डी एच जी खंड ३४ १८८०	
कल	=	कलशाय	गायकवाड श्रीरिएटल सिरीज, न ८ १९१८	पुस्त
कल	=	कलशाय	गायकवाड श्रीरिएटल सिरीज १९२०	,
कल	=	कलशाय	७ बर्नई सस्कृत सिरीज १९००	
कल	=	कलशाय	स्व संपादित कलशाय १९१९	पुस्त
कल	=	कलशाय	जैन धर्मप्रसारक, मंडल, मंडलगा १९१४	,
कल	=	कलशाय	† हस्तलिखित	गाथा
कल	=	कलशाय	श्रीमसिंह भाणेक, बम्बई संवत् १९१८	
कल	=	कलशाय	७ बर्नई सस्कृत सिरीज १८८७	
कल	=	कलशाय	१ हस्तलिखित	" अधिकार गाथा
कल	=	कलशाय	२ चतुसाल मोहोलाभा कीठारी ग्रहमदावाद, संवत् १८८०	"
कल	=	कलशाय	३ सेठ जगदाभाई भगुभाई ग्रहमदावाद १९२४	"
कल	=	कलशाय	स्व संपादित कलशाय, संवत् १९७८	गाथा
कल	=	कलशाय	राय धर्मसिंह बहादुर, कलशाय १८४२	"
कल	=	कलशाय	+ १ डा ए वेबर संपादित लापजिया १८८१	"
कल	=	कलशाय	२ नियुक्तगर प्रेस बम्बई १९११	"
कल	=	कलशाय	स्व संपादित कलशाय संवत् १९७८	गाथा
कल	=	कलशाय	अत्मानन्द गोवर्धनदास, बम्बई १९१३	"
कल	=	कलशाय	श्रीमसिंह भाणेक बम्बई संवत् १९६२	गाथा

† सत्यमेव के श्री मोदी द्वारा प्राप्त ।

+ सामान्यजिगने सस्कृत का नाम "संस्कृत जेस हाल" है और बम्बईके ना "गाथासंस्कृत"। प्रत्येक ही है, परन्तु बम्बईके संस्कृत में सात शतको के विभाग में करीब ५०० गाथाएँ छपी हैं और साधुजिगने में सोपे नंबर से ठीक १०००। एक से ७०० तक की गाथाएँ दोनों संस्करणों में एक ही हैं, परन्तु गाथाओं के कम-म-ब-होई दो बार नंबरों का आगामी-मोटा है। ७०० के बाद का और ७०० के भीतर भी अहाँ गाथा के अनंतर 'म' दिया है वह नंबर केवल साधुजिग के ही संस्करण का है।

संकेत	श्रृंग का नाम	संस्करण आदि	जिसके श्रृंग दिए गए हैं वह
गुरु	= गुरुप्रदक्षिणाकुलक	श्रृंगालाल शोबर्धनदास, बम्बई, १९६३	... गाय
गोप	= गौतमकुलक	भीमसिंह माणिक, बम्बई, संवत् १९६५	... "
चउ	= चउमरणापयत्रो	१ जैन-धर्म-प्रसारक-सभा, भावनगर, संवत् १९६६	... "
		२ या. बालाभाई कवलभाई, अहमदाबाद, संवत् १९६२	... "
चउ	= चउपन्नमहापुरिसचरिय	प्राकृत ग्रन्थ-परिषद्, बाराखसी-५, १९६१	... "
चंड	= प्राकृतलक्षण	● एथिमार्कि सोसायटी, बंगाल, बतकता, १८८०	... पाहुंड
चंद	= चंदप्रति	हस्तलिखित	... "
चार	= चारदत्त	त्रिलेख-संस्कृत-सिरीज	... श्रुत
चेइय	= चेइयवंदसुमहामास	जैन आत्मानन्द सभा, भावनगर, संवत् १९६२	... गाय
चेइय	= चैरमबन्धन भाष्य	भीमसिंह माणिक, बम्बई, संवत् १९६२	... "
जं	= जंघूडीपप्रति	१ देवचंद लालभाई पु० फंड, बम्बई, १९१०	... वसन्तार
		२ हस्तलिखित	... "
जय	= जयसिंहमण स्तोत्र	जैन प्रभाकर प्रिंटिंग प्रेस, रत्नलाम, प्रथमावृत्ति	... गाय
जिन	= जिनदत्तास्मान	सिंघी जैन सिरीज	...
जी	= जीवविचार	आत्मानन्द जैन-पुस्तक-प्रचारक मंडल, भाग्यरा, संवत् १९७८	...
जीव	= जीवकल्प	हस्तलिखित	...
जीव	= जीवाजीवाग्निगममूत्र	देवचंद लालभाई पुस्तकदोडार फंड, बम्बई, १९१९	... प्रतिपत्ति
जीवस	= जीवसमाष्टप्रवरण	† हस्तलिखित	... गाय
जीवा	= जीवानुशासनकुलक	श्रृंगालाल शोबर्धनदास, बम्बई, १९१३	... "
जो	= ज्योतिषररङ्क	हस्तलिखित	... पाहुंड
टि	= † टिप्पण (पाठान्तर)
टी	= † टीका
ठा	= ठाण्णमुत्त (स्थनागमूत्र)	भाग्यमोदय-समिति, बम्बई, १९१८-१९२०	... ठाण०
उदि	= उदिसूत्र	१ हस्तलिखित	...
		२ भाग्यमोदय समिति, बम्बई, १९२४	... पत्र
उमि	= उमिऊण स्मरण	स्व-संपादित, बनकता, संवत् १९७८	... गाय
उामा	= उामाधम्मवह्मांमुत्त	भाग्यमोदय समिति, बम्बई, १९१२	... धूमस्तम्भ, धम्म०
संडु	= संदुलवेयातिग्रन्थो	१ हस्तलिखित	...
		२ दे० ला० पुस्तकदोडार फंड, बम्बई, १९६२	... पत्र
ति	= तिजपपूत	जैन-ज्ञान-प्रसारक-मंडल, बम्बई, १९११	... गाय
तिय	= तिमुग्गानिग्रन्थो	हस्तलिखित	...
थी	= थीर्यवन्ध	हस्तलिखित	... वन्ध
त्रि	= त्रिपुरदाह (डिम)	गायक राह थोरिएण्टल् मिरीज, नै ८, १९१८	... श्रुत

† धट्टेय श्रोत्रु के० प्र० मोदी दाण प्राप्त ।

+ पाठान्तर वाले संस्करणों के जो पाठान्तर हमें उपादेय मानूय पड़े हैं उन्हें भी हम बीच में स्थान दिया है और प्रमाण के पास 'टि' शब्द जोड़ दिया है जिससे उस शब्द की उसी स्थान के स्थान पर समझना चाहिए ।

‡ जहाँ प्रमाण में संय-संकेत और स्थान-निर्देश के अन्तर 'ले' शब्द निर्या है वहाँ उस ग्रन्थ के उसी स्थान की योजना के प्रास्ताविक से मतलब है ।

संकेत	अथ वा नाम	संस्करण आदि	जिसके अंक दिए गए हैं वह
दं	= दंडकप्रकरण	१ जैन-ज्ञान-प्रधारण-मंडल, बम्बई, १९११ २ भीमसिंह मारोके, बम्बई, १९०८	... गाथा ... " ... लटव
दंत	= दशंगुण्डिप्रकरण	हस्तालिखित	... "
दशप्रगत्य दशवेचू	} = दशवैकान्तिक ग्रन्थस्य सिंहचूषि	P. T. S.	... "
दस	= दशवैकान्तिकमून	१ भीमसिंह मारोके, बम्बई, १९०० २ डॉ० जीवराम पैलाभाई, ब्रह्मपरावार, १९६२	... ब्रह्मपदन० ... "
दशगू	= दशवैकान्तिकचूषि	" "	... चूषिका०
दशानि	= दशवैकान्तिकनिष्ठुंकि	१ भीमसिंह मारोके, बम्बई, १९०० २ देवचन्द सातभाई	... ब्रह्मपदन, गाथा
दशवेचूड	= दशवैकान्तिक गूड विवरण	मुद्रित चूषि, आपमदेव वेदरीयल	...
दशा	= दशानुसंग्य	हस्तालिखित	... "
दीव	= दीवसामरणान्ति	"	...
दूत	= दूतपटोप्रकच	त्रिवेन्द्र संस्कृत-सिरीज	... छठ
दे	= देरीनाममाला	बम्बई संस्कृत-सिरीज, १८८०	... दर्ग, गाथा
देव	= देवेन्द्रस्तवप्रकीर्णक	हस्तालिखित	...
देवदिन	= देवदिन वधानक	"	...
देवेन्द्र	= देवेन्द्रनरदेवप्रकरण	जैन प्रारम्भानन्द सभा, भावनगर, १९२२	... गाथा
द्र	= द्रव्यसितरी	१ जैन-धर्म-प्रसारक-सभा, भावनगर, संवत् १९५८ २ शा० केणीचंद मूरचंद, न्हेसाणा, १९०६	... " ... "
द्रव्य	= द्रव्यसंग्रह	जैन-धर्म-प्रसारक-कार्यालय, बंबई, १९०६	... "
धण	= धूपमंत्रचार्शिका	ब्रह्मपरावार, रातग पुच्छक, बंबई, १८९०	... "
धम्म	= धर्मरत्नप्रकरण सटीक	१ जैन विद्या-प्रचारक संघ, पालीताण, १९०५ २ हस्तालिखित	... मूल-गाथा ... "
धम्मि	= धम्मिलहिदी (बसुदेवहिदी सत्त्वचैत)	धरानन्द सभा	...
धम्मो	= धम्मोवएसकुलक	हस्तालिखित	...
धर्मे	= धर्मसंग्रह	जैन-विद्या-प्रचारक-संघ, पालीताण, १९०५	... गाथा
धर्मे	= धर्मरत्नसुपुत्ति	भारानन्द सभा	... प्राधिकार
धर्मनि	= धर्मवैचित्र्यप्रकरण सटीक	बेसंगमाई छोटालाल सुवरीया, ब्रह्मपरावार, १९२४	...
धर्मसं	= धर्मसंग्रहणी	दे० सा० पुस्तकोद्धार फंड, बंबई, १९१६-१८	... पत्र
धर्मा	= धर्मसुपुत्ति	जैन-ब्रह्मपरावार-सभा, भावनगर, १९१८	... गाथा
धाला	= प्राकृतधालादेव	एसियाटिक सोसाइटी प्रॉफ बंगाल, १९२४	... छठ
ध्व	= ध्वन्यलोक	निर्णयसागर प्रेस, बंबई	... छठ
नंदोदित्य	= नन्दोदित्यण	P. T. S.	... "
नन्दवरस	= नन्दवरदरीराम (अविचर्येण)	वेङ्कर संपादित	...

संकेत	ग्रन्थ का नाम	संस्करण आदि	लिखके ग्रंथ दिए गए हैं वह
नव	= भवतत्त्वप्रकरण	१ आत्मानन्द-जैन-सभा, भावनगर २ प्राज्ञ-जैन धर्म-प्रवर्तक-सभा, अहमदाबाद, १९०६	*** गाथा *** "
नाट	= ‡ नाटकीयप्राकृतसाम्यसूची		
निबू	= निरीयसूत्रि	हस्तलिखित	*** उद्देश
निर	= निरयावलीसूत्र	१ हस्तलिखित २ आगमोदय-संमिति, बम्बई, १९२२	*** वर्ण, ग्रन्थ *** "
निष्ठा	= निशाचिरामकुलक	† हस्तलिखित	*** गाथा
निरी	= निरीयसूत्र	हस्तलिखित	*** उद्देश
पञ्चम	= पञ्चमचरित्र	जैन-धर्म-प्रसारक-सभा, भावनगर, प्रथमावृत्ति	*** सब, गाथा
पञ्चम	= पञ्चमचरित्र	प्राकृत-ग्रंथ-परिपद्, वाराणसी-५	*** "
पंच	= पंचसंग्रह	१ हस्तलिखित २ जैन आत्मानन्द सभा, भावनगर, १९१९	*** द्वार, गाथा *** "
पंचमा	= पंचकल्पशास्त्र	हस्तलिखित	***
पंचव	= पंचवस्तु	"	*** द्वार
पञ्चा	= पञ्चासकप्रकरण	जैन-धर्म-प्रसारक सभा भावनगर, प्रथमावृत्ति	*** पञ्चासक
पञ्चु	= पंचवस्तुसूत्रि	हस्तलिखित	***
पनि	= पचमिदंभीप्रकरण	आत्मानन्द-जैन सभा, भावनगर, सबत् १९७४	*** गाथा
परा	= पंचरान	त्रिवेन्द्र संस्कृत-सिरीज	*** प्रष्ट
पसू	= पंचसूत्र	हस्तलिखित	*** सूत्र

‡ सेंट्रल लाइब्रेरी, बडोदा में स्थित एक मुद्रित-हीन पुस्तक से गृहीत, जिसके पूर्व भाग में क्रमबद्धर का प्राकृत व्याकरण और उत्तर भागमें 'प्राकृतसामान्य' शीर्षक से कतिपय श्लोके से उद्धृत प्राकृत शब्दों की एक छोटी सी सूची दर्ज हुई है। इस सूची में उन श्लोकों के जो सक्षिप्त नाम और प्रस्ताव दिए गये हैं वे ही नाम तथा प्रस्ताव ज्यों के त्यों प्रस्तुत किए गये भी यथास्थान 'नाट' के बाद रखे गये हैं। उक्त पुस्तक में उन श्लोकों के सक्षिप्त नामों तथा संस्करणों का विवरण इस तरह है—

भासवी	for	भासवीभाष्यम्	Calcutta Edition of 1830
चैत	"	चैतन्यचन्द्रोदयम्	" 1854
विक्र	"	विक्रमीवर्षी	" 1830
साहित्य	"	साहित्यदर्पण	Edition of Asiatic Society
उत्तर	"	उत्तररामचरित	Calcutta Edition of 1831
रत्ना	"	रत्नावली	" 1832
मुञ्च	"	मुञ्चकटिक	" 1832
प्राप्त	"	प्राकृतपञ्चाश	Mr. Cowell's Edition of 1854
शत्रु	"	शत्रुन्तला	Calcutta Edition of 1840
मानवि	"	मानविकाग्निमित्र	Tulberg's Edition of 1850
वेष्टि	"	वेष्टिसंहार	Muktaram's Edition of 1855
पाम	"	सक्षिप्तसारस्य प्राकृतपद्याः	
महावी	"	महावीरचरित्रम्	Trithen's Edition of 1843
पिंग	"	पिंगल.	Ms.

संज्ञेत	ग्रन्थ वा नाम	गणनरूप आदि	त्रिलोक संज्ञा दिए गए हैं यह
परित	= परिनिमृष	भीममिह माणो०, बम्बई, संवत् १८१२	...
पथ	= महापञ्चमालाणुपमत्रो	शा. बालामार्द कञ्चनमार्द, धर्मदाबाद, संवत् १८१२	गाथा
पट्ट	= पञ्चप्रतिपदमण्डल	१ दिन-ज्ञान-प्रसारक-संज्ञक, बम्बई, १८११ २ धर्ममालन्द-जैन-मुक्ता-प्रसारक संज्ञक, धारवा, १८२१	...
पट्टण	= पट्टणपद्यामुक्त	राय धनपतिमिह बलपुर, बनारस, संवत् १८१०	...
पट्टह	= प्रत्यक्षपञ्चमाला	धाममार्दक मर्ममति, बम्बई, १८१२	...
पमा	= पञ्चमालाभाष्य	भीममिह माणो०, बम्बई, संवत् १८१२	...
पथ	= प्रथममालाधार	१ " संवत् १८१४ २ दे ता० पुस्तकालय संज्ञक, बम्बई, १८२२-२५	...
पस	= प्रज्ञापनोपाङ्ग-सुनीयनसंग्रहणी	धाममार्दक-जैन सभा, भावनगर, संवत् १८७४	...
पस	= पाल्पल्लव-दीप्तिप्रकाश	१ चौ० चौ० लक्ष्मण कंचनो०, भावनगर, संवत् १८७१	...
पास	= पार्ययसङ्गम	गायकबाड मोरिएटल सिटीज, नं. ४, १८१७	...
पि	= प्रमेदिन्, धर्मप्राहृत वप्राहृत	का. धार०, विरोधु हन० १८००	...
विग	= प्राहृतविगन	१ एडिमाडिन् भोगाहरी, बंगाल, बनारस, १८०२	...
पिड	= पिडनिपुंक्ति	१ हस्तलिखित २ दे० ता० पुस्तकालय संज्ञक, बम्बई, १८२२	...
पिडमा	= पिडनिपुंक्तिभाष्य	"	...
पुष्प	= पुष्पमालाप्रकरण	जैन-श्रवणर-संज्ञक, इंदौराणा, १८११	...
प्रति	= प्रतिमानाटक	निवेन्द्र संस्कृत-सिटीज	...
प्रबो	= प्रबोधचन्द्रोदय	निवेन्द्र संस्कृत सिटीज	...
प्रयी	= प्रतिमायीगणपरायण	निवेन्द्र संस्कृत सिटीज	...
प्रवि	= प्रवृत्त-विधान-मुक्तक	† हस्तलिखित	...
प्राह	= प्राहृतसर्वस्व (मार्तण्डेयहृत)	विभागलटव, विशाखापट्टणम्	...
प्राप	= इन्द्रधनुश्चक्रं द्रु दि प्राहृत	● पंजाब मुनिविरिटी, लाहौर, १८१७	...
प्राप्र	= प्राहृतप्रकाश	● १ डा. वापेल-संपादित, संज्ञक, १८०८ ● २ श्रीगीय-माहिर-परिषद्, बनारस, १८१४	...
प्रामा	= प्राहृतमार्गवेदशिका	● शाह हर्षचन्द्र मुराबाई, बनारस, १८११	...
प्राह	= प्राहृतसर्वस्वपावली	● सेठ मनमोहन मधुभाई, धर्मदाबाद, संवत् १८१८	...
प्रासू	= प्राहृतसूक्तजनमाला	जैन विरिष-माहिर शाह माता, बनारस, १८१८	...
वाल	= बालचरित	निवेन्द्र-संस्कृत-सिटीज	...
बृह	= बृहत्संज्ञकाभाष्य	हस्तलिखित	...
भग	= भगवतीमूत्र	● १ जिनगमप्रकाश सभा, बम्बई, संवत् १८७४ २ हस्तलिखित	...
भत	= भतपरिणामयत्रो	३ धाममोदय समिति, बम्बई, १८१८-१८१९-१८२१ ४ जैन-धर्म-प्रसारक-सभा, भावनगर, संवत् १८६६	...
भवदुषा	= भवभावगवृत्तिकथा	२ शा. बालामार्द कञ्चनमार्द, धर्मदाबाद, संवत् १८६२ देवचन्द सातमार्द	...

+ द्वार—प्रारम्भ के पूर्व के प्रस्ताव के लिए 'प' के बाद केवल गाथा के संकेत दिए गए हैं ।

† श्रद्धेय श्रीमुक्त के. प्रे. मोदी द्वार प्राप्त ।

संकेत	ग्रन्थ का नाम	सम्करण आदि	जिसके अंक दिए गए हैं वह
भवि	= भविसत्तकहा	* १ डा एन् जकोबा संपादित १६१८	
भाव	= भावकुलन	* २ मायकवाड थोरिएटल सिरोज १६२३	
भास	= भाषाहृत्य	अबमान गोवधननाम बन्वई १६१३	गाथा
भगव	= भगवतुलन	सेठ मनमुषभाई मगुभाई, अहमदाबाद	"
मध्य	= मध्यमध्यायोग	† हस्तलिखित	"
मन	= मनोनिग्रहभावना	निबन्ध संस्कृत सिरोज	पुछ
महा	= भाउसपेध्यालते एरस्यासुगन्	† हस्तलिखित	गाथा
	इन् महाराणी	ॐ डा एच जकोबी संग्रहित, लाहौरजिय, १८८६	
महानि	= महानिशीयमून	हस्तलिखित	अध्ययन
मा	= मातविकागमिग्र	निर्णयसागर प्रेस बन्वई १६१५	पुछ
माल	= मालसोमायव	" "	"
मुणिए	= मुनिमुवतन्वामिचरित	हस्तलिखित	गाथा
मुद्रा	= मुद्रापापस	बन्वई-सरकुल सिरोज १६१५	पुछ
मुच्छ	= मुच्छकटिक	१ निर्णयसागर प्रेस, बन्वई १६१६	"
		२ बन्वई संस्कृत सिरोज, १८६६	"
मे	= मैथिलीकल्याण	भाणिकचन्द दिगम्बर-जैन प्रयमाता बन्वई १६७३	"
मोह	= मोहराजवरानय	गायकवाड थोरिएटल सिरोज न ६, १६१८	"
यति	= यतिशिखावेचाष्टिका	† हस्तलिखित	गाथा
रभा	= रभाभजरी	* निर्णयसागर प्रेस बन्वई, १८-६	"
रतन	= रतनवकुलक	† हस्तलिखित	गाथा
रपण	= रमणगुहर्निबकहा	स्व-संपादित बनारस १६१८	पुछ
राज	= रामिपातराजग	* जैन प्रभाकर प्रिन्टिंग प्रेस रतलाम	
राय	= रायपतेलीमुस	१ हस्तलिखित	
		२ भागमोदय-समिति बन्वई, १६२५	पत्र
रामि	= रामिणी-हरण (ईशामुग)	गायकवाड थोरिएटल सिरोज, न ८ १६१८	पुछ
लघु	= लघुसंश्रुणी	भीमसिंह माणिक बन्वई १६०८	गाथा
लहम	= लघुप्रजितराति स्मरण	स्व-संपादित, कनकता, सबत् १६७८	"
लोक	= लोकप्रवाश	देवचन्द लालभाई	
बज्रा	= बज्रालग्न	एशियाटिक सोसाइटी बंगाल बलकता	पुछ
बव	= बवहारमून सभाध्य	१ हस्तलिखित	उद्देश्य
		२ धुनि माणिक संग्रहित आक्नगर, १६२६	"
बलु	= बलुदेवहिंदी *	१ हस्तलिखित	
		२ आत्मानन्द सभा	
बा	= बागुलवाग्यानुशासन	निर्णयसागर प्रेस, बन्वई, १६१५	पुछ
बाग	= बागभटालकार	" १६१६	"
वि	= विषयमयोपदेशकुलक	† हस्तलिखित	गाथा

संकेत	ग्रन्थ वा नाम	संस्करण आदि	जिनके धन दिए गए हैं वह
विक्र	= विक्रमोर्वशीय	निर्णयसागर प्रेत, बम्बई, १९१४	... पुष्ट
विक्र	= विद्वान्तक्रीरय	भारिएचपन्द-दिगम्बर-जैन-ग्रन्थ-माला, संवत् १९७२	.. "
विचार	= विचारसारप्रकरण	आगमोदय-समिति बम्बई, १९२३	... गाथा
विधा	= विधानश्रुत	स्व-संपादित वल्लभता सन् १९७६	श्रुतसङ्घ, धर्म्य०
विदे	= विदेवमंजरीप्रकरण	स्व-संपादित, बनारस, संवत् १९७५-७६	... गाथा
विदे	= विदेवाचर्यनभाष्य	स्व संपादित बनारस, धीर-संवत् २४२१	... "
वृष	= वृषभानुजा	निर्णयसागर प्रेत, बम्बई, १८९५	... पुष्ट
वेणी	= वेणीसहार	निर्णयसागर प्रेत, बम्बई, १९१५	... "
वै	= वैराग्यशतक	विठ्ठलभाई जोशभाई पटेल, अहमदाबाद, १९२०	... गाथा
आ	= आद्यप्रसिद्धमण्डनप्रवृत्ति	दे० ला० पुस्तकालय एंड, बम्बई, १९१९	... मूलगाथा
आचक	= आचकप्रवृत्ति	१ श्रुत वैराग्यशतक प्रेमचन्द संपादित, १९०५ २ जैन धर्म शास्त्र	... गाथा
धृ	= धृतास्वाद	† हस्तलिखित	... "
पद्	= पद्मपाषाणिका	● बम्बई संस्कृत एन्ड प्राकृत सिरीज, १९१६	... "
स	= समराक्षसगद्गा	एस्मियाटिक सोसाइटी, बंगाल, बल्लभता, १९०८-२३	... पुष्ट
स	= सभापसतरी	विठ्ठलभाई जोशभाई पटेल, अहमदाबाद, १९२०	... गाथा
सति	= सतितासार	१ हस्तलिखित २ संस्कृत प्रेत डिपोजिटरी, बल्लभता, १८८९ १ भोमसिंह भाण्डे, बम्बई, संवत् १९६८ २ आत्मानन्द जैन समा, भावनगर, संवत् १९७३ पुष्ट ... गाथा ...
संग	= गृहसंग्रहणी	हस्तलिखित	... प्रस्ताव
सप	= संपाचारभाष्य
संन	= शांतिनाथचरित (देवचन्द्रसूरी-कृत)
सति	= सतिचरितोप	१ जैन ज्ञान प्रसारक-मंडल, बम्बई, १९११ २ आत्मानन्द-जैन-मुक्त-प्रचारक मंडल, भावनगर, १९२१	... गाथा
संधा	= संधारणपत्रो	१ हस्तलिखित २ जैन धर्म प्रचारक समा, भावनगर, संवत् १९६६ "
सवोष	= सवोषप्रकरण	जैन ग्रन्थ प्रकाशक-समा, अहमदाबाद, १९१६	.. "
सवे	= सवेगभूतिबाहुलक	† हस्तलिखित	... पत्र
सवेग	= सवेगमंजरी गाथा
सद्धि	= सद्धिसमयराज	१ स्व-संपादित, बनारस, १९१७ २ सत्यविजय जैन-ग्रन्थमाला, नं. ६, अहमदाबाद, १९२५ "
सण	= सन्तुष्टानवर्तित	● डॉ एच. जेठोवी-संपादित, १९२१	... "
सत	= उपदेशसंग्रहिका	जैन धर्म-प्रसारक समा, भावनगर, संवत् १९७६	... गाथा
सम	= समवायगमूय	आगमोदय समिति, बम्बई, १९१८	... पुष्ट
समु	= समुद्रमयन (समवकार)	गायकवाड भारिएन्टल सिरीज, नं. ८, १९१८	... "
सम्प	= सम्पनिमूय	जैन धर्म प्रसारक समा, भावनगर, संवत् १९६५	... गाथा

संज्ञित	ग्रन्थ का नाम	संस्करण आदि	जिसके अंक दिए गए हैं वह
सम्मत	= सम्मन्वयसन्तति सटीक	दे० ला० पुस्तकोद्धार-फंड, बम्बई, १९१६	... पत्र
सम्य	= सम्यक्स्वरूप पञ्चोषी	अंबालाल गोवर्धनदास, बम्बई, १९१३	... गाथा
सम्यक्त्रयो	= सम्यक्त्रयोपादविधिविमुक्त	† हस्तलिखित	... ”
सा	= सामान्यपुण्योपदेशमुक्त	”	... ”
साधे	= मणुवरसाधेशतकप्रकरण	जीहरी जुनीलाल पन्नालाल, बम्बई, १९१६	... ”
सिक्ता	= सिद्धाशतक	† हस्तलिखित	... ”
सिग्ध	= सिग्धमवहरउत्तरण	स्व संपादित, कलकत्ता, संवत् १९७८	... ”
सिरि	= सिरिसिखिलकहा	दे० ला० पुस्तकोद्धार फंड, बम्बई, १९२३	... ”
मुख	= मुखबोधा टीका (उत्तराध्ययनस्य) †	हस्तलिखित	... अध्ययन, गाथा
मुखज	= मूर्धप्रसूति	भागमोदय-समिति, बम्बई, १९१६	... पाठ्य
मुपा	= मुपासनाहचरित्र	स्व-संपादित बनारस, १९१८-१९	... पृष्ठ
सुर	= सुरसुंदरीचरित्र	जैन-विधिष-साहित्य-शास्त्र-माला, बनारस, १९१६	... परिच्छेद, गाथा
सूम	= सूमगङ्गासुत	+ १ भीमसिंह माणिक, बंबई, १९३६ २ भागमोदय-समिति, बंबई, संवत् १९१७	... भूतलोक, ग्रन्थ ...
सूत्रनि	= सूत्रकृताङ्गनिष्ठुक्ति	१ हस्तलिखित २ भागमोदय-समिति, बंबई, संवत् १९७३ ३ भीमसिंह माणिक ” ” १९३६	... भूतलोक ... गाथा ...
सूक	= सूकमुकावली	दे० ला० पुस्तकोद्धार फंड, बंबई, १९२२	... पत्र
सूत्रपू	= सूत्रकृताङ्गनिष्ठुक्ति	P. 1' ८	...
स	= सेतुबंध	निर्णयसागर प्रेस, बंबई, १८९५	... आभासक, पत्र
स्वप्न	= स्वप्नवासवदत्त	त्रिवेन्द्र-संस्कृत-सिरीज	... पृष्ठ
हम्मीर	= हम्मीरमदमर्दन	गायबवाड ओरिएण्टल सिरीज, नं. १०, १९२०	... ”
हास्य	= हास्यबूझामणि (ग्रहसन)	”	... ”
हि	= हितोपदेशमुक्त	† हस्तलिखित	... गाथा
हित	= हितोपदेशसाधुमुक्त	”	... ”
हे	= हेमचन्द्र-प्राकृत-व्याकरण	● १ डॉ. आर्. पिरीन्-संपादित, १८०० २ बंबई-संस्कृत-सिरीज, १९००	... पद, सूत्र ... ”
हेका	= हेमचन्द्र-काव्यानुशासन	निर्णयसागर प्रेस, बंबई, १९०१	... पृष्ठ

† यद्यपि यीशु के प्रे. मोदी द्वारा प्राप्त ।

‡ देखो 'उत्तर' के नीचे श्री टिप्पणी ।

+ सूत्र के अंक इन दोनों में भिन्न भिन्न हैं, प्रस्तुत कोर में सूत्रक केवल भी. मा. के संस्करण के दिए गये हैं ।

प्रथम संस्करण में लेखक का निवेदन

कोई भी भाषा के ज्ञान के लिए उस भाषा का व्याकरण और कोष प्रयास साधन है। प्राकृत भाषा के प्राचीन व्याकरण अनेक हैं, जिनमें चण्ड का प्राकृतलक्षण, वररचि का प्राकृतप्रमश, हेमाचार्य का सिद्धहेम (षट्पथ व्याख्य), मार्कण्डेय का प्राकृतसर्वरत्न और लक्ष्मीधर की पद्मभाषाचन्द्रिका मुख्य हैं। और अर्वाचीन प्राकृत व्याकरणों की संख्या अत्यन्त होने पर भी उनमें जर्मनी के सुप्रसिद्ध प्राकृत-विद्वान् डॉ. पिशाल का प्राकृतव्याकरण सर्वश्रेष्ठ है जो अतिविस्तृत और तुलनात्मक है। परन्तु प्राकृत कोष के विषय में यह बात नहीं है। प्राकृत के प्राचीन कोषों में अद्यापि पर्यन्त केवल दो ही कोष उल्लेख्य हुए हैं—परिहृत घनपाल-कृत पाञ्चअलङ्कारनाममाला और हेमाचार्य-प्रणीत देशीनाममाला। इनमें पहला अतिसंक्षिप्त—दो बी में भी बस पन्नों में ही समाप्त और दूसरा केवल देश्य शब्दों का कोष है। इनके बिना अन्य कोई भी प्राकृत वा कोष न होनेसे प्राकृत के हार्दक अन्वयांशों को अपने अन्वयान में बहुत अनुविधा होती थी, कुछ घुम्ने भी अपने प्राकृत-ग्रन्थों के अनुशीलन-काल में इन अभाव का कटु अनुभव हुआ करता था। इनसे आज के करीब पनरह साल पहले पूर्यपाद, प्रात-स्मरणीय, पुरुषार्थ शास्त्र विरारद जैनाचार्य श्री १८०० की त्रिजयवर्मसूरीश्वरजी महाराज की प्रेरणा ने प्राकृत का एक उपयुक्त कोष बनाने का मैंने विचार किया था।

इसी अन्त्य में श्री राजेन्द्र सरिजी का अभिधानराजेन्द्र नामक कोष का प्रथम भाग प्रकाशित हुआ और अभी दो वर्ष हुए इसका अन्तिम भाग भी बाहर हो गया है। यही बड़े सात जिल्दों में यह कोष समाप्त हुआ है। इस संपूर्ण कोष का मूल्य २६०) रुपये हैं जो परित्यक्त और ग्रन्थ-परिमाण में अधिक नहीं कहे जा सकते। यद्यपि इस कोष की विस्तृत आलोचना करने की न तो यहाँ जगह है, न आवश्यकता ही, तथापि यह कहें बिना नहीं रहा जा सकता कि इसकी तयारी में इसके कर्ता और उसके सहकारियों की सचमुच घोर परिश्रम कला पकी है और प्रकाशन में जैन स्वतन्त्र सच को भारी धन-व्यय। परन्तु खेद के साथ कहना पड़ता है कि इसमें कर्ता की सकलता की अपेक्षा निष्कलता ही अधिक मिली है और प्रकाशक के धनका व्यवस्था ही विशेष हुआ है। सकलता न मिलने का कारण भी स्पष्ट है। इस ग्रन्थ को छोड़ें और से देखने पर यह सहज ही मान्य होता है कि इनके कर्ता को न तो प्राकृत भाषाओं का पर्याप्त ज्ञान था और न प्राकृत शब्द कोष के निर्माण की उतनी अवलोकना, जितनी जैन दर्शन शास्त्र और तर्क शास्त्र के विषय में अपने पाण्डित्यप्रख्यापन की धून। इसी धून ने अपने परिश्रम को योग्य दिशा में से जानेवाली विवेक-बुद्धि का भी हान कर दिया है। यही कारण है कि इस कोष का निर्माण, केवल पद्धत-पर भी कम प्राकृत जैन पुलक का ही, जिनमें अर्धमागधी के दर्शनविषयक ग्रंथों की बहुलता है, आधार पर किया गया है और प्राकृत की ही हवर मुख्य शाखा में से तथा विभिन्न विषयों के अनेक जैन तथा जैनेतर ग्रन्थों में एक का भी उद्योग नहीं किया गया है। इससे यह कोष व्यापक न होकर प्राकृत भाषा का एकदेशीय कोष हुआ है। इनक बिना प्राकृत तथा संस्कृत ग्रन्थों के विशिष्ट शब्दों की और नहीं-जहाँ तो छोड़-जहाँ संपूर्ण ग्रन्थ को ही अवतरण के रूप में उद्धृत करने के कारण पृष्ठ-संख्या में बहुत बड़ा होने पर भी शब्द-संख्या में ऊन ही नहीं, बल्कि आधार-भूत ग्रंथों में प्राप्त हुए कई उपयुक्त शब्दों को छोड़ देन से और विशेषार्थ-हीन 'मतिदीर्घ' सामासिक शब्दों की भरती से वास्तविक शब्द-संख्या में यह कोष अतिन्यून भी है। इतना ही नहीं इन कोष में अशुद्ध उद्धरणों की, अभावधानी की और प्रेस की ठा मसख्य भयुद्धिमाँ है ही, प्राकृत भाषा के अज्ञान से सबब रखनेवाली भूलों की भी कमी नहीं है। और सबसे बड़कर दोष इस कोष में यह है कि वाचस्पत्य, अनेकानुजयभाषा, अष्टक, रत्नाकरानारिण आदि केवल सख्त के और जैन इतिहास जेठे

१. जेठे 'वेदय' शब्द की व्याख्या में प्रतिमाशानक नामक सटोक सख्त ग्रन्थ की प्रादि से लेकर अन्त तक उद्धृत किया गया है। इन ग्रंथ की श्लोक-संख्या करीब तीन हजार है।

२. अक्ष = धर्क प्रादि।

३. जैन मद्र तिवल-रोल, मद्र-दुल्लभ मम्म, मद्र तिवल-मम्म विगम, मद्रुल्लभ-योग शिरोह, आचार्यदे(१)वर-वर-पर-म्यनेस, धर्मम्म(१)-कंठ-शायण, अक्षय-अक्षय-माला हियय, मद्रहल्लुकी(१)म-म-एलिय प्रादि। इन शब्दों का इनके अर्थों को अनेकां कुट्ट भी विशेष धर्म नहीं है।

दूसरी मुख्य कठिनाई धर्मार्थ्य के बारे में थी। मेरी भाषिका भ्रष्टवा ऐसी नहीं थी कि इस महान् ग्रन्थ की तय्यारी के लिए पुस्तकालय आवश्यक साधनों के धीरे सहायक मनुष्यों के वेतन खर्च के अतिरिक्त प्रकारान का भार भी वहन कर सकूँ। धीरे मुफ्त में किसी से भाषिक सहायता लेना मैं पसन्द नहीं करता था। इसके इत कठिनाई को दूर करने के लिए अग्रिम ग्राहक बनाने की योजना की गई, जिसमें उन अग्रिम ग्राहकों को हर पचास रुपये में इस संपूर्ण ग्रन्थ की एक कॉपी देने की व्यवस्था थी। इसमें मेरी उक्त कठिनाई सम्पूर्ण तो नहीं, किन्तु बहुत कुछ कम हो गई। इस योजना को इतने दूर तक सफल बनाने का अग्रिम श्रेय वचकता के जैन शैलाम्बर शीरधर के योगदान नेता श्रीमान् सेठ नरोत्तमभाई जेठाभाई को है, जिन्होंने शुरू से ही इसकी सरनकता का भार अपने पर लेते हुए मुझे हर तद्वत् से इस कार्य में सहायता की है जिसके लिए मैं उनका चिर-कृतज्ञ हूँ। इसी तरह अहमदाबाद निवासी श्रद्धेय श्रीयुक्ता शिवलालभाई प्रेमचन्द मोदी जी. ए., एल्.एल्. जी. का भी मैं बहुत ही उन्नत हूँ कि जिन्होंने कई मुद्रित पुस्तक में दो हुई प्राकृत शब्द सूचियों पर मेरे एकाग्रित किया हुआ एक बड़ा शब्द संग्रह मुझे दिया था। इतना ही नहीं, बल्कि समय समय पर प्राकृत की अनेक हस्त-लिखित तथा मुद्रित पुस्तकों का जोगाह कर दिया था और उक्त योजना में ग्राहक-संख्या बढ़ा देने का हार्दिक प्रयत्न किया था। प्रातः स्नानशील, पूज्यपाद, गुरुवर्य सुनिराज श्रीअमीचिजयजी महाराज, पूज्य जैनाचार्य श्रीचैत्यमोहन सुरिजी, ज. यु. गद्दारक श्रीजितचरित्रसुरिजी तथा स्वतन्त्र-सम्पादक विश्वरूपे श्रीयुक्त अम्बिकाप्रसादजी वाजपेयी का भी मैं हृदय से उपकार मानता हूँ कि जिनकी प्रेरणा में अग्रिम ग्राहकों की वृद्धि द्वारा मुझे इस कार्य में सहायता मिली है। उन महापुरुषों को, जिनने शुभ नाम इसी ग्रन्थ में अग्रिम ग्राहक सूची में प्रकाशित किए गए हैं, अनेकानेक धन्यवाद है कि जिन्होंने यथारहित अत्याधिक संख्या में इस पुस्तक की कॉपीयाँ खरीद कर मेरा यह कार्य सफल कर दिया है। यहाँ पर मेरे मित्र श्रीयुक्त सेठ गिरधरलाल त्रिभलाल धीरे श्रीमान् बाबू डालचन्दजा सिंधी के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। इन दोनों महाशयों ने अपनी अपनी शक्ति से अनुसूत यथैष्ट संख्या में इन कोष की कारियाँ खरीदने के अतिरिक्त मुझे इन कार्य के लिये समय समय पर बिना सूत्र रखते देने की भी कृपा की थी। यह वहने में कोई झगड़िका नहीं है कि यदि उक्त सब महानुभावों की यह सहायता मुझे प्राप्त न हुई होती तो इस कोष का प्रकाशन मेरे लिए मुश्किल ही नहीं असम्भव था।

यहाँ इस बात का भी उल्लेख करना उचित जान पड़ता है कि प्रातः से चार दस वर्ष पहले मेरे सहायक श्रद्धेय प्रोफेसर सुरलीधर वनजी ए. ए. महाशय ने धीरे मैं मित्रक एक प्रस्ताव विशिष्ट पद्धति का प्राकृत इंग्लिश कोष तैयार करने के लिए कलकत्ता-त्रिभलाल में उपस्थित किया था, परन्तु उस समय वह अनिश्चित काल के लिए स्थगित कर दिया गया था। इसके कई वर्ष बाद जब मेरे इस प्राकृत हिन्दी कोष का प्रथम भाग प्रकाशित हुआ तो उसे देखकर कलकत्ता त्रिभलाल ने वर्षोंवार स्वर्णय आनन्दलाल जटिल आशुतोष मुखर्जी इतने संतुष्ट हुए कि उन्होंने तुरत ही त्रिभलाल कोष के लिये दोनों के तत्परतापान में इसी तरह के प्रमाण-पत्र एक प्राकृत प्रिन्टिंग कोष तैयार और प्रकाशित करने का न केवल प्रस्ताव ही प्राप्त करवाया, बल्कि उसकी कार्य-रूप में परिणत करने के लिए उपयुक्त व्ययस्था भी करायी है। इनके लिए उनकी जितने धन्यवाद दिये जायें, कम हैं। यहाँ पर मैं कलकत्ता त्रिभलाल कोष की भी प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकता कि जिसने द्वारा मुझे इन कार्य में समय, पुस्तक धादि की अनेक सुविधाएँ मिली हैं जिससे यह कार्य प्रत्येक-प्रकार शीघ्रता से पूर्ण हो सका है। इस कोष के उपोद्घात से सम्बन्ध रखनेवाले अनेक ऐतिहासिक जटिल प्रश्नों को मुझमने में श्रद्धेय प्रोफेसर सुरलीधर वनजी ए. ए. ने अपने कीमती समय का बिना संकोच भोग देकर मुझे जो सहायता की है उसपर लिए मैं उनका अत्यन्त बराबर से आभार मानता हूँ।

इस कोष के मुद्रण-कार्य के आरम्भ से लेकर प्रातः शेष होते तक, समय समय पर जैसे जैसे जो अतिरिक्त हस्त लिखित और मुद्रित पुस्तकें या सन्दर्भ मुझे प्राप्त होते जाते वे जैसे जैसे उनका भी यथैष्ट उपयोग इन कोष में किया जाता था। यही कारण है कि अब तक के अमुद्रित भाग के शब्द उनके रेकर्डों के साथ साथ अस्तुत कोष में ही यथास्थान शामिल कर दिए जाते थे और मुद्रित भाग के शब्दों का एक अलग संग्रह सम्पादित किया जाता था जो परिशिष्ट के रूप में इसी ग्रन्थ में अग्रिम प्रकाशित किया जाता है। ऐसा करते हुए तृतीय भाग के छपने तक अतिरिक्त पुस्तकों का उपयोग किया गया था उनकी एक श्रृंखला सूची भी तृतीय भाग में दी गई थी। उपर्युक्त के अतिरिक्त पुस्तकों की श्रृंखला सूची इसमें ११ देकर अग्रिम की दोनों (द्वितीय और तृतीय भाग में प्रकाशित) सूचियों को जो एक साराण सूची यहाँ दी जा रही है उसीमें उन पुस्तकों का भी यथानुक्रम से यथास्थान समावेश किया गया है जिसने पाठकों को अलग अलग रेकर्ड-सूचियाँ देखने को लक्ष्मीक न हो।

उक्त परिशिष्ट में केवल उन्हीं शब्दों को स्थान दिया गया है जो पूर्व-संग्रह में न पाने के कारण एकरूप गये हैं या जाने पर भी लिग या अर्थ में पूर्वागत शब्दों की भ्रमण विरोधता रखते हैं। नेवल रेकर्डों की विरोधता को लेकर किसी शब्द को परिशिष्ट में पुनरावृत्ति नहीं की गई है।

१. 'अग्रिम ग्राहक सूची' का अर्थ द्वितीय संस्करण में नहीं छापा गया है—संपादक।

२. 'परिशिष्ट' का संपूर्ण अर्थ इस द्वितीय संस्करण में यथास्थान समावेश कर दिया गया है—संपादक।

यद्यपि मेरी मातृभाषा हिन्दी नहीं है तथापि वही एकमात्र भारतवर्ष की सर्वाधिक व्यापक और इसलिए राष्ट्र-भाषा के योग्य होने के कारण यहाँ अर्थ के लिए विशेष उपयुक्त समझी गई है ।

ग्रन्त में, आर्य से लेकर अपभ्रंश तक की प्राकृत भाषाओं के विविध-विषयक जैन एवं जैनैतर प्राचीन ग्रंथों के (जिनकी कुल संख्या ढाई सौ से भी ज्यादा है) अतिविशाल शब्द-राशि से, संस्कृत प्रतिशब्दों से, हिन्दी शब्दों से, सभी आवश्यक अवतरणों से और संपूर्ण प्रमाणों से परिपूर्ण इस बृहत् प्राकृत-कोष में, यद्येष्ट सावधानता रखने पर भी, जो कुछ मनुष्य-स्वभाव-मुलभ त्रुटियाँ या भूलें हुई हो उनको सुधारने के लिए विद्वानों से नम्र प्रार्थना करता हूँ यह आशा रखता हूँ कि वे ऐसी भूलों के विषय में मुझे सतर्क करेंगे ताकि द्वितीयावृत्ति में तदनुसार सशोधन का कार्य सरल हो पड़े । जो विद्वान् मेरे भ्रम प्रमादों की प्रामाणिक पद्धति से सूचना देंगे, मैं उनका चिर-कृतज्ञ रहूँगा ।

यदि मेरी इस कृति से, प्राकृत-साहित्य के अध्ययन में थोड़ी भी सहायता पहुँचेगी तो मैं अपने इस दीर्घ-काल-व्यापी परिश्रम को सफल समझूँगा ।

फलकृता
ता० २९-१-२८ }

हरगोविन्द दास दि. सेठ

प्रथम संस्करण का उपोद्घात

जो भाषा अतिप्राचीन काल में इस देश के आर्य लोगों की कथ्य भाषा—बोलचाल की भाषा—थी, जिस भाषा में भगवान् महाश्वर और बुद्धदेव ने अपने पवित्र सिद्धान्तों का उपदेश दिया था, जिस भाषा को जैन और बौद्ध विद्वानों ने विविध विषयक विपुल साहित्य की रचना कर अपनाई है, जिस भाषा में श्रेष्ठ कान्य निर्माण द्वारा प्रवरसेन, हाल आदि प्रादुर्गत किये कहते हैं? महाकवियों ने अपनी अनुपम प्रतिभा का परिचय दिया है, जिस भाषा के मौलिक साहित्य के आधार पर संस्कृत के अनेक उत्तम ग्रन्थों की रचना हुई है संस्कृत के नाटक ग्रन्थों में संस्कृत भिन्न जिस भाषा का प्रयोग दृष्टिगोचर होता है, जिस भाषा से भारतवर्ष की वर्तमान समस्त आर्य भाषाओं की उत्पत्ति हुई है और जो भाषाएँ भारत के अनेक प्रदेशों में आजकल भी बोली जाती हैं, इन सब भाषाओं का साधारण नाम है प्राकृत, क्योंकि ये सब भाषाएँ एकमात्र प्राकृत के ही विभिन्न रूपान्तर हैं जो समय और स्थान की भिन्नता के कारण उत्पन्न हुई हैं। इसीसे इन भाषाओं के व्यक्ति-वाचक नामों के आगे 'प्राकृत' शब्द का प्रयोग आजकल किया जाता है, जैसे प्राथमिक प्राकृत, आर्य या 'त्रयैनामही प्राकृत', पाली प्राकृत, पैशाची प्राकृत, क्षीरसेनी प्राकृत, महाराष्ट्री प्राकृत, अपभ्रंश प्राकृत, हिन्दी प्राकृत, बंगला प्राकृत आदि।

भारतवर्ष की प्राचीन और प्राचीन भाषाएँ और उनका परस्पर सम्बन्ध

भाषानुसंध के अनुसार भारतवर्ष की आधुनिक कथ्य भाषाएँ इन पाँच भागों में विभक्त की जा सकती हैं —(१) आर्य (Aryan), (२) द्राविड (Dravidian), (३) मुण्डा (Munda) (४) मन् ख्मेर (Mon khmer) और (५) तिब्बत-चीना (Tibeto Chinese)

भारत की वर्तमान भाषाओं में मराठी बँगला, ओडिया, विहारी, हिन्दी, राजस्थानी, गुजराती, पंजाबी, सिन्धी और काश्मीरी भाषा आर्य भाषा से उत्पन्न हुई हैं। पारसी तथा अफेगा, जर्मना आदि अनेक आधुनिक युरोपीय भाषाओं की उत्पत्ति भी इसी आर्य भाषा से है। भाषागत सादृश्य को देखकर भाषा तत्त्व ज्ञातार्थों का यह अनुमान है कि इस समय तिब्बत और बहुदूरवर्ती भारतीय आर्य भाषा भाषा समस्त जातियों और उक्त युरोपीय भाषा भाषी सखल जातियों एक ही आर्य-वर्ग से उत्पन्न हुई हैं।

तेलगु, तमिल और मलयालम प्रभृति भाषाएँ द्राविड भाषा के अन्तर्गत हैं। कोल तथा साँथाली भाषा मुण्डा भाषा के अन्तर्गत है। दासी भाषा मन्ख्मेर भाषा का और भोटानी तथा नागा भाषा तिब्बत चीना भाषा का निदर्शन है। इन समस्त भाषाओं की उत्पत्ति किसी आर्य भाषा से सम्बन्ध नहीं रखती, अतएव ये सभी अनार्य भाषाएँ हैं। यद्यपि ये अनार्य भाषाएँ भारत के ही दक्षिण, उत्तर और पूर्व भाग में बोली जाती हैं तथापि यम्रेजी आदि सुदूरवर्ती भाषाओं के साथ हिन्दी भाषा आर्य भाषाओं का जो घरा नत ऐन्य उपलब्ध होता है, इन अनार्य भाषाओं के साथ वह सम्बन्ध नहीं देखा जाता है।

ये सब कथ्य भाषाएँ आन्तरिक तिस रूप में प्रचलित हैं, पूर्वोक्त में उसा रूप में न थी, क्योंकि कोई भी कथ्य भाषा कभी एक रूप में नहीं रहती। अन्य वस्तुओं की तरह हमारा रूप भी सर्वदा बदलता ही रहता है—देश, काल और व्यक्तिगत उच्चारण के भेद से भाषा का परिवर्तन अनिवार्य होता है। यद्यपि यह परिवर्तन जो लोग भाषा का व्यवहार करते हैं उनसे द्वारा ही होता है तथापि उस समय वह लक्ष्य में नहीं आता। पूर्वोक्त की भाषा के संरक्षित आदर्श के साथ तुलना करने पर बाद में ही यह जाना जाता है। प्राचीन काल की जिन भारतीय भाषाओं के आदर्श संरक्षित हैं—जिन भाषाओं ने साहित्य में स्थान पाया है, उनसे नाम ये हैं—वैदिक संस्कृत, लौकिक संस्कृत, पाली, अशोक लिपि तथा उससे बाद की लिपि की भाषा और प्राकृत भाषा-समूह। इनमें प्रथम की दो भाषाएँ कभी जन साधारण की कथ्य भाषा न थी, वैदिक लेख्य—साहित्यिक भाषा—ही थी। अवशिष्ट भाषाएँ कथ्य और लेख्य उभय रूप में प्रचलित थी। इस

समय ये समस्त भाषाएँ मृत्यु रूप से व्यवहृत नहीं होतीं, इसी कारण ये मृत भाषा (dead languages) कहलाती हैं। उक्त वैदिक आदि सत्र भाषाएँ आर्य भाषा के अन्तर्गत हैं और इन्हीं प्राचीन आर्य भाषाओं में से कई एक क्रमशः रूपान्तरित होकर आधुनिक समस्त आर्य भाषाएँ उत्पन्न हुई हैं।

ये प्राचीन आर्य भाषाएँ कौन युग में किस रूप में परिवर्तित होकर क्रमशः आधुनिक कथ्य भाषाओं में परिणत हुईं, इसका सक्षिप्त विवरण नीचे दिया जाता है।

प्राचीन भारतीय आर्य भाषाओं का परिणति क्रम

सर जॉर्ज ग्रियर्सन ने अपनी निम्नलिखित सर्वे ऑफ इण्डिया (Linguistic survey of India) नामक पुस्तक में भारतवर्षीय समस्त आर्य भाषाओं के परिणाम का जो नम दिखाया है उसके अनुसार वैदिक भाषा उक्त साहित्य भाषाओं में सर्व प्राचीन है। इसका समय अनेक विद्वानों के मत में क्रिस्ताब्द-पूर्व दो हजार वर्ष (2000 B. C.) और प्रो वेद भाषा और लौकिक संस्कृत के मत में क्रिस्ताब्द पूर्व बारह सौ वर्ष (1200 B. C.) है। यह वेद भाषा क्रमशः परिणति होती हुई ब्राह्मण, उपनिषद् और यास्क के निरुक्त की भाषा में और बाद में पाणिनि प्रभृति के व्याकरण द्वारा नियन्त्रित होकर लौकिक संस्कृत में परिणत हुई है। पाणिनि आदि के पद प्रभृति के नियम रूप सस्तरों को प्राप्त करने के कारण यह संस्कृत कहलाई। मुख्य रूप से 'संस्कृत' शब्द का प्रयोग इसी भाषा के अर्थ में किया जाता है। यह संस्कृत भाषा वैदिक भाषा से उत्पन्न होने से उसके साथ घनिष्ठ सम्बन्ध रखने से वेद-भाषा के अर्थ में भी 'संस्कृत' शब्द बाद के समय से प्रयुक्त होने लग गया है। पाणिनि के बाद संस्कृत भाषा का कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। यह परिवर्तन होने में—वेद भाषा को लौकिक संस्कृत के रूप में परिणत होने में—प्रायः डेढ़ हजार वर्ष लगे हैं। पाणिनि का समय गोलडस्टुनर के मत में क्रिस्ताब्द पूर्व सप्तम शताब्दी और बोथल्लिक के मत में क्रिस्ताब्द पूर्व चतुर्थ शताब्दी है।

यहाँ पर इस बात का उल्लेख करना आवश्यक है कि डॉ. हॉर्नेलि और सर ग्रियर्सन के मतव्य के अनुसार आर्य लोगों के दो दल भिन्न भिन्न समय में भारतवर्ष में आये थे। पहले आर्यों के एक दल ने यहाँ आकर मध्यदेश में अपने उपनिवेश की स्थापना की थी। इससे कई सौ वर्षों के बाद आर्यों के दूसरे दल ने भारत में प्रवेश कर प्रथम दल के वेद और वैदिक सम्पदा आर्यों को मध्यदेश की चारों ओर भगा कर उनके स्थान को अपने अधिवार में किया और मध्यदेश को ही अपना वास-स्थान कायम किया। उक्त विद्वानों को यह मतव्य इसलिए करना पड़ा है कि मध्यदेश के चारों पार्श्वों में स्थित पञ्जान, सिन्ध, गुजरात, राजपूताना, महाराष्ट्र, अयोध्या, विहार, बंगाल और उड़ीसा प्रदेशों की आधुनिक आर्य कथ्य भाषाओं में परस्पर जो निरन्तरता देखी जाती है तथा मध्यदेश की आधुनिक हिन्दी भाषा [पाश्चात्य हिन्दी] के साथ उन सत्र प्राचीन की भाषाओं में जो भेद पाया जाता है उस निरन्तरता और भेद का अन्य कोई कारण दिखाना असम्भव है। मध्यदेशवासी इस दूसरे दल के आर्यों का उस समय का जो साहित्य और जो सम्पदा थी उन्हीं के प्रमत्ता नाम हैं वेद और वैदिक सम्पदा।

१. आर्य लोग व आदिम वास स्थान के स्थान में आधुनिक विद्वानों में गहरा मत भेद है। कोई स्वामीयोनिया को, कोई जर्मनी को, कोई वीलेण्ड को, कोई हंगरी को, कोई दक्षिण रशिया को, कोई मध्य एशिया को आर्यों की आदिम निवास भूमि मानते हैं तो कोई-कोई पंजाब और बाल्तीर को ही इनका प्रथम वास-स्थान बताते हैं। किन्तु अधिकांश विद्वान भाषा-तत्त्व के द्वारा दल सिद्धांत पर उन्नत हो गए हैं कि युरोपीय और पूर्वदेशीय आर्यों में प्रथम विच्छेद हुआ। पश्चिम पूर्वदेश के आर्य लोग कैस्पियन सागर और ईरान में एक साथ रहे और एक ही देव देवी की उपासना करते थे। उन्हीं बाद के भी विच्छिन्न होकर एक दल पारस में गया और बाक दल ने अफगानिस्तान के बीच होकर भारतवर्ष में प्रवेश और निवास किया। परन्तु जैन और हिन्दू शास्त्रों में अनुसार भारतवर्ष ही निवास के आर्यों का आदिम निवास-स्थान है। कोई-कोई आधुनिक विद्वान ने पुरातत्त्व की दृष्टि से भी यह दावा कर भारतवर्ष से ही कुछ आर्य लोग का ईरान आदि देशों में गमन और विस्तार-नाम सिद्ध किया है, किन्तु उन शास्त्रीय प्राचीन मत का समर्थन होता है।

उक्त वेद-भाषा प्राचीन होने पर भी वह वैदिक युग में जन-साधारण की कथ्य भाषा न थी, ऋषि-छेगों की साहित्य-भाषा थी। उस समय जन-साधारण में वैदिक भाषा के अनुरूप अनेक प्रादेशिक भाषाएँ (dialects) कथ्य रूप से प्रचलित थीं। इन प्रादेशिक भाषाओं में से एक ने परिमार्जित होकर वैदिक साहित्य में स्थान पाया है। ऊपर वैदिक युग से पूर्व काल में आए हुए प्रथम दल के जिन आर्यों के मध्यदेश के चारों तरफ के प्रदेशों में अपने-अपने भाषाओं का उल्लेख किया गया है उन्होंने वैदिक युग अथवा उसके पूर्व काल में अपने-अपने प्रदेशों की कथ्य भाषाओं में, दूसरे दल के आर्यों की वेद रचना की तरह, किसी साहित्य की रचना नहीं की थी। इससे उन प्रादेशिक आर्य भाषाओं का तात्कालिक साहित्य में कोई निदर्शन न रहने से उनके प्राचीन रूपों का संपूर्ण लोप हो गया है। वैदिक काल की और उसके पूर्व की उन ममस्त कथ्य भाषाओं को सर प्रियर्सन ने प्राथमिक प्राकृत (Primary Prakrits) नाम दिया है। यही प्राकृत भाषा-समूह न प्रथम स्तर (First stage) है। इसका समय ख्रिस्त-पूर्व २००० से ख्रिस्त-पूर्व ६०० तक का निर्दिष्ट किया गया है। प्रथम स्तर की ये समस्त प्राकृत भाषाएँ स्वर और व्यञ्जन आदि के उच्चारण में तथा विभक्तियों के प्रयोग में वैदिक भाषा के अनुरूप थीं। इससे ये भाषाएँ विभक्ति-बहुल (synthetic) कही जाती हैं।

वैदिक युग में जो प्रादेशिक प्राकृत भाषाएँ कथ्य रूप से प्रचलित थीं, उनमें परवर्ति-काल में अनेक परिवर्तन हुए जिनमें ऋ, ॠ आदि स्वरों का, शब्दों के अन्तिम व्यञ्जनों का, संयुक्त व्यञ्जनों का तथा विभक्ति और वचन-समूह का लोप या रूपान्तर मुख्य हैं। इन परिवर्तनों से ये कथ्य भाषाएँ प्रचुर परिमाण में रूपान्तरित हुईं। इस तरह द्वितीय स्तर (second stage) की प्राकृत भाषाओं की उत्पत्ति हुई। द्वितीय स्तर की ये भाषाएँ जैन और बौद्ध धर्म के प्रचार के समय से अर्थात् ख्रिस्त-पूर्व पाँच शताब्दी से लेकर ख्रिस्तीय नवम या दशम शताब्दी पर्यन्त प्रचलित रहीं। मगध, महावीर और बुद्धदेव के समय ये समस्त प्रादेशिक प्राकृत भाषाएँ, अपने द्वितीय स्तर के आकार में, भिन्न भिन्न प्रदेशों में कथ्य भाषा के तौर पर व्यवहृत होती थीं। उन्होंने अपने सिद्धान्तों का उपदेश इन्हीं कथ्य प्राकृत भाषाओं में से एक में दिया था। इनका ही नहीं, बल्कि बुद्धदेव ने अपना उपदेश सस्कृत भाषा में न लिखकर कथ्य प्राकृत भाषा में लिखने के लिए अपने शिष्यों को आदेश दिया था। इस तरह प्राकृत भाषाओं का क्रमशः साहित्य की भाषाओं में परिवर्तन होने का सूत्रपात हुआ, जिसके फलस्वरूप पश्चिम मगध और सूरसेन देश के मध्यवर्ती प्रदेश में प्रचलित कथ्य भाषा से जैनों के धर्म-पुस्तकों की अर्थ-भाषा की और पूर्व मगध में प्रचलित लोक भाषा से बौद्ध धर्म-ग्रन्थों की पाली भाषा उत्पन्न हुई। पाली भाषा के उत्पत्ति-स्थान के सम्बन्ध में पाश्चात्य विद्वानों का जो मतभेद है उसका विचार हम आगे जा कर करेंगे। ख्रिस्ताब्द से २५० वर्ष पहले सम्राट् अशोक ने बुद्धदेव के उपदेशों की भिन्न-भिन्न प्रदेशों में बहो-बहो की विभिन्न प्रादेशिक प्राकृत भाषाओं में खुदनाप। इन अशोक शिलालेखों में द्वितीय स्तर की प्राकृत भाषाओं के अतिविशेष सर्व-प्राचीन निदर्शन संरक्षित हैं। द्वितीय स्तर के मध्य भाग में—प्रायः ख्रिस्तीय पंचम शताब्दी के पूर्व में भिन्न भिन्न प्रदेशों की अपभ्रंश भाषाओं की उत्पत्ति हुई। इस स्तर की भाषाओं में चतुर्थी विभक्ति का, सप्त विभक्तियों के द्विवचनों का और आख्यात की अभिज्ञा विभक्तियों का लोप होने पर भी विभक्तियों का प्रयोग अधिक मात्रा में विद्यमान था। इससे इस स्तर की भाषाएँ भी विभक्ति-बहुल कही जाती हैं।

सर प्रियर्सन ने यह सिद्धान्त किया है कि आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं की उत्पत्ति द्वितीय स्तर की प्राकृत भाषाओं से, पासपर उसके शेष भाग में प्रचलित विविध अपभ्रंश भाषाओं से हुई है और आधुनिक भाषाओं को 'तृतीय प्राकृत भाषाओं का द्वितीय स्तर' या आधुनिक भारतीय भाषाएँ या आधुनिक भारतीय भाषाएँ की उत्पत्ति (ख्रिस्ताब्द ६००) तृतीय स्तर (Tertiary Prakrits) कह कर निर्देश किया है। इन भाषाओं की उत्पत्ति का समय ख्रिस्तीय दशम शताब्दी है। इनका साधारण लक्षण यह है कि इनमें अधिकांश विभक्तियों का लोप हुआ है, एवं भाषाओं की प्रकृति विभक्ति-बहुल न होकर विभक्तियों के बोधक रचनात्मक शब्दों का व्यवहार हुआ है। इससे ये विश्लेषणीय भाषाएँ (Analytical Languages) कही जाती हैं।

जिस प्रादेशिक अपभ्रंश से जिस आधुनिक भारतीय आर्य भाषा की उत्पत्ति हुई है उसका निरण आगे 'अपभ्रंश' शीर्षक में दिया जायगा।

द्वितीय स्तर की प्राकृत भाषाओं का इतिहास

प्रस्तुत कोष में द्वितीय स्तर की साहित्यिक प्राकृत भाषाओं के शब्दों को ही स्थान दिया गया है। इससे इन भाषाओं की उत्पत्ति और परिणति के सम्बन्ध में वहाँ पर कुछ विस्तार से विवेचन करना आवश्यक है।

साधारणतः लोगों की यही धारणा है कि संस्कृत भाषा से ही द्वितीय स्तर की समस्त प्राकृत भाषाएँ और आधुनिक भारतीय भाषाएँ उत्पन्न हुई हैं। कई प्राकृत-वैयकरणियों ने भी अपने प्राकृत-व्याकरणों में इसी मत का समर्थन किया है। परन्तु यह मत वहाँ तक सत्य है, इसका विचार करने के पहले इन भाषाओं के भेदों को जानने की जरूरत है।

प्राकृत का संस्कृत-भाषा से प्राकृत वैयकरणों ने प्राकृत भाषाओं के शब्द, संस्कृत शब्दों के सादृश्य और पार्थक्य के अनुसार विभाग इन तीन भागों में विभक्त किए हैं—(१) तत्सम, (२) तद्भव और (३) देश्य या देशी।

(१) जो शब्द संस्कृत और प्राकृत में बिल्कुल एक रूप हैं उनको 'तत्सम' या 'संस्कृतसम' कहते हैं, जैसे—कञ्जलि, भागम, हृष्टा, ईडा, उत्तम, उडा, एरंड, भोज्जार, किङ्कर, खड्ग, गण, वण्ड, जल, मङ्गार, टङ्गार, किम्भ, डक्का, तिमिर, दल, पवन, मोर, पमिस, फल, बहु, भार, मरण, रस, लव, वारि, सुन्दर, हरि, चण्डालि, हरन्वि प्रभृति।

(२) जो शब्द संस्कृत से वर्ण-लोप, वर्णान्तर अथवा वर्ण-परिवर्तन के द्वारा उत्पन्न हुए हैं वे 'तद्भव' अथवा 'संस्कृतभव' कहलाते हैं, जैसे—भग्न = भग्न, भार्य = भारिण, इष्ट = इष्ट, ईर्ष्य = ईर्षा, वड्ढय = उरण, कुप्य = कण्ठ, खड्ग = कण्ठ, गज = गज, धर्म = धर्म, चक्र = चक्र, कोम = छोह, यज्ञ = जज्ञ, ध्याम = ध्याय, रंश = रंश, नाप = रणह, मिदरा = तिष्ठत, इष्ट = इष्ट, धामिक = धम्मिन्न, पञ्चात् = पञ्चा, स्पर्श = रंश, बदर = बोर, भार्य = भारिमा, मेघ = मेह, भरण्य = रण्य, लोरा = लोरा, रोप = रोप, ह्वय = ह्विन्न, भवति = ह्वह, पिबति = पिन्न, पुच्छति = पुच्छ, भकारीत = भकारी, भविष्यति = होहिह इत्यादि।

(३) जिन शब्दों का संस्कृत के साथ कुछ भी सादृश्य नहीं है—कोई भी सम्बन्ध नहीं है, उनको 'देश्य' या 'देशी' बोला जाता है; यथा—प्रगय (देव), आकासिग (पर्याप्त), इराव (हस्ति), ईस (कीलक), उषाचित (पगल), ऊत्तम (उपमान), एजलि (घनाब्ज, वृषभ), बोहल (धम्मिल्ल), कवेट्ट (कुमुद), कुट्टिम (मुरत), गयसाउल (विरक्त), वड (स्तूप), वड्ढर (पातिका), धंडुई (कपिकच्छु), गज (गुह्य), कण्ठ्य (शीम), डवा (जङ्घा), जल (शास्त्र), डडर (शिशाव, ईर्ष्या), एणितिरिडि (बुद्धि), लोमरी (लता), धम्मिन्न (विस्मृत), दाणि (शूक), धमण (गृह), विम्वुत (निवित), वणिन्ना (करोटिका), कुंटा (देश-बन्ध), बिट्ट (पुत्र), उंङ (सूकर), मड्डा (बलात्कार), रति (माता), लंब (कुक्कुट), विण्डुड (सपुत्र), समराह (शीम), इत (प्रमिषुल), लम (परम), कुण्ड (विमज्जति), धिवह (दृशति), देन्खह, निम्नड (परमति), कुक्कड (अरपति), कोण्डर (अवति), अहिण्डुमड (गृह्णति) प्रभृति।

उपर्युक्त विभाग प्राकृत के साथ संस्कृत के सादृश्य और पार्थक्य के ऊपर निर्भर करता है। इसके सिवा संस्कृत और प्राकृत के प्राचीन ग्रन्थकारों ने प्राकृत भाषाओं का और एक विभाग किया है जो प्राकृत भाषाओं के उत्पत्ति स्थानों से संबन्ध रखता है। यह भौगोलिक विभाग (Geographical Classification) कहा जा सकता है।

प्राकृत भाषाओं का प्रणीत कहे जाते नाट्य शास्त्र में, 'सात भाषाओं को जो मगधी, अवन्तिजा, प्राच्या, मूरसेनी, भौगोलिक विभाग अथमगधी, वाहलीय और वाक्षिणात्या ये नाम हैं, चण्ड के प्राकृत-व्याकरण में जो 'पैशाचिकी और मागधिका ये नाम मिलते हैं, दण्डी ने काव्यादर्श में जो 'महापट्टाभय, शौरसेनी, गौडी और लादी ये नाम दिए हैं, आचार्य हेमचन्द्र आदि ने मगधी, शौरसेनी, पैशाची और चूलिनपैशाचिक कह कर जिन नामों का निर्देश

१. "मागध्यावन्तिजा प्राच्या मूरसेन्यथमगधी।

वाहीका वाक्षिणात्या ये सात भाषाः प्रकीर्तिताः॥" (नाट्यशास्त्र १७, ४८)।

२. 'पैशाचिकया रण्योलैनी' (प्राकृतलक्षण ३, ३८)।

३. "मागधिकाया रण्योलैनी" (प्राकृतलक्षण ३, ३९)।

४. 'महापट्टाभया भाषा प्रकट्ट प्राकृतं विदुः।

मागधः सूचिरलना केतुबन्धादि यन्मयम्॥

शौरसेनी च गौडी च साटी वाग्या च लादी।

माति प्रकृतमिषेवं ध्ववहासु सतिमिषः॥" (काव्यादर्श १, ३४ ३५)।

क्रिया है और मार्कण्डेय ने अपने प्राकृतसर्वर में प्राकृतचन्द्रिका के कतिपय श्लोकों को उद्धृत कर महाराष्ट्री, आग्नी, शौरसेनी, अर्धमागधी, वाहलीकी, मागधी, प्राच्या और दाक्षिणात्या इन आठ भाषाओं के, छह विभाषाओं में द्राविड और अद्रुज इन दो विभाषाओं के, ग्याह पिशाच भाषाओं में कान्चीदेसीय, पाण्ड्य, पाञ्चाल, गौड, मागध, ब्राचड, दाक्षिणात्या, शौरसेन, कैरव और द्राविड इन दस पिशाच भाषाओं के और सताईस अपभ्रंशों में ब्राचड, लट, वेदर्भ, वावर्, आवन्त्य पाञ्चाल, टाक, माल्य, कैरव, गौड, उडू, हैच, पाण्ड्य, कौन्तल, सिंहल कालिङ्ग, प्राच्य, कर्णाट, काञ्च, द्राविड, गोजर, आभीर और मध्यदेशीय इन तेईस अपभ्रंशों के जिन नामों का उल्लेख किया है वे उस भिन्न भिन्न देश से ही सम्बन्ध रखते हैं जहाँ जहाँ यह वह भाषा उत्पन्न हुई है। पञ्चभाषाचन्द्रिका के कर्ता ने 'शूरसेन देश में उत्पन्न भाषा शौरसेनी कही जाती है, मगध देश में उत्पन्न भाषा को मागधी कहते हैं और पिशाच देशों की भाषा पिशाची और चूलिकापिशाची है' यह लिखते हुए यहाँ बात अधिक स्पष्ट रूप में कही है।

पूरे में प्राकृत भाषाओं के शब्दों के जो तीन प्रकार दिये गए हैं उनमें प्रथम प्रकार के तत्सम शब्द संस्कृत से ही सप्त देशों के प्राकृतों में लिखे गए हैं, दूसरे प्रकार के तद्भव शब्द संस्कृत से उत्पन्न होने पर भी प्राकृत व्याकरणों के मत से फल क्रम से भिन्न भिन्न देश में भिन्न भिन्न रूप में प्राप्त हुए हैं और तीसरे प्रकार के देश्य शब्द वैदिक अथवा लौकिक संस्कृत से उत्पन्न नहीं हुए हैं, किन्तु भिन्न भिन्न देश में प्रचलित भाषाओं से गृहीत हुए हैं। प्राकृत पैयाकरणों का यही मत है।

देश्य शब्द

पहले प्राकृत भाषाओं का जो भौगोलिक विभाग बनाया गया है, वे तृतीय प्रकार के देशीशब्द उसी भौगोलिक विभाग से उत्पन्न हुए हैं। वैदिक और लौकिक संस्कृत भाषा पञ्चा और मध्यदेश में प्रचलित वैदिक मूल काल की प्राकृत भाषा से उत्पन्न हुई है। पञ्जा और मध्यदेश के बाहर के अन्य प्रदेशों में उस समय आर्य लोगों की जो प्रादेशिक प्राकृत भाषाएँ प्रचलित थीं उन्हीं से ये देशीशब्द गृहीत हुए हैं। यही कारण है कि वैदिक और संस्कृत साहित्य में देशीशब्दों के अनुरूप कोई शब्द (प्रतिशब्द) नहीं पाया जाता है।

प्राचीन काल में भिन्न भिन्न प्रादेशिक प्राकृत भाषाएँ ह्यान थीं, इस बात का प्रमाण व्यास के महाभारत, भरत के नाट्यशास्त्र और वात्स्यायन के कामसूत्र आदि प्राचीन संस्कृत ग्रन्थों में और जैनों के ज्ञातावर्मेकरा, विष्णुश्रुत, औपपाति कसूत्र तथा राजप्रदनीय आदि प्राचीन प्राकृत ग्रन्थों में भी मिलता है। इन ग्रन्थों में 'नानाभाषा', 'देशभाषा' या 'देशीभाषा' शब्द का प्रयोग प्रादेशिक प्राकृत के अर्थ में ही किया गया है। चूँकि ने अपने प्राकृत व्याकरण में जहाँ देशीप्रसिद्ध प्राकृत

१ 'ये श्लोक पिशाची और अपभ्रंश' के प्रकरण में दिए गए हैं।

२ 'शूरसेनोद्भवा भाषा शौरसेनीति नीमते।

मगधोल्लभभाषा ता मागधी सप्रचलते।

पिशाचदेशनियत पिशाचीद्विर्भवेत् ॥" (पञ्चभाषाचक्रिका, पृष्ठ २)।

३ 'नानाचर्ममिराच्छन्ना नानाभाषाण्य भारत। कुशना देशभाषामु जलतोऽप्योपधीधरा ॥' (महाभारत शयनर्क ४९ १०३)।

'अत ऊर्ध्वं प्रवक्ष्यामि देशभाषाविकल्पनम् ॥'

'अथवा चन्द्रतर्काचार्य देशभाषा प्रयोक्तुमि ॥' (नाट्यशास्त्र १७ २४, ४६)।

"नात्यन्त सङ्कतनैव नात्यन्त देशभाषायां। कथा गोष्ठीषु वचनश्लोके बहुमतो भवेत्" (नाममूल १, ४ ५०)।

'तते ए से मेहे कुमारे अट्टारमविष्णुगारदेशभाषाविसारए होत्वा', तथ ए चपाए नयरोए देवदत्ता नाम गणिया परिवसद भट्टा अट्टारसदेसीभाषाविसारया" (ज्ञानचर्मभाषासूत्र, पत्र ३८ ६२)।

'तथ ए वाणिमगमे नामगम्या श्यामं गणिया होत्वा . अट्टारसदेसीभाषाविसारया' (विष्णुश्रुत, पत्र २१-२२)।

'तए ए दम्पइएणे दारए . अट्टारसदेसिभाषाविसारए' (औपपातिक मूल पत्र १०६)।

'तए ए से दम्पइएणे दारए . अट्टारसविहदेसिपगारभाषाविसारए' (राजप्रदनीयसूत्र पत्र १४८)।

४ 'निर्दं प्रसिद्धं प्राकृतं त्रेण त्रिप्रकारं भवति—संस्कृततोनं, संस्कृतसमं .. देशीप्रसिद्धं तत्पदे ह्यति = स्तुतिर्भ' (प्राकृतन्याय पृष्ठ १-२)।

का उल्लेख किया है वहाँ भी देशी शब्द का अर्थ देशीभाषा ही है। ये सब देशी या प्रादेशिक भाषाएँ भिन्न-भिन्न प्रदेशों के निवासी आर्य लोगों की ही कथ्य भाषाएँ थीं। इन भाषाओं का पंजाब और मध्यदेश की कथ्य भाषा के साथ अनेक अंशों में जैसे सादृश्य था वैसे किसी किसी अंश में भेद भी था। जिस जिस अंश में इन भाषाओं का पंजाब और मध्यदेश की प्राकृत भाषा के साथ भेद था उसमें से जिन भिन्न-भिन्न नामों ने और धातुओं ने प्राकृतसाहित्य में स्थान पाया है वे ही हैं प्राकृत के देशी या देश्य शब्द।

प्राकृत वैयाकरणों ने इन समस्त देश्य शब्दों में अनेक नाम और धातुओं को संस्कृत नामों के और धातुओं के स्थान में आदेश-द्वारा सिद्ध करके तद्धव-विभाग में अन्तर्गत किए हैं। यही कारण है कि आचार्य हेमचन्द्र ने अपनी देशीनाममाला में केवल देशी नामों का ही संग्रह किया है और देशी धातुओं का अपने प्राकृत-व्याकरण में संस्कृत धातुओं के आदेश-रूप में उल्लेख किया है; यद्यपि आचार्य हेमचन्द्र के पूर्ववर्ती कई वैयाकरणों ने इनकी गणना देशी धातुओं में ही की है। ये सब नाम और धातु संस्कृत के नाम और धातुओं के आदेश-रूप में निष्पन्न करने पर भी तद्धव नहीं कहे जा सकते, क्योंकि संस्कृत के साथ इनका कुछ भी सादृश्य नहीं है।

कोई कोई पाश्चात्य भाषातत्त्वज्ञ का यह मत है कि उक्त देशी शब्द और धातु भिन्न-भिन्न देशों की द्राविड़, मुण्डा आदि अनार्य भाषाओं से लिए गए हैं। यहाँ पर यह कहा जा सकता है कि यदि आधुनिक अनार्य भाषाओं में इन देशी-शब्दों और देशी-धातुओं का प्रयोग उपलब्ध हो तो यह अनुमान करना असंगत नहीं है। किन्तु जयनरक यद् प्रमाणित न हो कि 'ये देशी शब्द और धातु वर्तमान अनार्य भाषाओं में प्रचलित हैं', तबनरक 'ये देशी शब्द और धातु-प्रादेशिक आर्य भाषाओं से ही गृहीत हुए हैं' यह कहना ही अधिक संगत प्रतीत होता है। इन अनार्य भाषाओं में दो-एक देश्य शब्द और धातु प्रचलित होने पर भी 'ये अनार्य भाषाओं से ही प्राकृत भाषाओं में लिए गए हैं' यह अनुमान न सर 'प्राकृत भाषाओं से ही ये देश्य शब्द और धातु अनार्य भाषाओं में गए हैं' यह अनुमान किया जा सकता है। हाँ, जहाँ ऐसा अनुमान करना असंभव हो वहाँ हम यह शर्थाधार करने के लिए बाध्य होंगे कि 'ये देश्य शब्द और धातु अनार्य भाषाओं से ही प्राकृत में लिए गए हैं', क्योंकि आर्य और अनार्य ये उभय जातियों जब एक स्थान में मिश्रित हो गई हैं तब कोई कोई अनार्य शब्द और धातु का आर्य भाषाओं में प्रवेश करना असंभव नहीं है।

बॉ. काल्डवेल (Caldwell) प्रभृति के मत में वैदिक और लौकिक संस्कृत में भी अनेक शब्द द्राविड़ीय भाषाओं से गृहीत हुए हैं। यह बात भी सदृग्ध ही है, क्योंकि द्राविड़ीय भाषा के जिस साहित्य में ये सब शब्द पाये जाते हैं वह वैदिक संस्कृत के साहित्य से प्राचीन नहीं है। इससे 'वैदिक साहित्य में ये सब शब्द द्राविड़ीय भाषा से गृहीत हुए हैं' इस अनुमान की अपेक्षा 'आर्य लोगों की भाषा से ही अनार्यों की भाषा में ये सब शब्द लिए गए हैं' यह अनुमान ही विशेष ठीक मालूम पड़ता है।

जिन प्रादेशिक देशी-भाषाओं से ये सब देशी शब्द प्राकृत-साहित्य में गृहीत हुए हैं वे पूर्वाक्त प्रथम स्तर की प्राकृत भाषाओं के अन्तर्गत और उनकी समसामयिक हैं। पितर-पूर्व षष्ठ शताब्दी के पहले ये सब देशीभाषाएँ प्रचलित थीं, इससे ये देश्य शब्द अर्थाधीन नहीं, किन्तु उतने ही प्राचीन हैं जितने कि वैदिक शब्द।

द्वितीय स्तर की प्राकृत भाषाओं की उत्पत्ति—वैदिक या लौकिक संस्कृत से नहीं, किन्तु

प्रथम स्तर की प्राकृतों से

प्राकृत के वैयाकरण गण प्राकृत शब्द की व्युत्पत्ति में प्रकृति शब्द का अर्थ संस्कृत करते हुए प्राकृत भाषाओं की उत्पत्ति लौकिक संस्कृत से मानते हैं। संस्कृत के कई अलंकार शास्त्रों के टीकाकारों ने भी तद्धव और तत्सम शब्दों में स्थित

१. देखो हेमचन्द्र-प्राकृत-व्याकरण के द्वितीय पाद के १२७, १२८, १३५, १३६, १३८, १४१, १७४ वगैरह सूत्र और चतुर्थ पाद के २, ३, ४, ५, १०, ११, १२ प्रभृति सूत्र।

२. 'एते चान्द्रीण्यु पठित्वा अपि मन्त्राभिर्वाचवादेशोक्तत्वा' (हे० प्रा० ४, २), अथर्वि ग्रन्थ विद्वानो ने धञ्जर, पञ्जर, उप्ताल प्रभृति धातुओं का पाठ देशी में किया है, तो भी हमने संस्कृत धातु के आदेश-रूप से ही ये यही बताए हैं।

‘तन्’ शब्द का सम्बन्ध संस्कृत से लगाकर इस मत का अनुसरण किया है^१। कतिपय प्राकृत-व्याकरणों में प्राकृत शब्द की व्युत्पत्ति इस तरह की गई है :—

‘प्रवृत्तिः संस्कृतं तत्र भवं तत् प्रागर्तं वा प्राकृतम्’ (हेमचन्द्र प्रा० व्या०)।

‘प्रवृत्तिः संस्कृतं तत्र भवं प्राकृतमुच्यते’ (प्राकृतगर्बस्य)।

‘प्रवृत्तिः संस्कृतं तत्र भवत्वात् प्राकृतं स्मृतम्’ (प्राकृतचन्द्रिका)।

‘प्रवृत्तेः संस्कृतायास्तु विकृतिः प्राकृती मता’ (पद्मभाषाचन्द्रिका)।

‘प्राकृतस्य तु सर्वेष्वेव संस्कृतं योनिः’ (प्राकृतमञ्जीवनी)।

इन व्युत्पत्तियों का तात्पर्य यह है कि प्राकृत शब्द ‘प्रकृति’ शब्द से बना है, ‘प्रकृति’ का अर्थ है संस्कृत भाषा, संस्कृत भाषा से जो उत्पन्न हुई है वह है प्राकृत भाषा।

प्राकृत वैयानरणों की प्राकृत शब्द की यह व्याख्या अप्रामाणिक और अव्यापक ही नहीं है, भाषा तत्त्व से असंगत भी है। अप्रामाणिक इसलिए कही जा सकती है कि प्रकृति शब्द का मूल अर्थ संस्कृत भाषा कभी नहीं होता—संस्कृत के किसी कोष में प्राकृत शब्द का यह अर्थ उपलब्ध नहीं है^२ और गौण या लाक्षणिक अर्थ तब तक नहीं लिया जाता जबतक मुख्य अर्थ में बाध न हो। यहाँ प्रकृति शब्द के मुख्य अर्थ स्वभावात् अथवा जनसाधारण लेने में किसी तरह का बाध भी नहीं है। इससे उक्त व्युत्पत्ति के स्थान में ‘प्रवृत्त्या स्वभावेन विद्धं प्राकृतम्’ अथवा ‘प्रवृत्तौ तत्साधारणजनानामिव प्राकृतम्’ यही व्युत्पत्ति संगत और प्रामाणिक हो सकती है। अव्यापक कहने का कारण यह है कि प्राकृत के पूर्वोक्त तीन प्रकारों में तत्सम और तद्भव शब्दों की ही प्रकृति उहाँनें संस्कृत मानी है, तीसरे प्रकार के देश्य शब्दों का नहीं, अथवा देश्य को भी प्राकृत कहा है। इससे देश्य प्राकृत में वह व्युत्पत्ति लागू नहीं होता। प्राकृत की संस्कृत से उत्पत्ति भाषा-तत्त्व के सिद्धान्त से भी संगति नहीं रखती, क्योंकि वैदिक संस्कृत^३ और लौकिक संस्कृत ये दोनों ही साहित्य की माजित भाषाएँ हैं। इन दोनों भाषाओं का व्यवहार शिक्षा की अपेक्षा रखता है। अशिक्षित, अज्ञ और बालक लोग किसी काल में साहित्य की भाषा का न तो रूप व्यवहार कर सकते हैं और न समझ ही पाते हैं। इसलिए समस्त देशों में सर्वदा ही अशिक्षित लोगों के व्यवहार के लिए एक कथ्य भाषा चालू रहती है जो साहित्य की भाषा से स्वतन्त्र—अलग होनी है। शिक्षित लोगों को भी अशिक्षित लोगों के साथ बातचीत के प्रसंग में इस कथ्य भाषा का ही व्यवहार करना पड़ता है। वैदिक समय में भी ऐसी कथ्य भाषा प्रचलित थी। और जिस समय लौकिक संस्कृत भाषा प्रचलित हुई उस समय भी साधारण लोगों की स्वतन्त्र कथ्य भाषा विद्यमान थी, यह नाटक आदि में संस्कृत भाषा के साथ प्राकृत-भाषी पात्रों के उल्लेख से प्रमाणित होता है।

पाणिनि ने संस्कृत भाषा को जो लौकिक भाषा कही है और पतञ्जलि ने इससे जो शिष्ट-भाषा का नाम दिया है, उसका मतलब यह नहीं है कि उस समय प्राकृत भाषा थी ही नहीं, परन्तु उसका अर्थ यह है कि उस समय के शिक्षित लोगों के आपस के वार्तालाप में, वर्तमान काल के पण्डित लोगों में संस्कृत की तरह और भिन्नदेशीय लोगों के साथ के व्यवहार Lingua franca की भाँति संस्कृत भाषा व्यवहृत होती थी। किन्तु बालक, स्त्रियाँ और अशिक्षित लोग अपनी मातृ-भाषा में बातचीत करते थे जो संस्कृत-भिन्न साधारण कथ्य भाषा थी। साधारण कथ्य भाषा किसी देश में किसी काल में साहित्य की भाषा से गृहीत नहीं होती, बल्कि साहित्य-भाषा ही जन-साधारण की कथ्य भाषा से उत्पन्न होती है। इसलिए ‘संस्कृत से प्राकृत भाषा की उत्पत्ति हुई है’ इसकी अपेक्षा ‘क्या तो वैदिक संस्कृत और क्या लौकिक संस्कृत दोनों ही उस समय की प्राकृत भाषाओं से उत्पन्न हुई हैं’ यही सिद्धान्त विशेष युक्ति संगत है। आजकल के भाषा-तत्त्वज्ञों में इसी सिद्धान्त का अधिक आदर प्राप्त जाता है। यह सिद्धान्त पश्चात्त्य विद्वानों का कोई नूतन आविष्कार नहीं है, भारतवर्ष के

१. ‘प्रवृत्ते संस्कृतादागतं प्राकृतम्’ (वामनमूलवाक्यटीका २, २), ‘संस्कृतव्यायाः प्रवृत्तेस्तत्त्वात् प्राकृतम्’ (काल्याणस्य की प्रेमचन्द्र-संवागीश्वर कृत टीका १, ३३)।

२. ‘प्रवृत्तियौनिर्यात्ययोः’। पौनरात्यार्थिनिर्दिष्टेषु गुणसाम्यमभावयोः। प्रव्यात् पूर्विकाया च’ (अनेकार्णवसूत्र ८७६-७)।

३. ‘स्वाम्यमात्यः सुहृदोऽपि राष्ट्रमुर्वलानि च।

राज्याङ्गानि प्रकृतयः। पीशाणां धेनुधेनिश्च ॥ (अभिधानचिन्तामणि ३, ३७८)।

‘यत् प्रात्यः—समास्यायाव पीथाय सदिभः प्रवृत्तयः स्मृताः’ (अ० नि० ३, ३७८ की टीका)।

४. कोई कोई प्राधुनिक विद्वान् प्राकृत भाषा की उत्पत्ति वैदिक संस्कृत से मानते हैं, इसी ‘प्राचीन-प्राकृत’ का प्रवेशक पृष्ठ ३४-३६।

ही प्राचीन भाषातत्त्वज्ञों में भी यह मत प्रचलित था यह निम्नोद्धृत कतिपय प्राचीन ग्रन्थों के अन्तर्गतों से स्पष्ट प्रतीत होता है। सूत्रतुत वाचस्पत्युद्धार के एक श्लोक की व्याख्या में प्रिस्त की ग्यारहवीं शताब्दी के जैन-विद्वान् भमिसाधु ने लिखा है कि—

“आदिनेति । सनसजगज्जुता ग्यावरणादिमिरतादित्संस्कारः सट्टो वचनव्यापारः प्रकृतिः, ततः सर्वं सैव वा प्रादुभ्य । ‘आदि-तनसते तिष्ठं देवाण्य अदमागन्ता माणी’ इत्यादिबचनान् वा प्राक् पूर्वं कृतं प्रमृष्टं बाल-महिलादि-मुषयो यत्रवापानिगमनपूर्वं वचनमुच्यते । मेर्यानुक्तलज्जमिवैकस्वरं तदेव च देशविशेषात् संस्काररूपेण समासादितविशेषं सत् संस्काराद्यन्तरविमोक्षान्नाति । अत एव शाश्वता प्राकृतमादी निदिष्टं तदनु मस्तदादीनि । पाणिन्यादिव्यावरणोदितशब्दनसंज्ञेन संस्वरणात् सट्टमुच्यते ।”

इस व्याख्या का तात्पर्य यह है कि—“प्रकृति शब्द का अर्थ है लोगों का व्यावरण आदि के संस्कारों से रहित स्वभाविक वचन-व्यापार। उससे उत्पन्न अर्थवाही है प्राकृत। अथवा ‘आदि-कृत’ पर से प्राकृत शब्द बना है, ‘आदि-कृत’ का अर्थ है ‘पहले किया गया’। आदि-कृत-वचनों में ग्यारह अंग अन्य वस्तुएं किए गए हैं और इन्हें ग्यारह अक्षर-अर्थों की भाषा भाषा वचन में—सूत्र में अर्थमागणी कहो गई है जो बालक, महिला आदि को सुबोध—सहज मध्य है और जो वचन भाषाओं का मूल है। यह अर्थमागणी भाषा ही प्राकृत है। यही प्राकृत, मेघ-मुक्त जल की तरह, पहले एक रूपकावा होने पर भी, देश-भेद से और संस्कार करने से मित्रता की प्राप्ति करता हुआ संस्कृत आदि अवातर विनोदों में परिणत हुआ है अर्थात् अर्थमागणी प्राकृत से संस्कृत और अन्यत्र प्राकृत भाषाओं की उत्पत्ति हुई है। इसी कारण से मूल अर्थकार (वदन्) ने प्राकृत वा पहले और संस्कृत आदि बाद में निर्देश किया है। पाणिन्यादि व्याकरणों में बताए गए नियमों के अनुसार संस्कार करने के कारण सट्टा कहलाते हैं।”

“अकृत्रिमत्वाद्युपदेशेन ननं जिवेन्द्र सासादिन पामि मायिदै.” (आदिशब्दप्रतिष्ठा १, १८)।

“अकृत्रिमत्वाद्युपधा धीनो वाचमुपारम्भे ।” (हेमचन्द्रभाष्यानुशासन, पृष्ठ १)।

उक्त पद्यों में अमराः महाकवि सिद्धसेन दिवाकर और आचार्य हेमचन्द्र जैसे समर्थ विद्वानों का जितदेव की वाणी को ‘अकृत्रिम’ और संस्कृत भाषा को ‘कृत्रिम’ कहने का भी रहस्य यही है कि प्राकृत जन साधारण की मातृभाषा होने के कारण अकृत्रिम—स्वाभाविक है और संस्कृत भाषा व्याकरण के संस्कार-रूप बनावटीपन से पूर्ण होने के हेतु कृत्रिम है।

१. “प्राकृतसंस्कृतमागपतिशाकभाषाश्च शौरसेनी च ।

पद्योऽन भूरिमेदो देशविशेषात्पञ्चशः ॥” (कात्यायनकार २, १२)।

२. आदिशब्दः अक्षर-पद्य, जिसका नाम दृष्टिगत है और जिसमें चौदह पूर्व (प्रकरण) थे, संस्कृत भाषा में था। यह बहुत बाल-छुट्टि हो। यथा है। पद्यवि इमके विषयो का समित्त वहीन समवायाङ्गुल्य में है।

“अनुशब्दादि पूर्वाणि सट्टाणि दुराभ्यव ॥११॥

प्रकाशितमगम्यानि तच्छुद्धिग्यानि काव्यत् । अक्षरैकादशानुपस्थित सुधर्मत्वामिमायि ॥११॥

वाचोमृदुपूर्ववर्तिनानुवह्याय सः । प्राकृता तामिहाकार्यात्” (ब्रह्मवैवर्तिन, पृ० ६८-६९)।

३. “दुष्टान् रिद्विवायं कासिमटकातिगंधिदं तं । श्रीवातवाप्यएवं गम्यमुद्रयं दिखतेहि ॥”

(आचार्यदिनकर में उद्धृत प्राचीन वाचा)।

“वाचोमृदुपूर्ववर्तिनानुवह्याय सः । अक्षरैकादशानुपस्थित सुधर्मत्वामिमायि ॥११॥

(दशैकादश टोका पत्र १-० में हरिमत्सुति द्वारा और कात्यायनशासन की टीका पृ० १ में आचार्य हेमचन्द्र द्वारा उद्धृत-

किया हुआ प्राचीन श्लोक)।

४. “अकृत्रिमता—असंस्कृतता, अत एव स्वाधुनि मन्विव्यामपि गेयवाणि पद्यानि वस्यार्थित विप्रह.” (कात्यायनशासनटीका)। आचार्य हेमचन्द्र की ‘अकृत्रिम’ शब्द की इस स्पष्ट व्याख्या से प्रतीत होता है कि उनका अर्थ प्राकृत-व्याकरण में प्राकृत की प्रकृति संस्कृत कहना सिद्धान्त-निरूपण के लक्ष्य से नहीं, परन्तु प्राप्य प्राकृत-व्याकरण की रचना शैली के उपलक्ष में है, क्योंकि सभी उपलब्ध प्राकृत-व्याकरणों की तरह हेमचन्द्र-प्राकृत-व्याकरण में भी संस्कृत पर से ही प्राकृत-शिक्षा की पद्धति अवधारण की गई है और रचना के समय उनका यही सिद्धान्त रहा हो जो बाद में बल्लभ गया हो और इस परिचित सिद्धान्त का वाचानुशासन में प्रतिपादन किया हो। वाचानुशासन की रचना व्याकरण के बाद उन्होंने की है यह कात्यायनशासन में प्रतिपादन काव्यो वाचो विवेचितः” (श्रु २) इस उक्ति से ही सिद्ध है।

केवल जैन विद्वानों में ही यह मत प्रचलित न था, सिरत की आठवीं शताब्दी के जैनैतर महाकवि वाक्पतिराज ने भी अपने 'गडडरहो' नामक महाकाव्य में इसी मत को दून स्पष्ट शब्दों में व्यक्त किया है —

“सयलामो इम वाया विसति एतो य श्येति वायाओ ।

एति समुद् चिय लेंति सायराओ चिय जलाई ॥६३॥”

अर्थात् इसी प्राकृत भाषा में सब भाषाएँ प्रवेश करती हैं और इस प्राकृत भाषा से ही सब भाषाएँ निर्गत हुई हैं जहाँ (भा.क.) समुद्र में हो प्रवेश करता है और समुद्र से ही (बाष्प रूप से) बाहर होता है। वाक्पति के इस पत्र का मर्म यही है कि प्राकृत भाषा को उत्पत्ति अन्य किसी भाषा से नहीं हुई है, बल्कि संस्कृत भाषि सब भाषाएँ प्राकृत से ही उत्पन्न हुई हैं।

सिरत की नवम शताब्दी के जैनैतर कवि राजभेखर ने भी अपने 'दाळारामायण' में नीचे का श्लोक लिखकर यही मत प्रकट किया है —

‘यद् येनि किञ्च सङ्कतस्य मुद्रया गित्त्वानु य मोक्षते, यन् श्रोत्रपादावधारिणि कटुर्मापात्राणा रस ।

गद्य ब्रह्मणं पद्म रतिपतेस्तत् प्राकृत यद्वचस्ताल्लान्तलिताङ्ग परय मुक्ती दृष्टेनिमेवव्रतम् ॥’ (४८, ४९) ।

जैन और जैनैतर विद्वानों के उक्त वचनों से यह स्पष्ट है कि प्राचीन काल के भारतीय भाषातत्त्वज्ञों में भी यह मत प्रचल रूप से प्रचलित था कि प्राकृत की उत्पत्ति संस्कृत भाषा से नहीं है।

प्राकृत भाषा लौकिक संस्कृत से उत्पन्न नहीं हुई है इसका और भी एक प्रमाण है। वह यह कि प्राकृत के अनेक शब्द और प्रत्ययों का लौकिक संस्कृत की अपेक्षा वैदिक भाषा के साथ अधिक मेल देखने में आता है। प्राकृत भाषा साक्षाद्रूप से लौकिक संस्कृत से उत्पन्न होने पर यह कभी संभव नहीं हो सकता। वैदिक साहित्य में भी प्राकृत के अनुरूप अनेक शब्द और प्रत्ययों के प्रयोग विद्यमान हैं। इससे यह अनुमान करना किसी तरह असंगत नहीं है कि वैदिक संस्कृत और प्राकृत ये दोनों ही एक प्राचीन प्राकृत भाषा से उत्पन्न हुई हैं और यही इस सादृश्य का कारण है। वैदिक भाषा और प्राकृत के सादृश्य के कतिपय उदाहरण हम नीचे उद्धृत करते हैं, ताकि उक्त कथन की सत्यता में कोई संदेह नहीं हो सके।

वैदिक भाषा और प्राकृत में सादृश्य

१ प्राकृत में अनेक जगह संस्कृत शब्दों के स्थान में उभार होता है, जैसे—वृन्द = वृन्द, ऋतु = उड, पृथिवी = पृथ्वी, वैदिक साहित्य में भी ऐसे प्रयोग पाये जाते हैं, जैसे—वृत = वृठ (ऋग्वेद १, ४४, ४) ।

२ प्राकृत में संयुक्त वर्णशब्द कई स्थानों में एक व्यंजन का लोप होकर पूर्व के ह्रस्व स्वर का दीर्घ होता है, जैसे—दुर्लभ = दूर्लह, चित्राम = चीसाम, रश्मि = रास, वैदिक भाषा में भी वैसे होता है, यथा—दुर्लभ = दूर्लभ (ऋग्वेद ४, ६, ८), दुर्णाश = दूर्णाश (शुक्लयजु. प्रातिशाल्य ३, ४३) ।

३ संस्कृत व्यंजनान्त शब्दों के अन्त्य व्यंजन का प्राकृत में सर्वत्र लोप होता है, जैसे—तानत् = तान्, यमास् = जस, वैदिक साहित्य में भी इस नियम का अभाव नहीं है, यथा—पञ्चात् = पञ्चा (अथर्वसंहिता १०, ४, ११), उच्चात् = उच्चा (तैत्तिरीयसंहिता २, ३, १४), नीचात् = नीचा (तैत्तिरीयसंहिता १, २, १४) ।

४ प्राकृत में संयुक्त २ और ४ का लोप होता है, जैसे—प्रगल्भ = पगल्भ, श्यामा = सामा, वैदिक साहित्य में भी यह पाया जाता है, यथा—अ प्रगल्भ = अ पगल्भ (तैत्तिरीयसंहिता ४, १, ६१), उचच = उचिच (शतब्रह्मसंहिता १, ३, ३३) ।

५ प्राकृत में संयुक्त वर्ण का पूर्व स्वर ह्रस्व होता है, यथा—पात्र = पत्र, रात्रि = रत्ति, साध्य = सग्म इत्यादि वैदिक भाषा में भी ऐसे प्रयोग हैं, जैसे—रोदसीत्रा = रोदसित्रा (ऋग्वेद १०, ८८, १०), अमात्र = अमत्र (ऋग्वेद ३, ३६, ४) ।

६ प्राकृत में संस्कृत व का अनेक जगह व होता है, जैसे—दण्ड = दण्ड, दंस = दंस, दोला = डोला, वैदिक साहित्य में भी ऐसे प्रयोग दुर्लभ नहीं हैं, जैसे—दुर्दम = दूर्दम (बाजलनेयसंहिता ३, ३६), पुरोदास = पुरोदाश (शुक्ल-यजु. प्रातिशाल्य ३, ४४) ।

७. प्राकृत में व वा ह होता है, यथा—वहिर = बहिर, व्याह = बाह वेद-भाषा में वो ऐसा पाया जाता है, जैसे—प्रतिसहाय = प्रतिसहाय (गोपब्राह्मण २, ४)।

८ प्राकृत में अनेक शब्दों में संयुक्त व्यञ्जनों के वाच में स्वर का आगम होता है, जैसे—कल्लिष्ठ = कल्लिठ्, स्त्र = सुत्र, तन्वी = तणुवी, वैदिक साहित्य में भी ऐसे प्रयोग विरल नहीं हैं, यथा—महस्य = महसय, स्वर्ग = सुर्गोः (तैत्तिरीयसंहिता ४, २, ३)। तन्व = तनुव, स्व = सुत्र (तैत्तिरीयसंहिता ७, २२, १, ६, २, ७)।

९ प्राकृत में अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द के प्रथमा के एरुचन में मो होता है, जैग—देवो, जिणो, मो इत्यादि; वैदिक भाषा में भी प्रथमा के एरुचन में स्त्री-रही मो देखा जाता है यथा—सर्वस्वो अजायत (ऋग्वेदसंहिता १०, ११०, २), सो चित् (ऋग्वेदसंहिता १, १११, १०-११)।

१०. एनीया विभक्ति के षष्ठ्यचन में प्राकृत में देव आदि अस्त्रात्म्य शब्दों का रूप देवे/ह गंभादेहि, जेट्टेहि आदि होते हैं, वैदिक साहित्य में भी इसीसे अनुरूप देवेभि, गम्भीरेभि, ज्येष्ठेभि आदि रूप मिलते हैं।

११ प्राकृत की तरह वैदिक भाषा में भी चतुर्था के स्थान में पद्यो विभक्ति होता है।

१२. प्राकृत में पञ्चमी के एरुचन में देवा, यच्छा, जिगा आदि रूप होते हैं, वैदिक साहित्य में भी इसी तरह के उवा, नीचा पञ्चा प्रभृति उपलब्ध होते हैं।

१३ प्राकृत में द्विपचन के स्थान में बहुवचन ही होता है वैदिक भाषा में भी इस तरह के अनेकों प्रयोग मौजूद हैं यथा—‘इन्द्रावरुणी’ के स्थान में ‘इन्द्रावरुणा’, ‘मित्रावरुणी’ का जगह मित्रावरुणा, ‘यी सुरभी राधवमी दिविस्पृशानभिनी’ के बदले ‘या सुरभा रथीतमा दिविस्पृशा आभना’ ‘नरी है’ के स्थल में ‘नप है’ आदि।

इस तरह अनेक युक्ति और प्रमाणों से यह साबित होता है कि प्राकृत की उत्पत्ति वैदिक अथवा लौकिक संस्कृत से नहीं, किन्तु वैदिक संस्कृत की उत्पत्ति जिस प्रथम स्तर की प्रादेशिक प्राकृत भाषा से पूर्ण में कही गई है उसीसे हुई है। इससे यहाँ पर इस बात का उल्लेख करना आवश्यक है कि संस्कृत के अनेक आलेखिकों ने और प्राकृत के प्रायः समस्त वैचारिकों ने ‘तत्’ शब्द से संस्कृत को लेकर ‘तद्भव’ शब्द का वाच्यहार ‘संस्कृतभव’ अर्थ में किया है यह किसी तरह सगत नहीं हो सकता। इसलिये यहाँ ‘तत्’ शब्द से संस्कृत के स्थान में वैदिक काल के प्राकृत का ग्रहण कर ‘तद्भव’ शब्द का प्रयोग वैदिक काल के प्राकृत से जो शब्द संस्कृत में लिया गया है उससे उत्पन्न इसी अर्थ में करना चाहिए। संस्कृत शब्द और प्राकृत तद्भव शब्द इन दोनों का साधारण मूल वैदिक काल का प्राकृत अर्थात् पूर्वीक प्राथमिक प्राकृत या प्रथम स्तर का प्राकृत है। इससे यहाँ पर ‘तद्भव’ शब्द का सैद्धान्तिक अर्थ ‘संस्कृतभव’ नहीं, किन्तु ‘वैदिक काल के प्राकृत से उत्पन्न’ यही समझना चाहिए।

द्वितीय स्तर की प्राकृत भाषाओं का उत्पत्ति-क्रम और उनके प्रधान भेद

जब उपर्युक्त कथन के अनुसार वैदिक तथा लौकिक संस्कृत और समस्त प्राकृत भाषाओं का मूल एक ही है और वैदिक तथा लौकिक संस्कृत द्वितीय स्तर की सभी प्राकृत भाषाओं से प्राचीन है तब यह कहने की कोई आवश्यकता नहीं है कि द्वितीय स्तर की प्राकृत भाषाओं के उत्पत्ति क्रम का निर्णय एकमात्र उसी साक्ष्य के तारतम्य पर निर्भर करता है जो उभय संस्कृत और प्राकृत तद्भव शब्दों में पाया जाता है। जिस प्राकृत भाषा के तद्भव शब्दों का वैदिक और लौकिक संस्कृत के साथ जितना अधिक सादृश्य होगा वह उतनी ही प्राचीन और जिसके तद्भव शब्दों का उभय संस्कृत के साथ जितना अधिक भेद होगा वह उतनी ही अर्वाचीन मानी जा सकती है, क्योंकि अधिक भेद के उत्पन्न होने में समय भी अधिक लगता है यह निर्विवाद है।

द्वितीय स्तर की जिन प्राकृत भाषाओं ने साहित्य में अथवा शिलालेखों में स्थान पाया है उनके शब्दों की वैदिक और लौकिक संस्कृत के साथ, उपर्युक्त पद्धति से तुलना करने पर, जो भेद पार्थक्य देखने में आते हैं उनके अनुसार द्वितीय स्तर की प्राकृत भाषाओं के निम्नोक्त प्रधान भेद (प्रकार) होते हैं, जो क्रम से इन तीन मुख्य काल विभागों में बाँटे जा सकते हैं—(१) प्रथम युग—ख्रिस्त पूर्व चार सौ से लेकर ख्रिस्त के बाद एक सौ वर्ष तक (400 B. C. to 100 A. D.), (२) मध्ययुग—ख्रिस्त के बाद एक सौ से पौन सौ वर्ष तक (100 A. C. to 500 A. D.), (३) शेष युग—ख्रिस्तीय पाँच सौ से एक हजार वर्ष तक (500 A. D. to 1000 A. D.)।

1

- 1

1

- 2

2

1

12

2

ब्राह्मणों की ही ओर से इस भाषा की तरफ अपनी सामाविक धृष्टि को व्यक्त करने के लिए इसका यह नाम दिया जाना और अधिक प्रसिद्ध हो जाने के कारण पीछे से बौद्ध विद्वानों का भी मागधी की जगह इस शब्द का प्रयोग करना आश्चर्यजनक नहीं जान पड़ता ।

उक्त प्राकृत भाषा समूह में पालि भाषा के साथ वैदिक संस्कृत का अधिक सादृश्य देखा जाता है । इसी कारण से द्वितीय स्तर की प्राकृत भाषाओं में पालि भाषा सर्वोपेक्षा प्राचीन मालूम पड़ती है ।

पालि भाषा के उत्पत्ति-स्थान के बारे में विद्वानों का मत भेद है । बौद्ध लोग इसी भाषा को मागधी कहते हैं और उनके मत से इस भाषा का उत्पत्ति-स्थान मगध देश है । परन्तु इस भाषा का मागधी प्राकृत के साथ कोई सादृश्य नहीं है । डॉ. कोनो (Dr. Konn) और सर मियर्सन ने इस भाषा का पेशाची भाषा के साथ सादृश्य देकर पेशाची भाषा को जिस देश में प्रचलित थी उसी देश को इसका उत्पत्ति-स्थान बनाया है, यद्यपि पेशाची भाषा के उत्पत्ति स्थान के विषय में इन दोनों विद्वानों का मतभेद नहीं है । डॉ. कोनो के मत में पेशाची भाषा का उत्पत्ति-स्थान विन्ध्याचल या दक्षिण प्रदेश है और सर मियर्सन का मत यह है कि 'इसका उत्पत्ति-स्थान भारतवर्ष का उत्तर पश्चिम प्रान्त है; वहाँ उत्पन्न होने के बाद संभव है कि कौशण-प्रदेश-पर्यन्त इसका विस्तार हुआ हो और वहाँ इससे पाली भाषा की उत्पत्ति हुई हो ।' परन्तु पालि भाषा अथोक के गुजरात-प्रदेश-स्थित गिरनार के शिलालेख के अनुरूप होने के कारण यह मगध में नहीं, किन्तु 'भारतवर्ष के पश्चिम प्रान्त में उत्पन्न हुई है और वहाँ से सिन्धु देश में ले जाई गई है' यही मत विशेष सगत प्रतीत होता है, क्योंकि निम्नोक्त उदाहरणों से पालिभाषा का गिरनार-शिलालेख के साथ सादृश्य और पूर्व-प्रान्त स्थित धौलि (संहगिरि) शिलालेख के साथ पार्थक्य देखा जाता है—

संस्कृत	पाली	गिरनारशिला०	धौलिशिला०
राज्ञः	राजिनो, रज्जो	राणो	नजिने
कृतम्	कत	कतं	कडे

इस विषय में डॉ. मुनीरतिदुमार चटर्जी का कहना है कि "युद्धदेव" के समस्त उपदेश मागधी भाषासे बाद के समय में मध्यदेश (Doab) की शौरसेनी प्राकृत में अनुनादित हुए थे और वे ही ख्रिस्त पूर्वे प्रायः द्वासी वर्ष से पालि-भाषा के नाम से प्रसिद्ध हुए हैं ।" किन्तु सच तो यह है कि पालि भाषा का शौरसेनी ओर मागधी की अपेक्षा पेशाची के साथ ही अधिक सादृश्य है जो निम्नांक उदाहरणों से स्पष्ट जाना जाता है ।

संस्कृत	पालि	पेशाची	शौरसेनी	मागधी
०क (लोक)	क (लोक)	क (लोक)	० (लोक)	० (लोक)
०ग (नग)	ग (नग)	ग (नग)	० (गुग)	० (गुग)
०च (सची)	च (सची)	च (सची)	० (सई)	० (सई)
०ज (रजत)	ज (रजत)	ज (रजत)	० (रजद)	० (रजद)
०त (कृत)	त (कृत)	त (कृत)	द (कद)	ड (कड)
०र (कर)	र (कर)	र (कर)	र (कर)	ल (कत)

१. "लोकपायत कुतर्क च प्राकृत म्नेच्छमायितम् ।

॥ मोतव्य दिनेनेतदधी नयति तद् द्विजम्" (पद्मपुराण, पूर्वखण्ड ६८, १७) ।

२. The Origin and Development of the Bengalee Language, Vol. I, page 57.

३. इन उदाहरणों में प्रथम वह अक्षर दिया गया है जिसका उभय उभय भाषा के नोने बिन्दु अक्षरों में परिवर्तन होता है और अक्षर के बाद प्राप्ति में उसी अक्षरवाला शब्द स्पष्टता के लिए दिया गया है ।

४. स्वर वर्णों के मध्यवर्ती अवयुक्त वरुण ।

संस्कृत	पालि	पैशाची	शौरसेनी	मागधी
श (वश)	स (वस)	स (वस)	स (वस)	श (वश)
प (मेव)	स (मेव)	स (मेव)	स (मेव)	श (मेव)
स (सारस)	स (सारस)	स (सारस)	स (सारस)	श (शालस)
न (वचन)	न (वचन)	न (वचन)	ण (वमण)	ण (वमण)
ट्ट (पट्ट)	ट्ट (पट्ट)	ट्ट (पट्ट)	ट्ट (पट्ट)	रट (पट्ट)
थै (अर्थ)	त्थ (अर्थ)	त्थ (अर्थ)	त्थ (अर्थ)	रत्त (अर्थ)
सु (वृत्तः)	ओ (वृत्तो)	ओ (वृत्तो)	ओ (वृत्तो)	ए (वृत्तो)

पालि भाषा की उत्पत्ति का समय ख्रिस्त के पूर्व पष्ठ शताब्दी कहा जाता है, किन्तु यह काल बुद्धदेव की सम-
 उत्पत्ति-समय सामयिक कथ्य मागधी भाषा का हो सकता है। पालि कथ्य भाषा नहीं, परन्तु बौद्ध धर्म-साहित्य
 की भाषा है। संभवतः यह भाषा ख्रिस्त के पूर्व चतुर्थ या पञ्चम शताब्दी में पश्चिम भारत में
 उत्पन्न हुई थी।

इस पालि-भाषा से आधुनिक सिन्धली भाषा की उत्पत्ति हुई है।

प्राकृत शब्द से साधारणतः पालि-भिन्न अन्य भाषाएँ ही समझी जाती हैं। इससे, और पालि भाषा के अनेक
 स्वतन्त्र कोप होने से, प्रस्तुत कोप में पालि भाषा के शब्दों को स्थान नहीं दिया गया है। इसलिए पालि भाषा की विशेष
 आलोचना करने की यहाँ आवश्यकता नहीं है।

(२) पैशाची

गुणाध्याय ने बृहत्कथा पैशाची भाषा में लिखी थी, जो लुप्त हो गई है। इस समय पैशाची भाषा के उदाहरण
 निम्नलिखित प्राकृतप्रकाश, आचार्य हेमचन्द्र का प्राकृतव्याकरण, पद्मभाषाचन्द्रिका, प्राकृत-सर्वेत्थ और संक्षिप्तसार
 आदि प्राकृत-ग्रन्थकारों में आचार्य हेमचन्द्र के कुमारपाल-चरित तथा काव्यानुशासन में, मोहराज-
 पराजय नामक नाटक में और दो-एक पद्मभाषास्तोत्रों में मिलते हैं।

भारत के नाट्यशास्त्र में पैशाची नाम का उल्लेख देखने में नहीं आता है, परन्तु इसके परवर्ती 'रुद्र', 'केराव-
 मिश्र आदि संस्कृत के आलंकारिकों ने इसका उल्लेख किया है। वाग्भट ने इस भाषा को 'भूतभाषित' के नाम से
 अभिहित की है।

वाग्भट तथा 'केरावमिश्र ने क्रम से भूत और पिशाच-प्रभृति पात्रों के लिए और 'पद्मभाषा-चन्द्रिकाकार ने
 विनियोग राक्षस, पिशाच और नीच पात्रों के लिए इसका विनियोग बतलाया है।

१. बुद्धि में प्रथमा के एक वचन का प्रत्यय।

२. भाचार्य उद्योतन की कृत्वय माला में, दशरी के वान्पाद्यों में, बाण के हर्षवर्ति में, वनजय के दशरुज में, सुबन्धु की
 वासवदत्ता में और अय्याय्य प्राकृत-संस्कृत द्वयो में इनका उल्लेख पाया जाता है। जेम्स ब्रुकलैंड और सीमदेवभट्ट-
 प्रणीत वयासरिणामर इसी बृहत्कथा का संस्कृत अनुवाद है। इस बृहत्कथा के ही भिन्न-भिन्न बंशों के साधार पर बाण, श्रीहर्ष,
 भवभूति आदि संस्कृत के महानवियों को कामन्दकी, रत्नावली, मालनीमावय-प्रभृति अनेक संस्कृत ग्रंथों की रचना की गई है।

३. पृष्ठ २२६: २३३।

४. वाग्यार्णव २, १२।

५. 'संस्कृतं प्राकृतं चैव पैशाची मागधी तथा' (अनङ्कारशेखर, पृष्ठ ५)।

६. 'संस्कृतं प्राकृतं तस्यापन्नं शो भूतभाषितम्' (वाग्भटनङ्कार २, १)।

७. यद् भूतेष्वप्येति निमित्तं तद्गौतमिकमिति स्मृतम्' (वाग्भटनङ्कार २, ३)।

८. 'पैशाचीं वा पिशाचभाषाः प्राहुः' (अनङ्कारशेखर, पृष्ठ ५)।

९. रत्न-पिशाचनोत्प्रेष्ट पैशाचीद्वितयं मयेत् ॥३१॥' (पद्मभाषा-चन्द्रिका, पृष्ठ ३)।

पड़भाषाचन्द्रिकाकार पिशाच-देशों की भाषा को ही पैशाची कहते हैं और पिशाच-देशों के निर्देश के लिए नीचे-
उत्पत्ति-स्थान के श्लोकों को उद्धृत करते हैं :—

‘पारम्पर्येन यथाहीनसन्नेपालमुत्तलाः ।

सुषेष्णमोजपान्यारहैषकमोजनात्तया ।

एते पिशाचदेशाः स्मृः’

मार्कण्डेय ने अपने प्राकृतसर्षप में प्राकृतचन्द्रिका के

‘काशीदेशीयपारम्पर्ये’ च पाञ्चाल गौड-मामयम् ।

प्राच्यं दादिवृणाथं च शीरसेनं च कैकयम् ॥

शाबरं द्राविडं चैव एकादश पिशाचजाः ।

इस पद्यन को उद्धृत कर ग्यारह प्रकार की पैशाची का उल्लेख किया है; परन्तु बाद में इस मत का खण्डन करके सिद्धान्त रूप से इत हीन प्रकार की पैशाची का ग्रहण किया है; यथा—‘कैकयं शीरसेनं च पाञ्चालमिति च त्रिधा पैशाच्यः’ ।

लक्ष्मीधर और मार्कण्डेय ने जिन प्राचीन पद्यनों का उल्लेख किया है उनमें पाण्ड्य, काञ्ची और कैकय आदि प्रदेश एक दूसरे से अतिदूरवर्ती प्रान्तों में अवस्थित हैं । इतने दूरवर्ती प्रदेश एकदेशीय भाषा के उत्पत्ति-स्थान कैसे हो सकते हैं ? यदि पैशाची भाषा किसी प्रदेश की भाषा न हो कर भिन्न भिन्न प्रदेशों में रहनेवाली किसी जाति-विशेष की भाषा हो तो इसका संभव इस तरह हो भी सकता है कि पूर्वकाल में किसी एक देश-विशेष में रहनेवाली पिशाच-प्राय मनुष्य-जाति बाद में भिन्न-भिन्न देशों में फैलती हुई वहाँ अपनी भाषा को ले गई हो । मार्कण्डेय-निर्दिष्ट हीन प्रकार की पैशाची परस्पर संनिहित प्रदेशों की भाषा है, इससे स्पष्ट ही संभव है कि यह पहले कैकय देश में उत्पन्न हुई हो और बाद में उसी के समीपस्थ शीरसेन और पाञ्चाल तक फैल गई हो । मार्कण्डेय ने शीरसेन-पैशाची और पाञ्चाल-पैशाची की प्रकृति जो कैकय-पैशाची की है इसका मतलब भी यही हो सकता है । सर प्रियर्सन के मत में पिशाच-भाषा-भाषी लोगों का आदिम वास-स्थान उत्तर-पश्चिम पञ्जाब अथवा अफगानिस्तान का प्रान्त प्रदेश है और बाद में वहाँ से ही संभवतः इसका अन्य देशों में विस्तार हुआ है । किन्तु डॉ. होर्नेल या इस विषय में और ही मत हैं । उनका कहना यह है कि अनाथ जाति के लोग आर्य-जाति की भाषा का जिस विकृत रूप में उच्चारण करते थे वही पैशाची भाषा है, अर्थात् इनके मत से पैशाची भाषा न तो किसी देश-विशेष की भाषा है और न वह वास्तव में भिन्न भाषा ही है । हमें सर प्रियर्सन का मत ही प्रामाणिक प्रतीत होता है जो मार्कण्डेय के मत के साथ अनेकांश में मिला-जुला है ।

परन्तु न तो शीरसेनी प्राकृत को ही पैशाची भाषा का मूल कहा है^१ । मार्कण्डेय ने पैशाची भाषा को कैकय, शीरसेन और पाञ्चाल इन हीन भेदों में विभक्त कर संस्कृत और शीरसेनी उभय को कैकय-पैशाची का और कैकय पैशाची को शीरसेन-पैशाची का मूल पतहाया है । पाञ्चाल पैशाची के मूल का उन्होंने निर्देश ही नहीं किया है, किन्तु उन्होंने इसके जो कौरी (कैलिः) और महर्षि (पन्दिम्) ये दो उदाहरण दिये हैं इससे मालूम होता है कि इस पाञ्चाल-पैशाची का कैकय-पैशाची से रकार और लकार के व्यत्यय के अतिरिक्त अन्य कोई भेद नहीं है, सुचारों शीरसेन-पैशाची की तरह पाञ्चाल-पैशाची की प्रकृति भी इनके मत से कैकय पैशाची ही हो सकती है । यहाँ पर यह कहना आवश्यक है कि मार्कण्डेय ने शीरसेन पैशाची के जो लक्षण दिए हैं उन पर से शीरसेन-पैशाची का

१. वर्तमान मधुरा और बन्गाकुमारी के शासपाल के प्रदेश का नाम पारम्पर्य, पञ्चनन्द प्रदेश का नाम कैकय, अफगानिस्तान के वर्तमान बाख्तरगारवाले प्रदेश का नाम बाहीक, दक्षिण भारत के पश्चिम उपकूल का नाम सद्य, मर्मदा के उत्पत्ति-स्थान के निकटवर्ती देश का नाम मुत्तल, वर्तमान काजूल और पेशावरवाले प्रदेश का नाम गान्यार, हिमालय के निम्न-वर्ती पार्वत्य प्रदेश-विशेष का नाम ऐव और दक्षिण महाराष्ट्र के पार्वत्य अञ्चल का नाम कजोजन है ।

२. “प्रकृति. शीरसेनी” (प्राकृतप्रकाश १०, २) ।

३. “क्षय श.”, “रय तो भवेत्”, “चवमंथोपरिष्टा य”, “कृतादिषु कडादयः”, “क्षय च्छ”, “त्याविकृते. एत्थ श.”, “तत्पयो श उच्चं स्पाद”, “अत. ओरो (रे) त” (बाकृतसर्षप, प्र १२६) ।

शौरसेनी भाषा के साथ कोई भी सन्त-व प्रतीत नहीं होता, क्योंकि कैश्य पेशाची के साथ शौरसेन पेशाची के जो भेद उन्होंने बतलाए हैं वे मागधा भाषा के ही अनुरूप हैं, न कि शौरसेना के। इससे इनको शौरसेन पेशाचा न कह कर मागध-पेशाची कहना ही सगत जान पड़ता है।

प्राकृत वैयाकरणों ने मत से पेशाची भाषा का मूल शौरसेनी अथवा संस्कृत भाषा है, किन्तु हम पहले यह भलीभाँति दिया चुके हैं कि कोई भी प्रादेशिक कथ्य भाषा, संस्कृत अथवा अन्य प्रादेशिक भाषा से उत्पन्न नहीं है, परन्तु वह उसी कथ्य अथवा प्राकृत भाषा से उत्पन्न हुई है जो वैदिक युग में उस प्रदेश में प्रचलित थी। इस लिए पेशाची भाषा का भी मूल संस्कृत या शौरसेनी नहीं, किन्तु वह प्राकृत भाषा ही है जो वैदिक युग में भारतवर्ष के उत्तर पश्चिम प्रान्त की या अफगानिस्थान के पूर्व प्रान्त-वर्ती प्रदेश की कथ्य भाषा थी।

प्रथम युग की पेशाची भाषा का कोई निदर्शन साहित्य में नहीं मिलता है। गुणाढ्य की बृहत्कथा संभवतः इसी प्रथम युग की पेशाची भाषा में रची गई थी, किन्तु वह आज तक उपलब्ध नहीं है। इस समय हम व्याकरण, नाटक और काव्य में पेशाची भाषा के जो निदर्शन पाते हैं वह मध्ययुग की पेशाची भाषा का है। मध्ययुग की यह पेशाची भाषा द्वादशवी शताब्दी से पौर्वी शताब्दी पर्यन्त प्रचलित थी।

पेशाची भाषा का शौरसेनी भाषा के साथ जिस जिस अंग में भेद है वह सामान्य रूप से नीचे दिया जाता है। इस के सिवा अन्य सभी अंशों में वह शौरसेनी के ही समान है। इससे इसके बाकी के लक्षण शौरसेनी के प्रकरण से जाने जा सकते हैं।

वर्ण भेद

- १ ङ न्य और एय के स्थान में ज्ञ होता है, यथा—प्रज्ञा = पञ्ञा, ज्ञान = ङ्ञान, कण्डका = कञ्ञका, अभि-मन्यु = अभिमञ्ञ्यु, पुण्य = पुञ्ञ्य।
- २ ञ और न के स्थान में न होता है, जैसे—गुण = गुन कनक = कनक।
- ३ त और व की जगह ङ होता है, जैसे—भगरतो = भगवती, शत = सत, मदन = मतन, देव = तेव।
- ४ लकार क में बदलता है यथा—सील = सीळ कुन = कुन।
- ५ ङ की जगह ङ और ङ होता है, जैसे—कुटुम्बक, कुटुम्बक, कुटुम्बक।
- ६ महाराष्ट्री के लक्षण में असंयुक्त-व्यञ्जन परिवर्तन के १ से १३, १५ और १६ अक्षराले जो नियम बतलाए गए हैं वे शौरसेनी भाषा में लागू होते हैं, किन्तु पेशाची में नहीं, यथा—ळोक = ओक, शाखा = साखा, भट = भट, मठ = मठ गरुड = गरुड, प्रतिभास = पतिभास, वनक = कनक, शपथ = सपथ, रेफ = रेफ, शजल = सयळ, यशस् = यस करणीय = करणीय, अगार = गार, दाह = दाह।
- ७ यादृश आदि शब्दों का ह परिणत होता है ङि में, यथा—यादृश = यातिश, सदृश = सतिश।

नाम विभक्ति

- १ अत्रान्त शब्द की पञ्चमी का पञ्चम्यन्त प्रातो और प्रातु होता है, जैसे—जिनातो, जिनातु।

आख्यात

- १ शौरसेनी के ङि और दे प्रत्ययों की जगह ङि आर वे हाता है, यथा—गच्छति गच्छने, रमति, रमते।
- २ भावण्य नाल में लि के बदले एय होता है, जैसे—भविष्यति = हुवेय्य।
- ३ भाव और कर्म में ईष तथा इष के स्थान में इष्य होता है, यथा—पठ्यते = पठिर्यते, इसिप्यते।

कृदन्त

- १ स्वा प्रत्यय के स्थान में कहीं तून और कहीं लून और दून होते हैं, यथा पठित्वा = पठितून, गत्वा = गन्तून, नष्ट्वा = नष्टून, नद्धून, वष्ट्वा = वष्टून, वद्धून।

(३) चूलिकापैशाची

चूलिकापैशाची भाषा के लक्षण आचार्य हेमचन्द्र ने अपने प्राकृत व्याकरण में और पंडित लक्ष्मीधर ने अपनी पठभाषाचन्द्रिका में दिए हैं। आचार्य हेमचन्द्र ने कुमारपालचरित और काव्यानुशासन में इस भाषा के निदर्शन पाये जाते हैं। इनके अतिरिक्त हर्षचरित नामक नाटक में और दो एक छोटो-छोटे पठभाषास्तोत्रों में भी इसके कुछ नमूने देखने में आते हैं।

प्राकृतलक्षण, प्राकृतप्रकाश, सक्षिप्तसार और प्राकृतसर्वस्व वगैरह प्राकृत व्याकरणों में और सप्ततुल्य के अन्तर्गत ग्रन्थों में चूलिकापैशाची का कोई उल्लेख नहीं है अथवा आचार्य हेमचन्द्र ने और पंडित लक्ष्मीधर ने चूलिकापैशाची के जो लक्षण दिए हैं वे चंड, वररुचि, क्रमदीप्तर और मार्कण्डेय प्रभृति वैयाकरणों ने पैशाची भाषा के लक्षणों में ही अन्तर्गत किए हैं। इससे यह स्पष्ट जाना जाता है कि उक्त वैयाकरण-गण चूलिकापैशाची को पैशाची भाषा के अन्तर्भूत पैशाची में इसका ही मानते थे, स्वतन्त्र भाषा के रूप में नहीं। आचार्य हेमचन्द्र भी अपने अभिधानचिन्तामणि नामक संस्कृत कोष ग्रन्थ के 'भाषा पद संस्कृतादिना' (काण्ड २ १६६) इस वचन की 'संस्कृत प्राकृत भाग्योत्तररत्नो-पैशाच्यपञ्च शतसंज्ञा' यह व्याख्या करते हुए चूलिकापैशाची का अलग उल्लेख नहीं करते। इससे मालूम पड़ता है कि वे भी चूलिकापैशाची को पैशाची का ही एक भेद मानते हैं। हमारा भी यही मत है। इससे यहाँ पर इस विषय में पैशाची भाषा के अन्तर्गत विवरण से कुछ अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं रहती। सिर्फ आचार्य हेमचन्द्र ने और लक्ष्मीधर का पूरा अनुसरण कर ५० लक्ष्मीधर ने इस भाषा के जो लक्षण दिए हैं वे नीचे उद्धृत किए जाते हैं। इनके सिवा सभी अशों में इस भाषा का पैशाची से कोई पार्थक्य नहीं है।

लक्षण

१. वर्ग के तृतीय और चतुर्थ अक्षरों के स्थान में क्रमशः प्रथम और द्वितीय होता है^१, यथा—नगर=नकर, व्याघ्र=घनर, राजा=राचा, निर्भर=निच्छर, तदाम=तदाक, ठका=ठका, मदन=मवन, मधुर=मधुर, बालक=पालक, भगवती=फकवती।
२. र के स्थान में वैकल्पिक ल होता है, यथा—रुह=रुह, रुह।

(४) अर्धमागधी

भगवान् महावीर अपना धर्मोपदेश अर्धमागधी भाषा में देते थे^२। इसी उपदेश के अनुसार उनके समसामयिक गणधर श्री सुधर्मस्थानी ने अर्धमागधी भाषा में ही आचारान्न प्रभृति सूत्र-ग्रन्थों की रचना की^३। वे प्रत्येक उस समय लिखे नहीं गए थे, परन्तु शिष्य परम्परा से कण्ठ पाठ द्वारा संचित होते थे। दिगम्बर जैनों के मत से ये समस्त ग्रन्थ विलुप्त हो गए हैं, परन्तु श्वेताम्बर जैन दिगम्बरों के इस मतव्य से सहमत नहीं है। श्वेताम्बरों के मत के अनुसार ये सूत्र ग्रन्थ महावीर निर्माण के बाद ९८० अर्थात् ख्रिस्ताब्द ४५४ में यत्नी (वर्तमान धन, पाटियावाड़ा) में श्रावर्धदिग्विजय क्षमाश्रमण ने वर्तमान आचार्य से लिपिबद्ध किए। उस समय लिखे जाने पर भी इन ग्रन्थों का भाषा प्राचीन है। इसका एक कारण यह है कि जैसे ब्राह्मणों ने कण्ठ पाठ द्वारा बहुत शताब्दी-पर्यन्त वेदों की रक्षा की थी वैसे ही जैन मुनियों ने भी अपनी शिष्य परम्परा से सुख पाठ द्वारा बहुत शताब्दी-अपने इन पवित्र ग्रन्थों को याद रखा था। दूसरा यह है कि जैन धर्म में सूत्र पाठों के शुद्ध उच्चारण के लिए खूब जोर दिया गया है, यहाँ तक कि मात्रा या अक्षर के भी अशुद्ध या विपरीत उच्चारण करने में दोष माना गया है। तिस पर भी सूत्र ग्रन्थों की भाषा का सूक्ष्म निरीक्षण करने से इस बात को स्वीकार करना ही पड़ेगा कि भगवान् महावीर के समय की अर्ध-

१. ग्रन्थ वैयाकरणों के मत से यह नियम शब्द क आदि के ग्रन्थों में लागू नहीं होता है (हे० प्रा० ४ ३२७)।

२. 'भगव च एव भद्रमाहोए भासाए धम्ममाइल्लस (ममवायान्न सूत्र पद ६०)।

३. 'तए एवमए भगव महावीरे कूरिअस्स एएणो निगितारयुत्तस भद्रमाहोए भासाए भासाद। सा वि य एव भद्रमाहो भासा तस्सि सव्वेसि भाविमएणारियाए अण्णो उमासाए परिणामए परिणमद' (दीपवस्तिका सूत्र)।

४. 'धर्त भासद मरिहा, गुत्त मयति मणहए निजए (भावश्यकमुक्ति)।

मागधी भाषा के इन ग्रन्थों में, अज्ञातभाष से हो क्यों न हो, भाषा-विषयक परिवर्तन अवश्य हुआ है। यह परिवर्तन होना असंभव भी नहीं है, क्योंकि ये सूत्र-ग्रन्थ वेदों की तरह शब्द-प्रधान नहीं, किन्तु अर्थ-प्रधान हैं। इतना ही नहीं, बल्कि ये ग्रन्थ जन-साधारण के बोध के लिये ही उस समय की कथ्य भाषा में रचे गये थे जोर कथ्य भाषा में समय गुजरने के साथ-साथ अवश्य होनेवाले परिवर्तन का प्रभाव, कण्ठ-पाठ के रूप में स्थित इन सूत्रों की भाषा पर पड़ना, अन्ततः उस-उस समय के लोगों को समझने के उद्देश्य से भी, आश्चर्यकर नहीं है। इसके सिवा, भाषा-परिवर्तन का यह भी एक मुख्य कारण माना जा सकता है कि भगवान् महावीर के निर्वाण से करीब दो सौ वर्ष के बाद (विस्म-पूर्व ३१०) चन्द्रगुप्त के राजत्व-काल में मगध देश में बारह वर्षों का सुदीर्घ अकाल पड़ने पर साधु लोगों को निर्वाह के लिए समुद्र-तीर-वर्ती प्रदेश (दक्षिण देश) में जाना पड़ा था। उस समय वे सूत्र-ग्रन्थों का परिशीलन न कर सकने के कारण उन्हें भूल से गए थे। इससे अकाल के बाद पाटलिपुत्र में संघ ने एकत्रित होकर जिस-जिस साधु को जिस-जिस अङ्ग ग्रन्थ का जो-जो अंश जिस-जिस आश्रम में याद रह गया था, उस-उस से उस-उस अङ्ग ग्रन्थ के उस-उस अंश को उस-उस रूप में प्राप्त कर ग्यारह अङ्ग-ग्रन्थों का संकलन किया। इस घटना से जैसे अङ्ग-ग्रन्थों की भाषा के परिवर्तन का कारण समझ में आ सकता है, वैसे इन ग्रन्थों की अर्धमागधी भाषा में, मगध के पार्श्ववर्ती प्रदेशों की भाषाओं की तुलना में दूरवर्ती महाराष्ट्र-प्रदेश की भाषा का जो अधिक साम्य देखा जाता है उसके कारण का भी पता चलता है। जब ऐतिहासिक प्रमाणों से यह बात सिद्ध है कि दक्षिण प्रदेश में प्राचीन काल में जैन धर्म का अच्छी तरह प्रचार और प्रभाव हुआ था तब यह अनुमान करना अयुक्त नहीं है कि उस दीर्घकालिक अकाल के समय साधु लोग समुद्र-तीर-वर्ती इस दक्षिण देश में ही गए थे और वहाँ उन्होंने उपदेश-द्वारा जैन धर्म का प्रचार किया था। यह कहने की कोई आवश्यकता नहीं है कि उक्त साधुओं को दक्षिण प्रदेश में उस समय जो भाषा प्रचलित थी उसका अच्छी तरह ज्ञान हो गया था, क्योंकि उसके बिना उपदेश-द्वारा धर्म-प्रचार का कार्य वे कर ही नहीं सकते थे। इससे यह असंभव नहीं है कि उन साधुओं की इस नव-परिचित भाषा का प्रभाव, उनके कण्ठ-स्थित सूत्रों की भाषा पर भी पड़ा था। इसी प्रभाव को लेकर उनमें से कई एक साधु-लोग पाटलिपुत्र के उक्त संमेलन में उपस्थित हुए थे, जिससे अङ्गों के पुनः संकलन में उस प्रभाव ने न्यूनाधिक अंश में स्थान पाया था।

उक्त घटना से करीब आठ सौ वर्षों के बाद बलमी (सौराष्ट्र) और मधुरा में जैन ग्रन्थों को लिपि बद्ध करने के लिए मुनि-संमेलन किए गए थे, क्योंकि इन सूत्र ग्रन्थों का और उस समय तक अन्य जो जैन ग्रन्थ रचे गए थे उनका भी क्रमशः विस्मरण हो चला था और यदि वही दश कुछ अधिक समय तक चालू रहती तो समग्र जैन शास्त्रों के लोप हो जाने का डर था जो वास्तव में सत्य था। संभवतः इस समय तक जैन साधुओं का भारतवर्ष के अनेक प्रदेशों में विस्तार हो चुका था और इन समस्त प्रदेशों से अल्पाधिक संख्या में आकर साधु लोगों ने इन संमेलनों में योग-दान किया था। भिन्न-भिन्न प्रदेशों से आगत इन मुनियों से जो ग्रन्थ अथवा ग्रन्थ के अंश जिस रूप में प्राप्त हुआ उसी रूप में यह लिपि-बद्ध किया गया। उक्त मुनियों के भिन्न-भिन्न प्रदेशों में चिर-काल तक विचरने के कारण उन प्रदेशों को भिन्न-भिन्न भाषाओं का,

१. 'पुत्रलु विट्ठियम कानियज्जकानियंगसिदंत्तं।

वीलवायमणस्य पाययमुद्धं जिणवरेहिं॥'

(भाचारदिन ४२ में श्रीवर्धमानसूरी द्वारा उद्धृत की हुई प्राचीन वाक्य)।

'बालक्षीमन्मूर्खणा नृणां चारित्रकाङ्क्षिणम्।

भगुप्रह्रायं तत्त्वज्ञैः सिद्धान्तः प्राकृतः इव॥'

(हरिभद्रसूरी की दशैकालिक टीका में श्रीर हेमचन्द्र के काव्यानुशासन में उद्धृत प्राचीन श्लोक)।

२. देशो Annual Report of Asiatic Society, Bengal, 1b93 में डॉ. हर्नलिस का लेख।

३. 'द्वयं तस्मिन् दुष्काले कराले कालरात्रिवत्। निर्वह्यं साधुबद्धस्तोत्रं नीरतिशेखरी॥१२॥

भगुदयमानं तु तदा साधूना विस्मृतं श्रुतम्। भगवत्सन्तो नरपश्यपीतं योगतपसि॥१३॥

संपोष्य पाटलीपुत्रे दुष्कालान्तेऽस्तितीर्षितम्। यदङ्गाप्यनोद्देशायासीद् गम्य तदादत्त॥१४॥

तद्वैराग्यद्वान्नि श्रीसंधीभेलयन् तदा। दृष्ट्वादिनिमित्तं च तस्यौ विविद् विचिन्तयन्॥१५॥

नेपालदेशमार्गस्य मद्रबाहुं च पूर्वणम्। ज्ञात्वा संपः समाह्वानं ततः प्रीत्यनुविद्यम्॥१६॥

(स्वचित्तकीर्ति, सर्ग ९)।

लक्षणों का और विभिन्न प्राकृत भाषाओं के व्याकरणों का कुछ न कुछ अलक्षित प्रभाव उनके कण्ठस्थित धर्म-ग्रन्थों की भाषा पर भी पड़ना अनिवार्य था। यही कारण है कि अंग ग्रन्थों में, एक ही अङ्ग ग्रन्थ के भिन्न भिन्न अंशों में और कहीं कहीं तो एक ही अंग ग्रन्थ के एक ही वाक्य में परस्पर भाषा भेद नजर आता है। संभवतः भिन्न-भिन्न प्रदेशों की भाषाओं के प्रभाव से युक्त इसी भाषा-भेद को लक्ष्य में लेकर लिखत की सप्तम शताब्दी के ग्रन्थकार श्रीजिनदासगणि ने अपनी निशोथ-पूर्ण में अर्धमागधी भाषा का "भट्टारखदेवीभाषानियम वा अद्धमागह" यह वैद्वत्पिक लक्षण किया है। भाषा परिवर्तन के उक्त अनेक प्रबल कारण उपस्थित होने पर भी अंग ग्रन्थों की अर्धमागधी भाषा में, पाटलीपुत्र के सम्मेलन के बाद से, आमूल या अधिक परिवर्तन न होकर उसके बदले जो सूक्ष्म या अल्प ही भाषा-भेद हुआ है और संकड़ों की तादाद में उसके प्राचीन रूप अपने असल आकार में जो संरक्षित रह सके हैं उसका श्रेय सूत्रों के अशुद्ध उच्चारण आदि के लिए प्रदर्शित पाप-ग्रन्थ के उस धार्मिक नियम को है जो सम्भवतः पाटलीपुत्र के सम्मेलन के बाद निर्मित या दृढ़ किया गया था।

यहाँ पर प्रसंग-यश इस बात का उल्लेख करना उचित प्रतीत होता है कि समजायाङ्ग सूत्र में निर्दिष्ट अंग ग्रन्थ-सम्बन्धी विषय और परिमाण का वर्तमान अङ्ग-ग्रन्थों में कहीं कहीं जो थोड़ा-बहुत ऊमरा विस्वादा और ह्रास पाया जाता है और अङ्ग-ग्रन्थों में ही बाद में उपाङ्ग ग्रन्थों का और बाद की घटनाओं का जो उल्लेख दृष्टिगोचर होता है उसका समाधान भी हमने उक्त सम्मेलनों की घटनाओं से अच्छी तरह मिल जाता है।

समजायाङ्ग सूत्र, व्याख्याप्रज्ञप्ति सूत्र, औपपातिक सूत्र और प्रज्ञापना सूत्र में तथा अन्यान्य प्राचीन जैन ग्रन्थों में जिस भाषा को अर्धमागधी नाम दिया गया है, स्थानाङ्गसूत्र और अनुयोगद्वारसूत्र में जिस भाषा को 'ऋषिभाषिता' कहा गया है और सम्भवतः इसी 'ऋषिभाषिता' पर से 'आचार्य हेमचन्द्र आदि ने जिस भाषा को 'आर्ष भ्रममागधी और आर्ष' (ऋषियों की भाषा) कहा करते हैं वह यस्तुतः एक ही भाषा है अर्थात् अर्धमागधी, ऋषिभाषिता और आर्ष ये तीनों एक ही भाषा के भिन्न-भिन्न नाम हैं, जिनमें पहला उसके उत्पत्ति-स्थान से और बाकी के दो उस भाषा को सर्वप्रथम साहित्य में स्थान देनेवालों से सम्बन्ध रखते हैं। जैन सूत्रों की भाषा यही अर्धमागधी, ऋषिभाषिता या आर्ष है। आचार्य हेमचन्द्र ने अपने प्राकृत-व्याकरण में आर्ष प्राकृत के जो लक्षण और उदाहरण

१. समजायाङ्ग सूत्र, पत्र १०६ से १२५।

२. 'जहा पञ्चवगाए पठमए आहोखदेव' (व्याख्याप्रज्ञप्ति सूत्र १, १—पत्र १६)।

३. देखो, स्थानाङ्ग सूत्र, पत्र ४१० में वर्णित निहव-स्वरूप।

४. देखो, श्रुत १६ में दिया हुआ समजायाङ्गसूत्र और औपपातिकसूत्र का पाठ।

'देवा ए भते ! कवराए भासाए भासति ? कवरा वा भाता मासिज्जाणी विसिस्सति ? गोपमा ! देवा ए अद्धमागहादा भासाए भासति, सायि य ए अद्धमागहा भासा मासिज्जाणी विसिस्सति।' (व्याख्याप्रज्ञप्ति सूत्र ५, ४—पत्र २२१)।

'दे किं ॥ भासारिया ? भासारिया जे ए अद्धमागहाए भासाए भासति' (प्रज्ञापनासूत्र १—पत्र १२)।

महद्वयसिपमासाणियद्ध अद्धमागह, भट्टारखदेवीभाषानियम वा अद्धमागह" (निशोथपूर्ण)।

'भासितवमणी सिद्ध देवाण अद्धमागहा भाणी' (काव्यालकार की भविष्यकृतटीका २, १२)।

'सर्वधर्मागधी सर्वभाषानु परिणामिनी'।

सर्वपा सर्वतो वाच सर्वज्ञी प्रष्टिदम्भे ॥" (वाग्मयकाव्यानुशासन, श्रुत २)।

५. "सद्धता पागसा चेव दुद्धा भणितोपो धादिण।

सरमभस्मिन् पिण्वते पससा इसिभासिसा ॥" (स्थानाङ्गसूत्र ७—पत्र ३६४)।

'सद्धता पागसा चेव भणितोपो होति दोहिण वा।

सरमभस्मिन् पिण्वते पससा इसिभासिसा ॥" (अनुयोगद्वारसूत्र, पत्र १२१)।

६. देखो, हेमचन्द्र प्राहल्ल्यावरण का सूत्र १, १।

"भाषोत्पत्तिर्ननुयं च द्विविधं प्राकृतं विदुः" (प्रेमचन्दर्वाचारी द्वारा काव्यादर्शटीका १, ३१ में बद्ध किया हुआ पंक्ति)।

घटाए है उससे तब, 'मत एव लौ पुति मागव्याम्' (हे० प्रा० ४, २८०) इस सूत्र की व्याख्या में जो "यदपि "पोराणमदमागह-भासानियम हृद मुत्" इत्यादिना धार्येय धर्ममागव्यामापानियतत्वमाम्नायि नृदेस्त्वदपि प्रापोऽस्यैव विधानात्, न वक्ष्यमाणतत्त्वस्य" यह कहकर उसी के अनन्तर जो दशवैमल्लिक सूत्र से उद्धृत "कपरे प्रागच्छद्, से तारिते जिद्विद" यह उदाहरण दिया है उससे उक्त बात निर्विवाद सिद्ध होती है ।

डॉ० जेकोबी ने प्राचीन जैन सूत्रों की भाषा को प्राचीन महाराष्ट्री कहकर 'जैन महाराष्ट्री' नाम दिया है ।^१ डॉ० पिशाल ने अपने सुप्रसिद्ध प्राकृत-व्याकरण में डॉ० जेकोबी की इस बात का सप्रमाण रजद किया है और यह सिद्ध किया है कि आर्ष और अर्धमागधी इन दोनों में परस्पर भेद नहीं है, एव प्राचीन जैन सूत्रों की—गद्य और पद्य दोनों की भाषा परम्परागत मत के अनुसार अर्धमागधी है ।^२ परन्तु काल के जैन प्राकृत ग्रन्थों की भाषा अल्पांश में अर्धमागधी की और अधिकांश में महाराष्ट्री की विशेषताओं से युक्त होने के कारण 'जैन महाराष्ट्री' रही जा सकती है, परन्तु प्राचीन जैन सूत्रों की भाषा को, जो शीरसेनी आदि भाषाओं की अपेक्षा महाराष्ट्री से अधिक साम्य रखती हुई भी, अपनी उन अनेक प्रसिद्धियों से परिपूर्ण है जो महाराष्ट्र आदि किसी प्राकृत में दृष्टिगोचर नहीं होती हैं, यह (जैन महाराष्ट्री) नाम नहीं दिया जा सकता ।

पंडित वेचरदास अपने गुजराती प्राकृत व्याकरण की प्रस्तावना में जैन सूत्रों की अर्धमागधी भाषा को 'प्राकृत (महाराष्ट्री)' सिद्ध करने की विफल चेष्टा करते हुए डॉ० जेकोबी से भी दो कदम आगे बढ़ गए हैं, क्योंकि डॉ० जेकोबी जब इस भाषा को प्राचीन महाराष्ट्री—साहित्य-निबद्ध महाराष्ट्री से पुरातन महाराष्ट्री बताने हैं तब पंडित वेचरदास, प्राकृत भाषाओं के इतिहास जानने की तनिक भी परवाह न रखकर, अर्धमागधी महाराष्ट्री से इस प्राचीन अर्धमागधी को अभिन्न सिद्ध करने जा रहे हैं ! पंडित वेचरदास ने अपने सिद्धांत के समर्थन में जो दलीलें पेश की हैं वे अधिकांश में भ्रान्त सत्कारों से वरपन्न होने के कारण कुछ सहस्य न रखती हुई भी कुतूहल-जनक अत्यर्थ हैं । उन दलीलों का सारांश यह है—(१) अर्धमागधी में महाराष्ट्री से मात्र दो चार रूपों की ही विशेषता, (२) आचार्य हेमचन्द्र का इस भाषा के लिए रचनान्वय व्याकरण या शीरसेनी आदि की तरह अलग-अलग सूत्र न बनाना प्राकृत (महाराष्ट्री) या आर्ष प्राकृत में ही इसको अन्तर्गत करना, (३) इसमें मागधी भाषा की कतिपय विशेषताओं का अभाव, (४) निश्चीयचूर्णिशर के अर्धमागधी के दोनों में एक भी लक्षण की इसमें असंगति, (५) प्राचीन जैन ग्रन्थों में इस भाषा का 'प्राकृत' शब्द से निर्देश, (६) नाट्य-शास्त्र में और प्राकृत-व्याकरणों में निदिष्ट अर्धमागधी के साथ प्रस्तुत अर्धमागधी की असमानता ।

१. मागधी भाषा में अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द के प्रथमा के एकवचन में 'ए' होता है ।

२. इसका अर्थ यह है कि प्राचीन धार्माचार्यों ने "पुरातन सूत्र धर्ममागधी भाषा में नियत है" इत्यादि वचन-द्वारा धार्मिक भाषा को जो धर्ममागधी भाषा रही है वह प्रायः मागधी भाषा के इसी एक एकारवाले विधान को लेकर, न कि प्रागे कहे जाव वाले मागधी भाषा के अन्य लक्षण के विधान को लेकर ।

३. इसी वचन के आधार पर डॉ० हर्नलिस का चण्डकृत प्राकृतनकाश के इन्ट्रोडक्शन (पृष्ठ १८-१९) में यह लिखना कि हेमचन्द्र के मत में 'पोराण' धार्मिक प्राकृत का एक नाम है, 'अम-भूषण' है क्योंकि यहाँ पर 'पोराण' यह सूत्र का ही विशेषण है, भाषा का नहीं ।

४. भावश्यकपूत्र के पारिभाषिकप्रकरण (दे० सा० पु० ५० पृ० ६२८) में यह सुषुप्त भाषा इस तरह है :—
"पुन्यावरसजुत वेचरकरं सर्वतमविहृद । पोराणमदमागहभासानियमं हृद मुत् ।"

५. Kalpa Sutra, Sacred Books of the East, Vol. XII.

६. Grammatik der Prakrit-Sprachen, 1^c-17.

७. जैसे धार्माचार्य हेमचन्द्र ने अपने प्राकृत-व्याकरण में महाराष्ट्री भाषा के धर्म में प्राकृत शब्द का प्रयोग किया है वैसे पंडित वेचरदास ने भी अपने प्राकृत-व्याकरण में, जो केवल हेमचार्म्य के ही प्राकृत व्याकरण के आधार पर रचा गया है, सर्वत्र साहित्यिक महाराष्ट्री के धर्म में ही प्राकृत शब्द का व्यवहार किया है ।

प्रथम दलील के उत्तर में हमें यहाँ अधिक कहने की कोई आवश्यकता नहीं, इसी प्रकरण के अन्त में महाराष्ट्री से अर्धमागधी की विशेषताओं की जो सख्ति सूची दी गई है वही पर्याप्त है। इसके अतिरिक्त डॉ. वनारसीदास की 'अर्धमागधी रीडर', मुनि श्रीरत्नचन्द्रजी की 'जैन सिद्धान्त कौमुदी' और डॉ. पिराल का 'प्राकृत व्याकरण' मौजूद हैं; जिनमें क्रमशः अधिकाधिक संख्या में अर्धमागधी की विशेषताओं का संग्रह है। आचार्य हेमचन्द्र के ही प्राकृत-व्याकरण के 'आर्पम्' सूत्र से, इसकी स्पष्ट और सर्वभेदग्राही व्यापक व्याख्या से और जगह-जगह किए हुए आर्प के सोदाहरण उल्लेखों से दूसरी दलील की निर्मूलता सिद्ध होती है। यदि आचार्य हेमचन्द्र द्वारा ही निर्दिष्ट की हुई दो-एक विशेषताओं के कारण घृष्टिपेशाची अलग भाषा मानी जा सकती है, अथवा आठ दस विशेषताओं को लेकर शीरसेनी, मागधी और पेशाची भाषाओं को भिन्न भिन्न भाषा स्वीकार करने में आपत्ति नहीं की जा सकती, तो कोई बजह नहीं है कि उसी व्याकरण के द्वारा प्रसारान्तर से अथवा स्पष्ट रूप से बनाई हुई ऐसी ही अनेक विशेषताओं के कारण आर्प या अर्धमागधी भी भिन्न भाषा न कही जाय। तीसरी दलील की जब यह भ्रान्त संस्कार है कि 'वही भाषा अर्धमागधी कही जाने योग्य हो सकती है जिसमें मागधी भाषा का आधा अंश हो'। इसी भ्रान्त संस्कार के कारण चौथी दलील में उद्धृत निशोच्युगि क अर्धमागधी के प्रथम लक्षण का सत्य और सीधा अर्थ भी उक्त पंडितजी की समझ में नहीं आया है। इस भ्रान्त संस्कार का निराकरण और निशोच्युगिगर द्वारा वताए हुए अर्धमागधी के प्रथम लक्षण का और उसके वास्तविक अर्थ का निर्देश इसी प्रकरण में आगे चलकर अर्धमागधी के मूल की आलोचना के समय किया जायगा, जिससे इन दोनों दलीलों के उत्तरों का यहाँ दुहराने की आवश्यकता नहीं है। पाँचवीं दलील भी प्राचीन आचार्यों के द्वारा जैन सूत्र ग्रन्थों की भाषा के अर्थ में प्रयुक्त किए हुए 'प्राकृत' शब्द की 'महाराष्ट्री' के अर्थ में पसीटने से ही हुई है। मालूम पड़ता है, पंडितजी ने जैसे अपने व्याकरण में 'प्राकृत' शब्द को बगल महाराष्ट्री के लिए रिजर्व कर रखा है वैसे सभी प्राचीन आचार्यों के 'प्राकृत' शब्द का भी वे एकमात्र महाराष्ट्री के ही अर्थ में सुकर किया हुआ समझ बैठे हैं। परन्तु यह समझ गलत है। प्राकृत शब्द का मुख्य अर्थ है प्रादेशिक कथ्य भाषा—लोक भाषा। प्राकृत शब्द की व्युत्पत्ति भी वास्तव में इसी अर्थ से सगति रखती है यह हम पहले ही अच्छी तरह प्रमाणित कर चुके हैं। तिसर शब्द की पद्य शतावली के आचार्य वण्डी ने अपने काव्यादर्श में—

'शीरसेनी च गौरी च नाटो चाप्या च ताहणो । याति प्राकृतमित्येव एवद्वारेणु संनिधिम् ॥' (१, ३५) ।

इन खुले वादों में यही बात कही है। इससे भी यह स्पष्ट है कि प्राकृत शब्द मुख्यतः प्रादेशिक लोक भाषा का ही वाचक है और इससे साधारणतः सभी प्रादेशिक ग्रन्थ भाषाओं के अर्थ में इसका प्रयोग होता आया है। वण्डी के समय तक के सभी प्राचीन ग्रन्थों में इसी अर्थ में प्राकृत शब्द का व्यवहार देखा जाता है। खुद वण्डी ने भी महाराष्ट्री भाषा में प्राकृत शब्द के प्रयोग को प्रकृत शब्द से विशेषित करते हुए इसी बात का समर्थन किया है। वण्डी के महाराष्ट्री को 'प्रकृत प्राकृत' कहने के बाद ही से विशेष प्रसिद्धि होने के कारण, महाराष्ट्री के अर्थ में 'प्रकृत' शब्द को छोड़ कर केवल प्राकृत शब्द का भी प्रयोग हेमचन्द्र आदि, किन्तु वण्डी के पीछे के ही विद्वानों ने, कहीं कहीं किया है। पंडितजी ने वस्तुविधि के समय से लेकर पीछले आचार्यों का महाराष्ट्री के ही अर्थ में प्राकृत शब्द का व्यवहार करने की जो बात उक्त टिप्पणी में ही लिखी है उससे प्रतीत होता है कि उन्होंने न तो वस्तुविधि का ही व्याकरण देखा है और न उनके पीछे के आचार्यों के ही ग्रन्थों का निरीक्षण करने की कोशिश की है, क्योंकि वस्तुविधि ने तो 'शेष महाराष्ट्रीवत्' (शकृतप्रकाश १२, ३२) कहते हुए इस अर्थ में महाराष्ट्री शब्द का ही प्रयोग किया है, न कि प्राकृत शब्द का। आचार्य हेमचन्द्र ने भी कुमारपालचरित में 'पाश्चात्ति माहादि' (१, १) में बहुवचन का निर्देश कर और देशानाममाला (१, ४) में 'विषे' शब्दलापकर 'प्राकृत' का प्रयोग साधारण

१. 'आर्पे प्राकृत बहुल भवति । तदपि यथास्थान दशयिष्याम । आर्पे हि सर्वे निषयो विस्तर्यन्ते' (हिं० प्रा० १, ३) ।
२. देवो, हेमचन्द्र प्राकृत व्याकरण के १, ४६ १, ४७ १, ७६ १, ११८, १, ११९ १, १२१ १, १७७, १, २२८, १, २५४ १, २७ २, २११ २, २६६ २, १०११, २, १०४, २, १४६, २, १७४, ३, १६२ और ४, २८७ सूत्रों की व्याख्या ।
३. 'ऊपरला वधा उल्लेखोमा वपरावेलो 'प्राकृत' शब्द प्राकृत भाषाको सूचक छे ऋणुयोद्धारभा 'प्राकृत' शब्द प्राकृत भाषाका ग्रन्थमा वपरावेलो छे । (७० १३१ सं०) । व्याकरण वस्तुविधिना समययो तो ए शब्द ज अर्थमा वपरावेलो आवयो छे; अने ए पद्धीना आचार्योंए पण ए शब्दने ए ज अर्थमा वापरवेलो छे, याते कोईए ग्रहीं ए शब्दने वरववो नहीं ।' (प्राकृत-व्याकरण, प्रवेश, १४ २६ टिप्पणी) ।
४. 'महाराष्ट्राश्रया भाषा प्रकृत प्राकृतं विदुः' (काव्यादर्श १, ३४) ।

लोक भाषा के ही अर्थ में ही किया है। आचार्य ढण्डी और हेमचन्द्र ही नहीं, बल्कि पिस्त की नयी शताब्दी के कवि राजदोस्तर, ग्यारहवीं शताब्दी के नमिसायु, उन्नीसवीं शताब्दी के प्रेमचन्द्रतर्कगोश प्रभृति प्रभूत जैन और जैनतर विद्वानों ने इसी अर्थ में प्राकृत शब्द का प्रयोग किया है। इस तरह जब यह अभ्रान्त सत्य है कि प्राचीन काल से लेकर आज तक प्राकृत शब्द प्रादेशिक कण्ठ भाषा के अर्थ में व्यवहृत होता आया है और इसका मुख्य और प्राचीन अर्थ साधारणतः सभी और विशेषतः बौद्धों में प्रादेशिक भाषा है, तब प्राचीन आचार्यों द्वारा भगवान् महावीर की उपदेश-भाषा के और उनके समसामयिक शिष्य सुधर्मसामि-अणीत जैन भूजों की भाषा के ही अभिप्राय में प्रयुक्त किए हुए 'प्राकृत' शब्द का 'अर्थ भगवत् प्रदेश (जहाँ भगवान् महावीर और सुधर्मस्वामी का उपदेश और विचरण होता प्रसिद्ध है) की लोक-भाषा (अर्थमागधी)' इस सुसंगत अर्थ को छोड़ कर भगवत् प्रदेश 'महाराष्ट्र (जहाँ न तो भगवान् महावीर का और न सुधर्मस्वामी का ही उपदेश या विहार होता माना गया है) की भाषा (महाराष्ट्री)' यह असंगत अर्थ लगाना, अपनी हीन विवेचना शक्ति का परिचय देना है। इसी तिलसिले में पंडितजी ने अनुयोगद्वारा सूत्र की एक अपूर्ण गाथा उद्धृत की है। यदि उक्त पंडितजी अनुयोगद्वारा की गाथा के पार्श्व का यहाँ पर उल्लेख करने के पहले इस गाथा के मूल स्थान को ढूँढ़ पाते और वे प्राकृत शब्द से जिस भाषा (महाराष्ट्री) का ग्रहण करते हैं इसके और प्राचीन भूजों की अर्थमागधी भाषा के इतिहास को न जानते हुए भी सिके उत्तरार्थ सहित इस गाथा पर ही प्रकरण संहति के साथ जरा गौर से विचार करने का कष्ट उठाते, तो हमारा यह विश्वास है कि वे कम से कम इस गाथा का यहाँ हवाला देने का सहस्र और अनुयोगद्वारा के कर्ता पर अधमागधी के विस्मरण का व्यङ्ग्य-वाण छोड़ने की धृष्टता कदापि नहीं कर पाते। क्योंकि इस गाथा का मूल स्थान है तृतीय अंग-प्रथम जिसका नाम स्थानाङ्ग-सूत्र है। इसी स्थानाङ्ग-सूत्र का सम्पूर्ण स्वर प्रकरण को अनुयोगद्वारा सूत्र में उद्धृत किया गया है जिसमें वह गाथा भी शामिल है। वह सम्पूर्ण गाथा इस तरह है —

‘सकृता पाता चेत्तु दुष्टा भण्णिंभी माहिया । सरमठलमि पिग्गवे पठया इतिमासिता ॥’

इसका शब्दार्थ है—“सकृत् और प्राकृत वे दो प्रकार की भाषाएँ कही गई हैं, गाये जाते स्वर-समूह (पद-प्रभृति) में अतिमासिता—प्राप्त भाषा प्रकृत है।” यहाँ पर प्रकरण है सामान्यतः गीत की भाषा का। वर्तमान समय की तरह उस समय भी सभी भाषाओं में गीत होते थे। इससे यहाँ पर इन सभी भाषाओं का निर्देश करना ही सूत्रकार को अभिप्रेत है जो उन्होंने सकृत्—व्याकरण सस्तरा युक्त भाषा और प्राकृत—व्याकरण-सस्तरा-रहित—लोक-भाषा इन दो मुख्य विभागों में किया है। इस तरह इस गाथा में पहले गीत की भाषाओं का सामान्य रूप से निर्देश कर बाद में इन भाषाओं में जो प्रसक्त है वह ‘अतिमासिता’ इस विशेष रूप से बताई गई है। यदि यहाँ पर प्राकृत शब्द का प्रादेशिक लोक भाषा यह सामान्य अर्थ न लेकर पंडितजी के कथनानुसार ‘महाराष्ट्री’ यह विशेष अर्थ लिया जाय तो गीत की सभी भाषाओं का निर्देश, जो सूत्रकार का करना आवश्यक है, कैसे हो सकता है? क्या उस समय अन्य लोक-भाषाओं में गीत होते ही न थे? गीत का ठेका क्या सत्तल और महाराष्ट्री इन दो भाषाओं को ही मिला हुआ था? यह कभी सम्भावित नहीं है। इसी गाथा के उत्तरार्थ के ‘पसथा इतिमासिता’ इस वचन से अधेमागधी की सूचना ही नहीं, बल्कि उसका श्रेष्ठपन भी सूत्रकार ने स्पष्ट रूप में बताया है। इससे पंडितजी के उस कथन में कुछ भी सत्याश नजर नहीं आता है, जो उनके सूत्रकार के अधेमागधी की अलग सूचना न करने के बारे में किया गया है।

जैसे बौद्धसूत्रों की मागधी (पालि) से नाट्य-शास्त्र या प्राकृत व्याकरणों में निदिष्ट मागधी भिन्न है वैसे जैन सूत्रों की अधेमागधी से नाट्य शास्त्र की या प्राकृत व्याकरणों की अधेमागधी भी अलग है। इससे बौद्धसूत्रों की मागधी नाट्य-शास्त्र या प्राकृत व्याकरणों की मागधी से मेल न रखने के कारण जैसे महाराष्ट्री न कही जाकर मागधा नहीं जाती है वैसे जैन सूत्रों की अधेमागधी भाषा भी नाट्य शास्त्र या प्राकृत व्याकरणों की अधेमागधी से समान न होने की वजह से ही महाराष्ट्री न कही जाकर अधेमागधी ही कही जा सकती है।

१. ‘पसथा सकृत्तं बंधी पाठय बोधिय होद सुवमारो’ (कर्पूरमञ्जरी, अङ्क १)।

२. ‘सुरमेन्वि प्राकृतभाषेन, तथा प्राकृतमेवापन्न यः’ (काव्यालङ्कार टिप्पण २, १२)।

३. ‘सर्वात्मानेन प्राकृतभाषाया’—(काव्यादर्श-टीका १, ३३), ‘तद्विद्योपनेन देवनागरीवर्तमाना सर्वा एव भाषा प्राकृतसंज्ञोपपन्न इति सूचितम्’ (काव्यादर्श-टीका १, ३४)।

भरत-रचित कहे जाते नाट्यशास्त्र में जिन सात भाषाओं का उल्लेख है उनमें एक अर्धमागधी भी है।^१ इसी नाट्यशास्त्र में नाटकों के नीरर, राजपुत्र और श्रेष्ठी इन पात्रों के लिए इस भाषा का प्रयोग निर्दिष्ट किया गया है। इससे नाटकों में इन पात्रों की जो भाषा है वह अर्धमागधी कही जाती है। परन्तु नाटकों की अर्धमागधी और जैन सूत्रों की अर्धमागधी में परस्पर समानता की अपेक्षा इतना अधिक भेद है कि यह एक दूसरे से अभिन्न कभी नाटकीय अर्धमागधी नहीं कही जा सकती। मार्कण्डेय ने अपने प्राकृत-व्याकरण में मागधी भाषा के लक्षण बताकर उसी जैन-सूत्रों की अर्धमागधी प्रकरण के शेष में अर्धमागधी भाषा का यह लक्षण कहा है—^२ “शौरसेन्या प्रदुरत्वादिप्रवाधमागधी” से भिन्न है अर्थात् शौरसेनी भाषा के निरुद्ध-वर्ती होने के कारण मागधी ही अर्धमागधी है। इस लक्षण के अनन्तर उन्होंने उक्त नाट्य-शास्त्र के उस वचन को उद्धृत किया है, जिसमें अर्धमागधी के प्रयोगार्ह पात्रों का निर्देश है और इसके बाद उदाहरण के तौर पर वेणोसहार की राज्ञसी की एक उक्ति का उल्लेख कर अर्धमागधी का प्रकरण खतम किया है। इससे यह स्पष्ट मालूम होता है कि भरत का अर्धमागधी विषयक उक्त वचन और मार्कण्डेय का अर्धमागधी-विषयक उक्त लक्षण नाटकीय अर्धमागधी के लिए ही रचित है; जैन सूत्रों की अर्धमागधी के साथ इसका कोई संबंध नहीं है। क्रमदीश्वर ने अपने प्राकृत-व्याकरण में अर्धमागधी का जो लक्षण दिया है वह यह है—^३ “महाराष्ट्रीमिश्रा धर्मागधी” अर्थात् महाराष्ट्री से मिश्रित मागधी भाषा ही अर्धमागधी है। जान पड़ता है, क्रमदीश्वर का यह लक्षण भी नाटकीय अर्धमागधी के लिए ही प्रयोग्य है, क्योंकि उक्त नाट्यशास्त्र में जिन पात्रों के लिए अर्धमागधी के प्रयोग का नियम बताया गया है, अनेक नाटकों में उन पात्रों की भाषा भिन्न-भिन्न है।^४ संभवतः इसी भिन्नता के कारण ही क्रमदीश्वर ने और मार्कण्डेय ने अर्धमागधी के भिन्न भिन्न लक्षण दिए हैं।

जैसे हम पहले कह चुके हैं, जैन सूत्रों की अर्धमागधी में इतर भाषाओं की अपेक्षा महाराष्ट्री के लक्षण अधिक देखने में आते हैं। किन्तु यह याद रखना चाहिए कि ये लक्षण साहित्यिक महाराष्ट्री से जैन अर्धमागधी में नहीं आये हैं। इसका कारण यह है कि जैन सूत्रों की अर्धमागधी भाषा साहित्यिक महाराष्ट्री भाषा से अधिक प्राचीन है और इससे यही (अर्धमागधी) महाराष्ट्री का मूल कही जा सकती है।^५ डॉ. हॉर्नलि ने जैन अर्धमागधी महाराष्ट्री से अर्धमागधी को ही आर्य प्राकृत कहकर इसीको परवर्ती काल में उत्पन्न नाटकीय अर्धमागधी, महाराष्ट्री और शौरसेनी भाषाओं का मूल माना है। आचार्य हेमचन्द्र ने अपने प्राकृत-व्याकरण में महाराष्ट्री नाम न देकर प्राकृत के सामान्य नाम से एक भाषा के लक्षण दिए हैं और उनके उदाहरण साधारण तौर से अर्वाचीन महाराष्ट्री-साहित्य से उद्धृत किये हैं; परन्तु जहाँ अर्धमागधी के प्राचीन जैन ग्रन्थों से उदाहरण लिए हैं वहाँ इसको आर्य प्राकृत का विशेष नाम दिया है। इससे प्रतीत होता है कि आचार्य हेमचन्द्र ने भी एक ही भाषा के प्राचीन रूप को आर्य प्राकृत और अर्वाचीन रूप को महाराष्ट्री मानते हुए आर्य प्राकृत को महाराष्ट्री का मूल स्वीकार किया है।

नाटकीय अर्धमागधी में मागधी भाषा के लक्षण अधिकांश में पाये जाते हैं इससे ‘मागधी से ही अर्धमागधी भाषा की उत्पत्ति हुई है और जैन सूत्रों की भाषा में मागधी के लक्षण अधिक न मिलने से वह अर्धमागधी कहलाने योग्य नहीं’ यह जो भ्रान्त संस्कार कई लोगों के मन में जमा हुआ है, उसका मूल है अर्धमागधी शब्द को मागधी भाषा के अपभ्रंश

१. “मागध्यवतिता प्राष्या सूरन्यधर्मागधी। बाहीका दाशिणास्या च सप्त भाषा प्रतीतिता।” (१७, ४८)।

२. “चेदना राजपुत्राणां यं द्विगं चार्धमागधी” (भरतीय नाट्यशास्त्र, निर्णयसामग्री संस्करण, १७, ५०)।

मार्कण्डेय ने अपने व्याकरण में इस विषय में भरत का नाम देकर जो वचन उद्धृत किया है वह इस तरह है—“रासो-थो द्विचेतुरास्यधर्मागधी” इति भरतः। यह पाठान्तर ज्ञात होता है।

३. प्राकृतसर्वस्व (पृष्ठ १०३)।

४. संक्षिप्तसार (पृष्ठ ३८)।

५. देखो, भाग-रचित कह जाते ‘बाह्यस्त’ और ‘स्वभावस्तदत्’ में क्रमशः चेट तथा चेटो की भाषा और शुद्ध के ‘पृच्छन्तिक’ में चेट और यंष्टी चन्दनदास की भाषा।

६. “It thus seems to me very clear, that the Prākṛit of Chanda is the ARSHA or ancient (Purana) form of the Ardhamāgadhī, Mahārāṣṭrī and Sauraseni.” (Introduction to Prākṛita Lakṣhana of Chanda, Page XIX).

में ग्रहण करना, अर्थात् 'अर्थ मागध्या' यह व्युत्पत्ति कर 'जिसका अर्थात् मागधी भाषा वह अर्थमागधी' ऐसा करना।
 वस्तुतः अर्थमागधी शब्द की न वह व्युत्पत्ति ही सत्य है और न वह अर्थ ही। अर्थमागधी शब्द की वास्तविक व्युत्पत्ति है 'अर्थमगधयेयम्' और इसके अनुसार इसका अर्थ है 'मगध देश के अर्थात् मागधी भाषा वह अर्थमागधी'। यही बात ख्रिस्त की सातवीं शताब्दी के ग्रन्थकार श्रीजिनदासगणि महत्तर ने निशेधपूर्ण नामक ग्रन्थ में 'पोरखमदमगहमासानिय हब सुत' इस उल्लेख के 'अर्थमागध' शब्द की व्याख्या के प्रसङ्ग में इन स्पष्ट शब्दों में कही है — 'मगहद्विसवमासानिवद धदमागह' अर्थात् मगध देश के अर्थ प्रदेश की भाषा में निरुद्ध होने के कारण प्राचीन सूत्र 'अर्थमागध' कहा जाता है।

परन्तु, अर्थमागधी का मूल उत्पत्ति स्थान पश्चिम मगध अथवा मगध और शूरसेन या मध्यवर्ती प्रदेश (अयोध्या) होने पर भी जैन अर्थमागधी में मागधी और शूरसेनी भाषा के विशेष लक्षण देखने में नहीं आते। महाराष्ट्री के साथ ही इसका अधिक सादृश्य नजर आता है। यहाँ पर प्रश्न होता है कि इस सादृश्य का कारण क्या है? सर प्रियर्सन ने अपने प्राकृत भाषाओं के भौगोलिक विवरण में यह स्थिर किया है कि जैन अर्थमागधी मध्यदेश (शूरसेन) और मगध के मध्यवर्ती देश (अयोध्या) की भाषा थी एवं आधुनिक पूर्वीय हिन्दी उससे उत्पन्न हुई है। किन्तु हम देखते हैं कि अर्थमागधी के लक्षणों के साथ मागधी, शूरसेनी और आधुनिक पूर्वीय हिन्दी का कोई सम्बन्ध नहीं है, परन्तु महाराष्ट्रा प्राकृत और आधुनिक मराठी भाषा के साथ उसका सादृश्य अधिक है। इसका कारण क्या? किसीने अभी तक यह ठीक-ठीक नहीं बताया है। यह सम्भव है, जैसा हम पाटलिपुत्र के सम्मेलन के प्रसंग में ऊपर कह आये हैं, चन्द्रगुप्त के राजत्वकाल में (ख्रिस्त पूर्व ३१०) बारह वर्षों के अफ़ास का समय जैन मुनि सघ पाटलीपुत्र से दक्षिण की ओर गया था। उस समय वहाँ के प्राकृत के प्रभाव से आग ग्रन्थों की भाषा का कुछ कुछ परिवर्तन हुआ था। यहाँ महाराष्ट्रा प्राकृत का आपस प्राकृत का साथ सादृश्य का कारण हो सकता है।

सर आर. जि. भाण्डारकर जैन अर्थमागधी का उत्पत्ति समय क्रिस्तीय द्वितीय शताब्दी मानते हैं। उनके मत में कोई भी साहित्यिक प्राकृत भाषा ख्रिस्त की प्रथम या द्वितीय शताब्दी से पहले की नहीं है। शायद इसी मत का अनुसरण कर डॉ. मुनाविक्कुमार चटर्जी ने अपनी Origin and Development of Bengalee Language नामक पुस्तक में (Introduction, page 18) समस्त नाटकीय प्राकृत भाषाओं का और जैन अर्थमागधी का उत्पत्ति काल क्रिस्ताव्य तृतीय शताब्दी स्थिर किया है। परन्तु त्रिरेन्द्रम् से प्रभावित भास रचित कहे जाते

नाटकों का निर्माण-समय अन्ततः ख्रिस्त की दूसरी शताब्दी के बाद का न होने से और अश्वघोष-वृत्त बौद्ध धर्म विषयक नाटकों के जो कतिपय अंश डॉ. ह्युडर्सने प्रभावित किए हैं उनका समय ख्रिस्त की प्रथम शताब्दी निश्चित होने से यह प्रमाणित होता है कि उस समय भी नाटकीय प्राकृत भाषाएँ प्रचलित थीं। और डॉ. ह्युडर्सने यह स्वीकार किया है कि अश्वघोष के नाटकों में जैन अर्थमागधी भाषा का निदर्शन है। इससे जैन अर्थमागधी की प्राचीनता का यह भी एक विश्वस्त प्रमाण है। इससे अतिरिक्त, डॉ. जेनेरो जैन सूत्रों की भाषा और मधुर के शिलालेखों (ख्रिस्तीय सन् ८३ से १७६) की भाषा से यह अनुमान करते हैं कि जैन आग ग्रन्थों की अर्थमागधी का काल ख्रिस्त पूर्व चतुर्थ शताब्दी का शेष भाग अथवा ख्रिस्त पूर्व तृतीय शताब्दी का प्रथम भाग है। हम डॉ. जेनेरो के इस अनुमान को ठाक समझते हैं जो पाटलिपुत्र के उस सम्मेलन से सगति रखता है जिसका उल्लेख हम पूरा कर चुके हैं।

संस्कृत के साथ महाराष्ट्री के जा प्रधान-प्रधान भेद हैं, उनका संक्षिप्त सूची महाराष्ट्री का प्रकरण में दी जायगा। यहाँ पर महाराष्ट्री से अर्थमागधी की जो मुख्य मुख्य विशेषताएँ हैं उनकी संक्षिप्त सूची दी जाती है। उससे अर्थ मागधी के लक्षणों के साथ महाराष्ट्री के लक्षणों की तुलना करने पर यह अच्छा तहह्वात हो सकता है कि महाराष्ट्री की अपेक्षा अर्थमागधी का वैदिक और लौकिक संस्कृत से अधिक निकटता है जो अर्थ मागधी की प्राचीनता का एक श्रेष्ठ प्रमाण कहा जा सकता है।

वर्णभेद

१ दो स्वरों के मध्यवर्ती असंयुक्त क के स्थान में प्रायः सर्वत्र ग और अनेक स्थलों में त और य होता है, जैसे—

ग—प्रवल्प = पण्य धानर = धानर धान्य = धान्य प्रवार = पवार यावक = सावय विवर्बक = विवर्बय निवेरक = निवेरय,

लोक = लोप भाकृति = भागद।

त—भारायक = भाराहत (ठाण्णमूला—पत्र ३१७), सामायिक = सामावित (ठा० ३२२), विशुद्धिक = विशुद्धित (ठा० ३२२), अधिक = अधिक (ठा० ३६३), शकुनिक = सावणित (ठा ३६३), नैपथिक = ऐसजित (ठा० ३६७), वीरासनिक = वीरासणित (ठा० ३६७), वर्धकि = वधुति (ठा० ३६८), नैरयिक = नेरवित (ठा० ३६६), सोमंतक = सोमतत (ठा० ४५८), नरकात् = नरतातो (ठा० ४५८), माडम्बिक = माडवित (ठा० ४५६), कौटम्बिक = कौटुबित (ठा० ४५६), सचयुक्तेण = सचयुक्तेण (विपाकयुत—पत्र ५), कूणिक = कूणित (विपा० ५ टि), भवितकात् = भविततातो (विपा० ७), रहसिकेन = रहसितेण (विपा ४, १८) इत्यादि ।
य—कायिक = काय, लोक = लोय वगैरह ।

२. दो स्वरों के बीच का असंयुक्त य प्राय कायम रहता है । कहीं-कहीं इसका त और य होता है; जैसे—भागम = भागप, भागमन = भागमण, आनुगायिक = आनुगायि, भागमिष्वत् = भागमिष्व, जागर = जागर भगारिन् = भगारि, भगवन् = भगव भतिग = भवित (ठा० ३६७), सागर = सागर ।

३. दो स्वरों के बीच के असंयुक्त च और ज के स्थान में त और य समय ही होता है । च के उदाहरण, जैसे—नाराच = नारात (ठा० ३५७), वचस् = वति (ठा० ३६८, ४५०), प्रवचन = पावसण (ठा० ४५१), कदाचित् = कदातो (विपा० १७, ३०), वाचना = वायणा, उपचार = उवयार, लोच = लोय, प्राचार्य = प्रायरि । ज के कुछ निदर्शन ये हैं—भोगिन् = भाति (सूत्र २, ६, १०) वज्र = वतिर (ठा० ३५७), पूजा = पूता (ठा० ३५८), राजेवर = रातोसर (ठा० ४५६), आरम्भ = भवतते (विपा० ४ टि), प्रजात = पयाय, नामध्वजा = कामरमया, आरम्भ = भवतय ।

४. दो स्वरों का मध्यवर्ती त प्राय कायम रहता है कहीं-कहीं इसका य होता है, यथा—वन्दते = वदति, नमस्यति = नमसति, पशुपास्ते = पशुवासति (सूत्र २, ७, विपा—पत्र ६), जितेन्द्रिय = जितिन्द्रिय (सूत्र २, ६, ५), सतत = सतत (सूत्र १, १, ४, १२), भवति = भवति (ठा०—पत्र ३१७), भतरित = भतरित (ठा० ३४६), सेवत = सेवत (ठा० ३६३), जाति = जाति, प्राकृति = प्रागिति, विहरति = विहरति (विपा—५), पुरत = पुरतो, करोति = करेति (विपा० ६), तत = तते (विपा० ६, ७, ८), सदितसु = सदितसु, संलपति = संलपति (विपा० ७, ८), प्रवृत्ति = पवृत्ति (विपा० १५, १६), करतल = करयल ।

५. स्वरों के बीच में स्थित द का व और त ही अधिनाश में देखा जाता है, कहीं-कहीं य भी होता है, जैसे—
द—प्रदिरा = पदितो (भावा), भेद = भेद, भनादिकं = भनादियं (सूत्र २, ७), वदत् = वदमाण, नवति = एवति, जनपद = जणवद, वेदिप्यति = वेदिहिती (ठा०—पत्र क्रम ३२१, ३६३, ४५८, ४५६) इत्यादि ।

त—पदा = जता, पाद = पाव, निवाद = निवात, नदी = नती, मुपावाद = मुसावात, वादिक = वातित, भग्यदा = भवता, कदाचित् = कदातो (ठा—पत्र क्रम ३१७, ३४६, ३६३, ३६७, ४५०, ४५१, ४५८, ४५६), यदि = जति, विरादिक = विरातोत (विपा० पत्र ४) इत्यादि ।

य—प्रतिष्ठादन = पठिष्ठायण, चतुष्वद = चउष्य वगैरह ।

६. दो स्वरों के मध्य में स्थित व के स्थान में प्राय सर्वत्र व ही होता है, यथा—पापक = पावग, सलपति = सलवति, सोपचार = सोवयार, भतिपात = भतिवात, उपगीत = उवलीय, धन्युपपन्न = धन्योववण, उपपूठ = उपवूठ, प्राधिपत्य = भाद्वेष, सपक = तपय, व्यपरोषित = यवरोषित इत्यादि ।

७. स्वरों के मध्यवर्ती य प्राय कायम रहता है, अनेक स्थानों में इसका त देखा जाता है, जैसे—

य—वायव = वायव, त्रिय = त्रिय, निरय = निरय, इन्द्रिय = इन्द्रिय, गायति = गायद भ्रुति ।

त—स्थाल = सिता, सामायिक = सामावित, कायिक = कावित, पातमिष्यति = पातमिष्यति, पर्याय = परितात, नायक = एताय, गायति = गातति, स्थायिन् = ठाति, शायिन् = साति, नैरयिक = नेरवित (ठा० पत्र क्रम ३१७, ३२२, ३२३, ३५७, ३५८, ३६३, ३६४, ३६७, ३६८, ३६६), इन्द्रिय = इन्द्रित (ठा० ३२२, ३५५) इत्यादि ।

८. दो स्वरों के बीच के व के स्थान में व, त, और य होता है; यथा—

य—वायव = वायव, गौरव = गारव, भवति = भवति, अनुविचिन्त्य = अनुवीति (सूत्र १, १०, १३) इत्यादि ।

त—परिवार = परिताव, भवि = कति (ठा० पत्र क्रम ३५८, ३६३) इत्यादि ।

य—परिवर्तन = परिवट्टण, परिवर्तना = परिवट्टणा (ठा० ३४६) वगैरह ।

९. महाराष्ट्री में स्वर-मध्यवर्ती असंयुक्त ऋ, ए, अ, इ, उ, ए, ओ, य, व इन व्यञ्जनों का प्रायः सर्वत्र लोप होता है और प्राट्प्रभासा आदि प्राङ्प्रत्ययान्तों के अनुसार इन लुप्त व्यञ्जनों के स्थान में अन्य कोई वर्ण नहीं होता । सेतुवन्ध, गाथासप्तशती और कर्पूरमञ्जरी आदि नाटकों की महाराष्ट्री भाषा में भी यह लक्षण ठीक-ठीक देखने में

आता है। आचार्य हेमचन्द्र के प्राकृत व्याकरण के अनुसार उक्त लुप्त व्यञ्जनों के दोनों तरफ अर्ध (ध या भा) हाने पर लुप्त व्यञ्जन के स्थान में 'य' होता है। 'गडडवहा' में यह 'य' अधिक मात्रा में (उक्त व्यञ्जनों के पूर्व में अर्धगोभन् स्वर रहने पर भी) पाया जाता है। परन्तु जैन अधर्मागवी में, जैसा हम ऊपर देख चुके हैं, प्रायः उक्त व्यञ्जनों के स्थान में अन्य अन्य व्यञ्जन होते हैं और कहीं कहीं ता वहा व्यञ्जन वायम रहता है। हाँ, कहीं कहीं उक्त व्यञ्जनों के स्थान में अन्य व्यञ्जन हाने या वही व्यञ्जन रहने के बदले महाराष्ट्री की तरह लोप भा दूखा जाता है, किन्तु यह लोप वहाँ पर ही दरने में आता है जहाँ उक्त व्यञ्जनों के वाद ध या भा से भिन्न कोई स्वर होता है, जैसे—लोक = लोभो, रोषित = रोदह, भोजन् = भोद, भ्रातुर = भ्रातर, भ्रादेशि = भ्राप्ति, कायिक = काश्म भ्रावेश = भ्राएष उगीरह।

१०. शब्द व आदि में, मध्य में और सयोग में सर्वत्रण की तरह न भा होता है; जैसे—नदी = नई, शातपुत्र = नायपुत्र, भ्रातृनाल = भ्रातृनाल, धनत = धनत, धनित = धनित, प्रसा = पन्सा, श्योग्य = धनमन्, विश = विन्तु, सर्वत = सर्वन्तु इत्यादि।
११. एव क पूर्व क धन क स्थान में भाए होता है, यथा—यामेव = जामेव, सामेव = तामेव, क्षिप्रमेव = क्षिप्पामेव, एवमेव = एवामेव, पूर्वमेव = पुर्वामेव इत्यादि।
१२. दीर्घ स्वर के बाद के इति वा के स्थान में ति वा और इ वा होता है, जैसे—इत्यग्रह इति वा = इदमहे ति वा, इदमहे इ वा इत्यादि।
१३. यथा और यावत् शब्द के य वा लोप और न दोनों ही देखे जाते हैं, जैसे—यथाख्यात = ग्रहणखाय, यथाजात = ग्रहाजात, यथातानक = ग्रहाणामण, यावत्कया = भावकहा, यावजीव = जावजीव।

घर्णागम

१. गद्य में भी अनेक स्थलों में समास के उत्तर शब्द के पहले व आगम होता है, यथा—निरयगामी, वडु गारव, दीहगारव, रहस्सगारव, गौणमाह सामाह्यमाह्यमाह, मज्झइणमणुत्तोस, मडुक्कमसुता आदि। महाराष्ट्री के पद्य में पादपूर्ति के लिए ही कहीं कहीं य आगम देखा जाता है, गद्य में नहीं।

शब्द-भेद

१. अधर्मागवी में ऐसे प्रचुर शब्द हैं जिनका प्रयोग महाराष्ट्री में प्रायः उपलब्ध नहीं होता, यथा—मज्झक्खिण, मज्झोव-वण, मणुवीति भाषवणा, भाषवतण, आणापाम्म भावीकम्म, कएहुइ केमहात्थ, दुत्त, पचरियमित्त, पावहुवण पुरियमित्त, भोरेवच्च, महत्तिमहाणिया, वक्क, विउस इत्यादि।
२. ऐसे शब्दों की संख्या भी बहुत बड़ी है जिनके रूप अधर्मागवी और महाराष्ट्री में भिन्न भिन्न प्रकार के होते हैं। उनके कुछ उदाहरण नीचे दिए जाते हैं—

अधर्मागवी

प्रभियागम	भग्गयधय
भाउण	भाउवण
भाटण	उभाहरण
उप्प	उवदि, उवदि
क्रिया	निरिया
वीस, वेस	कौरस
वेवचिर	विमचिर
गेहि	गिदि
विमत्त	वइध
दध	दधक
जाया	जत्ता
एिगण, एिगिण (नन)	एणग
एिमिणिए (नाग्न्य)	एणगएण
तच्च (तुवीय)	तध

अधर्मागवी

तच्च (तच्च)	तच्च
तेगिग्या	चिइच्छा
हुसलसग	बारसग
दोच	दुइध
नितिय	एिध
निएय	एिधम
पडुपण	पडुप्पएण
पच्छेकम्म	पच्छावम्म
पाय (पाय)	पत
पुढी (पुपह)	पुई, पिई
पुरेकम्म	पुराकम्म
पुव्वि	पुव्व
माय (माय)	मत, मेत्त
माहण	महण

अर्धमागधी	महाराष्ट्री	अर्धमागधी	महाराष्ट्री
मितवधु, मेवध	मिलिच्छ	सोधाए, सुसाए	मसाए
वग्गू	वाधा	सुमिण	सिमिण
बाह्ण (उपाह)	उवाणभा	सुहम सुहम	सएह
सहेज	सहाम	सोहि	सुदि

और दुबालस, बारस, तेस, चउणतोस वतीच, पणतोस इत्यादि तेयास, पणयाम, चढयान एण्टि बावटि तेवटि छावटि, चढसटि, चउणतरि बावतरि पणतरि सतहतरि, तेयासी छलसोड बाणउड प्रभृति सख्या शब्दों के रूप अर्धमागधी में मिलते हैं, महाराष्ट्री में वैसे नहीं।

नाम विभक्ति

- अर्धमागधी में पुलिग अकारान्त शब्द के प्रथमा के एकवचन में प्राय सर्वत्र ए और क्वचित् ओ होता है, किन्तु महाराष्ट्री में ओ ही होता है।
- सप्तमी का एक वचन स्मि होता है जब महाराष्ट्री में म्मि।
- चतुर्थी के एक वचन में भाए या भाते होता है, जैसे—देवाए, सबरायाए, वमरायाए, भट्टाए, भट्टिताते, मनुभाते, भलभाते (अ० पृष्ठ १५८) इत्यादि महाराष्ट्री में यह नहीं है।
- अनेक शब्दों के तुताया के एकवचन में सा होता है, यथा—मणसा, बयसा, कायसा, बोयसा, बलसा, बन्धुसा, महाराष्ट्री में इनके स्थान में क्रमशः भणेण, वण्ण, काएण, बोणेण, बलेण, बन्धुणा।
- कम्म और वम्म शब्द के तुताया के एक वचन में पालि की तरह कम्भुणा और वम्भुणा होता है, जब कि महाराष्ट्री में वम्मेण और वम्मेण।
- अर्धमागधी में तत् शब्द के पञ्चमी के बहुवचन में तेम्मे रूप भी देखा जाता है।
- धुम्पत् शब्द की पट्ठी या एकवचन संस्कृत की तरह तव और भस्व की पट्ठी का बहुवचन मस्माकं अर्धमागधी में पाया जाता है जो महाराष्ट्री में नहीं है।

आख्यात विभक्ति

- अर्धमागधी ने भूतकाल के बहुवचन में इनु प्रत्यय है, जैसे—पुच्छिनु, गच्छिनु, माराविनु इत्यादि। महाराष्ट्री में यह प्रयोग लुप्त हो गया है।

धातु-रूप

- अर्धमागधी में माइकलड, कुब्बड भुवि होखलो वृया भग्गवी होखा, हुल्हा, पहारेखा, भाष, दुल्हद विगिषए, तिवायए, म्फासो, तिउट्टई तिउट्टेमा, पडितवयाति सारयती धेविउड सपुच्छिहिति भाहंनु प्रभृति प्रभूत प्रयोगों में धातु की प्रकृति, प्रत्यय अथवा ये दोनों जिस प्रकार में पाये जाते हैं महाराष्ट्री में वे भिन्न भिन्न प्रकार के देखे जाते हैं।

धातु-प्रत्यय

- अर्धमागधी में त्वा प्रत्यय के रूप अनेक तरह के होते हैं —

(क) दट्ट, जैसे—कट्ट, साहट्ट, मवहट्ट इत्यादि।

(ख) इता, एता, इताए और एताए यथा—चइता, विउट्टिता, पासिता, करेता, पासिताए, करेताए इत्यादि।

(ग) इत, यथा—डुलहिनु, नासितु, वधितु प्रभृति।

(घ) भा जैसे—जिभा, छभा सोभा, मोभा, चेभा वगैरह।

(ङ) इता, यथा—परिगलिषा, दुल्हिया आदि।

(च) इनके अतिरिक्त विउकम्म, निउम्म समिष चंभाए, वणुगेवि, सट्ट, सट्टण, दिस्वा इत्यादि प्रयोगों में 'त्वा' के रूप भिन्न भिन्न तरह के पाये जाते हैं।

- तुम् प्रत्यय के स्थान में इषए या इत्ते प्राय रूपों में आता है, जैसे—करितए, गच्छितए, संभुवितए, ववसामितते (विपा० १३), बिहरितए आदि।

- अकारान्त धातु के व प्रत्यय के स्थान में ह होता है, जैसे—बह, गह, मधिह, पावह, संभुह, विपह, वित्यह प्रभृति।

तद्धित

१. तर इत्यय का तराय रूप होता है; यथा—अष्टिद्वतराय, अष्ट्यतराय, बहुतराय, नवतराय इत्यादि ।
२. माउलो, माउलंतो, गोमी, बुल्लिम, मगवंतो, पुरल्लिम, पचल्लिम, घोयलो, दोल्लिणो, पोरेवच आदि इत्योगों में मतुप् और अन्य तद्धित प्रत्ययों के जैसे रूप जैन अर्धमागधी में देखे जाते हैं, महाराष्ट्री में वे भिन्न तरह के होते हैं ।

महाराष्ट्री से जैन अर्धमागधी में इनके अतिरिक्त और भी अनेक सूक्ष्म भेद हैं, जिनका उल्लेख अवस्तार-भय से यहाँ नहीं किया गया है ।

(५) जैन महाराष्ट्री

जैन सूत्र-ग्रन्थों के सिवा इवेताम्यर जैनों के रचे हुए अन्य ग्रन्थों की प्राकृत भाषा को 'जैन महाराष्ट्री' नाम दिया नाम-निर्देश और साहित्य गया है । इस भाषा में सीधेकर और प्राचीन मुनियों के चरित्र, कथाएँ, दर्शन, तर्क, ज्योतिष, भूगोल, स्तुति आदि विषयों का विशाल साहित्य विद्यमान है ।

प्राकृत के प्राचीन वैयाकरणों ने 'जैन महाराष्ट्री' यह नाम देकर किसी भी भिन्न भाषा का उल्लेख नहीं किया है । किन्तु आधुनिक पाश्चात्य विद्वानों ने व्याकरण, काव्य और नाटक-ग्रन्थों में महाराष्ट्री का जो रूप देखा जाता है उससे इवेताम्यर जैनों के ग्रन्थों की भाषा में कुछ कुछ पार्थक्य देख कर इसका 'जैन महाराष्ट्री' नाम दिया है । इस भाषा में प्राकृत-व्याकरणों में बताये हुए महाराष्ट्री भाषा के लक्षण विशेष रूप से मौजूद होने पर भी जैन अर्धमागधी का बहुत-कुछ प्रभाव देखा जाता है ।

जैन महाराष्ट्री के कतिपय ग्रन्थ प्राचीन हैं । यह द्वितीय स्तर के प्रथम युग के प्राकृतों में स्थान पा सकती हैं । पयसा ग्रन्थ, निर्युक्तियों, पडमचरित्र, उपदेशमाला प्रभृति ग्रन्थ प्रथम युग की जैन महाराष्ट्री के उदाहरण हैं । बृहत्कल्प-भाष्य, व्यवहारसूत्र-भाष्य, विरोपावश्यक भाष्य, निशीथचूर्ण, धर्मसंप्रहर्णी, समराइच्छकहा प्रभृति ग्रन्थ मध्य युग और शेष-युग में रचित होने पर भी इनकी भाषा प्रथम युग की जैन महाराष्ट्री के समान है । दशम शताब्दी के बाद रचे गये प्रवचन-सारोद्धार, उपदेशपदटीका, सुपासनाहचरित्र, उपदेशरहस्य प्रभृति ग्रन्थों की भाषा भी प्रायः प्रथम युग की जैन महाराष्ट्री के ही अनुरूप है । इससे यहाँ पर यह कहना होगा कि जैन महाराष्ट्री के ये ग्रन्थ आधुनिक काल में रचित होने पर भी उसी भाषा, संस्कृत की तरह, अतिप्राचीन काल में ही उत्पन्न हुई थी और यह भी अनुमान किया जा सकता है कि जैन महाराष्ट्री क्रमशः परिवर्तित होकर मध्य-युग की व्यञ्जन-सोप-बहुल महाराष्ट्री में रूपान्तरित हुई है ।

अर्धमागधी के जो लक्षण पहले बताये गए हैं उनमें से अनेक इस भाषा में भी पाये जाते हैं । ऐसे लक्षणों में लक्षण कुछ ये हैं :—

१. क के स्थान में अनेक स्थलों में ख ।
२. लुप्त व्यञ्जनों के स्थान में म् ।
३. शब्द के आदि और मध्य में भी ख की तरह न ।
४. वया और यावत् के स्थान में क्रमशः नहा और जाव की तरह नहा और जाव भी ।
५. ममास में उत्तर पद के पूर्व में 'म्' का आगम ।
६. पाय, माय, वेगिच्छय, पडुप्पण, साहि, सुद्धम, मुमिण आदि शब्दों का भी, पत्त, नेत्त, वेदच्छय आदि की तरह प्रयोग ।
७. तृतीया के एकवचन में कहीं कहीं सा प्रत्यय ।
८. पाइस्सइ, कुब्बइ प्रभृति धातु-रूप ।
९. घोषा, किषा, बंदिपु आदि त्वा प्रत्यय के रूप ।
१०. वड, वावड, धंडुड, प्रभृति त-अत्ययान्त रूप ।

(६) अशोक-लिपि

सम्राट् 'अशोक' ने भारतवर्ष के भिन्न-भिन्न स्थानों में अपने धर्म के उपदेशों को शिलालेखों में खुदवाये थे। ये सब शिलालेख उस समय में प्रचलित भिन्न-भिन्न प्रादेशिक भाषाओं में रचित हैं। भाषा-साम्य की दृष्टि से ये सब शिलालेख ४४ प्रधानतः इन तीन भागों में विभक्त किये जा सकते हैं:—

- (१) पंजाब के शिलालेख। इनकी भाषा संस्कृत के अनुरूप है। इनमें ८ का लोप नहीं देखा जाता।
- (२) पूर्व भारत के शिलालेख। इनकी भाषा का मागधी के साथ सादृश्य देखने में आता है। इनमें ८ के स्थान में सर्वत्र ल है।
- (३) पश्चिम भारत के शिलालेख। ये उज्जयिनी की उस भाषा में हैं जिसका पालि के साथ अधिक साम्य है। इन तीनों प्रकार के शिलालेखों के कुछ उदाहरण नीचे दिए जाते हैं जिन पर से इनका भेद अच्छी तरह समझ में आ सकता है।

संस्कृत	कपर्वगिर (पञ्जाब)	घोळि (उज्जयिनी)	गिरनार (गुजरात)
देवानप्रियस्य	देवानप्रियस	देवानप्रियस	देवानप्रियस
राज्ञः	राणी	सज्जिते	रानो, रानो
दुस्सा	—	दुबल्लि	बल्ल
शुभूपा	शुभूपा	शुभूपा	शुभूपा
नास्ति	नास्ति, नास्ति	नायि, नयि, नया	नास्ति

इन शिलालेखों का समय क्रिस्त-पूर्व २५० वर्ष का है।

इन शिलालेखों की भाषा की उत्पत्ति भगवान् महावीर की एवं सम्भवतः बुद्धदेव की उपदेश-भाषा से ही हुई है।^१

(७) सौरसेनी

सौराष्ट्र-नाटकों में प्राकृत गद्यांश सामान्य रूप से सौरसेनी भाषा में लिखा गया है। अश्वमेध के नाटकों में एक निदर्शन तरह की सौरसेनी के उदाहरण पाये जाते हैं, जो पालि और अशोकलिपि की भाषा के अनुरूप और पिछले काल के नाटकों में प्रयुक्त सौरसेनी की अपेक्षा प्राचीन हैं। भास के, कालिदास के और इनके बाद के अधिक नाटकों में सौरसेनी के निदर्शन देखे जाते हैं।

वररुचि, हेमचन्द्र, क्रमदीपर, लक्ष्मीधर और मार्कण्डेय आदि के प्राकृत-व्याकरणों में सौरसेनी भाषा के लक्षण और उदाहरण पाये जाते हैं।

दण्डी, रद्वट और वाग्भट आदि संस्कृत के अलंकारिकों ने भी इस भाषा का उल्लेख किया है।

भारत के नाट्यशास्त्र में सौरसेनी भाषा का उल्लेख है, उन्होंने नाटक में नायिका और सखियों के लिए इस भाषा विनियोग का प्रयोग बताया है।^२

भारत ने विदूषक की भाषा प्राच्या कही है^३, परन्तु मार्कण्डेय के व्याकरण में प्राच्या भाषा के जो लक्षण दिये गये हैं तन्मा भाषा सौरसेनी के (प्राच्या) का कुछ विशेष भेद नहीं है। इससे हमने आ प्रस्तुत कोष में उसका अलग उल्लेख न करके सौरसेनी में ही अन्तर्भाव किया है।

दिगम्बर जैनो के प्रचलनसार, द्रव्यसंग्रह प्रसूति ग्रन्थ भी एक तरह को सौरसेनी भाषा में ही रचित है। यह भाषा रत्नमञ्जरी की अधिभागवी और प्राकृत-व्याकरणों में निर्दिष्ट सौरसेनी के सिध्द से बनी हुई है। इस भाषा को 'जैन सौरसेनी' नाम दिया गया है। जैन सौरसेनी मध्ययुग की जैन महाराष्ट्री की अपेक्षा जैन अर्द्धमागधी से अधिक निम्नतरा रखती है और मध्ययुग की जैन महाराष्ट्री से प्राचीन है।

१. हाल ही में डॉ॰ विभुवनदास बहुरेबंद ने अपने एक पुनर्परीक्षित लेख में बनेक प्रमाण और युक्तियों से यह सिद्ध किया है कि प्रशोक के शिलालेखों के नाप से प्रसिद्ध लिखनेवाला अशोक के नहीं, परन्तु जैन सम्राट् संघति के पुत्रवाये हुए हैं।

२. See Dr. A. B. Keith's Sanskrit Drama, Page 87.

३. "नाटिकायां सचीनां च सूरसेनाविरोधितो" (नाट्यशास्त्र १०, ५१)।

४. "प्राच्या विदूषकदीना" (नाट्यशास्त्र १०, ५१)।

सौरसेनी भाषा की उत्पत्ति^१ सुरसेन देश अर्थात् मध्य प्रदेश से हुई है।

वररुचि ने अपने व्याकरण में संस्कृत को ही सौरसेनी भाषा की प्रकृति अर्थात् मूल कहा है^२। किन्तु यह हम पहले ही प्रमाणित कर चुके हैं कि किसी प्राकृत भाषा की उत्पत्ति संस्कृत से नहीं हुई है। सुतारं, सौरसेनी प्राकृत का मूल भी प्रकृति वैदिक या लौकिक संस्कृत नहीं है। सौरसेनी और संस्कृत ये दोनों ही वैदिक युग में प्रचलित सुरसेन अथवा मध्यदेश की कथ्य प्राकृत भाषा से ही उत्पन्न हुई हैं। संस्कृत भाषा पाणिनि-प्रभृति के व्याकरण द्वारा नियन्त्रित होने के कारण परिवर्तनहीन मृत-भाषा में परिणत हुई। वैदिक काल की सौरसेनी ने प्राकृत-व्याकरण द्वारा नियन्त्रित न होने के कारण क्रमशः परिवर्तित होते हुए पिछले समय की सौरसेनी भाषा का आधार धारण किया। पिछले समय की यह सौरसेनी भी बाद में प्राकृत व्याकरणों के द्वारा जड़ते जाने के कारण संस्कृत की तरह परिवर्तन-रहित होकर मृत-भाषा में परिणत हुई है।

अश्वपोष के नाटकों में जिस सौरसेनी भाषा के उदाहरण मिलते हैं वह अशोकलिपि की सम-सामयिक कही जा सकती है। भास के नाटकों की सौरसेनी का और जैन सौरसेनी का समय सम्भवतः क्रिस्त की प्रथम या द्वितीय शताब्दी मालूम होता है।

महाराष्ट्री भाषा के साथ सौरसेनी भाषा का जिस-जिस अंश में भेद है वह नीचे दिया जाता है। इसके सिवा महाराष्ट्री भाषा के जो लक्षण उसके प्रकरण में दिये जायेंगे उनमें महाराष्ट्री के साथ सौरसेनी का कोई भेद नहीं है। इन भेदों पर यह ज्ञात होता है कि अनेक स्थलों में महाराष्ट्री की अपेक्षा सौरसेनी का संस्कृत के साथ पार्थक्य कम और सादृश्य अधिक है।

वर्ण-भेद

- स्वर वर्णों के मध्यवर्ती असंयुक्त व ओर व के स्थान में व होता है; यथा—रगत = रमद, वश = गदा।
- स्वरों के बीच असंयुक्त व का ह और ष दोनों होते हैं; जैसे—नाष = नाव, शाह।
- यं के स्थान में य और ञ होता है, यथा—घायं = घाह, यञ् = घुय, मुञ्।

नाम विभक्ति

- पञ्चमी के एकवचन में दा और दु ये दो ही प्रत्यय होते हैं और इनके योग में पूर्व के अक्षर का दीर्घ होता है; यथा—जिनात् = जिणादो, जिणादु।

आख्यात

- ति और दि प्रत्ययों के स्थान में दि और दे होता है; जैसे—हसदि, हसदे, रसदि, रसदे।
- भविष्यत्काल के प्रत्यय के पूर्व में णि लगना है; यथा—हसिस्तिदि, करिस्तिदि।

सन्धि

- अन्त्य सप्तर के बाद इ और ए होने पर ए का वैकल्पिक आगम होता है; यथा—श्रुन्व इदम् = श्रुतं एतम्, श्रुतमिदम्, एतम् एतत् = एतं एतद्, एतमेतद्।

कृदन्त

- त्वा प्रत्यय के स्थान में हम्, हूण और ता होते हैं; यथा—पठित्वा = पठिहम्, पठिहूण, पठिता।

१. वज्रवामन के “मोनियमन्त्रा (१५६ व) चेदो वीर्यवर्ष सिधुमोवोरा। बहुरा य सुरसेणा पात्रा भोगो य मासपुरिष्टा” (पृ ११)। इस पाठ पर “चेदिपु श्रुतिकरावतो, वीर्यवर्ष सिधुपु सौवोरेणु मधुरा, सुरसेणु पात्रा, भङ्गे(?) जि)पु मासपुरिष्टा” इस तरह व्याख्या करते हुए आचार्य मलयगिरि ने सुरसेन देश की राजधानी पात्रा बताने पर आज्ञा के बिहार प्रदेश की ही सुरसेन कहा है। नेमिचन्द्रभूषि ने घरने प्रवचनमोदारागमक ग्रंथ में वज्रवामन के उक्त पाठ की भवितव्य रूप में उद्धृत किया है। इसकी टीका में श्रीसिद्धनेमुरि ने आचार्य मलयगिरि की उक्त व्याख्या की “भविष्यत्कृत” महार, उक्त मूल पाठ की व्याख्या इस शब्द की है—“शुचीमती नगरे चेदो देहा, वीर्यवर्ष नगरं सिधुमोवोरा जनपद”, मधुरा नगरे सुरसेनास्यो देहा, पात्रा नगरी मन्त्रयो देहा, मासपुरी नगरी वर्तो देह।” (२० सा० संस्करण, पृ ४६६)।

२. प्राकृतप्रकाश (१२, २)।

(८) मागधी

मागधी प्राकृत के सर्व-प्राचीन निदर्शन अशोक-साम्राज्य के उत्तर और पूर्व भागों के राजसी, मिरट, लौरिया (Lauriya), सहसराम, बराबर (Barabar), रामगढ़, धौल और जौगढ़ (Jaugadha) प्रभृति स्थानों के अशोक-शिलालेखों में पाये जाते हैं। इसके बाद नाटकीय प्राकृतों में मागधी भाषा के उदाहरण देखे जाते हैं। नाटकीय मागधी के सर्व प्राचीन नमूने अश्वघोष के नाटकों के खण्डित अंशों में मिलते हैं। भास के नाटकों में, कालिदास के नाटकों में और मृच्छकटिक आदि नाटकों में मागधी भाषा के उदाहरण विद्यमान हैं।

वररुचि के प्राकृतप्रकाश, चण्ड के प्राकृतलक्षण, हेमचन्द्र के सिद्धहेमचन्द्र (अष्टम अध्याय), क्रमदीधर के सक्षिप्त-सार, लक्ष्मीधर की पट्टभाषाचन्द्रिका और मार्कण्डेय के प्राकृतसर्वस्व आदि प्रायः समस्त प्राकृत-व्याकरणों में मागधी भाषा के लक्षण और उदाहरण दिए गए हैं।

भरत के नाट्यशास्त्र में मागधी भाषा का उल्लेख है और उन्होंने नाटक में राजा के अन्तःपुर में रहनेवाले, सुरग खोदनेवाले, बलवार, अश्वपालक वगैरह पात्रों के लिए और विपत्ति में नायक के लिए भी इस भाषा का प्रयोग करने को कहा है। परन्तु मार्कण्डेय द्वारा अपने प्राकृतसर्वस्व में उद्धृत किये हुए कोहल के “राक्षसभिक्षुपणकभेदाद्या मागधी प्राहुः” इस वचन से मालूम होता है कि भरत के कहे हुए उक्त पात्रों के अतिरिक्त भिक्षु, क्षपणक

आदि अन्य लोग भी इस भाषा का व्यवहार करते थे। रुद्रट, वाग्भट, हेमचन्द्र आदि आलंकारिकों ने भी अपने-अपने अलंकार ग्रन्थों में इस भाषा का उल्लेख किया है।

मागध देश ही मागधी भाषा का उत्पत्ति-स्थान है। मागध देश की सीमा के बाहर भी अशोक के शिलालेखों में जो इसके निदर्शन पाये जाते हैं उसका कारण यह है कि मागधी भाषा उस समय राज-भाषा होने के कारण मागध के बाहर भी इसका प्रचार हुआ था। सम्भवतः राजभाषा होने के कारण ही नाटकों में सर्वत्र ही राजा के

अन्तःपुर के लोगों के लिए इस भाषा का व्यवहार करने का नियम हुआ था। प्राचीन भिक्षु और क्षपणक भी मागध के ही निवासी होने से, सम्भव है, नाटकों में इनकी भाषा भी मागधी ही निर्दिष्ट की गई है।

वररुचि ने अपने प्राकृत व्याकरण में मागधी की प्रकृति—मूल होने का सम्मान सौरसेनी को दिया है। इसीका अनुसरण कर मार्कण्डेय ने भी सौरसेनी से ही मागधी की सिद्धि कही है। किन्तु मागधी और सौरसेनी आदि प्रादेशिक भाषाओं का भेद अशोक के शिलालेखों में भी देखा जाता है। इससे यह सिद्ध है कि ये सब प्रादेशिक भेद प्राचीन और समसामयिक हैं, एक प्रदेश की भाषा से दूसरे प्रदेश में उत्पन्न नहीं हुए हैं। जैसे सौरसेनी मध्यदेश में प्रचलित वैदिक युग की कथ्य भाषा से उत्पन्न हुई है वैसे मागधी ने भी उस कथ्य भाषा से जन्म-ग्रहण किया है, जो वैदिककाल में मागध देश में प्रचलित थी।

अशोक-शिलालेखों की ओर अश्वघोष के नाटकों की मागधी भाषा प्रथम युग की मागधी भाषा के निदर्शन हैं। भास के और परवर्ती काल के अन्य नाटकों की और प्राकृत-व्याकरणों की मागधी मध्य-युग की मागधी से उदाहरण हैं।

शाकरी, चाण्डाली और शानरी ये तीन भाषाएँ मागधी के ही प्रकार-भेद—रूपान्तर हैं। भरत ने शाकरी भाषा का व्यवहार शबर, राक्ष आदि और उसी प्रकृति के अन्य लोगों के लिए कहा है, किन्तु मार्कण्डेय ने राजा के साने की भाषा शाकरी बतलाई है। भरत पुष्कस आदि जातियों की व्यवहार भाषा को चाण्डाली और अंगारकार, व्याघ्र-

१. “मागधी तु नरेन्द्रप्रणामन्त पुरनिवासिनाम्” (नाट्यशास्त्र १७, ५०)।

२. “सुरज्ञाखनकदीना युगलकाराधरणिगुणाय। व्यसने नायकाना स्वातन्त्र्यलाभु मागधी ॥” (नाट्यशास्त्र १७, ५६)।

३. “प्रकृति सौरसेनी” (प्राकृतप्रकाश ११, २)।

४. “मागधी शौरसेनीत” (प्राकृतसर्वस्व, पृष्ठ १०१)।

५. “शबरारण शकदीना तत्त्वभावध यो गण। शकारभाषा योत्थ्या” (नाट्यशास्त्र १७, ५३)।

६. “शकारत्येय शानरी, शकारव्य

‘रातोन्मदाभ्राता श्यालस्वैश्वर्यवपत्र।

मरुभूर्जताभिमानि शकार इति दुष्टुषीन स्वात’ इत्युक्ते” (प्राकृतसर्वस्व, पृष्ठ १०५)।

शाकरी भादि भाषाएँ कटहार और यन्त्र-जीरी लोगों की भाषा को शाकरी कहते हैं^१। इन तीनों भाषाओं के जो लक्षण और उदाहरण मार्कण्डेय के प्राकृत-व्याकरण में और नाटकों के उक्त पात्रों की भाषा में पाये जाते हैं उनमें और इतर प्राकृत-व्याकरणों की मागधी भाषा के लक्षण और उदाहरणों में तथा नाटकों के मागधी-भाषा-भाषी पात्रों की भाषा में इतना कम भेद और इतना अधिक साम्य है कि उक्त तीन भाषाओं को मागधी से अलग नहीं कही जा सकती। यही कारण है कि हमने प्रस्तुत कोष में इन भाषाओं का मागधी में ही समावेश किया है।

मृच्छकटिक के पात्र माधुर और दो सूतारों की भाषा को 'ढक्की' नाम दिया गया है। यह भी मागधी भाषा का ही एक रूपान्तर प्रतीत होता है। मार्कण्डेय ने 'ढक्की' को ही 'टाक्की' नाम से निर्देश किया है, यह उनके वहाँ पर उद्धृत किये हुए एक श्लोक से ज्ञात होता है^२। मार्कण्डेय ने पदान्त में व, वृतीया के एचवचन में ए, पञ्चमी के बहुवचन में ह्य आदि जो इस भाषा के लक्षण दिए हैं उनपर से इसमें अपभ्रंश का ही बिरोध साम्य नजर आता है। इस लिए मार्कण्डेय ने वहाँ पर जो यह कहा है कि 'हरिश्चन्द्र इस भाषा को अपभ्रंश मानता है'^३, वह मत हमें भी संगत मालूम पड़ता है।

मागधी भाषा का सौरसेनी के साथ जो प्रधान भेद है वह नीचे दिया जाता है। इसके सिवा अन्य अंशों में मागधी लक्षण भाषा साधारणतः सौरसेनी के ही अनुरूप है।

धर्ण-भेद

१. र के स्थान में सदैव त होता है^४; यथा—नर = एत; कर = कल।
२. श, प और स के स्थान में तालव्य श होता है; यथा—शोमन = शोड्य, पुष्य = पुल्लि, सारस = शानस।
३. संयुक्त प और स के स्थान में दन्त्य सकार होता है; यथा—शुक्क = शुक्ल, कटु = कस्ट, स्वलति = स्वतति, बृहस्पति = बृहस्पति।
४. ट और ठ के स्थान में ट्ट होता है; यथा—पट्ट = पस्ट, मुट्टु = शुट्टु।
५. ल्य और र्व की जगह स्त होता है; जैसे—उपल्लित = उवल्लित, सार्य = सस्त।
६. ज, घ और य के बदले य होता है; यथा—जानाति = याणति, दुर्वन = दुव्यण; यद्य = मव्य, यद्य = मव्य, याति = मादि, यय = यय।
७. ग्य, एय, ञ और झ के स्थान में ञ्न होता है; यथा—ग्य = मञ्ज, पुएय = पुञ्ज, प्रज्ञा = पञ्जा; मञ्जति = मञ्जति।
८. अनादि छ के स्थान में थ होता है; यथा—गथ = गध, पिच्छित = पिथित।
९. ङ की जगह क होता है^५; जैसे—रासस = सरस, यक्ष = यल।

नाम-विभक्ति

१. अकारान्त पुलिङ्ग-शब्द के प्रथमा के एकवचन में ए होता है; यथा—मिनः = मिये, पुष्य = पुल्लिये।
२. अकारान्त शब्द के पष्ठी का एकवचन ल और भाह होता है; यथा—जिनस्य = मिएलस, मिएह।
३. अकारान्त शब्द के पष्ठी के बहुवचन में माण और माह ये दोनों होते हैं; जैसे—जिनाताम् = मिएण, मिएह।
४. अस्मन् शब्द के एकवचन और बहुवचन का रूप हण होता है।

१. "वाएडाते दुस्सादिपु। अमारकरव्याधाना वाष्टपन्थोपजीविनाम्। योग्या शवरभाषा तु" (नाट्यशास्त्र १७, ५१-५२)।

२. "प्रयुज्यते नाटकादौ दृष्टातिव्यवहारिभिः।

मणिगृहिर्नदेरैथ उदाहृत्यमाधितम्" (प्राकृतसर्वस्व, पृष्ठ ११०)।

३. "हरिश्चन्द्रसिक्का भाषामपभ्रंश इतीच्छति" (प्राकृतम० पृष्ठ ११०)।

४. मार्कण्डेय यह नियम वैज्ञानिक मानते हैं "रस्य लो वा येत" (प्राकृतम० पृष्ठ १०१)।

५. हेमचन्द्र-प्राकृत व्याकरण के अनुसार 'दा' की जगह जिह्वाप्रतीक 'क' होता है-देको हे० प्रा० ४, २१६।

(९) महाराष्ट्री

प्राकृत काव्य और गीति की भाषा महाराष्ट्री कही जाती है। संतुन्य, गाथासम्पत्तनी, गडडहो, कुमारपालचरित प्रभृति ग्रन्थों में इस भाषा के निदर्शन पाये जाते हैं। गाथा (गीति साहित्य) में महाराष्ट्री प्राकृत ने इतनी प्रसिद्धि प्राप्त की थी कि बाद के नाटकों में गद्य में सौरसेनी बोलनेवाले पात्रों के लिए समीत या पद्य में महाराष्ट्री भाषा का व्यवहार करने का रिवाज सा बन गया था। यही कारण है कि कालदास से लेकर उसके बाद के सभी नाटकों में पद्य में प्रायः महाराष्ट्री भाषा का ही व्यवहार देखा जाता है।

चड ने अपने प्राकृतलक्षण में 'महाराष्ट्री' इस नाम का उल्लेख और इसके विशेष लक्षण न देकर भी आर्ष प्राकृत अथवा अर्धमागधी के और जैन महाराष्ट्री के लक्षणों के साथ साधारण भास से इसके लक्षण दिए हैं। वररुचि ने अपने प्राकृत व्याकरण में इस भाषा के 'महाराष्ट्री' नाम का उल्लेख किया है और इसके विशेष लक्षण और उदाहरण दिए हैं। आचार्य हेमचन्द्र ने अपने व्याकरण में 'महाराष्ट्री' नाम का निर्देश न कर 'प्राकृत' इस साधारण नाम से महाराष्ट्री के ही लक्षण और उदाहरण बताए हैं। क्रमदीश्वर का संक्षिप्तसार त्रिविक्रम की प्राकृतव्याकरणसूत्रश्रुति, लक्ष्मीधर की पञ्चभाषाचन्द्रिका और मार्कण्डेय का प्राकृतसर्वस्व प्रभृति प्राकृत व्याकरणों में इस भाषा के लक्षण और उदाहरण पाये जाते हैं। चड भिन्न सभी प्राकृत व्याकरणों में महाराष्ट्री का मुख्य रूप से विवरण दिया है और सौरसेनी, मागधी प्रभृति भाषाओं के महाराष्ट्री के साथ जो भेद हैं वे ही बतलाए हैं।

संस्कृत के अलंकार शास्त्रों में भी भिन्न भिन्न प्राकृत भाषाओं का उल्लेख मिलता है। भरत के नाट्य शास्त्र में 'दाक्षिणात्या' भाषा का निर्देश है, किन्तु इसके विशेष लक्षण नहीं दिए गए हैं। सम्भवतः यह महाराष्ट्री भाषा ही हो सकती है, क्योंकि भरत ने महाराष्ट्री का अलग उल्लेख नहीं किया है। परन्तु मार्कण्डेय के प्राकृतसर्वस्व में उद्धृत प्राकृतचन्द्रिका के 'वचन' में और प्राकृतसर्वस्व के सुद मार्कण्डेय के 'वचन' में महाराष्ट्री और दाक्षिणात्या का भिन्न भिन्न भाषा के रूप में उल्लेख किया गया है। दण्डी के जगन्नादर्श के

'महाराष्ट्राध्याया भाषा प्रकृत प्राकृत विदुः।

सागर श्रुतिराना सेतुवचादि यन्मवप ॥" (१, ३४)।

इस श्लोक में महाराष्ट्री भाषा का और उसकी उद्धृष्टता का स्पष्ट उल्लेख है। दण्डी के समय में महाराष्ट्री प्राकृत का इतना उत्कर्ष हुआ था कि इसके परवर्ती अनेक ग्रन्थकारों ने केवल इस महाराष्ट्री के ही अर्थ में उस प्राकृत शब्द का प्रयोग किया है जो सामान्यतः सर्व प्रादेशिक भाषाओं का याचक है। रुद्रट का काव्यालंकार, चागभट्टालंकार, पाइअलच्छी-नाममाला हेमचन्द्र का प्राकृत व्याकरण प्रभृति ग्रन्थों में महाराष्ट्री के ही अर्थ में प्राकृत शब्द व्यवहृत हुआ है। अलंकार-शास्त्र भिन्न पाइअलच्छीनाममाला और देशीनाममाला इन कोप ग्रन्थों में भी महाराष्ट्री के उदाहरण हैं।

डॉ. हॉर्नल्लि के मत में महाराष्ट्री भाषा महाराष्ट्र देश में उत्पन्न नहीं हुई है। वे मानते हैं कि महाराष्ट्री का अर्थ 'विशाल राष्ट्र की भाषा' है और राजपूताना तथा मध्यदेश प्रभृति इसी विशाल राष्ट्र के अन्तर्गत हैं, इसीसे 'महाराष्ट्री' उत्पत्ति स्थान मुख्य प्राकृत कही गई है। किन्तु दण्डी ने इस भाषा को महाराष्ट्र देश की ही भाषा कही है। सर मियर्सन के मत में महाराष्ट्री प्राकृत से हाआधुनिक मराठी भाषा उत्पन्न हुई है। इससे महाराष्ट्रा प्राकृत का उत्पत्ति-स्थान महाराष्ट्र देश ही है यह बात नि-सन्देह कही जा सकती है।

आचार्य हेमचन्द्र ने अपने व्याकरण में महाराष्ट्र की ही 'प्राकृत' नाम दिया है और इसकी प्रकृति संस्कृत कही है। इसी तरह चण्ड, लक्ष्मीधर, मार्कण्डेय आदि व्याकरणों ने साधारण रूप से सभी प्राकृत भाषाओं का मूल (प्रकृति) संस्कृत बताया है। किन्तु हम यह पहले ही अच्छी तरह प्रमाणित कर आए हैं कि कोई भाषा प्राकृत भाषा संस्कृत से उत्पन्न नहीं हुई है, बल्कि वैदिक काल में भिन्न भिन्न प्रदेशों में प्रचलित आयों की वृद्ध भाषाओं

१ "शेष महाराष्ट्रीवत्" (प्राकृतप्रकाश १२, ३२)।

२ "महाराष्ट्री तथ्यन्तो सौरज यथमागधी। बाहीनी मागधी प्राच्यगती ता दागिणात्यया ॥" (भा० सं० पृष्ठ २)।

३ देतो प्राकृतसर्वस्व पृष्ठ २ और १०४।

से ही सभी प्राकृत भाषाओं की उत्पत्ति हुई है, सुतरां महाराष्ट्र भाषा की उत्पत्ति प्राचीन काल के महाराष्ट्र-निवासी आर्यों की कथ्य भाषा से हुई है।

कौन समय आर्यों ने महाराष्ट्र में सर्व-प्रथम निवास किया था, इस बात का निर्णय करना कठिन है, परन्तु अशोक के पहले प्राकृत भाषा महाराष्ट्र देश में प्रचलित थी, इस विषय में किसी मत भेद नहीं है। उस समय महाराष्ट्र देश में प्रचलित प्राकृत से क्रमशः कान्धीय और नाटकीय महाराष्ट्री भाषा उत्पन्न हुई है। प्राकृत प्रकाश का कर्ता वररचि यदि वृत्तिकार कल्याण से अभिन्न व्यक्ति हो तो यह स्वीकार करना होगा कि महाराष्ट्री ने अन्ततः ख्रिस्त-पूर्व दो सौ वर्ष के पहले ही साहित्य में स्थान पाया था। लेकिन महाराष्ट्री भाषा के तद्भव शब्दों में व्यञ्जन वर्णों के लोप की बहुलता देखने से यह विश्वास नहीं होता कि यह भाषा उतनी प्राचीन है। वररचि का व्याकरण संभवतः ख्रिस्त के बाद ही रचा गया है। जैन अर्धमागधी और जैन महाराष्ट्री में महाराष्ट्री प्राकृत के प्रभाव का हमने पहले उल्लेख किया है। महाराष्ट्री भाषा में रचित आ मय साहित्य इस समय पाया जाता है उसमें ख्रिस्त के बाद की महाराष्ट्री के ही निदर्शन देखे जाते हैं। प्राचीन महाराष्ट्र की साहित्य उपलब्ध नहीं है। प्राचीन महाराष्ट्री में याद की महाराष्ट्री की तरह व्यञ्जन-वर्ण-लोप की अधिकता नहीं थी, इस बात के कुछ निदर्शन चण्ड के व्याकरण में मिलते हैं। जैन अर्धमागधी और जैन महाराष्ट्री में प्राचीन महाराष्ट्री भाषा का सादृश्य रक्षित है।

भरत ने नाट्यशास्त्र में आवन्ती और वाहलीक भाषा का उल्लेख कर नाटकों में धूर्त पात्रों के लिए आवन्ती का प्रावन्ती और वाहलीक और द्यूनकरों के लिए वाहलीक का प्रयोग कहा है। मार्कण्डेय ने अपने प्राकृतसर्वर में 'आवन्ती' के स्थान पर 'महाराष्ट्री' का प्रयोग किया है। स्पष्टतया महाराष्ट्री और शौरसेन्योस्तु संकरात् और आग्न्यामेव वाहलीकी किन्तु रस्यात् ला भवेत् यह कह कर इनका संक्षिप्त लक्षण-निर्देश किया है। मार्कण्डेय ने आवन्ती भाषा के जो लक्षणों के स्थान में गुण और अभिव्यक्त काल के प्रत्यय के स्थान में ल और आ प्रभृति लक्षण बतलाए हैं वे महाराष्ट्री के साथ साधारण हैं। उनके दिए हुए किराड, वेड, वेण्डि प्रभृति उदाहरणों में जो तकार के स्थान में दकार हैं वहाँ शौरसेनी के साथ इमजा (आवन्ती का) सादृश्य है परन्तु वह भी सर्वत्र नहीं है, जैसे उनके दिए हुए होड, गुण्ड, लिज्ड, भण्ड आदि उदाहरणों में। इसी तरह वाहलीकी में जो र का ल होता है वही एकमात्र मागधी का सादृश्य है। इसके सिवा सभा अंशों में यह भी आवन्ती की तरह महाराष्ट्री के ही सादृश्य है। सुतरां, ये दोनों भाषाएँ महाराष्ट्री के ही अन्तर्गत कही जा सकती हैं। इससे हमने भी इनका इस कोष में अलग निर्देश नहीं किया है।

संस्कृत भाषा के साथ महाराष्ट्री भाषा के वे भेद नीचे दिए जाते हैं जो महाराष्ट्री और संस्कृत के साथ अन्य प्राकृत लक्षण भाषाओं के सादृश्य और पार्थक्य की तुलना के लिए भी अधिक उपयुक्त हैं।

स्वर

- अनेक जगह भिन्न स्वरों के स्थान में भिन्न-भिन्न स्वर होते हैं; जैसे—चमृद्धि = सामिद्धि, ईवत् = ईति, हर = हीर, ध्वनि = झुण, कम्पा = सेज्जा, पय = पोम्प; यथा = यह सदा = सड, दयान = दौण, सान्ता = सुहृत्, धासार = ऊसार, दास = गेम्क, मारी = मोली, दति = दध, पम्पिन् = पड, जिह्वा = जीह, दिवचन = दुवमण, पिण्ड = पेंड, त्रिपाठ = तीहार, हरीतकी = हरडई, करमोर = कम्हार, पानीय = पालिष, जीणं = जूण, हीन = हूण, पीयूष = पेड्ड, मुद्रुल = मडल, भ्रुकुटि = भिज्जि, दुद = धीम, मूसल = मूसल, गुण्ड = लोड, धूम = सडह, उडयूड = उड्डी, वातून = वाडल, मूरु = मूर, मूरु = मूर, मूरु = मूर, मूरु = मूर, वेदता = विमण, स्तेन = पूण; मनोहर = मणहर, गो = गड, गात्र = सोच्छवाड = सुसात।
- महाराष्ट्री में श्र, श्र, छ, चू ये स्वर सर्वथा लुप्त हो गये हैं।
- श्र के स्थान में भिन्न-भिन्न स्वर एवं रि होता है; यथा—तुण = तण, मुद्रुक = माडक, कृपा = बिवा, माटू = माड, माड, वृत्तान्त = वृत्त, मूपा = मुसा, मूसा, मोमा = मुत्त = पिट, वेंट, वोट, मूनु = उड, रिड, मृद्धि = रिद्धि, श्रम = रिण्य, सहरा = सरित, हन = दरिम।
- छ के स्थान में दलि होता है; जैसे—क्लत्त = विलित, क्लन्न = किलिण।
- ऐ का प्रयोग भी प्रायः महाराष्ट्री में नहीं है। उसके स्थान में सामान्यतः ए और विशेषतः एड होता है, यथा—शील = सेल, ऐरावण = एरावण, वैद्य = वेज, वैषय्य = वैह्व, सैन्य = सेण, सद्गण = नेसास = नेसात, नदलात = देर = देव्य, ददन = देरन = ददसरित, दैय = ददण।

६. श्री का व्यवहार भी प्रायः महाराष्ट्र में नहीं है। उसके स्थान में सामान्यतः श्री और विशेष स्थलों में उ या झ होता है; यथा—कौमुदी = कौमुई, जीवन = जौवण, दीपारि = दीवारि, पीतोभी = पीतोभी, वीर = कउरव, गीठ = गउठ, सोय = सउह।

असंयुक्त व्यञ्जन

१. स्वरों के मध्यवर्ती क, ग, च, ज, त, द, य, व इन व्यञ्जनों का प्रायः लोप होता है; जैसे क्रमशः—सोच = सोभ, नग = एग, शभी = सई, रजत = रजम, मती = जई, गदा = गमा वियोग = विभोभ सावण्य = सामण्य।
२. स्वरों के बीच के ख, घ, ङ और भ के स्थान में ह होता है; यथा क्रमशः—शाखा = साहा, खापते = साहइ, नाप = छाह, साधु = साह, समा = सहा।
३. स्वरों के बीच के ट का ड होता है; यथा—मट = मड पट = पड।
४. स्वरों के बीच के ठ का ड होता है; जैसे—मठ = मड पठित = पडइ।
५. स्वरों के बीच के ड का त प्रायः होता है; यथा—गड = गल, तडाय = तलाय।
६. स्वरों के बीच के त का अनेक स्थल में ड होता है, यथा—प्रतिभास = पडिहास, प्रभृति = पडिडि, श्मापुत = वावड, पताका = पडामा।
७. न के स्थान में सर्वत्र ए होता है; यथा—कलक = कलण वचन = वचण, नर = एर, नवी = एई, वन्य = वण्य, दैन्य = दण्य।
८. दो स्वरों के मध्यवर्ती प का कही-कहीं व और वही-वही सोप होता है; यथा—शपय = सवह, शप = साव, उपसर्ग = उवसग, रिपु = रिड, कपि = बड।
९. स्वरों के बीच के क के स्थान में कहीं-कहीं भ, कहीं-कहीं ह और कहीं-कहीं ये दोनों होते हैं; यथा—रेफ = रेभ, शिफा = सिमा, वृत्ताफल = मुताहल, रफल = समल, सहल, रोफालिका = सेमालिमा, वेहालिमा।
१०. स्वरों के मध्यवर्ती व का न होता है, जैसे—भलावू = भलावू, सबल = सबल।
११. आदि के य का न होता है; यथा—यम = जम, यशस् = जस, याति = जाइ।
१२. हृद्यन्त के घनीय और य प्रत्यय के य का न होता है, जैसे—करणीय = करणिय, पेय = पेज।
१३. अनेक जगह र का ल होता है; यथा—हृदि = हृदिह, सदि = सदिह, वृषिष्ठिर = जहृदिह, गंगार = गंगाल।
१४. श और य का सर्वत्र स होता है; यथा—शब्द = सह, विश्राम = वीशाम, पुरुष = पुरिस, सत्य = सास, शेष = सेस।
१५. अनेक जगह ह का ल होता है, यथा—दाह = दाष, सिंह = सिष, संगार = संगार।
१६. कहीं-कहीं श, प और स का छ होता है; जैसे—शव = छाव, पष्ठ = छुट, मुषा = छुहा।
१७. अनेक शब्दों में स्वर सहित व्यञ्जन का लोप होता है; यथा—राजकुल = रावल, प्रागत = ग्राग, कालायस = कावास, हृदय = हिम, पादपतन = पावडण, यावत् = जा, त्रयोदश = तेरह, स्थिर = घेर, बदर = बोर, कदल = केल, कलिकाट = कण्णेर, वतुर्दश = चोदह, मधुख = मोह।

संयुक्त व्यञ्जन

१. स के स्थान में प्रायः ख और कहीं-कहीं ख और भ होता है; जैसे—सय = खय, सखण = सखण, भक्षि = भक्षि, शीण = क्षीण, क्षीण।
२. ख, घ, ङ और भ के स्थान में कहीं-कहीं क्रमशः च, छ, ज और भ होता है, यथा—शाखा = छाखा, वृध्वी = पिच्छी, विद्वान् = विज, बुद्ध्या = बुज्या।
३. ह्रस्व स्वर के पदवर्ती म्य, थ, स और प के स्थान में छ होता है, जैसे—पथ्य = पच्छ, पथात् = पच्छा, उत्साह = उच्छाह, भक्षरा = भच्छरा।

१. संस्कृत के 'भवि' शब्द का महाराष्ट्री में 'ऐ' होता है। इसके सिवा किसी किसी के मत में 'ऐ' तथा 'भौ' का भी प्रयोग होता है, जैसे—कैतव = कैभव, कौरव = कौरव (हे० प्रा० १, १)।

२. बरखि के प्राकृत-व्याकरण के 'नो एः सर्वत्र' (२, ४२) सूत्र के अनुसार सर्वत्र 'न' का एण होता है। सेतुबन्ध और गाय-शतपथी में इसी तरह सार्वभौमिक 'ए' पाया जाता है। हेमचन्द्र आदि कई प्राकृत वैयाकरणों के मत से शब्द के धादि के 'न' का विकलरूप से 'ए' होता है, यथा—नदी = नई, नई, नर = एर, नर। बरबदहो में एकार का वैकल्पिक प्रयोग देखा जाता है।

४. य और यं का झ होता है, यथा—मय = मज, जय = जज कार्य = कज ।
 ५. घ और झ का झ होता है, यथा—घ्यान = माण साध्य = सज्ज सुख = सुजक सज्ज = सज्ज ।
 ६. र का प्राय ङ होता है, जैसे—नतकी = एटई वैवर्त = ववट्ट ।
 ७. छ के स्थान में ठ होता है, यथा—मृष्टि = मृष्टि गृष्ट = गृष्ट काष्ठ = कृष्ट, इष्ट = इष्ट ।
 ८. न का ए होता है, यथा—निम्न = निम्न, प्रयुम्न = प्रयुम्न ।
 ९. ञ ना ए और ज होता है, जैसे—ज्ञान = ज्ञान, ज्ञाण प्रज्ञा = पण्णा, पञ्जा ।
 १०. स्त ञा य होता है, जैसे—हस्त = हस्त स्तोन धोत स्तोत्र = धोव ।
 ११. झ और ञ का प होता है, यथा—कुम्भ = कुम्भ, चम्पिणी = चम्पिणी ।
 १२. ध और स्व का क होता है, यथा—धुव = धुव सादन = पदण ।
 १३. ह ञा न होता है, यथा—जिह्वा = जिह्वा, विह्वल = विह्वल ।
 १४. म और नम का म होता है, जैसे—जन्म = जन्म ममय = मम्मह, युग्म = जुग्म, तिग्म = तिग्म ।
 १५. रम, धम, स्म और ह का म् होता है यथा—कारपोर = बन्हार धीव = मिह्व विस्मय = विह्व, ब्राह्मण = बम्हण ।
 १६. श ध्य क, ह ह्र और ण के स्थान में एह होता है, यथा—प्रश = पण्ड उण्ण = उण्ह स्तान = एहाण, वहि = वणिह्, पूर्वह् = पुव्हण् तीवण् = तिह ।
 १७. ङ ना ए होता है यथा—प्रह्व = पल्लव बहार = कल्लार ।
 १८. सयोग में पूर्ववर्ती क, ग ट ड, त द, प, य और स ना लोप होता है जैसे—धुव = धुव, धुप = धुड, पट्पद = धपम, खड्ग = खग, उत्पल = उत्पल, मुद्गर = मुग्गर, सुप्त = सुत, निवृत्त = निवृत्त, निष्ठुर = निष्ठुर स्वस्ति = स्वस्ति ।
 १९. सयोग में परवर्ती न, न और य का लोप होता है, यथा—स्मर = मर सन = सन व्यास = वाह ।
 २०. सयोग में पूर्ववर्ती और परवर्ती सभी ल व और र का लोप होता है यथा—उत्ता = उता, निरुत = निरुत शत्र = शत्र, पक्क = पक्क, धक्क = धक्क चक्क = चक्क ।
 २१. सयुक्त अक्षरों के स्थान में जो जो आदेश ऊपर कहा है उसका और सयुक्त व्यञ्जन के लोप होने पर जो जो व्यञ्जन धात्री रहता है उसका, यदि वह शब्द के आदि में न हो तो, द्वित्व होता है, जैसे—ज्ञाना = एणा मय = मय, वृत्त = वृत्त, वृत्ता = वृत्ता । परन्तु यह आदेश अथवा शेष व्यञ्जन यदि धर्गे का द्वितीय अथवा चतुर्थ अक्षर हो तो द्वित्व न होकर उसने पूर्व में आदेश अथवा शेष व्यञ्जन के अनन्तर पूर्व व्यञ्जन का आगम होता है, यथा—सण्ण = सण्ण, पण्ण = पण्ण, इष्ट = इष्ट धुप = धुप ।

विज्ञेयपण

१. हं, यं, रं के सध्य में और सयोग में परवर्ती ल के पूर्व में रर का आगम होकर सयुक्त व्यञ्जनों का विज्ञेयपण किया जाता है, यथा—महं = महं मरिह, महं भावर्त = भावर्त, हरिं = हरिं किरु = किरिह ।

व्यत्यय

१. अनेक शब्दों में व्यञ्जन के स्थान का व्यत्यय होता है, यथा—वैण्ण = वैण्ण भावान = भावान महापाण = महापाण, हरितान = हरितान, सपुक्क = सपुक्क, सल्लट = सल्लट, सुप्प = सुप्प, सक्क = सक्क ।

सन्धि

१. समास में कहीं कहीं ह्रस्व स्वर के स्थान में दीर्घ और दीर्घ के स्थान में ह्रस्व होता है, यथा—धत्तंदि = धत्तवह, पविण्ण = पविण्ण, यमुनाव = जंजणम, नदीसोत = एडसोत ।
 २. रर पर रहने पर पूर्व रर का लोप होता है जैसे—विद्वेश = विद्वेश ।
 ३. सयुक्त व्यञ्जन का पूर्व रर ह्रस्व होता है जैसे—भास्य = घस्य, युनोत्र = युण्ण, वृण्ण = वृण्ण, वरेत्र = वरेत्र, म्नेय्य = मित्तिच, नीतोत्तल = नीतोत्तल ।

सन्धि-निषेध

१. उद्गन (व्यञ्जन का लोप होने पर अश्लिष्ट रहे हुए) रर का पूर्व रर के साथ प्राय सन्धि नहीं होती है, यथा—विशारद = एणमार रजनोकर = रमणीपर ।

२. एक पद मे स्वरो की सन्धि नहीं होती है; जैसे—पाद = पाद्, गति = गद्, नगर = नगर् ।
३. इ, ई, और ऊ की, असमान स्वर पर रहने पर, सन्ध नहीं होती है; यथा—बन्धोवि धर्ममत्तो, दण्डोदो ।
४. ए और ओ की परध्वनी स्वर के साथ सन्धि नहीं होना है, यथा—ऊने धावंपो, मालम्बिपो एहिह ।
५. आख्यात के स्वर की साम्य नहीं होती है, जैसे—होइ इह ।

नाम-निभक्ति

१. अस्मान् पुलिग शब्द के एकवचन मे षो होता है; जैसे—जिन = जिणो, वृत्त = वण्णो ।
२. पञ्चमी के एकवचन मे तो षो, उ, हि और लोप होना है और तो भिन्न अन्य प्रत्ययों के प्रसंग मे अस्मा न आस्मा होता है; जैसे—जिनात् = जिणात्तो, जिणापो जिणाउ जिणाहि जिणा ।
३. पञ्चमी के बहुवचन का प्रत्यय तो षो उ और हि होता है, पर्यं तो से अन्य प्रत्यय मे पूर्व के म का षा होता है हि के प्रसंग मे ए भी होता है यथा—जिणत्तो, जिणासा जिणाउ, जिणाहि, जिणेहि ।
४. पञ्चमी के एकवचन के प्रत्यय के स्थान मे हितो और बहुवचन के प्रत्यय के स्थान मे हितो और सुतो इन रतन्त्र शब्दों का भी प्रयोग होता है, यथा—जिनाद् = जिणा हितो जिनेम्य = जिणा हितो, जिणे हितो, जिणा सुतो, जिणे सुतो ।
५. पट्ठी के एकवचन का प्रत्यय स्स होता है यथा—जिणस्स, गुणस्स, तस्स ।
६. अस्मत् शब्द के प्रथमा के एकवचन के रूप म्मि, मम्मि मम्हि, ह म्ह और म्म्य होता है ।
७. अस्मत् शब्द के प्रथमा के बहुवचन के रूप म्मह, मम्ह म्महो, मो, वयं और मे होता है ।
८. अस्मत् शब्द के पट्ठी का बहुवचन एो, एो, मम्म, मम्ह, मम्ह म्महो, मम्हाण, ममाण महाण और मम्माण होता है ।
९. युष्मत् शब्द के पट्ठी का एकवचन त्त्त, तु ते, तुम्ह तुह, तुहं, तुव, तुव, तुमो, तुमाह, दि, दे, इ, ए, तुम्म, तुम्ह, तुम्म उम्म उम्ह, उम्म और उम्ह होता है ।

लिङ्ग व्यत्यय

१. संस्कृत मे जो शब्द केवल पुलिङ्ग है, उनमे से कई एक महाराष्ट्री मे स्त्रीलिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग भी हैं, यथा—प्रन = पण्हो पण्हा, गुणा = गुणा गुणाई देवा = देवा, देवाणि ।
२. अनेक जगह स्त्रीलिङ्ग के स्थान मे पुलिङ्ग होता है, यथा—शत्त = सरपो, प्रावुद् = पाववो, विद्युता = विज्जुणा ।
३. संस्कृत के अनेक क्लोबलिङ्ग शब्दों का प्रयोग महाराष्ट्री में पुलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग मे भी होता है; यथा—पश = जवो, जन्म = जम्मो, मत्ति = मच्छी, वृष्टम् = पिट्ठो, जीर्णम् = चोरिमा ।

आख्यात

१. ति और ते प्रत्ययों के त का लोप होता है; जैसे—हवति = हवइ, हवए, रवते = रवइ, रवए ।
२. परस्मैपद और आत्मनेपद का विभाग नहीं है, महाराष्ट्री मे सभी धातु उभयपदों की तरह हैं ।
३. भूतकाल के हस्तन, अद्यतन और परोक्ष विभाग न होकर एक ही तरह के रूप होते हैं और भूतकाल मे आख्यात की जगह त प्रत्ययान्त कृदन्त का ही प्रयोग अधिक होता है ।
४. भविष्यत् काल के भी संस्कृत की तरह अस्तन और भविष्यत् ऐसे दो विभाग नहीं हैं ।
५. भविष्यत्काल के प्रत्ययों के पहले हि होता है यथा—हसिष्यति = हसिहिइ, करिष्यति, = करिहिइ ।
६. पर्यमान काल के, भविष्यत्काल के और विधि लिङ्ग और आज्ञार्थक प्रत्ययों के स्थान मे वज और वजा होता है, यथा—हवति, हसिष्यति, हवैत, हवतु = हसेज्ज, हसेज्जा ।
७. भाव और कर्म मे ईम और इज्ज प्रत्यय होते हैं, यथा—हव्यते = हवीमइ, हसिज्जइ ।

कृदन्त

१. शीलाधार्यक तु प्रत्यय के स्थान मे इर होता है; यथा—गत्तु = गमिइ, नमन्थील = नमिइ ।
२. धा-प्रत्यय के स्थान मे तुम, अ, तूण, तुमाण और ता होता है, जैसे—पठित्ता = पठित्त, पठिअ, पठिअण, पठित्तमाण, पठित्ता ।

तद्धित

१. स्व प्रत्यय के स्थान मे त और तण होता है, यथा—देवत्व = देवत्त, देवतण ।

(१०) अपभ्रंश

महर्षि पतञ्जलि ने अपने महामाध्य मे लिखा है कि “भूयोतोऽप्यशब्दा घल्लोवाश शब्दा । एकैकस्य हि शब्दस्य बहुवोऽग्र शा , तद्यथा—गौरि-यस्त शब्दस्य गावी, गोणी गोता, गोपोतलिका इत्येवमादयोऽग्र शा ” अर्थात् अपराब्द बहुत और शब्द (शुद्ध) थोड़े हैं, क्योंकि एन एरु शब्द के बहुत अपभ्रंश हैं जैसे ‘गी’ इस शब्द के गावी, गोणी, गोता, गोपोतलिका इत्यादि अपभ्रंश हैं ।

यहाँ पर ‘अपभ्रंश’ शब्द अपशब्द के अर्थ मे ही व्यवहृत है और अपराब्द का अर्थ भी ‘संस्कृत-व्याकरण से अनिद्ध शब्द’ है, यह स्पष्ट है । उक्त उदाहरणों मे ‘गात्री’ और ‘गोणी’ ये दो शब्दों का प्रयोग प्राचीन जैन सूत्र ग्रन्थों मे पाया जाता है और ‘चड तथा ‘आचार्य’ हेमचन्द्र आदि प्राकृत वैयाकरणों ने भी ये दो शब्द अपने अपने प्राकृत-व्याकरणों मे लक्ष्म द्वारा सिद्ध किये हैं । दण्डी ने अपने वाक्यादर्श मे पहले प्राकृत और अपभ्रंश का अलग अलग निर्देश करते हुए वाच्य मे व्यवहृत आभोर प्रभृति का भाषा को अपभ्रंश कही है और बाद मे यह लिखा है कि ‘शास्त्र मे संस्कृत भिन्न सभी भाषाएँ अपभ्रंश कही गई हैं’ । यहाँ पर दण्डी ने शास्त्र शब्द का प्रयोग महाभाष्य प्रभृति व्याकरण के अर्थ मे ही किया है । पतञ्जलि प्रभृति सरास्य वैयाकरणों के मत मे संस्कृत भिन्न सभी प्राकृत भाषाएँ अपभ्रंश के अन्तर्गत हैं, यह ऊपर के उनके लेख से स्पष्ट है । परन्तु प्राकृत-वैयाकरणों के मत मे अपभ्रंश भाषा प्राकृत का ही एक अवांतर भेद है । राजपालसार की टीका मे नमिसाधु ने लिखा है कि ‘प्राकृतमेवापभ्रंशः” (२ १२) अर्थात् अभ्रंश भी शौरसेना, मागधा आदि की तरह एक प्रकार का प्राकृत ही है । उक्त क्रमिक उद्धरणों से यह स्पष्ट है कि पतञ्जलि के समय मे जिस अपभ्रंश शब्द का ‘संस्कृत व्याकरण असिद्ध (काई भा प्राकृत)’ इस सामान्य अर्थ मे प्रयोग होता था उसने आगे जाकर क्रमशः ‘प्राकृत का एक भेद’ इस विशेष अर्थ को धारण किया है । हमने भी यहाँ पर अपभ्रंश शब्द का इस विशेष अर्थ मे ही व्यवहार किया है ।

अपभ्रंश भाषा के निर्दशन विक्रमोर्वशी घर्मायुष्य आदि नाट्यग्रन्थों मे, हरिवंशपुराण, पद्मवर्णि (स्वयंभूदेवटन) निर्दशन भविष्यत्कथा, संजयमञ्जरी, महापुराण, यक्षोत्तरपरित नागकुमारचरित, कथाकोश, पार्श्वपुराण मुद्ररंजचरित, करकडुचरित, जयतिष्ठमृगशंखोत्त, विनासवर्कहा सणकुमारचरित, सुपासनाहचरित, कुमारपालचरित, कुमारपाल-प्रतिषेध, उपदेशतरंगिणी प्रभृति काव्यग्रन्थों मे, प्राकृतमहाण, सिद्धहेमचन्द्राकरण (अष्टम अध्याय), संहितसार, पद्मभाषार्थ टिका, प्राकृतसर्वस्व योगरह व्याकरणों मे और प्राकृतविज्ञान नामक छन्द ग्रन्थ मे पाये जाते हैं ।

डॉ. हॉर्नैलि के मत मे जिस तरह आर्य लोगों की कथ्य भाषाएँ अनार्य लोगों के मुख से उच्चारित होने के कारण प्रकृति और समय जिस विकृत रूप को धारण कर पायी थी वह पेशाची भाषा है और वह कोई भी प्रादेशिक भाषा नहीं है, उस तरह आर्यों की कथ्य भाषाएँ भारत के आदिम निवास अनार्य लोगों की भिन्न भिन्न भाषाओं के प्रभाव से जिन रूपांतरों को प्राप्त हुई थी वे ही भिन्न-भिन्न अपभ्रंश भाषाएँ हैं और ये महाराष्ट्री की अपेक्षा अधिक प्राचीन हैं । डॉ. हॉर्नैलि के इस मत का सर प्रियर्सन प्रभृति आधुनिक भाषातत्त्वज्ञ गीनार नहीं करते हैं । सर प्रियर्सन के मत मे भिन्न भिन्न प्राकृत भाषाएँ साहित्य और व्याकरण मे नियन्त्रित होकर जन-साधारण मे अप्रचलित होने के कारण जिन नूतन कथ्य भाषाओं की उत्पत्ति हुई था वे ही अपभ्रंश हैं । ये अपभ्रंश भाषाएँ निरुतीय पञ्चम शताब्दी के बहुत काल पूर्व से ही कथ्य भाषाओं के रूप मे व्यवहृत होती थीं, क्योंकि चण्ड के प्राकृत व्याकरण मे और कालिदास की विक्रमोर्वशी मे इसके निर्दशन पाये जाने के कारण यह निश्चिन्त है कि निरुतीय पञ्चम शताब्दी के पहले से ही ये साहित्य मे स्थान पाने लगी थीं । ये अपभ्रंश भाषाएँ प्रायः दशम शताब्दी पर्यन्त साहित्य की भाषाएँ थीं । इससे बाद फिर जन-साधारण मे अप्रचलित होने से जिन नूतन कथ्य भाषाओं की उत्पत्ति हुई वे ही हिन्दी, बगल, गुजराती वगैरह आधुनिक

१. ‘सौरिखियामी गावीप्रो” ‘गोणै विनाल” (भाषा २, ४, ५) ।

२. ‘लगरमावीप्रो” (विषा १ २ पत्र २६) ।

३. ‘गोणोण सगेल” (व्यवहारमूल ३० ४) ।

४. ‘गोवावी” (प्राकृतमहाण २, १६) । ५. ‘गोणवद” (हे० प्रा० २, १०४) ।

६. ‘गामोरादिगिर काव्येव्यपभ्रंश इति स्मृत्यु ।

शास्त्रे तु संस्कृतप्रदाश्र शतवोदितम्” (१, ३६) ।

आर्य कथ्य भाषाएँ हैं। इनका उत्पत्ति-समय ख्रिस्त की नववीं या दसवीं शताब्दी है। सुतरा, अपभ्रंश भाषाएँ ख्रिस्त की पञ्चम शताब्दी के पूर्व से लेकर नववीं या दशवीं शताब्दी पर्यन्त साहित्य की भाषाओं के रूप में प्रचलित थीं। इन अपभ्रंश भाषाओं की प्रकृति ये विभिन्न प्राकृत-भाषाएँ हैं, जो भारत के विभिन्न प्रदेशों में इन अपभ्रंशों की उत्पत्ति के पूर्वकाल में प्रचलित थीं।

भेद अपभ्रंश के बहुत भेद हैं, प्राकृतचन्द्रिका में इसके ये सतर्जस भेद बताये गए हैं।

‘ब्राह्मणे सातवेदमनुपनामनामरी। बार्हवात्याज्जात्राज्जालटाकमालववैया ॥

गोडोदूतवपाधाःखाण्डवकी तसर्गहला। वातिप्रभाच्यमाण्टिवाज्ज्यादिद्विगीरता ॥

प्राचीनो मध्यदेशीय सूक्ष्मभेदव्यतिथता। रुद्राविराट्पञ्चश वैतासाविप्रभवत् ॥

मार्कण्डेय ने अपने प्राकृतसर्षव में प्राकृतचन्द्रिका से सतर्जस अपभ्रंशों के जो लक्षण और उदाहरण उद्धृत किए हैं। वे इतने अपर्याप्त और अस्पष्ट हैं कि खुद मार्कण्डेय ने भी इनसे सूक्ष्म यह कर नगण्य बताये हैं और इनका प्रथम प्रथम लक्षण निर्देश न कर उक्त समस्त अपभ्रंशों का नागर, ब्राह्मण और उपनागर इन तीन प्रधान भेदों में ही अन्तर्भाज माना है। परन्तु यह बात मानने योग्य नहीं है, क्योंकि जब यह सिद्ध है कि जिन भाषाओं का उत्पत्ति स्थान भिन्न भिन्न प्रदेश हैं और जिनकी प्रकृति भी भिन्न भिन्न प्रदेशों की भिन्न भिन्न प्राकृत भाषाएँ हैं तब वे अपभ्रंश भाषाएँ भी भिन्न भिन्न ही हो सकती हैं और उन सब का समावेश एक दूसरे में नहीं किया जा सकता। वास्तव में बात यह है कि वे सभी अपभ्रंश भिन्न भिन्न होने पर भी साहित्य में निपट न होने के कारण उन सब के निर्देशन ही उपलब्ध नहीं हो सके थे। इसीसे प्राकृतचन्द्रिकानगर न उनके स्पष्ट लक्षण ही कर पाये हैं और न तो उदाहरण ही अधिक दे सके हैं। यही कारण है कि मार्कण्डेय ने भी इन भेदों से सूक्ष्म कहकर टाल दिये हैं। जिन अपभ्रंश भाषाओं के साहित्य निरन्तर होने से निदर्शन पाये जाते हैं उनके लक्षण और उदाहरण आचार्य हेमचन्द्र ने केवल अपभ्रंश के सामान्य नाम से और मार्कण्डेय ने अपभ्रंश के तीन विशेष नामों से दिये हैं। आचार्य हेमचन्द्र ने ‘अपभ्रंश’ इस सामान्य नाम से और मार्कण्डेय ने ‘नागरापभ्रंश’ इस विशेष नाम से जो लक्षण और उदाहरण दिये हैं वे राजस्थानी-अपभ्रंश या राजपूताना तथा गुजरात प्रदेश के अपभ्रंश से ही सम्बन्ध रखते हैं। ब्राह्मणपञ्चश के नाम से सिन्धुप्रदेश के अपभ्रंश के लक्षण और उदाहरण मार्कण्डेय ने अपने व्याकरण में दिये हैं और उपनागर अपभ्रंश का कोई लक्षण न देकर केवल नागर और ब्राह्मण के मिश्रण की ‘उपनागर अपभ्रंश’ कहा है। इसके सिवा सीरसेनी-अपभ्रंश के निर्देशन मध्यदेश के अपभ्रंश में पाये जाते हैं। अन्य अन्य प्रदेशों के अध्या महाप्राचीन, अर्धमागधी, मागधी और पैराची भाषाओं के जो अपभ्रंश थे उनका कोई साहित्य उपलब्ध न होने से कोई निर्देशन भी नहीं पाये जाते हैं।

भिन्न भिन्न अपभ्रंश भाषा का उत्पत्ति स्थान भी भारतवर्ष का भिन्न भिन्न प्रदेश है। रुद्र ने और वाग्भट ने उत्पत्ति स्थान अपने अपने अलङ्कार ग्रन्थ में यह बात सचेत में अथवा स्पष्ट रूप में इस तरह कही है —

“वन्दोऽत्र भूरिभेदो देशविशेषात्पञ्चश” (काव्यालङ्कार २, १२)।

‘अपभ्रंशं शब्दं युष्मद् तत्तद्देशेण भाषितम्’ (वाग्भटलङ्कार २, ३)।

ख्रिस्त की पञ्चम शताब्दी के पूर्व से लेकर दशम शताब्दी पर्यन्त भारत के भिन्न भिन्न प्रदेश में कथ्य भाषाओं के प्राथमिक आर्य कथ्य रूप में प्रचलित जिस जिस अपभ्रंश भाषा से भिन्न-भिन्न प्रदेशों की जो जो आधुनिक आर्य कथ्य भाषाओं की प्रकृति भाषा (Modern Vernacular) उत्पन्न हुई है उसका विवरण यों है —

१. बर्गोपसाहित्यपरिपक्व पत्रिका १३१७।

२. “टाक टकभाषानामगोपनागदामिन्जवारणीयम्। तबहुला मालवी। वाडीबहुला पाञ्चाली। उल्लूगवा वैदर्भी। सवीधनाञ्च लाटी। ईरारोकारबहुला श्रीष्टी। सवीया वैकेयी। समासाला गौडी। डकारबहुला कौन्तली। एकारिणी च पाण्ड्या। युकाट्या सैहली। हिपुता कान्तिणी। प्राण्या तद्देशीयभाषाया। ज(ग)ट्टादिबहुलाऽऽभीरी कर्णवियेयात् काण्टी। मध्यदेशीया तद्देशीयाया। संकुताया च गौर्जरी। चकारात् पूर्वोक्तकभाषापरिपक्व। रत्त(ल)ह्या व्यत्ययेन पाश्चात्या। रेफ व्यत्येन द्राविडी। डकारबहुला वैतालिकी। एभीबहुला काञ्ची। रोपा देशभाषाविप्रदात् ॥”

३. “नागरी ब्राह्मणोपनागरवैति त्रयम्। अपभ्रंशं परे सूक्ष्मभेदतान् पुष्कलं मता” (प्रा० स पृष्ठ ३)। “मध्यपामपञ्चश-नामैवेवा तर्भाज” (प्रा० स० पृष्ठ १२२)।

महाराष्ट्री-अपभ्रंश से मराठी और कोंकणी भाषा ।

मागधी-अपभ्रंश की पूर्वे शाखा से बंगला, उड़िया और आसामी भाषा ।

मागधी-अपभ्रंश की बिहारी शाखा से मैथिली, मगही और भोजपुरिया ।

अर्धमागधी अपभ्रंश से पूर्वोय हिन्दी भाषाएँ अर्थात् अवधी, बघेली और छत्तीसगढ़ी ।

सौरसेनी-अपभ्रंश से बुन्देली, कन्नौजी, ब्रजभाषा, बाँगरू, हिन्दी या उर्दू ये वाश्चात्य हिन्दी भाषा ।

नागर-अपभ्रंश से राजस्थानी, मालवी, मेवाड़ी, जयपुरी, मारवाड़ी तथा गुजराती भाषा ।

पालि से सिन्धली और मालदीवन ।

टाकी अथवा टाकी से लहण्डी या पश्चिमीय पंजाबी ।

टाकी-अपभ्रंश (सौरसेनी के प्रभाव-युक्त) से पूर्वोय पंजाबी ।

त्राचड-अपभ्रंश से सिन्धी भाषा ।

पैशाची-अपभ्रंश से काश्मीरी भाषा ।

लक्षण नागर-अपभ्रंश के प्रधान लक्षण ये हैं :—

वर्ण-परिवर्तन

- भिन्न-भिन्न स्वरों के स्थान में भिन्न-भिन्न स्वर होते हैं; यथा—कृत्य = कच, कच, कचन = वेणु, वीण; बाहु = बाह, बाहा; बाहु; प्रु = पट्टि, पिट्टि, पुट्टि; तुण = तण, त्रिण, तुण; सुह्व = सुह्व, सुह्व; वेखा = तिह, सोह, वेह ।
- स्वरों के मध्यवर्ती असंयुक्त क, ख, त, थ, य और फ के स्थान में प्रायः क्रमशः ग, घ, ङ, च, व और न होता है; यथा—विष्णुदेवर = विष्णोद्वगु, सुख = सुग, कथित = कथि, रागव = रावग, लकच = लमत ।
- अनादि और असंयुक्त न के स्थान में वैकल्पिक सानुनासिक व होता है; यथा—कमत = कवैत, कमत, भ्रमर = भवैर, भमर ।
- संयोग में परवर्ती र का विकल्प से लोप होता है; यथा—प्रिय = पिय, प्रिय; चन्द्र = चन्द, चन्द्र ।
- वही-वही संयोग के परवर्ती य का विकल्प से र होता है; जैसे—व्यास = वान, वास, व्याकरण = वागरण, वागरण ।
- महाराष्ट्री में जहाँ न्ह होता है वहाँ अपभ्रंश में म्भ और न्ह दोनों होते हैं; यथा—गोम्भ = गिम्भ, मिम्भ; श्लेम्भ = सिम्भ, सिम्भ ।

नाम-विभक्ति

- विभक्ति के प्रसंग में ह्रस्व स्वर का दीर्घ और दीर्घ का ह्रस्व प्राय होता है; यथा—श्यामनः = सामनः, लङ्गाः = लङ्गा, हृष्टि = शिष्टि; पुत्री = पुति ।
- साधारणतः सातों विभक्ति के जो प्रथम हैं वे नाचे दिये जाते हैं । छिग-भेद में और शब्द-भेद में अनेक विशेष प्रत्यय भी हैं, जो विस्तार-भय से यहाँ नहीं दिये गए हैं ।

एकवचन

प्रथमा	उ, हो
द्वितीया	=
तृतीया	ए
चतुर्थी	सु, हो, स्तु
पञ्चमी	हे, ह
षष्ठी	सु, हो, स्तु
सप्तमी	ह, हि

बहुवचन

.
.
हि
हैं, °
हैं
हैं, °
हि

आख्यात-विभक्ति

एकवचन

१ पु०	उं
२ पु०	हि
३ पु०	ह, ए

बहुवचन

हैं
ह
हि

२. मध्यम पुरुष के एकवचन में आज्ञार्थ में इ व और ए होते हैं, यथा—कुरु = करि, कर, करे ।
 ३. भविष्यकाल में प्रत्यय के पूर्व में स आगम होता है, यथा—भविष्यति = होसह ।

श्रुदन्त

१. तव्य-प्रत्यय के स्थान में झण्वत्, एवञ्त् और एवा होता है, यथा—कर्तव्य = वरिएवञ्त्, करेवञ्त्, वरेवा ।
 २. त्वा के स्थान में इ, इत् इवि, भवि, एवि, एष्णिषु, एवि, एविषु, होते हैं, यथा—कृत्वा = वरि, करित, करिवि, करवि, करेप्पि, करेष्णिषु, करेवि, करेविषु ।
 ३. तुप् प्रत्यय की जगह एव, भण, भणहं, भणहि एवि, एष्णिषु, एवि, एविषु होते हैं, यथा—कनुम् = करेव, करण करणहं कर-एहि, करेप्पि, करेष्णिषु, करेवि, करेविषु ।
 ४. शीलाद्यर्थक तु-प्रत्यय के स्थान में भणम् होता है, जैसे—कर्त्तुं = करणम्, मारयितुं = मारणम् ।

तद्धित

१. त्व और ता के स्थान में ल्यण होता है, यथा—देवत्व = देवल्ण, महत्त्व = महल्ण ।

हम पहले यह कह आये हैं कि वैदिक और लौकिक संस्कृत के शब्दों के साथ तुलना करने पर जिस प्राकृत भाषा में वर्ण लोप प्रभृति परिवर्तन जितना अधिक प्रतीत हो, वह उसकी ही परवर्ती काल में उत्पन्न मानी जानी चाहिए । इस नियम के अनुसार, हम देखते हैं कि महाराष्ट्री प्राकृत में व्यञ्जनो का लोप सर्वाधिक है, इससे वह अन्यान्य प्राकृत-भाषाओं के पीछे उत्पन्न हुई है, ऐसा अनुमान किया जाता है । परन्तु अपभ्रंश में उक्त नियम का व्यत्यय देखने में आता है, क्योंकि भिन्न भिन्न प्रदेशों की अपभ्रंश भाषाएँ यद्यपि महाराष्ट्री के बाद ही उत्पन्न हुई हैं तथापि महाराष्ट्री में जो व्यञ्जन-वर्ण-लोप देखा जाता है, अपभ्रंश में उसकी अपेक्षा अधिक नहीं, बल्कि कम ही वर्ण लोप पाया जाता है और श्र स्वर तथा सयुक्त रसर भी विद्यमान है । इस पर से यह अनुमान करना असंगत नहीं है कि वर्ण लोप की गति ने महाराष्ट्री प्राकृत में अपनी चरम सीमा से पहुँच कर उसको (महाराष्ट्री को) अरिथ-हीन मॉस पिण्ड की तरह स्वर-बहुल आकार में परिणत कर दिया । अपभ्रंश में उसीकी प्रतिक्रिया शुरू हुई, और प्राचीन स्वर एव व्यञ्जनों को फिर स्थान देकर भाषा को भिन्न आदर्श में गठित करने की चेष्टा हुई । उस चेष्टा का ही यह फल है कि पिछले समय में संस्कृत-भाषा का प्रभाव फिर प्रतिष्ठित होकर आधुनिक आर्य कथ्य भाषाएँ उत्पन्न हुई हैं ।

प्राकृत पर संस्कृत का प्रभाव

जैन और बौद्धों ने संस्कृत भाषा का परित्याग कर उस समय की कथ्य भाषा में धर्मापदेश को लिपिबद्ध करने की प्रथा प्रचलित की थी । इससे जो दो नया साहित्य भाषाओं का जन्म हुआ था, वे जैन सूत्रों को अर्धमागधी और बौद्ध-धर्म-ग्रन्थ की पालि भाषा है । परन्तु ये दो साहित्य-भाषाएँ और अन्यान्य समस्त प्राकृत भाषाएँ संस्कृत के प्रभाव को उल्लंघन नहीं कर सकी हैं । इस बात का एक प्रमाण तो यह है कि इन समस्त प्राकृत भाषाओं में संस्कृत-भाषा के अनेक शब्द अविकल रूप में गृहीत हुए हैं । ये शब्द तत्सम कहे जाते हैं । यद्यपि इन तत्सम शब्दों ने प्रथम स्वर की प्राकृत-भाषाओं से ही संस्कृत में स्थान और रक्षण पाया था, तो भी यह स्वीकार करना ही होगा कि ये सत्र शब्द परवर्ती काल की प्राकृत-भाषाओं में जो अपरिवर्तित रूप में व्यवहृत होते थे वह संस्कृत साहित्य का ही प्रभाव था ।

इसके अतिरिक्त, संस्कृत का ही प्रभाव से बौद्धों ने एक मिश्र भाषा उत्पन्न हुई थी । महायान-बौद्धों के महावैपुल्य सूत्र नामक कतिपय सूत्र ग्रन्थ हैं । ललितविस्तर, सद्धर्म पुण्डरीक, चन्द्रप्रदीपसूत्र प्रभृति इसके अन्तर्गत हैं । इन ग्रन्थों की भाषा में अधिकांश शब्द तो संस्कृत के हैं ही, अनेक प्राकृत शब्दों के आगे भी संस्कृत की विभक्ति लगाकर उनको भी संस्कृत के अनुरूप रिये गए हैं । पार्श्वचर्य विद्वानों ने इस भाषा को 'गाथा' नाम दिया है । परन्तु यहाँ पर यह कहना आवश्यक है कि इसका यह 'गाथा' नाम असंगत है, क्योंकि यह संस्कृत मिश्रित प्राकृत का प्रयोग उक्त ग्रन्थों में केवल पद्यांशों में ही नहीं, बल्कि गद्यांश में भी देखा जाता है । इससे इन ग्रन्थों की भाषा को 'गाथा' न कहकर 'प्राकृत मिश्र-संस्कृत' या 'संस्कृत मिश्र प्राकृत' अथवा सत्तेज में मिश्र भाषा ही कहना उचित है ।

डॉ. वर्नैक और डॉ. राजेन्द्र लाल मित्र का मत है कि, 'संस्कृत भाषा, क्रमशः परिवर्तित होती हुई प्रथम गाथा भाषा के रूप में और बाद के पालि भाषा के आन्तर में परिणत हुई है । इस तरह गाथा भाषा संस्कृत और पालि की मध्यवर्ती

होने के कारण इन दोनों के (संस्कृत और पालि के) लक्षणों से आक्रान्त है ।' यह सिद्धान्त सर्वथा भ्रान्त है, क्योंकि हम यह पहले ही अच्छी तरह स्थापित कर चुके हैं कि संस्कृत भाषा प्रमथः परिणत होकर पालि भाषा में परिणत नहीं हुई है। किन्तु पालि-भाषा वैदिक-युग की एक प्रादेशिक भाषा से ही उत्पन्न हुई है । और, गाथा-भाषा पालि-भाषा के पहले प्रचलित न थी, क्योंकि गाथा भाषा के समस्त ग्रन्थों का रचना काल क्रिस्त-पूर्व दो सौ वर्षों से लेकर क्रिस्त की तृतीय शताब्दी पर्यन्त का है, इससे गाथा-भाषा बहुत तो पालि भाषा की समझाई न हो सकती है, न कि पालि भाषा की पूर्वस्था । यह भाषा संस्कृत के प्रभाव से कायम रखकर विभिन्न प्राकृत भाषाओं के मिश्रण से बनी है, इसमें सन्देह नहीं है । यही कारण है कि इसके शब्दों को प्रस्तुत कोष में स्थान नहीं दिया गया है ।

गाथा-भाषा का थोड़ा नमूना उल्लिखितर से यहाँ उद्धृत किया जाता है :—

“मधुधं निधवं शरदन्ननिभं, नटरङ्गसमा जगि जन्मि ऋति ।

गिरितपसम लघुरीमज्जवं, व्रजतापु जगे यय विष्णु नमे ॥ १ ॥”

“उदवचन्नसमा हमि कमणुला । प्रतिविम्ब इवा गिरिपोय यया ।

प्रतिभाससमा नटरङ्गसात्तप्य स्वप्नसमा चित्तिवर्जजैः ॥ १ ॥” (शु २०४, २०६) ।

बुद्धदेव और उसके सारथी की आपस में बातचीत :—

“एषो हि देव पुरुषो जयमानिमुत्, लीऐन्निप. शुभ्र सितो बलवीर्यहीनः ।

कधुजनेन परिमुत् भनापमुत्, न्यासिमये अपविद्ध बनेव दाह ॥

कुलधर्मे एव ध्यमस्य हि रवं भणाहि, मयवापि सर्वजगतोऽप्य इयं दावस्या ।

शीघ्रं भणाहि वचनं ययभूतमेतत्, श्रुत्वा तथार्थमिह योनि संचिन्तयिष्ये ॥

नैतन्य देव कुलधर्मे न राष्ट्रधर्मे, सर्वे जगम्य जर दीवन् धर्मधाति ।

तुम्यपि मातुपितृबान्धवजातिस्त्वं, जयसा धमुक्त नहि धान्यवतिर्नस्य ॥

षिक् सारथे धनुषबाणजनस्य मुदिष्यद् दीवनेन मयसत जय न पश्ये ।

आधर्तयन्निह रय पुनरह प्रवेद्ये, किं मया लीडरतिविजयसा भितस्य ॥”

संस्कृत पर प्राकृत का प्रभाव

पहले जो यह कहा जा चुका है कि वैदिक काल के मध्यदेश-प्रचलित प्राकृत से ही वैदिक संस्कृत उत्पन्न हुआ है और यह साहित्य और व्याकरण के द्वारा क्रमशः भाजित और नियन्त्रित होकर अन्त में लौकिक संस्कृत में परिणत हुआ है; एवं प्राकृत के अन्तर्गत समस्त उसमें शब्द संस्कृत से नहीं, परन्तु प्रथम स्तर के प्राकृत से ही संस्कृत में और द्वितीय स्तर के प्राकृत में आये हैं; प्राकृत के अन्तर्गत तद्वय शब्द भी संस्कृत से प्राकृत में गृहीत हैं और प्रथम स्तर के प्राकृत से ही क्रमशः परिवर्तित होकर परवर्ती काल के प्राकृत में स्थान पाये हैं और संस्कृत व्याकरण-द्वारा नियन्त्रित होने से वे शब्द संस्कृत में अपरिवर्तित रूप में ही रह गये हैं, इसी तरह प्राकृत के अधिराश देशो-शब्द भी वैदिक काल के मध्यदेश-भिन्न अन्यान्य प्रदेशों के आर्य-उपनिवेशों की प्राकृत-भाषाओं से ही वाद की प्राकृत-भाषाओं में आये हैं; इससे उन्होंने (देशी शब्दों ने) मध्यदेश के प्राकृत से उत्पन्न वैदिक और लौकिक संस्कृत में कोई स्थान नहीं पाया है । इस पर से यह सहज ही समझा जा सकता है कि प्राकृत ही संस्कृत भाषा का मूल है ।

अब इस जगह हम यह बताना चाहते हैं कि प्राकृत से न केवल वैदिक और लौकिक संस्कृत भाषाएँ उत्पन्न हो गई हैं, बल्कि संस्कृत ने श्रुत होकर साहित्य-भाषा में परिणत होने पर भी अपनी आग पुष्टि के लिए प्राकृत से ही अनेक शब्दों का संग्रह किया है । ऋग्वेद आदि में प्रयुक्त धंक् (वक्), यहू (वृष्), मेह (मेघ), पुराण (पुराण), वितउ (चालनी), उच्छेक (उश्तेक), प्रमृति शब्द और लौकिक संस्कृत में प्रचलित वितउ (चालनी), आयुत (मणिगोपति), खुर (खुर), गोखुर (गोखुर), गुग्गुलु (गुग्गुलु), छुरिका (छुरिका), अच्छ (अच), कच्छ (कच), पियाल (पियाल), गह (गरह), चन्द्र (चन्द्र), इन्द्र (इन्द्र), शिथिल (श्य), मरन्द (मवरन्द), किसल (किसल), हाहा (गुराविशेर), हेयाक (व्यमन), दाढा (दंढा), खिडकिना (लघुदाद, भाषा में खिडकी), जारुज (जयपुज), पुराण (पुराण) योगेद शब्द प्राकृत

से ही अविच्छिन्न रूप में गृहीत हुए हैं और मारिप (मार्य), जहियसि (हास्यति), बूमि (ब्रूमि), निरुतन (निरुतन), लटभ (लुत्तर), प्रभृति प्राकृत के ही मूल शब्द मानित कर संस्कृत में लिखे गए हैं ।

प्राकृत-भाषाओं का उत्कर्ष

कोई भी कथ्य भाषा क्यों न हो, वह सर्वथा ही पारवर्तन-शील होती है । साहित्य और व्याकरण उसको नियम के बन्धन में जकड़कर गति-हीन और अपरिवर्तनीय करते हैं । उसका फल यह होता है कि साहित्य की भाषा क्रमशः कथ्य भाषा से भिन्न हो जाती है और जन-साधारण में अप्रचलित मृत-भाषा में परिणत होती है । साहित्य की हरकोई भाषा एक समय की कथ्य भाषा से ही उत्पन्न होती है और वह जब मृत-भाषा में परिणत होती है तब कथ्य भाषा से फिर एक नयी साहित्य की भाषा की सृष्टि होती है । इस तरह एक समय की कथ्य भाषा से ही वैदिक और लौकिक संस्कृत उत्पन्न हुई थी और वह साधारण के पक्ष में दुर्बोध होने पर अर्थमागधी, पालि आदि प्राकृत भाषाओं में साहित्य में स्थान पाया था । ये सब प्राकृत-भाषाएँ भी समय पाकर जन-साधारण में दुर्बोध हो जाने पर संस्कृत की तरह मृत-भाषा में परिणत हो गईं और भिन्न-भिन्न प्रदेश की अपभ्रंश भाषाएँ साहित्य-भाषाओं के रूप में व्यवहृत होने लगीं । अपभ्रंश-भाषाएँ भी लघु दुर्बोध होकर मृत-भाषाओं में परिणत हो चलीं तब हिन्दी, बंगला, गुजराती, मराठी प्रभृति आधुनिक आर्य कथ्य भाषाएँ साहित्य की भाषाओं के रूप में गृहीत हुई हैं । उक्त समस्त कथ्य भाषाएँ उस उस युग की साहित्य की मृत-भाषाओं की तुलना में अवश्य ऐसे कतिपय उत्कर्षों से विशिष्ट होनी चाहिए जिनकी वहीलन ही ये उस-उस समय की मृत-भाषाओं की साहित्य के सिंहासन से च्युत कर उस सिंहासन को अपने अधिकार में कर पायी थी । अब यहाँ हमें यह जानना जरूरी है कि ये उत्कर्ष कौन थे ?

हरकोई भाषा का सर्व-प्रथम उद्देश्य होता है अर्थ-प्रकाश । इसलिए जिस भाषा के द्वारा जितने स्पष्ट रूप से और जितने अल्प प्रयास से अर्थ-प्रकाश किया जाय वह उतनी ही उत्कृष्ट भाषा मानी जाती है । इन दो कारणों के बल होकर ही भाषा का निरन्तर परिवर्तन साधित होता है और भिन्न-भिन्न काल में भिन्न-भिन्न कथ्य-भाषाओं से नयी नयी साहित्य भाषाओं की उत्पत्ति होती है । वैदिक संस्कृत क्रमशः लुप्त होकर लौकिक संस्कृत की उत्पत्ति उक्त दो कारणों से ही हुई थी । वैदिक शब्द-समूह अप्रचलित होने पर उसके अनावश्यक प्रकृति और प्रत्ययों को बाद देकर जो सहज ही समझ में आ सकें वैसे प्रकृति और प्रत्ययों का संग्रह कर वैदिक भाषा से लौकिक संस्कृत की उत्पत्ति हुई थी । संस्कृत-भाषा के प्रकृति प्रत्यय काल-क्रम से अप्रचलित होकर जब दुर्ग-बोध हो उठे तब उस समय की कथ्य भाषाओं से ही स्पष्टार्थक, सुलोच्यारण योग्य, मधुर और कोमल प्रकृति-प्रत्ययों का संग्रह कर संस्कृत के अन्तर्गम्य, दुर्बोध, कठोर्वाच्य, कठोर और कर्करा प्रकृति-प्रत्यय संग्रह समाप्तों का वर्जन कर अर्थमागधी, पालि और अन्यान्य प्राकृत-भाषाएँ साहित्य-भाषाओं के रूप में व्यवहृत होने लगीं । यदि इन सब नूतन साहित्य-भाषाओं में संस्कृत की अपेक्षा अर्थ-प्रकाश की अधिक शक्ति, अल्प आयास से और सुलभ से उच्चारण योग्यता प्रभृति गुण न होते तो ये कभी भी संस्कृत जैसी समृद्ध भाषा की साहित्य के सिंहासन से च्युत करने में समर्थ न होतीं । काल-क्रम से ये सब प्राकृत-साहित्य-भाषाएँ भी जब व्याकरण द्वारा नियन्त्रित होकर अप्रचलित और जन-साधारण में दुर्बोध हो चलीं तब उस समय प्रचलित प्रादेशिक अपभ्रंश भाषाओं ने इनसे दृढतर साहित्य भाषाओं का स्थान अपने अधिकार में किया । यहाँ पर यह प्रश्न हो सकता है कि साहित्य की प्राकृत भाषाओं की अपेक्षा इन अपभ्रंश-भाषाओं में वह कौन सा गुण था जिससे ये अपने पहले की प्राकृत साहित्य-भाषाओं को परास्त कर उनके स्थान को अपने अधिकार में कर सकीं ? इसका उत्तर यह है कि कोई भी गुण चरम सीमा में पहुँच जाने पर फिर वह गुण ही नहीं रहने पाता, वह दोष में परिणत हो जाता है । संस्कृत की अपेक्षा प्राकृत-भाषाओं में यह उत्कर्ष था कि इनमें संस्कृत के कर्करा और कठोर्वाच्य अत्यधिक और अत्यधिक व्यञ्जन वर्णों के स्थान में सब कोमल और सुलोच्यारणीय वर्ण व्यवहृत होते थे । किन्तु इस गुण की भी सीमा है, महाभाट्टी प्राकृत में यह गुण सीमा का अतिक्रम कर गया, यहाँ तक कि संस्कृत के अनेक व्यञ्जनों का एकदम ही लोप कर उनके स्थान में स्वर-वर्णों की परम्परा-द्वारा समस्त शब्द गाठित होने लगे । इससे इन शब्दों के उच्चारण सुख साध्य होने के बदले अधिकतर कष्टसाध्य हुए, क्योंकि बीच-बीच में व्यञ्जन-वर्णों से व्यवहित न होकर केवल स्वर-परम्परा का उच्चारण करना पड़कर होता है । इस तरह प्राकृत-भाषा महाभाट्टी-प्राकृत में आकर जब इस चरम अवस्था में उपनीत हुई तबसे ही इसका पतन अनिवार्य हो गया । इसकी प्रतिक्रिया-

स्वरूप अपभ्रंश भाषाओं में नूतन व्यञ्जन वर्ण बैठे कर सुरोच्चारण योग्यता करने की चेष्टा हुई। इसका फल यह हुआ कि प्रादेशिक अपभ्रंश भाषाएँ साहित्य की भाषाओं के रूप में उन्नत हुई। आधुनिक प्रादेशिक आर्य-भाषाएँ भी प्राकृत भाषाओं के उस दोष का पूर्ण सशोधन करने के लिए नूतन सस्कृत शब्दों को ग्रहण कर अपभ्रंशों के स्थान को अपने अधिकार में करके नवीन साहित्य-भाषाओं के रूप में परिणत हुई। आधुनिक आर्य भाषाओं में पूर्ण वर्तनी प्राकृतों और अपभ्रंशों की अपेक्षा उत्तरपक्ष यह है कि इन्होंने शब्दों के सन्ध्या में प्राकृत और सस्कृत को मिश्रित कर उभय के गुणों का एक सुन्दर सामञ्जस्य किया है। इनके तद्धृत और वैदिक शब्दों में प्राकृत की कोमलता और मधुरता है और तत्सम शब्दों में सस्कृत की ओजस्रिता। आधुनिक आर्य भाषाओं में सस्कृत और प्राकृत दोनों की अपेक्षा उत्तरपक्ष यह है कि ये सस्कृत और प्राकृतों के अनादयक लिंग, वचन और विभक्तियों के भेदों का वर्जन कर, उनके बदले भिन्न भिन्न स्वान्तर शब्दों के द्वारा लिंग, वचन और विभक्तियों के भेदों को प्रकाशित कर और सस्कृत तथा प्राकृतों के विभक्ति-बहुल स्वभाव का परित्याग कर विश्लेषण शील भाषा में परिणत हुई है। इस तरह इन भाषाओं ने अल्प आयास से वक्ता के अर्थ को अधिकतर स्पष्ट रूप में प्रकाशित करने का मार्ग प्रदर्शन किया है। एक गुणों के कारण ही आधुनिक आर्य भाषाओं ने वैदिक सस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश इन सब साहित्य भाषाओं के स्थान पर अपना अधिकार जमाया है।

सस्कृत की अपेक्षा प्राकृत भाषाओं में जो उत्कर्ष—गुण ऊपर बताये हैं वे अनेक प्राचीन ग्रन्थकारों ने पहले ही प्रदर्शित किये हैं। इनके ग्रन्थों से, प्राकृत के उत्तरपक्ष के सन्ध्या में, कुछ वचन यहाँ पर उद्धृत किए जाते हैं —

१. अस्मिन्ना पदम् वचनं पठितुं लोके च ये एव गच्छन्ति ।

कामस्य उत्तमार्ति कुलति, ते क्व एव सज्जति ? ॥ (हर्ष की नायकसप्तमि १, २) ।

अर्थात् जो लोग अत्युत्तम प्राकृत-भाषा को न तो पढ़ना जानते हैं और न सुनना जानते हैं अथवा काम तत्पक्ष की आलोचना करते हैं उनको शरम क्यों नहीं आती ?

२. उन्मिल्लह लायण पयस्य-ज्जायाए सक्कय-वयाण ।

सक्कय सक्काल्लकरिस्सेण पयससि पदावो ॥ (वाग्गिरियान का गडबहो ६५) ।

सस्कृत शब्दों का लान्घन प्राकृत की छाया से ही व्यक्त होता है सस्कृत-भाषा के उत्कृष्ट सस्वर में भी प्राकृत का प्रभाव व्यक्त होता है ।

३. लुक्कमल्ल-दमण सन्निवेश सिस्सिराप्पो वध रिद्धीप्पो ।

अस्मिन्ना पदम् वचनं पठितुं लोके च ये एव गच्छन्ति ॥ (गडबहो ७२) ।

सृष्ट के प्रारम्भ से लेकर आज तक प्रचुर परिमाण में नूतन नूतन अर्थों का दर्शन और सुन्दर रचनावाली प्रत्यक्ष संपत्ति वही भी है तो वह केवल प्राकृत में ही ।

४. हरि-विसेतो विज्जावधो य भट्ठावधो य मण्डीण ।

इह वहि वृत्तो वृत्तो वृत्तो वृत्तो वृत्तो वृत्तो वृत्तो ॥ (गडबहो ७५) ।

प्राकृत भाषा पढ़ने के समय हृदय के भीतर और बाहर एक ऐसा अभूत पूर्ण हर्ष होता है कि जिससे दोनों ओर एक ही साथ विकसित और सुदृढ़ होती है ।

५. वसो सज्जम वधो पाउअ वधोवि होइ सुसमारो ।

पुरिस-महिला जसिम्ममिन्तर तेतिम्मिमाण ॥ (राजेश्वर की कर्पूर-जरी, पद्य १) ।

सस्कृत भाषा कर्कश और प्राकृत भाषा मुकुमार है। पुरुष और महिला में विनता अनुर है, इन दो भाषाओं में भी उतना ही प्रेम है ।

१. अमृत प्राकृत काव्य पठितुं श्रोतुं च ये न जानन्ति । काम्यमनस्वविधा कुर्वन्ति ते वचनं तज्जति ? ॥

२. उन्मिल्लह लायण प्राकृतज्जाया सक्कयपदानां । सस्कृतमन्त्रोन्मिल्लह प्राकृतस्यापि प्रभाव ॥

३. नवामात्र-सज्जम सन्निवेशसिस्सिरा व पदं । अस्मिन्ना पदम् वचनं पठितुं लोके च ये एव गच्छन्ति ॥

४. हर्ष-विसेतो विज्जावधो मुत्तलीकार-वधो । इह वहि वृत्तो वृत्तो वृत्तो वृत्तो वृत्तो वृत्तो ॥

५. पदम् सस्कृतम् प्राकृतम् अमृतं वचनं मुकुमार । पुरुषमहियुर्गोपविद्वान्तरं स्तव्यम् ॥

‘गिर ध्व्या दि०या प्रकृतिसमुद्रा प्राकृतगिर ।

सुमन्योऽपन्न स सरसरपन भूतवचनम् ।’ (राजशेखर का बालरामायण १, ११) ।

संस्कृत भाषा सुनने योग्य है, प्राकृत भाषा स्वभाव मधुर है, अपन्न ग भाषा भव्य है और पौराणी भाषा की रचना रस पूर्ण है ।

‘संनय कव्यस्तःथ जण न याणति मद-बुद्धीया ।

सव्याणवि सुह बोहै तैणैम पाय्यं रइय ॥

गुढल्य वेसि रहिय सुनलिय-व नोहै विरइय रम्प ।

पायय-नव्व लोए वस्स न हियव मुआदे ? ॥ (महेश्वरभूरि का पञ्चमीमाहात्म्य) ।

सामान्य मनुष्य संस्कृत काव्य के अर्थ को समझ नहीं पाते हैं । इस लिये यह मन्य उस प्राकृत भाषा में रचा जाता है जो सब लोगों को सुलभ होय है ।

गूढार्थक देशी शब्दों से रहित और सुललित पदा में रचा हुआ सुंदर प्राकृत काव्य किसके हृदय को सुली नहीं करता ?

‘उत्तमज सरसय कव्व सक्कय-कव्व च निम्मिय जेण ।

सस हरं व पत्ति सइयइतट्टत्तण कुणइ ॥’

(वज्जालंग (?) से अपन्न शकाव्ययों को प्रस्ता० पृष्ठ ७६ में उद्धृत) ।

संस्कृत काव्य को छोड़ो और जिसने सरस काव्य की रचना की उसका भी नाम मत लो, क्योंकि वह (संस्कृत) जलते हुए घोंस के घर की तरह ‘तड तड तट्ट’ आवाज करता है—अतिरुद्ध लगता है ।

‘पादम कव्वम्मि रओ नो जायइ तड व छेय भणिएहि ।

उयत्तस य वासिय सीयत्तस तिंति न वच्चामो ॥

लसिए मधुरवसरण जुवई यण वल्लहे स सिंघारे ।

सते पादय कव्वे को सक्कइ सक्कय पडिउ ? ॥’ (जयवल्लभ का वज्जालंग, पृष्ठ ६)

प्राकृत भाषा की कविता में और विदग्ध के वचनों में जो रस आता है उससे थाली और शातल जल की तरह, दृष्टि नहीं होती है—मन रुभी ऊषता नहीं है—उत्कण्ठा निरंतर बनी हो रहती है ।

जब सुंदर मधुर, शृङ्गार रस पूर्ण और युवतियों को प्रिय ऐसा प्राकृत काव्य मौजूद है तब संस्कृत पढ़ने को कौन जाता है ?

१. संस्कृतवाक्यस्यार्थं येन न जानति मद्बुद्धयः । सर्वेषामपि सुखबोधं तेनैव प्राकृतं रचितम् ॥

गुढार्थदेशीरहितं सुललितवर्णैर्विरचितं रम्यम् । प्राकृतकाव्यं कोके कस्य न हृदयं मुखयति ? ॥

२. उत्तमयता संस्कृतकार्यं संस्कृतकाव्यं च निर्मितं येन । वरागृहमिव प्रदीपं तद्वतद्वतट्टत्वं करोति ॥

३. प्राकृतवाक्ये रघो यो जायते तथा वा श्लेषसिद्धौ । उत्कण्ठं च वासितशीतलस्य दृष्टिं न व्रजाम् ॥

सति मधुराक्षरैः युवतिजनवल्लभं सम्यगोरे । सति प्राकृतवाक्ये च ध्वक्ते संस्कृतं पठितुम् ? ॥

इस कोप में स्वीकृत पद्धति

१. प्रथम काले टाइपो में क्रम से प्राकृत शब्द, उसके बाद सादे टाइपो में उस प्राकृत शब्द के लिङ्ग आदि का संक्षिप्त निर्देश, उसके पश्चात् काले कोष्ठ (ब्रकेट) में काले टाइपो में प्राकृत शब्द का संस्कृत प्रतिशब्द, उसके अनन्तर सादे टाइपो में हिन्दी भाषा में प्रथम और तदनन्तर सादे टाइपो में ब्रकेट में प्रमाण (रेफरेंस) का उल्लेख किया गया है।
२. शब्दों का क्रम नागरी वर्ण-माला के अनुसार इस तरह रखा गया है :—अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, सं, क, ख, ग आदि। इस तरह अनुस्वार के स्थान की गणना संस्कृत-कोषों की तरह पर-सर्वर्ण अनुनासिक व्यंजन के स्थान में न कर अन्तिम स्वर के बाद और प्रथम व्यंजन के पूर्व में हो करने का कारण यह है कि संस्कृत की तरह प्राकृत में व्याकरण की दृष्टि से भी अनुस्वार के स्थान में अनुनासिक का होना कहीं भी अनिवार्य नहीं है और प्राचीन ह्यन्तर्निहित पुस्तकों में प्रायः सर्वत्र अनुस्वार का ही प्रयोग पाया जाता है।
३. प्राकृत शब्द का प्रयोग विशेष रूप से प्रार्थ (मध्वनागवो) और महाप्राष्ट्री भाषा के प्रार्थ में और सामान्य रूप से प्रार्थ से लेकर अक्षर 'श' भाषा तक के प्रार्थ में किया जाता है। अस्तुत कोप के 'प्राकृत शब्द-महाप्राष्ट्री' नाम के प्राकृत-शब्द सामान्य प्रार्थ में ही गृहीत है। इससे यहाँ प्रार्थ, महाप्राष्ट्री, शीरसेनी, अशोक विद्यालिपि, देश्य, मागरी, पैशाची, बुद्धिकापेशाची तथा अक्षर 'श' भाषाओं के शब्दों का संग्रह किया गया है। परन्तु प्राचीनता और आदिभ्य की दृष्टि से इन सब भाषाओं में प्रार्थ और महाप्राष्ट्री का स्थान ऊँचा है। इससे इन दोनों के शब्द यहाँ पूर्ण रूप से लिए गये हैं और शीरसेनी आदि भाषाओं के प्रायः ऊँची शब्दों का स्थान दिया गया है जो या तो प्राकृत (प्रार्थ और महाप्राष्ट्री) से विशेष भेद रखते हैं अथवा जिनका प्राकृत रूप नहीं पाया गया है, जैसे—'ध्वेय', 'विष्णुय', 'अपाय-हस्तय', 'संभावीमयि' आदि। इस भेद की पहिचान के लिए प्राकृत में इतर भाषा के शब्दों और आशयतः-कृत के शब्दों के प्रागे सादे टाइपो में कोष्ठ में उस उस भाषा का संक्षिप्त नाम-निर्देश कर दिया गया है, जैसे '(शी)', '(मा)' इत्यादि। परन्तु शीरसेनी आदि में भी जो शब्द या रूप प्राकृत के ही समान हैं वहाँ ये भेद-दर्शक चिह्न नहीं दिए गए हैं।
- (क) प्रार्थ और महाप्राष्ट्री से शीरसेनी आदि भाषाओं के जिन शब्दों में सामान्य (सर्व-शब्द-साधारण) भेद है उनको इस कोप में स्थान देकर पुनरावृत्ति-द्वारा ग्रन्थ के कनेवर की विशेष बखाना इसलिए उचित नहीं समझा गया है कि वह सामान्य भेद प्राकृत-भाषाओं के नापारण अन्तर्भाषी से भी अज्ञात नहीं है और वह उपोद्घात में भी उस उस भाषा के लक्षण-प्रसङ्ग में दिला दिया गया है जिससे वह सहज ही स्थान में आ सकता है।
- (ख) प्रार्थ और महाप्राष्ट्री में भी अक्षर उन्नेयनीय भेद है। तब पर भी यहाँ उनका भेद-निर्देश न करने का एक कारण तो यह है कि इन दोनों में इतर भाषाओं से अपेक्षा-कृत समानता अधिक है। दूसरा, प्राकृत की अपेक्षा प्रार्थों में ही विशेष भेद है जो व्याकरण से सम्बन्ध रखता है, कोप से नहीं, तीसरा, जैन ग्रंथकारों ने महाप्राष्ट्री-प्रार्थों में भी प्रार्थ प्राकृत के शब्दों का अविवल रूप में अधिक व्यवहार कर उनको महाप्राष्ट्री का रूप दे दिया है।
४. प्राकृत में यथुतिशाला नियम खूब ही अभ्यवस्थित है। प्राकृत-अक्षर, सेतुवन्ध, गायान्त्यश्रु और प्राकृतशिल आदि में इस नियम का एकदम प्रभाव है जबकि प्रार्थ, जैन महाप्राष्ट्री तथा गडबहो-अस्तुति प्रार्थों में इस नियम का दृढ़ से ज्यादा आदर देना जाता है, यहाँ तक कि एक ही शब्द में कहीं तो यथुति है और कहीं नहीं, जैसे 'धर्म' और 'धर्म', 'लोभ' और 'लोभ'। इन कोप में ऐसे शब्दों को पुनरावृत्ति न कर केही भी (यथुतिशाले 'य', वे रहते या रहित) एक ही शब्द लिया गया है। इससे रूप तथा अक्षर समान शब्द की

१. देखो प्राकृतप्रकाश, सूत्र ४, १४, १७, हेमचन्द्र-प्राकृत-व्याकरण, सूत्र १, २५, और प्राकृतसर्वस्व, सूत्र, ४, २१ आदि।
२. प्राकृतसर्वस्व (ग्रंथ १-३) आदि में इनके अतिरिक्त और भी प्राच्या, शाक्यरि आदि अनेक उपभेद बताए गए हैं, जिनका समावेश यहाँ शीरसेनी आदि इन्हीं मुख्य भेदों में सम्पाद्यमान किया गया है।
३. इन संक्षिप्त नामों का विवरण संक्षेप-सूची में देखिए।
४. इसी से डॉ. गिराल्ड आदि पाश्चात्य विद्वानों ने प्रार्थ-भिन जैन प्राकृत ग्रंथों को भाषा की 'जैन महाप्राष्ट्री' नाम दिया है। देखो डॉ. गिराल्ड का महाप्राष्ट्रीकरण और डॉ. ट्रेवेल्स की उपदेशमाला की प्रस्तावना।
५. हेमचन्द्र-प्राकृत-व्याकरण का सूत्र १, १८०।

तुलना की सुविधा के लिए आवश्यकतानुसार नहीं वही रेफरेंसवाले शब्द के अ के स्थान में 'म' और 'य' की जगह 'म' किया गया है।

आपे प्रयोगों में यथुत्तिलाले य की तरह 'त' का प्रयोग भी बहुत ही पाया जाता है, जैसे अय (अज) के स्थान में 'मत', 'मईम' (मलीत) की जगह 'मलीय' आदि। ऐसे शब्दों की भी इस कोष में बहुधा पुनरावृत्ति न करके त वजित शब्दों की ही विशेष रूप से स्थान दिया गया है।

६. संयुक्त शब्दों की उनके क्रमिक स्थान में अलग न देकर मूल (पूर्व भागवाले) शब्द के भीतर ही उत्तर भागवाले शब्द प्रकारादि क्रम से काले टाइपों में दिए गए हैं और उसके पूर्व (ठग्वे बिदी) का चिह्न दिया गया है। ऐसे शब्द का संयुक्त प्रतिशब्द भी काले टाइपों में चिह्न दे कर दिए गए हैं। विशेष स्थानों में पाठकों की सुगमता के लिए संयुक्त शब्द उसके क्रमिक स्थान में अलग भी घतलाये गए हैं और उसके अर्थ तथा रेफरेंस के लिए मूल शब्द में जहाँ वे दिए गए हैं देखने की सूचना दी गई है।

(क) इन संयुक्त शब्दों में जहाँ देखा— से जिस शब्द को देखने को कहा गया है वहाँ उस शब्द के उसी मूल शब्द के भीतर देलना चाहिए न कि अन्य शब्द के अन्दर।

७. त, लए (ल), आ, या (तल), मर, यर, तराग (तर), अम, सम (तम) आदि सुगम और सर्वत्र साधारण प्रत्ययवाले शब्दों में प्रत्ययों को छोड़कर केवल मूल शब्द ही यहाँ लिए गए हैं। परन्तु जहाँ ऐसे प्रत्ययों में रूप आवि की विशेषता है वहाँ प्रत्यय-सहित शब्द भी लिए गए हैं।

८. धातुओं के सब रूप सादे टाइपों में और कृदन्तों के रूप काले टाइपों में धातु के भीतर दिए गए हैं।

(क) भान तथा कर्म-कर्मि रूपों का निर्देश भी धातु के भीतर 'कर्म—' से ही किया गया है।

(ख) मूल कृदन्त के रूप तथा अय आस्थान तथा कृदन्त के विशिष्ट रूप बहुधा अलग अलग अपने क्रमिक स्थान दे दिए गए हैं।

९. जिन सत्सरणों से शब्द संभूत किया गया है उनमें रही हुई संपादन की या प्रेत की मूला को सुधार कर शुद्ध शब्द ही यहाँ दिए गए हैं। पाठकों के ज्ञानार्थ साधारण मूलों को छोड़कर विशेष मूलवाले पाठ रेफरेंस के उत्तेजक का अन्तः पूर्व में पद्यों के त्यों उद्धृत भी किये गए हैं और मूलवाले भाग की शुद्धि कौन में 'य' (शुद्धि) के बाद बतला दी गई है, जैसे देखो क्षोद्यम, अद्यम आदि शब्द।

(क) जहाँ भिन्न भिन्न प्रयोगों में या एक ही प्रयोग में भिन्न भिन्न स्थानों में या सत्सरणों में एक ही शब्द के अनेक सविग्न रूप पाये गए हैं और जिनके शुद्ध रूप का निर्णय करना कठिन जान पड़ा है वहाँ पर ऐसे रूपवाले सत् शब्द इस कोष में यथास्थान दिए गए हैं और तुलना के लिए ऐसे प्रत्येक शब्द के अन्तः भाग में दखो— लिख कर इतर रूप भी सूचया गया है जिस देखो 'पुष्पखलच्छिन्नय, पोकरलच्छिन्नय', 'पेसल, पेसेलेस', 'मयालि, सयालि' आदि शब्द।

१०. एक ही रूप के एक या भिन्न भिन्न सत्सरणों में अथवा भिन्न भिन्न प्रयोगों में पाठ करने के सभी शुद्ध शब्द इस कोष में यथास्थान दिए गए हैं जैसे—परिभ्रमसिय (मगवतीमून २५—पन् ६२२) और परिभ्रमसिय (अग. २५ टी—पन् ६२५), निविदेवज (भो. मा. ३३ मूनहताग १, २, ३, १२) और निविदेवज (भा. स. का मूनहताग १, २, ३, १२), परिवरित्तिय (भा. स. का प्रत्ययारण १, ५—पन् ६१) और परिवरित्तिय (अभिधानराजेंद्र का प्रत्ययारण १, ५), सामकोट्ट (सववायाग-भूष, पन् १५५) और सामिकुट्ट अवननसारोद्धार, द्वार ७) प्रभृति।

११. संयुक्त की तरह प्राकृत में भी अय से अय शब्दों के आदि के 'अ' तथा 'य' के नियम में गहरा मत भेद है। एक को शब्द नहीं बकरादि पाया जाता है तो वहाँ बकरादि। जैसे मगवतीमून में बरिय है तो विवाङ्मयुत में बरिय दया है। इससे ऐसे शब्दों की दोनों स्थानों में न देकर जो 'अ' या 'य' जित जान पड़ा है उसी एक स्थान में वह शब्द दिया गया है और उभय प्रकार के शब्दों के रेफरेंस भी यहाँ ही दिये गये हैं। हाँ जहाँ दोनों भागों के अस्तित्व का स्पष्ट रूप से उत्तेज पाया गया है वहाँ दोनों स्थानों में वह शब्द दिया गया है जैसे 'अफानल' और 'अफानल' आदि।

१२. निम्नादि शेषक सतिश शब्द प्राकृत शब्द से ही संबंध रखते हैं, संयुक्त प्रतिशब्द से नहीं।

(क) जहाँ अर्थ भेद में भिन्न आदि का भी भेद है वहाँ उस अर्थ के पूर्व में ही भिन्न स्थान आदि का सूचक शब्द दे दिया गया है। जहाँ ऐसा भिन्न शब्द नहीं दिया है वहाँ उससे पूर्व के अर्थ या अर्थों के स्थान ही स्थान आदि संपन्ना पाहिए।

(ख) प्राकृत में लिंग विधि खूब ही अनियमित है। प्राकृत व्याकरणों ने भी कुछ प्रति सक्षिप्त परन्तु व्यापक सूत्रों के द्वारा इस बात का स्पष्ट उल्लेख किया है। प्राचीन ग्रंथों में एक ही शब्द वा जिस-जिस लिंग में योग जहाँ तक हमें दृष्टिगोचर हुआ है, उस-उस लिंग का निर्देश इन कोष में उस शब्द के पास कर दिया गया है। जहाँ लिंग में विशेष विलक्षणता पाई गई है वहाँ उस ग्रन्थ का अवतरण भी दे दिया गया है।

(ग) जहाँ श्रीलिंग वा विशेष रूप पाया गया है वहाँ उस ग्रन्थ के बाद 'श्री—' निर्देश करके रेकर्ड के साथ दिया गया है।

(घ) प्राकृत में अनेक ग्रंथों में अव्यय के बाद विभक्ति का प्रयोग पाया जाता है। इससे ऐसे स्थानों में अव्यय-सूचक 'अ' के बाद प्रायः लिंग बोधक शब्द भी दिया गया है, जैसे 'वरा' के बाद 'अ. श्री' = (अव्यय तथा श्रीलिंग)।

१९. देश्य शब्दों के संस्कृत प्रतिशब्द के स्थान में केवल देश्य वा सक्षिप्त रूप 'दे' ही काले टाइपो में कोष्ठ में दिया गया है।

(क) जो धातु वास्तव में देश्य होने पर भी प्राकृत के प्रसिद्ध-प्रसिद्ध व्याकरणों में संस्कृत धातु के भादेश कह कर उद्भूत बतलाये गये हैं उनके संस्कृत प्रतिशब्द के स्थान में 'दे' न देकर प्राचीन व्याकरणों की मान्यता बतलाने के उद्देश्य से वे के भादेशि संस्कृत रूप ही दिये गये हैं। इसमें संस्कृत से विन्युल विवहटा रूपवाले इन देश्य धातुओं को वास्तविक उद्भूत समझने की भूल कोई न करे।

(ख) जो धातु उद्भूत होने पर भी प्राकृत व्याकरणों में उसको अव्यय धातु का भादेश बतलाया गया है उस धातु के व्याकरण-प्रदर्शित भादेशि संस्कृत रूप के बाद वास्तविक संस्कृत रूप भी लिखाया गया है यथा पेञ्च के [टश्, प्र + ईश्] आदि।

(ग) प्राचीन ग्रंथों में जो शब्द देश्य रूप से माना गया है परन्तु वास्तव में जो देश्य न होकर उद्भूत ही प्रतीत होता है, ऐसे शब्दों का संस्कृत-प्रतिशब्द दिया गया है और प्राचीन मान्यता बतलाने के लिए संस्कृत प्रतिशब्द के पूर्व में 'दे' दिया गया है।

(घ) जो शब्द वास्तव में देश्य ही है, परन्तु प्राचीन व्याख्याकारों ने उसको उद्भूत बतलाते हुए उसके जो परिमाणित—क्षिप्त-छाल कर बनाये हुए संस्कृत—रूप अपने ग्रंथों में दिये हैं, परन्तु जो संस्कृत-नीयो में नहीं पाये जाते हैं, ऐसे संस्कृत प्रतिशब्दों को यहाँ स्थान न देते हुए केवल 'दे' ही दिया गया है।

(ङ) जो शब्द देश्य रूप से सक्षिप्त है उसके प्रतिशब्द के पूर्व में 'दे' भी दिया है।

२४. प्राचीन व्याख्याकारों के दिये हुए संस्कृत प्रतिशब्द से जो जो अत्रि सभानतावाना सम्प्रज्ञत प्रतिशब्द है वही यहाँ पर दिया गया है, जैसे 'एहायिम' के प्राचीन प्रतिशब्द 'इनापिन' के बदले 'इनामित'।

२५. अनेक ग्रन्थवाले शब्दों के प्रत्येक अर्थ १, २, ३ आदि अर्थों के बाद क्रमशः दिये गये हैं और प्रत्येक अर्थ के एक वा अनेक रेकर्ड उस अर्थ के बाद सादे ब्रकेट में दिये हैं।

(क) धातु के निम्न निम्न रूपवाले रेकर्डों में जो-जो अर्थ पाये गये हैं वे ख १, २, ३ के अर्थों से लेकर क्रमशः धातु के भाष्यगत तथा हस्त के रूप दिये गये हैं और उस उन हस्ताले रेकर्ड का उल्लेख उनी हस्त के बाद ब्रकेट में कर दिया गया है।

(ख) जिन शब्दों का अर्थ वास्तव में सामान्य या व्यापक है किन्तु प्राचीन ग्रंथों में उसका प्रयोग प्रकरण तथा विशेष या प्रकीर्ण अर्थ में हुआ है, ऐसे शब्दों का सामान्य या व्यापक अर्थ ही इस कोष में दिया गया है, यथा—'हयिबग' का प्रकरण-वत् होता 'हाप' के योग्य मान्यता यह विशेष अर्थ यहाँ पर न देकर 'हाप सम्बन्धी' यह सामान्य अर्थ ही दिया गया है। 'एववत्त (नाशन)' आदि उल्लेखित शब्दों के लिए भी यही नियम रखा गया है।

२६. शब्द-रूप, लिंग, अर्थ की विशेषता या मुख्य विषय की दृष्टि से जहाँ अवतरण देने की आवश्यकता प्रतीत हुई है वहाँ पर वह, पर्याप्त घट में, अर्थ के बाद और रेकर्ड के पूर्व में दिया गया है।

(क) अवतरण के बाद कोष्ठ में जहाँ अनेक रेकर्डों का उल्लेख है वहाँ पर देश्य सब प्रधान रेकर्डों का ही अवतरण से संक्षेप है, शेष का नहीं।

२७. एक ही ग्रन्थ में जिन अनेक संस्करणों का उल्लेख इस कोष में किया गया है रेकर्ड में साधारण संस्करण-विशेष का उल्लेख न करके केवल ग्रन्थ का ही उल्लेख किया गया है। इसमें ऐसे रेकर्डवाले शब्दों का सब संस्करणों का या संस्करण विशेष का समझना चाहिए।

(क) जहाँ पर संस्करण-विशेष के उल्लेख की खास आवश्यकता प्रतीत हुई है वहाँ पर रेफरेंस की संकेत-सूची में दिये हुए संस्करण के १, २ आदि क्रम रेफरेंस के पूर्व में दिये हैं जैसे पेसल और पेसलेस शब्दों के रेफरेंस 'प्राचा' के पूर्व में '२' का क्रम प्रागमोदय समिति के संस्करण का और '३' का क्रम प्रो० रवजी भाई के संस्करण का बोधक है।

१८. जहाँ कहीं प्राकृत के किसी शब्द के रूप की, अर्थ की अथवा संयुक्त शब्द आदि की समानता या विशेषता के लिये प्राकृत के ही ऐसे शब्दान्तर की तुलना बतलाना उपयुक्त जान पड़ा है वहाँ पर रेफरेंस के बाद 'देखो—' से उस शब्द को देखने की सूचना की गई है।

१९. जहाँ कहीं 'देखो' के बाद काले टाइपो में दिये हुए प्राकृत शब्द के अनन्तर सादे टाइपो में लिगादि बोधक या सङ्कृत-प्रतिशब्द दिया गया है वहाँ उसी लिंग आदिवाले या संस्कृत प्रतिशब्दवाले ही प्राकृत शब्द से मतलब है, न कि उसके समान अन्तर प्राकृत शब्द से। जैसे अ शब्द के 'देखो अ भ' के अ से पुलिग अ को छोड़कर दूसरा ही अव्यय भूत अ शब्द, और ओसार के 'देखो ऊसार = वत्सार' के 'ऊसार' से तीसरा ही ऊसार शब्द देखना चाहिए, दूसरे और चौथे ऊसार शब्द को नहीं।

उक्त नियमों से भ्रतिरिक्त जिन नियमों का अनुसरण इस कोष में किया गया है वे प्राधुनिक वृत्तन पद्धति के संस्कृत आदि कोषों के देखनेवालों से परिचित और सुगम होने के कारण खुलासे की जरूरत नहीं रखते।

पाइअ-सइ-महरणावो ।

(प्राकृत-शब्द-महार्णवः)

पासिअ कोस-समूह, भासिअणेगंतवाय-सल्लिअत्यं ।
पासिअ-सोआलोअ, वंदांमि जिणं महावीरं ॥ १ ॥

निक्खित्तम साउ पयं, अइसइअं सयल-जाणि-परिणिमिरं ।
वायं अवाय-रहिअ, पणमांमि जिणिह-देवाणं ॥ २ ॥

पाइअ-भासामइअं, जयलोइअ सत्य सत्यमइविउलं ।
सइ महणव-णाम, रपमि कोसं स-वणण-कसं ॥ ३ ॥

अ

अ तुं [अ] १ प्राकृत वर्ण-माला का प्रथम
अक्षर (हे १, १; प्राप्ता) । २ विष्णु, कृष्ण
(से १, १) ।

अ वैलो अ प (प्रा १४, जो २; पलम ११३,
१४; कुमा) ।

अ [दे] देखो इय, 'बदो अ' (प्राक ७६) ।

अ" अ [अ] निज-लिखित अर्थों में से, प्रक-
रण के अनुसार, किसी एक को उल्लेखितकर
अर्थय—१ निषेध, प्रतिषेध, 'अइसइ' (पुर
७, २४८), 'सव्वनिसेहं मओज्जारी' (विसे
१२३२) । २ विरोध, उत्थापन, 'अपमम'
(गुदाया १, १८) । ३ अयोग्यता, अनुचितपन,
'अपास' (पलम २२, ८५) । ४ अराता, बोधा-
पन, 'अयण' (गउड), 'अकेल' (सम ४०) ।
५ अभाव, अविद्यमानता, 'अग्रण' (गउड) ।
६ भेद, भिन्नता, 'अमणुस्त' (एंसि) । ७
सादृश्य, तुल्यता, 'अचकणुदसण' (सम १३) ।
८ अग्रगण्यता, बुरागम, 'अभाइ' (वाण २९) ।
९ लघुपन, छोटाई, 'अतड' (इह १) ।

अ तुं [क] १ क्षय, मूलज (से ७, ४३) । २
अभि, प्राग । ३ अगुरु, मोर (से ८, ४३) । ४

न. पानी, जल (से १, १) । ५ सितवर, टोच
(से ८, ४३) । ६ मस्तक, सिर (से ८, १८) ।

अज नि [अ] उत्पन्न, जात (पा १७१) ।

अअंअ नि [दे] स्नेह-रहित, सूखा (दे १,
१३) ।

अअर देखो अवर (पि १६५) ।

अअर देखो आयर (पि १६५) ।

अइ अ [अवि] १-२ समाख्या और आमतए
अर्थ का सूचक शब्द (दे २, २०५; स्वप्न
५८) ।

अइ य [अति] यह अर्थय नाम और वातु के
पूर्व में लगना है और नीचे के अर्थों में से किसी
एक को सूचित करता है—१ अनियम, अवि-
रक्त, 'अइउरइ', 'अइउति', 'अइउतित' (पा
१४, रमा, पा २१४) । २ उत्कर्ष, महत्त्व,
'अइलेन' (कण) । ३ पूजा, प्रशंसा, 'अइजाय'
(टा ४) । ४ अतिशयण, उत्थान, 'अइ-
उज्जो' (सम ५, ४२) । ५ ऊपर, ऊँचा,
'अइउल', 'अइउलाग' (औन, राया १, १) ।
६ निन्दा, 'अइउडिय' (इह १) ।

अइ अ [अति] सामर्थ्य-सूचक अर्थय, 'अइ-
वह' (सम १, २, ३, ३) ।

अइ सक [आ + इ] आगमन करना, आ
गिरना, 'अइति नापया' (स ३८३) ।

अइइ को [अदिति] पुनर्वसु नक्षत्र का अवि-
घाता देव (सुज १०) ।

अइइ सक [अति+इ] १ उत्कर्षण करना । २
गमन करना । ३ प्रवेश करना । वहु, अईत
(से ९, २६, कण) । ४ अइइ (सूय
१, ७, २८) ।

अइइइ वि [अविबुद्ध] अविगत, प्रात (सूय
१, ५, १, १२) ।

अइअ सक [अति + अइ] १ अनियेक
करना, त्यागपन करना । २ उत्थान करना ।
३ अर्थ. दूर जाना (से १३, ८, ८६) ।

अइअचि वि [अत्यञ्जित] १ अभिपिक्क,
त्यागपन किया हुआ (से १३, ८) । २ उत्थ-
ान, अतिशय (से १३, ८) । ३ दूर गया
हुआ (से १३, ८६) ।

अइअ देखो अइअ (से १३, ८) ।

अइअअ देखो अइअचि (से १३, ८) ।

अइअअ न [अत्यञ्जन] १ उत्थान (से १३,
३८) । २ आरक्षण, सीमाय (से ८, ६४) ।
अइअ देखो अइअ-अचि + इ ।

अईत वि [अनायन्] १ नही आता हुआ ।
 २ जो जाना न जाता हो, 'गार्हपति पण्डरीहि
 य लिजइ चित्तं शशतीहि' (वज्र ४) ।
 अईंदिय वि [अतीन्द्रिय] ईंदियों से जिसका
 ज्ञान न हो सके वह (विने २८८) ।
 अईंमुत्त देखो अईंमुत्त (भाऊ ३२) ।
 अइन्म धक [अतिक्रम] गुजरना, बीतना-
 'दिवचणस समयो अइकमइ दुइरस रायस'
 (सम्मत १७४) । देखो अइकमइ = शक्ति +
 क्रम ।
 अइन्मय पु [अतिकाय] १ महोरग—जातीय
 देवोका एक इन्द्र (ठा २) । २ रात्रण का एक
 पुत्र (ने १६, ५६) । ३ वि. बड़ा शरीरवाला
 (छाया १, ६) ।
 अइन्कंत वि [अतिक्रान्त] १ श्रुतीत, गुजरा
 हुआ, 'अहकतजो-वला' (ठा ५) । २ तीर्थ,
 पार पहुँचा हुआ (भाव) । ३ जिसने स्थान किया
 हो वह 'सर्वांसोहासकता' (भीर) ।
 अइक्कम सक [अति + क्रम] १ उल्लंघन
 करना । २ व्रत-नियम का धार्मिक रूप से
 छेड़ना करना, 'अइकमइ' (भग) । वक्र. अइ-
 क्षमंत, अइक्षममाण (सुपा २१८, भग) ।
 छ. अइक्षमणिज (सुप, २, ७) ।
 अइक्षम पु [अतिक्रम] १ उल्लंघन (गा
 ३५८) । २ व्रत या नियम का धार्मिक छेड़ना
 (ठा ३, ५) ।
 अइक्षमण न [अतिक्रमण] ऊपर देखो (सुपा
 २३८) ।
 अइक्ष्ण वि [अतीक्ष्ण] तीक्ष्णतरहित,
 'अइक्ष्ण वेवरणो' (तनु ५६) ।
 अइक्ष्ण वि [अतीक्ष्ण] अदृश्य, 'अइक्ष्णा
 वेवरणो' (तनु ४) ।
 अइक्ष्ण [अति + गम्] १ गुजरना,
 अइक्ष्ण } बीतना । २ सप्त. पहुँचना । ३
 प्रवेश करना । ४ उल्लंघन करना । ५ जाना,
 गमन करना । वक्र. अइक्ष्णमण (छाया
 १, १) । संठ. अत्यथ (भाषा), 'अइक्ष्णय
 मनोप' (विने ६०५) ।
 अइक्ष्म पु [अतिगम] प्रवेश (गिने ३८६) ।
 अइक्ष्मण न [अतिगमन] १ प्रवेश मार्ग
 (गाथा १, २) । २ उत्तरपक्ष, पूर्व का उत्तर
 दिशा में जाना (भा) ।

अइगय वि [दे] १ माया हुआ । २ जिसने
 प्रवेश किया हो वह (दे १, ५७), 'सधुकुलमि
 अइगयो, विट्ठा य सगठरवै तत्य' (उप ५६७
 टी) । ३ न. मार्गका पीछला भाग (दे १,
 ५७) ।
 अइगय वि [अतिगत] शक्तिमान्त, गुजरा हुआ,
 'हिहवत्स अइय वरिसमेध' (महा, से १०,
 १८, विसे ७ टी) ।
 अइगय वि [अतिगत] प्राप्त, 'एव बुदिमइ-
 गयो गन्ने सबइइ हुविमयो जीवो' (तनु
 १३) ।
 अइचिरं य [अतिचिरम्] बहुत काब तक
 (गा ३५६) ।
 अइख देखो अइख = शक्ति + इ ।
 अइच्छ सक [गम्] जाना, गमन करना ।
 अइच्छइ (हे ४, १६२) ।
 अइच्छ सक [अति + क्रम] उल्लंघन करना ।
 अइच्छइ (भोष ५१८) । वह. अइच्छव
 (उत्त १८) ।
 अइच्छा श्री [अतिस्ता] १ देने की शक्तिवा ।
 २ प्रत्याख्यान विशेष (विने ३५०४) ।
 अइच्छिय वि [गत] गया हुआ, गुजरा हुआ
 (पत्र ३, १२२, उप ५ १३३) ।
 अइच्छिय वि [अतिक्रान्त] शक्तिमान्त, उल्लं-
 घित (पाप, विसे ३५८२) ।
 अइजाय पु [अतिजात] पिता से अधिक
 सर्पित बो प्राप्त करनेवाला पुत्र (ठा ५) ।
 अइह वि [अट्ट] १ जो न देखा गया हो
 वह । २ न. कर्म, दैव, भाग्य (भक्ति) । 'उठन,
 'पुठन वि [पूर्व] जो पहले कभी न देखा
 गया हो वह (गा ४१५, ७५८) ।
 अइह वि [अट्ट] जो देखा न गया हो वह
 (हास्य १४६) ।
 अइह वि [अनिष्ट] १ अशुभ । २ सारा, दुष्ट,
 'जो पुणु सनु बुद्धु अइहवु, तो विमव-
 ल्यउ देइ वीउ' (भक्ति) ।
 अइहो सक [अति + स्वा] उल्लंघन करना ।
 वह. अइहिय (उत्त ७) ।
 अइहिय वि [अतिघिन] घनिष्ठान्त, उल्लंघित
 (उत्त ७) ।
 अइय न [दे] गिरि-पट, तपई, पहाड़ का
 निम्न भाग (दे १, १०) ।

अइण न [अजित] चर्म, चमड़ा (पात्र) ।
 अइणिय वि [दे अतिनीत] प्रानीत, लामा
 हुआ (दे १, २४) ।
 अइणिय } वि [अतिनीत] १ फेंका हुआ (से
 अइणीय } ६, ५६) । २ जो दूर ले जाया
 गया हो (प्राप) ।
 अइणी अ वि [अतिगत] गत, गया हुआ (सुत
 २, १३) ।
 अइणीय वि [दे अतिनीत] प्रानीत, लामा
 हुआ (महा) ।
 अइणु वि [अति] जिसने नौका का उल्लं-
 घन किया हो वह, जहाज से उतरा हुआ
 (वह) ।
 अइतह वि [अतिव] सत्य, सच्चा (उप
 १०३१ टी) ।
 अइतेया श्री [अतितेज] पक्ष की चौदवी
 रात (गुज १०, १४) ।
 अइदपज न [विदपय] तारय, रहस्य, भावार्थ
 (उप ८६४, ८७६) ।
 अइदुसमा } श्री [अतिदुष्पमा] देखो दुस्स-
 अइदुसमा } मनुस्समा (पत्र २०, ८३,
 अइदुसमा } ६०, उप ५ १४७) ।
 अइदपज देखो अइदपज (पचा १४) ।
 अइथाडिय वि [अतिप्राडित] किराया हुआ,
 बुपाया हुआ (पह १, १) ।
 अइनिदुहायण वि [अतिपिष्टभन] स्तब्ध
 करनेवाला, रोकनेवाला (कुना) ।
 अइन्न न [अजीर्ण] १ बद्धगमी, अपच । २
 वि. जो हजम न हुआ हो वह । ३ जो पुराना-
 न हुआ हो, बूझ (उव) ।
 अइन्न वि [अदत्त] नहीं दिया हुआ । 'याण
 न [दान] चोरो (भाका) ।
 अइणुवुंयलसिणा श्री [अतिपाण्डुस्मल-
 शिला] मेघ पर्वत पर स्थित दक्षिण दिशा की
 एक शिला (ठा ४) ।
 अइणुडाण पु [अतिपताक] १ मत्स्य की एक
 जाति (विता १, ८) । २ श्री पताका के
 ऊपर की पतवार (छाया १, १) ।
 अइपरणाम वि [अतिपरिणाम] भाग्य-
 कता न रहन पर भी अश्रमाद-मार्ग का हो
 भाग्य सैनसारा, शालोत घरवादी की मर्यादा
 का उल्लंघन करनेवाला ;

‘यो दस्युस्तैकालमावकयं जं जहि जया काले ।
तत्तेसुस्तुत्तमई, भइपरिणामं विद्याणाहि’
(वृह १) ।

अइपाइअ वि [अतिपातिरु] हिंसा करनेवाला
(सूत्र २, १, ५७) ।

अइपास पुं [अतिपार्ष्वे] भगवान् भरनाय
के समकालिक ऐरवत क्षेत्र के एक तीर्थंकर-
देव (लिंग्य) ।

अइपास सकः [अति + हर] अतिराय
देखना, श्रव देखना । अइपासइ (सूत्र १, १,
४, ६) ।

अइप्पगे म [अतिप्रगे] पूर्व-प्रभात, बड़ी
सवेर (सुर ७, ७८) ।

अइप्पमाण वि [अतिप्रमाण] १ तृप्त होता
हुआ भोजन करनेवाला । २ न. तीन बार से
अधिक भोजन (पिड ६४७) ।

अइप्पसंग पुं [अतिप्रसङ्ग] १ अतिपरिचय
(पट्ठा १०) । २ तर्क-शास्त्र में प्रसिद्ध अति-
व्याप्ति-नामक दोष (सि १६६, खवर ४८) ।

अइप्पसंगि वि [अतिप्रसङ्गिन्] अतिप्रसंग
बोपवाला (अग्रक १०) ।

अइप्पहाय न [अतिप्रभात] बड़ी सवेर (भा
६८) ।

अइयल वि [अतिबल] १ बलिष्ठ, शक्ति-शाली
(सीप) । २ न. प्रातिशय बल, विशेष सामर्थ्य ।
३ बडा सैन्य (हे ४, ३५४) । ४ पु. एक
राजा, जो भगवान् श्रवणदेव के पूर्वार्थ चतुर्थ
‘म’ में पिठा मा पिठामह बा (भाबु) । ५
भरत धन्वर्ती का एक पीठ (डा ८) । ६
भरत क्षेत्र में भगामी बीबीसी में होनेवाला
पाँचवा बामुदेव (सम ५) । ७ रावण का एक
बोडा (पउम ५६, २७) ।

अइमहा की [अतिभद्रा] भगवान् महावीर
के प्रभात नामन ग्मारह्वं गणधर की माता
(भाबु) ।

अइभूइ पुं [अतिभूति] एक जैन मुनि, जो
पंचम बामुदेव के पूर्व-जन्म में मृग थे (पउम
२०, १७६) ।

अइभूमि की [अतिभूमि] १ परम प्रथं ।
२ बहुत जमीन (सि ३, ५२) । ३ गृहस्थों
के घर का वह भाग, जहाँ साधुओं का प्रवेश

करने की अनुज्ञा न हो, ‘अइभूमि न गच्छेना,
मोमरगमघो मुणी’ (सि ५, १, २४) ।

अइमट्टिया की [अतिमृत्तिमा] कीचवाली
मट्टी (जीव ३) ।

अइमत्त } वि [अतिमात्र] बहुत, परिमाण
अइमाय } से अधिक (उत डा ६) ।

अइमुं क } पुं [अतिमुक, ‘क’] १ स्वनाम
अइमुंन } स्वयं एक अंतर्हृद् (उमां जन्म मे
अइमुंतय } मुक्ति पानेवाला) जैन मुनि, जो
अइमुत्त } सोलामपुर के राजा विजय का पुत्र
अइमुत्तय } था और जिसने बहुत छोटी ही
उम्र में भगवान् महावीर के पास
दीक्षा ली थी (भन्त) । २ कंस
का एक छोटा भाई (भाव) । ३
बुल-विरोध (पउम ४२, ८) । ४
माधवी सत्ता (पाथ, स ३५) ।
५ न. भन्तगण्डला नामक ग्रन्थ-ग्रन्थ
का एक प्रवचन (भन्त) । (हिं १,
२६, १७८, सि २४६) ।

अइय वि [अतिग] अतिबलान्त, ‘अयो पश्च-
म्मि मुने, खवरं जइ छा न बूरिहिड’ (हे
२, २०४) । २ करनेवाला, ‘ठाणाइय’
(सीप) ।

अइय वि [अतिग] प्राप्त (राय १३४) ।

‘अइय वि [द्वयित] १ प्रिय, प्रीतिपात्र । २
दया-मान, दया करने योग्य (सि ६, ३१) ।

अइयथ देहो अइगच्छ ।
अइयण न [अत्यदुन] बहुत खाना, अधिक
भोजन करना (वव २) ।

अइयय वि [अतिगत] गया हुआ (स
३०३) ।

अइयर सक [अति + चर्] १ उत्सव
करना । २ वत को दूधित करना । वक्र ।
अइयरत (सुपा ३५४) ।

अइया मन् [अति + या] जाना, गुजरना
(उत २०) ।

अइया की [अजिना] बखरी, छापी (उप
२३७) ।

‘अइया की [द्वयिता] की, पत्नी (सि ६,
३१) ।

अइयण न [अतिवान] १ मगन, गुजरना ।

२ राजा पैगैह का नगर भादि में घूम-घाम
से प्रवेश करना (डा ४) ।

अइयाय वि [अतियात] गया हुआ, गुजरा
हुआ (उत २०) ।

अइयार पुं [अतिचार] उल्लंघन, अतिक्रमण
(मवि) । २ गृहीत वत या निमम मे दूषण
लगाना (पा ६) ।

अइर म [अचिर] जल्दी, शीघ्र (स्वप्न ३७) ।
अइर न [अजिर] आगन, चौक (पाथ) ।

अइर पुं [दे] १ मायुक्त, गावका राज-निपुक्त
मुनिवा (दे १, १६) ।

अइर न [दे. अतर] देखो अयर = अतर
(सुपा ३०) ।

अइर वि [दे] अनिरोहित (विड ५६०;
५६१) ।

अइरजुवइ की (दे) नई बहू, दुलहिन (दे १,
४८) ।

अइरत्त पुं [अतिरात्र] अधिक तिथि, श्रुतिप
की गिनती से जो दिन अधिक होता है वह
(डा ६) ।

अइरत्त वि [अतिरत्त] १ गाढा लात । २
विरोध रागी । ‘कंबलसिला, कंबला की
[कंबलसिला, कंबला] मेव पर्वत के
पादक वन मे स्थित एक शिमा, जिसपर
जिनदेवों का जन्माभिषेक किया जाता है
(डा २, ३) ।

अइरात्त [अचिरात्] शीघ्र, जल्दी (सि
३, १५) ।

अइरा की [अचिरा] पाचवें बच्चवर्ती और
सोतह्वं तीर्थंकर-देव की माता (मम
अइराणी) । १५२, पउम २०, ४२१) ।

अइराणी की [दे] १ इन्द्राणी । २ सीमाय के
लिए इन्द्राणी-वत करनेवाली की (दे १, ५८) ।

अइरावण पुं [ऐरावत] इन्द्र का हाथी (पाथ) ।
अइरावय पुं [ऐरावत] इन्द्र का हाथी (मवि) ।

अइराहा की [अचिरामा] बिजली, चपला
(दे १, ३४ टी) ।

अइरि न [अतिरि] पन या मुक्कल का अति-
क्रमण करनेवाला, घनास्थ (पट्) ।

अइरिप पुं [दे] कपाज्य, वातवीर्य, बहानी
(दे १, २६) ।

अइरित्त वि [अतिरित्त] १ बचा हुआ, अवशिष्ट (पउम ११८, ११९) । २ अधिक, ज्यादा (डा २, १); 'भवद्वायादित्तगुणनिबोधो' (नामं ६३) । 'सिञ्जासणिय वि [शय्या-सन्निक] लम्बी-बीड़ी शय्या और आसन रखने-वाला (साधु) (भाषा) ।

अवस्सु वि [अतिरूप] १ मुरूप, मुडील (पउम २०, ११२) । २ पुं. भूत-जातीय देव-विशेष (पएण १) ।

अइरेइय वि [अतिरेकित्त] अतिरेक-युक्त, अति-प्रभूत (राय ७८ टी) ।

अइरेण पुं [अतिरेक] १ आधिक्य, अधिकता, 'माइरेणमहासजायय' (छाया १, ५) । २ अतिशय (जीव ३) ।

अइरेण ॥ [अचिरेण] जल्दी, शीघ्र (गा अइरेणं १३५; पउम १२, ४, उवर ५३) ।

अइरेय देवो अइरेण (छाया १, १) ।

अइय म [अतीय] अतिशय, अधिकत,
'रित्तं मइय महँत्त' ।

विट्ठु मज्झिम वत्त भवणुत्त ।
ता तं सव्वं सुसुरि म ।

मण्णापत्तं करेजानु म' (महा) ।
अइयट्ठण न [अतिवत्तन] उत्तम, अति-क्रमण (भाषा) ।

अइयत्त सक [अति + वृत्त] अतिक्रमण करता । महत्तड (भाषा) ।

अइयत्तिय वि [अतिव्रतिक] १ जिसका उत्सव चिया गया हो वह । २ प्रयोग, मुख्य । ३ उत्तम बननेवाला (भाषा) ।

अइयय सक [अति + वृत्त] उत्तम करना ।
गंढ. अइयइत्ता (सुम २, २, ६५) ।

अइयय सव [अति + वृत्त] १ उत्तम करना । २ संयुक्त जाना । ३ प्रवेश करना ।
मदवर्षति (पएण १, ८) । यह. 'नियमणयण अइययत्तं गयं मुमिणं पासिताणं पडिबुद्धा' (छाया १, १; कप्प) ।

अइयय थन [अति + पत्त] उत्तम करना । २ मन्त्रण करना । ३ प्रवेश करना । ४ धार करना । ५ गिरजाना, 'मइरे रण-गोम-नट-सण्णा संगमम्मि मदवर्षति' (पएण १, ३), 'सोमण्णा संगमरं मदवर्षति' (पएण १, ५) ।
यट्. जरं वा शरीरप-विण्णमिणि शरीर

वा अइययमणि निवारसि' (छाया १, ६);
अइययत्त (कप्प) । प्रयो. अइयाएमाण (भाषा, डा ७) ।

अइयइ सक [अति + वह] बहुत करने में समर्थ होना । अइयइ (सुम १, २, ३, ५) ।

अइयाइ वि [अतिपातिन] १ हिसक (सुम १, ५) । विनवरर (विसे १५७८) ।

अइयाइत्तु वि [अतिपातायित्] मालेवाला (डा ३, २) ।

अइयाइय वि [अतिपातिक] ऊपर देखो (सुम २, १) ।

अइयाएत्तु देवो अइयाइत्तु (डा ७) ।

अइयाएमाण देवो अइयय = अति + पत्त ।

अइयाय पुं [अतिपात] १ हिंसा आदि कोप (श्लेष ४६) । २ बिनाश, 'पाणाइवाएण' (छाया १, ५) ।

अइयाय पु [अतिवात] १ उत्तम । २ भय-कर पवन, तूफान (उप ७६८ टी) ।

अइयाह सक [अति + याहव] बीताना, गुजराना; 'सो मइयाहेइ दुन्नि विण्णं' (बर्मेवि ३३) ।

अइयिरिय वि [अतिवीर्य] १ बलिष्ठ, महा-पराक्रमी । २ पुं. इस्वकुं बंध का एक राजा (पउम ५, ५) । ३ नन्दावर्त नगर का एक राजा (पउम ३७, ३) ।

अइयिसाल वि [अतिविशाल] १ बहुत बड़ा, विस्तीर्ण । २ स्त्री, यमप्रभ नामक पर्वत के दक्षिण तरफ की एक नगरी (दीव) ।

अइस [अप] वि [ईट्टरा] ऐसा, इस तरह का (हे ४, ५०३) ।

अइसइ वि [अतिशयिक] अतिशय वाला, विरिष्ठ, आश्चर्यजनक (सुभा २५७) ।

अइसइअ वि [अतिशयिन] ऊपर देखो (पाण) ।

अइसंधण देवो अइसंधाण; 'विज्जाल्लति-संधणं ॥ मायब्बं' (पवा ७, २९) ।

अइसंधाय [अतिसंधान] ठाई, बंधना, 'नियमाणसंधायं तापयुट्ठी य जयणा य' (पवा ७) ।

अइसकणा स्त्री [अजिज्जकणा] जतेजना, प्रेरणा, बहाना (मिमी) ।

अइमय मा [अति + शा] मात करना ।

वह. 'पत्तवम् अइसयंतो' (पउम १०, १९) ।

अइसय पुं [अतिशय] १ श्रेष्ठता, उत्तमता (सुभा १, ५) । २ महिमा, प्रभाव; 'त्रयणा-इसयो' (महा) । ३ बहुत, अत्यन्त (सुर १, २, ८१) । ४ चमत्कार (उर १, ३) । भरिय वि [अभूत] पूर्ण, पूरा भरा हुआ (पाण) ।
अइसरिय न [ऐश्वर्य] वैभव, सर्पति, गौरव (हे १, १५१) ।

अइसाइ वि [अनिशयिन] १ श्रेष्ठ (धम्म १ टी) । २ दूसरे को नात बनानेवाला ।

जो. 'णी' (सुभा ११५) ।

अइसाण न [अतिशयान] उत्कृष्टता, उत्कर्ष (वेद्य ५३३) ।

अइसार पुं [अतिसार] संग्रहीत रोग, जठर की व्याधि-विशेष (लहस १५) ।

अइसेस पुं [अतिशेष] १ महिमा, प्रभाव, आध्यात्मिक सामर्थ्य (सम ५६) । २ बचा हुआ, अवशिष्ट (डा ४, २) । ३ अतिशय वाला (विसे ५५२) ।

अइसेसि वि [अतिशेषिण] १ प्रभावशाली, महिमान्वित । २ समूह (राज) ।

अइसेसि वि [अतिशेषिण] १ महिमान्वित । २ समूह, ज्ञान आदि के अतिशय से सम्पन्न (सद्धि ४२ टी) ।

अइसेसिय वि [अतिशेषित] ऊपर देखो (श्लेष ३०) ।

अइसेसिय वि [अतिशेषित] शाल, जाना हुआ (वव १) ।

अइहर पुं [अतिभर] हट, भवधि, भवार्ता; 'सत्तीय को अइहरो ?' (मच्छु २३) ।

अइहार स्त्री [इ] बिजली, चपला (दे १, ३४) ।

अइहि पुं [अतिधि] नियम के आगे की निधि नियत न हो वह, पाहुन, यात्री, मित्र, साधु (आवा) । 'संविभाग पुं [संविभाग] मापु को शेजन्त अदि का निर्दोष दान (पमं ३) ।

अई सक [मम] जाना, गमन करना । मईर (हे ४, १६२, सुभा), मईति (पउर) ।

अईअ पुं [अतीन] १ मृतकाल (पय६०) । २ वि. जो बीन चुना हो, गुजरा हुआ; 'अं म मईया विदा' (पयि) । ३ अतिमृत (सुय

१, १०, सार्धं ४; विसे ८०८) । ४ जो दूर हो गया हो (उत्त १५) ।

अईअ } [अतीव] बहुत, विशेष, अत्यन्त
अईव } (मग २, १; परह १, २) ।

अईसंत वि [अ + दृश्यमान] जो दिखता न हो (मि १, २५) ।

अईसय देखो अइसय (पउम ३, १०५, ७५, २६) ।

अईसार पु [अतीसार] रोग-विशेष, सग्रहणी रोग (मुल १, ३) ।

अईसार पु [अतीसार] १ सग्रहणी रोग ।
२ इस नाम का एक राजा (आ ५, ३) ।

अइ देखो आइ = जो, 'उल्लसिषो तमहवो वनयागारो भवकायो' (पव २५५) ।

अइअ न [अयुत] १ दस हजार की सख्या ।
२ 'भरभम' को बीरसी लाख से गुणने पर जो सख्या लख हो वह (आ २, ४) ।

अइअम न [अयुताक्ष] 'भरक्षणिउर' को बीरसी लाख से गुणने पर जो सख्या लख हो वह (आ २, ४) ।

अइठ वि [अकुण्ठ] निपुण, कार्य-दक्ष (गउळ) ।

अइउचित्त न [औचित्य] उचितपन (प्राक् १०) ।

अइउम्ह वि [अयोध्य] १ मुह से जिसका सम्मान न किया जा सके वह (मम १३७) ।
२ जिस पर रिनु-मैय धाक्रमण न कर सके ऐसा किला, नगर आदि (आ ४) ।

अइउम्मा श्री [अयोध्या] नगरी-विशेष, इक्ष्वा-कुशरा के राजाओ की राजधानी, विनीता, बौमना, साकेतपुर आदि नामोंसे विख्यात नगरी, जो आजकल भी अयोध्या नाम से ही प्रसिद्ध है (आ २) ।

अउण वि [एऊण] जिसमें एक कम हो वह । यह शब्द बीस से लेकर तीस, चालीस आदि दहाई सख्या के पूर्व में लगता है और जिसका प्रथम उभय संख्या से एक कम होता है । 'एउठ श्री [पट्टि] जमसाठ, ५६ (कप्य) । 'सदि श्री [सप्रति] जमसतर, ६६ (कप्य) । 'सोस धीन [पिशत] जमनीम, २६ (एणा १, ११) । 'सट्ठि श्री [पट्टि] जमसाठ, ८६ (कप्य) । 'पन्न, 'पन्न श्रीन

[पञ्चासत] जमपाच, ४६ (जी ३८; पउम १०२, ७०) । देखो एगुण ।

अउणतीसइ श्री देखो अउण-तीस (उत्त ३६, २४०) ।

अउणपञ्च देखो अउणापञ्च (जीवस २०८) ।

अउणासट्ठि देखो अउण-सट्ठि (मुज ६) ।

अउणोणित्ति श्री [अपुननिवृत्ति] अन्तिम निवृत्ति, मोक्ष (मज्झ १०) ।

अउण्ण } न [अपुण्य] १ पाप (सुर ६,
अउण्ण } २०) । २ वि. धनविन । ३ पुरय-रहित, पापी (पउम २८, ११२, सुर २, ५१) ।

अउम देखो ओम (गुमा १४) ।

अउमर वि [अदुमर] खानेवाला, भक्षक (प्राक् २८) ।

अउल वि [अतुल] समानाचारण, अद्वितीय (उप ७२८ टी, परह १, ४) ।

अउल्लेन वि [अकुलीन] कुल-हीन, कुबालि, सकर (गा २५३) ।

अउल्लवि [अपूर्व] अनोखा, अद्वितीय (गा ११६) ।

अउस पु [दे] उपायक, पूजाये (प्रयो ८२) ।
अए थ [अथे] भ्राम्यण-वृत्तक धम्मय (कप्य) ।

अओ ष [अतस्] १ यहाँ से लेकर (मुपा ४७८) । २ इतिष, इस कारण से (उप ७३०) ।

अओ [अयस्] सोह । 'घण पु [पन] सोह का हवीस, 'सोसवि विदनि मयाप-रोहि' (सूय १, ५, २, १४) । 'मय वि [मय] सोहे की वनी हुई चीज (सूय २, २) । 'मुह पु [मुण] १-२ इस नाम का अन्वर्द्धन और उसके निवासी (आ ५) । ३ वि. सोहे की माफिक सज्जन मुह वाला, 'पक्खीहि खम्भनि अयोमुह' (सूय १, ५, २, ४) । 'मुही श्री [मुयो] एव नगरी (उप ७६४) ।

अओग्ग वि [अयोग्य] नालायक (म ७६४) ।

अओग्मा देखो अउग्मा (प्रति ११५) ।

अथ [दे] स्मरण-पातक प्रत्यय, 'अ दठ्ठ्वा मानदनया' (आह ८०) ।

अं पु [अङ्] १ उभय, दोनों (स्वप्न २१६) । २२२ की एक जाति (कप्य) ।

३ श्री की एक सख्या, 'कामी विक्कमवच्छरम्म य गए वारुणमुनोदुव' (सुर १६, २४६) ।

४ सख्या-दर्शक चिह्न, १, २, ३ (परण २) । ५ नाटक का एक भूरा, 'सुएणा मणु-स्वभरणवाणु निज्जाइमा मका' (वण ५४) ।

६ मन्द मणि की एक जाति (उत्त ३४) ।

७ चिह्न, निशान (चद २०) । ८ मनुष्य के बत्तीस प्रयास सप्तशो में से एक (परह १, ४) । ९ भासन-विशेष (चद ४) । १० 'कण्ड पुन. [कण्ड] रत्नप्रभा पृष्ठी के खर-काण्ड का एक हिस्सा, जो धंक रखो का है (आ १०) । 'अरेह्म, 'करेलुअ पुं [करेलुअ]

पानी में होनेवाली एक जाति की वनस्पति (भावा) । 'ट्टुइ श्री [रिथिति] भक रेखाओ की विभिन्न स्थापना, ६४ कलाओं में एक कला (कप्य) । 'धर पु [धर] चन्द्रमा (जीव ३) । 'घाई श्री [धात्री] पाच प्रकार की घाई-माताओं में से एक, जिसका नाम बालक को उल्लेख में से उसका भी बहलाना है (एणा १, १) । 'लिधि श्री [लिधि] अश्वारुध विधियों में की एक विधि, वर्णमाला-विशेष (सम ३५) । 'वणिय पुं [वणिक] भक्त-रत्नो का व्यापारी (राय) । 'वाल्लि, 'वाळी श्री [पाल्लि, 'पाळी] फाल्गुन (काप्र ११४) । 'हर देखो धर (जीव ३) ।

अं [दे अङ्क] निवट, मनीष, पास (हे १, ५) ।

अं पुन [अङ्क] एक देव-विमान (देवेन्द्र १३२) ।

अरकरेलुअ, 'ग देवा अर करेलुअ (भावा २, १, ८, ५) ।

अरुग न [अरुण] १ चिह्नित करना (भार) ।

२ देव आदि पशुमा को तोहे की परम सनाई आदि न दायना (परह १, १) । ३ वि. भक्ति करनेवाला, शिनी में नानेनाला, 'अरुण जोइ-सम्य' 'सुर' (कप्य) ।

अरुगा श्री [अरुण] ऊपर देखो (एणा १, १७) ।

अरुदाम पु [अरुदास] बालक को उभय में नजर उठना जो बहलानेवाला नीचर (मम्मन २१७) ।

अरुणाणिय देखो अरु-पणिय (राय १२६) ।

अंकार पुं [दे] सहायता, मदद (दे १, ६) ।
 अंकारई लो [अङ्कामरी] १ महाविन्द जेन
 के रम्य नामक विजय की राजधानी (आ २) ।
 भेन की पथिय दिशा मे बहती हुई शीतोदा
 न हानदी की दक्षिण दिशा में वर्तमान एक
 बहस्रार पर्वत (आ ५, २) ।
 अंकित न [दे] आसितन (दे १, ११) ।
 अंकित बि [अङ्कित] चिह्नित, निशानवाला
 (शेष) ।
 अंकित पु [दे] नट, नर्तन, नर्तय्या (आया
 १, १) ।

अङ्कडा पुं [अङ्कडन] नागदत्त, धूर्तो,
 ताक (ज १) ।

अङ्कुर पु [अङ्कुर] प्ररोह, पुतली (जो ६) ।
 अङ्कुरिय बि [अङ्कुरित] अङ्कुर-युक्त, जिसमें
 अङ्कुर उत्पन्न हुए हो वह (उवा) ।

अङ्कस पु [अङ्कस्य] १ आकडी, लोहे का
 एक हथियार, जिससे हाथी चलाये जाते हैं,
 'अङ्कसे जहा एगो धम्मं खेपडिआव' (उत्त २२) । २ प्रहविशेप (आ २, १) । ३
 सीता का एक पुत्र, कुल (पञ्च ६७, १६) ।
 ४ विजयला करनेवाला, कामू में रहनेवाला
 (गड) । ५ एक देव विमान (राज) । ६ पुन,
 पुन-चन्दन का एक दौप (पञ्च २) ।

अङ्कस पुन [अङ्कस्य] १ एक देव विमान
 (वेल्ह १४०) । २ पु. मङ्कुराकार खूँटी
 (पञ्च १७) ।

अङ्कसइय न [दे] अङ्कशित अङ्कुर के आकार-
 वाली चीज (दे १, ३८, से १, ६३) ।

अङ्कसप पु [अङ्कस्य] देखो अङ्कस । २
 सम्यक् की एक उपकरण, जिससे वह देव-
 पूजा के वास्ते वृक्ष के पत्तलों को काटता है
 (शेष) ।

अङ्कसा लो [अङ्कस्य] बौद्धों तोपकर थी
 अनन्तनाथ मण्डप की शासन-केची (पञ्च २८) ।

अङ्कसिअ बि [अङ्कसित] अङ्कस की तरह
 मुड़ा हुआ (से १४, २६) ।

अङ्कसी लो [अङ्कसी] देखो अङ्कसा
 (सति १०) ।

अङ्कुर देखो अङ्कुर, 'सा पुण विरत्तिवत्ता
 निवृत्ते विनेहे' (सुम्म ६१ टी) ।

अङ्किल्ल न [दे] मोठा प्रादि नो मारने वा
 चानुक, मोठा, चीकी (ज ४) ।

अङ्किल्ल पु [दे] मर्योक्त-युद्ध (दे १, ७) ।

अङ्कोल पु [अङ्कोल] वृक्ष-विशेष (हे १, २००) ।

अंता व पु [अङ्ग] १ इस नाम का एक देश,
 जिसने आजलज बिहार कहते हैं (सुर २,
 ६७) । २ रामरा एक सुभट (पञ्च १६, ३७) ।

३ न आचारण मूत्र प्रादि बाहर जैन आगम-
 न्य (जिवा २, १) । ४ वेदाय, वेद के शिष्यदि
 अंग (मात्र) । ५ चारण, हेतु (पञ्च १) ।

६ आला, जीव (प्रवि) । ७ पुन, शरीर
 (प्राप् ८४) । ८ शरीर के मस्तक प्रादि अवयव
 (बम्म २, १४) । ९ य विप्रदा का आग-
 न्य, सम्बोधन (राज) । १० बाह्यार्थकार

में प्रयुक्त विद्या जाता अन्वय (आ २) । ११ पु
 [विज] इस नामका एक गृहस्थ, जिसने
 अवान् पार्ष्णाय के पास दोहा ली थी

(निर) । १२ पु [वि] वना नगरी का
 एक ऋषि (मात्र) । [पु] अङ्ग] लो

[अङ्गि] अङ्ग-युक्त का परिशिष्ट (परिह) ।
 अङ्गहिय बि [अङ्गिनाङ्ग] जिसका अंग

काटा गया हो वह (सुर २, २, ६३) ।
 'जाय बि [जाय] बधा, लक्ष्मी (उप

६४८) । 'द देखो 'य = 'द (आ ८) ।
 'पमिह न [प्रविष्ट] १ बाहर जैन अङ्ग-युक्तो

में से कोई भी एक (कम्म १, ६) । २ अङ्ग-
 प्रथा का ज्ञान (आ २, १) । 'बाहिर न

[बाह] १ अङ्ग-युक्त के अतिरिक्त जैन आगम
 (मात्र) । २ अङ्ग-युक्तों से निद्र जैन आगमों का

ज्ञान (आ २) । 'मग न [मग] १ यंत्र प्रत्यय
 (राज) । २ हर एक अवयव (वड्) । 'मरि

न [मरि] चम्पा नगरी का एक देव-युद्ध
 (मग १, १) । 'मद, 'मदय पु [मदे,

'मदेक] १ शरीर की चर्मी करनेवाला नौकर ।
 २ बि शरीर को मतनेवाला, चर्मी करनेवाला

(सुरा १०८ महा अंग ११, १) । 'य पु
 [दे] १ बानी नामक विद्याधरराज का

पुत्र (पञ्च १०, १० ३६, ३७) । २ न,
 नाह, नद, केट्टा (परह १, ५) । 'य बि

[ज] १ शरीर में उत्पन्न । २ पु पुन,
 लक्ष्मी (उप १३४ टी) । 'या लो [या]

कया, पुनी (पाथ) । 'रख, 'रखग बि

[रख, 'रख] शरीर की रक्षा करनेवाला
 (सुरा ५२७, ३८) । 'राग, 'राय पु [राग]

शरीर में चन्दनादि का निवेपन (मिष, गा
 १८६) । 'राय पु [राज] १ अग्नेय का

राजा (उप ७५१) । 'सा देश का राजा कर्ण
 (सुरा १, १६, वेलो १०४) । 'रिस देखो

'इसि । 'रुह बि [रुह] देखो 'य = 'ज
 (सुरा ५१२, पञ्च ५६, ३२) । 'रुहा लो

[रुहा] पुनी, लक्ष्मी (सुरा १५०) । 'विज्जा
 लो [विज्जा] १ शरीर के छुरण का शुभा-

युक्त फल बतलानेवाला विद्या (उत्त ८) । २ वस
 नाम का एक जैन संघ (उत्त ८) । 'विचार पु

[विचार] देखो पूर्वोक्त अर्थ (उत्त १५) ।
 'समूय बि [संभूत] सतान, बधा (उप

६४८) । 'हारय पु [हारय] शरीर के
 अवयवों के विशेष, हाव भाव (मनि ३१) ।

'दाय न [दान] पुष्पेन्द्रिय, पुष्प विह
 (लिलो) ।

अंग पु [अङ्ग] अङ्गनाम प्रादिनाम के एक पुत्र
 का नाम (सी १४) । २ न. लगातार बाहर

दिना का उपवास (सोप ५८) । 'अ देखो
 'य (धर्म १२६) । 'हर बि [धर] अङ्ग-

ग्रंथा का जालकार (विचार ४७३) ।

अग बि [आङ्ग] १ शरीर का विचार (आ
 ८) । २ शरीर-सम्बन्धी, शारीरिक (सुर २,

२) । ३ न शरीर के छुरण बादि विकारों के
 शुभाशुभ फल को बतलानेवाला शास्त्र, निमित्त-

शास्त्र (पञ्च ५६) ।

'अग बि [चङ्ग] सुन्दर, मनोहर (मवि) ।
 अगइया लो [अङ्गदिका] एक नगरी, तीर्थ-

विशेष (उप ५५२) ।

अंगमाभीमाध पु [अङ्गाभीभाव] अग्नेय भाव,
 अश्विगत, 'अंगमाभीमाधे परिणएणमसरि-

जिणयम्मे' (सुरा २१८) ।

आण न [अङ्ग] आण, बौक (सुर ३,
 ७१) ।

अंणया लो [अङ्गना] ली, मोरत (सुर ३,
 १८) ।

अगइया देखो अङ्गइया (सी) ।

अगवहण न [दे] रोग, बीमारी (दे १,
 ४७) ।

अंगवलिज्ज न [दे] शरीर को मोड़ना (दे १, ४२) ।

अंगार पु [अङ्गार] १ जलता हुआ कोयला (हे १, ४७) । २ जैन साधुओं के लिए भिखा का एक दोष (आवा) । मद्दम पु [मद्दम] एक अमय जैन-आचार्य (उप २५४) । बई की [वती] मुमुमार नगर के राजा पुण्ड्रमार की एक बन्धा का नाम (धम्म ८ टी) ।

अंगारग पु [अङ्गारक] १-२ ऊपर देखो अंगारय [गा २६१] । ३ मगल-ग्रह (पहल १, ५) । ४ पहला महाग्रह (ठा २) । ५ राजा वश का एक राजा (पउम ५, २६२) ।

अंगारिय वि [अङ्गारित] कोयले की तरह जला हुआ, बिजल (नाट, आवा) ।

अंगाल देखो अंगार; 'मिदह्मालसिभ' (मिड ६७५) ।

अंगालग देखो अंगारग (राज) ।

अंगालिय न [दे] ईश का हुक्का (दे १, २८) ।

अंगालिज्ज देखो अंगारिय (आवा) ।

अंगि पु [अङ्गि] १ प्राणी, जीव (गण ८) । २ वि. शरीरवाला । ३ अंग-धारों का साता (बन्ध) ।

अंगिरस न [अङ्गिरस] एक गोत्र, जो गोतम-गोत्र की शाखा है (ठा ७) ।

अंगिरस वि [आङ्गिरस] १ मगिरस-गोत्र में उत्पन्न (ठा ७) । २ पु एक तापस (पउम ४, ८६) ।

अंगीरुड } वि [अङ्गीरुड] स्वीकृत (ठा ५, अंगीनय } मुग ५२६) ।

अंगीकर } सक [अङ्गी + कृ] स्वीकार (अंगीकरेद } करता । अंगीकरेद (महा, नाट) । अंगीकरेदि (न ३०६) सङ्ग. अंगीकरेउण (विने २६४२) ।

अंगुअ पु [इङ्गुअ] १ वृक्ष-विशेष । २ न. इण्ड वृक्ष का फल (हे १, ८६) ।

अङ्गु पु [अङ्गु] अङ्गु (ठा १०) । 'वसिष्ठ पु [प्रदू] १ एक विद्या । २ 'प्रध-व्याकरण' मूल का एक लुप्त ध्वन्यपन (ठा १०) ।

अङ्गुली की [दे] तिरका अङ्गुलन, धूधट (दे १, ६, १२८५) ।

अङ्गुल न [दे] अङ्गुली, अङ्गुलीय (दे १, ३१) ।

अङ्गुलभन वि [अङ्गोद्भव] सतान, बचा (उप २६४) ।

अङ्गुम सक [पूरय] पूति करना, पूरा करना । अङ्गुमइ (हे ४, ६८) ।

अङ्गुमिय वि [पूरित] पूरने किया हुआ (कुमा) ।

अङ्गुरि, 'री की [अङ्गुलि, 'ली] उगनी (गा २७७) ।

अङ्गुल न [अङ्गुल] यव के आठ मध्यभाग के बराबर वा एक नास, मान-विशेष (मग ३, ७) । 'पोहसिय वि [पूयक्त्त्वक] दो ने लेकर नव अङ्गुल तक का परिमाण माना (जोव १) ।

अङ्गुलि की [अङ्गुलि] उगनी (कुमा) । १ 'कोस पु [कोस] अङ्गुलि नाण, दास्ताना (राय) । २ 'फेडण न [फेडण] उगनी कोटना, बडावा करना (तहु) ।

अङ्गुलअ } न [अङ्गुलीयक] अङ्गुली अङ्गुलिज्जक } (दे ५, ६, बन्ध, वि २५२) ।

अङ्गुलिज्जग } अङ्गुलि की [दे] प्रियवृ, वृक्ष-विशेष (दे १, ३२२) ।

अङ्गुली की [अङ्गुली] देखो अङ्गुलि (कप) ।

अङ्गुलीय } पुन [अङ्गुलीयक] अङ्गुली (गुर १०, ६५), 'वायसि-अङ्गुलीयग } एण समिय । समयिषी अङ्गुलीयय } अंगलीयों की तीर्थ (पउम ५४, अङ्गुलेज्जक } ६, गुर १, १३२, वि २५२ अङ्गुलेयय } पउम ४६, ३९) ।

अङ्गुलेयग देखो अङ्गुलेयय (मुस २ २६) ।

अङ्गुलंय } न [अङ्गोपाङ्ग] १ शरीर के अङ्गोवग } धवयव (पण २३) । २ नख

नखरह शरीर के छोटे-छोटे धवयव 'नखरसम-सुमण्णोपोठा सवु अङ्गोवगण' (उत्त ३) । 'नाम न [नामन्] शरीर के धवयवों के निर्माण में कारण-भूत बर्मे विशेष (बम्म १, ३५, ४८) ।

अङ्गोहलि की [दे] शिर को छोड़कर बाकी शरीर का स्नान (उप ४ २३) ।

अंघो [अङ्ग] भय-मूचक ध्वन्य (प्रति ३६, प्रवी २०५) ।

अच सक [कृप्] १ लीचना । २ जोतना, चास करना । ३ रखा करना । ४ उठाना । अचइ (हे ४, १८७) । सङ्ग. अचेइत्ता (आव) । अच सक [अच्च] पूनना, पूना करना । अंचण (प्रवि) ।

अच सक [अच्च] जाना । अचति (पचा १६, २३) 'अचु गइ पूयणम्मि य', 'लोपीए पारमचइ' (बृह ४) ।

अंचल पु [अच्चल] कपड़े का शेव भाग (कुमा) ।

अचि पु [अच्चि] गमन, गति (मग १५) । अचि पु [आच्चि] आगमन, आना (मग १५) । अचिय वि [अच्चित] १ वृत्त, सहित (गुर ४, ६७) । २ पूजित (गुरा २१८) । ३ प्रसन्न, आशित (प्राय १८) । ४ न एक प्रकार का मूल्य (ठा ४, ५, जीव ३) । ५ एक बार का गमन (मग १५) । 'वचि पु [अच्चि] १ गमनागमन, आना जाना (मग १५) । २ कचा-नीचा होना (ठा १०) ।

अचियरिमिय न [अच्चितरिमित] एक तरह का नाख (राय ५३) ।

अचिया की [अच्चिका] भागपण (स १०२) । अच्च सक [कृप्] १ लीचना, 'प्रसति वायु-देव अचइत्तम्मि डिय सत' (विने ७६५) । २ धक. सम्भा होना । बङ्ग अच्चमाण (विने ७६५) । प्रयो मद्यावेइ (एया १, १) ।

अच्चण न [कपण] लीचान (पराह २, ५) । अच्चिय वि [दे] आकट, लीचा हुआ (दे १, १४) ।

अज सक [अच्च] मानना । क. अजियव्व (स ५४३) ।

अजण पु [अच्चण] १ इष्ट पुद्गल-विशेष (मुज २०) । २ देव विशेष (सिदि ६६७) ।

अजण पु [अजण] १ पर्वत विशेष (ठा ५) । २ एन तोपनाल देव (ठा ४) । ३ पर्वत-विशेष का एक शिखर, जो दिवहोती कहा जाता है (ठा २, ३, ८) । ४ वृक्ष विशेष (आव) । ५ न एक जाति का रत्न (एया १, १) । ६ देवविमान विशेष (मग ३५) । ७ नाजल, बजल (प्राय ३०) । ८ जिसका

मुत्ता बनता है ऐसा एक पार्थिव द्रव्य (बी ४) । १ भावको भाजना (सूय १, ६) । १० तैल भादिसे शरीर की मासिस करना (राज) । ११ लेप (स ५८२) । १२ रत्नप्रभा पुष्पिणी के खर-काण्ड का दशवीं भरा विशेष (ठा १०) । 'केसिया ली' ['केशिका'] वनस्पति-विशेष (पण १७, राय) । 'जोग पु' ['योग'] कला-विशेष (कप्य) । 'दीव पु' ['द्वीप'] द्वीप-विशेष (इक) । 'पुल्ल पु' ['पुल्लरु'] एक जाति का रत्न (ठा १०) । २ वनंत-विशेष का एक शिखर (ठा ८) । '८५हा ली' ['प्रभा'] चौथी नरक-पुष्पिणी (इक) । 'रिट्ट पु' ['रिट्ट'] इन्द्र-विशेष (भग ३, ८) । 'सलागा ली' ['शालागा'] १ जैन-मूर्ति की प्रतिष्ठा । २ भजन लगाने की सलाह (सूय १, ५) । 'सिद्ध वि' ['सिद्ध'] भ्रातृ में भजन-विशेष लगाकर प्रदृश्य होने की शक्तिवाला (निती) । 'सुन्दरी ली' ['सुन्दरी'] एक सती ली, हनुमान् की माता (पठम १५, १२) ।

अंजणइसिआ ली ['दे'] वृक्ष-विशेष, हवाम तमाल का पेड़ (हे १, ३७) ।

अंजणई ली ['दे'] मल्लो-विशेष (पण १) ।

अंजणईस न ['वे'] देखो अंजणइसिआ (हे १, ३७) ।

अजणग देखो अजग ।

अजणा ली ['अजना'] १ हनुमान की माता (पठम १, ६०) । २ स्वप्नान-क्यात चौथी नरक-पुष्पिणी (ठा २, ४) । ३ एक पुष्करिणी (न ४) । 'तणय पु' ['तनय'] हनुमान (पठम ४७, २८) । 'सुन्दरी ली' ['सुन्दरी'] हनुमान् की माता (पठम १८, ५८) ।

अजणाभा ली ['अजनाभा'] चौथी नरक-पुष्पिणी (इक) ।

अंजणिआ ली ['दे'] देखो अंजणइसिआ (हे १, ३७) ।

अजणी ली ['अजनी'] कज्जल का आधार-पात्र (सूय १, ४) ।

अजलि, 'ली पुली' ['अजलि'] १ हाथ का सटुट (हे १, ३५) । एक या दोनों सकुचित हाथों को ललाट पर रखना 'एलेख वा दोहि वा मणिलिह हर्षहि छिडालसविहहि ब्रजली भण्णति' (निबु) । ३ कर-सटुट, नमस्कार

रूप विनय, प्रणाम (प्रासू ११०, स्वप्न ६३) । 'उड पुं' ['पुट'] हाथ का संयुट (महा) । 'करण न' ['करण'] विनय-विशेष, नमन (दे) । 'पगह पुं' ['प्रमह'] १ नमन, हाथ जोड़ना (भग १४, ३) । २ संयोग-विशेष (राज) ।

अंजस वि (दे) शत्रु, सरल (दे १, १४) ।

अजिय वि ['अजित'] भाना हुमा, भजन-युक्त किया हुमा (से ६, ४८) ।

अजु वि ['श्रजु'] १ सरल, झुकटिल 'अनुचमनं जहा तच्च, निराण तह सुणेहं मे' (सूय १, १, १, ४, ८) । २ संयम मे तत्पर, समयी, 'भुट्टोवि नाइततह बज्ज' (भावा) । ३ स्पष्ट, व्यक्त (सूय १, १) ।

अजुआ ली ['अजुका'] भगवान् मनननाथ की प्रथम शिष्या (सम १५२) ।

अंजू ली ['अजू'] १ एक सारंगबह की बन्ना (विपा १, १०) । २ 'विचलचुट' का एक अध्ययन (विपा १, १) । ३ एक कट्टाणी (ठा ८) । ४ 'भातापर्मणया' सूत्र का एक अध्ययन (छाया २) ।

अठि पुन ['अरिय'] हही, हाड (पड़) । 'अहिममहुरस्स अवस्स भजोगवदाए अठ्ठी न भवतीमदि' (चार ६) ।

अंड न ['अण्ड, *क'] १ घड़ा (कप्य) । अंडअ लीप । २ अंड-कोरा (महानि ४) । अडग ३ 'भातापर्मणया' सूत्र का तृतीय अध्ययन (छाया १, १) । 'कंड वि' ['कूट'] जो अण्डे से बनाया गया हो, 'बमला महाए एणे, भाइ अण्डकडे जों' (सूय १, ३) । 'बंध पुं' ['बन्ध'] मन्दिर के शिखर पर रखा जाता अण्डाकार मोला (गडड) । 'वाणियय पु' ['वाणिजक'] अण्डे का व्यापारी (विपा १, ३) ।

अडग } वि ['अण्डज'] १ अण्डे से पैदा होनेवाले जन्तु पक्षी, साप, मछली वगैरह (ठा ३, १, ८) । २ रेशम का घामा । ३ रेशमी वस्त्र (उत्तर २६) । ४ रण का वस्त्र (सूय २, २) ।

अंडय पुं ['दे, अण्डज'] मछली, मत्स्य (दे १, १६) ।

अंडाउय वि ['अण्डज'] अण्डे से पैदा होने-वाला (पठम १०२, ६७) ।

अंत पुं ['अन्त'] १ स्वरूप, स्वभाव (से ६, १८) । २ प्राप्त भाग (से ६, १८) । ३ सीमा, हृद (बी ३३) । ४ निवर्त, नजदीक (विपा १, १) । ५ भग, विनाश (विसे ३४५४, जी ४८) । ६ निर्णय, निश्चय (ठा ३) । ७ प्रदेश, स्थान, 'एगमममममम' (भग ३, २) । ८ राग वीर द्वय, 'बोहि अनेहि मरिस्समारो' (भावा) । ९ रोग, बीमारी (विसे ३४५४) । १० वि. इन्द्रियों को प्रति-कूल लगनेवाली बीज, अनुन्द, नीरस वस्तु (पण २, ४) । ११ मनोहर, सुन्दर (से ६, १८) । १२ तीव्र, क्षुद्र, तुच्छ (कप्य) । 'कर वि' ['कर'] उसी जन्म में भुक्ति पातेवाला (सूय १, १५) । 'करण वि' ['करण'] नम्राक (पण १, ६) । 'काल पु' ['काल'] १ शृंग्र काल । २ प्रलय काल (से ५, ३२) । 'किरिया ली' ['किया'] भुक्ति, संसार का भन्त करना (ठा ४, १) । 'कुल न' ['कुल'] क्षुद्र कुल (कप्य) । 'गड वि' ['कूट'] उसी जन्म में भुक्ति पातेवाला (उप ४६१) । 'गडदसा ली' ['कूटसा'] जैन भगवत्पथ में आठवाँ भगवत्पथ (पण १) । 'वर वि' ['वर'] भिक्षा में नीरस पदार्थों की हो खोज करतवाला (पण २, १) ।

अत वि ['अन्त्य'] अन्तिम, मन्त का (पण १५) । 'कपरिया ली' ['क्षरिण'] १ ब्राह्मी लिपि का एक प्रेद (पण १) । २ कला विशेष (कप्य) ।

अत न ['अन्त'] भात (हुता १८२, गा ५८५) ।

अत थ ['अन्तर्'] मध्य में, बीच में (हे १, १४) । 'उर न' ['उर'] देखो अतेउर (नाट) । 'करण, 'करण' ['करण'] मन, हृदय, कण्ठासनपरवर्तकरोध' (उर ६ टी, नाट) । 'गय वि' ['गत'] मध्यवर्ती, बीचवाला (हे १, ६०) । 'डा ली' ['धा'] १ तिरोधान । २ नाश (प्रासू) । 'धान न' ['धान'] अदृश्य होना, तिरोहित होना ।

(उप १३६ टी) । °द्वागी स्त्री [°धानी]
जिसमे मद्रय हो सके ऐसी विद्या (सुप्र २) । °द्वाभूय वि [°धाभूत] नष्ट,
विगत 'नष्टेति वा विपतेति वा धंतदामूनेति
वा एण्डा' (भाष) । °प्वाअ पु [°पात]
अन्तर्भाव, समावेश (ह २, ७७) । °भाव पुं
[°भाव] समावेश (विते) । °मुहुच न
[°मुहृत्] कुछ कम मुहृत्, नून मुहृत् (जो
१४) । °रदा स्त्री [°धा] १ तिरिषान ।
२ नाश, 'बुद्धो सद्यत्तरदा' (या १६) ।
°रदा स्त्री [°अदा] मय-नाल, बीच का
समय (भाष) । °रप पु [°आत्मन]
आमा, जीव (हे १, १४) । °रिहिय, 'रिहिद'
(श्री) वि [°हित] १ व्यवहित, अग्रान-युक्त
(भाष) । २ गुप्त, मद्रय (सम ३६, उप
१६६ टी, भमि १२०) । °विइ पु [°वेदि]
गंगा और यमुना के बीच का देश (कुमा) ।
°अंत वि [°कान्त] सुन्दर, मनोहर (से १,
५६) ।

अतअ वि [°आयात्] आता हुआ (से ६,
५६) ।

अतअ वि [अन्तग] पार-गामी, पार-आत (से
६, १८) ।

अतअ वि [अन्तद] १ भविनाशी, शासन ।
२ जिसकी सीमा न हो वह (से ६, १८) ।

अतअ ३ वि [अन्तर] १ मनोहर, सुन्दर
अंतग ३ (से ६, १८) । २ अन्तर्गत,
समाहित (सुप्र १, १५) । ३ पर्यन्त, प्रान्त
भाग, 'जे एव परिभासति मन्तए ते समाहित'
(सुप्र १, ३) । ४ यम, मृत्यु (से ६, १८; उप
६६६ टी), 'समागम कलति अन्तगस्स' (सुप्र
१, ७) ।

अतग वि [अन्तग] १ पार-गामी । २
दुस्तरय, जो बढिनाई म छोडा जा सके,
'चिचाए अतग सोय निरुत्तेस्सो परिब्बए'
(सुप्र १, ६) ।

अंतगय देखो अत गाय (व १) ।

°अतग न [यन्तण] बन्धन, नियन्त्रण (प्रयी
२४) ।

अंतद्धान वि [अन्तधान] विपक्षान-वर्त्ता(मिड
५००) ।

अंतच्मान देखो अंत-आन (अग्न १४२) ।

अंतर न [अन्तर] १ मध्य, भीतर, 'गामंतरे
पवित्रो सो' (उप ६ टी) । २ मेद, विशेष,
फरक (श्रासु १६८) । ३ अक्सर, समय
(साया १, २) । ४ व्यवधान (ज १) ।
५ अक्सर, अन्तरान (अग ७, ८) । ६ विवर,
छिद्र (पाम) । ७ रजोहरण । ८ पात्र । ९ पुं,
आचार, कल्प । १० सुत के कपडे पहनने का
आचार, सीव कल्प (कप्प) । °कप्प पु
[°कप्प] जैन साधु का एक धार्मिक प्रयत्न
आचरण (पच्) °जंन पु [°कन्द] बन्ध की
एक जाति, वनस्पति विशेष (परए १) ।
°करण न [°करण] आत्मा का शुभ मध्य-
वसाय-विशेष (पच्) । °गह न [°गृह]
१ घर का भीतरी भाग । २ दो चरों के बीच
का अन्तर (वृह ३) । °णई स्त्री [°नदी]
छोटी नदी (डा ६) । °दीर पु [°दीप]
१ दीप-विशेष (जो २३) । २ सबल समुद्र
के बीच का द्वीप (परए १) । °सत्तु पु
[°शत्रु] भीतरी शत्रु, वाम-कोषादि (सुपा
८५) ।

अतर सज [अन्तरय] व्यवधान करना, बीच
में डालना । अतरहे, अतरेमि (विक १३६) ।

अतर वि [आन्तर] १ अन्तर्गत, भीतरी; 'सय-
लभुराएपि अतरो अप्पासो' (अग्न २०) । २
मालिक (उवर ७१) ।

अंतरंग वि [अन्तरङ्ग] भीतरी (विते
२०२७) ।

अंतरंजी स्त्री [आन्तरंजी] नगरी विशेष (विते
२३०३) ।

अंतरपटी स्त्री [अन्तरपटी] मूल स्थान से
ढाई गन्धूत की दूरी पर स्थित गाँव (पव ७०) ।

अतरमुहुच देखो अत मुहुच (पच २, १३) ।

अतरा अ [अन्तरा] १ मध्य में, बीच में (उप
६५४) । २ पहले, पूर्व में (कप्प) ।

अतराद्य न [आन्तरायिक] १ कर्म-विशेष,
जा शान भादि करने में विग्रह करता है (डा
२) । २ विग्र, रुकावट (परह २, १) ।

अतराईय न [अन्तरायीय] ऊपर देखो (सुपा
६०१) ।

अंतरापह पुं [अन्तरापथ] रास्ता का बीचला
भाग (सुख १, १५) ।

अंतराय पुन. [अन्तराय] देखो अतराद्य
(डा २, ४, स २०३) ।

अतराल पु [अन्तराल] अतर, बीच का भाग
(अभि ८२) ।

अंतरापण पुन [अन्तरापण] हकान, हाट
(चाह ३) ।

अतरासास पु [अन्तरवर्ष, अन्तरासास]
वर्ष-काल (कप्प) ।

अत रेख पुन [अन्तरिक्ष] अन्तराल,
आकाश (अग १७, १०, स्वप्न ७०) । °जाथ
वि [°जात] जमीन के ऊपर रही हुई आनाद,
मंच भादि वस्तु (भाषा २, ५) । °पासणाह
पु [°पार्थनाथ] कान्तदेश में मक्खीला के
पास का एक जैन-सीधे पीर वहा की भगवाद्
श्रीपारंथनाथ की मूर्ति (सी) ।

अतरिक्ष वि [आन्तरिक्ष] १ आकाश-
संबन्धी, आकाश का (जी ५) । २ प्रहा के
परस्पर युद्ध पीर में का फल बतलानेवाला
शब्द (सम ५६) ।

अतरिज न [अन्तरीय] १ वस्त्र, कपडा ।
२ शम्भा का मोचना वस्त्र, 'अतरिज एवम
णियसए, अहवा अतरिज नाम तेजाए हेडिल्ल
पोत्त' (मिद्ध १५) ।

अतरिज न [दि] करपनी, बढीहूय (दे १,
३५) ।

अंतरिजिया स्त्री [अन्तरीया] जैनीय
वैश्वार्थिक गण्ड की एक शाखा (कप्प) ।

अतरित वि [अन्तरित] व्यवहित, अतर-
ना (सुर ३, १४३; से १,
२७) ।

अतरिया स्त्री [दि] समाधि, धत (ज २) ।
अतरिया स्त्री [अन्तरिका] छोटा अन्तर,
घोष व्यवधान (राध) ।

अतरीय न [अन्तरीय] द्वीप, 'अतरमिहव-
राणे विणमवए मादि अतरीय व' (धर्मवि
१४३) ।

अंतरेण य [अन्तरेण] बिना, मित्राय (उत
१) ।

अतरेण म्र [अनरेण] बीच मे, मध्य मे (स ७६७) ।

अनलिम्ब देखो अनलिम्ब (लाया १, १, चार ७) ।

अति देखो पति (से ६, ६६) ।

अन्तिम वि [अन्तिम] चरम, शेप, मन्थ (ठा १) ।

अन्तिय न [अन्तिक] ? समीप, निवट (उत्त १) । २ ब्रह्मान, प्रत, 'अह निस्सु गिवाएखा घाहारस्तेव अतिपा' (भाषा १, ८) । ३ मन्तिम, चरम (सूय २, २) ।

अतीहरी स्त्री [दे] हरी (दे १, १५) ।

अंतेआरि वि [अन्तआरिन्] बीच मे जाने-वाला, बीचक (हे १, ६०) ।

अतेउर न [अन्त पुर] ? राजलिमो का निवासगृह । २ राती, 'सणहुमारी वि तेसि बरसाथ ततेउरी गमो तमुजए' (महा) ।

अतेउरिगा } स्त्री [आन्त पुरिकी, 'री']
अंतेउरिया } अन्त पुर मे रहनेवाली स्त्री,
अतेउरी } 'जी (उप ६ टी, सुपा २२८, २८६) । २ रोगी का नाममात्र लेने से उसको नीरोग बनानेवाली एक विद्या (वच ५) ।

अतेही स्त्री [दे] ? मध्य, बीच । २ उदर, पेट । ३ कलील, तरंग (दे १, ५५) ।

अनेयासि वि [अन्नेयासिन्] शिष्य (वप्य) ।
अतेउर देखो अनेउर (प्रति ५७) ।

अनो म्र [अनर] बीच, भीतर, 'गामतो मंपत्ता' (उप ६ टी गुर ३, ७४) । 'उरिया स्त्री [उरिका] नगर मे रहनेवाली बेश्या (मग १५) । 'गइया स्त्री [गयिका] स्वानन के लिए सामन जाना, 'सन्नाए विभूर अनागयाए तणमस' (गुर १५, १६१) । 'गय वि [गन] मन्थरती, समाविट (उप ६८६ टी) । 'जिअसणी स्त्री [नियसतो] जैन साध्विया को पहनने का एक वस्त्र (इह ३) । 'दहण न [दहन] हृदय-बाह (तडु) । 'मन्मन्-साणिय पुन [मन्मन्सानिक] अग्निव का एक भेद (राय) । 'मुहच इ [मुहच] कम मुहल, ५८ मिलिट मे कम समय

(वप्य) । 'वाहिणी स्त्री [वाहिनी] सुद नदी (ठा २, ३) । 'वोसभ पु [वशम्भ] ह्रादिक विधास (ह १ ६०) । 'सल न [शल्य] ? भीतरी शल्य, वाव (ठा ४) । २ बपट, माया (बीथ) । 'साल्य स्त्री [शाल्य] घरका भीतरी भाग, 'कोलावमड अतोमालाहिने बहिया नीछेई' (जवा, वि ३४३) । 'हुच वि [मुख] भीतर, 'भताहुच रुन्का जयागुएछे घरे हलिमउतो' (भा ३७३) ।

अतोहुच वि [दे] अतोहुच, सोपा सुह बाना (दे १, २१) ।

अन्डी (म्र) स्त्री [अन्] आत, आतो (ह ४, ४४४) ।

'अद पु [चन्द्र] ? चन्द्रमा, चार 'मसुव-इयो रोहाएण्डिमसंरतगोरिपुहमद' (गा १) । २ बपूर (से ६, ४७) । 'राअ पु ('राग) चन्द्रकात मणि (से ६, ४७) ।

'अदरा स्त्री [अन्दरा] गुफा (से ६, ४७) ।

'अदल पु [अन्दल] वृक्ष विशेष (से ७, ४७) ।

'अदवेदि (शो) देखो अदावेइ (हे ४, २८६) ।

अदु } स्त्री [अन्दु] श्रुत्वा, जजीर
अदुया } (बीथ, स ५३०) ।

अदेउर (सी) देखो अनेउर (हे ४, २६१) ।

अदोल म्र [अन्दोल] ? हिचकना, झूलना । २ कपना, हितना । ३ सदिय होना 'अदोल दोलासु व माणो गल्लोवि विलयाण (स ५२१) । बह अदोलन, अदोलिन, अदोलमाण (से ८, ५१, ११, २५, गुर ३, ११६) ।

अदोल सन् [अन्दोल] कपना, हितना । बह अदोलत (गुर ३, ६७) ।

अदोल्य पु [अन्दोलक] हिजोना (राय) ।

अदोलन न [अन्दोलन] ? हिचकना, झूलना (गुर ४, २२४) । २ हिजोना । ३ मार्ग विशेष (सूय १, ११) ।

अदोल्य देवो अदोलग (गुर ३, १७५) ।

अदोलि वि [अन्दोलिन्] दिनालेवाना, कपालेवाना (भा २३७) ।

अंदोलिर वि [अन्दोलिन्] भुलनेवाला (सुपा ७८) ।

अदोहण देखो अदोलण ।

अंध वि [अन्ध] ? श्रम्या, नेत्र-हीन (विपा १, १) । २ अज्ञान, ज्ञानरहित 'एए एअया भूदा तमपइदा' (भग ७, ७) । 'कट्टइल न [कण्टरीय] अथ पुण्य के कटक पर चलने के मार्गिक धविचारित गमन करना (भाषा) । 'तम न [तमस] निबिड अन्ध-वार (सूय १, ५) । 'पुर न [पुर] नगर-विशेष (इह ४) ।

अध पु [अन्ध] पाचवाँ नरक का चौथा नरनेन्द्रक, एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ११) ।

अध पु. न [अन्ध] इस नाम का एक देश (पउम ६८, ६७) ।

अध वि [आन्ध्र] आन्ध्र देश का रहनेवाला (पएह १, १) ।

अधु पु [दे] रूप, कुंसा (दे १, १८) ।
अचकार देखो अंधयार (वच ४) ।

अधग पु [दे] वृक्ष, पेड़ (भग १८, ४) ।

'वण्ह पु [वह्नि] स्थूल अग्नि (भग १८ ४) ।

अधग देखो अध (भग १८, ४) । 'वण्ह पु [वह्नि] सूक्ष्म अग्नि (भग १८, ४) ।

'वाण्ह पु [वृष्णि] यदुवरा का एक राजा, जो मनुदविजयादि के पिता था (अत २) ।

अधय } पु [अन्धक] ? श्रम्या, नेत्र-
अधयग } हीन (पएह १, २) । २ दानर-
रा का एक राज कुमार (पउम ६, १८६) ।

अधयार पुन [अन्धकार] अंधेरा, अंधकार (वप्य, स ४२६) । 'पकट पु [पक्क] कृष्णवर्ण (मुज १३) ।

अधयारण न [अन्धकार] अन्धेरा (भवि) ।
अधयारिय वि [अन्धकारित] अंधकार-
वाला (से १, १५, १३) ।

अधरअ } वि [अन्ध] श्रम्या, नेत्रहीन
अधल } (गा ७७४, हे २, १७३) ।

अवलरिही स्त्री [अन्धयित्री] अंध वानने-
वाली एक विद्या (सुपा ४२८) ।

अधार पु [अन्धहार] अंधेरा (बीथ १११, २७०) ।

अंधार सक [अन्धारय्] भयकार-युक्त
करता। कर्म. 'भेदवन्दने सुरे भवारिज्ज
न कि भुवण' (कुप ३८७)।

अंधारिय वि [अन्धारिय] भयकार वाता
(सुपा ५४, सु ३, २३०)।

अंधाय सक [अन्धय्] घषा करना। घषा-
बेइ (निष्क ८४)।

अंधिअ वि [अन्धित] ग्रन्थ बना हुआ (सम्मत
१२१)।

अंधिआ स्त्री [अन्धिया] द्यूत-विशेष (दे २,
१)।

अंधिआ स्त्री [अन्धिया] चतुरिन्द्रिय अनु की
एक जाति (उत्त ३६, १४७)।

अंधिहण वि [अन्ध] घषा, जग्माघ (पण्ड
२, ५)।

अंधिलय देखो अधिलग। (पिउ ५७२)।

अंधीकिद (स्त्री) वि [अन्धीकृत] घष किया
हुआ (स्वण ४६)।

अंधु पुं [अन्धु] रूप, कृपा (प्राभा दे १, १८)।
अंधेहण देखो अधिहण (पिण्ड)।

अप पु [अप्प] कपन (से ५, ३२)।

अप पु [अप्प] एक जात के परमाध्यात्मिक देव,
जो नरक के जीवों को दुल देते हैं (सम २८)।

अंन पु [आन्न] १ भोजन का पेइ। २ न
भोजन, भोजन-फल (हे १, ८४)। ३ गेहूँ की स्त्री

[दे] भोजन की भाँजी, गुठली (निष्क १५)।

४ 'बोयग न [दे] १ आम का रस (निष्क
१५)। २ भोजन की छाल (भावा २, ७, २)।

५ 'डाणल न [दे] भोजन का टुकड़ा (निष्क १५)।

६ 'डाणल न [दे] भोजन का छोटा टुकड़ा

(भावा २, ७, २)। ७ 'पेसिया स्त्री [पेसिया]

भोजन का सम्मा टुकड़ा (निष्क १५)। ८ 'भिश

न [दे] भोजन का टुकड़ा (निष्क १५)। ९ 'साला

न [दे] भोजन की छाल (निष्क १५)। १० 'सालयण

न [सालयण] वैद्य विशेष (राम)।

अन न [अन्न] १ तन्म, मट्ठा (जं ३)। २ खट्टा

रस। ३ खट्टी चीज (विने)। ४ वि. निष्ठुर

वचन बोलनेवाला (रुह १)।

अंन वि [आन्न] १ खट्टी वस्तु। २ मट्टे से

संस्कृत चीज (जं ३)।

अन वि [आन्न] भोजन, रसवर्णवाला (मे
३, ३४)।

अवग देखो अव = आन्न (अणु) 'हुँया स्त्री
[स्थि] भोजन की गुठली (अणु)।

अवट्ट पु [अम्बट्ट] १ देश-विशेष (पउम ६८,

६५)। २ विमान पिता ब्राह्मण और माता

वैश्य हो वह (सूय १, ६)।

अंउट्ट पु [अम्बट्ट] १ एक परिव्राजक, जो
महाविप्रेक्ष सेन ने जन्म लेनर मोक्ष जायगा

(भीम)। २ भगवान् महावीर का एक यावक,

जो भ्राता भी चौबीसों में २२ वाँ तीर्थंकर होगा

(ठा ६)।

अवट्ट वि [दे] कठिन (दे १, १६)।

अवट्टाई स्त्री [अम्बायात्रा] धाई माता (सुपा

२६८)।

अंमसो स्त्री [दे] कठिन और वासी कनिक

(दे १, ३७)।

अवय देखो अव (सुपा ३३४)।

अवर पुन [अम्बर] एक देव-विमान (देवेद्र

१५४)।

अंवर न [अम्बर] १ वायु (पाम. भग २,

२)। २ वस्त्र, कपड़ा (पाम. निष्क १)।

३ 'तिलय पु [तिलक] पर्वत विशेष (प्राव)।

४ 'वय न [वय] स्वच्छ वस्त्र (कण्)।

अउरस पुन [अम्बरस] माया, गहन (भग

२०, २—पउम ७७५)।

अउरिस पुन [अम्बरीष] १ भट्ठा, भाइ (भग

३, ६)। २ कौष्ठक (जीव)। ३ पु. नारक-

जीवों की बुल देनेवाले एक प्रकार के परमा-

धार्मिक देव (एव १८०)।

अवरिसि पु [अम्बरसि] १ ऊपर का वीरघर

अर्थ देखो (भग २८)। २ उच्चस्थिती नगरी

का निवासी एक ब्राह्मण (प्राव)।

अउरीस देखो अउरिस।

अवरोसि देखा अवरोसि।

अवसमिया } देखो अउमसी।

अवसमी }

अवहुड। स्त्री [अम्बहुण्डी] एक देवी (महावि

२)।

अना स्त्री [अम्ना] १ माता, माँ (स्वण २२४)।

२ भगवान् नेमिनाथ की शासनदेवी (सति

१०)। ३ नली विशेष (पण्ड १)।

अवाड सक [अम्बट्ट] खरटना, सेप करना

'पनसति खरएत्ति अवाडसि ति वुत्त भवति'

(निष्क ४)।

अवाड सक [तिरस् + कृ] उगलन देना,
तिरस्कार करना, 'तमो हस्वारिय अवाडिमा

मणिप्राय' (महा)।

अनाडग पु [आम्नान] १ भगता का

अनाडय (पण्ड १, पउम ४२, ६)। २

न. भगता का फल (अणु ६)।

अवाडिय वि [तिरस्कृत] १ तिरस्कृत (महा)।

२ उपात्तम्भ (स ५१२)।

अविआ स्त्री [अम्बिका] १ भगवान् नेमिनाथ

की शासनदेवी (ती १०)। २ पावन वासुदेव

की माता (पउम २०, १८४)। ३ 'समय पु

[समय] गिरनार पर्वत पर का एक तीर्थ

स्थान (ती ४)।

अवर न [आन्न] भोजन का फल (दे १, १५)।

अविल पु [आन्न] १ लट्ठा रस (सन ४१)।

२ वि. खटाई वाली चीज, लट्ठी वस्तु (भीम

३४०)। ३ नामकर्म-विशेष (कम्म १, ४१)।

अविलिया स्त्री [अम्बिका] १ इनली का पेइ

(उ १०३१ टी)। २ इनली का फल

(था २०)।

अनु न [अम्बु] पानी, जल (पाम)। १ 'अ, ज

न [ज] कमल, पद्म (अणु ५५, कुना)।

२ 'गाह पु [नाथ] समुद्र (वव ६)। ३ 'रुह

न [रुह] कमल (पाम)। ४ 'वह पु [वह]

मेघ, बारिश (गड्ड)। ५ 'वाह पु [वाह]

मेघ, बारिश (गड्ड)।

अनुपिसाअ पु [दे] राहु (ग ८०४)।

अनुसु पु [दे] भावद जन्तु विशेष, हिनक

पशु-विशेष, खरस (दे १, ११)।

अवेडिआ स्त्री [दे] एक प्रकार का वृषा,

अवेष्टी } पृष्ठि-युक्त (दे १, ७)

अउरसि पु [दे] द्वार-यत्न, दरवाजा का तल्ला

(दे १, ८)।

अउरच्चा स्त्री [दे] कूनों को बितनेवाली स्त्री

(दे १, ८, नाट)।

अम पु [अम्मस्] पानी, जल (था १२)।

अमु (धप) पुं [अदमन्] पशु, पायाण

(पड)।

अमो पुं [अम्भस्] पानी, जल। १ 'अ न

[ज] कमल (दे ७, ३८)। २ 'इणी स्त्री

[जिनी] कमलिनो, पद्मिनो (मै ६१)।

३ 'निदि पु [निधि] समुद्र (था १२)।

अकिरिय वि [अक्रिय] १ प्रातमी, निरुपम ।
२ प्रभुम व्यापार से रहित (ठा ७) । ३
परलोक-विषयक क्रिया को नहीं माननेवाला,
नास्तिक (एदि) । 'य वि [०त्सम] श्रामा
को निष्क्रिय माननेवाला, साम्य (सूत्र १,
१०) ।

अकिरिया स्त्री [अक्रिया] १ क्रिया का
घभाव (मग २६, २) । २ दुष्ट क्रिया, बुराव
व्यापार (ठा ३, ३) । ३ नास्तिकता (ठा ८) ।
'वाह वि [०वादिन्] परलोक-विषयक क्रिया
को नहीं माननेवाला, नास्तिक (ठा ४, ४) ।
अकीरिय देखो अकिरिय, 'जे बेह लोगमि
अकीरियावा, अनेए पुढा घुममाविसि' (सूत्र
१, १०) ।

अकुइया स्त्री [अकुचिका] देखो अकुच ।
अकुओभय वि [अकुतोभय] जिसको किसी
तरफ से भय न हो वह, निर्भय (भाचा) ।
अकुण्ड वि [अकुण्ड] अपने कार्य में निपुण
(गउइ) ।
अकुय वि [अकुच] निमल, स्थिर (निज १) ।
स्त्री, अकुइया (कप्य) ।

अकोप्य वि [अकोप्य] रम्य, सुन्दर (एह
१, ४) ।
अकोप्य पुं [दे] अकराय, गुनाह (पइ) ।
अकोस देखो अकोस = अकोरा ।
अकोसायत वि [अकोशायमान] विकसता
हुआ, 'रविचिरणसख्योद्विषयकोमधतउम-
गतीरविचरणसख्यो' (मीए) ।

अक पुं [अके] १ सूर्य, सूरज (सुर १०,
२२३) । २ राक का पेड़ (प्रातू १६८) । ३
सुवर्ण, सोना, 'जेए अरुनुअसरीतो विदिओ
रयणसखयोगी' (रयण ५४) । रावण का
एक मुमू (पउम ५६, २) । 'तूल न [तूल]
भाव' को हई (एह १) । 'तेअ पुं [तेअस]
विप्राधर वंश का एक राजा (पउम ५, ४६) ।
'योदीया स्त्री [योदिन्द्या] बहो विरोध
(एह १) ।

अक पुं [दे] हूत, सदेश-हाराज (दे १, ६) ।
'अक देखो थक (गा ५३०, ने १, ५) ।
अकाअ वि [अकृत] नहीं किया गया । 'पुत्र
वि [पूर्व] जो पहले बनी न किया गया हो
(मे १२, ४०) ।

अकइ देखो अकई (घाउ ५३) ।

अकंत वि [आकान्त] १ बनवान् के द्वारा
दबाया हुआ (राणा १, ८) । २ घेरा हुआ,
अस्त (भाचा) । ३ परास्त, अभिभूत (सूत्र १,
१, ४) । ४ एक जाति का निर्जीव वायु (ठा
५, ३) । ५ न. आक्रमण, उत्तलघन (मग १,
३) । 'हुकर वि [हु.ख] डू से से दबा
हुआ (सूत्र १, १, ४) ।

अकंत वि [दे] बड़ा हुआ, प्रवृद्ध (दे १, ६) ।
अकत वि [अशान्त] अनिष्ट, अनिश्चित,
अनभिमत (सूत्र १, १, ४, ६) ।
अकद शक [आ + कन्द] रोना, चिल्ला
(प्राणा) । नह. अकंदत (गुणा ५७४) ।

अकद (अप) देखो अकाम = आ + क्रम् ।
अकंदइ; सक. अकंदिकण (सण) ।

अकद पुं [आकन्द] रोदन, विनाष, चिल्ला-
वर रोना (सुर २, ११४) ।

अकंद वि [दे] ताल करनेवाला, रख (दे
१, १३) ।

अकंदीमाणय वि [आकन्दिक] खलनेवाला
(हुमा) ।
अकंदिय न [आकन्दित] विनाष, रोदन (मे
४, ६४, पउम ११०, ५) ।

अकम सक [आ + क्रम्] १ आक्रमण करना,
दबाना । २ परास्त करना । क. अकमंत
(वि ४८१) । सक. अकमिता (एह १, १) ।

अकम पुं [आकम] १ दवाना, बडाई करना ।
२ परास्त (भाच) ।

अकमण वि [आकमण] १—२ ऊपर देखो
(दे १४, ६६) । ३ पराक्रम (विने १०४६) ।
४ वि. आक्रमण करनेवाला (मे ६, १) ।
अकमिअ देखो अकत = आक्रम (प्रा १७२,
गुणा १२७) ।

अकसाळा स्त्री [दे] १ बलात्कार, जबरदस्ती ।
२ उन्मत्त-भौ स्त्री (दे १, ५८) ।
अका स्त्री [दे] बहिन (दे १, ६) ।

अका स्त्री [अका] बूढ़ी, हठी (सुर १०) ।
अकासी स्त्री [अकासी] व्यन्जन-वर्णनीय एक
देवी (ती ६) ।

अकिञ्ज वि [अकेव] सरोवर के अगोचर (ठा
६) ।

अकिट्ट वि [अकिट्ट] १ क्लेश-वजित (जीव
३) । २ बाधारहित (मग ३, २) ।

अकिट्ट वि [अकट्ट] अविनिवृत्त (मग ३, २) ।
अकिय वि [अक्रिय] क्रियारहित (विने
२००६) ।

अकुट्ट वि [दे] अक्यासित, अधिष्ठित (दे १,
१११) ।

अकुस सक [गम्] जाना । अकुसइ (हे
४, १६२) ।

अकुह्य वि [अकुह] निष्कण्ट, मायारहित
(दस ६, २) ।

अकूर पुं [अकूर] श्रीकृष्ण के चाचा का
नाम (हीम ४६) ।

अकूर वि [अकूर] बुरदारहित, बगल (प
२३६) ।

अकैज देवा अकिज ।
अकैह्य वि [एगहिन्] असेला, एकाकी
(नाट) ।

अकोह पुं [दे] छाग, बकरा (दे १, १२) ।
अकोण न [आकोण] इकट्ठा करना, समूह
करना (विने) ।

अकोस न [अकोरा] जिस प्राय के अति मज-
दीब में शरीर, शरीर या पर्वतीय नदी आदि
का उपद्रव हो वह;

'जेत वतमचल बा, इंदमणिं सकोमकोन ।
बाधातमि अकोस, अकोजले सावए तेण'
(बृह ३) ।

अकोस सक [आ + कृ] भाँसना करना ।
क. अकोसित (सुर १२, ४०) ।

अकोस पुं [आकोरा] बड़ बचन, राग,
भंगना (सम ८०) ।

अकोस वि [आकोशर] भाँसना करनेवाला
(उत २) ।

अकोसणा स्त्री [आकोराना] अमिश्राण, निर्भे-
रसना (राणा १, १६) ।

अकोसिअ वि [आकोशित] बड़ बचनो में
जिसकी अर्थता की गई हो वह (सुर ६,
२३४) ।

अकोह वि [अकोष] १ अन्व-शोध (अं २) ।
२ कोषरहित (उत २) ।

अकृप पुं [अकृ] १ जोष, धामा (ठा १) ।
२ खल (का एह पुं (न १४, ६४) । ३

चन्दनक, समुद्र में हानेवाला एक द्वेन्द्रिय जन्तु, जिसके निर्जीव शरीर को जैन साधु लोग स्थापनाकार्य में रखते हैं (था १)।

४ पहिया को घुरी, नील (शेष ५४६)। ५ बीसर का पासा (धरा ३२)। ६ विभीषण, बड़ेका वा बुरा (सि ६, ४४)। ७ चार हाथ या ६६ छद्मों का एक मान (धनु सम)। ८ छ्वास (धनु ३)। ९ न इन्द्रिय (विसे ६१, धरा ३२)। १० घृत, जूआ (सि ६, ४४)। ११ चम्म न [चमेन] पत्ताल, ममक, 'ममलचम्म वट्टगइये' (एणा १, ६)। १२ पाड्य न [पाडक] नील का दुबड़ा, 'दाहणा हाहात्त करेमणेण वड्ढो सा मुण्णो भक्कपाणएणित्तं' (स २५५)। १३ माला स्त्री [माला] जपमाला (पठम ६६, ३१)। १४ लघा स्त्री [लता] छ्वास की माला (दे)। १५ वत्त न [वात्र] पूजा का पाल 'तो लोमो। गहिमवत्तवत्तहत्तो एइ गिहे'।

वट्टावणत्थ' (गुप्ता ५८६)। १६ वलय न [वलय] रत्नान की माला (दे २, ८१)। १७ वाअ पु [वाह] वैवाहिक मत के प्रवर्तक गौतम ऋषि (विसे १५०)। १८ वाडग पु [वाटक] मलका (जीव ३)। १९ सुत्तमाला स्त्री [सुत्तमाला] जपमाला (धनु ३)।

अक्षर देखो अक्षरा = मा + क्सा। अक्षद (धरा)।

अक्षइय वि [आख्यात] उक्त, कथित (धरा)।

अक्षरइहिणी देखा अक्षरहिणी (प्राक् ३०)।

अक्षरइ वि [अक्षरइ] १ सपूर्ण। २ अक्षरइत्त। ३ निरंतर प्रविच्छिन्न अक्षर इच्छापणेहि रहनीछुरे गन्नी भूमरों (गुप्ता २६६)।

अक्षरइ पु [अक्षरइ] द्वय (धाम)।

अक्षरइत्त वि [अक्षरइत्त] १ सपूर्ण सएउ रहित (सि ३, १२)। २ अविच्छिन्न, निरंतर (उर ८, १०)।

अक्षरत्त देखो अक्षरा = मा + क्सा।

अक्षरत्त सक [आ + रन्ट्] आक्रमण करता 'अक्षरत्त पिमा हिमए, अएण महिलएण रमनस' (ग ४४)।

अक्षरगवेत्त न [दे] १ मैथुन, सेमेल।

२ शय, सध्या रात (दे १, ५६)।

अक्षरणिआ स्त्री [दे] विपरीत मैथुन (धाम)।

अक्षरम नि [अक्षम] १ धममयं (गुप्ता-३७०)। २ अयुक्त, अनुचित (ठा ३, ३)।

अक्षरय वि [अक्षत] १ धाररहित, ब्रह्म शुन्य (सुर २, ३३)। २ अक्षरित, संपूर्ण (सुर ६, १११)। ३ पु. न अक्षर धावत (गुप्ता ३२६)।

आर वि [आर] निर्दोष आचरणवाला (वव ३)।

अक्षरय वि [अक्षय] १ शय का समत्व (उत्तर ८३)। २ जिनका कभी नारा न हो वह (सम १)।

निहि पुन [निधि] एक प्रकार की तपस्या (वव २७१)। २ तइया स्त्री [तृतीया] वैशाल शूद्र तृतीया (आनि)।

अक्षर पुन [अक्षर] १ अक्षर, वरुण (गुप्ता ६५६)। २ ज्ञान, चेतना 'नक्षरइ अणुव ज्ञोति, अक्षर, नो य वेयएणमावा' (विसे ५५५)। ३ वि अविनय, निय (विसे ५५७)। ४ थ पु [थ] शब्दार्थ (अधि १५१)। ५ पुट्टिया स्त्री [पुट्टिजा] विपि-

विशेष (मम ३५)। समास पु [समास] १ अक्षरों का समूह। २ ध्रुव ज्ञान का एक भेद (कम्म १, ७)।

अक्षरत्त पु [दे] १ अक्षरत्त वृत्त। २ न अक्षरत्त वृत्त का फल (पएण १६)।

अक्षरत्तिय वि [दे] १ जिनका प्रतिशब्द दृष्टा हो वह प्रतिव्यमित (दे १, २७)। २ अक्षरत्त व्याकुल (सुर ४, ८८)।

अक्षरत्तिय वि [अक्षरत्तिय] १ अवधित, निस्पन्द (गुप्ता)। २ जो गिरा न हो वह, अप्रतिष्ठ (जाट)।

अक्षरत्तया स्त्री [दे] दिशा (दे १, ३४)।

अक्षरत्त सक [आ + क्सा] कट्ना बोलना। वक्क अक्षरत्त (एण धर्म ३)। कवक्क अक्षरत्तज्ज (सुर ११, १६२)। क अक्षरत्त, अक्षरत्तइयत्त (विसे २६७७ ना २२२)। हेइ अक्षरत्त (सत् ८ सत् ३ टी)।

अक्षरा स्त्री [आख्या] नाम (विसे १६११)।

अक्षराइ वि [आख्यायिन] कहनेवाला, उपदेशक, 'अक्षरत्तइ' (एणा १, १८)।

विपा १, १)।

अक्षराय न [आख्यातिक] क्रियापद, क्रियावाचक शब्द (विसे)।

अक्षराइय वि [आक्षितिक] स्वायं, मनधर, शाश्वत, 'एव ते मनिषयएणच्छा परदासुपाय-एणसता वेदित मन्त्राज्जरीएण अयाणं वम्मवणएण' (पएह १, २)।

अक्षराइया स्त्री [आख्यायिका] उपन्यास, वाता, कहानी (कप्पू, भास ५०)।

अक्षराइ वि [आख्याय] कहनेवाला (सूर १, १, ३, १३)।

अक्षराय पु [आख्यायक] म्लेच्छों की एक जाति (सूर १, ५)।

अक्षराइय पु [अक्षरायक] १ जूमा अक्षराइय। २ खेतना का दृष्टा। ३ अक्षराइय अक्षराय-स्थान (उप ५ १०)। ४ प्रेनको की बैठने का आसन (ठा ५, २)।

अक्षराय न [आख्यायन] १ कथन, निवेदन (गुप्ता)। २ वाता, उपस्था (पठम ४८, ७७)।

अक्षरायय न [आख्यायनक] कहानी, वाता (उप ५६७ टी)।

अक्षराय वि [आख्यायत] १ प्रतिपादित, कथित (गुप्ता ३६५)। २ न क्रियापद (पएह २, २)।

अक्षराय न [अक्षराय] हामी की पकड़न के लिए किया जाता दंडा, लड़ा (धाम)।

अक्षराया स्त्री [आख्यायत] एक प्रकार की जैन सेना 'अक्षरायाए सुदसणो वेदो तामिणा पडिबोहिमो (पक्)।

अक्षरि वि [अक्षि] आल, देन (हे १, १३, ३५ स २ १०४ प्राप् स्वप्न ६१)।

अक्षरिअ वि [अक्षिक] पारा से जूमा खननेवाला, जुयारी (दे ७, ८)।

अक्षरिअ वि [आख्यायत] प्रतिपादित, कथित (था १४)।

अक्षितर न [अक्षितर] मार्ग का कोटर (विपा १, १)।

अक्षिरज्जत देवो अस्या = मा + स्या ।

अक्षिरज्जत वि [आक्षिप्त] मय तपह मे प्रेरित (गिरि १६६) ।

अक्षिरज्जत वि [आक्षिप्त] १ म्याकुन । २ जिस पर टीका की गई हो वह । ३ प्राकृत, खोचा हुआ (मुर ३, ११५) । ४ मामर्थ्य से लिया हुआ (मे ४, २१) ।

अक्षिरज्जत न [अक्षेत्] मर्यादित सेव के बाहर का प्रदेश (निबू १) ।

अक्षिरज्जत मय [आ + क्षिप्] १ क्षामेय करना, टीका करना, चौपातोय करना । २ रोचना । ३ गालना । ४ ध्याकुन करना । ५ फेंकना । ६ स्वीकार करना, 'अक्षिष्वदं परि-मगार' (उवर ४६) । हेतु 'अक्षिरज्जित' (गिरि १, १), 'तपो न जुतमिह कामय अक्षिरज्जित' (स २०५, प ५७७) । वरम 'अक्षिष्वदं य मे बाणी' (स २३, प्रामा) ।

अक्षिरज्जत मय [आ + क्षिप्] आक्रोश करना । अक्षिष्वदि (गिरि २३१) ।

अक्षिरज्जत न [आक्षेपण] ध्याकुलता, धव राट्ट (पहल १, ३) ।

अक्षीण वि [अक्षीण] १ हलम शून्य, लय रहित, झूठ (कप) । २ परिपूर्ण, संपूर्ण (कुमा) । 'महाणसिय वि [महानसिक] जिसकी निम्नान श्लोण महातसी शक्ति प्राप्त हुई दो वह (पहल २, १) 'महाणसी स्त्री [महानसा] वह प्रभुत आरिष्यक शक्ति निजने पाया जो निपात दूसरे सेक' । लाया का यावत्-भूति खिलान पर भी तबत्र नम न हा, अवतत निपात लावता स्वय उस न जाम (पव २००) । 'महालय वि [महालय] निजम मोठी जगह मे भी बहुत लोग का समावेश हो सके एसी प्रभुत आरिष्यक शक्ति मे युक्त (पथ २) ।

अक्षुत्र वि [अक्षुत्र] भनीण, वृद्धि-शून्य 'अक्षुत्राकारनरित' (गंड) ।

अक्षुद्रिअ वि [अखण्डित] सपूर्ण, अप्रकट, पुनरहित 'अक्षुद्रिओ पक्षुद्रिओ दिसनानि सवान्पुण्डरीको' (मुपा ११६) ।

अक्षुण्ण वि [अक्षुण्ण] जो हूना हुआ न हो, अविच्छिन्न (पह १) ।

अक्षुद्र वि [अक्षुद्र] १ शरीर, अनुच्छ (दव ५) । २ दबाव, बरण (गवा २) । ३ उदार (पवा ७) । ४ गूस्म बुद्धिमान (धर्म २) ।

अक्षुद्र न [अक्षोद्वय] सुदता का भगव (उप ६१५) ।

अक्षुपुरी स्त्री [अक्षपुरी] नगरी विशेष (गुपा २) ।

अक्षुभ्यमान वि [अक्षुभ्यमान] जो क्षोभ को प्राप्त न होना हो (उप ६२) ।

अक्षुभिय देखो अक्षुहिय (उदि ६६) । अक्षुहिय वि [अक्षुमित] क्षोभरहित, मधुर (मण) ।

अक्षुक्षि वि [अक्षुक्षि] मन्त्र, परिपूर्ण, 'मोयणवत्वाहरण सपापतेण मन्त्रमन्त्राण' (उप ७२२ टी) ।

अक्षेअ देखो अस्या = मा + स्या ।

अक्षेअ पु [अक्षेप] शीघ्रता, जल्दा (मुपा १२६) ।

अक्षेय पु [आक्षेप] १ आकर्षण, खींच कर लाना (पहल १, ३) । २ सामर्थ्य, शर्म की समति के लिए अनुत्त शर्म की बताना (उप १००२) । ३ आशक्ता, प्रवर्णन (मय २, १, विम १४३६) । ४ उपपत्ति, 'दक्षेण कल्पवने अक्षेयसो भवे पयो' (उवर ४८) ।

अक्षेयग पु [आक्षेपक] १ बीचवर लात-वाला, प्राक्पंक । २ समर्थक पद, अक्षयवति के लिए अनुत्त अक्ष की बतानावाला शब्द (उप ६६६) । ३ साक्षिप्यकार (उवर १८८) ।

अक्षेयणी स्त्री [आक्षेपणी] शीतलो के मत को आकर्षण करनेवाली कथा (श्रीन) । अक्षेयि वि [आक्षेपिन्] आकर्षण करने वाला, बीचवर लातेवाला (पहल १, ३) ।

अक्षोड मय [कृष्] म्यान मे तनवार का लाचना बाहर करना । अक्षोड्ड (पहल १, १८०) ।

अक्षोड मय [आ + स्फोटय] बोधा या एक बार भवना । अक्षोड्डिआ । वक्र ।

अक्षोड्डत (दम ५) ।

अक्षोड्ड पु [अक्षोड्ड] १ शयन का पेठ । २ न यक्षोड्ड वृक्ष का फल (पहल १७, सण) । ३ राजकुन का दो जाती मुक्कण आदि की भट (वह १ टी) ।

अक्षोड्ड पु [आस्फोट] प्रतिवेसन की क्रिया-विशेष (पव २) ।

अक्षोड्डिय वि [कृष्ट] खोचा हुआ, बाहर निकला हुआ (सङ्ग) (कुमा) ।

अक्षोभ } पु [अक्षोभ] १ क्षाम का अक्षोभ } क्षाम, धवराट्ट का भगव (गुपा १, ६) । २ यदुवरा के राजा

अक्षोभिय का एक पुत्र, जो भगवान् नमि-नाथ के पास दीक्षा लेकर शत्रु जय पर भास गया था (अन १, ७) । ३ न अक्षोभिया मून का एक अक्षयन (मत १, ७) । ४ वि क्षामरहित, प्रचल, स्थिर (पहल २, ५, कुमा) ।

अक्षोहणिल वि [अक्षोभणिल] जो क्षुब्ध न किया जा सक (मुपा ११४) ।

अक्षोहिणी स्त्री [अक्षोहिणी] एक बड़ी सना, जिसम २१८७० हाथी, २१८७० रथ, ६५६९० गाड़े और १०६३५० पदम होने हैं (पठम ५५, ७, ११) ।

अरड वि [अरण्ड] परिपूर्ण, लएइरहित (श्रीप) ।

अरडल पु [आरण्डल] इन्द्र (पठम ५६, ४४) ।

अरडिय वि [अरडित] नदी दूटा हुआ, परिपूर्ण (पवा १८) ।

अरणय वि [दे] स्वच्छ, निर्मल, 'धायव-ताड । धारित धारित पुरो अरणय क्षण नेवि' (मुपा ७४) ।

अरज वि [अराद्य] जो आदि लायक न हो (गुपा १, १६) ।

अरज न [अशान] क्षयिष्य वरम के विन्द, पुत्रुम 'अरज विजावलिमो, अरह अरज बरेड कोइ इमो' (धम्म ८ टी) ।

अरम देवा अरम (कुमा) ।

अरमय पु [दे] मृत्त विशेष, एक प्रकार का दाम (पिंड ३६७) ।

अरालिअ देवा अरालिय = अरालित (कुमा) ।

अरादिम वि [अराद्य] धान के अरादिम, अरादि 'अरह धावित, अरादिम धावित' (कुमा) ।

अराय वि [अखात] नही खुदा हुमा । °तल न [°तल] छोटा तलाव (पाम) ।
 अरिहिल वि [अरिहिल] १ सयं, सवन, परिपूर्ण (कुमा) । २ मान भादि गुणो से पूर्ण, 'मसिते मग्निदे धीएणचारी' (सुम १, ७) ।
 अलुट्ट वि [दे] समूट (भवि) ।
 अलुट्टिअ वि [अलुट्टित] समूट, परिपूर्ण (कुमा) ।
 अलुडिअ देवो अलुडिअ (कुमा) ।
 अलेयण्ण वि [अलेदक्ष] मकुखन, मनिपुण (सुम १, १०) ।
 अलोड देवो अकरोड + फास्कोट (पव २ टी) ।
 अलोहा स्त्री [अलोभा] विद्या-विशेष (पउम ७, १३७) ।
 अग पुं [आ] १ वृद्ध, पेड । २ पर्वत, पहाड (से २, ४१); 'अवागपटाएलहुमडिय' (कण्) ।
 अगाह स्त्री [अगति] १ नीच गति, नरक या पशु-योगि से काम (ठा २, २) । २ निरपाम (मज्झ २६) ।
 अगंठिम न [अग्रन्थिम] १ कदली-फल, केला (बृह १) । २ फल की फाँक, टुकड़ा (निज्ज १६) ।
 अगंठिगेह वि [दे] मौलनोत्तम, जवानो से उन्नत बना हुमा (दे १, ४०) ।
 अगङ्खय वि [अकण्डखयक] नही जुलताने-वाला (सुम २, २) ।
 अगंथ वि [अग्रन्थ] १ धनरहित । २ पुस्ती. निर्यन्त्र, जैन साधु, 'पाव कम्म मवुवममाणे एम मह भगवे विमालि' (आषा) ।
 अगघण पु [अगन्धन] इस नाम की सपों की एक जाति, 'निच्छति वतय भोतु' कृते जाय । भगथी' (दस २) ।
 अगाड पुं [दे अक्ट] कूप, झारा (सुर ११, ८६, उव) । °तड वि [°तट] झारा का बिनारा (विसे) । °दस पुं [°दस] इस नाम का एक राजकुमार (उर) । सद्दुदर पुं [°दुर्दर] कुँए का मेड़क, मल्लव, वह मनुय जो अपना घर छोड़ बाहर न गया हो (एयमा १, ८) ।
 अगाड पुं [अट] कूप के पास पशुओं के जल पीने के लिए जो गर्त बनाया जाता है वह (उप २०५) ।

अगाड वि [अकृत] नही किया हुमा (वव ६) ।
 अगणि पुं [अग्नि] माग (जी ६) । °कय पुं [°कय] मगिन के जीव (भग ७, १०) । °सुह पुं [°सुर] देव, देवता (पाम्) ।
 अगणिअ वि [अगणित] भवगणित, भग-मणित (भा ४८४, पउम ११७, १४) ।
 अगणिज्जंत वि [अगण्यमान] जो गुणने में न आता हो, जिसकी प्रवृत्ति न की जाती हो, 'भगणिज्जंतो नामे विजा' (पाम् ६६) ।
 अगस्थि पुं [अगस्ति, °क] १ इस नाम अगस्थि का एक श्रवि । २ बुद्ध-विशेष (दे ६, १३३, मज्झ) । ३ एक ताप, मठावी महाहो मे ४४ वां महाहो (ठा २, ३) ।
 अगन्न वि [अगण्य] १ जिसकी गिनती न हो सके वह (उर ७२८ टी) ।
 अगन्न वि [अग्रण्य] नही सुनने लायक, बाधमय (भवि) ।
 अगम पुं [अगम] १ वृद्ध, पेड; 'हुमा म पायका हत्था भा (२ ब) गया विट्ठा ताक' (दसि १, ३५) । २ वि. स्वावर, नही चलने वाला (महानि ४) ।
 अगम न [अगम] माकाउ, गवन (भग २०, २) ।
 अगमिय वि [अगमिक] वह शास्त्र, जिसमें एक सदुप पाठ न हो, या जिसमें गाथा बगैर पद्य हो, 'गाहाइ अगमिय खनु कालियमुय' (विसे ४४६) ।
 अगम्म वि [अगम्भ] १ जाने के अभाव । २ स्त्री. भोगने के अयोग्य, भगिनी, पर स्त्री शक्ति (भवि, सुर १२, ५२) । °गामि वि [°गामिन्] पर स्त्री को भोगनेवाला, पार-दारिक (पणह १, २) ।
 अगय न [अगद] शोषण, दवाई (सुभा ४८७) ।
 अगय पुं [दे] दैत्य, दानव (दे १, ६) ।
 अग पुन [अगरु] मुगन्धि कल्ल-विशेष (पणह २, ५) ।
 अगरल वि [अगरल] मुविभव, स्पष्ट, 'भग-रलाए भगम्मणए-----भामाए मासे' (श्रीप) ।
 अगरु देवो अगर (कुमा) ।

अगरुअ वि [अगरुक] बड़ा नही, छोटा, लघु (गउड) ।
 अगरुल्लहु वि [अगुरुल्लु] जो भारी भी न हो घोर हलका भी न हो वह, जैसे भ्राजरा, परमाणु बगैरह (विसे) । °गाम न [°नामन्] बर्ग-विशेष, जिससे जीवो का शरीर न भारी न हलका होता है (वम्म १, ५७) ।
 अगलदत्त पुं [अगडदत्त] एक शक्ति-पुत्र (महा) ।
 अगल देवो अगर (श्रीप) ।
 अगहण पुं [दे] वापनिक, एक ऐसे संप्रदाय के लोग, जो मापे की खोपड़ी में ही खाने-पीने का काम करते हैं (दे १, ३१) ।
 अगहिल्ल वि [अग्रहिल्ल] जो मृत्युति से भाविष्ट न हो, भगवान (उप ५६७ टी) ।
 °यय पुं [°राज] एक राजा, जो वास्तव में पावल न होने पर भी पावल-प्रजा के आकृष्ट से बनावटी पावल बना था (सी २१) ।
 अगाड वि [अगाध] भयाह, बहुत गहरा; 'भगल्लपण्णेषु वि भाविमया' (सुम १, १३) ।
 अगामिय वि [अगामिक] भामरहित, 'भमा-मियाए .. कडवीए' (श्रीप) ।
 अगार पुं [अकार] 'भ' भस्तर (विसे ४८४) ।
 अगार न [अगार] १ गृह, घर (सम ३७) । २ पु. गृहस्थ, गुरी, कसरी (दम १) । °स्थ वि [°स्थ] गृही, (आषा) । °धम्म पुं [°धम्म] गृहि-धर्म, श्रावक-धर्म (श्रीप) ।
 अगारा वि [अकारक] भवर्ता (सूधनि ३०) ।
 अगारि वि [अगारिन्] गृहस्थ, गृही (सुम २, ६) ।
 अगारी स्त्री [अगारिणी] गृहस्थ स्त्री (वव ४) ।
 अगाल देवो अयाल (स ८२) ।
 अगाह वि [अगाध] गहरा, गभीर (पाम) ।
 अगिणि देवो अग्नि (सवि १२) ।
 अगिला स्त्री [अग्लिअ] मसप्रता, उत्साह (वा ५, १) ।
 अगिला स्त्री [दे] भवशा, तिरस्कार (दे १, १७) ।
 अगीय वि [अगीत] शास्त्रो का पूरा ज्ञान जिसको न हो सता (जैन साधु) (उप ८३३ टी) ।

अगीयत्य वि [अगीतार्थ] ऊपर देखो (वच १) ।

अगुज्झहर वि [दे] गुम बात को प्रकाशित करनेवाला (दे १, ४३) ।

अगुण देखो अउण (वि २६५) ।

अगुण वि [अगुण] १ गुणरहित, निर्गुण (गवड) । २ पुं. दोष, दूषण (दस ५) ।

अगुणासी देखो एगुणासी (वच २४) ।

अगुणि वि [अगुणिन्] गुण-वर्जित, निर्गुण (गवड) ।

अगुरु } वि [अगुरु] १ बड़ा नहीं सो,
अगुरुअ } छोटा, लघु । २ पुं. गुणविषय का विशेष, प्रमुख बन्धन, 'पूर्वेण किं प्रगृह्यते विदुः ककुपेण' (बप्पू, पउम २, ११) ।

अगुरुलहु } देखो अगुरुलहु (सम ५१,
अगुरुलहुअ } ठा १०) ।

अगुरुलु देखो अगुरु, 'संस्तुतिरिणसमुत्तुब्धेण' (निज्ज २) ।

अगम न [अमव] प्रवर्य (उत्त २०, १५) ।

अगम पुंन [दे] १ परिहास । २ बर्णन (संस्तु ४७) ।

अगम न [अम] १ भागो का भाग, ऊपर का भाग (कुमा) । २ पूर्वभाग, पहले का भाग (निज्ज १) । ३ परिमाण, 'अगमं त्वि वा परिमाणं ता एण्ठा' (भासू १) । ४ वि. प्रधान, श्रेष्ठ (सुपा ५५) । ५ प्रपम, पहला (भाव १) । 'कलंघं पुं [इकंघ] सिम्प का अग्र भाग (सि १, ५०) । 'आमिग वि [आमिगं] अग्रप्रधानी, भागो जानेवाला (स १, ४७) । 'ज देखो 'य (दे १, ४६) । 'जम्म [अजम्मन्] देखो 'य (उप ७२८ टी) । 'जाय [जात] देखो 'य (भाव १) । 'जीहा स्त्री [जिहा] जीभ का अग्रभाग । 'णिय, 'णी वि [णी] अगुमा, मुखिया, नायक (बप्पू, नट) । 'तावस पुं [तापस] ऋषि-विशेष का नाम (सुज १०) । 'दं न [ार्ध] पूर्वार्ध (निज्ज १) । 'पिंड पु [पिण्ड] एक प्रकार का निशान (भाचा) । 'प्यहार वि [प्रहारिन्] पहले प्रहार करनेवाला (भाव १) । 'बीय वि [बीज] जिसमें बीज पहले ही उत्पन्न हो जाता है या जिसकी उत्पत्ति में उसका अग्र-

भाग ही कारण होता है; जैसे आम, कोरटक आदि बनस्पति (पण १, ठा ४, १) । 'मणि पुं [मणि] मुख्य श्रेष्ठ, शिरोमणि (उप ७२८ टी) । 'महिंसी स्त्री [महिपी] पटरानी (सुपा ४६) । 'य वि [ज] १ भाले उत्पन्न होने वाला । २ पु. ब्राह्मण । ३ बड़ा भाई । ४ स्त्री बड़ी बहन (नट) । 'लोम पुं [लोम] मुक्तिस्थान, मिद्धि-सेल (आ १२) । 'हत्थ पुं [हस्त] १ हाथ का अग्र-भाग (उवा) । २ हाथ का अग्रतन्त्र, सहारा (सि ४, ३) । ३ अगुनी (प्राप) ।

अगम न [अम] १ प्रभूत, बहु । २ उपचार (भाचानि २८५) । 'भाव न [भाव] अनिष्टा-नलन का मोर (अ ७, पत्र ५००) । 'माहिंसी देखो 'महिंसी (उत्त १६, १) ।

अगम वि [अग्य] १ अर्थ, उत्तम (सि ८, ४४) । २ प्रधान, मुख्य (उत्त १४) ।

अगमाओ म [अमतस्] सामने, भागे (कुमा) । अगम्य वि [अग्रम्य] १ चररहित । २ पु. जैन साधु (श्रीम) ।

अगम्यस्वप्न पु [दे] स्वप्नमि का अग्रभाग (दे १, २७) ।

अगमल न [अगल] १ निवाक बन्द करने की लकड़ी, भागल (वच ५, २) । २ पु. एक महा-ग्रह (सुज २०) । 'पासय पु [पासक] जिसमें भागल दिया जाता है वह स्थान (भाचा २, १, ५) । 'पासाय पु [पासाद] जहाँ भागल दिया जाता है वह घर (पप) ।

अगमल वि [दे] अधिक, 'बीता एहगमता' (पिण) ।

अगमल स्त्री [अगल] भागल, हुहका (ताम) । अगमल्लि वि [अगल्लि] जो भागल से बन्द किया गया हो वह (सुप ६, १०) ।

अगमवेअ पु [दे] नदी का पूर (दे १, २६) । अगमह पु [आमह] भागह, हल, अभिनिवेश (सुप १, १, ३, स ५१३) ।

अगमहण न [अग्रमहण] १ भ्रान्त (सुप १२, ४६) । २ गहो जेता (सि ११, ६८) ।

अगमहण न [दे] अग्रमहण] भ्रान्द, भ्रान्त (दे १, १७, से ११, ६८) ।

अगमहणिया स्त्री [दे] सीमतोषयन, गर्भाधान के बाद किया जाता एक संस्कार और उष्णे

उपलब्ध मे मनाया जाता उत्सव, जिसको गुजराती भाषा मे 'अग्रमयली' कहते हैं (सुपा २३) ।

अगमहि वि [आमहिम्] भागही, हठी (सुप १, १३) ।

अगमहिअ वि [दे] १ निमित्त, विरचित । २ स्वीकृत, कबूल किया हुआ (पट) ।

अगमाणी वि [अग्रणी] मुख्य, प्रधान, नायक, 'दक्षिणदयावत्तिमो अगमाणी सत्तवणिय-सत्पत्त' (सुप ६, १३८) ।

अगमारण न [उद्गमारण] वमन, घान्ति (चाव ७) ।

अग्माह वि [अग्माह] अग्नाह, गभीर, 'लोरा-दहिएण्व अग्माहा' (गुह ४) ।

अग्माहार पु [अग्माहार] प्राग्म-विशेष का नाम (सुपा ५४५) ।

अग्माहार पु [दे] अग्माहार] उच्च जीविका (सुप २, १३) ।

अग्नि पु [अग्नि] मरकाबान-विशेष, एक मरक-स्थान (देवेन्द्र २७) । 'मंत, 'वंत वि [मन्] अग्निवाचा (श्राद्ध ३५) । 'हुत्त देखो 'होत्त (उत्त २५, १६; सुज २५, १६) ।

अग्नि पु स्त्री [अग्नि] १ अग्नि, वहि (भासू २२) । 'एस पुण कावि अग्नी' (सद्धि ६१) । २ कृत्तिका नक्षत्र का अधिपत्यक देव (ठा २, ३) । ३ लोकान्तिक देव-विशेष (भावन) ।

'आरिआ स्त्री [कारिका] अग्नि-मन्त्र, होम (कप्पू) । 'उत्त पुं [पुत्र] ऐश्वर्य क्षेत्र के एक तीर्थंकर का नाम (सम १५३) । 'कुमार पु [कुमार] भवतपति देवो की एक अन्तर जाति (पण १) । 'कोण पुं [कोण] पूर्व धीर दक्षिण के बीच की दिशा (सुपा ६८) । 'जस पुं [यशस] देव विशेष (विच) । 'ज्योय पुं [द्यौत] भगवान् महा-

धीर का पूर्वोक्त वीर्य ब्राह्मण-जन्म का नाम (भासू) । 'ट्ट वि [स्थ] भाग मे रखा हुआ (दे ४, ४२६) । 'ट्टेम पुं [ट्टेम] वज्र विशेष (सि १०, १५६) । 'यंमणी स्त्री [स्तम्भनी] अग्नि की शक्ति को रोपनेवाली एक विद्या (पउम ७, १३६) । 'दत्त पुं [दत्त] १ भगवान् पाण्डनाथ के समकालीन ऐश्वर्य क्षेत्र के एक तीर्थंकर देव (तिथ्य) । २ भद्रबाहु

स्वामी का एव शिष्य (कप्य) । 'दाग पु
[दान] सातवें बाबुदेव के पिता का नाम
(पञ्च २०, १८०) । 'देव पु [देव] देव-
विशेष (दीन) । 'भूइ पु [भूति] १ भव-
वात् महावीर का द्वितीय गणवर (कप्य) । २
भगवान् महावीर का पूर्वम अष्टारहवें आराध-
नम का नाम (आत्) । 'माणर पु [माणर]
अग्निमुक्तार देवों का उत्तर-दिशा का इन्द्र (ठा
२, ३) । 'माली स्त्री [माली] एक इन्द्राणी
(दीन) । 'वैस पु [वैश] १ रत्न नाम का
एक प्रसिद्ध ऋषि (एहि) । २ न एक गोन
(कप्य) । 'वैस' पु [वैरमन्] १ चतुर्दशी
तिथि (ज) । २ दिवस का वादतक; वृहत् (चद
१०) । 'वैसायग पु [वैश्यायन] १
अग्निवेश ऋषि का पीढ़ (एहि; स २२५) ।
२ अग्निवेश-भोज में उत्पन्न (कप्य) । ३ मोक्ष-
सक का एक दिवचर (भग १५) । ४ दिन
का बाहमर्वा वृहत् (सम ५१) । 'सफार पु
[सरकार] विधि-पूर्वक जनाला, साह केला
(भावम) । 'सपभा स्त्री [सप्रभा] भग-
वान् बाबुपूज्य की बीछा समय की पालकी का
नाम (सम) । 'सम्म पु [सार्मेन्] एक
प्रसिद्ध तपस्वी ब्राह्मण (आत्) । 'सिह पु
[शिख] १ सातवें बाबुदेव का पिता (सम
१५२) । २ अग्निमुक्तार देवों का अग्नि-
दिशा का इन्द्र (ठा २, ३) । 'सिह पु
[सिह] एक जैन मुनि (उप ४८६) । 'सिहा-
चारण पु [शिखाचारण] अग्नि-शिखा से
निर्बाधतया गमन करने की शक्ति वाला साधु
(पव ६८) । 'सीह पु [सिह] सातवें बाबु-
देव के पिता का नाम (ठा १) । 'सेण पु
[पेण] ऐतत् क्षेत्र के तीसरे और बाईसवें
तीर्थकर (शिष्य, सम १५३) । 'होत्त न
[होत्र] १ श्रग्म्याधन, होम (विशे १६४०) ।
२ पु. ब्राह्मण (पञ्च ३५, ६) । 'होत्तावाइ
वि [होत्रयादिन्] होम से ही स्वर्ग की
प्राप्ति माननेवाला (सूय १, ७) । 'होत्तिय
वि [होत्रिक] होम करनेवाला (सुपा ७०) ।

अग्निग पु [असिग] १ यमदग्नि नामक एक
तामस (आत्) । २ भयम् रोग, जिससे जो
मुख क्षय वह वुरत ही हजम हो जाता है
(विपा १, १०; विर २०४८) ।

अग्निग पु [दे] इन्द्रगोप, एव जातिवा सुद
भौट (दे १, ५३) । २ वि. मन्द (दे १, ५३) ।
अग्निगाय पु [दे] इन्द्रगोप, सुद भौट-विशेष
(पद्) ।

अग्निग वि [आग्नेय] १ अग्नि-सम्बन्धी ।
२ पु. लोचान्तिक देवों की एक जाति (एपाया
१, ८) । ३ न. गोत्र-विशेष, जो गातम गोत्र
की शाखा है (ठा ७) ।
अग्निगायाम न [आग्नेयाय] देव-विमान
विशेष (सम १४) ।
अग्निगम् वि [अग्निग] लेने के अयोध (पञ्च
३१, २४) ।

अग्निग वि [अग्नि] १ प्रथम पहला (कप्य) ।
२ षष्ठ, प्रथम, मुख्य (सुपा १) ।
अग्निगय पु [आग्नेयक] इस नाम का एक
राजपुत्र (उप २३७) ।

अग्निग देवो अग्निग = अग्निग (सुज २०) ।
अग्निगय देवो अग्निग (पचव २) ।

अग्निग पु [अग्नि] एक महापद् (ठा २,
३) ।

अग्निग वि [अग्नि] अग्निवर्ती (सिदि ४०६) ।
अग्नीय देवो अग्नीय (उप ८४०) ।

अग्नीयय न [दे] पर का एक भाग (पञ्च
१६, ६४) ।

अग्नीयय वि [दे] प्रमित, निबित (पद्) ।
अग्नी म [अग्नी] आगे, पहले (पिप) । 'यण
वि [तन] आगे का, पहले का (भावम) ।
'सर वि [सर] अगुप्रा, सुखिया, नायक
(आ २८) ।

अग्नीदे स्त्री [आग्नेयी] अग्निकोण, दक्षिण-
पूर्व दिशा (धण १८) ।

अग्नीयय न [अग्नीयणीय] दूसरा पूर्व, बार-
हवें नैनायम का दूसरा महाय भाग (सम २६६) ।

अग्नीयी देवो अग्नीयी (भावम) ।

अग्नीयीय देवो अग्नीयीय (खदि) ।

अग्नीय वि [आग्नेय] अग्नि (कोण) सम्बन्धी
(सुपु २१५) ।

अग्नीय वि [आग्नेय] १ अग्नि सम्बन्धी,
अग्नि का (पञ्च १२, १२६; विर १६६०) ।
२ न. सत्य-विशेष (सुर ८, ४१) । ३ एक

गोन, जो बल मोद की शाखा है (ठा ७) ।
४ अग्नि-कोण, दक्षिण-पूर्व दिशा (अग्नि) ।
अग्नीयय न [अग्नीयक] समुद्रीय वेला की
वृद्धि और हानि (सम ७६) ।

अग्घ भव [राज] विराजना, शोभना, चम-
कना । अग्घइ (हि ४, १००) ।

अग्घ सक [आ-घ्रा] सूचना । संक्र. अग्घे-
ऊण (सम्भार १४२) ।

अग्घ मव [अहं] योग्य होना, सायक
होना, 'कस ए अग्घइ' (सुपा १, ८) ।

अग्घ मव [अघं] १ मच्छी कीमत से
वेचना । २ आदर करना, सम्मान करना,
'पहिएण पुणो मणिय, मुञ्जेहि मिट्ठि ।
कम्म नयरम्मि ।

गत्वव सो साहइ, पणिय मणियस्सए जव'
(सुपा ५०१) । वक्र. अग्घायमाण (सुपा
१, १) ।

अग्घ पु [अघं] १ एक देव विमान (द्वेन्द्र
१, २) । २ पूजा (सय १००) ।

अग्घ पु [अघं] १ मच्छी की एक जाति (जीव
३) । २ पूजा-सामग्री (सुपा १, १६) । ३
पूजा में जलादि देना (हुमा) । ४ मूल्य, मोल,
कीमत (निज २) । 'वत्त न [पान] पूजा
का पान (गाउड) ।

अग्घ वि [अघं] १ पूजा में दिया जाता
जलादि द्रव्य (कप्य) । २ कीमत, बहुमूल्य
(प्राप) ।

अग्घय सक [पु] प्रति करना, पूरा करना ।
अग्घयइ (हि ४, ६६) ।

अग्घयिय वि [पूर्ण] १ भरा हुआ, संपूर्ण । २
पूरा किया गया (सुपा १०६, हुमा) ।

अग्घयिय वि [अपिद] पूजित, सज्जत,
सम्मानित (सि ११, १६, गउड) ।

अग्घा सक [आ + घ्रा] सूचना । वक्र.
अग्घाअत्, अग्घायमाण (गा ५६५, सारा
१, ८) । वक्र. अग्घाइजमाण (पणए २८) ।

अग्घाइ वि [आग्नायिन्] सूचनेवाला, 'सम-
मरपजमवाइदि । वारियवदि । चहुपु इहिह' ।
(आप २६४) ।

अग्घाअत् अग्घि [आग्रात्] सूचा हुआ (गा
६७) ।

अग्घाइजमाण देवो अग्घा ।

अग्धाङ्ग वि [आघ्राट्] सूचनेवाला । स्त्री.
‘रो (गा ८८६) ।

अग्घाड सक [पूर] पूति बरला, पूरा
बरना । भग्घाड (ह ४, १६६) ।

अग्घाड } पु [दे] दुःख-विशेष, भग्घामं,
अग्घाडग } चिचडा, लटजीरा (दे १, ८,
पण १) ।

अग्घाय वि [दे] तूम, संगुट (दे १, १८) ।

अग्घाय वि [आघ्रात] मुघा हुमा (पाग) ।

अग्घायमाण देखो अग्घ = अघे ।

अग्घायमाण देखो अग्घा ।

अग्घिय वि [राजिन] विराजित, शोभित
(कुमा) ।

अग्घिय वि [अघित] १ बहुमूल्य, कीमती,
‘अग्घिय नाम बहुमोल’ (निचू २) । २ पूजित
(दे १, १०७, से २०२) ।

अग्घोदय न [अघोदिक] पूजा का जल (अभि
११८) ।

अघ न [अघ] १ पाप, कुचर्म (कुमा) । २ वि.
शोचनीय, शोक का हेतु, ‘अघ बग्घणमाव’
(प्रयी ८०) ।

अघो देखो अहो (नाट) ।

अघक्कु पुन [अघक्कुस्] १ आँस के सिवाय
बाकी इन्द्रिया शरीर मन (कम्म १, १०) । २
आँस को छोड़ बाकी इन्द्रिय शरीर मन से होने-
वाला सामान्य ज्ञान (व १६) । ३ वि. अघा,
नगहीन (कम्म ४) । ‘दंसण न [दशेन]
आँस को छोड़ बाकी इन्द्रिया शरीर मन से होने-
वाला सामान्य ज्ञान (सम १६) । ‘दसणावरण
न [दशानारण] मन्त्रसंश्रान को रोकन-
वाला बर्म (ठा ६) । ‘कास पु [स्पश]
अघकार, अघेरा (णामा १, १४) ।

अघक्कुसुम वि [अघासुप] जो आँस से देखा
न जा सके (पण्ड १, १) ।

अघक्कुसस्स वि [अचलुप्प] जिसको देखने
का मन न चाहता हो (हह ३) ।

अचर वि [अचर] प्रविष्ट्यादि स्थिर पदार्थ,
स्थायर (वस) ।

अचल वि [अचल] १ निश्चल, स्थिर
(भावा) । २ पु यदुवरा के राजा अचलवर्णि
के एव पुत्र का नाम (अस ३) । एक वनदेव
का नाम (पव २०६) । ४ पर्वत, पहाड़ (पवड

१२०) । ५ एक राजा, जिसने रामचन्द्र के
छोटे भाई के साथ जैन दीक्षा ली थी (पवम
८५, ४) । ‘पुर न [पुर] बल्ल-द्वीप के पास
का एक नगर (कप्प) । ‘प्प न [त्सम्]

हस्तप्रहसिका को ८४ लाख से गुणने पर जो
संख्या लब्ध हो वह, अन्तिम संख्या (इक) ।

‘भाय पु [आट्] भगवान् महावीर का
नववां गणघर (कप्प) ।

अचल पु [अचल] छठवां रत्न पुरूप (विचार
४७२) ।

अचल न [दे] १ घर । २ घर का विह्वला
भाग । ३ वि. कहा हुआ । ४ निष्ठुर, निर्दय ।

५ नीरस, सूखा (दे १, २३) ।

अचला स्त्री [अचला] श्रृण्वी । २ एक
इच्छाही (णामा २) ।

अचित वि [अचिन्त] निश्चित, चिन्तारहित ।

अचित वि [अचिन्त्य] अविचिनीय, जिसकी

चिन्ता भी न हो सके वह, अचिन्त (बहुम ३) ।

अचित्तिज्ज } वि [अचित्तनीय] ऊपर

अचित्तनीय } देखो (अभि २०३, महा) ।

अचित्तिवि वि [अचिन्तित] आकस्मिक,
अचानकित (महा) ।

अचित्त वि [अचित्त] जीव रहित, अचेतन,
‘चित्तमचित्त वा एवे सय अजिन मिएहेजा’
(वम ४) ।

अचियत्त } वि [दे] १ अचिन्त, अशीतिवर

अचियत्त } (सूय २, २, पण्ड २, ३) । २

न. अशीति, द्वेय (सोम २६१) ।

अचिरजुय् देखो अचरजुय् (दे १, १८ टी) ।

अचिरा देखो अहरा (पवम ३७, ३७) ।

अचिरामा स्त्री [अचिरामा] विजली, विद्युत्
(पवम ४२, ३२) ।

अचिरेण देखो अदरेण (अह) ।

अचेयण वि [अचेतन] चेत यहित, निर्जीव
(पण्ड १, २) ।

अचेल न [अचेल] १ बस्ती का भग्नाव । २
अत्य-मूल्य वस्त्र । ३ मोडा वस्त्र (सम
४०) । ४ वि. वस्त्र-रहित, नग्न । ५ जोड़े

वस्त्र वाला । ६ अलं वस्त्र वाला । ७ मुलित
वस्त्र धारा, मैला, ‘तह चोव-जुअ-मुत्थियेने-
हियि मणए अचेतोत्ति’ (विगे २६०१) ।

‘परिसद, परीसद पु [परिपह, परीपह]

वस्त्र के भग्नाव से भयवा जोएँ, अलं या
कुत्तिन वस्त्र होने से उसे अशीन भाव से सहन
करना (सम ४०, मग ८, ८) ।

अचेलग } वि [अचेलक] १ वस्त्र-रहित,
अचेलय } नग्न । २ फटा-टूटा वस्त्र वाला । ३

मलिन वस्त्र वाला । ४ अलं वस्त्र वाला । ५

निर्दोष वस्त्र वाला, ६ अनियत रूप से वस्त्र का

उपयोग करनेवाला (ठा १, ३),

‘परिमुद्धजिएण-कुच्छियमोचानिय-

वसन्नामगेहि’ ।

मुणलो मुच्छारहिया, सतेहि अचेलया हुति’

(विगे २९६६) ।

अच सक [अच] १ दुःखना, सत्कार करना ।

अच्येइ (श्रीप) । अच (दे १, ३५ टी) । कवक-

अचिज्जत (मुपा ७८) । क. अचिगिज्ज

(णामा १, १) ।

अच पु [अच्य] १ शव (काल-मान) का एक

वेद (कप्प) । २ वि. पुत्र्य, पूजनीय (दे १,

१७७) ।

अचग न [अत्यङ्ग] वितासिता के प्रयाण
अग, भोग के मुख्य साधन, ‘अचगण अ
भोगमो माए’ (पवा १) ।

अचत्त वि [अत्यन्त] हृद से ज्यादा, अत्यधिक,
बहुत (सुर ३, २२) । ‘आयर वि [स्थायर]
अलाहिन्नान से स्थावर-जाति में रहा हुआ

(भावव) । ‘दूसमा जी [दुप्पमा] देखो

दुस्समदुस्समा (पवम २०, ७२) ।

अचत्तिअ वि [आत्यन्तिक] १ अत्यन्त,
अधिक, अतिशयित । २ जिसका नारा बसो

न हो वह, शायत (सूय २, ६) ।

अचग वि [अचैक] पूजक (वैय १२) ।

अचगाल वि [अत्यगाल] निरकुरा, अनियमित

(मोह ८७) ।

अचण न [अचन] पूजा, सम्मान (सुर ३,

१३, सत १२ टी) ।

अचणा स्त्री [अचंना] पूजा (अबु ५७) ।

अचणिया स्त्री [अचंनिअ] अर्चन, पूजा (राय

१०८) ।

अचत्त वि [अत्यक्त] नही छोड़ा हुआ, अत-

रित्यक्त (सुय ५ १०७) ।

अचत्थ वि [अत्यर्थ] १ अतिशयित, बहुत

(पणह १, १) । २ गंभीर अर्थे धाता (राय) ।
३ क्रि. प्रयादा, प्रत्यय (सुर १, ७) ।

अच्छभुय वि [अत्युद्धृत] बड़ा धाम्य-जनन
(प्रासु ४२) ।

अच्छ पु [अत्यय] १ विपरीत प्रावरण (शुह
३) । वितारा, मरण (उव) ।

अच्छ वि [अर्चन] पूजन, 'अणुबपाण न
चिरतराण, जहादिह रक्खणनदणति' (विने
७० टी) ।

अच्छर } न [आश्चर्य] विस्मय, बमकार
अच्छरिअ } (विक ६४, प्रबो १७, रंभा, भवि,
अच्छरीअ } नाट) ।

अच्छहम वि [अत्यधम] प्रति लोच (कण्ठ) ।

अच्छा की [अर्च] पूजा, सगर (गठ) ।

अच्छा की [अर्च] १ शरीर, देह (सू १, १३,
१७, १, १५, १८, २, २, ६, डा १, पत्र १६) ।
२ सेवाया, चित्त-वृत्ति (सू १, १३, १७, १,
१५, १८) । ३ ऐश्वर्य (डा ३, १-पत्र ११७) ।

अच्छासण पु [अत्यशन] पक्ष का बारहवा
दिन, द्वावरी तिथि (सुत्र १०, १५) ।

अच्छासणया की [अत्यासनता] खूब बैठना,
देर तक या बारबार बैठना (डा ६) ।

अच्छासणया की [अत्यशनता] खूब खाना
(डा ६) ।

अच्छासण } न [अत्यासन] प्रति समीप
अच्छासन } खूब नजदीक (मग १, १, उवा) ।

अच्छासाद्यय } वि [अत्यासाहित] अपमान-
अच्छासादिय } नित, हैरान किया गया (डा
१०, भा ३, २) ।

अच्छासाय सक [अस्था + शातय] अपमान
करना, हैरान करना । वृष्ट. अच्छासायमाग
(डा १०) । हेऊ अच्छासाइत्तए (मग ३, २) ।

अच्छाहिअ } वि [अत्याहित] १ महा भीति,
अच्छाहिद } बड़ा भया । २ कूटा, भयव्य (स्वप्न
४७) । ३ ऐसा बलमी कार्य, जिसमें प्राण-
हानि की सम्भावना हो (प्रमि ३७) ।

अच्छि की [अर्चिस्] १ कान्ति, तेज (मग
२, ५) । २ शनि की ज्वाला (पणह १) ।

३ किरण (राय) । ४ दीप की शिखा (उत्त
३) । ५ न. लोकात्मिक देवों का एक विमान
(धन १४) । *मालि पु [मालिन्] १

सूर्य, रवि (सू १, ६) । २ वि. किरणों
से रोमित (राय) । ३ न. लोकात्मिक देवों

का एक विमान (मग १५) । *माली की
[माली] १ चन्द्र और सूर्य की तृतीय भद्र-
महिषी का नाम (डा ४, १) । २ 'ज्ञातसूय'
के द्वितीय श्रुतस्वन्ध ने एव भ्रम्यन का नाम
(राया २) । ३ शकेन्द्र की तृतीय भद्रमहिषी
की राजधानी का नाम (डा ४, २) । *मालिणी
की [मालिनी] चन्द्र और सूर्य की एक भद्र-
महिषी का नाम (मग १०, ५, इव) ।

अच्छिअ वि [अर्चित] १ पूजित, सकल (गा
१५०) । २ न. विमान-विशेष (जीव ३,
पत्र ११७) ।

अच्छित देवो अच्छित (धोय २२; सुर १२,
२७) ।

अच्छीकर सक [अर्ची + कृ] १ प्रशमा
करना । २ पुराणद करना । अच्छीकरेह ।
वह. अच्छीकरत (निज ५) ।

अच्छीकरण न [अर्चीकरण] १ प्रशसा ।
२ सुराभय,
'प्रभीवरण ररलो, पुणवयण
स समपमो दुविहं ।

संतमसतं च तहा,
पञ्चसपरोक्षमस्नेह' (निज ५) ।

अच्छुअ पु [अच्छुत] १ विपु (मण्ड ५) ।
२ बारहवा देवलोक (मग ३९) । ३ ग्याहवा

और बारहवा देवलोक का इन्द्र (डा २, ३) ।

४ भ्रम्युत-देवलोकवासी देव, 'त चेन धारण-
च्युप मोहिएण्णारेण पारंति' (विने ६६६) ।

*नाह पु [नाथ] बारहवा देवलोक का
इन्द्र (मग) । *वइ पु [वति] इन्द्र-विशेष

(सुभा ६१) । *वडिसग न [वतसक]
विमान-विशेष का नाम (मग ५१) । *सग

पु [सग] बारहवा देवलोक (मग) ।
अच्छुअ पुन [अच्छुत] एक देव-विमान

(देहद १५५) ।

अच्छुआ की [अच्छुता] छत्रों और सतरहवें
तीर्थकर की शासनदेवी (मति ६, १०) ।

अच्छुईद पु [अच्छुतेन्द्र] ग्याहवा और बार-
हवा देवलोक का स्वामी, इन्द्र विशेष (पत्रम
११७, ७) ।

अच्छुक्क वि [अत्युक्कट] प्रत्यत उग्र
(धाम) ।

अच्छुग वि [अत्युग] ऊपर देखो (पत्र
२२४) ।

अच्छुष वि [अत्युष] खूब ऊँचा, विशेष
उन्नत (उप ६८६ टी) ।

अच्छुट्टिय वि [अत्युत्थित] भवामं करने को
तेगार (सू १, १४) ।

अच्छुण्ण वि [अत्युण्ण] खूब गरम (डा ५,
३) ।

अच्छुत्तम वि [अत्युत्तम] प्रति वेष्ट (कण्ठ) ।

अच्छुदय न [अत्युदक] १ वही वर्षा (धोय
३०) । २ प्रसृत पानी (जीव ३) ।

अच्छुदार वि [अत्युदार] प्रत्यत उदार
(स ६००) ।

अच्छुअय वि [अत्युअत] बहुत ऊँचा
(कण्ठ) ।

अच्छुवमह वि [अत्युद्धृत] प्रति प्रबल
(मग) ।

अच्छुववार पु [अत्युपचार] महान् उपकार
(गा ५१४) ।

अच्छुववार पु [अत्युपचार] विशेष सेवा-
सुय्या (गा ५१४) ।

अच्छुववय वि [अत्युव्वात] प्रत्यत बका
हुमा (शुह ३) ।

अच्छुसिण वि [अत्युसण] अधिक गरम
(प्रावा २, १, ७) ।

अच्छे भक [अति + इ] १ प्रतिफल होना,
उत्पत्ति । २ स. उत्पन्न करना । अच्छेइ

(उत्त १३, ३१, सू १, १५, ८) ।

अच्छे सक [अस्था + इ] स्थान करवाना ।
अच्छेहो (सू १, २, ३, ७) ।

अच्छेअर न [आश्चर्य] भाव्य, विस्मय
(विक ११) ।

अच्छे भक [आस्] बैठना । मण्डव (हि
१, २१४) । वह अच्छेअत, अच्छेआण

(सुर ७, १३, राया १, १) । क अच्छे-
अयन अच्छेअयन (मि ५७०, सुर १२

२२८) ।

अच्छ सक [आ + छिद] १ नाटना,
खेला । २ लोचना । अच्छे (प्रावा १, १, २,

३) । सक. अच्छेअत (भावक २२५), अच्छेअत
(पिड ३६८) ।

अच्छे वि [अच्छे] १ खण्ड, निर्मल
(कुमा) । २ पु. लटिक रत्न (पत्र ३७५) ।

३ पु. व. भायं देव-विशेष (प्रव २७५) ।

अच्छ पुं [अच्छ] रीछ, मालू (पह १, १) ।

अच्छ वि [आच्छ] अच्छे देश में उत्पन्न (पह ११) ।

अच्छ पु [अच्छ] मेरु पर्वत (सुख ५) ।
२ न. तीन बार छोटा हुआ स्वच्छ पानी (पिंड) ।

अच्छ न [दे] १ अत्यंत, विशेष । २ शीघ्र, जल्दी (दे १, ५६) ।

अच्छ वि [अच्छि] आल, नेत्र (कुमा) ।

अच्छ पु [अच्छ] १ अधिक पानीवाला प्रदेश । २ लतामो का समूह । ३ तृण, घास (दे ६, ४७) ।

अच्छ पु [अच्छ] बृल, पंड (दे ६, ४७) ।

अच्छ अ पु [अच्छ] १ बहेडा का बृल ।
२ न. स्वच्छ जल (दे ६, ४७) ।

अच्छ अर न [आच्छर्ये] विस्मय, चमत्कार (कुमा) ।

अच्छ अ वि [अच्छर्य] जो स्वाधीन न हो, पराधीन, 'अच्छरा' जे रा भुनति रा से चाहति बुद्ध' (वस २) ।

अच्छ अ देवो अत्यन्तक (गड) ।

अच्छण न [आसन] १ बैठा (पह १, १) । २ पालकी बोगर सुवासन (मोप ७८) ।
अच्छण न [गृह] विद्याम स्थान (जीव ३) ।

अच्छ ग न [दे] १ सेवा, शुभान (बृह ३) ।
२ देवता, अवयवक (वव १) । ३ महिला, दया (वस ८) ।

अच्छण्डिअर न [अच्छण्डिअर] अच्छण्डि-
कुपाग को चौरानी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (ठा २, १) ।

अच्छण्डिअर न [अच्छण्डिअर] सख्या-
विशेष, नलिन को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (ठा २, १) ।

अच्छण्ण वि [अच्छण] समुद्र, श्रवट (बृह ३) ।

अच्छमह पु [अच्छमह] रीछ, मालू (दे १, २७; पह १, १) ।

अच्छमह पु [दे] यम, देव-विशेष (दे १, ३७) ।

अच्छरा देवो अच्छरा (पट्ट) ।

अच्छरय पु [आस्तर] शय्या पर बिछाने का वस्त्र विशेष (पह १, १) ।

अच्छरसा १ श्री [अप्सरस] १ इन्द्र की अच्छरा १ पटरानी (ठा ६) । २ 'जाता-चर्मवर्षा' का एक अच्ययन (पह २) ।

३ देवी (पउम २, ४१) । ४ हवपती की (पह १, ४) ।

अच्छरा श्री [दे अप्सरा] चुटकी, चुटकी का आवाज (सुम २, २, ४४) ।

अच्छराणिजाय पु [दे] १ चुटकी । २ चुटकी बजाने में जितना समय लगता है वह, अत्यंत समय (पह १, ३६) ।

अच्छरिअ } न [आच्छर्ये] विस्मय, चम-
अच्छरिअ } स्कार (दे १, ४८, प्रवी ४२) ।
अच्छरीअ

अच्छल न [अच्छल] निर्दोषता, अनपराध (दे १, १०) ।

अच्छ वि [अच्छवि] जैन-चर्यन में जिसको स्नातक कहते हैं वह जीवन्मुक्त योगी (मग २५, ६) ।

अच्छविअर पु [अच्छविकार] एक प्रकार का मानसिक विलय (ठा ८) ।

अच्छहल पु [अच्छभल] रीछ, मालू (पह १) ।

अच्छा श्री [अच्छा] वरण देश की राज-
धानी (वव २७५) ।

अच्छा श्री [अच्छा] गर्व, अभिमान (दे ६, ४७) ।

अच्छा इ वि [आच्छादिन] ढकनेवाला,
आच्छादक (स ५११) ।

अच्छावण न [आच्छादन] १ ढकना (दे ७, ४४) । २ बल, बल (पह १) ।

अच्छावणा श्री [आच्छादना] ढकना आच्छा-
दित करना (वव २) ।

अच्छायत वि [अच्छातात] तीरण, चार-
दार (पह १) ।

अच्छि वि [अच्छि] आल, नेत्र (दे १, ३३, ३२) ।

अच्छि न [अच्छि] आल का मलना (बृह २) ।

अच्छि न [अच्छि] आल का मलना (बृह २) ।
अच्छि न [अच्छि] आल का मलना (बृह २) ।

वह, 'अच्छिणिमीलियमेतं, खात्वि सुहं दुक्खमेव
अणुबद्ध' । एण एणं एणं, अछोणिस्स पक्क-
भाणण' (जीव ३) । पत्त न [पत्त] आल
का पदम, पपती (मग १४, ८) । 'वेइग पु
[वेइग] एक चतुरिन्द्रिय जंतु, धुद जीव-
विशेष (उत्त ३६) । 'रीडय पु [रीडक]
एक चतुरिन्द्रिय जंतु, धुद कीट-विशेष (उत्त
३६) । 'ल्ल वि [मन्] १ अल वाला
प्राणी । २ चतुरिन्द्रिय जंतु (उत्त ३६) । 'मल
पु [मल] अल का मल, कीट (निबू ३) ।

अच्छिद मक [आ + छिद] १ थोडा छेद
करना । २ एक बार छेद करना । ३ बराबर
से छेद लेना । वह अच्छिदमाण (मग
८, ३) ।

अच्छिद पु [अच्छिद] गोशालक के एक
दिग्दर्शक (शिर्य) का नाम (मग १४) ।

अच्छिद पु [अच्छिद] १ एक बार
छेदना (निबू ३) । २ छेदना । ३ थोडा
छेद करना, थोडा काटना (मग १४) ।

अच्छिद वि [दे] मसृष्ट, नहीं हुआ हुआ
(वव १) ।

अच्छिदरल वि [दे] अमीतिकर । २ पु
वेर, पोशाक (दे १, ४१) ।

अच्छिद वि [आच्छेद्य] १ जबरदस्ती जो
दूसरे से छीन लिया जाय (पिंड) । २ पु.
लेन मायु के लिए निपा का एक दोष
(पह १) ।

अच्छिद वि [अच्छेद्य] जो तोडा न जा
सके (ठा ३, २) ।

अच्छिद श्री [अच्छिद] १ माय का
अभाव, मिथ्या । २ वि. नारा-रहित (विने) ।
'अय पु [अय] नित्यता-वाद, वस्तु को
नित्य माननेवाला पन (पह १) ।

अच्छिद वि [अच्छिद] १ छिद-रहित,
निबिड, गाढ (ज २) । २ निर्दोष (मग २, ६) ।

अच्छिद पु [अच्छिद] १ बराबर
अच्छिद १ से छीना हुआ । २ छेदा हुआ,
तोडा हुआ (पह १) ।

अच्छिद पु [अच्छिद] १ नहीं तोडा
अच्छिद १ हुआ, भंग्य नहीं किया हुआ (ठा
१०) । २ अव्यवहित, अंतर-रहित (गड) ।

अच्छिद पु [अच्छिद] १ नहीं तोडा
अच्छिद १ हुआ, भंग्य नहीं किया हुआ (ठा
१०) । २ अव्यवहित, अंतर-रहित (गड) ।

अच्छिद पु [अच्छिद] १ नहीं तोडा
अच्छिद १ हुआ, भंग्य नहीं किया हुआ (ठा
१०) । २ अव्यवहित, अंतर-रहित (गड) ।

अच्छिद पु [अच्छिद] १ नहीं तोडा
अच्छिद १ हुआ, भंग्य नहीं किया हुआ (ठा
१०) । २ अव्यवहित, अंतर-रहित (गड) ।

अच्छिद पु [अच्छिद] १ नहीं तोडा
अच्छिद १ हुआ, भंग्य नहीं किया हुआ (ठा
१०) । २ अव्यवहित, अंतर-रहित (गड) ।

अच्छिप्प वि [अस्पृश्य] छूने के प्रयोग (गुप्ता २८१)।
 अच्छिप्पंत वि [अस्पृशत] स्पर्श नहीं करता हुआ (था १२)।
 अच्छिय वि [आसित] बेटा हुआ (पि ४८०, ४८५)।
 अच्छियडण न [दे] भ्रातृ ना भ्रातृना (दे १, १६)।
 अच्छिअविअच्छि की [दे] परम्पर-भानपण, प्रापस की खोपटान (दे १, ४१)।
 अच्छिहरिल्ल [दे] देखो अच्छिअरुल्ल (दे अच्छिअरुल्ल) १, ४१)।
 अच्छी देखो अच्छि (रमा)।
 अच्छुक्क न [दे] प्रसिद्ध-पुनला, भ्रातृ ना कोटर (गुप्ता २०)।
 अच्छुत्ता ली [अच्छुत्ता] १ एक विद्यावि-
 द्वाली देवी (ति ८)। २ भगवान् भुमिभुज
 स्वामी की शासनदेवी (सति १०)।
 अच्छुद्धसिरी की [दे] हृद्धा से प्रापिक फल
 की प्राप्ति, भस्मभारित काम (पद्)।
 अच्छुल्लूद्ध वि [दे] निवृत्तान्त, बाहर निकाला
 हुआ, स्थान-भ्रष्ट किया हुआ (इह १)।
 अच्छेज्ज देखो अच्छिज्ज (ठा ३, २, ४)।
 अच्छेर [न [आअर्थ] १ विलम्ब, चमत्कार
 अच्छेरग (ह १, १८)। २ पुन. विलम्ब-जनक
 अच्छेरय घटना, प्रथम घटना (ठा १०,
 १३८)। *कर वि [कर] विलम्ब-जनक,
 चमत्कार उपजानेवाला (था १४)।
 अच्छोह सक [आ + छोटय्] १ पटकना,
 पछानना। २ सिचन, छिटकना, 'अच्छोविनि
 सिनाए, तिल तिल कि नु छिदादि' (सुर १५,
 २३, सुर २, २४५)।
 अच्छोह धुं [आच्छोट] १ सिचन। २
 भ्राम्यमान करना, पटकना (शेष ३२७)।
 अच्छोडण न [आच्छोटन] १ सिचन। २
 भ्रमकालन (सुर १३, ४१, गुप्ता २६३, वेणी
 १०६)। ३ मृगमा, सिचन (दे १, ३७)।
 अच्छोडोडवि वि [दे आच्छोटिट] बणित,
 बयाया हुआ (स २२५, २२६)।
 आच्छोडिअ वि [दे] माल्ट, खीसा हुआ
 'अच्छोडिअवल्ल (मा १६०)।
 अच्छोडिअ वि [आच्छोटित] सिक्क, सिचा
 हुआ (सुर २, २४५)।

अच्छोडिअ वि [आच्छोटित] पटना हुआ,
 भ्रष्टास्तित (सुर ४३३)।
 अच्छिप्प वि [अस्पृश्य] स्पर्श करने के प्रयोग,
 'भो गुरुश्रीव्य भद्रिगो बुभुगणाय, न उण
 पुरितो' (गुप्ता ४८७)।
 अज देतो अज = भजन (पजम ११, २५, २६)।
 अजगर देतो अजगर (मवि)।
 अजह पु [दे] जग उपपत्ति (पद्)।
 अजह वि [अजह] १ पद्म, विनमित
 (गड)। २ निपुण, वस्तु (हुमा)।
 अजम नि [दे] १ माल, माल (पद्)। २
 जनार्दन (पमा १५)।
 अजय वि [अयन] १ पाप-कर्म से ध्वस्त,
 नियम-रहित (कम्म ४)। २ अनुगोपी, कल-
 रहित (मयो ४४)। ३ उपयोग-रूप्य, देखात
 (गुप्ता ५२२)। ४ निवि. देखात से, अनुप
 योग से, प्रत्यक्ष चरमाणो य पाणप्रायद हिंसह
 (धम ४, उवर ४ टी)।
 अजय पु [अजय] पटपट छंद का एक भेद
 (पित)।
 अजयग ली [अयतना] अनुपयोग, स्थान
 नहीं रखना, कललती (गच्छ ३)।
 अजर वि [अजर] १ कृदावस्था-रहित, बुद्ध्या-
 मजित। २ पु. देव, देवता (भावम)। ३ मुक्त
 आत्मा (शेष)।
 अजराउर वि [दे] उण, गरम (दे १, ४५)।
 अजरावर वि [अजरावर] १ बुद्ध्या और
 मृष्ट से रहित, 'उणिय कोह काणिम अजरा-
 वो' (महा)। २ न. श्रुति, मोक्ष। ३ ली.
 '११ विद्या विशेष (पजम ७, १३६)।
 अजस पु [अजस] १ प्रपय, प्राप्तीति
 (उप ७६८)। *किञ्चित्ताम न [कीत्ति-
 नाम्] १ प्राप्तीति का कारण मूल एक कर्म
 (सम ६७)।
 अजसस किंवि [अजस] निरन्तर, ह्येसा,
 'भामरएणतजसस सजमपरिपाणल विहिण्ण'
 (पमा ७)।
 अजा देखो अया (हुमा)।
 अजाण वि [अजान] धनजान, धूर्ध (रणए
 ८५)।
 अजाणअ वि [अजायक] धनजान, जनकारी-
 रहित (काल)।

अजागणा ली [अजान] जानकारी-रहित दे-
 समी, 'अपाएणएण तज्जती न यया तमि'
 (था २८)।
 अजाणुय वि [अहायरु] भजन, नहीं जानने-
 वाला (ठा ३, ४)।
 अजाय वि [अजात] अनुत्पन्न, अनिपन्न।
 'कप्प पु [कप्प] शास्त्रो को पूरा-पूरा नहीं
 जाननेवाला जैन साधु, भगोताय; 'गीयअ
 जायणो भगोभा ललु भवे भगोमी भ' (सर्म
 ३)। *कप्पिय पु [कप्पियरु] भगोताय
 जैन साधु (गच्छ १)।
 अजिअ वि [अजित] १ भ्रष्टाजित, भ्रष्टा-
 युत। २ पु. दूसरे तीर्थंकर का नाम (मजि
 १)। ३ नवदे तीर्थंकर का अभिप्राता देव
 (सति ७)। ४ एक भारी बलदेव (सो २१)।
 'बला ली [अजि] भगवान् भजितनाथ की
 शासनदेवी (पव २७)। 'सैण पु [सैन]
 १ एक प्रसिद्ध राजा (भाव)। २ बीषा कुतकर
 (ठा १०)। ३ एक विष्णुवत जैन मुनि
 (धत ४)।
 अजिअ पु [अजित] भगवान् भजितनाथ का
 प्रथम धावक (विचार ३७८)।
 'नह पु [नाथ] नववा त्र पुरप (विचार
 ४७३)।
 अजिअ वि [अजीय] जीव-रहित, भवेतन
 (कम्म १, १५)।
 अजिअ वि [अजय्य] जो जीता न जा सके
 (गुप्ता ७५)।
 अजिया ली [अजिता] १ भगवान् भजित-
 नाथ की शासन देवी (सति ६)। २ अनुर्थ
 तीर्थंकर की एक मुख्य शिष्या (तिल)।
 अजिअ न [अजिन] १ हारण भारि पशुभी
 का चमड़ा (उत ५, दे ७, २७)। २ वि.
 जिसने राप-टोप का संवंध नाश नहीं किया
 है वह (अग १५)। ३ जिन भगवान् के तुल्य
 सर्वगणदेवक जैन साधु, 'अजिया मिएणकसा,
 जिएा द्वाविहह वागरेमण' (शेष)।
 अजिण्ण देखो अइअ = भगोए (भाव)।
 अजियंवर पु [अजितवर] ग्याह ह्यो मे
 भाठवा ह्य पुण्य (विचार ४७३)।
 अजिर न [अजिर] भांगन, भौक (सण)।

अजीर } देखो अइअ = अजीर (वच १;
अजीरय } एणया १, १३)।

अजीरण देखो अइअ = अजीर (विद २७,
पव १३१)।

अजीव पु [अर्जव] अचेतन, निर्जीव, जड़
पदार्थ (नव २)। 'आय पु [माय] धर्म-
स्तिकाय भादि अजीव पदार्थ' (मग ७, १०)।

अजुअ पु [दे] बुद्ध विशेष, सतच्छद, सत्तोमा
(दि १, १७)।

अजुअ न [अयुन] बरा हगार, 'बोएण सहमा
रहाण, पच अजुआए हयाए' (महा)।

अजुअलउपम पु [अयुगलपण] मत्तीना (दि
१, ५८)।

अजुअलउपणा की [दे] हमनी का पड़ (दे
१, ५८)।

अजुअ वि [अयुअ] अयोग्य, अनुचित
(विसे)। 'कारि वि [कारिअ] अयोग्य कार्य
करनेवाला (मुग ६०५)।

अजुअत्तिय वि [अयुत्तिक] मुक्ति-रूप्य, अन्त्याय
(मुर १२, ५५)।

अजुअ देवो अउअ, 'पच अजुआए हयाए सत्त
कोहीमो पाइअनएण' (सुल ६ १)।

अजेअ वि [अजिय] जो जीता न जा सके,
सो भउअएणएणएण अजेआ दोमुहएण'
(महा)।

अजोग पु [अयोग] मन, वचन शीर काया
के मन्त्र व्यापारो का निमनं अभाव होता है
बहु सर्वोद्भूत योग, शैलेरो-भरण (श्रीप)।

अजोग वि [अयोग्य] अभाय, लायक नहीं
बहु (तीज ११)।

अजोगि पु [अयोगिन्] १ सर्वोद्भूत योग को
प्राप्त योगी। २ मुक्त भावता (ठा २, १, कम
५, ५७, ५०)।

अज मव [अर्ज] पैदा करना, उगाने
करना, बमाना। अजइ (हे ५, १०८)। सऊ.
अजिय (विग)।

अज वि [अर्थ] १ वैश्य। २ स्वामी, मालिक
(दि १, ५)।

अज वि [आर्थ] १ निर्दोष। २ धार्मिक-भोत्र में
उपनत (एदि ५६)। ३ शिष्ट अनोचित, अज्ञात
ब्रह्मात बरोह राय' (उत १३, १२)। 'सउअ
पु [एउपउ] एक जैन भाचार्य (बुध ५४०)।

अज वि [आर्थ] १ उत्तम, श्रेष्ठ (ठा ५, २)।
२ मुनि, साधु (रूप्य)। ३ सत्यकार्य करने-
वाला (वच १)। ४ पूज्य, मान्य (विपा १,
१)। ५ पु मातामह (निमी)। ६ पितामह
(एणया १, ८)। ७ एक ऋषि का नाम
(एदि)। ८ न. मोन-विशेष (एदि)। ९ जन
साधु, साध्वी श्रौर उनकी शाखाओं के पूर्व में
यह शब्द प्रायः लगता है, जैसे अजअइर,
अजअइगा, अजपोमिला (रूप्य)। 'उत्त
पु [पुन] १ पति, भर्ता (माप)। २ मासिक
का पुन (नाट)। 'बोस पु [बोप] अगवान्
पार्थिव्य का एक गणरर (ठा ८)। 'मगु पु
[मइ] एक प्राचीन जैनाचार्य (सार्ध २२)।
'मिस्त वि [मिअ] पूज्य, मान्य (अभि
१३)। 'समुइ पु [समुइ] एक प्रसिद्ध
जैनाचार्य (माप २२)।

अज अ [अच] आज (मुर २, १६७)।
'त वि [तन] अनुपातन, आजकल का
(रमा)। 'ता की [ता] आजकल (रूप्य)।
'पमिअ अ [प्रभुति] आज से ले कर
(उवा)।

अज पु [दे] १ जिनर देव। २ बुद्ध देव (दि
१, ५)।

अज न [आअ] धी, बुद्ध (पाप)।
अज देवो रि = अइ।

अज अ [अथ] आज (मा ५८)।
अजत वि [आयत्त] आगामी। 'वाल पु
[वाल] भविष्य काल (पाप)।

अजहिजो अ [अथय] आजकल (ठा पु
१, २५)।

अजमालिअ वि [अथमालिक] आजकल का
(मगु १५८)।

अजग देवा अजय = अर्जक, 'अजगतमज-
रिव' (मुग ५३)।

अजग देवो अजय = धार्मिक (निर १ १)।
अजग सव [अर्ज] उगाने करना। सउ.
अजणिचा (मूग १, ५, २, २३)।

अजग } [अर्जेन] उगाने, पैदा करना
अजणण } (था १२ मत्त १८), 'एज वैरि-
मेव नरेमुआय तदणणए' (उ ७ टी)।

अजम वु [अर्थमन्] १ मूर्ख (पि
२६१)। २ देव विशेष (ज ७)। ३ उत्तर

पालुनी नक्षत्र का प्रथिदायक देव (ठा २,
३)। ४ न उत्तरा-पालुनी नक्षत्र (ठा २,
३)।

अजय पु [आर्थक] १ मानमह, मा का
बप (पउम ५०, २)। २ पितामह, पिता का
विना (मग ६ ३३), 'ज पुण अजय-नजय-
अणयविअययमउअओ दाए परमत्यओ नन-
तय तु पुंरिआमिमाओ' (मूर १, २२०)।

अजय वि [अर्जक] १ उगाने करनेवाला,
पैदा करनेवाला (मुग १२५)। २ दुः, बुद्ध-
विशेष (एणए १)।

अजय पु [दे] १ मुरम नामक तृण। २
गुरेठ नामक तृण (दि १, ५५)। ३ तृण,
घास (निज ११)।

अजल वु [आर्थल] स्तेछो की एक जाति
(एणए १)।

अजय न [आर्थय] सरलता, निष्कपटता
(नव २६)।

अजय (मग) देखो अज = धार्मिक। 'रइ पु
[खण्ड] धार्मिक-देश (अभि)।

अजयया की [आर्थय] न्युता, सरलता
(पक्कि)।

अजयि वि [आर्थयिन्] सरल, निष्कपट
(घावा)।

अजयि न [आर्थय] सरलता (मूर १, ५,
२, २३)।

अजा की [आर्थय] १ साध्वी (गण्ड २)।
२ योगी, पारंगती (दि १, ५)। ३ धार्मिक द्यव
(ज २)। ४ गगनात् मलिनार्थ की प्रथम
शिखा (सम १५२)। ५ माया, पूज्या की
(पि १०६, १५३, १५५)। ६ एक कला
(घोप)।

अजा की [आहा] भादेश, हुकुम (ह २,
८३)।

अजाय वि [अजात] अनुत्पन्न, 'अजायमि-
यरमवि एम सहवो ति दुपई जाए' (धर्मसं
२७०)।

अजाय सव [आ + ज्ञापय] भाजा करना,
हुकुम प्रमाण। १. अजाययय्य (मूर
२, १)।

अजिअ वि [अजित] उगावित, पैदा किया
हुआ (था १५)।

अजिआ छो [आयिवा] १ मान्वा, पुण्या
छी । २ साग्यो, संन्यासिनो (सम ६५; वि
४४८) । ३ माता की माता (दश ७) । ४
पिता की माता (स २५४) ।

अजिझीअ वि [दे] दत्ता, दिया हुआ (वच
१ टी) ।

अजिणाय देखो अजणाय (उप १६४) ।

अजीय देखो अजीय, 'धम्माम्मा पुणल,
मह बालो ६५ हंति धजीवा' (नव १०) ।

अज्ज (पव) म [अज्ज] पाज हि (४, ३४३;
मवि; वि) ।

अज्जुअ (शो) देखो अज्ज = पार्य (नाट) ।

अज्जुआ (शो) देखो अज्जा = धार्या (वि
१०४) ।

अज्जुण पुं [अज्जुन] १ सीधरापण्डव (आमा
१, १६) । २ बुद्ध-विरोध (आमा १, ६;
मौन) । ३ गौरालक के एक दिवकर (शिय)
का नाम (मम १५) । ४ न. श्वेत सुवर्ण,
रक्तद सीता, 'सव्वजुणुसुवण्णाममं' (मौप) ।
५ गुण-विषयो (पण १) । ६ अज्जुन बुद्ध का
गुण (आमा १, ६) ।

अज्जुणाय पुं [अज्जुन] १-६ ऊपर देखो ।
अज्जुणाय ७ एक माली का नाम (मत्त १८) ।
अज्जु छो [आयि] साह, धय (हि १, ७७) ।
अज्जोग देखो अजोग = धरोग (वच १) ।
अज्जोगि देखो अजोगि (वच १) ।
अज्जोह न [दे] कनकवि-विषयो (पण १) ।
अज्जमरय वि [अज्जम] मभिहावा (कम्पु) ।
अज्म पुं [दे] मद (उत्प. मज्ज) (दे १,
४०) ।

अज्मत्त देखो अज्मत्त (सप १, २, १२) ।
अज्मत्तय वि [दे] भागत, धामा हुआ (दे १,
१०) ।

अज्मत्तय १ न [अध्यात्म] १ भ्रातृ मे, भाव्य-
अज्मत्तय २ संन्यासी, भ्रातृ-विषयक (उत्तर १,
भावा) । २ मन में, मन संबंधी, मनो-निषण्ण-
(उत्तर ३; सुम १, १६, ४) । ३ मन, चित्त;
'अज्मत्तयानुपण' (दशनि १, २५) । ४ सुम-
ध्यान, 'अज्मत्तय सुममादि-महा, सुलत्तं च
विमाराह जे स निरुद्ध' (सम १०, ११) । ५ गु-
हा या (मौप ७४१) । 'जोग पुं [योग]
—ननिटोर, चित्त की एकपक्ष (सुम १, १६,

४) । 'दोस पुं [दोष] धाघ्यात्मिक दोष—
कोप, मान, माया और लोभ (सुम १, ६) ।
'यत्तिय वि [प्रत्ययिक] चित्त-हेतु, मन
से हो उत्पन्न होनेवाला शोच, चित्ता धादि
(सुम २, २, १६) । 'विस्सोहि छो [विमुक्ति]
भ्रातृ-शुद्धि (मौप ७४५) । 'संयुद्ध वि
[संयुद्ध] मनो-निग्रही, मन को बाध में रखने-
वाला (भावा) । 'सुद्धि छो [श्रुति] ध्यात्म-
साध, भ्रातृ-विद्या, योग-साध (पण २, १) ।
'सुद्धि छो [शुद्धि] मन की शुद्धि (भावा
१) । 'सोहि छो [शुद्धि] मन-शुद्धि (भावा
१) ।

अज्मत्तिय वि [आध्यात्मिक] भ्रातृ-विषय,
भ्रातृ या मन से संबंध रखनेवाला (विपा १,
१ मम २, १) ।

अज्मत्तिय देखो अज्मत्तिय (पव १२१) ।

अज्मत्तिय वि [आध्यात्मिक] १ ध्यात्म
का नाम (मम २) । २ ध्यात्म सत्यधी
(पुननि २४) ।

अज्मय वि [दे] आतिविस्मय, पड़ोसी (दे १,
१७) ।

अज्मयण पुं [अज्मयण] १ शय, नाम
(वच १) । २ पटना, ध्यात्म (विने) । ३
ग्रन्थ का एक अंग (विपा १, १) ।

अज्मयण वि [अध्यात्मिक] पढ़ने वाला,
ध्यामी (विने १४६५) ।

अज्मयय मव [अधि + आप] पढ़ना,
सीखना । १ ध्यामाति (विने ३१६६) ।

अज्मयय सक [अध्यय + सो] विचार करना,
चिंतन करना । वक्त. अज्मययसं (सुपा
१६१) ।

अज्मययण १ न [अध्ययसाधन] चिंतन,
अज्मययण २ विचार, भ्रातृ-परिणाम; 'जो
कुमरेलं अयिं, मुनिपुंजं । २ मुनिज्मयस-
रुपि । किं इयमनं जयद ?' (सुपा ५६६;
पाम्पु १०४३ विपा १, २) ।

अज्मययण पुं [अध्ययसाधन] विचार, ध्याम-
परिणाम, भ्रातृ-सकल (भावा कम्म ४,
८२) ।

अज्मययसि वि [अध्ययसित] निश्चित,

अज्मययसि वि [अध्ययसित] १ चित्तका
चिंतन किया गया हो वह (मौप) । २ न.
चिंतन, विचार (माम्पु) ।

अज्मययसि न [दे] मुंसा हुआ मुंह (दे १,
४८) ।

अज्मययसि वि [दे] देखा हुआ, हार (दे १,
१०) ।

अज्मयस संक [आ + मज्ज] धारोण करना,
धनिराण देना । धग्मास (दे १, १३) ।

अज्मयस १ वि [आकृष्ट] जिन पर भावोय
अज्मयसि २ किया गया हो वह (दे १, १३) ।

अज्मयय वि [अध्ययिक] ध्यायंत, ध्याय-
वि (माम्पु) ।

अज्मा छो [दे] १ प्रसूती, बुलडा । २ अरस्त
छी । ३ नगरी, बुलदिन । ४ बुलछी छी । ५
वह (छो) (दे १, ४०; गा ८३, ८६;
कहा ६४) ।

अज्मा १ सन [अधि + ह] ध्यान करना,
अज्मय २ पढ़ना । धग्मासि (सुख २, १३) ।
हैरु. धग्मासि (सुख २, १३) ।

अज्मास संक [अध्याप्य] पढ़ना । कर्म,
धग्मासि (सुख २, १३) ।

अज्मयसि वि [अध्ययसि] पढ़ने योग्य,
'मुन मे भविस्सति धग्मासि-मं भवद' (दश
६, ४, ३) ।

अज्माय पुं [अध्याय] १ पढ़न, ध्यामा
(नाट) । २ ध्याय का एक अंग (विने १११९;
पाम्पु) ।

अज्मयय पुं [अध्याय] १ बुद्ध-विरोध । २
शुद्धी के ऊपर बहनेवाली बली या शाखा
बौरह (पण १) ।

अज्मारोव पुं [अध्यारोव] ध्याय, ध्यामा
(धर्म २२२, १४१) ।

अज्मारोवण न [अध्यारोवण] १ ध्यारोवण,
ऊपर चढ़ना । २ पढ़ना, प्रश्न करना (विने
२६२८) ।

अज्मारोह पुं [अध्यारोह] देखो अज्मारोह
(सुपा २, ३, ७, ८, १६) ।

अज्माय देखो अज्माय = ध्यामाप्य । धग्मा-
वेद (सुख २, १३) । वच अज्मायअंत (हास्य
१२४) ।

अज्मायय देखो अज्मायय (दशनि १, १ टी) ।

अञ्जमावण न [अध्यापन] पाठन (सिरि २७) ।
अञ्जमावणा क्षी [अध्यापना] पढाना (बम्म
१, ६०) ।

अञ्जमावय वि [अध्यापक] पढानेवाला,
शिक्षक, गुरु (बसु, गुर ३, २६) ।

अञ्जमावस्य सक [अध्या + वस्] रहना,
वास करना । बहु अञ्जमावसंत (उवा) ।
अञ्जमास पु [अध्यास] १ ऊपर बैठना । २
निवास-स्थान (मुपा २०) ।

अञ्जमासणा क्षी [अध्यासना] सहन करना
(राज) ।

अञ्जमासिञ वि [अध्यासित] १ प्राणित,
प्रतिष्ठित । २ स्थापित, निवेशित (माट) ।

अञ्जमाह्वय वि [अध्याहृत] १ उत्तेजित, 'सौय-
लेण सुरहिणधम्मद्विवाग्धेण हत्थी अञ्जमाह्वो
यण समरेद्ध' (महा) ।

अञ्जमीण वि [अक्षीण] १ क्षय, क्षयूट । २
न सम्पन्न (निते ६५५) ।

अञ्जमुवयज देखो अञ्जोवयज (वि ७७
मीप) ।

अञ्जमुवषण देखो अञ्जोवषण (विपा १,
१) ।

अञ्जमुववाय देखो अञ्जोववाय (उप ३२२) ।
अञ्जमुविअ वि [अध्यापित] प्राणित (पिड
४५०) ।

अञ्जमुसिर वि [अशुपरि] छिद्र रहित (प्राप
३१३) ।

अञ्जोड वि [अभ्येड] पढनेवाला (विसे
१४६५) ।

अञ्जोएली क्षी [दे] दोहनेपर भी जिसका दोहन
हो सके ऐसी गैया (दे १, ७) ।

अञ्जोसणा क्षी [अभ्येपणा] प्रथित प्रार्थना,
विशेष साधना (राज) ।

अञ्जोवरग पु [अभ्यवपूरक] १ माधु के
अञ्जोवरय [लिपे] अधिक रखोई करना । २
साधु के लिए वढ़ाने की हुई रखोई (मीप
पत्र ६७) ।

अञ्जोविअ क्षी [दे] बरा-स्थान के शाकु-
एल में भी जाना मानियों की रचना (दे १,
१३) ।

अञ्जोवगमिय वि [आभ्युपगमिक] स्वेच्छ
यै स्वीकृत (पण १५) ।

अञ्जोववज्ज सक [अध्याप + पट्ट] भयासक
होना, धासक करना । अञ्जोववज्ज (वि
७७) । भविष्यज्जोववज्जिहिद (मीप) ।

अञ्जोववण पु [अध्यापण] अत्यंत
अञ्जोववण [भासक (विपा १, २, ख्या १,
२, महा, वि ७७) ।

अञ्जोववाय पु [अध्यापवाद] अत्यंत प्रास-
जि, तल्लोना (पण २, ५) ।

अञ्जोवणा देखो अञ्जोवणा, 'पनमो पञ्चव-
यणो विहिण्णा सव्वाणमावणानुकुलो' (संवेध
२४) ।

अट १ सक [अट] भ्रमण करना, घूमना ।
अट्ट १ अट्ट (पट्ट, दे १, १६५), परिमट्ट
(दे ४, २३०) ।

अट्ट सक [कट्ट] काय करना । अट्टर (हे
४, १६६, पट्ट, गड्ड) ।

अट्ट सक [शुप] सूचना, सुचना होना ।
अट्टि (मे ५, ६१) । बहु, अट्टित (मे ५,
७३) ।

अट्ट वि [आर्ते] १ पीडित, दुःखित (विपा
१, १) । २ घ्यान विशेष—शुद्ध-संयोग, अस्मि-
विशेष रोग निवृत्ति और भविष्य के लिए

चिन्ता करना (अ ४, १) । 'ण्य वि [श]
पीडित की पीडा को जाननेवाला (पट्ट)

अट्ट वि [मृत्त] गत, प्राप्त (ख्या १, १, भा
१२, २) ।

अट्ट पुन [अट्ट] १ दूबान, हाट (था १४) ।
२ मट्टल के ऊपर का घर, अट्टरी (कुमा) । ३
आकारा (भागे २०, २) ।

अट्ट वि [दे] १ कट्ट, दुर्बल । २ बडा, भूला ।
३ निर्लज्ज, बेशान । ४ भालवी, मुस्ता । ५ पु-
सुब तोना । ६ शब्द, भावान । ७ त मुख ।

८ झूठ भसयोवि (दे १, ५०) ।

अट्ट वि [दे] गया हुआ गत (दे १, १०) ।
अट्टहास पु [अट्टहास] देखो अट्टहास
(उव) ।

अट्टन [अट्टन] १ व्यापान, बसरत (मीप) ।
२ पु इस नाम का एक प्रसिद्ध मल्ल (उत
५) । 'साला क्षी [शाला] व्यापान-शाला,
बसरत-शाला (मीप बप्प) ।

अट्टन न [अट्टन] परिग्रहण (परम ३) ।
अट्टणा क्षी [आवर्तना] आवृत्ति (प्राट ३१) ।

अट्टमट्ट वि [दे] निरर्थक, व्यर्थ, निरम्मा
(सुख ५, ८) ।

अट्टमट्ट पु [दे] १ भालवान, कियारी (हे २,
७७४) । २ भ्रमण सकल-विवरण, पाप-सबद
अभ्यवस्थित विचार,

'मणवद्विय मणो जस्त भाद बहुयाइ अट्टमट्टाई'
॥ चितिय च न तहह, सचियुड य पावकम्माइ'
(उव) ।

अट्टय पु [अट्टक] १ हाट, दूबान (था १२) ।
२ पाप के छिद्र को बन्द करने में उपयुक्त
द्रव्य-विकली (हह १) ।

अट्टयक्कली क्षी [ट्ट] कमर पर हाथ रखकर
खडा रहना (प्राप) ।

अट्टहास पु [अट्टहास] बहुत हँसना, खिल-
खिला कर हँसना (वि २७१) ।

अट्टालग पु [अट्टालक] महल का उपरि-
अट्टालय [भाग, अट्टारी (सम १३७, पत्र
२, ६) ।

अट्टि क्षी [आर्ति] पीडा, दुःख (माचा) ।
अट्टिय वि [आर्ति] शोकदि से पीडित,
'अट्ट अट्टियचित्ता, जह पीवा दुक्खसारासुव्वीन'
(मीप) ।

अट्टिय वि [अर्धित] व्याकुल, व्यथ, 'अट्टइ-
ट्टियचित्ता' (मीप) ।

अट्ट पु [अर्ध] संयम (मूम १, २, १६६) ।

अट्ट पुन [अर्ध] ५ बल्ल, पसार (उवा २;
अट्टा), 'अट्टवसी' (मूम १, १४), 'अट्टाद,
हेऊई, पसिणाइ' (मग २, १) । २ विपय,
'अट्टियट्टा' (अ ६) । ३ शब्द का अभिवेय,

वाक्य (मूम १, ६) । ४ मलय, लान्ध (विपा
१, ६, भास १८) । ५ तत्त्व, परमाणु 'गुण-
त्व भी आरहता गिराए, अट्ट न पाणाइ अट्टिय
वेए' (उत १२, ११) इमो गुणु गुणु अट्ट-
दुण' (मूम १, १०, ६) । ६ प्रमाण, हनु
(हे २, २३) । ७ धमिनाय, इच्छा 'अट्टो मंन ।
भागेहि हवा अट्टो' (ख्या १, १६०, उत ३) ।

८ उदर, लवण (मूम १, २, १) । ९ पत्र,
पेमा (था १४, माचा) । १० पत्र, ताम्र,
'अट्टुत्ताणि गिल्लेग्ग अट्टुत्ताणि उ बज्ज'
(उत १) । ११ मीन, मुक्ति (उत १) । 'अट्ट
पु [अट्ट] । १ मंत्री । २ निमित्त यात्रा का
विमान (अ ४, ३) । 'जाय वि [आनार्य]

जिसको आवश्यकता हो, जिसका प्रयोजन हो वह, 'मट्टेण जस्स वज्जं संज्ञात एस मट्टमाद्यो य' (वव २) । 'जाय वि [याच] वनार्थो, धन की चाहवाला (वव २) । 'सइय वि [शतिक] सौ धर्मवाला, जिसरा सौ धर्म हो सके ऐसा (वचन आदि) (ज २) । 'सेण य [सेन] देखो अट्टिसेण, देखो अत्य-धर्म ।

अट्ट वि.व. [अप्ठ] संख्या-विशेष, षाठ, ८ (वो ४१) । 'वत्ताल वि [वत्तारिंश] षट्ठालीसवा (पउम ४८, १२६) । 'वत्तालीस वि [वत्तारिंशत्] षट्ठालीस (वि ४४५) । 'ट्टमिया ली [ट्टमिन्ना] जैन साधुओं का ६४ दिन का एक व्रत, प्रतिमा विशेष (सम ७७) । 'तालीस वि [वत्तारिंशत्] षट्ठालीस (नाट) । 'तीस वि [त्रिंशत्] संख्या-विशेष, षट्ठालीस (नम ६५, वि ४४२, ४४५) । 'तीसद्म वि [त्रिंश] षट्ठालीस (पउम ३८, ५८) । 'त्तरि ली [सप्तवि] षट्ठार, ७८ की संख्या (वि ४४६) । 'तीस वि [त्रिंशत्] षट्ठालीस (मुपा ६५५, वि ४४५) । 'दस वि [दशान्] षट्ठारह, १८ (सति ३) । 'दसुत्तरसय वि [दशोत्तर-शत्] एक सौ षट्ठारहवां (पउम १८८, १२०) । 'दह वि [दशान्] षट्ठारह, १८ वीं संख्या (पिंग) । 'पयसिय वि [प्रदेशिक] षाठ मय-यव वाला (डा १०) । 'पया ली [पदा] एक बुल, छन्द-विशेष (पिंग) । 'पाहरिअ वि [प्राह-रिक] षाठ प्रहर संबंधी (सुर १५, २१८) । 'माइया ली [भागिर] नरल वल्लु नापने का बहीस पत्तो का एक परिमाण (मयू) । 'म न [म] तेला, लगातार तीन दिनों का उपवास (सुर ४, ५५) । 'मंगल पुन [मङ्गल] स्वस्तिक आदि षाठ मार्गलिक वस्तु (उपय) । 'ममभत्त पुन [ममभत्त] तेला लगातार तीन दिनों का उपवास (उपाया १, १) । 'ममत्तिय वि [ममभत्त] तेला कलवाला (विपा २, १) । 'मी ली [मी] तिथि विशेष, मझी (विपा २, १) । 'मुत्ति पु [मुत्ति] महादेव, शिव (डा ६) । 'याल वि [वत्तारिंशत्] षट्ठालीस (मवि) । 'वन्न वि [पञ्चाशन्] संख्या विशेष, षट्ठावन, ५८ (कम्म १, ३२) । 'वरिस, 'वारिस वि [वारिष्क] षाठ वषं

की उन्न का (सुर २, १४६, ८, १०१) । 'विह वि [विध] षाठ प्रकार का (वी २४) । 'वीस लीन [विंशति] षट्ठाईस (वम्म १, ५) । 'सट्ठि ली [षट्ठि] संख्या-विशेष, षट्ठाठ (वि ४४२-६) । 'समइय वि [सामयिक] जिसकी अवधि षाठ 'समय' की हो वह (वीप) । 'सय न [शत] एक सौ षाठ, १०८ (डा १०) । 'सहस्स न [सहस्र] एक हजार धौर षाठ (वीप) । 'सामइय देखो 'समइय (डा न) । 'सिरि वि [शिरस्], 'सिरि मट्ट-नोण, षाठ बोण वाला (वीप) । 'सेण पुं [सेन] देखो अट्टिसेण । 'हत्तर वि [सप्ततितम] षट्ठतरवां (पउम ७८, ५७) । 'हत्तरि ली [सप्तति] षट्ठतर की संख्या ७८ (सम ८६) । 'हाम [धा] षाठ प्रकार का (वि ४५१) । 'अट्ट न [सट्ठ] षाठ, लवचो (प्रवी ७४) । अट्टंग वि [अष्टाङ्ग] जिसका षाठ अंग हो वह । 'अमिच्च न [निमित्त] वह शास्त्र जिसमें भूमि, स्वप्न, शरीर, स्वर आदि षाठ विषयो के फलाफल का प्रतिपादन हो (सूत्र १, १२) । 'महाणिमिच्च न [महानिमिच्च] भक्ततर-उक्त ग्रंथ (कप्प) । अट्टेस वि [अष्टस] मट्ट-नोण (सूत्र २, १, १५) । अट्टिट्ठि ली [अष्टट्ठि] योग की षाठ रटियां, वे ये हैं —विज्जा, तारा, वना, दीप्पा, स्थिरा, वान्ता, प्रमा धौर परा (सिदि ६२३) । अट्टय न [अष्टक] षाठ का समूह (वन १) । अट्टा ली [अष्ट] १ कुट्टि, 'चवळि बुद्धादि लोचं करेई' (ज २, स १८२) । २ मुट्ठीदार चीज (पचव २) । अट्टा ली [आस्था] अष्टा, विधास (सूत्र २, १) । अट्टा ली [अर्थ] लिए वास्ते 'तइय य मणी दिव्वो, समणिओ जीवरसवुद्धा' (सर ६, ६, डा ५, २) । 'दठ पुं [दण्ड] कार्य के लिए की गई हिंसा (डा ५, २) । अट्टाइस वि [अष्टविंश] षट्ठाईसवां (पिंग) । अट्टाइस ३ लीन [अष्टाविंशति] संख्या-अट्ठाईस विशेष, षट्ठाईस (पिंग वि ४४२) । अट्टाण न [अस्थान] १ भोग्य स्थान (डा ६, विवे ८५५) । २ मुखित स्थान, बैरथा का मुहला बगैरह (वन २) । ३ भोग्य, बैरथाजवी

'धट्टाण्णें कुसन्ना धयंति, दणेण जे तिद्धिमुत्ता-हरति' (सूत्र १, ७) । अट्टाण न [आस्थान] समा, सना-गृह (डा ५, १) । अट्टाणउइ ली [अट्टानति] षट्ठावने, ६८ (सम ६६) । अट्टाणउय वि [अट्टानत] मठानवेवां, ६८ वां (पउम ६८, ७८) । अट्टागनइ देखो अट्टाणउइ (सुर २१६) । अट्टाणिय वि [अस्थानिक] भगवान् भगवत्तय, 'मट्टाणिए होइ वहु पुणाय, जेएणएणसबाइ बुस वएज' (सूत्र १, १३) । अट्टायमाण वहु [अतिप्रत्त] नही बैठला हुआ (पचा १६) । अट्टार [वि. व.] [अष्टादशान्] संख्या अट्टारस [विशेष, षट्ठारह (पउम ३५, ७६, सति ५) । 'वह वि [विध] षट्ठारह प्रकार का (सम ३५) । अट्टारसग न [अष्टादशान्] १ षट्ठारह का समूह (पंचा १४, ३) । २ वि. जिसका द्रव्य षट्ठारह बुद्धा हो वह (पन १११) । अट्टारसम वि [अष्टादश] १ षट्ठारहवां (पउम १८, ५८) । २ न, लगातार षाठ दिनों का उपवास (उपाया १, १) । अट्टारसिय वि [अष्टादशिक] षट्ठारह वषं की उन्न का (वन ४) । अट्टारह [वि. व.] देखो अट्टार (पङ्, पिंग) । अट्टारह [वि. व.] अट्टारह १ लीन [अष्टापञ्चाशन्] संख्या-अट्टारस [विशेष, पचास धौर षाठ, ५८ (वि २६५, सम ७४) । अट्टारवन्न वि [अष्टापञ्चाश] षट्ठावनवां (पउम ५८, १६) । अट्टारय पुं [अष्टावन्न] १ स्वनाम-स्थान पर्वत-विशेष, बैनास (पएह १, ४) । २ न. एक जाति का बुद्धा (पएह १, ४) । ३ दूत कनक, जिस पर बुद्धा खेला जाता है वह (पएह १, ४) । ४ सुवर्ण, सोना (मय ८) । 'सेल पु [शैल] १ मेघपर्वत । २ स्वनाम-स्थान पर्वत-विशेष, जहाँ भगवान् स्वपर्वत निर्माण पाये थे, 'अस्मि तुमं अस्मिन्नो, जल्य य निगुवुत्तल-समय पत्तो । ते अट्टायपत्तेला, सीतामनि विरि-मुलस' (पय ८) ।

अट्टायय न [अथेपद] गृहस्थ (सं ३, ४) ।
अट्टायय न [अथेपद] धर्म-शास्त्र, समाप्ति-शास्त्र
(सूत्र १, ६ परह १, ४) ।

अट्टावीस स्त्रीन [अष्टाविंशति] अष्टाईस, २८
(पि ४४२, ४४४) ।

अट्टावीसइ श्री [अष्टाविंशति] संख्या-विशेष,
अष्टाईस, २८ । 'विह्वि' [विधे] अष्टाईस
प्रकार का (पि ४४१) ।

अट्टावीसइमा वि [अष्टाविंश] १ अष्टाईसनी
(पत्रम २८, १४१) । २ न. तेरह दिनों के
लगभग उपवास (आमा १, १) ।

अट्टासट्ठि श्री [अष्टापट्ठि] संख्या विशेष अठ-
सठ, ६८ (पिग) ।

अट्टासि श्री [अष्टाशीति] संख्या विशेष
अट्टासीह [अष्टासी] ८८ (पिग सम ७३) ।

अट्टासीय वि [अष्टाशीत] अष्टासीवां (पत्रम
८८, ४४) ।

अट्टाह न [अष्टाह] अष्ट दिन (आमा १, ८) ।

अट्टाहिया श्री [अष्टाहिका] १ अष्ट दिनों
का एक उत्सव (पत्रा ८) । २ उत्सव (आमा
१, ८) ।

अट्टि वि [अट्ठि] प्रार्थी, गरजवाला, भगि-
लापी (भावा) ।

अट्टि पु [अट्ठि] १ हठी, हाट, 'भम अट्टी'
(सूत्र २, १, १६) । २ फल की छुट्टी (सं
४, १, ७१) ।

अट्टि } श्रीन [अट्ठि, 'क'] १ हठी, हाट
अट्टिग } (कुमा, परह १, ३) । २ जिसमें
अट्टिय } श्रीन उत्पन्न न हुए हो ऐसा अपरि-
पक्व फल (बृह १) । ३ पु. कापालिक 'अट्टी'
विज्जा कुच्छियमिक्खु' (बृह १, व २) ।

'मिजा श्री [मिजा] हठी के भीतर का रस
(अ ३, ४) । सरस्वती पुं [सरज्जक] नापा-
लिक (व ७) । 'सेण ह [पेण] १ वस-
मोच की शास्त्रात्मक एक मोच । २ पु. इस मोच
का प्रवर्तन पुरुष और उनकी स्त्रियां (अ ७) ।

अट्टिय वि [अट्ठि] १ गरुड, याचन, प्रार्थी
(सूत्र १, २, ३) । २ धर्म का कारण, धर्म
सम्बन्धी । ३ मोक्ष का हेतु, मोक्ष का कारण

भूतः 'पत्रमा लाभस्संवि विज्जत अट्टिय भुय'
(उत्त १) ।

अट्टिय वि [अट्ठि] १ धर्म का कारण, धर्म-
सम्बन्धी । २ मोक्ष का कारण (उत्त १) ।

अट्टिय वि [अट्ठि] प्रमिलित, प्राप्त
(उत्त १) ।

अट्टिय वि [अट्ठि] १ अन्यवस्थित, प्रमि-
लित (परह १, ३) । २ चपल, चपल (सि
२, २४) ।

अट्टिय वि [अट्ठि] हठी-सम्बन्धी, हाट
का, 'अट्टिय रस सुखमा' (सं १४८) ।

अट्टिय वि [अट्ठि] स्थित, रहा हुआ, (सि
१, ३५) ।

अट्टिय पु [अट्ठि] १ कुल विशेष । २ न.
फल-विशेष, अट्ठि कृष्ण का फल (सं ६,
१, ७३) ।

अट्टिल्लय पु [अट्ठि] फल की छुट्टी (पिग
६०३) ।

अट्टुत्तर वि [अट्टुत्तर] अष्ट से अधिक
(श्रीम) । 'सय न [शत] एक सी और
अष्ट (भावा) । 'सय वि [शततम] एक
सी अष्टावां (पत्रम १०८, ५०) ।

अट्टु देवो अट्टु = अट्टु (पिग, पि ४४२,
अट्ट १४६, भाग सम १९४) ।

अट्ट सक् [अट्ट] भ्रमण करना, फिरना
'अट्टति संसार' (परह १) । वक्. अट्टमाण
(आमा १, १४) ।

अट्ट पु [अट्ट] १ रूप, इनाम (पात्र) । २
रूप के पास पशुमा के पानी पीने के लिए
जो गढ़ किया जाता है वह (सि १, २७१) ।

'अट्ट देवो तट्ट = तट्ट (भा ११७, से १,
५५) ।

अट्टइ } श्री [अट्टि, 'वी'] भयानक भगत,
अट्टइ } वन (सुपा १८१, नाट) ।

अट्टइज्झिय न [दे] विपरीत मैथुन (दे १,
४२) ।

अट्टरम्म सक [दे] समालना, रखना करना ।
कर्म 'अट्टरम्मज्जति सवरिमाहि वणे' (दे १,
४१) ।

अट्टरम्मिअ वि [दे] समालना हुआ, रक्षित
(दे १, ४१) ।

अट्टह न [अट्टह] अट्टावां की चौपटी
लाभ से अट्टावां पर जो संख्या लग्य हो वह
(अ ३, ४) ।

अट्टहंग न [अट्टाङ्ग] संख्या-विशेष, 'तुडिय'
या 'महातुडिय' की चौपटी लाभ से अट्टावां
पर जो संख्या लग्य हो वह (अ ३, ४) ।

अट्टन न [अट्टन] भ्रमण, घूमना (अ ६) ।

अट्टणी श्री [दे] मार्ग, रास्ता (दे १ १६) ।

अट्टपल्लय न [दे] वाहन विशेष (जीव) ।

अट्टयाणी श्री [दे] कुलटा, व्यक्तिचारीणी
अट्टया } श्री (दे १, १८, पात्र, भा २४४;
६६२, वक्ता ८६) ।

अट्टयाल न [दे] प्रसादा, तारोक (पल्ल २) ।

अट्टयाल } श्रीन [अट्टचल्यारिण] अट्ट-
अट्टयालीम } तारीकी, ४८ की संख्या (जीव
१, सम ७०) । 'सय न [शत] एक सी
और अट्टातलीस, १४८ (कम्म २, २५) ।

अट्टयडण न [दे] स्तलना, एक-वक्ता चलना,
'अट्टयावि वरिस्सता अट्टयडण काउमारड्डा'
(सुपा ६४५) ।

अट्टयाव } श्री [अट्टवि, 'वी'] भयंकर जगल,
अट्टयाव } गहरा वन (परह १, १, महा) ।

अट्टसट्ठि श्री [अट्टपट्ठि] अठसठ (पि ४४२) ।

'म वि [तम] अट्टमठवां (पत्रम ६८, ११) ।

अट्टाड पु [दे] बलाकार, जबरदस्ती (दे
१, १९) ।

अट्टिल्ल पु [अट्टिल्ल] एक जाति का पत्नी
(परह १) ।

अट्टिल्ल श्री [अट्टिल्ल] छन्द-विशेष (पिग) ।

अट्टोलिया श्री [अट्टोलिना] १ एक राज-
पुत्री, जो दुश्मन की पुत्री और गर्वमयता की
बहिन थी । २ दूषिका, बूढ़ी (बृह १) ।

अट्टोविय वि [अट्टोपित] मर्या हुआ (परह
१, ३) ।

अट्टु वि [दे] जो छोड़े छाटा हो, बीच में
बाधक होता हो वह, 'सो बोहाड्डो अट्टो
भावविस्सो' (अ १४६ टी) ।

अट्टुम्म सक [अट्टु] पंक्ता, गिराना ।
अट्टुम्मह [दे ४, ४४३, पट्ट] ।

अट्टुक्किय वि [अट्टु] फंका हुआ (इमा) ।

अट्टुन न [अट्टुन] १ वर्ष, वर्षा । २ बार,
फलक 'नवमुगणवएअट्टुअडिअमागुभीम-
खयरोर' (सुर २) ।

अट्टुअ वि [दे] पारोपित (व १ टी) ।
अट्टुया श्री [अट्टुना] मल्लो की स्त्रिया-विशेष
(विने ३३५७) ।

अद्ध देखो अद्ध = धर्म (हि २, ४१; चंद १०; सुर ६, १२६; महा) ।

अद्ध वि [आद्य] १ संपन्न, वैभव-शाली, धनी (पाप, उपर) । २ युक्त, सहित (पंचा १२) । ३ पूर्ण, परिपूर्ण; 'विद्युणमवि शुणद्ध' (भासू ७१) ।

अद्धअमकली छो [दे] देखो अट्टयमकली (वे १, ४५) ।

अद्धहत्त वि [आरद्ध] गुरु किया हुआ, प्रारब्ध (से १३, ६) ।

अद्धाड्डा } वि [अर्धतृतीय] बाई (सम
अद्धाड्डा } १०१; सुर १, ४४४, भवि, विस
१४०१) ।

*अद्धिह्य वि [कृष्ट] खोना हुआ (से ५, ७२) ।

अद्धुट्ट वि [अर्धचतुर्थ] साठे तीन, 'अद्ध-
द्वाद सयाड' (वि ४५०) ।

अद्धेज्ज न [आद्यस्य] धनीपन, श्रीमताई
(ठा १०) ।

अद्धेज्जा छो [आद्यधेया] श्रीमत से किया
हुआ सत्कार (ठा १०) ।

अद्धोस्सा पु [अर्धोरु] जैन साधियों के
पहने का एक वस्त्र (श्रौ ३१५) ।

अद्ध (मप) देखो अद्ध = शत्रु (वि ६७, ३०७,
४४२; ४४५) ।

अद्धाइस (मप) तीन [अष्टाविंशति] सख्या-
विशेष, अष्टाईस, २८ (वि ४४५) ।

अट्टारसग देखो अट्टारसग (गिठ ४०२) ।
अट्टारसम देखो अट्टारसम (मग १८, एणया
१, १८) ।

अण थ [अ, अन्] देखो अं (हि २, १६०,
से ११, ६४) ।

अण सत् [अण] १ आवाज करना । २ जाना ।
३ जानना । ४ समझना । ५ एण्ड (विसे
३४४१) ।

अण पुं [अण] १ शब्द, धावाज । २ गमन,
गति (विसे ३४४०) । ३ नपाव, क्रोध प्रादि
भान्तर शत्रु (विसे १२८७) । ४ गाली,
भारोच, धमिशा (तंडु) । ५ न. पाप (पहृ १,
१) । ६ नम (पावा) । ७ वि बुलित,
सचाप (विसे २७६७ टी) ।

अण पुं [अन] देखो अणंआणुअंधि (बम्म २,
४, १४, २६) ।

अण पु [अनस्] शकट, गाड़ी (धर्म २) ।

अण देखो अण्ण = धन्य; 'अण्हिधम्रापि
पिप्राण' (से ११, १६; २०) ।

अण न [अण] १ वरजा, ऋण (हि १, १४१) ।
२ कर्म (उत्त १) । ३ धारग वि [धारक]
करबदार, ऋणी (एणया १, १७) । ४ बल वि
[बल] जलमर्ण, तेनदार (पहृ १, २) ।

*अंजग वि [अंजक] देजनिया (पहृ १, ३) ।
*अण देखो गण (से ६, ६६) ।

*अण देखो जण, 'अण्ण महिलामण्ण रमतत्त्व'
(गा ४४) । 'गुरुणपरवत्त पिस कि (काप्र
६१), 'दासमण्ण' (मच्छु ३२) ।
*अण देखो तण (से ६, ६६) ।

*अणअरद्ध देखो अणवरय (नाट) ।

अणइवर वि [अनतिवर] जिससे बड़कर
हूसरा न हो, सर्वोत्तम, 'अच्छरामो'.....
अणइवरसोमरावत्तमो' (सीप) ।

अणइवुट्टि छो [अनतिवृष्टि] अकृष्टि, वर्षा का
अभाव, 'बुद्धिमतवमरुमुमारेइइइवुट्टो अणइ-
वुट्टो य' (संबोध २) ।

अणइइ वि [अनोति] ईति-रहित, शलप्रादि-
कृत उद्भव से रहित 'अणइइत्त' (श्रौ ५) ।

अणं पुं [अनङ्ग] १ काम, विषयभित्ताय,
रमणेच्छा (गा १६, भाव ६) । २ कामदेव,
मन्य (गा २३३, गउड, वच्छु) । ३ एक राज-
कुमार, जो भानवपुर के राजा जीतारि का पुत्र
था (गच्छ २) । ४ न. विषय-मेवक के मुख्य
अगो के श्रान्तिरक्त स्तन, दुग्धि, मुक्त प्रादि धंग
(ठा ५, २) । ५ बनावटी स्त्रिय आदि (ठा ५,
२) । ६ आरुह अण-अन्धो से भिन्न जैन शास्त्र
(विसे ८४४) । ७ वि. शरीर-रहित, अण-हीन,
मुक्त, 'पहृइ वहणु प्रणुगो, वहणु हु विविधति
कोमुसावाणा' (पउड), 'पहृवमणके पउड पण्यो,
व्णामुसतो हवई अण्यो' (मत् ४८) । 'धरिणी
छो [भृदिणी] रति, कामदेव को पत्नी (मुवा
६६०) । 'पहृसेणिणी छो [प्रतिपेयिणा]
अमप्राहित रोति से विषय-मेवक करनेवाली छो
(ठा ५, २) । 'पविट्ट न [प्रविष्ट] बाद्ध
धंग-अन्धो से भिन्न जैन धन्य (विसे ५२७) ।

*अण पुं [वाण] नाम के बाण (गा
४४८) । *अणपु पु [अण] रागवन्धनो का

एक पुत्र, लव (पउम ६७, ६) । *सर पुं [शर]
काम के बाण (गा १०००) । *सेणा छो
[सेना] बाका की एक विख्यात गणिका
(एणया १, ५, १६) ।

अणंत पुं [अनन्त] चालू धवसपिणो काल के
चौदहवें तीर्थंकर-देव, 'विमलमणंत व जिण'
(पडि) । २ विष्णु, कृष्ण (पउम ५, १२२) ।
३ शेष नाम (से ६, ८६) । ४ जिसमें अनन्त
जीव हो ऐसी वनस्पति, कन्द-मूल वगैरह (श्रौ ४१)
। ५ न. वेवल-नान (एणया १, ८) । ६
आकार (मग २०, २) । ७ वि. नारा-वजित,
शाश्वत (सूर १, १, ४, पहृ १, ३) । ८ नि सीम,
अपरिमित, अमन्य से भी कही अधिक (विसे) ।

६ प्रभूत, बहुत, विशेष (भासू २६, ठा ४, १) ।
*काइय वि [कायिक] अनन्त जीववाली वन-
स्पति, कन्द-मूल प्रादि (धर्म २) । *काय पु
[काय] कन्द-मूल प्रादि अनन्त जीववाली
वनस्पति (पहृ १) । *खुत्तोम [खुत्तस्य]
अनन्त बार (जी ४४) । *जीव पुं [जीव]
देखो *काइय (पहृ १) । *जीविय वि
[जीविक] देखो *काइय (मग ८, ३) । *णाण
न [ज्ञान] वेवल-नान (इत्त २) । *णाणि
वि [ज्ञानिन्] केवल-नामी, सर्वज्ञ (सूर १,
६) । *दसि वि [दशिन] सर्वज्ञ (पउम ४८,
१०५) । *वासि वि [दशिन] देवदत्त क्षेत्र
के बीचवें जिन-देव (तिर्य) । *मिसिसया छो
[मिशिरा] सत्यमित्र भावा का एक भेद-
जैसे अनन्तकाय से भिन्न अथेक वनस्पति से
मिली हुई अनन्तकाय को भी अनन्तकाय कहना
(पहृ ११) । *मीसय न [मिश्रक] देखो
*मिसिसया (ठा १०) । *इइ पुं [इय] विषयान
राजा दसरथ के बड़े भाई का नाम (पउम २३,
१०१) । *विजय पुं [विजय] भरतक्षेत्र के
२४ वें श्रीर देवदत्त क्षेत्र के बोसवें भावी तीर्थं-
कर का नाम (धर्म १४४) । *वीरिय वि
[वीर्य] १ अनन्त बलशाला । २ पु. एक
वेवलज्जानी मुनि का नाम (पउम १४, १५८) ।
३ एक आदि, जो मार्तंडीय के पिता थे (भासू
१) । ४ भरतक्षेत्र के एक मानी तीर्थंकर का
नाम (ती २१) । *संसारिय वि [संसारिक]
अनन्त काल तक संसार में जन्म-मरण पावे-
वाला (उग ३८४) । *सेण पुं [सेन] १ वीरा

कुलवर (सम १५०) । २ एक अन्तइद मुनि (सम ३) ।

अणंतइ पुं [अनन्तजित्] चानू काल के चौइ-हवें जिन-देव, (पद्य ६, १४८) ।

अणंतग १ देखो अणंत (ठा ५, ३) । २ न. अणतय १ वज्र विशेष (सोप ३६) । ३ पु. तेरवत क्षेत्र के एक निवेद (सम ११३) ।

अणंतय न [अनन्तरु] वज्र, कपडा (पव २) ।

अणंतरवि [अनन्तर] १ व्यवधान-रहित, अश्व-बहिन, 'अणतर कयं चइता' (छाया १, ८) । २ पु. वर्तमान समय (ठा १०) । ३ क्रि. बाद में, पाछे (विपा १, १) ।

अणनरहिय वि [अनन्तरहित] १ अश्वबहिन, व्यवधान-रहित (भावा) । २ मजीब, मचित, चेतन (निष्क ७) ।

अणतसो भ [अनन्तशस] अन्त बार (द ४५) ।

अणताणुअधि पु [अनन्तानुअधि] अन्त मान तक भासा की सारा में भ्रमण करने-वाले कपडो की चार चौड़ाइयो में प्रथम की चौड़ी, अनिप्रचंड क्षेत्र, मान, माया और लोभ (सम १६) ।

अणंस वि [अनश] अलएड (पर्मस ७०६) ।

अणङ्ग पु [दे] १ एक म्नेच्छ देह । २ एक म्नेच्छ जाति (पण्ड १, १) ।

अणक्य पु [दे] १ दोष, गुस्ता, लोप (सुपा १३, १३०, ६१०, मधि) । २ सजा (स ३७६) ।

अणरुअर न [अनक्षर] ध्रुव ज्ञान का एक भेद—धरा के बिना सफ के, धीनका, घुटनी बनाना, सिर हिलाना आदि सबेते से दूसरे का अनिप्राय जानना (एवि) ।

अणगार वि [अनगार] १ जितने घर-बार ध्याना किया हो वह, माधु, यति, मुनि (विपा १, २, भग १७, ३) । २ घर-रहित, निमुक्त, मोक्षमर्मा (ठा ६) । ३ पु. भरतक्षेत्र के भावी पाचवें सोम्वर का एक पूर्वभोजीय नाम (सम १५४) ।

-सुय न [अश्रुत] 'सूयकृतांग' सूय का एक अश्रुत-यन (सुय २, ५) ।

-अणगार वि [अणगार] १ करना करनेवाला । २ दुष्ट शिष्य, भगान (उत १) ।

अणगार वि [अनाकार] आहति-रूप, आकार-रहित, 'उदतभयवहारामावधो नाणगरं च' (विसे ६५) ।

अणगारि पु [अनगारिन्] साधु, यति, मुनि (सम ३७) ।

अणगारिय वि [अनगारिन्] साधु-सबन्धी, मुनि का (विसे २६७३) ।

अणगाल पु [अगाल] दुर्मित, अकाल (रह ३) ।

अणगिण वि [अनग] १ जो नंगा न हो, बको से आच्छादित । २ पु. कण्ठक की एक जाति, जो वज्र देता है (रुद्र) ।

अणगय देहो अनय (कुप १) ।

अणगय वि [अणगयन्] अण-आशय, कर्म-नारक (दस) ।

अणगय १ वि [अनर्च्य] १ अमूल्य, बहुमूल्य, अणगयेय १ कोनो (भाव ४) । 'अणगय अणगयेवाइ इति पचण्यारणणाइ' (उप ५६७ टी, स००) । २ महान् गुण । ३ उत्तम, श्रेष्ठ, 'त भगवत अणह नियमतीए अणगयमतीए, सकारेवि' (विने ६५, ७१) ।

अणय वि [अनय] शुद्ध, निर्मल, स्वच्छ (पचव ४) ।

अणच्छ देहो करिस = कृप । अणच्छद (हि ४, १८७) ।

अणच्छिआर वि [दे] अच्छिन्न, नहीं छेदा हुआ (दे १, ४४) ।

अणज्ज वि [अन्याद्य] अयाय, जो न्याय-गुन नहीं (पण्ड १, १) ।

अणज्ज वि [अनार्य] आर्य मित्र, दुष्ट, बराब, पापी (पण्ड १, १, अमि १२३) ।

अणज्जव (प्रप) ऊपर देहो । 'जड पु [खण्ड] अणज्ज देह, (मवि ३१२, २) ।

अणज्जससाय पु [अनद्यवसाय] अशक्त ज्ञान, अति सामान्य ज्ञान (विसे ६२) ।

अणज्जय पु [अनध्याय] १ अध्ययन का अभाव । २ निमग्न अध्ययन निषिद्ध है वह ज्ञान (नाट) ।

अणट्ट वि [अनार्य] आर्य-ध्यान में रहित, 'अणट्टा निति पणए' (उत १८, ५०) ।

अणट्ट पु [अनर्थ] १ बुझान, हानि (छाया १, ६, उप ६ टी) । २ प्रयोजन का अभाव

(पाव ६) । ३ वि. निष्कारण, कृपा, निष्फल (निष्क १; पण्ड २, १) ।

'दह पु [दण्ड] निष्कारण हिंसा, बिना ही प्रयोजन दूसरे की हानि (सुप २, २) ।

अणड पु [दे] जार, उपजति (दे १, १८, पड १) ।

अणड्ड वि [अनर्थ] विनाश-रहित, अलएड (ठा ३, ३) ।

अणणग वि [अनण] १ अमित्र, अशुभभूत (निष्क १) । २ मोक्ष-मार्ग, 'अणण चरमाणे सेण छएणे छएणावए' (भावा) । ३ अमा-धारण, अक्षितीय (सुपा १८६, मुर १, ७) ।

'तुल्ल वि [तुल्य] अमाधारण, अनुपम (उप ६४८ टी) । 'उंसि वि [दर्शित] पदार्थ को सत्य-सत्य देखनेवाला (भावा) । 'परम वि [परम] सयम, इन्द्रिय निग्रह, 'अणएणपरमे छाणी, एणे पमाण कयाइवि' (भावा) । 'मण, 'मणस वि [मनस्क] एकाग्र चित्तबाना, तल्लो (मोप, पडम १, ६१) । 'समाग वि [समाग] अमाधारण, अक्षितीय (उप ५६७ टी) ।

अणत्त वि [अनात्त] अगृहीत, अस्वीकृत (ठा २, ३) ।

अणत्त वि [अनार्य] मपीडित, 'अणवाइमाइनु अणत्तमणत्ते गवेसण कुणइ' (बव १) ।

अणत्त वि [अणत्त] अण से पीठित (ठा ३, ४) ।

अणत्त वि [अनात्त] दु खबर, मुक्त-नाराज, 'एणदएण भते । वि अता योगेना अणत्ता वा' (भग १४, ६) ।

अणत्त न [दे] निमात्य, देखो चिच्छिट्ठ इय्य (दे १, १०) ।

अणत्थ देहो अणट्ट (पवम ६२, ४, अ २७, सण) ।

अणत्थ वट्ट [अतिष्ठन्] १ नहीं रहता हुआ । २ अन्त होता हुआ, 'अणत्थे दिवसरे जो चयद चवविहवि आहार' (पवम १४, १३४) ।

अणत्थ देहो अणग (सुपा १८६, मुर १, ७, पडम ६, ६३) ।

अणत्थिय देहो अणगगिय (भग १०, २) ।

अणप्प वि [अनर्प्य] भरपूर करने के अभाव या अशक्त्य (ठा ६) ।

अणप्प वि [अनत्प] अधिक, बहुत (औप)।
अणप्प पु [अनात्मन्] निज से झिन्न, भ्रात्या
से परे (पउम ३७, २२)। 'ज वि [अ]'
१ निर्वाच, झुल्ले। २ पागल, भूताविष्ट, पराधीन
(निबु १)। 'धसग वि [अ]यश' परवश,
पराधीन (पउम ३७, २२)।

अणप्प पृ. [दे] खट्ग, तलवार (दे १,
१२)।

अणप्पिय वि [अनपित्त] १ नहीं दिया हुआ।
२ साधारण, सामान्य, अधिकोपि (ठा १०)।
'णय पु [अ]नय' सामान्य प्राणी पशु (विसे)।
अणभत्तर वि [अनभयन्तर] मोहरी तत्व
को नहीं जाननेवाला, रहस्य अनिष्ट, 'अणुअ-
त्तरा पु अहं मदणमदन्तं दुत्तत्तस' (अभि
६१)।

अणभिग्गह न [अनभिग्रह] 'सर्वे देवा
धन्वा' इत्यादि रूप निम्नान्त का एक भेद
(भा ६)।

अणभिग्गहिय न [अनभिग्रहिक्] ऊपर
देखो (ठा २, १)।

अणभिग्गहिय वि [अनभिग्रहीत] १ कदा-
ग्रह-शून्य (भा ६)। २ अस्वीकृत (उत्तर २८)।

अणभिग्गहिय वि [अनभिग्रह] प्रज्ञान, निर्वाच
अणभिग्गहिय वि [अभि] १७४, गुण १६८)।

अणभिलप्प वि [अनभिलाप्य] अनिवच-
नीय, जो वचन से न कहा जा सके (लुक्क
७)।

अणमिस वि [अनिमिय] १ विकसित, लिपि
हुआ (सुर ३, १४३)। २ निमग्न-रहित,
फलक-रहित (सुग ३५४)।

अणय पु [अनय] मनोति, भ्रम्याय (धा २७,
स ५०१)।

अणयार देखो अणगार (पउम ११, ७)।

अणरण पु [अनरण्य] साकेतपुर का एक
राजा जो, पीछे से आदि हुआ था (पउम १०,
८७)।

अणरह } वि [अनह] अयोग्य, नामान,
अणरह } (हुमा), 'एभि दिव्वंति अणरहि',
अणरह } अणरहिते तु इमो हाइ (पउम ३५)।

अणरहू की [दे] नवोडा, दुनहिन (पह)।
अणरामय पु [दे] भरति, बेपेनी (दे १,
४४, सदि)।

अणराय वि [अराजक] राज-शून्य, जिसमें
राजा न हो वह (बृह १)।

अणराह पु [दे] सिर में पहनी जाती रंग-
बिरंगी पट्टी (दे १, २४)।

अणरिक्क वि [दे] अलकाश-रहित, पुरसत-
रहित (दे १, २०)। २ दधि, दही आदि
कोरस भोज्य (निबु १६)।

अणरिह } वि [अनह] अयोग्य, नासायक
अणरह } (एगा १, १)।

अणलं म [अनलम्] असमर्थ (भावा २,
३, १, ७)।

अणल पु [अनल] १ अग्नि, आष (हुमा)।
२ वि असमर्थ। ३ अयोग्य, अशुभो अशु-
लोति य होति अयोगो य एगु' (निबु ११)।

अणष वि [अणुणत्] १ कण्ठदार। पु.
दिवस का छन्दोसमा झुल्ले (वद)।

अणषक्य वि [अनपकृत] जिसका अपचार
न किया गया हो वह (उव)।

अणगल्ल वि [अनवगल्ल] खानि रहित,
निरोग।

'सहुस अणवगल्लस, निरुक्किहुस, अतुण
ए' उमासमोतागे एस पाणुति बुच' (ठा २,
४)।

अणगळ वि [अनपत्त] सन्तान रहित, निर्दश
(सुग २५६)।

अणवळ न [अनवत्त] १ पाप का प्रभाव,
कर्म का प्रभाव (सुम १, १, २)। २ वि
निर्दोष, निष्पाप (पह)।

अणवज्ज वि [अणवज्ज] ऊपर देखो
(विसे)।

अणवटुप्प वि [अनवस्थाप्य] १ जिसको
फिरने दीक्षा न दी जा सके ऐसा बुद्ध अपराध
करनेवाला (बृह ४)। २ न. पुत्र प्राप्यवित्त का
एक भेद (ठा ३, ४)।

अणरुट्टिय वि [अनवस्थित] १ अव्यवस्थित,
अनिर्णयित (प्रासु १३७, सुर ४, ७६)। २
चकल, अस्थिर अणवट्टिय च चित्तं (सुर
१२, १३८)। ३ फल विरोध, नाप विरोध
(कम्म ४, ७३)।

अणवणिगय पु [अणपणिक्क, अणपणिक्क]
आनव्यतर देखो की ए' जाति (पह १, ४,
अण १०, २)।

अणवत्थ वि [अनवत्थ] अव्यवस्थित, अति-
यमित, असमयज (दे १, १३६)।

अणवत्था की [अनवत्था] १ अवस्था का
अभाव (उव)। २ एक तर्क-दोष (विसे)।
३ अव्यवस्था, 'अणणी जायइ जाया, जाया
माया पिमा य पुतो म। अणवत्था ससारे,
कम्मवत्ता सत्त्वजीवाण' (विसे १०७)।

अणवदम्प वि [दे] १ अनन्त, अपरिमित,
निस्सीम (सग १, १)। २ अविनाशी (सुम
२, ४)।

अणवद वि [अनवत्त] निष्पाप, निर्दोष, शुद्ध
(प्राह २१)।

अणवन्नि य देखो अणवणिगय (औप)।
अणवन्नि य देखो अणवदम्प (सम १२५, पह
१, ३, प्राप)।

अणवयमाण वड्ड [अनपयवत्त] १ अप-
वाद नहीं करता हुआ। २ साधुवादी (वव
३)।

अणवरय वि [अनवरत्त] १ सतत, निरन्तर,
अविच्छिन्न। २ न सदा, हमेशा (गा २८०,
६)।

अणवरदास (अप) वि [अनन्यादश] अमा-
धारण, प्रकृति (हुमा)।

अणवरस वि [अनवरत्त] आकात्मिक, अचि-
न्तित (पाम)।

अणराह वि [अवाध] बाधा-रहित, निर्वाच
(सुग १-६८)।

अणवैक्खित्तिय वि [अनवैक्खित्त] उपशित,
जिसकी परवाह न हो।

अणवैक्खित्तिय वि [अनवैक्खित्त] १ नहीं
देखा हुआ। २ अविचारित, नहीं सोचा हुआ।
'वारि वि [वारिन्] साह्विक। 'वारिया
की [वारिन्] साह्विक कर्म (उव ७६८ दो)।

अणमण न [अनमण] आहार का त्याग, उप-
वास (सम ११६)।

अणसिय वि [अनसित] उपोषित, उपासी
(आमय)।

अणह वि [अनध] निर्दोष, पवित्र (औप, गा
२७२, से ६, ३)।

अणह वि [दे] प्रसन्न, क्षति रहित, अण-
हूय (दे १, १३; सुग ६, ३३; सण)।

अणह न [अनभस्] भूमि, भूमिनी (से ६, ३)।

अणहप्पणय वि [दे] अणह, विद्यमान (दे १, ४८)।

अणहयय वि [दे] तिरस्सुत, मलित (पद)।

अणहा ओ [अधुना] इस समय (आहु ८०)।

अणहारय पुं [दे] बल, बला, जिसका मध्य-नीचा हो वह जमीन (दे १, ३८)।

अणहिअअ वि [अहृदय] हृदय-रहित, निष्ठुर, निर्दय (प्राय, गा ४१)।

अणहिगय वि [अनयिगत] १ नहीं जाना हुआ। २ पु वह साधु, जिसकी शास्त्री का ज्ञान न हो, अनौतार्थ (वच १)।

अणहिण्ण देवो अणभिण्ण (प्राय)।

अणहिवास वि [अनघास] समहिप्पु, सहन नहीं करनेवाला (उव)।

अणहिल्ल १ न [अणहिल्ल] पुनरात देश की अणहिल्ल १ प्राचीन राजधानी, जो आजकल 'पाटन' नाम से प्रसिद्ध है (ती २६, कुमा)।

१ वाद्य न [पाटक] देवो अणहिल्ल (पु १० मुण १०८८)।

अणहीण वि [अनधीन] स्वतन्त्र, अनायत्त (संग १११)।

अणहुहिल्लय वि [दे] जिसका फल प्राप्त न हुआ हो वह (सम्मत १४३)।

अणाइ वि [अनादि] आदि-रहित, नित्य (मम १२५)। १ गिहण, निहण वि [निवज] आनन्द वजित, शश्वत (उव, सम्म ६५, प्राय ४)। २ मंत, ३ वंत वि [मन्] अनादि काल से प्रवृत्त (पउम ११८, ३२, मवि)।

अणाइय वि [अनादेय] १ अनुपादेय ग्रहण करने के योग्य। २ नाम-कर्म का एक भेद, जिसके उदय से जीव या वचन, युक्त होने पर नौ भाष्य नहीं समझा जाता है (कम्म १, २७)।

अणाइय वि [अनादिक] आदि-रहित, नित्य (सम १२५)।

अणाइय वि [अनादिक] स्वजन-रहित, अनेका (मग १, १)।

अणाइय वि [अनातीत] पापी, पापिष्ठ (मग १, १)।

अणाइय पु [अनातीत] संसार, दुनिया (मग १, १)।

अणाइय वि [अनादित] जिसका आदर न किया गया हो वह (उप ८३३ टी)।

अणाइल वि [अनाविल] १ अचलपित, निर्मल (पएह २, १)।

अणाईअ देवो अणाइय (उप १०३१ टी, पि ७०)।

अणाउ पु [अनायुक्त] १ जिन-देव (सूय अणाउय १, ६)। २ सुकात्मा, सिद्ध (ठा १)।

अणाउल वि [अनाकुल] अम्याकुल, घोर (सूय १, २, २, छाया १, ८)।

अणाउत्त वि [अनायुक्त] उपयोग-शून्य, बे-क्याल, असावधान (घोष)।

अणाएज देवो अणाइज (मम १५६)।

अणागय पु [अनागत] १ भविष्य काल, 'अणुगत्यमपरमता, पचुत्पन्नगवेसता'।

ते पच्छा परितण्णति, खीरे आरम्भि वोक्खे' (सूय १, ३, ४)। २ वि भविष्य में होनेवाला (सूय १, २)। ३ आ की [अह] भविष्य काल (नव ४२)।

अणागल्लि वि [अनगलित] नहीं रोका हुआ (उवा)।

अणागल्लि वि [अनाकलित] १ नहीं जाना हुआ, अज्ञात (छाया १, ६)। २ अपरिमित, 'अणुगल्लितमिच्छावरोमं मण्णव विउ' (उवा)।

अणागार वि [अनागर] १ आगार रहित, आकृति-शून्य (ठा १०)। २ विरोधता रहित (कम्म ४, १२)। ३ न दर्शन, सामान्य ज्ञान (सम ६५)।

अणाजीव वि [अनाजीव] १ आजीविका-रहित। २ आजीविका की इच्छा नहीं रखने-वाला। ३ नि स्पृह, निरोह (वस ३)।

अणाजीवि वि [अनाजीविन्] ऊपर देखो, 'अणिगार्द अणाजीवी' (पडि, निवृ १)।

अणाहु पु [दे] जार, उरगति (दे १, १८)।

अणाडिय वि [अनादित] १ जिसका आदर न किया गया हो वह, तिरस्सुत (प्राय ३)। २ पु-जन्मद्वीप का अधिष्ठात्यक एक देव (ठा २, ३)।

३ जी. जन्मद्वीप के अधिष्ठात्यक देव की राज-धानी (जीव ३)।

अणाणुगामिय वि [अनाणुगामिक] १ पीछे नहीं जानेवाला (ठा ५, १)। २ न अश्वि-ज्ञान का एक भेद (एदि)।

अणादि देवो अणाइ (म ६८३)।

अणादिय १ देवो अणाइय (इक, पएह १, १; अणादीय १ ठा ३, १)।

अणादेज देवो अणाइज (पएह १, ३)।

अगभिग्गह न [अनाभिग्गह] मिथ्यात्व का एक भेद (पच १, २)।

अगभोग पु [अनाभोग] १ अनुपयोग, बे-क्यानी, असावधानी (प्राय ४)। २ न मिथ्यात्व-विरोध (कम्म ४, ५)।

अणामिय वि [अनामिक] १ नाम-रहित। २ पु-असाध्य रोग (तुडु)। ३ जी कनिष्ठापुली के ऊपर की मधुनी।

अणाय वि [अज्ञात] नहीं जाना हुआ, अपरिचित (पउम २४, १७)।

अणाय पु [अनाक] अर्यसोक, मनुष्य-लोक (से १, १)।

अणाय पु [अनात्मन्] आत्म-भित, आत्मा से परे (सम १)।

अणायय वि [अनायक] नायक-रहित (पउम १६, ७०)।

अणायय वि [अज्ञात] स्वजन रहित, अनेका (निवृ ६)।

अणायाग वि [अज्ञायक] अज्ञान, निर्वाच (निवृ ११)।

अणायतय १ न [अनायतन] १ वैश्या आदि अणाययण १ मीच लोग का घर (वस ५, १)।

२ जहाँ सज्जन पुरुषों का संगम न होता हो वह स्थान (पएह २, ४)। ३ पतित साधुका वा स्थान (प्राय ३)। ४ पशु, नपुमक वगैरह ने संगमवाता स्थान (घोष ७६२)।

अणायत्त वि [अनायत्त] पपकोन (पउम २६, २६)।

अणायर पु [अनादर] अच्युतान, अपमान (प्राय)।

अणायरण न [अनावरण] अनावार, खराब आचरण।

अणायरणया ली [अनाचरण] अवर देखो
(सम ७१) ।

अणायरिय देखो अणज्ज = धनार्थ (पणह १,
१; पउम १४, ३०) ।

अणायार देखो अणागार = धनकार (विसे) ।
अणायार पुं [अनाचार] १ शास्त्र-निषिद्ध
भ्राचरण (स १८८) । २ गृहीत नियमो का
जान-बूझ कर उल्लंघन करना, धन भङ्ग
(वव १) ।

अणारिय देखो अणज्ज = धनार्थ (उवा) ।

अणारिस वि [अनार्थ] जो श्रुति-प्रणीत न
हो वह (पउम ११, ८०) ।

अणारिस वि [अन्यादाश] दूसरे के पैसा
(नाम) ।

अणालत्त वि [अनालपित] अनुत्त, भक्तित,
नहो हुलासा हुमा (उवा) ।

अणालयय पु [अनालपक] मौन, नही बोलना
(पास) ।

अणाय सक [आ + नायय्] मगवाना, मण-
वेमि (सिदि ६४६) ।

अणायरण वि [अनायण] १ भावरण-रहित ।
२ न, केवल-ज्ञान (सम्म ७१) ।

अणायिअ वि [अनायित] मगवाया हुमा
(सिदि ६६, ७१८) ।

अणायिट्ठि १ ली [अनायुट्ठि] वर्षा का प्रभाव
अणायुट्ठि } (पउम २०, ८७, सम ६०) ।

अणायिल वि [अनायिल] १ निर्मल, स्वच्छ
(गउड) ।

अणाससि वि [अनाशसिन्] अनिच्छ, निस्पृह
(इह १) ।

अणासण देखो अणसण (सूम १, २, १, ११) ।

अणासय पु [अनाश, 'क' भ्रमण, भोजना-
भाव, 'खारस्स लोएस्स मणस्सएण' (सूम १,
७, १३) ।

अणासय वि [अनाशय] १ श्रायव-रहित । २
पुं श्रायव का प्रभाव, सवर । ३ श्रुति, दया
(पणह २, १) ।

अणासिय वि [अनाशित] मूखा (सूम १,
५, १) ।

अणाह वि [अनाथ] २ शरण-रहित (निबु
२) । २ स्वाभि-रहित, मातृक-रहित । ३ रज,

नरीव, बेचारा (एयाय १, ८) । ४ पुं. एक
जैन मुनि (उत्त २०) ।

अणाहार पुं [अनाहार] एक दिन का उपावास
(सबोव ५८) ।

अणाहि } वि [अनाधि, 'क' मानसिक
अगाहिय } पोडा से रहित (सि ३, ४४, सि
३६५) ।

अणाहिट्ठि पु [अनाघट्टि] एक अन्तर्द्व मुनि
(अन्त ३) ।

अणिशण देखो अगणिण (विचार २२) ।

अणिइय वि [अनियत] १ अनियमित, अस्थ-
वस्थित । २ पु. ससार (अय ६, ३१) ।

अणिउंचिय वि [अनिउच्छित] टेडा नहीं
गिया हुमा, सल (गउड) ।

अणिउत्त } देखो अइमुत्त (३, १, ३८, हे
अणिउत्तय } १, १७८, कुमा) ।

अणिएय वि [अनियत] अनियमित, अप्रति-
बद्ध, 'अचित्ते अगिडे अणिएयवारो, अययको
मिन्नु अणायितथा' (सूम १, ७, २८) ।

अणिदिय वि [अनिन्दित] १ निरवरी निन्दा
न की गई हो वह, उत्तम (धर्म १) । २ पु
विश्वर देव की एक जाति (पणह १) ।

अणिदिय वि [अनिन्दिय] १ इन्द्रिय-रहित ।
२ पु मुक्त जीव । ३ नैवतज्ञानी (अ १०) ।

४ वि. अतोन्द्रिय, जो इन्द्रियों से जाना न जा
सके, 'नय विजइ तगहणे लिगवि अणियित्त-
एणो' (सुर १२, ५८, स १६८, सि १८६२) ।

अणिदिया ली [अनिन्दिता] ऊर्ध्व लोक में
रहनेवाला एक दिक्कुमारो देवी (अ ८) ।

अणिक्क वि [अनेक] एक से ज्यादा (नव ५३) ।
'वाइ वि [वादिन्] श्रमियावादी (अ ८) ।

अणिक्किणी ली [अनोकिनी] ऐसी भेना जिसमें
२१८७ हाथी, २१८७ रथ, ६१६१ घोड़े और
१०६३५ प्यादे हो (पउम २६, ६) ।

अणिक्किरत्त वि [अनिक्किम] नहीं छोडा
हुमा, अप्रतिलयव, अविच्छिन्न, 'अणियित्तएणं
ततोवम्मेलं संभेणं तवसा अणाय मावेमाणे
विहए' (उवा. शीण) ।

अणिगण } देखो अगणिण (जीव ३, सम
अणिगिग } १७) ।

अणिगाह वि [अनिग्रह] स्वच्छन्द, असंयत
(पणह १, २) ।

अणिच्च वि [अनित्य] नश्वर, प्रत्यायी (नव
२४, प्रासु ६५) । 'भावणा ली [भावना]

सांसारिक पदार्थों की अनित्यता का चिन्तन
(पव ६७) । 'णुप्पेहा ली [नुप्पेहा]
देखो पूर्वोक्त अर्थ (अ ४, १) ।

अणिट्ठि वि [अनिष्ट] भूतिकर, हेतु (उव) ।
अणिट्ठिय वि [अनिष्ठित] असंपूर्ण (गउड) ।

अणिण देखो अगणिण (माठ) ।

अणिदा ली [दे अनिदा] १ बिना ह्यात
किये की गई हिंसा (अय १६, ५) । २ चित्त
की विकलता । ३ शान का प्रभाव (अय १, २) ।

अणिमा पुंकी [अणिमन्] माठ सिद्धियों
में एक सिद्धि, अत्यन्त छोटा मन जाने की
शक्ति (पउम ७, १३६) ।

अणिमिस न [अनिमिप] फल विरोध (स्त
५, १, ७३) ।

अणिमिस १ वि [अनिमिप, 'मेप' १ निर्मेप
अणिमिस २] शून्य (सुर ३, १७३) । २ पु
मल्ल, मछली (अय ५, १) । ३ देव, देवता
(वव १, या १६) । 'नयण पु [नयन] देव,
देवता (विसे ३४८६) ।

अणिय न [अनीक] सीय, लश्कर (कम्) ।

अणिय न [अनृत] मल्ल, कूट (अ १०) ।

अणिय न [वि] धार अण-भाग (पणह २, २) ।

अणिय वि [अनित्य] अस्थिर, अनित्य (उव) ।

अणियट्ठ पु [अनिरत्त] १ मोक्ष, मुक्ति (प्राधा
१, ५, १) । २ एक महापण (अ २, १) ।

अणियट्ठि वि [अनिरत्तिन्] १ निवृत्त नहीं
होनेवाला, पीछे नहीं लौटनेवाला (धोप) । २

न युक्त-ध्यान का एक चर (अ ५, १) । ३ पु.
एक महापण (पद २०) । ४ भ्रामरी उत्तराशी-
नाम में होनेवाले एक तोपनर देव का नाम
(सम १६५) ।

अणियट्ठि वि [अनियुत्ति] १ निवृत्ति-रहित,
व्यावृत्ति-रहित (अम २, २) । २ नववीं गुण-
स्वानव (अम २) । 'करण न [करण]

भ्रामा का विरुद्ध परिरक्षण-विरोध (प्राधा)
'वादर न [वादर] १ नववां गुण-स्वानव । २

नववें गुण-स्वानव में प्रवृत्त जीव (पाव ४) ।

अणियण देखो अगणिण (जीव ३) ।

अणियय वि [अनियत] १ अव्यवस्थित, अनियमित (उच) । २ कल्पवृक्ष की एक जाति, जो वक्र देती है (ठा १०) ।

अणिया देखो अणिदा (पिंड) ।

अणिया लो [दे] धार, धर भाग, गुणराती म 'अणी', 'संसारियादा पदया' (धर्मवि १७) ।

अणिरिक वि [दे] परतन, पराजोव । (काप्र ५४, गा ६६१) ।

अणिरिण वि [अनृण] अण-वर्जित, उअण, अनृणी (धर्मि ४६, चाप ६६) ।

अणिरुद्ध वि [अनिरुद्ध] १ अग्रतिहत, नहीं रोका हुआ । (सूत्र १, १२) । २ एक अन्त-हृद् मुनि (भक्त १) ।

अणिल पु [अनिल] १ वायु, पवन (कुमा) । २ एक देवीत तीर्थंकर का नाम (नित्य) । ३ राक्षस वंशीय एक राजा । (पउम ६, २६४) ।

अणिला ली [अनिला] नारिकेल तीर्थंकर की एक शिष्या (पव ६) ।

अणिल न [दे] प्रमात, सबेह (दे १, १६) ।

अणिस न [अनिश] निरुत्तर, सदा, हमेशा (गा २६२, प्रामू २६) ।

अणिसिद्ध १ वि [अनिसिद्ध] १ अग्रनिष्ठ । (अणिसिद्ध) २ अक्षयत, अमरजगत । ३ ऐसी निगा, जिसके मालिक अनेक हो और जो सब की अनुमतित स ली न गई हो, साधु की निगा का एक दोष (पिंड, औप) ।

अणिसोह वि [अनिशीथ] शास्त्र-विशेष, जो प्रकाश में पडा या पडया जाय (भावय) ।

अणिस्सरुद्ध वि [अनिशीरुद्ध] जिस पर किसी दास व्यक्ति का अधिकार न हो, नर-साधारण (धर्म २) ।

अणिसरा ली [अनिश] अग्रमति, आमाति का प्रभाव (उच) ।

अणिसिय वि [अनिशित] १ अनामत, अग्रमतिरहित (सूत्र १, १६) । २ अनिग्रन्-रहित, स्वाचरितरहित (धर्म १) । ३ अनाश्रित, किसी के साहाय्य की इच्छा न रखनेवाला (उत १६) । ४ न. ज्ञान-विशेष, अवग्रह-ज्ञान का एक भेद, जो निग पा कुत्तर ने बिना ही होता है (ठा ६) ।

अणिह वि [अनोह] १ धीर, सहिष्णु (सूत्र

१, २, २) । २ निष्कपद, सरल (सूत्र १, ८) । ३ निर्मम, निःस्पृह (भावा) ।

अणिह वि [अस्निह] स्नेहरहित (सूत्र १, २, २, ३०) ।

अणोह वि [दे] १ सहस्र, तुल्य । २ न मुन, मुंह (दे १, ५१) ।

अणिह्य वि [अनिहत] अहत, नष्टा मारा हुआ । 'रिड पु' 'रिपु' एक अन्तहृद् मुनि (धर्म ३) ।

अणीदम वि [अनोदरा] इन माफिक नहीं, विलक्षण (स ३०७) ।

अणीय न [अनोक्त] सेना, सरकर (ओप) ।

अणीयस पु [अनीयस] एक अन्तहृद् मुनि का नाम (भक्त ३) ।

अणीस वि [अनीश] असमर्थ (धर्मि ६०) ।

अणीसरुद्ध देखो अणिस्सरुद्ध (धर्म २) ।

अणोहा रम वि [अनिहोमि] गुप्त प्राप्ति में होनेवाला मरण विशेष (भा ११, ८) ।

अणु अ [अनु] यह अण्य नाम और धातु के साथ लगता है और नीचे के धर्मों में से किसी एक को बनलाता है, १ समीर, नवदीक, 'अणुकुल्ल' (गउड) । २ लघु, छोटा 'अणु-गम' (उत ३) । ३ कम, परिपक्वी, 'अणुदुर्ब' (इह १) । ४ में, भीतर, 'अणुजत' (महा) । ५ लघु करना, 'अणु विण अवारि संवीय इलीहि' (कुमा) 'अणु धार मंददुर्बमोति' (गउड) । ६ योग्य, उचित 'अणुवृत्ति' (सूत्र १, ४, १) । ७ बीप्सा, 'अणुदिल' (कुमा) । ८ बीच का भाग, 'अणु-दिसी' (पि ४१३) । ९ धनुरात, हितकर 'अणुयम' (सूत्र १, २, २) । १० प्रतिनिधि, 'अणुयमु' (विह्व २) । ११ पीछे बाढ़ 'अणु-मज्ज' (गउड) । १२ बहुत, अत्यंत 'अणुवक' (भा ६२) । १३ धनद करना महापता करना 'अणुपरिहारि' (ठा ३, ४) । १४ निरर्थक भी हमका प्रयोग होता है देखो अणुअम, अणु-सरिम' ।

अणु वि [अणु] १ बोधा, भय (पगह २, ३) । २ छाया (भावा) । ३ पु परमाणु (मन १३६) । 'अय वि [अन] उत्तम कुन थोड सर (कन) । 'जिरह ली [जिरह] देखो देसविरह (कम्म १, १८) ।

अणु पु [दे] धान विशेष चावल की एक जाति (दे १, ५) ।

'अणु ली [तनु] शरीर, 'सुपणु' (गा २६६) । अणुअ देखो अणु = मणु (नाम) ।

अणुअ वि [अह] अज्ञान, भूल (गा १=४, ३४५) ।

अणुअ पु [दे] १ आकृति, आकार । २ पुत्री, धान्य-विशेष (व १, ५२, आ १८) ।

अणुअ वि [अनुग] अनुसरण करनेवाला, 'अग्रममाणु' (विमा १, १) ।

अणुअ वि [अनुज] १ पीछे से ज्ञान । २ पु छाया भाई । ३ ली छोटी बहिन (धर्मि ८२, पउम २८, १००) ।

अणुअंच सक [अनु + अच्] पीछे लीचना । सक अणुअंचवि (धर्मि) ।

अणुअप सक [अनु + अप्] दिया करना । क अणुअपणिज (हास्य १४४) ।

अणुअंषा ली [अनुअंषा] दिया, करणा (ने १, २४, गा १६३) ।

अणुअंषि वि [अनुअंषि] दिया, करणा करनेवाला (धर्मि १७३) ।

अणुअत्तय वि [अनुअत्तय] अनुकूल आचरण करनेवाला अनुसरण करनेवाला (विह्व ३४०२) ।

अणुअत्ति देखो अणुअत्ति (सूत्र १२६) ।

अणुअर वि [अनुअर] १ महापताकारी, सह-चर (नाम) । २ सेवक, नौकर (प्रामा) ।

अणुअर वि [अनुअर] अनुसरण-कर्ता (हास्य १२१) ।

अणुअह न [दे] प्रमात, सुबह (दे १, १६) । अणुआ ली [दे] लाठी (दे १, ५२) ।

अणुआर पु [अनुआर] अनुसरण (ताड) ।

अणुआरि वि [अनुआरि] अनुसरण करने-वाला (नाम) ।

अणुआस पु [अनुआस] प्रमात, ज्ञान (लाय १) ।

अणुआ पु [दे] धान्य-विशेष, चना (दे १, २१) ।

अणुआ देखो अणुआय ।

अणुआय वि [अनुआय] १ व्यास, भरा हुआ । २ नहीं पिरा हुआ, अग्रजितः 'अग्रजण्यता अणुआयता निदुयनरुद्धता' (मीर) ।

अणायरणया स्त्री [अनाचरण] अणर देखो (सम ७१) ।

अणायरिय देखो अणज = अणाय (पण्ड १, १; पउम १४, ३०) ।

अणायार देखो अणायार = अणकार (विसे) ।
अणायार पुं [अनाचार] १ शास्त्र-निषिद्ध आचरण (स १८८) । २ गृहीत नियमों का जान-बूझ कर उल्लंघन करना, धन-भङ्ग (वव १) ।

अणारिय देखो अणज = अणाय (उवा) ।

अणारिस वि [अनार्य] जो श्रद्धा-पण्णीत न हो वह (पउम ११, ८०) ।

अणारिस वि [अन्यादृश] दूसरे के जैसा (नाट) ।

अणालत्त वि [अनालपित] अनाल, अणपित, नहीं हुआमा हुआ (उवा) ।

अणालवय पुं [अनालवयक] मौन, नहीं बोलना (पाप) ।

अणाव सक [आ + नायय] संवदना, अणा-वेमि (सिदि १४६) ।

अणावरण वि [अनावरण] १ आवरण-रहित । २ न. केवल-ज्ञान (सम्म ७१) ।

अणाथिअ वि [अनाथित] मंगनाया हुआ (सिदि १६; ७१८) ।

अणाधि वि [अनाधृष्टि] वर्षा का अभाव अणाधृष्टि पुं (पउम २०, ८७, सम ६०) ।

अणाथिल वि [अनाथिल] १ निर्मल, स्वच्छ (गण्ड) ।

अणाससि वि [अनाशसिम्] अणिच्छु, निच्छु (वृह १) ।

अणासण देखो अणसण (सुम १, २, १, १४) ।

अणासय पुं [अनाश, क] अणर, अणज-भाव, 'आरस्त सोखस्त अणासएण' (सुम १, ७, १३) ।

अणासय वि [अनाशय] १ अश्व-रहित । २ पुं. आशय का अभाव, संवर । ३ ग्रहिया, दया (पण्ड २, १) ।

अणासिय वि [अनशित] भूखा (सुम १, ५, २) ।

अणाह वि [अनाध] २ शरण-रहित (निबु ३) । २ स्वामि-रहित, मालिन-रहित । ३ रंक,

गरीब, बेचारा (णाय १, ८) । ४ पुं. एक जैन मुनि (उत्त २०) ।

अणाहार पुं [अनाहार] एक दिन का उन्मास (संयोग ५८) ।

अणाहि वि [अनाधि, क] मानसिक अगाधिय पीडा से रहित (सि ३, ४४, सि ३६५) ।

अणाहिट्टि पुं [अनाघट्टि] एक अन्तर्द्व द्वि (अन्त ३) ।

अणिइण देखो अगणिण (विचार २२) ।

अणियय वि [अनियत] १ अनियमित, अर्थ-व्यस्त । २ पु. संसार (भा ६, ३३) ।

अणिउच्चिय वि [अनिउच्चित] टेढा नहीं किया हुआ, सरल (गण्ड) ।

अणिउत्त अणिउत्तय वि देखो अइमुत्त (दि १, ३८; हे अणिउत्तय १, १७८, कुमा) ।

अणिएय वि [अनियत] अनियमित, अग्रति-बद्ध; 'असिले अयिदे अणिएयवाचो, अमयंको मित्तम् अणायिलया' (सुम १, ७, २८) ।

अणिदिय वि [अनिन्दित] १ जिसकी निन्दा न की गई हो वह, उत्तम (धर्म १) । २ पुं. किमर देव की एक जाति (पण्ड १) ।

अणिदिय वि [अनिन्दिय] १ इन्द्रिय-रहित । २ पुं. मुक्त जीव । ३ वेत्तज्ञानी (अ १०) ।

४ वि. अतीन्द्रिय, जो इन्द्रियों से ज्ञान न जा सके, 'नय विजइ तमहणे विगपि अणियिदित्त-एणो' (सु १२, ४८; स १९८, विसे १८६२) ।

अणियिया स्त्री [अनिन्दिया] ऊर्ध्वं लोक में रहनेवाली एक विष्णुमायी देवी (अ १०) ।

अणिक् वि [अनेक] एक से ज्यादा (नव ४३) ।

१ 'वाइ वि 'वादिन्' अविद्यावादी (अ ८) ।

अणिक्किणी स्त्री [अनीकिनी] ऐसी सेवा जिसमें २१८७ हाथी, २१८७ रथ, ६४६१ घोड़े और १०६३५ प्यादे हो (पउम ५६, ६) ।

अणिकिरत्त वि [अनिक्षिप्त] नहीं छोड़ा हुआ, अणित्यक्त, अविच्छिन्न, 'अणिकिरत्तेणं तवोत्तमेणं संजमेणं तवया अणाणं भावेभावे विहरद्' (उवा, धीप) ।

अणियाण वि देखो अणियाण (जोव ३; सम अणियाण १७) ।

अणिग्गह वि [अनिग्गह] स्वच्छन्द, अग्रयत (पण्ड १, ३) ।

अणिक् वि [अनित्य] नश्वर, अस्थायी (नव २४; प्रासु ६५) । १ भावणा स्त्री [भावना] सांसारिक पदार्थों की अनित्यता का चिन्तन (पव ६७) । १ पुण्येहा स्त्री [पुण्येहा] देखो पुण्येहा (अ ४, १) ।

अणिट्टि वि [अनिट्टि] अतीतिकर, द्वेष्य (उव) ।

अणिट्टिय वि [अनिट्टित] असंपूर्ण (गण्ड) ।

अणिण देखो अणिरिण (नाट) ।

अणिदा स्त्री [दे. अनिदा] १ बिना क्लान्त किये की गई हिंसा (भा ११, ५) । २ वित्त की विकलता । ३ शाप का अभाव (भा १, २) ।

अणिमा पुंस्त्री [अणिमन्] भाट सिद्धियों में एक सिद्धि, अत्यन्त छोटा बन जाने की शक्ति (पउम ७, १६६) ।

अणिमिस न [अनिमिय] फल-विशेष (स ५, १, ७३) ।

अणिमिस वि [अनिमिय, मेप] १ निमेष अणिमेस २ दृश्य (सु ३, १७३) । २ पुं. मत्स्य, मछली (स ५, १) । ३ देव, देवता (देव ३; य १६) । नयण पुं [नयन] देव, देवता (विसे ३४८६) ।

अणिव न [अनीक] क्षेम, सशर (कम्) ।

अणिव न [अनृत] असत्य, झूठ (अ १०) ।

अणिय न [दे] धार, अण-भाव (पण्ड २, २) ।

अणिय वि [अनित्य] अस्थिर, अनित्य (उव) ।

अणिवट्ट पुं [अनिवट्ट] १ मोक्ष, मुक्ति (प्राभा १, ५, १) । २ एक महापुरुष (अ २, ३) ।

अणिवट्टि वि [अनिवट्टि] १ निवृत्त नहीं होनेवाला, पीछे नहीं लौटनेवाला (मोप) । २ न. शुद्ध-स्वात्म का एक भेद (अ ४, १) । ३ पुं. एक महापुरुष (चंद २०) । ४ आत्मा की उत्पत्तिपीठ वाला में होनेवाले एक तीर्थंकर देव का नाम (सम १६४) ।

अणिवट्टि वि [अनिवट्टि] १ निवृत्ति-रहित, अव्युत्ति-वर्जित (कर्म २, २) । २ नयनं गुण-स्वानक (कर्म २) । ३ 'करण न [करण] प्राभा का विबुद्ध परिणाम-स्थान (प्राभा) ।

४ 'वादर न [वादर] १ भववा-गुण-स्थानक । २ नयनं गुण-स्वानक में प्रवृत्त गौर (पाव ४) ।

अणियण देखो अणियाण (जोव ३) ।

अणियय वि [अनियय] १ ग्रन्थवस्थित, प्रनि-
यमित (उत्त) । २ कल्पवृक्ष की एक जाति, जो
वक्र देवी है (डा १०) ।

अणिया देखो अणिया (निष्ठ) ।

अणिया जी [दे] धार, भद्र-भाग, शुभरात्री में
'मणी', 'संसारियादा पदया' (धर्मवि १७) ।

अणिरिक्क वि [दे] परलन, पराधीन । (काप्र
५४, गा ६६१) ।

अणिरिण वि [अनृग] मरण-वर्जित, उन्मरण,
मृत्यु (धर्मि ४६, चाप ६६) ।

अणिरुद्ध वि [अनिरुद्ध] १ अग्रसहित, नहीं
रोका हुआ । (सूत्र १, १२) । २ एक अन्न-
हृद् मुनि (अन्न १) ।

अणिल पु [अनिल] १ वायु, पवन (कुमा) ।
२ एक अनीत तीर्थंकर का नाम (तिथ्य) । ३
राक्षस-वशीय एक राजा । (पउम ६, २६४) ।

अणिला जी [अनिला] बार्हव तीर्थंकर की
एक शिष्या (पव ६) ।

अणिल न [दे] प्रमाद, सबेरा (दे १, १६) ।
अणिस न [अनिश] निरुत्तर, सदा, हमेशा
(गा २६२, प्राप् २६) ।

अणिसद्ध १ वि [अनिसुद्ध] १ धनिसिद्ध ।
अणिसिद्ध २ १ धनमत्त, धननुशात । २ ऐसी
निशा, जिसके मालिक अनेक हा भीर जो सब की
अनुमत से सो न गई हो, साधु की निशा का
एक बोध (निष्ठ, जैन) ।

अणिसोह वि [अनिशीय] शास्त्र विरोध, जो
प्रकार में वडा या पडाया जाय (भावम) ।

अणिस्तरुद्ध वि [अनिशीरुद्ध] १ जिन पर
किसी खास व्यक्ति का अधिकार न हो, सर्व-
साधारण (धर्म २) ।

अणिस्ता जी [अनिश] भगवति, भगवति
का भगवत् (उत्त) ।

अणिसिय वि [अनिसित] १ भगवन्,
भगवन्निर्हन् (सूत्र १, १६) । २ प्रविक्क-
रहित, रक्तावटरहित (सम १) । ३ भगवन्,
किमी के साहाय्य की इच्छा न रखनेवाला
(उत्त १६) । ४ न. मान-विरोध, व्यवह-
सान का एक भेद, जो लोग या फुल्लन के बिना हो
होना है (डा ६) ।

अणिह वि [अनोह] १ धीर, सहिष्णु (सूत्र

१, २, २) । २ निष्कपट, सरल (सूत्र १, ८) ।
३ निर्मम, निःस्वह (भाषा) ।

अणिह वि [अस्निह] स्नेहरहित (सूत्र १, २,
२, ३०) ।

अणिह वि [दे] १ सहस्र, तुल्य । २ न. सुख,
मुंह (दे १, ५१) ।

अणिहय वि [अनिहय] अहन. नहीं मारा
हुआ । 'रिउ दुं' [रिपु] एक अन्नहृद् मुनि
(अन्न ३) ।

अणीश्म वि [अनीह्रा] इस मार्फिक नहीं,
विलक्षण (न ३०७) ।

अणीय न [अनीक] सेना, सरकर (भीर) ।
अणीयस पु [अनीयस] एक अन्नहृद् मुनि का
नाम (अन्न ३) ।

अणीस वि [अनीक] असमर्थ (धर्मि ६०) ।
अणीसरुद्ध देखो अणिस्तरुद्ध (धर्म २) ।

अणीहारम वि [अनिहारिम] गुण भावि में
होनेवाला मरण-विरोध (भा १३, ८) ।

अणु अ [अनु] यह अन्वय नाम भीर धातु के
साथ संगता है और नीचे के धर्मों में से किसी
एक की बनता है, १ सपीर, नजदीक,
'अणुकुडम' (गउड) । २ सनु, छोटा, 'अणु-
नाम' (उत्त ३) । ३ कम, परिधीय, 'अणुबुद्ध'
(बुद्ध १) । ४ में, भीतर, 'अणुजत' (महा) ।

५ लक्ष्य करना, 'अणु निण अकारि मणीयं
इत्थीहि' (कुमा) । 'अणु धार मंठुं भगवतिप
तुह अस्मिन् सच्चविया' (गउड) । ६ योग्य,
जचित, 'अणुजति' (सूत्र १, ४, १) । ७ बोधता,
'अणुदिण' (कुमा) । ८ बीच का भाग, 'अणु-
निस्ती' (वि ४१३) । ९ अणुत्तर, हितकर,
'अणुपम्म' (सूत्र १, २, १) । १० प्रतिनिधि
'अणुपुत्त' (निबु २) । ११ पीछे बाध, 'अणु-
मज्ज' (गउड) । १२ बहुत, अन्वय 'अणुवक'
(भा ६२) । १३ मदद करना, महावता करना
'अणुपरिहारि' (डा ३, ४) । १४ निरर्थक भी
इसका प्रयोग होता है, देखो 'अणुपम्म', अणु-
सरिय' ।

अणु वि [अणु] १ बीडा, अल (पण्ड २, ३) ।
२ छाटा (भाषा) । ३ पु परमाणु (अम्म
१३६) । 'मय वि [मत] उत्तम बुद्ध श्रेष्ठ
वरं (नय) । 'विरइ जी [विरति] देखो
देसविरइ (अम्म १, १८) ।

अणु वि [अणु] १ बीडा, अल (पण्ड २, ३) ।
२ छाटा (भाषा) । ३ पु परमाणु (अम्म
१३६) । 'मय वि [मत] उत्तम बुद्ध श्रेष्ठ
वरं (नय) । 'विरइ जी [विरति] देखो
देसविरइ (अम्म १, १८) ।

अणु वि [अणु] १ बीडा, अल (पण्ड २, ३) ।
२ छाटा (भाषा) । ३ पु परमाणु (अम्म
१३६) । 'मय वि [मत] उत्तम बुद्ध श्रेष्ठ
वरं (नय) । 'विरइ जी [विरति] देखो
देसविरइ (अम्म १, १८) ।

अणु पु [दे] धान-विरोध, चावल की एक जाति
(दे १, ५) ।

'अणु जी [तनु] शरीर, 'अणु' (गा २६६) ।
अणुअ देखो अणु = अणु (नाम) ।

अणुअ वि [अज] अज्ञान, भूलें (गा १८४,
३४५) ।

अणुअ पु [दे] १ माहति, भाकार । २ पुत्री,
धन्य विरोध (दे १, ५२, या १८) ।

अणुअ वि [अनुअ] अनुसरण करनेवाला,
'अवममाणु' (विषा १, १) ।

अणुअ वि [अनुअ] १ पीछे में जाना । २ पु,
छोटा भाई । ३ जी छोटी बहिन (धर्मि ८२,
पउम २८, १००) ।

अणुअच सक [अनु + कृप्] पीछे कीचना ।
सह, अणुअचियि (मवि) ।

अणुअप सक [अनु + कृप्] दया करना ।
ह. अणुअपणिज्ज (हाल्प १४४) ।

अणुअपा जी [अनुअपा] दया, कल्याण (मि
६, २४, गा १६३) ।

अणुअंयि वि [अनुअंयि] दयातु, कल्याण
करनेवाला (धर्मि १७३) ।

अणुअसय वि [अनुअसय] अनुसरण
करनेवाला अनुसरण करनेवाला (विते
४४२) ।

अणुअत्ति देखो अणुअत्ति (सुत्त ३२६) ।

अणुअर वि [अनुअर] १ सहामताकारी, सह-
चर (नाम) । २ सेवक, नौकर (प्राप्ता) ।

अणुअर वि [अनुअर] अनुसरण-कर्ता (हाल्प
१२१) ।

अणुअल वि [दे] प्रमाद, सुबह (दे १, १६) ।
अणुआ जी [दे] साड़ी (दे १, ५२) ।

अणुआर पु [अनुआर] अनुसरण (नाड) ।
अणुआरि वि [अनुआरि] अनुसरण करने-
वाला (नाड) ।

अणुआस पु [अनुआस] प्रमार, विजान
(णाय १, १) ।

अणुअउ पु [दे] धान्य-विरोध, चना (दे
१, २१) ।

अणुअउ देखो अणुअउ ।

अणुअउय वि [अनुअउय] १ व्यास, भरत हुआ ।
२ नहीं मिरा हुआ, भगवत्, 'अवसारणता
अणुअउयता निदुअरअउयता (भीर) ।

अणुङ्गण वि [अनुद्वीर्ण] बाहर नही निकला हुमा (शेष) ।
 अणुङ्गण देखो अणुचिपण ।
 अणुङ्गण देखो अणुदिण ।
 अणुऊल वि [अनुकूल] घरति कूल, अनुकूल (गा ५२३) ।
 अणुऊल सक [अनुकूल्य] अनुकूल करना । भवि. मणुऊलहस्तं (ति ५२८) ।
 अणुओज पुं [अनुयोग] १ व्याख्या, टीका, सूत्र का विस्तार से अर्थ-प्रतिपादन (शेष २) । २ पृच्छा, प्रश्न (मभि ४४) ।
 अणुओह्य वि [अनुयोजित] प्रवर्तित, प्रवृत्त कराया हुमा (एदि) ।
 अणुओग देखो अणुओज (विसे ६) ।
 अणुओग पुं [अनुयोग] सम्बन्ध (यु १७) ।
 अणुओगि पु [अनुयोगिन्] धूनी का व्याख्याता, भाष्यार्थ, 'मणुओगी लोगाण कल सख-यासमो बह होइ' (पचव ४) ।
 अणुओगिगि वि [अनुयोगिक] दीक्षित, धुनि-धिय (एदि) ।
 अणुओयण न [अनुयोजन] सम्पन्न, जोडना (विसे १३६९) ।
 अणुकंप सक [अनु+कम्प] १ दया करना । २ भक्ति करना । ३ हित करना । वक्तु अणु-कंपत (नाट) । क अणुकंपणिज्ज, अणु-कंपणीज (मभि ६४, रयण १५) ।
 अणुरुप वि [अनुकम्प्य] अनुकम्पा के योग्य (दि १, २२) ।
 अणुर्वप } वि [अनुकम्प, *क] १ दयालु, अणुकम्प्य करता । २ भक्त, भक्तिमान् (उत्त १२), 'हिमाणुवपण देण हसिणमसिणा' (वप्य) । ३ हितकर, 'मापाणुवपण एाममेगे, मो पराणुवपण' (डा ४, ४) ।
 अणुर्वपण न [अनुकम्पन] १ दया, दया (वव ३) । २ भक्ति, सेवा, 'माउमणुवपणट्ठाए' (वप्य) ।
 अणुरंभा श्री [अनुकम्पा] ऊपर देखो (छाया १, १), 'मापरियणुवपण गच्छो मणुवपिमो महाभागो' (वप्य-टी) । 'दान न [दान] बरणा से मरीयो नो मम भादि देना, 'मणु-कंपादणं सद्धमाण न बहिंमि परिमिद्ध' (पमं २) ।

अणुकंपि वि [अनुकम्पित] १ दयालु, दयालु (भात ७५) । २ भक्ति करनेवाला (सूय १, ३, २) ।
 अणुकंपिअ वि [अनुकम्पित] जिस पर अनु-कम्पा की गई हो वह (नाट) ।
 अणुकड्ह सक [अनु+कृप्] १ खीचना । २ अनुसरण करना । वक्तु अणुकड्हमाण, अणुकड्हमाण (विपा १, १, एदि) ।
 अणुकड्हि श्री [अनुकृष्टि] अनुवर्तन, अनु-सरण (पच ५) ।
 अणुकड्हिय वि [अनुकृष्ट] अनुकृत, अनुकृत (स १२२) ।
 अणुकृप् पु [अनुकृत्य] १ बड़े पुरखों के मार्ग का अनुकरण । २ वि. महापुरुषों का अनुकरण करनेवाला, 'एणाणवरणड्डाण पुब्बापरियाण मणुवित्ति कुणए, मणुगच्छइ कुणवारी, मणु-कृप् त विमाराहि' (पचमा) ।
 अणुक्रम पु [अनुक्रम] परिपाटी, क्रम (महा) । 'सो ध [शस्] क्रम से, परिपाटी से (जो २८) ।
 अणुकर सक [अनु+कृ] अनुकरण करना, नवल करना । मणुकरइ (स ४३६) ।
 अणुकरण न [अनुकरण] नकल (वव ३/१) ।
 अणुकड्ह सक [अनु+कथ्य] अनुवाद करना, पीछे बोलना ।
 अणुकड्हण न [अनुकथन] अनुवाद (सूय १, १३) ।
 अणुसार पु [अनुसार] अनुकरण, नवल (वप्य) ।
 अणुसारि वि [अनुसारि] अनुकरण करने-वाला, 'किन्नराणुवारिणा महुरोएण' (महा) ।
 अणुविइ श्री [अनुकृति] अनुकरण, नवल, पुब्बापरियाण नाएणमहोएण य ततोविहाणेणु न मणुविइ नरेइ' (पच) ।
 अणुकिण्य वि [अनुकीर्ण] व्याप्त, भर हुमा (पठम ६१, ७) ।
 अणुकिण्ण न [अनुकीर्तन] कर्णन, प्रशंसा, दयाणा (पठम ६३, ७३) ।
 अणुकिण्णि देखो अणुकिइ (पचमा) ।
 अणुकुइय वि [अनुकुचित] १ पीछे पंजा हुमा । २ ऊँचा किया हुमा (निज्ज ८) ।

अणुकुण सव [अनु+कृ] अनुकरण करना । मणुकुणइ (निज्ज १२६) ।
 अणुकूल देखो अणुऊल (हे २, २१७) ।
 अणुकूलण न [अनुकूलन] अनुकूल करना, प्रसन्न करना, 'त कहइ । तम्मम्मे जिउमुणी तच्चित्तसुकुलणय ज' (सुपा २३४) ।
 अणुकूलि वि [अनुकूलि] अनुकूल-नारक, 'सुहभिरजोगाणुकूलिणो मणिमा' (संघोष ६) ।
 अणुकुर्वत वि [अनुवाक्रान्त] भावित, अनु-हित (भावा) ।
 अणुकुर्वत वि [अनुक्रान्त] भावित, विहित, अनुहित, 'एस विही मणुकुर्वते माहोएणं मह-मया (भावा) ।
 अणुकर्म सक [अनु+कर्म] क्रम से कहना । भवि. मणुकर्मिस्तामि (वीवस १) ।
 अणुस्कम सक [अनु+क्रम] धर्तिक्रमण करना । वक्तु अणुकर्मत (सूय १, ५, १, ७) ।
 अणुस्कम देखो अणुक्रम (महा, नव १६) ।
 अणुकर्मण न [अनुक्रमण] गमन, गति, (सूय १, ५, २, २१) ।
 अणुकुइअ वि [अनुकुचित] मोटा संकुचित (वव ६२) ।
 अणुक्रोस पु [अनुक्रोश] दया, बरणा (डा ४, ४) ।
 अणुक्रोस पु [अनुकथ्य] १ उत्तर्य का धभाव । २ वि. उत्तरवर्हित (मग ८, १०) ।
 अणुकिरत्त वि [अनुक्ति] ऊँचा न दिया हुमा, 'दिट्ठ मणुकिरत्तयुइ एसो मगो कुल-वहूण' (गा ५२६) ।
 अणुग वि [अनुग] अनुवर, नीकर (दि ७, ६६) ।
 अणुग वि [अनुग] अनुसरण-कर्ता (गच्छ ३, ३१) ।
 अणुगंतव देयो अणुगम = अनु + गम् ।
 अणुगपा श्री [अनुगम्पा] बरणा, दया (स १५८) ।
 अणुगंमियि वि [अनुगम्पित] जिस पर बरणा की गई हो वह (ग ४७३) ।
 अणुगच्छ देयो अणुगम = अनु + गम् । मणु-गच्छइ बह. अणुगच्छत, अणुगच्छमाण

(नाट) सूत्र १, १४)। कवक. 'अणुगच्छिजंत
(गाथा १, २)। संक. अणुगच्छिता (वप)।

अणुगच्छग देखो अणुगामग (गुफ ४०८)।
अणुगच्छिर वि [अनुगामिन] अनुगण
करनेवाला (गण)।

अणुगज भव [अनु + गर्ज] प्रतिव्यवि
करना, प्रतिशब्द करना। वक. अणुगज्जे-
माण (गाथा १, १८)।

अणुगम सक [अनु + गम्] १ अनुगण
करना, पीछे-पीछे जाना। २ जानना, सम-
झना। ३ व्याख्या करना, सूत्र के अर्थों का
स्थीकरण करना। कर्म. अनुगममह (विसे
११३)। वक. अनुगममंत, अनुगममाण
(उप ६ टी. सुपा ७८. २०८)। संक. अनुगम
(सूत्र १, १४)। क. अनुगतव (सुर ७,
१७६, पण १)।

अणुगम पुं [अनुगम] १ अनुसरण, अनुवर्तन
(दि २, ६६)। २ जानना, ठीक-ठीक समझना,
निरूपण करना (ठा १)। ३ सूत्र की व्याख्या,
सूत्र के अर्थों का स्थीकरण (वव १)। ४
अन्वय, एक की सत्ता में दूसरे की विद्यमानता
(विसे २६०)। ५ व्याख्या, टीका (विसे १३
५७)। अनुगममह तैल तह, तमो न अनुगम-
णमेव वाणुगमो। 'अणुगोणुख्यमो वा, जं
मुत्तराणमणुसरणं' (विसे ११३)।

अणुगमण न [अनुगमन] ऊपर देखो।

अणुगमिअ वि [अनुगत] अनुसृत (कुत्र
४३)।

अणुगमिर वि [अनुगन्त] अनुसरण करने-
वाला (दि ६, १३७)।

अणुगय वि [अनुगत] १ अनुसृत, निम्नका
अनुसरण किया गया हो वह (पण १, ४)।
२ जात, जाना हुआ (विसे)। ३ अनुसृत, जो
पूर्व से बराबर चला आया हो (पण १,
३)। ४ प्रतिज्ञात (विसे ६४६)।

अणुगर देखो अनुकर। अनुगरेद (स ३३४)।
वह. अनुगरित (स ६८)।

अणुगण देखो अनुकरण (कुत्र १७६)।

अणुगवेस सक [अनु + गवेप्] खोजना,
शोधना, तलाश करना। अनुगवेसद (वस)।

वह. अनुगवेसेमाण (मग ८, ५)। क
अणुगवेसियञ्च (कस)।

अणुगह देवो अनुगमाह = अनु + ग्रह. (नाट)।
अणुगहिअ देखो अनुगिहिअ (दे ८, २६)।
अणुगाम पुं [अनुगाम] १ छोटा गांव, (उत्त
३)। २ उपर, गहर के पास का गांव (ठा
५, २)। ३ विपश्चित गांव से दूसरा गांव,
'गामाणुगमं दुइवमाले' (विपा १, १. नीप,
प्राका)। -

अणुगामि } वि [अनुगामिन्, 'मिक्']
अणुगामिय } १ अनुसरण करनेवाला, पीछे-
पीछे जानेवाला (भीप)। २ निरीन हेतु, गुरु
कारण (ठा ३, ३)। ३ अवस्थित का एक
भेद (कम्म १, ८)। ४ अनुकर, सेवक (सूत्र
१, २, ३)।

अणुगारि वि [अनुकारिन्] अनुकरण
करनेवाला, नकालची (महा, धर्म ५; स
६३०)।

अणुगिहो [अनुकृति] अनुकरण, नकल
(था १)।

अणुगिह देवो अनुगमाह = अनु + ग्रह। वक.
अणुगिहमाण, अणुगिहमाण (निर १,
१. गाथा १, १६)।

अणुगिह वि [अनुगृह] श्रयन्त आसक्त,
लौपु (सूत्र १, ७)।

अणुगिहो [अनुगृहि] अव्यावर्तित (उत्त
३२)।

अणुगिल सक [अनु + गृ] भक्षण करना।
संठ. अणुगिलिता (गाथा १, ७)।

अणुगिहीअ वि [अनुगृहीत] जिस पर गेह-
रबानी की गई हो वह (स १४; १६३)।

अणुगीय वि [अनुगीत] १ पीछे कहा हुआ,
अनुवृत्त। २ पूर्व अन्वयकार के साव के अनुसृत
किया हुआ श्रव्य, व्याख्यान प्रादि (उत्त १३)।
३ जिसका जान किया गया हो वह, नीतित,
वर्णित। ४ न. गाना, गीत, 'उत्तारो' मत्त-
नियण्णो' (पठम ३३, १४८)।

अणुगण वि [अनुगण] १ अनुसृत, उचित,
योग्य (नाट)। २ तुल्य, सदृश गुणवाना,
जान प्रत्येकप्रमाण, बिहवो
मद्वेद वेवि वइठो।

विच्छाएद मिअक, तुसार-

वरितो मणुगुलेवि' (गउठ)।

अणुगुरु वि [अनुगुरु] श्रुत-परम्परा के अनु-
सार जिस विषय का व्यवहार होता हो वह
(इह १)।

अणुगूल वि [अनुकूल] अनुसृत (स ३७८)।

अणुगेवम वि [अनुग्राह] अनुग्रह के योग्य,
कृपा-पात्र (प्राप)।

अणुगेह देखो अनुगमाह = अनु + ग्रह।
अणुगेहवु (वि ५१२)।

अणुगह सक [अनु + ग्रह] कृपा करना,
मेहरबानी करना। क. अणुगहइइव, अणु-
गमाहिइव (सी) (नाट)।

अणुगह पुं [अनुग्रह] १ कृपा, मेहरबानी
(कप्प)। २ उपकार (भीप)। ३ वि. जिस
पर अनुग्रह किया जाय वह (वव १)।

अणुगह पुं [अनवग्रह] जैन साधुओं को
खून के लिए शास्त्र-निषिद्ध हत्या,
'एो गोपरे एो वण्णोणियमो, एो बड
दुवर्कित य कण्य गावो।

अणुगह एो गेहेहिमु जण्य कुएणं, स उगहो
तेममणुगहो दु' (इह १)।

अणुगहिअ } वि [अनुगृहीत] जिस पर
अणुगहीअ } कृपा की गई हो वह, आभारी
अणुगिहीअ } (महा. सुपा १६२; स ६७)।

अणुगघायम न [अनुद्वाविम] १ महा-प्राय-
चित्त का एक भेद (ठा ३, ४)। २ वि. महा-
प्रायचित्त का पात्र (ठा ३, ४)।

अणुगघाइ वि [अनुद्वातिक्] १ अनुद्वातित
नामक महा-प्रायचित्त का पात्र (ठा ५, ३)।
२ न. प्रत्यार-विशेष, जिसमें अनुद्वातित
प्रायचित्त का वर्णन है (पण २, ५)।

अणुगघाय वि [अनुद्वात] १ उद्घात-रहित।
२ न. निरीय सूत्र का वह भाग, जिसमें अनु-
द्वातित प्रायचित्त का विचार है, 'उधायम-
णुग्घाय शरोरण तिबिहो निवीहं दु'
(पाव ३)।

अणुगघाय न [अनुद्घाव] श्रुत-प्रायचित्त
(वव १)।

अणुगघायण न [अणोद्घातन] बर्णों का नारा
(प्राका)।

अणुग्यास सक् [अनु + ग्रासय्] सीताता, भोजन कराना, 'असण् वा पाण् वा खादम् वा साहम् वा ग्रणुग्यासेज् वा ग्रणुपाएज् वा' (नित्ति ७)। वङ्. अणुग्यासंत (नित् ७)।
अणुचय पु [अनुचय] पैलाकर इकठ्ठा करना (उप ५ १५)।

अणुचर सक् [अनु + चर्] १ सेवा करना। २ पीछे-पीछे जाना, अनुसरण करना। ३ अनुष्ठान करना। अणुचरइ (भावा ६)। अणुचरति (स १३०)। बर्म अणुचरिजइ। (विसे २५५५)। वङ्. अणुचरंत (पुष्क ३१३)। सङ्. अणुचरिन्ता (वउ १४)।

अणुचर देखो अणुअर (उत २८)।
अणुचरग वि [अनुचरक] सेवा करनेवाला (पव ६६)।

अणुचरिय वि [अनुचरित] अनुष्ठित, विहित, किया हुआ (कप्)।

अणुचि सक् [अनु + च्य] मरना, एक जन्म से दूसरे जन्म में जाना। सङ्. अणुचि-ऊण (महा)।

अणुचित सक् [अनु + चिन्त्] विचारना, याद करना, सोचना। अणुचिते (सया ६६)। वङ्. अणुचितेमाण (णामा १, १)। सङ्. अणुचीइ, अणुचीति, अणुचीइ (भावा, सूत्र १, १, ३, १३, वन ७)।

अणुचितण न [अनुचिन्तन] सोच-विचार, पर्यालोचन (भाव ६)।

अणुचित्ता की [अनुचि-ता] ऊपर देखो (भाव ४)।

अणुचिट्ठ सक् [अनु + रथा] १ अनुष्ठान करना। २ करना। अणुचिट्ठइ। (पहा)।

अणुचिण्य वि [अनुचीणे] १ अनुष्ठित, प्राचरित, विहित, 'मोहनिगिण्ठा स वया, विरिया-यारो स मणुचिरणो' (धोप २४६)। २ प्राप्त, मिना हुआ, 'वायमचासमाणुचिएणा एणइया पाणा उदाइया' (भावा)। ३ परिणामित (जोव १)।

अणुचिण्यय वि [अनुचीर्णयन्] जिसने अनुष्ठान किया हो वह (भावा)।

अणुचिन्न देनो अणुचिण्य (सुगा १६२, रमण ७५, पुष्क ७५)।

अणुचिय वि [अनुचित] अयोग्य (बृह १)।
अणुचीइ } देखो अणुचित।
अग्रचीति }

अणुच वि [अनुच] ऊचा नहीं, नीचा।
'इड्डिय वि [इड्डिकि] नीची धौर ग्रस्मिण रम्या वाला (कप्)।

अणुन्छइत वि [अनुत्सहमान] उत्साह नहीं रखता हुआ (पउम १८, १८)।

अणुन्छित्त वि [अनुत्तिताम्] नहीं छोड़ा हुआ, अ यत् (मउड २३८)।

अणुन्छत्त वि [अनुत्थित] १ बर्ब रहित, विनीत। २ स्वेत, समृद्ध। ३ सब से ऊनत, सर्वाथ 'पडिबद्ध नवर सुमे, नरिदवड पयाव-वियडपि। गह्वतयमणुच्छित्ते पुवेव्य, परिवत्तइ सारि' (मउड)।

अणुन्छुइ वि [अनुच्छम्] धन्यत, नहीं छोड़ा हुआ (गा ५२६)।

अणुज पु [अनुज] छोटा भाई (स १८८)।

अणुजत्त न [अनुयात्र] यात्रा में, 'अणुयाया मणुजत्त निग्गमो पेच्छइ कुमुमिय पूव' (महा)।
अणुनत्ता की [अनुयात्रा] निर्गम, नि सरण (सिंह ८८)।

अणुजा सक् [अनु + या] अनुसरण करना, पीछे चलना। अणुजाइ (विसे ७१६)।

अणुजाइ वि [अनुयायि] अनुसरण करने-वाला (सुवा ४०५)।

अणुजाइ की [अनुयायि] अनुसरण (धर्म-वि ५६)।

अणुजाण न [अनुयान] १ पीछे-पीछे चलना। २ महात्मा-विशेष, रथयात्रा (बृह १)।

अणुजाण्य सक् [अनु + ज्ञा] अनुमति देना, सम्मति देना। अणुजाणइ (उव)। बुना.

अणुनारिण्ठा (वि ११७)। हेइ. अणुजा गित्तप (डा २, १)।

अणुजण्य न [अनुज्ञान] अनुमति, सम्मति (सूत्र १ ९)।

अणुजाणायण न [अनुज्ञापन] अनुमति देना, अणुजाणायणविहिया' (पपा ६, १३)।

अणुजाणिय वि [अनुज्ञात] सम्मन, अनुमन (सुवा ५८४)।

अणुजाय वि [अनुयात] १ अनुपन, अनुपन (उा १३७ टी)।

अणुजाय वि [अनुजात] १ पीछे में उत्पन्न। २ सदृश, तुल्य, 'वसभाणुजा' (मुज १२)।

अणुजीव सक् [अनु + जीव्] आश्रय करना।
अणुजीवति (उत १८, १४)।

अणुजीवि वि [अनुजीविन्] १ आश्रित, नौकर, सेवक, 'पयईए विम अणुजीविच्छले' (सुमा ३३७, पाप्म, स ५३१)। 'त्तण न [इ] आश्रय, नौकरो (वि ३६७)।

अणुजुज सक् [अनु + युज्] प्रभ करना।
बर्म. अणुजुजते (धर्मस २९३)।

अणुजुत्ति की [अनुयुक्ति] योग्यवृत्ति, उचित न्याय (सूत्र १, ३, ३)।

अणुजेइ वि [अनुज्येष्ठ] १ वडे के नजदीक का (भावम)। २ छोटा, उतरता (पउम २२, ७६)।

अणुजोरा देखो अणुओअ (ठा १०)।

अणुजा वि [अनूज्] उत्साह-रहित, मनु साही, हताश (कप्)।

अणुज्ज वि [अनोज्ज] तेजरहित, कीका, 'अणुज्ज कीगवण्य विहरइ' (कप्)।

अणुज्ज वि [अनूज्] बड़ेरथ, लक्ष्य (धर्म १)।

अणुजा की [अनुज्ञा] अनुमति, सम्मति (पउम ३८, २४)।

अणुजा देखो अणोजा (भावा २, १५, ३)।
अणुजय वि [अनुजित] बल रहित, निर्बल (बृह ३)।

अणुजुय वि [अनुजुक्] समलन, वक्, कपटी (गा ७८६)।

अणुग्मा सक् [अनु + ध्या] चिन्तन करना, ध्यान करना। मङ्. अणुग्माइत्ता (भावम)।

अणुग्माण न [अनुध्यान] चिन्तन, विचार (भावम)।

अणुग्मा देना अणुग्मा। वङ्. अणुग्मारत्त (कुपा)।

अणुग्मिअ वि [दि] १ प्रयत्, प्रय न-शीन। २ जानना, मायान (पर १)।

अणुग्मिज्जिज वि [अनुत्तयिन्] क्षीण होने-वाला (वज १, २)।

अणुद्र वि [अनुत्थ] नहीं उठा हुआ, स्थित (भाप ७०)।

अणुद्रा सक् [अनु + रथा] १ अनुष्ठान करना, शास्त्रात विधान करना। २ करना। ३ अणु-

द्वियवन्, अणुद्वेअ (मुपा ५३७, सुर १४, ८५) ।

अणुद्वाइ वि [अनुद्वायिन्] अनुद्वायन करने-
वाला (प्राचा) ।

अणुद्वाण वि [अनुद्वाण] १ कृति । २ खात्रोक्त
विधान (प्राचा) ।

अणुद्वाण न [अनुद्वायान] क्रिया का अभाव
(उवा) ।

अणुद्वाणन न [अनुद्वापन] अनुद्वायन करना
(कस) ।

अणुद्विय वि [अनुद्वित] विधि से मपाविन,
विरित, किया हुआ (पद्, सुर ४, १६६) ।

अणुद्विय वि [अनुद्वित] १ बैठा हुआ । २
प्राप्त, प्रमादी (प्राचा) ।

अणुद्वियवन् देखो अणुद्वा ।

अणुद्विभु न [अनुद्विभु] एक प्रसिद्ध खद,
‘पञ्चसवरमणुपाए अणुद्विभुमाए हसति दस
सहस्रा (मुपा ६४६) ।

अणुद्विअ देखो अणुद्वा ।

अणुगु देखो अणुगो । अणुगह (अवि) ।

अणुगंत देखो अणुगो ।

अणुगय पुं [अनुगय] वितय, प्रार्थना (महा-
भार १११) ।

अणुगाइ वि [अनुगादिन्] प्रतिष्ठावि करने
वाला, ‘गजियवहस अणुगाइण’ (क१) ।

अणुगाय पुं [अनुगाय] प्रतिष्ठावि, प्रतिशब्द
(विसे ३४०४) ।

अणुगाय वि [अनुगाय] अनुमत, अनुमोदित
(पञ्च) ।

अणुगास पुन [अनुगास] अनुगामिन्, जो
नाक से बोना जाता है वह प्रसर । २ वि
सामुत्सार, अनुत्सार-पुन (ठा ७), वायुत्सार-
मणुगास वं (जीव ३ टी) ।

अणुगासिअ पुं [अनुगासिक] देखो ऊपर का
पहला अर्थ (पञ्च १) ।

अणुगो सक् [अनु + नी] १ अनुगम करना,
वितय करना, प्रार्थना करना । २ सम्पन्नता,
दिलाला देना, मानवना देना । वरु अणुगंत,
‘पुत्रेयि ॥ वमलोणुख’ (उत्त १४, अवि),
अणुगंत (ठा ६०२) । वरु, अणुगिज्जंत,
अणुगिज्जमाण, अणुगीअमाण (मुपा ३६७,
मे २, १६, वि ५३६) ।

अणुगोअ वि [अनुनीत] जिसका अनुगम
किया गया हो वह (हे ८, ४८) ।

अणुगंत देखो अणुगो ।

अणुगणय वि [अनुगण] १ नीचा, नम्र (हस
५, ११) । २ गर्वरहित, निर्गमिनी, ‘एत्यवि
भिम्भु अणुगणए विलीए’ (गृध १, १६) ।

अणुगणय सक् [अनु + ज्ञापय] १ अनु-
मति देना । २ प्रज्ञा देना, हुकुम देना । कर्म-
अणुगणयिअइ (उवा) । वरु, अणुगणवेमाण
(ठा ६) । क अणुगणवेयक (घोष ३८५
टी) । संह, अणुगणयिता, अणुगणयि
(प्राचम, प्राचा २, २, ६) ।

अणुगणयया } औ [अनुज्ञापना] १ अनु-
अणुगणयया } मति, सम्मति । २ प्रज्ञा,
फरमाइश (सम ४४, घोष ३८५ टी) ।

अणुगणयगी न्वी [अनुज्ञापनी] अनुपति-अक-
राव भाषा अनुमति लेन का वाक्य (ठा ४, ३) ।

अणुगणा को [अनुज्ञा] १ अनुमति, अनुमोदन
(सम २, २) । २ प्रज्ञा । ‘अप्य पुं [अल्प]
जैन साधुओं के लिए वस्त्र-पानादि लेने के विषय
में शास्त्रीय विधान (पञ्चमा) ।

अणुगणा को [अनुज्ञा] १ पठन विषयक
गुरु-प्राज्ञा-विरह (अनु ३) । २ सूत्र के अर्थ का
अध्ययन (वच १) ।

अणुगणाय वि [अनुज्ञाव] १ जिससे प्रज्ञा
दी गई हो वह । २ अनुमत अनुमोदित (ठा
३, ४) ।

अणुगण वि [अनुगण] ठाडा, जो गरम नहीं है
वह (वि ३१२) ।

अणुतड पुं [अनुतड] भेद, पदार्थों का एक
जाति का घुसकरण, जैसे सतत लोहे की
हथौड़े से पीटने से स्फुरित (चिन्तागरी) घुस-
होते हैं (ठा ५) ।

अणुतडिया को [अनुनाटिका] १ ऊपर देखो
(पण ११) । २ सत्ताव, ब्रह्म यादि का नेद
(भास ७) ।

अणुतप्य सक् [अनु + तप] अनुगत करना,
पक्षाना । अनुतपयि (मे १८४) ।

अणुनापि वि [अनुनापिच] पथात्ताप करने-
वाला (वच) ।

अणुनाप सक् [अनु + तापय] तपना ।
संह, अणुनापिता (गृध २, ४, १०) ।

अणुताप पुं [अनुताप] पथात्ताप (पाद, म
१८४) ।

अणुतावय वि [अनुतापक] पथात्ताप करने-
वाला (सूत्र २, ७, ८) ।

अणुतावि देखो अणुनापि (वच ७२८ टी) ।

अणुत वि [अनुक्त] अक्षयि (पच ५) ।

अणुतंत देखो अणुतत ।

अणुतत्प वि [अनुत्तप्य] १ परिपूर्ण शरीर ।
२ पूर्ण शरीरवाता, हृद् अणुतत्पों से अवि-
गत इन्द्रियपिण्डुएणों (वच २) ।

अणुत्तर वि [अनुत्तर] १ सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम
(ठा १०) । २ एक सर्वोत्तम देवलोक का
नाम (अनु) । ३ छोटा, ‘अणुत्तरो भाषा’
(पचम ६, ४) । ‘गगा ली [प्रपा] एक
प्रसिद्धी, जहां कुछ जीवों का निवास है (सूत्र
१, ६) । ‘णाणि वि [ज्ञानिन्] केवलज्ञानी
(सूत्र १, २, ३) । ‘यिमान न [यिमान]
एक सर्वोत्कृष्ट देवलोक (भग ६, ६) । ‘यथाइय
वि [‘‘पपातिक] अनुत्तर देवलोक में
उत्पन्न (अनु) । ‘यथाइयदसा ली. व.
[‘‘पपातिन्दसा] नववां जैन अग्र-अग्र
(अनु) ।

अणुत्थाण देखो अणुद्वाण (म ६४६) ।

अणुत्थारय वि [अनुत्साह] हतोत्साह, निराश
(कुमा) ।

अणुत्त पुं [अनुदात्त] नीचे से बोना जाने-
वाला स्वर (वृह १) ।

अणुदय पुं [अनुदय] १ उदय का अभाव ।
२ अर्थ-पन्न के अनुभव का अभाव (कम्म २,
१३, १४, १५) ।

अणुदयि न [दे] प्रभात, सुबह (दे १, १६) ।

अणुदिअ वि [अनुदित] जिसका उदय न
हुआ हो (भग) ।

अणुदिअस न [अनुदिनस] प्रतिदिन, हमेशा
(नाट) ।

अणुदिज्जंत वि [अनुदीयमान] उदय में न
प्राता हुआ (भग) ।

अणुदिग न [अनुदिन] प्रतिदिन, हमेशा
(कुमा) ।

अणुदिग } वि [अनुदित] १ उदय को
अणुदिग } अभाव । २ पान-पान में अतःपर

(कर्म) (भग १, २, ३), 'उदिरण = उदित'
(भग १, ४, ७ टी) ।

अणुविण्ण } व [अनुदीरित] १ जिसको
अणुदिन्न } उदीरणा दूर भविष्य में हो ।
२ जिसकी उदीरणा भविष्य में न हो (भग
१, ३) ।

अणुदिय वि [अनुदिय] उद्य को अप्राप्त
'मिच्छत अणुदिन त क्षीण अणुदिय च उव-
सत्' (भग १, ३ टी) ।

अणुदियह न [अनुदियस] प्रतिदिन, हमेशा
(सुर १, ११५) ।

अणुदिव न [दि] प्रगत, प्राप्त काल (पइ) ।
अणुदिसा } क्षी [अनुदिक] विदिह,
अणुदिसी } ईशान भोग प्रादि विदिशा (जिते
२७०० टी पि ६८, ४१३, कण्य) ।

अणुदिट्ठ वि [अनुदिष्ट] जिसका उद्देश्य न
दिया गया हो वह (पयह २, १) ।

अणुद्ध वि [अनूर्ध्व] ऊंचा नहीं, नीचा
(हुमा) ।

अणुद्धय वि [अनुद्धत] सरल, भद्र, विनयी
(उप ७६८ टी) ।

अणुद्धरि पु [अनुद्धरिन्] एक ध्रुव जन्तु
हुयु (कण्य) ।

अणुद्धिय वि [अनुद्धृत] १ जिसका उद्धार
न किया गया हो वह । २ बाहर नहीं निकाला
हुमा, 'ज कुणइ भावसल्ल अणुद्धिय इत्थ
सण्णुद्धमल्ल' (भा ४०) ।

अणुद्धयुय वि [अनुद्धृत] अपरिपक्व, नहीं
छोड़ा हुआ (कण्य) ।

अणुधम्म पु [अणुधर्म] गृहस्थ धर्म (जिते) ।

अणुधम्म पु [अणुधर्म] अनुद्वार—हितकर
धर्म 'एवोणुधम्मा मुत्तिष्णा पवेदधा' (भूम
१, २, १) । 'चारि नि [चारिन्] हित-
कर धर्म का अनुयायी, जैन धर्मी (भूम १,
२, २) ।

अणुधम्मिय वि [अनुधार्मिक] धर्म के अनु-
कूल, धर्माचिंत, 'एयं नु अणुधम्मिय उम्मा'
(भावा) ।

अणुधावय सव [अनु + धाव्] पीछे दौडना ।
वह. अनुधावत (ग ४, २१) ।

अणुधापण सव [अनुधापन] पीछे दौडना
(हुमा ४०३) ।

अणुधाविरि वि [अनुधाविरि] पीछे दौडने-
वाला (उप ७२८ टी) ।

अणुनाइ वि [अनुनादिन्] प्रतिष्ठादि करने-
वाला (कण्य) ।

अणुनाय वि [अनुज्ञात] अनुमत, जिसको
अनुमति दी गई हो वह 'माहवसे मोक्षसय
अणुनायाए तए माह' (सुवा ४७७) ।

अणुनास देखो अणुगास (जीव ३ टी) ।

अणुन्नर देखो अणुण्णर । वह अनुन्नवेमाण
(ठा ५, ३) । क. अनुन्नवेज्ज (कस) ।
संज्ञ अनुन्नवेत्ता (कस) ।

अणुन्नरणा देखो अणुण्णरणा (भोच ६३०,
कस) ।

अणुन्नवणी देखो अणुण्णरणी (ठा ४, १) ।

अणुन्ना देखो अणुण्णा (सुर ४, १३३ प्राप्ता
१८१) ।

अणुन्नाय देखो अणुण्णाय (भोच १ महा) ।

अणुपथ पु [अनुपथ] १ समीप का मार्ग
(कस) । २ मार्ग के समीप, रास्ता के पास
(वह २) ।

अणुपथ वि [अनुप्राप्त] प्राप्त, मिला हुआ
(सुर ४, २११) ।

अणुपन्न वि [अनुपन्न] प्राप्त (हुप ४०१) ।

अणुपयट्ठ वि [अनुपयट्ठ] अनुसृत, अनुपन
(महा) ।

अणुपयाण न [अनुप्रदान] दान का बंधना
प्रतिग्रहण (सबोय ३४) ।

अणुपरियट्ठ सव [अनुपरि + अट्] भूमना
परिग्रहण करना । संज्ञ अनुपरियट्ठिताण
विहे ए भते मज्झिमे ... वप्पु सवणस
मुद अणुपरियट्ठिताण हव्वमाणिक्खतए ?' (भा
१८, ७) । ३ अनुपरिपट्ठियट्ठ (सुवा १,
६) । हेतु अनुपरियट्ठेत्त (सुवा १, ६) ।

अणुपरियट्ठ सव [अनुपरि + वृत्] करना,
चिन्ते करना 'इत्ताणपेव भाट्ट अणुपरिप-
ट्ठ' (भावा) । वह अनुपरियट्ठमाण
भावा) । संज्ञ अनुपरियट्ठिता (भोच) ।

अणुपरियट्ठण न [अनुपयट्ठन] परिग्रहण
(सुप १, १, २) ।

अणुपरिवट्ठण न [अनुपरिवर्तन] परिवर्तन,
चिन्ता (भा १, ६) ।

अणुपरिवट्ठ देखो अनुपरियट्ठ = अनुपरि +
वृत् । वह अनुपरिवट्ठमाण (पि २८६) ।

अणुपरिवाडि, 'डी क्षी [अनुपरिपादि, 'टी]
अनुक्रम (से १५, ६६, पउम २०, ११, ३२,
१६) ।

अणुपरिहारि वि [अनुपरिहारिन्] 'परि-
हारि' को मदद करनेवाला, प्राणी मुनि की
सेवा शुश्रूषा करनेवाला (ठा ३, ४) ।

अणुपरिहारि वि [अनुपरिहारिन्] ऊपर
देखो (ठा ३, ४) ।

अणुपवन्न वि [अनुपपन्न] प्राप्त (सुम २,
३, २१) ।

अणुपवापत्त वि [अनुपवाचयित्ठ] पढ़ाने-
वाला, पाठक, उपाध्याय (ठा ५, २) ।

अणुपपाय देखो अनुप्पपाय = अनुप +
वाचय् ।

अणुपविट्ठ वि [अनुपविष्ट] पीछे से प्रविष्ट
(सुवा १, १, कण्य) ।

अणुपविसि सव [अनुप + विस्] १ पीछे
से प्रवेश करना । २ प्रवेश करना, भीतर
जाना । अनुपविसिद (कण्य) । वह अनुप-
विसित (निबू २) । संज्ञ अनुपविसिच्चा
(कण्य) ।

अणुपवेस पु [अनुप्रवेश] प्रवेश, भीतर
जाना । (निबू ७) ।

अणुपवस्स सव [अनु + वस्] पर्यालोचन
करना, विवेचना करना । संज्ञ अनुपवस्सिय
(सुम १, २, २) ।

अणुपवस्सि वि [अनुदर्शिन] पर्यालोचन,
विवेचन (भावा) ।

अणुपाल सव [अनु + पालय्] १ अनुन्न
करना । २ रक्षण करना । ३ प्रतीक्षा करना,
रह देवना । अनुपालेद (महा) वह, 'साया-
सोस्सव अनुपालतेण' (पत्ति), अनुपालित,
अनुपालेमाण (महा) । संज्ञ अनुपालेज्ज,
अनुपालिता, अनुपालिय (महा कण्य, पि
५७०) ।

अणुपालण न [अनुपालन] रक्षण, प्रति-
पालन (पयभा) ।

अणुपाला देखो अनुपालणा (जिते २४२०
टी) ।

अणुपालिय वि [अनुपालित] रचित, प्रति-
पातित (छ ८)।

अणुपास देको अणुपासः। वट. अणुपासमाण
(दम २)।

अणुपिष्ट न [अनुपिष्ट] प्रमुख, 'अणुपिष्ट-
मिदाह' (सम १)।

अणुपिहा देको अणुपेहा (इय ३५)।

अणुपुंर न [अनुपुंर] मूल तब, अन्त-पर्यन्तः
'अणुपुंरमावर्ततावि भावया उत्स्य ऊमवा हंति'
(दुम ३३)।

अणुपुख वि [अनुपुख] कमवार, धानुबन्धक
(छ ४, ४)। त्रि. कम. (पास)। 'ओ
[शस्] प्रमुख ने (भाषा)।

अणुपुख न [अनुपुख] कम, परिपाटी, अनु-
क्रम (पास)।

अणुपुखी की [अनुपुखी] ऊपर देको (पास)।
अणुपुखी की [अनुपुखी] भावना, चिन्तन,
विचार (पडम १४, ७७)।

अणुपेहण न [अनुपेहण] ऊपर देको (उप
१४२ टी)।

अणुपेहा की [अनुपेहा] ऊपर देको (वि
३२३)।

अणुपेहि वि [अनुपेहि] चिन्तन-कर्ता
(दुम १, १०, ७)।

अणुपेइस वि [अनुपेइस] एव दूधरे से
मिला हुआ, मिश्रित (कल्प)।

अणुपणी मर [अनुप+णी] १ प्रणय
करता। २ प्रसन्न करता। वट. अणुपणत
(उप ४ २८)।

अणुपणी [अनुपण्य] हन्तोपी, अन्य परि-
पट बाधा (छ ६)।

अणुपणीय वि [अनुपण्य] ऊपर देको
(छ ६)।

अणुपणन वि [अनुपणन] मरिचमान (नीरु
४)।

अणुपण देको अणुपण (कल्प)।

अणुपणा मर [अनुप+ण] का देना, निर-
रि देना। मणुपण (मण)। इ. अणुप-
दायन (कम)। हे. अणुपणात (उप)।

अणुपणा न [अनुपणा] दात, निर-रि
दात देना (भास ९)।

अणुपणु पुं [अनुपणु] स्वामी के स्थानांतर,
प्रतिनिधि (निरु २)।

अणुपण्य देको अणुपण्य। मणुपण्य (कस)।
हे. अणुपण्यत (उप)।

अणुपण्य देको अणुपण्य (भाषा)।
अणुपण्य सक [अनुप+ण्य] मणुपण्य
करता। हे. अणुपण्यत (विने २२०७)।

अणुपण्यदु वि [अनुपण्यदु] वि [अनुपण्यदु]
अणुपण्यदु वि [अनुपण्यदु] मणुपण्य, पाठन, पढानेवाला
(छ १, २; कल्प १)।

अणुपण्यदु पुं [अनुपण्यदु] कथन (दुम २,
७, १३)।

अणुपण्यदु सक [अनुप+ण्यदु] पढाना।
क. अणुपण्यदुसमाण (अ ३)।

अणुपण्यदु न [अनुपण्यदु] नयाँ पूर्व, बार-
बार केन संग-अथ का एक संर-विशेष (छ ६)।

अणुपण्यदु देको अणुपण्यदु (कस)।
अणुपण्यदु की [अनुपण्यदु] मणुपण्यदु,
प्रमाण (विने २१६०)।

अणुपण्यदु देको अणुपण्यदु। मणुपण्यदु
(उप)। वट. अणुपण्यदुसमाण (निरु १)।
अणुपण्यदु देको अणुपण्यदु (नाट)।

अणुपण्यदु न [अनुपण्यदु] देको अणुप-
ण्यदु (नाट)।

अणुपण्यदु (शी) सक [अनुप+सादय]
प्रमत्त करता। मणुपण्यदु (नाट)।

अणुपण्यदु वि [अनुपण्यदु] कथन, वि-
न्या हुआ (भाषा)।

अणुपण्यदु वि [अनुपण्यदु] पुन, संवद,
संन्या (निरु १)।

अणुपण्यदु वि [अनुपण्यदु] मणुपण्य, दण (दुम
१, ७)।

अणुपण्यदु वि [अनुपण्यदु] दूर करता,
हटाता हुआ;

अणुपण्यदु वि [अनुपण्यदु] दे
मरिच मरिचमण्यदुसमाण से
मरिच मरिचमण्यदुसमाण से

मरिच मरिचमण्यदुसमाण से
मरिच मरिचमण्यदुसमाण से

अणुपण्यदु देको अणुपण्यदु,
'छे मुनि' वि न कथ, न मार

केल मे मण्यदुसमाण।
मण्यदुसमाण (उप)।

अणुपण्यदु वि [अनुपण्यदु] वीक्षे से मेना
हुआ (नाट)।

अणुपण्यदु सक [अनुप+ण्यदु] चिन्तन करना,
विचारना मणुपण्यदु (वि ३२३)। इ. अणु-
पण्यदुसमाण (दुम १)।

अणुपण्यदु की [अनुपण्यदु] चिन्तन, भावना,
विचार, स्वाभाव-विशेष (उप २६)।

अणुपण्यदु पुं [अनुपण्यदु] मणुपण्य, प्रमाण;
'सौहृद्वेव मणुपण्यदु मर' मण्यदुसमाण'
(दम ६)।

अणुपण्यदु वि [अनुपण्यदु] पौडा हुआ,
साक प्रिया हुआ (स ३४४)।

अणुपण्यदु सक [अनु+ण्यदु] १ मणुपण्य
करता। २ सकय बनाये रहता। मणुपण्यदु
(उप ७१)। वट. अणुपण्यदु (विनी १८३)।

अणुपण्यदु की [अनुपण्यदु] मणुपण्यदुसमाण;
(नाट)। हे. अणुपण्यदु (शी) (मा ६)।

अणुपण्यदु पुं [अनुपण्यदु] १ मणुपण्य,
विचार, विचार का भाव (छ ६; उप १२८)।
२ संकथ (स १३६; उप १)। ३ मण्यदु का
मण्यदु (वका १४)। ४ मण्यदु का विचार,
परिणाम (उप ४; वका १८)। ५ स्नेह,
प्रेम (स २०६)।

अणुपण्यदु वि [अनुपण्यदु] मण्यदुसमाण
विनि विनि।

अणुपण्यदु वि [अनुपण्यदु] मण्यदुसमाण
(उप ४, २०)। ६ शास्त्र के मारम में बहने
वाला मण्यदुसमाण, विचार, मण्यदुसमाण
(भास १)। ७ विचार, मण्यदुसमाण (म ४४८)।

अणुपण्यदु वि [अनुपण्यदु] मण्यदुसमाण
करता (नाट)।

अणुपण्यदु वि [अनुपण्यदु] मण्यदुसमाण
(उप २६, ४२; दुम २९, ४४)।

अणुपण्यदु की [अनुपण्यदु] मण्यदुसमाण,
विचार का भाव (वका १२, ४४)।

अणुपण्यदु वि [अनुपण्यदु] मण्यदुसमाण,
मण्यदुसमाण (वका २, म १२३)।

अणुपण्यदु वि [अनुपण्यदु] विचार-विचार,
विचार (१, ४४)।

अणुपण्यदु वि [अनुपण्यदु] विचार-विचार,
मण्यदुसमाण, मण्यदुसमाण (म १११)।

अणुवक्त्र } वि [अनुवक्त्र] १ बंधा हुआ,
अणुवक्त्र } संबद्ध (मे ११, ६०) । २ सत्ता,
प्रतिबिम्बित, 'अणुवदतिव्यवस्था परोपरं वेयां
उदीरति' (पह १, १) । ३ व्याप्त (खाया
१, २) । ४ प्रतिबद्ध (खाया १, २) । ५
अत्यंत, बहुत, 'अणुवदनिरतरवेयाणु' (पह १,
१) । ६ उत्पन्न (उत्तर ६२) ।

अणुवद्ध वि [अनुवद्ध] १ अनुगत (पंचा ६,
२७) । २ पीछे बंधा हुआ (तिरि ४४४) ।

अणुवृह् देलो अणुवृह् ।

अणुवृह् देलो वि [अनुवृह्] अनुवृद्ध, अनुवृत्त
(उत्तर २) ।

अणुवृत्त वि [अनुवृत्त] अणुवृत्त, अनुवृत्त
(नाट) ।

अणुवज् देलो अणुवज् = अनुवज् (नाट) ।

अणुवज् सक [अनु + वज्] १ अनुवज् करना,
जानना, समझना । २ कर्मफल को भोगना ।
अणुवज्ति वि [अनुवज्ति] १ वह, अनुवर्त
(पि ४७५) । सङ्ग. अणुवज्ति, अणुवज्ति
(नाट, पह १, १) । हेतु. अणुवज्ति
(उत्तर १८) ।

अणुवज् पुं [अनुवज्] १ ज्ञान, बोध, निश्चय
(पंचा ५) । २ कर्मफल का भोग (विसे) ।

अणुवज् न [अनुवज्] ऊपर देखो (प्राव
४, विसे २०६०) ।

अणुवज्ति वि [अनुवज्ति] अनुवज्ति करनेवाला
(विसे १६५८) ।

अणुवज्ति वि [अनुवज्ति] सामान्य भव्य
(सवौष ५४) ।

अणुभाग पुं [अनुभाग] १ प्रभाव, माहात्म्य
(सूत्र १, ५, १) । २ शक्ति, सामर्थ्य (पह २) ।
३ कर्मों का विपाक—फल (सूत्र १, ५, १) । ४
कर्मों का रस, कर्मों में फल उत्पन्न करने की
शक्ति, 'ताण रसो अणुभागो' (कम्म १, २ टी,
नव ३१) । 'यद्यं पुं [अनुभाग] कर्म-मुद्रालो
में फल उत्पन्न करने की शक्ति का बनना (अ
४, २) ।

अणुभाय } पुं [अनुभाय] १-४ ऊपर देता
अणुभाय } (प्राव ३५, अ ३, ३, मज्झ, प्राव,
मम ६) । ५ मनोगत भाव की सूचक चेटा,
जैसे भीड़ का बहाना वगैरह (नाट) । ६ कृपा,
महदानी (स ३५५) ।

अणुभाव वि [अनुभाव] बोध, सूचक,
(प्राव) ।

अणुभास सक [अनु + भास्] १ अनुवाद
करना, कही हुई बात को उसी शब्द में, शब्दा-
न्तर में या दूसरी भाषा में कहना । २ चिन्तन
करना, 'अणुभासदं पुच्छवणं' (प्राव ६, व
३) । वरु. अणुभासयंत, अणुभासमाग
(स १८४, विसे २५१२) ।

अणुभासग न [अनुभासग] अनुवाद, उक्त
बात का कहना (नाट) ।

अणुभासगा ली [अनुभासगा] ऊपर देखो
(अ ५, ३, विसे २५२० टी) ।

अणुभासय वि [अनुभासय] अनुवादक, अनु-
वाद करनेवाला (विसे ३२१७) ।

अणुभासयंत देलो अणुभास ।

अणुभुज सक [अनु + भुज्] भोग करना ।
वह, अनुभुजमाग (स १६६) ।

अणुभूह ली [अनुभूति] अनुभव (विसे
१६११) ।

अणुभूय वि [अनुभूय] ज्ञात, निश्चित (महा) ।
'पुद्गल वि [पृथ] पहले ही जिनका अनुभव
हो गया हो वह (खाया १, १) ।

अणुभूय सक [अनु + भूय] कृपित करना,
शोभित करना । अणुभूयैति (सी) (नाट) ।

अणुभूह ली [अनुभूति] अनुभूत, सम्मति
(प्रा ६) ।

अणुभूतव्य देलो अणुभूत (विसे १६६०) ।

अणुभूत न [द] पीछे-पीछे, 'एवं विवितपरी
अणुभूतये बलिपा' (सुर ४, १४२, महा) ।
'गामि वि [गामिन्] पीछे-पीछे जानेवाला
(पि ४०५) ।

अणुभूत सक [अनु + भूत] विचार
करना । सङ्ग. अणुभूत (जीवत १६६०) ।
अणुभूत } सक [अनु + भूत] अनुमति
अणुभूत } देना, अनुमोदन करना । अणु-
महली, अणुमह (पि ४५७, महा) । वरु.
अणुभूतमाग (उत्तर ३१) । सङ्ग. अणु-
महज्ज (महा) ।

अणुभूति वि [अनुभूति] अनुमोदित,
अणुभूति } सम्मत (अ ५ २६१) ।
अणुभूत सक [अनु + भूत] १ मरना । २ सती
होना, पति मे मरने से मर जाना, 'जं देव-

विणो अणुभूति' (प्राव ३५) । भवि. अणु-
महति (पि ५२२) ।

अणुभूत सक [अनु + भूत] क्रम से मरना, पीछे-
पीछे मरना, 'इयं पारंपर्यमणो अणुभूत सह-
स्सो जाव' (पि २७४) ।

अणुभूत न [अनुभूत] ऊपर देखो (गउउ) ।
अणुभूततर वि [अनुभूततर] सुविद्या का
प्रतिनिधि (निबु ३) ।

अणुभाण न [अनुभाण] १ अटकल-मान, हेतु
के द्वारा अज्ञात वस्तु का निष्पत्ति (गा ३५५;
अ ४, ४) ।

अणुभाण न [अनुभाण] १ अविश्राम-मान
(सूत्र १, ११, २०) । २ अनुसूत्र (सु २५) ।

अणुभाण सक [अनु + भाण] अनुमान
करना । सङ्ग. अणुभाणइत्ता (व १) ।

अणुभाय वि [अनुभाय] बहुत घोडा, घोडा
परिमाणवाला (व ५, २) ।

अणुभाय सक [अनु + भाय] शोभित
होना, चमकना । सङ्ग. अणुभायि (मवि) ।

अणुभाय सक [अनु + भा] अटकल से
जानना । कर्म. अणुभायि (धर्म १२१६),
अणुभाय (वसति ४, १०) ।

अणुमेअ वि [अनुमेय] अनुमान के योग्य
(सै ७३) ।

अणुमेअ ली [अनुमेया] मर्यादा, हद
(कत) ।

अणुमेअ वि [अनुमेय] अनुमत, संमत,
प्रसन्न (प्राउर, मवि) ।

अणुमेय सक [अनु + मुद] अनुमति देना,
प्रस्ता करना । अणुमेय (उत्तर) । अणुमेयो
(चउ ५८) ।

अणुमेय वि [अनुमेय] अनुमान करने-
वाला (विसे) ।

अणुमेय न [अनुमेय] अनुमति, सम्मति,
प्रस्ता (उत्तर, पंचा ६) ।

अणुमुक्त वि [अनुमुक्त] नहीं छोड़ा हुआ
(पह १, ४) ।

अणुमुह वि [अनुमुह] अनुसूत्र, विमुक्त,
'विह साहस अणुमुहो विट्ठामि ति' (महा) ।

अणुय पुं [अनुय] धान्य-विशेष (व १५६) ।
अणुयंया देलो अणुयंया (गउउ, अ २१४) ।

अणुयत्त देखो अणुयत्त = अनु + कृत् । अणु-यत्तऽ (भवि) । बहु, अणुयत्तत, अणुयत्त-माण (पचमा, विते १७३१) । संकृ. अणु-यत्तिऊण (गउउ) ।

अणुयत्त देखो अणुयत्त = अनुकृत (भवि) । अणुयत्तणा क्षी [अनुयत्तना] १ बीमार की सेवा-शुभ्या करना (इह १) । २ अनुसरण । ३ अनुकूल वर्तन (जीव १) ।

अणुयत्तिय वि [अनुयत्ति] अनुकूल किया हुआ, प्रभावित (मुभा १३०) ।

अणुयत्तिरि वि [अनुयत्तिरि] भावित, अनु-हित (आपा १, १) ।

अणुया देखो अणुया (सूत्र २, १) ।

अणुयाय देखो अणुयाय (स १३३) ।

अणुयास पु [अनुयास] विशेष विनास (आपा १, १) ।

अणुरंगा क्षी [दे] गाडी (इह १) ।

अणुरगि वि [अनुरगि] अनुसरण-वर्ता (सुत्र १०, ८) ।

अणुरगि वि [अनुरगित] रगा हुआ (भवि) । अणुरज सब [अनु + रजय] अनुरागी करना, प्रीणित करना । बहु अणुरजअत (नाट) । संकृ. अणुरजिअ (नाट) ।

अणुरजण न [अनुरजण] राग, भ्रामाणि (विते २६७७) ।

अणुरजिपहय } वि [अनुरजि] अनुसर
अणुरजिय } किया हुआ, अनुरागी बनाया हुआ (ज १, महा) ।

अणुरक वि [अनुरक] अनुराग प्राप्त, प्रेम प्राप्त (नाट) ।

अणुरज सब [अनु + रजय] अनुसर होना प्रेमी होना, 'अणुरजिनि फणेलें जुवईउ सरणें पुण विरजति' (महा) ।

अणुरत्त देखो अणुरत्त (आपा १, १६) ।

अणुरत्ति वि [अनुरत्ति] बोनापा हुआ, भाट (आपा १, १) ।

अणुराड } वि [अनुरागि] अनुपम-
अणुराड } वाचा, प्रेमी (स ३३०, महा
सुर १३, १२०) ।

अणुराग पु [अनुराग] प्रेम, प्रीति (सुर ४, २२८) ।

अणुराग वि [अनुराग] १ पीछे भागा हुआ । २ ठीक-ठीक भागा हुआ । ३ न स्वागत (गग २, १) ।

अणुरागि देखो अणुराग (महा) ।

अणुराय देखो अणुराग (प्राप् १११) ।

अणुराहा क्षी [अनुराहा] नजब-विशेष (सम ६) ।

अणुरध सब [अनु + रुध] १ अनुरोध करना । २ स्वीकार करना । ३ भाषा का पालन करना । ४ प्राप्ति करना । ५ सक. मधीन होना । बर्मा अणुरधिअ (हे ४, २४८ प्राप्) ।

अणुरूअ १ वि [अनुरूप] १ योग्य, उचित अणुरूअ } (मे ६, ३६) । २ अनुकूल (सुग ११२) । ३ सदृश तुल्य (आपा १, १६) । ४ न. समानता, योग्यता (सम) ।

अणुरोह पु [अनुरोध] १ प्रार्थना, 'ता यमा-सुरोहेण एव परे निधयेव भागवत्' (महा) । २ वानिण्य, वणिण्यता (पाप) ।

अणुरोहि वि [अनुरोधि] अनुरोध करने-वाला (स १२१) ।

अणुरलगा वि [अनुरल] पीछे लगा हुआ (ग ३४४ सुर ३, २२६, सूत्र ७) ।

अणुरलद वि [अनुरल] १ पीछे से मिला हुआ । २ फिर से मिला हुआ (नाट) ।

अणुराप पु [अनुराप] फिर फिर बोलना (ठा ७) ।

अणुरिप सब [अनु + रिप] १ पोतना, लेन करना । २ फिर से पोतना । संकृ. अणुरिपिप्ता (सि ५८२) । हेड. अणुरिपिप्ताय (सि ५७८) ।

अणुरिपण न [अनुरिपण] लेप, पोतना (पह २, ३) ।

अणुरित्त वि [अनुरित्त] निम्न, पीछा हुआ (कय) ।

अणुरिद्ध सब [अनु + रिद्ध] १ चान्दा । २ छूना । बहु अणुरिद्धत (मम १३१) 'ममयममममिह' (पठन ३६, १२) ।

अणुरिषण न [अनुरिषण] १ लेप, पोतना (सपन ६४) । २ फिर से पोतना (पह २) ।

अणुरिषि वि [अनुरिषि] निम्न, पीछा हुआ, 'बम्मामुलेविमो गो' (पठन ८२, ७८) ।

अणुरोम सब [अनुरोम] १ क्रम से रखना । २ अनुकूल करना । संकृ. अणुरोम-इत्ता (ठा ६) ।

अणुरोम न [अनुरोम] १ अनुक्रम, यथाक्रम, 'वत्त दुहाणुतोमेण सह म पडिउमो भो भवे वत्त' (सुर १६, ४८) ।

अणुरोम वि [अनुरोम] सीधा, अनुकूल (ज २) ।

अणुरोम देखो अणुरोम (सुत्र ३६, ११०) ।

अणुरोम वि [अनुरोम] अनुकूल, अनुकूल (इह ३) ।

अणुरोम पु [अनुरोम] एक द्वीपिय सुद जन्तु (उत्त ३६) ।

अणुरोम पु [अनुरोम] सराव कथन, दुष्ट चर्चा (ठा ३) ।

अणुर पु [दे] बलात्कार, जबर्जस्ती (दे १, १६) ।

अणुरिद्ध वि [अनुरिद्ध] १ अनुचित, अनुचित, अनुचित । २ जो पूर्व-परम्परा से न भाया हो, 'अणुरिद्ध नाम ज एो भावित्परपरायण' (सीव ११) ।

अणुरिद्ध वि [अनुरिद्ध] अनुचित (विने) ।

अणुरिद्ध पु [अनुरिद्ध] १ प्रयोग उद्देश्य (पचा १२) । २ उपदेश का प्रभाव । ३ स्वभाव (ठा २, १) ।

अणुरिद्ध वि [अनुरिद्ध] १ उपयोग रहित । २ उपयोग का प्रभाव, प्रभावधानता (पह १) ।

अणुरिद्ध वि [अनुरिद्ध] प्रसन्न वक्ता, बहुत देवा, 'जब भगवता राम निम अणुरिद्ध' परि-मण एव करिदि' (मान १२) ।

अणुरिद्ध न [अनुरिद्ध] प्रति-नन्दन, प्रति-प्रणाम (सार्थ ३६) ।

अणुरिद्ध देखो अणुरिद्ध (सि ७४) ।

अणुरिद्ध वि [अनुरिद्ध] नाम रहित, प्रति-बन्धीय (इह १) ।

अणुरिद्ध वि [अनुरिद्ध] नकार-रहित (पाप) (निवृ १) ।

अणुरिद्ध सब [अनु + रिद्ध] अनुसरण करना, पीछे-पीछे जाना । अनुसरण (हे ४, १०७) ।

अणुरिद्ध वि [अनुरिद्ध] अनुसरण (हुमा) ।

अणुवजीवि वि [अनुपजीविन्] १ भ्रमा-
-यित । २ भाजीविका-रहित (पंथा १५) ।
अणुवजुत्त वि [अनुपयुक्त] भ्रसावधान,
स्थान-शून्य (ममि १११) ।
अणुवज्ज सब [गम्] जाना । अणुवज्ज (हे
५, १६२) ।
अणुवज्ज सक [दे] सेवा-शुध्पा करना (दे
१, ४१) ।
अणुवज्ज न [दे] सेवा-शुध्पा (दे १, ४१) ।
अणुवज्जिअ वि [दे] लिसकी सेवा-शुध्पा
की गई हो वह (दे १, ४१) ।
अणुवज्जिअ वि [दे] गत, गया हुआ (दे
१, ४१) ।
अणुवट्ठ देखो अणुवत्त = मनु + वृत् । ऊ.
अणुवट्ठणीअ (नाट) ।
अणुवट्ठि देखो अणुवत्ति = अनुवर्तित् (विसे
२४१७) ।
अणुवड्ड सक [अनु + पत्] भ्रमिन् होना ।
अणुवड्ड (उवर ७१) ।
अणुवड्डिअ वि [अनुपत्ति] पीछे गिरा हुआ
(हम्मिर ४०) ।
अणुवत्त सक [अनु + वृत्] १ अनुसरण
करना । २ सेवा शुध्पा करना । ३ अनुकूल
बरतना । ४ व्याकरण प्रादि के पूर्व सूत्र के
पद का, भ्रम्य के लिए नीचे के सूत्र में
जाना । अणुवत्त (स ४२) । वट्ठ अणुवत्त,
अणुवत्तत्त, अणुवत्तमाण (भाम्, विसे
३५६०, नाट) । इ. अणुवट्ठणीअ, अणु-
वत्तणीअ, अणुवत्तिपट्ट (नाट, उप १०३१
दी) ।
अणुवत्त वि [अनुवृत्त] अनुवृत्त (पिंड
१८) ।
अणुवत्त वि [अनुवृत्त] १ अनुवृत्त, अनुवृत्त ।
२ अनुकूल किया हुआ । ३ प्रवृत्त (पय २) ।
अणुवत्तग वि [अनुवर्त्तक] अनुवृत्त प्रवृत्ति
करनेवाला, सेवा करनेवाला (उव) ।
अणुवत्तग वि [अनुवर्त्तक] अनुवृत्त-वर्त्त
(सम १, २, २, ३२) ।
अणुवत्तग न [अनुवर्त्तन] १ अनुसरण (स
२३६) । २ अनुकूल प्रवृत्ति (गा २६५) । ३
पूर्व सूत्र के पद का भ्रम्य के लिए नीचे के
सूत्र में जाना (विसे ३५६०) ।

अणुवत्तणा ली [अनुवर्त्तना] ऊपर देखो
(उवर १४८) ।
अणुवत्तय देखो अणुवत्तग, 'असमन्तच्छदाणु-
-वत्तय' (साया १, ३) ।
अणुवत्ति ली [अनुवृत्ति] १ अनुसरण (स
४५६) । २ अनुवृत्त प्रवृत्ति । ३ अनुगम (विसे
७०५) ।
अणुवत्ति वि [अनुवर्त्तिन्] अनुकूल प्रवृत्ति
करनेवाला, भत्त, सेवक,
'तुह चडि । वत्तएकमत्ताणुवत्तिणो कह
गु सवमिज्जति ।
सेरिह्वहसकिममहिस्सोहमारणैण व जेणै'
(गड्ड) ।
अणुवत्ति वि [अनुवर्त्तिन्] ऊपर देखो
(वर्म्मि १२, मोह १०२) ।
अणुवत्त वि [अनुपम] उपमा-रहित, बेजोड,
अक्षितीय (था २७) ।
अणुवत्ता ली [अनुपमा] एक प्रकार का साय
द्रव्य (जीव ३) ।
अणुवत्ति वि [अनुपमि] देखो अणुवत्त
(गुपा ६८) ।
अणुवत्त देखो अणुवत्तय (पय २, १२) ।
अणुवत्त सक [अनु + वट्ठ] अनुवाद करना,
नहे हुए अर्थ को फिर से कहना । वट्ठ. अणु-
-वत्तमाण (भावा) ।
अणुवत्तय वि [अनुवत्त] १ अनुसरण, अनु-
-वृत्ति (ठा २, १) । २ विवि. निरुत्तर हमेशा
(रयण २५) ।
अणुवत्तल्लि ली [अनुवत्तल्लि] १ भ्रमाय,
भ्रमासि । २ भ्रमाय-ज्ञान. 'दुविहा अणुवत्तल्लि'
(विसे १६८२) ।
अणुवत्तल्लिमाण वि [अनुवत्तल्लिमाण] जो
उत्तमत्व न होता हो, जो जानते में न आता
हो (वसि १) ।
अणुवत्तल्लि वि [अनुवत्तल्लि] उत्तम-रहित,
भ्रमिण (पह १, २) ।
अणुवत्तल्लि वि [अनुवत्तल्लि] भ्रमन्त, भ्रमिण
(उव १६) ।
अणुवत्तल्लि पु [अनुवत्तल्लि] उपमया या भ्रमाय
(उव) ।
अणुवत्तल्लि वि [अनुवत्तल्लि] उपमया या भ्रमाय
(भावा) ।

अणुवह न [अनुपथ] पीछे, 'कुमारणुवहण
सो लग्गो' (उप ६ टी) ।
अणुवहण न [अनुवहण] वहन, 'तवोवहाण-
-गुणाणमणुवहण' (धु १३५) ।
अणुवहय वि [अनुपहत] भविनाशित
(पिंड) ।
अणुवहुआ ली [दे] नवीडा ली, दुलहिन् (दे
१, ४८) ।
अनुवाइ वि [अनुपाति] १ अनुसरण
करनेवाला (ठा ६) । २ सम्बन्ध रखनेवाला
(सम १५) ।
अनुवाइ वि [अनुपादिन्] अनुवाद करने-
वाला, उक्त अर्थ को कहनेवाला (सम १,
१२, सत १४ टी) ।
अनुवाइ वि [अनुवाचिन्] पढ़नेवाला,
ग्रन्थासी, 'सुदुनवीसवत्तिओ अणुवाइ सव्वनु-
-त्त' (सत १४ टी) ।
अणुवाएज्ज वि [अनुपादेय] ग्रहण करने
के योग्य, (भाव) ।
अणुवाद देखो अणुवाय = अनुवाद (विसे
३५७७) ।
अणुवादि देखो अणुवाइ = अनुपाति (उक्त
१६, ६) ।
अणुवाय पु [अनुपात] १ अनुसरण (पण
१७) । २ सम्बन्ध, समीप (भा १२, ४) ।
३ भाग्यन (पथा ७) ।
अणुवाय पु [अनुपात] १ अनुकूल पवन
(राय) । २ वि. अनुकूल पवन वाला प्रदेश—
स्थान (सम १६, ६) ।
अणुवाय वि [अनुपाय] उपाय-रहित, निर-
पाय (उप ७ १४) ।
अणुवाय पु [अनुवाद] अनुवापण, उक्त बात
को फिर से कहना (उवा, दे १, १३१) ।
अणुवायण न [अनुपातन] प्रवृत्तारण, उदा-
रता (वर्म्म २) ।
अणुवायय वि [अनुवाचक] कहनेवाला,
भविष्यवाक्य, 'पोलहणो ह्योए एत्थ पत्थाणु-
-वायो भण्णिमो' (गुपा ६१६) ।
अणुवाल देखो अणुपाल । वट्ठ. अणुवाल्ले
(स २३) । मट्ठ. अणुवाल्लिज्ज (स १०२) ।
अणुवाल्लण न [अनुपालन] रक्षण, परिपालन
(भावा) ।

अणुशालणा की [अनुशालना] १ ऊपर देखो (पृष्ठ १) । २ 'कप्य पु' [कप्य] साधु-गण के नायक की भवत्साल मृदु हा जले पर गए की रत्ना के लिए शारीय विधान (पञ्चमा) । अणुशालय वि [अनुशालय] १ रत्नक, परिपालक । २ पुं. शौरालक के एक भन बा नाम (मग २४, २०) ।

अणुशाम न [अनु + वासय] व्यवस्था करता । मणुवासेप्राप्ति (पाचा) ।

अणुशाम पु [अनुशाम] एक स्थान में मणुवा बान तक रह कर फिर वही नाम करता (पञ्चमा) ।

अणुशासन न [अनुशामन] १ ऊपर देखो । २ मन्त्र-द्वारा तेज प्राप्ति की मन्त्राल से केट में बहाना (णामा १, १३) ।

अणुशासना की [अनुशासना] ऊपर देखा (पञ्चमा) । १ 'कप्य पु' [कप्य] मणुवासे के लिए शारीय व्यवस्था (पञ्चमा) ।

अणुशासग वि [अनुशासक] १ सेवा नहीं करनेवाला । २ पुं. जैनतर गृहस्थ (निषू ८) ।

अणुशामर न [अनुशामर] प्रतिदिन, हमेशा (मुर १, २४१) ।

अणुशिति स्त्री [अनुशुति] १ मणुवा बर्तन (हुमा) । २ मणुवरण (उर ८३३ टी) ।

अणुशित वि [अनुशित] संवत्, युग हुआ (ग ११, १५) ।

अणुशित स [अनु + शित] प्रवेश करता । मणुशिति (मिला ७७) ।

अणुशिहाण ॥ [अनुशियान] १ मणुवरण । २ मणुवरण (विसे २०७) ।

अणुशीइ स्त्री [अनुशीयि] मणुवृत्तता, विद्या-लुपेद मा बर्तन चो-वर्तनो गिनाइ से मुर्भो (मृम १, ४, १, १६) ।

अणुशीइ ॥ म [अनुशियन्ति] निवार अणुशीइ ॥ बर, परा-गोपना कर (नि ५६३) ।

अणुशीति ॥ पाचा, दस ७) । देखो अणु-अणुशीतिय ॥ चित ।

अणुशीइ ॥ देखो अणुशीइ (मृम १, १२, अणुशीय २, १, १०, १) ।

अणुशीइ स [अनु + शीइ] मणुमोदन करता, प्रशंसा करता । मणुशीइ (मृम) ।

अणुशीइ वि [अनुशीइ] मणुमोदन करने वाला (ठा ७) ।

अणुशेद स [अनु + शेद] मणुमद करता । वह अणुशेदयत (मृम १, २, १) ।

अणुशेध ॥ पुं [अनुशेध] १ मणुगम, पन्थ, अणुशेह ॥ सम्बन्ध (धर्मस ७१२; ७१५) । २ संविधाय (मिड ५६) ।

अणुशेयण न [अनुशेदन] पल-भोग, मणुमद (स ४०३) ।

अणुशेय ॥ म [अनुशेय] निरुद्ध, सदा (गाम) ।

अणुशेयलर पु [अनुशेयलर] नाग-मुसार देखो वा एक इन्द्र (मग ३३) ।

अणुशेह देखो अणुशेह । वह, अणुशेहमाण (मृम १, १०) ।

अणुशेय वि [अनुशेयित] मणुवृत्त (स ६८७) ।

अणुशेय म [अनु + शेय] १ मणुवरण करता । २ सामने जाना । मणुशेय (मृम १, ४, १, ३) ।

अणुशेय न [अनुशेय] छोटा बड़, माधुषो के महाव्रता की मन्त्रा साधु बड़, जैन गृहस्थ के पान्ते के नियम (ठा ५, १) ।

अणुशेय न [अनुशेय] ऊपर देखो (ठा ५, १) ।

अणुशेय पु [अनुशेय] शायक-धर्म (पचा १०, ८) ।

अणुशेय न [अनुशेय] मणुगमन (धर्मसि ५४) ।

अणुशेय वि [अनुशेय] मणुवरण करने-वाला, 'मन्त्रमन्त्रमणुशेय' (णामा १, ३) ।

अणुशेय स्त्री [अनुशेय] पंडितता स्त्री (उत २०) ।

अणुशेय नि [अनुशेय] मणुम, शायक, 'एवं मुने संप्रणा मन्त्रमन्त्रमणुशेय' (मृम १, ३, १) ।

अणुशेय नि [अनुशेय] १ म-वन्ध, मुना हुमा (उर २११ टी) । २ मन्त्र, विद्वान् 'पद्याण विविध्याणामे विविध होमपु-स्याण' (पौष ४८८) ।

अणुशेय वि [अनुशेय] म सिद्ध, चो-रहित (णामा १, ८०, १ २८३) ।

अणुशेय न [अनुशेय] विपक्ष के मणुमार, 'एवं विरुद्धे मणुमारुते चउरतएतं तयणुशेय' (मृम १, ५, २) ।

अणुशेय देखो अणुशीइ (मौव) ।

अणुशेय स [अनुशेय + क्रम] मणुवरण करता । मणुशेयनि (उत १३, २५) ।

अणुशेय पुं [अनुशेय] १ प्रमग, प्रस्ताव (माम ३६, मवि) । २ संसर्ग, मोहवत्, 'मगमठिई पुण एमा, मणुमद गेह हवन्ति पुण-दीना' (मठि २८, २७) ।

अणुशेय वि [अनुशेय] प्रासङ्गिक (प्रवि १५) ।

अणुशेय स [अनुशेय + चर] १ परि-भ्रमण करता । २ पीछे चलना । मणुमचर (पाचा, मृम १, १०) ।

अणुशेय देखो अणुशेय मणुशेयनि (पच ६८) ।

अणुशेय म [अनुशेय + धा] १ सोजना, हुँडना, हलारा करना । २ विचार करना । ३ पूर्वार्ध का निदान करना । अणुशेयमि (मि ५००) । संह. अणुशेयमि (मवि) ।

अणुशेय न [अनुशेयान] गवेयण, अणुशेयान ॥ सोन (संशेष ४४) । २ पूर्वार्ध की संगति (धर्मसि ३०३) ।

अणुशेय न [अनुशेयान] १ सोन, अणुशेयान ॥ सोय । २ विचार, चिन्तन 'मतालमधुनार मुमावण एरिया हुँमि' (या २०) । ३ पूर्वार्ध का निदान (पचा १२) ।

अणुशेय न [दे] मविच्छिन्न रिता, निरुद्ध दिक्की (दे १, ५६) ।

अणुशेय स [अनु + शय] मद करता । मणुशेय (रमनि ४ ३३) ।

अणुशेय न [अनुशेयन] १ पीछे से जानना । २ मणुमार करना (पाचा) ।

अणुशेय स [अनुशेय + च] मणुव करता, भ्रमण करता, 'जो रमायो दिनामा वा निदिनायो का मणुशेय' (पाचा) ।

अणुशेय म [अनुशेय + शय] मणुवरण करता, मणुव करता । मणुशेय (पचा) ।

अणुशेय स [अनु + संज] १ मणुवरण करता, मणुव शाय के बालान्तर में मणुवर्तन

ह्वणोय (पउम १७, १४, युवा ५८१)। संक-
अणुह्वेजण, अणुह्विउं (प्राक् पंचा २)।
अणुह्वण न [अनुभवन] अनुभव (म २८७)।
अणुह्विय वि [अनुभूत] निरुवा अनुभव
निया गया हो वह (युवा ६)।
अणुहारि वि [अनुहारिन्] अनुवरण करने
वाला, नकालची (कुमा)।
अणुहार देखो अनुभाव (म ४०३, ६५६)।
अणुहियासण न [अन्यध्यासन] धैर्य से
महत् करना (ज २)।
अणुह मय [अनु + भू] अनुभव करना।
वह. अणुहुन (पउम १०३, १५२)।
अणुहुं सव [अनु + भुज्] भोग करना,
भागना। अणुहुंइ (भवि)।
अणुहुत्त देतो अणुहुत्त (गा ६५६)।
अणुहुं वि [अनुभूत] १ जिनका अनुभव
निया गया हो वह (कुमा)। २ न अनुभव
(न ४, २७)।
अणुहो सव [अनु + भू] अनुभव करना।
अणुहोति (प ४७५)। वह. अणुहोति (पउम
१०६, १७)। वचइ. अणुहोईअत्त, अणु-
होईअत्त, अणुहोईअत्तमाण अणुहोईअत्तमाण
(प ५)। इ. अणुहोइअत्त (शी) (भवि
१३१)।
अणुनप देतो अणुत्तप, 'एत्तो बोचई अणु-
त्तप' (पचमा)।
अणुण वि [अनूत] कम नहीं, अधिक
(कुमा)।
अणुय १ वृ [अनूप] अधिक जनबाता देता,
अणुय २ कम-बहुत स्थान (निय १७०३;
वच ४)।
अणेअ वि [अनेफ] देतो अणेअ (कुमा भवि
२४६)।
अणेअम्भ वि [दे] चयन, चयन (दे १,
३०)।
अणेअ १ [अनेक] एर से अधिक, बहुत
अणेअ २ [घोर, प्राय ५३]। 'वरण न
[वरण] पर्याय, घम, घरापा (मम १०६)।
'राय वि [रायिक] अनेक राजा में होने-
वाला, अनेक राजा सबकी (उगमरदि)
(मम)। 'सो म [रास्] अनेक बार
(वा १४)।

अणेअंत पु [अनेकान्त] अनित्य, नियम का
समाव (किले)। 'वाय पु [वाय] स्वादाव,
जैनो का मुख्य सिद्धान्त, सर्व-सत्त्व कादि
अनेक विरुद्ध धर्मों का भी एक वस्तु में समावेश
स्वीकार,
'जेण किला सोयस्सवि, ववहारे
सव्वहा न निव्वडइ।
उत्थ भुवणेइयुत्तणो नमो भयोजयवायस्स'
(सम्म १६६)।
अणेअंतियि वि [अनैरान्तिक्] ऐनान्तिक्
नहीं, अनित्य, अनियमित (मम १, १)।
अणेअवाइ वि [अनेकयादिन्] पचासों को
संबंधा भक्षण-भक्षण माननवाला, भक्षित्यावाद-
मत का अनुयायी (ठा ८)।
अणेअत्तन वि [अनिच्छन्] नहीं चाहता
हूमा (उप ७६८ टी)।
अणेअ वि [अनेज] निचय, निष्पत्ति (प्राक्)।
अणेअ वि [अज्ञेय] जानने के अयोग्य,
जानने के अयोग्य (महा)।
अणेअलिस वि [अनोदरा] अनुभव, घमासारण,
'जे घम्म मुदमक्कणि पक्खिगुल्लपणेअिम'
(सूम १, ११)।
अणेअभूय वि [अनेवम्भूत] बिनाशण,
विनाश 'अणेअभूय वि [अनेवम्भूत] बिनाशण,
विनाश 'अणेअभूय वि [अनेवम्भूत] बिनाशण,
विनाश (मम ५, ५)।
अणेअ देतो अणेअस। वह. अणेअसत्त (ताट)।
अणेअसण न [अन्येअण] मात्र, तत्ता (महा)।
अणेअसायि वि [अनेअसा] एण्ण इअ असाय
(उवा)।
अणेअसिज्ज वि [अनेअण] असायनीय,
देन साधुधा के लिए असाय (मिआ-कादि)
(ठा ३, १, रागा १, ५)।
अणेअउया छी [अनुत्तरा] जिसको अनु-
भव न होता हो वह छी (ठा ५, २)।
अणेअबं वि [अनयमान्त] जिसका परामर्श
न किया गया हो वह, अविश्व, 'अवराईह
अणेअउता' (सीर)।
अणेअगाइ देतो अणुगाइ = अवरण; 'आ-
रणो संउतो अणेअगाइ' (इह ३)।
अणेअगसिय वि [अनयपरिउ] नहीं किया
हूमा, असायित (उवा)।

अणेअ वि [अनय] निर्दोष, शुद्ध (रागा
१, ८)।
अणेअउमी छी [अनययादी] भगवान् महा-
वीर को पुत्री का नाम (प्राक्)।
अणेअउमी छी [अनयया] अवर देतो (वच)।
अणेअम वि [अनयन] नहीं हुआ हुआ
(दे १, १)।
अणेअत्तप देतो अणुत्तप (वच ६५)।
अणेअ वि [अनयम] हीन-रहित, परिपूर्ण
(मावा)।
अणेअमाय न [अनयमान] असाय का असाय,
सत्कार, 'एव उगमदोमा विजडा
परिक्कया अणेअमाय।
मार्हनिगिक्का म क्या,
विहियायारो म अणुविहारे'
(घोम २४६)।
अणेअपार वि [दे] १ प्रभु, प्रभूत (घारम)।
२ असाय-अनयन (पचा १४, जी ४४)। ३
अनिन्तीर्ण (परह १, ३)।
अणेअम्भिस वि [अनुदान] अनुदान, मोना
(कुमा)।
अणेअय न [दे] असाय, असाय (दे १,
१६)।
अणेअयिहिया यो [अनीपनिधिनी] मानु-
पूर्वों का एर भेद, असाय (मम)।
अणेअयिहिया यी [अनुपनिहिता] असाय
हो (मि ७७)।
अणेअ वि [अनाइ] १ शुल, मूला हूमा
(प ५५१)। 'मय वि [अनय] असाय,
निन्दुर निर्दोष (वाप ८६)।
अणेअयमा वि [अनयम] असाय (मम १,
१२ ९)।
अणेअम वि [अनयम] असाय-रहित, असाय-
नीय (पउम ७६, २६ मुर ३, १३०)।
अणेअयिय वि [अनुपमिन्] असाय देतो
(पउम २, ६३)।
अणेअयसमा यो [अनुपसंका] असाय,
असाय ज्ञान का असाय (मम २, १२)।
अणेअयिहिय वि [अनुपधिक्] १ परिपूर्ण-
रहित, असाय। २ असाय, असाय (मावा)।
अणेअयसमा यो [अनुपधिक्] असाय-
असाय (मावा)। २ असाय, असाय (मावा)।
अणेअयसमा यो [अनुपधिक्] असाय-
असाय (मावा)। २ असाय, असाय (मावा)।

अणोसिय वि [अनुपित] १ जिसने धातु न किया हो। २ प्रत्ययस्थित, 'अणोसिएण न वरेइ खावा' (धर्म ३, सूत्र १, १४)।

अणोहंतर वि [अनोघन्तर] वार जाने के लिए अग्रमार्ग, 'अणोहा हु एष पवेइय अणो-हंतरा एए, नो य घोह तरितए' (भाषा)।

अणोहट्टय वि [अनपघट्टक] निरकुश, स्वच्छन्दी (शाया १, १६)।

अणोहीण वि [अनघहीन] हीनता-रहित (वि १२०)।

अण्ण सक [भुज्] भोजन करना, खाना। अण्णइ (पट्)।

अण्ण स [अण्य] दूसरा, पर (प्राप्त १३१)। 'अस्थिय वि [विधिक, युयिक] अण्य दशन का अनुयायी (सम ६०)। 'गहण न [ग्रहण] १ गान के समय होनेवाला एक प्रकार का मूल विकार। १ पु गानेवाला, गान्धर्विक, गवैया (निष् १७)। 'अस्मिय वि [धार्मिक] भिन्न धर्म वाला (भौव १५)।

अण्ण न [अन्न] १ नाज, चावल आदि धान्य (सूत्र १, ४, २)। २ भक्ष्य पदार्थ (उत्तर २०)। ३ भक्षण, भोजन (सूत्र १, २)। 'इलाय, 'गिलाय वि [ग्लायक] बाली मत की जानेवाला (भौव भा १६, ३)। 'निहि पुत्तुनी [विधि] पाक कला (भौव)।

अण्ण न [अणस] पानी, जल (उत्तर ५)।

अण्ण वि [दे] १ आरोपित। २ सहित (पट्)।

*अण्ण देखो कण्ण = कण (भा ५६४, कण्ण)।

अण्णअ पु [दे] १ जवान लच्छ। २ धूर्त, ठग। ३ देवर (दे १, ५५)।

अण्णइअ वि [दे] १ वृम (दे १, १६)। २ सब विषयो मे तुम, सर्वार्थ-तुम (पट्)।

अण्णओ ॥ [अन्यसस्] दूसरे से, दूसरी तरफ (उत्तर १)। देखो अन्नओ।

अण्णणज वि [अन्योन्य] परस्पर, आपस में (पट्)।

अण्णण्य वि [अन्यान्य] और और, अलग-अलग,

'अण्णण्णइ ज्वेता, ससारमहिम एवरसण्णमि।

मण्णवि धौरहियमा, सगट्टाणइव मुलाइ' (गडड)।

अण्णत्त ॥ [अन्यत्त] दूसरे में, भिन्न स्थान में (भा ६५५)।

अण्णत्ति स्त्री [दे] भवसा, धममान, निरादर (दे १, १७)।

अण्णत्तो देखो अण्णओ (भा ६३६)।

अण्णत्थ देखो अण्णत्त (विपा १, ०)।

अण्णत्थ वि [अन्यत्थ] दूसरे (स्थान) में रहा हुआ (भा ५५०)।

अण्णत्थ वि [अन्यत्थ] यथायं, यथा नाम तथा गुण वाला, 'ठियमण्णत्थ तपत्थनिर-वेस्स' (विसे)।

अण्णमण्ण देखो अण्णण्ण = अन्योन्य, 'अण्ण-मण्णमण्णत्त' (शाया १, २)।

अण्णमय वि [दे] पुनरन, फिर से कहा हुआ (दे १, २८)।

अण्णय देखो अण्णय (धर्मस ३६२)।

अण्णयर वि [अन्यतर] दो में से कोई एक (कण्ण)।

अण्णया भ [अन्यदा] कोई समय में (उत्तर ६ टी)।

अण्णय पु [अर्णय] १ समुद्र। २ संसार, 'अण्णयस्स महोपवि एते तिण्णे दुप्पत्ते' (उत्तर ५)।

अण्णव न [अणवत्त] एक लोकोत्तर गृहार्थ का नाम (ज ७)।

अण्णह न [अण्वह] प्रतिदिन, हमेशा (धर्म १)।

अण्णह देखो अण्णत्त (पट्)।

अण्णह ॥ भ [अन्यथा] अन्य प्रकार से, अण्णहा ॥ विपरीत रीति से, उलटा (पट्, महा)। 'माव पुं [माव] वैपरीत्य, उलटा-पन (बह ४)।

अण्णहि देखो अण्णत्त (पट्)।

अण्णो स्त्री [आज्ञा] आज्ञा, आदेश (भा २३, अमि ६३, मुद्रा ५७)।

अण्णाइट्ट वि [अन्नादिट्ट] आदि, जिसको आदेश दिया गया हो वह; 'अण्णुएण मालागारे भोग्गमाणिणा जक्खेए अण्णाइट्टे समारे' (मत्त २०)।

अण्णाइट्ट वि [अन्यादिट्ट] १ व्याप्त (भा १४, १)। २ पराधीन, परवश (भा १८ ६)।

अण्णाइस्स (धम) वि [अन्याइस्स] दूसरे के जैसा (वि २४५)।

अण्णाण न [अज्ञान] १ प्रज्ञान, प्रज्ञानकारी, मूर्खता (दे १, ७)। २ मिथ्या ज्ञान, झूठा ज्ञान (भा ८, २)। ३ वि. ज्ञान-रहित, मूर्ख (भा १, ६)।

अण्णाण न [दे] दाय, विवाह-काल में बधू को भयवा वर को जो दान दिया जाता है वह (दे १, ७)।

अण्णाणि वि [अज्ञानिन्] १ ज्ञान रहित, मूर्ख (सूत्र १, ७)। २ मिथ्या ज्ञानी (पव १)। ३ प्रज्ञान को ही श्रेयस्कर माननेवाला, प्रज्ञान-वादी (सूत्र १, १२)।

अण्णाणिय वि [अज्ञानिक] १ प्रज्ञानवादी, प्रज्ञानवाद का अनुयायी (पाव ६, सम १०६)। २ मूर्ख, प्रज्ञानी (सूत्र १, १, २)।

अण्णाय वि [अज्ञात] अविदित, नहीं जाना हुआ (पणह २१)।

अण्णाय पु [अणाय] न्याय का अभाव (भा १२)।

अण्णाय वि [दे] भाद्रं, गोला (से ४, ६)। अण्णाय वि [अन्याय्य] न्याय से छूट, न्याय विरुद्ध, 'जे विग्गहीए अण्णायभासी, न से समे होइ प्रमत्तपत्ते' (सूत्र १, १३)।

अण्णाण्य (श्री) ऊपर देखो (भा २०)।

अण्णाणिरिद्ध वि [अन्याइट्ट] दूसरे के जैसा (प्राय)।

अण्णाणिस वि [अन्याइस्स] दूसरे के जैसा (वि २४५)।

अण्णाणस्य वि [दे] विस्तृत, विख्याता हुआ (पट्)।

अण्णिज्जमाण देखो अण्णे।

अण्णिय वि [अन्यित] युक्त, सहित (सूत्र १, १०, नाट)।

अण्णिया स्त्री [दे] 'देखो अण्णी (दे १, २१)।

अण्णिया स्त्री [अज्ञिका] एक विख्यात जैन मुनि की माता का नाम (ती ३६)। 'अत्त पुं [पुत्र] एक विख्यात जैन मुनि (ती ३६)।

अण्णी ली [दि] १ देवर की ली । २ पति की बहिन, नन्द । ३ पूजा, पिता की बहिन (दे १, ५१) ।

अण्णु } वि [अह] यज्ञान, निर्वाण, मूर्ख
अण्णुअ } (पद १, गा १८५) ।

अण्णुण वि [अण्योग्ग] परस्पर, आपस में (गठ) ।

अण्णुण वि [अम्यून] परिपूर्ण (उप ५ २२५) ।

अण्णे मरु [अनु + इ] अनुसरण करना ।
अण्णोइ (विदे २५२६) । अण्णोति (पि ५६३) ।
नवह अण्णिज्जमाणा (प्रतीयमान) (विपा १, १) ।

अण्णेस मरु [अनु + इप्] १ खाना, हूँडा, सहजीवात करना । २ चाहना, माछना । ३ प्रार्थना करना । अण्णोमद (पि १६३) । वरु अण्णेसंत, अण्णेसअत, अण्णेसमाणा (महा बाल) ।

अण्णेसणा न [अण्वेपण] खोज तनाय, सहजीवात (उप ६ टी) ।

अण्णेसणा ली [अण्वेपणा] १ खोज वह जीवात (प्राप) । २ प्रार्थना (भावा) । ३ गृह्य में दी जाती मित्रा का ग्रहण (ठा १, ४) ।

अण्णेसय वि [अण्वेपक] गवेषण (पव ७१) ।

अण्णेसि वि [अण्वेपिन्] खोज करनेवाला (भावा) ।

अण्णेसिय वि [अण्वेपित] जिसकी सहजीवात की गई हो वह, 'अण्णेसिया सग्गमो तुम्हे न बहिं विट्ठा' (महा) ।

अण्णेण्णा देतो अण्णुण्ण, 'अण्णेण्णसमुल्लु-
बद्धं शिष्यमो भण्णिमसिंय तु' (पचा ६, स्पन् ५२) ।

अण्णेसिअ वि [दि] क्षतिग्रस्त, उर्ध्वपिण (दे १, ३६) ।

अण्ह स [अणु] १ शाना, मोहन करना । २ पानन करना । ३ ग्रहण करना । अण्ह (दे ४, ११०, पद) । अण्ह (भौष) । अण्ह (कुमा) ।

अण्ह न [अहन्] निरुध, दिन, भूस्वावरण-
स्वप्नसमय (उरा) ।

अण्हम } पु [आश्रय] बन्धन के कारण
अण्हय } हिसादि (पह १, १, ५, भौष) ।

अण्ह ली [वृष्णा] वृषा, व्यास (गा ६३) ।

अण्हैअ वि [दि] आत, भूना हुमा (दे १, २१) ।

अतक्खि वि [अतर्कित] १ प्रचिंतित, प्राक्-
स्मिक, 'प्रतक्खिमेव एरिय वसल्लमह वता'
(महा) । २ ठीक-ठीक नहीं देखा हुआ, भ्रम
रितक्षित (वच ८) । ३ त्रि वि 'प्रतक्खि
वेव' 'बिहुरिओ रायहूवी' (महा) ।

अतड नि [अतट] छोटा निनारा, 'मत्तुव
वातो सो वेव मग्गो' (वृह १) ।

अण्ह्ण्ण वि [अण्ण्णक] वृष्णा रहित,
नि स्पृह (अनु ६५) ।

अतत्त वि [अतत्त] भ्रम, भूल, वैय्याव्री
(उप ५०८) ।

अतत्थ वि [अतत्थ] नहीं डर हुआ निर्भीक
(कुमा) ।

अतत्थ वि [अतत्थ] भय, भूटा (भावा) ।
अतर देहा अयर (पव १, कम्म ५, भवि) ।

अतय पुन [अतयस्] १ सपथ्य का भ्रम
(उत्त २३) । २ वि तर रहित (वृह ४) ।

अतय पु [अतय] अ प्रशमा, निन्दा (कुमा) ।
अतसी देतो अयसी (पह १) ।

अतह वि [अतथ] भय, भ्रमास्तवि,
भूटा (मूष १, १, २ भावा) ।

अतह वि [अतथा] उम मायिन नहीं,
'आमो थिय वाम्हे उच्छाहति गरयाण
विस्तीमो ।

आमो थिय प्रवह-विषेयणेण वनसो
हियमा' (गठ) ।

अतर वि [अतर] तरल की प्रशम्य (आमा
१, ६, १५) ।

अतारि म [अतारि] ऊपर देखो (मूष
१, ३, २) ।

अतिवट्ट म [अवि + वट्ट] १ भूव हटना,
हट जाना । २ गव चपन से मुक्त होना ।

अतिवट्ट (मूष १, १५, २) ।

अतिवट्ट म [अवि + वट्ट] १ उल्लंघन
करना । २ व्याप्त होना । 'निट्टुद (मूष १,
१५, ६ टी) ।

अतिवट्ट वि [अतिवट्ट] १ धतिग्रस्त । २

अनुगत, व्याप्त 'जसी इण्ण जल्लेतिवट्टे
अविनासमो डम्मइ तुत्तपण्णे' (मूष १, ५,
१, १२) ।

अतित्थ न [अतीर्थ] १ तीर्थ (अनुवि सप)
का भ्रम, तीर्थ की अनुपपत्ति । २ वह बात,
जिसमें तीर्थ की प्रवृत्ति न हुई हो या उसका
भ्रम रह जा हो (पह १) । 'सिद्ध वि
[सिद्ध] अतीर्थ काल में जो मुक्त हुआ हो
वह, 'अतिवत्थिदाय मत्तेवो' (नव ५६) ।

अतिहि देखो अहि ।

अतीगाद वि [अतिगाद] १ प्रतिनिविड ।
२ कवि, भय, बहुत 'अतीगाद भोमो
अत्ताहि' (पव ८, ११३) ।

अतुल वि [अतुल] अनुपम, प्रसाधारण
(पह १, १) ।

अतुलिय वि [अतुलित] आमाधारण, प्रति-
तीय (भवि) ।

अत्त देखो अत्त = आत्म (मुर ३, १७४,
सम ५७ एदि) । 'लाभ पु [लाभ] स्वल्प
की प्राप्ति, उल्लसि (वम्म २, २५) ।

अत्त वि [आत्त] पीठित, दु विद, ईतान
(मुर ३, १४३, कुमा) ।

अत्त वि [आत्त] १ गृहीत, लिया हुआ (आमा
१, १) । २ स्वीकृत, मङ्गल किया हुआ (ठा
२, ३) । ३ पु मानी मुनि (वृह १) ।

अत्त वि [आत्त] १ ज्ञानादि-गुण-संग्रह, गुणी ।
२ खण्ड-वैय बजित, दीतरण । ३ प्रायश्चित्त-
दाना गुर, 'नाएमादेशेण प्रसाणि, जेण मत्तो व सा मव ।

रायहोमपरीणा वा, जे व इत्ता विगोहिद'
(वच १०) । ४ माय, मुनि (मूष १, १०) ।
५ एतल हिततर (मा १५, ६) । ६ प्राय,
मिना हुआ (वच १०) 'प्रसत्तपण्णेने'
(उत्त १२) ।

अत्त वि [आत्त] दु स वा माय करनेमाना,
गुण का उपादान (मा १५, ६) ।

अत्त म [अत्त] यदा, इन स्थान में (माट) ।
'अव वि [अवन्] गृह्य, मानवीय (मनि
६१, पि २६३) ।

अत्तअ देतो अत्तय = भय (मा २१) ।

अत्तम्भ वि [आत्मभ्रम] १ निमो बन्-

ययन हो यह । २ पुं. प्राधान्यं दोष (पिंड ६५) ।

अत्तट्ट वि [आत्माथ] १ शस्त्रीय, स्वकीय (धर्म २) । २ पुं. स्वार्थ, 'इह वामनियतस्त' अत्तट्टे नावरज्जु' (उत्त ८) ।

अत्तट्टिय वि [आत्माथिक] १ शस्त्रीय । २ जो अपने लिए किया गया हो, 'उरस्सडं भोयए माहाणाए अत्तट्टियं सिद्धमहेणपक्ख' (उत्त १२) ।

अत्तण } देखो अत्प = आत्मन् (पुच्छ
अत्तणअ } २३९) । 'कररु वि [आत्मीय]
निजी, स्वकीय (नाट, पि ४०१) ।

अत्तणअ } (श्री) वि [आत्मीय] स्वकीय,
अत्तणअ } अपना, निजवा (पि २७७, नाट) ।

अत्तणिज्जिय वि [आत्मीय] स्वकीय (ठा ३, १) ।

अत्तणीअ (श्री) ऊपर देखो (स्वप्न २७) ।

अत्तमाण देखो आद्यत्त = मा + वृत् ।

अत्तय पुं [आश्मज] पुत्र, लड़का । 'या लो [जा] पुत्री, लडकी (विपा १, १) ।

अत्तवय वि [अत्तवय] अपने साथक, भव्य (नाट) ।

अत्ता ली [दे] १ माता, माँ (दे १, ५१; चाव ७०) । २ सासू (दे १, ५१; या ६६७, हेका ३०) । ३ कुला ४ सखी (दे १, ९१) ।

*अत्ता देखो अत्ता (प्रति ८२) ।

अत्ताण देखो अत्त = आत्मन्, (पि ४०१) ।

अत्ताण वि [अत्ताण] १ शरण-रहित, शून्य-बर्जित (पणह १, १) । २ पुं. कर्म पर लाठी रहकर चलनेवाला मुसाफिर । ३ फटे-टूटे कपड़े पहनकर मुसाफिरी करनेवाला यात्री (इह १) । अत्ति पुं [अत्ति] इस नाम का एक ग्रथि (गडड) ।

अत्ति ली [अत्ति] पीडा, दुःख (कुमा, सुपा १=५) । 'हर वि [हर] पीडा-नाशक, दुःख का नाश करनेवाला (अभि १०३) ।

अत्तिहरी ली [दे] दूती, समाचार पहुँचाने-वाली ली (पड ५) ।

अत्तीकर सक [आत्मी + क] अपने अपने करना, पत्र करना । अत्तीकरेय, वक्ता, अत्तीकरत (निबू ४) ।

अत्तीकरण न [आत्मीकरण] अपने अपने करना (निबू ४) ।

अत्तुकरिस पुं [आत्मीकरिप] अभिमान, अत्तुकोस } गर्व, 'तम्हा अत्तुकरिणो वने-

यको जइजणेण' (सुम १, १३; सम ७१) ।

अत्तुकोसिय वि [आत्मीकरिपिक] गर्वित, अभिमानी (श्रीप) ।

अत्तेय पुं [आत्रेय] १ भवि आधि का पुत्र (वि १०, ८३) । २ एव जैन पुनि (विसे २७६९) ।

अत्तो व [अत्तस्] १ इमने, इस हेतु से (गडड) । २ यहाँ से (प्राप्ता) ।

अत्थ देखो अट्ट = अर्थ (कुमा, उव ७२८; ८८४ टी. जी १; प्राप् ६५, गडड) । 'अरोह-

मत्थे रहिए विलासो' (नोय ७) । 'अत्यमहो पन्नखोय' (विसे १०३६, १२४३) । 'जोगि ली [योनि] धनोपाधेन का उपाय, साम,

धर्म, इष्ट कर्म-नीति (ठा ३, ३) । 'णय पुं [नय] शब्द को छोड़ अर्थ को ही मुख्य बस्तु माननेवाला पक्ष (पणु) । 'सदय न [शास्त्र] अर्थ शास्त्र, सर्पति शास्त्र (साया १, १) । 'वड्ड पुं [वड्डि] १ धनी । २ कुबेर (वय ७) । 'वाय पु [वाद] १ गुणवर्णन ।

२ दोष-निष्पण । ३ गुण वाचक शब्द । ४ दोष-वाचक शब्द (विने) । 'वि वि [वित्त] अर्थ का जानकार (पिंड १ भा) । 'सिद्ध वि [सिद्ध] १ प्रभूत धनवान्ना (जं ७) । २ पुं. ऐश्वर्य क्षेत्र के एक भ्रात्री विनयेव (तित्थ) ।

'लिय न [लिय] धन के लिए असह्य बोलना (पणह १, २) । 'लोयण न [लोचन] पदार्थ का साधन्य ज्ञान (प्राप् १) । 'लोयण न [लोकन] पदार्थ का निरीक्षण,

२ दोष-निष्पण । ३ गुण वाचक शब्द । ४ दोष-वाचक शब्द (विने) । 'वि वि [वित्त] अर्थ का जानकार (पिंड १ भा) । 'सिद्ध वि [सिद्ध] १ प्रभूत धनवान्ना (जं ७) । २ पुं. ऐश्वर्य क्षेत्र के एक भ्रात्री विनयेव (तित्थ) ।

'लिय न [लिय] धन के लिए असह्य बोलना (पणह १, २) । 'लोयण न [लोचन] पदार्थ का साधन्य ज्ञान (प्राप् १) । 'लोयण न [लोकन] पदार्थ का निरीक्षण,

२ दोष-निष्पण । ३ गुण वाचक शब्द । ४ दोष-वाचक शब्द (विने) । 'वि वि [वित्त] अर्थ का जानकार (पिंड १ भा) । 'सिद्ध वि [सिद्ध] १ प्रभूत धनवान्ना (जं ७) । २ पुं. ऐश्वर्य क्षेत्र के एक भ्रात्री विनयेव (तित्थ) ।

'लिय न [लिय] धन के लिए असह्य बोलना (पणह १, २) । 'लोयण न [लोचन] पदार्थ का साधन्य ज्ञान (प्राप् १) । 'लोयण न [लोकन] पदार्थ का निरीक्षण,

२ दोष-निष्पण । ३ गुण वाचक शब्द । ४ दोष-वाचक शब्द (विने) । 'वि वि [वित्त] अर्थ का जानकार (पिंड १ भा) । 'सिद्ध वि [सिद्ध] १ प्रभूत धनवान्ना (जं ७) । २ पुं. ऐश्वर्य क्षेत्र के एक भ्रात्री विनयेव (तित्थ) ।

'लिय न [लिय] धन के लिए असह्य बोलना (पणह १, २) । 'लोयण न [लोचन] पदार्थ का साधन्य ज्ञान (प्राप् १) । 'लोयण न [लोकन] पदार्थ का निरीक्षण,

२ दोष-निष्पण । ३ गुण वाचक शब्द । ४ दोष-वाचक शब्द (विने) । 'वि वि [वित्त] अर्थ का जानकार (पिंड १ भा) । 'सिद्ध वि [सिद्ध] १ प्रभूत धनवान्ना (जं ७) । २ पुं. ऐश्वर्य क्षेत्र के एक भ्रात्री विनयेव (तित्थ) ।

'लिय न [लिय] धन के लिए असह्य बोलना (पणह १, २) । 'लोयण न [लोचन] पदार्थ का साधन्य ज्ञान (प्राप् १) । 'लोयण न [लोकन] पदार्थ का निरीक्षण,

२ दोष-निष्पण । ३ गुण वाचक शब्द । ४ दोष-वाचक शब्द (विने) । 'वि वि [वित्त] अर्थ का जानकार (पिंड १ भा) । 'सिद्ध वि [सिद्ध] १ प्रभूत धनवान्ना (जं ७) । २ पुं. ऐश्वर्य क्षेत्र के एक भ्रात्री विनयेव (तित्थ) ।

'लिय न [लिय] धन के लिए असह्य बोलना (पणह १, २) । 'लोयण न [लोचन] पदार्थ का साधन्य ज्ञान (प्राप् १) । 'लोयण न [लोकन] पदार्थ का निरीक्षण,

२ दोष-निष्पण । ३ गुण वाचक शब्द । ४ दोष-वाचक शब्द (विने) । 'वि वि [वित्त] अर्थ का जानकार (पिंड १ भा) । 'सिद्ध वि [सिद्ध] १ प्रभूत धनवान्ना (जं ७) । २ पुं. ऐश्वर्य क्षेत्र के एक भ्रात्री विनयेव (तित्थ) ।

अत्थ न [अत्थ] दृष्टिया, प्राप्थ (पउम ८, २०; से १४, ६१) ।

अत्थ वक् [अर्थय] मागना, याचना करना, प्रार्थना करना, वितति करना । अत्यणए (निबू ४) ।

अत्थ भक् [रथा] वेडना । अत्यइ (प्राप् ७१) । अत्थ } देखो अत्त = मन (वम्प, पि २६३, अर्थ ३६१) ।

अत्यडिल वि [अत्यणिल] साधुप्रे के रहने के लिए अयोग्य स्थान, सुदूर जन्तुप्रां से व्याप्त स्थान (श्रीप १३) ।

अत्यथ वक् [अत्तं यत्] अस्त होता हुआ (वजा २२) ।

अत्यकिरिआ ली [अर्थक्रिया] बस्तु का व्यापार, पदार्थ से होनेवाली क्रिया (धर्म १ ४६६) ।

अत्यक् न [दे] १ प्रकाश, प्रकृष्टता, वे- समय (उर ३३०; से ११, २४, या ३०; भवि); 'अत्यक्राज्जिउमताहियहिमप्रा पडिभ-

जाप्ता' (भा ३=६) । २ वि. पलित (वजा ६) । ३ वि. भगवत्त, हुनेरा (गडड) ।

अत्यक् न [दे] १ मध्य-वर्ती, बीच का, 'अमए अत्यवे वा मोएएणेणु चणं पट्ट' (श्रीप ३४) । २ प्रणाय, गभीर । ३ न. लम्बाई, मायाम । ४ स्थान, जगह (दे १, ५४) ।

अत्यण न [अर्थेन] प्रार्थना, याचना (उव ७२८ टी) ।

अत्यणिऊर पुन [अर्थनिपूर] देखो अचछ-णिउर (पणु ६६) ।

अत्यणिऊरंग पुन [अर्थनिपूराङ्ग] देखो अचछणिउरंग (पणु ६६) ।

अत्यथि वि [अर्थार्थिन्] धन की इच्छा-वाला (उव १३६) ।

अत्यम भक् [अत्यम् + इ] अस्त होता, अदृश्य होता । अत्यमए (पि ५५८) । वक्. अत्यमंत (पउम ८, ५६) ।

अत्यमण न [अस्तमयन] अस्त होता, अदृश्य होता (श्रीप ९०७, से ८, ८५; या २=४) ।

अत्यमाधिय वि [अस्तमापित] अस्त कर-वाया हुआ (सम्मत १६१) ।

अत्यमिय वि [अस्तमित] १ अस्त हुआ,

हूव गया, महरय हुमा (घोष ५०७, महा-
मुगा १५५) । २ हीन, हानि-प्राप्त (डा ४, ३) ।
अथयारिआ श्री [दि] लगी, बयल्या (दि १
१६) ।

अत्यर सक [आ + स्तृ] विद्याना, शय्या
बनाना, पसारना । अत्यरह (उव) । संहं.
अत्यरिऊग (महा) ।

अत्यरण न [आस्तरण] १ बिद्वीना, शय्या
(दि १४, ५०) । २ विद्याना, शय्या करना
(निने २३२२) ।

अत्यरय वि [आस्तरक] १ मच्छादान करने-
वाना (राम) । २ पुं. निछोले के ऊपर का
पत्र (मग ११, ११; कण) ।

अत्यरय वि [अस्तरजरक] निर्मल, शुद्ध (मग
११, ११) ।

अत्ययण देनो अत्यमण (मवि) ।

अत्यसिद्ध पुं [अर्यसिद्ध] पत्र का दशम
दिन, दशमी तिथि (पुत्र १०, १५) ।

अत्या देनो अट्टा = धान्या ।

अत्या [सक] अताय [मस्त] होना,
अत्याज [हूव] जाना, महरय होना । मयाइ,
मयाए (पत्रम ७३, १५) । मयाप्रीति (मि
७, २३) । बट. अत्याजंत (मि ७, ६६) ।

अत्याज वि [अस्तमित] भन्त हुआ, हुआ
हुमा [हायचिप दिवसयो मस्यामी निगयवि-
रणमपामो] (पत्रम १०, ६६; वे ६, ५२) ।

अत्याइया श्री [दि] गोठो मएइ (उ ३६) ।
अत्थाण न [आस्थान] शाना, शाना-स्थान
(गुर १, ८०) ।

अत्थाणिय वि [अत्थानिय] गैर-स्थान में
सना हुआ, 'मयाणियमयण्हि' (मवि) ।

अत्थाणी श्री [आस्थानी] शाना-स्थान (हुमा) ।
अत्थाणीअ वि [आस्थानीय] शाना-स्थानी
(पुन ७८) ।

अत्थाम वि [अत्थामन] बल-यहिन, निर्बल
(गामा १, ११) ।

अत्थार पुं [दि] गहापज, गहाम्य (दि १, ६,
लाय) ।

अत्थारिय पुं [दि] नीरह, बर्नबायी (ब ९१) ।
अत्थारमगद देनो अत्थुमगद (पत्त ३) ।

अत्थारपन श्री [अत्थारपत्त] मनुक धर्म को
करना = मनुमत, एक प्रकार का अनुयायन

ज्ञान, जेमे 'देवसत्त पुट्ट है और दिन में नही
साता है' इस वाक्य से 'देवसत्त रात में साता
है' ऐसा मनुक धर्म का ज्ञान (उर ६६८) ।

अत्याइ वि [अस्ताघ] १ मयाइ, गह-रहित,
गंभीर (गामा १, १५) । २ नास्तिका के ऊपर
का भाग भी जितमे हूव सवे इतना गहरा
जतारय (इह ४) । ३ पुं. अतीत चौबीसी
में भारत में समुपगत इस नाम के एक तीर्थवर-
देन (पत्र ६) ।

अत्याइ वि [दि] देनो अत्यगघ (दि १, ५४;
मवि) ।

अरिय वि [अरिय] १ याचन, मांगनेवाला
(गुर १०, १००) । २ धनी, धनवाला (वंचा) ।
३ मानिन, स्वामी (विने) । ४ पल्ल, चाहने-
वाला;

'मएमो भणुणियाणं, वामत्थोणं च
सच्चवामकरो ।
मग्गापवग्गममहेज्जु जिण्णदेमिओ धम्मो ॥'
(महा) ।

अरिय न [अरिय] हाव, हड़ो (महा) ।

अरिय म [अस्ति] १ सत्त-भूचक भव्य है,
'मचेगमाया भूइस भविता मनापयो मएयारियं
पनइया' (धीन), 'मविय एं मति' निमाणाइ
(दीन १) । २ अदेठ, धनमर; 'वत्तारि मविय-
वामा' (डा ४, ४) । 'अरत्तव्य वि [अ-
रत्तव्य] सत्तमद्दी का पांचवां भद्र, स्वर्गीय
इय्य भादि की धर्मता से विद्यमान और एक
ही साथ करने की धरतय पदार्थ;
'सम्माने आट्टो देनो देनो म समयहा पण ।
तं धां समसत्तयं च होइ दविय निमणरणा'
(मग्ग ३८) ।

'काय पुं [अय्य] अदेठो का—धरतयो का
मनुह (मग १०) । 'अय्यवसत्तय वि
[निमयवसत्तय] सत्तमद्दी का छठवां
भद्र, स्वर्गीय इय्यादि की धर्मता से विद्यमान,
परकीय इय्यादि की धर्मता से विद्यमान और
एक ही समय में दोनों धर्मों में करने को
धरतय पदार्थ,
'गामागामाग्गे, देनो देनो म समयहा पण ।
तं धविण'रत्तययं च दविय निमणरणा'
(मग्ग ४०) ।
'न न [त्य] मय, विद्यमान, हतना ।

(गुर २, १५२) । 'त्ता श्री [ता] मय,
हवाली (उर ५ ३७५) । 'त्तिनय पुं [इति-
नय] इय्यापिक नय (विने १३७) । 'नयि
वि [मास्ति] सत्तमद्दी का तीसरा भद्र—
प्रकार, स्वइय्यादि की धर्मता से विद्यमान
और परकीय इय्यादि की धर्मता से विद्य-
मान वस्तु;

'मह देनो सम्माने देणोसम्मानपत्रे निमणो ।
तं दवियमवियनयि म, मएसविनेमिणं जण्ठा'
(सम्म ३७) ।

'नयिणपवया न [नास्तिप्रवाह] माइयें
धैव भद्र-अय्य का एक भाग, चौथा पूर्व (मग
२६) ।

अरियक न [आस्तिक्क] भास्तिवता, धामा-
परलोच भादि पर विद्यास (था ६; पुण
११०) ।

अरियय देनो अरिय = धर्मिय (महा, धीन) ।
अरियय वि [अरिय] धनी, धनवा (है २,
१५६) ।

अरियय न [अरिय] १ हड़ी, हाव । २ पु.
कुल-निष्ठेय । ३ न. बहु बीजवाला पन-निष्ठ
(पण १) ।

अरियय वि [आस्तिर] धामा, परलोच
भादि की हवाली पर धडा रानेवाता
(धर्म २) ।

अत्थिर देनो अत्थिर (वंचा १२) ।

अत्थीकर सक [अधी + क] प्रार्थना करना,
याचना करना । मणीकरेद (निगू ५) । बट.
अत्थीकरंत (निगू ५) ।

अत्थीकरण न [अर्थीकरण] प्रार्थना, याचना
(निगू ५) ।

अत्थु मय [आत्तृ] विद्याना, शय्या करना ।
बर्न. मयुप्पनर बरर. अत्थुकरंत (विने
२३२१) ।

अत्थुअ वि [आत्तृन] विद्याना हुआ (गाम-
विने २३२१) ।

अत्थुमगद पुं [अर्थापमह] 'अन्व' और मय
हाव होनेवाला ज्ञान-निष्ठेय, निर्विकल्पक ज्ञान
(मग ११, डा २, १) ।

अत्थुमगहन न [अर्थापमहन] छत्र का शिखर
(मग ११, ११) ।

अत्थुम वि [दि] मनु, पट्टा, (है १, ६) ।

अधुरण न [दि आतरण] विद्योना (स ६७) ।

अधुरिय वि [दि. आहृत] विद्याया हुमा - (स २३९; दे १, ११३) ।

अधुरड न [दे] भक्षण, भिनावो वृत्त का फल (दे १, २३) ।

अत्येक वि [दे] आत्मिक, प्रचिन्तित (दे १२, ४७) ।

अत्योगाह देवो अधुमाह (सम ११) ।

अत्योगाह देवो अधुमाहण (भग ११, ११) ।

अत्योडिय वि [दे] ग्राह, लोचा हुमा (महा) ।

अत्योभय वि [अतोभक्र] 'उत', 'वे' आदि निरर्थक शब्दों के प्रयोग से भ्रष्टित (सूत्र) (इह १) ।

अत्योगाह देवो अधुमाह (पण १५) ।

अथक न [दे] १ भराह, मनवर, मन-स्मात् (पद्) । २ वि. पतलेवाला, फैले-वाला (हुमा) ।

अथव्यण पुं [अथवण] बीया वेद-शाल (कच, शापा १, ५) ।

अथिर वि [अथिर] १ चवल, चपल (हुमा) । २ शनिय, विनश्र (हुमा) । ३ ग्रह, शिथिल (भोष) । ४ निर्बल (वच २) । ५ मजबूती से नहीं बैठा हुमा, नहीं जमा हुमा (अभ्यास), 'अथिरस्स पुण्यगदियस्स, वत्तणा जं इह पिरिकण' (पचा १२) । 'गाम न [नामन] नाम-कर्म का एक भेद (सम ६७) ।

अद सक [अद्] खाना, भोजन करना । अदह, प्रवर (पद्) ।

अदंसण देवो अदंसण (वचमा) ।

अदंसण पुं [दे] चोर, डाकू (दे १, २६, पद्) ।

अदंसिया छी [अदंशिका] एक प्रकार की मोठी चीज (पण १७) ।

अदकसु वि [अदह] १ नहीं देखा हुमा । २ असर्वन (सम १, २, ३) ।

अदकसु वि [अदक्ष] अनिपुण, अनुसाल (सम १, २, ३) ।

अदकसु वि [अदह्य] १ नहीं देखनेवाला,

अथा । २ असर्वन, 'अदह्युन ! दम्पुनाहियं सहहुण्ण भदह्युदंसणा' (सम १, २, ३) ।

अदण न [अदन] भोजन (इह १) ।

अदत्त वि [अदत्त] नहीं दिया हुमा (पण १, ३) । 'हार वि [हार] चोर (भावा) ।

'हारि वि [हारि] चोर (सम १, ५, १) ।

'दाण न [दान] चोरो (सम १०) ।

'दाणवेरण न [दानविरमण] चोरो ॥ निवृत्ति, वृत्ति वत (पण २, ३) ।

अदन्न देवो अदण (सिदि ३१०) ।

अदकम वि [अदक्ष] मनन, बहुत (जं ३) ।

अदय वि [अदय] निर्दय, निष्ठुर (निष्ठ २) ।

अदिइ देवो अइइ (अ २, ३) ।

अदिण देवो अदत्त (अ १) ।

अदित वि [अदित] १ दर्श-रहित, नश्र (इह १) । २ ग्रहितक (भोष ३०२) ।

अदिन्न देवो अदत्त (सम १०) ।

अदिरस देवो अदिरस (सम ६०; सुपा १५३) ।

अदिहि न्नी [अधुति] अधोराई, धीरज ना भभाव (गाम) ।

अदीप वि [अदीन] दीनता-रहित । 'सत्तु पुं [अधु] हस्तिनापुर का एक राजा (शापा १, ८) ।

अदु स [दे] १ आनतर्य-सूचक अर्थय, भव (भावा) । २ इतरे (सम १, २, २) ।

अदु स [दे] १ अथवा, या (सम १, ५, २, १५; उत ८, १२; वत्त २, १५) । २ प्रधिकारावर वा सूचक (सम १, ५, २, ७) ।

अदुत्तरं भ [दे] आनतर्य-सूचक अर्थय, भव, याव (शापा १, १) ।

अदुय न [अदुत्त] अ-शोभ, धीरे धीरे (भग ७, ६) 'अधण न [अधन] दीर्घ काल के लिए नवन (सम २, २) ।

अदुव } अ [दे] या, अथवा, और, 'हियेन अदुवा' } पाण्डुप्रादं, तमे अदुव थावरे' (वच ५, ५, भावा) ।

अदोळि } वि [अदोळि] स्थिर, निचल अदोळि } (हुमा) ।

अद वि [अद] १ गीला, भोगा हुमा, मरु-ठिन (हुमा) । २ पुं. इस नाम का एक

राजा । ३ एक प्रसिद्ध राजकुमार धीरे धीरे से जैन मुनि । ४ वि. आद'राजा के वंशज । ५ नगर-विशेष (सम २, ६) । 'कुमार पुं [कुमार] एक राजकुमार धीरे धीरे से जैन मुनि, 'महकुमारो दण्डगहरो भ' (पडि) । 'सुत्था छी [सुत्ता] वन्द-विशेष, नागर मोथा (अ २०) । 'मलम न [मलक] १ हरा ग्रामता । २ पीतु-वृद्ध की वली (पम २) । ३ शण वृद्ध की वली (पम ५) । 'रिट्ट पुं [रिट्ट] वमन कीमा (भावन) ।

अद पु [अद] १ भेष, वर्षा, बारिश (हि २, ७६) । २ वर्ष, संवत्सर, संवत् (सुर १३, ७०) ।

अद पुं [अद] आगारा (भग २०, २) ।

अद पुन [दे] १ परिहात । २ वर्णन (संक्षि ४७) ।

अद सक [अद्] माला, पीटना (वच १०) । अदइअ न [अद्वैत] १ भेद का अभाव । २ वि. भेद-रहित ब्रह्म औरह (गाठ) ।

अदइअ वि [आद्रोय] १ भाद'कुमार-सम्बन्धी । २ इस नाम का 'सूक्तज्ञा' सूत्र का एक प्रथम (सम २, ६) ।

अदंसण न [अदरौन] १ दर्शन का निषेध, नहीं देखना (सुर ७, २५८) । २ वि. परोक्ष, जिसका दर्शन न हो, 'एककपुषिय हाहिति मन्त्र भददंसणा इतिह' (सुपा ६१७) । ३ नहीं देखनेवाला, अथा । ४ 'धीरोली' या अग्रम निद्रा वाला (गच्छ १, पव १०७) । 'भूअ, 'हूय वि [भूत्] जो प्रहस्य हुमा हो (सुर १०, ५६, महा) ।

अदण } वि [दे] पाकुल, ध्याकुल (दे १, अदण } १५० इह १, निष्ठ १०) ।

अदन्न देवो अदण (सुत १, १५) ।

अदव वि [आद्रव] गला हुमा (भाव ६) । अदकर न [अदकर] भवसु, वस्तु का भभाव, (पचा ३) ।

अदह सक [आ + दह] उबालना, पानी-नीत वगैरह को खूब गरम करना । अदहेह, अदहेमि, संछ. अदहेत्ता (उवा) ।

अदहिय वि [आहित] रखा हुमा, स्थापित (विषा १, ६) ।

अदा श्री [आदा] १ नक्षत्र-विशेष (सम २) । २ छन्द-विशेष (पिंग) ।

अदाअ पुं [दे] १ आदर्श, दर्पण (दे १, १४; पण्य १५; निरु १३) । पसिण पुं [अश्रु] विज्ञा-विशेष, जिसमें दर्पण में देवता का ध्यान-मन होता है (हा १०) । विज्ञा श्री [विद्या] विद्विद्या का एक प्रकार, जिसमें भीमार को दर्पण में प्रतिबिम्बित कराने से वह भीरोग होता है (वय ५) ।

अदाइअ वि [दे] आदर्श बाला, आदर्श में पवित्र (हृद १) ।

अदाग [दे] देवो अदाअ (सम १२१) ।

अदि पुं [अद्रि] पहाड़, पर्वत (गउउ) ।

अदिट्ट वि [अट्ट] १ नही देला हुआ (सुर १, १७२) । २ दर्शन का अविषय (सम ६१) ।

अदिय वि [आद्रित] आद्र विद्या हुआ निगाया हुआ (विक २३) ।

अदिय वि [आद्रित] पीटा हुआ, पीडित (वय १०) ।

अदिस्त वि [अट्टय] देवने के अद्योय या अद्यय (सुर ६, १२०; सुपा ८५; या २७) ।

अदिरसन } वट्. [अट्टयमान] नही
अदिरसमान } दिलाता हुआ (सुपा १५५;
५५७) ।

अदीण वि [अदीण] शीत को अग्रस्त, अनुप्य, निर्मोक (पण्य २, १) ।

अदीण देवो अदीण (भीप ३१७) ।

अदुदुमाअ वि [दे] पूर्ण, मरु हुआ (पद १) ।
अदेस नि [अट्टय] देवने के अद्यय (म १७०) ।

अदेसीरारिणी श्री [अट्टयीरारिणी] भरतय भक्तिसौमि निया (सुपा ५५५) ।

अदेसीकरण नि [अट्टयीकरण] १ भरतय करता । २ भरतय करनेवाली निया, निपुण विज्ञानिग्न्या अदेसीनएणवगमो बार्नि (सुपा ५५५) ।

अदेहि नि [अट्टेहि] मोह-रहित, डेव-वर्जित (धर्म १) ।

अद पुं [अर्ध] १ भाषा (हुमा) । २ शब्द, संघ (वि ५०२) । करिस पुं [कर्ध] करि-माए-विशेष, पत्र का अर्धार्ध भाग (सुपा) ।

कुडव, कुडव पुं [कुडव, कुडव] एक प्रकार का चान्य का परिमाण (राम) ।

कुसेत्त न [कुसे] एक अथोपान में चन्द्र के साथ योग प्राप्त करनेवाला नक्षत्र (चंद १०) । खल्ला श्री [खल्ला] एक प्रकार का जूता (हृद ३) । घडय पुं [घटक] भाषा परिमाणवाला घड़ा, छोटा घड़ा (उमा) ।

चंद पुं [चन्द्र] १ भाषा चन्द्र (या ५७१) । २ गत-हस्त, गला बन्द कर बाहर करना (उप ७२८ टी) । ३ न. एक हथियार (उप ७ १६५) । ४ धर्म चन्द्र के आधारवाले सोपान (शाम्या १, १) । ५ एक तरह का बाण, 'एगो गुरु विष्णवेण सीसं द्विषामि भद्र-चक्षणे' (सुर ८, ३७) । चकयाल न [चक्रायल] गति-विशेष (हा ७) । चक्रि पुं [चक्रि] चक्रवर्ती राजा से धर्म निभूति वाला राजा, वामुदेव (वम १, १२) ।

चल्लु, छट्ट वि [पट्ट] साते पाँच (वि ५५०; सम १००) । ट्टम वि [ट्टम] साते सात (हा ६) । गाराय न [नाराय] भीमा चंडाल, शरीर के हाथों की रचना-विशेष (जीन १) । गारीसर पुं [नारीसर] शिर, महादेव (कम्पु) । तद्रय वि [तृतीय] झाई (पजम ५८, ३५) । तेरस वि [त्रयो-दश] साढ़े बाइठ (अम) । तेयश वि [त्रिप-ञ्जारा] साढ़े बावन (सम १०५) । छ नि [छ] चौथा माल, चौथा (हृद १) । नरम वि [नरम] साढ़े बाठ (वि ५५०) । नाराय देवो गाराय (कम्म १, २८) ।

वचम नि [पञ्चम] साढ़े चार (सम १०२) । पल्लिअंकि वि [पर्यट्ट] मातन-विशेष (हा ५, १) । पहर पुं [प्रहर] ग्रीष्मिण शान्त प्रसिद्ध एवं कुपेण (गण १८) । बचयर पुं [बचरे] देव-विशेष (पजम २७, ५) । मागहा, 'हो स्त्री [मागधी] प्राचीन जैन साहित्य की प्राकृत भाषा, जिसमें मागधी भाषा के भी कोई ३ नियम का अनुसरण किया गया है, श्लोक-मञ्जुभाष्यभाषिण्यं हृदयं गुणं' (वि ५, १८०; नि १६; सम ६०; पजम २, १५) । माअ पुं [माअ] पत्रा पत्रह नि (दे १०१) ।

मामिय वि [मासिक] पारिजिक, पञ्च-कम्बजो(महा) : चंद देवो चंद (उप ७३८

टी) । रजिय वि [राजियक] राज्य का भाषा हिलेदार, धर्म राज्य का मासिक (विपा १, ६) । रत्त पुं [रात्र] समय रात्रि का समय, विशेष (भा २३१) ।

वेयाली स्त्री [वेताली] विद्या-विशेष (सूभ २, २) । संसासिया स्त्री [सांसासियका] एक राज-कन्या का नाम (भार ५) । सम न [सम] एव क्षुत्, छन्द-विशेष (हा ७) ।

हार पुं [हार] १ नवसर हार (राम; भीप) । २ इस नाम का एक द्वीप । ३ समुद्र-विशेष (जीव ३) । हारभद [हारभद्र] भर्षहार-द्वीप का अग्निघाता देव (जीव ३) । हारमहाभद पुं [हारमहाभद्र] पूर्वोक्त द्वीप भर्ष (जीव ३) । हारमहाहार पुं [हार-महाहार] भर्षहार समुद्र का एक अग्निघातक देव (जीव ३) । हारपर पुं [हारपर] १ द्वीप-विशेष । २ समुद्र-विशेष । ३ उनका अग्निघातक देव (जीव ३) । हारपरभद पुं [हारपरभद्र] भर्षहार द्वीप का एक अग्निघाता देव (जीव ३) । हारपरमहाहार पुं [हारपरमहाहार] भर्षहार समुद्र का एक अग्निघाता देव (जीव ३) । हारोभास पुं [हारोभास] १ द्वीप-विशेष । २ समुद्र-विशेष (जीव ३) । हारोभासभद पुं [हारो-भासभद्र] भर्षहारवाम नामक द्वीप का एक अग्निघाता देव (जीव ३) । हारोभास-महाभद पुं [हारोभासमहाभद्र] पूर्वोक्त द्वीप भर्ष (जीव ३) । हारोभासमहाहार पुं [हारोभासमहाहार] भर्षहारवाम नामक समुद्र का एक अग्निघाता देव (जीव ३) । हारोभासनर ॥ [हारोभासनर] देवो पूर्वोक्त भर्ष (जीव ३) । दय पुं [दिक] एव प्रकार का परिमाण, भाइय का भाषा भाग (हा ३, १) ।

अद पुं [अप्यन्त] मायं, पल्ला (महा; धावा) । अदंत्त पुं [दि] १ पर्यन्त, पल्ल भाग (दे १, १८; वि १, ३२, पाप) । भरिअविमदाअंठो (निरु १०१) । २ पू. ब. बर्जिय, बर्जिक (वि १३, १२) ।

अद्वयन्य न [दि] १ अतीता करता, रह देखा (दे १, १५) । २ परोक्ष करता (दे १, १५) ।

अद्विप्रअ न [दे] १ संज्ञा करना, इशारा करना, संकेत करना (दे १, १४) ।

अद्विप्रअ वि [अर्थोक्ति] विवृत भास वाला (महानि ३) ।

अद्वजंवा श्री [दे अर्थजहा] एव प्रकार अद्वजयी ॥ जा बूता, मोचक नामक बूता, जिये गुजरती मे 'मोजडी' बहते हैं (दे १, ३३ २, ५ ९, १३६) ।

अद्वद्धा श्री [दे अद्धाद्धा] दित भयवा राति का एक भाग (सप्त ६ टी) ।

अद्वपेडा श्री [अर्थपेडा] सन्तक के अर्थ भाग ने आभरपाती पृष्ठ पक्ति मे मिश्रादन (उत्त ३०, १६) ।

अद्वर पु [अध्वर] यत्न, याग (पाथ) ।

अद्वर वि [दे] प्रच्छन्न, गुप्त, 'तद्वा एमस्त विद्रिपमदरुद्रुधो चैव पिच्छामि, तयो राया तपिद्रिपगो' (सम्मत १६१) ।

अद्विआर न [दे] १ मरण, भूषण, 'मा कुण भद्रविआर' (दे १, ४३) । २ मजल, छोटा मजल (दे १, ४३) ।

अद्धा श्री [दे अद्धा] १ काल, समय, वच, (छा २, १, नव ४२) । २ संकेत (मग ११, ११) । ३ सन्धि, शक्ति विशेष (विसे) । ४ न तत्त्वत वस्तुतः । ५ साक्षात्, प्रत्यक्ष (विग) । ६ विषम । ७ रात्रि (सप्त ६ टी) । 'काल पु [काल] सूर्य प्रावि की क्रिया (परि-भ्रमण) से ध्वस्त होनेवाला समय, 'सूर्यकिर्या-विद्रिद्रो गोदोहादकिर्यासु निरवेकलो' । अद्धा-कालो भएण' (विसे) । 'छेय पु [छेद] समय का एक छोटा परिमाण, दो प्रावतिका परिमित काल (पक्व) । 'पक्वक्याण न [प्रत्याख्यात] भुक्त समय के लिए कोई व्रत या नियम करना (भाजू ६) । 'मीसय [मिश्रक] एक प्रकार की सल-भूषा भाषा (छा १०) । मीसिया श्री [मिश्रिता] देखो पूर्वोक्त अर्थ (एण ११) । 'समय पु [समय] सर्व-भूषण काल (एण ४) ।

अद्वान पु [अध्वान] मार्ग, रास्ता (एया १, १४; मुर ३, २२७) । 'सीसय न [सीर्यक] मार्ग का श्रद्ध, श्रद्धा की भाँति वा श्रद्ध भाग (वच ४, २६) ।

अद्वान पु [अध्वान] मार्ग, रास्ता, 'हवह सताम नरस्त भद्राण' (मुत्त ८, १३) । 'सीसय न [सीर्यक] जहाँ पर संपूर्ण सार्य के लोग जाने के लिए एवज हैं वह मार्ग-रस्ता (वच ४) ।

अद्वानिष वि [आध्विष] पथिक, मुनाफिर (वह ४) ।

अद्वानिय वि [अध्वानिय] १ शपथित, श्रापित (मुर ७, २१४; उप २६४ टी) । २ श्रावक (स ६३०) ।

अद्वि देखो श्रद्ध, 'यएणा बहिरवरमा, ते चिय जोमति माणुने लोए ।

श श्रुति खलवमण, सताण भद्रि न पेक्षति' (मा ७०४) ।

अद्विइ लो [अध्वि] धोरज का भयाव, धवीरज (वच ११८, ३६) ।

अद्विइअ वि [अध्विअ] धोडा कहा हुआ (वि १५८) ।

अद्विइअ वि [अध्विअ] धोडा कहा हुआ (वि १५८) ।

अद्विइअ वि [अध्विअ] धोडा कहा हुआ (वि १५८) ।

अद्विइअ वि [अध्विअ] धोडा कहा हुआ (वि १५८) ।

अद्विइअ वि [अध्विअ] धोडा कहा हुआ (वि १५८) ।

अद्विइअ वि [अध्विअ] धोडा कहा हुआ (वि १५८) ।

अद्विइअ वि [अध्विअ] धोडा कहा हुआ (वि १५८) ।

अद्विइअ वि [अध्विअ] धोडा कहा हुआ (वि १५८) ।

अद्विइअ वि [अध्विअ] धोडा कहा हुआ (वि १५८) ।

अद्विइअ वि [अध्विअ] धोडा कहा हुआ (वि १५८) ।

अद्विइअ वि [अध्विअ] धोडा कहा हुआ (वि १५८) ।

अद्विइअ वि [अध्विअ] धोडा कहा हुआ (वि १५८) ।

अद्विइअ वि [अध्विअ] धोडा कहा हुआ (वि १५८) ।

अद्विइअ वि [अध्विअ] धोडा कहा हुआ (वि १५८) ।

अद्विइअ वि [अध्विअ] धोडा कहा हुआ (वि १५८) ।

अद्विइअ वि [अध्विअ] धोडा कहा हुआ (वि १५८) ।

अद्विइअ वि [अध्विअ] धोडा कहा हुआ (वि १५८) ।

अद्विइअ वि [अध्विअ] धोडा कहा हुआ (वि १५८) ।

अद्विइअ वि [अध्विअ] धोडा कहा हुआ (वि १५८) ।

अद्विइअ वि [अध्विअ] धोडा कहा हुआ (वि १५८) ।

अद्विइअ वि [अध्विअ] धोडा कहा हुआ (वि १५८) ।

अधई (श्री) [अधिम] १ हाँ । २ और क्या । ३ जरूर, अवश्य (वच) ।

अधं म [अधस्] नीचे (पि १४४) ।

अधट्ट वि [अधट्ट] श्रद्धा (हुमा) ।

अधण वि [अधन] निषेध, गरीब, 'रमइ विह्वी विसेते, पिमेते भोयविरयो महइ ।

मगइ सरोरमधलो, रोई जीए चिय वययो' । (नवड, सण)

अधणि वि [अधनिम्] धन रहित, निर्धन (या १४) ।

अधण्ण वि [अधण्ण] भद्रतार्थ, नित्य (एण १, १) ।

अधम देखो अहम (उत्त ६) ।

अधमण्ण वि [अधमण्ण] बलवत्, वेनदार अधमण्ण (धर्मा १४६, १६५) ।

अधम्म पु [अधम्म] १ पाप कार्य, निषिद्ध कर्म, श्रद्धा 'अधम्मए वेन विंति कप्पेमाणे विह-रई' (एया १, १८) । २ एक स्वतन्त्र और लोक-आपायी प्रजावी वस्तु, जो जीव वीरह को स्थिति करने मे सहायता पहुँचाती है (सम २, नव ५) । ३ वि. धर्म रहित, पापी (विपा १, १) । 'केउ पु [केउ] पाणि (एया १, १८) । 'कल्हाइ वि [कल्हाइ] प्रसिद्ध पापी (विपा १, १) । 'कल्हाइ वि [कल्हाइ] पाप का उपदेश देनेवाला (मग ३, ७) ।

'स्थिकाय पु [स्थिकाय] अधम्म का हुतरा अर्थ देखो (मणु) । 'बुद्धि वि [बुद्धि] पापी, पाणिष्ठ (उप ७२८ टी) ।

अधम्मिट्ट वि [अधम्मिट्ट] १ धर्म को नहीं करनेवाला (मग १२, २) । २ महा-पापी, पाणिष्ठ (एया १, १८) ।

अधम्मिट्ट वि [अधम्मिट्ट] १ धर्म को नहीं करनेवाला (मग १२, २) । २ महा-पापी, पाणिष्ठ (एया १, १८) ।

अधम्मिट्ट वि [अधम्मिट्ट] १ धर्म को नहीं करनेवाला (मग १२, २) । २ महा-पापी, पाणिष्ठ (एया १, १८) ।

अधम्मिट्ट वि [अधम्मिट्ट] १ धर्म को नहीं करनेवाला (मग १२, २) । २ महा-पापी, पाणिष्ठ (एया १, १८) ।

अधम्मिट्ट वि [अधम्मिट्ट] १ धर्म को नहीं करनेवाला (मग १२, २) । २ महा-पापी, पाणिष्ठ (एया १, १८) ।

अधम्मिट्ट वि [अधम्मिट्ट] १ धर्म को नहीं करनेवाला (मग १२, २) । २ महा-पापी, पाणिष्ठ (एया १, १८) ।

अधम्मिट्ट वि [अधम्मिट्ट] १ धर्म को नहीं करनेवाला (मग १२, २) । २ महा-पापी, पाणिष्ठ (एया १, १८) ।

अधम्मिट्ट वि [अधम्मिट्ट] १ धर्म को नहीं करनेवाला (मग १२, २) । २ महा-पापी, पाणिष्ठ (एया १, १८) ।

अधम्मिट्ट वि [अधम्मिट्ट] १ धर्म को नहीं करनेवाला (मग १२, २) । २ महा-पापी, पाणिष्ठ (एया १, १८) ।

अधम्मिट्ट वि [अधम्मिट्ट] १ धर्म को नहीं करनेवाला (मग १२, २) । २ महा-पापी, पाणिष्ठ (एया १, १८) ।

अधम्मिट्ट वि [अधम्मिट्ट] १ धर्म को नहीं करनेवाला (मग १२, २) । २ महा-पापी, पाणिष्ठ (एया १, १८) ।

अधम्मिट्ट वि [अधम्मिट्ट] १ धर्म को नहीं करनेवाला (मग १२, २) । २ महा-पापी, पाणिष्ठ (एया १, १८) ।

अधम्मिट्ट वि [अधम्मिट्ट] १ धर्म को नहीं करनेवाला (मग १२, २) । २ महा-पापी, पाणिष्ठ (एया १, १८) ।

अधिइ देखो अद्धिइ (मुपा ३५६) ।
 अधिकरण देखो अहिराण (पणह १, २) ।
 अधिग वि [अधिक] विशेष, ज्यादा
 (वृह १) ।
 अधिगम देखो अहिगम (पमं २, विने २२) ।
 अधिगरण देखो अहिराण (निबू १) ।
 अधिगरणिया देखो अहिराणिया (पणह
 २१) ।
 अधिगार देखो अहिराण (सूचनि ५८) ।
 अधिष्ठा {अप} वि [अधीन] धावत,
 अधिष्ठ {पतरा (पि ६१ ह ४, ५२७) ।
 अधिमासग पु [अधिमास] अधिक मास
 (निबू २०) ।
 अधिरोविअ वि [अधिरोपित] धावतित,
 'मृताधिराविमो सा' (पमंवि १३७) ।
 अधीमार दया अहिराण (सूचनि १८०) ।
 अधीय देखो अहीय (उत्त २० २२) ।
 अधीस वि [अधीरा] नायक, अधिपति
 (कुम्मा २३) ।
 अधुन दया अधुय (णाय १, १, पउम
 ६५, ४६) ।
 अधो दया अधो = मयसु (पि ३४५) ।
 अर्नदि श्री [अनन्दि] ममङ्गन मयुरान तं
 माण्ड मनदि' (मवि ३७) ।
 अनस देखो अणण (कुमा) ।
 अन्य दया अणय (गुग १७१) ।
 अनल दया अणल (हि १, २२८ कुमा) ।
 अनागय देखो अणागय (मय) ।
 अनागार देखो अगागार (मा) ।
 अनाय दया अणाय (गुग ४७०, पि ३८०) ।
 अनालक (पूवे) पि [अनालक] धर्मिक,
 दयातु (कुमा) ।
 अनिगण देखो अगगिण (मम १७) ।
 अनिदाया {देयो अनिदा (पणह ३४) ।
 अनिदाया {देयो अनिदा (पणह ३४) ।
 अनिमिसां धो [अनिमिसां] निर्निमिसेय
 (पि ५१५ टी) ।
 अनियमिय वि [अनियमित] १ धम्म-
 विप। २ धम्मन हट्टो वा निदर मरे

कस्तेवाना, 'मयो य नय धनिमियिणा'
 (पउम ११४, २६) ।
 अनियट्टि देखो अनियट्टि (मम २६ मम्म
 २, सत्त ७१ टी) ।
 अनियय देखो अनियय (मोप २) ।
 अनिरुद्ध देखो अनिरुद्ध (मव १४) ।
 अनिल देखो अनिल (हि १, २२८, कुमा) ।
 अनिसट्ट देखो अनिसट्ट (हा ३, ४) ।
 अनिहारिम {देयो अगोहारिम (मम हा
 अनोहारिम {२, ४) ।
 अनु (पम) देखो अणगहा (कुमा) ।
 अनुदूल देखो अनुदूल (गुग ४७४) ।
 अनुगह देखो अनुगह (मवि ४६) ।
 अनुचिट्ठिय देया अनुचिट्ठिय (स १५) ।
 अनुजुय देया अनुजुय (पि ५७) ।
 अनुहय देया अनुहय = मयु + मू । बह
 अनुहयत (रंमा) ।
 अन्न दया अण (गुग ३६०, प्राय ४३, पणह
 २, १, हा ३, २, ६ १, मा ६) ।
 अन्नहय देखो अणहय (मवि) ।
 अन्नओ दया अणओ । हुत्त मिवि [सुर]
 हुत्तपी वण (गुर ३ १३६) ।
 अन्नतो दया अणतो (कुमा) ।
 अन्नत्थ {देयो अणत्थ (पाचा स १५०,
 अन्नत्थ {कुमा) ।
 अन्नदो देयो अणतो (कुमा) ।
 अन्नमन्न देया अणमण (णाय १, १) ।
 अन्नन्न देखो अणगण (महा कुमा) ।
 अन्नय पुं [अन्नय] एव की सत्ता में हा हुमरे
 की विग्रामना की मवि की ह्यावी म ही
 पून की सत्ता निमित्त मम्मय (उप ४१३,
 स ६२१) ।
 अन्नयर देखो अणयर (गुग ३००) ।
 अन्नया देयो अणया (महा) ।
 अन्नय देखो अणय (गुग ८२ ३२६) ।
 अन्नह देखो अणह (गुर १ १२६ कुमा) ।
 अन्नहा देखो अणहा (गम १००, २८
 महा गुर १ १२१ मयु ७) ।
 अन्नदि देखो अणदि (कुमा) ।
 असा दया [दे] मया, नको (उप ७, १६,
 १६) ।
 असाट्ट वि [असाट्ट] धम्म, हुत्त हु
 धम्म कम्महा । मयं वरुत्त मयाट्ट मयुत्ते

मंनो छहह ममाण पित्तत्रपरिगमयेरे दाह-
 वसवीए धम्मये वेव काल बरेसति' (भा
 १२) ।
 अन्नाण देखो अण्णाण = मन्ना (कुमा गुर
 १, १५, महा, उवर ६४, मम्म ४, ६,
 ११) ।
 अन्नाणिय देखो अण्णाणिय (उव गुग ५८८) ।
 अन्नाणिय दया अण्णाणिय (पउम ४,
 २७) ।
 अन्नाय देखो पहला श्रीर हुमरा अण्णाय
 (गुर ६, २, गुग २५६ गुर २, ६, २०२,
 मम्म ६६ गुग २३३, गुर २, १६५, गुग,
 ३०८) 'माण ज न सिद्धं की सनु सल्लो
 सल्लयमन्नामो २' (उव ७१८ टी) ।
 अन्नारिस देखो अण्णारिस (हि १, १४२,
 महा) ।
 अन्नाहुत्त वि [दे] पणहुत्त (गुग २, १७) ।
 अन्नि वि [अन्यदीय] परोपण, 'मन्ना वा
 धन्नि वा' (गुग २ २ ६) ।
 अन्नजमाण दया अण्णजमाण (णाय १,
 १६) ।
 अन्निय देया अणिय ।
 अन्नियनुय पुं [अन्नियनुय] एव विस्सा
 ज्ञा बुनि (उव) ।
 अन्निया दया अणिया (मंमा ५६) ।
 अन्नुत्ति दया [अन्नोत्ति] माहिय मन्नि
 एव मन्नुत्त (मह १०, मम्म १४३) ।
 अन्नुत्त {देयो अण्णुत्त (हि १, १५६,
 अण्णुत्त {महा) ।
 अन्नू पि [अन्नू] मन्नी (पमंवि १३६) ।
 अन्नेम दया अण्णेम । बह अन्नेसमा
 (उव ६ टी) ।
 अन्नेसय दया अण्णेसय (गुर १०, २२८,
 मयु) ।
 अन्नेसमा देयो अण्णेसमा (हा ३, ४) ।
 अन्नेसय वि [अन्नेसय] मन्ने, मन्ने
 मन्ने (म २३१) ।
 अन्नेमि {देयो अण्णेमि (पि ३१६,
 अन्नेमि {मन्ने) ।
 अन्नेम दया अण्णेम (गुर, महा) ।
 अप छं. ब [अप्] दान, वा (गुर

ममता रहित, निर्मम, 'अपरिगहा' अणारभा
निम्न ताण परित्त' (मू १, १, ४)।

अपरिगहा श्री [अपरिगहा] वेस्था (ब २)।

अपरिगहा श्री [अपरिगहा] १ वेस्था,
ममता मयैह मयिवाहिता श्री (पठि)। २
पति-हीना श्री, विधवा (धर्म २)। ३ घर
शमी। ४ पनहारी। ५ देव पुजिका, दलता
का श्रेष्ठ का हई काया (भाष ५)।

अपरिच्छेद वि [अपरिच्छेद] १ महा
अपरिच्छेद } इका हुमा, अनाहुत (ब १)।
२ परिवार रहित (ब १)।

अपरिणय वि [अपरिणय] १ स्थावर को
अप्राप्त (छ २, १)। २ जैन साधु की भिगा
का एव हाथ। (भाषा)।

अपरित्त वि [अपरीत] अनरित्त, अनन्त
(वण १८)।

अपरित्त वि [अपरित्त] छत्र, मन्त्र,
नि होय (पण १, २, पठन ३, १४०)।

अपरिहारि वि [अपरिहारि] १ दोषा
का परिहार नहीं करनेवाला। (भाषा)।
२ पुं जैनर दर्शन का अनुयायी गृहस्थ
(निष्प २)।

अपवर्गा पुं [अपवर्ग] नाग, कुटि (पुर ८,
१०६ मत ११)।

अपविद्ध वि [अपविद्ध] १ श्रेष्ठ (वि ७,
११)। २ न गुरु-दत्त का एव दोष, पुत्र
का मन्दा करने गुरुप ही नाग जाना
(पुना २१)।

अपह वि [अप्रम] निम्न (दे १, १६४)।

अपहृष्ट वेगो अहृष्ट (मं)।

अपहारि वि [अपहारि] मरहण करो-
वाला (म २१७)।

अपहिय वि [अपहय] छोना हुमा (पठन
४१, ५)।

अपहृष्ट वि [अप्रम] १ धनार्थ। २ नाग
रहित, अनय (पठन १०६, १२)।

अपाइय वि [अपायि] पाप-रहित, मन्त्र
रहित जो बन्ध निगमों के अभाव में
होय (मं)।

अपाइय वि [अपायि] नहीं दया हुमा,
बन्ध-रहित, मन्त्र (छ १, १)।

अपादान न [अपादान] नारत-विशेष,
निर्मम पद्मों विभक्ति लगी है (विदे
२११७)।

अपाण न [अपाण] १ पाण का धर्म।
(उ ८५५)। २ पानी पैगा ठंडा पय मस्तु-
विशेष। (मग १५)। ३ पुन अमान मस्तु।
४ पुन (मुपा ६२०)। ५ वि ज्ञान वज्रित,
निर्वन (उत्तास) 'अपण मस्तु मस्तु' (व २)।

अपायागम पुं [अपायागम] निन्देय
का एव अनित्य (नैपाथ २)।

अपार वि [अपार] पार रहित, अनन्त (मुपा
४५०)।

अपारमग पुं [दे] निग्राम किया है (दे १,
५५)।

अपाय वि [अपाय] १ पाप रहित (मू १
१, ३)। २ न पुण्य (उव)।

अपाया श्री [अपाया] नगरी विशेष जहा
अनान्य महानगर का निर्माण हुमा या यह
अनान्य वाराणसी नाम से प्रसिद्ध है और
विहार से साठ मील दूर है (राज)।

अपिट्ट वि [दे] पुनका फिरसे कहा हुमा
(पठ)।

अपिय वि [अप्रिय] अनिय (नार १)।

अपिह म [अपिह] अनिय (हुमा)।

अपुनमग वि [अपुनमग] फिर न
अपुनमग } उरु बर्मनय नें बरन
वाता, लीय मार व पाप का नहीं करने
वाता (पंथा ३ वर २५१ २५१)।

अपुनमन पुं [अपुनमन] १ फिर से नहीं
होना। २ वि किया फिर अनन्य हा वट,
कुटि-अन (पठ २ ४)।

अपुनमन वि [अपुनमन] फिर व नहीं
हनेवाला (पंथा १)।

अपुनमन दया अपुनमनय (हुमा)।

अपुनमन पुं [अपुनमन] १ पुन
अपुनमन } कुटि मन्त्र (पठ १)।

अपुनमनय वि [अपुनमनय] १
अपुनमनय } पुं [अपुनमनय] १
अपुनमनय } फिर नहीं पुननेवाला, पुन
अपुनमनय } मन्त्र। २ मन्त्र, पुन (पंथा १५१ वीर
म १ १)।

अपुनमनय पुं [अपुनमनय] पुन
अपुनमनय } पुं [अपुनमनय] १ पुन
अपुनमनय } पुं [अपुनमनय] १ पुन

अपुनमनय पुं [अपुनमनय] १ पुन
अपुनमनय } पुं [अपुनमनय] १ पुन

अपुनमनय पुं [अपुनमनय] १ पुन
अपुनमनय } पुं [अपुनमनय] १ पुन

अपुनमनय पुं [अपुनमनय] १ पुन
अपुनमनय } पुं [अपुनमनय] १ पुन

अपुनमनय पुं [अपुनमनय] १ पुन
अपुनमनय } पुं [अपुनमनय] १ पुन

अपुनमनय पुं [अपुनमनय] १ पुन
अपुनमनय } पुं [अपुनमनय] १ पुन

अपुनमनय पुं [अपुनमनय] १ पुन
अपुनमनय } पुं [अपुनमनय] १ पुन

अपुनमनय पुं [अपुनमनय] १ पुन
अपुनमनय } पुं [अपुनमनय] १ पुन

अपुनमनय पुं [अपुनमनय] १ पुन
अपुनमनय } पुं [अपुनमनय] १ पुन

अपुनमनय पुं [अपुनमनय] १ पुन
अपुनमनय } पुं [अपुनमनय] १ पुन

अपुनमनय पुं [अपुनमनय] १ पुन
अपुनमनय } पुं [अपुनमनय] १ पुन

अपुनमनय पुं [अपुनमनय] १ पुन
अपुनमनय } पुं [अपुनमनय] १ पुन

अपुनमनय पुं [अपुनमनय] १ पुन
अपुनमनय } पुं [अपुनमनय] १ पुन

अपुनमनय पुं [अपुनमनय] १ पुन
अपुनमनय } पुं [अपुनमनय] १ पुन

अपुनमनय पुं [अपुनमनय] १ पुन
अपुनमनय } पुं [अपुनमनय] १ पुन

अपुनमनय पुं [अपुनमनय] १ पुन
अपुनमनय } पुं [अपुनमनय] १ पुन

अपुनमनय पुं [अपुनमनय] १ पुन
अपुनमनय } पुं [अपुनमनय] १ पुन

अपुनमनय पुं [अपुनमनय] १ पुन
अपुनमनय } पुं [अपुनमनय] १ पुन

अपुनमनय पुं [अपुनमनय] १ पुन
अपुनमनय } पुं [अपुनमनय] १ पुन

अपुनमनय पुं [अपुनमनय] १ पुन
अपुनमनय } पुं [अपुनमनय] १ पुन

अपुनमनय पुं [अपुनमनय] १ पुन
अपुनमनय } पुं [अपुनमनय] १ पुन

अपोरिसिय } वि [अपोरिस्मिन्] पुरुष से
अपोरिसीय } व्यादा परिमाण वाला, अमाप
(आया १, ५; १५)।

अपोरिसीय वि [अपोरिस्मिन्] पुरुष से नही
बनाया हुआ, नित्य (ठा १०)।

अपोह सक [अप + ऊह्] निधय करना,
निधय रूप से जानना। अपोहए (विसे
५६१)।

अपोह पु [अपोह] १ निधय-ज्ञान (विसे
३१६)। २ दुष्प्रभाव, भिन्नता (घोष ३)।
अप्प देखो अत्त = प्राप्त; 'अप्पोत्तममिन्नित्तं'
पहलस रायककयएत्तस भयमट्टे पएणत्तेत्ति
केम' (आया १, १)।

अप्प वि [अप्प] १ मोटा, स्तोक (सुपा
२८०; स्वप्न ६७)। २ अभाव (ओव ३;
भग १४, १)।

अप्प पु [आत्मन्] १ आत्मा, जीव, धेतन
(आया १, १)। २ निज, स्व, 'अप्पएणा'
'अप्पएणे कम्मन्त्थयं करित्तए' (आया १, ५)।

१ देह, शरीर (उत्त ३)। ४ स्वभाव,
स्वरूप (आचा)। 'वाट वि [वातिन्]'
आत्म-हत्या करनेवाला (उप ३५७ टी)।

'छंद वि [चन्द्रन्]' स्वैरी, स्वच्छन्दी (उप
८३१ टी)। 'ज्ज वि [ज्ज] १ आत्मज्ञ
(ह २, ८३)। २ स्वाधीन (निबु १)।

'जोइ पु [जोतिस्]' ज्ञानस्वरूप,
'विजोइयं पुरिसो अप्पजोइ ति एहिट्ठो'
(विसे)। 'ण्णु वि [ह्णु] आत्म-जानी
(पह)। 'वस वि [वरा] स्वतन्त्र, स्वा-
धीन (पाम्म; पत्तम ३७, २२)। 'यह पु
[वध] आत्म-हत्या, अघपात (सुर २,
१६६; ५, २३७)। 'वाइ वि [वादिन्]'
आत्मा के अतिरिक्त दूसरे पदार्थ को नहीं
माननेवाला (एहिं)।

अप्प पु [दे] पिता, माप (दि १, ६)।
अप्प सक [अप्पेय्] अर्पण करना, भेंट
करना। अप्पेइ (हे १, ६३)। अप्पघट्ट
(नाट)। संड. अप्पिअ (सुपा २८०)।
श. अप्पेयय्य (सुपा २६५; ५१६)।

अप्पआस देखो अप्पगास (नाट)।
अप्पआस एक [अप्पि] भासिज्ञान करना।
अप्पमासइ (पह)।

अप्प सन [अप्पेय्] अर्पण करना, भेंट
करना। अप्पेइ (हे १, ६३)। अप्पघट्ट
(नाट)। संड. अप्पिअ (सुपा २८०)।
श. अप्पेयय्य (सुपा २६५; ५१६)।

अप्पआस देखो अप्पगास (नाट)।
अप्पआस एक [अप्पि] भासिज्ञान करना।
अप्पमासइ (पह)।

अप्प सन [अप्पेय्] अर्पण करना, भेंट
करना। अप्पेइ (हे १, ६३)। अप्पघट्ट
(नाट)। संड. अप्पिअ (सुपा २८०)।
श. अप्पेयय्य (सुपा २६५; ५१६)।

अप्पइट्ठाण पुन [अप्रतिष्ठान] १ मोक्ष,
मुक्ति (आचा)। २ सातवीं नरक-भूमि का
बोचला आवास (सम २; ठा ५, ३)।

अप्पइट्ठिअ वि [अप्रतिष्ठित] १ अप्रति-
बद्ध। २ अशरीरी, शरीर-रहित (आचा
२, १६. १२)। देखो अपइट्ठिअ।

अप्पउल्लिय वि [अपकथौपाधि] नहीं पकी
हुई फल-फलहरी (स ५०)।

अप्पओजग वि [अप्रयोजक] अ-गमक,
अनिधायक (हेतु) (वर्मसं १२२३)।

अप्पअरि वि [आत्मअरि] अनेकपद,
स्वार्थ (उप ५७०)।

अप्पकंष वि [अप्रकम्प] निबल, स्थिर
(ठा १०)।

अप्पकेर वि [आत्मीय] स्वकीय, निजी
(आमा)।

अप्पक वि [अपक] नहीं पका हुआ, कच्चा
(सुपा ४१३)।

अप्पग देखो अप्प (आच ४; आचा)।

अप्पगास पु [अप्रकाश] प्रकार वा अभाव,
अन्धकार (निबु १)।

अप्पगुत्ता लो [दे] कपिचन्द्र, कौच गुल
(दि १, २६)।

अप्पजाणुअ वि [आत्मज्ञ] आत्मा का
जानकार (प्राक् १८)।

अप्पजाणुअ वि [अल्पज्ञ] अज्ञ, मूर्ख (प्राक्
१८)।

अप्पजम्ह वि [दे] आत्म-वश, स्वाधीन (वे
१, १४)।

अप्पडिआर वि [अप्रतिहार] इलाज-रहित,
उपाय-रहित (मा ४३)।

अप्पडिअंठय वि [अप्रतिगठक] प्रतिपत्त-
रूप्य, प्रतिस्थापन-रहित (राय)।

अप्पडिअम्म वि [अप्रतिमर्म्म्] संस्कार-
रहित, परिवर्तन-रहित; 'मुएणागरे व अप्प-
डिअम्म' (पएह २, ५)।

अप्पडिअंठय वि [अप्रतिमान्त] दोष से
अनिवृत्त, अव-नीयम में लगे हुए दुष्टयो की
नियमे शुद्धि न की हो वह (घोष)।

अप्पडिअुट्ठ वि [अप्रतिमृष्ट] अनिवाचित,
नहीं रोना हुआ (ठा २, ४)।

अप्पडिअचक वि [अप्रतिचक्र] अतुल्य,
अवमान (एहिं)।

अप्पडिअण } देवो अपडिअण (आचा)।
अप्पडिअ } अप्रतिअण

अप्पडिअंथ पु [अप्रतिवन्ध] १ प्रतिवन्ध
का अभाव। २ वि. प्रतिवन्ध-रहित (सुपा
६८८)।

अप्पडिअदद देखो अपडिअद (उत्त २६; वि
२१८)।

अप्पडिअदुद वि [अप्रतिमुद] १ अ-आगत।
२ कोमल, सुसुमार (अमि १६१)।

अप्पडिअ वि [अप्रतिम] असाधारण, अ-
व्यय (उप ७६८ टी; सुपा ३५)।

अप्पडिअत्त्व वि [अप्रतिरूप] ऊपर देखो (उप
७२८ टी)।

अप्पडिअद्ध वि [अप्रतिरुद्ध] अमात
(आया १, १)।

अप्पडिअत्तेस्स वि [अप्रतिलेश्य] असाधारण
मनो-बलवाला (मौप)।

अप्पडिअहेण न [अप्रतिलोपन] अमर्षवे-
क्षण, अनवलोकन, नहीं देखना (आच ६)।

अप्पडिअहणा लो [अप्रतिलोपना] ऊपर
देखो (कप्प)।

अप्पडिअहेहिं वि [अप्रतिलेखित] अमर्षवे-
क्षित, अनवलोकित, नहीं देना हुआ (उवा)।

अप्पडिअलोम वि [अप्रतिलोम] अतुल्य (भग
२५, ७; अमि २५)।

अप्पडिअवरिय पु [अप्रतिधृत] प्रयोग कान
(वह १)।

अप्पडिअवाइ वि [अप्रतिपादिन्] १ नितका
नारा न हो ऐसा, नित्य (सुर १५, २६)। २
अव्यभिचान वा एक भेद, जो केवल ज्ञान की
विना उत्पन्न करने नहीं जाता (विसे)।

अप्पडिअहय वि [अप्रतिहस्त] अवमान,
अतीत्य (वे ११, १२)।

अप्पडिअदय वि [अप्रतिदत्त] १ किसी से नहीं
स्वा हुआ (पएह २, ५)। २ अशरीरित,
अव्यभिच, 'अप्पडिअदयसएणे' (आया १, १६)।
३ विषय-रहित 'अप्पडिअदयवनाएदसएणरे'
(भग १, १)।

अप्पडीअदद देवो अपडिअद, 'निम्ममविह-
काए निमयमयेरेवि अप्पडीअद' (संघा ६०)।

अप्पाअप्पि ओ [दे] उक्कएठा, ओलुक्क
(पिण) ।

अप्पाउड वि [अप्पाउट] अनाच्छादित, नम
(सूत्र २, २) ।

अप्पाउय वि [अप्पाउय] थोडा आउ-
वाला (ठा ३, ३; पत्र १४, ३०) ।

अप्पाउरण वि [अप्पाउरण] ? नम । २ न.
वज्र का अभाव । ३ वज्र नहीं पहनने का
नियम (पंचा ५, पत्र ४) ।

अप्पाअ देवो अप्प = मात्तन् (पह १, २,
ठा २, २; प्राप्ति, हे ३, ५६) । 'रक्खि वि
[रक्खिन्] आत्मा को रक्षा करनेवाला
(उत्तर ४) ।

अप्पाअहु } न [अप्पअहुत्थ] नूनाधिकता,
अप्पाअहुय } कम-बेरोपन (नम ३२; ठा
४, २) ।

अप्पाअय वि [अप्पाअय] ? वज्र-रहित,
नम (पह २, १) । २ बुला हुआ, वज्र
नहीं किया हुआ (सूत्र १, ५, १) ।

अप्पाअयि वि [अप्पाअयि] दिया हुआ (सुपा
३११) ।

अप्पाअ सक [सं + दिश] संदेश देना,
खबर पहुँचाना । अप्पाअ (पह; हे ४,
१८०) । अप्पाअ (गा ६३२) । सक.
अप्पाअददु, अप्पाअहि वि [पि ५७७;
अवि] ।

अप्पाअ सक [आ + आप्] संभाषण
करना । अप्पाअ (प्राक् ७०) ।

- अप्पाअ सक [अधि + आप्] पढ़ाना,
सोखाना । कर्म. अप्पाअहि (सि १०, ७४) ।
वज्र. अप्पाअहि (सि १०, ७५) । हे. अप्पा-
अहि (पि २८६) ।

अप्पाअहो श्री [दे] संदेश, समाचार (पिट
५३०) ।

अप्पाअण्ण म [अप्पाअण्ण] मुखात्ता का
अभाव, गीलता (पंचा १, भास ११) ।

अप्पाअयि वि [संदिष्ट] संदेश दिया हुआ
(अवि) ।

अप्पाअयि वि [अप्पाअयि] ? पढ़ित,
शिक्षित (सि ११, ३८; १४, ६१) । २ न.
सोख, उपदेश, 'अप्पाअयिण' (उत्तर ५६२
टी) ।

अप्पाअहि निष्ठय [अप्पाअहि] अल्प संपात
वाला (अन. पत्र २, ७४) ।

अप्पाअ सक [अप्पाअ] अर्पण करना, भेंट
करना, देना, 'अप्पाअरोवि वारोणे अप्पाअ' (प्राक्) । अप्पाअ (पि ५५७) । अप्पा-
अहि (विसे ७ टी) ।

अप्पाअण न [अप्पाअ] दान, भेंट (उत्तर
१७४) ।

अप्पाअणिअयि वि [आत्मीय] स्वकीय,
निजी (भाग) ।

अप्पाअ वि [अप्पाअ] ? दिया हुआ, भेंट
किया हुआ (विपा १, २, हे १, ६३) ।
२ विवक्षित, प्रतिपादन करने की इष्ट, 'अह
दवियमपिय स तहेव अयिअति पज्जनयस्स'
(सम्म ४२) । ३ पु. पर्यायाधिक नम, 'अप्पा-
अययि विसेओ सामदमणपियनयस्स' (विसे) ।

अप्पाअ वि [अप्पाअ] ? अहित, अशुभिकर
(अन १, ५, विपा १, १) । २ न. मन का
हुल्लास । ३ चित्त की शक्ति, 'अहु एहिण व
सुहिणं वा अयिअं वदुह एगता होति' (सूत्र
१, ४, १, १४) ।

अप्पाअ ओ [अप्पाअ] अग्रिम, अग्रवि (सुपा
२६५) ।

अप्पाअयि वि [आत्मीकृत] आत्मा से संबद्ध
(विसे) ।

अप्पाअ वि [अप्पाअ] नहीं हुआ हुआ, अस्-
त्थित, 'अं अप्पाअ आवा ओहिणालस्स इति
पचक्ख' (सम्म ८१) ।

अप्पाअ वि [अप्पाअ] नहीं हुआ हुआ (सुपा
१११) ।

अप्पाअ वि [दे. आपूर्ण] पूर्ण (पह) ।

अप्पाअ वि [आत्मीय] आत्मा मे उत्पन्न
(हे २, १६३; पत्र, कुमा) ।

अप्पाअ देवो अप्पाअ, 'अप्पाअो पडिअवो
ओदियमवि चयद मह चक्खे' (सुपा ३११) ।

अप्पाअ देवो अप्पाअ = अर्पण ।

अप्पाअ ओ [अप्पाअ] अशुभ-
फलदायी (प्रा २१) ।

अप्पाअ वि [दे] गोल-रहित, नहर (पह ३) ।

अप्पाअ वि [आप्पाअ] आत्मात्तित,
आत्मा (विसे २६८ टी) ।

अप्पाअ सक [आ + स्फालय] ? आस्फो-
टन करना, हाथ से धापाट करना । २ ताड़ना,
पीटना । ३ ताल ठोकना । अप्पाअ (महा) ।
वज्र. अप्पाअलिज्जंत (राय) । सक. अप्पा-
अलिज्ज (काप्प १६६; महा) ।

अप्पाअण न [आप्पाअण] ? ताल ठोकना ।
२ ताड़ना, धापाट (गा ५४८; से ५, २२;
सुपा ८७) ।

अप्पाअलिअ वि [आप्पाअलिअ] ? हाथ से
ताड़ित, धापाट (पि ३११) । २ बुद्धि प्राप्त,
उन्नत (राज) ।

अप्पाअ सक [आ + क्रम] ? आक्रमण
करना । २ जाना, 'संभारामो व्व एह
अप्पाअ पत्तिमरविमरं कुमुमयो' (से ६,
५७) ।

अप्पाअ देवो अप्पाअ (अं २, दत्त ६) ।
अप्पाअ वि [दे. आक्रान्त] आक्रान्त,
दबाया हुआ (हे ४, २५८) ।

अप्पाअ वि [अप्पाअ] अपूर्ण, अप्रपूर
(गड) ।

अप्पाअ वि [दे. आपूर्ण] पूर्ण, भर
अप्पाअ हुआ (दे १, २०, मुर १०,
१७०, पाप्प, 'अप्पाअ पुत्तसोएणं अप्पाअ
सवाणी' (निर १, १) ।

अप्पाअ देवो अप्पाअ (गड) ।

अप्पाअ ओ [दे] वनस्पति-विशेष (पहण
१) ।

अप्पाअ सक [आ + स्फोटय] ? आस्फो-
टन करना, हाथ से ताल ठोकना । २ ताड़ना
करना । वज्र. अप्पाअंत (राया १, ८;
मुर १३, १८२) ।

अप्पाअण न [आप्पाअण] आस्फालन
(गड) ।

अप्पाअ वि [दे. आपूर्ण] पूर्ण (पह) ।
अप्पाअ वि [दे. आपूर्ण] ? आस्फो-
टित, धापाट । २ न. आस्फो-
लन, धापाट (पह १, ३, नम) ।

अप्पाअ ओ [दे] वनस्पति-विशेष (राय
८० टी) ।

अप्पाअ वि [दे] बुद्धि से व्याप्त, गहन,
निष्ठ (उत्तर १८) ।

अप्पाअ वि [अप्पाअ] निष्कल, निरर्थक (ह
१) ।

अफाय पुं [दे] भूमि-स्कोट, वनस्पति-विरोध (पण १) ।

अफास वि [अस्पर्श] १ स्पर्श-रहित (मग) ।
२ क्षराव स्पर्श वाला (सूय १, ५, १) ।

अफासुय वि [अप्रासुक] १ सचित, सजीव (मग ५, ६) । २ घटाया (जिहा) (ठा ३, १) ।

अकुड वि [अस्कुट] भल्लट, ध्वक (सुर ३, १०६; २१३; ना २६६; ज ७२८ टो) ।

अकुडिअ वि [अस्कुटिअ] भल्लरिष्ठ, नहीं हटा हुआ (हुमा) ।

अकुस वि [अस्कुदय] स्वरां करने के प्रयोग्य (मग) ।

अकुसिय वि [अभ्रान्त] भ्रम-रहित (हुमा) ।

अकुरस देखो अकुस (ठा ३, २) ।

अचंभ न [अम्रभ] मैदुन, क्षी-मन्त्र (पण १, ५) । "चारि वि [चारिअ] बहुधर्म नहीं पालनेवाला (वि ५०५; ५१५) ।

अचदिय पुं [अचदिक] 'बनों का भारमा से स्वरां ही होता है, न कि क्षीर-क्षीर ही तरह ऐस' ऐसा माननेवाला एक निम्न-जनामा । २ न, उल्टा मत (ठा ७, निवे) ।

अचल वि [अचल] बल रहित, निर्वल (पउम ५८, ११७) ।

अचला श्री [अचला] श्री, महिला, जनाना (पाम) ।

अचस पुं [अचस] बरवान (वि १, १) ।

अचदिहण्णु न [दे. अचदिहय] मैदुन, क्षी-मन्त्र (सूय १, ६) ।

अचदिह्मण्य वि [अचदिह्मन्तरु] धर्मिष्ठ, धर्म-तार (पाषा) ।

अचदिह्मस } वि [अचदिह्मस] जिसकी अचदिह्मस } चित्त-वृत्ति बाहर न घुमती हो, संयम (मग; पण २, ५) ।

अबाधा देनो अबाधा (जीव ३) ।

अबाह पुं [अबाह] देव-विरोध (रर) ।

अबादा श्री [अबादा] १ बाध का घभाव (सोप ५२ भा; मग १४, ८) । २ व्यवधान, घटत (ताम १६) । ३ बाध-रहित समय (भा) ।

अबादिर म [अपदिस्] बाहर नहीं, ओतर (हुमा) ।

अवाहिरय वि [अवाह] भीतरी, भ्राम्यन्तर (व १) ।

अवाहिरिय वि [अवाहिरिक] जिसके निवे के बाहर वसति न हो ऐसा गांव या शहर (वृह १) ।

अवीय देखो अवीय (वप्य) ।

अवुक्क म [अवुद्धा] नहीं जान कर, 'केसिचि तत्ताइ भवुक्क भावं' (सूय १, १३, २०) ।

अवुद्ध वि [अवुध] १ भवान, मूर्ख । (वस २) । २ धविकेनी (सूय १, १६) ।

अवुद्धिय } वि [अवुद्धिक] बुद्धि-रहित, मूर्ख अवुद्धीय } (छाया १, १७; सूय १, २, ३; पउम ८, ७५) ।

अवुह वि [अवुध] १ भवान । (सूय १, २, १; जो १) । २ मूर्ख, बेवकूफ (पण १, १) ।

अवोह वि [अवोध] १ बोध-रहित, भवान । २ पुं. जान का घभाव (वयं १) ।

अवोहिं भुंरी [अवोधि] १ जान का घभाव (सूय २, ६) । २ जैन धर्म की भ्रमाति । ३ बुद्धि-विरोध का घभाव (मग १, ६) । ४ मिथ्या-ज्ञान, 'अगोहिं परिमाणानि बोहिं अवधं-जामि' (पाष ५) । ५ वि. बोधि-रहित (मग) ।

अवोधिह न [अवोधिह] ऊपर देखो (व ५; सूय १, १, २) ।

अव्भी. व. [अव्भी] पानी, पल (पा २३) ।

अव्यंभ देनो अव्यंभ (मुपा ३१०) ।

अव्यंभण्णु न [अव्यंभण्य] ब्रह्मण्य का अव्यंभण्णु घभाव (नाट; प्रवो ७६) ।

अव्यीय देनो अवीय (वेद ७३८) ।

अवुद्धसिरी श्री [दे] इच्छा से की क्षपि-धन की प्राप्ति (दे १, ५२) ।

अवुय्य पुं [अवुय्] पर्वत-विरोध, जो धान-बन 'धाव्' काप से प्रतिष्ठ है (राज) ।

अवुय्य न [अवुय्] बना हुआ मूक और शोरिण (हं ७) ।

अव्व न [अव्व] १ धारा । (पाष पाष) । २ मेघ, बादल (ठा ५, ४; पाष) ।

अव्व वप [आ + विट्] भेदन करना । कम्मे (पाषा १, १, २, ३) ।

अव्वंभ सक् [अभि + अज्] तैल प्रादि से मर्दन करना, मालिश करना । अव्वंभण्ण, अव्वंभेद (महा) । संक्ष. अव्वंभण्ण, अव्वंभेत्ता, अव्वंभण्ण (ठा ३, १; वि २३५) । हे. अव्वंभण्ण (वस) ।

अव्वंभण्ण पुं [अव्वंभण्ण] तैल-मर्दन, मालिश (निवृ ३) ।

अव्वंभण्ण न [अव्वंभण्ण] ऊपर देखो (छाया १, १; महा) ।

अव्वंभण्णिय } वि [अव्वंभण्ण] तैलादि से अव्वंभण्ण } मर्दित, मालिश किया हुआ (सोप ८२, वप्य) ।

अव्वंभण्णिय } वि [अव्वंभण्ण] तैलादि से अव्वंभण्णिय } मर्दित, मालिश किया हुआ (सोप ८२, वप्य) ।

अव्वंभण्णिय } वि [अव्वंभण्ण] तैलादि से अव्वंभण्णिय } मर्दित, मालिश किया हुआ (सोप ८२, वप्य) ।

अव्वंभण्णिय } वि [अव्वंभण्ण] तैलादि से अव्वंभण्णिय } मर्दित, मालिश किया हुआ (सोप ८२, वप्य) ।

अव्वंभण्णिय } वि [अव्वंभण्ण] तैलादि से अव्वंभण्णिय } मर्दित, मालिश किया हुआ (सोप ८२, वप्य) ।

अव्वंभण्णिय } वि [अव्वंभण्ण] तैलादि से अव्वंभण्णिय } मर्दित, मालिश किया हुआ (सोप ८२, वप्य) ।

अव्वंभण्णिय } वि [अव्वंभण्ण] तैलादि से अव्वंभण्णिय } मर्दित, मालिश किया हुआ (सोप ८२, वप्य) ।

अव्वंभण्णिय } वि [अव्वंभण्ण] तैलादि से अव्वंभण्णिय } मर्दित, मालिश किया हुआ (सोप ८२, वप्य) ।

अव्वंभण्णिय } वि [अव्वंभण्ण] तैलादि से अव्वंभण्णिय } मर्दित, मालिश किया हुआ (सोप ८२, वप्य) ।

अव्वंभण्णिय } वि [अव्वंभण्ण] तैलादि से अव्वंभण्णिय } मर्दित, मालिश किया हुआ (सोप ८२, वप्य) ।

अव्वंभण्णिय } वि [अव्वंभण्ण] तैलादि से अव्वंभण्णिय } मर्दित, मालिश किया हुआ (सोप ८२, वप्य) ।

अव्वंभण्णिय } वि [अव्वंभण्ण] तैलादि से अव्वंभण्णिय } मर्दित, मालिश किया हुआ (सोप ८२, वप्य) ।

अव्वंभण्णिय } वि [अव्वंभण्ण] तैलादि से अव्वंभण्णिय } मर्दित, मालिश किया हुआ (सोप ८२, वप्य) ।

अव्वंभण्णिय } वि [अव्वंभण्ण] तैलादि से अव्वंभण्णिय } मर्दित, मालिश किया हुआ (सोप ८२, वप्य) ।

अव्वंभण्णिय } वि [अव्वंभण्ण] तैलादि से अव्वंभण्णिय } मर्दित, मालिश किया हुआ (सोप ८२, वप्य) ।

अव्वंभण्णिय } वि [अव्वंभण्ण] तैलादि से अव्वंभण्णिय } मर्दित, मालिश किया हुआ (सोप ८२, वप्य) ।

अव्वंभण्णिय } वि [अव्वंभण्ण] तैलादि से अव्वंभण्णिय } मर्दित, मालिश किया हुआ (सोप ८२, वप्य) ।

अव्वंभण्णिय } वि [अव्वंभण्ण] तैलादि से अव्वंभण्णिय } मर्दित, मालिश किया हुआ (सोप ८२, वप्य) ।

देना, सम्पत्ति देना । अब्भुज्जाणित्तिदि (श्री)
(पि ५३४) ।

अब्भगुण्णा [अभ्यनुज्ञा] अनुपति, सम्पत्ति
(राज) ।

अब्भगुण्णाय वि [अभ्यनुज्ञाव] अनुपत,
समत (ठा ५, १) ।

अब्भगुण्णा देलो अब्भगुण्णा ।

अब्भगुण्णाय देलो अब्भगुण्णाय (साया १,
१; कप्प, सुर ३, ८८) ।

अब्भगण न [अभ्यर्ण] १ निवट, नजदीक ।
२ वि. समीपस्थ (पवम ६८, १८) । ३ पु
न [पु] नगर-विशेष (पवम ६८, ५८) ।

अब्भत्त वि [अभ्यत्त] १ सैलदि से मल्लि,
मालिहा निमा हुमा । २ सित, सोचा हुमा;
'दिसि दिसि बम्भत्तभूरिस्सिमारो, पत्तो वासा-
रतो' (सुर २, ७८) ।

अभ्यत्थ वि [अभ्यत्थ] पठित, शिखित
(सुपा ६७) ।

अब्भत्थ सक् [अभि + अभ्यत्थ] १ सत्कार
करना । २ प्रायना करना । अभ्यत्थवुह (पि
५७०) । सं. अब्भत्थइअ, अब्भत्थियअ
(वाट) । क. अब्भत्थणीय (प्रभि ७०) ।

अब्भत्थण न [अभ्यर्थन] १ सत्कार ।
२ प्रायना (कप्प, हे ४, १८४) ।

अब्भत्थणाय १ स्त्री [अभ्यर्थेना] १ भावर,
अब्भत्थणिया १ सत्कार (सि ५, ४८) । २
प्रायना, निजति (पथा ११, सुर १, १६);
'न महइ अभ्यत्थणिय, ममइ
गयाणुपि विट्ठिमसाइ ।
बट्टण भासुवुह, खलसीए
को न बीहेइ' (वजा १२) ।

अब्भत्थिय वि [अभ्यर्थित] १ भावत,
कण्ठुन । २ प्रायित (सुर १, २१) ।

अब्भत्त देलो अब्भगण (पाप) ।

अब्भपडल न [दे] उपाय-विशेष, मोडल,
मधन, भवरक (जत ३६, ७५) ।

अब्भपिसाअ पु [दे. अभ्यपिशाच] रहू (दे
१, ५२) ।

अब्भय पु [अभय] बालक, बच्चा (पाप) ।
अब्भय पु [अभय] भयरस (जी ५) ।

अब्भदिय वि [अभ्यर्हित] सत्कार-प्राप्त,
भीतरातो (रह १) ।

अब्भवहरिय वि [अभ्यवहृत] भुक्त (सुख
२, १७) ।

अब्भवहार पु [अभ्यवहार] भोजन, खाना
(विसे २२१) ।

अब्भवालुया स्त्री [दे] यन्नक वा जूएँ
(जत ३६, ७५) ।

अब्भव देलो अभव, 'अब्भव्याण सिद्धा
एतदुणा एतथा बव्व' (पस ८५) ।

अब्भस सक् [अभि + अस्] सोखना,
भग्यास करना । क. अब्भसंत (स ६०६) ।
व. अब्भसियठ (सुर १४, ८५) ।

अब्भसण न [अभ्यसन] भग्यास (वसति
१) ।

अब्भसिय वि [अभ्यस्त] सोखा हुमा (सुर
१, ८८०, ६, १६) ।

अब्भहर पु [दे] मन्नक (पस ३, ३९) ।

अब्भदिय वि [अभ्यधिक] विशेष, प्रथावा
(सम २, सुर १, १७०) ।

अब्भाअच्छ वि [अभ्या + गम] समुप
प्राना, सामने प्राना । अभ्याअच्छइ (पट्ट ५) ।

अब्भाइक्ख देलो अब्भत्तसा । अभ्याइक्खइ,
अब्भाइक्खेजा (भावा) ।

अब्भागम पु [अभ्यागम] १ समुलागमन ।
२ समीप स्थिति (निबू २) ।

अब्भागमिय वि [अभ्यागत] १ संभु-
अब्भागय १ लागत । २ पु भागलुइ,
पाहुन, श्रुतिमि (सुम १, २, ३, सुपा ५) ।

अब्भायत्त वि [दे] प्रयागत, वापस प्रया
अब्भायत्त १ हुमा (दे १, ३१) ।

अब्भास पु [अभ्यास] इणवार (मल्ल ७५,
पिठ ५५५) ।

अब्भास न [अभ्यास] १ निवट, नजदीक
(सि ६, ६०, पाप) । २ वि समीपवर्ती, पारव-
रित्त (पाप) । ३ पु, शिवाग, पट्टाई, सोत ।

४ पावुति (पाप, वृह १) । ५ भावत (ठा
५, ४) । ६ भावुति से उचन संस्कार (परम
२) । ७ शिणत ना संनेत-विशेष (कम्म ४,
७८, ८३) ।

अब्भास सक् [अभि + अस्] भग्यास
करना, भावत जानना,
'अब्भत्तसाइ जीवो, उणु प दोस प
एव अम्ममि ।

तं पावइ पर-लोए, तेण य

अब्भास-लोएण' (परम २; भवि) ।

अब्भाहय वि [अभ्याहृत] भावान-प्राप्त
(गहा) ।

अब्भिम देलो अब्भंग = अभि + अभ्य । प्रयो.
अब्भिमावेइ (पि २३४) ।

अब्भिम देलो अब्भंग = भग्यम (साया १,
१८) ।

अब्भिगण देलो अब्भंगण (कप्प) ।

अब्भिमिय देलो अब्भमिय (कप्प) ।

अब्भितर देलो अब्भतर (कप्प, स ७, पएह
३, ५, साया १, १३) ।

अब्भितरओ म [अभ्यन्तरतस] १ भीतर
से । २ भीतर में (पावम) ।

अब्भितरिय वि [अभ्यन्तरिक] भीतर
वा, मन्तरन (सम ६०, कप्प, साया १,
१) ।

अब्भितरुद्धि पु [अभ्यन्तरोर्ध्व] कायो-
त्तरण का ए' दोए, सोतो पैर के मूठो को
मिसाकर भीतर घुलियो को बाहर फेलाकर
विया जाता अभ्यन्त-विशेष (वेदय ४८७) ।

अब्भिट्ट वि [दे] संगत, सामने भाकर मिडा
हुमा, 'हल्लो हल्लोए सम भग्गिद्धो रहवरो
सह रहेण' (पवम ६, १८२, ६८, २७) ।

अब्भिट्ट सक् [स + गम] संगति करना,
मिलना । अभिट्टइ (कुमा, हे ४, १६५) ।

अब्भिट्टु (सुपा १५२) ।

अब्भिट्ठिअ वि [संगत] संगत, युक्त (पाप,
दे १, ७८) ।

अब्भिट्ठिअ वि [दे] सार, मज्झत (दे १,
७८) ।

अब्भिमण वि [अभि] भेतरहित (परम २) ।

अब्भुअ देलो अब्भुदय (सि १५, ६५,
स ३०) ।

अब्भुसत्त सक् [अभि + अस्] सोखन
करना । क. अब्भुसत्त (वजा ८६) ।

अब्भुस्सण न [अब्भुस्सण] सिवन करना,
छिडनाव (स ३०६) ।

अब्भुस्सणीया जी [अब्भुत्तणीया] तीतर,
भावार, पवम से मिरता जत (वृह १) ।

अभ्युक्तिवि वि [अभ्युक्ति] सिक (स ३४०) ।

अभ्युक्त पृं [अभ्युक्त] उदय, उन्नति (मृग १, १४) ।

अभ्युक्त वि [अभ्युक्त] १ उन्नत । २ उत्पन्न (एणा १, १) । ३ ऊँचा किया हुआ, उठाया हुआ (मृग) । ४ चारों तरफ फैला हुआ (चंद १८) ।

अभ्युक्त वि [अभ्युक्त] ऊँचा, उन्नत (मृग १२, ५) ।

अभ्युक्त पृं [अभ्युक्त] सपुक्त (मात १५) ।

अभ्युक्त वि [अभ्युक्त] १ उन्नत, उन्नत-पुक्त (एणा १, ५) । २ तैयार (एणा १, ५; मृग २२२) । ३ पुं. एवाजी विहार (धम्म १२ टी) । ४ जिनकल्पिक मुनि (पंचव ४) ।

अभ्युक्त उम [अभ्युक्त + स्था] १ सादर करने के लिए कहा होना । २ प्रयत्न करना । ३ तैयारी करना । अभ्युक्त (महा) । बह्. अभ्युक्त (म ४१६) । सङ् अभ्युक्ति (मृग) । हं. अभ्युक्ति (ठा २, १) । ह. अभ्युक्ति (ठा ८) ।

अभ्युक्त न [अभ्युक्त] सादर के लिए कहा होना (सि १०, ११) ।

अभ्युक्त देवो अभ्युक्त । अभ्युक्त देवो अभ्युक्त (मम ५१, मुग १७६) ।

अभ्युक्ति वि [अभ्युक्ति] १ समान करने के लिए जो सड़ा हुआ हो (एणा १, ८) । २ उन्नत, तैयार 'अभ्युक्ति महेत्तु' (एणा १, १, पडि) ।

अभ्युक्ति [अभ्युक्ति] अभ्युक्ति करने वाला (ठा ५, १) ।

अभ्युक्त वि [अभ्युक्त] १ उन्नत, ऊँचा (पह १, ४) ।

अभ्युक्तयं वा. [अभ्युक्तयन्] १ ऊँचा करना हुआ । २ उत्तेजित करना हुआ, 'वीर्यं जतंति दीनवर्तितमनुएणप्रीणो' (ग २६५) ।

अभ्युक्त भव [स्ता] स्तान् बनना । अभ्युक्त (हे ५, १४) । बह्. अभ्युक्त (हुमा) ।

अभ्युक्त भव [प्र + दीप्] १ प्रकाशित होना । २ उत्तेजित होना । अभ्युक्त (हे ५, १४२) । अभ्युक्त (हुमा) । प्रयो. अभ्युक्त (सि ५, ५२) ।

अभ्युक्तयं वि [प्रदीप्] १ प्रकाशित । २ उत्तेजित (सि १५, २८) । अभ्युक्त वि [अभ्युक्त] उत्पन्न, 'पुष्पमवकु-लसिण्णो' (महा) ।

अभ्युक्त १ देखो अभ्युक्त । बह्. अभ्युक्त अभ्युक्त (सि १२, १८) । सङ्. अभ्युक्त (वाप) ।

अभ्युक्त पु [अभ्युक्त] १ उन्नति, उन्नत (प्रयो २६), 'अभ्युक्तयन्मुदयं तद्वर्णं नरमयं मुदीह' (उप ७६८ टी) ।

अभ्युक्त सक [अभ्युक्त + च्] उन्नत करना । अभ्युक्त (मवि) ।

अभ्युक्त न [अभ्युक्त] १ उन्नत (स ५४३) । २ वि. उन्नत-कारण (हे ४, २१४) ।

अभ्युक्त देवो अभ्युक्त (एणा १, १) । अभ्युक्त वि [अभ्युक्त] अभ्युक्त, विशेष उन्नत (मवि) ।

अभ्युक्त न [अभ्युक्त] १ पावर्ष, विस्मय (उप ७६८ टी) । २ वि. पावर्ष-कारण (राय, मुग १५) । ३ पुं. साहित्य शास्त्र प्रसिद्ध रसों में से एक; 'विश्वकर्षोऽप्युक्तो, अभ्युक्तो यो' रसो होइ ।

हरिगविनामोत्ती, लक्षणोऽप्युक्तो नाम' (धनु) । अभ्युक्त सक [अभ्युक्त + गम्] १ स्वीकार करना । २ पान करना । प्रयो., मंड. अभ्युक्त (सि १६३) ।

अभ्युक्तयं वि [अभ्युक्त] स्वीकार करना हुआ, 'वादे तदि हुमातेहि संवो मज्जं पाएत्ता अभ्युक्तयं विमयमयो चित्ते' (भाष ५ ३०) ।

अभ्युक्त पृं [अभ्युक्त] १ स्वीकार, मंजोर (सम १४५; स १७०) । २ सर्व-शास्त्र-श्रद्धा मित्रान्त-विशेष (बह १; मृग १, १२२) । अभ्युक्तयं वि [अभ्युक्त] स्वीकार, मंजोर (स ८००) ।

अभ्युक्तयं वि [अभ्युक्त] १ स्वीकार (सुर ६, ५८) । २ समीप में गया हुआ (भाषा) । अभ्युक्तयं वि [अभ्युक्त] मनुष्य-प्राप्त, मनुष्य-प्राप्त (नाट, सि १६३; २७६) ।

अभ्युक्तयं वि [अभ्युक्त] मनुष्य, मनुष्य (मवि १०४) ।

अभ्युक्त सक [अभ्युक्त + च्] स्वीकार करना । अभ्युक्तयं (एणा १, १६ टी, पम २०५) ।

अभ्युक्त देवो अभ्युक्त (पड) ।

अभ्युक्तयं वि [अभ्युक्त] सिक, सीमा हुआ (सुर ६, १६१) ।

अभ्युक्त वि [अभ्युक्त] भोजन के समय (विह १६०) ।

अभ्युक्त (भर) देवो आभोग (मवि) । अभ्युक्तयं वि [अभ्युक्त] स्वेच्छा से स्वीकार । १ की [१] स्वेच्छा से स्वीकार लपक्यादि की वेदना (ठा ५, ३) ।

अभ्युक्त देवो अभ्युक्त (पड) । अभ्युक्त देवो अभ्युक्त मनुष्य (पड) ।

अभ्युक्त वि [अभ्युक्त] १ मनुष्य, मनुष्य (पडि) । २ इन नाम का एक चौर (विपा १, १) ।

अभ्युक्त वि [अभ्युक्त] १ भक्ति नहीं करने वाला (हुमा) । २ न. भोजन का समाप्त (बव ७) ।

'हं पुं [१] उन्नत (भाषा; पडि मुग ३१७) । 'हृदि वि [१] उन्नत, निमित्त उन्नत किया हो वह (पंचव २) ।

अभय न [अभय] १ भय का अभाव, धैर्य (राय) । २ जीवित, मरण का अभाव (मृग १, ६) । ३ वि. मय-रहित, निर्मल (भाषा) । ४ पुं. रास धैर्य का एक विस्मय पुन मोर मन्त्री, जिनसे नगराट धरादीर के पास दीक्षा ली थी (मनु १, एणा १, १) । 'हुमात् पुं [१] देवा भनन्तोऽप्युक्तं मयं (पडि) ।

'दय वि [१] मय-विनाश, जीवित-नाश (पडि) । 'दाग न [१] दान' मोरित-दान (पह २, ४) । 'दय पुं [१] दय' बर्षा विन्यास नैनापावर्ष मोर कृपापावर्ष का नाम (मुनि १००७; पु १५; टी ५०; मय ७३) । 'पदनाग न [१] दान' कौशिक का दान (मृग १, ६) । 'यत्त न [१] यत्त' निरन्तर,

अभय (सुपा १८) । 'सेण पुं' ['सेन'] एक राजा का नाम (पिंड) ।

अभयंकर वि [अभयंकर] अमय देनेवाला, अहितक (सूत्र १, ७, २८) ।

अभयकरा ली [अभयकरा] गगनात् अभि-
नन्दन की वीक्षा-शिका (विचार १२६) ।

अभया ली [अभया] १ हृदयकी, हृदय, हृदय
(निबृ १५) । २ राजा दधिवाहन की ली का
नाम (ली ३५) ।

अभयारिष्ट न [अभयारिष्ट] मय-विशेष
(सूत्र १, ८) ।

अभयसिद्धि पुं [अभयसिद्धि] अमय,
अभयसिद्धी य मुक्ति के लिये प्रयोग्य जीव
(ठा २, २, एदि, ठा १) ।

अभयि वि [अभयि] १ असुन्दर, अचानक
अभय (विशे) कर्म ३, २३) ।

अभाअ वि [अभाअ] अस्थान, अयोग्य स्थान
(ति ८, ४२) ।

अभाइ वि [अभागिन] प्रमाणा, हत-भाग्य,
अमनसीव (बात २६) ।

अभागेय वि [अभागेय] ऊपर देखो
(पदम २८, ८६) ।

अभाव पुं [अभाव] १ ध्वंस, नाश (बृह १) ।
२ अविद्यमानता, अस्तव (पंचा ३) । ३
असम्भवं (दस १) । ४ अशुभ परिणाम
(वत १) ।

अभाविय वि [अभावित] अयोग्य, अनुचित
(ठा १०; बृह ३) ।

अभावुग वि [अभावुग] जिसपर दूसरे के
संग की प्रसर न पक सके वह, 'विशहरमणी
अभावुगदर्शन जीवो उ भावुर्गं तद्वा' (सुभा
१७५; भीष ७७३) ।

अभासा वि [अभासक] १ बोलने की
अभासय १ शक्ति जिसकी उपपन्न न हुई हो
नह २ गद्दी बोलनेवाला ३ पुं. नेवत स्वप्न-
इन्द्रियवाला, ऐक्यजि जीव ४ शुक आत्मा
(ठा २, ४, गग मलु) ।

अभासा ली [अभासा] १ असाय यवन ।
२ सप्त-निमित्त असाय यवन (अन २५, ३) ।

अभि अ [अभि] निम्न-लिखित शब्दों में से
जिसी एक को बतलानेवाला अमय—१ संयुक्त,

सामने, 'अभिगच्छत्या' (श्रीप) । २. चारों
थोर, समन्तात्, 'अभिरो' (स्वप्न ४२) । ३
वतात्कार, 'अभिप्रो' (धर्म २) । ४ उल्लापन,
प्रतिष्मण, 'अभिर्कत' (आचा) । ५ अत्यन्त,
अत्याद, 'अभिदुग' (सूत्र १, ५, २) । ६
लक्ष्य, 'अभिमुह' । ७ प्रतिकूल, 'अभिवा' (आचा) । ८ विकल्प । ९ संभावना (निबृ
१) । १० निरर्थक भी इस अमय का प्रयोग
होता है, 'अभिर्मति' (सुर १६, ६२) ।

अभिअण पुं [अभिअण] १ कुल । २ अत्य-
नूति (नाट) ।

अभिआवण वि [अभ्यावण] संयुक्त-भाग्य
(सूत्र १, ४, २) ।

अभिइ ली [अभिजित्] नयन-विशेष (ठा
२, १) ।

अभिइ सक (अभि + इ) सामने जाना, संयुक्त
जाना । वह, अभिईत (अन १४२ टी) ।

अभिर्जं देखो अभिर्जुंज । सक, अभि-
र्जयि (ठा ३, ४, दस १०) ।

अभिओअ पुं [अभियोग] १ शक्ता,
अभिओग १ हुकुम (भीष. ठा १०) । २
बलात्कार, 'अभिओगे य निओगे' (आ ५) ।

३ बलात्कार से कोई भी कार्य में लगाना
(धर्म २) । ४ अभिमान, परामय (आ ५) ।

५ कामरूप-प्रयोग, वशीकरण, बरा करने का
वर्ण या मन्त्र-उपाधि,

'दुविहो बह्नु अभिओगे, दन्वे भवे य
होइ नामव्यो ।

द्वन्विम होइ जोगी, विजा मंता य भावमि'
(भीष ५६७) ।

६ गर्व, अभिमान (आव ५) । ७ आग्रह, हठ
(नाट) । 'पण्णत्ति ली' ['प्रज्ञाति] विचा-
विशेष (एया १, १६) । देखो अहिओय ।

अभिओग पुं [अभियोग] उच्च, उद्योग
(सिदि ५८) ।

अभिओगी ली [अभियोगी] भावना-विशेष,
ध्यान-विशेष, जो अभियोगिक देव-मति (नैकर-
स्थानीय देव-मति) में उपपन्न होने का हेतु
है (बृह १) ।

अभिओयण न [अभियोजन] देखो अभि-
ओग (आव एण २०) ।

अभिगण } देखो अन्वगण (नाट; रंभा) ।
अभिजण }

अभिर्बं सक [अभि + काइ] इच्छा
करना, चाहना । अभिर्बंसेवा (आचा) । वह,

अभिर्कतमाण (दस ६, १) ।

अभिर्कता ली [अभिकाइ] प्रतिपादा,
इच्छा (आचा) ।

अभिर्कति वि [अभिकाइ] अभि-
अभिर्कतिर } लोपी, इच्छुक (पि ४०५; सुपा
१२६) ।

अभिर्कत वि [अभिकान्त] १ गत, प्रति-
कान्त, 'अभिर्कतं य बह्नु ययं सवेहाए'
(आचा) । २ संयुक्त गत । ३ आरम्भ । ४

उत्सर्गित (आचा, सूत्र २, २) ।

अभिक्रम सक [अभि + क्रम] १ जाना,
गुजरना । २ सामने जाना । ३ उत्सर्जन
करना । ४ शुक करना । वह, अभिक्रममाण
(आचा) । संक. अभिक्रम (सूत्र १, १, २) ।

अभिक्रम पुं [अभिक्रम] १ उत्सर्जन । २
प्रारम्भ । ३ संयुक्त-गमन । ४ गमन, गति
(आचा) ।

अभिकल पुं [अभिकल] बारंबार (अन
अभिकलण १ ४७ टी; ठा २, ४, वन ३) ।

अभिकला ली [अभिकला] नाम (विशे
१०४८) ।

अभिगच्छ सक [अभि + गम्] प्राप्त
करना । अभिगच्छइ (दस ४, २१, २२, ६,
२, २) ।

अभिगच्छ सक [अभि + गम्] सामने
जाना । अभिगच्छति (अन २, १) ।

अभिगच्छणया ली [अभिगमन] संयुक्त-
गमन (भीष) ।

अभिगच्छणया देखो अभिगच्छणया (वच
१) ।

अभिगज सक [अभि + गर्ज्] गर्जना,
बुल जोर से आवाज करना । वह, अभि-
गर्जत (एया १, १८; सुर १३, १८२) ।

अभिगम देखो अभिगच्छ । क. अभिगम-
णीय (स ७७६) ।

अभिगम पुं [अभिगम] १ प्राप्ति, स्वीकार
(एक्स) । २ आदर, सत्कार (अन २, ५) ।

३ (बृह १) उपदेश, सोल (एया १, १) ।

४ ज्ञान, निश्चय (पत्र १४६) । ५ सम्प-
त्त्व वा एक भेद (ठा २, १) । ६ प्रवेश
(से ८, ३३) ।

अभिगमण न [अभिगमन] ऊपर देखो
(स्वप्न १६; छाया १, १२) ।

अभिगमि वि [अभिगमिन्] १ भावर
करने वाला । २ उपदेशक । ३ निश्चय-कारक ।

४ प्रवेश करने वाला ५ स्वीकार करने
वाला, प्राप्त करने वाला (परण ३४) ।

अभिगाय वि [अभिगत] १ प्राप्त । २
सञ्चल । ३ उपस्थित । ४ प्रविष्ट (इह १) ।
५ ज्ञान, निश्चित (छाया १, १) ।

अभिगाहिय न [अभिग्रहिक] निव्याग-
विरोध (बन्ध ४, ५१) ।

अभिगिगम्क धन [अभि + गृध्] धति
लोन करता, मासक होता । बहू. धमि-
गिगम्कति (सूत्र २, २) ।

अभिगिगह् १ सक [अभि + ग्रह्] ग्रहण
अभिगिगह् २ करना, स्वीकारना । धमि-
गिगह् (बन्ध) । सङ्. अभिगिगिह्त्ता,
अभिगिगम्क (पि ५८२; ठा २, १) ।

अभिगगह पु [अभिग्रह] १ प्रतिज्ञा, निश्चय ।
(सोप १) । २ जैन साधुवा का माचार-
विरोध (इह १) । ३ प्रधाव्यायन, (निमन-
विरोध) का एक भेद (मान ६) । ४ बदा-
ग्रह, हठ (ठा २, १) । ५ एक प्रकार का
शारीरक विनय (बव १) ।

अभिगगहणी की [अभिग्रहणी] भाषा का
एक भेद, प्रलय-मुखा धवन (संवीच २१) ।

अभिगगहिय वि [अभिग्रहिक] धमिग्रह
धाना (ठा २, १; पत्र ६) ।

अभिगगहिय वि [अभिग्रहीत] १ निश्चये
विषय में धमिग्रह किया गया हो वह
(बन्ध, पत्र ६) । २ न. धरपारण, नियम
(परण ११) ।

अभिगप्ट स [अभि + गप्ट] वेग से
जाना । बहू. अभिगप्टिजमाण (एव) ।

अभिपाय पु [अभिपात] ग्राह्य, मार-पीट,
हिंसा (परह १, १; ३३ ४) ।

अभिपंद पु [अभिपन्] १ बहुसंख्य के
एक मध्यस्थत्व का एक पुत्र, जिससे जैन

दोसा ती थी (अंत ३) । २ इस नाम का
एक कुलकर मुख (पत्र ३, ६५) । ३
मुहूर्त-विरोध । (सम ५१) ।

अभिजण देखो अभिजण (स्वप्न २६) ।

अभिजस न [अभियशस्] इस नाम का
एक जैन साधुवा का कुल (एक भाचार्य की
संतति) (बन्ध) ।

अभिजाइ की [अभिजाति] कुलोनता,
सामवादी (उत्त ११) ।

अभिजाण सक [अभि + जा] जानना ।
बहू. अभिजाणमाण (भाषा) ।

अभिजान पु [अभिजात] पत ना ग्याहवां
दिन (सुज १०, १५) ।

अभिजाय वि [अभिजात] १ उत्पन्न, 'धमि-
जाययहो' (उत्त १४) । २ कुलोन (एव) ।

अभिजुज बह [अभि + जुज्] १ मन्त्र-
तन्त्रादि से बरा करना । २ कोई कार्य में
लगाना । ३ धातिगल करना । ४ स्वरण
करना, याद दिनाना । सङ्. अभिजुजिय,
अभिजुजियार्ण, अभिजुजित्ता (बव २,
३, सूत्र १, ५, २, भाषा. अण ३, ५) ।

अभिजुज वि [अभियुज्] १ वत-नियम में
जिससे रूपण न लगाया हो वह (छाया १,
१५) । २ जानकार, परिष्ठ (एदि) ।
३ दुरमन से घिरा हुआ (बेणी १२०) ।
अभिजम की [अभिज्या] लोभ, लोचुरता,
माहाक (सम ७१, परह १, ५) ।

अभिजिगय वि [अभिजित्] धमिनपिन,
बाधित (परण २८) ।

अभिजिअ वि [अभीष्ट] धमिनपिन (बजा
१६५) ।

अभिजिअय वि [अभिजिअ] बलिष्ठ, श्वा-
पित, प्ररमित (मान २) ।

अभिजिअय देतो अभिजिअय (सूत्र १, २,
३) ।

अभिजिअय } देखो अभिगी
अभिजिअय }

अभिजिअय स [अधि + नन्द] १ प्ररमा
करना, स्तुति करना । २ पाशोर्वाद देना ।
३ श्रोत करना । ४ मुग्धी बनाना । ५ ब्राह्मण,
इष्टा करना । ६ बहुमान करना, धारक करना ।

अभिजिअय (स १६३) । बहू. अभिजिअय
(धीन, छाया १, १; पत्र ५, १३०) ।
बहू. अभिजिअयमाण (ठा ६; छाया
१, १) ।

अभिजिअय वि [अभिजिअय] जिनका
अभिजिअय किया गया हो वह (सुपा ३१०) ।
अभिजिअय न [अभिजिअय] १ धमिनपिन ।
२ पुं. वर्तमान धरतारणीयता के वतुर्थ
जिनदेव (सम ५३) । ३ लोकोत्तर धावणमाण ।
(सुज १०) ।

अभिजिअय पुं [अभिजिअय] शारीरिक वेष्टा के
द्वारा हृदय भा भाव प्रकाशित करना, मात्व-
क्रिया (ठा ४, ४) ।

अभिजिअय वि [अभिजिअय] धूतन, नया (जीव
३) ।

अभिजिअय वि [अभिजिअय] धमिजिअय
लोभित, प्ररमित (म २७८) ।

अभिजिअय स [अभिजिअय + ग्रह्]
रोचना, सटवताना । सङ्. अभिजिअय
(पि ३३१, ५६१) ।

अभिजिअय की [अभिजिअय] वि
मिता के लिए गति-विरोध (बव ४) ।

अभिजिअय की [अभिजिअय] धन-
धनय रही हुई प्रजा (बव ६) ।

अभिजिअय स [अभिजिअय + गृध्]
जानना, इन्द्रिय धारि द्वारा निश्चित रूप से
ज्ञान करना । धमिजिअय (पिने ८१) ।

अभिजिअय पु [अभिजिअय] ज्ञान-विरोध,
धमि-ज्ञान (सम ८६) ।

अभिजिअय न [अभिजिअय] पीछे
लौटना, भास जाना (भाषा) ।

अभिजिअय वि [अभिजिअय] १ लोभ
रूप से निश्चित । २ धारही (उत्त १५) ।

अभिजिअय पु [अभिजिअय] धारह, हठ
(छाया १, १२) ।

अभिजिअय वि [अभिजिअय] बजा-
वही (पत्र १५७) ।

अभिजिअय पु [अभिजिअय] उरग मानना
(पावम) ।

अभिजिअय वि [अभिजिअय] विद. अभिजिअय
विद. धमिजिअय, धमिजिअय (पर १६५)
(बव १, ६) ।

अभिणिवट्ट सक [अभिनि + वृत्] रोचना, प्रतिपेय करना, 'ते महावीरं अभि-
णिवट्टं ग्वा कोहं च माणं च गायं च लोमं
च पेजं च दोसं च मोहं च मग्गं च जग्गं
च मारं च नरयं च तिरिथं च दुक्खं च'
(भावा)।

अभिणिवट्ट सक [अनिर् + वृत्] १
संपादित करना, निष्पन्न करना। २ उत्पन्न
करना। सकृ—अभिणिवट्टित्ता, (अण
५, ४)।

अभिणिवट्ट वि [अभिनिवृत्त] १
निष्पन्न। २ उत्पन्न, 'इहं लघु भूतताए तेहिं
तेहिं भुवेहिं अभिनेएण अभिसंभूया अभि-
सजाया अभिणिवट्टा अभिसंबुद्धा अभिसंबुद्धा
अभिनिवसता अणुपुब्बेए महत्तुणी' (भावा)।

अभिणिवट्ट वि [अभिनिवृत्त] १ श्रुत,
मोल-प्राप्त (सूत्र १, २, १)। २ शान्त,
भट्टपित (भावा)। ३ पाप से निवृत्त (सूत्र
१, २, १)।

अभिणिस्सज्जा की [अभिनिपया] जैन
साधुओं के रहने का स्थान-विशेष (अव १)।

अभिणिसट्ट देखो अभिणिसट्ट (मुख्य ६)।

अभिणिसिट्ठ वि [अभिनिट्ठ] बाहर
निक्का हुआ (जीव ३)।

अभिणिसेहिया की [अभिनेपेधित्री] जैन
साधुओं के स्वाध्याय करने का स्थान-विशेष
(अव १)।

अभिणिससय पन [अभिनिर् + सु] १
निकलना। अभिणिससयति (अण ७४)।

अभिणी सव [अभि + नी] अभिनय करना,
नाट्य करना। वट्ट. अभिणअंत (अ
७५)। वच. अभिणइज्जंत (अण
१५६)।

अभिणूम न [अभिनीस] माया, कपट (सूत्र
१, २, १)।

अभिण्ण वि [अभिण] जानना, निपुण
(अण ५८०)।

अभिण्ण वि [अभिण] १ भट्टित्त, अभि-
दात्त, भगवत्पुत्र (अण, अंका ११)।
२ वेरद्विज, अष्टमभूत (अव २)।

अभिण्णपुड पुं [अ] सली बुद्धि, सोपों

की ठगने के लिए सबके जिसको रास्ता पर
रख देते हैं (दे १, ४४)।

अभिण्णाय न [अभिज्ञान] निरानो, बिह
(आ १४)।

अभिण्णाय वि [अभिज्ञात] जाना हुआ,
विदित (भावा)।

अभितज्ज सक [अभि + तज्ज] तिरस्कार
करना, ताड़न करना। वट्ट. अभितज्जेमाण
(आया १, १८)।

अभितत्त वि [अभितत्त] १ उपया हुआ,
गरम किया हुआ (सूत्र १, ४, १, २७)।

अभित्तय सक [अभि + तय] १ उपना।
२ पीका करना, 'चत्तादि अणणिओ समार-
भित्ता जेहिं कूकम्मा मितवित्ति, वात' (सूत्र
१, २, १, १३)। वच. अभितत्तपमाण,
'ते तव्य चिट्ठित्तमित्तपमाण मच्छा व जीव-
तुवणोत्पत्ता' (सूत्र १, ५, १, १३)।

अभिताय सक [अभि + तापय] १ उपना,
गरम करना। २ पीकित करना। अभितायवति
(सूत्र १, ५, १, २१, २२)।

अभिताय पुं [अभिताय] १ बाह। २ पीका
(सूत्र १, ५, १, २, ६)।

अभिताय सक [अभि + त्रासय] नाश
उपजाना, भयभीत करना। वट्ट. अभितासे-
माण (आया १, १८)।

अभित्थु सक [अभि + स्तु] स्तुति करना,
श्लाघा करना, बखाना करना। अभित्थुएत्ति,
अभित्थुणामि (अण ४६४, वित्ते १०५४)।

वट्ट. अभित्थुणमाण (अण)। वच. अभित्थुणमाण
(अण १८६)।

अभित्थुय वि [अभिपूत] स्तुत, श्लाघित
(अण)।

अभित्थु देखो अभित्थु। वट्ट. अभित्थुणंत
(आया १, १)। वच. अभित्थुवमाण
(अण, ठा ६)।

अभिदुग्ग वि [अभिदुग्ग] १ दु सोलावन
स्थान। २ प्रतिविम्ब स्थान (सूत्र १, ५, १,
१७)।

अभिदो (औ) व [अभितः] चारों ओर ने
(अण ४२)।

अभिदय सक [अभि + दु] पीका करना,

दुःख उपजाना, हैरान करना, 'मुदंति वापाहिं
अभिदं एरा' (आया २, १६, २)।

अभिद्वय वि [अभिद्वय] उज्जुत, हैरान
किया हुआ (सूत्र १२, ६७)।

अभिद्वय देखो अभिद्वय (आया १,
६; स ५९)।

अभिधाइ वि [अभिधायिन्] वाचक,
कहनेवाला (वित्ते ३४७२)।

अभिधार सक [अभि + धारय] १ चिंतन
करना। २ स्पष्ट करना। अभिधार (अव ५,
२, २५, उत्त २, २१), अभिधारयामी (सूत्र
२, ६, १९)। वट्ट. अभिधारयंत (उत्तनि
३)।

अभिधारण न [अभिधारण] धारणा,
चिंतन (वट्ट ३)।

अभिधेज्ज पुं [अभिधेय] अर्थ, वाक्य,
अभिधेय (वित्ते १ टी)।

अभिन्द देखो अभिणंद। वट्ट. अभिन्द-
माण (अण)। वच. अभिन्दिजमाण
(अण)।

अभिन्दण देखो अभिणंदण (अण)।
अभिन्दि की [अभिन्दि] भगवत्, पुत्री;
'पावेइ अन्दिणमभिन्दि' (अभि ३७)।

अभिनिस्सत देखो अभिनिस्संत (भावा)।

अभिनिस्सम अक [अभिनिर् + अक] १
दीक्षा (अण)। २, दीक्षा लेने की इच्छा
करना, गृहवात से बाहर निक्का। वट्ट.
अभिनिस्समंत (अण ३६७)।

अभिनिगिण्ह देखो अभिनिगिण्ह (भावा)।

अभिनिगुम्भ देखो अभिनिगुम्भ। अभिनि-
गुम्भ (वित्ते ६८)।

अभिनिवट्ट देखो अभिनिवट्ट। वट्ट. अभि-
निवट्टाण (अण ५८१)।

अभिनिवट्ट देखो अभिनिवट्ट (अण)।

अभिनिवेश सक [अभिनि + वेशय] १
स्थापन करना। २ करना। अभिनिवेश
(अव ८, ५६)।

अभिनिवेशि न [अभिनिवेशि] निष्पा-
ल का एक प्रकार, सप्य वस्तु का मान होने
पर जो उसे नहीं मानने का दुःप्रह (आ १;
अण ४, ५१)।

अभिनिव्यट् देवो अभिणिव्यट् (कण्, माया) ।

अभिनिव्यट् क्व [अभिनि + वृत्] वृक्त् होना । बह्. अभिनिव्यट्माण (सूय २, ३, २१) ।

अभिनिव्यट् मन् [अभिनि + युत्] नीचना । सङ्. 'कोपायो मसि अभिनिव्यट्' टिप्ता (सूय २, १, १६) ।

अभिनिव्यागड् वि [अभिनिव्याङ्] विभिन्न इति याता (मत्तन) । (बह १ टी) ।

अभिनिव्यट् वि [अभिनिव्यट्] संज्ञान, उपग्र (कण्) ।

अभिनिव्यट् देवो अभिनिव्यट् (वि ११६) ।

अभिनिव्यट् वि [अभिनिव्यट्] जिवका स्वयं प्रदेष्टा बाह्य विवन् माया हा बह् (मग १५, पय ६६६) ।

अभिनिव्यट् देवो अभिनिव्यट् अभिनिव्यट् (राय ७५) ।

अभिनिव्यट् क्व [अभिनि + वृत्] टयना, मरना । अभिनिव्यट् (मग) ।

अभिनि देवो अभिनि (मग) ।

अभिनि देवो अभिनि (मग) ।

अभिनि देवो अभिनि (मग) ।

अभिनि देवो अभिनि (मग) ।

अभिनि देवो अभिनि (मग) ।

अभिनि देवो अभिनि (मग) ।

अभिनि देवो अभिनि (मग) ।

अभिनि देवो अभिनि (मग) ।

अभिनि देवो अभिनि (मग) ।

अभिनि देवो अभिनि (मग) ।

अभिनि देवो अभिनि (मग) ।

अभिनि देवो अभिनि (मग) ।

अभिमास सक् [अभि + माप्] संभाषण करता । अभिमास (वि १६६) ।

अभिमास श्री [अभिमास] पराम्ब, अभिमास (इ ३०) ।

अभिमास वि [अभिमास] पयमून, पयमित (माया, मुर ५, ७०) ।

अभिमास देवो अभिमास (ह ५, ३०५) ।

अभिमास क्व [अभि + मन्] संविन्न करना, मन् मे सम्भारना । सङ्. अभि-मन्तिऊण, अभिमन्ति (वि १, पयम) ।

अभिमास वि [अभिमास] मन् मे मरवास्त (मुर १६, ६२) ।

अभिमास क्व [अभि + मन्] १ मन् मान करना । २ सम्पत् करना । अभिमम (विने २१६०, २६०३) ।

अभिमास वि [अभिमास] इष्ट, अभिमास (सूय २, ५) ।

अभिमास पु [अभिमास] अभिमान, गर्व (वि १) ।

अभिमास पु [अभिमास] वृत् विटो (पय) ।

अभिमास वि [अभिमास] १ वृत्त, सापने स्थित । २ विवि. सापने (मग) ।

अभिमास वि [अभिमास] मद्रुय विद्या हुवा (मृगिनि १५६) ।

अभिमास पु [अभिमास] मद्रुय विद्या हुवा (सूय १, १, ३, २) ।

अभिमास पु [अभिमास] मद्रुय विद्या हुवा (सूय १, ५, २, २६) ।

अभिमास श्री [अभिमास] १ यवि, सभोय । २ श्रीवि, मद्रुय, (विने १२२३) ।

अभिमास क्व [अभि + मन्] १ होना करना, सभोय करना । २ श्रीवि करना । ३ सभोय होना, सापने करना । अभिमम (मग) ।

अभिमास क्व [अभि + मन्] १ होना करना, सभोय करना । २ श्रीवि करना । ३ सभोय होना, सापने करना । अभिमम (मग) ।

अभिमास क्व [अभि + मन्] १ होना करना, सभोय करना । २ श्रीवि करना । ३ सभोय होना, सापने करना । अभिमम (मग) ।

अभिमास क्व [अभि + मन्] १ होना करना, सभोय करना । २ श्रीवि करना । ३ सभोय होना, सापने करना । अभिमम (मग) ।

अभिमास क्व [अभि + मन्] १ होना करना, सभोय करना । २ श्रीवि करना । ३ सभोय होना, सापने करना । अभिमम (मग) ।

अभिमास क्व [अभि + मन्] १ होना करना, सभोय करना । २ श्रीवि करना । ३ सभोय होना, सापने करना । अभिमम (मग) ।

अभिमास क्व [अभि + मन्] १ होना करना, सभोय करना । २ श्रीवि करना । ३ सभोय होना, सापने करना । अभिमम (मग) ।

तबनियमसंनभाभिरया' (पयम ३७, ६३, ५ १२२) ।

अभिराम वि [अभिराम] सुन्दर. मनोहर (छाया १, १३, स्वय ५५) ।

अभिराम क्व [अभि + राम] उपरता मे कार्य में लगाना । अभिरामयति (इति ६, ५, १) ।

अभिराम वि [अभिराम] पयम, मन वा अभिमम (छाया १, १, उता, मुया ३५५, मग) ।

अभिराम क्व [अभि + रम्] पयम पटना, रचना । अभिराम (पय) ।

अभिराम वि [अभिराम] सुन्दर रूप वाता, मनोहर (छाया १, ५, १, १) ।

अभिराम क्व [अभि + रम्] १ रागना । २ ऊपर करना, माराटना । सङ्.

'वत्तारि साहिं माने बह्वे

पाठ्यादप्य भागम् ।

अभिराम क्व [अभि + रम्] पयम पटना, रचना । अभिराम (पय) ।

अभिराम वि [अभिराम] सुन्दर रूप वाता, मनोहर (छाया १, ५, १, १) ।

अभिराम क्व [अभि + रम्] १ रागना । २ ऊपर करना, माराटना । सङ्.

'वत्तारि साहिं माने बह्वे

पाठ्यादप्य भागम् ।

अभिराम क्व [अभि + रम्] पयम पटना, रचना । अभिराम (पय) ।

अभिराम वि [अभिराम] सुन्दर रूप वाता, मनोहर (छाया १, ५, १, १) ।

अभिराम क्व [अभि + रम्] १ रागना । २ ऊपर करना, माराटना । सङ्.

'वत्तारि साहिं माने बह्वे

पाठ्यादप्य भागम् ।

अभिराम क्व [अभि + रम्] पयम पटना, रचना । अभिराम (पय) ।

अभिराम वि [अभिराम] सुन्दर रूप वाता, मनोहर (छाया १, ५, १, १) ।

अभिराम क्व [अभि + रम्] १ रागना । २ ऊपर करना, माराटना । सङ्.

अभिलासुग वि [अभिलासुग] अभिलाषो
(उप ३५७ टी)।

अभिलोयण न [अभिलोदन] जहाँ सडे रह
कर दूर की चीज देखी जाय वह स्थान
(परह २, ४)।

अभिलोयण न [अभिलोचन] ऊपर देखी
(परह २, ४)।

अभिवंद सक [अभि + यन्द] नमस्कार
करना, प्रणाम करना। वहु. अभिवंदंत
(पवन २३, ६), क. 'जे माहुणो से अभि-
वदिषव्या' (गोप १४), अभिवंदणिज्ज
(विसे २६४३)।

अभिवदणा छी [अभिवदना] प्रणाम, नम-
स्कार (वेद्य ६३६)।

अभिवंदय वि [अभिवन्दक] प्रणाम करते
वाला (श्रीप)।

अभिवहट सक [अभि + वृध्] बढ़ना,
बढ़ा होना, उन्नत होना। अभिवहटामो, भूला.
अभिवहट्या (कण)। वहु. अभिवहट्टेमाण
(जं ७)।

अभिवहिट देखो अभिवुहिट (इक)।

अभिवहिट देखो अहिवहिट (सुज १०
१२ टी)।

अभिवहिटय वि [अभिवधिन] १ बढ़ाया
-हुआ। २ अधिक मास। ३ अधिक नामवाला
वर्ष (सम २६, पन्द ११)।

अभिवहट्टे सक [अभि + यधेय्] बढ़ाना।
-अभिवहट्टेति (सुज ६)। वहु. अभिवहट्टेमाग
(सुज ६)। सह. अभिवहट्टेता (सुज ६)।

अभिवत्त वि [अभिवत्तक] वाक्पूत
(धर्मसं ८८)।

अभिवर्त्त छी [अभिव्यक्ति] प्रादुर्भाव
(उप २८५)।

अभिवय सक [अभि + व्रज्] सापने
जाना। वहु. अभिवयंत (एण्ण १, ८)।

अभिवहय वि [अभिवहित] प्रणत, नम-
स्कार (सुग ३१०)।

अभिवात पुं [अभिवान] १ सापने का
पवन। २ प्रतिपन्न (गम या हस) पवन
(पाचा)।

अभिवाद सक [अभि + वादय्] प्रणाम
अभियाय वि [अभि + वादय्] प्रणाम
करना, नमस्कार करना। अभि-

वाद (महा)। अभिवाये (विसे १०५४)।
वहु. अभिवायमाण (पाचा)। क. अभि-
वायणिज्ज (सुग २६८)।

अभिवाय देखो अभिवात (पाचा)।
अभिवायण न [अभिवादन] प्रणाम, नम-
स्कार (पाचा, दसवू)।

अभिवाहरण न [अभिव्याहरण] कुनाहट,
पुकार (पंचा २)।

अभिवाहार पुं [अभिव्याहार] प्रभोत्तर,
सवाल-जवाब (विसे ३३६६)।

अभिविद्धिं पुंछी [अभिविधि] मर्यादा, व्याप्ति
(पंचा १५, विसे ८७४)।

अभिवुट्टि छी [अभिवृष्टि] वर्षा, वर्षा (पज
४०)।

अभिवुहट देखो अभिवहट्ट। सह. अभि-
वुहिटत्ता (सुज १)।

अभिवुडिट छी [अभिवृद्धि] १ वृद्धि,
बढ़ाव। २ उत्तरमात्रपद नसल का अग्रिष्ठात
देव (जं ७)।

अभिवुहट्टे देखो अभिवहट्टे। सह. अभि-
वुहट्टेत्ता (सुज ६)।

अभिवेदणा छी [अभिवेदना] शरयन्त पीढा
(सूय १, ५, १, १६)।

अभिवदजण न [अभिव्यज्जत] देखो अभि-
वत्ति (सूय १, १, १)।

अभिवगाहार देखो अभिवाहार (विसे
३४१२)।

अभिसंरुण न [अभिराङ्गन] संवा, बह्म
(संवीप ४६)।

अभिसंरु छी [अभिशङ्का] संशय, संदेह
(सूय १, ६, १, १४)।

अभिसंकि वि [अभिशक्ति] १ संदेह करने-
वाला। २ भोध, डरनेवाला, 'उन्नुत्तु माया-
मिस्की मरणा वुत्तचित्' (पाचा, खाया
१, १८)।

अभिसंय पुं [अभिस्यङ्ग] भावक्ति (ठा
३, ४)।

अभिसंजाय वि [अभिसंजात] उत्पन्न
(पाचा)।

अभिसंयुण सक [अभिस + स्तु] कृति
करना, वर्णन करना। वहु. अभिसंयुणमाण
(एण्ण १, ८)।

अभिसंधारण न [अभिसंधारण] पर्ण-
लोचन, विचारना (पाचा)।

अभिसंधि पुंछी [अभिसंधि] माशय, अभि-
प्राय (उप २११ टी)।

अभिसंधिय वि [अभिसंहित] गृहीत, उपात
(पाचा)।

अभिसंभूय वि [अभिसंभूत] उत्पन्न, प्रादु-
र्भूत (पाचा)।

अभिसंबुद्ध वि [अभिसंबुद्ध] ज्ञान-प्राप्त,
बोध-प्राप्त (पाचा)।

अभिसंबुद्ध वि [अभिसंबुद्ध] बढ़ा हुआ,
उन्नत प्रत्यक्षा को प्राप्त (पाचा)।

अभिसमग्गाय वि [अभिसमग्गाय] १
अभिसमप्रागत्य २ अग्रणी रह जाया
हुआ, मुनिर्णीत (सग ५, ४)। ३ अग्रस्थित
(सूय २, १)। ३ प्रात, लब्ध (सग १५; कण,
खाया १, ८)।

अभिसमाग सक [अभिसमा + गम्] १
सापने जाना। २ प्राप्त करना। ३ निर्णय
करना, ठीक-ठीक जानना। सह. अभिसमा-
गम्मा (पाचा, दस ५)।

अभिसमाग पुं [अभिसमागम] १ संतुल
गमन। २ प्राप्ति। ३ निर्णय (ठा ३, ४)।

अभिसमे सक [अभिसमा + स] देखो अभि-
समागम = अभिनय + गम। अभिसमेइ (ठा
३, ४)। सह. अभिसमेस (पाचा)।

अभिसर सक [अभि + स] प्रिय के पास
जाना। वहु. अभिसरंत (मोह ६१)।

अभिसरण न [अभिसरण] १ सापने जाना,
मनुष्य गमन (परह १, १)। २ प्रिय के पास
जाना (हुमा)।

अभिसर पुं [अभिसर] १ मय भावि वा
घरें। २ मय मास प्रादि से नियत भोज
(पव ६)।

अभिसरिआ देखो अहिसरिआ (ग
८७१)।

अभिसिच सक [अभि + सिच्] मनियेक
बचना। अभिसिचति (कण)। वहु. अभि-
सिचमाण (कण)। प्रयो., हेइ. अभिसिचा-
वित्तय (पि ५७८)।

अभिसिचि नि [अभिसिच] जितना अभि-
येव किया गया हो वह (भावम)।

अभिसेअ पु [अभिपेऊ] १ राजा, याचायें
अभिसेमा ॥ श्रादि पद पर आम्ह करणा (संभा-
महा) । २ स्नान-महोत्सव, बिष्णुभिषेगे
(मुषा ५०) । ३ स्नान (धीरू, न ३२) । ४
जहा पर अभिषेक किया जाता है वह स्थान
(भग) । ५ शुरु शोणित का मध्याम, 'इह खनु
प्रतताए' लेहि लेहि कुलेहि अभिषेकण शमि
समूय (घावा १, ६, १) । ६ वि याचायें
श्रादि पद वे योग्य (रुह ३) । ७ अभिषिक्त
(निबू १५) ।

अभिसेमा की [अभिसेमा] १ माव्यो, संख्या
मिनी (निबू १५) । २ साध्वियो की मुखिया,
प्रवर्तिनी (धर्म ३, निबू ६) ।

अभिसेजा की [अभिसेजा] देखो अभि-
गिसजा (वव १) । २ मित्र स्थान (विने
३५६१) ।

अभिसेवण ॥ [अभिसेवण] पूजा, सेवा
भक्ति (धर्म १५, ५६) ।

अभिसेवि वि [अभिसेवि] सेवा कर्ता (सूत्र
२, ६, ४४) ।

अभिरसग पु [अभिरसग] धामति (विने
२६६५) ।

अभिहट्टु म [अभिहट्टु] मलारकार करके,
जबरदस्ती बर्जे (भावा, वि ५७७) ।

अभिहट वि [अभिहट] १ सामने लाया
हुमा (ववा १३) । २ जैन मधुमा की गिरा
का एक दोष (ठा ३, ४) ।

अभिहण स [अभि + हण] मारना, हिंसा
करना (वि ५६६) । वट. अभिहणमाण
(ज ३) ।

अभिहणन न [अभिहणन] मविपाव, हिंसा
(मग ८, ७) ।

अभिहय वि [अभिहत] मारा हुमा, मारत
(परि) ।

अभिहा की [अभिघा] नाम, भावना (मण) ।
अभिहाण न [अभिधान] १ नाम, भावना
(हुमा) । २ नाचर, राट्ट (वव ६) । ३
कयन, उक्ति (विम) ।

अभिहाण ग [अभिधान] १ उच्चारण
(सूत्र १३८) । २ कयन, उक्ति (धर्म ३
११११) । ३ मोहप्रमय (वेद ७५) ।

अभिहिय वि [अभिहित] कथित, उक्त
(भावा) ।

अभिहेअ वि [अभिधेय] वाच्य, पदार्थ
(विने ८४१) ।

अभीड की [अभिजिन्] १ नखन-
अभीजि ॥ विरेप (मग ८, १५) । २ पु. एण
रत्नकुमार (मग १३, ६) । ३ राजा येरिण
का एण पुन, जिसने जैन दीक्षा ली थी (धनु) ।

अभीरु वि [अभीरु] १ निडर निर्भय
(भावा) । २ लो मध्यम शयन की एक धूचरना
(ठा ७) ।

अभेउमा देखो अभिउमा (पह १, ३) ।

अभीज वि [अभीज] भावन के प्रयोग
(एणा १, १६) । 'वर न [गुह] भिगा
के विरे प्रयोग पर, सोबी श्रादि नीच जाति
का पर (रुह १) ।

अम स [अम्] १ जाना । २ मावाज
करना । ३ खाना । ४ पीना । ५ भक
रागी होना धम गचाईयु (विने ३४५३)
'मम रोगे वा' (विम ३४५४) । अमर (विने
३४५३) ।

अमग्ग पु [अमार्ग] १ कुमार्ग, खराब रास्ता
(उव) । २ मिथ्यात्व, कथाय श्रादि द्वेष पदार्थ,
'अमग्ग परिवाणानि मग्ग जससवआदि'
(भावा ४) । ३ कुमल, कुदरन (रुह) ।

अमग्ग्याय पु [अमाघात] १ द्रव्य का स-
हण । २ मार्दिनवारण, धमय पोषणा (ववा
६) ।

अमख पु [अमार्थ] मनी, प्रधान (धीरू, मुर
४, १०४) ।

अमख पु [अमर्त्य] देव, देवता (हुमा) ।

अमग्ग वि [अमग्ग] १ मध्य रहित, अमर
(ठा ३, २) । २ परमाणु (मग २०, ६) ।

अमण न [अमन] १ ज्ञान, निर्णय (ठा ३,
४) । २ धन्य, प्रयोजन (विने ३४५३) ।

अमण ॥ वि [अमनरु] १ अग्रोनिवर,
अमणसर ॥ अमाष्ट (ठा ३, ३) । २ मनरहित
(भावा ४, मुर २, ४, २) ।

अमणाम वि [अमनआप] मणित, धमनोहर
(मग १४६, विम १, १) ।

अमणाम वि [अमनोम] ऊपर देखो (भग-
विता १, १) ।

अमणाम वि [अजनाम] पीना-बारन, दुखी
लाट्ट (मुर २, १) ।

अमणुस पु [अमनुष्य] १ मनुष्य भिन देव
श्रादि (एदि) । २ मनुष्य (निबू १) ।

अमत्त न [अमत्त] भाजन, पात्र (सूत्र १, ६) ।

अमम वि [अमम] १ ममता रहित, नि स्वह
(पह २, ५, मुषा ५००) । २ पु. आगामी
काल में होने वाले एक जिनदेव का नाम
(मग १३३) । ३ धुम रूप से होने वाले
मनुष्य की एक जाति (ज ४) । दिन वे
२५ वां मनुष्य का नाम (बंद १०) । 'त वि
[र] वि स्वह, ममता रहित (पच ४) ।

अमय वि [अमय] विकार-रहित,
अमयो य होइ जीवो, कारणविरहा
जहेव भागान ।

समय व होशनिच, मिमयवडतनुमाईय'
(विने) ।

अमय न [अमृत] १ अमृत, गुषा (प्रातृ
६६) । २ क्षीर समुद्र का पानी (राव) । ३
पु. माग, मुक्ति (सम १६७, प्राता) । ४
वि. नही मरा हुमा, जीवित, 'अमया ह नय
विमुआदि' (पजग ३३, २२) । 'कर पु [नर]
चन्द्र, चन्द्रमा (उर ७६८ ठी) । 'अरण पु
[निरण] चन्द्र (मुषा ३७७) । 'कुड पु
[कुण्ड] चन्द्र, चांद (वा २७) । 'पोस पु
[पोष] एक राजा का नाम (संभा) । 'फल
न [कल] अमृतोपन फल (एणा १, ६) ।

'मइय—मय वि [मय] अमृत-भूत (हुमा
मुर ३, १२१, २३१) । 'मउह पु [मयूय]
चन्द्र (मे ६०) । 'वल्लि, 'वल्ली की
[वल्लि, 'री] अमृतवता, वल्ली विदेय
गुहरी । 'वल्लि, 'वल्ली की [वल्लि,
'ल्ली] वल्ली विदेय गुहरी (वा २०, पर
४) । 'वास ॥ [वपे] गुषा-वृद्धि (भावा) ।

द्वयो अमिय = अमृत ।

अमय पु [दि] १ चन्द्र, चन्द्रमा (दे ११५)
२ अमृत रूप (पट) ।

अमयपडिअ पु [दि. अमृतपडित] चन्द्रमा,
चांद (हुत्र २१) ।

अमयपिणाम पु [दि. अमृतनिर्गम] १
चन्द्र, चन्द्रमा (दे ११५) ।

अमर वि [आमर] दिव्य, देव-गन्धर्वी, अमर
आउनेवा (पजग ६१, ५६) ।

अभिलासुग वि [अभिलासुग] अभिलाषी
(उप ३५७ टी) ।

अभिलोचन न [अभिलोचन] जहाँ खड़े रह
कर दूर की चीज देखी जाय वह स्थान
(पराह २, ४) ।

अभिलोचन न [अभिलोचन] ऊपर देखी
(पराह २, ४) ।

अभिवंद सक [अभि + वन्द] नमस्कार
करता, प्रणाम करता । वहु अभिवंदत
(पवन २३, ६), क. 'जे साहुरो ते अभि-
वयिदववा' (गोप १४) अभिवंदतिज
(विते २६४३) ।

अभिवंदणा ली [अभिवन्दना] प्रणाम, नम-
स्कार (वेदय ६३६) ।

अभिवन्द्य वि [अभिवन्द्य] प्रणाम करने
वाला (बीप) ।

अभिवद्वद सक [अभि + वृध्] बढना,
बढा होना, उन्नत होना । अभिवद्वदामो, भूका,
प्रतिवद्वदया (वप्य) । वहु अभिवद्वदमाग
(जं ७) ।

अभिवद्वि देखी अभिवुद्वि (इव) ।

अभिवद्वि देखी अहिषद्वि (मुज १०
१२ टी) ।

अभिवद्विहय वि [अभिविहय] १ बढाया
-हुषा । २ प्रथिक् मास । ३ प्रथिक् मासवाता
वर्ष (सम ५६, वन्द ११) ।

अभिवद्विहय सक [अभि + वधेय्] बढाना ।
अभिवद्विहय (मुज ६) । वहु, अभिवद्विहयमाग
(मुज ६) । सह, अभिवद्विहयता (मुज ६) ।

अभिवयत्त वि [अभिवयत्त] आविर्भूत
(पवन ८८) ।

अभिवयत्त ली [अभिवयत्त] प्रादुर्भाव
(उप २८४) ।

अभिवय सक [अभि + वय्] सामने
जाना । वहु अभिवयन (लाया १, ८) ।

अभिवयादय वि [अभिवयादित] प्रणत, नम-
स्सृत (मुग ३१०) ।

अभिवयात पुं [अभिवयात] १ सामने का
पवन । २ प्रविह्वन (गदम भा रुख) पवन
(माघा) ।

अभिवयाद् सक [अभि + यादय्] प्रणाम
अभिवयाय करता, नमस्कार करता । अभि-

वायद् (महा) । अभिवयादे (विते १०५४) ।
वहु, अभिवयायमाग (माघा) । क. अभि-
वायतिज (मुग ५६८) ।

अभिवयाय देखी अभिवात (माघा) ।

अभिवयायन न [अभिवयादन] प्रणाम, नम-
स्कार (माघा, दसकू) ।

अभिवयाहरण न [अभिवयाहरण] बुताहट,
पुकार (पचा २) ।

अभिवयाहार पुं [अभिवयाहार] प्रदोत्तर,
सवान-जवाह (विते ३३६६) ।

अभिविहि पुं [अभिविहि] मर्यादा, व्याप्ति
(दंजा १५ विते ८७४) ।

अभिविद्वि ली [अभिविद्वि] वृद्धि, वर्षा (पच
४०) ।

अभिविद्वि देखी अभिवद्वि । सक, अभि-
वुद्विहय (मुज १) ।

अभिविद्वि ली [अभिविद्वि] १ वृद्धि,
बढाव । २ उत्तरभाद्रपद नक्षत्र का ऋषिपदा
देव (जं ७) ।

अभिविद्वि देखी अभिवद्वि । सक, अभि-
वुद्विहय (मुज ६) ।

अभिवेदणा ली [अभिवेदना] ग्रन्थत पीडा
(सूत्र १, ५, १, १६) ।

अभिवेदजन न [अभिवेदजन] देखी अभि-
वयत्त (सूत्र १, १, १) ।

अभिवयाहार देखी अभिवयाहार (विते
३४१२) ।

अभिवसक न [अभिवसक] राखा, वहम
(संकोप ५६) ।

अभिवस ली [अभिवस] संराय, सवेह
(सूत्र १, ६, १, १४) ।

अभिवसकि वि [अभिवसकि] १ सवेह बले-
वाता । २ भीष्ट, डलेवाता, उज्जु मारा-
सिंकी मरणा पशुवति' (माघा, लाया
१, ८८) ।

अभिवस पुं [अभिवस] भाविक (उप
३, ४) ।

अभिवसजाय वि [अभिवसजाय] उपद्र
(माघा) ।

अभिवसिगुण सक [अभिवस + स्तु] स्तुति
करता, वर्णन करता । वहु अभिवसिगुणमाग
(लाया १, ८) ।

अभिसंधारण न [अभिसंधारण] पर्या-
लोचन, विचारना (माघा) ।

अभिसंधि पुं [अभिसंधि] श्राव्य, प्रति-
प्राय (उप २११ टी) ।

अभिसंधिय वि [अभिसंहित] गृहीत, उपात
(माघा) ।

अभिसंभूय वि [अभिसंभूत] उत्पन्न, प्रादु-
र्भूत (माघा) ।

अभिसंबुद्ध वि [अभिसंबुद्ध] ज्ञान-प्राप्त,
बोध-प्राप्त (माघा) ।

अभिसंबुद्ध वि [अभिसंबुद्ध] बढा हुआ,
उन्नत श्रव्यता को प्राप्त (माघा) ।

अभिसमपणगाय वि [अभिसमपणगाय]
अभिसमपणगाय १ अच्छी तरह जाना
हुआ, सुनिर्णीत (मग ५, ४) । २ व्यवस्थित
(सूत्र २, १) । ३ प्राप्त, लब्ध (मग १५; कण,
लाया १, ८) ।

अभिसमाग सक [अभिसमा + गम्] १
सामने जाना । २ प्राप्त करना । ३ निर्णय
करना, ठीक-ठीक जानना । सह, अभिसमा-
गम् (माघा, दस ५) ।

अभिसमाग पुं [अभिसमागम्] १ समुल
गमन । २ प्राप्ति । ३ निर्णय (उप ३, ४) ।

अभिसमे सक [अभिसमा + ह] देखी अभि-
समाग = अभिनमा + गम् । अभिममेह (उप
३, ४) । सह, अभिसमेह (माघा) ।

अभिसर सक [अभि + सृ] प्रिय के पास
जाना । वहु, अभिसरत (मोह ६१) ।

अभिसरण न [अभिसरण] १ सामने जाना,
समुल गमन (पराह १, १) । २ प्रिय के पास
जाना (हुषा) ।

अभिसव पुं [अभिसव] १ मद्य भादि का
मर्क । २ मद्य मास प्रादि से मिलित बीज
(पच ६) ।

अभिसारिआ देखी अहिसारिआ (ग
८७१) ।

अभिसिक्त सक [अभि + सिक्] अभिवेद
करना । प्रतिवर्तित (वप्य) । वयद्, अभि-
सिक्तमाग (वप्य) । प्रथो, हेह, अभिसिचा-
विचय (पि ५७८) ।

अभिसिक्त वि [अभिसिक्त] जितवा प्रति-
येक किया गया हो वह (मागम) ।

अभिसेअ } पुं [अभिपेअ] १ राजा, घाचायं
अभिसेमा } प्रादि पर पर भाट्ट करता (संघा-
महा) । २ स्नान-महोत्सव, 'जिष्णामिषे' (मुपा ५०) । ३ स्नान (घोषः ३ २२) । ४
जटा पर अभिषेक किया जाता है वह स्थान
(मग) । ५ गुरु शोणित का मण्डप, 'इह खनु
भ्रतसाए देहि तेहि बुतेहि अभिषेएण अभि-
संभूया' (घाचा १, ६, १) । ६ वि. घाचायं
प्रादि पर के योग्य (रुह ३) । ७ अभिषिक्त
(निज्ज १५) ।

अभिसेमा श्री [अभिसेमा] १ माध्वी, संस्था-
गिनी (निज्ज १५) । २ माध्वी की सुविधा,
प्रशस्तिनी (धर्म १, निज्ज ६) ।

अभिसेजा श्री [अभिज्या] देखो अभि-
जिज्ञासा (धर १) । २ भिन्न स्थान (रिये
३५६१) ।

अभिसेयण न [अभिपेयण] पूना, मेना,
भक्ति (पउम १४, ५६) ।

अभिसेयिनि रि [अभिपेयिनि] मेवा-वर्ता (सूय
२, ६, ५४) ।

अभिसेसा पुं [अभिपेसा] सामाजिक (रिये
२६५७) ।

अभिहट्टु व [अभिहट्टु] बनावार करने,
जवरन्ती करने (भाषा, रि ५७७) ।

अभिहट्ट रि [अभिहट्ट] १ मानने माया
हूमा (पंचा १३) । २ जैन माधुसू की निज्ञा
का एक दाप (ठा ३, ४) ।

अभिहण तर [अभि + हण] मारना, हिमा
करना (रि ५६६) । वट. अभिहणमाण
(जं ३) ।

अभिहणन न [अभिहणन] अभिवाण, निमा
(मा ६, ७) ।

अभिहण रि [अभिहण] मारा हुआ, बाह्य
(वदि) ।

अभिहा श्री [अभिहा] गाय, धार्या (मग) ।
अभिहाण रि [अभिहाण] १ नाम, धार्या
(हुमा) । २ बाधक, रुद्ध (वद ६) । ३
बधन, उर्ज (रिये) ।

अभिहाण न [अभिहाण] १ उच्छरत
(सुपरि ११८) । २ बधन, उर्ज (वर्त्त
११११) । ३ वच्छेदक (वेत्त ७४) ।

अभिदिण रि [अभिदिण] बर्दि, दण्ड
(भाषा) ।

अभिहेअ वि [अभिपेय] वाच्य, पदार्थ
(रिये ८४१) ।

अभीडि } श्री [अभिजिन्] १ नयन-
अभीडि } स्त्रिय (सम ८, १५) । २ पुं. एक
राजकुमार (मग १३, ६) । ३ राजा श्रेष्ठिक
का एक पुत्र, जिसे जैन दोहा ली थी (सुनु) ।

अभीरु रि [अभीरु] १ निदर, निर्भीक
(भाषा) । २ श्री. मध्यम धाम की एक भूचरणा
(ठा ७) ।

अभीउमा देखो अभिउमा (पद १, ३) ।

अभीउ वि [अभीउ] भोजन के समोप्य
(गुमा १, १६) । 'धर न [गुह] निज्ञा
के लिए उपयोग पर, पोषी प्रादि मोच जाति
का घर (रुह १) ।

अम मर [अम्] १ जाना । २ खावान
करना । ३ खाना । ४ बीजना । ५ धर.
रोगी होना. 'अम गंधर्वु' (रिये ३४५३).
'अम रोगे वा' (रिये ३४५४) । अमर (रिये
३४५३) ।

अममा पुं [अममा] १ बुलाया, खावा रहना
(उव) । २ रमियाच, बपाय प्रादि हेम पदार्थ,
'अममा परिमाणानि मर्या उरमरज्जवि'
(घार ४) । ३ कुसुम, कुसुम (रुह ७) ।

अमगपाय पुं [अमापान] १ इष्य का च-
रण । २ मरिचिनारण, अमय चोयण (पंचा
६) ।

अमश पुं [अमातर] कपरी, प्रपात (घोष; गुरु
४, १०४) ।

अमश पुं [अमत्य] देर, देरवा (हुमा) ।

अमरग रि [अमर्य] १ मय्य रचित, मरग
(ठा ३, २) । २ परमाणु (मग २०, ६) ।

अमग न [अमन] १ जल, निर्गुण (ठा ३,
४) । २ अन्न, अन्न (रिये ३४५३) ।

अमन } रि [अमनरु] १ अर्धनितर,
अमगशर } अर्ध (ठा ३, ३) । २ अर्धरुज
(घार ४, गुप २, ४, २) ।

अमनाम रि [अमनराय] बरिज, अमनाहर
(मग १४६, रिता १, १) ।

अमनाम रि [अमनोम] ऊपर देतो (मा.
रिता १, १) ।

अमनाम रि [अमनाम] ईशा-भारत, दुःखो-
त्पादक (सूय २, १) ।

अमणुस पुं [अमणुय] १ मनुज भिन्न देव
प्रादि (सुदि) । २ अनुमन (निज्ज १) ।

अमत्त न [अमत्त] भाजन, पात्र (सूय १, ६) ।

अमम रि [अमम] १ ममता-रहित, नि सह
(पद ७, ४; गुमा ५००) । २ पुं. भागानी
का म होने वाले एक निमदेव का नाम
(सम १५३) । ३ पुमरु रूप से होने वाले
मनुष्यों की एक जाति (जं ४) । दिन के
२५ वां मुहुर्त का नाम (वद १०) । 'त रि
[त्य] निःसृज, ममता-रहित (पंचर ४) ।

अमय रि [अमय] विचार-रहित,
'अमयो व होर जीवो, वारणविट्ठा
जदेव मापाम' ।

समय व होमनिचं, मिमपयउनुमार्थ'
(रिये) ।

अमय न [अमय] १ अमृत, गुमा (प्राप्
६६) । २ क्षीर मधु का पानी (राय) । ३
पुं. भोग, सुख (मग्ग १६७; प्राप्ता) । ४
रि. नहीं मरा हुआ, जीवित, 'अमयो ह नय
निमुप्राप्ति' (पउम ३३, ८२) । 'कर पुं [कर]
वत्त, वत्तमा (उर ७६८ टी) । 'रिरण पुं
[रिरण] वत्त (गुमा ३७७) । 'बुद्ध पुं
[बुद्ध] वत्त, वत्त (वा २७) । 'वोम पुं
[वोम] एक राजा का नाम (मंभा) । 'फल
न [फल] अमृतम फल (गुमा १, ६) ।

'अमय—मय रि [मय] अमृत-पूर्ण (हुमा.
गुरु ३, १२१, १२३) । 'मज्ज पुं [मय] वत्त
(वे ६८) । 'वदरि, वदरि श्री [वदरि,
'दी] अमृतम, वदरि-रिरेर, दुग्गी । 'वदरि,
'वदरि श्री [वदरि] वदरि-रिरेर, दुग्गी (वा २०; वर
४) । 'वाम पुं [वाम] गुमा-वत्त (भाषा) ।
देतो अमिय = अमृत ।

अमय पुं [दि] १ वत्त, वदमा (दे १, १५) ।
२ अमृत, देव (वद) ।

अमयपदिअ पुं [दि. अमृतपदिअ] वदमा,
वद (गुरु २१) ।

अमययोगम पुं [दि. अमृतयोगम] १
वत्त, वदमा (दे १, १५) ।

अमर रि [आमर] स्थि, देव-माध्वी, अमर
काट्येय' (पउम ६१, ५६) ।

अमर पुं [अमर] १ देव, देवता (पात्र) । २ मुक्त आत्मा (प्राण) । ३ भगवान् श्रमदेव का एक पुत्र (राज) । ४ अनन्तवीर्य नामक नावी जिनदेव के पूर्वजन्म का नाम (वी २१) । ५ वि. मरणादित, 'पावति श्रीवर्षेण जीवा अयामरं ठारण' (पवि) । 'कंठा श्री [कंठा] एक नगरी का नाम (उप ६५८ टी) । 'केड पुं [केतु] एक राजकुमार (वंश) । 'गिरि पुं [गिरि] मेरु पर्वत (पञ्चम १५, ३७) । 'गेह न [गेह] स्वर्ग (उप ७२८ टी) । 'बन्दन न [बन्दन] १ हरिचन्दन वृक्ष । २ एक प्रकार का सुगन्धित काष्ठ (पात्र) । 'वधु पु [वत्स] पत्न्यवृक्ष (मुपा ४४) । 'वत्स पु [वत्स] एक श्रेष्ठ-पुत्र का नाम (धम्म) । 'नाह पुं [नाथ] इन्द्र (पञ्चम १०१, ७५) । 'पुर न [पुर] स्वर्ग (पञ्चम २, १४) । 'पुरी श्री [पुरी] स्वर्गपुरी, धम्म-रावती (उप ४१०५) । 'पभ पु [प्रभ] वातर-क्षीप का एक राजा (पञ्चम ६, ६६) । 'यइ पु [पति] इन्द्र (पञ्चम १०१, ७०, मुर १, १) । 'बहू श्री [बधू] देवी (महा) । 'सामि पु [सामिन्] इन्द्र (विसे १४३६ टी) । 'सेण पु [सेन] १ एक राजा का नाम (वंश) । २ एक राज-कुमार का नाम (शाया १, ८) । 'लिय नि [लिय] स्वर्ग, 'वविजमनराजयाए' (उप ७२८ टी, मुपा ३५) । 'रई श्री [रविती] १ देव-नगरी, स्वर्ग-पुरी (पात्र) । २ मर्त्य लोक की एक नगरी, राजा थीलेन की राजधानी (उप ६८६ टी) ।

अमरगणा श्री [अमराङ्गना] देवी (श्रा २७) ।

अमरिदि पु [अमरेन्द्र] देवी का राजा, इन्द्र (मवि) ।

अमरिम पु [अमरप] १ भवहिप्पुता (हे २, १०५) । २ कदाग्रह (उत्त ३४) । ३ जोष, उत्सा (पण्ड १, ३, पात्र) ।

अमरिमण न [अमरपण] १—३ उमर देवी । ४ वि. भवहिप्पु, कोपी (पण्ड १, ४) ।

५ सहिण्ण, धामाशील (सम १५३) ।

अमरिसण वि [अमसण] उज्जयी, उज्जोयो (सम १५३) ।

अमरिसिय वि [अमरिपित] १ मत्सरी, अस-हिण्ण (भावण, स ४६५) ।

अमरी श्री [अमरी] देवी (हुमा) ।

अमरीस पु [अमरीश] इन्द्र (विष्म ३१०) ।

अमल वि [अमल] १ निर्मल, स्वच्छ (उज, मुपा ३४) । २ पु. भगवान् श्रमदेव के एक पुत्र का नाम (राज) ।

अमला श्री [अमल्य] राक्ष की एक अग्र-महिषी का नाम, इन्द्राणी विशेष (ठा ८) ।

अमवस्सा देवी अमावस्सा (पंचा १६, २०) ।

अमाइ १ वि [अमायिन्] निजपट, सरल अमाइल (पात्र, ठा १००, ४७) ।

अमाघाय देवी अमघाय (उवा) ।

अमान वि [अमान] १ गवरोहित, नम्र (कण्प) । २ असत्य, 'ठाएट्टाएविठोइइमम-रुणाएलोलहिसमूहो' (उज ६ टी) ।

अमाय वि [अमात] नहीं समझा हुमा, 'मुसाहुवगास मणे अमाय' (सत ३५) ।

अमाय वि [अमाय] निजपट, सरल (कण्प) ।

अमायि देवी अमाइ (मग) ।

अमारि श्री [अमारि] हिंसा-निवारण, जीवित-दल (मुपा ११२) । 'योस पु [योप] ग्रहणा की घोषणा (मुपा ३०६) । 'पडह पु [पटह] हिंसा-निषेध का इण्डियन, 'अमा रिपडह न पोसावेइ' (रयण ६०) ।

अमायसा } श्री [अमायसा] तिथि अमावस्सा } विशेष, अमावस्य (कण्प, मुपा अमायसा } २२६, शाया १, १०, बर १०) ।

अमिज वि [अमेय] नाप बरू के लिए अयय, अयस्य (कण्प) ।

अमिज्ज न [अमेय] १ अशुचि वस्तु 'अरि यमनिग्गस दुइहियस' (उत्त ७२८ टी) । २ विद्या (मुपा ३१३) ।

अमिज पुन [अमिज] रिपु, दुश्मन (ठा, ४, ४, से ५, १७) ।

अमिय देवी अमय = अमृत (प्रास १, ना २, विसे, भावा, पिण) । 'हुड न [हुण्ड] नगर विशेष का नाम (मुपा ५०८) । 'गइ श्री [गवि] एक ध्वज का नाम (पिण) । 'गाणि पुं [गानिन्] ऐरवत क्षेत्र के एक

तीर्थरक्षक देव का नाम (सम १५३) । 'भूय वि [भूत] अमृत तुल्य (प्राउ) । 'मेह पु [मेघ] अमृतवर्षा (जं ३) । 'रुइ पु [रुचि] चन्द्र, चन्द्रमा (प्रा १६) ।

अमिय वि [अमित] पवित्रा-रहित, अयस्य, अनन्त (भग ५, ४, मुपा ३१, भा २७) ।

'गइ पु [गवि] दक्षिण दिशा के एक इन्द्र का भाय, दिक्कुमारो का इन्द्र (ठा २, ३) ।

'जस पु [यशम] एक चक्रवर्ती राजा का नाम (महा) । 'गाणि वि [गानिन्] १ सर्वज्ञ (विसे) । २ ऐरवत क्षेत्र के एक जिन-देव का नाम (सम ५५३) । 'तैय पुं [तेजस्] एक जैन मुनि का नाम (उप ७६८ टी) । 'बल पुं [बल] इन्द्राणु वरा के एक राजा का नाम (पञ्चम ६, ४) । 'वाहण पुं [वाहन] विश्वकुमार देवी के एक इन्द्र का नाम (ठा २, ३) । 'वेग पुं [वेम] राक्षस वंश के एक राजा का नाम (पञ्चम ९, २६१) । 'सणिय वि [सन्निक] एक स्थान पर नहीं बैठनेवाला, बचल (कण्प) ।

अमिल न [दि] जन का बना हुमा धन (था १८) । २ पुं. मेघ, मेघ (मोघ ३६८) ।

अमिल वि [दि] आमिल] अमिल देश में बना हुमा (पात्र २, ५, १, ५) ।

अमिला श्री [अमिला] १ शीशवें जिनदेव की प्रथम शिष्या (सम १५२) । २ पांडी, छोटी मैस (वह १) ।

अमिलाण } वि [अम्लान] १ म्लान-अमिलाय } रहित, ताजा, हृष्ट (मुद्र ३, ६५, भा ११, ११) । २ पुं. कुरएक वृक्ष । ३ न कुरएक वृक्ष का पुष्प (दि १, ३७) ।

अमु [अदस्] वह अमृत (पि ४३२) ।

अमुअ स [अमुअ] वह, पीढ़ी, धमका-धमका (मोघ ३२ भा, मुपा ३१४) ।

अमुअ देवी अमय = अमृत (प्रास ५१, ना ६७६) ।

अमुअ देवी अमय = अमय (पात्र ७७७) ।

अमुअ वि [अमृत] स्मरण में नहीं भावा हुमा (भग ३, ६) ।

अमुइ वि [अमोचिन्] नहीं छोड़नेवाला (उज) ।

अमुग देवी अमुअ = अमृत (हुमा) ।

अमुगत्य वि [अमुत्र] अमुक स्थान मे (मुपा ६०२) ।

अमुण वि [अज्ञ] अज्ञान, भूल (बृह १) ।

अमुणिय वि [अज्ञात] अविदित (मुर ४, २०) ।

अमुणिय वि [अज्ञान] भूल, अज्ञान (पण्ड १, २) ।

अमुत्त वि [अमुक्त] अपरित्यक्त (ठा १०) ।

अमुत्त वि [अमूर्त] रूपरहित, निराकार (मुर १४, ३६) ।

अमुदगा न [अमुदम्] १ अतीन्द्रिय अमुयगम । मिथ्याज्ञान विरोध, जैन देवतामात्र के पुनरावृत्ति शरीर को देखकर जीव का शरीर पुद्गल से निर्मित नहीं है ऐसा निर्णय (ठा ७) ।

अमुस वि [अमृष] सत्ता, सत्य, 'अमुने वरं' (सूत्र १, १०, १२) ।

अमुसा ली [अमुषा] मत्स्यवचन (सूत्र १, १०) । 'वाह वि [वादिम] सत्यवादी (कुमा) ।

अमुह वि [अमुज] निवृत्तर (बृह १) ।

अमुहुरि वि [अमुहरिन्] अनावाल, पितृ-भापी (उत्त १) ।

अमूह वि [अमूह] अमृषण, विश्रक्षण (शापा १, ६) । 'गाण न [ज्ञान] सत्य ज्ञान (भावम) । 'दिट्ठि स्मि [टट्ठि] १ सम्प्रदर्शन (पव ६) । २ भविष्यन्ति बुद्धि (उत्त २) । ३ वि, भविष्यन्ति दृष्टि ज्ञाना, सम्प्रदृष्टि (गच्छ १) ।

अमूस वि [अमृष] सत्यवादी (कुमा) ।

अमेज्ज देलो अमिज्ज (भा ११, ११) ।

अमेज्ज देलो अमिज्ज (महा) ।

अमोस्स वि [अमूल्य] जिसकी कीमत न हो सके वह, बहुमूल्य (मंड, मुपा ११६) ।

अमोसलि न [दि. अमुशलि] वस्त्रादि निरीक्षण का एक प्रकार (मोप २६५) ।

अमोसा देलो अमुसा (कुमा) ।

अमोह वि [अमोघ] १ अव्यय, सत्य (मुपा २३, ४७५) । २ पु. सूर्य ने उदय और अस्त के समय विरणों के विचार से होने वाली रोगा विरोध (भा ३, ६) । एक मन का नाम (विपा १, ४) । 'दंसि वि

['दंशिन्] १ शोक-लौट देखनेवाला (बृह ६) । २ न. उपाय-विरोध । ३ पु. यज्ञ-विरोध (विपा १, २) । 'पहारि वि [प्रहारिन्] अन्न प्रहार करनेवाला, निशानबाज (महा) । 'रह पु ['रय] इस नाम का एक रथिक (महा) ।

अमोह पु [अमोह] १ मोह का प्रभाव, सत्य-ग्रह (विसे) । २ रुचक पर्वत का एक शिखर (ठा न) । ३ वि मोहरहित, निर्मोह (मुपा २३) ।

अमोह पु [अमोघ] १ सूर्य-चिह्न के नीचे कभी-कभी दोस्तों रथान आदि घण्टीवाणी रखा (महा १२१) । २ पुंन, एक देवविमान (देवेन्द्र १४४) ।

अमोहण न [अमोहन] १ मोह का प्रभाव (बृह १०) । २ वि. सुख नहीं करनेवाला (कप) ।

अमोहा ली [अमोघा] १ एक अमृषण, जिसके नाम से यह अमृषण कहलाता है (जीव ३) । २ एक पुष्करिणी (दीव) ।

अम्म देलो अय = माम्म (उर २, ६) ।

अम्मपण पु [आग्रदेव] एक जैन आचार्य (पव २७६, गा ६०६) ।

अम्मगा देलो अम्मगा (उवा) ।

अम्मच्छ वि [दि] अमच्छ (पट्ट) ।

अम्मह देलो अंबह (भीप) ।

अम्मही (भा) ली [अम्मा] माता, माँ (हे ४, ४२४) ।

अम्मणुअचिय न [दि] अनुगमन, अनुसरण (दे १, ४६) ।

अम्मगाई देलो अम्माई (विपा १, ६) ।

अम्मगा ली [अम्मा] १ माता, जननी (उवा) । २ पार्वर्त्त कामदेव की माता का नाम (सम १२२) ।

अम्महे (शी) घ. हर्ष-सूचक अव्यय (हे ४, २८४) ।

अम्मा ली [दि अम्मा] माता, माँ (दे १, ४) । 'पिह, 'पिउ, 'पियर, 'वीह पु. व. [पिह] माँ-बाप, माता-पिता (बृह ३: कल्प, मुर ३, ८३; ठा ३, १-मुर ३, ८८-७, १७०) । 'पेइय वि [पेइह] माँ-बाप-संबन्धी (भा १, ७) ।

अम्माइआ ली [दि] अनुसरण करने वाली ली, पीछे-पीछे जानेवाली ली (दे १, २२) । अम्मो म [?] १ आश्रय-सूचक अव्यय (हे २, २०८, स्वप्न २६) । २ माता का संबोधन, हे माँ (उवा, कुमा) ।

अम्मोगइया ली [दि] संकुल-नामन, स्वागत करने के लिए सामने जाना, 'राया सपमेव अम्मोगइयाए निगमो' (सुत्र २, १३) ।

अम्मोस वि [अमर्ष्य] अमर्ष्य, क्षमा के योग्य (मुपा ४८७) ।

अम्ह स [अमन्त] हम, निज, खुद (हे २, ६६, १४२) । 'कर, 'केर, 'बष वि [पिय] अमर्ष्य, हमारा (हे २, ६६, मुपा ४६६) ।

अम्हत्त वि [दि] प्रसूत, प्रजाजित (पट्ट) ।

अम्हार } (भा) वि [अस्मदीय] हमारा
अम्हारय } (पट्ट, कुमा) ।

अम्हारिच्छ वि [अस्माच्छ] हमारे जैसा (भापा) ।

अम्हारिसि वि [अस्मादसि] हमारे जैसा (हे १, १४२, पट्ट) ।

अम्हेबय वि [अस्माक] अमर्ष्य, हमारा (कुमा, हे २, १४९) ।

अम्हो म [अहो] आश्रय-सूचक अव्यय (पट्ट) ।

अय पु [आग] १ पहाड़, पर्वत । २ सौप्त, सपने । ३ सूर्य, सूरज (भा २३) ।

अय पु [अज] १ छाग, बकरा (विपा १, ४) । २ पूर्वमात्रव नक्षत्र का अष्टिमास्य देव (ठा २, ३) । ३ महादेव । ४ विष्णु । ५ राम-चन्द्र । ६ महा । ७ कामदेव (भा २३) । ८ महाप्रह विरोध (ठा ६) । ९ बीजोगातक शक्ति मे रहित वायव्य (पञ्च ११, २५) । 'करक पु [करक] एक महाप्रह का नाम (ठा २, ३) । 'वाळ पु [पाळ] आमोर (भा २३) ।

अय पु [अय] १ गमन, गति (विसे २७६३, भा २३) । २ तार, शक्ति । ३ अनुसर (विसे) । ४ न-मुए (ठा १०) । ५ भाग्य, नतीव (भा २३) ।

अय न [अच्छ] १ दुःख । २ पाप (भा २३) ।

अय न [अयस्] लोहा, लोह (घोष ६२) ।
 'आगर पुं [आकर] १ लोहे की चान
 (निबु ५) । २ लाह का कारखाना (ठा ८) ।
 'कंत, 'कस्तंत पुं [कान्त] मोह-मुखन
 (भावम) । 'कडिल्ल न [दे. 'कडिल्ल]
 बटाह (घोष) । कुंडी छो [कुण्डी] लोह
 का भाजन-विशेष (विपा १, ६) । 'कोट्टय पुं
 ['कोष्ठक] लोहे का बुरत, लोह का गोला,
 'पोट्ट' धक्कोट्टया ब्य वट्ट' (उवा) । 'गोलय
 पुं ['गोलक] लोहे का गोला (या ११) ।
 'दव्वी छो [द्वी] लोहे की बड़छो या बर-
 छुन, जिससे शाल, बड़ी धादि हिलाय जाता
 है (दे २, ७) । 'पय न [पात्र] लोहे का
 भाजन । 'सल्लागा छो ['शालागा] लोह की
 मलाई (उप २११ टी) ।

अय सक [अय्] १ समन करता, जाता ।
 २ प्राप्त करता । ३ जानता । बह. अयमाण
 (सन ६३) ।

अर्यङ्क सक् [कृप्] १ लीचना । २ जीतना,
 प्राप्त करना । ३ रेंजना करना । समष्टि (हे
 ४, १८७) ।

अर्यङ्गिर वि [कपिन्] कपिंशरील, नीचने-
 वाला (कुमा) ।

अर्यङ्क पु [अरुण्ड] १ मनुचिन समय
 (महा) । २ प्रकम्पित, हडाह (पउम ५, १६४;
 से ४४ गड) । ३ क्रिदि. मनधारील,
 भतकित (पाम) ।

अर्यंत वळ [आयम्] भाता हुआ, प्रवेश
 करता हुआ (भावम) ।

अर्यन्त्रि वि [अयन्त्रित] मनवरणीय (उत
 २०, ४२) ।

अर्यपिर वि [अरुपिर] नहीं बोलनेवाला,
 मौनी (पि २६६; ५६६) ।

अर्यपुल पुं [अर्यपुल] गौरात्मक का एक
 शिष्य (भग ८, ५) ।

अर्यस पुं [आदर्श] दर्पण, कौच । 'मुह पुं
 ['मुख] १ दस नाम का एक बीप । २ बीप-
 विशेष का निवासी (इक) ।

अर्यसंधि वि [इदंसंधि] उल्लुख कार्य को
 यथासमय करनेवाला (भाव) ।

अयकराय पुं [अयकर] एक महाप्रह (सुज
 २०) ।

अयक } पु [दे] बानर, धनुर (दे १, ६) ।
 अयग }

अयगर पुं [अजगर] भजगर, मोटा साँप
 (पणह १, १; पउम ६३, ५४) ।

अयड पुं [दे. अवट] कप, कृष्ण (दे १, १८) ।

अयण न [अतन] मलत होना, निरुत्तर
 होना (विने ३१७८) ।

अयण न [अयन] १ वसन । २ प्राप्ति, लाभ
 (विने ८३) । ३ शाल, निष्पुं (विने ८३) ।

४ गृह, मन्दिर, 'चंडियापण' (स ४३५) । ५
 वि. प्रापक, प्राप्त करनेवाला (विने ६६०) ।

६ पुन. वर्ष का माघा भाग, जिसमें सूर्य
 दक्षिण से उत्तर में या उत्तर से दक्षिण में
 जाता है (अ २, ४) ।

'एके समये दिग्गहा, बीए १५११प्रो

होति वीहापो ।

विस्मयलो मल्लो, इय दुके कचम वड्ठति'
 (गा ४६६) ।

अयण न [अदन] १ भरण । २ पुराक,
 भोजन (स १३०; उर ८, ७) ।

अयणु वि [अण्ड] भजान, मूल (सुर ३,
 १६६) ।

अयणु वि [अतनु] स्थुन, नीच, महान्
 (सण) ।

अयतंथिअ वि [दे] पुट्ट, उपचित (दे १,
 ४७) ।

अयर वि [अजर] बुढावस्थाहित 'भयरामर
 अण' (पडि, उव) ।

अयर पुंन [अतर] १ सागर, समुद्र (दे
 २८) । २ समय का मान-विशेष, सागरोपम
 (सग २१, २५; ण ४३) । ३ वि. तरने के
 बराबर (बह १) । ४ भसमर्थ, भसात (निबु
 १) । ५ तान, वीमार (बह १) ।

अयरामर वि [अजगामर] १ जरा क्षीर
 मरण से रहित (नर २) । २ न. शुक्ति, मोस
 (पउम ८, १२७) ।

अयल देलो अचल = मचल (पाघ, गडड,
 उप ५ १०५; धत ३, पउम ८५, ४, सग ८८,
 कप्य, सग १६) ।

अयल देलो अचल (पउम १२०, १५६) ।

अयस देलो अजस (गडड, प्राप्ति २३,
 १५३; या १७८) ।

अयसि वि [अयसरिन्] प्रजनी, यशो-
 रत्न, नीति लून्य (गडड) ।

अयसि } छो [अतसी] घन्य-विशेष, घनसी,
 अवसी } तोसी (भग. ठा ७; राया १, ५) ।

अया छो [अजा] १ बकरी । २ माया,
 भविष्य । ३ प्रवृत्ति, गुरदत (हे १, १२;
 पड) । 'किवाणिज्जपुं ['कृपाणीय] ग्याय-

विशेष, दैम बकरी के गने पर भनपारी छुटी
 पडतो है उस भाकिन् भनपारा किसी कार्य

का होना (भाव) । 'पाल पुं [पाल]
 आभीर, बकरी चरानेवाला (स २६०) । 'वय

पुं ['व्रज] बकरी का बाड़ा (भग १६, १) ।

अयागर देलो अय-आगर (ठा ८) ।

अयाण न [अज्ञान] ज्ञान का भाव (धत
 ६३) ।

अयाण वि [अज्ञ, अज्ञान] भजान, भजानी,
 भूरं (घोष ७४, पउम २२, ८३; गा २७५;
 दे ७, ७३) ।

अयाणअ वि [अज्ञायक] ऊपर देलो (पाम;
 भवि) ।

अयार्णत देलो अजाणत (घोष ११) ।

अयाणमाण देलो अजाणमाण (नर १६) ।

अयाणिय देलो अजाणिय (उप ७२८ टी) ।

अयाणय देलो अजाणय (सुर ३, १६८, सुप
 ५४३) ।

अयार पुं [अशर] 'म' मस्तर (विने ४७८) ।

अयाल पुं [असल] समय समय, मनुचित
 बाल (पउम २२, ८५) ।

अयालि पुं [दे] बुद्धि, मेधाच्छत्र दिवस (दे
 १, १३) ।

अयालिष वि [अकालिक] आकस्मिक,
 अकालोत्पन्न, 'पडउ पडउ एयस ह्यत्तले
 अयालिषा विज्झ' (रभा) ।

अयि देलो अइ = मयि (हे २, २१७) ।

अयुजरेवइ छो [दे] मभिर-युवति, नमोडा,
 हुलनि (पड) ।

अयोमय देलो अयो-मय (भंत १६) ।

अय्यावत्त (शौ) पुं [आर्यावर्त] भारत,
 हिन्दुस्तान (कुमा) ।

अय्युण (पा) देलो अज्ज (हे ४, २६२) ।

अर पुं [अर] १ धूरी, पहिने के नीचका
 कपड़ा । २ अशरत्ता जिनदे क्षीर सातवां

चक्रवर्ती राजा, 'मुमिले धरं महिरिहं पावद
जसणी धरो सम्ह' (भा. २: सम १३, उत
१८) । ३ समय का एक परिमाण, कालचक्र
का बाह्य हिस्सा । (ती २१) ।

*अर पुं [अर] १ किरण । भा ३४३, मे १,
१७) । २ हस्त, हाथ (मे १, २८) । ३
शुक्ल, चुगी (मे १, २८) ।

अरह स्त्री [अरति] भरो, मसा (भा. २,
१३, १) ।

अरह स्त्री [अरति] १ बेचैनी । (भग, भा. ४,
उत २) । *कम्म न [कम्म] भरति का हेतुभूत
कर्मविशेष (ठा ६) । 'परिसह, परीसह पु
[परिपह, परापह] भरति को सहन
करना (पच ८) । 'मोहणिज्ज न [मोह-
नीय] भरति का उत्पादन कर्म-विशेष (कम्म
१) । *रह स्त्री [रति] मुग दुष (ठा १) ।

*अरंग देखो तरंग (मे ३, २६) ।

अरंजर पुंन [अरंजर] घडा, जल-घट (ठा
४, ४) ।

*अरकर देखो घरकर (मे ६, ४४) ।

अरकररी स्त्री [अराकररी] नगरी-विशेष
(भा. ४) ।

अरा देखो अर (पह २, ४, मग ३, १) ।

अरविम्य वि [अरहित] निरप्य, रमतत,
'अरविम्यामिताया' (पुम १, ५, १) ।

अरहु पु [अरहु] वृत्त-विशेष (उ १०३१
टो) ।

अरण न [अरण] हिसा (उव) ।

अरणि पुं [अरणि] १ वृत्त-विशेष । २ इन
वृत्त की लयबी, जिसकी घिसने पर समि
जाली पैदा होती है (भा. २: रा. १, १८) ।

अरणि पुंस्त्री [दि] १ रागा, मार्ग । २ रक्ति,
बतार । (पह २) ।

अरणिशा स्त्री [अरणिशा] वनहाति-विशेष
(भा. ४) ।

अरणेट्ट पुं [दि. अरणेट्ट] पत्थर के
दुबरो मे मिली हुई गठे मिट्टी (की ३) ।

अरण्य वि [आरण्य] जंगल में रहने वाला
(पुम १, १, १, १६) ।

अरण्य न [आरण्य] पन, जंगल (दि १,
६६) । *पदिसग न [पदिसग] देवविमान

विशेष (सम ३६) । *साण पुं [अण्य]
जंगली कुत्ता (हुमा) ।

अरण्यय वि [आरण्यय] जंगली, जंगल-धामी
(भमि १२) ।

अरत्त वि [अरत्त] राम-रहित, नोराम (भा. ४) ।

अरत्त देखो अरण्य (कप्य, उव) ।

अरवाग पुं [दि] एक भनाय देश, अरव देश
(पच २७४) ।

अरमलिया स्त्री [अरमलिका] भरमलता,
बाग में फलरत्ना (उवा) ।

अरय देखो अर (लेत १०८) ।

अरय वि [अरजस्] १ रजोपुल-रहित (पउम
६, १४६) । २ एक महाभद्र का नाम (ठा
२, ३) । ३ वि. धुकीरहित, निर्मल (कप्य) ।
४ न. पाचवें देव लोक का एक प्रवर (ठा
६) । ५ रजोपुल का भभाव, 'अरो य अरय
पतो पतो गदमपुनर' (उत १८) ।

अरय वि [अरत्त] भनावच, नि लूह (पा. ४) ।

अरय पुंन [अरजस्] एक देवविमान
(विदे १४१) ।

अरया स्त्री [अरजा] दुग्ध नामक विजय की
राजधानी (ज ४) ।

अरयणि पु [अरणि] परिमाल विशेष, सुनी
भगुनीवाला हाथ (ठा ४, ४) ।

अरर न [अरर] १ युद्ध । २ वनना । *हुरी
स्त्री [हुरी] नगरी-विशेष (कम्म ६ टो) ।

अररि पुंन [अररि] विवाद, द्वार (भा. ४) ।

अरल न [दि] १ चौरी, कीट-विशेष । २
भय, भयङ्क (दि १, ६३) ।

अरलया स्त्री [दि] चौरी, कीट विशेष (दि १,
२६) ।

अरलु देखो अरहु (पउम ४२, ८) ।

अरनिंद न [अरिनिंद] कपन, पप (पह
२, ४) ।

अरनिंद वि [दि] दोषें लम्बा (दि १, ४२) ।

अरस पुं [अरस] स्पर्शिन, नोरम (भा. ४,
१, १) ।

अरस पुं [अरस] भ्यावि विशेष, बगानार
(था २२) ।

अरस न [अरस] तप-विशेष, निर्विकृति तप
(संकोच ५८) ।

अरह वि [अरहत्] १ पूजा के योग्य, पूज्य
(पह ३, हे २, १११) । २ पुं. जिनदेव,
तीर्थंकर (सम्म ६७) । *मिन्न पुं [मिन्न]
एक व्यापारो का नाम (गच्छ २) ।

अरह देखो अरिह = महं । मरह (भा. ४
२८) ।

अरह वि [अरहत्] १ प्रवट । २ जिससे
कुछ भी न लिया हो । ३ पु. जिनदेव, सर्वज्ञ
(ठा ४, १, ६) ।

अरह वि [अरथ] परिग्रहित (भग) ।

अरहत वक् [अरहत्] १ पूजा के योग्य,
पूज्य (पह ३, हे २, १११, मय ८, ५) । २
पु. जिन भगवान् तीर्थंकरदेव (भा. ४, ३,
४) ।

अरहन वि [अरहोत्तर] १ सर्वज्ञ, मह कुल
बालनेवाला । २ पु. जिन भगवान् (भग २, १) ।

अरहन वि [अरथात्त] १ नि लूह, निर्मल ।
२ पु. जिनदेव (भग) ।

अरहत वक् [अरहयन्] १ अपने स्वभाव
को नहीं छोड़नेवाला । २ पु. जिनेश्वर देव
(भग) ।

अरहट्ट पु [अरहट्ट] अरहट्ट, रूढ़, पानी का
बरबा, पानी निकालने का मन्त्र विशेष (भा
४६०, प्रा. ५५), 'अमिभा बालनएणं अर-
हट्टपिण्ड यनमग्गे' (जी. १) ।

अरहट्टिय वि [अरपट्टिक] अरहट्ट बनाने-
वाला (पु. ५५) ।

अरहणा स्त्री [अरहणा] १ पूजा । २ योग्यता
(भा. ४ २८) ।

अरहण्यय पु [अरहण्यय] एक व्यापारो का
नाम (भा. ४, ८) ।

अरहज पु [अरहज] एक पैन बुनि का नाम
(मु. २, २) ।

अराह पु [अरानि] लि. दुपन (हुमा) ।

अराह स्त्री [अरात्रि] दिन, दिन (हुमा) ।

अरागि वि [अरागि] रागहृत्, कोउराग
(पउम ११०, ४१) ।

अरि ऐयो अरे (हु. १०, १२ टो) ।

अरि पु [अरि] दुपन, लि (पउम ७३, १६) ।
*द्वयमा पुं [द्वयमा] य भा. ४ २८

शत्रु—नाम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य (सूत्र १, १, ४) । दमण वि [दमन] १ रिपु विनाश । २ पुं. इक्ष्वाकु वंश के एक राजा का नाम (पत्रम ५, ७) । ३ एक जैन मुनि जो भगवान् ऋक्षिताय के पूर्वजन्म के गुरु थे (पत्रम २०, ७) । दमणी स्त्री [दमनी] विद्या विशेष (पत्रम ७, १४५) । विहंसी स्त्री [विष्वसिनी] रिपु का नाश करनेवाली एक विद्या (पत्रम ७, १४०) । संतास पुं [संतास] शासनवंश में उत्पन्न लक्ष्मी का एक राजा (पत्रम ५, २६५) । हंत वि [हन्तृ] १ रिपु-विनाशक । २ पुं. जिनदेव (भावम) ।

अरिअल्लि पुं स्त्री [दि] व्याप, शेर (दि १, २४) । अरिजय पुं [अरिजय] १ भगवान् ऋषभदेव का एक पुत्र । २ न. नगर-विशेष (पत्रम ५, १०६, इक, सुर ५, १०३) ।

अरिहं पुं [अरिहं] १ वृक्ष-विशेष (पण्य १) । २ पत्तरेखें लीपकर का एक गणपति (सम १५२) । ३ पुं. एक देवविमान (हेन्द १३३) । ४ न. मौन-विशेष, जो माण्डव्य मौन की शाला है (ठा ७) । ५ स्त्री की एक जाति (उत्त ३४, ४; सुपा ६) । ६ फल-विशेष, पीठा (पण्य १७; उत्त ३४, ५) । ७ मनिष्ठ-सूत्रक उत्पात (भास्) । ८ 'मैमि, 'नैमि पुं [नैमि] वर्तमान काल के बौद्धों में जिनदेव (सम १७; अत ५; कप, पत्रि) ।

अरिहा स्त्री [अरिहा] कच्छ नामक विजय की राजधानी (ठा २, ३) ।

अरिच न [अरिच] पतवार, कन्हार, नाव की पीछे का डंडा, जिसमें नाव काहने-वाले घुमायी जाती है (धर्मवि १३२) ।

अरिहिहो म [अरिहिहो] पाटपुरक शब्द (हे २, २१७) ।

अरिस देखो अरस (एग्या १, १३) ।

अरिसल्ल } वि [अरिस्वत्] क्वासीर
अरिसिल्ल } रोगनाश (गम. विपा १, ७) ।

अरिह वि [अहं] १ योग्य, सायक (सुपा २६६; प्राप्र) । २ पुं. जिनदेव (भीप) ।

अरिह रक [अहं] १ योग्य होना । २ पूजा के योग्य होना । ३ पूजा करना । अरिह (महा) । महिहति (मण) ।

अरिह देखो अरह = अहंव (हे २, १११; पड) । दत्त, दिण्ण पुं [दत्त] जैन मुनि-विशेष का नाम (कप) ।

अरिहणा देखो अरहणा (प्राप्र २८) ।

अरिहंत देखो अरहंत = अहंव (हे २, १११; पड; एग्या १, १) । वैह्य न [वैय] १ जिन-मन्दिर (उवा, भात्) । २ शासन न [शासन] १ जैन धाम-ग्रन्थ । २ जिन-भाता । (पण्य २, ५) ।

अरु देखो तरु (मे २, १६, ५, ८५) ।

अरु वि [अरुज] रोग-रहित (तंडु ४६) । अरु देखो अरुव (तंडु ४६) ।

अरुम न [दे. अरुज] ग्रण, धाव, भरुमं हट्टा कुत्त (वृह ३) ।

अरुतुद वि [अरुतुद] १ मर्म-वेद्यक । २ मर्म-स्पर्श, 'इय तदरुतुदवायावाणोह विधियस्सावि' (सम्मत १५८) ।

अरुग पुं [अरुग] १ सुर्ग, सूरज (वे ३, ६) । २ सुर्ग का मारपी । ३ संघ्याराग, सत्या की लाली (वे ८, ७) । ४ द्वीप-विशेष । ५ समुद्र-विशेष, 'मंतूण होइ मरुणो, मरुणो दोनो उमो उड्डी' (दीव) । ६ एक ग्रह-देवता का नाम (ठा २, ३; पत्र ७८) । ७ कपाली-नर्बत का अधिष्ठाता देव (ठा २, ३; पत्र ६६) । ८ देव-विशेष (एदि) । ९ रक्त रंग, लाली । (गउड) । १० न. विमान विशेष (सम १४) । ११ वि. रत्न, लाल (गउड) । 'कंस न [कांस] देवविमान-विशेष (उवा) । 'कील' न [कील] देवविमान विशेष (उवा) । 'गंगा स्त्री [गङ्गा] महापट्ट-देवी की एक नदी (सी २८) । 'गव न [गव] देवविमान-विशेष (उवा) । 'जमय न [ज्वज] एक देवविमान का नाम (उवा) । 'प्यम, 'प्यह न [प्रभ] वृत्त नाम का एक देवविमान (उवा) । 'भद पुं [भद्र] एक देवता का नाम (सुज १६) ।

'भूय न [भूल] एक देवविमान (उवा) । 'महाभद्र पुं [महाभद्र] देव-विशेष (सुज १६) । 'महावर पुं [महावर] १ द्वीप-विशेष । २ समुद्र विशेष (इक) । 'वर्हिसय न [वर्तमरु] एक देवविमान (उवा) ।

'वर पुं [वर] १ द्वीप-विशेष । २ समुद्र-विशेष (सुज १६) । 'वरोभास पुं [वरावभास] १ द्वीप-विशेष । २ समुद्र-विशेष (सुज १६) । 'सिट्ट न [शिट्ट] एक देवविमान (उवा) । 'भ न [भ] देवविमान-विशेष (उवा) ।

अरुग न [दि] वमन, पद्म (दि १, ८) ।

अरुग पुं न [अरुग] १ एक देव-विमान । (हेन्द १३१) । 'प्यम पुं [प्रभ] १ मनुवेत्तगर नामक नागराज का एक भावान-पर्वत । २ उच्च पर्वत का निचली देव । (ठा ४, २; पत्र २२६) । 'भ पुं [भ] हृण्य पुद्गल-विशेष (सुज २०) ।

अरुगम पुं स्त्री [अरुगमन] लाली, रक्तार; 'पाणिपल्लवार्णमरुणीय' (सुपा ५८) ।

अरुणिय वि [अरुणित] रक्त, लाल (गउड) ।

अरुणुत्तरवर्हिसग न [अरुणुत्तरावर्तसक] इस नाम का एक देवविमान (सम १४) ।

अरुणोद पुं [अरुणोद] समुद्र-विशेष (सुज १६) ।

अरुणोदय पुं [अरुणोदक] समुद्र-विशेष (मण) ।

अरुणोववाय पुं [अरुणोवपाव] ग्रन्थ-विशेष का नाम (एदि) ।

अरुप वि [अरुप] ग्रण, धाव (सम १, ३, ३) ।

अरुय वि [अरुज] निरोगी, रोगरहित (सम १, मजि २१) ।

अरुह देखो अरह = अहंव (हे २, १११; पड; भवि) ।

अरुह वि [अरुह] १ जन्मरहित । २ पुं. मुक्त आत्मा (पत्र २७५, मग १, १) । ३ जिन-देव (पत्रम ५, १२२) ।

अरुह देखो अरिह = अहं । अरुहति (ममि १०४) । वडु. अरुहमाण (पड) ।

अरुह वि [अहं] योग्य (उत्तर ८४) ।

अरुहंत देखो अरहंत = अहंव (हे २, १११, पड) ।

अरुहंत वि [अरोहत्] १ नहीं उठता हुआ, जन्म नहीं लेता हुआ (मग १, १) ।

अरुव वि [अरुप] रूपरहित, समुत्त- (पत्रम ७३, २६) ।

अरुहि वि [अरुपिन्] ऊपर देखो (छा १, ३; भाषा; पण १) ।

अरे म [अरे] १-२ संभाषण और रति-
बानह का सूचक प्रथम्य (हे २, २०१; पट्ट १) ।

अरे म [अरे] इन प्रयोगों का सूचक प्रथम्य—
१ भाषणे । २ विस्मय, आश्चर्य । ३ परिहास,
ठट्ठा (सहित ३८, ४७) ।

अरोअ मक [उत् + लट्] उन्नास पाना,
विषसित होना । अरोप्रद (हे ४, २०२;
भूमा) ।

अरोअअ पु [अरोचक] रोग-विशेष, धन की
मरुति (या २२) ।

अरोइ वि [अरोचिन्] मरचि वाला, रचि-
रहित, 'मरोइ मरचे कहिए बिलाने' (गोम
७) ।

अरोग वि [अरोग] रोगरहित (भा १८,
१) । 'या छी [ता] मारोग्य, नोरोगता
(उप ७२८ टी) ।

अरोगि वि [अरोगिन्] नोरोग, रोगरहित ।
'या छी [ता] मारोग्य, रुदुच्यो (महा) ।

अरोगा पु देखो मारोम = मारोग्य (भाषा २,
अरोग्य १४, २) ।

अरोस वि [अरोप] १ गुस्सा रहित । २-३
पुं. एक स्नेह्य देश और उसमें रहनेवाली
स्नेह्य जाति (पण्ड १, १) ।

अल न [अल] १ बिन्दू के पुच्छ का सम
भाग,
'अममेय बिन्दुपाणै. मुग्गेम
महीणै तह म मंदम ।
निद्रि विमै विगुणपाणै,
तमन मयमम भय-अणुणै'
(भाषू ११) ।

२ आदेशी का एक मिश्रण (छाया २) ।
१ वि. समर्थ (भाषा) । 'पट्ट न [पट्ट]
बिन्दू की रूढ़ जैसे आरारवाला एक अणु
(विवा १, १) ।

'अल देगो वल (गा ७५; गे १, ७८) ।
अल म [अलम्] १ पर्याप्त, पूर्ण, 'अममा-
ल्लं जल्लोए' (गुर १३, २१) । २ प्रमाण,
निवारण, सम (उप २, ७) ।

अल म [अलम्] धनद्वारा, भुजा (भूषण
२०२) ।

अल म [अलम्] धनद्वारा, भुजा (भूषण
२०२) ।

अल म [अलम्] धनद्वारा, भुजा (भूषण
२०२) ।

अलंकर सव [अलं + कृ] मूर्णित करना,
विराजित करना । अलंकरति (वि २०६) ।

बहु. अलंकरत (मात १४३) । संह. अलं-
करति (पि २८१) । प्रयो., वचं. अलंकर-
वीथ (स ६४) ।

अलंकरण न [अलङ्करण] १ आभूषण, अलं-
कार (रघु ७४, मवि) । २ वि. शोभा-
कारण, 'मममलोयस्स अलंकरणे सुलोचणि'
(विक १४) ।

अलंकरिय वि [अलङ्कृत] मुशोभित, विभूषित,
'वि नभयलंकरियं जम्ममहेण तए महापुरिम'
(गुण ५८५, गुर ४, ११८) ।

अलंगार पुं [अलङ्कार] १ शास्त्र-विशेष,
साहित्यशास्त्र (सिदि २५, निक्का २) । २
गुण. एक देवविमान (देन्द्र १३५) ।

अलंगार पुं [अलंगार] १ भूषण, गढ़ना
(श्रीम. राप) । २ भूषा, शोभा (छा ४, ४) ।
'सहा छी [सभा] भूषा-गृह, गृहकार पर
(इम) ।

अलंगारिय पु [अलंगारिक] नायित, नाई,
हजाम (छाया १, १३) । 'कम्म न
[कम्मन्] हजामत, धीर वनं (छाया १,
१३) । 'सहा छी [सभा] हजामत बनाने
का स्थान (छाया १, १३) ।

अलकिय वि [अलङ्कृत] १ विभूषित, मुशो-
भित (वण. महा) । २ न. संगीत का एक
ग्रह (जीव ३) ।

अलकुण देवा अलंकर + अलकुण्ठि (व्यङ्ग्य
५२) ।

अलप वि [अलहय] १ उत्पन्न करने
के प्रयोग (गुर १, ४१) । २ उत्पन्न
करने के प्रयोग (उप २६७ टी) ।

अलपणिय वि [अलहणीय] ऊपर देगो
अलपणीय (महा; गुण ६०१, वि ६६;
नाट) ।

अलप पु [दि] दृष्ट. गुण (दे १, १३) ।
अलपुसा छी [अलपुसा] १ एक सिन्धुमारे
देवी का नाम । (छा ८) । २ दुःख स्थिति ।
(पाष) ।

अलपि छी [अलपि] अति (कोप २३-
भा) ।

अलपि छी [अलपि] अति (कोप २३-
भा) ।

अलपि छी [अलपि] अति (कोप २३-
भा) ।

प्रतिवागुदेव की राजधानी (पदम २०,
२०१) । देखो अलया ।

अलमप पुं [अलम] १ इस नाम का एक
राजा, जिसने भगवान् महावीर के पास दोसा
लेकर मुक्ति पाई थी (धौत १८) । २ न.
'अलमप' गुण के एक प्रथम्य का नाम ।
(धौत १८) ।

अलमप वि [अलम्य] सपथ में न आ सकने
ऐसा (गुर ३, ११६; महा) ।

अलमपमाणा वि [अलम्यमाणा] जो परि-
धान न आ सगता हो, पुन (उप ५६१ टी) ।
अलमिय वि [अलमि] १ अमान,
अपरिचित । (सि ११, ५४) । २ न महात्मा
हूमा । (गुर ४, १४०) ।

अलम देगो अलय = मलय (महा) ।
अलमा देगो अलया (मत १) ।

अलम न [दि] नलं देना, दोष का भूटा
मारोप (दे १, ११) ।

अलचपुर न [अचलपुरे] नगर-विशेष
(भूमा) ।

अलज वि [अलज्ज] निर्लज्ज, बेराम (पण्ड
१, ३) ।

अलजिर वि [अलजाल] ऊपर देगो (गा
६०, ४४४, ५६१, महा) ।

अलटपलट्ट न [दि] पार्थ का परिवर्तन
(दे १, ४८) ।

अलत पुं [अलक] मानवा, श्रिया हाव-
वर को लान करने के लिए जो रंग लगाती
हैं वह (भु २) ।

अलतय पुं [अलतय] १ ऊपर देगो ।
(गुण ४०१) । २ वि मानवा में रंगा हुआ
(पदु) ।

'अलथोय दगो कटथोय (सि १, ४६) ।
अलमजुड वि [दि] धानमी, गुण (दे १,
४६) ।

अलमजु वि [अलमजु] १ मयर्थ । २
निवेदन, निवारण । (छा ४, २) ।

अलमजु पुं [दि] दुर्जन सेन (दे १, २५) ।
अलमजुयसह पुं [दि] उमग सेन (दे १,
२५) ।
अलय न [दि] मित्र, प्रगा (दे १, ११,
मवि) ।

अलय पु [अलक] १ विच्छू का पादा ।
(विपा १, ६) । २ बेरा, पुंयराते बाल ।
(पाप्र. ॥ ६६) ।

अत्रया श्री [अलक] कुवेर की नगरी (पाप्र.
छाया १, ४) । देतो अलकः ।

अलय वि [अलय] मोनी, नहीं बोसनेमाला
(मृम २, ६) ।

अलयलसह पु [दे] धूतं चैव (पद) ।

अलस वि [अलम] १ भालसी, मुन्द (प्राप्
७) । २ मन्द, धीमा (पाप्र) । ३ पु सुद वीट-
विशेष, भूनाम, बर्षादि नु मे संप सरोखा
पान रग का जो ताम्बा जन्तु उत्पन्न होता है
वह (जो १५, पुष्प २६५) ।

अलस वि [दे] १ मधुर भावाजयमा, 'खे
मनसं नमसंजुल' (पाप्र) । २ वसुध रंग से
रंगा हुआ । ३ न. मोम (दे १, ५२) ।

*अलस देवो कउस (सं १, ६, ११, ४०, गा
३६६) ।

अलसग पु [अलसक] १ किन्चिना रोग
अलसय (वमा) । २ धमक, घृनन (पापा) ।

अलसाइय वि [अलसायित] जिसने भालसी
की तरह प्राचरण किया हो, मन्द (गा ३२२) ।

अलसाय सक [अलसाय] भालसी होना,
भालसी की तरह काम करना । अलसामइ
(पि ५५६) । वक्र. अलसायत, अलसाय-
माण (दे १५, १, उप ३१५, गच्छ १) ।

अलसी देखो अयसी (पापा, पद, हे २,
११) ।

अला श्री [अला] १ इन नाम की एक देवी
(ठा ६) । २ एक इन्द्राणी का नाम (छाया
२) । *यडिसग न [अलसक] भालसी
का भवन (छाया २) ।

*अला देखो कला (गा ६५७) ।

अलाउ न [अलाउ] तुम्बी पत्र, लौकी, तुम्बा
(मोम प्राप् १५१) ।

अलाउ } श्री [अलाउ] तुम्बी-सत्ता
अलाउ } (कुमा, पद) ।

अलाय न [अलाय] १ लज्जक, जलता हुआ
बाण (दे १, १०७, मोप २१ मा) । २ मज्जार,
कोयला (दे ३, ३४) ।

अलायणी श्री [अलायणी] बीणा-विशेष
(प्राह ३७) ।

अलाय देखो अलाउ (नं ३) ।

अलायू देवा अलाऊ (पि १४१, २०१) ।

अलाइ पु [अलाय] नुवमान, बैलाम, 'वव-
हरमाणण पुणो होइ सुनाइ नयावनाइ
वा' (पुपा ४४६) ।

अलाइ देवो अल (उप ७२६ टी, हे २, १८६;
छाया १, १, गा १२७) ।

अलि पु [अलि] भ्रमर (कुमा) । *उल न
[कुल] भ्रमर का समूह (हे ४, २१३) ।

*विरु न [विरु] भ्रमर का गुप्तरव
(पाप्र) ।

अलि पुत्री [अलि] वृद्धि राशि (विचार
१०६) ।

अलिअलो श्री [दे] १ वस्तूरी । २ प्याय,
शेर (दे १, ५६) ।

अलिआ श्री [दे] ममी (दे १, १६) ।

अलिआर न [दे] हूच (दे १, २३) ।

अलिअर न [अलिअर] १ घडा, कुम्भ (ठा
४, २) । २ कुड, पात्र-विशेष (दे १, ३७) ।

अलिअरअ पु [अलिअरक] १ घडा (उवा) ।
राने का कुडा, रंग पात्र (पाप्र) ।

अलिंद न [अलिंद] पाल-विशेष, एक प्रकार
का जलपात्र (मोव ४७६) ।

अलिंदग पु [अलिंदक] १ द्वार का प्रकोष्ठ
(न ४७६) । २ घर के बाहर के दरवाजे का
बीक । ३ बाहर का अन्न भाग (वृह २, राज) ।

अलिंदय पुन [अलिंदक] धाय रखन का
पात्र विशेष (मणु १५१) ।

अलिण पु [दे] बुद्धि, विच्छू (दे १, ११) ।

अलिणी श्री [अलिनी] भ्रमरी (कुमा) ।

अलिच न [अलिच] नौका खेवने का उड,
चप्पू (आना २, ३१) ।

अलिच न [अलिच] कपान (पाप्र) ।

अलिय न [अलो] १ मृगवाद, मस्य
वचन (पाप्र) । २ वि सूडा, खोट, 'अलिच-
पोसासावा'—(पाप्र) । ३ निपन्न, निरर्थक
(पण्ड १, २) । *वाइ वि [वादिन] मृग-
वादी (पउम ११, २७, महा) ।

अलिख सक [कथय] कहना, बोलना ।
अलिखइ (पिग) ।

अलिखइ न [दे] १ छन्द विशेष का नाम ।
२ वि. मधुरोक्त, निमगदित (पिग) ।

अलिख्य श्री [अलिख्य] इस नाम का एक
छन्द (पिग) ।

अलीग } देतो अलिय = धनीव (मुर ४,
अलीय } २२३, गुपा १००, महा) ।

अलीयधू श्री [अलिधू] भ्रमरी (कुमा) ।
अलीसअ श्री पु [दे] शाक-वृक्ष, शाक का
पेठ (दे १, २७) ।

अलुकिर वि [अरुक्षिन्] कोमल (मग
११, ४) ।

अलेसि वि [अलेसियन्] १ शेरधारहित ।
२ पु मुन धाम्ना (ठा ३, ४) ।

अलोग पु [अलो] जीव-गुह्य मादि रहित
प्राचार (मग) ।

अलोणिय वि [अलणिक] खुरारहित, नमक-
शून्य, 'नय अलोणिय सिल चोइ चट्टइ'
(महा) ।

अलोय देखो अलोग (मम १) ।

अलोभ पु [अलोभ] १ लोभ का प्रभाव,
सतोष । २ वि. लोभरहित, संतोषी (मग
उव) ।

अलोल वि [अलोल] घलमपट, निलोम (मम
१०, पि ८१) ।

अलोइ देखो अलोभ (कप) ।

अल्ल न [दे] दिन, दिवत (दे १, ५) ।

अल्ल देखो अह (हे १, ८३) ।

अल्ल सक [नम] नमना, नीचे झुटना ।
भोमस्तति (दे ६, ४३) ।

अल्लई श्री [आद्रै] नता-विशेष, भारक-
सत्ता (पण्ड १७) ।

अल्लय देखो अल्लय = भारक (धनं २) ।

अल्लय सक [उह + क्षिप्] ऊँचा फेंकना ।
प्रल्लयइ (हे ४, १४४) ।

अल्लय न [दे] १ जलाद्री, नीला पहा । २
केशुर, मृगरा-विशेष (दे १, ५४) ।

अल्लयिअ वि [उलिचिअ] ऊँचा फेंका हुआ
(कुमा) ।

अल्लय न [आद्रै] भारी, प्रदल (जो ६) ।
*विच न [विरु] भारी, हल्दी और कचूर
(जो ६) ।

अल्लय वि [दे] परिचित, शाव (दे १, १२२) ।

अल्लय पु [अल्लक] इस नाम का एक
विशाल जैन मुनि और प्रत्यकार, उद्योतन-

सुरि का उपाध्याय भवत्या का नाम (सुर १६, २३६)।

अल्लल्ल पुं [दि] मयूर, मोर (दि १, १३)।
अल्लविय [अप] देखो आलस = भ्रातृपति (भवि)।

अल्ला ली [दि] माता, माँ (दि १, ५)।

अल्लि } देखो अल्लि। झल्लि (पद्)।
अल्लिअ } झल्लिअ (दि १, ५६, हे ५, १५)।
वहू, अल्लिअत (सि १२, ७१, पउम १२, ५१)।

अल्लिअ सक [उप + लप्] समीप मे जाना। झल्लिअ (हे ५, १३६)। वहू, अल्लिअत (कुमा)। प्रयो. झल्लियावेइ (वि ५८२, ५९१)।

अल्लिअ वि [आश्रित] गोसा किया हुआ (गा ५५०)।

अल्लियावण न [आलायन] झालीन करना, छिट कराना, मिलान (भग ८, ६)।

अल्लिल्ल पु [दि] भमरा (पद्)।

अल्लिन सक [अपैय] भरण करना। झल्लिअ (हे ५, १३६, भवि, वि १६६, ५८५)।

अल्ली } सक [आ + ली] १ माता। २
अल्लीअ } प्रवेश करना। ३ जोड़ना। ४
प्राप्त करना। ५ भालिगन करना। ६ झक.
संगत होना। झलीमइ (हे ५, ५५)। भूवा.
झलीसी (ग्रामा) हेऊ अल्लीड (वह ६)।

अल्लीग वि [आलीन] १ झल्लिअ। २
प्राप्त। ३ प्रविष्ट। ४ संगत। ५ योजित।
६ जोड़ा लीन (हे ५, ५५)। ७ भ्रातृपति
(कम्प)। ८ तल्लीन, तत्पर (वव १०)।

अल्लेस वि [अलेइय] लेखायाहित (कम्प ५, ५०)।

अल्लोग देखो अल्लोग (द्रव्य १६)।

अल्लाद पु [आह् + लाद] शूरी, प्रमोद, भानन्द (प्राप्त)।

अव भ [अप] इन भयों का सूचक शब्धय—
१ विपरीतता, उल्टापन, 'भवकय, भवमुल'।
२ वापसी, पीछेपन, 'भवकमइ'। ३ बुरापन,
सराबपन, 'भवमग, भवसह'। ४ न्यूनता,
कमी, 'भवउह'। ५ रहितपन, वियोग, 'भव-
बाण'। ६ बाहरपन, 'भवसमण'।

अव भ [अप] निम्नलिखित भयों का सूचक
शब्धय—१ निम्नता, 'भवइण'। २ पीछेपन,
'भवउली'। ३ विरहपन, भनादर, 'भव-
गणंत'। ४ सराबी, बुराई, 'भवमुल'। ५
गमन। ६ भयमुल (राज)। ७ हासि, ह्रास,
'भवकाम'। ८ भ्रातृप, 'भवसदि'। ९ मर्यादा
(विने ८२)। १० निर्वय मो इसका प्रयोग
होता है, 'भवपुट, भवगल'।

अव भ [अप] १ रखण करना, 'भवतु
मुण्णिणो य पववमल' (रखण ६)। २ जाना,
गमन करना। ३ इच्छा करना। ४ जानना।
५ प्रवेश करना। ६ सुनना। ७ माँगना,
याचना। ८ करना, बनाना। ९ चाहना। १०
प्राप्त करना। ११ भ्रातृपन। १२ मारना,
हिंसा करना। १३ जानना। १४ झक प्रीति
करना। १५ सुत होना। १६ प्रकाशना।
१७ बढना। भव (आ २३, विने २०२०)।

अव पु [अप] शब्द, भावान (भा २३)।

अवअनरु स [हृश] देखना। भवभरुसइ
(हे ५, १८१, कुमा)।

अवअनिरुअ न [दि] विनाशित मुख, मुखाया
हुमा झुह (दि १, ५०)।

अवअच्छुअ न [दि] कसा-वज (दि १, २६)।

अवअच्छुअ सक [हृ + लाद] भानन्द पाना चुय
होना। भवभच्छइ (हे ५, १२२)।

अवअच्छुअ सक [हृ + लाद] चुय करना।
भवभच्छइ (हे ५, १२२)।

अवअच्छिअ [दि] देखो अवअनिरुअ (दि
१, ५०)।

अवअच्छिअ वि [हृ + लाद] १ हृष्ट,
आह्लास प्राप्त। २ चुय किया हुआ, हर्षित
(कुमा)।

अवअज्झ सक [हृश] देखना। भवभज्झइ
(पद्)।

अवअणिअ वि [दि] भसपाटित, भसमुक (दि
१, ५३)।

अवअण्ण पु [दि] ऊजल, शुल (दि १, २६)।

अवअत्त वि [अपवृत्त] स्थलित (सि १०,
१८)।

अवआस सक [हृश] देखना। भवआसइ
(हे ५, १८१, कुमा)।

अवइ वि [अग्रतिन्] अतन्य, भविरत,
भसयत (वह १)।

अवइण वि [अनतीणे] १ उतरा हुआ, नीचे
घाया हुआ। २ जन्मा हुआ (कम्प, पउम ७६,
२८)।

अवइइ (श्री) वि [अवचित] एकत्रित, इकट्ठा
किया हुआ (भमि ११७)।

अवइइ (श्री) वि [अपवृत्त] १ जिसका अहित
किया गया हो वह। २ न. भयकार, अहित
(बाह ५०)।

अवइअ देखो अवइण (सुर ३, १२२)।

अवउज्ज सक [अउउज्ज] नीचे नमना।

सह अउउज्जिय (धाका २, १, ७)।

अवउज्ज सक [अप + उउज्ज] परित्याग
करना। छोड़ देना। सक. अवउज्जिमऊण
(वह ३)।

अउउज्ज देखो अवउह।

अवउडग } देखो अवओडग (णामा १, २,
अवउडय } धनु)।

अवउठण न [अवगुण्ठन] १ ढकना। २
झुह ढकने का वज, झूँट (बाह ७०)।

अवउठ वि [अवगुह] भालिगन, 'समावह-
भवऊठो एववाहिरोव विज्जुतापडिभिने'
(हे २, ६, स ५६६)।

अवऊसण न [अपयसन] तपधर्मा-विशेष
(पवा १६)।

अवऊसण न [अपजोपण] ऊपर देना (पवा
१६)।

अवऊण न [अवगुह] भालिगन (गा
३३५, ५५९, वजा ७५)।

अवएड पु [अवएज] तापिवा-हृत, पाप-
विशेष (णामा १, १ टी—पत्र ५३)।

अवएस पु [अपदेश] बहाना, छद्म (पाप)।

अवओडग न [अवओटक] गते को मरोडना,
कुकटिवा को नीचे ले जाना (विपा १, २)।

'बंधण न [वन्धन] १ हाथ मीर सिर को
शुभ भाग से बाँधना (पवह १, २)। २. वि.
रस्ती से गला धीर हाथ को मोड़कर शुभ भाग
के साथ जिसको बाधा जाय वह (विपा १,
२)।

अवग पु [अवाह] नेत्र का प्राय भाग (सुर
३, १२५, ११, ६१)।

अवर्ग पु [दे] गटाग (दे १, १५)।
 अवर्ग } वि [दे. अपावृत्त] नहा द्वा
 अवर्गय } हुमा खुला (प्रोप. एह २, ४)।
 अवर्ण सा [दे] खोलना। अवर्णजेजा
 (भाषा २, २ ४)।
 अवर्चिअ वि [अवाञ्छित] प्रमोमुख, प्रमोद-
 मुख (वज्रा १०)।
 अवर्चिअ वि [अवञ्चित] नही ठगा हुमा
 (वज्रा १०)।
 अवभवि [अवभ्य] सकन, घन (मुपा
 ३२५)। 'पराय न [प्रयाद] ग्याह्या
 पूर्व, जैन प्रयास विरोध (सम २६)।
 थापतर वि [अनांतर] भीरी, बीच वा
 (भावम)।
 अथति पु [अथन्ति] भगवान् भाविनाय वा
 एक पुत्र (सी १४)।
 अत्रि } श्री [अत्रि, 'न्ती] १ मालव देश।
 अत्रि } २ मालव देश की राजधानी, जो
 मालव राजधानी में 'अत्रि' नाम से प्रसिद्ध
 है (महा मुना ३६६, भावम)। 'गंगा की
 [गङ्गा] मालवीय मत में प्रसिद्ध बाल-
 विष्ट (मा २४, १)। 'बह्मण पु [वर्धन]
 इन नन का एक राजा (भाव ४)। 'मुकु-
 माठ पु [मुकुमाल] एक धेष्ठि-मुकु, जो
 मालवीय भाषा में के पास दीपा लेकर
 देव-देव व मन्त्रियों विमान म उपस्थ
 हुआ है (पडि)। 'सेण पु [पिण] एक राजा
 (मन्)।

अवक्रिस पु [अपक्र] प्रपच, हाम,
 हानि (मम ६०)।
 अवक्रुसिय वि [अपक्रुपित] मर्तिन
 (मउड)।
 अवक्रस सा [अ + कृप्] त्याग करना।
 सट् अवक्रसिचा (चउ १४)।
 अवभारि वि [अपभारि] प्रहित करने
 वाता (पवम ६, ८५)।
 अत्रिण वि [अवकीर्ण] वरिष्ठ (दे १,
 १३०)।
 अत्रिण्यय } पु [अपकीर्ण] कलरु
 अत्रिण्यय } नामर एक जैन महर्षि का पूर्व
 नाम (महा)।
 अत्रिचि श्री [अपकीर्ति] प्रपरा (दे १,
 ६०)।
 अत्रिचि श्री [अपहृति] प्रपरा प्रहित
 (प्राह १२)।
 अवकीरण न [अवकरण] छोड़ना, त्याग,
 उखाड़ना (भाव ५)।
 अवकीरि वि [दे अवकीर्ण] विरहित,
 विपुल (दे १, १८)।
 अवकीरियवि [अवकीरिय] त्याग्य,
 छोड़ने लायक (एह १, ५)।
 अवकूजिय न [अवकूजित] हाथ की ऊचा-
 नीचा करना (निपु १७)।
 अवक्रेसि पु [अवक्रेसि] वन वध्य वन-
 स्थिति (उर २, ८)।

संठ अवक्रमहता, अवक्रम (वप, वव
 १)।
 अवक्रम सव [अ + क्रम] जाना। प्रव-
 म (मम)। संठ अवक्रमिता (मम)।
 अवक्रमण न [अवक्रमण] १ बाहर निकलना
 (अ ५, २)। २ पनापन, भागना, 'निगमण-
 भवसमर्ण' निस्करण पनापण व एगट्टा (वव
 १०)। ३ पीछे हटना (एया १, १)।
 अवक्रमण न [अपक्रमण] घनतरण, 'उत्त-
 रावक्रमण' (मम ६, ३३)।
 अवक्रम पु [अपक्रम] माटा, माटि (वृह १)।
 अवक्रम वि [अपक्रम] जिनका प्रहित किया
 गया हो वह (संठ)।
 अवक्रम पु [दे] दाह, मद्य (दे १, ४६,
 पाष)।
 अवक्रिस } पु [अपक्र] हानि, प्रपच
 अवक्रास } (विसे १७६६, मम १२, ५)।
 अवक्रास पु [अपक्र] ऊपर देखा (मम १२,
 ५)।
 अवक्रास पु [अप्रकाश] प्रपचार, प्रवेरा
 (मम १२, ५)।
 अवक्रास पु [अप्रकाश] मान, प्रहकार (मम
 ७१)।
 अवक्रम सव [टस] देखना। अवक्रम
 (पड)। प्रवक्रम (मवि)। वक्र अव-
 क्रम (हुमा)।
 अवक्रम पु [अवक्रम] १ शिविर छावनी

अवग पुन [दि. अवग] जल मे होने वाली वनस्पति-विशेष (मृग २, ३, १८)।

अवगइ छी [अपगति] १ क्षयव गति । २ गोलनीय स्थान (मुद्रा २४४)।

अवगड न [अवगण्ड] १ मुखें । २ पानी का फेन (मृग १, ६)।

अवगतव्य देखो अवगम = अवगम् ।

अवगच्छ सक [अव + गम्] जानना । अवगच्छइ (महा)। अवगच्छे (म १५२)।

अवगच्छ भव [अप + गम्] दूर होना, निवृत्त जाना । अवगच्छइ (महा)।

अवगण } सक [अ + गगम्] भनादर
अवगण्ण } करना, लिखारना । वह अव
गणत (प्रा २७)। सह अवगणिय
(प्रा १०५)।

अवगणया छी [अवगणना] अवज्ञा, भनादर
(दे १, २७)।

अवगणिय } वि [अवगणित] अवज्ञात,
अवगणिय } लिखत (दे जीव १)।

अवगद्वि [दि] विस्तीर्ण, विराल (दे १, ३०)।

अवगन्न देखो अवगण । अवगन्नइ (भवि)।
नह अवगन्निवि (भवि)।

अवगन्निव देखो अवगणिय (मुद्रा ४२१,
भवि)।

अवगम पुं [अपगम] १ भ्रमरण (मुद्रा
३०२)। २ विनाश (म १५३, विम ११८२)।

अवगम सक [अव + गम्] १ जानना । २
लिखण करना । सक अवगमिचु (मार्थ
६३)। क. अवगतव्य (स ५२६)।

अवगम पुं [अवगम] १ ज्ञान । २ निर्णय,
निवय (विम १८०)।

अवगमण न [अवगमन] ऊपर देखो (म
६७०, विसे १८६, ४०१)।

अवगमिअ } वि [अवगत] १ जान, विदित
अवगय } (मुद्रा २१८)। २ निवृत्त अव-
गति (दे ३, २३, म १५०)।

अवगय वि [अवगत] दुर्गम हुआ, विनष्ट
(छाया १, १, दम १०, १६)।

अवगार सह [अप + कृ] अवधार करना,
महित करना । अवगारइ (म ६३६)।

अवगरिस देखो अवकरिस विने (१५८३)।
अवगल वि [दि] ग्राह्य (पद)।

अवगल वि [अवगलान] वीमार (ठा २, ८)।
अवगहण न [अवग्रहण] निवय, अवधारण
(पद २७३)।

अवगाड देखो ओगाड (ठा १, भग. स १७२)।
अवगाडु वि [अवगादित] अवगाहन करने
वाला (विम २८२२)।

अवगार पु [अपगार] अवधार, ग्रहित-करण
(मुर २, ४३)।

अवगारय वि [अपगारय] अवधार-धारण
(म ६६०)।

अवगारि वि [अपगारि] ऊपर देखो (म
६६०)।

अवगास पु [अवगास] १ रुक्मण (महा)।
२ जगद, स्थान (भावम)। ३ अवस्थान, अव-
स्थिति (ठा ४, ३)।

अवगाह सक [अ + गाह] अवगाहन
करना । अवगाहइ (महा)।

अवगाह पु [अवगाह] १ अवगाहन । २
अवधार (उत २८)।

अवगाहण म [अवगाहन] अवगाहन, लिखा-
वगाहणएव अवगत व ताए तव (मुद्रा ५६३)।

अवगाहणा देखो ओगाहणा (ठा ४, ३, विने
२०८८)।

अवगिचण न [दे अववेचन] वृक्षरण (उ
पु ६६)।

अवगिम्भ देखो ओगिम्भ । सह अव-
गिम्भिय (वण)।

अवगीय वि [अवगीत] निवृत्त (उप पु
१८१)।

अवगुठण देखो अवउठण (दे १, ६)।
अवगुठिय वि [अवगुठित] ग्राह्यारित
(महा)।

अवगुण पुं [अवगुण] दुर्गुण, दोष (ह ४,
२६४)।

अवगुण सक [अ + गुणय] सोचना
उद्घाटन करना । अवगुणैजा (भावना २, २
२, ४)। अवगुणैवि (मग १५)।

अवगुड वि [अवगुड] १ धार्मिक हिंदू २,
१६८)। २ व्यास (छाया १, ८)।

अवगुड न [दे] व्यकीर, अवधार (दे १, २०)।

अवगूहण न [अवगूहन] भातिगन (मुर १४,
२२०, पदम ७४, २४)।

अवगूहाविच वि [अवगूहित] भास्तेपित
(स ६६६)।

अवग्ग वि [अव्यक्त] १ अस्पष्ट । २ पु-
ष्पतीतार, शास्त्रान्वित नाधु (उप ८७४)।

अवग्गइ देवा उग्गइ (पव ३०)।
अवग्गहण न [अवग्रहण] देखो उग्गइ (विम
१८०)।

अवच देखो अवय = अवच (भग)।
अवचइय वि [अपचयिक] अवचर्पण,
हास्यवाना (भाव)।

अवचय पु [अपचय] हास, अवचर्प (भग
११, ११, स २८२)।

अवचय पु [अवचय] इच्छा करना (हुमा)।
अवचयण न [अवचयन] ऊपर दला (दे ३,
५६)।

अवचि सक [अप + चि] हीन होना कम
जाना । अवचिजद (भग)। अवचिजनि (भग
२५, २)।

अवचि } सक [अव + चि] इच्छा करना
अवचिण } (कृत प्राति को वृत्त म तो-
कर)। अवचिणइ (नाट)। भवि. अवचिणिस
(वि ५३१)। हेह अवचिणैदु (सी) (वि
००२)।

अवचिय वि [अवचित] हान, हास्यप्राप्त
(विसे ८६७)।

अवचिय वि [अपचिन] इच्छा किया हुआ
(पाप)।

अवचुणिय वि [अवचूर्णित] तोड़ा हुआ,
चूर-चूर किया हुआ (महा)।

अवचुड पुं [अवचुड] चूह का पीछना भाग
(पिंडमा ३४)।

अवचूल दको ओऊल (छाया १, १६, पद
२१६)।

अवच वि [अवाच्य] १ वाचने के अयोग्य ।
२ वाचन के अयोग्य (परम ६६८)।

अवच न [अपचय] भुगल, वक्रा (वण्य; भाव
१, भाव ८२)। 'व वि [वन्] सतान-
वाना (मुद्रा १८६)।

अवचिञ्ज दको अवचिय (मृगनि - ०५)।

अवग पु [दे] वटाप (दे १, १५) ।
 अवगु } वि [दे. अपावृत्त] नही दना
 अवगुय } हुमा, पुता (भीष. पण्ड २, ४) ।
 अवगुण स [दे] सोतना । अवगुणेश्वा
 (भाषा २ २ २, ४) ।
 अवचिअ वि [अवाञ्छित] प्रपोकुल, प्रवाङ्-
 मुल (वज्ज १०) ।
 अवचिअ वि [अवञ्छित] नहीं ठगा हुमा
 (वज्ज १०) ।
 अवम्ब वि [अवन्म] सक्त, प्रवृत्त (मुपा
 ३२५) । 'प्राय न [प्रावाद] ग्याएवा
 पूर्वं, जैन प्रण्याश विरोध (सम २६) ।
 अवतर वि [अवातर] भीतरी, बीच वा
 (भाषम) ।
 अवति पु [अवति] भगवान् प्रादिनाथ वा
 एक पुत्र (ती १४) ।
 अवति } श्री [अवति, 'नो'] १ मानव देव ।
 अवती } २ मानव देश की राजधानी, जो
 भ्राजकल राजपूताना में 'उज्जैन' नाम से प्रसिद्ध
 है (महा. मुपा ३६६, भाषम) । 'गंगा श्री
 [गङ्गा] भानोवि' मत में प्रसिद्ध मान-
 विरोध (मग २४, १) । 'वह्दण पु [वर्धन]
 इस नाम का एक राजा (भाष ४) । 'सुधु-
 माल पु [सुधुमाल] एक धेहि-पुत्र, जो
 भार्यसुहृति भाचार्य के पास दीक्षा लेकर
 देव लोक के मतिनीपुत्र विमान में उत्पन्न
 हुमा है (पवि) । 'सेण पु [पेण] एक राजा
 (भाष) ।
 अवदिम वि [अवन्म] चन्दन बरने के
 प्रयोग, प्रणाम के प्रयोग (वसू १) ।
 अवकस सक [अव + कस] १ चाहना ।
 २ देखना । अवकस (भग) । वक्र अव
 कसमाण (णामा १, ६) ।
 अवकत देवी अवकस 'कुमरोवि सत्यरात्री
 उद्देता सविपमवकतो' (महा) ।
 अवरप्प सक [अव + कल्पय] कल्पना
 करना, भान लेना । अवकपति (सूपा १, ३,
 ३, ३) ।
 अवक्य वि [अपकृत] १ जिसका अपकार
 किया गया हो वह (सक) । २ अपकार,
 प्रहित (मुपा ६४१) ।
 अवसर सक [अप + क] ग्रहित करना ।
 अवसरति (सूपा १, ४, १, २३) ।

अवसरिस पु [अपरुष] अपपर, हास,
 हानि (सम ६०) ।
 अवकलुसिय वि [अपकलुपित] मानिन
 (गउड) ।
 अवकस स [अव + कृप्] त्याग करना ।
 सट. अवकसिचा (पउ १४) ।
 अवसरि वि [अपसरिन्] ग्रहित करने
 वाला (पउम ६, ८३) ।
 अवकिण्ण वि [अवकीर्ण] पतित्यक (दे १,
 १३०) ।
 अवकिण्णय पु [अपकीर्णक] बरवरह
 अवकिण्णय } नामक एक जैन महर्षि का पूर्व
 नाम (महा) ।
 अवकिन्ति श्री [अपकीर्ति] मयरा (दे १,
 ६०) ।
 अवकिन्ति श्री [अपकृति] अपकार, ग्रहित
 (प्राह १२) ।
 अवकीरण न [अवकरण] छोड़ना, त्याग,
 उत्सर्ग (भाष ५) ।
 अवकीरिअ वि [दे अवकीर्ण] विपहित,
 विपुत्र (दे १, ३८) ।
 अवकीरियव्य वि [अवकरितव्य] त्याग्य,
 छोड़ने लायक (पण्ड १, ५) ।
 अवकूजिय न [अवकूजित] हाथ को ऊँचा-
 नीचा करना (निबू १७) ।
 अवकैसि पु [अवकैशिन] कन-वन्म वन-
 स्मृति (उर २, ८) ।
 अवक्रेडक देवी अवक्रेडहा (पण्ड १, १) ।
 अवकंत वि [अपक्रान्त] १ पीछे हटा हुमा,
 वापस लौटा हुमा (मुपा २६२, उर १३४
 टी, महा) । २ निवृत्त, वचन्य (ठा ६) ।
 अवकत पु [अपक्रान्त] प्रथम नरक भूमि का
 ग्याहूवा नरक-स्थान —नरक-स्थान विरोध
 (वेद ३) ।
 अवकति श्री [अपक्रान्ति] १ प्रसरण ।
 २ निर्गमन (णामा १, ८) ।
 अवकति श्री [अवक्रान्ति] गमन गति
 (भाषा) ।
 अवकस सक [अप + क्रम] १ पीछे
 हटना । २ बाहर निकलना । अवकसद (महा,
 वप) । वक्र अवकसमाण (विपा १, ६) ।

सट. अवकमहात्ता, अवकम्म (वप, वव
 १) ।
 अवकम उप [अ + क्रम] जाना । अवक-
 मद (भग) । सट. अवकमिता (भग) ।
 अवकमण न [अपकमण] १ बाहर निकलना
 (ठा ५, २) । २ पनामन, भागना, 'निगमण-
 मयकमण' निम्पण पतापण च एण्ठा' (वव
 १०) । ३ पीछे हटना (णामा १, १) ।
 अवकमण न [अपकमण] धवतरण, 'उत्त-
 रापनमण' (भग ६, ३३) ।
 अवकय पु [अपकय] भाडा, माटि (वह १) ।
 अवकय वि [अपकृत] निमन ग्रहित किया
 गया हो वह (संठ) ।
 अवकस पु [दे] धार, मय (दे १, ४६;
 पाष) ।
 अवकरिस पु [अपरुष] हानि, अपचय
 अवकास } (विसे १७६०, मग १२, ५) ।
 अवकस पु [अपरुष] ऊपर देखो (मग १२,
 ५) ।
 अवकास पु [अपसारा] ग्रथकार, ग्रंथ
 (मग १२, ५) ।
 अवकौस पु [अपकोश] मान, ग्रहकार (मम
 ७१) ।
 अवकस स [हस] देखना । अवकस
 (पण्ड) । अवकस (मवि) । वक्र अव-
 कसत (हुमा) ।
 अवकसद पु [अवकसद] १ शिव, छावनी,
 सैन्य का पथ । २ नगर का विपु-सैन्य द्वारा
 वेष्टन, घेरा (हे २, ४, स ४१२) ।
 अवकसर पु [अवकसर] घुरीप, बिठा (भाष
 २६) ।
 अवकसारण न [अपसारण] १ निर्मलता,
 कठोर वचन । २ सहस्रभूमि का भ्रमन (पण्ड
 १, २) ।
 अवकसेर पु [अवसेर] विष्णु, वाषा (विपा
 १, ६) ।
 अवकसेवण न [अवसेवण] १ वाषा, भक्त-
 राय । २ क्रिया विरोध, नीचे जाना । (भाषम,
 विसे २४६२) ।
 अवखेर सक [दे] १ क्षिप्त करना । २ तिर-
 स्कार करना । अवखेरद (मवि) । वक्र अव-
 खेरत (मवि) ।

अवग पुन [दे-अवक] जल मे होने वाली वनस्पति-विशेष (सूत्र २, ३, १८)।

अवगइ की [अपगति] १ सराव गति । २ गोपनीय स्थान (मुपा ३४५)।

अवगड न [अवगण्ड] १ मुण्णै । २ पानी का केन (सूत्र १, ६)।

अवगतव्य देखो अवगम = अवगम ।

अवगच्छ सक् [अव + गच्छ] जानना । अवगच्छइ (महा) । अवगच्छे (स १५२)।

अवगच्छ भक् [अप + गच्छ] दूर होना निबल जाना । अवगच्छइ (महा)।

अवगण } सक [अ + गणय] भनावर
अवगण्ण } करना, तिरस्कारना । बहु-
गणत (धा २७) । सङ्ग अवगणिय
(मात्रा १०५)।

अवगणणा की [अवगणना] अवज्ञा, भनावर
(दे १, २७)।

अवगणिय } वि [अवगणित] अवज्ञात,
अवगणिय } तिरस्कृत (दे जीव १)।

अवगद वि [दे] विस्तीर्ण, विराल (दे १, ३०)।

अवगम देखो अवगण । अवगमइ (भवि)।
सङ्ग अवगमिभि (भवि)।

अवगमइ देखो अवगणिय (मुपा ४२१,
भवि)।

अवगम पु [अपगम] १ भ्रमरण (मुपा ३०२)। २ विनाश (स १५३, विने ११८२)।

अवगम सक [अ + गम] १ जानना । २ निर्णय करना । सङ्ग अवगमिसु (साधं ६३)। क. अवगतव्य (स ५२६)।

अवगम पु [अवगम] १ जान । २ निर्णय, निश्चय (विने १००)।

अवगमण न [अवगमन] ऊपर देखो (म ७७०, विने १८६, ४०१)।

अवगमिअ } वि [अवगत] १ जान, चित्ति
अवगम्य } (मुपा २१८) । २ निर्णय, अव-
धारित (दे ३, २३, स १४०)।

अवगय वि [अपगत] गुजर हुआ, चित्त
(शाखा १, १, दम १०, १६)।

अवगर सक् [अप + गृ] भ्रष्टार करना,
ग्रहित करना । अवगरेद (म ६३६)।

अवगरिस देखो अवकरिस विने (१५८३)।
अवगल वि [दे] श्रान्त (पट्)।

अवगल वि [अवगलान] बीमार (आ २, ७)।
अवगलह न [अवग्रहण] निश्चय, अवधारण
(पव २७३)।

अवगाढ देखो ओगाढ (आ १, भग स १७२)।
अवगाहु वि [अवगाहित] अवगाहन करने
वाला (विने २८२२)।

अवगाह पु [अप + गृ] भ्रष्टार ग्रहित करना
(सुर २, ४३)।

अवगाहय वि [अप + गृ] भ्रष्टार-कारक
(म ६६०)।

अवगारि वि [अप + गारि] ऊपर देखो (स ६६०)।

अवगास पु [अवगाश] १ पुरलत (महा)।
२ जगह, स्थान (प्राप्तम) । ३ अवस्थान अव-
स्थिति (आ ४, ३)।

अवगाह सक [अव + गाह] अवगाहन
करना । अवगाहइ (सण)।

अवगाह पु [अवगाह] १ अवगाहन । २
भ्रष्टार (उत्त २८)।

अवगाहण न [अवगाहन] अवगाहन, 'तिस्था-
वगाहणस्य भागतव्य तए तव्य' (मुपा ५६३)।

अवगाहणा देखो ओगाहणा (आ ४, ३, विने २०८८)।

अवगमिचण न [दे अववेचन] वृक्षरण (उप ५ २६)।

अवगिमिअ देखो ओगिमिअ । सङ्ग अव-
गिमिमय (कय)।

अवगीय वि [अवगीत] निन्दित (उप ५ १८१)।

अवगुठण देखो अवउठण (दे १, ६)।

अवगुठिय वि [अवगुठित] बाध्वादिन
(महा)।

अवगुण पु [अवगुण] दुष्ण तोप (दे ४, २६५)।

अवगुण सक् [अ + गुणय] खोना,
उत्थान करना । अवगुणेजा (भाना २, २, ४)। अवगुणि (भग १५)।

अवगुह वि [अवगृह] १ शान्ति (दे २, १६८) । २ व्यास (शाखा १, ८)।

अवगुह न [दे] व्यनीत, भयपत्र (दे १, २०)।

अवगुहण न [अवगृहण] शान्ति (सुर १४, २२०, पउम ७४, २४)।

अवगुहाविय वि [अवगृहित] भारतेपित
(स ६६६)।

अवग्ग वि [अव्यक्त] १ भ्रष्ट । २ पु-
त्रीताप शान्तनिमित्त साधु (उप ८७४)।

अवग्गह देका उग्गह (पव ३०)।

अवग्गहण न [अवग्रहण] देखो उग्गह (विने १८०)।

अव्य देखो अव्य = अव्यव (भग)।

अव्यवहय वि [अपचयिक] अव्यवधान,
हाववाला (साचा)।

अव्यवय पु [अपचय] हास, भ्रष्टाप (भग ११, ११ स २८२)।

अव्यवय पु [अवचय] इकट्ठा करना (हुमा)।

अव्यवयण न [अवचयन] ऊपर देखा (दे ३, ५६)।

अचि चक [अप + चि] होन जाना, कम
जाना । अवचिअइ (भग)। अवचिजनि (भग २५, २)।

अचिचि } मक् [अ + चि] इकट्ठा करना
अचिचिण } (कय प्रादि को कय मे ता-
कर)। अवचिणइ (नाट)। मक्. अवचिणिस्त
(वि ५६१)। हेइ अवचिणेहु (दी) (वि ००२)।

अवचिय वि [अचिचि] होन, हासप्राप्त
(विने ८६७)।

अचियि वि [अचिचि] इकट्ठा किया हुआ
(पाम)।

अवचुणिणय वि [अवचुणि] तोड़ा हुआ,
बुर-बुर किया हुआ (महा)।

अचुहु पु [अचुहु] बूढ़ का वीक्षण भाग
(चिउमा ३४)।

अवचुल देको ओऊल (शाखा १, १६, पव २१६)।

अचय वि [अचान्य] १ वानने के अवयव ।
२ वानन व भराव (धर्मसं ६६८)।

अचय न [अपत्य] भाना, वचा (कय, भाव १, प्राप् ८३)। 'व वि [वत्] सतान-
मान (मुपा १८६)।

अचिञ्ज देगा अचोय (मूप्पि १०५)।

अथश्रीय विं [अपत्यीय] मतानोष, सतान-
संभवी (डा ६) ।

अवच्छृणुण न [दे] शेष स बहा जाता
मानिय वचन (दे १, ३६) ।

अवच्छेय पुं [अवच्छेद] विभाग भंश (डा
३, ३) ।

अवच्छेद वि [अपच्छन्दक] छन्द वे लगण
से रहित, छन्दोशेष दुष्ट (पिंग) ।

अवजस पु [अपयशस्] सपवीति (उप पु
१८७) ।

अवजाण सक [अप+ज्ञा] १ भणपान करण,
'बालस मयप वीय न च बट्ट भवजाणई'
कुआ (सूत्र १ ४ १, २६) ।

अवजाय पु [अपजात] पिता की भणना
हीन वैभववाता पुत्र (डा ४, १) ।

अवजिह्व पु [अपजिह्व] दूसरी नरक-
पुष्पिणी का माठवा नरैन्द्रक—नरक-स्थान
विशेष (देवद ६) ।

अवजीय वि [अपजीय] जीवरहित मृग,
भवेतन (गड) ।

अवजुय वि [अवयुत] पुष्पमूल, भिन्न
(वज ७) ।

अवजा न [अवघ] १ पाप (परह २, ४) ।
२ वि निन्दनीय (सूत्र १ १, २) ।

अवज्जस सक [गम्] जाना गमन करना ।
भवज्जसह (हे ४, १६२) । बहु अवज्जसत
(कुमा) ।

अवज्जा जी [अवज्ञा] भगवत्तर (न ६०४) ।

अवज्ज वि [अवध्य] मारत के भयोय
(छाया १ १६) ।

अवज्जस सक [दृश] देखना (ससि ३६) ।

अवज्जस न [दे] १ कटी कमर । २ वि
कठिन (दे १, ५६) ।

अवज्जस जी [अवध्या] १ भयोध्या नवरी
(स्क) । २ विदेश वर्ष की एक नगरी (डा
२ ३) ।

अवज्जान न [अपध्यान] कुरा चिन्तन,
दुष्यति (मुपा ५४६, उप ४६६ सम ५०
विसे २०१३) ।

अवज्जान पुं पुन [अपध्यान] दुष्यति, 'बत
अवज्जान' जिहो भवज्जानो' (भावक
२८६, पचा १, २३, सवीध ५५) ।

अवज्जान वि [उपध्यात] १ दुष्यति वा
विषय । २ प्रवृत्त, स्थितन (छाया १, १४) ।

अवज्जान (भर) देतो उद्यज्जान (दे १, ३७) ।

अवट्ट सक [अप + घृत्] घुमाना, फिराना
भवट्ट भवट्ट ति वाहरति वरणाहारे रज्जुपरि-
वतणुआणु निज्जामणुं भवडम्मि वेर गिरि-
सिहरनिरादि पिर विवन जाणवत्त' (स
३५५) ।

अवट्ट भर [अप + घृत्] पीछे हटना । भर-
ट्टइ (प्राह ७२) ।

अवट्टा जी [आरत्ता] राजमार्ग से बाहर की
जगह (उप २६१) ।

अवट्टभ पु [अवट्टम्भ] भगवत्पुत्र, मायय
(पउम २६, २० स ३११) ।

अवट्टभ पुं [अवट्टम्भ] दृढता, हिममत (पयवि
१४०) ।

अवट्टभ देवो अवट्टभ । बर्म भवट्टव्यति (स
७४१) ।

अवट्टभण [अपप्रम्भन] भवत्तम्भन,
अवट्टहण सहारा (स ७४६ टी. ७४६) ।

अवट्टद वि [अवट्टद] रोना हुमा (द्वय
२७) ।

अवट्टद वि [अवट्टद] १ भवत्तम्भित । २
माकात भवट्टदा महाविषाण' (स ५८४) ।

अवट्टय सक [अप + स्तम्भ] भवत्तम्भन
करना, सहारा लेना । संक अवट्टयिअ (विक
६५) ।

अवट्टाण न [अवस्थान] १ भवत्तम्भित,
भवत्त्या । २ व्यवस्था (वृह ५) ।

अवट्टिअ वि [अवस्थित] १ भवगाहन करके
स्थित (सूत्र १, ६ ११) । २ कर्म-बच विशेष
प्रथम समय भ जितनी कर्म प्रकृतियों का बच
हो द्वितीय भावि समयो म भी उत्तरी हो
प्रकृतियों का जो बच हो वह (पच ५, १२) ।

अवट्टिअ वि [अवस्थित] १ स्थिर रहनवावा
(भग) । २ नित्य, शाश्वत (डा ३, ३) । ३ जो
बद्धता घटता न हो (जीव २) ।

अवट्टिअ जी [अवस्थित] भवस्थान (डा ३,
४, विसे ७५६) ।

अवट्टेभ सक [अप + स्तम्भ] भवत्तम्भन
करना । संक

'पाएण मया, सदेण मदे, चोवेण
वाह्वहमावि ।

अवट्ठभिकण धणुह वाहेणवि मुत्तिआ पाणा'
(वज्जा ४६) ।

अवट्ठभ पुं [दे] ताम्भत, पान (दे १, ३६) ।
अवट्ठ पुं [अवट्ठ] रूप, बुद्धा (गड) ।

अवट्ठ पुं [दे] १ रूप, बुद्धा । २ भाराय,
अवट्ठअ } वर्गीया (दे १, ५३) ।

अवट्ठअ पुं [दे] १ भया, पात-कूल वा पुत्रता,
गृह-गुण (दे १, २०) ।

अवट्ठअ पुं [अवट्ठ] प्रमिद, व्याति 'अण-
नयावदेवण निपिणएसम्मो एान (महा) ।

अवट्ठविअ वि [दे] रूप आदि मे निखर
मरा हुमा, जिसने भाल-हत्या की हो वह (दे
१, ४७) ।

अवट्ठाह सक [उत् + फुग] जंघ स्वर से
बदन करना । भवट्ठाहिं (दे १, ४७) ।

अवट्ठाहिअ न [दे] १ जंघ स्वर से रोदन
(दे १, ४७) । २ वि उत्कृष्ट (पय) ।

अवट्ठाहि वि [दे] स्निग्ध, परिभाट (दे १,
२१) ।

अवट्ठ पु [अवट्ठ] इराटिका, घटी या पागी,
बण्ठमणि (पाम) ।

अवट्ठअ पु [दे] उज्ज्वल उज्ज्वल (दे १, २६) ।

अवट्ठुहिअ वि [दे] रूप आदि मे गिरा हुमा
(पय) ।

अवट्ठा जी [दे] कुकाटिका, घट्टी, गर्वन का
जंघा हिस्सा (भग १५, पच ६७६) ।

अवट्ठ वि [अपार्थ] १ भया (मुज्ज १०) ।
२ भाषा दिन 'भवट्ठे पचक्का' (पडि भग
१६ ३) । ३ भाषे से नम (भग ७ १ नव
४१) । 'कवेत्त न [वेत्त] १ नपक-विशेष
(वज १०) । २ भूतों विशेष (डा ६) ।

अवण पु [दे] १ पानी का प्रवाह । २ घर
का फलहक (दे १ ५५) ।

अवण न [अवण] १ गमन । २ धनुमन
(एदि विसे ८३) ।

अवणण देखो अवणणयण (पिड ५७३) ।

अवणद वि [अवणद] १ संबद्ध, जोड़ा हुमा
(पुर २, ७) । २ भाषादित (भग) ।

अवणम सक [अप + नम्] नीचे नमना ।
बद्ध अवणमत (पय) ।

अवगमिय वि [अवनत] भवनत (सुपा ४२६)।

अवगमिय वि [अवनमित] नीचे किया हुआ, नमाया हुआ (सुर २, ४१)।

अवगय वि [अवनत] नमा हुआ (दत्त ५)।

अवगय पुं [अपनय] १ अपनय, हटाना (अ ८)। २ निन्दा (यव १४०; विस १४०३ टी)।

अवगयण न [अपनयन] हटाना, दूर करना (सुपा ११, स ४८३, उप ४९६)।

अवगाम पुं [अवनाम] ऊर्ध्वगमन, ऊँचा जाना, गुलाए खाया (अमर) (वर्मस २४२)।

अवणि औ [अवनि] पृथिवी, भूमि (उप ३१६ टी)।

अवणि देवो अवणी = धप + नी।

अवणिद पुं [अवनीन्द्र] राजा, भूप (भवि)।

अवणिय देवो अवणीय; 'तं कुपुणं चित्तनि-
वमणमवणियनीसदोसनल' (विदे १३८)।

अवणी देवो अवणि (सुपा ३१०)। 'सर
पुं [श्वर] राजा, भूमिपति (भवि)।

अवणी सक [अप + नी] दूर करना, हटाना।

भवणेइ, भवणेमि (महा)। बह्. अवणित,

अवणेत (निहू १; सुर २, ८)। कवक

अवणेज्जंत (उप १४६ टी)। क अवणेज
(इ ३७)।

अवणीय वि [अपनीत] दूर किया हुआ
(सुपा ५४)।

अवणीययण न [अपनीतयन] निन्दा-
यन (भावा २, ४, १, १)।

अवणेत देवो अरणी = धप + नी।

अरणोय पुं [अपनोइ] अपनयन, हटाना
(विदे ६८२)।

अरणोयण न [अपनोदन] अपनयन, दूरी-
करण (स ६२१)।

अवण वि [अवण] १ वर्णरहित, रूपरहित
(भा)। २ पुं. निन्दा (पंचव ४)। ३ अपनीति
(सोप १८४ भा)। 'य वि [यन] निन्दक,
'तेमि भवणएव बाले महामोहं पटुब्ब' (सम
५१)। 'वाय पुं [वाद] निन्दा (इ २६)।

अवण्य न [दे] भवता, निरादर (दे १,
१७)।

अवण्णा औ [अवज्ञा] निरादर, विरस्ताव
(भी)।

अवण्हअ पुं [अपहव] अपनाप (पद)।

अवण्हवण न [अपहवण] अपनाप (भावा)।

अवण्हण न [अवस्मान] गातुन भादि से
स्नान करना (छाया १, १३; विपा १, १)।

अवतस देवो अवयस = भवतस (हुमा)।

अवतस पुं [अवतस] मेलनंत (सुपा ६)।

अवतंसिय वि [अवतंसित] विगुणित
(हुमा)।

अवतट्ट वि [अवनट्ट] तट्टहत, छिना हुआ
(सुपा १, ५, २)।

अवतट्टि देवो अययट्टि = भवतट्टि (सुपा
१, ७)।

अवतारण न [अवतारण] १ उतारना। २
योजना करना (विस ६४०)।

अवतासण न [अवतासन] डराना (पव ७३
टी)।

अवतिरथ न [अपतीरथ] कुलित षट, खराब
विनारा (सुपा १५)।

अवत्त वि [अव्यक्त] १ भ्रष्ट (विदे)। २
कम उमर वाला (बुह १)। ३ भ्रष्ट (गच्छ
१)। ४ पुं. देवो अवयग (निहू २)।

अवत्त वि [अमात] पवनरहित (गच्छ १)।

अवत्त वि [अधात] प्राप्त, लब्ध।

अवत्त न [अत्र] धामन विशेष (निहू १)।

अवत्तय वि [दे] विमंखुल, धम्यवस्वित (दे
१, ३४)।

अवत्तय वि [अवत्तय] १ वचन से कहने
के अर्थय, अनिवचनीय। २ समन्वये का
चतुर्थे नप,

'भावतरणएहि ॥ नियएहि दोहि समयमाईहि।
वयणवितेसाईरि दब्बमवत्तय पडई' (सम्म
३६)।

अवत्तय न [अव्यक्तिक] १ एक वैनाभास
मत, निहृप्रचलित एक मत। २ वि. दत्त
मत का अनुयायी (आ ७)।

अवत्तय न [अवस्थान्तर] जुती दशा, निज
भक्त्या (सुर ३, २०६)।

अवत्तय वि [अपार्थक्य] १ निरर्थक, व्यर्थ।

२ सम्यक्त धर्मात्मा (सूत्र वगेह) (विदे)।

अवत्तय वि [अवष्टब्ध] भवतम्भन-प्राप्त,
निमनी सहारा मिला हो वह (छाया १, २८)।

अवत्तय वि [अपार्थक्य] निरर्थक (विदे ६६६
टी)।

अवत्तरा औ [दे] पाद-प्रहार, लात मारना
(दे १, २२)।

अवत्तरा औ [अवत्तरा] दशा, भवस्थिति (आ
८, कुमा)।

अवत्तराण न [अवत्तराण] भवस्थिति (आ ४,
१; स ६२७, महा. सुर १, २)।

अवत्तराण सव [अव + स्थापय] १ स्तिर
करना, ठहराना। २ व्यवस्थित करना। हंक.

अवत्तराविहुं अवत्तरावइहुं (शौ) (पि
५७३; नाट)।

अवत्तराविद् (शौ) वि [अवत्तरापित]।

भवस्थित किया हुआ (नाट)।

अवत्तरिय देवो अवत्तरिय (महा. स २७४)।

अवत्तरिय वि [अवत्तरित] फैलाया हुआ,
प्रसारित (छाया १, ८)।

अवत्तु न [अवत्तु] १ धमाव, भ्रष्टत्व (भवि,
भावम)। २ वि. निरर्थक, निष्फल (पएह १,
२)।

अवत्त देवो अवत्तंअ। सक. भवत्तयिय
(वेय ४८१)।

अवद्ग देवो अवयग (सुम २, २, ५)।

अवदल वि [अपदल] १ नि.सार, सार-
रहित। २ कथा, भ्रष्टत्व (आ ४, ४)।

अवदहण न [अवदहण] दग्धन, गरम होहो
के बोरा भादि ने चर्न (फोडे भादि) पर
दापना (छाया १, ४)।

अवदाण न [अवदान] शुद्ध कर्म (ती १५)।

अवदाय वि [अवदात] १ पवित्र, निर्मल,
'दियणकरावदाय भत्त वेहितु बसुणुणा सम्म'
(सुपा ४८१)। २ श्वेत, सफेद (पएह १,
४; पाप)।

अवदाय न [अपदाय] १ छोटी सिडनी।

२ गुप्त शिर (उप ६६१)।

अवदाल सव [अ + दल] सौलता।

भवदानेइ (भीप)। संह. अरदातेसा (भीप)।

अरदालिय वि [अरदालिय] विकसित, वि-
म्भित, 'भवदालियपुठ्ठियवणे' (भीप; पएह
१, ४; उपा)।

अरदिसा औ [अपादिक] भ्रान्त दिशा
(स ६२६)।

अवदेस देवो अयस (भवि ७६)।

अवहार } देवो अवहार (छाया १, २;
अवहार } प्राप्त) ।

अवहाहणा श्री. देवो अवदहण (विपा १, २) ।

अवदुस्त न [दे] उल्लसत आदि घर वा सामान्य उपकरण, गुजराती मे जिमको 'राच-रचिउ' बहते है (दे १, २०) ।

अवर्द्धस पुं [अवर्धस] विनाश (डा ४, ४) ।

अवर्धसि वि [अवर्धसिन्] विनाशवाचक (उत्त ४, ७) ।

अवधार मन् [अध + धारय्] नियम करता । इ. अवधारियन् (पंचा १) ।

अवधारण [अवधारण] निश्चय, निर्णय (था ३०) ।

अवधारणा श्री [अवधारणा] दीर्घाल तक याद रखने की शक्ति (सम्मत ११८) ।

अवधारिय वि [अवधारित] निश्चिन, निर्णोत (बहु) ।

अवधारियन् देवो अवधार ।

अवधाव सक [अप + धाव्] घोड़े दौडना । अवधावह (सण) । बहु. अवधावते (स २३२) ।

अवधिका श्री [दे] उपदेहिवा, जोमान (पण्ड १, १) ।

अवधीरि वि [अवधीरित] तिरस्कृत, अपमानित (बृह १, ४) ।

अवधुण } सक [अ + धू] १ परिचयाम
अवधुण } करना । २ अवज्ञा करना । संक.
अवधूणिअ, अवधूणिअ (नाल २३२, वेणी ११०) ।

अवधुण वि [अवधूत] १ अज्ञात, तिरस्कृत (मोप १८ मा. टी) । २ विनित (प्राव ४) ।

अवनिहय पु [अपनिद्रक] उजागर, निद्रा का अभाव (सुर ६, ८३) ।

अवन्न देवो अवण्ण = अन्न (अग, उव. श्लोप ३५१) ।

अवन्ना देवो अवण्णा (मोप ३८२ मा. सुर १६, १३१, गुना ३७२) ।

अवपंगुण } सक [दे] सोलना । अवपंगुणे
अवपंगुर } (सूत्र १, २, २, १३) । अव-
पङ्गे (सत ४, १, १८) ।

अवपङ्का श्री [अवपाङ्क्या] तापिका, तवी, छोटा तवा (पाया १, १ टी—पञ ४३) ।

अवपुट्ट वि [अवपुष्ट] जिमका हाथें निगा गया हो वह,

'जोए समित्तमसिण्णदिदाई
निसि समिवरावपुट्टाई' ।

नियमिवाहजलाई रोमंतिव,
तरणित्तन्याई (मुष्ठा ३) ।

अवपुसिय वि [दे] संचित, संयुक्त (दे १, ३६) ।

अवपूर वक् [अय + पूरय्] पूर्ण करता । वक्पूरति (स ७१२) ।

अवपेस्म मन् [अवप्र + स्म] मनलोचन करता । अवपेस्वह (उत्त १, १३) ।

अवप्पओम पुं [अवप्रयोग] उलटा प्रयोग, विरुद्ध धीर्वाच्यो वा नियम (बृह १) ।

अवप्फार पु [अवस्फार] विस्तार, फैलाव. 'ता विनिमिणा महोपुत्तिस्सिवात्फारपाएण' (स २८८) ।

अवयंथ पुं [अवयय्] वक्, वक्थन (गडड) ।

अवयद्ध वि [अवयद्ध] बंधा हुआ, नियमित (धर्म ३) ।

अवयाण वि [अपयाण] बाणरहित (गडड) ।

अवयुक्क सक [अय + युक्] १ जानना । २ समझना, 'जल्प तं युग्मस्ती रायं, पेक्खं नावयुक्कमे' (उत्त १८, १३) । बहु. अवयुक्कमाण (स ८५) । संक. अवयुक्कमेज्ज (स १६७) ।

अवयोह पुं [अवयोध] १ ज्ञान, बोध (सुपा १७) । २ विकास (गडड) । ३ जागरण (धर्म २) । ४ स्मरण, याद (आवा) ।

अवयोहय वि [अवयोधक] अवबोध-कारक, 'अवियक्कमलावबोहय, मोहमहात्तिमिस्सत्तरमर-सूर' (कान्ति) ।

अवयोहि पुं [अवयोधि] १ ज्ञान । २ नियम, निर्णय (आरू १, विसे ११५४) ।

अवभास सक [अय + भास] चमकना, प्रकाशित होना ।

अवभास पुं [अवभास] प्रकाश (सुज ३) ।

अवभास पु [अवभास] ज्ञान (धर्मसं १३३३) ।

अवभासण वि [अवभासन] प्रकाश-वर्त्त (सुज १, ४०) ।

अवभासय वि [अवभासक] प्रकाशत (विसे ३१७; २०००) ।

अवभासि वि [अवभासिन्] देदीप्यमान, प्रचम्पने वाला (गडड) ।

अवभासिय वि [अवभासित] प्रकाशित (जिने) ।

अवभासिय वि [अपभापित] भाव्यु, धर्मिष्ठान्त (बव १) ।

अयम देवो ओम (आवा)

अयमगा पुं [अपमार्ग] कुमार्ग, खराब रास्ता (कुमा) ।

अयमगा पुं [अपामार्ग] वृक्ष-विशेष, चिचडा, सटजीरा (दे १, ८) ।

अयमक्य पुं [अपमर्य] पकाल मृग, बिना बीत सरण (दे ६, ३; कुमा) ।

अयमज्ज सक [अय + मज्] पोछना, काटना, साफ करना । संक. अयमज्जिऊण (स ३४८) ।

अयमण्ण सक [अय + मन्] तिरस्कार करना । अवमण्णति (उवर १२०) ।

अयमह पुं [अयमई] मर्दन, विनाश (पण्ड १, २) ।

अयमहा वि [अयमईक] मर्दन करने वाला (छाया १, १६) ।

अयमन्न सक [अय + मन्] अन्नता करना, निरादर करना । अवमन्नह (महा) । बहु. अवमन्नत (सूत्र १, ३, ४) संक. अवमन्निऊण (महा) ।

अवमन्निय पुं वि [अवमत] अवज्ञात, अव-अवमय } गणित (सुर १९, १२७, महा, उव) ।

अवमाण पुं [अपमान] तिरस्कार (सुर १, २३५) ।

अवमाण पुं [अपमान] १ अवज्ञा, तिर-स्कार । २ परिमाण (डा ४, १) ।

अवमाण सक [अ + मानय्] अवगणना करना । अवमाणइ (अवि) ।

अवमाणण न [अवमानन] अनादर, अवज्ञा (पण्ड १, ५, श्लोप) ।

अवमाणण न [अपमानन] तिरस्कार, अप-मान (स १०) ।

अयमाणा खी [अयमानना] भवगणना (काल) ।

अयमाणि वि [अयमानिन्] भवज्ञा करने वाला (भूमि ६६) ।

अयमाणिय वि [अयमानित] तिरस्कृत (सि १०, ६६, सुपा १०६) ।

अयमाणिय वि [अयमानित] १ भवज्ञात, भवज्ञात (मुर २, १७६) । २ अप्रति, 'अयमाणियवेहना' (भग ११, ११) ।

अयमार पु [अपरमार] भयकर रोग विशेष, पागलपन (भाषा) ।

अयमारिय वि [अपरमारित, 'रिंक] भय-स्मार रोग वाला (भाषा) ।

अयमारुय पु [अयमारुत] नीचे चलता पवन (गड) ।

अयमिच्छु देवो अयमच्छु (प्राक्) ।

अयमिय वि [दे] जिसको भाव हो गया हो वह, प्रियत (बृह ३) ।

अयमुक्क वि [अयमुक्क] परित्यक्त (सि ५, ६६) ।

अयमेह वि [अयमेह] मेघ रहित (गड) ।

अयय देवो अयय = अयय (सूय १, ६, ११) ।

अयय न [अयय] कलन, पथ (पण १) ।

अयय वि [अयय] १ नीचा, अनुच (उत् ३) । २ अयय, हीन, अश्रेष्ठ (सूय १, १०) ।

३ प्रतिशूल (भग १, ६) ।

अययस पु [अययस] १ शिरोभूषण विशेष (कुमा, गा १७३) । २ कान का आभूषण (पाठ) ।

अययस सक [अययसय] भूषित करना । भवभसप्रति (सि १४२, ४६०) ।

अययकस सक [अय + ईक्ष] भवेष्टा करना, राह देवना । भवयवह (आया १, ६) । वह अययकसत, अययकरमाणा (आया १, ६, भग १०, २) ।

अययकस सक [अय + ईक्ष] १ देवना । २ पीछे से देवना । वह अययकसत (श्रौ १, ६८ भा) ।

अययकसा खी [अपेक्षा] भवेष्टा (आया १, ६) ।

अययमा न [दे] भक्त, भवसान (भग १, १) ।

अययच्छ सक [अय + गम्] नाचना । भव-यच्छद (स ११३) । सक. अययच्छिय (स २१०) ।

अययच्छ भव [हृ] देवना । भवयच्छद (ह ४, १८१) । वह. अययच्छत (कुमा) । अययच्छिय वि [हृ] देवा हुमा (आया १, ८) ।

अययच्छिय वि [दे] प्रसारित, 'कु कारयव-रुणिगुणियमययच्छियमयगरमहा य' (स ११३) ।

अययच्छ सक [हृ] देवना । भवयच्छद (ह ४, १८१) । सक. अययच्छिय (कुमा) ।

अययच्छि ओ [अययच्छि] सव्यकरण, चलता करना (भाषा) ।

अययच्छि वि [अययच्छि] भवस्थिति करने वाला, स्थिर रहन वाला (भाषा) ।

अययच्छि ओ [अययच्छि] शक्यपण (भाषा) ।

अययच्छि वि [दे] युद्ध में पकड़ा हुआ (दे १, ४६) ।

अययण न [अययण] कुलित वचन, दूषित भाषा (ठा ६) ।

अययण सक [अय + वृ] १ नीचे उतरना । २ जन ग्रहण करना । भवयच्छ (ह १ १७२) । वह अययणत, अययणमाणा (पठम ८२, ६३ सुपा १८१) । सक. अययणित (प्राक्) ।

अययणिय पु [दे] वियोग, विरह (दे १, ३६) ।

अययणिय वि [अययण] १ जिसका भयकर किया गया हो वह । २ न, भयवार, भवित-करण 'वा हेऊ तुह मणये तुह भवयणिय मण कि न' (सुपा ४२१) ।

अययणिय वि [अययण] १ जमा हुआ । २ नीचे उतरा हुआ (मुर ६, १८६) ।

अययण पु [अययण] १ भय, विभाग । २ अनुमान प्रयोग का वाक्यांश (द्वय १, ६ १, २४२) ।

अययणिय वि [अययण] भवयव वाला (ठा १, विवे २३२०) ।

अययण देवो ओगाण (ताट, गड) ।

अययण न [दे] सींचने की कीटी, लगान (दे १, २४) ।

अययण पु [अययण] मरणा, दोष (उप १०३१ टी) ।

अययणिय वि [अययण] निर्मल (सिदि १०२७) ।

अययण पु [अययण] ग्रहितकरण (स ४३७ कुमा, प्राक् ६) ।

अययण पु [अययण] १ उतरना । २ देहा-न्तर धारण, जन्म-ग्रहण । ३ अनुप-रूप में, देवता का प्रकाशित होना 'भज । एव तुम देवावधारो विय भागई' (स ४१६, भवि) ।

४ सगति, योगना (विने १००८) । ५ प्रवेश (सिदि १०४३) ।

अययण पु [अययण] समावेश (पव ८६) ।

अययण पु [दे] माध-गुणिका का एक उदक, जिसमें इक्षु से दहन भादि किया जाता है (दे १, ४२) ।

अययण न [अययण] उतारना (सिदि १०४४) ।

अययण देवो अययण (स ६६०) ।

अययणिय वि [अययण] भयकर करने वाला (स १७६, विवे ७६) ।

अययणिय वि [अययण] चलायमान किया हुआ (स ४२) ।

अययण सक [अययण] भालिगन करना । भवयणित (ह ४, १६०) । वह अययणियसिजमाणा (भौव) । सक. अययणिय (आया १, २) ।

अययण सक [अय + काश्] प्रवट करना । सक. अययणिय (तड) ।

अययण देवो अययण (गड, कुमा) ।

अययण पु [अययण] भालिगन (भौव २४४ भा) ।

अययण न [अययण] भालिगन (बृह १) ।

अययणिय वि [अययण] भालिगन करवाया हुआ (विपा १, ४) ।

अययणिय वि [अययण] भालिगन (कुमा, पाठ) ।

अययणिय खी [दे] नासा-रज्जु, नाक में डाली जाती दोर (दे १, ४६) ।

अययणिय वि [अययण] भय, हृषण, तद्विष (श्रा २७ महा) । 'हा म [य] भयया (पवा ८) ।

अवर स [अवर] १ पिछला बाल या देश (महा) । २ पिछले बाल या देश में रहा हुआ, पायाव्य (सम १३, महा) । ३ पश्चिम दिशा में स्थित, 'अवरहारेण' (स ६४६) । 'कक्रा श्री [कक्रा] १ घातकी-खंड के भरतसेय की एवं राजधानी । २ इस नाम के 'आतमर्म-यथा' मूल का एक प्रत्यय (आमा १, १६) । '०ह पु [ह] १ दिन का प्रतिम प्रहर (ठा ४, ५) । २ दिन का उत्तरी भाग (प्राप् १, गा २६६, प्राप् ५४) । 'दाहिण पु [दक्षिण] १ नैऋत्य कोण । २ वि नैऋत्य कोण में स्थित (पचा २) । 'दाहिणा श्री [दक्षिणा] पश्चिम मोर दक्षिण दिशा के बीच की दिशा, नैऋत कोण (वव ७) । 'फाणु श्री [फाणि] एही, अग्नी वा पिछला भाग (वव ८) । 'राय पु [रान] देखो अवरत्त=अपरत्त (प्राचा) । 'विदेह पु [विदेह] महाविदेह नामक वर्ष का पश्चिम भाग (ठा २, ३, पठि) । 'विदेहकूट न [विदेहकूट] पर्वत विशेष का शिखर विशेष (ज ४) । देखो अपर ।

अवर स [अवर] ऊपर देखो (महा आमा १, १६ वव ७, पचा २) ।

अवरमुह वि [अपराध मुह] १ समुह । २ तलार (सि २६६) ।

अवरच्छ देखो अपरच्छ (पह १, ३) ।

अवरज पु [व] १ गत विन । २ आगामी दिन । ३ भ्रातृ, सुबह (दे १, ५६) ।

अवरउम्र सक [अव + राध] १ अवराय करना, गुनाह करना । २ नष्ट होना । अवर २००६ (महा जव) । अरु अवरउमंत (राज) ।

अवरस पु [अपररात्र, अवररात्र] रात्रि का पिछला भाग (मग, आमा १, १) ।

अवरत्त वि [अपरत्त] १ चिरन, व्यास (वव पु ३०८) । २ नाराज, नाकुश (मुद्रा २६७) ।

अवरत्तेअ पु [दे] पयाताप अनुताप (दे अवरत्तेअ) १, ४५, पाम) ।

अवरदक्षिणा देखो अवरदाहिणा (वव १०६) ।

अवरद न [अपराध] १ अपराध, गुनाह (सुर २, १२१) । २ वि जिसने अपराध किया हो

वह, अपराधी, 'सगडे दारद ममं अतेउरति अवरद' (विपा १, ४, स २८) । ३ विना-शित, नष्ट किया हुआ (आमा १, १) ।

अवरद्विग वि [अपराधिक] १ अपराधी, दोषी । २ पु. सूना स्फोट । ३ सर्पादि-दश (विड १४) ।

अवरद्विग पु [अपराधिक] १ सर्व-अवरद्विग } दश । २ धृन्मो, छोटा फोका (भाप ३४१, विड) ।

अवरा श्री [अपरा] विदेहवर्ष की एक नगरी (ठा २, ३) ।

अवरा श्री [अपरा] पश्चिम दिशा (वव १०६) । अराइया देखो अपराइया (पजम २४, १, ज ४, ठा २, ३) ।

अवराइस देखो अणगइस (पड, हे ४, ४१३) ।

अवराजिय देखो अपराइय (हव) ।

अराजिया देखो अपराइया (इक) ।

अवराह पु [अपराध] १ अपराध, गुनाह (प्राव १) । २ मणिष्ट, दुर्गह, 'अवराहेनु गुलेनु य निमित्तमेत परो होइ' (प्राप् १२२) ।

अवराह पु [दे] कटी, कमर (दे १, २८) ।

अवराहिय न [अपराधित] १ अपराध, गुनाह, 'अपड अणो महल कससि अवरहिय जाय' (पजम ६४, २५ स ३२०) । २ अप-कार अणिष्ट अहित,

'सिरि कडिमा क्षति प्यनई, पुणु बलद मोडति ।

तोवि पहरदुम सउणह, अवरहिट न करति' (हे ४, ५५) ।

अवराहिल वि [अपराधिन] अपराधी (प्राक् ५०) ।

अवराहुत्त वि [अपराधिसुत्त] १ पराड-सुख । २ पश्चिम दिशा की तरफ मुंह किया हुआ (भाव ४) ।

अवरि } अवरि } अवरि } ऊपर (दे १, २६, प्राप्) ।

अवरिक वि [दे] अवरिकरहित, अवरिकर (दे १, २०) ।

अवरिगलिअ वि [अपरिगलित] गूली, गल्लूर (सि ११, ८८) ।

अवरिज वि [दे] अद्वितीय, असाधारण (दे १, ३६, पड) ।

अवरिल वि [अपरि] उत्तरोप वज्र, चारद (हे २, १६६, कुमा, गजड, प्राप्) ।

अवरिल वि [अपरीय] वाचाव्य, पश्चिम दिशा सकन्धी, 'तो एं तुमं अवरिल वणसंड गच्छे-ज्जाह' (आमा १, १) ।

अवरिलदडपुसण न [दे] १ भवोक्ति, भजस । २ असाव्य, मूड । ३ दान (दे १, ६०) ।

अवरंड सग [दे] आनिज्जन करना । अवरंड (दे १ ११, सुर ३, १८२, भवि) । अमं. अवर-रुडिअ (दे १, ११) । सड अवरंडिअ (दे १, ११, स ४२१) ।

अवरंडण न [दे] आनिज्जन (भवि, पाम, अवरंडिअ) दे १, ११) ।

अवरुत्तर पु [अपरोत्तर] १ वायव्य कोण । २ वि. वायव्य कोण में स्थित (मग) ।

अवरुत्तरा श्री [अपरोत्तरा] वायव्य दिशा, पश्चिम भीर उत्तर के बीच की दिशा (वव ७) ।

अवरुद्ध वि [अवरुद्ध] घिरा हुआ (विने २६७५) ।

अवरप्पर देखो अवरोप्पर (कुमा, रंभा) । अवरुद्ध सक [अव + रहु] गोचर उतरना । अवरुद्धि (नै १४) ।

अवरुय देखो अणुवज (प्राक् ८५) ।

अवरोप्पर } वि [परप्पर] आपस में (ह ४, अवरोप्पर } ४०६, गजड, सुपा २२, सुर ३, ७६, पड) ।

अवरोह पु [अरोध] १ अत पुर जानान जाना (सुपा ६३) । २ अत पुर में रहनेवाली श्री (विपा १, ५) । ३ नगर की सैन्य से घेरना (निज ८) । ४ संक्षेप (विने १५५५) । ५ प्रतिकष, कह सम्बलितवावरोहोति' (विने १७२१) । 'जुवइ श्री [जुवनि] अत पुर की श्री (पि १८७) ।

अवरोह पु [अवरोह] उगनेवाला (तृण भादि) (गजड) ।

अवरोह पु [दे] कटि, कमर (दे १, २८) । अवलय सक [अव + लय्] १ सहारा लेना, आश्रय लेना । २ लटकना । अवलंबइ (कम) । अवलंबइ (महा) । अरु अवलय-माण (सम्म ५५) । कवई अवलयिजत (पि ३६७) । सक अवलेविजण, अवल-

बिय (भाव ५, आमा २, १, ६) । हेह

अलंयित्तए (दना ७)। क. अलंयणिय, अवल्यविअन् (वे १०, २६)।

अलंय { पुं [अलंय्य, °क] १ सहाय, अलंयया } प्राथय (आ १६) १ ३ वि. लट-
वनेवाला (सौप, वव ४)। ३ सहारा लेनेवाला
(पच ८०)।

अलंयण न [अलंयन्] १ लटवना। २
प्राथय, सहारा (ठा ५, २, राय)।

अलंयणया की [अलंयणयता] भवग्रह-
ज्ञान (एवि १७५)।

अलंयि वि [अलंयिन्] भवसम्बन्ध
कलेवाला (गड, विवे २२२६)।

अलंयिय वि [अलंयिन] १ लटवा
हुमा। २ भाषित (एमा १, १)।

अलंयिर देखी अलंयि (गा ३६७)।

अलंयणन न [अलंयण] खराब लक्षण,
दुष्टी प्राप्त (मवि)।

अलंयग वि [अलंयन्] १ ग्राह्य। २ लगा
हुमा, लगान (महा)।

अलंयत वि [अलंयित] भगदुष्ट, छिपाया
हुमा (म २११)।

अलंयद वि [अलंयद] धनादर से प्राप्त
(ठा ६)।

अलंयि की [अलंयि] भ्राता (मा)।

अलंय न [दि] घर, मकान (दे १, २३)।

अलंय स [अप + लप्] १ भस्म
कीलना। २ सत्य की छिपाना। वक्रह्.

अलंयिज्जत (मुषा १२२)। क. अवल्य-
णिज्ज (मुषा ३१५)।

अलंयय पु [अलंयय] भगद्व (निबू १)।

अलंयि न [दि] भस्म, भूत (दे १, २२)।

अलंयि पु [अलंयिन्] जीव या पुराणी से
व्याप्त स्थान विशेष (ठा २, ४)।

अलंयिज्ज अ वि [दि] भ्राता, भ्रातावित
(दे ६, ७८)।

अलंयि वि [अलंयि] व्याप्त (मुषा १,
१३, १४)।

अलंयि वि [अलंयि] १ निष्ठ। २ गर्वित
‘भलसो सदोवित्तो, भलंयण तण्यो

भहपमाई।

एवं ठिपोवि मयद, मयाण सुट्ठिं भो मिं

(उव)।

अलंयु देखो अलंय (भाचा २, ३, १, ६)।

अलंयु आ श्री [दि] शीघ्र, सुखा (दे १, ३६)।

अलंयु वि [अलंयु] लोप-प्राप्त (नाट)।

अलंयु पु [अलंयु] १ शृङ्गार, गर्व।

अलंयु २ लेप, लेपन (पात्र, महा, नाट)।

३ श्रवण, भनादर (गड)।

अलंयु पु [अलंयु] चटनी (वजा १०४)।

अलंयुणिश्या की [अलंयुनिश्या] १ बोल
वा क्षिपक (ठा ४, २)। २ वृत्ति भादि भावने

का एक उपकरण (निबू १)।

अलंयुहि { की [अलंयुहि, °का] १ बाध
अलंयुहि } या क्षिपक (वम्म १, २०)।

२ सेवा विशेष (पच ४)। ३ बाधक के भाटा

के साथ पकाया हुमा दूध (पमा ३२)।

अलंयु स [अलंयु] देखना, मन-
साधन करना। वक्रह्. अलंयुअत, अलंयुए-

माण (रणय २६, एमा १, १) सङ्. अव-
लोहूण (काव)। इ अलंयुणीय (मुषा

७०)।

अलंयु पु [अलंयु] भवलोचन, दर्शन

अलंयु { उव ६८६ टी, मुषा ६, स २७६,

गड }।

अलंयुण न [अलंयुण] १ स्थान, विलो-
चन (गड)। २ स्थान विशेष, ‘तुष भव-

लोचण केव’ (पच ८०, ४)। ३ शिखर-विशेष

(वी ४)।

अलंयुणी की [अलंयुणी] देखी विशेष

(सम्मत १६०)।

अलंयु पु [अलंयु] छिपाना, लोप करना

(एह १, २)।

अलंयुणी की [अलंयुणी] विना विशेष

(पच ७, १३६)।

अलंयु वि [अलंयु] लोहुरित (गड)।

अलंयु न [दि] अवल्यक नौका खेपने का

उपकरण-विशेष (भाचा २, ३, १)।

अलंयु पु [दि. अलंयु] भस्मयक्यन,

अलंयुय { भस्माय (दे १, ३८)।

अलंयु न [अलंयु] संस्था-विशेष, ‘भवाङ्ग’ को

चौरागी साध से गुणने पर जो संस्था लब्ध

हो वह (ठा २, ४)।

अलंयु न [अलंयु] संस्था-विशेष, ‘भवाङ्ग’

को चौरागी साध से गुणने पर जो संस्था

लब्ध हो वह (ठा २, ४)।

अलंयु वि [अलंयु] लोचन (गड)।

अलंयु की [अलंयु] तापिका, छोटा

तवा (मग ११, ११)।

अलंयु पु [अलंयु] मोन, वृत्ति (भावम)।

अलंयु न [अलंयु] १ भस्मरण। २

कर्मपरायणों की दीर्घ स्थिति को छोटी

करना (पच ५)।

अलंयुणी की [अलंयुणी] ऊपर देखो (पच

५)।

अलंयु वि [अलंयु] १ बाध लोटा

हुमा। २ भस्म (दे १, ५२)।

अलंयु पु [अलंयु] कोठरी, छोटा घर

(मुषा ८१)।

अलंयु स [अलंयु] बाहर कंकना, बूट

हयना। कर्ष. भ उग्मह (पचा १६, ६)।

अलंयु अ वि [अलंयु] भवाङ्ग-संबन्धी

(धम्म १०८)।

अलंयु वि [अलंयु] भवाङ्गवाला

(नाट)।

अलंयु पु [अलंयु] १ विशेष नियम, भव-

वाद (उव ७८१)। २ निष्ठा, भवार्थ-वाद

(एह २, २)। ३ अनुज्ञा, समति (निबू १)।

४ निश्चय, निर्णय वाली हकीकत (निबू ५)।

अलंयु स [अलंयु] भवाङ्ग देना,

जगह देना। भववाङ्ग (मात्र)।

अलंयु स [अलंयु] भवाङ्ग देना,

जगह देना। भववाङ्ग (मात्र)।

अलंयु पु [अलंयु] गौरालक के एक

मक का नाम (मग ८, ५)।

अलंयु पु [अलंयु] निष्पन्न, दधाना

(गड)।

अलंयु न [अलंयु] ऊपर देखो

(गड)।

अलंयु वि [अलंयु] १ भस्माधीन, पराधीन

(मुषा १, ३, १)। २ स्वतन्त्र, स्वाधीन (दे

१, १)।

अलंयु वि [अलंयु] भस्म, भस्मिष्ठ (धम्म

७००)।

अलंयु स [अलंयु] भस्म, भस्म,

निश्चय (दे ४, ५२७)।

अजसउण न [अपशकुन] घनिट-सूचन
निमित्त, खराब शकुन (घोष ८१ भा, गा
२६१, सुपा ३६३)।

अवसकि वि [अपशङ्किन्] अपसरण-
कर्ता (सूच १ १२ ४)।

अजसक सन [अज + पङ्क] पीछे हट
जाना। प्रसङ्गेजा (भाषा)।

अवसङ्गण न [अव + ङण] अपसरण, पीछे
हटना (पचा १३)।

अवसकि वि [अपसङ्किन्] पीछे हटने
वाला (भाषा)।

अवसण्ण वि [दे] भटा हुआ टपटा हुआ
(पङ् १)।

अजसण्ण वि [अजसण] निमग्न, 'नामो
जहा पकजनावमण्णो' (उत्त १३, ३०)।

अजसद् पु [अपशङ्] १ अशुद्ध राख
(सुर १६, २४८)। २ खराब बचन (हे १,
१७२)। ३ भगवति अपमय (कुमा)।

अजसप्प षक [अज + सप्] पीछे हटना।
२ निवृत्त होना। ३ उतरना। अवसत्पति
(वि १७३)।

अजसपण न [अजसर्पण] अपसरण, अप
वर्तन (पउम ५६, ७८)।

अजसपि वि [अजसपिन्] १ पीछे हटने-
वाला। २ निवृत्त होना (सूच १, २,
२)।

अजसपिय वि [अजसर्पित] १ बखरत।
२ निवृत्त। ३ बखतीला (भवि)।

अवसदिपिणी देखो ओसदिपिणी (भग ३, २,
भवि)।

अजसमिआ (दे) देखो अजसमी (दे १
३७)।

अजसय वि [अपशङ्] नीच अवय (डा ४
४)।

अजसर षक [अज + स] १ पीछे हटना।
२ निवृत्त होना। अवसरद् (हे १, १७२)।
३ अजसरियव्य (उज १४६ टी)।

अजसर षक [अज + स] भाग्य करना।
सह 'भोसरणम अजसरिचो' (चउ १८)।

अजसर पु [अजसय] १ कान, समय
(पाभ)। २ प्रस्ताव, मौका (प्रागु ५७,
महा)।

अजसरण देखो ओसरण (पव ६२)।

अवसरण न [अपसरण] १ पीछे हटना।
२ निवृत्ति (गउड)।

अजसरिय वि [आजसरिक] सामयिक, सम-
योग्य (सण)।

अजसरीर पु [अपशरीर] रोष, व्याधि,
'संभावमरीरहो' (उप ५६७ टी)।

अजसस वि [अपसस] पराधीन, पर-
तन्त्र (हाया १, १६)।

अजसउ न [अपसउय] वाम पारने (एदि
१५६)।

अजसउय न [अपसउयक] शरीर का
बहिर्भाग (उप पु २०८)।

अजसह पु [आजसह] घर, मकान (उत्त
३२)।

अजसह न [दे] १ उत्पन्न। २ नियम (दे
१, ५८)।

अजसाइअ वि [अप्रसादित] प्रमत्त नही
रिया हुआ (से १०, ६१)।

अजसाण न [अजसान] १ नाश। २ शत
भाग (गउड पि ३६६)।

अजसाय पु [अजसाय] हिम, बर्फ (गउड)।

अजसारिअ वि [अप्रसारित] न फैला हुआ,
अविस्तारित (से, १)।

अजसारिअ वि [अपसारित] १ भाइ
बीचा हुआ (से १, १)। २ दूर बिगा हुआ,
हटाय़ा हुआ (सुपा २३२)।

अजसावण न [अजसावण] १ कजी (बुह
१)। २ भात बगैरह का पानी (सूच
५६)।

अजसावणिया की [अजसावणिका]
सुलाम्बानी विद्या (ममवि १२४)।

अजसिअ वि [अपसुत्त] पीछे हट्टा हुआ
(से १३ ६३)।

अजसिअ वि [अजसित] १ समाप्त, परि-
पूर्ण। २ प्राप्त, जाना हुआ (विसे २४८२)।

अजसिअ षक [अज + सद्] हारना
परजित होना एकलवि नावसिअद् (विसे
२४८४)।

अजसित वि [अजसित्] बीचा हुआ (रमा
३१)।

अजसिद् (सो) वि [अजसित] समाप्त, पूर्ण
(ममि १३३, प्रति १०६)।

अजसिद्धं पु [अजसिद्धान्त] दूषित मिर्दाव
(विसे २४५०, ६)।

अजसीय धा [अज + सद्] क्लेश पाना,
खिन्न होना। नक अजसीयत (पउम ३३,
१३१)।

अजसुअ धव [उद् + वा] सुखना शुष्क
होना। धवसुअ (पङ् १)।

अजसेअ पु [अजसेक] निबन्ध, छिद्रनाथ
(ममि २१०)।

अजसेअ वि [अजसेय] जानने योग्य (विसे
२६७१)।

अजसे (धव) देखो अजस (हे ४, ४२७)।

अजसेण देखो अजस, 'धवसेण कुजियवा'
(पउम १०२, २०१)।

अजसेस पु [अजसेय] १ धवराट्ट धाकी
(सुपा ७७)। २ वि. सब, सर्व (उज २११
टी)।

अजसेसिअ वि [अजसेयित] १ समाप्त
रिया हुआ पार पहुँचाया हुआ (से ४,
४७)। २ धारी का, धवराट्ट (भग)।

अजसेह षक [गम्] जाना। धवसेह (हे
४, १६२)। धवसेहति (कुमा)।

अजसेह षक [नश] भागना, पनायन
करना। धवसेह (हे ४, १७८, कुमा)।

अजसेइया की [अजसेयिका] निद्रा (सुपा
६०६)।

अजसेग वि [अजसेग] १ शोभ-रहित।
२ देव विगेण (वीव)।

अजसेण वि [अजसेण] बोझ लाल
(गउड)।

अजसेयणी की [अजसेयणी] निद्रा (सुपा
४७)।

अजसेय वि [अजसेय] जल्दी, निपट (भावम,
भाव ४)। 'कम्म न [कम्म] धावरयक
किया (भाऊ १)। 'कराणज वि [करणीय]
धावरय करने लायन कम्म, सामयिक धारा।
'किरिया की [किरिया] धावरयक अनुदान
(भाऊ १)। 'किद वि [किद] धावरयक
कार्य (दे)।

अवसत् भ [अवसयम्] जरूर, निश्चय (पि ३१५)।

अवसत्पिणी देखो अवसत्पिणी (संवाद ४८)।

अवसत्साथ देखो अवसाय (विक्र)।

अवसत्सिय वि [अवाश्रित] आश्रित, अवलम्बन (अनु ६)।

अवह सक [रप्] निर्माण करना, बनाना। अवह (हे ४, ६४)।

अवह स [उभय] दोनों, युगत (हे २, १३८)।

अवह वि [अवह] न बहुत दुःख, जो बालू नहीं है, बर, 'शोसत्पिणीइ भवहो इमाइ जायो तयो य निक्षिपहो (सर्मेवि १५१)।

अवहइ जो [अवहति] विनाश (विते २०-१९)।

अवहइ वि [दे] अभिमानी, गर्वित (दे १, २३)।

अवहइ देखो अवह = अप + ह।

अवहइ वि [अपहृत] ले लिया गया, छोना हुआ (सुपा २६६, पएह १, ३)।

अवहइ वि [अपहृत] ऊपर देखो (प्राक)।

अवहइ न [दे] मुसल (दे १, ३२)।

अवहण्य पु [दे] कलल, भोजन, उल्लस (दे १, २६)।

अवहत्य पु [अपहस्त] मारने के लिए या निवारण वाहर करने के लिए ऊँचा किया हुआ हाथ, 'भवहत्येए हमो कुमरो' (महा)।

अवहत्य सक [अपहस्त] १ हाथ को ऊँचा करना। २ त्याग करना, छोड़ देना। अवहत्येइ (महा)। सक. अवहत्येऊण, अवहत्येऊण (पि ५८६; महा)।

अवहत्यरा छी [दे] सात मारना, पाद-अहार (दे १, २२)।

अवहत्यिय वि [अपहस्तित] परित्यक्त, दूर किया हुआ (महा, भाग ५२४, गा ३५३, गुपा १६३; एदि)।

अवहय वि [अपहृत] गट, नाश प्राप्त (सि १४, २८)।

अवहय वि [अपातक] महिष (शोप ७५०)।

अवहर सक [गम्] जाना। अवहरइ (हे ४, १६२)।

अवहर सक [नम्] भाग जाना, पलायन करना। अवहरइ (हे ४, १७८; कुमा)।

अवहर सक [अप + ह] १ छीन लेना, अपहरण करना। २ भागाना करना, भाग देना। अवहरइ (महा) अवहरेजा (उवा)।

नवक. अवहरिज्जत, अवहीरमाण (मुर ३, १४२, भाग २५, ४; लाया १, १८)।

सक. अवहरिऊण, अवहइ (महा, भा. भा.)।

अवहर सक [अप + ह] परित्याग करना। सक. अवहइ (सुपा १, ४, १, १७)।

अवहर वि [अपहर] अपहारक, छीन लेने वाला (गा १५६)।

अवहरण न [अपहरण] छीन लेना (कुमा, सुपा २५०)।

अवहरिअ वि [गत] गया हुआ (कुमा)।

अवहरिअ वि [अपहृत] छीन लिया हुआ (मुर ३, १४१; कुमा ६)।

अवहस सक [अ + हस्] चुपचाप करना, तिरस्कार करना, उवाहस करना। अवहसइ (लाया १, १८)।

अवहसिय वि [अप, अवहसित] तिरस्कृत, उपहसित (लाया १, ८, मुर १२, ६७)।

अवहाउ सक [दे] बाकी करना। अवहअभि (दे १, ४०टी)।

अवहाडिअ वि [दे] उत्कृष्ट, जिस पर प्राचीन किया गया हो वह (दे १, ४७)।

अवहाण न [अवधान] १ ब्याल, उपयोग (मुर १०, ७१; कुमा)। २ ज्ञान, जानना (वते ८२)।

अवहाय पु [दे] विरह, वियोग (दे १, ३६)।

अवहाय भ [अपहाय] छोड़ कर, त्याग कर (मग १६)।

अवहार सक [अ + धार] निर्णय करना, नियम करना। नम. अवहारिज्जइ (स १६६)। हे. अवहारिरेउ (भास १६)। अवहार (मग) देखो अवहर = अप + ह।

अवहार (मग)। सक. अवहारि (मग)।

अवहार पु [अपहार] १ अपहरण (पएह १, ३; गुपा २७५)। २ दूर करना, परित्याग

(लाया १, ६)। ३ चोरी (मुपा ४४६)। ४ वाहर करना, निकालना (निवृ ७)। ५ भागाना (मग २५, ४)। ६ नाश, विनाश (मुर ७, १२४)।

अवहार पु [अधार] निश्चय, निर्णय। 'व वि [वत्] निश्चय वाला (ठा १०)।

अवहार पु [अधार्य] द्रुव राशि, गणित-प्रसिद्ध राशि विशेष (गुज १०, ६ टी)।

अवहारण न [अवधारण] निश्चय, निर्णय (सि ११, १५; स १६६)।

अवहारय वि [अपहारक] छीननेवाला, अपहरण करनेवाला (मुर ११, १२)।

अवहारि वि [अपहारि] अपहारक, छीननेवाला (मुपा ५०३)।

अवहारिय वि [अवधारित] निश्चित (स ५७६, पजम २३, ६; मुपा ३३१)।

अवहाय सक [क्रप्] दया करना, हृषा करना। अवहावेइ (पह. हे ४, १५१)।

अवहावसु (कुमा)।

अवहाविअ वि [अवधारित] गमन के लिए प्रेरित (सिदि ४३४)।

अवहास पु [अवभास] प्रकाश, तेज (गवड, प्राप्)।

अवहासिणी जो [अवहासिनी] नासारगुड, 'मोतव्ये जोतमगगहम्मि अवहासिणी सुहा' (गा ६६४)।

अवहासिय वि [अवभासित] प्रकाशित (मुपा १४२)।

अवहि देखो ओहि (मुपा ८६, ५७८, विते ८२, ७३७)।

अवहिइ वि [दे] दक्षित, अभिमानी, गर्वित (पह)।

अवहिइ न [दे] मैथुन, संयोग (मुर १, ६, १०)।

अवहिय वि [अपहृत] छीन लिया हुआ (पजम २०, ६६, मुर ११, २२, मुपा ४१३)।

अवहिय वि [अपहृत] महित (वंड)।

अवहिय वि [अपहृत] नियमित (विते २६३३)।

अवहिय न [अपहृत] अपहारण (वव १)।

अवहिय वि [अवहित] सावधान, स्थानबाना (प्रा. महा, लाया १, २; पजम १०, ६५)।

सुपा ४२३) । भण वि [भनस्] उलीन,
एमाइचित्त (सुपा ६) ।

अवहिय वि [रचित] निर्मित, बनाया हुआ
(कुमा) ।

अवहीन वि [अवहीन] हीन, उतरता, नम
दरजा वाला (नाट, वि १२०) ।

अवहीय वि [अपयोक्] नित्य बुद्धिनाला,
दुहुंदि (पणह १, २) ।

अवहीर सक [अव + धीरय्] भवज्ञा
करना, तिरस्कार करना । भवहीरेइ (महा) ।
बहू. अवहीरंत (सुपा ३१२) । कवट्ट.
अवहीरिज्जंत (सुपा ३७६) । बहू. अप-
हीरिज्जण (महा) ।

अवहीरण न [अवधीरण] प्रवहेलना, तिर-
स्कार (गा १४६, धमि ६८, गउड) ।

अवहीरणा की [अवधीरणा] ऊपर देखो (वि
१३, १६, वेणी १८) ।

अवहीरमाण देखो अनहर = मप + ह ।
अवहीरिअ वि [अवधीरित] भवज्ञात, तिर-
स्कार (वि ११, ७, गउड) ।

अवहील देखो अवहीर । अवहीलह (सण) ।

अवहीला की [अवहेला] भगवद (तिरि
१७६) ।

अवहूय वि [अवधूत] मार भगाया हुआ
(संवीध ५२) ।

अवहेअ वि [दे] दया योग्य, कृपा-भाज (वि १,
२२) ।

अवहेअ सक [मुच] छोड़ना, त्याग करना ।
अवहेअह (वि ४, ६१) । सक. अवहेअहिअ
(कुमा) ।

अवहेअड } पुन [अवहेअड] काथे सिर का
अवहेअड } ईद, भाषा सीसी रोग (उत्तनि ३) ।

अवहेअडिय वि [दे] नीचे की तरफ मोड़ा हुआ,
प्रयोगेति (उत्त २१) ।

अवहेरी की [अवहेला] अवगणना, तिर-
स्कार (उप २६०, ५६७ टी. नवि,
सुपा २६१, महा) ।

अवहेअल वि [अवहेल] तिरस्कारक (सुपा
१०६) ।

अवहेलण वि [अवहेलन] उपेक्षा करने वाला
(सुम २, ६, ५३) ।

अवधोअ पुं [दे] विपद, विषय (पड) ।

अवधोअय देखो अवधोअड, 'सो बढो भवहोअ-
एण' (सुस २, २५) ।

अवधोअमुद वि [उभयसुप] दोनों तरफ मुंह
बाला (प्राह ३०) ।

अवधोल सक [अव + होलय्] १ मूलना ।
२ सदेह करना । बहू. अवधोलन्त (छाया
१, ८) ।

अवाइ वि [अपायिन्] १ दु की । २ दोषी,
अपराधी, 'निमिषमन्त्राई होइ ब्रवाई य नेह-
लोएवि' (सुपा २७५) ।

अवाईण वि [अवाचीन] भयोमुख (छाया
१, १) ।

अवाईण वि [अवातीन] बापु स भनुपहृत
(छाया १, १) ।

अवाउह वि [अ-व्याधृत] किसी कार्य मे
न लगा हुआ (उप पु ३०२) ।

अवाउह वि [अप्राधृत] अनापेक्षित, नम,
दिग्भ्रमर (छाया १, १, छ ५, १) ।

अवाडिअ वि [दे] बखित, प्रवर्तित (पड) ।

अवाण देखो अपाण (पाम, विपा १, ६) ।

अवाय पु [अपाय] पानी का क्षामन (था
२३) ।

अवाय वि [अपाय] भाग्यरहित (था २३) ।

अवाय वि [अपाय] क्लेशरहित (था २३) ।

अवाय वि [अपाक] पापरहित (था २३) ।

अवाय पु [अवाय] प्राप्ति (था २३) ।

अवाय पु [अपाय] १ अन्तर्, अविष्ट (ठा १) ।
२ दोष, दोषण (सुर ४, १२०) । ३ अन्तर-
विशेष (ठा ४, ३) । ४ विनाश (धर्म १) ।

५ विषय, पार्ष्व (एरि) । ६ संशय-रहित
निश्चयार्थक ज्ञान विशेष (ठा ४, ४, छदि) ।

'दंसि वि [दंसिन्] प्राची अर्थों को
जाननेवाला (ठा ८, ४६) । 'विजय न
[विचय, विजय] ध्यान-विशेष (ठा ४, २) ।

अवाय पु [अवाय] संशय रहित निश्चयार्थक
ज्ञान-विशेष, गति ज्ञान का एक भेद (ठा ४,
४, छदि) ।

अवाय वि [अग्लान] अज्ञान, भ्रान्तरहित,
ताजा, 'अवायसंज्ञमंथिया' (प ३०२) ।

अवायाण न [अपादान] कारक-विशेष, स्था-
नान्तरिकरण (ठा ८, विरे २०६६) ।

अवार वि [अपार] पार-रहित, प्रगल्भ (मै
६८) ।

अवार पुं [दे] दूकान, हाट (दे १, १२) ।

अवारी की [दे] ऊपर देखो (दे १, १२) ।

अवालुआ की [दे] होठ का प्रांत भाग (दे
१, २८) ।

अवाव पु [अवाप] रतोई, पाक । 'कहा की
[कथा] रतोई सम्बन्धी बषा (ठा ४, २) ।

अवाव } (अप) देखो अवसें (पड) ।
अवासें }

अयाह पु [अवाह] देश-विशेष (धन) ।

अवाहा देखो अनाहा (मोप) ।

अवि म [अवि] निम्ननिहित धर्मों का सूचक
शब्दार्थ १ प्रत्य (वि ५, ४) । २ अवधारण,
निधय (भाषा, गा ५०२) । ३ समुच्चय (विरे
३५५१; भग १, ७) । ४ संभावना (विरे
३५४८; उत्त ३) । ५ विज्ञान (पाम) । ६-७
वाक्य के उपन्यास और पादपूति मे भी इनका
प्रयोग होता है (भाषा, पत्रम ८, १४६;
पड) ।

अवि पुं [अवि] १ प्रज । २ मेघ (विरे
१७७४) ।

अविअ वि [दे] उक्त, कथित (वि १, १०) ।

अविअ वि [अवित] रक्षित (दे ५, ३५) ।

अविअ म [अविच] विशेषण-सूचक शब्दार्थ
(पषा ७, २१) ।

अविअ म [अविच] समुच्चय-युक्तक शब्दार्थ
(सुर २, २४६; भग ३, २) ।

अविअ पु [अविअ] मेघ, मेढ (भाषा) ।

अविअ वि [अविन्] घना, मूले (सद्धि ४६) ।

अविअकतिय वि [अव्युत्क्रान्तिक] उत्पत्ति-
रहित (मग) ।

अविउसरण न [अवउत्सरण] प्रपरिचाय,
पाल मे रखना (मग) ।

अविकप वि [अविकप्प] निश्चल (पषा १८,
३५) ।

अविकरण न [अविकरण] गृहीत वस्तुओं को
मयास्थान न रखना (बहू ३) ।

अविकस देखो अविकस । अविकसइ (महा) ।
हेऊ. अविकसिअ (स ३०७) । क. अवि-
कसणिज्ज (विरे १७१६) ।
अविकसय वि [अपेत्तक] अपेक्षा करने वाला
(विरे १७१६) ।

अचिरमग न [अवेक्षण] अवलोकन, निरीक्षण (भव) ।

अचिरमग न [अपेक्षण] अपेक्षा, परवाह (विमे १७१६) ।

अचिरमग देवो अवेस्सा (कुमा) ।

अचिरमग वि [अपेक्षित] १ भवति ।
२ न. अपेक्षा, परवाह, नाविस्मय स्माए (भा १४) ।

अचिरमग वि [अवेक्षित] अवलोकित (मुपा ७२) ।

अचिरमग वि [अचिरमग] धन आदि विचार जनक वस्तुको का (पगो) (सूत्र २, २) ।

अचिरमग वि [अचिरमग] मनाताचित (वच १) ।

अचिरमग देवो अचिरमग (सुर ४ १८६) ।

अचिरमग वि [अचिरमग] १ विनल्प-रहित । २ न. कल्पना रहित प्रत्यय ज्ञान (धर्मसं ७४०) ।

अचिरमग वि [अचिरमग] मलरस, पूरण (उप २३१) ।

अचिरमग वि [अचिरमग] जिसका इमान न हो नको ऐसा, समाम्य व्याधि 'सामपुत्र गरलाए जह बहुबाहोए

सिद्धिमे बाहो ।

दोसाएमसमाए, तह धविगच्छो
कुमादोना' (भा १२) ।

अचिरमग पु [अचिरमग] मनीषा, शाला के रहस्य का अतिज्ञ साधु (वच ३) ।

अचिरमग वि [अचिरमग] १ उपरी रहित ।
२ मुद्र रहित, कन्हनरहित (मुपा २३४) ।
३ सरल, सीधा (भग) । 'माइ ली [गति] मकुटित गति (भग १४, ५) ।

अचिरमग वि [अधीष्ठ] नीचतरहित, व्याप्ति रहित (पद्) ।

अचिरमग वि [अविज्ञायक] अनजान, मूल (सूत्र १, ५, १) ।

अचिरमग वि [अनीज] बीजगति से रहित (पद्म ११, २५) ।

अचिरमग पु [अचिरमग] विनय का ममान (ठा ३, ३) ।

अचिरमग वि [अचिरमग] १ नार, उपपत्ति (दे १, १८) ।

अचिरमग वि [अचिरमग] २ मनी, कुलटा (दे १, १८) ।

अचिरमग वि [अचिरमग] निद्रा विच्छेदरहित (भा ६६) ।

अचिरमग ली [अचिरमग] अनुपयोग, स्थान का अभाव (सूत्र १, १, १) ।

अचिरमग वि [अचिरमग] मय, सत्ता (महा, उच) ।

अचिरमग } म [अचिरमग] विपाद-मूलक
अचिरमग } मय (पि २२, स्वप्न ५८) ।

अचिरमग पुत्री [अचिरमग] १ विच्छेद विधि ।
२ विधि का अभाव (वृह ३ भास्त्र १) ।

अचिरमग वि [अचिरमग] १ अज्ञान । २ अज्ञान, अपरिचित (पद्म ५, २१६) ।

अचिरमग वि [अचिरमग] अनिष्ट (मुपा ५८२) ।

अचिरमग न [अचिरमग] १ श्रुति का अभाव (ठा १०) । २ वि अचिरमग (पद्म १, १) ।

अचिरमग वि [अचिरमग] मल्ल, मल्ल, 'अचिरमग मल्ल मल्ल' (सम् ६५) ।

अचिरमग वि [अचिरमग] १ मेदरहित, 'नजलपजायस उ पुरिसो पुरिसो ति निच-

मविष्णो (मम् ३५) । २ किंवि नि सहाय, सहायरहित, 'सविष्णो निविष्णो इय पुरिसं

को भण्णं अविष्णो' (सम् ३५) ।

अचिरमग ली [अचिरमग] १ अविज्ञान (मुपा १, २) ।

अचिरमग देवो अचिरमग (भावा) ।

अचिरमग ली [अचिरमग] १ विराम का अभाव, अनिवृत्ति । २ पाप कर्म से अनिवृत्ति (सम् १०, पद्म २, ५) । ३ हिंसा (कम् ४) । ४ अज्ञान (मुपा ६) । ५ विरति-परिणाम

का अभाव (सूत्र २, २) । ६ विरतिरहित (नाट) । 'वाय पु [वाद] १ अचिरमग की चर्चा । २ मेधुन-चर्चा (ठा ६) ।

अचिरमग वि [अचिरमग] विरति से रहित पापनिवृत्ति मे नरित, पाप कर्म में प्रवृत्ति (भग. वच) ।

अचिरमग वि [अचिरमग] विरामरहित (भावा १, १४) ।

अचिरमग वि [अचिरमग] १ विरामरहित, अचिरमग (भा १५५) । २ पाप निवृत्ति से रहित (ठा २, १) । ३ अनुपयोगस्थानक

वाला अभाव (कम् ५, ६३) । ४ किंवि सदा, हमेशा (पात्र) । 'सम्मदिद्धि ली [सम्म-

गदिति] चतुर्गुणस्थानक (कम् २, २) ।

अचिरमग वि [अचिरमग] निविद्ध, धन (भावा १, १) ।

अचिरमग वि [अचिरमग] विच्छेदरहित (कुमा) ।

अचिरमग वि [अचिरमग] १ विरामरहित । २ किंवि निरुद्ध, हमेशा (पात्र) ।

अचिरमग वि [अचिरमग] मल्ल (कुमा) ।

अचिरमग वि [अचिरमग] मल्लरहित, धारणित (भग ५) ।

अचिरमग वि [अचिरमग] सीवरहित (भग) ।

अचिरमग पु [अचिरमग] १ पशु । २ वि कठिन (दे १, ५२) ।

अचिरमग वि [अचिरमग] विराम-रहित, शीघ्र (कम्) ।

अचिरमग ली [अचिरमग] मनी, मेदी (पात्र) ।

अचिरमग पु [अचिरमग] १ विवेक का अभाव । २ वि विवेकरहित । 'यत वि [यत्] अचिरमग (पद्म ११३, ३०) ।

अचिरमग वि [अचिरमग] एवावर विरोध मे रहित, सगत, सबद्ध (प्रोप) ।

अचिरमग वि [अचिरमग] विराम-रहित, प्रमाण भूत मय (कुमा, सुर ६, १७८) ।

अचिरमग वि [अचिरमग] सहा, तुल्य (कुमा) ।

अचिरमग वि [अचिरमग] विरामरहित (पद्म २ १) ।

अचिरमग वि [अचिरमग] तुल्य, समान (ठा २, ३, वा ८७७) ।

अचिरमग वि [अचिरमग] (ठा १०) ।

अचिरमग न [अचिरमग] मात धीर धीर (पद्म ४०) ।

अचिरमग वि [अचिरमग] १ विरामरहित (पद्म १, १) । २ किंवि, निरुद्ध, सदा (ठा ७२८ टी) ।

अविहृद पु [दे] बालक, बच्चा (बृह १)।
 अविहृय वि [अविभृय] दग्ध (मउ३)।
 अविहृया स्त्री [अविधया] जिसका पति
 जीवित हो वह स्त्री, सपत्नी (गाया १, १)।
 अविहा देलो अविदा (मभि २२४)।
 अविहाड वि [अधिघाट] भ्रष्टकट (वव ७)।
 अविहाविअ वि [दे] १ दीन, गरीब। २ न
 मौन (दे १, २६)।
 अविहाविअ वि [अधिभाविअ] भ्रमालोचित
 (मउ३)।
 अविहि देखो अविधि (मम १)।
 अविहिअ वि [दे] मत्त, उन्मत्त (पड् १)।
 अविहित वहु [अविघ्न] नहीं मारता
 हुमा, हिंसा नहीं करता हुमा।
 'वर्गेभित्तिं परिणमो, सत्पतीव विमुच्यई वेरा।
 मविहितोवि न मुच्यइ, नि सिद्धभाभोति मा सत्त'
 (मोप ६०)।
 अविहिंस वि [अधिहिंस] ग्रहिक (प्राचा)।
 अविहिंसा स्त्री [अविहिंसा] ग्रहिका (सुप
 १, २, १)।
 अविहीर वि [अप्रतीक्ष] प्रतीक्षा नहीं करने
 वाला (कुमा)।
 अविहृहय वि [अविहृहय] भावर करनेवाला
 (सस १०, १०)।
 अमी देखो अवि (उत्त २०, ३०)।
 अमीइय म [अविचिच्य] भ्रमन न हो कर
 (मग १०, २)।
 अमीइय [अविचिच्य] विचार न कर (मम
 १०, २)।
 अमीय वि [अद्वितीय] १ भ्रमाधारण, अनुपम
 (कुमा)। २ एकाकी, भ्रमहाय (विपा १, २)।
 अनुक सक् [मि + क्षपय] मित्राणि करना,
 प्राप्ति करना। अनुकद (दे ४, ३८)। वहु,
 अनुकंत (कुमा)।
 अनुहृद वि [अवृद्ध] तरण, जवान (कुमा)।
 अनुगाह देखो अधिगाह (ठा १, १)।
 अनुह देखो अनुह (रण)।
 अनुह देखो अनाह (गाया १, १)।
 अवे सक् [अय + इ] जानना। अवेसि (विते
 १७७३)।
 अवे सक् [अय + इ] दूर होना, हटना। अवेइ
 (स २०)। अवेह (मुद्र १६१)।

अवेमर सव [अय + ईत्] अपेक्षा करना।
 अवेस्वड (महा)।
 अवेकर सव [अय + ईत्] अवलोकन करना।
 अवेस्वाहि (स ३१०) सङ्ग. अवेकिरङ्ग
 (स ५२७)।
 अवेकरा स्त्री [अपेक्षा] अपेक्षा, परवाह (सुर
 ३, ८४, स ५६२)।
 अवेकिर वि [अपेक्षित] अपेक्षा करनेवाला
 (मउ३)।
 अवेकिरय वि [अपेक्षित] जिसकी अपेक्षा
 हुई हो वह (मभि २१६)।
 अवेकिरय वि [अपेक्षित] प्रबलोकित
 (मभि १६६)।
 अवेय वि [अपेक्ष] रहित, वर्जित (विते
 २२१३)। 'रुइ वि [रवि] रवि-रहित,
 निरोह (उप ७२२ दो)।
 अवेय } वि [अवेद, 'क' १ वृत्त-वेदादि
 अवेयग } वेद से रहित (पण १)। २ मुक्त,
 मोक्ष-प्राप्त (ठा २, १)।
 अवेसि देखो अवेसि (दे १, ८, पाम)।
 अवेह देखो अवेकर = अय + ईत्। अवेह
 (सुर ६)।
 अजोअड वि [अज्याहृत] अश्वत्थ, अस्पृष्ट
 (भास ७६)।
 अजोचिङ्गण देखो अजोचिङ्गण (प्राचा)।
 अजोचिङ्गि देखो अजोचिङ्गि (ठा ५,
 ३)।
 अजोह सक् [अय + ऊह] १ विचार करना।
 २ निर्णय करना। अजोह (भावम)।
 अजोह पु [अजोह] १ विकल्पज्ञान, तर्क-
 विषय। २ व्याम, वर्णन (उप ६६७)। ३
 निर्णय, निश्चय (एवि)।
 अजईमान पु [अन्ययीभाव] व्याकरण-
 प्रसिद्ध एक समास (अणु)।
 अजवग वि [अजयङ्ग] भ्रमर, भ्रमरहृद (मव
 ७)।
 अजवग न [अजयङ्ग] १ पूर्ण धम, पूरा
 शरीर। २ वि भक्तिवत्, अत्यन्त, सपूर्ण, परि-
 हितप्राप्त्ययोग्यसिद्धसर्ग (चर्यति १७,
 १५)।
 अजविरयत वि [अज्यादिम] १ विशेष-
 रहित। २ तत्त्वहीन, एकाग्र (उत्त २०)।

अजवग वि [अजयङ्ग] ध्यप्रतारुण्य, अनाकुल
 (उत्त १५)।
 अजयत् वि [अजयत्] १ धमप, अस्पृष्ट
 अजयत्तय } उप ७६८ दो, सुर ४, २१४, या
 २७)। २ छोटी उमर का बालक, बच्चा
 (निज् १८)। ३ भगीरथार्थ, शास्त्र-रहस्यान-
 गित (साधु) (धर्म २, प्राचा)। ४ पुं.
 अजयत्त मत का प्रवर्तक एवं जैनमत मुनि
 (ठा ७)। ५ न. साक्ष्य मत में प्रसिद्ध प्रवृत्ति
 (भावम)। 'मय न [मत] एवं जैनमत
 मत (विते)।
 अजयत्तय वि [अजयत्तय] १ भवचनीय।
 २ पुं कर्मवत्त विशेष, जब जीव सर्वथा कर्म-
 बन्धरहित होकर फिर जो कर्मवत्त करे वह
 (पव ५, १२)।
 अजयत्तिय देखो अजयत्तिय (प्रीन, विते,
 प्राचम)।
 अजयत्तियारि वि [अजयत्तियारि] ऐना-
 न्तिव (पचा २, ३७)।
 अजय न [अजयय] 'व' आदि निपात (वेद्य
 ६८३)।
 अजय न [अजयत्] १ व्रत का भ्रमाव (या
 १६८, सप १३२)। २ वि. प्रवरहित (विते
 २५५२)।
 अजय वि [अजयय] १ भ्रमय, अज्ञ (दुपा
 ३२१)। २ नित्य, शाश्वत (मग २, १)।
 अजयत्तिय वि [अजयत्तिय] १ भक्तिवत्,
 सदिग्ध। २ अयराक्षी (ठा ३, ४)।
 अजयत्तय वि [अजयत्तय] १ व्यसन-रहित।
 २ पुन. लोकोत्तर रीति से १२ वां दिन (ज
 ७)।
 अजयह वि [अजयय] १ व्यपारहित। २
 न. निरवल ध्यान (ठा ४, १, मोप)।
 अजयहिय वि [अजयवित] १ भ्रमोदित
 (पचा ३)। २ निरवल (इह १)।
 अजवा स्त्री [अजौ] पर से भिन्न, 'लो
 हव्याए लो पाराए' (सूप २, १, ६)।
 अजवा स्त्री [दे. अजवा] माता, जननी (दे १,
 ५)। (पड्)।
 अजवाइह वि [अज्यायिह] १ भविष्यत्स
 भविष्यते। २ न. सुय का एक गुण, भ्रमर
 की चलत-मुलत का भ्रमाव (बृह १, मउ २)।

अव्यागड वि [अव्यागृत] अन्त्य, अन्त्यु (भाव) तत् ए टी) ।

अव्याग वि [आव्याग] षोडश्विष्य (भाव ४८८) ।

अव्यागह वि [अव्यागह] १ हरत रहित वापर-रहित (भाव ३) । २ न रोम का प्रसार (भा १८, १०) । ३ मुख (भाव ५) । ४ मोक्ष-स्वात मुक्ति (भा १, १) । ५ पु. सोर्वाचार देव निर्देश (साम १, ८) ।

अव्यागाह पुन [अव्यागाह] एक देवविमान (स्वेत १४४) ।

अव्यागड वि [अव्यागड] १ जो व्यवहार में न आया गया हो, व्यापार रहित । २ एक प्रकार का बालु (बृह ३) ।

अव्यागम वि [अव्यागम] अगिण्ट, नारा नो समाप्त (भा १, ७) ।

अव्यागार वि [अव्यागार] व्यापार रजित (स ५०) ।

अव्याह्य वि [अव्याह्य] १ एकाग्र-रजित (डा ४४, सुपा ८६) । २ अन्तर्गत आयात-रहित (एरि) । 'सुजानरत्न न [पूर्वो-पारत्न] जिनमें पूर्वपर का विशेष भा सम्मर्जन हो ऐसा (वचन) (राय) ।

अव्याहार पु [अव्याहार] न बानना, मोन (पाद) ।

अव्याह्य वि [अव्याह्य] न कुत्रया हुआ (जीव ३, भावा) ।

अव्यय वि [अव्यय] विरति रहित (मट्ट ८) ।

अव्यो न नीचे के भागों में स, प्रवरण न धनु सार रिती एक प्रत्ये का मूलक भाष्य—१ श्रुत । २ दुःख । ३ संज्ञापाण । ४ अक्षराय । ५ निमग्न । ६ भानद । ७ भादर । ८ अय । ९ रत्न । १० विपार । ११ व्यासाय, 'मन्वा हरति हियय,

वहरि न वेत्त हवति उपदेण ।
मन्वो विपि रत्नस, मणुति धुना जयमिदिभा ।

मन्वो मुहुर्यामिले,
मन्वो मन्वगह मणन जीध ।

मन्वो धर्ममि नुमे, मन्वो बड सा न
उपरिदि ॥ (ह २, २०४) ।

अव्योड वि [अव्याह्य] १ चन्दिरिन

(बृह २) । २ पित्त रहित (ह्मा ३) । ३ नही बना हुआ । ४ अन्तः, मन्व । ५ न एक प्रकार का बालु (बृह ३) ।

अव्योच्छिन्न वि [अव्योच्छिन्न, अव्यव-च्छिन्न] १ आचार रहित, सतत, विच्छेद नजित (यन ७) । २ नियम । ३ अद्यावत् (मवड) ।

अव्योच्छ्रिति जो [अव्योच्छ्रिति, अव्यव-च्छ्रिति] १ सतत, प्रवाह बीच में विच्छेद का प्रभाव, परंपरा से बराबर चला आना (आय) । २ नय पु [नय] यन्त्र को निनी न किया कर न स्थायी मानसता वष, इत्यादि नय (भा ७, ३) ।

अव्योच्छिन्न देवी अव्योच्छिन्न (मौल ३२२, स ५४६) ।

अव्योचक देवा अव्योगड (भा १०, ४, मात ७१) ।

अस तक्ष [अस] व्याप्त करना । प्रसह मनए (चट) ।

अस मक्ष [अस] होना । शक्ति, 'हहा हहाहमि लि बडु' (भा १५) । अति (भा) । शक्ति (ह ३, १४, १५७ १४८) ।

नूक यापि, माली (मग उवा) ।

अस तक्ष [अस] मोक्षन करना । आना । प्रसह 'मन्वमणीमालु न वापद दोपावि जव्याही' (भा १०६ अति) । नह असत (अति) ।

क असिप्रवर (मुता ४३८) ।

अस नह [अमन्] अविनयन, मन्व दुःखो य विहसति न म टगनडए म (मग १, १, १६) ।

असह जो [अमति] १ उत्तम रत्न हुआ हन्त हव । २ भाय भापन का एक परिभाषा । ३ जमने भावा हुआ भाय (मगु सामा १, ७) ।

असह जो [असह्य] अभाह, अविनयमानता पमज जईल दाऊण,

अव्यागा एवमिअल पादे ।
असहय मुनिहियाण मुंइइ म अमिसानाम' (उम) ।

असह [असह] अत्रा वार, वार असह [वार (अति, भाषा, क ८३३ टी) ।

असह जो [अमति] १ दुःख, अविनयमानता जो (मुता ६) । २ खमी (मा ८, ६) । 'पौम

[पु पोप] धन के लिए क्षात्री, मनुष्य या पशु का जानन, 'मसदीरीस च वजिजा' (पा - २) । 'पौसण्या जो [पौवणा] देसो अनन्तरोक मर्ष (पदि) ।

असहय पुन [असहय] अमहयन (भा ७) । असह वि [असह] १ रुद्धा रहित, मर्ष-विषय । २ निडर निर्मय (भावा मुर २, २६) ।

असहल वि [असहल] गृहसा रहित, अनियमित (मुता) ।

असकि वि [असकि] संदेह = बल वाता (मुम १, १, २) ।

असकिह वि [असकिह] १ संक्षेप-रहित । २ विमुक्त निर्दोष (पीप एए २, १) ।

असह वि [असहय] संख्या रहित, परिमाण-रहित (मुता ५६६, जो २७, ४०) ।

असह न [असह्य] वाक्य माते निर दर्शन (मुता ४६६) ।

असहल जोन [ह] बतह भागा, जव म सवखोलममसडाह गच्छमि नव जाधति' (मच्छ ३, ११) । जो 'डी' (यन १०६) ।

असहल न [ह] बतह, भागा (लिपू १) ।

असहलिय वि [ह] बतह बरत बागा, अमग्वार (बृह १) ।

असहय दवा असह = मसह्य (स ८५) ।

असहय वि [असहय] १ सत्कार होन । २ सत्पान करने के प्रारम्भ (राय) ।

असहयज वि [असहयज] गिनता या परि-भाषा बरत न मदाय (यन ३४) ।

असहयजय राने अमहयजय (मगु) ।

असहयज देवो असहयज (मग) ।

असहयजह वि [असहयज] अमभ्यापन । 'मात पु [भाग] धर्मव्यावहा हिता (पीप, मग) ।

अमहयजय पुन [असहयज] गणना निर्देश (मगु) ।

असह वि [असह] १ निमग्न मनामन (एए २) । २ पु भागा (भावा) । ३ मुक्त जाव । ४ न योग, मुनि (यन ३, मीप) ।

असहय न [ह] बर, बारा (२ १२) ।

असंगहिय वि [असंगृहीत] १ जिसबा संग्रह न किया गया हो वह । २ अनाग्रित (ठा ८) ।

असंगहिय वि [असंग्रहिक] १ संग्रह न करने वाला । २ पुं. नेपथ्य नय का एक भेद (विशे) । असंग्रहित पुं [दि] १ ग्रन्थ, घोडा । २ वि. अनवस्थित, चञ्चल (दे १, ५५) ।

असंघयय वि [असंहनन] संहनन से रहित । २ यज्ञ, क्रमण, नाराय ऋदि प्रायश्चित्त तीन संघयणो से रहित (निष् १०) ।

असंजण न [असञ्जन] नि झूठा, अनासक्ति (निष् १) ।

असजम वि [असंयम] १ हिंसा, क्रूर आदि सामान्य अनुष्ठान (सूत्र १, १३) । २ हिंसा आदि पाप कार्यों से अनिवृत्त (धर्म ३) । ३ अज्ञान (भाषा) । ४ असमाधि (वच १) ।

असजय वि [असंयत] १ हिंसा आदि पाप कार्यों से अनिवृत्त (सूत्र १, १०) । २ हिंसा आदि करने वाला (ना १, ३) । ३ पुं. माधु-निद्र, गृहस्थ (भाषा) ।

असंजल पु [असंजल] १ ऐश्वर्य वर्ण के एक जिनदेव का नाम (सम १५३) ।

असंजोगि वि [असंयोगिन] १ संयोग-रहित । २ पुं. कुल जीव, मुक्तत्मा (ठा २, १) ।

असंत वक्क. [असन्] १ शविचामन (नव ३३) । २ क्रूर, भयानक (पण्ड १, २) । ३ अनुदर, अनाह (पण्ड २, २) ।

असंत देखो अस = धश् ।

असंत वि [अशान्त] शान्तरहित, क्रुद्ध (पण्ड २, २) ।

असंत नि [असक्त] सत्त्व-रहित, वल-शून्य (पण्ड १, २) ।

असंमह वि [दि असंमृत] अमृत, अमर्य (भाषा, वृह ५) ।

असमरत वक्क. [दि असंस्तरन्] १ समर्थ न होता हुआ । २ खोज न करता हुआ (वच ४) । ३ तुम न होता हुआ (बोध १८२) ।

असंधरण न [दि असंस्तरण] १ निर्वह का अभाव (वृह १) । २ परमत्त साध का अभाव (पंचव २) । ३ असंयतता, अशक्त अवस्था (धर्म ३, निष् १) ।

असंधरमाण वक्क [दि असंस्तरमाण] देनो असंधरत (वच ४, श्रोत्र १८१) ।

असंधिम नि [असंधिम] संधान रहित, अरण्य (वृह ५) ।

असंभंत पुं [असंभ्रान्त] प्रथम तरु का छत्रों नखेन्द्रव—नख-स्थान विशेष (देवेन्द्र ४) ।

असंभेद्य नि [असंभाव्य] जिसकी संभावना न हो सके ऐसा (धा १२) ।

असंभावणीय वि [असंभासनीय] ऊपर देखो (महा) ।

असलप्य वि [असंलप्य] अनिवर्चनीय (मणु) ।

असंलयेय पुं [असंलयेय] १ अग्रगण्य । २ वह स्थान जिसमें लोगों का यमनागमन न हो, भीष्मरहित स्थान (भाषा) ।

असंवर पुं [असंवर] आचर्य, सबर का अभाव (ठा ५, २) ।

असंवरीय वि [असंवृत] १ अनाच्छादित । २ गद्दी रुफा हुआ (कुमा) ।

असंमुह वि [असंमुह] असफल, पाप कर्म से अनिवृत्त (सूत्र १, १, ३) ।

असंसंयय वि [असंसायित] असंयय (सूत्र २, २) ।

असंसद्वि वि [असंसद्वि] १ दूतरे से न मिला हुआ (वृह २) । २ लेप-रहित (श्रीप) । ३ क्षी. निषेधाला का एक भेद (पंच ६६) ।

असंसक्त वि [असंसक्त] १ अग्रिमित (उत्त २) । २ अनासक्त (दत्त ८, उत्त ३) ।

असंसय वि [असंसय] १ संयम-रहित (वृह १) । २ निर्वि. नि सदेह, नवी (अभि ११०) ।

असंसार पु [असंसार] सत्तार का अभाव, मोक्ष (जीव १) ।

असंसि वि [असंसिन्] अविनश्वर (कुमा) । असंका वि [असंक्य] जिसको न कर सके वह (सुपा ६५१) ।

असंका वि [असंका] अग्रमर्थ (कुमा) । असंखय वि [असंसंखत] सत्तार-रहित (पण्ड १, २) ।

असंखय वि [असंसंखत] सत्तार-रहित (पण्ड १, २) ।

असंकर्णज वि [असंकर्णीय] अशय्य (कुमा) ।

असंगाह } पुं [असद्गम] १ वदग्रह (जप असंगाह } ६७२; सुपा ११४) । २ शक्ति-असंगाह } निर्वन्ध, विशेष आग्रह (गवि) ।

असत्थ न [असत्थ] १ क्रूर वचन (प्रागु १५१) । २ नि. क्रूर (पण्ड १, २) । ३ मोस न [मृष] क्रूर से मिला हुआ सत्य (द २२) ।

वाइ वि [वादिन्] क्रूर बोलने वाला (सम ५०, पठम ११, ३४) । ३ मोस न [मृष] न सत्य शीर न क्रूर ऐसा वचन (भाषा) ।

मोसा छी [मृषा] देतो अन्तर्लोच अर्थ (पंच १) । ४ संध वि [संध] १ अनाद्य-प्रतिज्ञ । २ अनाद्य अग्निप्राय वाला (महा, पण्ड १, २) ।

असज्ज } वक्क [असज्ज] सग न असज्जमाण } करता हुआ (भाषा, उत्त १४) । असज्जमाइय वि [असज्जमायिक] पठन-पाठन का प्रतिबन्धन कारण (पंच २६८) ।

असज्जमाय पु [असज्जमाय] अनायास, वह बाल जिसमें पठन-पाठन का निषेध किया गया है (पण्ड ३, ३०) ।

असद्ध वि [असद्ध] यद्धारहित (कुमा) । असद्ध वि [अराठ] नरल, निष्पट (सुपा ५५०) । ३ कुरा वि [कुराण] निष्पट भाव से अनुष्ठान करने वाला (वृह ६) ।

असण न [अशान] १ भोग्य, कामा (निष् ११) । २ जो खाया जाय वह, खाद्य पदार्थ (पंच ४) ।

असण पु [असन] १ बीजक नामक वृक्ष (पण्ड १; शापा १, १, श्रीप, पात्र, कुमा) । २ न. लेपण, कंबजा (विसे २७६५) ।

असणि पुत्री [अशानि] १ एक प्रकार की विजली (सुज २०) । २ पु. एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २६) ।

असणि पुंको [अशानि] १ वज्र (पात्र) । २ आकार से गिरता अग्नि-कण (पण्ड १) । ३ वज्र का अग्नि (जी ६) । ४ अग्नि (स ३३२) । ५ अग्निविशेष (स ३८५) । ६ पण्ड पुं [अभ] खण्ड के साधारण का नाम (मि १२, ६१) ।

मेह पु [मेय] १ वह कर्पा जिसमें मोले गिरे हो । २ शक्ति अथर्व-वर्ण, अथर्व-भय (भय ७, ६) । ३ वेग पु [वेग] विचारपरो का एक राजा (पठम ६, १५०) ।

असणीं छी [अशनी] एक इत्राणी (ठा ४, १) ।

असणी छी [अशनी] जिह्वा जीम ग्रन्थि-
रामणी कम्मल मोहण तह बयाण वने च'
(मुख २, ४२) ।

असण्ण वि [असंज्ञ] सत्तारहित अचतन
(सद्वृत्त ६) ।

असाण्ण वि [असंज्ञिन्] १ संज्ञि मित्र
मनोज्ञन से रहित (जीव) (ठा २, २) । २
सम्यग्दृष्टि भित्त जैनतर (भग १, २) । सुय
न [अशून] जैनतर शास्त्र (एवि) ।

असत्त वि [अशक्त] असमर्थ (सुर ३, २४४,
१०, १७४) ।

असत्त वि [असत्त] अनात्मक (भाषा) ।
असत्त न [असत्त] अभाव, असत्ता (एवि) ।
असत्ति छी [अशक्ति] सामर्थ्य वा प्रभाव ।
"मत्त वि [अमत्त] असमर्थ अशक्त (पञ्च
६६ ३६) ।

असत्थ वि [असत्थ] अतदुत्तर, बीमार
(सुर ३, १२७) ।

असत्थ न [अशक्त] १ राज्ञ मित्र । २ समय,
निर्दोष अनुदान (भाषा) ।

असद्द पु [अशब्द] १ शक्ति, अपर्या
(गच्छ १) । २ वि शब्दरहित (वृह ३) ।
असद्द वि [अशब्द] अशब्दरहित । छी 'अशब्द'
(उत्तर १ १६४) ।

असंभि देखो असंणि (भग जी ४३) ।
असन्नल वि [अशानल] १ अनिर्णित । २
निर्दोष, पवित्र (एवह २, १) ।

असन्नम वि [असन्नम] शशित, जगती (म
१५०) । भासि वि [भाषिन्] अमम्य
भाषी (सुर ६ २१-२) ।

असद्भाव पु [असद्भाव] १ वयार्थता वा
अभाव मूढ (निष्ठ) । २ वि अभाव, अवयव
(उत्तर ३, ४०) ।

असद्भाव वि [असद्भाविन्] मूढ, अभाव
(महा) ।

असद्भूय वि [असद्भूत] अभाव (भग) ।

असम वि [असम] १ अमान, अनापारण्य
(सुर ३, २४) । २ एक तीन पात्र प्रादि
एवहि सत्ता वाता विषय । "सर पु [सर]
कामदेव (गउड) ।

असमवाह न [असमवायिन्] नैर्वायिक और
वैशेषिक मत प्रविद्ध कारण विशेष (वित्त
२०६६) ।

असमजस वि [असमजस] १ अव्यवस्थित,
गैरव्यवस्थी (भाषा सुर २, १३१, सुपा
६२३, उभ १०००) । २ त्रिवि. अव्यवस्थित
रूप से (भाषा) ।

असमिक्षिय वि [असमीक्षित] अना-
लोचित, अविचारित (एवह १, २) । "कार
वि [कारिन्] साहिक । "कारिया छी
[कारिया] साहस कम (उत्तर ७६६ टी) ।

असरासय वि [अ] निर्दय, निष्ठुर हृदय
वाला (दे १, ४०) ।

अससाल वि [असरील] असम्य भाषा (सोह
६७) ।

असर पु [असु] प्राण, 'विज्जतासरो विम
टिगो कवि कात्त (स ३३७) ।

असत्तण्ण वि [असत्तण] असमान असाधारण
(सएण) ।

असवार पु [अभवार] वृद्धवार (परोंवि
४१) ।

असह वि [असह] १ अशक्ति (कुसा, सुपा
६२०) । २ असमर्थ (वच १) । ३ खद करने
वाला (भाषा) ।

असहण वि [असहन] अशक्ति, शीघ्र
(भाषा) ।

असहाय वि [असहाय] १ सहायरहित
(भग) । २ एकाकी (वृह ४) ।

असहज वि [असहाज्य] १ सहायता
रहित । २ सहायता वा अशक्ति (उत्तर) ।

असहणी वि [असहाधीन] परतन्त्र, पराधीन
(वच ८) ।

असह वि [असह] १ अशक्ति (उत्तर) ।
२ अभाव अमान (भाषा ३६ भा) । ३
बीमार गान (विज्ज १) । ४ सुदुस्तर, बीमार
(ठा ३ ३३) ।

असहज देखो असहज (भा) ।

असागारिय वि [असागारिन्] गुल्फा के
भावगमन से रहित स्थान (वच ३) ।

असादभूत पु [असादभूति] एक जे मुनि
(निष्ठ ४७४) ।

असादय न [असादक] वृण विशेष (एवह
१, पत्र ३३३) ।

असाय न [असात] दु ख पीडा (एवह १, १),
'रागवा इह जीम,

दुल्लहोवमि गामगुरस्ता ।
ज वेदित प्रसाय, कतो त हदि नरएवि'
(सुर ८ ७६६) ।

'वेयणज्ज न [वेदनीय] दु ख वा कारण-
भूत कर्म (ठा २ ४) ।

असार १ वि [असार, 'रु] निस्तार सार-
असार २ रहित (महा कुमा) ।

असारा छी [अ] कदली-वृक्ष, बैला का पद
(दे १, १२) ।

असालिय पु छी [अ] सब की एक जानि
(सुर २, ३, २४) ।

असासय वि [अशाश्वत] अनिय, अनिश्चर
(अपा १, १ मा २४७) ।

असाहण न [असाधन] अनिष्टि (सुर ४,
२४८) ।

असाहारण वि [असावारण] अनुत्तम, अनुत्तम
(भग दह) ।

असि पु [असि] १ खड्ग, तलवार (भाषा) ।
२ इस नाम की नरकपात देवा की एक जाति
(भग ३, ६) । ३ छी अनारस की एक मदी
का नाम (ती ३८) । "कुड न [कुण्ड] मधुरा
का एक तीर्थ-स्थान (ती ७) । "पाय पु
[पान] तनवार का पाय (पञ्च ५६ २४) ।
"चर्मपाय न [चर्मपाय] तनवार की
स्थान कोरा (भग ३, ५) । "धारा छी
[धारा] तनवार की धार (उत्तर १०) ।
"धेणु, धेणुआ छी [धेनु, धेनुमा] दुग्धी
(गउड भाषा) । "पत्त न [पत्र] १ तनवार
(निपा १ ६) । २ तनवार क बैला हाथ
पत्र (भग ३, ६) । ३ तनवार की पतये (जान
३) । ४ पुं नरकपात देवी की एक जाति (भग
२६) । "पुत्ता छी [पुत्रिमा] दुग्धी (उत्तर
पु ३३४) । "सुटि छी [सुटि] तनवार
की मूठ (भाषा) । "रोग न [रोग] अस्त्रों
रक्षा की एक उत्तम तनवार (ठा ७) । "लट्टि
छी [यष्टि] तनवार, तनवार (निपा १,
३) । "वंग न [वंग] तनवार पत्ते या न
कृता का जंगल (पा १, १) । "पत्त देवा

[पत्त] (वे ३, ५२) । 'हर नि [धर]
तनवार-धार, योदा (वे ६, १८) । 'हारा
देखो 'धारा (उव) ।

असिइ (आ) देखो असिइ (गण) ।

असिण न [अशन] भोजन, खाना, 'अग-
तिउं परिद्विजमाएँ पेहाए, पुरा धमिणा इवा
मचहारा इवा' (आवा २, १, ५, १) ।

असित्य न [असित्य] धारा लवे हुए हाथ
या बर्तन का कपड़े से धना हुआ धोवन
(पहि) ।

असिद्ध वि [असिद्ध] १ अनियन्त्र । २ तर्क-
शास्त्र प्रसिद्ध मुटु हेतु (विसे २८२४) ।

असिय वि [अशित] भुन, खादित (पाप,
सुपा ११२) ।

असिय वि [असित] १ कृष्ण, श्वेतपरहित
(पाप) । २ मनुष्य (विसे) । ३ अचढ़, अ-
यन्त्रित (सूत्र १, २, १), 'सिया एगे मणु-
गच्छति, मसिया एगे मणुगच्छति' (आवा) ।
'कर पुं [र] यज्ञ-विशेष (सण) ।

असिय न [वि] दास, दासी (वे १, १४) ।

असियव्य देखो अस = अश ।

असिलेसा की [अश्लेषा] नक्षत्र-विशेष
(मम ११) ।

असिलोग पु [अदलोऊ] अकीर्ति, अयस
(सन १२) ।

असिय न [अशिव] १ विनाश । २ मनुष्य ।
३ देवतादि वृत्त उपद्रव (घोष ७) । ४ मारी
रोग (अव ४) ।

असिधिण पुं [अस्यजने] देव, देवता
(आमा) ।

असिज्य देखो असिय (अव ७, प्राप्र) ।

असिसुई की [अशिथी] शिशुपरहित ली
(प्रकृ २८) ।

असिह वि [अशिष्ट] शिक्षारहित (अव ४) ।

असोइ की [अशीति] संख्या-विशेष, असी, ८० (सम ८८) । 'म वि [तम] असीवर्त, ८० वों (पवन ८०, ७४) ।

असोइग वि [अशीतिक] असी वर्ष की
उम्र वाला (तंडु ७) ।

असीम वि [असीमन] निस्त्वय, 'असीमंत-
नतिराएण' (अप ७२८ टी) ।

असील वि [अशील] १ दुःशील, असदा-
चारी (परह १, २) । २ न. असदाचार,
अग्रहणार्थ । 'मन वि [वन] १ अग्रहणचारी
(घोष ७७७) । २ प्रसृत्य (सूत्र १, ७) ।

असु पुं. व. [असु] १ प्राण (म ३८३) ।
२ न. जित । ३ ताप (प्राप्र. वृष ५१) ।

असु देगो असु (प्राप्र) ।

असुइ वि [अशुचि] १ अपवित्र, अस्वच्छ,
मलिन (अम. अ. व. ३) । २ न. ममेच्छ, विष्ट
(ठा ६; प्रमू १६६) ।

असुइ वि [अशुचि] शास्त्रप्रबण-रहित (अम
७, ६) ।

असुइकय वि [अशुचीकृत] अपवित्र किया
हुआ (अप ७२८ टी) ।

असुग पुं [असुऊ] देखो असु = असु (हे १,
१७७) ।

असुउभत वि [अटश्यमान] नहीं दिखाता
हुआ, 'अनपि ज अमुउभत' । भुननएण
रति' (पवन १०३, २५) ।

अमुणि वि [अभोउ] न मुनेवाला, 'अवि-
नर्दपरि मणिमितावोवले अमुणि सुखमु
मह वयण' (वजा ७२) ।

असुइ वि [अशुइ] १ अस्वच्छ, मलिन ।
२ न. मैला, अशुचि । 'विसेहय पुं [विशो-
धक] भवी, मेत्तर (सुर १६, १६५) ।

असुभ देखो असुह = अशुभ (सम ६७; अम) ।

असुय वि [अशुत] न सुना हुआ (ठा ४,
४) । 'जितिसय न [निश्रित] शास-अयण
के विना ही होनेवाली बुद्धि—ज्ञान (एणि) ।
'पुवर वि [पूर्व] पहले कभी नहीं सुना
हुआ (महा, खामा १, १, पवन ६५, १४) ।

असुय वि [असुत] पुनरहित (अत २) ।

असुर पुं [असुर] १ देव, दानव (पाप) ।
२ देवजाति-विशेष, अवनपति और अन्तर
देवों की जाति (परह १, ४) । ३ दास-स्या-
नीय देव (प्राप्र ३६) । 'इमार पुं [इमार]
अवनपति देवों की एक अवान्तर जाति (ठा
१, १, महा) । 'राय पुं [राज] अमुरो
का वृद्ध (वि ४००) । 'वदि पुं [वन्दिन]
राक्षस (से ६; १०) ।

असुरि पुं [असुरेन्द्र] अमुरो का राजा,
इन्द्र-विशेष (खामा १, ८; सुपा ७७) ।

असुह न [अशुभ] १ अशुभ, अनिष्ट (सुर
५, १६३) । २ पाप-कर्म (ठा ५, ४) । ३
वि. सारा, अमुरन्दर (जीव १; बुमा) ।
'नाम न [नामन] अशुभ कर्म देवाला
कर्म-विशेष (सम ६७) ।

असुह न [असुह] दुःख (ठा ३, ३) ।

असूअ सब [असुय] समूचा करना । अमू-
एहि (ने ७) ।

अमूया की [अमूना] १ सूचना वा अभाव ।
२ दूसरे के दोषों को न कह कर अपना ही
दोष कहना (निद्र १०) ।

अमूया की [असूया] अमूया, असहिष्णुता
(देव) ।

असुरिय वि [असुर्य] १ सूर्यरहित, अन्ध-
कारमय स्थान । २ पुं. नरक स्थान (सूत्र १,
५, १) ।

असेव्य देखो असिय (प्राप्र) ।

असेऊ वि [असेव्य] सेवा के अयोग्य
(अउड) ।

असेस वि [अरोप] नि शेष, सर्व (प्राप्र) ।

असोअ पुं [अशोक] १ देव-विशेष (राय
असोग ८२) । २ पुं. एक देवविमान
(देवन्द्र १४२) । ३ शक आदि इन्द्रों का एक
आभास्य विमान (देवन्द्र २६३) । 'वडिसय
पुन [अवतंसक] सौधमं देवतको का एक
विमान (राय ५६) ।

असोग पुं [अशोक] १ सुप्रसिद्ध वृक्ष-विशेष
(अप) । २ महाप्रह-विशेष (ठा २, ३) ।
हय रग (राय) । ४ अगनाय नल्लिनाय का
बैद्य-वृक्ष (सम १५२) । ५ देव-विशेष (जीव
३) । ६ न. तीर्थ-विशेष (ती १०) । ७
अश-विशेष (विवा १, ३) । ८ वि. शोक-
रहित । 'चंद पुं [चन्द्र] १ राजा शेरिक
का पुत्र, राजा कोरिण (प्राप्र) । २ एक
प्रसिद्ध जैनार्थ (सार्प ७७) । 'खलिय पुं
[खलिय] अशुभ वनदेव का पूर्व-जन्मीय
नाम (सम १५३) । 'वण न [वन] अशोक
वृक्षों वाला वन (अम) । 'वणिगा की
[वनिग] अशोक वृक्ष वाला दगोचा
(खामा १, १६) । 'सरि पुं [श्री] इत
नाम का एक अश्वत्थ राजा, ममाट अशोक
(विसे ८६२) ।

असोगा श्री [अशोका] १ इस नाम की एक इटाली (ठा ४. १) । २ भगवान् श्री शोचन-नाथ की शाननदी (पय २७) । ३ एक नगरी का नाम (पयम २०, १८६) ।

असोभण वि [अशोभन] मगुन्दर, सराव (पयम ६६, १६) ।

असोय देवा असोग (भग महा रथा) ।

असोय पु [अश्चयुक्] धांकिन माम (सम २९) ।

असोय वि [अशोच] १ शोचरहित (महा) । २ न. शोच का प्रभाव मगुचित्ता । 'बाइ वि [बादिन्] मरोच की ही माननेवाला (मोष ३१८) ।

असोयगया श्री [अशोचनता] शोक का प्रभाव (परिव) ।

असोया देवो असोगा (ठा २, ३, सवि ६) ।

असोहिय वि [अपक्] कच्चा (उवा) ।

असोहि श्री [अशोधि] १ मशुद्धि । २ विप-धना (माघ ७८८) । 'ठाण न [स्थान] १ वाप-बर्न । २ मशुद्धि स्थान । ३ दुर्जन का समर्थ । ४ अनागतन (मोष ७६९) ।

अस्त न [आस्थ] मुख, मुँह (गा १८६) ।

अस्त वि [अस्त्र] १ इन्द्ररहित, निर्धन । २ निर्धन, साधु मुनि (माघ) ।

अस्त पु [अस्थ] १ घोडा (उर ७६८ टी) । २ प्रविष्टी नयन का प्रतिपादन देव (ठा २, ३) । ३ ऋषि विरोध (न ७) । 'कण मृ [कर्ण] १ एक भन्तर्गण । २ इस भन्तर्गण का मित्राती (सुवि) । 'कण्ठी श्री [कर्णी] १ बन्तर्गण-विरोध (पण १) । कण न [करण] १ जहाँ घोडा खपने में जाता हो वह स्थान, भन्तर्गण (माघा २, १०, १४) । 'गीवी पु [गीन] पहले प्रवि-यामुदर का नाम (सम १०२) । 'तर पुंकी [तर] सघट (पण १) । 'मुद पु [मुय] १-२ इस नाम का एक भन्तर्गण और उमरी निवासी (सुवि, पण १) । 'मेह पु [मेघ] मय विरोध, जिसमें भरत मय जाता है (मगु) । 'सेण पु [सेन] १ एक प्रसिद्ध राजा, भगवान् पार्वनाथ का पिता (१४ ११) । २ एक महापूह का नाम (बन् २०) ।

'यर पुं [यदर] निगार वर के एक राजा का नाम (पयम ५, ४२) ।

अस्त न [अस्त] १ धनु, शङ्ख । २ चरित्र, बून (प्राइ २६) ।

अस्तस वि [असंम्य] सख्या-रहित (उप १७) ।

अस्तसिगि वि [दे] मानक (पय) ।

अस्तसंययि वि [असंहननिन्] महान रचित, किसी प्रकार के शारीरिक बन्ध में रहित (मग) ।

अस्तजम देवो असजम (उव) ।

अस्तजय नि [अस्त्रयत्] १ कुल की क्षा-नुसार बन्नेवाला, प्रत्तच्छदी (या ३१) ।

अस्तजय देवो असजय (उव) ।

अस्तदम पु [अशन्दम] मय-गलन (सुपा ६४५) ।

अस्तक्ष देवो असक्ष- 'गुरिणो हवत वयल-ममब' (उप १४६ टी) ।

अस्तसिगि देवो अससिगि (विने ५१६) ।

अस्तस्य पु [अश्वरथ] गुणविरोध, पीपन (नाट) ।

अस्तस्य वि [अस्तस्य] रोगी, बीमार (सुर ३, १५१, माल ६८) ।

अस्तसि देवो अससिगि (सुर १४, ६६, बम् ४, २, ३) ।

अस्तम पु [आश्रम] १ स्थान जगह । २ ऋषियों का स्थान (मनि ६६, स्थन २५) ।

अस्तमिगि वि [अश्रमिन्] मयरहित भव-न्यासी (मग) ।

अस्तनार देवो असनार (समस १४२) ।

अस्तस म [आ + दवस्] धाम्नासन केना । हेइ अस्तसिहुं (श्री) (मनि १२०) ।

अस्ताइर वि [आस्तादित्] निववा धाम्नादन निपा गया हो वह (२) ।

अस्ताएमाग देवा अस्ताय = धाम्नादय् ।

अस्ताद वर [आ + सादय्] प्राप्त करना । धाम्नादेति धाम्नादेन्यो (मग १५) ।

अस्ताद वर [आ + सादय्] धाम्नादन करना ।

अस्ताएण देवा अस्ताया (सुत्र १०, १६) ।

अस्तादिय वि [आस्तादित्] प्राप्त किया हुआ (मग १५) ।

अस्ताय देवा अस्ताद = धा + सादय् ।

अस्ताय देवो अस्ताद = धा + स्वादय् । वह ।

अस्ताएमाग (मग १२, १) । क. अस्ता-यणिज (सामा १, १२) ।

अस्ताय देवो अस्ताय (बम् २, ७, मग) ।

अस्तायण पु [आदवायन] १ मय ऋषि का मतान (जं ७) । २ मयिनी नयन का गोन (इव) ।

अस्तावि वि [आस्ताविन्] करता हुआ, दप-वता हुआ, मच्छद्र, 'जहा धाम्नाविणि नान जाश्वयो दुहर्ण' (सूत्र १, १, २) ।

अस्तास म [आ + ध्यास्य्] धाम्नादन देवा, विलासा देवा । धम्मानप्रदि (श्री) (वि ४६०) । धम्माति (उत २, ४०, वि ४६१) ।

अस्तासण पु [आदवासन] एक महापूह (सुत्र २०) ।

अस्ति श्री [अशि] १ कौण, घर प्रादि का केना (ठा ६) । २ तनवार प्रादि का मय-भाग—वार (उप ५ ६६) ।

अस्ति पु [अशिन] मयिनी नयन का मयि-हायक दव (ठा २, २) ।

अस्तिणी श्री [अशिनी] इस नाम का एक नयन (मम ८) ।

अस्तिव वि [अशिन] मयय-प्राप्त, 'निरा-मेगमस्तिवा' (बनु ठा ७, संवा १८) ।

अस्तु पु [अशु] धाम्, 'धम्' (संवि १७) । अस्तु (गी) न [अशु] मय (मनि ५०, स्थन ८५) ।

अस्तुकि वि [अशुता] निगरी जुगी वा पीन नाक की गई हो वह (वा ५६७ टी) ।

अस्तुद (श्री) देवा अस्तुय = धमूद (मनि १६६) ।

अस्तुय वि [अमृत्] वाद नन निपा हुआ (न) ।

अस्तेसा देवा अस्तेनेमा (मग १७, जिं ३४८८) ।

अस्तेद क [आधुनुनं] धांकिन माल की पूर्णिमा (वद १०) ।

अस्तेद श्री [आधुनुनं] धांकि मात की धाम्ना (सुत्र १०, ६ टी) देवा आसोया ।

अस्तेद श्री [अशेराना] मयिनी-नयन प्रसिद्ध मयन दव के वारा मयदेन (ठा ७) ।

अस्सोत्थ देखो अस्सत्थ (पि ७४, १६२, ३०६) ।

अस्सोयव्य वि [अश्रोतव्य] मुनने के अश्रोतव्य (सुर १४, २) ।

अह अ [अथ] इन अर्थों का सूचक अर्थव्य—
१ शब्द, वाद (स्वप्न ४३, २ ३१, कुमा) ।
२ अथवा, और,

'द्विज्ज सत्ते अह होउ वधणे चयउ

सब्बहा लच्छी ।

पटिन्नपणाले सुपुरिमाणे ण होउ स होउ ।'
(प्रासू ३) ।

३ मँगल (कुमा) । ४ प्रश्न । ५ समुच्चय । ६

प्रतिवचन, उत्तर (वृह १) । ७ विशेष (ठा

७) । ८ मयापेता, वास्तविकता (विसे १२७६) ।

९ पूर्ववत् (विसे १७०३) । १०-११ वाक्य

की शोभा बढ़ाने के लिए और वाद-प्रति में

भी इनका प्रयोग होता है (सुम १, ७, पंचा

१६) ।

अह न [अहन्] विवस, विव (आ १४; पाण) ।

अह अ [अधस्] नीचे (सुर २, ३८) ।

'लोग पुं [लोक्] पाताल-लोक (सुपा ४०) ।

'स्थ वि [स्थ] नीचे रहा हुआ, निम्न स्थित

(पञ्च १०२, ६५) ।

अह स [अदस्] यह, वह (पाण) ।

अह न [वे] दुःख (दे १, ६) ।

अह न [अथ] नाप (पाण) ।

अह 'देखो अह' (दे १, २५; कुमा) । 'कम्म,

'कम्मसो अ [कम्म] कम्म के अनुसार, अनुक्रम

से (श्रीष ५ भा. स ६) । 'कस्साय, 'स्साय

से [क्यात] निर्दिष्ट कारित्र, परिपूर्ण समय

(ठा ५, २, नव २६, कुमा) । 'कस्सायसंजय

वि [क्यातसंजय] परिपूर्ण समय वाला

(मग २५, ७) । 'चंद देखो अहाउं (सं

६) । 'थ वि [थ] ठीक-ठीक रहा हुआ,

मपास्थित (ठा ८, ३) । 'थ वि [थ] वास्तविक

(ठा ५, ३) । 'प्पहाण अ [प्रधान] प्रधान के हितार्थ से (मग १५) ।

अहं अ [अथचिम्] स्वीकार-सूचक

अर्थव्य—हँ, अच्छा (नाट, प्रसी ५) ।

अहंवार पुं [अहंवार] भविमान, सर्व (सुम

१, ६; स्वप्न ८२) ।

अहंकारि वि [अहंकारिन्] भविमान, गर्विष्ठ

(गउड) ।

अहंणिस न [अहंनिश] रात-दिन, सर्वदा

(पिण) ।

अहकम्म देखो अहेकम्म (पिंड १३६) ।

अहण वि [अधन] निर्धन, धनरहित (विसे

२८२२) ।

अहणिस न [अहंनिश] रात-दिन, निरन्तर

(नाट) ।

अहत्ता अ [अधस्तात्] नीचे (मग) ।

अहन्न वि [अधन्य] अप्रसास्य, हृतभाष्य (सुर

२, ३७) ।

अहन्ति देखो अहणिस (सुपा ४६२) ।

अहम वि [अधम] अधम, नीच (कुमा) ।

अहमंति वि [अहमन्तिन्] भविमान, गर्विष्ठ

(ठा १०) ।

अहमहमिआ } नी [अहमहमिका] में

अहमहमिगया } इससे पहले हो जाऊँ ऐसी

अहमहमिगा } चेष्टा, धन्यवाद (गा

५८०, सुपा ५४, १३२; १४८) ।

अहमिद पुं [अहमिन्] १ उत्तम-श्रेणीय

पूर्ण स्वाधीन देवनाति विशेष, देविक और

अनुत्तर विमान के निवासी देव (इक) । २

अपने को इन्द्र समाने वाला, गर्विष्ठ; 'संपद

पुण रामाणी नरि । सव्वेवि अहमिदा' (सुर

१, १२६) ।

अहम्म देखो अधम्म (सुष १, १, २; मग;

नव ६, सुर २, ४४, सुपा २५८; प्रासू १३६) ।

अहम्म वि [अधम्म] धर्मेच्छत, धर्मेरहित,

गौरवाजयी (अण) ।

अहम्माणि वि [अहम्मानिन्] भविमान

(आवम) ।

अहम्मि वि [अधम्मिन्] धर्म रहित, पापी

(सुपा १७२) ।

अहम्मिट्ठ देखो अधम्मिट्ठ (मग १२, २;

अण) ।

अहम्मिय वि [अधम्मिक] धर्माधी, पापी

(विपा १, १) ।

अहय वि [अदत्त] १ अनुदत्त, धन्यार्थि (ठा ८,

पत्र ४१८) । २ अन्नत, अन्नरहित

(सुष २, २) । ३ जो दूसरी तरफ़ दिया

गया हो (वंद १६) । ४ मया, प्रदान (मग ८,

६) ।

अहर वि [दि] शराक, अशमर्थ (दे १, १७) ।

अहर पुं [अधर] १ होठ, श्रोत्र (रुदि) । २

वि. नीचे का, नीचला (पणह १, ३) । ३

नीच, अधम (पणह १, २) । ४ दूसरा, अन्य

(प्राप्ता) । 'गइ छी [गति] अधोगति,

दुर्गति, नीच गति. 'महुराई निति कम्माई'

(पिंड) ।

अहरिय वि [अधरित] तिरस्कृत (सुपा

४७) ।

अहरी छी [अधरी] वेपण-शिला, जिस पर

मसासा कौसल गीसा जाता है वह पथर,

सितकट (उवा) । 'लोठ्ठ पुं [लोठ्ठ] जिसमें

गीसा जाता है वह पथर, लोहा (उवा) ।

अहरीक्य वि [अधरीकृत] तिरस्कृत, अव-

गणित (सुपा ४) ।

अहरीभूय वि [अधरीभूय] तिरस्कृत,

'उपरेल घरतीए, नररपणमिं महणहं देवि ।

अहरीभूयमसें, जयंति तुहं रयणगणाए'

(सुपा ३५) ।

अहस्स पुं [अधरोष्ठ] नीचे का होठ (पणह

१, ३; दे १, ८४; पणह) ।

अहरेम देखो अहिरेम । अहरेम (दे ४,

१६९) ।

अहरेमि अ वि [पूरित] पूरा किया हुआ

(कुमा) ।

अहल वि [अकल] निष्कल, निरर्थक (प्रासू

१३५, रंभा) ।

अहलंद वि [अधालन्द] नीच रात का समय

(पव ७०) ।

अहलंदि देखो अहालंदि (पव ७०) ।

अहय देखो अहया (दे १, ६७) ।

अहयइ (अण) देखो अहया (कुमा) ।

अधया पुं [अधया] १ धारणांतर में

अहया प्रयुक्त किया जाता अर्थव्य (मग,

सुष २, २) । २ या, अथवा (वृह १; निवृ

१; पंचा ३; दे १, ६७) ।

अहव्य देखो अमव्य (गा ३६०) ।

अहव्यय पुं [अधर्म्य] चौथा वेद-शास्त्र

(धोष) ।

अहव्या छी [दे] मसली, गुलटा छी (दे १,

१८) ।

अहह अ [अह] हल अर्थों का, मूफा

अन्य—१ श्रामनण ॥ २ वेद ॥ ३ आध्याय ॥
४ दुःख ॥ ५ आध्याय, प्रथम (हे २, २१७;
या १४; कण्डू; या १५६) ।

अहो ॥ [यथा] जैसे, माफिक, अनुसार (हे १, २४५) । [छन्द] [चन्द्र] ॥ स्वच्छन्दी, स्वरो (ता ८३३ दो) । २ न. मन्त्री के अनुसार (वच २) । [जाय वि] [जात] ॥ नम, प्रावरण-रहित (हे १, १४५) । २ न. जन्म के अनुसार । ३ जैन माधुसौ के बीसा बाल के परिमाण के अनुसार दिया जाता यवन—ममन्वार (धर्म २) । [पुण्डरी श्री] [पुण्य] यथाक्रम, अनुक्रम (छाया १, १; पत्र १, ८) । [तथा न] [तत्त्व] तत्त्व के अनुसार (भग २, १) । [तथा न] [तत्त्व] माय-मय (मम १६) । [पटित्व वि] [प्रतिरूप] ॥ उचित, योग्य (मोष) । २ शिव. दयायोग्य (विवा १, १) । [यत्त वि] [प्रयुक्त] ॥ पूर्व की तरह हो प्रयुक्त, प्रारि-वर्तित (छाया १, ५) । २ न. आत्मा का परिणाम-विशेष (म ४७) । [यवित्तरण] [प्रयुक्तस्तरण] आत्मा का परिणाम-विशेष (मम ५) । [वायर वि] [वायर] निरादर, सार-रहित (छाया १, १) । [भूय वि] [भूत] तारिख, मान्यनिक (छा १, १) । [राहिय, रायणिय न] [राहिय] यथा-प्रेक्ष, बडे के प्रम से (छाया १, १, भाषा) । [रिय ॥] [स्रजु] गलता के अनुसार (भाषा) । [रिह ॥] [रिह] यथोचित (छा २, १) । २ रि. उचित, योग्य (धर्म १) । [रीय न] [रीय] ॥ रीति के अनुसार । २ स्वभाव के माफिक (भग ५, २) । [लट्ट पुं] [लट्ट] बाग का एक परिमाण, पानी म भंडा हुआ हाथ जितने गमय में मूल जाय उठता समय (कण) । [वगास न] [वारास] घनरास के अनुसार (मूम २, ३) । [यच वि] [यच] पुन-पुनः (मा ३, ७) । [सथड रि] [संश्रुत] रुपा के योग्य (भाषा) । [सथि-भाग पुं] [संविभाग] मनु का दा देना (उत्तर) । [सथ न] [सथ] मान्यनिकता गमाई (भाषा) । [सत्त न] [साथ] रहि के अनुसार (धनु ५) । [सुत्त न] [सुत्त] मान्य के अनुसार (मम ७३) । [सुह न

[सुत्त] इच्छानुसार (छाया १, १; भग) । [सुहम वि] [सुहम] मारुत (भग ३, १) । देखो अहो ।
अहालंद वि [यथालन्द] यथानुगत (वान), इच्छानुसार (समय) (भाषा २, ७, १, २) ।
अहालदि पुं [यथालन्दिन] 'यथानन्द' अनु-गान करने वाला मुनि (पव ७०) ।
अहासंकाड वि [दे] निम्नम्, निम्न (निष् २) ।
अहासल वि [अहास्य] हान्य-रहित (मुषा ६१०) ।
अहाह भ [अहाह] देखो अहह (हे २, २१७) ।
अहि देखो अभि (गठ, पाप, पंचक ४) ।
अहि ॥ [अधि] इन प्रयोगों का सूचक अन्य-य ॥ माध्याय, विशेषता, 'ग्रहण', 'ग्रहणम्' । २ माध्याय, मत्ता: 'ग्रहणम्' । ३ ऐश्वर्य, 'ग्रहणम्' । ४ अर्था, उत्तर, 'ग्रहणम्' ।
अहि पुं [अहि] १ मर्ग, साध (पण १; प्राम १६; ३६, १०५) । २ शेष नाम (निष्) । 'वृद्धा श्री' [वृद्धा] नगरे-विशेष (छाया १, १६; तो ७) । 'मह पुन' [मृतक] सोरा का मुर्दा (छाया १, ६) । 'वह पु' [वति] शेष नाम (मनु ६०) । 'विजिज पुं' [विजिज] संध के मूल में सम्पन्न होने वाली अधिक जाति (मुषा) ।
अहिअल न [दे] मोष, छुप्पा (दे १, ३६; पट्ट) ।
अहिआअ न [अभिज्ञान] कुलीनता, गान-वानी (गा ३८) ।
अहिआइ श्री [अभिज्ञानि] कुलीनता (पट्ट) ।
अहिआर पुं [दे] लोभ-आना, जीवन निर्वाह (दे १, २६) ।
अहिउत्त वि [दे] आना राबि (गठ) ।
अहिउत्त वि [अभियुक्त] ॥ विनाश, परिणाम । २ उन्नत उद्योग (ताम) । ३ मनु म पिग दूपा, बेनी १०३ टि) ।
अहिउर गर [अभि + मूर] पुं गर, आना करना । मर्ग 'मर्ग' (गठ) ।
अहिउत्त गर [दट्ट] उपाय, उन्न

करना । ग्रहणनद (हे ४, २०८; पट्ट; कुमा) ।
अहिओय पुं [अभियोग] ॥ संबन्ध (गठ) । २ योगायोग (म २२६) । देवो अभिओअ (मवि) ।
अहिद पुं [अहीन्द्र] १ मर्ग का राजा, शेष नाम (मनु १) । २ मर्ग मर्ग (कुमा) । 'वुर न' [वुर] वसुनि-नगर । 'वुरणाह पु' [वुरणाह] विष्णु, मन्वन् (मनु २६) ।
अहिमग वि [अहिमग] हिमा न करने वाला (मोष ७४७) ।
अहिसन न [अहिसन] ग्रहणा (धर्म १) । अहिसय देखो अहिमग (पट्ट २, १) । अहिसा श्री [अहिसा] दूसरे को किसी प्रकार से दुःख न देना (निष् २; धर्म ३; मूम १, ११) ।
अहिसिय वि [अहिमि] धमारा, धमारा (मूम १, १, ४) ।
अहिमिन देखो अभिमिन गट्ट. अहिमिन (पंचक ४) ।
अहिमिन वि [अभिज्ञान] अभिज्ञानी, इच्छा (मनु) ।
अहिकमि देखो अहिकमि (मूम १, १२, २२) ।
अहिकय वि [अहिमिन] अभिज्ञानी बनना हो पट्ट, प्रमनु (मिगे १५८) ।
अहिकरण देखो अहिकरण (निष् ४) ।
अहिकरणी देवा अहिकरणी (छा ८) ।
अहिकार देवा अहिकार (छा १४, १७) ।
अहिकार देवा अहिकारि (रंभा) ।
अहिकारि भ [अहिमिन] अभिज्ञानी बन, बरेय बन (भाषा १) ।
अहिकरण न [दे] उपाय, उन्नता (दे १, ३५) ।
अहिकरण रि [अभिज्ञान] १ निम्न । २ निम्न । ३ मर्ग । ४ पण्य । ५ निम्न (गठ) ।
अहिकरण न [अधि + मूर] १ निम्न । २ पण्य । ३ निम्न । ४ मर्ग । ५ निम्न । ६ मर्ग । ७ निम्न । ८ निम्न । ९ निम्न । १० निम्न । ११ निम्न । १२ निम्न । १३ निम्न । १४ निम्न । १५ निम्न । १६ निम्न । १७ निम्न । १८ निम्न । १९ निम्न । २० निम्न । २१ निम्न । २२ निम्न । २३ निम्न । २४ निम्न । २५ निम्न । २६ निम्न । २७ निम्न । २८ निम्न । २९ निम्न । ३० निम्न । ३१ निम्न । ३२ निम्न । ३३ निम्न । ३४ निम्न । ३५ निम्न । ३६ निम्न । ३७ निम्न । ३८ निम्न । ३९ निम्न । ४० निम्न । ४१ निम्न । ४२ निम्न । ४३ निम्न । ४४ निम्न । ४५ निम्न । ४६ निम्न । ४७ निम्न । ४८ निम्न । ४९ निम्न । ५० निम्न । ५१ निम्न । ५२ निम्न । ५३ निम्न । ५४ निम्न । ५५ निम्न । ५६ निम्न । ५७ निम्न । ५८ निम्न । ५९ निम्न । ६० निम्न । ६१ निम्न । ६२ निम्न । ६३ निम्न । ६४ निम्न । ६५ निम्न । ६६ निम्न । ६७ निम्न । ६८ निम्न । ६९ निम्न । ७० निम्न । ७१ निम्न । ७२ निम्न । ७३ निम्न । ७४ निम्न । ७५ निम्न । ७६ निम्न । ७७ निम्न । ७८ निम्न । ७९ निम्न । ८० निम्न । ८१ निम्न । ८२ निम्न । ८३ निम्न । ८४ निम्न । ८५ निम्न । ८६ निम्न । ८७ निम्न । ८८ निम्न । ८९ निम्न । ९० निम्न । ९१ निम्न । ९२ निम्न । ९३ निम्न । ९४ निम्न । ९५ निम्न । ९६ निम्न । ९७ निम्न । ९८ निम्न । ९९ निम्न । १०० निम्न ।

अहिकखेय पु [अधिक्खेय] १ तिरस्कार ।
२ स्वापन । ३ प्रेरणा (नाट) ।

अहित्तिव देखा अहिकित्तव वड अहित्तिपंत
(स ५७) ।

अहिग देखो अहिय = ग्रथिक (विसे १६४३
टी) ।

अहिखीर सक [दे] १ पकटना । २ ग्राघात
करना । महिलीरुद (भवि) ।

अहिगंध वि [अधिगन्ध] ग्रथिक गन्ध वाला
(गलड) ।

अहिगम सक [अधि + गम्] १ जानना ।
२ निर्णय करना । ३ प्राप्त करना । क.
अहिगम्म (सम्म १६७) ।

अहिगम सक [अभि + गम्] १ सामने
जाना २ घावर करना । क. अहिगम्म
(सण) ।

अहिगम पुं [अधिगम] १ ज्ञान (विसे
६०८) ।

‘जौबाईएणमहिगमो निच्छत्तसम त्थोवममभाव’
(धर्म २) । २ उपलम्भ, प्राप्ति (दे ७, १४) ।
३ गुरु पारि का उपदेश (विसे २६७५) ।
४ सेवा, भक्ति (सम ५१) । ५ न. गुरु भादि
के उपदेश से होनेवाली सद्धर्म प्राप्ति—सम्प-
न्न (सुपा ६४८) । ६ रुई की [रुचि] १
सम्यक्त्व का एक भेद । २ सम्यक्त्व वाला
(भव १४५४) ।

अहिगम देखो अभिगम (भीष, से न, ३३,
गलड) ।

अधिगमन न [अधिगमन] १ ज्ञान । २
निर्णय । ३ प्राप्ति, उपलब्ध (विसे) ।

अधिगमय वि [अधिगमक] जनानेवाला,
बतलानेवाला (विसे ५०३) ।

अधिगमिय वि [अधिगत] १ ज्ञात । २
निश्चित (सुर १, १८१) ।

अधिगम्म देखो अहिगम = ग्रथि + गम् ।
अधिगम्म देखो अहिगम = ग्रथि + गम् ।

अधिगय वि [अधिगय] १ प्रस्तुत (रमण
३६) । २ न. प्रस्ताव, प्रसंग (राव) ।

अधिगय वि [अधिगत] १ उपलब्ध, प्राप्त
(उत्त १०) । २ ज्ञात (दे ६, १४८) । ३
गु. मोक्षार्थ गुण, शास्त्राभिन्न साधु (भव १) ।

अधिगर पुं [दे] १ नगर (जीव १) ।

अधिगरण पुन [अधिकरण] १ युद्ध, लड़ाई
(उप पृ २६८) । २ असत्य, पाप-कर्म से
सन्निवृत्ति (उप ८७२) । ३ ग्राम मित्र बाबा
वस्तु (ठा २, १) । ४ पाप जनक क्रिया
(छाया १, २) । ५ ग्राघात (विसे ८४) ।
६ बेट, उगहार (बृह १) । ७ कलह, विवाद
(बृह १) । ८ हिंसा का उपकरण, ‘मोहप्रेण
यद्यय हृतवस्त्वतमुपलप्युदमहिगरण’ (विसे
६१) । ९ ‘कळ’, ‘कर वि [क] कलहकारक
(सूत्र १, २, २, याचा) । १० ‘किरिया स्त्री
[किरिया] पाप-जनक कृति, दुर्गति मे से
जानेवाली क्रिया (पहल १, २) । ११ ‘सिद्धत
पुं [सिद्धास्त] भाग्यविक सिद्धि करनेवाला
सिद्धान्त (सूत्र १, १२) ।

अधिगरणी की [अधिरणी] सोहार का
एक उपकरण (भग १६, १) । २ ‘खोडि की
[खोडि] जितपर अधिकारणी रखी जाती
है वह कण्ड (भग १६, १) ।

अधिगरणिया की [आधिकरणीकी] देखो
अधिगरणीया । अधिरण किरिया (सम
१०, ठा २, १, नव १७) ।

अधिगरी [दे] १ नगर, स्त्री नगर (जीव
२) ।

अधिगार पुं [अधिकार] १ विभव, संपत्ति,
‘नियमप्रहारणुषक वम्मलमहिमे विहिस्तामो’
(सुपा ५१) । २ हक, सत्ता (सुपा ३५०) ।
३ प्रस्ताव, प्रसंग (विने ४७७) । ४ ग्रन्थ-
विभाग (वनु) । ५ योग्यता, पात्रता (प्रामू
१३५) ।

अधिगारि वि [अधिकारि] १ भयल-
अधिगारिय बाद, रात्र निद्रुक्त सतापीरा,
‘ता तपुपादिगारे समागमो त्वय तस्मि लखे’
(सुपा ३५०, या २७) । २ वात, योग्य (प्रामू
१३५, सण) ।

अधिगिष्ठ थ [अधिगृह्य] ग्रथिकार करने
(उवर ३६, ६६) ।

अधिगय पु [अभिघात] भास्फानन, घाघात
(गलड) ।

अधिच्छत्ता की [अधिच्छत्ता] नगरी-विरोध,
मुख्यतः देश की प्राचीन राजधानी (गिरि
७८) ।

अधिजाइ की [अभिजाति] दुनोतला (प्रामू) ।

अधिजाण सर [अभि + ज्ञा] पहिचानना ।
भवि. महिजाणिएसदि (सी) (पि ५३४) ।
अधिजाय वि [अभिघात] कुलीन (भग ६,
३३) ।

अधिजुंज देखो अभिजुंज । सङ्ग. अहिजुजिय
(भग) ।

अहिजुत्त देखो अभिजुत्त (प्रवी ८४) ।

अहिज्ज सक [अधि + इ] पढ़ना, ग्रन्थास
करना । महिज्ज (प्रत २) । वङ्ग. अहिज्जंत,
अहिज्जमाण (उप १६६ टी, उवा) । सङ्ग.
अहिज्जित्ता, अहिज्जा (उत्त १, सूत्र १, १२)
हेङ्ग. अहिज्जित (वस ४) ।

अहिज्ज वि [अधिगय] धनुष की डोरी पर
बढाया हुआ (बाण) (दे ७, ६२) ।

अहिज्ज वि [अभिज्ञ] जानकार, निद्रुण
अहिज्ज (पि २६६, प्राक, वस) ।
अहिज्जण न [अध्ययन] पठन, ग्रन्थास (विसे
७ टी) ।

अहिजाण (सी) देखो अधिजाण (प्राक ८७) ।
अहिजायिय वि [अध्यापित] पाठित, पढाया
हुआ (उप पृ ३३) ।

अहिज्जिय वि [अधीत] पठित, ग्रन्थस्त (सुर
८, २२१; उप ५३० टी) ।

अधिक्किय वि [अभिधित] लोभ-रहित,
मनुष्य (भग ६, ३) ।

अहिट्ट सक [अधि + ट्टा] करना । महिट्ट
(वस ६, ४, २) ।

अहिट्टा वि [अधिष्टक] मधिष्ठान, विधायक,
बाल,

‘तासदीपलभयेनु. न निविज्जान न पीएण ।
निग्गयापडिहेहाए, बुद्धुत्तमहिट्टा’
(वस ६, ५५) ।

अहिट्टण देखा अहिट्टाण (पचा ७, ३३) ।
अहिट्टा सक [अधि + स्था] १ ऊपर चलना ।

२ आग्रह लेना । ३ रहना, निवास करना ।
४ शासन करना । ५ करना । ६ हटाना । ७

आग्रह करना । ८ ऊपर चढ़ बैठना । ९
वश करना । महिट्टेड (निद्रु ५), ‘ता महि-
ट्टेहि हम्म रज्ज’ (स २०४) । महिट्टेजा (पि
२५२, ५६६) । वड. अहिट्टत (निद्रु ५) ।

वङ्ग. अहिट्टिज्जमाण (ठा ४, १) । सङ्ग.
अहिट्टेड्वा (निद्रु १२) । हेङ्ग. अहिट्टित्तप
(इद ३) ।

अहिष्टाण न [अधिष्ठान] १ बैठना (निष्ठ ५)। २ आश्रयण (सूत्र १, २, ३)। ३ मानिन बनना (भाषा)। ४ स्थान, आश्रय (स ४६६)।

अहिष्टायक वि [अधिष्ठायक] धन्यदा, अधि-पति (कुप्र २१६)।

अहिष्टायण न [अधिष्ठापन] ऊपर रखना (निष्ठ ५)।

अहिष्टिय वि [अधिष्ठित] १ प्रव्यासित (शाखा १, १४)। २ प्रयोग किया हुआ (शाखा १, १४)। ३ आवात, आविष्ट (छा ५, २)।

अहिष्टाण न [अधिष्ठान] अपान-प्रदेश (पत्र १३५)।

अहिष्टुय वि [दे. अभिष्टुत] पीडित, 'ग्रहिष्टुय पीडित' परब 'ब' (पाम)।

अहिण्द देवो अभिण्द । वरु- अहिण्द-माण (पत्रम ११, १२०) वरु- अहिण्द-दिजमाण, अहिण्दीअमाण (नाट. वि ५६३)।

अहिण्दण देवो अभिणदण (पत्रम २०, ३०, मवि)।

अहिण्दि वि [अभिनाम्दि] मानन्द मानने वाला (स ६७७)।

अहिण्दिय देवो अभिण्दिय (पत्रम ८, १२१, स १४)।

अहिणय देवो अभिणय (बन्धू, सण)।

अहिणय पु [अभिन्न] १ धेनुगन्ध बाण्य का बर्ता घना प्रत्येक (मि १, ६)। २ वि. प्रवन, मया (साया १, १, सुपा ३३०)।

अहिणयेमाण देवो अहिणी ।

अहिणयेमाण देवो अहिणु ।

अहिणाय देवो अहिणायण (मवि)।

अहिणवोह पु [अभिनिबोध] ज्ञान निरोध, मनज्ञान (पण २६)।

अहिणयस सर [अभिनि + यस्] वसना, रूना । वरु- अहिणयसमाण (सुता २३१)।

अहिणयिष्ठ नि [अभिनिष्ठ] आच्छाद-भन (म २७३)।

अहिणयेम पु [अभिनिवेश] आच्छाद हठ (म ६२३, मवि ६५)।

अहिणयेस नि [अभिनिवेशिन] आच्छाद (मि ४०५)।

अहिणी स्त्री [अहि] नागिन (वज्रा ११४)। अहिणी देवो अभिणी वरु- अहिणवेमाण (सुर ३, १५०)।

अहिणील वि [अभिनील] हय, हय रंग वाला (गठ ७)।

अहिणु सक [अभि + नु] स्तुति करना, प्रशंसा । वरु- अहिणवेमाण (सुर ३, ७७)।

अहिण्ण वि [अभिन्न] भेदरहित, मधुमधूत (गा २६५, ३६०)।

अहिण्णाग म [अभिज्ञान] विह, निशानी (मवि ११)।

अहिण्णु वि [अभिज्ञ] निगुण, ज्ञाता (हे १, ५६)।

अहित्त वि [अभित्त] तापित, संतापित (सत २)।

अहित्ता देवो अहित्त = मवि + ह ।

अहिदायग वि [अभिदायक] देने वाला, दाता (मुपा ५४)।

अहिदेवया स्त्री [अधिदेवना] ग्रहिष्ठाता देव (मुपा ६०, बन्धू)।

अहिद्वन सक [अभि + द्वा] हैयन करना । ग्रहिद्वनित (म ३६३)। मवि- ग्रहिद्वित्सद (स ३६६)।

अहिद्वुय वि [अभिद्वुत] हैयन किया हुआ (स ५१४)।

अहिधाव सक [अभि + धाव] दौटना, सामने दौड़ कर जाना । वरु- अहिधावत (मि १३, २६)।

अहिनाण } देवा अहिणगाण (था १६, मुपा अहिनाण } २४०)।

अहिनिवेस देवो अहिणिवेस (म १२५)।

अहिचणुअ सक [अहि + चणु] बहल करना । ग्रहिचणुअ (हे ४, २०६, पट्ट)। अहि-पचुचुअंति (मुपा)।

अहिपचुअ सर [आ + गम्] जाना । ग्रहि-पचुअ (हे ४, १६३)।

अहिपचुअइ वि [आगम] आगम (मुपा)। अहिपचुअइ न [दे] मनुष्यन, मनुष्यण (हे १, ४६)।

अहिपउ गर [अभि + पन्] मानने वाला । ग्रहिपउ (पर १०६)।

अहिपास सर [अधि + दा] १ मवि ।

देवना । २ समान रूप से देखना । ग्रहिपास (सूत्र १, २, ३, १२)।

अहिप्पाय देवो अभिप्पाय (महा. बन्धू)। अहिप्पेय देवो अभिप्पेय (उप १०३१ टी स ३४)।

अहिभव देवो अभिभव (गठ ७)।

अहिमंजु पुं [अभिमन्जु] मंजुन के एक पुत्र का नाम (कुमा)।

अहिमतण वि [अभिमानण] मानित करना, मन्य से संस्कारना (मवि)।

अहिमंतिअ वि [अभिमानित] मन्य के संस्कार (महा)।

अहिमज्जु } देवो अहिमज्जु (कुमा, पट्ट)।

अहिमण्णु } अहिमण्णु

अहिमय वि [अभिमत] संमत, हट (म २००)।

अहिमयय पुं [अहिमकर] सूत्र, रवि (पाम)।

अहिमर पुं [अभिमार] घनादि के लोभ से दूसरे को भारने वा साहम करने वाला (सुर १, ६८)। २ गजानिपातव (निते १७६४)।

अहिमाण पुं [अभिमान] गर्व, ग्रहनार (आनु १७, सण)।

अहिमाणि नि [अभिमानिन्] अभिमानी, गविष्ठ (स ४३१)।

अहिमार पुं [अभिमार] बुद्ध-क्रिये, 'एतं ग्रहिमारदारम ग्रणी' (उत्तनि ३)।

अहिमास } पुं [अधिमास, 'य' ग्रहित-अहिमासग] मास (मास १, निष्ठ २०)।

अहिमुह नि [अभिमुह] मंजुन, सायने रहा हुआ (मि १, ४४, पत्रम ८, १६७, गठ ३)।

अहिमुहिहउ } नि [अभिमुह्यीभूत] नामने अहिमुहिहउ } माया हुआ (पत्रम १२, १०५ ४५, ६)।

अहिय नि [अविक] १ ग्यादा, क्रिये (मीन-जी २०, हयन ४०)। २ मवि. बटन, बन्धन (महा)।

अहिय नि [अहित] ग्रहितकर, बटु दुग्मन (महा, मुपा ६६)।

अहिय नि [अधीन] पंडित, मन्त्रण, 'महिय-वो पंडित' (पर १०६)।

अहियास सर [अधि + दा] १ मवि ।

अधिया स्त्री [अधिया] भगवान् धीनमिनाय
को प्रथम शिल्पा (सप्त १५२) ।
अधियाइ देवो अधियाइ (पठ्) ।
अधियाय देवो अधियाय (पात्र) ।
अधियार पुं [अभियार] शत्रु के वध के लिए
क्रिया जाता मन्त्रादि प्रयोग (गठ) ।
अधियार देवो अधियार (स ५४३, पात्र-
मुद्रा २६६, सट्ट ७ टी: भवि, दे ७, ३२) ।
अधियारि देवो अधियारि (दे ६, १०८) ।
अधियास सक्र [अधि + आस्, अधि +
सह] सहन करना, कष्टों को शान्ति से
भोगना । अधियासह, अधियामह, अधियामेद
(उव, महा) । बर्न, अधियासिगजति (भग) ।
बह्. अधियासेमाण (मावा) । बह्. अधि-
यासित्ता, अधियासेत्तु (मूम १, ३, ४,
मावा) हेह अधियासित्ता (मावा) । क
अधियासियव्व (उप ५४३) ।
अधियास वि [अध्यास, अधिसह] सहिष्णु
(हृह १) ।
अधियासन न [अध्यासन अधिसहन]
सहन करना (उव ५३६, स १६२) ।
अधियासन न [अधिसाशन] अधिन भोगन,
भोग्यो (ठा ६) ।
अधियासिय वि [अध्यासित, अधिपोड]
सहन किया हुआ (मावा) ।
अधिर पु [आभीर] महीर, बाभला (पा
८११) ।
अधिरस देवो अधिरस । बह्. अधिरसत
(सट्ट १५४) ।
अधिरस बह् [अभि + रम्] क्रोध करना,
सभोग करना । अधिरसति (शी) (नाट्) । हेह
अभिरसत् (शी) (नाट्) ।
अधिरस्य वि [अभिरस्य] मुन्दर, मनोहर
(भवि) ।
अधिराम वि [अभिराम] मुन्दर, मनोहर
(गम) ।
अधिरामिण वि [अभिरामिन्] धान्य देने
वाला (सण) ।
अधिराय पु [अधिराज] १ राजा (हृह ३) ।
२ स्वामी, पति (मण) ।
अधिराय न [अधिराय] सम्य, प्रबुद्ध
(गठ् ७) ।

अधिरिअ देवो अधिरीअ (पठ् ६३१) ।
अधिरीअ वि [अहीर] निर्लज्ज, बेचरस (हि २,
१०४) ।
अधिरीअ वि [दे] निस्तेज, फीका (दि १,
२७) ।
अधिरिमाण वि [दे अहारिन्, अधीमनस्]
१ अमनोहर, मन को प्रविष्ट । २ प्रत्य-
कारक, 'एग्यरे मत्तये अभिनाय तितिव्व-
माणे पण्वए जे व हिरि, जे व अधियेमाण'
(मावा १, ६, २) ।
अधिरुय वि [अभिरूप] १ सुन्दर, मनोहर
(भवि २११) । २ अनुकूल, योग्य (विक ३८) ।
अधिरेम सक्र [हृ] पूरा करना, पूजित करना ।
अधिरेमह (हि ४, १६६) ।
अधिरोग्ग वि [दे] पूर्ण (पठ्) ।
अधिरोग्ग न [अधिरोग्ग] ऊपर चढ़ना,
मारोहण (मा ४०) ।
अधिरोहि वि [अधिरोग्ग] ऊपर चढ़ने
वाला (भवि १७०) ।
अधिरोग्गिणी वि [अधिरोग्गिणी] नि योणी,
सीढ़ी (दे ८, २६) ।
अधिर वि [अधिर] सकल, सब (गठ् ३,
रमा) ।
अधिरस } सक्र [साइत्त] चाहना, अभि-
अधिरस } लाय करना । अधिरसह, अधि-
अधिरस्य } लयह (ह ४, १६२), 'अधिर-
वसति वुसति अ रदवावार वित्तासिणीहिम-
पाइ' (मे १०, ५७) ।
अधिरस्य वि [अधिरस्य] अनुमान से
जानने योग्य (गठ् ६) ।
अधिरस बह् [अभि + लप्] क्षमापण
करना, नहना । बह्व. अधिरसपमास (स
८४) ।
अधिरस बह् [अभि + लप्] अभिनाय
करना, चाहना । अधिरसद (महा) । बह्
अधिरसत (नाट्) ।
अधिरसिय वि [अधिरसिन्] मान्यता (सुर
४, २४८) ।
अधिरसिर वि [अधिरसिन्] अभिनायो,
हनुता (दि ६, २८) ।
अधिराण न [अभिराण] गुप्त वा बचन
विशेष (श्यामा १, १७) ।

अधिराय पु [अभिराय] शब्द, आवाज (ठा
२, ३) ।
अधिरास पु [अभिरास] इच्छा, वाग्द, चाह (सठ् ३) ।
अधिरासि वि [अभिरासिन्] चाहनेवाला
(नाट्) ।
अधिरासि न [दे] १ पराभव । २ क्रोध, गुस्सा
(दे १, ७७) ।
अधिरासि सक्र [अभि + लिप्] १ चिन्ता
करना । २ लिखना । अधिरासि (मुद्रा
१०८) । बह्. अधिरासिह (वेणी २५) ।
अधिरोग्ग न [अभिरोग्ग] ऊंचा स्थान
(पण् २, ४) ।
अधिरोग्ग वि [अभिरोग्ग] चपल, चञ्चल
(गठ् ३) ।
अधिरोग्गिणी वि [अभिरोग्गिणी] सौन्दर्य,
रूपता (से ३, ४७) ।
अधिर वि [दे] धनवान्, धनी (दे १, १०) ।
अधिरिया स्त्री [अधिरिया] एक सती स्त्री
(पण् १, ४) ।
अधिर [अधिप] १ ऊपर, मुखिया (उव
७२८ टी) । २ माविक, स्वामी (गठ् ३) ।
३ राजा, भूप, 'दुद्राहिमा बह्वरा हवति'
(गोय ८) ।
अधिरस वि [अधिपति] ऊपर देवो (श्यामा
१, ८, गठ् ३, मुर ६, ६२) ।
अधिरस देवो अधिरस (पठ्) ।
अधिरसिय वि [अभिरसिन्] नमस्सुत (न
६४१) ।
अधिरस देवो अधिरस (पठ्) ।
अधिरस बह् [अधि + पन्] क्षीण होना ।
बह्व. 'एव नित्तारे माणुससणे भीविअ अधि-
वडते' (सट्ट २३) ।
अधिरस बह् [अधि + पन्] क्षान्त । बह्व.
अधिरसत (राज) ।
अधिरस देवो अधिरसद अधिरसदामो
(भवि) ।
अधिरसि वि [अभिरसिन्] उत्तर भोग्य-
अधिरसि } पदा नाम वा प्रविष्टाना देवता
(मुद्रा १०, १२, जे ७—पत्र ४६८) ।
अधिरसि वि [अभिरसिन्] यदाया दृमा
(स २४७) ।

अहुल्ल वि [अहुल्ल] यविवसित (कुमा) ।
अहुयंत वट [अभयन्त] न होता हुमा
(कुमा) ।

अहूण देखो अहीण = ग्रहीण (कुमा) ।

अहूय वि [अभूत] जो न हुमा हो [पुत्र]
वि [पूर्व] जो पहले कभी न हुमा हो (कुमा) ।

अहे घ [अधस्] नीचे (घाचा) । 'कम्म
न [कम्मन्] प्राधाकर्म, भिगा ना एव लोप
(पर) । 'काय पु [काय] शरीर वा नीचला
हिस्ता (सूत्र १, ४, १) । 'चर वि [चर]
जित प्रादि न रहने वाले सगं बोएह जनु
(घाचा) । 'तारग पु [तारक] पिराच-
विशेष (पण १) । 'दिसा लो [दिक्]
नीचे की दिशा (घाचा) । 'लोग पु [लोक]
पाताल-लोक (ठा २ २) । 'वाय पु [वाय]
नीचे बहनेवाला वायु (पण १) । २ भवान-
वायु पदेन (घानन) । 'विषह वि [धिकट]
भित्तिवारिहृत स्थान, खुला स्थान, 'तसि
भग्न भग्निके पहेविषह प्रतिपासए दविण'
(घाचा) । 'सत्तमा लो [सत्तमी] सातवी
या भन्तिम नरकभूमि (सम ४१, लाभा १,
१६, १६) । देखो अहो = भयस् ।

अहे देखो अह = भय (भा १, ६) ।

अहेउ पु [अहेतु] १ सत्य हेतु वा विरोधी,
हेत्वामास (ठा ५, १) । २ वि बारणरहित
नित्य (सूत्र १, १, १) । 'वाय पु [वाद]
आगमवाद, जिसमे सगं—हेतु को छोडकर

बैचक शाख ही प्रमाण माना जाता हो एंगा
वाद (सम्प १४०) ।

अहेउय वि [अहेतुक] हेतुवाजित, निष्कारण
(पउम ६३, ४) ।

अहेकम्म पुन [अध उरम्मन्] १ भयोकमति मे
ने जाने वाला कर्म । २ भिगा ना धावाकर्म
दोष (पिठ ६६) ।

अहेसणिञ्ज वि [ययैपमीय] संस्काररहित
बोए, 'महम्मणिञ्जो वर्याद जाएज्' (घाचा) ।

अहेसर पु [अहरीभर] सुवे, गूरज (महा) ।

अहो देया अइ = भयस् (सम ३६, ठा २, २,
३, १, भग, लाभा १ १, पउम १०२, ८१,
पण ३) ।

'करण न [करण] कलह, कगडा (निबु
१०) । 'गइ लो [गति] १ नरक मा विषंघ
योनि । २ धननि (पउम ८०, ४६) । 'गामि
वि [गामिन्] दुर्गति मे जानेवाला (सम
१५३, या ३३) । 'तरण न [तरण] कलह,
कगडा (निबु १०) । 'सुह वि [सुर]
भयोमुल, भयन मुल, लजिन (पुर २, १५८,
३, १३५, सुता ३४२) । 'लोइय वि
[लीकिक] पाताल लोक मे सतय रखने-
वाला (सम १४२) । 'हि वि [अवधि]
१ नीचे दर्जा का अधिज्ञान वाला (राय)
२ पुली नीचे दवा का अधिज्ञान, भव
धिज्ञान का एक नेद (ठा २, २) ।

अहो घ [अहनि] दिवस में, 'मही य रायो
मे सिवाभिनासिणो' (पउम ३१, १२८, पण २,
१) ।

अहो घ [अहो] इन प्रयोगों का सूचक शब्द—
१ विलम्ब, माघर्ष्य । २ तेंद, शीत । ३ भान-
न्यण, शनोपन । ४ निर्वर्ष । ५ प्रशमा । ६
अमूया, द्वेष (हे २, २१७, घाचा, गउड) ।

'दान न [दान] प्राघर्ष्य वार' दान (उत्त
२, कण्ठ) । 'पुरिसिगा, 'पुरिमिया लो
[पुरिपिस्] गर्व, धमिमल (स १२३,
२८८) । 'विहार पु [विहार] संयम का
प्राघर्ष्यजनक अनुदान (घाचा) ।

अहो घ [अहो] दीनता-सूचक शब्द (पण
१६) ।

अहो पुन [अहन्] दिन, दिवस (पिण) ।
'णिस, निस, निसि न [निश] रात और
दिन, दिन-रात, 'णिरए णेरइयाण अहोणिस
पधमणएण' (सूत्र १, ५, १, या ५०), अतो
अहोणिसिस् उ' (जिसे ८७३) । 'रत्त पु
[रान्] १ दिन और रात्रि परिमित काल,
प्राठ प्रहर (ठा २, ४), 'तिरिण अहोरत्ता
पुण न सतिमिया कयनेण' (पउम ४३, ३१) ।
२ बार प्रहर का समय (जो २) । 'राइया
लो [रात्रिको] ध्यानप्रधान अनुदान विशेष
(पचा १८, भाव ४, सम २१) । 'राइदिय
न [रात्रिनिद्रा] दिनरात (भग, मीप) ।
अहोरण न [दि] उत्तरीय वज्र, चारर (हे १,
२५, गा ७७१) ।

इम तिरिपाइअसदमहण्ये अघाराइनहसकलणो
खाम पडमी तरंगो समलो ।



आ

आ पु [आ] १ प्राकृत वर्णमाला का द्वितीय
स्वर वर्ण (प्राभा) । इन अक्षरों का सूचक
शब्द—२ अ मर्यादा, सीमा 'आस
मुद' (गउड, जिसे ८७४) । ३ अभिविधि,
व्याप्ति 'आसुनसिदर फलिहभामो' (कुमा
जिसे ८७४) । ४ बोधपन, श्रवणता

आशीलककहटुर वरण' (गउड) 'आधव'
(हे ६, ३१, जिसे १२३५) । ५ सम्मत्ता
चारो धीर 'अणुन उन्मा विवहएणमर-
कवरीविलचियसम्मि' (गउड, जिसे ८७५) ।
६ अधिगता विरोधता 'मावीण' (सूत्र
१, ५) । ७ स्मरण, याद (पउ) । = नित्यय,

आधर्ष्य (अ ५) । ६-१० क्रियाशब्द के योग
मे अर्थविविधता धीर विपर्यय, 'आहट्ट',
आगच्छेत' (पउ, कुमा) । ११ वाक्य की
सीमा के लिए भी इसका प्रयोग होता है
(लाभा १, २) । १२ पादपूर्ति में प्रयुक्त क्रिया
जाता शब्द (पउ २, १, ७६) ।

आ ॥ [आ] नोचे, घमः (राय ३५, ३६) ।
 आ घ [आस्] धन धन्यो का सूचक धन्य-
 १ खेद (गा ६२६) । २ दुःख । ३ दुःस्मा,
 श्रेय (मपू) ।
 आ म न [या] जाना । 'धन्यो ए धामि छेत'
 (गा ८२१) ।
 आअ वि [दे] १ मर्यत, बहुत । २ दीर्घ,
 लम्बा । ३ विषय, वडि । ४ न. तोह,
 तोह । ५ कुमन, मूलन (दे १, ७३) ।
 आअ वि [आगत] धाया हुआ, 'परयति
 भाषरोला' (मे १२, ६८; दुमा) ।
 आअअ वि [आगत] धाया हुआ (मे ३, ४,
 १२, १८; गा ३०१) ।
 आअअ वि [आगत] लम्बा, विस्तीर्ण (दे
 ११, ११),
 'मलयमूदेविद्ध न मोतितम पिमद भावमग्गो ।
 मोरो पाउसमाले वण्णजगगं उममिद्धि'
 (गा ३६४) ।
 आअअ म न [छप्] १ लीचना । २ जोतना,
 बास करना । ३ देना करना । भासंछद (पट्) ।
 आअंतअर देतो आगम = मा + मप् ।
 आअंतुअ देतो आगतुय (स्वन् २०; मभि
 १२१) ।
 आअंविअ देतो आअंवि (दे १०, ५१) ।
 आअंवि नि [आताम] घोषा लाल (मे ६, ११;
 मूर १, ११०) ।
 'आअंवि पुं [पादस्य] हंम, पति-विशेष (मे
 ६, ३१) ।
 आअस्स म न [आ + पत्] बहना,
 बीनना, उतरेष बहना । भायपाहि (मग) ।
 वनं. भायस्त्रीपदि (शी) (माट) । मूट. भाय-
 स्त्रिद (शी) (माट) ।
 आअस्स देतो आअस्स । भायस्त्रिद (पट्) ।
 मट. आअस्त्रिद, आअस्त्रिद (माट,
 नि ५८१, ५८५) ।
 आअस्स मा [दे] परस होवर बनना ।
 भायट्ट (दे १, १६) ।
 आअस्स मा [व्या + ट] व्याप्त होना, भाय
 में लगना । भायट्ट (पण पट्) । भायट्ट
 (दे ४, ८१) ।
 आअस्स वि [दे] परसराचित, दूसरे की
 प्रेरणा में बना हुआ (दे १, ६८) ।

आअस्स वि [व्यापृत] बायं मे लगा हुआ
 (दुमा) ।
 आअस्स देतो आयस्स (गा ६५६) ।
 आअस्स देतो आयस् (मिग) ।
 आअस् देतो आगय (प्राह १२, संति ६) ।
 आअम देतो आगम (मपू ७; मभि १८४,
 गा ४७६; स्वन् ४८; मुदा ८३) ।
 आअम देतो आगम (मे ३, २०; मुदा
 १८७) ।
 आअर स [आ + ट] भादर करना, लभार
 करना । भायट्ट (पट्) ।
 आअर न [दे] १ उद्वन, ऊनत । २ कूच
 (दे १, ७४) ।
 आअर पुं [दे] १ रोग, बीमार (दे १, ७२;
 पाय) । २ वि. चंचल, चंचल (दे १, ७५) ।
 देतो आयस्स ।
 आअरि [छो] [दे] भादो, लतामो मे विविड
 आअरि (दे १, ६१) ।
 आअर म न [वेप्] वापना । भायट्ट
 (पट्) ।
 आआमि देतो आगमि (मभि ८१) ।
 आआस देतो आयस् (पट्) ।
 आआसतअ [दे] देतो आयासतल (पट्) ।
 आइ स [अ + दा] प्रहण करना, सेना ।
 भायट्ट (मूर १, ७, २६) । भायट्टि (मग) ।
 वनं. भायट्ट (मग) । भायट्ट (मग) ।
 आयट्टा, आइसु (भायट्ट मूर १, १२;
 नि ५७७) । प्रयो. भायट्टि (मूर २, १) ।
 क. आइयट्ट (मग) ।
 आइ पुं [आदि] १ प्रथम, पहला (मूर २,
 १३२) । २ वरिष्ठ, प्रवृत्ति (मी ३) । ३
 समीप, पास । ४ प्रसार, भेद । ५ धन्य,
 श्रेय । ६ भवान, मुन, 'द्वय भासंति निगोह'
 मिहत्तादयो दिप्ता तुक्क' (दुमा मूर १,
 १३) । ७ उपति (मम ६५) । ८ संवाद,
 दुन्ना (मूर १, ७) । 'गर नि [कर] १
 भादि प्रसर्ज (मम १) । २ पुं. भायट्ट
 भायट्ट (पम २८, ३६) । 'मुण पुं [मुण]
 भायट्टि दुण (भाय ४) । 'भाद पुं [नाय]
 भायट्टि भायट्ट (भायम) । 'उत्तियर पुं
 [नीधर] भायट्टि भायट्ट (पम) ।
 'नय पुं [दर] भायट्टि भायट्ट (पम ३,
 १३२) । 'म पुं [म] प्रथम, भाय, पहला
 (भाय ५) । 'मूल पुं [मूल] मुख्य बारण
 (भाय) 'मोस पुं [मोस] संसार मे
 छुटना, मोस । २ सोम ही मुक होने वाली
 भायट्ट, 'द्वयो मे ए सेवति भायट्टो
 हि ते वणा' (मूर १, ७) । 'राय पुं [राय]
 भायट्टि भायट्ट (भा ६) । 'वराह पुं
 [वराह] कृष्ण, नारायण (मे ७, २) ।
 आइ वि [आदि] खलवाना (पंथा १८,
 ३६) ।
 आइ छी [आजि] संग्राम, लड़ाई (पंथा) ।
 आइअति देतो अति (मग १२, ६) ।
 आइ म [दे] भाय की शोभा मे लिए प्रदुक्त
 लिये जाने वाला धन्य (मग १, २) ।
 आइमग } छी [दे] १ देवता विशेष,
 आइमग } वरुण-विशेष (मग १, २) ।
 आइमग } २३३ टी—मग १८२; वरु
 १) । २ बीमती, चाली (वह १) ।
 आइमग [दे] भाय-विशेष (पम ३, ७,
 ६९, ६) ।
 आइच देतो आयच । भाईच (वग) ।
 आइच देतो अयम = मा + मन् । भायट्ट
 (प्राह ७३) ।
 आइचयार पुं [आदित्यार] रश्मि (मूर
 ४११) ।
 आइचिय नि [आदित्यार] भायट्ट-संयोग
 (मूरति ८ टी) ।
 आइच देतो आइच । भाईच (वग ४, १८७) ।
 आइचर स [आ + पत्] बहना, उ-
 तरेष देना, बीनना, भायट्ट (वग) । पट.
 आइचरमाग (लगा १, १२) । हैट. आइ-
 चरमाग (वग) ।
 आइचरमाग नि [आययट्ट] बहनेवाला,
 वग (पम २, ४) ।
 आइचरमाग न [आययट्ट] वग, उतरेष
 (वग ३) ।
 आइचरमाग नि [आययट्ट] वग, उतरेष
 (म १२२) ।
 आइचरमाग छी [आययट्ट] १ वग,
 बहने (लगा १, १) । २ वग वग की
 बीमती, वग वग भायट्टि मूर-भायट्टि
 की वग वग बहने (वग ६) ।
 आइचरमाग नि [आययट्ट] वग, उतरेष (वग) ।

(जीव ३) । °वरोभासमहावर पुं [वराव-
भासमहावर] घञिनवराजाम नामक समुद्र
का ग्रथिछाता देव (जीव ३) । °वरोभासवर
[°वरावभासवर] देखो घञन्तलोके धर्म
(जीव ३) ।

आईनीड स्त्री [आदिनीति] सामन्त पहलो
राजनीति (सुपा ४६२) ।

आईय देखो आड = घादि (जी ७; कान) ।
आइय वि [आतीत] १ विशेष-ज्ञात । २
संसार-प्राप्त, संगार मे घूमनेवाला (घाचा) ।
आईल पुंन [आचील] पान का धूबना
(पक्) ।
आईय घन [आ + दीप्] चमरना । वह
आईयमाग (महादि) ।

आईसर पुं [आईशर] भगवान् श्रमणदेव
(सिदि ५५१) ।

आड स्त्री [दि] १ पानी, जल (दे १, ६१) ।
२ इस नाम का एक वनस्पति-वैध (ठा २, ३) ।
°काय, °काय पुं [°काय] जल का जीव
(उर ६८५; पण १) । °बाइय, °बाइय
पुं [°कायिक] जल का जीव (पण १;
मग २४, १३) । °जीर पुं [°जीय] जल
का जीव (मूम १, ११) । °बहुल नि
[°बहुल] १ जन-अड्ड । २ राजप्रसा धुविनी
का तृतीय काण्ड (सम ८८) ।

आड म [दि] मय्या, या, 'माड पलोहेद मं
मज्जन्तेरेण बोद समालुणो, घाड तथयं
वेद मज्जन्तेति' (म ३५६) ।

आड } न [आयुप्] १ माड, जीवन-
आउअ } कान (कुमा; पण १६) । २ उमर,
वय (पा ३२१) । ३ माड के कारणभूत कर्म-
पुण्य (ठा ८) । °वाल पुं [°वाल] मरण,
मृत्यु (माया) । °कयय पुं [°क्षय] मरण,
मौन (पिपा १, १०) । °कयम न [°क्षेम]
मायु-मानस, जीवन (माया) । °यिजा स्त्री
[°यिया] वैद्यशास्त्र, चिकित्साशास्त्र,
(मार) । °उयेय पुं [°वेद] वैद्य, चिकित्सा-
शास्त्र (पिपा १, ७) ।

आउंय सन [आ + पुञ्चय्] संकुचित
बनना, मनेष्टा । सट्. आउंयि (पा)
(मरि) ।

आउंचण न [आकुञ्चन] संकोच, मानसंकोच
(वय) ।

आउंचणा स्त्री [आकुञ्चना] ऊपर देखो
(धर्म ३) ।

आउंचिय वि [आउञ्चिन] १ संकुचित । २
ऊठा कर धारण किया हुआ (दे ६, १७) ।
आउंजि वि [आकुञ्चिन] १ संकुचनेवाला ।
२ निबन्ध (गडढ) ।

आउंट देखो आउट्ट = स-नत्तप् । माउटावेमि
(पाया १, ५) ।

आउंट घक [आ + कुञ्च्] संकोचना,
प्रयोग, संह. आउंटावित्तु (वय ५) ।

आउंटण न [आकुञ्चन] भावर्जन (वंचा
१७, १६) ।

आउंटण न [आकुञ्चन] संकोच, मानसंकोच
(दे १, १७७) ।

आउंयालिय वि [दि] मायाविव, हूबया
हुया, पानी मादि द्रव्यधार्य मे व्यात (पाय) ।

आउय } देखो आउ = माणुप (सुपा ६५५;
आउम } मग ६, ३) ।

आउच्छ सक [आ + प्रच्छ] घाता लेना,
घनुता लेना । वट्. आउच्छेन, आउच्छमाण
(सि १२, २१; ५७) । संह. आउच्छिऊण,
आउच्छिय (महा. मुग ६१) ।

आउच्छण न [आप्रच्छन] घाता, घनुता
(पा ७७, ५००) ।

आउच्छणा स्त्री [आप्रच्छना] प्रल (वचा
१२, २६) ।

आउच्छा स्त्री [आपृञ्चा] घाता (कुप
१२४) ।

आउच्छिय वि [आपृञ्च] निपटी घाता ली
गई हो वह (सि १२, ६४) ।

आउञ्च देवो आओञ्च = पातोय (दे १,
१५६) ।

आउञ्च पुं [आउञ्च] १ संकुच बनना । २
गुप्त किया (पण ३६) ।

आउञ्च वि [आउञ्च] मन्मुच करने योग्य
(पारम) ।

आउञ्च वि [आयोउय] जोधने योग्य, गन्धय
करने योग्य (सि ७४ ३२६६) ।

आउञ्जिय वि [आयोञ्जि] बाय बकनेवाला
(मुग १६६) ।

आउञ्जिय वि [आयोञ्जि] उद्योगवाता,
मावयान (मग २, ५) ।

आउञ्जिय वि [आयञ्जित] संकुच किया
हुया (पण ३६) ।

आउञ्जिया स्त्री [आयञ्जि] क्रिया, ध्यापार
(पारम) । °करम न [°करण] शुभ ध्यापार-
विशेष (पण ३६) ।

आउञ्जीकरण न [आयञ्जीकरण] शुभ
ध्यापार-विशेष (पण ३६) ।

आउट्ट सक [आ + पुत्त] १ बनना । २
भ्रमना । ३ व्यस्तता बनना । ४ घन,
संकुच होना, लवर होना । ५ निवृत्त होना ।
६ घूमना, फिरना । माउट्ट, माउट्टति (मग
७, १; निष् ३) । वट्. आउट्टति (सम २२) ।
सट्. आउट्टिऊण (पाय) । हेह. आउट्टिसप्
(वय) । प्रयो. माउट्टवेमि (पाया १, ५
टी) ।

आउट्ट सर [आ + पुत्त] खेल बनना,
हिला बनना । माउट्टमो (माया) ।

आउट्ट नि [आउट्ट] १ निवृत्त, मोक्ष किता
हुया (उर ६६८), 'कण्ठए पाउट्टे जइ
विमलित्थपि तहेह' (वह ३) । २ भ्रमिन,
भ्रमया हुआ (उर ६००) । ३ ठीक-ठीक
व्यस्तित्व (माया) । ४ घन, निश्चिन् (राज) ।

आउट्ट पुं [आउट्ट] खेल, हिला (मूम १,
१) ।

आउट्ट } नि [आहट] भार-शुक्र (निड
आउट्टिअ } ३११; पर ११२) ।

आउट्टण ॥ [आउट्टण] हिला (मूम १, १) ।

आउट्टण न [आउत्तण] १ घारापद, मेरा,
निक (वर १, ६) । २ घनित्व होना, लवर
होना (मूम १, १०) । ३ प्रविताया, दृष्टा
(माया) । ४ घूमना, घनण । ५ निवृत्ति
(मूम १, २०) । ६ बनना, हिला, वृद्धि
(राज) ।

आउट्टया स्त्री [आउत्तया] घावयान
(पारि) ।

आउट्टया स्त्री [आउत्तया] ऊपर देखो (निष्
२) ।

आउट्टावण न [आउत्तण] घनित्व बनना,
लवर बनना (माया २) ।

आवृत्ति स्त्री [आवृत्ति] १ हिसा, मारना (भाषा, उच) । २ निर्देयता (भाष १८) ।

आवृत्ति स्त्री [आवृत्ति] देतो आवृत्तण = भावनेन (वच १, १, २, १०, सूत्र १, १, भाषा) । ५ बार-बार करना, पुन पुनः क्रिया (सुख १२) ।

आवृत्ति वि [आवृत्ति] १ मारनेवाला, हिसा, जाए बाएण खाउठो (सूत्र) । २ बराबर बार (दसा) ।

आवृत्ति वि [दे] सावे तीन, एसे गुण रचना-हुनु ता भावृत्ति बंदा भावृत्ति सूर सत्वलोच प्रोभासीति (सुख १६) ।

आवृत्ति वि [आवृत्ति] बूटकर बैठने योग्य (जैन सिद्धे मे अक्षर) (दसति २, १७) ।

आवृत्ति देतो आवृत्त = भावत (दसा) ।

आवृत्ति पु [आवृत्ति] दहड विरोध (मत २७) ।

आवृत्ति वि [आवृत्ति] छिद्र, विदारित (सूत्र) ।

आवृत्ति स्त्री [आवृत्ति] पात मे भावर करना (पचा १५, १८) ।

आवृत्ति वि [आवृत्ति] सतुष्ट (निष्ठा १) ।

आवृत्ति सक [आवृत्ति] सकय करना, जोडना । बवह आवृत्तिजमाण (भग ५, ५) ।

आवृत्ति सक [आवृत्ति] १ कृता, पीटना । २ ताडन करना, धातन करना । आवृत्ति (व ३) । बवह आवृत्तिजमाण (भग ५, ५) ।

आवृत्ति सक [आवृत्ति] लिखना, 'द्वि बट्टु रामण भावृत्ति' संह. आवृत्ति (व ३—पत्र २५०) ।

आवृत्ति वि [आवृत्ति] चाहत, तावित (व ३—पत्र २२२) ।

आवृत्ति सक [मस्ति] मज्जन करना, झुगना । भावृत्ति (हे ५, १०१, पट्ट) ।

आवृत्ति वि [मन] हुवा हुमा, लल्लन (कुमा) ।

आवृत्ति वि [आवृत्ति] पूर्ण, भरपूर, व्याप्त 'कुमुमफलाउरसहस्रि' (पत्र ८, २०३) ।

आवृत्ति वि [आवृत्ति] १ उपयोग वाला, मावधान (कम्प) । २ क्रि. उपयोग-मूर्तक (भग) । ३ न पुरोपोत्सर्ग, फलगत जाना (?)

(उप ६८५) । ४ पुं. गीन का नियुक्त किया हुमा मुलिया (दे १, १९) ।

आवृत्ति वि [आवृत्ति] १ संशित (ऊ ३, १) । २ संयत (भग) ।

आवृत्ति वि [आवृत्ति] भाव-मृत (वच ५) । आवृत्ति वि [आवृत्ति] १ रोपी, बीमार (एति) ।

२ उचलित । ३ उचित, पीडित (प्राप्ति २८; ६५) ।

आवृत्ति न [दे] १ सदा, युद्ध । २ वि. बहुत । ३ मय (दे १, ६५, ७६) ।

आवृत्ति वि [आवृत्ति] दु विन, पीडित (भाषा) ।

आवृत्ति वि [आवृत्ति] १ व्यात (धीर) । २ व्यात (पाप) । ३ व्यात, दु लित । ४ संकीर्ण (स्वप्न ७३) । ५ पुं. समूह (विसे ७००) ।

आवृत्ति सक [आवृत्ति] १ व्यात करना । २ व्यात करना । ३ दु ली करना । ४ संकीर्ण करना । ५ प्रचुर करना । बवह—आवृत्तिजत, आवृत्तिजमाण (महा, पि ५६३) ।

आवृत्ति स्त्री [आवृत्ति] बूट विरोध (दे ५, ५) । आवृत्ति वि [आवृत्ति] भावत किया हुमा (गा २५, पत्र ३३, १०६, उप पु ३२) ।

आवृत्ति सक [आवृत्ति] देतो आवृत्त = भावतम् । आवृत्तिकरेति (भग) । बवह—आवृत्तिजमाण (नाट) ।

आवृत्तिभूत वि [आवृत्तिभूत] पदशया हुमा (सुर २, १०) ।

आवृत्ति न [दे] बहान चलाने का बाहमय उपकरण (सिंह ५२५) ।

आवृत्ति सक [आ + वस] रहना, वास करना । वा. आवृत्ति (सम १) ।

आवृत्ति सक [आ + कृ] भावने का, शाप देना, निष्ठुर वचन बोलना । आवृत्ति (भग ५५) । भावने, भावने (जवा) ।

आवृत्ति सक [आ + कृ] स्पर्श करना, छूना । बवह—आवृत्ति (सम १) ।

आवृत्ति सक [आ + लु] सेवा करना । बवह आवृत्ति (सम १) ।

आवृत्ति न [दे] नृच (दे १, ६५) । बवह—आवृत्ति (नदीति टिप्पण)

आवृत्ति देतो आवृत्त = भावत (कुमा) ।

आवृत्ति वि [आवृत्ति] चिराय दीर्घावृत्ति (मम २६; भाषा) ।

आवृत्ति स्त्री [आवृत्ति] भविष्य, निर्देयता (भाषा १, १८, भग १५) ।

आवृत्ति देतो आवृत्त = पा + दुह । भाव-स्तति (भाषा १, १८) ।

आवृत्ति पुं [आवृत्ति] दुर्वचन, भगवन् वचन (सूत्र १, ३, १८) ।

आवृत्ति वि [आवृत्ति] १ जहूरी । २ क्रि. जहूर, मकर (पण १६) । 'करण न [करण] १ मन, वचन और भाषा का गुण व्यापार । २ मोक्ष के लिए प्रवृत्ति (पण ३६) ।

आवृत्ति न [आवृत्ति] १ शय, हृषियार (कुमा) । २ विनायर दश के एक राजा का नाम (पत्र ५, ५५) । 'घर न [गृह] शक्राला (ज) ।

'घरसाठा स्त्री [गृहशाला] देवो भनतर-उत्त भव (ज) । 'घरिय वि [गृहिक] शक्राला का भव्य—प्रधान कर्मचारी (ज) । 'गार न [गार] शक्राला (धीर) ।

आवृत्ति वि [आवृत्ति] दोहा, शक्राला (विसे) ।

आवृत्ति सक [दे] छुप मे पण करना । भाव-उद (दे १, ६६) ।

आवृत्ति न [दे] बूट-पण, छुप मे की जाती प्रसिद्धा (दे १, ६८) ।

आवृत्ति सक [आ + वस] भरना, पूर्ण करना भरपूर करना । भावने (महा) । कृ. आवृत्ति, आवृत्ति, आवृत्ति (पत्र १०२, ३३, से १२, २८) । बवह—आवृत्तिजमाण (पि ५३७) । सव. आवृत्ति (भग) (मवि) ।

आवृत्ति वि [आवृत्ति] मरा हुमा, व्यात (सुर २, १६६) ।

आवृत्ति वि [आवृत्ति] १ प्रविष्ट । २ सनुचित (भाषा १, ८) ।

आवृत्ति वि [आवृत्ति] ग्रहण करने के योग्य उपदेय । 'थाम, 'नाम न [नामन्] कर्म-विरोध, जिसके उदय से किसी का कोई भी वचन प्राप्त माना जाता है (सम ६७) ।

आवृत्ति वि [आवृत्ति] भागमा, भविष्य में होने वाला (सूत्र १, २, ३, २०) ।

आएस पुं [आदेश] १ प्रेक्षा । २ प्रकार, रीति (संदि १८४) । ३ वि. नीचे देखो (सिद्ध २३०) ।

आएस देखो आवेस (भग १४, २) ।

आएस ३ पु [आदेश] १ जयदेव, विद्या । आएसग ३ २ राजा, हुकुम (महा) । ३ विवधा, मम्मति (सम्म ३७) । ४ प्रतिवि, मेहमान (सुम २, १, ४६) । ५ प्रकार, भेद, 'जोवे ए भते । बालाएलेण कि सपदेमे प्रपदम' (भग ६, ४, जीव २, विसे ४०३) । ६ निर्देश (निष्क) । ७ प्रमाण, 'जाव न बहुअसत्ता ता मोनं एव ह्य्य भाएलो' (सिद्ध २१) । ८ ह्मन्धा, अभिलाषा, वेको आपसि । ९ ह्मन्धा, वडाहण, 'बाधाहयमाएनी भवरडो हुअ भनतरण' (भाचानि २६७) । १० सूत्र, धन्य, शास्त्र (विसे ४०५) । ११ उपचार, मारीक, 'भाएलो सबभारे' (विसे ३४, ८८) । १२ शिष्ट सम्मत, 'बहुमुपमाइएणे तु,

न बाहियएणेहि जुगएणएणेहि ।

भाएलो सो उ भवे,

महाबलि सयतएणयो' (वव २, ८) ।

आएसग न [आदेशान] ऊपर देखो (महा) । आएसग न [आदेशान, आदेशान] लोहा बंदरु वा बाएणना, शिल्पशास्त्र (भावा २, २, १०; धीव) ।

आएसि वि [आदेशान] १ भादेश करने-बाना । २ अभिलाषी, ह्मन्धा (भावा) ।

आएसिय नि [आदिष्ट] त्रिमको भाजा दो गई हो वह (भवि) ।

आणमिय वि [आदेशिक] १ भादेश मन्थी । २ निपाट भादि के त्रिमन में बंधे हुए वे साधन-साधन जिनको धमला मे बंधे देने का संलग्न किया गया हो (सिद्ध २२६) ।

आओ भ [दे] भयना, या, ओह बिमेलनि, नि हाउ मुनिअयो, भायो इदनाय, भायो मन्थिमयो, भायो मयय पेयनि' (ग ४४४) ।

आओग पुं [आयोग] १ साज, नगा (धीव) । २ भवधार मूत्र ने लिए बरजा देना (भग) । ३ परितर, गर्जनाम (धीव) ।

आओग पुं [आयोग] भवधार, भवधारन ॥ साज (सुम २, ७, २) ।

आओग्ग पुं [आयोग्य] परितर, सरजाम (धीव) ।

आओज पुं [आयोग्य] वाज, बाजा (महा, पद) ।

आओज वि [आयोग्य] सवन्ध-योग्य, जोने योग्य (विसे २३) ।

आओड सव [आ + रोडय] प्रवेश करना, घुमेडना । भाओडादेति (विषा १, ६) ।

आओडण न [आओडण] मजबूत करना (गि ६, ६) ।

आओडिअ वि [दे] ताहित, मास हुमा (सि ६, ६) ।

आओध मरु [आ + युध] सजना । भाओ-वेहि (वेरि १११) ।

आओस सव [आ + मुश, मोशय] भाओस करना, शाप देना । भाओसद (निर १, १) भाओमेजसि, भाओमेवि (उवा) । बवड, आओसेजमाग (भत २२) ।

आओम पुं [दे] प्रदीप-समय, सख्या-नरन (धीव ६१ मा) ।

आओमणा छी [आओशाना] निर्धेखना, तिरस्कार (निर १, १) ।

आओहग न [आओधन] बुद्ध, लघई (वव ६४८ गि, मुर ६, २२०) ।

आंन वि [अन्य] भन्त वा (पंवा १८, ३६) । आर्य स [आ + आहृत्] बाहना, ह्मन्धा । भासिहि (भरि) ।

आर्यमा छी [आराहृत्] बाह, ह्मन्धा, भविनाया (विसे ८५६) ।

आर्यवि वि [आराहृत्] भविनायो, ह्मन्धा (भावा) ।

आरुद घर [आ + वरु] रोगा विनाना । भार्यवि (सि ८८) ।

आरुदिय न [आरुन्दित] १ भारुन्दत, रादत । २ वि. जितन भारुन्दा किया हो वह (दे ३, २७) ।

आरुप घर [आ + वरु] १ पोरा बनना । २ तगर होना । ३ भाएपन करना । मंहु, आरुपइधा, आरुपइत्तु (पज) ।

आरुप पुं [आरुप] १ पोरा बनना । २ भाएपना (वव) । ३ तगरना, भाएपन (पज) ।

आरुपण न [आरुपण] ऊपर देखो (वव; धर्म) ।

आरुपिय वि [आरुपित] ईपन चनित, कम्पित (उम २२८ टी) ।

आरुपिय वि [आरुपित] भावजित, प्रसन्न किया हुमा (सिद्ध ४३६) ।

आरुड पुं [आरुप] लोचन । 'विस्डिद्धी छी [विस्डिष्ट] लोचनान (भग १५) ।

आरुडुण न [आरुपण] लोचन (निष्क) । आरुडिहय वि [दे] बाहर निकाला हुमा, 'पुर्व व वन्ध तीए निम्भच्छिदा

ता परितु गदयम्म ।

पच्छिमभाएविणियादारेणअडिहया मति ।' (धर्मव १३३) । आरुणग न [आरुण] श्वरा (ताड) ।

आरुणिय वि [आरुण] धुन, मुना हुमा (भावा) ।

आरुदि देखो आरुदि (मति ६) । आरुदिहय वि [आरुमिक] भनरमान होने-वाला, विना ही कारण होनेवाला; 'धम्मनि-मिताभावा जं मयमावन्दिहय सति' (निर ३४५१) ।

आरु पुं [आरु] १ ताल । २ मनुह (हुमा) ।

आरुस देखो आगस । भासगिलाओ (भावा २, ३, १, १५) हेह. आरुसितार (भावा २, ३, १, १५) ।

आरुस देखो आगार (हुमा ६ १३) । आरुस देखो आगाम (भग) ।

आरुसिय वि [दे] पलात, बारी (पद) । आरुदि छी [आरुदि] म्मन्, भाएग (दे १, २०६) ।

आरुिचय न [आरुिचय] निम्नरुहा, निम्नरुहा 'भाएपन व वीर व जर-धम्मो' (नर २३) ।

आरुिचयया छी [आरुिचयना] ऊपर देखो (मम १२०) ।

आरुिचयिय ३ देखो आरुिचय (भाएग गुण आरुिचय १८८) ।

आरुिहृ छी [आरुिहृ] भाएपन (वव १३) ।

आकिदि देवो आकिइ (मुमा) ।

अकुं च सक [आ + कुञ्च] संकोच करना ।
आकुचद, सज आकुचिचि (घा) (भवि) ।
आकुचण न [आकुञ्चन] संकोच, संकोच
(सम्म १३३, निरे २४६२) ।

आकुचिय वि [आकुञ्चित] सकुचित, 'रुद्ध
गलय धातुचिवायो धमणोयो पमरिया विमण'।
(सुर ४, २३८) ।

आकुट्ट न [आकुट्ट] १ घातोश । २ वि, जिस
पर घातोश दिया गया हो वह (दे ३ ३२) ।

आकुल दे आडल (कय) ।

आकूय न [आकूत] १ दूजित, इशारा (उप
७२८ टी) । २ प्रमिप्राय (निरे ६२८) ।

आयेरलिय वि [आयेरलिक] धमपूर्ण
(भावा) ।

आकोणन [आनोटन] टूट कर धुमेडना
(पणह १, ३) ।

आकोस देवो अकोस = पाकोश (पच ४,
२३) ।

आकोसाय सक [आकोसाय] विवसित
होना । बहु आकोसायत (पणह १, ४) ।

आकूद (मा) देवो आकूदं । घातकामि (वि
८८) ।

आच (मप) सक [आ + च] कीछे
लीचना । संकु आचिचि (भवि) ।

आयडल पु [आयण्डल] इद्र (मुपा
४७) । 'धणुह न [धनुप] इद्रधनुप
(उप ६६६ टी) । 'भूह पु [भूति] भग-
धातु महावीर के मुख्य शिष्य भीम-स्वामी
(पञ्च ११८ १०२) ।

आगइ की [आगति] घागमन (भावा विदे
२१४६) ।

आगइ देवो आकिइ (महा) ।

आगनञ्ज देवो आगम = मा + गम् ।

आगतगार १ न [आगन्तगार] वर्षशरा
आगतार १ मुमाकिजाना (ग्रिप भावा) ।

आगतु वि [आगन्तु] भनिवाला (सूध) ।

आगन्तु देवो आगम = मा + गम् ।

आगतुग १ वि [आगन्तुक] १ आनेवाला ।
आगतुय १ र भतिपि (म ४७१ चाह २४,
सुप ३३६, शीप २१६) । २ कृतिम, अन्ध-
भाविक (सुर १२ १०) ।

आगतुण देवो आगम = मा + गम् ।

आगंप सत [आ + गम्पय] कपाना,
हिताना । गट. आगंपयंत (स ३३१, ४४३) ।

आगपिय देवा आरुपिय (पञ्च ३४, ४३) ।

आगच्छ सप [आ + गम्] धाना, घाग-
मन करना । घागच्छद (महा) । गरि.
घागच्छिस्सइ (वि ५२३) । गट. आगच्छत,
आगच्छमाण (बाल. मग) । हेह आग-
च्छिच्चण (पि १७८) ।

आगत देवा आगय (सुर २, २४८) ।
आगती की [दे] रूप तुता (दे १, ६१) ।
आगम सत [आ + गम्] १ भाना घागमन
करना । २ जानना । भवि. घागमित्तं (पि
५२३, ५६०) । बहु. आगममाण (भावा) ।
संठ आगतुण आगमेचा, आगम्म (पि
५८१, ५८२ शीप) । इ. आगनञ्ज (मुपा
१२) । हेह. आगंतु (बाल) ।

आगम पु [आगम्] १ समागम (पच, १४५) ।
२ भान, जानकारी, 'बोद्धवविआणणलं घागम
कए' (मुप २, १३) ।

आगम पु [आगम्] १ घागमन (ते १४,
७५) । २ शाल, मिडान्त (जी ४८) । 'कुसल
वि [कुसल] सिदान्ता वा जानकार (उत्त) ।

'ज वि [ह] शास्त्रा वा जानकार (प्राक्) ।
'वीइ की [नानि] घागमोत्त विधि (धर्म
२) । 'णु वि [न] शास्त्रो वा जानकार
(प्राक्) । 'परतत वि [परतन्त्र] सिदात
के मधीन (पचव) । 'यलिय वि [यलिक]
सिदान्तो वा बज्ज जानकार (म ८, ८) ।
'वयहार पु [वयहार] सिदान्तानुमोदित
व्यवहार (वर) ।

आगम पु [आगम्] १ समागम (पच, १४५) ।
२ भान, जानकारी, 'बोद्धवविआणणलं घागम
कए' (मुप २, १३) ।

आगम पु [आगम्] १ घागमन (ते १४,
७५) । २ शाल, मिडान्त (जी ४८) । 'कुसल
वि [कुसल] सिदान्ता वा जानकार (उत्त) ।

'ज वि [ह] शास्त्रा वा जानकार (प्राक्) ।
'वीइ की [नानि] घागमोत्त विधि (धर्म
२) । 'णु वि [न] शास्त्रो वा जानकार
(प्राक्) । 'परतत वि [परतन्त्र] सिदात
के मधीन (पचव) । 'यलिय वि [यलिक]
सिदान्तो वा बज्ज जानकार (म ८, ८) ।
'वयहार पु [वयहार] सिदान्तानुमोदित
व्यवहार (वर) ।

आगम पु [आगम्] १ घागमन (ते १४,
७५) । २ शाल, मिडान्त (जी ४८) । 'कुसल
वि [कुसल] सिदान्ता वा जानकार (उत्त) ।

'ज वि [ह] शास्त्रा वा जानकार (प्राक्) ।
'वीइ की [नानि] घागमोत्त विधि (धर्म
२) । 'णु वि [न] शास्त्रो वा जानकार
(प्राक्) । 'परतत वि [परतन्त्र] सिदात
के मधीन (पचव) । 'यलिय वि [यलिक]
सिदान्तो वा बज्ज जानकार (म ८, ८) ।
'वयहार पु [वयहार] सिदान्तानुमोदित
व्यवहार (वर) ।

आगम पु [आगम्] १ घागमन (ते १४,
७५) । २ शाल, मिडान्त (जी ४८) । 'कुसल
वि [कुसल] सिदान्ता वा जानकार (उत्त) ।

'ज वि [ह] शास्त्रा वा जानकार (प्राक्) ।
'वीइ की [नानि] घागमोत्त विधि (धर्म
२) । 'णु वि [न] शास्त्रो वा जानकार
(प्राक्) । 'परतत वि [परतन्त्र] सिदात
के मधीन (पचव) । 'यलिय वि [यलिक]
सिदान्तो वा बज्ज जानकार (म ८, ८) ।
'वयहार पु [वयहार] सिदान्तानुमोदित
व्यवहार (वर) ।

आगम पु [आगम्] १ घागमन (ते १४,
७५) । २ शाल, मिडान्त (जी ४८) । 'कुसल
वि [कुसल] सिदान्ता वा जानकार (उत्त) ।

'ज वि [ह] शास्त्रा वा जानकार (प्राक्) ।
'वीइ की [नानि] घागमोत्त विधि (धर्म
२) । 'णु वि [न] शास्त्रो वा जानकार
(प्राक्) । 'परतत वि [परतन्त्र] सिदात
के मधीन (पचव) । 'यलिय वि [यलिक]
सिदान्तो वा बज्ज जानकार (म ८, ८) ।
'वयहार पु [वयहार] सिदान्तानुमोदित
व्यवहार (वर) ।

आगम पु [आगम्] १ घागमन (ते १४,
७५) । २ शाल, मिडान्त (जी ४८) । 'कुसल
वि [कुसल] सिदान्ता वा जानकार (उत्त) ।

'ज वि [ह] शास्त्रा वा जानकार (प्राक्) ।
'वीइ की [नानि] घागमोत्त विधि (धर्म
२) । 'णु वि [न] शास्त्रो वा जानकार
(प्राक्) । 'परतत वि [परतन्त्र] सिदात
के मधीन (पचव) । 'यलिय वि [यलिक]
सिदान्तो वा बज्ज जानकार (म ८, ८) ।
'वयहार पु [वयहार] सिदान्तानुमोदित
व्यवहार (वर) ।

आगम पु [आगम्] १ घागमन (ते १४,
७५) । २ शाल, मिडान्त (जी ४८) । 'कुसल
वि [कुसल] सिदान्ता वा जानकार (उत्त) ।

'ज वि [ह] शास्त्रा वा जानकार (प्राक्) ।
'वीइ की [नानि] घागमोत्त विधि (धर्म
२) । 'णु वि [न] शास्त्रो वा जानकार
(प्राक्) । 'परतत वि [परतन्त्र] सिदात
के मधीन (पचव) । 'यलिय वि [यलिक]
सिदान्तो वा बज्ज जानकार (म ८, ८) ।
'वयहार पु [वयहार] सिदान्तानुमोदित
व्यवहार (वर) ।

आगमि वि [आगन्तु] घानेवाला, घागमन
करनेवाला (सण) ।

आगमिरस वि [आगमिरस्यत्] १ घागामी,
हानेवाला (पञ्च ११८, ६३) । २ घानेवाला
(सम्म १४३) ।

आगमिरस की [आगमिरस्यन्ती] भविप्य-
वात्, 'धदंभनात्मि घागमिरसाए' (पच
६०) ।

आगमेम १ देवो आगमिरस (मंत १९,
आगमेसि १ शीप) ।

आगम्म देवो आगम = मा + गम् ।

आगय वि [आगत] १ घाया हुमा (प्राप् ४) ।
२ उ पत्र (गामा १, ७) ।

आगर देवो आकर = पानर (भावा, उप ६३१
टी) ।

आगरि वि [आकरिन्] शाल वा मालिक,
यान वा काम करनेवाला (पणह १, २) ।

आगरिस पु [आरुपे] १ ग्रहण, उपादान
(विम २७८०, सम १ ८७) । २ लोचान (विने
२७८०, हे १, १७७) । ३ ग्रहण कर छोड़
देना (भावा) । ४ प्राप्ति (मग २५, ७) ।

आगरिस सक [आ + कृप्] लोचना । बहु.
भागरिसत (धर्म ३७२) ।

आगरिसग वि [आरुपेण] १ लोचनेवाला ।
२ पु धयस्तान्त, लोह-धुम्बक (भावम) ।

आगरिसण न [आरुपेण] लोचान (सम्मस
२१५) ।

आगरिसणी की [आरुपेणी] विद्या-विशेष
(सुर १३, ८१) ।

आगरिसिय वि [आइष्ट] लोचन हुमा (मुपा
१६६ महा) ।

आगल सक [आ + कल्य] १ जानना ।
२ लगाना । ३ पहुँचाना । ४ सम्भलना करना ।
आगलेइ (उज) । घागनेति (मग १, ९) ।

सह 'हृदिय खम्मि आगलेऊण' (महा) ।
आगल वि [आगलन] लान बीमार (बह १) ।

आगस सक [आ + कृप्] लोचना । घाग-
साहि (भावा २, ३, १, १४) । संठ. आग-
सिउ (विने २२२) ।

आगइ देवो आगह । सह आगइइसा (दम
५ १ ३१) ।

आगहिअ वि [आगृहीत] सगृहीत (विने
२१०४) ।

आगाढ वि [आगाढ] १ प्रबल, दु साध्य, 'कडुगोसहज आगाढरोमिणी रोगसमदग्ध' (उप ७२८ टी), 'नो नण्ड निर्गयाए वा निर्ग-
मोए वा अनमत्स मोए आइए, नन्त्र
आगेहि रोगायेहि' (नन) २ अत्रवाद,
वास बारए (पचमा) ३ अत्यन्त गाढ (निब्र) ।
*जोग पु [योग] योग विशेष, गलि-योग
(धोप ५४८) । *पणन न [प्रज्ञ] शास्त्र,
आगम, आगाढपणसुय भवियणा' (बब) ।
*सुय न [भुत] आगम-विशेष (निब्र) ।

आगामि वि [आगामिन्] आनेवाला (सुपा ९) ।

आगार सक [आ + कराय] बुराना, आह्वान
करना । सक. आगारेऊण (माव) ।

आगार न [आगार] १ घर, गृह (छाया १,
१, महा) । २ वि गृहस्थ, गृही (ठा) । *थ
वि [थ] गृही (पि ३०६) ।

आगार पु [आगार] १ अत्रवाद (उप ७२८
टी, पडि) । २ इति, वेष्टा-विशेष (सुर ११,
१६२) । ३ आहुति, रूप (सुपा ११५) ।

आगारि वि [आगारिक] गृहस्थ-सकपी
(विने) ।

आगारि वि [आगरित] १ भाट । २
उत्तरित, परिवर्त (माव) ।

आगाल पु [आगाल] १ समान प्रदेष्टा मे
रहना । २ सम भाव से रहना (मावा) । ३
उद्वेग विषय (धज) ।

आगास पुन [आगास] आकाश, आतरा
(उमा) । *गमा की [गमा] विद्या विशेष,
निम्न वेत से आगार मे गमन कर सकता है
(पञ्च ७, १४४) । *गामि वि [गामिन्]
आगार मे गमन करने वाला, पति प्रभुति
(मावा) । *जोङ्गी की [योगिनी] परि-
विशेष, आगासजोःणीए निनुको सहवि वाम-
पामिन्' (सुपा १८५) । *विवाय पु
[विस्तराय] आगार प्रदेष्टा का गमन,
आगार आगार-द्रव्य (पण १) । *धिमानन
[दे] गमनरहित आगार का भाग (माव) ।
*फलिद, *फालिय पु [फलिक] निर्मल
रश्मि-रत्ना (राम धीरे) । *फालिया की
[फालि] एत मोटा दम्ब (पण १७) ।

*इवाइ वि [विपतिन्] विद्या प्रादि
के बल से आगार मे गमन करनेवाला (धीप) ।

आगासिय वि [आगारित] आगार को
प्राप्त (धीप) ।

आगासिय वि [आकृषित] खीना हुआ
(धीप) ।

आगासिया की [आकाशिकी] आकाश में
गमन करने की लब्धि-शक्ति (सुपनि १६२) ।

आगाह सक [अव + गाह] अत्रगाहन
करना, स्नान करना । आगाहइत्ता (वत ५,
१, ३१) ।

आगिइ की [आकृति] आकार, रूप, मूर्ति
(सुर २, २२, विवा १, १) ।

आगिट्टि की [आकृष्टि] आकर्षण (सुपा
२३२) ।

आगी देखो आगिइ, 'खिएणावलिबगामी-
दिलानु सामादय न ज तापु' (विने २७०७) ।

आगु पु [आकु] बलिताप, दृष्टा (माक) ।

आघ देखा आघन । मूलकताय' सूत्र के प्रथम
श्रुतलक्ष्य का दत्तार्थ प्रत्ययन (सुप १, १०) ।

आघंस सक [आ + घृप्] घर्षण करना
(निब्र) ।

आघंस सक [आ + घृप्] चिमना, घोडा
चिमना । आघसिज (मावा २, २, १, ४) ।

आघस वि [आघर्षे] जल के साथ घिसकर
को पिया जा सके वह (पिड ५०२) ।

आघसण न [आघर्षण] एक बार का घर्षण
(निब्र) ।

आघयण न [दे] बच स्थान (छाया १, ६—
पत्र १६७) ।

आघय सक [आ + कया] १ कहना, जवाब
देना । २ ग्रहण करना । आघयेइ (ठा) ।
बचट आघयिजए (मग) । मूरा आघे (मूय,
पि ८८) । बट आघयेमाण (पि ४४) । इह-
आघवित्तण (पि ८८) ।

आघयगा की [आघयान] बचन, उक्ति
(छाया १, ६) ।

आघयइत्तु वि [आघययक] बचन, वक्ता,
जवाब (ठा ४, ४) ।

आघयिय वि [आघयान] उक्त, कहा हुआ
(पि ४४) ।

आघयिय वि [दे] गृहीत, स्वीकृत (मणु
२०) ।

आघयेसग वि [आख्यापयित्ठु] उपदेष्टा,
वक्ता (मावा) ।

आघस सक [आ + घस्] मोटा चिमना ।
आघसावेज (निब्र) ।

आघा सन [आ + कया] कहना । (पावा) ।
आघा सन [आ + प्रा] सूचना । वह, आघा-
यत (उप ३५७ टी) ।

आघाय वि [आघयान] कथित, उक्त (मावा) ।
आघाय वि [आघयान] १ उक्त, कथित
(सुप १, १३, २) । २ न. उक्ति, कथन (सुप
१, १, २, १) ।

आघाय पु [आघात] १ एक तरक-स्थान
(देवे २६) । २ विनाश (उक्त ५, ३२, सुख
५, ३२) ।

आघाय पु [आघात] १ बघ । २ चोट, प्रहार
(हुमा, छाया १, ६) ।

आघायत देको आघा = मा + प्रा ।
आघाय देको आघय । आघावेइ (पि ८८,
२०२) ।

आघुट्ट वि [आघुष्ट] घोषित, जाहिर किया
हुआ (बलि) ।

आघुम्म सन [आ + घूर्ण] डोचना,
हिलना, बौलना, चलना ।

आघुम्मिय वि [आघूर्मिन] डोना हुआ,
कलित, चलित, आघुम्मियणकुम्मा' (पञ्च
१०, ३२, ८७, ५६) ।

आघोस सन [आ + घोषय] घोरणा
करना, दिहोरा निम्नाना । आघोस (प ६०) ।

आघोसण त [आघोषण] दिहोरा, घोषणा
(महा) ।

आघमन सन [आ + चक्ष] करना ।
बट आघमन (पि २५, ८८, लाट) ।

आघमिय (शी) वि [आघयान] उक्त,
कथित (धमि २००) ।

आ गरिय वि [अगरित] १ अनुति, निहित ।
२ न आचरण (आगू १११) ।

आचम सन [आ + चामय] पाटना
स्नान, धोना । बट आचमन (पुत्र ३६) ।

आसर दम आसर = पातर (सुमा) ।
आचारित्र न्यो आचारिय = पातारि (माव) ।

आचिवर सक [आ + चक्ष्] बह्ना ।
 कृ. आचिक्खणीय (स ४०) ।
 आचिक्खिय वि [आख्यात] कथित, उक्त
 (स ११६) ।
 आचुण्णिय वि [आचृणित] १ चूत-चूर
 किया हुआ (पठन १७, १२०) ।
 आचेलक न [आचेलक्य] १ वल का भग्नाव
 (कप) । २ वि. आचार-विशेष, 'आचेलको
 धम्मो' (पंचा) ।
 आच्छेदण न [आच्छेदन] १ नाश । २ वि.
 नाशक (कुमा) ।
 आजत्य देहो आगम + प्रा = गम । आजत्यह
 (प्राकृ ७४) ।
 आज्ञा देहो आयाह (ठ; स १७८) ।
 आजि देहो आह = प्राजि (कुमा, दे १, ४६) ।
 आजीरण पुं [आजीरण] स्वनामख्यात एक
 जैन मुनि, 'आजीरणो य मोक्षो' (संघा ६७) ।
 आजीव } पुं [आजीव] १ आजीविका,
 [आजीवण] जीवन निर्वाह का उपाय, 'आजी-
 वयेयं तु भद्रजमाणीं पुणीं पुणीं पिप्परिया-
 नुवति' (सूत्र) । २ जैन साधु के लिए भिक्षा
 का एक दोष—गृहस्थ को अपनी जालि, कुल
 प्रादि की समानता बतलाकर उससे भिक्षा
 ग्रहण करना (ठा ३, ४) । ३ गौशालक मत
 का अनुयायी साधु (पव) । ४ धन का समूह
 (मूमे) ।
 आजीवण पुं [आजीवण] १ धन का गर्व
 (सूत्र) । २ सकल जीव (जीव ३ टी) । देहो
 आजीवय ।
 आजीवन न [आजीवन] १ आजीविका,
 जीवन-निर्वाह का उपाय । २ जैन साधु के
 लिए भिक्षा का एक दोष (पव) ।
 आजीवणा स्त्री [आजीवणा] ऊपर देहो
 (यम; जीत) ।
 आजीरय देहो आजीवण, 'आजीवणदिट्ठेण
 चउरससीतिजानि कुलपेटीओणियमृदुयसहसा
 भवतीतिमस्सया' (जीव ३) ।
 आजीविय वि [आजीविक] गौशालक के
 मत का अनुयायी (पण २०; उवा) ।
 आजीविया स्त्री [आजीविना] १ निर्वाह
 (भार) । २ जैन साधु के लिए भिक्षा का एक
 दोष (उत) ।

आजुत वि [आयुक्त] यमप्रादी (निद्र) ।
 आजुम्भ भक [आ + युष्] लड़ना । हेह-
 आजुम्भिट्ठं (सी) (विणी १२४) ।
 आजुह न [आयुध] हथियार (मै २४) ।
 आजोज्ज देहो आभोज्ज (विसे १५०३) ।
 आडंबर पुं [आडम्बर] १ घाटोप, ऊपरी
 दिखाव (पाम्) । २ वाय की भावाज (ठा) ।
 ३ यज्ञ-विशेष (प्राच) । ४ न. यज्ञ का मन्दिर
 (पव) ।
 आडंबर पु [आडम्बर] वाय-विशेष, पटह
 (प्राच १२८) ।
 आडंबरिल्ल वि [आडम्बरयत्] आडम्बर
 (पाम्) ।
 आडविय वि [दे] १ चूणित, चूर-चूर किया
 हुआ (पट्) ।
 आडविय वि [आटविक] जंगल में रहनेवाला,
 जंगली (स १२१) ।
 आडह सक [आ + दह्] चारो ओर से
 जलाना । आडह (पि २२२, २२३) । आड-
 हति (पि २२२, २२३) ।
 आडह सक [आ + धा] स्थापन करना,
 नियुक्त करना । आडह । संक. आडहेत्ता
 (श्रीप) ।
 आडाडा स्त्री [दे] बलाकार, जबरदस्ती (दे
 १, ६४) ।
 आडासेवीय पुं [आडासेवीक] पक्षि-विशेष
 (पण १, १) ।
 आडि स्त्री [आडि] १ पक्षि-विशेष । २ मत्स्य-
 विशेष (दे ८, २४) ।
 आडिपत्तिय पु [दे] शिविका-वाहन द्रुप
 (?) (स १३७, ५४१) ।
 आडुआल सक [दे] मिश्र करना, मिलाना ।
 आडुआल (दे १, ६६) ।
 आडुआलि पुं [दे] मिश्रण, मिलावट (दे १,
 ६६) ।
 आडोव देहो आडोव = घाटोप (सुपा २६२) ।
 आडोलिय वि [दे] छद, रोवा हुआ (णाय
 १, १८) ।
 आडोव सक [आ + टोपय्] १ आडंबर
 करना । २ पवन द्वारा झूलाना । आडोवेह
 (भग) । संट. आडोवेत्ता (भग) ।
 आडोव पुं [आटोप] आडंबर (जग, सण) ।

आडोविय वि [दे] घाटोपित, गुप्ता किया
 हुआ (दे १, ७०) ।
 आडोविय वि [आटोपिक] घाटोपवाला,
 स्थापित (पण १, ३) ।
 आडई स्त्री [आडई] वनस्पति-विशेष (पण १,
 १) ।
 आडम पुंन [आडम] १ चार प्रत्य (तेर) का
 एक परिमाण । २ चार सेर परिमित चीज
 (श्रीप; सुपा ६७) ।
 आडत्त वि [दे] आकान्त, 'एण्ठतरम्मि विजय-
 वम्मनरमइणा आडत्तो लच्छिन्निल्लयसामी मूर्-
 तेयो नाम नरइ' (स १४०) ।
 आडत्त वि [आरट्ठ] गुरु किया हुआ, प्रारब्ध
 (श्रीप ४८२, हे २, १३८) ।
 आडत्तिअ वि [आरट्ठ] प्रारभ किया हुआ
 आडविअ (मंगल २३; वेदय १४८) ।
 आडप्प देहो आडय ।
 आडय देहो आडम (महा; ठा ३, १) ।
 आडय सक [आ + रभ्] प्रारंभ करना,
 शुरु करना । आडय (हे ४, १५५; धम्म
 २२) । कर्म. आडयइ, आडवीमइ (हे ४,
 २५४) ।
 आडा सक [आ + ट] आदर करना,
 मानना । आडाह (ववा) । बहु. आडामाग,
 आढायमाण (पि ५००; माचा) । वक्क.
 आडज्जमाण (माचा) ।
 आडा स्त्री [आदर] संमान (पव २—गाथा
 १५५; संघोष ५५) ।
 आडिअ वि [आदत्त] सल्लत, सम्मानित
 (हे १, १४३) ।
 आडिअ वि [दे] १ दृष्ट, धमीष्ट । २ गणीय,
 माननीय । ३ भग्नमत, उच्छुक्त । ४ गाद,
 निविड (दे १, ७४) ।
 आण सक [आ + ण] जानना, पंच न प्राणह
 एण' (से १३, ३) । प्राणसि (से १४, २८),
 'अमिम पादपनचं पडिंठं सोडं च जेण
 प्राणंति' (पा २) । प्राणे (ममि १६७) ।
 आण सक [आ + णी] लाना, मानयन
 करना, से माना । प्राणह (पि १७; भनि) ।
 वट्. आणमाणे (णाय १, १६) । हेट्.
 आणित्ति (भप) (भनि) ।
 आण पुं [आण] १ रसाशुद्धाग, सात ।
 २ स्थान से युद्धय (पण ९) ।

आण देखो जाग = यान (चाह ८) ।
 आणछ देखो आंछ । भाएछड (पड) ।
 आणत देखो आणा ।
 आणतरिय न [आनतर्ये] १ भविन्देह,
 व्यवहार का ब्रह्म (डा ४, ३) । २ भगवन्,
 परिश्रित, 'आणतरियति वा भगवन्परिवर्तित
 वा भगवन्वर्तित वा एण्डा' (भाट्ट) ।
 आणद भक [आ + नन्द] भानन्द पाना,
 छुरा होना ।
 आणद सब [आ + नन्द] गुप्त करना ।
 भाएदेदि (ही) (ना) । इ. आणदिअउर
 (रया १०) ।
 आणद पु [आनन्द] १ महोदय का सोल-
 हवां झूलत (सुख १०, १३) । २ एक देव-
 विमान (वेन्द १३१) ।
 आणद पु [आनन्द] १ हर्ष, खुशी (कुमा) ।
 २ भगवान् शीलनाथ के मुख्य शिष्य (मम
 १५२) । ३ पोतनपुर नगर का एक राजा,
 जो भगवान् ब्रजितनाथ का मातामह था
 (पउम ५, ५२) । ४ भावी छठवां बलदेव
 (सम १५४) । ५ नाहुनार-भातीय देवो के
 स्वामी धरणेन्द्र के एक रथ-सैन्य का भविष्यति
 दन (डा ५, १) । ६ झूलत विशेष (सम ५१) ।
 ७ भगवान् भगवन्देव का एक पुत्र (राज) ।
 ८ भगवान् महावीर के एक साधु शिष्य का
 नाम (कथ) । ९ भगवान् महावीर के दन
 मुख्य उपासको (भावक शिष्य) मे पहला
 (उवा) । १० देव-विशेष (अ दीव) । ११
 राजा धीरेण्ड के एक पौत्र का नाम (निर
 २, १) । १२ 'उपासगर्मा' सूत्र का एक
 सम्प्रदाय (उवा) । १३ 'अष्टोत्तरोपासक
 द्वा' सूत्र का सातवां सम्प्रदाय (भग) ।
 १४ 'निर्यायली' सूत्र का एक सम्प्रदाय
 (निर २, १) । १५ ब. देश विशेष (पउम
 ६८, ६९) । १६ पुर न [पुर] नगर विशेष
 (वृह) । १७ निर्याय पु [रक्षित] स्वनामधेय
 एक जन साधु (भग) ।
 आणदण न [आनन्दन] १ कुशो हर्ष (सुभा
 ४४०) । २ वि छुरा करनेवाला आनन्द-
 दास्य (स २१२ रया ३, सण) ।
 आणदण्ड पु [दि] पहली बार की रज-
 आणद्वयस [स्वला का रज वस्त्र (भा ४५७,
 दे १, ७२, पड) ।

आणद्वी स्त्री [आनन्दा] १ देवो विशेष,
 मेघ की पवित्र दिया मे स्थित रचर पर्वत
 पर रहनेवाली एक दिक्षुमारी (डा ८) ।
 २ इस नाम की एक पुष्करिणी (राज) ।
 आणदिय वि [आनन्दित] १ हर्षान्त
 (गौर) । २ रामचन्द्र के भाई भरत के साथ
 दोहा लेनेवाला एक राजा (पउम ८५, ३) ।
 आणदिर वि [आनन्दिन] भानन्दो, सुश
 रहनेवाला (भवि) ।
 आणकस सब [परि + ईक्ष] परीक्षा
 करना । हक. आणकस (मोघ ३६) ।
 आण-छ देखो आजड । भाएछड (पड) ।
 आणद्वि वि [आनद] सबका नट (उत १८,
 ५०, मुल १८, ५०) ।
 आणन न [आनन] मुल, मुँह (कुमा) ।
 आणन न [आनयन] लाना (महा) ।
 आणस वि [आसत] प्रापित, जिसका हटुम
 दिया गया हो वह (छाया १, ८, मुर ४,
 १००) ।
 आणसि स्त्री [आज्ञप्ति] भ्राता, हटुम (भवि
 ८१) । २ वि [कर] भ्रातावरक, नोकर
 (से ११, ६५) । ३ 'किरर वि [किरर]
 नोकर (पण्ड) । ४ 'हर वि [हर] भ्राता-
 वाहक, संदेश वाहक (भवि ८१) ।
 आणसिया स्त्री [आज्ञप्ति] ऊपर देखो
 (उवा वि ८८) ।
 आणथ न [आनर्थ्य] अनर्थता (मनु
 १५०) ।
 आणप (भ्राता) देवो आणप = भा + जपय ।
 भाएपयति (वि ४) ।
 आणपाण देखो आणापाग (नव ६) ।
 आणपप वि [आज्ञाप्य] भ्राता करने माय्य
 (सूत्र १८, ४, २, १५) ।
 आणम अब [आ + अन्] स्वास लेना ।
 भाएमति (भग) ।
 आणमणी देखो आणमणी (मास १८ वि
 ८८, २४८) ।
 आणय पुन [आनय] १ देवलोक विशेष
 (नम ३५) । २ पु उम देवलोक-वासी देव
 (उत) ।
 आणय पुन [आनय] एक देवविमान (वेन्द
 १३५) ।

आणयण न [आनयन] लाना, भानना (था
 १४, स ३७६) ।
 आणय सब [आ + जपय] भ्राता देना-
 करमान । भाएवड, भाएवेसि (पउम ३३,
 १००, ६८) । वकु आणवेमाग (वि
 ४५१) । क. आणवेयक (महा) ।
 आणय देखो आणाय = भा + मायय ।
 आणयण न [आजपन] भ्राता, भादेश, कर-
 माइर (उवा प्राप्ता) ।
 आणयण न [आनायन] मंगलाना (सुभा
 ५७८) ।
 आणयणिय वि [आज्ञापनिक] भ्राता कर-
 मानेवाला (राय २५) ।
 आणयणिया स्त्री [आज्ञापनिका, आनाय-
 निरा] स्त्री वाता आणयणी (डा २, १) ।
 आणयणी स्त्री [आज्ञापनी] १ क्रिया विशेष,
 हटुम करना । २ हटुम करने से होनेवाला
 कर्म-बन्ध (नव १६) ।
 आणयणी स्त्री [आनायनी] १ क्रिया-विशेष,
 मंगलाना । २ मंगलाने से होनेवाला कर्म-बन्ध
 (नव १९) ।
 आणा स्त्री [आज्ञा] भादेश, हटुम (मोघ
 ६०) । २ उदेश, 'एसा माया निगपिया'
 (भावा) । ३ निदेश 'उवाप्राप्ति एहिहो माया
 विणमा म हाति एण्डा' (वव) । ४ भागम,
 मिदाल (विसे ८६४, एवि) । ५ सूत्र की
 व्याख्या (मीप) । ६ सरपु [ईद्वर] भ्राता
 करमानेवाला मानिक (विपा १, १) । ७ जोग
 पु [योग] १ भ्राता का सम्बन्ध (पंचा) ।
 २ राजा के अनुपार कृति, 'पाने विताइनुल्ल'
 भाएणोयो प्र मयधयो' (पंचव) । ३ 'रुडि स्त्री
 [रुचि] सम्बन्ध विशेष (उत) । ४ वि
 भागमो पर थदा रहनेवाला (नव) । ५ वि
 [वन्] भ्राता माननेवाला (पंचा) । ६ वत्त
 न [पत्र] भागम, हटुमनामा (से १,
 १८) । ७ वरहार पु [व्यवहार] व्यवहार-
 विशेष (पंचा) । ८ विजय न [विजय,
 'विजय] धर्मव्यापन विशेष, जिसमें भ्राता—
 भागम क गुणा का चिन्तन किया जाता है
 (मीप) ।
 आणाइ पु [इ] यकुनि, पसी (दे १, ६४) ।

आणाइत्त वि [आनात्त] आना मानने-
वाला (पचा)।

आणाइय वि [आनायित] मँवाया हुआ
(हुमा २, २१)।

आणापाण पु [आनप्राण] १ श्वातोच्छ्वास
(मास १०४)। २ श्वातोच्छ्वास-परिमित
समय (मणु)। ३ पञ्जति की [पयांसि]
श्वातोच्छ्वास लेने की शक्ति (भग ६, ४)।
आणापाणु की [आनप्राण] ऊपर देखो,
'आणापाणुकी' (भग २५, ५)।

आणापाणुय पु [आनप्राणय] श्वातो-
च्छ्वास-परिमित काल (कण्ठ)।

आणास पु [आनास] श्वास अतः श्वास
(नग)।

आणासिय वि [आनासित] १ योडा नमाया
हुमा (पह १, ४)। २ धवीन किया हुआ
(पदम ६८, ३७)।

आणास पु [आस्यन] १ वयन। २ हाथी
बाँधने की रस्सी—झोरी। ३ जहाँ पर हाथी
बाँधा जाता है वह स्तम्भ, कील (दे २,
१७७, नमाया)। ४ कलस, पदम दु
[स्तम्भ] जहाँ हाथी बाँधा जाता है वह
स्तम्भ (ह २, ११७)।

आणाव देखो आणव = मा + जन्म। आणा-
वेह (म १२६)। कवक, आणाविज्जत
(सुपा ३२३)। क. आणावेयव्य (आपा)।

आणाव सक [आ + नावय] मँगवाना।
आणावह (भवि)। सक. आणाविय
(नाट)।

आणाव (मप) सक [आ + नी] लाना।
आणावह (माक १२०)।

आणावण न [आनावन] दूसरे से मँगवाना,
'वयमारवणे पदमा बोपा आणावणेण धान्नेहि'
(सवेप ७)।

आणावण न [आहापन] आना, हुनुम
(पद)।

आणाविय वि [आहापित] जिसकी हुनुम
रिसा गया हो वह, परमावा हुआ (सुपा
३५१)।

आणाविय वि [आनायित] मँवाया हुआ
(सुपा ३८५)।

आणि देवा आणी। क. आणियव (रग
६)। सक. आणिय (नाट)।

आणिअ वि [आनोत्त] लाया हुआ (हे १,
१०२)।

आणिअ [दे] देखो आदिअ (दे १, ७४)।
आणिअ वि [दे] टेढ़ा, बक (दे ६, ८६)।
आणिक न [दे] तिर्यक् मैथुन (दे १, ६१)।

आणी सक [आ + नी] लाना। कर्म.
आणीवह (प ४८८)। वक. 'आणीवीए'
कुण्डे, दोतेकु परमह कृणतीए (मुद्रा २१६)।

वह आणीय (जिसे ६१६)। कवक-
आणिज्जत (सुपा १६३)।

आणीय वि [आनोत्त] लाया हुआ (ह १,
१०१, कवि)।

आणुअ न [दे] १ दुक, ऊँह (दे १, ६२,
पद)। २ आकार, आकृति (दे १, ६०)।

आणुओगिअ वि [आनुयोगिक] श्वारपा-
कर्ता (गुदि ५१)।

आणुअपिअ वि [आनुअपिअ] दयालु, कृपा-
वान (राम)।

आणुअमि वि [आनुअमिअ] नीचे देखो
(विसे ७३६)।

आणुअमिय वि [आनुअमिय] १ अनुसरण
करनवाला, पीछे-पीछे चलवाला (भग)।

२ न. अवशिष्टन का एक भेद (भावच)।
आणुअणु न [आतृगुण्य] १ दीविय,
आणुअणु २ अनुपत्ता (पचा ६, २६)। २

अनुकूलता (धर्म ११६६)।
आणुअमिअ वि [आनुअमिअ] इतर धर्म-
वालों की भी आदर, सर्वधर्म-सम्मत (आवा)।

आणुअणु देखो आणापाणु (कम्म ५, ४०)।
आणुअणु न [आनुअणु] अनुक्रम, पतिपाटी
(निर १, १)।

आणुअणु की [आनुअणु] रूप, पतिपाटी
(मणु)। ३ नाम, नाम न [नामन] नाम-
कर्म का एक भेद (सम ६७)।

आणुओमिअ वि [आनुओमिअ] अनुक्रम,
अनुकूल, मनोहर (स ७, ५६)।

आणुविचि की [आनुवृत्ति] अनुसरण (म
६१)।

आणु पुन [अनूप] समतुल्य (धर्म
६२६)।

आणु पु [दे] धाव, होम (दे १, ६४)।
आणे सक [आ + नी] लाना, ले आना।

आणेइ (महा)। क. आणियव (मुपा
१६३)। सक. आणेओत्त (महा)।

आणे सक [आ] जानना। आणेइ (नाट)।
आणेसर देखो आणा-ईसर (था १०)।

आत देखो आय = प्राप्त (ठा १)।
आतव देखो आयव = प्राप्त (स २६६)।

आतिय देखो आइय (हुप्र १००, २८६)।
आत्त देखो अत्त = प्राप्त, 'आतहियं वु'
हुएण लभइ' (सुप्र १, २, २०)।

आत्त देखो अत्त = प्राप्त (मणु २१)।
आत्त वि [आत्तिय] स्वकीय (मणु २१)।

आईस [दे] देखो आयस (ग २०४, प्रति
आईसग)। द, मूप १, ४)।

आद (सो) देखो अत्त = प्राप्त (द्वय ६)।
आद देखो आह = धा + हा। आदए (सुप्र १,
८, १६)।

आदण [दे] भाङ्गल, व्याकुल, धक्-
आदण [दे] लाया हुआ (अप ५ २२१, हे ४,
४२२)।

आदयाण वि [आददान] ग्रहण करता हुआ
(सु १३८)।

आदर देखो आवर = पा + ह। आदरह (हे
४, ८३)।

आदरिस देखो आयस (हुमा, दे २, १०७)।
आदाउ वि [आदाउ] ग्रहण करनेवाला
(विसे १५६८)।

आदाण देवी आयाण (अ ४, १), 'धम्म-
दाणेण सुजुपायि तुम' (पसम ६५, ६०, उवा)।

आदाण न [आदहण] उकाला हुआ, गरम
किया हुआ (जल तैल आदि) (उवा)।

आदाणिय न [आदाणीय] नाम, नका (मुल
४, ६)।

आदाणीय देखो आयाणीय (कण्ठ)।
आदाय देखो आया = धा + दा।

आदि देखो आह = प्रावि (कण्ठ, मूप १, ५)।
आदिअ देखो आदअ (ठा ५, ३, ८)।

आदिअणु की [आदिअणु] ग्रहण करने की
क्रिया (मणु)।

आदिअ देवा आपन्न (नग)।
आदिअ देवा आइअ (मनि १०६)।

आदिअ देवा आइअ (वजा १६०)।

आदिनु वि [आदात्] ग्रहण करनेवाला (ठा ७)।

आदिय सक [आ + दा] ग्रहण करना। आदियइ (उवा)। प्रयो. दावियावेति (सूत्र २, १)।

आदिल } देखो आइल (पि ५६५)।
आदिल्ल }
आदिल्ल }

आदी जी [आदी] इस नाम की एक महानदी (ठा ५, ३)।

आदीण वि [आदीन] १ मलयत दीन, बहुत गरीब (सूत्र १, ५)। २ न दूषित भिना। 'भोइ वि [भोजिन्] दूषित भिना को सेने-वाला, 'नादीएभोईवि करेति पाव' (सूत्र १, १०)।

आदीणिय वि [आदीनिक] मलयन्त दीन-सबकी, 'मादीणिय दुक्किय पुरन्वा' (सूत्र १, ५)।

आदु (सी) देखो अदु (पि ६०)।

आदुज देखो आपज (पण्ह १, ४)।

आदेस देखो ओएस = मादेश (कुमा, वन २ =)।

आदेस पु [आदेश] अपदेश, व्यवहार (सूत्र १, ८, ३)। देखो आपस = मादेश (सूत्र २, १, ५६)।

आधरिस सक [आ + धर्य] परास्त करना, तिरस्कारना। आधरिसहि (भावन)। आया देखो आहा (पि ३)।

आधार देखो आहार = पाचार (पण्ह २, ५)। आधोरण पु [आधोरण] हस्तिक महाजत, हाथीवाज (पमसि ११६)।

आनय देखो आणय (मनु)।

आनामिय देखो आणाभिय (पण्ह १, ४)। आपण देखो आरण (पमि १८८)।

आपण देखो आरण (पमि ६५)।

आपत्ति वि [आपत्ति] प्राप्ति (सवोय ३५ वन १४६)।

आपाइय वि [आपादित] १ जिसकी प्रापति की गई हो वह। २ उपादित अनित (विरो १०४६)।

आपादन न [आपादन] संपादन (भावन ८२, पचा ६, १६)।

आपीड पु [आपीड] शिरोभूषण (था २८)।

आपीण देखो आवीण (मउड)।

आपुच्छ सक [आ + प्रच्छ] भाजा लेना, सम्पत्ति लेना। आपुच्छइ (महा)। वह-आपुच्छत (पि ३६७)। क. आपुच्छणीय (छाया १, १)। संक. आपुच्छिता, आपुच्छिताण, आपुच्छिऊण, आपुच्छिऊ, आपुच्छिय (पि ५८२, ५८३, वण, ठा ५, १)।

आपुच्छण न [आप्रच्छण] भाजा, मनुमति (छाया १, ६)।

आपुट्ट वि [आपुट्ट] जिसकी भाजा या सम्पत्ति ली गई हो वह (सुर १०, ५१)।

आपुण वि [आपूर्ण] पूर्ण, मपूर (दे १, ३०)।

आपूर पु [आर] पुरलेवाया, 'मवणाकरा-गूरं ससि' (कण)।

आपूर देखो आऊर। कर्म, आपुरिजइ (महा)। वह, आपूरमाण, आपूरमाण (भग राय)।

आपेड } देखो आपीड (पि १२२, महा)।
आपेड }

आपेण न [दि] पिट, भाटा (पइ)।

आपस पु [आपस] मल सपर (हे १, ४४)।

आफर पु [दि] दूत, बुझा (दे १, ६३)।

आफल सक [आफालय] शास्त्रान करना, भाषान करना। सह आफालिआ,

आफालऊण (पि ५८२, ५८६)।

आफालण देखो अप्फालण (था ५४६)।

आफुण वि [दि] भाक्कल (मणु १६२)।

आफोडिअ न [आफोटिड] हाथ पछाधना (पण्ह १, ३)।

आवध सक [आ + वध] मनुत वधना।

वह आनवत (इ १, ७)। सह आवधिरुण (पि ५८६)।

आवध पु [आवध] सबन्ध, समोण (मउड)।

आनद वि [आनद] बंधा हुआ (स ३५८)।

आनाहा जी [आनाहा] १ धन बाधा (छाया १, ४)। २ अन्तर (सन १५)। ३ मानसिध मोटा (बुह)।

आमर पु [आमर] १ यह विशेष (ठा २, ३)। २ न. विमान विशेष (सम ८)।

'पमर न [प्रमर] विमान-विशेष (सम ८)।

आमकराण देखो अवमकराण (उवा)।

आमह वि [आमापित] १ कथित, उक्त (सुपा १५१)। २ समापित (सुर २, २४८)। आमरण न [आमरण] ग्रन्थार, ग्रन्थपण (पि ६०३)।

आमवय वि [आमवय] होने योग्य, संभाव्य (वव, सुपा ३०७)।

आभा जी [आभा] प्रभा, कान्ति, तैज (कुमा, मोप)।

आभागि वि [आभागिन्] भोक्ता, भोगी, 'मणेणण वनमरणण आभागी भवेज' (वदु, छाया १, ६८)।

आभार पु [आभार] धौक, भार (सुपा २३६)।

आभास सक [आ + भाप्] कहना सम-पण करना। आभासइ (हे ४, ४४७)।

आभास पु [आभास] १ जो वास्तविक में वह न होकर उससे समान लगता हो। २ विपरीत, करणाभासिहि (कुमा)।

आभासिय पु [आभासिय] १ इन नाम का एक स्नेच्छ देश। २ उनमें रहनेवाली स्नेच्छ जाति (पण्ह १, १)। ३ एक भन्तर्द्धन। ४ उनमें रहनेवाला, 'कहि ए भते। आभासियवुवाए' आभासियदीवे नाम दीव' (जीव ३, ठा ४, २)।

आभासिय देखो आभट्ट (निर)।

आभिओदय देखो आभिओगिय (महा)।

आभिओग पु [आभियोग्य] १ विवर-स्थानीय देव विशेष (ठा ४, ४)। २ नीचर, विवर (राय)। ३ विवरता, नीचरी (वस ६ २)।

आभिओगा जी [आभियोग्या] मामिभोगिन भावना (वस ३६, २५५)।

आभिओमि वि [आभियोगिन्] विवर-स्थानीय देव (सन ६)।

आभिओगिय वि [आभियोगिय] १ मन्त्र आदि न आनोनिवा चवानना (पण्ह २०)। २ नीचर स्थानीय देव विशेष (छाया १, ८)। ३ वहीरण, दूगरे का वर में करने का मायादि यम (पचा, महा)।

आभिओगिय वि [आभिओगित] वशीकरण
ग्रहति से संकृत (भाव) ।

आभिओग देखो आभिओग (पण २०) ।

आभिग्रहहिअ वि [आभिग्रहिक] १ अभिग्रह-
संबन्धी (पंचा ४, ८) । २ न. मिय्यात्व-
विशेष (पंच ४, २) ।

आभिग्रहिय वि [आभिग्रहिक] १ प्रतिज्ञा
से संबन्ध रखनेवाला । २ प्रतिज्ञा का निर्वह
करनेवाला (भाव) । ३ न. मिय्यात्व-विशेष
(धा ६) ।

आभिर्णदिय पुं [आभिनन्दित] थावण
मास (चंद) ।

आभिष्टु } वि [दे] प्रवृत्त, 'आभिष्टु पर-
आभिडिय } मरण' (पठम ४, ४२, ६, १६२;
वज्रा ४२) ।

आभिणिशोहिय देखो आभिणिशोहिय (धर्मसं
८२३) ।

आभिणिशोहिय न [आभिनिबोधिक] इन्द्रिय
धर मन से होनेवाला प्रत्यक्षज्ञान-विशेष
(धर्म ३३) ।

आभिप्पाहज वि [आभिप्रायिक] अभिप्राय-
वाला (भणु १४५) ।

आभिसेक वि [आभिपेक्ष्य] १ अभिपेक्ष के
योग्य (तिर १, १) । २ मुख्य, प्रधान, 'आभि-
सेक' हवियरणण पडिअहे' (मीम) ।

आभीर } पुं [आभीर] एक शूद्र जाति,
आभीरिय } गरीर, गोवाला (सूत्र १, ८, सुर
९, ६२) ।

आभूअ वि [आभूत] उत्पन्न (तिर १, १) ।

आभडिय [दे] देखो आभिष्टु (उप ६ ४२) ।

आभोइअ वि [आभोगित] देहा दृष्टा (वण्य)

आभोग पुं [आभोग] १ वितोन्नत, देखना
(उप १४७) । २ प्रदेश, स्थान (सुर २, २२१) ।

३ उपकरण, साधन (धोष ३६) । ४ प्रति-
लेखन (धोष ३) । ५ उपयोग, स्थान (भग)

६ विस्तार (शापा १, १) । ७ ज्ञान, जानना
(भग २५, ६, ठा ४) । देखो आभोग्य =

आभोग ।

आभोगण न [आभोगन] ऊपर देखो (संदि) ।

आभोगि वि [आभोगिन्] परिपूर्ण, 'जह

नमनो निरासो नामो जसविहवागो' (सुपा

२७५) । 'ओ छो [नी] मानसिक निर्णय
उत्पन्न करनेवाली विद्या-विशेष (बृह) ।

आभोग्य सक [आ + भोग्य] १ देखना ।

२ जानना । ३ क्यास करना । आभोग्य (ज्या-
खाया) । वक्र. आभोग्यमाण (वण्य) । संक्र.

आभोइचा, आभोएऊण, आभोइअ (दस

५. महा. पंचव) ।

आभोग्य पुं [आभोग] १ सपं की कथा (स

६१०) । २ देखो आभोग (भाव, महा. सुर

३, ३२) ।

आम [आम] अनुमत प्रकाशक शब्द—

हो (गा ४१७, सुर २, २४५; न ४५६) ।

आम म [भयत्] मास (प्राक ८१) ।

आम पुं [आम] १ योग, पीडा (से ६, ४४) ।

२ वि. शयन, बचा (था २०) । ३ प्रयुद्ध,
अपवित्र (भाचा) । ४ जर पुं [ज्यर] भजीणें

से उत्पन्न बुद्धार (गा ५१) ।

आमइ वि [आमयिन्] योगी (वव १) ।

आम [आम] १ स्वीकार-सूचक शब्द—हो

(सुख २, १३) । २ श्रवण, श्रवणत (धर्मसं

६४६) ।

आमंड न [दे] बनावटी मामला का फल,

कुत्तिम मामलन (उप ६ २१४; उप १४५ टी) ।

आमंडण न [दे] भाएड, पात्र (दे १, ६८) ।

आमंत सक [आ + मन्त्रय] १ ब्राह्मण

करना, संबोधन करना । २ अभिनन्दन करना ।

वक्र. आमंतेमाण (भाचा) । संक्र. आमंतिचा

(कय), आमंतिथि (मूय १, ४) ।

आमतण न [आमन्त्रण] ब्राह्मण, संबोधन

(वव) । २ यण न [यचन] संबोधन-विभक्ति

(विने ३४५७) ।

आमंतणी छो [आमन्त्रणी] १ संबोधन की

भाषा, ब्राह्मण की भाषा (दस ६) । २ बाळी

संबोधन-विभक्ति (ठा ८) ।

आमंतिथि वि [आमन्त्रित] संबोधित (विपा

१, ६) ।

आमम देखो आम (शापा १, ६) ।

आमपायपुं [अमापात] यगार्चन-अदान, हिंसा-

निवारण (पंचा ६, १५; २०, २१) ।

आमज सक [आ + मज्ज] एक बार साफ

करना । आमज्जेअ (भाचा) । वक्र. आमज्जेअ

(निबु) । प्रयो. आमज्जायंत (निबु) ।

आमइ पुं [आमद] संघर्ष, आघात (कुमा) ।

आमय पुं [आमय] योग, वद (स ५६६;

स्वन् ६०) । १ करणी छो [करणी] विद्या-

विशेष (सुम २, २) ।

आमय वि [आमत] संमत, अनुमत (विने

१३६) ।

आमराय पुं [आमराज] एक प्रसिद्ध राजा

(ती ७) ।

आमरिस पुं [आमर्ष] स्वर्ण (विने ११०६) ।

आमल पुन [आमलक] मामला का फल

(सम्मत १५६) ।

आमलई छो [आमलकी] मामला का पेड़

(दे) ।

आमलरुप्पा छो [आमलरुप्पा] नगरी-विशेष

(शापा २, १) ।

आमलय पुं [आमरक] १ चारो ओर से

मारना । २ विपाक-श्रुत का एक अध्ययन (ठा

१०) ।

आमलगा पुं [आमलक] १ मामला का

आमलय पेड़ (ठा ४) । २ मामला का फल,

'मुक्खोवाभा मामलगो विव करतले देसिमो

भगवया' (बलु, कुमा) ।

आमलय न [वि] द्रुपद-गृह, द्रुपद रबने का

स्थान (दे १, ६७) ।

आमसिण वि [आमसुण] १ शोका चिकित्सा ।

२ उल्लसित (से १२, ४३) ।

आमिल सक [आ + मुच] छोड़ना ।

आमिलइ (भवि) ।

आमिस न [आमिष] नैवेद्य (पंचा ६, २६-
कुत्र ४२३; ती ११) ।

आमिस न [आमिष] १ मास (शापा १,

४) । २ वि. मनोहर, सुन्दर (से ६, ३१) ।

३ आसक्ति का कारण, 'आमिसं सवयुज्जितता

विहरिस्सामो निरापिता' (उत्त १४) । ४

आहार, फल्यदि भोग्य वस्तु (पंचा ६) ।

आमुंच सक [आ + मुच] १ छोड़ना ।

२ उत्तरना । ३ परतना । वक्र. आमुंचंत

(भाव) ३८) ।

आमुक वि [आमुक] १ एक (गा ५३६;

गठड) । २ उत्तरा दृष्टा (भाव ३८) । ३ परि-

हित (विणी १११ टी) ।

आमुट्ट वि [आमुट्ट] १ स्पष्ट । २ उलटा किया हुआ (भोज) ।

आमुय सक [आ + मुच्] छोड़ना, त्यागना ।
आमुयद (गडद) ।

आमुस सक [आ + मुश्] थोड़ा सा एक बार स्पर्श करना । बहः आमुसत, आमुस-भाग (डा १, धात्वा, भग ८, २) ।

आमेडणा की [आमेडना] विपर्यस्त करना, उलटा करना (पणह १, २) ।

आमेल दु (दे) लट्, जटा (दे १, ६२) ।

आमेल पु [आपोड] फूलों की माला, जो आमेलमा प्रकट पर धारण की जाती है, आमेलय शिरोभूषण (दे १, १०५, पि १२२, भग ६, ३३) ।

आमेल देवो आमेल = मापीव (उवा २०६) ।
आमेक्षि वि [आपीक्षित] भवतस्ति, विरो-भूषण से विभूषित (से ६, २१) ।

आमोअ सक [आ + मुद्] छुड़ा होना । सक आमोअधि (भप) (भवि) ।

आमोअ पु [दे आमोअ] हर्ष, खुशी (दे १, ६४) ।

आमोअ पु [आमोअ] सुगन्ध, अच्छी गन्ध (मि १, २३) ।

आमोअ पु [आमोअ] बाध विरोध (राय ५६) ।

आमोअअ वि [आमोअ] १ मुकुट उत्पन्न करनेवाला । २ भान्तव-जनक (से ६, ४०) ।

आमोअअ वि [आमोअ] मुकुट केनेवाला (से ६, ४०) ।

आमोअअ वि [आमोअ] दृष्ट, हसित (भवि) ।
आमोअअ पु [आमोअ] मोप, श्रुति, पूर्ण छुत्कारा (सूत्र १, १, ४, १३) ।

आमोअअ की [आमोअ] १ छुत्कारा । २ परित्याग (सूत्र १, १, पि ४६०) ।

आमोअ पु [दे] कट, लट, समूह (दे १, ६२) ।

आमोअन न [आमोअन] १ वाय-विरोध (धात्वा) । २ फूलों से बालों का एक प्रकार का गन्धन (उत्तनि ३) ।

आमोअन न [आमोअन] घोड़ा मोचना (पणह १, १) ।

सामोअन वि [आमोअन] मलिन (भान ६०) ।

आमोअ देवो आमोअ (स्वन ५२, सुर ३, आमोअ) ५१, काल) ।

आमोअ पु [आमोअ] कतवार-पुञ्ज, कतवार का डेर, कूड़े का पुञ्ज (भाषा २, ७, ३) ।

आमोअ वि [दे] विरोध, मन्त्रा जानकार (दे १, ६६) ।

आमोअ पु [आमोअ] १ स्पर्श, छूना 'सक-स्पर्शमागो' (पणह २, १, पि ७५१) ।

आमोअ पु [आमोअ] चोर (उत्त ६, २८) ।

आमोअ वि [आमोअ] १ चोर, चोरी करनेवाला (आ ५, २) । २ चोरी की एक जाति (उर २, ६) ।

आमोअहि पु [आमोअहि] सखि-विरोध, जिसके प्रभाव से स्पर्श मात्र से ही सब रोग नष्ट होते हैं (पणह २, १, भीप) ।

आय पु [आय] १ लाभ प्राप्ति, फायदा (भलु) । २ वनस्पति विशेष (पणह १) । ३ कारण, हेतु (विने १२२६, २६७६) । ४ अध्ययन, पठन (विने ६५८) । ५ गमन (विने २७६२) ।

आय पु [आय] अध्ययन, राजाज्या विरोध (भलु २५०) ।

आय वि [आय] १ अन्न-सम्बन्धी । २ वन के बाल से उत्पन्न (बलादि) (भाषा) ।

आय वि [आय] भावा हुमा (काल) ।

आय वि [आय] गृहीत, 'भाववर्तितो करेइ धामएण' (सथा ३६) ।

आय पु [आय] १ पाप । २ अपराध, गुनाह (था २३) ।

आय पु [आय] १ भावा, जीव (सम १) । २ निज, स्वयं, 'महालहृत्स्वयाइ दययाइ गहाय भायाइ एवमवत भवकाभित्ति' (भग ३ २) । ३ शरीर, देह (सामा १, ८) । ४ आत्मा आदि भावा के गुण (भाषा) । 'मुत्त वि [गुत्त] सवत जितेन्द्रिय 'भावयुत्ता निर्द-दिया' (सूत्र) । 'जोगि वि [योगिन्] मुमुक्षु प्यानी (गुम्) । 'दि वि [धिन्] युयुक्षु, 'एव से जिम्बू भायट्टी' (सूत्र) । 'तव वि [तन्] स्वाधीन स्वतंत्र (राज) । 'तत्त न [तत्त] परम पदार्थ, ज्ञानादि रहस्य (भाषा) । 'प्यमाण वि [प्रमाण] सारे तीन हाथ का परिमाण वाला (पय) । 'प्यवाय न

['प्रवाद] वाहमें बैन श्रद्धा प्रथ का एक माग, सातवां पूर्व (सम २६) । 'भाव पु [भाव] १ भाव-स्वल्प । २ निज धर्मिभाव (भग) । ३ विपासक 'विण्णज्जो सवह्वायमाव' (सूत्र) । 'य पु [ज] वृक्ष, लहरा (भवि) । 'रक्ख वि [रक्ख] श्रद्धावक (सामा १, ८) । 'व वि [वत्] ज्ञानादि भावयुक्तो से सपन्न (भाषा) । 'हम्म वि [ह] भावा को ध्योगति में ले जानेवाला । २ देवो आहम्म (पिड) ।

आय देवो आयड विचारयन्त्रिभाषा जो पुरितो सो होइ वरिसमयमा' (सुपा ४५१) ।

आयड की [आयति] भविष्य काल (सुर ७, १३१) ।

आयडजण न [आयतिजनक] तपधर्मा-विरोध (पव २७१) ।

आयडका देवो आड = मा + बा ।

आयड पु [आयड] १ दुःख । २ पीडा (भाषा) । ३ दुःसाध्य रोग, आयु-पाती रोग (भीप) ।

आयडि वि [आयडिन्] रोगी, रोग युक्त (डा ५, ३, टी—पन ३४२) ।

आयडुल न [आयडुल] परिमाण का एक मेल, 'जैण जया मयूना, तैवि ज हीइ माणएव दु । ३ भविमहिहायडुलमणिययमाण पुण हन दु ।' (विने ३४ टी) ।

आयड सक [आ + तच्च्] सोचना छिड़कना । भावयड भावयानि (उवा) ।

आयडचणिया की [आयडचणि] १ कुम्भनार का पात्र विदप जिसे वह पान बनाए के समय मिट्टीचाला पानी रखता है (भग १५) ।

आयडचणी की [आयडचणी] उपर देवो (भग १५) ।

आयड वि [आयड] जिनम आयडन किया हो वह (सामा १ १ स १८९) ।

आयड देवा आयड = मा + बा ।

आयडम वि [आयडम] भावा का विप्र करनेवाला (डा ४, २) ।

आयडम वि [आयडम] १ धनानी, अन्नान । २ भोजी (डा ४ २) ।

आयडम वि [आयडम] १ भावा का शात

रहनेवाला, मन घोर इन्द्रियो का निग्रह करने-
वाला । २ अथ प्रादि को संयत रहने को
सिक्खनेवाला (ठा ४, २) ।

आयंप पुं [आरुम्प] १ कपना, हितना ।
२ कपनेवाला (पउम ६६, १८) ।

आयंपिय वि [आरुम्पित] कपना हुआ (स
३४३) ।

आयंय धक [येप्] कपना, हितना ।
आयंबड (हे ४, १४७) ।

आयंय } वि [आतात्र] योडा लाल
आयंयिर } (घोर, मुर ३, ११०, मुवा ६,
१४४) ।

आयंयिल न [आचाम्ल] तर्वा-विशेष, धाविन
(छाया १, ८) । 'यड्डमाण न [वधेमान]
तपधर्मा-विशेष (अंत ३२, महा) ।

आयंयिलिय वि [आचाम्लिक] धाम्मिल-तप
का कर्ता (ठा ७; पणह २, १) ।

आयंभर } वि [आत्मभरि] स्वामी, प्रकल-
आयंभरि } केन्द्र (ठा ४, १) ।

आयंय धक [आ + रुम्प] कपना, हितना
(प्रामा) ।

आयंस } पुं [आदर्स] १ धरंय (पणह १, ४;
आयंसम } सूत्र १, ४) । २ चेत प्रादि के गने
का भूषण-विशेष (मणु) । 'मुह पुं [मुर]
एक पल्लवीप । २ उमने निवासी मनुष्य (ठा
४, २) ।

आयसय देखो आइसर । आसयवाहि (भग) ।
अयन वि [आजक] देखो आय = भाग
(भावा) ।

आयसम भव [येप्] कपना, हितना ।
आयसमड (हे ४, १४१, पणह) । वड.
आयसमन (हुमा) ।

आयट सक [आ + यत्तय] १ विराना,
मुमान । २ उवाचना । वड. आयट्ट (मि
५, ७५; ८, १६) । कयड. आयट्टिजमाण
(छाया १, ६) ।

आयट्टण न [आयत्तन] विराना (मुवा २३०) ।
आयट्टर वर [आ + छप्] खोचना ।
आयट्टर (मरा) । कयड. आयट्टिजट (हे
५, २८) । संट. आयट्टिजण (मरा) ।

आयट्टण न [आरुपण] भायंय, लींवा
(मुवा १२, ७६; मा ११८) ।

आयट्टि छी [आरुट्टि] ऊपर देखो (गड.
दे ६, २१) ।

आयट्टि पुं [दे] विस्तार (दे १, ६४) ।

आयट्टिय वि [आरुट्ट] खोचना हुआ (काल,
कप्पु) ।

आयण्य सक [आ + रुण्य] मुनना,
धवल करना । आयण्येड (मा ३६५) । वड.
आयण्यंत (हे १, ६५; मा ४६५; ६४३) ।
सड्ड. आयण्यजण (उवा) ।

आयण्यण न [आरुण] धवल (महा) ।

आयण्यिय वि [आरुणिन] मुना हुआ
(उवा) ।

आययंत वड्ड [आयदन्] ग्रहण करता
हुमा (सूत्र २, १) ।

आयय वि [आयत्त] भवित, स्ववश (मा
३७६) ।

आयय देखो आयण्य । वड. आययन (मुर
१, २४७) ।

आययण देखो आयण्यण (मुर ३, २१०) ।

आयम सक [आ + यम्] आचमन करना,
बुझा करना । हेड. आयमिचय (कप्पु) ।
वड. आयममाण (ठा ५) ।

आयमण न [आचमन] बुझि, शींच (मा
१२; मा ३३०, निड्ड ४; मा २०६; २५२) ।

आयमिअ देखो आगमिअ (हे १, १७७) ।

आयमिगी छी [आयमिनी] विज्ञा-विशेष
(सूत्र २, २) ।

आयय वि [आयत्त] १ लम्बा, विस्तृत (उवा-
पउम ८, २१५) । २ पुं, मोय (सूत्र १, २) ।

आयय वा [आ + द्द] ग्रहण करना ।
आयय, आययति (दण ५, २, ३१; उत ३,
७) । वड्ड. आययमाण (विड १०७) ।

आययण न [आयतन] १ प्राचीनगु (सूत्र
१, ६, १६) । २ उगाढा पारण (सूत्र १,
१२, ५) ।

आययण न [आयतन] १ घर, गृह (गडर) ।
२ प्रायय, स्थान (भावा) । ३ देव-मन्दिर
(भायय) । ४ धार्मिक जनों का एकत्र होने
का स्थान,
'जल साहमिया बहने सोनयंता बहमुवा ।
बस्तिमायालपणया भाययणं ठि विमाळ डु'
(भावा) । ५ कर्म-कर्म का कारण (भावा) ।

६ निरुपय, निरुपय (सूत्र १, ६) । ७ निर्दोष
स्थान (सार्थ १०६) ।

आयय सक [आ + चर] आचरना, करना ।
आयय (महा, उत) । वड्ड. आययंत,
आययमाण (भग) । क. आययियव (स १) ।
आयय पु [आरु] १ खादि, पान । २ समूह
(वाल; कप्पु) ।

आयय देखो आयार = आचार (सूत्र ३५६) ।
आयय पुं [आइर] १ सत्कार, सम्मान
(मड) । २ परिहृ, मसंतोष (पणह १, ५) ।
३ इयाल, संभाल (कप्पु) ।

आययण पुं [आययण] इन नाम का एक
म्लेच्छ राजा (पउम २७, ६) ।

आययण न [आचरण] प्रवृत्ति, मनुष्य (पडि) ।

आययण न [आचरण] आचर (भा १२, ५) ।

आययणा छी [आचरणा] परंपरा का रिवाज
(विषय २५) ।

आययणा छी [आचरणा] आचरण, मनुष्य
(सट्टि १४५; उतर १४५) ।

आययि वि [आचरि] १ मनुहित, विहित,
हुत (उवा) । २ न, शास्त्र-मन्त्र बाल-चलन,
'बसडैण समानने न कयड वेणुड मसावज ।
न निवारियवनेहि प, बहमणुमयमेमाययि'
(उत ८१३) ।

आययिय पुं [आचार्य] १ गण का नायर,
मुखिया (भावन) । २ उपदेश, श्रुत, शिक्षा
(भा १, १) । ३ धर्म पढ़ानेवाला (भा
८, ८) ।

आययिस देखो आयंय (हे २, १०५) ।

आययल धन [लम्ब] १ लम्बा होना । २
सट्टना; 'विचरताड लपि मोणल्लर, परि-
मोयणु निर्यवि आययल्ल' (मरि) ।

आययल्लया छी [दे] देखने, 'मयणुमयिअ-
रियंणी कट्टया भाययल्ल पत्ता' (पउम ८,
१८६), 'विजो मणुणमाणेहि भति भाययल्ल
पत्ता' (मुर १६, ११०), 'मि उण निम-
धन मयणामल्लभं पणणो उदेहि धम्मनेहि
खिबेदेमि' (कप्पु) । देखो आअल्ल ।

आययल्लिय वि [दे] भाग्य, बला (ज
१०३१ टी. मरि) ।

आयय पुं [आययण] मरोपन का २४वां
सूत्र (सूत्र १०, ११) ।

आयव वि [आतप] १ उजोत, प्रवृत्त (गा ४६) । २ तप, धाम (उत्त) । ३ न. धूर्त-विशेष (सम ५१) । ४ गाम, नाम न [नामन] नामकर्म का एक भेद (सम ६७) । आयवत्त न [आतप] छर, छाता (छाया १, १) ।

आयवत्त पु [आयावत्त] भारत, हिन्दुलाल (इक) ।

आयवत्त की [आतप] १ सूर्य को एक अन्न-महिली—“ट्राती” । २ इस नाम का ‘ज्ञाना-धर्मकथा’ सूत्र का एक अयमन (छाया १, १) ।

आयम वि [आयस] बाहे का, लोह निर्मित (गउड, निबु १) ।

आयसी की [आयसी] लाह का काष्ठ (पण्ड १, १) ।

आया देखो आय = प्राप्तम् ।

आया सक [आ + या] आना, भागमन करना । आयति (मुपा ५७) । भाषाएति, भाषाइतु (कप) । बहु आयत ।

आया मर [आ + दा] ग्रहण करना, स्वीकार करना । आयइज्ज (उत्त ६) । क. आया-णिज्ज (उ ६) । मङ्ग. आयाए, आदाय, आयाय (कस, कप, महा) ।

आयाइ की [आजाति] १ उत्पत्ति, जन्म (उ १०) । २ जाति, प्रकार । ३ भाषा, भाषण (भाषा) । ४ जाति न [स्थान] १ संसार, जगत् । २ ‘भाषाएतद्’ सूत्र के एक धन्यमन का नाम (उ १०) ।

आयाइ की [आयाति] १ भागमन । २ उत्पत्ति, गर्भ से बाहर निकलना (उ २, ३) । ३ आयति, मत्पिप काल (दस) ।

आयाए देखो आया = आ + दा ।

आयाण पुन [आदान] १ ग्रहण, स्वीकार (भाषा) । २ इन्द्रिय (मग ५, ४) । ३ जिनका ग्रहण किया जाय वह, प्राप्त वस्तु (उ ४, मूष २, ७) । ४ कारण, हेतु, ‘सति मे उउ भाषाणां जेहि बौद्ध पाण’ (मूष १, १) जिन्ना दुस्सायासं पट्टनराण समारदसि’ (पउम ६५, ४८) । ५ भाति, प्रथम (भणु) ।

आयाण न [आदान] १ समम, चरित (मूष १, १३, २२) । २ वि, भादेय, उपादेय (मूष

१, १४, १७, तटु २०) । ३ ‘पय न [पद] अन्य का प्रथम शब्द (भणु १४०) ।

आयाण न [आयान] १ भागमन । २ भाष का एक भाषण विशेष (गउड) ।

आयाम सक [आ + यमय] तन्वा करना । कवङ्ग. आआमिज्ज (से १० ७) । सङ्ग.

आयामेत्ता, आयामेत्ताण (मग वि ५८३) ।

आयाम सक [आ + यम्] शौच करना, शुद्धि करना । आयामइ (पव १०६ टी) ।

आयाम सक [दा] देना, दान करना । आयामेइ (मग १५) । सङ्ग. आयामेत्ता (मग १५) ।

आयाम पु [आयाम] तन्वाई, देव्यै (सम २, गउड) ।

आयाम पु [द] बल, जोर (दे १, ६५) ।

आयाम न [आचाम्ल] तपो विशेष, आयवित नाइविट्ठो उ सरो छम्ममे परिमियं तु आयाम’ (भाषावि २७२, २७३) ।

आयाम } न [आचाम] मरवावण, चावल आयामग } भाति का घानी (भाष ३५६, उत्त १५) ।

आयामणया की [आयामनवा] तन्वाई (मग) ।

आयामि वि [आयामिन्] तन्वा (गउड) ।

आयामुही की [आयामुही] इन नाम की एक नगरी (म ४३१) ।

आयाय देखो आया = आ + दा ।

आयाय वि [आयान] आना हुआ (पउम १४, १३०, दे १ ६६, कुम्मा १६) ।

आयाय सक [आ + यय] कुपला, महाजन करना । आयायति (सी) (गउड) । सङ्ग. आआ-रिज, आयारेऊण (गउड स ५७८) ।

आयाय पु [आया] १ भावति, त्व (छाया १, १) । २ इहत्तु, इच्छा (वाम) ।

आयाय पु [आनार] ‘म’ भगर (कुप ३२) ।

आयाय पु [आचार] १ भाषण, अनुष्ठान (उ २, ३, भाषा) । २ चान-वत्तन, चीन-भाव (पउम ६३ ८) । ३ बारह जैन भद्रकथा मे पहला धन्य ‘आयारदममुत्ते’ (उ ६८०) ।

४ निजुपु छिप्य (मग १, १) । ५ ‘केतेयपी की [तेपिप]’ क्या का एक भेद (उ ४) ।

६ ‘अहम, ‘भट्टय न [भाण्ड]’ नगादि का उल्लङ्घ—आयम (छाया १, १६) ।

आयारिमय न [आचारिमक] विवाह के समय दिया जाता एक प्रकार का दान (स ७७) ।

आयारिय वि [आचारित] १ भावित, तुलाया हुआ (पउम ६१, २५) । २ न. ब्राह्मन-वचन, भाषण-वचन (से १३, ८०; भूमि २०६) ।

आयान सक [आ + ताप] मुर्भ के ताप मे शरीर को सोडा लगाना । २ शीत भातर भादि को सहन करना । बहु. आयारत पउम ६, ६१) आयारित (कप) आयारित (पउम २६ २१), आयारिमाण (महा मग) ।

हेइ. आयारिवात्त (कस) । सङ्ग. आयारिय (भाषा) ।

आयान पु [आताप] मनुस्सुभार-आनीय देव-विशेष (मग १३, ६) ।

आयान पु [आताप] भातप-भोगकर्म (पव ५, १३७) ।

आयारम वि [आतापक] शीत भादि को सहन करनेवाला (मूष २, २) ।

आयारण न [आतापन] एक बार या दोहरा भातर भादि को सहन करना (छाया १, ६६) ।

‘भूमि की [‘भूमि] शीतादि सहन करने का स्थान (मग ६, ३३) ।

आयारणया की [आतापना] ऊपर देखो आयारणा } (उ ३, ५) ।

आयारय वि [आतापक] शीत भादि को सहन करनेवाला (पउम २, १) ।

आयारल } पु [दि] सबेर का लड़का, आयारलर } बातातर (दे १, ७०, वाम) ।

आयारि वि [आतापिन्] देखो आयारय (उ ४) ।

आयास मर [आ + यासय] तन्वाक देना, खिन्न करना । आयासवि (वि ४६०) ।

सङ्ग. आआसिअ (भा ४४) ।

आयास पु [आयास] १ उजोत, परिपक्व, खद (गउड) । २ परिपक्व, मधुमय (पण्ड १, ५) । ३ ‘ल’ के [‘लियि] निप्ति विशेष (पण्ड १) ।

आयास दवा आयस (पउ १) ।

आयाम देना आगास (पउम ६६, ४०, ८, १, ८४) । ‘निलय = [‘निलय] नगर-विशेष (मगि) ।

आयासइत्तिअ वि [आयासयित्] सनसीक
देवेवाला (ग्रामि ६३) ।

आयासतल न [आकाशतल] चन्द्रयाला,
पर के ऊपर की गुली छत (पुत्र ४६२) ।

आयासतल न [दे] प्रासाद वा छुद्र भाग (दे
१, ७२) ।

आयासतल न [दे] पतिगृह, मोह (दे १,
७२) ।

आयासिअ वि [आयासित] परिधान, तिर
(गा ११०) ।

आयाहम्म वि [आत्मज्ञ] १ प्रायश्चित्तारुह ।
२ न. ब्राह्मणर्म दोष (विड ६५) ।

आयाहिण न [आदक्षिण] दक्षिण पार्श्व से
भ्रमण करना (उवा) । *पयाहिण वि
[*प्रदक्षिण] दक्षिण पार्श्व से भ्रमण कर
दक्षिण पार्श्व में स्थित होनेवाला (विपा १,
१) । *पयाहिणा औ [*प्रदक्षिण] दक्षिण
पार्श्व से परिभ्रमण, प्रदक्षिणा (ठा १) ।

आयु देवो आउ = आयुप् । *यंत वि [यत्]
चिरायुक्त, दीर्घ आयुवाला (पहल १, ४) ।

आर पुं [आर] १ इन्द्र-लोक, यह जन्म (सूत्र
१, १, ६; १, ६, २८; १, ६, ६) । २ मनुष्य-
लोक (सूत्र १, ६, २८) । ३ मुकुली लोहे
की नील (कुत्र ४३४) । ४ न. गृहस्वपन
(सूत्र १, २, १, ८) ।

आर पुं [आर] १ मंगल-ग्रह (पञ्चम १७,
१०८; सुर १०, २२४) । २ चौथा अक्षर का
एक नरकावास (ठा ६) । ३ वि. शर्वान्वतन,
पूर्व का (सूत्र १, ६) ।

*आरअ वि [कारक] कर्ता, करनेवाला (गा
१७६, ३४८) ।

आरओ ङ [आरतस्] १ पूर्वी, पट्टे,
शर्वाक (सूत्र १, ८, ३६३) । २ समीप में,
पास में (उप ३३१) । ३ शुरु कर के, प्रारम्भ
कर के (विसे २२८५) ।

आरओ ष [आरतस्] पीछे से (एवि २४६
वे) ।

आरंदर वि [दे] १ श्रानेकाल । २ संकट,
व्यास (दे १, ७८) ।

आरंभ सक [आ + रम्] १ शुरु करना ।
२ हिता करना । आरंभइ (हे ४, १९३) ।

वह. आरंभंत (गा ४२, से ८, ८१) । संकट.
आरंभइत्ता, आरंभिअ (नाट) ।

आरंभ पुं [आरम्भ] १ शुरुआत, प्रारम्भ
(हे १, ३०) । २ जीव-हिता, वध (था ७) ।
३ जीव, प्राणी (पहल १, १) । ४ पाप-नर्म
(प्रापा) । *य वि [ज] पाप-नर्म से उत्पन्न
(प्रापा) । *विणय पुं [विनय] आरंभ का
प्रभाव । *विणइ वि [विनयिन] आरंभ
से विरल (प्रापा) ।

आरंभग पुं [आरम्भक] १ ऊपर देखो
आरंभय । (सूत्र २, ६) । २ वि. शुरु करने-
वाला (विसे ६२८; उप ४ १) । ३ हिंसक,
पाप-कर्म करनेवाला (प्रापा) ।

आरंभि वि [आरम्भिन्] १ शुरु करनेवाला
(गड) । २ पाप-नर्म करनेवाला (उप
८६६) ।

आरंभिअ पुं [दे] मालाबार, भाली (दे १,
७१) ।

आरंभिअ वि [आरब्ध] प्रारम्भ, शुरु किया
हुआ (प्रवि) ।

आरंभिअ देखो आरंभ = आ + रम् ।

आरंभिया औ [आरम्भिकी] १ हिता से
सम्बन्ध रखनेवाली क्रिया । २ हिंसक क्रिया
से होनेवाला नर्म-बन्ध (ठा २, १; नव १७) ।

आरंभर न [आरम्भ्य] नीलबान ना घोहला,
कोतवाली, भारभक्तता (सुस ३, १) ।

आरंभर वि [आरम्भ] १ रक्षण करनेवाला
(दे १, १५) । २ पु. कोतवाल, नगर का
रक्षक (पाष) ।

आरंभरग वि [आरम्भर] १ रक्षण करने-
वाला, प्राता (कम्प, सुपा ३३१) । २ पु.
शत्रियों का एक वंश । ३ वि. उस वंश में
उत्पन्न (ठा ६) ।

आरंभिख वि [आरम्भिन्] रक्षक, प्राता (ठा
३, १, श्रोप २६०) ।

आरंभिखग वि [आरम्भिक] १ रक्षक,
आरंभिख्य प्राता । २ पु. कोतवाल (निनु
१, १६; सुपा ३३६; महा, स १२७, १३१) ।

आरंभक सक [आ + राध] आरपण करना ।
आरंभक (प्राक ६८) ।

आरंभक वि [आराध्य] पूज्य, माननीय (मन्त्रु
७१) ।

आरड सक [आ + रट] १ चिल्लाना, वृम
माना । २ रोना । वह. आरडंत (उप १२८
टी) । संकट. आरडिऊण (महा) ।

आरडिअ न [दे] १ वितोष, प्रन्दन । २ वि.
चित्र-मुक्त (दे १, ७५) ।

आरण पुं [आरण] १ देवतो-विरोध (प्रनु;
सम ३६; इक) । २ उस देवतो का निवासी
देव, 'तं वेव भारण्णञ्चय भोहीणाण पारंति'
(संग २२१, विसे ६६६) ।

आरण पुंन [आरण] एक देवविमान (देवेन्द्र
१३५) ।

आरण न [दे] १ घर, होठ । २ फलन (दे
१, ७६) ।

आरणाल न [आरनाल] बानी, सावधाना
(दे १, ६७) ।

आरणाल न [दे] कमल, पप (दे १, ६७) ।

आरण्य वि [आरण्य] जंगली, जंगल-निवासी
(वि ८, ५६) ।

आरण्यग वि [आरण्यक] १ जंगली, जंगल-
आरण्यग १ निवासी, जंगल में उत्पन्न (उप
२२६; सा) । २ न. शत्रु-विरोध, उत्तमिपद-
विरोध, पञ्चम ११, १०) ।

आरण्यग वि [आरण्यक] जंगल में बसने-
वाला (तापस आदि) (सूत्र २, २) ।

आरत वि [आरत] १ घोडा रक्त (प्रापा) ।
२ शरत्क धनुरक्त (पहल २, ४) ।

आरत्तिय न [आरात्रिक] रातरी (सुर १०,
१६; कुमा) ।

आरद्ध वि [आरद्ध] प्रारण, शुरु किया
हुआ (काल) ।

आरद्ध वि [दे] १ बड़ा हुआ । २ सतृण,
उलुक । ३ घर में भाया हुआ (दे १, ७५) ।

आरनाल देखो आरणाल = आरनाल (पाष) ।

आरनाल न [दे] कमल, पप (पट्ट) ।

आरंजिय देखो आरण्यग (सूत्र २, २,
२१) ।

आरब देखो आरव ।

आरब्ध नीचे देखो ।

आरब्ध देखो आरंभ = आ + रम् । आरम्भ
(हे ४, १९३; उपर १०) । वह. आरंभंत,
आरम्भाना (ठा ७) । संकट. आरम्भ (विसे
७६५) ।

आरभड न [आरभट] १ मूत्य का एक मेद (अ ४, ४) । २ इस नाम का एक शूद्रार्थ, 'धन्वेय य आरभडो सोमिलो' पंचप्रयुक्तो होइ (गणित) ।

आरभड न [आरभट] एक तरह की नाट्य विधि (राय ५४) । 'भसोल न [भसोल] नाट्यविधि-विशेष (राय ५४) ।

आरभडा की [आरभटा] प्रतिलेखना-विशेष (श्लेष १६२ भा) ।

आरभिय न [आरभित] नाट्यविधि विशेष (राय) ।

आरय वि [आरत] १ उत्पन्न । २ अग्रगत (भूम १, १५) ।

आरय वि [आरत] उत्पन्न, सर्वथा निवृत्त (भूम १, ४, १, १, १, १०, १३) ।

आरय पु [आरय] राज्य, आवाज, ध्वनि (सण) ।

आरय पुं [आरय] इस नाम का एक प्रसिद्ध मन्त्र-देवा (पण्ड १, १) ।

आरय } वि [आरय] अरय देश में उत्पन्न, आरयग } अरय देश का निवासी । स्त्री, 'दी (छाया १, १) ।

आरयिद वि [आरयिन्द] कमन-सम्बन्धी (गठक) ।

आरस सक [आ + रस्] विज्ञाना, ब्रूम मारना । बह, आरसत (उत्त १६) । हेह, आरसिड (बाल) ।

आरसिय न [आरसित] १ चिल्लाहट, ब्रूम । २ चिल्लाया हुआ (विपा १, २) ।

आरसिय पु [आरसै] वंश (जहाजी) ।

आरह देखा आरम । आरह (पड़) । सक, आरहिअ (भमि ६०) ।

आरहत } वि [आरहत] मरुत का, जिन-आरहतिय } देव सम्बन्धी, 'आरहतैहि' (बन ६, ४, ४, पद—गाथा १७०) ।

आरा की [आरा] लोहे की सलाई, वेने में डाली जाती लोहे की सीली (पण्ड १, १, स ३०) ।

आरा भ [आराभ] १ भर्वा, पहले (दे १, ६३) । २ पूर्व-भाग (विंते १७४०) ।

आराइअ वि [दे] १ गृहीत, स्वीकृत । २ प्राप्त (दे १, ७०) ।

आराडि की [आराटि] चोत्तर, चिल्लाहट (सुख २, १५) ।

आराडी की [दे] देखो आरडिअ (दे १, ७५) ।

आराम पु [आराम] कमीचा, उपवन (श्लेष, छाया १, १) ।

आराम पुन [आराम] कमीचा, उपवन, 'आरामाणी' (आचा २, १०, २) ।

आरामिअ पुं [आरामिअ] मानी (हुमा) ।

आरान पु [आरान] राज्य, आवाज (स ६७७, गठक) ।

आराह सक [आ + राघय] १ सेवा करना, मर्क करना । २ ठीक-ठीक पानन करना । आराह, आपहेइ (महा, भय) ।

बह, आराहत (पण्ड ७०) । सक, आराहिला, आराहेला, आराहिकुण (भय, भय, महा) । हह, आराहिई (महा) ।

आराह वि [आराध्य] आराधन-योग्य (आरा ११) ।

आराहग वि [आराहक] १ आराधन करने-वाला । २ मात्र का साधक (भय ३, १) ।

आराहण न [आराधन] १ सेवना (आरा ११) । २ अन्नशन (राज) ।

आराहणा की [आराधना] १ सेवा, भवि । २ परिपालन (छाया १, १२, पचा ७) ।

३ भाग मार्ग के अनुकूल वर्तन (पक्षि) । ४ जिसका आराधन किया जाय वह (आरा १) ।

आराहणा की [आराधना] आवश्यक, सामयिक आदि पद-कर्म (भय ३१) ।

आराहणी की [आराधनी] भाषा का एक प्रकार (श्लेष ७) ।

आराहिय वि [आराधित] १ सेवित, परिपालित (भय ७०) । २ अनुकूल, योग्य (स ६२३) ।

आरिट्टि वि [दे] यात्र, गत, गुजरा हुआ (पड़) ।

आरिय न [आधृत] भागमन (राय १०१) ।

आरिय देखा अज्ज = भाषा । (भय पड़, सुपा १२८, पण्ड १४, ३०, सुपा ८, ६३) ।

आरिय वि [आरित] सेवित, 'आरिया भाषा-रिमी सेवितो का एणुति' (आरु) ।

आरिय वि [आरित] आरु, दुवाया हुआ, 'आरियो भागारियो वा एणुता' (भाव) ।

आरिया देखा अज्जा = भाषा (आरु) ।

आरिह वि [दे] भर्वा, उत्पन्न, पहले जो उत्पन्न हुआ हा (दे १, ६३) ।

आरिस वि [आरि] श्रुति-सम्बन्धी (हुमा) ।

आरिह्य देखा आरहत (दम १ १ टी) ।

आरग देखा आरोग्य = आरोग्य, 'आरग-वाहिनभ समाहिवरुसुतम दिनु' (पडि) ।

आरुह वि [आरुह] ब्रुह, रुट (पचम ५३, १४१) ।

आरण (भय) सक [आ + क्रिय] पालिजन करना । आरुण (आरु ११६) ।

आरुभ देखा आरुह = पा + रूह । बह, आरुभमाण (भय) ।

आरुगया देखा आरोग्या (विने २६२८) ।

आरुस सक [आ + रूप] भाव करना रोप करना । सक, आरुस (भूम १, ५) ।

आरुसिय वि [आरुट] ब्रुह, दुपित (छाया १, २) ।

आरुह सक [आ + रुह] ऊपर बहना, ऊपर बैठना । आरुह (पड़, महा) ।

आरुह (भय) । बह, आरुहट, आरुहमाण (मे ५ १६ या ३६) । सक, आरुहिकुण, आरुहिय (महा नाट) । हेह, आरुहिई (भय) ।

आरुह वि [आरुह] उत्पन्न, उद्भूत, जात, 'आमारुह मि नाम,

वसतिम नमरुहिइ ए छाणामि । छापरिआण पडणो हरिणि

जा होमि सा होमि' (गा ७०५) ।

आरुहण न [आरोहण] ऊपर बैठना (छाया १, २, या ६३०, सुपा २०१, विपा १, ७ गठक) ।

आरुहण न [आरोहण] आरोपण, ऊपर चढ़ाना (पण्ड १५४, राय १०६) ।

आरुहिय वि [आरोपित] १ स्थापित । २ ऊपर बैठना हुआ (मे ८, ११) ।

आरुहिय वि [आरुह] १ ऊपर चढ़ा हुआ आरुह (महा) । २ रुट, विहित, 'तीए पुरयो पडरुणा भागिया दुइए मए समि' (पचम ८, १११) ।

आरेइअ वि [दे] १ मुद्रित, संयुचित ।
२ भ्रान्त । ३ मुक्त (दे १, ७७) । ४ रोमा-
ञ्चित, पुलकित (दे १, ७७; पाप्म) ।

आरेण घ [आरेण] १ समीप, पास (उप
३३६ टी) । २ धनवि, पहले (विसे ३६१७) ।
३ शरम्भ कर (विसे २२८५) ।

आरोध धक [उत् + लस] विवसित होना,
उल्लास पाना । आरोधइ (हे ४, २०२) ।

आरोअणा देखो आरोअणा (ठा ४, १; विसे
२६२७) ।

आरेइअ [दे] देखो आरेइअ (पह) ।

आरोग्ग सक [दे] खाना, भोजन करना,
भारोगना । आरोग्गइ (दे १, ६६) ।

आरोग्ग न [आरोग्य] एकामन तप (संवीप
५८) ।

आरोग्ग न [आरोग्य] १ नीरोगता, रोग का
भ्रमाव (ठा ४, ३, उव) । १ वि, रोग-
रहित, नीरोग (बन्ध) । ३ पुं. एक बाह्यपो-
पासक का नाम (उप ५५०) ।

आरोग्गरिअ वि [दे] रक्त, रंगा हुआ
(पह) ।

आरोगिअ वि [दे] चुक, क्षमा हुआ (दे
१, ६६) ।

आरोह वि [दे] १ प्रवृद्ध, बढा हुआ । २
गृहागत, घर में आया हुआ (पह) ।

आरोय न [आरोय] १ क्षेम, सुख । २
नीरोगता, 'भारोयारोय पयूया' (भाषा २,
१५, ६) ।

आरोल सक [पुञ्ज] एकत्र करना, इकट्ठा
करना, आरोलइ (हे ४, १०२-पड़) ।

आरोल्लिअ वि [पुञ्जित] एकत्रित, इकट्ठा
किया हुआ (हुग) ।

आरोय सक [आ + रोपय] १ उपर
चढ़ाना, ऊपर बैठाना । २ स्थापन करना ।
आरोवेइ (हे ४, ४७) । सक. आरोवेचा,
आरोविउं, आरोपिऊण (भग, नुमा,
महा) ।

आरोवण न [आरोपण] ऊपर चढ़ाना (सुपा
२५६) । २ सम्पादन (दे १, १७४) ।

आरोअणा हो [आरोअणा] १ उपर चढ़ाना ।
२ प्राशस्त्य-विशेष (बव १) । ३ प्राश्निका,

व्याख्या वा एक प्रकार । ४ प्रश्न, पर्यनुयोग
(विसे २६२७, २६२८) ।

आरोयिअ वि [आरोयित] १ चढाया हुआ ।
२ संस्थापित (महा, पाप्म) ।

आरोस पुं [आरोप] १ स्नेच्छ देश विशेष ।
२ वि. उम देश का निवासी (पणह १, १,
वस) ।

आरोसिअ वि [आरोपिअ] गोपित, छुप
करा हुआ (मि ६, ६६; मवि; दे १, ७०) ।

आरोह सक [आ + रह] ऊपर चढ़ना,
बैठना । आरोहइ (बव) ।

आरोह सक [आ + रोहय] ऊपर चढ़ाना ।
क. आरोहइयक (बव १) ।

आरोह पुं [आरोह] १ सवार, हाथी, घोडा
भादि पर चढ़नेवाला (से १३, ७५) । २
ऊँचा (सह) । ३ लम्बाई (बव १, ५) ।

आरोह पुं [दे] स्तन, धन, पूँची (दे १,
६३) ।

आरोहण वि [आरोहण] १ सवार होनेवाला ।
२ हस्तिक, पीतवान, हाथी का रक्षक (भीप) ।
आरोहि वि [आरोहि] ऊपर देखो
(गउड) ।

आरोहिय वि [आरुह] ऊपर बैठा हुआ,
ऊपर चढा हुआ (मवि) ।

आल न [दे] अनर्थक, श्रुता (सिदि ८६४) ।
आल न [दे] १ क्षीय प्रवाह । २ वि. नोमल,
मुद्र (दे १, ७३) । ३ आगत (रमा) ।

आल न [आल] बलकारीप, दोषारोपण (स
५३३), 'न दिज कस्सवि बूढमाल' (सत २) ।

आल देखो बाल (पा ५५, से १, २६; ५,
८५, ६, ५६) ।

आल देखो जाल (सि ५, ८५, ६, ५६) ।
आल देखो ताल, 'समविहम एमंति हस्सिअल-
विककाइ' (सि ६, ५६) ।

आलइअ वि [आलगित] यथास्थान स्थापित,
योग्य स्थान में रखा हुआ (बन्ध) ।

आलइअ वि [आलविक] गृही, ग्राह्यवाला
(पाप्म) ।

आलइय वि [आलगित] पहना हुआ (भाना
२, १५, ५) ।

आलकारिय वि [आलकारिक] १ शल्यकार-
शल्य-ज्ञाता । २ शल्यकार-चिकी । ३ शल्य-

कार के योग्य, 'भालकारिय भंउ उवणेइ'
(जीव २) ।

आलकिअ वि [दे] संयु किया हुआ (दे १,
६८) ।

आलंद न [आलन्द] समय का परिमाण-
विशेष, पानी से भीजा हुआ हाथ जितने समय
में गूँस जाय उतने से तेज पाँच ग्रहोराज
तक का काल (विसे) ।

आलंदिअ वि [आलन्दिक] उद्युक्त समय
का उत्पन्न न कर कार्य करनेवाला (विसे) ।

आलंय सक [आ + लंय] ग्राभय करना,
गहारा सेना । संड. आलंयिय (भास ११) ।

आलंय पुं [आलंय] ग्राभय, ग्राभार (सुपा
६३५) ।

आलंय न [दे] भूमि-छत्र, वनस्पति-विशेष जो
वर्षा में होता है (दे १, ६४) ।

आलंयण न [आलंयण] १ ग्राभय, ग्राभार,
बिसवा श्वलम्बन किया जाय वह (एणा १,
१) । २ बारण, हेतु, प्रयोजन (भावना
भावना) ।

आलंयणा की [आलंयणा] ऊपर देखो (पि
३६७) ।

आलंयि वि [आलंयण] श्वलम्बन करने
वाला, ग्राभयी (गउड) ।

आलंभिय न [आलंभिक] १ तार-विशेष
(ठा १) । २ भगवती मूल के प्यारहवें शतक
का बारहवां वृद्धेस (भग ११, १२) ।

आलंभिया की [आलंभिय] नगरी-विशेष
(भग ११, १२) ।

आलंय पुं [दे] पणल कुता (भस १२५) ।
आलंय सक [आ + लंय] १ जानना ।
२ चिह्न से पहचानना । आलंयिमी (गउड) ।

आलंयिस्सय वि [आलंयित] १ ज्ञात, परि-
चित । २ चिह्न से जाना हुआ (गउड) ।

आलंय वि [आलंय] लगा हुआ, संयुक्त (से
५, ३३) ।

आलंय वि [आलंयित] संभाषित, आभाषित
(पजम १६, ४२, सुपा २०८; धा ६) ।

आलंय पुं [दे] मयूर, मोर (दे १, ६४) ।
आलंय वि [आलंय] १ संछट । २ संयुक्त ।

३ स्मृष्ट, छुड़ा हुआ । ४ मारा हुआ (नाट) ।

आलप्प वि [आलप्प] बहने के योग्य, निर्वचनीय, 'सदमदरुमिण्णालप्पमे' ग्रणेम' (वहृम ८)।

आलभ मन् [आ + लभ्] प्राप्त करना। भानभिजा (उवर ११)।

आलभण न [आलभन्] विनाशन (धम्मवे ८८२)।

आलभिया लो [आलभिया] नगरी-विशेष (उवा, भाग ११, २)।

आल्य पुन [आल्य] गृह, घर, स्थान (महा, गा १३५)।

आल्य पुन [आल्य] बोद्धशान्-अग्निद्विज्ञान विरोध (धम्म ६६५, ६६६, ६६७)।

आल्यण न [दि] बाझ-गृह, शम्भा-गृह (दे १, ६६, ८, ५८)।

आलन सक् [आ + लप्] १ बहना, वात-चोत करना। २ बाँटा या एक बार कहना।

वह. आलस्यं (गा ११८, धम्मि ३८), आल-यमाण (छा ४)। आल्यिकुण (महा), आलभिन (नाट)।

आलनय न [आलनय] संभाषण, बातचीत, वात्सलाय (भाग ११३, छा १२८ टी. भा १६, दे १, ५६, न ६६)।

आलगाल न [आलगाल] विचारी, धाँवला (पाद्य)।

आलस वि [आलस] भानवी, सुस्त (भाग १२, २)। 'स न [त्य] भानस, सुन्ती (भा २३)।

आलसिय वि [आलसित] भानवी, मन्त्र (भाग १२, २)।

आलसुय देवो आलसिय, 'सवि सायडीला भानमुया कुणि' (सम्मत ५१)।

आलस्स पुन [आलस्य] सुस्ती, 'भानस्सो रणरणयो' (वजा १६२)।

आलस्स न [आलस्य] भानस, सुन्ती (मुमा, मुमा २५१)।

आलस्स वि [आलस्सिन्] भानवी, सुस्त (गच्छ २, १)।

आलअ देवो आलान (गा ४२८, ६१६, वे १६)।

आलाण देवो आणाल (पाद्य, वे ५, १७, महा)।

आलाणिय वि [आलाणिन] नियन्त्रित, मन्त्र-वृत्ति से बाँधा हुआ, 'ददमुयदडालाणियवमल-नरिणो निवो समरोहो' (मुपा ४)।

आलाण पु [आल्य] १ संभाषण, बातचीत (छा ४)। २ शब्द भाषण (छा ५)। ३ प्रथम भाषण (छा ४)। ४ एक बार की वक्ति (भग ५, ४)।

आलायक देवो आलायग (मुज ८)।

आलायग पु [आलायक] पेष, पेषपाक, परिच्छेद, प्रथ वा शर-विशेष (छा १, २)।

आलायग न [आलायन] बाँधने का रज्जु भाँद साधन, वचन-विशेष। 'यज पु [यज्य] वच विशेष (नग ८, ६)।

आलायण न [आलायन] घातन, समायण (वजा १८४)।

आलायणी लो [आलायन] वाय-विशेष (वजा ८०)।

आलास पु [दि] बुधिर, विन्दु (दे १, ६१)। आलाहि देवो अलाहि (पद्य)।

आलि पु [अलि] भ्रमर, मयूर, बाँस (पर्व)। आलि देवो आली (राज. पाद्य)।

आलि सक् [आ + लिङ्] भाषिज्ञ बनना, भेंटना, वने लगना। आलिगइ (महा)। संक्ष. आलिगिकुण (महा)। हह. आलिगित (महा)।

आलिग पु [आलिङ्] वाय-विशेष (राज)। आलिग वि [आलिङ्ग्य] १ भाषिज्ञ बनने योग्य। २ पु. वाय-विशेष (गैद ३)।

आलिगण न [आलिङ्गन] भाषिज्ञन, भेंट (वज्जु)। 'वट्ठी लो [वट्ठि] गाल या कपोत का उपासन—तक्षिया, शरीर-अभाष्य उपासन (भा ११, ११)।

आलिगणिया लो [आलिङ्गनिक्क] देवा आलिगयगट्टि (जीव ३)।

आलिगिणी लो [आलिङ्गिनी] जलु घाद के नीचे रखने का तक्षिया (पव ८४)।

आलिगिय वि [आलिङ्गित] भाषि, विसन भाषित्व किया गया हो वह (काल)।

आलिद पु [आलिन्] बाहर के दरवाजे के चौदुंठे का एक हिस्सा (धम्मि १५६, धम्मि २८)।

आलिप सक् [आ + लिप्] पोचना, लेना। आलिपइ (वज्जु)। देह. आलि-

पिच्छ (वज्जु)। वह. आलिपंत। प्रयो. आलिपाचन (निबु ३)।

आलिपय न [आनेपण] १ लेव करना, विते-पण (रण ५३)। २ जिसका लेव होता है वह चीज (निबु १२)।

आलिमा देवो आलिमा (पव ५, १५५)। आलित्त न [आलित्र] जहाज चलाने का वाद्य विशेष (भाजा २, ३, १, ६)।

आलित्त वि [आलिम्] खरिएट्ट, खरजा हुआ, लिया हुआ (विह २३४)।

आलित्त वि [आदिम] १ चारों ओर से जला हुआ, 'जह धापित्ते गेह बोद्ध पुत्त नर तु बाँहज' (वज्जु १, ३; छाया १, १, १४)। २ न. धाग लगनी, धाग में जलना: 'कोट्टिमपरे वचने धापित्तस्मि वि न डगइ' (वज्जु ४)।

आलिद्ध वि [आलिद्ध] भाषित्व (भाग १६, ३; मुर ३, २२२)।

आलिद्ध वि [आलीड] कहा हुआ, धान्वादित्त (वे ६, ५६)।

आलिसिंदग पु [दि. आलिसिन्डक] धान्य-विशेष (छा ५, ३, मग ६, ७)।

आलिसिंदग पु [दि. आलिसिन्डक] ऊपर देखा (छा ५, ३)।

आलिह सक् [सृष्ट्] ससों करना, धूना। धालिहइ (ह ५, १८२)। वह. आलिहव (नाट)।

आलिह सक् [आ + लिप्] १ विन्यास करना, स्थापन करना। २ बिन करना, चिनरना या चिन बनाना। वह. आलिहमाय (मुर १२, ४०)।

आलिहवि वि [आलिहित] बिनित (पुर १, ८७)।

आली सक् [आ + लो] १ लोन होना, धावक होना। २ आलिन करना। ३ निवास करना। वह. आलीयमाण (गडड)।

आली लो [आली] १ पवि, ओणी। २ सबी, वयस्या (ह १, ८३)। ३ वयसति-विशेष (छाया १, २)।

आलीड वि [आलीड] १ दासक, 'धातूतानो-तवुवेवत्तु रीमवनात्तानानिमावा' (पवि)। २ न. भासन-विशेष (वज्जु १)।

आलीढ पुंन [आलीढ] योद्धा का युद्ध समय का भासन-विशेष (वच १)।

आलीण वि [आलीन] १ वीन, भासक, तत्पर (पउम ३२, ६)। २ मालिणित, मालिण्ट (वप)।

आलीयग वि [आदीपक] जलानेवाला, भाग सुलगानेवाला (शामा १, २)।

आलीयमाण देखो आली = भा + ली।

आलील न [दे] समीप वा भव, पास का डर (दे १, ६५)।

आलीयग देखो आलीयग (पएह १, ३)।

आलीयण न [आदीपन] भाग लगाना (दे १, ५१; विपा १, १)।

आलीचिय वि [आदीपित] भाग से जलाना हुआ (पि २४४)।

आलु पुंन [आलु] कन्ध-विशेष, झालू (पा २०)।

आलुदे ली [आलुकी] झालू-विशेष (वच १०)।

आलुप सक [वह] जलाना, दाह देना। झालू वह (दे ४, २०८; पइ)।

आलुप सक [वृष्ट] स्पर्श करना, छूना। झालू वह (दे ४, १८२)।

आलुपन न [स्पर्शन] स्पर्श, छूना (मउड)।

आलुविअ वि [स्पृष्ट] स्पृष्ट, छुआ हुआ (सि १, २१; पात्र)।

आलुविअ वि [दग्ध] जला हुआ (सुर ६ २०३)।

आलुप सक [वृष्ट] छूना। झालुपइ (प्राक ७४)।

आलुप सक [आ + लुप्] हरण करना। झालुपइ (भाषा)।

आलुप वि [आलुप्] ग्रहण, हरण करने-वाला, छीन लेनेवाला (भाषा)।

आलुग देखो आलु (पएह १)।

आलुगा ली [दे] मरी, छोटा चबड़ा (उप ६६०)।

आलुवार वि [दे] निरर्थक, धर्म, निष्पौजन, 'ता दसिमा ममगां भगव किं अनुवारमणि-एटि' (मुपा ३४३)।

आलेस्स वि [आलेस्स] चित्रित, 'रचित आलेस्सिअ' परिच्छेदं धर्म्म आलेस्सविअण-

राणवि न खमं' (अबु २५. से २, ४४; गा ६४१, मउड)।

आलेटुं } देखो आसिलिस।
आलेटुअ }

आलेव पुं [आलेप] विलेपन, लेप, 'आलेव-निमित्तं च देवीभ्यो बलययस्त्रियवाहाभ्यो मर्षति चंदणं' (महा)।

आलेवण न [आलेपन] १ लेप, विलेपन। २ जिसका लेप किया जाता है वह वस्तु, 'जे भिन्नवुं रचितं आलेवणुजाय पडिगाहेत्ता' (निबु १२)।

आलेसिय वि [आलेपित] मालिणन करण हुआ (विअ ३७६)।

आलेह पुं [आलेस] चित्र (आवम)।

आलेहिअ वि [आलेसित] चित्रित (महा)।

आलोअ सक [आ + लोक्] देखना, विलोकन करना। वहु. आलोअंत, आलो-ईत, आलोएमाण (गा ५४६, उप ३ ४३; भाषा)। कवड. आलोअंत (सि १, २५)।

सह. आलोएऊण, आलोइआ (काल, ठा ६)।

आलोअ सक [आ + लोक्] १ देखना। २ गुरु को अपना भ्रमराव कह देना। ३ विचार करना। ४ आलोचना करना। आलोइ (मग)। वहु. आलोअंत (पडि)। सह. आलोएआ, आलो-इअ (मग, पि ५८२)।

हेह. आलोइसए (ठा २, १)। ह. आलो-एयक, आलोएइयक (उप ६८२; शीघ ७६६)।

आलोअ पुं [आलोक] १ तेज, प्रकाश (सि २, १२)। २ विलोकन, धम्भो तरह देखना (शीघ ३)। ३ धुन्नी वा समान भाग, सम भू-भाग (शीघ १६१)। ४ ववासवि प्रकाश-स्थान (भाषा)। ५ जगह, संसार (भाव)। ६ ज्ञान (पएह १, ४)।

आलोअग वि [आलोचक] आलोचना आलोअय करवाना (भा ४०; पुण ३५५, ३६०)।

आलोअण न [आलोचन] विलोकन, दर्शन, निरीक्षण (शीघ ५६ भा)।

'अयानोमणत्तल्ल, अमरइएणं मर्म्मति बुद्धोपो। त एव निरारभं, एवि हियम नईदल' (मउड)।

आलोअग न [आलोचन] नीचे देखो (पएह २, १, प्राप् २४)।

आलोअणा ली [आलोचना] १ देवता, वतलाना। २ प्रामादित के लिए अपने दोषों को गुरु को बता देना। ३ विचार करना (मग १७, २, भा ४२, स ५०६)।

आलोइअ वि [आलोचित] स्पृष्ट, निरीक्षित (से ६, ६४)।

आलोइअ वि [आलोचित] प्रदर्शित, गुरु को बताया हुआ (पडि)।

आलोइअ देखो आलोअ = भा + लोक्।

आलोइत्तु वि [आलोअपित] देखने वाला, द्रष्टा (सम १५)।

आलोइल वि [आलोअयत्] प्रकाश-युक्त (वजा १६०)।

आलोअंत देखो आलोअ = भा + लोक्।

आलोग देखो आलोअ = आलोक (मोप ५६५)। 'नयर न [नगर] नगर-विशेष (पउम ६८, १७)।

आलोच देखो आलोअ = भा + लोक्। वहु. आलोचंत (मुपा ३०७)। सह. आलो-चिअण (सि ११७)।

आलोचण देखो आलोअण (उप ३३३)।

आलोअ सक [आ + लोअ] हिलोना, घबरा करना। सह. आलोडि वि (मप) (सण)।

आलोडिय } वि [आलोडित] ममित,
आलोडिय } हिलोना हुआ, 'आलोडिया य नयरी' (पउम ५३, १२६; उप ४४२ टी)।

आलोअण = [आलोचन] गवाह (उत्त १६, ४)।

आलोअ सक [आ + लोअ] आच्छादित करना। वहु. आलोचिअमाण (सि १८२)।

आलोअ देखो आलोअ = आलोक, 'मंठे अल्लोवे भेसएणे भोएणे पियागमणे' (रमा)।

आलोअिय वि [आलोपित] आच्छादित, ढका हुआ (शामा १, १)।

आय वि [आयन्] जितना। आर्यवि (पि ३६६)।

आर वि [आयन्] जब तक, जब तक। 'वह वि [अय] देनो 'कहिय (विते १२६३, भा १)। 'वहं य [अयम्]

यावज्जीव, जीवन-पर्यन्त (भाव) । 'कहा ली' ['कथा'] जीवन-पर्यन्त, 'यसरा भावबहाए' शुक्लवास न भुचति' (उप ६८१) । 'कहिय वि' ['कथिय'] यावज्जीविक, जीवन-पर्यन्त रहनेवाला (ठा ६, उप ५२०) ।

आव पु [आप] १ प्राप्ति, लाभ (पह २, १) । २ जल वा समूह । 'बहुल न' ['बहुल'] देखो आउ-बहुल (कस) ।

आव सक [आ + या] भाना, भ्रामन करना, 'बहावसिराएनि निच ब्रावइ निहामुह ताए' (सुपा ६५७) । ब्रावइ (नाट) । भावति (सग १६२) ।

आवआस सक [उप + गृह्] भ्रानिगन करना । भावमासइ (प्राक ७५) ।

आनइ ली [आपन] भापति विपत्त, सकट (सम ५७, सुपा ३२१, सुर ४, २१५, प्रसू ५, १५६) ।

आवग पु [वे] भ्रामार्ग, वृष विशेष, लज्जीरा (दे १, ६२) ।

आवहु वि [आपणहु] बोधा सकेद, फीका (ग २६५) ।

आवहु वि [आपणहु] ऊपर देखो (सि ६, ७५) ।

आवत देखो जायत, 'भावती के यावती लोगनि समया य माहणा य' (प्राचा १, ४, २, ३, १, ५, २, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५, १६, १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २४, २५, २६, २७, २८, २९, ३०, ३१, ३२, ३३, ३४, ३५, ३६, ३७, ३८, ३९, ४०, ४१, ४२, ४३, ४४, ४५, ४६, ४७, ४८, ४९, ५०, ५१, ५२, ५३, ५४, ५५, ५६, ५७, ५८, ५९, ६०, ६१, ६२, ६३, ६४, ६५, ६६, ६७, ६८, ६९, ७०, ७१, ७२, ७३, ७४, ७५, ७६, ७७, ७८, ७९, ८०, ८१, ८२, ८३, ८४, ८५, ८६, ८७, ८८, ८९, ९०, ९१, ९२, ९३, ९४, ९५, ९६, ९७, ९८, ९९, १००) ।

आवगान न [आवगान] पक्ष पर चढ़ने की कला (मवि) ।

आवबेज वि [अपत्यीय] अपत्य-स्थानीय (कप) ।

आवज देखो आओज (हे १, १५६) ।

आनइ भक [अ + पद] प्राप्त होना, लागू होना । भावजइ (कस) । क आवजियज (पह २, ५) ।

आवज सक [आ + वर्त्] १ समुख करना । २ प्रसन्न करना, 'भावजति गुण खलु मनुहनि जए भमच्छरिय' (स ११) ।

आवज सक [आ + पद] प्राप्त करना । भावजइ (उत ३२, १०३) । भावज (सूय १, १, २, १६, २०) भावजयु (सुत २, ६) ।

आवज } वि [आवर्त्, क] श्रोत्र्युपादक
आवजग } (पिड ४३६) ।

आवज्जन न [आवर्जन] १ समुख करना । २ प्रसन्न करना (भापू) । ३ उपयोग, स्थान । ४ जयोग-विशेष । ५ व्यापार विशेष (विसे ३०५१) ।

आवजिय वि [आवर्जित] १ प्रसन्न किया हुआ । २ समुख किया हुआ (महा सुर ६, ३१, सुपा २३२) । 'करण न' ['करण] व्यापार विशेष (भापू) ।

आवजिय देखो आउजिय = मातोयिक (कुमा) ।

आवज्जीकरण न [आवर्जीकरण] जयोग विशेष या व्यापार-विशेष का करना उदीर-एवाविका मे कर्म प्रत्येक रूप व्यापार (भीप विसे ३०५०) ।

आनइ भक [आ + वृत्] १ चक्र की तरह घूमना, फिरना । २ विलीन होना । ३ सक शोषण करना सुखाना । ४ पीटना दु ली करना । भावटइ (हे ४, ५१६ सूय १, ५, २) । वक्र आवट्टमाण (से ५, ८०) । आवट्ट देखो आउत (भाना सुपा ६५, मूय १, ३) ।

आवट्टणा ली [आवर्तना] भावर्तन (प्राक ३१) ।

आपट्टिआ ली [दे] १ नवोदा, दुलहिन । २ परतन ली (दे १, ७७) ।

आपड देखो आपस = भावर्त् (सय ३०) ।

आउड सक [आ + पत्] १ भाना, भ्रामन करना । २ भा लगना । वक्र आवडत (प्रासू १०६) ।

आवडण न [आपतन] १ गिरना (सि ६, ४२) । २ भा लगना (स १८४) ।

आवणवीहि ली [आपणवीधि] १ हट-भार्ग, बानार । २ रथ्या विशेष, एक तरह का मुहला (सय १००) ।

आवडिअ वि [आपतित] १ गिरा हुआ (महा) । २ पास में भाया हुआ (सि १४, ३) ।

आउडिअ वि [दे] १ समत, सबड (दे १, ७८, पाम) । २ गार, मजबूत (दे १ ७८) ।

आण पु [आपण] १ हाट, डूबान (पाया १, १, महा) । २ बानार (पामा) ।

आवणिय पु [आपणिक] सौभाग्य, व्यापारी (पाम) ।

आणण वि [आपण] १ भापति-युक्त । २ प्राप्त (गा ४६७) । 'सत्ता ली' ['सत्ता'] गमिणी, गमवती ली (प्रति १२४) ।

आवणण वि [आपण] भापित (मूय १, १, १, १६) ।

आवच सक [आ + वृत्] भाना, 'नावतइ नागच्छइ पुणो मने तेण मनुएराविनि' (वेदम ३६६) ।

आवच भक [आ + वृत्] १ परिभ्रमण करना । २ बदलना । ३ चक्रकार घूमना । ४ सक पठित पाठ को याद करना । घुमाना । भावतइ (मूय ५१) । वक्र अत्तमाण, आउत्तमाण (हे १, २७१, कुमा) ।

आयस पु [आयस] १ चक्रकार परिभ्रमण (स्वय ९६) । २ मुहूर्त्त विशेष (सम ५१) । ३ महाविदेह क्षेत्रस्य एक विजय (मदेह) का नाम (ठा २, ३) । ४ एक छुरवाला पशु विशेष (पह १, १) । ५ एक लोकपाल का नाम (ठा ४, १) । ६ पर्वतविशेष (ठा ६) । ७ भणि का एक सख (सय) । ८ ग्राम-विशेष (भावम) । ९ शारीरिक कैठा विशेष, कायिक व्यापार विशेष, 'डुवानहावते कितिकम्भे' (सम २१) । 'कूड' [कूट] पर्वत-विशेष वा शिखर विशेष (इक) । 'यित वक्र' ['यमान'] दक्षिण की तरफ चक्रकार घूमने-वाला (सग ११, ११) ।

आवच पुन [आयस] १ एक तरह का जहाज (सिरि ३८३) । २ म लगातार २५ किनो का उपास (सबोय ५८) ।

आयस न [आयपन] छत्र, छाता (पाम) । आवचन न [आउत्तन] चक्रकार भ्रमण (हे १, ३०) । 'पेडिया ली' ['पीठिया'] पीठिया-विशेष (सय) ।

आवचय पु [आयचक] देखो आवच । १० वि चक्रकार भ्रमण करनेवाला (हे २ ३०) । आवचा ली [आवचा] महाविदेह-भोज के एक विजय (मदेह) का नाम (इक) ।

आउत्ति ली [आपत्ति] १ दोष प्रमण, 'सत्त्व-विभोस्वावती' (विने १६३४) । २ प्रापदा, गट । ३ उत्पत्ति (विसे ६६) ।

आवचि ली [आपत्ति] प्राप्ति (परम ४७३) ।

आरदि खी [आवृत्ति] आवरण (संक्षिप्त ६)।
आवृत्त देवो आपगग (पञ्चम ३४, १०, ख्यामा
१, २, ३ २५६, उतर १६०)।

आवय पुं [आवर्त्त] देवो आवत्त, 'निति-
वम्म वारमावय' (सम २१)।

आवय देवो आरुड। वट, आयत्त आवय-
माण (पञ्चम ३३, १३, ख्यामा १, १, ८)।
आनया खी [आपगा] नदी (धाम, स
६१२)।

आनया खी [आपद्] भावदा, विपद् दुःत
(पाप्र घण ४२),

'न गणति पुब्बनेह, न य

नीह नेय लोप भवपाय।

नय भाविभायपायो, गुरिमा

महिलाय भावता' (गुर २, १८६)।

आवर सक् [आ + वृ] प्राच्छादन करना,
ढकना। कर्म आवरिज्झइ (भा ६, ३३)।
ववड आनरिज्झमाण (भम १५)। सक्-
आवरिता (ठा)।

आनरण न [आनरण] १ प्राच्छादन करने-
वाला, ढकनेवाला, तिरोहित करनेवाला (सम
७१, ख्यामा १, ८)। २ वास्तु विद्या (ठा
६)।

आनरणिज्झ वि [आनरणीय] १ प्राच्छा-
दनीय। २ ढकनेवाला, प्राच्छादन करनेवाला
(मीप)।

आधरिय वि [आवृत्त] प्राच्छादित, तिरो-
हित 'भावरियो कम्मोहि' (निज्झ १)।

आनरिसण न [आधर्पण] छिद्रकला, निबन
(वृह १)।

आधरिसण न [आधर्पण] मुग्ध जल की वृष्टि
(अणु २५)।

आनरेइया खी [दे] करिका, मन्त्र परोक्षे
का पाद विशेष (दे १, ७१)।

आवलय न [आनलन] मोड़ना (पण्ड १,
१)।

आवलि खी [आनलि] १ पक्षि, येखी
(पाप्र ५)। २ पु एक विद्वान्नी का नाम (पञ्चम
५, ६५)।

आवलिआ खी [आवलिआ] १ पक्षि, येखी
(राव)। २ क्रम, परिपाटी (सुज १०)। ३
समय-विशेष, एक सूत्र काल-परिमाण (मय

६, ७)। 'पविट्ठ नि [प्रनिट्ठ] येणो ते
व्यवस्थित (मग)। 'वाहिर वि [वाह] वि-
प्रवर्णो, येण-यद्ध न्हो र्हा हुमा (मग)।
आवलिख वि [आनलिख] वैष्टित (सुप्रनि
२००)।

आवली खी [आनली] १ पक्षि, येखी
(पाप्र)। २ रावण की एवं वषा का नाम
(पञ्चम ६, ११)।

आनस सक् [आ + यन्] रहना, वास
करना। भाग्येज्जा (सूय १, १२)। वट
'भागार आनसंना दि' (सूय १, ६)।

आयसह पु [आसय] १ घर, भावय,
स्थान (सूय १, ४)। २ मठ, संन्यासिना
का स्थान (पण्ड ६ २, १८०)।

आयसहिय पु [आसयिक] १ गृहस्थ, गृही
(सूय २, २)। २ संन्यासी (सूय २, ७)।

आयसिय, वि [आयसिक] १ भ्रष्ट-वर्त्तव्य,
आयसग/जहरो। २ न, मामविज्झि धर्मा-
आयससय' मुद्रान, नियम (उर, सम १०,
खदि)। ३ जैन ग्रन्थ विशेष, भावस्थक सूत्र
(भावम)। 'गुणभाग पु [गुणयोग] भाव-
स्थक सूत्र की व्याख्या (विने १)।

आनससय पुन [आपासय] १—३ ऊपर
देखो। ४ भाषा, भाषण (विने ८७५)।

आरसिसया खी [आरसिकी] साक्षात्कारी-
विशेष, जैन साधु का अनुगत विशेष (उत्त
२६)।

आरह सक् [आ + वह] चारण करना,
बहान करना 'येवो वि गिहिससो जइणो
मुदत्त पक्कमावहइ' (उव) 'एणो पूयण
तवसा भावहेत्ता' (सू १ ७)।

आरह वि [आवह] चारण करनेवाला
(भावा)।

आवा सक् [आ + पा] १ पीना। २ भोग
में लाना, उपभोग करना। हंइ वत इच्छति
आवेत्त, येवते मण्णे भवे' (सू २, ७)।

आवाइया खी [आवापिआ] प्रथम होम,
'पकुप्याए पक्खावाइयाए' (स ७५७)।

आवाग पु [आपाक] भावा, मिट्टी के पात्र
पकने का स्थान (उप ६४८, विने २४६
टी)।

आवाह पु [आपाव] भीलो की एक जाति, तेल

वालेण तेल भवण उत्तरहमहदे वासे वहे
भावावा शांम चिलाया परिवसति' (व ३)।
आनाणय न [आपाणक] दूधान, 'मिताई
भावाणयाह' (स ५३०)।

आनाय पुन [आपात] भ्रम्यागम, भ्रममन
(पव ६१, ६१ टी)।

आवाय देवो आनाग (था २३)।

आनाय पु [आपाव] १ प्रारम्भ, शुरुवात
(धाम, ते ११, ७५)। २ प्रथम मेलन (ठा
४, १)। ३ तत्वात्, तुरंत (था २३)। ४
पतन, गिराव (था २३)। ५ सम्पन्न, समाग
(उर, वम)।

आवाय पु [आनाय] १ भावा, मिट्टी के पात्र
पकने का स्थान। २ भावना। ३ प्रमेय,
पंचना। ४ शत्रु की विल्ला। ५ बीना, वजन
(था २३)।

आनायण न [आपादन] सम्पादन, (धर्मस
१०६८)।

आनाल देखो आलनाल (धर्मवि १६, ११२)।
आनाल } न [दे] जल के निकट का प्रदेश
आनाल } (दे २, ७०)।

आवान देखो आनाय = भावप। 'कहा खी
[क्या] र्खोई सन्नवी कया, वि कया विशेष
(ठा ४, २)।

आनास पु [आनास] १ वास-स्थान (ठा ६,
पाम)। २ निवास, प्रवस्थान, रहना (पण्ड
१, ४ मीप)। ३ पक्षि-गृह, नीड (वव १,
१)। ४ पडाव, डेरा (सुपा ४५६ उप ५
१३०)। 'पठवय पु [पवैत] रहने का
पर्वत (इक)।

आवास } देखो आयससय = भावस्थक (वि
आवास } ३४८, प्रोप ६३८, विने ८५०)।
आवासणिया खी [आवासनिआ] भावा-
स्थान (स १२२)।

आवासय न [आवासक] १ भावस्थक,
जहरो। २ नित्य-कर्त्तव्य धर्मागुण (हे १,
४२, विने ८५८)। ३ पु, पक्षि गृह, नीड
(वव १, १)। ४ वि, सत्कारावाचक, यासक।
५ प्राच्छादक (विने ८७५)।

आवासि वि [आवासिना] रहनेवाला,
'एतन्नियावासो' (उव)।

आवासिय वि [आवासित] संनिवेशित,
पडाव डाला हुआ (सुपा ४५६, गुर २, १)।

आवाह सक [आ + वाहृ] १ सान्व्य के लिए देव या देवाभिहित चीज को बुलाना । २ बुलाना । संक. आवाहिय (भप) (भवि) ।

आवाह पुं [आवाघ] पीठा, बाघा (विपा १, ६) ।

आवाह पुं [आवाह] १ नव-परिणीता वधू को घर के घर लाना (परह २, ४) । २ विवाह के पूर्व किया जाता पान देने का एक उत्सव (जीव ३) ।

आवाहन पुं [आवाहन] ब्राह्मण (विते १८=३) ।

आवाहिय वि [आवाहित] १ बुलाया हुआ, प्राप्त (भवि) । २ मदद के लिए बुलाया हुआ देव या देवाभिहित वस्तु, 'एवं च भगुनैरेवावाहियाई सत्याई' (सुर ८, ४२) ।

आवि न [दि] १ प्रसव-पीडा । २ वि, निष्प, शारवत । ३ दृष्ट, देखा हुआ (दे १, ७३) ।

आवि घ [चापि] समुच्चय-द्योतक शब्द (कप्प) ।

आवि ऋ [आविस्] प्रकटना-सूचक शब्द (सुर १४, २११) ।

आविअ सक [आ + पा] पीना, 'जहा दुमस्त पुत्रेषु भमरो आविमह रम' (दम १, २) ।

आविअ वि [आवृत्] आच्छादित (से ६, ६२) ।

आविअ पुं [दि] १ इन्द्रगोप, सुदृढ कीट-विशेष । २ वि. मण्डित, झण्डित (दे १, ७६) । ३ प्रोत (दे १, ७६; पात्र, पद्) ।

आविअ वि [आविच] मन्त्र-देशोत्पन्न (राय) ।

आविअउभा स्त्री [दे] १ नवीडा, दुलहित । २ परतना, पराधीन स्त्री (दे १, ७७) ।

आविअ सक [आ + व्यध्] १ विधना । २ पहनना । ३ मन्त्र से अधीन करना ।

आविघ (मान ३८) । आविघामो (पि ४८६), 'पानव वा सुवर्णमुत्तं वा आविघेज पित्रिषेज वा' (माना २, १३, २०) ।

वर्म. आविचमइ (उव) ।

आविघण न [आव्यघन] १ पहनना । २ मन्त्र से प्राविष्ट करना, मन्त्र से अधीन करना

(परह १, २; भाव ३८) ।

आविक्कम्म पुंन [आविक्कम्मं] प्रवृत्त-वर्म, प्रवृत्त्य से किया हुआ नाम (भावा २, १५, ५२) ।

आविग्ग वि [आविग्ग] उद्विग्न, उदासीन (से ६, ८६; १३, ६३, दे ७, ६३) ।

आविट्ठ वि [आविट्ठ] १ शत्रुत, व्याप्त (सम ५१; मुपा १८७) । २ प्रविष्ट (सूय १, ३) । ३ अभिहित, आश्रित (अ ५; भाव ३६) ।

आविट्ठ वि [आविट्ठ] भूत भादि के उपद्रव से युक्त (सम्मत १७३) ।

आविट्ठ वि [आविट्ठ] परिहित, पहना हुआ (कप्प) ।

आविट्ठ वि [दे] क्षिप्त, भेंटित (दे १, ६३) ।

आविट्ठमाव पुं [आविमाव] १ उत्पत्ति । २ प्रादुर्भाव, अभिव्यक्ति, 'आविट्ठमावतिरोभाव-मेतपरिणामिदवमेवाय' (विते) ।

आविट्ठमूय वि [आविट्ठमूय] १ उत्पन्न । २ प्रादुर्भूत (कप्प) । ३ अभिव्यक्ति (सुर १४, २११) ।

आविट्ठ वि [आविट्ठ] १ भलिन, श्लवच्छ (सम ५१) । २ शत्रुत, व्याप्त (सूय १, १५) ।

आविट्ठिअ वि [दे] कुपित, क्रुद्ध (पद्) ।

आविट्ठिअ वि [आविट्ठिअ] अभिनयित (दे १, ७२) ।

आविस् सक [आ + विस्] प्रवेश करना, बुलाना । भाविनेइ (सम्मत १०३) ।

आविस् भव [आ + विस्] १ सबड होना, श्रुत होना । २ सक. उपगोप करना, सेवना, 'परदारमाविस्सामित्ति' (विते ३२५६) ।

'जं जं सम्य जीवो, भाविस्सं जेण जेण भावेण । मो तम्मि तम्मि समण, सुहंमहं वणं वणं' (उव)

आविहव भव [आविह + भू] १ प्रकट होना । २ उत्पन्न होना । भाविहवइ (स ४८) ।

आविह्वअ देवो आविह्वमूय (स ७१८) ।

आवी देवो आवि = भाविस्; 'आवी वा जइ वा रत्ते' (उत १, १७; सुख १, १७) ।

'कम्म देवो आविक्कम्म (भावा २, १५, ५) ।

आवीअ वि [आपीत] १ पीत । २ शोषित (से १३, ३१) ।

आवीइ वि [आपीचि] निरन्तर, अविच्छिन्न, 'गन्ममभिइमावीइसलितच्छेद सरं व सुसंतं । म्पुसमयं मरमाणे, जीयंति जणो कहे भणइ' (सुपा ६५१) ।

'मरण न [मरण] मरण-विशेष (भग १३, ७) ।

आवीक्कम्म न [आविक्कम्मं] १ उत्पत्ति । २ अभिव्यक्ति (अ ६, कप्प) ।

आवीइ सक [आ + पीड] १ पीडना । २ दनाना । भावीइइ (सण) ।

आवीण न [आपीण] स्तन, धन (गडड) ।

आवीण देवो आमेल = भापीड (स ३१५) ।

आवीण देवो आवीड । संक. आवीणलयाण (भावा २, १, ८, १) ।

आवीणल न [आपीडन] समूह, निबध (गडड) ।

आवुअ पुं [आवुक] मादक की भाषा ने पिता, बाप (माद) ।

आवुण वि [आपूर्ण] पूर्ण, भरपूर (दे २, १०२) ।

आवुत्त पुं [दे] भागी-पति (भमि १८३) ।

आवुत्त वि [आवुत्त] डका हुआ (माद ८, १२) ।

आवुत्त स्त्री [आवुत्त] भावरण (माद ८, १२) ।

आवूर देवो आवूर = भा + वूरप् । वड्ड. आवूरत्त (पवम ७६, ८) । कवड्ड. आवूरत्त-माण (स ३८२) ।

आवूरण न [आवूरण] वृत्ति (स ४३६) ।

आवूरिय देवो आवूरिय (पवम ६४, ५२; स ७७) ।

आवेअ सक [आ + वेदप्] १ विनति करना, निवेदन करना । २ बतलाना । आवे-एइ (महा) ।

आवेअ पुं [आवेग] वट, दुत (से १०, ५७, ११, ७२) ।

आवेअ देवो आमा ।

आवेइइय वि [आवेइय] वेष्टित, निरा हुआ (मा २८) ।

आवेइ देवो आमेल (हे २, २३४, आवेइय) ।

आवेइ पुं [आवेइ] १ वेष्टन । २ मण्डनाकर करना (से ७, २७) ।

आवेढण न [आवेढण] ऊपर देखी (गजड, नि ३०४)।

आवेढिय वि [आवेष्टित] १ चारो ओर से वेष्टित (भा १६, ६, उप पु ३२७)। २ एक बार वेष्टित (ठा)।

आवेण न [आवेदन] निवेदन, मनो-मात्र का प्रकाश-वरण (गजड, दे ७, ८७)।

आवेयअ वि [दे] १ विशेष आसक्त। २ प्रवृद्ध, बड़ा हुआ (पह)।

आवेस सक [आ + वेस] भूतविष्ट करना। संक. आवेसिऊण (स ६४)।

आवेस पुं [आवेस] १ प्रतिनिवेश। २ जोर। ३ भूतग्रह। ४ प्रवेश (नाट)।

आवेसण न [आवेशन] शून्यगृह, 'बावेसण-समापवानु परिणसलानु एवमा वालो' (भावा)।

आस देखो अस्त = अक्ष (प्राक २६)।

आस अक [आस्] बैठना। वक्र. 'अजय आसमाणो व पाणपूपाइ हिनह' (दस ४)। हेह. आसिअण, आसइअण, आसइअणु (पि ५७न, कस, दस ६, ५४)।

आस पुं [अश्व] १ अश्व, घोड़ा (छाया १, १७)। २ देव-विशेष, प्रथिनी नक्षत्र का प्रति-प्रायक देव (ज)। ३ प्रथिनी नक्षत्र (चद २०)। ४ मन, चित्त (पण २)। ५ अणु, कण पुं [कण] १ एक प्रत्यय। २ उमका निवासी (ठा ४, २)। ३ गीय पुं [ग्रीन] एक प्रसिद्ध राजा, पहला प्रतिबालुवेन (पठन ५, १५६)। ४ तर पुं [तर] लहर (आ १८)। ५ व्यास पुं [व्यामन] द्रोणाचार्य का प्रख्यात पुत्र (कुमा)। ६ अ पुं [अन] विद्यमान वश वा एक राजा (पठन ५, ५२)। ७ धम्म पुं [वर्म] देखी पूर्वोक्त अर्थ (पठन ५, ५२)। ८ धर वि [धर] धर्म की धारण करनेवाला (भीष)। ९ उर न [उर] ऊपर-विशेष (इक)। १० उरा, उरी की [उरी] नगरी-विशेष (कस, ठा २, १)। ११ मज्झिमा की [मज्झिका] चतुर्निन्दिय जीव विशेष (भीष ३६७)। १२ मद्ग, मद्ग पुं [मर्दक] अश्व का मर्दन करनेवाला (छाया १, १७)। १३ मित्र पुं [मित्र] एक वैजातया दार्शनिक, जो महाभारत के स्थित्य बौद्धिग्य का स्थित्य का श्रीर निजने

साधुचैदिक पथ चलाया था (ठा ७)। १ मुह पुं [मुस] १ एक अन्तर्ज्ञ। २ उमका निवासी (ठा ४, २)। ३ मेह पुं [मेघ] यज्ञ-विशेष (पठन ११, ५२)। ४ रु पुं [रथ] घोड़ा-गादी (छाया १, १)। ५ वार पुं [वार] बुद्ध-सवार, बुद्ध-चढ़ैया (मुपा २१४)। ६ वाह-गिया की [वाहनिना] घोड़े की सवारि, घोड़े पर सवार होकर फिरना (विपा १, ६)। ७ सेण पुं [सेन] १ भगवान् पार्श्वनाथ के पिता (कप)। २ पंचवै चक्रवर्ती का पिता (सम १५२)। ३ रोह पुं [रोह] बुद्ध-सवार, बुद्ध-चढ़ैया (से १२, ६६)।

आस पुंकी [आश] भोजन, 'आपासाण पाय-रासाण' (सम २, १)।

आस पुं [आस] लेपण, फेंकना (विने २७६५)।

आस न [आस्य] सुप्त, मुह (छाया १, ८)। आसइ वि [आश्रयिन्] माय्य-स्थित, 'अमा-सइणी जाया सा देखी सावप्रजिव' (धर्मि १७७)।

आसक सक [आ + शङ्क] १ संदेह करना, सशय करना। २ धन. भयभीत होना।

आसकद (स ३०)। वक्र. आसकंत, आस-कमाग (गाट, मान ८३)।

आसका की [आशङ्का] शङ्का. भय, वहन, सशय (सुर ६, १२१, महा. नाट)।

आसकि वि [आशङ्किन्] आशङ्का करने-वाला (गा २०५)।

आसकिय वि [आशङ्कित] १ सशय, सश-यित। २ संभावित (महा)।

आसकि वि [आशङ्किन्] आशङ्का करने-वाला, वहनी (सुर १८, १७, गा २०६)।

आसंग पुं [दे] वाम-गृह शय्या-गृह (दे १, ६६)।

आसंग पुं [आसङ्ग] १ प्रासक्त, चत्तिल्यं। २ संबन्ध। (गजड)। ३ योग (भावा)।

आसंगि वि [आसङ्गिन्] १ प्रासक्त। २ सवन्धी, सयोगी (गजड)। की. 'पी (गजड)।

आसघ सक [सं + आश्रय] १ संभावना करना। २ अभ्यवसाय करना। ३ स्थिर करना, निश्चय करना। आसंघइ (से १५, ६०)। वक्र. आसंघव (से १५, ६२)।

आसंघ पुं [दे] १ अश्व, विरवास (मुपा ५२६; पड)। २ अभ्यवसाय, परिणाम (से १, १५)।

३ प्रासंघा, इच्छा, चाह (गजड)।

आसंघा की [दे] १ इच्छा, वाञ्छा (दे १, ६३)। २ प्रासक्ति (से २)।

आसंघिअ वि [दे] १ अध्यवसित। २ घन-पारित (से १०, ६६)। ३ संभावित (कुमा, स १३७)।

आसंजिअ वि [आसङ्क] पीछे लगा हुआ (सुर ८, ३०, उत्तर ६१)।

आसंद्य न [आसन्दक] आसन-विशेष (भावा, महा)।

आसंद्य पुन [आसन्दक] आसन-विशेष, मंन (सुख ६, १)।

आसंदाप न [आसन्दान] धनटुम्भन, धन-रोय, रक्षावट (गजड)।

आसंदिअ की [आसन्दिका] छोटा गध (सम १, ५, २, १५, गा ६१७)।

आसंदी की [आसन्दी] आसन-विशेष, गध (सम १, ६, दस ६, ५४)।

आसा की [अश्वगन्धी] वनसति-विशेष (मुपा ३२४)।

आसंवर वि [आशम्बर] १ दिगम्बर, नग्न (भावा)। २ जैन का एक मुख्य भेद। ३ वस्त्रा अनुयायी (स २)।

आसंसइ वि [आसंशयित] संशय-रहित (सुप २, २, १६)।

आसंसण न [आशंसन] इच्छा, प्रसितापा (भावा ६५)।

आसंसा की [आशंसा] प्रसितापा, इच्छा (भावा)।

आसंसि वि [आशंसिन्] प्रसितापी, इच्छा करनेवाला (भावा)।

आसंसिअ वि [आशंसित] अश्लेषित (गा ७६)।

आसंसयय पुं [दे] प्रशस्त पति-विशेष, श्रीवद (दे १, ६७)।

आसंग देखो आस = अश्व (छाया १, १२)।

आसगलिअ वि [दे] आकृत, 'पासपनिषो तिन्धकम्पपरिणस' (स ४०४)।

आसगलिअ वि [दे] प्राप्त, 'एव जितयविमुद-चित्तलेण सविधो कम्मसंगयो, प्राप्तयतिर्य बोधिवीर्य' (स ६७६)।

आसज् भ्र [आसाय] प्राप्त करके (विशे ३०) ।

आसड पुं [आसड] विष्म की तेरहवीं शताब्दी का स्वनाम-स्वात एव जैन ग्रन्थकार (विशे १५३) ।

आसण न [आसन] १ जिसपर बैठा जाता है वह चौकी प्रादि (भाव ४) । २ स्थान, जगह (उत्त १, १) । ३ राध्या (भाव) । ४ बैठना, उपवेशन (ठा ६) ।

आसणिय वि [आसनिन्] आसन पर बैठना हुआ (स २६२) ।

आसणन न [आसन] १ समीप, पास । २ वि समीपस्थ (गड) । देखो आसन ।

आसत्त वि [आसक्त] सीन, तत्पर (महा, प्रसू ६४) ।

आसत्त वि [आसक्त] १ नीचे लगा हुआ (पाय ३५) । २ पुं. मनुष्य का एक भेद, भीमपात होने पर भी शी का प्राणिमण कर उसके कथादि भगो ने छुटकर सोनेवाला मनुष्य (पव १०६) ।

आसत्ति जो [आसक्ति] अभिप्रेत, वल्लीनता (कुमा) ।

आसत्थ पु [आसत्थ] पोषण का पत्र (पत्रम ५३, ७६) ।

आसत्थ वि [आसत्थ] १ प्राधायन प्राप्त, स्वस्थ । २ विभक्त (खाया १, १; सय १५२; पत्रम ७, ३८, ७, २०) ।

आसन्न देखो आसण (कुमा, गड) । *पत्ति वि [पत्तिन्] नगरीक में रहनेवाला (मुपा ३५१) ।

आसम पु [आसम] तापस प्रादि का निवास स्थान, तीर्थ-स्थान (पह १, ३; भीष) । २ ब्रह्म-धर्म, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ भीर भ्रम्य (संन्यास) ये चार प्रकार की भवसा (पचा १०) ।

आसमपय न [आसमपद्] वापसा के प्राथम से उत्पन्नित स्थान (उत्त ३०, १७) ।

आसमि वि [आसमिन्] प्राथम में रहने-वाला, प्रापि, मुनि वगैरह (पवव १) ।

आसय भक्त [आस्] बैठना । आसयति (जीद ३) ।

आसय सक [आ + धी] १ आश्रय करना, ।

भ्रवल्भन करना । २ ग्रहण करना । आसयद (कय) । वक्त. आसयंत (विशे ३२२) ।

आसय पु [आराक] खानेवाला (भाव) । आसय पुं [आश्रय] भावार, भ्रवल्भन (उत्त ७१५, मुर १३, ३६) ।

आसय पु [आश्रय] १ मन, चित्त, हृदय (मुर १३, ३६, पाम) । २ भूमिप्राय (सुम १, १५) ।

आसय न [दे] निकट, समीप (दे १, ६५) । आसरिअ वि [दे] समुक्त भागन, मानने प्राया हुआ (दे १, ६६) ।

आसय सक [आ + स्तु] धीरे-धीरे करना, टपकना । वक्त. आसासमान (भाव) ।

आसव सक [आ + स्तु] भाना, भासवदि जेह कम्म परिणामेणपणो स विस्सेयी भावा-सवो (द्रव्य २६) ।

आसव पु [आश्रय] मूल्य छिद्र, देखो, 'सया-सव' (मग १, ६) ।

आसव पु [आसव] मय, वक्त (वप ७२० टी) ।

आसन पुं [आश्रय] १ कर्मों का प्रवेश द्वार, जिससे कर्मव्यव होता है वह हिंसा प्रादि (ठा २, १) । २ वि श्रोता, सुन-बचन की सुनने-वाला (उत्त १) । *सक्ति वि [सक्तिन्] हिंसादि में आसत (भाव) ।

आसण न [दे] वास गृह, शम्भ-भर (दे १, ६६) ।

आसवाहिद्या जो [आश्रवाहिन्] भव श्रोत्र (पर्वति ४) ।

आसाअ सक [आ + सादय] व्यर्थ करना, छूना । भासाएजा । वक्त आसायमाण (भाव २, ३, २, ३) ।

आसाअ सक [आ + रुस्] प्राधायन लेना, विद्याम लेना । आमसड, आमसमु (पि ८८, ४६६) ।

आससण न [आशसन] विनाश, हिंसा (पह १, ३) ।

आसाअ जो [आशसा] भविनामा, 'जोम तु परिणय, त दुट्टु आमसा हार' (विशे २५१६) । आमसिय वि [आशस्त] प्राधायन-प्राप्त (म ३७८) ।

आसा जो [आसा] १ प्राण, उष्मीय (भीष-से १, २६, मुर ३, १७०) । २ रिछा (उत्त

६४८ टी) । ३ उत्तर श्वक पर बसनेवाली एक दिक्कुमारो, देवी विशेष (ठा ८) ।

आसाअ सक [आ + साद] स्वाद लेना चखना, खाना । भासायति (मग) । वक्त. आसाअअत, आसाएत, आसायमाण (नाट, मे ३, ४८, खाय १, १) ।

आसाअ सक [आ + सादय] प्राप्त करना । वक्त आसाएत (से ३, ४५) ।

आसाअ सक [आ + सादय] भवना करना, भ्रममान करना । भासाएजा (महानि ५) । वक्त. आसायत, आसाएमाण (आ ६, ठा ४) ।

आसाअ पु [आसाद] १ स्वाद, रस (गा ५६३, से ६, ६८, उत्त ७६८ टी) । २ वृत्ति (से १, २६) ।

आसाअ पु [आसादय] स्वाद का विलकुल भ्रमव (संनु ४५) ।

आसाअ देखो आसय = भावम (संनु ४५) ।

आसाअ पु [आसाद] प्राप्ति (से ६, ६८) ।

आसाइय वि [आशासित] १ भ्रवज्ञात, तिरस्त्व (मुक्त ४५४) । २ न. भवता, तिर-स्वार (विशे ६२) ।

आसाइय वि [आसादित] चला हुआ, बीज खायो हुआ (से ५, ४६) ।

आसाइय वि [आसादित] प्राप्त, लब्ध (देका ३०, खि) ।

आसाड पु [आपाड] १ पमाड मास (मम ३६) । २ एक निष्ठ, जो भूमिचिन् मत का उदात्त का (ठा ७) । *भूइ पुं [भूति] एक प्रसिद्ध जैन मुनि (कुमा २६) ।

आसाडा जो [आपाडा] नग्न विशेष (ठा २) ।

आमादां जो [आपादां] प्रापाड मान की पूर्णिमा (मुत्र) ।

आसादां जो [आपादा] १ प्रापाड मास का पूर्णिमा । २ प्रापाड मान की भवानन (मुत्र १०, ६) ।

आसादेत्तु वि [आसादयित] भासादन करनेवाला (ठा ७) ।

आसामार पु [आसामर] साउर वानुदेन भीर वनदेर में पूर्वभरीय पर्वतुड का नाम (मम १५३) ।

आसायण न [आस्थादन] स्वाद सेना, चवना (पञ्च २२, २७, छाया १, ६, सुपा १०७)।
आसायण न [आशातन] १ नीचे देखो (विदे ६६)। २ धनन्तातुर्वन्धि कपाय का वेदन (विदे)।

आसायणा स्त्री [आशातना] विपरीत वर्तन, अपमान, तिरस्कार (पदि)।

आसार सक [आ + सारय्] तदुस्त करना, बीणा को ठीक करना। संक. आसारिऊण (सिदि ७६४)।

आसार पु [आसार] समीकरण, बीणा को ठीक करना (कुप्र १३६)।

आसार पु [आसार] वेग से पानी का बरसना, (से १, २०, सुपा ६०६)।

आसारिय वि [आसारित] ठीक किया हुआ, 'आसारिया कुमारेण बीणा' (कुप्र १३६)।

आसालिय पु स्त्री [आशालिक] १ सर्प की एक जाति (पएह १, १)। २ स्त्री विद्या-विशेष (पञ्च १२, ६४, ५२, ६)।

आसावल्ली स्त्री [आशापल्ली] एक नगरी (सी १५)।

आसायि वि [आसायिन्] भरनेवाला, सन्धि (सूत्र, १, ११)।

आसात सक [आ + शास्] आशा करना, उम्मीद रखना। आसातदि (वेणी ३०)।

आसात सक [आ + आसय्] आराधन देना, सात्वतना करना। आसातद (वज्रा १६)।
यङ्. आसासत, आसासित (से ११, ८७, आ १२)।

आसास पु [आश्वास] १ आराधन, सात्वतना (आप ७३, सुपा ८३, उप ६६२)। २ विश्राम (ठा ४, ३)। ३ द्वीप-विशेष (आपा)।

आसासज पु [आश्वासक] विग्राम-स्थान, यन्त्र का अक्ष, सर्प, परिच्छेद, प्रत्याय (से २, ४६)। २ वि. आश्वासन देनेवाला, 'नाश आसासय मुमिचुव' (पुष्क ३८)।

आसासग पु [आशासन] बीजण-नामक वृक्ष (भीप)।

आसासना न [आश्वासन] १ सात्वतना, दिलासा (गुर १, ११०, १२, १५, उप ५७)। २ ग्रहों के देव विशेष (ठा २, ३)।

आसासन पु [आश्वासन] १ एक महाग्रह (सुत्र २०)। २ वि. आश्वासन-दाता (कुप्र ११०)।

आसासिज वि [आश्वासित] जिसको आश्वासन दिया गया हो वह (से ११, १३६, गुर ४, २८)।

आसि सक [आ + शि] आश्रय करना। संक. आसिक (आरा ६६)।

आसि देखो अस = अस्।

आसि वि [आशिश्] खानेवाला, भोजक (सट्टि १३)।

आसिअ वि [आशिक] अन्न का शिक्क, 'कुडु वि य जो माते द्देइ तं आसिअ विंति' (वव ४)।

आसिअ वि [आशित] खिलाया हुआ, भोजित (से ८, ६३)।

आसिअ वि [आशित] आश्रय-आप्त (कप्य, गुर ३, १७, से ६, ६५, विसे ७५६)।

आसिअ वि [आसित] १ उपविष्ट, बैठा हुआ (से ८, ६३)। २ रहा हुआ, स्थित (पञ्च ३२, ६६)।

आसिअ देखो आसिप्त (छाया १, १, कप्य, भीप)।

आसिअअ वि [दे] लोहे का, सोह निर्मित (दे १, ६७, सूत्र ८०, वृणो सू० या २८२)।

आसिका स्त्री [आसिका] बैठना, उपवेशन (से ८, ६३)।

आसिआ देखो आसी = आशिप् (पट्)।

आसिअ सक [आ + सिच्] तीक्ष्ण। कर्ष. आसिचर्च (वेद्वय १५१)।

आसिण वि [आशिन्] खानेवाला, भोजक, 'मसासिणस' (पञ्च २६, ३७)।

आसिण पु [आशिन] आश्रित मास (पाय)।

आसित वि [आसिक] १ थोड़ा सित (गग ६, ३३)। २ सित, सोचा हुआ (आय)। ३ पु नपुंसक का एक भेद (पुष्क १२८)।

आसित्तिया स्त्री [दे] साव-विशेष, 'विशालहिं आसित्तियाभी गोषा नज सार्थेति' (सुत्र १०, १०१)।

आसियावाय देखो आसीवाय (सूत्र १, १४, १६)।

आसिल पु [आसिल] एक महर्षि (सूत्र १, ३, ४, ३)।

आसिलिट्टि वि [आसिलट्ट] भ्रातृमित्र (नाट)।

आसिलिस सक [आ + शिल्प्] भ्रातृमित्र करना। हेङ्. आलेट्टुअ, आलेट्टु (हे २, १६४)।

आसिसा देखो आसी = आशिप् (महा, मभि १३३)।

आसी देखो अस् = अस्।

आसी स्त्री [आशी] बाडा (विदे)। 'विस पु [विप] १ जहरिला स प, 'आसी दादा कणपविमानीविता पुण्येयवा' (जीव १ टी, प्रसू १२०)। २ पर्वत विशेष का एक शिखर (ठा २, ३)। ३ निग्रह श्रीर अनुग्रह करने में समर्थ, लब्धि विशेष को प्राप्त (भा ८, १)।

आसी स्त्री [आशिप्] आशीर्वाद (गुर १, १३८)। 'वयण न [वचन] आशीर्वाद (सुपा ४६०)। 'वाय पु [वाद] आशीर्वाद (गुर १२, ४३, सुपा १७४)।

आसीण वि [आसीन] बैठा हुआ, 'नमिऊण आसीण त्थो' (वसु)।

आसीयअ पु [दे] दरजी, कपडा खानेवाला (दे १, ६६)।

आसीसा देखो आसी = आशिप् (पट्)।

आसु पुन [आशु] पानू (सक्ति १७)।

आसु } अ [आशु] शीघ्र, तुरंत, जल्दी (सार्ध आसु } १८, महा, काठ)। 'कार पु [कार] १ हिंसा मारना। २ मरने का कारण, विस्-विषा वगैरह (आय)। ३ शीघ्र उपस्थित, 'आसुकारे मरये, अस्मिन्नाए य बीविपासाए' (आउ ६)। 'पण्य वि [प्रज्ञ] १ शीघ्र-बुद्धि। २ विषय ज्ञानो, केवल-ज्ञानो (सूत्र १, ६, १४)।

आसुर वि [आसुर] अशुर-सकन्धी (ठा ४, ४, भाउ ३६)।

आसुरक न [आसुरक] मोक्षिन, पुष्ता (वव ८, २५)।

आसुरिय पु [आसुरिक] १ अशुर, अशुर रूप से उपज (अज)। २ वि. अशुर-सकन्धी (सूत्र २, २, २७)।

आसुरीय वि [असुरीय] अशुर संकन्धी,

‘भ्रातृस्येति दिने बाला गर्च्छति ब्रह्मसत्तम’ (उत्त ७, १०)।

आसुरक्त वि [आशुरक्त] १ शीघ्र क्रुद्ध । २ अति कुपित (खाया १, १)।

आसुरक्त वि [आसुरोक्त] अति कुपित (खाया १, १)।

आसुरक्त वि [आशुरक्त] अति-नुपित (विषा १, ६)।

आसुरि न [आशुरिन्] १ वलित बलाने-
बाली सुराक । २ रसायन-रक्षा (सूय १, ६)।

आसुरी की [आशुरी] शलाका, प्ररासा (सूय १, ६, १५)।

आसुरिय वि [आशुरिन्] बोधा स्थूल विषा
हृमा (पण्ड १, ३)।

आसुर्य न [दि] दौषपातितक, मनोती (पिंड ५०५)।

आसेअगय वि [आसेचनक] जिसकी देखने
के मन की प्रति न होती हो वह (दि १, ७२)।

आसेन सक [आ + सेच्] १ सेवना । २
पातना । ३ आचरना । आसेय (प्राय ६७)।

आसेवग न [आसेयन] १ परिपालन, सरलण
(मुपा ५३८) । २ आचरण (स २७१) । ३
मेतुन, रतिमंभोग (सत्त १; पय १७०)।

आसेवगया } की [आसेयना] १ परिपालन
आसेयगा } (सूय १, १५) । २ विपरीत
आचरण (पय) । ३ आचरण (प्राय) । ४ शिक्षा
का एक भेद (धर्म ३)।

आसेया की [आसेया] ऊपर देखी (मुपा
१०)।

आसेयि वि [आसेयित] १ परिपालित ।
२ सम्पन्न (प्राय) । ३ आचरित, अनुष्ठित
(स ११८)।

आसोय पुं [अश्रयुक्] आश्रित नाम
(स्यार ३६)।

आसोअ वि [आशोक] अशोक वृक्ष संबन्धी
(गउड)।

आसोइया की [दि. आसोतिरा] शोषवि-
विशेष, ‘आसोत्पादमीशं चोले पुषिण कुमुस-
मीस’ (मुपा ३६७)।

आसोई की [आभयुजी] आश्रित पूर्णिमा
(स)।

आसोई } की [आभयुजी] १ आश्रित
आसोया } मास की पूर्णिमा । २ आश्रित
मास की प्रमास (सुज १०, ७; ६)।

आसोकेता की [आरोकान्ता] मध्यम ग्राम
की एक भूखंडा (उ ७)।

आसोत्य पुं [अभ्यर्थ] पीपल का पेड़ (पण्ड
१, उप २३६)।

आह सक [द्रुच्] कहना । भूका—आहंनु,
आह (कण्)।

आह सक [पाहृत्] चाहना, इच्छा करना।
आहृ (हे ५, १६२, पड) । वड. आहंन
(कुपा)।

आहंडल देखो आहंडल (हम्मोर १५)।

आहंतुं देखो आहण ।

आहण थ [दि] १ अभ्यास । २ निष्कारण
(वव १) । ३ भाय पुं [आभृ] कदाचित्कता
(पय १०७ टी)।

आह्य न [दि] १ अध्यय, बहुत, अतिराम्य (दे
१, ६२) । २ अ. शीघ्र, अत्यंती (प्राय)।

३ कदाचित्, कभी (मग ६, १०) । ४ उप-
स्थित होकर (प्राय) । ५ व्यवस्था कर (सूय
२, १) । ६ निभक्त कर (प्राय) । ७ छीन
कर (वना)।

आह्या की [आहत्या] प्रहार, प्रापात (मग
१५)।

आहृ न [दि] देखो आहृदु = दे (पय ७३
टी)।

आहृदु की [दि] प्रहेलिका, पहिलिया, कुकी-
बल, तिरु न विहृमद सयं आहृदुदुहृदृदि
न (पय ७३)।

आहृदु देखो आहृ = आ + हृ ।

आहृद [आहृत्] १ छीन लिया हुआ । २
चोरी किया हुआ (मुपा ६५३) । ३ सामने
लाया हुआ, उपस्थापित (स १८८)।

आहृद न [दि] सोलहर, सुख शब्द (पड)।

आहृण सक [आ + हृन्] प्रापात करना,
मारना । आहृणमि (पि ५६६)। संड
आहृणित, आहृणित, आहृणित (पि
५६१, १८५, १८२)। हेड. आहृतं (पि
५७६)।

आहृण सक [आ + हृन्] उठाना । वड.
आहृ [१ हृ] गिय (सय १८, २१)।

आहृण न [आहृन] प्रापात (उर ३६६)।

आहृणाविय वि [आपातित] आहृत कराया
हुआ (स ५२७)।

आहृचदीय न [यायातथ्य] १ यथावस्थान-
पन, वास्तविकता । २ तथ्य-मार्ग—सम्प्रज्ञान
आदि । ३ ‘सूत्रकृताङ्ग’ सूत्र का तेरहवां
प्रत्ययन (सूय १, १३, १३, १३५)।

आहृम सक [आ + हृम्] माना, प्रागमन
करना । आहृमइ (हे ५, १६२)।

आहृमिअ वि [अयामिक] प्रथम-संबन्धी
(वस ८, ३१)।

आहृमिय वि [अयामिक] प्रथमी, पापी
(सम ५१)।

आहृय वि [आहृत्] प्रापात प्राप्त, प्रेरित
(कण्)।

आहृय वि [आहृत्] १ प्राकृत, खोका हुआ ।
२ छीना हुआ (उर २११ टी)।

आहृस सक [आ + हृ] १ छीनना, खींच लेना ।
२ चोरी करना । ३ लाना, भोजन करना ।

आहृद (पि १७३)। वड. आहृरिज्जमाण
(उ ३)। संड. आहृदु (पि २८६)।
हेड. आहृरिस्त (तंडु)।

आहृ सक [आ + हृ] लाना । आहृपिहि
(सूय १, ५, २, ५), आहृनेनी (सूय २, २,
५५)।

आहृण पुन [आहृण] १ उदाहरण, इष्टान्त
(सूय ५३६, उर २६३, ६५१) । २ आह्वान,
बुलाना (मुपा ३१७) । ३ ग्रहण, स्वीकार ।
४ व्यवस्थापन (प्राय) । ५ प्रागमन, लाना
(सूय २, २)।

आहृण पुन [आहृण] १ उदाहरण, इष्टान्त
(सूय ५३६, उर २६३, ६५१) । २ आह्वान,
बुलाना (मुपा ३१७) । ३ ग्रहण, स्वीकार ।
४ व्यवस्थापन (प्राय) । ५ प्रागमन, लाना
(सूय २, २)।

आहृण पुन [आहृण] १ उदाहरण, इष्टान्त
(सूय ५३६, उर २६३, ६५१) । २ आह्वान,
बुलाना (मुपा ३१७) । ३ ग्रहण, स्वीकार ।
४ व्यवस्थापन (प्राय) । ५ प्रागमन, लाना
(सूय २, २)।

आहृण पुन [आहृण] १ उदाहरण, इष्टान्त
(सूय ५३६, उर २६३, ६५१) । २ आह्वान,
बुलाना (मुपा ३१७) । ३ ग्रहण, स्वीकार ।
४ व्यवस्थापन (प्राय) । ५ प्रागमन, लाना
(सूय २, २)।

आहृण पुन [आहृण] १ उदाहरण, इष्टान्त
(सूय ५३६, उर २६३, ६५१) । २ आह्वान,
बुलाना (मुपा ३१७) । ३ ग्रहण, स्वीकार ।
४ व्यवस्थापन (प्राय) । ५ प्रागमन, लाना
(सूय २, २)।

आहृण की [दि] सराई, नाव का सराई
शब्द (सूय २)।

आहृरिमिय वि [आवर्तित] तिरस्कार, मल्लित;
‘आहृरिमियो हूमो संमनेण नियन्तिभो’
(सत्तम)।

आहृद (मग) सक [आ + चल्] हिलना,
चलना । ‘नरमद दतपतो आहृदइ, खलइ
जीह’ (सर्व)।

आहृद की [आहृत्] विषापर-चय की
एक बन्धा (पउम १३, ३५)।

आहृद सक [आ + हृ] बुलाना । आहृनु

(धर्मि ८)। संक्ष. आहविज्, आहविऊण
(धर्मि ६८, सम्पत् ११७)।

आहन दुं [आहव] बुद्ध, लडाई (पाम. सुपा
२८८, श्राव ४१)।

आहवण } न [आहवान] १ बुलावा।
आहवण्य } २ ललकारना (पा १२, सुपा
६०, पत्र ६१, ३०, पत्र ६४)।

आहवण देखो आहूअ = आहूत (तो ४)।

आहव्य नि [आभाव्य] शास्त्रिक क्षेत्रादि
(पत्र ११, ३०, पत्र १०४)।

आहवणो जी [आह्वानो] विचारविशेष
(सूत्र २, २)।

आहा सक [आ + अया] रहता। कर्म.
प्राहिज् (पि ४४५), प्राहिज्ति (कर्म)।

आहा सक [आ + धा] स्वप्नन करना।

कर्म. प्राहिज् (सूत्र २, १)। हेऊ आहैउं

(सूत्र १, ६)। संक्ष. आहाय (उत्त ५)।

आहा जी [आभा] कानि, तेज (कर्म)।

आहा जी [आधा] १ शाय, श्राव (विह)।

२ साधु के निमित्त आहार के लिए मन -

प्रतिपादन (पिह)। कंड नि [ट्टव] प्रापा-

कर्म-बोध से युक्त (स १८८)। कम्म न

[कम्म] १ साधु के लिए आहार पकाना।

२ साधु के निमित्त पकाना हुआ भोजन, जो

जैन साधुओं के लिए निषिद्ध है (पत्र २, ९;
ता ३, ४)। कम्मिय नि [कम्मिऊ] देखो

पूर्वक धर्म (धनु)।

आहाण न [आधान] १ स्थापन, २ स्थान,
श्रावण, सन्नयुपाहार (श्राव ४ उवर २६)।

आहाण्य } न [आधान, क] १ उचित,
आहाण्य } २ वचन। २ निवर्तनी, बहाव,
लोकानि (सूत्र २, ६६; उर ७२८ टी)।

आहातहिय नि [याथातथ्य] साथ, वास्त-

विक (सूत्र २, १७)। देखो आहचहीय।

आहार सक [आ + हारय] खाना, भोजन

करना, भक्षण करना। आहारइ, आहरेति

(भग)। वहु आहरेमाण (कर्म)। महु.

आहारिउसमाण (कर्म)। हेऊ आहारे-

यऊ (ता ३)।

आहार दु [आहार] १ बुलाव, भोजन (स्वप्न
६०, श्राव १०४)। २ खाव, भक्षण (पत्र)।

३ न. देखो आहारण (पत्र १०२, ६८)।

*पञ्चत्ति लो [पयसि] युक्त आहार को
सत और रम के रूप में बदनमें की शक्ति (भग
६, ४)। *पोसह दु [पोपध] ब्रत विशेष,

जिसमें आहार का सर्वथा या अधिक त्याग

किया जाता है (श्राव ६)। *सण्णा लो

[सखा] आहार करने की इच्छा (अ ४)।

आहार दुं [आधार] १ श्राव, अधिकरण

(सुपा १२८, संथा १०३)। २ श्रावण (भग
२०, २)। ३ श्रवणारण, याव रचना (पुष्प
३४६)।

आहारण न [आहारण] १ शरीर विशेष,

जिसमें बीज-दुर्ग, केवलज्ञानी के पास जाने

के लिए बनाता है (अ २, २)। २ वि. भोजन

करनेवाला (अ २, २)। ३ आहारक शरीर-

नाला (चित्ते ३७५)। ४ आहारक शरीर उत्पन्न

करने का जिते सामर्थ्य हो वह (कर्म)।

*जुगल न [जुगल] आहारक शरीर और

उसके शरीराङ्ग (कर्म २, १०, २४)। *णाम

न [नामन्] आहारक शरीर का हेतु भूत

कर्म (कर्म १, ३३)। *दुग न [द्विऊ]

देखा *जुगल (कर्म २, १, ८, १७)।

आहारण नि [आधारण] १ श्रावण करने-

वाला। २ श्रावण-भूत (सि ६, ५०)।

आहारण नि [आधारण] श्रावण (सि ६,
५०)।

आहारण देखो आहारण (अ ६, भा, पत्र
२८, अ ३, १, कर्म १, ३७)।

आहारइयि नि [याथारिक्ता] यथा-

अर्थ, यथोक्तम् (कर्म)।

आहारि नि [आहारिन्] आहार-कर्त्ता

(धम्म १११)।

आहारि नि [आहार्य] १ खाने योग्य।

२ वस्तु के साथ साथ जा सके ऐसा योग्य पदार्थ-

विशेष (पिह ५०२)।

आहारि नि [आहार्य] आहार के योग्य,

खाने योग्य (पिह ११)।

आहारि नि [आहारित] १ जिसमें आहार

किया हो वह, 'उत्त कंडोपमस सण्णो त

पणीय पण्णोपण आहारित्समाणन'

आहवणा लो [आभावना] उद्देश्य (पिह
३६१)।

आहवण नि [आधावित] दौढ़ हुआ

(पिह ७२२)।

आहविर नि [आधावित्] दीकनेवाला

(सण)।

आहस देखो आभास = भा + भाव। सक-

आहसिनि (भग) (भवि)।

आहह म [आहह] श्रावण-श्रावक श्राव्य

(हे २, २१७)।

आहि लो [आधि] मन की पीडा (धम्म
१२ टी)।

आहिआइ लो [आभिजाति] कुलीनता,

श्रावण (सि १, ११)।

आहिआइ लो [आभिजाती] कुलीनता (पा
२८५)।

आहिइ सक [आ + हिण्] १ मनन

करना, खाना। २ परिग्रह करना। ३ पूजा,

परिष्कार करना। वहु. आहिइउं, आहि-

डेमाण (पत्र २६५ टी, श्राव १, १)। सक-

आहिइय (महा, स १६३)।

आहिइआ नि [आहिण्डक] चलनेवाला,

आहिइय १ परिष्कार करनेवाला (भोप
११५; ११८, धीप)।

आहिह न [आधिक्य] अधिकता (चित्ते
२०८७)।

आहिजाइ लो आहिजाइ (महा)।

आहिजाइ लो आहिजाइ (पा २४)।

आहितुडिअ दुं [आहितुडिअ] श्रावण,

श्रावण, श्रावण (सुपा ११६)।

आहिय नि [दे] १ कानि, गत। २ कुपित,

कुद (दे १, ७६, जीव ३ टी)। ३ श्रावण,

श्रावण हुआ (दे १, ७६, से ११, ८३,

पाम), 'प्राहित् उज्जिच्छं व भाजस रोस-

मिणं च' (जीव ३ टी)।

आहिइ नि [दे] १ खद, एका हुआ। २

गतिव, गता हुआ (पट)।

आहियत्त न [आधिपत्य] दुःखपापन, नेतृत्व

(अ १०३१ टी)।

आहिय नि [आहित] १ स्थापित, निवेशित (अ
४)। २ भण्युं हितवर (सूपा)। ३ निरन्तर,

निमित्त (पात्र) । *गिग पुं [गिगि] मगिन-
होनीय ब्राह्मण (पउम ३५, ५) ।

आहिय वि [आहित] १ व्याप्त, 'मन्त्रिरेणा-
हिमो एम जलोयखाहिया' (कुप्र ४३) । २
जनित, उत्पन्न । ३ प्रथित, प्रसिद्धि-आप्त
(सुम १, २, २, २६) । ४ सर्वथा हितकारी
(सुम १ २, २, २७) ।

आहिय वि [आख्यात] कहा हुआ, प्रति-
पावित, उक्त (परण ३३, मुज १६) ।

आहियार पुं [अधि.कार] अधिकार, सत्ता,
हक (पउम ५५, ८) ।

आहियत्त देखो आहिपत्त (काल) ।
आहिसारिअ वि [अभिसारित] नायक-बुद्धि
से महीद, पति बुद्धि से स्वीकृत (से १३, १७) ।

आहीर पुं [आहीर] १ रेश विशेष (कण्) ।
२ शूद्र जाति विशेष, ग्रहीर (सुम १, १) ।

३ इस नाम का एक राजा (पउम ६८, ६४) ।
की. *री—ग्रहीरित (मुपा ३६०) ।

आहु सक [आ + ह्वे] बुलाना । क. आहु-
यिज्ज (भीष) ।

आहु [आ + हु] दान करना, त्याग करना ।
क. आहुयिज्ज (श्या १, १) ।

आहु व [आहु] भयवा, या (नाट) ।
आहु पुं [दे] झुक, उल्टा (दे १, ६१) ।

आहु देखो आह = बल् ।
आहुइ वि [आहोव] दाता, दायी (श्या
१, १) ।

आहुइ सी [आहुति] १ हवन, होम (गउड) ।
२ होम का पदार्थ, बलि (स १७) ।

आहुंदुर पुं [दे] बालक, बच्चा (दे १,
आहुंदुरु ६६) ।

आहुड न [दे] १ सीत्तार, मुरत समय का
गब्द । २ पणित, विनय, बेचना (दे १, ७४) ।

आहुड भक [दे] गिरना । आहुडइ (दे १,
६६) ।

आहुडिअ वि [दे] निपतित, गिरा हुआ (दे
१, ६६) ।

आहुण सक [आ + घु] रंपाना, हिलाना ।
कवक, आहुणिज्जमाण (श्या १, ६) ।

आहुणिय वि [आधुनिक] १ आधुनिक का,
मवीन । २ पुं. गृह विशेष (ठा २, ३) ।

आहुत्त व [दे. अभिमुख] सम्मुख, सामने,
'कुमारोवि पहाविषो उपाहुत्त' (महा. मवि) ।

आहुअ वि [आहुत] बुलाना हुआ (पात्र) ।
आहुअ पुं [आहुक] पिराच-विशेष (इक) ।

आहुअ वि [आभूत] उत्पन्न, जात; 'आहुअ
मे गम्भो' (वसु) ।

आहेवं देखो आह = मा + घा ।
आहेड पुं [आखेट, 'क] शिकार,
आहेडग भुग्या (मुपा १६७, स ६७;
आहेडय) दे ।

आहेडिय वि [आखेटिक] भुग्या-सम्बन्धी,
'आहेडियभण्येण' (सम्मत् २२६) ।

आहेण न [दे] बिनाह के बाद वर के घर

बधू के प्रवेश होने पर जी जिमाने का उत्सव
किया जाता है वह (भाचा २, १, ४) ।

आहेय वि [आघेय] १ स्थाप्य । २ धावित
(विसे ६२४) ।

आहेर देखो आहीर (विसे १४५४) ।
आहेवन्न न [आधिपत्य] नेतृत्व, मुखियापन
(सम ८६) ।

आहेवण न [आक्षेपण] १ क्षालेप । २ क्षोभ
उत्पन्न करना (परह १, २) ।

आहोअ देखो आभोग (से १, ४६, ६, ३;
गा दव; गउड) ।

आहोअ देखो आभोग = मा + भोग्य ।
संक. आहोइऊण (म ५५) ।

आहोइअ वि [आभोगित] नात, दृष्ट (स
४८५) ।

आहोइअ वि [आभोगिक] उपयोग हो
नितका प्रयोजन हो वह, उपयोग-प्रधान
(कण्) ।

आहोइ सक [ताडय] तानन करना, पिटना
आहोइइ (दे ४, २७) ।

आहोएण [आभोरण] हस्तिक, महावत
(पात्र, स ३६६) ।

आहोइ वि [आधोवधिक] भवधि-
आहोदिय } ज्ञानी का एक भेद, नियत क्षेत्र
को धवधिसान दे देखनेवाला (भग. सम
६६) ।

इय पाइअसहमहण्वे आमारइमहत्तकल्लो
विइयो तरंगो समत्तो ।



इ

इ पुं [इ] १ प्राकृत यलंगला का लुतीय स्वर-
बल (प्राभा) । २-३ वाक्पालकृत्तर और पाद-
पुति में प्रयुक्त किया जाता अर्थ (कण्, दे
२, ११७, पड) ।

इ देखो इइ (उवा) ।

१७

इ सक [इ] १ जात, गमन करता । २
जानना । एइ, एंति (कुमा) । बह, एंत
(कुमा) । संक. इशा (पात्रा) । हेइ. इचए,
एचए (कण्, वस) ।

इअइय देखो इयरइ (प्राक ३७) ।

इइ व [इति] इन वषों का सूचक अर्थ—
१ समाप्ति (पात्रा) । २ भवधि, हृद (विसे) ।
३ मान, परिमाण (वव ८४) । ४ निवय (निव्व
२, १५) । ५ हेतु, कारण (ठा ३) । ६ एवम,
इस वच्छ, इस प्रकार (उत्त २२) । देखो इति ।

इओ [इत्स्] १ इतसे, इस कारण (पि १७४) । २ इस तरफ (सुपा ३६४) । ३ इस (लोक) में (विसे २६८२) ।

इओअ थ [इत्अ] प्रसगान्तर-मूचक अन्वय (था २८) ।

इत्तिगिया की [दि. इत्तिनिग] निन्दा, गहर् (सुप १, २) ।

इत्तिगी की [दि. इत्तिनी] ऊपर देखो (सुप १, २) ।

इंगार } देवो अंगार (पि १०२; जी ६, इंगाल } प्राप्) । *कम्म न [कर्मम्] कौयला आदि उत्पन्न करने का धीर बेचने का व्यापार (पडि) । *सगडिया की [शक-टिन] संगीठी, प्राप रक्ते का वर्तन (भम) ।

इंगारडाह पुन [अङ्गारदाह] माया, मिट्टी के पात्र पकाने का स्थान (भावा २, १०, २) ।

इंगाल वि [आङ्गार] अङ्गार-संभवनी (दस ४) ।

इंगाला देवो अंगार (ठा २, ३) ।

इंगालय देवो इंगाला (सुप २०) ।

इंगाली की [दि] ईत वा डुकडा, गढेरी (दे १, ७६, पाप्) ।

इंगाली की [आङ्गारी] देवो इंगाल-कम्म (था २२) ।

इंगित्त न [इङ्गित्त] इशारा, संकेत, अभिप्राय के गन्तुप चेष्टा (पाप्) । *ज, *ण, *णु वि [ङ] इशारे से समझनेवाला (प्राप्, हे २, ८३, पि २७६) । *मरण न [मरण] मरण-विशेष (पचा) ।

इंगिअजाणुअ देवो इंगिअज्ज (प्राप् १८) ।

इंगिगी की [इङ्गिनी] मरण-विशेष, अन्तर्गन्-क्रिया-विशेष (सम ३३) ।

इंगुअ न [इङ्गुअ] उठती धुल का फन (कुमा, पउम ४१, ६) ।

इंगुइ } की [इङ्गुदी] धुल-विशेष, हमके इंगुदी } फन तैलमय होने हैं, धुलवा इशारा नाम प्रण-विशेष की हैं, क्योंकि इसके तैल से प्रण बहुत शीघ्र भस्म होते हैं (भावा, धमि ७३) ।

इयजि नि [दि] प्रात, सुँपा हुमा (दे १, ८०) ।

*इंज् देवो किण्णर (से ८, ६१) ।

इंत देवो ए=मा+इ ।

इंद पुं [इन्द] १ देवताओं का राजा, देवराज (ठा २) । २ यष्ट, प्रधान, नायक, 'एरिद' (गउड), 'देविद' (कप्प) । ३ परमेश्वर, ईश्वर (ठा ४) । ४ जीत, आत्मा, 'इंदो जीतो सव्भो-वलद्धिमोगगमेसरत्तएओ' (विसे २६६३) । ५ ऐश्वर्य-शाली (भावम) । ६ विद्यापरी का प्रसिद्ध राजा (पउम ६, २, ७, ८) । ७ पृथ्वी-काय का एक अविष्टायक देव (ठा ५, १) । ८ ज्येष्ठा नक्षत्र का अविष्टायक देव (ठा २, ३) । ९ उतीर्णों तीर्थंकर के एक स्वनाम-ख्यात गणेश्वर (सम १४२) । १० सप्तमी तिथि (कप्प) । ११ मेघ, वर्षा, 'कि जयद सधरया रुन्मसक ग्रह भवे इंदो' (दसनि १०५) । १२ न. देवविमान-विशेष (सम ३७) ।

इं दुं [जिन्] १ हम नाम का राजस वंश का एक राजा, एक लक्ष (पउम ५, २६२) । २ रावल के एक पुत्र का नाम (से १२, ५८) । *ओव देवो *गोव (पि १६८) । *काइय पुं [कायिक] नीन्द्रिय जीव विशेष (पएण १) । *कील पुं [कील] देवता का एक अवयव (सौप) । *कुभ पुं [कुभ] १ वडा कलरा (राय) । २ उद्यान-विशेष (राया १, ६) । *केउ पुं [केतु] इन्द्र-चक्र, इन्द्र-यष्टि (पएण १, ४, २, ४) । *कील देवो *कील (सौप, पि २०६) । *गाइय देवो *गाइय (उत २६) । *गाह पुं [ग्रह] इन्द्राक्षर, किसी के शरीर में इन्द्र का अविष्टान, जो पागलपन का कारण होता है, 'इदमाहा इवा खंदमाहा इवा' (पय ३, ७) । *गोव, *गोवग, *गोवय पुं [गोप] वर्षा ऋतु में होनेवाला रक्त वर्षण का शुद्ध जन्तु-विशेष, जिसका पुनराती में 'गोतुल गाव' बहते हैं (उप ३२, सुर २, ८७, जो १७, पि १६८) । *गाह पुं [ग्रह] ग्रह-विशेष (जो ३) । *गिग पुं [गिग] १ विराळा नक्षत्र का अविष्टायक देव (प्रणु) । २ महामह-विशेष (ठा २, ३) । *गोव पुं [गो] ग्रहाविष्टायक देव-विशेष (ठा २, ३) । *जसा की [यशस्] भाग्यव्यय नगर के ब्रह्मपुत्र की एक पत्नी (उत १३) । *जाल न [जाल] माया-वर्म, धन, बन्ध (स ४४५) । *जालि, *जालिअ पि [जालिन्, *क] मायावी, बानीवर (ठा: सुपा २०३) ।

*जुइण पुं [जुतिज्ज] स्वनाम-ख्यात एश्वर-वंश का एक राजा (पउम ५, ६) । *ऊम्य पुं [धज] बडी ध्वजा (पि २६६) । *ऊम्या की [धजा] इन्द्र द्वारा मरत राजा को दिखाई हुई अपनी दिव्य ध्वजुलि के जालज में राजा भारत से उस मज्जुलि के समान आकृति की की हुई स्थापना और उसके उपसर्त में किया गया उत्सव (भाक् २०) । *गील पुन [नील] नीलम, नीलमणि, रत्न-विशेष (गउड, पि १६०) । *तरु पुं [तरु] वृक्ष-विशेष, जिसके नीचे भगवान् समननाथ को केवल-मान हुमा था (पउम २, २८) । *त न [त्थ] १ स्वर्ग का भाषिण्य, इन्द्र का प्रसाधारण वर्म । २ राजत्व । ३ प्राधाय (सुपा २५३) । *दत्त पुं [दत्त] इस नाम का एक प्रसिद्ध राजा (उप ६३६) । २ एक जैन मुनि (विपा २, ७) । *दिण्ण पुं [दिज्ज] स्वनाम-ख्यात एक जैन प्राधाय (कप्प) । *धणु न [धणु] १ शक्र-धनु, सूर्य की किरण योवर पड़ने से बाकारा में जो धनुष का आकार धौल पड़ता है वह । २ विदाधर-वंश के एक राजा का नाम (पउम ८, १८६) ।

*नील देवो *गील (पउम ३, १३२) । *पाडियया की [प्रतिपत्त] कात्तिज (पुनराती भाषिन्) मास के कृत्त्यपक्ष को पड़ने तिथि (ठा ४) । *पुर न [पुर] १ इन्द्र का नगर, अमरावती (उप पु १२६) । २ नगर-विशेष, राजा इन्द्रत की राजधानी (उप ६३६) । *पुरा न [पुर] १ जैन्य वेदावधिक गण के चौथे बुल का नाम (कप्प) । *प्यभ पुं [प्रभ] राजस वंश के ए० राजा का नाम, जो लड्डा का राजा था (पउम ५, २६१) । *भूउ पुं [भूति] भावान् महावीर वा प्रथम-सुहृद शिष्य, नीलमत्वामी (सम १६; १५२) । *मह पुं [मह] १ इन्द्र की भारावना के लिए किया जाता एक उत्सव । २ भाषिन् पूर्णिमा (ठा ४, २) । *माटो की [माटो] राजा माहिल की पत्नी (पउम ६, १) । *मुद्धाभिसिउ पुं [मुद्धाभिसिउ] पउ की सातवीं तिथि, सप्तमी (वद १०) । *मेह पुं [मेघ] राजस वंश में उत्पन्न एक राजा (पउम ५, २६१) । *य पुं [य] १ देवो इन्द्र (ठा ४) । २ नरक विशेष । ३

*जुइण पुं [जुतिज्ज] स्वनाम-ख्यात एश्वर-वंश का एक राजा (पउम ५, ६) । *ऊम्य पुं [धज] बडी ध्वजा (पि २६६) । *ऊम्या की [धजा] इन्द्र द्वारा मरत राजा को दिखाई हुई अपनी दिव्य ध्वजुलि के जालज में राजा भारत से उस मज्जुलि के समान आकृति की की हुई स्थापना और उसके उपसर्त में किया गया उत्सव (भाक् २०) । *गील पुन [नील] नीलम, नीलमणि, रत्न-विशेष (गउड, पि १६०) । *तरु पुं [तरु] वृक्ष-विशेष, जिसके नीचे भगवान् समननाथ को केवल-मान हुमा था (पउम २, २८) । *त न [त्थ] १ स्वर्ग का भाषिण्य, इन्द्र का प्रसाधारण वर्म । २ राजत्व । ३ प्राधाय (सुपा २५३) । *दत्त पुं [दत्त] इस नाम का एक प्रसिद्ध राजा (उप ६३६) । २ एक जैन मुनि (विपा २, ७) । *दिण्ण पुं [दिज्ज] स्वनाम-ख्यात एक जैन प्राधाय (कप्प) । *धणु न [धणु] १ शक्र-धनु, सूर्य की किरण योवर पड़ने से बाकारा में जो धनुष का आकार धौल पड़ता है वह । २ विदाधर-वंश के एक राजा का नाम (पउम ८, १८६) ।

*नील देवो *गील (पउम ३, १३२) । *पाडियया की [प्रतिपत्त] कात्तिज (पुनराती भाषिन्) मास के कृत्त्यपक्ष को पड़ने तिथि (ठा ४) । *पुर न [पुर] १ इन्द्र का नगर, अमरावती (उप पु १२६) । २ नगर-विशेष, राजा इन्द्रत की राजधानी (उप ६३६) । *पुरा न [पुर] १ जैन्य वेदावधिक गण के चौथे बुल का नाम (कप्प) । *प्यभ पुं [प्रभ] राजस वंश के ए० राजा का नाम, जो लड्डा का राजा था (पउम ५, २६१) । *भूउ पुं [भूति] भावान् महावीर वा प्रथम-सुहृद शिष्य, नीलमत्वामी (सम १६; १५२) । *मह पुं [मह] १ इन्द्र की भारावना के लिए किया जाता एक उत्सव । २ भाषिन् पूर्णिमा (ठा ४, २) । *माटो की [माटो] राजा माहिल की पत्नी (पउम ६, १) । *मुद्धाभिसिउ पुं [मुद्धाभिसिउ] पउ की सातवीं तिथि, सप्तमी (वद १०) । *मेह पुं [मेघ] राजस वंश में उत्पन्न एक राजा (पउम ५, २६१) । *य पुं [य] १ देवो इन्द्र (ठा ४) । २ नरक विशेष । ३

*जुइण पुं [जुतिज्ज] स्वनाम-ख्यात एश्वर-वंश का एक राजा (पउम ५, ६) । *ऊम्य पुं [धज] बडी ध्वजा (पि २६६) । *ऊम्या की [धजा] इन्द्र द्वारा मरत राजा को दिखाई हुई अपनी दिव्य ध्वजुलि के जालज में राजा भारत से उस मज्जुलि के समान आकृति की की हुई स्थापना और उसके उपसर्त में किया गया उत्सव (भाक् २०) । *गील पुन [नील] नीलम, नीलमणि, रत्न-विशेष (गउड, पि १६०) । *तरु पुं [तरु] वृक्ष-विशेष, जिसके नीचे भगवान् समननाथ को केवल-मान हुमा था (पउम २, २८) । *त न [त्थ] १ स्वर्ग का भाषिण्य, इन्द्र का प्रसाधारण वर्म । २ राजत्व । ३ प्राधाय (सुपा २५३) । *दत्त पुं [दत्त] इस नाम का एक प्रसिद्ध राजा (उप ६३६) । २ एक जैन मुनि (विपा २, ७) । *दिण्ण पुं [दिज्ज] स्वनाम-ख्यात एक जैन प्राधाय (कप्प) । *धणु न [धणु] १ शक्र-धनु, सूर्य की किरण योवर पड़ने से बाकारा में जो धनुष का आकार धौल पड़ता है वह । २ विदाधर-वंश के एक राजा का नाम (पउम ८, १८६) ।

*नील देवो *गील (पउम ३, १३२) । *पाडियया की [प्रतिपत्त] कात्तिज (पुनराती भाषिन्) मास के कृत्त्यपक्ष को पड़ने तिथि (ठा ४) । *पुर न [पुर] १ इन्द्र का नगर, अमरावती (उप पु १२६) । २ नगर-विशेष, राजा इन्द्रत की राजधानी (उप ६३६) । *पुरा न [पुर] १ जैन्य वेदावधिक गण के चौथे बुल का नाम (कप्प) । *प्यभ पुं [प्रभ] राजस वंश के ए० राजा का नाम, जो लड्डा का राजा था (पउम ५, २६१) । *भूउ पुं [भूति] भावान् महावीर वा प्रथम-सुहृद शिष्य, नीलमत्वामी (सम १६; १५२) । *मह पुं [मह] १ इन्द्र की भारावना के लिए किया जाता एक उत्सव । २ भाषिन् पूर्णिमा (ठा ४, २) । *माटो की [माटो] राजा माहिल की पत्नी (पउम ६, १) । *मुद्धाभिसिउ पुं [मुद्धाभिसिउ] पउ की सातवीं तिथि, सप्तमी (वद १०) । *मेह पुं [मेघ] राजस वंश में उत्पन्न एक राजा (पउम ५, २६१) । *य पुं [य] १ देवो इन्द्र (ठा ४) । २ नरक विशेष । ३

*जुइण पुं [जुतिज्ज] स्वनाम-ख्यात एश्वर-वंश का एक राजा (पउम ५, ६) । *ऊम्य पुं [धज] बडी ध्वजा (पि २६६) । *ऊम्या की [धजा] इन्द्र द्वारा मरत राजा को दिखाई हुई अपनी दिव्य ध्वजुलि के जालज में राजा भारत से उस मज्जुलि के समान आकृति की की हुई स्थापना और उसके उपसर्त में किया गया उत्सव (भाक् २०) । *गील पुन [नील] नीलम, नीलमणि, रत्न-विशेष (गउड, पि १६०) । *तरु पुं [तरु] वृक्ष-विशेष, जिसके नीचे भगवान् समननाथ को केवल-मान हुमा था (पउम २, २८) । *त न [त्थ] १ स्वर्ग का भाषिण्य, इन्द्र का प्रसाधारण वर्म । २ राजत्व । ३ प्राधाय (सुपा २५३) । *दत्त पुं [दत्त] इस नाम का एक प्रसिद्ध राजा (उप ६३६) । २ एक जैन मुनि (विपा २, ७) । *दिण्ण पुं [दिज्ज] स्वनाम-ख्यात एक जैन प्राधाय (कप्प) । *धणु न [धणु] १ शक्र-धनु, सूर्य की किरण योवर पड़ने से बाकारा में जो धनुष का आकार धौल पड़ता है वह । २ विदाधर-वंश के एक राजा का नाम (पउम ८, १८६) ।

*नील देवो *गील (पउम ३, १३२) । *पाडियया की [प्रतिपत्त] कात्तिज (पुनराती भाषिन्) मास के कृत्त्यपक्ष को पड़ने तिथि (ठा ४) । *पुर न [पुर] १ इन्द्र का नगर, अमरावती (उप पु १२६) । २ नगर-विशेष, राजा इन्द्रत की राजधानी (उप ६३६) । *पुरा न [पुर] १ जैन्य वेदावधिक गण के चौथे बुल का नाम (कप्प) । *प्यभ पुं [प्रभ] राजस वंश के ए० राजा का नाम, जो लड्डा का राजा था (पउम ५, २६१) । *भूउ पुं [भूति] भावान् महावीर वा प्रथम-सुहृद शिष्य, नीलमत्वामी (सम १६; १५२) । *मह पुं [मह] १ इन्द्र की भारावना के लिए किया जाता एक उत्सव । २ भाषिन् पूर्णिमा (ठा ४, २) । *माटो की [माटो] राजा माहिल की पत्नी (पउम ६, १) । *मुद्धाभिसिउ पुं [मुद्धाभिसिउ] पउ की सातवीं तिथि, सप्तमी (वद १०) । *मेह पुं [मेघ] राजस वंश में उत्पन्न एक राजा (पउम ५, २६१) । *य पुं [य] १ देवो इन्द्र (ठा ४) । २ नरक विशेष । ३

*जुइण पुं [जुतिज्ज] स्वनाम-ख्यात एश्वर-वंश का एक राजा (पउम ५, ६) । *ऊम्य पुं [धज] बडी ध्वजा (पि २६६) । *ऊम्या की [धजा] इन्द्र द्वारा मरत राजा को दिखाई हुई अपनी दिव्य ध्वजुलि के जालज में राजा भारत से उस मज्जुलि के समान आकृति की की हुई स्थापना और उसके उपसर्त में किया गया उत्सव (भाक् २०) । *गील पुन [नील] नीलम, नीलमणि, रत्न-विशेष (गउड, पि १६०) । *तरु पुं [तरु] वृक्ष-विशेष, जिसके नीचे भगवान् समननाथ को केवल-मान हुमा था (पउम २, २८) । *त न [त्थ] १ स्वर्ग का भाषिण्य, इन्द्र का प्रसाधारण वर्म । २ राजत्व । ३ प्राधाय (सुपा २५३) । *दत्त पुं [दत्त] इस नाम का एक प्रसिद्ध राजा (उप ६३६) । २ एक जैन मुनि (विपा २, ७) । *दिण्ण पुं [दिज्ज] स्वनाम-ख्यात एक जैन प्राधाय (कप्प) । *धणु न [धणु] १ शक्र-धनु, सूर्य की किरण योवर पड़ने से बाकारा में जो धनुष का आकार धौल पड़ता है वह । २ विदाधर-वंश के एक राजा का नाम (पउम ८, १८६) ।

*नील देवो *गील (पउम ३, १३२) । *पाडियया की [प्रतिपत्त] कात्तिज (पुनराती भाषिन्) मास के कृत्त्यपक्ष को पड़ने तिथि (ठा ४) । *पुर न [पुर] १ इन्द्र का नगर, अमरावती (उप पु १२६) । २ नगर-विशेष, राजा इन्द्रत की राजधानी (उप ६३६) । *पुरा न [पुर] १ जैन्य वेदावधिक गण के चौथे बुल का नाम (कप्प) । *प्यभ पुं [प्रभ] राजस वंश के ए० राजा का नाम, जो लड्डा का राजा था (पउम ५, २६१) । *भूउ पुं [भूति] भावान् महावीर वा प्रथम-सुहृद शिष्य, नीलमत्वामी (सम १६; १५२) । *मह पुं [मह] १ इन्द्र की भारावना के लिए किया जाता एक उत्सव । २ भाषिन् पूर्णिमा (ठा ४, २) । *माटो की [माटो] राजा माहिल की पत्नी (पउम ६, १) । *मुद्धाभिसिउ पुं [मुद्धाभिसिउ] पउ की सातवीं तिथि, सप्तमी (वद १०) । *मेह पुं [मेघ] राजस वंश में उत्पन्न एक राजा (पउम ५, २६१) । *य पुं [य] १ देवो इन्द्र (ठा ४) । २ नरक विशेष । ३

द्वीप विशेष । ४ न विमान विशेष (इक) ।
 'याल देखो जाल (महा) । 'रह पु [रथ]
 विचार बर के एक राजा का नाम (पउम
 ५ ४४) । 'राय पु [राज] इद्र (तिथ) ।
 'लट्टि ली [यष्टि] इन्द्र ध्वज (छाया १
 १) । 'लेहा ली [लेला] राजा विक्रमयत
 की पत्नी (पउम ५ ५१) । 'वज्रा रुनी
 [रज्जा] इन्द्र विशेष का नाम, जिसके एक
 पाद में ग्वाह प्रहर होते हैं (पिंद) । 'वसु
 ली [वसु] ब्रह्मराज की एक पत्नी (राज) ।
 'वाय पु [वात] एक माएडनिक राजा
 (भवि) । 'वारण पु [वारण] इद्र का
 हाया, एरावत (कुमा) । 'सम्म पु [शर्मन]
 स्वनाम-स्वात एक ब्राह्मण (आमम) । 'साम
 गिय पु [सामानिक] इद्र के समान खडि
 वाला देव (महा) । 'सिरी ली [आ] राजा
 ब्रह्मवत की एक पत्नी (राज) । 'सुअ पु
 [सुन] इन्द्र का लडका जयल (दे ६ १६) ।
 'सेना ली [सेना] इद्र का सैन्य । २
 एक महानदी (ठा ५, ३) । 'इयु देला घणु
 (ह १ १८७) । 'उडह न [युध] इद्रघनु
 (छाया १ १) । 'उडहपम पु [युधमम]
 बानखीप का एक राजा (पउम ६ ६६) ।
 'मअ पु [मिय] राजा इद्रयुधमम का
 पुत्र, बानखीप का एक राजा (पउम ६, ६७) ।
 इद्र पुन [इन्द्र] एक देवविमान (देवेन्द्र १४१) ।
 इद्र वि [ऐन्द्र] इन्द्र-संबन्ध (छाया १, १)
 । २ न सल्लु का एक प्राचीन व्याकरण
 (आमम) ।
 इद्रगाइ पु [दे] साय म सलगन रहनवाले
 कीन विशेष (दे १, ८१) ।
 इद्रगि पु [दे] बर्क, हिम (दे १, ८०) ।
 इद्रगिधूम न [दे] बर्क हिम (दे १ ८०) ।
 इद्रडुलअ पु [दे] इन्द्र का उपायन (दे १,
 ८२) ।
 इद्रमह वि [दे] इ कुमारी म उलय । २ न
 कुमारता जीवन (दे १, ८१) ।
 इद्रमहसामुअ पु [दे इन्द्रमहसामुअ]
 कुता, धान (दे १ ८२ पाय) ।
 इद्रा ली [इन्द्रा] इ एक महानदी (ठा ५ ३) ।
 २ परछेद्र की एक भय-महिषी (छाया २) ।
 इद्रा ली [इन्द्रा] पूर्व दिशा (ठा १०) ।

इद्राणी ली [इन्द्राणी] इ इद्र की पत्नी (सुर
 १, १७०) । २ एक राज-पत्नी (पउम ६,
 २१६) ।
 इद्रासणि पु [इन्द्रासनि] एक नर-स्थान
 (देवेन्द्र २६) ।
 इन्द्रिंदिर पु [इन्द्रिन्दिर] भ्रमर भमर, भौरा
 (पाय २१ ७६) ।
 इन्द्रिय पुन [इन्द्रिय] इ आत्मा वा चिह्न, ज्ञान
 के साधन यून इन्द्रिय—धोर, चक्षु प्राण,
 जिह्वा त्वक् श्रोत्र मन त सास्त्रिं नो पयसंति
 इद्रिया' (दमरू १ १९ ठा ६) । २ भ्रम,
 शरीर के भ्रमत्व, नो नियम इत्यादि इद्रियाइ
 मणोहराइ मणोरयाइ धालोहरा निगमाइता
 मवइ (उत्तर १६) । 'अत्राय पु [प्राय] इद्रिया
 द्वारा होनवाला वस्तु का नियमात्मक ज्ञान विशेष
 (पएण १५) । 'आमाहणा ली [स्वमहणा]
 इन्द्रियो द्वारा उत्पन्न होनवाला ज्ञान विशेष
 (पएण १५) । 'जय पु [जय] इ इद्रिया
 का निग्रह इन्द्रिया को बर म रखना अथि
 परिहृि वरण नट्ट व प्रणेहि कीरद भसार ।
 ठा चम्मत्थोहि दइ, जइअय इद्रियजयमि
 (इद्रि ४) । २ लयो विशेष (पउ ३७०) । 'ट्टाय
 न [स्थान] इन्द्रियो का उपायन कारण,
 जसे श्री ३३य का आकाश चक्षु का तेज वगैरह
 (सूय १ १) । 'गउउत्तणा ली [निर्वर्त्तना]
 इन्द्रियो के आकार की निष्पत्ति (पएण १५) ।
 'णाय न [ज्ञान] इन्द्रिय-द्वारा उत्पन्न ज्ञान
 प्रमाण ज्ञान (वव १०) । 'त्य पु [थि]
 इन्द्रिय से ज्ञान योग्य वस्तु रूप रस-गंध
 वगैरह (ठा ६) । 'पञ्चति ली [पञ्चांगि]
 शक्ति विशेष जिसके द्वारा तीव्र वायुप्राप्ति
 के रूप में बदने इद्रे व्याहार की इद्रिया में रूप में
 परिवर्त्तन करना है (पएण १) । 'विचय पु
 [वचय] देखो जय (पया १८) । 'वसय
 पु [विपय] देखो टय (उत्तर ५) ।
 इद्रिय न [इन्द्रिय] लिण, पुरुष चिह्न (धर्मस
 ६८१) ।
 इद्रियाल देखो इद्र ताल (सुभा ११७ महा) ।
 इद्रियाल देखो इद्र जालि 'वह नोउक्य
 इद्रियाल' निर्वर्त्त विहिय म चरद दियालेण
 (सुभा २४२) तह एन इद्रियातो, दसद
 चणुमस्तराइ हवाइ (सुभा २४२) ।

इद्रियालीअ देखो इद्र जालिअ 'न भवामि
 ब्रह्म सखरो नरपुंगव । इद्रियालीओ' (सुभा
 २४३) ।
 इद्रिर पु [इन्द्रिर] भ्रमर, भमरा भौरा
 'भकासुहृदिराइ' (विक २६) ।
 इद्रिरा ली [इन्द्रिरा] लक्ष्मी (सम्मत २२६) ।
 इद्रावर न [इन्द्रीवर] कमल पद्म (पउम १०,
 ३६) ।
 इद्रु पु [इन्द्रु] चन्द्र चद्रमा (पाय) ।
 इद्रुत्तरगडिसम न [इन्द्रोत्तराउतसक] देव-
 विमान विशेष (सम ३७) ।
 इद्रु पुली [उन्द्रु] छूटा, मूयक (तात्) ।
 इद्रोयन न [इन्द्रुयान] विमान विशेष (सम
 ३७) ।
 इद्रोय देखो इद्र गोय (पाय २ ७६) ।
 इद्रोयत्त पु [दे] इद्रगोप, कीन विशेष (दे १,
 ८१) ।
 इद्र देखो इद्र=इद्र (पि २६८) ।
 इध न [विह] निराती चिह्न (ह १ १७७
 २ ५० कुमा) ।
 इधन न [इधन] इ इधन जलावन लकड़ी
 वगैरह दास वस्तु (कुमा) । २ भल्ल विशेष
 (पउम ७१, ९४) । ३ उदीपन उत्तेजन (उत्तर
 १४) । ४ पाताल पुमान, दण वगैरह जिससे
 फल पकाने जाते हैं (निबू १५) । 'शाला का
 [शाला] वह पद, जिसमें जलावन रख
 जाते हैं (निबू १६) ।
 इधिय वि [इधियत] उदीपित प्रज्वलित (इह
 ४) ।
 इद्र न [दे] प्रवेश बैठ इद्रमणए पवसलं'
 (विते ३४८३) ।
 इद्र देखो एक्क (कुमा सुभा ३७७ ह ४०
 पाय प्राय १० वस सुर १०, २१२ था
 १० व २१ रएण २ था ६ पउम ११,
 ३२) ।
 इद्रड पु [इद्रड] गृण विशेष (पएण २, ३
 पएण १) ।
 इद्रड वि [गडड] इद्रड दण का बना हुमा
 (थापा २, २, ३ १४) ।
 इद्रण वि [न] चोर चुरानवाता (दे १ ८०)
 'वाट्टवाम्भुगु इद्रयाओ जणमणेरुणाप्राउ ।
 वाट्टमरियाउ लोह' (न ७६) ।

इकार देवो एकारह (कम्म ६, ६६) ।

इकिक्क वि [एकैक] प्रत्येक (जी ३३, प्रासु ११८, सुर ८, ४२) ।

इकिळ्ळीन [एरुचत्तारिंशत्] एकचालीस, ४१ (कम्म ६, ५६) ।

इन्कुस न [दे] नीलोत्पल, कमल (दे १, ७६) ।

इक्क सक् [ईक्ष्] देखना । इक्कइ (उप) । इक्क (सूप १, २, १, ११) ।

इक्कअ वि [ईक्ष्] देखनेवाला (या ५५७) ।

इक्कअ न [ईक्ष्ण] प्रबलोकन, प्रेक्षण (पउम १०१, ७) ।

इक्कअउ देवो इक्कअरु (विक ६४) ।

इक्कल्लग वि [ऐक्ष्वाक] इक्ष्वाकु नामक प्रसिद्ध क्षत्रियवंश के उत्पन्न (विरा) ।

इक्कल्लग } पुं [इक्ष्वाकु] १ एकप्रसिद्ध क्षत्रिय इक्कल्लग } राजवंश, भगवान् श्वभद्रेश्वर का वंश । २ उस वंश के उत्पन्न (भग ९, ३३, कल्प, धीप, धनि १३) । ३ कोशल देश (शाया १, ८) । 'भूमि की [भूमि] प्रयोग्या नगरी (भाव २) ।

इक्कल्ल पुं [इक्ष्] १ ईल, ऊल (हि २, १७, वि ११७) । २ धान्य विशेष, 'वरट्टिका' नाम का धान्य (आ १८) । 'गण्डिया की [गण्डिका] गोदरी, ईल का दूधवा (भावा) । 'घर न [गृह] उद्गमन विशेष (विसे) । 'चोयग न [दे] ईल का दुधवा (भावा) । 'डाला न [दे] १ ईल की शाखा का एक भाग (भावा) । २ ईल का छेद (निबु १) । 'पेसिया की [पेसिया] गण्टरी (निबु १६) । 'सिन्ति की [दे] ईल का टुकड़ा (निबु १६) । 'मेरग न [मेरक] गण्टरी, बड़े हुए ऊल के गुच्छे (भावा) । 'ल ट्ट की [यट्टि] ईल की साड़ी, इनु-दण्ड (भावा) । 'वाड पुं [वाट्ट] ईल का छेद, 'गुपिर पि चण्णमाणो नत्तयओ इच्छावागममभिम' (भावा ३) । 'सालग न [दे] १ ईल की मन्ची शाखा (भावा) । २ ईल की गहर की छान (निबु १६) । देवो उच्छु ।

इग देला एक (कम्म १, ८, ३३, सुपा ४०६, या १४, नव ८, वि ४४४, या ४४, सम ७४) ।

इगयाललीन [एरुचत्तारिंशत्] एकचालीस, ४१ (कम्म ६, ५६) ।

इगल्लोसइम वि [एरुविंश] एकवीसवाँ (पव ४६) ।

इगुचाल वि [एरुचत्तारिंशत्] सत्था-विशेष, ४१—चालीस और एक (भग, पि ४४४) ।

इगुणीस वि [एकोनविंश] उन्नीसवाँ (पव ४६) ।

इगुणीस } की [एकोनविंशति] उन्नीस (पव इगुणीस } १८, कम्म ६, ५६) ।

इगुसट्टि की [एकोनपट्टि] उनसठ (कम्म ६, ६१) ।

इग्ग वि [दे] भीत, डरा हुआ (दे १, ७६) ।

इग्ग देवो एक (नाट) ।

इग्गिअ वि [दे] मरित, विरक्त (दे १, ८०) ।

इच्चा देखो इक्क ।

इच्चाइ पुन [इयादि] वगैरह, प्रयुति (जी ३) ।

इच्चेय म [इत्थेयम्] इस प्रकार, इस माफिक (सुम १, ३) ।

इच्छु सक् [इप्] इच्छा करना, चाहना । इच्छइ (उप, महा) । वक् इच्छुअ, इच्छु माण (उत्त १, ८८५) ।

इच्छुसक् [आप् + सु = ईप्स्] प्राप्त करने को चाहना । क्. इच्छियउर (वव १) ।

इच्छुकार देवो इच्छा कार (पडि) ।

इच्छुकार पुं [इच्छाकार] 'इच्छा' शब्द (पवा १२, ४) ।

इच्छा स्त्री [इच्छा] पक्ष की ग्यारहवीं राशि, 'ज्यति-भरराजिया य ग(७ इ)च्छा य' (सुज १०, १४) ।

इच्छा स्त्री [इच्छा] भूमिनाष, चाट, वाछा (उवा, प्रासु ४८) । 'रारपु [कार] स्वनीय-इच्छा, भूमिनाष (पडि) । 'छुद वि [च्छन्द] इच्छा के अनुकूल (भावा ३) । 'गुल्लेम वि [गुल्लेम] इच्छा के अनुकूल (पएण ११) ।

'गुल्लेमिय वि [गुल्लेमिक] इच्छा के अनुकूल (भावा) । 'पणिय वि [प्रणीत] इच्छानुसार निवा हुआ (भावा) । 'परिमाण न [परिमाण] परिमाण वस्तुओं के विषय की इच्छा का परिमाण करना, धातव का पाचवाँ घट (ठा ५) । 'मुच्छा स्त्री [मूच्छा]

प्रत्यासक्ति, प्रबल इच्छा (पएण १, ३) । 'लोभ पुं [लोभ] प्रबल लोभ (ठा ६) । 'लोभिय वि [लोभिक] महालोभ (ठा ६) । 'लोल पुं [लोल] १ महान् लोभ । २ वि. महा-लोभो (वह ६) ।

'इच्छा स्त्री [दित्सा] देने की इच्छा (भाव) । इच्छिय [इट्] इष्ट, अभिलषित, वाञ्छित (सुर ४, १२३) ।

इच्छिय वि [ईप्सित] प्राप्त करने की चाह । हुप्पा, अभिलषित (भग, सुपा ६२५) ।

इच्छिय वि [इच्छि] जिसकी इच्छा की गई हो वह (भग) ।

इच्छिर वि [एपित्] इच्छा करनेवाला (कुमा) ।

इच्छु देखो इक्कु (कुमा, प्रासु २३) ।

इच्छु वि [इच्छु] भूमिनाषी (या ७४०) ।

इज्ज सक् [आ + इ] जाना, भागमन करना । वक्. इज्जत्,

'विश्वयस्मि जो उवाएल, बोहमो कुप्पई नरो । दिक्कं सो सिरिभिरजंति, वदेण पत्तिहेए ।' (वस ६, २, ४) ।

इज्ज पुंन [इज्जा] यत्न, याग, 'निस्सङ्गा धम-इज्जि' (उत्त १२, ३) ।

इज्जा स्त्री [इज्जा] १ याग, पूजा । २ प्राज्ञापी का सम्प्रापन (पएण ठा १०) ।

इज्जा स्त्री [दे] माता, जननी (पएण) ।

इज्जिसिय वि [इज्जियिक] पूजा का अभिनायो (भग ९, ३३) ।

इज्जम भव [इप्] कमजना (हि २, २८) । वड. इज्जमाण (राम) ।

इट्ठम पुं [दे] मेवई, पुं शेष (विज्जि ० गा ४६१, ४६६) ।

इट्ठम स्त्री [इट्ठा] नीचे देखो (पएण २, २; मिड) ।

इट्ठम स्त्री [दे] साथ विशेष, सेव (विज्ज ४६१, ४६६, ४७२) ।

इट्ठाय देगा इट्ठा-भाय (मम्मत्त १३७) ।

इट्ठा स्त्री [इट्ठा] इंट (गड, ह २, ३४) । 'पाय, 'वाय पुं [पारु] इंटो का पचना । २ जहाँ पर इंट पराई जाती हैं वह स्थान (ठा ८) ।

इष्टाल ॥ [इष्टाल] ईंट का टुकड़ा (दस ५, १, ६५)।

इष्ट वि [इष्ट] १ भूमिलपित, भूमिप्रेत, वाञ्छित (विषा १, १; सुपा ३७०)। २ पुजित, सल्लत (मौप)। ३ व्यामोक्ष, सिद्धान्त से भविष्य (उर ८८२)।

इष्ट न [इष्ट] १ स्वाम्युपगत, स्व-सिद्धान्त (धर्मस ५१९)। २ न. उपो-विशेष, निर्वि-कृति-तप (सम्प्रोष ५८)। ३ यागविया (म ७११)।

इष्टि की [इष्टि] १ इच्छा, अभिप्राय, चाह (सुपा २४६)। २ याग-विशेष (समि २२७)।

इष्टि की [इष्टि] लीचाव, लीचना (मा १८)।

इडा की [इडा] शरीर के बाएँ भाग में स्थित नाडी (कुमा)।

इदुर न [दे] गादी (मौप ४७६)।

इदुरा } न [दे] रसोई इकने का बड़ा पात्र
इदुरय } (रय १४०)।

इदुरिया की [दे] मिष्टान्न-विशेष, एक प्रकार की मिठाई (सुपा ४८५)।

इह्द वि [अह्द] श्रद्धि-सम्पन्न (भग)।

इहिद की [अहिद] १ वैभव, ऐश्वर्य, सम्पत्ति (सुर ३, १७)। २ लक्ष्मि, शक्ति, सामर्थ्य (उत्त ३)। ३ पदवी (ठा ३४)। "गारव न [नीरव] सम्पत्ति या पदवी आदि प्राप्त होने पर अभिमान और प्राप्त न होनेपर उसकी लालसा (सम २, ठा ३, ४)। "पत्त वि [प्राप्त] श्रद्धालु (पणख ११; सुपा ३६०)। "म, "मत्त वि [मत्त] श्रद्धिवाला (निष्क १, ठा ६)।

इहिदसिय वि [दे] यावत्-विशेष, भोगन की एक जाति (भग ६, ३३ टी)।

इणं }
इणमो } म [एतत्] यह (दे १, ७६)।

इण देखो विण (से ४, ३५)।

इण देखो विण (से ८, ७१)।

इण्द न [चिह्द] बिह, निराश (मे १, १२, पद)।

इण्दा की [तुण्णा] तुण्णा, प्यास, सूखा (गा ६३)।

इण्दि म [इदानीम्] इस समय, इस वक्त (दे १, ७६, पात्र)।

इवरेतसयस्य पु [इवरेतसयस्य] सर्वशास्त्र-प्रसिद्ध एक दोष, परलार एक दूसरे की अपेक्षा (धर्मस ११५८)।

इति देखो इह (पि १८)। "हास पुं [हास] पूर्ववृत्तान्त, प्रतीतकाल की घटनाओं का विवरण, पुरावृत्त (कप)। २ पुराणशास्त्र (भग)।

इत्तए देखो इत्त क।

इत्तर वि [इत्तर] १ अल्प, थोड़ा (मणु)।

२ अल्प-आत्मिक, थोड़े समय के लिए जो किया जाता हो वह (ठा ६)। ३ थोड़े समय तक रहनेवाला (या १६)। "परिमग्धा की [परिमग्धा] थोड़े समय के लिए रस्ती हुई बेरया, रस्तेन, रस्ता आदि (भाष ६)। "परिमग्धा की [परिमग्धा] देखो "परिमग्धा (भाष ६)।

इत्तरिय वि [इत्तरिक] ऊपर देखो (निचू २; भाषा-उवा, पंचा १०)।

इत्तरिय देखो इत्तर (सूम २, २)।

इत्तरी की [इत्तरी] थोड़े काल के लिए रस्ती हुई बेश्या आदि (पंचा १)।

इत्तहे (कप) म [अत्र] यहा पर (कुमा)।

इत्ताहे म [इदानीम्] इस समय, इस वक्त, अभी (भाष)।

इत्ति देखो इह (कुमा)।

इत्तिय वि [इयत्, एतावत्] इतना (हे २, १५६, कुमा, प्रासू ११८ पद)।

इत्तरिय वि [इत्तरिक] अल्पकालिक, जो थोड़े समय के लिए किया जाता हो (स ४६; विसे १२६५)।

इत्तिल देखो इत्तिय (हे २, १५६)।

इत्तो देखो इत्तो (या १७)।

इत्तोअ देखो इत्तोअ (या १४)।

इत्तोप्प [दे] यहाँ से लेकर, इस प्रभुति (पात्र)।

इत्थ म [अत्र] यहाँ, हममें (कप, कुमा, प्रासू १२१)।

इत्थ म [इत्थम्] इस तरह, इस प्रकार (पणख २)। "थ वि [इत्थ] नियत धारार-वाला, निर्गमित (योग १)।

इत्थंथ वि [इत्थंथ] इस तरह रहा हुआ (दस ६, ४, ७)।

इत्थय्य पुं [इत्थय्य] वह शर्थ (भग)।

इत्थय्य पुं [इत्थय्य] की-विषय (पि १६२)।

इत्थय्य देखो इत्थ (या १२)।

इत्थिय की [इत्थि] महिला, नारी, 'इत्थीणि वा पुरिमाणि वा' (पाचा २, ११, ३)।

इत्थिय } की [इत्थि] जनाना, औरत, महिला
इत्थी } (सूम २, २, हे २, १३०)। "कला

की [कला] की के गुण, की की सीखने योग्य कला (जं २)। "कहा की [कथा] की-विषयक वास्तवताप (ठा ४)। "गणुसंग पुंन [गणु-सक] एक प्रकार का नमुसक (निचू १)।

"णाम न [नामन्] कर्म-विशेष, जिसके उदय से कीव की प्राप्ति होती है (यामा १, ८)। "परिसह पुं [परिपह] ब्रह्मचर्य (भग ८, ८)। "विप्पजह वि [विप्रजह] १ की का परित्याग करनेवाला। २ पु. मुनि, साधु (उत्त ८)। "वेद, "वेय पुं [वेद] १

की को पुरुष सग की इच्छा। २ कर्म-विशेष, जिसके उदय से की की पुरुष के साथ भोग करने की इच्छा होती है (मग, पणख २२)।

इत्थेण वि [इत्थेण] जिनको का समूह, की-जन, 'सज्जसि किं न महती दीणामो मारित्तियेण' (उप ७२८ टी)।
इत्थाणि देखो इत्थाणि (भाषा)।
इत्थाणि (शौ) देखो इत्थाणि (प्रासू ८७)।
इत्थाणी } देखो इत्थाणि (समि १६)।
इत्थाणी }

इत्तिचित्त (शौ) न [इत्तिचित्त] इतिहास (मोह १२८)।

इदुर न [दे] धान्य रखने का एक तरह का पात्र (मणु १५१)।

इदुद पुं [दे] भीष, मधुकर (दे १, ७६)।
इदुगिगपूम न [दे] तुहिन, हिम (पद)।
इदुि देखो इदुि (पद)।

इध (शौ) देखो इह (हे ४, २६८)।
इध पुं [इधय्य] पनी, भास (पात्र)।

इध पुं [दे] बणिक्, व्यापारी (१, ७६)।
इध पुं [इध] हाथी, हल्लो (जं २, कुमा)।

इधपाल पुं [इधपाल] महापत (सम्मत १२७)।

इध ॥ [इधम्] यह (दे ३, ७२)।

इमेरिस वि [एतादृश] ऐसा, इससे जैसा (सण) ।
 इय देखो इम (महा) ।
 इय देखो इइ (पद्. हे १, ६१, शीप) ।
 इय न [दे] प्रवेश, पेट (आवम) ।
 इय वि [इत] १ गत, गया हुआ (सूय १, ६) । २ प्राप्त, 'उदयमिमो जस्तीमो जयमिम चंदुव्य जिणचंदो' (साधं ७१, विते) । ३ ज्ञात, जाना हुआ (आचा) ।
 इयणिहं वि [इदानीम्] हाल में, इस समय, अधुना (ठा, ३) ।
 इयर वि [इतर] १ अन्य, दूसरा (जी ४६; प्रामु १००) । २ हीन, नम्र (आचा १, ६, २) ।
 इयरहा वि [इतरथा] अन्यथा, नहीं तो, अन्य प्रकार से (कम्म १, ६०) ।
 इयेरेयर वि [इतरेतर] अन्योन्य, परस्पर (राज) ।
 इयाणि १ भ्र [इदानीम्] हाल में, इस इयाणि १ समय (भा, वि १४४) ।
 इर देखो इर (हे १, २६, नाट) ।
 इरमंदिर पुं [दे] नरम, ऊँट (हे १, ८१) ।
 इराय पुं [वे] हाथी (हे १, ८०) ।
 इरायदी (सो) की [इरायती] नदी-विशेष (नाट) ।
 'इरि देखो गिरि, 'विमहरिपवरसिहरे' (पउम १०, २७) ।
 इरिण न [इरण] करना, श्रण (चाट ६६) ।
 इरिण न [दे] कनक, मुक्ता (हे १, ७६; गउड) ।
 इरिय सक् [इर] जाना, गति करना । इरि-यामि (उत्त १८, २६; मुख १८, २६) ।
 इरिया की [दे] कुटी, कुटिया (हे १, ८०) ।
 इरिया की [इर्या] गमन, गति, चलना (आचा) । 'वद पुं [पथ] १ मार्ग में जाना (भीष ५४) । २ जाने का मार्ग, रास्ता (भग ११, १०) । ३ बैजल शरीर से होने-वाली क्रिया (सूय २, २) । 'वहिय न [पथिक] बैजल शरीर को चेष्टा से होनेवाला वर्णकम, वर्ण-विशेष (सूय २, २; नम ८, ८) । 'वहिया स्त्री [पथिकी] व्याक-रहित बैजल कायिक क्रिया, क्रिया-विशेष

(पडि; ठा २) । 'समिड स्त्री [समिति] विवेक से चलना, दूसरे जीव को किसी प्रकार की हानि न हो ऐसा उद्योग-पूर्वक चलना (ठा ८) । 'समिय वि [समित] विवेक-पूर्वक चलनेवाला (विपा २, १) ।

इल पुं [इल] १ वाद्ययंत्रों का वास्तव्य स्वनाम-व्यात एक गृहपति—गृहण्य (आया २) । २ न. इसादेवी के मिहसतन का नाम (आया २) । 'सिरी स्त्री [श्री] इल नामक गृहस्थ की स्त्री (आया २) ।

'इल्लंतअ देखो इल्लंत (मे ३, ४७) ।
 इला स्त्री [इला] १ पृथिवी, भूमि (पे २, ११) । २ धरस्त्र की एक भद्र-महिषी (आया २) । ३ इल नामक गृहस्थ की पुत्री (आया २) । ४ रथक पर्वत पर रहनेवाली एक दिव्यकुमारी (ठा ८) । ५ राजा जनक की माता (पउम २१, १३) । ६ इलवर्धन नगर में स्थित एक देवता (आवम) । 'कूड न [कूट] इलादेवी के निगत-भूत एक शिवर (ठा ४) । 'पुत्त पुं [पुत्र] इलादेवी के प्रसाद से उत्पन्न एक धेनु-पुत्र, जिसने नदीनी पर मोहित होकर तट का पेड़ा बीछा घोर घ्नत में नाच करते-करते ही शुद्ध भावना से केवलज्ञान प्राप्त कर मुक्ति पाई (आयू) । 'बइ पुं [पति] एसाप्य गोत्र का भादि पुत्र (एदि) । 'वडंसय न [वितंसरु] इलादेवी का प्रसाद (आया २) ।

इलाइमुत्त देखो इला-पुत्त, 'पनो इलाइमुत्तो चित्ताइमुत्तो बा महुत्तुलो' (पडि) ।

इलिया स्त्री [इलिका] शुद्ध जीव-विशेष, बीनी घोर चावल में उत्पन्न होनेवाला कीट-विशेष (जी १०) ।

इली स्त्री [इली] शब्द विशेष, एक जाति की सनवार की तरह का हथियार (पह १, ३) ।

इल पुं [दे] १ प्रतीहार, चपरासी । २ सविन, दाँती । ३ वि. वरिद्ध, गरीब । ४ कोमल, मुटु । ५ बाला, कृष्ण वर्णनाला (हे १, ८२) ।

इलपुत्त पुं [दे] व्याघ्र, शेर (वंड) ।

इल्लि पुं [दे] १ शार्ङ्ग, व्याघ्र । २ विह । ३ छाता (हे १, ८३) ।

इल्लिय वि [दे] आसिक, उप्पेणपुल्लाविमहल-

भपुल्लासवेल्लिममल्लिमाप्रसत्तलएण' (विम २३) ।

इल्लिया स्त्री [इल्लिमा] शुद्ध जीव-विशेष, घ्नत में उत्पन्न होनेवाला कीट-विशेष (जी १६) ।

इल्लीर न [दे] १ भासन-विशेष । २ छाता । ३ रत्नमाला, गृह-द्वार (हे १, ८३) ।

इव अ [इय] इन भयों का चोटक भयम्— १ उपमा । २ मादर, तुलना । ३ उत्प्रेक्षा (हे १, ८२; सण) ।

इसअ वि [दे] विस्तीर्ण (पद्) ।

इसणा देखो एसणा (रंभा) ।

इसागी स्त्री [एसानी] ईशान कौण, पूर्व घोर उत्तर के बीच की दिशा (नाट) ।

इसि पुं [स्रुपि] १ मुनि, साधु, ज्ञानी, महात्मा (उत्त १२; धवि १४) । २ श्रुतिपादि-निकाय का दक्षिण दिशा का इन्द्र, इन्द्र-विशेष (ठा २, ३) । 'गुत्त पुं [गुम] १ स्वनाम-व्यात एक जैन मुनि (कप) । २ न. जैन मुनियों का एक कुल (वप) । 'गुत्तिय न [गुमीय] जैन मुनियों का एक कुल (वप) । 'दास पुं [दास] १ इस नाम का एक षष्ठ, जिसने जैन दीक्षा ली थी । २ 'भद्रुत्तोरवाइसा' सूत्र का एक अभ्ययन (भद्र २) । 'दत्त, 'विण्ण पुं [दत्त] एक जैन मुनि (कप) । 'पालिय पुं [पालिन्] ऐरवत क्षेत्र के पाँचवें तीर्थंकर का नाम (सम १४३) । 'पालिया स्त्री [पालिया] जैन मुनियों की एक शाखा (कप) । 'भद्रुत्त पुं [भद्रपुत्र] एक जैन थावक (सम ११, १२) । 'भासिय न [भापित] १ भगवन्मो के प्रतिरिक्त जैन आचार्यों के बनाए हुए उत्तराध्ययन भादि शासन (आवम) । २ 'प्रश्नभावरण' सूत्र का तृतीय अभ्ययन (ठा १०) । 'वाइ, 'चाइय, 'वादिय पुं [वादिन्] व्यक्तियों को एक जाति (भीष, पह १, ४) । 'वाल पुं [पाल] १ श्रुतिपादि-व्यक्तियों का उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३) । २ पाचवें वाहुदेव का पूर्वमेवीय नाम (सम १४३) । 'पालिय पुं [पालिन्] श्रुतिपादिव्यक्तियों के एक इन्द्र का नाम (देव) ।

इसिण पुं [इसिन्] प्रचार्य देश विशेष (आया १, १) ।

इसिनय वि [इसिनरु] इसिन-नामक अनायें
देरा मे उत्पन्न (खाया १, १, इक) ।

इसिया की [इपिका] सलाई, शलाका (सुप्र
२, १) ।

इसु पुं [इयु] बाण (पाप्र) ।

इसस वि [एयत्] १ भविष्य काल, 'जुत
सपयमिस्स' (बिते) । २ होनेवाला, भावी,
'समरइ भूय मिस्स' (बिते ५०८) ।

इसर देवा ईसर (प्राप्र, पि ८७, ठा २, ३) ।

इसरिय देवो ईसरिय (पउम ५, २७०, सम
१३, प्राप् ७५) ।

इसा की [ईप्पा] श्रोत, मसूया (उत्त २४,
२३) ।

इसास पुं [इव्वास] १ धनुष, कायूक, शरा-
सत । २ बाण लोपक, तीरंदाज (प्राक्) ।

इह पुं [इम] हाथी, हस्तो (प्राक्) ।

इह म. [इदानीम] इस समय, अबुना (प्राक्
८०) ।

इह य [इह] यहाँ, इस जगह (भावा, स्वप्न
२२) ।

इह पारलोइय वि [एहिकारलौकिक]

इस और परलोक से सम्बन्ध रखनेवाला (स
१५६) ।

भगिय वि [एहभगिय] इस

जन्म संबन्धी (भग) ।

लोअ, 'लोअ पु

[लोअ] वर्तमान जन्म, मनुष्य लोक (ठा ३,
प्राप् ७५, १५३) ।

लोअ, 'लोअय वि [एह-
लौकिक] इस जन्म-संबन्धी, वर्तमान जन्म-

संबन्धी (वण, सुपा ४०८, परह १, २, स
४८१), 'इहलोयपारलोइयमुहाइ सम्वाइ तेण
दिनाइ' (स १५४) ।

इहअ [उपर देवो (पउ: पउम २१, ७) ।

इहई [उदानीम] हान, संव्रति, इस समय

(पाप्र) ।

इह देवो इह = इह (भीप, था १४) ।

इहरहा देवो इयर हा (उत्त ८६०, भस ३६,
इहरा } हे २, २१२) ।

इहरा देवो इहई = इदानीम (पउ३) ।

इहामिय देवो इहामिय (पि १४) ।

इहि य [इह] यहाँ (रमा) ।

॥ इस सिरिपाइअसहमहणवे इमारहसकत्तणो
एण तहो सरणो समत्तो ॥

ई

ई पु [ई] प्राकृत वर्णमाला का चतुर्थे वर्ण,
स्वर विशेष (प्राप्ता) ।

ईअ म [एत्त, इदम्] यह (पि ४२६,
४२६) ।

ईअ म [इति] इस तरह, 'ईम मणोविस्सईय'
(बिते ५१४) ।

ईअ पुंकी [ईति] धाव्य नौदर को नुकसान
पहुँचानेवाला बूढ़ा भावि प्राणि-गण (भीप) ।

ईअस वि [ईहारा] ऐसा, इस तरह का, इसके
ममान (महा ३ १५) ।

ईअह म [प्रा] तुम होना । ईअहद (प्राक्
६५) ।

ईअ देवो नीअ = कोट 'दुईअण्णिअईअमारि-
पद' (गा ३०) ।

ईअ की [ईअ] स्तुति (वेद्य ८६८) ।

ईण वि [ईण] प्रार्थी, भक्तियायी, 'पाहाअड
वेव निराममोणे' (सुप्र १, १०, ८) ।

ईण देवो दीण (से ८, ६१) ।

ईति देवो ईद (सम ६०) ।

ईदिस देवो ईदिस (न १४०, धमि १८२,
नण्णु) ।

ईर सक [ईर] १ प्रेरणा करना । २ कहना ।
३ गमन करना । ४ फटना । ईरइ (बिते
१०१०), छ 'ठाएणगमणएणमोणजुअण-

जुअतरनिवाविआए दिट्ठीए ईरियअ' (परह
२, १) ।

मूक. ईरिद (सी) (प्रमि ३०) ।

ईरिय वि [ईरित] प्रेरित (बिते ११४४) ।

ईरिया देवो इरिया (सम १०; भीप ७४८,
सुर २, १०४) ।

ईरिस देवो ईदिस (कुमा, स्वप्न ५५) ।

ईस न [दे] झूटा, खोना, कीलक (दे १,
८४) ।

ईस सक [ईप्] ईर्ष्या करना, द्वेष करना ।
ईसामति (गा २४०) ।

ईस पु [ईय] देवो ईसर = ईवर (कुमा,
पउम १०२, ५८) । २ न. ऐश्वर्य, प्रवृत्ता

(परण २) ।

ईस देवो ईसि (नण्णु) ।

ईसअ पु [दे] रोक, हरिण की एक जाति
(दे १, ८४) ।

ईसस्थ न [इयअसाअ] धनुर्बंद, बाण-
विधा (भीप, परह १, ५), 'विमाराणाय-

कुसवा ईयअयत्तमा बीरा' (पउम ६८, ४०,
पि ११७) ।

ईसर पु [दे] मलय, कामदेव (दे १, ८४) ।

ईसर पु [ईसर] १ परमेश्वर, प्रभु (ह १,
८४) । २ महादेव, शिव (पउम १०६, १२) ।

३ स्वामी, पति (कुमा) । ४ मायक, मुखिया

(विपा १, २) । ५ देवतामा का एक धातान,

बेलघर देवो का धातान विशेष (सम ७३) ।

६ एक पातान कलश (ठा ४, २) । ७ धाव्य,

पत्नी (सुपा ४३६) । ८ ऐश्वर्य शाली, वैभवी

(जीव ३) । ९ पुत्रराज । १० माएअनिअ,

साम्प्रत-पाना । ११ मन्त्री (पण्णु) । १२

अन्ध विशेष, भूतवादि-निपाय का द्रव्य (ठा २,

३) । १३ पताल-विशेष (ठा ४) । १४ एव

राजा का नाम । १५ एव जैन मुनि (महापि
६) । १६ यज्ञ विशेष (पर २७) ।

ईसर पु [ईश्वर] अणिमा आदि आठ प्रकार के ऐश्वर्य से सम्पन्न (अणु २२) ।

ईसरिय न [ऐश्वर्य] वैभव, प्रभुता, ईश्वरपन (पउम ८६, ६३) ।

ईसा ली [ईपा] १ लोचपातो की अग्रमहि-
मियों की एक पापंदा (ठा ३, २) । २ पिशा-
चेद्र की एक परिपद (जीव ३) । ३ हल का
एक काष्ठ (दे २, ६६) ।

ईसा ली [ईपा] ईर्ष्या, द्रोह (गउड) । "रोस
पु [रोप] क्रोध, गुस्सा (कप्पु) ।

ईसाइय वि [ईर्ष्यायित] जिसको ईर्ष्या हुई
हो वह (सुपा ६१) ।

ईशान पु [ईशान] १ देवलोक-विशेष, दूसरा
देवलोक (सम २) । २ दूसरे देवलोक का इन्द्र
(ठा २, ३) । ३ उत्तर धीर पूर्व के बीच की
विद्या, ईशान कोण (सुपा ६८) । ४ गृहार्त-
विशेष (सम ४१) । ५ दूसरे देवलोक के
निवासी देव (ठा १०) । ६ प्रभु, स्वामी
(विसे) । ७ वडिसग न [वससक] विमान-
विशेष का नाम (सम २५) ।

ईशान पु [ईशान] भद्रोपन वः ग्यारहवीं
गृहार्त (सुज १०, १३) ।

ईसाणा ली [ऐशानी] ईशान कोण (ठा
१०) ।

ईसाणी ली [ऐशानी] १ ईशान-कोण । २
विद्या-विशेष (पउम ७, १४१) ।

ईसालु वि [ईर्ष्यालु] ईर्ष्यालु, प्रसहियु,
द्वेषी (महा, मा ६३४, प्राप्) । ली. "णी
(पउम ३६, ४४) ।

ईसास देलो इस्सास, 'ईसासट्ठाण' (निर. पि
१६२) ।

ईसि अ [ईपत्त] १ बोधा, अल्प (पएण
३६) । २ पृथिवी-विशेष, मिट्टी-क्षेत्र, युक्त-
भूमि (सम २२) । ३ पठमार वि [प्राग्भार]
बोधा अवनत (पचा १८) । ४ पठभारा ली
[प्राग्भारा] पृथिवी-विशेष, मिट्टि क्षेत्र
(ठा ८, सम २२) ।

ईसिअ न [ईर्ष्यित] १ ईर्ष्या, द्वेष (गा
५१०) । २ वि. जिसपर ईर्ष्या की गई हो
वह (दे २, १६) ।

ईसिअ न [दे] १ शील के सिर पर का पत्र-

पुट, भीतो की एक तरह की पगड़ी । २ वि.
वशीकृत, वश किया हुआ (दे १, ८४) ।

ईसिं देतो ईसिं (महा, मुर २, ६६; कम,
ईसीं) पि १०२) ।

ईह सक् [ईह, ईह] १ देखना । २
विचारना । ३ चेष्टा करना । ईहए (विसे
५६१) । वक् ईहंन, ईहमाण (गउड, सुपा
८८, विसे २५८), संह. 'अनिभाणो ईहिं-
ऊण मइयुव' (पच ८६; विसे २५७) ।

ईहण न [ईहण] मोचे देखो (मात्त १) ।

ईहा ली [ईहा] १ विचार, ऊहापोह, विमर्श
(णाय १, १, सुपा ५७२) । २ चेष्टा, प्रयत्न
(सोप ३) । ३ मति-ज्ञान का एक भेद (पएण
१५, ठा ५) । ४ इच्छा (स ६१२) । ५ मिग,
'मिय पु [सुग] १ वृक्ष, भेकिया (णाय १,
१, भग ११, ११) । २ नाटक का एक
भेद (राम) ।

ईहा ली [ईहा] अवलोकन, विलोकन (सोप) ।

ईहिय वि [ईहित] चेष्टित (सम १, १, ५) ।
२ विमर्शित, विचारित, ईहा-विषयीकृत (विसे
२५७) ।

॥ इम सिरिपाइअसदमहण्णवे ईसायइसदसकलणो
लुणम चउणो तरणो समतो ॥

उ

उ पु [उ] प्राहृत वर्णमाला का पञ्चम अक्षर,
स्वर-विशेष (प्राभा) । २ उपयोग रखना,
ख्याल करना, 'उत्ति उवभोगकरणे' (विसे
३, १६८) । ३ गति क्रिया (आयम) ।

उ ङ [उ] निम्नोक्त अर्थों का सूचक अव्यय—
१ संबोधन, आमन्त्रण । २ कोप-वचन,
क्रोधोक्ति । ३ अनुकम्पा, दया । ४ निषेध,
दुष्कृत । ५ विस्मय, आश्चर्य । ६ अगीकार,
स्वीकार । ७ प्रश्न, पृच्छा (हि २, २१७) ।

उ म [उ] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१
विशेषण । २ कारण (वम १) ।

उ अ [उ] इन अर्थों का शीतक अव्यय—१
समुच्चय, और (कप्प) । २ अवधारण, निश्चय
(आयम) । ३ किन्तु, परन्तु (ठा ३, १) । ४
नियोग, आज्ञा । ५ प्रशंसा । ६ निमित्तग्रह ।
७ शका की निवृत्ति (जव) । ८ पावपूर्ति के
लिए भी इसका प्रयोग होता है (जव) ।

उ देखो उव, 'उभो उणे' (पइ २, १, ६८) ।

उ अ [उत्त] निम्नोक्त अर्थों का सूचक अव्यय—
१ ऊँचा, ऊर्ध्व 'उत्तमत' (आयम) । २ विप-
रीत, उलटा, 'उत्तम' (विसे) । ३ अभाव,
रहितता, 'उत्तर' (णाय १, १) । ४ ज्यादा,

विशेष, 'उत्तविय' (उपपु ७८, विसे ३५७६) ॥

उअ ङ [दे] विलोकन करो, देखो (दे १, ८६
टी. हे २, २, ११) ।

उअ ङ [उत्त] इन अर्थों का सूचक अव्यय—
१ विकल्प, अथवा । २ वितर्क, विमर्श (कुपा) ।
३ प्रश्न, पृच्छा । ४ समुच्चय । ५ बहुत, मति-
शय (हे १, १७२) ।

उअ ङ [दे] शब्द, सरल (पइ) ।

उअ देखो उव (गा ५०, से ६, ६) ।

उअ न [उद्] पानी, जल । 'सिंधु पु
[सिन्धु] समुद्र, सागर (पि ३४०) ।

उअ वि [उदकृन्] उत्तर, उत्तर दिशा में स्थित । °महिहर पु [°महिघर] हिमाचल-पर्वत (गउउ) ।

उअअ न [उदकृ] पानी, जल (गा ५३, से ६, ८८) ।

उअअ देखो उदय (से १०, ३१) ।

उअअ न [उदर] पेट, उदर (से ६, ८८) ।

उअअ वि [दे] शत्रु, सरल, सीधा (दे १, ८८) ।

उअअद (शौ) देखो उदयग (नाट) ।

उअआअ वि [उपआरकृ] उपकार करने वाला (गा ५०) ।

उअआर वि [उपआरिन्] ऊपर देखो (विक् २५) ।

उअहकृन् वि [उपजीव्य] प्राथय करने योग्य, सेवा करने योग्य (से ६, ६) ।

उअऊह सक [उप + गहृन्] भालिगन करना । सक. उअऊहेऊण (वि ५८६) ।

उअएस देखो उवएस (गा १०१) ।

उअँचण न [उदकृचन] १ ऊँचा पँचना । २ उबने का पाप, माफ़ाऊ पाप (दे ४, १११) ।

उअथिद (शौ) वि [उदञ्चित] १ ऊँचा उठाना हुआ, ऊँचा फेंका हुआ (नाट) ।

उअत पु [उदन्त] हनीवत, वृत्तान्त, समाचार (पाम. प्रामा) ।

उअकिद (शौ) वि [उपकृत] जिसपर उपकार किया गया हो वह (वि ६४) ।

उअकिअ वि [दे] पुनरुह, आगे किया हुआ (दे १, १०७) ।

उअगअ देखो उवगय (गा ६४४) ।

उअचित्त वि [दे] भगवत, विवृत (दे १, १०८) ।

उअजीवि वि [उपजीविन्] भासित (मणि १८६) ।

उअग्माअ देखो उवग्माय (नाट) ।

उअट्टी खी [दे] नीची, खी के कटि-वस्त्र की नाडी, 'उअट्टी उअमो नीची' (पाथ) ।

उअट्टिअ देखो उवट्टिय (प्राप) ।

उअणिअ } देखो उवणीय (प्राह ६) ।
उअणीअ }

उअण्णास देखो उअण्णास (नाट) ।

उअत्तत देखो उवट्ट = उद + वृत् ।

उअत्थाण देखो उवट्टाण (नाट) ।

उअत्थिअ देखो उवट्टिय (से ११, ७८) ।

उअदिट्ठ देखो उवडिठ्ठ (नाट) ।

उअमुत्त देखो उवमुत्त (रंभा) ।

उअभोग देखो उवभोग (नाट) ।

उअमिञ्जत वक्र [उपमीयमान] जिसकी

तुलना की जाती हो वह (काप्र ८६६) ।

उअर न [उदर] पेट (कुमा) ।

उअरि } देखो उअरि (गा ६४, से ८,
उअरि } ७५) ।

उअरी खी [दे] शाकिनी, देखो विरोध (दे १, ६८) ।

उअरुन्म देखो उवररुन्म । उअरुन्मदि (शौ) (नाट) ।

उअरोअ } देखो उअरोह (प्राप, नाट) ।
उअरोह }

उअरुद्ध देखो उवलद्ध (नाट) ।

उअरिठ्ठअ न [अपविष्टकृ] भासन (प्राह १०) ।

उअविय वि [दे] वच्छिष्ट, 'इहय मे णिसि जत उअविय चेव युस्मादी' (वृह १) ।

उअसप्प देखा उवसप्प । उअसप्प (नसि ५१) ।

उअसम } देखो उवसम = उप + सम ।
उअसम }

उअसमइ उवसमइ (प्राह ६६) ।

उअह य [दे] देखो, देखिए (दे १, ६८, प्राप) ।

उअहस देखो उवहस । उअहसद (प्राह ३४) ।

उअहार देखो उवहार (नाट) ।

उअहारी खी [दे] योगी, बोहनेवाली खी (दे १, १०८) ।

उअहि पु [उदधि] १ समुद्र, मागर (गउउ) ।
२ स्वनाम-स्वात एक विनायर राजकुमार (पउम ५, १६६) । ३ बाल परिमाण, साम-रोग्य (सुर २ १३६) । ४ स्वनाम-स्वात एक जैन पुत्रि (पउम २०, ११७) । देखो उदधि ।

उअहि देखो उअहि = उधि (पव ६) ।

उअहुत्तत देखो उवमुत्त ।

उअहोअ देखो उवभोग (अवी ३० नाट) ।

उआअ देखो उवाय (नाट) ।

उआअण देखो उआयण (मान ४६) ।

उआर देखो उआल (सुपा ६०७, वण्ण) ।

उआर देखो उआर (पद, गउउ) ।

उआलम देखो उवालम = उपा + लम् । क.

उआलंअणिञ्ज (नाट) ।

उआलंम देखो उवालंम = उपा + लम् (गा २०१) ।

उआलम देखो उआलंम = उपा + लम् । उआलमेणि (वि ८२) ।

उआलि खी [दे] श्वत्स, शिरोमूषण (दे १, ६०) ।

उआस वि [उदास] नीचे देखो (पिंग) । उआस देखो उआस = उपा + मास् । कवह-

उआमिञ्जण (हास्य १७०) ।

उआसीण वि [उदासीन] १ उदासी, दिन-गौर । २ मध्यस्थ, तन्त्र्य (से ५४६, नाट) ।

उआहरण देखो उदाहरण (मान ३) ।

उअ सक [उप + इ] समीप जाना । उएह, उएव (वि ४६३) ।

उअ भक [उद + इ] उचित होना । उएह (रंभा) । वक्र. उअयत (रंभा) ।

उअ देखो उअ, 'अमोवि हुनु उअमो सरिसा परं वे' (रंभा) । °राय पु [°राज] वसत शत्रु (रंभा) ।

उअ वि [उदित] १ उदय प्राप्त, उदगत (सुपा १२७) । २ उक्त, कथित (विने २३३, ८५६) । 'परकम पु [°पराक्रम] इपाहु-बंश के एक राजा का नाम (पउम ५, ६) ।

उअ वि [उचित] योग्य, लायक (से ८, १०३) ।

उअतण न [दे] उत्तरीय वस्त्र, चादर (दे १, १०३, बुमा) ।

उअट्ठ वि [उपेठ्ठ] इन्द्र का छोटा भाई, विष्णु का नामन भवता, जो स्रष्टा के गर्भ से हुआ था (दे १ ६) ।

उअट्ठ वि [अपेठ्ठ] हीन, शत्रुविन, आउविन-श्वत्सवस्मउअट्ठउअदेव (एपाया १, ८) ।

उअण्ण देखो उअण्ण (आ ५, विने ५०३) ।

उअण्ण वि [उदीच्य] उत्तर दिशा सम्बन्धी, उत्तर दिशा में उत्पन्न (प्रायम) ।

उअण्ण देखो ओउण्ण (सम्मत ७७) ।

उअयत देखा उअ = उद + द ।

उअण्ण देखो उदीच (राय) ।

उईर देखो उदीर, 'उईरि मरुती' (पा २७) । वट्ट उईरत (सुफ १३) । वट्ट-उईरिद्धा (सुप १, ६) ।

उईरण देखो उदीरण (ठा ५; पुष्क १६५)।

उईरणया } देखो उदीरणया (विसे २५१५,
उईरणया } दो, नम्प १५८, विसे २६६२)।

उईरिय देखो उदीरिय (पुष्क २१६)।

उउ वि [ऋतु] १ ऋतु, दो मास का काल विशेष, वसन्त आदि ऋतु प्रवार का काल (श्रीप, प्रन्त ७), 'उउए', 'उउह' (वप्य)। २ छी-मुसुम रजो वर्योन, रजो-वर्ष (ठा ५, २)। 'बद्ध पुं' [बद्ध] शीत और उष्णकाल, वर्षा-काल के प्रतिरिक्त मास मास का समय (श्रीप २६; २६५; ३५८)। 'मास पुं' [मास] १ आषाढ मास (बव १ दो)। २ चौम दिनवाला मास (सम)। 'य वि [अ] ऋतु में उत्पन्न, समय पर उत्पन्न होनेवाला (पएह २, ५, शाया १, १), 'उपमपुल्ल-पञ्चमपुल्लउउपमल्लाएणैवएणिहीसु। गंधेसु रजजमाणा एतंति भाणिहियवट्टा' (शाया १, २७)।

'संधि पुंस्त्री' [संधि] ऋतु का सन्धि-काल, ऋतु का अन्त समय (भावा)। 'संवच्छर पुं' [संवत्सर] वर्ष-विशेष (ठा ५)। देखो उह = उउ।

उउवर देखो उवर = उदुम्बर (कुमा, हे १, २७०, पट्ट)।

उउवहिय न [ऋतुपक्ष] मास-कल्प, एक मास तक एक स्थान में साधु का निवास-गुहान (भावा २, २, ७)।

उउल्ल } पुन [उदुल्ल] उल्लल, गुल्ल
उउल्ल } (कुमा, पट्ट; हे १, १७१)

उउट्ट पुं [ट्ट] शिल्प विशेष (भणु १६६)।

उओगिअ वि [ट्ट] सम्बद्ध, समुक्त (पट्ट)।

उं भ [ट्ट] इन भयो का सूचक अर्थ—१ शेष, निम्न। २ विषय। ३ खेद। ४ विवर्त। ५ सूचन (प्राक् ७६)।

उंय भक् [नि + त्रा] नीद लेना। उंयइ। (हे ५, १२)।

उंयहिआ स्त्री [ट्ट] वक्रधारा (दे १, १०६)।

उल्ल पुन [उल्ल] मित्रा (सूय १, २, ३ १५)।

उल्ल पुं [उल्ल] मित्रा, माधुकरी (उप ६७७; श्रीप ४२४)।

उल्लअ पुं [ट्ट] वस्त्र धारण का काम करने वाला शिल्पी, छापी, जो वस्त्र धारण करता है, छोट बनाता है वह (दे १, ६८; पाय)। उंय सक् [सिच्] सोचना, छोट बनाना। उंयजा (राज)। भवि—उंयिस्सइ (सुपा १३६)।

उंय सक् [युज्] प्रयोग करना, जोड़ना, 'अहमवि उंयमि तह विपि' (धम्म ८ टी)। उंयजयण न [उंयजयण] मोन विशेष, जो वसिष्ठ-मोय की एक शाखा है (ठा ७)।

उंयजिअ वि [सिक्] सिक्, छोट बना हुआ (सुपा १३६)।

उंय } वि [ट्ट] १ गमीर, गहरा (दे १, उंय } ६५, सुपा १५, उप १५७ टी, ठा उंय } १०, या १६)। २ पु, पिण्ड, 'बस्ताई भसउय मज्जापाई विराहेज्जा' (श्रीप २५६ भा)। ३ चलते समय पंख में पिण्ड रूप से लग जाय उतना गहरा कोष, कर्दम (श्रीप ३३ भा)। ४ शरीर का एक भाग, मांस पिण्ड, 'हियउउए' (विपा १, ५)।

उंयग } न [ट्ट] स्पष्ट, स्थान, जगह (दस उंयउअ } ५, १, ५, १, ८७)।

उंयल्ल न [ट्ट] १ मध्य, मध्यम, उभासन। २ निकर, समूह (दे १, १२६)।

उंयिया स्त्री [ट्ट] मृदा-विशेष (राज)।

उंयी स्त्री [ट्ट] पिण्ड, गोलाकार वस्तु, 'तल्ल एणं एणा वरमऊपी दो पुट्टे परिआगेते विट्ठु-डीपडुदे निव्वए निव्वहए भिनमुट्टिपमाणे मऊपीमणए पसवति' (शाया १, ३)।

उंयूर } पुंस्त्री [उन्दुर] मूषक, बूढ़ा (बवड, उंयूर } पएह १, १, उवा, दे १, १०२)।

उदु न [ट्ट] मुल, बूँह (भायु २६)। 'रुक्क न [ट्ट] मुँह से वृषभ आदि की तरह आवाज करना (भायु २६)।

उदुअ पुं [ट्ट] वस्त्रा दिक्क (दे २, १०५)। उंदुर पुंस्त्री [उन्दुर] मूषक, बूढ़ा (दस २, ७)।

उव पुं [उव] वृक्ष विशेष, 'निववउवउव' (उप १०३१ टी)।

उवर पुं [उदुम्बर] १ वृक्ष-विशेष, शूलर का पेड़ (पएण १)। २ न. शूलर का पत्त (प्राय)। ३ देहवी, डार के नीचे की सक्की (दे १, ६०)। 'दत्त पुं [दत्त] १ यस्-

विशेष (विपा १, ७)। २ एक सार्थवाह का पुत्र (विपा १, ७)। 'पंचम, पणम न [पञ्चक] बड, पीपल, शूलर, पल्ल और नागोदुम्बर इन पांच वृक्षों के फल (सुपा ४६; भाग ६, ३३)। 'पुष्क न [पुष्प] शूलर का फूल (भाग ६, ३३)।

उंवर वि [ट्ट] बहूत, प्रचुर (दे १, ६०)। उंवरउप न [ट्ट] नवीन भण्डय, संपूर्ण उपति (दे १, ११६)।

उंवरय पुं [ट्ट] कुछ रोग का एक भेद (सिदि ११४)।

उंया स्त्री [ट्ट] कथन (दे १, ८६)।

उंवी स्त्री [ट्ट] पका हुआ गेहूँ (दे १, ८६; मुग ५७३)।

उंवेभरिया स्त्री [ट्ट] वृक्ष-विशेष (पएण १)।

उंय सक् [ट्ट] पूति करना, पूरा करना (राज)।

उकिट्टु देखो उकिट्ट (पिग)।

उकुरडिया [ट्ट] देखो उकुरडिया (निर १, १)।

उक्क वि [उक्क] १ उत्सुक, उत्कण्ठित (सुर ३, ५३)। एक विद्याधर राजा का नाम (पवम १०, २०)।

उक्क वि [उक्क] कथित (पिग)।

उक्क न [ट्ट] पाद-पतन, पाद पर गिर कर नमस्कार करना (दे १, ६५)।

उक्कअ वि [ट्ट] प्रवृत्त, कैला हुआ (पट्ट)।

उक्कयण } न [ट्ट] १ कूडी प्रशंसा करना,
उक्कयणया } सुरासन (शाया १, २)। २

ऊँचा करना, उठाना (सूम २, २)। ३ भाह निकालना (निक् ५)। ४ घूस, रिरावत (दला २)। ५ घूँस घुस की ठानेवाले घूर्त का, समीपस्थ विक्षलण पुरुष के भय से बोधी देर के लिए निरचेष्ट रहना (श्रीप)। 'दीव पु

[दीप] ऊँचा ढवला प्रदीप (मन्त)।

उक्कण न [ट्ट] देखो उक्कयण (राज)।

उक्कंठ भक् [उक् + कण्ठ] उक्कण्डा करना, उत्सुक होना। उक्कण्डेहि (नै ७३)।

वक्क उक्कंठ (नै ६१)। हेक्क उक्कंठिदुं (श्री) (वधि १५७)।

उक्कंटा स्त्री [उक्कण्डा] उत्सुकता, मीलुक्य (दे १, २५, ३०)।

उक्कंठिय [उत्तरिण्ट] उल्लुव (भा उक्कंठिर) ५४२, गुर ३, ८६, पउम ११, उक्कंठुल्ल ११८, वग्ग ६०)।

उक्कंठ वि [उत्तरिण्ट] धूव छटा हुमा, विरोध करिण्ट (पिउ १७१)।

उक्कंठय सक [उत्तरण्ट] पुलकित बरणा, 'दियमेवि भूयसभावणए उक्कंठयति मगाड' (गउड)।

उक्कंठय वि [उत्तरण्ट] पुलकित, रोमान्चित (गउड)।

उक्कंठा छी [दे] भूत रिशत (दे १, ६२)।

उक्कंठिअ वि [दे] १ भारोपित। २ हरिण्ट (पड)।

उक्कन वि [उत्तरान्त] ऊँचा गया हुआ (मवि)।

उक्कन्ति छी [दे] देखो उक्कन्दा (दे १, उक्कन्ती) ८७)।

उक्कंठ वि [दे] विप्रलम्भ, गगा हुआ, कञ्चित (पड)।

उक्कंठल वि [उत्तरुण्डल] झकुरित (गउड)।

उक्कंदि छी [दे] कूपजला (दे १, ८७)। उक्कंदी

उक्कंप् प्रक [उत् + कम्प्] बाँपना, हिलना।

उक्कंप् पु [उत्तरम्प्] कम्प, चलन (मण, गा ७३५)।

उक्कंपिय वि [उत्तरम्पिन] १ चञ्चल किया हुआ (राज)। २. न. कम्प, हिलन। 'योमामुक्कंपिधुल्लपएहि जाणति एण्डिअ धएणा। भग्गारिणीहि दिट्ठे, पिअम्मिअ भाणवि वोसस्सि' (गा ३६१)।

उक्कंपिय वि [दे] धवलित, मर्द किया हुआ (कम्प)।

उक्कंयन न [दे. अवस्संयन] बाठ पर बाठ के हान से पर की छत बाँपना, पर का सत्तार विरोध (सू १)।

उक्कंयिय वि [दे. अवस्संयिय] बाठ से बाँपा हुआ (राज)।

उक्कच्छ वि [उत्तरच्छ] स्पुट, स्पट (पिण)।

उक्कच्छा छी [उत्तरच्छा] छन्द-विरोध (पिण)।

उक्कच्छिआ छी [औपक्षिकी] जैन साधव्यों को पहनने का वस्त्र-विरोध (धोम ६७७)।

उक्कञ्ज वि [दे] अनवस्थित, चञ्चल (पड)। उक्कट्टि छी [अपकट्टि] धनवर्ष, हानि (वव १)।

उक्कट्टि स्त्री [उत्कट्टि] उक्कं, 'महता उक्कट्टिहीणादस्सवत्तयेण' (सुज्ज १९—पव २७८)। देखो उक्किट्टि।

उक्कड वि [उत्कट] १ लोव, प्रचण्ड, प्रखर (एवि, महा)। २ विराग, विस्तोर्ण (वप्प, गुर १, १०६)। ३ प्रवत् (उवा गुर ६, १७२)।

उक्कड देखो उक्कड (उप ६५६)।

उक्कडिय वि [दे] बोधा हुआ, छिल (पाम)। उक्कडिय देखो उक्कुडुय (कस)।

उक्कड्ड सज [उत् + कर्ण] उक्कट्ट नरता, बडाना। उक्कडए (कम्म ५, ६८ टी)।

उक्कड्डग पुं [अपकर्षक] १ चोर की एक्काति—जो घर से वन भादि ले जाने हैं। २ जो चारो की बुलाकर चोरी कराते हैं। ३ चोर की पीठ ओझने वाले, चोर के सहायक (पण १, ३ टी)।

उक्कड्डिय वि [उत्कर्षित] १ उपागिन, उछाया हुआ। २ एक स्थान से उठा कर अन्य स्थान (पिउ ३६१)।

उक्कण्ण वि [उत्कर्ण] सुनने के लिए उल्लुक् (से ६, १६)।

उक्कत्त सक [उत् + कृत्] बाटना, कतरना। वरु उक्कत्तं (गुण २१६)।

उक्कत्त वि [उत्कृत्] बटा हुआ, छिल (विपा १, २)।

उक्कत्तण न [उत्कर्त्तण] बाट जानना, छेदन (पुण ३८४)।

उक्कत्तिय देखो उक्कत्त = उक्कत्त (पउम ५६, २४)।

उक्कत्थण न [उत्कर्त्थण] ज्यादा (पण १, १)।

उक्कप्प पु [उत्कर्प्प] शास्त्र निषिद्ध भावण (वक्का)।

उक्कणाह पुं [दे] उतम भरव को एक जाति (सम्मत् २१६)।

उक्कम सक [उत् + क्रम] १ ऊँचा जाना। २ उतरे क्रम से रखना। वरु. उक्कमत्त (भावम)। सऊ. उक्कमिऊण (विते ३५३१)।

उक्कम पु [उत्क्रम] उलगा क्रम, विपरीत क्रम (विते २७१)।

उक्कमण न [उत्क्रमण] ऊर्ध्व गमन। २ बाहर जाना (समु १७२)।

उक्कमित वि [उत्क्रान्त] १ प्रारब्ध। २ क्षीण, 'अक्रमागमितस्मि वा दुहे, भवता उक्कमिते भवतीए। एणस्स गवी य भागती, विदुम वा सरण ए मन्ने' (सू १, २, ३, १७)।

उक्कर सक [उत् + कृ] लोवना। वरु. उक्करिउज्जमाण (भावम)।

उक्कर पुं [उत्कर] १ समूह, घघात, 'सक्कर-एक्करमक्के' (गुण ५१८)। २ कर रहित, राज वेय शुक्र ने रहित (गण १, १)।

उक्करड देखो उक्कर = उत्कर, 'कस्सावि उत्तरीय गहिकण कम्मो अ उत्तरडो' (सिउ ७६५)।

उक्करड पुं [दे] १ मशुचि राशि। २ जहाँ मैला इकट्ठा किया जाता है वह स्थान (धा २७, गुण ३५५)।

उक्करिअ वि [दे] १ विस्तीर्ण, प्रायत। २ भारोपित। ३ हरिण्ट (पड)।

उक्करिअ वि [उत्तरीण] कोशित, खादा हुआ, 'उत्तुक्करियव्व निधममिहितलोपणा' (महा)।

उक्कारद (छी) वि [उत्कर्त] ऊँचा किया हुआ (स्वप्न ३६)।

उक्कारया छी [उत्तरिका] जेने एण्ड के बीज से उत्तर दिक्का भनग होता है उन तरह भनग होता, भेद-विरोध (भा ५, ४)।

उक्कारस सक [उत् + कृप्] १ छावना। २ गर्ज करना, बसाव करना। वरु. उक्करिस्त (व १४, ६)।

उक्करिस्त देखो उक्करस = उक्कं (उत्, विते १७६६)।

उत्तररिसण न [उत्तररिण] १ उत्तर, यद्वा, महत् । २ स्थापन, ध्यापन ;

‘उत्तमिल्ल’ लायएण

पदयच्छायाए सत्तम ययाणं ।

सत्तमयसत्तमयसत्तरिसणोए

पययस्तपि पहावो ॥ (पउउ) ।

उत्तररिसिय वि [उत्तररि] स्त्रीक निताला हुमा, उत्प्लवित (से १४, ३) ।

उत्तररि देवो उत्तररि (ठा ५, ३) ।

उत्तररि भक्त [उत्तर + र्त्वि] उत्तर रूप से धरतना । उत्तररि (गुल २, ३७) ।

उत्तररि वि [उत्तररि] १ धर्म-रहित । २ न. बोरी (पह १, ३, टी) । ३ पुं. देश-विशेष, जिसकी भाजक ‘उत्तरिया’ या ‘उठीसा’ कहते हैं (प्रबो ७८) ।

उत्तररि सव [उत्तर + लम्पय] कांसी लटवना । उत्तररि (स ६३) ।

उत्तररि लक्षण न [उत्तररि] कांसी लटवना । (स ३५८) ।

उत्तररि देवो उत्तररि (उत्तर ३६, १३८) ।
उत्तररि वि [दे] उवता हुमा; पुनराती मे ‘उत्तररि’; ‘उत्तररि’ सिद्धि-उत्तररि (विचार २५७) ।

उत्तररि स्त्री [उत्तररि] १ कृपा, मकड़ी एक प्रकार का कीड़ा जो जाल बनाता है, ‘उत्तररि’ (कम्प) । २ नीचे की तरफ बहनेवाला वायु (जी ७) । ३ छोटा समुद्र, समुद्र-विशेष (ठा ३, १) । ४ सहरी, तरंग (राज) । ५ गहर-गहर कर तरंग की तरह चलनेवाला वायु (भाचा) ।

उत्तररि सव [गम] जाना, गमन करना । उत्तररि (हे ५, १६२, कुमा) । प्रयो. उत्तररिवादे । वरु. उत्तररिवादे (निबू १०) । उत्तररि देवो ओफस । वरु. उत्तररिमाण (कम) । हेरु. उत्तररिसत्तए (भाचा २, ३, १, १५) ।

उत्तररि देवो उत्तररि (हुमा) ।

उत्तररि देवो उत्तररि = उत्तररि (सूय १, १, ४, १२); ‘उत्तररि भद्रउत्तररि’ (दम ५, २, ४२) ।

उत्तररि न [उत्तररि] १ भविष्यमान करना

(सूय १, १३) । २ ऊँचा जाना । ३ निवर्तन, निवृत्ति । ४ प्रेरणा (राज) ।

उत्तररि वि [उत्तररि] सत्तरादि के लिए उत्तररि (उत्तर ३) ।

उत्तररि वि [उत्तररि] प्रत्यय-वला (उत्तर १५) ।

उत्तररि भक्त [अप + कृ] १ ह्रास प्राप्त होना, होना होना । २ किपलना, गिरना, घेर लपटने से गिर जाना । वरु. उत्तररिमाण (ठा ५) ।

उत्तररि पुं [उत्तररि] १ भद्र, भविष्यमान (सूय १, १, ४, २) । २ भविष्य, उत्तररि (भावि) ।

उत्तररि वि [उत्तररि] १ उत्तर, क्यादा से क्यादा ‘उत्तररि’ (ठा १, १, १) ; ‘उत्तररि उदोराण’ (वम्प ११६) । २ भविष्य, गम्य (सूय १, १) ।

उत्तररि स्त्री [उत्तररि] १ कृपा, भाकार से जो एक प्रकार का धमार सा गिरता है (भोप ११० भा. जी ६) । २ छिद्र-मूल रिवाह (भावि) । ३ भविष्य (ठा ८) । ४ भाकार-विह (दम ४) । ‘सुह पुं [सुह] १ भव्य-विशेष । २ उत्तररि निवासी लोच (ठा ४, २) । ‘वाय पुं [वाय] वारा का गिरना, लुका गिरना । (भय ३, ६) ।

उत्तररि स्त्री [दे] कृपा-नुना (हे १, ८७) ।

उत्तररि सव [उत्तर + क्राय] दूर करना, पीछे हटाना, ‘उत्तररि’ जीव भगमापी ठेपे के नामा (दमनि २—पय ८७) ।

उत्तररि देवो उत्तररि (पहण ११; भाय ७) ।

उत्तररि वि [उत्तररि] वह शास्त्र. जिसका श्रद्धा समय में ही पढ़ने का विधान न हो (ठा २, १) ।

उत्तररि देवो उत्तररि = उत्तररि (भय १२, ५) ।

उत्तररि वि [दे] उत्तर, क्यादा से क्यादा (पह) ।

उत्तररि वि [दे] उत्तर, उठा हुमा (हे १, ११४) ।

उत्तररि वि [उत्तररि] १ क्यादा (पय—गा १५) । २ पुन. दमनी आदि के पत्तो का

समूह (दम ५, १, ३४) । ३ लगातार दो दिन का उपवास (संयोध ५८) ।

उत्तररि वि [उत्तररि] १ उत्तर, उत्तम (हे १, १२८; द २६) । २ का का सम्पन् द्वारा किया हुमा दुनडा (दम ५, १, ३४) ।

उत्तररि स्त्री [उत्तररि] हर्षवनि, भानन्द की धावना (भोप; भय २, १) । देवो उत्तररि ।

उत्तररि वि [उत्तररि] १ रोहित, लोहा हुमा (भावि १८२) । २ नट (भावि २) ।

उत्तररि वि [उत्तररि] गटा हुमा (से ५, ५१) ।

उत्तररि न [उत्तररि] १ भयन (पयम ११८, ६३) । २ प्रसादा, रत्नाभा (वउ १) ।

उत्तररि वि [उत्तररि] कथित, कहा हुमा (मुज २० टी) ।

उत्तररि वि [उत्तररि] १ कथित, उपलब्ध; ‘उत्तररि-कथन’ (सुदु २६) । २ लोहा हुमा (दमनि २, १७) ।

उत्तररि सव [उत्तर + कृ] लोहा, पत्थर आदि पर कटार कौट का राज मे लिखना । उत्तररि (वि ४७७) ।

उत्तररि न [उत्तररि] भवत धारि से बढाना, बसावा, बर्षापन, ‘उत्तररि’ उचितरणाई । पुन. के उचितरणाई से उचितरणाई (धमनि ४६) ।

उत्तररि देवो उत्तररि = उत्तररि (धा १४, गुप ५१८) ।

उत्तररि देवो उत्तररि । उत्तररि (धायु) ।

उत्तररि देवो उत्तररि = उत्तररि (उप ५ ३१५) ।

उत्तररि न [उत्तररि] उत्तम कीडा (पयम ११५, ६) ।

उत्तररि वि [उत्तररि] कीलक से नियमित, ‘उत्तररि’ परिधि-उत्तररि (मुप ४७५) ।

उत्तररि न [उत्तररि] ऊँचे बढाना (सूय २, २, ६३) ।

उत्तररि वि [दे] मत, उगत (हे १, ६१) ।

उत्तररि भक्त [उत्तर + रथा] उगना, खडा होना । उत्तररि (हे ५, १७, पद) ।

उक्कुञ्ज भव [उत् + कुञ्ज] ऊँचा होकर
नोचा हाना । सङ्ग उक्कुञ्जिय (भाषा) ।

उक्कुञ्जिय न [उत्कृजित] ध्व्यत गच्छ
(नीञ्) ।

उक्कुट्टु न [उत्कुट्ट] वनस्पति का कूटा हुआ
चूर्ण (भाषा: निञ् १, ४) ।

उक्कुट्टु वि [उत्कुट्ट] ऊँचि स्वर से धाकुट्ट
(दे १, ४७) ।

उक्कुट्टु वि [उत्कुट्टु] भासन विरोप,
उक्कुट्टु वि [उत्कुट्टु] निपदा विरोप (मम ७, ६, धोष
१५६ भा लाया १, १) । श्री उक्कुट्टु
(ठा ५, १) । "सिन्धु" वि [सिन्धु]
उक्कुट्टु मानन से स्थित (ठा ५, १) ।

उक्कुट्टु भव [उत् + कुट्ट] कूटना, उछानना ।
उक्कुट्टु (उत् २७, ५) ।

उक्कुट्टु अ दत्ता उक्कुट्टु (ती ११) ।
उक्कुट्टु पु देवो उक्कुट्टु (पुत्र ५५) ।

उक्कुट्टु पु [दे] राशि डेर (दे १, ११०) ।
उक्कुट्टु वि [दे] वृष, वृद्धा डालने
उक्कुट्टु वि [दे] श्री जगह (उत् ५६३ टी, निपा
उक्कुट्टु १, १ लाया १, २, दे १,
११०) ।

उक्कुट्टु सक् [गम्] जाना, गमन करना ।
उक्कुट्टु (ह ४, १६२) ।

उक्कुट्टु वि [उत्कृष्ट] उत्तम, श्रेष्ठ (कुमा) ।
उक्कुट्टु य न [उत्कृजित] ध्व्यन महाध्वनि
(पह १, १) ।

उक्कुट्टु वि [उत्कृष्ट] १ समान से छत्र
करनावाला । २ विनारे से बाहर का । ३ न
चोरी (पह १, ३) ।

उक्कुट्टु भव [उत् + कुञ्] ध्व्यत भावान
करना, चित्तवाना । वङ्ग, उक्कुट्टुभाषा
(निपा १, ७, निर १, १) ।

उक्कुट्टु पु [उत्कर] १ समूह, राशि, डेर
(कुमा महा) । २ तरण विरोप, कर्मों की
स्थियादि की बदना (विसे २५१४) । ३
भिन, एररर के बीच की तरह की मतप
जिमा गया हो वह (राज) ।

उक्कुट्टु पु [दे] उपहार, भेंट (दे १, ६६) ।

उक्कुट्टु वि [दे] उकेलाया हुआ
मुनवाया हुआ, 'राहणा उकेलाया चोल-
याद', निहियादि सम तभी, जात दिग्ठ

वत्यद सुनएण, वत्यद रूप्य, वत्यद मणि-
भोत्तियपवाला" (महा) ।

उक्कुट्टु वि [दे] अवरोप रहित किया
हुमा, घेरा उठाया हुआ (स ६३२) ।

उक्कुट्टु न [दे] राज-कुल में दातय द्रव्य,
राजा आदि का दिया जाता उपहार (वव
१ टी) ।

उक्कुट्टा श्री [दे] वृष, रिशवत (दे १, ६२,
पह १, ३ निपा १, १) ।

उक्कुट्टु वि [दे] वृष लेकर कार्य करते-
वाला, घुमवोर (लाया १, १, श्रीप) ।

उक्कुट्टा श्री [दे] प्रतिगच्छ, प्रतिव्यति (दे
१, ६२) ।

उक्कुट्टु वि [उत्कोप] प्रक्षर, उत्कट (सण) ।
उक्कुट्टु वि [उत्कोप] देखो उक्कुट्टु (भवि) ।

उक्कुट्टा श्री [उत्कोपा] १ वृष रिशवत ।
२ वृषों को डालने में प्रवृत्त वृषों पुरुष का
समीपस्थ विचक्षण पुरुष के नय से बोड़ी
देर के लिए अपने कार्य को स्थगित करना
(राज) ।

उक्कुट्टु पु [दे] भाग, धूप, गरमो (दे १,
६७) ।

उक्कुट्टु न [उत्कोपन] उदीपन उत्तेजन,
'मयपुत्रकोपण' (भवि) ।

उक्कुट्टु वि [उत्कोपित] ध्यत कुद किया
हुमा (उप पु ७८) ।

उक्कुट्टु सक् [उत् + कुट्ट] १ रोना,
चित्तवाना । २ तिरस्कार करना । वह
उक्कुट्टु (राज) ।

उक्कुट्टु वि [उत्कर्ष] उक्कुट्ट, प्रथान, मुख्य
(वषा १, २) ।

उक्कुट्टु पु [उत्कर्ष] १ प्रवर्ष, धतिराय
'उक्कुट्टुजहनेण अतमुहता विषय विषयि' (जी
३८, श्रीप) । २ गव भूमिमान (सूत्र १ २,
२, २६, सम ७१ ठा ४, ४—पत्र २७५) ।

उक्कुट्टु वि [उत्कृष्ट] उक्कुट्ट, अधिक से
अधिक 'मुलरदयाण ठिई उक्कुटा सागराणि
चित्ती' (जी ३६) 'मोसतिग न मल्लुला
उक्कुट्टुसरीयमाणे' (जी ३२), 'तमो विषय-
तीमो पणिगहितए, त पहा—उक्कुट्टा,
मणिममा, जहएणा' (ठा ३ उव) ।

उक्कुट्टु पु [उत्कोश] १ कुरर, पणि-विरोप

(पह १, १) । २ वि. जार से चित्ताने-
वाला (राज) ।

उक्कुट्टु सक् न [उत्कोशन] १ क्रन्दन । २
निर्मलन, तिरस्कार,
'उक्कुट्टुजहनेण अतमुहता' (महा)

भवमाणहीलगाप्रो य ।
मुणिणो मुणिणपरमका

दम्पहारिख विसहति' (उव) ।
उक्कुट्टा श्री [उत्कोशा] कोशानामक एक
प्रसिद्ध वेरमा (धर्म वि ६७) ।

उक्कुट्टु वि [उत्कोशित] भरिसंत,
तिरस्कार, दुस्काप हुआ (उप पु ७८) ।

उक्कुट्टु सक् वि [उत्कर्ष] देखा उक्कुट्टु =
उ इट्ट (कप्प भन् ३७) ।

उक्कुट्टु पु [उत्कोशिक] १ गोत्र-विरोप
का प्रवर्तक एक छवि । २ न गात्र विरोप,
धरस्त ए भगवद्भारनेयस्स उक्कुट्टुनियगोत्तस्स
(कप्प) ।

उक्कुट्टु वि [दे] पुरस्कर भागे किया
हुमा (पह) ।

उक्कुट्टु वि [उत्कृष्ट] उत्कर्ष, प्रापिक
(भय) ।

उक्कुट्टु देखो उक्कुट्टु = उक्कुट्टु (विसे
५८७) ।

उक्कुट्टु सक् [उक्कुट्ट] सोचना (सूत्र २,
२, ५५) ।

उक्कुट्टु [उक्कुट्ट] १ सव्य (राज) । २ जैन
सर्निया के पहतने के वस्त्र विरोप का एक
धरा (हह १) ।

उक्कुट्टु देखा उक्कुट्टु = उक्कुट्टु (पाम) ।
उक्कुट्टु वि [उत्कर्षित] व्याप्त, मरा हुआ
(मे १ ३३) ।

उक्कुट्टु सक् [उत् + एण्डु] तोड़ना,
टुकड़ा करना । वह उक्कुट्टु (नाट) ।

उक्कुट्टु पु [दे] १ सपाह, समूह । २ स्वपुट,
विपमान्तर प्रदेश (दे १, १२६) ।

उक्कुट्टु न [उत्कर्षण] उक्कुट्टन, विच्छेदन
(विक्र २८) ।

उक्कुट्टु वि [उत्कर्षण] खाँदव, दिल्न
(से ५, ४३) ।

उक्कुट्टु वि [दे] भावान्, दवाया हुआ
(से १, ११२) ।

उकखेवण पुं [अयस्कन्द] १ भेरा डालना ।
२ छन मे शत्रु सेन्य को मारना (पृष्ठ १, २) ।
उकखेवण पुं [उत्तम] भवसम्भ, सहारा
(साया) ।

उकखेवणिय देखो उत्थंभिय (भवि) ।

उकखेवणिय न [ओत्तम्भिक] भवसम्भ,
सहारा (राज) ।

उकखेवणिय प [दे] पुन पुन, भारंवार,
'उकखेवणिय वा भुजो भुजोति वा पुणो
पुणोति ॥ एण्ण' (वव १) ।

उकखेवण सक [उत् + रन्] उठावना, उच्छेदन
करना, काटना । उकखेवणदि (पृष्ठ १,
१) । सक उकखेवणिकण (नीरू १) । कर्म,
उकखेवणमति (पि ५४०) । कण्ठ उकखेवणमत
(से ७, २८) । क. उकखेवणमिअव (से
१०, २६) ।

उकखेवण सक [दे] खाँटना, मुसल कौरह से
घोहि भादि का छितका दूर करना (दे
१, ११५) ।

उकखेवण वि [दे] भवकीर्ण, वृणित (पट्ट) ।
उकखेवण न [उररनन] उन्मूलन, उलटाव
(वृह १, १) ।

उकखेवण न [दे] खाँटना, निस्तुपीकरण
(दे १, ११५ टी) ।

उकखेवणिय न [दे] खण्डित, निस्तुपीकृत
(दे १, ११५) ।

उकखेवण देखो उकखेव (पि ६०, १६३,
५६६) ।

उकखेवण देखो उकखेवण = उत् + खन् ।

उकखेवण वि [उत् + रन्] १ उठावना हुआ,
उन्मूलित (आया १ ७, हे १, ६७, पट्ट,
महा) । २ कुना हुआ, उलटावित,
'एत्थत्तम्मि पत्तो, मुवाडिजाहरो ठहि भवणे ।
उकखेवणगा विट्ठा, ह्वारा तेण्वि दुवा' (सुवा ४००) ।

उकखेवण देखो उकखेवण (हे २, ६०, सूत्र
उकखेवण १, ४, २, १२) ।

उकखेवणिय वि [दे उत्तम्भित] उन्मूलित,
उलटावित (से ६, २६) ।

उकखेवणिया, स्त्री [दे] माली, पात्र विशेष
उकखेवली (दे १, ८८) । 'उकखेवणिया
माली जा सापुणिमत्त सा भाहकम्मिया'
(निरू १) ।

उकखेवण स्त्री [ऊत्ता] स्वाती, भाजन-विशेष
(भाषा २, १, १) ।

उकखेवण (शी) वि [उत्तावित] उद्धृत
(उत्तर ६७) ।

उकखेवण देखो उकखेवण (हे १, ६७, गा
२७३) ।

उकखेवण सक [उत् + रन्, रालय]
उखाटना, उन्मूलन करना । सह. उकखेवण-
इत्ता (रंभा) ।

उकखेवण देखो उकखेवण = उत् + खन् । उकखे-
वणिय (भवि) । सह. उकखेवणिय (भप)
(भवि) ।

उकखेवणिय वि [दे] १ भवकीर्ण, ध्वस्त,
वृणित । २ भाष्य, गुप्त । ३ पारवं मे
शिपिल, एक तरफ से ढोला (दे १, १२०) ।

उकखेवणिय वि [उत् + रन्] १ केंना हुआ ।
उकखेवणिय २ ऊँचा उठाया हुआ (पात्र) ।

३ ऊँचा किया हुआ (आया १, १) । ४
उन्मूलित, उलटावित (रण) । ५ बाहर
निकाला हुआ (पृष्ठ २, १) । ६ उलटावित
(विम) । ७ न. भेय विशेष (राय, ठा ४,
४) । 'चरय वि [उत् + रन्] पात्र पात्र से
बाहर निकाले हुए भोजन को ही बहण करने
का नियमवाला (शाष्ट्र) (पृष्ठ २, १) ।

उकखेवणिय देखो उकखेवण = उत् + रन् ।

उकखेवणिय वि [उत् + रन्] सिक, सीका हुआ,
'उकखेवणियममसरी' (सूत्र २, २, ५५,
कण्ठ) ।

उकखेवणिय सक [दे] उठावना । प्रयो., हेक.
'उकखेवणियविट्ठा माडतो भूयो' (सी ७) ।

उकखेवणिय सक [उत् + रन्] स्थापन
करना, 'शुयस्स य भगवन्तो वेत्त नाम उकखे-
विस्सामो' (स १६२) ।

उकखेवणिय सक [उत् + रन्] १ केंना ।
२ ऊँचा केंना । ३ उठना । ४ बाहर
करना । ५ कटना । ६ उठना । उकखेवण-
(सूत्र ५६) । वक. 'गएवि उकखेवण्यो न
नज्जति एण्हिया मुणेरवला' (वृह ३) । सक.
उकखेवणिय, उकखेवणिय (पि ५७५, भाषा
२, २, ३) । कवक. उकखेवणिय, उकखे-
वणिय (से ६, २५, पृष्ठ १, ४),
उकखेवणिय (से २, १३) ।

उकखेवणिय त [उत्तेवण] १ केंना, दूर
करना । २ वि. दूर करनेवाला (कुमा) ।

उकखेवणिया स्त्री [उत्तेवणा] बाहर करना,
दूर करना (वृह १) ।

उकखेवणिय देखो उकखेवणिय (सुर २, १८०) ।

उकखेवणिय पुं [दे] १ उन्मूलन, माला,
माला । २ समूह । ३ वक्र या एव भर, ध्वस्त (दे
१, १२६) ।

उकखेवणिय सक [उत् + रन्] लोडना, ढुका करना ।
उकखेवणिय (ह ४, ११६) ।

उकखेवणिय वि [उत् + रन्] १ खण्डित, ध्वस्त,
भिन्न (कुमा, से ४, २३; सुवा २६२) । २
व्यय किया हुआ, लक्ष्य किया हुआ,
'एतियवणा इण्हि, उकखेवणिय
सालिमाइय माउ ।

वृह योग्य तो सहसा,
पुणो पुणो कुट्टिय हिय' (सुवा १५) ।

उकखेवणिय वि [दे. उत्तेवण] काटा हुआ,
'एण्णु दुर्दुत्तुकुत्तुकिस्सवत्ति' तिलच्छेत्त' (सा
७६६) ।

उकखेवणिय सक [उत् + रन्] धुप होना ।
उकखेवणिय (प्राक ७५) ।

उकखेवणिय वि [दे] उलटावित, केंना हुआ
(दे १, ४) ।

उकखेवणिय सक [दे] धुलवाना । सक. उकखे-
वणिय (भाषा २, १, ६, २) ।

उकखेवणिय वि [उत् + रन्] धुप, धूम, धूम
(से ७, १६) ।

उकखेवणिय पुं [उत्तेवण] १ उलटावित, उन्मूलन
(नीरू) । २ ऊँचा करना (गड्ड) । ३ जो
उठाया जाय वह, 'उकखेवणिय निक्खेवण-
भाणमि' (विट्ट ५७०) ।

उकखेवणिय पुं [उत्तेवण] उलोढ़ावित, भूमिका
(उवा, विषा १, २, ३, ४) ।

उकखेवणिय वि [उत्तेवण] १ ऊँचा केंने-
वाला । २ कु. एक जाति का पत्ता, व्यजन-
विशेष (पृष्ठ २, ५) ।

उकखेवणिय न [उत्तेवण] १ केंना (पउम
३७, ५०) । २ उन्मूलन, उलटावित (सूत्र
२, १) ।

उक्तेविअ वि [उत्तेपित] जलाया हुषा
(घृष) (भवि) ।

उक्तेविअ वि [उत्तेपित] १ उन्मिष, उडाया हुषा (पाप) । २ छिन, उसाडा हुषा (दे १, १०५; १११) ।

उग भव [उत् + गम्] उदित होना ।
उगद (नाट) ।

उग (अन) वि [उद्गत] उदित (पिण) ।

उगाहिअ वि [दे] उन्मिष, कंका हुषा (पड) ।

उगुणपन्न कीन [एकोनपञ्चारात्] जनप-
नाम, ५६ (सुज १०, ६ टो) ।

उगुणीसीसा स्त्री [एकोनविंशति] उनीस,
१६ (सुज १०, ६ टो) ।

उगुणुत्तर न [एकोनसप्तति] उगहत्तर, ६६,
'उगुणुत्तराद' (सुज १०, ६ टो) ।

उगुनउइ स्त्री [एकोननवति] नवामी, ८६
(बम्म ६, ३०) ।

उगुसीइ स्त्री [एकोनाशीति] उनासी, ७६
(बम्म ६, ३०) ।

उगा भक [उद् + गम्] उदित होना ।
उगे (पिण) । बह, उगत, 'देव । पलपन-
एकल्लाएवइडुविषट्ठएगगतमिह' (हिं) राणु-
गारिणो' (धर्मा ५) ।

उगा सव [उद् + घाटय्] खोलना । उगद
(हि ४, ३३) ।

उगा वि [उद्] १ तेज, लीढ, प्रवन (पउम
८३, ५) । २ पु, सानि कौ एक जाडि,
जिसका भगवान् भाविदेव ने भारजक पद पर
निपुन की थी (डा १, १) । 'वई स्त्री
['वनी] ज्योति-शान्ध-अग्निद नन्द-तिथि
की रात (ज ७) । 'सिरि पु ['श्रीक]
रामन वरा का एक राग, स्थानम स्यात एव
लेशः (पउम ५, २६५) । 'सेण पु ['सेन]
मधुरा नगरी का एक यदुवर्णीय राजा (छाया
१, १६; भत) ।

उगमंठ सव [उन् + ग्रन्थ्] खोलना, गंठ
खोलना । सक् उगमंठज (हम्मो १७) ।

उगाध वि [उद्गन्ध] भव्यन्त सुगन्धित
(गउड) ।

उगाच्छ [उद् + गम्] उदय
उगम } होना । उगच्छदि (सो) (नाट) ।

उगमद् (वजा १६) । उगमेज (वाल) ।
वह. उगमत, उगममाण (मुपा ३८,
परए १) ।

उगम पु [उद्गम] १ उत्पत्ति, उद्भव,
'तत्पुगमो पमूई पम्वो एमाई होति एगुडा'
(राज) । २ उदय, 'सूलागो' (सुर ३,
२५०) । ३ उत्पत्ति से सम्बन्ध रखनेवाला
एक भिन्ना दोष (घोष ६५, ६३० भा. डा
१०) ।

उगमण न [उद्गमन] उदय (मिरि ५२८
सुज ६) ।

उगमिय वि [उद्गमित] उपाजित (निष्ठ
२) ।

उगय वि [उद्गत] उत्तरन, जात (भाव
३) । २ उदित, उदय प्राप्त (सुर ३, २५७) ।
३ व्यवस्थित (राज) ।

उगाह सक [रचय्] रचना, बनाना, निर्माण
करना । करना । उगहइ (ह ५, ६५) ।

उगाह सक [उद् + ग्रह] ग्रहण करना ।
उगहइ (भा) । सक् उगाहिता (भग) ।

उगाह पु [अनमह] इन्द्रिय द्वारा होनेवाला
सामान्य ज्ञान विशेष (वित) । १ अवधारण,
निरूपण (उत्त) । ३ प्राप्ति, लाभ (भाषू) ।
४ पान नाशन (पचा ३) । ५ साधित्यो
का एक उपकरण (घोष ६६६, ६७६) । ६
योनिडाार (बृह ३) । ७ ग्रहण करने योग्य
वस्तु (परह १, ३) । ८ प्राप्य, आवास-
स्थान, वसति (प्राचा), 'प्राहापडिक्क उगह
योगिहिता' (छाया १, १) । ९ वह वस्तु,
जिसेपर अपना प्रमुख हो, धनीन चीज (बृह
३) । १० देव का गुरु से बितनी दूरी पर
रहने का शास्त्रीय विधान है उसी अगह
मर्यादित भू-भाग, भुविदि की चारा तरफ की
शरीर प्रमाण जमीन, अणुप्राणह मे मिठ-
गह' (पडि) । 'अन, 'अतग न ['अनन,
'क] जैन साधिया का एक भुवाच्छादक
वस्त्र, जाधिया, लंगोट, 'छादवागएणुत'
(बृह ३) । 'पट्ट' पट्टम पुन ['पट्ट' क]
देखो पूर्वोक्त अर्थ 'ना चण्डन मिगुका'
उगहएणव वा उगहएणव वा धारितए वा
परिहरितए वा' (बृह ३) ।

उगह पु [अनमह] परोक्षने के लिए उठाया
हुषा भोजन (सुम २, २, ७३) ।

उगहण न [अनमहण] इन्द्रिय द्वारा होने-
वाला सामान्य ज्ञान, 'अत्थाणं उगहण
अवगह' (विते १७६) ।

उगाहिअ वि [रचित] १ निर्मित, विहित
(कुम) ।

उगाहिअ वि [अनगृहीत] १ सामान्य रूप
से ज्ञात । २ परोक्षने के लिए उठाया हुषा
(डा १) । ३ गृहीत । ४ प्राप्ति । ५ मुख मे
प्रतिम, 'तविहे उगाहिए परएण्ते,—अ च
उगिणएहइ, अ च साहरइ, अ च आसगमि
पस्सिवति' (अन २, ८) ।

उगाहिअ वि [दे] निपुण-गृहीत, अच्छी तरह
लिया हुषा (दे १, १०५) ।

उगा सव [उद् + गे] १ ऊँचे स्वर से गान
करना । २ बजाने करना । ३ श्लाघा करना,
'उगाइ गाइ हसइ,

असकुलो सय बरेइ कदप ।

मिहिज्जवचित्तो वि य,
भोसने देइ गेहइ वा' (अव) ।
बहु उगार्यत (सुर ८, १८६) । कवह.
उगीयमाण (पउम २, ५१) ।

उगाढ वि [उद्गाढ] १ धनि गाढ, प्रबल
(उव ६८६ टी, मुपा ६५) । २ स्वल्प,
तनुस्वर (बृह १) ।

उगासिअ वि [उद्गमित] ऊपर उठाया हुषा,
ऊँचा किया हुषा (मुल १, १५) ।

उगायत देखो उगा ।

उगाार पु [उद्गाार] १ वचन, उक्ति, 'ते
उगाल' विमुणा मे ए सहाति पिण्णुए
परणुणगारे' (गउड) । २ राइ, आवाज,
अनि 'तिससहएणियपणो एहइडुहिबल-
मज्जउगारे', 'अहिताडियसमुगारकअण-
पडिरवाहोमो' (गउड) । ३ उकार । ४ वचन,
श्रीवाई (नाट, कस) जिण्णुकाएणएण-
उक्कतमयएणुगारेण विव केमकलविण्य'
(स ३१३; निष्ठ १०) । ५ जल का द्योय
प्रवाह, उगारो दिद्योतो' (पाप) । ६
रोमम, पशुराजा 'रामपा उगारो' (पाप) ।
उगाल पु [दे. उगाल] पान की पिचकारी
(पव ३८) ।

उगगाह पु [उगार] विनिर्गम, बाहर निक-
लना (वच १) ।

उगगाह सक [उद् + ग्रह्] ग्रहण करना,
‘भामरावत्याई पमज्ज, पमज्जता भयराई
उगगाहेई’ (उवा) । सक. उगगाहेत्ता जेणेव
समए भगव महारी तेणे उगगावधई
(उवा) ।

उगगाह सव [अ + गाह्] भ्रमणाल
करना, ‘उगगाहेति नाणाविहासो चिचिन्द्रा-
सहियार्थो’ (स १७) ।

उगगाह सव [उद् + ग्राह्य] १ लगावा
करना । २ ऊंचे से चलना । उगगाह
(प्राठ ७२) ।

उगगाह पु. देखो उगगाहा (पिग) ।

उगगाहण न [उद्ग्राहण] लगावा, दो हुई
चीज की मांग (मुपा ५७८) ।

उगगाहणिया बी [उद्ग्राहणिया] ऊपर
देखो, ‘उजाराणपालया पासम्मि गमो तथा
कोवि । उगगाहणियाह’ (मुपा ६३२) ।

उगगाहणी बी [उद्ग्राहणी] ऊपर देखो
(इ १) ।

उगगाहा बी [उद्ग्राहा] छन्द विरोध (पिग) ।

उगगाहिय वि [दे उद्ग्राहित] १ गृहीत,
लिया हुआ । २ उल्लिखित, पंका हुआ । ३
प्रवर्तित (दे १, १३७) । ४ उच्चातित, ऊंचे
से चलाया हुआ (पास. स २१३) ।

उगगाहिम वि [अनगाहिम] तली हुई वस्तु ।
(पणइ २, ५) ।

उगगाण्ण [वि उद्गरीण] १ उन, वकित
उगगाण्ण [वि] २ वस्तु, उद्गरीण
(छाया १, १) । ३ उठाया हुआ, ऊपर
किया हुआ ।

‘उगिगल्लसगमबल अयलोइय
नरवईवि विमूहसो ।

चित्तेइ ग्रहो घट्टा, मज्जक बहुट्टा

इह पविट्ठा’ (सुर १६, १४७) ।

‘निय् । नियविण्णोवह-
कलकमलियोव्वे दे तुण्ण जाधो ।

उगिगल्लसगपसरत्तत्तिता-

मलियसव्वगो’ (मुपा ५३८) ।

उगगार देखो उगगल । उगगरेइ (मुद्रा १२१) ।

वक्. उगगार (कल) ।

उगगारण न [उद्गारण] १ वान्ति, वमन,
कम । २ उजित, वयन

‘भासुसिणोवि भवमाणवंचणा

ते परत्तस न वरन्ति ।

मुहुदम्बुमुगिरण’ (पं, छाहू

उगहिय मंभीरा’ (उव) ।

उगगल सक [उद् + गृ] १ बहना, बोलना ।

२ उबार करना । ३ उलटी करना, वमन

करना । ४ उठाना । वट्. ‘भगिजालुगिगलंत

वयण’ (छाया १, ८) । सट्. उगगलित्ता

(वस), उगगलेत्ता (निचू १०) ।

उगगिगिज देखो उगगिण (पास) ।

उगगीय वि [उद्गीत] १ उच स्वर से गाया

हुमा (दे १, १६३) । २ न. संगीत गीत, गान

(से १, ६५) ।

उगगीयमाण देखो उगगा ।

उगगीर देखो उगगिर । वक्. ‘उगर्ग उगगीरंतो

हल्लिवहत्थे, ह्यासलोयाण’ (मुपा १५८) ।

उगगीरिज देखा उगगिण्य. ‘उगगीरिओ मयो-

वरि, जगभीहावीहत्तरकरवातो’ (मुपा १५८) ।

उगगीय वि [उद्गीय] उल्लिखित, उल्लेख

(हुमा) । १. उच वि [हृत्] उल्लिखित

किया हुआ (उर १०३१ टी) ।

उगगुल्लिखिओ बी [दे] हृदय-रस का उल्लेखना,

भावोद्देक (दे १, ११८) ।

उगगीय सक [उद् + गोपय्] १ खोजना ।

२ प्रकट करना । ३ विप्रगुण करना । वक्.

‘हत्थी वा पुरिसे वा सुविण्णते एग मह

किहहमुत्तग का जाव सुविल्लमुत्तं वा

पासमाए पासति उगगोवेमाओ उगगेवेइ’

(भग १६, ६) ।

उगगोवणा बी [उद्गोपना] १ खोज,

गवेषणा,

‘एलए गवेसणा लग्गणा

य उगगोवणा य वोदव्वा ।

एए उ एग्गणा नामा

एगट्ठिया होति’ (पिड ७३) ।

२ देखो उगगम उगगम उगगोवण मग्गणा

य एगट्ठिया एगारि’ (पिड ८८) ।

उगगोविय वि [उद्गोपित] विमोहित, भ्रान्त,

‘उगगोवियमिति ऋणास मन्ति’ (भग

१६, ६) ।

उगघ देखो उव । उगघ (पट्) ।

उगघट्टि बी [दे] प्रवर्तन, शिरो-भूषण (दे
उगघट्टी १, १०) ।

उगघह सव [उद् + घाटय्] खोलना
(प्रास) ।

उगघह सक [उद् + घट्] खुलना ।

उगघइ (सिरी ५०४) । उगघहति (धर्म

वि ७६) ।

उगघडिअ वि [उद्घाटित] खुला हुआ (धर्म

वि ७७) ।

उगघडिअ वि उद्घाटित’ खुला हुआ । २

छिन्न, नष्ट किया हुआ (से ११, १३०) ।

उगघर वि [उद्गृह] गृह-स्वागी, जिसने

गर्बार छोड़ कर संन्यास लिया हो वह,

साधु ।

‘धवोव्व कालपत्ते परिह्वाइएए पए पमायपयो ।

तह उगघरविगपरनिरगणो वि नम ह्विस्सम सहइ’

(छाया १, १० टी) ।

उगघव देखो अगघ । उगघवइ (दे ५, १६९

टि. राज) ।

उगघसिय न [अनपपिन] वर्षण (राम ६७) ।

उगघाअ पु [दे] १ सप्पह, सचात (दे १,

१२६, स ७७, ४३६, गडड, से ५, ३५) ।

२ स्वपुट, विपमानत प्रदेश (दे १, १२६) ।

उगघाअ पु [उद्घात] १ मारम्भ, प्रारम्भ,

‘उगघाओ मारओ’ (पास) । २ प्रतिपात होकर

लगना । ३ सप्पकरण, भाग-पात (ठा ३) ।

४ उगोद्घात, सूचिका (विसे १३५८) । ५

हास (ठा ५, २) । ६ न. प्रायश्चित्त-विशेष ।

७. निरीध सून का एक भ्रय, जिसमें उक्त

प्रायश्चित्त का वर्णन है, ‘उगघायमणुग्गवां

मारोएण तिविहोमो निक्कोह तु’ (भाय ३) ।

उगघाअ सक [उद् + घातय्] विनाश

करना । उगघाइ (उत २६, ६) ।

उगघाइम वि [उद्घातित] १ लज्ज, छोटा ।

२ न. लज्ज प्रायश्चित्त (ठा ३) ।

उगघाइय वि [उद्घातित] १ विनाशित (ठा

१०) । २ न. लज्ज प्रायश्चित्त (ठा ५) ।

उगघाइय वि [उद्घातित] लज्ज प्रायश्चित्त

वाला (वच १) ।

उगघाइय न [उद्घातित] लज्ज प्रायश्चित्त

(कम) ।

उग्याड सक [उद् + पाटय्] १ खोलना । २ प्रकट करना । ३ बाहर करना । उग्याड (ह ४, ३३) । उग्याड (महा) । छत्र उग्याडिऊण (महा) । क. उग्याडिअन्व (था १६) । कचट. उग्याडिजंत (स ३, १२) ।

उग्याड पुं [उद्घाट] प्रकट, प्रकाश, 'जिनु कम्मो बहुएणं उग्याडो निययक्कमाण' (निरि ५२८) ।

उग्याड देखो उग्याड = उद् + पाटय् । हेह, 'तं जिणएहस्स वार केण्वि नो सत्तिय उग्याड' (निरि ५२८) ।

उग्याड वि [उद्घाट] १ खुला हुआ, प्रकाशित (पउम ३६, १०७) । २ बोधा बन्ध किया हुआ 'उग्याडकवाउग्याडएण' (भाव ४) । ३ व्यक्त प्रकट । ४ परिपूर्ण, प्रसूत, 'एयत्तरस्मि उग्याडपोरिस्सीसूयणा वत्ती पत्तो' (सुपा ६७) ।

उग्याडण न [उद्घाटन] १ खोलना (भाव ४) । २ बाहर करना, बाहर निष्कासना (उप ५ ३६७) ।

उग्याडगा श्री [उद्घाटना] ऊपर देखो (भाव ४) ।

उग्याडिअ वि [उद्घाटित] १ खुला हुआ । २ प्रकटित, प्रकाशित (सि २, ३७) ।

उग्यायण न [उद्घाटन] १ नारा, विनाश (भाव) । २ पूज्य-स्थान, उत्तम जगह । ३ सरोवर मे जाने का मार्ग (भाव २, ३) ।

उग्यार पु [उद्घार] सिन्धु, छिड़काव, 'विण्णित्थिउग्यार निवडिओ धरणिवट्टे' (स ५६८) ।

उगिघट्टु वि [उद्घुट्टु] सघट्ट, 'गमिरमुद-उग्युट्ट' किरोडुगिघट्टुपागारविद' (लहूष ४, से ६, ८०) ।

उग्युट्ट वि [उद्घुट्ट] घोषित, उद्घोषित (मु १०, १४, सण), 'भमरवहउग्युट्टयययार' (महा) ।

उग्युट्ट वि [उद्घोषित], लुप्त, दूरीकृत, विनाशित (दे १, ६६), उरपासिरेणोमुह-बणलउग्युट्टमहिरमा जणममुभा' (स ११, १०२) ।

उग्युस सक [सूज्] साफ करना, मार्जन करना । उग्युस (हे ४, १०५) ।

उग्युस सक [उद् + घुप्] देखो उग्योस । संक. उग्युसिअ (नाट) ।

उग्युसिअ वि [सूट] मार्जित, साफ किया हुआ (कुमा) ।

उग्योस सक [उद् + घोपय्] घोषणा करना, विदोषा पित्रवाना, जाहिर करना । उग्योमेह (विपा १, १) । वक. उग्योसेमाण (विपा १, १, ख्याया १, ५) । कचट. उग्योसिज्जमाण (विपा १, २) ।

उग्योस पुं [उद्घोष] नीचे देखो (स्वप्न २१) ।

उग्योसेणा श्री [उद्घोषणा] हुनो पितवाना, विदोषा पिटवा कर जाहिर करना (विपा १, १) ।

उग्योसिय वि [मार्जित] साफ किया हुआ, 'उग्योसियनुनिम्मल व धार्यसमज्जतल' (पएह २, ५) ।

उग्योसिय वि [उद्घोषित] जाहिर किया हुआ, घोषित (अवि) ।

उघूण वि [दे] पूर्ण मयूर (पद्) ।

उचिय वि [उचित] योग्य, वायव्य, मनुष्य (कुमा, महा) । 'णुप्प वि [उ] विवेकी (उप ७६८ टी) ।

उच्च न [दे] नाभि-स्थ (दे १, ८६) ।

उच्च वि [उच्च, क, उच्चैस्] १ ऊँचा उच्च (कुमा) । २ उत्तम, उत्कृष्ट (हि २, १९४, सूत्र १, १०) । 'उच्चद वि [उच्चन्दस्] स्वर, स्वेच्छाचारी (पएह १, २) । 'गागरी देखो 'गागरी (कम्प) ।

'त न [उ] १ ऊँचाई (सम १२, जी २८) । २ उत्तमता (ठा ४, १) । 'तभयग, 'तभय-य पु [रश्मृतक] जिससे समय और वेतन का इकरार कर यथासमय नियत नाम लिया जाय वह नौकर (राज ठा ४, १) ।

'चरिया श्री [चरिका] लिपि विशेष (सम ३५) । 'यवणय न [यवणय] लम्बयानाकार वस्तु विशेष, 'यवणय ए अणगारस्स गीणाए भयमेयावसे तवक्कलवान्ने होत्था, से जहानामए करणोवा दवा कुटिया-

नीचा इत्ता उच्चयएण एणा' (मनु) । 'यच्चिआ

श्री ['यच्चिआ] ऊँचा-नीचा करना, जैसे-तैसे रखना, 'कह तपि तुइ ए एणं नह सा

मांसदिप्राण बहुप्राण । काउए उच्चयचिं तुह

दसएलेहना पडिआ' (गा ६६७) ।

'यान पुं ['वाद्] प्रसास, स्ताभा (उप ७२८ टी) । देखो उच्चा ।

उच्चइज वि [उच्चयित] एकत्रीकृत, इकट्ठा किया हुआ (काल) ।

उच्चंडिय वि [दे] ऊँचा बडामा हुआ (हम्मोर २८) ।

उच्चंतय पु [उच्चतरा] बल-रोग, बल मे होनेवाला रोग विशेष (राज) ।

उच्चिअ वि [दे] १ दीर्घ, लम्बा, प्रायत (दे १, ११६) । २ भ्रातृत्व, दबामा हुआ, रोधा हुआ 'सौस उच्चचिअ' (तडु) ।

उच्चिअ वि [दे] उन्नत, ऊँचा पैँका हुआ (दे १, १०६) ।

उच्चत वि [उच्चयत्] पतित, त्यक्त (पाप) ।

उच्चतरस न [दे] १ दोनो तरफ का स्तूप भाग । २ प्रतिपक्षित भ्रमण, अभ्यवस्थित विवर्तन (दे १, १३६) । ३ दोनो तरफ से ऊँचा नीचा करना (पाप) ।

उच्चय वि [दे] दृढ, मजबूत (दे १, ६७)

उच्चयिअ वि [दे] मुणित, उदया हुआ (पद्) ।

उच्चय वि [दे] प्राकट, ऊपर बैठे हुए (दे १, १००) ।

उच्चय सक [उच् + स्यज्] ध्याय देना छोड़ देना । क. उच्चयणिज्ज (पउम ९६, २८) ।

उच्चय पु [उच्चय] १ ननुह राशि 'एयलो-चय विसाल' (सुपा ३४, कम्प) । २ ऊँचा ढेर करना (सम ८, ६) । ३ नीची, छी के कटो-बल से नाड़ी (पाप) । 'वय पु [वग्ग] वन्ध विशेष, ऊपर ऊपर रन कर चीनो को बांधना (सम ८, ६) ।

उच्चय पु [अरचय] इकट्ठा करना, एकत्री-करण (दे २, २६) ।

उचर सक् [उत् + चर] १ पार जाना, उतीर्ण होना । २ पहुँचा, चोल्ना । ३ धरा, समर्थ होना पहुँच सकना । ४ बाहर निरग्न-नाना । उचर (मूल ४६) : 'मूलदेवेण य निरग्नमाई पामाई जाय दिट्ठु' नितियासि-हत्थेहि वेदिमत्ताण्यं मणुसेहि । चितियं च : एाहमेसि उचरमि, बाय्यं च मए चरनरज्जाण्यं निराउहो संपये, तां न पोरिमन्वानमरोति चितियं भणियं (महा) । बहू ।

'भरिउडारंतपरिपिप्रसंभरणिमुणो वराईए । परिव्राहो विप्रदुक्कलस बहूद रागएद्विप्रा बाहो' (गा ३७७) ।

उचरण न [उचरण] वचन, उचारण, 'विद-ममस्व सोहि धम-उच्चरणोद माऊण' (मुपा ३१७) ।

उचरिय वि [उचरित] १ उतीर्ण, पार-प्राप्त : 'तीए हृत्पिसेभुचरियाए उचिऊण भय, जीविदायाकोति पुणिएऊ तुम साहितासं परोदसो' (महा) । २ उचरित, कवित, उत (विम १०८३) ।

उचलण न [उचलन] उमर्दन, उल्टीठन (गण) ।

उचलिय वि [उचलिय] चलित, गत (भवि) । उचल वि [दे] १ धम्यासित, मालुड । २ विदारित, छिन्न (पहू) ।

उचल सक् [उत् + चल्] १ चलना, जाना । २ समीप मे प्राना ।

उचलिय वि [उचलित] १ गत, गया हुआ । २ समीप मे प्राया हुआ ।

'जिणमवणुवुवाएद्विउच्चलिय-

उल्लमालिहोहस ।

पुष्काह गेएहत्तो, बढो

विहिण पविट्ठो ह'

(सुर ३, ७४) ।

उचा ॥ [उचैस्] १ ऊँचा, 'तो वेण दुड-हरिणा उचा हृत्तिण जोम पचवत्तं । उच-खोमी सो रएण' (महा) । २ उत्तम, श्रेष्ठ (हा २, १) । 'गोच, 'गोय न [गोन्] १ उत्तम गोच, श्रेष्ठ-वत् । २ कर्म विशेष, जिसके प्रभाव से जीव उत्तम माने-जाते कुल में उत्पन्न होता है (हा २, ४, श्यावा) । 'बय

॥ [क्रा] १ महाव्रत (उत्त १) । २ वि. महाव्रतधारी (उत्त १४) ।

उचाअ वि [दे] १ शान्त, यना हुआ (भोष ५१८) । २ पुं. ध्यातिग, परिगम (मुपा ३३२) ।

उचाइय वि [दे उच्चाजित] उच्चापित, उचाया हुआ, 'उचाया ननरा' (स २०६) ।

उचाण पुं [उचाण] हिमाचन पर्वत । 'य वि [उज] हिमाचल मे उत्पन्न, 'उचामयठाण-सुत्तंसिण' (कण) ।

उचाड वि [दे] मित्रग, निरात (दे १, ६७) ।

उचाड सक् [दे] १ रोचना, निराटना । २ धर. प्रकटित करना, दिग्विस्तार होना (दे २, १६३ डि) ।

उचाडण न [उचाटन] १ एक स्थान से दूसरे स्थान में उठा ले जाना, हल-स्थान से भ्रष्ट करना । २ मन्त्र विशेष, जिसके प्रभाव से वस्तु अपने स्थान से उटायी जा सकती है, 'उचाडणुभणमोहणाइ सञ्चयि मइ वरयय व' (मुपा ५६६) ।

उचाडणी छी [उचाटनी] द्विधा विशेष जिससे द्वारा वस्तु अपने स्थान से उठायी जा सकती है (सुर १३, ८१) ।

उचाडिर वि [दे] १ रोक्नेवाला, निवारण करनेवाला । २ शरतीस करनेवाला, दिलीवर, 'कि उज्जावंतीए, उग्र दूरतीए कि नु भोमाए । उचाडिरीए वेवेचि, तीए भणिए न विम्हणी' (दे २, १६३) ।

उचार सक् [उत् + चारय] १ बोलना, उच्चारण करना । २ मलोत्पन्न करना, पोषणा जाना । उचारोद (उवा) । वक् उचारयव (स १०७) । उचारमाम (कण, लाया १, १) । क. उचारयेव्य (उवा) ।

उचार पु [उचार] १ उच्चारण । २ विद्या, मलोत्पन्न (सग १०, उवा मुपा ६११) ।

उचार वि [दे] विमल, स्वच्छ (दे १, ६७) । उचारण ॥ [उचारण] वचन, 'इसि हस-पंचसखारणुदाए' (धौर) ।

उचारिअ वि [दे] गृहीत, उगाध (दे १, ११४) ।

उचारिअ वि [उच्चारित] १ कथित, उक्त । २ पाठाना गया हुआ (उवा) ।

उचाल सक् [उत् + चालय] १ ऊँचा पँचना । २ दूर चरना । संक. 'उचालइय विहाणुमु धदरा भासणामो पलइमु' (माधा) ।

उचालइय वि [उचालयित्] दूर चरनेवाला ध्यानगता, 'जं जाओआ उचालइय तं जाओआ दुरातइय' (माधा) ।

उचालिय नि [उचालिन] उठाया हुआ, ऊँचा किया हुआ, उच्चापित, 'उचानियमि पाए इरियासिमिस्स सवमट्टाए' (भोष ७४८, दमति ४४) ।

उचाय सक् [उचाय्] ऊँचा करना, उठाना । संक. उचानइचा, 'दोवि पाए उचावइत्ता सन्धो समत्त समनिनाएम्' (पएण १७) ।

उचावय वि [उचावच] १ ऊँचा क्षीर नीचा (लाया, १, १, पएण ३४५) । २ उत्तम क्षीर अथवा (भग १४) । ३ मनुज क्षीर प्रवित्रल (भग १, ६) । ४ अथमजस, प्रत्य-वस्थित (लाया १, १६) । ५ निविच, ताना-निच, 'उचावयमाहि तेज्जाहि ववस्सी भिसू चामन' (उत्त ८) । ६ उल्लटवर, विशेष उत्तम, 'एण एत्तस माणुदस्स समलोवासणस उचावएहिं सीपव्वमउएवेरमएपञ्चसाराणीस-होववामेहि अण्यए भावेमाएस्स' (उवा, भोष) ।

उच्चाविय वि [उचित] ऊँचा किया हुआ (वज्जा १३२) ।

उच्चिहट्ट भक् [उत् + स्था] खड़ा होना । उच्चिट्ट (काल) ।

उच्चिडिभ वि [दे] मयदा रहित, निर्लज्ज, 'उच्चिडिभ मुक्कजाय' (पाप्म) ।

उच्चिण सक् [उत् + चि] कृत् वगैरह को लोड कर एवमित करना, झट्टा करना । उच्चि-णद (हे ४, २४१) । वक्. उच्चिणत (भवि) । उच्चिणय न [उच्चयन] भवचयन, एकत्रोकरण (मुपा ४६६) ।

उच्चिणिय वि [उचित] झट्टा किया हुआ, अवचित (पाप्म) ।

उच्चिणिर वि [उचैट्] कृत् वगैरह को चुनने-वाला (हुमा) ।

उच्चिय देखो उच्चिय, 'तत्स सुषोन्वियपत्र-
त्तण्णो संतोसमणुपत्ता' (उप १६६ टी)।

उच्चियल न [दे] कलुपित जल, मैसा पानी
(पाप्र)।

उच्चुच वि [दे] टल, गविह, भूमिमानो (दे
१, ६६)।

उच्चुग वि [दे] ग्रनरसियत (पह)।

उच्चुड भक [उन् + चुड] ग्रनरसण
करना, हटना। वह उच्चुडत (गड ७३३)।

उच्चुप सक् [चट्] बदना भालह होना,
ऊपर गेना। उच्चुपाइ (ह ४, २५६)।

उच्चुपिअ वि [दे, चटित] भालह, ऊपर
बसा हुआ (दे १, १००)।

उच्चुरण [दे] उच्छिष्ट, कूटा (पह)।
उच्चुलउलिअ न [दे] कुतूहल से शीघ्र शीघ्र
जाना (दे १, १२२)।

उच्चुल वि [दे] उद्भिग, खित। २ भवि-
एह, भालह। ३ भीर, डरा हुआ (दे १,
१२७)।

उच्चुड पु [उच्चुड] निशान का नीचे लट-
कता हुआ शृंगारित वक्राश (उप ४४६)।

उच्चूर वि [दे] मानाविष, बहुविध (रान)।

उच्चूल पु [अपमूल] १ निशान का नीचे
लटकता हुआ शृंगारित वक्राश (उप ४४६
टी)। २ भीमा-सिर—पैर ऊपर कीर सिर
नीचे कर—बसा किया हुआ (विपा १, ६)।
उच्चो देखो उच्चिण। उच्चैह (ह ४, २५१)।
हेह, उच्चैह (गा १५६)।

उच्चैय वि [उच्चैवस्] विन्तातुर मनवाना
(पाप्र)।

उच्चैहर न [दे] १ उत्तर भूमि। २ जघन-
स्नानीय देश (दे १, १३६)।

उच्चैय वि [द] प्रकट, व्यक्त (दे १, ६७)।
उच्चोद पु [दे] शोषण, 'चरुणोच्चोदकारी चरो
देहस धरा' (कप्पु, प्राप)।

उच्चोदय [उच्चोदय] चरुणा का एक देव-
हृत प्रासाद (उत्त १३, १३)।

उच्चोल पुं [दे] १ लद, उडंग। २ नीचो, क्षी
के कटीनख की माडी (दे १, १३१)।

उच्छ पुं [उक्षन] नैल, वृषभ (हे २, १७)।

उच्छ पु [दे] १ मात का भावरण (दे १,

८३)। २ वि. मृग, हीन; 'उच्छतं वा मृग-
त्वम्' (पह २, १)।

उच्छअ पुं [उत्सव] क्षण, उत्सव (हे २,
२२)।

'उच्छअ वि [पृच्छक] प्रन-कर्ता (गा ६०)।
उच्छइअ वि [उच्छदित] भाष्यदित,
'पालवउच्छइअयच्छयलो' (कान)।

उच्छंसल वि [उच्छंसल] १ शृङ्गला रहित,
भवरोव-नचित, वन्यन-शून्य। २ उदत, निर्-
कुश (गड ३)।

उच्छंगरलिय वि [उच्छंगलिय] भवरोप-
रहित किया हुआ, धुला किया हुआ; 'उच्छं-
गलिववणएण सोहणं विवि पवणालु'
(गड ३)।

उच्छंग पुं [उत्सङ्ग] मध्य भान, 'मउच्छङ्ग-
परिणहमियंनोएशवमासिणो पसुवइणो'
(गड ३, मे १०, २)। २ कौड, गोद, कौरा
(पाप्र), 'उच्छो णिविसेता' (भावप)। ३
गुट देश (भीप)।

उच्छंगिअ वि [उत्सङ्गित] कोर, कोली या
गोद में लिया हुआ (उप ६४८ टी)।

उच्छंगिअ वि [दे] माये किया हुआ, माये
रखा हुआ (दे १, १०७)।

उच्छंय देखो उत्थंय (हे ४, ३६ टी)।

उच्छंट पु [दे] भङ्ग से की हुई चोरी (दे १,
१०१, पाप्र)।

उच्छंट पु [च] चोर, डाह (दे १, १०१)।
उच्छंटिअ वि [दे] चुराई हुई चीज, चोरी
का माल (दे १, ११२)।

'उच्छण न [प्रच्छन] प्रश्न, पूछना (गा
५००)।

उच्छण देखो उच्छण (ह १, ११४)।
उच्छत न [अपच्छत] १ अपने दोष को
ढकने का व्यर्थ प्रयत्न, गुणराही मे 'दावपि-
छोले'। २ भूषावाद, झूठ वचन (पह १,
२)।

उच्छत वि [उत्सत] छिन, सफ़ाउ, नष्ट
(कुमा सुग ३८४)।

उच्छप्प सक् [उन् + सप्पय] उन्नत करना,
प्रभावित करना। उच्छप्पइ (सुपा ३५२)।

वह. उच्छप्पंत (सुपा २१६)।

उच्छप्पण न [उत्सपण] उत्पत्ति, समुदय
(सुपा २७१)।

उच्छप्पणा क्षी [उत्सपणा] ऊपर देखो,
'विणपवयणमि उच्छप्पणाउ कारेइ विवि-
हापो' (सुपा २०६; ६४६)।

उच्छल भक [उत् + शल] १ उछलना,
ऊँचा जाना। २ बूदना। ३ पसरना, फैलना
वह. उच्छलंत (कप्प, गड ३)।

उच्छलण न [उच्छलण] उछलना (दे १,
११८, ६, ११४)।

उच्छलित वि [उच्छलित] उछलना हुआ,
ऊँचा गया हुआ (गा ११७, ६२४, गड ३)।
२ प्रश्न, फैला हुआ; 'ता ताए वरगयो'।
उच्छलियो छनितं पिव गथ गोसोसवणव-
णस्स' (सुपा ३८५)।

उच्छलिर वि [उच्छलित] उद्धतनेवाला
(धर्मव १४; कुप १७१)।

उच्छल देखो उच्छल। उच्छलइ (पि ३२७),
'उच्छलपति समुद्ध' (हे ४, ३२६)।

उच्छल वि [उच्छल] उछलनेवाला (भवि)।
उच्छलणा क्षी [दे] भगवर्तना, प्रप्रेषणा,
'कण्ठपहारनिहयमारुक्खियसरकनवयएत-
वणामसच्छुच्छलणाहि विमण्णा चारगववहिं
पवेसिया' (पह १, ३)।

उच्छलित देखो उच्छलित (भवि)।
उच्छलित वि [दे] मित्रकी छाल वाली गई
हो वह, 'तएणो उच्छलित्ता य धोहि' (दे
१, १११)।

उच्छय देखो उच्छय (कुमा)। २ उल्लेख
(भवि)।

उच्छयिअ न [दे] शय्या, बिछौना (दे १,
१०३)।

उच्छइ सक् [उन् + सह] उच्चम करना।
वह. उच्छइ (सह ६, ३, ६)।

उच्छइ भक [उन् + सह] उस्ताहित
होना। वह. उच्छइत (भवि)।

उच्छइय वि [उत्सहित] उन्मादयुक्त
(सण)।

उच्छइअ वि [अपच्छादित] भाष्यदित,
ढका हुआ (पउम ६१, ४२, मुर ३, ७१)।

उच्छइअ (भवि) वि [अपच्छादन] ढका
हुआ (भवि)।

उच्छइय देखो उच्छय = उन्नत (प्रमा)।

उच्छय पुं [उच्छय] उच्च उच्छय (अ
७)।

उच्छ्राय सक [अव+छाद्य] आच्छादन करना, ढकना । सक. उच्छ्राइऊण (वेद्य ४८५) ।

उच्छ्रायण वि [अवच्छादन] आच्छादक, ढकनेवाला (स ३२३) ।

उच्छ्रायण वि [उच्छादन] नाशक (स ३२३, ५६३) ।

उच्छ्रायणया स्त्री [उच्छादना] १ उच्छेद, उच्छ्रायणा विनाश (भग १५) । २ व्यवच्छेद, व्याप्ति (राज) ।

उच्छ्राय देवो उत्थार=मा + क्रम (हे ४, १९० टी) ।

उच्छ्राय सक [उन्+शाउय] उच्छालना, ऊँचा फेंकना । बहु. उच्छ्रायित (कुम्भा ४) ।

उच्छ्रायण न [उच्छालन] उछालना, उछोपण (कुम्भा ५) ।

उच्छ्रायिअ वि [उच्छालित] कँका हुआ, उल्लिख (सुरा ६७) ।

उच्छ्राय देवो ऊसास (मे ६८) ।

उच्छ्राय सक [उन्+साहय] उछाह दिलाता, उछोवित करना । उच्छ्राह (सुरा ३५२) ।

उच्छ्राह पु [उत्साह] १ उछाह (ठा २, १) । २ हृद उद्यम स्थिर प्रयत्न (सुज २०) । ३ उल्लास उल्लुक्ता (चव २०) । ४ पराक्रम, बल । ५ सामर्थ्य, शक्ति (भाङ्ग १, हे १, ११४, २ ४८, पञ्च २०, ११८) ।

उच्छ्राह पु [दे] सूत का बोरा (हे १, ६२) ।

उच्छ्राहण न [उत्साहन] उरोजन, प्रोसाहन (उप ५६७ टी) ।

उच्छ्राहिय वि [उत्साहित] प्रोसाहित उछोवित (पिठ) ।

उच्छ्रद सक [उत्+छ्रिद] उन्मूलन करना, उखाड़ना । सक उच्छ्रिदिय (सूत ४४) ।

उच्छ्रिदण न [दे] उधार लेना, करना लेना, मूद पर लेना (पिठ ३१७) ।

उच्छ्रिपण वि [अवच्छिम्पक] बोरो को सान-पान वगैरह की सहायता देना (पण्ड १, ३) ।

उच्छ्रिपण न [उत्क्षेपण] १ ऊपर फेंकना । २ बाहर निकालना (पण्ड १, १) ।

उच्छ्रिद वि [उच्छ्रिद] पूछा, उच्छ्रिद (सुरा ११७, ३७५, प्राय १५८) ।

उच्छ्रिद वि [उच्छ्रिद] परिष्ट, प्रसम्भ (दस ३, १ टी) ।

उच्छ्रिपण वि [उच्छ्रिपण] उच्छ्रिप, उन्मूलित (ठा ५) ।

उच्छ्रिद वि [दे] १ उत्तिष्ठ, फँका हुआ । २ विनिष्ठ, पागल (दे १, १२४) ।

उच्छ्रिद वि [उच्छ्रिप] कँका हुआ (से ५, ६१, पाम) ।

उच्छ्रिद देवो उच्छ्रिय (मे २, १३, पञ्च) ।

उच्छ्रिद वि [उत्तिष्ठ] सोचा हुआ, चिन्त (दे १, १२१) ।

उच्छ्रिद देवो उच्छ्रिपण (कण) ।

उच्छ्रिद देवो उच्छ्रिपण ।

उच्छ्रिद वि [उच्छ्रिद] उन्नत, ऊँचा (राज) ।

उच्छ्रिदण वि [दे] उच्छ्रिद पूछा (पद) ।

उच्छ्रिद न [दे] १ छिद्र, बिबर (दे १, ६५) । २ वि प्रवर्ज्य (वि) ।

उच्छ्रिद देवो इच्छु (पाद्य, गा १४१, पि १७७, शोध ७७१, दे १, ११७) । 'जत न [य] ईस मेले का माना (दे ६, ५१) ।

उच्छ्रिद पु [दे] पवन, वायु (दे १, ८५) ।

उच्छ्रिद वि [उत्सुक] उत्कण्ठित (हे २, २३) ।

उच्छ्रिद अ न [दे] दखे डले की हुई चोरी (दे १, ६५) ।

उच्छ्रिद अण न [दे] ईल का खेत (दे १, ११७) ।

उच्छ्रिद आर वि [दे] सख्त, दबा हुआ (दे १, ११५) ।

उच्छ्रिद वि [दे] १ बाण वगैरह से भागते । २ अग्रहत, धोना हुआ (दे १, १३२) ।

उच्छ्रिद देवो उच्छ्रिद (सुर ८, ६१) । 'भीम वि [भीम] जो उत्कण्ठित हुआ हो (सुर २, २१४) ।

उच्छ्रिद वि [दे] दस, अग्निमानि (दे १, ६६) ।

उच्छ्रिद वि [उच्छ्रिपण] १ सरिड, तोडा हुआ, 'उच्छ्रिपण मयिचं न निदलिध' (पाद्य) । २ आनन्द,

'रइणानि मणुच्छ्रुणा, वीसय माणए वि मणानिदा ।

तिमयेहि वि परिहिया, पवणमेहि मलिमा गुवेउच्छ्रणा' (से १०, २) ।

उच्छ्रिद वि [दे] १ निमित्त । २ पतित (शोध २२० भा) ।

उच्छ्रिद सक [अप+क्षिप्] भाबोश करना, गाली देना । उच्छ्रिद (भग १५) ।

उच्छ्रिद भण न [उत्क्षेपण] ऊँचा फेंकना (पव ७१ टी) ।

उच्छ्रिद वि [दे] मगिनवर, स्थायी (दे १, ६०) ।

उच्छ्रिदण न [दे] १ ईल का खेत । २ ईल, ऊँच (दे १, ११७) ।

उच्छ्रिद पु [दे] १ मनुवाद । २ खेद, उषे (दे १, १२१) ।

उच्छ्रिद वि [दे] घास, ऊपर बैठा हुआ (पद) ।

उच्छ्रिद वि [उत्तिष्ठ] १ व्यक्त, उन्मूलित (पाया १, १ उक्) । २ क्षुब्ध, दुःखी हुआ (राज) । ३ निष्कासित, बाहर निकाला हुआ (शोध) ।

उच्छ्रिद वि [उच्छ्रिद] ऊपर देवो 'उच्छ्रिद-सरीपरा शनो जीवो सरीरमन ति' (उप वि ६६) ।

उच्छ्रिद देवो उच्छ्रिद=उच्छ्रिद (हे ४, ११६ टी) ।

उच्छ्रिद देवो उच्छ्रिद (उप) ।

उच्छ्रिद पु [उच्छ्रिद] १ नाश उन्मूलन 'एगुच्छ्रिदमिनि मुहुनुल्लिखिअणमजुत्त' (सम्म १८) । २ व्यवच्छेद, व्याप्ति, 'उच्छ्रिदो मुत्तयाण ववच्छेउत्ति वुत्तं मयति' (शोध १) ।

उच्छ्रिदयण न [उच्छ्रिदन] विनाश, उन्मूलन, 'चित्ते एव समधो एवमुच्छ्रिदयो मग्ग' (सुरा ३३३) ।

उच्छ्रिद सक [उन्+क्षि] १ ऊँचा होना, उन्नत होना । २ अधिक होना, शक्तिरिक्त होना । बहु उच्छ्रिद (पाम १६४) ।

उच्छ्रिद पु [उत्क्षेप] १ ऊँचा करना, उछाना । २ फेंकना (चव २, ४) ।

उच्छ्रिद पु [उत्क्षेप] प्रक्षेप (चव ४) ।

उच्छेद्यन [उत्सेपण] ऊपर देखो (मे ६, २५) ।

उच्छेद्यन न [दे] घृत, घी (दे १, ११६) ।

उच्छेद्य पुं [उत्सेध] ऊँचाई (दे १, १३०) ।

उच्छोडिय वि [उच्छोडित] छुटाया हुआ, मुक्त किया हुआ। 'उच्छोडिय-बैघो सो रत्ना भणियो म भद'। उर्वविससु (सुर १, १०५)। 'पासद्वियुत्तिहेह सखणयुच्छोडिया म से वैया' (सुर २, ३६) ।

उच्छोभ वि [उच्छोभ] १ शोभा-रहित । २ न. पिशुनता, चुगली (राज) ।

उच्छोल सक [उत् + मूल्य] उम्मीलन करना, उवाटना । वहु. उच्छोलैल (राज) ।

उच्छोल सक [उत् + क्षाल्य] प्रक्षालन करना, धोना । वहु. उच्छोलैल (निबू १७) ।

प्रयो., वहु. उच्छोलैल (निबू १६) ।

उच्छोलेण न [उत्क्षालन] प्रभूत जल से प्रक्षालन, 'उच्छोलेण न कक वत निज पयियाणिया' (सूत्र १, ६, शीप) ।

उच्छोलेणया श्री [उत्क्षालना] प्रक्षालन (वत ५) ।

उच्छोलेया श्री [दे] प्रभूत जल, 'नहर्बन्वेगरो मे जमेह उच्छोलेयोयणो मयमो' (उव) ।

उच्छोलियु वि [उत्क्षालयिष्] डूबोलेवाला, निमग्न बनरनाला (सूत्र २, २, १८) ।

उजु देखो उजु (भाषा, कण्) ।

उजुअ देवो उजुअ (माद) ।

उज देखो ओय = भोगस् (कण्) ।

उज न [ऊर्ज] १ वेग, प्रताप । २ बल (कण्) ।

उजअणी } की [उजयनी, 'यिनि']

उजइणी } नगरी-विशेष, मालव देश की प्राचीन राजधानी, आजकल भी यह 'उजैन' नाम से प्रसिद्ध है (बाह ३०, पि ३८६) ।

उजंगल न [द] बलात्कार, जबरदस्ती ।

२ वि. दीर्घ, लम्बा (दे १, १३५) ।

उजगरय पुं [उज्जगरक] १ जागरण, निद्रा का भगवत् ।

'जय न उजगरयो,

जय न ईसा विमुरणं माण ।

सम्भावाचतुमं जय,

मयि नेहो तहि नति' (वज्र ६८) ।

उजगिर न [उज्जगर] जागरण, निद्रा का भगवत् (दे १, ११७, वज्र ७४) ।

उजगुज वि [दे] स्वच्छ, निर्मल (दे १, ११३) ।

उज्ज वि [दे] उजाग, वसति-रहित (दे १, ६६) ।

'उक्ताएणमरोणयत-

सउज्जमूविमट्टवित्तविसमा

योउज्जउक्कविउवा इपाओ

ता उज्जमनीओ' (मउउ) ।

उज्जणि वि [दे] बक, टेडा (दे १, १११) ।

उज्जम सक [उद् + यम्] उद्यम करना, प्रयत्न करना । उज्जमह (कण् १४) ।

उज्जमह (उव) । वहु. उज्जमत, उज्जम-

माण (पणह १, ३)। 'ए करेइ बुक्कमोउ

उज्जममाणवि संजमनेमु' (सूत्र १, १३) ।

ऊ. उज्जमिअव्य, उज्जमेयव्य (सुर १४, ८३, मुपा २८७, २२४) । हेह. उज्जमिउ (उव) ।

उज्जम पुं [उद्यम] उद्योग, प्रयत्न (उव, श्री ५०, प्रासू ११५) ।

उज्जमण (मप) न [उद्यापण] उद्यापन, वन-

समाप्ति-कार्य (मवि) ।

उज्जमि नि [उद्यमिन्] उद्योगी (सूत्र ४१६) ।

उज्जमिय (मप) वि [उद्यापित] समापित (वत) (मवि) ।

उज्जम्ह सक [उन् + जूम्ह] जोर से ऊँसाई मेवा । उज्जम्हइ (प्राह ६४) ।

उज्जय हि [उजय] उद्योगी, उद्युत, प्रयत्नशील (पाश, काप्र १६६, का ४४८) ।

'मरण न [मरण] मरण-विशेष (भाषा) ।

उज्जयंत पुं [उज्जयन्त] गिरदार पर्वत, इस उज्जयवर्धन, श्रविष्य जो करेइ गिरावर्तो (गी, बिदे १८)। 'ता उज्जयतसत्तनयसु

सिन्हेमु दोमुवि जिणिए' (सुणि १०६७५) ।

उज्जर वि [द] १ मध्य-गत, भीतर का । २ पुं. निर्बरण, शय (सुदु ४१) ।

उज्जल भक [उद् + जल] १ जलना । २ प्रकाशित होना, चमकना । उज्जलति (विक ११४) । वहु. उज्जलैल (एदि) ।

उज्जल वि [उज्जल] १ निर्मल, स्वच्छ (मप ७, न. कुमा) । २ दीप्त, चमकीला (कण्, कुमा) ।

उज्जल वि [दे] देखो उज्जल (हे २, १७४ डि) ।

उज्जलग वि [उज्जलग] चमकीला, देदीप्यमान, 'जाउज्जलगणधंवरं कयइ पयत

भउजेमवचल सिहि' (कण्) ।

उज्जलिअ पुं [उज्जवलित] तीसरी नरक-भूमि का सातवां नरकद्रक—नरक-स्थान विशेष (देवेन्द्र ८) ।

उज्जलिअ वि [उज्जवलित] १ उद्दीप्त, प्रकाशित (पउम ११८, ८८, श्रीप) । २ ऊँची ज्वालामो मे युक्त (जीव ३) । ३ न. उद्दीपन (राज) ।

उज्जल वि [दे] खेद-सहित, पसीनावाला, मर्मित, 'मुंथ कहुविण्णइंगा उज्जल्ला

मसमाहिया' (सूत्र १, ३) । २ बलवान, बलिष्ठ (हे २, १७४) ।

उज्जल न [औज्जल्य] उज्ज्वलता (गा ६२६) ।

उज्जल्ला श्री [दे] बलात्कार, जबरदस्ती (दे १, ६७) ।

उज्जव सक [उद् + यत्] प्रयत्न करना । वहु. 'कु'उवि उज्जयमाणं पदेव करति

रितय समण' (उव) ।

उज्जवण देखो उज्जावण (मवि) ।

उज्जइ सक [उद् + हा] प्रेरणा करना । वहु. उज्जहिंसा (उत २७, ७) ।

उज्जाअर पुं [उज्जागर] जागरण, निद्रा उज्जागर } का भगवत् (गा ४८३, वज्र ७६) ।

उज्जाडिअ वि [दे] उजाड किया हुआ (मवि) ।

उज्जाण न [उद्यान] उद्यान, बगीचा, उद्यान (मपु, कुमा) । 'जसा श्री [यात्रा] गोठी, गोठ (पाया १, १) । 'पालअ, 'पाल वि [पालक, 'पाल] बगीचा का रान, माली (सुपा २०८, ३०४) ।

उज्जाणिअ वि [ओद्यानिक] उद्यान-सम्बंधी, बगीचा का (मप १४, १) ।

उज्जाणिअ वि [दे] दिम्बोहट, नीचा किया हुआ (दे १, ११३) ।

उज्जाणिया श्री [ओद्यानिका] गोठी, उज्जाणिया } गोठ, 'उज्जाणं जल सोतो

उज्जाणियाए वन्दइ' (निबू ८ न १५१) ।

उज्जाणी स्त्री [ओज्यानी] गोष्ठी, गोठ
(मुपा ४=५)।

उज्जायण न [उज्जायत] गोत्र-विशेष (मुज्ज
१०, १ टी)।

उज्जाल सक [उत् + ज्वालय्] उज्ज्वल
करना, विशेष निर्मल करना। संज्ञ. उज्जाल-
सियं (थावक ३७६)।

उज्जाल सक [उद् + ज्वालय्] १ उजाला
करना। २ जलाना। संज्ञ. उज्जालिय,
उज्जालिन्ना (इस ५, भाषा)।

उज्जालण न [उज्ज्यालन] जलाना (इस ५)।

उज्जालण न [उज्ज्यालन] उज्ज्वल करना
(सिदि १=०)।

उज्जालय वि [उज्ज्यालक] भाग सुलगाने-
वाला (सूत्र १, ७, ५)।

उज्जालिअ वि [उज्ज्यालित] जलाना हुआ,
सुलगाना हुआ (सुर ६, ११७)।

उज्जायण न [उज्जायत] व्रत का समाप्ति-
कार्य (भाषा)।

उज्जायिय वि [दे] विकसित (सण)।
उज्जित देखो उज्जयंत (शायी १, १६)।

‘उज्जवेणसिहदे, दिवला

नाख नितीहिमा जस ।

तं धम्मचक्रवट्ठि,

अरिटुनेनि नमंसामि’ (पडि)।

उज्जीरिअ वि [दे] निर्मसिद्ध, अपमानित,
तिरस्कृत (दे १, ११२)।

उज्जीवण न [उज्जीवन] १ पुनर्जीवन,
जिलाना, तत्पनभावो एतो कुमरसुखीवणे
जासो’ (मुपा ५०४)। २ उद्दीपन (सण)।

उज्जीविय वि [उज्जीवित] पुनर्जीवित,
जिलाना हुआ (मुपा २७०)।

उज्जु वि [ज्जु] सरल, निष्कमट, सीधा
(धोप; भाषा)। ‘कइ वि [‘कृत] १
निष्कमट तवस्वी (भाषा, उत्त)। ‘कइ
वि [‘कृत] भाग्य-वहित भाषणवाला
(भाषा)। ‘जइ ‘जुजु वि [‘जइ] सरल
चिन्तु मूर्ख, वात्स्य को नही समझनेवाला
(पंचा १६, उत्त २६)। ‘मइ लो [‘मति]
१ मन पर्यंत ज्ञान का एक गेद, सांप्रत्य
मनोज्ञान, सामान्य रीति से दूसरे के मनोभाव

को जानना। २ वि. उक्त मनो-ज्ञानागता
(पण २, १; धोप)। ‘वालिया लो
[‘वालिक] नदी-विशेष, जिसके किनारे
भगवान् महावीर की वेवल-ज्ञान उत्पन्न हुआ
था (कप्प, स ४३२)। ‘मुत्त पुं [‘मुत्त]
वर्तमान वस्तु को ही माननेवाला नव-विशेष
(ठा ७)। ‘मुय पुं [‘भुत्त] देखो पूर्वोक्त
अर्थ, ‘पञ्चुपमगाही उज्जुमुसो एयविही
मुयेम्वो’ (पण)। ‘इय पु [‘इस्व]
वाहिना हाथ (धोप ५११)।

उज्जु पुं [‘ज्जु] संयम (सूत्र १, १३, ७)।

उज्जुअ वि [‘ज्जुक] ऊपर देखो (भाषा,
कुमा, भा १५६, ३५२)।

उज्जुआइअ वि [‘ज्जुआरित] सरल किया
हुआ (से १३; २०)।

उज्जुअ देखो उज्जुअ (वि ५७)।

उज्जुत्त वि [उज्जुत्त] उद्यमी, प्रयत्नशील
(सुर ४, १५; पाष्)।

उज्जुतिअ वि [दे] १ क्षीण, नष्ट। २ शुष्क,
सूखा (दे १, ११२)।

उज्जुद वि [उद् + ज्जुद] घाएण किया हुआ
(संयोग ५३)।

उज्जेणन पुं [उज्जयनक] थावक-विशेष,
एक उपासक का नाम (भाषा ४)।

उज्जेणी देखो उज्जणी’ (महा. बाप ३३३)।

उज्जोअ सक [उद् + योतय्] प्रकार
करना, उद्योत करना। उज्जोएइ (महा)। वइ-
उज्जोयंत, उज्जोइत, उज्जोयमाण, उज्जो-
एमाण (शायी १, १; मुपा ४७; सुर ८,
८७, मुपा २४२, जीव ३)।

उज्जोअ पुं [उद्योग] प्रयत्न, उद्यम (पउम
३, १२६; सुत्त ३६ पुष्क २८; २६)।

उज्जोअ पुं [उद् + योत] १ प्रकाश, उज्जेल।
‘भर वि [‘कर] प्रकाशक, ‘लोमस उज्जो-
अरे, धम्मविययरे जिणो’ (पडि, पाष्, हे
१, १७७)। २ उद्द्योत का कारण-भूत कर्म-
विशेष (सम ६७; कम्म १)। ‘त्य न [‘स]
शक्त विशेष (पउम १२, १२८)।

उज्जोअग वि [उद् + योतक] प्रकाशक, ‘सव्य
जलुज्जोअगम्’ (एदि)।

उज्जोअण न [उद् + योतन] १ प्रकाशन, श्रव-
भासन। २ वि. प्रकाश करनेवाला (उप

७२८ टी)। ३ पुं, सूर्य, रवि। ४ एक प्रसिद्ध
जैनाचार्य (मु ७; साधं ६२)।

उज्जोअय वि [उद् + योतक] १ प्रकाशक।
२ प्रभावक, उन्नति करनेवाला (उर ८, १२)।

उज्जोअंत देखो उज्जोअ = उद् + योतय्।

उज्जोइय वि [उद् + योतित] प्रकाशित (सम
१५३; मुपा २०५)।

उज्जोएमाण देखो उज्जोअ = उद् + योतय्।

उज्जोमिअ स्त्री [दे] रश्मि, रस्ती (दे १,
११५)।

उज्जोय देवां उज्जोअ = उद् + योतय्। वइ-
उज्जोयंत, उज्जोययंत, उज्जोवैत, उज्जो-
वैमाण (पउम २१, १५, स २०७; ६३१,
ठा ८)।

उज्जोवण न [उद् + योतन] प्रकाशन (स
६३१)।

उज्जोविय देखो उज्जोइय (कप्प, शायी १,
१; पण १, ४; पउम १, ६०, स ३६)।

उज्जम सक [उज्जम्] ध्याण करना, छोड़
देना। उज्जमइ (महा)। कवइ. उज्जिमज्जाण
(उप २११ टी)। सइ. उज्जिमज्ज, उज्जिमज्ज,
उज्जिमज्जण (समि ६०; वि ५७६; राज)।

हेइ. उज्जिमज्ज (शायी १, ८)। क. उज्जिम-
ज्जव (उप ५६७ टी)।

उज्जम पुं [उज्जम, उद् + य] उपाध्याय, पाठक
(विसे ३१६८)।

उज्जमअ वि [उज्जमक] ध्याण करनेवाला,
उज्जमण धोइनेवाला (सूत्र १, २, उप १७६
टी)।

उज्जमण न [उज्जमन] परित्याग (उप १७६;
मु ४०३; पउम १, ६०; धोप)।

उज्जमणया स्त्री [उज्जमना] परित्याग (उप
उज्जमणा ५६३, भाषा ४)।

उज्जमणिअ वि [दे] विज्ञेय, वेदा हुआ। २
निम्नीकृत, नीचा किया हुआ (पइ)।

उज्जमणय न [दे] पलायन, भागना (दे १,
१०३)।

उज्जमणय वि [दे] पलायित, भागा हुआ
(पइ)।

उज्जमण पुं [निर्भर] पर्यंत से गिरनेवाला जल-
प्रवाह, पहाड़ का भस्त्रा (शायी १, १;
सउ, भा ६६६)। ‘वणणी स्त्री [‘पणी]
उदक-भाव, जल-प्रपात (निज्ज ५)।

उत्तरिअ वि [दे] टेढो नजर से देखा हुआ ।
२ विभित । ३ क्षित, फँसा हुआ । ४ परि-
त्यक्त, उन्मिष्ट (दे १, १३३) ।

उत्तरिअ वि [दे] प्रवृत्त, बलिष्ठ (पद्) ।
उत्तरिअ वि [दे] १ प्रक्षित, फँसा हुआ ।
२ विक्षित (पद्) ।

उत्तरिअ पु [दे] उद्यम, उद्योग, प्रयत्न (दे
१, १५५) ।

उत्तरिअ वि [दे] उत्कृष्ट उत्तम (पद्) ।
“उत्तरिअ देवो अउत्तरिअ (उप पृ ३७४) ।

उत्तरिअ पु [उपाध्याय] विद्या दाना गुरु,
शिक्षक, पाठक (महा, मुर १, १८०) ।

उत्तरिअ वि [उत्तरिअ] चमकनेवाला
देदीप्यमान, चमकानेवाला (रमा) ।

उत्तरिअ वि [दे] १ क्षणीय लोभापवाद ।
२ वि निन्दनीय । ३ क्षणीय (दे ३, ५५) ।

उत्तरिअ वि [उत्तरिअ] १ परिवर्त्यक्त विमुक्त
(हुमा) । २ भित (भाव ४) । ३ न परिपक्व
(भणु) । “य पु [क] एक सार्यवाह वा
पुन (विपा १ २) ।

उत्तरिअ वि [दे] १ शुष्क, सूखा हुआ । २
निम्नीकृत नीचा विपा हुआ (पद्) ।

उत्तरिअ स्त्री [उत्तरिअ] एक सार्यवाह-
पत्नी (छाया १, ७) ।

उट्ट पुत्री [उट्ट] ऊँ, बरम (विपा १, ६
हे २, ३४ उवा) । स्त्री उट्टी (राज) ।

उट्टा पु [अनार] घाट, दीर्घ जलाराम
वा तट,
“अह ते मुट्टरे बहनुमनये सुमत्यमनसवणे ।
सीलायनि जहिध्व समरतलाए कुमारण्य”
(पद्य ६८, ३०) ।

उट्टिया देवो उट्टिया (पद्य ७८) ।

उट्टिय { वि [औपिक] ऊँ सम्प्रदाय । ऊँ
उट्टियय { के दोषो की बना हुआ (अ ५, ३
छोप ७) । ३ पु. शूल, नीकर (हुमा) ।
४ घटा, घट (उवा) ।

उट्टिया स्त्री [उट्टिका] घटा, घट कुम्भ (विपा
१, ६, उवा) । “समण पु [अमण] धानो-
पिक-मत्त वा साधु, जो बड़े घड़े में बैठ कर
तपस्या करता है (श्रीप) ।

उट्ट मक [उत् + स्था] उठना, खड़ा होना ।

उट्ट (हे ४, १७ महा) । उट्टेदे (पि ३०६) ।
वह, उट्ट (गा ३८२, गुपा २६६), उट्टित
(सुर ८, ४३, १३, ५३) । सह, उट्टाय,
उट्टित्तु, उट्टित्ता, उट्टित्ता (यत्न, भावा पि
५८२) । सह उट्टित्तु (उप पृ २५८) ।

उट्ट वि [उत्थ] उत्थित, उठा हुआ (भाष ७०
उवा) । “बइस मप [ोपवेश] उठ-ठेहे (हे ४,
४२३) ।

उट्ट पु [ओष्ठ] मोठ, मथर (सम १२४, गुपा
५२३) ।

उट्ट पु [उत्थ] जलचर जल विरोध (सूभ १,
७, १५) ।

उट्टण देवो उट्टण (पद्य १३०) ।

उट्टभ सक [अय + स्तम्भ] १ भालम्बन
देना, सहारा देना । २ धारकण करना
मम उट्टभइ (हे ४, ३६५) । सेकु उट्ट-
भिया एयावा मय (भावा १, ६, ३
११) ।

उट्टण न [उत्थापन] उत्थापन ऊँचा करना,
उठाना (सोम २१४, हे १, ८२) ।

उट्टविय वि [उत्थापित] उत्थापित, उठाया
हुआ खड़ा किया हुआ, सा सार्यय उट्टविया
भणइ किमामणकारण मुएहे (सुर ६
१६०) ।

उट्टा देवो उट्ट = उत् + स्था (प्राप्ता) ।
उट्टा स्त्री [उत्था] उत्थान, उठान “उट्टाए
उट्टेदे (छाया १, १, श्रीप) ।

उट्टाह वि [उत्थाह] उठनेवाला (प्राप्ता) ।
उट्टाह वि [उत्थित] १ जो तैपार हुआ हो,
प्रणु (पद्य १२, ६६) । २ उत्थन, उत्थित
(स ३७६) ।

उट्टाह देवो उट्टाह (उवा) ।

उट्टाण न [उत्थान] १ उठान, ऊँचा होना
(उवा) “मममसिलेहे धडगु ॥ वोचिइइ
पविसि महरिउट्टाण” (स १३, ३७) । २
उठान, उत्थित (छाया १, १४) । ३ धारक,
धारक (सम १५) । ४ उठान, बाहर निर-
तना (छदि) । “सुय न [अन] शास्त्र विरोध
(छदि) ।

उट्टाय देवो उट्ट = उत् + स्था ।

उट्टाय सक [उत् + स्थापय] उठाना ।
उट्टावेइ (महा) ।

उट्टावण देवो उट्टावण (नस) ।

उट्टावण देवो उट्टावण, “पवतएविहि निरवसे” (उवा) ।

उट्टावण देवो उट्टावण (भत २५) ।

उट्टाविय वि [उत्थापित] १ उठाया हुआ,
खड़ा किया हुआ (नप्) । २ उपातित “सुमए
उट्टावियो कनी एस” (उप ६४८ टी) ।

उट्टित्तु

उट्टित्तु

उट्टित्तु

उट्टित्तु

उट्टिय वि [उत्थित] उत्थित, खड़ा हुआ (सुर
३ ६६) । २ उत्थन, उठान (पएह १,
३) विहीसिया वावि उट्टिया एवा (गुपा
५४१) । ३ उदित, उदय प्राप्त, “उट्टियमि
मूरे (मणु) । उवाट, उजुच (प्रावा) ।
५ उदसित बाहर निकला हुआ (भाष ६५
भा) ।

उट्टिर वि [उत्थाप] उठनेवाला (सण) ।

उट्टिसिय वि [उट्टियुपित] गुणित रोमा
क्षित (श्रीप हुमा) ।

उट्टीअ (मप) देवो उट्टिय (पिग) ।

उट्टुम { सक [अय + छोय] पूरना ।

उट्टुह { उट्टुमति उट्टुमह (पि १००),
उट्टुह (भग १५) । सह, उट्टुहइत्ता
(भाष १५) ।

उट्टिअ (मप) देवो उट्टिय (पिग) —पद्य
५८१) ।

“उट्ट पुन [सुट] घट, कुम्भ

पडिक्खमणएणुन तावएणउउमणगणकुंने ।
गुरिससवहिमधपरिए कीस मणतो मणे बहमि”
(गा २६०)

“उट्ट पु [सुट] समूह, राशि ‘सणी जहा
भउउउ भतार जो विहिइस’ (सम ९१) ।

“उट्ट देवो पुड (उवा, महा, गउउ गा ६६०,
सुर २, १३ प्राप्ता ३६) ।

उट्टन पु [उट्ट] एक ऋषि, तापम विरोध
(निपु १२) ।

उट्टव वि [उ] निम, निमा हुआ (पद्) ।

उट्टव { पु [उट्ट] ऋषि पापम, पाल-
उट्टव { शांता, पता से बना हुआ पर (ममि
उट्टव { १११, प्रति ८४, भमि ३७, स
१०), उडको कावसणेह (पाद) ;

‘जमहं रिमा न रामो य, हृणामि महामपिस्।
तेषा मे उडयो दड्डो, जायं सरणमो भय’
(निबृ १)।

उडाहिअ वि [दे] उत्थित, फेका हुआ (पड्)।

उडिअ वि [दे] प्रविष्ट, खोजा हुआ (पड्)।

उडिउ पु [दे] उडिउ, उडर, माप धान्य-विशेष
(दे १, ६८)।

उडु पु [उडु] एक देव विमान (देवेन्द्र १३१)।

‘उपम पुन [‘प्रम] उडु नामक विमान के
पूर्व तरफ स्थित एव’ देव विमान (देवेन्द्र
१३८)।

‘मज्झ पुन [‘मध्य] उडुविमान
के दक्षिण तरफ का एक देव विमान (देवेन्द्र
१३८)।

‘यावत् पुन [‘कायत्] उडुविमान
के पश्चिम तरफ का एक देव विमान (देवेन्द्र
१३८)।

‘सिद्ध पुन [‘सृष्ट] उडुविमान के
उत्तर तरफ का एक देव विमान (देवेन्द्र
१३८)।

उडु न [उडु] १ नक्षत्र (पाश)। २ विमान-
विशेष (सम ६६)। ‘य, व पु [‘प] १

चन्द्र, चक्रमा (भीय, सुर १६६, २४६)। २
जहाज, नौका (दे १, १२२)। ३ एक की

सख्या (सुर १६, २४६)। ‘यड पु [‘पति]
चन्द्र (सम ३०, परह १, ४)। ‘वर पु

[‘वर] मूर्त्य (राज)।

उडु देखो उड (डा २, ४, भोप १२३ गा)।

उडु वरिजिया ली [उडुवरीया] जैन मुनियो

की एक शाखा (कण्)।

उडुहिअ न [दे] १ विवाहिता ली का कौप।

२ वि, उन्मत्त, मूका (दे १, १३७)।

उडुहल पु [उडुहल] उडुहल उडुहल
उडुहल (पिड ३६१, प्राक ७)।

उडु पु [उडु] १ देश विशेष, उज्जैन, धौल,
भोद्र नामो से प्रसिद्ध देश, जिसको आजकल

उडीसा कहते हैं (दे २८६)। २ इस देश का
निवासी, उडिया, ‘सगजवल्-वन्धर-ग्याय मुक

कोडु भड्डा—’ (परह १, १)।

उडु वि [दे] कुमा आदि की खोदनेवाला,
खनक (दे १, ८५)।

उडुग पु [दे] १ बैल, सड। २ वि, दीर्घ,
सम्मा (दे १, १२३)।

उडुस देखो उडैस (उत्त ३६, १३८)।

उडुस पु [दे] खटमल, खटनीरा, उडैस (दे
१, ६६)।

उडुहण पु [दे] चोर, डाक (दे १, ६१)।

उडुअ पु [दे] उदगम, उदय, उद्वग (दे १,
६१)।

उडुग न [उडुयन] उडान, उडना। ‘मोरोवि
आहव पिण्ड हृत तद्वन्मि उडुगणे’ (सुर ८,
५२)।

उडुग पु [दे] १ प्रतिशब्द, प्रतिव्यभि। २
कुपर, पति विशेष। ३ विष्ठा, पुरीष। ४

मनोरथ, अभिमाप। ५ वि, बहिष्, अभिमानो
(दे १, १२८)।

उडुमर वि [उडुमार] उद्धृत, प्रवल (कुर
१४५)।

उडुमार वि [उडुमार] १ भय भोति। २
भाडम्बरवाता, दीपगयाला (पाश)।

उडुमारिअ वि [उडुमारिअ] भय-भीत किया

हुमा (कण्)।

उडुमर सक [उडु + डायय] उडाना।
उडुमर (भवि)। वडु. उडुमर (हे ४,
१५२)।

उडुन वि [उडुन] उडनेवाला (पिड ४७१)।

उडुगण न [उडुगण] १ उडाना, ‘मत्तजव-
नामपुद्गलणेषु जलकलुषण किमि’ (कुमा)।

२ आभरण, ‘हियउडुगणे’ (गामा १, १४)।

उडुगवि वि [उडुगवि] उडाना हुआ (गा
११०, सिंग)।

उडुगवि वि [उडुगवि] उडानेवाला (वजा
६७)।

उडुगस पु [दे] संताप, परिताप (दे १, ६६)।

उडुगह पु [उडाह] १ भयङ्कर दाह, जला
देना (शेष २०८)। २ गालिय, निदा, उप-

पात (भोप २२१)।

उडुगि वि [औड] उडीसा देश का निवासी
(नाट)।

उडुगि वि [दे] उत्थित, फेका हुआ (पड्)।

उडुगिअत देखो उडुगि = उड + डी।

उडुगिआहरण न [दे] छुरी पर रखे हुए धून
को पाँव की ओर उँगलियों से लेते हुए चल

जाना, ‘छुरिप्रगमुकुप्यं वतुष पायगुतीहि
उम्यर्ष’। न उडुगिआहरण

‘सुसुं मनोहीय, सुकिपाह्लाभवेन संग्हा।
पादा नु निमिगच्छति, तद्विज्ञातममुद्रिपादरसं’
(दे १, १२१)।

उडुगि वि [उडुगि] उडा हुआ, ‘तरउडुगि-

पस्तिपुण्व फो’ (धर्मवि १३६)।

उडुगिअ वि [दे] ऊपर फेका हुआ (पाश)।

उडुगि भव [उडु + डी] उडना। उडुगि, उडुगि
(पि ४७४)। वडु. उडुगिअत, उडुगिअत (दे ६,
६४, उप १०३१ टी)। सडु. उडुगिअत,
उडुगिअत (पि ५८६, भवि)।

उडुगि ली [औड] निवि विशेष, उरकल देश
की निवि (निते ४६४ टी)।

उडुगि वि [उडुगि] उडा हुआ (गामा १,
१, पाश, सुपा ४६५)।

उडुगुअ पु [दे] उडाना, उडाना ‘जमाइएणं
उडुगुअ वापनिसगण’ (पडि)।

उडुगुअ पु [दे] देखो उडुगुअ (वैद्य
उडुगुअ ४३४, ४३७)।

उडुगुआडिय पु [उडुगुआडिक] भगवान्
महावीर के एक गण का नाम (कण्)। देखो
उडुगुआडि।

उडुगुहिअ देखो उडुगुहिअ (दे १, १३७)।

उडुगुअ देखो उडुगुअ (राज)।

उडुगु न [ऊर्ध्व] १ ऊपर, ऊचा (मणु)। २

वचन, उलटी, ‘उडुगुणितो हौ कृत्’ (इह ३)।
३ वि. उसम मुख्य ‘महाताप नो उडुगुताप
परिणमति’ (भा ६, ३, भावम)। ४ लडा,
दरद्वयमल ‘साणुव उडुगुदेकोडाउसगण पु
डाउज’ (भाव ६)। ५ ऊपर का, उपरितन
(उवा)। ‘कण्डूयग पु [‘कण्डूयक] तापसो
का एक सम्प्रदाय जो नासिक के ऊपर भाग में
हो चुकलते हैं (भा ११, ६)। ‘काय पु
[‘काय] शरीर का उपरितन भाग (राज)।
‘काय पु [‘काक] काक, बायस, ते उडुगु-
काएहि पवत्रमाणा भवरेहि खजति सण्फ-
एहि’ (सूय १ ५, २, ७)। ‘गम वि [‘गम]
ऊपर जानेवाला (सुपा ४५६)। ‘गामि वि
[‘गामिन] ऊपर जानेवाला (सम १५३)।
‘वर वि [‘वर] ऊपर चलनेवाला, आनार
में उडनेवाला (गुमादि) (भासा)। ‘दिसा
ली [‘दिर] ऊर्ध्व दिशा (उवा. भाव ६)।
‘रेणु ॥ [‘रेणु] परिमाण-विशेष, आठ

अस्सुअस्सुअस्सु (इक) । 'लोम, 'लोय पु
['लोक] स्वर्ग, देव-लोक (ठा २, ३, भग) ।
'वाय पुं ['वात] ऊँचा गया हुआ वायु
वायु विशेष (जीव १) ।

उद्धृं ऊपर देखो, 'उद्धृंजाण ग्रहोसिरे भास-
नोद्धोवण' (भग १, १; महा, या ३३) ।

उद्धृं न ['दे] मार्ग का उन्नत भू-भाग (सुम
१, २) ।

उद्धृल } पुं ['दे] उल्लास, विवास (दे १,
उद्धृल } ६१) ।

उद्धृविय वि ['कथित] ऊँचा किया हुआ
(वजा १४६) ।

उद्धृा लो ['कर्णा] ऊँच-दिशा (ठा ६) ।
उद्धृ ['दे] देखो उद्धि (सुक १०, ८) ।

उद्धृ देखो उद्धृ (पद्) ।
उद्धृ देखो उद्धृ (पद्) ।

उद्धृय देखो उद्धृय = उद्धृत (रमा) ।
उद्धृया लो ['दे] १ पात्र विशेष (स १७३) ।

२ नम्रल वहीर धोड़ने का वस्त्र (स ५६६) ।
उर्ण देखो पुण = पुनर (पिंड ८२) ।

उण न ['भ्रण] ऋण, करना (पद्) ।
उण } देखो पुण (प्रमा, प्राप् ६१, कुमा,
उणा } हे १, १५) ।

उणाइ } हे १, १५) ।
उणपन्न लीन ['एनेपपञ्चाशत्] उन्चास,
५६ (वेधन ६६) ।

उणाइ पु ['उणादि] व्याकरण का एक
प्रकरण (परह २, २) ।

उणाइ पुं ['दे] प्रिय, पति, नामक, 'उणाइ-
साहोदोला प्रियार्थ' (सहि ५७) ।

उणो देखो पुण (गउठ, वि १४२, हे १, ६५) ।
उण न ['ऊर्ण] भेड़ या बकरी के रोम,
रोधी । देखो उन्न । 'वपास पु ['वापस]

ऊन, भेड़ के रोम (निष् १) । 'णाभ पु
['नाभ] मकड़ी, नीट-विशेष (राज) ।

'उण देखो पुण = पूर्ण (वे ८, ६१, ६५) ।
उणन स ['उद् + नद्] पुनारना, ग्राह्यन
करना । उणमद (प्रह ७५) ।

उणइ ली ['उन्नति] उन्नति, अमृदय (गा
५६७) ।

उणइज्जमाण देखो उणो ।
उणम धर ['उद् + नम्] ऊँचा होना,
उन्नत होना । वहु, उणमल (पि १६६) ।

संठ, उणमिय (भावा २, १, ५) ।

उणम वि ['दे] समुन्नत, ऊँचा (दे १, ८८) ।
उणय वि ['उन्नत] १ उन्नत, ऊँचा (अभि
२०६) । २ गुणवान्, गुणी (छाया १, १) ।

३ धर्मिणी (सुम १, १६) । ४ न. धर्मि-
मान, गर्व (भग १२, ५) ।

उणय पु ['उन्नय] नीति का भ्रम (भग
१२, ५) ।

उण्णा लो ['ऊर्णा] ऊन, भेड़ के रोम
(भावम) । 'पिपोलिया लो ['पिपोलिस]

चोटो, जन्तु-विशेष (दे ६, ४८) ।
उण्णाअरु वि ['उन्नारु] १ उन्नति-कारक ।

२ पुन. छन्द शास्त्र प्रसिद्ध मध्य-गुल चतुष्पल
की सजा (पिप) ।

उण्णाग पु ['उन्नाक] ग्राम-विशेष (भावम) ।
उण्णाम पुं ['उन्नाम] १ उन्नति, ऊँचाई (सि
६, ५६) । २ गर्व, धर्मिमान । ३ गर्व का

कारण-भूत कर्म (भग १२, ५) ।
उण्णाम स ['उद् + नमम्] ऊँचा करना
(सि ५, ५६) ।

उण्णामिय वि ['उन्नामिय] ऊँचा किया
हुआ (भा १६, २५६, वे ६, ७१) ।

उण्णाल स ['उद् + नमम्] ऊँचा करना ।
उण्णालद (प्राक ७५) ।

उण्णालिय वि ['दे] १ कृष्ट, दुर्बल । २
ऊनमिष्ट, ऊँचा किया हुआ (दे १, १३६) ।

उण्णअ वि ['उन्नोत्] विवर्णित, विचारित
(सि १३, ७७) ।

उण्णअ वि ['ओर्णिठ] ऊन का बना हुआ
(ठा ६, ३, शोध ७०६, ८६ भा) ।

उण्णिइ वि ['उन्नित्] १ विकसित, उन्नत
(गउठ) । २ निद्रा-रहित (माल ८५) ।

उण्णी स ['उद् + नी] १ ऊँचा ले जाना ।
२ नहना । भवि. उण्णेहिं (विसे ३५८५) ।

नवठ. उण्णइज्जमाण (राज) ।
उण्णइज्ज पु ['दे] १ हुंकार । २ भाकाश की

तरफ मुँह किए हुए कुत्ते की भाषा (दे
१, १३२) । ३ वि. गविन, 'एव मण्णिमी संतो
अण्णुअमी सो नइह सभंत्तु' (वव २, १०) ।

उण्ण पु ['उण्ण] १ भाषण, गपनी (छाया
१, १) । २ वि. गरम, उम (कुमा) ।

उण्णवण न ['उण्णन] गरम करना (पिंड
२४०) ।

उण्णिआ लो ['दे] इतर, लिखनी (दे
१, ८८) ।

उण्णीस पुंन ['उण्णीप] पगडी, मुकुट (हे
२, ७५) ।

उण्णोदयभंड पुं ['दे] भ्रमर, भमरा, मीरा (दे
१, १२०) ।

उण्णोला लो ['दे] नीट-विशेष (भावम) ।
उताहो व ['उताहो] धमना, या (वि ८५) ।

उत्त वि ['उत्त] कथित, धर्मिहित (मुर १०,
७६, स ३७८) ।

उत्त वि ['उत्त] १ बोधा हुआ । २ निर्वादिष्ट,
उपादिष्ट, 'देवउत्ते मप लोए वमउत्तेनि
मावरे' (सुम १, १, ३) ।

उत्त पुं ['दे] वनसति-विशेष (राज) ।
'उत्त वि ['गुप्त] रक्षित (सुम १, १, ३, ५) ।

उत्त देखो पुत्त (गा ८४, मुर ४८, १५८) ।
उत्तइय } वि ['उत्तेय्य] (दश० नि० गा०
उत्तइय } १११. भग') ।

उत्तं देखो उत्तंय = उत्त । उत्तयइ (ह ५,
१३३) ।

उत्तं देखो उत्तंय । उत्तयइ (प्राक ७०) ।
उत्तं देखो वुत्तं (पद्, विक् ३६) ।

उत्तंपिअ वि ['दे] क्षिप्त, उन्नत (दे १,
१०२) ।

उत्तं स ['उत् + नम्भ] १ रोचना ।
२ धनसम्पन्न देना, सहारा देना । बर्न,
उत्तंमिअइ, उत्तंमिअंति (पि १०८) ।

उत्तंभण न ['उत्तंभन] १ अक्षरोंप । २
धनसम्पन्न (उप २२१) ।

उत्तंभय वि ['उत्तंभन] १ रोचनेगना ।
२ धनसम्पन्न देनेवाला, सहायक (उप २
२२०) ।

उत्तंस पुं ['अतंस] शिरो-भूषण, धनसम्पन्न
(गउठ, दे २, ५७) ।

उत्तंस पु ['उत्तंस] बर्णाभूषण, वनहूत, बर्ण-
भूषण (पाप) ।

उत्तइय वि ['दे] उन्नत, धमिअ दीनित
(दयनि ३, ३५) ।

उत्तं वि ['दे] गविन (महि ५६ टी) ।
देखो उत्तुण ।

उत्तण वि [उत्तण] गुणगानी बनीन,
‘सितरितनभूमिबल्लराई’ उत्तणउत्तवडाई
उत्तणु (पण १, १)।

उत्तणुअ वि [उत्तणुअ] ग्रमिमानो, गविष्ठ
(पाम)।

उत्तत्त वि [उत्तत्त] प्रति-उत्त, बहुत मरम
(गुणा ३७)।

उत्तत्त वि [दे] ज्ञायासित, मारुद्ध (पद)।

उत्तत्त वि [उत्तत्त] भय-भोत, प्राप्त-प्राप्त
(पण १, ३, पाम)।

उत्तद्ध देखो उत्तरद्ध (पिग)।

उत्तप वि [दे] १ गवित, ग्रमिमानो (३१,
१३१, पाम)। ग्रमिक गुणवाता (दे १३१)।

उत्तप वि [उत्तप] देदीप्यमान (राज)।

उत्तम पुं [उत्तम] एक दिन का उपवास
(संक्षेप ५८)।

उत्तम वि [उत्तम] १ धेष्ट, प्ररस्त, सुन्दर
(कम्प, ग्राम ६)। २ प्रधान, मुख्य (पंजा ४)।

३ परम, वरुद्ध, ‘उत्तमवदुत्त’ (भग ७, ६)।

४ अत्य, अन्तिम (राज)। ५ पु. श्रेष्ठ-वर्त
(हक)। ६ समय, रथाग (दशा ५)। ७

राजस रंथा का एक राजा, स्वनाम-स्वात एक

त्तकेश (पउम ५, २६४)। ८ पु [अर्थ]

१ धेष्ट वस्तु। २ नोश (उत्त २)। ३ मोक्ष-

मार्ग, ‘जीवा जिया परमदुम्मि’ (वउम २,

८१)। ४ मनहन, मरण (भोष ७)।

५ ण वि [ण] सेनवार (नाट)।

उत्तम वि [उत्तमस्] मशान-रहित,

‘तिविहृतमा उम्मुक्का, तम्हा ते उत्तमा ह्वति’

(भावनि ५५, कम्प)।

उत्तमा न [उत्तमा] मस्तक, छिर (सम

५०, कुमा)।

उत्तमा ली [उत्तमा] १ ‘शाखावमकद्धा’

का एक कथयन (खामा २, १)। २ इन्द्राणी

(शाया २, १, ४, ५, १)।

उत्तमा ली [उत्तमा] पत्र की प्रथम रात्रि

(गुज १०, १४)।

उत्तम म्रक [उत्त + म्रक] क्षिन्न होना,

उद्भिन्न होना। उत्तमद (स २०३)। वड.

उत्तममंत, उत्तममाग (नाट)। वंड-

उत्तमिअ (नाट)।

उत्तमिअ वि [उत्तान्त] किन्न, क्षिपीर
(दे १, १०२; पाम)।

उत्तर शक [उत्त + त्] १ बाहर निकलना।

२ खन. पार करना। उत्तरिस्सामो (स

१०१)। वड. उत्तरंत,

‘पेन्थि मणिमिच्छा पद्धिमा

हमिभस पिटुपुट्टिअ।

धूम दुद्धसमुदुत्तरतत्तिव्ध

विम सभएहा’ (गा ३८८),

‘उत्तरंताग य मरं, खनारो निमाए मरिउ-

मारदो’ (महा)। वंड. उत्तरित्तु (वि ५७७)।

हेट. उत्तरित्तए (वि ५७८)।

उत्तर म्र [अय + त्] उत्तरना, नीचे आना।

वड. उत्तरमाग, ‘उत्तरमाएस्त तो निमा-

गामो’ (गुणा १४०)। उत्तर वि [उत्तर]

१ धेष्ट, प्ररस्त (पउम ११८, ३०)। २

प्रधान, मुख्य (सूम १, ३)। ३ उत्तर-दिशा

में रहा हुआ (ज १)। ४ उपरि-वर्ती,

उपरितन (उत्त २)। ५ क्षयिक, क्षयित्तः।

‘मदुत्तर—’ (धीष, सूम १, २)। ६

अवातर, भेद, शाखा, ‘उत्तरपण’ (कम्प

१)। ७ ऊन का बना हुआ बख, कम्बख

वरीरू (कम्प)। ८ न. जवान, प्रयुत्तर (वव

१)। ९ वृद्धि (भग १३, ४)। १० पुं-

ऐरवत क्षेत्र के बाईमदे भावी जिनदेव का

नाम (सम १५४)। ११ वर्षा वलय (कम्प)।

१२ एक जैन मुनि, धार्म-महागिरि के प्रथम

शिष्य (कम्प)। ‘कचुय पु [अर्थक]

वत्तर-विशेष (विषा १, २)। ‘करण न

[करण] उपकार, सस्वार विशेष-गुणाधान,

‘सडिखिवाहियाए,

सूतगुणाए सउत्तरगुणाए।

उत्तरकरण कौरद, जह

सगड-रहक-गेहाए’ (भाव ५)।

‘कुरा ली [कुरु] स्वनाम-स्वात क्षेत्र-विशेष,

‘उत्तरकुराए ए भते। कुराए कैरिअ पागार-

भावपावेमारे एएणते’ (जीव ३)। ‘कुरु

पुं [कुरु] १ वर्षा विशेष, ‘उत्तरकुरुपायु-

सच्छपवो’ (पि ३२८, सम ७०, पण १,

४, वउम ३५, ५०)। २ देव-विशेष (ज २)।

‘कुरुकूड न [कुरुकूट] १ भाव्यवत पर्वत

का एक शिखर (ठा १)। २ देव-विशेष

(जं ४)। ‘कोडि ली [कोटि] संगीतरात्र-

प्रसिद्ध गान्धार-नाम की एक मूर्च्छना (ठा

७)। ‘गंधारा ली [गान्धारा] देखो

पूरीक ग्रंथ (ठा ७)। ‘गुण पु [गुण]

शाखा गुण, अगान्तर गुण (भग ७, ३)।

‘वागाल ली [वावाल] नगरी-विशेष

(भावम)। ‘चूट [चूट] घुस-वन्दन का एक

क्षेप, गुह को वन्दन कर बड़े भ्रातृज से ‘मरय-

एण वदाम’ कहना (धमं २)। ‘चूटिया ली

[चूटिया] देखो प्रन्तर-उत्त ग्रंथ (वृह ३;

गुमा २५)। ‘दूड न [अर्थ] पिछला प्राचा

भाग उत्तरार्ध (जं ४)। ‘दिसा ली [दिश]

उत्तर दिशा (सु २, २२८)। ‘दू न [अर्थ]

पिछला प्राचा भाग (पिग)। ‘पाइ, ‘पयडि

ली [प्रकृत] वनों के प्रवातार भेद (उत्त

३३, सम ६६)। ‘पक्षयिमिष्ठ पुं [पा-

आरय] वायव्य कोण (वि)। ‘पट्ट पुं

[पट्ट] विछीना के ऊपर का बख (गुज

१२६ भा)। ‘पारणग न [पारणक]

उपवासार्थ वत की समाधि, पाएण (कात्त)।

‘पुरच्छिम, ‘पुररियम पुं [पौररय]

ईशान कोण, उत्तर भोर पूर्व के बीच की

दिशा (खामा १, १, भा, पि ६०२)।

‘पौडवया ली [पौडवया] उत्तरा भाव्यवा

नक्षत्र (गुज ५)। ‘फगुगणी ली [कासुगणी]

उत्तर-पक्षगुणी नक्षत्र (कम्प, पि ६३)।

‘बलिस्सह पुं [बलिस्सह] १ एक प्रसिद्ध

बैन साधु (कम्प)। २ उत्तर बलिस्सह नामक

क्षेत्र के निवाला हुआ एक गण, भगवान्

महावीर का द्वितीय गण—साधु-संनदाय

(कम्प, ठा ६)। ‘भववया ली [भाद्रपदा]

नक्षत्र-विशेष (ठा ६)। ‘मंदा ली [मन्दा]

मध्यम ग्राम की एक मूर्च्छना (ठा ७)।

‘महुरा ली [मथुरा] नगरी विशेष (धम)।

‘माय पु [वाद्] उत्तरवाद (भाव)।

‘विक्खि, ‘वेउत्तिव वि [वैक्खि]

स्वाभाविक-जिन वैक्खि, वनावती वैक्खि

(कम्प १ कम्प)। ‘साला ली [शाला]

१ जीवा गृह। २ पीछे से बनाया हुआ घर।

३ बाह्य-गृह हाथी-भोटा मर्रादि बाँवने का

स्थान, तबेला (निपु ८)। ‘साहा, ‘साहय

वि [साधक] विद्या, भजन वगैरह का

साधन करनेवाले का सहायक (गुप्ता १५१, स ३६६)। देखो उत्तरा ।

उत्तरओ अ [उत्तरत] उत्तर दिशा की तरफ (ठा ८, भग)।

उत्तरंग न [उत्तरङ्ग] १ दरवाजे का ऊपर का बाण (हुया)। २ वि. जपल, चचल (हुदा २६८)।

उत्तरकुल पु. व. [उत्तरकुल] १ देव भूमि स्वर्ग (स्वप्न ६०)। २ की. भगवान् नमिनाय की दीक्षाशिपिका (विचार १२६)।

उत्तरण न [उत्तरण] १ उतरना पार करना (ठा ५, स ३६२)। २ अग्रपण्य, नीचे जाना (ठा १०)।

उत्तरणवरद्धिया की [दे] उज्जु जहाज, बागी (दे १, १२२)।

उत्तरनिउज्जिय वि [उत्तरनैकिरिय] उत्तर-नैकिरियामक लब्धि से सम्पन्न (पत्र २, २०)। उत्तरसंग देखो उत्तरा-संग (पत्र ३८)।

उत्तरा की [उत्तरा] १ उत्तर दिशा (ठा १)।

२ मय्यम ग्राम की एक मूर्च्छना (ठा ७)।

३ एव दिशा-कुमारी देवी (ठा ८)। ४

दिगम्बर-मठ प्रवर्तक आचार्य शिष्यभूति की

स्वनाम ब्याप्त भगिनी (विंते)। ५ बहिष्कृता

नगरी की एक बापी का नाम (ठी)। 'णंदा

की [नन्दा] एक दिक्कुमारी देवी (राज)।

'पह पुं [पय] उत्तरदिशा-स्थित देश, उत्त-

रोम देश (भाज २)। 'फग्गुणी देखो उत्तर-

फग्गुणी (सम ७, इफ)। 'भद्दयया देखो

उत्तर भद्दयया (सम ७, इक)। 'यण न

[यण] उत्तरामण्य, सूर्य का उत्तर दिशा में

गमन, माघ से लेकर छ महीना (सम ५३)।

'यया की [यता] गाव्यार-शम की एक

मूर्च्छना (ठा ७)। 'यह देखो 'पह (महा,

उज १४२ टी)। 'संग पु [संग] उत्तरोय

वज्र का शरीर में न्यास-विशेष, उत्तरपण्य

(कप्प, भा. प्रीप)। 'समा की [समा]

मय्यम ग्राम की एक मूर्च्छना (ठा ७)। 'सादा

की [पाठा] नग्न-निकोप (सम ६, वध)।

'हुत्त न [मिमुत्त] १ उत्तर की तरफ।

२ वि. उत्तर दिशा की तरफ मुंह किया हुआ

(भोप ६५०, भाव ४)।

उत्तरिज्ज } न [उत्तरीय] चादर, दुपट्टा
उत्तरिय } (जग, प्राप्र हे १, २५८),

'जयजिज उत्तरिय' (गुप्ता ५४६),

उत्तरिय वि [उत्तीर्ण] १ उतरा हुआ, नीचे

झाया हुआ (सुर ६, १५६)। २ पार पहुँचा

हुआ (महा)।

उत्तरिय वि [औत्तरिक, औत्तराह] देखो

उत्तर (ठा १०, विंते १२४३)।

उत्तरिह वि [औत्तराह] उत्तर दिशा या

काल में उत्तर या स्थित, उत्तर-सम्बन्धी,

उत्तरीय, 'अह उत्तरिहय्ये' (गुप्ता ४२,

सम १००, भग)।

उत्तरीअ देखो उत्तरिय = उत्तरीय (कुमा, हे

१, २५८, महा)।

उत्तरीकरण न [उत्तरीकरण] उल्टा बनाना,

विशेष मुद्रा करना, 'तत्स उत्तरीकरणेण'

(पडि)।

उत्तरोद्ध पु [उत्तरीद्ध] १ ऊपर का झोठ (वि

३६७)। २ इमथ्, मूँछ (राज)।

उत्तलहअ पु [दे] विटप, शकुर (दे १,

११६)।

उत्तल वि [उत्तवन्] विखने कहा हो वह

(वि ५६६)।

उत्तस अक [उत्त + सत्] १ ताल पाना,

पीठित होना। २ डरना, भयभीत होना। बहुत

उत्तसंत (सुर १, २४६ १०, २२०)।

उत्तसिय वि [उत्तस्त] १ अग्रणी। २

पीठित (सुर १, २४६)।

उत्ताड सक [उत्त + ताडय्] १ ताड़ना,

ताड़न करना। २ बाध बनाना। कवक.

'उत्ताडिज्जाताण दहरियाण कुडवाण'

(राग)।

उत्ताडण न [उत्ताडन] १ ताड़ना करना

(हुया)। २ बाध बनाना (राज)।

उत्ताण वि [उत्तान] १ उन्मुख, ऊर्ध्व-मुख

(पत्रा १८)। २ चित्त (विषा १, ६, ठा

५, ४)। ३ विस्फारित, 'उत्ताणयण्येच्छ-

णिज्जा पासादीया दस्सिणज्ज' (धोप)।

४ धनियुण, शकुरज्ज, 'उत्ताणमई न छाहए

मम्म' (मम्म ८)। 'साहय वि [सायिन्]

चित्त सोनेवाला (वस)।

उत्ताणअ १ ऊपर देखो (भग, गा ११०,

उत्ताणग ५ स)।

उत्ताणपत्तय वि [दे] एरइ-सम्बन्धी (पत्तो

वगेह्) , (दे १, १२०)।

उत्ताणिय वि [उत्तानित] १ चित्त किया

हुआ (से ६, ८१, गा ४६०)। २ चित्त

सोनेवाला (दसा)।

उत्तार सक [अन + तारय्] नीचे उता-

रना। बहुत. उत्तारैमाण (ठा ५)।

उत्तार सक [उत्त + तारय्] १ पार पहुँ-

चाना। २ बाहर निकालना। ३ दूर करना,

'देहो' नईए जितो, तमो एए जइ नो उत्ता-

रिता तो ह मरिज्जा' (गुप्ता ३५७, काल)।

उत्तार पु [उत्तार] १ उतरना, पार करना,

'अणुलोभो संसारो पडिओभो तस्स उत्तारो'

(दस २), 'एअउत्ताराह' (उवर १२)। २

परित्याग (विंते १०४२)। ३ उतारनेवाला,

पार करनेवाला,

'अससयसहसमुल्लेहं,

जाज्जामरएसाणोत्तारो।

जिणययल्लमि गुणायर।

लणमवि मा कहिस्सि पमाय'

(प्राप्ता ३३४)।

उत्तार पु [दे] आवास-स्थान, गुजराली में

'उत्तारो' (सिदि ७००)।

उत्तारण न [उत्तारण] १ उतारना २ दूर

करना। ३ बाहर निकालना। ४ पार करना,

'ठा अज्जवि मोहमहाप्रहिमवेणा

सुरति तुह बाड।

सायुत्तारणहेव, तम्हा

जत्त कुणु मइ ॥'

(गुप्ता ५५७, विंते १०४०)।

उत्तारय वि [उत्तारक] पार उतारनेवाला

(स ६४७)।

उत्तारिय वि [उत्तारित] १ पार पहुँचाया

हुआ। २ दूर किया हुआ। ३ बाहर निकाला

हुआ। 'तण्णि उत्तारिओ भूमिनिवरायो'

(महा)।

उत्ताल वि [उत्ताल] १ महान्, बड़ा, 'उताल-

तालवाण वणिएदि दिज्जाणएण' (गुप्ता

५०२)। २ उजाला, शीघ्रगती, 'वट्ठवि

उतालो अण्णडिनेहिण्येज्ज गिएहो' (गुप्ता

६२०)। ३ उजल (दे १, १०१)। ४ वेतान,

ताल बिबड गान का एक दोय, 'गायतो मा

उत्थय पुं [उत्तम्भ] ऊर्ध्व प्रसरण, ऊँचा फैलाना (सं ६, ३३)।

उत्थयण न [उत्तम्भन] ऊपर देखो (गउड)।

उत्थयि वि [उत्थेयिन्] ऊँचा फैलाना (गउड)।

उत्थयिअ वि [उत्थमित] ऊँचा किया हुआ, उन्नत किया हुआ (कुमा)।

उत्थयिअ वि [रुद्ध] रोका हुआ (कुमा)।

उत्थयिअ वि [उत्तम्भित] उत्थापित, उठाया हुआ (सं ५, ६०)।

उत्थयि वि [उत्तम्भन] १ आघात प्राप्त, धक्काजबन करनेवाला।

‘आरिउजइ जलनिहोवि
मल्लोलोत्थमिततुलसेलो।

म ह्रुनमन्मनिमिभ-
मुहामुहो कम्म परिणामो ॥’
(प्राप्त १२७)।

उत्थयिअ वि [उत्तम्भित] १ प्रवलम्बित।

२ क्वा हुआ, स्तम्भित ‘मथ्थेणल्लउत्थय-
निमाणणे सुधणु सुणुणु मइ वण्ण’ (भा
६२४)। ३ मन्थन-भुक्त किया हुआ (म
५६६)।

उत्थयिअ देखो उत्तम्भि (मज्जा १५२)।

उत्थय्य पु [दे] समर्प, उपनर्द (दे १, ९३)।

उत्थय्यण देखो उद्धयण (कुप्र ११७)।

उत्थय्य देखो उत्थय्य (वप्य) ‘निवडति
सणोत्थय्यकूपियानु तुगावि भाग्या’ (उप
७२८ टी)।

उत्थय सक [आ + क्रम्] आक्रमण करना। संक्र, उत्थयिअ (मप) (मवि)।

उत्थय सक [अय + रु] १ आश्चर्यजन करना, बहाना। २ परामर्ष करना। वक्र, उत्थयरेत, उत्थयमाण (पण्ड १, ३, राज)।

उत्थय } सक [उत् + रु] आश्चर्यजन
उत्थय्य } करना (?)। उत्थयरे, उत्थयरेत्स
(प्राक ७५)।

उत्थयिअ वि [आक्रान्त] आक्रान्त, दबाया हुआ। ‘उत्थयिअविमग्गिमाइ भस्सत’ (पाम,
मवि)।

उत्थयिअ वि [दे] १ निस्वत, निर्गन् (स
४७३)।

‘मन्नुक्खुत्थयिअमहल्लवाह-

मलोवहा पडिया’ (मुपा २०)।

२ उत्थित, उठा हुआ (दे ७, ६२)।

उत्थयल न [उत्थयल] १ ऊँची झूल राशि,
उठात रख पुञ्ज (मग ७, ६ टी)। २ उन्मार्ग,
कुपय (सं ८, ६)।

उत्थयलिअ न [दे] १ घर, गृह। २ वि,
उन्मुञ्जनात, ऊँचा गया हुआ (दे १, १०७,
सं १८०)।

उत्थयल्ल भक [उत् + शल्ल] उच्छलना,
कूदना। उत्थयल्ल (पड)।

उत्थयल्लयल्ल स्त्री [दे] दोनों पारवों से
परिवर्त्तन, उभय-पुण्य (दे १, १२२)।

उत्थयल्ल स्त्री [दे] १ परिवर्त्तन (दे १, ६३)।

२ उन्नतन (गउड)।

उत्थयिअ वि [उच्छलित] उच्छला हुआ,
‘उत्थयिअ उत्थयिअ’ (पाम)।

उत्थाय वि [उत्थायिन्] उठाना (दे ८
१६)।

उत्थायिअ वि [उत्थायित] उठाया हुआ,
‘उत्थयिअयनवरदेमे दडाहिअ ठवइ मण्ण’
(मुपा ३५२)।

उत्थायण न [उत्थायण] १ शीर्ष, वल, पराक्रम
(विसे २८-२९)। २ उत्थान, उत्थलित,
बछावाही प्रमग्नो न नियतइ भोसहेहि कएहि।
सम्हा सीउयाण निधमियव्व हिण्णसीहि’
(मुपा ४०४)।

उत्थायिअ (मप) वि [उत्थायित] उठाया
हुआ (मवि)।

उत्थार सक [आ + त्रम्] आक्रमण करना,
दवाना। उत्थारइ (ह ४, १६०, पड)।

उत्थार देखो उच्छाह = उन्साह (दे २, ४८,
पड)।

उत्थारिअ वि [आक्रान्त] आक्रान्त, दबाया
हुआ, ‘उत्थारिअयतरयउरिउवगो’ (कुमा, मुपा
५४६)।

उत्थिय देखो उद्धिय (दे ४, १६, पि ३०)।

उत्थिय देखो उत्थय्य (पंचा ८)।

‘उत्थिय वि [तीर्थिक] मवानुयायो, दर्शन-
नुयायो (उवा, जीव ३)।

‘उत्थिय वि [यूथिक] युध-जयिष्ठ, ‘मएण-
उत्थिय—’ (उवा, जीव ३)।

उत्थयण न [अनस्तोभन] मनिष्ठ को शान्ति
के लिए किया जाता एक प्रकार का कौतुक,
मू मू भावान करना। (वृह १)।

उद् न [उद्] जल, पानी, ‘अवि साहिण दुजे
वासे सीमोद धमोच्चा निक्खते’ (धावा,
मग ३, ६)। ‘उल्ल ओल्ल वि [‘ट्रि’]
पानी से गोला। (घोष ४८६, पि १६१)।
‘गत्ताम न [‘गत्ताभि’] गोत्र-विशेष
(अ ७)।

उद्दय देखो ओद्दय (मणु)।

उद्दयल्ल वि [उद्दयिन्] उदयवान्, उन्नति-
शील, ‘सिदिममयवेवसूरी मण्डवसूरी भयावि
उद्दयल्ल’ (मुपा ६२२)।

उद्दक पु [उद्दक] जल का पान विशेष जिससे
जल ऊँचा छिड़का जाता है (ज २)।

उद्दक सक [उद् + अञ्च] ऊँचा जाना
(कुमा)।

उद्दकय प [उद्दकन] १ ऊँचा फैलाना।

२ वि ऊँचा पकनेवाला (मणु)।

उद्दचिर वि [उद्दचिर] ऊँचा जानेवाला
(कुमा)।

उद्दत्त पु [उद्दत्त] हकीकत, समाचार, वृत्तान्त
पिण्णमण्ण कइल्ल बीमोदवी भव राहवत्स
उवण्णियो’ (सं ४, ५५, स ३०, मग)।

उद्दप पु [उद्दप] इच्छाया पुत्र उदय (मल-
द्व० राम० श्रुतिवर्धन)।

उद्दग पुन [उद्दक] जल पानी, नत्तारि
उदय पण्णसा’ (अ ४, जी ५)। २

वनस्पति विशेष (दत्त ८, ११)। ३ जलाशय
(मग १, ८)। ४ पु. स्वनाम ह्यात एक
जैन साधु। ५ सातव भावी जिनदेव (मूम
२, ७)। ‘गन्ध पु [गर्भ] बादल,
अन्न (मग २, ५)। ‘दोणि ओ [‘ट्रोणि’]

१ जल रखने का पात्र-विशेष, ठंडा करने के
लिए गरम लोहा जिसमें डाला जाना है वह
(मग १६, १)। २ जो श्रमष्ट में लगाया
जाता है वह छोटा घडा (दत्त ७)। ‘लोमाल
न [‘पोदुराल’] बादल, मेघ (अ ३, ३)।

‘मच्छ पु [‘मत्तय’] दन्ध-पुण्य का सारइ,
उत्पात विशेष (मग ३, ६)। ‘माल पुओ
[‘माल’] जल का ऊपर पड़ना तरंग, उदर-
सिखा, बला (अ १०, जीव ३)। ‘वथिय ओ

[‘यस्ति’] दति, पानी भरने का मशक (शामा १, १८)। °सिहा की [°शिमा] केला (ठा १०)। °सीम पु [°सीमन्] पर्वत विशेष (इन)।

उदग्ग वि [उदग्ग] १ मुन्दर, मनोहर, ‘ततो ददु’ तीए ख्व तह जोग्गल्लुदग्ग’ (गुर १, १२२)। २ छत्र, उल्लट, प्रखर (ठा ४, २, श्यामा १, १, सप्त ३०)। ३ प्रधान, मुख्य, ‘उदग्गवारित्ततो महो’ (उत्त ११)।

उदङ्कड पु [उदङ्ग] एक तरब-स्थान (देवेन्द्र २७)।

उवत्ति वि [उदात्त] उदार, बल्लुपण (संबोध ३८)।

उदत्त वि [उदात्त] स्वर विशेष, जो उच्च स्वर से बोला जाय वह स्वर (विसे ८५२)।

उदम्मा की [उदम्मा] दुपा, सरस, विपासा (उप १०३१ टी)।

उदय देखो उदग (श्यामा १, ८, सम १५३, उप ७२=टी, प्राप् ७२, परण १)।

उदय पु [उदय] साम (सूत्र २, ६, २४)।

उदय पु [उदय] १ धम्मूदय, उल्लति, ‘जो एवविहिण्णि कज्ज भायद, सो किं भवदत्त-कुमारस्स उदय इ=उद?’ (महा) २ उपति (विसे)। ३ विपाक, कर्म-परिणाम, ‘बह्वमारणप्रभमत्ताएवाए परपरवित्तोवण्णो’।

सव्वजह्णो उदमो दसण्णिमो एवकसि वयाए’ (अव)। ४ प्रादुर्भाव, उदगम, ‘भाइन्वोदस वदग्गहा ध्व निपभा थामा सुपा (महा)।

‘उदयम्मिव श्रधमणोवि भरद रत्तत्तव दिवसनाहो।

रिद्धो भावदंमुनि तुल्लच्चिय गूल सप्पूरिसा’ (प्राप् १२)।

५ भरतसेन के भावी सातवें जिनदेव (सम १५१)। ६ भरतसेन में होनेवाले तीसरे जिनदेव का पुर्व भविय नाम (सम १५४)। ७ स्वनाम-व्याप्त एक राजकुमार (सम २१, ५६)। ‘यिख पु [‘यिख] पर्वत विशेष, जहाँ सूर्य उदित होता है (मुपा ८८)।

उदयत देखो उदि।

उदयण पुं [उदयन] १ राजा सिद्धराज का प्रसिद्ध मंत्री (गुर १४३)।

उदयण पुं [उदयन] १ एज राजकुमार, कोशाम्बी नगरी के राजा शतानीन का पुत्र (विपा १, ५)। २ एक विख्यात जैन राजा (सप्प)। ३ म. उपति, उदय। ४ वि. उन्नत होनेवाला, प्रवर्धमान (ठा ५, २)।

उदर न [उदर] १ क, जठर (सूत्र १, ८)। २ पेट की बीमारी, ‘सयजरवण्णुप्रासासतो-सोदराणि’ (सहृष १५)।

उदरंभरि वि [उदरम्भरि] स्वार्थी, भवेत्पेटू (वि ३७६)।

उदरि वि [उदरि] पट की बीमारीवाला (पण्ड २, ५)।

उदरिय वि [उदरि] ऊपर देखो (विपा १, ७)।

उदायाह वि [उदायाह] १ पानी बहने-वाला जल-माहल। २ पु. छोग प्रवाह (भग १, ६)।

उदसी [दि] [उदस्रित?] तक

उदधि पु [उदधि] १ समुद्र, सागर (कुमा)। २ भवकपति देवो की एक जाति, उदधिबुमार (पण्ड १, ४)। ‘कुमार पुं [‘कुमार] देखो की एक जाति (परण १)। देखो उआहि।

उदाइ पु [उदायिन] १ एक जैन राजा, महाराजा कोणिक का पुत्र, जिसकी एक दुष्ट ने जैन साधु वनकर धर्म-व्यस से मारा था और जो भविष्य में तीसरा जिनदेव होगा (ठा ६, ती)। २ पु राजा कूणिक का पट्ट-हस्ती (भग १६, १)।

उदाइण देखो उदायण (कुलक २३)।

उदात्त देखो उदत्त (एणि १७४ टी)।

उदायण पुं [उदायन] सिन्धु देश का एक राजा, जिम्मे भगवान् महावीर के पाद विला की थी (ठा ८, भग ३, ६)।

उदार देखो उराल (उप पु १०८)।

उदासि वि [उदासिन्] उदास, उदासीन। ‘व ॥ [‘व] भीदासीन्य (रंभा, स ४५६)।

उदासीण वि [उदासीन] १ मध्यस्थ, उदस्थ (पण्ड १, २)। २ उज्ज्या करनेवाला (ठा ६)।

उदाहड पि [उदाहृत] कथित, दृष्टान्तित (राज)।

उदाहर सव [उदा + ह] १ कहना। २ दृष्टान्त देना। उदाहरति (पि १४१), ‘भास मुखं नेव उदाहरिजा’ (सत्त ४३)। मूरा, उदाहु (भाचा, उत्त १४, ६), उदाहू (सूत्र १, १२, ४)। वट्ट उदाहरति (सूत्र १, १२ ३)।

उदाहरण न [उदाहरण] १ कथन, प्रति-पादन। २ दृष्टान्त (सूत्र १, १२, विसे)।

उदाहिय वि [उदाहृत] १ कथित, प्रति-पादित। २ दृष्टान्तित (भाचा श्यामा १, ८)।

उदाहिय वि [दि] उल्लिखित, फँका गया (पड)।

उदाहु देखो उदाहर।

उदाहु थ [उताहो] भयवा, पा (उवा)।

उदाहु देखो उदाहर।

उदाहो देखो उदाहु = उताहो (स्वप्न ७०)।

उदि भव [उद + इ] १ उन्नत होना। २ उत्पन्न होना। (विसे १२६६, जीव ३)। वट्ट, उदयत्त (भग, पदम २, ५६, मुपा १६८)। कवक, उदिज्जत (विसे ५३०)।

उदिकिखअ वि [उदीक्षित] भवलोकि (दे ६, १४४)।

उदिण वि [उदीच्य] उत्तर दिशा में उत्पन्न (भावव)।

उदिण १ वि [उदीर्ण] १ उदित, उदय प्राप्त उदिज्ज (ठा ५), ‘इतो वि इको विसमो उदिमो’ (सत्त ५२)। २ फलोन्मुख (कर्म) (परण १६, भग)। ३ उत्पन्न, जहा उदिएणो नणु कोवि भाहो’ (सत्त ९, भा २७)। ४ उल्लट, प्रवल, भ्रणुत्तरोववाइयाए मते। देवा कि उदिएण मोहा, उवसत्तोभा, छोएमोहा?’ (भग ५, ४)।

उदिष वि [उदित] १ उदित, उदगत (सम ३६)। २ उन्नत (ठा ४)। ३ उत्त, कथित (विसे १५७६)।

उदीण वि [उदीचीन] १ उत्तर दिशा से संबन्ध रखनेवाला, उत्तर दिशा में उत्पन्न (भाचा पि १६५)। ‘पारिणा की [‘प्राचीना] ईशान-भोए (भग ५, १)।

उदीणा की [उदीचीना] उत्तर दिशा (ठा १, १)।

उदीर स [उद् + ईरय्] ? प्रेरणा करना ।
२ कहना, प्रतिपादन करना । ३ जो कर्म
उदय-प्राप्त न हो उसको प्रयत्न विशेष से
फलोन्मुख करना । उदीरइ, उदीरैति (भग-
वति ७८) । मूका, उदीरिमु, उदीरैनु
(भग) । भवि, उदीरिस्मति (भग) । कङ्-
उदीरैत (ठा ७), 'कुसलवसुदीरतो' (उप
६०४) । कवक, उदीरिज्जमाण (पण्य
२३) । हेङ्क, उदीरैत्ताए (नस) ।

उदीराय देखो उदीरय (पृष्ठ ५, ५) ।

उदीरय न [उदीरण] ? कथन, प्रतिपादन ।
२ प्रेरणा । ३ काल प्राप्त न होने पर भी
प्रयत्न विशेष से किया जाता कर्म-फल का
प्रभुत्व (कम्म २, १११) ।

उदीरणया } ली [उदीरणा] ऊपर देखो
उदीरणा } (कम्म २, १३, १), 'ज करणे-
णोक्कमि उदए विज्जइ उदीरणा एमा' (कम्मप
१४१, १६६) ।

उदीरय वि [उदीरक] ? कथक, प्रतिपादन ।
२ श्रेयक, प्रवर्तक, 'एकमेव विषयविषयउदीरयणु'
(पण्य १, ५) । ३ उदीरणा करनेवाला, काल-
प्राप्त न होने पर भी प्रयत्न विशेष से कर्म-
फल का प्रभुत्व करनेवाला (कम्मप १५६) ।

उदीरिइ देखो उदीरिय (पृष्ठ ७४) ।

उदीरिय वि [उदीरित] ? प्रेरित, 'कालियाण
धम्मियाण लोभियाण उदीरियाण नेरिने सही
भवति' (राय जीव ३) । २ कथित, प्रति-
पादित, धोरे धम्मे उदीरिए' (भावा) ।
३ जमित, कृत 'ससङ्कासा परमा उदीरिया'
(भावा) । ४ समय-प्राप्त न होने पर भी
प्रयत्न-विशेष से लोच कर जिनके फल का
प्रभुत्व किया जाय वह (कर्म) (पण्य २३,
भग) ।

उदु देखो उड (प्राप, धमि १८९, पि ५७) ।

उदुव देखो उडर (कस) ।

उदुइह सक [उद् + इह] ऊपर चटना ।
उदुइह (पि ११८) ।

उदुखल देखो उड्खल (पि ६६) ।

उदुग पुन [दि] ग्रुथिणी-सिला (उवा ८, १०
टी) ।

उदुलिय वि [दि] भवनत, नीचा नगा हुआ
(पट्) ।

उदुहल देखो उडहल (भावा, पि ६६) ।

उदु न [दि] ? जल-मात्रपु । २ कटुद, बैत के
नये का दूबह (दि १, १२३) । ३ मत्स्य-
विशेष । ४ उसके चर्म का बना हुआ वस्त्र
(भावा) ।

उद वि [आर्द्र] गीला, आर्द्र (पट्) ।

उद्वि वि [उत्ता] उद्यम-युक्त (प्राक् २१) ।

उद्वुड्ड } वि [उद्वण्ड] ? प्रचण्ड, उद्वत
उद्वड्डा } (क्रिया, वड्ड) । २ पु. हाव मे
हण्ड को ऊँचा रखकर चलनेवाले तापसो
को एक जाति (श्रीप, निष् १) ।

उद्वतुर वि [उद्वस्तुर] ? जिसका दंत बाहर
भाया हो वह । २ ऊँचा (गड्ड) ।

उद्वभ पु [उद्वम्भ] ह्वय का एक भेद (पिण) ।
उद्वहस पु [उद्वहस] मधुमक्षिका, मत्स्य
मादि छोटा बोट (कम्प) ।

उद्वह्व पु [उद्वग्ध] रत्नप्रभा मरकत गुंथवी
का एक नरकावास (ठा ६) । 'मग्निम पु
[मध्यम] रत्नप्रभा शुधिवी का एक नरकावास
(ठा ६) । 'वित्त पु [पिण] देखा पुवाँक
मय' (ठा ६) । 'पिण्डि पु [पिशिष्ट] देखो
पुवाँक मय' (ठा ६) ।

उद्वरि न [दि ऊर्ध्व] सुभिज, मुकाय
(वृह १) ।

उद्वम पुन देखो उज्जम = उजम (प्राक् २१) ।
उद्वरिअ वि [दि] ? उखाव, उखावा हुआ
(दि १, १००) । २ स्फुटित, विखलित, 'कुडिअ
पिअन्न च दल्लिअ उद्वरिअ' (पण्य) ।

उद्वरिअ वि [उद् + इत्त] गवित, उद्वत
अभिमानो (एदि) ।

उद्वलण न [उद्वलन] विदारण (गड्ड ६) ।

उद्व सक [उद्, उप + ट्] ? उपद्रव
करना, पीडा करना । २ मारना, विनाश
करना, हिसा करना 'तए एव सा रेवई गाहा
वईणी भयया कयाइ तांति दुवालमणह
सवतीए भवर जाणित्ता छ सवतीया सत्थण-
भोणेण उद्वेइ, उद्वेइत्ता छ सवतीयो
विण्णभोणेण उद्वेइ, उद्वेइत्ता तांति
दुवालमणह सवतीए नोउपरिय एणमई
हिएणकोटि एणमय वय सभयय पडिबवेइ,
२ ता महामणएण समणोवासएण उद्वि उउ-
लाइ भोमयोगाइ भुवमाणो विहइ' (उवा) ।

मवि, उद्वेहिद (भग १५) । कवक, उद्व-
जिज्जमाण (सुम २, १) । क. उद्वेयव्य
(सुम २, ३) ।

उद्वयअ पुं [उद्द्रव, उपद्रव] ? उपद्रव ।
२ विनाश, हिंसा, 'मारभो उद्वयमो' (था ७) ।
उद्ववइत्तु वि [उद्द्रोव, उपद्रोव] ? उपद्रव
करनेवाला । २ हिसक, विनाशक, 'से हत्ता
देत्ता भेत्ता नुपित्ता उद्ववइत्ता विउपित्ता
अकड कटिप्पामि ति मज्जाणो' (भावा) ।

उद्ववग न [उद्द्रवग, उपद्रवग] ? उपद्रव,
हरवत, 'उद्ववण पुण जाणनु प्रहयापविबज्जिअ'
(पिंड, श्रीप) । २ विनाश, हिंसा (स ४४,
भावा) ।

उद्ववण न [अपद्राण] मृग को छोड़कर सब
प्रकार का डुब, 'उद्ववण पुण जाणनु
अहयापविबज्जिअ वोउ' (पिंडना २५, पिंड
६७) ।

उद्वरणया } ली [उद्द्रवया, उपद्रवया]
उद्ववणा } ऊपर देखो (भग, पण्य १, १) ।
उद्ववाइअ देखो उह, उवाइय, 'समएस्स ए
भगवभो महावीरस्स एव गणा हत्ता, तं—
गोवमे गणे उत्तरपत्तिस्सहणए उद्वहणए
चारणणए उद्ववित्त-इम-गणे विस्समाति-
(इम) गणे कामिइत्त-अ-गणे माणवणए
कोटिपणे' (ठा ६) ।

उद्वविअ वि [उद्द्रुव, उपद्रुव] ? पीडित,
'सवाइसा सवाटिमा परियाविमा किंसाविमा
उद्वविआ ठाणाभो ठाण सवामिया' (पडि) ।
२ विनाशित, 'नाउए विभेणए निरयनिद्रुपस्स
वित्तिय, ठो सो सडुडु को उद्वविओ' (सुपा
४०६) ।

उद्ववेत्तु देखो उद्वयइत्तु (भावा) ।

उडा सक [उद् + दा] बनाना, निर्माण
करना । उदाइ (ना) ।

उडा सक [अउ + ट्] मरना । उदाई,
उदायाति (भग) । घं. उदाइत्ता (जीव
३, ठा १०, भाग) ।

उदाइआ ली [उद्द्रोनी, उपद्रोनी] उपद्रव
करनेवाली स्त्री, 'ताए वा उदाइमाए कोइ
संभवा मडिठो होउवा' (पाप १८ ना टी) ।

उदाइअ देखो उदाय = शुभ ।

उदाइआ देखो उदा = पर + दा ।

उद्दाण की [दे] चल्हा, चल्ती, जिसपर रसोई पकाई जाती है (दे १, ८७) ।

उद्दाण वि [अनद्राव] मृत, 'उद्दाणे मोक्षममि चैद्याद वदामि' (सुख १, ३) ।

उद्दाम वि [उद्दाम] १ स्वेद, स्वच्छन्द (पात्र) । २ प्रचण्ड, प्रखर 'ता सजलजल-हृह्रामर्गहिरसदेण ताण ॥ बह्द' (सुपा २३४) । ३ अश्रयस्थित (दे १, १७७) ।

उद्दाम पु [दे] १ सघात, समूह । २ स्फुट, विपमोन्नत प्रदेश (दे १, १२६) ।

उद्दामिय वि [उद्दामित] सत्वता हुआ, प्ररम्भित 'तत्प या बहवे हृल्यो पासति सएणद्धबन्मिययुक्ते उप्पोसियकच्छे उद्दामियय' (विपा १, २) ।

उद्दाय अक [शुभ] शोभना, शोभित होना, अच्छा बालूम देना । वक्र, 'उववणेमु परहुय-क्यपरिभितसनुलेमु उद्दायत रत्तईगोव यवोयकाहन्विलविणु' (छाया १, १) । उद्दाइत (छाया १, १ टी) ।

उद्दार देखो उद्दाल = उदार 'देमि न वस्सवि णेए उद्दारणस्स विविहरमपाह' (वज्जा १२०) ।

उद्दारिअ वि [दे] १ मुझ से पलायित रह-नुत । २ उत्क्रांत, उन्मूलित (पद्) ।

उद्दाल सक [आ + छिद्] लोच लेना, हाथ से छीन लेना । उद्दालस (दे ४, १२६, पद् महा) । हेऊ उद्दालेउ (वि ५७७) ।

उद्दाल पुं [अवदाल] १ दवाय, अवदनन 'तसि तासिगमि सर्पाण्णमि गमागुलिय-वालुअउद्दालसालिए' (फण्य छाया १, १) । २ वृक्ष विशेष (जीव ३) । ३ अवसर्पिणी काल का प्रथम भाग—समय विशेष (ज २) ।

उद्दालिय वि [आच्छिन्न] छीना हुआ, लोच लिया गया (पात्र कुमा, ऊ पृ ३२३) ।

'दो सारनसिद्धावि हु तेहि उद्दालिया' (सुपा २३८) ।

उद्दावणया की [उपद्रावणा] उदब, हैरानी (राज) ।

उद्दाह पुं [उद्दाह] १ प्रखर दाह । २ भाग (ठा १०) ।

उद्दाहग वि [उद्दाहक] भाग सगनेवाला (पण्ड १, ३) ।

उद्दिष्ट वि [उद्दिष्ट] १ कथित, प्रतिपादित (विपा २, १) । २ निश्चित (दस) । ३ दान के लिए संकल्पित (अन्न, पानादि) । 'एण्य-पुता उद्दिष्टमत्त परितग्गयति' (सूय २, ६) । ४ संसित (सूय २, ६) । ५ न. उद्देश (पात्र १०) । 'कड वि [उद्] साधु के उद्देश से बनाया हुआ, साधु के निमित्त किया हुआ (भोजनादि) (वम १०) ।

उद्दिष्टा की [उद्] पाह्या विधि विशेष, प्रमाणव्या (औष) ।

उद्दिष्ट वि [उद्दिष्ट] प्रवृत्त (वृह १) ।

उद्दिस सक [उद् + दिग] भ्रान्ता करना । कर्म. उद्दिसजति (अणु ३) ।

उद्दिस सक [उद् + दिश] १ नाम निर्देश पूर्वक वस्तु का निष्पण करना । २ देखना । ३ सकल्प करना । ४ लय करना । ५ आगोकार करना । ६ सम्यक् लेना । ७ समान करना । ८ उपदेश देना । उद्दिसद (वव २, ७) । वम 'अत अग्नयणा एक-सराग दसमु चैव विससेमु उद्दिससति' (उवा) । कवक. उद्दिसिज्जत (आवम) । सऊ 'गयो तासि सभोव, पुच्छिय महुरवाणीए एक्क कल्लग उद्दिसिऊण, वयो तुम्ये' (महा. वव ७) । 'तदनसाले य एक्का परमहिंसा बुधुम उद्दिसस कुमारउत्तमो अस्सए पविसमद (महा), उद्दिसिय (आधा २, १, वमि १०४) । हऊ उद्दिसिउ, उद्दिसिउत्तए (वव १० भा डा २, १) । प्रयो. उद्दिसाविउत्तए, उद्दिसावेत्तए (वृह १, कस) ।

उद्दिसिअ देखो उद्दिष्ट (आधा २) ।

उद्दिसिअ वि [दे] उपस्थित, विरक्त (दे १, १०६) ।

उद्दीरणा देखो उद्दीरणा, उद्दीरणउद्दाण ज नाएत्त तय वोच्छ' (पच ५, ६८) ।

उद्दीवण न [उद्दीपण] १ उत्तेज्य । २ वि उत्तेज (मै ५८, रंभा) ।

उद्दीवणज वि [उद्दीपनीय] उद्दीपक, उत्तेजक, 'मयणुद्दीवणज्जेहि विविहेहि भूसेणेहि' (रंभा) ।

उद्दीविअ वि [उद्दीपित] प्रदीपित, प्रज्वालित (पात्र), 'धीयाए पवितविउ ततो उद्दीविओ जलणे' (सुर १, ८८) ।

उद्दुट्टय वि [उद्दुट्ट] पलायित (पचम ६, ७०) ।

उद्दुट्टय वि [उपद्रुत] हेरान किया हुआ (म १३१) ।

उद्देस देखो उद्दिस उद्देसद (मवि) ।

उद्देस पु [उद्देश] १ मज्ज विषयक उपागमा (अणु ३) । २ नाम का उच्चारण (सिदि १०६०) । ३ वाचन, सूत्र प्रदान, सूत्रों के मूल पाठ का अध्यापन (पच १) ।

उद्देस पु [उद्देश] १ नाम निर्देश पूर्वक वस्तु-निष्पण (विदे) । २ शिष्टा, उपदेश 'उद्देसो पासगमस एणिय' । ३ व्यपदेश, व्यवहार (आधा) । ४ लय । ५ धर्मापन, मतलब (विदे) । ६ श्रय का एक भरा (मग १, १) । ७ प्रदेश, भयन, 'कुमवि छुदिममभरा आवाआलणहिंरा समनुद्देसो' (सै ५, १६, १, २०) । ८ पुच्छप्रतिज्ञा, पुच वचन (विदे) । ९ जगत्, स्थान (कण्ठ) ।

उद्देस वि [औद्देश] देखो उद्देसिय = औद्देशिक (विउ २३०) ।

उद्देसण न [उद्देशन] १ पाठन, वाचन, अध्यापन, 'उद्दिउत्तए आणएत्त पाठणया चैव एण्डा' (पचभा, वव २, ५) । २ अधिचारिता, योग्यता (ठा ४, ३) ।

उद्देसण फाल पु [उद्देशनफाल] मूलमूल के अध्यापन का समय (एदि २०६) ।

उद्देसणा की [उद्देशना] ऊपर देखो (पचभा) ।

उद्देसिय न [औद्देशिक] १ जिज्ञा का एक दोष, साधु के लिए भोजन निर्माण । २ वि. साधु निमित्त बनाया हुआ (भोजन) (वम), 'उद्देसिय तु कम्म एव उद्दिसस कीए जति' (पचा १७, डा ६, अत) ।

उद्देसिय वि [औद्देशिक] १ उद्देश-साम्बन्धी उद्देश से किया हुआ । २ विवाह प्रादि के उपनयन के लिए गए जीवम में निमग्नता के भोजन की समाप्ति के अनन्तर बचे हुए वे खाद्य द्रव्य जिनको सदांजातीय भिक्षुओं को देने का सबन्ध किया गया हो (पिउ २२६) ।

उद्देह पु [उद्देह] भगवान् महावीर ना एव
गए—साधु समुदाय (ठा ६; नप्य)।

उद्देहलिया छी [उद्देहलिया] वनस्पति-विशेष
(राज)।

उद्देहिया [छो] [दे] उपदेहिना, दोषक,
उद्देही [नोत्रिय जलु विरोध (जी १६,
स ४२५, भोप २२३), 'उवदेहीइ उद्देही'
(दे १, ६३)।

उद्देहारा वि [उद्देहारा] पातक, हिनक
(पएह १, ३)।

उद्ध देखो उद्ध (दे ३, ३३, पि ८३, महा
दे २, ५६, ठा ३, २)।

उद्धअ वि [उद्धत] १ उन्मत्त (मे ४, १३,
पाय)। २ गर्हित, अभिमानी (भग ११,
१-१)। ३ उत्पत्ति (आमा १, १)। ४
अतिप्रसन्न, उद्धतमनसक—' (पएह १, ३)।
उद्धअ देखो उद्धरिअ = उद्धृत, पावलेछ
उवेचन व उद्धयपयमारणा उ उद्धारो (वच
१०)।

उद्धअ वि [दे] शाप, ठका (पद्)।

उद्धत देना उद्धा।

उद्धस सक [उद् + धृप्] १ मारना। २
आक्रोश करना, गानी देना। उद्धसेइ (भा
१५)। उद्धसति (आमा १, १६)।

उद्धम सक [उद् + ध्वस्] विनाश करना।
सक. उद्धसिकुण (स ३६२)।

उद्धंसण न [उद्धर्ण] १ आक्रोश, निर्मर्सन।
२ वध, हिना (राज)।

उद्धसणा क्षी [उद्धर्णा] उपर देखो (भीष
६ भा), 'उद्धासणाहि उद्धनणाहि उद्धसति,
(आमा १, १६)।

उद्धसिय वि [उद्धर्षत] आक्रुष्ट, जिसपर
आक्रोश विना गया हो वह (निज ४)।

उद्धच्छवि वि [दे] विनवदित, अप्रमाणित
(दे १, ११५)।

उद्धच्छविअ वि [दे] सज्जित, वैशार (दे
१, ११६)।

उद्धच्छिअ वि [दे] निषिद्ध, प्रतिषिद्ध (दे
१, १११)।

उद्धट्टु देखो उद्धर।

उद्धट्ट वि [उद्धृत्] उठा नर रखा हुआ
(धर्म ३)।

उद्धण वि [दे] उद्धत, भविनीत (पद्)।
उद्धत्य वि [दे] विप्रलम्ब, वञ्चित (दे १,
६६)।

उद्धदेहिय न [और्ध्वदेहिक] अग्नि सखार
आदि अर्धदेहिक (स १०६)।

उद्धम सक [उद् + हन्] १ राख वगैरह
कूटना, वायु भरना। २ ऊँचा बनना, उठना। कवह. उद्धमसाण सलाए सिमाए
सखियाए खसुणीए (राय), 'पायालसहस्र-
वायवसवेगसलितउद्धमसाणदगरययधकार
(खण्णामरसागर)' (पएह १, ३, भोप)।

उद्धर सक [उद् + ह्] १ फँसे हुए को
निचालना, उपर उठाना। २ उन्मूलन करना।
३ दूर करना। ४ लीपना। ५ लीएँ मन्दिर
वगैरह का परिवार-संस्कार करना। ६
किसी ग्रथ या लेख को अग्र-विशेष को दूसरी
पुस्तक या लेख में अविच्छन्न नकल करना।
अवि उद्धरिन्मइ (स ५६६)। वह पद्मवर
पद्मगम पाय जियमविदाइ पूयतो, जिलाइ
उद्धरतो' (मुपा २२५),
'जयइ धरपुडरतो मरणीसाविपुह'गवन्नेण।
णियइहण करेण न पचणुणिआ महाकुम्भी'।
(तवड)

सह उद्धरित, उद्धरिऊण, उद्धरित्ता,
उद्धरिसु उद्धट्टु (पचा १६, प्राक्),
'त लय सम्बसो दिता, उद्धरित्ता मयुया'
(उत २३, पचा १६) बाहु उद्धट्टु वक्क-
मयुल्लवने' (सूप् १, ६), 'तवे पाणे उद्धट्टु
पाद रीदग्ग' (आचा २, ३, १, ४)।

उद्धर (भप) देखो उद्धर (महि)।

उद्धरण न [उद्धरण] १ उपर उठाना। २
फँसे हुए को निचालना (गजड), 'दीणुदरएण्णिम
पणँ न पठत्त' (विदे १३५)। ३ उन्मूलन।
४ अपनयन (सूप् १, ४, ६)।

उद्धरण वि [दे] उच्छिष्ट, झूठा (दे १, १६६)।

उद्धरिअ वि [उद्धृत्] १ उत्पत्ति, उद्गम,
हस्तुत उच्छ्रद्ध उच्छिस्त-उत्पात्तिमाई उद्धरिअ'
(पाय)। २ किसी ग्रथ या लेख के अग्र
विशेष को दूसरे पुस्तक या लेख में अविच्छन्न
नकल न करना।

एयो जीवविगारो, ससेईण जणएणाहेच।
संविचो उद्धरिओ, इदयो मुय-ममुदाम्।

(जी ५१), 'जिए उद्धरिया विजा, मागसगमा
महापरिएणाओ' (भावम)। ३ आक्रुष्ट, लीपा
हुआ। ४ निष्कासित, बाहर निकाला हुआ,
'उद्धरिपसन्धमल्ल—' (पचा १६)। ५ लीएँ
बलु का परिवार करना, 'जियमविदर त
उद्धरिअ' (विदे १३३)।

उद्धारेअ वि [दे] अहित, विनाशित (पद्)।
उद्धल पु [दे] दोना तरफ को प्रवृत्ति (पद्)।

उद्धर पु [उद्धय] ऊँचो, योहणए का चाचा,
मित्र और भक्त (रविम ४६)।

उद्धउअ वि [दे] उल्लिख, फँसा हुआ (दे १,
१०६)।

उद्धनिअ वि [दे] अहित, पूजित (दे १,
१०७)।

उद्धा } सक [उद् + धाप्] १ दीहना,
उद्धाअ } वेग म जाना। २ ऊँच जाना।
उद्धाइ (पि १६५)। वक. उद्धत, उद्धाअत,
उद्धायमाण (नप्य से ६, ६६, १३, ६१,
भीष)।

उद्धाअ यव [उद्धर्ष्य] ऊँचा होना। वह
उद्धाअमाण (मे १३, ६१)।

उद्धाअ वि [उद्धर्ष] उद्धाहित, ऊँचा गया
हुआ, 'दिएणकए वहत उद्धाअणिएप्रतगरउ-
मणिगप्रमिहरे' (से ६, ३६)।

उद्धाअ पु [दे] १ विपनोन्नत प्रवेश। २
समूह। ३ वि घना हुआ, आत (दे १,
१२४)।

उद्धाअ वि [उद्धानित] १ फैला हुआ,
विस्तीर्ण, प्रवृत्त (से ३, ५२)। २ ऊँचा
लौहा हुआ (से २, २२)।

उद्धार पु [उद्धार] १ नाय, रक्षण (कुमा)।
२ उद्धार देना, उपार देना (मुपा ५६७, ध
१४)। ३ अग्रहरण (अणु)। ४ अग्रवाद
(राज)। ५ चारणा, पडे हुए पाठ को नही
मूलना 'पावलेणे उवेच वव उद्धयपयमारणा
उ उद्धारो' (वच १०)। 'पडिओमन न
[पन्थोपयो] समय का एव परिमाण
(अणु)। 'समय पु [समय] समय विशेष
(अणु)। 'सागरोपम न [सागरोपम]
समय का एक दीर्घ परिमाण (अणु)।

उद्धरय वि [उद्धारक] उद्धार-नारक (कुप्र
२)।

उच्चाय देतो उच्चा ।

उच्चाय न [उच्चायन] गोरे देता (भा १) ।

उच्चायणा छी [उच्चायना] १ प्रवत प्रवति ।

२ दूर गमन, दूर क्षेत्र में जाना (परम ३) । ३

भायें गो शीघ्र गति (पर १) ।

*उद्धि देता सुद्धि (पद्) ।

उद्धि छी [द्धि] गयो ना एव प्रमय, रुक्मणी

'उय (गुञ्ज १, = दौ. डा ३, २ दो-पय

१३३) ।

उद्धिअ देता उद्धिरअ = उद्धृत (भा ४०

धीन राय वन १, धीव, पय २८) ।

उद्धीमुह वि [ऊर्ध्वीमुख] उँ ऊँगा रिया

हूमा (पद ४) ।

उद्धुधुलिय वि [द्धि] धुँवनाया हूमा (मण)

उद्धुधुनिय दगा उद्धय (मण) ।

उद्धुधुम मर [द्ध] पूणें करना, पूरा करना ।

उद्धुमद (ह ४, १५६) ।

उद्धुधुमा मर [उद्ध + ध्मा] १ भाषाज करना ।

२ जोर म पमनी बा करना । उद्धुमाद उद्ध-

मापद (पद्, प्राप्ता) ।

उद्धुधुमादअ रि [उद्धध्मापित] उँडा किया

हूमा, निरगित (म १, ८) ।

उद्धुधुमाय रि [द्धि] १ परिपूर्ण, 'मायाद उद्ध-

माया' (धुमा) 'पशुहयपुद्गुमायं माहिरेय

य जाए माउए (छवि) । २ उमत्त,

ममरदरपुद्गुमायुहमहमर' (म ६, ११) ।

उद्धुधुय वि [उद्धधुन] १ पनन मे उँगा हूमा

(सि ७ १४) । २ प्रवृत्त पैना हूमा, 'पशुधु-

माधिराम' (धोप) । ३ प्ररगित 'याउद्धुय

नियमनेयनी' (जीय ३) । ४ उचट, प्रवत

(मम १३७) । ५ व्यक्त, प्रवट (वण) ।

उद्धुधुर वि [उद्धुधुर] १ ऊँगा, उच उद्धुर

उच्च (पाप) । २ प्रचलट, प्रवत (गुर ३, ३६

१२, १०६) ।

उद्धुधुनन } देतो उद्धु

उद्धुधुननामाय } देतो उद्धु

उद्धुधुनिय वि [उद्धुधुपित] १ रोमाध,

'मनोदयविपदि हनिउद्धु सिपदि सिपमाणी

य (उव) । २ वि रोमाधित, पुनकित (दि

१, ११४, २, १००) 'उद्धुधुनियेधुनू

सीपलमनिलेण संकुड्यगतो' (गुर २ १०१),

'उद्धुधुनियेनरसद' (महा) ।

उद्धु मर [उद्ध + ध्] १ नपाता,

नपाता । २ पापर पयपर बीजाता, गंगा

करता । ३ उद्धुधुनन, उद्धुधुधुयमाय

(पयम २, ४० वण) ।

उद्धुधुनिय देतो उद्धुधुन (मण) ।

उद्धुधुर (सी) देता उद्धुधुय (पाप ३३) ।

उद्धुधुल सव [उद्ध + धुलध्] १ व्याप

करता । २ गुति लगाता । उद्धुधुलेद (ह

४, २६) ।

उद्धुधुलन म [उद्धधुलन] गुति ना वद्ध

वर गमाता,

जासनागमपुनानुगुनानगनिज्वरन

ग मयनद गुननासाविमाद उद्धुधुनगरमो'

(पा ४०८) ।

उद्धुधुलिय रि [उद्धधुलिय] १ गुति न

सागा हूमा । २ व्यक्त, निविराद्धुनिममलं

(धुमा) ।

उद्धुधुनियया छी [उद्धधुनिय] पूर देता

विधि हू विद्याउपक्रमगुरीमनीदि गुणुतादि

उत्तरियमिम निविता उद्धुधुनिये वयनदि

(गुर १४, १७७) ।

उद्धुधुनिय रि [उद्धधुनिय] गिगो पूर

विद्या गया हा यह (निक १३३) ।

उद्धुधुन धुँ [उद्धधु] उत्तमान, ऊँगा होता

(मट्टि ६५) 'ऊँ नद गुणुधुनोए विनिज्वर

तं सयन राधुदोम जणेद मद्द मयमा' (धुमा

६४) ।

उद्धुधुन [ऊँ] ऊन, अड या वकरो के राम ।

'मय रि [मय] ऊँ बा बना हूमा

'गातालियाए विदं नचनावट पासुतियाहार ।

उद्धुधुनयानविमणगुणुधुनयणहूमाभाण ॥'

(धुमा ४३२) ।

उद्धुधुन वि [विपण] विपाद प्रात,

सित्र (पद्) ।

उद्धुधुन देतो उद्धुधुन (पात, गुमा २५७, प्रागु

२८, सायें ३४) ।

उद्धुधुन देतो उद्धुधुन ।

उद्धुधुन [उद्धुधुन] ऊँगा लिया हूमा (पयम

१०४, ५७) ।

उद्धुधुन सव [उद्ध + नन्द] अश्विनन्दन करना ।

कवडु हियममालासहसिह उद्धुधुनयामे

(वण) ।

उद्धुधुन देतो उद्धुधुन (गुमा ४७६, मम ७१,

वण) ।

उद्धुधुन देतो उद्धुधुन । 'मय रि [मय] ऊँ

बा बना हूमा (गुमा ६४१) ।

उद्धुधुनिय म [उद्धुधुनिय] हूँ-यापत घास

(म ३७६) ।

उद्धुधुन धुँ [उद्धुधुन] ऊँगादि । २ अश्विना,

मयें (मम ७१) ।

उद्धुधुनिय रि [उद्धुधुनिय] ऊँगा लिया हूमा

(पाप मट्टा म ३७७) ।

उद्धुधुनिय रि [द्धि] देतो उद्धुधुनिय, 'उद्धु-

धुनिय उद्धुधुनिय' (पाप) ।

उद्धुधुन धुँ [उद्धुधुन] ऊँगादि (पाप) ।

उद्धुधुन देता उद्धुधुन = धीगिर (धोप

७०५) ।

उद्धुधुनिय मर [उद्धुधुनिय] उद्धुधुन, उद्धु-

धुनिय मर । अश्वि, उद्धुधुनियममि (गुम

२, १, ६) । ३ उद्धुधुनियमर (गुम २,

१, ७) ।

उद्धुधुनियमन म [उद्धुधुनियमन] दीमा छाड

कर रिगुणुधुन हूमा, साधुधुन छाडकर रिग

गुणुधुन हूमा (उ १३० टी, १६६) ।

उद्धुधुन देतो उद्धुधुन । वयड, उद्धुधुनयाम

(वण) ।

उद्धुधुन (धन) धुँ [उद्धुधुन] धीम श्रुतु

(मरि) ।

उद्धुधुनिय म [उद्धुधुनिय] धर बा उद्धुधुन

(उव ६, ६) ।

उद्धुधुन म [उद्धुधुन] १ विद्धता या पीछे या

भाग । २ रि, समीपय (पा ६६३) ।

उद्धुधुन देतो उद्धुधुन (विने १०२१, पद्) ।

उद्धुधुन देतो उद्धुधुन (पद्) ।

उद्धुधुनयाम देतो उद्धुधुन = उद्धुधुन + वादधु ।

उद्धुधुन देतो उद्धुधुन । उद्धुधुन (पद्) ।

उद्धुधुन उद्धुधुनिय (नाट) ।

उद्धुधुनिय धुँ [उद्धुधुन] कृता, 'मध-

दिये जंघायेयाएदि मृत्तायाम' (धुमा

३६२), 'तह त निउयाएदियाउवि वाहिल्य'

(धुमा ३६२) ।

उद्धुधुन देतो उद्धुधुन = धुँधु । उद्धुधुन (वि १०४,

ह १, १६६) ।

उपपञ्च वि [उत्पत्ति] ऊँचा गया हुआ,
उठा हुआ, 'सिंघे य भागने उपपञ्च' (उवा:
सुर ३, ६६) । २ उत्तत, ऊँचा (भावा) ।
३ उद्भूत, उत्पन्न (उत्त २) । ४ न, उत्पन्न,
उत्पन्न (भीष) ।

उपपञ्च वि [उत्पाटित] उत्पातित, उठाया
हुआ; 'सुखितपद्ममुपात्त दट्ठूण पिणं व
सिद्धिबलसं एलिपि' (सि १, ३०) ।

उत्पञ्चअव्य } देखो उत्पञ्च = उत् + पञ् ।
उत्पञ्चिं }

उत्पञ्च वि [दे] १ बह, भ्रमन्त । २ पुं. पङ्क,
कौचक, कपड़े । ३ उतति (दे १, १२०) ।
४ समूह, राशि (दे १, १३०. पाद्म, गज, स
४३७) ।

उत्पञ्च पुं [दे] समूह, राशि,
'एवमल्लं विसरणं, पहिमा

पेय्यति कुमरवत्सल ।

नामस्स लेहिउत्पञ्चगराहमं

हृत्पमल्लं व ॥' (गा ५८५) ।

उत्पञ्च भ्रम [उत् + पञ्] उत्पन्न होता ।
उत्पन्नति (कृष्) । बहु. उत्पञ्चति, उत्पञ्च-
माण (सि ८, ५५; सम्म १३५; भग. विते
३३२२) ।

उत्पञ्च सक [उत् + पञ्] उठना, ऊँचा
जाना, बूढ़ना (भावा) ।

उत्पञ्च पुं [उत्पट] श्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष, कुट्ट
कीट-विशेष (राज) ।

उत्पञ्चि देखो उत्पञ्च (नाट) ।

उत्पञ्च सक [उत् + पञ्] घान्य वगैरह को
सूप आदि से साफ सुधारा करना । कर्म. 'सानी
बीही जबा य लुब्धंतु मनिजंतु उत्पञ्चजंतु
य' (पणह १, २) ।

उत्पञ्चण न [उत्पन्न] सूप आदि से घान्य
वगैरह को साफ-सुधारा करना (दे १, १०३) ।

उत्पञ्चण वि [उत्पन्न] उत्पन्न, सजात, उद्भूत
(भग नाट) ।

उत्पत्ति वि [दे] १ गनित । २ विरक्त
(पञ्) ।

उत्पत्ति वि [उत्पत्ति] उत्पत्ति, प्रादुर्भाव
(उत्त) ।

उत्पत्तिया श्री [औत्पत्तिकी] बुद्धि-विशेष,

विना शास्त्राभ्यासादि के ही होनेवाली बुद्धि,
स्वाभाविक मति (ठा ४, ४, छाया १, १) ।

उत्पन्न देखो उत्पण्ण (उवा: सुर २, १६०) ।
उत्पञ्च सक [उत् + पञ्] उठना, बूढ़ना ।

उत्पञ्च (महा) । बहु. उत्पञ्चत, उत्पञ्चमाण
(उवा १४२ टी, छाया १, १६) । सक. उत्प-
ञ्चा (भीष) । ह. उत्पञ्चअञ्च (सि ६, ७८) ।

हेट. उत्पञ्चं (सुर ६, २२२) ।
उत्पञ्च देखो उत्पञ्च । बहु. उत्पञ्चत (सि ५,
५६) ।

उत्पञ्च पुं [उत्पात्] १ उत्पन्न, ऊँचे जाना,
बूढ़ना, उद्भूत । २ उत्पत्ति; 'भवतिरु पत्ते
मंदारिवाउत्पञ्चाई यं' (विते ५७७) । 'निवय
पुं [निपात्] १ ऊँचा-नीचा होना;

'वरपणुवपुत्रसायत्तरमगेवेहि हीएउ नावा ।
सुखलोलवसुद्धिद्वयनगरनियरेण बरियावि ॥
अएवरयत्तरगेहि उत्पन्ननिवयं कुण्ठितिया वट्ठ'
(सुर १३, १६७) । २ नात्य-विधि का एक
प्रकार (भीष ३) ।

उत्पञ्चण न [उत्पन्न] ऊँचा जाना, उद्भूत
(ठा १०. सि ६, २५) ।

उत्पञ्चण न [उत्पन्न] बल को लीचना,
सेरना (सि ५, ६०) ।

उत्पञ्चणी श्री [उत्पत्तनी] विद्या-विशेष (सूय
२, २, २७) ।

उत्पञ्चि (वय) देखो उत्पञ्चि (हे ४, ३३४,
विप) ।

उत्पञ्चिवाडि, 'ही श्री [उत्पञ्चिवाडि, 'ही
उत्ता क्रम, विपरीत, विपरीत, 'उत्पञ्चिवाडी-
वहूँ चाउम्मासा अने लहना' (गच्छ १) ।

उत्पञ्चोत्तर भ [उत्पञ्चोत्तर] ऊपर-ऊपर (स
१४०) ।

उत्पन्न न [उत्पन्न] १ कमल, वष (छाया १,
१. मग) । २ विमान-विशेष. (सम ३८) ।
३ सत्य-विशेष, 'उत्पन्न' को बीरवी लाह
से गुणने पर जो सस्या सत्य हो वह (ठा २,
४) । ४ सुगन्धि द्रव्य-विशेष, 'परमुत्पन्नगणित'
(न ३) । ५ पु. परिवाहन-विशेष (प्राञ्
१) । ६ दीप-विशेष । ७ समुद्र विशेष (पणह
१५) । 'वेदम पुं [वृन्तक] भाजीविक
मत का एक साधु-समाज (भीष) ।

उत्पत्ति न [उत्पत्ति] सत्या-विशेष, 'हृद्य'
उत्पत्ति न [उत्पत्ति] सत्या-विशेष, 'हृद्य'

उत्पत्ति न [उत्पत्ति] सत्या-विशेष, 'हृद्य'
उत्पत्ति न [उत्पत्ति] सत्या-विशेष, 'हृद्य'

उत्पत्ति न [उत्पत्ति] सत्या-विशेष, 'हृद्य'
उत्पत्ति न [उत्पत्ति] सत्या-विशेष, 'हृद्य'

उत्पत्ति न [उत्पत्ति] सत्या-विशेष, 'हृद्य'
उत्पत्ति न [उत्पत्ति] सत्या-विशेष, 'हृद्य'

उत्पत्ति न [उत्पत्ति] सत्या-विशेष, 'हृद्य'
उत्पत्ति न [उत्पत्ति] सत्या-विशेष, 'हृद्य'

उत्पत्ति न [उत्पत्ति] सत्या-विशेष, 'हृद्य'
उत्पत्ति न [उत्पत्ति] सत्या-विशेष, 'हृद्य'

उत्पत्ति न [उत्पत्ति] सत्या-विशेष, 'हृद्य'
उत्पत्ति न [उत्पत्ति] सत्या-विशेष, 'हृद्य'

उत्पत्ति न [उत्पत्ति] सत्या-विशेष, 'हृद्य'
उत्पत्ति न [उत्पत्ति] सत्या-विशेष, 'हृद्य'

को बीरवी लाह से गुणने पर जो सत्या
सत्य हो वह (ठा २, ४) ।

उत्पत्ति श्री [उत्पत्ति] १ एक इन्द्राणी, काल
नामक पिशाचेन्द्र की एक भय-महिषी (ठा
४, १) । २ इस नाम का 'जाताघनंका' का
एक भयानक (छाया २, १) । ३ स्वनाम
व्यात एक भाविनी (भग १२, १) । ४ एक
गुप्तकली (जीव ३) ।

उत्पत्ति श्री [उत्पत्ति] कमलिनी, कमल
का गाछ या पोवा (पणह १) ।

उत्पत्ति वि [दे] अध्यासित, आसक्त (पञ्) ।
उत्पञ्च सक [उत् + पञ्] १ लीचना, पार
करना, सेरना । २ ऊँचा जाना, उठना । बहु.
उत्पञ्चत, उत्पञ्चमाण (सि ५, ६१, ८, ८६) ।

उत्पञ्चइय वि [उत्पन्नजित] जिसने बीसा
छोड़ दी ही वह, साधु होकर फिर गृहस्थ
बना हुआ (सि ४८५) ।

उत्पञ्च पुं [उत्पञ्च] उन्माद, कुमारी, 'पंचाड
उत्पञ्च नैमि' (निचु ३; सि ४, २६; हेका
२५६) । 'जाइ वि [यायिन्] उलटे रान्ने
जानेवाला, विपन्न-नामी (ठा ४, ३) ।

उत्पञ्च देखो उत्पञ्च = उत्पाद (ठा १—
पन १६, ठा ५, ३—पन ३५६) ।

उत्पञ्च वि [उत्पञ्चिन्] उत्पन्न होनेवाला
(विते २८११) ।

उत्पञ्चइता देखो उत्पञ्च = उत् + पादय् ।
उत्पञ्चइतु वि [उत्पञ्चइतु] उत्पन्न, उत्पन्न
करनेवाला (ठा ७) ।

उत्पञ्चइय न [औत्पत्तिक] नृकृष आदि
उत्पातों का सूचक शब्द (सूत्र १, १२, ६) ।

उत्पञ्चइय वि [उत्पञ्चिन्] उत्पन्न किया हुआ,
'उत्पञ्चइयमिच्छिएणोउत्पत्तं' (पाम) ।

उत्पञ्चइय वि [औत्पत्तिक] ॥ भस्त्राभाविक,
कृत्रिम, 'उत्पञ्चइयम्यं व चकमत' । २ भ्रातृ-
स्मिक, भ्रष्टमाद होनेवाला, 'उत्पञ्चइया वाही'
(राज) । ३ न भद्रिप-भूषक आत्मिक उत्पन्न,
उत्पात, 'भो मो नाविद्युरित्ता सवर्षाचार समु-
ज्या होह । दीघद कदवयणं व मोयमुपायं
जेण' (सुर १३, २८६) ।

उत्पञ्चइयं } देखो उत्पञ्च = उत् + पादय् ।
उत्पञ्चइतु }
उत्पञ्चइतु }

उत्पञ्चइतु } देखो उत्पञ्च = उत् + पादय् ।
उत्पञ्चइतु }
उत्पञ्चइतु }

उत्पञ्चइतु } देखो उत्पञ्च = उत् + पादय् ।
उत्पञ्चइतु }
उत्पञ्चइतु }

उत्पञ्चइतु } देखो उत्पञ्च = उत् + पादय् ।
उत्पञ्चइतु }
उत्पञ्चइतु }

उत्पञ्चइतु } देखो उत्पञ्च = उत् + पादय् ।
उत्पञ्चइतु }
उत्पञ्चइतु }

उत्पञ्चइतु } देखो उत्पञ्च = उत् + पादय् ।
उत्पञ्चइतु }
उत्पञ्चइतु }

उत्पञ्चइतु } देखो उत्पञ्च = उत् + पादय् ।
उत्पञ्चइतु }
उत्पञ्चइतु }

उत्पञ्चइतु } देखो उत्पञ्च = उत् + पादय् ।
उत्पञ्चइतु }
उत्पञ्चइतु }

उत्पञ्चइतु } देखो उत्पञ्च = उत् + पादय् ।
उत्पञ्चइतु }
उत्पञ्चइतु }

उत्पाड सक [उत् + पादय्] १ ऊपर उठाना । २ उठावना, उन्मूलन करना । उत्पा-
देह (परह १, १, म १५; काल) । उ. उत्पा-
दणजिज्ञ (सुभा २४६) । सक. उत्पाडिय
(नाट) ।

उत्पाड सर [उत् + पादय्] उत्पन्न करना ।
सक. उत्पाडिऊण (विगे ३३२ टी) ।

उत्पाड पु [उत्पाट] उन्मूलन, उत्खनन,
'नवलोपाजो' (उप १४१ टी, ६८६ टी) ।

उत्पाडण न [उत्पाटन] १ उत्पादन, ऊपर
उठाना । २ उन्मूलन, उत्खनन (स २६६,
राज) ।

उत्पाडिय वि [उत्पाटित] १ ऊपर उठाया
हुआ (पाप प्राक) । २ उन्मूलित (भाव) ।

उत्पाडिय वि [उत्पादित] उत्पन्न किया हुआ,
'उत्पाडियमाणएण खंदगसीमाण सेसि नमा'
(भाव १३) ।

उत्पादथ वि [उत्पादक] उत्पन्न बर्ता (प्रयो
१७) ।

उत्पादीअमाण देवो उत्पाय = उत् + पादय् ।

उत्पाय सक [उत् + पादय्] उत्पन्न करना,
बनाना । उत्पाएहि (वाच) । वड. उत्पाएंत,
उत्पायंत (सुर २, २२, ६, १३) । सह.
उत्पाएत्ता (मग) । हेऊ उत्पाइत्ता, उत्पा-
एंत, उत्पाएत्तए (राज, वि ४५६, राया
१, ५) । कवक, उत्पादीअमाण (शो)
(नाट) ।

उत्पाय पुन [उत्पाय] १ उत्पन्न, ऊर्ध्व गमन,
'न सग्ग गमुमणा निस्सति नरमुण्युपाय'
(सुभा १८०) । २ आरक्षिक उपद्रव, 'पव-
हण च पासइ समुदमग्गे उत्पाएण लम्भाते
भमत ताहे धरोएण त उत्पाय उवसायिय'
(महा) । ३ आरक्षिक उपद्रव का प्रतिपादक
शब्द, निमित्त शास्त्र विशेष (ठा ६, सभ ५७,
परह १, ४) । 'नियाय पु [निपाय] चढना
झोर उतरना (स ४११) ।

उत्पाय पु [उत्पाद] उत्पत्ति, प्रादुर्भाव (सुभा
६, कुमा) । 'पवनय पु [पर्वत] एक प्रकार
के पर्वत, जहां आकर कई स्वतंत्र-जातीय देव-
देविमा झीडा के लिए विविध प्रकार के शरीर
बनाते हैं (सम ३३, जीय ३) । 'पुत्रय न

[पूर्व] प्रथमपूर्व, अन्वारा विशेष, वारहें
जैन धर्म-ग्रन्थ वा एव भाग (सम २६) ।

उत्पायण वि [उत्पादक] १ उत्पन्न करने-
वाला । २ पुं. शीघ्रिय जन्म-विशेष, कीट-
विशेष (वच ८) ।

उत्पायण न [उत्पादन] १ उत्पादन, उपार्जन
(ठा ३, ४) । २ वि. उत्पादक, उपार्जन (पठम
३०, ४०) ।

उत्पायणया [स्त्री] उत्पादना । १ उपार्जन,
उत्पायणा [उत्पन्न] उत्पन्न करना । जैन साधु की
निता वा एव दोष (सोप ७४६; ठा ३, ४,
पिएड १) ।

उत्पायय वि [उत्पादक] उत्पन्न-वर्ता (सुम
२, २५) ।

उत्पाल सक [यय्] बहना, बोलना । उत्पा-
लह (हे ४, २) । उत्पालमु (कुवा) ।

उत्पाय सक [उत् + प्तायय्] १ लंबाना,
तेराना । २ कुदना, उठाना । उत्पावेइ (हे
२, १०६) । कवक. उत्पियमाण (उरा) ।

उत्पास सक [उत्प + अस्] हँसी करना ।
उत्पासिति (सुस १, १६) ।

उत्पाहल न [दे] उत्कठा, उत्पुनता (पाप) ।
उत्पि सक [अप्यय्] देना । उत्पिड (कप्य) ।

उत्पि म [उपरि] ऊपर, 'कहि ए मते । जोइ-
सिमा देवा परिवसति ? गोयमा । उत्पि वीर-
समुहाए इमोहे एणएणए पुढवीए' (जीव
३, राया १, ६; ठा ३, ५, श्रीप) ।

उत्पिगलिआ लो [दे] हाथ का मध्य भाग,
करोत्सव (दे १, ११८) ।

उत्पिजल न [दे] १ सुरत, समोह । २ रज,
धूली । ३ भण्णीति, भ्रमयत (दे १, १३५) ।

उत्पिजल वि [उत्पिजल] अति-आकुल,
व्याकुल (कप्य) ।

उत्पिजल अक [उत्पिजलत्] आकुल की
तरह भावण करना । कक उत्पिजलमाण
(कप्य) ।

उत्पिचल्ल [दे] देखो उत्पित्य, 'आहित्य
उत्पिचल्ल च भाजलें रोसमणिय च', 'भोय दुय-
मुपिचल्लुताव च कमसो मुलेकव' (जीव ३),
'हथो अह तसस सखहुतो पहाविमो धाय-
रपिच्छे', 'सखसेत्तापि धायरपिच्छे' (पठम

८, १७५; १२, ८७), 'उत्पिचल्लमपरगईहि'
(भत ११६) ।

उत्पिण देखो उत्पण । वड. उत्पिणित (सुभा
११) ।

उत्पित्य वि [दे] १ प्रस्त, भोत (दे १,
१२६; से १०, ६१; न ५७४, पुण ४४३,
गउड) 'वि मायवविमूढा सरणविहूणा
अपुत्तिया' (सुर १२, १६०) । २ कुपित,
क्रुद्ध । ३ विधुर, धातुल (दे १, १२६;
पाप) ।

उत्पित्य वि [दे] स्वास-युक्त (गीत) (राय
७७ टी) ।

उत्पिय सक [उत् + पा] १ आत्मादन
करना । २ फिर-फिर स्वास लेना । कक.

उत्पियंत (परह १, ३—यम ५५, राज) ।

उत्पिय वि [अपित] धर्यण किया हुआ
(हे १, २६६) ।

उत्पियण न [उत्पाय] फिर फिर स्वास लेना
(राज) ।

उत्पियमाण देखो उत्पाय ।

उत्पिल्लण न [उत्सायन] लीचना (विड ५२२) ।

उत्पिल्लय देखो उत्पाय । उत्पिलवेइ । कक
उत्पिल्लयत, 'जे भिन्न सएण नान उत्पि-
लवेइ उत्पिल्लयत वा साइग्गइ' (मिहू १८) ।

उत्पीड पुं [दे. उत्पीड] समूह, राशि (वि ४,
३७, ८, ३) ।

उत्पीडण न [उत्पीडन] १ कस कर बाधना ।
२ बहाना (से ८ ६७) ।

उत्पील सक [उत् + पीडय्] १ कस कर
बाधना । २ उठाना, 'सएण वा एण
उत्पियावेज्जा (भावा २, ३, १, ११) ।
उत्पीलवेज्जा (वि २४०) ।

उत्पील पु [दे] १ सभात, समूह (दे १,
१२६ सुभा ६१, सुर ३, ११६ वज्जा ६०,
पुष्क ७३ धम्म १२ टी) 'हुमायणो वहे
सण्य जाजुपीतो विणासए' (महा) । २
स्वपुट, विपमोन्नत प्रदेश (दे १, १२६) ।

उत्पील्लण न [उत्पीडन] पीडा, उपद्रव
(स ७७०) ।

उत्पील्य वि [उत्पीडित] कस कर बंधा
हुआ, 'उत्पील्यविचवट्टगहियाउहयहएण' (परह
१, ३, निपा १, २) ।

उत्तिमङ्ग ४ [उद्भेदन्] सम कर भयल
होना, भाषात कर पोछे हटना,

‘जेमुं चिय कुठिअइ,

रह्मुमिअण्णुहोतो महिहरेमु ।

तेमुं चिय णिमिअइ,

पहिरोहंदोसिरो कुलिसो ॥

(पउउ) ।

उत्तिमङ्ग ५ [उद्भिन्न] १ धनुस्ति
उत्तिमङ्ग } (शेष ११३), उत्तिमले पाणिय
पडिय (सुर ७, ११४) । २ उद्धारित, छोला
हुमा । ३ न. जैन साधुको के लिए मित्रा का
एक दोष, मिट्टी बगैरह से लिप्त पार को
खोलकर उत्तमे से दी जाती मित्रा, ‘छगणाद-
योगउत्त उत्तिमविय ण तमुमिअण्ण’ (पचा
१३, ठा ३, ४) । ४ वि- ऊँचा हुमा, खडा
हुमा; ‘हसितवमुत्तिमरोमचा’ (महा) ।

उत्तिमय वि [उद्भिन्न] दुखी को काउकर
उत्तमेवाली बनस्पति (पयह १, ४) ।

उत्तिमय वि [ऊँचिउत्त] ऊँचा किया हुमा,
खडा किया हुमा (मुपा ८६, महा, वज्जा
८८) ।

उत्तिमय न [उद्भिन्न] १ लवण-विशेष,
समुद्र के निचारे पर क्षार जलके ससर्ग से होने-
वाला लोन (भाषा २, १, ६, ५) । २ पुन.
खंडीट, शयन भावि प्राणी (सवोध २०,
धर्मस ७२, मूस १, ६, ८) ।

उत्तिमय न वि [ऊँचीकृत] ऊँचा किया
हुमा, ‘उत्तिमयवाहुपुष्पी’ (उप ५६७ टी) ।

उत्तुमुअ धन [उद् + भू] उत्पन्न होना ।
उत्तुमुअ (हे ४, ६०) ।

उत्तुमुआण वि [दे] १ उन्नतता हुमा, भगिन
से ठाठ जो दूध बगैरह उद्यतता है वह (दे
१, १०५, ७, ८१) ।

उत्तुमुगा वि [द] जल, मस्तिर (दे १, १०२) ।

उत्तुमुत्त सक [उन् + त्तिप्] ऊँचा पँवना ।
उत्तुत्त (हे ४, १४४) ।

उत्तुमुत्तिअ वि [उत्तिअ] ऊँचा फँसा हुमा
(हुमा) ।

उत्तुमुत्तिअ वि [द] उदीपित, प्रदीपित (पाध) ।

उत्तुमूअ वि [उद्भूत] १ उपग्र (सुर ३,
२३६) । २ भागनुक कारण (विमे १४७६) ।

उत्तुमूआणी [उद्भूत] श्रोत्रण वासु-
देव नो एव गेरी जो किसी भागनुक प्रयो-
जन के उपस्थित होने पर बजाई जाती थी
(विमे १४७६) ।

उत्तुमेअ पुं [उद्भेद] उद्गम, उत्पत्ति, ‘उत्तुमेअ-
प्रतिगिरियइसीमाणिअडियवन्नुत्तमेअ’ (गउउ),
‘समिअणवोव्वसउत्तमेअमुत्तस सयलमसहरा-
रा’ (सुर ११, ११६) ।

उत्तुमेअम वि [उद्भेद] स्वय उत्पन्न होने-
वाला, उत्तमेअ पुण सयह्म जहा साधुई
कोण (निज्ज ११) ।

उत्तुम पु [उत्त] उभय, दोनों (पच ६, ५८) ।
उत्तुमओ व [उभयतस्] द्विधा, दोनों तरह
मे दोनों धोर से (उव, भीष) ।

उत्तुमज्जायण देवो ओमज्जायण (सुपज १०,
१६) ।

उत्तुमय वि [उभय] युगल, दो, दोनों (ठा ४,
४) । ‘उत्तुम य [त्र] दोनों बगह (मुपा
६५८) । ‘लोण पु [लोण] यह क्षीर पर
जन्म (पचा ११) । ‘हा स [था] दोनों
तरफ मे, द्विधा (सम्म ३८) ।

उत्तुमच्छ स [उच्छ] उगता, घूर्तना ।
उत्तुमच्छइ (हे ४, ६३) । वड. उत्तुमच्छत
(हुमा) ।

उत्तुमच्छ सक [अभ्या + गम्] सामने प्राना ।
उत्तुमच्छइ (पह) ।

उत्तुमा जी [उत्ता] गीरी, पारंगती (पाध) । २
द्वितीय धामुदेव की माला (सम १५२) । ३
देव गणिका-विशेष (भाहू) । ४ जी-विशेष
(हुमा) । ‘साइ [रवाति] स्वनाम धम्य
एक प्राचीन जैनार्चार्थ क्षीर विस्मान शब्दकार
(साधं ५०) ।

उत्तुमाण न [दे] प्रवेश (भाषा २, १, ६) ।
‘उत्तुमार देवो कुमार (भज्जु २६) ।

उत्तुमिअ वि [उत्तिअ] मिश्रित, ‘पलितमिर-
पनिमसीवलवरणुपणुमीअण्णवणजस’ (हुमा) ।

उत्तुमय सक [उद् + मुय्] छोटना । वड.
उत्तुमयत (उत्त ३०, २३) ।

उत्तुमइअ वि [दे] १ मूढ, मूर्ख (दे १, १०२) ।
२ उत्तम (भा ४६८, वज्जा ४२) ।

उत्तुमऊह वि [उत्तुमयूय] प्रमात्तानो
(गउउ) ।

उत्तुमह पु [दे] १ हठ । वि. उद्भूत (दे १,
१२४) ।

उत्तुमथिय वि [दे] दण्ड, जला हुमा (वज्जा
५२) ।

उत्तुमगा वि [उत्तम] १ पानी के ऊपर भाषा
हुमा, तीर्थ (रावे) । २ न. उत्तमजन, तीरना,
जल के ऊपर प्राना (भाचा) । ‘जला जी
‘जला’ नदी-विशेष, जिसमे पत्थर बगैरह
भी तैर सकते हैं (अ ३) ।

उत्तुमगा पु [उत्तमार्ग] १ कुपय, उलटा रास्ता,
विपरीत मार्ग (सुर १, २४३; मुपा ६५) ।
२ छिद्र, रज्ज (भाचा) ३ धार्य करना
(भाचा) ।

उत्तुमगाणा जी [उत्तमार्गा] छिद्र, विवर
(भाचा) ।

उत्तुमच्छ न [दे] १ क्षीय, पुत्ता (दे १,
१२५; से ११, १६, २०) । २ वि. प्रसबद्ध,
३ प्रकारान्तर से कथित (दे १, १२५) ।

उत्तुमच्छर वि [उत्तमसर] १ ईर्ष्या, द्वेषी
(से ११, १४) । २ उद्भट (भा १२७, ६७५) ।

उत्तुमच्छजिअ वि [दे] उद्भट (दे १, ११६) ।
उत्तुमच्छिअ वि [दे] १ नृपित, रट, २
भाहुन, बगलुल (दे १, १३७) ।

उत्तुमज्ज न [उत्तमज्ज] तरण, तीरना ।
‘णिमज्जिया जी [निमज्जिअ] उत्तुम
करना पानी में ऊँचा-नीचा हाना (ठा
३, ४) ।

उत्तुमज्जय वि [उत्तमज्ज] १ उत्तमजन करने-
वाला, गीता सगाने वाला । २ उत्तमजन से
ही स्थान करनेवाले तापसा की एक जाति
(भीर, भाग ११, ६) ।

उत्तुमड्डा जी [दे] १ बनावार जवरहस्ती
(दे १, ६७) । २ विशेष, मस्तीकार (उप
२८२ टी) ।

उत्तुमण वि [उत्तमनस्] उन्निष्ठ, उत्तुन
(उप ५ ५८) ।

उत्तमत्त पु [दे] १ पतुय, बुद्ध विशेष । २
एराह, वृत्त-विशेष (दे १, ८६) ।

उत्तमत्त वि [उत्तमत्त] १ उद्भट, उमाद-युक्त
(वह १) । २ वाग्वन, वृत्तादि (विह ३८०) ।
‘जला जी [जला] नदी-विशेष (ठा २, ३) ।

उत्तमत्तय न [दे] पतुये का पतन, ‘उत्तमत्तय-

रसरसिधो पिच्छइ नन्नं विणा कएय”
(मोह २२) ।

उम्मत्थ सक [उम्भय + गम्] सामने
घाना । उम्मत्थइ (हे ४, १६५, कुमा) ।

उम्मत्थ वि [दे] अयो-मुल, विपरीत (दे १,
६३) ।

उम्मर पुं [दे] देहरी, द्वार के नीचे की लकड़ी
(दे १, ६५) ।

उम्मरिअ वि [दे] उत्साह, उन्मूलित (दे १,
१००, पङ्) ।

उम्मल वि [दे] स्थान, वठिन, घट्ट (दे १,
६१) ।

उम्मलण न [उम्मलण] मसलना (पात्र) ।

उम्मल पुं [दे] १ राजा, नृप । २ भेष,
भारिख । ३ बलाकार । ४ वि. पीवर, पुष्ट
(दे १, १११) ।

उम्माळी जी [दे] गुण्य (दे १, ६५) ।

उम्महण वि [उम्मधन] नाशक, विनाशकारी
(सुर ३, २११) ।

उम्माइअ वि [उम्मावित] उन्मत्त किया हुआ
(पउव २५, १६) ।

उम्माडिय न [दे] उल्लुक्, जलता बाष्प, गुज-
राती में 'उकाडु' (निरि ६८०) ।

उम्माना न [उम्मान] १ भाव, माया भावि
सुला मान (अ २, ५) । २ जो सोला जाता
है वह (अ १०) ।

उम्माइ देखो उम्माय (भग १५, २) ।

उम्माइइअ (श्री) वि [उम्माइयिअ] उम्माइ
करनेवाला (प्रति ४२) ।

उम्माय प्रक [उद् + मद्] उम्माइ करना,
उन्मत्त होना । वट्ट. उम्मायत्त (उप ६८६
टी) ।

उम्माय पुं [उम्माव] १ चित्त-विभ्रम, पागल-
पन (अ ६, महा) । २ वामाधोनिता, विषय
में भ्रमन्तात्मक (उत्त १६) । ३ आनिङ्गन
(विने) ।

उम्माल देखो ओमाल (पात्र) ।

उम्मालिय न [उम्मालित] मुञ्चोभित्त (प्रवि) ।

उम्माइ पुं [उम्माय] विनाश, 'निरोविज्जलावि
(नामोभा) बरनि महियुम्माह' (महा) ।

उम्माहय वि [उम्माधक] विनाशक, 'महो
उम्माहयत्त विमयाण' (महा. अवि) ।

उम्माहि वि [उम्माथिन्] विनाशक (महा-
दि) ।

उम्माहिय वि [उम्माथित] विनाशित (प्रवि) ।

उम्मि पुंजी [उम्मि] १ कल्लोल, तरंग (कुमा;
दे ३. ६) । २ भोज, जन-समुदाय (भग २,
१) । 'मालिणी जी' [मालिनी] नदी-विशेष
(अ २, ३) ।

उम्मिठ वि [दे] हस्तिक-रहित, महावत-
रहित, निरकुश, 'उम्मिठकरिचरो इव उम्मू-

सइयसमूह सो' (सुपा ३४८, २०३) ।

उम्मिण सक [उद् + मी] लौपना, नाप
करना । कर्मे. उम्मिणिअइ (अणु १६३) ।

उम्मिय वि [उम्मित] प्रमित, 'कोडाकोडि-
जुणम्मियावि विहिणो हाहा निचित्ता नवो'
(रभा) ।

उम्मिलि वि [उम्मीलिअ] विकासी, 'तस्य य
उम्मिलिरपठमपल्लवाद्ययिउसपल्लवाह' (सुपा
८६) ।

उम्मिलअक [उद् + मील्] १ विकसित
होना । २ चुनना । ३ प्रकाशित होना ।

उम्मिल्लइ (मउड) । वट्ट. उम्मिल्लेव (दे १०,
३१) ।

उम्मिल वि [उम्मील] १ विकसित (पात्र;
दे १०, ५०, स ७६) । २ प्रकाशमान (सि
११, ६५, मउड) ।

उम्मिल्लण न [उम्मीलण] विकास, उत्सास
(मउड) ।

उम्मिलिय वि [उम्मीलित] १ विकसित,
उत्साहित । २ उद्घाटित, खुला हुआ, 'उमो
उम्मिल्लियाणि तसस नयणासि' (भावम,
स २८०) । ३ प्रकाशित । ४ बहिष्कृत,
'यजसम्मिल्लियमसुखिउखण्णुमियाणो' (जीव
५) । ५ न. विनाश (अणु) ।

उम्मिस अक [उद् + मिप्] चुनना,
विचरना । वट्ट. उम्मिसत्त (विक ३५),

उम्मिसिय वि [उम्मिपिन्] १ विकसित,
प्रयुक्त (भग १५, १) । २ न. विनाश,
ऊर्ध्व (जीव ३) ।

उम्मिसस अक [उद् + मिप्] चुनना,
विचरना । वट्ट. उम्मिसत्त (विक ३५),

उम्मिसिय वि [उम्मिपिन्] १ विकसित,
प्रयुक्त (भग १५, १) । २ न. विनाश,
ऊर्ध्व (जीव ३) ।

उम्मिसस अक [उद् + मिप्] चुनना,
विचरना । वट्ट. उम्मिसत्त (विक ३५),

उम्मिसिय वि [उम्मिपिन्] १ विकसित,
प्रयुक्त (भग १५, १) । २ न. विनाश,
ऊर्ध्व (जीव ३) ।

उम्मिसस अक [उद् + मिप्] चुनना,
विचरना । वट्ट. उम्मिसत्त (विक ३५),

उम्मिसिय वि [उम्मिपिन्] १ विकसित,
प्रयुक्त (भग १५, १) । २ न. विनाश,
ऊर्ध्व (जीव ३) ।

उम्मीलिय देखो उम्मिलिय (राज) ।

उम्मोस वि [उम्मिश्र] मिश्रित, युक्त (सुपा
७८, प्रासु ३२) ।

उम्मूअ देखो उमुय । वट्ट. 'जएम्मि पोऊसमि-
नुम्मुअत्त वववु पसएण सइ निक्खिवेज्जा'
(उप पृ २०) ।

उम्मूअ न [उम्मूअ] धवात, सूका (पात्र) ।

उम्मूअ सक [उद् + मुच्] परिव्याग
करना । वट्ट. उम्मूअत्त (विने २७५०) ।

उम्मूअ वि [उम्मूअ] १ विमुक्त, रहित,
'ते वीरा बधोपुम्मूअत्ता नावकवत्ति जीविय'
(सूअ १, ६) । २ उल्लिख्य (पीप) । ३
परिव्यक्त (भावम) ।

उम्मूअ वि [उम्मूअ] १ जल के ऊपर तैरा
हुआ । २ न. तेरना । 'निमुगियाया की
[निमगना] उम्मूअत्त करना, 'सि निम्हू
वां उद्गसि पवमाणे नो उम्मूअनिमुगियं
करेज्जा' (मावा २, ३, २, ३) ।

उम्मूअ वि [उम्मूअ] १ जल के ऊपर तैरा
हुआ । २ न. तेरना । 'निमुगियाया की
[निमगना] उम्मूअत्त करना, 'सि निम्हू
वां उद्गसि पवमाणे नो उम्मूअनिमुगियं
करेज्जा' (मावा २, ३, २, ३) ।

उम्मूअ वि [उम्मूअ] १ जल के ऊपर तैरा
हुआ । २ न. तेरना । 'निमुगियाया की
[निमगना] उम्मूअत्त करना, 'सि निम्हू
वां उद्गसि पवमाणे नो उम्मूअनिमुगियं
करेज्जा' (मावा २, ३, २, ३) ।

उम्मूअ वि [उम्मूअ] १ जल के ऊपर तैरा
हुआ । २ न. तेरना । 'निमुगियाया की
[निमगना] उम्मूअत्त करना, 'सि निम्हू
वां उद्गसि पवमाणे नो उम्मूअनिमुगियं
करेज्जा' (मावा २, ३, २, ३) ।

उम्मूअ वि [उम्मूअ] १ जल के ऊपर तैरा
हुआ । २ न. तेरना । 'निमुगियाया की
[निमगना] उम्मूअत्त करना, 'सि निम्हू
वां उद्गसि पवमाणे नो उम्मूअनिमुगियं
करेज्जा' (मावा २, ३, २, ३) ।

उम्मूअ वि [उम्मूअ] १ जल के ऊपर तैरा
हुआ । २ न. तेरना । 'निमुगियाया की
[निमगना] उम्मूअत्त करना, 'सि निम्हू
वां उद्गसि पवमाणे नो उम्मूअनिमुगियं
करेज्जा' (मावा २, ३, २, ३) ।

उम्मूअ वि [उम्मूअ] १ जल के ऊपर तैरा
हुआ । २ न. तेरना । 'निमुगियाया की
[निमगना] उम्मूअत्त करना, 'सि निम्हू
वां उद्गसि पवमाणे नो उम्मूअनिमुगियं
करेज्जा' (मावा २, ३, २, ३) ।

उम्मूअ वि [उम्मूअ] १ जल के ऊपर तैरा
हुआ । २ न. तेरना । 'निमुगियाया की
[निमगना] उम्मूअत्त करना, 'सि निम्हू
वां उद्गसि पवमाणे नो उम्मूअनिमुगियं
करेज्जा' (मावा २, ३, २, ३) ।

उम्मूअ वि [उम्मूअ] १ जल के ऊपर तैरा
हुआ । २ न. तेरना । 'निमुगियाया की
[निमगना] उम्मूअत्त करना, 'सि निम्हू
वां उद्गसि पवमाणे नो उम्मूअनिमुगियं
करेज्जा' (मावा २, ३, २, ३) ।

उम्मूअ वि [उम्मूअ] १ जल के ऊपर तैरा
हुआ । २ न. तेरना । 'निमुगियाया की
[निमगना] उम्मूअत्त करना, 'सि निम्हू
वां उद्गसि पवमाणे नो उम्मूअनिमुगियं
करेज्जा' (मावा २, ३, २, ३) ।

उम्मूअ वि [उम्मूअ] १ जल के ऊपर तैरा
हुआ । २ न. तेरना । 'निमुगियाया की
[निमगना] उम्मूअत्त करना, 'सि निम्हू
वां उद्गसि पवमाणे नो उम्मूअनिमुगियं
करेज्जा' (मावा २, ३, २, ३) ।

उम्मूअ वि [उम्मूअ] १ जल के ऊपर तैरा
हुआ । २ न. तेरना । 'निमुगियाया की
[निमगना] उम्मूअत्त करना, 'सि निम्हू
वां उद्गसि पवमाणे नो उम्मूअनिमुगियं
करेज्जा' (मावा २, ३, २, ३) ।

उम्मूअ वि [उम्मूअ] १ जल के ऊपर तैरा
हुआ । २ न. तेरना । 'निमुगियाया की
[निमगना] उम्मूअत्त करना, 'सि निम्हू
वां उद्गसि पवमाणे नो उम्मूअनिमुगियं
करेज्जा' (मावा २, ३, २, ३) ।

उम्मूअ वि [उम्मूअ] १ जल के ऊपर तैरा
हुआ । २ न. तेरना । 'निमुगियाया की
[निमगना] उम्मूअत्त करना, 'सि निम्हू
वां उद्गसि पवमाणे नो उम्मूअनिमुगियं
करेज्जा' (मावा २, ३, २, ३) ।

उम्मूअ वि [उम्मूअ] १ जल के ऊपर तैरा
हुआ । २ न. तेरना । 'निमुगियाया की
[निमगना] उम्मूअत्त करना, 'सि निम्हू
वां उद्गसि पवमाणे नो उम्मूअनिमुगियं
करेज्जा' (मावा २, ३, २, ३) ।

वह उम्मूलंत, उम्मूलयंत (ने १, ४, स ४६६) । संक्ष. उम्मूलिकण (महा) ।

उम्मूलग न [उम्मूलन] उपादन, उत्खनन (पि २७८) ।

उम्मूलणा की [उम्मूलना] ऊपर देखो (पण्ड १, १) ।

उम्मूलिअ वि [उम्मूलिअ] उलाटित, मूल से उलाटा हुआ (गा ४७५ मुर ३, २४४) ।

उम्मेठ [दे] देखो उम्मेठ (पउम ७१, २६, स ३३२) ।

उम्मेस पुं [उम्मेस] उन्मीलन, विकास (भग १३, ४) ।

उम्मेयणी की [उम्मेयणी] विद्या विशेष (मुर १३, ८१) ।

उम्ह पुंकी [ऊम्मन्] १ सताप, गरमी, ज्वाला, 'सदीरउम्हाए जीबड सयावि' (उप ५६७ टी, एणा १, १, हुआ) । २ भाफ, वाष्प (ने २, ३२ हे २ ७४) ।

उम्हइअ } वि [ऊम्मायित] संतप, गरम
उम्हयिअ } किया हुआ (ने ४, १, पउम २, ६६, गउड) ।

उम्हाअ अन् [ऊम्माय] १ गरम होना । २ भाफ निकालना । वह उम्हाअंत, उम्हाअमाण (से १, १०, पि ५५८) ।

उम्हाल वि [ऊम्मयत्] १ गरम, परितप । २ वाष्प युक्त (गउड) ।

उम्हायिअ न [दे] सुख, समोच (दे १, ११७) ।

उयचिय वि [दे] देखो उयिअ = परिक्रमित, 'उयचियलोमदुल्लसपट्टविच्छएणे' (एणा १, १—पउ १३) ।

उयट्ट देखो उउयट्ट = उद + वृत् । उयट्टंवि, भुक्ता, उयट्टिसु (भा) ।

उयट्ट देखो उउयट्ट = उद्धत ।

उयत्त भक् [अप + वृत्] हट्ठा । उयत्तति (दस ३, १ टी) ।

उयर वि [उदार] श्रेष्ठ, उत्तम देवा भवति विमलोयज्जतिजुत्ता' (पउम १० ८८) ।

उयरिया की [अपपरिअ] छाया कभय (मम्मत् ११६) ।

उययिअ देखो उयिअ = (दे) (राय ६३ टी) ।

उयाइय न [उपयाचित] मनोती (मुपा ८: ५७८) ।

उयाय वि [उपयात] उपगत (राज) ।

उयारण न [अपतारण] निष्कावर, ऊनार, हर्ष-दान, पुनराती में 'उवारणु' (उप ६५) ।

उयाहु देखो उदाहु (मुर १२, ५६, नाल, विसे १६१०) ।

उयकिअ वि [दे] दबड़ा किया हुआ (पउ) ।

उयल वि [दे] धन्यासित, आलस (पउ) ।

उर पुन [उरस्] वस स्थल, छाती (हे १, ३२) । 'अ, ग पुकी [ग] सर्प, साँप (काप १७१) ।

'उरपणिरित्तएसागरनह-

सततएणसमो भ ज्यो होइ ।

भमरमियवरणिजसहर्षवपन-

समो म सो समएो' (मणु) ।

'तन पु [तपस्] तप-विशेष (ठा ४) ।

'त्य न [तन] मरु विशेष, जिसके फँकने से शब्द संपन्न हो बैठता होता है (पउम ७१, ६६) ।

'परिसप्प पुंकी [परिसर्प] वह से चलनेवाला प्राणी (सर्पवि) (जो २०) ।

'सुत्तिया की [सूत्रिअ] मोतियों की हार (राज) ।

उर न [दे] आरम्भ, प्रारम्भ (दे १, ८६) ।

उरउरेण अ [दे] साम्राट (विपा १, ३) ।

उरस वि [दे] क्षितिज, विस्तारित (दे १, ६०) ।

उरस्य वि [उरस्य] १ छाती में स्थित । २ छाती में पटने का भावपूर्ण (भावा २, १३, १) ।

उरस्यय न [दे] वन, बलार, नवच (पाप) ।
उरस्य पकी [उरस्य] मप, भेद (एणा १, १: पण्ड १, १) ।

उरदिभअ वि [औरभिअ] भेद चरानेवाला (सूत्र २, २, २८) ।

उरादमज्ज } वि [उरओय] १ मेघ-मन्वन्धी ।
उरदिभय } २ उत्तराय्यन सून का एव

अध्ययन, 'उत्तो ममुदिययेय उरदिमज्जंति भग्गयणु' (उत्तनि, राज) ।

उरय पु [उरज] वनस्पति-विशेष (राज) ।

उररि पुं [दे] फुल, वनरा (दे १, ८८) ।

उरल देखो उराल (बम्म १, भाग ६ २२) ।

उरयिअ वि [दे] १ श्रावित । २ क्षणित, क्षिप्त (पउ) ।

उरसिअ पुं [उरसिअ] स्तन, धन (पमंवि ६६) ।

उरसस वि [उरस्य] १ सतान, वच्चा (ठा १०) । २ हादिक, श्रामान्तर, 'उरससवल-समएणागय—' (राय) ।

उराल वि [उदार] १ प्रवल (राय) । २ प्रधान, मुख्य (मुजज १) । ३ मुन्दर, श्रेष्ठ (सूत्र १, ६) । ४ मन्दुत (बन्ध २०) । ५ विशाल, विस्तीर्ण (ठा ५) । ६ न शरीर-विशेष, मनुष्य घोर तिर्यञ्च (फुल पत्नी) इन दोनों का शरीर (मणु) ।

उराल वि [उदार] स्थूल, मोटा (सूत्र १, १, ४, ६) ।

उराल वि [दे] भयंकर, भीम (मुजज १) ।

उरालिय न [औदारिक] शरीर विशेष (मणु) ।

उरिआ की [उड्डिआ] लिपि विशेष (सम ३५) ।

उरित्थय न [दे] उरसि त्रिक] तीन सर-वाला हार (मीव) ।

'उरिस देखो उरिस (मा २२२) ।

उरु वि [उरु] विशाल, विस्तीर्ण (पाप) ।

उरुलु पुं [दे] १ मयूष, घृमा । २ शिखरी (दे १, १३४) ।

उरुमह

उरुमिल वि [दे] प्रेरित (पउ, दे १, १०८) ।

उरुमोस

उरोरुह पुं [उरोरुह] स्तन, धन (पउ ६२) ।

उरोरुह न [उरोरुह] १ स्तन, धन । २ जैन साधियों का उकरण विशेष (पउम ३१० भा) ।

'उल देखो कुल (से १, २६, गा ११६, मुर ३, ४१, महा) ।

उलय } पुंन [उलय] दण विशेष (मुपा
उलय } २८१, प्राग) ।

उलकी की [उलपी] दण विशेष, 'उक्वी नीरए' (पाप) ।

उलिअ वि [दे] अक्षयुषित नवरत्ना, स्फार दृष्टि (दे १, ८८) ।

उलित न [दे] ऊँचा हुआ (दे १, ८६) ।

'उलंण देखो कुलीण (गा २५३) ।

उलुउडिअ वि [दे] प्रबुद्धित, विरचित (दे १, ११६)।

उलुओसिअ वि [दे] रोमाचित, पुनक्ति (पद्)।

उलुकमिअ वि [दे] ऊपर देखो (दे १, ११५)।

उलुगउ पु [दे] उल्लुग, अनात, सूका (दे १, १०७)।

उलुग पु [उल्लुग] १ उल्लुग पेचक। २ देश-विशेष (पउम ६८, ६६)।

उलुग पु [उल्लुग] उल्लुग पु, पेचक (धर्मस ६७१, १२६५)।

उलुगी की [ओल्लुगी] विना विशेष (विते २४५४)।

उलुग वि [अरुग] बीमार (महा)।

उलुग वि [दे] देखो ओलुग (महा)।

उलुगुडिअ वि [दे] १ विनिपातित, विना-शित। २ प्रशान्त (दे १, १३८)।

उलुग देवो उल्लुग, 'ग्रह वह दिगमणितेय, उनुगण हृद अचत' (सहि १०८, नुर १, २६ पउम ६७, २४)।

उल्लुहव पु [दे] बाक, कौमा (दे १, १०६)।

उल्लुहविअ वि [दे] अदुत्त, सुप्तिरहित (दे १, ११७)।

उल्लुहलअ वि [दे] अविपुल्ल, सुप्तिरहित (पद्)।

उल्लुग पु [उल्लुग] १ उल्लुग, पेचक (पाम)। २ देशविषय मत वा प्रत्येक गण्यत मुनि (मम १५६, विते २४०८)।

उल्लुग देवो उल्लुग (कुमा)।

उल्लुग पु [उल्लुग] मङ्गल ध्वनि (रमा)।

उल्लुग दसा उल्लुग (दे १, १७१, महा)।

उल्लुग [आर्] गीला, धात्रे (कुमा, दे १, ८२)। 'गच्छ पु [गच्छ] जैन मुनियो वा गण विशेष (वप)।

उल्लुग स [आर्] १ गीला करना, धात्रे करना। २ धन धात्रे होना। उल्लुग (दे १, ८२)। वर. उल्लुग, उल्लुग (गउड)। सङ्ग उल्लुगा (महा)।

उल्लुग न [दे] अण, करना, 'वो मं उल्ले पच्छि' (मुपा ४८६)।

उल्लुगण न [उल्लुगण] अण, समण (दे ११, ५१)।

उल्लुग पु [उल्लुग] काष्ठ-भय बारक (निपु १२)।

उल्लुग सक [उन् + लड्य] उल्लुगण करना, अतिक्रमण करना। उल्लुग (पि ४५६)।

हृक उल्लुगिअ (मग ८, ३३)।

उल्लुग पु [उल्लुग] उल्लुगण, अतिक्रमण (संनोष ६)।

उल्लुगण न [उल्लुगण] १ अतिक्रमण, उल्लुगण (पाए ३६)। २ वि अतिक्रमण करनेवाला, 'उल्लुगणे य चडे य पावसमणे ति कुचव' (उत्त ८)।

उल्लुग वि [उल्लुग] उल्लुग, 'अवति उल्लुग-वयणा' (वाल)।

उल्लुग पु [उल्लुग] छोटा मुदग बाज-विशेष (राज)।

उल्लुगिअ वि [दे] यहिण्ड, बाहर निकाला हुआ (पाम)।

उल्लुगण न [उल्लुगण] उल्लुगण, काँधी लगा कर सज्जना (सम १२५)।

उल्लुग वि [दे] १ सान, हूग हुआ। २ स्वयं, 'उल्लुग सिराजाल' (स २६४)।

उल्लुग देवो उल्लुग = उल्लुग। उल्लुग (प्राट ७२)।

उल्लुग वि [दे] उल्लुगिअ, खाली किया हुआ (दे ७, ८१)।

उल्लुगिअ देवो उल्लुग—(दे), 'सो पुण नरो पाविटो अहो सत्थाउ त महामडवि। उल्लुगिअ-बुद्धोदयविषय वठणहं पाण्हि' (धर्मसि १२४)।

उल्लुग वि [उल्लुग] उल्लुग (पवा २)।

उल्लुग न [आर्] गीला करना (उवा शोध ३६, से २, ८)।

उल्लुग न [दे] छाया वस्तु-विशेष, शोधण (पिड ६२४)।

उल्लुगिया की [आर्] गीला करना, जल पीने का गमछा, टोपिया (उवा)।

उल्लुगिअ वि [दे] गीला करना, निशपर बोना साथ गया हो यह, 'ग्रह धर्मि सत्तोण उल्लुगिअसत्तवसहनिपमि' (नुर २, २)।

उल्लुग त [दे] कौडियो वा ग्रामण (दे १, ११०)।

उल्लुग सक [उन् + लड्य] १ चलिता होना, चञ्चल होना। २ ऊँचा चलना। ३ उल्लुग होना। उल्लुग (से ११, १३)। वर. उल्लुग (काल)।

उल्लुगिअ वि [उल्लुगिअ] १ चञ्चल (गा ५६६)। २ उल्लुग (से ६, ६८)।

उल्लुगिअ वि [दे] शिपिअ, घोला (दे १, १०४)।

उल्लुग सक [उन् + लड्य] १ कहा। २ बकना, बकवाड करना, खराब शब्द बोलना, 'ज वा स वा उल्लुग' (महा)। वर. उल्लुग, उल्लुगमाण (पउम ६४, ८, नुर १, १६६)।

उल्लुग सक [उन् + लड्य] उल्लुगण करना। सङ्ग. उल्लुगिअण। हृक उल्लुगिअ। क. उल्लुगिअण (प्राट ६६)।

उल्लुगण न [उल्लुगण] १ बकवाड २ बचन, 'अवि न जुजव जह सह मणवहल्लुगण उल्लुग' (मुपा ४६८)।

उल्लुगिअ वि [उल्लुगिअ] १ बकित, उत। २ न. उवि, बचन, 'अणपञ्चगणसंठाण चारलविय-पेहण' (उत)।

उल्लुगिअ वि [उल्लुगिअ] १ वक्ता, भाषक। २ बकवाडी, वाचाट (गा १७२ मुपा २२६)।

उल्लुग सक [उन् + लड्य] १ विपत्ति होना। २ बुझा होना। उल्लुग (पद्)। वर. उल्लुग (गा ५६०, वप)।

उल्लुग देवो उल्लुग (गउड)।

उल्लुगिअ वि [उल्लुगिअ] १ विपत्ति। २ हणित (पद्, विपु)।

उल्लुगिअ वि [दे. उल्लुगिअ] पुनक्ति, रोमाचित (दे १, ११५)।

उल्लुग वि [दे] सात प्रारणा, पाद प्रहार (वडु)।

उल्लुग वि [उल्लुग] १ वर. वचन। २ वचन (मण)।

उल्लुग सक [उन् + नमय] १ ऊँचा करना। २ ऊपर चढ़ना। उल्लुग (दे ४, ३६)। वर. उल्लुगमाण (पउ १)।

उल्लुग सक [उन् + लड्य] गान करना, बजाना। वर. उल्लुगमाण (राज)।

उल्ला पुन [उल्ला] छन्द-विशेष (मिग) ।
उल्लासिअ वि [उल्लासित] २ ऊँचा किया
हुमा, ऊपर फेंका हुमा (कुमा, हे ४,
४२२) ।

उल्लासिय वि [उल्लासित] तावित (राज) ।
उल्लास सक [उत् + लप्, ल्यापय] १
बहना, बोलना । २ बकवाद करना । ३
शुलवाना । ४ बकवाद कराना । बहु-
उल्लासयंत, उल्लासयंत (सि ११, १०३ मा
५३६; ६५१; हे २, १६३) ।

उल्लास पुं [उल्लास] १ शब्द, श्रावण (सि
१, ३०) । २ उत्तर, जवान (श्लोक ५६ भा;
गा ५१४) । ३ बकवाद, विहृत वचन । ४
उक्ति, वचन (पञ्चम ७०, ५८) । ५ समापण,
‘नमणैहि को न वीसह’

केय समारण न होति उल्लावा ।

हियमाणैह जं पुण,

जणेह तं माणुस विरलं ॥’ (महा) ।

उल्लासिअ वि [उल्लासित] १ उल, वचन ।
२ न, उक्ति, वचन (गा ५८६) ।

उल्लासिअ वि [उल्लासित] १ बोलनेवाला,
भाषक (हे २, १६३; सुपा २२६) ।

उल्लासग वि [उल्लासक] १ विजगित होने-
वाला । २ आनन्दजनक (भा २७) ।

उल्लासग न [उल्लासक] विनास (सि
५३६) ।

उल्लासि २ वि [उल्लासित] ऊपर देखो
उल्लासिर २ (कम्प, लक्ष्म १; प्राप् ६६) ।

उल्लास सक [उत् + ल्यापय] कम करना,
हीन करना । बहु-उल्लासहर्त (उत्तर
६१) ।

उल्लासिअ वि [दे] उत्तपित, उभागत
(पद्) ।

उल्लासिअ वि [आद्रित] गोला भिया हुमा
(गउड, हे ३, १६) ।

उल्लासिअ वि [दे] १ चीरा हुमा, फाटा हुमा
(उत्तर १६, ६४) । २ उगलान्य, उताहना
दिया हुमा (सम्पत् ५२) ।

उल्लास सक [उद् + रिच्] खाली करना ।
हेक. ‘उल्लासिअण य समलो ह्यखरहेहि
समुद्रं’ (उण ४०) ।

उल्लासिअ वि [दे] उदित, छापी किया
हुमा ।

‘तह नाहिहो बुबलणणयेण
सामन्नवारिणा भरिषो ।

नहु निट्टइह उल्लासिअवि
पियनयणकलसेहि’ (सुपा ३३) ।

उल्लासक न [दे] दुस्तेष्ट, खराब चेष्टा
(पद्) ।

उल्लासग वि [उल्लासित] उधरशंक (पव
१) ।

उल्लासण न [उपलेपन] उपलेप (पिड
३५०) ।

उल्लासिअ वि [दे] राधा-वेष का निशाना,
‘विषेकवा विवरोयममंतदचक्रकोवरिणिल्लिया’
(सि १६२) ।

उल्लासिअ वि [आद्र] गोला (वज्जना ११२) ।

उल्लास सक [उद् + लिह्] १ चारना ।
२ खाना, बखण करना; ‘उल्लासिअरिहप्रपुरी
उम रोपयमि उल्लासिअ’ (हे १, ८८) ।

उल्लास सक [उद् + लिह्] १ रेखा
करना २ लिखना । ३ चितना ।

उल्लासण न [उल्लासक] १ कर्ण (सुपा
५८) । २ विलेखन, ‘बहुभास नहुल्लिअणै’
(हे १, ७) ।

उल्लासिअ वि [उल्लासित] १ घट, पिसा
हुमा (छावा १, २) । २ छिना हुमा,
लथित (पाष) । ३ रेखा किया हुमा (सुपा
१६३, प्राप् ७) ।

उल्लासिअ वि [दे] १ कृत्वा (हे १, ८७) । २
दोत मा मेल, ‘उल्लासतेनु दुगंगा’ (महा) ।

उल्लासण वि [उपलीन] प्रच्छन्न, गुप्त
(भाषा २, २, ३, ११) ।

उल्लासिअ वि [दे] १ प्ररुद्ध, भागे किया
हुमा । २ रक्, रंगा हुमा (पद्) ।

उल्लासिअ वि [दे] उद्वत उदम-प्राप्त (प्राह.
७७) ।

उल्लासिअ वि [उल्लास] १ उन्मूलित । २ न.
उन्मूलन (प्राह ७०) ।

उल्लासिअ वि [उल्लासित] उलाहा हुमा,
उन्मूलित, ‘शुद्धि हुंलकसावा उल्लासिया’
(सुपा ८०, प्रवो ६८) ।

उल्लासिअ वि [दे] संश्रुण्व, दुकचा-दुकचा
किया हुमा (हे १, १०९) ।

उल्लासिअ वि [उल्लासित] उल्लंठ, उदत (सुपा
४६५; सुपा ६, २१५) ।

उल्लास सक [वि + रेचय्] मरना,
टपकना, बाहर निकलना । उल्लास (हे ४,
२६) । प्रवो. बहु. उल्लासयंत (कुमा) ।

उल्लास वि [दे] दुदित, ह्मा हुमा (हे १,
६२) ।

उल्लास सक [सुह] लोहना । उल्लासक
(हे १, ११६; पद्) ।

उल्लासिअ वि [सुहित] मोहित, लोहा
हुमा (कुमा) ।

उल्लासिअ वि [उल्लास] १ नदी-विशेष
उल्लासिअ (विसे २४२६) । २ उल्लास नदी
के किनारे का प्रदेश (विसे २४२५) । ‘तीर
न [तीर] उल्लास नदी के किनारे बसा
हुमा एक नगर (विसे २४२४; भाग २६, ३) ।

उल्लासण न [दे] मुनलथान, बटे हुए हाथ
पाँव की फिर से उत्पत्ति (उप ३८१) ।

उल्लास सक [उत् + ल्] गट होना,
खँस पाना । बहु. ‘तद्वि य सा रासिरी
उल्लासिअ न ताया ताहि’ (उव) ।

उल्लासिअ वि [दे] मिथ्या, भ्रम, झूठा (हे १,
८६) ।

उल्लासिअ पुं [दे] छोटा सल्ल (हे १, १०५) ।
उल्लासिअ वि [उल्लासित] चलित (गा
५६७) ।

उल्लासिअ वि [उल्लास] १ उल्लास, उल्लास,
सक. उल्लासिअण (प्राह ६६) ।

उल्लास सक [निस + स] निरसा । उल्लास
(हे ४, २५६) ।

उल्लासिअ वि [दे] उल्लास, उल्लास (पद्) ।
उल्लास वि [दे] १ आह (हे १, १००;
पद्) । २ मद्, दुदित (हे १, १००; पाष) ।

उल्लास सक [आ + रुह्] चटना ।
उल्लास (प्राह ७३) ।

उल्लास सक [सुह] १ लोडना । २ नारा
करना । उल्लास (हे ४, ११६; कुमा) ।

उल्लासण न [लोडन] धेन, लोडन (गा
१६६) ।

उल्लासिअ वि [सुहित] विनाशित, ‘उल्लासि-
अहिमकपेयु’ (एणि १०, पाष) ।

उल्लासिअ वि [दे] रुच, भूषा, ‘उल्लासिअ
नवणै हरियं पाय’ (मोप ४२६ टी) ।

उल्लेखा देखो उल्ल = आदर्य ।

उल्लेख पुं [दे] हास्य, हँसी (दे १, १०२) ।

उल्लेख वि [दे] समष्ट, सुख्य (दे १, १०४; पाप) ।

उल्लेख्य न [दे] १ पोतना, भीत को चुना वगैरह ते संकेत करना (भीष) । २ वि. पोता हुआ (शापा १, १; सम १२७) ।

उल्लेख वि [दे] वृद्धि, ध्वनि (पङ्) ।

उल्लेख पुं [दे. उल्लेख] चन्द्रातप, चन्द्रनी (दे १, ६८; मुर १२, १; उर १०७) ।

उल्लेख सक [उल्लेख्य] लोभ आदि ते पिमना । उल्लेखिज (भावा २, १३, १) ।

उल्लेख पुं [उल्लेख] १ भगसी, छत (शाया १, १; कप. भग) । २ थोड़ी देर, थोड़ा बिलम्ब (राज) ।

उल्लेख देखो उल्लेख (मुर ३, ७०; कुमा) ।

उल्लेख सक [उल् + लुल्] छटना, लैटना । वङ्. उल्लेखेंत (निष् १७) । पूं. शोककुल की-चन शब्द (चउ० सगरवरिय) ।

उल्लेख सक [उद् + लोल्] पोखना । उल्लेख, संछ. उल्लेखेत्ता (भावा २, १४, ६) ।

उल्लेख पुं [दे] १ शत्रु, दुरमन (दे १, ६६) । २ नीलाहल (पठन १६, ३६) ।

उल्लेख पुं [उल्लेख] १ प्रकम्प, 'उल्लेखे आसि एराहिवाए विपदा बहुलोला' (गउठ) । २ वि. उद्भट, उद्वत, 'सएणएणियिभुलो-सगरे' (स ६७) । ३ वि. उल्लुक्, 'बहुसो पभतविहूँतसमुहानासमगुलोने । हिणए क्खेय ममपत्ति चला वीहवासा' (गउठ) ।

उल्लेख (भप) देखो उल्लेख (भवि) ।

उल्हास सक [वि + ध्मापय्] ठडा करना, भाग को चुनाना । उल्हास (हं ४, ४१६) ।

उल्लेखिय वि [दे, विधापित] बुझाया हुआ, शान्त किया हुआ (पठन २, ६६) ।

उल्लेखिअ वि [दे] उद्भट, उद्वत, (दे १, ११६) ।

उल्लास वि [वि + ध्मा] बुझ जाना । उल्लास (स २८३) ।

उप न [उप] निम्न लिखित भाषों का सूचक प्रत्यय—१ समीपता, 'उपदेशि' (पएण १) । २ सरासता, सुस्पष्टता (उत्त ३) ।

३ समस्तपन (राय) । ४ एकवार । ५ भीतर (भाव ४) ।

उप न [उद्] पानी, जल; 'पाउवदाई च एहणुवदाई च' (शाया १, ७—प ११७) ।

उपअठ वि [उपकण्ठ] समीप का, आसन्न (गउठ) ।

उपइठु वि [उपदिष्ट] नवित, प्रतिपादित, शिखित (शेष १४ भा. पि १७३) ।

उपइण्य वि [उपयोगि] सेवित (ग ३६) ।

उपइय वि [उपचिन] १ मासल, पुष्ट (पएह १, ४) । २ उन्नत (भोष) ।

उपइय पुंसी [दे] श्रोत्रिय जीव-विशेष, देखो ओपइय (जीव १ दो. पएण) ।

उपइस सक [उप + दिश] १ उपदेश देना, सिखाना । २ प्रतिपादन करना । उपइसइ (पि १८४) । उपइसनि (भग) ।

उपउंज सक [उप + युज्] उपयोग करना । कर्म. उपउंजति, (विने ४८०) । सक. उपउंजिऊण, उपउंज (पि ५८५; निष् १) ।

उपउज पुं [दे] १ उपकार (दे १, १०८) । २ वि. उपकारक (पङ्) ।

उपउत्त वि [उपयुक्त] १ न्याय, वाजवी । २ सावधान, समस्त (उत्त, उप ७७३) ।

उपऊठ वि [उपगृह] आतिङ्गित (पाप, ते १, १८; या १३३) ।

उपऊह सक [उप + गृह्] आतिङ्गित करना । उपऊहइ (प्राक् ७४) ।

उपऊहण न [उपगृहण] आतिङ्गित (ते ५, ४८) ।

उपऊहिअ वि [उपगृहित] आतिङ्गित (मा ६२१) ।

उपएइआ की [दे] शराव परोसने का पात्र (दे १, ११८) ।

उपएस पुं [उपदेश] १ शिक्षा, बोध (ज) । २ कथन, प्रतिपादन । ३ शास्त्र, मिथ्या (भावा विने ८६४) । ४ उपदेय, जिगमे विषय में उपदेश दिया जाय वह (कर्म १) ।

उपएसय वि [उपदेशक] उपदेश देनेवाला; 'हिम्माए पुण्यसंजीव, सिपा विओएसया' (सूय १, १) ।

उपएसण न [उपदेशान] देखो उपएस (उत्त २८; भा ७ विने १२८३) ।

उपएसणया } की [उपदेशाना] उपदेश
उपएसणा } (राज. विने २५८३) ।

उपएसिय वि [उपदेशित] उपदिष्ट, 'सामा-इयणिणुज्जित वोच्छं उपएसियं गुरुएणं' (विने १०८०, सण) ।

उपओग पुं [उपयोग] १ ज्ञान, चैतन्य (पएण १२, ७, ४, ५; दं ४) । २ द्वाज, ध्यान, साधना; 'तं पुण सविगेणं उपओगपुणए तिव्वसदाए' (पंचा ४) । ३ प्रयोजन, आवश्यकता (सुपा ६४३) ।

उपओगि वि [उपयोगिन्] उपायक, योग्य, प्रयोजनीय, पत्ताईए विमुद्धि साहेउं गिएहए जमुवओमि' (सुपा ६४३; स ५) ।

उपग पुंन [उपाङ्ग] १ छोटा अवयव, छुट भाग, 'एवमादी सव्वे उवगा भएए' (निष् १) । २ ग्रन्थ-विशेष, मूल-ग्रन्थ के अंश-विशेष को लेकर उसका विस्तार नै वर्णन करने-वाला ग्रन्थ, टीका, 'संगीवंगाए सहरहाए चउहं वेयाए' (श्री) । ३ 'ओपपातिक' सूत्र वगैरह बाहर जैन ग्रन्थ (कप. जं. १; सूक्त ७०) ।

उपजय न [उपाजन] मुक्ताण, मालिश (पएह २, १) ।

उपकंउ देखो उपअठ (भवि) ।

उपकंठ न [उपकण्ठ] समीप (सिदि ११२१) ।

उपकुअ (श्री) [उपकृत्य] उपकार करने (प्राक् ८८) ।

उपकप्प सक [उप + कल्] १ उपचित करना । २ करना, 'उपकप्पइ करेइ उएणं वा होति एक्क' (पंचमा) । उपकप्पति (सूय १, ११) ।

उपकप्प पुं [उपकल्प] साधु को दी जाने-वाली भिक्षा, धनदान वगैरह (पंचमा) ।

उपकृय वि [उपकृत्य] नितर उपकार किया गया हो वह, अनुगृहीत, 'मणुवमय-रासुगहपरायणा' (भाव ४) ।

उपकृय वि [दे] सज्जित, प्रपुष्ट, तैयार (दे १, ११६) ।

उपकर देखो उपयय = उप + कृ । उपकरेउ (उत्त) ।

उपकर सक [अव + कृ] व्याप्त करना ।

मुपा. 'म्व्हा वंजुणा उपकरि' (भावा १, ६, ३, ११) ।

उपकरण देखो उपगण (भोप) ।

उपकस सक [उप + कप्] प्राप्त होना,
‘नारीण वसमुवकसति’ (सूत्र १, ४) ।

उपकसिञ्ज वि [द्वि] १ संनिहित । २ परिने-
विन । ३ संजित, जलादित (दे १, १३८) ।

उपकार देखो उपगारि (दे १, २० वी) ।
उपगारिया देखो उपगारिया (राय ८२) ।

उपकिह् १ स्त्री [उपकृति] उपवार (दे ४,
उपकिदि १ ३४, ८, ४५) ।

उपकुल न [उपकुल] नक्षत्र-विशेष, श्वषण
आदि बाह् (ज ७) ।

उपकुल पुन [उपकुल] कुल मन्त्र के पास
का मन्त्र (सुज १०, ५) ।

उपकोसा स्त्री [उपकोशा] एक मणिका,
कोशा वैश्या की छोटी बहिन (कुप ४५१) ।

उपकोसा स्त्री [उपकोशा] एक प्रसिद्ध वैश्या
(उप) ।

उपकृन्त वि [उपक्रान्त] १ समीप में आनीत ।
२ प्रारब्ध, प्रस्तावित (विदे २८७) ।

उपक्रम मन् [उप + क्रम्] १ शुरू करना,
प्रारम्भ करना । २ प्राप्त करना । ३ जानना ।

४ समीप में लाना । ५, सत्कार करना ।
६ अनुसरण करना ‘सोमो धुरणो भाव
जमुवक्रमण’ (विने २२९), ‘ता तुष्मे ताव
श्रवणमह लहु, जाव एमामि भावमुव-
क्रमामि ति’ (महा), ‘जेलोवकामि
पञ्च तमीवमाणिगण’ (विने २०३६),
जएण हल्लुपिआईहि खेताड उपक्रमज्जति
से त लोतोवक्रम’ (अणु) । बह्. उपक्रमत
(विने ३४१८) ।

उपक्रम पु [उपक्रम] १ आरम्भ, प्रारम्भ ।
२ प्राप्ति का प्रयत्न, ‘सोचवा भगवानुसासणी
सध्वे तथ करेज्जुवक्रम’ (सूत्र १, २,
३, १४) । ३ कर्मों के कल का अनुभव
(सूत्र १, ३, भाग १, ४) । ४ कर्मों की
परिणति का कारण-भूत जीव का प्रयत्न-
विशेष (ठा ४, २) । ५ मरण, मौत, विनाश
‘हुज्ज इममि समए उपक्रमो जीविमस्स वड
मज्ज’ (आउ १५, बह् ४) । ६ दूरस्थित
को समीप में लाना, मलयस्मोवक्रमण
उपक्रमो सेण तमि अ उमो वा सल्लसमी-
वीकरण’ (विदे, अणु) । ७ धर्मस्य विपातक

बन्तु (ठा ४, २, स २८७) । ८ शब्द,
हृदयार, ‘सुमाहारख्ये उवक्रमेण च
परिखाए’ (धर्म २) । ९ उपचार (स २०३) ।

१० ज्ञान, निश्चय । ११ अनुवर्तन, अनुवृत्त-
प्रवृत्ति (विदे ६२६, ६३०) । १२ सत्कार,
परिचर्य, ‘वेतोवक्रमे’ (अणु) ।

उपक्रम पु [उपक्रम] अनुवृत्त कर्मों को
उदय में लाना (सुप्रनि ४७) ।

उपक्रमण न [उपक्रमण] उपर देखो (अणु,
उवर ४६, विने ६११, ६१७, ६२१) ।

उपक्रमिय वि [ओपक्रमिक] उपक्रम से
सम्बन्ध रखनेवाला (ठा २, ४, सप १४५,
पएण ३५) ।

उपक्रम देखो उपक्रम = उप + क्रम् । धर्म,
उपक्रामिगजह (विदे २०३६) ।

उपक्रम सक [उप + क्रम्] दीर्घांत में
भोगने योग्य कर्मों का वह समय में ही
भोगना । धर्म उपक्रामिगजह (धर्मस
६४८) ।

उपक्रमण न [उपक्रमण] उपक्रम करना
(आयक १६७) ।

उपक्रमण देखो उपक्रमण (विने २०५०) ।
उपप्रेस पु [उपप्रेसा] १ बाधा । २ शोक
(राज) ।

उपप्रेस सक [उप + प्रे] १ पचाना,
रसोई करना । १ पाक को मसाले में
सम्भारित करना । उपप्रेसह, उपप्रेसदिति
(पि ५५६) । सङ्. उपप्रेसहोपा (भावा) ।

प्रयो. उपप्रेसहोव, उपप्रेसहोविति (पि ५५६,
कप्) । सङ्. उपप्रेसहोविति (पि ५५६) ।

उपप्रेसह १ वि [उपप्रेसह] १ पचाना
उपप्रेसहोविति हूमा । २ मसाला वगैरह ॥
सत्कार-युक्त पचाना हूमा (निबु ८ पि ३०६,
५५६, उत १२, ११) । ३ पुन- रसोई,
पाक, ‘अखियागहणमसरा जह अज्ज उप-
प्रेसहो न कायवत्तो’ (उप ३५६ टी, ठा ४, २,
छाया १, ८, भाष ५४ भा) । ‘म नि
[म] पचाने पर भी जा कच्चा रह जाता
है वह मूंग वगैरह घन विशेष, ‘उपप्रेसहो
खाम जहा चखयादीण उपप्रेसहोविति जे ए
विगमति ते कंठुयाम उपप्रेसहोविति अणु’
(निबु १२) ।

उपप्रेसह पु [उपप्रेसह] १ सत्कार । २ जिससे
सत्कार किया जाय वह (ठा ४, २) ।

उपप्रेसह पु [उपप्रेसह] घर का उपकरण,
साधन (सूत्रनि ५) ।

उपप्रेसह न [उपप्रेसह] ऊपर देखो ।
‘साला स्त्री [शाला] रसोई-घर, पाक-
गृह (निबु ६) ।

उपप्रेसह सक [उप + प्रे] कहना । धर्म,
उपप्रेसागज्जति (सूत्र २, ४, १०, भाग १६,
३—पण ७६२) ।

उपप्रेसा स्त्री [उपप्रेसा] उपनाम (धर्मस
७७७) ।

उपप्रेसाइत्तु वि [उपप्रेसायित्तु] प्रसिद्धि
करनेवाला ‘भत्ताए उपप्रेसाइत्ता भवई’
(सूत्र २, २, २६) ।

उपप्रेसाइया स्त्री [उपप्रेसायिता] उपकथा,
मवातर कथा (सम ११६) ।

उपप्रेसाण न [उपप्रेसाण] उपप्रेसाण,
कथा (पणम ३३, १४६) ।

उपप्रेसत्त वि [उपप्रेस] प्रारब्ध, शुक किया
हुमा (मुद्रा ९३) ।

उपप्रेसित सक [उप + प्रिप्] १ स्थापन
करना । २ प्रयत्न करना । ३ आरम्भ करना ।
उपप्रेसि (पि ३१६) ।

उपप्रेसीय वि [उपप्रेसी] क्षय प्राप्त (धर्मवि
४२१) ।

उपप्रेसीय पु [उपप्रेसी] १ प्रयत्न, उद्योग ।
२ उपाय, ‘ए भणामि तास्सि साहसिगजे
विदो उपप्रेसी’ (मा १६) ।

उपप्रेसीय पु [उपप्रेसी] धर्मोत्पादन,
धुएण (तैटु १७) ।

उपप्रेसी वि [उपप्रेसी] अनुसरण करनेवाला
(उप २४३, श्रौप) । २ ममी में जानेवाला
(विदे २५६५) ।

उपप्रेसीय सक [उप + गम्] १ समीप में
आना । २ प्राप्त करना । ३ जानना । ४
स्वीकार करना । उपप्रेसीय (उप, स २३७) ।

उपप्रेसीय वि [उपप्रेसी] उपप्रेसीय-
ऊण (म ४४) ।

उपप्रेसीय वि [उपप्रेसीय] गिना हुमा,
सख्यात, परिणित (स ४६१) ।

उपप्रेसीय वि [उपप्रेसीय] विरचित (म
८०३) ।

उवगम देखो उवगच्छ । संक. उवगम्म
(विसे ३१६६) । हेक उगगतुं (निबु १६) ।

उवगय वि [उपगत] १ पास आया हुआ
(से १, १६, या ३२१) । २ शांत, जाना
हुआ (सम ८८, उप ५६, साधं १४४) ।
३ युक्त सहित (राय) । ४ प्राप्त (भग) ।
५ प्रकर्ष प्राप्त (सम्म १) । ६ स्वीकृत,
‘अगमपयदमूला, अएणेहि वि उवगया
किरिया’ (उवर ५५) । ७ अतमूर्त, अन्तर्गत,
‘ज न महाकम्मसुप,

जारी अ सेसाणि छेमसुत्ताणि ।

चरणकरणाणुभोगो ति

कानियये उवगयासि’

(विसे १२६५) ।

उवगय वि [उपवृत्त] जिसपर उपकार किया
गया हो वह (स २०१) ।

उवगर सक [उप + कृ] हित करना । उव-
गरेमि (स २०६) ।

उवगरण न [उपकरण] १ साधन, सामग्री,
साधक वस्तु (श्रीम ६६६) । २ बाह्य इन्द्रिय-
विशेष (विसे १६४) ।

उवगरिय न [उपवृत्त] उपकार (कुप ४५) ।

उवगत सक [उप + कृ] समीप आना,
पास आना । संक. उवगसित्ता (सुस १,
४) । वक्र.

‘उवगसंत भवित्ता, पडितीमाहि वगुहि ।
भोगभोगे विपारिदं, महामोह पवुव्वइ’
(सम ५०) ।

उवगा सक [उप + ग] वर्धन करना, दान
करना, पुण्यमान करना । वक्र. उवगाहुज्ज-
माण, उवगिज्जमाण, उवगीयमाण (राय,
भग ६, ३३, स ६३) ।

उवगार देखो उवधार = उच्चार (सुर २,
४३) ।

उवगारा वि [उपसारक] उपकार करने-
वाला (स ३२१) ।

उवगारि वि [उपसारिन्] ऊपर देखो (सुर
७, १६७) ।

उवगारिया छी [उपवारिका] शासक आदि
की पीठिया (राय ८१) ।

उवगिअ न [उपवृत्त] १ उपकार । २ वि.

जिसपर उपकार किया गया हो वह (स
६३६) ।

उवगिज्जमाण देखो उवगा ।

उवगिण्ह सक [उप + ग्रह] १ उपकार
करना । २ पुष्टि करना । ३ ग्रहण करना ।
उवगिण्ह (पि ५१२) ।

उवगीय वि [उपगीत] १ वर्णित रत्नावित ।
२ न. संगीत, गीत, गान, ‘वाद्ययुवगीय
नट्टमवि सुय विट्ठ चिट्ठुत्तिकर’ (साधं
१०८) ।

उवगीयमाण देखो उवगा ।

उवगूह वि [उपगूह] १ आतिष्ठित (या
१५१, स ४४८) । २ न. आतिष्ठन (राज) ।

उवगूह सक [उप + गूह] १ आतिष्ठन
करना । २ उप्त रीति से रखण करना ।
३ रचना करना, बनाना । वक्र. उवगूहि-
ज्जमाण (राय १, १, भौप) ।

उवगूहण न [उपगूहन] १ आतिष्ठन । २
प्रवृत्त रखण । ३ रचना, निर्माण, आरं-
भणट्टोहि बालयवग्रहणेहि व’ (उदु) ।

उवगूहिय वि [उपगूह] आतिष्ठित (रायव) ।
उवगूहिय न [उपगूहित] गाढ़ आतिष्ठन
(पव १६६) ।

उवग्ग न [उपाग] १ अन्न के समीप । २
आपाद मांस, ‘एवो धिय कातो पुण्यरेव
यए उवग्गमि’ (वव १) ।

उवग्गाह पु [उपग्रह] १ पुष्टि पोषण (विसे
१८५०) । २ उपकार (उप ५६७ टी, स
१५४) । ३ ग्रहण, उत्पादन (श्रीम २१२
भा) । ४ उपधि, उपकरण, साधन (श्रीम
६६६) ।

उवग्गाह पु [उपग्रह] सामीप्य-सम्बन्ध (धर्मसं
३६३) ।

उवग्गाहण वि [उपग्राहक] उपकार-नारक
(हुक्क २३) ।

उवग्गाहिय न [उपगृहीत] उपचार (तंडु
५०) ।

उवग्गाहिय वि [उपगृहित] १ उपस्थापित
(पण २३) । २ आतिष्ठानादि वेष्ट, ‘उवह-
सिण्ह उवग्गाहिय उवसदेहि’ (तंडु) । ३
उपवृत्त (स १५६) । ४ उपगृह्यित (राज) ।
उवग्गाहिय देखो औद्योगाहिय (ववव) ।

उवग्गाहि वि [उपग्राहिन्] सम्बन्धी, सम्बन्ध
रखनेवाला (स ५२) ।

उवग्गाय पु [उपोद्घात] ग्रन्थ के आरम्भ
का वचन, भूमिका (विसे ६६२) ।

उवग्गायण वि [उपघातक] विनाशक (धर्म-
सं ५१२) ।

उवघाइ वि [उपघातिन्] उपघात करने-
वाला (भास ८७, विसे २००८) ।

उवघाइय वि [उपघातिक] १ उपघात-
कारक (विसे २००६) । २ हिंसा से सम्बन्ध
रखनेवाला, ‘भूमोवघाइए’ (भौप) ।

उवघाय पु [उपघात] १ विनाशना, आघात
(श्रीम ७८८) । २ अयुद्धता (टा ५) । ३
विनाश (कम्म १, ५४) । ४ उपद्रव (उदु) ।
५ दूसरे का अशुभ चिन्तन (भास ५१) ।
‘नाम न [‘नामन्’] कर्म विशेष, जिसके
उदय से जीव अपने ही शरीर के पडोजीम,
चौरसत, रसौली आदि अवयवों से वनेर
पाता है वह कर्म’ (सम ६७) ।

उवघायण न [उपघातन] ऊपर देखो
(विसे २२३) ।

उवचय पु [उपचय] १ बुद्धि (भग ६, ३) ।
२ समूह (पि २, भौप ४०७) । ३ शरीर
(प्राय ५) । ४ इन्द्रिय पर्याप्त (पण १५) ।
उवचयन न [उपचयन] १ बुद्धि । २
परिपक्वण, पुष्टि (राज) ।

उवचर सक [उप + चर] १ सेवा करना ।
२ समीप से धूमना करना । ३ आरोप
करना । ४ समीप में खाना । ५ उपद्रव
करना । उवचरइ, उवचरण, उवचरामी,
उवचरति (वृह १, पि ३४८, ४५५,
आपा) ।

उवचर सक [उप + चर] व्यवहार करना ।
उवचरति (पि ८५६) ।

उवचरय वि [उपचरक] १ सेवा के निप
से दूसरे के अहित करने का नीचा देखने-
वाला (सुप २, २, २८) । २ पु. जापूत,
पर (भापा २, ३, १, ५) ।

उवचरिय वि [उपचरित] बन्धन (धर्मसं
२४५) ।

उवचरिय वि [उपचरित] १ उदासित,
देवित, बहुमानित (स ३०) । २ न. उपचार,
सेवा (पवा ६) ।

उपचि सक [उप + चि] १ इकट्ठा करना ।
२ पुष्ट करना । उपचिण्ड, उपचिण्डा, उप-
चिणित । भूका उपचिणितु । भवि, उपचि-
णिस्मति (ठा २, ४, भग) । वमं उपचि-
ण्ड, उपचिण्जति (भा) ।

उपचिठ्ट सक [उप + स्था] उपस्थित होना,
समीप आना । उपचिट्ठे, उपचिट्ठेज्जा
(सि ४६२) ।

उपचिणिय देखो उपचिय (वर्मि १०६) ।
उपचिय वि [उपचित] १ पुष्ट, पीन
(पण १, ४, कम्) । २ स्वापित, निवेशित
(कम्, पण २) । ३ उन्नति (भीष) । ४ व्याप्त
(मणु) । ५ बृद्ध, बड़ा हुआ (भावा) ।

उपचयया की [उपचयका] पर्वत के पास की
नीची जमीन (सी ११) ।

उपचल्लुदिव (शौ) वि [उपचल्लुन्दित]
धर्म्यधित (धमि १७३) ।

उपजंजग वि [वे] दीर्घ, लम्बा (दि १,
११६) ।

उपजा भक [उप + जप्] उत्पन्न होना ।
उपजायइ (विने ३०२९) ।

उपजाइ की [उपजाति] छन्द विशेष (पिंग) ।
उपजाइय देखो उपजाइय (भाट १६ मुपा
३५४) ।

उपजाय वि [उपजात] उत्पन्न (मुपा ६००) ।
उपजीव सक [उप + जीप्] प्राणय लेना ।
उपजीवइ (महा) ।

उपजीउग वि [उपजीउरु] आधित (मुपा
११६) ।

उपजीवि वि [उपजीविन्] १ आश्रय लेने-
वाला, 'न करेइ नेय पुच्छइ निम्मा लिग-
मुवजीवी' (उव) । २ उपकारक (विने
२८८६) ।

उपजोइय वि [उपजोतिधरु] १ भग्नि के
समीप में रहनेवाला । २ पाक स्थान में स्थित,
'के इत्य लता उपजोइया वा भग्नावया वा
सह सन्निहि' (उत १२, १८) ।

उपज्ज भक [उत् + पद्] उत्पन्न होना ।
उपज्जति (सू १, १, ३, १६) ।

उपज्जण न [उपार्जन] पैदा करना, नमाना
(मु ८, १४४) ।

उपज्जिण सक [उप + अर्ज] उपार्जन
करना । उपज्जिणेसि (स ४४३) ।

उपज्ज्मय } पु [उपाध्याय] १ श्रयापक,
उपज्ज्मय } पदानातः (पउम ३६, ६०,
पद्) । २ श्रयाप्यापक जैन मुनि की दी जाती
एक पदवी (विने) ।

उपज्ज्मय वि [दे] आचारित, अनुयाय हुआ
(राज) ।

उपज्मय देखो उपज्ज्मय (सि ७७) ।
उपट्टण देखो उपट्टण (राज)

उपट्टणा स्को उपट्टणा (भग, विने २४१५
टी) ।

उपट्ट वि [उपस्य] एक स्थान में सतत भव-
स्थित (वव ४) । 'वाल पुं [वाल] भाने
की वेला, धम्मगम समय (वव ४) ।

उपट्टभ पु [उपट्टम्भ] १ भवस्थान (भग) ।
२ श्रुतकम्पा, कल्याण (ठा २) ।

उपट्टप्प वि [उपस्थाप्य] १ उपस्थित करने
योग्य । २ व्रत—दीक्षा के योग्य 'वियत्त-
दिच्चे वेहे व उपट्टप्पा व भादिया' (वृह ६) ।

उपट्टय सक [उप + स्थापय्] श्रुति में
सत्यापित करना । उपट्टयति (सू २, १
२७) ।

उपट्टय सक [उप + स्थापय्] १ उपस्थित
करना । २ व्रत का आरोपण करना, दीक्षा
देना । उपट्टवेइ, उपट्टवेह (महा, उवा) ।
हेक. उपट्टवेत्तए (वृह ४) ।

उपट्टयणा की [उपस्थापना] १ चारित्र-
विशेष, एक प्रकार की जैन दीक्षा (वर्म २) ।
२ शिष्य में व्रत की स्थापना, 'वयट्ठपणु
वट्टवणा' (पवजा) ।

उपट्टयणीय वि [उपस्थापनीय] देखो
उपट्टप्प (ठा ३) ।

उपट्टा सक [उप + स्था] उपस्थित होना ।
उपट्टएजा (भग) ।

उपट्टाण न [उपस्थान] १ बैठना, उपवेशन
(छाया १, १) । २ व्रत-स्थापन (महानि ७) ।
३ एक ही स्थान में विशेष काल तक रहना
(वव ४) । 'दोस पु [दोप] नियवास
दोप (वव ४) । 'साला की [शाला]
प्रास्थान-मण्डप, सभा-स्थान (छाया १, १,
निर १, १) ।

उपट्टाण न [उपस्थान] श्रुतान, आचार
(सू १, १, ३, १४) ।

उपट्टाणा की [उपस्थाना] जिसमें जैन साधु
योग एक बार ठहर कर फिर भी श्राव-
निषिद्ध अवधि के पहले ही आकर ठहरे वह
स्थान (वव ४) ।

उपट्टाण देखो उपट्टय । उपट्टावेहि (पि
४६८) । हेऊ. उपट्टाविसए, उपट्टावेत्तए
(ठा) ।

उपट्टाण्णा देखो उपट्टयणा (वृह ६) ।

उपट्टिय वि [उपस्थित] १ प्राप्त, 'जण्णवाइ-
मुवट्टिया' (उत १२) २ समीप-स्थित (भाव
१०) । ३ तैय्यार, उद्यत (वर्म ३) । ४
आधित, निम्नसमुवट्टिणी' (भाट, सू १,
२) । ५ मुमुक्षु, श्रवण लेने की तैय्यार,
'उपट्टियं पडिरय, सजय सुतवत्तिय ।
मुक्कम्म धम्मो भसइ, महामोह पुक्कवइ'
(सप ५१) ।

उपट्टाण्णा देखो उपट्टयणा (पवा १७, ३०) ।

उपट्टिहियु वि [उपट्टिहियु] जलानेवाला,
'मपण्णिनाएण कायमुवड्हिता भवइ' (सू २,
२, २) ।

उपट्टिअ वि [दे] भवनत, नमा हुआ (पद्) ।

उपणगर न [उपनगर] उपपुर, शाखा नगर
(भीष) ।

उपणस सक [उप + नर्त्तय्] नवाना,
नाच करना । वषट्ठ. उपणसिज्जमाण
(भीष) ।

उपणद्ध वि [उपनद्ध] गठित (उतर ६१) ।

उपणम सक [उप + नम्] १ उपस्थित
करना, वा रखना । २ प्राप्त करना । उक्-
खमइ (महा) । वड्ठ. उपणमत (उ १३६
टी सू १, २) ।

उपणमिय वि [उपनमित] उपस्थापित
(सण) ।

उपणय वि [उपनय] उपस्थित (सि १, १६) ।

उपणय ॥ [उपनय] १ उपसहार, दृष्टान्त के
अर्थ की प्रवृत्ति में जोड़ना, हेतु का पक्ष में
उपसहार (पव ६६, धोप ४४ भा) । २
स्तुति, श्लाघा (विने १४०३ टी, पव १४०) ।
३ आवाहन नय (राज) । ४ संसार-विशेष,
उपणय (सि २७२) ।

उपनयन पुं [उपनय] यतोपवीत सस्कार,
उपहार, भेंट (राय १२७)।

उपनयण न [उपनयन] १ उपसहार (बब
१)। २ उपस्थापन (पिंड ४४१)।

उपनयण न [उपनयन] उपवीत-सस्कार,
मन-मूत्र धारण सस्कार (पणह १, २)।

उपनिअ देखो उपनीय (सं ४, ५३)।

उपनिक्तिरस वि [उपनिक्तिम्] व्यवस्थापित
(भावा २)।

उपनिग्न्येय पुं [उपनिग्न्येय] घरोहर, रक्षा
के लिए दूसरे के पास रखा धन (बब ४)।

उपनिगमा पुं [उपनिगम] १ द्वार, दरवाजा
(सं १२, ६८)। २ उपवन, बगीचा (गठड)।

उपनिगमय वि [उपनिगम] समीप में निकला
हुआ (प्रोप)।

उपनिज्जत देखो उपणी।

उपनिमत सक [उपनि + मन्त्र्य] निम-
न्त्रण देना। भवि, उपनिमतोहिंति (भोप)।

मद्र. उपनिमतिऊण (सं २०)।

उपनिमतण न [उपनिमन्त्रण] निमन्त्रण
(भान ८, ६)।

उपनिवाय पु [उपनिपात] सम्बन्ध (धर्मसं
४४८)।

उपनिविट्ट वि [उपनिविष्ट] समीप स्थित
(राय)।

उपनिअओ क्षी [उपनिपन्] वेदान्त शास्त्र,
वेदान्त प्रत्यय, ब्रह्म-विद्या (फण्डु ८)।

उपनिद्धा क्षी [उपनिधा] मार्गण, मार्गणा
(पबस)।

उपनिहि पुत्री [उपनिधि] १ समीप में
आनीत, धरोहर (ठा ५)। २ विरचना, निर्माण
(अपु)।

उपनिहि पुत्री [उपनिधि] उपस्थापन, अया-
नत (अपु ५२)।

उपनिहिअ वि [उपनिधि] १ उपनिधि-
सम्बन्धी। 'आ क्षी [५] क्रम-विशेष
(अपु ५२)।

उपनिहिय वि [उपनिहित] १ समीप में
स्थापित। २ आसन पित्त (सूत्र २, २)।

'य पुं [५] निम विरूप की धारण करने-
वाला निपु (सूत्र २, २)।

उपणी सक [उप + नी] १ समीप में लाया,
उपस्थित करना। २ ग्रहण करना। ३ इष्टता
करना। उपसंति (उवा), उपसोमो। भवि
उपणेहि (पि ४५५, ४७४, ५२१)।
कवक. उपणिज्जंत (सं ११, ५३)। सक.
'से भिक्षुको उपयोत्ता अणेगे' (सूत्र २,
६, १)।

उपणीअ न [उपनीत] उपन्यन (अपु
२१७)। 'वयण न [वचन] प्रशसा-वचन
(भावा २, ४ १, १)।

उपणीय वि [उपनीत] १ समीप में लाया
हुआ (पात्र, महा)। २ अपित, उपोक्त
(भोप)। ३ उपनययुक्त, उपसहृत (विसे ६६६
टी, अपु)। ४ प्रसन्न, स्थापित (भावा
२)। 'वरय पु [वरम] अभिग्रह विशेष
को धारण करनेवाला साधु (भोप)।

उपणीय वि [उपन्यस्त] उपन्यस्त, उप-
ठोक्त 'गुणिलोए उपण्यस्त विविहं पाण-
भोमण। 'हुंनमाणं विविज्ज' (सं ५,
३६)।

उपणीयस पुं [उपन्यास] १ वाक्योपक्रम,
प्रस्तावना (ठा ४)। २ इष्टान्त विशेष (सं
१)। ३ रचना (अभि ६८)। ४ छल प्रयोग
(प्रमी २२)।

उपतल न [उपतल] हस्त-तल की धारा धोर
का पारदर्शक (निबु १)।

उपताण पुं [उपताप] सत्ताप, पीडा (सूत्र
१, ३)।

उपतायि वि [उपतापित] १ पीडित। २
तप्त किया हुआ, गरम किया हुआ (सुर २,
२२६, सख)।

उपत वि [उपात्त] गृहीत (पत्रम २६, ४६;
सुर १४, १६०)।

उपत्यद वि [उपत्यत] ऊपर ऊपर आच्छा-
दित (अप)।

उपत्याण देखा उपट्टाण (सखि ४, ५५)।

उपत्याणा देवो उपट्टाणा (पि ३४१)।

उपत्यिय देवो उपट्टिय (सप १७)।

उपत्यु स [उप + रतु] स्तुति करना, स्तुत्या
बतल। उपत्युति (पि ४६४)। उपत्युवदि
(सो) (उत्तर २२)।

उपदंस सक [उप + दर्शय] दिखलाना,
बतलाना। उपदसइ (अप. महा)। उपदंसि
(विपा १, १)। भवि. उपदंसिस्सामि
(महा)। वक. उपदंसमाण (उवा)। कवक.
उपदंसिस्समाण (आया १, १३)। संक.
उपदंसिय (भावा २)।

उपदंस पुं [उपदर्श] १ रोग विशेष, गर्मी,
सुजात। २ भवलेह, चाटना (चाह ६)।

उपदंसण न [उपदर्शन] दिखलाना (अपु)।
'कूट पुं [कूट] नीलवंत नामक पर्वत का
एक शिखर (ठा २, ३)।

उपदंसिय वि [उपदर्शन] दिखलाया हुआ
(सुपा १११)।

उपदंसिर वि [उपदर्शिन] दिखलानेवाला
(अपु)।

उपदसेसु वि [उपदर्शयि] दिखलानेवाला
(पि ३६०)।

उपदस पुं [उपद्वय] ऊपम, वल्लेडा (महा)।
उपदा क्षी [उपदा] भेंट, उपहार (रभा)।

उपदा क्षी [उपदायिका] पानी देनेवाली,
'पाउपदा व एहाएवदा व दाहिसेमए-
कारि ठेवे' (आया १, ७)।

उपदाण न [उपदान] भेंट, नजराना (अभि)

उपदिस सक [उप + दि] उपदेस देना।
उपदिसइ (अप)।

उपदीय न [दे] द्वीपालर, प्राय द्वीप (दे १,
१०६)।

उपदेसग वि [उपदेशक] व्याख्याता (भोप)।

उपदेसणया देखो उपएसणया (विसे २६,
१६)।

उपदेसि वि [उपदेशिन] उपदेशक (चाह
४)।

उपदेही क्षी [उपदेहिवा] शुद्ध पन्तु-विशेष,
दीपक (दे १, ६३)।

उपद्वय सक [उप + द्र] उपद्रव करना,
ऊपम मचाना। भवि. उपद्वयिस्सइ (महा)।
उपद्वय देखा उपद्वय (ठा ५)।

उपद्वयण न [उपद्वयण] उपद्रव करना, उप-
सर्ग करना (धर्म ३)।

उपद्विय वि [उपद्रव] पीडित, मय-मोड़
किया हुआ (आन ४, विसे ७६)।

उपद्रुति वि [उपद्रुति] रैरान किया हुआ (मत १०५)।

उपधाउ पु [उपधाउ] निकट धातु (संकोष ५३)।

उपधारणया स्त्री [उपधारणा] अवग्रह-ज्ञान (एदि १७४)।

उपधारणया स्त्री [उपधारणा] धारणा, धारण करना (ठा ८)।

उपधारित वि [उपधारित] धारण किया हुआ (भग)।

उपनन्द पु [उपनन्द] स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि (भग)।

उपनन्द सव [उप + नन्द] अभिनन्दन करना। कवङ्क. उपनन्दितमाण (कल्प)।

उपनगर देवो उपनयर (मुल २, १३)। उपनयर देवो उपनयर (मुल ३४१)।

उपनिक्पित देवो उपनिक्पित (कस)। उपनिक्पेय सक [उपनि + क्पेय] १ भरोहर शतना। २ स्थापन करना। क. उप-निक्पेयियकर (कस)।

उपनिगाय देवो उपनिगाय (छाया १, १)। उपनिगधण न [उपनिगधण] १ सवध। २ कि सबन्ध-हेतु (विश १६३९)।

उपनिमत देवो उपनिमत। उपनिमतेद, उपनिमतेमि (कस, उवा)।

उपनिषिद्ध वि [उपनिषिद्ध] समीपस्थित (पल २७)।

उपनिहिय वि [अपनिधिरु] देवो उपनिहिय (पल २, १)।

उपनयस वि [उपनयस] स्थापित (स ३१०)। उपनयस पु [उपनयस] निवेदन (दपनि १, ८२)।

उपपदाग न [उपपदान] नीति विशेष उपपयाग] दान-नीति समिपत धर्म का दान (विश १, ३, छाया १, १)।

उपपुय वि [उपपुय] उपद्रुत, मय म व्याप्त (राज)।

उपयुज सर [उप + युज] उपभोग करना, काम में लाना। उपयुज (पह)। वह उपयुजत (जा ५ १८)। कहा उपयुजत, उपयुजत (मे २, १० गुर ८, १६१)।

उपयुजिऊण (महा)।

उपयुज सर [उप + युज] उपभोग करना, काम में लाना। उपयुज (पह)। वह उपयुजत (जा ५ १८)। कहा उपयुजत, उपयुजत (मे २, १० गुर ८, १६१)।

उपयुजिऊण (महा)।

उपयुजण न [उपयुजण] उपभोग (मुपा १६)।

उपयुक्त वि [उपयुक्त] १ जिसका उपभोग किया हो वह (वह ३)। २ अधिकृत (उप ५ १२४)।

उपयोज पु [उपयोज] १ भोजनविरिक्त उपयोज] भोग, जिसका फिर फिर भोग किया जाय जैसे—वज्र गृहादि 'उपयोगो दु पुणो पुणो उपयुजइ भवणवतयाई' (उत्त ३३, अग्नि ३१)। २ जिसका एक बार भोग किया जाय वह, भोजन पान वगैरह (भग ७, २, पडि)।

उपयोग पु [उपयोग] १ एक बार भोग, भासेवन। २ भस्तरण भोग (भावक २८४)। ३ धारण करना (ठा ५, ३ टी—पत्र ३३८)।

उपयोग वि [उपयोग] उपभोग-योग उपयोज] (यग, वृह ३)।

उपमा स्त्री [उपमा] १ सादर्य, हृष्टान्त (मणु उत्त, प्रामु १२०)। २ सत्य (ठा १०)। ३ साध पदार्थ विशेष (जीन ३)। ४ 'प्रत्ययवा करण' मूल का एक गुण धर्म्यन (ठा १०)। ५ असङ्कार विशेष (विने ६६६ टी)। ६ प्रमाण विशेष (उपमान-प्रमाण (विने ४७०)।

उपमान न [उपमान] १ हृष्टान्त, सादर्य। २ जिस पदार्थ से उपमा दी जाय वह (स्वनि १)। प्रमाण विशेष (मूख १, १२)।

उपमालिय वि [उपमालिय] निरूपित सुरोभित

'धर्मसामयपशुनि, कुतयमातोवमाविपुहं च। नरावममपुणवतसं, विनतं पासं पुरमं' (मुपा ३४)।

उपमिय वि [उपमित] १ जिसको उपमा दी गई हो वह। २ जिसकी उपमा दी गई हो वह (मान)। ३ न, उपमा, सादर्य (विने ६८५)।

उपमेज वि [उपमेज] उपमा के योग्य (पे ७३)।

उपय पु [दि] हाथी को पकड़ने का यन्त्र (पाप)।

उपय देवो ओयर। वह. उपयंत (भग)।

उपय (सा) एवो उदय (नरि)।

उपय सर [उप + ह] उत्तार करना, हित

करना। उपयरेद (एण)। क. उपययियव्व (मुपा ५६४)।

उपय सर [उप + चर] १ आरोप करना। २ भक्ति करना। ३ कल्पना करना ४ विवि-हता करना। कवङ्क. उपययिज्जित (मुपा ५७)।

उपयरण न [उपयरण] साधन, सामग्री 'माए परोवपण मज ह एवि त्त साहिंभ तुमए' (वाप २६, गउड)। २ उपकार (सत्त ४१ टी)।

उपययि वि [उपययि] १ उपहृत। २ उप-कार (वज्ज १०)।

उपययि वि [उपययि] आरोपित (विने २८३)।

उपययि स्त्री [उपययि] दासी (उप ५ ३८७)।

उपया सक [उप + या] समीप में जाना। उपयाद (मूख १, ४, १, २७)। उपययि (विने १५६)।

उपयाइय वि [उपयायित] १ प्रापित, सम्प-न्नित। २ न, मनीकी, किसी काम के पूरा होने पर किसी देवता की विशेष आराधना करने का मानसिक संकल्प (ठा १०, छाया १ ८)।

उपयाण न [उपयाण] समीप में गमन (मूख १, २)।

उपयार पु [उपयार] मनाई, हित (उप. गउड: वज्ज ५८)।

उपयार पु [उपयार] १ पूजा, सेवा आदर, भक्ति (ग ३२ प्रति ४)। २ विविधता, कुशुता (पल ९)। ३ लगण, राज शक्ति-विशेष, धन्यारा: जा तेनु धम्ममदसा मा उपयारेण निदएण ६२' (दगनि १)। ४ ध्यहार एणउत्तावापुत्ता' (विश १, २)। ५ कल्पना, उपधारणो गिगान्ध रिगि गणप गणप्यो नरि' (विग)। ६ भावेन (धामम)।

उपयारा वि [उपयार] गरा-पूजा करने-वाला (निपु ११)।

उपयारा न [उपयारा] धन्य भाग उपयार करना, उपधारणाराणानु गिगमा व' (वि. धमम' (गण २, ३)।

उचयारय वि [उपकारक] उपकार करने-
वाला (धम्म ८ टी) ।

उचयारि वि [उपकारिन्] उपकारक (स
२०८; विक २३, विवे ७६) ।

उचयारिअ वि [ओपचारिक] उपचार से
संबन्ध रखनेवाला (उवर ३४) ।

उचयालि पुं [उपजालि] १ एक अन्तर्गत मुनि,
'जो वसुदेव का पुत्र था और जिसने भगवान्
श्रीनेमिनाथजी के पास दीक्षा लेकर शत्रुघ्न
पर मुक्ति पाई थी (घट १४) । २ राजा
श्रेणिक का इस नाम का एक पुत्र, जिसने
भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर अनुत्तर-
चिमान ने देव-गाति प्राप्त की थी (अनु १) ।

उचरहू की [उपरति] विराम, निवृत्ति (विते
२१७७; २६४०, सम ४४) ।

उचरंज सक [उप + रंज] प्रस्त करना ।
कर्म. उवरणजि (शौ) (सुत्रा ५८) ।

उचरग देखो ओअरय, 'उचरापविट्ठाए कणम-
मंजरीए निहणत्थं दारदेसिहिएण हिं' ठं
पुव्ववरिएणयवेदिमं' (महा) ।

उचरत वि [उपरत्त] १ अमरक, राम-मुक्त;
'कुमखणेमुवरात्त' (सुपा २५६) । २ राहु से
प्रतिष्ठ (पात्र) । ३ ज्ञान (स ४७३) ।

उचरम अक [उप + रम्] निवृत्त होना,
विरत होना; 'मो उचरमसु एयाभो असुमग्ग-
वसाणाम्भो' (महा) ।

उचरम पुं [उपरम] १ निवृत्ति, विराम,
(उप ७ ६३) । २ तारा (विते ६२) ।

उचरय वि [उपरत्त] १ विरत, निवृत्त (माचा,
सुपा ५०८) । २ मूल (स १०४) ।

उचरय देखो उवरगा, 'उचरयगया दारं पिहिअउ
विमि भुणमुयंती विट्ठ' (महा) ।

उचरल (अप) देखो उवररिय [दे] (विग) ।

उचराग पुं [उपराग] रूपं या चन्द्र का
उचराय १ अग्रण, राहु-ग्रहण (अणह, १, २;
से ३, ३६; गड्ड) ।

उचराय पुं [उपराय] दिन, 'राभोवरायं यप-
डिन्ने भग्निताय एगया भुवे' (माचा) ।

उचरि म [उपरि] ऊपर, ऊर्ध्व (उच) । 'मासा
ही [मापा] गुह के बोलने के अन्तर ही
विशेष बोलना (पडि) । 'म, भग, भय,

छ वि [तन] ऊपर का, ऊर्ध्व-स्थित (सम
४३, सुपा ३३; गण, हे २, १६३; सम २२;
८६) । 'हुत्त वि [अभिमुख] - ऊपर की
तरफ (सुपा २६६) ।

उचरि ऊपर देखो (हुमा) ।

उचरितण देखो उअरि-म (धर्मि १५१) ।

उचरुंघ सक [उप + रुघ्] १ अटकाव
करना । २ अडचन डालना । ३ प्रतिबन्ध
करना, रोकना। कर्म. उवररुंघइ, उवररिउंघइ,
(हे ४, २४८) ।

उचरुद पुं [उपरुद] नरक के जीवों को दुःख
देनेवाले परमाधामिक देवों की एक जाति,
'बह्वाचरुद काले भ, महावाले तित्त यावरे'
(सम २८), 'मंजति मंगमगाणि, ऊत्ताहुसि-
राणि करचरणा। कप्पेति कप्पएहिं, उचरुदा
पावमममया' (सूत्र १, ५) ।

उचरुद वि [उपरुद] १ रक्षित । २ प्रतिरुद्ध,
मकरुद्ध; 'पासत्थपमुहचोरोवचोपपुअमसत्ताए'
(सामं ६८; उप ७ ८३२) ।

उचरोह सक [उप + रोघय्] अडचन
डालना । क. उचरोहणीय (सुस १, ४०) ।

उचरोह पुं [उपरोघ] १ अडचन, बाधा
(विते १४१३; स ३१६), 'भूमोवरोहरहिए'
(भाव ४) । २ अटकाव, प्रतिबन्ध (इह १;
स १५) । ३ वेरा, नगर आदि का खैय द्वारा
घेरना; 'उचरोहमा वीरुद सपरिखो पुवरस्त
पागारी' (इह ३) । ४ निर्वन्ध, आग्रह
(स ५५७) ।

उचरोहिय वि [उपरोधित] जिसको उचरोध
—निर्वन्ध किया गया हो वह (सुप्र १३५;
४०६) ।

उचरोहि वि [उपरोधिन] उपरोध करने-
वाला (भाव ४) ।

उवल पुं [उपल] १ पापण, पत्थर (प्रासू
१७५) । २ टीकी वगैरह को संस्कृत करने-
वाला पापाण-विशेष (अणह १) ।

उवलम्भण पुं [उपलम्बन] तावत्त (सिक्क)
वाला एक प्रकार का सीप (अनु) ।

उवलंभ सक [उप + लम्] १ प्राप्त करना ।
२ जानना । ३ उताहना देना । कर्म.

उवलंभिज्जद (वि ५४१) । वक. उवलंभेमाण
(शाया १, १८) ।

उवलंभ पुं [उपलम्भ] १ लाभ, प्राप्ति (सुपा
६) । २ ज्ञान (स ६५१) । ३ उताहना, एवं
बहुवचन (उप ६४८ टी) ।

उवलंभ देखो उवालंभ = उपात्तम्, 'उवलं-
भम्मि मिगावई नाहियवाई वि वत्तथे'
(वसनि १, ७५) ।

उवलंभण न [उपलम्भन] प्राप्ति (एदि
२१०) ।

उवलंभणा की [उपलम्भना] उताहना;
'यएणं सत्थपादं वहिं लेज्जणाहिं य सट्ठाहिं
य उवलंमएहिं य लेज्जमाणा य रंढमाणा य
उवलंभेमाणा य यएणत्त एयमदं एवैदंति'
(शाया १, १८) ।

उवलक्क सक [उप + लक्कय्] जानना,
पहिचानना । उवलक्कइ (महा) । संक.
उवलक्कलेऊण (महा) । क. उवलक्किलज्ज
(उप ७ ७७) ।

उवलक्कय पुं [उपलक्क] ज्ञान, खबर, मासूम;
'सिखाईं अणुवलंभं रपएाई रक्कगहणम्म'
(सुप्र ३२६) ।

उवलक्खण न [उपलक्खण] १ पहिचान
(सुपा ६१) । २ अन्याय-बोधक सचेत
(आ ३०) ।

उवलक्किअ वि [उपलक्कित] १ पहिचान
हुआ, परिचित (आ १२) ।

उवलग्ग वि [उपलग्न] लगा हुआ, क्षान्त;
'पउमिहिएणत्तावत्तमज्जविदुमिचयत्त' (कप्प,
अवि) ।

उवलद्ध वि [उपलद्ध] १ प्राप्त । २ विज्ञात;
'अइ खवं उवलद्ध', जइ अया भाविभो
उवयमेण' (उव, शाया १, १३; १४) । ३
उपात्तम्, जिसको उताहना दिया गया हो वह
(उप ७२८ टी) ।

उवलद्धि की [उपलद्धि] १ प्राप्ति, लाभ ।
२ ज्ञान (विते २०६) ।

उवलद्धिय देखो उवलद्ध; 'सत्तरत्तल्लुहिस्त मे
अक्कमुत्तल्लियं, ता तुमं मत्तित्तं' (सुप्र
१६६) ।

उवलदधु वि [उपलद्ध] ग्रहण करनेवाला,
जाननेवाला (विते ६२) ।

उपलभ देखो उपलभ = उप + लभ् । वट्
उपलभत (पि ४५७) । सकृ उपलभम्
(पि ५६०) ।

उपलभत्ता छी [दे] वलय, वज्रन
उपलभन्ता } (दे १, १२०) ।

उपलभ सकृ [उप + लभ्] ब्रौडा करना,
बितास करना । वट्ट उपलभत (महा) ।
प्रयो, बहु उपलभित्तमाणा (शायी ११) ।
उपलभ्य न [दे] सुख, मैथुन (दे १
११७) ।

उपलभ्य न [उपलभित्त] ब्रौडा विरोध
(शायी १६) ।

उपलभ् देखो उपलभ = उप + लभ् । सकृ
उपलभ्य (स ३२) उपलभ्यिऊण (स
६१०) ।

उपला सकृ [उप + ला] १ ग्रहण करना ।
२ धारण करना । हेक उपलाउं (वय १) ।
उपलि देखो उपलि । उपलिङ्गना (भावा २,
३ १, २) ।

उपलिप सकृ [उप + लिप्] सीपना,
पोतना । भवि उपलिपिहिइ (पि ५४६) ।
उपलिप सकृ [उप + लिप्] चुम्बन करना,
'बनए जो उ सीसाएँ जीहाएँ उपलिपए'
(गच्छ १९६) ।

उपलिप्त वि [उपलिप्त] सीपा हुमा, पोता
हुमा (शायी १, १) ।

उपलीण देखो उपलीण ।

उपलुभ वि [दे] सगज, मजा-मुक (दे १,
१७७) ।

उपलेन पु [उपलेण] १ लेना । २ गर्भ
बच (मीप) । ३ सरलेय (भावा) । ४
भारलेय (सूत्र १, १, २) ।

उपलेयण न [उपलेपेन] ऊपर देनो (भा
११, ६, निबू १, मीप) ।

उपलेयिय वि [उपलेपित] सीपा हुमा,
पोता हुमा (वय) ।

उपलेभ सकृ [उप + लेभ्य] सातच
देना सीम दिखाना । संउ उपलेभेऊण
(महा) ।

उपलेहिय वि [उपलेभित्त] जिसको सातच
दी गई हो बट्ट (उप ७२८ टी) ।

उपल्लि सकृ [उप + ली] १ रटना, स्थिति

करना । २ धारण करना । उपल्लियइ (पि
११६ ४७४) 'तपो संनयामव वासावास
उपल्लिङ्गना' (भावा २, १, १, २) ।

उपल्लीण वि [उपल्लीण] १ स्थित । २
प्रचलन स्थित उपल्लोणा भेनुएणम्म विरएण
वंति (भावा २) ।

उपल्लि पु [उपपत्ति] जार (वयमे १२८) ।

उपल्लि सकृ [उप + पट्] १ उत्पन्न होना ।
२ समत हाना पुन हाना । उपल्लि भवि
उपल्लिङ्गिहिइ (भा महा) । वट्ट उपल्लि
माण (ठा ४) । सकृ । उपल्लिप्ता (भा
१७ ६) । हेक उपल्लिउ (सूत्र २, १) ।

उपल्लिण न [उपल्लेन] व्याम, 'प्रसमजतो
वक्कजएणमिह पायइ सक्कसपचायाधो' (सुपा
४७१) ।

उपल्लिमाण देखो उपल्लि = उप + लभ् ।

उपल्लिण वि [उपल्लि] राज भादिना वल्लन
—प्रधान सनापति भादि (सस ६, २, ५) ।

उपल्लिण वि [उपल्लि] प्रधान भादि का
प्रधान भादि को बैठने योग्य (दम ६, २, ५) ।

उपल्लि सकृ [उप + लुत्] चुटु होना,
मरना, एक गति से दूसरी गति में जाना ।

उपल्लिइ (भा) । बहु उपल्लिइमाण (भा) ।

उपल्लि न [उपल्लेन] बगीचा (शायी १, १
गउइ) ।

उपल्लिण वि [उपल्लि] १ उत्पन्न, 'उपल्लेणो
माणुसम्मि सोमम्मि' (उत्त ६) । २ समत
पुत्त (पंचा ६, उवर ४७) । ३ प्रवित्त

'उपल्लेणो धावकमुणो' (उत्त १६) । ४ न,
उपत्ति, नल्ल (भा १४ १) ।

उपल्लि छी [उपपत्ति] १ उपाति वन
(ठा २) । २ युक्ति, व्यास (पउम २, ११७
उवर ४६) । ३ विषय । ४ समर्थ, विचउ इति
वा संभउ इति वा उजव इति वा एण्टा' (भाबू १) ।

उपल्लि वि [उपपत्तृ] उत्पन्न हानसका,
देखागेनु देखाएँ उररनारो भवि' (पौन
ठा ८) ।

उपल्लि देखो उपल्लिण (भा टा २ २ स
१२८ १६२) ।

उपल्लिण न [उपपत्तन] देखो उपल्लि =
उत्पन्न, 'उपल्लेणो उपल्लेणो' (पचन) ।

उपल्लिण न [उपल्लेन] उपल्लि (सुपा
६१६) ।

उपल्लिण वि [उपल्लिण, उपल्लिण] १
उत्पन्न होनाभावा भवि मे भाया उप-
पाए, नवि मे भाया उपपाए' (भावा) ।
२ देखल या नारक रूप से उत्पन्न होनाभावा
(पणह १, ४) ।

उपल्लि सकृ [उप + पाद्य] सारादन
करना, सिद्ध करना । उपपाए (उत्त १,
४३, दम ८, ३३) ।

उपल्लि पु [उप + पाद्य] वाय बनाना ।
कह उपल्लिमाण, उपल्लिमाण (वय
रा) ।

उपल्लि पु [उपपात्त] १ देव या नारक जीव
की उत्पत्ति—जन (वय) । २ सेवा भावर
'भाएणोववायवणएणिदेवे विट्ठति' (भा १, ३) ।
३ विनय । ४ भाषा 'उपपात्ता एण्हो
भाएण विण्हो य हाति एण्टा' (वय ४) ।
५ प्रादुर्भाव (पणह १६) । ६ उत्पन्नान,
संप्राप्ति (निबू ५) । 'कप्प पु [कत्त]'
साध्याचार विरोध पारसंथा के साथ रह कर
संविन विहार का संप्राप्ति (पंचमा) । 'य
वि [उ] देव या नारक गति में उदत्त
जीव (भावा) ।

उपल्लि पुन [उपपात्त] उत्पन्न, मनाहार,
दिन रात भावनादि का प्रसाद (उत्ता महा) ।

उपल्लि वि [उपपात्ति] जिसने उपल्लि
जिया हो बट्ट (पउम ३३, ५१ सुपा ४७८) ।

उपल्लि वि [उपपात्त] उपल्लि विना
हुमा (भवि) ।

उपल्लि देखो उपल्लिण सक्कं जुम्भणो व
(७ व) विष्ठा (पचि ८) ।

उपल्लि वि [उपविट्ट] बैठना, निरण
(भावम) ।

उपल्लिण वि [उपविगमन] सज्ज
निगड (जीव १) ।

उपल्लि सकृ [उप + विट्ट] बैठना । उप-
विमर (महा) । छर उपल्लिण (पचि
२८) ।

उपल्लिण न [उपल्लेन] बैठना (वृत्त ७) ।

उपल्लि न [उपल्लि] १ धातु, जनक

उवसाम पुं [उपशम] उपशान्ति (सिदि २३५) ।

उवसाम देखो उवसाम (विने १३०६) ।

उवसाममा वि [उपशमक] १ जोपादि को उपशान्त करनेवाला (विसे २२६; भाव ४) ।
२ उपशमते संबन्ध रखनेवाला, 'उवसाममा-
मेदिपयस होइ उवसामय तु सम्मत' (विसे २७२५) ।

उवसामण न [उपशमन] उपशान्ति, उपशम (न ४६९) ।

उवसामणया औ [उपशमना] उपशम (ठा ८) ।

उवसामय देखो उवसामम (सम २६, विने १३०२) ।

उवसामिय वि [औपशमिक] १ उपशम-
सङ्गती । २ पुं. भाव-विशेष, 'महोदयमस-
हायो, मन्वो उवसामिभो भावो' (विने ३४-
६४) । ३ न. सम्मन्वय-विशेष (विसे ५२६) ।

उवसामिय वि [उपशमित] शाप्य विद्या
हुमा (भव १) ।

उवसाह सब [उप + कथ] कहना । उव-
साहइ (सण) ।

उवसाहण वि [उपसाधन] निपादक (सण) ।
उवसाहिय वि [उपसाधित] तैवार विद्या
हुमा (पाठम ३४, ८; सण) ।

उवसित वि [उपसित] भिच, छिड़ना हुमा
(रना) ।

उवमिलोअ सब [उपमिलोअय] वर्णन
करना, प्रस्ताव करना । उ. उवमिलोअदुअ
(श्री) (मुद्रा १६८) ।

उवसुत वि [उपसुत] सोमा हुमा (से १५,
११) ।

उवसुद वि [उपसुद] निर्दोष (सूमा १, ६) ।
उवसुदिय वि [उपसूचित] समुचित (सण) ।

उवसर वि [उ] रवि योग्य (दे १, १०४) ।
उवसेरा न [उपसेयन] मेवा, परिवेष (पव
६) ।

उवसेयय वि [उपसेयक] सेवा करनेवाला,
नरक (नवि) ।

उवसोभ धक [उप + शुभ] शांभवा, विरा-
जना । चहु. उवसोभमाण, उवसोभमाण
(सण, खाया १, १) ।

उवसोभिय वि [उपशोभित] सुशोभित,
विराजित (भोप) ।

उवसोहा औ [उपशोभा] शोभा, विभूषा
(सुर ३, १०४) ।

उवसोहिय वि [उपशोधित] निर्जन किया
हुमा, शुद्ध किया हुमा (खाया १, १) ।
उवसोहिय देखो उवसोभिय (मुपा ५, नवि,
साध ६६) ।

उवसरमा देखो उवसरमा (नव) ।

उवसरस्यं पुं [उपाश्रय] जैन साधुको के
निवास करने वा स्थान (सम १८८, भोय
१७ भा, उप ६४८ टी) ।

उवससा औ [उपाश्र] हेप (नव १) ।

उवस्तिश वि [उपाश्रित] १ द्वेषी (वव १) ।
२ कर्त्तृवृत्त । ३ यमोप मे स्थित । ४ न.
हेप (राज) ।

उवस्सुदि औ [उपश्रुति] प्रत्येक को जानने
के लिए ज्योतिषी को कहा जाना प्रथम वाक्य
(हाम्य १३०) ।

उवह स [उभय] दोनों, युगल (हुमा, ह २,
१३८) ।

उवह य [उ] दोनों धर्म को बतानेवाला
अर्थय (पद्) ।

उवहट्ट सक [समा + रभ] शुरू करना,
आरम्भ करना । उवहट्टइ (पद्) ।

उवहट्ट वि [उपहृत] १ उपद्रवित, उत्पत्त-
यित (राज) । २ भोजन स्थान में अर्पित भोजन
(ठा ३, ३) ।

उवहण सब [उप + हण] १ विनाश करना ।
२ क्षापात पहुँचाना । उवहणइ (उव) । कर्म
उवहणइ (पद्) । वक्र. उवहणत (राज) ।

उवहणण न [उपहणन] १ क्षापात । २
विनाश (ठा १०) ।

उवहट्ठय सब [समा + रच] १ रचना,
बनाना । २ उत्तेजित करना । उवहट्ठइ (ह
४, ६५) ।

उवहट्ठिय वि [समारचित] १ बनाया
हुमा । २ उत्तेजित (हुमा) ।

उवहट्ठमा देखो उवहण ।

उवहट्ठय वि [उपहृत] १ विनाशित (यामु
१३३) । २ दूषित (हह १) ।

उवहर सब [उप + ह] १ पूसा करना ।

२ उपस्थित करना । ३ सरपण करना । उव-
हरइ (ह ४, २५६) । भूवा उवहरिमु (ठा
६) ।

उवहस मक [उप + हस] उपहास करना,
हँसी करना । उ उवहसणिज (स ३) ।

उवहसिअ वि [उपहसित] १ जिसका उप-
हास किया गया हो वह (पि १५५) । २ न.
उपहास (तडु) ।

उवहा औ [उपधा] माया, कपट (धर्म ३) ।

उवहाण न [उपधान] १ तर्किया, उसीना
(दे १, १४०, सुर १२, २५, मुपा ४) । २
सपयमां (सूमा १, ३, २, २१) । ३ उवापि,
'सन्ध्याय कलिहरमण उवहारणवता कलिजए
बाल' (उप ७२८ टी) ।

उवहार पु [उपहार] १ मंद, उवहार (प्रति
७४) । २ विस्तार, फैलाव, 'परासमुद्रयोध-
हारेहि सज्जको बेक दीवयत' (रूप) ।

उवहारणया देखो उवहारणया (राज) ।

उवहारिअ वि [उपधारित] धनधारित,
निधन (सूमा २, ७) ।

उवहारिआ औ [उ] बोहनेवाली औ (मा
उवहारी ७३१, द १, १०८) ।

उवहारुल्ल वि [उपहारयन्] उपहारवाला
(सक्ति २०) ।

उवहाम पु [उपहास] हँसी, ठट्ठा, दिलागी
(हे २, २०१) ।

उवहास वि [उपहास्य] हँसी के योग्य,
'मुसमत्यो वि ह वा,
जणपग्रिजणं सययं निवेवेह ।
सा धम्मि । साव लोए, ममव
उवहासय सहइ' (सुर १, २३२) ।

उवहासणिज वि [उपहसनीय] हंस्याम्यद
(पजम १०६, २०) ।

उवहि पुं [उदधि] समुद्र, सागर (से ५, ४०,
४२, नवि) ।

उवहि पुंजी [उपाधि] १ माया, कपट
(भावा) । २ कर्म (सूमा १, २) । ३ उप-
करण, माधन : 'उविहा उवहो पएणता'
(ठा ३: भोय २) ।

उजहिंद सब [उप + दिणह] पर्यंत करना,
भूमना : 'वित्तपय उजहिंद' (संवाप ४१) ।

(श्यामा १, १६, गडड) । २ वि सहित, युक्त
'गुणसंप्रोवनीयो' (विने ३४११) ।

उपवीड ॥ [उपवीड] उमर्दन, 'सिबिणो-
ववीडं धालिपणएण गाढ पोडिमा' (रंभा) ।

उपवृह सक [उप + वृह्] । १ पुष्ट करना ।
२ प्रशंसा करना, तारीफ करना । सकृ-
उपवृहैऊण (दर्शन ३) । क. उपवृहैयव
(वसन ३) ।

उपवृहण न [उपवृहण] । १ वृद्धि, पोषण
(पण २, १) । २ प्रशंसा, श्लाघा (पचा २) ।
उपवृहा स्त्री [उपवृहा] ऊपर देखो, उपवृह-
विरोधो बच्छल्लभमाणे षट्ठ' (पडि) ।

उपवृहणिय वि [उपवृहणीय] पुष्टि-कर्ता
(निष् ८) । स्त्री. पट्ट विरोध, राजा वगैरह के
भोजन समय में उपभोग में आनेवाला पट्टा
(निष् ६) ।

उपवृहिय वि [उपवृहिय] । १ वृद्धि को प्राप्त,
पुष्ट (सं १५) । २ प्रसन्नित (उप वृ ३८६) ।
उपवृहियि वि [उपवृहियि] । १ पोषक, पुष्टि-
कारक । २ प्रशंसक (सण) ।

उपवृहिय वि [उपवृहिय] युक्त, सहित (श्यामा १,
१, श्रौप वसु, नुर १, ३४; विने ६६६) ।

उपसक्रम सक [उपस + क्रम्] समीप
आना । वक्र. उपसक्रमत (वन ५, १, १०) ।
उपसंलङ सक [उपस + लङ्] रंघना,
पकाना । कवच. उपसंलङ्घिज्जमाण (आचा
२, १, ४, २) ।

उपसंला स्त्री [उपसंलया] यथावस्थित पदार्थ-
ज्ञान (सूत्र १, १२) ।

उपसंगह सक [उपस + गृह्] उपकार
करना । कर्म उपसंगहिक (सं १६१) ।

उपसंगर मङ्ग [उपस + ङ्] उपसंहार करना ।
उपसंगरमि (भवि) ।

उपसंगरिय देखो उपसंहरिय (भवि) ।
उपसंधिय वि [उपसंध्य] जिसका उपसंहार
किया गया हो वह, समापित (विने १०११) ।

उपसचि सक [उपस + चि] संलय करना ।
सह. उपसंचियि (सण) ।

उपसंथिय नि [उपसंथिय] । १ समीप में
स्थित । २ उपस्थित (सण) ।

उपसंत वि [उपसंता] । १ श्रोत्रादि विचार-

रहित (सूत्र १, ६, धर्म ३) । २ नष्ट, अप्रपत्,
'उपसंतरयं करोह' (राय) । ३ पु. ऐरवत सेन
के स्वनाम-धन्य एक तीर्थङ्कर-देव (पव ७) ।
'मोहं पुं' [मोह] ग्यारहवां गुण-स्थानक
(सम २६) ।

उपसंति स्त्री [उपसंति] उपशम (आचा) ।
उपसंधारिय वि [उपसंधारित] संकलित
(निष् १) ।

उपसपज्ज [उपस + पज्] । १ समीप में
जाना । २ स्वीकार करना । ३ प्राप्त करना ।
उपसपज्ज (सं १६१) । वक्र. उपसपज्जत
(वव १) । सकृ. उपसपज्जिता, उपसपज्जि-
त्ताण (सण, उवा) । हेतु. उपसपज्जिउ
(वृह १) ।

उपसंपण्ण वि [उपसंपण्ण] । १ प्राप्त । २
समीप-गत (धर्म ३) ।

उपसंपया स्त्री [उपसंपया] । १ ज्ञान वगैरह
की प्राप्ति के लिए दूसरे पुरुषों के पास जाना
(धर्म ३) । २ अन्य गुरु आदि की सत्ता का
स्वीकार करना (ठा ३, ३) । ३ लाभ, प्राप्ति
(उत्त २६) ।

उपसंहार सक [उपस + हार] । १ हटाना, दूर
करना । २ संकेतना, संकेतना, 'ता उपसंहार
द्वम कोव' (दुय २८५) । सकृ. 'उपसंहारिउं
नीमेमदेवमायं गमो जाव' (धर्म १८) ।

उपसंहरिय वि [उपसंहरित] मंगेडा हुमा,
'वंतरेण य उपसंहरिया माया' (महा) ।

उपसंहार पुं [उपसंहार] सकोचन, संकेत
(द्वय १०) ।

उपसंहार पुं [उपसंहार] । १ समाप्ति । २
उपनय (आ ३६) ।

उपसंग पुं [उपसंग] । १ उपद्रव, बाधा (ठा
१०) । २ भयंकर विरोध, जो धातु के पूर्व में
जोड़े जाने से उक्त धातु के धर्म की विशेषता
बहता है (पणह २, २) ।

उपसंग वि [दि] मन्द, धालसी (दि १,
११३) ।

उपसंगिय वि [उपसंगित] हैरान किया
हुमा (सिरी १११०) ।

उपसङ्ग थक [उप + सङ्] भाग्य करना ।
उपसङ्गि (आचा २, ८, १) ।

उपसज्जण न [उपसज्जण] । १ श्रवण, शीघ्र
(विने २२६२) । २ सन्ध्य (विने ३०५१) ।

उपसत्त वि [उपसत्त] विरोध आसक्तिवाला
(उत्त ३०) ।

उपसह पुं [उपसह] सुरत-समय का शब्द
(वृद्ध) ।

उपसह पुंन [उपसह] । १ प्रच्छन्न राक्षस । २
समीप का शब्द (तदु ५०) ।

उपसप्य सक [उप + सप्] समीप जाना ।
सक्र. उपसप्यिऊण (महा, स ५२६) ।

उपसपि वि [उपसपि] समीप में जाने-
वाला (भवि) ।

उपसपिय वि [उपसपित] पास गया हुआ
(पाम) ।

उपसम पुं [उप + शम्] । १ श्रोत्र-रहित
होना । २ शान्त होना, ठंडा होना । ३ नष्ट
होना । उपसमइ (कप्, कप्त, महा) । कृ-
उपसमियव (कप्) । प्रयो. उपसमेइ (विने
१२८४), उपसमवेइ (वि ५५२) । इ. उप-
समावियव (कप्) ।

उपसम पुं [उपसम] । १ श्रोत्र का समाप्त,
क्षाना (आचा) । २ इन्द्रिय-निग्रह (धर्म ३) ।
३ पन्द्रहवां दिवस (चद १०) । ४ सुहृत्-
विरोध (सम ५१) । 'सम्म न' [सम्यक्कर-
साम्यक्-विरोध (भग) ।

उपसमणा स्त्री [उपसमना] आरिचय प्रयत्न-
'विरोध, जिसमें कर्म-पुद्गल उदय-उदोरादि
के अयोग्य बनए जाय वह (वच) ।

उपसमि वि [उपसमिन्] उपसमनाला
(विने ५३० टी) ।

उपसमिअ पुं [उपसमिक] कर्मों का उप-
शम (पल्लु ११३) ।

उपसमिय वि [उपसमित] उपशम-आप्त
(भवि) ।

उपसमिय वि [उपसमिक] । १ उपशम में
होनेवाला । २ उपशम में सन्ध्य रहनेवाला
(सुपा ६४८) ।

उपसाम सक [उप + शामय] । १ शान्त
करना । २ रहित करना । उपसामेइ (भग) ।
वक्र. उपसामेमाण (राग) । इ. उपसामि-
यव्य (कप्) । संठ. उपसामइत्तु (पंच) ।

उपसाम पु [उपशाम] उपशान्ति (मिरि २३५)।

उपसाम देवो उपसम (विम १३०६)।

उपसामग वि [उपशामक] १ जोषाणि को उपशान्त करवाला (विसे ५२६ भाव ४)।
२ उपशमय सबय खनवाला 'उपसामग मणिगसस हाइ उपसामग तु सम्मत (विम २७२६)।

उपसामग न [उपशामन] उपशान्ति उपशम (स ४६९)।

उपसामगया औ [उपशामना] उपशम (ठा ८)।

उपसामय देवो उपसामग (सम २ विने १३०२)।

उपसामिय वि [ओपशामिक] १ उपशम सबनो। २ पु भाव विशेष मोहोवसम हावो मन्वो उपसामिओ भावो (विने ३४ ६४)। ३ न सम्मन्व विशेष (विसे ५२६)।

उपसामिय वि [उपशमित] शान्त विद्या हुमा (वच १)।

उपसाह सन [उप + अथ] बहना उप साह (सख)।

उपसाहण वि [उपसाधन] 'न्याय' (मण)।

उपसाहिय वि [उपसाधित] तैवार विद्या हुमा (पाउम ३४ ८ सण)।

उपसित वि [उपसिक] विच छिन्ना हुमा (रमा)।

उपमिगेअ सन [उपश्लोक्य] वखन बरना प्रकाश करना। ऊ उपसिलोअइव्ठ (शौ) (मुद्रा १६८)।

उपसुत वि [उपसुत] सोमा हुमा (सि १५ ११)।

उपसुद्ध वि [उपसुद्ध] निर्णय (सुम १ ६)।

उपसुव्य वि [उपसूचित] समुचित (सण)।

उपसेर वि [उप] रज योग्य (दे १ १०४)।

उपसेवण न [उपसेवन] सेवा परिचय (वच ६)।

उपसेवय वि [उपसेवक] सेवा करनेवाला भव (मवि)।

उपसोभ भक [उप + शुभ] सोभना विरा जया। वह उपसोभमाण उपसोभमाण (मण याया १, २)।

उपसोभिय वि [उपशोभित] मुशोभित विराजित (मौप)।

उपसोहा औ [उपशोभा] सोभा विभूषा (पुर ३ १०४)।

उपसाहिय वि [उपशोधित] निर्जन किया हुमा शुद्ध किया हुमा (याया १ १)।

उपसोहाइ देवो उपसोभिय (मुग ५ मवि साय ६६)।

उपसग देवो उपसग (कस)।

उपसग्य पु [उपाभय] जन साधुमा के निवास करन का स्थान (सम १८८ भाव १७ भा उप ६४८ टी)।

उपसा औ [उपाभा] द्वप (वच १)।

उपस्सिय वि [उपाभित] १ द्वपी (वच १)।

२ मज्झिहत। समीप म स्थित। ४ न द्वप (राज)।

उपसुदि औ [उपसुति] प्रसन्न मन को जानन के लिए ज्योतिपी को कहा जाना प्रसन्न भास्य (हास्य १३०)।

उपह स [उपअथ] धानो उपस (हुमा हे २ १३८)।

उपह म [दि] देखो मथ को बननवाला मयय (पड)।

उपहट्ट सक [समा + रभ] शुरू करना धारम्भ करना। उपहट्ट (प)।

उपहट्ट वि [उपट्टव] १ उपदीवित उपस्था भित (राज)। २ भोजन स्थान म अर्पित भोजन (ठा ३ १)।

उपहण सक [उप + हण] १ विनाश करना। २ भाषात पहुचाना। उपहणइ (उप)। कय उपहम्म (प)। वह उपहण्यत (राज)।

उपहणण न [उपहनन] १ भाषात। २ विनाश (ठा १०)।

उपहत्थ सन [समा + रच] १ रचना बनाना। २ उत्पन्नित करना। उपहत्थइ (ह ४ ६५)।

उपहत्थिय वि [समारचित] १ बनाया हुमा। २ उत्पन्नित (हुमा)।

उपहम्म देवो उपहण।

उपहय वि [उपहय] १ विनाशित (प्रमू १३५)। २ दुषित (वह १)।

उपहर सन [उप + ह] १ पूजा करना।

२ उपस्थित करना। ३ अर्पण करना। उप हरइ (ह ४ २५६)। भूमा उपहरिमु (ठा ६)।

उपहम सन [उप + हस्] उपहास करना हसी करना। ह उपहसणिज (स ३)।

उपहसिअ वि [उपहसित] १ जिसका उप हास किया गया हो वह (वि १५५)। २ न उपहास (तडु)।

उपहा औ [उपघा] माया कप (धम ३)।

उपहाण न [उपघा] १ तकिया उलीसा (दे १ १४० मुर १२ २५ मुग ४)। २ सपथया (मूय १ १ २ २१)। ३ उमापि सपथपि कलिहमण उपहाणवता कलिजए काय (उप ७२८ टी)।

उपहार पु [उपहार] १ भन उपहार (प्रति ७४)। २ निस्तार पलाव पहासमुप्रोव हारिह मन्वो वेन दीवयत (मण)।

उपहारणया वेवो उपधारणया (राज)।

उपहारिअ वि [उपधारित] धनधारित निवित (सूय २ ७)।

उपहारिआ औ [दि] दोहनवाली औ (गा उपहारी ७३१ दे १ १०८)।

उपहारुल वि [उपहारण] उपहारवाला (मनि २०)।

उपहाम पु [उपहास] हसी ठडा विलगी (हे २ २०१)।

उपहाम वि [उपहास्य] हसी के योग्य सुसमत्वा वि हु जो

जणयप्रगिय सपय निवेवेइ।

सौ अम्मि। ताव मोए, ममव

उपहासय लहइ (पुर १ २१२)।

उपहासणिज वि [उपहसनीय] हास्यास्पद (पजम १०६ २०)।

उपहि पु [उपधि] सम सागर (सि ५ ४० ४२ मवि)।

उपहि पु औ [उपाधि] १ माया कपट (भावा)। २ कम (मूय १ २)। ३ उप बरण साधन लिबिहा उपही परणत्ता (ठा ३ भाय २)।

उपहिद सक [उप + हिण्ड] पर्यन्त करना धूमा 'निकय' उपहिद (सोवप ४१)।

उचहिय वि [उपहित] ? उपदौकित, अप्रति ।
२ निहित, स्थापित (भाचा, विसे १३७) ।
३ न, उपदौकन अपेण (निबु २०) ।

उचहिय वि [औपाधिक] माया ते प्रच्छन्न
विचरनेवाला (शाया १, २) ।

उचहुज सक [उप + भुज] उपभोग करना,
कार्य में लाना । उचहुजइ (पि ५०७) । कवक
उचहुजत (पि ५४६) ।

उचहुत्त देखो उचमुत्त (पाप से १०, ४१) ।

उवाइम्म सक [उपाति + क्रम] उत्तपन
करना । सक, उवाइरम्म (भाचा २,
८, १) ।

उवाइण सक [उपाति + नी] उजारना । सक,
उवाइणित्ता (भाचा २, २, २ ७) ।

उवाइण सक [उप + याच्] मनीती करना,
किसी काम के पूरा होने पर किसी देवता
की विशेष प्रार्थना करने का मानसिक
सकप करना । हेह, 'जति ए अह देवाणु-
लिया । दारमं वा दारिय वा पयामि, ताए
अह तुमं जाम च दाय च भाग च अकल-
यणिहं च अणुबद्धसामि ति कट्ठु भीत्ताइय
'उवाइणित्ता' (विपा १, ७) ।

उवाइण सक [उपा + दा] १ ग्रहण करना ।
२ प्रवेश करना । हेह उवाइणित्ता (ठा
३) । प्रयो, 'त सेय खलु मम जित्तपुत्त
रणो सताए तन्नाए रहियाए अविठ्ठाए
सम्भूताए जिणएणताए भावाए अमिण
मणहुवाए पयमट्ठ उवाइणित्ता' (शाया
१, १२) ।

उवाइणाय सक [अति + क्रम] १ उत्तपन
करना । २ गुजारना, पसार करना । उवा-
णवेइ । वहु उवाइणायेंत । हेह उवाइणाय-
वेत्ताए (कच), उवाइणायित्ताए (कप)
'ते गामसि वा जाम सनिवेसि वा बहिया
मे ए सनिविट्ठ पेहए कप्पइ निम्माणाए वा
निग्गणीए वा तदिदवस भित्तापरियाए
गणूए पणिमित्तए नो से कप्पइ त रयणि
तत्थेव उवाइणायित्ताए । जे खलु निग्गमे वा
निग्गमे वा त रयणि तत्थेव उवाइणायवेइ,
उवाइणायेंत वा तादग्गइ ये दुहमो सोइक-
ममाणे भावग्गइ पजमासियं पट्ठादुहए

अणुणाइय (कस), 'नो से कप्पइ त रयणि
उवाइणायित्ता' (कप) ।

उवाइणायि वि [अतिक्रान्त] १ उत्तपित ।
२ गुजारा हुआ, पसार किया हुआ, बिताया
हुआ । 'नो कप्पइ निग्गयाए वा निग्गयीए वा
अवरा वा ४ पढमाए पोत्तीए पडिग्गाहेत्ता
पच्छिम पोत्तिं उवाइणायित्ताए । सेय अहए
उवाइणायि वि सिया, त नो अण्णया उज्जवा'
(कस) ।

उवाइय देखो उवयाइय (शाया १, २, सुपा
१०, महु) ।

उवाइं ली [उलान्ती] पोताकी नायक विद्या
की प्रतिपन्नमृत एक विद्या (विसे २४५४) ।

उवाएज } वि [उपादेय] दास ग्रहण करने
उवाएय } योग्य (विसे स १४८) ।

उवागच्छ } सक [उपा + गम्] समीप में
उवागम } जाना । उवागच्छइ (भग कप) ।
अवि उवागमित्तति (भाचा २ १ १, २)
सह उवागच्छित्ता (भग कप) । हेह
उवागच्छित्ताए (कप) ।

उवागम पु [उपागम] समीप में आगमन
(राज) ।

उवागमण न [उपागमन] १ समीप में
आगमन । २ स्थान, स्थिति (भाचानि
३११) ।

उवागय वि [उपागत] १ समीप में आया
हुआ (भाचा २ ३, १, २) । २ प्राप्त,
'एगदिवसपि जीवो पवन्नमुज्जागमो अणल्ल
मणी' (उव) ।

उवाडिय वि [उपादित] उवाड हुआ (विपा
१, ६) ।

उवाणया } ली [उपानह] झूठा (वह)
उवाणहा } 'पुत्तपुत्तायिमाओ उवाणहामो
पणु ठविमाओ' (सुपा ६१०, सूम १, ४,
२, ६) ।

उवादा सक [उपा + दा] ग्रहण करना ।
कर्म, उवादीवति (भग) । सह उवादाय,
उवादिप्ता (भग) । कवक उवादीयमाण
(भाचा २) ।

उवादाण न [उपादान] १ ग्रहण, स्वीकार ।
२ कार्यरूप में परिणत होनेवाला कारण ।
३ जिसका ग्रहण किया जाय वह, प्रदा

'नामोवादाणे जिय मुच्छा लोभेति वो तगो'
(विसे २६००) ।

उवाडिय वि [उपजग्घ] उपभुक्त (राज) ।

उवाय पु [उपाय] १ हेतु साधन (उत
३२) । २ दृष्टान्त, 'उवाओ सोसाप्पमेण य
विधप्पमेण य' (भाचू १) । ३ प्रतीकार (अ
४, ३) ।

उवाय सक [उप + याच्] मनीती करना ।
वहु, उवायमाण (शाया १, २ १७) ।

उवायण न [उपायन] भेंट, उपहार, नज-
राना (उप २४४, सुपा २२४, ४१०,
मड ७) ।

उवायणाय देखो उवाइणाय । उवायणवेइ ।
वहु उवायणायेंत । हेह उवायणायवेत्ताए
(कच) उवायणायित्ताए (कप) ।

उवायण देखो उवादाण (पच्छु १२ स २,
विसे २१७६) ।

उवायाय वि [उवायात्] समीप में आया
हुआ (निर १, १) ।

उवाल्ल वि [उपाल्ल] आल्ल (स १३१) ।
उवाल्ल सक [उपा + लम्] उलाहना
देना । उवाल्लमइ (कप) । वहु उवाल्लमव
(पज्ज १६, ४१) । सह उवाल्लमिच्छा (वह
४) । क उवाल्लमणिज्ज (माल १, ४४) ।

उवाल्ल पु [उपाल्ल] उलाहना (शाया १-
१, वा ४) ।

उवाल्ल वि [उपाल्ल] जिसको उलाहना
दिया गया हो वह 'उवाल्लो य सो सिवो
अपणो' (निबु १, माल १६७) ।

उवाल्ल सक [उपा + लम्] उलाहना
देना । अवि उवाल्लिस्स (भाप) ।

उवायत्त पु [उपायत्त] वह भय जो सेटने
से थम-मुच हुआ हो (वाह ७०) ।

उवायत्तिद (शी) वि [उपायत्तित्त] उपभुक्त
अथ से युक्त (वाह ७०) ।

उतास सक [उप + आस्] उतासना
करना, सेवा करना, 'पुत्तपुत्तायणो उतासेज्जा
सुपरणं सुतवस्सि' (सूम १, ६) । वह,
उतासमाण (अ ६) ।

उतास पु [अवराज] लाली जाह आयाय
(ठा २, ४, न मा) ।

उव्वट्टण न [उव्वट्ठन] तुले से उसके बीच को भ्रमन करना (पिंड ६०३) ।

उव्वट्टण न [अपवर्त्तन] देखो उव्वट्टणा = अपवर्त्तना (वित्ते २५१५) ।

उव्वट्टणा छी [उव्वट्ठना] १ मरण, शरीर से जीव का निकलना (आ २, ३) । २ पार्व का परिवर्त्तन (भाव ४) । ३ जीव का एक प्रयत्न, जिसने कर्म-परमाणुओं को सधु स्थिति दीर्घ होती है, करण विशेष (भग ३१, ३२) ।

उव्वट्टणा छी [अपवर्त्तना] जीव का एक प्रयत्न, जिससे कर्मों की दीर्घ स्थिति का ह्रास होता है (वित्ते २७१५ टी) ।

उव्वट्ठिअ वि [उव्वट्ठित्त] साफ किया हुआ, प्रमाजित, 'बरीसेण वावि उव्वट्ठिए' (पिंड २७९) ।

उव्वट्ठिय वि [उव्वट्ठत्त] किसी गति से बाहर निकला हुआ, मृत, 'भाउकलएण उव्वट्ठिया समाणा' (पह १, १) ।

'उव्वट्ठिय वि [उव्वट्ठित्त] १ जिसने किसी भी द्रव्य से शरीर पर का तेल बगैरह का मेल दूर किया हो यह, 'समो तप्यट्ठिओ' केव भ्रमगियो उव्वट्ठिओ उरहल्लज्जयेहि पमज्जिमी' (महा) । २ प्रभावित, किसी पद से भ्रष्ट किया हुआ (पिंड) ।

उव्वट्ठइ वि [उव्वट्ठइ] वृद्धि-प्राप्त (भावम) । उव्वण वि [उव्वण] प्रवण, उद्धृत (उप ७०; गउड, धम्म ११ टी) ।

उव्वत्त देखो उव्वट्ठ = उ + वृत् । उव्वत्तइ (वि २८६) । वड्ठ, उव्वत्तत्त, उव्वत्तमाणा (से ५, ४२; स २५८, ६२७) । कवड्ठ, उव्वत्तज्जमाणा (आमा १, ३) । संड्ठ, उव्वत्तिय (भवि) ।

उव्वत्त देखो उव्वट्ठ (दे) ।

उव्वत्त सव [उ + यत्त] १ छाया करना । २ उतटा करना । उव्वत्तत्त (पव ७१) संट्ठ उव्वत्तिया (दस ५, १, ६३) ।

उव्वत्त वि [उव्वत्त] छाया करनेवाला (पव ७१) ।

उव्वत्त वि [उव्वट्ठत्त] १ उत्तान, चित्त (सि ५, ६२) । २ उन्नमित (हे ४, ४३४) । ३ जिसने पार्व को घुमाया हो वह (भाव ३) ।

४ ऊर्ध्व-स्थित, 'सो उव्वत्तविसाणो संववसमो जामो' (महा) । ५ घुमाया हुआ, फिराया हुआ (प्राप) ।

उव्वत्त वि [अपवृत्त] उतटा रहा हुआ, विपरीत स्थित (से १, ६१) ।

उव्वत्तण न [उव्वट्ठन] १ पार्व का परिवर्त्तन (गा २८३, निवृ ४) । २ ऊंचा रहना, ऊर्ध्व-वर्त्तन (भाव ११ भा) ।

उव्वत्तिय वि [उव्वत्तित्त] १ परिवर्त्तित, चक्र-कार घुमा हुआ (स ८३), 'भविमि व वणत्तएहि उव्वत्तियम व सवत्तवुहाए' (सुर १२, १६६) ।

उव्वट्ठ देखो उव्वट्ठइ (महा) ।

उव्वत्त सव [उ + वप्] उतटो करना, पीछा निकाल देना । वड्ठ, उव्वत्तमत्त (से ५, ६; गा ३४१) ।

उव्वत्तमिअ वि [उव्वत्तम्] उतटो किया हुआ, वमन किया हुआ (प्राप) ।

उव्वत्त वड्ठ [उ + वृ] शेष रहना, बच जाना, 'मुत्तहाए' बंठाए जमुत्तरेइ देग्गाह साहूए तमावरेण' (उप २११ टी) । वड्ठ, उव्वत्तसत्त (गट) ।

उव्वत्त पुं [दे] धर्म, ताप (दे १, ८७) ।

उव्वत्तिय वि [दे] १ अधिक, बचा हुआ, अवशिष्ट (दे १, १३२; पिंग, गा ७७४; सुपा ११, ४३२; ओष १६८ भा) । २ शनीपित, अनभीष्ट । ३ निश्चित । ४ अवशिष्ट । ५ न. ताप, परमी (दे १, १३२) । ६ वि. शक्ति-भ्रान्त, उलझित, 'परव्वहरणविरया निरया-इदुहाए वे खलुकरिया' (सुपा ३६८) । उव्वत्तिय न [अपवर्त्तिय] कोटरी, छोटा घर (सुर १४, १७४) ।

उव्वत्त सव [उ + वत्त] १ उपवेपन करना । २ पीछे सौटना । हेड्ठ, उव्वत्तित्तए (धम) ।

उव्वत्त सव [उ + वल्ल] उन्मूलन करना । उव्वत्तए । वड्ठ, उव्वत्तमाणा (पंव ५, १६६) ।

उव्वत्तल न [उव्वत्तल] १ शरीर का उपवेपन-विशेष (आमा १, १, १३) । २ भासित, धम्मज्जन (हृद ३, धीप) ।

उव्वत्तल छी [उव्वत्तल] १ उन्मूलन । २ उव्वत्त-योग्य धर्म-ग्रहण (पंव ३, ३४४) ।

उव्वत्तिय वि [उव्वत्तित्त] पीछे सौटा हुआ (महा) ।

उव्वत्त वि [उव्वत्त] उजाड़, वसति-रहित (सुपा १८८, ४०६) ।

उव्वत्तिय वि [उव्वत्तित्त] अपर देखो (गा १६४ सुर २, १११; सुपा ५४१) ।

उव्वत्ती छी [उव्वत्ती] १ एक भ्रष्टरा (सण) । २ रावण को एक स्तनाम-व्याप्त पत्नी (पउम ७४, ८) ।

उव्वट्ठ सक [उ + वट्ठ] १ धारण करना । २ उठाना । उव्वट्ठइ (महा) । वड्ठ, उव्वट्ठइ, उव्वट्ठमाणा (पि ३६७, मे ६, ५) । कवड्ठ, उव्वट्ठमाणा (आमा १, ६) ।

उव्वट्ठण न [उव्वट्ठन] १ धारण । २ उत्थापन । (गउड, गट) ।

उव्वट्ठण न [दे] महान् भावित (दे १, ११०) ।

उव्वत्ता छी [दे] धर्म, ताप (दे १, ८७) ।

उव्वत्ता } धम [उ + वा] १ सूक्ष्मता, उव्वत्ता } शुद्ध होना । उव्वत्ता, उव्वत्ताध (पद; हे ४, २४०) ।

उव्वत्ता वि [उव्वत्ता] शुष्क, सूखा (गउड) । उव्वत्ता अ वि [दे] खिल, परिश्रान्त (दे १, उव्वत्ताइ अ १०२, हृद १; वव ४, पाप, गा ७५८, सुपा ४१६) ।

उव्वत्ताउल न [दे] १ गीत । २ उपवन, वगीचा (दे १, १३४) ।

उव्वत्ताडल न [दे] १ विपरीत मुरत । २ मर्याद-रहित मैथुन (दे १, १३१) ।

उव्वत्ताइ वि [दे] १ विस्तीर्ण, विशाल । २ दु खरहित (दे १, १२६) ।

उव्वत्ताण देखो उव्वत्ताअ = उव्वत्ता (सुर १६६) । उव्वत्ता देखो उव्वत्ताअ = उव्वत्ता (सुर १, ४, १, २) ।

उव्वत्ता (प्राप) सव [उ + यत्त] याप करना, छोड़ देना । धर्म, उव्वत्ताइइ (हे ४, ४३८) ।

उव्वत्ता सव [क] बहना, बोलना । उव्वत्ताइ (पद) ।

उव्वत्ता सव [उ + वास] १ दूर करना । २ देशनिष्ठा करना । ३ उजाड़ करना । उव्वत्ताइ (गट, पिंग) ।

उव्वत्तामिय वि [उव्वत्तासित्त] १ उजाड़ किया हुआ (पउम २७, ११) । २ देश-बाहर

विषा हुमा (मुषा ५४२) । ३ दूर विषा हुमा (गा १०६) ।

उच्चाह पु [दे] धर्म, तान (दे १, ८७) ।

उच्चाह पु [उच्चाह] विवाह (दे २१) ।

उच्चाह सब [उद् + दाधय्] विशेष प्रकार से पीठित करना । कबक, उच्चाहि-ज्जामाण (भावा लाया १, २) ।

उच्चाहिअ [दे] उत्तिम, फका हुमा (दे १, १०६) ।

उच्चाहुल न [दे] १ उत्सुकता, उत्सुक (भवि, दे १, १३६) । २ वि. द्वेष्य, अग्रीहिकर (दे १, १३६) ।

उच्चाहुलिय [दे] उत्सुक, उत्सहित (भवि) ।

उच्चिआइअ वि [उच्चैदित] उल्लिखित (वि ३, २६) ।

उच्चिक न [दे] प्रलपित, प्रलाप (पद्) ।

उच्चिगग वि [उच्चिग] १ जिल । २ भीष, घबडाया हुमा (दे २, ७६) ।

उच्चिगगर वि [उच्चैगमील] उच्चैग करने वाला (भावा ३८) ।

उच्चिज्ज शेको उच्चिय । उच्चिज्ज (प्राकृ ६८), उच्चिज्जति (दे ८६) । सकृ उच्चिज्जऊण (धर्मवि ११६) ।

उच्चिज्ज वि [दे] १ चकित, भीत । २ कलाव, केश-युक्त (पद्) ।

उच्चिज्जि वि [दे] १ अधिक प्रमाण वाला । २ मर्यादा रहित, निर्लज्ज (दे १, १३४, वच० पत्र २६७-२९६ पद्य) ।

उच्चिज्जण शेको उच्चियग (वि २१६) ।

उच्चिज्ज वि [उच्चिज्ज] १ ऊँचा गया हुमा, उच्चिज्ज (पद्य १, ४) । २ गम्भीर, गहृष (सम ४४, लाया १, १) । ३ विद्ध, 'बीलप-सर्पहि धरणिपत्ते उच्चिदो' (सभा ८७) ।

उच्चिज्ज वि [उच्चिज्ज] जिसकी ऊँचाई का माप किया गया हो वह (पद्य १५८) ।

उच्चिज्ज देको उच्चियग (दे २, ७६, सुर ४, २४८) ।

उच्चिय अक् [उद् + विज्] उच्चैग करना, उदासीन होना, पिल होना, 'को उच्चियज्ज नरवर । मरणल भवस गच्छे' (स १२६) ।

वक् उच्चियमाण (स १३६) ।

उच्चियणिज्ज वि [उच्चैजनीय] उच्चैग प्रद (पद्य १६, ३६, मुषा ५६७) ।

उच्चियेयग न [उच्चैरेचन] खाली करना, 'एव च भरिर्हारेयस्य भुवन्तस्य' (काल) ।

उच्चिल्ल अक् [उद् + चेल] १ चलना, कपना । २ सक. वेष्टन करना । वक् उच्चिल्लन, उच्चिल्लमाण (मुषा ८८, उप ५ ७७) ।

उच्चिल्ल अक् [प्र + स्] फैलना, पसरना । उच्चिल्लइ (भवि) ।

उच्चिल्ल अक् [उद् + चेल] १ सङ्कलना इतर-उच्चैर चलना 'उच्चिल्लइ सयणीए देको प्रास्तनचवणुव' (धर्मवि ११२) ।

उच्चिल्ल वि [उद् + चेल] बज्जल, चपल (मुषा १४) ।

उच्चिल्लि वि [उच्चैलिट्] चलनेवाला, हिलनेवाला (मुषा ८८) ।

उच्चिय अक् [उद् + विज्] उच्चैग करना, खिल होना । उच्चिल्लइ (पद्) ।

उच्चियज्ज १ देको उच्चिय । उच्चियज्ज उच्चै-उच्चै १ अइ (प्राकृ ६८) ।

उच्चियज्ज वि [उद् + विज्] १ ऊँच, ऊँचैय युक्त (पद्) । २ उच्चैय वच वाला (पाप) ।

उच्चिय सक [उत् + व्यय्] १ ऊँचा फँकना । २ ऊँचा जाना, उठना 'सि जहाएण-मए केह पुरिते उच्चै उच्चियइ' (वि १२६) ।

वक्, 'मएसावि उच्चियइताइ अयेयाई मात सयाइ पासति' (लाया १, १७ टी—धन २३१) । वक्, उच्चियमाण (भग १६) ।

सकृ उच्चियहिता (वि १२६) ।

उच्चिय पु [उच्चि] स्वाम-व्यापन एक धानीयिक मत का उपासक (भग ८, ५) ।

उच्चो पु [उच्चो] ग्रथिनी (सि २, ३०) । 'स पु [रा] राजा (कुमा) ।

उच्चो देको उच्चो (कुमा, दे १, १२०) ।

उच्चो वि [दे] उत्साव, खोटा हुमा (दे १, १००) ।

उच्चो वि [उच्चि] उत्साव 'तस्म उच्चोस उच्चोस समाणस' (वि १२६) ।

उच्चो सब [अय + पीडय्] पीडा पहुँचाना, मार-पीट करना । वक् उच्चोले-माण (राज) ।

उच्चोलीय वि [अपपीडक] लज्जा-रहित करनेवाला, शिष्य को प्रायश्चित्त लेने में शरम को दूर करने का उपदेश देनेवाला (ग्रह) (भग २५, ७, २ ५६) ।

उच्चोसमाण देको उच्चो ।

उच्चोण १ वि [दे] १ उच्चिन । २ उत्तिक । उच्चोण १ ३ शूय (दे १, १२३) । ४ उच्चो, उच्चोण (दे १, १२३, सुर ३, २०५) ।

उच्चो वि [उद् + व्यट्] १ धारण किया हुमा, पटना हुमा (कुमा) । २ ऊँचा लिया हुमा, ऊपर धारण किया हुमा (सि ५, ५४, ६, ११) । ३ परिणीत, हृत विवाह (मुषा ४५६) ।

उच्चोअणाअ वि [उच्चैजनीय] उच्चैग-कारक (नाट) ।

उच्चो १ [उच्चो] १ शोक, दिलीपी (ठा ३, ३) । २ व्याकुलता (भग ३, ६) ।

उच्चो सक [उद् + व्यट्] १ बोधना । २ प्रयत्न करना, बधन-मुक्त करना । उच्चोइ (पद्), उच्चोइज (भावा २, ३, २, २) ।

उच्चोइ न [उच्चोइ] १ बन्धन । २ वि. बन्धन रहित किया हुमा (राज) ।

उच्चोइ वि [उच्चोइ] १ बन्धन रहित किया हुमा । २ परदेष्टि (दे ४, ५६) ।

उच्चोत्ताल न [दे] भविष्ठिन विज्ञाना, निरन्तर रोवन (दे १, १०१) ।

उच्चो देको उच्चो (कुमा, महा) ।

उच्चोय वि [उच्चोय] उच्चैग-कारक (रमण ४०) ।

उच्चोयण १ वि [उच्चैजनक] उच्चैग-जनक उच्चोयण १ (भाउ, पद्य १, १) ।

उच्चोयण पुन [उच्चैजनक] एक नरक-न्याय (देव २ २८) ।

उच्चो अक् [प्र + स्] फैलना । उच्चोइ (पद्) ।

उच्चो वि [उच्चो] उच्चैजित (सि २, ३०) ।

उच्चो वि [उच्चो] फैला हुमा, प्रसर (मान ४४२) ।

उच्चो देको उच्चोइ । उच्चोइ (दे ४, २२३) । वक् उच्चैल्लज्ज (कुमा) ।

उच्चो सब [उद् + चेल] १ सत्वर जाना । २ व्याप करना । ऊँचा उठना, ऊँचा

जाना । ४ अक. पैतला, पसरला । वट्ट.
उब्बेल्लंत (पि १०७) ।

उब्बेल्ल वि [उद्बेल्ल] १ उच्छलित, उछला
हुआ । 'उब्बेल्ला सलिलनिही' (पउम ६, ७२) ।
२ प्रवृत्त, फेला हुआ (प्राप्ति) । ३ उद्भिन्न,
'हरिस्त्रवमुत्प्रेतपुलयाए' (स ६२५) ।

उब्बेल्लिअ वि [उद्बेल्लित] १ कम्पित
(गा ६०५) । २ उत्सारित (वृह ३) । ३
प्रसारित (स ३३५) ।

उब्बेल्लिउ वि [उद्बेल्लितु] सत्वर जाने-
वाला (कुमा) ।

उब्बेय देवी उब्बिय । उब्बेयइ (पट्ट) ।
उब्बेय देवी उब्बेय (कुमा मुर ४, ३६,
११, १६४) ।

उब्बेयवि वि [उद्बेयज] उब्बेय कारण,
'धडा धिस्सेही, धवप्रवाइ सयम्माइ चवला ।
धका बोहुएसीला, सीसा उब्बेयवा गुल्ला'
(उव) ।

उब्बेयणय वि [उद्बेयजन] उद्बेय-जनक
(पव ५५) ।

उब्बेयय देवी उब्बेयग (स २६२) ।

उब्बेयसरपु [उब्बेयसर] इस नामका एक
राजा (कुमा) ।

उब्बेह पुं [उद्बेय] १ ऊँचाई (सम १०५) ।
२ गहराई (ठा १०) । ३ जमीन का अवगाह
(ठा १०) ।

उब्बेहलिया श्री [उद्बेयपालिना] वनस्पति-
विशेष (पट्ट १) ।

उसड्ड वि [दे] ऊँचा (राय) ।

उसड्ड देवी उसड्ड = दे (पय २) ।

उसण पुं [उशनस] ग्रह विशेष, शुक्र,
भार्गव (प्राप्ति) ।

उसणसेण पुं [दे] वनप्रद (दे १, ११८) ।
उसत्त वि [उत्सत्त] ऊपर धँसा हुआ (एणा
१, १) ।

उसन्न [उत्सन्न] भट्ट मति विशेष की एक
जाति (सं ६१) ।

उसत्तिपणी देवी उत्सत्तिपणी (जी ४०, विदे
२७०६) ।

उसम पुंन [वृषभ] एक देव निमान (देवद
१४०) ।

उसम पुं [वृषभ, वृषभ] १ स्वनाम-
व्यात प्रथम जिनदेव (सम ४३, कप्प) । २
वैत, खडि (जीव ३) । ३ वेष्टन-पट्ट (पव
२१६) । ४ देव-विशेष (ठा ८) । ५ ब्राह्मण-
विशेष (उत्त १) । 'कंठ पुं [कण्ठ] १ वैत
ना गता । २ खन-विशेष (जीव ३) । 'कूड
पुं [कूट] पर्वत विशेष (ठा ८) । 'णाराय
न [नाराच] संहनन-विशेष, शरीर-वचन-
विशेष (पव) । 'दत्त पुं [दत्त] ब्राह्मण-
कुल ग्राम का रहनेवाला एक ब्राह्मण,
जिसके घर भगवान् महावीर भवतरे (वि
कप्प) । 'पुर न [पुर] नगर विशेष (पि
२, २) । 'पुरी लो [पुरी] एक राजधानी
(ठा ८) । 'सेण पुं [सेन] मगधवा क्षत्रप-
देव के प्रथम गणपति (प्राप्ति १) ।

उसर (पै) पुंजी [उत्तर] ऊँट (पि २२६) ।

उसलिअ वि [दे] रोमाञ्चित, पुलकित
(पट्ट) ।

उसह देवी उसम (हि १, १११, १३३,
१४१, पट्ट, कुमा, सम १५२, पउम ४,
१५) ।

उसहसेण पुं [वृषभसेन] तीर्थंकर-विशेष ।
२ जिनदेव की एक शास्त्रीय प्रतिमा (पव
६६) ।

उसा थ [उपस] प्रमात-कात (गडड) ।

उसिण वि [उष्ण] गरम, तप्त (कप्प ठा ३,
१) । २ पुन गरम स्पर्श (उत्त १) । ३ गरमी,
ताप (उत्त २) ।

उसिय वि [उत्तुत] ध्यान्त, फैला हुआ (सम
१३७) ।

उसिय वि [उपित] रूढ़ा हुआ, निश्चित (वि
८, ६३, भत्त १२८) ।

उसिर देवी उसीर = उशीर (सूय १, ४,
२, ८) ।

उसीर न [उशीर] गुणवि कृष्ण विशेष, छाया
(पण्ह २, ५) ।

उसीर न [दे] कमल दण्ड, विज (दे १,
६५) ।

उसु पुं [इषु] १ बाण, शर (सूय १, ५,
१) । २ धनुषकार जेज का बाण-म्यानीय
शेज-परिमाण

'धणुवरगाभी नियमा, जीवावरगं विरोहत्ताए ।
सेसस्स छट्ठभागे, जं मूलं तं उसू होइ'
(जी १) । 'कार, गार, यार पुं [कार]
१ पर्वत विशेष (सम ६६, ठा २, ३, राज) ।

२ इस नाम का एक राजा । ३ स्वनाम व्यात
एक पुरोहित (उत्त १४) । ४ वि. बाण
बनानेवाला (राज) । ५ स्वनाम-व्यात एक
नगर (उत्त १४) ।

उसुअ पुं [दे] दीप, इषण (दे १, ८६) ।

उसुअ न [इषु] १ बाण के प्रकार का
एक धातुपण । २ तिनक (पिड ४२४) ।

उसुअ वि [उत्सुक] उत्कण्ठित (कुमा
२२४) ।

उसुयाल न [दे] उड्डाल (राज) ।

उसुयाल पुं [दे] परिभा, शत्रु सैन्य का नाश
करने के लिए ऊपर से भ्राष्ट्रावित गर्त-विशेष
(उत्त ६) ।

उत्स पुं [दे] हिम, मोत, 'मणहरिएनु मणु-
स्सेमु' (वृह ४) ।

उत्सकलिअ वि [उत्सकलिन] निघट्ट, परि-
व्यक्त (प्राप्ति २) ।

उत्सखलअ वि [उत्सखलल] उच्छृङ्खल,
निरंकुश (पि २१३) ।

उत्सग पुं [उत्सग] कौड, कोला या मोरा
(गाट) ।

उत्सगपट्ट वि [उत्सगपट्ट] शरीर-स्पर्श से रहित
(उप ५५५) ।

उत्सक थक [उत् + प्यक्] १ उत्कण्ठित
होना । २ पीड़े हटना । ३ सब, स्वयं
करना । सऊ, उत्सकइत्ता । प्रमो, उत्सका-
इत्ता (ठा ६) ।

उत्सकसण [उत् + प्यक्] प्रदीप्त करना,
उत्तेजित करना । संह. उत्सकिय (प्राप्ति
२, १, ५, २) ।

उत्सकण न [उत्सकण] किसी कार्य को
कुछ समय के लिये स्थगित करना (पमं ३) ।

उत्सकण न [उत्सकण] उत्सर्ण (धंथा
१३, १०) ।

उत्सकिय वि [उत्सकिय] निषण्ण का न
बाद किया हुआ (पिड २६०) ।

उत्सग्ग पुं [उत्सग्ग] १ रण्य (प्राप्ति ५) ।
२ सामान्य निर्ज (उप ७८१) ।

उत्सर्गि वि [उत्सर्गिन्] उत्सर्ग—सामान्य नियम—ना जानकार (पृष्ठ ६४) ।

उत्सर्ण वि [अवसर्ण] निगमन, 'अवर्षे उत्सर्ण' (पृष्ठ १, ४) ।

उत्सर्ण्य भ [दे] प्रायः, प्रवेष्ट (पृष्ठ १) ।

उत्सर्ण्यसिद्धा श्री [उत्सर्ण्यसिद्धिणा] परिमाण-विशेष, ऊर्ध्वरेणु का ६४ वां हिस्सा (इक) ।

उत्सर्ज्य देखो उत्सर्ण्य = दे (सूत्र २, २, ६५, संदु २७) । भाव्य पुं [भाव्य] बाहुबन्धन (धर्म ७५६) ।

उत्सर्ज्य वि [उत्सर्ज्य] निज धर्म में प्राप्त होना (पृष्ठ १२) ।

उत्सर्पण न [उत्सर्पण] १ उत्पत्ति, पोषण । २ वि, उत्पन्न करनेवाला, बढ़ानेवाला, 'वदन्त्य-वत्सर्पण्याह वयसाह जप्य जा सं' (सुभा ५०६) ।

उत्सर्पण्यो श्री [उत्सर्पण्यो] उत्पत्ति, प्रभावना (पृष्ठ १२६) ।

उत्सर्पण्यो श्री [उत्सर्पण्यो] विख्यात करना प्रतिष्ठित करना (सम्मत १६६) ।

उत्सर्पण्यो श्री [उत्सर्पण्यो] उत्पत्ति काल विशेष, दया कौटुम्भी-सागरोप-परिणित काल-विशेष, जिसमें सब पदार्थों की क्रमशः उत्पत्ति होती है (सम ७२; डा १, १०, पञ्च २०, ६०) ।

उत्सर्प्य पुं [उत्सर्प्य] १ उत्पत्ति, उभता (विशे ३४१) । २ ग्रहणा (पृष्ठ २, १) । ३ शरीर (पृष्ठ १) ।

उत्सर्पण न [उत्सर्पण्य] ग्रामिण, नव (सूत्र १, ६) ।

उत्सर्ग्य भ [उत् + स] हटना, दूर जाना । उत्सर्ग्य (स्वप्न ६) ।

उत्सर्ग्य भ [उत् + शि] १ ऊँचा करना । २ सदा करना । उत्सर्ग्य, सङ्ग, उत्सर्ग्यविचा (नय) । प्रयो., सङ्ग, उत्सर्ग्य (प्राचा २, १) ।

उत्सर्ग्य पुं [उत्सर्ग्य] उत्सर्ग्य (मणि १६४) ।

उत्सर्ग्यो श्री [उत्सर्ग्यो] ऊँचा करे करना, झुका करना (मग) ।

उत्सर्ग्य भ [उत् + अस्] १ उच्छ्वास लेना, श्वास लेना । २ उल्लसित होना । उत्सर्ग्य

सङ्ग (भम) । नवङ्ग, उत्सर्ग्यविभाण (डा १०) ।

उत्सर्ग्य वि [उच्छ्वासित] १ उच्छ्वास-प्राप्त । २ उल्लसित (उत् २०) ।

उत्सर्ग्य श्री [उच्छ्वास] गैया, गौ (दे १, ८६) ।

उत्सर्ग्य [दे] देखो आसा (डा ४, ४) ।

चारण पुं [चारण] घोस के श्वत्सुमन से गति करने का सामर्थ्यवाला मुनि (पृष्ठ ६०) ।

उत्सार सङ्ग [उत् + सारय] १ दूर करना, हटाना । २ बहुत दिन में पाठनीय ग्रन्थ को एक ही दिन में पढ़ाना । सङ्ग, उत्सारित (इह १) । सङ्ग, उत्सारिता (महा) । क-

उत्सारित्वा (यो) (स्वप्न २०) ।

उत्सार पुं [उत्सार] धनेक दिन में पढ़ाने योग्य ग्रन्थ का एक ही दिन में प्रव्यापन । 'कल्प्य पुं [कल्प्य] पाठन-संबन्धी आचार-विशेष (इह १) ।

उत्सारग वि [उत्सारग] दूर करनेवाला । २ उत्सार-कल्प के योग्य (इह १) ।

उत्सारण न [उत्सारण] १ दूरीकरण । २ धनेक दिनों में पढ़ाने योग्य ग्रन्थ का एक ही दिन में प्रव्यापन, 'अहिह उत्सारणं कार्य' (इह १) ।

उत्सारय वि [उत्सारय] दूरीकर, हटाना (संघा ५७) ।

उत्सार्य पुं [उच्छ्वास] १ उर्ध्व, ऊँचा श्वास (पृष्ठ १) । २ प्रवृत्त श्वास (भाव २) ।

नाम न [नाम] उच्चा-हेतुक धर्म-विशेष (मम ६७) ।

उत्सारय वि [उच्छ्वास] उच्चा-हेतु लेने-वाना (विशे २७१५) ।

उत्सार्य देखो उच्छ्वास (सुप्रति ६२) ।

उत्सर्ग्य वि [उच्छ्वास] स्वयं, स्वच्छा-चार्य, निरदुष्ट (उत् १४६ टी) ।

उत्सर्ग्य वि [दे] आश्रय, श्रृंखला (स २६०) ।

उत्सर्ग्य सङ्ग [उत् + सिच] १ सिचन, सेन करना । २ ऊपर सिचन । ३ आश्रय करना । ४ छाती करना, 'धृष्टं वा नावं उत्सर्ग्य' (प्राचा २, ३, १, ११) । उत्सर्ग्य (विश्व १८) । सङ्ग, उत्सर्ग्यमाणा (प्राचा २, ३, ६) ।

उत्सर्ग्य देखो उच्छ्वास (सुप्रति ६२) ।

उत्सर्ग्य वि [उच्छ्वास] स्वयं, स्वच्छा-चार्य, निरदुष्ट (उत् १४६ टी) ।

उत्सर्ग्य वि [दे] आश्रय, श्रृंखला (स २६०) ।

उत्सर्ग्य सङ्ग [उत् + सिच] १ सिचन, सेन करना । २ ऊपर सिचन । ३ आश्रय करना । ४ छाती करना, 'धृष्टं वा नावं उत्सर्ग्य' (प्राचा २, ३, १, ११) । उत्सर्ग्य (विश्व १८) । सङ्ग, उत्सर्ग्यमाणा (प्राचा २, ३, ६) ।

उत्सर्ग्य देखो उच्छ्वास (सुप्रति ६२) ।

उत्सर्ग्य वि [उच्छ्वास] स्वयं, स्वच्छा-चार्य, निरदुष्ट (उत् १४६ टी) ।

उत्सर्ग्य न [उत्सर्ग्य] १ सिचन । २ श्रृंखला से जल वगैरह को बाहर को खींचना (प्राचा) । ३ सिचन के उपकरण (प्राचा २) ।

उत्सर्ग्य श्री [उत्सर्ग्य] देखो उत्सर्ग्य (उत् ३०, ५) ।

उत्सर्ग्य देखो उत्सर्ग्य । सङ्ग, उत्सर्ग्य (पृष्ठ ५, १, ६३) ।

उत्सर्ग्य सङ्ग [मुच] छोड़ना, त्याग करना । उत्सर्ग्य (हे ४, ६१) ।

उत्सर्ग्य सङ्ग [उत् + क्षिप्] ऊँचा फेंकना । उत्सर्ग्य (हे ४, १४४) ।

उत्सर्ग्य वि [मुक्त] मुक्त, परित्यक्त (कुमा) ।

उत्सर्ग्य वि [उत्सर्ग्य] १ ऊँचा फेंकना । २ ऊपर उठना (स ५०३) ।

उत्सर्ग्य वि [उत्सर्ग्य] विकारान्त को प्राप्त, अचित किया हुआ (मम ५, २, २१) ।

उत्सर्ग्य वि [उत्सर्ग्य] उत्पत्ति, ऊँचा किया हुआ (कल्प) ।

उत्सर्ग्य वि [उत्सर्ग्य] १ व्याप्त । २ ऊँचा किया हुआ (कल्प) ।

उत्सर्ग्य वि [उत्सर्ग्य] महकारी (उत् २६, ४६) ।

उत्सर्ग्य न [उत्सर्ग्य] सक्रिया (सुभा ४३७; छाया १, १, अक्ष २३२) ।

उत्सर्ग्य सङ्ग [उत्सर्ग्य] उत्पत्ति करना, उत्पन्न करना । उत्सर्ग्य (उत्तर ७१) ।

उत्सर्ग्य वि [उत्सर्ग्य] उत्पन्न-रहित, न-उत्सर्ग्य (कल्प, छाया १, १) ।

उत्सर्ग्य वि [उत्सर्ग्य] उत्पन्न-रहित ।

उत्सर्ग्य न [उत्सर्ग्य] उत्पन्न-रहित (प्राचा २, ३, १, ११) । उत्सर्ग्य (विश्व १८) । सङ्ग, उत्सर्ग्यमाणा (प्राचा २, ३, ६) ।

उत्सर्ग्य वि [उत्सर्ग्य] उत्पन्न-रहित करना । सङ्ग, उत्सर्ग्यमाणा (प्राचा २, ३, ६) ।

उत्सर्ग्य वि [उत्सर्ग्य] उत्पन्न-रहित (पृष्ठ ७६, २१; पृष्ठ २, ३) ।

उत्सर्ग्य वि [उत्सर्ग्य] मूल-विशुद्ध, मिश्रित-विशुद्ध (वृ १, उत् १४६ टी) ।

उत्सर्ग्य देखो उत्सर्ग्य (मम ५, ४, अक्ष २३२) ।

उत्सर्ग्य [औत्सर्ग्य] उत्पन्न, उत्पन्न ।

‘कर वि [‘र] उक्कएठा-जनक (छाया १, १)।

उस्सूण वि [उच्छून] मूला हुमा, फूला हुमा (उप ५६४, गजड, स २०३)।

उस्सूर न [उत्सूर] सध्या, शाम ‘बचामो नियनयरे उस्सूर वट्टए जेण’ (सूर ७, ६३, उप ५ २२०)।

उस्सेअ पु [उत्सेअ] १ सितन । २ उज्जित । ३ गवं (बाह ४५)।

उस्सेइम वि [उत्सेवेदिम] आग से मियित पानी, भाव पोमा जल (कप्प, ठा ३, ३)।

उस्सेह पु [उत्सेअ] १ ऊंचाई (विपा १, १)। २ शिखर, टीच (जोव ३)। ३ उज्जित, अम्मु-दय ‘पडणता उत्सेहा’ (स ३६६)।

उस्सेहंगुल न [उत्सेघाङ्गुल] एव प्रकार का परिमाण (विसे ३४० टी)।

उह स [उभ] दोनो, युगम, युगल (पड्)।

उहट्ट थक [अप + घट्ट] नष्ट होना। उहट्टइ (मम्मत् १६२)।

उहट्ट दु देखो उव्वट्ट = उर + धुव।

उहय स [उभय] दोनो, युगम (कुमा मवि)।

उहर न [उपगृह] छोटा घर, माथय विशेष (एणह १, १)।

उहस सक् [उप + हस्] उपहास करना। उहसइ (आहु ३४)।

उहार पु [उहारा] मत्स्य विशेष (राज)।

उहिजल पु [दे] चतुरिन्दिम जन्तु विशेष (मुस ३६, १४६)।

उहिजलिआ छो [दे] अमर देखो (उत्त ३६, १४६)।

उहु (अप) देखो अहो = मही (सण)।

उहुर वि [दे] अवाङ्मुल अयोधुल (गजड)।

॥ इअ सिरिपाइअसदमहणवे उभाउइसदसकनणो
छाम पचनो सरणो समत्तो ॥

ऊ

ऊ पु [ऊ] प्राकृत वर्णमाना का षष्ठ स्वर-वर्ण (हे १, १, प्रामा)।

ऊ म [दे] निम्नलिखित अर्थों का सूचक अन्वय—१ गहरी, निम्ना, ‘ऊ एल्लअ’। २ आपेय, प्रस्तुत वाक्य के विपरीत अर्थ की आशंका से उठे उलटला, ‘ऊ वि मए भणिए’। ३ वित्तमय, आरचन ‘ऊ वह भुँएमा भवये’। ४ सूचना, ‘ऊ वेण ए विएणाम’ (हे २, १६६ पड्)।

ऊअट्ट वि [अउयुट्ट] कृष्टि से नष्ट (पाभ)।

ऊआ छी [दे] बूझा, खूँ (दे १, १९६)।

ऊआस पु [उपआस] भोजनभाव (हे १, १७३)।

ऊगिय वि [दे] भलट्ट (पड्)।

ऊग्माअ देखो उवग्माय (हे १, १७३ प्रामा)।

ऊह देखो बूड (वि १२, ७८ या २८३)।

ऊड वि [ऊड] बहन बिआ हुमा, धारण बिआ हुमा ‘ऊडलं यउज्जुणअसिनेनु मुअ-दिरतेणु’ (गजड)।

ऊड वि [ऊड] परिणीत, विवाहित (पर्यंत ११६०)।

ऊडा छी [ऊडा] विवाहिता छी (पाभ)।

ऊडिअय वि [दे] १ प्रावृत्त, आच्छादित। २ न आच्छादन, प्रावरण (पाभ)।

ऊण वि [ऊण] मूल, होन (पउम ११८, ११६)। ‘वीसइम वि [‘विंशतितम] ऊणी-समो’ (पउम १६, ८०)।

ऊण न [अण] अण करना (गाठ)।

ऊणदिअ वि [दे] आनन्दित हणित (दे १, १४१, पड्)।

ऊणिमा छी [पूर्णिमा] पूर्णिमा, तमो तीए केव ऊणिमाए भोरिऊ नईसत्त बहणइ परिचयो पारसजल’ (महा)।

ऊणिय वि [ऊणित] कम किया हुमा (ज २)।

ऊणिय पु [ऊणित] केव विशेष (अलव्या० पत्र १३३)।

ऊणोयरिआ छी [ऊनोदरिआ] कम माहार करना तर विशेष (अप ५८, ७, नव २८)।

ऊणालेस } छी न [एकोनबत्तरारिआत]
उणाल } ऊणआउ, ३६ (पुत्र २, १, पत्र १२ देवेन्द्र २६४)।

ऊमिणय न [दे] मोलएक, पुनता (पर्यंत २)।

ऊमिणिय वि [दे] मोच्छिन्न, जिसने स्नान के बाद शरीर पाछा हो वह (स ७५)।

ऊमिअिअ न [दे] दोता पारवा मे आयाव करना (दे १, १४२)।

ऊर पु [दे] १ घाम, नीव। २ संय, समूह (दे १, १४१)।

‘ऊर देखो तूर (वि ८, ६५)।

‘ऊर देखो पूर (वि ८, ६५) या ४५, २३१)।

ऊरण पु [ऊरण] नेय, भेद (राय विसे)।

ऊरणो छी [दे] मय, भेद (दे १, १४०)।

ऊरणोअ नि [ओरणिक्] भेदी बरानेरावा (धणु १४४)।

‘ऊरय वि [पूर] पूति बरनेवाता (मवि)।

ऊरस वि [ओरस] पुत्र विशेष स्व-पुत्र (छा १०)।

ऊरिसविअ वि [दे] रज्ज, रागा हुमा (पड्)।

ऊरी म [ऊर] १ धनीगार । २ रित्तार।

‘अय वि [‘हम] धनीगार, रीतार (उप ७२८ टी)।

ऊर पु [ऊर] बह्ना, जोप (पाया १, १८०)।

कुमा) । °जाल न [°जाल] जाँय तक लटकने-
वाला एक धातुपण (ग्रीव) ।

ऊरुद्वय वि [ऊरुद्वय] जया-भ्रमाण (गृह्य
बौध्द) (पङ्) ।

ऊरुद्वयस वि [ऊरुद्वयस] ऊपर देखो
(पङ्) ।

ऊरुमेत वि [ऊरुमात्र] ऊपर देखो (पङ्) ।
ऊल पु [दे] गति-भग (दे १, १३९) ।

°ऊल देखो कूल (गा १८६) ।

ऊस पु [ऊस] किरण (हे १, ४३) ।

°मालि पु [°मालिन] मूर्ख (कुमा) ।

ऊस पु [ऊप] मार-भूमि की मिट्टी (पण्य १,
बो ४) ।

ऊसअ न [दे] उपपान, उत्तीसा, तपिया (दे
१, १४०, पङ्) ।

ऊसठ वि [ऊसठ] १ परित्यक्त । २ न
उत्सर्जन, मत्ताडि वा त्याग, मो तत्प ऊसठ
पनरेवा, त जहा, उबार बाँ (भाषा २, २,
१, ३) ।

ऊसठ वि [दे उच्छ्रित] १ उच, थोठ
(भाषा २, ४, २, ३, जीव ३) । २ ताजा
'मह' महपति बा, कमठ कमठति बा, रनिम
रसिद ति बा' (भाषा २, ४, २, २) ।

ऊसण न [दे] गति भङ्ग (दे १, १३६) ।
ऊसण्डसण्डिया देखो उत्सण्डसण्डिया (पव
२५४) ।

ऊसत्त देखो उसत्त (पण्य धावम) ।

ऊसत्थ पु [दे] १ जम्माई । २ वि, धातुल
(दे १, १४३) ।

ऊसरधक [उत् + ध] १ क्षिप्तकना । २ दूर
होना । ३ सक, त्यागना । ऊसरइ (भवि)
सह, ऊसररि (भवि) ।

ऊसर न [ऊपर] धार भूमि निमने चीन
नहो पैदा होना है 'ऊसरदवर्तियददङ्कल्लसना
एण' (सम्य १७, भव ७३) ।

ऊसरण ॥ [उत्सरण] भारोहण 'धामूधरण
तमो समुपमण' (विम १२०८) ।

ऊसय पु [उच्छ्रय] १ उल्लेख ऊँचाई । २
उल्लेखापुन (जीवस १०४) ।

ऊसल धक [उत् + लस्] उल्लसित होना ।
ऊसलइ (हे ४, २०२, पङ्, कुमा) ।

ऊसल वि [दे] घन पुष्ट (दे १, १४०) ।
ऊसलिअ वि [उल्लसित] उल्लसित, पादुभूत
ऊसलिअ वि [दे] रंगाम्बित, पुलकित
(दे १, १४१, पाप) ।

ऊसय देखो उत्सय = उभय (न्य ६३) ।
ऊसय देखो उत्सय = उत् + वि । उत्सवेह
(पि ६४, ५५१) । सह ऊसयि (पण्य
भग) ।

ऊसयिअ वि [दे] १ उद्भात (दे १, १४३) ।
२ ऊँचा किया हुआ (दे १, १४३ खाया
१, ८, पाप) । ३ उद्गम, नमित (पङ्) ।

ऊसयिअ वि [उच्छ्रित] ऊर्ध्व स्थित (पण्य) ।

ऊसय सक [उत् + रस्] १ उत्सव
केना, ऊँचा सात केना । २ विनसित होना ।
३ पुलकित होना । ऊसवह (पि ६४, २१५) ।
बह ऊससन, ऊससमाण (गा ७४
पण्य ४ पि ४६६) ।

ऊससन न [उच्छ्रयसन] उत्सव । °लद्धि
जी °लद्धि खानोच्छ्रयस की शक्ति
(कम्म १, ४४)

ऊससिअ न [उच्छ्रयसित] १ उद्यम
(पङ्) । २ वि उल्लसित । ३ पुलकित
(स ८३) ।

ऊससिर वि [उच्छ्रयसित] उद्यम लेने-
वाला (हे २, १४५) ।

ऊसअत वि [दे] लद होने पर शिथिल
(दे १, १४१) ।

ऊसाइअ वि [दे] १ विनित । २ उल्लित (दे
१, १४१) ।

ऊसार सक [उत् + सारय] दूर करना
त्यागना । सह ऊसारि (भग) (भवि) ।

ऊसार पु [दे] गत विशेष (दे १, १४०) ।
ऊसार पु [उत्सार] परित्याग (भवि) ।

ऊसार पु [आसार] वग वाली वृद्धि (हे १,
७६, पङ्) ।

ऊसारि वि [आसारि] वेग से बरखनवाला
(कुमा) ।

ऊसारिअ वि [उत्सारित] दूर किया हुआ
(पङ्, भवि) ।

ऊसास पु [उच्छ्रयास] १ उद्यम, ऊँचा
खास (पाङ् ५) । २ मरण (इह १) ।
°णाम न [°नामन] बर्ग विशेष (कम्म १,
४४) ।

ऊसासय वि [उच्छ्रयासक] उद्यम लेने-
वाला (विसे २७१४) ।

ऊसासिअ वि [उच्छ्रयासित] बाधा रहित
किया हुआ (दे १२, ६२) ।

ऊसाह पु [उत्साह] उत्साह, उछाह (मा
१०) ।

ऊसि सह [उत् + शि] ऊँचा करना, उन्नत
करना । सह ऊसिया (उत् १०, ३५) ।

ऊसिअ सह [उत् + पङ्क] ऊँचा करना ।
सह ऊसिकिअ (भग १, ८ टी) ।

ऊसिकिअ वि [दे] प्रदीप्त, शोभायमान
(पाप) ।

ऊसित वि [उत्सित] १ गतित । २ उदित ।
३ वदा हुआ । ४ प्रतिशायित (हे १, ११४) ।

ऊसित वि [अवसित] उपनित (पाप) ।
ऊसिय देखो उत्सिय = उच्छ्रित (ग्रीव, पण्य,
सण्) ।

ऊसीस वि [उच्छ्रिप, °क] उमीसा,
ऊसीसग विरहाना (खाया १, ७ पाप,
ऊसीसय मुपा ५३ १२०) ।

ऊसुअ वि [उत्सुक] उत्कण्ठित (गा ५४३,
कुमा) ।

ऊसुअ वि [उच्छ्रुक] जहा से मुक उद्गत
हुआ हो वह (हे १, ११४) ।

ऊसुअ वि [उत्सुकित] उत्सुक किया हुआ
(गा ३१२) ।

ऊसुअ धव [उत् + लस्] उल्लसित होना ।
ऊसुअ (हे ४, २०२) ।

ऊसुभिअ वि [उल्लसित] उल्लास प्राप्त
(कुमा) ।

ऊसुभिअ न [दे] १ राशन विशेष, गन्ना बंड
आप ऐसा रुदन (दे १, १४२, पङ्) ।

ऊसुभिअ वि [दे] विभुन, परित्यक्त (दे १,
१४२) ।

ऊसुअ देखो ऊसुअ = उभय (उ ५६७ टी) ।
ऊसुअ न [दे] मय भाग (भाषा २, १,
८, ६) ।

ऊसुभिअ वि [दे] उमीमा या मिरहाना
किया हुआ (पङ्) ।

ऊसु १ [दे] धामूधन, पान (हे २, १७४) ।
ऊसुसुभिअ [दे] देवा ऊसुभिअ (दे १,
१४२) ।

ऊह सक [ऊह] १ तर्क करना । २ विचारना । ऊहइ (विसे ८२१), ऊहँवि (सुर ११, १८४) । संह, ऊहिऊण (आउ ५२) । ऊह न [ऊधस्] स्तन (विपा १, २) । ऊह पुं [ऊह] १ विचार, विवेक-बुद्धि (राज) । २ तर्क, वितर्क (मूम २, ४) । ३

संस्था-विशेष (राज) । ४ शोध-संज्ञा, अव्यक्त ज्ञान (विसे ५२२; ४२३) । ऊहंग न [ऊहाङ्ग] संस्था-विशेष (राज) । ऊहट्ट वि [दे] उपहसित (दे १, १४०) । ऊहसिय वि [उपहसित] जिसका उपहास किया गया हो वह (दे १, १४०) ।

ऊहा जी [ऊहा] तर्क, विचार-बुद्धि (भावम) । ऊहापोह पुं [ऊहापोह] सोच-विचार, मन में होनेवाला तर्क-वितर्क (कुप्र ६१) । ऊहिअ वि [ऊहित] धनुमान से शाद (से ६, ४१) । ए पुं [ए] स्वर-वर्ण विशेष (हे १, १; प्रामा) ।

॥ इम सिरियाइअसदमहण्णवे ऊमाएइत्संनणो
छट्टो तरंगो समतो ॥

ए

ए पुं [ए] स्वर-वर्ण-विशेष (हे १, १; प्रामा) । ए अ [ए, ऐ] इन अर्थों का सूचक अव्यय— १ भ्रामन्त्रण, सम्बोधन; 'ए एहि खवइहूतो मग्ग' (पउम ८, १७४) । २ वाक्यालंकार, वाक्य-शोभा; 'सि जहाएगाम ए' (अणु) । ३ स्मरण । ४ भ्रमूया, ईर्ष्या । ५ अनुकम्पा, कष्टता । ६ आह्वान (हे २, २१७; भवि, गा ६०४) ।

ए सक [आ + इ] भ्राना, भ्रामन करना । एह (उवा) । भवि, एहिइ (उवा) । वहु, एंत (पउम ८, ४३; सुर ११, १४८), ईत (सुर ३, १३), एजंत (सि ५६१), एजमाण (उप ६४८ टी) ।

ए' देखो एत्तिअ (उवा) ।

ए' देखो एयं (उवा) ।

एअ वि [एत] भाषा हुआ, वागत (सम्मत् ११६) ।

एअ स [एतस्] यह (भा, हे १, ११; महा) । 'रिसि वि [इरा] ऐसा, इतने जैसा (द ३२) । 'रुव वि [रुप] ऐसा, इस प्रकार का (आया १, ३, महा) ।

एअ देखो एग (गउठ, नाट, स्वप्न ६०; १०६) । 'आइ वि [किन्] खेला (प्रति १६०; प्रति ६५) । 'इह वि. व. [इशान्] ग्याह की संख्या, दस और एव (सि २४५) । 'इहम वि [इश] ग्याहवाँ (भवि) ।

एअ देखो एव = एव (कुमा) ।

एअ } देखो एवं, 'एम वि विरीध विट्ठमा' एअं } (से ३, ४६; गउठ, पिग) ।

एअंत देखो एफंत (वेणी १८) ।

एआईस (भग) पुं. व. [एअविशति] एफ्तीत (पिग) ।

एयारिच्छ वि [एतादृश] ऐसा, इतने जैसा (प्रामा) ।

एइजमाण देखो एय = एव ।

एइय वि [एजित] कम्पित (राय ७४) ।

एइस देखो एईस (सुख २, १७) ।

एईस वि [एतादृश] ऐसा (विसे २५४६) ।

एईजि (अप) अ [एयमेव] १ इती तरह । २ मही (भवि) ।

एऊण देखो एयूण (पिग) ।

एंत देखो इ = इ ।

एंत देखो ए = ए + इ ।

एक देखो एक तथा एग (पह; सम ६६; पउम १०३, १७२, हेका ११६; पएह २, ५, पउम ११४, २४, सुपा १६५; कप, सम ७१; १२३) । 'इआ अ [दा] एक समय में, कोई वस्तु (हि २, १६२) । 'छ (अप) वि [क] एकाकी (सि ५१५) । 'छिय वि [किन्] एकाकी, खेला (उप ७२८ टी) । 'णउइ छी [नयति] संख्या-विशेष, एकाके (सम ६५; सि ४३५) ।

एकूण देखो अउण = एकोन (मुजज १६) ।

एक देखो एक तथा एग (हे २, ६६; सुपा १४३; सम ६६; ५५; पउम ३१, १२८; गउठ, कप, मा १८; सुपा ५८६, मा ४१; सि ५६५; नाट, आया १, १; गा ६१८; कात; मुर ५, २४२; भग, सम ३६; पउम २१, ६३; कप) । 'अए देखो एगएय (गउठ, सुर १, ३८) । 'सणिय वि [शानिक] एक ही बार भोजन करनेवाला (पएह २, १) । 'सचरि जी [सत्तति] संख्या-विशेष, ७१, एकहत्तर (सम ८२) । 'सरग, 'सरय वि [सरक, 'सर्ग] एक समान, एक सरीखा (उवा, भग १६, पएह २, ५) । 'सि ॥ [शस्] एक बार, 'सव्वजहूनो उवओ दसयुण्णिओ एकस्सि कयाए' (भग), 'एकस्सि कओ पमामो जीय पाडेइ भवसुं दम्मि' (सुर ८, ११२); 'एकस्सि सोलवत्तवि-अहं देज्जहि पच्छिताह' (हे ४, ४२८) । 'सि अ [त्र] एक (किसी एक) में, 'एकस्सि न मु त्वियो सिति पिमो कोइवि उवातको' (कुमा) । 'सि, 'सिअं म [दा] कोई एक समय में (हे २, १६२) । 'सिं म [शस्] एक बार (सि ४५१) । 'इ वि [किन्] खेला (प्रयो २३) । 'इ पुं [दि] स्वनाम-ख्यात एक माएअतिक (सुवा) (विपा १, १) । 'णउय वि

[ननत] ६१ वों (पउम ६१, ३०)।
 'रसम वि [दरा] ग्याहवां (पिग १,
 १, उवा, सुर ११, २५०)। 'रह नि व.
 [दरा] ग्याह, दस यौर एक (पइ)।
 'सीइ क्षी [स्योति] सस्या विशेष, एकाक्षी
 (सम ८८)। 'सीइविह वि [शोतिवि] व
 एवासी तह का (पएण १, १७)। 'सीय वि
 [शोति] एकाक्षी, ८१ वों (पउम ८१,
 १६)। 'सीसरसय वि [सीसरसतम] एक
 सी एव वों, १०१ वों (पउम १०१, ७६)।
 'वीर पु [वीर] सहोवर भाई, सगा भाई
 (पउम ६, ६०, ४६, १८)। 'वीरा क्षी
 [वीरा] सगी बहिन (पउम ८ १०६)।
 एक वि [एक] अनेला (हेका ११)।
 एक वि [दे] लोहनर, प्रेम-तत्पर (दे १,
 १४४)।
 एकई (प्र) वि [एकानि] एकावी,
 अनेला (मवि)।
 एकग न [दे] चल्न, चुगलिय काष्ठ विशेष
 (दे १, १४४)।
 एककत पु [एकान्त] १ सवैया। २ तरव,
 प्रमेय। ३ जरूर, अवरय। ४ असाधारणता,
 विशेष (स ४, २३)। ५ निर्जन, निराता (भा
 १०२)। देवी गगल।
 एककक वि [एकैक] हर एक, प्रत्येक
 (भाट)।
 एकककनम [दे] देखो एकककनम (स ५,
 ५६)।
 एककसिस्थ न [एकसिस्थ] तपो विशेष
 (पव २७१)।
 एककग देखो गग गग = एकक (कुप्र ७६)।
 एककवरिह पु [दे] देवर, पति बा छोटा
 भाई (दे १, १४६)।
 एककग पु [दे] नयक, कया बहनेवाला (दे
 १, १४५)।
 एकमुह वि [दे] १ धर्म-रहित, निपर्ण। २
 बरिद, निषेध। ३ प्रिय, हट (दे १, १४८)।
 एकमेक वि [एकैक] प्रत्येक, हर एक
 (हे ३, १, पइ, कुमा)।
 एकह वि [दे] प्रवत, चलवान (पइ)।
 एकहपुडिग न [दे] बिलत बिन्दु-बुद्धि, बल
 बिन्दुवाली बारिदा (दे १, १४७)।

एकसरिअं अ [दे] १ शीघ्र, तुल्य। २
 संप्रति, आजकल (ह २, २१३, पइ)।
 एकसरिआ अ [दे] शीघ्र, जलदी (प्राह
 ८१)।
 एकसाहिह वि [दे] एक स्थान मे रहने-
 वाला (दे १, १४६)।
 एकसिबली क्षी [दे] शास्त्रतो-गुप्ता से मूलत
 पचवासी (दे १, १४६)।
 एकसेस देखो एग सेस (धनु १४७)।
 एकह देखो एग (प्राह ३५)।
 एकहार देखो एकह (बम्म ६, १६)।
 एकहार पु [अयस्हार] लोहार (हे १, १६६,
 कुमा)।
 एकरी क्षी [एका] एक (क्षी) (निष्क १)।
 एककूण देखा अउण (पि ४४५)।
 एकैकम वि [दे] परम्पर, अन्वय (दे १,
 १४५), सुकृता एकैकम अपेक्षाना (पउम
 ६८, १५)।
 एकैह } देखो एग (प्राह, ३५)।
 एकौह }
 एग अ [एक] १ एक, प्रथम सवैया (धनु)।
 २ एगरी, अनेला (ठा ४, १)। ३ अद्वितीय
 (कुमा)। ४ असाधारण नि सहाय (विपा १,
 २)। ५ अन्य, दूसरा, 'एकमेव बरति मोला'
 (पएह १, २)। ६ समान, सहज, तुल्य
 (उवा)। ७ इय दबो एग, 'अथैयद्याण
 नेरदयाण एग पतिभावम ठिई वण्णता' (सम
 २, ठा ७ श्रीप)। ८ इय वि [क] अनेला,
 एकाकी (मग)। ९ ओ अ [तस] एक
 तरफ (अप)। १० कसरिय वि [कारिक]
 एक अणखाता (नाम) (मणु)। ११ बी
 क्षी [स्वन्व] एक स्वन्ववाला (कुल वगैरह)
 (जीव ३)। १२ सुर वि [पुर] एक सुरवाला
 (गो वगैरह पणु) (पएण १)। १३ ग वि
 [क] एकाकी अनेला (शा १४)। १४ ग
 वि [ग] उल्लो, तलर (सुर १, १०)।
 'चम्बु वि [चम्बुप्] एक अस्त्रवाला,
 एकाज वाना (पएह २, २)। १५ चत्तल वि
 [चत्तारिग] एगवालीसवीं (पउम ४१,
 ७६)। १६ चर वि [चर] एगरी बिहने-
 वाला (भावा)। १७ चरिया क्षी [चर्या]
 एगरी बिहरया (भावा)। १८ चारि वि

[चारिन्] अनेल विहाये (सूम १, १३)।
 'चूड पुं [चूड] विद्यावर वंश का एग
 राजा (पउम ५, ४५)। १९ चूडस वि
 [चूड] १ पूर्ण प्रभुत्ववाला, अकरएव,
 'एगचूड ससागर सुजिअण वणुह' (पएह २,
 ४)। २ अद्वितीय (भाप्र १८६)। ३ जिह
 वि [जटिन्] महाप्रह विशेष (ठा २, ३)।
 ४ जाय वि [जात] अनेला, निस्सहाय
 'अगविमण एगमाए' (पएह २ ५)।
 ५ ठु वि [स्थ] अट्टा, एकनित (मग १४,
 ६, उप प ३४१)। ६ ठि वि [थि] एक
 अर्धवाला, पर्याय-शब्द (घोष १ भा)। ७ ठु,
 'ठुं अ [ठ] एक स्थान में, मिलिया मन्त्रेवि
 एगट्ट' (पउम ४७, ४४)। ८ ठिय वि
 [थि] एक ही अर्धवाला, समानार्थक,
 पर्याय शब्द (ठा १)। ९ ठिय वि [थि] अधिक
 जिसके फल में एक ही बीज होता है ऐसा
 धाम वगैरह का पठ (पएण १)। १० नासा क्षी
 [नासा] एक बिन्दुवाली, देवी-विशेष
 (भावा १)। ११ ना न [त्र] एक ही स्थान
 में, एगते ठिगो' (स ४७०)। १२ देवो
 'ठु' (मम्म १०६, निष्क १)। १३ नासा देखो
 'नासा (ठा ८)। १४ पप अ [पदे] एक
 ही साथ युगपद (पि १७१)। १५ पकत वि
 [पक्] १ असाधारण (राज)। २ ऐकात्मिक,
 अविच्छेद (सूम १, १२)। ३ पन्नास क्षीन
 [पन्नाशन्] एकावन, पचास प्रौर एक।
 ४ पन्नासक्षम वि [पन्नासक्षम] एकावनवा,
 ५१ वों (पउम ५१, २८)। ५ पाइअ वि
 [पादिन्] एक पाँच अंका रखनेवाला
 (धातापता मे) (कच)। ६ पासग वि
 [पादेक] एक ही पाँच की भूमि से
 सम्पन्न रखनेवाला (धातापता मे) (पएह
 २, १)। ७ पासिय वि [पादेक] देवों
 पूर्वार्ध अर्ध (कच)। ८ भत्त न [भक्त]
 अन्न विशेष, एकासन (पचा १२)। ९ भूय वि
 [भूत] १ एकाभूत, मिला हुआ (ठा १)।
 २ भूतन (ठा १०)। ३ भग वि [भक्त]
 एगप्रचित, तन्वीन (सुर २, २२६)।
 ४ भग वि [एक] प्रत्येक, हर एक (सम
 ६७)। ५ य वि [क] एगरी, अनेला
 (दस ५)। ६ य वि [ग] अनेला जानवाला
 (उत ३)। ७ यर वि [तर] रा में से कोई

बी एक (पट्) । 'या म' [दा] एक समय में (आहु नव २४) । 'राइय वि' [रात्रि] एक-रात्रि-सम्बन्धी, एक रात में होनेवाला (सम २१, मुर ६, ६०) । 'राय न' [राज] एक राज (ठा ५, २) । 'स्र वि' [एक] एकही, प्रथेला (ठा ७, मुर ४, ५४) । 'विह वि' [विध] एक प्रकार का (नव ३) । 'विहारि वि' [विहारिन्] एकल विहारो, प्रथेला विचरनेवाला (वृह १) । 'वीसइम वि' [विश्रान्तितम] एकहीसर्वा (पउम २१, ८१) । 'वीसा की' [विश्रान्ति] एकहीस (पि ४४५) । 'सट्ट वि' [पट्] एकसठवा ६१ वा (पउम ६१ ७५) । 'सट्ठि की' [पट्ठि] एकसठ (सम ७५) । 'सत्तर वि' [सप्तत] एकहत्तरवां, ७१ वा (पउम ७१, ७०) । 'समइय वि' [सामयिक] एक समय में होनेवाला (भा २४, १) । 'सरिया की' [सरिका] एगवली, हार विशेष (ज १) । 'साडिय वि' [शाटिक] एक नल्ल वाना, 'एगसाडियमुत्तरासग करेइ' (कप्प, राया १, १) । 'सिअ म' [दा] एक समय में (पट्) । 'सेल पु' [शैल] पर्वत-विशेष (ठा २, ३) । 'सेरबूड पुन' [शैलबूट] एगशैल पर्वत का शिखर विशेष (ज ४) । 'सेस पु' [क्षेप] व्याकरण-प्रसिद्ध समास विशेष (पणु) । 'हा' [धा] एक प्रकार का (ठा १) । 'हुत्त म' [सहत्त] एक बार (प्रागम) । 'णिअ वि' [किन्] प्रथेला (कस श्रोप २८ भा) । 'इस वि' [इशम] ग्यारह । 'इसुत्तरसय वि' [इशोत्तराशततम] एक ही ग्याहत्तवां, १११ वां (पउम १११, २४) । 'भोग पु' [भोग] एगव-वचन (निद्र १) । 'मोस वि' [मिश्र] १ प्रलु-काणा का एर दीप, वरुन की मध्य में ग्रहण कर दोना धंयनो की हाथ से पसीठ कर उठाना (शोप २६७) । 'यय वि' [यस] एगन सबद (कण) । 'रस देतो' [इस (पि ४५६) । 'रसी की' [इसी] तिचि-विशेष, एगदशो (कण, पउम ७३, ३४) । 'पयण की' [पञ्चाशत्] एकपन (पि २६५) । 'ययि, 'ली की' [तलि,

ली] विविध प्रकार की परिणयो से श्रित हार (शोप) । 'यलोपनिभन्ति न' [तलीप्रवि-भक्ति] नाट्य-विशेष (राय) । 'वाइ पुं' [वादिन्] एक ही आत्मा नगैरह पदार्थ की माननेवाला दर्शन, वेदान्त दर्शन (ठा ८) । 'वीस लोन' [विश्रान्ति] सेव्या-विशेष, एकहीस (पउम २० ७२) । 'सण न' [शिन, 'सन] व्रत विशेष, एकासन (धर्म २) । 'ह पुन' [ह] एक दिन (प्राचा २, ३, १) । 'इह वि' [इहय] एक ही प्रहार से मृत् हो जानेवाला (भा ७, ६) । 'हिय वि' [हिक] १ एक दिन का उपरान्त । २ पु उबर विशेष, एकात्तर उबर (भा ३, ७) । 'हिय वि' [हिक] एक से ज्यादा (पच) देखो एज, एक और एक्क । एरांत देखो एक्कत (ठा ५, मूष १, १३ श्रोप ५५, पचा ५ १०) । 'दिट्ठि की' [ट्टि] १ जैनेतर दर्शन । २ वि जनेतर वरान को माननेवाला (सूम २, ६) । ३ की. निश्चित सम्पत्त्व, निश्चल सत्य पदार्थ (सूप १, १३) । 'दूसमा की' [दुप्पमा] श्रवसपिणी-वाल का छठवां और उत्तरपिणी-वाल का पहला मारा, नाल विशेष (सूम १, ३) । 'पडिय पु' [पण्डित] साधु, समत (भा) । 'वाल पुं' [वाल] १ जैनेतर दर्शन को माननेवाला । २ श्रवयत जीव (भा) । 'वाइ वि' [वादिन्] जैनेतर दर्शन का अनुयायी (राज) । 'वाय पुं' [वाद] जैनेतर दर्शन (सुपा ६५८) । 'सुसमा की' [सुपमा] वान विशेष, श्रवसपिणी का वन प्रथम और उत्तरपिणी वान का छठवां मारा (गदि) । एरातिय वि [एगान्तिर] १ श्रवस्यभावी (विने) । २ मन्त्रिणीय 'एरातिय कम्मवाहि श्रोमह' (स ५६२) । ३ जैनेतर दर्शन (सम्प १३०) । एरातिय न [एगान्तिर] मिथ्यात्व का एन भेद - वस्तु को सर्वथा सखिब भादि एह ही रटि से देतना (संयोप ५२) । एराटि देतो एग सट्ठि (वेर- १३६ मुज्ज १२) । एराटिय की [द] नीरा, जहाम (गाया १, १६) ।

एगठाण न [एगस्थान] एक प्रकार का तप (पव २७१) । एरादिय वि [एरेन्द्रिय] एक इन्द्रियवाला, केवल स्वर्गन्द्रियवाला (जीव) (ठा ७) । एशीभूत वि [एशीभूत] मित्रा ह्वा, एकठा-प्राप्त (सुपा ८६) । एगूण देखो अउण । 'चत्ताल वि' [चत्ता-रिंश] उनवालीसवा (पउम ३६, १३४) । 'चत्तालीस लोन' [चत्तारिंशत्] उनवालीस (सम ६६) । 'चत्तालीसइम वि' [चत्ता-रिंशत्तम] उनवालीसवां (सम ८६) । 'णउइ की' [नउति] नवासी (पि ४४४) । 'वीस लोन' [विंशत्] उनवीस, २६ । 'वीसइम वि' [विंशत्तम] उनवीसवां, २६ वां (पउम २६, ४६) । 'नउइ देतो' [णउइ (सम ६४) । 'नउय वि' [नवत] नवासीवां (पउम ८६, ६५) । 'पन्न, 'पन्नास लोन' [पन्नाशात्] उनचास (सम ७०, भा) । 'पन्नास वि' [पन्नाश] उनपचासवां (पउम ४६, ४०) । 'पन्नासइम वि' [पन्नाशत्तम] उनपचा-सवां (सम ६६) । 'वीस लोन' [विंशति] उनीस (सम ३६, पि ४४४ राया १, १६) । 'वीसइम की' [विंशति] उनीस (सम ७३) । 'वीसइम, 'वीसईम, 'वीसम वि' [विश्रान्तितम] उनीसवां (राया १, १८, पउम १६, ४५, पि ४४६) । 'सट्ट वि' [पट्] उनसठवां ५६ वां (पउम ५६, ८१) । 'सत्तर वि' [सप्तत] उनसत्तरवां (पउम १६, ६०) । 'सी, 'सीइ की' [शीति] उतासी (सम ८७, पि ४४४, ४४६) । 'सीय वि' [शीव] उतासीवां, ७६ वां (पउम ७६, ३५) । देखो अउण । एगूयय पुं [एगोरु] १ इन नाम का एग मरटिप । २ वि, उमका निवासी (ठा ४, २) । एग (धर) देखो एग (पिण) । एज पुं [एज] वायु पवन (वाच) । एज्जणया की [एज्जना] कण, क'पना (सूमनि १६६) । एज् देतो मय = एज् । यट् एज्जमाग (राय ३८) । एज्ज देतो ए = धा + इ । एज्ज न [आयन] मागन (मन ३) ।

एजमाण देखो ए = एा + इ ।

एड सक् [एड्] छोटना, हथान करना ।

एडेइ (भग) । बक्क, एडिजमाण (एाया १, १६) । संक, एडित्ता (भग) । इ.

एडेयव्व (एाया १, १) ।

एड सक् [एड्य] हठना, दूर करना ।

एडेइ, संक, एडेत्ता (राय १८) ।

एडक्कु पुं [एडक्कु] मेप, मेड (उप ७ २३४) ।

एडया ली [एडया] भेडो (पड्) ।

एण पु [एण] हण्ण मृग, हरिण (बण्ण) ।

‘माहिं की [‘माहिं] बन्तूरी (बण्ण) ।

एणं क पुं [एणाङ्क] वनर, बन्तूरा (बण्ण) ।

एणिज्ज वि [एणिय] हरिण-संक्की, हरिण का (मास बगैह) (राज) ।

एणिज्जय पुं [एणियक्] स्वनाम-स्मात् एक राजा, जिसने भगवान् महावीर के पाप दीक्षा ली थी (ठा ८) ।

एणिस पुं [एणिम] वृक्ष-विशेष (उप १० ३१ टी) ।

एणी की [एणी] हरिणी (पात्र, परह १, ४) ।
‘वार पुं [‘वार] हरिणी की भपनेवाला, जनका पोषण करनेवाला (परह १, १) ।

एणुमासिअ पुं [दे] मेव, मेडक (दे १. १४७) ।

एणेज्ज देखो एणिज्ज (विना १, ८) ।

एण्हं } ॥ [इदानीम्] अधुना, संप्रति
एणिह् } (महा. हे २, १३४) ।

एणान् देखो एरिसिअ = एतावत्, ‘एतावन् नर-लोभो’ (जीव १. ८०) ।

एत्तअ वि [इयन्, एतायन्] इतना (अभि ५६; स्वन् ४०) ।

एत्तए देतो इ = इ ।

एत्तहि (भग) म [इतस्] यहा से (कुमा) ।

एत्तहे देखो इच्छहे (कुमा) ।

एत्ताहे देखो इच्छाहे (हे २, १२४. ५. कुमा) ।

एत्तिअ } नि [इयन्, एतायन्] इतना
एत्तिल } (हे २, १४७) । ‘मत्त’, ‘मत्त

वि [‘मान] इतना ही (हे १, ८१) ।

एत्तिक (शी) देखो एत्तिअ = एतावत् (आइ ६४) ।

एत्तुल (भग) ऊपर देतो (हे ४, ४०८, कुमा) ।

एत्तुण म [दे] अधुना, इस समय (आइ ८०) ।

एत्तो देया इओ (महा) ।

एत्तोअ म [दे] यहा से लेकर (दे १, १४४) ।

एत्त्य म [अत्र] यहा, यहा पर (उवा, गठ, चाप १०३) ।

एत्थी देखो इत्थी (उप १०३१ टी) ।

एत्थु (भग) देखो एत्थ (कुमा) ।

एत्थंज न [एत्थंय्ये] तात्पर्य, मात्सर्य (उप ८४६ टी) ।

एत्तिहासिअ (शी) वि [ऐतिहासिक] इति-हास-संबन्धी (श्राप) ।

एत्तह देखो एत्तिअ (हे २, १४७; कुमा, कात्र ७७) ।

एम् (भग) म [एवम्] इस तरह, ऐसा (पड् निग) ।

एमइ (वप) म [एवमेव] इसी तरह, ऐसा ही (पड्; वज्जा ६०) ।

एमाइ } वि [एवमादि] इत्यादि, वगैरह
एमाइय } (उत्तर ८, २६; उप) ।

एमाण वि [दे] प्रवेश करता हुआ (दे १, १४४) ।

एमिणिआ जो [दे] वह ली, जिसके शरीर को, किसी देश के रिपान के अनुसार, सुन के बागे से माप कर उस बागे को फँक दिया जाता है (दे १, १४५) ।

एमेअ } म [एवमेअ] इसी तरह, इसी
एमेअ } प्रकार ‘ता म्हा वि’ बरशिग्गं

एमेअ ए नासरो ठाड (कात्र २६, हे १, २७१) ।

एम्म (भग) म [एवम्] इस तरह, इस प्रकार (हे ४, ४१८) ।

एम्मइ (भग) म [एवमेअ] इसी तरह, इस प्रकार (हे ४, ४२०) ।

एन्हिं (वप) म [इदानीम्] इस समय, अधुना (हे ४, ४२०) ।

एय मरु [एज्] १ कौपना हितना । २ चपना । एमड (बण्ण) । वट्. एयत्त (ठा ७) । प्रयो. वण्ड. एज्जमाण (राज) ।

एय पुं [एज्] गवि, चपन (भग २४, ४) ।

एयत्त देया एयंन (उपम १५, २८) ।

एयण न [एज्ज] कम्प, हिलन, ‘निरेयणं मात्’ (भाव ४) ।

एयणा ली [एज्जा] १ बन्ध । २ ध्वज, चवन (मूच २, २; भा १७, ३) ।

एयाणि देखो इयाणि (रंभा) ।

एयावत्त वि [एतावन्] इतना (भाव) ।

एरंड पुं [एरण्ड] १ वृक्ष-विशेष, रंड, शरी, एरण्ड का पेड़ (ठा ४, ४, एाया १, १) ।

२ वृक्ष-विशेष (परण १) । ‘मिजिया ली

[‘मिजिया] एरण्ड-वत्त (भग ७, १) ।

एरंड वि [एरण्ड] एरण्ड-वृक्ष-संबन्धी (पमादि) (दे १, १२०) ।

एरंडइय } पु [दे] पागल कुत्ता, ‘एरंडए
एरंडय } साए एरंडयसाएति हड्ड-
वित्.’ (वृह १) ।

एरणणय न [एरणयत्त] १ क्षेत्र-विशेष (भग १२) । २ वि. जम क्षेत्र में रहनेवाला (ठा २) ।

एरवई की [एरायती, अजिरयती] नदी-विशेष (राज, वत्त) ।

एरवय न [एरयन्] १ क्षेत्र-विशेष (भग १२; ठा २, ३) । २ पु. पर्वत-विशेष (ठा १०) ।

एरवय वि [एरयत्त] ऐरवत क्षेत्र का (सुख १, ३) ।

एरवय वि [एरवत्त] ऐरवत क्षेत्र का छूने-वाला (वृण) । ‘कूड न [‘कूड] पर्वत-विशेष का शिखर-विशेष (ठा १०) ।

एराणी की [दे] १ इराणी वन का सेवन करनेवाली ली (दे १, १४७) ।

एरायई की [एरायती] नदी-विशेष (ठा ५, २; वि ४६४) ।

एरायण पुं [एरायण] १ इन्द्र का हाथी, जो वि इन्द्र के हस्ति-मैय का अधिकृत देन है (ठा ५, १; प्रवी ७८) । ‘वाहण पुं [‘वाहण] इन्द्रवत्त (ठा ५३० टी) ।

एरायण पुं [एरायण] १ हृद-विशेष (पात्र) । २ हृद विशेष का मायग्राहा देन (जीव ३) ।

३ छन्द-आभ्रप्रसिद्ध पञ्चला प्रन्तार में बादि के लुप्य धीर मय के दो पुत्र प्रदारी का छेवन (निग) । ४ वायुच वृक्ष । ५ तरल धीर ताम्बा इन्द्र-यन्त्र । ६ इरायती नदी का समीपवर्त्ती देश । ७ इन्द्र का हाथी (हे १, २०८) ।

परिम नि [ईदहा] इस तरह का, ऐसा (भाव, कुत्तम आइ २१) ।

एरिसिअ (भग) ऊपर देतो (निग) ।

एल वि [दे] कुशल, निपुण (हे १, १४४)।
 एल पु [एड, एल] १ मृगो की एक
 एलगा } जाति (विपा १, ४)। २ मेघ मेढ
 (सूत्र २, २)। 'मूअ, 'मूग वि [मूक]
 १ मूक, मेढ की तरह अत्यन्त धोलनेवाला,
 'जलएलमृगमम्मणयतियवयएउरुणणे दोसा'
 (धा १२, दस ५, प्राव ४, निपु ११)।
 एलगाञ्ज न [एलगाञ्ज] स्वनाम-रूपात् नगर-
 विशेष (उप २११ टी)।
 एलय देखो एल (उवा, वि २४०)।
 एलयिल वि [दे] १ धनाञ्ज, धनी। २ पु.
 वृषभ, बैन (हे १, १४८, पद)।
 एला की [एला] १ इलायची का पेड (वे ७,
 ६२)। २ इलायची-फल (पु १३, ३३)।
 'रस पुं [रस] इलायची का रस (पएह
 २, ५)।
 एलालुय पुं न [एलालुक] माछ की एक
 जाति, कन्ध-विशेष (मनु ६)।
 एलायव न [एलायव] माएड्य गोन का
 एक शाखा-गोन (ठा ७)।
 एलायव वि [एलायव] एलायव-गोन का
 (एहि ४६)।
 एलायवा की [एलायवा] फल की तीसरी
 शत (चंद १०, १४)।
 एलिमन वि [ईहत्त] ऐसा (उत ७, २२)।
 एलिय पु [एलिह] धाम्य-विशेष (पएह १)।
 एलिया की [एडिका, एलिना] १ एव जात
 की मृगी। २ मेडिया (हे ३, ३२)।
 एलिम देवो एलिम (सूत्र १, ६, १)।
 एल पुं [एल] वृक्ष-विशेष (उप १०३१ टी)।
 एलगा पुं [एलुक] देहनी, डार वे नीचे
 एलुय } की लज्जी (जीय ३, प्राचा २)।
 एह नि [दे] रीद, निर्यन (हे १, १४४)।
 गय म [गय] दन भयो का सूचक प्रत्यय—१
 धवधारण, नियम (ठा ३, १, प्राप् १६)। २
 साहस्य, बुद्धता। ३ चार-नियोग। ४ निग्रह।
 ५ परिहार। ६ मल, पोधा (हे २, २१७)।
 गउ देवो एवं (हे १, १६, पउम १५, २४)।
 एवइ वि [इयग, एतायग] इतना।
 'सुतो य [इतस] दउनी बार (कय)।

एवइय वि [इयत्, एतावत्] इतना (कय,
 विसे ४४४)।
 एवं म [एवम्] इस तरह, इस रीति से,
 इस प्रकार (सूत्र १, १; हे १, २६)। 'मूअ
 पुं [भूत] १ व्युत्पत्ति के अनुसार उस क्रिया
 वे विशिष्ट भयों को ही शब्द का अग्निये
 माननेवाला पद (ठा ७)। २ वि. इस तरह
 का, एवं-प्रकार (उप ८७७)। 'विध, 'विह
 वि [विध] इस प्रकार का (हे ४, ३२३,
 बाल)।
 एवहास पुं [एवंहास] इतिहास (गउड
 ८०२)।
 एवड (पप) वि [इयत्] इतना (हे ४,
 ४०८, कुमा, मवि)।
 एवमाइ देखो एमाइ (पएह १, ३)।
 एवमेव } देखो एमेव (हे १, २७१, उवा)।
 एवामेव }
 एवई देखो एवं (पड; मवि ७२, स्वप्न १०)।
 एवई देखो एय=एव (मवि १३, स्वप्न ४०)।
 एवयहि (पप) म [इदानीम्] हम समय,
 अनुना (पड)।
 एवगार पुं [ईर्ग] बगडी (कुमा)।
 एस सक [इप्] १ इच्छा करना। २
 खोजना। ३ प्रकाशित करना। एसइ (पिंड
 ७५)।
 एस सक [आ + इप्] करना, 'तम्हा
 विण्णमेविज्जा' (उत १, ७, मुख १, ७)।
 एस सक [आ + इप्] १ खोजना, खुद
 भिक्षा की लीन करना। २ विशेष भिक्षा का
 ग्रहण करना। एसित (प्राचा २, ६, २)।
 वरु. एसमाण (प्राचा २, ५, १)। संह.
 एसित्ता, एसिया (उत १, प्राचा)। हेड
 एसित्तए (प्राचा २, १)।
 एस वि [एय्य] १ माधो पदार्थ, होनेवाली
 वस्तु (प्राव ५)। २ पु. भविष्य काल (दमनि
 १); 'अवयनं संपद गए वह वीरुद, त्रिह व
 एसमि' (विसे ४२२)।
 'एस देखो देस, 'मण की ए एसद बखो
 पयिज्जतो मएवजालमि' (गा ४००)।

एसग वि [एपक] अन्वेषक, गवेपक (प्राचा)।
 एसज्ज न [एयवय] वैभव, प्रभुत्व, संपत्ति
 (ठा ७)।
 एसण न [एणण] १ अन्वेषण, खोज। २
 ग्रहण (उत २)।
 एसणा की [एणणा] १ अन्वेषण, गवेपण,
 खोज (प्राचा)। २ प्राप्ति, लाभ. 'विसएमण
 भियायाति' (सूत्र १, ११)। ३ प्रार्थना (सूत्र
 १, २)। ४ निर्दोष प्राधार की खोज करना
 (ठा ६)। ५ निर्दोष भिक्षा (प्राचा २)। ६
 इच्छा, भूमिलाप (पिंड १)। ७ भिक्षा का
 ग्रहण (ठा ३, ४)। 'समिह की [समिति]
 निर्दोष भिक्षा का ग्रहण करना (ठा ५)।
 'समिय वि [समित] निर्दोष भिक्षा को
 ग्रहण करनेवाला (उत ६, मग)।
 एसणिज्ज वि [एपणीय] ग्रहण-योग्य (प्राचा
 १, ५)।
 एसि वि [एयिन्] अन्वेषक, खोज करनेवाला
 (प्राचा)।
 एसिय वि [एयिन्] १ खोज करनेवाला,
 गवेपक। २ पुं, व्याप। ३ पाक्षि-विशेष
 (सूत्र १, ६)। ४ मनुष्यो की एक लीन
 जाति (प्राचा २, १, २)।
 एसिय वि [एयित] गवेपित, अन्वेषित (मग
 ७, १)। २ निर्दोष भिक्षा (वव ४)।
 एसिय वि [एयित] भिक्षा-चर्चा की विधि से
 प्राप्त (सूत्र २, १, ५६)।
 एससिय देखो एसज्ज (उव)।
 एह बव [एय्] दबना, उतत होना। एहद
 (पड)। प्रयो., कवट. 'दीसंति दुहए दहंठा
 (दम ६)।
 एह (पप) वि [ईहत्त] ऐसा, इनके जैसा
 (पड. मवि)।
 एहत्तरी (पप) की [एकसत्तति] संवत्ता-
 विशेष, ७१ (निग)।
 एहा की [एयस्] समिप, दपन (उत १२,
 ४३, ४४)।
 एहिअ वि [एहिह] हम जन्म-संबन्धी (मोप
 ६२)।

ऐ

ऐ य [अयि] इन धर्मों का सूचक अव्यय—
१ संभावना । २ भ्रामन्त्रण, संवोधन । ३

प्रश्न । ४ अनुत्पन्न, प्रीति । ५ अनुत्पन्न, 'ऐ
वीहेमि, ऐ उम्भत्ति' (हे १, १६६) ।

॥ इम सिरिपाइअसहमहण्वो ऐभासइअनललो
सदुमो तरंगो समतो ॥

ओ

ओ मुं [ओ] स्वर वर्ण-विशेष (हे १, १,
प्रभा) ।

ओ देवो अव = अप (हे १, १७२, प्राप्र.
कुमा, पङ्) ।

ओ देवो अव (हे १, १७२, प्राप्र. कुमा
पङ्) ।

ओ देवो उय (हे १, १७२, कुमा) ।

ओ देवो उअ = उत (हे १, १७३, कुमा) ।

ओ म [ओ] इन धर्मों का सूचक अव्यय—
१ वितर्क । २ प्रकीर्ण, विस्मय (प्राङ् ७८) ।

ओ म [ओ] इन धर्मों का सूचक अव्यय—
१ सूचना, 'ओ मविण्णपत्तित्त्वे' । २ परचा-

त्ताप, अनुत्पन्न, 'ओ म मए छाया इत्तिमाए'
(हे २, २०३, पङ्, कुमा, प्राप्र) । ३

संवोधन, भ्रामन्त्रण (ताट—वैत ३७) ।
४ पादवृत्ति में प्रयुक्त किया जाता अव्यय

(धंवा १, वित्ते २०२४) ।

ओअ न [ऐ] बातों, कथा कहानी (दे १,
१४६) ।

ओअअ वि [अपगत] भ्रष्ट, 'ओअअभन'-
(पि १६५) ।

ओअअ पु [ऐ] गलित, गर्जना (दे १, १५५) ।

ओअअ सक [आ + छिद्] १ बलात्कार से
छीन लेना । २ नारा करना । ओअअइ (हे ४,
१२५, पङ्) ।

ओअअणा ओ [आच्छेदना] १ नारा । २
ज्वररस्ती छीनना (कुमा) ।

ओअअअ सक [हश्] देखना । ओअअअइ
(हे ४, १८१, पङ्) ।

ओअअअ सक [रि + आप्] व्याप्त करना ।
ओअअअइ (हे ४, १४१) ।

ओअअअअ वि [व्याप्] विस्तृत, फैला
हुआ (कुमा) ।

ओअअअअ वि [दे] १ अभिभूत, परितुल ।
२ न वेरा वहीह को एकनित करना (दे १,
१७२) ।

ओअअअअ } वि [दे] प्राप्त, सूँघा हुआ
ओअअअअ } (हे १, १६२, पङ्) ।

ओअअअ वि [अवतत] नमा हुआ, नीचे की
तरफ मुड़ा हुआ (सि ११, ११८) ।

ओअअ वि [अपवृत्त] धौधा किया हुआ,
उतारा किया हुआ, ओअअ कुंमपुदे जलस-

कण्ठिमावि कि ठाड ? (पा ६५४) ।

ओअअअ वि [अपवृत्तित्व] १ भ्रमरान्त-
योग्य । २ व्यामने योग्य, छीनने योग्य,
'कुमुपमि व पञ्चापए भगरोधप्रममि'
(सि ३, ४८) ।

ओअअअअ वि [दे] अभिभूत, पराभूत
(पङ्) ।

ओअअ सक [अ + च्] १ जन्म-ग्रहण
करना । २ नीचे उतरना । ओअअइ (हे ४,
८५) । वङ्. ओअअत (धोष १६१, गुर
१४, २१) । हङ्. ओअअउ (प्रान्) । ह.

ओअअअअ (गुर १०, १११) ।

ओअअअ न [अपकरण] साधन, सामग्री (पा
६८१) ।

ओअअअ न [अनतरण] उतरना, नीचे भ्राना
(गङ्) ।

ओअअअ पुं [अपवरण] कनरा, कोठरी (सुग
४१५) ।

ओअअअ वि [अनवीर्य] वृत्ता हुआ (पाप्र) ।

ओअअअ वि [औदरिक] वेद मप, पैह, उवर
भरले मान की चिन्ता करनेवाला (धोष
११८ मा) ।

ओअअअ ओ [अपवरिका] कोठरी, छोटा
कमरा (सुग ४१५) ।

ओअअअ देवो ओअअ = अप + वृत् । ओअअअइ
(प्राङ् ७०) ।

ओअअअ अ [अ + चल्] चलना ।
ओअअअ (पि १६७, ४८८) । वङ्. ओअअ-
अ (पि १६७, ४८८) ।

ओअअ पु [दे] १ भ्रमचार, तराज भ्रमचारण,
भ्रित्त भ्रमचारण (पङ्, स ५२१) । २ भ्रम,

भ्रमना (पङ्, दे १, १६५) । ३ भीमो का
बोडा । ४ वि पर्यन्त, प्रसिद्ध । ५ सम्बलन,

सद्वृत्ता हुआ (दे १, १६५) । ६ जिसकी
बाँधें निमीलित होनी हो वङ्. मुच्छिदन्तो-

भ्रमना भ्रमरंता एणममहिहरेहि पयगा' (सि
१३, ४३) ।

ओअअअ वि [दे] निगल्य, प्रतारित (पङ्) ।

ओअअ सक [सायय्] साधना, यज्ञ में
करना, जीतना, 'गण्ठाहि ए भा देवाणु-

पिभा । सिधू महारण्ड पचत्विमिल
लिम्बुड ससिधुसागरगिरिवेराग समविसमण-
म्बुडणि ॥ ओपवेहि' (ज ३) । सक.
ओअवेत्ता (ज ३) ।

ओअवण न [साधन] विजय, वरा करना
स्वायत्त करना (ज ३—पम २४८) ।

ओआज पु [दे] १ ब्रामासीर गाँव का
रामी । २ ब्रामा, प्रादेश । ३ हस्तो वगैरह
को पकड़ने वा गत्त । ४ वि अग्रहूत, छोना
हुमा (दे १, १६६) ।

ओआअन पु [दे] भल्ल समय (दे १ १६२) ।
ओआर सक [अप + चारय] डानना,
'कह सुअ हृष्येओ ओआरति' (मे ४६) ।

ओआर पु [अपकार] अष्टिष्ठ हानि, क्षति
(कुमा) ।

ओआर पु [अनवार] १ अवारण (ठा १,
गड) । २ अवार, देहातर भारण (पह) ।
३ उपति, जन्म, 'अचत्तमणोपायो जय
अरारोगवाहीण' (स १११) । ४ प्रवेश
(विसे १०४०) ।

ओआर देवो उवयार (पह) ।

ओआरण न [अवतारण] उतारना, अवारणित
करना (दे ४, ४०) ।

ओआरिज वि [अवतारित] उतारा हुमा
(स ११, १३, उप ५६७ टी) ।

ओआल पु [दे] छोटा प्रवाह (दे १, १५१) ।

ओआलो लो [दे] १ लङ्ग वा दीप । २
पति, खेणी (दे १, १६५) ।

ओआवल पु [दे] बालातप, सुवह वा सूर्य
ताप (दे १, १६१) ।

ओआस देवो अजगास (हे १, १७२, कुमा,
२०), अम्भारिणाए सुदर । भीमासी बर्य
पावण' (वाप ६०३) ।

ओआस देवो उवजस (हे १, १७३, प्राह) ।

ओआहिज वि [अवगाहित] जिसका
अवगाहन विषा गया हो वह (मे १, ४, ८,
१००) ।

ओईध तव [आ + मुच्] १ छोड़ देना,
त्यागना, फेंक देना । २ उगार कर रख देना,
'तो उरिअऊण तजे ओईधइ वचुय सरीयो' (पउम ३५, १६), रहेय व मरति परिवा
ओए ओईधइ ति' (भात ३८) ।

ओइण वि [अनतीर्ण] उतरा हुमा (पात्र,
गा ६३) ।

ओइत्त } न [दे] परिधान, वस्त्र (दे १,
ओइत्तग) १५५) ।

ओइह वि [दे] ग्राहद (दे १, १५८) ।

ओउठण न [अवगुण्ठन] ओ के मुँह पर
का बरन, घूँघट (अभि १६८) ।

ओउल्लि वि [दे] पुरस्कृत आगे किया हुमा
(पह) ।

ओऊल न [अवचूल] सङ्कता हुमा बरना
छल, प्रात्यक्ष (पात्र), 'मरगयलवतोमोतिमो-
उल' (पउम ८, २६३) । देखो ओचूल ।

आ य [ओम्] प्रणव, मुख्य मन्त्राक्षर (पहि) ।

ओरार पु [ओङ्कार] 'ओ' अक्षर (उत २५
३१) ।

ओगण सक [कण] अन्वय भावाज करना ।
ओगणइ (प्राह ७३) ।

ओँघ देखो उघ । ओघइ (हे ४, १२ टि) ।

ओँडल न [दे] कैरा-गुल्फ, बेरा रचना,
घमिल्ल (दे १, १५०) ।

ओँटुर देखो उटुर (पह) ।

ओयाल सक [छाद्य] ढक्कना, आच्छादित
करना । ओयालइ (हे ४, २१) ।

ओयाल सक [पञ्चाय] १ ठुबाना । २
व्यास करना । यावानइ (हे ४, ४१) ।

ओयालिज वि [छादित] ढका हुमा (कुमा) ।

ओयालिज वि [प्लावित] १ ठुक्का हुमा ।
२ व्यास (कुमा) ।

ओयवण देवो उक्कयण (भावा २, २, ३,
१ टी) ।

ओरुच्छिवा देवो उक्कच्छिवा (पव ६२) ।

ओरुह वि [अपवृष्ट] १ सीखा हुमा । २
न अपरपण, सीखाव (उत १६) ।

ओरुहदग देवो उक्कहदग (पणह १, ३) ।

ओरुगा पु [अवसरक] विष्ण (मन २०) ।

ओरुस सक [अन + कृप्] १ निमग्न
होना, गड जाना । २ सोचना । ३ सह
जाना । वह ओरुसमाण (रस) ।

ओरुसत्त वि [अनकान] निपाड, पराजित
'परसाईहि अणेकरता अणउरिअणहि
अणउदिअमाण विहरनि' (ओप) ।

ओरुसंदी देवो उक्कंदी (दे १, १७५) ।

ओरुणी लो [दे] युवा, बूँ (दे १, १५६) ।
ओरुकिअ न [दे] १ वास, वसन, अयत्तान ।

२ वसन उल्गे (दे १, १५१) ।

ओरुसत्त सक [आ + कृप्] लोचना ।
कर्म 'जह जह ओरुसत्तजइ, तह तह वेग
परिअहमाणेण । भयव । तुरगेणे, इहाणिओ
आसमे तुम्ह' (सुर ११, ५१) ।

ओरुसत्त सक [अव + लण्डय] लोडना,
भागना । क. ओरुसत्तअउ (से १०, २६) ।

ओरुसत्त वि [दे] भागान्त (दे १, ११२) ।

ओरुसत्त देखो अरुसत्त (सुर १०, २१०,
पउम ३७, २६) ।

ओरुसत्त देखो उरुसत्त (कुमा प्राह) ।

ओरुसत्त [दे] देखो उरुसत्त (दे १, १७५) ।

ओरुसत्त (सो) वि [अभियत्] अभिय
मे होनेवाला, भावी (प्राह ६६) ।

ओरुसत्त वि [दे] १ अरुसत्त । २
खडित, कृणित (कस, दे १, १३०) । २
छन्न, ढका हुमा । ३ पार्ष्व मे स्थित
(दे १, १३०) ।

ओरुसत्त वि [अरुसत्त] कका हुमा (रस) ।

ओरुसत्त देखो आरुसत्त ।

ओरुसत्त (सो) अजगम । क. ओरुसत्तद्वज
(शी) (सा ५८) ।

ओरुसत्त वि [उपगत] प्राप्त (सुम १, ५,
२, १०) ।

ओरुसत्त देखो ओरुसत्त (पिग) ।

ओरुसत्त वि [अवगलित] निरा हुमा,
खिसका हुमा (गा २०५) ।

ओरुसत्त न [अपकसन] ह्रास (राज) ।

ओरुसत्त वि [अनगृहीत] उगत, गृहीत
(ठा ३) ।

ओरुसत्त वि [अनगात्] १ आश्रित, अश्रित
(ठा २, २) । २ व्याप (एणा १, १६) ।

३ निमग्न (ठा ४) । ४ गभीर गहरा (पउम
२०, ६५, से ६, २६) ।

ओरुसत्त पु [अनगात्] जगह, स्थान (विसे
१३६ टी) ।

ओरुसत्त पु [अनगात्] मार्ग, रास्ता (मुन
२, २१) ।

ओरुसत्त उर [अन + गाह] ग'य से बनना ।
व ओरुसत्त (पिग ५७५) ।

ओगाह सक [अ+गाह] अवगाहन करना। ओगाह (पह)। बहु ओगाह (भाव २)। सङ्. ओगाहइत्ता, ओगाहिता (दस ५, मग ५, ४)।

ओगाहण न [अवगाहन] अवगाहन (मग)। ओगाहणा छी [अवगाहना] १ आचार भूत आकाश-सेव (ठा १)। २ शरीर (मग ६, =)। ३ शरीर परिमाण (ठा ४, १)। ४ अवस्थान, अवस्थिति (विसे)। *णाम न [नामन्] कर्म विशेष (मग ६, =)। *णाम पुं [नाम] अवगाहनात्मक परिणाम (मग ६, =)।

ओगाहिम वि [अवगाहिम] पक्वान (पचा ५)।

ओगिम्भ [सक [अ+मह] १ प्राप्य ओगिम्भ २ सेना। २ भुजानु-पूर्वक ग्रहण करना। ३ जानना। ४ उद्देश करना। ५ लय कर कहना। ओगिम्भ (मग, कप्य)। सङ्. ओगिम्भय, ओगिम्भइत्ता, ओगिम्भइत्ता, ओगिम्भइत्ताण (भावा एया १, १, कस, उवा)। क. ओषेत्तव्य (कप्य वि ५७०)।

ओगिम्भण न [अवग्रहण] सामान्य ज्ञान-विशेष, अवग्रह (एदि)।

ओगिम्भणया छी [अवग्रहणता] १ उपर देखो (एदि)। २ मनो विपरीकरण, मन स जानना (ठा न)।

ओगिम्भ देखो ओगिम्भ। सङ्. ओगि-हिता (निर १, १)।

ओगुडिय वि [अवगुण्डित] लिप्त (वृह १)।

ओगुट्टि छी [अवगुट्टि] धारण, हलवाई, तुच्छता (वडम ५६, १५)।

ओगुहिय वि [अवगुहित] शान्तिमित (एया १, ६)।

ओगर पु [ओगर] धान्य विशेष, सीहि-विशेष (विग)।

ओग्गह देखो उग्गाह (सम्म ७५, उव, वस, स ३५, ५६=)।

ओग्गह सर [प्रति+इप्] ग्रहण करना। ओग्गह (प्राह ७३)।

ओग्गहण देखो ओगिम्भण। *पट्टग पुन [पट्टक] धैन साधियों के पहने का एक दुष्प्रचाराय वस्त्र, नापिया, लंगोटा (वस)।

ओग्गहिय वि [अवगृहीत] १ अवग्रह ज्ञान से जाना हुआ, अवग्रह वा विषय। २ अनुज्ञा से गृहीत। ३ वस्त्र, वेषा हुआ (उवा)। ४ देने के लिए उठाया हुआ (मीर)।

ओग्गहिय वि [अवग्रहिक] अनुज्ञा से गृहीत, अवग्रहवाला (मीर)।

ओग्गारण न [उद्गारण] उद्गार (बाह ७)।

ओग्गाल पु [दे] छोटा प्रवाह (दे १, १५१)।

ओग्गाल सक [रोमन्याय] पुराना, बचाई हुई वस्तु का पुन बचाना। ओग्गालह (हे ४ ५३)।

ओग्गालि वि [रोमन्यायि] पुरानेवाला, बचाई हुई वस्तु का पुन बचानेवाला (हुमा)।

ओग्गाह देखो उग्गाह = उद + ग्राह्य। ओग्गाह (प्राह ७२)।

ओग्गिअ वि [दे] अग्निपूत, पुरातन (दे १, १५=)।

ओग्गीअ पुं [दे] हिम, बर्फ (दे १, १५६)।

ओग्घ देखो उग्घह। ओग्घह (प्राह ७१)।

ओग्घसिय वि [अवघसित] प्रमानित, साक्ष्य मुचर किया हुआ (राय)।

ओघ पु [ओघ] १ समूह सघात (गाया १, ५)। २ ससार, 'एते ओघ हरिस्मति सुगुहं बहुरिणो' (सूत्र १, ३)। ३ अविच्छेद अविच्छिन्नता (पह १, ७)। ४ सामाय, साधारण। सण्णा छी [संसा] सामाय ज्ञान (पह ७)। *देस पु [देस] सामाय विवक्षा (मग २५, ३)। देखो ओह = ओष।

ओघट्टि (सौ) वि [अवगुट्टि] ग्राह्य (मयी २७)।

ओपसर पु [दे] १ पर का जल प्रवाह। २ धनवं परानी, नुवजान (दे १, १००, गुर २, ६६)।

ओपसिय देखो ओग्घसिय।

ओपाययण न [ओपायतन] १ परमत्र मे पूजा जाना स्थान। २ तत्रावर्तनी पानी जाने का साधारण रास्ता (भावा २, १०, २)।

ओपेत्तव्य देखो ओगिम्भ।

ओचार पुं [दे] अपचार। धान्य रखने की

बडी कोडी—मिट्टी का पात्र विशेष (मयु १२१)।

ओचिदी (सौ) छी [ओचित] उचितता, शौचित्य (रभा)।

ओचुंय सक [अ+चुम्] चुम्बन करना। सङ्. ओचुंयिऊण (मवि)।

ओचुल न [दे] कुहा का एक भाग (दे १, १५३)।

ओचुल २ देवा ओकुल (विना १, २, गुर ओचुला १, ७०)। २ मुल से हटा हुआ शिबिल—ढीला (वस्त्र), 'शौचुलनियया' (नं ३—मन २४५)।

ओस्य देखो अत्रय (महा)।

ओसिया छी [अवचायि] टोह कर (फूलो की) छन्दार करनेवाली (गा ७६७)।

ओसेंहर न [दे] अमर भूमि। २ जघन के रास (दे १, ११६)।

ओच्छअ [वि [अवसृत] १ माच्छादिन। ओच्छअय २ निच्छ, रोना हुआ (पह १, ४, गउड स १६४)।

ओच्छदिअ वि [दे] १ बगहल। २ व्यथित, पीडित (पह)।

ओच्छण वि [अवच्छन्न] माच्छादित, डबा हुआ, एिच्छाजो असोको माच्छएणो सापरत्तव' (सम १५२)। देखो ओच्छन्न। ओच्छन्न न [दे] बत धावन, दानन (दे १, १५२)।

ओच्छन्न देखो ओच्छण (म ११२, ओप)। २ अवच्छन्न, माहान्त (भावा)। ओच्छर (सौ) सन [अ+सृ] १ विद्याना, कैना। २ माच्छादित बरना, डबना। ओच्छरीमदि (ना—उत्तम १०५)।

ओच्छविय [वि [अवच्छादित] माच्छा-ओच्छादय] दित देना हुआ, 'मुच्छवयास-कण्ठमवतिलमुच्छादय मुरम्म केमार-नित्तउकामपुन' (एया १, १—मन २५, न २०, महा न १५०)। ओच्छादिय नीचे देना। ओच्छाय सन [अ+छादय] माच्छादन करना। सङ्. ओच्छादिय (मवि)। ओच्छाय वि [अवच्छादन] दाचना, निपान (म ५५७)। ओच्छादिय देना उच्छादिय।

‘ओच्छाहिमो परेण य सदि-
पसमाहि वा समुत्तइमो ।

मवमाणिमो परेण य जो
एसद माणसिजो सो ॥’
(पिंड ४६४) ।

ओच्छिअ न [दे] नेत्र विवरण (दे १,
१५०) ।

ओच्छिण वि [अयच्छिण] आच्छादित,
‘पतेहि य पुत्तेहि य ओच्छिरएणपच्छिरएण’
(जीव १) ।

ओच्छुद्ध सक [आ + क्रम्] ? आक्रमण
करना । २ गमन करना । ओच्छुदति (से
१३, १६) । वनं ओच्छुद्ध (से १०,
५५) ।

ओच्छुण वि [आश्रान्त] ? दबाया हुआ ।
२ चलामित, ओच्छुणहुगमनपहा (से १३,
६३, १५, १३) ।

ओच्छोअ न [दे] घर की छत के आन्त
भाग से गिरता पानी

‘रत्नेह पुत्तम मायएण

आच्छोअस पच्छिज्जीती ।

असूहि पक्षिपपरिणी ओलि-

वर्जत ए सज्जत’ (गा ६२१)

ओजिग्घ मक [प्रा] रुप्त होना । ओजिग्घद
(प्राक् ६५) ।

ओज्जर वि [दे] नीव, डरपोक (पङ्) ।

ओज्जल देवो उज्जल (दे) ।

ओज्जरल वि [दे] बलवान् प्रबल (दे १,
१५४) ।

ओज्जाअ पु [दे] गजित गजविज (दे १,
१५४) ।

ओज्म वि [दे] मैता, अमच्छ पोटा नहीं
वह (दे १, १५८) ।

ओज्मत देखो ओज्मा = मय + ध्या ।

ओज्ममण न [दे] पतायन, भाग जाना (दे
१, १०३) ।

ओज्मर पु [निर्मर] करना, पर्वत से
निजलता जल प्रवाह (गा ६४०, दे १, ६८,
कुमा. मग) ।

ओज्मरिअ [दे] देवो उज्मरिअ (दे १,
१२३) ।

ओज्मरी जी [दे] भोग प्राप्त का आवरण
(दे १, १५७) ।

ओज्मा सक [अप + ध्या] सखन चिन्तन
करना । कवक, ओज्मत (भव) ।

ओज्मा देखो अज्मज (जुग ३७४) ।

ओज्मज देखो उज्जमज (कुमा प्राक्) ।

ओज्मज वि [दे] दूसरे को प्रेरणा कर
हाथ से लिया हुआ (दे १, १५६) ।

ओज्मजग केवो उवज्मज (उप ३५७ टी) ।

ओट्ट पु [ओट्ट] मोठ, भवर (पउम १,
२४, स्वज १०४ कुमा) ।

ओट्टिअ वि [औट्टिक] उट्ट सम्बन्धी, उट्ट
के बालों से बना हुआ (कस स ५८६) ।

ओड्डु वि [दे] मरुत्त, रागी (दे १,
१५६) ।

ओड्ड पु [ओड्ड] ? उत्तल देहा । २ वि
उत्तल देहा का निवासी, उडिया (पिप) ।

ओड्डिअ वि [ओड्डिय] उत्तल देसीय (पिप) ।

ओड्डण न [दे] ओदन, उत्तरीय, चादर
(दे १, १५३) ।

ओड्डिगा जी [दे] मोदनी (स २११) ।

ओटण न [दे] अट्टण (प्राक् ३८) ।

ओण देखो ऊण = ऊन (रंभा) ।

ओणद सक [अव + नन्द] भविन्द
करना । कवक, ओणदिजमाण (कप्प) ।

ओणम मक [अर + नम्] नीचे गमना ।
वकु ओणमंत (से १, ५२) । संट्. ओण-

मिअ, ओणमिऊण (धारा २, निज १) ।

ओणय वि [अनय] ? तथा हुआ (सुर २,
४६) । २ न नमस्कार, प्रणाम (सम २१) ।

ओणल मर [अय + लम्भ] सट्टना,
‘वेसमनाडु संपे ओणल्लद’ (अवि) ।

ओणयिअ वि [अनयित] नमया हुआ,
भवनत विचा हुआ (गा ६३५) ।

ओणम सक [अर + नमय] नीचे नमाना,
भवनत करना । ओणमेहि (मुन्छ ११०) ।

संट्. ओणमिआ (निज) ।

ओणामणी जी [अननामनी] एण विचा,
जिसके प्रभाव से हुआ भवेत्त स्वयं कर्नादि

देने से तिए भवनत होते हैं (उप ३ १५५,
निज १) ।

ओणामिय } वि [अवनयित] भवनत किया
ओणामिय } हुआ (से ५, २६, ६, ४, गा
१०३, भवि) ।

ओणिअत्त मक [अपनि + वृत्] पोछे
हटना, वापिस भाना । वकु. ओणिअत्तंत
(से २, ७) ।

ओणिअत्त वि [अपनिवृत्] पोछे हटा हुआ,
वापिस भाया हुआ (से ५, ५८) ।

ओणिमिअ वि [अवनिमिलित] मुडित, मूँदा
हुआ (से ६, ८७, १३, ८२) ।

ओणिमिट्ट देवो ओनिमिट्ट (पि ३३३) ।

ओणियव्य पु [दे] बलकी, बीटियों का

खुदा हुआ मिट्टी का ढेर (दे १, १५१) ।

ओणीवी जी [दे] मोदी, कटि-सूत्र (दे १,
१५०) ।

ओणुअ वि [दे] ममिभूत, पराभूत (दे १,
१५८) ।

ओणिह न [ओभिद्रय] मित्रा का भ्रमाव,
‘ओणिह दोभवत्त’ (काप्र ८५; दे १,
११७) ।

ओणिज वि [औणिज] ऊन का बना हुआ,
ऊर्ण निमित्त (कस) ।

ओणज्ज वि [उपनेय] साचे में ढाल कर
बना हुआ कूल भादि संधि से बन्ना मोटा का
पुतला, ‘आरट्टिमउविन्नं ओएले (१ ऐ)
उज नीमिं क रंमं क’ (वसति २, १७) ।

ओत्तलहुअ पु [दे] विटप (दे १, ११६) ।

ओत्ताण देवो उत्ताण (विज २८) ।

ओत्थ सर [थम्] डनना । ओत्थद (प्राक्
६५) ।

ओत्थअ वि [अनसृत] ? केना हुआ, प्रथन
(से २, ३) । २ आच्छादित, निहित ‘सम-

तथो धम्मं मयल’ (भावम, दे १, १५१,
स ७७, ३७६) ।

ओत्थअ वि [दे] भवदम, तिर (दे १,
१५१) ।

ओत्थइअ देवो ओच्छइय (गा ५६६, ति
८, ६२, स ५७६) ।

ओत्थर देवा ओच्छर । धामरद (पि ५०५
नाट) ।

ओत्थर पु [दे] उपाह (दे १, १५०) ।

ओत्थरण न [अपस्तरण] बिदीना (पउम
५६, ८५) ।

ओत्थरिअ वि [अचस्सुत्त] १ विद्धाया हुमा ।
२ व्यात (से ७, ४७) ।

ओत्थरिअ वि [दे] १ ब्राह्मन् । २ जो
आमण करता हो वह (दे १, १६६) ।

ओत्थल्ल देखो उदथल्ल = उद + स्तु । ओत्थ-
ल्लइ (प्राइ ७५) ।

ओत्थल्लपत्थल्ल देखो उदथल्लपत्थल्ल (दे
१, १२२) ।

ओत्थाडिय वि [अचस्सुत्त] विद्धाया हुमा
(भव) ।

ओत्थार सक् [अ + स्तारय्] आण्डारिअ
करना । नर्म्म ओत्थारिअजिअ (से ६६८) ।

ओदइय देखो ओदइय (अग्न १३६) ।

ओदइय पुन [ओदइयिक्] १ उदय, नर्म्म-
निपाक (मग ७, १४; विसे २१७४) । २ वि.
उदय निपाक (विसे २१७४, मूष १, १३) ।

३ पु. कर्मोदय रूप भाव, 'कम्मोदयमाहो
सञ्जो धम्मो यो ह्येव भोदयस्सो' (विसे ३४६४) ।

४ वि उदय होने पर होनेवाला (विसे
२१७४) ।

ओदइ न [ओदास्य] उदात्तता, ओदुता
(आह) ।

ओदइज न [ओदास्य] उदात्तता (आह) ।

ओदण न [ओदण] भाउ, राधा हुमा बाबल
(पण्ड २, ५, मोष ७१४, चार १) ।

ओदरिअ वि [ओदरिक] पट भरा, पट मले
के लिए हो जा साधु हुमा हा वह (निबु १) ।

ओदहण न [अचदहन] सत रिप हुए चोह
के कोरा बर्गल से दानना (राज) ।

ओदारिय न [ओदार्थ] उदारता (आह) ।

ओद वि [आट्रे] मोना (प्राइ २०) ।

ओदविअ वि [दे] १ ब्राह्मन् । २ नट
(दे १, १७१) ।

ओदंस सक् [अ + ध्यस्] १ गिरना ।
२ हटाना । ३ हटाना । वक्क 'वरवादि
मणोअता मणएउणिएहि अणोदसिअ-
माणा विहरति' (मीष) ।

ओचार सक् [अय + धाच्] पीछे दोहना ।
आचारद (महा) ।

ओधुण रेवो अरधुण । नर्म्म आधुवति (पि
५१६) । सट, ओधुणिअ (पि ५६१) ।

ओधूअ रि [अचधूअ] नमिअ (नाट) ।

ओधूसरिअ वि [अचधूसरित] धूसर रंग-
वाला, हलका पीला रंगवाला (से १०,
२१) ।

ओनडिय वि [अननटित] अचणित, निर-
स्सुत 'चतुप्पोनडियमएणह' (सम्मत २१४) ।

ओनियट्ट वि [अनियट्ट] देवा ओणि-
अच = अचनियुत्त (अण) ।

ओपल्ल वि [दे] अचोणं, कुण्डिल, 'तने
ए से तेतल्लिपुत्ते नोत्तप्लज जाव भन्नि खवे
आहरति, सत्थवि य से चारा ओपल्ला' (आया
१, १४) ।

ओप्प वि [दे] छट, मोर दिया हुमा (पट्ट) ।

ओप्प सक् [अपय्य] अरण करना । ओप्पेइ
(दे १, ६३) ।

ओप्पा ओ [दे] शाण धादि पर मणि बगैर
का अरण करना (दे १, १४८) ।

ओप्पाइय वि [ओत्पातिक्] उल्लात-सम्बन्धी
(मीष) ।

ओप्पिअ वि [अपित] समर्पित (दे १, ६३) ।

ओप्पिअ वि [दे] शाण पर चिमा हुमा,
'एण्वमज्जोणियमयसह' (दे १, १४८) ।

ओप्पील पु [दे] समूह, जल्पा (पाप) ।

ओप्पुसिअ } देखो उप्पुसिअ (अग्न, पि
ओप्पुसिअ } ४८६) ।

ओयइ वि [अयइ] १ बीधा हुमा । २
अयइअ (वह १) ।

ओयुग्ग सक् [अ + युष्] जानना ।
वट. ओयुग्गमाग (आवा) ।

ओम्भालग देखो उम्भालण (दे १, १०३) ।

ओमग वि [अवमग्न] अग्न, नट (मे ३,
६३, १०, २६) ।

ओमगणा ओ [अपमगना] लोअ निदा,
अपनीति (राज) ।

ओमाम सक् [अ + भास्] प्रकाशना,
चमकना । वक् ओमाममाण (ना ११,
६) । प्रवो ओमामेइ (मग) ओमामति, ओमा-
मति (मुज १६) इ. ओमाममाण (मुष
१, १४) ।

ओमास मक् [अ + भाप्] याचना करना
मागना, वक् ओमासिअमाण (निबु २) ।

ओमास पु [अचमास] १ अराज (मीष) ।
२ महामह स्त्रिय (अ २, ३) ।

ओमासण न [अचमासण] १ अराज,
उज्ज्वल (मग ८, ८) । २ आनिर्भाव । ३
प्राप्ति (सुम १, १२) ।

ओमासण न [अचमासण] याचना, प्रार्थना
(वव ८) ।

ओमासिय वि [अचमासिय] १ याचित,
प्राप्ति (वव ६) । २ न. याचना, प्रार्थना
(वह १) ।

ओमुग्ग वि [अचमुग्ग] बक्, व'क्. (आया
१, ८—एन १३३) ।

ओमेडिय वि [अचमुक्क] छुग्या हुमा,
रहित किया हुमा 'तेणहि कटिउज्जएणक्खं
पिअ वूद-ओमोडिओ निपटुत्तु' (महा) ।

ओम वि [अचम] अमर, निम्मार (आचा
२, ४, २, १) ।

ओम वि [अचम] १ वन, वृक्ष, हीन
(आचा) । २ लघु छोटा (मान २२१ भा) ।

३ न. दुग्ध, अमल (मीष १३ भा) ।

'कोट्ट' वि 'कोट्ट' कनोदर, जिसने वन
बाधा हो वह (अ ४) । 'वेलाग, 'वेलाय
वि 'वेलाक्' औणं बीर मनिअ वक्क धारण
करनेवाला (उत्त १२, आचा) । 'रत्त दुं
[रात] १ दिन-रात, उद्योतिष की गिनती
के अनुसार जिस तिथि का दाय होता है वह
(अ ६) । २ महोत्सव, रात दिन (ओप
२८५) ।

ओमइइ वि [अचमलिन] मलिन, मैला (मे
२, २४) ।

ओमथ [दे] देखो ओमथ (पाप) ।

ओमथिय वि [दे] मराजुल किया हुमा,
मराया हुमा (आया १, ११) ।

ओमथिय वि [अचमलिन] औपसत वे
प्यिअ, नीचे मल्ल वोर ऊँचे पैर लपकर
स्थित (एदि १२८ टी) ।

ओमस वि [दे] धाउट, धाउट (वट्ट) ।

ओमज्जण वि [अचमज्जन] स्नान किया (अ
६, ४८ टी) ।

ओमज्जायण हु [अचमज्जायण] श्रुति-
नित्य (अ ७ एन) ।

ओमज्जिअ वि [अचमज्जिअ] जिनको स्नान
करना गया हो वह मलिन (म ५६७) ।

ओमट्ट वि [अचमट्ट] वट्ट, मुग्रा हुमा (वे
५, ११) ।

ओमत्थ वि [दे] नत, भयोमुख (पाप) ।
ओमथिय [दे] देखो ओमथिय (भोष ३८६) ।

ओमह न [निर्माल्य] निर्माल्य, देवोच्छिष्ट
द्रव्य (पङ् १) ।

ओमह वि [दे] घनीभूत, वठिन, जमा हुआ
(पङ् १) ।

ओमान पुं [अपमान] अपमान, तिरस्कार
(उत्त २६) ।

ओमाण न [अमान] १ जिससे खेन वगैरह
का माप किया जाता है वह, हस्त, दण्ड
वगैरह मात (ठा २, ४) । २ जिसका माप
किया जाता है वह क्षेत्रि (अणु) ।

ओमाणन [अवमानन, अप] अपमान,
तिरस्कार (स ६६७) ।

ओमाय वि [अवमित] परिमित, मापा हुआ
(सुज ६) ।

ओमाल देखो ओमह = निर्माल्य (हे १, ३८,
हुमा, वज्जा ८८) ।

ओमाल भक्त [उप + माल्] १ शोभना,
शोभित होना । २ सक, सेवा करना, पूजना ।
सङ्क. ओमालिचि (अभि) । कवक. 'मह्वावि
भक्तिपराभक्तियसवह्वीसकृमुनवामेहि' । ओमा-
लिज्जतकमो, नियमा तियाहिबो होह'
(उप ६८६ ठो) ।

ओमालिअ देवो ओमह = निर्माल्य (प्राक्
३४) ।

ओमालिअ वि [उपमालित] १ शोभित ।
२ पूजित, श्रद्धित (अभि) ।

ओमालिआ छी [अनमालिअ] निमडी या
मुफ्फाई हुई माला (गा १६४) ।

ओमास पुं [अनमार्ज] स्पर्श (मे ६, ६७) ।

ओमिण सक [अव + मा] मापना, माप
करना । कर्म. ओमिणगज्ज (माणु) ।

ओमिणग न [दे] ओमनक, विवाह की एक
रीति, घर के लिये सातू बी छोर से किया
हुआ ग्योदावर (पचा ८, २३) ।

ओमिय वि [अयमित] परिच्छिन्न, परिमित
(सुज ६) ।

ओमोल भक्त [थर + मील] मुद्रित होना,
बन्द होना । यद्.ओमीलंत (वे ३, १) ।

ओमीस वि [अयमिअ] १ मिथित । २
समीपस्थ । ३ न. सामीप्य, समीपता,

'सुनिरंषि भन्त्यमाणो,
वेत्तिओ कायमणियभोमीसे ।

न जवेइ कायमानं,
पहल्लणुणेण नियएण ।'

(सोष ७७२) ।

ओमुक्क वि [अमुक्क] परित्यक्त (सम्मत
१५६) ।

ओमुग्ग देखो उम्मुग्ग (पि १०४, २३४) ।
ओमुच्छिअ वि [अयमुच्छित्त] महा-मूर्च्छा
को प्राप्त (पउम ७, १५८) ।

ओमुद्धग वि [अयमूर्धक] भयोमुख, भंभु-
द्धगा धरिणके पंति (सुव १, ५) ।

ओमुय सक [अव + मुच्] पहनना ।
भोगुयइ (कप्) । वक्क. ओमुयत (कप्) ।
सङ्क. ओमुइत्ता (कप्) ।

ओमोय पुं [ओमोक्] आमरण, धामूण
(भा ११, ११) ।

ओमोयय वि [अवमोदर] भूत की अपेक्षा
न्यून भोजन करनेवाला (उत्त ३०) ।

ओमोययिअ न [अवमोदरिक्] १ न्यून
भोजनक, तन-विशेष (भाषा) । २ दुमिअ,
भगल (सोष ७) ।

ओमोययिआ छी [अनमोदरिता, 'रिअ']
न्यून भोजन रूप तप (ठा ६) ।

ओम्माय पु [उग्माद्] उन्मत्तता (सवोष २१) ।

ओय न [ओजस्] १ विषम सखा, जैसे
एक, तीन, पाँच आदि (पिंड ६२६) । २

आहार विशेष, भक्षनी उपति के समय जीर
प्रथम जो आहार लेता है वह (सूयनि १७१) ।

ओय वि [ओजस्] गृह, घर (वच ५) ।

ओय वि [ओज] १ एक, अक्षहय (सूय १,
४, २, १) । २ मध्यस्थ, तटस्थ, उदासीन
(वृह १) । ३ पुं. विषम राशि (भा २२, ३) ।

ओय न [ओजस्] १ बल (भाषा) । २
प्रकाश, तेज (चर ५) । ३ उपति स्थान
में आत पुरुषों का समूह (परण ८, सग
१८२) । ४ धातव, श्रतु-धर्म (ठा ३, ३) ।

ओयंसि वि [ओजस्विन्] १ बजान् ।
२ तेजस्वी (सम १५२, धोय) ।

ओयट्ठण न [अपवर्त्तन] पीछे हटना, वापिस
लौटना (उप ७६०) ।

ओयड्ड मक् [अप + कृप्] गीचना ।
कवक. ओयड्डियंत (पउम ७१, २६) ।

ओयड्डिया } छी [दे] भोदनी, भोदने
ओयड्डुी } का वक्क, चादर, दुपट्टा (सुव
२, ३०) ।

ओयण देवो ओदण (पउम ६६, १६) ।

ओयत्त वि [अवट्त्त] अवगत, भयोमुख
(पाप) ।

ओयत्त सक [अप + वर्तय्] उलटाना,
वाली करने के लिए नमाना । सङ्क.

ओयत्तियार्ण (भाषा २, १, ७, ५) ।
ओयत्तण न [अपवर्त्तन] वित्तकान्ता, हटाता
(पिंड ५६३) ।

ओययिअ वि [दे] परिकल्पित (परह १, ४;
धोय) ।

ओया छी [ओजस्] शक्ति, सामर्थ्य (एणा
१, १०—य १७०) ।

ओया छी [ओजस्] १ प्रकार (सुज ६) ।
२ माता का शुक्र-रोगित (संडु १०) ।

ओयाइअ देवो उययाइय (सुगा ६२५, वे
४, २२) ।

ओययिअ वि [उपयात] उपगत, समीप पहुँचा
हुआ (एणा १, ६, निर १, १) ।

ओयार सक [अव + तारय्] नीचे उठा-
रना । सङ्क. ओयारिया (इत ५, १, ६९) ।

ओयार पुं [अयनार] पाद, तीर्थ (वेइय
५१८) ।

ओयारय वि [अनतारक] १ उतापनेवाला ।
२ प्रवर्ति करनेवाला (सम १०६) ।

ओयारण देवो उयारण (सुग ७१) ।

ओयावट्त्ता अ [ओजयिरा] १ बल शिवा
वर । २ चमत्कार दिया वर । ३ दिया आदि
का सामर्थ्य शिवा वर (जो दोषा दी जाय
वह) (ठा ४) ।

ओर वि [दे] १ चाद, मुन्दर (दे १, १५६) ।
२ समीप (इश ० दग ० पू०, आश्या ० वीरा-
पय ८७ गा ६) ।

ओरंपिअ वि [दे] १ आराज । २ नट (दे
१, १७१) ।

ओरपिअ वि [दे] पत्ता लिया हुआ, दिया
हुआ (पाप) ।

ओरत्त वि [दे] १ गविष्ठ, प्रमिताली । २ कुमुम्भ से रक्त । ३ विदारित, काटा हुआ (दे १, १६४; पाथ) ।

ओरद्ध देवो अवरद्ध = अघराद्ध (ग्रह ५०) ।

ओरम भक्त [उप + रम्] निवृत्त होना ।

घोरस्य (मूत्र १, २, १, १०) ।

ओरही क्षी [दे] सन्ना घोर मधुर भावान् (दे १, १०४; पाथ) ।

ओरम सक [अय + त्] नीचे उतरना ।

घोरस्य (हे ४, ८५) ।

ओरस वि [उपरस] स्तब्ध-युक्त, अनुप्राणी (ठा १०) ।

ओरस वि [ओरस] १ स्वोपादित पुत्र, स्व-पुत्र (ठा १०) । २ घोरस्य, हृदयोत्पन्न (जीव ३) ।

ओरसिअ वि [अप्रतीर्ण] उत्तरा हुआ (कुमा) ।

ओरस वि [ओरस्य] हृदयोत्पन्न, धाम्यन्तरि (ग्रह) ।

ओराल देवा उराल = उदार (ठा ४, १० जीव १) ।

ओराल देवो उराल (दे) (चर १) ।

ओराल न [ओरार] नीचे देवो (विने ६११) ।

ओरालि न [ओरारिक्त] १ शरीर विशेष, मनुष्य और पशुओं का शरीर (धीप) । २ वि. शोभायमान, शोभा बाता (पाथ) । ३ औदारिक शरीर बाता (विने १७५) । 'णाम न [नामन्] औदारिक शरीर का हेतुवृत्त बर्न (वम्भ) ।

ओरालि वि [दे] १ म्यास । २ उगलित; 'विट्ठोराहोरोपासमिरी' (गुर १, १२) ।

ओरालि वि [दे] १ पीछा हुआ 'मुदि बरपुत्र देवि पुत्रु मोरानिउमुत्रमकु' (मरि) । २ विलासा हुआ, प्रसारित, 'दन'र्दिन बहुरदंनु मोरानिपो' (मरि) ।

ओराली देवा ओरही (गुर ११, ८६) ।

ओरिअ वि [अरिअ] मरिअ को मारा, 'अपर मरिअोरिअिअ अपर डडडडडडवममविन' (पटम १४, ४३) ।

ओरिअ पु [दे] सन्ना बान, दीप बान (दे १, १४४) ।

ओरी [दे] समीप (माला० नीप. पन्—८५ गा० १५) ।

ओरंज न [दे] जीवा-विशेष (दे १, १२६) ।

ओरंभिय वि [उपरुद्ध] भावुत, भाषाद्वित (गा ११४) ।

ओरुण वि [अवरदित] रोया हुआ (गा ५३८) ।

ओरुद्ध वि [अवरुद्ध] रखा हुआ, बन्द किया हुआ (गा ८००) ।

ओरुभ स [अय + रुद्ध] उतरना । बह. ओरुभमाग (बह) ।

ओरुम्मा भक्त [उद् + या] मूलना, मूल जाना । घोरुम्माइ (हे ४, ११) ।

ओरुह देवो ओरुभ । बह. ओरुहमाग (संभा ६३, वम्भ) ।

ओरुहण न [अप्रोहण] नीचे उतरना (पटम २६, ५५, विने १२०८) ।

ओरुहण न [अप्रोहण] नीचे उतरना, धवराण (पथ १५५) ।

ओरोध देवो ओरोह = धवरोध (विता १, ६) ।

ओरोह देवो ओरुभ । बह. ओरोहमाग (बह ४, २०) ।

ओरोह पु [अप्रोध] १ धन्य-पुत्र, जनाजाना (धीप) । २ धन्य पुत्र की क्षी (गुर १, १४३) । ३ नगर के दरवाजा का प्रान्तर द्वार (छाया १, १, धीप) । ४ संधान, मन्त्र (पथ) ।

ओरअ पु [दे] १ स्वेन वर्षा, बाज पती । २ भनराय, निम्न (दे १, १६०) ।

ओरअथी क्षी [दे] नवीडा, दुनटिन (दे १, १६०) ।

ओरअथि वि [दे. अरअगिन] १ शरीर में मडा हुआ, परिणित (दे १ १६२, पाथ) । २ सगा हुआ (मि १, १६२) ।

ओरअथी क्षी [दे] जिपा, क्षी (दे १, १६०) ।

ओरअ व [उत् + लट्] उपर्यन्त करना । मोरंरंति (छाया १, १—पथ ६१) ।

ओरअ देवा अरअर = अरअरम्भ । बह. ओर यऊन (महा) ।

ओरअ पु [अरअम्भ] नीचे गडगना (धीप रत्न ७३) ।

ओरअण न [अवलम्बन] सहारा, धारण । 'दीप पुं [दीप] शृङ्खला-बद्ध दीपक (पथ) ।

ओरअवि वि [अवलम्बित] धारित, जियका सटारा लिया गया हो वह (निवृ १) । २ लज्जया हुआ (धीप) ।

ओरअवि वि [उद्धित] लज्जया हुआ (मूम २, २ धीप) ।

ओरअ पु [उपालम्भ] उपाहता, 'अपोलम्भ-णिमित्तं पटमम् छायागमणस्य भयमदृष्टे पणसं नि देति' (छाया १, १) ।

ओरअगिअ वि [उपलक्षित] पहिचाना हुआ (पटम १३, ४२; गुपा २५४) ।

ओरअ (मर) देवो ओरअगि (मिरि ५२४) ।

ओरअ व [अ + लम्] १ पीछे सपना । २ वेसा करना । धीरगमंति (मि ४८८) । बह. ओरअगिअ (गुपा २३४; महा) । प्रयो, बह. ओरअगामि वि (मण) ।

ओरअ वि [अरअग] १ मत्तान, बीमार । २ दुर्वन, निर्बल (छाया १, १—पथ २८ धी. विप १, २) ।

ओरअ वि [अवलम्बन] पीछे सगा हुआ, धनुचन (महा) ।

ओरअ [दे] देवो ओरअग (दे १, १६४) ।

ओरअया क्षी [दे] वेसा, मत्ति, बाकरी; 'बरेउ देवो वमाय वम धीरगाम' (म ६ १६) । 'धोसगाम वेतति वरिअं निगमो गुजो' (वम्भ ८ टी) ।

ओरअ वि [अरअगिन्] मेरा बल्ले-यात । धी-जी (रमा) ।

ओरअगिअ वि [अवलम्ब] मेरित (बग्ग ३२) ।

ओरअर पु [दे] स्वेन, बाज पती (दे १, १६०, ता २११) ।

ओरअ देवो ओरअ = धनी (हे १, ८३) ।

ओरअ पु [अरअन्] बह. के दरवाजे का मरुट (ग २५४) ।

ओरअ व [दे] स्वेन, बह. 'ओरअ- [गल्ल] भागे रि गग म्हेन बावा बरागंमममममममम' (मि १५४) ।

ओरअ व [अय + विप्] स्वेन, मेर सपना । बह. ओरअगिअ (पथ) ।

ओलिभा छी [दे] उपदेहिका, दोमक (दे १, १५३; गउड)।

ओलिम्भमाण देवो ओलिह ।

ओलिह वि [अवलित्त, उपलित्त] लीपा हुमा, हतलेप (पएह १, ३; उव, पाप्र, दे १, १२८, श्रौप)।

ओलिची छी [दे] खड्ग आदि का एक दोप (दे १, १५६)।

ओलिप्प न [दे] हात, हँसी (दे १, १५३)।

ओलिप्पवी छी [दे] खड्ग आदि का एक दोप (दे १, १५६)।

ओलिह सक [अय + लिह] आत्मावन करना। कवक. ओलिम्भमाण (कण)।

ओली सक [अय + ली] १ आगमन करना। २ नीचे आना। ३ पीछे आना। 'नीचं च आया ओलिह' (जिते २०६४)।

ओली छी [आली] संक, श्रेणी (कुमा)।

ओली छी [दे] कुल-परिपाटी, कुलाचार (दे १, १२८)।

ओलीकी छी [दे] बालकी की एक प्रकार की बीड़ा (दे १, १५३)।

ओलुंड सक [वि + रेचय] करना, उपकरना, बाहर निकालना। ओलुंडह (दे ४, २६)।

ओलुंडिर वि [विरेचयितृ] करनेवाला (कुमा)।

ओलुप पुं [अवलोप] मसलना, मर्दन करना (गउड)।

ओलुपअ पुं [दे] तापिका-हस्त, उवा वा हाया (दे १, १६३)।

ओलुग वि [अउरुण] १ रोगी, बीमार (पाप्र)। २ भन, नट (पएह १, १); 'गुस्ता गुस्ता निर्मसा ओलुग ओलुग-सरोर' (निर १, १)।

ओलुग वि [दे] १ सेवक, नीतर। २ मिलेन, निर्वन, बल-हीन (दे १, १६४)। ३ निरुद्ध, निरुद्ध (मुर २, १०२; दे १, १९४; न ४६६; २०४)।

ओलुगायि वि [दे] १ बीमार। २ विद्ध, पीडित (गउड ८१)।

ओलुट्ट वि [दे] १ बसंतमान, वर्षगन। २ मिष्टा, घलाय (दे १, १९४)।

ओलेहह वि [दे] १ भन्यासक। २ तुप्पा-पर। ३ प्रवृद्ध (दे १, १७२)।

ओलोअ देवो अवलेअ। वक. ओलोअन, ओलोएमण (मा २, लाया १, १६; १, १)।

ओलोह सक [अप + लुह] पीछे लौटना। वक. ओलोहमाण (राज)।

ओलोयण न [अवलोकन] १ देखना। २ हटि, नजर (उप पु १२७)।

ओलोयण न [अवलोकन] गवास, 'दिद्धा भनवा सेण भोलीयणमएण' (सुख २, ६)।

ओलोयणा छी [अवलोकना] १ देखना। २ गवेण, खोज (वव ४)।

ओल पुं [दे] १ पति, स्वामी। २ दण्ड-प्रतिनिधि पुरुष, राजपुरुष-विशेष (पिंग)।

ओल देवो उल्ल = भाद्र' (दे, १, ८२; काप्र १७२)।

ओल देवो उल्ल = भाद्र'। ओल्ले (पि १११)। वक. ओल्लन (दे १३, ६६)।

वक. ओल्लिजत (या ६२१)।

ओल्लण पुं [अवलटन] एक नरक स्थान (देवद २८)।

ओल्लण न [आर्द्रियण] गीता करना, गिनाना (पि १११)।

ओल्लणी छी [दे] माजिता, इलायची, दाल-चीनी आदि मसाला से संसृत दधि (दे १, १५४)।

ओल्लण न [दे] व्याप, सोना (दे १, १६३)। ओल्लरि वि [दे] गुप्त, सोया हुआ (दे १६३; गुपा ३१२)।

ओल्लवि (सी) नीचे देना (पि १११; मुच्छ १०४)।

ओल्लिअ वि [आर्द्रिअ] भाद्र' किया हुआ (या ३३०, सण)।

ओली छी [दे] पनर, बाई; गुजराती में 'ऊस' (वेहम ३७३)।

ओल्लव सक [वि + ध्यापय] गुमान। ठंढा करना। वक. ओल्लवियजंत (स ३६२)। श. ओल्लवेयव्य (स ३६२)।

ओल्लविज वि [दे] देवो उल्लविय (मुर १०, १४६)।

ओय न [दे] रामो वसए को बंधन से निपट किया हुआ गत (दे १, १४६)।

ओवअण न [अवपतन] नीचे गिरना, भयः पाव (सि ६, ७७; १३, २२)।

ओवअणी छी [अवपातिनी] विद्या-विशेष, जिसके प्रभाव से स्वयं नीचे माटा है या दूसरे को नीचे उतारता है (सुम २, २)।

ओवअय वि [अवपतित] १ धनतोष, नीचे आया हुआ (सि ६, २८; श्रौप)। २ भा पडा हुआ, भा उडा हुआ (सि ६, २६)। ३ न. पतन (श्रौप)।

ओवअय पुंजी [दे] तीन हस्त्रियवाला एक क्षुद्रजन्तु, 'यि किं तं तेहदिया? तेहदिया एणै-गविहा एएणता, तं पहा—ओवअया रोहि-णीया हलियेसोहा' (जोय १)।

ओवअय वि [ओपचयिक] उचित, परिपुष्ट (रान)।

ओयगारिय वि [ओपकारिक] उपकार करने वाला (मग १३, ६)।

ओयगारिय वि [ओपकारिक] उपकार के विधित हा, उपकारार्थक (देवद १०६)।

ओयग सक [अप + क्रय] १ व्याप करना। २ उटना, माच्छादन करना।

ओयगह, ओयगउ (सि ४, २५, ३, ११)।

ओयग सक [उप + बल, आ + क्रय] १ आक्रमण करना। २ पराभाव करना।

ओयगह (मवि)। संक. ओयगिगवि (मवि)।

ओयगहिय वि [ओपग्रहिक] जैन साधुओं के एक प्रकार का उपकरण, जो नारण-विशेष से थोड़े समय के लिए किया जाता है (पव ६०)।

ओयगिअ वि [दे. उपवर्णित] १ ममिद्रुत १ भाकत (सि ६, ३०, पाप्र, मूर १३, ४२)।

ओयगअय वि [ओपयतिक] उपपात करने वाला, पीडा उत्पन्न करनेवाला, 'गुवं या जव वा विट्ठं न लविग्गोवपादयं' (मग ८)।

ओयय सक [उप + ग्रय] पाग जाना, 'गुहए ओयय वाधर' (मवि)।

ओयट्ट घा [अप + घट्ट] १ पीछे हटना। २ नम होना, हास-प्रास होना। यट. ओयट्टत (उप ७६२)।

ओयट्ट पुं [अपयत्त] १ हास, हसि। २ आगमन, (जिते २०६२)।

ओवट्टण न [अपवर्त्तन] हास, नमी (थावक २१६)।

ओवट्टणा छी [अपवर्त्तना] भागाकार, भाग-हण (राज)।

ओवट्टिअ न [दे] चाटु, छुरामद (दे १, १६२)।

ओवट्ट वि [अवट्टट्ठ] बरसा हुआ, जितने छुटि की हो वह (दे ६, ३४)।

ओवट्ट पुं [दे. अववर्ष] १ छुटि, बारिख (दे ६, २५)।

२ मेघ-जल का सिञ्चन (दे १, १५२)।

ओवट्टिअ वि [ओपस्थितिक] उपस्थिति के योग्य, नौकर (प्रती ११)।

ओवड्ढ क [अव + पत्] गिरना, नीचे पड़ना। बहु. ओवड्ढंत (दे १३, २८)।

ओवड्ढण न [अवपतन] १ भय पात। २ भस्म-पात (दे २, १२)।

ओवड्ढ वि [उपार्ध] आपे के करीब। *ओवरिया छी [ओमोदरिका] बाहद बनल का ही बाहार करना, तप-विशेष (मग-७, १)।

ओवड्ढि वि [अपवृद्धि] हास (निबू २०)।

ओवड्ढा छी [दे] मोहन का एक भाग (दे १, १५१)।

ओवण न [उपपन्न] बगीचा, पाराम (हुमा)।

ओवणित्ठियपुं [ओपनिहित, ओपनिधिक] निहाचर विशेष; समीपस्थ भिक्षा की लेनेवाला साधु (का ५, शीप)।

ओवणित्ठिया छी [ओपनिधिरी] मानुषवी-विशेष, अनुक्रम-विशेष (मीन)।

ओवत्त स [अप + वर्त्तय] १ उलटा करना। २ फिराना, घुमाना। ३ चेंचना। संट. ओवत्तिय (दम ५)। इ. ओवत्तेअव्य (गे १०, ५०)।

ओवत्त वि [अपवृत्त] फिराया हुआ (दे १, ६१)।

ओवत्तिय वि [अपवत्तिंत] १ घुमाया हुआ। २ लिप्त (लामा १, १—पत्र ४७)।

ओवत्थाणिय वि [ओपस्थानिक] मग का बाई बरलेवाला नीरर। छी. *था (मा ११, ११)।

ओवम देखो ओवम्म; इदियपच्चस्सं पिय मणुमारण भोवनं न भइलाणं (ओवस १४२)।

ओवमिय वि [ओपमिक] उपमा-सम्बन्धी (मणु)।

ओवमिय } न [ओपम्य] १ जगमा (ठा ८; ओवम्म } मणु)। २ उगमान, प्रमाण (मृष १, १०)।

ओवय सक [अव + पत्] १ नीचे उतरना। २ भा पड़ना। बहु. ओवयंत, ओवयमाण कप्प. स ३७०: पि ३६३; लामा १, १६१।

ओवयण न [दे. अवपट्टन] ओहणक, जुमान (लामा १, १—पत्र ३६)।

ओवयण न [अवपतन] अवतरण, नीचे उतरना (मग ३, २—पत्र १७७)।

ओवयाइयय वि [ओपयाचितक] मनीती से प्राप्त किया हुआ, मनीती से मिला हुआ (ठा १०)।

ओवयारिय वि [ओपचारिक] उपचार-सम्बन्धी (पंचा ६, पुष्क ४०६)।

ओवय पुं [दे] निर, समूह (दे १, १५७)।

ओवयाइय वि [ओपपातिक] १ जिसकी उत्पत्ति होती हो वह (पंच १)। २ पु. संसारी, प्राणी (माधा)। ३ देव या नारक-जीव (दस ४)। ४ न. देव या नारक-जीव का शरीर (पंच १)। ५ जैन धाम-नव्य विशेष, शीप-पातिक मून (शीप)।

ओवयाइय वि [ओपपातिक] एक जन्म से दूसरे जन्म में जानेवाला (मृष १, १, ११)।

ओवसमिय वि [ओपसमिक] १ उत्तम से संबन्ध रखनेवाला, उत्तम—समर्थ रोगादि। २ छन्द-विशेष, प्र. परा छानि अथवा रप छन्द (मणु)।

ओवसमिअ पुं न [ओपसमिक] १ उत्तम। २ वि. उत्तम से उत्पन्न। ३ उत्तम होने पर होनेवाला (विने २१७४)।

ओवमेर न [दे] १ पत्तन, सुगन्ध बाटु-नित्य। २ वि. रति-योग्य (दे १, १७३)।

ओवसय देवो उवममय; पट्टिअ मोवसय-तण्य वेणुअरस्सण्ड (पव ८१)।

ओवह स [अ + यह] १ बहु जाना, बहु पतना। २ ह्वना। बहु, ओवुममाण (पम)।

ओवहारिअ वि [ओपहारिक] उपहार-संबन्धी (विक ७५)।

ओवहिय वि [ओपधिक] माया से गुप्त विचरनेवाला (लामा १, २)।

ओवाअअ पुं [दे] भापातप, जल-समूह की गभी (पट्ट १)।

ओवाइय देखो ओववाइय (राज)।

ओवाइय देखो उवयाइय (हुमा ११३)।

ओवाइय वि [आवपातिक] सेवा करनेवाला (ठा १०)।

ओवाडण न [अनपाटन] विदारण, नाश (ठा २, ४)।

ओवाडिय वि [अवपाटित] विदारित (शीप)।

ओवाय सक [उप + याच्] मनीती करना। बहु. ओवायंत, ओवाइयमाण (सुर १३, २०६; लामा १, ८—पत्र १४४)।

ओवाय पुं [अवपात] १ सेवा, भक्ति (ठा ३, २; शीप)। २ गर्त, गड्ढा (पण्ड १, १)। ३ नीचे गिरना (पण्ड १, ४)।

ओवाय वि [ओपाय] उपाय-जग्य, उपाय-सम्बन्धी (उत्त १, २८)।

ओवार सक [अप + वारय] माच्छादन करना, डकना। संट. ओवारिअ (मनि २१३)।

ओवारि न [दे] घण्य मरने का एक प्रकार का ताम्बा कौठा, गोदाम (राज)।

ओवारिअ वि [दे] ढेर किया हुआ, राखि-भुत (म ४८७; ४८)।

ओवारिअ वि [अववारिअ] माच्छादित, डटा हुआ (मे ६१)।

ओवास य [अ + वान्] शोभना, चिरन्तन। ओवास (प्रा)।

ओवास सक [अ + वान्] धरवाश पाना, जगह मिलना। धावागद (मग. हुमा ७, २३; मग ६६)।

ओवास पुं [अ + वान्] धरवाश, तानी जगह (पाय प्राय, मे १, २४)।

ओवास पुं [उपवास] उत्तराश, मोक्षान्नाद (पव ४२, ८६)।

ओवासंतर पुं न [अवसातान्तर] पायाश, गान (मग २०, २—पत्र ७३९)।

ओयाह सक [अव + गाह्.] भवगाहना ।
 ओयाह (प्राप्) ।
 ओयाहिअ वि [अपवाहित्] १ नीचे गिराया
 हुवा (से ६, १६, १३, ७२) । २ घुमाकर
 नीचे डाला हुवा (से ७, ५५) ।
 ओयिअ वि [दे] १ धारोपित, अध्यासित ।
 २ मुक्त, परित्यक्त । ३ हृत, छोना हुमा ।
 ४ न, खुशामद । ५ रदित, रोदन (दे १,
 १६७) । ६ वि, परिकल्पित, संस्कारित
 (कथ्य) । ७ लक्षित, व्याप्त (पावव) । ८
 उज्ज्वलित, प्रकाशित (गामा १, १६) । ९
 विभूषित, शृंगारित (प्राप्) । देखो उचिय ।
 ओयिद्ध वि [अपविद्ध] १ प्रेरित, ब्राह्म
 (से ७, १२) । २ नीचे गिराया हुमा (से १३,
 २६) ।
 ओयील सक [अव + पीड्य] पीडा पहुँ-
 चाना, मार-पीट करना । बहु ओयीलेमाण
 (गामा १, १८—पत्र २३६) ।
 ओयीलय देखो उचयीलय (परह १, ३) ।
 ओयुद्धममाण देखो ओयव ।
 ओवेहा छी [उपेक्षा] १ उपदर्शन, देवना ।
 २ भवधोराण, 'सयमगिहोमणचोयलो य
 वायाओवेहा' (प्राप् १७१ भा) ।
 *ओवण देखो ओवण (से ७, ६२) ।
 ओवण सक [अप + घृण्] १ पीछे
 फिरना, लौटना । २ घपनत होना । सङ्क.
 ओवणित्ठण (प्राप् भा ३० टी) ।
 ओवणत वि [अपवृत्त] पीछे फिरा हुमा ।
 २ नग्रा हुमा, घपनत (से ८, ८५) ।
 ओववेवण देखो उववेव (सक्षि ३५) ।
 ओस देखो जस—ऊप (दव ५, १, ३३) ।
 ओस पुं [दे] देखो ओसा (राज) । *चारण
 पुं [चारण] हिम के घनतमन से जाने-
 वाता साधु (गण्य) ।
 ओसक सक [अव + पण्ठकृ] कथ करना,
 पठाना । सङ्क. ओसकिया (दव ५, १, ६३) ।
 ओसक सक [अव + प्यण्ठ] १ पीछे
 हटना, भ्रष्टरण करना । २ भागना, पलायन
 करना । ३ उतीरण करना, उत्तेजित करना ।
 ओसद्ध (गि ३०२, ३१५) । यङ्क. ओसधत्त,
 ओसधमाण (से ५, ७३; स ६५) । सङ्क.

ओसकइत्ता, ओसकिय, ओसकियण
 (अ ८; दस ४; सुर २, १५) ।
 ओसक वि [दे अवप्यविच्छ] भ्रष्टत, पीछे
 हटा हुमा (दे १, १४६, पाव) ।
 ओसकण न [अवपण्ठण] १ भ्रष्टरण (स
 ६३) । २ नियत काल से पहले करना (धर्म
 ३) । ३ उत्तेजन (वृह २) ।
 ओसकिय वि [अवप्यविच्छ] नियत काल
 से पहले किया हुमा (पिंड २६०) ।
 ओसट्ट सक [वि + सुप्] केलना, पसरना ।
 ओसट्ट (गा ८५६) ।
 ओसट्ट वि [दे] विचलित, प्रकुलित (पट्ट)
 ओसडिअ वि [दे] भाकोर्ण, व्याप्त (पट्ट) ।
 ओसट्ट न [ओपव] दवा, इलाज, गैपन
 (दे १, २२७) ।
 ओसडिअ वि [ओपधिरु] वेध, चिन्तितक
 (कुमा) ।
 ओसण न [दे] वडंग, खेद (दे १ ११५) ।
 ओसण वि [अयसज्ज] १ खिन्न (गा ३८२;
 से १३, ३०) । २ शिथिल, डीला (बव ३) ।
 देखो ओसज्ज ।
 ओसण वि [दे] वृद्धि, खरिडत (दे १,
 १५६; यङ्क) ।
 ओसण ॥ [दे] प्राय बहुत कर (कथ्य) ।
 ओसत्त वि [अवसत्त] संबद्ध, संयुक्त (गामा
 १, ३; स ४४६) ।
 ओसति देखो ओसहि (अ २, ३) ।
 ओसद्ध वि [दे] पावित, गिराया हुमा (पाव) ।
 ओसज्ज देखो ओसण = घबसत (सुर ४,
 ३४; गामा १, ५, स ६; पुण्क २१) । ३
 न. एकादश, 'ओसन्ने देह पेण्हइ या' (उप) ।
 ओसज्ज वि [अवसज्ज] निमग्न (दवङ्क १,
 ८) ।
 ओसज्ज देखो ओसण्ण (धम्म १, १३; चिते
 २२७५) ।
 ओसप्पिणी छी [अवसप्पिणी] दश काय-
 कोटि साधोपमपरिणित नात्र-विशेष, जिसमें
 सर्व पदार्थ के मुखो की प्रमथ हानि होती
 जाती है (सम ७२; अ १) ।
 ओसम सक [उप + शमय] उरगान
 करना । भवि. ओमभेहिनि (पिंड ३२६) ।

ओसमिअ वि [उपशमित] शान्ति-प्राप्त
 (सम ३७) ।
 ओसर सक [अव + त] १ नीचे धाना ।
 २ घबतरना, जग्न लेना । ओसरह (पट्ट) ।
 ओसर सक [अप + सु] भ्रष्टरण करना,
 पीछे हटना । २ सरकना, खिसकना, फिम-
 लना । ओसरह (महा, काल) । वक. ओसरंत
 (गा १८, ३६३; से ६, २६; ६, ८२; १२,
 ६; से ६३) ।
 ओसर सक [अव + सु] धाना, तीव्रकर
 भावि महापुरुष का धारना (उप ७२८ टी) ।
 ओसर पुं [अवसर] १ घबसर, समय (सूम
 १, २) । २ घस्तर (राज) ।
 ओसरण न [अवसरण] १ जिन-देव का
 उपदेश स्थात (उप १३३; खण १) । २
 साधुओं का एकत्रित होना (सूम १, १२) ।
 ओसरण न. [अवसरण] १ हटना, बुर होना ।
 २ वि. दूर करनेवाला, 'बहुपावकम्मओसरण'
 (कुमा १) ।
 ओसरिअ वि [दे] १ भाकोर्ण, व्याप्त । २
 प्राज्ञ के इशारे से संकेतित या इंगित (पट्ट) ।
 ३ त्रयोयुक्त, घबनत । ४ न. प्राज्ञ का इशारा
 (दे १, १७१) ।
 ओसरिअ वि [अवसृत] प्रागत, पधारा हुमा
 (उप ७२८ टी) ।
 ओसरिअ वि [अवसृत] १ पीछे हटा हुमा
 (पउम १६, २३; वक्क. यद ३५१) । २ न.
 भ्रष्टरण (से २, ८) ।
 ओसरिअ वि [उपसृत] संसृजगत, सामने
 भाया हुमा, (पाव) ।
 ओसरिआ छी [दे] भवित्त्वक, बाहर के दर-
 वाजे का प्रकाश (दे १, १६१) ।
 ओसव पु [उत्सव] उत्सव, धानत-याण
 (प्राप्) ।
 ओसविय देखो ओसमिअ (पिंड ३२६) ।
 ओसविय वि [उच्छ्रयित] ऊँचा किया हुमा
 (पउम ८, २६६) ।
 ओसविअ वि [दे] १ शोभा-वहित । २ न.
 घबसत, खेद (दे १, १६८) ।
 ओसट्ट न [ओपव] दवा, गैपन (प्राप्,
 सत्य ५६) ।

ओसहिं, ही ओ [ओपधि] १ वनस्पति (पण्ण १) । २ नगरी-विशेष (राज) । "महि-हर पु ["महिधर] पर्वत-विशेष (अञ्जु ४४) ।

ओसहिअ वि [आवसथिऊ] चन्द्राय-वागादि वन को करनेवाला (गा ३६४) ।

ओसा ओ [दे] १ घोस, निशा जल (जो ५, भासा, विम २५७९) । २ हिम, बरफ (दे १, १६४) ।

ओसाअ पु [दे] प्रहार की पीडा (दे १, १५२) ।

ओसाअ पु [अरयाय] हिम, झोन (मे १३, ५२; दे ८, ५३) ।

ओसाअन वि [दे] १ जमाई खाता हुआ श्रावण । २ बैठठा । ३ वेदना-भुक्त (दे १, १७०) ।

ओसाअन वि [दे] १ महीशान, जमीन का मार्गिक । २ प्रापेयान (पट्ट) ।

ओसाण न [अवसान] १ भूत (ठा ४) । २ समीपता, समीप्य (सूय १, ४) ।

ओसाण न [अवसान] युव के समीप स्थान, घर के पास निवास (सूय १, १४, ४) ।

ओसाणिहाण वि [दे] विपि-पूर्वक स्फुटित (दे १, १६३) ।

ओसायण [अयरयाय] घोस, निशा-जल (जीवम ३१) ।

ओसायण न [अवसादन] परिछाटन, नारा (विम) ।

ओसार न [अप + सारय] दूर करना । मोनारेहि (स ४०८) । वने, प्रासादिकंजु (म ४१०) । सङ्ग-ओसारिनि (मवि) ।

ओसार पु [दे] मो-याट, मो-बाडा (दे १, १४६) ।

ओसार पु [अपमार] भगवण (मे १३, १४) ।

ओसार देवो ऊसार = उलमार (मवि) ।

ओसार पु [असार] बच, बहार (मे १२ ५६) ।

ओमारिअ वि [अपमारिअ] दूर किया हुआ, धानीन (गा ६६ पत्र २३ ८) ।

ओमारिअ वि [असारिअ] धनसम्पन्न, लक्ष्मण हुआ (मो) ।

ओसास (अप) देवो ओवास = भवकाय (मवि) ।

ओसिअ वि [दे] १ धवन, बल-रहित (दे १, १५०) । २ प्रयुक्त, भगवाण (पट्ट) ।

ओसिअ वि [उपिन] १ वमा हुआ, रहा हुआ (सूय १, १४, ४) । २ अवस्थित (सूय १, ४, १, २०) ।

ओसिअंत वट्ट- [अवसीदत्] पीडा पाता हुआ (हि १, १०१; से ३, ५१) ।

ओसिअिअ वि [दे] घात, मृगा हुआ (दे १, १६२; पाय) ।

ओसिअिअ वि [अवसेचयिह] अपसेव करनेवाला (सूय २, २) ।

ओसिअिअ न [दे] १ गति-व्यापात । २ अति-निहित (दे १, १७३) ।

ओनिअ वि [अवसिक्त] मोजाया हुआ, भिक्त (भासा २, १, १, १) ।

ओसिअ वि [दे] उपलब्ध (दे १, १५८) ।

ओसिय वि [असित] १ पर्ववसित । २ उपशान्त (सूय १, १३) । २ जीव, पराभूत (विम) ।

ओसिरण न [दे] श्रुत्यार्जन, परिदयाग (पट्ट) ।

ओसीअ वि [दे] धर्मो-मुग, भवनन (दे १, १५८) ।

ओसीअ देवो उसीअ (पट्ट २, ५) ।

ओसीअ न [अप + युत्] १ पीछे हटना । २ प्रमना, फिरना । सङ्ग-ओसी-सिऊण (दे १, १५२) ।

ओसीअ वि [अप + युत्] अग्रवृत्त (दे १, १५२) ।

ओसुअ वि [उत्सुअ] उत्कण्ठ (प्राप्र) ।

ओसुअिअ वि [दे] उत्प्रेतित, वलित (दे १६१) ।

ओसुअ न [अप + पातय] १ गिरा देना । २ नष्ट करना । कर्म धामुर्नित (से ७, ६१) । वट्ट-ओसुअ (मे ४, ५४) । वट्ट-ओसुअंन (नि ३५३) ।

ओसुअ स [तिज] लोपण करना, तज करना । मोनुअ (ह ५, १०४) ।

ओसुअ वि [अप + उट] मृगा हुआ (पट्ट ५३ ७६, ५ १८) ।

ओसुअ न [अप + शुप्] मृगना । वट्ट-ओसुअ (मे २, ६३) ।

ओसुअ वि [दे] १ विनिमित्त (दे १, १५७) । २ विनाशित (से १३, २२) ।

ओसुअंन देवो ओसुं भ ।

ओसुअ न [ओसुअ] उल्लुका, उल्लेख (मोप, पि ३२७ ए) ।

ओसुअयो, ओ [अवरापनी] विद्या-ओसोगिया; विशेष, जिसके प्रभाव में दूसरे ओसोगी की गाढ निद्राधीन किया जा सकता है (मुसा २२०; एया १, १६; कय) ।

ओसुअ पु [अप + उट] अग्रवृत्त, पीछे हटना (पत्र २) ।

ओसुअंन देवो ओसुअंन (विह २८५) ।

ओसुआ [दे] देवो ओसा (कय) ।

ओसुआ पु [अप + उट] नारा, विनाश (सण) ।

ओह देवो ओघ (पट्ट १, ४; गा ५१८; निबु १६, प्रोच २; पम्म १० टी) । ५ मूत्र, शान्त-सम्बन्धी वायु (विम ६५७) ।

ओह सर [अ + त्] नीचे उतरना । मोह (ह ४, ८५) ।

ओह पुन [ओघ] १ उत्सर्ग, सामान्य नियम, (खदि ५२) । २ सामान्य, साधारण (वर १) । ३ प्रवाह (राय ४७ टी) । ४ सतिव-प्रवेश । ५ पातन-द्वार (भासा २, १३, १०) । ६ नगर (सूय १, ६, ६) । "मूय न [धुन] शान्त विशेष (खदि ५२) ।

ओह पु [दे] राम हँसो (दे १, १५३) ।

ओहंजलिओ ओ [दे] युद्ध जन्तु-विशेष, शत्रुविजय जीव-विशेष (जीव १) ।

ओहंवर वि [ओघवर] संसार पार करने-वाला (धुनि), (भासा) ।

ओहंम पु [दे] १ चन्दन । २ त्रिपार चन्दन पित्रा जागा है वह दिना, चन्द्राय या हरना (दे १, १६८) ।

ओहट्ट न [अप + पटट] १ कम हाना, हास पाना । २ पीछे हटना । ३ मज्जा, हाना, निवृत्त करना । पाटट्ट (हि ४, ५१६) । वट्ट-ओहट्टन (प ८, ६०; मुसा २३३) ।

अहट्ट पु [दे] १ धमपट्टन । २ मोरी, बटि धम । ३ रि. धमपट्ट, पीछे हटा हुआ (दे १, १६६ अरि) ।

ओहट्ट } वि [अपचट्ट] निवारक, हटाने-
ओहट्ट } वाला, निषेधक (विपा १, २,
गाथा १, १६, १८)।

ओहट्टिअ वि [दे] दूसरे को दबाकर हाथ से
गृहीत (दे १, १५६)।

ओहट्ट पुं [दे] हास, हँसी (दे १, १५३)।

ओहट्ट वि [अपचट्ट] पिप्पा हुप्पा (पठम
३७, ३)।

ओहड वि [अपहट] नीचे लाया हुप्पा (वस
५, १, ६६)।

ओहडणी ली [दे] धर्मला (दे १, १६०)।

ओहट्ट वि [दे] प्रवत (दे १, १५६)।

ओहट्टिअ वि [अपहटित] परित्यक्त, दूर
किया हुप्पा (दे १५)।

ओहय वि [उपहट] उपपात प्राप्त (छाया
१, १)।

ओहय वि [अवहट] विनाशित (श्रीप)।

ओहर सक [अप + ह] अपहरण करना।
कर्म. भीहरीपामि (वि ६८)।

ओहर सक [अप + ह] टेढा होना, बक्र
होना। २ सव. उलटा करना। ३ फिराना।
सक्र. ओहरिय (ध्याना २, १, ७)।

ओहर न [उपगृह] छोटा गृह, कोठी (पणह
१, १)।

ओहरण न [अपहरण] उठा ले जाना,
अपहार (उप १७६)।

ओहरण न [दे] १ विनाशण, हिसा। २
अर्धवर्ग धर्म की सम्पादना (दे १, १७५)।
३ शक्र, हथियार (स ५३१, ६३७)। ४
वि. धामात (पट्ट)।

ओहरिअ वि [दे. अपहट] १ कँठा हुप्पा
(सि १३, ३)। २ नीचे गिराया हुप्पा (सि
१, ३७)। ३ उतारा हुप्पा, उतारित (श्रीप
८०६)। ४ अपनीत, 'ओहरिममत्त्व भाव-
वहो' (या ५०)।

ओहरिअ वि [दे] १ धामात, मूँपा हुप्पा।
२ पुं. चन्दन पिखने की शिगा, चन्द्रीटा (दे
१, १६६)।

ओहल देतो उज्जयल (हे १, १७१, बुया)।

ओहल सा [अप + गल] पिसना। मरि-
मोहतही (मुपा १३६)।

ओहलिय वि [अपलिन] पिप्पा हुप्पा,
'अमुनोहलियमयलो' (सुर २, १८६;
सण)।

ओहली ली [दे] श्रीप, सगृह (मुगा ३६४)।

ओहस सक [उप + हस्] उपहास करना।

ओहसइ (नाट)। कक्क. ओहसिज्जंत (सि
१५, १०)। क. ओहसणिज्ज (स ८)।

ओहसिअ न [दे] १ वस्त्र, कपडा। २ वि.
धृत, कम्पित (दे १, १७३)।

ओहसिअ वि [उपहसित] जिसका उपहास
किया गया हो वह (ग, ६०, दे १, १७३,
स ४४८)।

ओहाइअ वि [दे] अधो-मुल (१, १५८)।

ओहाइअ वि [अवधाविन] चरित्र से भ्रष्ट
(श्वक्क १, १)।

ओहाइण न [अवघाटन] आपरिचत-विशेष
(वव १)।

ओहाइण न [अवघाटन] ठकना, पिघाल
(वव १)।

ओहाइणी ली [दे. अवघाटनी] १ पिघानी
(दे १, १६१)। २ एक प्रकार की मोदनी
(जीव ३)।

ओहाइय वि [अपघाटित] १ पिटित, बन्द
किया हुप्पा, 'बइरामयकवाओहाइयाधो' (जं
१—पत्र ७१)। २ स्थगित (आक ५)।

ओहाण न [उपघान] स्वप्न, डरना (वव ५)।

ओहाण न [अपघान] उपयोग, व्याप्त
(भावो)।

ओहाण न [अपघावन] धक्कापट्ट, पीछे
हटना (निबु १६)।

ओहाम सक [तुलय] तीलना, तुलना
करना। ओहामइ (हे ५, २५)। वक्र.
ओहामंत (कुमा)।

ओहामिय वि [तुलित] तीला हुप्पा (पाध.
मुपा २६६)।

ओहामिय वि [दे] १ शमिपुव (पट्ट)।
२ तिरहटा (स ११३, श्रीप ६०)। ३ बन्द
किया हुप्पा, स्थगित, 'अह जीयपसरका
खेलेण चाहामिमा सव्वा' (पत्रम ४६, ६)।

ओहार सक [अप + धारय] निरवय
करना। चट्ट. ओहारिअ (श्रीम १६५)।

ओहार पुं [दे] १ कच्छप। २ नदी वगैरह
के बीच की शुष्क जगह, द्वीप। ३ शंख,
विभाग (दे १, १६७)। ४ जलचर-जल-
विशेष (पणह १, ३)।

ओहार पुं [अपघा] निषय। 'व वि
[वत्] निषयवाला (द्र ४६)।

ओहारइत्तु वि [अपघारयित्] निषय करने-
वाला (राज)।

ओहारइत्तु वि [अवधारयित्] दूसरे पर
मिथ्यामिथोण लगानेवाला (राज)।

ओहारण न [अपधारण] नियम, निषय
(द्र २)।

ओहारणी ली [अपधारणी] निषयारम्भक
भाषा, 'ओहारणि मय्यिकारिणि ऋ दासं न
वासिञ्च सया स पुजो' (वस ८, ३)।

ओहारिणी ली [अपधारिणी] ऊपर देखो
(भास १४)।

ओहाव सक [आ + कम्] धाक्रमण करना।

ओहावइ (हे ५, १६०, पट्ट)।

ओहाव सक [अप + धाव] पीछे हटना।
वक्र. ओहावंत, ओहावित (श्रीप १२६;
वव ८)।

ओहावण न [अपधान] १ अपसरण,
पलायन (वव १)। २ दीक्षा से भागना, दीक्षा
को छोड़ देना (वव ३)।

ओहावण न [अवभावन] प्रमान, प्रपकीर्ति
(निड ५८६)।

ओहावणा ली [अपहापना] लापर, लघुता
(श्रय २६)।

ओहावणा ली [अपभापना] तिरस्कार,
अपवाद (उप १२६ टी. ॥ ५१०)।

ओहावणा ली [आक्रान्ति] धाक्रमण
(कात्)।

ओहाविअ वि [अपभाविअ] १ तिरस्कार
(मुपा २२५)। २ स्थान, स्थान-प्राप्त (वव
८)।

ओहाविअ वि [अपधावित] पलायित, अप-
सर (वसण १, २)।

ओहास पुं [अनहास, उपदास] हँसी,
हास्य (श्रीम. वै ५१)।

ओहासण न [अवभापण] दापना, माग,
निष्ठिभित्त (भास ४)।

ओहसिय वि [अवभाषित] याचित (पचा १३, १०) ।

ओहि पुकी [अरधि] १ मर्यादा, सीमा हद (गा १७०, २०६) । २ रूपि-मदारी का अतीन्द्रिय ज्ञान विरोध (उवा महा) । ३ जिण पुं [जिन] अवधिज्ञानवाला साधु (एएह २, ३) । ४ गाण न [ज्ञान] अवधिज्ञान (वव १) । ५ गाणावरण न [ज्ञानावरण] अवधिज्ञान का प्रतिबन्धक कर्म (कम्म १) । ६ दसण न [दर्शन] क्वी वल्लु का अतीन्द्रिय सामान्य ज्ञान (मम १५) । ७ दसणावरण न [दर्शनावरण] अवधिवशेन का भावार्थक कर्म (आ ६) । ८ नाण देवो गाण (आक) । ९ मरण न [मरण] मरण विरोध (भग १३, ७) ।

ओहिअ वि [अनसीर्ण] उतरा हुआ (कुमा) ।

ओहिअ वि [आधिक] श्रीमणिव, सामान्य रूप से उक्त (अणु १६६, २००) ।

ओहिण्ण वि [अपमित्र] रोका हुआ, अट-काया हुआ (सि १३, ५४) ।

ओहिल्ल न [दे] १ विपाद, खेद । २ रमन, वेग । ३ वि विचारित (दे १, १६८) ।

ओहिर देखो ओहीर । ओहिर (पड) ।

ओहिर देखो ओहर = मग + ह । कर्म प्राहि-रिपामि (पि ६८) ।

ओहीअन वि [अनहीयमान] समरा कम होता हुआ (से १५, ४२) ।

ओहीण वि [अरहीन] १ पोखे रहा हुआ (अभि ५६) । २ अरगत, गुलरा हुआ (म १२, ६७) ।

ओहीर मग [नि + ट्रा] सो जाना, निद्रा लेना (ह १, १२) । वक् ओहीरमाण (णाय १, १, विपा २, १, कप्प) ।

ओहीर मग [सद्] खिन्न होना । वक् ओहीरत क सोधत (पाध) ।

ओहीरिअ वि [अधीरित] तिरस्कृत, परिभूत (आचा २, १) ।

ओहीरिअ वि [दे] १ उदगीत । २ भवसत, खिन्न (दे १, १६३) ।

ओहुअ वि [दे] १ भिमभूत, पराभूत (दे १, १५८) ।

ओहुअ देखा उरहुअ । मोहुअ (अभि) ।

ओहुअ वि [दे] १ विफल, निष्फल (दे १, १५७) ।

ओहुअपत वि [आरम्यमाण] जिसपर आक्रमण किया जाता हो वह (से ३, १८) ।

ओहुर वि [दे] १ धवनत, मचाइ-धुल (गउइ) । २ खिन्न, खद प्राप्त । ३ खल्ल, खल्ल (दे १, १५७) ।

ओहुल्ल वि [दे] १ खिन्न । १ धवनत, नीचे झुका हुआ (अभि) ।

ओहुणग न [अनधूनम] १ कम्म । २ उल्लङ्घन । ३ मज्झम करण से भिन्न ग्रन्थ का भेद करना (आचा १, ६, १) ।

ओहुय वि [अनधूत] उल्लङ्घित (इह १) ।

॥ इम सिरिपाइअसहमहण्णो ओआराहसहसकलणो एअमो सरमो समतो ।

तत्तममलीए म सरविहण्णोवि समतो ॥

क

क दुं [क] १ प्राकृत कर्ण-माला का प्रथम व्यन्तनाभर जिसका उच्चारण-स्थान गण्ट है (आप, हण) । २ ब्रह्मा (दे ५, २६) । ३ किए हुए पाप का स्वीकार, 'कति मड मे पाप' (आवम) । ४ न, पानी, जल (स ६११) । ५ गुल (सुर १६, ५५) । देवी 'अ = क ।

क देखो किम् (गउड, महा) ।

कअयत देतो दय-य = दसवत् (आह ३५) ।

कइ वि. क [कति] कितना, 'तं भवे' । कइदिठं ओमावेदं (अम) ।

कईएवः 'मोएनि जाव तुअक, पिअरं बइएसु रिपयेहु' (पउम ३४, २७) ।

अज वि [पय] कतिपय, कईएव (दे १, २५०) ।

इअ [चिन्] कईएव (उप ५ ३) ।

थ वि [य] कितना, कौन सेना का ? (विने

६१७) । कइय 'यय, 'यइ वि [पय] कईएव (पउम ६१ १६, उवा, पड, कुमा

दे १, २५०) । विअ [अपि] कईएव

(कास, महा) । विह वि [विध] कितने

प्रकार का (अम) ।

कइ वि [वृत्ति] १ विज्ञान परिशुद्ध । २ पुण्यवात् (सूप २, १, ६०) ।

कइअ [कचित्] कहा, किती जगह म

(लसव २, १५) ।

कइअ [कद] कव, किस समय ? एसाई

उए मज्झो पणमाई कइ सु उअहद ?

(सा ८०३) ।

कइ पुं [उपि] बन्दर, बानर (पाध) ।

दीय पुं [दोष] दोष विरोध बानर दोष

(पउम ५२, १६) । दइय, 'यय पुं [यय]

१ बानर-दोष के एक राजा का नाम (पउम ६, ८२) । २ सज्जन (हे २, ६०) ।

हसिअ त [हसित] १ स्वच्छ आनन्द में अमानस

बीजनी का दर्शन । २ बानर के समान विहृत

कुं ना हंसना (अम ३, ९) ।

कइ दइअ कवि = कवि (गउड सुर १, २७) ।

अर (अम) पुं [कवि] श्रेष्ठ कवि (विग) ।

मा की [त्त] कवित्व, कविपन (पड) ।

राय पुं [राज] १ श्रेष्ठ कवि (विग) । २

गउरहरो नामक प्राहट नाम्ने के कर्ता

काइनिराय-नामक कविः प्राहि कइराययो

कण्डपयो ति पणहवता (गउड ७६७) ।

कइअ वि [अवि] सप्रेमता, प्राह-विशुद्ध

विशुद्ध कइयो होइ विहज्जो य काणिमो

(उत ३२, १४) ।

कइअंक } पुं [दे] निकर, समूह (दे २,
कइअंसइ } १३)।

अइअय न [कैतय] कपट, दम्भ (कुमा, प्राप्र)।

कइआ ॥ [कदा] कब, किस समय ? (गा
१३८; कुमा)।

कइवल्ल वि [दे] शोभा, मय्य (दे १, २१)।

कइंद पुं [कवीन्द्र] श्रेष्ठ कवि (गउड)।

कइकच्छु लो [कपिकच्छु] वृक्ष विशेष,
केवाँछ, कौछ, कवाछ (गा ५३२)।

कइगई लो [कौगयी] राजा दशरथ की एक
रानी (पउम ६१, २१)।

कइयय पुं [कपियय] १ वृक्ष-विशेष, वैष का
पेड़ । २ कम-विशेष, वैष, कैषा (गा ६४१)।

कइय वि [कतम] बहुत मे से कौन सा ? (हे
१, ४८, गा ११६)।

कइयवउ देखो कइअय (तंडु ५३)।

कइयहा (भन) म [कदा] कब, किस समय ?
(सण)।

कइयाइ म [कदाचित्] किसी समय मे
(कुप्र ४१३)।

कइर देखो कयर = कतर (पिंड ४६६)।

कइर पुं [कदर] वृक्ष विशेष, 'जं कइरखल-
हिद्धा इह दशबोडी दखिगमति' (आ १६)।

कइरय पुं [कैरय] कमल, कुमुद (हे १, १२२)।

कइरय पुं [कैरय] बुधुव, 'कइरयो' (सति ५)।

कइरविणी लो [कैरविणी] कुमुदिली, कमलिली
(कुमा)।

कइलास पुं [कैलास, 'श'] १ स्थानम-ख्यात
पर्वत विशेष (पाम, पउम ५, ५३; कुमा)।

२ मंत्र पर्वत (निडु १३)। ३ देव विशेष,
एक नाग-राज (जीव ३)। 'मय पुं [शय]
महावज, गिव (कुमा)। देखो कैलास।

कइलासा लो [कैलासा, 'शा'] देव-विशेष
की एक राजधानी (जीव ३)।

कइललइल पुं [दे] स्वच्छन्द चारी बैध
(दे २, २५)।

कइनिया लो [दे] भरतन विशेष, मोहनल,
मोहनानी (गुमा १, १ टी—पउ ४३)।

कइस (गर) नि [कोटश] बैसा (कुमा)।

कइया (गर) देखो कइआ (गुमा ११६)।

कइयय देखो कइयय (पउम २८, १६)।

कईस पुं [कवीरा] श्रेष्ठ नवि, उत्तम कवि
(पिण)।

कईसर पु [कवीसर] उत्तम कवि (रंभा)।

कउ पुं [कलु] यज्ञ (कण्ण)।

कउ (षप) म [कुन] नहाँसे (हे ४, ४१६)।

कउअ वि [दे] १ प्रधान, मुख्य । २ पुंन
चिन्ह, निशान (दे २, ५६)।

कउच्छेअय पु [कौच्छेयक] पेट पर बँधी हुई
तलवार (हे १, १६२, पड)।

कउड न [दे-ककुड] देवो कउड = ककुड
(पड)।

कउअ पुं [कौरय] १ कुह देश का
कउरय राजा । २ पुंली-कुह वरा मे
उत्पन्न । ३ वि कुह (देश या वंश) से सबंध
रखनेवाला । ४ कुह देश मे उत्पन्न (प्राप्र,
नाट, हे १, १६२)।

कउल न [दे] १ करोय, गोईठा का बुरा (दे
२, ७)।

कउल न [कौल] तान्त्रिक मत का प्रवर्तक
मन्य, कौलोपनिषद् वगैरह । २ वि शक्ति का
उपासक । ३ तान्त्रिक मत की शान्तिवाला ।
४ तान्त्रिक मत का अनुयायी । ५ देवता-
विशेष,

'विससिज्जंतमहापमुद-

सणसमपरोप्यवह्म'।

गयले चिचय मंघवडि

बुराति तुह कउलयासीमो'

(गउड)।

कउलय देखो कउरय (बंड)।

कउसल पुं [कौशल] चतुराई, 'कउसलो'
(सति ६, शाड १०)।

कउसल न [कौशल] कुशलता, वसता,
होशियारी (हे १, १६२; प्राप्र)।

कउहा ॥ [दे] निय, सय, हरेषा (दे २, ५)।

कउड पुंन [ककुड] १ बैल के बंधे या
मुखड । २ सफे छत्र वगैरह राज-चिह्न।
३ पर्वत या धधमाय, टोच (हे १, २२५)।

४ वि प्रधान, मुख्य

'नरतिमियमहलीलंतनतावंगरउहामिरोमे'।
संरुड रजभाण, रमली सोरंदिमवह्म'।
(गुमा १, १७)। देखो कउड।

कउहा लो [कलुम्] १ दिवा (कुमा)। २
शोभा, गान्ति । ३ चम्पा के पुणो की माला।

४ इस नाम की एक रागिणी । ५ शाख ।
६ विकीर्ण वेश (हे १, २१)।

कउहि वि [ककुदिन] बुधम, बैल (अपु
१४२)।

कए } म [कृते] वास्ते, निमित्त, निप,
कएण } 'ततो सो तस कए, खरोह खाली-
कएण } उणेगठाणेसु' (कुमा १५, कुमा)

'भवराहमजिरोए कएण कामो बहूद चाव'
(गा ४७३)।

'तज्जा चत्ता सोलं व

संडिपं अजसथेसणा दिलाए ।

जसस कएणं विमसहि !

सो चैम जणो जणो जामो'

(गा ५२५)।

कएल्ल वि [कृत] किया हुआ (मुख
२, १५)।

कओ म [कृत:] कहाँ से ? (मावा, उव-
रयण २६)। 'हुत्त निवि [दे] किस तरफ-
'कओहुत गंतव' ?' (महा)।

कओ म [क] कहाँ, किस स्थान मे, 'कमो
वयामो ?' (गुमा १, १४)।

कओण्ह वि [ककुण्ह] मोठा गरम (धमंवि
११२)।

कओल देखो कयोल (सि ३, ४६)।

कं म [कम्] उदक, कल (तंडु ५३)।

कंइ म [दे] किससे, 'कंइ पंइ सिक्किल ए
गदलास' (विक १०२)।

कंऊ पुं [कङ्ग] १ पक्षि विशेष (पएह १, १,
४, अनु ४)। २ एक प्रकार का मज्जुत
धीर तीक्ष्ण लोहा (उप ४६५)। ३ दूध-
विशेष, 'बनफलसरलनयण'—(उप १०११
टी)। 'पत्त न [पउ] माण-विशेष, ए'।

प्रहार का बाण, जो उडता है (वेणी १०२)।

'लोह पुंन [लोह] ए' प्रकार का लोहा
(उप ४३२६, गुमा २०७)। 'पत्त देतो
'पत्त (नाट)।

कंकइ पुं [कङ्कति] वृक्ष-विशेष, नागरता-
नाम वृक्षविध (उप १०३१ टी)।

कंकड ॥ [कङ्कट] धर्म, वयच, 'रामो वारे
सबंनरं डिंदो वंता' (पउम ४४, २१, चीण)।

कंकइय नि [कङ्कटि] वयचमाला, वमित
(पएह १, ३)।

कंकडुअ } पुं [काङ्कडुअ] दुर्मेय भाष,
कंकडुग } उरद की एक जाति, जो कभी
पक्का ही नहीं, 'कंकडुयो विव मामो, तिदि
न उवेइ जस्स ववहारो' (वव ३)।

कंरुण न [कङ्कण] हाथ का आभरण-विशेष,
कंरुण (शा २८, गा ६६)।

कंरुण पुं [दे] चतुर्विध जन्तु की एक
जाति (उत्त ३६, १४७)।

कंरुणी श्री [कङ्कण] हाथ का आभरण-
विशेष, 'सयमेव मेकलोए धलीए तं कंरुणी
बडा' (कुप्र १८५)।

कंरुति पुं [कङ्कति] ग्राम-विशेष (राज)।
कंरुतिज्जु श्री [काङ्कतीय] मारवाज वडी मे
उत्पन्न (राज)।

कंरुयपुं [कङ्कत] १ मागवला-नामक घोषधि।
२ सौ की एक जाति। ३ पुंश्री. कंषा, केरा

सँवारने का उपकरण (सूप्र १, ४)।
कंरुसास पुं [कङ्कसास] कर्कट, साप की
एक जाति (पाप्र)।

कंरुसी श्री [दे] कंषी, केरा सँवारने का
उपकरण (ती १५)।

कंरुल न [कङ्काल] चमकी भोर मास रहित
अस्थिमज्जर, 'कंरुलवेसाए' (शा १६);
'शुद्ध नरकरंजनकालसकुले भीसणमसाणे'
(बजा २०; दे २, ५३)।

कंरुबंस पुं [कङ्कवारंश] वनस्पति-विशेष,
(पएण ३३)।

कंरुविल्ल देवो कंरुविल्ल (सुपा ५५६, कुमा)।
कंरुवुण देवो कंरुवण = दे (सुल ३६, १४७)।

कंरुविल्ल पुं [कङ्किल्ल] भरोश वृक्ष (नै ६०
विक २८)।

कंरुविल्ल पुं [दे, वङ्किल्ल] भरोश वृक्ष (दे २,
१२, गा ४०४, सुपा १४०, ५६२, कुमा)।

कंरुवेल न [दे. कर्कट] १ वनस्पति विशेष,
ककरैल, एक प्रकार की सब्जी, जो वर्षा में
ही होती है (दे २, ७; पाप्र)। २ पु. एक
नागराज। ३ साप की एक जाति (हे १,
२६, पट्)।

कंरुवेल पुं [कंदोल] १ कंदोल, शीतल-बीजों
के वृक्ष का एक भेद। २ न उग वृक्ष का
पत्त, 'सकपूरुल्लारकोलं तंबोव' (उप १०३१
दे)। देवो कंदोल।

कंरुल सक [काङ्कल] चाहना, चाहना। कंरुल
(हे १, १६२; पट्)।

कंरुण न [काङ्कण] नीचे देखो (वर्म २)।
कंरुणा श्री [काङ्कणा] १ चाल, अभिलाष (सुप्र
१, १५)। २ आसक्ति, मुक्ति (भग)। ३

अन्य धर्म की चाह अथवा उत्प्रेष आसक्ति
रूप सम्पत्ति का एक अतिचार (पडि)।

'मोहोपपन्न न [मोहोपाप] कर्म विशेष
(भग)।

कंरुति वि [काङ्कित्] चाहनेवाला (आचा,
गउळ, सुप्र १३, २४३)।

कंरुतिअ वि [काङ्कित्त] १ अभिलषिण। २
बाधा युक्त, चाहवाला (उवा, भग)।

कंरुतिर वि [काङ्कित्तु] चाहनेवाला, अभि-
लाषी (गा ५१, सुपा ५३७)।

कंरुणी श्री [दे] वल्ली-विशेष, कान्ती
(पएण १)।

कंरुणी ज्ञान [कङ्क] १ आनन्द-विशेष, गौतम या
नारो (ग ७, दे ७, २)। २ वल्ली-विशेष
(पएण १)।

कंरुण्डिया श्री [दे. कङ्कुलिना] जिन-मन्दिर
की एक बड़ी मारातना, जिन-मन्दिर मे या
उन्के नजदीक लघु या बृह नीति का करना
(वर्म २)।

कंरुण पुंन [काङ्कन] १ एक देव-विमान
(देवज १३१)। २ वि. सोने का, सुवर्ण का;
'कंरुणं लंड' (बजा १५८)। 'पह न [प्रभ]
१ रत्न-विशेष। २ वि. रत्न-विशेष का बना
हुमा (देवज २६६)। 'पायथ पुं [पादप]
वृक्ष-विशेष (व ६७३)।

कंरुण पुं [काङ्कन] १ वृक्ष विशेष। २ स्व-
नाम-व्यात एक श्रेणी (उप ७२८ टी)। ३

न. बुगुण, सोना (कम्प)। 'उर न [पुर]
कल्लि देसा का एक मुख्य नगर (आक)।

'कूड न [कूट] १ सीमन्त-नामक वस्तुस्वार
पर्वत का एक शिखर (छ ७)। २ देव-
विमान-विशेष (सम १२)। ३ रत्न पर्वत

का एक शिखर (छ ८)। 'कैअई श्री
[कैतर] वता-विशेष (कुमा)। 'तिलय

न [तिलक] हय नाम का विद्यापरो का
एक नगर (इव)। 'त्यल न [स्थल] स्व-

नाम व्यात एक नगर (ईव)। 'वलयग न
[वलयन] चौराही तीनों में एक तीर्थ का

नाम (राज)। 'सेल पुं [शैल] मेर-
पर्वत (कम्प)।

कंचणग पुं [काङ्कनक] १ पर्वत-विशेष
(सम ७०)। २ काङ्कनक पर्वत का निवासी

देव (जीव ३)।

कंचणा श्री [कङ्कणा] स्वनाम व्यात एक
श्री (पएण १, ४)।

कंचणर पुं [कङ्कनर] वृक्ष-विशेष (पउम
५३, ७६, कुमा)।

कंचणिया श्री [काङ्कनिका] वृक्ष माला
(श्रीव)।

कंचा (दे) देखो कण्णा (पाप्र)।

कंचि श्री [काङ्कि, कञ्जी] १ स्वनाम-रपात
कंचि श्री एक देश (कुमा)। २ कटो-मेलसा,
कमर का आभूषण (पाप्र)। ३ स्वनाम-रपात

एक नगर (सुपा ४०६)।

कंची श्री [दे] मुसल के धुँह में रक्ती जाती
तोहे की एक वस्त्राकार चीज, सापी या साम
(दे २, १)।

कंचीरय न [दे] पुष्प विशेष (बजा १०८)।

कंचीरय न [काङ्कौरत] सुतल-विशेष (बजा
१०८)।

कंचु पुं [कङ्कुक] १ श्री का स्तनाच्छा-
कंचुअ १ दक वस्त्र, चोली (पउम ६, ११;
पाप्र)। २ सर्व-स्वक, साप की कंचली, कंचुली

(विसे २५१७)। ३ वर्म, कवच (मग ६, ३३)।

४ वृक्ष-विशेष (दे १, २५, ३०)। ५ यज्ञ,
कपडा, 'तो उम्भिकणए लज्जा (लज्जा), श्रीधर
कचुय सरीरापो' (पउम ३४, १५)।

कंचुइ पुं [कङ्कुकिन्] १ भन्त-पुर का प्रती-
हार, चारको (आपा १, १; पउम ८, १६,
सुप्र २, १०६)। २ साप (विसे २५१७)।

३ वव, जव। ४ कणक, वना। ५ बुध्दार,
भगदून में होनेवाला एक प्रकार का भजन,
बोन्दरी। ६ वि. जिसने कच धारण किया

हो वह (हे ४, २६३)।

कंचुइअ वि [कङ्कुकित्त] कंचुइअता (कुमा;
रिपा १, २)।

कंचुइअ वि [कङ्कुकिय] भन्त-पुर का प्रती-
हार (आ ११, ११)।

कंचुइअ वि [कङ्कुकियमान] कंचुइअ की
तट्ट धारण करनेवाला 'विमव' उद्भवत-
सामगती' (सुपा १८१)।

कचुग देखो कचुअ (घोष) ६७६ विरो
२५२८)।

कचुगि देखो 'कचुइ (सण)।

कचुलिया छी [कञ्जुलिया] कंचली, चोली
(कचु)।

कचुली छी [दे] हार, नएठामरण (भवि)।

कजिअ न [काजिर] काजिअ (सुर २, १३३
कचु)।

कट देखो कटग (पिंड २००)।

कटअत वि [कण्टकायमान] १ कण्टक पैसा,
कण्टक की तरह भाचरता (से ६ २२)। २
पुनर्जित होना (भाबु ५८)।

कटइअ वि [कण्टकित] १ कण्टकवाला
(से १, ३२)। २ रोमाञ्चित पुलकित (कुमा
पाय)।

कटइअत देखो कटअत (गा ६७)।

कटइल पु [कण्टकिल] १ एक बात का
बात। २ वि कण्टको से व्याप्त (सूत्र १ ५)।

कटइल देखो कटइअ (परह १ १ कुमा)।

कटइअ वि [दे] कण्टक प्रांत (दे २, १७)।

कटइल देखो कटइअ (दे २ ७५)।

कटग } पु [कण्टक] १ बाग कण्टक
कटय } (कट है १, ३०)। २ रोमाञ्च
पुलक (गा ६७)। ३ शत्रु दुश्मन (छाया १,
१)। ४ वृत्तिक की पूँछ (वन ६)। ५ शल्य
(विपा १, ८)। ६ दु खोलावक वस्तु (उत्त
१)। ७ पयोतिप-शास्त्र प्रसिद्ध एक वृत्तयोग
(गण १६)। ८ वीविया छी [दे] कण्टक
शाखा (भावा १ ५)।

कटगरी छी [दे] वनस्पति विशेष कण्ट
कारिका भूकटिका (दे २ ४)।

कटिग वि [कण्टिक] १ कण्टकवाला
कण्टक-पुत्र। २ वृत्त विशेष (उज १०३१
टो)।

कटिया छी [कण्टिका] वनस्पति विशेष (बह
१ बाज १)।

कटी छी [दे] ऊपरकट, कण्टिका, पर्वत के
नक्षत्रीय की भूमि

एगामो एकादशफलभरतपुरिया भूमिखण्डपुर।

कटो मो निजर्वीत व, भनंदरमदभाभोया

(भनद)।

कटुल } [दे] देको कण्टक = (दे) पाय
कटोल } दे २, ७)।

कठ पु [दे] १ सूकर, सूकर। २ मर्यादा
धीमा (दे २, ५१)।

कठ पु [कण्ठ] १ गला घानी (कुमा)। २
समीप पास। ३ अश्वल, 'कठ कवाईए
एवबदगठिमि (दे २ १८)। 'दरसल्लिअ
वि [दरसल्लिअ] गद्गद (पाय)। 'मुरय
न [मुरज] धारण विशेष (छाया १, १)।
'मुरवी छी [मुरवा] गले का एक धारण
(धीय)। 'मुही छी [मुखी] गले का एक
धारण (राज)। 'मुत्त न [सूत्र] १
मुरत वच विशेष। २ गले का एक धारण
(धीय)।

कठ वि [कण्ठ्य] १ कण्ट से ऊपत्य। २
सरल, सुगम (मिन्न १५)।

कठकुछी छी [द] १ कठन वगैरह के अ-वन
न कचो हुई गाठ। २ गले में सटकी हुई
सम्बो नाडी प्रांच (दे २, १८)।

कठवीणार पु [दे] छिद्र विवर (दे १, २५)।

कठमल न [द] १ ठठरी वृत्त शिबिका। २
यान-यान वाहन (दे २ २०)।

कठमाल पु छी [कण्ठमाल] रोग विशेष
(सूत्र ४५१)।

कठय पु [कण्ठक] स्वनाम-व्यात एक चौर
नायक (महा)।

कठाकठि अ [कण्ठाकठि] गले गले म
बहुए कर (छाया १ २—यव ८८)।

कठाल वि [कण्ठवह] बड़ा गलावाला
(धर्मवि १०१)।

कठिअ पु [दे] बपरासी प्रतीहार (दे २,
१५)।

कठिया छी [कण्ठिका] गले का एक
धारण (गा ७५)।

कठीरअ देखो कठीरल (निरात १७)।

कठीरल पु [कण्ठीरल] सिंह शाहूँ (प्रयी
२१)।

कठ सख [कण्ठ] १ वीहि वगैरह का
खिलना प्रत्यय करना। २ खीचना। ३
खुजवाना। वरु कडत (घोष ४६८ गा
६६३) कठित (छाया १, ७)।

कठ न [काण्ड] १ अगल का अर्धव्यावता

भाग 'कडति एत्य भनइ अगुभभागी भस-
खजो' (पव २६० टी)।

कड पुन [काण्ड] १ दण्ड लाठी। २
निर्दिष्ट समुदाय। ३ पानी, जल। ४ पर्व।

५ वृत्त का स्कन्ध। ६ वृत्त की शाखा।
७ वृत्त का वह एक भाग जहाँ से शाखाएँ
निकलती हैं। ८ भय का एक भाग। ९

गुच्छ, स्तंभक। १० अरव घोड़ा। ११ प्रेत
पितृ और देवता के यज्ञ का एक हिस्सा।

१२ रोड शुद्ध भाग की सम्बो हड्डी। १३
शुक्रामद। १४ ल्याया प्रशसा। १५ पुनः
प्रगटनता। १६ एकान्त, निर्जन। १७ दुष्ट

विशेष। १८ निर्जन घुघो (दे १, २०)। १९
अवसर प्रस्ताव (गा ६३३)। २० समूह

(छाया १, ८)। २१ बाण, शर (उज ६६६)।
२२ वेव विमान विशेष (राज)। २३ पर्वत वगैरह
का एक नाम (सम ६५)। २४ ब्रह्म दुकका

अवयव (भाबु १)। 'च्छारिय पु [च्छारिक]
१ इस नाम का एक ग्राम। २ एक ग्राम

नायक (वन ७)। देखो कडग, कडय।

कड पु [दे] १ फल फीन। २ वि बुलत।

३ विप्र, विपत्ति-वस्त (दे २, ५१)।

कडइअ देखो कटइअ (गा ५५८)।

कडइअत देखो कटइअत (गा ६७)।

कडग न [कण्डक] १ संघातीय समय-न्याय
समुदाय (पिंड ६६ १००)। २ विभाग

पर्वत प्रादि का एक भाग (सूत्र १, ६१०)।

कडग पुन [काण्डक] देखो कड = काण्ड
(भावा भावम)। २५ संयम अर्थ विशेष
(बृह ३)। २६ इस नाम का एक ग्राम

(भाबु १)। देखो कडय।

कडय न [कण्डन] वीहि वगैरह को सार
करना, छुप छुपकर (भा २०)।

कडयखवा छी [दे] यवतिका परदा (दे २,
२५)।

कडय पुन [काण्डक] देखो कड = काण्ड
वया कडग। २७ वृत्त विशेष राप्ता का

पौव वृत्त पुनसी मुवाए भरे रक्तधारा का
कटमो (अ ८)। २८ तावीज एवडा वज
भक्तवि बंड्याई पडलीनोरित भगवाइ'
(सुर १६, ३२)।

कडरीय पु [कण्डरीक] मलपप राजा का

एक पुत्र, गुएरीन का छोटा भाई, जिसने

वपों तब जैनी दीपा का पालन कर भक्त में उसका त्याग कर दिया था (छाया १, १६ उद्यो)।

कडरीय वि [कण्डरीक] १ भरोमन प्र सुन्दर। २ अग्रवाल (सूयनि १४७ १५३)।

कडलि } लो [कन्दरिका] युका कन्दरा
कडलिआ } (पि ३३३ हे २, ३८ कुमा)।

कडवा लो [कण्डवा] वाय विरोध (राज)।

कडार सक [उत् + क] खुदना छील छान कर ठीक करना। सक

गूए खुदे इह पमावदणो जममि,
ज देहिएमवणो तोवणवाएवकवा।

एहें पडेइ पडम कुमरोएमेग

कडारिऊण पमडेइ पुणो दुईमो' (कप्प)।

कडाबेल्लो लो [कण्डनला] वनस्पति विरोध (पणए १)।

कडिअ वि [कण्डित] साफ-मुथरा किया हुआ (दे १ ११५)।

कडियायण न [कण्डियायन] बैरानी (विहार) का एक वैश्य (मग १५)।

कडिल पु [कण्डिल्य] १ कण्डिल्य गान का प्रवक्त ऋषि विरोध। २ पुली कण्डिल्य गीत वदम। ३ न गीत विरोध, जो माण्डव्य गीत की एक शाखा है (ठा ७-पत्र ३६०)।

विषण धु [यन] स्वनाम स्थात ऋषि विरोध (धद १०)।

कडु देलो कडु (राज)।

कडु देलो कडु (सूय १ ५)।

कडुअ सक [कण्डूय] जुजवाना। कडुप्रद (हे १ १२१ उव) कडुप्रद (पि ४६२)।
कडु कडुअत (गा ४६०) कडुअमाण (मामू २८)।

कडुअ पु [कान्दविक] हलवाई, मिठाई बेचन वाला राया पितोइ नमो नडुअत वन कटयएउसवलो ? (भावम)।

कडुअ पु [कण्डुक] गेंद (द ३, ५६ कडग } राज)।

कडुअयुय वि [कण्डजु] वाण की तरह सीपा (ध ३१७ गा ३५२)।

कडुयग वि [कण्डूयक] चुनवाला (भौव)।

कडुयग न [कण्डूयन] १ सुखली, खान पाया रोम विरोध। २ चुनवाना पामागिह

यस जहा, नडुयण दुखमेव गूढस (ध ५१५ उव २६४ टी गड)।

कडुयय देहो कडुयग 'भक्तुयएहि' (पणह २, १—पत्र १००)।

कडु पु [कण्डुक] स्वनाम-स्थात एक राजा जिसन रामचन्द्र के भाई भरत के साथ जैनी दोषा ली थी (पत्रम ८५ ५)।

कडू लो [कण्डू] १ जुजवाहट, जुजवाना (छाया १, ५)। २ रोम विरोध पाया, खान (छाया १ १३)।

कडूइ लो [कण्डूवि] ऊपर देखो (गा ५३२ सुर २ २३)।

कडूइअ न [कण्डूयित] जुजवाना (सूय १, ३ ३ गा १८१)।

कडूय देलो कडुअ = कण्डूय। कडूयद (महा)।
कडू कडूयमाण (महा)।

कडूयग वि [कण्डूयक] चुनवालाला (ठा ३ १)।

कडूयण देलो कडूयण (उप २५६ सुपा १७६ २२७)।

कडूयय देलो कडूयग (महा)।

कडू पु [दे] बर बुधा (दे २ ६)।

कडूल वि [कण्डूल] खानवाला बर-मुत् (कुमा)।

कत सक [कूत्] १ कान्ता, छेदना। २ गालना, बरप से सूता बनाना सल्ल कतति कण्णो (सूय १, ८, १०)। कतामि (पिडमा ३५)।

कत वि [कात्] १ मनीहर, सुन्दर (कुमा)। २ शक्तिपति, वाञ्छित (छाया १ १)। ३

पति स्वामा (पाय)। ४ देव विरोध (सुज १६)। ५ न कान्ति प्रभा (भावा २५ १)।

कत वि [कान्त] गव गुजरा हुआ (प्राप)।

कता लो [कान्ता] १ लो नारी (सुर ३ १४ सुपा ५७३)। २ रावण की एक पत्नी का नाम (पत्रम ७५, ११)। ३ एक योग दृष्टि (राज)।

कतार न [कान्ता] १ अण्य जयल (पाय)। २ दुष्ट, द्वेषित। ३ निरापय। ४ पागल (कप्प)।

कतार पुन [कान्ता] जल फटादि रहित अण्य कतारो' (सम्मत १६६)।

कति लो [कान्ति] १ तेज प्रकाश (सुर २, २३६)। २ शोभा, सौन्दर्य (पाय)। ३ इत नाम की रावण की एक पत्नी (पत्रम ७५, ११)। ४ महिमा (पणह २ १)। ५ दृष्टा।

६ चन्द्र की एक कता (राज विक १०७)।

पुरी लो [पुरो] नगरी विरोध (ती)। 'म, ह वि [मन्] कान्ति युत् (भावम गड, सुपा ८ १८८)।

कति लो [कान्ति] १ परिवर्तन, करकार। २ गमन, गति (नाट—विज ६०)।

कत पु [दे] काम कामदेव (दे २ १)।

कथक } पु [कथक] भ्रम की एक जाति कथरा } (ठा ४ ३ उल २३) जहा से कथय } कथोवाएँ ब्राह्मन कथए सिया' (उल ११)।

कथा लो [कथा] कथरी शुद्धी, पुरान वल्ल से बना हुआ झोडना (हे १, १८७)।

कथार पु [कथार] वृण विरोध (उप २२० टी)।

कथारिया } लो [कथारिका, 'री] वृण कथारी } विरोध (उप १०३१ टी)। 'यण न [वन] उजैन के समीप का एक जगल

जहा श्रवनीमुकुमार नामक जैन मुनि न भन शन त्रत किया था (भाक)।

कथेर पु [कथेर] वृण विरोध (राज)।

कथेरी लो [कथेरी] बरदबमय वृण विरोध (उर ३, २)।

कद सक [कद] कान्ता रोना। बरद (पि २३१)। वृका कदिनु (पि ५१६)। वह

कदत (गा ५८४) कदमाण (छाया १ १)।

कद वि [दे] १ दृढ मगवत्। २ मन उमत्। ३ न स्वरण भाञ्जान (दे २, ५१)।

कंद पु [कन्द, कन्दि] व्यन्तर देखो की एन जाति (ठा २, ३—पत्र ८५)।

कद पु [कन्द] १ शूरेणर धोर बिना रेठो की जह जमीन द मूरत शरखन्द, विनापीन,

मोन काजर, सहमुन योगह (जा ६)। २ मूल जह (गड)। ३ छन्द विरोध (सिंग)।

कद पु [कन्द] कान्तियेय, पशान (हुमा हे २, ५ पद)।

कन्दगया स्त्री [कन्दनता] मोटे स्वर से चिल्लाता (ठा ४, १)।

कंदपुं पुं [कन्दर्प] १ कामदेव, भ्रमंग (पाप)। २ कामोद्दीपक हास्यादि, 'कल्पे कुवद्' (पंडि, छाया १, १)। ३ देव-विशेष (पव ७३)। ४ काम संबंधी कपाया ५ वि. काम-युक्त, कामी (वृह १)।

कंदपुं वि [कान्दर्प] कान्दर्पसम्बन्धी (पव ७३)।

कंदपि वि [कान्दर्पिन्] कामोद्दीपक, कन्दर्प का उत्तेजक (पव १)।

कन्दपिय पुं [कान्दर्पिक] १ मजाक करने वाला भाइय वगैरह (भीष, भग)। २ भाइय-प्राय वेबो की एक जाति (पण २, २)। ३ हास्य वगैरह भाइय कर्म से भागीविका चलानेवाला (पण २०)। ४ वि. काम-सम्बन्धी (वृह १)।

कन्दर न [कन्दर] १ रथ, विवर (छाया १, २)। २ झुहा, गुफा (उवा, प्राप् ७३)।

कन्दरा स्त्री [कन्दरा] गहा, गुफा (सि ४, कन्दरी)। १६, राज)।

कन्दल पुं [कन्दल] १ भट्टर, प्ररोह (मुपा ४)। २ लता विशेष (छाया १, ६)।

कन्दल न [दि] कपाल (दे २, ४)।

कन्दलग पुं [कन्दलग] एक खुरवाला जानवर-विशेष (पण १)।

कन्दलिख } वि [कन्दलित] संवृत्ति (कुमा-
कन्दलिख } वि ५६५)।

कन्दली स्त्री [कन्दली] १ लता विशेष (मुपा ६; पवम ४३, ७६)। २ भंडुर, प्ररोह, 'वादिदुपनरत्नीमण्डने' (उव ७२८ टी)।

कन्दली स्त्री [कन्दली] कन्द-विशेष (उत ३६, ६८, ६९)।

कन्दविय पुं [कान्दयिक] हलवाई, मिठाई बेचनेवाला (उत १११ टी)।

कन्दिद पुं [कान्देन्द्र, कान्दिनेन्द्र] कन्दिव-नामक देव निराय का इन्द्र (ठा २, ४—पव ८५)।

कन्दिय पुं [कान्दिन्] १ वाणव्यन्तर देखो की एव जाति (पण १, ४, भीष)। २ न. रोदन, श्रान्त (उत २)।

कन्दिर वि [कान्दिन्] कान्देवाला (भवि)।
कन्दी स्त्री [दि] मूला, कन्द-विशेष (दे २, १)।

कन्दु स्त्री [कन्दु] एक प्रकार का वरवन, जिसमें भाइय वगैरह कपाया जाता है, हुंछ (विपा १, ३, मूख १, ५)।

कन्दुअ पुं [कन्दुक] १ गेंद (पाप, स्वप्न ३९; मे ८१)। २ वनस्पति-विशेष (पण १)।

कन्दुअ पुं [कान्दयिक] हलवाई, मिठाई बेचनेवाला (दे २, ४१, ६६३)।

कन्दुक देखो कन्दुअ (सूय २, ३, १६)।

कन्दुग देखो कन्दुअ (राज)।

कन्दुट्ट न [दि] देखो कन्दोट्ट (पाप, धर्मा ५; सण)।

कन्दुट्टय पुं न [दि] कन्द-विशेष (सुख ३६, ६८)।

कन्दुय देखो कन्दुअ (कुप ६८)।

कन्दोदय देखो कन्दुअ (मुपा ३८५)।

कन्दोट्ट न [दि] नील कमल (दे २, ६, प्राप्, पट्ट, गा ६२२, उत्तर ११७, वपु, भवि)।

कंद देखो रोध = लम्ब (नाट, वज्र ३६)।

कंधरा स्त्री [कन्दरा] शीवा, गदवन (पाप, सुर ४, १६६, गण ६)।

कंधार पुं [दि] लव्य, शीवा का पीछना भाग (उप ७, ८६)।

कंधक [कम्प] कानना, हिलना। कंध (हे १, ३०)। वक्र, कंपत, कंपमाण (महा, वपु)। वक्र कंधिज्ज (सि ६, ३८, १३, ५६)। प्रयो, वक्र, कंधाधित (मुपा ५६३)।

कंध पुं [कम्प] अर्धव्यं, चलन, हिलन (कुमा, भाट)।

कंधपुं पुं [दि] पणिक, मुगाफिर (दे २, ७)।

कंधन न [कम्पन] १ कम्प, हिलन (भवि)। २ रोग-विशेष। 'वाइअ वि [वातिक] कम्प वायु नामक रोगवाला (भनु ६)।

कंधि वि [कम्पिन्] कान्तेवाला (वपु)।

कंधिअ वि [कम्पित] बापा हूषा (कुमा)।

कंधिर वि [कम्पिन्] बापनेवाला (गा ६५६, मुपा १२८; या २७)।

कंधिख वि [कम्पयत्] बापनेवाला, अक्षिप, 'निचमर्षितिल परमगाहि कंधिलनामपुर' (उत ६ टी)।

कंधिपुं पुं [काम्पित्य] १ यदुवंशीय राजा अयमवृष्टि के एव पुत्र का नाम (मन्त १)।

२ न. पनाब देश का एव नगर (ठा १०; उप ६४८ टी)। 'पुर न [पुर] तप-विशेष (पवम ८, १४३, उवा)।

कंध वि [कन्ध] १ कामुक, कामी। २ सुन्दर, मनोहर (पि २६५)।

कंध देखो कंधा।

कंध पुं [दि] विज्ञान (दे २, १३)।

कंधल पुं न [कन्धल] १ कामरी, ऊनी बपडा (पाचा, भग)। २ पुं. स्वनाम स्वत एक बत्तीबंद (राज)। ३ गी के गले का चमडा, सात्ना, गनकवल, लहर (विपा १, २)।

कंधा स्त्री [कन्धा] मटि, लकड़ी, 'विद्वो लज्जणएण, निमुडिअ कंधपाएहि, बडो' (मुपा ३६६)।

कंधि स्त्री [कन्धि, *कंधी] १ दबी, कंधी स्त्री। २ लीला मटि, छद्मी, रोल मे हाथ में रखी जाती लकड़ी (उप २३७)।

कंधिया स्त्री [कन्धिका] पुस्तक का पुट्टा, किताब का आवरण पट्ट (राय ६६)।

कन्दु पुं [कन्धु] १ शङ्ख (पण १६, ४)। २ इत नाम का एक द्वीप (पवम ४५, ३२)। ३ पर्वत-विशेष (पवम ५५, ३२)। ४ न. एक देव-विमान (सम २२)। 'गीम न [गीम] एक देव-विमान (सम २२)।

कंधोय पुं [कन्धोज] देश-विशेष (पवम २७, ७, स ८०)।

कंधोय वि [कान्धोज] कन्धोज देश मे उपग्र (स ८०)।

कंधार पुं, व. [कन्धीर] इत नाम का एक प्रसिद्ध देश (हे २, ६८; पट्ट)। 'जन्म न [जन्मन] कुतुम, केसर (कुमा)। देखो कन्धार।

कंधार पुं, व. [कन्धीर] इत नाम का एक प्रसिद्ध देश (हे २, ६८; पट्ट)। 'जन्म न [जन्मन] कुतुम, केसर (कुमा)। देखो कन्धार।

कंधार पुं, व. [कन्धीर] इत नाम का एक प्रसिद्ध देश (हे २, ६८; पट्ट)। 'जन्म न [जन्मन] कुतुम, केसर (कुमा)। देखो कन्धार।

कंधार पुं, व. [कन्धीर] इत नाम का एक प्रसिद्ध देश (हे २, ६८; पट्ट)। 'जन्म न [जन्मन] कुतुम, केसर (कुमा)। देखो कन्धार।

कंधार पुं, व. [कन्धीर] इत नाम का एक प्रसिद्ध देश (हे २, ६८; पट्ट)। 'जन्म न [जन्मन] कुतुम, केसर (कुमा)। देखो कन्धार।

कंधार पुं, व. [कन्धीर] इत नाम का एक प्रसिद्ध देश (हे २, ६८; पट्ट)। 'जन्म न [जन्मन] कुतुम, केसर (कुमा)। देखो कन्धार।

कंधार पुं, व. [कन्धीर] इत नाम का एक प्रसिद्ध देश (हे २, ६८; पट्ट)। 'जन्म न [जन्मन] कुतुम, केसर (कुमा)। देखो कन्धार।

कंधार पुं, व. [कन्धीर] इत नाम का एक प्रसिद्ध देश (हे २, ६८; पट्ट)। 'जन्म न [जन्मन] कुतुम, केसर (कुमा)। देखो कन्धार।

कंधार पुं, व. [कन्धीर] इत नाम का एक प्रसिद्ध देश (हे २, ६८; पट्ट)। 'जन्म न [जन्मन] कुतुम, केसर (कुमा)। देखो कन्धार।

कंस न [कांस्य] १ घातु-विशेष, कासा । २ वाय विशेष । ३ परिमाण विशेष । ४ जल पीने का पात्र, प्याला (हे १, २६; ७०) । ५ ताल न [ताल] वाय-विशेष (जीव ३) । ६ पत्ती, 'पाई' स्त्री [पात्री] कासा का बना हुआ पात्र-विशेष (कय; ठा ६) । ७ 'पाय न [पात्र] कासा का बना हुआ पात्र (वस ६) ।

कंसार पुं [दे] कसार, एक प्रकार की मिठाई; 'ता बरेऊण कंसारं तालपुडसंयुतं येणं विसमोयगं गोमे उवणेमि एयाणं' (स १८७) । कंसारी स्त्री [दे] श्रोत्रिय छुद्र जन्तु की एक जाति (जो १८) ।

कंसाल पुं [कांस्यल] वाय-विशेष (हे २, ६२; मुपा ५०) ।

कसाला स्त्री [कंसताल, कांस्यताल] वाय का एक प्रकार का निर्घोष, ताल (एदि) ।

कंसालिया स्त्री [कंस्यतालिना] एक प्रकार का वाय (मुपा २४२) ।

कंसिअ पुं [कांस्यिक] १ कपरा, कंसारी, कास्य वार (हे १, ७०) । २ वाय विशेष (मुपा २४२) ।

कंसिआ स्त्री [कंसिना] १ ताल (एया १, १७) । २ वाय-विशेष (भाचा २) ।

कसगि पुं [दे] कंस गान, 'कसस विगमति कसगामी हे' (सूत्र १, ५, २, १५) ।

कसुध } देखो कडह = कडुद (पि २०६; कसुम } हे २, १७५) ।

कसुद देखो कडह = कडुद (ठा ५, १; एया १, १७; विपा १, २) । ५ हरिश्चंद्र का एक राजा (पउम २२, ६६) ।

कसुदा देखो कडहा (पद) ।

कस पुं [कंस] १ उद्वेग-द्रव्य, शरीर पर का मेल दूर करने के लिए लगाया जाता द्रव्य (सूत्र १, ६, निवृ १) । २ न. पाप (अग १२, ५) । ३ माया, कपट (सम ७१) । ४ गहना न [शुकरु] माया, कपट (पण्ड १, २—पत्र २८) ।

कस पुन [कस] १ चन्दन भादि उद्वेग द्रव्य (वस ६, ६४) । २ प्रयुज्य रोप भादि में रिया जाता शार-भावन । ३ लोप भादि से

उद्वेग (पत्र २—माया ११५) । ४ कुसुमा स्त्री [कसुका] माया, कपट (पत्र २) ।

कस पुं [कंस] १ चक्रवर्ति का एक देव-कृत प्रसाद (उत्त १३, १३) । २ रासि विशेष, कंस रासि (परमि ६६) ।

कस्य पुं [कस्य] ब्रह्माधिपत्यक देव विशेष (ठा २, ३) ।

कस्यु स्त्री [कस्यु] बैर का वृक्ष (पाय) ।

कसड पुं [कसड] कंसरासि (विचार १०६) ।

कसड न [कसड] १ जलजन्तु विशेष, कुलीर (पाय) । २ ककडी, पस-विशेष (पत्र ४) ।

३ हृदय का एक प्रकार का वायु (अग १०, ३) ।

कसडकड पुं [कसडकड] ककडी, खीरा (वय) ।

कसडिया } स्त्री [कसडिना, 'डी] ककडी कसडी } (खीरा) का माछ (अग ६६१) ।

कसणा स्त्री [कसना] १ पाप । २ माया (पण्ड १, २) ।

कसकन पुं [दे] युद्ध बनाते समय की शूल-रस की एक अवस्था, शूल रस का विचार-विशेष (पिड २८६) ।

कसर पुं [कसर] १ कसर, पत्थर (विपा १, २, गउड, मुपा ५१७, प्रासु १६८) । २ वि. बठिन, गुरा (भाच ४) । ३ कसर भावाना वाता (उत्त ७) ।

कसरणया स्त्री [कसरणया] १ दोषोद्भावन, दोषोद्भावनगमित प्रनाप (ठा ३, ३—पत्र १४७) ।

कसराइय न [कसरायित] १ कसर की तरह भावित । २ दोषोच्चारण, दोष प्रवृत्ति (भाच ४) ।

कसस वि [कसर] १ बजोर, पण्य (पाय. मुपा ५८; धारा ६४, पउम ३१, ६६) । २ प्रवर, चण्ड । ३ लोप, प्रगड (विपा १, १) । ४ धनिट, हानि कारक (अग ६, ३३) । ५ निवृत्त, निर्दय (उग) । ६ चवान-चवा कर बहा हुआ बचन (भाचा २, ५, १) ।

कसस } पुं [दे] दण्डोद, कसस्य (दे कसस्य) २, ५४) ।

कससेण पुं [कससेण] धनीय उत्सर्पणी-कस में उद्वेग एवं स्वभाव स्थित दुस्वर (पत्र) ।

कसालुआ स्त्री [कसालुआ] १ कृपाएड-बहो, बोहडा का माछ, 'कसालुमा मोछडलित्तवेण' (मुच्छ ५६) ।

कसिकड पुं [दे] कसकास, गिरगिट, गुजराती में 'काकेडु' (दे २, ५) ।

कसि पुं [कसि] भाव्य में होनेवाला घातविषय का एक राजा (ती) ।

कसिय न [कसिक] मास (सूत्र १, ११) ।

कसोअण पुन [कसोअण] रत्न की एक जाति (वय, पउम ३, ७५) ।

कसोअण पुं [कसोअण] मणि-विशेष की एक जाति (मुच्छ २०२) ।

कसोड न [कसोड] शाक विशेष, कसरैल, कसोड (राज) । देखो कसोडय ।

कसोडि स्त्री [कसोडिनी] कसोडे का वृक्ष कसरैल का माछ (पाय १—पत्र ३३) ।

कसोडय न [कसोडय] देखो कसोड ।

२ पु. अनुवेल्लवर-नामक एक मात-राज । ३ उसका भावस्य पर्वत (अग १, ६; इक) ।

कसोड पुं [कसोड] १ वृक्ष-विशेष, शीतल-चीनी के वृक्ष का एक भेद (गउड, स ७१) ।

२ न. पस-विशेष, जो सुगंधी होता है (पण्ड २, ५) । देखो कसोड ।

कसोली स्त्री [कसोली] वृक्ष-विशेष (मुपा २४६) ।

कसस देखो कसड = कस (उव. वय, सुर १, ८८, पउम ४४, १, पि ३१६; ४२०) ।

कससय वि [कससय] १ कसा प्राप्त । २ पुं कसा का कसा (तंतु ३६) ।

कसरड देखो कसस (सम ४१; ठा १, १' बगजा ८०, उव) ।

कसरड वि [दे] पीन, गुट (दे ३, ११; वय, भाचा, मणि) ।

कसरडगी स्त्री [दे] सती, सहेली (दे २, १६) ।

कसरड [दे] देखो कसस (पद) ।

कसरया देखो कसडा = कसा (पाय, एया १, ८, सुर ११, २२१) ।

कसयाड पुं [दे] १ कसयाग, चितचित्र, सटसीय । २ विनाड, दूष की मलाई (दे २, ५४) ।

कग्यायल पुं [दे] विनाड, दूष का चित्रक, दूष की मलाई (दे २, २२) ।

कच न [दे. कृत्य] कार्य, काम (दे २, २, (पङ्.)।

कच (वे) देखो कज (प्राप्र)।

कच न [काच] काच, शीरा, 'कच मारिणक' च सम आहारे पञ्जीमर्दि (वण्)।

कचत वि [कृत्यमान] शोडित किया जाता (सूत्र १, २, १)।

कचरा श्री [दे] १ कचर, कच्चा राखूना।

२ कचरा को सूखाकर, तलकर श्रीर मसाला डालकर बनाया हुआ खाद्य विशेष, एक प्रकार का आचार, उजराती में जिसको 'काचरी' कहते हैं 'पुणो कचरा पपडा दिरणमेम' (भरि)।

कचनार पु [दे] कचनार, कूडा (सूत्र ४४)।

कचाइणी लो [काशायनी] देखी विशेष, चरडी (स ४३७)।

कचायण पु [काशायन] १ स्वनाम-ख्यात ऋषि विशेष (सुत्र १०)। १ न. कौशिक गोत्र की शाखा-रूप एक गोत्र। ३ पुंलिंगी उस गोत्र में उल्लस (छा ७—पत्र ३६०)।

कचायणी लो [काशायनी] पार्वती, गौरी (गाम)।

कचि थ [कचिन्] १ न. धनो वा सूचक धर्म्य—१ प्रत। २ महल। ३ अमिलाप। ४ हर्ष (सि २७१, हे २, २१७, २१८)।

कच्यु (भर) ऊपर देखो (हे ४, ३२६)।

कच्यूर पु [कचूर] वनस्पति विशेष, कछूर, माली हली (धा २०)।

कचोल पु [कचोलक] पात्र विशेष, कचोलय [प्याना (पत्रम १०२, १२, भवि गुप्ता २०१)।

कच्छ पु [कक्ष] १ काँच, कसरी। २ यन जनन (भग ३, ६)। ३ लृण, घास। ४ ठुल लृण। ५ पत्नी, सहा। ६ शुल्ल गहो वाला जंगल। ७ राजा योद्धा का जनान-राना। ८ हाथी को बंधने की डोर। ९ पारव यात्रा। १० बह भ्रमण। ११ कथा, श्रेणी। १२ दार, दरवाना। १३ वनस्पति-विशेष, शृंग। १४ निभोतक कृपा। १५ दर की भेंट। १६ स्पर्श का स्थान। १७ लस प्राय देश (हे २, १७)।

कच्छ पु न. [कच्छ] १ स्वनाम-ख्यात देश, जो भारतवर्ष भी 'कच्छ' नाम से प्रसिद्ध है (पत्रम ६८, ६९, दे २, १ टी)। २ जलप्राय देश, जल बहुत देश (शाया १, १—पत्र, ३३, कुमा)। ३ कच्छा, लंबोटा (सुर २, १६)। ४ इक्षु वगैरह की वाटिका (कुमा, आचा २, ३)। ५ महाविदेह वर्ष में स्थित एक विजय प्रदेश (छा २, ३)। ६ तप्त, विनारा, 'गोलाएईए कच्छे चक्खतो राइमाइ पताइ' (गा १७१)। ७ नदी के जल से वेष्टित वन (भग)। ८ भगवान् श्रमणदेव का एक पुत्र (भावम)। ९ कच्छ विजय का एक राजा। १० कच्छ विजय का अभिष्टायक देव (ज ४)। ११ पारवर्ती प्रदेश। १२ राजा नगैरह के उद्यान के समीप का प्रदेश (उप १८६ टी)। १३ छद्म विशेष, दोषक छद्म का एक भेद (सिग)। 'कूड न [कूट] १

माह्यनगनामक कदस्कार पर्वत का एक शिखर। २ कच्छ विजय के विनायक वेताडय पर्वत के दक्षिणोत्तर पारवर्ती की शिखर (छा ६)। ३ चित्रकूट पर्वत का एक शिखर (ज ४)। 'हिंय पु [धिपि] कच्छ देश का राजा (भवि)। 'हिंयइ पु [धिपति] कच्छ देश का राजा (भवि)।

कच्छ पुन [कच्छ] १ नदी के पान की नीची जमीन। २ मूला आदि की बाड़ी (भावा २, ३, ३, १)।

कच्छर पु [दे] कच्छिआ, सखी बेचने-वाला। (लोल प्र० ४६४, २, ३१—सर्ग)।

कच्छगावई लो [कच्छगानी] महाविदेह वर्ष का एक विजय प्रदेश (छा २, ३)।

कच्छट्टी लो [दे] कच्छी, लंगोटी, कच्छी (रमा—पि)।

कच्छम पु [कच्छप] १ हर्म, कुप्रा (पह १.१, शाया १, १) २ राहु, बह विशेष (भग १२ ६)। 'रिमिय न [रिद्धि] उद्वेदन का एक दोष, कछुए की तरह पकने हुए कटा बना (वृह ३, कुमा)।

कच्छभाणिया लो [दे] जल में होनेवाली वनस्पति विशेष (सूत्र २, ३, १८)।

कच्छमी लो [कच्छमी] १ कच्छा-श्ले, हूनी। २ पाय विशेष (पह २, ५)। ३

नारद की वीणा (शाया १, १७)। ४ पुस्तक-विशेष (छा ४, २)।

कच्छर पु [दे] पद्ध, नीच, कदं (दे २, २)। कच्छरी लो [कच्छरी] शुक्ल विशेष (पह १—पत्र ३२)।

कच्छर (शप) पु [कच्छ] स्वनाम प्रसिद्ध देश-विशेष (भवि)।

कच्छर देखो कच्छभ (पत्रम ३४, ३३, दे १, १६७ (गउठ)।

कच्छवी देखो कच्छमी (वृह ३)।

कच्छह देखो कच्छभ (गाम)।

कच्छा लो [कक्षा] १ विभाग, भंश (पत्रम ६६, ७०)। २ उरो कन्ध, हाथी के पेट पर बांधने की रज्जु, 'उपलोमिचच्छे' (विपा १, २—पत्र २३, श्रीप)। ३ काँच, बगल (भग ३, ६, प्राप्ता)। ४ श्रेणी, पंक्ति, 'बमस्तस्य प्रमुदितस्य प्रमुकुनारण्यो बुमस्तस्य पामलायिवाहितस्तस्य सत कच्छामो परणतामो' (छा ७)। ५ बमर पर बंधने का बन्ध (गा ६८४)। ६ जनानखाना, मन्त पुर (छा ७)। ७ संघर्ष-भौति। ८ स्पर्श-स्थान। ९ पर की मोत। १० प्रतोड (ह २, १७)।

कच्छा लो [कच्छ] कटि-मेलना, बमर का श्रावण (गाम)। 'वई लो [वती] देखो कच्छगारई (ज ४)। 'वईकूड न [वती-कूट] महाविदेह वर्ष में स्थित ब्रह्मकूट पर्वत का एक शिखर (इक)।

कच्छाद्वय पु [दे. कच्छाद्वय] रोग विशेष (भिरि ११७)।

कच्छु लो [कच्छ] १ तुजरी, खान, रोग-विशेष (प्राप्ता २०)। २ खान की उपलब्ध बनवायी धोपपि, कचिच्यु (पह २, ५)। 'छ, 'ह वि [भन्] साज रोग-वाला (राज, विपा, १, ७)।

कच्छुट्टिया लो [दे. कच्छपटिका] कच्छी, लंगोटी (रमा)।

कच्छुरिअ वि [दे] १ दौध, जिसकी रस्य की जाय बट। २ न. रस्य (दे २, १९)।

कच्छुरिअ वि [कच्छुरित] रियात, शक्ति (कुमा ६ टी)।

कच्छुरी लो [दे] भरिच्यु, कच (दे २, ११)।

कच्छुल पुं [कच्छुल] शुल्म-विशेष (पण १—पत्र ३२)।

कच्छुल पुं [कच्छुल] स्वनाम ह्यात् एक नारद मुनि (शाखा १, १६)।

कच्छु देवो कच्छु (मामू ७२)।

कच्छोटी श्री [दे] कच्छोटी, जंगोटी (रमा—टि)।

कच्च वि [कार्य] १ जो किया जाय वह। २ करने योग्य। ३ जो किया जा सके (हे २, २४)। ४ न. प्रयोग, उद्देश्य, 'न य माहेइ सज्ज' (मामू २७, कप्य)। ५ नारण, हेतु (वच २)। ६ काम, कर्त्तव्य,

'अनह परिचित्तिग्गइ,

सहरित्तइग्गएण णियएण।

परिणामइ अनाह णिय,

कज्जरसो विहित्तसेण'

(सुर ४, १६)।

'जाण वि [क्ष] कार्य को जाननेवाला (उप २४८)। 'सेण पुं [सेन] भरीत उत्पत्तिणी-
बाल में चरण स्वनाम ह्यात् एक कुनवर-
पुत्र (मम १४०)।

कज्जा (श्री) श्री [कन्यरा] कन्या, कुमारी (म्राह ८७)।

कज्जड पुं [दे] अनर्थ (हे २, १७)।

कज्जमाण वि [कियमाण] जो किया जाता हो वह, 'कज्ज व कज्जमाण व चागमिस्स' व पावण (मम १, ८)।

कज्जल न [कज्जल] १ काजल, ममी। २ काजल, कुमा (कुमा)। ३ 'पपभा श्री [प्रभा] मुखरिता नामक जम्बू कुल की उत्तर दिशा में स्थित एक पुष्करिणी (जोव ३)।

कज्जलइ वि [कज्जलित] १ जानलगाया। २ श्याम, कृष्ण (पाप)।

कज्जलंगी श्री [कज्जलंगी] कज्जल-मुद्ग, रीप के उपर रखा जाता पात्र, जिनम काजल झट्टा होना है, कजरीटी (मंत्र, शाखा १, १—पत्र ६)।

कज्जला श्री [कज्जला] इस नाम की एक पुष्करिणी (र)।

कज्जलान मर [मुइ] हुम्न, बुद्धना 'माउसो समला। एउ ते लावाए उअय

रत्तिणए शायवइ, उअएरि वा शावा कज्ज-
सावेइ' (भावा २, ३, १, १६)। वहु-

कज्जलायेमाग (भावा २, ३, १, १६)।

कज्जलिअ देखो कज्जलइअ (से २, ३६; गउठ)।

कज्जव पुं [दे] १ विष्ठा, मैला। २ लुण कज्जवय। ३ वेदूह वा समूह, नूटा, कतवार (दे २, ११, उप १७६; २६३; ३ २६४, दे ६, २६, अणु)।

कज्जिय वि [कारिय] कार्यार्थी, प्रयोजनार्थी (वच ३)।

कज्जोवा पुं [कार्योपग] भठासी महानहो में एक ग्रह का नाम (ठा २, ३—पत्र ७८)।

कज्जाल न [दे] सेवान, एक प्रकार की घास, जो जलारण्य में लगती है (दे २, ८)।

कटरि (मप) म [कटरे] इन मपों का चोतव मयय—१ भावर्थ, विस्मय, 'कटरि म्हात्तइ मुद्धइ, जे मणु विचिचन मार' (हे ४, ३५०)। २ प्रसन्न, स्ताथा, 'कटरि भाउ मुनिसाउ, कटरि मुद्धकमल पमनिम' (धम्म ११ टी)।

कटार (मप) न [दे] छुरी, छुरिका (हे ४, ४४४)।

कट्ट सक [कट्ट] नाटना, खेलना। कट्टइ (भवि)। सङ्. कट्टि, कट्टिनि, कट्टिअ (रमा, भवि, पिंग)।

कट्ट वि [कट्ट] बाटा हुआ, छिन्न (उप १८०)।

कट्ट न [कट्ट] १ दुल। २ वि. कट्ट-नारक, कट्टई (पिंग)।

कट्ट पुन [दे] कट्टी में शवा हुआ पी वा बम, साव विशेष (गिड ६३७)।

कट्टर न [दे] सख, मय, हुम्न, 'जे जहा विस्मयकट्टरे इ वा विमएणट्टे इ वा' (मनु)।

कट्टराय न [दे] छुरी, स्रज विशेष (स १४३)।

कट्टरी श्री [दे] छुरिका, छुरी (दे २, ४)।

कट्टिअ वि [कट्टिअ] बाटा हुआ, छेदित (पिंग)।

कट्टु वि [कट्टु] कत्ता, कलेवाता (वद)।

कट्टु म [कट्टा] बरने (शाखा १, २, कच भाग)।

कट्टोरा पुं [दे] कटोरा, प्याला, धान-विशेष, 'तमो पावेहि कटोरागा कट्टोरागा मंहुमा सिप्पामो व ठविज्जेति' (निज्ज १)।

कट्ट न [कट्ट] १ दुल, पीडा, व्यथा (कुमा)। २ पाप। ३ वि. कट्ट-नायक, पीडा-नारक (हे २, ३४, ६०)। 'हर न [गृह] कठ-
धरा, काठ की बनी हुई चारदीवारी (सुर २, १८१)।

कट्ट न [काठ] काठ, लकड़ी (कुमा, सुपा ३४४)। २ पु. राजगृह नगर का निवासी एक स्वनाम-स्वात घंटी। (भावम)। 'कम्मत न [कर्मोत्त] लकड़ी का कारवाना (भावा २, २)। 'कट्टण न [करण] श्यामकलानक गृहस्थ के एक सौत का नाम (कप्य)। 'कार पुं [कार] काठ-कर्म से जीविता कयानेवाला (अणु)। 'कोल्ल पुं [कोल्लम] वृत्त की शाखा के नीचे झुका हुआ धन-भाग (मनु)। 'लाय पुं [लाय] कौट-विशेष, छुरण (ठा ४)। 'वल न [वल] छर की दान (रज)। 'पाउया श्री [पाहुया] काठ का सूता, लकड़ (मनु ४)। 'पुत्तलिया श्री [पुत्तलिया] कठुवनी (अणु)। 'पेजा श्री [पेया] १ मूँग बगीछ का क्वाप। २ धूल से ढकी हुई लकड़न की राव (उवा)। 'मट्ट न [मट्ट] पुण्य-मरन्द (कुमा)। 'मूल न [मूल] शिखर धान्य, जिसका दो टुकड़ा समान होना है ऐसा बना, मूँग धारि मय (वद १)। 'हार पुं [हार] कीर्तिय जन्तु-विशेष, छुड कीट विशेष (जोव १)। 'हारय पुं [हारय] कठहारा, लकड़हारा (सुपा ३८२)।

कट्ट वि [कट्ट] वित्तित, चामा हुआ, 'भीर-
कुपट्टेयपट्टोन्त्वा इपणे म मीणे य' (पोप ३३६)।

कट्टण न [कट्टण] धारण, लोचन (गउठ)।

कट्टहार पुं [काट्टहार] कट्टण, लकड़हार, काठहार (सुर १०८)।

कट्टा श्री [काट्ट] १ दिवा (मम ८८)। २ हृद, घोषा। कज्जम मट्टो पया कट्टा' (या १६)। ३ बाव का एक परिमाण, कट्टाट्ट निन्द (वद)। ४ कट्टय (सुम ६)।

कट्टिअ पुं [दे] चपरसी, प्रतीहार (दे २, १५)।

कट्टिअ वि [वसित] काठ से संस्कृत भौत वगैरह (भाषा २, २)।

कट्टिण देखो कट्टिण (नाट—मालती ५६)।

कट्टेअ वि [काट्ये] देखो कट्टिअ—वाहित (भाषा २, २, १, ६)।

कट्टोल देखो कट्ट = कट्ट (विड १२)।

कड वि [दे] १ क्षीण दुर्बल । २ मृत, विनष्ट (दे २, ५१)।

कड पुं [कट] १ गण्ड-स्थल, गाल (आया १, १. पन ६५)। २ गुण, धाम । ३ चढाई आस्ताण-विशेष (ठा ४, ४. पन २७१)।

४ लकड़ो, याष्ट, तैसि व जुड लगलिदुङ्क कडपाछाणरतनिवारिह (वनु)। ५ भय, बास (विपा १, ६. ठा ४, ४)। ६ गुण-विशेष (ठा ४, ४)। ७ छिला हुमा काठ (भाषा २, २, १)। °छेज्ज ॥ [°छेज्ज]

मला विशेष (मौप, ज २)। °तड न [°तड] १ कटक का एक भाग । २ गण्ड तल (आया १, १)। °पूयणा की [°पूतना] अन्तरो-विशेष (विसे २५४६)।

कड वि [कट] १ किया हुआ, बनाया हुआ, रचित (भग, परह २, ४. विपा १, १. कप्प, गुपा २६)। २ पुन पुन विशेष, मल्लगुण, (ठा ४, १)। ३ बार की संख्या (सूत्र १, २)। °जुग न [°जुग] समय-जुग, जगति का समय, आदि पुन, १७२०००० वर्षों का यह पुन होता है (ठा ४, ३)। °जुम्म पुं [°जुम्म] सम राशि-विशेष, चार से भाग देने पर जिसमें कुछ भी शेष न बचे ऐसी राशि (ठा ४, ३)। °जुम्मकडजुम्म पुं [°जुम्मकडजुम्म] राशि विशेष (भग ३४, १)। °जुम्मास्त्रिओय [°जुम्मस्त्रिओय] राशि विशेष (भग ३४, १)। °जुम्मदास्त्रिओय पुं [°जुम्मदास्त्रिओय] राशि-विशेष (भग ३४, १)। °जोमि वि [°जोमि] १ हत मित्र (निद्र १)। २ गीतार्थ, माली (मौप १३४ भा)। ३ सप्तमी (निपु १)। °वाइ पुं [°वादिन] राष्ट्र को सैनिक न मानवर निजी की वार्द

हुई माननेवाला, जगलचुलवादी (सूत्र १, १, १)। °इ पुं [°इ] देखो 'जोगि' (भग, आया १, १—पन ७५)। देखो कय = कृत।

कडअल पुं [दे] दीवारिक, प्रतीहार (दे २, १५)।

कडअछी छी [दे] कण्ठ, गला (दे २, १५)।

कडइअ पुं [दे] स्थिति, बढई (दे २, २२)।

कडइअ वि [कटफित] वलय की तरह स्थित (सि १२, ४१)।

कडइल पुं [दे] दीवारिक, प्रतीहार (दे २, १५)।

कडगर न [कडङ्गर] रुप, छिलका, भूसा (गुपा १२६)।

कडंत न [दे] भूली, बन्द विशेष । २ मुसल (दे २, ५६)।

कडतर न [दे] पुराना सूर्य आदि उपकरण (दे २, १५)।

कडतरिअ वि [दे] दारित, विदारित, विना-शित (दे २, २०)।

कडंय पुं [कडय] वाद विशेष (विसे ७८ टी)।

कडवा पुं [कडवा] वाय विशेष (राय ४६)।

कडंमुअ न [दे] १ कुम्भग्रीव नामक पात्र-विशेष । २ घड़े का गण्ड भाग (दे २, २०)।

कडक देखो कडग (नाट—रत्ना ५८)।

कडकडा स्त्री [कडकडा] मनुकरण शब्द-विशेष, कडकड आवाज (सि २५७, पि ५५८, नाट—मालती ५६)।

कडकडिअ वि [कडकडित] जिसने कडकड आवाज किया हो वह, जोएँ (सुर ३, १६३)।

कडकडिअ वि [कडकडाविष्ट] कडकड आवाज करनेवाला (सण)।

कडकिय न [कडकिय] कडकड आवाज (सिरि ६६२)।

कडकरा पुं [कटात्] कटास, तिरछी चितवन, मयकुर दण्ड, मोटा का संवेत (पात्र, सुर १, ४३, गुपा ६)।

कडकरा सब [कटाश्रय] कटास करना । कटाश्रय (भवि)। संह. कडकरेयि (भवि)।

कडकराण न [कटाक्षण] कटास करना (भवि)।

कडकिरअ वि [कटाक्षित] १ जिसपर कटास किया गया हो वह (रंभा)। २ न. कटास (भवि)।

कडग पुं [कटग] १ कडा, वलय, हाथ का आभूषण-विशेष (आया १, १)। २ यवनिका, प्रसंग, 'भनस्म समगमण होहो कडतरेण त सव्व । निमुयमुवग्गएण' (उप १६६ टी)।

३ पर्वत का मूल भाग । ४ पर्वत का मध्य भाग । ५ पर्वत की सम भूमि । ६ पर्वत का एक भाग, 'गिरिलवरकडगविसममुगेमु' (पव ८२, परह १, ३. आया १, ४. १८)। ७ शिविर, सेना रहने का स्थान (इह २)। ८ पु. देश विशेष (आया १, १—पन ३३)। देखो कडय ।

कडच्छु स्त्री [दे] कहीं, चमची, डोई (दे २, ७)।

कडण न [कडन] १ मार डालना, हिसा करना । (कुमा)। २ नारा करना । ३ मर्दन । ४ पाप । ५ युद्ध । ६ विजलता, आकुलता (हे १, २१७)।

कडण न [कटन] १ घर की छत । २ घर पर छत डालना (गच्छ १)।

कडण न [कटन] चढाई आदि से घर का संस्कार, चढाई आदि से घर के पार्श्व भाग वा किया जाता प्राच्छादन (भाषा २, २, ३, १ टी, पव १३३)।

कडणा स्त्री [कटना] घर का ध्वजय विरेप (भग ८, ६)।

कडणी स्त्री [कटनी] मेखला, 'सुरगिरिवड-णिणरिट्टियवडायाण सिरिमणुहरति' (गुपा ६१२)।

कडतय स्त्री [दे] सोढ़े का एक प्रकार का हथियार, जो एक धारवाला धीर वक्र होता है (दे २, १६)।

कडतरिअ वि [दे] देखो कडतरिअ (भवि)।

कडहरिअ वि [दे] १ क्षिप्त, काटा हुआ । २ न. क्षिद्रता (पद)।

कडप्प पुं [दे कटप्प] १ सप्पह, निवर, बलास (दे २, १३, पद, गजड, गुपा ६२; भवि, निद्र ६५)। २ वस्त्र का एक भाग (दे २, १३)।

कडमड पुं [दे] उडेग (संति ५७) ।
कडय न [कटक] ऊव भादि की यटि (भाषा
२, १०, २) ।

कडय देखो कडग (सुर १, १६३, पाष.
गड, महा, मुग १६२; दे ५, ३३) ।
लखर, मैय (ठा १) । १० पुं. बारी देह
का एन दाग (महा) । 'यडे लो [वती]
राजा कटव की एव' बय्या (महा) ।

कडयड पुं [कडयड] कड कट भावान,
'बल्यद लपवबहाणियकटम (?) य' उमत्रंउदुम-
गण' (पञ्च ६४, ४४) ।

कडयडिय वि [दे] परावसित, विपत्ता हुआ,
पुण्या हुआ, 'न कुम्भह कडयडिय हिंदि नं
विहड गिरिवर' (मुग १७६) ।

कडसन्ना लो [दे] बरा खनावा, बरम की
मनाई (गिरा १, ६) ।

कडसार न [कडसार] मुनि का एक उप-
करण, प्रागम, 'न वि नेद गिला पिदो
(?) छि) नवि कुं (?) डि) ककलं क
कडसार' (विचार १२८) ।

कडमी लो [दे] शमान, ममान (दे २, ६) ।
कट्ट पुं [कट्ट] कुल-विशेष (इह १) ।
कडा लो [दे] कडी, लिक्डी, लजीर की लदी-
'विषयकवाडकटणे लउरुधो निमुण्णिमो
ततो' (मुग ४१४) ।

कडार न [दे] नाखिल, नखिर (दे २, १०) ।

कडार पुं [कडार] १ कर्ण-विशेष, लामडा
कर्ण, भूरा रंग । २ वि. कर्णिल कर्णाला,
भूरा रंग का, मटमैला रंग का (पाषा रणण
७७, मुग ३३, ६२) ।

कडाली लो [दे] कडालिना] कोडे के छुंहे
पर बापने का एक उपकरण (सुनु ६) ।

कडाह पुं [कडाह] १ कडाह, लोहे का पात्र,
लोहे की बडी कडाही (सुनु ६; नाट—
सुन्द ३) । २ दुग विशेष (पञ्च १३, ७६) ।
३ पौर की हड्डी, शरीर का एक भाग
(पण १) ।

कडाहपहलियिअ न [दे] दोनो पारों का
मध्यस्थ, पारों को घुमाना विपत्ता (दे २,
२५) ।

कटि लो [कटि] १ कमर, कटी (गिरा १,
२, सुनु ६) । २ गुणित का मध्य भाग ।

(व १) । 'तड न [कट] १ कटी-कट ।
२ मध्य भाग (राय) । 'पट्टय न [पट्टक]
घोती, 'कटन-विशेष (इह ४) । 'पत्त न
[पत्र] १ समीप दुस की पत्ती । २ पत्ती
नमर (सुनु ५) । 'यल न [तल] कटी-
प्रदेश (भवि) । 'हड न [टीय] देखो कटिह
(दे) वा हसप धर्म । 'पट्टी लो [पट्टी]
नमर का पट्टा, नमर पट्टा (मुग ३३१) ।
'यल्य न [यल्य] घोती, नमर में पहनने
का कपडा (दे २, १७) । 'सुत्त न [सूत्र]
नमर का धातुपण, सेखता (सम १८६,
क्यू) । 'हल्य पुं [हल्य] नमर पर रखा
हुआ हाथ (दे २, १७) ।

कडि वि [कटिन्] कडाईवाला (धनु १४४) ।

कडिअ वि [कटित] १ कट—कडाई से
भाषादित (क्यू) । २ कट से सम्बन्ध
(भाषा २, ३, १) । ३ एक दूसरे में मिला
हुआ, 'कणलियिअकडिअ' (सीम) ।

कडिअ वि [दे] प्रीणिव, खुशी विपत्ता हुआ
(पट्ट) ।

कडियंभ पुं [दे] १ कमर पर रखा हुआ
हाथ (पाष, दे २, १७) । २ कमर में रिया
हुआ धातु (दे २, १७) ।

कटिण पुन [दे] गुण विशेष (सूत्र २, २, ७) ।

कडित देखो कालस (पाषा १, १ टी—
पत्र ६) ।

कडिभिल न [दे] शरीर के एक भाग में
होनेवाला कृष्ठ विशेष (इह ३) ।

कडिह वि [दे] १ छिद्र रहित, निरिध्र
(दे २, ५२, पट्ट) । २ न. कडी-नल,
कमर में पहनने का कपडा, घोती कडिह
(दे २, ५२, पाष, पट्ट, मुग १५२, क्यू,
भवि निमि २६००) । ३ वन, जंगल, झंझी,
ससारमजस्थिते, संजोगीयोपयोगीतरादौ ।

कुपदपण्टाण तुमं, मन्वाहो नाह । उपप्रा ।
(पञ्च २, ५५ बर २, दे २, ५२) । ४ वि.
कट्ट, निमिड, साड, 'निमिडिनायडरडिअ'
(उर १०३१ टी. दे २, ५२, पट्ट) । ५
भारीभार बांधीका । ६ पु. दीर्घावि प्रवीह ।

॥ गिरा, कट्ट, दुसम (दे २, ५२, पट्ट) ।
८ कटाह, लोह का बडा पात्र (पौष ६२) ।
९ लज्जण विशेष (दा ६) ।

कडी देखो कडि (मुग २२६) ।

कडु पुं [कडुक] १ कडमा, तित, रस-
कडुअ विशेष (ठा १) । २ वि. लीपा, तिक
रस वाला (से १, ६१; मुग) । ३ म्रिण्टि
(पह २, ५) । ४ दाण, नमंवर (पह
१, १) । ५ परप, निपुन (नाट—रत्ना ६६) ।
६ ली. कनसति विशेष, कुटकी (हे २,
१५५) ।

कडुअ (सी) म [कट्या] कटने (हे २, २७२) ।

कडुआल पुं [दे] पण्डा, पण्ड (दे २,
५७) । २ छोटी मछली (दे २, ५७; पाष) ।

कडुय वि [कडुवि] १ कडमा दिया
हुआ । २ दूषित (गवड) ।

कडुया ली [कडुनी] बली-विशेष, कुटकी
(पण १) ।

कडुन्दय } पुं ली [दे] देखो कडुन्दु,
कडुन्दु } 'पुनकडुन्दुमहत्ता' (मुग ५१,
कडुन्दुय } पाष, निर ३, १, पञ्च) ।

कडुयावि वि [दे] १ प्रहृत, जिस पर प्रहार
किया गया हो वह (उर ५६५) । २ व्यथित,
पीडित, 'सा य (बीरपाडी) कुमारसहार-
दुयाविना कणा परमुहा कया' (महा) ।
३ हराया हुआ, पराजित । ४ भारी विपद्
में पंजा हुआ (भवि) ।

कडुइद (सी) वि [कडुइन्] कडुन किया
हुआ (नाट) ।

कडेर न [कनेर] शरीर, देह (पाष, हे
४, ३६५) ।

कट्ट सर [कट्ट] १ लीचना । २ बाग
बरता । ३ रखा बरता । ४ पडना । ५
उच्चारण बरता । कट्टइद (ह ४, १८३) ।
कट्ट. कट्टइद, कट्टइमाग (ग ६८७,
महा) । कट्ट. कट्टइज्जन्, कट्टइन्माग
(स ४, २६, ६ ३६, पट्ट १, ३) । कट्ट.
कट्टइऊण, कट्टइउ, कट्टइन्, कट्टइय
(महा) । 'कट्टइन् नमोसार' (पंवर),
कट्टइउ (सि १७७) । ६. कट्टइयन्
(मुग २३६) ।

कट्टपु [कट्ट] लीपा, धातुपण (उग
१६) ।

कट्टय न [कट्टय] १ लीपा, धातुपण,

(मुग २६२) । २ वि. सोनवाला, भावपंक (उप ५ २७७) ।

कङ्कणयायी [कर्पणता] भावपंक (उप ५ २७७)

कङ्कणायि वि [कर्पित] सोनवाया हुमा, गौहर निवन्धाया हुमा (भवि) ।

कङ्कणयि वि [दे] गौहर निवन्धा हुमा, गुजराती मे 'काङ्कण', 'दो दासीहि मुण्ड अज हिहिमो कुट्टिअय महि' (सिदि ६८६) ।

कङ्कणयि वि [पृष्ठ] १ पाण्डु, सोबा हुमा (पह १, ३) । २ पठित, उच्चारित (स १२१) ।

कङ्कणयि कङ्कण न [कर्पाकर्प] लोचान (उत्त १६) ।

कङ्कण [कङ्क] १ काय करना । २ उवाचना । ३ तपाना, गरम करना । कङ्क (हे ४, २२०) । कङ्क, कङ्कमाण (पि २२१) । कङ्क, 'राया लोपड एम निचह रे रे वङ्कटिअलेण' (मुग १२०), कङ्कडामाग (पि २२१) ।

कङ्कणयि वि [कङ्कणयमान] कङ्कण भावय करता (पउम २१, ५०) ।

कङ्कण न [कङ्कण] काय करना, 'रगणुणेल पावड कङ्कणनङ्कण मणिङ्गा' (कुप्र २२३) ।

कङ्कण न [दे] कङ्क (पिड ६२४) ।

कङ्कण वि [कङ्कण] १ उवाचा हुमा । २ खूब गरम किया हुमा, 'कङ्कणी लउ निबलसी मङ्कणुमी एव जाएई' (या २७, भोय १४७, मुग ४६६) ।

कङ्कण लो [दे] कङ्क, भोजन-विशेष (हे २, ६७) ।

कङ्कण वि [कङ्कण] १ कङ्कण, कङ्कण, कङ्कणग } कङ्कण, पय (पह १, ३, पाग) ।

२ न, कण विशेष (भाया २, ३, ३) । ३ पाण, पत्ता (पह २, ५) ।

कङ्कण वि [कङ्कण] १ कङ्कण, परप, निष्ठुर । २ पुं. इस नाम का एक राजा (पउम ३२, २३) ।

कण सक [कण] शब्द करना, भावाज करना । कण (हे ४, २३६) । कङ्क. कणन (सुर १०, २१८, कङ्का ६६) ।

कण सक [कण] भावाज करना । कण (हे ४, २३६) ।

कण पुं [कण] १ कण, लेश, 'गुणवखामि पतिवहिं न सखइ' (साध ७६) । २ विरीणें दाना (कुमा) । ३ वनस्पति-विशेष, (पह १) । ४ पुं. एक म्लेच्छ देश (राज) ।

१ कङ्क-विशेष, कङ्कणियावर देव-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७७) । २ कण्डव, मोहन (उत्त १२) । ३ कणिक (भाया २, १) ।

४ विदु, विदुइयं कण्डयं (पाय) । ५ इज वि [यत्] विदुवाया (पाय) । ६ कुंडग पुं [कुण्डक] मोहन की बनी हुई एक भव्य वस्तु, 'कण्डुडयं कङ्कणयं विदु' भुगड रूपतें (उप १२) । ७ पृथलिया की [पृथलिका] भोजन विशेष, कणिक (पाया) की बनाई हुई एक खाद्य वस्तु (भाया २, १) ।

८ भन्तर पुं [मङ्क] वेगोपि मत्त का प्रवर्तक एक शक्ति (राज) । ९ खेति की [वृत्ति] निम्ना, भील (मुग २३४) ।

१० विद्यागण पु [वितानक] देवो कणय-विद्यागण (मुग २०, इल) । ११ सताय पुं [सतानक] देवो कणय सताय (एक) । १२ पुं [इ] वेगोपि मत्त का प्रवर्तक शक्ति (विस्ते २१६४) । १३ यण वि [यणी] विदुवाया (पाय) ।

कण पुं [कण] शब्द, भावाज (उप ५ १०३) । कणयि कङ्क पुं [कणयि] इस नाम का एक राजा (वंस) ।

कणयिपुर न [कणयिपुर] नगर-विशेष, जो महाजन जनक के भाई कनक की राजधानी की थी ।

कणयि पु [कणयि] कणय, वनस्पति-विशेष (पह १—पत्र ३२) ।

कणयि पु [दे] शुक, तोता, मुगा, मुगा (हे २, २१२, पङ्क, पाग) ।

कणयि लो [दे] लता, बल्ली (हे २, २५ पङ्क, स ४१६, पाग) ।

कणयि न [कणयि] पापण का एव प्रकार का हथियार (विपा १, ६) ।

कणयि पुं [कणयि] कणय-विशेष (भावाज) ।

कणयि कणय मङ्क [दे] कणय-विशेष (भावाज) । कणय-विशेष (पउम २६, ५३) । कङ्क. कणय-विशेष (पउम ५३, ८६) ।

कणयि पुं [कणयि] कणय-विशेष, कणय-विशेष (भावाज) । कणय-विशेष (ठा २, ३) ।

कणयि कणयि वि [कणयि] कणय-विशेष (भावाज) । कणय-विशेष (ठा २, ३) ।

कणयि कणय मङ्क [दे] कणय-विशेष (भावाज) । कणय-विशेष (पउम २६, ५३) ।

कणयि कणय पुं [कणयि] कणय-विशेष, कणय-विशेष (भावाज) । कणय-विशेष (ठा २, ३) ।

कणयि कणयि वि [कणयि] कणय-विशेष (भावाज) । कणय-विशेष (ठा २, ३) ।

कणयि कणयि न [दे] कणय-विशेष (भावाज) । कणय-विशेष (ठा २, ३) ।

कणयि कणयि वि [कणयि] कणय-विशेष (भावाज) । कणय-विशेष (ठा २, ३) ।

कणयि कणयि पुं [कणयि] कणय-विशेष (भावाज) । कणय-विशेष (ठा २, ३) ।

कणयि कणयि पुं [कणयि] कणय-विशेष (भावाज) । कणय-विशेष (ठा २, ३) ।

कणयि कणयि पुं [कणयि] कणय-विशेष (भावाज) । कणय-विशेष (ठा २, ३) ।

कणयि कणयि पुं [कणयि] कणय-विशेष (भावाज) । कणय-विशेष (ठा २, ३) ।

कणयि कणयि पुं [कणयि] कणय-विशेष (भावाज) । कणय-विशेष (ठा २, ३) ।

कणयि कणयि पुं [कणयि] कणय-विशेष (भावाज) । कणय-विशेष (ठा २, ३) ।

कणयि कणयि पुं [कणयि] कणय-विशेष (भावाज) । कणय-विशेष (ठा २, ३) ।

कणयि कणयि पुं [कणयि] कणय-विशेष (भावाज) । कणय-विशेष (ठा २, ३) ।

कणयि कणयि पुं [कणयि] कणय-विशेष (भावाज) । कणय-विशेष (ठा २, ३) ।

कणयि कणयि पुं [कणयि] कणय-विशेष (भावाज) । कणय-विशेष (ठा २, ३) ।

कणयि कणयि पुं [कणयि] कणय-विशेष (भावाज) । कणय-विशेष (ठा २, ३) ।

[लता] चमरेन्द्र के सोम नामक लोकपाल-
देव की एक भ्रमरहृद्वी (ठा ४, १—पत्र
२०४) । 'वियाणया पुं [नितानरु] ग्रह-
विशेष, ग्रहाधिपत्यक देव-विशेष (ठा २,
३, पत्र ७७) । 'संताणया पुं [सितानरु]
ग्रह-विशेष, ग्रहाधिपत्यक देव विशेष (ठा
२, ३—पत्र ७७) । 'वलि स्त्री [नलि]
१ सुवर्ण का एक भ्राम्पण, सुवर्ण की
मणियों से बना भ्राम्पण (पत्र २७) । २
तप-विशेष, एक प्रकार की तपस्वशां (शोध) ।
३ पुं द्वीप विशेष । ४ समुद्र विशेष (जीव ३) ।
'नलिपविभक्ति स्त्री [नलिपविभक्ति]
नाट्य का एक प्रकार (राय) । 'नलिभद्र
पुं [नलिभद्र] कनकावलि द्वीप का एक
अधिपत्यक देव (जीव ३) । 'वलिमहाभद्र
पुं [वलिमहाभद्र] कनकावलिदेव नामक
समुद्र का एक अधिपत्यक देव (जीव ३) ।
'वलिमहानर पुं [नलिमहानर] कनका-
वलिदेव नामक समुद्र का एक अधिपत्यक देव
(जीव ३) । 'वलिदेव पुं [नलिदेव] १
इस नाम का एक द्वीप । २ इस नाम का एक
समुद्र । कनकावलिदेव समुद्र का अधिपत्यक
देव विशेष (जीव ३) । 'वलिदेवभद्र पुं
[नलिदेवभद्र] कनकावलिदेव द्वीप का एक
अधिपति देव (जीव ३) । 'नलिदेवमहाभद्र
पुं [वलिदेवमहाभद्र] कनकावलिदेव नामक
द्वीप का एक अधिपत्यक देव (जीव ३) ।
'नलिदेवरोमास पुं [नलिदेवरोमास] १
इस नाम का एक द्वीप । २ इस नाम का एक
समुद्र (जीव ३) । 'वलिदेवरोमासभद्र पुं
[नलिदेवरोमासभद्र] कनकावलिदेवरोमास-
भद्र द्वीप का एक अधिपत्यक देव (जीव ३) ।
'नलिदेवरोमासमहाभद्र पुं [नलिदेवरोमास-
महाभद्र] कनकावलिदेवरोमासभद्र द्वीप
का एक अधिपत्यक देव (जीव ३) । 'नलि-
देवरोमासमहानर पुं [नलिदेवरोमास-
महानर] कनकावलिदेवरोमासभद्र का एक
अधिपत्यक देव (जीव ३) । 'नलिदेवरोमास-
भद्र पुं [नलिदेवरोमासभद्र] कनकावलि-
देवरोमास समुद्र का एक अधिपत्यक देव (जीव
३) । 'नली स्त्री [नली] देवी 'वलि का

पहला और दूसरा भयं (पत्र २७१) । देवों
कणय = कनक ।
कणगसत्तरि स्त्री [कनगसत्तरि] एक प्राचीन
जेनेतर राजा (भ्रम ३६) ।
कणगा स्त्री [कनगा] १ भोग-नामक राज-
सेन्द्र की एक भ्रमरहृद्वी (ठा ४, २—पत्र
७७) । २ चमरेन्द्र के सोम नामक लोकपाल
की एक भ्रमरहृद्वी (ठा ४, २) । ३ 'खाया-
धम्मरहा' सूत्र का एक अन्वय (खाया २,
१) । ४ शुद्ध जन्तु विशेष की एक जाति,
जन्तुविशेष लोक-विशेष (जीव १) ।
कणगसत्तरि पुं [कनगसत्तरि] इस नाम का
एक देव (शब्द) ।
कणय पुं [दे] १ फूलों को झट्टा कच्चा,
अवचय । २ बाण, शर 'असिल्लेयकस्यतो
मर—' (पत्र ८, ८८, पण्ड १, १, दे २,
१६, पाप) ।
कणय पुन [कनरु] एक देव विमान (देवेन्द्र
१४४) ।
कणय देवी कणगा = कनक (शोध ११० भा,
प्राप्ति ११६, दे १, २२८, उव पाप, महा-
कुमा) । ८ पु. राजा जनक के एक भाई का
नाम (पत्र २८, १३३) । ९ रावण का इस
नाम का सुभद्र (पत्र १६, ३२) । १०
भूत, वृक्ष विशेष (से १, ४८) । ११ वृक्ष-
विशेष (पण्ड १—पत्र ३३) । १२ न.
छन्द विशेष (पिण) । 'पण्यय पुं [पण्ये]
देवी कणगा गिरि (सुपा ४३) । 'मय वि
[मय] सुवर्ण का बना हुमा (सुपा २०) ।
'भन [भ] विद्यापरी का एक नगर
(शब्द) । 'ली स्त्री [ली] घर का एक
भाग (खाया १, १—पत्र १२) । 'नली स्त्री
[नली] देवी कणगावली । ३ एक राज-
पत्नी (पत्र ४, ४४) ।
कणयदी स्त्री [दे] वृक्ष विशेष, पाउरी, पालव
(दे २, ५८) ।
कणविआणय पुं [कणविआणय] देवी
कणगावयाणया (सुज्ज २०) ।
कणरी स्त्री [दे] कन्या (वज्र १०८) ।
कणरीर पुं [करीर] १ वृक्ष विशेष, कनेर
(ह १, २३३ सुपा १५१) । २ न. वनेर
का वृक्ष (पण्ड १, ३) ।

कणि पुस्त्री [दे] स्फुरण, स्फूर्ति, 'वणी
फुरण' (पाप) ।
कणिआर देवी कणिआर (कुमा) प्राय, हे
२, ६५) ।
कणिआरिअ वि [दे] १ कानी घाँव से जो
देखा गया हो वह । २ न. कानी नजर से
देखना (दे २, २४) ।
कणिआ स्त्री [कणिआ] कनेक, रोटी के लिए
पानी से मिखाया हुमा माटा (दे १, ३७) ।
कणिआ वि [कणिआ] मत्स्य विशेष (जीव
१) ।
कणिआ देवी कणिआ (आ १५) ।
कणिट्ट वि [कणिट्ट] १ छोटा, लघु (पत्र
१५, १२, हे २, १७२) । २ निष्ठ, जगमग
(रमा) ।
कणिअ न [कणिअ] १ घाँस-नवर । २
भावाव, ध्वनि (प्राव ४) ।
कणिअ*) देवी नणिआ (कण्य) । २
कणिआ) कणिका, कानल का टुकड़ा
(प्राव २, १, ८) । 'कुडय देवी कण-कुटग
(स ४८७) ।
कणिआ स्त्री [कणिआ] वीणा-विशेष (जीव
३) ।
कणिअ वि [कणिअ] भावाव कनेयाला (उव
पु १०३, पाप) ।
कणिअ न [कणिअ] नरात्र-विशेष का जोर
(हक) ।
कणिआ स्त्री [कणिआ] छोटी मणुली
(धर्मावका, धर्मा० ६ श्लो० १७५३) ।
कणिअ न [कणिआ] सत्य-शोचक, धान्य का
शब्द प्राय (दे २, ६) ।
कणिअ न [दे] किराण, सम्य-शूक, सत्य का
लोकप्रिय शब्द भाग (दे २, ६, शोध) ।
कणीअ) वि [कणीअ] छाटा, लघु,
कणीअस) 'तम भाया कणीअमा पहु नाम'
(वपु, वेणी १७६, कण्य, धन १५) ।
कणीअमा स्त्री [कणीअमा] १ धात की
तारा । २ छोटी उलटी (राय) ।
कणीअ देवी कणीअ (वन्द) ।
कण्य [कण्य] स्वयं वपेय का भयन
(प्राव २, १, ८) ।
कणूया देवी नणिआ = कणिआ (पत्र) ।

कणोडिडआ स्त्री [दे] गुग्गा, गुंथनी (दे २, २१)।

कणेर देखो कणिंगआर (हे १, १६८; पि २५८)।

कणेरु } स्त्री [कनेणु] हस्तिनी हस्तिनी
कणेरुया } (हे २, ११६; बुमा. छाया १,
१—पत्र ६४)।

कणोअ न [दे] गरम रिया हुमा जल, तेन
वोहू (दे २, १६)।

कणग पुं [कण्या] रातो विरेप, कण्या-राशि,
‘बुहो य कएणमि वट्टर उचो’ (पत्रम १७,
८१)।

कणग पुं [कण्य] इस नामरा एक परिवानन,
अपि विशेष (प्रीप प्रमि २६२)।

कणग पुं [कर्ण] १ कोटि भाग, अघारा (गुज
१, १)। २ एव स्लेच्छ-जाति (मुच्छ १५२)।

कणग पुं [कर्ण] १ बान, अवन, योन,
‘कएणाई’ (पि ३५८, प्रास २)। १ पुं. भद्र

देश का इस नाम का एक राजा, गुमिहिर
का बड़ा भाई (छाया १, १६)। ३ बाना,

बल्लु के छोर का एक मरा (भग० सूत्र ५१,
६६)। ‘ऊर’, ‘ऊर न’ ‘पूर’ बान का

भामूपण (भाम, हेका ४४)। ‘गडू स्त्री
[गति] मेरु-सम्बन्धी एक डाँटी (ओ १०)।

‘जयसिहदेव पुं [जयसिहदेव] गुजरात
देश का बाहली शताब्दी का एक मरास्त्री

राजा (ती)। ‘द्वय पुं [देव] विष्णु की
तेरही शताब्दी का सीपाट-देशीय एक राजा

(ती)। ‘धार पुं [धार] नाविक, निर्माणक
(छाया १, ८)। ‘पाडरण पुं [प्राधरण]

१ इस नाम का एक भव्यद्वीप। २ उस भव्य-
द्वीप का निवासी (पएण १)। ‘पावरण

देखो ‘पाडरण (इक)। ‘पीठ न [पीठ]
कान का एक प्रकार का भामूपण (छा ६)।

‘पूर देखो ‘ऊर (छाया १, ८)। ‘रया स्त्री
[रवा] नदी-विशेष (पत्रम ४०, १३)।

‘यालिया स्त्री [वालिया] कान के ऊपर
भाग में पहना जाता एक प्रकार का भामूपण

(प्रीप)। ‘वेहणन न [वेधनन] कृतक-
विशेष, कलंबोराव (प्रीप)। ‘सककुली स्त्री

[‘शकुली] १ कान का छिद्र। २ कान की
सवाई (छाया १, ८)। ‘सोहण न

[‘शोधन] बान का मस निरालने का एक
उपकरण (नित्र ४)। ‘धार पुं [‘धार] देखो

‘धार (भचु २४, स ३२७)। देखो कन्न।
कणणआर देखो कणिंगआर (प्रास ३०)।

कणणउज पुं [‘वाण्यकृञ्ज] १ देश-विशेष,
दोभाब, गङ्गा घोर यमुना नदी के बीच का

देश। २ न. उस देश का प्रधान नगर, जिसको
भाजकल ‘कसीज’ कहते हैं (ती; कण्य)।

कणणवाल न [दे] बान का भामूपण—
कुएल वगैरह (हे २, २३)।

कणणगा देखो कन्नगा (भाम ४)।
कणणहलुदी स्त्री [दे] गृह-गोपा, छिपकली (दे

२, १६)।
कणणडय (अप) देखो कणग (हे ४, ४३२,

४३३)।
कणणल (अप) पि [कर्णाट] १ देश विशेष,

कण्टक। २ वि. उस देश का निवासी
(पिम)।

कणणलोयण पुन [कर्णलोचन] देखो कणि-
लोयण (गुज १०, १६)।

कणणल पुन [कर्णल] ऊपर देखो (गुज १०,
१६ टी)।

कणणस वि [कण्यस] अग्रम जणय (उत
५)।

कणणसरिय वि [दे] १ बानी नजर से देखा
हुमा। २ न बानी नजर से देखना (दे २,

२४)।
कणणाली [कण्या] १ ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्ध

एक राशि। २ कण्या, लडकी, कुमारी (कण्य-
पि २८२)। ‘चोलय न [चोलक] धार्य-

विशेष, जवनाल (एलि)। ‘णय न [नय]
चोल देश का एक प्रधान नगर, ‘नोलदेवान-

यसे कएणाणयनये’ (ती)। ‘लिय न
[लोक] कण्या के विषय में बोला जाता

भूत (पएह १, ३)।
कणणआस न [दे] कान का भामूपण—

कुएल वगैरह (हे २, २३)।
कणणईधण न [दे] कान का भामूपण—

कुएल वगैरह (हे २, २३)।
कणणाल पुं [कर्णाट] १ देश विशेष, जो

भाजकल ‘कण्टक’ नाम से प्रसिद्ध है। २

वि. उस देश में उत्पन्न, वहा का निवासी
(कण्य)।

कणणाल पुं [दे] पमल, अन्त-भाग (दे २,
१४)।

कणणि पुं [कर्णि] एव तरब-स्वान (दिवेद
२६)।

कणणिया स्त्री [‘रणिगा] १ पप-उदर, बमल
का बीज-बीज (दे ६, १४०)। २ नील,

अम (भणु. छा ८)। ३ शालि वगैरह के बीज
का सुन-मूल सुप सुत (छा ८)।

कणणिआर पुं [‘रणिगार] १ वृष विशेष,
कनेर का भास (हुवा. हे २, ६५; प्रास)।

२ मोरालक का एक भक्त (भग १४, १०)।
३ न. कनेर का मूल (छाया १, ८)।

कणणियायण न [‘रणिगयन] नक्षत्र विशेष
का एक मोन (इक)।

कणणिरह देखो कन्नौरह।
कणणुपल न [कर्णापल] बान का भामूपण-

विशेष (कण्य)।
कणणेर देखो कणिंगआर (हे १, १६८)।

कणणोच्छडिआ स्त्री [दे] हूतरे की दात
गुप्तगुप्त मुनदेवाली स्त्री (हे २, २२)।

कणणोडू } स्त्री [दे] स्त्री को पहनने का
कणणोडिडआ } वस्त्र विशेष, नीरङ्गी (दे

२, २० टी)।
कणणोडत्ता [दे] देहां कणणोच्छडिआ (दे

२, २२)।
कणणोपल देखो कणणुपल (माट)।

कणणोडी स्त्री [दे] १ बल्लु, चौब, पत्ती का
डोर, ठाठ। २ भवतंत, शेखर, भूपण विशेष

(दे २, ५७)।
कणणोअगणिगआ स्त्री [कर्णाअगणिग]
कणणोअली, बानाकली (हे १, ६१)।

कणणोअसरिय [दे] देखो कणणसरिय
(दे २, २४)।

कण्ह पुं [कृष्ण] कन्द विशेष (उत ३६,
६६)।

कण्ह पुं [कृष्ण] १ श्वेत्युप, माता देवकी
घोर पिता कणुदेव से उत्पन्न नवरां वासुदेव

(छाया १, १६)। २ वाचका वासुदेव और
नलदेव के पूर्व जन्म के गुरु का नाम (सम

१५३)। ३ देशाकाशिक दंत को प्रतिचरित

बस्नेवाला एक उपामक (मुस १६२)। ४ विरम की सुनीय शताब्दी का एक प्रसिद्ध जैनार्चय, दिग्गजर जैन मत के प्रवर्तक शिवमूर्ति मुनि के शुक (विमे २५३३)। ५ बाला बर्ण (आवा)। ६ इस नाम का एक परिव्राजक, तापस (घौप)। ७ वि. श्याम वर्ण, काला रंगवाला (कुम)। ८ ओराल पु [ओराल] वनस्पति-विशेष (पण १—प ३४)। ९ कन्द पु [कन्द] वनस्पति विशेष, कन्द विशेष (पण १—प ३६)। १० कण्ठ यार पु [कण्ठियार] बाली कनर का गाछ (जीव ३)। ११ छुमार पु [छुमार] राजा श्रष्टिक का एक पुत्र (निर १, ४)। १२ गोमा स्त्री [गोमिन्] बाला गृह्याण कण्हमीमी जहा जित्ता कटग बा बिचित्रय (वन ६)। १३ गाम न [नामन] कर्म विशेष जिसके उदय मे जीव का शरीर बना होता है (राज)। १४ पक्खिय वि [पक्खिक] १ क्रूर कर्म करनेवाला (सू २, २)। २ बहुत बान एक बसार में क्रमण करनेवाला (जीव) (ठा १, १)। १५ धनुजीव पु [धनुजीव] वृष विशेष, श्याम पुष्पवाला दुपहरिया (जीव २)। १६ भूम, भोम पु [भूम] बानी जमीन (भावम, विमे १४५८)। १७ राई, राई स्त्री [राजि, जी] १ काली रत्ना (भग ८, ५ ठा ८)। २ एक इन्द्राणी ईशानन्द की एक भ्रम महिषी (ठा ८, जीव ४)। ३ गाता धर्मका सून का एक अध्ययन—परिच्छेद (पण २, १)। १८ रसि पु [रसि] इस नाम का एक ऋषि, जिसका जन्म शलावती नारी में हुआ था (ही)। १९ लेस, लेस वि [लेस्य] कृष्ण लेखावाला (भग)। २० लेसा, लेस्सा स्त्री [लेस्य] जीव का अति विष्ट मत—गरिमाण जलप-वृत्ति (भग, सम ११, ठा १)। २१ वडिसय, वडिसय न [वडिसय] एक देव विमान (राज, लाया २, १)। २२ वहि, वही स्त्री [वहि, ही] वही विशेष, नामरनी लता (पण १)। २३ सप पु [सप] १ बाला सप (जीव ३)। २ राहु (सुज २०)। २४ दोष कण्ह।

कण्हई म [कुतश्चिन्] विनी से (सू १, २, ३, ६)। २५ दोष कण्हइ।

कण्हा स्त्री [कृष्णा] १ एक इन्द्राणी, ईशानन्द की एक भ्रम महिषी (ठा ८—प ४२६)। २ एक अन्तर्गु स्त्री (अत २५)। ३ द्रौपदी, पाण्डवों की स्त्री (राज)। ४ राजा श्रष्टिक की एक रानी (निर १, ४)। ५ ब्रह्म दश की एक नदी (भावम)।

कण्हइ म [कचिन्] कचित्, कही भी (सू १, १)। २ कहा से ? (उत्त २)।

कण्हइ दोष कण्हइ (सू २, २, २१)। कतवार पु [दे] कतवार कूडा (ध २, ११)। कति दोषो कइ = कति (वि ४३३ भग)। कतु दोषो कइ = कतु (कण्)।

कत्त सक [कृत्] कटना देखना, कतरना। कत्ताहि (पण १, १)। कट कत्तल (धोष ४६८)।

कत्त मय [कृत्] काटना बरल से सूत बनाना। कट कत्तल (पिंड १७४)।

कत्त वि [कृत्] निर्मित (सपि ४०)।

कत्त न [दे] कलज, स्त्री (पट्)।

कत्तण न [कर्त्तन] काटना (पिंड ६०२)।

कत्तण न [कर्त्तन] १ कतरना, कटना (सम १२५ उप ३२)। २ वि कत्तनवाला, कतरनेवाला (सुर १ ७२)।

कत्तगया स्त्री [कर्त्तनता] लवन, कतराई (सुर १, ७२)।

कत्तर पु [दे] कतवार कूडा, 'इत्तो य कविलभूमयसकवहमारित्त्वमिदं, नमय-विशो विष्णु' (मुपा २ ७)।

कत्तरिअ वि [कृत्, कर्त्तित] कतरा हुआ, कटा हुआ, सूत (सुपा ५४६)।

कत्तरी स्त्री [कर्त्तरी] कतरनी, कैंची (कण्)।

कत्तरीअर पु [कर्त्तरीय] मृग विशेष (भग १२३, प्रति ३६)।

कत्तव्य वि [कर्त्तव्य] १ नरन योग्य (स १७२)। २ न नाय, बाज, काम (धा ६)।

कत्ता स्त्री [दे] धनिका खूत की कबिरा, कीडी (दे २ १)।

कत्ति स्त्री [कृत्ति] पर्व, चमड़ा (स ४३६, गड १ लाया १, ८)।

कत्ति वि [कर्त्त] बरनेवाला, किरिया या कतरिहिया (वर्मस १४५)।

कत्तिकेअ पु [कर्त्तिकेय] महादेव का एक पुत्र, यजमान (दे ३, ५)।

कत्तिकी स्त्री [कर्त्तिकी] कर्त्तिक मास की पूर्णिमा (पठम ६६, ३०, इक)।

कत्तिय वि [कृत्तिय] कृत्तिय, बनारसी (मुपा ८३, ज २)।

कत्तिय पु [कर्त्तिक] १ कर्त्तिक मास (मम ६५)। २ इस नाम का एक श्वेती (निर १, ३)। ३ भरत क्षेत्र के एक भावी तीर्थंकर के पूर्व भव का नाम (सम १५४)।

कत्तिया स्त्री [कृत्तिका] नन्तन विशेष (सम ११, इक)।

कत्तिया स्त्री [कर्त्तिमा] बतरनी, कैंची (मुपा २६०)।

कत्तिया स्त्री [कर्त्तिकी] १ कर्त्तिक मास की पूर्णिमा (सम ६६)। २ कर्त्तिक मास की श्रमावास्या (धव १०)।

कत्तिययि वि [दे] कृत्तिय दिलाऊ कत्तियविद्याह उवहिण्णहाणि (सू १, ४)।

कत्तु वि [कर्त्त] कतरनाला, कत्ता भुत्ता य पुनवावण (आ १)।

कत्तो म [कृत्त] कहा से, किसे ? (पठन ४७, ८, कुमा)। २ बय वि [हय] कहा से उत्पन्न ? (विमे १०१६)।

कटय सब [कटय] श्लाघा करना, प्रशंसना। कटय (हे १, १८७)।

कटय म [कृत्त] कहा से ? (पट्)।

कटय म [कृत्त, कृत्त] कहा ? (पट्, कुमा, प्राप् १२३)। ३ म [कृत्त] कहा, किसी जगह (आवा कण् ह २, १७४)।

कटय वि [कटय] १ कहने योग्य, कथनीय। २ न बाध्य का एक भेद (ठा ४, ४—प २८७)। ३ वनस्पति विशेष (राज)।

कटयत देखो कट् = कटय।

कटयभाणा स्त्री [कटयभानी] पानी में होने वाली वनस्पति विशेष (पण १—प ३४)।

कटयूरिया स्त्री [कटयूरी] मृग-मद, हरिण कटयूरी स्त्री की नाभि में होनेवाली मुपिपित वस्तु (मुपा १४७, स २३६, कण्)।

कथ वि [दे] १ उगल, मृदा। २ शीघ्र, दुर्बल (पट्)।

कद (मा) देखो कड = इत (प्राह १०३)
 कदग देखो कयग (हमीर ३४)।
 कदण देखो कडग = कदन (हुमा)।
 कदलो देखो कयली (पण १—यम ३२)।
 कदु देखो कड = कदु (प्राह १२)।
 कदुअ (शी) = [कृत्वा] बरके (प्राह ८८)।
 कदुइया स्त्री [दे] बल्ली-विशेष, कदहू,
 लीकी (पण १—यम ३३)।
 कदुशण (ना) बि [कदुण] बाडा गरम
 (प्राह १०२)।
 कदम पुन [कदम] बीचड, बाँदो (कुप्र
 ६६)। *ल बि [ल] बीचडवाला (सूमनि
 १६१)।
 कदम १ पुं [कदम] १ कदो, बीच (पणह
 कदम १) २ देव विशेष, एक नाम-
 राज (भग ६, ३)।
 कदमिअ बि [कदमित] पट्ट बुक, बीच
 वाला (स ७, २०, गडह)।
 कदमिअ पु [दे] महिब, मिला (दे २, १५)।
 कद देखो कण = कण (सुर १ २, सुर २,
 १७१, सुवा ५२४, पम्म १२ टी, डा ५,
 २, मुवा ६५, पात्र)। *यस पु [यसस]
 कान बा धातुपण (पात्र)।
 कद देखो कण (कुलक)। *एध देखो कण-
 देव (कुप्र ४)। *बट्टि, *बट्टि स्त्री [कृत्वा]
 किनारा, अग्र भाग (कुप्र ३३१, ३३४,
 विचार ३२७, पत्र १२५)।
 कदउज देखो उणउज (हुमा)।
 कदगा स्त्री [कदगा] कम्पा, लडकी,
 कुमारी (सुर ३, १२२, महा)।
 कदस बि [कदोयस] कनिष्ठ, जघन-
 *कदसमगिअमनेहु (पत्र १५७)।
 कद देखो कण (सुर २, १५४, पात्र)।
 कदहा देखो कणहा (मवि)।
 कदहारि बि [दे] विनियत, असह्य 'भारहे'
 बतारिउ गदु (मवि)।
 कदोरह पु [कर्गारह] एक प्रकार की सिविका,
 घनाक्ष का एक प्रकार का बाहन (छाया
 १, ३)।
 कदुलुड (अप) पु [कर्ण] कान, श्रवणोद्भय
 (हुमा)।
 कदरय देखो कणिआर (हुमा)।

कनोली [दे] देखो कणोली (पात्र)।
 कन्ह देखो कणह (मुवा ५६६, पण)। *सह
 न [सह] जैन साधुभा वे एक कुत वा
 नाम (पण)।
 कपन देखो कमन (प्राह १३)।
 कपिजल पु [कपिजल] पति-विशेष—
 वातर। २ गौर पत्नी (पणह १, १)।
 कपूर देखो कपूर (या २७)।
 कप्य सक [कप्य] १ समर्थ होना। २
 कल्पना, काम मे जाना। ३ सक. बाटना,
 छेदना। कप्यक, कप्यए (कण, महा, पिय)।
 कप्य, कप्यक (दे ४, ३५७)। क. कप्य-
 गिज (भाब ६)। प्रयो. कप्यवेज (निबू
 १७)। क. कप्यवत (निबू १७)।
 कप्य सक [कप्य] १ कला, बनाना।
 २ बरान करना। ३ कल्पना करना। क.
 कप्यमाण (विवा १, १)। क. कप्यऊण
 (पचव १)।
 कप्य बि [कप्य] ग्रहण-योग्य (पचा १२)।
 कप्य पु [कप्य] १ प्रसासन (पिउ २६६;
 २७१, ३०५, गच्छ २, ३२)। २ बाघार,
 व्यवहार (व १, व ६६)। ३ दाय-
 तन्त्रय सुत्र। ४ कल्प-मूल। ५ व्यवहार
 सूत्र (व १)। ६ वि. उचित (पचा १८,
 ३०)। *काल पु [काल] प्रभूत काल
 (सूत्र १, १, ३, १६)। *वर बि [वर]
 कल्प तथा व्यवहार सूत्र का नामकार
 (व १)।
 कप्य पु [कप्य] १ बाल-विशेष, देवो के दो
 हवार सुत्र परिमित समय, 'कम्माए कपिआए
 काहि कपारसु एिबेस' (अन्नु १८,
 हुमा)। २ शालोक विधि, अनुष्ठान (डा
 ६)। ३ शाल विशेष (विसे १०७५, सुवा
 ३२४)। ४ कान्त-प्रमुख उपकरण (श्रीध
 ५०)। ५ देवो वा स्थान, वारह देवलोक
 (मय ५, ४, डा २, १०)। ६ वारह देवलोको
 निवासी देव, वैमानिक देव (अम २)। ७
 वृक्ष-विशेष, भोजान्धित फल को देववाला
 वृक्ष, कल्प-वृक्ष (हुमा)। = शलक-विशेष,
 'असिलेडयकप्योमरविहया' (पचम ६,
 ७३)। ८ पवित्रास, स्थान (इह १)। ९
 राजा मन्त्र का एक मन्त्री (राज)। ११ वि

समर्थ, शक्तिमान् (छाया १, १३)। १२
 सद्य, तुल्य, 'विवतवण' (पात्रम, पणह २,
 २४)। *कृ पु [कृ] बालक, बच्चा (व ७)
 ७)। *इह स्त्री [स्थिति] साधुको वा
 शास्त्रोक्त अनुष्ठान (इह ६)। *इथा स्त्री
 [स्थित] १ लडकी, बालिका (व ४)।
 २ तल्ल छी (इह १)। *छी स्त्री [स्था]
 १ बालिका, लडकी (व ६)। २ कुलाङ्गना,
 कुल वधू (व ३)। *तर पुं [तर] कल्प-
 वृक्ष (प्राह १६८, दे २, ७६)। *थी स्त्री
 [थी] देवी, देव-स्त्री (डा ३)। *हुम,
 *हुम पुं [हुम] कल्प-वृक्ष (व ६,
 महा)। *पायन पुं [पादप] कल्प-वृक्ष (पडि,
 सुवा ३६)। *पाहुड न [प्राधुत] जैन
 बन्ध विशेष (सी)। *रुख पुं [रुख]
 कल्प-वृक्ष (पणह १, ४५)। *बडिसय न
 [यतसक] १ विमान-विशेष। २ विमान-
 वाली देव-विशेष (निर)। *बडिसया स्त्री
 [वतसिका] जैन ग्रन्थ-विशेष, जिसमें कल्प-
 वतसक देव-विमानो का वर्णन है (अम निर
 १)। *विडिध पुं [विटपिन्] कल्प-वृक्ष
 (सुवा १२६)। *साल पुं [शाल] कल्प वृक्ष
 (अ १४२ टी)। *साहि पुं [शारिन्]
 कल्प-वृक्ष (सुवा ३६६)। *सुच न [सुच]
 श्रीभद्रबाहु स्वामि-विरचित एक जैन ग्रन्थ
 (कण, कव)। *सुय न [सुय] १ ज्ञान-
 विशेष। २ ग्रन्थ-विशेष (छाया)। *ईअ पुं
 [तीव] उत्तम जाति के देव-विशेष, त्रैविक
 और धनुतर विमान के निवासी देव (पणह
 १, ४, पणह १)। *ग पु [ग] बिधि को
 माननेवाला (कस, गी)। *य पु [य]
 कद, बुद्धि, राज देव भाग (विवा १, ३)।
 कप्यत पुं [कप्यत] प्रमय काल, सहार-
 समय (कप्य)।
 कप्यड पुं [कपेट] १ कपडा, वस्त्र (पचम
 २५, ६८, सुवा ३४४, स १८०)। २ जीर्ण
 वस्त्र, लकुटाकार कपडा (पणह १, २)।
 कप्यडिअ बि [कार्पेटिक] मिष्टक, भोजनार्थ
 (छाया १, ८, सुवा १३८, इह १)।
 कप्यडिअ बि [कार्पेटिक] कपरी, मायावी
 (छाया १, ८—पत्र १५०)।
 कप्यण न [कल्पन] छेदन, काटना (सुवा
 १३८)।

कपणा स्त्री [कल्पना] १ रचना, निर्माण । २ प्रश्नार्थ, निश्चय (निष् १) । ३ कल्पना, विचल्प (विस्ते १६३२) ।

कप्पणी स्त्री [कल्पनी] कतरनी, कैंची (पणह १, १; विपा १, ४; स ३३१) ।

कप्पर पुं [कर्पर] खप्पर, कपाप, तिर की खोपड़ी (बृह ४; नाट) । देखो कुप्पर = कर्पर ।

कप्परिअ वि [दि] शरित, चीरा हुआ (दि २, २०, बजा ३४, मत्ति) ।

कप्पास पुं [कार्पास] १ कपास, रई । २ ऊन (निष् ३) ।

कप्पाससिअ पु [कार्पासासिअ] नौन्दिय जोल-विशेष, छुद्र जल-विशेष (जीव १) ।

कप्पासिअ वि [कार्पासिक] १ कपास वेष्टनवाला (अणु १४६) । २ न. कैनेतर शास्त्र-विशेष (अणु ३६, एण्णि) ।

कप्पासिय वि [कार्पासिक] कपास का बना हुआ, सूती कपड़ा (अणु) ।

कप्पासी स्त्री [कर्पासी] रई का गाछ (राज) । कर्पिआकप्पाअ न [कर्पाकल्प] एक जैन शास्त्र (एण्णि २०२) ।

कर्पिय वि [कल्पित] १ रचित, निर्मित (भीर) । २ स्थापित, समीप में रखा हुआ, 'सि धम्मए कुमारे तं धम्मं मंसं कहरिं धम्म-कल्पिय करेइ' (निर १, १) । ३ कल्पना निर्मित, विकल्पित (धर्मान १) । ४ ध्वनित (भाषा, धूम १ २) । ५ छिद्र, काटा हुआ (विपा ३, ४) ।

कर्पिय वि [कल्पित] १ अनुमत, अनिष्ट (उवर १३०) । २ योग्य, उचित (अणु १, वज ८) । ३ पुं. गीतामें, शान्ति साधु, 'वि वा अक्खिएणं' (वज १) ।

कर्पिया स्त्री [कल्पिमा] जैन अर्थ-विशेष, एक उपाङ्ग-अर्थ (जं १, निर) ।

कप्पर पुं [कर्पर] कपूर, मुगणिय इव्य-विशेष (पणह २, ४, सुर २, ६, युग २६३) ।

कप्पोयअ पुं [कल्पोपप] १ कल्प-युक्त । २ देव-विशेष, याइ देव लोक-नामी देव (पणह २) ।

कप्पोयणण पुं [कल्पोपपण] ऊपर देखो (मुग ८८) ।

कप्पोयवन्तिआ स्त्री [कल्पोपपन्तिआ] देव-लोक विशेष में उत्पत्ति (अण) ।

कप्फल न [कटफल] इस नाम की एक वनस्पति, कायफल (हे २, ७७) ।

कप्फाड देखो कपाड = कपाट (गठड) ।

कप्पाड [दि] देखो कफाड (पाप) ।

कफ पुं [कफ] कफ, शरीर स्थित वायु विशेष (राज) ।

कफाड पुं [दि] युग, युद्ध (दि २, ७) ।

कफेअ (सी) देखो रमंअ (प्राक् ८५) ।

कव्यट्ठी स्त्री [दि] छोटी लकड़ी (पिंड २८५) ।

कव्यड } पुन [कर्बट] १ खराब नगर, कव्यडरा } दुर्गति शहर (भा, पणह १, २) । २ पु. ग्रह-विशेष, ग्रहाविष्टाण देव-विशेष (छा २, ३—पत्र ७८) । ३ वि कुनगर का निवासी (उत्त ३०) ।

कव्वर देखो कव्वुर (प्राक् ७) ।

कव्वाडभयय पुं [दि] ठीका पर जमीन खोले का काम करनेवाला मजदूर (छा ४, १—पत्र २०३) ।

कव्वुर } वि [कल्लूर] १ कवरा, चिनक कव्वुरय } बरा, चितला (गठड, अणु ६) । २ पु. ग्रह-विशेष, ग्रहाविष्टाण देव-विशेष (छा २, ३, राज) ।

कव्वुरिअ वि [कल्लूरित] अनेक वर्णवाला, चितकवरा किया हुआ, 'देहकतिकव्वुरिय-जम्ममिहं' (सुपा ५४) । 'अण्णिमक्खोरण्णवार-छितरण्णहकिरण्णव्वुरिअ' (कुम्मा ६, पत्रम ८२, ११) ।

कव (अण) देखो कफ (पट्ट) ।

कभल्ल न [दि] कपाल, खप्पर (अणु ५; उवा) ।

कभ सर [क्रम] १ चलना, पाव उठाना । २ उत्त्थान करना । ३ अक. कैयना, पसरना । ४ होना, 'अण्णोवि विचयनियमो न कम्मइ जप्पो स सव्वय' (विस्ते २४६) । 'अण्ण उवायतरं कम्मइ' (स २०६) । वड्.

कमंत (से २, ६) । क. कम्मणिज्ज (भीप) ।

कम स [कम्म] चाहना, वाञ्छना । कवट्.

कम्ममाण (से २, ८२) । क. कम्मणिज्ज (सुपा ३४, २६२) । कम्म (छा १, १४ टी—पत्र १८८) ।

कम मा [कम्म] १ संगत होना, युक्त होना, घटना । २ अधिक रहना । कमइ (पिंड २३१, पत्र ६१) ।

कम पुं [कम्म] १ पाद, पग, पांव (सुर १, ८) । २ पम्परा, 'निमुकुलकमागयायो पिउणा विज्जायो मग्गं दिन्नायो' (सुर ३, २८) । ३ अनुकम, परिचायी (गठड) । ४ मर्यादा, सीमा (छा ४) । ५ न्याय, फैला, 'अवि-आरिअ कम्म ए करिस्सि' (स्वल्न २१) । ६ नियम (बृह १) ।

कम पुं [कम्म] अम, यथावत्, क्लान्ति (हे २, १०६; कुमा) ।

कम्मडल्ल पुं [कम्मण्डल्ल] संप्राप्तियों का एक मिट्टी या काष्ठ का पान (निर ३, १; पणह १, ४, उअ ६४८ टी) ।

कम्मथ पुं [कम्मथ] बंद, मस्तकहीन शरीर (हे १, २३६; प्राक्, कुमा) ।

कम्मड पुं [दि] १ बड़ी की बलरी । २ पिंड, स्थायी । ३ बलदेव । ४ मुक्क, मुह (हे २, ५५) ।

कम्मड पुं [कम्म] १ पाद, पग, पांव (सुर १, ८) । २ पम्परा, 'निमुकुलकमागयायो पिउणा विज्जायो मग्गं दिन्नायो' (सुर ३, २८) । ३ अनुकम, परिचायी (गठड) । ४ मर्यादा, सीमा (छा ४) । ५ न्याय, फैला, 'अवि-आरिअ कम्म ए करिस्सि' (स्वल्न २१) । ६ नियम (बृह १) ।

कम्म पुं [कम्म] १ पाद, पग, पांव (सुर १, ८) । २ पम्परा, 'निमुकुलकमागयायो पिउणा विज्जायो मग्गं दिन्नायो' (सुर ३, २८) । ३ अनुकम, परिचायी (गठड) । ४ मर्यादा, सीमा (छा ४) । ५ न्याय, फैला, 'अवि-आरिअ कम्म ए करिस्सि' (स्वल्न २१) । ६ नियम (बृह १) ।

कम्म पुं [कम्म] १ पाद, पग, पांव (सुर १, ८) । २ पम्परा, 'निमुकुलकमागयायो पिउणा विज्जायो मग्गं दिन्नायो' (सुर ३, २८) । ३ अनुकम, परिचायी (गठड) । ४ मर्यादा, सीमा (छा ४) । ५ न्याय, फैला, 'अवि-आरिअ कम्म ए करिस्सि' (स्वल्न २१) । ६ नियम (बृह १) ।

कम्म पुं [कम्म] १ पाद, पग, पांव (सुर १, ८) । २ पम्परा, 'निमुकुलकमागयायो पिउणा विज्जायो मग्गं दिन्नायो' (सुर ३, २८) । ३ अनुकम, परिचायी (गठड) । ४ मर्यादा, सीमा (छा ४) । ५ न्याय, फैला, 'अवि-आरिअ कम्म ए करिस्सि' (स्वल्न २१) । ६ नियम (बृह १) ।

कम्म पुं [कम्म] १ पाद, पग, पांव (सुर १, ८) । २ पम्परा, 'निमुकुलकमागयायो पिउणा विज्जायो मग्गं दिन्नायो' (सुर ३, २८) । ३ अनुकम, परिचायी (गठड) । ४ मर्यादा, सीमा (छा ४) । ५ न्याय, फैला, 'अवि-आरिअ कम्म ए करिस्सि' (स्वल्न २१) । ६ नियम (बृह १) ।

कम्म पुं [कम्म] १ पाद, पग, पांव (सुर १, ८) । २ पम्परा, 'निमुकुलकमागयायो पिउणा विज्जायो मग्गं दिन्नायो' (सुर ३, २८) । ३ अनुकम, परिचायी (गठड) । ४ मर्यादा, सीमा (छा ४) । ५ न्याय, फैला, 'अवि-आरिअ कम्म ए करिस्सि' (स्वल्न २१) । ६ नियम (बृह १) ।

कम्म पुं [कम्म] १ पाद, पग, पांव (सुर १, ८) । २ पम्परा, 'निमुकुलकमागयायो पिउणा विज्जायो मग्गं दिन्नायो' (सुर ३, २८) । ३ अनुकम, परिचायी (गठड) । ४ मर्यादा, सीमा (छा ४) । ५ न्याय, फैला, 'अवि-आरिअ कम्म ए करिस्सि' (स्वल्न २१) । ६ नियम (बृह १) ।

कम्म पुं [कम्म] १ पाद, पग, पांव (सुर १, ८) । २ पम्परा, 'निमुकुलकमागयायो पिउणा विज्जायो मग्गं दिन्नायो' (सुर ३, २८) । ३ अनुकम, परिचायी (गठड) । ४ मर्यादा, सीमा (छा ४) । ५ न्याय, फैला, 'अवि-आरिअ कम्म ए करिस्सि' (स्वल्न २१) । ६ नियम (बृह १) ।

कम्म पुं [कम्म] १ पाद, पग, पांव (सुर १, ८) । २ पम्परा, 'निमुकुलकमागयायो पिउणा विज्जायो मग्गं दिन्नायो' (सुर ३, २८) । ३ अनुकम, परिचायी (गठड) । ४ मर्यादा, सीमा (छा ४) । ५ न्याय, फैला, 'अवि-आरिअ कम्म ए करिस्सि' (स्वल्न २१) । ६ नियम (बृह १) ।

कम्म पुं [कम्म] १ पाद, पग, पांव (सुर १, ८) । २ पम्परा, 'निमुकुलकमागयायो पिउणा विज्जायो मग्गं दिन्नायो' (सुर ३, २८) । ३ अनुकम, परिचायी (गठड) । ४ मर्यादा, सीमा (छा ४) । ५ न्याय, फैला, 'अवि-आरिअ कम्म ए करिस्सि' (स्वल्न २१) । ६ नियम (बृह १) ।

कम्म पुं [कम्म] १ पाद, पग, पांव (सुर १, ८) । २ पम्परा, 'निमुकुलकमागयायो पिउणा विज्जायो मग्गं दिन्नायो' (सुर ३, २८) । ३ अनुकम, परिचायी (गठड) । ४ मर्यादा, सीमा (छा ४) । ५ न्याय, फैला, 'अवि-आरिअ कम्म ए करिस्सि' (स्वल्न २१) । ६ नियम (बृह १) ।

कम्म पुं [कम्म] १ पाद, पग, पांव (सुर १, ८) । २ पम्परा, 'निमुकुलकमागयायो पिउणा विज्जायो मग्गं दिन्नायो' (सुर ३, २८) । ३ अनुकम, परिचायी (गठड) । ४ मर्यादा, सीमा (छा ४) । ५ न्याय, फैला, 'अवि-आरिअ कम्म ए करिस्सि' (स्वल्न २१) । ६ नियम (बृह १) ।

कम्म पुं [कम्म] १ पाद, पग, पांव (सुर १, ८) । २ पम्परा, 'निमुकुलकमागयायो पिउणा विज्जायो मग्गं दिन्नायो' (सुर ३, २८) । ३ अनुकम, परिचायी (गठड) । ४ मर्यादा, सीमा (छा ४) । ५ न्याय, फैला, 'अवि-आरिअ कम्म ए करिस्सि' (स्वल्न २१) । ६ नियम (बृह १) ।

कम्म पुं [कम्म] १ पाद, पग, पांव (सुर १, ८) । २ पम्परा, 'निमुकुलकमागयायो पिउणा विज्जायो मग्गं दिन्नायो' (सुर ३, २८) । ३ अनुकम, परिचायी (गठड) । ४ मर्यादा, सीमा (छा ४) । ५ न्याय, फैला, 'अवि-आरिअ कम्म ए करिस्सि' (स्वल्न २१) । ६ नियम (बृह १) ।

कम्म पुं [कम्म] १ पाद, पग, पांव (सुर १, ८) । २ पम्परा, 'निमुकुलकमागयायो पिउणा विज्जायो मग्गं दिन्नायो' (सुर ३, २८) । ३ अनुकम, परिचायी (गठड) । ४ मर्यादा, सीमा (छा ४) । ५ न्याय, फैला, 'अवि-आरिअ कम्म ए करिस्सि' (स्वल्न २१) । ६ नियम (बृह १) ।

कम्म पुं [कम्म] १ पाद, पग, पांव (सुर १, ८) । २ पम्परा, 'निमुकुलकमागयायो पिउणा विज्जायो मग्गं दिन्नायो' (सुर ३, २८) । ३ अनुकम, परिचायी (गठड) । ४ मर्यादा, सीमा (छा ४) । ५ न्याय, फैला, 'अवि-आरिअ कम्म ए करिस्सि' (स्वल्न २१) । ६ नियम (बृह १) ।

कम्म पुं [कम्म] १ पाद, पग, पांव (सुर १, ८) । २ पम्परा, 'निमुकुलकमागयायो पिउणा विज्जायो मग्गं दिन्नायो' (सुर ३, २८) । ३ अनुकम, परिचायी (गठड) । ४ मर्यादा, सीमा (छा ४) । ५ न्याय, फैला, 'अवि-आरिअ कम्म ए करिस्सि' (स्वल्न २१) । ६ नियम (बृह १) ।

कम्म पुं [कम्म] १ पाद, पग, पांव (सुर १, ८) । २ पम्परा, 'निमुकुलकमागयायो पिउणा विज्जायो मग्गं दिन्नायो' (सुर ३, २८) । ३ अनुकम, परिचायी (गठड) । ४ मर्यादा, सीमा (छा ४) । ५ न्याय, फैला, 'अवि-आरिअ कम्म ए करिस्सि' (स्वल्न २१) । ६ नियम (बृह १) ।

कम्म पुं [कम्म] १ पाद, पग, पांव (सुर १, ८) । २ पम्परा, 'निमुकुलकमागयायो पिउणा विज्जायो मग्गं दिन्नायो' (सुर ३, २८) । ३ अनुकम, परिचायी (गठड) । ४ मर्यादा, सीमा (छा ४) । ५ न्याय, फैला, 'अवि-आरिअ कम्म ए करिस्सि' (स्वल्न २१) । ६ नियम (बृह १) ।

कम्म पुं [कम्म] १ पाद, पग, पांव (सुर १, ८) । २ पम्परा, 'निमुकुलकमागयायो पिउणा विज्जायो मग्गं दिन्नायो' (सुर ३, २८) । ३ अनुकम, परिचायी (गठड) । ४ मर्यादा, सीमा (छा ४) । ५ न्याय, फैला, 'अवि-आरिअ कम्म ए करिस्सि' (स्वल्न २१) । ६ नियम (बृह १) ।

कम्म पुं [कम्म] १ पाद, पग, पांव (सुर १, ८) । २ पम्परा, 'निमुकुलकमागयायो पिउणा विज्जायो मग्गं दिन्नायो' (सुर ३, २८) । ३ अनुकम, परिचायी (गठड) । ४ मर्यादा, सीमा (छा ४) । ५ न्याय, फैला, 'अवि-आरिअ कम्म ए करिस्सि' (स्वल्न २१) । ६ नियम (बृह १) ।

कम्म पुं [कम्म] १ पाद, पग, पांव (सुर १, ८) । २ पम्परा, 'निमुकुलकमागयायो पिउणा विज्जायो मग्गं दिन्नायो' (सुर ३, २८) । ३ अनुकम, परिचायी (गठड) । ४ मर्यादा, सीमा (छा ४) । ५ न्याय, फैला, 'अवि-आरिअ कम्म ए करिस्सि' (स्वल्न २१) । ६ नियम (बृह १) ।

१५, २०२, २२, ५४, अणु, कप्प, औप) ।
५ बलह, मगडा (पट्) ।

कमल पुन [कमल] एव देव-विमान (देवेन्द्र १४२) । 'गणअण पु' [नयन] विण्णु, नारायण (समु ११२) ।

कमल न [कमल] १ कमल, पद्म, धारविन्द, (कप्प, कुमा; प्राप् ७१) । २ कमलाक्ष्य इन्द्राणी वा सिंहासन । ३ सख्या विशेष, 'कमलान' की बौरासी लास से घुलने पर जो सख्या लब्ध हो वह (जो २) । ४ छन्द-विशेष (पिंग) । ५ पु. कमलाक्ष्य इन्द्राणी के पूर्व जन्म का पिता (आया २) । ६ ज्येष्ठ-विशेष (मुपा २७५) । ७ पिंगल प्रसिद्ध एक गण, अक्षय अक्षर जिसमें गुरु हो यह गण (पिंग) । ८ एकजात का चावल, कनम (प्राप्) । 'कर पु [क्ष] इस नाम का एक यक्ष (सणु) । 'जय न [जय] विज्राघरा का एक नगर (इक्) । 'जोगि पुं [योनि] ब्रह्मा, विजाता (पाप्) । 'पुर न [पुर] विज्राघरा का एक नगर (इक्) । 'प्यभा स्त्री [प्रभा] १ बाल नामक पिशाचिन्द्र की भ्रातृ महिषी (डा ४, १) । २ 'जाता धर्मव्या' सून का एक अग्र्यपन (आया २) । 'वग्धु पुं [वग्धु] १ सूर्य, रवि (पउम ७०, ६२) । २ इस नाम का एक राजा (पउम २२, ६८) । 'माला स्त्री [माला] पीतलपुर नगर के राजा भानन्द की एक रानी, अगवान् अजितनाथ की मातामही—दासी (पउम ५, ५२) । 'रय पु [रजस्] कमल का पराग (पाप्) । 'यडिसय न [यडिसस्] कमलानामक इन्द्राणी का प्रासाद (आया २) । 'सिरी स्त्री [श्री] कमला नामक इन्द्राणी की पूर्व जन्म की माता का नाम (आया २) । 'सुंदरी स्त्री [सुन्दरी] इस नाम की एक रानी (उप ७२२ टी) । 'सेना स्त्री [सेना] एक राज-पुत्री (महा) । 'अर, 'प्राप् पु [कर] १ कमलो का समूह । २ सरोवर, हृद वगैरह जलाशय (से १, २६, कप्प) । 'पीड, 'मेल पु [पीड] भटत कवचर्मा का अक्षर-रत्न (जं ३, हि २९) । 'सण पु [सन्] ब्रह्मा, विजाता (पाप्, दे ७, ६२) ।

कमलम न [कमलाङ्ग] यस्या विशेष, चौरासी लाख महापद की संख्या (जो २) ।
कमला स्त्री [दि] हरिणी, मुनी (पाप्) ।
कमला स्त्री [कमला] १ लट्ठी (पाप्, मुपा २७५) । २ रासल की एक पत्नी (पउम ७४, ६) । ३ बाल नामक पिशाचिन्द्र की एक भ्रातृ-महिषी, इन्द्राणी विशेष (डा ४, १) । ४ 'जाता धर्मव्या' सून का एक अग्र्यपन (आया २) । ५ छन्द विशेष (पिंग) । 'अर पुं [कर] धनाग्र, धनी (से १, २६) ।
कमललिणी स्त्री [कमललिनी] पत्नी, कमल का गात्र (पाप्) ।
कमलुक्कभय पुं [कमलुक्कभय] गृहा (वि ८२) ।
कमय ५ भक्त [रप] मोना, सो जाना । कमयस् ५ कमय (पट्) । कमयसइ (हे ४, १५६, कुमा) ।
कमसो य [कमस] क्रम से, एक-एक करके (सुर १, ११६) ।
कमिअ वि [दि] उपसर्पित पास आया हुआ (दे २, ३) ।
कमिय वि [कान्त] उल्लसित (दस २, ५) ।
कमेलाग पु [दि] [कमेलाग] लु, ऊँट (पाप्) ।
कमेलय पु [ज] १०३१ टी, क ३३१) । बी. 'मी (उप १०३१ टी) ।
कम्म सक् [कृ] हुआमत करना, क्षीर-कर्म करना । कम्मइ (हे ४, ७२, पट्) । वह, कम्मत (कुमा) ।
कम्म सक् [भुज] भोजन करना । कम्मइ (पट्) । कम्मइ (हे ४, ११०) ।
कम्म देवो कम्म = कम्
कम्म पुन [कम्म] १ जीव द्वारा बहुल किया जाता अग्र्यत सूर्य पुद्गल (डा ४, ४, कम्म १, १) । २ काम, क्रिया, करनी, व्यापार (डा १, धाचा), 'कम्मा खाणक्का' (वि १७२) । ३ जो किया जाय वह । ४ व्याकरण प्रसिद्ध कारक विशेष (विसे २०६६, ३४२०) । ५ वह स्थान, जहाँ पर बुना वगैरह पकाया जाता है (पह २, ५ प १२३) । ६ पूर्व कृति, भाग्य, 'कम्मत्ता दुम्माग चेव' (सु १, ३, ३, आया (पट्) । ७ काम्य शरीर । ८ काम्य शरीर नामकर्म से विशेष (कम्म २, २१) । 'कर वि [कर] नीकर, चाकर (धाचा) । देवो 'गार ।

'करण न [करण] कर्म विपय वचन, जीव-परागम-विशेष (भा ६, १) । 'गार वि [गार] नीकर (पउम १७, ७) ।
'किन्निस्स वि [किन्निस्स] कर्म-चाण्डाल, खराब काम करनेवाला (उत्त ३) । 'करयं पुं [रन्ध्र] कर्म-पुद्गल का गिण्ड (कम्म ५) । 'गर देखो 'कर (प्राक्) । 'गार पुं [गार] १ बारीगर, शिन्नी (आया १, ६) । देखो 'गर । 'जोग पुं [योग] शास्त्रोक्त अनुष्ठान (कम्म) । 'ट्टाण न [स्थान] कारखाना (धाचा) । 'ट्टिह्मी स्त्री [रिधति] १ कर्म-पुद्गल का अवस्थान-समय (भा ६, ३) । २ वि. सत्तारी जीव (भा १४, ६) । 'गिसेण पुं [निपेक] कर्म-पुद्गल की रचना-विशेष (भा ६, १) । 'धारय पुं [धारय] ध्याकरण प्रसिद्ध एक समास (अणु) । 'परिसाङ्गाणी स्त्री [परि-शाट्ठनी] कर्म-पुद्गल का जीव-प्रदेशों से युक्तकरण (सूत्र १, १) । 'पुरिस पुं [पुरिस्] कर्म-प्रधान पुरुष—१ कार्यगर, शिल्पी (सूत्र १, ४, १) । २ महारथ करने-वाले वानुदेव वगैरह राजा लोग (डा ३, १—पय ११३) । 'प्यवाय न [प्रवाद] जैन ग्रन्थार विशेष, पाठार्थ पूर्व (सम २६) ।
'यंथ पु [यन्थ] कर्म-पुद्गल का आत्मा में लगना, कर्म से आत्मा का वधन (भाव ३) । 'भूमग वि [भूमिक] कर्म-भूमि में उत्पन्न (पह १) । 'भूमि स्त्री [भूमि] कर्म-प्रधान भूमि, भरत क्षेत्र वगैरह (जी २३) । 'भूमिग देवा 'भूमग (पह २३) । 'भूमिय वि [भूमिज] कर्म-भूमि में उत्पन्न (डा ३, १—पय ११४) । 'मास पु [मास] भावण मास (जो १) । 'मासग पु [मासक] मास विशेष, पांच गुडान, पांच रत्नी (द्राणु) । 'य वि [ज] १ कर्म से उत्पन्न होनेवाला । १ कर्म-पुद्गल का बना हुआ शरीर विशेष, काम्य शरीर (डा २, १, ५, १) । 'या स्त्री [जा] कम्मास से उत्पन्न होनेवाली बुद्धि, अनुभव (एदि) । 'लेस्सा स्त्री [लेस्स] कर्म द्वारा होनेवाला जीव का परिणाम (भा १४, १) । 'यग्गाणी स्त्री [क्याणी] कर्म-रूप में परिणत होनेवाला

पुद्गल समूह (पच) । 'वाइ वि [वादिन्] भाग्य को ही सय कुछ माननेवाला (राज) । 'विनाग पु [विपाक] १ कर्म परिणाम, वर्म-फल । २ कर्म विपाक का प्रतिपादक ग्रन्थ (कम्म १, १) । 'सयच्छर पु [सयसर] लोकि वयं (सुज १०) । 'साला की [शाला] १ बारखाना । २ कुम्भकार का घटादि बनाने का स्थान (वृह २) । 'सिद्ध पु [सिद्ध] कारोपर, शिल्पी (भावम) । 'जीर [जीन] १ कारोपर । २ कारोपरी का कोई भी काम बतलाकर निशादि प्राप्त करनेवाला साधु (ठा ५, १) । 'दान पु [दान] जिससे भारी पाप हो ऐसा व्यापार (भाग ५, ५) । 'यारिय पु [यै] कर्म से भारी, निर्दोष व्यापार करनेवाला (पण १) । 'वाइ देखो 'वाइ (भावा) ।

कम्म वि [कर्मण] १ कर्म-सम्बन्धी, कर्म-जन्य, कर्म-निमित्त कर्म-मय । २ न कर्म-पुद्गल का ही बना हुआ एक ध्रुवकत सुकम शरीर, जो भवात्तर में भी भारमा के साथ ही रहता है (ठा १, कम्म ४) । ३ कर्म-विशेष, कर्मण शरीर का हेतु मूल कर्म (कम्म २, २१) । ३ कर्मण शरीर का व्यापार (कम्म ३, १५, कम्म ४) ।

कम्मइय न [कर्मचित, कर्मण] ऊपर देखो (पठन १०२, ६८) ।

कम्मंत पुं [दि कर्मान] १ कर्म-बन्धन का कारण (भावा, मूय २, २) । २ कर्म-स्थान कारखाना (हे २, ५२) ।

कम्मंत वि [कुर्वन्] १ हजामत करता हुआ । २ हजाम, मापित (कुमा) । 'साला की [शाला] जहाँ पर उत्तरा—बाल बनान का छुप आदि सनाया जाता हो वह स्थान (निज ८) ।

कम्मकर देखो कम्म-कर (प्राह २६) ।

कम्माग न [कर्मक, कामक, कर्मण] देखो

कम्म = कामण (ठा २, २, पण २१, भाग) ।

कम्मण न [कर्मण] १ कर्म मय शरीर (द २२) । २ श्रोत्र, मन्त्र आदि के द्वारा मोचन, वशीकरण, उच्चाटन आदि कर्म (उप १३४ टी, स १०८) । 'गारि वि [कारिन्] ।

बारण करनेवाला (सुर १, ६८) । 'जोय पु [योग] कार्यण प्रयोग (छाया १, १४) ।

कम्मण न [भोजन] भोजन (कुमा) ।

कम्ममाण देखो कम्म = कय ।

कम्मय देखा कम्मग (मय पच) ।

कम्मय सक [उप + मुज] उपभोग करना ।

कम्मवद (हे ४ १११, पड) ।

कम्मण न [उपभोग] उपभोग, काम में लाग (कुमा) ।

कम्मस वि [कम्मस] १ मलिन । २ न पाप (पाप, हे २, ७६-प्राभा) ।

कम्मा की [कर्मन्] क्रिया व्यापार (ठा ४, २—पण २१०) ।

कम्मर पु [कर्मार] १ सोहार, सोहृहार (विते १५६८) । २ याम विशेष (प्राह १) ।

कम्मर [वि [कर्मार, क] १ नौकर, कम्मरार चारु (स ५३७, श्रोष ४, ६४ कम्माराय टी) । २ कारोपर, रिस्ती (जीव ३) ।

कम्मरिया की [कर्मसारिका] जी-नौकर, दासी (गुपा ६३०) ।

कम्मि [वि [कम्मिन्] कर्म करनेवाला कम्मिअ] श्रम्यासी,

'एवकनिमणुय उअ पामरेण देहं हल पाज्जहीमो मोतव जोतअपणहम्मि भवरासली मुक्का।' (गा ६६४) ।

२ पाप कर्म करनेवाला (मूय १, ७, ६) ।

कम्मिया की [कम्मिअ, कम्मिअ] १ श्रम्यास से उत्पन्न होनेवाली बुद्धि (छाया १, ११) ।

२ शरीर कर्म विशेष, अवशिष्ट कर्म (भाग) ।

कम्हल न [कदमल] पाप (राज) ।

कम्हा अ [कम्माल] क्या, किन कारण से ? (श्रीप) ।

कम्हार देखो कमार (हे २, ५४) । 'ज न [ज] बेयर, कुकुम (कुमा) ।

कम्हिअ पु [दि] माली, मालतार (दे २, ८) ।

कम्हीर देखो कमार (मुदा २४२, वि १२०, ३१२) ।

कय पु [कय] वेध, बान (हे १, १७७, कुमा) ।

कय पु [कय] खरीदना (गुपा ३४४) ।

कय देखा कड = कुल (भाषा-गुमा, प्राग १५) ।

'उण्ण, 'उअ वि [पुण्य] पुण्यस्थली भाग्यस्थली (स ६०७, गुपा ६०६) । 'क

देखो 'ग (पण १, २) । 'कज्ज वि [काय] कृतार्थ, सफन मनोरथ (छाया १, ८) ।

'करण वि [करण] श्रम्यासी, कृतार्थस (वृह १, पण १, ३) । 'किअ वि [कृत्य] कृतार्थ सफन मनोरथ (गुपा २७) । 'ग वि [क] १ श्रमनी उत्पत्ति में दूसरे की अपेक्षा करनेवाला, प्रयत्न-जन्य (विते १८३७, स ६५३) ।

गु. दास विशेष, गुलाम, 'भयनभर्त वा वनभर्त वा कयगमर्त वा' (निज ६) ।

३ न. सुवर्ण सीमा (राज) । 'य वि [व्र] उपहार न माननेवाला, कृतघ्न (सुर २, ४४, गुपा ५८८) । 'जाणुअ वि [हायक] कृतघ्न, उपकार को माननेवाला (पि ११८) ।

'णु वि [हा] उपकार को माननेवाला, किए हुए उपकार की कदर करनेवाला (कम्म २६) । 'णुया की [हाता] कृतकृता, एहसानमन्त्री निहोरा मानना (उप ५ ६६) ।

'य वि [यै] कृतकृत्य, चरितार्थ, सफल-मनोरथ (प्राह २३) । 'नासि वि [ना-सिन्] कृतकृत्य (श्रोष १६६) । 'अ, 'नु

देखो 'णु, 'ज विलिजनिहरिया विवेयनय-मदिर कयल्लगु' (गुपा ३०१, महा, स ३३, या २८) । 'पज्जलि वि [पज्जलि] कृताञ्जलि, नमस्कार के लिए जिनसे हाथ ऊँचा किया हा वह (भाग) । 'पडिअ की

'प्रतिवृत्ति' १ प्रत्युत्तर (वभा १६) । २ विनय विशेष (वव १) । 'पडिअइया की [प्रतिवृत्ति] १ प्रत्युत्तर (छाया १, २) । २ विनय का एक भेद (ठा ७) ।

'बलिअम्म वि [बलिअम्म] जिनसे देवता की पूजा की है वह (मय २, ५, छाया १, १६—पण २१०, तडु) । 'मगला की

'मङ्गल' इन नाम को एक नगरी (सवा) । 'माल, 'मालय वि [माल, क] १ जिसने माला बनाई हो वह । २ पु. वृत्त विशेष, कनेर का गाथा 'अकील्लविल्लसल्लइयमा ततमाज-सानटु' (उप १०११ टी) । ३ तमिसा-नामक गुला का शक्तिदायक देव (ठा २, ३) ।

'लङ्कारण वि [लङ्कारण] जिनसे भयने शरीर किहू को सफल किया हो वह (भाग ६, ३३, छाया १, १) । 'य वि [यत] जिनसे किया हो वह (विते १५५५) । 'वत्तामाल-

वरगहटुलिमो घमिमलो (गा ५४४) । २ पाणि-महण, शादी (राज) । 'य पुं' [ज] नम (वाप्र १७२) । 'रुह पुं' [कररुह] १ नल (हे १, ३४) । २ पुं. शुष-विशेष (पउम ७७, ८८) । 'लापय न' [लापय] कना विशेष, हस्त-सापय (कम्प) । 'वंदण न' [वन्दन] वन्दन का एक दोष, एक प्रकार का शूल समनवर वन्दन करना (बृह ३) ।

करअडी } छी [दे] स्थूल वस्त्र, मोटा वस्त्रा
करअरी } (दे २, १६) ।

करआ छी [करका] करवा, घोला, शिना-
वृष्टि (मण्डु ६४) ।

करइली छी [दे] शुष्क वृक्ष, सूखा पेठ (दे
२, १७) ।

करं क पुं [दे कररुह] १ मिता-भाय (दे २,
५५, गठड) । २ श्रयोक्त-भूत (दे २, ५५) ।

करं क पुन [कररुह] १ हड्डी, हाट, 'कर'वच-
मभोल्ले मसाणमि' (मुपा १७५) । २
ग्रन्थि-यज्ञ, हाड पजर (उप ७२८ वेदी) ।
३ पानदा, पान बोलह रखने की छोटी पेटी-
'लवलीकरवाहिणीमो' (कम्प) । ४ हड्डियों
का ढेर (सुर ६, २०१) ।

करज स [भञ्ज] ताडना, फोड़ना,
टुकड़ा करना । करजह (दे ४, १०६) ।

करज पुं [करज] वृक्ष विशेष, करिना (पण्य
१, दे १, ११, गा १२१) ।

करंज पुं [दे] गुल्म-वृक्ष, मूली लवचा (दे
२, ८) ।

करजिअ वि [भ्र] लोभा हुआ (हुमा) ।

करंड पुं [करण्ड] गंधाकार हड्डी (उट
३५) ।

करंड } पुं [करण्ड, 'क'] १ बरगड,
करंडग } जिम्मा, पट्टना (पण्य १, ५,
करंडय } या १४, ठा ४, ४) ।

करंडिया छी [करण्डिया] छोटा डिब्बा
(आपा १, ७, गुपा ४२८) ।

करंडी छी [करण्डी] १ जिम्मा, पेट्टना (या
१४) । २ मुंरी, पात्र-विशेष (उप २६३) ।

करंडय न [दे] पीठ के पास की हड्डी (पण्य
१, ४—पन ७८) ।

करंत देनो कर = ह ।

करंय पुं [करम्य] दही पीर भाज का बना

हुमा एक खाद्य द्रव्य, दम्पोहन (पाप्र दे २,
१४, गुपा १३६) ।

करविय वि [करम्विन] व्याप्त, धचित (गुपा
३४, गठड) ।

कररंठ पुं [कररंठ] इन नाम का एक
परिधानक, ताम्र विशेष (धौप) ।

कररुट पुं [कररुट] एक जैन महर्षि
(महा, पंडि) ।

कररुचिय वि [कररुचिन] करवत आदि से
पाठा हुआ (अणु १५४) ।

कररुड वि [दे, कररं क रंठ] १ कठिन,
पट्ट (उपा) ।

कररुटी छी [दे कररुटी] चिपटा, निम्बनीय
वस्त्र-विशेष, जो प्राचीन काल में कप्य पुरुष
को पहनाया जाता था (विपा १, २—पन
२४) ।

कररुय पुं [करकय] करपन, करात, भार
(पण्य १, १) ।

कररुय पुं [कररुय] 'कर-वर' प्रावान (आपा
१, ६) । 'रुट पुन' [शुण्ड] गुण विशेष
(पण्य १—पन ४०) ।

कररुगि पुं [कररुगि] ग्रह-विशेष, ग्रहाधि-
पति देव विशेष (ठा २, ३—पन ७८) ।

करग देना नारग = काल (एरि ५०) ।

करग पुं [करक] १ करवा, घोला (या २०,
ओर ३४३, की ५) । २ पानी की बचखी,
जल पात्र (अनु ५, या १६, गुपा ३३६,
३६४) । देवो करय = बरल ।

करगय देना कररुय (स ६६६) ।

करगह देनो करगह (सम्मत १७३) ।

करगयल पुं [दे] विनाट, दूध की मलाई
(दे २, २२) ।

कररुड्रेडिया छी [दे] लाली, लाल (मुप २,
१५) ।

करट पुं [दे] पात्रिन धार की सानेबाना
द्रासण (मुचु २०७) ।

करड पुं [करट] १ बाग, बीमा (सर १,
१४) । २ हाथी का गरु-स्वत (मुपा १३६,
पाप्र) । ३ बाग-विशेष (विक्र ८०) । ४
मुनुम-भूष । ५ बरीर-भूष । ६ निरुट,
सट । ७ पापरी, नाडिका । ८ व्याड-विशेष

(दे २, ३४ टी) ।

करड पुं [दे] १ व्याघ्र, शेर । २ वि. बवरा,
चित्तबरा (दे २, ५५) ।

करडा छी [दे] लट्वा—१ एक प्रकार का
नरस वृष । २ पति विशेष, वर । ३ धमर
मोत । ४ बाग-विशेष (दे २, ५५) ।

करडि पुं [करटिन] हाथी, हस्ती (सुर २,
६६, गुपा ५०; १३६) ।

करडी छी [दे, करटी] बाग विशेष, 'मट्टमं
करडी' (अ २) ।

करडयभक्त न [दे] धाड विशेष (विह)

करग न [करग] १ शत्रिय (सुर ४, २३६;
हुमा) । २ धामन, पदासन वीरह (हुमा) ।

३ ग्रथिहरण, आश्रय (हुमा) । ४ कृति,
क्रिया, विधान (ठा ३, ४, सुर ४, २४५) ।

५ करक विशेष, सापवतन (ठा ३, १;
विने १६३६) । ६ उपधि, उपकरण (धौप
६६६) । ७ न्यायालय, न्याय-स्थल (उप पु
११७) । ८ कीर्त्य-भूरा (ठा ३, १—पन
१०६) । ९ योगीति-शास्त्र प्रसिद्ध बब-मालवादि
करण (सुर २, १६५) । १० निमित्त, प्रयो-
जन (आडु १) । ११ जेल, कैदखाना (मनि) ।

१२ वि. जो दिया जाय वह (धौप २, भा
३) । १३ कल्पेनाला (हुमा) । 'हिण्डि पुं'
[धिपति] जेल का अध्यक्ष (मनि) ।

'साला छी [शाला] न्यायालय (सं० पुं
हारि० पन. १०८, २) ।

करगया छी [करगया] १ मनुग्रान, जिया ।
२ संयमनुग्रान (आपा १, १—पन ५०) ।

करगसाला छी [करगशाळा] न्याय मन्दिर
(सन १, १ टी) ।

करणि छी [दे] जिमा, बर्म (अणु ११७) ।

करणि छी [दे] १ हन प्रातर (दे २, ७;
मुपा १०५, ४७५, पाप्र) । २ शहर, समा-
नता (अणु) । ३ मनुग्रण, नरन करना
(गठड) । ४ लोभार, मीनीकार (उप पु
३८५) ।

करंअ देना कर = ह ।

करगिह वि [दे] धामन, हाथ, 'मनुग्रनन-
हाणिररररररररररर' यमामयोग' निरंतररर
'च कउयते' (य ३१२), 'मनुग्रररररररर
सहागण्ठे पु मण्ठ' (य ३१२) ।

करणीअ देनो कर = ह ।

करपत्त न [करपत्र] करपत्र, करपत्र (विषा १, ६) ।
 करभ पु [करभ] ऊँट उट्ट (पण्ह १, १, गउड) ।
 करभी छी [करभी] १ उट्टी, स्त्री ऊँट, ऊँटनी (पिंड) । २ धान्य भले वा बडा पात्र (शुह २, कस) । देखो करही ।
 करम पि [दे] क्षीण, दुर्बल (दे २, ६, पड) ।
 करमंद पु [करमंद] कनवाला कुल विशेष (गउड) ।
 करमंद पु [करमंद] कुल विशेष करौदा (पण्ण १—पत्र ३२) ।
 करमरी स्त्री [दे] इठ हूत स्त्री बादी (दे २, १५, पड, गा ५२७, पात्र) ।
 करय देतो करग (उप ७२२ टी, पण्ह १, कुमा, उवा ७) । ३ पत्ति विशेष (पण्ह १, १) ।
 करयदी छी [दे] मलिन, बेला का गाछ (दे २ १८) ।
 करयर भ्रक [करराय] 'कर-कर' भावाज करता । बड़ करयरत (पत्र ६४, ३५) ।
 कररह दु [कररह] छन्द विशेष (पिण) ।
 करलि] छी [कवलि, 'ली] १ पतका । करली] २ हारिय को एक जाति । ३ हाथी का एक भागण (हे १, १२०, कुमा) ।
 करश पुन [दे] करक] जल पान 'पालिक्वाज नीर पाएज पुच्छिणी' (मुवा २१४ ६३१) ।
 करवदी छी [करमन्दी] सत्ता विशेष, एक जात का पेड (दे, ८, ३५) ।
 करपत्तिआ छी [करपानिका] जल पान-विशेष (था १२) ।
 करवाल पु [करवाल] खड्ड, ललवार (गाम गुणा ६०) ।
 करविया छी [दे] करकिरा] पान पान-विशेष (गुणा ४८८) ।
 करवीर पु [करवीर] वृक्ष विशेष, कनेर का गाछ (गउड) ।
 करही [दे] देखो कडसी (हे २, १७४) ।
 करह पु [करभ] १ ऊँट, उट्ट (पत्र ५६, ४४, पात्र, कुमा, गुणा ४२७) । २ सुगंधी द्रव्य विशेष (गउड ६६८) ।

करहं च न [करहंश्च] छंद विशेष (पिण) ।
 करहाड पुं [करहाट] वृक्ष विशेष, बरहार, शिफा मन्द, मेनपन (गउड) ।
 करहाडय पुं [करहाटक] १ उपर देखो । २ देश-विशेष, 'बरहाडयविषय धनऊरयसनिवे-सम्भ' (ग २५३) ।
 करही देखो करभी । ३ इस नाम का एन छन्द (पिण) । 'रह वि [रोह] ऊँट सवार, उट्टी पर सवारी करने वाला (महा) ।
 कराङ्गी छी [दे] शान्मसी वृक्ष, सेमर का पेड (दे २, १८) ।
 करादल पुं [करादल] स्वनाम दयात एव राजा (तो ३७) ।
 कराल वि [कराल] १ ऊनत, ऊँचा (धनु ५) । २ दुरित जिसका बँत सन्धा और बाहर जिसका हो यह (गउड) । ३ भयानक, भयंकर (कथु) । ४ फाडनेवाला । ५ विकसित (से १०, ४१) । ६ व्यवहित (से ११, ६६) ।
 ७ वि इस नाम का विदेह देश का राजा (पमं १) ।
 कराल सव [करालय] १ फाडना, छिद्र करना । २ विवक्षित करना । कपलेद (से १०, ४१) ।
 करालिअ वि [करालिअ] १ द-दुरित, सन्धा और वहिर्निर्गत दंतवाला (से १२, १०) । २ व्यवहित किया हुआ, भस्तरानवाला बनाया हुआ (से ११, ६६) । ३ भयकर बनाया हुआ (कथु) ।
 करली स्त्री [दे] दतवन, दाँत मुट्ट करने का बग (दे २, १२) ।
 करावण न [कारण] करवाना, बनवाना, निर्माण (गुणा ३३२, धम्म ८ टी) ।
 कराविय वि [कारित] करपा हुआ (स ५६४, महा) ।
 करि पु [करिअ] हाथी, हस्ती (गाम, प्राधु १६६) । 'धरणट्टाय न [धरणस्थान] हाथी को ब घने का छोर—रुद्ध रस्ता (गाम) ।
 'नाह पु [नाय] १ डोरवाण, छन्द का हाथी । २ उत्तम हस्ती (गुणा १०६) । 'बघण न [बन्धन] हाथी पकटने का गर्त (गाम) ।
 'भयर पु [भर] जल हस्ती (गाम) ।
 करिअ पु [करिक] एक महाग्रह (गुज २०) ।

करिअ } देखा कर = ह ।
 करिअव्य }
 करिआ स्त्री [दे] मरिच परामने का पात्र (दे २, १४) ।
 करिगज्जउ } (अप) देखो धायज (हे ४, करिगज्जउ } ४३८, कुमा, पि २५४) ।
 करिअ देतो कर=ह ।
 करिअया } स्त्री [करिणी] हस्ती, हथिनी
 करिणी } (महा पत्र ८०, ५३, गुणा ४) ।
 करिण पुं [करिअ] हाथी, हस्ती, 'दे दुहु करिणहम' कुमा । सन्तमुदयगण्ण' (उप ६ टी) ।
 करिअ }
 करिआण } देखो कर = ह ।
 करिदुण }
 करिमरी [दे] देखो करमरी (गा ५४, ५५) ।
 करिअ न [दे] १ बराकुर, बँस का कोपड़, देखीली भूमि में उत्पन्न होनेवाला वृक्ष विशेष, जिसे ऊँट खाते हैं (दे २, १०) । २ बरौता, तरकारी विशेष 'धायुपुसिआइडुडुमपाइस-भियकरिअमसाई' (विसे २६३) । ३ धाकुर, कन्दन (कथु) । ४ पु. करीत वृक्ष, करील (पड) । ५ वि बराकुर के समान, 'हाहा ले केय करिलिययमावाइसयणुल्लिय' (गउड) ।
 करिस देखो बड्ड = हट्ट । करिस (हे ४, १८७) । बड़, करिसत (सुर १, २३०) । सऊँ करिसत्ता (पि ५८२) ।
 करिस पु [कपे] १ काकपण, खोचान । २ विवेक्षण, रखा करना । ३ मान विशेष, पल का चौथा हिस्सा (जी १) ।
 करिस देखो करीस (हे १, १०१, पात्र) ।
 करिसय वि [कपेक] लेंती करनेवाला, कृपी बल (उत्त ३, ग्रामम)
 करिसय न [कपेण] १ खोचान, काकपण । २ चासना, खनी करना । ३ कृपि, खेती (पण्ह १, १) ।
 करिसय देखो करसग (मुवा २, २६०, स २, ७७) ।
 करिसावण पुन [कार्यापण] मित्र (विसे ५०६, कथु) ।
 करिसिद्ध (श्री) वि [किपिअ] २ चासा हुआ, खेती कि

वरिसिय वि [कृशित] दुबल किया हुआ
(मूम १, २)।

करीर पु [करीर] वृष विशेष, करीर, करील
(उप ७२८ टी. था १६, प्राप् ६२)।

करीस पु [करीष] जगने के लिए सुखाया
हुआ गोबर कडा गोइडा (हे १, १०१)।

करण देखो मलुण (स्वप्न ५३, मुपा २१६),
‘उभमह उयारमाय दक्खिण वरुणय म
आमुव’ (गठ ३)।

करणा ली [करुण] दया दूसरे के दुःख को
दूर करने की इच्छा (गठ ७ मुपा)।

करणाइय वि [करुणायित] जिसपर करुणा
की गई हो वह (गठ ३)।

करणि वि [करुणिम] करुणा करनेवाला,
बयाडु (सण)।

करे सन् [कारय] करना। करेइ (प्राक्
६०)।

करेअव्व } देखो पर = ह।
करेत }

करेहुं पु [दे] इन्तान, गिरिज, सट (हे
२, ५)।

करेणु पु [करेणु] १ हस्ती, हाथी। २ कनेर
का माछ, ‘एसो करेणु’ (हे २, ११६)। ३
श्री. हस्तिनी हस्तिनी (हे २, ११६ छाया १,
१, मुर ८, १३६)। ‘दत्ता श्री [दत्ता]
ब्रह्मदत्त करुवर्ती की एव ली (उत्त १३)।
‘सेणा श्री [सेना] देखो प्रबोधन मधे
(उत्त १३)।

करेणुआ ली [करेणु] हस्तिनी, हस्तिनी
(पाम महा)।

करेमाण } देखो पर = ह।
करेअव्व }

करेयाहिय वि [करयाधित] राजनर से
वीरित, महान से हेतम (भीष)।

करोट न [दे] १ नास्ति, नास्ति। २
बाज, भीष। ३ वृषम बैत (हे २, ५४)।

करोहम पु [दे] पाय-विशेष, बटोर (मिजु
१)।

करोडि ली [कोटि] सिर की हड्डी (मुप,
२, २१)।

कोटिय पु [कोटिक] नागातिन, मिजु-
विशेष (छाया १, ८—पत्र १२०)।

कोटिया } ली [कोटिका, ‘टी’ १ कुवा,
कोटी } नडे मुँह का एक पाय, नास्य

पाय विशेष (अणु, दे ७, १५, पात्र)। २
स्वमिना, पानना (छाया १, १ टी—पत्र

५३)। ३ मिट्टी का एक तरह का पाय
(भीष)। ४ पाल, मिना पाय (छाया १,
८)। ५ परोसन का एक उपकरण (दे, २,
३८)।

कोटो ली [दे] एक प्रकार की चौड़ी, लुङ-
जन्तु विशेष (दे २, ३)।

कोटो ली [दे] मुद्रा, शव (मुत्र १०२)।

कल सन् [कलय] १ सत्ता करना। २
भारण करना। ३ जानना। ४ पहिचानना।

५ सम्पन्न करना। कलइ (हे ४, २५६
पट्)। कलयति (विदे २०२६)। अवि

कलइस्स (वि ५१३)। कय कलइस्स (विदे
२०२६)। कल कलयत (मुपा ५)। कल

कलज्जत (मुपा ६४)। सट्. कलज्जण
कलज्ज (महा भवि १८२)। कल जलज्जण,

कलगीअ (मुपा ६२२, वि ६१)।

कल वि [कल] १ मधुर, मनोहर (पाम)। २
पुं. अमृत मधुर शब्द (छाया १, १६)। ३

मोनाहल, वलवल (वद १६)। ४ कर्म
कीचड, बाडो (भत १३०)। ५ भाय विशेष

गोल बना मटर (छा ५, -)। ‘कटी स्त्री
[‘कण्ठी] कीचिना, कीचन (दे २, ३०

कपू)। ‘मजुल वि [‘मज्जुल] शब्द
से मधुर (पाम)। ‘यठ पुं [‘कण्ठ] कीचिना,

कीचन (मुपा)। ‘यटी स्त्री [‘कण्ठी] (मुप
४, ५८)। ‘हस पुं [‘हस] एक गरी,

राज-हस (कप गठ ३)।

कलर पु [कलर] १ दाग, दोष (प्राप् ६४)।
२ सायन, चिह्न (मुपा, गठ ३)।

कलर मक् [कलर] बरचित करना।
कलर (अवि)। क. कलरियत्त (मुपा ५४८,

५८१)।

कलरु पुं [दे] १ बाँध बंधा (दे २, ८)।
२ बंध की बनावट बाँध (छाया १ १८)।

कलरन म [कलरु] बरचित करना
(पर ८)।

कलरुल वि [कलरुल] धारम, कलुण
(भीष संघा)।

कलरुलीमागि वि [कलरुलीमागि] दुख-
व्याकुल (मूम २, २, ८१, ८३)।

कलरुलीमान पु [कलरुलीमाव] १ दुःख
से व्याकुलता। २ संसार-परिग्रह (भावा

२, १६, १२)।

कलरुली ली [दे] वृत्ति, वाद, बाटे आदि से
परिच्छन्न स्थान परिधि (दे २, २४)।

कलरुल वि [कलरुल] बरचित, दागी (हे
४, ५३८)।

कलरुल वि [कलरुल] बरचित, दागी
(बान, वि ५६५)।

कलरुल न [कलरुल] व्याज, मूद (मुत्र
३५५)।

कलरु पु [कलरु] १ मुराड, कुराड, रंग-
पाय (ववा)। २ जाति से प्राप्त एक प्रकार

के मनुष्य (छा ६—पत्र ३५८)।

कलर पु [कलर] १ वृष विशेष, मीन,
बदम का माछ (हे १, ३०, २२२, गा ३७,

कपू)। ‘वीर म [‘वीर] शत्रु विशेष
(मिपा १, ६—पत्र ६६)। ‘वीरिया ली

[‘वीरिना] वृष विशेष, जिसका मूत्र नाग
घटित वीरुण होता है (वीन ३)। ‘वालुया

ली [‘वालुना] १ बदम के पुत्र के भारता-
वासी प्रसी। २ नल की नदी, ‘कनकना-

मुपाए बटुमुको अणतता’ (उत्त १६)।

कलु ली [दे] कन्वी विशेष, भातिनर (दे
२, ३)।

कलुअ न [कलुअ] बदम वृष का पुत्र,
‘भारतवर्षकलुअ विन मज्झिमनिरामकूदे’

(कपू)।

कलुआ [दे] स्त्री कलुआ (वण १,
मुत्र ४)।

कलुआ ली [कलुआ] १ बदम वृष
का मयल मान-मान। २ एक गेय का नाम,

जहाँ पर भावान् भटारी की बाहल्यो
ने बनाया था (पत्र)।

कलुआ ली [कलुआ] कप में हाथेगारी
कलुआ की एक जाति (मूम २, ३, १८)।

कलुआ पु [कलुआ] बदम वृष (मुत्र
१६)।

कलुआ पु [कलुआ] १ कोरा, क

आवाज (मग १, ३३, राय) । ३ चूना आदि से मिश्रित जल (विपा १, ६) ।

कलमल भर [कलमलय] 'कल कल' आवाज करना । बह. कलकलत, कलकलिन, कलकलत, कलकलमाण (पह १, १, ३, ग्रौम) ।

कलमलिन न [कलकलित] कोलाहल करना (दि ६, ३६) ।

कलकलित वि [कलकलित] कलकल शब्द से युक्त (मिरि ६६४) ।

कलमल देखो कलमल = बढास (गा ७०२) । कलचुलि पु [कलचुलि] १ क्षयित विशेष । २ दूध नाम का एक क्षयित-वस्तु (पिप) ।

कलण देखो मरगा, तौमुवि कलणमु हासु सुहसकणो (मच ८२) ।

कलण न [कलन] १ राय, माराज । २ सव्याय, गिनती (विसे २०२८) । ३ धारण करना (मुपा १५) । ४ जानना (मुपा १६) । ५ प्राप्त, ग्रहण 'जुलत का सयनकमाजसण रमणपरमुपस' (भा १६) ।

कलणा जी [कलना] १ छति, कलस, 'जुएणो कदम कर्न एहुवणकलणार्नसिलस कुणता' (कपू) । २ धारण करना, जानना, 'मगमरहे सिरिलइककलणा' (कपू) ।

कलगिज देखो कल = कलम् ।

कलस न [कलस] जी, भार्या (प्रासु ७६) ।

कलघोय देखो कलघोय (घोप) ।

कलम पु जी [कलम] १ हाथी का घन्का (छाया १, १) । २ बच्चा, बालक, 'सकमानु मजजतभनममदावहासमूलु' (हे १, ७) । कलमिआ स्त्री [कलमिआ] हाथी का स्त्री बच्चा (छाया १, १—पत्र ६३) ।

कलम पु [दे. कलम] १ चौर तस्वर (दि २, १०, पात्र, भावा) । २ एक प्रकार का उत्तम शाल (उवा २, पात्र) ।

कलमल पु [कलमल] १ पेट का मल (अ ३, ३) । २ वि. दुर्गति, दुर्गमयाला (उव ८३३) । कलमल पुन [दे.] १ मदन-वेदन (सत ४७) ।

२ बंन, भरपराहट, धृष्टा. 'मनुएर मनुएणो तोपियविमिजलपूवराण' । नामवि चित्तिथं एतु कलमलं जणइ हिमपरिम्भं (मन ३३) । कलस देखो कलस (हे १, १७) ।

कलस पु [दे.] १ मनुज कृत । २ सोना, सुवर्णकार (दि २, ४४) ।

कलस पु [कलस] सोना, सुवर्णकार (पत्र) । कलसदि वि [दे.] १ प्रसिद्ध, विख्यात । २ स्त्री. कुल विशेष, पादरी, पादल (दि २, ५८) ।

कलसलल न [दे.] शोष्ठ-सेप, होठ पर लगाया जाता लेप-विशेष (मवि) ।

कलसल देखो कलमल (हे २, २२०, पात्र, गा ५३५) ।

कलसलिर वि [कलसलयितृ] कलकल करने-वाला (बजा ६६) ।

कलरहाणी जी [कलरहाणी] इस नाम का छन्द (पिप) ।

कलल न [कलल] १ शीर्ष और शोणित का समुदाय, 'पादजलि रडता सुतततनुतवसनिर्भ कलल' (पत्रम ११८, ८), 'वसकलससंभ-सोणिय' (पत्रम ३६, ५६) । २ गर्भ-वेदन चर्म । ३ गर्भ के अवयव रूप रेत विकार (गडड) । ४ कंदी, कीचड़, कंदम (गडड) ।

कललिय वि [कललिन] कर्दमि, गरीबाला विमाहुमा, 'मएयोएकनहविमलियकेसरकी सालनललियद्वारा' (गडड) ।

कलविक पु [कलविक] पक्ष विशेष, बटक, गौरिया पक्षी, गौरैया (पात्र गडड) ।

कलमु स्त्री [दे.] मुग्गी पात्र (दि २, १२, पत्र) ।

कलस पु [कलस] १ कलस, वडा. (उवा. छाया १, १) । २ स्वयम् छंद का एक श्रेय, छंद विशेष (पिप) ।

कलस पुन [कलस] १ एक देव विमान । (वेद १४०) । २ वाय विशेष (राय ५० टी) ।

कलसिया स्त्री [कलसिया] १ छोटा घडा (भापु) । २ वाय विशेष (भापू १) ।

कलह पु [कलह] कलेश, कलज (उव, घोप) ।

कलह देखो कलम (उव पत्रम ७८, २८) ।

कलह न [दे.] तलवार की म्याल (दि २, ५, पात्र) ।

कलह बक [कलहाय] भयदा करना, लडाई करना । यह कलहव, कलहमाण (पत्रम २८, ४, मुपा ११, २३३, ५५६) ।

कलहण न [कलहण] भयदा करना (उव) ।

कलहाइ देखो कलह = कलहाय । कलहापदि (सी) (नाट) । बह. कलहाअत (गा ६०) ।

कलहाइअ वि [कलहायित] कलहावा, भगडाखोर (पात्र) ।

कलहि वि [कलहिन] भगडाखोर (दि ५, ५४) ।

कलहोय न [कलघोय] १ सुवर्ण, साना (सण) । २ चांदी, रजत (गडड, पह १, ४, पात्र) ।

कला स्त्री [कला] १ मरा, भाग, मात्रा (मनु ४) । २ समय का सूक्ष्म भाग (विसे २०२८) । ३ चन्द्रमा का सौहर्षी हिस्सा (प्रासु ६५) । ४ कला, विद्या, विज्ञान (कपू, राय, प्रासु ११२) । पुरुष योग्य कला के मुख्य बहतर और स्त्री-योग्य कला के मुख्य चौसठ श्रेय हैं, 'वायसरी कला' (मणु), 'वायसरीकलापडिमा विमुला' (प्रासु १२६), 'वसतद्विकलापडिमा' (छाया १, ३) । पुरुष-कला ये हैं—१ विधि ज्ञान । २ अक्षराणि । ३ विधि कला । ४ भावकला । ५ गान, गाना । ६ वाद्य बजाना । ७ ध्वर गत (पट्ट, नयम वगैरह स्त्री को ज्ञान) । ८ मुद्रक गत (मुद्रक, मुद्रावि विशेष वाद्य का ज्ञान) । ९ समताल (संगीत के ताल का ज्ञान) । १० ध्रुव कला ।

११ वनराज (लोको के साथ मालापर सजाय करने की विधि) । १२ पाति का ज्ञान । १३ मणुष्य (चीपाट खेलने की रीति) । १४ शीघ्र कविः । १५ दन-मृत्तिरा (ध्वजकरण विद्या) । १६ पात्र कला । १७ पात्र विधि (जलपान के गुण दोष का ज्ञान) । १८ वल विधि (वल की सजावट की रीति) । १९ विलेपन विधि । २० शयन विधि । २१ भार्या (छंद विशेष) बनाने की रीति । २२ प्रेक्षिका (विनोद के लिए पहेलिया—पूडाकार्य पत्र) । २३ मार्गधरा (छंद विशेष) । २४ गाय (छंद विशेष) । २५ गीति (छंद विशेष) । २६ स्त्री (मनुष्य छंद) । २७ हिरण्य-मुक्ति (चांदी के माणुष्य की वषात्मान योजना) । २८ सुवर्ण-मुक्ति । २९ पूर्ण-मुक्ति (मुर्गाप वदाई बनाने की रीति) । ३० भाषण विधि (भाषण की वषात्) । ३१ तख्खी परिवर्त (स्त्री को मुद्रक बनाने

की रीति) । ३२ स्त्री-लक्षण (श्री के शुभाष्टम चिन्हा का परिज्ञान) । ३३ पुरुष लक्षण । ३४ अरुण लक्षण । ३५ गज-लक्षण । ३६ गो-लक्षण । ३७ कुन्तु-लक्षण । ३८ ध्वज-लक्षण । ३९ दण्ड लक्षण । ४० शनि लक्षण । ४१ मणि-लक्षण (रत्न-मण्डपा) । ४२ काकीण-लक्षण (रत्न विशेष को परीक्षा) ४३ वास्तुविद्या (गृह-वधान और सजाते की रीति) । ४४ लघु-वाचार मान (लघु परिमाण) । ४५ नगर-मान । ४६ चार (ग्रह-चार का परिज्ञान) । ४७ प्रतिचार (ग्रहों के चक्र-गमन वगैरह का ज्ञान, यथा रोगप्रतीकार ज्ञान) । ४८ ब्यूह (मैथ रचना) । ४९ प्रविब्यूह (प्रतिदिष्ट ब्यूह) । ५० चक्र ब्यूह । ५१ गज-ब्यूह । ५२ राज-ब्यूह । ५३ युद्ध (मल युद्ध) । ५४ नियुद्ध । ५५ युद्धनियुद्ध (सैन्यादि राज्य सम युद्ध) । ५६ दंडित युद्ध । ५७ कुट्टित युद्ध । ५८ बाहु युद्ध । ५९ लगा युद्ध । ६० हनु-शासन (दिव्यान्न-भूषक शासन) । ६१ हमर प्रपात (नक्षत्र विद्या शास्त्र) । ६२ धनुर्वेद । ६३ हिरण्य पाक (चाँदी बनाने की रीति) । ६४ मुषण पाक । ६५ सूतक्रीडा (एक ही मूल को अनेक प्रकार र रचिना) । ६६ वस्त्र क्रीडा । ६७ मालिका खेन (यूत-विशेष) । ६८ पन-खेय (अनेक पन्ना में प्रयुक्त पन का खेल, हस्त-काम्य) । ६९ मट-खेय (मट की तट क्व सम खेल करने का ज्ञान) । ७० सजीव (मरी हुई प्राणु को फिर प्रमथ बनाता) । ७१ नील (प्राणु मारण, रसायन) । ७२ शङ्खन खेन (शङ्खन-शास्त्र) । (नं २ टी सम ८३) । "शुरु पु ["शुरु" बलाचार्य, विद्याभ्यासर, स्थिक (सुभा २५) । "वरिय पु ["वर्षार्य" देखो पूर्वाक ग्रंथ (एषा १, १) । "यदे स्त्री ["वनी" १ बलावाली स्त्री) २ एक पतिव्रता स्त्री (अप ७३६. परि) । "सवयग न[सवर्ण] संस्था विशेष (अ १०) ।

कण्डा स्त्री [कलाचिन्ता] प्रबोध, कौनो स
लेखक मल्लिकार्जुन तन्त्र का हस्तानुमन (पात्र) :

चलाय वुं [कलाद] सोनार मुखर्ज्वार (पण्ड
१, २ छाया) १, ८) ।

फलाय पुं [कलाय] धाम विशेष गौरवना,
मटर (ठा ३, ५, प्रनु ५) ।

कलात्र पुं [कलाप] १ समूह, जत्वा (दि १, २३१)। २ मयूर पिच्छ (मुपा ४८)। ३ शर्यध, तूख, जिसमे बाण रखे जाते हैं (दि ३, १५)। ४ कान का आभूषण (सीध)।

कलाभग न [कलापक] १ चार श्लाका नी
एक वाक्यता । २ श्रीवा का एव भाग्य
(पृष्ठ २, ५) ।

कलापय न [कलापक] चार पत्रा की एक वाक्यता (सम्मत १८७) ।

कलायि पुष्पी [कलापिन्] मयूर, मोर (उप
७२८ टी) ।

कलि प० [कलि] एक नरकावास (देवेन्द्र २६) ।

कलि यु [काल] १ वत्सह, भगडा (नृमा
प्राप्त ६४) । २ युग विरोध, कलि युग (२५
८३३) । ३ पर्वत विरोध (तो ५४) । ४

प्रथम भेद (निबू १५) । ५ एत, धरोता
(सूच १, २, २, भग १८, ४) । ६ दुट्ट पुण्य
द्वो पत्नी' (पाप) । 'ओग, 'ओय ६

[*ओज] युग्म राशि विशेष (मग १८ ४ ठा ४, ३)। *ओयम्हजुग्म पृ. [*ओज-युक्तयुग्म] युग्म राशि विशेष (मग ३४,

१)। ओयर्गलिओय प [ओजर्गल्योज]
सुम राशि विशेष (भग १४, १) । ओजर्गल्योज
ओय प [ओजर्गल्योज] सुम राशि विशेष

(मग ३४, १)। *आयदानरजुग्म यु
[*ओजद्वापरयुग्म] युग्म राशि विशप
(मग ३४, ३)। *आयदानरजुग्म यु

(भाग १४, १) । कुह न [कुह] तयि-
विशय (तो १५) । जुग न [युग] कति
युय (तो २१) ।

कलि ५ [दे] शत्रु दुश्मन (दे २, २) ।
कलिअ वि [कलित्] १ युक्त, सहित (पण्ह
१ ३) । २ साथ, समीप । ३ साथ, विधि ।

कलिअ देवा कल = बनम् ।

ग्राम ६०) । २ कलिग देश का राजा (विग) ।
कलिग पु. [कलिङ्ग] भगवान् आदिनाथ
का एक पुत्र (ती १४) ।

कलिय देखा किलिय (गा ७७०) ।
कलिय पु [कलिय] क, चडाई (निबू १७) ।
कलिय = [क] देदी कलिये, कलिये कलिये ।

मलिन न [द] द्वाग लङ्ङ। (द २, ११)।
 मलिन पुन [कलम] १ बम वा पाद-
 विशेष, 'कलिवा वसकपरो' (गच्छ २)। २

सूखी लकड़ों (भग ८, ३) ।
 फलित न [रुटि] कमर पर पहना जाना
 एक प्रकार का चर्म मय कवच (शाखा १.

लिम न [दे] कमल, पप (हे २, ६) ।

लिमल श्वा कलिमल = कलकल (तनु ४१) ।
 लिल वि [कलिल] गहन, घना, दुर्भ्य
 (वाय) ।

लुण वि [करुण] १ दीन, दया जनन,
जपा पात्र (हे १ २५४, प्रामू १२६, नुर
३, २३६)। २ प साहित्य शास्त्र प्रसिद्ध

नव रमा मे एव रत (भणु) ।
लुगा देखो करुणा (राज) ।
नव वि [कलश] : सवित्र कलश

‘कलिवन्तुस’ (विपा १, १, पाद्य) । २ न
पाप, दोष, भैल (स १३२, पाद्य) ।

लुसिअ वि [कलुपित] पाप-प्रसूत, मनिन
से १०, ५ गड्ड) ।
लमोऱुय वि [रुलपीऊन] मनिन बिया

पु [दि] १ काल, अन्धियमजर । २

नगर न [धनैर] शरीर, देश (आव ४८
ग) ।

समुय न [कनेमुक] षण विरेश (मूष
, २) ।

न [कृत्य] १ कल, गया हुआ या

०) । २ शब्द, अत्रात्र । ३ चक्षुष्या मिनती
वैव ३४४२) । ४ आराध्य, निरोगता,

स्मै विद्यावर्ग (विसे ३४३६) । ५ प्रमात्र,
४२ (अणु) । ६ वि विद्य, योग रत्न

(ठा ३, ३, दे ८, ६५) । ७ वि. दश, चतुर (दे ८, ६५) ।

कल्यत्त पु [कल्यत्त] कलेवा, प्रातर्मोजन, जल-यान (स्वयं ६०, नाट) ।

कल्यपाल पु [कल्यपाल] कलवार शराव वेचनेवाला (मोह ६२) ।

कल्यवि वि [दे] १ तोमित, आदित । २ विस्तारित, फैलाया हुआ (दे २ १८) ।

कला जो [दे] मय, दाह (दे २ २) ।

कलाकहिं म [कल्याकल्य] १ प्रविदिन कलानलि १ हर रोज (विपा १ ३ राया १, १८) । २ प्रति प्रमात, रोज सुबह (उवा प्राप) ।

कलाण न [कल्याण] सुवर्ण (तिरि ३७३) ।

कलाण पुन [कल्याण] १ सुख, मंगल, सेम, 'गुणद्वारापरिणामि सते जीवाण सयलकलाणा' (उप ६००, महा प्राप् १५६) । २ निर्वाण, मोक्ष (विदे ३४४०) । ३ निवाह लग्न (सुपु) । ४ जिन भगवान् का पूर्व भव से भ्रवन, जन्म, बीजा, केवल ज्ञान तथा मोक्ष-प्राप्ति रूप भवसर 'गच महामत्ताणा नयेवि निणायण होति सिमभेण' (पचा ६) । ५ समृद्धि, धनव (वप्य) । ६ पुन विरोध (पण १) । ७ तप विशेष (पव) । ८ देश विशेष । ९ नगर विशेष 'कलाणवेसे मत्ताणनये सक्ती खाण राया जिण भत्तो हुवा' (ती ५१) । १० पुण्य, शुभ कर्म (प्राचा) । ११ वि हित-नारत, सुल-नारत (जीव ३ उत ३) । 'कल्य न [कृतक] नगर विरोध (ती) । 'कारि वि [कारिन्] सुतावह, मंगल-नारक (राया १, १६) ।

कलाणि वि [कल्याणिन्] कल्याण प्राप्त (राज) ।

कलाणी छो [कल्याणी] १ कल्याण बरने-वाणी छो (गउड) । २ दो वर्ष की बधिया (उत्तर १०३) ।

कलाल पु [कल्यपाल] कलान, दाह वेचने वाला (पणु, मार ६) ।

कलि म [कल्ये] कन दिन, कल को (ग ५०२) ।

कल्लग पु [कल्लु] द्वीन्द्रिय जीव विरोध, नोट की एक जाति (जीव ३) ।

कल्लय पु [कल्लु] द्वीन्द्रिय जन्तु की एक जाति (पण १—पत्र ४४) ।

कल्लुरिया [दे] देखो कल्लुरिया (राज) ।

कल्लय पुन [दे] कलेवा, प्रातराश (प्रा ४६४ टी) ।

कल्लय पुं [दे] दमनीय बैल, सँड (प्राचा २, ४ २) ।

कल्लोडिआ [दे] देखो कल्लोडि (नाप) ।

कल्लो पु [कल्लो] तरंग अग्नि (घीप प्राप् १२७) ।

कल्लो वि [दे, कल्लो] गनु दुरपन (दे २, २) ।

कल्लोखिणी छो [कल्लोखिनी] नदी (वप्य) ।

कल्लहार न [कल्लहार] सफेद बमर (पण १, दे २, ७६) ।

कल्लि देखो कलि (गा ८०२) ।

कल्लोड पुं [दे] बलतर, बछड़ा (दे २, ६) ।

कल्लोडि छो [दे] बलतर, बछिया (दे २, ६) ।

कन अक [कु] धावान करना शब्द करना । कवड (हे ४, २३३) ।

कनदय वि [कनचित्त] बलवाना वामत (उपम ७०, ७१, घीप) ।

कवध येनो कवध (पण १, ३ महा गउड) ।

कवग पु [कवग] 'क' से 'ड' तक के पाँच अक्षर (पर्मि १४) ।

कवचिअ देखो कवड्य (तिरि १३१६) ।

कवचिया छो [कवचिअ] कवाचिना, प्रवेष्ट (राज) ।

कवटिअ वि [कवटित] पीछल, हैरान किया हुआ (हे १, १२४) ।

कवड न [कवट] माया छप, शाम (पाध सुख ४, १६१) ।

कवडि देखो कवडि तो भण्ड कवटिनका धनजवि तं पुण्ये एयं (गुपा ५४२) ।

कवट्ट पु [कवट्ट] बडी बीडी, बरान्धि (दे ११०, जो १२) ।

कवडि पु [कवटिन] १ यन विशेष (गुपा ५१२) । २ महादेव, छिप (गुमा) ।

कवडिआ छो [कवटिआ] कौडी, बराटिका (गुपा १४, ५४५) ।

कवण वि [किम्] कौन ? (उपम ७२, ८, गुमा) ।

कवय पुन [कवच] बर्म, बहिर (विपा १, २० उपम २४, ३१, पाप) ।

कवय त [दे] वनस्पति विरोध, भूमिच्छद (दे २, ३) ।

कवरी छो [कवरी] बेश पारा धम्मिल्ल (गुमा, वेणी १८१) ।

कवल सव [कवलय] प्रसना, हृष्य करना ।

कवलेइ (गउड) । कर्म कवनिअ (गउड) ।

कवळ कनलिजत (गुपा ७०) । सङ्ग कव-लिङ्गा (गउड) ।

कवल पु [कवल] कवल, दाह (पव ४, घीप) ।

कवलण न [कवलण] प्रसन भाण (पाम १७०, गुपा ४७४) ।

कवलिअ वि [कवलिन] दक्षित, भक्षित (पाम-सुर २, १४६ गुपा १२१, १३६) ।

कनलिआ छो [दे] ज्ञान का एव उपकरण (पाम ८) ।

कवल पु [दे] लोहे का कवड (सुम १, ५, १, १५) ।

कवलि छो [दे] पात्र विशेष गुड बरैह कवडि } पवाने का भाजन, बडाह, बराह, 'अभितेय य गिण्ठे कालविताए कवलिपूयाए' (सया १२०, विपा १, ३) ।

कवाल } पुन [कपाट] विवाद, विवाही कवाड } (गउड घीप गा ६२०) ।

कवाल न [कवाल] १ खोजी, सिर की हड्डी 'कवललिपवाली' (गुपा १५२) । २ पड-कर्प, मिषा-यान (पचा ह १, २३१) ।

कवास पुं [दे] एव प्रकार का जूता, धर्मजुता (दे २, ५) ।

कवि देखो कक = कवि (गुर १, २४६) ।

कवि पु [कवि] १ कविता करनेवाला (गुर १, १८ गुपा ५६२, प्राप् ६३) । २ गुरु, गुरुविरोध (गुपा ५६२) । 'स न [त्य] कविता, कविता (गुर १, ४२) । देखो कवि = कवि ।

कसा छो [कसा, कसा] चर्म गटि चातुक,
कोडा (विपा १, ६, मुभा ३४५) ।

कसा देखो कसा (पद) ।

कसाइ वि [कपायिन्] १ कपाय रगवाला ।
२ क्रोध-मान-माया-लोभवाला (पण १८,
प्राचा) ।

कसाइज वि [कपायिन्] ऊपर देखो (गा
४८२ था ३५, प्राचा) ।

कसाय सज [कराय] ताडन करना,
मारना । भूसा बसाइवा (प्राचा) ।

कसाय पुं [कपाय] १ कोष, माल, माया
और लोभ (विसे १२२६, द ३) । २ रस-
विशेष, कपैया (ठा १) । ३ वर्षा विशेष,
लाल पीला रंग (उवा २२) । ४ बवाय,
बाढा । ५ वि कपैया स्वादवाला । ६ कपाय
रंगवाला । ७ सुगन्धी, दुर्गन्धदार (हे २,
१६०) ।

कसार [दे] देखो कसार (भवि) ।

कसि वि [कपिन्] मारनेवाला, विनाशक,
'बतारि एए कसिणो कसाया सिधति मूलाइ
पुण्यवस्त' (मुल १, १) ।

कसिअ न [कशिका] प्रलोभ, चातुक, 'अघो
भय बद्धवीए कसिअ मादत' (प्रवी १०८) ।

कसिआ छो ऊपर देखो (सुर १३, १७०) ।

कसिआ छो [दे] फल विशेष, घरएअचारी
नामक वनस्पति का फल (हे २, ६) ।

कसिउ (दे) देखो कट्टा = इट्ट (पद) ।

कसिण देखी कसण = कट्ण, इटल (हे २,
७५ कुमा पाद, दे ५, १२) ।

कसुमीरा छो [कश्मीर] एक उत्तर भारतीय
देश (प्राक २८, ३३) ।

कसेरु } पुन [करोरु, क] जलीय कन्द-
वसेरु } विशेष (गडउ, पण १) ।

कसेरुग पुन [कशेरु] जलम होनेवाली वन-
स्पति की एक जाति (मूस २, ३, १८, प्राचा
२, १, ८, ५) ।

कसोति छो [दे] वाय विशेष, 'महाहि
बमाति भोचा बज सपति' (मुज १०, १७) ।

कसत पु [दे] पट्ट, बर्दम, नाने (दे २, २) ।

कसाय न [दे] श्रावट, जगद, गेट (दे २,
१२) ।

कस्सव पु [कायय] १ वरा विशेष, 'बस्सव-
नुत्तुसो' (विक ६५) । २ ऋषि विशेष
(भवि २६) ।

कह सक [कथय] कहना, बोलना । कहइ
(हे ५, २) । कर्म, कथद, कहिजइ (हे १,
१८७, ४, २४६) । बक, कहव, कहित,
कहेमाण (रयण ७२, सुर ११, १४८) ।
बक, कथत कहिजत, कहिजमाण
(राज, सुर १, ४४, गा १६८, सुर १४,
६५) । सैक कहिउ, कहिअण (महा-
कास) । क, कहणिज, कहियउ, कहेयउ,
कहणीय (मूस १, १, १, सुर ४, १६२,
मुभा ३१६, पणह २, ४, सुर १२, १७०) ।

कह सक [कथ] कथाय करना, उवाचना ।
बहइ (पद) ।

कह पु [कफ] कफ, शरीरस्व घातु-विशेष,
जलजम (कुमा) ।

कह देखो कह (हे १, २६, कुमा पद) ।

*कहयि देखो कह-नहि पि (गडउ, उप ७२८
टी) । *वि देखो कह पि (प्रासू ११५,
१४१) ।

कहआ म [कथया] बितर्क प्रेर माथय श्रव
को बातलानेवाला प्रत्यय (से ७, ३५) ।

कहं म [कथम्] १ कैसे, किस तरह ?
(स्वप्न ४५ कुमा) । २ क्या किस लिए ?
(हे १, २६, पद, महा) । *कहि म

[कथमयि] किसी तरह (गा १४६) ।

*कहा छो [कथा] राग द्वेप को उत्पन्न

बनेवाली कथा, विकथा (प्राचा) । *वि,

*वी अ [चित्] किसी तरह, किसी

प्रकार से (भा १२, उप ५३० टी) । *वि म

[अपि] किसी तरह (गडउ) ।

कहकह पुं [कहकह] प्रमोद बलबल, खुशी

का शोर (ठा ३, १—पत्र ११६, कप) ।

कहकह अत्र [कहकहय] खुशी का शोर

भजना । कह कहइत (पणह १, २) ।

कहकहकह पु [कहकहकह] खुशी का शोर

(महा) ।

कहकह पुं [कथकथा] बातचीत (प्राचा २,

१५, २) ।

कहा वि [कथक] १ कहनेवाला, (सहि

२३) । २ म कथा शर (उप १०३१ टी) ।

कहण न [कथन] कथन, उक्ति (वर्म १) ।
कहणा छो [कथना] ऊपर देखो (भत २,
उप ४६७, ६६८) ।

कहय देखो कहग (दे १, १४५) ।

कहइ पुन [दे] कर्प, खपर (भत १२) ।

कहा छो [कथा] कथा, वार्ता, हकीकत (सुर
२, २५०, कुमा, स्वप्न ८३) ।

महाणम } न [कथानक] १ कथा, वार्ता
कहाणय } (था १२, उप ५ ११६) । २

प्रसंग, प्रस्ताव, कथ से नाम जालिणांत

बहाणयविसेनेण' (स १३३ १८८) । ३

प्रयोजन, कार्य, 'कहाणयविसेनेण समानमो

पाडलावह' (स ५५५) ।

कहार सक [कथय] कहलाना, बुनवाना ।

कहमेइ (महा) ।

कहारण पुं [कार्पाण] सिक्का विशेष (हे २,

७१, ६३, कुमा) ।

कहाविअ वि [कथित] कहलाया हुआ (मुभा

६५, ४५७) ।

कहि } अ [कय, कुन] कहा, किस स्थान

कहिआ } में ? (उवा, भग, नाट कुमा,

कहि } उर) ।

कहिसु वि [कथयिह] कहनेवाला, भाषक

(सम १५) ।

कहिय वि [कथित] कथित, उक्त (उव, नाट) ।

कहिया छो [कथिका] कथा, कहानी (उप

१०३१ टी) ।

कहु (पप) अ [कृत] कहा से ? (पद) ।

कहइ वि [दे] तक्षण, जवान (दे २, १३) ।

कहेसु देखो कहिसु (ठा ४, २) ।

काअडची } छो [काअचिञ्जी] दुगा,

काइ-चो } पु गवी (प्राक ३०) ।

काइअ वि [कायिक] शारीरिक, शरीर-

सम्बन्धी (भा ३४, प्राचा) ।

काइआ } छो [कायिकी] १ शरीर सम्-

बाइगा } धी जिया, शरीर से निवृत्त ध्या-

पाद (ठा २, १, सम १०, नव १७) २ शीव-

जिया (स ६४६) । ३ मूत्र, पेशाब (भाप

२१६, उप ५ २७८) ।

काईदी छो [काइदी] इस नाम की एक

नगरी, बिहार की एक नगरी (समा ७६) ।

काइणी छो [दे] दुग्गा, लान रती (दे २,

२१) ।

काई स्त्री [काकी] बीए की मादा (विपा १, ३) ।

काउ स्त्री [कापोती] लेख्या विशेष आत्मा का एक प्रकार का परिणाम (भग आवा) ।
“लेसा स्त्री [लेदया] शाल्य-परिणाम विशेष (सम डा ३, १) । “लेस वि [लेदय] कापोत लेख्यावाला (पण १७ मय) ।
“लेसा देखो “लेसा (पण १७) ।

काउ देखो कर = क ।
काउवर पु [काकोदुम्बर] नीचे देखो (राज) ।
काउवरी स्त्री [काकोदुम्बरी] शीतल विशेष निम्बवर्षवृक्षकाउवरीवोरि— (उप १०३१ टी पण १) ।

काउनाम वि [फत्तु नाम] करने को बाह्य नाम (शोध ५३७) ।

काउडुण्ण न [कायोडुण्ण] उच्छादन दूर-स्थित दूसरे के शरीर का भाग्यल करना (णया १, १४) ।

काउदर पु [काकोदर] सप की एक जाति (पण १, १) ।

काउमण वि [फत्तु मन्स] बरन की बाह्य भाग (उप ७, उप ७ ७० सं १०) ।

काउरिस पु [कापुरि] १ जराब भाग्यनी, नीच पुरुष । २ कातर, उरपीक पुरुष (मउड पुर ८, १५०, मुपा १६२) ।

काउल पु [दे] बक बगुला (दे २, ६) ।

काउसगा पु [कायोत्सगा] १ शरीर पर काउसगा के ममत्व का त्याग (उत्त २६) ।
२ कामिनी हिया का त्याग । ३ ध्यान के लिए शरीर की निरन्तरता (पडि) ।

काऊ सेनी काउ (डा १, वम्म ४, १३) ।

काऊण } देखो कर = क ।
काऊण }

काओदर देखो काउदर (स्पण ६८) ।

काओली स्त्री [काओली] बन्द विशेष, वन स्थित विशेष (पण १) ।

काओवण पु [कायोवण] संसारी आत्मा (सम २, ६) ।

काओसगा देखो काउसगा (गवि) ।

काऊ पु [काऊ] १ कौभा, मायस (भनु ३) ।
२ वृद्ध विशेष, महापितामह देव विशेष (डा २, ३—पत्र ७८) । “जंपा स्त्री [जङ्गा]

वनस्थित विशेष चक्रसेनी, घु घची (भनु ३) ।
देखो काग, काय = काक ।

कावदग पु [कावन्दक] एक जैन महर्षि (कण) ।

काउदिय पु [काउन्दिक] एक जैन महर्षि (कण) ।

काऊदिया स्त्री [काउन्दिका] जैन मुनियो की एक शाखा (कण) ।

काऊदी देखो काउदी (णया १, ६, डा ५ १) ।

काऊणि देखो कागणि (विपा १, २) ।

काऊलि देखो कागलि (डा १०—पत्र ४७१) ।

काग देखो काक (दे १ १०६, प्रास ६०) ।

“तालसजीउगनाय पु [तालसजीउगन्याय] वास्तवीयवाय (उप १४२ टी) ।

“तालिज, “तालीज न [तालीय] जैने कीए का प्रवर्तित भाग्यन कीर तल फल का भक्तस्मात् गिरना होता है ऐसा प्रवर्तित संभव भक्तस्मात् किसी कार्यका होना (भावा, दे ५ १५) । “थल न [थल] देश विशेष (दे २, २७) । “पाल पु [पाल] कुष्ठ विशेष (राज) । “पिंडी स्त्री [पिण्डी] मय पिण्ड (भावा २, १, ६) । देखो वाय = वाक ।

कागदी देखो काउदी (भनु २) ।

कागणि स्त्री [दे] १ राज्य, “भसोयसिरिणो पुत्तो भवो जायद कागणि” (विदे ८६२) ।

२ मास का छोटा दुग्ध (शौप) ।

कागणी देखो कागिणी (भा २७ डा ७) ।

कागणी स्त्री [कागिणी] सवा गुंजा का एक वा” (मल १५५) ।

कागल पु [कागल] शीवात्म्य उन्नत प्रदेश (भनु) ।

कागलि } स्त्री [कागलि, “ली] १ मूढम
कागलि } शीतस्थान, स्वर-विशेष (मुपा ५६ उप पु ३५) । २ देवी विशेष, ममवाय

भक्तिमन्त्र की शान्त देवी (पत्र २७) ।

कागिणी स्त्री [कागिणी] १ बौदी, बर्द्धिता (उर ७, ३, उर या २८ टी) । २ बौद्ध बौद्ध के मुख्य का एक सित्ता (उर ५४५) ।

३ रत्न विशेष (सम २७, उप ६८६ टी) ।

कागी स्त्री [कागी] १ बीए की माता (भा २ विद्या विशेष (विदे २४५३) ।

काकोणंद पु [काकोनन्द] इस नाम की एक स्नेह्य जाति, “मिच्छा काणीणदा विक्खाया महियत्तमि ते सुरा” (पत्रम ३४ ४१) ।

काठिण्ण न [काठिण्य] कठिनता (धम्म ५१, ५४) ।

काठ पु [काय] काठा (कुलक ११) ।

काण वि [काण] काना, एकाप (मुपा ६४३) ।

काण वि [दे] १ सन्निद्ध, काना (भावा २, १, ८) । २ चुपचा हुमा । “कण पु [कण्य] चुपई हुई चीज को खरीदना (मुपा ३४३, ३४४) ।

काणच्छि } स्त्री [दे] टेढी नजर से बहना,
काणच्छि } कटाप (दे २, २४ मवि)
“बाणच्छिमाभीय जहा विडो तहा बरेद” (भावम) ।

काणय न [कान्त] १ वन जगन (पाप) ।
शोभा उपवन (भनु शौप) ।

काणत्येय पु [दे] किरल जल-मुष्टि, बूँद-बूँद बरखना (दे २ २६) ।

काणद्धी स्त्री [दे] परिहास (दे २, २८) ।

काणिक्का स्त्री [दे] बड़ी ईंट (इह ३) ।

काणिट्ठा स्त्री [काणिट्ठा] लोहे की ईंट (वव ४) ।

काणिआर देखो कणिआर (संति १७) ।

काणिय न [काण्य] मल का रोग, काणिय भिन्निपं वेन बुणिय बुणिय सहा” (भावा) ।

काणीण पु [काणीण] कुंवारी बच्चा न उन्नत पुत्र (मवि) ।

कादर देखो कायध (पण १, १) ।

कादवरी देखो कायवरी (मवि १८८) ।

कादूसण वि [फदूपण] माता को दूधित करनेवाला । स्त्री. “गिया (सम ५, ८—पत्र २६८) ।

कापुरिस देखो काउरिस (णया १, १) ।

काम पुं [काम] रोग, बीमारी (दवनि २, १५) । “उर देखो कामदेव (उप ४११) ।

“य न [य] भाग्यल तर (उपोष ५८) ।

“दहण पु [दहन] महानेय, शिव (वव ६८) । “रूप देना कामरूप (पमरि ५६) ।

काम सक [कामय] चाहना, कादर ।

कामेद (मि ४६१) । कामेति (उर) । यर,

कामेत्त कामअयाण (गा २५६, मवि ६१) ।

काम पु [काम] १ इच्छा, कामना, अभिप्राया (उत्त १४, भाषा प्राम् १६)। २ सुन्दर शब्द, रूप यगैह विषय (भा ७ उ, डा ४, ४)। ३ विषय वा अभिप्राय (बुधा)। ४ मन्त्र बन्धन (बुधा, प्राम् १)। ५ द्रव्य प्रीति (धर्म १)। ६ मैथुन (पण २)। ७ छन्द विशेष (पिग)। 'कन न [११न्त] देव विमान विशेष (जीव ३)। 'कम न [११म्] लाग्गव दय लोच के इह का एक यात्रा विमान (ठा १०—पत्र ४३७)। 'काम वि [११वाम] विषय की चाहवाला (पण २)। 'कामि वि [११कामिन्] विषयाभिप्रायी (भाषा)। 'कूड न [११कूट] देव विमान विशेष (जीव ३)। 'गम वि [११गम] १ इच्छावाची, स्वेरी (जीव ३)। २ न देतो 'वम (जीव ३)। 'गामि ली [११गामी] विद्या विशेष (पउम ७, पण १४)। 'गुण न [११गुण] १ मैथुन (पण १, ४)। २ शब्द प्रमुख विषय (उत्त १४)। 'घड पु [११घट] ईप्सित चीज को देनेवाला दिव्य वस्तु (था १४)। 'जल न [११जल] स्नान-मीठ, जिसपर बैठकर स्नान किया जाता है वह पट्ट 'सिण्णणोड तु कामजल' (निक्क १३)। 'जुग पु [११जुग] पति विशेष (जीव ३)। 'उमय न [११उमय] देवविमान विशेष (जीव ३)। 'उमया ली [११उजा] इस नाम की एक वेश्या (विपा १, २)। 'ट्टि वि [११ट्ठिम्] विषयाभिप्रायी (पाया १, १)। 'डिडुप पु [११डिडु] १ जैन साधुओं का एक गण (ठा ६—पत्र ४४६)। २ न जैन भूमियों का एक तुल (राज)। 'णयर न [११नगर] विद्याभरा का एक नगर (इक)। 'दाडणी ली [११दायिनी] ईप्सित फल की देनेवाली विद्या विशेष (पउम ७, १३४)। 'हुहा ली [११हुहा] नामधेय (था १६)। 'द्वंअ, 'द्वं पु [११द्वं] १ भक्षण, कन्दर्प (माद, स्पन् ५५)। २ एक जैन श्रावक का नाम (जवा)। 'धेणु ली [११धेनु] ईप्सित फल देनेवाली गौ (काल)। 'पाळ पु [११पाळ] १ देव विशेष (जीव)। २ बसवदे, हलायुध (वाम)। 'पिपासय वि [११पिपासक] विषयाभिप्रायी (भग)। 'पुर न [११पुर] इस नाम का एक विद्याभर नगर (इक)। 'प्यम

न [११प्रभ] देवविमान विशेष (जीव ३)। 'कास पु [११कास] षट् विशेष, महाविद्याता देव विशेष (गुज २०)। 'महापण न [११महापण] धनराश के समीप वा एक बेल (भा १५)। 'रुज पु [११रुज] देश-विशेष, जो आसाम में है (पिग)। 'लेस्स [११लेस्य] देव विमान विशेष (जीव ३)। 'वणय न [११वण] एक देव विमान (जीव ३)। 'सत्य न [११शास्त्र] रति शास्त्र (धर्म २)। 'समणुण वि [११समनोद्ध] वामा-सक, कामासक (भाषा)। 'सिंगार न [११सिङ्गार] देव विमान विशेष (जीव ३)। 'सिष्ट न [११सिष्ट] एक देव विमान विशेष (जीव ३)। 'यट्ट न [११यत्त] देव-विमान-विशेष (जीव ३)। 'यसाइच ली [११यसा-यिता] योगी का एक तरह का ऐश्वर्य, जिसमें योगी अपनी इच्छा के अनुसार सब वस्तुओं का अपने बित्त में समर्थ करता है (राज)। 'यसासा ली [११यसासा] विषयाभिप्राय (ठा ४, ४)। काम न [११कामम्] इन वयों का सूचक अर्थवाचक—१ धनधारण (सूत्र २, १)। २ पुत्रपति, सम्पत्ति (निक्क १६)। ३ धन्युपपन्न, स्वीकार (सूत्र २, ६)। ४ प्रतिश्रय, प्रविश्य (हि २, २१७)। कामग न [११कामाग्न] कन्दर्प का उत्तेजक स्नान वगैरह (सूत्र २, २)। कामहुहा ली [११कामहुहा] नामधेय, ईप्सित वस्तु की देनेवाली दिव्य गौ (पउम ८२, १४)। कामध पु [११कामध] विषयाभ्युद, तीव्र कामी (प्राम् १७६)। कामकिसोर पु [११दे] नर्वन, गन्ध (हे २, ३०)। कामग वि [११कामक] १ अभिलषणीय, वाञ्छनीय (पण १, १)। २ चाहलवाला इच्छुक (सूत्र १, २, २)। कामन [११कामन्] चाह, अभिलाषा, 'अद-ल्लिकामणेषो जीवा नरयमि वचचरि' (महा)। कामय देखो कामग (जवा)। कामि वि [११कामिन्] विषयाभिप्रायी (भाषा, वउड)।

कामि वि [११कामिन्] अभिप्रायी (बुत्र १५४)। कामिअ वि [११कामित] वाञ्छित, अभिलाषित (गुग २५५)। कामिअ वि [११कामि] १ वाम सम्बन्धी, विषय सम्बन्धी (मत १११)। २ न, तोर्य विशेष (वी २८)। ३ सरोवर विशेष, जिसमें ईप्सित जल मिलता है (राज)। ४ वि. इच्छा पूर्ण करनेवाला (स ३६०) ५ वि. इच्छुक, इच्छावाला, अभिप्राय (विपा १, १)। कामिआ ली [११कामिआ] इच्छा, अभिलाषा, 'अकामिआए विण्णित्ठुस्स' (पण १, ३)। कामिजुल पु [११कामिजुल] पति विशेष (हे २, २६)। कामिहट्ट पु [११कामिहट्ट] एक जैन भूमि, अर्थात् मुहुरितमूर्ति का एक स्थल (कल)। कामिहट्टय न [११कामिहट्टिक] जैन भूमियों का एक तुल (कल)। कामिणी ली [११कामिनी] काता, ली (सूत्र ५)। कामिय वि [११कामित] यष्ट, जितना चाहें उतना (विड २७२)। कामुअ वि [११कामुक] कामी, विषयाभिप्रायी कामुअ (हे २५, महा)। 'सत्य न [११शास्त्र] काय शास्त्र, रति शास्त्र (उप ५३० टी)। कामुसरयडिसग न [११कामोसरयतसक] देवविमान विशेष (जीव ३)। काय पु [११काय] १ वनस्पति की एक जाति (सूत्र २, ३, १६)। २ एक महाहट्ट (गुज २०)। ३ पुन जीव तिकाय, जीव-समूह 'अप्याइ कानाई पेवेतिताई' (सूत्र १, ७, २)। 'मत वि [११वत्त] बड़ा शरीरवाला (सूत्र २, १, १३)। 'पह पु [११पह] जीव हिंसा (आवक ३४८)। काय पु [११काय] १ शरीर देह (ठा ३, १, बुधा)। २ समूह, राशि (विसे ६००)। ३ देश विशेष (पण १, १)। ४ वि. उन देश में रहनेवाला (पण १)। 'गुत्त वि [११गुत्त] शरीर को बरा में रखनेवाला (भग)। 'गुत्ति ली [११गुत्ति] शरीर को बरा में रखना जितेन्द्रियता (भग)। 'जोअ, 'जोग पु [११जोग] शरीर व्यापार, शरीरिक क्रिया (भग)। 'जोगि वि [११जोगिन्] शरीर जय

कारायणी स्त्री [दे] शाल्वनि-वृक्ष, सेमर का पेड़ (दे २, १८)।

काराप देवो मारप। कारावेद (पि ५५२)।

भवि, काराविस्त (पि ५२८)।

काराण देवो कारयण (पह १, ३, उप ४०६)।

काराय वि [कारक] बरानेवाला, विधायक (म ५५७)।

कारायि वि [रारित] बरवाया हुआ, बनवाया हुआ (विसे १०१६, मुर ३, २४, स ११३)।

कारि वि [कारिम्] बर्ता, बरनेवाला, 'एयस्स कारिणो बालिसत्तमारोविद्या जेण' (उप ५६७ टी), 'एयस्सएत्तस्स कारिणी ग्रह' (मुर ८, ५६)।

कारिका देवो कारिया (तु ४)।

कारिम वि [दे] कृत्रिम, बनावटी, नकली (दे २, २७, गा ४५७; पङ्, उप ७२८ टी, स ११६, प्राप् २०)।

कारिय देवो कज्ज = कार्य (सू १, २, ३, १०, दस ६, १५)।

कारिय वि [कारित] करामा हुआ, बनवाया हुआ (पह २, ५)। कार्य (सू १, १५१)। कारियह्मं स्त्री [दे] बली-विशेष, करैला का गाछ (पह १—पत्र ३३)।

कारिया स्त्री [कारिस्] बरनेवाली, कर्त्री (उवा)।

कारिह्म देवो कारि (समो ३८)।

कारिहो स्त्री [दे] बली विशेष, करैला का गाछ (सू १११)।

कारिस पुं [कारीप] गोइडा की मरिण, बड़ा की घाम (उत १२)।

कारु पुं [कारु] ? कारीमर, शिली (गाम, प्राप् ८०)। २ नव प्रकार के कारु चर्मकर भादि।

कारुइज वि [कारुकीय] कारीवर से सम्बन्ध रखनेवाला (पह १, २)।

कारुणिय वि [कारुणिक] दयालु, कृपालु (ठा ४, २, सण)।

कारुण्य ? न [कारुण्य] दया, कल्याण (महा कारुण्य ? उप ७२८ टी)।

कारेमाण ? देवो कार = कार्यम्।

वारेह्य न [दे] बरैला, नरनारी-विशेष (भनु ६)।

कारोटिय पु [कारोटिक] ? बापालिक, भिन्न विरोध। २ ताम्बूल-बाह्व, लघोघर (श्रीप)।

काल न [दे] तमिस, अन्यनार (दे २, २६ पङ्)।

काल पुं [काल] ? समय वक्त (जी ४६)। २ मृग्य, मरण (विसे २०६७, प्राप् ११२)।

३ प्रस्ताव, प्रसंग, भवसर (विसे २०६७)।

४ विलम्ब, देरी (स्वप्न ६१)। ५ उमर, वय (स्वप्न ४२)। ६ श्रुत (स्वप्न ४२)।

७ ग्रह विशेष, ग्रहाधिपत्य देव-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८)। ८ ज्योति-शास्त्र प्रसिद्ध

एक कुयोग (गण १६)। ९ सप्तवी मरन-

पृथ्वी वा एव नरनाराज (ठा ५, ३—पत्र ३४१, सम ५८)। १० नरक के जीवों को

दुख देनेवाले परमाधिपत्य देवों की एक

जाति (सम २८)। ११ बेलम्ब इन्द्र का

एव लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १६८)।

१२ प्रभञ्जन इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १६८)। १३ इन्द्र-विशेष, पिशाच-

निकाय वा दक्षिण दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। १४ पुरीय वनए समुद्र

के पाताल बनसो का अधिष्ठाता देव (ठा ४, २—पत्र २२६)। १५ यना श्रेष्ठिक का

एक पुत्र (निर १, १)। १६ इस नाम का एक गृहपति (छाया २, १)। १७ भ्रमाव

(वृ ४)। १८ पिशाच देवों की एक जाति (पह १)। १९ निषि विशेष (ठा ६—पत्र ४४६)। २० वर्षे-विशेष, दयाम-

वर्ण (पह २)। २१ न. देव विमान विशेष (मम ३५)। २२ 'निर्यान्ती' सूत्र का एक

अभ्यसन (निर १, १)। २३ काली देवी का

विहासन (छाया २)। २४ वि. कृष्ण, काना रंग का (मुर २, ५)। २५ वि. कृष्ण

वि [वाहि क्ष्वन्] ? समय की अपेक्षा करने-

वाला (भाषा)। २ भवसर का नाता (उत ६)। 'काम पु [कल्प] ? समय सम्बन्धी

शास्त्रीय विधान। २ उसका प्रतिपादक शास्त्र

(श्वेत्मा)। 'काल पुं [काल] मृग्य समय

(विसे २०६६)। 'कूड न [कूट] जकट

विष-विशेष (मुपा २३८)। 'कटेन पुं [क्षेप] निलम्ब, देरी (से १३, ४२)।

'गय वि [गत] मृग्य-प्राप्त, मृत (छाया १, १; महा)। 'चक न [चक्र] ? नीस

सामरीपम परिमित समय (एदि)। २ एक

भयंकर सत्त्व, 'जाहे एवमि न साहं ताहे

पालचक्र विवचद' (भावम)। 'घूला स्त्री

[घृदा] भवि-भास वीरह का भविक

समय (निवृ १)। 'णु वि [त] भवसर

वा जानकार (उप १७६ टी, भाषा)। 'दृष्ट

वि [दृष्ट] नीत से मरा हुआ (उप ७२८

टी)। 'देन पु [देव] देन विशेष (शेव)।

'धम्म पुं [धर्म] मृग्य मरण (छाया १,

१, विपा १, २)। 'झ, 'मु देवो 'णु

(पि २७६, मुपा १०९)। 'परियाय पु

[पर्याय] मृग्य समय (भाषा)। 'परिहीण

न [परिहीन] विलम्ब, देरी (सम)। 'पाल

पु [पाल] देव विशेष, पराजित का एक

लोकपाल (ठा ४, १)। 'वास पु [वाग]

ज्योति शास्त्र प्रसिद्ध एक कुयोग (गण

१८)। 'पिट्ट, 'पुड पुन [पृष्ठ] ?

धनुष। २ कर्ण का धनुष। ३ काला

हरिण। ४ कौज पक्षी (पि ५३)।

'पुरिस पु [पुरुष] जो पुत्रेद कर्म का

भनुभव करता हो वह (सू १, ४, १, २

टी)। 'पपम पु [प्रभ] इत नाम का एक

पर्वत (ठा १)। 'फोडय पुको [फोटोड]

प्राणहर कोश। स्त्री. हिया (रभा)।

'भास पु [भास] मृग्य समय, 'कालमाने

काल किचा' (विपा १, १, २, भग ७, ६)।

'भासिणी स्त्री [भासिनी] गमिणी,

शुविणी (वस ५, १)। 'मिग पु [मृग]

कृष्ण मृग की एक जाति (ज २)। 'रसि

स्त्री [रसि] प्रलय रति, प्रलय-काल

(गउड)। 'वडिसा न [वतसक] देव-

विमान विशेष, काली देवी का विमान

(छाया २)। 'वाइ वि [वादिन्] जगत्

को कालहस्त माननेवाला, समय को हो सब

कुछ माननेवाला (एदि)। 'वासि पुं

[वसिण] भवसर पर बरनेवाला मेघ

(ठा ४, ३—पत्र २६०)। 'संदीप पु

[संदीप] भवसर विशेष, त्रिपुत्रपुर (भाषा)।

‘समय पुं [समय] समय, वक्त (मुज ८) । ‘समा स्त्री [समा] समय विशेष, वारक हन समय (जो २) । ‘सार पु [सार] मृग की एक जाति, बाला मृग, ‘एको बि बालसारे य देह गलुं पयाहियव-लतो’ (भा २५) । ‘सोअरिय पु [सोर-रि] स्वनाम स्यात् एक बमाई (पाक) । ‘गुरु, ‘गुरु, ‘गुरु न [गुरु] सुगन्धि द्रव्य विशेष, जो धूप के काम में सत्ता जाता है (छाया १, १, बप्प, मीप, गडड) । ‘यस, ‘स न [यस] सोहे को एक जाति (ह १, २६६ पुता, प्राप्, स ८, ५६) । ‘मवेसियधुत पुं [‘स्यवैशिकपुन] इस नाम का एक जैन भुति जो मगबाय पारवनाथ की परम्परा में थे (भग) ।

कालजर पु [कालजर] १ देश विशेष (विंग) । २ पर्वत विशेष (भावम) । देवी कालिजर । कालजरर सख [दे] १ निर्मलता करना, पटकारना । २ निर्वासित करना, बाहर निकाल देना । ‘तो तेण भणिया मजा, रिण । पुत्तो बानकवरियइ एनो, ता सा रामेण लाइ सगमिपुहु, मह जीववीए हन न होइ न जाइ वचनवि, वि बजइ लच्छीए, पुता-विउताए पिउला नियमन । जयामि’ (मुपा ३६६, ४००) ।

कालरसर पुन [कालरसर] १ भूप-मान, मूल दिखा, २ वि. भन्व-शिक्षित, ‘बानक-रूपनिक्रम घमिम दे निजनीमसरिचड’ (भा ८३८) ।

कालरसरिअ वि [दे] १ उपासक, निर्म-लित । २ निर्वासित, ‘सखि न विरमइ दुजही मलाहुनडाए सगने, लतो बालस-रिपो निउणा’ (मुपा ३८८) । ‘तो निउणा बानेए बालकपरिपो’ (मुपा ४८८) ।

कालरसरिअ वि [कालरसरि] देवी के भक्त जाननेगना, मरिणित, ‘मा तुम्हाण मरके यह एको बालकपरिपो’ (कण्) ।

काला } पुं [काल] १ प्रसिद्ध वैशाखाय कालय } (पुन १.६, २४०) । २ भ्रमर, भंति (राज) । देवी काल (ज्ना, ल ४८६ टी) ।

कालय रि [दे] भूत, डा (दे २, २८) ।

कालगुट न [दे. कालगुट] वपुज (दे २, २८) ।

कालवेसिय पुं [कालवेसिक] एक वरपा-पुव (ती ७) ।

काला स्त्री [काला] १ श्याम-वर्णवाली । २ तिरस्कार करनेवाली (कुमा) । ३ एक इटाणी, चमरेड की एक पण्थी (डा ५, १) । ४ बेरया विशेष (ती ७) ।

कालाइकमयन [कालातिकमर] सप विशेष, दिन में पूर्वार्ध तक ब्राह्मर-वाण (सबोव ५८) । कालाकोण पुन [काललण] बाला नाम या नमक (स ३, ८) ।

कालि पु [कालि] विहार का एक पर्वत (ती १३) ।

कालिअमूरि पु [कालिअमूरि] एक प्रसिद्ध प्राचीन जैन भाषा (विचार ५२६) ।

कालिआ स्त्री [दे] १ शरीर, देह । २ काना-नख । ३ भेष, वारिडा (दे २, ५८) । ४ पेश-समूह, वादन (पाप) ।

कालिआ स्त्री [कालिआ] १ देवी विरेप (मुपा १८२) । २ एक प्रकार का लुपानी पवन (उप ७२२ टी, छाया १, ६) ।

कालिआ पु [कालिआ] १ देश विशेष, पत्तो कालिअदेसमा’ (था १२) । २ वि. कलिआ देश में उलन (पउम ६६, ५५) ।

कालिगी स्त्री [कालिगी] बूझी विशेष, वरजून का गाछ (परण १) ।

कालिगी स्त्री [कालिगी] विद्या विशेष (मूम २, २, २७) ।

कालिजण न [दे] तापिण्ड, श्याम तमान का पद (दे २, २६) ।

कालिजणो स्त्री [दे] ऊपरदेवी (दे २, २६) ।

कालिजर पु [कालिजर] १ देश-विशेष (विंग) । २ पर्वत विशेष (उत्त १३) । ३ न. जगत विशेष (पउम ५८, ६) । ४ तीर्थ-स्थान विशेष (ती ७) ।

कालिदी स्त्री [कालिदी] १ यमुना नदी (पाप) । २ एक इटाणी, शबरेड की एक पटपानी (पउम १-२, १५६) ।

कालिय पु [दे] १ शरीर, देह । २ मय, वारिडा (दे २, ५६) ।

कालिया देवी कालिय = कालि (राज) ।

कालिगी स्त्री [कालिगी] संज्ञा विशेष, बहुत समय पहले गुजरी हुई चीज या भी जिनमें स्मरण हो सके वह (विसे ५०८) ।

कालिज न [कालिय] हृदय का बृद्ध मांस-विशेष (सुदु) ।

कालिय पु स्त्री [कालिअन्] श्यामका, कण्ठता, दागीपन (मुर ३, ४४, या १२) ।

कालिय पु [कालिय] इस नाम का एक सप (मुपा १८१) ।

कालिय रि [कालि] १ काल में उपन, कान-मन्थनी । २ भनिरिचत, भन्व-वर्धन, ‘हृत्पापया हेने बाना कानिया हे प्रणायया’ (उत्त ५, क १६) । ३ बहु शास्त्र, जिसको बहुत समय में ही पढ़ने की शक्तीय भासा है (डा २, १—पन ५६) । ४ दीप पुं [‘दीप] दीप विशेष (छाया १, १७—पन २२८) । ‘पुत्त पुं [‘पुन] एक जैन भुति जो भगवान् पारवनाथ की परम्परा में थे (भग) । ‘सणि वि [‘सणि] कानि की सत्ताबाला (विसे ५०६) । ‘सुय न [‘शुन] वह शास्त्र जो बहुत समय में ही पका जा सके (लुकि) । ‘पुणोण पुं [‘पुणोण] देवा पूर्वोक्त मय (मय) ।

काली स्त्री [काली] १ विद्या-देवी विशेष (सवि ५) । २ चमरेड की एक पटरानी (डा ५, १० छाया २, १) । ३ वनस्पति विशेष, बानरहा (सुत ५) । ४ श्यामवर्ण बानी स्त्री, ‘सामा गायद महर, बानी गायद मर ब रहते ब’ (डा ७) । ५ राजा धेरिण की एक स्त्री (निर १, १) । ६ कीपी जैन शासन-देवी (सवि ६) । ७ पार्वती, गौरी (पाप) । ८ इन नाम का एक छंद (विंग) । कालुप न [‘कालुप] दया, करुणा । ‘बहिआ स्त्री [‘वृत्ति] मोक्ष मंग वर प्राप्ति-प्रा करना (विपा १, १) ।

कालुपिय स्त्री कालुपिय (मूम १, १, १) ।

कालुपिय स्त्री कालुपिय (मूम १, १, २, ६) ।

कालुप पु [दे] मर की एक उलम जाति (ममन २१६) ।

कालुपिय न [‘कालुप] कलुपडा, मनिना (पाप) ।

कालुस्स न [कालुप्प] कलुपपन (सं २) ।
कालोज्ज न [दे] तापिञ्ज, श्याम तमान का
पेठ (दे २, २६) ।

कालोय न [कालोय] १ काली देवी का धर्म्य ।
२ सुगन्धि द्रव्य विशेष, कालचन्दन (सं ७५) ।
३ हृदय का मात-खरड, कलेजा (सूत्र १,
५, १, २मा) ।

कालोद देखो कालोय (जीव ३) ।
कालोदधि पुं [कालोदधि] समुद्र विशेष
(पराह १, ५) ।

कालोदाइ पुं [कालोदयिम्] इस नाम का
एक दारौमिक विद्वान् (मग ७, १०) ।

कालोय पुं [कालोद] समुद्र विशेष जो
धातवी-कण्ड द्वीप की चारों तरफ घिर कर
स्थित है (सम ६७) ।

काय } पुं [दे] १ बाँवर वहाँकी, बौक
कायड } दोनों लिए तरावतुमा एक वस्तु,
इसमें दोनों ओर सिक्कर लटकाये जाते हैं
(जीव ३, पत्रम ७५, ५२) । २ 'कोडिय पुं'
[कोटिक] काँवर से भार होनेवाला
(समु) । देखो काय = (दे) ।

कायडि } की [दे] काँवर (कुप्र १२१,
कायोडि } २५४, दस ४, १ टी) ।

कायडिअ पुं [दे] वैषयिक, काँवर से भार
होनेवाला (पत्रम ७५, ५२) ।

कायध पुं [कायध] एक महाप्रह, प्रहायि-
धायक देव-विशेष (राज) ।

कायलिअ वि [दे] भरतृह, असहिष्णु (दे
२, २५) ।

कायलिअ वि [कायलिअ] कवल प्रवेश रूप
माहार (मग सग १८१) ।

कायलिअ पुं [कायलिअ] वाग-मार्गी, अघोर
सम्प्रदाय का अनुय (मुपा १७४, ३६७, दे
१, ३१, प्रवे ११५) ।

कायलिअ } की [कायलिअ] कायलिक-
कायलिअ } प्रवर्तनी की (गा १०८) ।

काविट्ट न [कापिट] देव विमान विशेष (सम
२७, पत्रम २०, २३) ।

काविल न [कापिल] १ साध्य-रश्मि (सम
१५५) । २ वि. सास्य मत का अनुयायी
(भौप) ।

काविलिय वि [कापिलिय] १ कापिल मुनि-
सन्धी । २ न. कापिल मुनि के वृत्तान्तवाला
एक ग्रन्थ, 'उत्तराध्याय' सूत्र का धात्र्या
अध्याय (सम ६४) ।

काविसायण देखो अविसायण (जीव ३) ।
कायी की [दे] नीलवर्णवाली, हरा रंग की
बीज (दे २, २६) ।

कावुरिस देखो समुरिस (सं ३७५) ।

कावेअ न [कापेय] वानरान, चपलता
(मज्झ ६२) ।

कावोय वि [दे] काँवर वहन करनेवाला
(समु ५६) ।

कास देखो कड्ड = कृष्. कासह (पद्) ।

कास मक [कास्] १ बहुरा, रोग विशेष
से खराब भावाज करना । २ कासना, खाँसी
को भावाज करना । ३ खोखार करना । ४
छोक खाना । बह. कासव, कासमाण (पराह
१, ३—पत्र ५४, भाषा) । सङ्क. कासित्ता
(जीव ३) ।

कास पुं [काश, 'स'] १ रोग विशेष, खाँसी
(एगमा १, १३) । २ तुल्य-विशेष, कास कास-
कुसुम मन्ने सुनिष्कल जम्भ-जीविय नियम'
(उप ७२८ टी) । 'कामुडुसुम विहल' (भाष
५८) । ३ उसका कूल जो संकेद और शोभाय-
मान होता है, 'ता तल्य नियद धृति सहहर-
हरहासजसकास' (मुपा ४२८, कुमा) । ४
ग्रह विशेष, ग्रह-देव-विशेष (आ २, ३) । ५
रस (आ ७) । ६ ससार, बगल (भाषा) ।

कास देखो कास = कास्य (हे १, २६, पद्) ।

कास्रस वि [कास्रस] प्रमादी, ससार में
भासक (भाषा) ।

कासग देखो कासय, 'जेण रोहति वीजाइ,
अण जीजति कासग' (नित्र १) ।

कासण न [कासन] बोखाला, खाट्कार
(ओष २३४) ।

कासमहण पुं [कासमहण] वनस्पति विशेष,
मुन्द विशेष (पराह १—पत्र ३२) ।

कासय } पुं [कपिक] शरीरगत, विज्ञान (दे
कासय } १, ८७, पाष) ।

'जह वा मुण्णइ सम्भाई,
कासवो परिणयाई दिट्ठमि' ।

जह भूयाई कयतो, वत्थुसहायो इमो जम्हा'
(मुपा ६५१) ।

कासव पुं [काश्यप] १ इस नाम का एक
ऋषि (आमा) । २ हरिण की एक जाति ।
३ एक जात की मछली । ४ दश प्रजापति
का जमाता । ५ वि. दाह पीनेवाला (हे १,
४३, पद्) ।

कासव न [काश्यप] १ इस नाम का एक
गोत्र (आ ७, लाया १, १, कप) । २ पु
भगवान् काश्यप का एक पुत्र ३ वि.
काश्य गोत्र में उत्पन्न, काश्यप-गोत्रीय (आ
७—पत्र ३६०, उत्तर ७; कप, सूत्र १, ६) ।
४ पुं. नापित, हजाम (अंग ६, १०, भाषम) ।
५ इस नाम का एक गृहस्थ (अंत १८) । ६
न. इस नाम का एक 'मत्तमइवस' सूत्र का
अध्यायन (अंत १८) ।

कासवनालिया की [काश्यपनालिका] धी-
पणीकल (भाषा २, १, ८, ६, दस ५, २,
२१) ।

कासविज्जया की [काश्यपीया] जैन मुनियों
की एक शाखा (कप) ।

कासवी की [काश्यपी] १ पृथिवी, पत्थरी
(कुमा) । २ काश्यप-गोत्रीया की (कप) ।
'रइ की [रति] भगवान् सुमतिनाथ की
प्रथम शिष्या (सम १५२) ।

कासा की [कसा] दुर्बल की (हे १, १२७
पद्) ।

कासाइया } की [कापायी] कपाय रंग से
कासाई } रंगी हुई साड़ी, लाल साड़ी (कप,
उमा) ।

कासाय वि [कापाय] कपाय-रंग में रंगा
हुआ वस्त्रादि (गउड) ।

कासार न [कासार] १ तलाव, छोटा तपोवन
(मुपा १६६) । २ पद्मविशेष, 'कसार'
(सं १८६) । ३ पुं. समूह, पत्थरा (गउड) ।
४ प्रदेश स्थान (अंग १) । 'भूमि की
[भूमि] निम्न प्रदेश (गउड) ।

कासार न [दे] पातु विशेष, सीतपत्र (दे
२, २७) ।

कासि पुं [काशी] १ देश विशेष, नारी
जिला 'काशित जणवमी' (मुपा ३१; उत्तर
१८) । २ नारी देव का राजा (कुमा) ।

३ स्त्री. काशी नगरी, बनारस शहर (कुमा) ।
 *पुर न [पुर] काशी नगरी, बनारस शहर
 (पञ्च ६, १३७) । *राय पु [राज] काशी
 देश का राजा (उत्त १८) । *य धुं [प]
 काशी देश का राजा (पञ्च १०४, ११) ।
 *वह्दण पु [वर्धन] इस नाम का एक
 राजा, जिनसे भगवान् महावीर क पास दोहा
 ली थी (ठा न—पञ्च ४३०) ।

वासिअ न [दे] १ मृत्यु वक्र, चारो क
 बण्डा । २ संकेत वक्र (दे २, ५६) ।

वासिअ न [वासित] दीन, धुत् (राज) ।
 वासिअ न [दे] वाक्स्वप-नामक देश (दे
 २, २७) ।

वासिअ वि [वासिअ] सांख्य योगवाला (विषा
 १, ७—पञ्च ७२) ।

वासी जी [नारी] काशी, बनारस (छाया
 १, ८) । *राय पु [राज] काशी का राजा
 (विम) । *स पुं [रा] काशी का राजा
 (विम) । *सर पु [श्वर] काशी का राजा
 (विम) ।

वाह सक [कथय] कहना । कहयते (भूम
 १, १३, ३) ।

वाहर देवा वाहार (दस ४, १ टी) ।

वाहल वि [दे] १ मृदु नीमन । २ ठग, धूर्त
 (दे २, ५८) ।

वाहल वि [वातर] वातर, डरनेक, कभीर
 (ह १, २१४, २५४) ।

वाहल पुन [वाहल] १ वाय विशेष (गुर ३,
 ६९, कीय एहि) । २ ध्वन्य आवाज (बएह
 २, २) ।

वाहला जी [वाहला] वाय-विशेष, महा-
 दारा (विक ८७) ।

वाहलिया जी [वाहलिया] भामुपण विशेष
 (पञ्च २७१) ।

वाहली जी [दे] सरणी, युवता (दे २, २६) ।
 वाहली जी [दे] १ खर्च करने का धान्यादि ।
 २ वारा, जिसपर पूरी या पृथी बनेह पचाओ
 जाती है (दे २, ५६) ।

वाहार धुं [दे] बहार, पर जाति जो पानी
 करने पीर सोनी बनेह डाले का नाम भरती
 है (दे २, २७ मवि) ।

वाहार धुंन [दे] बाहर, बरने (गुञ्ज १०, ६) ।

वाहारण पु [वापण] मित्रा विशेष (हे
 २, ७१, एह १, २, पद्—प्राप्र) ।

वाहिय वि [वायिक] क्या-नार, वार्ता करने
 वाला (वह १) ।

वाहिल पु [दे] गोपाल, स्वात, जी. रा*
 (दे २, ३८) ।

वाहिलिया जी [दे] तवा, जिसपर पूरी आदि
 पचाओ जाती है (प्राप्र) ।

वाहीअ देखो वाहिय (बन्ध ३, ६) ।

वाहीअदाय न [सारिपविदान] प्रत्युपचार
 की मारा से दिया जाता दान (ठा १०) ।

काहे न [कदा] कब किस समय ? (हे २,
 ६५, मत २४, प्राप्र) ।

वाहेणु जी [दे] गुप्ता, लाल रत्ती (दे २,
 २१) ।

कि देला कि (हे १, २६, पद्) ।

कि मक [कु] करना, बनाना, 'कुहिय करणे'
 (विसे ३३००) । कबळ. निजत (गुर १,
 ६०, ३, १४, ५६) ।

किअ देखो कय = इत (बाज ६२५, प्राप्र १५,
 धम्म ०४, मे ६५ वजा ४) ।

निअ देखो निअ = हृष (पद्) ।

निअत वि [कियत्] कितना (सरण) ।

किअत देखो कयत (अधु ५८) ।

विआटिआ जी [कुसाटिआ] कला का उन्नत
 भाग (प्राप्र) ।

विह जी [हृति] हृति, क्रिया, विधान (पद्—
 प्राप्र उच) । *कम्म न [कर्मन्] १ बन्धन,
 प्रणयन (सम २१) । २ कार्य-करण (अम
 १४, ३) । ३ विद्यामण (व्यव ० गा ६२) ।

जिं स [किम्] कौन, क्या क्या, निन्दा
 प्रश्न, धनियय, धन्यता श्रीर साहस्य को
 बनलनेवाला शब्द (हे १, २६, ३, ५८,
 ७१, कुमा विषा १, १, निज ५३); किं
 कुन्ति मणीसो जाउ सट्ठेहि विपतिं
 (प्राप्र ४) । *उण थ [पुन] तब फिर,
 फिर क्या ? (प्राप्र) ।

जिन्सज्वया देवा जिनायवया (पाचा २,
 २, ३) ।

किहम्म पुं [किहम्मन्] इस नाम का एक
 गुरुत्व (मत्त) ।

किहुर पु [किहुर] नौकर, चावर, दास (गुप्ता
 ६०, २२३) । *सथ पु [सत्य] १ पर-
 मेयर परमात्मा । २ मज्जुत, विष्णु (मज्जु
 २) ।

किहुरी जी [किहुरी] दासी, नौकरानी
 (कप्पु) ।

किमइअ देखो वेचाइय (मणु २१२) ।

जिनायवया जी [किहुरीवया] क्या
 करना है यह जानना । *मूड वि [मूड]
 निवर्तय विवृद्ध, हकाबका, भौंका, यह
 मनुष्य जिसे यह न सूझ पड़े कि क्या किया
 जाय (महा) ।

किहुर पुन [मिहुर] धन्यता शब्द-विशेष
 (सिदि ५४१) ।

किविअ वि [दे] संकेत, श्वेत (दे २, ३१) ।

निविचजड वि [निविचजड] हकाबका,
 यह मनुष्य जिसे यह न सूझ पड़े कि क्या
 किया जाय (आ २७) ।

किविणिआ जी [किविणिआ] धुद परिकार,
 कपटी (गुप्ता १५६) ।

किविणी जी [किविणी] ऊपर देखो (गुप्ता
 १५४, गुप्ता) ।

किविहि देखो कविहि (विचार ५६१) ।

किमिरिड पु [किमिरिड] धुद कीट विशेष,
 मोन्द्रिय जीव की एक जाति (राज) ।

किचम [निज] समुच्चय-यौतव धन्यय, श्रीर
 जो दूसर को (गुर १, ४०, ४१) ।

किचण न [निजन्] १ इय-हरण, कोटी
 (विसे १५१) । २ म कुछ निजिअ (वव
 २) ।

जिचण न [निजन्] इय, वस्तु (उत्त १२,
 ८, गुञ्ज ३२ ८) ।

किचाहिय वि [किचिदधिन्] कुछ गयादा
 (गुप्ता ५३०) ।

जिचि थ [निजन्] धन्य, ईश्वर, मोदा
 (जो १, स्वन् ४७) ।

जिचिममत्त वि [किचिममत्त] स्वयं, बहुत
 मोदा, परिचिअ (गुप्ता १४२) ।

विचण वि [विचिदन्] धुद वय, पूर्ण प्राय
 (मो) ।

किनक पुं [विचिन्क] गुप्त-गुप्त, पचण
 (छाया १, १) ।

किन्तु पु [दि] सरोप-मृन्, खरस का पेड
(दे २, ३१) ।

किण्ण (श्री) । म [किमिदम्, किमेतत्]
यह क्या ? (पट् कुमा) ।

किन्तु म [किन्तु] परन्तु लेकिन (सुर ४, ३७) ।

किंथुग्य देखो किंथुग्य (राज) ।

किंदिय न [किन्ट] १ वस्तु का मध्य-स्थल ।
२ ज्योतिष में दृष्ट लग्न से पहना, चौथा,
सातवां और दसवां स्थान, 'किंदियअण्ठिय-
सुरिम्म' (सुभा १६) ।

किन्तु अ पु [कन्तुक] कन्तुक गेद (भवि) ।

किपर पु [दि] छोटी मछली (दे २ ३२) ।

किनर पु [किन्नर] १ श्वतर देवों की एक
जाति (पण्ह १, ४) । २ भगवान् धर्मनाथ
जो के शासनदेव का नाम (संति ८) । ३
बमर की रथ-सेना का अधिपति देव (ठा
५, १) । ४ एक इन्द्र (ठा २, ३) । ५ देव-
गर्जन, देव गायक (कुमा) । *कठ पु [कण्ठ]
किन्नर के बएठ जितना बड़ा एक भण्ड
(जीव ३) ।

किन्तरी की [किन्तरी] १ किन्नर देव की की
(कुमा) ।

किन्तु म [किन्तु] पूर्वपक्ष, प्रातोप, प्रातःका का
मूचक प्रणय (बव १) ।

किपय वि [दि] कण, कण्ठ (दे २, ३१) ।

किपाग पु [किम्पाक] १ कुन विशेष, 'हुति
मुहि विम महारा विमया किपागमुदकल व'
(पुत्त ३६२ प्रीप) । २ न उलझा फल
जा देखन में और शराह में सुन्दर, परन्तु खाने
स प्राण का नारा करना है किपागफलोवमा
विमया' (सुर १२, १३८) ।

किपि म [किमपि] कुछ ओ (प्राप् ६०) ।

किपुत्ति पु [किपुत्ति] १ श्वतर देवा
की एक जाति (पण्ह १, ४) । २ एक इन्द्र,
किन्नर निराप के उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा
२, ३) । ३ विरोधन यनीन्द्र की रथसेना
का अधिपति देव (ठा ५, १—अव ३०२) ।
*कठ पु [कण्ठ] मण्डि की एक जाति, जो
किपुत्ति व बएठ मित्रता बना होता है
(जीव ३) ।

किणोह वि [दि] खनित, गिरा हुआ, भुला
हुआ (२, ३१) ।

किमम्भ वि [किमम्भ] असार, नि सार
(पण्ह २, ४) ।

किमयती की [किमदन्वी] जनश्रुति, जनरस
(हम्मरी ३६) ।

किसार पु [किंसार] सत्य-शूक, सत्य का
सोदण अथ भाग (दे २, ६) ।

किमुग्य न [किमुग्य] ज्योतिष-प्रसिद्ध एक
स्तर करण (विमे ३ ३५०) ।

किमुअ पु [किमुअ] १ पलारा का पेड, टेमू
बाक (सुर ३ ४६) । २ न पलारा का पुष्प
(हे १, १६, ८६) ।

किडिडि पु [दि] सर्प, सर्प (दे २, ३२) ।

किडिधा की [किडिन्धा] नगरी विशेष
(सं १४, ५५) ।

किडिधि पु [किडिन्धि] १ पर्वत विशेष
(पठम ६, ४५) । २ इस नाम का एक राजा
(पठम ६, १५४, १०, २०) । *पुर न
[गुर] नगर विशेष (पठम ६, ४५) ।

किञ्च वि [कृत्य] १ करने योग्य, कर्तव्य,
परज (सुभा ४६२, कुमा) । २ बन्धनीय,
पुननीय 'न पिडुमो न पुरमो नेव किञ्चएण
पिडुमो' (उत्त ३) । ३ पु. गृहस्थ (सूत्र १,
१, ४) । ४ म. शास्त्रीक अनुष्ठान, क्रिया,
इति (भावा २, २, सूत्र १, १, ४) ।

किञ्चत वि [कृत्यमान] १ छिन्न क्रिया जाता,
नाटा जाता । २ पीडित क्रिया जाना, सताया
जाता (राज) ।

किञ्चण न [दि] प्रगलन धाता, 'हरिश्चन्द्रेण
छपदमयण विचणं व पीताण' (धोष
१६८—पत्र ७२) ।

किञ्च स्त्री [कृत्या] १ कान्ता कर्तन (उप
पु ३६६) । २ स्त्रिया काम, धर्म । ३ देव
वैदेह की मूर्ति का एक भद्र । ४ जानूसरी,
जाह्न । ५ योग विशेष, मन्मायी का राग
(हि १, १२८) ।

किञ्चा देखो कर = कृ ।

किचि स्त्री [कृत्ति] १ मृग वगैरह का धन्य ।
२ चपदे का धन्य । ३ भूजन्म, धानपत्र । ४
हस्तिका धन्य (हि २, १८० ८६ पट्) ।

*पाउरण पु [पावरण] महादेव, शिव (कुमा) ।
*हर पु [धर] महादेव, शिव (पट्) ।

किञ्चिरं म [कियञ्चिरम्] कितने समय
तक, वच तक ? (उप १२८ वी) ।

किच्छु न [कृच्छु] १ दुष्ट कष्ट (ठा ५,
१) । २ वि कष्ट साथ, कष्ट-युक्त (हे १,
१२८) । ३ किञ्चि दुष्ट से, मुश्किल से
(सुर ८, १४८) ।

किञ्ज वि [क्रिय] खरोदे योग्य 'अजिञ्ज
किञ्जमेव वा' (उत्त ७) ।

किञ्जत देखो कि = कृ ।

किञ्जअ वि [कृत] किया गया, निर्मित
(पिप) ।

किट्ठ सक [कीर्त्तय] १ स्तुति करना,
श्रुति करना । २ वार्त्तन करना । ३ बहना,
बोलना । किट्ठइ किट्ठइ (भावा भग) । वट्ठ,
किट्ठमाण (पि २८६) । सट्ठ किट्ठइत्ता,
किट्ठित्ता (उत्त २६, कप्प) । हेह किट्ठिअए
(कठ) ।

किट्ठ स्त्री [किट्ठ] १ घातु का मल, मेल
(उप ५३२) । २ रंग विशेष (उर ६, ५) ।
३ लेन, धो वगैरह का मेल । स्त्री *ट्टी
(पभा ३३) ।

किट्ठण देखो किट्ठण (इह ३) ।

किट्ठि स्त्री [किट्ठि] १ भस्तीकरण विशेष,
विभाग विशेष, 'मपुञ्चविघोहीए मणुमानोणू-
णविमयए किट्ठो' (पव १२, भावम) ।

किट्ठिय वि [कीर्त्तिव] १ बखाने, प्रशंसित
(सूत्र २, ६) । २ प्रतिपादित, कथित (सूत्र २,
२ ठा ७) ।

किट्ठिया स्त्री [कीर्त्तिया] जनस्यवि विशेष
(पण्ह १, भग ७, २) ।

किट्ठिस न [किट्ठिस] १ खली, सरनी, तिन
धादि का तैल रहित घृत (प्रागु) । २ एक
प्रकार का मृत्त, मृदा (प्रागु भावम) ।

किट्ठिस न [किट्ठिस] १ ऊन धादि का धारी
बना हुआ धरा । २ उतारे बना हुआ मृदा ।
३ ऊन, ऊट के धात धादि की मिनारट का
मृत्त (प्रागु ३४) ।

किट्ठो देखा किट्ठ = किट्ठ ।

किट्ठोअय वि [किट्ठोअय] धातु म मिता
हुआ, एतादृश, येन गुणं धादि का किट्ठ

उसमें मिल जाता है उस तरह मिला हुआ (उब)।

किट्ट वि [किट्ट] कलेउ-युक्त (मग ३, २; जीव ३)।

किट्ट वि [कट्ट] जोता हुआ, हल-विदारित (गुर ११, ५६; मग ३, २)। २ न. देव-विमान विशेष, 'जे देवा सिरिवन्ध सिरिदास-कंठ मल्लं किट्टं' (१६) बाबोएण्यं धर-एणकडिमं विमाणं देवत्ताए उववएणं (सम ३६)।

किट्टि स्त्री [कट्टि] १ कर्ण। २ खोचान, मातर्ण। ३ देवविमान-विशेष (मम ६)।

'कूड न [कूड] देवविमान-विशेष (सम ६)। 'घोस न [घोष] विमान-विशेष (मम ६)। 'जुत्त न [युक्त] विमान-विशेष (सम ६)। 'उमय न [उज] विमान-विशेष (मम ६)। 'प्यभ न [प्रभ] देवविमान-विशेष (सम ६)। 'वणग न [वर्ण] विमान-विशेष (सम ६)। 'मिग न [मिग] विमान-विशेष (मम ६)। 'सिद्ध न [शिष्ट] एक देव-विमान (सम ६)।

किट्टियायत्त न [कट्टयायत्त] देवविमान-विशेष (सम ६)।

किट्टुत्तरवडिसग न [कट्टुत्तरायत्तसग] इस नाम एक देव-विमान, देव-मन्त्र (सम ६)।

किट्टा वि [कीट्टा] होडा करनेवाला (मूम १, ४, १, २ टी)।

किट्टुं [किरि] सूवर, मूमर (हे १, २५१; पर)।

किट्टिफिडिया स्त्री [किट्टिफिट्टा] मूली हरी की भावान (छाया १, १—पत्र ७४)।

किट्टिभुं [किट्टिभ] रोग विशेष, एक प्रकार का खुद बोज (मद्रम १५, मग ७, ६)।

किट्टिया स्त्री [दे] सिक्की, छोटा द्वार (स २८३)।

किट्ट मग [कीट्ट] खेतना, बोझ करना। पर. किट्टुत (वि १६७)।

किट्टुवर वि [कीट्टावर] बीजा-नारर (धोप)।

किट्टा स्त्री [कीट्टा] १ बीजा, खेत (विषा १, ७)। २ बापाय्ग्या (छा १—पत्र ५१६)।

किट्टाविया स्त्री [कीट्टाविया] बीजन घानी, धानक को खेत-मृद करनेवाली दाई (छाया १, १६—पत्र २११)।

किट्टि वि [दे] १ संभोग के लिए जिसको एकांत स्थान में लाया जाय वह (वव ३)।

२ स्मरित, मुद्र (मुद्र १)।

किट्टिग न [किट्टिग] सन्यासियों का एक धाम, जो वीम का बना हुआ होता है (मग ७, ६)।

किण सग [की] खरीदना। निणह (हे ४, ५२)। वड, 'वे किणं निणवेमाणे हण चायमाणे' (मूम २, १)। किणंत (मुपा ३६६)। चंड. किणित्ता (पि ५८२)। प्रयो. निणवेड (पि ५५१)।

किण पु [किण] १ चरण-विड, चरण को निगानी (गड ३)। २ मास-बंध। ३ सूखा घाव (मुपा ३००; वजा ३६)।

किणइय वि [दे] शोभित, विभूषित (पत्रम ६२, ६)।

किणग न [क्रयण] कीटना, खरीद, क्रय (उप वृ २५८)।

किणा देलो किण्णा (प्राय, हे ३, ६६)

किणि वि [क्रयिन्] खरीदनेवाला (सम्भोग १६)।

किणिकिण भव [किणिकिण्य] निण-विण भावान करना। वड. किणिकिणित (धोप)।

किणिय वि [कीट] बीजा हुआ, खरीदा हुआ (मुपा ५३४)।

किणिय पुं [किणिक] १ मनुष्य की एक जाति, जो भावा बनानी और बनाती है (वव ३)। २ रखी बनाने का काम करने-वाली मनुष्य जाति, 'निणिया उ वरतामो वनिदि' (वव ३)।

किणिय न [किणित] बाघ-विशेष (पय)।

किणिया स्त्री [किणिया] छोटा चोड़ा, कुननी। 'अन्नेरि नई मडियरिणीय-कुण्णविणिणयोनिना'।

मनिणउरवन्धोय्दमकिणमहा कहरि दिदिदि' (स १८०)।

किणिस सग [शाण्य] सीख करना, ठेक करना। निणउद (पिण)।

किणो म [किमिति] क्यों, किसलिए ? (दे २, ३१; हे २, २१६; पाम; गा ६७; महा)।

किण्य वि [कीर्ण] १ उल्लेख, छुटा हुआ; 'उवतनिणएण्व वट्टपडियव' (मुपा ५७१)। २ शिष्ट, फेंका हुआ (छा ६)।

किण्य पुं [किण्य] १ पलवाला घुड़ विशेष, जिससे दाख बनता है (गड ३, माचा)। २ न. घुड़ बीज, निणव-भुत के बीज, जिसका दाख बनता है (उत्त २)। 'सुरा स्त्री [सुरा] निणव-भुत के फल से बनी हुई मदिरा (गड ३)।

किण्य वि [दे] सोममान, राजमान (दे २, ३०)।

किण्य म [किण्य] प्रस्तापक मयम (उवा)।

किण्यर देलो किणर (जं १; राय; इज)।

किण्णा म [क्रयम्] क्यों, क्यों कर, कैसे ? 'निणया लदा निणया पता' (विषा २, १—पत्र १०६)।

किण्यु म [किणु] इन धर्मों का मूलक मय्यम—१ प्रसन्न। २ विवर्त। ३ साधारण। ४ स्थान, स्थल। ५ विवर्त (उवा, स्वय ३४)।

किण्ण देलो कण्ह (गा ६५; छाया १, १; उर ६, ५; पण १७)।

किण्ह न [दे] १ खरीद करना। २ मरने करना (दे २, ५६)।

किण्हग पुं [दे] क्यापान में पड़ा भादि में होनेवाली एक तरह की भादि (जीवम ३६)।

किण्हग देगा कण्ह (छा ५, १—पत्र ३५१, वम्प ५, १३)।

किण्य पुं [किण्य] घुत्तर, छाया (दे ४, ८)।

किण्य देलो किण (संश ५)।

किण्य देलो किट्ट—कीट्टं। अरि. किण्यम (वडि)। वड. किण्यपण (पत्र ११६)।

किण्य न [कीर्ण] १ स्थाया, मृत्ति, 'ठर य विणुसम सीटि निणत' (धरि ५; वे ११, १३१)। २ खोज, भित्ति। ३ कपन, जिक (रिगे ६४०; गड ३, मुपा)।

किण्या स्त्री [कीर्णा] कीर्ण, कपन, प्रयोज (विस्व ७४८)।

कित्य वि [कीर्तक] कीर्तन-वर्ता (पत्र २१६ टी)।

किचवोरिअ देवो कचवोरिअ (ठा ८)।

निचा देवो किआ = कृपा (प्राक् ८)।

किंति जो [कीर्ति] १ यश, कीर्ति, सुख्याति (मोप, प्राप् ४३, ७४, ८३)। २ एक विद्या-देवी (पत्रम ७, १४१)। ३ बेसरिद्र ही धर्मशायी देवी (ठा २, ३—पत्र ७२)। ४ देव-प्रतिमा-विशेष (शाया १, १ टी—पत्र ४३)। ५ श्लाघा, प्रशंसा (पंच ३)। ६ नीलवन्त पर्वत का एक शिखर (अं ४)।

७ सीधन देवलोक की एक देवी (निर)। ८ पुं, इस नाम का एक जैन मुनि, जिसके पास पाँचवें अवतार के क्षीला सी जो (पत्रम २०, २०५)। ९ कर वि [कर] १ यशस्कर, स्वाति-नाक (शाया १, १)। २ पुं, भगवान् धार्मिकों के एक पुत्र का नाम (राज)। १० बंद पुं [बन्ध] गुप्त-विशेष (पत्रम)। ११ धर्म वं [धर्म] इस नाम का एक राजा (संज्ञ)। १२ धर पुं [धर] १ गुप्त-विशेष (सदु)। २ एक जैन मुनि, इससे बलदेव के पुत्र (पत्रम २०, २०५)। १३ पुं [पुत्र] कीर्ति-प्रधान पुत्र, बागुदेव वीरू (ठा ६)। १४ म वि [मत्] कीर्ति-मुक्त। १५ मई जो [मती] १ एक जैन साध्वी, (प्राक्)। २ ब्रह्मदेव चक्रवर्ती की एक स्त्री (उत्त १३)। १६ य वि [द] कीर्ति-कर, यशस्कर (मोप)।

निसि स्त्री [शक्ति] धर्म, भगवा, 'बुद्धो मग्धाए वगपितोम' (प्राप् ६६३, मा ६४०, बज्जा ४४)।

निसिम वि [शक्तिम] भगवद्वी, ननली (गुप २४, ६१३)।

निसिय वि [कीर्ति] १ उच्च, वरिष्ठ, 'वितियवर्णमहिमा' (पठि)। २ प्रशंसित, स्थापित (ठा २, ४)। ३ निरूपित, प्रति-पादित (सदु)।

निसिय वि [क्रियत्] क्रियता (गठक)।

निसि वि [सिद्ध] भाद्र, गीता (हे ४, ३२६)।

निन्द देवो मण्ड (कप)।

निपाठ वि [द] स्मरण, गिरा हुआ (पठ)।

किच्विस न [क्रियत्] १ पाप, पातक (पण्ड १, २)। २ मास, 'निग्य च ते वीर्यागमं किच्विस' (स २६३)। ३ पुं, चाण्डाल-स्थानीय देव जाति (भा १२, ५)। ४ वि. मयित। ५ अथवा, नीच (उत्त ३)। ६ पापी, दुष्ट (धर्म ३)। ७ कर्तुं, चितकबरा (तंडु)।

किच्विसिय पु [क्रियत्] १ चाण्डाल-स्थानीय देव जाति (ठा ३, ४—पत्र १६२)। २ केवल बेपयारी साधु (अथ)। ३ वि. प्रवम, नीच (सूच १, १, ३)। ४ पाप-जन को भोगनेवाला दण्ड, पंडु वीरू (शाया १, १)। ५ माह-चैत्रा करनेवाला (मोप)।

किच्विसिया स्त्री [क्रियत्] १ भावना-विशेष, धर्म-गुरु वीरू को निम्न करने की भावत (धर्म ३)। २ केवल बेपयारी साधु की धुति (भा)।

निम (अथ) व [कथम्] क्यों, कैसे? (हे ४, ४०१)।

निमण देवो निमण (प्राक्)।

निमत्स पुं [निमत्स] गुप्त-विशेष, जिसने हथ को संग्राम में हराया था और शाप लगने से जो मरकर अजवर हुआ था (निबु १)।

निमी पुं [हृमि] १ शुद्ध जीव, वीट-विशेष (पण्ड १, ३)। २ घट में, कुन्ती में श्रीर ववासीर में उपलब्ध होनेवाला जल-विशेष (जी १५)। ३ द्वीपिय वीट विशेष (पण्ड १, १—पत्र २३)। ४ य न [ज] हृमि-जल से उत्पन्न वस्त्र, 'श्रीनेत्रपट्टमई जं, निमिय तु पुनचुव' (पचमा)। ५ राग, 'राय पुं [राय] विरमिनी का रस (कम्म १, २०, २३, ३२, पण्ड २, ४)। ६ रासि पुं [रासि] वनस्पति विशेष (पण्ड १—पत्र ३६)।

निमिपरवसण [दं] देखो किमिहरवसण (पठ)।

निमिचल्य न [किमिचल्य] इच्छागुहा, चर (शाया १, ८—पत्र १५०)।

निमिण वि [हृमि] हृमि-मुक्त, 'निमिणबहुदुमिणपु' (पण्ड २, ५)।

निमिणय वि [दे] सामाये वस्त्र (दे २, १३)।

किमिहरवसण न [दे] कीरीय-वस्त्र, रेशमी वस्त्र (दे २, ३३)।

किमु म [किमु] इन प्रयोगों का सूचक ध्वन्य-१ प्रत्यय। २ वितर्क। ३ निन्दा। ४ निषेध (हे २, २१७, पिंग)।

किमुय म [किमुत] इन प्रयोगों का सूचक ध्वन्य—१ प्रत्यय। २ वितर्क। ३ वितर्क। ४ अतिशय (हे २, २१८); 'धमररराममहिं' ति पुन्यं वेहिं किमुय सेहेहिं' (वित्ते १०६१)।

किमिय न [दे. किमि] जटता, जाज्य (पत्र)।

किमीर वि [किमीर] १ कर्तुं, कबया (पाप)। २ पुं, राक्षस-विशेष, जिसको भीमसेन ने मारा था (देही ११७)। ३ वंश-विशेष, 'जाया किमीरवसे' (रमा)।

क्रिय देखो कीय (पिठ ३०६)।

क्रियत वि [क्रियत्] कियता (सम्पत् २२८)।

क्रियथ देखो वयथ (नवि)।

क्रियव देवो कइअन (उप ७२८ टी)।

क्रिया दंडो किरिया, 'हय नाए क्रियाहोए' (हे २, १०४); 'मण्णुसारी सडो पन्-वण्णोनी क्रियावरो वेव' (उप ११६; वित्ते ३५६, १ टी, कप)।

क्रियाडिया स्त्री [दे] जानवूटी, जान का ऊपरी भाग (वच १)।

क्रियाण देवो कर = कृ।

क्रियाणा न [प्रयाणक] चित्तल, गुरु, गसाला आदि बेचने योग्य चीजें (गु १, ६०)।

किर पुं [दे] सुहर, मृगर (हे २, ३०; पठ)।

किर म [क्रिल] इन प्रयोगों का सूचक ध्वन्य—१ संभावना। २ निरर्थक। ३ हेतु, निरिच्छ वारण। ४ भातां प्रसिद्ध धर्म। ५ धरति। ६ अतीत, धरात। ७ समय, सदिह (हे २, १८६, पठ. गा १२६, प्राप् १७, दस १)। ८ पाठ पूर्ण वि मे इसका प्रयोग होता है (कम्म ४, ७६)।

किर सव [क] १ संज्ञा। २ पगारा, पीनाम। ३ विरोध। ४ विरत (ति ४, ५८; १४, ५७)।

किरण पुन [किरण] तिरण, ररिच, प्रना (गुप ३५१, पठ. प्राप् ८२)।

किरिण्ड वि [किरणन्] किरणवात्,
तेजस्वी (गुर २, २४२) ।

किराड १ पु [किरात्] १ अनायं देश विदेश
किराय १ (पव १४८) । २ भीन, एक जगती
जाति (गुर २, २७, १८०, गुप्ता ३६१; हे
१, १८३) ।

किरात (श्री) देखो किराय (प्राह ८६) ।

किरे देखो फिर = बिल (तिरि ८३२, ८३४) ।

किरे पु [किरि] मातृ को आवाज, 'बल्यद
किरिति बल्यद हिरिति बल्यद छिरिति
रिच्छाणं सही' (पठम ६४, ४५) ।

किरे पुं [किरि] सूवर, सूवर (गउड) ।

किरिआ देखो क्याण 'अमतराहिरिपुन-
किरिआणो' (कुलन २१) ।

किरिहिरिया स्त्री [दि] १ बलापकस्त्रिया,
किरिहिरिया १ एक मान से दूसरे मान गई
हुई बात, गन । २ कुतूहल, नीतुन (दे २,
६१) ।

किरिहिरिया स्त्री [दे] १ बाघ विशेष, बाँस
भादि की बच्चा—लकड़ी से बना हुआ एवं
प्रकार का बाजा (भावा २, ११, १) ।

किरित्तण देखो कित्तण (नाट—मात ६७) ।

किरिया स्त्री [क्रिया] १ क्रिया, इति, व्या-
पाद, प्रयत्न (सूय २, १, डा ३, ३) । २
शास्त्रोक्त अनुष्ठान, पर्यानुष्ठान (सूय २, ४,
पव १४६) । ३ सावध व्यापार (मग १७,
१) । ४ 'हाण ॥ [स्थान] कर्मबन्ध का
कारण (सूय २, २, भाव ४) । 'वर वि
[पर] अनुष्ठान कुराम (वह) । 'याड वि
[धादिन्] १ आस्तिक, कीर्वाण प्रास्तिव्य
माननेवाला (डा ४, ४) । २ केवल क्रिया से
ही मोक्ष होता है ऐसा माननेवाला (सम
१०६) । 'विसाल न [विशाल] एवं
देन प्रयाग, तेद्वानं पूर्व-अन्त्य (सम २६) ।

किरीड पु [किरीट] मुकुट, शिरो मूषण
(पाम) ।

किरीडि [किरीटिन्] मजुन, मध्यम पाएव
(वेणी १६२) ।

किरीन वि [कीन] बीना हूमा, चरोन हूमा
(प्राप्त) ।

किरीय पु [किरीय] १ एक स्नेह्य देश । २
उद्यम उत्पन्न स्नेह्य प्राति (पाम) ।

किरोलय न [किरोल] फन विशेष, किरो-
लिवा बल्ली वा फल (उर ६, ५) ।

किल देखो फिर = बिल (हे २, १८६, गउड,
कुमा) ।

किंलं वि [क्रान्त] खिन्न, खान्त (वह) ।
किंलंज न [किलिज] बस का एक पात्र,
जिसमें गैया वगैरह को खाना खिनाया जाता
है (उवा) ।

किलज न [किलिज] तुल्य-विशेष (पमवि
१३५, १३६) ।

किलिज अक [किलिजाल्य] 'बिल-
बिल' आवाज करना, हँसना, 'बिलबिलइ
अ महरिष मणिव' बीरिहिरिहिरि' (बप्पु) ।

किलिजाल्य न [किलिजाल्य] 'बिल-
बिल' ध्वनि, हर्ष ध्वनि (पामम) ।

किलणी स्त्री [दि] १ रथ्या, गली (दे २, ३१) ।
किलम मय [काम] कनात होना, खिन्न
होना । किलमसि (बप्पु) । किलमसि (वजा
६२) । वह- किलमसत (पि १३६) ।

किल्लाचक न [कीडाचक] इन नाम का
एक ध्वज—वृत्त (पिग) ।

किलाड पु [किलाट] दूध का विचार विशेष,
मलाई (दे २, २२) ।

किलाम सव [कलमय] कनात करना, खिन्न
करना, स्थान उत्पन्न करना । किलामज
(पि १३६) । वह- किलामेंत (मग ५, ६) ।
कवड किलामीअमाण (पा ४६) ।

किलाम पु [कलम] खेद, परित्याग, स्तब्धि,
'लमपिणो से किलामा' (पडि, किये २५०४) ।

किलामणया स्त्री [कलमाना] खिन्न करना,
उत्पन्न करना (मग ३, ३) ।

किलामणा स्त्री [कलमाना] कथन, कथन
(महानि ४) ।

किलामिअ देखो किलंज (पामु १३६) ।

किलामिअ वि [कलमिअ] निग्र किया हुआ,
देहान किया हुआ, पीछन, 'तएहकिलामि-
आम' (पठम १०३, २२, गुर १०, ४८) ।

किलिच न [दि] छोटी लकड़ी, लकड़ी का
टुकड़ा, दंततरोहणिय निनिबसितनि अवि-
स्मि' (मत १०२, पाम दे २, ११) ।

किलिचिअ न [दि] ऊपर देखो (पा ८०) ।

किलिज देखो किलंज (नाट—दुपद २५, पि
११६) ।

किलिचिअ मय [रम्] रमण करना, बीबा
करना । किलिचिअ (हे ४, १६८) ।

किलिचिअ न [रत] रमण, बीबा, संभोग
(कुमा) ।

किलिजिअ अक [किलिजाल्य] 'बिल-बिल'
आवाज करना । वह किलिजिअंत (उप
१०३१ ले) ।

किलिजिअ न [किलिजिअ] इस नाम का
एक विद्याधरनगर (इक) ।

किलिजिअिल देखो किलिजिअ । वह ।

किलिजिअिलंत (पठम ३३, ८) ।

किलिजिअिल न [किलिजिअिल] 'बिल-बिल'
आवाज करना, हर्ष-यौवना ध्वनि-विशेष (स
३७०३ ३८५) ।

किलिड वि [किलिड] १ कथन-युक्त (उत्त ३२) ।
२ कठिन, विपम । ३ कथन जलन (प्राप्त, हे
२, १०६, उव) ।

किलिण देखो किलिज (स्यन ८५) ।

किलिच वि [कल्लुअ] कलित, उचित (प्राप्त,
वह, हे १, १४५) ।

किलिचि स्त्री [कल्लुचि] रचना, कल्पना
(पि ५६) ।

किलिच वि [किलिच] प्राप्त, गीता (हे १,
१४५, २, १०६) ।

किलिम देखो किलम । किलिम (पि
१०३) । वह किलिमंत (पि ६, ८०; ११,
५०) ।

किलिमिअ वि [दि] कथित, उक्त (दे २,
१२) ।

किलिज देखा बीर (पव २, पे ४३) ।

किलिस अक [किलि] लेद पाता, पत
जाना, दु गी हाता । वह- किलिसंन (पठम
२१, ३८) ।

किलिस देखो किलोम, 'मिच्छन्मच्छन्मीपाण,
निनिमणिलिनि दुहाण' (गुप्ता ६४) ।

किलिसिअ वि [किलिशिअ] आयाधित, कथन-
प्राप्त (म १४६) ।

किलिम देखा किलिम = किलि । किलिम
(महानि ४२) । वह किलिमंत (नाट—
मात ३१) ।

किलिमिअ वि [किलि] कथन प्राप्त, कथन-
प्राप्त (उर ३ ११६) ।

किलीण देखो किलिण (भवि) ।

किलीव देखो कीव (स ६०) ।

किलेस प्रक [किलेस] कलेस पाना, हेरान

होना । किलेसद (प्राक २०) ।

किलेस पुं [किलेस] १ खेद, यकावट (श्रीप) ।

२ दुःख, पीडा, बाधा (पदम २२, ७५; सुख

२०) । ३ दुःख वा कारण । ४ कर्म, गुण-

गुण-कर्म (यह १) । ५ र वि [किलेस] कलेस-

जनक (पदम २२, ७५) ।

किलेसिय वि [किलेसित] हुआ किया हुआ

(सुर ४, १९७, १९८) ।

किल्ला देखो किङ्गा (मै ६१) ।

किप पुं [कूप] १ इस नाम का एक ऋषि,

कृपाधर्म (हे १, १२८); 'माहसयसमग्य

मग्य विदुर बोले जयइहं सवरो कोव

(? सवरो किं) मागपाम' (शाया १,

१६—पत्र २०८) ।

किचें (प्रन) देखो कहुं (कुमा) ।

किष्ण वि [कृपण] १ गरीब, रक, धीन

(सूत्र १, १, ३; अन्तु ६७) । २ दरिद्र,

निर्धन (पणह १, २) । ३ कर्म, अवाता

(दे २, ३१) । ४ कर्त्तव्य, कायर (सूत्र २, २),

किमा स्त्री [कृपा] दया, मेहरबानी (हे १,

१२८) । ५ वन वि [पत्र] कृपा-प्राप्त,

दयालु (पदम ६२, ४७) ।

किपाण पुन [कृपाण] कर्ण, तलवार (सुपा

१५८—हे १, १२८, पत्र) ।

किपालु वि [कृपालु] दयालु, दया करनेवाला

(पदम ३४, ४०, ६७, २०) ।

किडिल न [दे] १ खलिहान, अथ साफ करने

का स्थान । २ वि. खलिहान में जो हुआ हो

वह (दे २, ६०) ।

किडिडी स्त्री [दि] १ किवाड़, पार्वत द्वार ।

२ घर का पिछला भाग (दे, २, ६०) ।

किटिण देखो कियण (हे १, ४६; १२८; या

१३६, सुर ३, ४४; प्राप् ५६; पणह १, १) ।

किरीडजोणि पुं [कृपीटयोनि] अग्नि

(यमसत् २२६) ।

किस् सब [किराय] हसित करना, धपचित

करना । विषय (सूत्र १, २, १, १४) ।

किस् वि [कृषा] १ दुर्बल, निर्बल (जवर

११३) । २ पतला (हे १, १२८; ठा ४, २) ।

किस्संग वि [कृशङ्ग] दुर्बल शरीरवाला (या

६५७) ।

किस्स पुं [कुरार] १ पन्थान-विशेष, तिल,

नासल और रूप की बनी हुई एक खाद

बीज । २ खिचड़ी, चावल और दाल का

मिश्रित भोजन विशेष (हे १, १२८) ।

किस्स देखो केसर 'महमहिप्रदसणकिस्स'

(हे १, १५६) ।

किस्सा स्त्री [कृश्या] खिचड़ी, चावल-दाल

का मिश्रित भोजन-विशेष (हे १, १२८; दे

१, ८८) ।

किस्सल देखो किस्सलय (हे १, २६१; कुमा) ।

किस्सलइय वि [किस्सलयित] अकृतित, नये

अकृतितवाला (सुर ३, ३६) ।

किस्सलय पुन [किस्सलय] १ नूतन अकुर

(था २०) । २ कोमल पत्ता (जी ६),

'सन्धोवि किस्सलोअणुअणमपारो अणतपो

अणमो' (पणह १) । 'माला की [माला]

छन्द-विशेष (मजि १६) ।

किस्सा देखो कासा (हे १, १२७) ।

किस्साण पुं [कृशान] १ अग्नि, वहि, धाय ।

२ वृक्ष-विशेष, चित्रक वृक्ष । ३ तीन की

लंबाई (हे १, १२८, पत्र) ।

किस्सि स्त्री [कृपि] लोती, चास (विसे १६१५;

सुर १५, २००, प्राप्) ।

किस्सिअ वि [कृशित] दुर्बलता प्राप्त, कुराता-

युक्त (या ४०; वजा ४०) ।

किस्सिअ वि [कृपित] १ निलखित, रेखा

किमा हुआ । २ जोता हुआ, छटा । ३ लीना

हुआ (हे १, १२८) ।

किस्सीवल पुं [कृपीवल] कर्पक, किसान;

'पाय परस घनं भस्सवि किस्सीवा पुंवि'

(आ १६) ।

किस्सो पुं [किशोर] बाल्यावस्था के बाद की

अवस्थावाला बालक, 'सीटविस्सोवह गुहायो

निग्गमो' (सुपा ५४१) ।

किस्सोरी स्त्री [किशोरी] युवावस्था, प्रविवाहिता

युवती (शाया १, ६) ।

किस्स देखो किल्लिस = किशू । संकृ. किस्स-

ह्वा (सूत्र १, ३, २) ।

किह् देखो कहुं (भावा, कुमा; याप ३, २;

विहं) शाया १, १७) ।

कीअ देखो कीव (पत्र; प्राप्) ।

कीइस् वि [कीटश] कैसा, किस तरह का

(स १४०) ।

कीकस् पुं [कीकश] १ कृमि-जन्तु-विशेष ।

२ न. हड्डी, हाड । ३ वि. कठिन, कठोर

(राज) ।

कीकअ देखो कीयन (वेणो १७७) ।

कीड देखो किङ्ग = कीड । भवि, कीडिस् (वि

३२६) ।

कीड पुं [कीट] १ कीडा, छुद जन्तु (जव) ।

२ कीट-विशेष, अनुत्पिन्न जन्तु की एक

जाति (उत्त २) ।

कीडइय वि [कीटयन्] कीडावाला, कीटक-

युक्त (गड) ।

कीडण न [कीडन] खेल, क्रीडा (सुर १,

११८) ।

कीडय पु [कीटक] देखो कीड = कीट (नाट

सुपा ३७०) ।

कीडय न [कीटज] कीडे के तन्तु से उत्पन्न

होनेवाला वस्त्र, वस्त्र-विशेष (पणु) ।

कीडा देखो किङ्गा (सुर ३, ११६; उवा) ।

कीडाविषा देखो किङ्गाविषा (राज) ।

कीडिया स्त्री [कीटिका] पिपीलिका, चींटी

(सुर १०, १९६) ।

कीडी स्त्री [कीटी] ऊपर देखो (उप १४७ टी-

दे २, ३) ।

कीण सक [की] सरीसृप, मोल लेना ।

बीणह, कीणह (पत्र) । भवि, कीणिस्

(वि ५११; ५३४) ।

कीणारस पुं [कीताश] दम, जन (पाम; सुपा

१८३) । 'विह' 'युह' मृग, मीत (उप

१३६ टी) ।

कीदिस (शी) देखो कीरिस (प्राक ८२) ।

कीय वि [कीत] १ सरीसृप हुआ, मोल लिया

हुआ (यम ३६; पणह २, १; सुपा ३४५) ।

२ जैन साधुको के लिए निष्ठा का एक दोष

(ठा ३, ४) । ३ न. वय, सरीसृप (दस ३,

सुपा ३, ६) । 'कट', 'गड वि [कृत] १

मूल्य देकर लिया हुआ (यह १) । २ साधु

के लिए मोल से बीना हुआ, जैन साधु के

लिए निष्ठा-दोष-युक्त वस्तु (वि ३३०) ।

कीयग पु [कीचक] विरट देश के राजा का माला, जिसको भीम ने मारा था (उप ६४८ टी)। 'नवमं दूय विराडनयर्', तत्पथ सुमुं कि (७ की) यगं भाउमयसमग' (छाया १, १६—पत्र २०६)।

कीया की [कीरा] नयन तारा, 'भरकतम-सारकवितनयणकीयरासिवन्ने' (छाया १, १ टी—पथ ६)।

कीर पु [दे. कीर] शुक, सोता, मुग्गा (दे २, २१, उर १ १४)।

कीर पु [कीर] १ देश विशेष, बारमोर देश। २ वि. बारमोर देश संबन्धी। ३ वि. बारमोर देश में उत्पन्न (विंते ४६४ टी)।

कीरंत } देलो कर = क।
कीरमाण }

कीरल पु [कीरल] देश-विशेष (पठम ६८, ६४)।

कीरिस देलो केरिस (गा ३७४, मा ४)।

कीरी की [कीरी] लिपि-विशेष, कीर देश की लिपि (विन ४६४ टी)।

कील मक [कीडू] कीडा करना, सेतना। कीलइ (प्राप्त)। बहः कीलंत, कीलमाण (सुर १, १२१, पि २४०)। छहः कीलेत्ता, कीलजग (सुर १, ११७, पि २४०)।

कील वि [दे] स्तोत्र, भण्य, बोडा (दे २, २१)।

कील देवा ग्रील (वाप)।

कील पुन [दे कील] बंद, गवा (मूय १, ४, १, ६)।

कीलग म [कीलग] कीन से भयन, सीने में नियंत्रण, कणिमण्णिवीसण्णुदुक्कं विम्वरिय पुनविदेवीए' (मोह २०)।

कीलग म [कीलग] कीडा, खेल (मीप)। 'याहं की [धानी] कालर की खेल-नूद बरनेवानो वार्द' (छाया १, १)।

कीलगअ न [कीलगअ] किलीना (प्रति २४२)।

कीलगिआ १ की [दे] रम्या, गती (दे २, कीलगो } ३१)।

कीला की [दे] १ नर-नपू दुर्गाहिन (दे २, ३१)।

कीला की [कीला] मुलत समय म बिचा जावा हत्य-कारण विशेष (दे २, ६४)।

कीला की [कीडा] सेर, कोउन (मुपा ३५८, सुर १, ११७)। 'वास पु [वास] कोडा करने का स्थान (इत)।

कीलाल न [कीलाल] रविर, धून, रक्त (उप ८६, पाप)।

कीलालिअ वि [कीगालि] चरि-मुक्त, सुनवाना (गउड)।

कलयग न [कौडन] खेल करना (छाया १, २)।

कीलायगय न [कीडनक] किलीना (निर १, १)।

कलिअ न [कीडित] कीडा, खण, कोउन (सम १३, स २४१)।

कीलिअ वि [कीलिअ] कूटा ओका 'हृषा, 'लिहियव कीनियव' (महा, मुपा २५४)।

कीलिआ स्त्री [कीलिका] १ छोटा कूटा, कूटी (कम्म १, ३६)। २ शरीर संतुलन-विशेष, शरीर का एक प्रकार का बाधा, जिसमें हृदिवा केवन कूटी से बँधी हुई हा ऐमा शरीर-कवचन (सम १४६, कम्म १, ३६)।

कीन पु [कीन] १ मुसुक (इह ४)। २ वि. मातर, मपीर (सुर २, १४, छाया १, १)।

कीन पु [दे कीन] पति विशेष (पणह १, १—पत्र ८)।

कीस वि [कीडह] कैमा, विन तरह का (भाग, पणह १४)।

कीस वि [किंस्व] कीन स्वभाववाना, वैस स्वभाव का (मा)।

कीस म [कस्मान्] क्या, जिस छ, किम बाराए से ? (उर, हे २, ६८)।

कीस देवा सिलिम्म। कीसवि (उत १६, १३, वे ३३)। बहः कीसंत (वि ८३)।

कु म [कु] १ भय, छोटा। २ निषिद्ध निरा-स्थि। ३ कुलित, निन्दित (ह २, २१७, से १, ७६ सम्म १)। ४ विशेष, ज्यादा (छाया १ १४)। 'उरिम पुं [पुरुष] सराव मन्थी दुर्जन (पि १२, ३३)। 'वर वि [वर] सराव पान चनवाना, सराव-रहित (छाया)। 'डह पुं [दण्ड] पारा रहित, रजिवा शान्त भाव बाध का हाना है ऐमा कपुगु पाव (पणह १, ३)। 'डहिम वि [दण्डिम] दाउ दर दाँना हृषा इम्य

(विपा १, ३)। 'विस्थ न [तीर्थ] १ जलाशय में उतरने का सराव मानं (प्रासू ६०)। २ दूषित दर्शन (सम १, १, १)। ३ 'तित्थि वि [तीर्थिय] दूषित मत का अनुयायी (कुमा)। 'दहिम देखो डहिम (छाया १, १—पत्र ३७)। 'दंसण न [दर्शन] दुष्ट मत, दूषित धर्म (पणह २)। 'डमणि वि [दर्शनिन्] १ दुष्ट दार्शनिक। २ दूषित मत का अनुयायी (या ६)। 'दिट्ठि स्त्री [ट्टि] १ कुलित दर्शन (उत २८)। २ दूषित मत का अनुयायी (धर्म २)। 'दिट्ठिय वि [ट्टिय] दुष्ट दर्शन का अनुयायी, मिथ्यावादी (पठम ३०, ४४)। 'प्यय-यण न [प्रयचन] १ दूषित शान्त। २ वि दूषित सिद्धांत को माननेवाला (मणु)। 'प्यावयणिय वि [प्रावचनिक] १ दूषित सिद्धांत का अनुसरण करनेवाला (सम १, २, २)। २ दूषित भागम-संबन्धी (पनुग्रान) (मणु)। 'भस न [भक्त] सराव भोजन (पठम २०, १६६)। 'मार पु [मार] १ कुलित मार (सम २, २)। २ मर्याद मार, मुष्ट-आय बरनेवाना ताडन (छाया १, १४)। 'रहा स्त्री [रण्डा] रोंड, विषवा (या १६)। 'र्य, 'रय न [रूप] १ सरान रूप (उप ३६२ टी, पणह १, ४)। २ माया-विशेष (मग १२, ४)। 'लिंग न [सिङ्ग] १ कुलित भेष (सब)। २ पुं. कीट कीट-शुद्ध जन्तु (विदे १७५४)। ३ वि. कुलीन, दूषित धर्म का अनुयायी (प्रायम)। 'लिंगि पुं [सिङ्गिन्] १ कीट कीट-शुद्ध जन्तु (मुपा ७४८)। २ वि. कुलीन, मर्याद धर्म का अनुयायी (पणह १, २)। 'यय न [पर] सराव शन्य

'यो माहइ दूंसडा, बयणएरयाई विरिहाकराई।

जो मंत्रिजण कुचय, मप्रय सुदरं दे' (वज्रा ६)।

'जियण पुं [जियण] कुलित विचार (मुपा ४४)। 'उरिम देयो 'उरिम (पठम ६२ ४४)। 'संसगण पुं [संसग] सराव धर्म, दुर्जन-मुलति (धर्म ३)। 'मरय पुंन [शान्क] कुलित शान्त, भगवत-धर्मांग विद्वान् 'ईकरययाया मन्थे मृगया' (निह

११)। 'समय पुं' [ममय] १ प्रमात-
प्रणीत शास्त्र (सम्प १)। २ वि. कुतोष्णिक,
कुशाक्ष वा प्रणीत धीर धनुषायी (सम्प १)।
'सह्यि वि' [शालिक] जिसके भीतर
खराब शय्य घुस गया हो वह (पएह २, ४)।
'सील न' [शील] १ खराब स्वभाव
(धावा)। २ अश्रद्धापूर्व, ध्वनिचार (अ ४,
४)। ३ वि. जिसका प्राचरण अच्छा न हो
वह, दुराचारी (शेष ७६३)। ४ अश्रद्धाचारी,
ध्वनिचारी (अ ५, ३)। 'सुमिण पुंन'
[श्वधन] खराब स्वधन (था ६)। 'हण वि'
[धन] धन्य धनवाला, दरिद्र (पएह २,
१—पत्र १००)।

कु छी [कु] १ प्रथिबी, भूमि, 'कुसमयवि-
साछण' (सम्प १ टी—पत्र ११४ से १,
२६)। 'त्तिज न' [त्रिज] १ तीनों जगत्,
स्वर्ग, मर्त्य धीर पाताल लोक। २ तीन जगत्
में स्थित पदार्थ (शेष)। 'त्तिज वि' [त्रिज]
तीनों जगत् में उपस्थित वस्तु (भावम)।
'त्तिजायण पुन' [त्रिजायण] तीनों जगत्
के पदार्थ जहाँ मिल सके ऐसी दूकान (मग,
धामा १, १—पत्र ५१)। 'यलय न' [यलय]
धुँवी-मण्डल (था २४)।

कुअरी देखो कुओरी (वि २५१)।
कुअल देखो कुअलय (प्राप्र)।
कुओरी देखो कुमारी (गा २६८)।
कुइय वि [कुचित] सट्टा हुआ (पत्र ६२)।
कुइमाय वि [दि] स्तन, शुन (दे २, ४०)।
कुइय वि [कुचित] अक्षय्यनिष्ठ, क्षरित
(अ ६)।

कुइय वि [कुचित] कुट, कोर-मुक्त (मवि)।
कुइयण पु [कुचिर्ण] इस नाम का एक
गुप्तवि, एक गुरूप (विने ६३२)।

कुइअ पुन [कुतप] स्नेह पात्र, धी वीत
बैरह भले का समझे का पात्र-विशेष।
'कुनाई की ? (कु) उच्चाट (पाप्र) देखो
शुतुप।

कुउअ स्त्री [दि] गुन्धी-पात्र, गुन्धा (दे
२, १२)।

कुउय देखो कुउअ (पिड ५५०)।

कुउल न [दि] १ बीरी, माघ, दशरत्न ।

२ पहले हुए कपडे का प्रात भाग, अश्वत्त
(दे २, ३८)।

कुऊहल न [कुतुहल] १ अपूर्व वस्तु देखने
की लासला—उत्सुकता। २ कोनक, परि
हास (दे १, ११७, कुमा)।

कुओ म [कुत] कहाँ से ? (पट्ट)। 'इ
अ [चित] कहे से, किसी से (स १८५)।
'वि [अवि] कहे से भी (काल)।

कुआरी स्त्री [कुमारी] धम्मरति विशेष,
कुआरपाठा, धीकुवार, धीकुवार (था २०;
जी १०)।

कुऊण न [दि] १ कोनक, दत्त-कमल (पएह
१—पत्र ४०)। २ पुं. शुद्ध जल विशेष,
चतुरिन्द्रिय पीडे की एक जाति (उत्त ३६)।

कुऊण पुं [कोऊण] देश-विशेष (मधु, साधं
३४)।

कुऊण देखो कुऊण (मिरि २८६)।

कुऊम न [कुऊम] केसर, सुगन्धी द्रव्य-
विशेष (कुमा, था १८)।

कुंग पुं [कुङ्ग] देश विशेष (मवि)।

कुच सक [कुच] १ जाना, चलना। २
प्रव. संकुचित होता। ३ टेढ़ा चलना
(कुमा, गउउ)।

कुंच पुं [कीञ्च] १ पत्ति विशेष (पएह १,
१, उप ५ २०८; उर १, १४)। २ दत्त
नाम का एक प्रसुर (पाप्र)। ३ इस नाम
का एक प्रवाय देश। ४ वि. उससे निवासी
लोग (पत्र २७४)। 'रया स्त्री [रया]
हलङ्कारण की इस नाम की एक नदी
(पत्रम ४२, १५)। 'वीरग न [वीरक]
एक प्रकार का जहाज (निद्र १६)। 'रि
पुं [रि] वातिविय, स्वन्द (पाप्र)। देखो
कोंच।

कुंचल न [दि] कुट्टन, नन्दी, वीर (दे २,
३६, पाप्र)।

कुचि वि [कुञ्चि] १ कुट्टन, वरु। २
मायसी, नपटी (वन १)।

कुचिगा देखो कोचिगा।

कुचिय वि [कुञ्चित] १ सङ्कुचित (गुमा
५८)। २ नएक के धारारोमा, मानाहनि
(वीर अ २)। ३ कुट्टन, वरु (वन १)।

कुचिय पुं [कुञ्चिक] इस नाम का एक जैन
उपासक (अत १३३)।

कुचिया देखो कोचिगा। रुई से बरा हुआ
पहनने का एक प्रकार का कपडा (जीत)।

कुचिया स्त्री [कुञ्चिका] कुञ्जी, ताली (पिड
३५६)।

कुजर पुं [कुअर] हस्ती, हाथी (हे १, ६६
पाप्र)। 'पुर न [पुर] नगर विशेष,
हस्तिनापुर (पत्रम ६५, ३४)। 'सेणा स्त्री
[सेना] ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती को एक रानी
(उत्त २६)। 'रत्त न [वर्त] नगर-
विशेष (मुर ३, ८८)।

कुंड वि [कुण्ट] १ कुञ्ज, वामन (भावा)।
२ हाथ-रहित, हस्त हीन (पत्र ११०; निद्र
११; भावा)।

कुंडलविटल न [दि] १ मन्-तन्नादि का प्रयोग,
पालएड विशेष (भावम)। २ वि. मन्-
तन्नादि से प्राजीविका चलानेवाला (भाक्)।
कुंडार वि [दि] स्नान, सूता, मलिन (दे २,
४०)।

कुंदि स्त्री [दि] १ गठरी, गंठ (दे २, ३४)।
२ शयन विशेष, एक प्रकार का बीजार
'मुसमुसहलर्वालकुंदिदुहालयमुसमुसाए'
(गुमा ५२६)।

कुंदि वि [कुण्ट] १ मन्द, शाली (था १६)।
२ मूर्ख, बुद्धि रहित (भावा)।

कुंटी स्त्री [दि] संकती, बीनटा (पत्रम ११४)।

कुंड न [कुण्ड] १ कुंडा, पात्र विशेष (पट्ट)।
२ जलसय-विशेष (एरि)। ३ इस नाम
का एक सरोवर (ही ३४)। ४ ग्राम,
प्रदेश, 'विसमएणुइयारिणोतिरिवरेमगा देरा'
(कप)। 'कोलिय पु [कोलिङ्ग] एक जैन
उपासक (उवा)। 'माग पुं [माग]
मगय देश का एक गाँव (कप, पत्रम २,
२६)। 'धारि वि [धारि] भाग्यारो
(कप)। 'पुर न [पुर] शाय-विशेष (कप)।
कुंड न [दि] जग मेले का जौल बाएर,
जो बंध का बरा हुआ होता है (दे २, ३३,
४, ४५)।

कुंडग पुंन [कुण्डक] १ धान का दिगबा
(उत्त १, २. धापा २, १, ८, ९)। २
पावत से मिश्रित धूमा (उत्त १, ५)।

हुंडभी ली [दे. कुंडभी] छोटी पताका (भायम)।

हुंडमोअ पुंन [कुण्डमोद] हाथी के पैर की माहतिवाला मिट्टी का एक तरह का पात्र (देन ६, ५१)।

हुंडल पुंन [कुण्डल] १ एक देव-विमान (देवन्द १४५)। २ सप्त-विरोध, 'पुरिमयू' या निविहलिक सप्त (ससोष ५७)।

हुंडल पुंन [कुण्डल] १ बाल का घामपण (मग; बीन)। २ पुं. विदमं देश के एक राजा का नाम (पउम ३०, ७७)। ३ द्वीप-विरोध। ४ समुद्र-विरोध। ५ देव-विरोध (जीव ३)। ६ पर्वत-विरोध (ठा १०)। ७ गोल आकार (मुपा ६२)। *भद पुं [भद्र] कुण्डल द्वीप का एक अधिष्ठाया देव (जीव ३)। *मंडिअ वि [मण्डित] १ कुण्डल से विमूषित। २ विदमं देश का इस नाम का एक राजा (पउम ३०, ७५)। *महाभद पुं [महाभद्र] देव विरोध (जीव ३)। *महायद पुं [महावर] कुण्डलवर समुद्र का अधिष्ठाता देव (सुगज १६)। *वर पुं [वर] १ द्वीप-विरोध। २ समुद्र-विरोध। ३ देव विरोध (जीव ३)। ४ पर्वत-विरोध (ठा ३, ४)। *वरभद पुं [वरभद्र] कुण्डलवर द्वीप का एक अधिष्ठाया देव (जीव ३)। *वरमहाभद पुं [वरमहाभद्र] कुण्डलवर द्वीप का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३)। *वरोभास पुं [वराय-भास] १ द्वीप-विरोध। २ समुद्र-विरोध (जीव ३)। *वरोभासभद पुं [वराय-भासभद्र] देवी प्रतीक धर्म (जीव ३)। *वरोभासमहावर पुं [वराय-भासमहावर] कुण्डलवर द्वीप का अधिष्ठाता देव (जीव ३)। *वरोभासमहाभद पुं [वराय-भासमहाभद्र] देवी प्रतीक धर्म (जीव ३)। *वरोभासमहावर पुं [वराय-भासमहावर] कुण्डलवर द्वीप का अधिष्ठाता देव (जीव ३)। *वरोभासमहाभद पुं [वराय-भासमहाभद्र] देवी प्रतीक धर्म (जीव ३)।

हुंडल वि [कुण्डलवि] कुण्डलवाला (भाय ३३)।

हुंडल वि [कुण्डलवि] वरुंन, गोल आकारवाला (मुपा ६२; कपू)।

हुंडल वि [कुण्डलवि] छन्द विरोध (पिंग)।

हुंडलोद पुं [कुण्डलोद] इस नाम का एक समुद्र (सुगज १६)।

हुंडाम पुं [कुण्डाम] सनिवेश विरोध, ग्राम-विरोध (भायम)।

हुंडि देखो कुंडी (महा)।

हुंडिअ पुं [द] ग्राम का अधिपति, गांव का मुखिया (दे २, ३७)।

हुंडिअपसयन न [दे] ब्राह्मण विट्, ब्राह्मण की नोकरी, ब्राह्मण की सेवा (दे २, ४३)।

हुंडिआ } ली [कुण्डिआ] नीचे देखो कुंडिया } (रमा, धनु ५; मग, उपाया २, ५)।

हुडिण न [कुण्डिण] विदमं देश का एक नगर (सुग ४८)।

हुंडी ली [कुण्डी] १ नृएडा, पात्र-विरोध, 'तिसिमहोमूमीए ठविया हुंडी य तेल्लाडि-पुल्ला' (मुपा २६६)। २ कनएडल, संन्यासी का जल पात्र (महा)।

हुंड देखो हुंड (मुपा ४२२)।

हुंडय न [दे] १ कुन्नी, कुन्हा। २ द्योडा बरतन (दे २, ६३)।

हुन पुं [दे] शुक, तोता, सुग्गा (दे २, २१)।

हुन पुं [हुन्व] १ हथियार-विरोध, आला (पह १, १, शीप)। २ राम के एक मुष्ट का नाम (पउम ५६, ३८)।

हुनल पुं [हुन्तल] १ बैरा, बाल (सुर १, १, मुगा ६१; २००)। २ देश विरोध (मुगा ६१, ठव ४१५)। *हार पुं [हार] धम्मिल्ल, सयत रेख, बांधे हुए बाल (पाय)।

हुनल पुं [दे] सातवाहन, नृप-विरोध (दे २, ३६)।

हुनला ली [हुन्तला] इस नाम की एक रानी (देन)।

हुनला ली [दे] करोटिना, परोखने का एक उपकरण (दे २, ३८)।

हुनली ली [हुन्तली] भुन्त्य देश की रहने-वाली ली (कपू)।

हुनारुति न [हुन्तारुति] नरें की सहाई (मिर १०३२)।

हुंती ली [दे] मंजरी, वीर (दे २, ३४)।

हुंती ली [हुन्ती] पाण्डवों की माता का नाम (उप ६४८)। *विहार पुं [विहार] नासिक-नगर का एक जैन मन्दिर, जिसका जोषोंद्वार कुन्तीनी ने किया था (ली २८)।

हुंतीपोट्टय वि [दे] चतुकोण, चार कोनवाला, चौकोर (दे २, ४३)।

हुंथु पुं [हुन्थु] १ एक जिन-देव, इस ध्वन-खण्डिणी काल में उत्पन्न सत्तएवर्वा तीर्थंकर और छठवां चक्रवर्ती राजा (सम ४३; पडि)। २ हरिश्चंद्र का एक राजा (पउम २२, ६८)। ३ चमरेड की हस्त-सेना का अधिपति देव-विरोध (ठा ५, १—पउम ३०२)। ४ एक बुद्ध जन्तु, श्रीमद्वय जन्तु की एक जाति (उत्त ३६, जी १७)।

हुंन पुं [हुन्न] १ पुण्य-वृक्ष विरोध (मं २)। २ व. पुन्य-विरोध, हुन्न का वृक्ष (सुर २, ७६; उपाया १, १)। ३ विद्या-धरो का एक नगर (इग)। ४ पुंन. छन्द-विरोध (पिंग)।

हुंनय वि [दे] कुरा, दुर्बल (दे २, ३७)।

हुंन ली [हुन्ना] एक इन्द्राणी, मानिमद्र इन्द्र की पटरानी (इग)।

हुंनरी न [दे] विन्मी-कल, हुन्गन का कल (दे २, ३६)।

हुंनुक पुं [हुन्नुक] वनरात्रि-विरोध (पएण १—पउम ४१)।

हुंनुकरक पुं [हुन्नुकरक] सुगमि पदार्थ विरोध (उपाया १, १—पउम ४१, सम १९७)।

हुंनुदुअ पुं [दे] पति-विरोध, उद्धव, उल्लू (पाय)।

हुंनर पुं [दे] छोटी मछली (दे २, ३२)।

हुंनय पुंन [हुंनय] वल वरैए रपने का पात्र-विरोध (रएण ३१)।

हुंनल पुंन [हुंनल, हुंनल] १ इस नाम का एक नगर। २ सुगुन, कन्ती, कन्तिरा (दे १, २६ मुगा, पउ)।

हुंनर [दे] देगो हुंनर (पाय)।

हुंन पुं [हुंन] १-२ गाठ, धरती धीर एर भी पाइए की नाव (मल १२१, तंडु २६)। ४ व्यापिक-श्रमिक एर राशि (पिपार १०६)। ५ एक नाव (पउम ४६)।

कुंभ पु [कुम्भ] १ स्वनाम प्रसिद्ध एक राजा भगवान् मल्लिनाथ का पिता (सम १५१ पत्रम २० ४५) । २ स्वनाम रचात जैन महर्षि शठारहवें तीर्थंकर के प्रथम शिष्य (सम १५२) । ३ कुम्भस्त्राण का एक पुत्र (मे १२ २५) । ४ एक विद्याधर सुभट का नाम (पत्रम १० १३) । ५ परमाध्यात्मिक देवों की एक जाति (सम २६) । ६ कलश घडा (महा कुमा) । ७ हाथी का गण्ड स्थान (कुमा) । ८ धाय मापन का एक परिमाण (प्राण) । ९ तलत का उपकरण (चित्र १) । १० ललाट आज स्थल (पत्र २) । ११ अण्ण पु [कुण] रावण के छोटे भाई का नाम (१५, ११) । आर पु [कार] कुम्हार घडा भादि मिट्टी का बरतन बगान वाला (हे १ ८) । डर न [पु] नगर विशेष (वस) । गार देखो आर (महा) । गग न [ग] मगध देश प्रसिद्ध एक परिमाण (राया १ ८—पत्र १२५) । सेण पु [सेन] उत्तिपिण्णी बाल के प्रथम तीर्थंकर के प्रथम शिष्य का नाम (सिंह) ।

कुम्भड न [कुम्भाण्ड] फल विशेष मोहँटा कुम्भडा (वसू) ।

कुम्भार पु [कुम्भकार] कुम्हार घडा भादि मिट्टी का बरतन बगानवाला (हे १, ८) । पाय पु [पाक] कुम्हार का बरतन पकाने का स्थान (ठा ८) ।

कुम्भि पु [कुम्भिन] १ हस्तो हाथी (गण) । २ गुरुत्व विशेष एक प्रकार का घट पुरुष (पत्र १२७) ।

कुम्भिक देखा कुम्भिय (राय ३७) ।

कुम्भिणास्त्री [दे] जन का गर्त (दे २, ३८) ।

कुम्भिय वि [कुम्भिय] गुम्भ-परिमाणवाला (ठा ४ २) ।

कुम्भिल पु [दे कुम्भिल] १ चोर, स्तेन (दे २ ६२, विज ५६) । २ रिशुन, डुबल (दे २ ६२) ।

यमिल्लियि [दे] सोने गोम (दे २, ३६) ।

कुंभी लो [कुम्भी] १ पात्र विशेष घडे के भागवाला छोटा बौध (यम १२५) । २ कुंभ घडा (ज ३) । पाग पु [पात्र] १

कुम्भी म पकना (पणह २ ५) । २ तरक की एक प्रकार की यातना (सुभ १, १ १) ।

कुम्भी स्त्री [कुम्भाण्डी] कोहडा का गाछ चलिघो कुम्भीफल दतुरासु (गडड) ।

कुम्भी स्त्री [दे] केश रचना केश-सयम (दे २ ३४) ।

कुम्भील पु [कुम्भील] जलवर प्राणि विशेष नक मगर (चाह ६४) ।

कुम्भभन पु [कुम्भोद्भव] ऋषि विशेष भगवत् ऋषि (कपू) ।

कुम्भिन वि [कुम्भिन] खराब कर्म करने वाला (सुभ १ ७ १८) ।

कुकुला स्त्री [दे] नवोडा दुबहिन (दे २ ३३) ।

कुकुल [दे] देखो कुम्कुल (वस ५ १३४) ।

कुकुहाडय न [कुकुहायित] चबते समय का शब्द विशेष (सदु) ।

कुकुल पु [कुकुल] बरीपाणि बडे की भाग (पणह १ १) ।

कुक्क देखो कोकक । कुक्क [पि १६७ ४८८] ।

कुक्क पु [दे] कुत्ता कुक्कुर कुक्केहि कुक्काहि अ कुक्कमि (गुच्छ ३६) ।

कुक्कयय न [दे] शमारण विशप मनु अनणि अलकार कुक्कयय मे पयच्छाहि (सुभ १ ४, २ ७) । देखो कुम्कुडय ।

कुकी स्त्री [दे] कुत्ती कुक्कुटी (गुच्छ ३६) ।

कुम्कुज वि [कुम्कुज] भांड की तरह शरीर के बगवना की बुचेष्टा करनेवाला (यम २, पत्र ६) ।

कुम्कुभ न [कीकुभ] बुचेष्टा, नामोल्लाव यम विचार (पत्रम ११ ६७ आवा) ।

कुम्कुभ वि [कुकुन] धात्रदन करनेवाला (उत्तर २१) ।

कुम्कुआ स्त्री [कुचकुचा] भवस्यदन धारण राय रस कर कुत्ता राना (गृह ६) ।

कुम्कुडय वि [कीकुचक] नड की तरह बुचेष्टा करनेवाला नाम चेष्टा करनेवाला (यम शीघ्र) ।

कुम्कुडय न [कीकुच] नाम-बुचेष्टा, भात्ररण व मय्यादायात सविचारकरणिमह भणिय । कुक्कुडय (सुभा ५ ६ पडि) ।

कुम्कुड पु [कुकुट] चतुरिन्द्रिय वस्तु की एक जाति (उत्तर ३६ १४८) ।

कुम्कुड [कुम्कुट] १ कुक्कुट मुर्गा (गा ५८२ उवा) । २ वनस्पति विशप (भग १२) । ३ विद्या द्वारा विद्या जाता हस्त प्रयोग विशप (वव १) । मसय [मास क] १ मुर्गा का मास । २ बीजपूरक वनस्पति का गुदा (भग ५५) ।

कुम्कुड वि [दे] मत जनस (दे २ ३७) ।

कुम्कुडय न [कुक्कुटक] देखो कुक्कयय (सुभ १ ४ २ ७ टी) ।

कुम्कुडिया स्त्री [कुम्कुटिका] 'टी' कुम्कुडी । कुक्कुटी मुर्गा (गाया १ ३ विषा १ ३) ।

कुम्कुडा स्त्री [कुम्कुनी] माया कप (विज २६७) ।

कुम्कुडेसरन [कुक्कुदेसर] तीर्थ विशप (ती १६) ।

कुम्कुड पु [कुम्कुड] कुत्ता श्वान (पत्रम ६४, ८०, सुभा २७७) ।

कुम्कुडय पु [दे] निरर समूह (दे २ १३) ।

कुम्कुस पु [दे] धान्य फादि का छितना भूसा (दे २ ३६ वस ५ १ ३४) ।

कुम्कुड पु [कुम्कुभ] पक्षि विशप (गडड) ।

कुम्कुडाइय [दे] चारते समय का शब्द का शब्द विशप (सदु ५१) ।

कुक्कि [दे कुक्कि] देखो कुक्कि (दे २, ३४ शीघ्र स्वप्न ६१ वस ३३) ।

कुम्किभरि देखो कुम्किभरि (यमवि १४६) ।

कुक्किअअ देखो कुक्किअअ (संति ६) ।

कुग्गाह पु [कुग्गाह] १ कदाग्र हठ (उप ८३३ टी) । २ जल वस्तु विशप कुग्गाह गाहल्लवणवसुलो (सुभा ६२६) ।

कुच पु [कुच] स्तन धन (कुगा) ।

कुचोज न [कुचोच] बुवा (यमस ११७५) ।

कुच पु [कुच] कपो वान सवारते का उप गरण (उत्तर २२, ३०) ।

कुच न [कुच] १ दाढ़ी-मूँछ (यम पमि २१२) । २ गुरु विशेष (पणह २ ३) देखो कुचगा ।

कुचधरा स्त्री [कुचधरा] दाढ़ी-मूँछ धारण करनेवाला (यम ८३ भा) ।

कुशग वि [कीर्यक] शर नामक गाछ वा बना
हुमा (प्रापा २, २ ३ १४)।

कुशग } देलो कुच (प्रापा २ २ ३
कुशग } बाल)। ३ कुँची, छुण निमित्त
तुलिका, जिनसे दीवाल म चूना लगाया जाना
है (उप पु ३४३ कुमा)।

कुशिय वि [कुशिक] बाही-मूँछवाला (बृह
१)।

कुच्छ सक [कुत्स] निन्दा करना धिक्कारना।
ह कुच्छ कुच्छगिज्ज (भा २७ परह १
३)।

कुच्छ पु [कुत्स] १ रुपि विरोध। २ गोल
विरोध 'चेरत्तम ए प्रजनिवभूदत्त कुच्छममु
त्तस (वप)।

कुच्छ देलो कुच्छ = कुत्स।

कुच्छग पु [कुत्सक] वनस्पति विरोध (सूय
२ २)।

कुच्छगिज्ज देलो कुच्छ = कुत्स म नमि
कुच्छणिन् साणाणं भनत्तणिज्ज हिं (भा
२७)।

कुच्छा की [कुत्सा] निन्दा, धृणा जुत्सा
(सोप ४४४ उप ३२० टी)।

कुच्छि पुंकी [कुच्छि] १ उर प (ह १
३५ उवा महा)। २ घटतालीस मयुन वा
मान (ज २)। ३ 'दिमि पु [कुच्छि] उर मं
उदान होनवाना कीना कीन्निप जन्तु विरोध
(परह १)। ४ धार कुं [धार] १ जहाज
वा नाम करनेवाला मीनर कुच्छिपावन्न
भासग भजसत्ताणावावाणिग्गा (आया १
८—वप १३३)। २ एक प्रकार का जहाज
का ध्यापरी (आया १ १६)। ३ पूर पु
[पूर] उदर-पूति (वप ४)। ४ वेयणा की
[वदना] उदर वा रोग विरोध (जीन ३)।
५ मूल पुन [शूल] रोग निरोध (आया १
१३ विपा १, १)।

कुच्छिभरि वि [कुच्छिभरि] भोसक, पट्ट
स्वार्थ हा विपचित्तुत्त (१ चिन्)।
भरि। (रंभा)।

कुच्छिमई की [द. कुच्छिमती] रनिणी
पाप-मत्तवा (द २ ४१ पड)।

कुच्छिमई (मा) देलो कुच्छिमई (अ
१०२)।

कुच्छिय वि [कुत्सिब] सारव, निन्त
गहिन (पना ७ मवि)।

कुच्छिह न [दे] १ वृत्ति वा विवर बाह वा
छिद (दे २, २४)। २ छिद, विवर (पाम)।

कुच्छेअ पु [कुच्छेअ] तलवार खड्ग
(दे १, १६१ पड)।

कुच पु [कुच] वृष, पेठ (ज २)।

कुचय पु [कुचय] चमारी कुमासोर (सूय
१ २, २)।

कुच वि [कुच] १ कुच कुच वा मन
(सुपा २ वप)। २ पुन पुन निरोध (पड)।

कुचय पु [कुच] १ वृच विरोध शयनिका
(पउम ४२ = कुमा)। २ न उच वृच वा
पुन वयेउ पुजयपपुण (ह १, १८१)।

कुचक स [कुच] भ्रम करना छुत्सा
करना। कुचक (ह ४ २१७ पड)।

कुट स [कुट] १ कूटना पीटना ताडन
करना। २ कटना, छेना। ३ गरम करना।

४ उगानम देना। मवि कुट्टस (पि ५२८)।
वह कुट्टि (सुर ११ १)। कवह कुट्टि

जिन, कुट्टिमाणा (सुपा ३४० प्राय ६६
राय)। सइ कुट्टिय (मग १४, ८)।

कुट पु [कुट] पडा कुम्भ (सूय २ ७)।

कुट पुन [कुट] १ कोट, तिसा दिग्गति कवा
आई कुट्टर भडा ठविग्गति (सुपा ५०३)।
२ नगर, गहर (सुर १५ ८१)। ३ बाल पु
[पाल] मोतराल नगर (सुर १५,
८१)।

कुट्टन न [कुट्टन] १ छैन कुल्लेन भन्न
(भाप)। २ कूटना, ताडना (ह ४ ४८८)।

कुट्टा का [कुट्टा] शरीरित पीसा (सूय
१ १२)।

कुट्टा का [कुट्टा] १ मूयन एक प्रकार
का मोटे लकने जिससे चावन घादि मर
क जाता है (बृह १)। २ कूटा कुट्टी
कुट्टिनी (रंभा)।

कुट्टरी की [कुट्टरी] चंदी पावती (दे २ ३३)।
कुट्टा का [कुट्टा] नीचे पावती (२ ३५)।

कुट्टाय पु [कुट्टाय] चमका मोपी (दे २, ३७)।
कुट्टि देलो कुट्ट = कुट्ट।

कुट्टि नगा दगा कोट्टिया (पन)।
कुट्टि [कुट्टि] देलो कोट्टिय (पाप)।

कुट्टी की [कुट्टिनी] कूटी, कूटी (वपू,
रंभा)।

कुट्टिम देखो कोट्टिम = कुट्टिम (मग ८ ६,
राय जीव ३)।

कुट्टिय वि [कुट्टिय] १ कूटा हुमा ताडित
(सुपा १५ उत १६)। २ छिन्न छेदिन
(बृह १)।

कुट्ट पुन [कुट्ट] १ पसारी के यह/ येची जाती
एक वस्तु कूट (विने २६३ परह २५)। २
रोग विरोध, कोड (वप ६)।

कुट्ट पु [कुट्ट] १ उदर, पट जहा विस
कुट्टय मतलुविसारमा। वेचा हाणिम मतेहि
(वपि)। २ कोठा कुट्टल धाप मरन वा
बडा भाजन (परह २, १)। ३ कुट्टि वि
[कुट्टि] एक बार जानने पर नहीं मूलन
वाला (परह २ १)। देलो कोट्ट, कोट्टा।

कुट्ट नि [कुट्ट] १ शपित भमियत। २ न
शाप भमियाल-शाप उट्ट कुट्ट वेहि पव्वना
भागया हथ (सुपा २५०)।

कुट्टग पुन [कुट्टग] शून धर (वन ५ १
२ २)।

कुट्टा की [कुट्टा] धमली, चिचा (बृह १)।

कुट्टि वि [कुट्टिम] कुट्ट रोगमाना (सुपा
२४३ ५७६)।

कुट्ट पु [कुट्ट] १ पडा कवा (दे २, १५
पा २१६ विने १४५६)। २ वरत। ३ भाषा
वगेरह वा बचन-व्यान (आया १, १—पन
६३)। ४ वृष व तदुपनिर्गममिप्या-
दगा (सुपा ५६२)। कट्ट पुं [कट्ट]
पात्र निरोध धरा के जैसा पात्र (द २
२०)। ५ दोहिया का [दोहिया] पडा भर
हुय धनवाली (पा ३१७)।

कुडगा पुन [कुडगा] १ कुञ्ज, निम्ब लडा
वगेरह वा दारा हुमा लान (पा ६८० हवा
१०५)। २ वन, जंगल (टा २०० टी)।
३ वन का जानी वन को बनी हुई छान
(बृह १)। ४ गहर कोटर (राज)। ५ रंश-
मल (आया १ ८ कमा)।

कुडगा पुन [कुडगा] लता-गुम लडा
वगेरह (दे २ ३७ मग पाप प)।

कुडगा की [कुडगा] लता-निरोध (मग २१,
७६)।

कुंडगी स्त्री [दे. कुटङ्गी] बंस की जाली,
एकपहरण निवडिया बंसकुंडगी (महा. पुर
१२, २००, उप पृ २८१) ।

कुडय देखो कुडय (महा. भा ६०६) ।
कुडग देखो कुड (आमन. सूत्र १, १२) ।
कुडभी स्त्री [कुटभी] छोटा पतला (सम
६०) ।

कुडय न [दे.] सता-गृह, सता से आच्छादित
घर, कुटीर, भोपडी (दे २, २७) ।

कुडय पुन [कुडय] वृक्ष-विशेष, कुरैया
(आमा १, १, परण १७, स ११४), 'कुडय
वत्त' (कुता) ।

कुडय पुं [कुडय] पनाज या अन्न नापने का
एक माप (आमा १, ७, उप पृ २७०) ।

कुडाल देखो कुडाल (ववा) ।
कुडिअ वि [दे.] कुञ्ज, वामन, नादा (पाम) ।
कुडिआ स्त्री [दे.] बाइ का विवर (दे २,
२४) ।

कुडिच्छ न [दे.] १ बाइ का छिद्र । २ कुटी,
भोपडी । ३ वि. द्रुति, छित (दे २, ६४) ।
कुडिल वि [कुटिल] वक्र, टेढ़ा (पुर १,
२०, २, ८६) ।

कुडिलविडल न [दे.] कुटिलविटल] हस्ति-
शिक्षा (राज) ।

कुडिल न [दे.] १ छिद्र, विवर (पाम) । २
वि. कुञ्ज, कुडवा (पाम) ।

कुडिलय वि [दे.] कुटिलय] कुटिल, टेढ़ा,
वक्र (दे २, ४०, अवि) ।

कुडिलय देखो कुडिलय (राज) ।
कुडी स्त्री [कुटी] लोग गृह, भोपडी, कुटीर
(मुगा १२०, ववा ६४) ।

कुडीर न [कुटीर] भोपडी, कुटी (हे ४,
३६४, परम ३३, ८४) ।

कुडीर न [दे.] बाइ का छिद्र (दे २, २४) ।
कुडुंग पुं [दे.] लतागुह, लतामी से बना हुआ
घर (पट्ट, गा १७४, २३२ अ) ।

कुडुंय न [कुटुम्ब] परिवार, परिवार, स्वजन-
बर्ग (उवा महा, माप्र १६७) ।

कुडुंय पुं [कुटुम्ब] १ वनसति-विशेष,
पनिमा (परण १—पत्र ४०) । २ वन-
विशेष 'पल्लवमण्डप' से बँदीनी ॥ कुडुंय'
(उत ३६, २८ वा) ।

कुडुंयि वि [कुटुम्बिन, कं.] १ कुटुम्ब-
कुडुंयि } युक्त, गृहस्थ । २ कुनवेवाला,
कर्णक (गडड) । ३ सम्बन्धी, 'सोभाएलसमुद-
एण आणसकुडुंयि' (वप) ।

कुडुंयीअ न [दे.] सुरत, समीप, मैथुन
(पट्ट) ।

कुडुंभग पुं [दे.] जल-महक, पानी का
मेढक (निहू १) ।

कुडुंय पुं [दे.] लता गृह (पट्ट) ।

कुडुंयिअ न [दे.] सुरत, समीप, मैथुन (दे
२, ४१) ।

कुडुंयी (अप) स्त्री [कुटी] कुटिया, भोपडी
(कुता) ।

कुडुं पुन [कुडुं] १ भित्त, भीत (परम
६८, ६, हे २, ७८) ।

'अग्नं यथोक्तिं यज यथोक्तिं
अज यथोक्तिं गण्ठिरीए ।
पदमन्विष्य विमहदे कुडुं सेहाहि
चित्तमितो (गा २०८) ।

कुडुं न [दे.] भारवर्ग, कौमुक, कुतुहल (दे २,
३३, पाम, पट्ट, हे २, १७४) ।

कुडुंयिलोई [दे.] गृह-गोषा, छिपकली (दे २,
१६) ।

कुडुंलेवणी स्त्री [दे.] कुडुंलेपनी] गुधा,
पूना, लकी, लटिका (दे २, ४२) ।

कुडुंल न [दे.] हल के ऊपर का विस्तृत घास
(ववा) ।

कुड पुन [दे.] १ डुराई हुई वस्तु की लोच
में जाना (दे २, ६२, मुगा ५०३) । २
छोटी हुई चीज को छुनवेवाला, बापस
लेनेवाला (दे २, ६२) ।

कुडार पुं [कुडार] कुत्तावा, करना (हे १,
१६६, पट्ट) ।

कुडाय न [दे.] अनुमान, गोखे जाना (जिने
१४२६ टी) ।

कुडिय वि [दे.] बूड, भूत, वेधमक, 'दुयति
नेजराइ गुणो पुणो दुडियगुणो' (पुर ३,
१४२) ।

कुडिय वि [दे.] जिखे मान को चोरी हो
गई हो वह (सुख २, २१) ।

कुण सव [कुं] बरना, बाना। गुणइ,
कुणइ, कुण (आ, महा, मुगा ३२०) ।

वह कुणत, कुणमाण (गा १६५, मुगा
३६०, ११३, भावा) ।

कुणक पुं [कुणक] वनसति-विशेष (परण
१—पत्र ३५) ।

कुडंय न [कुणय] १ मुरदा, मृत-शरीर (पाम,
गडड) । २ वि. दुर्गन्धी (हे १, २३१) ।

कुणाल पुं. व. [कुणाल] १ देश विशेष
(आमा १, ८, उप ६८६ टी) । २ प्रसिद्ध
महाराज भरतों का एक पुत्र (जिसे ८६१) ।

'नयर न [नगर] एक शहर, उज्जैन,
'भासो कुणालनय' (सभा) ।

कुणाला स्त्री [कुणाल] इस नाम की एक
नगरी (मुगा १०३) ।

कुणि पुं [कुणि] १ हस्त-विक्षल, हँड,
कुणिय] हाथ-कंटा मनुष्य (परम २, ७७) ।

२ जन्म से ही जिसका एक हाथ छोटा हो
वह । ३ जिसका एक पांव-छोटा हो वह,
खम्ब (परह २, ५—पत्र ५०, भावा) ।

कुणिया स्त्री [दे.] वृत्ति-विवर, बाइ का छिद्र
(दे २, २४) ।

कुणिय पुन [दे.] कुणय] १ शव, मृतक,
मुरदा (परह २, ३) । २ मात (आ ४, ४,
वीर) । ३ नरकावास-विशेष (सूत्र १, ५,
१) । ४ शल का कपिर, बसा बगेह (भा
७, ६) ।

कुणुणय घक [कुणुणाय] शीत से बन्म
होने पर 'बडक' भावाज करता । वट्ट.

कुणुणत (पुर २, १०३) ।

कुणहरिया स्त्री [दे.] वनसति विशेष (परण
१—पत्र ३५) ।

कुनची स्त्री [दे.] मनोरथ, वाग्म्या (दे २, १६) ।

कुडुय पुं [कुडुम्ब] बाइ-विशेष (पाम ४६) ।
कुडुवर पुं [कुडुम्बर] बाइ विशेष (पाम ४६) ।

कुडुय पुं [कुडुय] १ तेल बगैरह भरने का
चमड़े का पात्र (दे ५, २२) । देखो कुडुअ ।

कुच पुं [कुं] कुत्ता, कुत्तर (रमा) ।

कुच न [दे.] कुनक] देना, इजारा (जिना
१, १—पत्र ११) ।

कुचार वि [कुचार] धर्मयोग चार' (गन्ध
१, ३०) ।

कुचित्तिय पुत्री [दे.] एक तरह का मोड़,
बनुदित्रिब जन्तु-विशेष, 'बरातिय कुतिय
निहू' (आमा १७, पमा ४१) ।

कुत्ती श्री [दे] कुत्ती, कुक्कुटी (रंभा) ।
कुत्थ ग्र [कुत्] बहा, किस स्थान में ?
(उत्तर १०४) ।

कुत्थ सक [कोथय] सदाना, 'नो वाज
हरेयजा, नो सनित कुत्थिज्जा' (पव १५८
टी), कुत्थे (१ लो) ज्जा (मणु १६१) ।
भवि, कुत्थि (१ लि) हिई (पिंड २३८) ।
ह. कुत्थ (वननि १०, २४) ।

कुत्थ देखो बड। कुत्थसि, कुत्थलु (गा
५०१ अ) ।

कुत्थण ज्ञोन [कोथन] सदाना, मड जाना
(बव ४) ।

कुत्थन न [दे] १ विमान (दे २, १३) । २
कोटर कुत्त की पोण, गह्वर (मुपा २४६) ।
३ सयं वनेरह का विल (उप ३५७ टी) ।
कुत्थल देखो कोत्थल; 'कुत्थ (१ लो) लम-
माराउपयो' (पमंवि २७) ।

कुत्थुय पुं [कुत्थुय] बाय विशेष (राम) ।
कुत्थुमरी श्री [कुत्थुमरी] बनलविशेष,
घनिमा (पएण १—पन ११) ।

कुत्थुद पुंन [कोत्थुम] मणि-विशेष, जो
विष्णु की छाती पर रहती है (हेवा २५७) ।
कुत्थुदुधय न [दे] नीबी, नारा, इमारबन्ध
(दे २, ३८) ।

कुदो देखो कुओ (हि १, ३७) ।

कुद वि [दे] प्रभूत, प्रवृत्त (दे २, ३४) ।

कुदण पुं [दे] रासक, रासा (दे २, ३८) ।

कुदय पुं [कोदय] धान्य-विशेष, बोदो,
बोदय (सम्य १२) ।

कुदाल पु [कुदाल] १ भूमि खोदने का
साधन, बुदाल, बुदारी (मुपा ५२६) । २
बृज-विशेष (ज २) ।

कुद वि [कुद] कृषित, क्रोध-युक्त (महा) ।

कुपचि (दे) म [कचिन्] किसी जगह में
(भाह १२३) ।

कुप्प सक [कुप्] कोप करना, गुम्मा
करना । कुप्पद (उव, महा) । बड, कुप्पत
(मुपा १६७) । ह. कुप्पियव्व (स ६१) ।

कुप्प सक [माप्] दोलना, बहना । कुप्प
(मवि) ।

कुप्प न [कुप्प] मुखों पीर बाँदो की छोड़
कर अन्य पानु पीर मिट्टी बनेरह के बने हुए

गृह-उपकरण, 'सोहाई जवखरो कुप्प' (बह
१; पडि) ।

कुप्पड पुं [दे] १ गृहाचार, घर का रिवाज ।
२ समुदाचार; सदाचार (दे २, ३६) ।

कुप्पर न [दे] गुरुत के समय किया जाता
हृदय-ताड़न-विशेष । २ समुदाचार, सदाचार ।
३ नर्भ, हाँसी, ठट्ठा (दे २, ६४) ।

कुप्पर पुं [कुप्पर] १ कच्छेखि, हाथ का
मध्य भाग । २ जानु, घुटना । ३ रथ का
अवयव-विशेष (जं ३) ।

कुप्पर पुं [कुप्पर] देखो कप्पर । भीत की
परत, भीत का जीखी-शीखी घर; 'एयायो
पावलायं कुप्पर जुएणमिस्सिमां' (गउड) ।

कुप्पल देखो कुंपल (वि २७७) ।

कुप्पास पुं [कुप्पास] कज्जुक, काबली,
जानी मुरती (हि १, ७२, कप्प, पाप) ।

कुप्पिय वि [कुप्पित] १ कुपित, क्रुद्ध । २
न. क्रोध, गुस्सा; 'कुप्पिय नाम कुप्पिअ' (भाह ४५) ।

कुप्पिस देखो कुप्पास (दे १, ७२, दे २,
४०) ।

कुप्पर पुं [कुप्पर] भगवान् मल्लिनाथ का
शासनाधिष्ठायक यज्ञ (पव २६) ।

कुप्पेर पुं [कुप्पेर] भगवान् मुमुनाय के प्रथम
भावक का नाम (विचार ३७८) ।

कुप्पेर पुं [कुप्पेर] १ बुदरे, यल-राज, यनेस
(पाप, गउड) । २ भगवान् मल्लिनाथ का
शासनाधिष्ठाता यज्ञ विशेष (सति ८) । ३
बाह्यनपुर के एक राजा का नाम (पजम ७,
४४) । ४ इस नाम का एक श्रेष्ठ (उप
७२८ टी) । ५ एक जैन मुनि (कप्प) ।

'दिसा पुं [दिस्] उत्तर दिशा (पुर २,
८५) । 'नयरी श्री [नगरी] बुदरे की
राजधानी, भलरा (पाप) ।

कुप्पेरा श्री [कुप्पेरा] जैन साधु-गण की एक
शाखा (कप्प) ।
कुप्पड वि [दे] बुदडा, बुद्ध, वासन (था
२७) ।

कुप्पर पुं [कुप्पर] वैद्यमण के एक पुत्र का
नाम (पन ५) ।

कुम्भंड पुं [कुम्भाण्ड] देव विशेष की जति
(ठा २, ३—पज ८५) ।

कुम्भंडिड पुं [कुम्भाण्डेन्द्र] इन्द्र-विशेष,
कुम्भाण्ड देखो का स्वामी (ठा २, ३) ।

कुम्भर देखो कुमारी (दे १, ६७, मुपा २४३;
६५६; कुमा) ।

कुम्भी देखो कुमारी (कप्प, पाप) ।

कुमार पुं [कुमार] १ प्रथम-वय का बालक,
पाच वर्ष तक का लटका (ठा १०; रागा
१, २) । २ बुदवार, रात्र्याहं पुरुष (पएह
१, ५) । ३ भगवान् वामनपुत्र का शासना-
धिष्ठाता यज्ञ (सति ७) । ४ लोहकार, लोहार;
'कवेमुट्टिमाईहिं कुमारेहिं अयं पिव' (उत्त
२३) । ५ नासिकेय, स्वन्द (पाप) । ६ शुक्र
पत्नी । ७ बुदसवार । ८ सिन्धु नदी । ९
बृज-विशेष, वल्ल-बृज (हि १, ६७) । १०
सविवाहित, ब्रह्मचारी (मम ५०) । 'गाम
पुं [ग्राम] वादन-विशेष (भावा २, ३) ।

'णदि पुं [नग्दिन्] इन नाम का एक
सोमार (भावम) । 'धम्म पुं [धम्म] एक
जैन साधु (कप्प) । 'वाल पुं [पाल]
विक्रम की बारहवीं शताब्दी का गुजरात का
एक सुप्रसिद्ध जैन राजा (दे १, ११३ टी) ।

कुमार पुं [दे] कुमार का महीना, भाविवन
मास (ठा २, १) ।

कुमारा श्री [कुमारा] इन मान का एक
संनिवेश, 'तमो भगवं कुमाराए संनिवेशे
गयो' (भावम) ।

कुमारिय पुं [कुमारिक] नवाई, नीतिर
(बह १) ।

कुमारिया श्री [कुमारिका] देखो कुमारी
(वि ३५०) ।

कुमारी श्री [कुमारी] १ प्रथम वय की लटकी
२ सविवाहित नव्या (हि ३, ३२) । ३
बनलविशेष, फोडुधारी (पव ४) । ४
नवमल्लिक । ५ नदी-विशेष । ६ जन्म-दीन
का एक भाग । ७ बनलविशेष, भन-
राजिना । ८ लोहा । ९ बड़ी हवाची । १०
बन्ध्या बन्दी की सजा । ११ पति-विशेष
(दे ३, ३२) ।

कुमारी श्री [दे] कुमारी गौरी, पार्वती (दे
२, ३५) ।

कुमुज पु [कुमुज] १ इन नाम का एक
बालक (वि १, ३५) । २ महाशिव वर्ष का

एक विजय-युगल, भूमि प्रदेश विशेष (ठा २, ३—पत्र ८०)। ३ न चन्द्र बिकासी कथन (गामा १, ३—पत्र २६ से १, २६)। ४ सख्या विशेष, कुमुदाङ्ग को चौरासी लाख से गुणने पर जो सख्या सन्व हो वह (जो २)। ५ शिखर विशेष (ठा ८)। ६ मि भूमी मे भानन्द पतिवाला। ७ खराब प्रीतिवाला (मि १, २६)। देखो कुमुद।

कुमुअ पु [कुमुद] देव-विशेष (तिरि ६६७)। 'चद पु [चन्द्र] भावाचर सिद्धने दिवाकर की मुनि श्रवस्था का नाम (सम्मत १४१)।

कुमुअंग न [कुमुदाङ्ग] सरपा विशेष, 'महाकाल' को चौरासी लाख से गुणने पर जो सख्या सन्व हो वह (जो २)।

कुमुआ जी [कुमुवा] ? इस नाम की एक पुष्करिणी (ज ४)। २ एक नगरी (दीव)। कुमुदणी जी [कुमुदिनी] ? चन्द्र बिकासी कमल का पद (कुमा १भा)। २ इस नाम की एक रानी (उप १०३१ टी)।

कुमुद देखा कुमुअ (इक)। देव विमान विशेष (सम ३३ ३५)। 'गुम्न न [गुम्न] देव-विमान विशेष (सम ३५)। 'पुर न [पुर] नगर विशेष (इक)। 'पपमा जी [प्रमा] इस नाम की एक पुष्करिणी (ज ४)। 'वण न [वन] मधुरा नगरी के समीप का एक जङ्गल (ती २१)। 'गर पु [गर] कुमुद-पण्ड, कुमुदो से भरा हुआ नम (पणह १, ४)।

कुमुअंग देखो कुमुअंग (इक)।

कुमुदग न [कुमुदर] वृण विशेष (सुप्र २, २)।

कुमुली जी [दे] कुली, कुहा (दे २, ३६)। कुम्न पु [कुम्न] कन्दन, कलुषा (पात्र)। 'गाम पु [ग्राम] मगध देश के एक गाँव का नाम (अप १५)।

कुम्भग वि [दे] म्लान शुक्र, कुम्हनाया हुआ (दे २, ४०)।

कुम्मार पु [कुर्मा] मगध देश के एक गाँव का नाम (प्राचा २, १५, ५)।

कुम्मास पु [कुलमास] ? अन्न विशेष, उदर (धोप ३५६, पणह २, ५)। २ बोहा गीजा हुआ मूँग वगैरह पान्य (पणह २, ५—पत्र १४८)।

कुम्मी जी [कुर्मा] ? कलुषी, कच्छपी। २ नारद की माता का नाम (पत्रम ११, ५२)। 'पुत्त पु [पुत्र] दो हाथ ऊँचा इस नाम का एक पुरुष, जिसने मुनि पाई यी (धीप)।

कुम्ह पु. [कुर्भम] देश विशेष (हे २, ७४)। कुम्हड देखो कोहड (प्राक २२)।

कुम्हडी देखो कोहडी (प्राक २२)।

कुय पु [कुच] ? स्तन यन। २ वि शिखिल (वव ७)। ३ भस्त्रि (निच १)।

कुयवा जी [दे] क्ली विशेष (पणह १—पत्र ३३)।

कुरग पु [कुरङ्ग] ? मृग की एक जाति (ज २)। २ कोई भी मृग हरिण (पणह १, १, गड)। जी 'गी (गाम)। 'च्छी जी [क्षी] हरिण के नेन जैसे नेनवाली जी, मुगलपनो जी (गाम २०)।

कुरटय पु [कुरण्ड] वृक्ष विशेष, पिपवावा (उप १०३१ टी)।

कुरकुर देखो कुरकुर। वक्र कुरकुराईत (रभा)।

कुरय पु [कुरक] वनस्पति विशेष (पणह १—पत्र ३५)।

कुरय न [कुरवक] पुष्प विशेष (वज्ज १०६)।

कुरर पु [कुरर] कुरर पत्नी, उत्कोश (पणह १, १, उप १०२६)।

कुररी जी [दे] पशु जानवर (दे २, ४०)।

कुररी जी [कुररी] ? कुरर पत्नी की माथा। २ गाथा छन्द का एक भेद (पिग)। ३ वेपी, मेढी (रभा)।

कुरल पु [कुरल] ? देश, बाल, 'कुरल-कुलीहि बलिभो तमारदनसामनो अश्वसिटी' (सुपा २४ पात्र)। २ पक्षि विशेष (जीव १)।

कुली जी [कुरली] ? देश की वक्र सटा (सुपा १, २४)। २ उल्ल पक्षिणी, 'कुलीन्व महणो मगध' (पत्रम १७, ७६)।

कुरवय पु [कुरवक] वृक्ष विशेष, बटनरेया (गा ६, गा ४०, विक २६, ग ४४४, कुमा-दे ५, ६)।

कुरा जी [कुरा] वर्ष-विशेष, अन्नक भूमि-विशेष (ठा २, ३, १०)।

कुरिण न [दे] बडा जंगल, भयकर घटवो (धोष ४४७)।

कुरु पु व. [कुरु] ? आर्य देश विशेष, जो उत्तर भारत में है (गामा १, ८, कुमा)।

२ भगवान् आदिनाथ का इस नाम का एक पुत्र (ती १४)। ३ अन्नक-भूमि विशेष (ठा ६)। ४ इस नाम का एक वरा (भवि)। ५ पुत्री कुश वरा में उत्पन्न, कुश वशीप (ठा ६)। 'अरा, 'अरी देखो गोब 'चरा, 'चरी (पड)। 'खेत्त 'कखेत्त न [क्षेत्र] ?

दिखी के पास का एक मैदान, जहाँ कौरव श्रीर पाण्डवा की लड़ाई हुई थी। २ कुश देश की राजधानी, हस्तिनापुर नगर (भवि, ती १६)। 'चद पु [चन्द्र] इस नाम का एक राजा (धम्म, गाम)। 'चर वि [चर] कुश देश का रहनवाला। जी. 'चरा, 'चरी (हे ३, ३१)। 'जगल न [जङ्गल] कुर भूमि देश विशेष (भवि, ती ७)। 'णाह पु [नाथ] बुधोपन (गा ४४३ गड)।

'दत्त पु [दत्त] इस नाम का एक धैरी श्रीर वैत महर्षि (उत २, सभा)। 'मई जी [मयी] ब्रह्मदत्त बन्धनी की पटवनी (सम १५२)। 'राय पु. [राज] कुश देश का राजा (ठा ७)। 'यह पु [पति] कुश देश का राजा (उप ७२८ टी)।

कुरुखा जी [कुरुखा] पाँव का प्रनालन (धोष ३२८)।

कुरुख धक [कुरुखराय] 'कुर-कुर' भावाज करना कुसकुनामा, बडबडाना। कुरुकु रामम (पि ५५८)। वक्र. कुरुखराअत (वप्प)।

कुरुखिअ न [दे] रणरणक, धौलपूर (दे २ ४२)।

कुरुगुर देखो कुरुकुरु। कुरुगुरेति (स ४०३)।

कुरुचिअ पु [दे] ? कुमीर, जल जन्तु विशेष। २ न ग्रहण, उपदान (दे २, ४१)। देखो कुरुचिअ।

कुरुख वि [दे] अतिर, अग्रिय (दे २, ३६)।

कुरुख वि [दे] ? निर्दय, निष्ठुर (दे २, ६३, भवि)। २ निष्ठुर, चतुर (दे २, ४३, भवि)।

कुरुय न [दे] राजा का या द्वारे का धन (राम)।

कुरुमाल ख [दे] टटोलना, धीरे धीरे हाथ फेरना। वक्र. कुरुमालत (मुप्र ४४)।

सुरय न [दि सुरक] माया नपट (सम ७१)।
सुरया श्री [दि सुरका] शरीर प्रदान,
स्नान (वव १)।

सुरर देवा सुरर (कुमा)।
सुरल पु [दि] १ कुलित वेश टडा बाल दि
२ ६३ भवि। २ वि निदय। ३ निपुण
चनुर (द २ ६३)।

सुरल मय [कु] भावान करना बीए बा
बोलना। कुम्पवि (मवि)।
सुरलभ न [कुन] वायम का रा द बीए
की भावान (मवि)।

सुरर देवा सुर (पवन ११० ८३ भवि)।
सुररा देवा सुराय (सुभा ७७)।
सुररिप पु [सुरविद] १ मवि विशेष रन
की एक जाति (गउड)। २ सुर विशेष
(पएण १ पएण १ ४—गन ७८)। ३
सुरनिव नामक रोग एक प्रकार का जन्मा
रोग एणिकुरिन्वत्तवट्टाणुसुवजप (बीप)।
"नस पुन [नस] भूणण विशेष (वप्प)।
सुरनिदा या [सुरनिदा] एम नाम की एक
बीजगमाया (पवन ५४ ३८)।

सुरमिह [दि] देवी सुरचिह (पाप)।

सुर पुन [कुल] १ कुल वरा जाति (आमू
१७)। २ पट्ट वरा (उत्त ३)। ३ परिहार
बुद्ध (उप ६ ७७)। ४ नम्राणीय समूह
(पण १ ३)। ५ गोत्र (सुपा ८ ठा ५, १)।
६ एक आचार्य की सतीति (वप्प)। ७ पर
गृह (वप्प मूम १ ४, १)। ८ साधिय,
मासीय (भाषा)। ९ पवीरिय-यात्र प्रविद
नग्न सगा (सुत्र १ ६४) कुला कुन
(ह १ ३३)। "ञ्ज पु [सुध] पूरक
पूर गुरप (गउड)। "वम पु [मम]
कुलाचार वरा परम्परा का रिवाज (मट्ठि
७५)। "वर दतो नावे "गर (ठा १०)।
"जाह श्री "रीटि जाति विरेप (वव
१२१ ठा ६ १०)। "वम देवा वम
(मट्ठि ६)। "गर पु [वर] कुल की स्वामता
बननाया कुन व शारम्भ न नीडि वीरर की
व्यवस्था बननाया महापुण्य (मम १२६
पण २)। "गह न [गह] निगु-गह (गउड)।
"पर न [गह] निगु-गह (भाषा)। "न वि
[ज] कुलीन शास्त्री की कुल में "न

(द ५)। "जाय वि [जान] कुलीन खान
दत्ता कुन का (सुपा ५६८ पाप)। "नुअ
वि [युत] कुलीन (पव ६५)। "णाम न
[नामन] कुल व धनधार किया जाता नाम
(अणु)। "वतु पु [वन्तु] कुल सखान
कुल-सतीति (वव ६)। "तिल्ल पुन
[तिल्ल] कुल म अष्ट (भा ११ ११)।
"व्य वि [व्य] कुलीन खानगी वरा का
(साया १ ५)। "रेर पु [स्वानर] अष्ट
साधु (पव)। "दिगयर पु [त्तिनर]
कुन म अष्ट (वप्प)। "दान पु [दाप]
कुन प्रकाश कुन म अष्ट (वव)। "दन
पु [दन] गोत्र "नना (वार)। "दयथा
श्री [दयथा] गोत्र देवता (सुपा ५६७)।
"दो श्री [दो] गोत्र देवी (सुपा ५०२)।
"धम्म पु [धम] कुलाचार (ठा १०)।
"पठय पु [पर्ये] पवन विरेप (मम ६६
सुभा ३३)। "पुत्त पु [पुत्त] वरा रथक
पुन (उत्त १)। "बालिया श्री [बालिया]
कुलीन वया (सुर १ ५३ हवा ३०१)।
"भूमण न [भूपण] १ वरा की सितान या
चमकान वाता। २ पु एर केवती गगना
(पवन ३६ १२२)। "मय पु [मय] कुल का
प्रतिमान (ठा १०)। "मयहारया "महत्त
रिया या [महत्तरिया] कुन म प्रगत
या बुद्ध की मुद्रिया (मग ७६, भावम)।
"य दला "ज (सुपा ५६८)। "रोग पु
[रोग] कुल मय रोग (न २)। "वद पु
[वन] लाम्भा का मुद्रिया, प्रवाह सचानी
(सुपा १६० ज ३३)। "वम पु [वम]
कुल व वरा वरा (मग ११ १०)। "वम
पु [वश्य] कुन म उन्नय, वरा में मशर
(मग ६, ३३)। "वडिसण ७ [वडिसण]
कुन मय पु कुन-नगर (वग)। "वट्टा
[वट्टा] कुन की कुलान्ता (भाष ५
वि ३८७)। "मपण वि [समय] कुलान
गानगी कुन का (भाष)। "ममय पु
[समय] कुलाचार (मूम १ १ १)।
"मल पु [सो] कुल-पवन (सुपा ६००
स ११६)। "मेणग या [मेणग] कुन
पवत वे जितया दृढ न कुलमन्त्रि
मरिया नान नन्वमन्त्रि (सुपा ६००)।

"हर न [गृह] विगृह, रिता का घर (भा
१२१ सुभा १६४ स ६, ५३)। "नान
वि [नान] भान कुल की बडाई बतना
वर भावनाया प्राप्त बननाया (ठा ५ १)।
"य न [न] पया का घर नाड (पाप)।
"यार पु [यार] कुलाचार वरा-परम्परा
न बना भाता रिवाज (वव १)। "रिय पु
[रिय] त्रि-पन की मयना म माय (ठा ३,
१)। "लिय वि [लिय] गुम्वा व घर
गोत्र भागनाया (मूम २, ६)।

कुलर पु [कुलर] इस नाम का एक राजा
(पम ८२ २८)।

कुलप पु [कुलप] इस नाम का एक वनाय
ग्य। २ उममें रहनवाली जाति (मूम ३, २)।

कुलकुल दला कुलकुल। कुलकुल (मवि)।

कुलस पु [कुलस] १ एक स्नेह द्ये।
२ उमम रहनवाली जाति (पग १ १ ६४)।

कुलाय पु [कुलाय] एक भनाय वरा (पव
२७५)।

कुलटा श्री [कुलटा] अविचारिता की
पूरवकी (मग ३८५)।

कुल्य पु [कुल्य] भन विशेष कुनकी
(ठा ५ ३ साया १ ५)। श्री "ह्या (भा
१८)।

कुलपमय पु [द] कुल-मय कुन का गग,
कुन का भावकीति (दि १, ५२ भवि)।

कुलप दला कुलप (नंद २६ अणु १५१)।

कुलय न [कुल] सात या बार स उमान
परम्पर सात पण (मम ७६)।

कुल्य पु [कुल्य] १ वी विशय (पएण १
१)। २ बुद्ध वगी (उत्त १४)। ३ कुल
या (मूम १ ११)। ४ मार्ज, विराज,
जग बुद्ध-इत्यय रिचन कुलामो न
(म ४)।

कुल्य पुन [द] कुलम गंवर (पव ३८)।

कुल्य दला कुलर (भा २)।

कुलनड श्री [न] वला पुन (दे २ ५६)।

कुलप पु [कुलप] कुलरति (दि ८२)।

कुल्य दला वयाज (राज)।

कुल्य व [कुल्य] कुलमय कुलर (पव
५३)।

कुलाल पु [कुलाट] १ मानरि, बिनाह ।
२ बाहण, विप्र (सूय २, ६) ।

कुलिमाल पु [कुलाङ्गार] कुल मे कलक
लगानेवाला, दुराचारी (ठा ४, १—पत्र
१८५) ।

कुलित न [कुलिक] खेत मे घास काटने का
छोटा काष्ठ-विशेष (भणु ४८) ।

कुम्भिक पु [कुलिक] १ ज्योतिष शास्त्र
कुलिय } मे प्रसिद्ध एक कुयोग (गण १८) ।
२ न. एक प्रकार का हल (एह १, १) ।

कुलिय न [कुल्य] १ भीत, भित्त (सूय १,
२, १) । २ मिट्टी की बनाई हुई भीत (इह
२, कस) ।

कुलिया की [कुलिना] भीत, कुण्ड (वह २) ।

कुलिर पु [कुलिर] मेघ वगैरह काहू राशि
मे चतुर्थ राशि (पत्रम १७, १०८) ।

कुलिमय पु [कुलिमत] परिव्राजक का एक
भेद, सापस विशेष, घर में ही रहकर क्रोधादि
का विजय करनेवाला (भौप) ।

कुलिस पुन [कुलिग] वज्र, हथकड़ा का मुख्य
भाग (पात्र, ज ३२० टी) । 'निगाय पुं
[निनाद] रावण का इस नाम का एक मुकुट
(पत्रम ५६, २६) । 'मयम् न [मध्य]
एक प्रकार की तपस्वर्या (पत्रम २२, २४) ।

कुलीकोस पु [कुलीकोश] पक्षि-विशेष (एह
१, १—पत्र न) ।

कुलीण वि [कुलीन] उत्तम कुल मे उत्पन्न
(प्राहु ७१) ।

कुलीर पु [कुलीर] जल-विशेष (पात्र, दे ३
४१) ।

कुलव सव [कुल, ग्लौ] १ जलाना । २
ग्लान करना । ३ 'मालद्वन्द्वमुपाद' कुल-
चिह्नण मा जाणि एण्णुभो सिधिये' (मा
४२६) ।

कुलविय वि [दे] जना हुआ, विरहस्वनिग-
मुत्पन्नियमाहो' (मरि) ।

कुलोयकुल पु [कुलोयकुल] ये चार नद्य-
मयिनिवृ, रावणिया, मादा और धनुषाणा
(गुप्त १०, ५) ।

कुल पुं [दे] १ शीता, गलठ । २ वि. घस-

मर्ष, घसक । ३ छिन्न-मुच्छ, जिसकी पूँछ
कट गई हो वह (दे २, ६१) ।

कुल पुन [दे] वृत्त, गुजराती मे 'कुलो'
(सूय ८, १३) ।

कुल प्रक [कुल] वृद्धा । वक्र. 'भास्वरिक्त-
साण बल मुन्युक्तास्पादिककुलंस्वगतसे-
खायुह' (पत्रम ५३, ७६) ।

कुलउर न [कुल्यपुर] नगर-विशेष (सया) ।
कुलड न [दे] १ कुलो, चूल्हा (दे २, ६३) ।
२ छोटा पात्र, पुढवा (दे २, ६३, पात्र) ।

कुलरिअ पुं [दे] कायविक, हलवाई, मिठाई
बनानेवाला (दे २, ४१) ।

कुलरिया की [दे] हलवाई की दुकान
(भावम) ।

कुला की [कुल्या] १ जल की नाली, सारिणी
(कुमा, दे २, ७६) । २ नदी, कृषि नदी
(धणू) ।

कुलाग पु [कुल्याग] समिपेल-विशेष, मय
देश का एक भाग (धणू) ।

कुली देखो कुला (वर्मवि ११२) ।

कुलुडिया की [कुलुडिका] घटिका, घड़ी
(सूय १, ४२) ।

कुलुली की [दे] बाग्य विशेष, गुजराती—
'कुलेर' (पत्र ४) ।

कुलुरिअ [दे] देखो कुलुरिअ (महा) ।

कुल पुं [दे] मृगाल, तियार (दे २, ३४) ।
कुलणय न [दे] लवट, यष्टि, तबली, छड़ी
(राज) ।

कुललय न [कुबलय] १ गीसोलन, हथ रग
का कमल (पात्र) । २ चन्द्र-विकासी कमल
(भा २७) । ३ कमल, पत्र (भा ५) ।

कुली की [दे] वृक्ष-विशेष (हृत् २४६) ।
कुविद पु [कुविन्द] तनुवाम, कपडा नुनने-
वाला (मुपा १८८) । 'वली की [वली]
वस्ती-विशेष (एण १—पत्र ३३) ।

कुविय वि [कुपित] कुद, जिसको पुसा
हुआ हो वह (एह १, १, सुर २, ५, हेम
७३, प्राहु ६४) ।

कुविय देखो कुप्प = कुप्प (एह १, २, मुपा
४०६) । 'साला की [साला] बिदेना
आदि गृहोपकरण रखने की बुद्धिया, घर का
वह भाग जिसमें गृहोपकरण रखे जाते हैं
(एह १, ४—पत्र ११३) ।

कुवेणी की [कुवेणी] शस्त्र-विशेष, एक प्रकार
का हथियार (एह १, ३—पत्र ४४) ।

कुवेर देखो कुवेर (महा) ।

कुव्व सक [कु, कुव्व] करना, बनाना । कुव्वद
(भग) । भूका. कुव्विया (पि ५१७) । वक्र-
कुव्वत, कुव्वमाण (भौप १५ भा, एणा
१, ६) ।

कुस पुन [कुसा] वृण-विशेष, दर्भ, डाग,
काश (विपा १, ६, निवृ १) । २ पुं. दास-
रथी राम के एक पुत्र का नाम (पत्रम १००,
२) । 'ग [म] दर्भ का धन-भाव जो
प्रत्यक्ष दीर्घ होता है (उत्त ७) । 'गानय
न [म्रनगर] नगर-विशेष, विहार का एक
नगर, राजगृह, जो आजकल 'राजगिर' नाम
से प्रसिद्ध है (पत्रम २, ६८) । 'गगुर न
[मपुर] देखो पूर्वोक्त धर्म (सुर १, ८१) ।
'हृ पु [यत्त] धर्म देश विशेष (सत ६७
टी) । 'हृ पु [यत्त] धर्म देश विशेष, जिसकी
राजधानी शौर्यपुर की (हृ) । 'त न [क,
'क] भास्तरण-विशेष, एक प्रकार का
बिछोना (एणा १, १—पत्र १३) । 'स्थल-
पुर न [स्थलपुर] नगर विशेष (पत्रम २१,
७६) । 'मट्टिया की [मृत्तिका] डाग के
साथ कुटी जाती मिट्टी (निवृ १८) । 'वर पुं
[वर] दीप विशेष (मणु—टी) ।

कुस वि [कीश] दर्भ का बना हुआ (भावा
२, २, ३, १४) ।

कुसण न [दे] सीपन, झाड़ू करना (दे २,
३३) ।

कुसण न [दे] गोरस (पिड २८२) ।

कुसणिय वि [दे] गोरस से बना हुआ कसबा
आदि खाग, 'कुनु (१ स) एणिय' (पिड
२८२ टी) ।

कुसल वि [कुसाल] १ निवृण, चतुर, दग,
भूमि (भावा, एणा १, २) । २ न. कुल,
हित (राय) । ३ पुण्य (पत्रा ६) ।

कुसल की [कुसाल] नगर-विशेष, विन्तीग,
धमोष्ठा (भावम) ।

कुसार देखो कुसार (स १८६) ।

कुसी की [कुसी] तोड़े का बना हुआ एक
हथियार (दे ८, ५) ।

कुशीलन पु [कुशीलन] अभिनयकर्ता नट (कम्प)।

कुसुंभ पुन [कुसुम्भ] १ कृत विशेष, कमुष, बरें (ठा व—पत्र ४०५)। २ न. कुसुम का पुष्प, जिसका रंग वनरा है (पं २)। ३ रंग विशेष (भा १२)।

कुसुमिअ वि [कुसुम्भित] कुसुम्भ रगवाला (भा १२)।

कुसुमिल पु [कु] विरुन, दुर्जन, चुपलबोर (दे २, ४)।

कुसुंभी की [कुसुम्भी] वृक्ष-विशेष, कुसुम का पेड़ (पात्र)।

कुसुम कक [कुसुमय] कूल भावा। कुसुमलि (सबोध ४७)।

कुसुम न [कुसुम] १ पुष्प, फूल (पात्र, प्राम ३४)। २ पु. इस नाम का भगवान् पद्मप्रम का शान्ताभिधायक मन (सति ७)। 'वेड पु [वेतु] भरएवर दीन बा भयिष्ठाक देश (दीन)। 'चाय, 'चाय पु [चाय] कामदेव, मकरन्दन (मुपा ५६, ५३०, महा)। 'उमय पु [धरज] वसन्त ऋतु (कुमा)। 'णयर न [नगर] नगर-विशेष, पाटलिपुत्र, आजकल जो 'पटना' नाम से प्रसिद्ध है (भाषम)। 'उत पु [दन्त] एक तीर्थ-क्षेत्र देव का नाम, इस भवसिंघी काल के नववें जिनदेव, श्री सुविधिनाम (पत्रम १, ३)। 'दाम न [दामर] कूलों की माना (उवा)। 'धणु न [धनुष] कामदेव (कुमा)। 'पुरन [पुर] देवों-अपर 'णयर (उप ५६)। 'बाण पु [बाण] कामदेव (मुर ३, १६२, पात्र)। 'रज पु [रजस] मकरन्द (पात्र)। 'रद पु [रद] देवों-उत (पत्रम २०, ५)। 'लया की [लया] हृदय विशेष (मजि १५)। 'समय पु [संभय] मधुमास, ज्येष्ठमास (मणु)। 'सर पु [शर] कामदेव (मुर ३, १०६)। 'अर पु [अरु] इस नाम का एक छंद (पिंग)। 'उह पु [उधु] काम, कामदेव (स ३३८)। 'उह की [उता] इस नाम को एक नगरी (पत्रम ५, २६)। 'सय पु [ससन] किञ्चक, पराग, पुष्प-रेणु (छाया १, १, भीए)।

कुसुमसमय पु [कुसुमसम्भन] वैशाख मास का लोकोत्तर नाम (मुग्ज १०, १६)।

कुसुमाल वि [कुसुमवत्] कूलवाला (स ६६७)।

कुसुमाल पु [दे] चोर, स्तेन (दे २, १०)।

कुसुमालिअ वि [दे] शून्य-मनस्क, भ्रान्त-चित्त (दे २, ४२)।

कुसुमिअ वि [कुसुमिन] गुणित, पुष्प-युत, खिला हुआ (छाया १, १, पत्रम ३३, १४८)।

कुसुमिल वि [कुसुमवत्] ऊपर देखो (मुपा २२३)।

कुसुर [दे] देखो मसुर (दे २, १७४ टि)।

कुसूल पु [कुशूल] कोष्ठ, झाल रखने के लिए मिट्टी का बना एक प्रकार का बड़ा पात्र (पात्र)।

कुसुमिअ पु [कुसुमवत्] दुष्ट स्वप्न (सबोध ४२)।

कुह मज [कुय] सड़ जाता दुर्गन्धी होता। कुह (भाव, हे ४, १६५)।

कुह पु [कुह] वृक्ष, पेड़, गाछ 'कुहा महीष्ठा कच्छा' (रसनि १)।

कुह देखा सह (गा ५०७ म)।

कुहड पु [कुमाण्ड] व्यन्तर देवों की एक जाति (भीए)।

कुहड न [कुमाण्ड] १ कुहडा, पेड़ा, कोहँवा (कम्प ५, ८५)।

कुहडिया की [कुमाण्ड] कोहँवा का गाछ (राय)।

कुहक [कु] देवों कुहय (धर्मनि १३५, कुप ८)।

कुहग पु [कुहक] बन्द विशेष, 'साहिणीहू य भीहूय, कुहगा य सहेवय' (उत ३६, ६६ व)।

कुहड वि [दे] कुम्भ, कूबड (दे २, ३६)।

कुहण पु [कुहण] १ वृक्षों का एक प्रकार, बुझों की एक जाति से मिले कुहण? कुहण भोज्यविहा पणखता (पणख १-पत्र ३३)। २ वनपतवि विशेष। ३ भूमि-स्फोट (पणख १-पत्र ३० भावा)। ४ देश-विशेष। ५ इसमें रहनेवाली जाति (पणख १, १-पत्र १४, इक)।

कुहण वि [क्रोधन] क्रोधी, क्रोध करनेवाला (पणख १, ४-पत्र १००)।

कुहणी की [दे] कूपर, हाथ का मध्य-भाग (मुपा ४१२)।

कुहय पुन [कुहक] १ वायु विशेष, दोहते हुए घर के उदर-प्रदेश के समीप उत्पन्न होता एक प्रकार का वायु 'धणगजिय-हयकुहण' (पणख २)। २ इन्द्रजातादि कौतुक, 'भलोतुए वरुहण प्रमाई' (दस ६, ३)।

कुहर न [कुहर] १ पर्वत का प्रत्यक्ष (छाया १, १-पत्र ६३)। 'गैद्व विततरिह्य पिणखकुहर व सलिसमुएनिम' (गा ६०७)। २ छिद्र, बिल, विवर (पणख १, ५; पत्र २)। ३ बु. देश-विशेष (पत्रम ६८, ६७)।

कुहाड पु [कुहार] कुहाड, करता (विपा १, ६-पत्रम ६६, २४, स २, ४)।

कुहाडी की [कुहारी] कुहाडी, कुठार (उप १६३)।

कुहाण की [कुहण] १ भारवर्ध-जनक, दम्भ क्रिय, दम्भ-वर्ध। २ लोगों से द्रव्य हासिल करने के लिए किया हुआ कपट भेष (जीत)।

कुहिय वि [दे] लिप्य, पोता हुआ (दे २, ३५)।

कुहिय वि [कुहित] १ थोड़ी दुर्गन्धवाला (छाया १, १२-पत्र १०३)। २ सडा हुआ (उप ५६७ टी)। ३ विनष्ट (छाया १, १)। 'पुहय वि [पूतिक] भयानक सडा हुआ (पणख २, ५)।

कुहिणी की [दे] १ कूपर, हाथ का मध्य भाग। २ रज्ज्या, महला (दे २, ६२)।

कुहिल पुषी [कुहमत्] कोयल पक्षी (पिंग)।

कुहु की [कुहु] कोकिल पक्षी की आवाज (पिंग)।

कुहुण देखो कुहण = कुहन (उत ३६, ६६ वा)।

कुहुव्यय पु [कुहुव्यन] बन्द विशेष (उत ३६, ६८)।

कुहेड पु [दे] भोयी विशेष, घुंघरू, एक प्रकार का हरे का गाछ (दे २, ३५)।

कुहेड पु [कुहेड, 'क'] १ बम-कार कुहेड अ उपजायेवाला मत्त कन्दार मान,

‘कुहेडविजासवदराजीयो न गच्छई सरण
तम्मि काले’ (उत्त २०, ४१) । २ प्राभाणक,
वक्रोक्ति विशेष ‘तेनु न विमह्यद सप्त प्राह-
दुहुदेणहि व’ (पव ७३ टी, बृह १) ।

कुहेडग पुन [दे] भजमा (पचा ४, २०) ।

कुहेडगा छी [कुहेटग] कन्द विशेष,
विटहाउ (पव ४) ।

कूअ देखो कून = कूप (चड, हम्मोर ३०) ।

कूअ ग न [कूजन] १ भव्यक शब्द । २ वि.

ऐसी भाषाज करनेवाला (ठा ३, ३) ।

कूअणया छी [कूजनता] कून भव्यक
शब्द (ठा ३, ३) ।

कूअआ छी [कूपिना] कूई, छोटा कूप (चड) ।

कूअय न [कूजिन] भव्यक भाषाज (महा-
सुर ३, ४८) ।

कूअया छी [कूजिका] क्विड आदि वा
भव्यक भाषाज (पिड ३५६ टी) ।

कूचिआ छी [कूचिका] बाढी-बूँछ का बाल
(सवीध ३१) ।

कूचिया छी [कूचिका] बुदबुद, बुलबुला,
पापी का बुलवा (विसे १४६७) ।

कूज भक [कूज्] भव्यक शब्द करना ।

कूजहि [चार २१] । बहू कूजत (मे २६) ।

कूजिअ न [कूजित] भव्यक भाषाज (हुमा-
मे २६) ।

कूड भक [कूटय] १ कूडा ठहराना । २

भयना करना । कूडे (मणु ५० टी) ।

कूड पु [दे] कूड पारा, कांसी, जान (दे २,

४३ राय उत्त ५ सूम १, ५, २) ।

कूड पुन [कूट] १ भसम, छल युक्त, कूडा-

‘बूडहुलकूमाणी’ (पडि) । २ झोति जनक

बल्लु (भग ७, ६) । ३ माया, बपट, छल,

दाग, धोपा (हुमा ६२७) । ४ नरक (उत्त

५) । ५ पोडा जनक स्वाग, दु खोलादक

जगह (सूम १, ५ २-उत्त ६) । ६ शिखर,

टोच (ठा ४, २ रमा) । ७ पर्वत का मध्य

भाग (ज २) । ८ पापाएयम यन्त्र विशेष,

मारने का एक प्रकार का यन्त्र (भा १५) ।

९ समूह, राशि (निर १, १) । १० फारि वि

[‘वारिन’] धोलेवाज, दगाखोर (हुमा ६२७) ।

‘गगाह पु [गगाह] धोले से जीवों को

कंसनेवाला (विपा १, २) । ११ ‘गगाहणी

(विपा १, २) । १० जाल न [जाल] धोले

का जाल, फाँसी (उत्त ११) । ११ तुला छी

[‘तुला’] झूठी नाप, बनावटी नाप (उत्ता

१) । १२ पास न [पाश] एव प्रकार की

मछली पकड़ने का जाल (विपा १, ८) ।

१३ पपओग पु [प्रयोग] प्रच्युत पाप (भाव

४) । १४ लेह पु [लेप] १ जाली लेह,

दूसरे से हस्ताक्षर तुल्य स्मरण बना कर धोखे-

वाजी करना । २ दूसरे के नाम से झूठी चिट्ठी

बगैर लिखना (पडि उवा) । ३ ‘वाहि पु

[‘वाहिन’] बैल, बत्तीबंद (भाव ५) ।

४ ‘समर न [सादय] झूठी गवाही (पचा

१) । ५ ‘समिर वि [साहिन्] झूठी भाँसी

बेनेवाला (भा १५) । ६ ‘समिखज न [सा-

क्षय] झूठी गवाही (हुमा ३७५) । ७ ‘सामलि

छी [‘शालमलि] १ रुप विशेष के आकार

का एक स्थान, जहाँ गल्ल बसोय देखो का

निवास है (सम १३, ठा २, ३) । २ नरक

रिचत कूप विशेष (उत्त २०) । ३ ‘गार न

[‘गार] १ शिखर के आकारवाला घर

(ठा ४, २) । २ पर्वत पर बना हुआ घर

(भावा २, ३, ३) । ३ पर्वत में खुदा हुआ

पर (मिष्ट १२) । ४ हिंसा स्थान (ठा ४, २) ।

५ ‘गारसाला छी [‘गारसाल] बह्यन

वाला घर पर बह्यन करने के लिए बनाया

हुआ घर (विपा १, ३) । ६ ‘हछ न [‘हिय

पापाएयम यन्त्र की तरह मारना, कुचल

जालना (भग १५) ।

कूड न [कूट] १ पाय जाल, कस, फटा (सूम

१, ५, २, १८ राय ११४) । २ लगातार

२७ दिन का उपवास (सवीध ५८) ।

कूडग देखो कूड (भावम) ।

कूण भक [कूणय] सकुचित होना, सकोच

पात्ता (मउट) ।

कूणिव वि [कूणित] सकोच प्राप्त, सकोचित

(मउट) ।

कूणिव वि [दे] ईपद विवक्षित, पोडा खिला

हुमा (दे २, ४४) ।

कूणिव पु [कूणिक] रागा श्रेणिक का पुन

(धोम) ।

कूणिव वि [कूणित] मडाहुमा (हुम १६०) ।

कूय भक [कूज्] भव्यक प्रावाज करना ।
बहू-कूयत, कूयमाण (धोप २१ भा. विपा

१, ७) ।

कूय पुं [कूप] १ कूप, कुँघा (मउट) । २ धो,

तेल बगैर रखने का पात्र, कुतुप (छाया १,

१—पव ५८, धोप) । ३ ‘दुदुहट पु [‘दुदुह

१ कूप का मेढक । २ वह मनुष्य जो अपना

घर छोड़ बाहर न गया हो, भलन (देख

६४८ टी । लेखो कून) ।

कूर वि [कूर] १ निर्दय, निष्कप, हिसक

(पराह १, ३) । २ भयवर रीढ़ (छाया १,

८, सूम १, ७) । ३ पुं राख का इस नाम

का एक मुष्ट (पउम ५६, २६) ।

कूर पुन [कूर] वनसति विशेष (सूम २, ३,

१६) ।

कूर न [कूर] भान, मोदन (दे २, ४३) ।

‘गडुअ, गडुअ पुं [गडुक] एक जैन

महिष (भावा, भाव ८) ।

कूरं य [ईपन्] पोडा, भलन (दे २, १२६,

पूड) ।

कूरपिडन न [दे] भोजन विशेष, छाद विशेष

(भावम) ।

कूरि वि [कूरिन] १ निर्दयी, क्रूर चित्तवाला ।

२ निर्दय परिवारवाला (पराह १, ३) ।

कूल न [दे] सैम का पिछना भाग (दे २,

४३, ते १२, ६२) ।

कूल न [कूल] टट, किनारा (पाम, छाया

१, १६) । २ धमग पु [ध्मायक] एक प्रकार

का वातप्रत्य जो किनारे पर खड़ा हो आवाज

कर भोजन करता है (धोप) । ३ बालग,

बालप पु [बालक] एक जैन मुनि (भाव,

वाले) ।

कूलरसा छी [कूलरुपा] नदी, तीर को

सोछनेवाली नदी (विणी १२०) ।

कून पुन [दे] १ उपाई चीज को चीज में

जाना (दे २, ६२, पाम) । २ कुराई चीज

को छुपानेवाला, छिनी हुई चीज को लटवाई

बगैर कूर कर वास लेनेवाला, ‘तए ए सा

दोवही देखो पउमएयम एध बपायी—एवं

खलु देवा० जहुदीये दीये भाद्रे वागे मारव-

तीए राखरीए नएहे स्थानं वागुदेने मम

पियभाऊए परिवरवि, व जइ ए से छएह

माणं ममं कृवं मो हृवमाणच्छद, तए एं
ग्रहं देवां जं तुमं बदसि तम्म भ्राणाभोवा-
ययणएणित्ते चिट्ठिस्सामि' (एणया १,
१६—यन २१५); 'दोवईए कृवग्गाहा' (उप
६५८ टी; दे ६, ६२)।

कृवग } पुं [कृप, क] १ कृप, कृष्ण,
कृवग } गर्त (प्राय ५५); २ स्नेह-मात्र,
कृवय } कुनुप, कुणा (वज्रा ७२; उप ५
५१२)। ३ जहाजका मध्य स्तम्भ, जहाजपर पाल
बधा जाता है (भीप, एणया १, ८)। 'तुल्य
ओ [तुला] कृवतुला, हँकुवा (दे १, ६२;
८७)। 'मंडुल्ल पुं [मण्डूक] १ कृप का
मंडक। २ श्लेष्म मनुष्य, जो अपना घर
छोड़ बाहर न जाता हो (निद्र १)।

कृवय पुं [कृपक] देखो कृय=कृप (यमण
३२)। स्वनाम-प्रसिद्ध एक जैन मुनि (अत
३)।

कृवर पुन [कृवर] १ जहाज का एक भवयन,
जहाज का मुख-भाग, 'संयुएणयड्डुइवर'
(एणया १, ६—यन १५७)। २ रथ या
गाड़ी के गैरह का एक भवयन, युगधर (मि
१२, ८५)।

कृवल न [दे] जवन-वख (दे २, ५३)।

कृयिय न [कृजित] मय्यक शब्द, 'तह बहवि
कुण्ण सो सुरययूयिय तणुरो जेण' (शुपा
५८८)।

कृयिय पुं [कृपिक] इस नाम का एक सनि-
वेश—गय (भावन)।

कृयिय वि [दे] मोप-म्यावर्तक, कुराई हुई
बीज की बीज कर उसे मानना (एणया
१, १८—यन २१६)। २ बीज की बीज
बलनाला (एणया १, १)।

कृयिवा ओ [कृपिग] १ छोटा कृप (उप
७२८ टी)। २ छोटा स्नेह-मात्र, कुपी (यज्ज)
कृवी ओ [कृपी] ऊपर देखो, 'एयामो धमय-
कृवीधो' (उप ७२८ टी)।

कृमार पुं [दे] गतारिग, गत किया स्थान,
पट्टश, 'कूसाएल्लतंयमो' (दे २, ५४,
पाप)।

कृहं पुं [कृमाण्ड] म्यत्तर देसो की एक
जाति (पर १, ५)।

के सर [मी] बीमना, सरीसृप। बेड, बेमड
(पद)।

के [वि] [क्रियत्] कितना? 'चिरेण थ
[चिरेण] कितने समय में? (अंत २४)।
'चिरं थ [चिरं] कितने समय तक? (पि
१४६)। 'चिरेण देखो [चिरेण] (पि
१४६)। 'दूर न [दूर] कितना दूर?
'केदूरे सा पुरी लका?' (पदम ५८, ५७)।
'महालय वि [महालय?] कितना बड़ा?
(एणया १, ८)। 'महासिय वि [महत्]]
कितना बड़ा? (पणए २१)। 'महिहिड्डय
वि [महिद्धि] कितनी बड़ी अद्विबाला
(पि १४६)।

केअइ पुं [केकय] देश-विशेष, जिसका प्राधा
भाग बायें घोर प्राधा भाग बायें है, सिंधु
देश की मोया पर का देश (इक)। 'केय-
ग्रहं च भारियं नणियं' (पणए १; सत ६७
टी)।

केअई ओ [कितरी] कुल-विशेष, वेवड़ा का
कुल (कुमा, दे ८, २५)।

केअग } पुं [केतक] १ कुल-विशेष, केवडा
केअग } का गाछ, बेतरी (गड ३)। २
न. केतरी-गुप, केवडा का फूल (गड ३)। ३
चिट्ठ, निशान (ठा १०)।

केअगी ओ [केतरी] १ केवडा का गाछ या
पीघा। २ केवडा का फूल (यम ३७)।

केअल देखो केवल (अभि २६)।

केअय देखो कइअय=केतव, 'जं केअयेण
सिम्भ' (या ७५५)।

केआ ओ [दे] रज्जु, रस्सी (दे २, ५४;
मग १३, ६)।

केआर पुं [कृदार] १ क्षेत्र, खेत (सुर २,
७८)। २ बालवाल, कपाटी (पात्र, मग
६६०)।

केआरवाग पुं [दे] कुल-विशेष, पलाश का
वंड (दे २, ५४)।

केआरिआ ओ [केदारिआ] घामनाली
जमीन, गोचर भूमि (बणु)।

केउ पुं [केतु] १ पत्थर, पत्थरा (मुग
२२६)। २ ग्रह-विशेष (मुग २०; गड ६)।
३ चिट्ठ, निशान (भीर)। ४ कुल-वृक्ष, रई
का वृद्धा (गड ३)। 'रेत्तन न [केउ] मेप-मृष्टि
में ही जिनमें मय वेदा हो बरता हो ऐसा
वेध-विशेष (मार ६)। 'मई ओ [मती]

किमरेत्त श्रीर निपुएत्त की धम-महिती का
नाम, इन्द्राणी-विशेष (मग १०, ५; एणया
२)। 'माल न [माल] वेदाव्य पदंत पर
स्थित इस नाम का एक विद्याधर-नगर (इक)।
केउ पुं [दे] कन्द, नाँदा (दे २, ५४)।
केउ पुन [केतु] एक देवविमान (देवेन्द्र
१५४)।

केउग } पुं [केतुक] पाला-लसरा विशेष
केउय } (मग ७१; ठा ५, २—यन २२६)।
केऊर पुन [केयूर] १ हाथ का भागपण-
विशेष, ब्रह्मद, बाहुबन्ध (पात्र, मग ६, ३३)।
२ पुं, दक्षिण सपुत्र का पाला-लसरा (पव
७७२)।

केऊरपुत्त पुं [दे] गाय तथा भैंस का बच्चा
(संति ५७)।

केऊव पुं [केयुव] दक्षिण सपुत्र का एक
पाला-लसरा (इक)।

केसाय थक [केसाय] 'कैं-कैं' भावाज
करना। बह, 'पेत्तइ तमो जमणि केसायंत
महोपधि' (पदम ४४, ५५)।

केसुअ देखो केसुअ (कुमा)।

केई ओ [केयी] १ राजा दशरथ की एक
रानी, केय देश के राजा की कन्या (पउम
२२, १०८; ऊ ६ १७)। २ माठरें वायुदेव
की माता (मग १५२)। ३ मर-विदेह के
विभीषण-वायुदेव की माता (भावन)।

केकय पुं [केकय] १ देश-विशेष, यह देश
प्राचीन बाहीर प्रदेश के दक्षिण की घोर
तथा सिंधु देश की सीमा पर स्थित है। २
इस देश का रहनेवाला (पणए १, १)। ३
केय देश का राजा (पउम २२, १०८)।

केकसिय ओ [केसिसा] राण की माता
का नाम (पउम ७, ५५)।

केस ओ [केसा] मर-वाणी। 'रज पुं
[रज] मर की भावना, मर-शब्द (एणया
१, १—यन २२)।

केसाइयन [केसायिन] मर का शब्द (मुग
७६)।

केई देसो केई (पउम ७६, २६)।

केबय देसो केकय (पव २७५)।

केबसो ओ [केमी] राण की माता (पउम
१०३, ११५)।

केवाइय देवो केवाइय (छाया १, ३—पत्र ६५) ।

केवाई देवो केवाई (पत्र १, ६४; २०, १८४) ।

केवाइय देवो केवाइय (राज) ।

केज वि [केय] बेचने की चीज (ठा ६) ।

केट } पुं [केटभ] १ इस नाम का एक फेदव } प्रतिवामुदे राजा (पत्र ५, १५६) । २ दैत्य-विशेष (हे १, २४०, कुमा) । ३ 'रेड पुं' [रेपु] श्रीरूप, नारायण (कुमा) ।

केन देवो केनज (हास्य १३६) ।

केनजि } वि [कियत्] कितना ? (हे २, केनजि } १५७, कुमा, पद्, महा) ।

केचुल (भप) ऊपर देवो (कुमा, पद्, हे ४, ४०८) ।

केरु (भर) भ [कुन] वहाँ, किस जगह ? (हे ४, ४०५) ।

केहई देवो केचिअ (हे २, ११७, प्राप्र) ।

केम } (भप) देवो कहँ (पद्, हे ४, ४०३; केम } ४१८) ।

केय न [केत] १ गृह, घर । २ चिह्न, निशानी (पत्र ४) ।

केयन न [केतन] १ वस्त्र वस्तु, टेढी चीज । २ चोरी का हाथ (ठा ४, २—पत्र २१८) ।

३ सनेह, सनेह स्थान (बन ४) । ४ धनुष की मूठ (उत ६) । ५ मछली पकड़ने का जाल (सूत्र १, ३, १) । ६ स्थान, जगह (प्राभा) । ७ 'कवजलसतिन' (सूत्र० पूर्ण) ।

पत्र = २ गा० १७६) ।

केयय देवो केऊय (सुभा १४२) ।

केयय वि [केतयय] खरीदने योग्य वस्तु (उत ३५, १५) ।

केर } वि [दे. समन्वित] संवन्धी वस्तु, केर } संवन्धी चीज (स्वप्न ५१, हे ४, ३५६, ३७३, प्राप्र भवि) ।

केरव न [कैरव] १ कुटुम्ब, सफेद कमल (पाम, सुभा ४६) । २ कैरव, बपट (हे १, १५२) ।

केरिचल वि [कीहल] कैसा, किस तरह का ? (हे १, १०५, प्राप्र काल) ।

केरिस वि [कीहस] कैसा, किस तरह का ? (प्राभा) ।

केरी छी [फस्टी] वृत्त-विशेष, बरीर का गाछ, 'निबंयोरिवेरे'— (उत १०३१ टी) ।

केल देवो कयल = वदन (हे १, १६७) ।

केलाइय वि [समारचित] सामान्यतर विद्या हुमा (हुमा) ।

केलाय सब [समा + रचय] समारचन करना, साफ कर ठीक करना । बेलायद (हे ४, ६५) ।

केलास पुं [केलास] राहु का इष्ट पुत्र-विशेष (सुज २०) ।

केलास पुं [केलास] १ स्वनाम-अभिन्न पर्वत-विशेष (हे ६, ७३, वरड, कुमा) । २ इस नाम का एक नाग राज (इक) । ३ इस नागराज का प्राचल-पर्वत (ठा ४, २) । ४ मिट्टी का एक तरह का पात्र (निर १, ३) । देवो कहइअस ।

केलि देवो कयलि (हुमा) ।

केलि छी [दे] कन्द-विशेष (उत ३६, ६८, सुल ३६, ६८) ।

केलि } छी [केलि, 'ली'] १ बीड़ा, खेन, केलि } मयाक (हुमा, पाम, कपू) । २ परिहास, हाँसी, ठट्टा (पाम, शीप) । ३ काम-बीड़ा (कपू, शीप) । ४ आर वि [वार]

बीड़ा करनेवाला, विनोदी (कपू) । ५ 'काणय न [कानन] बीबीधान (कपू) । ६ 'किल, 'गिल वि [किल] १ विनोदी, बीड़ा-प्रिय (सुभा ३१४) । २ पु. वरतर-जातीय देव-विशेष (सुभा ३२०) । ३ पुन. स्थान-विशेष (पत्र ५४, १७) । ४ 'भवण न [भवन] बीड़ा गृह, विलास-घर (कपू) । ५ 'विमाण न [विमान] किलास-महल (कपू) । ६ 'सयन न [शयन] काम शय्या (कपू) । ७ 'सेजा छी [शय्या] काम शय्या (कपू) ।

केली देवो कयली (हे १, १२०) ।

केली छी [दे] सखी, कुलटा, व्यभिचारिणी छी (दे २, ४४) ।

केलीगिल वि [केलीगिल] केलीगिल स्थान न उलप (पत्र ५५, १७) ।

केय देवो के' (भग पाएण १७—पत्र ५४५, विसे २८६१) ।

केवै (भप) देवो कह (हुमा) ।

केयइय वि [कियत्] कितना ? (सम १३४, विसे ६४६ टी) ।

केवट्ट पुं [कैयर्त्त] घोवर, मछलीमार, मछुमा (पाम, स २५८, हे २, ३०) ।

केयड (भप) देवो केचिअ (हे ४, ४०८, कुमा) ।

केयल वि [केयल] १ भवेला, भवहाम (ठा २, १, शीप) । २ धनुषम, प्रद्वितीय (भप २, ३३) । ३ शूद्र, मय्य वस्तु से प्रमिश्रित (इस ४) । ४ संपूर्ण, परिपूर्ण (निर १, १) । ५ धनरत्न, धन-रहित (विसे ८४) । ६ न. ज्ञान विशेष, सर्वश्रेष्ठ ज्ञान, भूत, भावी वगैरह सर्व वस्तुओं का ज्ञान, सर्वज्ञता (विसे ८७) । ७ 'कप वि [कप] परिपूर्ण, संपूर्ण (ठा ३, ४) । ८ 'णाण न [ज्ञान] सर्वश्रेष्ठ ज्ञान, संपूर्ण ज्ञान (ठा २, १) । ९ 'णाणि, 'नाणि वि [ज्ञानिन्] १ केवल-ज्ञानवाला, सर्वज्ञ (कपू, शीप) । २ पुं. इस नाम के एक भहंन देव, प्रतीत उत्सर्पिणी-काल के प्रथम तीर्थंकर (व ६) । ३ 'णाण, 'नाण, 'भाण देवो 'णाण (विसे ८२६, ८२६; ८२३) । ४ 'दसन न [दर्शन] परिपूर्ण सामान्य बोध (कपू ४, १२) ।

केवल भ [केवलम्] केवल, निर्दोष, माद (स्वप्न ६२, ६३; महा) ।

केवलाअ सक [समा + रभ] धारम्भ करना, शुरु करना । केवलाभद (पद्) ।

केवलि वि [केवलिन्] केवल ज्ञानवाला, सर्वज्ञ (भप) । २ 'पक्सिय वि [पाक्षिक] १ स्वयंभुव । २ पु. जिनदेव, तीर्थंकर (भप ६, ३१) ।

केवलिअ वि [केवलिक] १ केवलज्ञानवाला (भप) । २ परिपूर्ण, संपूर्ण, 'सामादय केवलिअ पत्तय' (विसे २६८१) ।

केवलिअ वि [केवलिक] १ केवल ज्ञान से सम्बन्ध रखनेवाला (प १७) । २ केवल-प्रोच (सूत्र १, १४) । ३ केवल-ज्ञान सम्बन्धी (ठा ४, २) । ४ न. केवल ज्ञान, संपूर्ण ज्ञान (भाव ४) ।

केवलिअ वि [केवलिय] केवल ज्ञान, केवलिय संपत्ते' (सच ६७ टी, विसे ११८०) ।

फेयली की [कयली] ज्योतिष विद्या-विशेष
(हास्य १२६, १२६)।

फेस पुं [फेसा] फेस, बाल (उप ७६८ टी;
प्रथी २६)। पुर न [पुर] वेनास पर
स्थित एक चित्रापर-नगर (इव)। 'लोअ
पु [लोअ] नेरीं का ज्युलन (भा. एण्ड
२, ४)। 'वाणिज्ज न [वाणिज्ज] वेना-
वाले जीवो का व्यापार (भा ८, ५)। 'हृत्थ,
'हृत्थय पुं [हृत्थ, 'क] वेनापार, जमा-
रचित वेना, संवत् बाल (हण्य, पास)।

फेस देवो फेरिस। की. 'सी (मणु १३१)।
फेस देवो फिलेस (उप ७६८ टी. घम
२२)।

फेसर पुं [फयीशर] उत्तम बलि, श्रेष्ठ बलि
(उप ७२८ टी)।

फेसर पुंन [फेसर] एक देवविमान (देवेन्द्र
१४२)।

फेसर पुंन [फेसर] १ पुण्य-रेणु, पराग, निरन्क
(वे १, ५०, ६६, १३)। २ सिंह वीरह
में बंधा ना बाल, वेसाप (सि १, ५०, गुप्ता
२१५)। ३ पुं. बटुन पुन (हण्य, गडक,
पास)। ४ न. इस नाम का एक उद्यान,
नाम्पिन्य नगर का एक उद्यान (उत्त १७)।
५ फल विशेष (दान)। ६ मुकुरी, सोना।
७ छन्द-विशेष (हि १, १४६)। ८ पुन-
विशेष (गडक ११२२)।

फेसरा की [फेसरा] १ सिंह वीरह के रक्त्य
पर के बालों की सदा, 'वेमस य मोहाए'
(भापू ४१; गडक; प्रामो)।

फेसरि पुं [फेसरि] १ सिंह, वनराज,
बरोटोय (उप ७२८ टी; मे ८, १५; एण्ड
१, ४)। २ हस्त-विशेष, भीषणत पर्वत पर
स्थित एक हस्त (गम १०५)। ३ वृष-विशेष,
नरक-शेष के बापुं प्रति बापुदेव (मम
१२४)। 'दह पुं [दह] दह-विशेष (डा
२, १)।

फेसरिशा की [फेसरिशा] गाढ करने का
बन्धे का दुश्मन (भा. सि २३२२ टी)।

फेसरिह वि [फेसरिह] बमरराजा
(गडक)।

फेसरी की [फेसरी] देवो वेमसिआ, 'जिर्-

कटुदियदत्तल्लुपुंनुसपवित्तयनेखरोहलयप'
(एणा १, ५-पय १०५)।

फेसर पुं [फेसा] १ धर्म चक्रवर्ती राजा
(सम)। २ यौहण्य बापुदेव, नारायण
(मउड)।

फेसि वि [फेसि] क्लेश-युन, विनष्ट (विसे
३१५४)।

फेसि पुं [फेसि] १ एक जैन मुनि, भगवान्
पावर्त्तनाथ के गिण्य (पाव. मम)। २ बसुर-
विशेष, प्रव के रूप को धारण करनेवाला
एक देव, जिसको यौहण्य ने मारा था
(मुद्रा २६२)।

फेसि पुं [फेसि] देवो फेसर (पठम ७५,
२०)।

फेसिअ वि [फेसिअ] वेरासल, बान-युक्त।
की. 'आ (मम १, ४, २)।

फेसी की [फेसी] सातवें बापुदेव को मारा
(पठम २०, १८४)।

'फेसी की [फेसी] वेरासली की, 'विदण-
वेसी' (उवा)।

फेसुअ देवो किमुअ (हि १, २३; ८६)।

फेह (भा) वि [फेह] बैसा, जिस तरह
का ? (मवि. पद : कुमा)।

फेहि (मम) घ. लिए, बापे (हि ४, ४२५)।

फेअय न [फेअय] बपद, धम्म (हि १, १, ना
१२४)।

फेअ देवो फोक (हि २, ४५ टी)।

फेअ देवो फेन (गडक)।

फेअह देवो फेदह (गप)।

फेआम मर [वि + रस] विवचना,
पिनना। बापासद (हि ४, १६५)।

फेआसिय वि [वि + सिज] विवक्ति, प्रहृज,
विता हृषा (हुमा न २)।

फेइड पुं [फेइड] १ बोजन, निव (एण्ड
१, ४, उर २३, स्वन् ६१)। २ छन्द का
एक भेद (मि)। 'बइय पुं [बइय]
कनपति विशेष, वनजन्म (एण्ड १७-
पय २२७)।

फेइय की [फेइय] की बोजन, निवी
'बोदना पयम मर' (एण्ड; पास)।

फेइया की [फे] बोदना, बन्ध के बंधार (दे
२, ४६)।

फेउआ की [फे] मोझा की मगिन, बपीपागिन
(दे २, ४८, पास)।

फेउग [न [फेउग] १ बुद्धल, मपूवें वस्तु
कोउव [देवने का मगिनय (गुर २, २२६)।

२ धारण्य, विमय (वव १)। ३ जम्बव
(यप)। ४ जम्बुवडा, जम्बुवडा (यव १)।

५ दृष्टि-लोपादि से रखा के लिए विद्या जाता
बाजन का तिकन, रक्षा-गम्यनादि प्रयोग (पास)

धीय, विपा १, १; एण्ड १, २; धर्म ३)।

६ वीराम्य मादि के लिए विद्या जाता स्वान,
विस्मापन, धूर, होम वगैरह मर्म (वव १,
एणा १, १४)।

फेउण्ड वि [फेउण्ड] मोडा गरम (धर्मवि
११३)।

फेउहल देवो फेउहल (हि १, ११७;

फेउहल १७१, २, ६६; कुमा. पास)।

फेउहलि वि [फेउहलि] बुद्धलनी, बौद्धनी,
बुद्धल-विष (कुमा)।

फेउहल देवो फेउहल (कुमा; वि ६१)।

फेउग पुं [फेउग] देव-विशेष (स ४१२)।

फेउगम पुं [फेउगम] १ धनार्थ देव-विशेष,
(इव)। २ वि, उन देव में छेनेवाला (एण्ड
१, १, विसे १४१२)।

फेउ पुं [फेउ] १ एक नाम का एक मतार्थ
देव (एण्ड १, १)। २ पति विशेष (डा ७)।

३ द्वीप विशेष (ती ४५)। ४ इस नाम का
एक धनुर (हुमा)। ५ वि, कौज देव का
निवासी (एण्ड १, १)। 'सिउ पुं [सिउ]
वातिरेय, मान्द (हुमा)। 'थर पुं [थर]
इस नाम का एक द्वीप (मणु-टी)। 'वीरम
पुन [वीरम] एक प्रकार का जहान (इव
१)। देवो कुच।

फेविम की [फेविम] धारी, मुंनो (वा
१७०)।

फेविम वि [फेविम] माहृति, मंजुवि
एण्ड १, ४)।

फेवियन न [फे] १ ज्योतिष-गण्यकी सूचना।
२ कटुनरि निर्दिग-गण्यकी सूचना: 'नटनरो
बोमजम' (पास २२१ भा)।

फेव देवो फेव (हि १, १११ टी)।

फेव देवो फेव (हि १, १०२)।

कोंड पुं [कोण्ड, गौड] देश-विशेष (इक) ।
 कोंडल देखो कुंडल (राज) । भैरवग पु
 [मित्र] एक व्यतर देव का नाम (बृह
 ३) ।
 कोंडलग पुं [कुण्डलरु] पक्ष विशेष (श्रीप) ।
 कोंडलिया जी [दे] १ श्वापद वस्तु विशेष,
 साही, श्वापद । २ क्रीडा, कोट (दे २, ५०) ।
 कोंडिय पु [दे] ग्राम निवासी लोगों में कूट
 कराकर छल से गैब का मालिक बन बैठने-
 वाला (दे २, ४८) ।
 कोंडिणपुर न [कोण्डिनपुर] नगर विशेष
 (रत्नम ५१) ।
 कोंडिया देखो कुडिया (परह २, ५) ।
 कोंडिण देखो कोडिण (राज) ।
 कोंड देखो कुड (हे १, ११६) ।
 कोंडुल्ल पुं [दे] उबूक, उल्लू, पक्ष विशेष
 (दे २, ४६) ।
 कोत देखो कुत (परह १, १ मुर २, २८) ।
 कोतल देखो कुतल = कुतल (प्राक ६,
 सलि ४) ।
 कोती देखो कुती (णामा १, १६—पत्र
 २१३) ।
 कोमी देखो कुमी (प्राक ६) ।
 कोक पु [कोरु] १ चक्रवाक पक्षी (दे ८,
 ४३) । २ वृक, मेरिया (इक) ।
 कोकतिय पुषी [दे] जन्तु विशेष, लोमड़ी,
 कोकरिया (परह १, १) । जी २या (णामा
 १, १—पत्र ६५) ।
 कोरनद देखो कोरगय (सबोध ४७) ।
 कोरगय न [कोरनद] १ रत्न कुटुब । २
 साल कमल (परह १, स्वप्न ७२) ।
 कोवासिय [दे] देखो कोवासिय (परह
 १, ४—पत्र ७८) ।
 कोकुइय देखो कुकुइय (ठ ६—पत्र ३७१) ।
 कोषः सक [व्या + ह] कुलाना, धातान
 करना । कोषः (दे १, ७६, पद) । वरु
 कोषंन (कुमा) । सह कोकिय (भरि) ।
 प्रयो. कोषावद (भवि) ।
 कोषाम पु [कोषाम] इह नाम का एक
 वर्षांत, यईर (भाद्र १) ।
 कोषामिय [दे] देखो कोषासिअ (दे २,
 ५०) ।

कोकिय वि [व्याहृत] ब्राह्म, कुलाया हुमा
 (भवि) ।
 कोककुइय देखो कम्कुइय (कस, श्रीप) ।
 कोखुन्म देखो खोखुन्म वरु कोखुन्ममाण
 (वि २१६) ।
 कोखप न [दे] अलीक हित, भूठी मलाई,
 दिलावटी हित (दे २, ४६) ।
 कोखिय पुषी [दे] शैशक, नया शिष्य (वव
 ६) ।
 कोच्छ न [कोरस] १ गोत्र विशेष । २ पुषी,
 कौस गोत्र में उत्पन्न (ठ ७—पत्र ३६०) ।
 कोच्छ वि [नीक्ष] १ कुसि सम्बन्धी, उदर से
 सम्बन्ध रखनेवाला । २ न उदरपदेष्ट
 'गणियावारकणैस्कात्य (१ पद) हल्यी' (णामा
 १, १—पत्र ६४) ।
 कोच्छभास पु [दे] कुसभाप] वक्क,
 कौभा, वायस, 'न मली सयनाहल्यो भावि
 प्कड कोच्छभासम्' (उव) ।
 कोच्छेअय देखो कुच्छेअय (हे १, १६१,
 कुमा, पद) ।
 कोज देखो कुज (कप) ।
 कोजप न [दे] जी रहल्य (दे २, ४६) ।
 कोजय देखो कुजय (णामा १, ८—पत्र
 १२५) ।
 कोजरिअ वि [दे] भापूरित, पूर्ण किया हुमा,
 मय हुमा (पद) ।
 कोरमरिअ वि [दे] ऊपर देखो (दे २,
 ५०) ।
 कोर देखो कोटर (विद्य १५१) ।
 कोरिय पु [दे] गौ (निश्रीय ३५६५ गा०) ।
 कोटुभ पुन [दे] हाथ से ग्राह्य जल, 'कोटु मो
 जलकरफालो' (पाप) । देखो कोट्टुंभ ।
 कोटीवरिस य [कोटीवर्ष] ताट देरा की
 प्राचीन राजधानी (विचार ४६) ।
 कोट्ट देहां कुट्ट = कुट्ट, वक्क कोट्टिजमाण
 (पापम) । सट्ट कोट्टिय (जीव ३) ।
 कोट्ट न [दे] १ नगर, शहर (दे २, ४५) ।
 २ बोट, बिना, दुर्ग (णामा १, ८—पत्र
 १३४, उत ३०, बृह १, गुण ११८) ।
 'वाल पु [पाल] कोट्टयान, नगर रत्न
 (गुण ५१३) ।

कोट्टिया जी [कुट्टयन्तिका] तिन वगेरह
 की चूले का उपकरण (णामा १, ७—पत्र
 ११७) ।
 कोट्टिरिया जी [कोट्टक्रिया] देवी-विशेष,
 दुर्गा प्रादि स्त्र क्षपाती देवी (धनु २५) ।
 कोट्टय देखो कुट्टय (उप १७६, परह १, १) ।
 कोट्टर देखो कोटर (महा, हे ४, ४२२, गा
 ५६३ य) ।
 कोट्टवीर पु [कोट्टवीर] इस नाम का एक
 मुनि प्राचार्य शिवभूति का एक शिष्य (विसे
 २५५२) ।
 कोट्टा जी [दे] १ गौरी, पार्वती (दे २,
 ३५—१, १७४) । २ गला, गर्दन (उप
 ६६१) ।
 कोट्टाग पु [कोट्टाग] १ वर्षिक, बईर
 (प्राचा २, १, २) । २ न, हरे फलों को
 सुखाने का स्थान विशेष (बृह १) ।
 कोट्टिय पु [दे] द्रोणी, नौका, जहाज (दे
 २, ४७) ।
 कोट्टिम पुन [कुट्टिम] १ रत्नमय भूमि
 (णामा १, २) । २ कसत वष जमीन, बँधी
 हुई जमीन (य १) । ३ भूमि-मल (मुर १,
 १००) । ४ एक या धनेक हलावाला घर
 (वव ४) । ५ कोपवी, मदी । ६ रत्न की
 खान । ७ घनरा का पेड़ (हे १, ११६,
 प्राप्र) ।
 कोट्टिम वि [कुट्टिम] बनावटी, बनाया
 हुमा, बहुवचरी (पत्रम ६६, ६६) ।
 कोट्टिल पु [कोट्टिक] सुगर, गुग्गरी, मुगप,
 कोट्टिल] ओटी (राज, विपा १, ६—पत्र ६६,
 ६६) ।
 कोट्टी जी [दे] १ दोह, दोहन । २ विषय
 रखना (दे २, ६४) ।
 कोट्टुभ पुन [दे] हाथ से ग्राह्य जल,
 'कोट्टु म बट्टए तोए' (दे २, ४७) ।
 कोट्टुम यक [रम्] क्रीडा भरता, रमण
 करना । नाट्टुमद (हे ४, १६८) ।
 कोट्टुगणी जी [कोट्टुगणी] जैन मुनि-
 गण की एक शाखा (कप) ।
 कोट्ट देखो कुट्ट = कुट्ट (भग १६, ६, णामा
 १, १७) ।

कोट्ट पुं [कोट] १ घारणा, धनधारित धर्म का कोशान्तर में स्मरण-योग्य भवस्थान (एरि १७६) । २ सुगन्धी द्रव्य-विशेष (राय ३४) ।

कोट्ट १ देखो कुट्ट = कोट्ट (आया १, १, ठा कोट्टा ३, १, पाय) । २ भाष्य विशेष, कोट्टय घातास-विशेष (धोय २००, यव १) । ४ धावरक, कोटरी (वस ५, १, उ ४६६) । ५ बैर्य विशेष (आया २, १) । गार न [गार] भाष्य भले का घर (धोय कप्य) । २ माएगारा, भडार (आया १, १) ।

कोट्टार पुन [कोट्टागार] माएगारा, भडार (पठम २, ३) ।

कोट्टि वि [कुट्टिम्] कुट्ट रोगी (भाषा) । कोट्टिया औ [कोट्टिमा] छाटा कोट, लड्ड कुशुल (उग) ।

कोट्टु पुं [कोट्ट] शृगाल, सियार (पह) । कोडड देखो कोडड (स २५६) ।

कोडडिय देखो कोडडिय (कप्य) ।

कोडधन [दे] कार्य, नाम काज (दे ३, २) ।

कोडय [दे] देखो कोडिय (पाय) ।

कोडर न [कोटर] गह्वर, कुप का योग भाग, विवर (गा ५६२) ।

कोडस पु [कोटर] पत्ति-विशेष (राज) ।

कोडाकोडि औ [कोटाकोटि] संस्था विशेष, बरोड की बरोड से हुने पर जो संस्था सम्प हो यह (मम १०५, कप्य, उव) ।

कोडाल पु [कोडाल] १ मोर विशेष का प्रवर्तक पुत्र । २ न, गाव विशेष (कप्य) ।

कोडि औ [कोटि] १ घनुय का धन भाग (राय ११३) । २ अद, प्रकार (पिड ३६५) ।

कोडि औ [कोटि] १ संस्था विशेष, बराड, १०००००० (आया १, ८, मुर १, ६७, ४, ६०) । २ धन भाग, धली, मोर (पि १२, २६, पाय) । ३ अंग, विभाग, भाग, 'नपिपयाना एण्यो सोए वातगाराडिमित्तोनि' (पय ३६, ठा) । 'कोडि देतो कोडा-कोडि (मुग २६६) । 'यद्ध नि [यद्ध] बराड संस्थाभा (वय ३) । 'भूमि औ [भूमि] एर जेन ओर्य (की ४३) । 'सिमा औ [सिमा] एर जेन ओर्य (पठम ४८,

६६) । 'सो य [अस] करोडो, अनेक करोड (मुग ४२०) । देखो कोडी ।

कोडिअ न [दे] १ छोटा मिट्टी का पात्र, लड्ड सराव, सकोरा (दे २, ४७) । १ पुं पिशुन, दुर्जन, चुगलखोर (यद्) ।

कोडिअ पु [कोटिक] १ एक जैन मुनि (कप्य) । २ एक जैन मुनि-गण (कप्य, ठा ६) ।

कोडिअ वि [कोटित] सकोषित (घर्मस ३८८) ।

कोडिअ न [कोडि-य] १ इस नाम का कोडिअ एक नगर (उर ६४८ टी) । २ काशित मोर की शाखा रूप एक मोर (कप्य) ।

३ पुं कोडिअ मोर का प्रवर्तक पुत्र । ४ वि कोडिअ-मोरीय (ठा ७—पय ३६०, कप्य) । ५ पु. एक मुनि, जो शिवभूति का पित्र्य था (विसे २५५२) । ६ महागिरि-भूरि का पित्र्य, एक जैन मुनि (कप्य) । ७ मोरम स्वामी के पास सोसा सेनेवाले पाँच सौ सारमा का गुप्त (उर १४२ ले) ।

कोडिआ औ [कोडिअ] कोडिअ मोरीय औ (कप्य) ।

कोडिअ पु [दे] पिशुन दुर्जन, चुगलखोर (दे २, ४०, पह) ।

कोडिअ देवा कोटिअ (राज) ।

कोडिअ पु [कोटिअ] इस नाम का एक श्रापि, बाणस्य मुनि (वय १, पल्लु) ।

कोडिअ न [कोटिअ] बाणस्य प्रणीत नीति-शास्त्र (पल्लु) ।

कोडिसाहिय न [कोटिसाहित] प्रयाख्यान विशेष, पहले दिन उपास्य करते दूसरे दिन भी उपवास भी सी जातो प्रतिज्ञा (वय ४) ।

कोडी देखो कोटि (उर, ठा ३, १, जो ३०) । 'करण न [करण] विभाग, विमजन (पिड ३०७) । 'णार न [नार] इस नाम का मोरल देव का एक नगर (ले १५) । 'मातमा औ [मानमा] गणार-भाय की एक भूधर्मा (ठा ७—पय ३६३) । 'वरिम न [वर्य] साठ देव की राजधानी, नगर विशेष (दर पर १७४) । 'वरिमिग औ [वरिमि] जैन भुवि-गण की एक ।

शाखा (कप्य) । 'सर पुं [श्वर] बरोड पति, कोटीय (मुग ३) ।

कोडीण न [कोडीण] १ इस नाम का एक मोर, जो कोस मोर की एक शाखा रूप है । २ वि. इस मोर में उन्नत (ठा ७—पय ३६०) ।

कोडुव न [दे] कार्य, काज (दे २, २) ।

कोडुवि देखो कुडुवि (ठा ३, १—पय १२५) ।

कोडुविय ॥ [कोडुविय] १ कुटुम्ब का स्वामी, परिवार का स्वामी, परिवार का मुखिया (नम) । २ ग्राम प्रधान, गाँव का भादमी (पय १, ५—पय ६५) । ३ वि. कुटुम्ब में उन्नत, कुटुम्ब से सम्बन्ध रखने-वाला, कुटुम्ब-सम्बन्धी (महा जीव ३) ।

कोडुमगा पु [कोडुप] भग्न-विशेष, कोटी की एक जाति (राज) ।

कोडु [दे] देखो कुडु (दे २, ३३, स ६४६; ६४२; हे ४, ४२२; आया १, १६—पय २२४, उव ४६२, मवि) ।

कोडुम देखो कोडुम (कुमा) ।

कोडुमिअ न [रत] रति शीला विशेष (कुमा) ।

कोडुविय वि [दे] कुटुम्बी, कौतुकी, विनोद-शील, उत्कृष्ट (उव ७६८ टी) ।

कोडुव पु [कुडि] रोग विशेष, कुट्ट राग कोड' वि ६६, आया १, १४, भा २०) ।

कोडि वि [कुडि] कुट्ट रोग से प्रस, कुट्ट-रोगी (भाषा) ।

कोडि १ वि [कुडि] कुट्ट-रोगी, कुट्ट-कोडिय १ प्रस (पय २ ५ विरा १, ७) ।

कोग वि [दे] १ बाना, श्याम वर्णवाना (दे २, ४५) । २ पु. लड्ड, लकड़ी, मटि (दे २, ४५ निड १, पाय) । ३ बाँला बनेल बराने की लकड़ी, बाँला-बादल-दरुह (जो ३) ।

कोण पुं [कोग] कोन, मन, पर का कोण । एक भाग (पठ ६२, ४४, रजा) ।

कोगन पु [कोग] रागन निराध (पाय) ।

कोगायल पु [कोगायल] भगवान् शाति-भाय के प्रथम थारव का नाम (विचार ३७८) ।

सोणालग पुं [सोनाल] पतन पर स्थित (पय १, १) ।

कोणाली स्त्री [दे] मोठी, मोठ (बृह १)।
कोणिअ } पु [कोणिअ] राजा भेरिणक का
कोणिग } पुत्र, नृप विशेष (भत. छाया १,
१; महा. उप)।

कोणु स्त्री [दे] लेखा, लकीर, रेखा (दे २, २६)।
कोणेद्विया स्त्री [दे] पुञ्जा, गुं 'बगोठी'
(अनु० वृ० हारि० पत्र० ७६) देखो,
चणोद्विया।

कोण्य पु [दे. कोण] मूह-कोण, धर का
एक भाग, कोना (दे २, ४५)।

कोतव न [कोतव] मूषक के रोम से निष्पन्न
रूता (राज)।

कोतुहल देखो कुकुहल (काल)।

कोत्तलका स्त्री [दे] दाक परोसने का भाण्ड,
पान-विशेष (२, १४)।

कोत्तिअ वि [कोत्तिकर] कौतुकी, कुतूहली
(गा ६७२)।

कोत्तिअ पु [कोत्तिकर] १ भूमि-शयन करने-
वाला वागप्रत्य (प्रीप)। २ न. एक प्रकार
का मधु (ठा ६)।

कोरय देखो कोच्छ = कोश।

कोरथर न [दे] १ विमान (दे २, १३)। २
बीट, गह्वर (छपा २४७, निबू १५)।

कोरथल पु [दे] १ बुराूल, गोष्ठ (दे २,
४८)। २ कोयली, बिला (स १६२)।
*कारा स्त्री [कारी] भीरी, बीट विशेष
(बृह १)।

कोरुथुभ पु [कोरुथुभ] वासुदेव के वसः
कोरुथु स्थल की मणि (बी १०, प्राप्.
कोरुथु महा. गा १५१; पएह १, ४)।
कोरुड पु [कोरुड] घनुप, घनु, वासुभ,
बाप (भत १६)।

कोरुडिम [दे] देतो रु दंडिम (ज १, नय्य)।
कोरुडिय [दे] देतो रु दंडिय (ज १, नय्य)।

कोरुसग देखो कोरुसग (भग ६, ७)।

कोरुव गेलो रुद्वप (मवि)।

कोरुविया स्त्री [दे] मातुवाहा, सुद बीट-
विशेष (मुख १८, ३५)।

कोरुवाल देखो रुदाल (पएह १, १—पत्र
२३)।

कोरुलिया स्त्री [रुदालिया] छोटा कुत्तर,
कुत्तरी (पिना १, ३)।

कोय पुं [कोय] इस नाम का एक राजा,
जिसने दशरथ मरत के साथ बँध दीक्षा ली
थी (पत्रम ८५, ४)।

कोय्य देखो कुय्य = कुपु। कोय्य (नाट)।

कोय्य पुं [दे] अषराय, गुनाह (दे २, ४५)।

कोय्य वि [कोय्य] द्वेय, धर्मोत्तिकर,
"भक्तोपजन्मपुत्रता" (पएह १, ३)।

कोय्यर पु [कुय्यर] १ हाथ का मध्य भाग
(कोय २६६ गा, कुमा. दे १, १२४)। २
नदी का किनारा, तट, तीर (कोय ३०)।

कोचेरी स्त्री [कोचेरी] विद्या विशेष (पत्रम
७, १४२)।

कोमग पु [कोमग] पक्षि-विशेष (भत.
कोमग ३) जीप।

कोमल वि [कोमल] शूद्र सुकुमार (जी १०,
पाम, कपु)।

कोमार वि [कोमार] १ कुमार से सम्बन्ध
रखनेवाला, कुमार-सम्बन्धी (विपा १, ७१)।
२ कुमारी सम्बन्धी (पाम)। ३ कुमारी में
उत्पन्न (दे १, ८१)। स्त्री. "रिया", "री"
(पत्र १५)। "भिय न ["भिय"] वैद्यक
शास्त्र विशेष, जिसमें बासकी के स्तन पान-
संबन्धी वर्णन है (विपा १, ७—पत्र ७३)।
कोमारी स्त्री [कोमारी] विद्या-विशेष (पत्रम
७, १३७)।

कोमुइया स्त्री [कोमुदिर] श्रीहृष्य वासुदेव
की एक भेरी, जो उत्सव की सूचना के समय
बजाई जाती थी (विते १४७६)।

कोमुई स्त्री [दे] पूर्णिमा, वीह स्त्री पूर्णिमा
(दे २, ४८)।

कोमुई स्त्री [कोमुई] १ शब्द श्रुती की
पूर्णिमा (दे २, ४८)। २ चन्द्रिका, चांदनी
(भीप, धम्म ११ टी)। ३ इस नाम की एक
नगरी (पत्रम ३६, १००)। ४ नास्ति की
पूर्णिमा (यय)। "नाह पुं [नाय] चन्द्रमा,
चांद (पत्रम ११ टी)। "महोत्सव पुं [महो-
त्सव] उत्सव विशेष (पि ३६६)।

कोमुदिया देखो कोमुइया (छाया १, ५—
पत्र १००)।

कोमुदी देखो कोमुई—भीमुदी (छाया १,
१२)।

कोयय वि [कीतय] वृहे के रोमों से बना
हुआ (वज्र) (अणु ३४)।

कोयय वि [कीयय] 'कोयय' देश में निवाप्त
(छाया २, ५, १, ५)। देखो कोययग।

कोययग पुं [दे] रुई से भरे हुए कपड़े
कोययय का बना हुआ प्रावरण विशेष,
रजाई (छाया १, १७—पत्र २२६)।

कोयरी स्त्री [दे] रुई से भरा हुआ कपड़ा
(बृह ३)।

कोरंग पुं [कोरङ्ग] पक्षि-विशेष (पएह १,
१—पत्र ८)।

कोरंट पुं [कोरण्ट, ०] १ वृक्ष विशेष
कोरंटग (पाम)। २ न. इस नाम का
शुक्रवृक्ष (मर्वाच) शहर का एक उर्वरन
(वव १)। ३ कोरएल्ल वृक्ष का पुष्प (पएह
१, ४, ज १)।

कोरअ (श्री) देखो कडरय (प्राह ८४)।

कोरय पुं [कोर] कलापाक सुहुन,
कोरय कल की कली (पाम), 'वत्तारि
कोरवा पत्तार' (ठा ४, १—पत्र १८५)।

कोरय देखो कडरय (सम्मस १७६)।

कोरविआ स्त्री [कोरविआ] देखो कोरविआ
(अणु १३०)।

कोरव पुं [कोरव] १ कुटुम्ब में उत्पन्न
(सम १५२, ठा ६)। २ नीरव्य-नीरव्य।
३ पु बाठवा चक्रवर्ती राजा महोदय (जीव
३)।

कोरुनीया स्त्री [कीरुनीया] इस नाम की
पत्न्य प्राय की एक मूर्च्छा (ठा ७)।

कोरुंटि देखो कोरुंट (छाया १, १—
कोरुटिय पत्र १६, नय्य, पत्रम ४२, ८,
कोरुंट स्त्री, उपा)।

कोल पुं [दे] गीता, नोक, गला (दे २, ४५)।

कोल पुं [कोड] १ सूत्र, बराह (पएह १,
१—पत्र ७, स १११)। २ उत्तम, गौर
'कोनीय'—(गड)।

कोल पुं [कोल] १ देश-विशेष (पत्रम ६५,
६६)। २ छुण, बाह बीट (सम ३६)। ३
शूवर, बराह, सूत्र (उप ३२० टी, छाया
१, १, कुमा. पाम)। ४ सूत्रिक से भागार
का एक वस्तु (पएह १, १—पत्र ७)। ५
अक्ष विशेष (पत्रम ५)। ६ मनुष्य की एक
नीच जाति (पाम ४)। ७ बदरी वृक्ष, बेर
का गाढ़ा दूध, बदरी-मल, बेर (द्व ५,
१, नय ६, १०)। *पाम न [पाक] नगर-

विशेष, जहाँ श्रीमत्पनदेव भगवान् का मन्दिर है, यह नगर दक्षिण में है (ती ४३)। "पाल पु [कोल] देव विशेष, धरणेन्द्र का लोकपाल (श ३, १—पत्र १०७)। "मुणय, मुणह पुष्पे [मुनक] १ वडा शूवर, सूमर की एक जाति, जगती बराह (भावा २, १, ५)। २ शिकारी कुत्ता (परण ११)। जी. "जिया (परण ११)। "जास पुन [जास] बाण, लकड़ी (मम ३६)।

कोल वि [कोल] १ शक्ति का उपासक, तान्त्रिक मत का अनुयायी। २ तान्त्रिक मत से संबंध रखनेवाला 'कोली छम्पो वस्य एो भाइ रम्पो' (कपू)। ३ न बदर फल-संबंधी (भा १, १०)। "चुण्ण = [चूर्ण] बेर का चूर्ण, बेर का सत्तू (मम ५, १)। "द्विय न [स्थिरक] बेर की छड़िया या शुकली (भा ६, १०)।

कोलन पु [कोल] पिठर, स्थाली (दे २, ४७ पाय)। २ गूह, घर (दे २, ४७)।

कोलन पु [कोलन] बुन की शाखा का नामा हुआ मय भाग (भनु ५)।

कोलमिणी जी [कोली, कोली] कोन-जातीय की (मात्र ४)।

कोलपरिय वि [कोलमृदिक] कुलमृद-संबंधी, मिट्टी-संबंधी, मिट्टी से संबंध रखनेवाला (उग)।

कोलजा श्री [दे] भाग्य रखने का एक छद्म का गर्त (भावा २, १, ७)।

कोलर देवा कोटर (मा ५६३ म)।

कोलर न [कोलर] उपासित शास्त्र में प्रसिद्ध एक चरण (विने ३१४८)।

कोलाल वि [कोलाल] १ कुम्भकार संबंधी। २ न मिट्टी का पाय (उग)।

कोलालिय पु [कोलालिक] मिट्टी का पाय बेचनेवाला (बृह २)।

कोलह पु [कोलाम] शय की एक जाति (परण १)।

कोलाहल पु [दे] कभी की धाराय, कभी का शब्द (दे २, ५०)।

कोलाहल पु [कोलाहल] लुपन, शरत्तन, रोना, हल्ला, बड़ा क्रूर जोरावा प्लेन प्रकार

का प्रकृत शब्द (दे २, ५०; हेना १०५, जन ६)।

कोलाहलिय वि [कोलाहलिक] कोलाहल-वाला, शोरखलवाला (पत्र ११७, १६)।

कोलिअ पु [दे] एक भयम भयुक्त जाति (सुख २, १३)।

कोलिअ पु [दे] कोली, कनुवाय, घुसाहा, कपडा बुननेवाला (दे २, ६५, सुदि, पत्र २, उप वृ २१०)। २ जल का कोडा, मक्का (दे २, २५, पाय, या २०, भाव ४, बह १)।

कोलिअ न [दे] उल्लुख, धूना (दे २, ४६)।

कोलिअ न [कोलीग्य] कुलीना, खालानी (पर्व १४६)।

कोलीरुय वि [कोडीटल] स्वीटल, फ्रीडल (गठ)।

कोलीण न [कोलीन] १ निचदही, लोच-बाला, जन-मृति (मा ३७)। २ वि बल-परपरायण, कुलम्ब से भागात। ३ उन्नत कुल में उत्पन्न। ४ तान्त्रिक मत का अनुयायी (भाट—महावी १३३)।

कोलीर न [दे] लान रम का एक पदार्थ, कुलविन्द 'कोलीरसणयण्ये' (दे २, ४६)।

कोलुण न [काण्य] दया, भुजंग्या, वज्र्या (निबू ११)। "पडिया, "पडिया की [प्रतिष्ठा] अनुकम्पा की प्रतिष्ठा (निबू ११)।

कोलेज पु [दे] नीचे मोन श्रीर ऊपर लार्ड के भावा का भाग्य आदि मले का बोटा (भावा २, १, ७, १)।

कोलेय पु [कोलेयक] खान, बुसा (सम्मत १६०, पर्व ५२)।

कोल पु [दे] कोषा, जेनी हुई लकड़ी का टुकड़ा (निबू १)।

कोलर न [कोलरि] नगर विशेष (निबू ४२७)।

कोलपाम न [कोलपाम] दक्षिण देश का एक नगर जहाँ श्री श्रमदेव का मन्दिर है (ती ४३)।

कोलर पु [दे] पिठर, स्थाली, कापी, कदिया (दे २, ४७)।

कोला देगो बुला (दुमा)।
कोला देगो बुलाग (मंत्र)।

कोलापुर न [कोलापुर] दक्षिण देश का एक नगर, महानक्षत्री का स्थान (ती ३४)।

कोलासुर पु [कोलासुर] इस नाम का एक देव्य (ती ३७)।

कोल्लुग [दे] देखो कोल्लुअ (वव १ बृह १)।

कोलाहल न [दे] पत्र विशेष, विन्धी-फल (दे २, ३६)।

कोल्लुअ पु [दे] १ शृगाल, तियार (दे २, ६५, पाय पत्र ७, १७, १०५, ४२)।

२ कोल्ह चरकी, कल से रख निकालन का कल (दे २, ६५, महा)।

कोन सन [कोपय] १ द्विपत्त करना। २ बुद्धि करना। कोवेर (सूमति १२५), कोवेर्य (सुप ६४)।

कोय पु [कोय] कोय, उल्ला (विपा १, ६; प्राय १७५)।

कोयवि [कोपन] कोपी, कोय-मुल (पाय गुरा ३६५, सम १४७, लज्ज ८२)।

कोवाय पु [कोपक] कनायं देव-विशेष (पत्र २७४)।

कोवासिअ देखो कोवासिय (पाय)।

कोवि वि [कोपिन] कोपी, कोय-मुल (गुरा २८१, या २०)।

कोविअ वि [कोविअ] मिणुए, विद्वान् धर्मित (भावा मुया ११०, १६२)।

कोविअ वि [कोपिन] १ कुट्ट लिया हुआ। २ द्विपत्त, दाप-युन किया हुआ, बदरा फिर लाहा बायलवि नरि बाविय बयल (उग)।

कोविआ श्री [दे] शृगाली, निवारित (दे २, ४६)।

कोविआर पु [कोविदार] बुन विशेष (निबू ३३)।

कोविगा या [कोपिनी] बाय-गुरा श्री (या १२)।

कोवाय (मा) वि [फुदुण] चटा गरम (मा १०२)।

कोम पु [दे] १ कुट्टन रंग से रंग हुआ रत्न कपड़ा। २ गठन कपड़ा, शालर (दे २, १५)।

कोम पु [कोय] कोम, मार्ग की गम्भीर का पल्लव को कोर (लज्ज की ३२)।

कोस पु [कोश, प] १ खजाना, भण्डार (एगामा १, १३१ पत्र ५ २४) । २ तलवार की म्यान (सुम १, ६) । ३ मुकुल, 'बमलकोसब' (कुमा) । ४ मुकुल, कली (गड) । ५ गोल, वृत्ताकार 'ता मुह-मेतियवरकोमपिहियपरसरतदतरपरसर' (सुपा २७ गड) । ६ दिव्य-भेद ता सोहे का स्पर्श वगैरह शाय 'एव्य ग्रहें कोसविसएहि पच्चाएयो' (म ३२४) । ७ अभिमान शस्त्र शब्दार्थ मिलक प्रत्य जैसा प्रस्तुत पुस्तक । ८ पुन पलपान, चपन (पाप्र) । ८ न नगर विशेष 'कोस नाम नगर' (स १३३) । १ पाण न [पाण] सौगव, शाय (पा ४४८) । १ हिप पु [हिप] खजाना की भण्डारी (सुपा ७३) । कोसय पु [कोशाय] कन-बुल विशेष (पण १—पत्र ३१) । १ गडिया की [गण्डिया] लक्ष्म विशेष एक प्रकार की तलवार (राज) ।

कोसविया की [कोशामिया] जैनमुनि गण की एक शाखा (पणु) ।

कोसवी की [कोशामी] बस् देश की मुख्य-नगरी (ठा १०, विपा १, ५) ।

कोसग पु [कोशग] साधुओं का एक चर्म मय उपकरण चमड़े की एक प्रकार की केशी (धर्म १) ।

कोसट्टरिआ की [दे] चण्डी, पार्वती, गौरी, शिव-पत्नी (दे २, ३४) ।

कोसय न [दे कोशग] लघु शराब, छोटा पान पात्र (दे २, ४७ पाप्र) ।

कोसल न [कोशल] कुशलता निपुणता, बातुरी (कुमा) ।

कोसल न [दे] नीची नारा इनारकन्द (दे २ ३०) ।

कोसल } पु [कोसल *] १ देश विशेष कोसलग (कुमा महा) । २ एक जैन महर्षि, मुनीसल मुनि (पत्र २२, ४४) । ३ कोमल देश का राजा । ४ दि कोसल देश में उपर (ठा ५ २) । ५ पुर न [पुर] अयोध्या नगरी (पात्र १) ।

कोसला की [कोसला] १ नगरी विशेष,

अयोध्या नगरी (पत्र २०, २८) । २ अयोध्या प्रांत, कोसल देश (भग ७, ६) ।

कोसलिअ वि [कोशलिक] १ कोसल देश में उत्पन्न, कोसल देश सम्बन्धी (भग २०, ८) । २ अयोध्या में उत्पन्न, अयोध्या सम्बन्धी (ज २) ।

कोसलिअ न [दे कोशलिक] प्रायुव, भेंद, उपहार (दे २, १२, सण सुपा—प्रस्तावना ५) ।

कोसलिआ की [दे कोशलिक] ऊपर देखो (दे २, १२ सुपा—प्रस्तावना ५) ।

कोसल न [कोशल्य] निपुणता, चतुराई (कुमा सुपा १६, सुर १०, ८०) ।

कोसल न [दे] प्रायुव, भेंद, उपहार 'त पुरजणकोसल नरवदण अणिय कुमारस्त' (महा) ।

कोसल्य की [कोशल्य] निपुणता, चतुराई तह मज्झिमेकोसल्यया य सोएण्चिय इयारिण' (सुपा ६०१) ।

कोसल की [कोशल्य] दाशरथि राम की माता (उर व ३७४) ।

कोसलिअ न [दे कीगलि] भेंद, उपहार (दे २, १२, महा सुपा ४१३, ५२७ सण) ।

कोसा की [कोश] इस नाम की एक प्रसिद्ध वेद्या, जिसके बहा जैन महर्षि शिस्तूलभद्र मुनि ने निविकार भाव से बानुबान (बीमासा) किया था (विदे ३३) ।

कोसिय नि [कोषग] थोडा गरम (नाट—वेणी) ।

कोसिय न [कोशिक] १ मनुष्य का सोन विशेष (प्रवि ४१, ठा ३६०) । २ बीसवें नवम का सोन (चंद १०) । ३ पु जलुक, युव, चल्तु (पाप्र सार्थ ५६) । ४ सप विशेष चण्डोशिव-नामन दृष्टि विष सप, जिसको भगवान् श्रीमन्वीर न प्रबोधित किया था (भावय) । ५ वृष विशेष । ६ इद्र । ७ कुल । ८ कोशाव्यध खजाना की छोटि, धनुराज । १० इन नाम का एक राजा । ११ इन नाम का एक मयूर । १२ सप को पकड़नमाला, सपरा, मारटिन । १३ अग्निसार, मज्जा । १४ शृगारय (दे १,

१५६) । १५ इस नाम का एक तापस (मनि) । १६ पुत्री मौरिन गोत्र में उत्पन्न, कोशिक गोत्रीय (ठा ७—पत्र ३६०) । १७ श्री कोसिई (मा १६) ।

कोसिया की [कोशिका] १ भारतवर्ष की एक नदी (कस) । २ इस नाम की एक विद्या-वार राज-कन्या (पत्र ७, ५४) । ३ चमड़े का जुता, कोसियमालाभूषितसिरोहरी विगय-वस्त्रो य' (स २२३) । देखो कोसी ।

कोसियार पु [कोशिकार] १ कीट विशेष, रेशम का कीडा (पण १, ३) । २ न रेशमी वस्त्र (ठा ५, ३) ।

कोसी की [कोशी] १ शम्बी, दोमी, कली (पाप्र) । २ तलवार की म्यान (सुम २, १, १६) ।

कोसी की [कोशी] देखो कोसिया (ठा ५, ३—पत्र ३५१) । २ गोलाकार एक वस्तु, 'कबणकोसीपविद्वत्ताए' (भीप) ।

कोसुभ वि [कोसुम्भ] कुसुम-सम्बन्धी (रंग) (तिरि १०५७) ।

कोसुम वि [कोसुम] कूल सम्बन्धी कूल का बना हुआ, 'कोसुमा बाणा' (गड) ।

कोसुम्ह देखो कुसुम (सति ४) ।

कोसेअ न [कोरोय] १ रेशमी वस्त्र, कोसेज २ रेशमी कपडा (दे २, १३, सन १५३; पण १, ४) । २ तसर का बना हुआ वस्त्र (जोव ३) ।

कोह पु [कोष] पुल्मा, कोप (भीप २ भा ठा ४, १) । १ मुह वि [मुहड] जोय रहित (ठा ५, ३) ।

कोह पु [कोष] सज्जा, शीणता (भग ३, ६) । कोह पु [दे कोष] कोषकी धैला (विदे २६८८) ।

कोह वि [कोषयन्] १ भाव युव, कोप-महित 'कोहए मारणए भायाए 'तोमाए' ' ' माराय एण' (पंड) ।

कोहग पु [कोभग] वीर विशेष (भीप) । कोहमण्य न [कोषमण्य] कोष-युक्त पित्तन (भाउ ११) ।

कोहड न [कोहडण्ड] १ बुद्धाएयीन-न, कोहडा (वि ७६, ८६, १२७) । २ न

देव-विमान-विरोध (ती ५६) । ३ वृ. व्यन्तर-
श्रेणीय देव-जाति-विरोध (पव १६४) ।
कोहंडी की [कूप्माण्डी] कोहंडे का गाछ
(हे १, १२४; दे २, ५० टी) ।
कोहण वि [क्रोधन] १ क्रोधी, गुस्माखोर
(सम ३७; पवन ३५, ७) । २ पु. इस नाम
का राखण का एक सुमट (पउम ५६, ३२) ।
कोहल देखो कुऊहल (हे १, २७१) ।
कोहलिअ वि [कुनहलिन्] कुतूहली,
कुतूहल-प्रेमी । की. आ (गा ७६८) ।
कोहलिअ की [कूप्माण्डिक] कोहंडा का
गाछ,
‘जह तंपेति परबई नियमबई
मरतहंति मोतूण ।

तह मएणे कोहलिए, ग्रन्थ
बल्लंवि कुट्टिहिसि (गा ७६८) ।
कोहली देखो कोहंडी (हे २, ७३, दे २,
५० टी) ।
कोहल देखो कोहल (पद) ।
कोहंडी की [दे] तापिका, तवा, पचन-पान-
विरोध (दे २, ४६) ।
कोहंडी देखो कोहंडी (पद) ।
कोहि } वि[क्रोधिन्] क्रोधी, क्रोधी-स्वभाव का
कोहिल } गुस्माखोर (कम्म ४, १४०; बह २) ।
कीरय } देवो कउरय (हे १, १, पंड) ।
कीलय }
‘किसिय देखो निसिय = कृपित (उप
७२८ टी) ।

‘कूर देखो कूर = कूर । (वा २६) ।
‘कूर देखो ‘कूर (हे २, ६६) ।
‘कुरंड देखो खंड (गउड) ।
‘कुरंम देखो खंम (सि ३, ५६) ।
‘कुरम देखो खम (प्रासू २७) ।
‘कुरलण देखो खलण (गउड) ।
‘कुरंसा देखो खंसा (सुपा ५१०) ।
‘कसु देखो खु (कप्पू. भूमि ३७; बाह १४) ।
‘कसुत्त देखो लुत्त (गउड) ।
‘कखेडु देखो खेडु (सुपा ५५२) ।
‘कखेव देखो खेव, ‘आरखेव व खए’ (उप
७२८ टी) ।
‘कयोडी देखो खोडी (पएह १, ३) ।

॥ इस तिरिपाइअसदमहणवे क्यापाहसहंसवतलो
दसगो तरंगो सप्तलो ॥

ख

ख पुं [ख] १ ध्वजन-वाले विरोध, इसका
स्थान बएठ है (प्रासा, प्रास) । २ न. भावारा,
गगन, ‘गजते से मेहा’ (हे १, १८७; कुमा,
दे ६, १२१) । ३ इन्द्रिय (विसे ३४४३) ।
‘ग पुं [ग] १ पत्नी, खग (पाघ, दे २,
५०) । २ मनुष्य की एक जाति, जो बिना
के बल से भावारा में गगन भरती है, बिचापर-
सौख (प्रासा ५६) । देवी राय = खग ।
‘गइ सी [गति] १ भावारा-गति । २ बर्म-
विरोध, जो भावारा-गति का कारण है (कम्म
२, ३, नर ११) । ‘गामिणी की [गामिनी]
त्रिधा-विरोध, जिनके प्रभाव से भावारा में
गगन रिया जा सक्ता है (पउम ७, १४३) ।
‘गुप्प, न [गुप्प] भावारा-कुसुम, धर्मभावित
पल्लु (हुमा) ।
रअ } सर [रन्] संपतियुक्त करना ।
खर } समर, खरद (प्राह ७३) ।
खइ नि [खयिन्] १ क्षयनाता, नाशनाला ।

२ क्षय रोगवाला, क्षय-रोगी (सुपा २३३,
१७६) ।
खइअ वि [क्षपित] नाशित, उन्मूलित (भीष,
भवि) ।
खइअ वि [खचित] १ व्याप्त, जटिल । २
मण्डित, विभूषित (हे १, १६३; भीष, स
११४) ।
खइअ वि [खादित] १ खाया हुआ, भुक्त,
ब्रत (पाघ, स २५०; उप ५ ४६) । २
भाजना, ‘तह य होवि उ बसाया । खइमो
बेहि मरुत्तो बजावजाई न कुणेंद’ (म
११४) । ३ न. भोजन, भक्षण: ‘खइए व
पीएए व न य एमो लाइमो हइइ कप्पा’
(पउ ६२; ठा ४, ४—पवन २७६) ।
खइअ नि [खायित] क्षय-प्राप्त, क्षीण, ‘तिवि-
बायखइयेतो’ (गुर १६, १६१) ।
खइअ पुं [दि] हेराव, स्वभाव (ठा ४, ४—
पन २७६) ।

खइअ } पुं [चायिक] १ क्षय, विनाश,
खइअ } उन्मूलना ‘सि कि स खइए ? खइए
भइएई बम्मपमवीणं खइएणं’ (मल्लु) । २
वि. क्षय से उत्पन्न, क्षय-संबन्धी, क्षय से
संबन्ध रखनेवाला । ३ बर्म-नाश से उत्पन्न,
‘बम्मक्खवमहागो खइमो’ (विसे ३४६५, कम्म
१, १५, ३, १६, ४, २२, साम्य २३, भीष) ।
खइअ न [खंउ] खेदों का समूह, अनेक खेद
(वि ६१) ।
खइया की [खदिना] क्षात्र-विरोध, मेका हुआ
योहि—पान, लाजा, ‘दहियतापमगदया-
निधोए’ (भवि) ।
खइर पुं [खदिर] कुट्ट विरोध, गिर का गाछ
(पाघा, हुमा) ।
खइर वि [खादिर] खादित-कुट्ट-संबन्धी (हे १,
६७; गुता १११) ।
खइर [दि] देखो खइअ (ठा ४, ४—पन
१७६ टी) ।

खण्ड पुं [खण्ड] स्वनाम-प्रसिद्ध एक जैना-चार्य (पावम, भाव्)।

खण्ड अक [खुम्] १ खुम्ब होना, डर से विह्वल होना। २ सक. कन्तुपित करना। खण्ड (हे ४, १५५, कुमा)। 'खण्डरंति विप्रगहण्' (से ५, ३)।

खण्ड वि [दे] कन्तुपित, 'दरद्वद्विविखण्डिद्वद्व-मरप्रमवडरा' (से ५, ४७, स ५७८)।

खण्ड न [क्षौर] क्षौर कर्म, हजामत (हेका १=६)।

खण्ड पुन [खण्ड] खैर वगैरह का चिकना रस, गोद (बृह ३, निवृ १६)। 'कण्डिण्य न [कण्डितक] तापसो वा एक प्रकार का पात्र (विने १४६५)।

खण्डरि अ [खुब्ध] कन्तुपित (पाव, बृह ३)।

खण्डरि अ [क्षौरित] मुण्डित, सुच्छित, केश-रहित किया हुआ (से १०, ४३)।

खण्डरि अ [खण्डुरित] सरलित, चिपकाया हुआ (निवृ ५)।

खण्डरीरुय वि [खण्डरीकृत] गोद वगैरह की तरह चिकना किया हुआ,

'खण्डरीकमो य किण्डीकमो य

खण्डरीकमो य मलिण्णिमो।

बग्गेहि एण जीवो, माऊणवि

मुग्गमिं जेण' (उव)।

खण्डोपसम पुं [क्षयोपशम] कुछ भाग का बिनाहा मीर कुछ का स्थाना (मग)।

खण्डोपसमिय वि [क्षयोपशमि] १ क्षयो-पशम से उत्पन्न, क्षयोपशम-संबन्धी (सम १५५, ठा २, १, मग)। २ पुन. क्षयोपशम (मग विने २१७५)।

खण्डर पु [दे] पनाश-वृक्ष (सी ३३)।

खण्डार पु [खण्डार] राजा सेगार, निम्न की वादही शताब्दी ॥ सीपट् देव का एक भूति, जिसकी पुनरावत ने राजा सिद्धराज ने मारा था (सी ५)। 'गण्ड पुं [गण्ड] नगर विशेष, सीपट् का एक नगर, जो धान-वन वृक्षादि' ने नाम से प्रसिद्ध है (सी २)।

खण्ड सर [खण्ड] १ क्षीयता। २ वस में वरता। खण्ड (मवि) 'ठा गच्छ तुरिय-

तुरियं तुरयं मा खच मुंच मुक्तयं' (सुपा १६८)।

खण्डिय वि [कण्ट] १ खोंचा हुआ (म ५७४)। २ वस में किया हुआ (मवि)।

खण्ड अक [खण्ड] लगदा होना (कम्प)।

खण्ड वि [खण्ड] लगदा, मृग, सूना (सुपा २७६)।

खण्ड न [खण्ड] गादी में सोहे के डंडे के पास बांधा जाता सण आदि का गोल कपडा—जो तेल आदि में भीजाया हुआ रहता है, जि-हुआ, 'खण्डनखण्डननिर्मा' (उत्त ३४, ४)।

खण्डन पु [खण्डन] राह का कृष्ण पुगल विशेष (मुञ्ज २०)।

खण्डन पु [खण्डन] १ पक्षि विशेष, खण्डरीट (दे २, ७०)। २ वृक्ष विशेष, 'ताडवडखण्ड-जलायुक्त्वपरहोरेदुक्त्वकारे' (स २५६)।

खण्डन पु [दे] १ कर्म, कीचड (दे २, ६६; पाव)। २ कजल, कानन, मयी (ठा ४, २)। ३ गादी के पहिए के भीतर का काता कीच (पण १७—यव ५२५)।

खण्डर पु [दे] सूना हुआ वेड (दे २, ६८)।

खण्डा क्षी [खण्ड] क्षय विशेष (विष)।

खण्डि अ [खण्डि] जो लगदा हुआ हो, धंसभूत (कम्प)।

खण्ड सक् [खण्डव] तोडना, टुकड़ा करना, विच्छेद करना। खण्ड (हि ४, ३६७)। बकव खण्डिज्जत (से ११, ३२, सुपा १३४)। हेऊ.

खण्डित्त ए (उवा)। क. खण्डियठ (उप ६२८ ठी)।

खण्ड पुं [खण्ड] एक नरक-स्थान (देशेत्त २६)। 'कण्ड न [कण्ड] लोटा वागवग्न्य (सम्मत ८४)।

खण्ड (अ) देखो खण्ड, 'मुञ्जोरेह खण्ड वसड सन्धी' (मवि)।

खण्ड पुन [खण्ड] १ टुकड़ा, भंरा, हिस्सा (दे २, ६७, कुमा)। २ चीनी मिले (उर ६, ८)। ३ पृथ्वी का एक हिस्सा, 'खासंड—' (सण)। 'पण्डन पु [घटक] मिथुन का जन्मवार (आमा १, १६)। 'पण्डाया छो [पण्डा] वैशाख पूर्वन की एक शुक्र (ठा २, ३)। 'भेय पुं [भेय] विच्छेद विशेष, पदार्थ का एक खण्ड का

पृथक्करण, पटके हुए घड़े की तरह पृथग्भाव (मग ५, ४)। 'मण्डय पुन [मण्डक] मिता-पात्र (आमा १, १६)। 'सो म [रास्] टुकड़ा-टुकड़ा, खण्ड-खण्ड (मि ५१६)। 'भेय देखो 'भेय (ठा १०)।

खण्ड न [दे] १ मृगड, शिर, मस्तक। २ दाह का बरतन, मध्य-पात्र (दे २, ६८)।

खण्ड ई की [दे] मसती, कुलडा (दे २, ६७)।

खण्ड पुन [खण्डक] चीमा हिस्सा (वव १४३)।

खण्डा न [खण्डक] शिखर-विशेष (ठा ६; इक)।

खण्डन न [खण्डन] १ विच्छेद भञ्जन, नारा (आमा १, ८)। २ कण्डन, धान्य वगैरह का छिपका भक्षण करना, 'खण्डनदण्डाणि गिह-कम्मे' (सुपा १४)। ३ वि. नारा करनेवाला, नाराक (सुपा ५३२)।

खण्डा क्षी [खण्डना] विच्छेद, विनाश (कम्प, निवृ १)।

खण्डपट्ट पु [खण्डपट्ट] १ सूतका, झमारी (विपा १, ३)। २ सूत, छग। ३ मत्स्या से व्यवहार करनेवाला (विपा १, ३)।

खण्डकत पुं [खण्डकत] १ दाहग्राधिक, कीचवाल (आमा १, १, पण्ड १, १, मीप)। २ शुक्लपाल, डूगी वस्तु करनेवाला (आमा १, १, विने २३६०, मीप)।

खण्ड न [खण्डन] इन्द्र का वन विशेष, जिससे मनुं ने जलाया था (नाट—वेणी ११४)।

खण्डा क्षी [खण्ड] मिसी, चीनी, शक्कर, सांड (मीप ३७३)।

खण्डा क्षी [खण्ड] दल नाम की एक विद्यापर-बन्धा (पहा)।

खण्डागण्डि व [खण्डागण्ड] टुकड़ा-टुकड़ा, खण्डखण्ड (उवा. आमा १, ६)। 'डीरिय वि [खण्ड] टुकड़ा-टुकड़ा किया हुआ (पुर १६, ५६)।

खण्डागण्डिचण न [खण्डागण्डिचण] दल नाम का एक विद्यापर-नगर (६५)।

खण्डावत्त न [खण्डावत्त] दल नाम का एक विद्यापरनगर (६५)।

रंडाहड वि [रण्डरण्ड] ठुङ्ग-ठुङ्गवा
रिचा हुषा (हुषा ३८५)।

रंडिअ पु [रण्डिऊ] छान, विगार्थी
(भीष)।

रंडिअ वि [रण्डित] छिन, विछिन (हे
१, ५३, महा)।

रंडिअ पु [दे] १ मागध, भाट, विरद-माठक।
२ वि अनिवार्य, निवारण करने को बशव
(हे २, ७८)।

रंडिआ छी [रण्डिआ] खएड, ठुङ्गवा
(ममि ६२)।

रंडिआ छी [दे] नाप विरोध, बीस मन की
नाप (सं २४)।

खंडी छी [दे] १ मयदर, छोटा गुम डार
(छाया १, १८—यव २३६)। २ जिले का
छिद्र (छाया १, २—यव ७६)।

रड्डु (मप) देखो रगगा। पुनराती मे 'लाडु'
बहते हैं (मरक १२१)।

रड्डुअ न [दे] बाहु-बल्य, हाथ वा बानूपण-
विरोध, बाहुबल्य (गुच्छ १८१)।

रंडुय देला रड्डग (पय १४३)।

रंडे पु [दे] पिठा, बाप (पिंड ४३२, सुख
२, ३, ५, ८)।

रंडे देखो रग।

रंडे वि [क्षान्त] क्षमा-शील, क्षमा-युक्त (उप
३२० टी. क्यू. ममि)।

रंडेउ वि [क्षन्तेव्य] क्षमा-योग्य, माफ
करने सामक (विक्र ३८, ममि)।

रानि छी [क्षानि] क्षमा, क्षोष वा क्षमन
(क्यू, महा; प्राम् ४८)।

रानि देखो रग।

रानिया } छी [दे] माता, जननी (पिंड
राती ४३०, ४३१)।

रान पु [रन्] १ क्षातिवैय, महादेव वा
एक पुत्र (हे २, ५, प्राप छाया १, १—यव
३६)। २ राम का स्वन्दनाम वा एक मुष्ट
(पयम ६७, ११)। *रुमार पु [रुमार]
एक जैन मुनि (उप)। *माह पु [मह] १
स्वन्दरुत जाडर, स्वन्दारेख (जं २)। २
गर विरोध (भाग १, ६)। *मह पु [मह]
स्वन्द वा उभय (छाया १, १)। *सिरी

छी [श्री] एक चोर-सेनापति की भार्या का
नाम (विपा १, ३)।

रंदग पु [रन्दक] १-२ ऊपर देखो। ३
रन्दय एक जैन मुनि (उप, मग भन, सुपा
४०८)। ४ एक पार्लायक, जिसने भगवान्
महावीर ने पास पीछे से जैन दीक्षा ली थी
(पुष्प ८५)।

रन्दरुह न [रन्दरुह] शाख-विरोध (वर्षसं
६३५)।

रंदिल पु [स्कन्दिल] एक प्रख्यात जैनाचार्य,
जिसने मयुरा में जैनपमा की सिपि-वड विद्या
(गच्छ १)।

रध पु [रन्ध] निमित्त, बीच, दीवार (भाषा
२, १, ७, १)।

रध पु [रन्ध] १ पुष्ट प्रचय, पुष्टी का
पिण्ड (कम्म ५, ६६)। २ सल्ल, निचर
(विसे ६००)। ३ कम्पा, बाँध (हुमा)। ४
पेठ का घट, जहाँ से शाखा निकलती है
(हुमा)। ५ छन्द-विरोध (पिंग)। *करणी छी
[करणी] सावित्र्या की पहलने का उभरएण-
विरोध (मोप ६७७)। *मंत वि [मंत]
स्वन्धवाना (छाया १, १)। *वीय पु
[वीज] स्वन्ध ही जिसका बीज होता है
ऐसा कन्दो बरीहू वा गाछ (छा ५, ५)।
*सालि पु [शालिन्] अन्तर देवो की एक
जाति (राज)।

रधमि पु [दे. रन्धमिन्] स्नून बाडा की
भाग (हे २, ७०, पाय)।

रधमस पु [दे] हाथ, जुवा, बाहू (हे २,
७१)।

रधमसी छी [दे] स्वन्ध मटि, हाथ (पद्)।
रंधय देखो रध (पिंग)।

रधयट्टि छी [दे] रन्धयट्टि हाथ, जुवा,
(हे २, ७१)।

रधर पुछी [कन्वर] सीवा, मना, मरदन
(सण)। छी. 'रा' (महा)।

रधलट्टि छी [दे] रन्धयट्टि स्वन्ध-मटि,
हाथ, जुवा (पद्)।

रंधयार देखो रधयार (महा)।

रधयार देखो रधयार (महा ३०)।

रंधार पु [रन्धार] देह विरोध (पयम
६८, ६९)।

रंधार देखो रंधयार (पयम ६६, २८, महा
विसे २४५१)।

रंधाल वि [रन्धवन्त] स्वन्धवाला (सुपा
१२६)।

रधवार पु [रन्धवार] धावनी, सैन्य का
पठार, शिविर (छाया १, ८, स ६०३,
महा)।

रंधि वि [रन्धिन] स्वन्धवाला (भीर)।

रंधि देखो रंधि (स ६६७)।

रधी छी. देखो रध (भीष)।

रंधीधार पु [दे] बहुत गरम पानी की धारा
(हे २, ७२)।

रध ख [सिच्] सिद्धना, जिद्धना।
खप (ममि)।

रधणव न [दे] वक्र, कपडा; 'बहुसेवादिप्र-
मममनखनणयणियणलपेरो' (सुपा ११)।

रध पु [स्तम्भ] क्षमा पमा (हे १, १८७,
२, ४, ६, मग महा)।

रध ख [रुम्] धुम्प होता, विचलित
होना। रंधेआ, लोमाएआ (छा ५, १—यव
२६२)।

रधमतिथ न [स्वम्भतीर्थ] एक जैन तीर्थ,
जुनरात वर प्राचीन 'लमणा' गांव (हुड
२१)।

रधमिअ वि [स्वम्भि] लमे से बाँधा हुआ
(स ६, ८५)।

रधमाइत्त न [स्वम्भादित्य] पूर्व दिश का
एक प्राचीन नगर, जो आजकन 'लमत' नाम
से प्रसिद्ध है (ती २३)।

रधमाळण न [स्वम्भाळण] क्षमे से बाधना
(पयह १, ३)।

रधमरग पुन [दे] पूर्वी रोटी (पय २)।

रगग पु [रन्धग] १ पगु विरोध, गँदा (उप
१४८, पयह ११)। २ पुन. वनवा, ममि
(हे १, ५४, म ५११)। *वेणुआ छी
[वेनु] छुरे, बाहू (मम)। *पुरा छी
[पुरा] विन्द वर्ग की स्वनाम प्रसिद्ध नगरी
(छा २, ३)। *पुरे छी [पुरे] कुर्वीन हो
कर (मम)।

रगगातरगि न [रगगातरगि] गनवार की
लड़ाई (मिदि १०१२)।

खगि पुं [खडिग] जन्तु-विशेष, गेंडा (कुमा)।

खगिअ पुं [दे] ग्रामेश, गांव का मुखिया (दे २, ६६)।

खग्री की [खड्ग्री] विदेह वर्ष की नगरी-विशेष (ठा २, ३)।

खगूड वि [दे] १ शठ-प्राय, धूर्त सदृश (शोध ३६ भा)। २ धर्मरहित, नास्तिक-प्राय (शोध ३५ भा)। ३ निद्रालु। ४ रस सम्पद (बृह १)।

खच सक [खच्] १ पावन करना, पवित्र करना। २ कसवर बंधना। खचइ (हे ४, ६६)।

खचिअ देखो खइअ = लक्षित (कुमा)। १ पित्ररित (कम्प)।

खचल पुं [दे] जल मल्लू, भासू (दे २, ६६)।

खचोल पुं [दे] ध्याम, शेर (दे २, ६६)।

खज पुं [खज] वृक्ष विशेष (स २५६)।

खज वि [खाज] १ खाने योग्य वस्तु (पहइ १, २)। २ न. खाने विशेष (भावि)।

खज वि [भ्रज्य] जिसका क्षय किया जा सके वह (पइ)।

खजत देखो खा।

खजग देखो खज = खाद्य (भग १५)।

खजमाण देखो खा।

खजय देखो खज = खाद्य (पदम ६६, १६)।

खजअ वि [दे] १ जीर्ण, सखा हुआ। २ खालपन, जिसकी उलाहना दिया गया हो वह (दे २, ७५)।

खजिर (भप) वि [खाद्यमान] जो खाया गया हो वह (सण)।

खज्जू की [खज्जू] कुजली, पाभा (राज)।

खज्जू पुं [खज्जू] १ खजूर का फल (हुमा) उत ३४)। २ न. खजूर का पत्त (पदम ४१, ६, गुमा ५७)।

खज्जूरी की [खज्जूरी] खजूर का माछ (भाष, पण १)।

खज्जोअ पुं [दे] नक्षत्र (दे २, ६६)।

खज्जोअ पुं [खज्जोअ] मोट विशेष, जुगुन, (गुमा ५७, छाया १, ८)।

खट्ट न [दे] १ तीमन, कड़ी, मोर (दे २, ६७)। २ वि. खट्टा, धम्म (पण १—पत्र २७, जीव १)। ३ मेह पुं [मेघ] खट्टे जल की वर्षा (भा ७, ६)।

खट्टंग न [दे] छाया, छातप का धमन (दे २, ६८)।

खट्टंग न [खट्टवाङ्ग] १ शिव का एक धाम्य (हुमा)। २ चारपाई का पाया या पाटी। ३ प्रायश्चित्तार्थक भिक्षा मांगने का एक पात्र। ४ सान्निभ मुद्रा-विशेष,

‘हृत्पट्टियं ववर्त्तते, न मुपद नृणं खण्णि खट्टंगं। सा नृह विदेह बालय, बालाकाबालिणी जामा’ (वज्रा ८८)।

खट्टम्पउ पुं [खट्टवाङ्ग] रत्नप्रभा नामक पृथिवी का एक नक्षत्रावाह, ‘काल काळण खण्णव्वाअ पुटवीए खट्टम्पउमिहाए नएए पल्लिभोभमान्ने वेव नारणो जववपेति’ (स ८६)।

खट्टा की [खट्टा] खाट, पलंग, चारपाई (गुमा ३३७, हे १, १६५)। मल्ल पुं [मल्ल] बीमारी की प्रवृत्ति से जो खाट से उठ न सकता हो वह (बृह १)।

खट्टिअ [दे] खट्टिक खट्टी, सीनिक, खट्टिक कलाई (गा ६८२, सुभ २, २, दे २, ७०)।

खट्ट पुं [दे] एक म्लेच्छ-जाति (मुच १५२)।

खट्ट न [दे] शूद्र, बास (दे २, ६७, कुमा)।

खट्टइअ वि [दे] समुचित, समीप प्राप्त (दे २, ७२)।

खट्टग न [खट्टग] १ भाग, वेद के वेद के धर्म—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, षोडश, धर्म, निवृत्ति। २ वि वि [‘विट्’] ध्यो धर्मो का जलकार (पि २६५)।

खट्टकय पुन [खट्टकय] आहत देना, ध्वनि के द्वारा सूचना, सिक्की वगैरह की आवाज, ‘विमदन्त्याकडालं खट्टकयो निमुण्णिमो वतो’ (गुमा ४१४)।

खट्टवार पुं [खट्टवार] ऊपर देखो (सुर ११, ११२, विरू ६०)।

खट्टकिआ १ की [दे] खिन्नी, छोट धार खट्टी (कम्प, महा-दे २, ७१)।

खट्टकिय देखो खट्टकय (धर्मवि ५६)।

खट्टम्पउ पुं [खट्टम्पउ] खट खट आवाज (मोह ८६)।

खट्टम्पउ देखो खट्टम्पउ (सम्मत १४३)।

खट्टखट्ट पुं [खट्टखट्ट] देखो खट्टखट्ट (इक)।

खट्टखट्ट वि [दे] छोट और लम्बा (राज)।

खट्टोट्टिअ पुं [दे] एक म्लेच्छ जाति (मुच १५२)।

खट्टणा की [दे] नैया, गौ (गा ६३६ भा)। खट्टहट्ट पुं [खट्टखट्ट] सारत वीरह की भावना, खटकार (गुमा ५०२)।

खट्टहटी की [दे] जन्तु-विशेष, गिलहरी, गिल्ली (दे २, ७२)।

खट्टिय देखो खट्टिय (गा ६८२ भा)।

खट्टिअ देखो खट्टिअ (गा १६२ भा)।

खट्टिअ पुं [दे] दवात, स्थाही का पात्र (धर्मवि ५७)।

खट्टिआ की [खट्टिका] खटी, लटकी की खिलने की खटी या खटिया (कम्प)।

खटी की [खटी] ऊपर देखो (महा)।

खडुआ की [दे] मौलिक, मोती (दे २, ९८)।

खडुक थक [आविस् + भू] प्रवृत्त होना, उत्पन्न होना। खडुकति (वज्रा ४६)।

खडुङ्ग } पुकी [दे] मुड फिर पत्र उंगली खडुङ्ग } का प्रापात (वव १)।

खडु सक [खडु] मर्दन करना। खडुइ (हे ४, १२६)।

खडु } न [दे] १ शम्भु, दाढ़ी-मूँछ (दे २, खडुग १६, पात्र)। २ बड़ा, महान (विते २५७६ टी)। ३ गर्त में आगारनामा (ववा)।

खडुआ की [दे] १ खानि, मात्र (दे २, ९६)। २ पर्वत का खात, पर्वत का गर्त (दे २, ६६)।

३ गर्त, गुहा, खडु (सुर २, १०९, स १५२, गुमा १२, या १६, महा, उत २, पवा ७)।

खडुडिअ वि [खडुडिअ] जिसका मर्दन किया गया हो वह (गुमा)।

खडु दुया की [दे] क्षेत्र, प्रापात, ‘खडु दुया म पवेअ मे’ (उत १, ३८)।

खडुलेअ पुं [दे] खडु, गर्त, गड्ढा (स १६३)।

खण ख [खण] क्षोदना। खणइ (महा)।

धर्म, सम्मद, खण्णजइ (हे ४, २४४)।

धट. खणेषाण (सुर २, १०९)। धट-

रगणेतु (भावा) । कवः। रगणमाण (वि ५४०) ।

रगण पुं [क्षण] काल विशेष, बहुत थोडा समय (ठा २, ४, हे २, २०, गडड, प्राप् १३४) । 'जोह वि [योगिन्] क्षणमाण खनेवाला (मुद्र १, १, १) । 'भगुर वि [भगुर] क्षण विनरवर, क्षणिक (पदम ८, १०५, गा ४२३, विवे ११४) । 'या क्षी [क्षा] रानि, रात (उप ७६८ टी) ।

रगणकरगण } एक [रगणरगण] क्षण
रगणरगणगण } क्षण प्राधान्य करता । रगण-
क्षणित (पदम ३६, ५३) । बह, रगण
कतगण (स ३८५) ।

रगण वि [रगन] खोदनेवाला (णामा १, १८) ।

रगण न [रगन] खोदना (पदम ८६, ६०, उप ५ २२१) ।

रगय वेतो रग = क्षण (भावा, उवा) ।

रगय वि [रगन] खोदनेवाला (दे १, ८५) ।

रगविय वि [रगानि] गुप्तामा हूमा (मुद्रा ४५४, महा) ।

रगि क्षी [गनि] खान, प्रावर (मुद्रा ३५०) ।

रगिण } देवा रगणिय = क्षणिक 'महादया
रगिण } कामपुला क्षणिकता' (मु १३२,
धर्मस २२८) ।

रगिण न [रगिण] खोदने का धन, खन्ती (दे ४, ४) ।

रगिय वि [क्षण] १ क्षण-विनरवर, क्षण भगुर (विने १७२) । २ वि. गुरमन-
वाला, काम धपा से रहित 'नो गुह्ये विव
भन्ने क्षणिया इन गुह्ये नोहरीयो' (धम्म
८ टी) । 'याह नि [वादिन] सर्व पदार्थ
नो क्षण विनरवर माननेवाला, बीदमत का
भनुयायी (राज) ।

रगिय नि [रगित] गुप्त हूमा (मुद्रा २५६) ।

रग्यो देवो रगि (पाप) ।

रग्युसा क्षी [दि] मन का दुख, मानसिक
बीडा (दे १, ६८) ।

रग्यु न [दि] मात, घोरा हूमा (दे २, ६६,
४ २, पर १) ।

रग्यु वि [रग्यु] खोदने योग्य (दे २, ३६) ।

रग्यु देवो रग्यु (दे २, ६६, पद) ।

रग्युअ पु [दि. स्थायु] कोल, खाटी,
खुँव (दे २, ६८, गा ६४, ४२२ अ) ।

रग्यु न [दि] १ खात, खोदा हूमा (दे २,
६६, पाप) । २ राज मे तोडा हूमा (मोष
३२०) । ३ खें, चोरी करने के लिए दीवाल
में किया हुआ छेद (उप ५ १६६, राया १,
१८) । ४ माद, गोबर (उप ५६७ टी) ।

'रग्यु पु [रगन] सघ सगावर चोरी
करनेवाला (णामा १, १८) । 'रग्यु न
[रगन] खें सगाता (णामा १, १८) ।
'मेह पु [मेय] बरीप बे मयाल रमवाला
मेय (मग ७, ६) ।

रग्यु पु [क्षण] क्षणिक, मनुष्य जाति विशेष
(मुद्रा १६७, उत्त १२) ।

रग्यु वि [क्षण] १ क्षणिक-संक्रय, क्षणिक
का । २ न, क्षणिक, क्षणिक, 'मरह
घलत नरेद कोह इमो' (धम्म ८ टी,
माट) ।

रग्यु पु [दे] १ खेत लादनेवाला । २
खें सगावर चोरी करनेवाला । ३ ग्रह विशेष,
राहु (मग १२, ६) ।

रग्यु पु [दि] एक स्नेह्य जाति (मुद्र १३२) ।

रग्यु पु [क्षण] क्षणिक नीचे देवो, 'सतीण
सेठे वह दवक्के' (मुद्र १, ६, २२) ।

रग्यु न [क्षण] मनुष्य नीचे जाति,
क्षी, रान्य (पिंग, कृमा ह २, १५५
प्राप् ८०) । 'हुडग्याम पुं [हुण्डग्याम]
नगर विशेष, जहां श्रीमहवीर देव का जन्म
हूमा था (मग ६, ३३) । 'हुडपुर न
[हुण्डपुर] पूर्वीक ही धर्म (भावा २,
१५, ४) । 'निजा क्षी [निजा] धनु-
रिया (मुद्र २, २) ।

रग्यु न [क्षण] क्षी [श्रजियाणी] क्षणिक जाति
रग्यु न [क्षण] क्षी [श्रजियाणी] क्षणिक जाति
रग्यु न [क्षण] क्षी [श्रजियाणी] क्षणिक जाति

रग्यु न [दि] प्रयुक्त साम (पपा १७, २१) ।

रग्यु न [दि] १ गुप्त, मजित (दे २, ६७
मुद्रा ६१०, उप ५ २५२, अ, मनि) ।

२ प्रदु, बट्ट 'मे भरतुपवने तरद
विला नेय मुद्रा नरि' (मार्च ११४ द २,
६७, पन २, ४ ४) । ३ रिखा, बस

(मोष ३०७, ठा ३, ४) । ४ अ. शीय,
जली (भावा २, १, ६) । 'दागिज वि.

[दागिज] समुद्र, श्रद्धि-सपन (मोष ८६) ।

रग्यु [दि] देवो रग्यु (पाप) ।

रग्युमाण देवो रग्यु = क्षु ।

रग्युअ [दि] देवो रग्युअ (पाप) ।

रग्युमा क्षी [दे] एक प्रकार का दूता
(इह ३) ।

रग्युअ पु [कर्पर] १ मनुष्य-जाति विशेष,
'पत्तं तमिं दमएणेतु पवत व क्षणराण
बर्द' (रमा) । २ मिता-मात्र, बाल (मुद्रा
४६५) । ३ लापकी, कपान (हे १, १८१) ।
४ घट वगैरह काटका (पदम २०, १६६) ।

रग्युअ वि [दि] क्षु, कृमा, निष्ठुर
रग्युअ (दे २, ६६, पाप) ।

रग्युअ स [क्षु] १ क्षमा करता, माफ
करता । २ सहन करता । समह (उवर ८३,
महा) । कर्म, क्षमिगह (मवि) । क.
रग्युअ (मुद्रा ३०७, उप ७२८ टी,
मुद्र ४, १६७) । प्रयो, क्षमावह (मवि) ।
कह. रग्युअइत्ता, रग्युअइत्ता (पदि,
का) । क. रग्युअइत्ता (पदि) ।

रग्यु वि [क्षु] १ उचित, योग्य 'क्षितो
भाटो न क्षमा मणसा वि पत्तेड' (पक्ष
५४, पाप) । २ समय, क्षितिमा (दे १,
१७ उप ६५०, मुद्रा ३) ।

रग्यु पु [क्षु] क्षुभक क्षुभक सपत्नी जैन मापु
(उप ५ ३६२, मोष १४०, मन ४४) ।

रग्यु न [क्षु] क्षुभक क्षुभक, क्षेता, क्षेत्र
भाटि (विद ३१२) ।

रग्यु न [क्षु] क्षुभक क्षुभक १ उपवास (इह
१, निष्ठ २०) । २ व. सपत्नी जैन मापु
(ठा १०—पन ४१४) ।

रग्यु देवा रग्यु (पाप २६४, उप ४८६,
मन ४०) ।

रग्यु क्षी [क्षु] १ क्षुभक, क्षुभक, 'उत्तर-
क्षमाभा' (मुद्रा ३४८) । २ क्षुभक का
धन, रानि (ह २, १८) । 'वह पु
[पनि] राना न, क्षुभक (पर्म १६) ।

'समय पु [क्षु] क्षुभक क्षुभक, क्षुभक, क्षुभक
(पदि) । 'हर पु [पर] १ परित, पहाड ।
२ क्षुभक क्षुभक (मुद्रा ३२८) ।

रमावणया ॥ श्री [क्षमण] खमाना, माफी
रमावणया ॥ मंगला (भग १७, ३ राज) ।
रमायि वि [क्षमित] भाफ किया हुआ
(हे ३, १५२, सुपा ३६४) ।

रमिय वि [क्षमित] भाफ किया हुआ
(कुप्र १६) ।

रम्म देखो राज = वन । लम्मइ (प्राक ६८) ।

रम्मकरम पु [दे] १ संशय, लडाई । २
मन का दुःख । ३ परचाताप का निश्वास
(हे २ ७६) ।

राय देखो राय । लमइ (पह) ।

राय भक [क्षि] क्षय पाना नष्ट होना । लमइ
(पह) ।

राय देखो राग (पाम) ॥ ३ प्राकार तक ऊँचा
पहुँचा हुआ (हे ६, ४२) । राय पु [राज]
पल्लवा का राजा गदह-पत्ती (पाम) । यह
पु [पति] गदह-पत्ती (हे १५, ५०) ।

राय न [सुत] २ दण, पाव, सारकलेय व
छर्प (उप ७२८ टी) । २ नि श्रणित,
घवाया हुआ 'सुणमोष्य कीडल्लो' (आ
१४, सुपा ३४६, मुर १२, ६१) । राय
रनी पु [चार] शिपिलावारी साधु या
साध्वी (वव ३) ।

राय वि [सात] खोदा हुआ (पउम ६१,
४२) ।

राय पु [क्षय] १ क्षय, प्रलय, विनाश (भग
११ ११) । २ रोग विशेष राज-पदमा
(लहम १५) । कारि वि [कारिण] नाश-
कारक (सुपा ६५५) । काल, गाल पु
[काल] प्रलय काल, (मवि ह ४, ३७७) ।
गि पु [गि] प्रलय-काल की भाग (हे
१२, ८१) । नाणि पु [हानि] केवल
शानी, परिपूर्ण शानवाला, सर्वज्ञ (विसे
५१८) । समय पु [समय] प्रलय-काल
(लहम २) ।

रायकर वि [क्षयकर] नाश-कारक (पउम ७,
८१, ६६, ३४, पुष्प ८२) ।

रायतकर वि [क्षयान्तकर] नाश-कारक
(पउम ७, १७०) ।

राय पुछी [राय] १ भावाश में चलने-
वाला, पत्नी (जी २०) । २ विवाह, विवा
यत से भाकाश में चलनेवाला मनुष्य (सुर

३, ८८ सुपा २४०) । राय पु [राज]
विवाहरी का राजा (सुपा १३४) ।

राय देखो रादर = सदिर (भन्त १२, सुपा
५६३) ।

खयरक वि [रादिरक] सदिर सम्बन्धी । छी,
'का' (सुख २, ३) ।

खयाल पुन [दे] बरा जाल, बाँस का वन
(मवि) ।

रर भक [रर] १ भरना, टपकना । २
नष्ट होना । ररर (विसे ५५५) ।

रर वि [रर] १ निन्दुर, लबा, परय कठोर
(सुर २, ६, दे २ ७८, पाम) । २ पुली
मर्दम, गधा (पह १, १, पउम ५६, ४४) ।
३ पु छन्द विशेष (पिप) । ४ न. तिल का
तेल (भोष ४०६) । कट न [कण्ट] बबूल
वगैरह की शाखा (ठा ३, ४) । कड न

[काण्ड] रत्नप्रभा पृथिवी का प्रथम कार्ड-
ग्रह विशेष (जीत ३) । कम्म न [कर्मन्]
जिसमें भयने जीवों की हानि होती हो ऐसा
काम, निन्दुर गधा (सुपा ५०५) । कम्मिअ
वि [कर्मिन्] १ निन्दुर करने करनेवाला ।
२ पु. कीतनाल, दाएँपारिक (भोष २१८) ।

किरण पु [किरण] सूर्य सूरज (पिप
सण) । दसण पु [दण] इस नाम का
एक विवाहरी राजा, जो रावण का बहनोई
था (पउम १०, १७) । नहर पु [नहर]
शवाद जलु हिसक प्राणी सुपा १३१,
४७४) । निस्सण पु [निस्वन]
इस नाम का रावण का एक सुभट

(पउम ५६, ३०) । मुख पु [मुख]
१ भनाई, देश विशेष । २ भनाई देश विशेष
का निवासी (पह १, ४) । मुधी छी
[मुर्दा] १ वाय विशेष (पउम ५७, २३,
सुपा ५० भोष) । २ मनुष्य का दासी (वव
६) । यर वि [तर] १ विशेष कठोर

(सुपा ६०६) । २ पु. इस नाम का एक
प्रेत गच्छ (राज) । समय न [संज्ञक]
तिल का तेल (भोष ४०६) । सायिआ छी
[शायि] लिपि विशेष (सम ३५) ।

सरर पु [सर] परमाधामिक देवी की
एक जाति (सम २६) ।

रर वि [रर] विनश्वर, धर्मायी (विसे
४५७) ।

ररर सक [रररठय] १ धुकारना, निर्भ-
खना करना । २ लेप करना । रररठय (सूक
४६) ।

रररठ वि [रररठ] १ धुकारनेवाला, तिर-
स्कारक । २ उपलित करनेवाला । ३ मनुष्य
पदार्थ (ठा ४, १, सूक ४६) ।

रररठण न [रररठण] १ निर्मल, परय-
भाषण (वव १) । २ प्रेरणा (भोष ४० भा) ।

रररठणा छी [रररठण] कपूर देखो (भोष
७५) ।

रररठिअ ति [रररठित] निर्मलित (कुप्र
३१८) ।

रररसुआ छी [दे] वनस्पति विशेष (संभोष
५४) ।

रररह पु [दे] हाथी की पीठ पर बिछाया
जाता आस्तरण (पउम ८४) ।

रररह सक [लिप्] लेपना, पोतना । संह.
रररिअ (सुपा ४१५) ।

रररह पु [रररह] एक जघन्य मनुष्य जाति,
'ग्रह केसह रररहए क्रिण्ड हट्टिम बरएव
णियस' (सुपा ३६२) ।

रररडिअ वि [दे] १ रत्न, लता । २ भग्न
नष्ट (हे २ ७६) ।

रररडिअ वि [लिप्] जिसकी लेप किया गया
हो वह पोता हुआ (भोष ३७३ टी) ।

रररण न [दे] बबूल वगैरह की कट्टय मय
बासी (ठा ४, ३) ।

रररफरस पु [ररररफ] एक नरक स्थान
(देवेन्द्र २७) ।

रररय पु [रररक] भगवान् महावीर के नाम
में से खोला (मास कील) निकालनेवाला एक
देव (वेदय ६६) ।

रररय पु [दे] १ कर्मवर, नौकर (भोष
४३८) । २ राहु (मग १२, ६) ।

रररहर भक [ररररराय] 'हर-हर' भावाज
करना । यह रररहरत (गउड) ।

रररडिअ पु [दे] बीन, पोता, पुत्र का पुत्र
(हे २, ७२) ।

ररा छी [ररा] जलु विशेष, नेवला की तरह
जल से चलनेवाला जलु विशेष (जीब २) ।

सरिअ वि [दे] भुज, मक्षित (दे २, ६७, मवि)।

सरिआ की [दे] नौकरानी, दासी (शोध ४३८)।

सरिसुअ पुं [दे. सरिशुअ] कन्द विशेष (भा २०)।

सरुट्टी की [सरोट्टी] एक प्राचीन लिपि जो दाहिने से बाएँ को लिखी जाती थी। गाचार लिपि। देखो, सरोट्टिआ (पण १)।

सरह वि [दे] १ कठिन, कठोर। २ स्पष्ट, विषय धीरे जँचा (दे २, ७८)।

सरोट्टिआ की [सरोट्टिआ] लिपि विशेष (सम ३५)।

सल भक [सल] १ पटना, गिरना। २ धूलना। ३ खना। सलह (प्राप्त)। बङ्ग।

सलत, सलमाण (से २, २७, गा ५४६, मुभा ६०१)।

सल भक [सल] भ्रष्टरण करना, हटना। जलाहि (उत्त १२, ७)।

सल भ [सल] पाद पूति में प्रयुक्त होता मध्यम (प्राप्त ८१)।

सल वि [सल] १ जुन, प्रथम ययुय (सुर १, १६)। २ न. धान साफ करने का स्थान (विभा १ ८, भा १४)। 'पू वि [पू] खलिहान या खलियान को साफ करवावा (कुमा, पद्, प्राप्ता)।

सलइअ वि [दे] रिज, खानी (दे २, ७१)। खल-सल भक [खलसलाय] 'खल खल' भावाज करना। खलखलैह (पि ५५८)।

सलागिअ वि [दे] मत, उभक्त (दे २, ६७)।

सलण ॥ [सलण] १ नीचे देखो (प्राचा, से ८, ५५, गा ४६६, वज्रा २६)।

सलणा की [सलण] १ गिर जाना, निगलन (दे २, ६४)। २ विपत्त, भजन (शोध ७८८)। ३ शरणागत, स्काय, होजा गुणों, या सलण नरति जइ प्रसन्न वसणस' (उप ३३६ टी)।

सलभलिअ वि [दे] धुय, सोम प्राप्त (मवि)।

सलर १ पुं [सलसल] नदी के प्रवाह की सलहल १ प्रावाज, 'बहमाणवालिहोण दिखि-लिमिमुवत्तवत्तहपयसो' (सुर ३, ११, २, ७५)।

सला भक [दे] सराव करना, मुकसान करना। 'ताणवि सलो सलाइ य' (पउम ३७, ६३)।

सलअ वि [सलअ] १ रुका हुआ। २ गिरा हुआ पतित (दे २, ७७, पाप्म)। ३ न. अपराध, गुनाह। ४ मुल (से १, ६)।

सलअ वि [सलअ] खल से व्याप्त, खलि-खचित (दे ४ १०)।

सलण पुन [सलण] १ लगाम (पाप्म)। २ कायोत्सर्ग का एक दोष (पव ५)।

सलिया की [सलिका] तिन वगैरह का सैल-रहित झुणं खनी, खरी (मुभा ४१४)।

खलियार सक [सली + क] १ तिरस्कार करना, घृणारता। २ ठगना। ३ उपद्रव करना। खलियारसि, खलियारसि (मुभा २१७, स ४६८)।

खलियार पु [सलियार] तिरस्कार, निर्भरसना (पउम ३६, ११६)।

खलियारण न [सलीकरण] तिरस्कार (पउम ३६, ८४)।

खलियारणा की [सलीकरण] वज्रचना, ठगाई (स २८)।

खलियारिअ वि [सलीकृत] १ तिरस्कृत (पउम ६६, २)। २ शक्ति, ठगा हुआ (स २८)।

खलिरि वि [सलिरि] स्वसन करनेवाला (वज्रा ५८, सण)।

खली की [दे खली] तिल पिण्डिका, तिल वगैरह का स्नेहहित झुणं खली (दे २, ६६, मुभा ४१५, ४१६)।

खलीक देखो खलियारिअ (वउ ४४)।

खलीर देखो खलियार = खनी + क। खली-कदे (स २७)। कर्म खलीनरीयद, खली-किजद (स २८, सण)।

खलीन न [खलीन] देखो खलियार (मुभा ७७, स ५७४)। २ नदी का विनाश 'खलीणमदिय खणमाणे' (विभा १, १—पउ—१६)।

खल भ [खल] विशेष-सूचक मध्यम (दसनि ४, १६)।

खल भ [खल] इन धर्मों का सूचक मध्यम— १ भवभरण, निरुपय (जी ७)। २ पुन, फिर (भाचा)। ३ पादयुति और वायव की

शोभा के लिए भी इयका प्रयोग होता है (प्राचा, निबु १०)। 'सिस्त न [सिस्त] जहा पर जहरी बीज मिले वह क्षेत्र (वय ८)।

खलुं कु पु [दे] १ गली बेल, मखनीत बेल, (ठा ४, ३—पउम २४८)। २ मखनीत शिष्य, कुशिय (उत्त २७)।

खलुंकिज पुं [दे] १ गली बेल सबन्धी। २ न. उत्तराध्ययन सूत्र का इस नाम का एक अध्ययन (उत्त २७)।

खलुग देखो खलुय (पव ६२)।

खलुय न [खलुय] दुष्क, पाँव का मणि-बन्ध (विभा १, ६)।

खल न [दे] १ बाढ का छिद्र। २ विनाश (दे २, ७७)। ३ वि. खाली, रिक्त, 'जाया खलकबोला परिमोसिमसतोणिया धणिय' (उप ७२८ टी, दे १, ३८)।

खल वि [दे] निम्न मध्य, जिसका मध्य भाग नीचा हो (दे १, ३८)।

खलइअ वि [दे] १ सङ्घटित, सन्नोच-युक्त। २ प्रवृत्त, हर्षयुक्त (दे २, ७६, गउड)।

खलण पुन [दे] १ पत्र, पत्ता। २ पत्र-खलण पुं, पुट, पत्ता का बना हुआ पुडवा या बोना (मुप १, २, २, १६ टी, निज २१०, वृह १)।

खलण पुन [दे] १ पाँव का रक्षण खलण पुं, कुलेना वमडा, एक प्रकार का पूता (वर्न ३)। २ धैरा (उप १०३१ टी)।

खल की [दे] वर्न, वमडा, लात (दे २, ६६, पाप्म)।

खलइ देखो खलीह (निबु २०)।

खलिय की [दे] संवेत (दे २, ७०)।

खलिह (पउ) देखो खलीह (दे ४, ३८६)।

खली की [दे] सिर का वह चमडा, जिनमें बेश पैदा न होता हो (प्राचम)।

खलीह पुं [खलियाट] जिसके सिर पर पाव न हो, गवा, चटना (दे १, ७४, कुमा)।

खलह पुं [खलह] कन्द-विशेष (पण १—पउम ३६)।

खल सव [क्षपय] १ नाश करना। २ डालना, प्रयोग करना। ३ उत्सर्जन करना।

खवेइ (उप), खवपति (मग १८, ७)। कर्म, खविजनि (मग)। वट. खवेमाण (पापा

१, १८) ३ सक. खनइत्ता, खनित्तु, खवेत्ता
(भग १५; मय्य १६, भोग) ।

खन पु [दे] १ वाम हस्त, बायाँ हाथ । २
गर्दन, रासन (दे २, ७७) ।

खनग वि [क्षपक] १ नारा करनेवाला, काय
कलेवाला । २ पुं तपस्वी जैन-मुनि (जव,
भाव ८) । ३ वि. क्षपक श्रेणि में ग्राह्य
(कम्म ५) । *सेदि छी [श्रेणि] क्षपण
क्रम, कर्मों के नारा की परिपाटी (भग ६
११; खवर ११४) ।

खनडिअ वि [दे] स्वलित स्वलन प्राप्त
(दे २, ७१) ।

खनग } न [क्षपण] १ क्षय, नारा (जीत) ।
खनयण } २ डालना, प्रत्येक (कम्म ४, ७५) ।

३ पु. जैन मुनि (वित्ते २५८३, मुद्रा ७८) ।
खनग देखो खनग 'विहित पक्कखणणे सो'
(धम्म २३) ।

खनगा छी [क्षपणा] ग्रन्थयन, राजा प्रकरण
(भणु २५०) ।

खनय पु [दे] क्लेश, कष्ट (दे २, ६७) ।

खनय देखो खनग (सम २६, भातर १३,
भावा) ।

खनलअ वि [दे] हृषित, क्रुद्ध (दे २, ७२) ।

खनल पु [खलल] मत्स्य विशेष (विपा १,
८—पद ८३ टी) ।

खनर छी [क्षपा] रानि, रात । *जल न
[जल] भावरमाय, हिम (ठा ४, ४) ।

खनित वि [खपिन्] १ विनिराजित, नष्ट किया
हुआ (सुर ४ ५० प्राप्त) । २ उद्धत (भा
१३५) ।

खनय पु [दे] १ वाम कर बायाँ हाथ ।
२ रासन गवा (दे २, ७७) ।

खनय वि [खय] धामन, कुञ्ज, नाछा (भावा) ।

खनय वि [खय] नष्ट, मोटा *खलनगन्वो
पयो भाति' (सिदि ६७४) ।

खनुर देखो खनुर (पिक २८) ।

खनवल न [दे] प्रुद्ध, मुक्त (दे २, ६८) ।

खस भव [दे] खिसकना, निर पडना । लखड
(पिग) ।

खस पु. व [खस] १ अनार्य देश विशेष,
हिन्दुस्थान के उत्तर में स्थित इस नाम का
एक पहाड़ी प्रान्त (पउम ६८ ६६) । २ छुछी

खस देश में रहनेवाला मनुष्य (पणह १—पद
१४, इक) ।

खसखस पु [खसखस] पोस्ता का दाना,
ज्यौर, खस (स ६६) ।

खसफस भव [दे] खसना, खिसकना, निर
पडना । वहु खसफसेमाण (सुर २, १५) ।

खसफमि वि [दे] व्याकुल, भयोर । *हुअ
वि [भूत] व्याकुल बना हुआ (हे ४,
४२२) ।

खसर देखो कसर = दे कसर (जं २, ४
४८०) ।

खसिअ देखो खइअ = लचित (हे १, १६३) ।

खसिअ न [कसित] रोग विशेष, लसी
(हे १, १८१) ।

खसिअ वि [दे] खिनका हुआ (सुपा २८१) ।

खसु पु [दे] रोग विशेष, पाना गुजरती में
'लख' (सण) ।

खह पुन [खह] पाकाय, गगन (भग २०,
२—पद ७७५) ।

खह देखो ल (ठा ३, १) ।

खहयर देखो खयर (भीप विपा १, १) ।

खहयरी छी [खचरी] १ पत्थिणी, माता
पत्नी । २ विद्याधरी, विद्याधर की छी (ठा
३, १) ।

खा १ सक [खाद] खाना भोजन करना,
खाय [अण] करना । खाद खाइ, खाउ
(हे ४ २२८) । खति (सुपा ३७०, महा) ।

अवि खाइहि (हे ४, २२८) । कं खइ
(जव) । वहु खत, खायत, खायमाण
(कव १४, पउम २२, ७५, विपा १, १),

*खता पिम्रता इह जे मरति, पुणोपि ते खति
पिमाति राय ।' (कव १४) । वक्क खज्जंत,
खज्जमाण (पउम २२, ४३ गा २४८

पउम १७, ८१ ८२ ४०) । हह. खइ
(पि ५७३) ।

खाय वि [ख्यात] प्रसिद्ध, विद्युत (ज ३२६,
६२३, मव २७, हे २, ६०) । *किंत्तय वि
[कीर्त्ति] यशस्वी, कीर्त्तिमान् (पउम ७,
४८) । *जस वि [यशस्] बड़ी धर्म

(पउम ५, ८) ।

खाय वि [खादत] भुज, भक्षित, खाइमि
खण—' (गा ६६८, अवि) ।

खाय वि [खात] १ खुदा हुआ । २ न. खुदा
हुआ बलाय, 'खामोदाइ' (कप्प) । ३

ऊपर में बिस्तारवाली धौर नीचे में संकुचित
ऐसी परिखा । ४ ऊपर धौर नीचे समान रूप
से खुदा हुई परिखा (भीप) । ५ खाई, परिखा
पात्र) ।

खाइ छी [खाति] खाई, परिखा (सुपा २६४) ।

खाइ छी [खाति] प्रसिद्धि, कीर्त्ति (सुपा
५२६, ठा ३, ४) ।

खाइ [दे] देखो खाई (भीप) ।

खाइअ देखो खइअ = क्षायिक (वित्ते ४६,
२१७५, सत ६७ टी) ।

खाइअ वि [खादित] खाना हुआ, भुज,
भक्षित (भाग, निर १, १) ।

खाइआ छी [दे खाति] खाई परिखा
(दे २, ७३, भाग. सुपा ५२६, भग ५, ७,
पणह २, ५) ।

खाई म [दे] १—२ वाक्य की शोभा और
पुन खइव के धर्म का सूचक ग्रन्थय (भग ५,
४, भीप) ।

खाइग देखो खाइअ = क्षायिक (सुपा ५५१) ।

खाइम न [खादिम] भद्र-वर्जित फल, भीषण
बरीह खान बीज (सम ३६, ठा ४२,
भीप) ।

खाइर वि [खादि] लविर-बुल-सम्बन्धी, लैर
का, कल्प (हे १, ६७) ।

खाउय न [खायक] लायपदार्थ (मूलशुद्धि
कां १७१, देवर्षिन कथा गा ६ पद्यी) ।

खाओउसम १ देखो खओवसमिय (सुपा
खाओउसमिअ) ५५१, ६५८, मय्य २३) ।

खाओवसमिअ देखो लाओयसमिअ (मज्ज
६८, मय्यस्त्रो ५) ।

खाइइअ वि [दे] प्रतिफलित, प्रतिबिम्बित
(द २, ७३) ।

खाइखड पु [खाइखड] चौथी नव-मुषिकी
का एक नखलावास (ठा ६) ।

खाइहिल छी [दे] एक प्रकार का जानवर,
गिनहरी, फिली (पणह १, १, उप पु २०५
वित्ते ३०४ टी) ।

खाण पु [दे] एव म्नेच्छनाति (मुग्घ
१५२) ।

खाण न [खादन] भोजन, भक्षण खायें

प्र पाणेषु प्र वह गहियो मज्जेतो सम्मणए' (गा ६६२, पञ्च १४, १३६) ।

खाण न [ख्यान] कयन, उचित (राज) ।

खाणि की [खानि] खान, आकर (दे २, ६६, कुमा, मुपा ३४८) ।

खाणिअ वि [खानित] खुरवाया हुमा (दे ३, ५७) ।

खाणी देखो खाणि (पाप) ।

खाणु] पु [स्थानु] स्थानु, हठा वृष, अचल खाणुय] (पह २, ५, ह २, ७ कम) ।

खाद् देखो खाइ = खाति (सति ६) ।

खाम सक [क्षमय] क्षमाता, माफी न गना ।

खामेइ (भग) । कर्म, खामिअइ, खामोइइ (हे ३, १५३) । सक गामेत्ता (भग) ।

खाम वि [क्षम] १ कृपा, दुर्बल, 'खामप हुकवोन' (उप ६८६ टी पाद्य) । २ क्षीय, भरात (दे ४, ४६) ।

खामण न [क्षमण] क्षमाता (आनक ३६५) ।

खामणा की [क्षमणा] क्षमापणा, माफी मांगना क्षमा-याचना (मुपा ५६५, विवे ७६) ।

खामिय वि [क्षमित] १ जिसके पाम यमा मागी गई हो वह, क्षमाया हुमा (वित २३८८, हे ३, १५२) । २ सहन किया हुमा । ३ विलम्बित, विलम्ब किया हुमा, 'सिणिए अहोस्ता घुए' । खामिया मे कर्मण (पञ्च ४३, ३१, हे ३, १५०) ।

खाय पु [खाइ] खाचकी नरक-भूमि का एक राज्य-स्थान (वेण्ड ११) ।

खायर देखो खाइर (कर्म ६) ।

खार पु [क्षार] १ एक नरक स्थान (वेण्ड ३०) २ भुजपरिचर्च की एक जाति (सूय २, ३, २५) । ५ जैर, दुग्मनी (मुक्ष १, ३) ।

*डाइ पुन [दाइ] क्षार पकने की भट्टी (भापा २, १०, २) । *तन पुन [तन] भाजुपेद का एक जेब, कानोबरण (ठा ८—पञ्च ४२८) ।

खार पु [क्षार] १ क्षारण, भट्टना, सबलन (ठा ८) । २ भग्न, धाव (खामा १, १२) ।

३ क्षार, क्षार, लवण विशेष (सूय १, ७) ।

४ लवण, नोन (हृन् ४) । ५ जलनवर विशेष (पणए १) । ६ मज्जिका, सजी (सूय १, ४, २) ।

७ वि कट्ट या चरपर स्वादवाता, कट्ट चीज (पणए १७—पञ्च ५३०) । ८ खारे चीज, नमकीन स्वादवाती वस्तु (अप ७, ६, सूय १, ७) ।

*तउसी [त्रुपुपी] कट्ट त्रुपुपी, वनस्पति विशेष (पणए १७) । *तिल न [तैल] खारे से संस्कृत तेल (पह २, ५) ।

*मेह पु [मेध] क्षार रसवाले पानी की बपा (अप ७, ६) । *वत्तिय वि [वात्रिक] क्षार पात्र मे जिमाया हुमा । २ क्षार-पात्र का व्यापार दून (घोप) ।

*वत्तिय वि [वृत्तिक] क्षार में फेंका हुमा, क्षार से सोचा हुमा (घोप, दया ६) । *वाडा की [वापी] क्षार से भरी हुई बापी, कूँडा (पह १, १) ।

खारकिडी की [दे] गोधा, गोह, बल्लु विशेष (दे २, ७३) ।

खारदूसण वि [खारदूपण] खट्टपण का, खट्टपण सम्बन्धी (पञ्च ४५, १५) ।

खारय न [हे] मुकुल, बत्ती (दे २, ७३) ।

खारायण पु [क्षारायण] १ क्षय-विशेष । २ माहट्यणोत्र के शास्त्राभूत एक गोत्र (ठा ७) ।

खारी की [खारी] एक प्रकार की नाप, ३४ सेर की तीन (गा ८१२) ।

खारिभरी की [खारिभरी] क्षारी-परिमित वस्तु जिसमें भट तक ऐसा पात्र भर दूध देने वाली (गा ८१२) ।

खारिक न [दे] कल विशेष, छुहारा (सिरि ११८) ।

खारिय वि [क्षारित] १ क्षान्त, भराया हुमा (अप ६) । २ पानी में पिसा हुमा (भवि) ।

खारी देखो खारि (गा ८१२, बी १) ।

खाराणिय पु [क्षाराणिक] १ स्नेच्छ देश-विशेष । २ उसमें रखनेवाली स्नेच्छ जाति (अप १२, २) ।

खारोदा की [खारोदा] नदी विशेष (घन) ।

खाल सक [खालय] घोंघा, पत्थारना, पानी से धाक करना । ऊ. खालणिज (अ ३२६) ।

खाल चीन [दे] नाला, मोरी, गदगी जिनकले का मार्ग (ठा २, १) की. खाला (मुमा) ।

खालास [खालस] प्रधावन, पत्थारना (मुपा ३२८) ।

खालिअ वि [खालित] चौत, घोंघा हुमा (वी १३) ।

खानपन [ख्यापन] प्रतिपादन (पचा १०, ७) ।

खानणा की [ख्यापना] प्रसिद्धि, प्रकयन, 'अस्तथा खानणविहाण वा' (विते) ।

खानिय वि [खाद्यमान] जिसको खिताया जाता हो वह 'काणामसाई खानियत' (विपा १, २—पञ्च २५) ।

खानियय वि [खादियक] जिसमें खिताया गया हो वह, 'काणामसखानियया' (घोप) ।

खानेव वि [खणाययन्] प्रवर्तित करता हुमा, प्रसिद्धि करता हुमा (अप ८३३ टी) ।

खास सक [कास्] खासता, खापी खान ।

खासई (सुपु १६) ।

खास पु [कास] रोप विशेष, खाँसी की बीमारी, खाँसी (विपा १, १, मुपा ४४, सण) ।

खासि वि [कासिन्] खाँसी का रोगवाता (मुपा ५७६) ।

खासिअ न [कासित] खाँसी, खासना (हे १, ६१) ।

खासिअ पु [कासिक] १ स्नेच्छ देश विशेष । २ जहाँ रखनेवाली स्नेच्छ जाति (पह १, १—पञ्च १४, अ, सूय १, ५, १) ।

खि सक [खि] क्षीय होना । कर्म, 'खिज्जव अवसतती' (स ६८५) । क्षीयति, क्षीयने (कम्म ६, ६६, टी) ।

खि की [खिति] धुँवकी, घरा (पञ्च १०, १५६, स ४१६) । *गोचर पु [गोचर] मनुष्य, मानुष, प्रादमी (पञ्च ५३, ४३) ।

*पइट्ट न [प्रतिट्ट] नगर-विशेष (स ६) ।

*वइट्टय न [प्रतिट्टित] १ इस नाम का एक नगर (अप ३२० टी, स ७) । २ राजगृह नाम का नगर, जो भाजक विहार में 'उज्जिन' नाम से प्रसिद्ध है (वी १०) ।

*सार पु [सार] इन नाम का एक दुर्ग (पञ्च ८०, ३) ।

खिय सक [खिय] खिखि पावान करना ।

खिइ १ वक्र, खिरिण्यत (मुक्ष २, ३३) ।

खिरिणिण्या की [खिरिणिण्या] बुद्ध परिणय (खा) ।

खालिअ वि [खालित] चौत, घोंघा हुमा (वी १३) ।

खानपन [ख्यापन] प्रतिपादन (पचा १०, ७) ।

खानणा की [ख्यापना] प्रसिद्धि, प्रकयन, 'अस्तथा खानणविहाण वा' (विते) ।

खानिय वि [खाद्यमान] जिसको खिताया जाता हो वह 'काणामसाई खानियत' (विपा १, २—पञ्च २५) ।

खानियय वि [खादियक] जिसमें खिताया गया हो वह, 'काणामसखानियया' (घोप) ।

खानेव वि [खणाययन्] प्रवर्तित करता हुमा, प्रसिद्धि करता हुमा (अप ८३३ टी) ।

खास सक [कास्] खासता, खापी खान ।

खासई (सुपु १६) ।

खास पु [कास] रोप विशेष, खाँसी की बीमारी, खाँसी (विपा १, १, मुपा ४४, सण) ।

खासि वि [कासिन्] खाँसी का रोगवाता (मुपा ५७६) ।

खासिअ न [कासित] खाँसी, खासना (हे १, ६१) ।

खासिअ पु [कासिक] १ स्नेच्छ देश विशेष । २ जहाँ रखनेवाली स्नेच्छ जाति (पह १, १—पञ्च १४, अ, सूय १, ५, १) ।

खि सक [खि] क्षीय होना । कर्म, 'खिज्जव अवसतती' (स ६८५) । क्षीयति, क्षीयने (कम्म ६, ६६, टी) ।

खि की [खिति] धुँवकी, घरा (पञ्च १०, १५६, स ४१६) । *गोचर पु [गोचर] मनुष्य, मानुष, प्रादमी (पञ्च ५३, ४३) ।

*पइट्ट न [प्रतिट्ट] नगर-विशेष (स ६) ।

*वइट्टय न [प्रतिट्टित] १ इस नाम का एक नगर (अप ३२० टी, स ७) । २ राजगृह नाम का नगर, जो भाजक विहार में 'उज्जिन' नाम से प्रसिद्ध है (वी १०) ।

*सार पु [सार] इन नाम का एक दुर्ग (पञ्च ८०, ३) ।

खिय सक [खिय] खिखि पावान करना ।

खिइ १ वक्र, खिरिण्यत (मुक्ष २, ३३) ।

खिरिणिण्या की [खिरिणिण्या] बुद्ध परिणय (खा) ।

खिरिणी की [खिरिणी] ऊपर देखो (ठा १०, छाया १, १, अजि २७)।

खिरिणी की [दे] श्रुतावी, की सियार (दे २, ७४)।

खिरिणि [खिरिणि] रडोबाज, ध्वनिचारी, 'भरोषुं विगतपुण्यवासियरसरो' (रंभा)।

खिस सक [खिस] निन्दा करना, गर्हा करना, मुच्छकारना। खिसए (आचा)। कर्म, खिसगइ (हु १)। कक्क, खिसि-ऊत (उप ५००)। क. खिसणिज (छाया १, ३)।

खिसण न [खिसन] अवर्णवाद, निन्दा, गर्हा (मीन)।

खिसगा की [खिसना] निन्दा, गर्हा (मीन, उप १३४टी)।

खिसा की [खिसा] ऊपर देखो (प्रोप ६०, द्र ४२)।

खिसिय वि [खिसित] निर्दिष्ट बहित (ठा ६)।

खिक्खइ पुं [दे] ककलास, गिरगिट, सरट (दे ३, ७४)।

खिक्खियंथ वि [खिलीयमान] 'खि-नि' आवाज करता (पह १, ३—पत्र ४६)।

खिक्खिरी की [दे] डोम वगैरह का स्पर्श रोक्ने की लकड़ी (दे २, ७३)।

खिख पुन [दे] लोचनो, हसर (दे १, १३४)।

खिज्ज भक [खिज्ज] १ खेद करना, भ्रमगोचर करना। २ उद्भिन्न होना, घक जाना। खिज्जइ, खिज्जए (स १४, गउड, वि ४४७)। क. खिज्जियन्न (महा गा ५१३)।

खिज्जणिगा की [खेदिनिगा] खेद-त्रिया भ्रमसोच, मन का उद्वेग (छाया १, १६—पत्र २०२)।

खिज्जिअ न [दे] उपालम्भ, उपाहना (दे २, ७४)।

खिज्जिअ वि [खिज्ज] १ खेद प्राप्त। २ न. खेद (स ५४५)। ३ प्रत्यय-जन्य रोप (छाया १, १—पत्र १६५)।

खिज्जिअय न [खेदिनय] द्रव विशेष (सजि ७)।

खिरिअ वि [खेरिअ] खेद करनेवाला, खिल होने की आशयवाला (उत्प ७, ६०)।

खिहु न [खेल] खेल, क्रीडा, मजाक, 'खिहडेए मए भखियं एयं' (सुपा ३०२), 'नालतरणं खिहुपरो गमेइ' (सत ६८)। 'कर वि [कर] खेल करनेवाला, मजाक करनेवाला (सुपा ७८)।

खिण वि [खिन्न] १ खिल, खेद प्राप्त। २ खान्त, थका हुआ (दे १, १२४, गा २२६)।

खिण देखो द्राण (प्राप)।

खिच वि [खिप्त] १ फेंका हुआ (सुर ३, १०२, सुपा ३५७)। २ प्रेरित (दे १, ६३)।

'इत्त, 'चित्त वि [चित्त] आन्त-चित्त, विशिष्ट-मनस्क, पालन (ठा ५, २, प्रोप ४६७, ठा ५, १)। 'मण वि [मनस] चित्त-भ्रमवाला (महा)।

खिच देखो खेत्त (मण, प्राप्, पडि)। 'देवया की [देवता] क्षेत्र का अधिष्ठापक देव (या ४७)। 'वाल पु [पाल] देव-विरोध, क्षेत्र-रक्षक देव (सुपा १२२)।

खिचज पु [खेज] मोद तिया हुआ लडका, 'चित्तज सुएणवि कुल बट्टज (कुप्र २०८)। खिचय न [खिप्त] द्रव विशेष (सजि २४, २५)।

खिचय न [दे] १ अनर्थ, मुकसान। २ वि, दोष, प्रवृत्ति (दे २, ७६)।

खिचअ वि [खेचिअ] १ क्षेत्र-सम्बन्धी। २ पुं व्याधि विशेष, 'तालपुडं गस्ताए जह बहुवाहीए विविधो वाही' (था १२२)।

खिन्न देखो खिण = खिन (पाश्, महा)।

खिप्प भक [खप्] १ समर्थ होना। २ दुर्बल होना। खिप्पइ (संशि ३२)।

खिप्प वि [खिप्प] शीघ्र, खरा भुव। 'गइ वि [गति] १ शीघ्र गतिवाला। २ पुं, अतिगति द्रव का एक लोचकाल (ठा ४, १)।

खिप्पं म [खिप्पम] तुरल, शीघ्र, जल्दी (प्राप् ३७, पडि)।

खिप्पत देखो खिन।

खिप्पामेय भ [खिप्पमेय] शीघ्र हो, तुरल हो (जं ३, महा)।

खिप्पा की [खिप्पा] ध्रुवी (पड)।

खिर भन [खिर] १ गिरना, गिरपडना।

२ टपकना, भरना। खिरइ (हि ४, १७३)। बह, खिरत (पत्र १०, ३२)।

खिरिय वि [खिरित] १ टपका हुआ। २ गिरा हुआ (पाप)।

खिल न [खिल] प्रकट-भूमि, ऊसर जमीन (पह १, २—पत्र २६)।

खिलीकरण न [खिलीकरण] खाली करना, शून्य करना, 'जुवजएयोखिलीकरण क्वाड्यो वेसवाड्यो' (मै ८)।

खिल सक [खिलय] रोचना, रकावट डालना 'भएइ इमाणं बन्धव! गमए खिल्लेमि कट्ठिं देह' (सुपा १३७)।

खिल भक [खेल] क्रीडा करना, खेल करना, तमारा करना। बह, खिल्लन (सुपा ३६६)।

खिल पु [दे] कोडा, कुनसी, गुजराती में 'खीत' (सदु ३८)।

खिल्लण न [खिलन] खिलीना, खेतन (सुर १५, २०८)।

खिल्लइ पु [दे, खिल्लइ] बन्द विरोध खिल्लइ (था २०, पत्र २)।

खिल्लुइहा स्त्री [दे] बन्द विरोध (सबीध ४४)।

खिन सक [खिप्] १ कंकना। २ प्रेरना। ३ शालता। खिबइ, खिबइ (महा)। बह-

खिबेमाण (छाया १, २)। बहक खिप्पत (कास)। बह, खिथिय (कम्म ४, ७४)। क. खिथियन्न (सुपा १५०)।

खिण न [खिण] १ कंकना, क्षेपण (सि १२, ३६)। २ प्रेरण, इधर-वधर चलना (सि ५, ३)।

खिथिय वि [खिप्] १ क्षान्त, फेंका हुआ। २ प्रेरित (सुपा २)।

खिथ्व देखो खिरन। बह, 'यह खिथ्विअण मव्वं, पोए ते पत्थिया रएणभूमि' (पम्म १२टी)।

खिस भक [दे] सरहना, खिसनना। बह, 'ग्रह नियमाणे गच्छतसस खिसिअण वाहएण-हिता पडिय (सुपा ५२७, ५२८)।

खीण देखो खिरण = खिन 'कोरेण सुए-खीणो' (पत्र ३२, ३)।

खीण वि [खिण] १ क्षय प्राप्त, नष्ट, निर्दिन (कम्म ६०, दे २, ३)। २ दुर्बल, हरा (अप २, ५)। 'दुइ वि [दुइ] दुःख-पटित (कम्म १२३)। 'मोइ वि [मोइ] १ विनया मोह नष्ट हो गया हो वह (ठा ३,

४) । २ न. वास्कुं पुल्ल-स्थानक (सम २६) ।
 'राम वि [राम] १ वीतराम, राम-रहित ।
 २ पुं. निरन्तर, वीर्यर देव (मत्स्य १) ।

श्रीयमाण वि [श्रीयमाण] जिसका क्षय
 होता जाता हो वह (पा ६८६ टी) ।

शोर न [शोर] बेला, दो दिन का उपवास
 (संकोच ५८) । 'हिंदिर पु' [हिण्डोर]
 देव-विशेष (कुप्र ७६) । 'हिंदिरा औ'
 [हिण्डोरा] देवी-विशेष (कुप्र ७६) । 'वर'
 पुं [वर] १ समुद्र-विशेष । २ हीन विशेष
 (सुज १६) ।

श्रीर न [श्रीर] १ दुग्ध, दूध (हे २, १७,
 प्राप् १३, १६८) । २ पानी, जल (हे २,
 १७) । ३ पुं. शीरवर समुद्र का अविष्ठापक
 देव (जीव ३) । ४ समुद्र विशेष, शीर समुद्र
 (पञ्च ६६, १८) । कथं पु [कदम्प]
 इस नाम का एक ब्राह्मण-उपास्य (पञ्च
 २१, ६) । 'काओला औ' [काओला]
 वनस्पति विशेष, कीरविशारी. (पण १) ।
 'जल पु' [जल] शीर समुद्र, समुद्र विशेष
 (जीव) । 'जलनिधि पु' [जलनिधि] बहो
 सुवाल मय (पुन २६४) । 'दुम, 'दूम पु'
 [दुम] दूधमाला पेठ, जिसमें दूध निक्कलता
 है ऐसे वृक्ष की जाति (श्रीप ३४६, निवृ
 १) । 'धाई औ' [धात्री] दूध पिलानेवाली
 बाई (शाय १, १) । 'पूर पु' [पूर]
 उबलता हुआ दूध (पण १७) । 'रनन
 पु' [रम] शीरवर हीन का एक अविष्ठाता
 देव (जीव ३) । 'मैह पु' [मेष] दूध-
 समान स्वादवाले पानी की वर्षा (तित्य) ।
 'बाई औ' [यती] प्रभूत दूध देनेवाली (वृह
 ३) । 'वर पु' [वर] शीर-विशेष (जीव
 ३) । 'वारि न' [वारि] शीर समुद्र का
 जल (पञ्च ६६, १८) । 'हर पु' [हर]
 'धर' गौर-सागर (वर्ग २४) । 'सव
 पु' [श्रम] तपि-विशेष, जिसके प्रभाव
 में बचन दूध की तरह मधुर मान्य हो ।
 २ ऐसी तपिवाला जीव (पण २, १,
 शीप) ।

श्रीरिदय वि [श्रीरक्ति] सजान शीर, जिसमें
 दूध लयन्त हुआ हो वह, 'तएण पानी
 पसिया नतिमा भग्गिया वसुधा धामणय्या

शीरा (?) इया बढध्मा' (शाय १, ७) ।
 श्रीरि वि [श्रीरि] १ दूधवाला । २ पुं
 जिसमें दूध निक्कलता है ऐसे वृक्ष की जाति
 (उप १०३१ टी) ।

श्रीरिज्जमाण वि [श्रीर्यमाण] जिसका
 बोहन किया जाता हो वह (भावा २,
 ४) ।

श्रीरिणी औ [श्रीरिणी] १ दूधवाली (भावा
 २, १, ४) । २ वृक्ष-विशेष (पण १—
 पत्र ३१) ।

शीरी औ [श्रीरी] शीर, पहाल-विशेष
 (कुप ६३६, पाप्र) ।

शीरो अ पु [शीरो] समुद्र विशेष, शीर-
 सागर (हे २, १८२, गा ११७, गडक, उज
 ५३० टी. स ३४४) ।

शीरोआ औ [श्रीरोआ] इस नाम की एक
 नदी (इक ३३, ३) ।

शीरोद बेओ शीरोअ (डा ७) ।

शीरोदक पु [शीरोदक] शीर-सागर
 शीरोदय (शाय १, ८, शीप) ।

शीरोदा बेओ शीरोआ (डा ३, ४—४२
 १६१) ।

शील पुं [शील, 'क] लीला, बूँद,
 शीलम { बूँद (स १०६, मूम १, ११, हे
 शीलव १, १८१, कुमा) । 'मग पु'
 [मार्ग] मार्ग-विशेष, जहाँ बूँदों ज्यादा
 रहते हैं बूँदों के निशान बनाये गये हो (मूम
 १, ११) ।

शीलपान न [शीलन] लेल कराना, बीड़ा
 नगना । 'धाई औ' [धात्री] लेल दूध
 करणियोंकी बाई (शाय १, १—पत्र ३७) ।

शीलिया बेओ कीलिया (जीव ५८) ।

शीलिया औ [शीलिस] शीरी बूँदों (शायम) ।

शीप पु [शीप] मद प्राप्त, मदोन्मत्त, मत्त
 (हे ८, ६) ।

शु य [शुल] इन श्यों का शूचक
 अर्थय—१ निरवध, धनधारण । २
 चित्तक, विचार । ३ सत्य, सदेष्ट । ४ समा-
 वना । ५ विस्मय, आश्चर्य (हे २, १६८,
 पट्ट. गा ६, ४२२, ४०१, लयन ६, कुमा) ।
 शुं देवा मुदा (पण २, ४, मुपा १६८)
 शाय १, १३) ।

शुइ औ [शुति] १ छोक । २ छोक का
 निशान (शाय १, १६६, मग ३, १) ।

शुइय वि [दे] १ विच्छिन्न । २ विध्यात,
 शान्त. 'सुसा चिया' (कुप्र १४०) ।

शुंमुणय पु [दे] नाक का छिद्र (दे २, ७६,
 पाप्र) ।

शुंमुणी औ [दे] रज्जु, मुहला (दे २, ७६) ।
 शुंगाह पु [दे] मध की एक उत्तम जाति
 (सम्पत् २१६) ।

शुंठ पुं [दे] बूँद, बूँदों । 'मोइय वि'
 [मोइय] १ बूँदों की नीलनेवाला, उज्ज्वले
 छूँवर भाग जानेवाला । २ पुं. दस नाम का
 एक हाथी (माट—मुच्छ ८४) ।

शुइय वि [दे] स्वलित, स्वलता प्राप्त (दे
 २, ७१) ।

शुंद (शी) सक [शुंद] १ जला । २ पीसना,
 कूटना । शुंद वि (प्राक ६९) ।

शुद अक [शुप] भूष लपना । शुंद
 (प्राक ६६) ।

शुपा औ [दे] इष्टि की रोकने के लिए बनाया
 जाता एक लुण्णम उपकरण (हे २, ७५) ।

शुंभय वि [शुंभण] शीम उपमानेवाला
 (पण १, १—पत्र २३) ।

शुंज अक [परि + अस्] १ कंकना । २
 निराम करना । शुंजद (प्राक ७२) ।

शुंज वि [शुंज] १ दूधडा । २ शायन
 सुजय (हे १, १८१, गा ५३४) । ३ बक,
 टडा (श्रीप) । ४ एक पाई में हीन (पत्र
 ११०) । ५ न. सस्यान विशेष, शरीर का
 शायन धारण (डा ६, सम १४६, जीव) ।
 जी. शुंजा (शाय १, १) ।

शुंजिय वि [शुंजिय] कूबडा (धावा) ।

शुइ अक [शुइ] १ लोडना, लण्डिड
 करना, दुकना करना । २ मक. कूटना, क्षीण
 होना । ३ हटना कुल होना । शुइद (माट—
 संहिय २२६, हे ४, ११६) । शुइवि
 (उज) ।

शुइ वि [दे] शुद्धि, शण्डिड, दिन (हे २,
 ७४, शवि) ।

शुइ बेओ शुइ = शुइ । शुइद (हे ४, ११६) ।
 शुंजि वि (म ८, ४८) । वट. 'वज्रगन्धमय्या

सुडंतदितमोत्तिवा (पउम ५३, ११२, स ४४८) । संक. खुडिउण (स ११३३) ।

सुडक देवो खुडुक = (दे) । खुडकए (धर्मवि ७१) ।

सुडकिअ [दे] देवो खुडुकिअ (मा २२६१) ।

सुडिअ वि [खण्डित] वृद्धि. खण्डित, विच्छिन्न (हे १, ५३, पट्ट १) ।

सुडुक सक [अप + क्रमय्] हटाना, दूर करना । खुडुकइ (प्राह ७०) ।

सुडुक भक [दे] १ नीचे उतरना । २ स्तमित होना । ३ शय्य की तरह कुमना । ४ गुप्ता से मीन रहना । खुडुकइ (हे ४, ३६५) । वक्र. खुडुकंत (कुमा) ।

सुडुकिअ वि [दे] १ शय्य की तरह कुमा हुमा, लटका हुमा (उप ३५५) । २ रोय-मूक, गुप्ता से मीन धारण करनेवाला । जी. आ (मा २२६५) ।

सुडु } वि [दे. सुद सुल्ल] १ लघु. खुडुग } छोटा (दे २, ७४, कण, दस ३; भाषा २, २, उत १) । २ नीच, भ्रमण दुष्ट (दुष्क ४४१) । ३ दु. छोटा साधु, लघु सिष्य (सूत्र १, ३, २) । ४ पुं. मज्झीम-विशेष, एक प्रकार की धर्मज्ञा (भीष, उप २०६) ।

सुडुमड्डा म [दे] १ बहु, पर्यन्त । २ फिर-फिर (निबु २०) ।

सुडुय देवो खुडु (हे २, १७४, पट्ट, कण, सम ३५; लाया १, २) ।

सुडुग } देवो खुडुग (भीष, पण ३६; खुडुग } लाया १, ७, कण) । गियठ न [नैर्गन्थ] उत्तराध्ययन सूत्र का छठवां अध्यायन (उत ६) ।

सुडिअ ॥ [दे] सुद, मैत्रुन, संयोग (दे २, ७५) ।

सुडिआ की [दे. सुडिवा] १ छोटी, लची (ठा २, ३; भाषा २, २, ३) । २ दावर, नदी खुदा हुमा छोटा सत्ताय (जं १; पण २, ५) ।

सुपुणसुडिआ की [दे] प्राण, नाय, नासिवा (दे २, ७६) ।

सुपुण वि [सुपण] १ मर्दित (मा ४४५; निबु १) । २ वृद्धि (दे २, ४५) । ३ मग,

लीन, भ्रमणपरपहणया ग्राह सरण सुकम-पुणया (चउ ३८; संथा) ।

सुपण वि [दे] परितेष्ठित (दे २, ७५) ।

सुत वि [दे] निमग्न, हुमा हुमा (दे २, ७४, लाया १, १, या २७६, ३२४; संथा. गडड) ।

सुतो ॥ [कृत्यस्] वार, दफा (उव, गुर १४, ६१) ।

सुद वि [सुद] चुच्छ, नीच, दुष्ट, भ्रमण (पण १, १, ठा ६) ।

सुद न [चौदथ] सुदता, चुच्छता, नीचता (उप ६१५) ।

सुदमा जो [सुद्रिमा] गान्धार ग्राम की एक मूर्च्छता (ठा ७—पन ३६३) ।

सुद वि [सुद] सोम-प्राप्त, धवलाया हुमा (गुम ३२५) ।

सुधा वि [सुध्] भूच (धर्मसं १०६२) ।

सुधिय वि [सुधित] सुधातु, भूषा (सूत्र १, ३, १) ।

सुन देवो सुण = सुण (सि ५६८) ।

सुन देवो सुण = (दे) (पाप) ।

सुप सक [प्लुप्] जसना । सुपइ (प्राह ६५) ।

सुप सक [मस्ज] ह्वना, निगन होना । सुपइ (हे ४, १०१) । वक्र. सुपंत (गड, कुमा; भीष २३; से १३, ६७) । हेक. सुपिउ (संदु) ।

सुपिवासा की [सुतिपासा] भूष और प्यास (सि ३१८) ।

सुवम भक [सुभ्] १ सोम पाना, सुमित होना । २ नीचे ह्वना । वक्र. सुवमंत (ठा ७—पन ३६३) ।

सुवमण न [सोभग] सोम, धवलाहट (पण) ।

सुम भक [सुभ्] डरना, धवलाता । सुमइ (पण १८) । क. सुभियच्च (पण २, ३) ।

सुभिय वि [सुमित] १ सोम-युक्त, धवलाया हुमा (पण १, ३) । २ न. सोम, धवलाहट (भीष) । ३ पलह, भगदा (शह ३) ।

सुमम भक [सुप्] भूष लगना । सुममइ (प्राह ६२) ।

सुमिय वि [दे] नमित, नमाया हुमा (लाया १, १—पन ४७) ।

सुय न [सुत] छोक (वेद ४३३) ।

सुर पुं [सुर] जानवर के पवि का नख (गुर १, २४८; गडड; प्राह १७१) ।

सुर पुं [सुर] छुर, उत्तरा (लाया १, ८; कुमा; प्रयो १०७) । पत्त न [पन] भस्तुरा या उत्तरा, छुरा (विपा १, ६) ।

सुरप्प पुं [सुरप्प] एक तरह का जहाज (तिरि ३८३) ।

सुरप्प पुं [सुरप्प] १ धातु वाटने का भ्रम-विशेष, सुरपा (सम १३४) । २ सर-विशेष, एक प्रकार का वाण (वेणी ११७) ।

सुरसाण पुं [सुरसान] १ देश-विशेष (सिग) । २ सुरसान देश का राजा (सिग) ।

सुरहखुडी की [दे] प्रणय-कोप (पट्ट १) ।

सुरसाण देवो सुरसाण (सिग) ।

सुरि वि [सुरि] धुवाला जानवर (भाव ३) ।

सुर पुं [सुर] ग्रहरण-विशेष, मासुध-विशेष (सुर १३, १६३) ।

सुरहखुडी की [दे] प्रणय-कोप (दे २, ७६) ।

सुरप्प देवो सुरप्प (पउम ५६, १६; स १८४) ।

सुल क [दे] वह गांव जहाँ साधुओं को मित्रा कम मिलती हो या मित्रा में दूत प्रादि न मिलता हो (वव १) ।

सुल देवो सुम्म । सुलइ (प्राह ६६) ।

सुलिअ देवो सुडिअ (सिग) ।

सुलह पुं [दे] उल्ल, पैर की गाँठ, कीली (दे २, ७५, पाप) ।

सुल न [दे] डूटी, डूटीर (दे २, ७५) ।

सुल } वि [सुल्ल, क] १ छोटा, लघु. सुल्ल } सुद (पण १) । २ दु. क्षीन्द्र

नीच-विशेष (जीय १) ।

सुल्ल देवो सुल्ल (कुप २७६) ।

सुल्ल (सप) देवो सुल्ल (सिग) ।

सुल्ल वि [सुल्ल] १ लघु, सुद, छोटा (भवि) । २ वपस्क-विशेष, एक प्रकार की कीड़ी (लाया १, १८—पन २३५) ।

सुल्लमय पुं [दे] सत्तावी, जहाज का कर्मचारी-विशेष (तिरि ३८५) ।

सुहिरौ की [दे] सवेत (दे २, ७०) ।

सुख पुं [क्षुप] जिसकी शाखा पीर मूल छोटे होते हैं ऐसा वृक्ष (शाखा १, १—पत्र ६५)।
सुखय पुं [दे] गृह-विशेष, नरद्वि-नृण, बंटीया पान (दे २, ७५)।

सुख्य देखो सुभ। सुख्य (पद)।
सुखवय न [दे] पत्ते का पुढवा, दोना (जब २)।

सुह देखो सुभ। ह. सुहियव (सुपा ६१६)।
सुहा श्री [क्षुध] मूल, बुझना (महा-प्राज्ञ १७३)। परिसह, परीसह पुं [परिपह, परीपह] भूत की वेदना को शान्ति मे सहन करना (उत्त २, पंथा १)।

सुहिअ वि [क्षुभित] १ शोभ-प्राप्त (स १, ४६, सुपा २४१)। २ सोम, सन्नाम (भोप ७)।

सूय न [क्षुग] नुस्वान, हानि (सुर ४, ११३, महा)। २ भयपाय, दुनाह (महा)। ३ न्यूनता, कमी (सुपा ७; ४३०)।

सूय सक [सुदय] चित्र करना, लेद उपजाना। लेपद (विंते १४७२, महा)।

सूय पु [सिद] १ लेद, उद्वेग, शोक (उप ७२८ टी)। २ नकलीक, परिश्रम (स ३१५)। ३ सयम, विरति (उत्त १५)। ४ वाकवट, श्रान्ति (भावा)। ५ ग्ग, झ वि [झ] निपुण, कुशल, चतुर, जानकार (उप ६०८, भोप ६४७)।

सूय देखो सूय (सूय १, ९, भावा)।

सूय पु [सुय] व्याग, मोचन (सि १२, ४८)।
सूयण न [सिद] १ लेद, उद्वेग। २ वि. लेद उजानेवाला (कुमा)।

सूयअर देखो सूयअ (कुमा, सुर ३, ६)। हिधिय पु [धिप] विवाचरी का राजा (पउम २८, ५७)। हिधिय पु [धिपति] विवाचरी का राजा (पउम २८, ५४)।

सूयअरिद पु [सिचरेन्द्र] सूयरा का राजा (पउम ६, ५२)।

सूयअरि देखो सूयअरी (कुमा)।

सूयआलु वि [दि] १ नि छट, मन्द, झालगी। २ घमहिणु, ईर्ष्या (दे २, ७७)।

सूयवि [सिदिन] सिलि किया हुआ (न ६३४)।

सूयअर देखो सूयअर (ठा ३, १)।

सूयजणा श्री [सिदना] लेद-मूचक बाणी, लेद (शाखा १, १८)।

सूयड सक [कृप] खेती करना, चास करना।
सूयड (सुपा २७६), 'ग्रह भ्रमया य दुस्त्रिह ह्लाई खेडिअ भयखन्वेव' (सुपा २३७)।

सूयड सक [सूयट] हकिना। सूयड (चिदय ३३७, कुप ७१)।

सूयड न [सिद] १ झुलो का प्राकारवाला नगर (भोप, पणह १, २)। २ नदी और पर्वतो से बँटित नगर (सूय २, २)। ३ पुं-मुगगा, शिवार (भवि)।

सूयड न [सूयट] फनक, डाल (पणह १, ३)।

सूयडण न [रूपण] खेती करना (सुपा २३७)।
सूयडण न [सिदन] खेडना, पोछे हटाना (उप २२६)।

सूयडअ न [सिदनक] किसीना (नाट—रत्ना ६२)।

सूयडय पु [सूयेटक] १ विप, जहर (हि २, ६)। २ ज्वर-विशेष (कुमा)।

सूयडय वि [सूयेटक] नाराक, नारा करनेवाला (हि २, ६, कुमा)।

सूयडय न [सिदक] खोण गांव (वाघ, सुर २, ६६२)।

सूयडाय वि [सिदक] लेल करनेवाला, तमासभिर (उप पु १८८)।

सूयडिअ वि [सिद] हल से विचारित (दे १, १३६)।

सूयडिअ पु [सूयेटिक] १ नारावाला, नगर। २ भगवतवाला (हि २, ६)।

सूयड सक [रम्] बीडा करना, लेल करना।
सूयड (हे ४, १६८)। सूयडि (कुमा)।

सूयडु } न [सिद] १ बीडा, लेल, तमासा,
सूयडु } मजाक (ह २, १७४, महा, सुपा २७, स ५०६)। २ बहाना, छन, मय-छटय विदेअण (सुपा ५२३)।

सूयडा श्री [क्राडा] बीडा, लेल, तमासा (भोप, पउम ८, ३७, मन्द २)।

सूयडिया श्री [दि] बायो दफा, 'मद' पचिदमा सोदिया (स ४८५)।

सूयड पुन [सिच] १ भागाश (विने २०८८)।

२ हृषि भूमि, खेत (बृह १)। ३ जमीन, भूमि। ४ देश, गांव, नगर वगैरह म्यान (कप्य, पंचू, विंते)। ५ भार्या, छो (ठा १०)। 'कप्य पु [कप्य] १ देश का रिवाज (बृह ६)। २ क्षेत्र-संवन्धी अनुष्ठान। ३ मन्थ-विशेष, जिसमें क्षेत्र-विशेषक आचार का प्रतिपादन हो (पंचू)। 'पंडिओयम न [पल्योपम] बाल का नाप-विशेष (भणु)। 'रियि पु [र्य] भार्य भूमि मे उत्पन्न मनुष्य (पणह १)। देखो रिच = क्षेत्र।

सूयय पु [सूयक] राहु (मुज २०)।

सूययि वि [सूयि] क्षेत्रवाला, क्षेत्र का स्वामी (विंते १४६२)।

सूयम न [सूय] १ कुशल, कल्याण, हित (पउम ६५, १७, गा ४६६, मत्त १६; रण ६)। २ प्राप्त वस्तु का परिपालन (शाखा १, ५)। ३ वि. कुशलता युक्त, हित-कर, उपद्रव-रहित (शाखा १, १, बह ७)। ४ पु. पादलिपुत्र के राजा जितराहु का एक भ्राता (भाद्र १)। 'पुरी श्री [पुरी] १ नगरी-विशेष (पउम २०, ७)। २ विदेह-वर्ष की एक नगरी (ठा २, ३)।

सूयमर पु [सूयमर] १ कुलकर पुष्य विशेष (पउम ३, ५२)। २ ऐश्वर्य क्षेत्र के वस्तुयें कुलकर पुष्य (सम १५३)। ३ ग्रह विशेष प्रहाणिप्रायक देव-विशेष (ठा २, ३)। ४ स्वनाम-श्रमिद्ध एक जैन मुनि (पउम २१, ८०)। ५ वि. बन्ध्या का काल, हित-जनक (स २११ टी)।

सूयमर पु [सूयमर] १ कुलकर पुष्य-विशेष (पउम ३, ५२)। ऐश्वर्य क्षेत्र का पंचिर्वा कुलकर पुष्य विशेष (सम १५३)। ३ वि. क्षेत्र-धारक, उपद्रव रहित (राज)।

सूयमर पु [सूयमर] स्वनाम प्रविद्ध एक भन्त हृद वैनुनि (भ्रत)।
सूयमरय पु [सूयमर] राजा कुमारपाल का एक पुत्र पुष्य (दुप ५)।

सूयमरिज्या श्री [सूयमरि] वैनुनि गण की एक शाखा (कप्य)।

सूयमा श्री [सूयमा] १ विदेह वर्ष की एक नगरी (ठा २, ३)। २ क्षेत्र-नाम नगरी-विशेष (पउम २०, १०)।

खेर पुं [दे] एम म्नेच्छ जाति (मुच्छ १५२) ।
खेरि स्त्री [दे] १ परिशादन, नाश 'परणखेरि
वा' (वृह २) । २ खेद, उद्वेग । ३ उत्तलता,
उत्पुगता (भवि) ।

खेल ध्रुव [खेल] खेलना, क्रीडा करना,
तमाशा करना । खेलद (वप्पू), खेलत (गा
१०६) । वक्त्र. खेलत (पि २०६) ।

खेल पुं [दे] गहाव वा वर्मचारी विशेष
(मिरि ३६५) ।

खेल वि [खेल] खेल करनेवाला, नाटक वा
पात्र (धर्मवि ६) जो. 'खेलिया' (धर्मवि ६) ।

खेल पुं [श्लेष्मन्] श्लेष्मा वक्, निहोवन,
घृण (सम १०, शीप, वप्प पांड) ।

खेलण } न [खलन, *क] १ क्रीडा,
खेलणय } खेल । २ विलीना (आन. स
१२७) ।

खेलोसहि स्त्री [श्लेष्मीपधि] १ लम्पि-
विशेष, जिससे श्लेष्म श्लेष्मि वा काम देने
लगे (पण्ड २, १, सति ३) । २ वि. ऐसी
लम्पिवाला (भावम पत्र २७०) ।

खेल देतो खेल = खल । खेल्ल (पि २०६) ।
वक्त्र देहमाणा (स ४४) । प्रयो सक.
खेल्लवेऊण (पि २०६) ।

खेल्ल देतो खेल = श्लेष्मन् (राज) ।

खेल्लण देतो खेलण (स २६५) ।

खेलायण } न [खलनक] १ खेल करना,
खेलायणय } क्रीडा करना । २ न विलीना
(उप १४९ टी) । 'घाई स्त्री [धात्री] खेल
करानेवाली बर्हि (राज) ।

खेल्लि न [दे] हसित, हँसी, ठट्ठा (दे २,
७६) ।

खेल्लुड देतो रल्लुड (राज) ।

खेव पुं [क्षेप] १ क्षेपण फेंकना (उप ७७२
टी) । २ न्यास स्थापना (विसे ६१२) । ३
सङ्घा विशेष (कम्म ४ ८१, ८४) ।

खेव पुं [क्षेप] बिनम्ब देरी (स ७७५) ।

खेव पुं [खेद] उद्वेग, खेद, वल्लेख, 'न हू कोइ
गुरु खेव वचध सीसेहु सतिउमुहेहु' (?)
(पउम ६७, २३) ।

खेवण न [क्षेपण] प्रेरण (आया १, २) ।

खेवय वि [क्षेपण] फेंकनेवाला (गा २४२) ।

खेयिय वि [खेदित] पित्त किया हुआ
(भवि) ।

खेह पुन [दे] वृत्ती, रज, 'वग्गिरुमसर-
खुस्सपवेहान्तरिस्सपह' (सुर ११, १७१) ।

खोज पुं [क्षोद] १ इयु, ऊख । २ दीप-
विशेष इयुवर द्वीप । ३ समुद्र-विशेष,
इयुवर समुद्र (अयु ६०) ।

खोइय वि [दे] विच्छेदित 'सन्ने संघी
खोइया' (सुव २, १४) ।

खोउदय पुं [क्षोदादक] समुद्र विशेष (सुम
१, ६, २०) ।

खोओद देतो खोओद (सुज १६) ।

खोदग } पुं [दे] खूँटी, खूँटा (उप २७८,
खोदय } स २६३) ।

खोदग ध्रुव [खोद] बानर वा बोलना,
बदर वा धावाज करना । खोदग (गा
१७१ ध्रु) ।

खोदरा } स्त्री [खोरा] बानर की धावाज
खोरा } (गा ५३२) ।

खोउदम ध्रुव [खोउध्रु] अत्यन्त वपभीत
होना, विशेष व्याकुल होना । वक्त्र. खोमु-
उममाण (धीप पण्ड १, ३) ।

खोज पुन [दे] मार्ग चिह्न (संति ४७) ।

खोट्ट सक [दे] खटखटाना, ठकठकाना,
ठोकना । वक्त्र. खोट्टिऊत (धोप ५६७
टी) । सक. खोट्टेउ (धोप ५६७ टी) ।

खोट्टिय [दे] बनावटी लकड़ी (नदीटिय पत्र
१४६) ।

खोट्टी स्त्री [दे] दासी, बाकरानी (दे २, ७७) ।

खोड पुं [खोट] फोडा (आह १८) ।

खोड पुं [दे] १ सीमा निर्धारक काष्ठ, खूँटा :
२ वि धार्मिक, धर्मिष्ठ (दे २, ८०) । ३
खन, लयना (दे २, ८०, पिय) । ४
शृगाल, सियार (मुच्छ १८३) । ५ प्रदेश,
जगह, 'सिगखोडे वज्जेह' (धोप ७६ भा) ।
६ प्रसोक्त, प्रमाणन (धोप २६५) । ७ न
राजकुल में देने योग्य सुवर्ण वगैरह द्रव्य
(वप १) ।

खोडपञ्जालि पुं [दे] खूल काष्ठ की धारि
(दे २, ७०) ।

खोडय पुं [खोट्टक] नख से चर्म का निष्पी
डन (हे २, ६) ।

खोडय पुं [खोट्टक] कोटा, कुसी (हे २,
६) ।

खोडिय पुं [खोट्टक] मिरदार पर्वत वा
क्षेपणाल देवता (ती २) ।

खोडी स्त्री [दे] १ बडा बाण (पण्ड १, ३—
पत्र ५३) । २ बाण की एक प्रकार की पेटी
(महा) । ३ नखी लकड़ी (३ धाव वृ हारि,
पत्र ४२१) ।

खोणि स्त्री [क्षोणि] धूम्रिनी, घरणी (अण) ।
'वह पुं [पति] राजा, भूपति (उप ७६३
टी) ।

खोणिद पुं [क्षोणीन्द्र] राजा, भूमिपति
(अण) ।

खोणी देतो खोणि (सुर १२, ६१, सुग
२३८, रंभा) ।

खोद पुं [क्षोद] १ खूँटन, विचारण (ना
१७, ६) । २ इयु-रस, ऊख का रस (सुम
१, ९) । 'रस पुं [रस] समुद्र-विशेष
(दीव) । 'र पुं [वर] द्वीप-विशेष (जीव
३) ।

खोद पुं [क्षोद] खूँटन कुजनी (हमोर १४) ।

खोदोअ } पुं [क्षोदोअ] १ समुद्र विशेष,
खोदोअ } नितका पानी इयुवर से मुख्य
मधुर है (जीव ३, इक) । २ मधुर पानीवाली
वापी (जीव ३) । ३ न मधुर पानी, इयु-
वर के समान मिठा जल (पण्ड १) ।

खोद न [क्षोद] मधु शब्द (अग ७, ६) ।

खोभ सक [क्षोभय] १ विचलित करना,
धैर्य से च्युत करना । २ धारणय उपजाना ।
३ रव पैदा करना । खोभेद (महा) वक्त्र.
खोभत (पउम ३, ६६, सुग ४६३) । हेह
खोभित्तय, खोभइउ (उवा पि ३१६) ।

खोभ पुं [क्षोभ] १ विचलता, सन्नम (आव
५) । २ श्ल नाम का एक रावण का पुत्र
(पउम ५६, ३२) ।

खोभण न [क्षोभण] क्षोभ उपजाना, विच-
लित करना 'तेनोक्खलोअणक' (पउम २,
८२ महा) ।

खोभिय वि [क्षोभित] विचलित किया हुआ
(पउम ११७, ११) ।

खोम } व [क्षीम] १ वापसिक वज्र,
खोमय } कपास का बना हुआ वज्र (आया

१, १—पत्र ४३ टी, उवा १) । २ सन का वना हुमा वल्ल (सम १२३, भग ११, ११, पएह २, ४) । ३ रेसमी वल्ल (उप १४६; स २००) । ४ वि. अतसी संवधी, सन-संवधी, (ठा १०, भग १, १ ११) । *पसिय न [प्ररन] विद्या विशेष, जिससे वल्ल में देवता का भाइतान किया जाता है (ठा १०) ।

खोमिय न [श्रीमिक] १ कपाल का बना हुमा वल्ल (ठा ३, ३) । २ सन का बना हुमा वल्ल (कप्य) ।

खोमिय वि [क्षौमिक] १ रेसम सम्बन्धी । २ सन-सम्बन्धी (पव १२७) ।

खेय देखो खोद (सम १५१, इक) ।

खोर } न [दि] पात्र-विशेष, कचोलक, कठोर खोरय } (उप पु १३५, सुदि) ।

खोल पु [दि] १ खोग गथा (दि २, ८०) ।

२ वल्ल का एक देश (दि २, ८०, ५, ३०, बृह १) । ३ मय का नीचला कोट बर्दम (प्राचा २, १, ८, बृह १) ।

खोल पु [दे] गुच्छर, जामुन (पिंड १२७) ।

खोल न [दे] कोटर, गह्वर 'खोल कोटर' (निबू १५) ।

खोसलय वि [दे] दन्तुल, सम्बे श्रीर बाहर निकले हुए दाँतवाला (दि २, ७७) ।

खोसिय वि [दे] जीएँ प्राय किया हुमा (पिंड ३२१) ।

खोह देखो खोभ = खोभम् । खोह (भवि) । वल्ल खोहेंत (सि १५, ३३) । कवह, खोहि-ज्वत (सि २, ३) ।

खोह देखो खोभ = खोभ (पएह १, ४, कुमा सुपा ३६७) ।

खोहण देखो खोभण (था १२; सुपा ३०२) ।

खोहिय देखो खोमिय (सप) ।

॥ इम सिरिपाइअसदमहणवे रमाराइसदसकणवो
एभारहमो सरमो समतो ॥

ग

ग पु [ग] अयजन वर्ष विशेष, इमका स्थान कएठ है (प्राभा, प्राप) ।

*ग वि [ग] १ जानेवाला । २ प्राप्त होने-वाला, जैसे—पारण, वसण (प्राचा, महा) ।

गजयत वि [गतयत्] गया हुमा (प्राठ ३५) ।

गइ छो [गलि] १ शान, धबवाध (विगे २५०२) । २ प्रकार, भेद (सि १, ११) । ३ गमन, चलन, देशान्तर प्राप्ति, (कुमा) ।

४ जन्मान्तर प्राप्ति, मन्वातर-गमन (ठा १, १, ६) । ५ देव, मनुष्य, तिर्यञ्च, नरक श्रीर भुक्त जीव को भवस्था, देवादि-योगि (ठा ५, ३) । *तस पु [त्रस] धमिनि धीर वायु के जीव (कम्म ३, १३, ४, १६) ।

*नाम न [नामन] देवादि गति का बारह-सूत कर्म (सम ६७) । *प्यवाय पु [प्रपान] १ गति की नियतता (पएह १६) । २ संघार विशेष (भग ८, ७) ।

गदइ पु [गजेन्द्र] १ ऐसखण हाथी, इन्द्र-हत्ती । २ थोड़ हाथी (गउठ, कुमा) । *पय ३६

न [पद] गिरमार पर्वत का एक बल-सीध (टी ३) ।

गइल्लय देखो गय = गत (सुल २, २२) ।

गउ } पु [गो] बेल, गुपम, सौंद (हे १, गउअ } १५८) । *पुल्ल पु न [पुच्छ] १ बेल की पूँछ । २ बाण विशेष (कुमा) ।

गउअ पु [गउय] गी-सुल्य झाड़िवाला जगती पशु-विशेष, नील गाय (कुमा) ।

गउआ छो [गो] गैया, गी (हे १, १५८) ।

गउठ पु [गौड] १ स्वनाम स्यात देश, बंगाल का पूर्वी भाग (ह १, २०२, सुपा ३८६) । २ गौड देश का निवासी (ह १, २०२) । ३ गौड देश का राजा (गउठ, कुमा) । *वइ पु [वव] नाकपिठराज का बनाया हुमा प्राकृत-भाषा का एक काव्य-संघ (गउठ) ।

गउण वि [गौण] अग्रधान, अमुल्य (दे १, ३) ।

गउणी छो [गौणी] शक्ति-विशेष, शब्द की एव शक्ति (दे १, ३) ।

गउरन देखो गारय (कुपा दे १, १६३) ।

गउरविय वि [गौरवित] गौरव-युक्त किया हुमा, जिसका भावर—सम्मान किया गया हो वह, 'तजजएपाइ सत्तागमाई वेवेहि वेव विपहेहि, गउरविपाइ रयएगारेण' (सुपा ३५६, ३६०) ।

गउरी छो [गौरी] १ पार्वती, शिव-पत्नी (सुपा १०६) । २ गौर वर्णवाली छो । ३ श्री-विशेष (कुमा) । *पुत्त पु [पुन] पार्वती का पुत्र, स्कन्द, कार्तिकेय (सुपा ४०१) ।

गअ देखा गय = गत, 'भीया जहागवगई पविवगण गय' (रंभा) ।

गमा पु [गम] मुनि विशेष, द्विजिय सत का प्रवर्तक भाषाय (ठा ७, विन २४२५) ।

*दत्त पु [दत्त] १ एक जैन मुनि, या पठ वासुदेव क पूर्वजन्म के गुरु थे (स १५३) ।

२ नवर्ष वासुदेव के पूर्वजन्म का नाम (पउम २०, ७१) । ३ इस नाम का एक जैन भेट्टो (ग १६, ५) । *दत्ता छो [दत्ता] एक सारंगगढ़ छो की का नाम (विना १, ७) ।

*गं देखो गंगा । *पयवाय पु [प्रपान]

हिमाचल पर्वत पर का एक महान् ह्रद, जहाँ से गंगा निकलती है (ठा २, ३)। *सोअ पुं [स्रोतस्] गंगा नदी का प्रवाह (वि ५५)।

गंगाली जो [दे] गोन, बुयो (सुपा २७८; ४८७)।

गंगा जी [गङ्गा] १ स्वनाम-प्रायः नदी (बस, सम २७, कण्ठ)। २ खो-विशेष (सुमा)। ३ मोरानाक के मत से काल-परिमाण-विशेष (भाग १५)। ४ गंगा नदी की दक्षिणाधिक्य देवी (भावन)। ५ नीचप्रतिपाद की भाता का नाम (एपा १, १६)। छुंड न [कुण्ड] हिमाचल पर्वत पर स्थित ह्रद-विशेष, जहाँ से गंगा निकलती है (ठा ८)। *कूड न [कूट] हिमाचल पर्वत का एक शिखर (ठा २, ३)। *दीव पुं [द्वीप] द्वीप-विशेष, जहाँ गंगा-देवी का भवन है (ठा २, ३)। *देवी जी [देवी] गंगा की दक्षिणाधिक्य देवी, देवी विशेष (इक)। *धस पुं [धस] प्रायः-विशेष (कम)। *सय न [सय] नीचालक के मत में एक प्रकार का काल-परिमाण (सा १५)। *सागर पुं [सागर] प्रसिद्ध तीर्थ-विशेष, जहाँ गंगा समुद्र में मिलती है (उप १८)।

गोअ पुं [गोअ] १ गंगा का पुत्र, श्रीमन्-विनायक (छाया १, १६, देवी १०४)। २ दैविक अत का प्रबलक भावार्थ (भाङ्ग १)। ३ एक जैन मुनि, जो मगवाय वरवर्ण-भाव के बंध के थे (सा ६, १२)।

गंड पुं [दे] वरुड, इस नाम की एक गंडिय [मलेच्छ] जाति (दे २, ८४)।

गंडिय पुं [दे] देवी। गुं घांकी (लोक प्र० ४६५१-३१ सर्ग)।

गंड सक [गंड] १ तिरस्कार करना। २ जलमय करना। ३ मर्दन करना। ४ धरास्व करना। गंडद (वप ५)। गंडखीय (सिदि ३८)।

गंड पुं [दे] गाल (दे २, ८१)।

गंड पुं [गंड] भोग्य-विशेष, एक प्रकार की खाद्य वस्तु (पराह २, ५—यन १४८)। *साता जी [साता] रुख, लकड़ी वगैरह इत्यादि रखने का स्थान (निजु १३)।

गंडपन न [गंडपन] १ अपमान, तिरस्कार (सुपा ४८०)।

बेएणिय रसगुणप्रा,

बगर्भति गगन न येव केसरिखो।

संभावजिज्ज भरखुं,

न गंजखुं पोरिखारिं (बसा ४२)।

२ कर्तव्य, दाग, 'गंजखारिहो जम्बो' (बजा १८)।

गंडपन वि [गंडपन] मर्दनकर्ता (सिदि ३४६)।

गंडा जी [गंडा] बुरा-गृह, भय की दूकान (दे २, ८५ टी)।

गंजिज पुं [गंजिज] बल्य-बाल, दाल बेचने-वाला, बालाल (दे २, ८५ टी)।

गंजिज वि [गंजिज] १ पचजित, धर्ममूल, 'कण्ठरिमगंजिजो इव' (उप ६८६ टी)। २ हव, बाप हमा, बिनासित (पिप)। ३ गोष्ठि (हे ४, ४०६)।

गंजिज वि [दे] १ विमेषभास, विपुलः। २ भ्रान्त-चित्त, पागल (दे २, ८३)।

गंजुखिय वि [दे] रोमाञ्चित, पुनर्कित (बय १२)।

गंजोड वि [दे] सजावत, व्याकुल (वड्)।

गंजोखिय वि [दे] १ रोमाञ्चित, जिसके रोम खड़े हुए हो वह (दे २, १००; अवि)। २ न, हँसाने के लिए किया जाता। प्रेम-स्यरी, कुल्लुखी, कुल्लुवाह (दे २, १००)।

गंड सक [ग्रथ] १ गठना, बूँचना। २ रचना, बनाना। गंडद (हे ४, १२०; वड्)।

गंड देहो गंध (उय; सूत्र २, ५, धर्म २)।

गंडि जी [गुधि] एकवार व्यापी हुई ची (प्राङ्ग ३२)।

गंडि धुकी [ग्रन्थि] १ गंड, जोड़। २ बाँध बांधि की निष्ठा, पर्व (हे १, ३५, ४, १२०)।

३ कठरी, गंड (छाया १, १, धौय)। ४ योग-विशेष (लहृम १५)। ५ राग-रूप का निश्चित परिमाण-विशेष (उप २३३)।

'गंधित सुनुनेमो कनकतपण्णस्युर्गंधि ख'। जीवस्य कम्मजसिंघो यण्णपगंडसपरिणामो' (विजे ११६५)।

*छेअ पुं [छेअ] गंड तोड़नेवाला, चोर-विशेष, पाकेदार (दे २, ८६)। *जेय पुं [जेद] ग्रन्थि का घेदन (धर्म १)। *जेयग

वि [जेदक] १ ग्रन्थि को घेदनेवाला। २ पुं. चोर-विशेष (छाया १, १८; परह १, ३)। *वण्ण पुं [पर्ण] सुगन्धि गन्ध विशेष (यण्ण)। *सहिज वि [सहिज] १ गंड-मुक्त। २ न. प्रत्यास्थान-विशेष, वत-विशेष (धर्म २, पंडि)।

गंठिम न [ग्रन्थिम] १ ग्रन्थ से बनी हुई काला बगैरह (पराह २, ५; मग ६, ३३)। २ कुल-विशेष (पराह १—यन १२)।

गंठिय वि [ग्रन्थिय] पूँचा हुमा, गठा हुमा, पियोरा हुमा (कुमा)।

गंठिय वि [ग्रन्थिक] गंठनाला (सुप २, ५)।

गंठिज वि [ग्रन्थिज] रन्ध्र-मुक्त, गंठ-वाला (राज)।

गंड पुं [दे] १ वन, जंगल। २ वाएध्यासिक, कोतवाल। ३ छोटा मृग (दे २, ६६)। ४ नापिक, नाई (दे २, ६६; बाचा २, १, २)। ५ न. शुद्ध, समूह, 'कुमुनवागंडकुम-हुनिव' (बहा)।

गंड पुं [गण्ड] १ माल, बपोन (भाग, सुपा ८)। २ रोम-विशेष, बगैरहमाला, 'ठा मा करेह बीयं गंडेवरिकोडिमामुत्तं' (उप ७६ न टी, बाचा)। ३ हाथी का कुम्भफल (बन २६)। ४ कुम्भ, स्तन (उप ८)। ५ ऊँच का जल्य, झुल-कटूह (वप ३, ३५६)। ६ छल-विशेष (पिप)। ७ कोबा, स्फोटक (वप १०)। ८ गंड, ग्रन्थि (धवि १७; धमि १८४)। *जेअ, जेअअ पुं [जेअक] चोर-विशेष, पाकेदार (मवि १७, धमि १८४)। *मागिया जी [मागिका] शाय का एक प्रकार की ताप (राप)। *माला जी [माला] रोम-विशेष, जिसमें शीरा झूल जाती है (बय)। *बल न [बल] बपोन-जन (सुर ४, १२४)। *लेहा जी [लेहा] बपोन-पल्लो, गाल पर लगाई हुई कस्तूरी वगैरह की छटा (जिर १, १; गलद)। *बच्छा जी [बच्छा] पीन स्तनो दे युक्त दावी-वाली जी (सत ८)। *वागिया जी [वागिया] बंस का पात्र-विशेष, जो जला दे छोटा होता है (मन ७, ८)। *वास पुं [वावर] माल का पात्र-भाग (गलद)।

गंड न [गण्ड] दोष, नाग (सूय १, ६ १६) । माणिया छी [मानिया] पात्र-विशेष (राय १४०) 'विइवाय पुं' [व्यति-पात] ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्ध एक योग (संबोध ५४) ।

गंडइया छी [गण्डकिरा] नदी विशेष (धाम) ।

गंडय पुं [गण्डक] १ गंडा, जामवर-विशेष (पात्र. दे ७, ५७) । २ चन्द्रोपणा करने-वाला घुघर, डेर लगनेवाला घुघर (धोय ६४४) ।

गंडली छी [दे] गंडेरी, ऊछ का टुकड़ा (उप १०६) ।

गंडा देखो गंडि = ग्रन्थि (गण्ड १८) ।

गंडाग पुं [गण्डक] नाई, हजाम (भाषा २, १, २, २) ।

गंडि पु [गण्डि] जन्तु-विशेष (उत्त १) ।

गंडि वि [गण्डिन] १ गण्डमाता का रोग-वाला (भाषा) । २ गण्ड रोगवाला (पण्ड २, ५) ।

गंडिया छी [गण्डिका] १ गंडेरी, ऊछ का टुकड़ा (महा) । २ सोनार का एक उपकरण (छा ४, ४) । ३ एक धर्म के अधिकारवाली ग्रन्थ-प्रकृति (सम १२६) ।

गंडिल देखो गंधिल (हक) ।

गंडिलायई देखो गंधिलायई (हक) ।

गंडी छी [गण्डी] १ सोनार का एक उपकरण (छा ४, ४—यत्र २७१) । २ कमल की कणिका (उत्त ३६) । 'तिंदुग' [तिन्दुक] मय विशेष (ती १८) । 'पय पु' [पद] हाथी की रूढ़ चतुष्पद जानवर (छा ४, ४) । 'कोत्थय पुन' [पुस्तक] पुस्तक-विशेष (छा ४, २) ।

गंडीरी छी [दे] गण्देरी, ऊछ का टुकड़ा (दे २, ८२) ।

गंडीन न [गण्डीय] १ भजुन का धनुष (बिही ११२) ।

गंडीय न [दे-गण्डीय] धनुष, बाण (दे २, ८४; महा. पात्र) ।

गंडीयि पुं [गण्डीयि] भजुन, मयम पाएइय (बिही ५८) ।

गंडुअ न [गण्डु] मोठीसा, सिपहाना (महा) ।

गंडुअ न [गण्डुत्] गृण-विशेष (दे २, ७५) ।

गंडुल पु [गण्डोल] कृमि-विशेष, जो पेट में पैदा होता है (जी १५) ।

गंडुहाण न [गण्डोपधान] गाल का लकिया (पद ८४) ।

गंडुपय पुं [गण्डुपय] जन्तु-विशेष (राज) ।

गंडुल देखो गंडुल (पण्ड १, १—यत्र २३) ।

गंडुस पुं [गण्डूप] पानी का कुत्ता (मा २७०, सुपा ४४६), 'बहुमदरागसुपा' (उप ६८६ टी) ।

गंडुस पुं [गण्डूप] पानी का कुत्ता (सूत्रनि ५४) ।

गंड देखो गंड ।

गंडव्य } देखो गम = गम् ।

गंडि } देखो गम = गम् ।

गंडिय न [गण्डिक] गृण-विशेष (पण्ड १—यत्र ३३) ।

गंडी छी [गण्डी] गाड़ी, शकट (यम १२ टी, सुपा २७७) ।

गंडु देखो गम = गम् ।

गंडुमहागया छी [गन्ताप्रत्यागत] भित्ता-धर्म-विशेष, जैन मुनियों की भित्ता का एक प्रकार (छा ६) ।

गंडुकाम वि [गण्डुकाम] जाने की इच्छा वाला (था १४) ।

गंडुमण वि [गण्डुमनस्] ऊपर देखो (वयु) ।

गंडुण } देखो गम = गम् ।

गंडुण } देखो गम = गम् ।

गंध देखो गंड—ग्रन्थ । गंध (वि ३३३) ।

गंध-मयोमति (वि ५४८) ।

गंध पुं [ग्रन्थ] १ शास्त्र, सूत्र, पुस्तक (विदे ८६४, १२८३) । २ धन-धान्य वगैरह बांधा मिश्रण, ऋष, मान आदि धामन्तर अर्पण, परिहृ (छा २, १; वृह १, विदे २५७३) । ३ धन, देस (स २३६) । ४ स्वभाव, संकल्पी सोय (पण्ड २, ४) । 'इइअ पुं' [तीव] जैन साधु (सूय १, ६) ।

गंधि वि [ग्रन्थिन्] रचना-कर्ता (सम्मत १३६) ।

गंधि देखो गंडि (पण्ड १, ३—यत्र ४४) ।

गंधिम देखो गण्डिम (पाया १, १३) ।

गंधिला छी [गण्डिला] देखो गंधिल (हक) ।

गंडीणी छी [दे] गंडा विशेष, जिसमें भ्रष्ट बंद की जाती है, मोक्ष-मिथीनी (दे २, ८३) ।

गण्डुअ देखो गंडुअ (पद) ।

गंध पुं [ग्रन्थ] १ ग्रन्थ, नास्तिका से ग्रहण करने योग्य पदार्थों की वास महज (धोय; मग; हे १, १७७) । २ लघ, लेख (मे ६, ३) । ३ धर्म विशेष (पण्ड १, १) । ४ धान्यन्तर देखो भी एक जाति (हक) । ५ ॥ देव विमान विशेष (तिर १, ४) । ६ वि. गन्धमुक्त पदार्थ (सूय १, ६) । 'उडी छी' [कुटी] गन्ध-द्रव्य का घर (गडक, हे १, ८) । 'कासाइया छी' [कापायिसा] सुगन्ध कपाय रंग की साड़ी (उवा; मग ६, ३३) । 'गुण पुं' [गुण] गन्धस्व गुण (अम) । 'द्वय न' [द्विक] गन्ध-द्रव्य का घुल (छा ३, १—यत्र ११७) 'इह वि' [द्वय] गन्धपूर्ण, सुगन्धपूर्ण (पंचा २) ।

'गाम न' [गामन्] गन्ध का हेतुभूत बर्ग-विशेष (अम) । 'तेल न' [तेल] सुगन्धित तेल (बन्धू) । 'द्वय न' [द्विक] सुगन्धित तेल (बन्धू) । 'द्वय न' [द्विक] सुगन्धित तेल (बन्धू) ।

'द्वय न' [द्विक] सुगन्धित तेल (बन्धू) । 'द्वय न' [द्विक] सुगन्धित तेल (बन्धू) ।

'द्वय न' [द्विक] सुगन्धित तेल (बन्धू) । 'द्वय न' [द्विक] सुगन्धित तेल (बन्धू) ।

'द्वय न' [द्विक] सुगन्धित तेल (बन्धू) । 'द्वय न' [द्विक] सुगन्धित तेल (बन्धू) ।

'द्वय न' [द्विक] सुगन्धित तेल (बन्धू) । 'द्वय न' [द्विक] सुगन्धित तेल (बन्धू) ।

'द्वय न' [द्विक] सुगन्धित तेल (बन्धू) । 'द्वय न' [द्विक] सुगन्धित तेल (बन्धू) ।

'द्वय न' [द्विक] सुगन्धित तेल (बन्धू) । 'द्वय न' [द्विक] सुगन्धित तेल (बन्धू) ।

'द्वय न' [द्विक] सुगन्धित तेल (बन्धू) । 'द्वय न' [द्विक] सुगन्धित तेल (बन्धू) ।

'द्वय न' [द्विक] सुगन्धित तेल (बन्धू) । 'द्वय न' [द्विक] सुगन्धित तेल (बन्धू) ।

'द्वय न' [द्विक] सुगन्धित तेल (बन्धू) । 'द्वय न' [द्विक] सुगन्धित तेल (बन्धू) ।

'द्वय न' [द्विक] सुगन्धित तेल (बन्धू) । 'द्वय न' [द्विक] सुगन्धित तेल (बन्धू) ।

'द्वय न' [द्विक] सुगन्धित तेल (बन्धू) । 'द्वय न' [द्विक] सुगन्धित तेल (बन्धू) ।

'द्वय न' [द्विक] सुगन्धित तेल (बन्धू) । 'द्वय न' [द्विक] सुगन्धित तेल (बन्धू) ।

सुगन्धित लेप द्रव्य (विषा १, ६)। *वह्नि स्त्री [वह्नि] गन्ध द्रव्य की बनाई हुई गोली (साया १, १० भौप)। *वह पुं [वह] पवन, वायु (कुमा. गा ५४२)। *वास पुं [वास] १ सुगन्धित वस्तु का पुट। २ जूएँ-विशेष (सुपा ६७)। *समिद्ध वि [समिद्ध] १ सुगन्धित, सुगन्ध पूर्ण। २ न. नगर-विशेष (आवम, इक)। *सालि पुं [सालि] सुगन्धित शीहि, धान (आवम)। *हस्ति पुं [हस्ति] उत्तम हस्ती, जिसकी गर्ज से दूसरे हाथी भग जाते हैं (सम १, पडि)। *हरिण पुं [हरिण] हस्तुरिया हिरन (कपू)। *हाररा पुं [हारर] १ इस नाम का एक स्नेह्य देश। २ गन्धहारक देश का निवासी (पहह १, १-पन १४)।

गंधग पुं [गन्धन] एक सर्व-जाति (दस २, ८)।

गंधपिसाय पुं [दे] गंधिक, पसारी (दे २, ८७)।

गंधय देखो गंध (महा)।

गंधलया स्त्री [दे] नासिका, घ्राण (दे २, ८५)।

गंधवाह पुं [गन्धवाह] पवन (सुपु १८०)।

गंधव्य पुं [गन्धर्व] १ देव मायक, स्वर्ग-मायक (उत्त १, सख)। २ एक प्रकार की देव-जाति, व्यतर देवी की एक जाति (पहह १, ४, भौप)। ३ यज्ञ-विशेष, भगवान् कुन्धनाय का शासनप्रियायक यज्ञ (सति ८)। ४ न. युद्ध-विशेष (सम ५१)। ५ वृष-कुल की, गान (विपा १, २)। *कठ न [कठ] रत्न की एक जाति (राय)। *घर ॥ [गृह] संगीत-गृह, संगीतलय, संगीत का अभ्यास-स्थान (ज १)। *णगर [नगर न [नगर] भ्रमस्थ-नगर, सच्चा के समय में भ्रांति का दीव्यता मिथ्या-नगर, जो सारी उत्पत्ति का सूचक है (अपु, पव १६८)। *पुर न [पुर] देखो *णगर (गवड)। *लिपि स्त्री [लिपि] लिपि विशेष (सम ३५)। *नवाह पुं [त्रिगो] उत्सव चित्त विवाह, स्त्री-मुख की इच्छा के अनुसार विवाह (सख)। *साला स्त्री [शाला] गान-शाला, संगीत-गृह, संगीत-तालय (वच १०)।

गंधव्य वि [गन्धर्व] १ गंधर्व-संबन्धी, गंधर्व से संबन्ध रखनेवाला (जं १, धमि ११५)। २ पु. उत्सव-हीन विवाह, विवाह विशेष, 'गन्धर्वेण विवाहेण सममेव विवाहिता' (आवम)। ३ न. गीत, गान (पाम)। गंधवि वि [गन्धर्वि] गानेवाला (ते ३)। गंधन्वि वि [गन्धर्वि] १ गंधर्व-विद्या में कुशल (सुपा १६६)। गंधा स्त्री [गन्धा] नगरे-विशेष (इक)। गंधाण न [गन्धान] छन्द विशेष (सिग)। गंधार पुं [गन्धार] देश विशेष, बन्धार (स ३८)। २ पर्वत विशेष (स १६)। ३ न. नगर-विशेष (स ३८)। गंधार पुं [गन्धार] स्वर-विशेष, रागिनी-विशेष (ठा ७)। गंधारी स्त्री [गन्धारी] १ सती विशेष, कृष्ण वासुदेव की एक स्त्री (पडि, अंत १५)। २ विद्यादेवी विशेष (सति ६)। ३ भगवान् भगिनाथ की वासनदेवी (सति १०)। गंधारी स्त्री [गन्धारी] विद्या विशेष (सूय २, २, २७)। गंधाघ पुं [गन्धापाति] स्वनाम-श्रद्धि गंधाघाह १ एक वृक्ष, वैशाख पर्वत (इक, ठा २, १-पन ६६, ८०, ठा ४, २-पन २२३)। गंधि वि [गन्धि] गंध-युक्त, गंधवाला (कप्य गवड)। गंधि वि [दे] दुर्गम खराब गंधवाला (दे २, ८३)। गंधिअ पुं [गन्धिअ] गन्ध द्रव्य बेषनेवाला, पसारी (दे २, ८७)। गंधिअ वि [गन्धिअ] गंध युक्त, 'सुगन्धवर-गन्धगन्धि' (भौप)। *साला स्त्री [शाला] लकड़ जैसी गन्धवाली चीज की दुकान (वच ६)। गंधिअ वि [गन्धित] गन्ध युक्त, गन्धवाला (स ३७२ गा ५४५, ८७२)। गंधिल पुं [गन्धिल] वर्ष-विशेष, विजय-नक्षत्र-विशेष (ठा २, ३, इक)। गंधिलार्थ स्त्री [गन्धिलार्थ] १ क्षेत्र विशेष, विजयवर्ष विशेष (ठा २, ३, इक)। २ नगरी विशेष (द ६१)। *कूड न [कूट]

१ गन्धमारन पर्वत का एक शिखर (ज ४)। २ वैशाख पर्वत का शिखर-विशेष (ठा ६)। गंधिली स्त्री [दे] छाया, छाह (सप १०१ टी)। गंधुचत्तमा स्त्री [गन्धुचत्तमा] मदिरा, मुरा (दे २, ८६)। गंधेली स्त्री [दे] १ छाया, छाह। २ मधु-मखिरा (दे २, १००)। गंधोदग पुं [गन्धोदक] सुगन्धित जन्म गंधोदय १ सुगन्ध वाहित पानी (भौप, विप, १, ६)। गंधोली स्त्री [दे] १ इच्छा, भगिनाथा। २ रानी, राह (दे २, ६६)। गंधि पुं [दे] देखो गम = गम। गंधिपु पुं [दे] देखो गम = गम। गभीर न [गम्भीर्य] १ गम्भीरता। २ अतीव्र (सूनि ६६)। गभीर वि [गम्भीर] १ गम्भीर, अस्लाम, अगुल्ल, गहरा (भौप, से ६, ४४, कप्य)। २ पुन गहन-स्थान, गहन प्रदेश, जहाँ प्रति-शब्द उल्लिख हो (विने ३४०४, बह १)। ३ पुं. रावण का एक सुभट (पवन ५६, ३)। ४ यदुवंश के राजा अन्धकबुद्धि का एक पुन (अत ३)। ५ न. समुद्र के किनारे पर स्थित इस नाम का एक नगर (पुर १३, ३०)। *पोय न [पोत] नगर-विशेष (साया १, १७)। *मालिणी स्त्री [मालिनी] महा-बिह्वल्य की एक नगरी (ठा २ ३)। गभीरा स्त्री [गम्भीरा] गम्भीर-हृदया स्त्री (वच ५)। २ भागा-छन्द का एक मेट (पिन)। ३ छुद्र जन्तु-विशेष, वस्तुनिद्रप जीव विशेष (पहह १)। गभीरिअ न [गम्भीर्य] गम्भीरता, गम्भीरपन (दे २, १०७)। गभीरिअ पुं [गम्भीर्य] ऊपर देखो (सख)। गगण न [गगन] आकाश, अम्बर (कप्य, स ३४८)। *गन्ध न [गन्धन] वैशाख पर्वत पर का एक नगर (इक)। *वहम, वहह न [वहम] वैशाख पर्वत पर का एक नगर (राज इक)। गगर्णम पुं [गगनाङ्ग] छन्द विशेष (पिन)।

गम्य पुं [गर्ग] १ श्रुति-विशेष । २ गोन-विशेष, जो गौतम गोत्र की एक शाखा है (ठा ७) ।

गम्य पुं [गर्ग] १ एक जैन महर्षि (उत्तर २७, १) । २ विक्रम की वारहवीं शताब्दी का एक श्रेष्ठ (पुत्र १४२) ।

गम्य पुं [गम्य] गौ गोत्र में उत्पन्न श्रुति-विशेष (उत्तर २७) ।

गम्य वि [गम्य] १ गम्य भावाजवाला, अति क्षम्य वक्ता (प्राप्त) । २ मानव या दुष्ट से क्षम्यक कर्म (हे १, २१६, हुआ) ।

गम्यी की [गम्यी] गम्यी, छोटा घड़ा (दे २, ८६, मुपा ३३६) ।

गम्यि देखो गम्यार, 'रजगम्यिर्गम्ये' (गा ८४३, सण) ।

गम्य सक [गम्य] १ जाना, समन करना । २ जानना । ३ प्राप्त करना । गम्य (प्राप्त, पद) । नवि, गम्य (हे ३, १७१, प्राप्त) ।

गम्य गच्छत, गम्यमाण (पुत्र ३, ६६, भा १२, ६) । संह. गच्छित्त (हुमा) । हेह, गच्छित्तार (पि १६८) ।

गम्य पुन [गम्य] १ समूह, मार्ग, मंषात (म १४८) । २ एक भाषाई का परिवार (कीर. सं ४७) । ३ शुद्ध-परिवार, 'शुद्धपरिवारो गम्यो, तस्य वसंताण एण्णवाविठ्ठा' (पचक, धर्म ३) । 'वास पुं [वास] शुद्ध-पुन में रहना, गम्यपरिवार के साथ निवास (धर्म ३) । 'विहार पुं [विहार] गम्य की सामाचार्य, गम्य का भाषा (वच १) । 'सारणा की [सारणा] गम्य का रक्षण (राज) ।

गम्यगम्यिच्छि घ. गम्यगम्य से होकर (भीषण) । गम्यिच्छि वि [गम्यिच्छि] गम्यगम्य, गम्य में रहनेवाला (इह १) ।

गम्य देवो गम्य = गम्य (गम्य. प्राप्त १७१, इह) । 'सार पुं [सार] एक जैन मुनि, दण्डक प्रत्य का वर्तों (हं ४७) ।

गम्य पुं [दे] जन, धन, धन-विशेष (दे २, ८१, पाप) ।

गम्य न [गम्य] धन-वर्धित वास्तव, प्रकथ (ठा ४, ४—पाप २८७) ।

गम्य धक [गम्य] सजना, गम्यगम्य, धन-धनता । गम्य (हे ४, ६८) । वक्र. गम्यंत, गम्यंत (पुत्र २, ७५, रण्य ५८) ।

गम्य न [गम्य] १ गम्य, भवान्क ध्वनि, मेघ या सिंह का नाद । २ नगर-विशेष (उत्तर ७६५) ।

गम्यमह पुं [दे. गम्यमह] पशु और हाथी की भाषा (दे २, ८८) ।

गम्यफल } वि [दे] देश-विशेष में उत्पन्न
गम्यल } (वक्र) (भाषा २, ५, १, ५, ७) ।
गम्यम पुं [गम्यम] पवित्रोत्तर दिशा का पवन (भावम) ।

गम्यर पुं [दे] बन्ध-विशेष, गम्यर, गम्यर, इनका खाना धर्म-प्राप्त में निषिद्ध है । (था १६, जो ६) ।

गम्यल वि [गम्यल] गम्यन करनेवाला (निष्ठा ७) ।

गम्यल देखो गम्यम (भावम) ।

गम्यि जो [गम्यि] गम्यन, हाथी वगैरह की भाषा (हुमा मुपा ८६; उत्तर ११७) ।

गम्यिअ वि [गम्यिअ] १ जिसने गम्यन किया हो वह, स्तनित (पाप) । २ न गम्यन, मेघ वगैरह की भाषा (पण्य १, ३) ।

गम्यिचु } वि [गम्यिचु] गम्यन करनेवाला,
गम्यिर } गम्यनेवाला (ठा ४, ४—पाप २, ६, गा ५४) ।

गम्यिअविअ न [दे] १ शुद्धी, शुद्धताहट । २ अण-स्पर्श से होनेवाला रोमाक, पुनक (पद) ।

गम्यि नि [प्राप्त] ग्रहण योग्य (स १४०, विसे १७७) ।

गम्यि पुं [गम्यि] भरपूर की नात्य-मेला का पवित्रित (राज) ।

गम्यिआ की [दे] गम्यि, गम्यिआ (दे २, ८१) ।

गम्य त [गम्य] १ रिक्तों से प्राप्त, मोटा पत्थर (दे २, ११०) । २ गम्य, सार्द (पुत्र १३, ४१) ।

गम्य (भा) देवो गम्य = गम्य (प्राप्त) ।

गम्यय पुन [दे] गम्यन, भवान्क ध्वनि, हाथी वगैरह की भाषा. 'ता गम्ययं कुण्ठो, समाम्भा गम्ययो, तस्य' इत्येतरे सर्व विव.

सो जकखो गम्ययं पकुण्ठो' (मुपा २८१; ५४२) ।

गम्यय अक [दे] गम्यन करना, भवान्क भाषा करना । वक्र. गम्ययहंत (मुपा १६४) ।

गम्ययही जो [दे] वज्र-निर्घोष, गम्यय भाषा, मेघ-ध्वनि (दे २, ८५; सण) ।

गम्यय न [दे] गम्यय, गोलमाल (मुपा ५४१) ।

गम्यिअ } देखो गम्य = गम्य ।
गम्यिअ }
गम्यिअ }

गम्यल न [दे] बावल वगैरह का बोझ-जल, बावल मादि का बोझ (धर्म २) ।

गम्य पुंकी [गम्य] गम्य, गम्य (हे २, ३२; प्राप्त, मुपा ११४) । जी. गम्य (हे १, ३५) ।

गम्य न [दे] शकट, गादी (ही १५) ।

गम्यिआ की [दे] मेदी, मेदी, कण्ठ, गम्यिआ 'गम्यिआवाहेण गम्यिआयं जलं विपाणुंते' (धम्म, सुम १, ३, ४) ।

गम्यि की [दे] १ छापी, भना, बन्दी (दे २, ८४) । २ मेदी, मेदी (सहि १५) ।

गम्य पुंकी [गम्य] गम्य, गम्य, लर (हे २, ३७) । 'वाहन पुं [वाहन] रावण, दशानन (हुमा) ।

गम्यिआ की [दे] गादी, शकट (सोप ३८६, गम्यि) । २, ८१, मुपा २४२) ।

गम्य न [दे] गम्य, बिघोना (दे २, ८१) ।

गम्य देखो पद = पद । गम्य (हे ४, ११२) ।

गम्य पुंकी [दे] गम्य, हुं, जिता, बाट (दे २, ८१; मुपा २५, १०५) । जी. गम्य (हुमा) ।

गम्यिअ वि [पदिन] गम्य हुमा, पदिन (हुमा) ।

गम्यिअ वि [गम्यिअ] १ गम्य हुमा, निवद. 'निहनिगम्यिआण' (उत्तर ६८९ टी. पण्य १, ४) । २ चर्च, पुच्छि, निमित्त (ठा २, १) । ३ गम्य, भाषा, (भाषा २, २, २; पण्य १, २) ।

गम्य स [गम्य] १ गम्यना, गम्यनी करना । २ गम्य करना । ३ भवान्क करना, भाषा करना । ४ पर्व-पोषन करना । गम्य गम्य (हुमा गम्य) । वर. गम्य, गम्य (वच ४, मे ४, १५) । इ. गम्यय (उत्तर ५४५) ।

गण पुं [गण] १ समूह, समुदाय, वृक्ष, धोक (जी ३४, कुमा, प्राप् ४; ७५; १११) । २ गण्ड, समान आचार व्यवहारवाले साधुओं का समूह (कण्य) । ३ छन्द-शास्त्र प्रसिद्ध नामा समूह (पिंग) । ४ शिव का अनुचर (गाम, कुमा) । ५ मत्स्यो का समुदाय (मणु) । *ओ म [तस्] धनेकरा, गृह्य. (सूय २, १) । *नायग पुं [नायक] गण का मुखिया (राया १, १) । *नाह पुं [नाथ] १ गण का स्वामी, गण का मुखिया (सुपा २, १०) । २ गणधर, जिनदेव का प्रधान शिष्य (पञ्च १२, ६) । ३ आचार्य, गुरु (साध २३) । *भाय पुं [भाय] किरक-विशेष (गण्ड) । *राय पुं [राज] १ सामन्त राजा (मग ७, ६) । २ जेनापति (पाय ३, कण्य) । *वइ पुं [पति] १ गण का स्वामी । २ गणेश, गजानन, शिवपुत्र (गा ३७२ गवर्ध) । ३ जिनदेव का मुख्य शिष्य, गणधर (सिध २) । *सामि पुं [सामिन्] गण का मुखिया, गणधर (ज २०० धै) । *हृ पुं [धर] १ जिनदेव का प्रधान शिष्य (सम ११३) । २ अनुपम शालादिपुत्र-समूह की धारण करनेवाला जैन साधु, आचार्य वगैरह, 'सैजमवे गणहृ' (भावम, पव २७६) । *हरि पुं [धरेन्द्र] गणधरो मं श्रेष्ठ, प्रधान गणधर (पञ्च ३, ४३; ५८, १) । *हारि पुं [धारिन्] देखो 'हर (गण २३, साध १) । *जीय पुं [जीव] गण के नाम से विवाह करनेवाला (छा ५, १) । *नच्छेइय, 'विच्छेइय, 'वच्छेइय पुं [विच्छेइय] साधु-गण के कार्य की किन्ता करनेवाला साधु (भावा २, १, १०, छा ३, १, कण्य) । *हिचइ पुं [धिपति] १ शिव-पुत्र, गजानन, गणेश (गा ४०३, पाय) । २ जिनदेव का प्रधान-शिष्य (पञ्च २६, ४) । गणग पुं [गणक] १ ज्योतिषी, जोषी, ज्योतिष-शास्त्र का जानकार, दैवज्ञ (राया १, १) । २ भगवत, महाकालिक (खण्ड १, १—पञ १६) । गणग न [गणन] गिनती, संख्या (व १) । गणगा श्री [गणना] गिनती, संख्या, संख्या (सुर २, १३२, प्राप् १००, वृष २, २) ।

गणगाइआ श्री [दे. गण-नायिका] पारती, चण्डी, शिवपत्नी (दि २, ८०) । गणय देखो गणग (भीष, सुपा २०३) । गणसम वि [दे] गोष्ठी-रथ, मोट में लीन (दे २, ८७) । गणायमह पुं [दे] विवाह-गणक (दि २, ८६) । गणाविज वि [गणित] गिनती कराय दृष्टा (स ६२६) । गणि वि [गणिन्] १ गण का स्वामी, गण का मुखिया । श्री. गणिणी (सुपा ६०२) । २ पुं. आचार्य, गण्डनायक, साधु-समुदाय का नायक (छा ८) । ३ जिनदेव का प्रधान साधु-शिष्य (पञ्च ६१, १०) । ४ परिच्छेद, निरचय, सिद्धान्त (एदि) । *पिडग न [पिटक] १ बारह मुख्य जैन धामग्रन्थ, ब्राह्मण-ग्रंथ (सम १; १०६) । २ नियुक्ति वगैरह से मुक्त जैन पागम (भीष) । ३ पुं. यज्ञ-विशेष, जिन-शासन का धर्मगुण्य देव (संति ४) । ४ निरचय-समूह, सिद्धान्त-समूह (एदि) । *पिज्जा श्री [विद्या] १ गण-विशेष । २ ज्योतिष और तिलिप्त शास्त्र का ज्ञान (एदि) । गणि पुं श्री [गणि] अध्ययन, परिच्छेद, प्रकरण (एदि १४६) । गणिम न [गणिम] गिनती से देखी जाती वस्तु, सख्या पर जिसका भाव हो वह (या १८०, राया १, ८) । गणिम न [गणिम] १ गणना, गिनती, सख्या । २ वि. संक्षेप, जिसकी गिनती की जा सके वह, (मणु १५४) । गणिय वि [गणित] १ गिता दृष्टा । २ न. गिनती, संख्या (छा ६, ज २) । ३ जैन साधुको का एक कुल (कण्य) । ४ अंक गणित, गणित-शास्त्र (एदि, मणु) । *लिपि श्री [लिपि] लिपि-विशेष, अंक-लिपि (सम ३५) । गणिय पुं [गणिक] गणित-शास्त्र का ज्ञाता, 'गणिय जाणइ गणिष्ठा' (मणु) । गणिय श्री [गणित] वेत्ता, गणिक (या १२ रिपा १, २) । गणिवि वि [गणयितृ] गिनती करनेवाला (या २०८) ।

गणेत्तिआ } श्री [दे] १ द्वादश वा यना
गणेतो } दृष्टा हृष वा मासुपण-विशेष
(राया १, १६—पञ २१३; भीष, नय, गद्य) । २ यज्ञ-याना (दे २, ८१) । गणेशर पुं [गणेश्वर] १ गण का नायक । २ छन्द-विशेष (पिंग) । गणम नि [गण्य] गणनीय, संक्षेप (संक्षेप १०) । गण्णा (मा) श्री [गणना] गिनती (प्राक् १०२) । गत्त न [गत्त] देह, शरीर (भीष, पाय, सुर २, १०१) । गत्त देखो गद्ध (मग १५) । श्री. गत्ता (सुपा २१४) । गत्त न [दे] १ ईपा, वीणा या चारपाई की तबकी-विशेष । २ वंज, कर्दम (दे २, ६६) । ३ वि. यत्न, गया दृष्टा (पद) । *गत्तण वि [कर्तन] काटनेवाला, छेदन (सूय १, १५, २४) । गत्ताइ } श्री [दे] १ गवादी, गोचर-मूनि
गत्ताडी } (दे २, ८२) । २ गायिका, गाने-
वाली श्री (पद दे २, ८२) । गत्थ वि [गन्त] कवित्त, प्राप्त किया हुआ, 'गद्महृच्छलोमगच्छा' (?) ल्या) (पदह १, ३—पञ ४४, नाट—वैत १५६) । गद् सक [गद्] मोलना, कहना । वड्. गद्दत (नाट—वैत ४५) । गदि देखो गइ = गति (द्वेन्द्र ३५१) । गहुअ (श्री) व [गद्ना] जाकर (प्राक् मम) । गद् देखो गज्ज = गय (प्राक् २६) । गहत्तोय पुं [गहत्तोय] लोकालोक देवो की एक जाति (सम ८२१, राया १, ८) । गहट्म पुं [दे] कटु-ध्वनि, कण-कटु धाराज (दि २, ८२; पाय, ३ ११, ४२०) । गहम देखो गहह = गर्वम (भाष) । गहभय देखो गहहय (भावा २, ३, १; भावम) । गहभाल पुं [गहभाल] स्वामन-प्रसिद्ध एक परिव्राजक (यत्) । गहभाळि पुं [गहभाळि] एक जैन मुनि (वी २५) । गहमिह पुं [गहमिह] उज्जयिनी का एक राजा (निचु १०१ दि २६१, ४००) ।

गहभी श्री [गर्दभी] १ गयो, गह्नी (पि २६१)। २ विद्या-विशेष (फल)।

गहह पुं [गर्दभ] १ गहहा, गया, खर (सम ५०; दे २, ८०; पाय: हे २, ३७)। २ इस नाम का एक मणि-पुत्र (सह १)।

गहह [दे] कुमुद, चन्द्र-विकारी कमल (दे २, ८३)।

गहह्य पुं [गर्दभक] १ छुद्र जन्तु विशेष, जो गोशाला बगैर में उललन होता है (जी १७)। २ देवो गहह (नाट)।

गहही देवो गहमी (नाट—मूच्छ ५८, निष् १०)।

गह्रिज वि [दे] गविष्ठ, गर्भ-युक्त (दे २, ८३)। गह्र पुं [गुह्र] पक्षि विशेष, गोघ, गिह्र (सौष)।

गह्र वि [गण्य] १ माननीय, श्राद्धराज्य, 'हियमयलो करैतो, वस्स न होइ गहमी पुलावलो', 'सबो छुणैहि गमी' (उव)। २ न. गणना, गिनती, 'गुह्रस्स कुण्डल गन्' (मुपा २५३)।

गहम पुं [गर्म] १ कुलि, पेड, उबर (डा ५, १)। २ उत्पत्ति-स्थान, जन्म-स्थान (डा २, ३)। ३ ब्रह्म, अन्तरात्म (वज्र)। ४ मध्य, अन्तर, भीतर का (छाया १, ८)। 'गरा श्री [र] गमिमान बरनेशाली विद्या-विशेष (सूत्र २, २)। 'घर न [गृह] भीतर का घर, घर का भीतरी भाग (छाया १, ८)। 'ज वि [ज] गर्म में उललन होनेवाला प्राणी, मनुष्य, पशु बगैरह (पत्र १०२, ६७)। 'थ वि [थ] १ गर्म में रहनेवाला। २ गर्म से उलल होनेवाला मनुष्य बगैरह (डा २, २)। 'मास पुं [मास] जातिक छे लेकर मास तक का महीना (वर ७)। 'य देवो [ज] (जो २३)। 'य देवो [वती] गमिणी छो (मुपा २७६)। 'यस्मिंति छो [व्युत्पत्ति] १ ममाश्रय में उत्पत्ति (डा २, ३)। 'यस्मिंति वि [व्युत्पत्ति] १ गर्भस्थ में जिसरी उत्पत्ति होती है वह (सम २; २५)। 'हर देवो घर (गुर १, २१; गुहा २८२)।

गम्भर न [गह्र] १ बोट, डहा। २ मय, विषम स्थान (पात्र ४, पि १३२)।

गम्भर देवो गह्र; 'गम्भरो' (प्राक् २४; संति १६)।

गम्भाहाण न [गर्माधान] संस्कार-विशेष (राय १४६)।

गम्भिज पुं [दे. गर्भज] जहाज का निम्न श्रेणी का नौकर 'कुच्छिधारकलवारगम्भिज (२ ज) सज्जाणवावाणियमा' (छाया १, ८—पत्र १३३; राज)।

गम्भिण [वि [गर्मित] १ जिसको गर्भ गम्भिण] पैदा हुआ हो वह, गर्भ-युक्त (हे १, १०८; प्राप्, छाया १, ७)। २ युक्त, सहित, 'वेसिसवलीनमित्तगम्भिण' (कुमा. पद)।

गम्भिणल देवो गम्भिज (छाया १, १७—पत्र २२८)।

गम सक [गम्] १ जाना, गति करना, चलना। २ जानना, समझना। ३ प्राप्त करना। भूका. गमिही (कुमा)। ४ कर्म, गमह, गमिजह (हे ४, २६६)। कवक. गममाण (म १४०)। सङ्ग. गमु, गमिज, गता, गतूण, गतूण (कुमा. पद, प्राप्, सौष. वस), गहुअ, गह्रिज, गहुअ (सौ), (हे ४, २७२; पि ४८१; नाट—मानवी ४०), गमेरिप, गमेरिपुण, गरिप, गरिपुण (मय), (कुमा)। हेह. गतु (कस. या १४)। इ. गमठ, गमणिज, गमणीअ (छाया १, १; या २४६; उव. भग. नाट)।

गम स [गमय] १ ले जाना। २ व्यतीत करना, पसार करना, गुजारना। गमवि (गठ), 'बुहा। बुहा मा दिवहे गमेह' (सत ४)। बर्न. गमेज्जति (गठ)। बह. गमव (मुग २०२)। सङ्ग. गमिऊण (पि) हेह गमिऊण (पि ३७८)।

गम पुं [गम] १ गमन, गति, चार (उ २२० टी)। २ प्रवेश (पत्र १, २६)। ३ शास्त्र का मुख्य पाठ, एक तरह का पाठ, विनया सामर्थ्य भिन्न हो (दे १, १. विवे २४६. भग)। ४ व्याख्या, टीका (विवे २६३)। ५ बोध, ज्ञान, मयक (मनु. छुदि)। ६ मार्ग (राजा (डा ७)।

गम पुं [गम] १ प्रारं (वर १)। २ वि. जंगम (सह ४)।

गमग वि [गमक] बोधक, निश्चायक (विवे ३१३)।

गमण न [गमन] गमन, गति (भग. प्राप् १३२)। २ वेदन, बोध (छुदि)। ३ व्याख्यान, टीका। ४ पुण्य बगैरह नव मसन (राज)।

गमणया श्री [गमन] गमन, गति 'लोगत-गमणा' गमणया' (डा ४, ३); 'पायवद पहरिह गमणा' (छाया १, १—पत्र २६)।

गमणिज देवो गम = गम। गमणि ग श्री [गमनिका] १ संक्षिप्त, व्याख्यान, विमर्शन (राज)। २ गुजारना, प्रतिष्ठापन, 'कालगमणिमा एय उवापो' (उप ७२८ टी)।

गमणी श्री [गमनी] १ विद्या-विशेष, जिसके प्रभाव से आकाश में गमन किया जा सकता है (छाया १, १६—पत्र २१३)। २ दूता, 'सखावि जलो जलं विगाहि तो उत्तरह गमणीसो चरणहिवो' (मुपा ६१०)।

गमणीअ देवो गम = गम। गमय देवो गमय (विवे २६७३)।

गमार वि [दे. प्राप्य] १ विविध, मूर्त (सति २४)।

गमाव देवो गम = गमय। गमावह (सरा)।

गमिअ वि [गमिक] प्रकारवाला (वव १)।

गमिद वि [दे] १ मूर्त। २ हृद। ३ स्वसित (पद)।

गमिय वि [गमिन] १ गुजार हुआ, प्रतिष्ठाव (गठ)। २ जाणित, बोधित, निवेदित (विवे ५५६)।

गमिय न [गमिऊ] शास्त्र-विशेष, सद्य पाठवाला शास्त्र, 'अग-गणिवाई गमियं गति-समय के बारणज-न' (विवे ५४६, ४४४)।

गमिर वि [गमृ] जानेवाला (हे २, १४४)। गमेरिप [दे] देवा गम = गम।

गमेर देवा गमार (संति ४७)।

गमेम देवो गमेम। गमेवद (हे ४, १८६)। गमविं (कुमा)।

गमवि [गम्य] १ जानने योग्य। २ जा जाना या ग (उर १७०. मुपा ४२६)। ३ हरने योग्य, धाकन योग्य (गुर १२६;

१५, १५४)। ४ जाने योग्य। ५ भोगने योग्य—स्वपत्नी वगैरह (सुर १२, ३२)।

गम्म न [गम्य] गमन, 'अगम्मगम्म' भुविणोपु धनं' (सुस ८, १३)।

गम्ममाण देखो गम = गह।

गय वि [दे] १ प्रीणित, प्रमित, सुभाषा गया (दे २, ६६, पङ्क)। २ मृत, मरा हुआ, निर्जिव (दे २, ६६)।

गय वि [गत] १ गया हुआ (सुपा ३३४)। २ मतिरक्त, गुजरा हुआ (दे १, ५६)। ३ विज्ञात, जाना हुआ (गण्ड)। ४ मृत, हत (उप ७२८ टी)। ५ प्राप्त, 'भापईययि मुहए' (प्रासू ३३, १०७)। ६ स्थित, रहा हुआ, 'मण्णय' (उत्त १)। ७ प्रविष्ट, जितने प्रवेश किया हो (अ ४, १)। ८ प्रवृत्त (सूत्र १, १, १)। ९ व्यत्यस्त (भीष)। १० न. गति, गमन, 'उससो गईदमगणमुल्लियगय-विकको भवय (बलु, सुपा ५७८, भाषा)। ११ गाय वि [भाग] मृत, मरा हुआ (या २७)। १२ गय वि [राग] राग-रहित, नीत-राग, निरोह (उप ७२८ टी)। १३ गइया, 'गई की [पतिका] १ विषया, राह, (भीष-पत्रम २६, ४२)। २ विस्तार गति विदेश गया हो वह की: प्रीणित-भक्त का (या ३३२ पत्रम २६, ४२)। १४ गय वि [वयस्] बूढ़, बुढ़ा (गाम)। १५ गुगइअ वि [गुग-ति] शय, परम्परा का अनुयायी, श्रव-श्रद्धालु (उत्तर ४६)।

गय पु [गज] १ हाथी, हस्ती, कुजर (अणु, भीष, प्रासू १५४, सुपा ३३४)। २ एक अतिवृद्ध जैन मुनि, गज सुकुमार मुनि (अत ३)। ३ इस नाम का एक षष्ठ (उप ७६८ टी)। ४ रावण का एक सुमत् (पत्रम ५६, २)। ५ उर न [पुर] नगर-विशेष, कुए देश का प्रधान नगर, हस्तिनपुर (उप १०१४, महा, सण)। ६ वण, 'कन्न पु [कणे] १ द्वीप-विशेष। २ उसमें रहनेवाला (जीव ३, अ ४, २)। ७ कलम पु [कलम] हाथी का बच्चा (रायो)। ८ गय वि [गन] हाथी के ऊपर आरुढ़ (भीष)। ९ गगय पु [गगय] पर्वत विशेष (भाक)। १० गय वि [थ] हाथी के ऊपर स्थित (पत्रम ८, ८६)। ११ पुर

देखो उर (सुस १, २, १)। १२ वधय पु [वधय] हाथी को पकटनेवाली जाति (सुपा ६४२)। १३ भारिणी की [भारिणी] वनस्पति-विशेष, पुच्छ विशेष (एण १—पत्र ३२)। १४ मुह पु [मुप] १ योष, यणपति, शिव-मुन (गाम)। २ यग-विशेष (एण ११)। १५ राय पु [राज] प्रधान हाथी, श्रेष्ठ हस्ती (सुपा ३८६)। १६ यड पु [यति] गजेन्द्र, श्रेष्ठ हस्ती (एण १, १५, सुपा २८६)। १७ वर पु [वर] प्रधान हाथी। १८ वरारि पु [वरारि] सिंह, शार्ङ्ग, वनराज (पत्रम १७, ७६)। १९ वहु की [वधू] हथिनी, हस्तिनी (गाम)। २० वीही की [वीधी] रुक वगैरह महाब्रह्मों का चार-दोष-विशेष (अ ६)। २१ ससण पु [सरसन] हाथी की सूँठ (भीष)। २२ सुकुमाल पु [सुकुमाल] एक प्रसिद्ध जैन मुनि, उसी मंत्र से मुक्ति वत जैन साधु-विशेष (अत, पडि)। २३ रि पु [रि] सिंह, पञ्चालन (अवि)। २४ रोह पु [रोह] हस्तिचक्र, महावत (गाम)।

गय पु [गद] रोग, बिमारी (भीष, सुपा ५७८)।

गयक पु [गजाङ्क] देवों की एक जाति, दिक्कुमार देव (भीष)।

गयद पु [गजेन्द्र] श्रेष्ठ हाथी (गण्ड)।

गयकठ पु [गजकठ] रत्न-विशेष (राय ६७)।

गयकन्न पु [गजकण] अनाय देश-विशेष (पत्र २७४)।

गयगयय न [गजामपद] दशार्णवूट का एक तीर्थ (भाषानि ३३२)।

गयण न [गगन] हँ अक्षर (सिदि १६६)।

गयि पु [गणि] सुर्व (कुप्र ५१)।

गयण न [गगन] गगन, आकाश, अम्बर (दे २, ६५४, गण्ड)। १ गइ पु [गति] एक राजकुमार (दत्त)। २ चर वि [चर] आकाश में चलनेवाला, पक्षी, विद्याधर वगैरह (सुपा २५०)। ३ मण्ड पु [मण्डल] एक राजा (दत्त)।

गयणरइ पु [दे] भेष, मेह, बादल (दे २, ८८)।

गययिण्डु पु [गगनेन्दु] विद्याधर वंश के एक राजा का नाम (पत्रम ५, ४५)।

गयनिमीलिषा की [गजनिमीलिषा] उरसा, उदासीनता (स ५१)।

गयमुह पु [गजमुह] अनाय देश-विशेष (पत्र २७४)।

गयसाउल [वि [दे] विरक्त, वैरागी (दे गयसाउल] ८७, पङ्क)।

गया की [गदा] लोहों का मा पापाए का अन्न-विशेष, लोहों का मुगदर मा लोह (राय)। २ हर पु [धर] वायुदेव, (दत्त ११)।

गया की [गदा] एक देव-विमान (देवत्र १३३)।

गया की [गया] स्वनाम-प्रसिद्ध नगर-विशेष (उप २५१)।

गर वि [कर] कटनेवाला, कर्ता (सण)।

गर पु [गर] १ विप विशेष, एक प्रकार का जहर (निबु १)। २ श्रौतिय-काष्ठ प्रसिद्ध बवावि कारणों से एक (विसे ३३४८)।

गरण देखो करण (एण ६३)।

गल न [गल] १ विप, जहर (गाम प्रासू ३६)। २ रज्जु। ३ वि, अण्यत्, अण्यष्ट, 'अ-गल्लाए अ-मण्णए' (भीष)।

गरलिमायद्ध नि [गरलिकायद्ध] निमित्त, उपन्यस्त (निबु १)।

गरह सक [गह] निन्दा करना, छुपा करना। गरह, गरह (भग)। वहु, गरहत (द १३)। कवह, गरहिजमाण (आया १, ८)। सव गरहिता (भाषा २, १५)। हेह, गरहिणए (कठ, अ २, १)। ह-गरहणिय, गरहणीय, गरहियक (सुपा १८४, ३७६, पङ्क २, १)।

गरहण न [गहण] निन्दा, छुपा (सि १३२)।

गरहणय २ की [गहणा] निन्दा, छुपा (अय गरहणा] १७, ३, प्रीय, पङ्क २, १)।

गरहा की [गहां] निन्दा, छुपा (भग)।

गरहिय वि [गरहित] निन्दित, छुपा (सं ६३, अ ३३, सण)।

गरिअ वि [कृत] किया हुआ, निर्मित (दे ७, ११)।

गरिद्धि वि [गरिष्ठ] मति युक्त, बड़ा भारी (सुपा १०, १२८, प्रासू १५४)।

गरिम पुकी [गरिमन्] यशस्, पुष्ट, गौरव (दे १, ३४, सुपा २३, १०६)।

गरिह देखो गरह । गरिहह, गरिहामि (महत् पति) ।

गरिह पुं [गर्ह] निन्दा, गर्हा (प्राप्ति) ।

गरिहणया देखो गरहणया (उत्त २६, १) ।

गरिहा स्त्री [गर्हा] निन्दा, घृणा, जुगुप्सा (भोष ७६१, म १६०) ।

गरु देखो गरु, 'गरयरलतापु खिबिऊण' (मुपा २१४) ।

गरुअ वि [गरुअ] गरु, बडा, महान् (हे १, १६; प्राप्ति, प्राप्ति २६) ।

गरुअ सक [गरुअरु] गरु जरना, बडा बनाना । गरुएह (पि १२३),

'हंसाण सगेहि विट्ठि, मारिलेह
भह सयण हंसेहि ।

भरणएणं विभ एण,
भय्माण खवर गरुअति'
(हेका २३५) ।

गरुआ } सक [गरुअरु] १ बडा
गरुआअ } बनाना । बडे की तरह भावरण
करना । गरुआह, गरुआमद (हे ३, १३८) ।

गरुअ वि [गरुअरु] बडा विना हुमा (से ६, २०, गरुअ) ।

गरुई } स्त्री [गुर्वा] बडी, ज्येष्ठा, महती
गरुमी } (हे १, १०७, प्राप्ति, निष्प १) ।

गरुक देखो गरुअ 'एवजोव्वएहमअरिणा
सिमाएणमअन्नेण' (प्राप्ति) ।

गरुअ देखो गरुअ (उत्ति १; स २६५, पिण) ।
छल्ल-विरोध (पिण) । 'स्य न [शु] भल्ल-
विरोध, उरगात्र का प्रतिपत्ती भल्ल (पञ्च १३,
१३०, ७१, ६६) । 'द्वय पुं [ध्वज]
विष्णु, वामुदेव (पञ्च ६१, ५७) । 'यूह पुं
[व्यूह] सेना की एक प्रकार की रचना
(महा, वि २४०) ।

गरुहक पुं [गरुहाह] १ विष्णु, वामुदेव ।
२ इत्यहं वश के एक राजा का नाम (पञ्च
५, ७) ।

गरुअ पुं [गरुअ] एक देव विमान (देवेन्द्र
१३४) ।

गरुअ पुं [गरुअ] १ पति राज, पति-विरोध
(पट्ट १, १) । २ यम-विरोध, भगवान्
शान्तिनाथ का शासन-यम (उत्ति ८) । ३
भरतनाथि देखो की एक जाति, सुपर्णकुमार

देव (पट्ट १, ४) । ४ सुपर्णकुमार देखो का
इन्द्र (सूत्र १, ६) । 'केउ पुं [केतु] देखो
'उमय (राज) । 'उमय, 'द्वय पुं [ध्वज]
१ गरुह पत्नी के चित्रवाली ध्वजा (राज) ।
२ वामुदेव, कृष्ण । ३ देव-जाति-विरोध,
सुपर्णकुमार देव (भावम, सम, पि) । 'व्यूह
देखो गरुअ-यूह (अं २), 'सत्य न [शुश]
गरुआह, भल्ल-विरोध (महा) । 'सिण न
[सिन] भासन-विरोध (राज) । 'येयाय
न [येयाय] शासन-विरोध, जिसकी याद
करने से मरुदेव प्रत्यक्ष होते हैं (ठा १०) ।
देखो गरुअ ।

गरुवी देखो गरुई (हुमा) ।

गल सक [गल] १ गल जाना खडना । २
छतम होना, समाप्त होना । ३ फटना, टप-
बना, गिरना । ४ पिघलना, नरम होना ।
५ सक, गिराना, टपकाना, 'जाव रत्ती गलई'
(महा) । बह. 'नवेण ख बोएहि गलंनम्
ममुदरस' (महा, सुट ४, ६८; मुपा २०४) ।
गलित (पट्ट १; २, प्राप्ति ७२) । प्रयो.,
बह. गलावेमाण (छाया १, १२) ।

गल } पुं [गल] १ गला, शीका, बल
गलअ } (मुपा ३३; पाप्म) २ बहिर, बंसी,
मछली पकने का कीज (उप १८८, विपा १,
८, सुट ८, १४०) । 'गलि स्त्री [गलि]
गले की गर्जना (महा) । 'गलिय न
[गलित] गल-नर्दन (महा) । 'लय वि
[लत] गले में लगाया हुआ, बहल-न्यस्त
(धीप) ।

गलई स्त्री [गलई] वनस्पति-विरोध (राज) ।

गलगा देखो गलअ (पट्ट १, १) ।

गल्लथ देखो गल्लि । गल्लथ (हे ४, १४३,
अवि) ।

गल्लथण न [ल्लेपण] १ लेपण करना, चक्का ।
२ प्रेरण (से ५, ५३, मुपा २८) ।

गल्लथलिअ वि [दि] १ शिम, चंका हुमा ।
२ प्रेरित (दे २, ८७) ।

गल्लथल्ल पुं [दि] गल्लथ, हाथ से गला पक-
डना (छाया १, ६, पट्ट १, ३—पञ्च ५३) ।
गल्लथल्लिअ [दि] देखो गल्लथलिअ (से ५,
४०, ८, ६१) ।

गल्लथा स्त्री [दि] प्रेरण

'गत्याण विच मुवएणमि भावया
न उण हंति लहयाल ।
गहनल्लोसगतत्वा, ससिमुराणं न ताराण'
(उप ७२८ टी) ।

गल्लथिअ वि [सिम] १ प्रेरित (मुपा
६३५) । २ चंका हुमा (दे २, ८७, हुमा) ।
३ बाहर निकाला हुमा (पाप्म) ।

गल्लद्धय पुं [दि] प्रेरित, शिम (पट्ट) ।

गल्लहथिअ वि [गल्लहसित] गला पकड़कर
बाहर निकाला हुमा (महा १३८) ।

गल्लण देखो गिल्लण (नाट—चैत ३४) ।

गलि देखो गल = गल, 'मच्छुल्ल गलि गिल्लिा'
(दसू १, ६) ।

गलि } वि [गलि, 'क] दुर्बिनीत, दुर्बल
गलिअ } (था १२, मुपा २७६) । 'गहह
पुं [गहह] अविनीत गहहा (उत्त २७) ।
'बहल पुं [बहलीन] दुर्बिनीत बल (पण्) ।
'सस पुं [सस] दुर्बल धोका (उत्त १) ।

गलिअ वि [गलिअ] १ गला हुमा, पिघला
हुमा (पण्) । २ क्षान्ति, प्रक्षालित (हुमा) ।
३ खलित, पठित (से १, २) । ४ नष्ट, नाश-
प्राप्त (मुपा २४३; सण्) ।

गलिअ वि [दि] स्मृण, याद किया हुमा (दे
२, ८१) ।

गलिन देखो गल = गल ।

गल्लि वि [गलीय, गनय] गले का (पिट
४४४) ।

गल्लिर वि [गल्लि] निपन्न पिपत्रा, टप-
बता, 'बहुसोमगल्लिरपणेण' (मा १४) ।

गल्लुअ देखो गरुअ (पञ्च १, पट्ट) ।

गल्लोई } स्त्री [गुहो] बली विरोध,
गल्लोया } विनीय, दुर्बल (हे १, १३४; जो
१०) ।

गल्ल पुं [गल्ल] १ गल, बगोल (दे २, ८१;
उवा) । २ हाथी का गल्ल-च्युन, मुम्म स्मृण
(पट्ट) । 'ममुरिया स्त्री [ममुरिया]
गल्ल का उपधान (जोत) ।

गल्ल पुन [दि] १ सट्टिअ गल्लि (प्राप्ति पि
२६६) ।

गल्लथ देखो गल्लथ । गल्लपद (पट्ट) ।

गह^१ न [गुह] घर, मकान । 'यइ पुं [पति] गुह्य, गुहो, संसारी (पउम २०, ११६; प्राप्) । 'यइणी छो [पत्नी] गृहिणी, छो (सुपा २२६) ।

गह^२नहोल पुं [दि. प्रहकहोल] राहु, प्रह-विशेष (दे २, ८६; पाष्) ।

गहगद यक [दे] हर्ष से भर जाना, आनन्द-पूर्ण होना । गहगहइ (भवि) ।

गहण न [ग्रहण] १ आदान, स्वीकार (से ४, ३३; प्राप् १४) । २ आदर, सम्मान । ३ ज्ञान, धनवीर्य (से ४, ३३) । ४ खण्ड, आवाज (आचा २, ३, ३; प्रावम) । ५ वि. ग्रहण करनेवाला । ६ न. इन्द्रिय (विते १७०७) । ७ चन्द्र-सूर्य का उदय-परा—ग्रहण (मग १२, ६) । ८ वि. प्राप्, जिसका ग्रहण किया जाय वह (उत्त ३२) । ९ न. शिक्षा-विशेष (भाज) ।

गहण न [ग्राहण] ग्रहण करना, श्रमीकार करना। 'जो आसि बंभचरगहणयुल' (कुमा) ।

गहण न [ग्रहण] १ आदान का कारण । २ आशेषक, 'बचमुत्त कर्ब गहणं वसति' (उत्त १२, २२) ।

गहण न [गहन] भरएय-लेन (आचा २, ३, १) । 'विदुग्ग न [विदुग्ग] पर्वत के एष प्रदेश में स्थित वृक्ष-वल्ली-समुदाय (सूत्र २, २, ८) ।

गहण वि [गहन] १ निविड, दुर्गन्ध, दुर्गन्ध; 'नाले घराइयिहणे जोणीगहणमि भीसणे हय' (जी ४६), 'पलत्तारएतिणिगहण' (गडउ) । २ वन, झाड़ी, घना बानन (पाष्, मग) । ३ दुःख-महूर, दुःख का कोटर (विपा १, ३—पउ ४६) ।

गहण न [दे] १ निर्जल-स्थान, जल-रहित प्रदेश (दे २, ८२; आचा २, ३, ३) । २ कल्प, परोहर, गिरवो (सुपा ५४८) ।

गहणय न [दे] गदना, मासुपण (सुपा १५४) ।

गहणया छो [ग्रहण] ग्रहण, स्वीकार, उपादान (भीप) ।

गहणी छो [ग्रहणी] दुःख, कष्ट (पएह १, ४; भीप) ।

गहणी छो [ग्रहणी] कुम्भि, पेट (पव १०६) ।

गहणी छो [दे] जबरदस्ती हरण की हुई छो, बांसी या बंदी (दे २, ८४, से ६, ४७) ।

गहणिय पुं [गमस्ति] किरण, त्विड् (पाष्) ।

गहर पुं [दे] गुप्त, गोप-पत्नी (दे २, ८४, पाष्) ।

गहर पुंन [गहर] १ निकुंज । २ वन, जंगल । ३ दैव, कपट । विपम-स्थान । ४ रोदन । ५ गुका । ७ अनेक अन्वों का सकट; 'गहरो' (प्राक् २४) ।

गहयड पुं [गृहपति] कृषक, खेती करनेवाला (पाष्) ।

गहयड वि [दे] १ ग्रामीण, गांव का रहने-वाला (दे २, १००) । २ पुं चन्द्रमा, चाँद (दे २, १००, पाष्, वाम १५) ।

गहिअ वि [दे] वस्ति, मोम हुआ, टेढ़ा, किया हुआ (दे २, ८५) ।

गहिअ वि [गृहीत] १ उपात, स्वीकृत (भीप; ठा ४, ४) । २ पकड़ा हुआ (पएह १, ३) । ३ शांत, जलनय, विदित (उत्त २, पद्) ।

गहिअ वि [गृह] ग्रामत्, खलीन (पाष्) ।

गहिआ छो [दे] १ काम-भोग के लिए जिसकी प्रार्थना की जाती हो वह छो (दे २, ८५) । २ ग्रहण करने योग्य छो (पद्) ।

गहिर वि [गभीर] गहरा, गम्भीर, प्रस्ताप (दे १, १०१; काप् ६२४; कप्, गडउ; भीप, प्राप्) ।

गहिल वि [ग्रहिल] भ्रूवादि से भाविष्ट, पागल (आ १४) ।

गहिलिय वि [दे. ग्रहिल] भावेष-मुक्त, गहिल्ल } पागल, भ्रान्त-चित्त (पउम ११३, ४३; पद्; था १२, लय ५६७ टी. भवि) ।

गहीअ देखो गहिअ = गृहीत (था १२, स्पण ६८) ।

गहीर देखो गभीर (प्राप् ६) ।

गहीरिअ न [गभीर्ये] गहराई, गम्भीरपन (दे २, १०७) ।

गहीरिम पुंछी [गभीरिमन्] गहराई, गम्भीर-खा (दे ४, ४१६) ।

गहीअब्ब } देखो गह = पद् ।
गहीअ }
गहीअ }
गहीअ }

गहण (ग्रप) देखो गह = पद् । गहण (पद्) ।

गा } सक [गे] १ गाना, आलापना । २ गाअ } वणन करना । ३ स्तुता करना । गाइ, गाइइ (हे ४, ६) । वडू. गांत, गाअन, गावमाण (गा ४४६; वि ४७६; पउम ६४, २४) । कवकू. गिज्जत (गडउ, गा ६४२; सुपा २१, सुर ३, ७६) । सङ्क, गाइई (महा) ।

गाअ पुं [गो] बैल, वृषभ, साँव (हे १, १५८) ।

गाअ न [गात्र] १ शरीर, देह (सम ६०) । २ शरीर का धन्यव (भीप) ।

गाअ वि [गायक] गानेवाला (कुमा) ।

गाअंक पुं [गायक] महादेव, शिव (कुमा) ।

गाअग वि [गायन] गानेवाला, गंधवा (सुपा ५५; सण) ।

गाइअ वि [गीत] १ गाया हुआ, 'विमरेण सो गाइयं गीय' (सुपा १६) । २ न. गीत, गान, गाना (आव ४) ।

गाइआ छो [गायिका] गानेवाली छो (गा ६४४) ।

गाइर वि [गायक] गानेवाला, गंधवा (सुपा ५४) ।

गाई छो [गो] गैया, गी (हे १, १५८; दे ४, १८; गा २०१, सुर ७, ६५) ।

गाउ } न [गडयुत्त] १ कोत, कोरा, दो गाउअ } हजार घनुप-प्रमाण जमीन (वि गाऊअ. २५४, भीप; इक जी १८, विते ८२ टी) । २ दो कोत, कोरा-युग्म (भीप १२) ।

गागर पुं [दे] छो को पहनने का बद्ध-विशेष, सहंगा, पंधरा या पांधरा गुजरवो में 'पापरो' (पएह १, ४) । २ मल्ल-विशेष (पएह १) ।

गागरी [दे] देवो गायरी (वि १२) ।

गागलि पुं [गागलि] एग बैलघुनि (उत्त १०) ।

गागेज्ज वि [दे] मज्जि, मया हुआ, पालो-दित (दे २, ८८) ।

गागेज्जा छो [दे] नवोझ, दुमदिन (दे २, ८८) ।

गाहिअ वि [दे] विधुद, विधुद (दे २, ८१) ।

गाढ वि [गाढ] १ गाढ़, निविह, शान्द्र (पाप, सुर १४, ४८) । २ मज्जत दृढ़ (सुर ४, २३७) । ३ त्रिवि. प्रयन्त, कृतिशय (कण्) ।

गाण न [गान] गीत गाना (हे ४, ६) ।

गाण वि [गायन] गवैया, गीत प्रबोध (दे २, १०८) ।

गाणगणित पुं [गाणनगणिक] छ ही मास के भीतर एक साधु-गण से दूधरे गण से जनेवाला साधु (बृह १) ।

गाणी की [दे] गवाक्षी, गोबर भूमि (दे २, ८२) ।

गाथा देखो गाथा (भग, विन) ।

गाथ वि [गाथ] मस्ताप रहित, कम गहटा (दे ४, २४) ।

गाम पुं [ग्राम] १ समूह, निगर, 'बबलो हविषगानो' (सुर २, १३८) । २ ग्रामि समूह, जन्तु निगर (विसे २८६६) । ३ गाँव, बसति, ग्राम (कण्, छापा १, १८, श्रौप) । ४ इन्द्रिय-समूह (भग, श्रौप) । 'कंडग, कंडय पुं [कण्डक] १ इन्द्रिय-समूह रूप बाँटा (भग श्रौप) । २ दुर्जनों का दल भालाप, गाँवो (भ्राषा) । 'घायग वि [घातक] गाँव का नाश करनेवाला (पह १, ३) । 'गिद्धमण न [निर्घमन] गाँव का पानी जाले का दस्ता, नाला (कण्) । 'धम्म पुं [धर्म] १ विषयभिलाष, विषय की वाञ्छा (ठा १०) । २ इन्द्रियों का स्वभाव । ३ विषय-प्रवृत्ति (भ्राषा) । ४ मैथुन (सुर १, २, २) । ५ शब्द, हर वहीरह इन्द्रियों का विषय (पह १, ४) । ६ गाँव का धर्म, गाँव का कर्तव्य (ठा १०) । 'द पुन [र्घ] प्राधा गाँव । २ उत्तर भारत, भारत का उत्तरप्रदेश (निद्र १२) । 'मारी की [मारी] गाँव भर में फैली हुई बीमारी विशेष (जीव २) । 'रोम पुं [रोम] ग्राम-व्यापक बीमारी (ज २) । 'वह पुं [पति] गाँव का मुखिया (पाप) । 'एगुगाम न [रुपुगम] एक गाँव से दूधरे गाँव (श्रौप) । 'गार पुं [चार] विषय (भावम) ।

गाम उड [दे] पुं [दे] गाँव का मुखिया (दे २, गामऊड ८६, बृह १) ।

गामउड न [ग्रामानुडक] १ गाँव की सीमा

(भाषा) । २ वि. गाँव की सीमा में रहनेवाला (दसा १) । ३ पु. जैनेतर दार्शनिक-विशेष (सुर २, २) ।

गामगोहं पुं [दे] गाँव का मुखिया (दे २, ८६) ।

गामड पुं [ग्रामक] गाँव, छाटा गाँव (या १६) ।

गामण न [दे गमन] भूमि में गमन, भू संचरण (भग ११, ११) ।

गामणह न [दे] ग्राम-स्थान, ग्राम-श्रदेश (पह १) ।

गामणि देखो गामणी (दे २, ८६, पह १) ।

गामणिभुअ पुं [दे] गाँव का मुखिया (दे २, ८६) ।

गामणी पु [दे] गाँव का मुखिया (दे २, ८६, प्राप्ता) ।

गामणी वि [ग्रामगो] १ धैर्य, प्रथान, नायक (से ७, ६०, पण १, गा ४४६, पह १) । २ पुं, गुण विशेष (दे २, ११२) ।

गामपिंडीला पुं [दे] भोज से पेट भरने के लिये गाँव का आश्रय लेनेवाला भोजारी (भ्राषा) ।

गामरोड पुं [दे] छन से गाँव का मुखिया बन बैठनेवाला, गाँव के लोगों में कूट उल्लन कर गाँव का शासक होनेवाला (दे २, ६०) ।

गामहण न [दे] ग्राम-स्थान, गाँव का प्रवेश (दे २, ६०) । २ छोटा गाँव (पाप) ।

गामाग पुं [ग्रामाक] ग्राम विशेष, इन नाम का एक सन्निवेश (भावम) ।

गामार वि [दे. ग्रामीण] ग्रामीण, छोटे गाँव का रहनेवाला (बजा ४) ।

गामि वि [गामिन्] जनेवाला (गा १६७, भाषा) । की 'णी (कण्) ।

गामिख वि [ग्रामिक] १ देखो गामिख (दे २, १००) । २ आम का मुखिया (निद्र २) । ३ विषयभिलाषी (भ्राषा) ।

गामिखिआ की [गामिनिआ] गमन करने-वाली की, 'सविग्रहसबहुगामिणिमाहि' (भवि २६) ।

गामिख वि [ग्रामीण] गाँव का गामिखिअ } निवासी, गँवार (पठम ७७, गामीण } १०८ विसे १ टी, दे ८, ४०) । की 'ही (कुमा) ।

गामिखिअ की [ग्रामीण] गाँव का गामिखिअ } निवासी, गँवार (पठम ७७, गामीण } १०८ विसे १ टी, दे ८, ४०) । की 'ही (कुमा) ।

गामिखिअ की [ग्रामीण] गाँव का गामिखिअ } निवासी, गँवार (पठम ७७, गामीण } १०८ विसे १ टी, दे ८, ४०) । की 'ही (कुमा) ।

गामिखिअ की [ग्रामीण] गाँव का गामिखिअ } निवासी, गँवार (पठम ७७, गामीण } १०८ विसे १ टी, दे ८, ४०) । की 'ही (कुमा) ।

गामिखिअ की [ग्रामीण] गाँव का गामिखिअ } निवासी, गँवार (पठम ७७, गामीण } १०८ विसे १ टी, दे ८, ४०) । की 'ही (कुमा) ।

गामुअ वि [गामुक] जनेवाला (स १७४) । गामेइआ की [ग्रामेयिका] गाँव की छहने-वाली की, गँवार की (गउड) ।

गामेणी की [दे] छापी, बना, बवरी (दे २, ८४) ।

गामेग देखो गामेग (पमंनि १३७) ।

गामेयग वि [ग्रामेयक] गाँव का निवासी, गँवार (बृह १) ।

ग्रामेरेड [दे] देखो ग्रामरोड (पह १) ।

गामेलुअ देखो ग्रामिल (मुद्र २७४, गामिल १, १, विसे १४११) ।

ग्रामेस पुं [ग्रामेश] गाँव का अधिकारी (दे २, २७) ।

गायण वि [गायन] गवैया, गायन (सिदि ७०१) ।

गायरी की [दे] गाँरी, गगरी, कलरी, छोटा घडा (दे २, ८६) ।

'गार वि [कार] कार, कर्ता (भवि) ।

गार पुं [दे. ग्रामर] पदर, पायाल, कट्ठ (बव ४) ।

गार न [अगार] गृह, घर, मकान (ठा ६) । 'त्य पुकी [स्थ] गृहस्थ, गृही (निद्र १) । 'स्थिय पुकी [स्थित] गृहस्थ, गृही, ससारी, 'गारस्थियनउविष मासासिप्रो न भासिअ' (पुण १८१, ठा ६) ।

'गारय वि [ग्रारक] कर्ता, करनेवाला (स १४१) ।

गारय पुं [गौरय] १ भविमान, महकार । २ भविनाय, सातवा. 'समो गारया पणसत्ता' (ठा ३, ४, था ३४, सम ८) । ३ महत्व, उत्तम, प्रभाव (कुमा) । ४ आदर, सम्मान (पह १, प्राप्ता) ।

गारयि वि [गौरयि] १ गौरवान्वित, महत्त्वशाली । २ गौरवा, भविमान । ३ सात्वाभाव, भविनाय (सुर १, १, १) ।

गारयिख वि [गौरयिख] १ गौरवान्वित, महत्त्वशाली । २ गौरवा, भविमान । ३ सात्वाभाव, भविनाय (सुर १, १, १) ।

गारयिख वि [गौरयिख] १ गौरवान्वित, महत्त्वशाली । २ गौरवा, भविमान । ३ सात्वाभाव, भविनाय (सुर १, १, १) ।

गारयिख वि [गौरयिख] १ गौरवान्वित, महत्त्वशाली । २ गौरवा, भविमान । ३ सात्वाभाव, भविनाय (सुर १, १, १) ।

गारयिख वि [गौरयिख] १ गौरवान्वित, महत्त्वशाली । २ गौरवा, भविमान । ३ सात्वाभाव, भविनाय (सुर १, १, १) ।

गारयिख वि [गौरयिख] १ गौरवान्वित, महत्त्वशाली । २ गौरवा, भविमान । ३ सात्वाभाव, भविनाय (सुर १, १, १) ।

गारयिख वि [गौरयिख] १ गौरवान्वित, महत्त्वशाली । २ गौरवा, भविमान । ३ सात्वाभाव, भविनाय (सुर १, १, १) ।

गारयिख वि [गौरयिख] १ गौरवान्वित, महत्त्वशाली । २ गौरवा, भविमान । ३ सात्वाभाव, भविनाय (सुर १, १, १) ।

गारि पुंकी [अगारिन्] गृही, ससारी, गृहस्थ (उत्त ४, १६) ।

गारिहस्थिय स्त्रीन [गारिहस्थ] गृहस्थ-संस्कृति,
संसार-संस्कृति। स्त्री. 'या (पत्र २३५)।

गारुड } वि [गारुड] ? गृहस्थ-संस्कृति।

गारुड } २ मर्ष को विष को उतारनेवाला,
सर्प-विष को दूर करनेवाला। ३ पुं, सर्प विष

को दूर करनेवाला मन्त्र (उप २६६ टी. वे

१४, ५७)। ४ न. शास्त्र विरोध, मन्त्र शास्त्र-

विरोध, सर्वविष नाराक मन्त्र का जितमें वर्युन

हो वह शास्त्र (ठा २)। *मंत्र पुं [मन्त्र]

सर्प-विष का नाराक मन्त्र (सुपा २१६)।

*विद वि [विस्] गारुड मन्त्र का जानकार,

गारुड शास्त्र का जानकार (उप २६६ टी)।

गाल सक्त [गालय] ? गालना, छानना।

२ गाल करना। ३ उत्सर्जन करना, अतिक्र-

मण करना। गालयद (विसे ६४)। वक्र.

गालेमाण (भग ६, ३३)। कनक. गालि-

ज्जत (सुपा १७३) प्रयो. गालावेद (छाया

१, १२)।

गालण न [गालन] छालना, गालना (पहृ

१, १; उप ३ ३७६)।

गालणा स्त्री [गालना] ? गालना, छानना।

२ गिरना। ३ पिष्टलवाना (विपा १, १)।

गालयाहिया स्त्री [दे] छोटी गौका, बोगी,

*एवंतर्म्मि सनागया गालयाहियाए निजा-

मया (स ३५१)।

गालि स्त्री [गालि] गाली, गारी, मपरान्त,

मसन्म वचन (सुपा ३७०)।

गालिय वि [गालिन] ? छाना हुआ। २

अतिव्रज। ३ विनाशित। ४ क्षिप्त, 'गालिय-

मिठो निरंकुशो विपरिणो शयद्वली' (महा)।

गाठी स्त्री [गाली] देखो गालि (पत्र ३६)।

गान (मप) देखो गा। गावद (पिंग)। वक्र.

गावत (पि २४४)।

गाय (मप) देखो गन्य (अवि)।

गाय वि [दे] गठ, गया हुआ, गुजरा हुआ

(पहृ १)।

गार } पुं [गारय] ? पत्थर, पाषाण

गावाण (पाप)। २ पहार, गिरि (दे ३,

५६)।

गामि (मप) देखो गचिन्त्य (अवि)।

गानी स्त्री [गो] गौ, गैया (दे २, १७४, विना

गास पुं [मास] घास, वनल (सुपा ४८८)।

गास पुं [मास] भोजन (पत्र ६३)।

गाह देखो गह = ग्रह। नमं. गाहिवद (अप्र)।

गाह सक्त [गाहय] ग्रहण करना। गाहद

(धीप)।

गाह सक्त [गाह] ? गाहना, डूबना। २

पडना, धम्यास करना। ३ अनुभव करना।

४ टोह लगाना। गाहदि (सौ); (गुच्छ ७२)।

वचक. गाहिवज्जत (वजा ४)।

गाह पुं [गाघ] मस्ताय-रहित, बाह (ठा ४,

४)।

गाह पुं [गाह] ? गाह, पुंभीर, नक्र, जल-

जन्तु-विरोध, मगर (दे २, ८६, छाया १, ४,

औ २०)। २ घायद, हठ (विसे २६६; पत्र १६,

१२)। ३ दृष्ट, भावद (निद्र १)।

४ गारुडिक, सर्प को पकड़नेवाली मनुष्य-

जाति (श्रु १)। *वर्दे स्त्री [वती] नदी-

विरोध (ठा २, १—पत्र ८०)।

गाहृ वि [गाहृ] ? ग्रहण करनेवाला,

लेनेवाला (सुपा ११)। २ समझनेवाला,

जाननेवाला (सुपा ३४३)। ३ समझनेवाला,

शिक्षक, भाचार्य, गुरु (धीप)। ४ आपक,

बोधक। स्त्री. गाहृगा (धीप)।

गाहृ क्वि [गाहृ] प्रसिप्त करनेवाला, 'गाहृ

समलपुण्य' (स ६८२)।

गाहृ न [गाहृ] ? ग्रहण करना। २

ग्रहण, आदान, 'गाहृ तवचरिमस्ता गहृ

चिय गाहृणा होति' (पंचमा)। ३ शास्त्र,

सिद्धान्त (वच ४)। ४ बोधक-वचन, शिक्षा,

उपदेश (पहृ २, २)।

गाहृणा स्त्री [गाहृणा] ? उपर देखो (उप

गाहृणा } पु ३१४, भाषा, गच्छ १)।

गाहृय देखो गाहृगा (विसे ८३१, स ४८८)।

गाहृ स्त्री [गाहृ] मध्यम, धन्य-प्रकरण

(उत्त ३१, १२)।

गाहृ स्त्री [गाहृ] ? धन्य-विरोध, धार्मिक,

गीति (ठा ३, ३; अवि ३७, ३८)। २

प्रतिष्ठा। ३ नियम, 'सिधपाण म गाहृ'

(भाव ४)। ४ 'मृष्टपाण' मृष्ट का सोदहवा

मध्यम (मृष्ट १, १, १)।

गाहृ स्त्री [दे] गृ, घर, मकान; 'गाहृ घर'

[पवि] ? गृहस्थ, गृही, संसार

४; सुपा २२६)। २ घनी, घना

१)। ३ मंडारी, भाटगारिक (सम

स्त्री. 'गो (छाया १, ५; उवा)।

गाहाल पुं [गाहाल] कीट-विरोध,

जन्तु विरोध (जीव १)।

गाहावर्दे स्त्री [गाहावर्दी] ? नदी-
२ द्वीप-विरोध। ३ हृद-विरोध,

गाहावर्दी नदी निष्कली है (ज ४)।

गाहाधिय वि [माहित] जिसकी

कराय गया हो वह (सुर ११, १८३)

गाहिणी स्त्री [गाहिनी] ? गाहने

स्त्री। २ छल-विरोध (पिंग)।

गाहियुर न [गाहियुर] मगर-विरोध (ग

गाहिय वि [माहित] ? जिसको

कराय गया हो वह। २ भ्रातृव, उर

हुमा (सुर १, २, १)।

गाहृक्य वि [गाहृक्य] एकत्रिय, ।

किया हुआ (सुपति १, १६)।

गाहृ स्त्री [गाहृ] धन्य-विरोध (पिंग)।

गाहृलि पुं स्त्री [दे] ग्राह, मकर, मगर, कूर

जन्तु विरोध (दे २, ८६)।

गाहृहिया देखो गाहृ = गाभा (सुपा २६

मिठि [मृष्टि] ? एक बार ध्यायी हुई

एक बार ध्यायी हुई ध्या (दे १, २६)।

मिथुज [दे] देखो गेंडुज (पाप)।

मिथुल [दे] देखो गेंडुल (पाप)।

मिभ (मप) देखो मिभ (दे ४, ४४२)।

मिंद देखो मिश (पहृ १)।

मिज्जत देखो गा।

मिर्मक [मृध] भासक होना, ल

होना। मिर्मक (दे ४, २१७)। मि

(छाया १, ८)। वर. मिर्मजत (धीप

क. मिर्मक्यर (पहृ २, २)।

मिर्मक वि [मृध, भाह] ? ग्रहण न

कोय। २ धनी उरद में किया जा।

ऐसा (ठा २, २)।

मिट्टि देखो मिठि. 'वारंरम्वनि वता मि

मिट्टिच जवमनि' (उप ७२८ टी. पा

पा ६४०)।

मिट्टिया स्त्री [दे] गेरी, मंद खेतने की तर

गिण देखो गण = गण्यम् । गिण्ति (सद्धि ६७) ।

गिण्ह देखो गह = ग्रहः । गिण्ह (गण्य) । वड्, गिण्हत्, गिण्हमाग (सुपा ६१६, छाया १, १) । सद्धि, गिण्हिदं, गिण्हिऊण, गिण्हिहा (वि ५७४, ५८५, २८२) । हेह, गिण्हिसप्प (गण्य) । क, गिण्हियज्ज, गिण्हियज्ज (मल्ल, सुपा ५१३) ।

गिण्हण देखो गहण = ग्रहण (सिरि ३७७; पिड ४५६, संड ५०) ।

गिण्हणा छी [ग्रहण] उपादान, भादान (उत्त १६, २७) ।

गिण्हणिय वि [ग्राहिण] ग्रहण करमा हूमा (परमि ११६) ।

गिह पुं [गृध्र] पक्षि-विशेष, गोप (पात्र, छाया १; १६) ।

गिह वि [गृध्र] भातक, कम्पट, सोनुप (पण्ड १, २, पात्र ३) ।

गिहपिण्ड न [गृध्र शृङ्ग, गृध्रपृष्ठ] मरण-विशेष, भारमाहृत्य के समिप्राय से शीघ्र भादि को धरणा शरीर लिता देना (वज्र १५०) ।

गिह्छि छी [गृह्छि] एक देव-विमान (हेन्द १३४) ।

गिह्छि छी [गृह्छि] भासति, लम्पटटा, गार्थ्य (सूत्र १, ६) ।

गिह्छणा देखो गिह्छणा (उत्त १६, २७) ।

गिह्छ वृ [ग्रीष्म] ऋतु विशेष, गर्मी का मौसिम (हे २, ७४, पात्र) ।

गिह्छा छी, देखो गिह्छ, 'गिह्छाणु' (सुख २, १७) ।

गिर सक [गृ] १ शीतना, उष्णारण करना । २ गिलना, गिलना । गिह्छ (पड) ।

गिरा छी [गिर] बाणी, भाषा, वाक् (हे १, १६) ।

गिरि पुं [गिरि] १ पहाड, पर्वत (गजड, १, २३) । 'अड्डी छी [तट्टी] पर्वतीय नदी (गजड) । 'कण्णई, कण्णी छी [कण्ण] बल्लो-विशेष, बत्ता विशेष (पण्ड १—पत्र ३३, भा २०) । 'कूड = [कूट] १ पर्वत का शिखर । २ पु, रामचन्द्र का महल (पत्रम ८०, ४) । 'जण्ण पुं [जङ्ग] १

कोनए देश में वर्षाकाल में बिया जाता एक प्रकार का उत्सव (इह १) । 'जई छी [नदी] पर्वतीय नदी (वि ३८२) । 'णाल पुं [नार] प्रसिद्ध पर्वत विशेष, जो कठियावाड़ में आजगत्त श्री 'गिरनार' के नाम से विख्यात है (श्री ३) । 'द्वारिणी छी [द्वारिणी] विद्या-विशेष (पत्रम ७, १३६) । 'नई देखो 'जई' (सुपा ६३५) । 'परसुंदण न [परसुन्दन] पहाड पर से गिरा (मिचू ११) । 'घड्ड न [कटक] पर्वत का मध्य भाग (गजड) । 'पन्मार पु [प्रामभार] पर्वत-निम्न (सपा) । 'राय पुं [राज] मेघ पर्वत (इक) । 'वर पुं [वर] प्रधान पर्वत, उत्तम पहाड (सुपा १७६) । 'वरिद पुं [वरिन्द] मेघ पर्वत (भा २७) । सुआ छी [सुता] पार्वती, गौरी (विग) ।

गिरि पुं [दे] बोज-कोश (दे ६, १४८) ।

गिरिद पु [गिरीन्द्र] १ चेत पर्वत । २ मेघ पर्वत । ३ हिमाचल (कप्यु) ।

गिरिको देखो गिरि कण्णी (पत्र ४) ।

गिरिडी छी [दे] पशुभो के दांत को बांधने का उपकरण-विशेष, 'दंतगिरिड पवगद' (सुपा २३७) ।

गिरिनगर न [गिरिनगर] गिरनार पर्वत के शीघे का नगर, जो आजकल 'जूनगद' के नाम से प्रसिद्ध है (सूत्र १७६) ।

गिरिकुलिय न [गिरिकुलिय] नगर-विशेष (पिड ४६२) ।

गिरिस पु [गिरिस] महादेश, शिव (पात्र, दे, ६, १२१) । 'वास पुं [वास] कैलाश पर्वत (सि ६, ७५) ।

गिरोस पु [गिरीश] १ हिमालय पर्वत । २ महादेव, शिव (विग) ।

गिल सक [गृ] गिलना, गिलवना, भ्रमण करना । सक, गिलिकण (नट) ।

गिलन न [गारण] निगरण, भ्रमण (हे ४, ४४४) ।

गिरा [गृ] अक [गलै] १ ग्लान होना, बीमार गिराअ होना । २ श्लान होना, बक जाना । ३ उदासी होना । गिनाद, गिलायद, गिना-एमि (अग, कट, भाषा) । वड्, गिलायमाण (छा ३, ३) ।

गिला छी [ग्लानि] १ बीमारी, रोग । २ उद, बकावट (छा ८) ।

गिलाण देखो गिलाअ, 'गिलाणइ वज्जे' (स ७१७) ।

गिलाण वि [ग्लान] १ बीमार, रोगी (सूत्र १, ३, ३) । २ भ्रमक, भ्रममय, बका हूमा (छा ३, ४) । ३ उदासीन, उद-रहित (छाया १, १३; हे २, १०६) ।

गिलाणि छी [ग्लानि] ग्लानि, उद, बकावट (छा ५, १) ।

गिलायय वि [ग्लायक] ग्लानि-युक्त, शान (श्रीप) ।

गिलायसि पु छी [ग्रासिन्] व्याधि विशेष, भ्रमण रोग (भाषा) । छी 'गो (भाषा) ।

गिलिअ वि [गिलित] गिलता हूमा, भसित (सुपा ३, २०६, सुपा ६४०) ।

गिलिअवत वि [गिलितवत्त] जिसने भ्रमण किया हो वह (वि ५६६) ।

गिलेइया [छी] [दे] गृह-गोमा, छिपकली गिलेइ (सुपा ६४०, पुष्प २६७) ।

गिलि छी [दे] १ हाथी की पीठ पर बसा जाता होता, होता (छाया १, १—पत्र ४३ टी चौप) । २ डोली, जो मावनी से उठाई जाती एक प्रकार की टिबिका (सूत्र २, २, वना ६) ।

गिल्याण पु [गीर्वाण] देव, सुर, त्रिवरा (उप ५३० टी) ।

गिह न [गृह] घर, मकान (भाषा, भा २३, स्वप्न ६४) । 'रथ पु छी [रथ] गृहस्थ, गृही, संनारी (कप्य ३५) । छी, 'त्वा (पत्रम ४६, ३३) । 'नाह पु [नाथ] घर का मालिक (भा २८) । 'लिगि पुं छी [लि-गिन्] गृहस्थ, गृही, संनारी (पत्रम) । 'वद पु छी [पति] गृहस्थ, गृही, घर का मालिक (छा ५, ३, सुपा २३४) । 'वास [वास] १ घर में निवास । २ द्वितीयाध्यम, संसारिक, गिहवास पास विव मन्तो वसइ दुनिषयो तमि' (पत्रम, सूत्र १, ६) । 'वद पुं [वस] १ द्वितीय श्राद्ध, संसारिक (सूत्र १, ४, १) । 'सम पुं [श्रम] घर-वार, द्वितीयाध्यम (स १४८) ।

गिहिकोइला श्री [गुदकोइला] गृहणोपा,
छिपकली (स ७५८) ।

गिहमेहि पु [गृहमेधिन] गृहस्थ (धर्मवि
२६) ।

गिहयद पु [गृहपति] देश का अधिपति, गृह-
दार, 'तह गिहईवि देस नागयो' (पव ८५) ।

गिह पु [गृह्यम्] गृही, संसार, गृहस्थ
(मोप १७ भा. नव ४३) । 'धम्म पुं
[धर्म] गृहस्थ धर्म, धावक-धर्म (राज) ।

'ल्लान न [लिल्ल] गृहस्थ का बेरा (इह १) ।
गिहिणी की [गृहिणी] गृहिणी, आया, की
(सुपा ८३, भा १६) ।

गिहीअ वि [गृहीत] प्राप्त, उपात, ग्रहण
किया हुआ (स ४२८) ।

गिहेल्लु देवो गिहेल्लुय (भावा २, ४, १, ८) ।
गिहेल्लुय पु [गृहेल्लु] देहली, द्वार के नीचे
की लकड़ी (निबु ११) ।

गी की [गिर] वारणी, भाषा, वाक्,
'विरमुजल व छापापल्ल व गीविससियं
जस्स' (गवड) ।

गीआ की [गीता] धीमज्जगवद्गीता, ज्ञानमय
उपदेश, छल्ल-विशेष (पित) ।

गीइ की [गीति] १ छल्ल-विशेष, भाषा-युक्त
का एक भेद । २ गान, गीत (ठा ७, उप
१३० टी) ।

गीइया की [गीतिका] ऊपर देवो (भीप,
छाया १, १) ।

गीय वि [गीत] १ पद्य मय वाक्य, गेय, जो
गाया जाय वह (पण्ड २, ५, मणु) । २
कथित, प्रतिपादित (छाया १, १) । ३
प्रसिद्ध, विख्यात (संभा) । ४ न. गान, ताल

भीर बाजे के अनुसार गाना (जं २, उत १) ।
५ संगीत-कला, गान-कला, संगीत-शास्त्र का
परिज्ञान (छाया १, १) । ६ पु. गीताई, उसमें
मोर भगवद वगैरह का जानकार जैन साधु,
विद्वान् जैन मुनि (उप ७७३) । 'जस पुं
[यशस] इन्द्र-निर्घोष, गणधर देवो का एक
इन्द्र (ठा २, ३, इक) । 'त्य पुं [य]'
१ विद्वान् जैन मुनि (उप ८३३ टी. वव
४, मुया १३७) । २ संगीत इत्यम् (मै १४) ।
'पुर न [पुर] नगर-विशेष (पउम ५५,
५३) । 'रइ की [रति] १ संगीत-योग

(भोग) । २ पु. गणधर देवो का एक इन्द्र
(इक, भा, ३, ८) । ३ गणधर देवो का
अधिपति देव-विशेष (ठा ७) । ४ वि. संगीत
प्रिय, गान-प्रिय (विपा १, २) ।

गीवा की [गीमा] कण्ठ, गवदन (पाष) ।

गुंछ देवो गुच्छ हि १, २६) ।

गुंछा की [दे] १ विन्दु । २ दाढी-मूँछ । ३
घघम, नीच (दे ३, १०१) ।

गुज धक [हस्] हैंसना, हास्य करना ।
गुजइ (हे ४, १६६) ।

गुंज धक [गुंज] १ गुन-गुन करना, भ्रमर
आदि का आवाज करना । २ गर्जना, सिंह
नगैरह का आवाज करना, 'गुंजति सीह' (महा) । बह. गुजव (छाया १, १—पत्र
५ रमा) ।

गुज पुं [गुज] १ गुग्गुलुकर का वायु (पउम
१३, ४३) । २ पर्वत-विशेष, 'गुजवररज्यं
ते' (पउम ८, ६०, ६४) ।

गुंजा की [गुंजा] १ लता विशेष (सुर २,
६) । २ फल विशेष, कुंभवी (छाया १, ३,
भा ३१०) । ३ भस्मा, वाद्य-विशेष (भावा)

४ परिणाम-विशेष (ठा ४, १) । ५ गुग्गुलु,
गुंजन, गुन गुन आवाज, 'गुंजावक्कुह-
रोवपूठ' (सम) । ६ वायु-विशेष, गुग्गुलु-
कलेवाला वायु (जीव १, जी ७) 'फल,
'हल न [फल] फल विशेष, कुंभवी (सुर
२, ६, सुपा २६१) ।

गुंजालिआ की [गुंजालिआ] गंभीर तथा
देवी वाली—बावली या बावदी (भावा
२, ३, १) ।

गुंजालिया की [गुंजालिआ] बक-सारिणी,
देवी कियारी (छाया १, १) । २ गीत
पुनरिणी (निबु १२) । ३ बक नदी (पण्ड
११) ।

गुंजानिअ वि [द्रासित] हंसाया हुआ (कुमा
७, ४१) ।

गुंजिन न [गुंजिन] गुन-गुन आवाज, भ्रमर
नगैरह का गवड (कुमा) ।

गुंजिर वि [गुंजिर] गुन-गुन आवाज करने-
वाला (उप १०३१ टी) ।

गुंजुव देवो गुंजुवइ व बुन्नाइ (हे ४, २०२) ।

गुंजेहिअ वि [दे] पिएवोइत, इकट्ठा किया
हुआ (दे २, ६२) ।

गुंजोइ सक [वि + लुल] बिबेरना । गुंजो-
ल्लइ (प्राक ७३) ।

गुंजोइ धक [उत् + लस्] उल्लास पाना,
विजित होना । गुंजाल्लइ (हे ४, २०२) ।

गुंजोइअ वि [उल्लसित] विजित, विक-
सित (कुमा) ।

गुंठ सक [उद् + धूलय, गुण्ठ] धूल
बाला करना, धूलो के रंग का करना, धूल-
रहित करना । गुंठइ (हे ४, २६) । बह.

गुंठत (कुमा) ।

गुंठ पुं [दे] प्रथम भरव, दुष्ट घोडा (दे २,
६१, स ४५४) । २ वि मायावी, बपटी
(वव ३) ।

गुंठा की [दे] माया, धम्म, छल (वव ३) ।

गुंठिअ वि [गुंठित] १ दूसरित । २ ध्यात
३ आच्छादित (दे १, ८५) ।

गुंठी की [दे] नीरंगी, की का बल-विशेष
(दे २, ६०) ।

गुंठ न [दे] मुक्ता से उत्पन्न होनेवाला लुण-
विशेष (दे २, ६१) ।

गुंठण व [गुंठण] धूलि का लेव, धूल का
शरीर में लगाना, 'वररुण्ण' छणाणि व नो
सम्मं सहसि' (छाया १, १—पत्र ७१) ।

गुंठिअ वि [गुंठित] १ धूलि-लित, धूलि-
मुक्त (पाष) । २ विस, पटा हुआ, 'डुएण
गुंठिपाता' (विपा १, २—पत्र २४) । ३
पिरा हुआ, खड़ी जह पण्डु किया' (सुस
१, २) । ४ आच्छादित, प्रावृत्त (भावा)

५ प्रेरित (पण्ड १, ३) ।

गुंथण न [ग्रन्थन] सूचना, गठना (रसण
१८) ।

गुंद पुं [गुन्द्र] कुल-विशेष (पाष) ।

गुन्दल न [दे. गुन्दल] १ धानद-ध्वान,
छुरी की आवाज, हँस की तुलुध्वनि, 'मत-
वररविण्णोसवण्ण' (सुर ३, ११५) ।

'वररिणीहि वसहेहि व सण्णमेस' हरिसउ दल
काठ' (सुस १३७) । २ हर्ष-भर, धानद-
ध्वनि, छुरी की धुं, 'धम्म' (सुस १३७) । २ हर्ष-भर, धानद-
ध्वनि, 'धाण्णु' दलेण लल्ल लोनावहि
परिस्सवो' (सुपा २२, ११६) । वि. धानद-

मग्न, घुरी में लीन, 'त' वह दृष्ट' छाणद-
गु'दल' (मुग १३४)।

गुणवडय न [दे] एक प्रकार की मिठाई, गुज-
राती में जिसको 'गुदवडा' कहते हैं (मुग
४८५)।

गुंदा } छी [दे] १ बिन्दु २ ध्रुव, नीच
गुंदा } (दे २, १०१)।

गुंघ सक [ग्रन्थ] गठना। गुंघद (प्राक
६३)।

गुंघ सक [शुक्ल] गुंघना, गठना। गुंघद
(वङ्) वङ् गुंघन (कुमा)।

गुण पुं [गुम्फ] १ रचना, रूपा, ग्रन्थ
(उप १०३१ टी. दे १, १५०, ६, १५२)।

गुण पुं [दे] गुप्त, कारगर, जेल (दे २,
६०)।

गुंफन न [दे] गोकन, पत्थर फेंकने का मज-
विशेष, 'गु' फाफेरलानुकारण' (सुर २, ८)।

गुंफो छी [दे] शतपदी, सुद कोट विशेष,
गोजर, कनकवृक्ष (दे २, ६१)।

गुग्गुल पुं [गुग्गुल] गुग्गुलित द्रव्यविशेष,
गुग्गुल या गुग्गुल (मुग १५१)।

गुग्गुली छी [गुग्गुल] गुग्गुल का पेड़ (जी
१०)।

गुग्गुल देखो गुग्गुल (स ५३१)।

गुच्छ } पुं [गुच्छ] १ गुच्छा, गुच्छक,
गुच्छय } स्तम्भ (उत्त २, स्पन् ७२)। २

कुलो की एक जाति (पण्य १)। ३ पत्तो
का समूह (व १)।

गुच्छय देखो गोच्छय (मोप ६६८)।

गुच्छिय वि [गुच्छित] उच्छा वाला, गुच्छ-
युक्त, 'गिच्छ' गुच्छिया' (राय)।

गुज्ज देखो गोज्ज (मुग २८१)।

गुज्जर पुं [गुज्जर] १ भारत का एक प्राय,
गुजरात देश (पिंग)। २ वि. गुजरात का
निवासी। जी. 'री (नाट)।

गुज्जरत्ता छी [गुज्जरत्ता] गुजरात देश (साधं
६८)।

गुज्जलिअ वि [दे] सपटित (वङ्)।

गुज्जक पुं [गुज्ज] एक देव-माति (दश ७,
५३)।

गुज्जक } वि [गुज्ज] १ गोपीनीय, छिपाने
गुज्जमअ } योग्य (प्राग १, ६, २, १२४)।
२ न. गुप्त बात, रहस्य, 'सिर्मतिणिद्विययमं

गुज्जकं पित्तस्य एषा पुट्ट' (उप ७२८ टी)।

३ लिग, गुष्प-चिह्न। ४ योनि, स्त्री-चिह्न (धर्म
२)। ५ मैथुन, संभोग (पण्य १, ४)। 'हर

वि [धर] गुप्त बात की प्रकट नहीं करने-
वाला (दे २ ५३)। 'हर वि [हर] रहस्य-

मेदी, गुप्त बात की प्रसिद्ध करनेवाला (दे २,
६३)।

गुज्जमअ } पुं [गुज्जक] देवों की एक जाति
गुज्जमअ } (ठा ५, ३)।

गुट्ट न [दे] स्तम्भ, गुण-काण्ड, 'धग्गुण-
गुट्ट व उत्स जागुद' (उवा)।

गुट्ट देखो गोट्ट (पाप. मत १६२)।

गुट्टी देखो गोट्टी (सूक्त ५८)।

गुड सक [गुड] १ हाथी की कवच वगैरह
से सजाता। २ सजाई के लिए तय्यार करना,

सजावा, 'गुडह मद्दे पणोकोदेह रहषकवा-
हके' (मुग २८८)। कवड 'गुडिअगुडिअ-
तमड' (सि १२, ८७)।

गुड सक [गुड] नियन्त्रण करना। गुदेइ
(संघोष ५५)।

गुड पुं [गुड] १ गुड, ईश का विकार, सात
शक्कर (दे १, २०२, प्राप् १५१)। २ एक

प्रकार का कवच (राज)। 'सत्य न [सार्थ]
नगर-विशेष (प्राक)।

गुडदाअत्रि वि [दे] निरुद्धि, इक्ष्वा किया
हुआ (दे २, ६२)।

गुडा छी [गुडा] १ हाथी का कवच। २
पथ का कवच (पिया १, २)।

गुडिअ वि [गुडित] कवचित, कर्मित, कृत-
संवाह (सि १२, ७३, ८७, पिया १, २)।

गुडिआ छी [गुडिका] गाली (गा १७७)।

गुडीलद्विआ छी [दे] शुभन (दे २, ६१)।

गुड्ड पुन [दे] सीमा या सीमा, तंजु, ईप,
बज्र-गृह (सि ४८२; ६४५)।

गुण सक [गुणय्] १ क्लाना। २ भावुति
करना, याद करना। गुणद (सूक्त ३१, दे

४, ४२२) गुणै (ज)। वङ्. गुणमाण
(ज ५ ३६६)।

गुण पुं [गुण] उच्चारण (सूचनि २०)। २
रसना, मेखला (भाषा २, २, १, ७)।

गुण पुन [गुण] १ गुण, पर्याय, स्वभाव,
धर्म (ठा ५, ३)। २ ज्ञान, गुण वगैरह एक

ही साध रहनेवाला धर्म (सम् १०७, १०६)।
३ ज्ञान, विनय, दान, शौर्य, सदाचार वगैरह

दोष-प्रतिपक्षी पदार्थ (कुमा. उत्त १६, पाणु,
ठा ४, ३; ने १, ४)। ४ ताम, कायदा,

'विह्वेहि गुणाई मगति' (दे १, ३४, मुग
१०३)। ५ प्रवृत्तता, प्रवृत्ता (प्राग १,

१)। ६ रज्जु, जेरा, धागा (सि १, ४)।
७ व्याकरण प्रसिद्ध ए, भा भीर धर् रूप

स्वर-विकार (मुग १०३)। ८ जैन गृहस्थ
को पालने का क्त विशेष, गुण-भक्त (पंचव

३)। ९ रूप, रस, गन्ध वगैरह द्रव्यावृत्ति
धर्म, 'गुण-पञ्चकलत्वागुणोवि जामी पञ्चाव्य

पञ्चसो' (ठा १, १; उत्त २८)। १०
प्रयत्नवा, धनुष का रोता (कुमा)। ११ कार्य,

प्रयोजन (अप २, १०)। १२ अप्रधान,
अधुस्य, गीण (दे १, ३४)। १३ मंथ,

विभाष (पाणु)। १४ उपकार, हित (पंचा
५)। 'कर वि [कर] १ लाभ-कारक। २

उपकार-कारक (पंचा ५)। 'कार पुं [कार]
गुणा करना, धन्यास राशि (सम ६०)। 'चद

पुं [चन्द्र] १ एक राजकुमार (मावम)। २
एक जैन मुनि भीर ग्रन्थकार। ३ श्रेष्ठि-

विशेष (राज)। 'ट्टाण न [स्थान] गुणी
का स्वस्व-विशेष, निम्नगृहि वगैरह चउवह

गुण स्थानक (कम्म ४, पव ६०)। 'ट्टिअ
पुं [पिठिक] गुण की प्रधान माननेवाला

मठ, नय-विशेष (सम् १०७)। 'इड वि
[इड] गुणी, गुणवान् (सुर ३, २०;

१३०)। 'णग, 'णु, 'न्त, 'न्तु वि [ज्ञ]
गुण का जानकार (गउ, उव ८६, उप

५३० टी. मुग १२२)। 'पुरिस पुं [पुरुष]
गुणी पुरुष (सूय १, ४) 'मत वि [वन्]
गुणी, गुण-युक्त (भाषा २, १, ६)। 'रयणस-

वच्छर न [रत्नसंवत्सर] तपश्चर्या-विशेष
(अम)। 'व, 'वत वि [वत्] गुणी, गुण-युक्त

(सा ३६, उप ८५४)। 'व्यय न
[जन] जैन गृहस्थ को पालने योग्य दत्त-

विशेष (पठि)। 'सिलय न [शिलक]
रामगृह नगर का एक क्षेत्र (प्राग १, १)।

'सेदि छी [श्रेणि] कर्म-उद्देशकों की रचना-

विशेष (वंच) । *सेण वुं [*सेन] इत्य नाम का एक प्रसिद्ध राजा (स ६) । *हर वि [*धर] ? गुणों की धारण करनेवाला, गुणी । २ उन्नु धारक । छी. *रा (मुप ३२७) ।

*यर वुं [*कर] गुणों की खान, अनेक गुण-वाला, गुणी (पठन १५, ६०; श्रमू १३४) । गुण देखो पुराण; *गुणसद्धि अमरसे सुराजयें वु जह इहागच्छे (कम्म २, ८; ४, ५४; ५६, आ ४४) ।

*गुण वि [*गुण] गुण, प्रादुत, 'बोसणुलो लोसणुलो' (कुमा-श्रमू १६) ।

गुणन न [गुणन] १ गुणकार (पठ २१६) । २ श्रम्य-परानर्तन, श्रवृत्ति, 'गुणयु' (? गुण-एणु) जेहानु भ मसत्तो (पिड ६६४) ।

गुणणा छी [गुणना] ऊपर देखो (सम्पत्तवो १५) ।

गुणयाहीस छीन [एओनचरारिशान] उनकाहीस, ३६ (पथ ५६) ।

गुणबुद्धि छी [गुणबुद्धि] लगातार पाठ दिना का उपास (संबीष ५८) ।

गुणसेण वुं [गुणसेन] एक जैन नामाचर्य जो मुनिसिद्ध हेमाचार्य के प्रपुत्र थे (पुत्र १६) ।

गुणा छी [दि] मिशाल-विशेष (अवि) ।

गुणाविय वि [गुणित] पढाया हुआ, पाठित, 'तय को धमएण सयतामी पणुअध्यामाओ महएवियआओ गुणाविओ' (महा) ।

गुणि वि [गुणिन्] गुण-युक्त, गुणवाला (उप ५६७ डी, गडक; श्रमू २६) ।

गुणिअ वि [गुणि] १ गुण हुआ, जिसका गुणा किया गया हो वह (आ ६) । २ पठित, माद किया हुआ (सि ११, ३१) । ३ पठित कीज (प्रीप ६२) । ४ जिम पाठ की श्रावृत्ति की गई हो वह, पठनसिद्ध (पठ ३) ।

गुणिल्ल वि [गुणयन्] गुणी, गुण-युक्त (सि ५६५) ।

गुण्ण देवो गोण्ण (मपु १४०) ।

गुण्ह (मप) देखो गिण्ह । उएह्ह (प्राड ११६) ।

गुत्त न [गोत्र] शास्त्र, काष्ठान (मूय २, ७, १०) ।

गुत्त वि [गुत्त] गुत्त, प्रणय, दिया हुआ (पाया १, ४; मुर ७, २१५) । २ रचित (उप १५) । ३ स्व-पर की रक्षा करनेवाला, गुप्ति-युक्त, मन वगैरह की निर्दोष प्रवृत्तिवाला (पुप ६०५) । ४ एक स्वनाम प्रसिद्ध जैनानाम (प्रात) ।

गुत्त देखो गोत्त (पाप, मम, प्रायम) । गुत्तपण्य न [दि] पितृवर्ण (दे २, ६३) । गुत्ति छी [गुत्ति] १ वैदधाना, जेत (सुर १, ७३; पुप ६३) । २ कठपत्र (पुप ६३) । ३ मन, बचन और वाया की अगुण प्रवृत्ति को रोकना । ४ मन वगैरह की निर्दोष प्रवृत्ति ठा २, १, मम ८) । गुत्त वि [गुत्त] मन वगैरह की निर्दोष प्रवृत्तिवाला, संयत (पएह २, ४) । *पाल वुं [*पाल] जैन का रत्न, वैदखाना का सम्पन्न (पुप ४६७) । *सेण वुं [*सेन] वैदख लोक में उत्पन्न एक जिनदेव (सम १५३) ।

गुत्ति छी [गुत्ति] गोपन, रक्षण (पु १२) ।

गुत्ति छी [दि] ? कबन (दे २, १०१; अवि) । २ इच्छा, क्षमिताया । ३ बचन, भावाज । ४ सता, बली । ५ सिर पर पहनी जाती फूल की माला (दे २, १०१) ।

गुत्तिदिय वि [गुत्तेन्द्रिय] इन्द्रिय निग्रह करने वाला, संवेन्द्रिय (मप, पाया १, ४) ।

गुत्तिय वि [गोत्तिक] रत्न, रक्षण करने-वाला, 'मगरुत्तिए सहविइ' (बम्प) ।

गुत्तिय वि [गोत्तिक] गोदी, समान कीज-वाला, गोसिया (पुत्र ३४४) ।

गुत्तिवाल देखो गुत्ति-पाल (धर्मि २६) ।

गुत्थ वि [प्रथित] उप्रिक्त, पूँछा हुआ (स ३०३; प्राप, गा ६३; बम्प) ।

गुत्थंइ वुं [दि] भासनाही, पवित्र-विशेष (दे २, ६२) ।

गुद दुंभी [गुद] गौड, गुद (दे ६, ४६) ।

गुदह न [गोदह] नगर-विशेष (मोह ८८) ।

गुप वर [गुप] व्याकुल होना । गुपह (दे ४, १४०, पद) । वड. गुपयें, गुपमाण (कुमा ६, १०२; बम्प, धीर) ।

गुप वि [गोप्य] १ दिमाने योग्य । २ न, एतन्, रिक्त (ठा ४, १) ।

गुपदं छी [गोपदी] गो बा बैर दूजे उठना महए को उठतिवें पादि, निम्नहूर दुपदं-मोदं (सम्प १२ डी) ।

गुपयें न [दि] १ शयनीय, शय्या । २ वि, योषित, रक्षित (दे २, १०२) । ३ संवृद्ध, गुप्य, धनकाया हुआ, व्याकुल (दे २, १०२; से १, २; २, ४) ।

गुपय्य देखो गो-पय (मूक ११) ।

गुप्य वुं [गुल्फ] फीली, पैर की गाँठ (स ३३; हे २, ६०) ।

गुफगुमिअ वि [दि] गुगन्यो, गुगल्य युक्त (दे २, ६३) ।

गुचम देखो गुप्य (पद्) ।

गुम संव [गुम्] श्रूयना, गठना । गुमह (हे १, २३६) ।

गुम संव [अम्] दूधना, पर्यटन करना, भ्रमण करना । गुमह (हे ४, ६१६) ।

गुमगुम } घर [गुमगुमाय] १ 'गुम-गुमगुमाअ } गुम' भावाज कर्ता । २ यदुर श्रम्यक इति करना । वड. गुमगुमं, गुमगुमिन, गुमगुमायंत (धीप, पाया १, १; बम्प, पठन ३३, ६) ।

गुमगुमाइय वि [गुमगुमायित] जिसने 'गुम-गुम' भावाज किया हो वह (धीप) ।

गुमिअ वि [अमित] अविद्ध, दुनाया हुआ (कुमा) ।

गुमिल वि [दि] १ मूक, गुप्य । २ गहन, गहरा । ३ प्रत्यक्षित । ४ प्रापूर्ण, भरपूर (दे २, १०२) ।

गुसुसुगुम देखो गुमगुम । वड. गुसुसुगु-गुमन, गुसुसुगुमं (पठन २, ६०, ६२, ६) ।

गुम वर [गुद] व्याकुल होना, पकड़ना, व्याकुल होना । गुमह (हे ४, २०७) ।

गुम वुं [गुल्म] पतिवार, परिवार, 'इफी-गुमवर्तियुद' (पुप २, २, ५५) ।

गुम वुं [गुल्म] १ लता, बली, वनस्पति-विशेष (एण १) । २ भारी, वृद्ध-परा (पाप) । ३ वेना-विशेष, जिनमें २७ हापी, २७ रव, ८१ घोडा और १३५ व्यादा हैं ऐसी वेना (पठन १६, ५) । ४ बुद्ध, महद् (धीप, मूय २, २) । ५ मया बा दृष्ट दिग्मा, जेनुन-अमर का एक घर (धीप) । ६ मया, जगह (धीप १६३) ।

गुम्माइ वि [दे] १ मूढ, मूर्ख (दे २, १०३).
 श्रोत्र (१३६, पात्र, पद) । २ अपूरित, पूर्ण
 नहीं किया हुआ (पद) । ३ पूरित, पूर्ण
 किया हुआ (दे २, १०३) । ४ स्थित ।
 ५ संचालित, मूल से उच्चलित । ६ विपठित,
 विपुक्त (दे २, १०३, पद) ।

गुम्माइ देतो गुम्मा । गुम्माइ (हे ४, २०७) ।
 गुम्माइ वि [मोहित] मोह युक्त, मुष
 किया हुआ (कुमा ७, ४७) ।

गुम्मागुम्मा म, जलवायु होकर (श्रीप) ।
 गुम्माइ वि [मुग्ध] १ मोक्ष प्राप्त, मूढ
 (कुमा ७, ४७) । २ प्रवृत्त, मद से प्रमत्ता
 हुआ (बह १) ।

गुम्माइ पु [मीलिक] कौतवाक, नगर-
 रक्षक (श्रीप १३३, ७६१) ।

गुम्माइ वि [दे] मूल से उल्लाहा हुआ, उन्मू-
 लित (दे २, ६२) ।

गुम्मी की [दे] हज्जा, भगिलापा (दे २,
 ६०) ।

गुम्मी की [गुलमी] शतपदी, ध्रुव, लटमल,
 बूँ (उत्त ३६, १३६, सुज ३६, १३६) ।

गुम्ह सक [गुम्ह] प्रीणका, गलना । गुम्ह
 (श्री) (स्वज ५३) ।

गुम्हा देखो गुम्मा (हे २, १२४) ।

गुरय देखो गुरु 'जो गुरवे साहीजे बम्मा
 साहेब पोडबुद्धि' (पठम ६, ११४) ।

गुरु पु [गुरु] १ शिक्षक, विद्या-दाता,
 गुरुज, पदानेवाला (बद १, ६५) । २
 धर्मापेक्षक, धर्माचार्य (विसे ६३०) । ३
 माता, पिता वगैरह पूज्य लोग (ठा १०) ।

४ शृङ्खलित, ग्रह-विशेष (पठम १७, १०८,
 कुमा) । ५ स्वर विशेष, जो मात्रावाला था,
 ई वगैरह स्वर, जिसके पीछे अनुस्वार या
 संयुक्त व्यञ्जन हो ऐसा भी स्वर-वर्ण (विप) ।

६ वि. बडा, महान् (उवा. से ३, ३८) । ७
 भारी, बोझिल (ठा १, १, कम्म १) । =
 उल्लूक, उत्तम (कम्म ४, ७२, ७६) । 'कम्म
 वि [कर्मन्] कर्मों का बोझिलता, भारी
 (मुपा २६५) । 'कुल न [कुल] १ धर्मा-
 चार्य का सामोप्य (पपा ११) । २ कुल-
 परिवार (उप ६७७) । 'गई की [गति]

गति-विशेष, भारीपन से ऊँचा-नीचा गमन
 (ठा ८) । 'लायन न [लायन] सरासार,
 अच्छा और बुरातन (बव ४) । 'सन्मिल्ल्या
 पुं [सहाध्यायिक] गुप्त के भारी (बह ४) ।

गुरुई देखो गुरुई (छाया १, १) ।

गुरुगी की [गुर्गी] १ गुरु-स्थानीय की (गुर
 ११, २११) । २ धर्मोपदेशिका, साध्वी (उप
 ७२८ टी) ।

गुरेड न [गुरेड] कृष्ण-विशेष (दे १, ४५) ।

गुल देखो गुड = गुड (ठा ३, १, ६, छाया
 १, ८, भा ४५५, श्रीप) ।

गुल न [दे] चुम्बन (दे २, ६१) ।

गुल्लुं सक [उन् + क्षिप्] ऊँचा
 फैलना । गुल्लुं छद (हे ४, १४४) । संक
 गुल्लुंकिऊ (कुमा) ।

गुल्लुं देखो गुल्लुं = उद् + नमय् ।
 गुल्लुं छद (हे ४, १६१) ।

गुल्लुं भक [गुल्लुं] 'गुल्लुं' भाषा
 फैलना, हाथी वा हर्ष से बिपादना या बोधना ।
 बह गुल्लुंमल, गुल्लुंमल (उप १०३१ टी,
 उवा. पठम ८, ७७१, १०२, २०६) ।

गुल्लुं गल्लुं १ [गुल्लुं] हाथी की
 गुल्लुं गल्लुं } गर्जना (ज ५, मुपा १३७) ।
 गुल्लुं सक [चाटी कू] कुशाग्र करना । गुल-
 लाइ (हे ४, ७३) । बह गुल्लुंमल (कुमा) ।

गुल्लुंमल गल्लुं की [गुल्लुंमल] एक
 तरह की मिठाई सोलपापदी । २ गुल्लुंमल
 (पव २५६, सुज २० टी) ।

गुल्लुंमल गल्लुं की [गुल्लुंमल] बाण विशेष
 (पव ४) ।

गुल्लुं वि [दे] मथित, विनोदित (दे २,
 १०३, पद) । २ पुं. गैद, कन्दुक, 'कन्दुको
 गुल्लुं' (पाध) ।

गुल्लुं की [दे] १ बुद्धि । २ गैद,
 कन्दुक । ३ स्तवक, गुच्छा (दे २, १०३) ।

गुल्लुं की [गुल्लुं] १ गोली, बुद्धि
 (महा. छाया १, १३, मुपा २६२) । २
 वर्णक द्रव्य विशेष, सुगन्धित द्रव्य-विशेष
 (श्रीप. छाया १, १—पत्र २५) ।

गुल्लुं वि [दे] गुल्लुं, गुल्लुंमल, लता
 समूहवाला (श्रीप. भा) ।

गुल्लुं [गुल्लुं] गुच्छ, गुच्छा (दे २,
 ६२) ।

गुल्लुं देखो गुल्लुं = उद् + क्षिप् । गुल्लुं
 छद (हे ४, १४४) ।

गुल्लुं सक [उत् + नमय्] ऊँचा
 करना, उत्तम करना । गुल्लुं छद (हे ४, २६६) ।

गुल्लुं वि [उन्नमित] ऊँचा किया हुआ,
 उन्नमित (दे २, ६३, कुमा) ।

गुल्लुं वि [दे] बाड से झटारित (दे
 २, ६३) ।

गुल्लुं देखो गुल्लुं । गुल्लुंमल (मवि) ।
 बह गुल्लुंमल (पि ५५८) ।

गुल्लुं गल्लुं १ देखो गुल्लुं गल्लुं (श्रीप,
 गुल्लुं गल्लुं) पद १, ३, स ३६६) ।

गुल्लुं वि [दे] भ्रमित, घुमाया हुआ,
 (दे २, ६२) ।

गुल्लुं पुं [गुल्लुं] गुच्छा, लतबक (पाध) ।
 गुल्लुंमल वि [गुल्लुंमल] लता-समूहवाला,
 गुल्लुंमल (छाया १, १—पत्र ५) ।

गुल्लुं देखो गुल्लुं = गुल्लुं । पुर्वति (भा १५) ।
 'गुल्लुं देखो कुल्लुं, 'गुल्लुंमलमल' (संवि) ।

गुल्लुं गल्लुं [दे] देखो गोभालिआ (जी १७) ।
 गुल्लुं वि [गुल्लुं] ब्याकुल, मुष्य (ठा ३,
 ४—पत्र १६१) ।

गुल्लुं वि [गुल्लुं] १ गहन, गहरा, गाढ़,
 निविड (गुर ६, ६६, उप ३ ३०, पद १,
 ३) । २ न. फाटी, जगल (उप ८३३ टी) ।

'इको करइ कम्म,
 इको मयुहवइ दुक्कयविमार ।
 इको संसरइ निमो,

जरमरएजजगइविमल' (पव ४५) ।
 गुल्लुं वि [दे] चीनी का बना हुआ, मिलो-
 वाला (मिश्रण) (उप ५, १०) ।

गुल्लुं की [गुल्लुं] गर्भवती की (मुपा
 २७७) ।

गुल्लुं देखो गुल्लुं । गुह्र (हे १, २३६) ।

गुल्लुं पु [गुल्लुं] कात्तिकेय, एक शिव पुत्र
 (पाध) ।

गुल्लुं की [गुल्लुं] गुफा, कन्दरा (पाध. ठा २,
 ३, प्राप् २७१) ।

गुल्लुं वि [दे] गन्धौर, गदरा (पाध. कप) ।

गृह वि [गृह] गुप्त, प्रच्यवत्, क्षिप्ता हुमा
(पण्ड १, ४, जो १०) । दंत पु [दन्त]
१ एक भ्रतर्द्धीय, द्वीप विशेष । २ द्वीप विशेष
का निवासी (डा ४, २) । ३ एक जैन मुनि ।
४ 'भ्रतुत्तरोपातिक दरा' सूत्र का एक भ्रम्य-
यन (प्रनु २) । ५ भ्रत श्रेय का एक भावी
चक्रवर्ती राजा (सम १५४) ।

गृह सक [गृह] क्षिपाना, गुप्त रखना ।
वक्र गृहत (स ६१०) ।

गृह न [गृह] गृ, विष्टा (रुडु) ।

गृहण न [गृहण] क्षिपाना (सम ७१) ।

गृहिय वि [गृहित] क्षिपाना हुमा (स १८६) ।

गृह्य (प) देलो गिण्ड । गृह्य (कुमा) ।

गृह्व [सह] गृहणियणु (हे ४, ३६४) ।

गृह वि [गृह] गाने योग्य, गाने लायक,

गीत (डा ४, ४—पत्र २८७, वजा ४४) ।

२ न गीत, गान, 'मण्डहरगेयमुणीए' (सुर

३, ६६, गा ३३४) ।

गेंडुअ न [दे] स्तनी दे जगर की बल ग्रन्थि

(दे २, २३) ।

गेंडुअ न [दे] कठुक, चोली (दे २, ६४) ।

गेंड न [दे] देलो गेंडुअ (दे २, २३) ।

गेंडुई जी [दे] बीडा, लैन, गम्मत, विनोद

(दे २, ६४) ।

गेंडुअ पु [कण्डुक] गेंद, गेंस, खेतने की एक

बस्तु (हे १, ५७, १२२, सुर १, १२१) ।

गेज वि [दे] मयित, वितोचित (दे २, ८८) ।

गेजल न [दे] प्रीवा का भागरण (दे २,

६४) ।

गेजम वि [प्राह] ग्रहण-योग्य (हे १, ७८) ।

गेहण न [दे] १ रचना, क्षेपण । २ दे देना

'तत बोडणकण ससममा भासमाउ सह'

(उप ६५८ टी) ।

गेह न [दे] १ पट्ट, बीच, काँदो । २ पत्र,

भ्रम विशेष (दे २, १०४) ।

गेही जी [दे] गेही, गेंद खेतने की लकड़ी

(हुमा) ।

गेह देलो गिण्ड । गेह देहि (४, २०६, उप

महा) । नूका, गेहोप (कुमा) । भवि,

गेहस्तर (महा) । बह, गेहदेव, गेहमाण

(सुर ३, ७४; विपा १, १) । सह, गेहिहा,

गेहिऊण, गेहिअ (भग, वि ५८६,
कुमा) । क. गेहिह्यव्व (उत १) ।

गेहण न [ग्रहण] भादान, उपादान, नेना
(उप ३३६, स ३७५) ।

गेहणया जी [ग्रहणा] ग्रहण, भादान (उप
५२६) ।

गेहानिय वि [ग्राहित] ग्रहण करपा हुमा
(स ५२६ महा) ।

गेहिअ न [दे] उर सूत्र, स्तनाच्छादक-वज्र
(दे २, ६४) ।

गेह देलो गिह (घोष) ।

गेरिअ [पुन] गेरिक १ गेह, साल रङ्ग

गेरुअ की मिट्टी (स २२३, वि ६०,

११८) । २ मल्ल-विशेष, रत्न की एक जाति

(पण्ड १—पत्र २६) । ३ वि. वेप रंग का

(वपू) । ४ पु विदएओ साधु साधु मत

का अनुयायी परिव्राजक (पत्र ६४) ।

गेलण [न] गलण्य रोग, बीमारी, र्गानि

गेलण (विसे ५४०, उप ४६६, घोष

७७, २२१) ।

गेविज [न] ग्रैवेयक १ प्रीवा का बाभू-

गेविज पत्र, गले का गहना (घोष, पाया

गेवेजय १, २) । २ ग्रैवेयक देलो का

विमान (डा ६) । ३ पु वलम थेणी के देवो

की एक जाति (वपू, घोष, भग, पी ३३,

६८) ।

गेवेय देलो गेवेज (भाषा २, १३, १) ।

गेह पुन [गेह] घर, 'न नईन वल्लं न उज्जहो

गेहो' (वजा ६८) ।

गेह न [गेह] गृह, घर, भवन (स्वप्न १६,

मउड) । 'जामाउय पु [जामाउक] घर-

जमाई, सर्वथा समुद्र के घर में रहनेवाला

जामाता (उप ५ ३६६) । 'गार वि

[गार] १ घर के भागवाला । २ पु-

बलपुन की एक जाति (सम १७) । 'गु

वि [यन] घरवाला, गृही, संसारो (पट्ट) ।

'सम पु [ग्राम] गृहस्थायन (पत्र ३१,

८३) ।

गेहि वि [गृह] सोत्रप, ग्रन्थासक्त (घोष

८७) ।

गेहि जी [गृहि] प्रासक्त, ग्रन्थ, साधक

(स ११३, पण्ड १, ३) ।

गेहि वि [गेहिन्] नीचे देखो (पाया १;
१४) ।

गेहिअ वि [गेहिक] १ घरवाला, गृही । २
पु भर्ता, धनी, पति (उत २) ।

गेहिअ [गृहिक] ग्रन्थासक्त, सोत्रप, सातवी
(पण्ड १, ३) ।

गेहिणी जी [गेहिनी] गृहिणी, जी (हुमा
३४१, कुमा, कपू) ।

गो पु [गो] भूप, राजा 'तहमी गो भूपमुद्र-

स्सिणो ति' (वज १) । 'माहिसक न

[माहिक] गी भीर भैस का मुड या

समूह निम्बुय गोमाहिसक' (स ६८६) ।

गो पु [गो] १ रश्मि, विष्णु (गउड) । २

स्वर्ग, देव भूमि (हुमा १४२) । ३ जैन,

सर्वावर्त । ४ पशु जानवर । ५ जी, गीया,

'अपरिपरितारिपानियमियदिग्गमणोमोहिलो

गोव' (विसे ७५४, पत्र १०३, ५०,

हुमा २७५) । ६ बाली, वाग (भूम १,

१३) । ७ भूमि, 'ज महइ विकवणयावरण

सोमी पुलिवाण' (गउड, हुमा १४२) ।

'आल देलो 'वाल (पुष्प २१६) । 'इल नि

[भन] गो पुत्र, जिसके पास भनेन' गी हो

वह (दे २, ६८) । 'उल न [कुल] १

गौमी का समूह (भाव ३) । २ गाढ़ मा-

बाडा 'सामी गोउलगमो' (भारम) । 'उलिय

वि [कुलिक] गो कुलवासा, गो कुल का

माविक, गोवाला (महा) । 'खिजय न

[खिजक] पात्र विशेष, जिसमें गी को

खाना दिया जाता है (भग ७, ८) । 'कीड

पु [कीड] पशुओं की मन्त्री, बघी (जी

११) । 'करीर', 'लीर' [लीर] गीया

का दूध (सम ६०, पाया १, १) । 'गह

पु [ग्रह] गाय की चारी, गी को खेनना

(पण्ड १, ३) । 'गहण न [ग्रहण]

गो-ग्रहण (पाया १, ८८) । 'जिसजा जी

[नियपा] धामन विशेष, गो की तरह

वेतना (डा १, १) । 'नियं न [वीर्य] १

गौमा का जालाव प्रादि में सड़ने का रास्ता,

क्रम से नीचो जमीन (जीर ३) । २ सजण

समुद्र बगैह की एक बगह (डा १०) ।

'साम नि [ग्राम] १ गौमा को ग्राम

देनेवाला । २ पु. एक बगह का पुत्र (विना

१, २) । 'दास पुं' [दास] १ एक जैन-मुनि, भद्रबाहु स्वामी का प्रथम शिष्य । २ एक जैनमुनिगण (कप्प, डा ६) । 'दोहिया स्त्री' [दोहिका] १ गौ का दोहन । २ श्रासन विशेष, गौ दुहने के समय जिस तरह बैठ जाता है उस तरह का उपवेशन (डा ५, १) । 'दुह वि' [दुह] गौ को दोहने-वाला (पड्ड) । 'धूँछिआ स्त्री' [धूँछिआ] लग्न विशेष, गौको को चरा कर लौटने का समय, सायंकाल, 'बैलध्व गोधूमिया' (रंभा) । 'पय' [पय] न [पय] १ गौ का खुद डूबे उतना गहरा, 'लक्ष्मि जन्मि जेवाएण जायद गोपयं व भद्रजलहो' (भाप ६६) । २ गोपद-परिमित भूमि (मणु) । ३ गौ का खुद (डा ४, ४) । 'मद पुं' [मद] श्रेष्ठ-विशेष, शाविमन्न के पिला का नाम (डा १०) । 'भूमि स्त्री' [भूमि] गौमी को चरने की जगह (भावम) । 'म वि' [मन्] गौबाला (विशे १४६) । 'मल न' [मल] गौ का शव (छाया १, ११—पत्र १७३) । 'मय न' [मय] गोवर, गौ का मल, गोविष्टा (मय ५, २) । 'मुत्तिया स्त्री' [मुत्तिवा] १ गौ का दूध, गोदूध (मीघ ६४ भा) । २ गोदूध के झाकारवाली गृहवर्ति (पंचव २) । 'मुहिय न' [मुहित] गौ के मुख की झाकारवाली बाल (छाया १, १८) । 'सहस पुं' [सहस] तीन वर्ष का बैल (सम १, ५, २) । 'रोयग स्त्री' [रोयन] हवनम-क्याव पीत-वर्ण श्रम्य-विशेष, गोमस्तकवित्त शुक्र पित्त (सुर १, १३७) । स्त्री- 'गा (पचा ४) । 'लेहणिया स्त्री' [लेहनिश] ऊपर भूमि (निष् ३) । 'लोम पुं' [लोम] १ गौ का राम मार । २ द्वितीय जन्तु विशेष (जोव १) । 'वद पुं' [पति] १ दूध । २ दूध । ३ राजा (सुपा १४२) । ४ महादेव । ५ बैल (हे १, २११) । 'पदय पुं' [प्रतिविक] गौमी की पर्याय का भुजुरण बल्लेवाला एक प्रकार का लपटरी (छाया १, १५) । 'वय देवो' [पय (राज)] । 'बाह पुं' [बाह] गौमी का बाग्रा (हे १, १४६) । 'वय देवो' [वय (मीघ)] । 'सारा स्त्री' [शाल]

गौमी का बाग्रा (निष् ८) । 'हण न' [धन] गौमी का समूह (पा ६०६, सुर १, ४६) । गोअ देखो गोय = गोपय । ऊ. गोअणिज (माट—मालती १२१) । गोअंट पुं [दे] १ गौ का चरण । २ स्थल-शृङ्गाट, स्थल में होनेवाला शृङ्गाट या पिछाटा का पेट (दे २, ६८) । गोअग्ग स्त्री [दे] तप्या, दुहला (दे २, ६९) । गोअह स्त्री [दे] दूध बेचनेवाली स्त्री (दे २, ६८) । गोअर पुं [गोचर] छायालय (सत ५, २, २) । गोअलिणी स्त्री [गोपालिनी] ग्वालिनी, जो गयलभूमिभोजयन्मि जुहवाहोय मट्टेण । पुत्रियगोमलिणीए मल्लएणितुव निम्नविभो' (वर्गवि ५५) । गोआ स्त्री [गोदा] नदी-विशेष, गोदावरी नदी, 'गोमणयलच्छुदुगन्वादिणा वरिससी-हेख' (पा १७५) । गोआ स्त्री [दे] मयरी, बलरौ, छोटा चढा (दे २, ८२) । गोआअरी स्त्री [गोदावरी] नदी विशेष, गोदावरी (पा ३१५) । गोआलिआ स्त्री [दे] मयरी खुद में उलान होनेवाला क्रीट विशेष (दे २, ८८) । गोआवरी देखो गोआअरी (हे २, १७५) । गोउर न [गोपुर] मयरा या किले का दरवाजा (सम १२७, सुर १, ५६) । गोउलिख वि [गोमुलिक] गायन पर निबुल पुण्य, गोमुल-रखन (दुप्र ३१) । गोउली स्त्री [दे] मयरी, बीर (हे २, ६३) । गोह देखो कौह = कीह (इक) । गोह न [दे] बागल बन, जंगल (दे २, ६४) । गोही स्त्री [दे] मयरी, बीर (दे २, ६३) । गोहल देखो गुहल (अवि) । गोदीण न [दे] मयूर पित्त, मोर का पित्त (दे २, ६७) । गोक पुं [गुरुक] पाद-मन्त्रि, पैर की गोट (पह १, ४) । गोकण पुं [गोकार्ण] १ गौ का बाग । गोअर २ दस पुरवाता चतुपद विशेष

(पह १, १) । ३ एक धनद्वीप, द्वीप-विशेष । ४ गोकर्ण-द्वीप का निवासो मनुष्य (डा ४, २) । गोकिलिज देखो गो-कलिजय (सम १४०) । गोकसुरय पुं [गोक्षुरक] एक मीषवि का नाम, मोखर (स २५६) । गोचय पुं [दे] शानन-रहद, कोडा, बाहुक (दे २, ६७) । गोच्छ देखो मुच्छ (सि ६, ४७, पा ५३२) । गोच्छअ पुं पुन [गोच्छक] पाप वर्ण गोच्छम } साक रने का बल-सहद (कस, पह २, ५) । गोच्छद न [दे] गोमय, गो-विष्टा (दुचक ३४) । गोच्छा स्त्री [दे] मयरी, बीर (दे २, ६५) । गोच्छिय देखो मुच्छिय (मीघ, छाया १, १) । गोद्रद देखो गोच्छद (माट—मुच्छ ४१) । गोजलोया स्त्री [गोजलीरा] धुद क्रीट विशेष, द्वितीय जन्तु-विशेष (पह १, ५) । गोज पुं [दे] १ शारीरिक शोषवाला बैल (सुपा २८१) । २ गलेवाला, गवैया, गायन, वीणावसनवाला, गौय मन्त्रद्वन्द्वधोर्गोह । बैदिकखेण सहस्रितं, जयसहालायण व मय' (पत्रम ८५, १६) । गोद पुं [गोष्ट] गोवाडा, गौमी के रहने का स्थान (महा, पत्रम १०३, ४०; पा ४४७) । गोदामाहिल पुं [गोदामाहिल] कर्म-गुहलो की जीव प्रदेरा से प्रपद मालनेवाला एक वैवासास झाकां (डा ७) । गोह देखो गोहरी (भावम) । गोहिल पुं [गोहिक] एष मरहली के गोहिलग } सदस्य, मित्र, समान वयस दाहल गोहिलय } (छाया १, १९—पत्र २०५, पत्रा १, २—पत्र ३७) । गोहरी स्त्री [गोहरी] १ मरहली, समान वय-वालो की सभा (भाष, दधनि १; छाया १, १६) । २ यासलाय, परापरों (दुप्र) । गोह पुं [गोह] १ देह विशेष (स २८६) । २ वि. गोह देह का निवासी (पह १, १) । गोह पुं [दे] गोद, धार, वि (माट—मुच्छ १५८) । गोह स्त्री [गोह] नदी विशेष, गोदावरी (पा १८, १०५) ।

गोडी स्त्री [गोडी] गुड की बनी हुई मरिच,
गुड का दाल (बृह २)।

गोडू वि [गोडू] १ गुड का बना हुआ। २
मधुर, मीठा (भा १८, ६)।

गोडू [दे] देखो गोड (मृच्छ १२०)।

गोण पुं [दे] १ साडी (दे २, १०४)। २
बैल, घुघण, बसोवर् (दे २, १०४, कुमा,
हे २, १७४, मुपा ४४७, श्रीप; दस ५, १;
भावा २, ३, ३. उप ६०४, विपा १, १)।

*इत्र वि [यन्] गाय वाला, गोमी का
मालिक (मुपा ५५७)। *वइ पुं [पति]
गोमी का मालिक, गौ यामा (मुपा ४५०)।

गोण (श्री) पुन [गो] बैल, 'गाणो, गाणो'
(प्राह ८८)।

गोण वि [गोण] १ गुण निपटन, गुण-मुन,
मयायं (विपा १, २, श्रीप)। २ अप्रमान,
अमुच्य (भीष)।

गोणोगा स्त्री [गयाङ्गना] गैया, गाय (मुपा
४६५)।

गोणत्त पुं पुन [दे] बैल का बीजार रखने
गोणत्तय } का यंत्र (उप ३१०; स ४४४)।

गोणम पुं [गोनम्] सर्प की एक जाति,
पण्य-रहित साँप की एक जाति (पह १,
१. उप ७०३)।

गोणा स्त्री [दे] गाय, गैया, गऊ (यद्)।

गोणिका पुं [दे] गो-सदृह, गोमी का सपूत (दे
२, ६७, पात्र)।

गोणिय वि [दे] गोमी का व्यापारी (वप ६)।

गोणी स्त्री [दे] गाय, गैया (शेष २३ भा)।

गोण्य देखो गोण = गोण (कप्य एणा १,
१—वप ३७)।

गोतिहागी स्त्री [दे गोतिहायणी] गोबला,
गौ की बछरी (सं ३२)।

गोत्त पुं [गोत्र] १ पर्वत, पहाड़, (या १४)
२ न. नाम, अभिमान, भावना (मे १५,
१०)। ३ बर्न-विशेष, जिससे प्रमाण से

प्राणी उच्च या नीच जाति का बटना
है (उप २ ४)। ४ पुन. नौत वस कुल,
जाति, 'यत्त मूलगोता वसएता' (उप ७)।

*कमलिण न [ममलिण] नाम-विपर्यय,
एक से बने दूसरे नाम का उच्चारण
(मे ११, १७)। *दियया स्त्री [दियया]

कुन-देवी (या १४)। *कुस्सिया स्त्री
[स्पर्सिया] बल्लो-विशेष (पह १)।

गोत्त पुन [गोत्र] १ पूर्वज पुण्य से नाम से
प्रसिद्ध बपत्य—संतति (संदि ४६, गुज्ज
१०, १६)। २ वि. वाणी का रसक (मृष
१, १३, ६)।

गोत्ति वि [गोत्रिन्] समान गोत्रवाला,
कुटुम्बी, स्वजन (मुपा १०६)।

गोत्ति देखो गुत्ति (स २४२)।

गोत्तिअ वि [गोत्रिक] समान गोत्रवाला,
स्वजन, भाई-बंद (या ७७)।

गोत्थुम् देखो गोथुम् (इक)।

गोत्थूमा देखो गोथूमा (इक)।

गोथुम्, पु [गोत्थूप] १ ग्याज्वर जिन-
गोथूम् } देव का प्रथम-शिव्य (सम १५२,
पि २०८)। २ बेलनर नागदाज का एक

आवास पर्वत (सम ६६)। ३ न. मातृपोतर
पर्वत का एक शिखर (शेष)। ४ नौदुम-
रल (सम, १५८)।

गोथूमा स्त्री [गोत्थूमा] १ कानो-विशेष,
भंजन पर्वत पर की एक वारी (उप ३, ३)।

२ शक्रेन्द्र की एक अग्रमहिषी की शय्यपत्नी
(उप ४, २)।

गोदा स्त्री [दे गोदा] नदी-विशेष, गोदावरी
(पह ७, गा ६५५)।

गोध पुं [गोध] १ म्लेच्छ देश। ३ गोप
देश का निवासी मनुष्य (रात्र)।

गोधा स्त्री [गोधा] गौह, ह्या से चलनेवाली
एक साँप की जाति (पह १, १; एणा
१, ८)।

गोन्न देखो गोण (एणा १, १६—वप
२००)।

गोपुर देखो गोउर (उप ६, धमि १८२)।

गोप्पहेलिया स्त्री [गोप्रहेलिस्] गोमी की
बत्ती की जगह (भावा २, १०, २)।

गोफणा स्त्री [दे] गोघन, कपूर केने का
घन्त-विशेष (रात्र)।

गोमहा स्त्री [दे] रम्या, पुञ्जा (दे २, ६६)।

गोमाअ पुं [गोमाअ] गुणन, मिश्रा, रूद्र
गोमाअ १. यम—मृच्छ ३२०, पि १६५,
एणा १, ४. म २२६, पात्र)।

गोमाणसिया स्त्री [गोमानसिया] शय्या-
कार स्थान-विशेष (जीव ३)।

गोमाणसी स्त्री [गोमानसी] ऊपर देखो
(जीव ३)।

गोमि } वि [गोमिन्] जिसके पास घनेक
गोमिअ } गौ हों वह, (पह, निवृ २)।

गोमिअ देखो गोमिअ (रात्र)।

गोमिअ, [दे] देखो गोमा (पह २१२)।

गोमिक (मा) [गोरवित] संमानित (प्राह
१०१)।

गोमा स्त्री [दे] बल्लसूत, श्रीगिष जन्तु-
विशेष (जी १६)।

गोमुह पुं [गोमुय] १ यज्ञ-विशेष, भगवान्
अपमनेय का शासन दस (सति ७)। २ एक
अन्तर्द्विप, द्वीप विशेष। ३ गोमुप-द्वीप का

निवासी मनुष्य (उप ४, २)। ४ न. उपनेपन
(दे २, ६८)।

गोमुही स्त्री [गोमुही] बाघ-विशेष, (पह,
राय)।

गोमुही [गोमुही] बाघ-विशेष (राय ४६,
पह १२८)।

गोमेअ पुं पुं [गोमेअ] दल की एक जाति,
गोमेअ } राहुरल (मुमा ७०; उप २)।

गोमेह पुं [गोमेह] १ यज्ञ विशेष, भगवान्
नेमिनाथ का शासन-देव (सं ८)। २ यज्ञ-
विशेष, जिसमें गौ का बप किया जाता है

(पउम ११, ४१)।

गोमिअ पुं [गोमिअ] कौतवान, मगर-
रत्न (पह १, २)।

गोम्ही देखो गोमी (रात्र)।

गोय देखो गोस (सम ३३, कम्प १)।

*वादि [वादिन्] घने दल को उभय
माननेवाला, वंशधरिणी (भावा)।

गोय म [दे] उदुम्बर—द्रवर वगैरह का फल
(भावा ६)।

गोय न [गोत्र] मोन, बार-संयम (मृष १,
१४, २०)। *वाय उं [वादि] मोन-गुणक
बचन (मृष १, ६, २७)।

गोयम पुं [गोनम] श्रीप-विशेष (उप ७)।
२ दौघ-वेन (दीप)। ३ न. गोत्र विशेष
(कप्य उपा ७)।

गोयम वि [गौतम] १ गोतम गोत्र में उत्पन्न, गोतम गोत्रीय, 'जे गोयमा ते सवविहा पएउत्ता' (ठा ७; भग ज १) । २ पुं. भगवान् महावीर का प्रधान-शिष्य (अग १४, ७, उवा) । ३ इस नाम का एक राजकुमार, राजा अश्वमेधवृत्ति का एक पुत्र, जो भगवान् जैमिनाय के पास दीक्षा लेकर शत्रुञ्जय पर्वतपर मुक्त हुआ था (सन्त २) । ४ एक मनुष्य जाति, जो बैल द्वारा मिला मँग कर अपना निर्वाह चलाती है (छाया १, १४) । ५ एक ब्राह्मण (उप ६१७) । ६ क्षीप विशेष (सम ८०, उप ५६७ टी) । 'केसिञ्ज न [केशरीय] 'उत्तरावयम' सूत्र का एक आश्रय, जिसमें गोयम स्वामी क्षीर केशिपुत्रि का संवाद है (उत्तर २१) । 'संशुक्त वि [समोत्र] गोतम गोत्रीय (मम, प्रायम) । 'सामि पु' [स्वामिन्] भगवान् महावीर के सर्व प्रधान शिष्य का नाम (विपा १, १—पत्र २) ।

गोयमज्जिया १) क्षी [गीतमार्जिका] कैमपुनि-गोयमेज्जिया १) गण की एक शाखा (राज, वप्प) ।

गोयम पु [गोचर] १ गोचर की चरने की जगह, 'एो गोयदे एो वणगाणिमाण' (वह ३) । २ विषय, 'भट्टरहोमरं एमह' सपुत्र' (गउठ) । ३ इन्द्रिय का विषय, प्रत्यक्ष, 'इयं राया उज्जाए तं बत्तो नयणगोमरं सव' (हुमा) । ४ निरादम, निरा के लिए भ्रमण (सोच ६६ भा; दस ५, १) । ५ निरा, माधुचरी (उप २०४) । ६ वि, भूमि में पिचरनेवाला, 'विम्वणगोयराए पुलिवाए' (गउठ) । 'चरिआ क्षी [चर्या] निरा के लिए भ्रमण (उप १३७ टी; पत्र ४, ३) । 'भूमि क्षी [भूमि] १ वसुमी की चरने की जगह (दे ३, ४०) । २ निरा-भ्रमण की जगह (ठा १) । 'वत्ति वि [वत्तिन्] निरा में लिए भ्रमण करनेवाला (गा २०४) । गोयरी क्षी [गोचरी] निरा, माधुचरी (गुपा २६६) ।

गोर पुं [गौर] १ शुक्ल-वर्ण, सफेद रंग । २ वि. गौर वर्णवाला, शुक्ल (गउठ, हुमा) । ३ धारदार, निर्मल (छाया १, ८) । ४ र पु

['र] गर्व की एक जाति (पएण १) । 'गिरि पुं [गिरि] पर्वत विशेष, हिमालय (निबू १) । 'मिग पुं [मृग] १ हरिण की एक जाति । २ न. उस हरिण के चमड़े का बना हुआ वस्त्र (आचा २, ५, १) । गोरअ देखो गोरव (गा ८६) ।

गोरंग वि [गौरङ्ग] गोय शरीरवाला, शुक्ल शरीरवाला (वप्पु) ।

गोरफिडी क्षी [दे] गोवा, गोह, वन्तु-विशेष (दे २, ६८) ।

गोरहित वि [द] सत्त, व्वत्त (पट्) ।

गोरव न [गौरव] १ महत्त्व, उल्लव (प्राहु ३०) । २ आदर, सम्मान, बहुमान (विदे ३४७३, पयल ५३) । ३ ममन, गति (ठा ६) ।

गोरविअ वि [गौरवि] सम्मानित, निस्का आदर किया गया हो वह (दे ४, ५) ।

गोरव्व वि [गौरव्व] गौरव योग्य (धर्मवि ६४; कुप ३७७) ।

गोरस पुन [गोरस] गोरल, दूध, दही, मट्ठा या छाछ बगैरह (छाया १, ८, ठा ४, १) ।

गोरस पु [गोरस] बाली का भ्रान्त्य (तिरि १४०) ।

गोदह पु [दे] हल में जोखने योग्य बैल (आचा २, ४२, ३) ।

गोदा क्षी [दे] काङ्गल-पदवि, हल रेतल । २ चपु, झाल । ३ धीमा, गर्दन या टोक (दे २, १०४) ।

गोरिं देखो गोरी (दे १, ४) ।

गोरिअ न [गोरिक] विद्यापर का नगर विशेष (इक) ।

गोरी क्षी [गोरी] १ शुक्ल वर्ण क्षी (हि ३, २८) । २ पार्वती, शिव-पत्नी (हुमा, गुपा २४०, गा १) । ३ योड्ण की एक क्षी का नाम (अत १५) । ४ इस नाम की एक विद्या-देवी (सति ६) । 'कूट न [कूट] विद्यापर-नगर-विशेष (इक) ।

गोरी क्षी [गोरी] विद्या-विशेष (दूप २, २, २७) ।

गोह्व न [गोह्व] प्रशस्त गाय (धर्मवि ११२) ।

गोह पुं [दे] १ सानी (दे २, ६५) । २

पुरष का निन्दा-गर्भ आमन्त्रण (छाया १, ६) । ३ निपुत्रता, फटोरता (दस ७) ।

गोह पुं [गोह] १ कृष-विशेष, 'कदम्बगोल-णिहकटभारिणिम' (अणु ५८) । २ गोलाकार, वृत्ताकार, मण्डलाकार वस्तु (ठा ४, ४, अतु ५) । ३ गोलक, कुंडा (गुपा २७०) ।

४ गंद, कन्दुक (दूप १, ४) ।

गोह पुंक्षी [दे] गोता, जार से उत्पन्न, कुंड (दस ७, १४) । क्षी 'ली (दस ७, १६) ।

गोहय पुं [गोहय] ऊपर देखो (दूप २, गोहय २; उप पु ६६२ काल) ।

गोहव्यायण न [गोहव्यायन] गोत्र-विशेष (सुज १०, १६) ।

गोह क्षी [दे] गौ, गैया (दे २, १०४; पाय) । २ नदी, कोई भी नदी । ३ सखी, सहेली, सगिनी (दे २, १०४) । गोदावरी नदी (दे २, १०४, गा ५८, १७३, हेका २६७, वि ८५; १६४, पाय, पट्) ।

गोहिय पुं [गोहिय] गृह बनानेवाला (धव ६) ।

गोहिया क्षी [दे] १ गोली, पुटिका (राय, अणु) । २ गंद, लकड़ी के खेलने की एक चीज, 'वीए दासीए धयो गोहियाए निमो' (दालि २) । ३ बड़ा कुएरा, बड़ी, घाली (ठा ८) । 'लिछ, 'लिच्छ न [लिच्छ, 'लिच्छ] १ बुल्ली, बूल्हा । २ भगिन विशेष (ठा ८—पत्र ४१७) ।

गोहियायण न [गोहियायन] गोत्र-विशेष, जो बौद्धिक गोत्र की एक शाखा है । २ वि. गोहियायन गोत्रीय (ठा ७) ।

गोडी क्षी [दे] मपनी या मपानी, मपनिपा, दही मपने की लकड़ी, रही (दे २, ६५) ।

गोह न [दे] विन्दी-पन्न, बुन्दरुन का पन्न (छाया १, ८; हुमा) ।

गोहल पुं [गोहल] १ देश विशेष (प्रायम) । २ न. गोत्र विशेष, जो बारपन गोत्र की शाखा है । ३ वि. गोहय गोत्र में उत्पन्न (ठा ७) ।

गोह्ला क्षी [दे] विन्दी, बल्ली-विशेष, बुन्दरुन की लकड़ (दे २, ६५, प्रायम, पाय) ।

गोय सव [गोयय] १ दिग्गता । २ स्थाण करता । गोयए, गोयेद (गुपा ३४६; महा) ।

कवह. गोविज्जंत (मुपा ३३७; सुर ११, १६२; प्राप् ६५) ।
 गोव } पुं [गोप] गोमों का रखर, ग्वाला,
 गोवअ } गोपाल (उवा ७; दे २, ५८,
 कप्पु) । "जिरि पुं [गिरि] पर्वत विशेषः
 'गोवगिरिसिहसंठियवरमज्झिणाययणुदारमव-
 रटं (मुएण १०८६७) ।
 गोवहुदण देखो गोवहृण (पि २६१) ।
 गोवण न [गोपन] १ ग्वाल २ छिपाना
 (धा २८; उप ५६७ टी) ।
 गोवणिय पुं [गोवर्चन] १ पर्वत-विशेष (पि
 २६१) । २ ग्राम विशेष (पउम २०, ११५) ।
 गोवय वि [गोपक] छिपानेवाला, ढाँगेनेवाला
 (संबीध ३५) ।
 गोवर पुं न [व] गोवर, गोमय, गो-विष्टा (दे
 २, ६६; उप ५६७ टी) ।
 गोवर पुं [गोवर] १ माप देश का एक गाँव,
 गोम-स्वामी की जन्मभूमि (घाक) । २
 वणिग्-विशेष (उप ५६७ टी) ।
 गोवल न [गोवल] १ गोपन, मोतुल, गोमो
 का समूह, 'रिति गोवलाई' (मुपा ५३३) ।
 २ गोप-विशेष (मुज १०) ।
 गोवलायण देखो गोवहृण (मुज १०) ।
 गोवलिय पुं [गोवलिक] ग्वाला, गहीर
 (मुपा ५३३) ।
 गोवल पुन [गोवल] गोप-विशेष (मुज १०,
 १६ टी) ।
 गोवहृणय वि [गोवहृणय] १ गोवण गोप
 में उलटन । २ न, गोप विशेष (इक) ।
 गोवा पुं [गोपा] गोमों का पालन करने-
 वाला, ग्वाला (प्राभा) ।
 गोवाय क [गोपाय] १ छिपाना । २
 रखण करना । वक. गोवायत (उप ३५७) ।
 गोवाल पुं [गोपाल] गी पालनेवाला, ग्वाला,
 गहीर (दे २, २८) । "गुजरी की [गुजेरी]
 भैरव राजवाली भापा-विशेष, गुजरात के
 गहीरो का गोत (कुमा) ।
 गोवालय पुं [गोपालक] ऊपर देखी (पउम
 ५, ६६) ।

गोवालि पुं [गोपालिन] ग्वाला, गोप,
 गहीर (मुपा ५३२; ५३३) ।
 गोवालिगी की [गोपालिनी] गोप-की, गहीर-
 रिन, ग्वालि (मुपा ५३२) ।
 गोवालिप पुं [गोपालिक] गोप, गहीर,
 ग्वाला (मुपा ५३३) ।
 गोवालिवा की [गोपालिवा] गोप-की, गोपी,
 गहीरिन (एया १, १६) ।
 गोवाली की [गोपाली] वल्लो-विशेष (पएण
 १) ।
 गोविअ वि [दे] भजन्नाक, गहीर कोलनेवाला
 (दे २, ६७) ।
 गोविअ वि [गोपित] १ छिपाया हुआ । २
 रक्षित (सुर १, ८८; निर १, ३) ।
 गोविआ की [गोपिआ] गोपागना, गहीरिन
 (कुमा; गा ११५) ।
 गोविंद पुं [गोपेन्द्र] १ स्वनाम-ख्यात एक
 योग-विषयक ब्रह्मकार । २ एक जैनमुनि
 (पचव, छंदि) ।
 गोविंद पुं [गोविन्द] १ विष्णु, कृष्ण । २
 एक जैन मुनि (ठा १०) । "गिम्भुत्ति की
 [निम्भुत्ति] इस नाम का एक जैन दार्शनिक
 ब्रह्म (निष् ११) ।
 गोविल न [दे] वज्रुक, चोली (दे २, ६५) ।
 गोवी की [दे] बाला; कन्या, कुमारी, लकड़ी
 (दे २, ६६) ।
 गोवी की [गोपी] गोपागना, गहीरिन (मुपा
 ५३५) ।
 गोव्वर [दे] देखो गोवर (उप ५६१, ५६७
 टी) ।
 गोस पुं [दे] प्रमात, सुबह, प्रातःकाल (दे
 २, ६६; सण. गउठ. वव ६, पंचव २,
 पाप्प. पड. पव ५) ।
 गोसंधिय पुं [गोसंधित] गोपाल, गहीर
 (राज) ।
 गोसम्मा पुन [दे गोसमं] प्रातःकाल, प्रमात
 (दे २, ६६; पाप्प) ।

गोसण वि [दे] मूख, वेवकूक (दे २, ६७;
 पड.) ।
 गोसाल } पुं. व. [गोशाल] १ देश-विशेष
 गोसाल्य } (पउम ६८, ६५) । २ पुं. भगवान्
 महावीर का एक शिष्य, जिसने पीछे अपना
 धार्मिक मत चलाया था (मग १५) ।
 गोसाविआ की [दे] १ देरमा, बारांगना
 (मुच्च ५५) । २ मूल-जननी (नाट—मुच्च
 ७०) ।
 गोसिय वि [दे] प्रमातिक, प्रातःकाल-सङ्गो
 (सण) ।
 गोसीस न [गोशीष] बन्धन-विशेष, सुगन्धित
 काष्ठ-विशेष (पएण २, ५, ५. कप्प, सुर ५,
 १५, सण) ।
 गोह पुं [दे] १ गाँव का मुखिया (दे २, ८६) ।
 २ भट, सुपट, मोडा (दे २, ८६; महा) ।
 ३ बार, उपपति (उप ५२१५) । ४ सिपाही,
 पुलिस (उप ५३३५) । ५ दुहव, ब्राह्मनी,
 मनुष्य (मुच्च ५७) ।
 गोह पुं [दे] कोतवाल यादि क्रूर मनुष्य (सुल
 ३, ६) । २ वि. प्रादीए, प्राम्य, गँवार या
 गँवार, देहाती (सुल २, १३) ।
 गोह देखो गोधा (दे २, ७१; मग ८, ३) ।
 गोहिय की [गोधिका] १ गोधा, गोह, जल-
 जन्तु-विशेष (सुर १०, १८६) । २ सप की
 एक जाति (वीव २) । ३ बाघ-विशेष
 (मणु) ।
 गोहुर न [दे] गोमय, गो-विष्टा (दे २, ६६) ।
 गोहूम पुं [गोधूम] भस्म-विशेष, गेहूँ (कस) ।
 गोहेर } पुं [गोवेर] जन्तु-विशेष, साँप
 गोहेरय } की तरह का जानवर (पउम ५८,
 ६२; ६१) ।
 "गह देखो गह = भट (गउठ) ।
 "गहण देखो गहण = ग्रहण (ममि ५६) ।
 "गहण देखो गहण = ग्रहण (कुमा) ।

घ

घ पुं [घ] कएठ स्थानीय व्यञ्जन बर्ण-विशेष (प्रायः प्राप्ता) ।
 घअअद न [दि] घुकर, दण्ड (पङ्) ।
 घई (अप) घ. पाद-पूरक और अनर्थक शब्दय (हे ४, ४२४, कुमा) ।
 घओअ } पु [घृतोद] १ समुद्र-विशेष, घओद } जिसका पानी घी के तुल्य स्वादिष्ट है (इक. ठा ७) । २ मेघ विशेष (तिरय) ३ वि जिसका पानी घी के समान मधुर हो ऐसा जलाराम । औ. °आ, °दा (जोष १, राय) ।
 घघ पुं [दि] गृह मकान, घर (दे २, १०५) । °साला औ [°शाला] अनाथ मष्टप, मिश्रण का प्राथम स्थान (मोष ६३६, वच ७, आचा) ।
 घघल (अप) न [भ्रष्ट] १ भ्रमण, कलह (हे ४, ४२२) । २ मोह, धराहट (कुमा) ।
 घघलिअ वि [दि] घबघाया हुआ (खे ६, घमि ११४) ।
 घघोर वि [दि] भ्रमण शील, मटकनेवाला (दे २, १०६) ।
 घघिय पुं [दि] तेली, तेल निकालनेवाला, गुजराती में घाची (मुर १६, १६०) ।
 घट पुं [घट] अट्टा, कात्थ निर्मित वाद्य-विशेष (प्राय ८६ भा) । औ. °टा (हे १, १६५, राम) ।
 घटिय पु [घटिक] बाएडाल का कुल-देवता, मय विशेष (इह १) ।
 घटिय पुं [घाटिक] अट्टा बनानेवाला (अप) ।
 घटिया औ [घटिका] १ छोटी घट्टे (प्राप्ता) । २ किण्वी, डुबुर (मुर १, २४८, ज २) । ३ आभरण विशेष (एग्या १, ६) ।
 घंस पुं [घर्ष] घर्षण, घिसन (एग्या १, १—पत्र ६१) ।
 घसन ङ [घर्षण] घिसन, रगड़ (स ५७) ।
 घसिय वि [घर्षित] घिसा हुआ, रगड़ा हुआ (मोष) ।
 घववृण देगो घे ।

घघर न [दि] घंघरा, घघरा, लहंगा, ब्रियो के पहनेने का एक वस्त्र (दे २, १०७) ।
 घघर पुं [घर्घर] १ शब्द विशेष (गा०००) । २ खोखला गला, घाघरगलमि (दे ६, १७) । ३ खोखला आवाज, 'रसमाछी घघरेण-सहेण' (मुर २, ११२) । ४ न. श्याङल, शैवाल या सेवार बगैर का समूह (गउर) ।
 घट सक [घट्ट] १ स्पर्श करना, छूना । २ हिलाना, चबाना । ३ सघर्ष करना । ४ ब्राह्मण करना । घट्ट (मुपा ११६) । वक्र-घट्ट (ठा ७) । ककक. घट्टिजव (दे २, ७) ।
 घट्ट सक [घट्टय] हिलाना । संक. घट्टिवाण (दस ५, १, ३०) ।
 घट्ट सक [अट्ट] अट्ट होना । घट्ट (पङ्) ।
 घट्ट पुं [दि] १ कुम्भरग से रंगा हुआ वस्त्र । २ नदी का घाट । ३ वेणु, बेंग, बास (दे २, १११) ।
 घट्ट पुं [घट्ट] ! शर्कराप्रधानामक नरक भूमि का एक नरकावास (इक) । २ पुंन, जमाव (था २८) । ३ समूह, जल्पा 'हयघट्टा' (मुपा २५६) । ४ वि. गाढा, निविड, 'भूल बटकरहूमो' (मुपा १११) ।
 घट्टसुअ न [दि. घट्टसंशुक्र] बल विशेष, बूटदार कौमुम्भ बल (हुमा) ।
 घट्टन वि [घट्टन] बालाक, हिला देनेवाला (पिं ६३३) ।
 घट्टन न [घट्टन] १ छूना, स्पर्श करना । २ बलाना, हिलाना (दस ५) ।
 घट्टणग पुं [घट्टनक] पात्रबगैर की विकला करने के लिए उस पर घिसा जाता एक प्रकार का पत्थर (इह ३) ।
 घट्टणया } औ [घट्टना] १ आघात, घाह-घट्टणा } न (घोष. ठा ५५) । २ चलन, हिलन (घोष ६) । ३ विचार । ४ वृद्धा (इह ४) । ५ नदयना, पीडा (आचा) । ६ स्पर्श, छूना (पण १६) ।
 घट्टय देसो घट्ट (महा) ।
 घट्टिय वि [घट्टिय] १ ब्राह्मण, सघर्ष-शुक्र

(जं १) । २ प्रेरित, चातित (पण १, ३) । ३ स्पष्ट, धृष्टा हुमा (ज १, राम) ।
 घट्ट वि [घट्ट] १ घिसा हुआ (हे २, १७४; औप. सम १३७) ।
 घड सक [घट्ट] १ झेठा करना । २ करना, बनाना । अक. परिश्रम करना । ४ संगत होना, मिलना । घड (हे १, १६५) । वक्र घडव, घडमाण (सि १, ५; निवृ १) । क. घडियठर (एग्या १, १—पत्र ६०) ।
 घड सक [घट्टय] १ मिलाना, जोड़ना, समुक्त करना । २ बनाना, निर्माण करना । ३ सचालन करना । घडै (हे ४, ५०) । भवि, घडिस्तामि (स ३६४) । वक्र. घडव (मुपा २५५) । संक. घडिअ (दस ५, १) ।
 घड पुं [घट] घडा, कुम्भ, कलश (हे १, १६५) । °कार पुं [°कार] कुम्भकार, मिट्टी का बरतन बनानेवाला (अप पु ४१५) । °बेडिया स्त्री [°बेडिया] पानी भरनेवाली दासी, पनहारिन (मुपा ४६०) । °दास पुं [°दास] पानी भरनेवाला मीकर, पनहारण आचा । °दासी स्त्री [°दासी] पानी भरने-वाली, पनहारिणी (सू १, १५) ।
 घड वि [दि] घड़ीकल, बनाया हुआ (पङ्) ।
 घडइअ वि [दि] सकुचित (पङ्) ।
 घडग पुं [घटक] छोटा घडा (ज २, अणु) ।
 घटगार देसो घड-नार (वच १) ।
 घडचडग पुं [घटचटक] एक हिता-अपान संश्रय (मोह १००) ।
 घडण स्त्रीन [घटन] १ पटना, प्रसंग (वि १३) । २ श्रव्य, संवष (वेदव ५१७) ।
 घडण न [घटन] १ घटना या गड़ना, इति, निपाण (स ७, ७१) । २ चलन, झेठा, परिश्रम (अनु ४. पण २, १) ।
 घडणा औ [घटना] नितान, मेल, संगोप (सू १, १, १) ।
 घडय देसो घडग (जं २) ।
 घडा औ [घटा] घट्ट, जल्पा (गउर) ।

घडाघडी छो [दे] गोठी, समा, मएल्ली (पड़)।

घडाव सक [घटय] १ बनाना। २ बनवाना। ३ संयुक्त करना, मिलाना। घडावद (हे ४, २४०)। संक. घडाविचा (भावय)।

घडि वि [घटिन्] घटवाला (अणु १४४)। घडि छो [घटी] देखो घडिआ = घटिका (प्राय ५५)। 'मंसय, मंसयन [मात्रक] छोटे घडे के आकार का पात्र-विशेष (राज, बस)। 'जत न [घयन्] रेंट रेंट, पानी निकालने का कत (पात्र)।

घडिअ वि [घटित] १ हन, निमित्त (पात्र)। २ सतक संबद्ध, छिट, मिला हुआ (पात्र, स १६४, बीप, महा)।

घडिअघडा छो [दे] गोठी, मएल्ली (दे २, १०५)।

घडिआ छो [घटिना] १ छोटा घडा, कत्तरी (गा ४८०, धा २७)। २ घडी, मुहूर्त (धुपा १०८)। ३ समय बतानेवाला यन्त्र, घडी-यन्त्र, घडी (पात्र)। 'लय न [लय] घण्टागृह, घण्टा बजाने का स्थान (सुर ७, १७)।

घडिआ १ छो [दे] गोठी, मएल्ली (पड़)। घडी १ [दे २, १०५)।

घडिआ देखो घडिआ (सूय १, ४, २, १४)। घडी छो [घटी] देखा घडिआ (स २३८, प्राह)।

घडुक्कय पुं [घटोरकय] भीम का पुत्र (हे ४, २६६)।

घडुडभय वि [घटोडभय] १ घट से उन्नत। २ पुं, श्रुति-विशेष, घण्टय मुनि (प्राह)।

घट ॥ [दे] घूटा, टीला, नूप (पात्र)।

घग पुं [घन] १ भेय, वाहन (सुर १३, ४५; प्राय ७२)। २ हथौडा (दे ६, ११)। ३ गणित-विशेष, तीन अंशों का पूरण करना, जैसे दो का पन घाट होता है (ठा १०—पत्र ४१६; विसे ३२४०)। ४ वाज का शब्द-विशेष, वायुताल वगैरह (ठा २, ३)। ५ वि, हड, ठोस (भीप)। ६ अविचल, निश्चिद, साध (कुमा, भीप)। ७ गाढ, प्रगाढ़, 'जाया पीई घणा ठेवि' (उप

५६७ टी)। ८ घटिषय, अधिक, अत्यन्त (राय)। ९ कठिन, सरलता-रहित, स्थान (जो ७; ठा ३, ४)। १० न. देवविमान-विशेष (यम ३७)। ११ पिण्ड (सूय १, १, १)। १२ वाज-विशेष (सुज १२)। 'उदहि देखो घणोदहि (भा)। 'णिचिय वि [निचित] अत्यन्त निश्चिद (भा ७, ८; भीप)। 'तय न [तपस्] सपरचर्या-विशेष (उत्त ३)। 'ध्व पुं [ध्वन्] १ इस नाम का एक अश्वशैप। २ उमका निचानो मनुय (ठा ४, २)। 'गाल न [गाल] वेताव्य पर्यंत पर स्थित विद्यावर-नार-विशेष (इक)। 'सुदंग पुं [सुदङ्ग] भेय की तरह गम्भीर भावावधाना वाद्य विशेष (भीप)। 'रह पुं [रय] एक जैन मुनि (पल्ल २०; १६)। 'वाउ पुं [वायु] स्थान वायु, जो तरक-शुक्ति के नीचे है (उत्त ३६)। 'वाय पुं [वात] देखो 'बाउ (भा, जो ७)। 'वाहण पुं [वाहन] विद्यापरी के राजा का नाम (पत्र ५, ७७)। 'विजुआ छो [विजुवा] देवी-विशेष, एक दिक्कुमारी देवी का नाम (इक)। 'समय पुं [समय] वर्षा-नाल, वर्षा श्रुत (कुमा पात्र)।

घणगुल पुं [घनगुल] परिमाण-विशेष, सूची से घुना हुआ प्रतरागुल (अणु १५८)।

घणसंमद पुं [घनसंमद] व्योतिष-प्रसिद्ध योग विशेष, जिसमें बज्र या सूर्य ग्रह बसवा नक्षत्र के बीच में होकर जाता है वह योग (सुज १२—पत्र २३३)।

घणघमाइय न [घनघनायित] रय की घनघनाहट या गम्भीराहट, अत्यन्त शब्द-विशेष (पहल १, ३)।

घगवाहि पुं [दे] इन्द्र, स्वर्गपति (दे २, १०७)।

घणसार पुं [घनसार] कपूर (पात्र, भवि)। 'मंजरी छो [मञ्जरी] एक छोटी का नाम (रूपू)।

घणा छो [घना] घरण्ड की एक घन-महिषी, इन्द्राणी-विशेष (आपा २, १—पत्र २५१)।

घणा छो [घृणा] घृणा, घृणुषा, गर्हा (प्राय)। घणिय न [घनित] गर्वना, गर्वन (सुज २०)।

घणोदहि पुं [घनोदधि] पत्थर की तरह कठिन जल-समूह (सम ३७)। 'वचन न [वलय] वसपाकार कठिन जल-समूह (पण २)।

घण पुं [दे] १ उर, वक्षस्, छाती। २ वि. रक्त, रंगा हुआ (दे २, १०५)। ३ घाल्य, मार डालने योग्य (सूय क० २-७, पत्र ४१०)।

घत्त सक [क्षिप्] १ फेंकना, डालना। २ प्रेरणा। घत्त (हे ४, १४८)। सह- 'क्रमांशो घत्तिऊण वरसीण' (पत्र ७८, २०; स ३५१)।

घत्त सक [मह] गहण करना। भवि, घत्तिस्स (परी ३३)।

घत्त सक [गवेपय] खोजना, ढूँढना, घटु-संचाल करना। घत्त (हे ४, १८६)। संक. घत्तिअ (कुमा)।

घत्त सक [यन्] यत्न करना, उद्योग करना। घत्त (सं ५६)।

घत्त वि [घात्य] १ मार डालने योग्य। २ जो मारा जा सके (पि २८१, सूय २, ७, ६; ८)।

घत्तय न [क्षेपण] फेंकना (कुमा)। घत्ता छो [घत्ता] छन्द विशेष (विग)।

घत्तार्णद न [घत्तार्णद] छन्द-विशेष (विग)।

घत्ति म [दे] शीघ्र, जल्दी (प्राह ८१)।

घत्तिय वि [क्षिप्] प्रेरित (स २०७)।

घत्तु वि [घातुक] मारनेवाला, घातक, जहाद (उत्त १८, ७)।

घत्य वि [मस्त] गृहीत, पकड़ा हुआ (पिड ११६)।

घत्य वि [मस्त] १ भस्मित, निपटला हुआ, नवस्तित (पत्र ७१, ५१०, पएह १, ४)। २ आक्रान्त, अतिभूत (धुपा ३५२, महा)।

घम्म पुं [घर्म] घाम, गरमी, संताप, घून (दे १, ८७, या ४१४)। २ पसीना, स्वेद (हे ४, ३२७)।

घम्मोही छो [घर्मा] पहली गरम-शुक्की (ठा ७)। घम्मोई छो [दे] ठण विशेष (दे २, १०६)।

घम्मोही छो [दे] १ मय्याद बाल। २ मरक, मन्दर, उन्नत पुत्र-विशेष। ३ घामण्ट नामक-वृक्ष (दे २, ११२)।

घय न [घुन] घी, छत हि १, १२६, सुर १६, ६३। *आसन पुं [अन] जिसका वचन घी की तरह मधुर लगे ऐसा लम्बिमाम् पुष्प (घावम)। *तिरु न [किरु] घी का मेल (धर्म २)। *कट्टिया छी [किट्टिका] घी का मेल (पव ४)। *गोल न [गोल] घी और गुड की बनी हुई एक प्रकार की मिठाई, मिष्टान्न विशेष (मुपा ६३३)। *घट्ट पुं [घट्ट] घी का मेल (शह १)। *पुन्न पु [पुण] घेवर, मिष्टान्न विशेष (उप १४२ टी)। *पूर पु [र] घेवर या पीवर मिष्टान्न विशेष (मुपा ११)। *पूमसिन्त पु [पुमसिन्त] एक जैन मुनि, आर्यसिन्त सूरि का एक शिष्य (भापू १)। *मंड पु [मण्ड] ऊपर का घी, घुवसार (जीव ३)। *मिल्लिया छी [मिल्लिका] घी का कीट, छुर जन्तु-विशेष (जो १६)। *मैह पु [मैघ] घी के तुल्य पानी भरने वाली बरफ (ज ३)। *वर पु [वर] दीप-विशेष (रु)। *सागर पु [सगर] सद्गुरु विशेष (वीन)।

घयण पुं [दे] भाइ, भंडा, भडवा (उप २०४, २७४, पव ४)।

घयपुस पुं [घृतपुष्य] एक जैन महर्षि (कुलक २२)।

घर पुन [गृह] घर, भवन, गृह (हि २, १४४, डा ४, भापू ७५)। *छुटी छी [छुटी] १ घर के बाहर की कोठरी। २ चीब के भीतर की कुटिया (भीप १०५)। ३ छी का शरीर (मडु)। *कोइला छी [कोइला] गृहगोषा छिपकली (पिंड, मुपा ६४०)। *गोली छी [गोला] गृह-गोषा, छिपकली (दे २, १०५)। *गेहिया छी [गोघरा] छिपकली, जन्तु-विशेष (दे २, १६)। *जामाउय पुं [जामाउक] घर-जमाई, सगुर घर में ही होकर रहनेवाला जामात (छाया १, १६)। *य्य पु [य्य] गृही, संभारी, घरवादी (भापू १३१)। *नाम न [नामान्] भवती नाम, वास्तविक नाम (महा)। *वाडय न [पाटन] बनी हुई जमीन वाला घर (वाप)। *वार न [द्वार] घर का दरवाजा (वाप १६५)। *सउयि

पुं [शकुनि] पालतू जानवर (वव २)। *समुदाणिय पुं [समुदानिक] आजीविक मत का अनुयायी साधु (घोप)। *सामि [स्वामिन्] घर का मालिक (हे २, १४४)। *सामिणी छी [स्वामिनी] गृहिणी, छी (पि ६२)। *सुर [शूर] शरीर, शरीर, शूरा गुर, पर में ही बहादुरी दिखानेवाला (दे)।

घरगण न [गृहाङ्गण] घर का शयन, चौक (गा ४४०)।

घरकुडी छी [गृहकुटी] छी-शरीर (सदु ४०)।

घरग देखो घर (जीव ३)।

घरघंट पु [दे] घटक, गौरैया पक्षी (दे २, १०७, पाप)।

घरघरग पुं [दे] गला का मांसपेश-विशेष (ज १)।

घरट्ट पु [घरट्ट] जला, बहो, घन पीसने का पाषाण बजन (गा ८००, सख)।

घरट्ट पुं [दे] घरघट्ट, घरघट्ट, पानी का चखला (मिडु १)।

घरट्टी छी [घरट्टी] शक्ती, शीप (दे ३, १०)।

घरपी देखो घरिणी, 'तं वरघरणि वरणि व' (७२२ टी, भापू ४५)।

घरयद पु [दे] भार्य, दर्वण, शीशा (दे २, १०७)।

घरस पुं [दे] गृहवास] गृहभ्रम, गृहस्थाधन (शह ३)।

घरसन देखो घसण (सख)।

घरति वि [गृहयत्] घरवाला, गृहस्थ (भाह ३५)।

घरिणी छी [गृहणी] घरवाली, छी, भार्य, पत्नी (उप ७२८ टी, से २, ३८, सुर २ १००, कुमा)।

घरिह पु [गृहिन] गृही, संभारी, घरवादी (गा ७३६)।

घरिहा छी [गृहिण] घरवाली, छी, पत्नी (कुमा)।

घरिछी छी [दे गृहिणी] गृहिणी, पत्नी (दे २, १०६)।

घरिस पुं [घरि] घरण, राख (छाया १, १६)।

घरिसण न [घरिण] घरण, राख (सख)। घरोइला छी [दे] गृहगोषा, छिपकली, बिहनु-इया (पि १६८)।

घरोल न [दे] गृह-भोजन विशेष (दे २, १०६)।

घरोलिया } छी [दे] गृहगोषिका, छिपकली; घरोली } गुजराती में 'घरोली' (परह १, १; दे २, १०५)।

घलघल पु [घलघल] 'घल-घल' आवाज, ज्वनि-विशेष (विपा १, ६)।

घल सख [सुप] कैंका, डालना, घालना। पल्ल, पल्लति (मवि, हे ४, ३३४, ४२२)।

घल वि [दे] भनुरक, प्रेमी (दे २, १०५)।

घलय } पु [दे] क्षीयमान जोष की एक घटोष } जाति (मुल ३६, १३०, उत्त ३६, १३०)।

घल्लिअ वि [क्षिअ] कैंका हुमा, डाला हुमा (मवि)।

घल्लिअ वि [दे] घटित, निर्मित, किया हुमा, 'महच्छु' छै लेखिय पल्लिमा सिखल्लमगुल्लुपल्लो' (मुपा २४६)।

घस सख [घुप] १ घिसना, रगड़ना। २ मार्जन करना, सका करना। घमइ (महा, पद) सख. 'घसिऊण मणिएकट्ट भग्गो पणजल्लिओ मउ पण्णा' (सुर ७, १८६)।

घस लीन [दे] १ फटी हुई जमीन, फाटवाली भूमि (भावा २, १०, २)। २ शुषिर भूमि, पोली जमीन। ३ धार भूमि (वस ६, १२)।

घसण देखो घसण (मुपा १७, दे १, १६६)।

घसणिअ वि [दे] घसित, घसेपित (पद)।

घसणी छी [घरणी] सव-रेला, देढ़ी लबीर (स ३५७)।

घसा छी [दे] १ पोली जमीन। २ भूमि-रेला, सरीर (राज)।

घसिय वि [घुट] पिवा हुमा, राखा हुमा (हया ५)।

घसिर वि [असिर] बह-भराज, बहुत लाने-वाला (भीप १३३ ना)।

घसी छी [दे] १ भूमि-राज, सरीर। २ नीचे उतरना, मरठरण (राज)।

घसी छी [दे] जमीन का उगार, डाल (भापा २, १, ५, ५)।

धसुमर वि [चस्मर] खाने की श्रवितवाला, लायुक (प्राक् २८) ।

घाइ वि [घातिन्] घातक, नाशक, हिंसक (गा ४३७, विते १२३८, मग) । 'कम्म न [वर्मन्] कर्म-विशेष, ज्ञानावरण, दर्शना-वरण, मोहनीय और अन्तराय ये चार कर्म (संत) । चउक्क न [चतुष्क] पूर्वोक्त चार कर्म (प्राक्) ।

घाइअ वि [घातिन्] १ मारित, विनाशित (आया १, ८, उक्) । २ धवाया हुआ, जो शक्ति-रूप हुआ हो, सामर्थ्य-रहित, 'करणाई घाइआई जाया ग्रह वेयणा नवा' (सुर ४, २३६) ।

घाइआ की [घातिका] १ विनाश करनेवाली की, मारनेवाली की (ज २) । २ घात, हत्या । ३ घाव करना (सुर १६, १५०) ।

घाइज्जमाण } देखो घाय = हत ।

घाइयवज्ज } घायवज्ज देखो घाय = घातय् ।

घाइरि वि [घायिन्] मूँघनेवाला (गा ८८६) ।

घाइज्जाम वि [हन्तुकाम] मारने की इच्छा-वाला (आया १, १८) ।

घाणत देखो घाय = हत ।

घाइ मक् [अंश] अट्ट होना, च्युत होना । भाइ (पद्) ।

घाइ पुं [घाट] १ मित्रता, सौहार्द (इह आया १, २) । २ मस्तक के नीचे का भाग (आया १, ८—पत्र १३३) ।

घाइयि वि [घाटिक] बयल्य, मित्र (आया १, २ इह) ।

घाइकेय पुं [दे] लरगोश की एक जाति (?) 'जे बुह सेममुहासारज्जुनिवद्धा इह मए यदा । पाउरेयसमया इव भववणा से पलायवि' (उप ७२८ टी) ।

घाय पु [दे] १ पानी, कोइ, तिल-पीठन-यन्त्र (पिठ) । २ पान, बड़ी घादि में एक बार डालने का परितण (मुपा १४) ।

घाय पुन [घ्राण] नाक, नासिका, 'यो घाला' (दुएण १५, उप ६४८ टी, दे २, ७६) । 'रिस पुन [प्रांस] नासिका में होने-वाला रोग-विशेष, पीनस (भोप १८४ भा) ।

घाणिदिय न [घ्राणेन्द्रिय] नासिका, नाक (उत्त २१) ।

घाय सक [हन्] मारना, मार डालना, विनाश करना । वहु. घाएह (उव) । वहु. 'घाएत रिज्जब्बे' (पउम ६०, १७) । 'घायंत' (पउम २४, २६, विते १७६३) । कवहु. 'सि वणे विनाएण चोरसेणावद्वणा पंचहि चोर-सएहि सद्धि मिहं घाइज्जमाणं पासइ' (आया १, १८) । वहु. घाइयवज्ज (पउम ६६, ३४) । घाय सक [घातय्] मरवाना, दूसरे द्वारा मार डालना, विनाश करवाना । वहु. घायमाण (सुम २, १) । क. घाइयव्य (पउम ६६, ३४) ।

घाय पुं [घात] गमन, गति (सुज १, १) ।

घाय पुं [घात] १ प्रहार, चोट, वार (पउम ५६, ३५) । २ नरक (सुम १, ५, १) । ३ हत्या, विनाश, हिंसा (सुम १, १, २) । ४ ससार (सुम १, ७) ।

घायग वि [घातक] मार डालनेवाला, विनाशक (स २६४, सुपा २०७) ।

घायण न [हनुन] १ हत्या, मार, हिंसा (मुपा ३४६, इ २६) । २ वि हिंसक, मार डालनेवाला (स १०८) ।

घायण पुं [द] नायक, गवैया (दे २, १०८, हे २, १७४, पद्) ।

घायणा की [हनुन] मारना, हिंसा, वध (पएह १, १) ।

घायय देखो घायग (विते १७९३, स २६७) ।

घायय पुं [घातक] नरक स्थान विशेष (देवैज २६, ३०) ।

घायवग की [घातना] १ मरवाना, दूसरे द्वारा मारना । २ लूटपाट मचवाना, 'बहुणा-मवायावसाहि ताविया' (विपा १, ३) ।

घार मक् [घारय्] १ विप का फैलना, विप की शरस से फैलना होना । २ मक्, विप से बेचन करना । ३ विप से मारना । कर्म. 'घारिज्जो य तमो वितेण' (स १८६) । हेहु. घारिज्जिउ (स १८६) ।

घार पु [दे] १ प्राकार, तिला, दुर्ग (दे २, १०८) ।

घारत पुं [दे] १ घुड़, घेवर, एक प्रकार की मीठी (दे २, १०८) ।

घारण न [घारण] विप की शरस से होने-वाली बेचनी (मुपा १२४) ।

घारियि वि [घारित] जो विप की शरस से बेचन हुआ हो. 'तत्तमो भोगो । सवत्थ उवुवयागा विसघारियमोगमुत्तोत्ति' (उप ४४२), 'वित्तावा (?) घा) रियस जह वा वणवन्दएकामिणीसंगो' (उवर ६७), 'विसघारिभो सि घत्तुरिभो सि मोहेण किं ठमिभो सि' (मुपा १२४, ४४७) ।

घारिया की [दे] मिष्टान-विशेष, गुजराती में लिखे 'घारे' कहते हैं (भवि) ।

घारी की [दे] १ लुकुनिका, पक्षि-विशेष (दे २, १०७, पाम) । २ छन्द-विशेष (विग) ।

घास सक [घृप्] १ घिसना । २ पीटा करना । कर्म. घासइ (सुम १, १३, १५) ।

घास पुं [घास] दण, पशुभो को खाने का दण (दे २, ८५, धीप) ।

घास पुं [घास] १ कवल, कौर (धीप. उत्त २) । २ बाहार, भोजन (आपा. धीप ३३०) ।

घास पु [घर्ष] घर्षण, रगड़, 'जो मे उवजि-यो इह वरहणसएण चरखघासेण' (मुपा १४७) ।

घाससणा की [घ्रासेपग] बाहार विषय-गुडि घसुडि का पर्यालोचन (भोप ३३८) ।

घि देखो घे । भवि. घिघिइ (विते १०२३) । कर्म. घिपति (प्रासु ४) । सकु घित्तुण (कुमा ७, ५६) । हेहु. घित्तु (मुपा २०६) । क. घित्तव्य (सुर १४, ७७) ।

घिअ न [घृत] घी, घीब, घ्राय (गा २२) ।

घिअ वि [दे] मरिचत, तिरण्डत, भवधोरित (दे २, १०८) ।

घि } पु [घ्रीम] १ गरमो की मृदु, घ्रीम घिसु } वाक, 'मिंसितिरवाने' (धीप ३१० भा. उत्त २, ८, वि ६, १०१) । २ गरमो, भस्मना (सुम १, ४, २) ।

घिट्टि वि [द] कुन्ज, कूबडा (दे २, १०८) ।

घिट्टि वि [घृष्ट] घिसा हुआ, रगड़ा हुआ (मुपा २७८, गा ६२६ भा) ।

घिणा की [घृणा] १ जुटना, मरवि । २ दया, अनुकम्पा (हे १, १२८) ।

घिणिङ वि [घृणायन्] घृणावाला, नर-रत करनेवाला (पिठ १७६) ।

चित्त (प्रप) वि [क्षिप्त] कँका हुआ, डाला हुआ (मवि) ।

चित्तमण वि [प्रहीतुमन्स] ग्रहण करने की इच्छावाला (मुपा २०६) ।

चित्तण } देखो चि ।
चित्तण }

चिस सक [अस्] प्रतना, निगलना, भक्षण करना । चिसद (हे ४, २०४) ।

चिसरा जी [दे] मछनी पकड़ने का जाल-विशेष (विपा १, ८—पत्र ८५) ।

चिसिअ वि [प्रस्त] कवलित, निगला हुआ, मलित (कुमा ७, ४६) ।

चुधुरह पु [दे] डकर डग, डेर, समूह (दे २, १०६) ।

चुट पु [दे] छूट, एक बार पीले योग्य पानी भादि (हे ४, ४२३) ।

चुग्य } (मग) घूँत [चुग्यिका] कपि-वेष्टा,
चुग्यिअ } कटर की चैठा (हे ४, ४२३;
कुमा) ।

चुग्युद्धण न [हे] खेद, तत्कालीक, परिश्रम (दे २, ११०) ।

चुग्युरि पुं [दे] मण्डक, मेक, मेटक (दे २, १०६) ।

चुग्युसुअ वि [दे] नि राक होकर गया हुआ (पद) ।

चुग्युसुसय न [दे] सायक बधन, आराका-वृत्त बाड़ी (दे २, १०६) ।

चुग्युचुघुचक [चुग्युघाय] 'घुट्ट' भावाज करना, घुक् या जन्म का बोलना ।

वज्र. चुग्युचुघुचत (पत्रम १०४, ४६) ।

चुग्युभ्र [चुग्यु] ऊपर देखो । वज्र. चुग्युयत (आमा १, ८—पत्र १३३) ।

चुटग पुं [चुटग] लिपे हुए पात्र की भित्ति का परपर (पिठ १५) ।

चुट्टुगिअ न [दे] पहाड़ की बड़ी धिजा (दे २, ११०) ।

चुट्ट वि [चुट्ट] घोषित, ऊँची भावाज से जाहिर किया हुआ (पत्रम ३, ११८, मवि) ।

चुहुषा मज [गर्ज] गरजना, गर्जना करना । चुहुहर (हे ४, १६४) ।

चुण पुं [चुण] बाण भाव कीट, पुन (छा ४, १. विवे १११६) ।

चुणहुणिआ } श्री [दे] कर्णोपकर्णका,
चुणाहुणी } कानावाणी (दे २, ११०,
महा) ।

चुणिय वि [चुणित] कुणो से बिद, पुन हुआ (रह १) ।

चुण्य देखो घुम्म । वज्र. चुण्यंत (नाट) ।

चुण्णिअ वि [चुणित] १ घुमा हुआ । २ आन मरका हुआ (दे ८, ४६) ।

चुत्तिअ वि [दे] गलेपित, प्र-वेपित, खोखा हुआ (दे २ १०६) ।

घुम } देखो घुम्मा । घुमद (पिग) । वज्र.
घुम } घुमरत (पद १, ३) ।

घुमघुमिय वि [घुमघुमित] १ जिसने 'घुम-घुम' भावाज किया हो वज्र । २ न. 'घुम-घुम' ज्वनि, 'महाराभीरघुमघुमिवरमहल' (मुपा ४०) ।

घुम्मा मज [चुण] घुमना, चक्रकार फिरना । घुम्माद (हे ४, ११७, पद) । वज्र. घुम्मत, घुम्ममाण (हवा ३३, आमा १, ६) । संक घुम्मिकण (महा) ।

घुम्मान न [चुणन] चक्रकार भ्रमण (कुमा) ।

घुम्माविअ वि [चुणित] घुमाया हुआ (वज्रा १२२) ।

घुम्मिय वि [चुणित] घुमा हुआ, चक्र की तरह फिरा हुआ (मुपा ६४) ।

घुम्मिर वि [चुणित] घुमनेवाला, फिरनेवाला, चक्रकार घुमनेवाला (उप पु ६२, गा १८०, पद ८) ।

घुग्य पुं [दे] एक तरह का पथर, जो पात्र बगैर ही बिजना करने के लिए उस पर दिसा जाता है, व्यस्य या चरवी (पिठ) ।

घुरहूर देखो घुरघुर । वज्र. घुरहूरत (आ १२) ।

घुरहूर मज [दे] घुरचना, घुक्चना, गरजना । 'घुरहूरि वज्या' (महा) ।

घुरहार पुं [घुरहार] घुरार भादि की भावाज (फिरत ६) ।

घुरघुर मज [घुरघुराय] घुरघुरना, 'घुर-घुर' भावाज करना, व्याघ्र बगैर ही बोलना । घुरघुरि (पि ३५८) । वज्र. घुरघुरायत (मुपा ४०४) ।

घुरघुरि पुं [दे] मण्डक, मेडक, मेक, वैन (दे २, १०६) ।

घुरघुरु } देखो घुरघुर । घुरघुरद (महा) ।
घुरघुरु } वज्र. घुरघुरमाण (महा) ।

घुल देखो घुम्म । घुलद (हे ४, ११७) ।

घुलिअ जी [दे] हाथी की भावाज, करि-शब्द (पिग) ।

घुलघुल मज [घुलघुलाय] 'घुल घुल' भावाज करना । वज्र. घुलघुलाभाण (पि ३५८) ।

घुलिअ वि [चुणित] चक्रकार घुमा हुआ (कुमा) ।

घुल्य श्री [दे] कीट-विशेष, कीटिग्रम जन्तु की एक जाति (प्राण २) ।

घुसण देखो घुसिण (कुमा) ।

घुमल सक [मध] मयना, विलोडना । घुसलद (हे ४, १२१) ।

घुसलिअ वि [मधित] मयित, विलाडित (कुमा) ।

घुसिण न [घुसण] कुटुम, सुगन्धित इन्ध-विशेष, केसर (हे १, १२८) ।

घुसिणल वि [घुसणन] कुटुमवाला, कुटुम-युक्त (कुमा) ।

घुसिणिअ वि [दे] गलेपित, घनित (दे २, १०६) ।

घुसिम न [दे] घुषण, कुटुम (पद) ।

घुसिरमार न [दे] मयलान, विवाह के मय-सर में स्नान के पहले कमाया जाता मयूरदि का पियान, वटन (दे २, ११०) ।

घुसुल देखो घुसल । वज्र. घुसुलत, घुसुलित (पिठ ४८०, ४७३) ।

घुमुलग न [मयन] विलोडन (पिठ ६०२) ।

घुअ बुभी [घुअ] वज्र, वज्र, पति विशेष (आमा १, ८, पत्रम १०४, ४६) । श्री. घुई (विपा १, ३) । 'रि पुं [रि] नान, नौया, वाधत (तद) ।

घुणाग पुं [घुणाग] स्वामन-व्यात समिधेय-विशेष, माल-विशेष (आमा १) ।

घुरा श्री [दे] १ मया, जीव । २ लवना, खरीर का धारय विशेष, 'गरमाण का घुरामो नयित' (मप २, २, ४५) ।

ये देखो गह = गह । येद (पद) । मवि.

चेच्छ [विस्ते ११२७] । कर्म चेप्यइ (हे ४, २५६) । कवड्. चेप्पंत, चेप्पमाय (गा ५८१, भाग. स १५२) । सङ्क. चेऊण, चयकूण, चेम्कूण, चेत्तुआण, चेत्तुआणं, चेत्तूण, चेत्तूण (नाट—मात्तो ७१, पि ५८४, हे ४, २१०, पि, उव, प्राप्) । हेऊ. चेत्तुं, चेत्तूण (हे ४, २१० पउम, ११८, २४) । क. चेत्तड (हे ४, २१०, प्राप्) ।

चेटर पुन [दे] चेत, चउत्तर मिटान विरोप, 'सा मणइ मियेहेवि ह्य चयचेटरमोयण सम-कुणइ' (मुपा १३) ।

चेक्कूण देखो चे ।

चेत्तमग [वि प्रहीतुमनस] गहणकले केव्वेच्छावाला (पउम १११, १६) ।

चेप्पं } देखो चे ।
चेप्पंत }
चेप्पमाय }

चेटर [दे] देखो चेटर (दे २, १०८) ।

चोट्ट } सक [पा] पीना, पान करना ।

चोट्टय } चोट्टइ (हे ४, १०) । वड्. चोट्टइ-यत (स २५०) । हेऊ. चोट्टिड (कुमा) ।

चोड देखो चुम्म । चोडइ (से ४, १०) ।

चोड } पुळी [चोट, *क] योड, अड,

चोडग } ह्य (दे २, १११, पय ५२,

चोडय } उवा, उप २०८) । २ पु. कायो-

त्तर्ग का एव दोप (पय ५) । *रक्कण पु

[*रक्कण] अयवान, सारिम (उप ५६७ टी) ।

*मीन [मीर] अयवीर-नामक प्रतिवामुदेव,

मुपविरोप (भावम) । *मुद न [मुज]

जैनेतर शास्त्र विरोप (अणु) ।

चोडिय पुं [दे] मित्र, वयस्स (वड् ५) ।

चोडी ली [चोटी] १ चोटी । २ वृद्ध-विरोप,

'दीवलिपोडिचुलकमरसइरादरुनिकएले' (स

२५६) ।

चोण न [चोण] चोडे की नाव (अण) ।

चोणस पुं [चोनस] एक प्रकार का साँप

(पउम ३६, १७) ।

चोणा ली [चोणा] १ नाक, नासिका (पाप) । २ चोडे की नाक । ३ मृगधर का मुख-अद्वेष (से २, ६४, गउड) ।

चोर अक [धुर] निद्रा मे 'धुर-धुर' आवाज करना । चोरति (या ८००) । वड्. चोरंत (स ४२४, उप १०३१ टी) ।

चोर वि [दे] १ नाशित, विनाशित । २ गुं. गीष, पशि विरोप (दे २, ११२) ।

चोर वि [चोर] भयंकर, भयालक, विकट (सुप १, ५, १, सुपा ३४५, धुर २, २४३, प्राप् १३६) । २ निर्दय, निष्ठुर (पाप) ।

चोरि पुं [दे] रत्नम पशु की एक जाति (दे २, १११) ।

चोल देखो चुम्म । चोलइ (हे ४, ११७) । वड्. चोलत (कय, गा ३७१, कुमा) ।

चोल सक [चोलय] १ पिसना, रगडना । २ मिलाया (विसे २०४४, से ४, ५२) ।

चोल न [दे] वपडे से छाना हुआ दही (पमा ३३) ।

चोलन न [चोलन] चर्पण, रगड (विसे २०४४) ।

चोलना ली [चोलना] पत्थर वगैरह का पानी की रगड से मोलाकर होना (स ४७) ।

चोलनड } न [दे] एक प्रकार का खान

चोलनडय } इय्य, दहीबडा (पमा ३३, या २०, सुपा ४६५) ।

चोलानिअ वि [चोलिअ] मिश्रित किया हुआ,

मिलाया हुआ (से ४, ५२) ।

चोलिअ न [दे] १ शिलाफल । २ हठ-कूट,

कनाकार (दे २, ११२) ।

चोलिअ वि [धुणिअ] धुमाया हुआ (पाप) ।

चोलिअ वि [धुणित] अत्यन्त लीन, 'अज-

रक्कमो जविण्णु अईत चोलिअो' (सुव २,

१३) ।

चोलिअ वि [चोलिअ] याम को तरह मोना

हुआ (सुप २, २, ६३) ।

चोलिअ वि [चोलिअ] रगडा हुआ, मंदित

(मीप) ।

चोलिर वि [धुणित] धूमनेवाला, चमकानेवाला (गा ३३८, III ५७८, गउड) ।

चोस सक [चोपय] १ चोपणा करना, ऊँची आवाज से जाहिर करना । २ चोखना, ऊँची आवाज से अध्ययन करना, चोर-चोर से बोल कर पढना या रटना । चोसइ (हे १, २६०, प्राप्) । प्रयो. चोसावेइ (मग) ।

चोस पुं [चोप] १ ऊँची आवाज (स १०७, कुमा, गा ५४) । २ ब्राह्मण-पक्षी, ब्रह्मरो का महला, ब्रह्मरो टोली (हे १, २६०) । ३ गोष्ठ, गोभी का बाडा (ठा २, ४—पन ८६, पाप) । ४ स्वमित्रकुमार देवो की दक्षिण दिशा का द्वार (ठा २, ३) । ५ बदात्त आदि स्वर-विरोप (वय १०) । ६ अनुनाद (अग ६, १) । ७ न देव-विमान विरोप (अम १२, १७) । *सिण पुं [*सेन] सातवें वायुदेव का पूर्वजन्म का धर्म शुक, एक जैन मुनि (पउम २, १७६) ।

चोस न [चोप] लगातार रगड दिना का उपवास (सबोम ५८) ।

चोसण न [चोपण] १ ऊँची आवाज (निह १) । २ चोपणा, छिडोपा निद्राकर जाहिर करना (राय) ।

चोसगा ली [चोपगा] ऊपर देखो (आया १, ११, या ५२४) ।

चोसय न [दे] दर्पण का चरा, दर्पण रखने का उपकरण-विरोप (अट) ।

चोसाडई ली [चोपातरी] लता-विरोप (पएण १७—पन ५३०) ।

चोसाडिया देखो चोसाडई (राय ३१) ।

चोसाडई १ ली [दे] छरर श्रुत में होने-चोसाली } वाली लता-विरोप (दे २, १११;

पएण १—पन ३९) ।

चोसायन न [चोपण] चोपणा, डोड़ी या हुण्णी पिटवा कर जाहिर करना (उप २११ टी) ।

चोसिअ वि [चोपित] जाहिर किया हुआ

(उव) ।

च

च म [च] ग्रथवा, या. 'चसखो विमण्णै' (पच ३, ४४) ।

च पु [च] तालु-स्यातीय व्यञ्जन-वर्ण-विशेष (प्राप. प्राप्ता) ।

च म [च] दन ग्रन्थो मे प्रयुक्त किया जाता ग्रन्थय—१ श्रीर, तथा (कुमा. हे २, २१७) । २ पुन, फिर (कम्म ४, २३; ६६; प्रभु ५) । ३ मचधारण, निरचय (पच १३) । ४ मेद, विशेष (निष् १) । ५ प्रतिशय, प्राप्तिव्य (प्राप्ता, निष् ४) । ६ अनुपति, सम्पत्ति (निष् १) । ७ पाद प्रति, पाद पूरण (निष् १) ।

चआ श्री [चयू] चमडी, लका (पड) । चइअ वि [शक्ति] जो समर्थ हुआ हो, शक्त (सि ६, ४१) ।

चइअ देवो चविअ (पउम १०३, १२६) ।

चइअ वि [त्यक्त] युक्त, परित्यक्त (कुमा ३, ४६) ।

चइअ वि [स्याजित] छुड़वाया हुआ, युक्त कराया हुआ (शोध ११५) ।

चइअ देवो चय = त्यज् ।

चइअ देवो चु ।

चइअ देवो चेइअ (पड) ।

चइअ } देवो चय = त्यज् ।

चइअ देवो चु ।

चइअ देवो चेइअ (हे २, १३, कुमा)

चइअ पु [चित्र] मास-विशेष, चैत्र मास (हे १, १५२) ।

चइआ देवो चु ।

चइआण } देवो चय = त्यज् ।

चइअ (श्री) वि [चकित] भीत, शकित (प्रति २१३) ।

चइअ देवो चु ।

चउ वि [चतुर्] चार, संख्या-विशेष, ४ (उवा. कम्म ४, २, जी ३३) । आलीस छीन [चत्वारिंशत्] चौमासी, ४४ (पि ७५, १६६) । उट्ट न [चाट्टा] चारो दिशा (कुमा) । कट्टी छी [चाट्टी] चौक, चौकठ,

चौलटा, द्वार के चारो ओर का काठ, द्वार का ढांचा (निष् १) । 'कोण वि [कोण] चार कोणवाला, चतुर्ल (छाया १, १३) । 'ग न देवो चउक्क = चतुक्क (द २०) । गइ छी [गति] नरक, तिर्यग्, मनुज्य और देव की योनि (कम्म ४, ६६) । गइअ वि [गतिक्] चारो गति मे प्रमग्न करनेवाला (था ६) । 'गमण न [गमन] चारो दिशाएँ (कम्म) । 'गुण, 'गुण वि [गुण] चौबुना (हे १, १७१, पड) । 'चत्ता ली [चत्वारिंशत्] संख्या विशेष, चौमासी (पम) । 'चरण पु [चरण] चौपाया, चार पैर के जन्तु, पशु (उप ७६८ टी. सुवा ४०६) । 'चूड पु [चूड] विद्याधर वर के एक राजा का नाम (पउम २, ४५) । 'ट्ट देवो 'त्य (हे २, ३३) । 'ट्टाणयडिअ वि [स्यान-पतित] चार प्रकार का (भग) । 'णउइ ली [नवति] संख्या विशेष, चौरानवे, ६४ (पि ४४६) । 'णउय वि [नवद] चौरानवेवा, ६४ वां (पउम १४, १०६) । 'णवइ देवो 'णउइ (सम ६७, था ४४) । 'ण्य (भग) । देवो 'पन्न (पिग) । 'तिस, 'तीस न [त्रिंशत्] चौतीस, ३४ (भा. शोध) । 'तीसइ देवो 'तीसइम (पउम ३४, ११) । 'तीसा ली देवो 'तीस (प्राक्) । 'चालीस वि [चत्वारिंश] चौमासीसवा, ४४ वां (पउम ४४, ६८) । 'चीसइम वि [त्रिंश] १ चौतीसवा ३४ वां (कम्म) । २ न. सोलह दिनों का लगातार उपवास (छाया १, १—पत्र ७२) । 'त्य वि [थ] १ चीपा (हे १, १७१) । २ पुन, उपवास (भग) । 'त्यचउत्य पुन [थचतुर्थ] एक एक उपवास (भग) । 'त्यमच्च न [थमच्च] एक दिन का उपवास (भग) । 'त्यमच्चिय वि [थमच्चिक] जिसने एक उपवास किया हो वह (पह २, १) । 'त्यिमंगल न [थीम-ङ्गल] वक्त्र-र के समागम का चतुर्थ दिन, जिसके बाद कामाता फलेता अपने घर जाता है, चौथरी (भा ६४६ म) । 'थी ली [थी]

१ चौथी । २ सप्रदान-विभक्ति, चतुर्थ विभक्ति (ठा ८) । ३ तिथि-विशेष (सम ६) । 'दंत देवो 'दंत (पज) । 'दस वि न [दशान] संख्या-विशेष, चौदह (नव २, जी ४७) । 'दसपुण्ड्र पु [दशपुण्ड्र] चौदह पूर्व ग्रन्थो का जानवाला मुनि (शोध २) । 'दसम वि. देवो 'इसम (छाया १, १४) । 'दसहा म [दशधा] चौदह प्रकार से (नव ५) । 'दसी ली [दशी] तिथि विशेष, चतुर्दशी (रयण ७१) । 'दत पु [दन्त] पैरावत, हठ का हाथी (कम्म) । 'इस देवो 'दस (भग) । 'इसपुण्ड्र देवो 'दसपुण्ड्र (भग ५, ४) । 'इसम वि [दस] १ चौदहवां, १४ वां (पउम १४, १५८) । २ पुन, लगातार छ दिनों का उपवास (भग) । 'इसी देवो 'दसी (कम्म) । 'इसुत्तरसय वि [दशोत्तरशततम] एक सौ चौदहवां, ११४ वां (पउम ११४, ३५) । 'इह देवो 'दस (पि १६६, ४४३) । 'इही देवो 'दसी (प्राक्) । 'इसि, 'इसिं म [दिश] चारो दिशाओ को तरफ, चारो दिशाओ मे (भग. महा. ठा ४, २) । 'आ म [धा] चार प्रकार मे (उद) । 'नाण न [ज्ञान] मति, श्रुत, स्ववि धीर मन पूर्वव ज्ञान (भा. महा) । 'नाणि वि [ज्ञानि] मति वनेरह चार मानवाला (पुवा ८३, ३२०) । 'पण देवो 'पन्न । 'पणइम वि [पञ्चाश] १ चोवनवां, ५४ वां । २ न लगातार छबीस दिनों का उपवास (छाया २—पत्र २५१) । 'पन्न, 'पन्नास लीन [पञ्चासत्] चौवन, ५४ (पउम २०, १७. सम ७२, कम्म) । 'पन्नासइम वि [पञ्चाशत्तम] चौवनवां, ५४ वां (पउम ५४, ४८) । 'पय देवो 'प्य (छाया १, ८, जी २१) । 'पाल न [पाल] मृगमि देव का प्रहरण-मोस (रय) । 'पइया, 'पइया ली [पदिमा] १ धनु विशेष (पिग) । २ जन्तु-विशेष की एक जाति (जोव २) । 'पइं ली [पदी] देवो 'पइया (पुवा १६०) । 'पप्प देवो 'पन्न (सम ७२) । 'पय पुदी [पद] १

चोपाया प्राणी, पशु (जी ३१)। २ न. ज्योतिष-प्रसिद्ध एक स्थिर करण (विशे ३३०)। *प्यह पुं [पय] चौट्टा, चौपहा, चौपस्ता (प्रवी १००)। *पुउ वि [पुउ] चार पुटवाला, चौसर, चौपट (विपा १, १)। *फाल वि [फाल] देखो *पुउ (छाया १, १—मग ५३)। *व्वाहु वि [वाहु] १ चार हाथवाला। २ पुं. चतुसुंग, श्रीहण (नाट)। *बुअ [बुअ] देखो *वाहु (नाट. मूष १, ३, १)। *अंग पुंन [भङ्ग] चार प्रकार, चार विभाग (छा ४, १)। *अंगी लो [भङ्गी] चार प्रकार, चार विभाग (भग)। *भाइया लो [भागिका] चीसठ पल का एक नाप (मयु)। *मट्टिया लो [मृत्तिका] कपडे के साप कूटे हुई मिट्टी (निबू १८)। *मंड-लान न [मण्डलक] लगन मण्डप, विवाह-मण्डप (मुपा ६३)। *मासिअ देखो चाउ-म्मासिअ (था ४७)। *मुह, *मुह पुं [मुल] १ ब्रह्मा, विपाता (पउम ११, ७२; २८, ४८)। २ वि. चार मुंहवाला, चार द्वारवाला (भीप, सण)। *यग पुंन [यग] चार वस्तुओं का समुदाय (निबू १५)। *यण, *यन्न लोन [पञ्चाशत्] चीवन, पचान सौर चार, ५४ (वि २६५; २७३; सम ७२)। *यार वि [हार] चार दवाजवाला (गृह) (कुमा)। *विह वि [विध] चार प्रकार का (दं ३२; नव ३)। *वीस लोन [विंशति] बीसल, बीन सौर चार, २४ (सम ४३, दं १, वि ३४)। *वीसइ (मय)। लो [विंशति] बीस सौर चार, चौबीस (वि ४४५)। *वीसट्म वि [विंशतितम] १ चौबीसवा (पउम २४, ४०)। २ न. ग्याहृ दिने का लगतार उपवास (मग)। *उग्ग देखो *वग्ग (भावा २, २)। *व्वार पुंन [वार] चार बार, चार दफा (हे १, १७१; कुमा)। *विह देखो *विह (छा ४, २)। *वीस देपो *वीस (सम ४३)। *वीसइम देखो *वीस-इम (छाया १, १)। *सट्ठि लो [पट्टि] चीसठ, साठ सौर चार (सम ७१, मयु)। *सट्ठि वि [पट्टितम] चौसठवां (पउम

६४, ४७)। *सट्ठि देखो *सट्ठि (कयु)। *स्साल न [शाल] चार शालाफो से युक्त चार (सम ५१)। *हट्ट, *हट्टय पुंन [हट्ट, क] चौट्टा, बाजार (महा. भा २७; मुपा ४५१)। *हत्तर वि [सप्तत] चौहत्तरवां, ७४ वां (पउम ७४, ४३)। *हत्तरि लो [सप्तति] चौहत्तर, सत्तर सौर चार (वि २४५; २६४)। *हा य [धा] चार प्रकार से (छा ३, १; जी १६)। देखो चो*।

चउक न [चतुष्क] चौट्टी, चार वस्तुओं का समूह (सम ४०; सुर १४, ७८; मुपा १४); *बण्णउवक्केण (था २३)।

चउक [दे. चतुष्क] चौक, चौपहा, जहाँ चार रास्ता मिलता हो वह स्थान, चौमुहानी (हे ३, २; पट्ट; छाया १, १; भीप; कय; मयु; बृह १; जीव १, सुर १, ६३; भग)। २ भागन, प्राण (सुर ३, ७२)।

चउकर पु [दे] कान्तियेय, शिव का एक पुत्र (हे ३, ५)।

चउकर वि [चतुष्कर] चार हाथवाला, चतुसुंग (उत्त ८)।

चउकिआ लो [दे. चतुष्टिका] भागन, छोटा चौक (सुर ३, ७२)।

चउग्माइया लो [दे] नाप-विशेष (भग ७, ८)।

चउठ पुं [चोड] देश-विशेष (समत्त ६०)। चउठ् देखो चउट्स (संघोष २३)।

चउट्टह वि [चतुर्दश] चौदहवां (प्राक ५)। लो. *ही (प्राक ५)।

चउपंचम वि [चतुष्पञ्च] चार या पांच (मूष २, २, २१)।

चउपाडिय न [चतुष्पातिपन्] चार पडवा या पलिया तिथियां (पव १०४)।

चउप्पाय पं [चतुष्पाद] एक दिन का उपवास (संघोष ५८)।

चउप्फल वि [चतुष्फल] चौमुना, 'यदस-नाय चउप्फलोय' (सिदि १५७)।

चउबोल लोन [चौबोल] छन्द-विशेष (पिंग)। लो. *ला (पिंग)।

चउममुह पुं [चतुर्मुह] दो दिन का उपवास, देवा (संघोष ५८)।

चउर वि [चतुर] १ निबुल, सज, होशियार

(पाप, वेणी ६६)। २ क्रि. निबुलता से होशियारी से; 'केसो मायद चउर' (छा ७)।

चउरंग वि [चतुरङ्ग] १ चार भंगवाला, चार विभागवाला (सैन्य वीरह) (सण)।

२ न. चार भंग, चार प्रकार (उत्त ३)।

चउरंगय न [चतुरङ्गक] एक तरह का वृषा (मोह ८६)।

चउरगि वि [चतुरङ्गिन] चार विभागवाला (सैन्य वीरह)। लो. *णी (मुपा ४५६)।

चउरत वि [चतुरन्त] १ चार पयंतवाला, चार सीमाएँवाला। २ पुं. संसार (मोप)।

लो. *वा [वा] प्रियी, बखली (छा ४, १)।

चउरत न [चतुरन्त] चक्र, पहिया (शेय ३४३)।

चउरस वि [चतुरस] चतुष्कोण, चार कोणवाला (भग. भाषा; दं १२)।

चउरसा लो [चतुरसा] छन्द विशेष (पिंग)। चउरय पुं [दे] चौरा, चतुसरा, गाँव का सभा स्थान (सम १३८ डी)।

चउरस देखो चउरस (विशे २७६७)।

चउरचिध पुं [दे] सातवाहन, राजा शालि-बाहन (हे ३, ७)।

चउरणप वि [चतुरानन] १ चार मुँहवाला। २ पुं. ब्रह्मा, विपाता (मउड)।

चउरासी } लो [चतुरशीति] संख्या-विशेष, चउरासीइ } चौरासी, ८४ (जी ४५; सण; उवा, पउम २०, १०३; सम ६०, कय)।

चउरासीइम वि [चतुरशीतितम] चौरा-सीवां, ८४ वां (पउम ८४, १२, कय)।

चउरसीया लोन [चतुरशीति] चौरासी, 'चउरसीयं कू गणहता तस्म उप्पला' (पउम ४, ३५)।

चउरिदिय वि [चतुरिन्द्रिय] स्वक, जिह्वा, नाक सौर चतु दत चार इन्द्रियवाला (जनु) (भग डा १, १, जी १८)।

चउरिमा लो [चतुरिमन्] चतुरता, चतुर्पद, चतुर्ग, निबुलता (सट्ठि १६)।

चउरिया } लो [दे] लगन-मण्डप, मडवा, चउरी } विवाह-मण्डप, मुजराती में 'चोरी' (रंभा, मुपा ५५२)।

चउरुत्तरसय वि [चतुर्उत्तरातम] एकही चारवां, १०४ वां (पउम १०४, १२)।

चउवीस वि [चतुर्विंश] चौबीसवाँ (पय ४६)।

चउवीसिंगा खी [चतुर्विंशिका] समय-मान-विशेष, चौबीस तीर्थंकर जितने समय मे होते हैं उतना काल—एक उत्सर्पणी या एक भ्रव-सर्पिणी-काल (महानि ४)।

चउवेद } वि [चतुर्वेद] चारो वेदो का
चउवेय } ज्ञाता, चतुर्वेदी, चौबे (धर्मसं
चउवेयद } १३३८. मोह १०)।

चउसट्टिआ खी [चतुःशष्टिमा] रसवालो चीज लौलने का एक नाप, चार पत का एक माप (मणु १५१)।

चउसर वि [दे] चौसर, चार सरा (नदी)वाला (हार भादि) (सुपा ५१०, ५१२)।

चउहत्थ पुं [चतुर्हस्त] श्रीकृष्ण (सुख ६, १)।

चउहार पुं [चतुराहार] चार प्रकार का आहार, भक्षण, पान, स्नादिम और स्वादिम, 'चतुर्हस्तजपि न सखेवि चउहारपरिहारो' (सुपा ५७३)।

चओर पुन [दे] पात्र विशेष, 'मुतावसाणे य चायमणवेताए भवणोएणु चओरोसु' (स २५२)।

चओर } पुं खी [चओर] पति-विशेष
चओरग } (पण्ड १, १, सुपा १७)।

चओयचइय वि [चयोपचयिअ] बुद्धि-हानिवाला (उप २५८ टी. भाषा)।

चंक्रम भक [चंक्रम] बार बार चलना।
२ हथर उभर घूमना। ३ बहुत भटकना।
४ टेढ़ा चलना। ५ चलना फिरना। बह्म-
चंक्रमत (उप १३० टी. ६८६ टी)। देह
चंक्रमिअ (स ३५६)। क. चंक्रमियव्व
(वि १५६)।

चंक्रमण न [चंक्रमण] १ हथर उभर
भ्रमण। २ बहुत चलना। ३ बार बार
चलना। ४ टेढ़ा चलना। ५ चलना-फिरना।
(सम १०६; राणा १, १)।

चंक्रमिय वि [चक्रमित] १ जितने चंक्रमण
या भ्रमण किया हो वह। २-६ उभर देखो
(उप ७२८ टी. निपु १)।

चंक्रमिर वि [चंक्रमिर] चंक्रमण करनेवाला
(सण)।

चंक्रम भक [चंक्रम] देवो चंक्रम। बह्म-
चंक्रमत, चंक्रममाण (भा ४६३; ६२३
उप १३३; पण्ड २, ५, कण)।

चंक्रमण देखो चंक्रमण (राणा १, १—
पत्र ३८)।

चंक्रमिअ देखो चंक्रमिअ (स ११, ६६)।

चंकार पुं [चकार] च वर्ष, 'च' अक्षर
(ठा १०)।

चंग वि [दे. चङ्ग] सुन्दर, मनोहर, रम्य
(दि ३, १, उप १२६, सुपा १०६; क
३५, यम ६ टी, कण्, प्राप्, सण, गवि)।
चंग क्रि वि [दे] मछला, छेन (२५)।

चंगदेव पुं [चङ्गदेव] हेमाचार्य का गृहस्था-
वस्था का नाम (कुप्र २०)।

चंगवेर पुं न [दे] काठ का तस्ता (भाषा २,
४, २, ३)।

चंगवेर पुं [दे] काठ-पानी, काठ का बना
हुआ छोटा पात्र-विशेष, 'पीठए चंगवेर य'
(स ७)।

चंगिम पुं खी [दे चङ्गिम] सुन्दरता
सौन्दर्य, चंद्रता, चापन (नार)। खी. 'मा
(मिने १००, उप १८१, सुपा ५, १२३;
२६३)।

चगेरी खी [दे] टोकरी, बगेली, डलिया,
कठारी, लुण भादि का बना पात्र-विशेष
(मिसे ७१०, पण्ड १, १)।

चंच देखो चंछ। चंचइ (श्रद्ध ६५)।

चंच पुं [चञ्च] १ पट्टप्रभा नरक-सुखिनी
का एक नरकावास (इक)। २ न. देव-
विमान-विशेष (इक)।

चंचपुड पुं न [दे] शपाठ, भविषात, 'सुर-
वसणचंचपुडोहे बराणसण भविहणमाण'
(चं ३)।

चचप्पर न [दे] भस्य, झूठ, झगड़, 'चंच-
प्पर न भणिमो' (दि ३, ४)।

चंचरीअ पुं [चञ्चरीक] अमर, गोंप (दि
३, ६)।

चंचल वि [चञ्चल] १ चल, चञ्चल (कण,
चार १)। २ पुं. टाख ने एक मुष्ट का
नाम (पठम ५, ३६)।

चचला पी [चञ्चला] १ चञ्चल खी। २
द्वन्द्व-विशेष (पिण)।

चंचल्लिअ वि [चञ्चल्लित] चञ्चल किया
हुआ, 'मणुवाणिलचंचे (? च) त्तिप्रवेसराइ'
(विह २६)।

चंचा खी [चञ्चा] १ नरकट की चटाई।

२ चमरेद की राजधानी, स्वर्गनगरी-विशेष।

३ घास का पुतला (दीव)।

चंचाल (मप) देखो चंचल (सण)।

चंचु खी [चञ्चु] चोच, पक्षी का ठोर (दि
३, २३)।

चंचुखिय न [दे. चञ्चुरित, चञ्चुषित]
कुटिल मन, टेढ़ी चाल (मीप)।

चंचुमालइय वि [दे] रोमाञ्जित, पुलकित
(कण, धीप)।

चंचुय पुं [चञ्चुरु] १ अनार्य देश विशेष।
२ उस देश का निवासी मनुष्य (पण्ड १, १)।

चचुर वि [चञ्चुर] चपल, चञ्चल (कण्)।

चंछ सक [तक्ष] छिना। चंछइ (पट्)।

चड सक [पिप्] पीसना। चंडइ (पट्)।

चंड देखो चंद (इक)।

चंड वि [चण्ड] १ प्रबल, उग्र, मलर, तीव्र
(कण्)। २ भयानक, डरावना (उत्त २६;
धीप)। ३ शक्ति श्रोतो, कोष-स्वभावी (उत्त
१; १०, पिप, राणा १, १८)। ४ तेजस्वी,
तेजिल (उप ३०१)। ५ पुं. दासत बरा के
एक राक्षा का नाम (पठम ५, २६४)।

६ कोष, कोप (उत्त १)। 'निरण पुं
[किरण] सूर्य, रवि (उप ३२१)।

'कोसिय पुं [कीशिक] एक सर्व, जिसने
भयमान महावीर को सताया था (कण्)।

'दीव पुं [दीप] दीप-विशेष (इक)।

'पज्जोअ पुं [प्रयोत] उग्रयिनो के एक
प्राचीन राजा का नाम (भावम)। 'भाणु
पुं [भातु] सूर्य, मूरज (कुम्मा १३)। 'रुह
पुं [रुह] प्रहति कोषी एवं जैन धारार्थ
(भाव १७)। 'वडिसय पुं [उत्तंसरु]
गुप-विशेष (पहा)। 'चाल पुं [पाल] गुप-
विशेष (कण्)। 'सेण पुं [सेन] एवं
राजा का नाम (कण्)। 'लियन [लीक]
कोष बरा बड़ा हुआ झूठ (उत्त १)।

चडसु पुं [चण्डांसु] सूर्य, मूरज, रवि
(कण्)।

चंडण देखो चंदण, 'चंडण, चंडणो' (प्राक् १६)।

चंडमा पुं [चन्द्रमस्] चन्द्रमा, चाद (पिंगो)।
चंडा की [चण्डा] १ चमरादि इन्द्रो की
मध्यम परिवर्त (ठा ३, २, मग ४, १)। २
मगवान् वायुपुत्र की शाननदेवी (सनि १०)।
चंडातक न [चण्डातक] की का पहलने का
वज्र, बाँधी, सहंगा (दे ३, १३)।

चंडार पुं न [च] भण्डार, भाण्डागार (कुसा)।
चंडाल पुं [चण्डाल] १ वणुसकर जाति-
विशेष शूद्र क्षीर द्राह्मणी से उत्पन्न (भावा-
सूत्र १, ८)। २ डोम (उत्त ३, ६)।

चंडालिय वि [चाण्डालिक] बण्डाल सनयो,
बण्डाल जाति में उत्पन्न (उत्त १)।

चंडाली की [चण्डाली] १ बण्डाल-जातीय
की। २ विद्या-विशेष (पठम ७, १४२)।

चंडिअ वि [चि] कृत, छिन्न, बाग ह्रमा (दे
३, ३)।

चंडिक पुं न [चि चाण्डिक्य] रोप, गुस्ता,
क्षेत्र, रीखा (दे ३, २, पद, सम ७१)।
चंडिअ वि [चि, चाण्डिक्यत] १ रोप-
मुख रीखाकाखाना, भयंकर (छाया १, १,
पण्ड २, २, मग ७, ८, उवा)।

चंडिज पुं [चि] कोप, क्षेप, गुस्ता। २ वि-
निश्चय, छल, कुर्जन (दे ३, २०)।

चंडिम पुं की [चण्डिमन्] भण्डता, प्रचण्डता
(मुवा १६)।

चंडिया की [चण्डिना] देखो चंडी (स
२६२, नाद)।

चंडिल वि [चि] नीन, पुट (दे ३, ३)।

चंडिल पुं [चण्डिल] हनाम, नापित (दे ३,
२, पाद्, गा २६१ म)।

चंडी की [चण्डी] १ शैव-युक्त की,
कर्मशा क्षीर उग्र की (गा ६०८)। २ पार्वती,
गौरी, शिव-पत्नी (पाद्)। ३ वनस्पति-
विशेष (पण्ड १)। 'द्वयग वि [चि] चण्ड
चण्डो का भक्त (सूत्रनि ६०)।

चंद पुं [चन्द्र] १ चन्द्र, चन्द्रमा चाद (ठा
२, ३, प्रामु १३, ५५, पाद्)। २ वृष विशेष
(उप ७२८ दी)। ३ रामचन्द्र, दायरणी राम
(ते १, ३४)। ४ राम के एक सुभट का नाम
(पठम ५६, ३८)। ५ रावण का एक सुभट

(पठम ५६, २)। ६ राशि विशेष (मणि।
७)। ७ भाद्रादक वस्तु। ८ कपूर। ९ स्वर्ण,
सोना। १० पानी, जल (दे २, १६४)।

११ एक जैन आचार्य (गच्छ ४)। १२ एक
द्वीप का नाम, द्वीप विशेष (जीव ३)। १३
राधापेश की पुतली का बायां नयन, अक्ष का
गोला (खुदि)। १४ न, देवविमान-विशेष
(सम ८)। १५ रुक्म पर्वत का एक शिखर
(दीव)। 'अन देखो 'पउ (विक्र १३६)।
'उत्त देखो 'गुस (मुद्रा १६८)। 'कत पु

[चान्त] १ मणि विशेष (स ३६०)। २
न, देवविमान-विशेष (सम ८)। ३ वि. चन्द्र

की तरह भाद्रादक (भावम)। 'कना की
[चान्त] १ नगरी विशेष (उप ६७३)।

२ एक कुलकर-पुरुष की पत्नी (सम १५०)।
'वृद्ध न [चूट] १ देवविमान विशेष (सम

८)। २ रुक्म पर्वत का एक शिखर (ठा ८)।
'गुस पुं [गुस] मौर्यवर का एक स्वनाम-

विस्मृत राजा (विसि ८६२)। 'चार पु
[चार] चन्द्र की गति (चद १०)। 'चूड,

'चूल पुं [चूड] विद्याधर वश का एक
स्वनाम प्रसिद्ध राजा (पठम ५, ४५, दम)।

'चूडाय पुं [चूडाय] अग देश का एक
राजा, जिसने भगवान् महिषासुर के साथ दीक्षा

ली थी (छाया १ ८)। 'जसा की [यसास्]
एक कुलकर पुरुष की पत्नी (सम १५०)।

'उमर न [चूज] देवविमान विशेष (सम
८)। 'णररा की [नरा] रावण की

महिन का नाम (पठम १०, १८)। 'णह पुं
[नरा] रावण का एक सुभट (पठम ५६,

३१)। 'णही देखो 'णररा (पठम ७, ६८)।
'णागरी की [नागरी] जैन मुनि-गण की

एक शाखा (धम्म)। 'दरिसणिगा की
[दुराणिगा] अलव-विशेष, बच्चे के पहली

बार के चन्द्र-चंद्रोत्पत्ति के उत्तरार्ध में काला जाता
उत्पन्न (सन)। 'दिण न [दिन] प्रति-

पदादि स्थिति (पच ५)। 'दीन पुं [दीप]
द्वीप विशेष (जीव ३)। 'द्व न [दीप] आभा

चन्द्र, झट्टी उज्ज्विल का चन्द्र (जीव ३)।
'पदिमा की [प्रतिमा] उप विशेष (ठा २,

३)। 'पसत्ति की [प्रसात्ति] एक जैन
उपास्य ग्रन्थ (ठा २, १—पत्र १२६)।

'पव्वय पुं [पर्वत] वस्तुकार पर्वत विशेष
(ठा २, ३)। 'पुर न [पुर] वैताव्य पर्वत

पर स्थित एक विद्याधर-नगर (इक)। 'पुरी
की [पुरी] नगरी-विशेष, भगवान् चन्द्रप्रभ

की जन्म भूमि (पठम २०, ३४)। 'पपभ
वि [प्रभ] १ चन्द्र के मुख्य कान्तिवाला।

२ पुं. आठवें जिनदेव का नाम (धर्म २)। ३
चन्द्रबाल, मणि विशेष (पण्ड १)। ४ एक

जैन मुनि (देव)। ५ न, देवविमान विशेष
(सम ८)। ६ चन्द्र का सिंहासन (छाया २,

१)। 'पपभा की [प्रभा] १ चन्द्र की एक
अध महिषी (ठा ४, १)। २ मदिरा विशेष,

एक जात का दाह (जीव ३)। ३ इन नाम
की एक राज कन्या (उप १०३१ दी)। ४

इस नाम की एक शिविका, जिसमें बैठकर
भगवान् सीतलनाथ क्षीर महावीर स्वामी

दीक्षा के लिए बाहर निकले थे (पावम)।
'पपह देखो 'पपभ (पच, सम ५३)। 'भागा

की [भागा] एक नदी (ठा ५, ३)।
'मडल पुं न [मण्डल] १ चन्द्र का मण्डल,

चन्द्र का विमान (ज ७, मग)। २ चन्द्र का
विम्ब (पण्ड १, ४)। 'मगा पुं [मार्ग] १

चन्द्र का मण्डल गति से परिधमण। २ चन्द्र
का मण्डल (मुद्रा ११)। 'मणि पुं [मणि]

चन्द्रबाल, मणि विशेष (विक्र १२६)।
'माला की [माला] १ चन्द्राकार हार, चन्द्र-

हार। २ छन्द विशेष (पिंग)। 'मालिया की
[मालिसा] बही पूर्वोक्त ग्रन्थ (क्षीर)।

'मुदी की [मुदी] १ चन्द्र के समान
भाद्रादक बुधवासी की। २ सीता-मुन दुष्ट

की पत्नी (पठम १०६, १२)। 'ह पुं
[रय] विद्याधर वश का एक राजा (पठम

५, १५ ४४)। 'रिमि पुं [रमि] एक
जैन ग्रन्थकार मुनि (पच ५)। 'लस न

[लंदय] देवविमान विशेष (सम ८)। 'लोहा
की [लेरा] १ चन्द्र की रेखा, चन्द्रबाल।

२ एक राक्षस-पत्नी (लो १०)। 'वडिसग न
[वडिसग] १ चन्द्र के विमान का नाम

(चद १८)। २ देखो चडडडिसग (उत्त
१३)। 'वण न [वर्ण] एक देवविमान

(सम ८)। 'वयण वि [वदन] १ चन्द्र
के मुख्य भाद्रादकन मुहवाता। २ पुं.

रासस-यश का एक राजा, एक लंकावति (पउम ५, २६६) । 'चिक्कं पुन' [चिक्कम्] चन्द्र का विक्रम क्षेत्र (जो १०) । 'विमाण' [विमान] चन्द्र का विमान (ज ७) । 'विलासि वि' [विलासिन्] चन्द्र के तुल्य मनोहर (राम) । 'वेग पुं' [वेग] एक विद्यापर-मरेष्ट (महा) । 'सयच्छर' पुं [सयच्छर] बर्ग-विशेष, चन्द्र माथों से निघनर सदस्तर (चद १०) । 'साख्य' की [साख्य] मद्रासिका, भटारि (दे ३, ६) । 'साखिया' की [शाखिका] मद्रासिका (शमा १, १) । 'सिम न' [सिद्ध] देव-विमान विशेष (सम ८) । 'सिद्ध न' [शिष्ट] एक देवविमान (सम ८) । 'सिरी की' [थी] द्वितीय कुलकर दूत की मी का नाम (भाद्र १) । 'सिहर पु' [शिखर] विद्यापर वश का एक राजा (पउम ५, ४३) । 'सूरदसा-यणिश', 'सूरपासणिया' की [सूरदस-निमा] बालक का जन्म होने पर सोखरे दिन उसको कराया जाता चन्द्र की सूर्य का दर्शन और उसको उपलक्ष्य में लिया जाता उसका (भग ११, ११, विना १, २) । 'सुरि पु' [सूरि] स्वर्णानविकपाल एक जैन भाषाचर्य (सण) । 'सेण पु' [सेन] १ भगवान् भादिनाय का एक पुत्र । २ एक विद्यापर राज-कुमार (महा) । 'सेहर पु' [सेलर] १ भूय विशेष (सी ३८) । २ महादेश, शिव (सि ३६५) । 'हास पु' [हास] लक्ष-विशेष, लखवार (सि १४, ५२ वडर) ।

चंद पु [चन्द्र] सप्तवार विशेष, जिसमें अधिक मास न हो वह वर्ष (गुज ११) । 'उड्ड पु' [उड्ड] कुछ ग्रन्थि उनसठ दिनों की एक शब्द (गुज १२) । 'परिवेस पु' [परिवेस] चन्द्र-नरिणि (मणु १२०) । 'पहा की' [प्रभा] देखो चंद पभा (विचार १२६, गुज ४५३) । 'चंदी की' [चंदी] एक नगरी (मोह ८८) ।

चद वि [चन्द्र] चन्द्र-चंकी (चंद १२) ।

'चुल न' [चुल] जैन मुनि का एक कुल (गण्ड ४) ।

चदइ देखो चंद = चन्द्र (हे २, १६४) ।

चंदइल्ल पु [दे] भद्र, मोर (दे ३, ३) ।

चदक पु [चन्द्राङ्ग] विद्यापर वंश का एक स्वर्ण प्रसिद्ध राजा (पउम ५, ४३) ।

चदग [चन्द्रक] देखो चंद । 'विग्म', 'वेग्म न' [वेध] राधावेध, 'चदगविज्ज' लड, केवलसिख समाजपक्षी (सभा १२२, जिह ११) ।

चदद्विआ की [दे] १ कुज, शिखर, बग्या । २ पुच्छा, स्तम्भ (दे ३, ६) ।

चदय पु [चन्दन] १ एक देवविमान (वेष्ट १४३) । २ रत्न की एक जालि (उत ३६, ७७) । ३ पुं, द्वितीय जीव-विशेष, मस का जीव (उत ३६, १३०) ।

चदय पु न [चन्दन] १ सुगन्धित कुल-विशेष, चन्दन का पेड़ (मणु ६) । २ न. सुगन्धित काष्ठ-विशेष, चन्दन की लकड़ी (भग ११, ११, हे २, १८२) । ३ पिता हुआ चन्दन (कृपा) । ४ कन्द-विशेष (विम) । ५ रुक्क पर्वत का एक शिखर (ज) । 'कलस पु' [कलश] चन्दन-वर्चित रुक्म, गाङ्गापत्तिक घट (मीव) । 'घड पु' [घट] मगल कारक घटा (जीव ३) । 'बाळा की' [बाळा] एक बाष्पी की, भगवान् महावीर की प्रथम शिष्या (पडि) । 'वइ पु' [पति] स्वनाम स्वात एक राजा (ज ६८६ टी) ।

चदपम पु न [चन्दन] १ लख देखो । २ पुं, द्वितीय जन्तु विशेष, जिसके क्तेवर की जैन साधु लोग स्वाध्यायार्थ में रखते हैं (पण्ड १, १, की १५) ।

चदपाग की [चन्दना] भगवान् महावीर की प्रथम शिष्या, चन्दवत्सला (सम ५४२, कथ) ।

चदधि की [दे] ब्राह्मण, कुल्ला । 'उयय न' [चदक] कुल्ला कंदन की जगह (माना २, १, ६, २) ।

चंदकी की [दे] चन्द्र की पत्नी, रोहिणी, 'चंदो विप चंदलीनो' (महा) ।

चदम पु [चन्द्रम] चन्द्रमा, चांद (भग) ।

चंदरुद देखो चद रुद (पना ११, १५) ।

चदवडाय की [दे] गिरावा भाषा शरीर का घोर भाषा मंगा हो ऐसी की (दे ३, ७) ।

चदा की [चन्द्रा] चन्द्र-जीव की रावधानी (जीव ३) ।

चदाअव पु [चन्द्राव] ज्योत्स्ना, चन्द्रिका, चन्द्र की प्रभा, चांदनी (हे १, २७) । देखो चदायय ।

चदाणण पु [चन्द्रानन] ऐतत्त क्षेत्र के प्रथम जिनदेव (सम १५३) ।

चदाणणा की [चन्द्रानना] १ चन्द्र के तुल्य भाद्रपद उत्पन्न करनेवाली, चन्द्रमुखी । २ शाश्वती जिन-प्रतिमा विशेष (का १, १) ।

चदाभ वि [चन्द्राभ] १ चन्द्र के तुल्य भाद्रपद-जन्म । २ पुं, शाश्वती जिनदेव, चन्द्र-प्रभ स्वाभो (भाद्र २) । ३ इस नाम का एक राज-कुमार (पउम १, ५३) । ४ न. एक देवविमान (सम १४) ।

चदायण न [चन्द्रायण] तप विशेष, जिसमें चन्द्रमा के चंदने चढ़ने के प्रसुत्तार मोचन के नीचे पतले-बढ़ने पड़ते हैं (वैभा १६) ।

चदायण न [चन्द्रायण] चन्द्र का छ छ मान पर दक्षिण और उत्तर दिशा में गमन (जो ११) ।

चदायय देखो चदाअव । १ माघछादन-विशेष, विवाह, वैशाख (गुज ३, ७२) ।

चंदाळग व [दे] शाव दा भागल विशेष (शूय १, ४, २) ।

चदावच न [चन्द्रावच] एक देवविमान (सम ८) ।

चदाविग्मय देवो चदग-विग्म (एदि) । चदिअ वि [चान्द्रिक] चन्द्रका, चन्द्र-चदकी (पद १४१) ।

चदिआ की [चन्द्रिका] चांदनी, चन्द्र की प्रभा, ज्योत्स्ना (सि २, मा ७७) ।

चदिओजलीन वि [दे] चन्द्रिकोजगलिन] चन्द्र-कालि से उज्जल बना हुआ (चंद) ।

चदिज न [दे] चन्द्रिका, चन्द्रप्रभा, 'भेताए हाए चदाय,

चदिअ तावराए फलिनवहो । सपुसिमाण जिदल,

सामन सयलामाए ॥' (भा १०) ।

चदिम देखो चंदम (मीव ८५) । २ एक जैन मुनि (मनु २) ।

चदिमा की [चन्द्रिका] चन्द्र की प्रभा, ज्योत्स्ना, चांदनी (हे १, २८३) ।

चदिमाह्य न [चान्द्रिक] 'मातायमनका' पुत्र का एव धर्म्य (राज) ।

चदिल पु [चदिळ] नापित, हजाम (गा २६१, दे ३, २)।

चंदुत्तरवडिसग न [चन्द्रोत्तरावतसक] एक देवविमान (सम ८)।

चंदरी छो [दि] नगरी विशेष (ठा ४२)।

चंदोज } न [दि] कुमुद, चन्द्र विकासी
चंदोज्य } कमल (दे ३, ४)।

चंदोसरण न [चन्द्रोत्तरण] कौशाम्बी नगरी का एक उद्यान (विपा १, ५—पन ६०)।

चंदोसर पु [चन्द्रोदर] एव राज-कुमार (सम ८)।

चंदोयग न [चन्द्रोपक] सयागी का एक उपकरण (ठा ४ २)।

चंदोषराग पु [चन्द्रोपराग] चन्द्र ग्रहण, चन्द्रमा का ग्रहण राहु-यास (ठा १०, भा ३, ६)।

चद्र देखो चद (हे २ ८०, कुमा)।

चप सक [दि] चापना, दावना दवाना। चपह (भा २५)। कर्म चपिजह (हे ४, ३६५)।

चप सक [चर्च] चर्चा करना। चपह (भा २५)। सक चपिऊण (वजा ६४)।

चप सक [आ + रह] चढ़ना। चपह (भा ७३)।

चप देखो चपय (राय ३०)।

चपग पु [चम्पक] एक देवविमान (देवेन्द्र १४२)।

चपग देखो चपय 'भ्रतुद्वारे' भविष्य, चपग-माना न कौरव सीदे' (भा ३)।

चपडण न [दि] प्रहार, आघात 'सरभसचने तपिप्रडङ्गिभयभसिधुरीणवहवलणचपडणन-मुयइमा'। ध्रुवीजालोती' (चि ८५)।

चपण न [दि] चापना दवाना (उप १३७ तो)।

चपय पु [चपक] १ कृत्र विशेष चप्पा का पड (स १५२, मग)। २ देव विशेष (जीव ३)। ३ न चप्पा का फूल (कुमा)। 'माला की [माला] १ छत्र विशेष (सिग)। २ चप्पा के फूलों का हार (भा ३)। 'लया की [लता] १ नताकार चम्पक फूल। २ चम्पक फूल की शाखा (ज १, भौष)। 'वण

न [वन] चम्पक फूलों की प्रधानतावाला वन (मग)।

चपयवडिसग पु [चम्पनावतसक] सौषमें देवतोष में स्थित एक विमान (राय ५६)।

चपा छो [चम्पा] भय देश की राजधानी, नगरी विशेष जिसको भोजनस 'भयनपुर' कहते हैं (विपा १ १, कण)। 'पुरी छो [पुरी] वही ग्रंथ (पउम ८, १५६)।

चपा छो देखो चपय: 'कुसुम न [कुसुम] चप्पा का फूल (राय)। 'उण नि [वर्ण] चप्पा के फूल के तुल्य रंगवाला, सुवर्ण-वर्ण:। छी [णी] (मप) (हे ४ ३३०)।

चपारण (भर) पु [चम्पारण] १ देश विशेष चपारन, तिरहुत कमिनगरी (बिहार) का एक जिला। २ चपारण का निवासी (सिप)।

चपिअ वि [दि] चापा हुआ दवाया हुआ, महित (मुपा १३७ १३८)।

चपिअ न [दि] ब्राह्मण दवाव (तदु ४४)। चपिलिया छो [चम्पीया] जैन मुनिगण की एक शाखा (कण)।

चम पु [दि] हल से विदारित भूमि रेखा (दे १ १)।

चमपा छो [दे] लक, लवाचा, चमडी (दे ३, ३)।

चमिद देखो चइद (कुमा)।

चनोर पु छी [चनोर] पणि विशेष चकोर पक्षी (मुगा ४५७)। छी 'री' (रमण ४६)।

चक पु [चक्र] १ पणि विशेष, चक्रवाक पक्षि (पाप कुमा सण), दो हृत्सिखुलदमगो चको इव द्विदुजवयवगो' (उप ७२८ तो)।

२ न. गाड़ी का पहिया (परह १ १)। ३ सप्रह (मुपा १५०, कुमा)। ४ भल विशेष (पउम ७२, ३१ कुमा)। ५ चक्राकार प्राभूपण मस्तक का भागण विशेष (भौष)।

६ ध्युह विशेष सैन्य की चक्राकार रचना-विशेष (लाया १, १, भौष)। 'कन पु [कान्त] देव विशेष, स्वयंभूषण समुद्र का भविष्यता देव (दीव)। 'जोहि पु [योधिन] १ चक्र से लटनवाला घोड़ा (ठा ६)।

२ नागदेव, तीन बंड धुविको का राजा (भा ५)। ३ उभय पु [चय] चक्र के निगल-वाली ध्वजा (ज १)। 'पहु पु [प्रभु]

चक्रवर्ती राजा (सण)। 'पाणि पु [पाणि] १ चक्रवर्ती राजा, सम्राट्। २ वायुदेव, ग्रंथ-चक्रवर्ती राजा (पउम ७३, ३)। 'पुरा, 'पुरी छो [पुरी] विदेह वर्ष की एक नगरी (ठा २ ३, इक)। 'प्यहु देखो 'पहु (सण)।

'यर पु [चर] मित्रुक, भौषमगा (उप ६१७)। 'रयण न [रत्न] चक्र विशेष, चक्रवर्ती राजा का मुख्य मायुष (परह १, ४)।

'वइ पु [पति] सम्राट् (सिग)। 'वइ, 'वट्टि पु [वर्तिन] छ लख भूमि का भविष्यत राजा, सम्राट् (सिग सण ठा ३, १, पंडि प्रभू १७५)। 'वट्टिन न [वर्तिन] सम्राट्पन, साम्राज्य (मुप ४, ६१)। 'वसि देखो 'वट्टि (पि २८६)।

'विनय पु [यिनय] चक्रवर्ती राजा से जीतने योग्य क्षेत्र विशेष (ठा ८)। 'साला छी [शाला] वह मकान, जहाँ तिल परा जाता हो सैलिक गृह (वव १०)। 'सुइ पु' [शुभ, सुप] देव विशेष, मातुगोत्तर पर्वत का भविष्यत देव (दीव)। 'सेण पु [सेन] स्वनाम-न्यात एक राजा (वइ)। 'हर पु [धर] १ चक्रवर्ती राजा सम्राट् (सम १२६, पउम २, ८५ ४, ३६, कण)। २ वायुदेव, ग्रंथ-चक्र की राजा (राज)।

चक न [चक्र] एक देवविमान (देवेन्द्र १३३)।

चक्रआअ देखो चक्राया (पि ८२)।

चक्रग पु [चक्राङ्ग] पणि विशेष (मुगा ३४)।

चक्रगभय न [दे] नारगी का फल (दे ३, ७)।

चक्रगाहय न [दे] कमि तरङ्ग बल्लोन (दे ३ ६)।

चक्रम १ भक [भ्रम] ध्वनन, भक्त्तना, चक्रम्म १ भ्रमण करना। चक्रमद (दे २, ६)। चक्रमद (दे ४, १६१)। वह चक्रमत (स ६१०)।

चक्रममयिअ वि [भ्रमित] घुमाया हुआ, चिराया हुआ (कुमा)।

चक्रय देखो चक्र (परण १)।

चखल न [दि] बुरखल, कण का माभूपण। २ दोनारचक्र, द्विदोता का पटिया (दे ३, २०)। ३ वि. वयुन, मोलतार पदार्थ (दे

चष सक [चचे] चन्दन आदि ना विलेपन करना । चषवेई (परमैव १५) ।

चष पुं [चचै] हेमाचार्य के पिता का नाम (सुर २०) ।

चष पुं [चचै] समालम्भन, चन्दन वगैरह का शरीर में उपलेप (दे ६, ७६) ।

चषर न [चषर] बीहडा, बीरास्ता, बीराहा, बीक (छाया १, १; परह १, ३; सुर १, ६२; (हे २, १२ गुमा) ।

चषरिअ पुं [दे चषररीरु] धम्मर, बीरा (पट्ट) ।

चषरिया की [चचैरिरु] १ नृप-विशेष (रंमा) । २ देतो चषरी (म ३०७) ।

चषरी की [चचैरी] १ शीत-विशेष, एक प्रकार का गान. 'शिपरियचषरीवपुत्रियउ-आणुममो' (सुर ३, ५४); 'पारमियचषरी-गोवा' (गुमा ५५) । २ गावेवाली टोली, गावेवाला का दूध; 'पबते ममणमगुवे निगमामु शिचिन्तेसाणु नमरचषरीमु', 'बहू नीमचषरी मन्हाण चषरीए ममागनं परिचर्यद' (म ४२) । ३ छन्द-विशेष (सिग) । ४ हाथ की ताली की भागाज (भार १) ।

चषरमा की [दे] वाद्य-विशेष, 'मठुगच चष-ताणै, मठुगच चषगावायगाय' (राम) ।

चषा की [दे] १ शरीर पर गुमानिय वसाय का लगाता, विलेपन (दे ३, १६, वाच. व १, छाया १, १; राम) । २ तज प्रहार, हाथ की ताली (दे ३, १६, पट्ट) ।

चषार मच [उपा + लभ] उपाजन देना, उपादा देना । चषारद (पट्ट) ।

चषारि नि [दे] १ मरिह, विमुक्ति. 'चटुजयचषारिणा निज' (दे ३, ४); 'ठगुमहापरायचषारि' (पम १ टी); 'गाहू ठगुमहापरायचषारि' (पट्ट ३६) । २ पुन, निजना. चषारिनि मुण्णि चषु का शरीर पर मगनना (हे २, ७४); 'चषारि' (पट्ट) कुटुम्बचषिचषुण्णि' (पट्ट २०, २८ टी) 'चषारि कुलपचषि मुण्णर-पचषारि' (ज ७६८ टी) 'चषारि-पचषारि' (गुमा ११०) ।

चषिचि वि [चचित] विलिप्त (चैय ८४४) । चषुचुप सक् [अपय] अपय करना, देना । चषुचुप (हे ४, ३६) ।

चषु सक् [तत्त] दिलना, बाटना । चषुद (हे ४, १६४) ।

चषिद्धिअ वि [तट्ट] धिना हुमा (हुमा) । चषर सक् [हस] देखना, धनवीजन करना । चषरद (दे ३, ४, पट्ट) ।

चषरा की [चर्या] १ धापरण, यतन । २ चसन, ममन । ३ परिभाषा, संकेत (विते २०४४) ।

चषिज वि [हट्ट] मरतोहित, देना हुमा (महा) ।

चटुअ देना चटुअ (गा १६२) ।

चट्ट सक् [दे] बाटना, मरतेह करना. 'न म मरतोणियं मिलं बोद चट्टे' (महा) ।

चट्ट पुं न [दे] १ भूव, कुमुदा; 'जीवति उदहिपिमा, चट्टुचिट्ठना न जीवति' (मुक ७०) । २ पुं. चट्टा, विचार्य । 'साछा की [गाहा] चट्टाला, चट्टमार, छोटे मानकी की पाठशाला (बह १) ।

चट्ट नि [चट्टि] चट्टेयना (चट्ट) ।

चट्ट पुं [दे] वाद्य-रत्न, काठ की चट्टा, परोमने का वाद्य-विशेष चट्टुल (दे ३, १, गा १६२ म) ।

चह ता [आ + रह] चहना, ऊपर बैठना, चान्द हाना । चहद (हे ४, २०६) । चह. चहिट्ट, चहिट्ठण (गुमा ११४-गुमा) ।

चह पुं [दे] शिमा, सीढ़ी (दे ३, १) ।

चहका पुं न [दे] १ चहवार, चहना (हे ४, ४०६, नरि) । २ शत्रु विशेष (पत्रम ७, २६) ।

चहचारि नि [चट्टारिण] 'चट्ट' रुद्ध बनेलागा (वरन पादि) (पत्रम) ।

चहमा देगे चहय (पट्ट १) ।

चहमर पुं [दे] १ मरुह, मूष, जप्ता (पत्रम ६०, १६, छाया १, १—पत्र ४६) । २ भास्वर, भाये 'मर्या चहमरमेउ मचपहल हण' (रमि ३) ।

चहपट्ट पुं [चहपट्ट] 'चह-पट्ट' भासाज (सिग १, ६) ।

चहचहचह मक् [चहचहाय] 'चह-चट्ट' भासाज करना । चहचहचट्टि (विषा १, ६) ।

चहट्ट पुं [चट्ट] जनि-विशेष, बिजली के मिरने की भागाज (सुर २, ११०) ।

चहण न [आरोहण] चहना, ऊपर बैठना (था १४, प्रसू १०१, उप ७२८ टी; प्रोप ३०; सट्टि १४३; वग्ग ५४) ।

चहपड मक् [दे] चहटाणा, छट्टेयना, चहना पाता । चह. चहपडट (गुमा ७२) ।

चहय पुं की [चट्ट] पशि विशेष, गौरैया पत्ती (दे २, १०७) । की. 'वा (दे ८, १६) ।

चहवेला की केतो चवेहा (पट्ट १, ३—पत्र ५३) ।

चहवायन न [आरोहण] चहना (ज १५२) ।

चहायिय वि [आरोहित] चहाया हुमा, ऊपर स्थापित 'रणसंमरणिहरे चहारिया बलयमयानका' (मुण्णि १०६०१; सुर ११, ३६; महा) ।

चहायिय वि [दे] प्रेषित, भेजा हुमा; 'चाउदिमिनि तेणं चहारियं मारणं तप्पा सोरि' (गुमा ३६५) ।

चहिय वि [आरद] गहा हुमा, चान्द (गुमा १३७; १५१, १५६; हे ४, ४४५) । चहिआर पुं [दे] भायो, धाम्मर (दे ३, ५) ।

चहु पुं [चट्ट] १ त्रिय वषण, त्रिय पातय । २ बही का एक भागा । ३ उदर, देह । ४ पुं न. त्रिय संभावण, मुद्रामद (हे १, ९७; प्रार) । 'आर वि [चर] मुद्रामद करने-वाला, मुद्रामने (पट्ट १, १) । 'आरअ नि [चर] मुद्रामने (गा ६०२) ।

चट्टारि नि [चट्टारिण] मुद्रामने (सिग ४१०) ।

चट्टारिया की [दे] १ उजबह । २ वाद-विचार (मोद ७) ।

चट्टारि देना चट्टारि (सिग ४८६) ।

चट्ट नि [चट्ट] १ चहना, चरन (म ७, ४३; पत्रम १२, १६) । २ चहना, चिदा हुमा (पट्ट १) ।

चट्ट नि [दे. चट्ट] गह-वदर जिना हुमा, चिदुपचट्टारिण (मुम ७१) ।

चडुला श्री [दे] रत्न तिलक, सोने की मेखला में लटकता हुआ रत्न निर्मित तिलक (दे ३, ८)।

चडुलातिलाय न [दे] ऊपर देखो (दे ३, ८)।

चडुलिया श्री [दे] भन्त भाग में जला हुआ घास का पुला, घास की झांटी (एहि)।

चड्ड सक [मूड] मर्दन करना, मसलना। चड्डर (हे ४, १२६)। प्रयो. चड्डाए (मुप ३३१)।

चड्ड सक [पिप्] पीसना। चड्डर (हे ४, १८४)।

चड्ड सक [मुज्] भोजन करना, खाना। चड्डर (हे ४, ११०)।

चड्ड न [दे] तैल-पान, जिसमें शेषक किया जाता है, गुजराती में 'चाड्ड' (मुप ६३८, ६४१)।

चड्ड न [भोजन] भोजन, खाना। २ खाने की वस्तु, खाद्य-सामग्री (कुमा)।

चड्डावली श्री [चड्डावली] इस नाम की एक नगरी, जहाँ यीशुनेश्वर मुनि ने विष्णु की ग्यारहवीं सदी में सुरसुहृदी-चरित' नामक प्राकृत काव्य रचा था (सुर १६, २४६)।

चड्डि वि [मुदित] मसला हुआ, जिसका मर्दन किया गया हो वह (कुमा)।

चड्डि वि [पिष्ट] पीसा हुआ (कुमा)।

चड्ड देवो चड = भा + रह। संक्षु चडिऊण (सम्मत १५६)।

चडण देवो चडण (संक्षेप २८)।

चण १ पु [चणक] चना, चन्न विशेष चणअ १ (न ३, कुमा, ग ४५७, दे १, २१)।

चणइया श्री [चणकिका] मसूर, मसूर-विशेष (ग ५, ३)।

चणग देवो चणअ (मुप ६३१, सुर ३, १५८)। 'गाम मु [ग्राम] ग्राम-विशेष, गौड देश का एक ग्राम (राज)। 'पुर न [पुर] नगर-विशेष, राजगृह-नगर का प्रसक्त नाम (राज)।

चणयग्गाय देवो चणग-नाम (धर्मवि ३८)।

चणोद्विया श्री [दे] गु या। शु० 'चणोद्वी', देवो कोणोद्विया (अनु० वृ० हरि० पन ७५)।

चच पुन [दे] तकू, तकुभा, सूत बनाने का यन्त्र, तकवी (दे ३, १, धर्म २)।

चच वि [त्यक्त] छोटा हुआ, परित्यक्त (एह २, १, कुमा १, १६)। २ सूत की झांटी (प्रत्यय ७०, १)।

चचर देवो चचर (पि २६६, नाट)।

चचा देवो चचालीसा (उप)।

चचा श्री [चचा] १ शरीर पर सुगन्धी वस्तु का विलेपन। २ विचार, चर्चा (प्राङ् ३८)।

चचाळ वि [चत्वारिंश] चालीसवा (पद्य ४०, १७)।

चचाळीस न [चत्वारिंशत्] १ चालीस, ४०, 'चचाळीस विनाशानसहस्रा परपुषो' (सम ६६, कप्य)। २ वि. चालीस वर्ष की उम्रवाली, 'चचाळीसस विवाण' (तदु)।

चचाळीसा श्री [चत्वारिंशत्] चालीस, ४०, 'चोला चचाळीसा' (एह २)।

चचरिपुली [दे. चत्तरि] हास, हास्य (दे ३, २)।

चपेटा श्री [दे. चपेटा] करावाल, चपेट, तमाचा (पद्)।

चप्प सक [आ + क्रम्] प्राक्रमण करना, दबाना। संक्षु. चप्पवि (प्रवि)।

चप्प सक [चर्च] १ अध्ययन करना। २ कहना। ३ प्रवर्तना करना। ४ चन्दन आवि से विलेपन करना। चप्पइ (प्राङ् ७५, संक्षि ३५)।

चप्पडग न [दे] नाष्ट-यत्न विशेष (एह १, ३—पद्य ५३)।

चप्परण न [दे] विरस्कार, निरास (सु ६)।

चप्पलअ वि [दे] १ प्रसव, मूला (कुमा ८, ७६)। २ बहुमिष्यावादी, बहुत मूठ चोले-वाला (पद्)।

चप्पिय वि [आश्रन्त] आश्रित, स्वाया हुआ (प्रवि)।

चप्पुद्विया श्री [चप्पुद्विका] चपटी, कुज्जी, चप्पुद्वी १ शंख के साथ झुलती की ताली (गाथा १, ३—पद्य ६५, दे ८, ४३)।

चप्पल न [दे] शेषर-विशेष, एक तरह चप्पलअ का शिरोभूषण। २ वि. प्रसव, मूला, निष्यामायी (दे ३, २०; हे ३, ३८, कुमा ८, २५)।

चमक पु [चमत्कार] विलस्य, प्रसन्न, 'सजणियण्णवमक्को' (धम्म ६ टी, उप ७६८ टी)। 'चर वि [कर] विलस्य-जनक (सण)।

चमक १ सक [चमत् + कृ] विलसित चमकर १ करना, प्रसन्न-यानित करना। चमकइ, चमकति (विदे ४३, ४८) वक्र-चमकरंत विक्र ६६)।

चमकार पु [चमत्कार] प्रसन्न, विलस्य (सुर १०, ८, वजा २४)।

चमकिअ वि [चमकृत] विलसित, प्रसन्न-यानित (मुप १२२)।

चमड १ सक [मुज्] भोजन करना, खाना। चमड १ चमडइ (पद्) चमडइ (हे ४, ११०)।

चमड सक [दे] १ मर्दन करना, मसलना। २ प्रहार करना। ३ कदर्थन करना, पीटना। ४ निन्दा करना। ५ प्राक्रमण करना। ६ उद्दिग्न करना, विग्न करना। कवक, चम-डिज्जत (सोप १२८ भा बृह १)।

चमडण ॥ [भोजन] भोजन, खाना (कुमा)।

चमडण न [दे] १ मर्दन, प्रसवमर्दन (सोप १८७ भा स २२)। २ प्राक्रमण (स ५७६)। ३ कदर्थन, पीटना। ४ प्रहार (सोप १६३)। ५ निन्दा, गर्हण (सोप ७६)। ६ वि. जिसकी कदर्थना की जाय वह (सोप २३७)।

चमडण श्री [दे] ऊपर देखो (बृह १)।

चमडिअ वि [दे] मर्दित, विनाशित (वव २)।

चमर पु [चमर] पशु-विशेष, जिसके बाती का चापर या चँवर बनता है, 'वराहचमरसे-विण एण्णे' (पउम ६४, १०५, एह १, १)।

२ पु. पाचनें जिननेव का प्रथम शिष्य (सम १५२)। ३ दक्षिण दिशा में घुमाहुंमारी का इन्द्र (ठा २, ३)। 'चच पु [चच्छ] चम-रेन्द्र का स्वाभाव-युक्त (मग १३, ६)। 'चंचा श्री [चच्छा] चमरेन्द्र की राजधानी, स्वर्ग-पुरी-विशेष (छाया २)। 'पुर न [चुर] विद्यापरो का नगर-विशेष (इर)।

चमर पुन [चामर] चँवर, चामर, वात-व्यजन (हे १, ६७)। 'धारी, धारी श्री

['चारिणी] चामर बीजने या डोलानेवाली छी (मुवा ३३६, सुर १०, १५७)।

चमरी छी [चमरी] चमर-यशु की मादा, सुरही गाय (मे ७, ५८, स ५४१; शौन. मत्त)।

चमस धुन [चमस] चमचा, कचछी, दर्वाँ (शौप. मत्त)।

चमुकार पु [चमरकार] १ मारचर्य, विस्मय, 'वेल्हाणयमुनिचरचित्तचमुकारकारय' (सुर १३, ६७)। २ बिजली का प्रकाश, 'ताव य बिज्जुचमुकारएउतर बडचडइससही' (सुर २, ११०)।

चमु छी [चमु] १ मेला, मेल, सरवर (भावम)। २ सेना-विशेष, जिसमें ७२६ हाथी, ७२६ रथ, २१८७ घोड़े और १६५४ पैदल हो ऐसा सरवर (पउम ५६, ६)।

चम्म न [चम्म] छाल, टाक, चमड़ा, लाल (हे १, ३२; त्वन ७०, प्राप् १७१)। 'निड वि [चिड] चमने मे छोपा हुमा (नग १३, ६)। 'कोस, 'कोसय पु [कोश, 'क] १ चमडे वा बना हुमा थैला २ एक सज्ज वा चमडे का फूला (शौप ७२८, भावा २, २, ३, यव ८)। 'कोशिया छी ['कोशिया] चमडे की बनी हुई पैली (मृम २, २)। 'मडिय वि [मडिडक] १ चमडे का परिधानभाना। २ सड उतकरण चमडे का ही रखनेवाला (छापा १, १५)। 'ग वि [क] चमडे का बना हुमा चम्मय (मृम २, २)। 'पकिम पु [पकिन्] चमडे की पागवाला पाती (छा ५, ५—यज २०१)। 'पट पु [पट] चमडे का पट्टा, पाय (निपा १, ६)। 'पाय न [पाज] चमडे का पाज (भापा २, ६, १)। 'वर पु [वर] मोची, चमार (म २-६, २, ३७)। 'रयण न [रन] चमरती का रन विशेष, जिसम मुख में बांधे हुए शक्ति वगैरह उगो दिन पर पर खाने योग्य हो जाते हैं (पउ २१२)। 'रयन पु [रुअ] वृष-विशेष (भा ६, ३)।

चम्मट्टि छी [चर्मयष्टि] चर्म-मय यष्टि, चर्म-दण्ड, चमरा मनी हुई दण्ड (बण्ण)।

चम्मट्टिअ थक [चर्मयष्टिय] चर्म-यष्टि की तरह प्राचरण करना। वड्. चम्मट्टिअंन (बण्ण)।

चम्मट्टिल पु [चर्मस्थिल] पक्षि-विशेष (पण्ह १, १)।

चम्मर पु [चर्मसार] चमार, मोची (विने २६८८)।

चम्मरय पु [चर्मवारक] ऊपर देखो (प्राप)।

चम्मिय वि [चर्मित] चर्म में बँधा हुमा, चर्म-नैष्ठि (शौप)।

चम्मेट्ट पु [चर्मेट्ट] प्रहरण-विशेष, चमडे से वैष्टि पापाएवाला प्रावृष (पण्ह १, १)।

चम्मेट्टगा पुंछी [चर्मेट्टक] शक-विशेष (राय २१)। छी, 'गा (मण्ण १७५)।

चाय सक [त्यज्] छोड़ना, त्याग करना। चयइ (पाप, हे ५, ८६)। चर्म. चइइ (उव)। वड्. चयंत (मुवा ३८८)। सक, चइअ, चइं, चिआ, चइऊण, चइत्ता, चइत्ताण, चइत्तु (हुमा, उत १, ५६, उवा, उत १)। इ. चइयउव (मुवा ११६, ४०५, ५२१)।

चाय सब [दाक्] सबना, समर्थ होना। चयइ (हे ५, ८६)। वड्. चयंत (मृम १, ३, ३, से ६, ५०)।

चाय थक [च्यु] मरना, एक जग में दूसरे जग में जाना। चयइ (मनि), चयंनि (भा)। वड्. चयमाण (बण्ण)।

चाय पुं [चाय] १ छोट, देह (निपा १, १, उम)। २ समूह, राशि, देर (विज २२१६, गुवा ५७१, हुमा)। ३ इन्द्रादोना (मण्ण)। ४ बुद्धि (भावा)।

चाय पुं [चाय] ईंठे की रचना-विशेष (निड २)।

चाय पुं [चयन] थार, जमान्तर-गमन (छा ८, बण्ण)।

चायण न [चयन] १ इन्द्रा करना (यज २, ८)। २ चण्ण, जमान (छा २, ५)।

चायन न [त्यजन] त्यग, चरिमाण (मट्टि ३६)।

चायण न [चयन] १ मरण, जमान्तर-गमन (छा १—यज १६)। २ पतन, गिर जाना। 'कप पु [कल्प] १ पवन-प्रकार, चारिअ वगैरह से गिरने का प्रकार। २ शक्ति साधुओं का बिहार (गज्ज १, वचना)।

चायण न [चयन] व्युत्ति, धंश, क्षय (तंदु ५१)।

चर सक [चर्] १ गमन करना, चलना, जाना। २ भक्षण करना। ३ सेवना। ४ जानना। चरइ (उव, महा)। भूवा. चरिउ (मउइ)। भवि. चरिउ (वि १७३)। वड्. चरंन, चरमाण (उत २; भग. विपा १, १)। सड्. चरिअ, चरिऊण (माट—मुच १०; भावम)। हेइ. चरिउं, चारए (शौप १५; बस)। इ. चरियउव (भा ६, ३३)। प्रयो, चारियउव (पण्ह १७—यज ५६७)।

चर पुं [चर] १ गमन, गति। २ वर्तन (इस. भावम ३ इव, जावम (पाप, गति)।

चर पुं [चर] जंगम प्राणी (हुम २५)।

*चर वि [चर] चलनेवाला (भावा)।

चरनी छी [चरन्ती] जिस दिशा में गगवान् निजदेर वगैरह मानी दुरय विचरते हो यह (यज १)।

चरा पुं [चरा] १ देवो चर = चर। २ सत्यागियो का झुएर विशेष, झुएरय धूमने बाने त्रिदिग्गो की एक जानि (भा गज्ज २)। ३ भित्तो की एक जाति (पण्ह २०)। ४ दण-महादि जन्तु (यज)।

चरचरा छी [चरचरा] 'चर-चर' धाराज (छ २५७)।

चरट पुं [चरट] कुटेर की एक जाति (मम १२ टो: गुवा २३२, ३३३)।

चरण पुन [चरण] १ संयन, चारिअ, 'सम्म-तणएचराया पठेयं पट्टपट्टेदमा' (संशोप २२)। २ प्राचरण (मृमनि १२५)।

चरण न [चरण] १ संयन, चारिअ, वज, निम (छा १, १. शोप २. विने १)। २ बत्ता, वज्रों का दुपदिमाण (सुर २, ३)। ३ पय का बीजा दिग्मा (निम)। ४ मगर, बिहार (रुं, मृम १, १०, २)। ५ वेदन, धार (जय २)। ६ पउ, वज

(३, ७) । ^१करण न [करण] संयम का मूल और उत्तर गुण (सूत्र १, १ सम्म १६४) । ^२करणाणुयोग पुं [करणाणुयोग] संयम के मूल और उत्तर गुणों की व्याख्या (निबू १५) । ^३कुसील पुं [कुसील] चरित्र की मलिन करनेवाला साधु, शिष्टिवाचारी साधु (पव २) । ^४णय [नय] क्रिया की मुख्य माननेवाला मत (भाषा) । ^५मोह पुं [मोह] चारित्र का भावावरु कर्म-विशेष (कम्म १) ।

चरम वि [चरम] १ अन्तिम, अन्त का, पर्यन्तवर्ती (आ २, ४, भाग ८, ३, कम्म ३, १७; ४, १६; १७) । २ अन्तर भव से मुक्ति मानेवाला । ३ जिसका विद्यमान भव अन्तिम हो वह (आ २, २) । ^४काल पुं [काल] मरणसमय (पंचव ४) । ^५जलहि पुं [जलधि] अन्तिम समुद्र, स्वयंभूमण समुद्र (सहस्र २) ।

चरमंत पुं [चरमान्त] सब से अन्तिम, सब से प्रायः-वर्ती (सम ६६) ।

चरय देखो चरम (श्रीप; शास्त्र १, १५) । चरि पुंकी [चरि] १ पशुओं की चरने की जाहू । २ चारा, पशुओं की खाने की चीज, घास (कुम १७) ।

चरिग देखो चरिया = चरिहा (राज) ।

चरित न [चरित्र] १ चरित, आचरण । २ व्यवहार (अवि, प्रासू ४०) । ३ स्वभाव, प्रकृति (हुमा) ।

चरित्त न [चरित्र] जीवन कथा, जीवनी, कहानी (सम्मत् १२०) ।

चरित्त न [चारित्र्य] संयम, विरिधि, व्रत, नियम (आ २, ४, ४, ४; मग) । ^१कप्प पुं [कल्प] संयमागुहान का प्रतिपादक ग्रन्थ (पंचमा) । ^२मोह पुं [मोह] कर्म-विशेष, संयम का भावावरु कर्म (मग) । ^३मोहजिज्ज न [मोहनीय] वही पूर्वोक्त कर्म (आ २, ४) । ^४चारित्त न [चारित्र्य] आशिव संयम, व्याव-पर्य (पडि; भाग ८, २) । ^५चार पुं [चार] संयम का अनुष्ठान (पडि) । ^६रिय पुं [रिय] चरित्र से भाव्य, सिद्ध चरित्रवला, साधु, मुनि (पण १) ।

चरित्ति पुंकी [चारित्र्य] संयमवाला, साधु, मुनि (उप ६६६, पंचव १) ।

चरिम देखो चरम (सुर १, १०; प्रीप; भग; आ २, ४) ।

चरिय पुं [चरक] चर-गुण, जाग्रत, द्रव (सुपा ५२८) ।

चरिय न [चरित] १ चरित, आचरण (श्रीप; प्रासू ८६) । २ जीवनी, जीवन-चरित (सुपा २) । ३ चरित-ग्रन्थ (सुपा ६५८) । ४ चरित, आशिव (पण १, ३) ।

चरिया की [चरिका] १ परिष्कारिका, संपा-सिनी (श्रीप ५६८) । २ किला और नगर के बीच का मार्ग (सम १३७; पण १, १) ।

चरिया की [चर्या] १ आचरण, अनुष्ठान, 'दुक्करचरिया मुणिराण' (पठम १४, १५२) । २ गमन, गति, विहार (सूत्र १, १, ४) । ३ शक्ति (आख्या ० पत्र ११ गा. ६८) ।

चरोया देवों चरिया = चर्या, 'तण्णफो चरीया य इवेकवारस जोगिनु' (पंच ४, २०) ।

चरु पुं [चरु] स्वाती-विशेष, पान-विशेष (श्रीप; अवि) ।

चरुणिणय देखो चारुहणय (इक) ।

चरुल्लेय न [दे] नाम, आख्या (दे ३, ६) ।

चल सक [चल] १ चलना, गमन करना । २ झुक, कापना, हिलना । चवइ (महा, गउड) । वड्ड, चलंत, चलमाण (गा ३५६; सुर ३, ४०; मग) । हेऊ. चलिई (गा ४८४) । श्रयो. संऊ. चलइत्ता (वड्ड ५, १) ।

चल वि [चल] १ चंचल, अस्थिर (स ४२०; बजा ६६) । २ पुं. रावण का एक मुण्ड (पठम ५६, ३६) ।

चलचल वि [चलचल] १ चंचल, अस्थिर; 'चलचलयोडिगोडणवराई नयणाई तरु-गोई' (बजा ६०) । २ पु. धी में तनी जाती हुई चीज का फलना सीन धान (निबू ४) ।

चलण पुं [चरण] पाँच, पैर, पाद (श्रीप; दे १, १६) । ^१माडिया की [माडिया] पैर का आभूषण-विशेष (पण २, ५; श्रीप) । ^२वट्टन न [वट्टन] पैर पर तिर मुद्रा कर प्रणम, प्रणाम-विशेष (पठम ८, २०६) ।

चलण न [चलन] चलना, गति, बात, प्रया, रिताज (सि ६, १३) ।

चलणा की [चलना] १ चलन, गति । २ कम्म, हित्तन (भा १६, ६) ।

चलणाइह पुं [चरणायुध] कुक्कुट, मुर्गा (दे ३, ७) ।

चलणाओह पुं [दे चरणायुध] ऊपर देखो (पडि) ।

चलणिया की [चलनिका] नीचे देखो (श्रीप ६७६) ।

चलणिया } की [चलनिका, 'नी'] जैन
चलणी } साधियों की पहने का कटि-
बन्ध (पव ६२) ।

चलणी की [चलनी] १ साधियों का एक उपकरण (श्रीप ११५ भा) । २ पैर तक का कीच (जीव ३, मग ७, ६) ।

चलवलण न [दे] चटपटाई, चंचलता (पठम १०२, ६) ।

चल्यचल वि [चलाचल] चंचल, अस्थिर (पठम ११२, ६) ।

चलियि वि [चलियि] इन्द्रिय-निद्रा करने में असमर्थ, जिसकी इन्द्रिया काहू में न हो वह (भाषा २, ५, १) ।

चलिअ न [चलित] १ विकलता, अस्थिर्य, चंचलता (पव) । २ वि. चला हुआ, कम्पित (भावम) । ३ प्रवृत्त (शाम; श्रीप) । ४ विनष्ट (धम्म २) ।

चलिर वि [चलित] चलनेवाला, अस्थिर, चपल, चंचल, 'चलिरमचली' (उप ६८६; सुपा ७६, २५७, ३५१) ।

चल्ले देखो चल = चल् । चल्लइ (हि ४, २३१; पडि) ।

चलणम न [दे] जपनायुक, कटि-बन्ध (पडि) ।

चलि की [दे] नाचते समय की एक प्रकार की गति (कपू) ।

चलि की [दे] मदन-वेल्हा (संति ४७) ।

चलिअ देखो चलिअ (सुर २, ६१; उर पु ५०) ।

चन मक [कथय] बहना, बोलना । चवइ (हि ४, २) । ^१कर्म. चलिअइ (हुमा) । ^२वा. चवंड (अवि) ।

चन धक [च्यु] भरना, जन्मान्तर मे जाना ।
चवइ (हे ४, २३३) । सङ्क. चवियऊण
(प्राक्) । ङ्क. चवियवट (ठा ३, ३) ।

चय पु [च्यय] मरण, मौत, 'मल्लंता यपुण-
चय', (उत्त ३, १४) ।

चयचय पुं [चयचय] 'चन-चय' भावान,
ज्वनि विरोप (धोप २८६ भा) ।

चयण न [च्ययन] १ मरण, जन्मान्तर-प्राप्ति
(सुर २, १३६, ७, ८, ४४) । २ वतन,
गिर जाना (बृह १) ।

चयल वि [चयल] १ चवल, अग्निघर (सुर
१२, १३८, प्राप् १०३) । २ मातुल, व्या-
कुल (धोप) । ३ पुं. रावण का एक मुम्रट
(पठम ४६, ३६) ।

चयल पुं [दे] धन-विरोप, बीडा (आ १८) ।
चयलय पुं [दे] धान्य विरोप, गुजराली मे
'बोय' (पव १५४) ।

चयला की [चयला] विद्युत, बिजली (जीव
१) ।

चयिअ वि [च्युत] मृत, जन्मान्तर-प्राप्त
(हुमा २, २६) ।

चयिअ वि [कथित] उक्त, कहा हुआ (मवि) ।
चयिआ की [चयिआ] जनपति विरोप
(पणए १७—पत्र ४११) ।

चयिहा } की [चपेटा] तमाचा, धण्ड
चयिला } (हे १, १५६, हुमा) ।
चयेला }

चयेकी की [दे] १ निजुत कर-कुंठ । २ छुट्ट,
समुद्र, हिम्मा (दे ३, १) ।

चयेन न [दे] धचनोय, लोनापवाद (दे ३,
१) ।

चयेना देनो चयिहा (प्राक्) ।

चउअ स [चय] चवाना (सति ३४) ।

चउअ (सी) देनो चय = चयं । चयदि (प्राक्
१३) ।

चउअविअ नि [दे] धरतिउ, बूने से पोवा
हुमा, 'चययिआ य पुणेण नायिआ (गुग
४४५) ।

चउअण न [चउअ] चवाना (दे ७, ८२) ।

चउआइ देनो चउअणि (पत्र) ।

चउआरु } पुं [चोआरु] कालिंद, बृहस्पति
चउआन } का शिव, मोरामति (प्रवी
७८; पत्र) ।

चउआगि वि [चोआगि] १ चवानेवाला ।
२ दुर्व्यवहारी (वव ३) ।

चउअिय वि [चउअि] चवाया हुमा (सुर
१३, १२३) ।

चउअ सक [चय] चकना, आस्वाद लेना ।
चउ. चउअ (सी) (रमा) । हेऊ. चउसिहुं
(सी) (रमा) ।

चउसग } पुं [चयप] १ दाह पीने का प्याला
चउसय } (जे ४, पाम) । २ पान-पात्र, प्याला
(सुर २, ११, पठम ११३, १०) । ३ पति-
विरोप (दे ६, १५४) ।

चउतिया की [दे] छुट्टी, छुट्टीघर, 'जोग-
भुएणचहतिवामनपत्तेवेण' (कात्त) ।

चउट्ट धक [दे] चिपकना, चिपटना, सगना,
गुजराली मे 'चउट्ट', २ मूठ तुह धनउजे
लोलाइ चउट्टए जहा चित' (सवेय १६) ।
चउट्टर (हुम २४६) ।

चउट्ट वि [दे] १ निमग्न, लीन (दे ३, २;
वजा ३८), 'मण-ममरो-गुण सीए मुहाराविदे-
चिअ चउट्टो' (उर ७२८ टी) ।

चउट्ट } वि [दे] चिपका हुआ, सगा
चउट्टिय } हुमा (पमवि १४१, उप ७२८
टी, पुत्र २७) ।

चउट्टे पुं [दे] एक मनुष्य जाति (मवि) ।

चाइ वि [त्यागि] १ त्याग करनेवाला,
छोड़नेवाला । २ दायी, दान देनेवाला, वरार
(सुर १, २१७, ४, ११८) । ३ नि.सय,
लिरिह, संखी (मवा) ।

चाइय वि [त्याजित] छोड़वाया हुआ (पमवि
८) ।

चाइय नि [शक्ति] जो समर्थ हुआ हो
(पठम ७, १२१, गुप १, १४), 'सखीका
एहि जया पेत्तूण न चाइया मुदिण' । ताह
ते मेरइय' (पठम ११८, २४) ।

चाउअगी की [चावेही] मुन्दर धंगगली
की (प्रा २६) ।

चाउअह पु [चामुण्ड] राउअ-यंअ का एअ
राग, एअ सङ्गा-पति (पठम ४, २६३) ।

चाउआल न [चउआल] चार बरत, चार
ममय (पति २४७६) ।

चाउअण नि [चउअण] चार बीनगना,
चतुस (बीन ३) ।

चाउअण्ट } वि [चउअण्ट] चार धंदवाला,
चाउअण्ट } चार घण्टाओं से युक्त (शाय
१, १, मय ६, ३३; निर १) ।

चाउआम न [चाउआम] चार महाप्रत,
साधु धर्म—महिता, सत्य, भक्तोप धीर धरि-
ग्रह ये चार साधु वत (शाय १, ७, डा ४,
१) ।

चाउआय न [चाउआय] दासकीनी, सना-
लपन, इलामची धीर नागनेमर (उप पु
१०६; महा) ।

चाउअथग देनो चाउअथिय (उत्ति ३) ।

चाउअय पु [चाउअय] रोग पिराप, घोवे-
बीये दिन पर होनेवाला उवर, बीयिया
बुलार (जीर ३) ।

चाउअसिया की [चउअसिया] निमि-विरोप,
चउअसी, बीदस, 'हीएणुएणचाउअसिया'
(उवा) ।

चाउअसी की [चउअसी] ऊपर देनो (मग,
जो ३) ।

चाउअह (मय) नि. म. [चउअहान]
चौदह, १४ (पिंग) ।

चाउअसि देनो चउअसि (महा. गुग ३६५)

चाउआय न [चउआय] चउअिय, चार
प्रकार का (उत्त २०, २३; गुल २०, २३) ।

चाउमास } पुं [चाउमास] १ बीमाग,
चाउम्मान } जैसे प्रापाइ से लेर नातिन
तर के चार महीने (उप ६ ६६०, ववा
१७) । २ प्रापाइ, नातिन धीर चामुन
मान की गुल चउअसी: 'पतिअ चाउमामे'
(तदुप १६) ।

चाउमासिअ नि [चाउमासिअ] १ चार
मास चामुनी, जैसे प्रापाइ से लेर नातिन
तर के चार महीने से सम्बन्ध रखनेवाला
(शाय १, ४, सुर १४, २२८) । २ न.
प्रापाइ, नातिन धीर चामुन मान की गुल
चउअसी जिमि, पवि गिरेर (वा ४७, पति
३८) ।

चाउमासी की [चाउमासी] चार मास,
बीमाग, प्रापाइ से नातिन, नातिन मे
चामुन धीर चामुन से प्रापाइ तर के चार
महीने (पठम ११८, १८) ।

चाउम्मासी छी [चाउमासी] देखो चाउ-
म्मासिअ (धर्म २, प्राव) ।

चाउरंग देखो चउरंग (पवव २, ७५) ।

चाउरंगि देखो चउरंगि (मग, छाया १,
१—पन ३२) ।

चाउरंगिज वि [चतुरङ्गीय] १ चार भागो
से सम्बन्ध रखनेवाला । २ न. 'उत्तराध्यायन'
मूख का एक अध्यायन (उत्त ४) ।

चाउरंत देखो चउरत (सम १, ठा ३, १,
हे १, ४४) ।

चाउरत पु [चातुरन्त] १ चक्रवर्ती राजा,
सम्राट् (पणह १, ४) २ न सत्तम-महाजय,
चौरी (स ७८) ।

चाउरंत न [चातुरन्त] भरत क्षेत्र, भारतवर्ष
(विद्य ३४०, ३४१) ।

चाउरत न [चतुरन्त] बक, पहिया (बिद्य
३४४) ।

चाउरक वि [चातुरक्य] चार बार परिणत ।
'गोक्षीर न [गोक्षीर] चार बार परिणत
किया हुआ गो-दूध, जैसे कतिपय गोभो का
दूध दूधपे गोभो को पिलाया जाय, फिर
उनका मनु्य गोभो को, इस तरह चार बार
परिणत किया हुआ गो-दुग्ध (जीव ३) ।

चाउल वि [दे] चावल का, 'तहेव चाउल
विट्' (दस ३, २, २२) ।

चाउल पु [दे] चावल, तरबुज, (दे ३, ८,
प्राभा २, १, ३, ६, ८, उप पु २३१,
भाप ३४४, सुभा ६३६-२४७ ६०, ८०) ।

चाउल्लग न [दे] दूध का पुल्लत—कृत्रिम
दूध (निष्पु १) ।

चाउउण देखो चाउवण (सम्मत १६२) ।

चाउवण } वि [चातुर्वर्ण्य] १ चार वर्ण-
चाउउण्ण } वाला चार प्रकार वाला । २
पु. साधु साधनी, श्रावक और व्यापिक का
समुदाय (ठा ५, २—पन ३२१), 'चाउव-
एणस समणसपत्त' (पउम ६०, १२०) ।
३ न. ग्राहण, दायिप, वैश्य और शूद्र के
चार मनुष्य-जाति (मग १५) ।

चाउविज्ज देखो चाउवैज (ली ७) ।

चाउवैज न [चातुर्वैद्य] १ चार प्रकार
की चिकित्सा—ग्याय, व्यावरण, साहित्य और
धर्म-शास्त्र । २ पु. चौबे, बाह्योणी का एक

मल्ल—उपगोत्र यावर्ग, 'पउरचातवैज्जकोएण'
(महा) ।

चाउरसाला छी [चतुरशाला] चारो तरफ
के कमराधो से युक्त घर (पव १३३ टी) ।

चाएँत देखो चाय = चय ।

चाँउडा छी [चामुण्डा] स्वनाम-स्वयत देवी
(हे १, १७४) । 'क्राउअ पुं [चमुक]
महादेव, शिव (कुमा) ।

चाग देखो चाय = त्याग (पंचव १) ।
चागि देखो चाह (उप पु १०५) ।

चाड वि [दे] मायावी, कपटी (दे ३, ८) ।
चाडु पुन [चाट्ट] १ प्रियवाक्य । २ सुरापद
(हे १, ६७, प्रथ) । 'धार वि [कार]
सुरापदो (पणह १, २) ।

चाडुअ न [चाटुक] ऊपर देखो, कुमा) ।

चाणक पु [चाणक्य] १ राजा चन्द्रगुप्त का
स्वनाम-प्रसिद्ध मन्त्री (मुद्रा १४४) । २ एक
मनुष्य-जाति (प्रवि) ।

चाणकी छी [चाणक्यो] लिपि विशेष (विदे
४६५ टी) ।

चाणिक देखो चाणक (माक) ।
चाणूर पु [चाणूर] मल्ल-विशेष, जिसको
धीछ्म्य न मारा या (पणह १, ४, विप) ।

चांमर पुन [चांमर] चंदर, बाल-व्यवन (हे
१, ६७) । २ छन्द विशेष (पिण) । 'माहि
वि [माहिन्] चांमर नीजनेवाला नौकर ।

छी. 'गी (प्रवि) । छायाण न [छायाण]
स्वाति नक्षत्र का गोत्र (इक) । 'वमय पु
[भज] चांमर-युवत पलाका (मीर) ।

'धार वि [धार] चांमर बीजनेवाला (पउम
८०, ३६) ।

चांमरच्छ न [चांमरछ] गोद विशेष (मुज्ज
१०, १६) ।

चांमरा छी. ऊपर देखी (मीप, वसु भा ६,
३३) ।

चांमीअर न [चांमीकर] सुवर्ण, सोना
(पाम, सुभा ७७, छाया १, ४) ।

चांमुंडराय पुं [चामुण्डराज] सुवरात का
एक वीरुष्य बरा का राजा (मुद्र ४) ।

चांमुंदा देखो चाँउडा (विदे, पि) ।

चाय देखो चय = शर् । बट्ट. चापध,
चायें (सुम ३, ३, १, यव १) ।

चाय देखो चाय (सुभा ५३०, से १४, १५,
पिण) ।

चाय पु [त्याग] १ छोड़ना, परित्याग (प्राप्
८, पवव १) । २ दान (सुर १, ६५) ।

चायग } पुं [चातक] पक्षि-विशेष, चातक
चायव } पक्षी (सण, पाष, दे ६ ६०) ।

चार सक [चारय] चराना, खिलाना ।
चारेद (धर्मवि १४३) ।

चार पुं [चार] १ गति, गमन, 'चायकारेण'
(महा, उप पु १२३, रयण १४) । २ जमण,
परिभ्रमण (स १६) । ३ चर-युष्य, जासुम

(विपा १, ३, महा, मवि) । ४ कारागार,
बैदखाना (मवि) । ५ सचार, सचरण
(मीप) । ६ अनुष्ठान, वाचरण (प्राचानि
४५, महा) । ७ उद्योगिप-क्षेत्र, भाकाश (ठा
२, २) ।

चार पुं [दे] १ दृष्ट विशेष, पियाल धून,
चिरींजी का पेठ (दे ३, २१, मयु, पणह
१६) । २ बन्धन स्थान (दे ३, २१) । ३
इच्छा, क्षमिताय (दे ३, २१, भवि, सुभा
५११) । ४ न. फल विशेष, मेवा विशेष

(पणह १६) । 'वक्रय पुं [क्रय] देवने-
वाले की इच्छानुसार दाम देकर खरीदना
(सुभा ५११) ।

चाए देखो चर = चर् ।

चांरा वे [चारक] देखो चार (मीप, छाया
१, १, पणह १, ३, उप ३५७ टी) । 'पाल
पु [पाल] जेलखाना का प्रमुख (विपा १,
६—पन ६५) । 'पालरा पुं [पालक]
बैदखाना का प्रमुख, जेलर (उप पु ३३७) ।

'भड न [भाण्ड] बैदी की शिक्षा करने
का उपकरण (विपा १, ६) । 'हिव पुं
[पिप] बैदखाना का प्रख्यात, जेलर (उप
पु ३३७) ।

चारण पु [दे] ग्रन्थ-वैदिक, पावेउमार, चोर-
विशेष (दे ३, ६) ।

चारण पुं [चारण] १ श्रावण में गमन करने
की शक्ति रखनेवाले जैन मुनियो को एक
जाति (मीप, मुद्र ३, १५, मवि १६) । २
मनुष्य-जाति विशेष, स्तुति करनेवाली जाति
माट (उप ७६८ टी, प्राभा) । ३ एक जैन
मुनि-गण (ठा ६) ।

४५

चारणिआ छो [चारणिम] गणित-विशेष (श्लोक २१ टी) ।

चारभट्ट पुं [चारभट्ट] शूर पुरुष, लब्धव्य, सैनिक (पह १, २; १, ३, ३, ३) ।

चारभट्ट पुं [चारभट्ट] छुटेरा (पिउ ५७६) ।

चारय देखो चारय (मुग २०७, ल १५) ।

चारघाय पुं [दे] घोघम श्रुत का पवन (दि ३, ६) ।

चारहट्ट देखो चारभट्ट (धम्म १२ टी, भवि) ।

चारहट्टी छो [चारभट्टी] शौर्यवृत्ति, सैनिक-वृत्ति (मुग ४४१, ४४२, हे ४, ३६६) ।

चारगार न [चारगार] वैदलाना, जेलखाना (मुग १६, १७) ।

चारि छो [चारि] चार, पशुओं के खाने की चीज, घास आदि (श्लोक २३८) ।

चारि वि [चारिन्] १ प्रवृत्ति करनेवाला । (विसे २४३ टी, उव, भावा) । २ चलने वाला, गमनशील (श्लोक, कम्पु) ।

चारिअ वि [चारित्] १ जिसको खिलाया गया हो वह (से २, २७) । २ विज्ञापित, जताया हुआ (पह १७—पत्र ४६७) ।

चारिअ पुं [चारिअ] १ चर पुरुष, जासूस (पह १, २; पत्र २६, ६५), 'चोरपति चोरिउत्ति य होइ जसो परदारगामिनि' (विसे २३७३) । २ चंचलता का मुसिया पुरुष, सटुआय का मनुष्य (स ४०६) ।

चारित देखो चरित्त—चारिअ (श्लोक ६ भा, व ६७७ टी) ।

चारित्ति देखो चरित्ति (कुफ १५५) ।

चारियव्य देखो चर—चर ।

चारिया छो [चर्या] १ भावरण, इषर-उपर गमन, जीविका । २ वेष्टा (उत १६, ८१, ८२, ८४, ८५) ।

चारी छो [चारी] देखो चारि—चारि (स ४८०; श्लोक २३८ टी) ।

चारु वि [चारु] १ सुन्दर, शोभन, प्रवर (उवा, श्लोक) । २ पुं, धीमेरे जिनके का प्रथम शिष्य (स १५२) । ३ न. प्रहण-विशेष, शर विरोध (जीव १, राय) ।

चारउगय पुं [चारविगय] १ देह-विरोध । २ वि. उव देह का निगमो (श्लोक; भव) ।

छो. 'णिग्या (श्लोक) ।

चारणय पुं [चारुनरु] उपर देखो (श्लोक) ।

छो. 'णिग्या (श्लोक, श्लोक १, १) ।

चारुवच्छि पु. व. [चारुवत्ति] देह-विरोध (पत्र ६८, ६४) ।

चारुसेणी छो [चारुसेनी] छल-विरोध (विग) ।

चाल सक [चालय] १ बलाना, हिलाना, कपाना । २ विन्यास करना । चासेइ (उव, स ४७४, महा) । कर्म. चालिज्जइ (उव) ।

वह. चालत, चालेमाण (मुग २२४; जीव ३) । बचक. चालिज्जमाण (श्लोक १, १) ।

हेइ. चालितए (उवा) ।

चालण न [चालण] १ बलाना, हिलाना (रभा) । २ विचार (विसे १००७) ।

चालण न [चालण] राका, प्ररन, पूर्वपत्त (वेइ २७१) ।

चालणा छो [चालणा] राका, पूर्वपत्त, प्रासेव (मपु, वृह १) ।

चालणया छो [चालनिम] नीचे देखो (उव ११४ टी) ।

चालणी छो [चालनी] घासा, छानने का पाणी चलनी या छननी (भावन) ।

चाल्यास पु [दे] शिर का श्रृणु-विरोध (दे ३, ८) ।

चालिय वि [चालिअ] चलाया हुआ, हिलाया हुआ, 'पुण्यइए चातिमाए खिपसकेयमगाए' (महा) ।

चाळि वि [चाळिवि] १ चलानेवाला । २ चलनेवाला, 'खसवणुचाळिविअरदवगिअस-रिसेण पमेण' (वज्ज ७०) ।

चाले छो [चर्याविशत्त] चावीस, ४० (उवा) ।

चालीस चीन [चत्थारिंशत्त] चानीस, ४० (महा. विग) छो. 'सा (वि ५) ।

चालुष पुंछो [चालुष] १ चातुर्य वंश में उत्पन्न । २ पु. सुकसत का प्रसिद्ध राजा कुमारपाल (मुग) ।

चाय सक [चय] चबाना । इ. चायज्ज (उत १६, ३८) ।

चाय पुं [चाय] चतुष, चातुष (स ५३) ।

चायल न [चापल] चपलता, चपलता (मवि २४१) ।

चायल न [चापल] उपर देखो (स ५२६) ।

चायाली छो [चायाली] धाम विरोध, इस नाम का एक गाँव (भावन) ।

चायि वि [चयिअ] नवाया हुआ (पनेवि ४६; १४६) ।

चायि वि [क्यायिअ] मरवाया हुआ (पह २, १) ।

चायेछो छो [चापेटी] निघा-विरोध, जिसने दूसरे को लगाया मारने पर बीमार भावनी का रोग बना जाता है (व ५) ।

चायेव्य देखो चाय = चर ।

चायेणय न [चायेभत्त] विमान-विरोध, एक देह-विमान (स ३६) ।

चास पु [चाप] पल्ल-विरोध, स्वर्ण-चातक, पपीहा, लहट्टाखा (पह १, १; पण १७, श्लोक १, १, श्लोक ८४ भा, उर १, १४) ।

चास पु [दे] चाह, हृन्-विचारित भूमि देता, खेती (दे ३, १) ।

चाह सक [चाह] १ चाहना, वांछना । २ प्रस्ता करना । ३ याचना । चाहइ, चाहति (मवि विग) ।

चाहिणी छो [चाहिनी] हेमाचार्य की माता का नाम (पुत्र २०) ।

चाहिय वि [चाहिय] १ चाहिय, मवि-लपित । २ मरेगित । ३ चाहिय (मवि) ।

चाहुआग पु [चाहुआन] १ एव प्रसिद्ध क्षत्रिय-वंश, चीहान वंश । २ पुत्री, चीहान वंश में उत्पन्न (मुग ५५६) ।

चि देखो चिण । कर्म, चियइ, चिम्मइ, चिज्जनि (हे ४, २४३, मग) ।

चिअ म [च] निघय को बलानेवाला धर्म्य मरुबट्ट त पिअ मामिलोण' (ह २, १८४, कुमा. स १६, ४६, दं १) ।

चिअ म [इ] १—२ उमा कीर उमेरा का मुख्य धर्म्य (भावन) ।

चिअ वि [चिअ] १ रट्टा हिदा हुआ (मग) । २ व्याप (मुग २४१) । ३ पुट, मासन (उव ८०२ टी) ।

चिअन वि [चिअ] इंट भादि का डेर (मग १५४) ।

चिअ देखो चित्त = चित्त ग्राह २६) ।

चिआ छी [चिप्] कान्ति, तेज, प्रभा (पङ्क)।

चिआ देखो चियगा (मुग २४१: महा)।

चिइ छी [चिप्] १ उत्पन्न, पुष्टि, वृद्धि (पङ्क २)। २ इच्छा करना (उत्त ६)। ३ बुद्धि, मेधा (पाप्)। ४ भोत वगैरह बनाता। ५ चिता (पङ्क १, १—पङ्क ८)। *कर्म न [कर्मन्] वन्दन, प्रणाम-विशेष (भाव ३)।

चिइ देखो चेइअ (उप ५६७, चैय १२, पंचा १)।

चिइगा देखो चियगा (अ १)।

चिइछ सक [चिक्स्] १ दवा करना, इलाज करना। २ शाक करना, सहाय करना। चिइछइ (हे २, २१, ४, २४०)।

चिइछअ वि [चिन्स्सक] १ दवा करने-वाला, इलाज करनेवाला। २ पु. वैद्य (भा ३३)।

चिइय देखो चितिय, जेण एस मुचरियतकोवि मुजिइमिणिदवसणोवि (महा)।

चिउर पु [चिहुर] १ केरा, बाल (गा १८८)। २ पीत रंग का लघुद्रव्य-विशेष (पण १७—पङ्क ५२८, राय)।

चिच [सक] [मण्डय] विमूषित करना, चिचअ [असक] असक करना। चिचइ, चिचअइ (हे ४, ११५, पङ्क)।

चिचइअ वि [मण्डित] सोमित, विमूषित, अमरुत (पङ्क १५, १३, मुपा ८८, महा पाप्, प्राप्, कुमा)।

चिचइअ वि [दे] अलित, चला हुआ (दे ३, १३)।

चिचणिआ छी [दे] देखो चिणिआ (मुगा चिचणिगा मुपा १२ ५८८)। चिचणी

चियमी छी [दे] भरट्टिका, अन्न पीमने की चकरी (दे ३, १०)।

चिचा छी [चिआ] १ लुण की बनाई हुई चलाई वगैरह। *पुरिस पु [पुरय] लुण वा मनुष्य, जो पशु पत्नी मादि को डराने के लिए खेती में गाढ़ा जाता है (मुगा १२४)।

चिचा छी [दे. चिआ] इसली का पेड़ (दि ३, १०, पाप्, विपा १, ६, मुपा १२४, ५८२, ५८३)।

चिचिअ वि [मण्डित] भूषित, अलंकृत (कुमा)।

चिचिणिआ छी [दे] इसली का पेड़ चिचिणिचिचा (घोष २६; दे ३, १०, चिचिणी मुपा ५८४, पाप्)।

चिचिह सक [मण्डय] विमूषित करना, अलंकृत करना। चिचिहइ (हे ४, ११५, पङ्क)।

चिचिहअ वि [मण्डित] विमूषित, अलंकृत, सँवारा हुआ (पाप्, कुमा)।

चित सक [चिन्त्य] १ चिन्ता करना, विचार करना। २ याद करना। ३ ध्यान करना। ४ कीर्ति करना, शफखान करना।

चितेइ, चितेमि (उव, कुमा)। वहु. चितव, चितेल, चितिस, चितयस, चितयमाण, चितेमाण (कुमा, उव, पङ्क १०, ४, अवि ५७, हे ४, ३२२, ३१०, सुर ४, २३)। वचह.

चितिज्जत (भा ६५१)। सङ्क. चितित, चितिऊण (महा, गा ३५८)। क. चित-णीय, चितियक, चितेयक (उप ७३२, पचा २, पङ्क ३१, ७७, मुपा ४४५)।

चित वि [चिन्त्य] चिन्तनीय, विचारणीय, विचार योग्य (उप ६८५)।

चितग वि [चिन्तक] चिन्ता करनेवाला, विचार (उप पु ३३३, ३३६ टी)।

चितथ न [चिन्तन] १ विचार, पर्यालोचन (महा)। २ स्मरण, स्मृति (उत्त ३२, महा)।

चितपा छी [चिन्तना] ऊपर देखो (उप ६८६ टी)।

चितणिआ छी [चिन्तमि] याद करना, चिन्तन करना (उप ५, ३)।

चितय वि [चिन्तक] चिन्ता करनेवाला (उप ५६१, निर १, १)।

चितव देखो चिन = चिन्त्य। चिनवइ (कुमा मरि)।

चितविथ वि [चिन्तित] ज्यकी चिन्ता की गई हा बहु (अवि)।

चिता छी [चिन्ता] १ विचार, पर्यालोचन (पाप्, कुमा)। २ अफसोस, शोक, विलगीरी (सुर २, १६१; सुम २, १, प्राप् ६१)। ३ ध्यान (भाव ४)। ४ स्मृति, स्मरण (एदि)। ५ इष्टप्राप्ति का संदेह (कुमा)।

*उर वि [तुर] शोक से व्याकुल (सुर ६, ११६)। *दिहू वि [टहू] विचार-पूर्वक देखा हुआ (पाप्)। *मइअ वि [मय]

चिन्ता युक्त, 'समये वितामदम काजण मिअ' (गा १३३)। *मणि पु [मणि] १ मनो-वाञ्छित वस्तु की देनेवाला रत्न विशेष, दिव्य मणि (महा)। २ नीलशत नगरी का एक राजा (पङ्क २०, १४२)। *वर वि [पर]

चिन्ता-मग्न (पङ्क १०, १३)।

चितायग वि [चिन्तक] चिन्ता करनेवाला चितायग (भावम)। छी. *गा (मुपा २१)।

चितिय वि [चिन्तित] १ विचारित, पर्यालोचित (महा)। २ याद किया हुआ, स्मृत (छाया १, १, पङ्क)। ३ जिसको चिता जलन हुई हो वह (जीव ३, बीप)। ४ न. स्मरण, स्मृति (भा ६, १३, बीप)।

चितिर वि [चिन्तयिह] चिन्ताशील, चिन्ता करनेवाला (भा २७, सण)।

चिच न [चिह] १ चिह्न, लक्षण, निशानी (ह २, ५०, प्राप्, छाया १, १९)। २ ध्वजा, पताका (पाप्)। *पट्ट पु [पट्ट]

निशानी जल यन्त्र-सदृश (छाया १, १)। *पुरिम पु [पुरय] १ बाकी-रूँख वगैरह गुरप की निशानी वाला मनुष्य, हिजड़ा। २ गुरप का वेप धारण करनेवाली छी वगैरह (अ ३, १)।

चिचाल वि [चिहुर] चिहुरत, निशानी-वाला (पङ्क १०९, ७)।

चिचाल वि [दे] १ रज्य, गुल्बर, मनोहर। २ मुख्य, प्रधान, प्रवर (दे ३, २२)।

चिधिय वि [चिहिन] चिह्न-युक्त (पि २६७)। चिपुल्लयी छी [दे] छी वा पत्तने वा यन्त्र-विशेष, सहजा (दे ३, १३)।

चिक्किइ देखो चिइछइ। चिक्किआमि (ग ४८५)। इ चिचिइअअ (अवि १६७)। चिहुर देखा चिउर (पि ५०६)।

चिक वि [दे] १ श्लोक, घोडा, मत्स्य । २ न. धुन छोक (पद) ।

चिकण वि [चिकण] चिकना, सिनाय (पण १, १, गुण ११) । २ निविड, पना, 'जं पाव चिकण तप बद्ध' (सुर १४, २०६) । ३ दुम्येय, दु ख से छूटने योग्य (पण १, १) ।

चिको सो [च] १ घोड़ी बीज । २ हलकी मेम-बुटि, मुकम छोटा (दे ३, २१) ।

चिकार पु [चीरमार] चिल्लाहट, चिपाड (सण) ।

चिकिग दलो चिकण (हुमा) ।

चिकुरअग नि [द] सहिण्णु, सहन करने-बाना (पद) ।

चिकुरअग पु [दे] कर्मन, पक, पीछ (दे ३, ११, हे १, १४२, पण १, १) ।

चिकुरअग म [चिकुरअग] बाडियावाह बा एक नगर (ती २) ।

चिकिराज [दे] देवो चिकराज (मा ६७, चिन्ता ३२४, ४४५, ६८४, मीप) ।

चिगिचिगाय मक [चिनचिनाय] बब-बनाट करना, घमघना । बहू. चिगिचिगायत (सुर २, ८६) ।

चिगिचिगण देवो चिद्वज्ज (पिबे १०) ।

चिगिचिगण न [चिरिस्मन] चिचिमा, हराज (उ १३५ दी) ।

चिगिचिगण देवो चिद्वज्ज (म २७८, छाया ४, ५—पण १११) ।

चिगिचिगो धो [चिरिस्मा] दवा, प्रतीमार, हराज (म १७) । 'साहिया मा [साहिया] चिचिमा शापर भेयर-आपर (म १७) ।

चिगि नि [दे] १ चिगो नासिवासा, वैडी हुई नाराज (दे ३, ६) । २ न. रमण, रामान, रति (दे ३, १०) ।

चिगि नि [राउग] घोने योग्य, परिपूर्ण योग्य (मा ४६८) ।

चिगर नि [दे] चिगो नासिवासा (दे ३, ६) ।

चिगो देवा पय = पद ।

चिगि पु [चिगि] चोचर चिकण, मवर घासका 'चिगेदर'—(मा १, २—पण २६) ।

चिगि पु [दे] हाराज, घमन (दे ३, १०) । चिट्ठ म [दे] भयन्त, प्रतिशय (मा १, ४, २, २) ।

चिट्ठ मक [स्था] बैठना, स्थिति करना ।

चिट्ठ (हे १, १६) । मुका. चिट्ठि (प्रावा) । बहू. चिट्ठत, चिट्ठमाण (हुमा, मण) ।

सहू चिट्ठिउ, चिट्ठिऊण, चिट्ठिण, चिट्ठिआ, चिट्ठिआण (कण, हे ४, १६, राज, मि) । हेह. चिट्ठिआण (कण) । कू चिट्ठिणिज, चिट्ठिअण्य (उप २६४ टी. मण) ।

चिट्ठ देवो चेह्ठा । बहू चिट्ठमाण (पवा २) ।

चिट्ठहलु नि [स्था] बैठनेवाला, उठनेवाला (मण ११, ११, दसा ३) ।

चिट्ठण न [स्थान] गमा रहना (पव २) । चिट्ठण न [चिट्ठ] चेठा, प्रयत्न (दि २२) ।

चिट्ठणा सो [स्थान] स्थिति, बैठना, व्यवस्था (हह ६) ।

चिट्ठा देवो चेह्ठा (सुर ४, २४५, प्राम् १२४) ।

चिट्ठिय चि [चिट्ठ] १ निवने चेठा ही हो वह (पण १, ३, छाया १, १) । २ न चेठा, प्रयत्न, (पण २, ४) ।

चिट्ठिय नि [स्थान] १ व्यवस्थित, रहा हुआ । २ न. व्यवस्था, स्थिति (चर २०) ।

चिट्ठिय पु [चिट्ठि] पति विरोध (पण १, १) ।

चिण ताव [चि] १ झट्टा करना । २ हून बगेह ताहकर झट्टा करना । चिणइ (ह ४, २३८) । भूषा. चिणिमु (मण) । भवि चिणिइइ (ह ४, २४३) । बर्म. चिणिगइ (ह ४, २४२) । चह्ठ. चिणिऊण, चिणेऊण (पद) ।

चिण देवा पय (मा १८) ।

चिण देवो चित्त (प्राह २६) ।

चिणिअ नि [चिनि] झट्टा गिया हुआ (मुग २२३ हुमा) ।

चिणोटी धो [दे] हुना हुंचनी, सार रंगी हुचरणी में चणडा (दे ३, १२) ।

चिणि नि [चं] १ व्यवस्थित, प्रयत्न (उप १३) । २ व्यवस्थित प्रयत्न (उप १३) । ३ चित्त, इत (उप १३) ।

चिण्ह न [चिण्ह] निरासी, साधन (हे २, ५०, गउठ) ।

चित्त मक [चित्रय] चित्र बनाना, सतवीर खीचना । चित्तेइ (महा) । कबहु चित्तिज्जत (उप पु ३४१) ।

चित्त न [चित्त] १ मन, धन बरण, हृदय (ठा ४, १, प्राम् ६१; १५५) । २ ज्ञान, चेतना (मावा) । ३ बुद्धि, मति (मन ४) । ४ भूमिप्राय, धाराय (मावा) । ५ उपयोग, व्याल (मणु) । ६ णु नि [ह] दिल बा जानवार (उप पु १७६) । ७ निगाइ वि [चिपातिम] भूमिप्राय के अनुसार चलने-वाला (मावा) । ८ मत वि [चन्] धनीय वल्लु (मन ३६; मावा) ।

चित्त देवो चहत्त = चैत्र (रमा, ज २, कण) ।

चित्त न [चित्र] १ छवि, आलेख, समवीर (सुर १, ८६, स्वप्न १३१) । २ माधय, विस्मय (उत १३) । ३ बाह्य विरोध (प्राम् ५) । ४ नि. विनयाण, विचित्र (मा ६१२, प्राम् ४२) । ५ मनेत्र प्रकार का, विविध, नाताविष (ठा १०) । ६ प्रकृत, माधय-जनक (निगा १, ६, कण) । ७ कवरा, चित्तवरा (छाया १, ८) । ८ पु एक सातागन (ठा ४, १—पण ११७) । ९ परंत विरोध (पण १, ५—पण ६४) । १० विषय, बीता, दयापद विरोध (छाया १, १—पण ६५) । ११ नात्र विरोध, चित्रा नाम 'हलो चित्त य चहा, दस बुद्धिराद नाणस' (मण १७) । १२ पु [चित्र] भरत क्षेत्र मे एक प्राची जिनदेव (मण १५४) । १३ नामा धी [चित्रा] देश-विरोध, एक नियुक्तमारी देवी (ठा ४, १) । १४ मम न [चित्रे] भावेत्य, छवि, तलवीर (मा ६१२) । १५ देवो 'मर (मणु) । १६ चर नि [चित्र] नामा प्रचार की कर्मा करने-वाता (उत ३) । १७ पु [चित्र] १ गीतासी मे उभर निगारे पर चित्र एक कालवार-पर्वत (दे ४) । २ परंत-विरोध (उपम ३३, ६) । ३ न. कार-विरोध, जो व्यवहार नाम में 'चित्तो' नाम न प्रगट है (उपम ६८) । ४ शिखर-विरोध (ठा २, ३) । ५ चित्र धी [चित्रा] चित्र-विरोध

(अजि २७) । गार पुं [०कर] चित्रकार, चित्रेरा (सुर १, १०४, छाया १, ८) ।
 गुत्ता औ [गुत्ता] ? देवी विशेष, सोम-
 नामक लोकपाल की एक भद्र-महिषी (ठा ४, १) । २ दसिए रुचक पर्वत पर बसनेवाली
 एक दिव्यकुमारी, देवी-विशेष (ठा ८) । पवस
 पुं [पवस] ? वेणु देव नामक इन्द्र का एक
 लोकपाल, देव-विशेष (ठा ४, १) । २ छुट
 जलु-विशेष, चतुरिन्द्रिय कोट-विशेष (जीव
 १) । फल, फल्ला, फलय न [फलक]
 तसवीरवाला तस्वा (महा. अय १५, पि
 ११६) । भित्ति औ [भित्ति] ? चित्र-
 वाली भोत । २ औ की तसवीर (दस ८) ।
 यर देवो गार (छाया १, ८) । रस पुं
 [रस] भोजन देनेवाली कलाकुसी की एक
 भावि (सम १७, पउम १०२, १२२) ।
 लेहा औ [लेहा] छल्ल-विशेष (भानि
 १३) । संभूइय न [संभूतीय] चित्र
 और संभूत नामक चाण्डाल-विशेष के वृत्तान्त
 वाला 'उत्तराध्यायनसूत्र' का एक अध्यायन (उत्त
 १२) । सभा औ [सभा] तसवीरवाला
 गृह (छाया १, ८) । साला औ [शाला]
 चित्र-गृह (हेका ३२२) ।
 चित्रांग पुं [चित्राङ्ग] गुण देनेवाले वस्त्र-
 बुझी की एक जाति (सम १७) ।
 चित्रांग देवो चित्र = चित्र (उप पु २०) ।
 चित्राणुअ देवो चित्र-णु (शक्र १८) ।
 चित्राठिअ वि [दे] परिलोपित, छुटा किया
 हुआ (दे ३, १२) ।
 चित्राण न [चित्राण] चित्र-कर्म (धर्मवि ३४) ।
 चित्रादाउ पुं [दे] मधु-मयल, मधुपूडा (दे
 ३, १२) ।
 चित्रपत्तय पुं [चित्रपत्रक] चतुरिन्द्रिय
 जीव की एक जाति (उत्त ३६, १४६) ।
 चित्रपरिचयेय वि [दे] सजु, छोटा (अय,
 ७, ६) ।
 चित्रय देवो चित्र = चित्र (पाम) ।
 चित्रयल्ला औ [चित्रयल्ला] बल्ली-विशेष
 (हम्मौर २८) ।
 चित्राल वि [दे] ? मरिहत्त, विप्रुषित ।
 २ रणणीय, मुन्दर (दे ३, ४) ।
 चित्राल वि [चित्रल] ? चित्तता, बबरा,

चित्तकवरा (पाम) । २ पुं. जगली पशु-विशेष,
 हरिण के आकारवाला द्विचुरा पशु-विशेष
 (जीव १, पएह १, १) ।
 चित्रालि पुं औ [चित्रालि] साँप की एक
 जाति (पएण १) ।
 चित्रालिअ वि [चित्रालि, चित्रित] चित्र-
 गुक्त किया हुआ, 'पदम विप्र दिप्रहृदे कुटो
 देहाहि चित्रालिओ' (गा २०८) ।
 चित्राविअअ वि [दे] परिलोपित (पट्) ।
 चित्रवीणा औ [चित्रवीणा] बाजा विशेष
 (राय ४६) ।
 चित्ता औ [चित्रा] ? नक्षत्र-विशेष (सम २) ।
 २ देवी-विशेष, एक विद्याकुमारी देवी (ठा
 ४, १) । ३ शस्त्र के एक लोकपाल की
 औ, देवी-विशेष (ठा ४, १—पउम २०४) ।
 ४ शीपवि-विशेष (सुर १०, २२३, पएण १७) ।
 चित्ताचिह्नय पुं [दे] जंगली पशु-विशेष
 चित्ताचेह्नय (आषा २, १, ५, ३, ४) ।
 चित्तायडी औ [चित्रपटी] बल्ल-विशेष, छोट
 (बूदीवार) आदि बपका, 'उवविट्ठा' चित्ता-
 वडिमसूरयमि विजम्भवई कमलया व' (ध
 ७३८) ।
 चिचि पुं [चित्रिन्] चित्रकार, चित्रेरा (कम्म
 १, २३) ।
 चिचिअ वि [चित्रित] चित्र-गुक्त किया
 हुआ (श्रीप, कण; उप ३६१ टी. दे १, ७५) ।
 चिचिया औ [चित्रिन्] औ-भोता, आषा-
 विशेष की मादा (पएण ११) ।
 चिचो देवो चेचो (सुख १०, ७) ।
 चिची औ [चिची] चैत्र मास की पूर्णिमा
 (एक) ।
 चिहियिअ वि [दे] निर्णायित, विमोक्षित
 चिदायिअ (दे ३, १३. पाम. अवि) ।
 चित्र देवो चिण्ण (सुपा ४, सल. अवि) ।
 चिप्प रुक [दे] ? कुत्ता । २ दबान । बर्मे,
 'वि (० चि) चिप्पिअ जं तस्सि रेणुवि सोमह-
 वसहेण' (दे २, ६६ टी) । खं. चिप्पिचा
 (बृह २) ।
 चिप्पम पुन [दे] हूटी हुई छात्र, गुजराती में
 'चेतो' (कस २, ३० टी) ।
 चिप्पड देवो चिप्पिअ (धर्मवि २७) ।
 चिप्पय देवो चिप्पय (कस २, ३० टी) ।

चिप्पिअ पुं [दे] ननुंसन-विशेष, जन्म के
 समय में शंभू ने सदन कर जिसका झंडकोश
 दबा दिया गया हो वह (पव १०६ टी) ।
 चिप्पिडय पुं [दे] शत्रु-विशेष (दसा ६) ।
 चिबुअ न [चिबुन्] होठ के मोचे का धव-
 यन, छोटी (कुमा) ।
 चिन्मभ न [चिर्मिट] क्षीरा, ककडी, फल-
 विशेष, गुजराती में 'चेमपु' (दे ६, १४८) ।
 चिन्मडिया औ [चिर्मिटिअ] ? बल्लो-
 विशेष, ककडी का गाछ । २ माल्य की एक
 जाति (जीव १) ।
 चिन्मड देवो चिन्मड (सुपा ६३०; पाम) ।
 चिर्मिअ वि [चिर्मिट] चिपटा, बैठा हुआ,
 चिर्मिअ देवा हुआ (नाक) (छाया १, ८,
 पि २०७, २४४) ।
 चिमिअ वि [दे] रोमर, रोमाक्षित, गुलकित,
 गहू (दे ३, ११; पट्) ।
 चिय देवो चेइअ = चैत्य, 'सो मज्जा कयाइ
 चियपरिआवि कुण तमो नदरे' (सम्मत् १५६) ।
 चियका औ [चिता] मुर्दे की कूकने के
 चियया वि [दे] छोट लुनी हुई लकड़ियों का ढेर
 (पएह १, ३—पउम ४५, सुपा ६५७, त
 ४१६) ।
 चियस देवो चत्त (मग २, ५; १०, २,
 बप्प, मिज्ज १) ।
 चियस वि [दे] ? समित्त, सम्मत् (ठा ३,
 ३) । २ श्रौतिकर, राग जनक (ओप) । ३
 श्रोति, शक्ति । ४ भरोति का अभाव (ठा ३,
 ३—पउम १४४) ।
 चियस देवो चियया (पउम ६२, २३) ।
 चियया वि [दे] चोय = स्वाग (ठा ५, १,
 चियाय) सम १६) ।
 चिर न [चिर] ? शीघ्र काल, बहुत बाल
 (वज्ज ८३, गा १४७) । २ विलम्ब, देरी
 (गा ३४) । ३ वि. शीघ्र काल तक रहनेवाला-
 'हियदिन्दिय पियवला चिरा घया वस पायति'
 (वया ५२) । 'आरअ वि [कारक]
 विलम्ब करनेवाला (गा ३४) । 'जीनि वि
 [जीविन्] शीघ्र काल तक जीनेवाला (पि
 १६७) । 'जीविअ वि [जीविअ] शीघ्र
 काल तक जोपा हुआ, बूढ़ (वाप २, ३४) ।
 'टिह, टिहय, टिहिय वि [सिपितिक]

लम्बा घालुप्यवाला, दीर्घ काल तक रहनेवाला (मग. मूम १, ५, १), 'एमाई फामाई कुमरि बालं, निरतर तलय चिरट्टिईय' (मूम ३, ५, २), 'राअ पुं 'रात्र' बहु काम, दीर्घ काल (घात्ता)।

चिर धन [चिरय्] १ वितम्ब करना। २ घालस करना। चिरप्रदि (श्री) (पि ५६०)।

चिर म [चिरम्] दीर्घ काल तक, अनेक समय तक (स्वप्न २६, जो ५६)। 'तण वि [तन] घुपाना, बहुल काल भा (महा)। चिराचिय वि [चिरचित्] चिरकाल से उप-चित—इकट्ठा बिपा हुमा या बड़ा हुमा (पंच ५, १६७)।

चिरहो की [दे] वर्ण—माला, अक्षरावली; 'चिराचि वि ध्यायाना सोमा सोएहि गोरतम-हिमा' (दे १, ६१)।

चिराडिहिल [दे] देखो चिरिडिहिल (पात्र)। चिरमाल सक [प्रति + पालय्] परिपालन करना। चिरमालह (प्राह ७५)।

चिरया की [दे] कुटो-मोपरी (दे ३, ११)। चिरसस म [चिरस्य] बहुत काल तक (उत्तर १७६, कुमा)।

चिराअ देखो चिर = चिरम्। चिरमइ (म १२६)। चिराममि (मे६२)। मवि. चिरामसं (गा २०)। यइ. चिराअअम (गाट—मालती २७)।

चिराइय वि [चिरादिक] घुपाना, प्राचीन (छाया १, १, मीप)।

चिराईय वि [चिरातीत] घुपाना, प्राचीन (बिपा १, १)।

चिराउ म [चिरात्] चिर काल से, सम्ये समय से (कुप ३६७)।

चिराणय (भर) वि [चिरन्तन] घुपान, घुपाना, प्राचीन (मवि)।

चिरादण वि [चिरन्तन] ऊपर देखो (इह ३)।

चिरा मय [चिरय्] १ वितम्ब करना। २ काम करना। ३ सत. वितम्ब करना, सोर रचना चिरपइ (मवि)। चिराइह (काल). मा से चिरादेहि (पउम ३, १२६)।

चिराविय वि [चिराविड] १ खिसे निमन्त्र बिमा हो यह। २ निमन्त्रित, सोरा गया।

३ म. चिराम, देह. 'नरिणो यंसायए वि मय चिरायिं समि' (पउम १०२, १०१)।

चिरिचिरा की [दे] जलबारा, वृष्टि (दे ३, १२)।

चिरिका की [दे] १ पानी भरने का चर्म—मानन, मरक। २ अल वृष्टि। ३ प्रात. काल, सुबह (दे ३, २१)।

चिरिचिरा [दे] देखो चिरिचिरा (दे ३, १३)।

चिरिडी देखो चिरहो (गा १६१ म)।

चिरिडिहिल न [दे] बधि, बहो (दे ३, ५४)।

चिरिडिही की [दे] गुआ, घुंगरी, सास रली (दे ३, १२)।

चिराअ पुं [चिरात्] १ अनायं देश-विरोध। २ किरात देश में रहनेवाली म्लेच्छ-जाति, मिन्त, पुतिद (हे १, १२३, २५४, पएह १, १, मीप, कुमा)। ३ वन सारथी (ध्यायारी) का एक दास—नौकर (छाया १, १८)।

चिराइया की [चिरावित्रा] किरात देश की रहनेवाली की, निरातिन (छाया १, १)।

चिराई की [चिरातो] ऊपर देखो (इह)। 'पुस पुं [पुत्र] एक शाली-पुत्र और जैन-महपि (पंकि छाया १, १८)।

चिराइ देखो चिराअ (प्राह १२)।

चिलिचिलिआ की [दे] धारा, वृष्टि (पइ)।

चिलिचिलिय वि [दे] भीजा या भीजा हुआ, धारित, गीला (उडु ३८)।

चिलिचिलि [वि [दे] धार, गीला (पएह चिलिचिलि १, ३—पउम ५४, दे ३, चिलिचिलि १२)।

चिलिण [दे] देखो चिलीण, 'इधममममममि या चिलिणे वेह्नुहामो' (मोष १६२)।

चिलिमिणी } की [दे] बरिना, परदा,
चिलिमिलिया } माच्छादन-नट (मोष मा-
चिलिमिलिया } सुम २, २, ४८: नर,
चिलिमिली } मोष ७८, ८०)।

चिलीण न [दे] धगुवि, मैना, मन-भूत, 'मज्जति विनोए मज्जितामो घणुजंए मोत्तु' (उ १०३१ टी)।

चिल पुं [दे] १ बाण, बच्चा, लट्ठा (दे ३, १०)। २ बत्ता, लिम्ब (धायय)।

चिल पु [चिल] १ बृण रिदेय (यम)। २ न घुन रिदेय।

'पूयं कुलति देवा, कचणकुमुमेकु जिणुवरिदाए'। गृह पुण चिल्लदेनें नरेण पूया विरद्वयवा ॥'

(पउम ६६, १६)

चिल न [दे] मूर्ध, मूष, छात्र (प्राह २८)।

चिल्लअ न [दे] देवोपमान, चमकता, 'मंड-एणोइणुणमारएहि केहि केहिंवि मवंगतितय-पतलेहनामएहि चिल्लएहि' (मजि २८, मीर)।

चिल्लन [दे] देखो चिल्लिय (पएह १, ४—पउम ७१ टी)।

चिल्लइ [दे] देखो चिल्ल (दे) (भावा २, ३, ३)।

चिल्लमा की [चिल्लमा] एक सती की, राजा भैरविक की पत्नी (पवि)।

चिल्लय न [दे] धनचटु, खराब ब्राह्म (पएह १, १ टी—पउम २५)।

चिल्ल पु [चिल्लन] १ अनायं देश विरोध। २ उस देश का निवासी (इह)।

चिल्ल पुंकी [दे] १ धापद पशु-विरोध, बीता (पएह १, १—पउम ७, छाया १, १—पउम ६५)। की. 'लिया (पएह ११)। न. कंदोवाना जलारय, छोटा तपान आदि (छाया १, १—पउम ६३)। ३ देवोपमान, चमकता (छाया १, १६—पउम २११)।

चिहा की [दे] बील, पति-विरोध, शत्रुनिष्ठा (दे ३, ६८, ८८, पात्र)।

चिलिय वि [दे] १ लोच, घासक (छाया १, १)। २ देवोपमान (छाया १, १, मीप, बण्ण)।

चिलिह पु [दे] मरक, मन्दार, शुद्ध जलु-विदेय (दे ३, ११)।

चिल्लर न [दे] मुचन, एष प्रवार की मोटी लकड़ी जिससे चावल धारि मरक मूडे जाते हैं (दे ३, ११)।

चिल्लय पुं [दे] चरु-मार्ग, पहिने की लकड़ी, गुजराती में 'भीतो' (कुमा २८०)।

चिविड } वि [चिपिट] बिना, बैठ या
चिविड } बैठा हुआ (नार). 'चिविडमान' (पि २४८, पउम २७, ३२, पउम)।

चिविडा की [चिपिडा] मय द्रव्य विरोध (दे ३, ७१)।

चिविड देखो चिविड (पउम १३, १८१)।

चिहुर पुं [चिहुर] वेष्ट, बाल (पाक सुपा २८१)।

ची } देखो चेइअ (हे १, १५१, सार्च
चीअ } ५७, ६३)।

चीअ न [चित्ता] मुवे मो फूकने के लिए
अनी हुई लकड़ियों का ढेर, चीअ बहुस्तव व
अट्टिआईं जईस समुचिणई (गा १०५)।

चीइ देखो चेइअ (सुर ३, ७५)।

चीइ वि [दे] काता काच की मछिवाला
(सिंह ६८०)।

चीण वि [चीन] १ छोटा, लघु, 'बीणचिमि-
दववमगसास' (छाया १, ८—पत्र १३३)।

२ पु म्नेच्छ देश-विशेष, चीन देश (पहलू
१, १, स ४५३)। ३ चीन देश का निवासी,
चीनी या चीना (पहलू १, १)। ४ धान्य-विशेष,
ग्रीहि का मेर (सण), 'बीणकूर छविथा-
तन्नेण हिल' (महा)। ५ 'पट्ट पुं' [पट्ट]
चीन देश में होनेवाला वस्त्र-विशेष (पहलू १,
४)। ६ 'पिट्ट पुं' [पिट्ट] सिन्दूर-विशेष (सण,
पहलू १७)।

चीणसु } पुं [चीनांग, क] १ कीट-विशेष,
चीणसुय } जिसके तनुओं से वस्त्र बनता है
(हह १)। २ चीन देश का वस्त्र-विशेष,
बीणसुसूतिययविवाइय' (सुपा ३५, अणु-
ज २)।

चीया औ, देखो चीअ = चित्ता, 'बीयाण
पक्कव ततो उहीविमो जलणो' (सुर ६,
८८)।

चीर न [चीर] वस्त्र-खण्ड, कपड़े का टुकड़ा
(भोव ६१ मा, गा १२, सुपा ३६१)। 'कडूस-
रापट्ट पुं' [कडूसकपट्ट] जैन साधुओं का
एक उपकरण, रजोहरण का बन्धन-विशेष
(निबू ५)।

चीरग पुं [चीरक] नीचे देखो (गण्य २)।

चीरिय पुं [चीरिक्] १ रागना में पड़े हुए
चीबड़ो को पहननेवाला मिथुन। २ फल-वृक्षा
कपड़ा पहननेवाली एक साधु नाति (छाया
१, १५—पत्र १६३)।

चीरिया औ [चीरिक्] नीचे देखो (सुर ८,
१८८)।

चीरी औ [चीरी] १ वस्त्र-खण्ड, वस्त्र का
टुकड़ा, 'गो वेण निमवत्थकनाठ पीरिउ

करेऊण' (सुपा ५८५)। २ खुद्र कीट-विशेष,
मीणुर (भुमा, दे १, २६)।

चीवट्टी औ [दे] भल्ली, भाला, खल्ल-विशेष
(दे ३, १४)।

चीवर न [चीवर] वस्त्र, सत्वासिंघा मा मिथुभो
के पहनने का कपड़ा (सुर ८, १८८; ठा
५, २)।

चीवाढी औ [दे] चीत्वार, चित्ताहट, पुकार,
हाथी की रजना या चिमाडना (सुर १०,
१८२)।

चीही औ [दे] मुत्ता का क्षण-विशेष (दे ३,
१४, ६२)।

चु म्क [चुडु] १ मरना, जन्मान्तर में जाना।
२ गित्ता। भवि, बइस्ताभि (कण्य)। संक-
चइऊण, चइत्ता, चइअ (उत्त ६, ठा
८, मग)। ३ चइयव्व (ठा ३, ३)।

चुअ म्क [रचुत्त] मरना, टपकना।
चुमइ (हिं २, ७७)।

चुअ सक [र्यज्] त्याग करना, परिहार
करना, 'यमहुं मिगे छ' (सूय १, १, २,
१२)।

चुअ वि [च्युत्त] १ च्युत, घुघ, एक जन्म
से दूसरे जन्म में प्रवर्तित (मग, महा, ठा
३, १)। २ गिनट, 'चुअल्लिकचुअ' (भवि
१८)। ३ अट्ट, पत्ति (छाया १, ३)।

चुइ औ [च्युति] ध्यान, मरण (यन)।

चुकारपुर न [चुकारपुर] एक नगर (सम्मत
१५५)।

चुचुअ पुं [दे] शेरक, अवतल, मस्तक का
भूषण (दे ३, २६)।

चुचुअ पुं [चुचुचु] १ म्नेच्छ देश-विशेष।
२ उत्त देश में रहनेवाली मनुष्य जाति
(हक)।

चुचुण पुं [चुचुचु] १ म्भ (पवी) नाति-
विशेष, एव म्भ-जाति (ठा ६—पत्र ३५८)।

चुचुणिअ वि [दे] १ चलिष्ठ, यत्त। २
जुत्त, जट्ट (दे ३, २३)।

चुचुणिआ औ [दे] मोही की प्रतिव्यति।
२ रायट, रति, समीग। ३ इसली का पेड़।
४ चुत विशेष, धृष्टि-चुत। ५ वृषा, खटमल,
खुद्र कीट-विशेष (दे ३, २३)।

चुचुमालि वि [दे] १ मलत्त, मालवी, दीर्घ-
वृत्ती (दे ३, १८)।

चुचुलि पुं [दे] १ उच्छुं वीच। २ उच्छुं,
पसर, एक हाथ का सपुटाकार (दे ३, २३)।

चुचुलिअ वि [दे] १ भवधारित, निश्चित।
२ न. गुण्य, लालच, सत्यता (हे ३, २३)।

चुचुलिपुर पुं [दे] उच्छुं उच्छुं, पसर (दे
३, १८)।

चुछ वि [दे] परिशोधित, सूखाया हुआ (दे
३, १५)।

चुछिअ वि [दे] सूखा हुआ, परिशोधित,
'चुछियल्ल एव, मा भत्तार हवा कुणहु'
(सुपा ३४६)।

चुट सक [चि] फूल बगैरह को तोड़ कर
इकट्ठा करना। वट्ट चुटैत (सुपा ३३२)।

चुठि वि [दे] दुग्धनेवाला (दे ६, १६ छी)।

चुढी औ [दे] बोझ पानीवाला बलात जता-
शय (छाया १, १—पत्र ३३)।

चुपासय [दे] देखो चुपासय,
'ताव य सेज्जाउ ठिमी,

वादाहवियरो निस्तारमए।

चुपासण पेच्छइ,
'निवडत रयणपज्जलिय'
(पल्ल २६, ८०)।

चुब सक [चुम्ब] चुम्बन करना। चुबइ
(हे ५, २३६)। वट्ट चुबैत (गा १७६,
५१६)। कयड, चुबिज्जत (से १, २२)।
वट्ट, चुबिनि (मप) (हे ५, ५३६)। ह.
चुबिअव्व (गा ५६५)।

चुबण न [चुबण] चुम्बन, चुम्बा चूमा (गा
२१३, कण्य)।

चुबिअ वि [चुम्बित] १ चुम्बा लिया हुआ,
कृत-चुम्बन। २ न. चुम्बन, चुम्बा (दे ६,
६८)।

चुबिअ वि [चुम्बित] चुम्बन करनेवाला
(भवि)।

चुमल पुं [दे] शेरक, अवतल, शिरो-भूषण
(दे ३, १६)।

चुक् म्क [अंग] १ चुकना, मूल करना।
२ अट्ट होना, रहित होना, यन्त्रित होना।
३ सत्त-नष्ट करना, खण्डन करना। चुक्कइ
(हे ५, १७७, पट्ट)। 'गो सत्थविद्धाई,
चुक्कइ देव स चम्पं य' (विसे २६८५)।

चुक वि [अष्ट] १ चुका हुमा, भूला हुमा, विस्तृत; 'चुक्कसवेमा', 'चुक्कविणमम्मि' (गा ३१८; ११५)। अष्ट, मञ्जित, रक्षित; 'इसणमेत्तसएणे चुक्का नि मुहाण बहुमाण' (गा ४६५; चर ३६; मुपा ८७)। ३ मन-वहित, वेख्याल (से १, ६)।

चुक पुं [दे] मुटि, मुट्टी (दे ३, १४)।
चुकार पुं [दे] भावाज, शब्द (से १३, २५)।

चुकहुड पुं [दे] छाग, बकरा, भ्रज (दे ३, १६)।

चुन्त [दे] देखो चोकर (सूक्त ४६)।
चुचुय [दे] न [चुचु] स्तन का भ्रम भाग, चुचुय [दे] वन का कृत, चुचो (पएह १, ४, राम)।

चुचुय पुं [चुचु] स्तन का भ्रम भाग, स्तनो की गोलाई, चुचो (राम ६४)।

चुच्छ वि [चुच्छ] १ भ्रम, धोडा, हसका। २ हीन, जघन्य, नगण्य (हे १, २०४, पद)।

चुज न [दे] भारघव (दे ३, १४, सट्टि ६३)।

चुडण न [दे] जीर्णता, सड जाना (शोप ३४६)।

चुडलिअ न [दे] दुःखन्दन का एव दोष, रजोहरण की प्रभाव की तरह लडा रखकर बन्दन करना (मुमा २५)।

चुडलो [दे] देखो चुडुली (पव २)।

चुडिली देखो चुडुली (तंडु ४६)।

चुडुप ॥ [दे] १ साल उठारना (दे ३, ३)। २ भाव, क्षत (गडड)। ३ ममदी, लवचा (पाप)।

चुडुप्पा खी [दे] लवचा, ममदी, खान (दे ३, ३)।

चुडुली खी [दे] उल्ला, मनात, जनतो हुई तकदी, वल्लुक (दे ३, १५; पाप, मुर १३, १५६, स २४२)।

चुण सक [चि] चुनन, चुमना, पथियो का खाना। चुणद (हे ४, २३८), कायो लियो-हल चुणद (सूक्त ६६)।

चुणअ पुं [दे] १ चाणाल। २ बाल, बच्चा। ३ छन्द, चन्दा। ४ मर्याद, भोजन की

मर्याद। ५ व्यतिकर, सम्बन्ध। ६ वि-भल्य, मोडा। ७ मुक्त, स्वतः। ८ भाषात, सूया हुमा (दे ३, २२)।

चुणिअ वि [दे] विचारित, धारण किया हुमा (दे ३, १५)।

चुण्य सक [चूण्य] चुल्ला, टुकड़ा-टुकड़ा कला। संक, चुण्यय (राज)।

चुण्य पुं [चूण] १ चूण, चूड़, चुनो, बारीक छेद (वह १; हे १, ८४, पाचा)।

२ भाटा, पिपल (भाचा २, २, १)। ३ धूनी, रज, रेणु (दे ३, १७)। ४ मन्य द्रव्य का रज, चुनो (मग ३, ७)। ५ चुना (हे १, ८४, विवा १, २)। ६ बरीकरछादि के लिए किया जाता द्रव्य-मिलान (गाया १, १४)।

'कोसय न [कोराक] मलय विशेष (पएह २, ५)।

चुणग न [चौण] पद विशेष, मम्दीरारण्य पद, महायक रुम्द (इति २)।

चुण्णइअ वि [दे] चुण्णइव, चुल से भाइव; जिस प्रकार चुण् कंठा गया हो वह (दे ३, १७, पाप)।

चुण्णग पुं [चूण] चुल्ल-विशेष (भाचा २, १०, २३)।

चुण्णा खी [चूणा] कुल्ल-विशेष, चुल्ल-विशेष (मिग)।

चुण्णाआ खी [दे] कला, विज्ञान (दे ३, १६)।

चुण्णासी खी [दे] दासी, नौकरानी (दे ३, १६)।

चुण्ण खी [चूणि] द्रव्य की टीका-विशेष (निच)।

चुणिअ वि [चूणि] १ चूर-चूर किया हुमा (पाप)। २ धूलो से व्याप्त (दे ३, १७)।

चुणिअआ खी [चूणिअ] भेद-विशेष, एक तरह का प्रयत्न, जैसे पिसान का भ्रमव भ्रम-भ्रम होता है (पएण ११)।

चुणिअ वि [चूणिअ] गणित प्रसिद्ध सर्वा-वर्धित धरा (मुज १०, २२—पव १८५)। १२—पव २१६)।

चुइस देखो चउइस (मुर ८, ११८)।

चुइ देखो चुण्य (हुमा, ठा ३, ४; प्राप् १८; भाव २; पमा ३१)।

चुजण न [चूर्ण] चूर-चूर करना (रवा ३)।

चुजि देखो चुणिग (विचार ३५२; चंड)।

चुजिअ देखो चुणिगअ (पएह २, ४)।

चुजिआ देखो चुणिगआ (भात ७)।

चुप वि [दे] समोह, स्निग्ध (दे ३, १५)।

चुपल पुं [दे] शेर, भवतंस (दे ३, १६)।

चुपलिअ न [दे] नया रंगा हुमा कपडा (दे ३, १७)।

चुप्पाल पुं [दे] भरोखा, गवाडा, बातायन, बंगना (दे ३, १७)।

चुरिम न [दे] बाध-विशेष (पव ४)।

चुलचुल भव [चुलचुलाय] उल्लिखित होना, वल्लुक होना। बह, चुलचुलंत (गा ४८१)।

चुलणी खी [चुलनी] १ हुपद राजा की खी (गाया १, १६; छप ६४८ टी)। २ बसुवत चक्रवर्ती की माता (महा)। 'पिय पुं [पिटु] मगवाय महावीर का एक मुख्य उपसक (उभा)।

चुलसी खी [चुलसी] चौबारी, बस्ती और बार, ८४ (महा, टी ४७), 'चुलसीए नागकुमारवामसयसहसेयु' (मग)।

चुलसीइ देखो चुलसी (पवम २०, १०२, अ २)।

चुलिआआ खी [चुलिआआ] छन्द विशेष (पिग)।

चुलअ पुन [चुल] चुल्ल, पसर, एक हाथ का संयुदाकार (दे ३, १८, मुपा २१६; प्राप् ५७)।

चुलक देखो चालुक (दे १, ८४ टी)।

चुलचुल भव [स्पन्द] पडकना, फरकना, मोडा हिलना। चुलुडलद (हे ४, १२७)।

चुलचुलिअ वि [स्पन्दित] १ फरका हुमा, कुछ हिला हुमा। २ न. छुरण, स्पन्दन (पाप)।

चुलप पुं [दे] छाग, भ्रज, बकरा (दे ३, १६)।

चुल पुं [दे] १ शिगु, बालक। २ दात, नीबुर (दे ३, २२)। ३ वि. छोटा, सघु (ठा २, ३)। 'ताय पुं [तात] पिता का छोटा भाई, बाला (पि ३२५)। 'पिउ पुं

['विट्] चाचा, पिता का छोटा भाई (विपा १, ३) । माउया की ['माउ'] १ छोटी माँ, माता की छोटी सपत्नी, विमाता, सौतेली माँ (उप २६४ टी. राणा १, १; विपा १, ३) । २ चाची, पिता के छोटे भाई की स्त्री (विपा १, ३—पत्र ४०) । 'सगय, 'सयय पुं, ['शनक] भगवान् महावीर के दस पुत्रों में से एक (उवा) । 'हमयेत पुं ['हिमयत्] छोटा हिमवान् पर्वत, पर्वत-विशेष (ठा २, ३; सम १२०, इके) । 'हिम-यंतकूट न ['हिमयन्कूट] १ बुद्ध हिमवान्-पर्वत का शिखर-विशेष । २ पुं. उसका श्रमिपति देव-विशेष (ज ४) । 'हिमयत-गिरिकुमार पुं ['हिमयद्गिरिकुमार] देव विशेष, जो बुद्ध हिमवत्कूट का प्राणिप्रायक है (ज ४) ।

चुहग न [दे] संकूक (कुप्र २२७; २२८) । चुहग [दे] देखो चोहक (बाक) ।

चुह्मि की ['चुहि, 'ह्मि] बूढ़ा, जिसमें बुढ़ी १ भाग रक्कर रखाई की जाती है वह (दे १, ८५; सुर २, १०३) ।

चुह्मि की [दे] शिला, पाषाण-खण्ड (दे १, १५) ।

चुल्लुचल्ल थक [दे] थकना, उल्लसना; 'बुल्लुचल्लेदे जे होइ अणय, रितय कणकणोइ । भरिमाई रा चुल्लेदी मुपुरिसविनाएभइ १' (सूमति ६६ टी) ।

चुहोखय पुं [दे] बग भाई (दे ३, १७) ।

चुअ पुं [दे] स्तन-शिला, दन का अग्र भाग, चुनी (दे १, १८) ।

चुअ पुं [चुअ] १ बुढ़ा-विशेष, भाद्र, धान का माछ (गड्ड, भाग, सुर ३, ४८) । २ देव-विशेष (जीव ३) । 'बडिसग न [चुअ-भक] सोयमविमान-विशेष (राय) । 'वडिसा को [चुअ-तस] अकेन्द्र की एक अग्र-महिषी, इन्द्राणी-विशेष (इक, जीव ३) ।

चुआ की [चुआ] अकेन्द्र की एक अग्र-महिषी, इन्द्राणी-विशेष (इक, ठा ४, २) ।

चुआय पुं [चुआ] स्तन का अग्र-भाग (आठ ११) ।

चूड पुं [दे] नृग, बाहु-मूषण, धनयावती (२३, १८०, ४, ५२, ५६; पाप) ।

चूडा देखो चून् (सुर २, २४२, गड्ड, राणा १, १; सुपा १०४) ।

चूहुल्लअ (भा) देखो चूह (दे ४, ३६५) ।

चूर सक [चूरय्, चूर्णय्] यरह करना, तोड़ना, टुकड़ा-टुकड़ा करना । चूरमि (यम्म ६ टी) । भवि, बूरदस्स (पि ५२८) । बहू-चूरत (सुपा २६१, ५६०) ।

चूर (भा) पुं [चूर्ण] बूर-भुरसुट, जिह्म गिरिसिद्ध पंडित सिल, भनुवि चूर करे' (दे ४, ३३७) ।

चूरण देखो चुन्नण (कुप्र २०३) ।

चूरिअ वि [चूर्ण, चूर्णित] बूर-बूर किया हुआ, टुकड़ा-टुकड़ा किया हुआ (अवि) ।

चूरिम पुं [दे] मिठाई विशेष, चूर्मा लड्डू (पव ४ टी) ।

चूल' देखो चूला । 'मणि न [मणि] विषाघरी का एक नगर (इक) ।

चूलअ [दे] देखो चूह (नाट) ।

चूला की [चूदा] १ चोटी, सिर के बीच की केश-शिखा (पाप) । २ शिखर, टोक, 'अवि वनइ मेसुता' (उप ७२८ टी) । ३ मयूर-शिखा । ४ कुकटु शिखा । ५ शेर की नसरा । ६ बुद्ध काँपड़ का अग्र भाग । ७ विमूषण, धलकार, 'तिविहाय दन्वचूला, सचिंता मोसगा य सचिंता । कुकटु वीह मोरसिहा, बुल्लमहि भगवतु' । चूला विमूषणवि य, सिंहर्ति य होति एण्डा' (निबू १) ।

८ अधिक मास । ९ अथिच बर्दे । १० अण्य का परिशिष्ट (दक्क १) । 'अम्म न [चूर्मन] संस्कार-विशेष, मुण्डन (भावन) । 'मणि पुं की [मणि] १ शिर का सर्वोत्तम भाग मूषण विशेष, मुकुट-रत्न, शिरो मणि (भोग, राय) । २ सर्वोत्तम, सर्व-श्रेष्ठ, 'तिलायचूला-मणि नमो वे' (पण १) ।

चूलिय पुं [चूलिक] १ अनार्य देश विशेष । २ उल्लेख ना निगामी (पण्ड १, १) । ३ जीव. संख्या विशेष, चूलिनाग की चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या सत्य हो वह (इक, ठा २, ४) । स्त्री. 'या (राज) ।

चूलियंग न [चूलिमात्र] संख्या-विशेष,

प्रयुक्त जो चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या सत्य हो वह (ठा २, ४; जीव ३) । चूलिया देखो चूला (सम ६६; सुर ३, १२; अवि; निचू १; ठा ४, ४) ।

चूय (भा) देखो चूअ (अवि) ।

चूह सक [क्षिप्] केंकना, डालना, प्रेरणा । चूह' (वद) ।

चे अ [चेत्] यदि, जो, अगर (उत्त १६); 'एवं च कम्मो तित्थं न वेदवेतोत्ति की गाहो ?' (विसे २५८६) ।

चे देखो चय—धन । वेद, (भावा) । संकू. चेसा (कल्प, भोग) ।

चे } देखो चि । वेद, चेप्रह, चेप, चेप्र चेअ } (वद) ।

चेअ सक [चित्] १ चेतना, सावधान होना, स्थल रखना । २ सुख माना, स्मरण करना, याद आना । चेअ' (स ५३८) । ३ सक. जानना । ४ अनुमन करना । चेअ (भावन) ।

चेअ सक [चेतय्] १ ऊपर देखो । २ देना, धरण करना, वितरण करना । ३ करना, बनाना; 'जे अंतारयं चेअ' (सम ५१) । चेअइ, चेअसि, चेअमि (भावा) । बहू. चेते [ए] माण (ठा ५, २—पत्र ३१४, सम ३६) ।

चेअ ॥ [एव] अग्रधारण सूचक अण्यय, निषय बतावनाला अण्यय (हे २, १८४) ।

चेअ न [चेत्तस्] १ वेद, चेतना. माग, चेतन्य (विसे १६६१, भाग १६) । २ मन, चित्त, धन्य करण (वत्त ५, १; ठा ६, २) । चेअ पुं [चेत्ति] देश-विशेष (इक सप्त ६७ टी) । 'अइ पुं [पति] चेदि देवा ना राजा (पिण) ।

चेअ' पुं [चेत्तय्] १ चित्त पर बनाया चेअइ १ हुआ स्मारक, स्तूप, पत्थर वा वस्तु वगैरह स्थापित किए, 'महयसाहेनु वा मययमिणायु वा मययवेअणु वा' (भावा २, २, ३) । २ अन्तर का स्थान, अन्तरागतन (भाग, उवा, राय, तिर १, १; विपा १, १, २) । ३ जिन-मन्दिर, जित-गृह, धर्म-मन्दिर (ठा ४, २—पत्र ४३०, पंथमा, पवा १२; महा. इ ४, २७); 'पदिमं भस्मी य वेअर रम्भे' (पत्र ७६) । ४ इष्ट देव की मूर्ति,

अमोए देवता की प्रतिमा 'कलाएय मगलं चेद्वय पण्डुवासायो' (श्रीप भग) । ५ अहं-प्रतिमा, जिन-देव की मूर्ति (ठा ३, १० उवा-परह २, ३; भाव २, पडि), 'विद्वएण जयाएण नदीसरवरे दीदे समोसरण करेइ, तहि चेद्वयाई बवइ' (भग २०, ६), 'विण्ण बिदे मानवचेइयति सय्यनुणो बिनि' (भव ७६) । ६ उजान, बगोचा मिहिलाए चेइए वच्छे सोमच्छाए मणोरमे' (उत्त ६, ६) । ७ समा वुज, समा गृह के पास का वृक्ष । = चवूतरा-भाला वृक्ष । ८ देवो का चिह्न भूत वृक्ष । ९ वहु वृक्ष जहाँ जिनदेव को बसल ज्ञान उत्पन्न होता है (ठा व सम १३, १५६) । ११ वुज, पेड़, 'बाएण हीरमाएम्मि चेइमम्मि मणोरमे' (उत्त ६, १०) । १२ यज्ञ स्थान । १३ मनुष्या का विद्यान-स्थान (पट्ट, हे २, १०७) । 'उंम पु ['स्तम्भ] स्तूप, दूम, (सम ६३, राज, सुज १८) । 'पर न ['गृह] जिन-मन्दिर, अहंमन्दिर (पवन २, १२, १४, २६) । 'जत्ता की ['यात्र] जिन-प्रतिमा सम्बन्धी महोत्सव विशेष (धर्म १) । 'धूम पु ['स्तप] जिन मन्दिर के समीप का स्तूप (ठा ४, २, ज १) । 'वन्दन न ['द्रव्य] देव-द्रव्य, जिन-मन्दिर-सम्बन्धी स्थावर वा जगम मिलत (वव ६, पञ्चमा ३०७, ३४) । 'परिधाडी की ['परि-पाटी] धर्म से जिन मन्दिरों की यात्रा (धर्म २) । 'मह पु ['मह] वैद्य-सम्बन्धी उपवन (भावा २, १, २) । 'रुक्ख पु ['वृक्ष] १ चवूतरावाला वृक्ष, जिसके नीचे बीतरा बांधा हो ऐसा वृक्ष । २ जिन-देव को जिनके नीचे देवत ज्ञान उत्पन्न होता है वह वृक्ष । ३ देवता का चिह्न भूत वृक्ष । ४ देव समा के पास का वृक्ष (सम १३, १५६, ठा ८) । 'वन्दण = ['वन्दन] जिन प्रतिमा की मन, वचन और काया से खुश (पव १, संप १, ३) । 'वन्दणा की ['वन्दना] वही प्रतीक धर्म (सम १) । 'वास पु ['वास] जिन मन्दिर में मणियों का निवास (वस) । 'हर देवो 'घर (जीव १, पजम ६४, ६२, गुपा १३, ३६३, जवर १६०) । चेइअ वि ['चितित] इष्ट, विहित, 'वाप २

अमारीहि अमाराइ चेइमाइ भवति' (भावा २, १, २, २), 'चेइमं कइमेणहु' (इह २, वच) । चेंथ देखो चिंध (आप्र) । चेच्चा देखो चे = व्यन् । चेठु अक ['चेष्ट] प्रयत्न करना, भावकरा करना । वक्क. चेठुमाण (काल) । चेठु देखो चिट्ठ = स्या (हे १, १०४) । चेठुण न ['स्थान] स्थिति, प्रवस्थान (वव ४) । चेठुण देखो चिट्ठण = चेष्टन (उप ११) । चेठु की चेष्टा प्रयत्न, भावकरा (ठा ३, १, सुर २, १०६) । चेठिय देखो चिट्ठिय = चेष्टित (श्रीप, महा) । चेठ पुं ['दे] बाल, कुमार, रिगु (हे ३, १०, शाया १, २, वृह १) । चेइ } पुं 'चेट', 'क' १ दास, नौकर चेइग } (श्रीप, कण्) २ नृप-विशेष, चेइय } धैराणिका नगरी का एक स्थान प्रसिद्ध राजा (आवू १०, भग ७, २, महा) । ३ मैला देवता, देव की एक जलन्य बात (गुपा २१७) । चेडिआ की चेडिका दासी, नौकरानी (भग ६, ३३, कण्) । चेडी की चेटी ऊपर देखो (भावप) । चेडी की दे कुमारी, बाला, लडकी (पाप्र) । चेत्त न ['चैत्य] वैद्य विशेष (पट्ट) । चेत्त पु ['चैत्र] १ मास विशेष, वैत मास (सम १६, हे १, १५२) २ जैन मुनियों का एक मण्ड (इह ६) । चेत्ती की चेत्ती १ वैत मास की पूर्णिमा । २ वैत मास की अमावस (सुज १०, ६) । चेदि देखो चेइ (रण) । चेदीम पुं चेदीश चेदि देश का राजा (रण) । चेयग वि ['चेतक] दाता, देनेवाला (उप ६३७) । चेयण पु ['चेतन] १ आत्मा, जीव, प्राणी (ठा ४, ४) २ वि. चेतनावाला, ज्ञानवाला, बुद्धि वेणए व किमस्स' (विने १८४५) । चेयणा को चेतना ज्ञान, चेत, चैतन्य, मुक्ष, स्वाल (भाव ६, सुर ४, ४४५) । चेयणण } न ['चेतन्य] ऊपर देखो (विने चेयण } ४७५, गुपा २०, सुर १४, ८) । चेयस देखो चेअ = चेत्तु ।

'ईसादेसेण प्राविट्ठे, कलुयाविलेयसे । जे अतरायं चेएइ, महामोह पणुववइ' (सम ४१) । चेया देखो चेयणा, 'पतयेममात्रो न रेणु-तेल्ल व सयुए येया', (विने १६४२) । चेय } न [चेल] वस्त्र, कपडा (भावा चेयल } श्रीप) । 'वण्ण न ['वणी] व्यनन विशेष, एक तरह का पंजा (स ४४६) । 'गोल न ['गोल] वल का गेंद बन्दुक (सुर १, ४, १) । 'हर न ['गृह] तम्बू, पट-मण्डन रावटी (स ४३७) । चेयन न [दे] गुला-गम दिह्ठिवाए भुवण, गुप्तति वे चित्तचेलए निहिय' (वजा ५६) । चेयिय देखो चेल, 'रयणकएचेलियवहुयन-भरमरिया' (पजम ६६, २५, भावा) । चेयुप न [दे] मुमल, मूल (हे ३, ११) । चेय } [दे] देखो चिल (३) (पजम ६७, चेयअ } ११, १६, स ४६६, वसति १, उप २६८) । चेयग } [दे] देखो चिल्ल (पट्ट १, चेयय } ४—पत्र ६८, ती ३३) । चेय म [एय, चैय] १ भवचारण सूचक धर्म्य, निबयवरीक शब्द, 'जो कुणइ परमस इहं पासइ न चेव को मणए-गुण' (प्रासू २६, मझ), 'अवहारए चेवसइो म' (विज ३५६५) । २ पाव पूरक धर्म्य (पजम ८, ८८) । चेअ म [इय] सादरय-यौतन धर्म्य, पचदइ मणहलमई सय्यगवि चेव वेएण' (पजम ३, ४, उत्त १३ ३) । चो देखो चउ (ह १, १७१, कुपा, सम ६०, श्रीप भग शाया १, १ १४, विना १, १, सुर १४, ६७) । आला की 'चरयारि-शन्' चलीस और बार, ४४ (वने २३०४) । 'वाट्टि की ['वट्टि] चीसठ, ६४ (वण्) । 'वत्ति की ['सप्तति] सत्तर और बार, ७४ (सम ८४) । चोअ सव ['चोद्व] १ प्रेरणा करना । २ कहना । चोएइ (उक ११ १३) । ववह. चोइज्जत, चोइज्जमाण (सुर २, १०, शाया १, १६) । संह चोइज्जण (महा) । चोअज वि ['चोद्व] प्रेरक, प्रेरक वता, पूर-पत्नी (मणु) ।

चोणअ न [चोदन] प्रेरण, प्रेरणा (मत ३६; उत २८)।

चोइअ वि [चोदित] प्रेरित (स १५, सुपा १५०; श्रौप, महा)।

चोए सक [चोदय] १ प्रश्न करना। २ सोचना, शिक्षण देना। चोएइ, चोएह (व१)।

चोक [दे] देखो चुक = (३) (महा)।

चोकरा वि [दे] चोखा, शुद्ध, शुचि, पवित्र, (छाया १, १, उप १४२ टी, बृह १, भाग ६, ३३; राय, श्रौप)।

चोमखलि वि [दे] चोलाई करनेवाला, शुद्धता वाला (पिंड ६०३)।

चोमला जी [चोक्षा] परियाजिका विशेष, इस नाम की एक सप्तासिनी (छाया १, ८)।

चोज न [दे] माधव, विस्मय (दे ३, १४, सुर ३, ४, सुपा १०३, सट्टि १५६, महा)।

चोज न [चौर्य] चोरी, चोर-कर्म, 'गृहेषु हिंसं प्रलिय, चोजअ भयमतेवण' (उत ३५, ३; छाया १, १८)।

चोज न [चोष] १ प्रश्न, प्रच्छा। २ प्राबर्ध, प्रभुत्व। ३ वि. प्रेरण-योग्य (पा ४०६)।

चोटी, छी [दे] चोटी, शिला (दे ३, १)।

चोडु न [दे] बुल, फल और पत्ती का वन्यन, (विह २८)।

चोडुं [दे] बिल्व, बुल विशेष, बेल का पेड़ (दे ३, १६)।

चोणग न [दे] १ कतह, कण्ठा (निह २०)। २ कण्ठावन्त भादि जन्म्य कर्म (भूम २, २)।

चोत्त [दे] पुन [दे] प्रतोद, प्राज्ञ-दण्ड, चोत्तअ [चातक] (दे ३, १६, पात्र)।

चोद [दे] देखो चोय (पएह २, ५—पत्र १५०)।

चोदग देखो चोअअ (मोष ४ भा)।

चोदणा छी [चोदना] प्रेरणा, किसी प्रभाव-शाली व्यक्ति की ओर से कुछ नहने या करने के लिए होनावा संवेत (मर्मसं १२४०)।

चोप्यड सक [अक्ष] लिगध, चोप्यड, यो तेल वगैरह समान। चोप्यडइ (दे ४, १६१)। बट. चोप्यडमाण (दुमा)।

चोप्यड न [अक्षण] यी, तैत वगैरह लिगध वस्तु, गैहज्यस्स जोग किंचि वि कण्ठोप-जाम्य' (सुपा ४३०)।

चोप्यडि वि [दे] चुपडा हुआ (पव ४)।

चोप्याल पुं [चतुप्याल] सूर्यास देव की प्राण्य-शाला (राय ६३)।

चोप्याल न [दे] मतवारण, वरण (जं २)।

चोफुव वि [दे] लिगध, स्नेहवाला, प्रेम-युक्त, प्रेमी (दे ३, १५)।

चोय १ न [दे] लबा, छाव (पएह २, चोयग ५—पत्र १५० टी)। २ माय वगैरह का दछा (निह १५, भावा २, १, १०)। ३ गन्ध द्रव्य-विशेष (प्राण, जीव १, राय)।

चोयग देखो चोअअ (रादि)।

चोयणा छी [चोदना] प्रेरणा (स १५; उप ६४८ टी)।

चोयय पुं [दे] फल विशेष (प्राण १५४)। चोयालीस खोन [चतुश्रव्यारिशात्] चौ-लीस, ४४ (विदम ३६२)।

चोर पुं [चोर] तस्कर, दूसरे का धन चुराने-वाला (हे ३, १३४; पएह १, ३)। 'कीड पुं [कीट] विद्या में उलझन होता कीट (जी १७)।

चोरकार पुं [चौर्यकार] चोर, तस्कर, 'चोरकारकरं ज वृत्तमदत्त तव वज्रं' (सुपा ३३४)।

चोरग वि [चोरक] १ चुरानेवाला। २ पुन. वनस्पति विशेष (पएह १—पत्र ३४)।

चोरण न [चोरण] १ चोरी, चुराणा (सुर ८, १२२)। २ वि. चोर, चोरी करनेवाला (भवि)।

चोरली छी [दे] थावण माम की कृप्य चतुर्दशी (दे ३, १६)।

चोरग पुं [चोरक] संनिवेश विशेष, इन नाम का एक छोटा भाव (भावम)।

चोरव सक [चोरय] चोरी करना। चोरवेद (प्राह ६०)।

चोरसी [दे] चोरासी (पि ४३६, चोरसाई ४४६)।

चोरिअ न [चौर्य] चोरी, चपहरण (हे २, १०७, ठा १, १; प्रास ६५, सुपा ३७६)।

चोरिअ वि [चौरिक] १ चोरी करनेवाला (पव ४१)। २ पुं. चर, चासुस (पएह १, १)। चोरिअ वि [चोरित] चुराया हुआ (विते ८१७)।

चोरिआ छी [चौर्य, चौरिका] चोरी, चपहरण (पा २०६, पट, हे १, ३५, सुर ६, १७८)।

चोरिअ न [चौरिक्य] ऊपर देखो (पएह १, ३)।

चोरी छी [चोरी] चोरी, चपहरण (या २७)।

चोल वि [दे] १ कामन, कुञ्ज (दे ३, १८)।

२ पुं. पुण्य विह, लिङ्ग (पव ६१)। ३ न. गन्ध-द्रव्य विशेष, मज्झिमा (उर ६, ४)।

'पट्ट पुं [पट्ट] जैन मुनि का कटि-वस्त्र (मोष ३४)। 'य पुं [ज] मजीठ का रग (उर ६, ४)।

चोल पुं [चोल] देश विशेष, द्रविड और कविल्ल के बीच का देश (पिग, सण)।

चोलअ न [दे] कवच, बर्त (नाट)।

चोलअ १ न [चोल, क] सत्कार विशेष, चोलग १ सुहृद, 'विहिण्ण वृत्ताकर्म्म धालाणं चोलय नाम' (भावम, पएह १, २)।

चोलुक देखो चालुक (सी ५)।

चोलोवणग न [चूलारनयन] १ चूलो-चोलोवणय नयन, सत्कार-विशेष, सुहृद चोलोवणयण (छाया १, १—पत्र ३८)।

२ शिखा-धारण, कूडा-धारण (भा ११, ११—पत्र ५४४, श्रौप)।

चोलक [दे] देखो चोलग (पएह २, ४)।

चोलक पुं पुन [दे] १ भोजन (उप ६ १२, चोह्मग ३ भावम, उत ३)। २ वि. सुहृद, छोटा, तबु (उप ६ ११)।

चोह्मग पुन [दे] शैला, घोरा, मोत, पर मम समस्त तानेह चोल्लए, 'पाइणा उक्केल्ला-विवाइ चोल्लयाई' (महा)।

चोपत्तरी छी [चतु सप्तवि] सत्तर और चार, ७४ (पच ५, १८)।

चोगालय पुन [चतुर्द्वार] चोगाल, ऊपर का शयन-गृह, 'इमा य एमा देवी हृदियमिडे भावत्ता। खवरं हृदो चो—(?) वाल-यायो हृदये प्रवतारे' (सत २, १० टी)।

चोव्वड देखो चोप्यड = प्रसू। चोव्वडइ (पट्ट)।

य म [प२] मयपारण-सुचक मय्यय (हे २, १८४, १८४, कुमा, पद) ।

विअ देयो चिअ=एव (हे २, १८४, कुमा) ।

वेअ देखो चेय=एव (वि ६२, जी ३२) ।

॥ इम-सिरिपाइअसदमहणयम्मि चयापदमहणकतलो चउसयो तरंगो समतो ।

छ

छ पु [छ] १ साधु स्थानीय म्यन्त्रन वलं विशेष (प्राप प्राप्ता) । २ माण्ड्यावन, डवना 'छ ति य दोसाण छाये होइ' (पावम) ।

छ नि य. [प५] संख्या विशेष, ॥ 'छ छिन्मापो जिणसामणम्मि' (था ६, जी ३२, मग १, ८) । 'उत्तरमय वि [उत्तर शतसम] एव सौ भीर छठवां (पठम १०६, ४६) । 'कम्म न [कर्मन्] ॥ प्रवार वे कर्म, जो बाह्यो वे कर्मन् ई, यथा— यजन, याजन, प्रप्ययन, अप्यायन, दान भीर प्रतिग्रह (निबू ११) । 'काय न [काय] छ प्रवार के जीव, प्रपिकी, अग्नि, फाकी, बायु पतस्वि भीर भ्रम जीन (या ७, पवा १५) । 'गुण, 'गुण वि [गुण] छुना (ठा ६, वि २७०) । 'शरण पु [वरण] प्रमर, भीर (कुमा) । 'जीन-निनाय पु [जीवनिनाय] देखो 'काय (माषा) । 'गगड्ड, 'गगवड्ड [गगति] संस्था-नियेय, छानवे, ६६ (मग ६८, धवि १०) । 'ताम छीन [त्रिधम्] संस्था विराप, छतोम, ३६ (कम्म) । 'सोमइम वि [त्रिधम्म] छनीयसं (पठम ३६, ४३ पण ३६) । 'दसवि, य [पोडशम्] पोडश मोनह । 'दसहा म [पोडशाया] मोनह प्रवार का (कन ४) । 'दिमि न [दिम] छ दिर-ए—पूर, वयिम, उतर, संक्षेप, ऊर्ध्व भीर अपादिश (मा) । 'दा म [पा] छ प्रवार का (कम्म १, ३८) । 'नयइ, 'नुयइ 'अइइ दयो 'पावइ (कम्म १, ४, १२, मग ७०) ।

'अडय वि [अजन्] छानवेवां, ६६ वां (पठम ६६, ५०) । 'पण, पण छीन [पञ्चारात्] छपन, ५६ (पाव, मग ७१) । 'पज वि [पञ्चारात्] छपनवां (पठम ५६, ४८) । 'म्याय पु [भाग] छठवां हिस्सा (वि २७०) । 'म्यासा छी [भाषा] प्राहय, सम्पु, मापणी, शौर्येनी, पेशाचिवा भीर अपप्रवा ये छ भाषाए (रमा) । 'मासिय, 'म्यासिय वि [पाष्-मासिक] छ मास यं होनवाना, छ मास सम्पयो (मग २१ सीप) । 'वरिस वि [वारिष्क] छ वरं नी उग्रपाला (वायं २६) । 'वीस देखो 'डोस (विप) । 'विह वि [विध] छ प्रवार का (मग नव ३) । 'वीस छीन [विशति] छवीम, बीस भीर ॥ (मग ४२) । 'डो-सइम वि [विशतिवम] १ छवीसवां २६ वां (पठम २६, १०३) । २ सगावार बाह्य दिना वा उदयमा (णावा १, १) । 'सट्टि छी [पट्टि] संस्था विशेष, साठ भीर छ (कम्म २, १८) । 'ससयरे छी [ससति] छिहत्तर (कम्म २, १७) । 'हा देयो 'डा (कम्म १, ५, ८) । छइ देतो छमि=छवि (वा १२) । छइअ वि [स्थगिन्] बाह्य, माण्ड्यादि निरादित (हे २, १७ पद) । छइन [वि [दे] विदप चतुर, हाथियर पड्डम] (विग ३, २५, मग ७२० बजा पाव कुमा) । छउअ वि [दि] सु इल, पउता (दि ३, २२) ।

छउम पुप [छउम] १ कपट, शठता, माया (मग १, पद) । २ छन, बहाना (हे २, ११२, पद) । ३ बावरेण, माण्ड्यावन (मग १, ठा २, १) । छउम न [छउमन्] शलाकरणीय मादि चार पातो कर्म (वेइय ३५६) । छउमस्य वि [छउमस्य] १ मयबंन, संपूर्ण ज्ञान से वञ्चित । २ राग-सहित, साराग (ठा ४, १, ६, ७) । छउल्लुअ देखो छल्लुअ (राज, विदे २५०८) । छुइई छी [दे] कपिक्कू वृण विशेष, केवाय, कवाय (दे १, २४) । छट पु [दे] छाटा, अर वा छोटा, जल-चट्टा । २ रि, शीम, जल्पी चलेवाता (दे २, ३३) । छँट वष [सिच] सीचना । छँगु (मुपा २६८) । छँटण न [सिचन] मिचन मिचन (मुपा १३६ कुमा) । छटा छी [दे] देतो छट (पाव) । छटिअ वि [सिच] भीषा इमा (मुपा १३८) । छँड देतो छड्ड=मुप । छँड (माया ३२ अरि) । छँडअ वि [दे] छन छट (पद) । छडिअ रि [मुप] परिरक्ष, छोटा हप्पा (पावा अरि) । छँड सक [छन्] १ बाह्य, बाह्यता । २ धनुना देना, संयति देना । ३ निमज्ज देना । कवड्ड

‘भतेउरुखनवाहणेदि
परसिपरिपरेहि मुखिवसमा ।
कामेहि बहुविहेहि य
छंदिज्जतापि नेच्छंति’ (उप) ।
संछ. छंदिअ (दस १०) ।
छंद पुन [छन्द] १ इच्छा, मरजी, प्रमिलाया
(भाचा, गा २०२; स २३६; उप. प्राप्त ११) ।
२ भ्रमिप्राय, भासय (भाचा, भा) । ३ वशता,
अधीनता (उत्त ४, हे १, ३३) । ४ चारि वि
[‘चारिम्’ स्वच्छन्दी, स्वैरी (उप ७६८
टी) । ५ छत्त वि [‘छत्त’ स्वैरी (मनि) ।
६ गुणवत्तन न [‘गुणवत्तन’ मरजी के
अनुसार बरतना (प्राप्त १४) । ७ गुणवत्तय
वि [‘गुणवत्तय’ मरजी का अनुसरण
करनेवाला (छाया १, ३) ।
छंद पुन [छन्दस्] १ स्वच्छन्दता, स्वैरिता
(उत्त ४) । २ अभिलाष, इच्छा । ३ भासय,
भ्रमिप्राय (सुम १, २, २, भाचा, हे १,
३३) । ४ छन्द-शास्त्र (सुपा २८७; भीष) ।
५ वृत्त, छन्द (वज्जा ४) । ६ गुण्य वि [‘छ’]
छन्द का जानकार (गवड) ।
छंदण पुन [छादन] ढकना, ढकन (राम
१६) ।
छंदण न [छन्दन] निमग्नण (पिड ३१०) ।
छंदण न [यन्दन] नन्दन, प्रणाम, नमस्कार
(सुमा ४) ।
छंदणा ली [छन्दना] १ निमग्नण (पंचा
१२) । २ प्रार्थना (वृह १) ।
छंदा ली [छन्दा] बीसा का एक भेद, अपने
या दूसरे के अभिप्राय-विशेष से लिया हुआ
संग्यास (ठा २, २, पंचमा) ।
छंदिअ वि [छन्दित] अनुसात, अनुगत
(भीष ३८०) । २ निमग्नित (निज्ज २) ।
छंदो देवो छंद = छन्दस् (भाचा, भ्रमि १२६) ।
छल वि [पट्ठ] छल्का, छ ना समूह,
‘अतरिउल्लसामकंठा (सुपा २१६, सम
३२) ।
छग देखो छ = वप् (कम्म ४) ।
छग न [दे] घुरीय, बिछा (पण्ह १, ३—
पत्र ५४, भीष ७२) ।
छग देखो छग. (पत्र २७१) ।

छगण न [स्थगन] पिधान, ढकना (वप ४) ।
छगण न [दे] गोमय, गोबर (उप ५६७ टी,
पंचा १३; निज्ज १२) ।
छगणिया ली [दे] मोयंठा, कंठा (अनु ५) ।
छगल पुंछी [छगल] छाग, भज, वकरा
(पण्ह १, १; भीष) । ली. ली (दे २, ८४) ।
‘पुर न [पुर] नगर-विशेष (ठा १०) ।
छगा देखो छुक (दं ११) ।
छगुरु पुं [पट्ठगुरु] १ एक ली और बसली
दिनो का उपवास । २ तीन दिनो का उपवास
(ठा २, १) ।
छच्छंदर पुन [दे] छच्छंदर, सूखे या बूढ़े
की एक जाति (सं १६) ।
छल्ल भक [राज] शोभना, चमकना ।
कमह (हे ४, १००) ।
छज्जिअ वि [राजित] शोभित, अलङ्कृत
(कुमा) ।
छज्जिअ ली [दे] पुत्त-गात्र, चरैरी (स
३३४) ।
छट्टा [दे] देखो छटा (पट्) ।
छट्ट वि [पट्ट] १ छटाव (सम १०४, हे १,
२६३) । २ न. लगातार दो दिनो का उपवास
(सुर ४, ५५) । ३ क्षमण न [क्षमण,
‘क्षपण’ लगातार दो दिनो का उपवास
(अंत ६; उप ३४३) । ४ क्षमय पु
[क्षमक, ‘क्षपक’ दो-दो दिनो का बराबर
उपवास करनेवाला तपस्वी (उप ६२२) ।
‘भत्त न [भत्त] लगातार दो दिनो का
उपवास (धर्म ३) । ५ भत्तिय वि [भत्तिक]
लगातार दो दिनो का उपवास करनेवाला
(पण्ह १, १) ।
छट्टी ली [पट्टी] १ तिथि-विशेष (सम २६) ।
२ विश्रुति विशेष, संबन्ध-विश्रुति (शुदि.
हे १, २६५) । ३ जन्म के बाद किया जाता
उत्सव-विशेष (सुपा ५७८) ।
छट्ट सक [आ + रुढ] झगड़ होना,
बहना । छड्ड (पट्) ।
छट्टस्तर पुं [दे] लन्द, कार्तिकीय (दि
२, २६) ।
छट्टछटा ली [छट्टछटा] मूर्ध (सुप) नवीरुह
से अन्न को ढाँढते समय होता एक प्रकार का
धन्यक भावात्र (छाया १, ७—पत्र ११६) ।

छटा ली [दे] विद्युत, विजली (दे ३, २४) ।
छटा ली [छटा] १ समूह, परम्परा (सुर ४,
२४३; वा १२) । २ छीय, पानी की बूँद
(पाम) ।
छटाल वि [छटालत्] छटाला (पत्रम
३५, १८) ।
छडिय वि [छटित] सूप भादि से छँटा या
फटा हुआ (संदु २६, राम ६७) ।
छडु वक [छर्दय, सुच्] १ वमन करना ।
२ छोड़ना. त्याग करना । ३ डालना, गिराना ।
कमह (हे २, ३६, ४, ६१; महा, उप) ।
धर्म, छडिज्ज (वि २६१) । बह. छडुत्त
(भाग) । संछ. छडुत्त मूर्ध लीरु जह पियह
ट्टुनजरी (विने १४७१) । छडिज्ज (वक २) ।
छडुण न [छर्दन, मोचन] १ परिध्याग,
विमोचन (उप १७६, भीष ८६) । २ वमन,
वास्ति (विपा १, ८) ।
छडुय वि [छर्दय] छोड़नेवाला (सुर ३१७) ।
२ पुं. एक छेद का नाम (सुर ३६६) ।
छडुवण न [छर्दन, मोचन] १ छुड़वाना,
मुक्त करवाना । २ वमन करना । ३ वि.
वमन करनेवाला । ४ छुड़ानेवाला (कुमा) ।
छडुवय वि [छर्दय, मोचक] त्याग कराने-
वाला, त्यागक (दे २, १२) ।
छडुवाण देखो छडुवण (सुपा ५१७) ।
छडुवायि वि [छर्दित, मोचित] १ वमन
कराया हुआ । २ छुड़वाया हुआ (भावन,
वृह १) ।
छड्डि ली [छदि] वमन का रोग (पट्; हे २,
३६) ।
छड्डि ली [छर्दिस्] छिद्र, दूषण; ‘ओ
जगह परछिदि, सो निपछिदि ए नि सुयह’
(पत्रो) ।
छड्डिय वि [छर्दित, मुक्त] १ वात,
छड्डियालिय वमन किया हुआ । २ त्यक्त,
मुक्त (विने २६०६; दे १, ४६, भीष) ।
छण वन [क्षण] हिंसा करना । छणै
(भाचा) । प्रयो. छणविह (वि ३१८) ।
छण सक [क्षण] छेदन करना । छणह
(सुप २, १, १७) ।
छण पुं [क्षण] १ उसव, मह (हे २, २०) ।
२ हिंसा (भाचा) । ३ ‘वंद पुं [चन्द्र] हर

श्रुतु को पूणिमा वा चन्द्रमा (स ३७१) ।
‘सत्ति पुं’ [‘राशिन’] बही पूर्वोक्त सम्यं
(सुग ३०६) ।

छण्ण न [छण्ण] हित्तन, हिंसा (भाव) ।

छण्णित्तु पुं [‘अण्णन्दु’] शरद श्रुतु को पूणिमा
वा चन्द्र (सुग ३३; ४०४) ।

छण्ण वि [छण्ण] १ गुप्त, प्रच्छन्न, छिपाया हुआ
(इह १, प्राप) । २ पाच्छादित, ढका हुआ
(भा ५८०) । ३ न. माया, षण्ड (सूय १,
२, २) । ४ निज्ज, विज्ज, रहस्य । ५ क्लिबि,
गुप्त रीति से, प्रच्छन्न रूप से ।

‘जं छण्ण भायरिय,
तद्धमा जण्णोए जोव्वणमएण ।
तं पटिअ (? पटि) पजइ
इहिह सुएहिं सीतं कयनेहिं’
(उप ७२८ टी) ।

छण्णालय न [दे पण्णालरु] त्रिकाष्टक,
तिपाई, संन्यासियों का एक उपकरण (मग,
भीष, छाया १, ५) ।

छत्त न [छत्त] छाता, छातराज (छाया १,
५; प्राप् ५२) । ‘धार पुं’ [‘धार’] छाता
पाएण बनैवाला लौहर (जीव ३) । ‘पडामा
धी’ [‘पताका’] छत्त-युक्त पञ्च । २ छत्त
के ऊपर की पताका (भीष) । ‘पलासय न
[‘पलाराज’] इतमंगला नगरी का एक क्षेत्र
(मग) । ‘भग पुं’ [‘भङ्ग’] राज-मण्ड, गुप्त-
मण्ड (राज) । ‘द्वार देसो’ [‘धार’] (भाष्य) ।
‘इच्छत्त न [‘निच्छत्त’] १ छत्त के
ऊपर का छाता (सम १३७) । २ पुं-
पठोक्ति-शाल प्रसिद्ध योग-विशेष (गुज १२) ।

छत्ता न [छत्ता] लगातार लेटीस दिनों का उदा-
समान (संभाव ५८) । पुंन. एक देवनिवास
(देवग १४०) । ३ पुंन. पठोक्ति-शाल एक
योग जिसमें चन्द्र धारित इह छत्त के आकार
में खड़े हैं (गुज १२—पत्र २३१) । ‘इदं
वि [‘वन्’] छातागमन (गुप्त २, १३) ।
‘वार वि [‘वार’] छाता बनानेवाला शिल्पी
(सपु १४६) । ‘ग पुंन [‘क’] वनस्पति-
विशेष (गुप्त २, १६) ।

छत्ता पुं [छत्ता] विदार्य, धन्यायो (उप ५
३३१, १९६ टी) ।

छत्तविद्या धी [छत्तान्तिद्ध] परिपद-विशेष,
समा-विशेष (इह १) ।

छत्तच्छय (पग) पुं [सप्तच्छद] वृक्ष-विशेष,
सतीना, छत्तिवन (सय) ।

छत्तवन्न न [दे] पास, तुल्य (पाप) ।
छत्तपण्ण देसो छत्तियण्ण (प्राप) ।
छत्ता धी [छत्ता] नगरी-विशेष (भाष्य) ।
छत्तार पुं [छत्तार] छाता बनानेवाला
कारीगर (पण १) ।

छत्ताइ पुं [छत्ताम] वृक्ष-विशेष, ‘आमोहस-
त्तिवण्णे, सत्ते पिपए विपुल्लताहे’ (सम
१५२) ।

छत्ति वि [छत्तिन] छत्त-युक्त, छातावाला
(भास ३३) ।

छत्तियण्ण पु [सप्तपर्ण] वृक्ष-विशेष, सतीना,
छत्तिवन, (हे १, २६५, कुमा) ।

छत्तोय पुं [छत्तीरु] वनस्पति-विशेष, वृक्ष-
विशेष (पण १—पत्र ३५) ।

छत्तोय पुं [छत्तोप] वृक्ष विशेष (भीष, संत) ।
छत्तोह पुं [छत्तोप] वृक्ष विशेष (भीष, पण
१—पत्र ३१, मग) ।

छत्तमत्थ देसो छत्तमत्थ (इय ४४) ।
छत्तयय देसो छत्तयय (राज) ।
छत्तसम वि [पट्टदग] छ या दस (सूय २,
२, २१) ।

छद्दी धी [दे] शम्भा, बिछीना (दे ३, २४) ।
छत्त वि [छण्ण] हिंसा प्रमाण, हिंसा-जनक
(सूय १, ६, २६) ।

छत्त देसो छण्ण (वण, उप ६४८ टी, प्राप्
८२) ।

छत्तदिगिह वि [पट्टदिमान्न] वृक्ष-युक्त
वृक्षगल्ला (इह ३) ।
छत्तद्वया धी [पट्टद्विका] वृक्ष, जं (धोप
७२४) ।

छत्तपी धी [दे] नियम विशेष, निषेध पत्र
लिखा जाता है (दे ३, २५) ।

छत्तपण्ण [दे] पट्टपण्ण [दे] निषेध,
छत्तपण्णय [पट्ट, भाष्य] (दे ३, २४,
पाप ४३५ ५८) ।

छत्तपत्तिआ धी [दे] १ वज्र, वज्रह,
समाया । २ वज्रांग, रोटी, पुनगा

‘छत्तपत्तिआ वि वज्रह,
निपत्ते पुत्ति । एय को देसो ? ।

निमगुरिमेवि रमिगज्ज,
परसुरिसिविगज्जए गमे’
(गा ८८७) ।

छत्तपन्न [दे] देसो छत्तपण्ण (मय ६) ।

छत्तपय पुं [पट्टपद] १ भ्रमर, भीष (हे १,
२६५, जीव ३) । २ वि, छ. स्थानवाला ।
३ छ प्रसार का (विसे २८६१) । ४ न.
छत्त विशेष (पिग) ।

छत्तय पुं पुन [दे] पात्र-विशेष (भाषा २,
छत्तयग १, ८, १, निह ५६१; २७८) ।

छत्तय न [दे] वंश-पिटक, धी वंशरक्ष को
छत्तने का उपकरण-विशेष, ‘सुईगाईमकरोड-
एहि सत्तयं च माऊणं । मात्तेय छत्तयएण’
(धोप ५५८) ।

छत्तभासरी धी [पट्टभासरी] एक प्रकार की
बोला (छाया १, १७—पत्र २२६) ।

छत्तमद्दम धक [छत्तमद्दमाय] ‘छत्त-छत्त’
भावान करता, गरम चीज पर दिया जाता
पानी की भावाज । छत्तमद्दम (वज्र ५८८) ।
‘छत्त’ देसो छत्ता । ‘रह पुं’ [‘रह’] वृक्ष, पेड़,
दलम (कुमा) ।

छत्तमल पुं [दे] सप्तच्छद, वृक्ष-विशेष,
सतीना, छत्तिवन (हे ३, २५) ।

छत्ता धी [छत्ता, छत्ता] धुमिरी, पारिणी,
धूमि (हे २, १८) । ‘हर पुं’ [‘धर’] पर्वत,
पहाड़ (वह) । देसो छत्तम’ ।

छत्तो धी [रामा] वृक्ष-विशेष, क्षीत-नर्म वृक्ष
(हे १, २६५) ।

छत्तम देसो छत्तम (हे २, ११२; पट्ट; पत्र
४०, ५, सण) ।

छत्तसुह पुं [पट्टसुग] १ स्वयं, वारिधेय (हे
१, २६५) । २ मगवान विमलनाथ का
अभिज्ञान देर (सीन ८) ।

छत्त न [छत्त] १ पट्ट, पत्ती, वज्र, वत्ता (भीष) ।
२ भाषण, भाष्यदान (दे ६, ४७) ।

छत्त न [छत्त] १ वज्र, पात्र (हे २, १७) ।
२ वीरिन, वीरिन (सूय १, २, २) ।

छत्तद [दे] रक्षा छत्तद (रक्षा) ।

छत्तद पुं [सिंह] सत्य-मुट्ट, तमवार का हाथ
(पट्ट १, ४) । ‘पट्टयाव न [‘मयाद’]
वत्सु रिया छत्त (म २) ।

छल देखो छ = प (मम १, ६) ।

छल सब [छलय्] ठाना, बचना ।

छलिग्गेज (स २१३) । सङ्क. छलिउं,

छलिऊण (महा) । क. छलिऊण (मा १४) ।

छल न [छल] १ कपट, माया (उप) । २

व्याज, बहाना (पाप, मायु ११४) । ३ भय-

विपात, यचन-विपात, एक तरह का यचन-

मुझ (सूय १, १२) । ४ ययण न [ययन]

छल, यचन-विपात (सूय १, १२) ।

छलस वि [पहस्र] पद-भोग, छ' भोगवाला

(छ ८) ।

छलैलस वि [पहस्रिक] छ कोणवाला

(सूय २, १, १५) ।

छलग न [छलन] प्ररोपण, फेंकना (भाषाणि

३११) ।

छलग न [छलन] ठगई, बचना (सुर ६,

१६२) ।

छलग्गो छी [छलता] १ ठगई, बचना

(भोग ७५५, उप ७७६) । २ छन, माया,

कपट (विसे २५५५) ।

छलथ वि [पहथ] छ भयवाला (विसे

६०१) ।

छलशील छीन [पहशीलि] संस्था विरोध,

भस्ती और छ, ८६ (भग) ।

छलसीइ छी. ऊपर देखो (सम ६२) ।

छलिअ वि [छलित] १ वञ्चित, विप्रतारित,

ठगा हुआ (भवि, महा) । २ शृङ्गार-वाक्य ।

३ चोर का हथार, तस्कर संज्ञा (राज) ।

छलिअ वि [दे] विवाह, बालाक, बहुर (दे

३, २४, पाप) ।

छलिअ न [छलिक] नाट्य विशेष (मा ४) ।

छलिअ वि [रसलित] रसलन प्राप्त (भोग

७८६) ।

छलिया देखो छालिया. 'कोणकुर्छलिपाल-

कोण दिन' (महा) ।

छलुअ } पु. [पहुलक] देशिक मत-प्रव-

छलुअ } संक कण्ठाव श्रुति (कप, ठा ७,

छलुअ } विसे २३०२). 'द्वयादधमपत्तो-

वसुणाप्रो छलुजति' (विसे २५०८, २५५५) ।

छली छी [दे] लचा, बल्लन, छाल (दे ३,

२४, जी १३, मा ११५, ठा ४, १, शाया

१, १३) ।

छलुय देखो छलुअ (पि १४८) ।

छन देखो छिन । छरेम (सुपा ५७३) ।

छनछी छी [दे] चर्म, चाम, चमडा (दे ३,

२४) ।

छवि छी [छवि] १ बान्ति, तेज (हुमा,

पाप) । २ भंग, शरीर (पह १, १) ।

चर्म, चमडी (पाप, जीव ३) । ४ भवयव

(पवि) । ५ भंगो, शरीर (ठा ४, १) ६

भवद्भार विशेष (प्रणु) । ७ न्छेअ पुं

[न्छेअ] भद्गु वा विच्छेद, भवयव वर्तन

(पवि) । ८ न्छेअण न [न्छेअन] भंग-

च्छेद (पह १, १) । ९ साण न [त्राण]

चमडी का भाच्छादन, बचक, बर्म (उत २) ।

छविअ वि [स्पृष्ट] छूना हुआ (या २७) ।

छविपठन न [छविपठन] मोनारित शरीर

(उत ३, २४) ।

छयोइय वि [छयित्त] १ कान्तिवाता ।

२ घन, निविड (भावा २, ४, २, १) ।

छय्य [दे] देखो छुय्य (राज) ।

छविअ वि [दे] मिहित, भाच्छादित (गवड) ।

छद (भप) देखो छ + प (पि ४४१) ।

छदत्तर वि [पदसप्तत] छिहतरवां, ७६ वां

(पउम ७६, २७) ।

छदत्तरि छी [पदसप्तति] छिहतर, ७६ (पर

१६) ।

छाअ देखो छाव (प्राक १५) ।

छाइअ वि [छादित] भाच्छादित, ढका हुआ

(पउम ११३, ५४, कुमा) ।

छाइल वि [छायान्त] छायावाला, कान्ति-

मुक्त (हे २, १६६, पद) ।

छाइल पु [दे] १ प्रदीप, दीपक, 'बोक्ख

तह छाइल्लय च दीनं मुण्येवार्हि' (वव ७, दे

३, ३५) । २ वि, सदृश, समान, तुल्य । ३

ऊन, प्रभूरा (दे ३, ३३) । ४ मुख्य, सुजैत,

रूपान (दे ३ ३५, पद) ।

छाई देखो छाया (पह) ।

छाई छी [दे] माता, देवी, देवता (दे ३,

२६) ।

छाउमस्य न [छादुमस्य] सपस्य-अवस्था

(सहि ६ टी) ।

छाउमस्य वि [छादुमस्यिक] केवलज्ञान

उत्पन्न होने के पहले की अवस्था में उत्पन्न,

सर्वज्ञता की पूर्वविस्था से संबन्ध रखनेवाला

(मम ११; पण ३६) ।

छाओवग वि [छाओवग] १ छाया-मुक्त,

छायावाला (हुमादि) २ पु. सेवतीय पुच्छ,

मानवीय पुच्छ (ठा ४, ३) ।

छागल वि [छागल] १ भज-संबन्धी (ठा ५,

३) । २ पुं. मन, वक्रा । छी. ली (पि

२३१) ।

छागलिय पुं [छागलिक] छागों से भाजीविका

बननेवाला, भजायालक (विपा १, ४) ।

छाण न [दे] १ धाम्य वगैरह का मलन (दे

३, ३४) । २ गोमय, गावर (दे ३, ३४,

सुर १२, १७, शाया १, ७, जीव १) । ३

वक्र, कपडा (दे ३, ३४, जीव ३) ।

छाणय न [दे] छानना, गलन. 'भूमीपेहण-

वसछाणयई जयणाप्रो होइ न्हाणइ' (सहि

४५ टी) ।

छाणरइ (भप) देखो छणरइ (पिग) ।

छाणी छी [दे] १ धाम्य वगैरह का मलन ।

२ वक्र, कपडा (दे ३, ३४) । ३ गोमय,

गावर (दे ३, ३४, घर्म २) ।

छाणी छी [व] कडा, गोवर का हवन (वव

३८) ।

छाय वि [छात] प्रणाङ्कित, भाववाला (वत

६, २, ७) ।

छाय सक [छाद्य्] भाच्छादन करना,

ढकना । छावर (हे ४, २१) । वक्र. छायांत

(पउम ७, १४) ।

छाय वि [दे-छात] १ बुद्धिबिंद, भूला (दे

३, ३३; पाप, उप ७६८ टी. भोग २६०

भा) । २ कुरा, दुर्बल (दे ३, ३३; पाप) ।

छायसि वि [छायायन्] कान्तिमान्,

तेजस्वी (सम १५२) ।

छायण न [छादन] भाच्छादन, ढकना (पिग,

महा, स ११) ।

छायण न [छादन] १ पर की छत, छाजन

(पिग ३०३) । २ वक्रन, गावरण । ३ वक्र,

कपडा (मुख ७, १५) ।

छायणिया } छी [दे] डेरा, पडाव, छावनी.

छायणी } 'को तत्त्व विमो एतो कुणित

गिहछायणि' (या १२, महा) ।

छाया की [छाया] १ मानव वा भ्रमाव,
छाह (पाप) । २ नान्ति, प्रमा, दीप्ति (हे १,
२४६; प्रीप, पाप) । ३ शोभा (प्रीप) । ४
प्रतिविम्ब, परछाई (प्राप् ११४, उत २) ।
५ भूप रहित स्थान, धरातल देश (ठा २,
४) । गह की [गति] १ छाया ने अनुसर
गमन । २ छाया ने प्रवलम्बन गति (पण्ड
१६) । पास पु [पाश्वे] दिशाक्त पर
स्थित भगवान् पारब्रह्म की स्थिति (ही ४३) ।
छाया की [दे] १ कीर्ति, यश, स्थाति । २
भ्रमरो, भ्रमरो, मीरो (दे ३, ३४) ।
छायाइत्तय वि [छायावन] छायावाना,
छाया-युक्त । की. 'इत्तिआ (हे २, २०१) ।
छायाहा की [पट्टचारिण] दिवासीग,
बालीस मीर छ, ४६ (मग) ।
छायाहीन कीन, ऊपर देता (सम ६६; कप) ।
छायाहीस वि [पट्टचारिण] दिवासीग,
४६ वा (पदम ४६, ६६) ।
छार वि [छार] १ निपलनेवाला, मखेवाला ।
२ छारा, लपल-रमवाला । ३ पुं. लवण,
नोन, ममन । ४ सजी, सजीवरार । ५ गुरु
(हे २, १७, प्राप्) । ६ मम, मृति (विने
१२४६, न ४४, प्राप् १४५, छाया १, २) ।
७ मारवय, मगहिण्डुवा (जीव १) ।
छार पु [दे] मन्धमल, मानुष (दे ३, २६) ।
छारय देतो छार (भा २७) ।
छारय न [दे] १ इषु शून्य, उत की छान
(६, १, १४) । २ मुकुल, बसी (दे३, ३४,
पाप) ।
छारिय वि [छारिक] छार-गन्धकी (सम ५,
१, ७) ।
छाउ पु [छाग] मज, बरसा (ह १, १६१) ।
छालिया की [छालिग] मजा, छापी (मुद
७, १०, गण) ।
छाली की [छाली] ऊपर देतो (प्राप्) ।
छाय पु [छाय] बानर, बघा, छिपु (ह १,
२१५, प्राप्, पन १) ।
छायन रला छायन (इह १) ।
छायवि की [पट्टपटि] छाउउ, पिनाउउ,
६६ (मग ७०, विने २७११) ।
छायसार की [पट्टमवि] छिन्तर, छतर

मीर छ ७६ (पदम १०२, ८६, सम ८५) ।
"म वि [तम] छिच्छरवा (मग) ।
छायलिय वि [पट्टवलिक] छा मानलियन-
परिमित समयवाला (विने ५३१) ।
छासट वि [पट्टपट] दिवासठवा (पदम
६६, ३७) ।
छासी की [दे] छाछ, वरू, मठा (दे ३, २६) ।
छासी की [पट्टशीति] दिवासी, जसी
मीर छ । "म वि [तम] दिवासीग, ८६
वा (पदम ८६, ७४) ।
छाहचारि (मग) देतो छानचरि (पि २४५) ।
छाहचरि देतो छानचरि (पव २३६) ।
छाहा की [छाया] १ छाह, भातप
छाहाया - ना भ्रमाव । २ प्रतिविम्ब, परछाई
छाही (पह; प्राप्; मुर २, २४७, ६,
६५, हे १, २४६, गा ३४) ।
छाही की [दे] गमन, भावसा । "मणि पु
[मणि] मूर्त्य, मूलज (दे ३, २६) ।
छिअ देतो छिअ (दे ८, ७२, प्राप्) ।
छिअ की [दे] मसही, गुनटा (हे २,
१४४, गा ३०१, ३५०, पाप, परमलन-
समुत्पन्निय ३१, १) ।
छिअटरमण न [दे] कीदा-विरोध, वधु-
स्वयन की कीदा (दे ३, ३०) ।
छिअग पु [दे] १ देह, शरीर । २ जार,
उदरग । ३ न. वन विरोध, शवाहु-व्यन
(दे ३, ३६) ।
छिओल की [दे] छोटा जल-ग्रहा (दे ३,
२७, पाप) ।
छिअ न [दे] १ बूझा, पोटी (दे ३, ३५,
पाप) । २ दन, छाता । ३ पून-व्यन (दे
३, ३५) ।
छिओला की [दे] १ बाह का छिद । २
भगवाद् छ दिदिमाभा दिणुसावण्णि
(पव १८८ था ६) ।
छिओ की [दे] बाह का छिद (छाया १,
२—पव ७६) ।
छिअ मर [छिअ] ऐला, छिन्दे करता ।
छिअ (भजन-मग) । मरि, छेन्द (हे ३,
१७१) । मरि, छिअर (महा) । मरि,
दिदमान (छाया १, १) । मरि, छिअन,
छिअमान (पा १, निरा १, २) । मरि,

छिदिअण, छिदिता, छिदित्तु, छिदिय,
छेत्तुण (पि ५८५; मग १४, ८; वि ५०६;
ठा ३, २; महा) । क. छिदियवय (पण्ड
२, १) । हेऊ, छेत्तु (भावा) ।
छिअन न [छिअन] छेद, लखन- नर्तन
(प्रोप १५४ भा) ।
छिअण न [छिअन] कटगना, दूसरे द्वारा
छेदन करना (महावि ७) ।
छिदियवि वि [छिदित] विदित्तु करताया
गया (स २२६) ।
छिअय पु [छिअय] कपडा छानने का काम
कननेवाला (दे १, ६८, प्राप्) ।
छिअ न [दे] छुल, छीन (दे ३, ३३; गुमा) ।
छिअ वि [दे, छुम] छुट्टा, छुमा छुमा
(दे ३, ३६, हे २, १३८; से ३, ४४, स
४४४) । "परोड्या की [परोदिना]
वनलति-विरोध (विने १७५४) ।
छिअ वि [छिअट्टन] छीन्धी मानान ने
भाहूत, 'गुनिनी वीरगुणिमा दिरादिना
परावण गुनि' (प्रोप १२४ भा) ।
छिअन वि [दे] छीन करता हुआ (गुना
११६) ।
छिअ की [दे] छिआ, छीव (स ३२२) ।
छिआरिअ वि [छिआरिअ] छीन्धी मानान
ने भाहूत, भाहूत मानान ने छुताया हुआ
(पाप १२४ भा टी) ।
छिदिय न [दे] छीनना, छीन करना (स
३२४) ।
छिओअण वि [दे] मज्जन, मगहिण्डु
(ह १ २६) ।
छिओल की [दे] १ पिर की मानान ।
२ पव ने पव न माना । ३ मरटा का
दहना, मरन-मण्ड (ह ३ ३७) ।
छिअओअण वि [दे] मज्ज, पडन, इअ
(दे ३, २३) ।
छिअओअण [दे] देतो छिअओअण (ठा
६—पव ३७२) ।
छिअ (ही) मर [छुप] छुना । छिअरि
(महा ६३) ।
छिओल पु [दे] देतो छिओल (पाप) ।
छिअर देतो छिअर (पह) ।
छिअय देतो छिअय (पह) ।

छिच्छिकार पुं [छिच्छिकार] निवारण-सूचक
या घृणा सूचक शब्द, छि, छि (पिंड ४११)।
छिच्छि म [दे धिक्छिन्] छि छि विक्
भिन्, भनेक भिन्कार (दे २, १७४ पद)।
छिज देखो छि = छिद। हेरु छिज्जिउ
(सङ्ग)।

छिज्ज वि [छेय] १ छरिडत किया जा सके।
२ छेदेन योग्य (सूत्र २, ५)। ३ न छेद
विच्छेद द्विपारण 'पावति वयवहरोहंछिज्ज-
मरणावसासाई' (मोघ ४६ भा, पुष्प
१८६)।

छिज्जत वि [क्षीयमाण] सब पाता दुर्बल
होना छिज्जेहे छिण्णिया, पच्चन्नम्मिदि
नुमम्मि भगेहि (गा ३४७)।

छिज्जत } देखो छिद
छिज्जमाण }

छिड्ड न [छिद्र] १ छिद्र विवर (पठम २०,
१६२, मनु ६, उप पृ १३८)। २ भवकाश
भवसर (पणह १ ३)। ३ छूपा, चोप (सुपा
३६०)। 'पाणि पु [पाणि] एक प्रकार
का जैत साधु (मावा २, १ ३)।

छिड्ड पुन [छिद्र] भाकाश गगन (भग २०
२—पन ७७५)।

छिण्ण देखो छिद (आया १ १८ सूत्र
१ ८)।

छिण्ण पु [दे] नार उपपति (दे ३ २७
पद)।

छिण्णण्णोडण न [दे] शीम सुरत, जल्दी
(दे २ २६)।

छिण्णयड वि [दे] टक से छिद न (पात्र)।

छिण्णा की [दे] ममती कुलद (दे ३, २७)।

छिण्णाल पु [दे] नार मार उपपति छिण्णाला
या छिनरा (दे ३, २७ पद)।

छिण्णालिआ } की [दे] मसती कुलद
छिण्णाली } पुरखी, छिनारी छिण्णाल,
भ्यनिभात्तिणी। (मुण्ड ५५ दे ३ २०)।

छिण्णोदमना की [दे] हुवा हुव (वास)
दाम (दे ३ २६)।

छिच्छ देखो स्तिच्छ = सेन (मोघ उप ८३३
टी, हेका ३०)।

छिच्छ वि [दे] साट छूसा हुमा (दे ३ २७
गा १३ सुपा ५०४ पात्र)।

छित्तर [दे] देखो छेत्तर (स ८ २२३
उप पृ ११७, ५३० टी)।

छित्ति की [छित्ति] छेद विच्छेद सराइन
(विसे १४५८ लहुम ५)।

छित्तु वि [छिद] छेदेनाला (पव १)।

छिद देखो छिड्ड (आया १, २ ठा ५ १
पठम ६४, ६)।

छिद पु [दे] छोटी मछली (दे ३ २६)।

छिदिय वि [छिद्रित] छिद्र मुक, छिद्रवाला
(सरह)।

छिन्न वि [छिन्न] १ सरिहण, घुटित, छेद-मुक
(मग भासू १४६)। २ निषांति निमित्त
(पृह १)। ३ न छेद सराइन (उत १५)।

'माय वि [अम्य] लह-रहित, लह मुक
(पणह २ ५)। २ पु त्यागो, साधु मुनि

निमय (ठा ६)। 'च्छेय पु [च्छेद] नय
विशेष अत्येक सूत्र को दूसरे सूत्र की अपेक्षा

से रहित मान्यताला मत (एहि)। 'द्वान्तर
वि [ध्वान्तर] मान विशेष जहाँ गाँव,

नगर वगैरह कुछ भी न हो ऐसा रास्ता (इह
१)। 'मडव वि [मडव्य] जिस गाँव या

शहर के समीप में दूसरा गाँव बगैरह न हो
(निचू १०)। 'रुह वि [रुह] काट कर

कोन पर भी पैदा होववाली वनस्पति (जीव
१० पणह ३६)।

छिन्नाल वि [दे] हल की जात का बैल भादि
(उत २७, ७)।

छिन्नालिगा } की [द] स्वतन्त्र पत्नी विशेष
छिन्नालिगा } (मग वि ३० ५८)। देखो

छिण्णालिआ।

छिप्प न [छिप्प] बल्दी शीम। 'तूर न
[तूर्ये] शीम। २ बन्ध्या जाता एक बाबा

जुएही (विप १, ३ आया १, १८)।

छिप्प न [दे] १ जिम्मा भोस (द ३ ३६
सुपा ११५)। २ गुच्छ लायन (दे ६, ३६
पात्र)।

छिप्पत देखो छिप = स्पृष्ट।

छिप्पती की [दे] १ वत विशेष। २ उत्सव
विशेष (दे ३, ३७)।

छिप्पदूर न [दे] १ गोपय सराइन गोवर
सराइन। २ विषम मन्दिन (द ३, ३८)।

छिप्पाल पु [दे] सत्वासक बैल, खाने में लगा
हुमा बैल (दे ३, २८)।

छिप्पालुअ म [दे] गूँछ लायन (दे ३,
२६)।

छिप्पिडी की [दे] १ वत विशेष। २ उत्सव
विशेष। ३ पिपु पित्तन (दे ३ ३७)।

छिप्पिअ वि [दे] शरित मरा हुमा टपका
हुमा (पात्र)।

छिप्पीर न [दे] पलाल, गुमास, लुण (दे ३
२८)।

छिप्पोली की [दे] मजारी की विद्या (निचू १)।

छिड्ड सक [छिप] कँकना। छिड्डमति
(सूत्र १ ५ २, १२)।

छिमिछिमिछिम सक [छिमिछिमाय]
'छिम छिम' मानान करना। बहू छिमि-
छिमिछिमत (पठम २६, ५८)।

छिरा की [शिरा] नस नाबी, राग (ठा २,
१ हे १, २६६)।

छिरि पु [दे] भाजू की भावादा (पठम १४
५५)।

छिह न [दे] १ छिद, विवर (दे ३, १५
पद)। २ कुटी कुटिया, छोग पर। ३

बाइ का छिद (दे ३, १५)। ४ पलारा का
पेड (सी ६)।

छिहूर न [दे] पल्लव छोटा तलाव (दे ३,
२८ सुर ४ २२६)।

छिहूर वि [दे] मसारा, छिहूर खालर।

छिही की [दे] शिला चोटी (दे ३ २७)।

छिप सक [स्पृष्ट] स्पर्श करना छूना।

छिपद (हे ४ १८२)। कर्म छिपद, छिदि
जद (हे ४, २१७)। बहू छिपत (गा

२६६)। कवह छिप्पत छिविज्जमाण
(कुमा या ४४३ स ६३२ आ १२)।

छिपट्ट [दे] पैसा छेवट्ट (मम्म २, ४)।

छिपन [दे] पैसा छेवट्ट (मम्म २, ४)।

छिपन [दे] पैसा छेवट्ट (मम्म २, ४)।

छिपन [दे] पैसा छेवट्ट (मम्म २, ४)।

जिसके पन्ने विशेष सम्बे धीर कम चौड़े हो
ऐसी पुस्तक (ठा ४, २; पत्र ८०) ।

झिबिअ वि [स्प्रष्ट] १ छूमा हुआ (दे ३,
२७) २ न. सस्यं, छूना (सि २, ८) ।

झिबिअ न [दे] ईश का दुखड़ा (दे ३, २७) ।

झियोहअ [दे] देखो झियोहअ (गा ६०५
अ) ।

झिवन वि [दे] कृमि, बनावटी (दे ३,
२७) ।

झिवोहअ न [दे] १ निन्दार्थक मुल बिहूणन,
भरलच-भ्रकाराक मुल बिहार विशेष । २ त्रि-
णित मुल (दे ३, २८) ।

झिह सक [स्प्रष्ट] सस्यं करना, छूना ।
विह (हे ४, १८२) ।

झिहअ न [शिरणह] मयूर की गिला (गाथा
१, १—पत्र ५७ टी) ।

झिहअ न [दे] वही का बना हुआ मिट्टान,
बधिर; गुजराती में जिसे 'मिर्लंड' कहते हैं
(दे ३, २६) ।

झिहडि पु [शिरणहिन] १ मयूर, मोर ।
२ वि. मयूरपिच्छ को पारण करनेवाला
(गाथा १, १—पत्र ५७ टी) ।

झिहलीं की [दे] गिला, चौड़ी (हृह ४) ।

झिहा की [रुहा] स्याह, धमिलाना (कुमा,
हे १, १२८, पद्) ।

झिहिहिमिल न [दे] बधि, बहो (दे ३,
३०) ।

झिहिअ वि [स्प्रष्ट] छूमा हुआ (कुमा) ।

झीअ झीन [झुन] झिल्ला, झीन (हे १,
११२, २, १७, शीप ६५३, पडि) । झी.
आ (भा २७) ।

झीअमाण वि [झुन] झीन करना (भाषा
२, २, ३) ।

झीग वि [झीण] सय प्राप्त, इच, दुबल (हि
२, ३, गा ८५) ।

झीयन वि [झुन] झीन करता (वी ८) ।

झीर न [झीर] जन, पानी । २ दुप, दूध
(हे २, १७, गा ५६७) । *मिरली की
[मिरली] बनसति विशेष, मूषि-मूषाए
(पण १—पत्र ३५) ।

झीरल पु [झीरल] हाथ से चलनेवाला एक
तरह का तन्तु, साप की एक जाति (पणह
१, १) ।

झीयोहअ [दे] देखो झियोहअ (गा ६०३) ।

झु सक [झुद] १ पीतना । २ पीतना ।
कर्म. झुज (उव) । कवक. झुजमाण (संभा
६०) ।

झुअ देखो झीअ (प्राप्त) ।

झुअ देखो झुअ । झुअ (प्राह ७९) ।

झुई की [दे] बलाक, बकपति (दे ३, ३०) ।

झुझुई की [दे] कपिकण्डू, केराँफ का पेड़
(दे ३, ३५) ।

झुझुसय न [दे] रणरणक, उत्सुकता,
उत्कण्ठा (दे ३, ३१) ।

झुंद वि [आ + मय] भाक्रमण करना ।
झुंद (ह ४, १६०, पद्) ।

झुंद सक [दे] बहु, प्रभूत (दे ३, ३०) ।

झुन्कारण न [झिन्कारण] पिन्कारना,
निन्दा (हृह २) ।

झुन्द वि [झुच्छ] झुच्छ, झुद, हलना (हे
१, २०५) ।

झुच्छुन्नर सक [झुच्छ + क] 'झुच्छ'
भावाज करना, स्वानादि को बुलाने को
भावाज करना । झुच्छुन्नरति (भाषा) ।

झुजमाण देखो झु ।

झुद सक [झुद] झुटना, कथन-मुक्त होना ।

झुदर (मवि) । झुदर (पम ६ टी) ।

झुद वि [झुदिव] झुटा हुआ, कथन-मुक्त
(मुपा ४००, मूक्त ८६) ।

झुद वि [दे] छोटा, तपु (पाषा) ।

झुदण न [झोटन] झुटाना, मुक्ति (या
२७) ।

झुद वि [दे] १ लिस । २ लिस, फेंका हुआ
(मवि) ।

झुदु य [दे] १ यदि, जो (हे ४, ३८५,
४२२) । २ शीघ्र, तुल्य (ह ४, ४०१) ।

झुद वि [झुद] झुन, तुल्य, हलना, तपु
(मवि) ।

झुडिया की [झुडिया] धानरण-विदेय
(पणह २, ५—पत्र १५६ टी) ।

झुण वि [झुण] १ धूलित, धूर-धूर किया
हुमा । २ विहृत, निगारित । ३ ग्रन्थस्त (हे
२, १७, प्राप्त) ।

झुच वि [झुम] स्पष्ट, छूमा हुआ (हे २,
१३८, कुमा) ।

झुत्ति की [दे] दूत, भरीव (मूक्त ८६) ।

झुदहीरपुं [दे] १ शशि, बचा, जानक ।
२ शशी, बन्दना (दे ३, ३८) ।

झुहिया देखो झुडिया (पणह २, ५—पत्र
१५६) ।

झुद देखो झुद (प्राप्त) ।

झुद वि [दे] लिस, प्रेरित (सण) ।

झुच वि [झुच] झुला (प्राह २२) ।

झुन्न पुन [झुण] कनीव, ननुमक (पिड
४२५) ।

झुन्न देखो झुण, 'जतमि पावमहणा छुला
छलेण कम्मण' (संभा ५६) ।

झुप्पत देखो झुच ।

झुम्भ सक [झुम्] झुम्भ होना, विचलित
होना । झुम्भ (पि ६६) ।

झुम्भत्य [दे] देखो झुम्भत्य (दे ३, ३३) ।

झुम् देखो झुह । झुम्ह, झुम्ह (महा, रमण
२०) । झुम्ह झुम्भति (पि ६६) ।

झुमा देखो झुमा (वमपू १) ।

झुर सक [झुर] १ लेप करना, लीपना ।
२ छेदन करना, छेटना । ३ ब्याप्त करना
(वा १२, पत्र २८, २८) ।

झुर पुं [झुर] १ पुरा, नवित का मय । २
परा का नल, घुर । ३ झुन-विदेय,
गात्रक । ४ बाण पार, तीर (ह २, १७
प्राप्त) । ५ न. मूल विशेष (पणह १) ।

*धरय न [गृहक] नावित के छुटा कौरह
खन की पौरी (नित्र १) ।

झुरण न [झुरण] धनलेपन (मपू) ।

झुरमट्टि पुं [दे] नावित, हनाम (दे ३, ३१) ।

झुरदत्य पुं [दे] झुरदत्य नावित, हनाम
(दे ३, ३१) ।

झुरिया की [दे] मृतिवा, मिट्टी (दे ३, ३१) ।

झुरिया की [झुरिया] घुरी, पाद (महा,
झुरिया) मुमा ३८१, स १४७) ।

झुरिय वि [झुरिय] १ ब्याप्त । २ लिस
(पत्र २८, २८) ।

छुरी की [छुरी] छुरी, चाकू (दे २, ४, प्राप् ६५)।

छुड़ देखो छुड़ (मुपा १५६)।

छुल्लुन्दल देखो चुल्लुन्दल। छुल्लुन्दल (सूपन ६६ दे)।

छुव सक [छुप्] स्पर्श करना हुआ। कर्म, छुपइ, छुविजइ (हे ४, २४६)।

कवक-छुपंत (उप ३३६, ७२८ टी)।

छुह सक [क्षिप्] फेंकना, डालना। छुहइ (उप, हे ४, १४३)। संक छोट्टण, छोट्टण (स ५५, विते ३०१)।

छुहा की [सुधा] १ मयूत, पीतूष (हे १, २६५ कुमा)। २ लड़ी, मकान पोतने का श्वेत द्रव्य विशेष, चूना (दे १, ७८, कुमा)।

*अर पु [र] चन्द्र, चन्द्रमा (पट्ट)।

छुहा की [सुध] सुधा, भूस, शुद्धता (हे १, १७, दे २, ४२)।

छुहाइअ वि [सुधित] श्रुता, सुसुधित (पाट्ट)।

छुहाइअ वि [सुधाइअ] ऊपर देखो (गा ५८१)।

छुहाइअ वि [सुधाइअ] ऊपर देखो (उप ४ १६०, १५० टी)।

छुहाइअ वि [सुधित] ऊपर देखो (उप; उप ७२८ टी, प्राप् १८०)।

छुहाइअ वि [दे] क्षित, पोता हुआ (दे ३, ३०)।

छुह वि [क्षिप्] क्षित, प्रेरित (हे २, ६२, १२७, कुमा)।

छुहअ न [दे] पार्श्व का परिवर्तन (पट्ट)।

छेअ सक [छेदय] १ छिन्न बना। २ तोड़वाना, दैत्याना। कर्म, छेअजति (पि ५४३)। सक छेयत्ता (महा)।

छेअ पु [दे] १ मन्त्र, प्राक्त, पर्यंत (दे ३, ३८, पात्र, से ७, ४८, कर्म १, ३६)।

२ देवर, पति का छोटा भाई (दे ३, ३८)। ३ एक देश, एक भाग (सि १, ७)। ४ निर्निभाग भरा (बम्म ४, ८२)।

छेअ वि [छेक] निपुण, ननुप, हस्तिगार (पात्र, प्राप् १७२, शीप, छाया १, १)। *अरिय पु [आर्च] शिलाचार्य, मत्ताचार्य (मा ७, ९)।

छेअ वि [दे. छेक] १ विग्रह, निर्मल (पंचा ३, ३५, ३८)। २ न. कालोचित हित (धर्म-स ५४३)।

छेअ पु [छेद] १ नाश, विनाश, विन्याच्छेधो कर्मो भद्र (पुर ५, १६४)। २ खण्ड, विभाग (सि १, ७)। ३ छेदन, नर्तन, 'जीहाच्छेध' (गा १५३, से ७, ४८)। ४

■ वैत प्रायम शय्य, वे वे हैं—निरोधमूत्र, महानिरोधमूत्र, दत्ता-श्रुतकण्ठ, बृहत्कण्ठ, व्यवहारमूत्र, पञ्चकल्पमूत्र (विते २२६५)।

५ छिन्न विभाग, भग्न किया हुआ भरा (सि ७, ४८)। ६ कमी, न्यूनता (पंचा १६)।

■ प्रायश्चित्त-विरोप (ठा ४, १)। = गुडि-परीसा का एक भग्न, धर्म गुडि जानने का एक लक्षण, निर्दोष बाध प्राप्त, 'सो छेएए सुदोर्ति' (पंचव ३)। *रिह म

[रिह] प्रायश्चित्त विरोप (ठा १०)।

छेअअ वि [छेदक] छेदन करनेवाला, छेअग काटनेवाला (नाद, विते ५१३)।

छेअअ न [छेदन] १ खण्डन, कर्त्तन, द्विधा करण (सम ९६, प्राप् १४०)। २ कमी न्यूनता, ह्रास (भाचा)। ३ खल हथियार (सूभ २, ३)। ४ निधायक वजन (बह १)। ५ मूलम भववज (बह १)। ६ जल-जीव विशेष (सूभ २ ३)।

छेओवट्टावण न [छेदोपस्थापनीय] जैन संन्यस निवेप, बड़ी दीक्षा (भव २६, पचा १११)।

छेओवट्टावणिय न [छेदोपस्थापनीय] ऊपर देखो (सक)।

छेओई [दे] देखो छिडई (गा ३०१)।

छेअ [दे] देखो छिड (दे ३, ३५)।

छेआ की [दे] १ शिखा, चोटी। २ नव-मालिका, लता-विरोप (दे ३, ३६)।

छेओ की [दे] छोटी गली, छोटा रास्ता (दे ३, ३१)।

छेग देखो छेअ = छेक (दे ३, ४७)।

छेअ देखो छिज (द्वनि २, महा)।

छेओआ की [छेआ] छेदन किया (सूभ १, ४)।

१ छेअ पु [दे] स्तेन, चोर (पट्ट)।

छेअ देखो छेअ (गा ६, उप ३५७ टी, १६४, भवि)।

छेअर न [दे] सूप वगैरह पुराना गृहोपकरण (दे ३, ३२)।

छेअसोवणय न [दे] छेअ में नामना (दे ३, ३२)।

छेअ वि [छेअ] छेदनेवाला, काटनेवाला (भाचा)।

छेअ देखो छेअ = छेदय। नर्म, छेओप्रति (पि ५४३)। सक छेदिकण, छेदेचा (पि ५८६, भा)।

छेअ देखो छेअ = छेद (पउम ४४, ६७, शीप. वव १)।

छेअअ वि [छेदक] छेदनेवाला (पि २३३)।

छेदण वि [छेदन] छेदन-कर्त्ता। जी. *गी (स ७६६)।

छेओवट्टावणिय देखो छेओवट्टावणिय (ठा ३, ४)।

छेअ पु [दे] १ स्वासक, चन्दनादि सुगन्धि वस्तु का वितेपन। २ चोर, चोरी करनेवाला (दे ३, ३६)।

छेअ न [दे. छेअ] पुच्छ, लाङ्गल, पूछ (गा ६२, विया १, २, गड्ड)।

छेअय पु [दे] चन्दन भादि का वितेपन, स्वासक (दे ३, ३२)।

छेअ पु [दे] भज, ध्यान, बकरा (दे छेअम } ३, ३२, स १५०)। जी. *छिआ,

छेअय } *छी (पि २३१, परह १, १—पच १४४)।

छेअवण न [दे] १ उलट्ट हर्ष भवि। २ बाल छेदन। ३ बीकार, ध्वनि-विरोप, 'छेअवणपुकिट्टाह बालकीलावणं न संद्राह' (भावाय)।

छेअिय न [दे] सेण्टित, नाक छेकने का शब्द, ध्वन्यक ध्वनि-विरोप (परह १, १, विते ५०१)।

छेओ की [दे] थोड़े फूलवाली माला (दे ३, ३१)।

छेअग न [दे] महामारी या मारी वगैरह फैली हुई बीमारी (भव ५, निरु १)।

छेअट्ट न [दे. सेवार्त्त, छेदयुक्त] १ छेदयुक्त सहान-विरोप, शरीर रचना-विरोप, जिसमें मर्कट-वन्ध, वेदन भीर रचना-विरोप, जो ही हर्षिया प्राप्त मे प्रवी ही ऐसी

शरीर रचना (सम ४४, १४६, भग, वम्म १, ३६) । २ कर्म विरोध, जिसके उदय से पूर्वोक्त सदन की प्राप्ति होती है वह कर्म (वम्म १, ३६) ।

छेनाडी [दे] देखो छिनाडी (पव ८०, निचू १२, जीव ३) ।

छेद पु [दे] क्षेप] श्रेण, क्षेपण, 'तो वम परिणामाणममुमभावतिरममाणविट्ठिच्छेदो' (सि ४, १७) ।

छेहत्तरि (पव) देखो छाहत्तरि (पिग) ।

छोअ पु [दे] छिनका (सूम २, १, १६) ।

छोअ पु [दे] दास, नौकर (दे ३३) ।

छोअआ की [दे] छिनका, ईल वगैरह की छाल (उप ७६८ टी) 'उच्छुल्लदे परिणए छोअय पणमिदं' (महा) ।

छोफरी की [दे] छोकरी, लडकी (कुप्र ५३) ।

छोट्टि की [दे] उच्छिष्टता, बूढाई (पिड ५८७) ।

छोड सक [छोट्टय] छोडना, वचन से मुक्त करना । छोड्ड छोड्ड (भवि महा) । सऊ. छोडियि (सुपा २४६) ।

छोडय वि [दे] छोटा, लघु (वग्जा १६४) ।

छोडापिय वि [छोटिल] छुडवाया हुआ, वचन मुक्त कराया हुआ (स ६२) ।

छोडि की [दे] छोटी, लघी, खुद (पिग) । छोडिअ वि [छोटित] १ छोडा हुआ, वचन मुक्त किया हुआ, 'वत्थाओ छोडिओ गठो' (सुपा ५०४, स ४३१) । २ घटित माहृत (पणह १, ४—पन ७८) ।

छोडिअ देखो फोडिअ (भीष) ।

छोहण वि [दे] छोडकर (कुप्र ३१) ।

छोहण } देखो छुह ।

छोहण

छोप्प वि [स्फुरय] स्पर्श-योग्य, छूने लायक (माचा १, २५४) ।

छोवम पु [दे] पिगुन, लाल, दुर्जन (दे ३, ३३) । देखो छोवम ।

छोवम वि [श्रोभय] लोम योग्य, लोमणीय, हाति सप्तपरिवर्जिया य छोवा (१ व्या) सिम्पव नाममयसवपरिवर्जिया' (पणह १, ३—पन ५५६) ।

छोवमरय वि [दे] मप्रिय, मप्रिष्ट (दे ३, ३३) ।

छोवमाइती की [दे] १ मयूरया, छूने के प्रयोग्य । २ देव्या मप्रोत्तिकर की (दे ३, ३६) ।

छोम [दे] देखो छोवम (दे ३, ३३ टि) । २ निस्तहाय दीन (पणह १, ३—पन ५५६) ।

३ न. शम्भास्थान, कलक भारोपण, दापारोप (वृह १, वव ९) । ४ न. वन्दन विरोध, दो खमासमल-रूप वन्दन (गुमा १) । ५ धापात, 'कोवेण धमवमती दतव्वामे ये देह सो तमि' (महा) ।

छोम देखो छुम (गामा १, ६—पन १५७) ।

छोयर पु [दे] छोरा, लडका, छोकरा (उप ४ २१२) ।

छोलिअ देखो छोडिअ = छोटित (पिग) ।

छोल सक [तक्ष] छोलना, छाल उतारना । छोल्लइ (पद) । कर्म छोल्लिगजु (ह ४, ३६६) ।

छोल्लण न [सक्षग] छीलना, निम्नुवीकरण, छिनका उतारना (गामा १, ७) ।

छोलियि वि [सष्ट] छिनका उतारा हुआ, सुप-रहित किया हुआ (उप १७५) ।

छोह पु [दे] १ समूह, दूध, जलवा । २ जितने (दे ३, ३६) । ३ धापात, 'दाव य को भाययो छोह जा देह उत्तरिक्कि' (महा) ।

छोह पु [क्षेप] १ क्षेपण, फेंकना, 'निपविट्ठि-च्छोहप्रमयपाराहि' (सुपा २६८) ।

छोर [दे] देखो छोयर (सुपा ५५२) ।

छोहिय वि [श्रोभित] लोम प्राप्ति, धवडाया हुआ, व्याकुल किया गया (उप १६७ टी) ।

॥ इय विरिपाइअसदमहण्णगम्मि छुभाडाइमदसकलणो
५७२ममो तरंगो समतो ॥

ज

ज पु [ज] ताडु-स्थानीय व्यजन यहाँ विरोध (प्रामा प्राप) ।

ज स [यत्] जो, जो कोई (ठा ३, १ जो ८, गुमा, गा १०९) ।

ज वि [ज] उत्पन्न, 'माहाइयरसपेमा होइ चित्तेण पेहणे दहणी' (गा ७६६) 'भार-म' (भावि) ।

जअवार पु [जयनार] जोत, शम्भुदस (प्राहु ३०) ।

जअड भक [त्वर] त्वरा करना, शीघ्रता करना । जअडइ (दे ४, १७०, पद) । वऊ. जअडव (दे ४, १७०) । प्रया जअडाववि (गुमा) ।

जअल वि [दे] धन, धान्य-द्वित, ढका हुआ (पद) ।

जइ पु [यति] १ साधु जितेन्द्रिय, संन्यासी (भीष, सुपा २४४) । २ धन-शान्ति में प्रसिद्ध विद्याम-स्थान, वविता वा विद्याम-स्थान (धम्म १ टी) ।

जइ वि [यति] जितना (वव १) ।

जइ य [यदा] जिस धमय जिस वक (प्राप) ।

जइ य [यदि] यदि, जा, और (सम १६५,

विपा १, १)। *निम्र [अपि] जो भी (महा)।

जङ्गम [यन्] जहाँ, जिस स्थान में (पद्)।
जङ्ग वि [जयिन्] जीतनेवाला, विजयी (कुमा)।

जङ्गवज्र वि [जितव्य] जीतने योग्य (प्रवि १२)।

जङ्गमा म्र [यदा] जिस समय, जिस वस्तु (उवा, हे ३, १५)।

जङ्गच्छा औ [यच्छा] १ स्वतन्त्रता। २ स्वेच्छाचार (राज)।

जङ्गण वि [जित्] १ जित-देव का मत, जित-धर्मी। २ जित नागवान् का, जित-देव से संबन्ध रखनेवाला (विसे १८३, धम्म ६ टी, सुर ८, ६४)। औ. ०णी (पचा १)।

जङ्गण वि [जयिन्] जीतनेवाला, 'मणपवण-जङ्गणदेव' (उवा, एमा १, १—पत्र ३१)।

जङ्गण वि [जयिन्] वेगवाला, वेग-मुक्त, स्वप-मुक्त, 'उवाययत्तपद्मवत्तजङ्गणसिग्गवे-गार्हि' (जीन)।

जङ्गत्त वि [जैत्र] १ जीतनेवाला, विजयी (ठा ६)। २ पुं. वृष-विरोध (रंभा)।

जङ्गत्ता देखो जय = जि।

जङ्गय वि [जयिक] जयावह, विजयी (छाया १, ८—पत्र १३३)।

जङ्गय वि [यट्] याग करनेवाला, 'तुम्हे पद्मा जगाए' (उत्त २५, ३८)।

जययवन् देखो जय = यव।

जङ्गमा म्र [यदि या] भयना, या (वव १)।

जङ्गस (मन्) वि [याहरा] कैला, जिस तरह का (पद्)।

जङ्ग न [जटु] लाथा, लाठ, लाह (ठा ४, ४, उप ३ २४)।

जङ्ग पुं [यटु] १ स्वनाम-रूपात् एव राजा। २ मुप्रभित शक्ति वंश (उव)। *गण्डण पुं [नन्दन्] १ यदुवंशीय, यदुवंश में ऊपण। २ श्रीहण्य (उव)।

जङ्ग पुं [यजुप्] वेद-विशेष, यजुर्वेद (पणु)।

जङ्गण पुं [यमुन्] स्वनाम-प्रसिद्ध एव राजा (उप ५४७)।

जङ्गण औ [यमुना] भारत की एक जङ्गण प्रसिद्ध नदी, जमुना (ठा १, २, हे जङ्गण १, ४, १७८)।

जङ्गणा देखो जङ्गणा (वजा १२२, प्राज्ञ ११)।

जङ्गो म्र [यत्] १ क्योंकि, कारण कि, चूंकि (था २८)। २ जिससे, जहाँ से (प्राप्ति ८२, १४८)।

जङ्ग [यन्] १ क्योंकि, कारण कि। २ वायवात्तर का संवत्स वृषव कथ्य (हे १, २४, महा, गा ६६)। *किञ्च म्र [किञ्चित्] १ जो कुछ, जो कोई (पंडि, पण्ड १, ३)।

२ भस्वबद्ध, प्रयुक्त, गुच्छ, नगण्य (पचव ४)।
जङ्गयमुक्त्तु वि [हे] धन्य मुकुन्त से प्राप्त योके उपहार से धनवी होनेवाला (हे ३, ४४)।

जङ्गम वि [जगम] १ चलनेवाला, जो एक स्थान से दूसरे स्थान में जा सकता हो वह (ठा ६, श्रवि)। २ छन्द-विशेष (पिप)।

जङ्गल पुं [जङ्गल] १ देश विशेष, सफरलक्ष देश (कुमा, सत्त ६७ टी)। २ निर्जल प्रदेश (हृह १)। ३ न मास, 'यपुत्तभविषारि-मोत्तपुहं जं जगले किण्ण' (वजा ४२)।

जङ्गा औ [दे] गोचर-भूमि, पटुआ को बरने की जगह (दे ३, ४०)।

जङ्गावि वि [जङ्गमिक] १ जगम वस्तु के संवत्स रखनेवाला, जगम-संस्कृती। २ न, जगम जीवों के रोम का बना हुआ कपड़ा (ठा ३, ३, ५, ३, बस)।

जङ्गलि औ [जाङ्गलि] विप उतारने का मन्त्र, विप विना (औ ४४)।

जङ्गलिय पुं [जाङ्गलिक] ग्राहक, विपमन्त्र का जानकार, विपहुरिया (पत्रम १०५, १७)।

जङ्गल चीन [जाङ्गल] विप विपातक तन्त्र, विप विना, आयुर्वेद का एक विभाग जिसमें विप की विविधता का प्रतिपादन है (विपा १, ७—पत्र ७२)। औ. *छी (ठा ८)।

जङ्गा औ [जङ्गा] जाँप, जानु के नीचे बा माग (भाषा) कण्ठ)। *चर वि [चर] पादचारी, पैर से चलनेवाला (घातु)। *चारण पुं [चारण] एक प्रकार के जैन भुजि, जो अपने तपोव्रत से शाश्वत में गमन कर सकते हैं (भा २०, ८, पत्र ७७)। *संसारिणि वि

[संसार्ये] जाँप तक पानीवाला जलशाय (भाषा २, ३, २)।

जङ्गाच्छेअ पुं [दे] चत्वर, चौक (दे ३, ४३)।

जङ्गामय } वि [दे] जहाल, द्रुत गामी, वेग जङ्गालुअ } से जानेवाला (दे ३, ४२, पद्)।

जङ्गाल वि [जङ्गाल] द्रुत-गामी (दे ३, ७८)।

जङ्गल सक [यन्] १ बरा करना, काटू में करना। २ जकड़ना, बाँधना (उप १ ३१)।
जङ्ग न [यन्] १ कल, धुक्ति-पूर्वक शिल्प आदि कर्म करने के लिए पदार्थ-विशेष, तिल-यन्त्र आदि (जीव ३, गा ५४४, पंडि, महा, कुमा)। २ बरीकरण, रक्षा कौरह के लिए किया जाता सेज प्रयोग (पण्ड १, २)। ३ समयन, नियन्त्रण (राय)। *पथर पुं [प्रस्तर] मोरुण का पथर (पण्ड १, २)।

*विहण्यम्स न [पीडनकर्मन्] यन्त्र द्वारा खिल, ईल यादि पोलेने या पेरनेका धधा (पंडि)। *पुरिस पुं [पुरुष] यन्त्र-निर्मित पुरुष, यन्त्र से पुरुष की चेष्टा करनेवाला पुतला (भाषा)। *याडचुल्लो औ [पाटचुल्लो] छटु-सप्त पकले का बूझ (ठा ८—पत्र ४१७)। *हर न [गृह] भार-गृह, पानी का कवायवाला स्थान (कुमा)।

जङ्ग देखो जा = या।

जङ्गण न [यन्त्रण] १ नियन्त्रण, संयमन, काटू। २ रोकनेवाला, प्रतिरोधक, (से ४, ४६)।

जङ्गिअ पुं [यान्त्रिक] यन्त्र-कर्म करनेवाला, कल चलानेवाला (गा ५४४)।

जङ्गिअ वि [यन्त्रिन्] नियन्त्रित, जङ्गा हुआ (पत्रम ५३, १४४)।

जङ्गु पुं [यन्त्रु] जीव, प्राणी (उत्त ३, सण)।

जङ्गु म्र [यन्त्रु] जलशाय में होनेवाला एण विशेष (पण्ड २, ३—पत्र १२३)।

जङ्गु वि [यान्त्रु] यन्त्र नामक वृण का (भाषा २, ३, १४)।

जंप सक [जल्प्] बोलना, कहना। जंपद (प्राप्त)। बह्. जंपत, जंपनाण (महा, गा १६८, सुर ४, २)। सं. जंपजङ्गण, जंपिजङ्गण, जंपिय (प्राक्त; महा)। हेइ जंपित (महा)। इ. जंपिअअ (गा २४२)।

जंषण न [जलपन] जकि, कयन, कटना
(या १२; गउठ) ।

जंषण न [दे] १ धकीति, धपयश । २ मुल
मुह (दे ३, ५१; मवि) ।

जंषण वि [जलपक] बोलनेवाला, भाषक
(पएह १, ३) ।

जंषाण न [जम्पान] १ बाहन-विशेष, मुखा-
सन, शिविका विशेष (का ४, ३; भीष; सुभा
३६३; उप ६५६) । २ मूतक-यान, शव-यान
(सुभा २१६) ।

जंषिचन्द्रय वि [दे] जिसको देखे उसी को
बाहनेवाला (दे ३, ४४; वास) ।

जंषिय वि [जलिपत] कथित, उक्त (भासू
१३०) ।

जंषिय देखो जंष ।

जंषिर वि [जलिपट] १ जलपाक, वाचाट
(दे २, ६७) । २ बोलनेवाला, भाषक (दे
२, १५४; या २७; या १६२; सुभा ४०२) ।

जंषिकिरमगिर १ वि [दे] जिसको देखे
जंषिकिरमगिर १ कि जो याचना करने-
वाला (पह; १, ४४) ।

जंषरई छो [जाम्बयनी] लीटपण की एक
पत्नी (मत १४; भासू १) ।

जंषरंत पु [जाम्बयन्] एन विद्याधर
राजा (हुप्र २५६) ।

जंषाण न [दे] १ जंबाल, शैवाल, जलमल,
छिंवार या सेवार (दे ३, ४२; पास) ।

जंषाल पुन [जम्बाल] १ बंदम, बंदी, बंध
(पास; का ३, १) । २ जरापु, गर्म-हेटल बर्मे
(हुप्र १, ७) ।

जंषीरिय (घा) न [जंषीर] नीबू या नीबू-
फल-विशेष (पण) ।

जंषु पुं [जम्बु] १ जम्बुक, शिमार, 'उडपु-
हृमरजगुण' (पठम १०५, ५७) । २ एन
प्रसिद्ध जैन मुनि, सुप्रसंग-स्वामी के शिष्य,
भक्तिम नेवती (बन्ध, वसु; निगा १, १) । ३
न. जम्बु बुद्ध का फल, जासुन (आ ३६) ।

जंषु पुन [जम्बु] जम्बु बुद्ध का फल, जासुन,
'ते विनि जसु मत्तेना' (संवाष ४०) ।

जसु १ शोको जंषु (रुपा; सुभा; इर; पठम ५६,
२२; मे ११, ८६) ।

जंषुअ पुं [दे] १ वेतस वृक्ष, बेंत । २ पश्चिम
दिक्पाल (दे ३, २२) ।

जंषुअ १ पु [जम्बुक] १ शिमार, गौदह
जंषुग (भासू १७१; उप ७६८ टी. पठम
१०५, ६५) । २ न. जम्बुवृक्ष का फल,
जासुन (सुभा २२६) ।

जंषुल पुं [दे] १ बानीर वृक्ष, बेंत । २ न.
मद्यमान, मुरापात्र (दे ३, ४१) ।

जंषुल वि [दे] जलपाक, वाचाट, धक्कादी
(पास) ।

जंषुवई देखो जंषवई (मत, पठि) ।

जंषू की [जम्बू] १ बुद्ध विशेष, जासुन
का पेठ (सुभा १, १; भीष) । २ जंषू वृक्ष
के भावार का एक रत्नमय शाश्वत पदार्थ,
मुद्ररंग, जिसके कारण यह द्वीप जलद्वीप
नहलाता है (जं १) । ३ पुं. एक सुप्रसिद्ध
जैन मुनि, सुप्रसंग-स्वामी का मुख्य शिष्य (जं
१) । 'दीय पु ["द्वीप] मूकएइ विशेष,
सब द्वीप और समुद्रों के बीच का द्वीप, जिसमें
बहु भासत भादि क्षेत्र वर्तमान है (जं १,
६६) । 'दीया वि ["द्वीपक] जम्बूद्वीप-
सम्बन्धी, जम्बूद्वीप में उत्पन्न (का ४, २, ६) ।
'दीयपणजति छो ["द्वीपपणजति] जैन
श्रामण-धर्म-विशेष, जिसमें जम्बूद्वीप का वर्णन
है (जं १) । 'पीठ, 'पेठ न ["पीठ]
मुद्ररंग-जम्बू का दक्षिणतः प्रवेश (जं ४,
६६) । 'पुर न ["पुर] नगर-विशेष (इर) ।
'मालि पु ["मालिन्] राखण का एक पुत्र,
राखण का एक मुह (पठम ५६, २२; मे
१३, ८६) । 'मेषपुर न ["मेषपुर] विद्या-
धर-नगर-विशेष (इर) । 'संड पु ["पण्ड]
श्राम-विशेष (भासम) । 'सामि पुं ["सामिन्]
सुप्रसिद्ध जैन मुनि-विशेष (भासम) ।

जंषूय पुं [जम्बूय] शिमार, गौदह (भीष
८४ भा) ।

जंषूयय न [जाम्बूयन] १ मुण्णें, सोना
(मम ६१; पठम ५, १२६) । २ पुं. स्वनाम
प्रसिद्ध एन राजा (पठम ४८, ६८) ।

जंषूयय पुन [जम्बूयक] उदा भावन-विशेष
(उदा) ।

जंषु पुं [दे] नुप, मूमा, भाव्य बगैल का
छिंवार (दे ३, ४०) ।

जंभंत देखो जंभा = जम्भ ।

जंभा वि [जम्भक] १ जंभाई लेनेवाला ।
२ पुं. ब्यन्तर-देवों की एक जाति (बन्ध,
सुभा ४०) ।

जंभणमण १ वि [दे] स्वच्छन्द-भाषी, जो
जंभणमण } मरजी में भावे वह बोलने-
जंभणय } वाला (पह; दे ३, ४४) ।

जंभणी छो [जम्भणी] तन्त्र-प्रसिद्ध विद्या-
विशेष (सुप्र २, २; पठम ७, १४४) ।

जंभय देखो जंभग (सुभा १, १; मत, मम
१४, ८) ।

जंभल पुं [दे] जड, सुन्द, मन्द (दे १, ४१) ।
जंभा छो [जम्भा] जंभाई, जम्भण (विषा
१, १) ।

जंभा छो [जम्भा] एक देवी का नाम
(सिदि २०१) ।

जंभा } धक [जम्भ] जंभाई लेना ।
जंभाअ } जंभाइ, जंभाप्रइ (दे ४, १५७;
२४०; भास; पह) । बहु जंभंत, जंभाअंत
(गा ५६६; से ७, ६५; बन्ध) ।

जंभाइअ न [जम्भित] जंभाई, जम्भना
(सिदि) ।

जंभिय न [जम्भित] १ जंभाई, जम्भना । २
पुं. श्राम-विशेष, जहाँ बागान् महावीर को
बेवत्तज्ञान उत्पन्न हुआ था, यह गाँव बारस-
नाथ पहाड़ के पास की श्रुतुबासिना नदी के
किनारे पर था (बन्ध) ।

जकय पुं [यक्ष] १ ब्यन्तर देवों की एक
जाति (पएह १, ४; भीष) । २ घनेश, कुबेर,
मयापिपति (भास) । ३ एक विद्याधर-पुत्र,
जो राखण का दीविर भाई था (पठम ८,
१०२) । ४ द्वीप-विशेष । ५ समुद्र-विशेष
(बंद १६) । ६ शान, कुसा 'मह कायिरा-
हणया उज्जुल्लिरे परमणमि' (भास, पठम १६३
भा) । 'बहम पुं ["बहम] १ बेमार, धोए,
बन्दन, बजुर और बन्नीरी का मयमाप मिश्रण
(भरि) । २ द्वीप-विशेष । ३ समुद्र-विशेष
(बंद २०) । 'गाह पुं ["गाह] मयावेश,
मयावत्त उदरन (जोब १, जं २) । 'गाथा
पुं ["गायक] यतो का धरिपति, कृबेर
(पण) । 'दिश न ["दीम] देखो नीपे
'दिस्वय (पठ २१) । 'दिशा छो ["दसा]
महिर लुक्कय की बहिन, एक जैन साध्वी

(पहि) । 'मह पुं' ['मह] यक्षोप का अधिपति देव विशेष (चर २०) । 'मंडलप-विभक्ति' छी ['मण्डलप्रविभक्ति'] एक तरह का नाट्य (राय) । 'मह पुं' ['मह] यक्ष के लिए किया जाता महोत्सव (प्राचा २, १, २) । 'महाभद्र पुं' ['महभद्र] अक्ष द्वीप का अधिपति देव (चर २०) । 'महाधर पुं' ['महाधर] यक्ष समुद्र का अधिपति देव-विशेष (चर २०) । 'राय पुं' ['राज'] १ यक्षों का राजा, कुवेर । २ प्रधान यक्ष (सुवा ४६२) । ३ एक विद्याधर राजा (पदम ८, १२४) । 'धर पुं' ['धर'] यक्ष-समुद्र का अधिपति देव-विशेष (चर २०) । 'इन्द्र वि' ['विष्ट] यक्ष का प्रावेशवाला, यक्षाधिपति (ठा ५, १, वच २) । 'द्विस्तय, 'ल्लिस्तय न' ['द्विस्तय'] १ कभी-कभी किसी विद्या में विजली के समान जो प्रकाश होता है वह, प्राचा में ध्यस्त हृत अग्नि-दीपन (भग ३, ६; वच ७) । २ आकाश में दीप्ता घनि-युक्त विरास (जीव ३) । 'वेस पुं' ['वेस'] यक्ष-हृत प्रावेश, यक्ष का गन्तव्य-राश्री में प्रवेश (ठा २, १) । 'ह्विप पुं' ['धिप'] १ वैद्यमण्ड, कुवेर, यक्ष राज । २ एक विद्या-धर राजा (पदम ८, ११३) । 'ह्विपह पुं' ['धिपति] देवों पूर्वोक्त धर्म (पाथ, पदम ८, ११६) ।

जकरासि छी [दे. यक्षरात्रि] दीपालिका, दीवाली, कालिक वदि अमास का पर्व (दे ३, ४३) ।

जस्तरा छी [यक्षा] एक प्रसिद्ध जैन साध्वी, जो महर्षि स्थूलभद्र की बहिन थी (वर्ध) ।

जविरादं पुं [यक्षेन्द्र] १ यक्षों की स्वामी, यक्षों का राजा (ठा ४, १) । २ मगवान् धरनाथ का शासनाधिष्ठाक देव (पव २६, संति ८) ।

जविरागरी छी [यक्षिणी] १ यक्ष-भोजन की, देविषों की एक जाति (भायम) । २ मगवान् भोजनेमिनाथ की प्रथम शिष्या (सम १३२) ।

जविरागरी छी [यक्षिणी] देखो जकसा (संगल २३) ।

जस्तरा छी [याक्षी] सिंधि-विशेष (चिदे ४६४ टी) ।

जकखुत्तम पुं [यक्षोत्तम] यक्ष-देवों की एक प्रधानतर जाति (परण १) ।

जकखेस पुं [यक्षेश] १ यक्षों का स्वामी । २ मगवान् अभिनन्दन का शासन-यक्ष (संति ७) ।

जग न [यष्टत्] पेट की दक्षिण ग्रन्थि (पह १, १) ।

जग पुं [दे] जन्तु, जीव, प्राणी, 'पुष्टो जग परिसंखाय भिक्षु' (सूय १, ७, २०) ।

जग पुंन [जगत्] प्राणी, जीव, 'पुढविजीवे हिंसिजा येन तजिस्सिया जे' (दस ५, १, ६८; सूय १, ७, २०, १, ११, ३३) ।

जग न [जगत्] जग, ससार, दुनियाँ (स २४६, कुर २, १३१) । 'गुरु पुं' ['गुरु'] १ जगत् में सर्व-श्रेष्ठ पुरुष । २ जगत् का पूज्य । ३ जिन-देव, तीर्थंकर (स २१; पंचा ७) । 'जीवण वि' ['जीवन'] १ जगत् को जीवनेपाला । २ पुं जिन-देव (राज) ।

'गाह पुं' ['गाय'] जगत् का पालक, परमेश्वर, जिन-देव (छदि) । 'पितामह पुं' ['पिता-मह'] १ ब्रह्मा, पिताता । २ जिन-देव (छदि) ।

'पपासा वि' ['प्रकाश'] जगत् का प्रकाश करनेवाला, जगत्प्रकाशक (पदम २२, ४०) ।

'पहाज न' ['प्रधान] जगत् में श्रेष्ठ (गठ) ।

जगई छी [जगती] १ प्रकार, विधा, दुर्ग (मम १३, कैय ६१) । २ धुविषो (उत्त १) ।

जगईपञ्चय पुं [जगतीपञ्चय] पंचैत विराप (राय ७५) ।

जगजग यक [यकास्] बदरना, दीपना । वरू. जगजगंन, जगजगंत (पदम ७७, २३, १४, १३४) ।

जगड सक [दे] १ मगदना, भगदा बरना, बसह बरना । २ बदर्यन बरना, पीडना । ३ उडान, जागुन बरना । वरू. जगडंत (मवि) । वरू. जगडिज्जंत (पदम ८२, ६, राज) ।

जगहण न [दे] नीचे देखो (उव) ।

जगहण वि [दे] १ मगद बरनेवाला । २ बदर्यना बरनेवाला (धर्मवि ८६, कुप्र ४२६) ।

जगहण छी [दे] १ भगदा, बसह । २

कदर्यन, पीडन, 'सिए चिय मम्महाणापसस जगजगहणापसतस' (उप ५३० टी) ।

जगडिअ वि [दे] विद्रावित, कदमित (दे ३, ४४; सार्थ ६७, उव) ।

जगडिअ वि [दे] लड़ाया हुआ (धर्मवि ३१) ।

जगर पुं [जगर] सनाह, कवच, वर्म (दे ३, ४२) ।

जगल न [दे] १ पङ्कवाली मदिरा, मदिरा का नीचला भाग (दे ३, ४१) । २ ईश की मदिरा का नीचला भाग (दे ३, ४१; पाम) ।

जगार पुं [दे] राब, बगार (पव ४) ।

जगार पुं [जगार] 'ज' अक्षर, 'ज' वर्ण (निबू १) ।

जगार पुं [यरगार] 'यत्' शब्द, 'यगारहिद्वारं वपादेण निदेसो कीरह' (निबू १) ।

जगारी छी [जगरी] धन-विशेष, एक प्रकार का छुद्र अक्षर, 'भमणं कीयलसत्तुगमुग्गज-गरीय' (पंचा ५) ।

जगुत्तम वि [जगदुत्तम] जगत्-श्रेष्ठ, जगद में प्रधान (पह २, ४) ।

जग्ग भक [जागृ] १ जागना, नीद से उठना । २ संवेत होना, सावधान होना । जग्गह, जग्गि (ह ४, ८०; पद; प्राप् ६८) । वरू. जग्गव (सुवा १८५) । प्रयो. जग्गावह (वि ५४६) ।

जगण न [जागरण] जागना, निद्रा-त्याग (सोप १०६) ।

जगगिअ वि [जागरित] जागा हुआ, नीद से उठया हुआ (मुवा ३११) ।

जग्गह पुं [पुद्गमह] जो प्रात हा उये प्रहण करने की राजाशा, 'एएण जग्गहो पोतिमो' (भावम) ।

जग्गाविअ देखो जग्गविअ (वि १०, ४६) ।

जग्गाह देखो जग्गह (धाम) ।

जग्गिअ वि [जागृत] जाग हुआ, ध्यान-निद्रा (सा ३८५, मुवा, मुवा २६३) ।

जग्गिर वि [जागिरिह] १ जागनेवाला । २ सावध रहनेवाला (मुवा २१८) ।

जघण न [जघन] बयर के नीचे का भाग, ऊपरम (बन्. धीर) ।

जञ पुं [दे] पुल्ल, मरद, श्राव्यो (दे ३, ४०) ।

जञ वि [जात्य] १ उत्तम जातवाला, कुचीन, श्रेष्ठ, उत्तम, सुन्दर (छाया १, १; था १२, सुपा ७७, नय) । २ स्वभाविक, श्रद्धाविम (तदु) । ३ सजातीय, विजाति विधाय से रहित, मुद (जीव ३) ।

जञ्जण न [जात्याञ्जन] १ श्रेष्ठ श्रज्जन, सुन्दर श्रज्जन (छाया १, १) । २ मरित श्रज्जन, तैल शरीर से मरित श्रज्जन (कण) ।

जञ्जण न [दे] १ श्रग, सुगन्धि श्रय-विशेष, जो वृष के काम में धाता है । २ कुकुम, नेसर (दे ३, ५२) ।

जञ्जय [जात्यन्ध] जन्म से अन्धा, जन्माध (सुपा ३६५) ।

जञ्जणिय [वि] [जात्यन्धित] सुकुल में जञ्जय [उत्पन्न, श्रेष्ठ जाति का (सूत्र १, १०, बृह ३) ।

जञ्जस पुं [जात्यन्ध, जात्यान्ध] उत्तम जाति का घोडा (पद्म ५४, २६) ।

जञ्जिय (भग) वि [जातीय] समान जाति का (मण) ।

जञ्जिर न [यञ्जिर] जहाँ तक, जितने समय तक (बष ७) ।

जञ्ज सक [यम्] १ उपरन करना, विराग करना । २ देना, दान करना । जञ्जइ (हे ४, २१५, कुमा) ।

जञ्ज पुं [यद्धम] रोग-विशेष, यक्ष्मा, क्षय-राग (प्राक् २२) ।

जञ्जद वि [दे] स्वच्छन्द, स्वेर (दे ३, ४६, पङ्) ।

जञ्ज देखो जय = यन् । वक्र. जञ्जमाण (नाट—शकु ७२) ।

जञ्जु देखो जञ = यद्वप (छाया १, ५, भग) ।

जञ्ज वि [जट्य] जो जीता था सके वह जीतने को शक्य (हे २, २४) ।

जञ्जर वि [जर्जर] जीर्ण, सचिद्ध, खोखला, जर्जर, भ्रमिता या भ्रमकर (गा १०१, सुर ३, १३६) ।

जञ्जर सक [जर्जरय] जीर्ण करना, खोखला करना । वक्र. जञ्जरिज्जत, जञ्जरिज्जमाण (नाट—चैत ३३, सुपा ६४) ।

जञ्जरिय वि [जर्जरित] जीर्ण किया गया, खोखला किया हुआ, पुराना (ठा ४, ४, सुर ३, १६५; कस) ।

जञ्जिग पुं [जटियक] एक जैन आचार्य का नाम (सी १५) ।

जञ्जिय } न [याञ्ज्य] जीवन-मर्याद, जञ्जीय } जन्मदो भर, 'जञ्जीय श्रिहरण (पिड १०६, ५१२) ।

जट्ट पुं [जट] १ देश विशेष (भग) । २ उस देश का निवासी (हे २, ३०) ।

जट्ट वि [इष्ट] यजन किया हुआ, याग किया हुआ (स ५५) ।

जट्ट न [इष्ट] यजन, याग, यत् (उत्त १२, ४०, २५, ३०) ।

जट्टि ली [यट्टि] लकड़ी, 'जट्टिदुट्टिलजपहा-रहे' (महा. प्राप्र) ।

जट्ट वि [जट्ट] १ श्रचेतन, जीव-रहित पदार्थ । २ मूर्ख, भ्रालसी, विवेक-शून्य (पाप. प्राप् ७१, ३१) ।

जट्टि } शरित, जाड़े से ठंडा होकर चलने को मराना (पाप) ।

जट्ट देखो जट (पङ्) ।

जट्ट } ली [जटा] सटे हुए बाल, भिते हुए जट्टा } बाल (हिका २५७, सुपा २५१) ।

'धर वि [धर] १ जटा को धारण करने-वाला । २ पुं. जटाधारी तापस, संन्यासी (पद्म ३६, ७५) । 'धारि पुं [धारिन्] देखो पूर्वोक्त ग्रंथ (पद्म ३३, १) ।

जट्टहार देखो जट-धारि (पुत्र २६३) ।

जट्टाड } पुं [जटाड] स्वनाम-श्रद्धित गृध्र जट्टाडण } वस्त्र-विशेष (पद्म ४४, ५५, ४०) ।

जट्टागि पुं [जटागिन्] ऊपर देखो (पद्म ४१, ६५) ।

जट्टाल वि [जटावत्] जटा-युक्त, जटाधारी (हे २, १४६) ।

जट्टामुर पुं [जटामुर] शत्रु-विशेष (वेणी १७७) ।

जट्टि वि [जट्टिन्] १ जटावाला, जटायुक । २ पुं. जटाधारी तापस (श्रीप. भत्त १००) ।

जट्टिश् वि [जट्टिक्] देखो जट्टि (पुत्र २६३) ।

जट्टिश् वि [जट्टिक्] पिहित, ढका हुआ (सिरि ५१६) ।

जट्टिश् वि [दे. जट्टिक्] जट्टि जटा हुआ, शक्ति, संतम (दे ३, ४१; महा. पाप) ।

जट्टिश् पुली [जट्टिमन्] जटता, जटपन, जाव्य (सुपा ६) ।

जट्टियाइलम } पुं [दे जटिकादिलक] यह-जट्टियाइलम } विशेष, महाधिप्रायक देव-विशेष (ठा २, ३, चन्द २०) ।

जट्टिल वि [जटिल] १ जटावाला, जटा-युक्त (उवा. कुमा २, १५) । २ व्यास, क्षत्रित, 'उल्लसिपवद्वज्जालीनजटिले जलणे पवेसो वा' (सुपा ४६५) । ३ पुं. सिंह, केसरी । ४ जटाधारी शासक (हे १, १६४, भग १५, पव ६४) ।

जट्टिलय पुं [दे. जटिलक] राहु, ग्रह-विशेष (सुक् २०) ।

जट्टिलय [वि] [जटिलिन्] जटिल किया हुआ, जटा-युक्त किया हुआ (सुपा १२५, २६६) ।

जट्टिल वि [जटिलिन्] जटावाला, जटाधारी (चट्ट) ।

जट्टिल देखो जटिल (भग १५—पद्म ६७०) ।

जट्टि वि [दे] शराक, प्रसमय (पद्म १०७) ।

जट्टि न [जाड्य] जटता, जटपन (उद्ग ३२० टी. सार्व १३०) ।

जट्टि देखो जट (पद्म १०७, पंचमा) ।

जट्ट पुं [दे] हाथी, हस्ती (भोग २३८, बृह १) ।

जट्टा ली [दे] जाडा, सीत (सुर ११, २१५, पिप) ।

जट्ट वि [स्थक] परिवर्तन, मुक्त, वजित (हे ४, २५८ श्रोग ६०), 'जइवि न सम्मत्तजडो' सत्त ७१ टी) ।

जट्टर } न [जट्टर] पेट, उदर (हे १, २५४, जटल } प्राप्र पङ्) ।

जण सब [जणय] उत्पन्न करना, पैदा करना । जणेर जणति (प्राप् १५, १०८, महा) । जणयति (पापा) । वक्र. जणयत्, जणमाण (सुर १३, २१, २२६; उव) ।

जण पुं [जण] १ मनुष्य, मानव, प्रादयी, लोक, व्यक्ति (श्रीप. पापा: कुमा. प्राप् ६. ४४

६५, स्वप्न १६) । २ देहाती मनुष्य (सूय १, १, २) । ३ समुदाय, वर्ग, लोक (कुमा. पंचव ४) । ४ वि. उत्पादक, उत्पन्न करने-वाला 'जैण मुहम्मदजण' (विसे ६६०) । 'जत्ता छो [यात्रा] जन-समागम, जन-संमति, 'जणजतारहिदाए' होइ अद्वैत बदेण सया' (वम ४) 'ट्टाण न [स्थान] १ दण्ड-कारण्य, दक्षिण का एक जंगल । २ नगर-विशेष, नासिक (ती २८) । 'यइ पुं [पति] सोगो का मुखिया (शौर) । 'यय पु [व्रज] मनुष्य समूह (पउम ४, ५) । 'याय पुं, [वाह] १ जन-श्रुति, किंवदन्ती, उड़ती खबर (मुपा ३००) । २ मनुष्यों की प्राप्त में बर्चा (शौर) । ३ लोकपवाद, लोभ में निम्ना, 'ययवायभएण' (प्रव १) । 'स्सुइ छो [श्रुति] किंवदन्ती । 'ययवाय पु [प्रावाद] लोक में निम्ना (ग ४८५) । जणइ छो [जनिता] उत्पादिन, उत्पन्न करनेवाला (कुमा) ।

जणइउ पुं [जनयितु] १ जनक, पिता जणइउ (राज) । २ वि. उत्पादक, उत्पन्न करनेवाला (ठा ४, ४) ।

जणउत्त पुं [दि] ग्राम का प्रधान पुरुष, गांव का मुखिया (दि ३, ५२; पइ) । २ विद, भाएइ, नॉक, विदुषक (दि ३, ५२) । जणवास पु [जनङ्गम] बागडाल, 'रायणी हुंति रका य बमणा य जणगमा' (उप १०३ १ टी, पाप) ।

जगग देखो जगय (भग उर पु २१६, सुर २, १३७) ।

जणण न [जनन] १ जन्म देना, उत्पन्न करना पैदा करना (मुपा ५६७, सुर ३, ६, इ ५७) । २ वि. उत्पादक, जनक (उर ६, ६, कुमा, भवि) 'जणमएणसयजणएण' (वसु) ।

जगगिं छो [जननि, 'नीं] १ माता, जगगीं छो [ममा (सुर ३, २५, महा पाप) । २ उलान करनेवाली छो, उत्पादिता (कुमा) ।

जगहण पुं [जगार्दन] धीरपण, विष्णु (उर ५८८ टी, पित) ।

जगपगइ पुं [जगपवाइ] जन-वर, लोकोपि, भद्रपाद (मोइ ५३) ।

जणमेअअ पुं [जनमेजय] स्वनाम-प्रसिद्ध नृप-विशेष (चाइ १२) ।

जणमेजय देखो जणमेअअ (वमवि ८१) ।

जणय वि [जनक] १ उत्पादक, उत्पन्न करनेवाला, 'विद्धिविय विमुणएणं सव्वं सव्वस्स मयजणयं' (प्राप् १६) । २ पुं. पिता, बाप (पाप, सुर ३, २५, प्राप् ७७) । ३ देखो जण = जन (सूय १, ६) । ४ मिथिला का एक राजा, राजा जनक, सीता का पिता (पउम २१, ३३) । ५ पुंन व. माता पिता, मां-बाप, 'जं किपि कोई साहइ तजजणयाइ कुणति त सव्वं' (मुपा ३५६, ५६८) । 'वणआ छो [वनया] राजा जनक की पुत्री, राजा रामचन्द्र की पत्नी, सीता, जानकी (से १, ३७) । 'दुहिया, धूआ [दुहिय] वही धर्म (पउम २३, ११, ४८, ४) । 'नदण पुं [नन्दन] राजा जनक का पुत्र, भामरहल (पउम ६३, २५) । 'नंदणी छो [नन्दनी] सीता, राय-पत्नी, जानकी (पउम २५, ४६) । 'णदिणी छो [नदिनी] वही धर्म (पउम ५५, १८) । 'नितनणया छो [नृपतनया] राजा जनक की पुत्री, सीता (पउम ५८, ६०) । 'पुत्ती छो [पुत्री] वही धर्म (रयण ७८) । 'सुअ पुं [सुत] जनक राजा का पुत्र, भामरहल (पउम ६५, २८) । 'सुआ छो [सुता] जानकी, सीता (पउम ३७, ६२, से २, ३८, १०, ३) ।

जणयगया छो [जगराजजा] जानकी, सीता, राजा रामचन्द्र की पत्नी (पउम ५१, ७८) ।

जणयय पुं [जनपद] १ देश, राष्ट्र, जन-स्थान, सोनालय (घोस) । २ देश निवासी जन-समूह प्रा (पइह १, ३, बाचा) ।

जणयय वि [जनपद] देश में उत्पन्न, देश का निवासी (बाचा) । जणस्सुइ छो [जनश्रुति] किंवदन्ती, कथावाह, कहानत (वमवि ११२) ।

जणि (भप) घ [इय] तरह, भाविन, पैसा (दे ४, ५५५; पइ) ।

जणिअ वि [जनिअ] उत्पादित, उत्पन्न किया हुआ (पाप) ।

जणी छो [जनी] छो, नारी, महिला (राया २—यम २५३; पउम १५, ७३) ।

जणु देखो जणि (दे ४, ५५५; कुमा, पइ) । जणुकुटिआ छो [जनोंकटिआ] मनुष्यों का छोटा समूह (भग) ।

जणुमि छो [जनोंमि] तरय की तरह मनुष्यों की भीड़ (भग) ।

जणेमाण देखो जण = जनय ।

जणेर (भप) वि [जनक] १ उत्पादक, पैदा करनेवाला । २ पुं. पिता, बाप (भवि) ।

जणेरी (भप) छो [जननी] माता, मां (भवि) ।

जणण पुं [यह] १ यज्ञ, याग, मज, कनु (प्राप् ५ २२७) । २ देव-पूजा । ३ धाद (जीव ३) । 'इ, जाइ वि [याजिन्] यज्ञ करनेवाला (शौर, निह १) । 'इज्ज वि [जोय] १ यज्ञ-सम्बन्धी, यज्ञ का । २ व. 'उत्तराध्ययन' सूत्र का एक प्रकरण (उत २५) । 'ट्टाण न [स्थान] १ यज्ञ का स्थान । २ नगर-विशेष, नासिक (ती २०) ।

'सुइ न [सुल] यज्ञ का उपाय (उत २५) । 'वाह पुं [वाह] यज्ञ-स्थान (गा २२७) । 'सेठ पुं [श्रेष्ठ] श्रेष्ठ यज्ञ, उत्तम याग (उत १२१) ।

जण देखो जन्न = जन्य (परमंत १००) ।

जणयय देखो जणय (प्राप्) ।

जणययत्ता छो [दे, यज्ञयात्रा] बराह, विवाह की यात्रा, बर के साधियों का गमन (उप ६२४) ।

जणसेणी छो [याहासेनी] श्रौषठी, पाइइव-पत्नी (शेणी ३७) ।

जणहर पुं [दे] नर-पक्ष, दुरु-मनुष्य (पइ) ।

जणियय पुं [याशिक] याजक, यज्ञ करनेवाला (भावप) ।

जणोइय पुं [यशोपवीत] यज्ञ-मूत्र, जणोइययीय } जन्म (उत २, घातन) ।

जणोइय पुं [दे] रासम, शिराष (दे ३, ४३) ।

जणइ न [दे] १ छोटी स्थावी । २ वि. हृण, बाते रंग का (दे ३, ५१) ।

जणइ छो [जाहृषी] मंगा नदी, भागेरपी (यसु ६) ।

जण्ढली छी [दे] नीवी, नारा, इजारबन्द
(दे ३, ४०) ।

जण्ढली छी [जाहुयी] १ समर चक्रवर्ती
की एक पत्नी, मगौरप की जवनी (पउम
५, २०१) । २ गङ्गा-नदी, भागीरथी (पउम
४१, ५१, कुमा) ।

जण्ढुं पुं [जह्] भरत वहीय एव राजा
(प्रायः दे २, ७५) । *मुआ छी [मुना]
गङ्गा-नदी, भागीरथी (पाम) ।

जण्ढुआ छी [दे] जाउ, पुटना (पाम) ।
जण्ढुफणा स्त्री [जह्, नया] गयानदी
(कुत्र ६६) ।

जस देखो जय = यत् । भवि. जातिहामि
(निर १, १) ।

जस पुं [यत्] उद्योग, उद्यम, कष्ट (उप
५ ५८) ।

जसा छी [यात्रा] १ देशांतर-गमन, देशांतर
(ठा ४, १; भीर) । २ गमन, गति. जसति
हाइ गमल (पंचमा, भीर) । ३ देव-नृत्य के
निमित्त बिद्या जाता उचर-विशेष, भट्टादिना,
रथ-यात्रा आदि: 'हुं नायं पारदा मिदाम्यणुमु
जतामो' (गुर ३, ३८) । ४ तीर्थ-गमन,
तीर्थ-भ्रमण (धर्म २) । ५ शुभ-प्रवृत्ति (मग
१८, १०) ।

जसा छी [यात्रा] संक्षम-निर्वाह (उत
१६, ८) ।

जसि छी [दे] १ बिता । २ सेवा, घुघुपा-
'मनाएणाए ठगजती न बया ठमि वेणवि'
(पा २८) ।

जसिअ देतो *यसिअ (उग २० ३३) ।

जांत्तय नि [यायन] निजना (प्रसू १५६,
पाम) ।

जसो देतो जओ (हे २, १९०) ।

जस्य म [यस] जहाँ, क्रिम (हे २, १९१,
प्रसू ७१) ।

जदि देखो जइ = यदि (निद्र २) ।

जदिछा देग जइछा (इह ३, मा १२२) ।

जदु देमो जउ = मउ (कुमा ठा ८) ।

जरर पुंग [रि] बाज विशेष (सम्पत् २१८,
२१९) ।

जया देमो जहा (ठा २, १-३, १) ।

जज देखो जण्णा (पह १, २, ४, पउम
११, ४६) ।

जज वि [जन्म] १ जन-हित, लोक-हितकर
(धुम २, ६, २) । २ उत्पन्न होने योग्य
(धर्मसं २८०) ।

जजत्ता छी [दे] बरात, युवराजो में 'जल'
जज्जा } (मुग ३६६, उप ७६८ टी) ।

जजसेणी देता जणसेणी (पार्य ४) ।

जनु देखो जानु (पउम ६८, १०) ।

जओइय देता जणोवईय (धुम २, १३) ।

जओउईय देतो जणोवईय (णाय १,
१६—यत्र २११) ।

जन्हरी देखो जण्ही (ठा ६, ६) ।

जप देखो जय = जप् (पइ) ।

जपिर वि [जपिर] बाज बरतेवाला (पइ)
जप देखो जप । जणइ (पइ) । जपति
(पि २६६) ।

जपप पुं [जप] १ उक्ति, बचन । २ छत्र
का उपासक स्वर माणय (राज) ।

जपप वि [याप्य] यमन बराले योग्य ।
*जाण न [यान] बाहन-विशेष, शिबिका
(दे ६, १२२) ।

जपपभिइ } म [यत्प्रभृति] जय वे, जहाँ वे
जपपभिइ } तेवर (छाया १, १; बण) ।

जपिअ वि [जपिअ] १ उत, बयित
(पाम) । २ न उचि, यवन (धरु २) ।

जम सर [यमय] १ बाउ में राता,
निषत्रण करना । २ अमान, स्पिर करना ।
जमेइ (म १०, ७०) । छंड. जमइत्ता
(भीर) ।

जम पुं [यम] १ बहिगादि वंष मदावत,
साधु का वत (छाया १, ५, ठा २, ३) ।

२ दक्षिण दिशा का एक लोकपाल, देव-
विशेष, वय देता, यमराज (पह ६, १,
पाम. हे १, २४३) । ३ मरणी नरक का
अतिरिक्त देव (मुग्ज १०) । ४ विनिग्या
नगरी का एक राजा (पउम ७, ४६) । ५
वायव्य-विशेष (मायम) । ६ मृत्यु, मौत (माय
५, महा) । ७ संयमन, नियन्त्रण (मायम) ।

*बायि पुं [बायिक] मारु-विशेष, यमा-
बायिक देव, जो मारती के जीर्ण को दुःख
देते हैं (पह १, १) । *यौम पुं [यौय]

ऐरवत वर्ष के एक भावी जिन-देव (पव ७) ।
*पुरी छी [पुरी] भावी की नगरी, मौत का
स्थान. 'को जमपुरीसमाए समसाए एव-

मुन्यवइ' (मुग ४६२) । *प्यम पुं [प्रम]
यमदेव का उपात-नवत, पवत-विशेष (ठा
१०) । *भट पुं [भट] यमराज का मुह
(महा) । *मदिर न [मन्दिर] यमराज का
घर, मृत्यु स्थान (महा) । *लय न [लय]
पूर्वोक्त ही धर्म (पउम ४५, १०) ।

जमग पुं [यमक] १ पति विशेष । देव-
विशेष (जो ३) । ३ पवत-विशेष (जो ३,
सम ११४, इव) । ४ इह विशेष, बह, भ्रम
(जो ३; इव) । देखो जमप ।

जममं } म [दे] एक साथ एक ही
जममसममं } समय में, मुगनर (धम्म ११
टी. छाया १, ४, भीर, विता १, १) ।

जमणिया छी [जमनिका] धैन गाधु का
उपर-विशेष (राज) ।

जमदग्गि पुं [जमदग्गि] तास विशेष, इम
नाम का एक संन्यासी, परशुराम का पिता
(पि २३७) ।

जमदग्गिजडा छी [यमदग्गिजडा] गण्य-
द्रव्य विशेष, मुगपयाना (उत्ति ३) ।

जमय देता जमग ५ न. धर्तवार शास्त्र में
प्रसिद्ध धनुर्नाम-विशेष । छन्द-विशेष (पिग) ।

जमल न [यमल] १ जोमा, गुम, गुगन
(छाया १, १, हे २, १७१, ते ५, ५६) ।

२ समान थेलि में स्पिष्ट वस्तु पंजाराता
(राय) । ३ सार्वर्णी सहचारी (मग १५) ।

४ समान वस्तु (राय भीर) । *जुगमजग
पुं [जुगमजग] धीरुण यमुदेर (पह
१०४) । *पद, 'यय न [पर] १ प्राय-
यिन रिशेय (निद्र १) । २ दात बरों की
संख्या (पह १२) । *पाणि पुं [पाणि]
मुटि छोटो (मग १६०, १) ।

जमयिय रि [यमयिय] १ गुम न मे
चिउ (राय) । २ कय थेलि न मे धरयिय
(छाया १०, १, भीर) ।

जमलोइय रि [यमलीकर] १ यमराज-
सावक की यमराज के गम्य रवदेनाता ।

२ यमराजाधिक देव, मनुष्यों की एक जति
(पुप १, १३) ।

जमा स्त्री [यानी] दक्षिण दिशा (ठा १०—पत्र ५७८) ।

जमाळि पुं [जमालि] स्वनाम-स्वात एक राज-कुमार जो भगवान् महावीर का जामाता था, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी और पीछे से ध्वजना ध्वज गन्ध निरासता था (छाया १, ८; ठा ७) ।

जमावण न [यमन] १ नियन्त्रण करना । २ विषम बस्तु को सम करना (निबू १) ।

जमिअ वि [यमित] नियन्त्रित, संगमित, बाहु में किया हुआ (सं ११, ४१, सुपा ३) ।

जमुगा देखो जेंडगा (पि १७६; २५१) ।

जमु जी [जम्] ईशानेन्द्र की एक धर्म-महिषी का नाम (इक) ।

जम्भ भक्त [जम्] उत्पन्न होना । जम्भह (हे ४, १३६, पङ्) । बड़. जम्भंत (कुमां): 'जम्भन्तीए सोगो, बड़हंतीए य बड़हए चिठा' (सुक ८८) ।

जम्भ सक [जम्] लाना, बसल करना । जम्भह (पङ्) ।

जम्भ पुंन [जम्भन्] जम्भ, उत्पत्ति (ठा ६; महा. प्राप् ६०) ।

जम्भण न [जम्भन्] जम्भ, उत्पत्ति, उत्पाद (हे २, १७४; छाया १, १, सुर १, ६) ।

जम्मा श्री [यान्या] दक्षिण दिशा (उप पु १७५) ।

जम्हाअ [] देखो जमाअ । जम्हाअह, जम्हाह [] जम्हाह, जम्हाहाह (प्राक जम्हाह) । ६४) ।

जय सक [जि] १ जीतना । २ भव. उल्लूक-पन से बरतना । जयइ (महा) । जयति (स १९) । संठ. जइता (ठा ६) ।

जय सक [जय्] १ पूजा करना । २ मांग करना । पण्ड (उस २५, ४) । बड़. जअमाण (प्रति १२५) ।

जय भव [यत्] १ यत्न करना, चेष्टा करना । २ हवाल करना, उपयोग करना । जयइ (उप) । भवि. जइलामि (महा) । बड़. जयन, जयमाण (स २६०; छा २६; बीध १२४, पुक २४१) । क. जइयवज (उप; सुर १, १४) ।

जय न [जगत] जगत्, दुनियाँ, संसार (प्राप् १५३; सं १, १) । 'तय न [जय] स्वर्ग, मर्त्य और पाताल लोक (मुपा ७६, ६५) । 'नाह पुं [नाथ] परमेश्वर, परमात्मा (पउम ८६, ६५) । 'पहु पुं [प्रभु] परमेश्वर (मुपा २८, ८०) । 'णइ वि [नन्द] जगत को आनन्द देवता (पउम ११७, ६) ।

जय वि [यत] १ संयत, जितेन्द्रिय (मास ६५) । २ उपयोग रखनेवाला, हवाल रखने-वाला (उत्त १, माय ४) । ३ न. छत्रार्थ गुण-स्वानक (कम्म ४, ४८) । ४ हवाल, उपयोग, स्वावधानता (छाया १, १—पत्र ३३) । 'जय करे जय चिट्ठे' (दस ४) ।

जय पुं [जय] वेग, शीघ्र गमन, रौड (पाम) ।

जय पुंन [जय] १ जय, जीत, रातु का पराभव (भीप. कुमां) । २ स्वनाम-अभिष्ट एक वक्त्र-वर्ती राजा (सम १५२) । 'उर न [पुर] नगर-विशेष (स ६) । 'कम्मा श्री [कर्मा] विद्या-विशेष (पउम ७, १३९) । 'योस पुं [घोष] १ जय ध्वनि । २ स्वनाम-अभिष्ट एक जैन भुवि (उत्त २५) । 'बंद पुं [बन्ध] १ विक्रम की बारहवीं शताब्दी का मन्त्री का एक प्रतिनि राजा । २ पतरहवीं शताब्दी का एक जैनाचार्य (रमण ६४) ।

'जस्ता श्री [यात्रा] रातु पर बढाई (मुपा १५४) । 'पढाया श्री [पताका] विजय का झंडा (श्रा १२) । 'पुर देखो 'उर (बनु) । 'संगला श्री [मङ्गला] एक राज-कुमार (दंस ३) । 'लक्ष्मी श्री [लक्ष्मी] जय-सदमी, विजयश्री (सि ४, ३१, पात्र ७४४) ।

'वत वि [बन्] जय-प्राप्त, विजयी (पउम ६१, ४६) । 'बहह पुं [वहह] गुण-विशेष (दंस १) । 'सभ पुं [सम्भ] गुणवैद्य-नामक राजा का एक मन्त्री (भानू ४) ।

'संधि पुं [सन्धि] यही पूर्वोक्त धर्म (भाव ४) । 'सद पुं [शरट्] विजय-सूचक धाराज (बीग) । 'सिंह पुं [सिंह] सिंहल द्वीप का एक राजा (रमण ४४) । २ विजय की बारहवीं शताब्दी का उपराज का एक प्रसिद्ध राजा, जिसका दूसरा नाम 'मिद-राव' था. 'जेल धर्मिहदेतो राधा मणिअण

सयलदेसमि' (मुपि १०६००) । ३ स्वनाम-ह्यात जैनाचार्य-विशेष (मुपा ६५८); 'सिरि-बयसिहो सूरि सममरोमएउलमि तुप्रसिद्धो' (मुपि १०८७२) । 'सिरि श्री [श्री] विजयश्री, जयलक्ष्मी (भावम) । 'सेण पुं [सेन] स्वनाम-अभिष्ट एक राजा (महा) । 'वह वि [वह] १ जय को वहन करने-वाला, विजयी (पउम ७०, ७, मुपा २३४) । २ विजय-नगर-विशेष (इक) । 'वहपुर न [वहपुर] एक विद्या-नगर (इक) । 'वास न [यास] विद्याधरो का एक स्वनाम-स्वात नगर (इक) ।

जय पुं [यव] प्रयत्न, चेष्टा, कोशिश (दस ५, १, १६) ।

जय पुं श्री [जया] तिथि-विशेष—सुदीया, अष्टमी और त्रयोदशी तिथि (जं १) ।

जयं देखो जया = यदा । 'पमिइ भ [प्रभुति] जब से, जिस समय से (स ३१६) ।

जयंत पुं [जयन्त] १ इन्द्र का पुत्र (पाम) । २ एक जाती बलदेव (सम १५४) । ३ एक जैन भुवि, जो ब्रह्मेन भुवि के लुणी शिष्य थे (कम्प) । ४ इस नाम के देव-विमान में रहनेवाली एक उत्तम देव-जाति (सम ५६) ।

५ जूझीय की जगती के पश्चिम द्वार का एक अधिष्ठाता देव (ठा ४, २) । ६ न. देव-विमान-विशेष (सम ५६) । ७ जम्बूद्वीप की जगती का पश्चिम द्वार (ठा ४, २) । ८ चक्र पर्वत का एक शिखर (ठा ४) ।

जयती श्री [जयन्ती] १ पत की नववीं रात (मुज १०, १४) । २ भगवान् भरलाभ की दीक्षा-तिथि (विचार १२६) ।

जयंती श्री [जयन्ती] १ यक्षी-विशेष, भरणी, वर्ष पाठ (एण १) । २ समय बलदेव की माता (सम १५२) । ३ विदेह वर्ष की एक नगरी (ठा २, ३) । ४ धर्मराज-नामक यहू की एक धर्म महिषी (ठा ४, १) । ५ जम्बूद्वीप के मध्य से पश्चिम दिशा में स्थित चक्र पर्वत पर रहनेवाली एक दिग्-कुमारि देवी (ठा ८) । ६ भगवान् महावीर की एक उत्तमिष्ठा (सम १२, २) । ७ भगवान् महावीर के छात्रों गणपति की माता (पापम) । ८ धर्मराज

पर्वत की एक वापी (वी २४) । ६ नवमी तिथि (जं ७) । १० जैन मुनियों की एक शाला (कण्) ।

जयण न [यजन] १ याग, पूजा । २ भ्रमय-दान (पणह २, १) ।

जयण न [यतन] १ यत्न, प्रयत्न, चेष्टा, दयन, 'जयणपडण-जोग-चरित' (मनु) । २ यतना, प्राणी की रक्षा (पणह २, १) ।

जयण वि [जरन] बेगवासा, बेय-युक्त (कण्) ।

जयण न [जयन] १ जीत विजय (बुद्धा २६८, कण्) । २ वि. जीतनेवाला (कण्) ।

जयण न [जे] छोटे का बल्गर, हय-सगाह (दे ३, ४०) ।

जयणा की [यनना] १ प्रयत्न, चेष्टा, कोशिश (निचू १) । २ प्राणी की रक्षा, हिंसा का परित्याग (दम ४) । ३ उपयोग, किसी जीव को दुःख न हो इन तरह प्रकृति करने का ब्याल (निचू १, स ६७, कीप) ।

जयदह पुं [जयदह] मिथु देश का स्वनाम-प्रसिद्ध एक राजा, जो दुसौपन का बहुनौई था (छाया १, १६) ।

जया म [यदा] जिस समय, जिस वक्त (कण्, बार) ।

जया की [जया] १ विद्या विशेष (पउम ७, १४१) । २ अनुषं चत्तर्त्तौ राजा की क्षत्र-महिषी (मम १५२) । ३ भगवान् पापुगुण्य की स्वनाम ब्याल मावा (मम १५१) । ४ विधि विशेष—पुनीया, भट्ठी की मीर प्रयोशरी तिथि (पुअ १०) । ५ भगवान् पार्थनाय की शासनदेवी (ती ६) । ६ शोपपि-विशेष (रान) ।

जयार पुं [जारा] १ 'ज' भरार । २ जवा-रादि भरलो न राउ, 'जयजयारमयार' सधली जंयद गिरल्पवारा (गण्ड ३, ४) ।

जयिण देखो जइग = जयिन् (पणह १, ४) ।

जर म [ज] जोरुं होना, पुराना होना, बूढ़ा होना । जरद (हे ४, २३४) । बर्म, जोरद, जरिगद (हे ४, २४०) । बह, जरंत (मनु ७६) ।

जर पुं [जर] रोग विशेष, दुखार (कुमा) ।

जर पुं [जर] १ राखण का एक गुम (पउम ४६, ३) । २ वि. जीरु, बुराना (दे ३, १६६) ।

जर वि [जरत] जोरुं, पुराना, बूढ़ा, बूढ़ा (कुमा, सुर २, ६६; १०४) । छो. 'ई' (कुमा, गा ४७२ म) । 'ग्या पु' [ग्या] बूढ़ा जैन (बह १, मनु ४) । 'गयो की' [गयो] बूढ़ी गाय (गा ४६२) 'ग्यु पुं' [ग्यु] १ बूढ़ा जैन । २ की बूढ़ी गाय, 'जिएणा म जरगवो पडिया' (पउम ३३, १६) ।

जर' देखो जरा (कुमा, मर १६, व ७) ।

जरंड वि [दे] बूढ़ा, बूढ़ा (दे ३, ४०) ।

जरमा वि [जररु] जोरुं, पुराना (मनु ५) ।

जरठ वि [जरठ] १ कठिन, पुरप । २ जोरुं, पुराना (छाया १, १—प ५) । देखो जरठ ।

जरह वि [दे] बूढ़ा, बूढ़ा (दे ३, ४०) ।

जरह देखो जरठ (पि १६८; से १०, ३८) ।

१ प्रौढ, मजबूत (से १, ४३) ।

जरण म [जरण] जीरुंवा, माहार का हजम होना हाजमा (मरुसं ११३५) ।

जरय पुं [जरक] रत्नप्रमानामक नरक बुधियों का एक नरकावास (ठा ६—प ३६५) । 'मज्ज पुं' [मज्ज] नरकावास विशेष (ठा ६) । 'रत्त पुं' [रत्त] नरकावास विशेष (ठा ६) । 'रत्तितु पुं' [रत्तितु] नरकावास विशेष (ठा ६) ।

जरलद्विअ } वि [दे] गमीछ, ग्राम्य (दे जरलमिअ } ३, ४४) ।

जरा की [जरा] बुढ़ापा, बुढ़ार (भाषा, बस प्राहु १३४) । 'कुमार पु' [कुमार] शीघ्रपण का एक आई (मर) । 'संव पुं' [संज] राजगृह नगर का एक राजा, नवनों प्रतिवागुदेव, जिसको शीघ्रपण वागुदेव ने मारा था (मम १५३) । 'सिध पुं' [सिध] वही पूर्वोंक मरु (पणह १, ४—प ७२) । 'मिधु पुं' [सिन्धु] वही पूर्वोंक मरु (छाया १, १६ प २०६, पउम ४, १२६) ।

जरा की [जरा] बगुदेव की एक पत्नी (पुअ ६६) ।

जरादिरण (परा) देखो जल हरण (मिग) ।

जरि वि [जरिन्] बुलावाला, गर से बोडि (पुअ २४३) ।

जरि वि [जरिन्] जरा-युक्त, बूढ़ा, बूढ़ा (दे ३, ५७, उर ३, १) ।

जरिअ वि [जरिन्] ज्वर-युक्त, बुलावाला (गा २६६, मुपा २८६) ।

जल मक [जल] १ जलना, दम्य होना । २ चमकना । जलद (महा) । बह, जलंत (उवा, गा २६४) । हेरु, जलित (महा) । प्रयो, बह जलिन (महानि ७) ।

जल देखो जह (भा १२, भाव ४) ।

जल न [जाड्य] जडता, मन्थता, 'जलघोय-जलतेवा' (सार्य ७१) से १, २४) ।

जल पुं [जल] देदीप्यमान, चमकीला (सूअ १, ५, १) ।

जल न [जल] शीर्य (बजा १०२) । 'कन पुं' [कान्त] एक देवविमान (देवेन्द्र १४४) । 'वारि पुं' [वारिन्] चतुरिन्द्रिय जन्तु-विशेष (उत्त १६, १४६) । 'य वि [ज] पानी में उलट (धु ६८) । 'मारिअ पु' [मारिअ] चतुरिन्द्रिय जन्तु की एक जाति (मुअ ३६, १४६) ।

जल न [जल] १ पानी, उदक (सूअ १, ५, २, जो २) । २ पुं, जलबाल-नामक द्रव्य का एक लोखपाल (ठा ४, १) । 'कंज पुं' [कान्त] १ मणि-विशेष, रत्न की एक जाति (पणह १, कुमा १५) । २ द्रव-विशेष, उषधिपुमार-नामक देवजाति का दण्डा दिया का द्रव (ठा २, ३) । ३ जलनाम द्रव का एक लोखपाल (ठा ४, १) । 'करप्पाल पुं' [कराफाल] हाथ से धारव पानी (पाम) । 'करी पुं' [करीन्] पानी का हाथी, जलजन्तु विशेष (महा) । 'कस्त्य पुं' [कस्त्य] कदम्य ब्रुत की एक जाति (मरु) । 'कीडा, कीला की' [कीडा] पानी में की जाड़ी बीडा, जल-नेत्रि (छाया १, २) । 'कलि की' [कलि] जल-बीडा (कुमा) । 'यर देखो' 'यर (कण्, हे १, ७७) । 'वार पुं' [वार] पानी में चमना (छाया २, ३, १) । 'वारण पुं' [वारण] विशेष प्रभाव में पानी में जो नुमि की तरह चमना का नौ ऐसी चतुरिन्द्रिय द्रव्य रूप-वाला बुधि (गण्ड २) । 'वारि पुं' [वारिन्] पानी में द्युनमाना मनु (जी २०) ।

चारिया छी [चारिका] क्षुद्र जन्तु-विशेष, चतुरिन्द्रिय जीव की एक जाति (राज)।
 जंत न [यन्त्र] पानी का यन्त्र, पानी का फवारा (कुमा)।
 गाह पुं [नाथ] समुद्र, सागर (उप ७२२ टी)।
 गिहि पुं [निधि] समुद्र, सागर (गड्ड)।
 गीली छी [नीली] शैवाल (दे ३, ५२)।
 तुसार पुं [तुपार] पानी का विन्दु (पात्र)।
 थिभिणी छी [स्नभिनी] विद्या-विशेष (पउम ७, १३६)।
 द पुं [द] मेघ, मघ्न (सुत्र २६२; पव १८)।
 हा छी [हा] पानी से भीजाना हुमा वंश (सुपा ५१३)।
 निहि देखो गिहि (प्राप् १२७)।
 पभ पुं [प्रभ] १ इन्द्र-विशेष, उदयिकुमार-नामक देव-जाति का उत्तर दिशा का इन्द्र (डा २, ३)।
 २ जलकान्त नामक इन्द्र का एक लोकपाल (डा ४, १)।
 य न [ज] कमल, पप (पउम १२, ३७, शीघ्र, परह १)।
 य देखो द (काल, गड्ड, से १, २४)।
 थर पुंछी [चर] जल में रहने-वाला महादेव जन्तु (जी २०)।
 जी. शी (जीव २)।
 रंछु पुं [रंछ] पक्षि-विशेष, बूँच पक्षी (गा ५७८, गड्ड)।
 रक्षस पुं [राक्षस] राक्षस की जाति (परह १)।
 रमण न [रमण] जल-क्रीडा, जल-कैल (छाया १, १३)।
 रय पुं [रय] जलप्रम-नामक इन्द्र का एक लोकपाल (डा ४, १)।
 रासि पुं [राशि] समुद्र, सागर (सुपा १६५, उप २५४ टी)।
 रह पुं [रह] पानी में घेरा होनेवाली वनस्पति (एण १)।
 रूप पुं [रूप] जलकान्त नामक इन्द्र का एक लोकपाल (भग ३, ८)।
 लिहिर न [लिहिर] पानी में उलटत होनेवाली वस्तु-विशेष (इंत १)।
 वायस पुंछी [वायस] जलक्रीडा, पक्षि-विशेष (कुमा)।
 वासि वि [वासिन्] १ पानी में रहनेवाला।
 २ पुं. छापसो की एक जाति, जो पानी में ही निगम रखे (भीप)।
 गाह पुं [वाह] १ मेघ, मघ्न (सुपा ५३२, सुपा ८६)।
 २ जन्तु-विशेष (पउम ८८, ७)।
 विन्धुय पुं [वृद्धिक] पानी का बिन्दु, चतुरिन्द्रिय जन्तु-विशेष (परह १)।
 वीरिय पुं

[वीर्य] १ इन्द्राकु वंश का एक स्वनाम-क्यात राजा (डा ८)।
 २ क्षुद्र कीट-विशेष, चतुरिन्द्रिय जन्तु की एक जाति (जीव १)।
 सय न [शय] कमल, पप (उप १०३१ टी)।
 साला छी [शाला] प्रपा, पानी बिताने का स्थान, प्याऊ (था १२)।
 सुग न [शुक] १ शैवाल।
 २ जलकान्त-नामक इन्द्र का एक लोकपाल (डा ४, १)।
 सेल पुं [शील] समुद्र के भीतर का पर्वत (उप ५६७ टी)।
 हरिय पुं [हस्तिन्] जल-हस्ती, पानी का एक जन्तु (पात्र)।
 हर पुं [घर] १ मेघ, मघ्न (सुर २, १०४ से १, ५६)।
 २ एक विद्यापर सुकट (पउम १२, १५)।
 हर पुं [भर] जल-स्रुह (गड्ड)।
 हर न [गृह] समुद्र, सागर (से १, ५६)।
 हरण न [हरण] १ पानी की ब्यारी (पात्र)।
 २ छन्द-विशेष (पित)।
 हि पुं [धि] १ समुद्र, सागर (महत् सुपा २२३)।
 २ चार की संख्या (विने १५४)।
 सय पुंन [शय] शरीर पर लताव (सुर ३, १)।
 जलइय पुं [जलकित] जलकान्त-नामक इन्द्र का एक लोकपाल (डा ४, १—पउम १६८)।
 जलजलि पुं [जलजलि] तपण, दोनों हाथों में लिया हुमा जल (सुर ३, ५१; वपु)।
 जलग पुं [जलक] शक्ति, भाग (निड)।
 जलजलिथ वि [जलजलित] 'जल-जल' शब्द से युक्त (तिरि ६६४)।
 जलजलिथ वि [जलजलित] देशोपमान, बधकता (वपु)।
 जलग पुं [जलग] १ शक्ति, बलि (उप ६४८ टी)।
 २ देवी की एक जाति, शक्ति-कुमार-नामक देव-जाति (परह १, ५)।
 ३ वि. जलता हुमा।
 ४ चमरता, दँडैप्यमान, 'एईद जलजलगुवमाए' (उप ६४८ टी)।
 ५ जलानेवाला (सूम १, १, ४)।
 ६ न. शक्ति सुलभाना (परह १, ३)।
 ७ जलाना, मस बनना (गख २)।
 जिह पुं [जिह्व] विद्यापर वंश का एक राजा (पउम ५, ४६)।
 मिस पुं [मित्र] स्वनाम-क्यात एक प्राचीन नवि (गड्ड)।
 जलवध न [जलवध] जलाना, दह्य बनना (परह १, १)।

जलिथ वि [जलित] १ जला हुमा; प्रदीप्त (सुम १, ५, १)।
 २ उज्ज्वल, कान्ति-युक्त (परह २, ५)।
 जलिथ वि [जलित] जलता, सुलगता (पर्ववि ३५; कुप्र ३७६)।
 जलया } छी [जलीकस्] १ जन्तु-जलया } विशेष, लोक, जलिका, जल का कीटा (पउम १, २४; परह १, १)।
 २ पक्षि-विशेष (जीव १)।
 जलसम पुं [दे] रोग-विशेष (उप पु ३३२)।
 जलोयर न [जलोदर] रोग-विशेष, जलमयर, जठरान (सरा)।
 जलोयरी वि [जलोदरिन्] जलमयर रोग से पीड़ित (राज)।
 जलोया देखो जलया (जी १५)।
 जल पुं [दे. जल] १ शरीर का मैल, मुखा पसीना (सम १०; ४०, मौप)।
 २ नद की एक जाति; रस्सी पर खेल करनेवाला गट (परह २, ४)।
 ३ शीघ्र, छाया १, १)।
 ४ बन्दी, दिरद-पालन (छाया १, १)।
 ५ एक स्नेच्छ देहा।
 ५ उत देह में रहनेवाली स्नेच्छ जाति (परह १, १—पउम १४)।
 जलार पुं [जलार] १ स्वनाम-प्रसिद्ध एक प्रभाव देह।
 २ जलार देहा का निचासी (इत)।
 जलिय त [दे. जलक] शरीर का मैल (उत २४)।
 जलसिद्धि छी [दे. जलौपधि] एक तरह की शाय्यामिक शक्ति, जिसके प्रभाव में शरीर के मैल से रोग का नाश होता है (परह २, १, विने ७७६)।
 जय सर [यापय] १ शमन करवाना, भेजना।
 २ व्यग्रपना करना।
 जवद (हे ४, ४०)।
 हे. जयित्तए (सूम १, ३, २)।
 क जयगिन्त, जयणीय (छाया १, ५; हे १, २४८)।
 जय तव [यापय] काल-यापन करना, पसार बनना।
 जवेति (निड ६१६)।
 जय ख [जप] जात बनना, बार-बार मन ही मन देवता का नाम स्मरण करना, पुनः पुनः मन्त्रोच्चारण करना।
 जवद (रंभा); 'वर्षादि शययणे बर्दति मंते सहा मुनिभार्यो'

(मुपा २०२) । वह, जवंत (नाट) । ववह, जविज्जत (सुर १३, १८६) ।

जय पुं [जप] जाप, पुन. पुन. मन्त्रोच्चारण, बार-बार मन ही मन देवता का नाम-स्मरण (एहह २, २, मुपा १२०) ।

जय पुं [यय] १ धन-विशेष, जय या जो (एपाया १.१, एहह १.४) । २ परिमाण-विशेष, आठ मूका की नाप (ठा ८) । १ गाली की [नाली] वह नाती जिसमें जो बोए जाते हों (माचू १) । १ मङ्गल न [मध्य] १ तप-विशेष (पउम २२, २४) । २ मात युवा का एक नाप (पव २५) । १ मन्मा की [मध्या] अत विशेष, प्रतिमा-विशेष (ठा ४, १) १ राय पुं [राज] गुण-विशेष (इह १) । १ वंसा की [वशा] वनस्तति-विशेष (एहह १) ।

जय पु [जय] वेग, दीह, शीघ्र गति (कुमा) ।

जय पुन [यन] एक देवविमान (द्वेन्द्र १४०) । १ नालय पुं [नालक] बन्धा का बन्धक (एहि ८८ टी) । १ न न [न] यव लिप्यन्त परमाण, शीघ्र विशेष, जय की शीघ्र, जाउर (पव २५३) ।

जयजय पुं [यययय] धन-विशेष, एक तरह का यव धान्य (ठा ३, १) ।

जयण न [य] हल की शिला, हल की चोटी (दे ३, ४१) ।

जयण न [जपन] जाप, पुन. पुन. मन्त्र का उच्चारण, 'यदिना दहस्व जपे को बालो मन्त्र-अण्णि' (पउम ८६, ९०, स ३) ।

जयण वि [जयन] १ वेग से जानेवाला (उप ७६८ टी) । २ पुं. वेग, शीघ्र गति (भाषम) ।

जयण पुं [ययन] १ म्नेच्छ देश-विशेष (पउम ६८, ६४) । २ उभ देश में रहनेवाली मनुष्य जाति (एहह १, १) । ३ मयन देश का राजा (कुमा) ।

जयण न [यापन] निर्वाह, पुञ्जाप, (उत ८) ।

जयणा की [यापना] ऊपर देखो (पव २) । जयणागिया की [ययनागिया] निर्भिन्निशेष (राज) ।

जयणागिया की [ययनागिया] कन्या का कन्धुक (भावम) ।

जयणिआ की [ययनिआ] परदा (दे ४, १, सय, वप्पु) ।

जयणिज्ज देखो जय = यापय ।

जयणी की [ययनी] परदा, घान्छादक पट (दे २, २५) । २ सचारिका, दूती (मवि ५७) ।

जयणी की [यायनी] १ यवन की की । २ यवन की लिपि (सम ३५, बिसे ४६४ टी) । जयणीज्ज देखो जय = यापय ।

जयपचमाण पुं [दे] जात्यय का बाहु-विशेष, प्राण-बाहु (गडड) ।

जयय } पु [दे] जय का झरुर (दे ३, जवरय } ४२) ।

जयली की [दे] जय, वेग, 'मच्छंति गह्य-नेहेण ववरपुराहिक्का जवलीय' (मुपा २७६) ।

जययारय [दे] देखो जवरय (पंचा ८) ।

जयस न [ययस] १ लृण, घास, 'पिठ्ठिव्व जवसम्मि' (उप ७२८ टी, उउ पु ८४) । २ गेहूँ वगैरह धान्य (भाषा २, ३, २) ।

जया की [जया] १ वस्ती-विशेष, जवा-गुण्य का कुडा । २ कुडहल का पूल, अडहल का गुण्य (कुमा) ।

जयास पुं [ययास] गुप्त विशेष, रक्त गुण्य-वाला गुप्त-विशेष, 'पाउलि जयासो' (या २३, एहह १), 'अवाससुमुपे ६ वा' (एहह १७) ।

जयि वि [जयिग] १ वेगवाला, वेग-युक्त जयिण } मुपा ११२) । २ पुं. अरब, पाडा (राज) ।

जयिज वि [जयिज] १ जिसका जाप किया गया हो वह (मयज भादि) (सिदि ३६६) । २ न. मध्यमन प्रवरण भादि यंत्रणा (मुप २, १३) ।

जयिय वि [यापित] १ गमित, गुनरत दृष्टा । २ नासिज (कुमा) ।

जस पुं [ययास] १ नीति, इज्जत, मु-स्वाति (धीग, कुमा) । २ संयम, त्याग, विरति (वव १, दस ५, २) । ३ नियम (उत ३) । ४ भगवान् भगवन्नाय का प्रथम स्थिय (सम १२२) । ५ भगवान् पारंगनाय

का आठवाँ प्रधान स्थिय (कण्) । १ नीति की [कीत्ति] सुध्यानि, सुप्रसिद्धि (सम १, ६, भायू १) । १ मह पुं [भद्र] स्वनाम-स्वात एव जैन आचार्य (कण्, सार्ध १३) । १ म. मंत वि [यन्] १ यशस्वी, इज्जतदार, नीतिवाला (एहह १, ४) । २ पुं. स्वनाम-प्रसिद्ध एक कुलकर पुरुष (सम १५०) । १ वई की [यवी] १ द्वितीय पञ्चवर्त्तों सम-राज की माता (सम १५२) २ सुतोया, भट्टमी शीघ्र त्रयोदशी की राति (पंच १०) । १ वम पुं [वर्मन्] स्वनाम-स्वात गुण-विशेष (गडड) । १ वाय पुं [वाद] साधुवाद, यशो-गान, प्रससा (उप ६८६ टी) । १ यिजय पुं [यिजय] विक्रम की मझारहवीं शताब्दी का एक जैन सुप्रसिद्ध ग्रन्थकार, ग्यापार्या भीमान् यशोविजय उपाध्याय (राज) । १ हर पुं [धर] १ भारतवर्ष का भूत कालिक मझारहवाँ जिन-देव (पव ८) । २ भारतवर्ष में एक भावी जिन-देव (पव ४६) । ३ एक राज-कुमार (धम्म) । ४ पञ्च भा पाँचवाँ दिन (ज ७) । ५ वि. यश को धारण करनेवाला, यशस्वी (जीव ३) । देखो जसो ।

जसंसि पु [यशसियन्] भगवान् महावीर के पिता का एक नाम (भाषा २, १५, ३; वप्प) ।

जसद पुं [जसद्] बाहु विशेष, पत्ता (राज) । जमदेय पु [यशोदेय] एक प्रसिद्ध वैनाचार्य (पव २७६) ।

जसमह पुं [यशोभद्र] १ पञ्च का चतुर्थ दिवस (सुज्ज १०, १४) । २ एक राजवि, जो वायव्य देश से रत्नपुर नगर का राजा था और जिमने जैनी दीक्षा ली थी, जो प्राचार्य हेमवन्त्र के पुत्र थे (कुप ७, १८) । ३ न. उद्गुह्यति गण का एक कुल (वप्प) ।

जसवई की [यशोमनी] भगवान् महावीर की दीक्षिणी का नाम (भाषा २, १५, ३) ।

जसस्मि वि [यशसियन्] यशस्वी, नीतिमान् (सुप १, ६, ३, मुप १४३) ।

जसहर पुं [यशोरथ] एक देव-विमान (देवद १४१) ।

जसा की [यशा] बनिनकुनि की माता (उत ८) ।

जसो देखो जस । आ छो [दा] १ नन्द नामक गोप की पत्नी (गा ११२, १५७) । २ भगवान् महावीर की पत्नी (कम्प) । कामि वि [कामिन्] यश चाहने-वाला (दस २) । किंतिनाम न [कीर्तिनामन्] कर्म-विरोध, जिसके प्रभाव से सुयश फैलता है (सम ६७) । धर पु [धर] १ धररोज के धरन-दैत्य का अग्रपति देव (ठा ५, १) । २ न प्रेयेयक देवलोक का प्रस्तर (रुक्) । हरा छो [धरा] १ दक्षिण रुक्क पर्वत पर रहनेवाली एक विशाकुमारी देवी (ठा ८) । २ जम्बूद्वीप विशेष सुदर्शना (जीव ३) । ३ पक्ष की चौथी रात्रि (जो ४) । जसोधर देखो जस हर (सुज १०, १४) । जसोधरा देखो जसो-हरा (सुज १०, १४) । जसोया छो [यसोदा] भगवान् महावीर की पत्नी का नाम (प्राचा २, १५, ३) ।

जह सक [हा] व्याग देना, छोड़ देना । जहइ (वि ६७) । घट जहल (वव ३) । जहणिल (राज) । सक जहिता (पि ५८२) ।

जह म [यत्र] जह, जिसने (हे २, १६१) । जह म [यया] जिस तरह के, जैसे (ठा ३, १, स्वप्न २०) । क्रम न [क्रम] क्रम के अनुसार, क्रमक्रम (पचा ६) । कदाय देखो अह-कसाय (भावम) । द्विय वि [द्वित] वास्तविक सत्य (सुर १, १६२, सुपा ५७) । रथ वि [रथे] वास्तविक सत्य (पचा १५) । रथनाम वि [रथनामन्] नाम के अनुसार पुण्यवान् भगवत् (आ १६) । रथवाइ वि [रथवादिन्] सत्य वक्ता (सुर १४, १६) । पच न [पायात्म्य] वास्तविकता, सत्यता (राज) । रिह न [रिह] उचितता के अनुसार (सुपा १६२) । वदिय वि [वृत्त] सत्य, यथार्थ (सुपा ५२६) । विहि पुत्री [विधि] विधि के अनुसार, महामागिणपुत्रादौ जहविहिणा साहित्यनाम्नो (सुर ३, २८) । सस न [सस्य] सच्चा के क्रम से, क्रमानुसार (नाट) । देखो जहा = यथा ।

जह्य न [जपन] बमर के नीचे का भाग (गा १६६, छाया १, ६) ।

जहणरोह पु [दे] ऊरु, बचा, जाँघ (दे ३, ४४) ।

जहणा छो [हान] परित्याग (सबोध ५६) ।

जहणूसन न [दे] अर्थात्क, जघनायुक्त, जहणूसुअ छो को पहनने का वस्त्र विशेष (दे ३, ४४, पद) ।

जहणु न [जघन्य] निकट, हीन, अधम, जहण नौच (सम ८, भग, ठा १, १, जो ३८, द ६) ।

जहा = देखो जह = हा । (पि ३१०) । संह, जहाइसा, जहाय (सुम १, २, १, पि १६१) ।

जहा देखो जह = यथा (हे १, ६७, कुमा) । जुत्त वि [युक्त] यथोचित, योग्य (सुर २, २०१) । जट्ट न [ज्येष्ठ] ज्येष्ठता के क्रम से (भणु) । नामय वि [नामक] जिसका नाम न कहा गया हो, अनिर्दिष्ट नामा, कोई (जीव ३) । तथ न [तथ्य] सत्य, वास्तविक (भाषा) । तह न [तथ] सत्य वास्तविक (राज) । तह न [याथातथ्य] वास्तविकता, सत्यता (आणुसि वि निरुद्धातहेण) (सुम १, ६) । २ 'सुवकृताज्ञ' सूत का एक भग्यमन (सुम १, ११) । पयट्टकरण न [प्रवृत्तरण] भाषा का परिणाम विशेष (भाषा) । भूय वि [भूत] सच्चा वास्तविक (छाया १, १) । राइगिया छो [रात्रिकता] ज्येष्ठता के क्रम से बह्मण के अनुसार (कस) । रह देखो जह-रिह (स ४६३) । निन्न न [वृत्त] वैसा हुआ हो वैसा यथार्थ (स २४) । सत्ति जीव [शक्ति] शक्ति के अनुसार (पचा ३) ।

जहाजाय वि [दि. यथाजाय] जह, भूषं वेवकूप (दे ३, ४१, पए १, ३) ।

जहि देखो जह = यव (हे २, १६१, गा जहि १३१, प्राप् ५६) ।

जहिय देखो जहि (पिठ ५८) ।

जहिच्छ न [यथेच्छ] इच्छा के अनुसार (सुपा १६, पि) ।

जहिच्छिय न [यथेप्सित] इच्छानुसार, इच्छानुसार (पचा १) ।

जहिच्छिया छो [यहच्छा] मरजी, स्वेच्छा, स्वच्छन्दता (गा ४५३, विसे ३१६, त ३३२) ।

जहिठिल पुं [युधिष्ठिर] पाण्डु राजा का ज्येष्ठ पुत्र, ज्येष्ठ पाण्डव (हे १, १०७, प्राप्) ।

जहिमा छो [दि] विदग्ध पुरुष की बनाई हुई भाषा (दे ३, ४२) ।

जहुठिल देखो जहिठिल (हे १, ६६, १०७) ।

जहुत्त न [यथोक्त] कथनानुसार (पडि) ।

जहेअ म [यथैअ] जैसे ही (हे ६, १६) ।

जहेच्छ देखो जहिच्छ (गा व ८२) ।

जहोइय न [यथोदित] कथितानुसार (धर्म ३) ।

जहोइय न [यथोचित] योग्यता के अनुसार जहोइय सार (सि ८, ५, सुपा ४७१) ।

जा बरु [जन्] उत्पन्न होना । जाइइ (हे ४, १३६) । बह जायत (कुमा) । सहु एकके चिन्त्य निश्चिन्त्या पुण्यो-पुण्यो जाइइ-व मरिउं व' (स १३०) ।

जा सक [या] १ जाना, गमन करना । २ प्राप्त करना । ३ जानना । जाइ (सुपा १००) । जवि (महा) । बह जत (सुर ३ १४३, १०, ११७) । बवह जाइअमाण (पए १, ४) ।

जा सक [या] सकना, समर्थ होना, विदु सम एव न जाइ पवइइ, 'बहिष्ठियाए कि जायइ भगमाइइ' (सुज २, १३) ।

जा देखो जान = यावद (हे १ २७१, कुमा-सुर १५, १३८) ।

जाअ देखो जान = जाप (हास्य १३२) ।

जाअ देखो जा = या । जाअइ (प्राक् ६६) ।

जाअर देखो जागर (पुत्रा १८७) ।

जाआ छो [याह] देवर-भार्या, देव की पत्नी, देवरानी (प्राक् ४३) ।

जाइ छो [जाति] १ पुण्य-विशेष, मास्ती (कुमा) । सामाय नैयायिकों के मत से एक धर्म-विशेष, जो व्यापन हो, जैसे मनुष्य वा मनुष्यत्व, यो ना मोव (सि १६०१) । २ जात, कुल, गोत्र वध, जाति (ठा ४, २, सुम ६, १३, कुमा) । ४ उत्पत्ति, जन्म (उत्त ३, पडि) । ५ सविन साहस, वैश्य भादि वादि (उत्त ३) । ६ पुण्य प्रधान कुल, जाई ना वेद (पएण १) ।

॥ मय-विरोध (विषा १, २) । *आजीव पुं
[आजीव] जाति की समानता बतला कर
मिता प्राप्त करनेवाला साधु (ठा ५, १) ।

*धेर पुं [स्थिर] साठ वर्ष की उम्र का
मुनि (ठा ३, २) । *नाम न [नामन]
नर्म-विरोध (सम ६७) । *पसण्णा स्त्री
[प्रसन्ना] जाति के पुष्पा से काष्ठित मदिरा
(जीव ३) । *फल न [फल] १ इन्द्र-विरोध ।

२ कल-विरोध, जायसल, एक गर्भ मछाला
(सुर १९, ३३; सण) । *मत बि [मत]
जन्म जाति का (भाषा २, ४, २) । *मय
पुं [मय] जाति का प्रतिमान (ठा १०) ।

*पकिया स्त्री [पकिना] १ सुगन्धित
फलवाला बुद्ध-विरोध । २ पल-विरोध, एक
गर्भ मनाला (सण) । *सर पुं [स्मर]
१ पूर्व जन्म की स्मृति । २ वि. पूर्व जन्म
का स्मरण करनेवाला, पूर्व-जन्म का ज्ञान-
वाला, 'जाइसइ मने इमाई नयणाई
सयलसोमस' (सुर ४, २०८) । *सरण न
[स्मरण] पूर्व जन्म की स्मृति (उत्त १६) ।
*सर देखो 'सर (कण्य, विसे १६७; उप
२२० टी) ।

जाइ स्त्री [जाति] १ ग्याय-शास्त्र-प्रसिद्ध
दूयणामास—प्रसव दूसरा (धर्मसं २६०,
भा ७११) । २ माता का बंध (पिंड ४३८) ।

जाइ देखो जाया (पह) ।

जाइ स्त्री [दे] १ मदिरा, मुरा, हाक (दे
३, ४५) । २ मदिरा-विरोध (विषा १, २) ।

जाइ बि [याजिन्] यज्ञ-नर्ता (दसवि १,
४५) ।

जाइ बि [यायिन्] जानेवाला (ठा ४, ३) ।
जाइअ बि [याचित] प्राथित, मांगा हुआ
(विसे २५०४, भा १६५) ।

जाइअ देखो जाय = जाव (गज्या १४४) ।

जाइच्छिं १ बि [याटच्छिक] १ इच्छा-
जाइच्छिय १ दुनार, मनेच्छ (धर्मसं १२) ।
२ इच्छादुसरो (धर्मसं ६०२) ।

जाइच्छिय बि [याटच्छिक] स्वेच्छा-निर्मित
(विसे २५) ।

जाइजत देखो जाय = जावय ।

जाइजत } देखो जाय = जाव ।
जाइजमान }

जाडणी स्त्री [याकिनी] एक जैन साध्वी,
जिसकी सुप्रसिद्ध जैन ग्रन्थकार श्री हरिभद्र-
सूरि अपनी धर्म-माता समझते थे (उप
१०३६) ।

जाडयव्यय न [यातव्य] गमन, गति (सुख
२, १७) ।

जाईअ बि [जातीय] जाति-सम्बन्धी
(थावक ४०) ।

जाड न [जायु] सीखेया, यवाण, साड की
काजी, सपसी, साध-विरोध (पिंड ६२५) ।

जाड म [जातु] कदाचित्, कभी (उपकु ११) ।

जाड म [जातु] किसी तरह (उप ५४७) ।

*कण्ण पुं [कणे] पूर्वमात्रपदा मञ्ज का गोन
(हक) ।

जाड स्त्री [याटु] १ देवर-पत्नी, देवपत्नी ।
२ वि. जानेवाला (सलि ४) ।

जाडया स्त्री [याटुना] देवर-पत्नी, पति के
छोटे भाई की स्त्री, देवपत्नी (छाया १०१६) ।

जाडर पुं [दे] कपित्थवृक्ष, कैच का फल
(दे ३, ४५) ।

जाडल पुं [जातुल] बल्ली-विरोध (पण्य
१—पण ३२) ।

जाडहाण पुं [यातुधान] राक्षस (उप १०३१
टी, पाष्म) ।

जाग पुं [याग] १ यज्ञ, शम्बर, होम, हवन
(पठम १४, ४७, स १७१) । २ देव-पूजा
(छाया १, १) ।

जागर धक [जागु] जागना, निद्रा-त्याग
करना । जागर (पह) । बहू. जागरमाण
(विसे २७१६) । हेऊ. जागरित्तय, जाग-
रेसण (कण्य, वच) ।

जागर बि [जागर] १ जागनेवाला, जागता
(छाया, कण्य या २५) । २ पुं. जागरण,
निद्रा-त्याग (मुद्रा १८७, मग १२, २, सुर
१३, ६७) ।

जागरइतु बि [जागरितु] जागनेवाला
(भा २३) ।

जागरिअ बि [जागुव] जागना हुआ, निद्रा-
रहित, प्रबुद्ध (छाया १, १६, या २५) ।

जागरिअ बि [जागरिक] निद्रा-रहित (भा
१२, २) ।

जागरिया स्त्री [जागरिमा, जागरियां]
जागरण, निद्रा-त्याग (छाया १, २, श्रीप) ।

जागरुअ बि [जागरुक] जागता, जागा
हुआ, जागने के स्वभाववाला (धर्मवि १३६) ।

जाजावर बि [यायावर] गमनशील, विनम्र
(सम्पत्त १७४) ।

जाडी स्त्री [दे] शुभ्र, सदा-प्रज्ञा (दे ३, ४५) ॥

जाण सक [हा] जानना, ज्ञान प्राप्त करना,
समझना । जाणइ (हे ४, ७) । बहू. जाणत,
जाणमाण (कण्य, विषा १, १) । सहू.
जाणिकण, जाणित्ता, जाणित्तु (पि
५८६, महा, भा) । हेऊ. जाणिड (पि
५७६) । ऊ. जाणियव्य (मग, मत १२) ।

जाण पुन [यान] १ रथादि वाहन, सवारी
(श्रीप, पण्य २, ५, ठा ४, ३) । २ यान-
पान, नौका, जहाज; 'याणं संसारसमुद्रतारणे
बंधुर जाण' (पुण्य ३७) । ३ गमन, गति
(यत्र) । *पत्त, 'वत्त न [वात्त] जहाज,
नौका (नमि ५, सुर १३, ३१) । *साला स्त्री
[शाला] १ तवेला, शल्लव । २ वाहन
बनाने का कारखाना (श्रीप, भाषा २, २, २) ।

जाण न [ज्ञान] ज्ञान, बोध, समझ (मग,
कुमा) ।

जाण बि [जानन्] जानता हुआ, 'जाण
काण्य छाड्डी' (मुद्रा १, ५, १) ; 'मासु-
पण्येण जाणया' (भाषा) ।

जाणई स्त्री [जानिनी] सीता, राम पत्नी
(पठम १०६, १८, से ६, ६) ।

जाणय बि [ज्ञायक] जानकार, ज्ञानी,
जाननेवाला (मुद्रा १, १, १; महा, सुर
१०, ६५) ।

जाणगी देखा जाणई (पठम ११७, १८) ।
जाणय न [दे] बरान, गुजराती में 'जान';
'जो दरबारया सधुविमोति जाणणणामो'
(उप ५६७ टी) ।

जाणय न [ज्ञान] जानना, जानगरी,
समझ, बोध (हे ४, ७; उप ५ २३, मुद्रा
४६६, सुर १०, ७१, पण्य १४ महा) ।

जाणयया स्त्री. ऊपर देखो (उप ५१६;
जाणया १ विसे २१४८, धणु, माव ३) ।
जाणय देखो जागम (मग, महा) ।

जाणय वि [ज्ञापक] जननिवाला, सम्मले-
वाला (श्रीप) ।

जाणया ली [ज्ञान] ज्ञान, समझ, जानकारी,
‘एएंसि पयाए जाणजाए सवसुयाए’ (भग) ।

जाणयय वि [ज्ञानपद] १ देश में उत्पन्न,
देश सन्धी (भग, छाया १, १—पत्र १) ।

जाणाय सक [ज्ञापय] ज्ञान कराना,
जनना । जाणएव जाणएवेद (कुमा, महा) ।
हेह. जाणाविउ, जाणावेउ (पि ५११) ।
ह जाणावियउर (उप ५ २२) ।

जाणाचण न [ज्ञापन] ज्ञापन बोधन (पउम
११, ८८, सुपा ६०६) ।

जाणाउणा } ली [ज्ञापनी] विद्याविशेष
जाणाउणी } (उप ५ ४२, महा) ।

जाणाविय वि [ज्ञापित] ज्ञातया, विज्ञापित,
माहूम कराना, निवर्तित (सुपा ३५६,
माहूम) ।

जाणि वि [ज्ञानिन्] ज्ञाता, ज्ञानकार (कुमा) ।

जाणिअ वि [ज्ञात] जाना हुआ, विदित
(सुर ४, २१४, ७, २६) ।

जाणु न [जाउ] १ घोंह, घुटना । २ ऊर
और जघा का मध्य भाग (तनु, निर १, ३,
छाया १, २) ।

जाणु } वि [ज्ञायक] ज्ञाननेवाला, ज्ञाता,
जाणुअ } ज्ञानकार (ठा ३, ४, छाया १,
१३) ।

जाणे झ [जाने] उत्प्रेक्षा-मूचक श्रमय,
मानो (प्रति १५०) ।

जाम सक [सृज्] मार्जन करना, सफा
करना । जामइ (माठ—प्राज्ञ ८० टी) ।

जाम पु [याम] १ प्रहर, तीन घण्टा का
समय (सम ४४ सुर ३, २४२) । २ यम,
अहिंसा आदि पांच व्रत । ३ उग्र विशेष,
भाट से बतौस बतौस से साठ और साठ से
अधिर वर्ष की उम्र (भावा) । ४ वि. यम-
संबंधी जमराज का (सुपा ४०५) । ५ इह
वि [‘यन्’] १ प्रहरवाला (हे २, १५६) ।
२ पुं. प्राहरिक, पहरेदार, यामिक (सुपा
५) । ३ ‘दिसा ली [दिश]’ दक्षिण
दिशा (सुपा ४०५) । ४ ‘वई ली [वती]
’रात्रि, रात (पउठ) ।

जाम देखो जाव = यावत् (माउ ३३) ।

जामाइ देखो जामाउ (पिउ ४२४) ।

जाममगहण न [यामग्रहण] ग्राहकिल,
पहरेदारी (सुख २, ३१) ।

जामाउ } पुं [जामाउ, ‘क’] जामाता,
जामाउय } दापाद, सड़की का पाँत (पउम
८६, ४, हे १, १३१, गा ६८३) ।

जामि ली [जामि, यामि] बहिन, भगिनी
(राज) ।

जामिअ देखो जामिम (धर्मि १३५) ।

जामिम पु [यामिक] ग्राहकिक, पहरेदार,
पहरे, पहरेदार (उप ८३३) ।

जामिनी ली [यामिनी] रात्रि, रात (उप
७२८ टी) ।

जामिल देखो जामिम (सुपा १४६, २६६) ।
जामेअ पु [यामेय] भागना, भगिनीय,
बहिन का पुत्र (धर्मि २२) ।

जाय सक [याच्] प्रार्थना करना, माँगना ।
बहु. जायत (पह १, ३) । कवहु. जाइ-
ज्जत (पउम ५, ६८) ।

जाय सक [यातय] पीटना, झनका
करना । जाइ (उप) । कवहु. जाइज्जत
(पह १, १) ।

जाय देखो जाग (छाया १, १) ।

जाय वि [जात] १ उत्पन्न, जो पैदा हुआ
हो (ठा ६) । २ न. समूह, सपात, (दस
४) । ३ वेद, प्रकार (ठा १०, निपु १६) ।

४ वि. प्रवृत्त (श्रीप) । ५ पुं. लड़का, पुत्र
(भग ६, ३३, सुपा २७६) । ६ न. बच्चा,
संतान, ‘जाय लीए जइ कहवि जायए पुन-
जोएल’ (सुपा ५६८) । ७ जन, उपति
(छाया १, १) । ८ ‘कम्म न [‘कम्म’]
१ प्रवृत्ति बर्ण (छाया १, १) । २ संस्कार-
विशेष (अमु) । ३ ‘तेय पु [‘तेजस्’] अग्नि,
वह्नि (सम ५०) । ४ ‘निद्रुया ली [‘निद्रुता’]
मुक्त-वस्था ली (मिपा १, २) । वि मूअ
वि [‘मूक’] जन्म से मूक (मिपा १, १) ।

५ ‘रूअ न [‘रूप’] १ मुखर, खोना (श्रीप) ।
२ रूप, बाँदी (उत ३५) । ३ मुखर-
निर्मल (सम ६५) । ४ ‘वेय पु [‘वेदस्’]
अग्नि, वह्नि (उत १२) ।

जाय वि [यात] गत, गया हुआ (सूत्र १,
३, १) । २ प्राप्त (सूत्र १, १०) । ३ न.
गमन, गति (भावा) ।

जाय पु [जात] गोताप, विद्वान् जैन मुनि
(पव—भावा २४) ।

जायम वि [याचक] १ भगिनिवाला । २
पु. भिक्षुक (था २३, सुपा ४१०) ।

जायम वि [याजक] यज्ञ करानेवाला (उत
२५, ६) ।

जायन न [याचन] याचना, प्रार्थना (पा
१४, प्रति ६१) ।

जायन न [यातन] कदंबन, पीठन (पह
१, २) ।

जायणया } ली [याचना] याचना, प्रार्थना
जायणा } भागना (उप ५ ३०९, सम ४०;
म २६१) ।

जायणा ली [यातना] कदंबना, पीठा
(पह १, १) ।

जायणी ली [याचनी] प्रार्थना की भाषा
(ठा ४, १) ।

जायव पु ली [यादव] यदुवंश में उत्पन्न,
यदुवंशीय (छाया १, १६, पउम २०, ५६) ।

जाया ली [यात्रा] निर्वाह, गुजारा, इति ।
‘माय वि [मात्र]’ जितने से निर्वाह हो
सके उतना, ‘साहस्र विति पीरा जामा मायं
व भोमं व’ (पिउ ६४३) ।

जाया ली [जाया] ली, मौरत, (गा ६,
सुपा ३८६) ।

जाया देखो जत्ता (पह २, ४, सूत्र १, ७) ।

जाया ली [जात] भगवत्प्रेष्ठ आदि इन्द्रो की
काष्ठ परियुक्त (भग ठा ३, २) ।

जायाइ पु [यायाजित्] धन-वर्त, जायव,
यज्ञ बरानेवाला (उत २५, १) ।

जार पु [जार] १ उपपति, पार (हे १, १७७) ।
२ गणित का लक्षण विशेष (जीव ३) ।

जारिउद्र वि [यादत्र] ऊपर देखो (भावा) ।

जारिस वि [यादरा] पैसा, जिस तरह का
(हे १, १४२) ।

जारिउणय न [जारेणय] शोध विशेष, जो
यागिष्ठ यात्र की पूरा रास्ता है (ठा ७) ।

जाळ सक [याळय] जलाना, दह्य करना
‘वो जनिअजणयजाणयकीमु जालेनि नियदे’
(महा) । ३. जालेनि (महा) ।

जाल ॥ [जाल] १ समूह, सघात (सुर ४, १३५, स ४४३) । २ माला का समूह वाम-
निकर (राय) । ३ कारीगरीवाले छिद्रों से युक्त
गुहाय, गवाय विशेष, भरोला (श्रीप. छाया १,
१) । ४ मछली वगैरह पकड़ने का जाल, पारा-
विशेष (पण्ड १, १) । ४ मछली वगैरह पकड़ने
की जान, पारा-विशेष (पण्ड १, १, ४) । ५ पैर
का धातूपण विशेष, कडा (श्रीप.) । ६ कडग
पु [फटक] १ सच्छिद्र गवाशों का समूह ।
२ सच्छिद्र गवाश-समूह से धलकृत प्रदेश
(जीव ३) । ३ घराग न [गृहक] सच्छिद्र
गवाशवाला मकान (राय, छाया १, २) ।
४ पजर न [पजर] गवाश (जीव ३) ।
५ हराग देखो घराग (मीन) ।

जाल पु [जाल] जाला, अग्नि शिवा, धाम
की लपट (सुर ३, १८८, जी ६) ।
जालतर न [जालान्तर] सच्छिद्र गवाश का
मध्यभाग (सम १, ३३७) ।

जालधर पु [जालधर] १ पञ्च का एक
स्वनाम ब्यात शहर (मवि) । २ न गोत्र-
विशेष (मप्य) ।

जालधारायण न [जालधारायण] गोत्र-
विशेष (प्राचा २, १५) ।

जालग देखो जाल = जाल (पण्ड १, १, ५,
श्रीप. छाया १, १) ।

जालग पु [जालग] द्वीपत्रय जीव की एक
जाति, मकड़ी (उत्त ३६, १३०) ।

जालगपडिआ जी [दे] चन्द्रशाला, महासिक्ता,
भटवरी (दे ३, ४६) ।

जालय देखो जाल = जाल (गड ३) ।

जालयगी जी [दे] सवाद, सहाय, खरग
गुनपाती मे 'जावयण' (सिदि ३८५) ।

जाला जी [जाला] १ शक्ति की शिवा (प्राचा,
सुर २, २४६) । २ नवन पञ्चमूर्तियों की माता
(सम १५२) । ३ भगवान् चन्द्रप्रभ की
शासनदेवी (संति ६) ।

जाला ॥ [यदा] जिस समय, जिस काल में,
जाला जागति गुणा, जाला से सहिमहर्षि
पेधति' (दे ३, ६५) ।

जालाउ पु [जालाउ] द्वीपत्रय जन्तु-
विशेष, मरडी (राज) ।

जालान सक [जालान] जलाना, दाह देना ।

बहु. जालायत (महानि ७) ।

जालायित वि [जालित] जलाया हुआ
(सुपा १८६) ।

जालि पु [जालि] १ राजा शेरिक का एक
पुत्र जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा
ली थी (अनु १) । २ श्रीकृष्ण का एक पुत्र,
जिसने बोधा से कर गनुज्य पर्वत पर भुक्ति
पाई थी (भत १४) ।

जालिय पु [जालिक] जाल जोति, वायुरिक,
बहेलिया, चिरोमार (गड ३) ।

जालिय वि [जालित] जलाया हुआ; सुल-
गाया हुआ (उच, उच ५२७ टी) ।

जालिया जी [जालिया] १ कज्जुक (पण्ड
१, ३—पत्र ४४, गड ३) । २ बुज (राज) ।

जालुगाल पु [जालुगाल] मछली पकड़ने
का साधन विशेष (भमि १८३) ।

जाय देखो जानइअ (प्राचा २, २, ३, ३) ।

जाय सक [यापय] १ गयन करना, गुजर-
ना । २ बरतना । ३ शरीर का प्रतिपालन
करना । जायइ (प्राचा) । जावेइ (हे ४,
४०) जायइ (सुम १, १, ३) ।

जाय स [यावत्] इन भर्त्ता का सूचक
अव्यय—१ परिमाण । २ मर्यादा । ३ अव-
धारण, निश्चय 'आवदय परिमाणे भगवत्या-
एवमारणे चेद' (सिंते ३५१६, छाया १,
७) । ४ जीव जी न [जीव] जीवन पर्यन्त
(प्राचा) । जी 'या (सिंते ३५१८, श्रीप.) ।
५ जीविय वि [जीविय] भावजीव-सब की
(स ४४१) । देखो जाय ।

जाय पु [जाय] मन ही मन बार बार देवता
का स्मरण, मन का उचारण (सुर ६,
१७४, सुपा १०१) ।

जायइ पु [दे] गुन-विशेष (पण्ड १—पत्र
३४) ।

जायइअ वि [यायत्] जितना, 'आवइया
वसणपइ' (सम १४४, भत ६४) ।

जायई जी [जायपरी] १ कन्द विशेष (उत्त
३६, ६८, सुप ३६, ६८) । २ शुद्ध यन्त्रसति
की एक जाति (पण्ड १—पत्र ३४) ।

जायईय पु [जायपरीक] कन्द विशेष
(उत्त ३६, ६८) ।

जाय देखो जान (पत्रम ६८, ५०) । १ ताव
॥ [तावत्] १ गणित विशेष । २ गुणाकार
(ठा १०) ।

जायव देखो जावइअ (भम १, १) ।

जायव देखो जावय = मापक (दत्तनि १) ।

जावण न [यापन] १ बिताना, गुजारना ।
२ दूर करना, हटाना (उच ३२० टी) ।

जावणा जी [यापना] ऊपर देखो (उच ७२८
टी) ।

जावणिज वि [यापनीय] १ जो बीताया
जाय गुजारने योग्य । २ शक्ति-युक्त, जाव-
णिज्जाए एहिशीहिप्राय' (पठि) । ३ तत न
[तत्र] अन्य विशेष (भर्त्ता २) ।

जावय वि [यापक] १ बीतानेवाला । २ पुं.
सर्व-शास्त्र प्रसिद्ध काल-सोचक हेतु (ठा, ४,
३) ।

जावय वि [यापक] जीतनेवाला, 'जिणएण
जावमाण' (पठि) ।

जावय पु [यापक] भनक्तक, झलता, साक्ष
का रग (गडक, सुपा ६६) ।

जावसिय वि [यासिक] १ भाव्यते गुजार
करनेवाला (इह १) । २ भास माहक (मीय
२३८) ।

जाविय वि [यापित] बीताया हुआ (छाया
१, १७७) ।

जास पु [जाप] विराज विशेष (राज) ।

जासुमण पु [जासुमनस्] १ जपा
जासुमिण का पुत्र पुण्यप्रधान (पण्ड १,
जासुमण छाया १, १) । २ न जपा का
पुत्र (छाया १, १, मप्य) ।

जाहाग पु [जाहक] जन्तु विशेष, जिसने
शरीर मे काटे होते हैं, साही या साहिन
(पण्ड १, २, विपे १४४४) ।

जाहइय न [याथार्थ्य] सत्यपन, यान्तविषय
(विप १२७६) ।

जाहासस देवो जहा-संस 'जाहासंसविमोर्ल
निजयय साहवायो य' (उच १७६) ।

जाहे स [यत्] जिस समय, जब, (हे ३,
६४, महा गा ८८) ।

जि (भा) देखो ज्यन्त्य (हे ४, ४२०, गुमा,
बजा १४) ।

जिअ षक [जीय] जीना, प्राण-धारण करना। जिप्रद, जिप्रउ (हे १, १०१)। वक्र-जिअंत (भा ६१७)।

जिअ पुं [जीय] आत्मा, प्राणी, चेतन (सुर २, ११३, जी ६; प्राप् ११४, ११०)।
[लोअ पुं] [लोक] संसार, दुनिया (सुर १२, १४३)।

जिअ न [जित] जीत, जय (प्राक् ७०)।
[गसि वि] [काशिय] जीत से शोभनेवाला विजेता (सम्मत २१७)। [सन्तु पुं] [शत्रु] भ्रातृ-विद्या का जानकार दूसरा रत्न-मुष्य (विचार ४७३)।

जिअ वि [जित] १ जीता हुआ, पराभूत, प्रसिद्ध (कुमा, सुर ३, ३२)। २ परिचित (विसे १४७२)। ३ [राम] जितेन्द्रिय, सपत्नी (सुपा २७६)। [भाण पुं] [भानु] राजसन्ध्या का एक राजा, एक लंकानाथि (पठम ५, २५६)। [सन्तु पुं] [शत्रु] १ भगवान् प्रजितनाथ का पिता (सम १५०)। २ नृप-विशेष (महा, विपा १, ५)। [सेण पुं] [सेन] १ जैन आचार्य-विशेष। २ नृप-विशेष। ३ एक चक्रवर्ती राजा। ४ स्वनाम-ख्यात एक कुत्तक (राज)। [रि पुं] [रि] भगवान् समवनापत्री का पिता (सम १५०)।

जिअती की [जीअम्ती] बक्षी-विशेष (पण १)।

जिअय वि [जीतयत्] जय-प्राप्त (पण १, १)।

जिअदिय } वि [जितेन्द्रिय] इन्द्रियो की जिअदिय } वश में रखनेवाला, संयमी (पठम १४, ३६; हे ४, २८७)।

जिअ सक् [प्रा] संपना, गन्ध लेना। कृ. जिअभिज (रूप)।

जिअण न [प्राण] संपना, गन्ध-ग्रहण (स ५७७)।

जिअणा की [प्राण] उपर देखो (भोप ३७६)।

जिअिय वि [प्रात] संपा हुआ (गम)।

जिअद पुं [दे] कन्दुक, गेंद, जिअहोहिआ-हमण (पर ३८, धर्म २)।

जिअह पुं [दे] कन्दुक, गेंद (धर्म ३८)।

जिअ } देखो जंभाय। जिअ (प्रति जिआय) २४१)। वक्र. जिआर्जन (हे ११, ३०)।

जिअिया की [जम्भा] जम्भाई, जम्भण, मुख विद्या (सुपा ५८३)।

जिगोसा की [जिगोपा] जय की इच्छा (कुप २७८)।

जिगय देखो जिअ। जिगय (मि २)।

जिगिय वि [दे] प्रात, संपा हुआ (दे ३, ४६)।

जिअ } देखो जिण = जि।

जिअ वि [ज्येष्ठ] १ महान्, बृद्ध, बड़ा (सुपा २३४, कम्म ४, ८६)। २ श्रेष्ठ, उत्तम। ३ पुं. बड़ा भाई, जिअ व कण्ठि पि पुं (धर्म २)। [भूइ पुं] [भूति] जैन साधु-विशेष (ती १७)। [मूली की] [मूली] ज्येष्ठ मास की पूणिमा (ह्व)।

जिअ पु [ज्येष्ठ] मास-विशेष, जेठ (राज)।

जिअ की [ज्येष्ठ] १ भगवान् महावीर की पुत्री। २ भगवान् महावीर की भविनी (विसे २३०७)। ३ स्वनाम-विशेष (जी १)। देखो जेठा।

जिअणी की [ज्येष्ठ] बड़े भाई की पत्नी, जिअनी या जेठानी (सुपा ४८७)।

जिअणी की [ज्येष्ठ] जेठ मास की धमावम (सट्ठि ७८ वी)।

जिअ सक् [जि] जीतना, वश करना।

जिअ (हे ४, २४१, महा)। धर्म. जिअ-ज्जह, जिअ (हे ४, २४२)। वक्र. जिअंत, जिअयंत (पि ४७३, पठम १११, १७)।

कवक. जिअमाण (उत ७, २२)। सक्.

जिअिता, जिअिऊण, जिअेऊण, जेऊण,

जेऊआण (पि. हे ४, २४१, पट्. कुमा)।

हेऊ. जिअिय, जेअ (सुर १, १३०; रंभा)।

कृ. जिअ, जिअेयव, जेयव (उत ७,

२२, पठम १६, १६; सुर १४, ७६)।

जिअ पु [जिअ] १ राम भादि धनुरंग शत्रुघो की जीतनेवाला, अर्हन् देव, तीर्थंकर (सम १; ठा ४, १-सम्प १)। २ बृद्ध देव,

बृद्ध भगवान् (दे १, ५)। ३ चेतन-आती,

सर्वज्ञ (पण १)। ४ चौदह पूर्व ग्रन्थो का जानकार (उत ५)। ५ जैन साधु-विशेष, जिनकवी मुनि। ६ भ्रातृ-जान भादि श्रोतीन्द्रिय जानवाला (पंचा ४, ४३, ४)। ७ वि. जीतनेवाला (पंचा ३, २०)। [इंद पुं] [इन्द्र] अर्हन् देव (सुर ४, ८१)। [कप पुं] [कल्प] एक प्रकार के जैन मुनियो का आचार, चारित्र्य विशेष (ठा ३, ४, ह्व १)। [कपिय पुं] [कल्पिक] एक प्रकार का जैन मुनि (भोप ६६६)। [किरिया की] [क्रिया] जिनदेव का बतलाया हुआ धर्माभ्युपगम (पंचव १)। [धर न] [गृह] जिन-मन्दिर (भग २,

८; एणा १, १६—पण २१०)। [चट्ट पुं] [चन्द्र] १ जिनदेव, अर्हन् देव (कम्म ३,

१; अवि २६)। २ स्वनाम-ख्यात जैन आचार्य

विशेष (पु १२, सण)। [जता की] [यात्रा]

अर्हन् देव की पूजा के उपलक्ष में किया जाता

उत्सव-विशेष, त्य-यात्रा (पंचा ७)। [गाम

न] [नामन्] धर्म-विशेष जिसके प्रभाव से

जीव तीर्थंकर होता है (राज)। [दस पुं]

[दस] १ स्वनाम-प्रसिद्ध जैन आचार्य-विशेष

(पण २६, सव १५०)। २ स्वनाम-ख्यात

एक जैन श्रेष्ठी (पठम २०, ११६)। [वठन

न] [वठन] जिन-मन्दिर-सम्बन्धी धनादि

वस्तु, 'बृद्धतो जिअकव्व तिअणारत्त सहइ

जीवो' (जय ४१८, पठ १)। [दास पुं]

[दास] १ स्वनाम-प्रसिद्ध एक जैन उपासक

(प्राक् ६)। २ स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि

श्रीर प्रप्यकार, निरीध-सूत्र का कृष्णिकार

(निरु २०)। [देव पुं] [देव] १ अर्हन्

देव (पु ७)। २ स्वनाम-प्रसिद्ध जैन आचार्य

(प्राक्)। ३ एक जैन उपासक (प्राक् ४)।

[धम्म पुं] [धम्म] जिनदेव का उपासित

धर्म, जैन धर्म (ठा ५, २, हे १, १८७)।

[नाह पुं] [नाह] जिनदेव, अर्हन् देव

(सुपा २३५)। [पडिमा की] [प्रतिमा]

अर्हन् देव की मूर्ति (एणा १, १६—पण

२१०, राय. जीव ३), 'जिअण्डिआअण्ण

पडिअ' (स्वच २)। [पवयण न] [प्रव-

चन] जैन धाम, जिनदेव-अर्णोत शाय

(विसे १३५०)। [पसरय वि] [प्रसारण]

तीर्थंकर भाषित, जिनदेव कथित (पण २,

५) १° पट्टु पुं [°अमु] जिन-देव, बहँन देव (उप ३२० टी) । २° पाडिहेर न [°प्रातिहाय्य] जिन-देव की बहँसा-मूकक देव-कृत भणोक ब्रुल आदि घाट वास विनूविद्या, वे वे हैं—१ भणोक ब्रुल, २ मुर-उत पुण-वृष्टि, ३ दिव्य-ध्वनि, ४ चामर, ५ विहासन, ६ आम-एडल, ७ कुटुमिनाद, ८ छत्र (दस १) । ३° पालिय पुं [°पालिन] चम्पा नगरी का निवासी एक भोहि-पुत्र (आया १, ६) । ४° विंय न [°विम्भ] जिन प्रीति, जिन देव की प्रतिमा (पडि, पचा ७) । ५° भड पुं [°भट] स्वनाम-प्रमिद एक जैन भाचार्य, जो सुप्रसिद्ध जैन ग्रन्थकार व्योहरिमद गुरि के गुरु थे (मार्च ५८) । ६° भट्ट पुं [°भट्ट] स्वनाम-प्रमिद जैन भाचार्य भीरु ग्रन्थकार (भाव ४) । ७° भयण न [°भयन] बहँन मन्दिर (पचव ४) । ८° मय न [°मत] जैन दर्शन (पंचा ४) । ९° माया की [°मातृ] जिन-देव की जननी (सम १५१) । १०° मुद्रा की [°मुद्रा] जिन-देव जिन तरह से शरीरों में रहते हैं उस तरह शरीर का विग्यान, आसन-विशेष (पचा ३) । ११° यंद देवो [°चंद (सुर १, १०; सुपा ७६) । १२° रजितय पुं [°रजित] स्वनाम-ख्यात एक सार्यवाह-पुत्र (आया १, ६) । १३° वड पुं [°वति] जिन-देव, बहँन-देव (सुपा ८६) । १४° यई की [°वाच] जिन-देव की बाली (इह १) । १५° वयण न [°वयन] जिन-देव की बाली (ठा ६) । १६° वयण न [°वयन] जिन-देव का पुत्र (भीन) । १७° वर पुं [°वर] बहँन देव (पचम ११, ४; भाज १) । १८° वरिंद पुं [°वरेंद्र] बहँन देव (उप ७७६) । १९° वट्ट पुं [°वल्लभ] स्वनाम-ख्यात एक जैन भाचार्य भीरु प्रसिद्ध स्तोत्र-कार (सहृम १७) । २०° वसह पुं [°वृषभ] बहँन देव (यज) । २१° वसह की [°मविष] जिन-देव की प्रसिध (मग १०, ५) । २२° सासन न [°शासन] जैन दर्शन (उत्त १८, सूम १, ३, ४) । २३° हंस पुं [°हंस] एक जैन भाचार्य (इं ४७) । २४° हर देवो [°हर (पचम ११, ३; सुपा ३३१-महा) । २५° हरिप पुं [°हर्ष] एक जैन भुजि (रपण १४) । २६° त्रयण न [°त्रयतन] जिन-देव का मन्दिर (पंचा ४) ।

जिणंद देखो जिणिंद, 'सबे जिणंद सुरविद-वंदा' (पडि, जो ४८) ।
जिणकरिप पुं [°जिनकरिपन] जैन भुजि का एक प्रेस (पंचा १८, ६) ।
जिणग न [°जयन] जय, जीत (सण) ।
जिणपह पुं [°जिनप्रभ] एक जैन भाचार्य (तो ५) ।
जिणिंद पुं [°जिनेन्द्र] जिन भगवान्, बहँन देव (प्राय ५२) । १° गिह न [°गृह] जिन-मन्दिर (सुर ३, ७२) । २° चंद पुं [°चन्द्र] जिन-देव (पचम ६५, ३६) ।
जिणिय वि [°जित] परामृत, बरीरुत (सुपा १२२, रयण २७) ।
जिणिसर देखो जिणेसर (सम्मत ७६, ७७) ।
जिणिसर देखो जिणेसर (पंचा १६) ।
जिणुत्तम पुं [°जिनोत्तम] जिन-देव (मवि ४) ।
जिणंद देखो जिणिंद (वेद ६०) ।
जिणेस पुं [°जिनेश] जिन भगवान्, बहँन देव (सुपा २६०) ।
जिणेसर पुं [°जिनेश्वर] १ जिन देव, बहँन देव (पचम २, २३) । २ विजय की ग्याहारी राताग्री के स्वनाम-ख्यात एक प्रसिद्ध जैन भाचार्य भीरु ग्रन्थकार (सुर १६, २३६; सार्य ७६; ग्र ११) ।
जिण वि [°जीण] १ पुपाना, बर्बर (हे १, १०२; बाह ४६ प्राय ७६) । २ पचा हुपा, 'जिणो मोषणमते' (हे १, १०२) । ३ बूढ, बूढ़ा (इह १) । सेट्टि पुं [°सेट्टि] १ पुपाना सेठ । २ थोडि पद से च्युत (भाव ४) ।
जिण (भय) देखो जिअ = जित (सिग) ।
जिणगासा की [°जितासा] जानने की कच्चा (पंचा ३) ।
जिणिगय } (भय) देखो जिणिय (सिग) ।
जिणगीअ }
जिणोअभा की [°दि] हर्षा, हूब (पात) (दि ३, ४६) ।
जिण्ड वि [°जिण्ड] १ जितर, जीतनेवाला, विजयी (प्राभा) । २ पुं. भट्टन, मध्यम पाइर (यज) । ३ त्रिपु, योत्रण । ४ मुर्य, रवि । ५ इन्द्र, देव-नायर (हे २, ७३) ।

जित देखो जिअ = जित (महा, सुपा ३६५; ६४३) ।
जित्तिअ } वि [°यावत्] जितना (हे २, जिचिल } १५६; पद) ।
जित्तुल (भय) ऊपर देखो (कुमा) ।
जिध (भय) म [°यथा] जैसे, जिन तरह से (हे ४, ४०१) ।
जिअ देखो जिण (सुपा ६) ।
जिआसिय वि [°जिआसित] जानने के लिए इष्ट, जानने के लिए बाह्या हुपा (भास ७५) ।
जिह्वाद्धा वृ [°जीर्णोद्धा] गुराने भीरु टूटे-फूटे मन्दिर भादि को सुधारना (सुपा १०६) ।
जिअम पुं [°जिह्वा] एक मरक-स्थान (देवेंद्र ६; २६) ।
जिअभा की [°जिह्वा] जीम, रमना (पयह २, ५; उप ६८६ टी) ।
जिअभिंदिय न [°जिह्वेन्द्रिय] रसनेन्द्रिय, बीम (ठा ४, २) ।
जिअभिया की [°जिह्विका] १ जीम । २ बीम के भाग-वासी बीन (अं ४) ।
जिम सक [°जिम, मुज] जीमना, भोजन करना, खाना । जिमइ (हे ४, ११०, पद) ।
जिम (भय) देखो जिघ (पद; मवि) ।
जिमण न [°जिमन, भोजन] जीमन, भोजन (या १६; वेल ५६) ।
जिमण न [°जिमन] जिमना, भोज (पर्मवि ७०) ।
जिमिअ वि [°जिमित, मुज्ज] १ जितने भोजन किया हुपा हो बह (पचम २०, १२७; पुण ३५, महा) । २ जो खाया गया हो बह, प्रसित (दि ३, ४०) ।
जिम देखो जिअ = जित । जिमइ (हे ४, २३०) ।
जिअ पुं [°जिअ] १ भेष विशेष, जितने बरफने से प्रायः एक वर्ष तक जमीन में बिक-नापन रहती है (ठा ४, ४—यन २००) । २ वि. बुटिल, बचटे, मायावी (सम ७१) । ३ मन्द, धनव (न २) । ४ न. माया, बपट (वच ३) ।
जिअ न [°जिअ] बुटिलता, यस्या, माया, बपट (सम ७१) ।

जिव देखो जीव, 'मायाइ ग्रहं भणियो काय्वा
वच्छ जिवदया तुमए' (परमि ५) ।

जिवें } (भग) देखो जिध (कुमा, पद, हे
जिह ५, ३३७) ।

जिहा देखो जीहा (पद) ।

जीअ देखो जीअ = जीव । जोमइ (भा १२४,
हे १, १०१) । वह, जीअस (से ३, १२,
भा १६६) ।

जीअ देखो जीव = जीव (गउड) । ५ पानी,
जल (से २, ७) ।

जीअ देखो जीविय (हे १, २७१, प्राप्र, सुर
२, २३०) ।

जीअ न [जीत] १ आचार, रिवाज, प्रथा, कटि
(श्रीप, राय, सुपा ४३) । २ प्रायश्चित से
सम्बन्ध रखनेवाला एक तरह का रिवाज,
जैन सूत्रों में उक्त रीति से भिन्न तरह के
प्रायश्चित्तों का परम्परागत आचार (ठा ५,
२) । ३ आचार-विशेष का प्रतिपादक ग्रन्थ
(ठा ५, २, ध्व १) । ४ मर्यादा, स्थिति,
ध्वस्मा (एहि) । 'कम्प पु ["कल्प"] १
परम्परा से आगत आचार । २ परम्परागत
आचार का प्रतिपादक ग्रन्थ (पचा ६, जीत) ।
'कल्पिय वि ["कल्पिक"] जीत कल्पवाला
(ठा १०) । 'धर वि ["धर"] १ आचार-
विशेष का जानकार । २ स्वनाम-स्वात एक
जैनार्चाय (एहि) । 'व्यहार पु ["व्यवहार"]
परम्परा के अनुसार व्यवहार (धर्म २,
पचा १६) ।

जीअण देखो जीअण (माट-चैत २५६) ।

जीअख वि [जीवितयत्] जीवितवाला,
भेट जीवनेवाला (पराए १, १) ।

जीआ जी [ज्या] १ धनुष की डोर (हुमा) ।
२ ग्रिवी, नृमि । ३ माता, जननी (हि २,
११५, पद) ।

जीण न [दे. अजिन] जीन, भय की पीठ
पर लिखीया जाता चर्ममय आसन (पव ८४) ।

जीमूअ पुं [जीमूत] १ भेष, वर्षा (पाभ-
गउड) । २ भेष विशेष, जिसके बरसने से
जमीन दरा वर्ष तक चिकनी रहती है
(ठा ४, ४) ।

जीरं देखो जर = ज ।

जीरण न [जीर्ण] १ शून्य पाक । २ वि.
पुराना, पचा हुआ, 'भजीरण' (मिड २७) ।

जीरय न [जीरफ] जीय, महाला-विशेष
(सुर १, २२) ।

जीरय सक [जीरय] पचाना । जीरयइ
(कुप्र २६६) ।

जीय एक [जीय] १ जीन, प्राण धारण
करना । २ सक. प्राप्त करना । जीयइ
(हुमा) । वह, जीयत, जीयमाण (विपा
१, ५, उव ७२८ टी) । हेह, जीयिउ (भाका) ।
वह, जीविय (माट) । ह, जीवियअव्व,
जीयणिअ (सुम १, ७) । प्रयो, जीवावेहि
(वि ५५२) ।

जीय पुंन [जीय] १ आराम, चेतन, प्राणी
(ठा १, १, जी १, सुपा २३३), 'जीवाइ'
(वि ३६७) । २ जीवन, प्राण धारण,
'जीनोति जीवण पाणधारण जीवियति
पणायाम' (विते ७५०८, सम १) । ३ पुं.
बृहस्पति, सुर-पुत्र (सुपा १०८) । ४ वन,
पराक्रम (भा २, १) । ५ देखो जीअ =
जीव । 'अय पु ["काय"] जीव राशि,
जीव समूह (सूत्र १, ११) । 'माह न
["माह"] जिन्दे की पकड़ना (खापा १, २) ।
'गिणाय पु ["गिणाय"] जीव-राशि (ठा
६) । 'विकाय पु ["विकाय"] जीव
समूह, जीव-राशि (भा १३, ४, अणु) । 'वय
वि ["वय"] जीवित देवेवाला (सम १) ।
'दया जी ["दया"] प्राणि दया, दु को जीव
का दु ख से राख (महानि १) । 'देव पु
["देव"] स्वनाम-स्वात प्रसिद्ध जैन धार्माय
और भयकार (सुपा १) । 'पयस पु
["प्रदेशजीय"] प्रथम प्रदेश में हो जीव की
स्थिति को माननेवाला एक जैनार्चाय दार्श-
निक (राज) । 'पणसिय पुं ["आदेशिक"]
देखो पूर्वाक्त अर्थ (ठा ७) । 'लोग, 'लयेय
पुं ["लेके"] १ जीव जाति, प्राणि-स्त्री,
जीव-समूह (महा) । 'विजय न ["विजय"]
जीव के स्वरूप का चिन्तन (राज) । 'विभक्ति
जी ["विभक्ति"] जीव का भेद (उत ३६) ।
'बुद्धिय न ["बुद्धिक"] अनुता, धर्मवि,
अनुमति (एहि) ।

जीव न [जीव] सात दिन का लगातार
उपवास (संवीध ५८) । 'विसिद्ध न
["विशिष्ट"] वही अर्थ (संवीध ५८) ।

जीवजीव पु [जीवजीव] १ जीव-वत, प्राय-
पराक्रम (भा २, १) । २ चकोर-पक्षी,
चकवा (राज) ।

जीवत देखो जीन = जीव । 'मुक ॥ ["मुक्त"]
जीवन्मुक्त, जीवन्-दशा में हो समार बन्धन से
मुक्त महात्मा (भण्डु ४७) ।

जीवग पुं [जीवग] १ पक्षि विशेष (अप
५८०) । २ नृप-विशेष (तिथ्य) ।

जीवजीवग पुं [जीवजीवग] चकोर पक्षी,
चकवा (पराए १, १—पय ८) ।

जीवण न [जीवन] १ जीना, जिनगी (विते
३५२१, पय ८, २५०) । २ जीविका,
आजीविका (स २२७, ३१०) । ३ वि.
जिानेवाला (राज) । 'विति जी ["वृत्ति"]
आजीविका (अप २६४ टी) ।

जीवमजीव पुं [जीवाजीव] चेतन और जड
पदार्थ (धायम) ।

जीवमसुत देखो जीवत मुक्त (उवर १६१) ।

जीरयमई जी [दे] मुगों के भाकरण के
साथ भूत व्याध मुगों (दे ३, ४६) ।

जीवा जी [जीमा] १ धनुष की डोरी (स
३८४) । २ जीवन जीना (विते ३५२१) ।

३ क्षेत्र वा विशाल विशेष (सम १०४) ।

जीवाड पु [जीवाड] जिानेवाला श्रीपथ,
जीवनीपथ (हुमा) ।

जीवाधिय वि [जीवित] जिलाया हुआ (अप
७६८ टी) ।

जीवि वि [जीविण] जीनेवाला (भा ८४७) ।

जीविअ वि [जीवित] १ जो जिन्दा हो ।
२ जीवित, जीवन, जिनगी (हे १, २७१,
प्राप्र) । 'नाह ॥ ["नाय"] प्राण-पति
(सुपा ३१५६) । 'रिसिका जी ["रिसिका"]
वनस्पति विशेष (पराए १—पय ३६१) ।

जीविआ जी [जीविआ] १ आजीविका,
निर्वाह साधन वृत्ति (ठा ४, २, ॥ २१८,
खापा १, १) ।

जीविओसविय वि [जीवितोस्वविक] १
जीवन में उत्पन्न के तुल्य, जीवनोत्पन्न व
समान (यव ६, ३३, राय) ।

जीविओसासिय वि [जीवितोच्छवासिक] जीवन को बढानेवाला (मग ६, ३३)।
 जीविगा भेलो जीरिआ (स २१८)।
 जीहू मक [खरज] लजा करना, घरमाना।
 जीहू (हे ४, १०३, पद)।
 जीहूा खी [जिह्वा] जीम, खाना (भाषा-
 स्वप्न ७८)। 'ल वि [यन्] सभी
 जीमवाला (पदम ७, १२०; नमि ८, सुर
 २, ६२)।
 जीहायिअ वि [लजित] लजा युक्त किया
 गया, लजाया गया (कुमा)।
 जु देखो जुज (हुमा)। बहक. जुजत (सम्म
 १०७, स १२, ८७)।
 जुं जी [युध] लहाई, युद्ध, 'जुधि' वातिमए
 वेण्ड' (विते ३०१६)।
 जु म [दि] निरवय-मूलक धन्यव (सा ४)।
 जुअ देखो जुग (से १२, ६०, एक पद
 १, १)। ६ युम, जोडा, उमय (मिग, सुर
 २, १०२, सुग १६०)।
 जुअ वि [युत] युक्त, सलग्न, सहित (दि १,
 ८१, सुर ४ ६४)।
 जुअ देखो जुन (गा २२८, कुमा, सुर २,
 १७७)।
 जुअई खी [युपति] सखी, जवान खी
 (गडड, कुमा)।
 जुअजुअ (मर) म [युतयुत] जुअ-जुअ,
 झग-झग भिल्ल भिल्ल (हे ४, ४२२)।
 जुअज [दि] देखो जुअल = (दि) (पद)।
 जुअजद पु [युगनद] योतिप प्रसिद्ध एक
 भोग, जिसने वीत के कवे पर रले हुए युग—
 पुआ या जुगल की तरह बन्द धीर सुन
 लया मगम भवत्यित होते हैं वह भोग (सुज
 १२—पत्र २३३)।
 जुअय न [युतर] जुदा, युक्त (दि ७, ७३)।
 जुअरज न [यौवराज्य] युवराज का भाव
 या पद, युवराज (स २६८)।
 जुअल न [युगल] १ युग, जोडा, उमय
 (पाप)। २ वे दो पय तिनका धर्य एक
 दूसरे से सापेज हो (मा १४)।
 जुअल पु [दि] युग, सरण, जवान (दि
 ३, ४७)।

जुअलिअ वि [दि] डिगुहित (दि ३, ४७)।
 जुअलिअ देखो जुगलिअ (पाया १, १)।
 जुअली खी [युगली] युग, जोडा (माल ३८)।
 जुआण देखो जुगण (मा ४७, २४६)।
 जुआरि खी [दि] जुमारि, झल विशेष (सुपा
 ४४६, सुर १, ७१)।
 जुइ खी [युति] कान्ति, तेज, प्रकाश, चमक
 (भीष, जीव ३)। 'म, मंत वि [मंत]
 तेनस्की, प्रकाशवाली (स ६४१, पदम
 १०२, १४६)।
 जुइ खी [युति] सयोग, युक्त (ठा ३, ३)।
 जुइ पु [युगिन्] स्वनाम ब्यात एक जैन
 भुनि (पदम ३२, ४७)।
 जुईम वि [युतिमत्] तेनस्की (भूम १,
 ६, ८)।
 जुउच्छ सक [जुगुप्स] घुषा करना,
 निन्दा करना। जुउच्छ (हे ४, ४, पद, ने
 १, ४)।
 जुउच्छिय वि [जुगुप्सित] निन्वित
 (निपु ४)।
 जुगिय वि [दि] जाति, कर्म या शरीर से
 हीन, जिसको संन्यास देने का जैन शास्त्री में
 निषेध है (पुष्क १२४)।
 जुगिय वि [दि] १ काटा हुमा (पिब ४४६)।
 २ दूषित (सिदि २२३)।
 जुज सक [युज] जोडना, युक्त करना।
 जुजह (हे ४, १०६)। बह. जुजत (भोष
 ३२६)।
 जुजण न [योजन] जोडना, युक्त करना,
 किसी कार्य में लगाना (सम १०६)।
 जुजणया खी [योजना] १ ऊपर देखो
 जुजणया (भीष, ठा ७)। २ करण विशेष—
 मग, वजन धीर शरीर का व्यापार 'मणव-
 यलकायकरिया पन्नरसविहाव जुजणकरण'
 (विते ३३६०)।
 जुजम [दि] देखो जुजुमय (ज ३१८)।
 जुजिअ वि [दि] दुगुहित, भूषा (पाया १,
 १—पत्र ६६ ६८ टी)।
 जुजुमय न [दि] हय लण विशेष, एक
 प्रकार की हठी घास, जिसको पशु चान से
 खाते हैं (स ४८७)।

जुंजुलुह वि [दि] परिपह-रहित (दि ३, ४७)।
 जुग पु [युग] १ काल विशेष—सत्य, त्रेता,
 द्वापर और कलि ये चार युग (कुमा)। २
 पात्र वर्ष का पात्र (ठा २, ४—पत्र ८६,
 सम ७५)। ३ न, चार हाथ का यूप (भीष,
 पद १, ४)। ४ शकट का एक द्यंग, धुर,
 गादी या हल खींचने के समय जो बैलों के
 बन्धे पर रखे जाते हैं (पत्र १ ३६, वत
 २)। ५ चार हाथ का परिमाण (मणु)।
 ६ देखो जुअ = युग। 'पपर वि [प्रपर]
 युग-अर्थ (मग)। 'प्यहाण वि [प्रधान]
 १ युग अर्थ (रमो)। २ पुं. युग अर्थ जैन
 धार्या की एक उपाधि (पत्र २६४, सुह
 १)। 'बाहु पु [बाहु] १ विदेह वर्ष में
 उत्पन्न स्वनाम प्रसिद्ध एक जिनदेव (विषा
 २, १)। २ विदेह वर्ष का एक नि-
 खरअधिपति राजा (भापु ४)। ३ मिथिला
 का एक राजा (तित्त)। ४ वि मूप मा लंभा
 की तरह सन्धा हाथवाला, दीर्घ बाहु (ठा ६)।
 'मच्छ पु [मस्य] की एक जाति (विषा
 १, ८—पत्र ८४ टी)। 'स्यच्छर पु
 [सजस्तर] वर्ष विशेष (ठा ५, ३)।
 जुगतर न [युगान्तर] धूप-परिमित भूमि-
 भाग, चार हाथ जमीन (पद २, १)।
 'पलेयणा खी [प्रलोम्ना] बल्ले समय
 चार हाथ जमीन तक हट्टि रहता (मग)।
 जुगधर न [युगन्धर] १ गाड़ी का काष्ठ-
 विशेष, शकट का एक भवयव (ज १)। २
 पुं. विदेह वर्ष में उत्पन्न एक जिनदेव (भापु
 १)। ३ एक जैन भुनि (पदम २०, १८)।
 ४ एक जैन धार्या (भाषम)।
 जुगल ॥ [युगल] युग, जोडा, उमय (मणु,
 राम)।
 जुगलि वि [युगलिन्] खी-युल के युग रूप
 से उत्पन्न होनेवाला (रमण २२)।
 जुगलिअ वि [युगलित] १ युग-युक्त, द्वन्-
 सहित (जीव ३)। २ युग रूप से स्थित
 (राज)।
 जुगय वि [युगयन्] समय के उपद्रव से
 बजित (मणु राय)।
 जुगय } म [युगपत्] एक ही साथ,
 जुगय } एक ही समय में 'कारणज-
 न'।

विभागो दीवपमासाणं शुषवज्जमेवि' (विसे ५२६ टी, बीप) ।

जुगुच्छ देखो जुवच्छ । जुगुच्छइ (हे ४, ४) ।

जुगुच्छणया } की [जुगुप्सा] धृणा,
जुगुच्छा } तिरस्कार (स १६७, प्राप्र) ।

जुगुच्छिय वि [जुगुप्सित] कृत्वि, निन्दित (कुमा) ।

जुग्ग न [जुग्य] १ बाहन, गाडी बगैरह यान (भाचा) । २ शिविका, पुत्र्य-यान (सूत्र २, २, अं २) । ३ गोस्ल देश मे प्रसिद्ध हो हाथ का लम्बा-चौड़ा यान विशेष, शिविका-विशेष (आया १, १, बीप) । ४ वि यान बाइक घरव प्रादि । ५ भार-वाहक (ठा ४, ३) । 'यिरिया, यिरिया की [चिया] बाहन की गति (ठा ४, ३—पत्र २३६) ।

जुग्ग वि [योग्य] सामक, उचित (विसे २६६२, स ११, प्राप् ५६, कुमा) ।

जुग्ग न [जुग्म] युगल, द्वन्द्व, उभय (कुमा, प्राप्र, प्राप) ।

जुज देखो जुज। जुजइ (हे ४, १०६, वइ) । जुजत देखो जु ।

जुग्म भक [युध्] लडाई करना, लडना । जुग्मइ (हे ४, २१७, पइ) । वक्क जुग्मत, जुग्ममाण (सुर ६, २२२, २, ३१) । वक्क जुग्मत्ता (ठा ३, २) । प्रयो. जुग्मावेइ (महा) । वइ जुग्मापेत (महा) । क जुग्मावेयव्य (उप ५ २२५) ।

जुग्म न [युद्ध] लडाई, सभाम, समर (आया १, ८, कुमा, मन्वु, गा ६८४) । 'इजुद्ध न [विजुद्ध] महायुद्ध, युद्धो की बहतर बत्ताओं में एक बत्ता (बीप) ।

जुग्मया न [योधन] युद्ध लडाई (सुपा ५२७) ।

जुग्मज वि [युद्ध] १ लडाइ हथा, जिसने संघाम किया हो मह (से १५, १७) । २ न. युद्ध, लडाई, संघाम (स १२६) ।

जुट वि [जुट] केचित (सामा) ।

जुट न [दि] भूज, घरण, 'भा इट्ठ तुम जुट' नपसि' (पर्मि १३१) ।

जुडिअ वि [दि] भास मे जुटा हुआ, लड़ने के लिए एक दूसरे से भोज हुआ; 'कुहरेहि समं मुहसा जुडिया तह साइणावि साईहि' (उप ७२८ टी) ।

जुण वि [दि] विदध, निगुण, दत्त (दे ३, ४७) ।

जुण वि [जीर्ण] जुना, पुराना (हे १, १०२, गा ५३४) ।

जुणहुगा न [जीर्णदुर्ग] नगर-विशेष, जो भावकल भी 'जूनाना' नाम से प्रसिद्ध है (सी २) ।

जुणह देखो जोणह = ज्योत्स्न (सुज १६) ।

जुणहा की [ज्योत्स्ना] चन्दिनी, चन्द्रिका, चन्द्र का प्रकार (सुपा १२१; सण) ।

जुत्त सक [युत्तय्] जोतना। संक जुत्तित्ता (सी १२) ।

जुत्त वि [युक्त] १ संगत, उचित, योग्य (आया १, १६, चर २०) । २ संयुक्त, जोडा हुआ, मिला हुआ, संबद्ध (सूत्र १, १, १, भाच) । ३ उद्युक्त, किसी कार्य मे लगा हुआ (पव ६४) । ४ सहित, समन्वित (सूत्र १, १, ३, भाचा) । 'संखिज्ज न [संख्येय] सख्या-विशेष (कम्म ४, ७८) ।

जुत्ताणंतय पुन [युत्तानन्तक] गलना-विशेष (भणु २३४) ।

जुत्तासंखिज्ज देखो जुत्तासंखिज (भणु २३४) ।

जुत्ति की [युक्ति] १ योग, योजना, मोट, संयोग (बीप, आया १, १०) । २ ग्याय, उपसति (उप १५०, प्राप् ६३) । ३ साधन, हेतु (सूत्र १, ३, ३) । 'ण्ण वि [ज्ञ] युक्ति का जालदार (बीप) । 'सार वि [सार] युक्ति-प्रधान, पुन, ग्याय-संगत, प्रमाण-युक्त (उप ७२८ टी) । 'सुवण्ण न [सुवण्ण] बनावटी सोना (उप १०, ३६) । 'सेण पु [पेण] ऐरवत वर्ष के धट्टय जिन देव (सम १५३) ।

जुत्तिय वि [यौक्ति] गाडी बगैरह में जो नोता चाय, 'जुत्तियपुरगमाय' (सुपा ७७) ।

जुट देखो जुग्म = युद्ध (हुमा) ।

जुण देखो जुण (सुर १, २४४)

जुन्हा देखो जुण्हा (सुपा १५७) ।

जुप्प देखो जुंज जुप्पइ (हे ४, १०६) । जुप्पसि (कुमा) ।

जुम्म न [जुग्म] १ युगल, दोनो, उभय (हे २, ६२, कुमा) । २ पुं. सम राशि (बीप ४०७, ठा ४, ३—पत्र २३७) । 'पएसिय वि [आदेशिक] सम सब्ब प्रदेशो से निगम (भग २५, ४) ।

जुम्म न [जुग्म] परस्पर सापेक्ष दो पक्ष (सिंरि ३६१) ।

जुन्हं स [युष्मत्] द्वितीय पुरुष का वाचक सर्वनाम, 'जुम्हदम्हपवरण' (हे १, २४६) ।

जुमिह वि [दि] गहन, निबिड, सान्द्र, 'हुहुत्तुमिहपय' (दे ३, ४७) ।

जुव पु [युवन्] जवान, तरुण (हुमा) । 'राअ पु [राज] गद्दी का वारिस (उत्तराधिकारी) राजकुमार, भावी राजा (सुर २, १७५; अस्मि ८२) ।

जुवइ की [युवति] तरुणी, जवान की (हे १, ४, बीप, गउड, प्राप् ६३, कुमा) ।

जुवरा पु [युवराज] तरुण बैल (भाचा २, ४, २) ।

जुवरज न [यौवराज्य] १ युवराजपन (उप २११ टी, सुर १६, १२७) । २ राजा के मरने पर जब तक युवराज का राज्यान्तरिक न हुआ हो तबतक का राज्य (भाचा २, ३, १) । ३ राजा के मरने पर और युवराज के राज्यान्तरिक हो जाने पर भी जबतक दूसरे युवराज की नियुक्ति न हुई हो तबतक का राज्य (इह १) ।

जुवइ देखो जुगइ (स ४७८, पवम ६५, २३) ।

जुवल्लिय देखो जुगल्लिय (भग बीप) ।

जुवाण देखो जुन (पत्रम ३, १४६, आया १, १, कुमा) ।

जुवाणी देखो जुवई (पत्रम ८, १८४) ।

जुव्यण } देखो जोज्जण (प्राप् ४६,
जुव्यणत्त } ११६); 'पडमं चिय भावत्तं,
'ततो बुययत्तम्वणत्ता' (सुपा २४१) ।

जुसिअ वि [जुट] सेमित, 'पाएण देह सोगो उरगारिणु वरिषिअ न जुसिए वा' (ठा ४, ४) ।

जुहिट्टि } देवो जहिट्टिल (पिंग. उप
जुहिट्टिल } ६४८ टी. एणार १, १६—
जुहिट्टिल } पत्र २०८, २२६) ।

जुहु सक [हु] १ देना, भ्रंश करना । २
हवन करना, होम करना । जुहुणापि (ठा
७—पत्र ३८१, लि ४०१) ।

जूअ न [यूत] जूया, यूत (याम) । *र
वि [यर] जुमारी, जुए का सिलावो (गुया
५२२) । *रारि वि [कार] वही पुरोच
भयं (एणार १, १८) । *रारि वि [मारिन्]
जुमारी (महा) । *केलि की [कलि] यूस-
कीडा (रमण ४८) । *रलय न [रलयर]
जुमा लवने वा स्थान (राज) । *केलि
देवा 'केलि (रमण ४७) ।

जूअ पु [यूप] १ जुमा, धुर, गावी का भव्यक-
विरोध जो बैलो के कथे पर डाला जाता है,
जुमड (ठा पु १३६) । २ स्तम्भ विरोध,
'जूमसहस्र मुसल सहस्त व रससेवे' (कथ)
३ यज्ञ-स्तम्भ (ज ३) । ४ एक महापाताल-
मलश (पत्र २७२) ।

जूअअ पु [दे] चातक पत्ती (दे ३, ४७) ।

जूआग पु [यूपर] देवो जूअ = यूप (सम
७१) ।

जूआग पु [यूपर] सन्ध्या की प्रभा और चन्द्र
की प्रभा का मियण (ठा १०) ।

जूआ छो [यूफ] १ लूँ, पीलड, लटमल, लुड
कीट विशेष (जी १६) । २ परिमाण विशेष,
मात्र लिया का एक नाप (ठा ६, इर)
*सेलायर वि [राय्यातर] धूम्रामो की
स्थान देनेवाला (भा १४) ।

जूआर वि [यूतार] जुमारी, जुए का
खेलाही (रंभा, मवि, गुया ४००) ।

जूआरि } वि [यूरारिन्] जुमा खेले-
जूआरि } वासा, जुए का खेलाही (इ ४३,
गुया ४००, ४८८, स १४०) ।

जूक देवो जुमक = यूप । क. यूमियग्न (सिदि
१०२५) ।

जूट पु [जूट] कुन्नाल, केय-बलाग (दे ४,
२४, मरि) ।

जूय न [यूप] सगाढा ढा दिना वा उपवास
(संशोध ५८) ।

जूयय } पु [यूपर] शुक्ल पक्ष की द्वितीया
जूयय } भादि तीन दिनों में होनी चन्द्र की
कला और सन्ध्या के प्रकाश का मियण (मसु
१२०, पत्र २६८) ।

जूर सक [गह] निदा करना । जूरति (सूम
२, २, ५५) ।

जूर भक [क्रुय] क्रोध करना, गुस्सा करना ।
जूरह (हे ४, १३२, पड) ।

जूर घर [रिद] मद करना, धक्का मारना ।
जूरह (हे ४, १३२, पड) । जूर (कुमा) ।
मवि. जूरिहि (हे २, १६३) । चहु
जूरत (ह २, १६३) ।

जूर भक [जूर] १ झुगना, झुलना । २
खक, वष करना, हिला करना (राज) ।

जूरण न [जूण] १ झुलना, झुगना । २
निदा, गहण (पञ्च) ।

जूरय सक [यूच] ठगना, बचना ।
जूरह (हे ४, ६३) ।

जूरण वि [यूचन] ठगनेवाला (कुमा) ।

जूरायन न [जूण] झुगना, झोपण (मन
३, २) ।

जूरायिच वि [क्रोधित] क्रुड किया हुआ,
कोपित (कुमा) ।

जूरिज वि [रिज] खेद प्राप्त (याम) ।

जूरमिलय वि [दे] महन, निविड, सान्द्र
(हे ३, ४७) ।

जूल देवो जूर = क्रुष । जूल (गा ३५४) ।

जूय देवो जूय = यूत (एणार १, २—पत्र
७६) ।

जूय } देवो जूअ = यूप (इर, ठा ४,
जूयय } २) ।

जूम देवो जूमस (ठा २, १, बप्प) ।

जूस पुन [यूप] जूस, मूंग वगेरु वा क्वाय,
नदी (मोष १४७, ठा ३, १) ।

जूसअ वि [दे] जलित, पंचा हुआ (पड) ।

जूमगा छो [जोपगा] सेना (बप्प) ।

जूसिय वि [जुड] १ खेति (ठा २, १) ।
२ धपिन, सोण (बप्प) ।

जूह न [यूय] सभू जया (ठा १०, गा
२४८) । *यह पुं [पनि] सगृह का धरि-
पति, भूष का नायक (दे ६, ६८ एणार १,
१, गुया १३७) । *हिय पुं [पिचि]

पुत्रोंक हो भयं (गा ५४८) । *हियड
पुं [पिचिपति] गृध-नायक (उत्त ११) ।

जूह न [यूय] गुम, गुल, जोडा (भाचा २,
११, २) । *मम ॥ [काम] लगानार चार
दिनों का उपवास (संशोध ५८) ।

जूहिय वि [यूथेक] यूप में उपन (भाचा
२, २) ।

जूहियठाग न [यूथिन्स्थान] विवाह-मण्डप
बाली जगह (भाचा २, ११, २) ।

जूहिया छो [यूथिका] लता-विरोध, जूही
का पड (पण १, पत्र ५३, ७६) ।

जूही छो [यूथी] लता विरोध, मायवी लता
(कुमा) ।

जेअ, १ पाद-वृत्ति में प्रयुक्त किया जाता
अव्यय (हे २, २१७) । २ अवधारण-भूचक
अव्यय (उच) ।

जेअ वि [जेय] जीतने योग्य (रतिम ५०) ।

जेअ वि [जेत] जीतनेवाला (सूम १, ३, १,
१, १, ३, १, २) ।

जेअ वि [जेत] जीतनेवाला, विजेता (मम
२०, २) ।

जेअआण

जेअ } देवो जिंग = जि ।

जेऊण

जेकार पु [जयसार] 'जय-जय' धाराज
स्तुति, 'हुति देवाण जेकारो' (गा ३३२) ।

जेट्ट देवो जिट्ट = षष्ठ (हे २, १७२, महा
उवा) ।

जेट्ट देवो जिट्ट = षष्ठ (महा) ।

जेट्टा देवो जिट्टा (सम ८, भाष ४) । *मूल
पुं [मूल] जेठ मास (मोष एणार १,
१३) । *मूला छो [मूली] जेठ मास की
पूणिमा (मुज १०) ।

जेट्टामूल छ [जट्टामूल] १ जेठ मास की
पूणिमा । २ जेठ मास की अमावस्या (मुज
१०, ६) ।

जेग देवा जडण = जेव (सम्मत ११७) ।

जेण घ [जन] सण-मूचर अण्य, 'मनररधं
अण बभनरधं' (ह २, १८३, कुमा) ।

जेच वि [यान] निजना । छो. *सो
(हाय १३०) ।

जेत्त देखो जइत्त (वि ६१) ।

जेत्तिअ } वि [यावत्] जितना (हे २,
जेत्तिल } १५७, ना ७१, गखड) ।

जेत्तिक (शी) ऊपर देखो (प्राक् १५) ।

जेत्तुल } (अप) ऊपर देखो (हे ४, ४३५) ।
जेत्तुल्ल }

जेइह देखो जेत्तिअ (हे २, १२७, प्राप्र) ।

जेम सक [जिम्, भुज्] भोजन करना ।

जेमइ (हे ४, ११०, पइ) । वक्र. जेमंत
(पञ्च १०३, ८५) ।

जेम (अप) अ [यथा] जैवे, जिस तरह से
(सुपा ३८३, भवि) ।

जेमण } न [जिमेन] जीमन, भोजन (भोप
जेमणग } ८८ प्रीप) ।

जेमणय न [दे] दक्षिण भ्रम, गुजरातो मे
‘जमणु’ (दे ३, ४८) ।

जेमणी श्री [जिमनी] जीमन (सबोध
१७) ।

जेमाउन न [जिमन] भोजन कराना, खिलाना
(भग ११, ११) ।

जेमाथिय वि [जिमित] भोजित, जिसको
भोजन कराया गया हो वह (उप १३६ टी) ।

जेमिय वि [जिमित] जीमा हुआ, जिसने
भोजन किया हो वह (एपाया १, १—पञ
४१ टी) ।

जेयव्य देखो जिण = जि ।

जेव (शी) देखो एव = एव (रमा, कम्पू) ।

जेयँ (अप) देखो जियँ (हे ४, २६७) ।

जेयड (अप) देखो जेत्तिअ (हे ४, ४०७) ।

जेठन (शी) देखो एव = एव (मि, नाट) ।

जेह (अप) वि [यादह] जैहा (हे ४,
४०२, पइ) ।

जेहिल पुं [जिहिल] स्वनाम ध्यात एक जैन
मुनि (कण्) ।

जो } स [टश] देवता । जोइ (अप),
जोअ } ‘एसा हु’ एकवर्क, जोपइ गृह सुँग्रह
जेण’ (सुर ३, १२६) । जोयँति (स ३६१) ।
जमँ, जोअइ (रमण ३२) । वक्र. जोअत
(रमण ११ टी, महा सुर १०, २४४) ।
वक्रक. जोइजंत (सुपा ५७) ।

जोअ भव [धुत्] प्रसारित होना, भव-

कना । जोइ (कुमा) । मुगा, जोईधु
(मग) । वक्र. ‘जोअंत (कुमा, महा) ।

जोअ सक [योतय्] प्रकाशित करना ।

जोअइ (सुप्र १, ६, १३), ‘वत्सवि य

गिह पुण बानपंधिया जोयए दुहिया’ (सुपा
६११) । जोएज्जा (विपे ६१२) ।

जोअ सक [योजय्] १ समाप्त करना,
खतम करना । २ करना । जोएइ (सुज्ज
१०, १२—पञ १८०, १८१, सुज १२—
पञ २३३) ।

जोअ सक [योजय्] जोहना, युक्त करना ।
जोएइ (महा) । वक्र. जोइयन्त्र, जोएअअ
जं यणिय, जोयणिज्ज (उप ५६६, स
५६८, श्रीप, निज् १) ।

जोअ पुं [दे] १ चद्र, चन्द्रमा (दे ३, ४८) ।
२ युजल, युम (एपाया १, १ टी—पञ
४३) ।

जोअ देखो जोग (अवि २५, स ३६१,
कुमा) । ‘वडय न [वटक] चूणं विशेष,
पाचक चूणं, हाजमा (स २५२) ।

जोअंगण [दे] देखो जोईंगण (अवि) ।

जोअग वि [योतक] १ प्रकाशनेवाला २ न.
व्याकरण प्रसिद्ध निपात वीरह पद (विपे
१००१) ।

जोअड पुं [दे] लघोत, कीट-विशेष, जुगट्
(पइ) ।

जोअण न [दे] मोचन, नेत्र, चक्षु, शील
(दे ३, ५०) ।

जोअण न [योजन] १ परिमाण विशेष, चार
कोश (भग, इक) । २ संकथ, संयोग, जोहना
(पइह १, १) ।

जोअण न [योजन] युवावस्था, तहलता,
जवानी (उप १४२ टी, गा १६७) ।

जोअणा श्री [योजना] जोहना, संयोग
करना (उप पु २२१) ।

जोअा श्री [चो] १ स्वयं । २ भ्राताय
(पइ) ।

जोआइसु वि [योजयि] जोहनेवाला,
संयुक्त करनेवाला (अ ४, ३) ।

जोइ वि [योगिन्] १ युग, संयोगवाला ।
२ चित्त विशेष करनेवाला, समाधि सम्पन्ने-
वाला । ३ पुं. मुनि, यति, साधु (सुपा २१६,

२१७) । ४ रामचन्द्र का स्वनाम ध्यात एक
मुनि (पञ्च ६७, १०) ।

जोइ पुं [योतिस्] १ प्रकार, तेज (भग;
अ ४, ३) । २ अग्नि, वहि, ‘तप्ति जहा
बहा पडियं जोइमज्जे’ (सुप्र १, १३) । ३
प्रदीप आदि प्रकाशक वस्तु, ‘जहा हि अये सह
जाइणावि’ (सुप्र १, १२) । ४ अग्नि का
काम करनेवाला कल्पवृक्ष (सम १७) । ५
ग्रह. नक्षत्र आदि प्रकाशक पदार्थ (चद १) ।
६ ज्ञान । ७ ज्ञान युक्त । ८ प्रसिद्धि-युक्त ।
९ सत्कर्म-कारक (अ ४, ३) । १० स्वर्ग ।
११ ग्रह. वगैरह का विमान (राज) । १२
व्योतिष-शास्त्र (निर ३, ३) । ‘अग पु’
[‘अङ्ग] अग्नि का काम करनेवाला कल्प-
वृक्ष-विशेष (अ १०) । ‘रस न [‘रस]
रस की एक जाति (एपाया १, १) । देखो
जोइस = व्योतिस् ।

जोइअ पुं [‘रे] कीट विशेष, लघोत, जुगट्,
पन्थीजना (दे ३, ५०) ।

जोइअ वि [‘ट्ट] देता हुआ, विलोपित (सुर
३, १७३, महा भवि) ।

जोइअ वि [योजित] जोइा हुआ (स
२६४) ।

जोइअ देखो जोगिय (राज) ।

जोइंगण पुं [‘दे] कीट-विशेष, इन्द्र गोप (दे
३, ५०) ।

जोइह पुन [व्योतिष्क] प्रदीप आदि प्रका-
शक पदार्थ वि मूलसं दसहादिपमे नाइक्क-
तर भवेसीयदि’ (रमा) ।

जोइकप पुं [‘दे. व्योतिष्क] १ प्रदीप, दीपक
(दे ३, ५६, एव ४, व ७) । २ प्रदीप
आदि का प्रकाश (भोप ६५३) ।

जोइणी श्री [योगिनी] १ योगिनी, सन्मा-
सिनी । २ एक प्रकार की देवी, दे. वीसठ हैं
(संति ११) ।

जोइर वि [‘दे] स्वतित (दे ३, ५६) ।

जोइस न [‘दे] नक्षत्र (दे ३, ५६) ।

जोइस देखो जोइ = व्योतिष्क (चद १, कण्,
विपे १८००, जो १, अ ६) । ‘शय पु’
[‘राज] १ मूर्ध । २ चद्र (सुप्र २०, १८) ।
‘लिय पुं [‘लिय] मूर्ध आदि देव (उत्त
३६) ।

जोइस पुं [ज्योतिष] १ देवो की एक जाति, सूर्य, चन्द्र, ग्रह आदि (कल्प, धीप, बंड २७)। २ न. सूर्य आदि का विमान (वि १२, जो १)। ३ शास्त्र-विशेष, ज्योतिष-शास्त्र (उत्त २)। ४ सूर्य आदि का चक्र। ५ सूर्य आदि का मार्ग, यात्रा, 'जे महा जाइसमि चारं चरति' (परा २)।

जोइस पुं [ज्योतिष] १ सूर्य, चन्द्र आदि देवो की एक जाति (कल्प, पंचा २)। २ वि. ज्योतिष शास्त्र का जानकार, जोतिषी (सुभा १५६)।

जोइसिअ वि [ज्योतिषिक] १ ज्योतिष शास्त्र का ज्ञाता, दैवज्ञ, जोतिषी (म २२, सुर ४, १००; सुभा २०३)। २ सूर्य, चन्द्र आदि ज्योतिष देव (सीप, जो २४, परा २)। 'राज पुं [राज] १ सूर्य, रवि। २ चन्द्रमा (परा २)।

जोइसिंद पुं [ज्योतिरिन्द्र] १ सूर्य, रवि। २ चन्द्र, चन्द्रमा (ठा ६)।

जोइसिण पुं [ज्योतिस्त्र] शुक्ल पक्ष (जो ४)।

जोइसिणा की [ज्योतिस्त्रा] चन्द्र की प्रमा, चन्द्रिका, चादनी (ठा २, ४)। पक्षस पुं [पक्ष] शुक्ल पक्ष (चंद १५)। भा की [भा] चन्द्र की एक मध-माहिणी (भा १०, ५)।

जोइसिणी की [ज्योतिषी] देवो-विशेष (परा १७—पत्र ४६६)।

जोई की [दे] विष्णु, विजली (दे ३, ४६, पद)।

जोईसर देवो जोइ-रस (कल्प, जीव ३)।

जोईस पुं [योगीश] योगीन्द्र, योगि-न्याज (स १)।

जोईसर पुं [योगीश्वर] ऊपर देवो (सुभा २३, रमण ६)।

जोइकण्य न [योगकर्ण] योग-विशेष (सुज १०, १६ दी)।

जोइरणिणय न [योगकर्णिण] योग विशेष (सुज १०, १६)।

जोकार देवो जेकार (ग ३३२ म)।

जोकर वि [दे] मलिन, अपवित्र (दे ३, ४८)।

जोग देवो जुग = युग, 'नपाज्याजोग समाजुतं' (राय ४०)।

जोग पुं [योग] नक्षत्र-समूह का क्रम से चन्द्र और सूर्य के साथ संबंध (सुज १०, १)।

जोग पुं [योग] १ व्यापार, मन-वचन और शरीर की चेष्टा (ठा ४, १, सम १०; स ४००)। २ चित्त-विशेष, मन-अणिबलन, समाधि (पत्रम ६८, २३, उत्त १)। ३ धरा करने के लिए या पावन आदि वना के लिए केंद्रा जाता पूर्ण-विशेष, 'जोगो मद्रोह-करो सीधे छितो इमाण सुताण' (सुर ८, २०१)। ४ सम्बन्ध, संयोग, मेमन (ठा १०)। ५ स्थित वस्तु का नाम (छाया १, ५)। ६ शब्द का अर्थवार्थ-सम्बन्ध (भास २४)। ७ बल, बौर्य, पराक्रम (कर्म ५)। 'कस्मिन् न [चोम] स्थित वस्तु का नाम धीर उसना सरलण (छाया १, ५)। ८ य वि [स्थ] योग-निष्ठ, ध्यान-लीन (पत्रम ६८, २३)। ९ पुं [स्थ] शब्द के अर्थवार्थ का मर्म, व्युत्पत्ति के अनुसार शब्द का अर्थ (भास २४)। 'दिष्टि की [टटि] चित्त-निष्ठ से उत्पन्न होनेवाला मान-विशेष (राज)। 'धर वि [धर] समाधि में कुशल, योगी (पत्रम ११६, १७)। 'परि-व्याख्या की [परिभाषिका] समाधि-प्रदान शक्ति-विशेष (छाया १, ६)। पिंड पुं [पिण्ड] बरीकरण आदि के प्रयोग से प्राप्त की हुई मित्रा (पंचा १३, निष्ठ १३)। 'सुदा की [सुदा] हाथ का विन्यास-विशेष (पंचा ३)। 'व वि [वन्] १ शुभ प्रवृत्तिवाला (सूत्र १, २, १)। २ योगी, समाधि करनेवाला (उत्त ११)। 'वाहि वि [वाहिन] १ शास्त्र ज्ञान की आराधना के लिए शास्त्रोक्त तपस्याओं को करनेवाला। २ समाधि में रहनेवाला (ठा ३, १—पत्र १२०)। 'विधि पुं की [विधि] शास्त्रों की आराधना के लिए शास्त्र-निर्दिष्ट अनुष्ठान, तपश्चर्या-विशेष, 'इय वृत्तो योगविही', 'एवा योगविही' (अंग)। सत्य न [शास्त्र] चित्त-विशेष का प्रतिपादक शास्त्र (उत्तर १६०)।

जोग पुं [योग] योग्य, उचित, लाभक (ठा ३, १, सुभा २८)। २ प्रभु, समर्थ, शक्तिमान् (निष्ठ २०)।

जोगा की [दे] बाहु, कुरामद, (दे ३, ४६)।

जोगा की [योग्या] १ शास्त्र का प्रख्यात (मग ११, ११, जं ३)। २ गर्भ-धारण में समर्थ योगि (हंड)।

जोज देवो जोअ = योग्य। भवि, जोज-हस्तामि (सूत्र १३०)। क्रि. जोज (उत्त २७, ८)।

जोड सक [योजय] जोडना, संयुक्त करना। बड़, जोडेत (सुर ४, १६)।

बड़, जोडिऊण (महा)।

जोड पुं [दे] १ नक्षत्र (दे ३, ४६; नि ६)। २ योग-विशेष (सण)।

जोड (मप) की [दे] जोडी, युगल, 'परिस जोड न जुत' (सूत्र ४४३)।

जोडिअ पुं [दे] व्याप, बहेलिया, बिडीमार (दे ३, ४६)।

जोडिअ वि [योजिन] जोडा हुआ, संयुक्त किया हुआ (सुभा १४६, ३५१)।

जोण पुं [योन, यधन] स्नेह्य देश-विशेष (छाया १, १)।

जोणि की [योन] १ उपति-स्थान (मग, स ८२, प्राप् ११५)। २ वारण, हेतु, उपाय (ठा ३, ३, पंचा ४)। ३ जीव का उत्पत्ति-स्थान (ठा ७)। ४ जी-वन्त, मग (मणु)। 'विद्यान न [विद्यान] उत्पत्ति-

जोगोपुण होइ ब्रह्मरूपे' (धम्म १२; सुर २, २०५; महा, सुभा २०८)।

जोगि देवो जोइ = योगिन् (कुमा)।

जोगिंद पुं [योगिन्द्र] महान् योगी, योगीश्वर (रमण २६)।

जोगिणी देवो जोइणी (सुर ३, १८६)।

जोगिय वि [योगिक] दो पदों के सम्बन्ध से बना हुआ शब्द, जैसे—उप-करोति, अग्नि-प्रेषयति (परा २, २—पत्र ११५)। २ अग्नि-अवगम से बना हुआ (उप वृ ६४)।

जोगीसर देवो जोइसर (स २०१)।

जोगेसी की [योगेश्वर] देव विशेष (सण)।

जोगेसी की [योगेशी] विद्या-विशेष (पत्रम ७, १४२)।

जोग्य वि [योग्य] योग्य, उचित, लाभक (ठा ३, १, सुभा २८)। २ प्रभु, समर्थ, शक्तिमान् (निष्ठ २०)।

जोग्या की [दे] बाहु, कुरामद, (दे ३, ४६)।

जोग्या की [योग्या] १ शास्त्र का प्रख्यात (मग ११, ११, जं ३)। २ गर्भ-धारण में समर्थ योगि (हंड)।

जोज देवो जोअ = योग्य। भवि, जोज-हस्तामि (सूत्र १३०)। क्रि. जोज (उत्त २७, ८)।

जोड सक [योजय] जोडना, संयुक्त करना। बड़, जोडेत (सुर ४, १६)।

बड़, जोडिऊण (महा)।

जोड पुं [दे] १ नक्षत्र (दे ३, ४६; नि ६)। २ योग-विशेष (सण)।

जोड (मप) की [दे] जोडी, युगल, 'परिस जोड न जुत' (सूत्र ४४३)।

जोडिअ पुं [दे] व्याप, बहेलिया, बिडीमार (दे ३, ४६)।

जोडिअ वि [योजिन] जोडा हुआ, संयुक्त किया हुआ (सुभा १४६, ३५१)।

जोण पुं [योन, यधन] स्नेह्य देश-विशेष (छाया १, १)।

जोणि की [योन] १ उपति-स्थान (मग, स ८२, प्राप् ११५)। २ वारण, हेतु, उपाय (ठा ३, ३, पंचा ४)। ३ जीव का उत्पत्ति-स्थान (ठा ७)। ४ जी-वन्त, मग (मणु)। 'विद्यान न [विद्यान] उत्पत्ति-

शास्त्र (विसे १७७५) । 'सुल न [शुल]
योनि का एक रोग (एया १, १६) ।

जोणिय वि [योनिक्, यननिक्] अनायं
देश विशेष से उत्पन्न । छी. 'या (इक,
श्रीप, एया १, १—पय ३७) ।

जोणल्लिआ छी [दे] अन्न विशेष, जुधारि,
जोहरी (दे ३, ५०) ।

जोण्ह वि [उयैस्स] १ शुक्र, श्वेत, 'कालो
वा जोएहो वा बेणुणुमावेण चदस्स' (सुज
१६) । २ पुं, शुक्र पत्त (जो ४) ।

जोण्ह स्त्री [उयोस्सता] अन्न प्रकार (पइ,
काम्र १६७) ।

जोण्हल वि [उयोस्सतान्] उयोस्सा
वाला, अन्निकायुक्त (हे २, १५६) ।

जोस देखो जुत्त = युक्त (हुप्र १८१) ।

जोत्त } न [योक्त्र, क] जोत्त, रस्सी या
जोत्तय } बन्दे का तन्मा, जिससे बेल या
घोडा, गायी या हल में जोता जाता है
(पएह २, ५, या १६२) ।

जोय देखो जोअ = हट् । जोयह (महा, भवि) ।

जोय पु [दे] १ विन्दु । २ वि. स्वीक,
घोडा (दे ३, ५२) ।

जोयण न [दे] १ यन्त्र, कल, 'आउज्जोवण'
(शोध ६० भा) । २ धान्य का मर्दन, अन्न-
मलन (शोध ६० भा) ।

जोयारि स्त्री [दे] अन्न-विशेष, जुधारि (दे
३, ५०) ।

जोयिय वि [हट्ट] विवोन्ति (स १४७) ।

जोव्वण न [यौनन] १ तास्सण, जवान्नी
(आप्र वण्) । २ मध्य भाग (मि २, १) ।
जोव्वणणीर } न [दे] वय-परिणाम, वृद्धत्व,
जोव्वणवेअ } वृद्धता 'जोव्वणणीर तह-
णुत्ते वि विज्जिअदिवाण पुत्तिआण' (दे
३, ५१) ।

जोव्वणिया स्त्री [यौवनिक्] यौवन,
जवान्नी (राय) ।

जोउणोवय न [दे] वृद्धता, वृद्धत्व, जरा
(दे ३, ५१) ।

जोस देखो जुम्म = जुप् । वहु. जोसंत
(राज) । प्रयो, सङ्ग, जोसियाण (वव ७) ।
जोस पु [फोप] अवसान, अन्त (सूय १,
२, १, २ टि) ।

जोसिअ वि [जुट्ट] सेवित (सूय १, २, ३) ।

जोसिआ स्त्री [योपित्] स्त्री, महिला,
नारी (पइ, धर्म २) ।

जोसिणी देखो जोण्ह (भवि ११) ।

जोह भक् [युध्] सङ्गा । जोहह (भवि) ।

जोह पु [योध] युद्ध, योद्धा (श्रीप, कुमा) ।

'ट्ठाण न [स्थान] मुमटो का युद्ध कालीन
शरीर विन्यास, भग रचना-विशेष (आ १;
निबु २०) ।

जोहणा देखो जोण्ह (मै ७१) ।

जोहा स्त्री [योधा] जुज-परिसर की एक
जाति (सूय २, ३, २५) ।

जोहार सक [दे] जुहारना, जोहार करना,
प्रणाम करना । कर्म जोहारिज्जइ (आक
२५, १३) ।

जोहार पु [दे] जोहार, प्रणाम (पय ३८) ।

जोहि वि [योधिन्] लङ्घनेवाला, मुभट
(पय ७१) ।

जोहिया स्त्री [योधिन्] लङ्घनेवाला, लङ्घयेया
(मीर) ।

जोहिया स्त्री [योधिन्] लङ्घनेवाला, लङ्घयेया
(मीर) ।

जोहिया स्त्री [योधिन्] लङ्घनेवाला, लङ्घयेया
(मीर) ।

जोहिया स्त्री [योधिन्] लङ्घनेवाला, लङ्घयेया
(मीर) ।

॥ इम तिरिपाइअसदमहण्णयस्मि जप्रापइत्तहकलखो
सोसहो तरीगी समथो ॥

भ

भ पुं [भ] १ तानु-स्पर्शनीय व्यञ्जन वर्ण-
विशेष (आमा, प्राप) । २ ध्यान (विसे
३१६८) ।

भंनर पु [मन्हार] वृद्ध वयस्क की आवाज
(गुर २, १८, पडि, सण) ।

भंफारिअ न [दे] भयचयन, भूय वयस्क का
आवाज या कुन्ना (दे ३, ५६) ।

भल्ल सक [दे] स्वीकार करना । भल्लह
(भय) (तिरि ८६५) ।

भंर भक् [सं + तप्] संकल्प होना, संताप
करना । भंरह (दे ४, १४०) ।

भंर भक् [वि + लप्] विताप करना,
बचवाद करना । भंरह (दे ४, १४८) ।
भट्. भंरन (हुमा) ।

'भणनावाभो गहिपीमुभो भल्लह नरेत्त [एस पुव] ।
सोभोवि भणइ भल्लसि तुवेव बहुलोहगदगहिपो'
(या १५) ।

भंय सक [उपा + लभ्] उपार्जन देना,
उत्ताहना देना । भंरह (दे ४, १५६) ।

भंर भक् [निर् + भस्] निश्चाय लेना ।
भंरह (दे ४, २०१) ।

मंर वि [दे] तुष्ट, संतुष्ट, खुश (दे ३, ५३)।
मंरग न [उपालम्भ] उपालम्भ, उपाहना (कुमा)।

मंरर पुं [दे] शुक्ल तर, सूखा पेठ (दे ३, ५४)।

मंररिअ [दे] देखो मंररिअ (दे ३, ५६)।

मंररायण वि [संतापन] संताप करनेवाला (कुमा)।

मंररिअ वि [नि.भसिद] नि.भस लेनेवाला (कुमा ७, ४४)।

मंर पुं [मंभ] कलह, झगडा (सम ५०)।

कर वि [कर] कलहकारी, कूट करानेवाला (सम १७)।

पत्त वि [प्राप्त] कलेश प्राप्त (सम १, १३)।

मंरग न [मंरगाय] 'मन-मन' मंरगण ३ शब्द करना। 'मंरगण' (गा ५७५ म)। मंरगणकद (पिंग)।

मंरगा की [मंरगना] 'मन-मन' शब्द (गठ)।

मंसा की [मंरसा] वाद्य-विशेष, मंर, फाल (राय ५० टी)।

मंसा की [मंरसा] १ प्रचण्ड वायु-विशेष (गा १७० सण)। २ कलह, कलेश, झगडा (उप, वृह ३)। ३ मामा, कपट। ४ जोष, दुस्सा (सम १, १३)। ५ लुप्या, लोभ (सम २, २)। ६ व्याकुलता, व्यग्रता (भावा)।

मंरगि वि [मंरगित] कुपुडित, भ्रुवा (गणाय १, १)।

मंर सक [भ्रम] धूमना, फिरना। मंरद (दे ४, १९१)।

मंर सक [शुद्ध] शुद्धारव कला। वक्र. 'मंरतमनिरमरतममालियं मालियं गदित' (सुपा ५२६)।

मंरग न [भ्रमण] पर्वत, परिभ्रमण (कुमा)।

मंरगिअ की [दे] चक्रमण, कुटिल गमन (दे ३, ५५)।

मंरगि वि [दे] जिस पर प्रहार किया गया हो वह, प्रहत (दे ३, ५५)।

मंरी की [दे] छोटा किल्ला ऊँचा केश-कलाप (दे ३, ५३)।

मंरुली की [दे] मसती, कुचटा (दे ३, ५४)।
मंरुअ पुं [दे] वृक्ष-विशेष, पीलु का पेठ (दे ३, ५३)।

मंरुली की [दे] मसती, कुचटा। २ लीडा, खेल (दे ३, ६१)।

मंरुयि वि [दे] प्रदुत, पलायित, भगाया हुआ (पद)।

मंर सक [भ्रम] धूमना, फिरना। मंरद (दे ४, १९१)।

मंर सक [आ + च्छादय] मंरपना, आच्छादन करना, डकना। मंरद (पिंग)।

संर. मंरिअण, मंरिपि (कुमा. मवि)।

मंर सक [आ + क्रामय] क्रामण क-वाना। मंरद (प्राठ ७०)।

मंरण वि [भ्रमण] भ्रमण-कर्ता (कुप्र ४)।

मंरण न [भ्रमण] परिभ्रमण, पर्वत (कुमा)।

मंरण की [दे] वस्त्र, धात की बरीनी, धात के बाल (दे ३, ५४, पाठ)।

मंरा की [मंरपा] एकदम कूटना, मंरपा पात (सुपा १६८)।

मंरिअ वि [दे] १ दुष्टि, दूटा हुआ। २ पट्टि, मादत (दे ३, ६१)।

मंरिअ वि [आच्छादित] मंरा हुआ, बंद किया हुआ (पिंग), 'पर्ववप्रो मंरिपो कति' (महा), 'तपो एवं मणमणस सहस्रेण' मंरिअं मृदुहृद सुमदस एवावलेण' (महानि ४)।

मंरिअ न [दे] वचनीय, लोक-निदा (दे ३, ५; मवि)।

मंरर देखो मंरर = वि + सप्। वक्र. मंररत (वय २३)।

मंरग पुं [दे] मंरग, कलह (सुपा ५४६; ५४७)।

मंरगुली की [दे] प्रसिद्धारिवा, प्रिय से मिलने के लिए संकेत स्थान पर जानेवाली की या स्थापिका (विक १०१)।

मंरमर पुं [मंरमर] १ वायु-विशेष, मंरि। २ पट्ट, डोल। ३ कलि-युग। ४ नव-विशेष (पि २४७)।

मंरमरिय वि [मंरमरित] वायु विशेष के शब्द से युक्त (ठा १०)।

मंरमरी की [दे] दूसरे के स्वर्ग की रोक्ने के लिए बांझ लोग जो लकड़ी अपने पास रखते हैं वह (दे ३, ५४)।

मंर सक [शुद्ध] १ मंरना, पके फल खादि का मिरना, टपकना। २ हीन होना। ३ सक. मंरत मारना, गिराना। मंरद (दे ४, १९०)।

वक्र. मंरत (कुमा)। कथ. 'वासातु सीम-बाएहि मंरिजतो' (प्राव १)। संर. 'मंरि-अण पल्लविला, पुणोहि जायति तचरवा तुरियं'।

वीराणवि घणरिडी, गमावि न हु दुल्ला एव' (वय ७२८)।

मंरसि म [मंरसि] शीघ्र, जल्दी, तुरंत, (वय ७२८ टी. महा)।

मंरप म [दे] शीघ्रता, जल्दी (वय पु ११०, २भा)।

मंरप सक [आ + छिद] मंरपना, मंरत धारना, छीनना। मंरपमि (मवि)। संर. मंरपिपि (मवि)।

मंरपपड न [दे] मंरप, मंरसि, शीघ्र (दे ४, ३८८)।

मंरपिअ वि [आच्छिन्न] छीना हुआ (मवि)।

मंरि म [मंरसि] शीघ्र, जल्दी, तुरंत, 'मंरि मणपल्लव पुणो' (गा ६१३)।

मंरिअ वि [दे] १ शिथिल, डीला, सुल (गा २३०)। २ धात, विन्न, (पद)। ३ मंर हुआ, गिरा हुआ, 'करज्जाममिद-पमिसउले' (पठप ६६, १५)।

मंरिअ देखो मंरिअ (सुप्र २, ४)।

मंरिअ देखो मंरिअ (दे १, १६४)।

मंरी की [दे] निरंतर दृष्टि, मंरी, कुचराती में 'मंरी' (दे ३, ५३)।

मंर सक [जुगुप्स] घृणा करना। मंरद (पद)।

मंरगमग सक [मंरगगाय] 'मन-मन' धातन करना। वक्र. मंरगमग्यात (प्राव)।

मंरगमगिअ वि [मंरगमगित] 'मन मन' धातनवाला (पिंग)।

मंरगमग देखो मंरगमग। मंरगमग (वय ६६)।

मंरगमगारव पुं [मंरगमगारव] 'मन-मन' धातन (महा)।

मगभणिय देखो मगभणिय (सुपा ५०) ।
 भणि देखो भुणि (रंभा) ।
 भत्ति देखो भट्टत्ति (हे १, ४२, पङ्; महा-
 सुर २, १) ।
 भत्थ वि [दे] गत, गया हुआ । २ नष्ट (दे
 ३, ६१) ।
 भपिअ वि [दे] पर्यस्त, उल्लिखित (पङ्) ।
 भप्य देखो भग । भपइ (पङ्) ।
 भमाल न [दे] हृदयजाल, माया-जाल (दे ३,
 ५३) ।
 भय पुंली [ध्वज] ध्वज, पताका (हे २, २७,
 ग्रीव) । जी, या (ग्रीव) ।
 भर भक [क्षर] करना, टपकना, धुना,
 निरना । भरइ (हे ४, १७३) । बहू. भरंत
 (कुमा, सुर ३, १०) ।
 भर सक [रह्य] याव करना । भरइ (हे ४,
 ७४, पङ्) । क. भरेयवज (बृह १) ।
 भरंक } पुं [दे] पुण का बनाया हुआ
 भरंत } पुण्य, चढा (दे ३, ५५) ।
 भरा वि [भारक] चिन्तन करनेवाला, ध्यान
 करनेवाला, 'भरणी करी भरनै पमावणी
 साणदसणपुणाय' (एहि) ।
 भरभर पुं [भरभर] निर्भर या करना
 बाहि वा 'भर-भर' प्रावान (सुर ३, १०) ।
 भरण न [क्षरण] करना, टपकना, पतन
 (यव १) ।
 भरणा बी [क्षरणा] ऊपर देगो (प्रावम) ।
 भरय पु [दे] सुवर्णहार, सोनार (दे ३, ५४) ।
 भरय वि [क्षरित] टपका हुआ, गिरा हुआ,
 पतित (वर, प्रोप ७६०) ।
 भरउ पु [दे] मशर, मच्छर (दे ३, ५४) ।
 भरुकिअ वि [दग्ध] जला हुआ, भस्मीभूत-
 'जमपुण्ड्रविहानननालोनिभस्रियं द्विष्ये'
 (सुपा ६५७, हे ४, ३६५) ।
 भरुमल भक [जाउल] मलकना, चम-
 कना, दीपना । वट. भरुमलंत (भवि) ।
 भरुमलआ बी [दे] मोनी, नौबली, बेसी
 (दे ३, ५६) ।
 भरुहल देखो भरुमल । भरुहलइ (सुपा
 १८६) । वट. भरुहलंत (भा ३८) ।

भरुहलिय वि [दे] सुव्य, विचलित, 'पर-
 हरियवर भरुहलियसायर चलियसयलकुलसेल'
 (कुलक ३३) ।
 भरुली बी [दे] भुगलुपणा, धूप में जल-दान,
 व्यर्थ तुलना (दे ३, ५३, पाप) ।
 भरुलिकिअ वि [दे] दग्ध, जला हुआ (दे
 भरुलिसिअ ३, ५६) ।
 भरुली बी [भरुली] वसयाकार वाद्य-विशेष,
 हुड्डय बाजा, काल, भालर (ठा १०, प्रोप, सुर
 ३, ६६, सुपा ५०, कल्प) ।
 भरुली बी [दे] बाजा, बकरी (बंद) ।
 भरुलियमल्लिअ वि [दे] संपूर्ण, परिपूर्ण, भरपूर
 (बीव) ।
 भरुणा बी [क्षपणा] १ नाट, विनाश (विते
 ६६१) । २ ग्रथयन, पठन (विते ६५८) ।
 भरु पु [भर] १ एक देवविमान (देवेन्द्र
 १४०) । २ एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ११) ।
 भरु पु [भर] १ मरह्य, मछली (पहू १,
 १) । २ 'चिधय पुं [चिहक] कामदेव,
 स्मर (कुमा) ।
 भरु पुं [दे] १ ग्रथय, क्षपकीर्ति । २ तट,
 विनारा । ३ वि. तटस्थ, मध्यस्थ । ४ धीर्य-
 गभीर, लम्बा भीर गभीर, बहुल गह्वर (दे
 ३, ६०) । ५ टंक से छिन्न (दे ३, ६०,
 पाप) ।
 भरुय पु [भरुय] छोटा मरह्य (दे २, ५७) ।
 भरुय पुन [दे] सख-विशेष, श्राप्य-विशेष,
 'वरुमरुतसतसन्त-ल' (पवज ८, ६५) ।
 भरुसिअ वि [दे] १ पर्यंत, उल्लिखित । २
 भारु, जिसपर बाजोस किया गया हो वह
 (दे ३, ६२) ।
 भरुसिध पु [भरुसिध] वाम, स्मर (कुमा) ।
 भरुसुर न [दे] १ ताम्बूल, पान (दे ३, ६१;
 गडक) । २ धर्म (दे ३, ६१) ।
 भरु स [ध्वे] चिन्ता करना, ध्यान करना ।
 भाद, भापइ (हे ४, ६) । वट. भायत,
 भायमाण (भारु. मर) । रंष्ट. भाऊण
 (भास ११०) । हेरु. भाइचण (मन) । इ.
 भायल, भेय, भाइयल, भायणयल
 (कुमा. भास ७८, भास ४, ति १०, सुर
 १४, ८५) ।

भाइ वि [ध्यायिग] चिन्तन करनेवाला,
 ध्यान करनेवाला (भाचा) ।
 भाइअ वि [ध्यात] चिन्तित (तिरि १२५५) ।
 भाइ उ वि [ध्यात] ध्यान करनेवाला, चिन्तन
 (भाव ४) ।
 भाइ न [दे. भाट] १ लता-गहन, निहुड़,
 काही (दे ३, ५७, ७, ८४, पाप, सुर ७,
 २४३) । २ वृक्ष, देड़, 'भाप्रली भाइमेमिम'
 (दे १, ६१), 'विटो य तए पोमाइगभाइयस'
 इयमि एएले विणिगमो पायमो' (स १४४) ।
 भाइण न [भाइण] १ भोग, क्षय, शीतला ।
 २ प्रसूतोत्त, भाइना (राज) ।
 भाइल न [दे] कर्पास-फल, डोहो, कपास (दे
 ३, ५७) ।
 भाइवण बीन [भाइण] मछलाना, सफा
 कराना, मार्जन कराना । बी, 'गी (सुपा
 ३७३) ।
 भाण वि [ध्यान] ध्यानकर्ता (धु १२८) ।
 भाण पुन [ध्यान] १ चिन्ता, विचार,
 उत्कण्ठानुषंग स्मरण, सोच (भाव ४; ठा
 ४, १, हे २, २६) । २ एक ही वस्तु में
 मन की स्थिरता, ली लगाना (ठा ४, १) ।
 ३ मन शक्ति की चेष्टा का निरोध । ४ हड़
 प्रयत्न से मन वहीरहा वा ध्यापार (विते
 ३०७१, ठा ४, १) ।
 भाणवरिया बी [ध्यातानवरिका] १ दो
 ध्यानों का मध्य भाग, वह समय जिसमें
 प्रथम ध्यान की समाप्ति हुई हो और दूसरे
 का आरम्भ जबतक न किया गया हो और
 अन्य अनेक ध्यान करने के वाकी हो (ठा ६,
 मग ५, ४) । २ एक ध्यान समाप्त होने पर
 शेष ध्यानों में किसी एक को प्रथम प्रारंभ
 करने का विमर्श (बृह १) ।
 भाणि वि [ध्यानिन] ध्यान. करनेवाला
 (धारा ८६) ।
 भास स [दे] जलाना, दाढ़ देना, दग्ध
 करना । भापइ (सूम २, २, ४४) । वट.
 भासंत (सूम २, २, ४४) ।
 भास वि [दे] दग्ध, जला हुआ (भासा २,
 १, १) । 'थंडिल न [रथण्डिल] दग्ध
 भूमि (भासा २, १, १) ।

भाम वि [ध्याम] धनुजबल (पणह १, २—
पत्र ४०) ।

भामण न [दे] जनाना, भाम लंगाना प्रदीप-
नक (नव २) ।

भामर वि [दे] बूढ, बूढा (दे ३, ५७) ।

भामल न [दे] १ शल वा एक प्रकार का
रोग, घुनराती मे 'भामरो' । २ वि. भामर
रोगवाला (उप ७६८ टी, भा १२) ।

भामल वि [ध्यामल] श्याम, काला (धर्मस
८०७) ।

भामलिय वि [ध्यामलित] काला किया
हुआ (कुत्र ५८) ।

भामित वि [दे] दग्ध, प्रज्वलित (दे ३,
५६, वष ७, भावन) । २ श्यामलित, काला
किया हुआ । ३ कलित 'भामर' इत्ययमादि
जीए या भामिभो नेन' (साधं १६) ।

भाय वि [ध्याम] भस्मीकृत, दग्ध, जला
हुआ (एवि) ।

भायव देवो मा ।

भासुआ की [दे] बीरी, बुद्ध जन्तु विशेष
(दे ३, ५७) ।

भाषण न [ध्यापन] देवो भामग (राज) ।
भाषण न [ध्यापना] दाह, जलाना, धमि-
सत्कार (भावन) ।

भाषणा देवो अन्नायगा (सबोध २४) ।

भित्तिय न [दे] गुप्ताकरना (वप १४३ टी) ।
भित्तिय ॥ [दे] वचनीय, शोकापवाद, लोक-
निन्दा (दे ३, ५५) ।

भित्तिय [दे] धुधित, भूषा (वह ६) ।
भित्तिय [दे] धुधित, भूषा (वह ६) ।
भित्तिय [दे] धुधित, भूषा (वह ६) ।
भित्तिय [दे] धुधित, भूषा (वह ६) ।

भित्तिय [दे] धुधित, भूषा (वह ६) ।
भित्तिय [दे] धुधित, भूषा (वह ६) ।
भित्तिय [दे] धुधित, भूषा (वह ६) ।
भित्तिय [दे] धुधित, भूषा (वह ६) ।

भित्तिय [दे] धुधित, भूषा (वह ६) ।
भित्तिय [दे] धुधित, भूषा (वह ६) ।
भित्तिय [दे] धुधित, भूषा (वह ६) ।
भित्तिय [दे] धुधित, भूषा (वह ६) ।

भित्तिय [दे] धुधित, भूषा (वह ६) ।
भित्तिय [दे] धुधित, भूषा (वह ६) ।
भित्तिय [दे] धुधित, भूषा (वह ६) ।
भित्तिय [दे] धुधित, भूषा (वह ६) ।

भित्तिय [दे] धुधित, भूषा (वह ६) ।
भित्तिय [दे] धुधित, भूषा (वह ६) ।
भित्तिय [दे] धुधित, भूषा (वह ६) ।
भित्तिय [दे] धुधित, भूषा (वह ६) ।

भित्तिय [दे] धुधित, भूषा (वह ६) ।

भित्तिय } न [दे] शरीर के धवयो की
भित्तिय } जटता (भावा) ।

भित्तिय देवो मा । भित्तिय भित्तिय (ववा-
भग, वस, पि ४७६) । वहु. भित्तियमाण
(छाया १, १—पत्र २८, ६०) ।

भित्तिय न [दे] जोरें वृष, पुत्राना द्वारा (दे
३, ५७) ।

भित्तिय न [दे] भोला हुआ, पकटी हुई
वह वस्तु जो ऊपर से गिरती हो (मुपा १७८) ।

भित्तिय भक [रना] भीतना, स्नान करना ।
भित्तिय (हुमा) ।

भित्तिय की [भित्तिय] कीट-विशेष, भीतिव
जो की एक जाति, भित्तिय (पाद. पणह १) ।

भित्तिय की [दे] १ भीती नामक वृण ।
२ मरक, मरकट (दे ३, ६२) ।

भित्तिय की [दे] मरकती पकड़ने की एक
तरह की जाल (विपा १, ८—पत्र ८५) ।

भित्तिय की [दे] तहरी, तरंग (पणह) ।
भित्तिय की [दे] तहरी, तरंग (पणह) ।

भित्तिय की [भित्तिय] १ वनस्पति विशेष
(पणह १, वप १०३१ टी) । २ कीट विशेष,
भीतिर (गा ४६४) ।

भित्तिय वि [क्षोण] दुर्बल, कृष (हे २, १,
पास) ।

भित्तिय न [दे] १ दग्ध, शरीर । २ कीट,
कीटा (दे ३, ६२) ।

भित्तिय की [दे] सजा, शरम (दे ३, ५७) ।

भित्तिय पु [दे] गुण्य नामक वाय (दे ३, ५८) ।

भित्तिय वि [दे] १ धुधित, भूषा (पणह
१, ३—पत्र ४६) । २ भूषा हुआ, धुधित
हुआ (भग १६, ४) ।

भित्तिय मुसय न [दे] मन का दुख (दे ३,
५८) ।

भित्तिय न [दे] १ प्रवाह (दे ३, ५८) । २
पशु विशेष, जो मनुष्य के शरीर की शरीरों
जोवा है भीर जिवा रोम कपड़े के त्रिये
बहुमूल्य है (उप ५५६) ।

भित्तिय की [दे] मोपटी, वृण कुटीर, वृण-
निमित्त पर (हे ४, ४२६, ४२८) ।

भित्तिय न [दे] प्रालम्ब (छाया १, १) ।

भित्तिय देवो भूषा=वृष । भूषा (पि
२१४) । वहु भूषा (हे ४, ३७६) ।

भूषा वि [दे] भूष, शरीर, प्रसन्न (दे ३,
५८) ।

भूषा सक [जुगुप्स] धृष्टा करना, निन्दा
करना । भूषा (हे ४, ४, मुपा ३१८) ।

भूषा पु [ध्वनि] शब्द, धावान (हे १, ५२,
पह, कुमा) ।

भूषा वि [जुगुप्सित] निन्दित, धृष्ट
(हुमा) ।

भूषा की [दे] छेद, विच्छेद (दे ३, ५८) ।
भूषा भूषय न [दे] मन का दुख (दे ३,
५८) ।

भूषा पु [दे] धक्कामान प्रकार (भावनानु
६) ।

भूषा धन [अन्दील] भूषाना, भोलना,
सद्वर्तना । वहु. भूषा (मुपा ३१४) ।

भूषा धीन [दे] धन विशेष । की. १णा
(पिग) ।

भूषा की [दे] धुधित, सजा, गाछ (दे ६,
५८) ।

भूषा देवो भूषा । सक भूषा (पि २०६) ।
भूषा देवो भूषा । सक भूषा (पि २०६) ।

भूषा देवो भूषा । सक भूषा (पि २०६) ।
भूषा देवो भूषा । सक भूषा (पि २०६) ।

भूषा देवो भूषा । सक भूषा (पि २०६) ।
भूषा देवो भूषा । सक भूषा (पि २०६) ।

भूषा देवो भूषा । सक भूषा (पि २०६) ।
भूषा देवो भूषा । सक भूषा (पि २०६) ।

भूषा देवो भूषा । सक भूषा (पि २०६) ।
भूषा देवो भूषा । सक भूषा (पि २०६) ।

भूषा देवो भूषा । सक भूषा (पि २०६) ।
भूषा देवो भूषा । सक भूषा (पि २०६) ।

भूषा देवो भूषा । सक भूषा (पि २०६) ।
भूषा देवो भूषा । सक भूषा (पि २०६) ।

भूषा देवो भूषा । सक भूषा (पि २०६) ।
भूषा देवो भूषा । सक भूषा (पि २०६) ।

भूषा देवो भूषा । सक भूषा (पि २०६) ।
भूषा देवो भूषा । सक भूषा (पि २०६) ।

भूषा देवो भूषा । सक भूषा (पि २०६) ।
भूषा देवो भूषा । सक भूषा (पि २०६) ।

भूषा देवो भूषा । सक भूषा (पि २०६) ।
भूषा देवो भूषा । सक भूषा (पि २०६) ।

भूषा देवो भूषा । सक भूषा (पि २०६) ।
भूषा देवो भूषा । सक भूषा (पि २०६) ।

भूसमाण (भावा) । संक. भूसिप्ता,
भूसिप्ताणं, भूसिप्ता (भीष, पि ५८३,
अंत २७) ।

भूसणा छी [जोषणा] सेवा, धाराधना (उवा,
अंत, भीष, पाया १, १) ।

भूसरिअ वि [दे] १ अत्यर्थ, अत्यन्त । २
स्वच्छ, निर्मल (दे ३, ६२) ।

भूसिय वि [जुष्ट] १ श्रेष्ठ, धाराधित
(पाया १, १, भीष) । २ क्षपित, क्षिप्त,
परित्यक्त (उवा, ठा २, २) ।

भैडुअ पुं [दे] कन्दुक, गेंद (दे ३, ५६) ।
भैय देखो जा ।

भेर पुं [दे] घुराना धरा (दे ३, ५६) ।

भोटिग पुं [दे] देश-विशेष (कुप्र ४७२) ।

भोट्टी छी [दे] प्रथमहिणी, नैस की एक
जाति (दे ३, ५६) ।

भोट्टिआ छी [दे] रास के समान एक
प्रकार की बीज (दे ३, ६०) ।

भोट्ट सक [शाटय] पेठ आदि से पन
वगैरह को गिराना । भोट्ट (पि ३२६) ।

भोट्ट न [दे] १ पेठ आदि से पन आदि का
गिराना । २ जोखें वृत्त (पाया १, ११—
पत्र १७१) ।

भोट्टण न [शाटन] पातन, गिराना (पएह १,
१—पत्र २३) ।

भोट्टप पुं [दे] १ चना, मज-विशेष । २
सूखे चने का शाक (दे ३, ५६) ।

भोट्टिअ पुं [दे] ग्याघ, शिकारी, बहेलिया
(दे ३, ६०) ।

भोलिआ } छी [दे] भोलिआ } भौलो,
भोलिआ } यँतो, कोयलो (दे ३, ५६; सुप्र
२, ४) ।

भोस देखो भूस । भोसह (भावा) । बड़.

भोसमाण, भोसेमाण (सुभा २६; भावा) ।
सक. 'संकेहणए सम्म भोसिप्ता नियमदेह
तु' (सुर ६, २४६) ।

भोस सक [गवेपय] लोजना, मनेपण
करना । भोसेहि (सूह ३) ।

भोस सक [भोपय] डालना, प्रयेप करना ।
क भोसेयअय (वव १) ।

भोस पुं [भोप] राशि-विशेष, जिसके डालने
से समान भागाकार हो बहू राशि (वव १) ।

भोस पुं [दे] भाडना, दूर करना (ठा ५, २) ।

भोसण न [दे] गवेपण, मार्गण, 'भामोण
ति वा मणण ति वा भौमण ति वा एण्ड'
(वव २) ।

भोसणा देखो भूसणा (सम ११६, मग) ।

भोसणा छी [जोषणा] मयत समय की
धाराधना, सहेलना (धायक ३७८) ।

भोसिअ देखो भूसिय (भावा, हे ४, २५८) ।

॥ इअ छिरियाइअसइमहणवयमि ममाराइअसइमहणवयमि
सतरहमो तरंगो समतो ॥

ट

ट पुं [ट] मुहँ ह्यानीय अयजन वहाँ विशेष
(भामा, प्राप) ।

टअया छी [दे] आत्मान चन्द, पुकारने की
भावाज, गुजराती में 'टोको' (कुप्र ३०६) ।

टंक पुं [टङ्क] बिज-विशेष, तिका पर का
बिज (पंचा ३, १५) ।

टंक पुं [टङ्क] १ तलवार आदि का धार भाग
(पएह १, १—पत्र १८) । २ एक प्रकार
का तिका (या १२, सुपा ५१३) ।
३ एक दिशा में दिग्न पर्यंत (पाया १, १—
पत्र ६३) । ४ पत्थर बाटने का मज, टाँची,
टोपी (दे ५, ३५; जग पु ३१२) । ५
परिमाण विशेष, बार मासे की लील (पिण) ।
६ पश्चिम-विशेष (जीर १) ।

टंक पुं [दे] १ तलवार, राख । २ राख,
मुसा हुआ जलापण । ३ बह्म, जाप । ४

मिति, भीत । ५ ठट, किनारा (दे ४, ४) ।
६ लज्जित, कुदात (दे ४, ४; से ५, ३५) ।
७ बि. छिन्न, खेदा हुआ, बाटा हुआ (दे
४, ४) ।

टंकण पुं [टङ्कन] स्नेह्य की एक जाति,
(जिसे १४४४) ।

टंकयल्लु पुं [दे] बन्द-विशेष, एष जाति
की तरकारी (या २०) ।

टंका छी [दे] १ जंघा, जाँघ (धाम) । २
स्वनाम-स्वात एष लोथें (लो ४३) ।

टंकार पुं [टङ्कार] अनुप का मय्य (भवि) ।

टंकार पुं [दे] भोज्य, तेज (पजड) ।

टंजिअ वि [दे] प्रयत्न, फेला हुआ (दे ४, १) ।

टंजिअ वि [टङ्कित] टाँची से बाटा हुआ
(दे ४, ५०) ।

टंजिया छी [टङ्कित] पत्थर बाटने का मज,
टाँकी (सम्मत २२७) ।

टबरय वि [दे] भारनाला, शुक्, भारी (दे
४, २) ।

टक पुं [टङ्क] देश-विशेष (हे १, १६५) ।

टक वि [टङ्क] १ टङ्क-देशीय । २ पुं, भाट

की एक जाति (हुम १२) ।

टकर पुं [दे] डीवर, रंग से रंग का धायात
(सुर १२, ६७, पव १) ।

टकरा छी [दे] टकोर, भुङ्क-विर में टंगली
का धायात (वव १ टी) ।

टकारा छी [दे] धरणि-वृत्त का मूल (दे
४, २) ।

टगर पुं [टगर] १ इन्द्र-विशेष, टगर का
पुत्र । २ सुगणित बाहु-विशेष (ह १,
२०५, हुमा) ।

दशरु पु [दे] लवकी धादि के धापात की धावाज (कुप ३०६) ।

दट्टइआ की [दे] जवनवा, परदा (दे ४, १) ।

दप्पर वि [दे] विकराल कर्णवाला, भयकर

कानवाला (दे ४, २, सुपा ५२०, कप्पु) ।

दसर पु [दे] केश चप, बाल-समूह (दे ४, १) ।

दयर रेलों दगर (कुमा) ।

दलदल भक [दलदलाय्] 'दल-दल' धावाज

करना । वक्क दलदलत (प्राप् १६३) ।

दलदलिय वि [दलदलित] दल-दल' धावाज

वाला (उप ६४८ टी) ।

दलदल भक [दे] १ लकड़हाना, लकड़ना ।

२ धवराणा, हैरान होना । दलवलति (धर्मवि

३८) । वक्क दलदल १ (सिर ६०८) ।

दलिअ वि [दे] दला हुआ, हटा हुआ (सिरि

६८३) ।

दसर न [दे] विमोहन, मोहना (दे ४, १) ।

दसर पु [नसर] दसर, एक प्रकार का सूता

(हे १, २०५ कुमा) ।

दसरोट्ट न [दे] शेखर, मयतस (दे ४, १) ।

दहरिय वि [दे] झँका किया हुआ, 'दहरिय-

कन्नो जाओ मियुव्व गौइ कह सोउ (धर्मवि

१४७, सम्मत १५८) ।

दार पु [दे] भयम, भय, हठी घोडा (दे

४, २) 'मरिचिखिओवि न मुमइ, मणय

दारय दारय' (भा २७) । २ दट्टइ, छोटा

घोडा (उप १५५) ।

टाल न [दे] कौमल फल, गुठली उपल होने

के पहले की प्रख्याता वाला फल (वस ७) ।

टिट्टा [दे] देखो टेटा (मवि) । 'साला

टिट्टा' की 'शाला' जुमालाना, जुमा

खलने का भट्टा (सुपा ४५५) ।

टिंघरु } पुन [दे] वृत्त विशेष, तेंद का पेड

टिंघरु } (दे ४, ३, उप १०३१ टी, पाप) ।

टिंघरुणी की [दे] ज्वर देखो (पि २१८) ।

टिक्क न [दे] १ टीका, तिलक । २ सिर का

स्वक, मस्तक पर रखता जाता गुच्छा (दे

४, ३) ।

टिक्किट्ट (शो) वि [दे] तिलक विमूषित

(कप्पु) ।

टिंघर वि [दे] स्वधिर, बूढ़, बूढा (दे

४, ३) ।

टिट्ठिअ पु [टिट्ठिअ] १ पति विशेष, निट्-

हृये, टिट्ठिआ । २ जल-जलु विशेष (सुर १०,

१८५) । जी. 'मी (विपा १, ३) ।

टिट्ठियाय सक [दे] बोलने की प्रेरणा करना,

'दि टि' धावाज करने की विवताना ।

टिट्ठियावेइ (खाया १ ३) । कवकु. टिट्ठिया-

वेजमाण (खाया १, ३—पव २४) ।

टिप्पणय न [टिप्पणरु] विवरण छोटी

टीका (सुपा ३२४) ।

टिप्पी की [दे] तिलक, टीका (दे ४, ३) ।

टिरिटिल सक [भ्रम्] भ्रमना, फिरना,

चलना । टिरिटिलइ (हे ४, १६१) । वक्क.

टिरिटिल (कुमा) ।

टिक्किय वि [दे] विमूषित (धर्मवि ५१) ।

टिक्किडि सक [मण्डय्] मण्डित करना,

विमूषित करना । टिक्किडिइ (हे ४, ११५,

कुमा) । वक्क. टिक्किडि (सुपा २८) ।

टिक्किडिअ वि [मण्डित] विमूषित,

मण्डित (पाप) ।

टुट वि [दे] धिन-रुस्त जिसका हाथ कटा

हुआ हो यह (दे ४, ३, प्राप् १४२, १४३) ।

टुट्ठण भक [टुट्ठणाय्] 'टुन टुन' धावाज

करना । वक्क टुट्ठणत (गा ६८५ काप

६६५) ।

टुवय पु [दे] धापात-विशेष, गुजराती में

'डुवो' (सुर १२, ६७) ।

टुट्ट भक [टुट्ट] टुटना, कट जाना । टुट्टइ

(मिग) । वक्क टुट्ट (सि ६ ६३) ।

टुप्परण ॥ [दे] जैन साधु का एक छोटा पात्र

(कुलक ११) ।

टुर पु [नुर] १ जिसकी दाढ़ी मूँछ न

खी हो ऐसा चपरासी । २ जिसने दाढ़ी-मूँछ

कटवा दी हो ऐसा प्रतिहार (हे १, २०५,

कुमा) ।

टेट ॥ [दे] १ मध्य स्थित मण्डि विशेष ।

वि. भीरण (कप्पु) ।

टेटा की [दे] जुमालाना, जुमा खेलने का

भट्टा (दे ४, ३) ।

टेटा की [दे] १ अग्नि-गोलक । २ छाती का

शुक ग्रण (कप्पु) ।

टेंवरुय न [दे] कल विशेष (भावा २, १,

८ ६) ।

टेकर न [दे] स्थल, प्रदेश (दे ४, ३) ।

टोक्कण } न [दे] दाढ़ नापने का बरतन

टोक्कणरुड } (दे ४, ४) ।

टोपिआ की [दे] टोपी, सिर पर रखने का

चिला हुआ एक प्रकार का वस्त्र (सुपा २६१) ।

टोप्प पु [दे] श्रेष्ठ विशेष (स ४५१) ।

टोप्पर पु [दे] शिरकाण विशेष, टोपी

(विप) ।

टोल पु [दे] १ शलम, जलु विशेष । २

पिराण (दे ४, ४ प्राप् १६२) । 'गइ की

'गति' गुरु-नन्दन का एक दोष (पव २) ।

'गइ की' [इक्ति] प्रशस्त भाग्यवाला

(राव) ।

टोल पु [दे] १ टिड्डी, टिडी (पव २) । २

मुष (कुप ५८) ।

टोलव पु [दे] मयूक, युग-विशेष, मयूमा

का पड (दे ४, ४) ।

॥ इय तिरिपाइअसहमहण्णरम्मि टयाराइत्तवत्तलो

मयूमाहो तरयो समतो ॥

ठ

ठ पुं [ठ] मूर्धन्यस्थानीय व्यञ्जन यस्तुविशेष (प्रामा. प्राप) ।

ठइअ वि [दे] ? जगिन्त, ऊपर पंवा हुमा । २ पु. प्रयत्ना (दे ४, ५) ।

ठइअ वि [स्थगित] ? भाच्छादित, रक्ता हुमा । २ बन्द किया हुमा, रक्ता हुमा (स १७३) ।

ठइअ देतो ठयिअ (पिण) ।
ठंझिअ देतो थंझिअ (उव) ।
ठंभ देतो थंभ = तन्म । धर्म, ठंभिजगह (ह २, ६) ।

ठंभ देतो थंभ = तन्म (ह २, ६, पद) ।
ठउर } पु [ठनछुर] ? ठाउर, क्षमिण,
ठनछुर } राजपुत्र (स ५५४, सुभा ५१२,
सट्ठि ६८) । २ ग्राम धौरद्वारा स्वामी,
नायक, मुखिया (आयन) ।

ठफार पुं [ठ फार] 'ठ' फार, 'तम्मि बल्लते करिमवसित्ताह महीह सुगपुगुमेणी । निहिया रिऊण विजए मतो ठनारपरति ध्व' (धर्मि २०) ।

ठा } सक [स्थग] बन्द करना ।
ठय } ठेर ठए (सट्ठि २३ टी, सुत्त २, १७) ।

ठा पु [ठरु] ठग, धूर्त, बख्क (दे २, ५८, सुभा) ।

ठगिय वि [दे] वल्लित, ठगा हुमा, विप्र-
सारित (सुभा १२४) ।

ठगिय देको ठइय = स्थगित (उप पु ३८८) ।

ठट्टार पु [दे] तान् पित्तप्रदाय धानुके बर्तन
बनाकर जीविका चलानेवाला, ठटेरा (धर्म २) ।

ठड्ड वि [स्तब्ध] हस्तकम्बरा मुष्टित,
जड (हे २, ३६, वज्जया ६२) ।

ठप वि [स्थाप] स्थापनीय, स्थापन करने
योग्य (धोप ६) ।

ठय सक [स्थग] बन्द करना रोकना ।
ठणति (स १५६) ।

ठणण [स्थगन] ? इकाव अटकाव । २ वि
रोकनेवाला । छो 'णी (उप ६६६) ।

ठयण न [स्थगन] बन्द करना अचिच्छेय
च' (पवा २, २५) ।

ठरिअ वि [दे] ? गौरवित । २ उर्ध्व-
स्थित (दे ४, ६) ।

ठलिय वि [दे] ? पाली, सूय, रिक किया
गया (सुभा २३७) ।

ठल्ल वि [दे] निधन, धन रहित, दण्डि (दे
४, २) ।

ठन चर [स्थापय] स्थापन करना । ठनह,
ठनेह (पिण, वण, महा) । ठन (भग) । यष्ट,
ठयत (वण ६३) । सष्ट ठयित, ठयिऊण
ठयित्ता, ठयित्तु, ठयेत्ता (पि ५७६, ५८६,
५८२, प्रामु २७, पि ७८२) ।

ठणन न [स्थापन] स्थापन, सत्पान (सुर
२, १७७) ।

ठण्णा छी [स्थापना] ? प्रविष्टि, चिन,
भूति, आचार (ठा २, ४, १०, मणु) । २
स्थापन, न्यास (ठा ४, ३) । ३ सार्वत्रिक
वस्तु, वृत्त वस्तु के धर्माव वा अनुस्थिति
में जिस किसी चीज में उद्वेग सत्त्व किया
जाय वह वस्तु (विसे २६२७) । ४ जैन
साधुओं को भिक्षा का एक दोष साधु को
भिक्षा में देने के लिए रक्ती हुई वस्तु (ठा ३,
४—पण १५६) । ५ अनुया, समति (एवि) ।

६ पुरुषाणा, बाळ दिनो वा जैन पर्व विशेष
(निज्ज १०) । 'हुल पुन [हुल] भिक्षा के
लिए प्रतिष्ठित कुल (निज्ज ४) । 'णय ॥
[नय] स्थापन की हो प्रथम माननवाला
मत (राज) । 'पुरिस पु [पुरुष] वृत्त की
भूति या चित्र (ठा ३, १, सूत्र १, ४, १) ।
'यारिय पु [चार्य] जिस वस्तु में आचार्य
का सकल किया जाय वह वस्तु (धर्म २) ।
'सच्च न [सत्त्य] स्थापना विषयक सत्य,
जिन भगवान् की भूति की दिन कहना यह
स्थापना-सत्य है (ठा १०, पण ११) ।

ठवणा छी [स्थापना] वासना (एवि १७६) ।

ठवणी छी [स्थापनी] न्यास, न्यास रूप से
रखा हुमा द्रव्य (था १४) । 'भोस पु
[भोप] न्यास की चोरी, न्यास का प्रत्याप,
वोहेणु पित्तदोहो लखीमोसो असेसोमेसु
(था १४) ।

ठयिअ वि [स्थापित] रखा हुमा, संस्थापित
(पद, पि ५६४, ठा ५, २) ।

ठयिआ छी [दे] प्रतिमा, भूति, प्रविष्टि
(दे ४, ५) ।

ठयिर देको थनिर पि १६६) ।

ठा मर [रा] बैठना, स्थिर होना, रहना,
नति का स्थान करना । ठाह, ठामह (हे ४,
१६, पद) । यष्ट, ठायमाय (उप १३०
टी) । यष्ट, ठाइऊण, ठाऊण (पि १०६,
पंवा १८) । हेरु ठाइत्ता, ठाउ (वच,
भाव ५) । इ. ठाणिज्ज, ठायवन्, ठाण-
यवन् (आय १, १४ सुभा ३०२, सुर ६,
३३) ।

ठाइ वि [स्थायिन्] रहनेवाला, स्थिर होने-
वाला (मीर, वण) ।

ठाणयवन् देना ठा ।

ठाणयवन् देना ठाय ।

ठाण पुं [दे] भान, गर्व, अधिमान (दे ४,
५) ।

ठाण पुं न [स्थान] ? स्थिति, प्रस्थान, नति
की निवृत्ति (सूत्र १, ५, १, बृह १) । २ स्वल्प-
प्राप्ति (सम्म १) । ३ निवास, रहना (सूत्र
१, ११, निज्ज १) । ४ कारण, निमित्त, हेतु
(सूत्र १, १, २, ठा २, ४) । ५ पर्यंक
आदि स्थान (राज) । ६ प्रकार, भेद (ठा
१०, भाइ ४) । ७ पद, जगह (ठा १०) ।
८ गुण, पर्याय, धर्म (ठा ५, ३, भाव ४) ।
९ श्राव्य, आचार, वसति, मकान, घर (ठा
४, ३) । १० सुतीय जैन भगवत्, आचार्य
सूत्र (ठा १) । ११ 'आचार्य' सूत्र का अध्ययन,
परिच्छेद (ठा १, २, ३, ४, ५) । १२ कायोत्तरं
(धोप) । 'अट्ट वि [अट्ट] ? धर्मो जगह
से जुड़ (आया १, ६) । २ चारित्र से पतित
(सट्ठि) । 'इय वि [तिग] कायोत्तरं
चलेवाला (धोप) । 'यय न [ययत]
ऊँचा स्थान (बृह ५) ।

ठाण न [स्थान] ? कुक्क (काकण) देश का
एक नगर (सिरि ६३६) । २ हेरु दिन
का लगातार उपवास (सवोप ५८) ।

ठाणग न [स्थानक] शरीर की केश-विशेष (पचा १८, १५)।

ठाणि वि [स्थानिन्] स्थानवाला, स्थान-युक्त (सूत्र १, २, उव)।

ठाणिज्ज देखो ठा।

ठाणिज्ज वि [दे] १ गौरवित, सम्मानित (दे ४, ५)। २ न. गौरव (पइ)।

ठाणुकडिय } वि [स्थानोरत्तु] १ ऊक-
ठाणुकुडुय } ठुक भासनवाला (पण २,
१, मग)। २ न. भासन विशेष (इए)।

ठाणु देखो रणणु। 'जड न [रणण] १
स्थाणु का भवयव। २ वि. स्थाणु की तरह
जैसा और स्थिर रहा हुआ, स्थानित शरीर-
वाला (आया १, १—पन १६)।

ठाग } (मय)। देखो ठाण (मिग, सण)।
ठाग }

ठाग पु [स्थाग] स्थान, आश्रय (मुल २,
१७)।

ठाग सक [स्थापय] स्थापन करना, रखना।
ठावड, ठावड (मि ५५३, कण, मरा)। वड-
ठावड, ठानित (वड २०, सुपा ८८)। सक-
ठावड, ठावड (कस: महा) क. ठावडय
(सुपा ५५५)।

ठावग न [स्थापन] स्थापन, धारण (पचा
१३)।

ठावगया } देखो ठवणा (ज ६८६ टी, ठा
ठावणा } १, वड १)।

ठावय [स्थापक] स्थापन करनेवाला (आया
१, १८; सुपा २३४)।

ठावर वि [स्थावर] रहनेवाला, स्थायी (मन्तु
१३)।

ठावजि वि [स्थापिन] स्थापित, रखा हुआ
(ठा ३, १, था १२, महा)।

ठावजि वि [स्थापयि] ऊपर देखो (ठा
३, १)।

ठिअज न [दे] ऊर्ध्व, ऊँचा (दे ४, ६)।

ठिइ श्री [स्थिति] १ व्यवस्था, क्रम, मर्यादा,
नियम, 'जयहिइ एसा' (ठा ४, १, उव ७२८
टी)। २ स्थान, अवस्थान (सन २)। ३
भवस्था, वरा (जो ४८)। ४ धातु, उन्न,
काल-मर्यादा (मग १४, ५, नव ११, पण
४, मीप)। 'कसय पु [क्षय] धातु का
सय, मरण (विपा २, १)। 'पडिया देखो
'पडिया (कण)। 'बंध पु [बंध]
कर्म बंध की काल-मर्यादा (कम्म ४, ८२)।
'पडिया श्री [पतिता] पुन-जन्म-सम्बन्धी
जन्म-विशेष (आया १, १)।

ठिक न [दे] प्रत्य षिक (दे ४, ५)।

ठिकरिआ श्री [दे] ठिकरी, घडा का टुकड़ा
(था १४)।

ठिय वि [स्थित] १ अवस्थित (ठा २, ४)।
२ व्यवस्थित, नियमित (सूत्र १, ६)। ३
सडा (मग ६, ३३)। ४ नियत, बैठा हुआ
(निबु १, प्राप्-कुमा)।

ठिर देखो थिर (मन्तु १, गा १३१ म)।

ठिविअ न [दे] १ ऊर्ध्व, ऊँचा। २ निकट,
समीप। ३ हिक्का, हिक्की (दे ४, ६)।

ठिअ सक [पि + पुट] मोड़ना। सक-
ठिअकण (सुपा १६)।

ठोण वि [स्थान] १ जमा हुआ (घट भादि)
(कुमा)। २ ध्वनि-कारक, भाषा बनने-
वाला। ३ न. जमाव। ४ भासत्य। ५ प्रति-
ध्वनि (दे १, ७४, २, ३३)।

ठुठ पुं [दे] हूँठा हूँठ, स्थाणु (ज १)।

ठुक सक [ह] त्याग करना। ठुकइ (प्राक्
६३)।

ठेर पुकी [स्थित] वड, वूडा (गा ८८३
म पि १६६)।

'पउरुवाणी गानो, महंगावो

जोमणं पई ठेरो।

पुएखमुय साहीण, मयई

मा होव कि मरउ ?

(गा १६७)। श्री, 'री (गा ६५४ म)।

ठोड पुं [दे] १ जोतिपी, बैल। २ पुरोहित
(सुपा ५५२)।

॥ इम सिरिपाइअसहमहण्यनमि ठयाराइसहसकणो

एणएवोसइमो वरंमो समतो ॥

ड

ड पुं [ड] मूढ-स्थानीय व्यक्कन वणं विशेष
(प्राप्ता, प्राप्)।

डओयर न [दुकोदर] डेट ना रोग विशेष,
जलोदर (निबु १)।

डक पु [दे] १ डंक, वृधिक (विज्जु) भादि का
कोटा (पण १, १)। २ दंड-स्थान, जहाँ पर

धुरिबक भादि डसा हो 'जह सवसरोरमयं
विशं निधित्तु डकमाणि' (सुपा ६०६)।

डकिय देखो डक=दट (दे ८६)।

डगा श्री [दे] डोग, साठे, बटि (सुपा २३८,
३८८, ५४६)।

डंड देखो दंड (दे १, १२७, प्राप्)।

डड न [दे] बज्र के सोए हुए टुकड़े (दे
४, ७)।

डडगा श्री [दण्डगा] दण्डिण देश का एक
प्रसिद्ध धरएण—जगल (मुल)।

डडय पुं [दे] रम्या, महत्वा (दे ४, ८)।

डडारण्य = [दण्डारण्य] दण्डिण का एक

प्रसिद्ध जंगल, दण्डवारण्य (पत्रम १८, ४२)।

ढंढि } छो [दे] सिते हुए वरुण-सण्ड (दे ४, ४७)।
ढडो } ७, परह १, ३)।

ढंवर पुं [दे] धर्म, गरमी, प्रस्वेद (दे ४, ८)।

ढंवर पुं [डम्बर] ब्राह्मण, भ्रातृ (उप १४२ टी. पिंग)।

डभ देखो दंभ (हे १, २१७)।

डंभण न [दम्भन] दागने का शल-विशेष (विषा १, ६)।

डंभण न [दम्भन] वंचना, ठगई (पत्र २)।

डंभणया } छो [दम्भना] १ दागना। २
डंभणा } माया, वपट, दम्भ, वंचना (उप
पृ ३१५, परह २, १)।

डंभिअ पुं [दे] छुमारी, छुए का लेनाही (दे ४, ८)।

डंभिअ वि [दंभिअ] वधक, मायावी, कपटो (कुमा, पट्ट)।

डंस सक [दंस] डसना, काटना। डसइ, डंसए (पट्ट)।

डंस पुं [दरा] सुदर जन्तु-विशेष, डंस, मच्छर (जी १८)।

डस पुं [दरा] १ दन्त-जत। २ सर्व प्रादि का काटा हुआ धाव। ३ दोष। ४ खडन। ५ दांत ६ धर्म, कवच। ७ मर्म-स्थान (प्राक १५)।

डंसण पुन [दशन] धर्म, कवच, 'डंसणो' (प्राक १५)।

डहक वि [दृष्ट] डसा हुआ, दांत से काटा हुआ (हे २, २०, गा ५११)।

डहक वि [दे] दन्त-गृहीत, दांत से उपात (दे ४, ६)।

डहक कीन [डहक] वायन-विशेष (सुपा १६५)।

डहकुरिज्जत वक [दे] पीडित होता हुआ (सूत्र ०० गा ३१५)।

डगण न [दे] यान विशेष (यज)।

डगममा भक [दे] चसित होना, हिलना, कांपना। डगमगीति (पिंग)।

डगान न [दे] १ फल का टुकड़ा (मित्र १५)।

२ ईट, पापाए वगैरह का टुकड़ा (भोष ३५६, ७८ भा)।

डगाल पुं [दे] घर के ऊपर का भूमि तल, छत (दे ४, ८)।

डग्ग }
डग्गंत } देखो डह।
डग्गमाथ }

डट्ट देखो डहक = दृष्ट (हे १, २१७)।

डहइ वि [दग्ध] प्रज्वलित, जला हुआ (हे १, २१७, गा १४६)।

डहइही छो [दे] दव मार्ग, धाव का रास्ता (दे ४, ८)।

डफन न [दे] सेल, कुन्त, गासा, चरछो, घामुघ-विशेष (दे ४, ७)।

डकभ पुं [डर्म] डाम, डुरा, सुण-विशेष (हे १, २१७)।

डमडम धव [डमडमाय] 'डम-डम' भावान करना, डमक आदि का भावान होना। वक, डमडमन (सुपा १६३)।

डमडमिय वि [डमडमायित] जिसने 'डम-डम' भावान किया हो वह (सुपा १५१, ३३८)।

डमर पुन [डमर] १ राव का भीतरी या बाह्य किल्ल, बाहरी या भीतरी उपद्रव (राया १, १०, ज २, पत्र ४, श्रौष)। २ गलह, लडाई, बिगड़ (परह १, २, दे ८, ३२)।

डमरुअ } पुन [डमरुक] नाव-विशेष,
डमरुअ } कापालिक योगियों के बजने का
बाजा, डमरु (दे २, ८६, पत्रम ५७, २३, सुपा ३०६, पट्ट)।

डर थक [डस] डरना, भय भीत होना। डरह (हे ४, १६८)।

डर पुं [दर] डर, भय, भीति (हे १, २१७, सण)।

डरिअ वि [डरत] भय-भीत, डरा हुआ (कुमा सुपा ६५५, सण)।

डल पुं [दे] लोट मिट्टी का डेला (दे ४, ७)।

डल सक [पा] पीना। डलइ (हे ४, १०)।

डल } न [दे] पिटिका, डाला, डाली, दांस
डलमा } का बना हुआ फल फूल रखने का
पात्र (दे ४, ७ आचम)।

डला छो [दे] डाला, डाली (कृप २०६)।

डाहर वि [पार] पीनेवाला (कुमा)।

डव सक [आ + रभ] आरम्भ करना, शुरू करना। डवह (पट्ट)।

डवडन थ [दे] ऊँचा मुँह वर ने वेग से क्षर-उपर गमन (चंड)।

डव्य पुं [दे] वाम हस्त, बायाँ हाथ, पुनराती में 'डायो' (दे ४, ६)।

डस देखो डंस। डसइ (हे १, २१८, पि २२२)। डेऊ डसिउं (सुर २, २४३)।

डसण न [दशन] १ दश, दत्त से काटना (हे १, २१७)। २ दांत (कुमा)।

डसण वि [दशन] दातनेवाला (सिदि ६२०)।

डसिअ वि [दृष्ट] डसा हुआ, काटा हुआ (सुपा ४४६, सुर ६, १८५)।

डद सक [दह] जलाना, दह्य करना। डहइ, डवए (हे १, २१८, पट्ट, महा, उप)। भवि डहिहिइ (हे ४, २४६)। वडइ, डडमंत, डडमाग (सम ११७, उप ३३३, सुपा ८५)। डेह, डहिउं (पत्रम ३१, १७)। क डडम (ज ३, २, दस १०)।

डहन न [दहन] १ जलाना, भस्म करना (वह १)। २ पु. शर्म, वहि, प्राग (कुमा)। ३ वि. जलानेवाला, 'तस सुहसुहइहणो मप्पा जलणो पयाने' (भारा ८५)।

डहर पुं [दे] १ शिष्ट, बालक, बचा (दे ४, ८, पाष, वव ३, दस ६, १, सुपा १, २, १; २, ३, २१; २२, २३)। २ वि. लड्ड, छोटा, सुद (भोष १७८, २६० भा)। ३ गगान पु [भाम] छोटा बाल (वव ७)।

डहरक पुं [दे] वृक्ष-विशेष। २ पुण्य विशेष, 'डहकडुलपुरता डुवती लफ्फल मुणसि' (पमवि ६७)।

डहरिया छो [दे] जन्म से डहरइ धर्म तक की लवकी (वव ४)।

डहरी छो [दे] मलिनधर, मिट्टी का पडा (दे ४, ७)।

डाअल न [दे] लोचन ब्राह्म, नंघ (दे ४, ६)।

डाइणी छो [डाकिनी] १ डाकिनी, डावान, डुबैल, प्रेतिनी। २ जतर मंतर जाननेवाली छो (परह १, ३ सुपा ५०१, स ३०७, महा)।

डाउ पुं [दे] १ फलितवक वृक्ष, एक जाति का रेंद। २ वलपति की एक तरह की प्रतिमा (दे ४, १२)।

स्नेह्य-जाति. डोम (पण्ह १, १. इक. पय ६) । ३ देखो दुंभ (पाम) ।

डोंविल्या पुं [दे] १ स्नेह्य देश विशेष । २ डोंविल्य एक धनार्थ जाति (पण्ह १, १, इव) । ३ डोम, चारडाल (त २८६) ।

डोफरी स्त्री [दे] डूडी स्त्री (दुप्र ३५३) ।

डोह पुं [दे] ब्राह्मण, विप्र (मुस ३, १) ।

डोडिणी स्त्री [दे] ब्राह्मणी (मनु० ६६ सूत्र) ।

डोडिणी स्त्री [दे] ब्राह्मणी (मनु ४६) ।

डोडू पुं [दे] एक मनुष्य-जाति, ब्राह्मण, 'दिदुने सप्तहणजिमिपो निगपचलो बहिं डोडू, तो सत्सुद्धर फालिम' (उप १३६ स्त्री) ।

डोर पुं [दे] डोर, गुण, रस्ती (गा २११, वजा ६६) ।

डोल शक [डोलय्] १ डोलना, हिलना,

झुलना । २ संशयित होना, सन्देह करना । वड. डेलत (मन्तु ६०) ।

डोल पुं [दे] १ सोचन, धारण, मनन, गुज-रासी में 'डोलो', (दि ४, ६) । २ जन्तु-विरोध (ग्रह १) । ३ पत-विरोध (पचव २) ।

डोल पुं [दे] चतुर्दिग्ध जीव की एक जाति (उत्त ३६, १४८. सुल ३६, १४८) ।

डोला स्त्री [डोला] हिन्दोला, झूलना या झुलना (दि १, २१७. पाम) ।

डोला स्त्री [दे] डालो, शिबिका, पालकी (दे ४, ११) ।

डोलाअत वि [डोलायमान] सद्य बल्ले-वाला, डेंवाडोल (मन्तु ७) ।

डोलाइअ वि [डोलायित] संशयित, डेंवाडोल, 'मडस डोलाइअ हिमम' (गा ६६६) ।

डोलायमाण देखो डोलाअत (निबू १०) ।

डोलायि वि [डोलायित] बम्पिड, हिलाया हुआ (पवम ३१, १२४) ।

डोलाअ पुं [दे] कृष्णसाध, वाला हिरन (दे ४, १२) ।

डोलि वि [डोलायत] मोतनेवाला, कापने-वाला, 'दरडोलिसोस' (कृमा) ।

डोलगग पुं [दे] पानी में होनेवाला जन्तु-विरोध (मुम २, ३) ।

डोन [दे] देखो डोअ (सुदि वन पु २१०) । स्त्री 'वा (वमा २७) ।

डोसिणी स्त्री [दे] पक्षोक्ता, चन्द्र प्रकाश, धाँवनी (पद्) ।

डोहल पुं [डोहल] १ पॉन्थी स्त्री का अभिवाप । मनोरम, लालसा (दि १, २१७, (कृमा) ।

॥ इम सिरिपाइअसहस्रहणयम्मि डोपापइतद्दंनसणो
वीसस्मा तरणी समतो ॥

ढडसिअ पुं [दे] १ धाम का यज्ञ । २ गवि
ना वृक्ष (दे ४, १५) ।

ढडुल्ल देखो ढंडल्ल । ढडुल्लइ (सण) ।

ढंडोल सक [गवेपय] खोजना, भन्नेपण
करना । ढडोलइ (हे ४, १८६) । सक-

ढडोलिअ (कुमा) ।

ढंडोल्ल देखो दुडुल्ल । सक ढडोल्लिअ
(सण) ।

ढस भक [वि + धृत] घसना, घसकर
रहना, गिर पडना । ढसइ (हे ४, ११८) ।

वक्र, ढसमाण (कुमा) ।

ढंसय न [दे] प्रयास प्रयत्नवि (हे ४, १४) ।

ढक्क सक [छाद्य] १ ढकना, धाष्ट्यादन
करना, बन्द करना । ढक्कइ (हे ४, २१) ।

भवि. ढक्किस्स (गा ३१४) । कर्म. 'ढक्कि-
णजल कूबाई' (सुर १२, १०२) । सक-
'वच ढक्किउ वार', ढक्किऊण, ढक्के-
ऊण (सुभा ६४०, महा पि २२१) । क.
ढक्केयऊण (वस २) ।

ढक्क पुं [ढक्क] १ देश विशेष । २ देश
विशेष में रहनेवाली एक जाति (भवि) । ३
माट की एक जाति (उप ५ ११२) ।

ढक्कय न [दे] तिलक (दे ४, १४) ।

ढक्कुरि वि [दे] मद्गुह, भारचर्य-जनक
(हे ४, ४२२) ।

ढक्कयथुल्ल देखो ढक्कयथुल्ल (पव ४) ।

ढक्का खी [ढक्का] वाय विशेष, डवा,
नगाडा, डक्क (गा ५२६, कुमा, सुभा २४२) ।

ढक्काअ वि [छादित] बन्द किया हुआ,
आच्छादित (स ४६८, कुमा) ।

ढक्काअ न [दे] बैल की गर्जना (अणु
११२, सुव ६, १) ।

ढगढगगा खी [दे] 'ढग-ढग' धावाज,
पानी वगैरह पीने की धावाज, 'सोणिय
ढगढगगाए घोद्यतौ' (स २५७) ।

ढज्जत देखो ढज्जत (पि ११२, २१६) ।

ढड्ड पुं [दे] भेरी, वाय विशेष (दे
४, १३) ।

ढड्डर पुं [दे] राहु (सुज्ज २०) ।

ढड्डर पुं [दे] १ मछी भावाज, महावृध्वनि
(सोप १५६) । २ न. गुण-चन्दन का एक

दोष, बड़े स्वर से प्रणाम करना (सुभा २५) ।

३ वि. बुद्ध, बुद्धा, 'ढड्डर-सङ्गाए मण्णे'
(साधं ३८) ।

ढणिय वि [धन्नि] शब्दित, ध्वनित (सुर
१३, ८४) ।

ढमर न [दे] १ पिण्ड, स्याली या याली (दे
४, १७, पात्र) । २ गरम पानी, उष्ण जल
(दे ४, १७) ।

ढयर पुं [दे] १ पिशाच (दे ४, १६,
पात्र) । २ ईर्ष्या, द्वेष (दे ४, १६) ।

ढल भक [दे] टपकना, नीचे पडना,
गिरना । २ झुकना । वक्र ढलन (कुमा),
क्षतसेयचामरलीलो' (उप ६८६ टी) ।

ढलिय वि [दे] झुका हुआ (उप ५ ११८) ।

ढाल सक [दे] १ ढालना, नीचे गिराना ।
२ झुकना चामर वगैरह का चीबना ।

ढालए (सुभा ५७) ।

ढलहल्लय वि [दे] गृह बोमस मुलायम (वज्रा
११४) ।

ढलिय वि [दे] गिरा हुआ, खलित (वज्रा
१००) ।

ढालिअ वि [दे] नीचे गिराया हुआ,
'सोसाओ ढालियो सूरौ' (सुर ३, २२८) ।

ढान पुं [दे] धाग्रह निर्बन्ध (कुमा) ।

ढिक पुं [ढिक्क] पति विशेष (परह १, १—
पन ८) ।

ढिक्क पुं पुं [दे] शूद्र जन्तु विशेष, गौ
दिहुर्य भावि की सगनवाला गौट विशेष
(राज, जी १८) ।

ढिक्कीआ खी [दे] पाय विशेष (तिरि
४२६) ।

ढिग देखो ढिग (राज) ।

ढिडय वि [दे] कल में पतित (दे ४ १५) ।

ढिक्क भक [गर्ज] साह का गरजना ।
ढिक्कइ (हे ४, ६६) । वक्र ढिक्कमाण
(कुमा) ।

ढिक्कय न [दे] निलय, हमेशा, सदा (दे
४, १५) ।

ढिक्कय = [गर्जन] गर्ज की गर्जना
(महा) ।

ढिडिडस न [ढिडिडस] देव-विमान विशेष
(वर) ।

ढिल्ल वि [दे] ढोला, शिपिल (पि १५०) ।

ढिल्ली खी [ढिल्ली] भारतवर्ष की प्राचीन
घौर अद्यतन राज पानी, दिल्ली शहर (पिग) ।

० नाह पुं [नाथ] दिल्ली का राजा (कुमा) ।
ढुल्ल सक [भ्रम] भ्रमना, फिरना, चलना ।

ढुक्कइ (हे ४, १६१) । ढुंल्लन्ति (कुमा) ।

ढुल्ल सक [गवेपय] हँडना, खोजना,
भन्नेपण करना । ढुंल्लइ (हे ४, १८६) ।

ढुल्लग न [गवेपय] खोज, भन्नेपण (कुमा) ।

ढुल्लिअ वि [गवेपित] भन्नेपित, हँडा हुआ
(पात्र) ।

ढुक्क सक [ढीक्] १ भेंड करना धरपण
करना । २ उपस्थित करना । ३ धक, लगना,
प्रवृत्ति करना । ४ मिलना । वक्र. ढुक्कन
(पिग) । कवक. ढुक्कत (उप ६८६ टी,
पिग) ।

ढुक्क सक [प्र + शि] ढुकना, घुसना,
प्रवेश करना । ढुक्कइ (प्राक् ७४) ।

ढुक्क वि [दे] डौकित १ उपस्थित हाजिर
(स २५१) । २ मिलित (पिग) । ३ प्रवृत्त,
'चलित ढुक्को' (धा २७, सण, भवि) ।

ढुक्कल्लय न [दे] चमड़े से मड़ा हुआ
वाय विशेष (तिरि ४२६) ।

ढुक्काअ वि [डौकित] ऊपर देखो (पिग) ।
ढुम } सक [भ्रम] भ्रमण करना, भ्रमना ।
ढुस } ढुमक, ढुमइ (हे ४, १६१, कुमा) ।

ढुल्ल देखो ढुल्ल = भ्रम । वक्र. ढुल्लल्लत
(वज्रा १२८) ।

ढेक पुं [ढेक्क] एक गल पत्ती, पति विशेष
(वज्रा ३४) ।

ढेरा खी [दे] १ हर्ष, घुरी । २ ढँडवा,
ढँकरी, रूप-मुला (दे ४, १७) ।

ढेकिअ देखो ढेकिअ (राज) ।

ढेनी खी [दे] बलाका, बक-पत्ति (दे
४, १५) ।

ढेकुण पुं [दे] मत्तुण, लटमल (दे ४, १४) ।
ढेडिअ वि [दे] धूपित, धूप दिया हुआ
(दे ४, १६) ।

ढेणियाल्ला } पुं खी [देणिसालक] पति-
देणियालय } निरोप (परह १, १) । खी.
० लिमा (पयु ४) ।

ढेस वि [दे] निर्धन, दखि (दे ४, १६) ।

ढोज देखो ढुक्क = डौल । ढाएयइ (महा) ।

म्नेच्छ-जाति, ओम (पएह १, १, इक, पव ६) । ३ देखी हुंघ (पाप्र) ।

डोविलग पुं [दे] १ म्नेच्छ देश विशेष । २ डोविलय एक प्रनाय जाति (पएह १, १, इक) । ३ डोम, चाएडाल (स २८६) ।

डोक्की छी [दे] दूढी छी (कुप्र ३५३) ।

डोड पुं [दे] ब्राह्मण, विप्र (सुख ३, १) ।

डोडिणी छी [दे] ब्राह्मणी (भनु ६६ भृग) ।

डोडिणी छी [दे] ब्राह्मणी (भनु ४६) ।

डोड्ड पुं [दे] एक मनुष्य-जाति, ब्राह्मण, 'हिन्दो सक्कलजिमिओ निगच्छतो बहिं डोड्डो, तो सल्लुदुर फालिम' (उप १३६ ओ) ।

डोर पुं [दे] डोर, गुण, रस्मी (गा २११, वजा ३६) ।

डोल मक [दोलय्] १ डोलना, हिलना,

भूलना । २ संशयित होना, मन्देह मरना । वह, डेलत (भन्नु ६०) ।

डोल पुं [दे] १ सोचन, धाँध, नयन, गुजरती में 'डोलो' (दे ४, ६) । २ जन्तु-विशेष (ग्रह १) । ३ फल-विशेष (पवच २) ।

डोल पु [दे] चतुरिन्धिय जोय की एक जाति (उत ३६, १४८, मुख ३६, १४८) ।

डोल्छ छी [दोल्छ] हिंदोला, झूलना या झूलना (हे १, २१७, पाप्र) ।

डोल्छ छी [दे] डालो, शिविका, पालवी (दे ४, ११) ।

डोलाअंत वि [दोलायमान] संशय करने-वाला, डेंबागेल (भन्नु ७) ।

डोलाइअवि [दोलायित] संशयित, डेंबागेल, 'भइस डोलाइअं हिमम' (गा ६६६) ।

डोलायमान देखो डोलाअंत (निङ्ग १०) । डोलायवि वि [दोलायित] कम्पित, हिलाना हुमा (पजम ३१, १२४) ।

डोलिअ पुं [दे] कृष्णसार, काला हिरन (दे ४, १२) ।

डोलिअवि [दोलायत] डोलनेवाला, कपने-वाला, 'दरडोलिअस' (कुमा) ।

डोलिअग पुं [दे] पानी में होनेवाला जन्तु-विशेष (भृम २, ३) ।

डोय [दे] देखो डोअ (एवि: वा व २१०) ।

छी 'वा' (वजा २७) ।

डोसिणी छी [दे] प्योस्ला, चन्द्र-प्रकाश, चांदनी (पह) ।

डोहल पुं [दोहद] १ गमिणी छी वा श्रमिताप । मनोरप, लालसा (हे १, २१७, कुमा) ।

॥ इम सिरिपाइअसदमहण्यमिम डपाराइइइइइइइ
वीसदमी तरंगी समतो ॥

ड

ड पु [ड] व्यञ्जन वर्ण-विशेष, यह मूर्द्धन्य है, क्योकि इसका उच्चारण मूर्द्धा से होता है (आमा, प्राप) ।

डक पुं [दे] काक, वायस, कौआ (दे ४, १३, ज २, प्राप, सण, भवि, पाप्र) । 'वस्तुल न [वास्तुल] शाक विशेष, एक तरह की भाजी या तरकारी (धर्म २) ।

डक पु [डक] कुम्भकार-जातीय एक जैन उपासक (विजे २३०७) ।

डक देखो डक। नवि, डकिअ (पि २२१) ।

डकण न [दे] छादन १ डकना, पिघान (प्रापु ६०, भृगु) ।

डकण देखो डिकुण (राज) ।

डकणी छी [दे] छादनी डकनी, पिघानिया, डकने वा पात्र विशेष (दे ४, १४) ।

डकिअ देखो डकिअ (सिरि ५२६) ।

डंकुण पु [दे] मलुण, लटमल (दे ४, १४) । डंकुण पु [डडंकुण] वाय विशेष (आमा २, १११) ।

डंड देखो डक = (दे) (पि २१३, २२३) ।

डरअ पु न [दे] फल पत्र से रहित डाल, 'दरसेलेवि हु महमरेण पुनते ण मालई-विडवो' (गा ७५५, वज्जा ५२) ।

डरअअ [दे] डेला । शु० डेलाअ (आस्वा-नकम० को० नागथी आस्वानक पत्र—४ पव ६१) ।

डसरी छी [दे] वीणा-विशेष, एक प्रकार की वीणा (दे ४, १४) ।

डड पुं [दे] १ पंक, कीच, कंदम, कांदो (दे ४, १६) । २ वि, निरयंक, निगमा (दे ४, १६० गवि) ।

डड पुं [डडण] एक जैन महावि, डरडण अपि (सुख २, ११) ।

डड वि [दे] धार्मिक, कपटी (सम्मत् ११) ।

डडण पु [डडण] स्वनाम-व्याप्त एक जैन मुनि (विजे ३२, पडि) ।

डडणी छी [दे] कपिकज्जु, केवाच, बुस-विशेष (दे ४, १३) ।

डडर पुं [दे] १ पिराच । २ ईर्ष्या (दे ४, १६) ।

डडरेअ पुं [दे] कंदम, पक, कादा, कादि (दे ४, १६) ।

डडल्ल सक [भ्रम] भ्रमना, किरता, भ्रमण करना । डंडल्लड (हे ४, १६१) ।

डंडल्लिअ वि [आन्त] आल, भ्रमा हुमा (कुमा) ।

हंढसिअ पुं [दे] १ ग्राम का यन्त्र । २ गाँव का वृक्ष (दे ४, १५) ।

ढहुल्ल देखो हंढल्ल । ढहुल्ल (सण) ।

ढंढोल सक [गवेपय] खोजना, भ्रान्तेपण करना । ढढोल (दे ४, १८६) । सक. ढढोलिअ (कुमा) ।

ढंढोल्ल देखो ढुहुल्ल । सक. ढढोल्लिनि (सण) ।

ढस भक [वि + घृत्] घसना, घमकर रहना, गिर पचना । ढस (दे ४, ११८) । वक्र, ढसमाण (कुमा) ।

ढंसय न [दे] प्रयश, प्रयत्नीति (दे ४, १४) । ढक्क सज [छादिप] १ ढकना, आच्छादन करना, बन्द करना । ढक्क (दे ४, ११) ।

भवि. ढक्किस्स (गा ३१४) । भर्म. 'ढक्कि-उज्जल कूबाई' (सुर १२, १०२) । सक 'सथ्य ढक्किड बार', ढक्किऊण, ढस्ये-ऊण (सुपा ६४०, महा, पि २२१) । क. ढस्येयठर (बन २) ।

ढक्क पु [ढक्क] १ देश-विशेष । २ देश-विशेष में रहनेवाली एक जाति (भवि) । ३ भाट की एक जाति (उप ५ ११२) ।

ढसकय न [ढे] तिमक (दे ४, १४) ।

ढक्करि वि [दे] घट्टुठ्ठ, घासघाँस जनक (दे ४, ४२२) ।

ढसकयथुल्ल देखो ढसयथुल्ल (पव ४) ।

ढक्का श्री [ढसका] वाय विशेष ढका, मगाडा, डमरु (गा ५२६, कुमा सुपा ३४२) ।

ढक्किअ वि [छादित] बन्द किया हुआ, आच्छादित (स ४६६, कुमा) ।

ढक्किअ न [दे] बैल की गर्जना (सण ११२, सुव ६, १) ।

ढगगढगा श्री [दे] 'ढग-ढग' आवाज, पानी वगैरह पोने की आवाज, 'सोखियं ढगगढगाए पोटीयतों' (स २५७) ।

ढजजत देतो ढजमत (पि ११२, २१६) ।

ढह्ढ पु [दे] मेढी, वाय विशेष (दे ४, १३) ।

ढह्ढर पुं [दे] षड् (सुज्ज २०) ।

ढह्ढर पुं [दे] १ षड् आवाज, महान् ध्वनि (सोप १५६) । २ न. शुद्ध-बन्धन का एक

शेष, बड़े स्वर से प्रणाम करना (सुपा २५) । ३ वि. वृद्ध, बुढ़ा, 'ढह्ढर-सङ्गाए मणोए' (साधं ३८) ।

ढणिय वि [ध्वनिन] शब्दित, ध्वनित (सुर १३, ८४) ।

ढमर न [दे] १ पिठर, स्याली या बासी (दे ४, १७, पात्र) । २ गरम पानी, उष्ण जल (दे ४, १७) ।

ढयर पुं [दे] १ पिशाच (दे ४, १६, पात्र) । २ ईर्ष्या, द्वेष (दे ४, १६) ।

ढल भक [दे] टपकना, नीचे पडना, गिरना । २ झुकना । वक्र ढलन (कुमा)

'बलतसेयचामरलीलो' (उप ६८६ टी) ।

ढलिय वि [दे] झुका हुआ (उप ५ ११८) ।

ढाल सक [दे] १ ढालना, नीचे गिराना । २ झुकना, चामर वगैरह का झीजना । ढालए (सुपा ४७) ।

ढलहल्लय वि [दे] मुट्ट कोपल, घुनायम (वज्रा ११४) ।

ढलिय वि [दे] गिरा हुआ, स्थलित (वज्रा १००) ।

ढालिअ वि [दे] नीचे गिराया हुआ, 'सोलाओ ढालिओ सूरों' (सुर ३, २२८) ।

ढान पु [दे] धाग्रह, निर्दोष (कुमा) ।

ढिक पुं [ढिक्क] पति विशेष (पणह १, १—पन ८) ।

ढिकय पुं [दे] शुद्ध जम्बू विशेष, गौ दिवुग [दे] भादि को लगनेवाला कीट विशेष (राज. जी १८) ।

ढिन्लीआ श्री [दे] पाय विशेष (तिरि ४२६) ।

ढिग देखो ढिठ (राज) ।

ढिदय वि [दे] जल में पतित (दे ४, १५) ।

ढिक्क भक [गर्ज] साँठ का गरजना । ढिक्क (दे ४, ६६) । वक्र ढिन्समाण (कुमा) ।

ढिन्सय न [दे] नित्य, हमेशा, सदा (दे ४, १५) ।

ढिक्कय न [गर्जन] साँठ की गर्जना (पहा) ।

ढिहिदस न [ढिहिदस] देन-विमान विशेष (दे ४) ।

ढिल्ल वि [दे] ढीला, सिथिल (पि १५०) । ढिल्ली श्री [ढिल्ली] भारतवर्ष की प्राचीन

और अद्यतन राज-धानी, दिल्ली शहर (पिग) ।

'गाह पुं [नाथ] दिल्ली का राजा (कुमा) ।

ढुल्ल सक [ध्रम] ध्रमना, किरना, चलना ।

ढुल्ल (दे ४, १६१) । ढुल्लति (कुमा) ।

ढुल्ल सक [गवेपय] झूठना, खोजना, भ्रान्तेपण करना । ढुल्ल (दे ४, १८६) ।

ढुल्लय न [गवेपय] खोज, भ्रान्तेपण (कुमा) । ढुल्लिअ वि [गवेपित] भ्रान्तेपित, झूठा हुआ (पात्र) ।

ढुन्क सक [ढीक] १ मँट करना धरएल करना । २ उन्मत्त करना । ३ धक्क. सगना, प्रवृत्ति करना । ४ मिलना । वक्र. ढुक्कन (पिग) ।

कवक्र ढुक्कन (उप ६८६ टी, पिग) ।

ढुक्क सक [प्र + गिरा] झुकना, घुसना, प्रवेश करना । ढुक्क (प्राक् ७४) ।

ढुन्क वि [दे] ढीकन । १ उन्मत्त, हाविर (स २५१) । २ मिलित (पिग) । ३ प्रवृत्त, 'गवितल ढुक्को' (भा २७, मय, भवि) ।

ढुक्कल्लन न [दे] चमड़े से मड़ा हुआ वाय विशेष (तिरि २२६) ।

ढुक्किअ वि [ढीकित] ऊपर देखो (पिग) । ढुम पुं सक [ध्रम] ध्रमण करना, घुसना ।

ढुस पुं ढुम ढुम (दे ४, १६१, कुमा) ।

ढुरुल्ल देखो ढुल्ल = ध्रम । वक्र ढुरुल्लत (वज्रा १२८) ।

ढेर पुं [ढेक्क] एन जल पनी पति विशेष (वज्रा ३४) ।

ढेरा श्री [दे] १ हर्ष, खुशी । २ हँसना, हँसली, हूप-मुला (दे ४, १७) ।

ढेकिअ देखो ढिक्कय (राज) ।

ढेकी श्री [दे] बलाका, बक-पति (दे ४, १५) ।

ढेकुग पुं [दे] मत्तण, खटवत (दे ४, १४) ।

ढेडिअ वि [दे] धूपित, धूप दिया हुआ (दे ४, १६) ।

ढेणियालय पुं श्री [देणिसालक] पति-देणियालय वि [विराज] (पणह १, १) । श्री.

'सिया (पव ४) ।

ढेल वि [दे] निर्धन, दखि (दे ४, १६) ।

ढोअ देखो ढुक्क = ढीस । टोएगह (पहा) ।

डोइय वि [डोकि] १ मंड विया हुआ २ उपस्थित विया हुआ (महा, सुपा १६८, भवि)।
 डोपर वि [दे] भ्रमण शीघ्र, घुमकट, घूमनेवाला (दे ४, १५)।
 डोयण देखो डोवण (वेज्य ५२, मुप्र १६८)।

डोयणिया छी [डोकिन] उपहार, मंड (धर्मवि ७१)।
 डोल्ल पु [दे] प्रिय, पति (संक्षि ४७, हे ४, ३३०)।
 डोल्ल पु [दे] १ दोल, पट्टा २ देश विरोध, जितवी राजधानी धौलपुर है (पिंग)।

डोवण } न [डोकिन, 'क] १ मंड करना,
 डोवणय } भ्रमण करना (कुमा) २ उपहार,
 मंड (सुपा २८०)।
 डोविय वि [डोकि] उपस्थापित, उपस्थित
 विया हुआ (स ५०८)।

॥ इम खिरपाइअसहमहण्णम्मि डयाराइसइसवत्तणो
 एम्मकीसइसो रंरंगो समत्तो ॥

रा सया न

ण पु [ण, न] व्यञ्जन वर्ण-विशेष, इसका उच्चारण स्थान मूर्दा है इससे यह मूर्दव्य कहाता है (प्राप, प्रामा)।
 ण घ [न] निवेद्यार्थक अन्वय, नहीं, मत (कुमा, गा २, प्रासू १५६)। 'उण, 'उणा, 'उगाइ, 'उणो भ [पुन] न तु, नहीं कि (हे १, ६५, पद्)। 'सतिपरलोगमाइ वि [आन्तिपरलोकयादिपु] भोग और परलोक नहीं है ऐसा माननेवाला (डा न)।
 ण ल [तत्] वह (हे १, ७, कुमा)।
 ण स [इवम्] यह, इस (हे ३, ७७, उप ६६०, गा १३१, १६६)।
 ण वि [ज्ञ] जानकार, परिउठ, विचणए (कुमा २, ८८)।
 णअ देखो णअ = नव (गा १०००, नाट—चैत ४२)। 'डीअ पु ['दोप] बयाल का एक विख्यात नगर, जो म्याय-खास का केन्द्र गिना जाता है, जिसको आजकल 'नदिया' कहते हैं (नाट—चैत १२६)।
 णअचर देखो णत्तचर (चड)।
 णइ छी [नति] १ नमन, नम्रता २ भव-सान, मत (राय ४६)।
 णइ ध. १ निश्चय सूचक अव्यय, 'गईए खाइ' (हे २, १८४, पद्)। २ निवेद्यार्थक अव्यय, 'नइ माया नेर पिग' (मुप्र २, २०६)।

णइ* देखो णई (गउइ, हे २, ६७, गा १६७, सुर ११, ३५)।
 णइअ वि [नयिक] नय-युक्त, यमिप्राय विशेष-वाला (सम ४०)।
 णइअ देखो णी = जी।
 णइमासय न [ठे] पानी में होनेवाला फन-विशेष (दे ४, २३)।
 णइराय न [नीरायस्य] माया का प्रभाव। 'याद पु ['याद] माया के घटितव को महा माननेवाला सर्वेन, बीड तथा बाबाक मत (धर्मस ११८५)।
 णई छी [नदी] नदी, पर्वत आदि से निकला वह स्रोत जो समुद्र या बड़ी नदी में जाकर मिले (हे १, २२६, धाम)। 'कच्छ पु ['कच्छ] नदी के किनारे पर की भावी (खाया १, १)। 'गाम पु ['ग्राम] नदी के किनारे पर स्थित गांव (ग्राम)। 'णाइ पु ['नाय] समुद्र, सागर (उप ७२८ टी)। 'वइ पु ['पति] समुद्र, सागर (पह १, ३)। 'सवार पु ['सवार] नदी उत्तरना, जहाज आदि से नदी पार जाना (यज)। 'सोत्त पु ['सोवस] नदी का प्रवाह (ग्राम, हे १, ४)।
 णउ (धप) देखो इव (कुमा)।
 णउअ न [नयुत] 'नयुताप' को चौरासी

साज से घुलने पर जो संस्था लम्ब हो वह (डा २, ४, इक)।
 णउअ न [नयुताप] 'प्रयुत' को चौरासी से घुलने पर जो संस्था लम्ब हो वह (डा २, ४, इक)।
 णउइ छी [नसि] संस्था-विशेष, नम्बे, ६० (सम ६४)।
 णउइय वि [नस] ६० वाँ (पलम ६०, ३१)।
 णउल पु [नकुल] १ म्योला, नेवला (पह १, १; जी २२)। २ पाँचवाँ पाएख (खाया १, १६)।
 णउल पु [नकुल] वाघ विशेष (राय ४६)।
 णउली छी [नकुली] एक महीपति (वी ४)।
 णउली छी [नकुली] विद्या विशेष, सर्व-विद्या की प्रतिपक्ष विद्या (राज)।
 ण य [दे] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ प्रस १ २ उपमा (प्राक ७६)।
 ण य. १ वाक्पालकार में प्रयुक्त किया जाता अव्यय (हे ४, २८३ उवा. पडि)। २ प्रस-सूचक अव्यय, ३ स्वीकार-योजक अव्यय (राज)।
 ण (वी) देखो णयु (हे ४, २८३)।
 णं (धप) देखो इव (हे ४, ४४४, भवि, सण. पडि)।

पंगअ वि [दे] ख, रोका हुषा (पह) ।

पंगर पु [दे] लगर, जहाज को जल-स्थान मे यामने के लिए पानी में जो रस्सी धादि डाली जाती है वह (उप ७२ न टी, सुर १३, १६३, स २०२) ।

पंगर } न [स्यङ्गल] हल, जिसमे खेत जोता
गंगल } और बोया जाता है (पउम ७२, ७३, पएह १, ४, पाभ) ।

पगल पुन [दे] बज्जु, चांच, चोच, 'जडाउणो छुटो । नहणगलेसु पहरह दसाणण बिउल-बच्छयने' (पउम ४४, ४०) ।

पगल पुन [स्यङ्गल] एक देव विमान (देवेन्द्र १३३) ।

पगलि पु [स्यङ्गलिन्] बलमर, हली (कुमा) ।

पगलिय पु [स्यङ्गलिक] हल के आगारवाले शक विशेष को चारण करने वाला सुमट (बप्प मीप) ।

पगल न [स्यङ्गल] पुच्छ, वृक्ष (ठा ४, २, हे १, २५६) ।

पगलि वि [स्यङ्गलिन्] १ लम्बी वृक्षवाला २ पु वापर, बन्द (कुमा) ।

पंगलि देखो पगोलि (पव २६२) ।

पगोल देखो पगल (पाया १, ३, पि १२७) ।

पंगोलि } पु [स्यङ्गालिन्, 'क] १ भन्त-
पगोलिय } होप विशेष । २ उसका निवासी
मनुष्य (पि १२७, ठा ४, २) ।

पंगता न [दे] वज, बपडा (कत, भाव ५) ।

पंद भन [नन्द] १ छुरा होना, भानन्ति होना । २ समुद्र होना । एवद, एवए (पह) । कवड्ड पंदिजमाण (मीप) । क. पदि-अउव, पदेअउव (पह) ।

पंद पु [नन्द] १ स्वनाम प्रसिद्ध पाटलिपुत्र नगर का एक राजा (सुद्धा १६ न, सुदि) । २ भरत क्षेत्र के भावी प्रथम वासुदेव (सम १५४) । ३ भरत-क्षेत्र मे होने वाले नववें तीर्थंकर का पूर्व भवी नाम (सम १५४) । ४ स्वनाम प्रसिद्ध एक जैन मुनि (पउम २०, २०) । ५ स्वनाम-स्वात एक मेयो (शुपा ६६ न) । ६ न. देव विमान विशेष (सम २६) । ७ सोहे का एक प्रकार का वृत्त आसन (पाया १, १—पत्र ४३ टी) । ८ वि. समुद्र हनि

वाला (मीप) । 'कंत न [कान्त] देव-विमान विशेष (सम २६) । 'कूड न [कूट] एक देव विमान (सम २६) । 'ऊम्य न [ध्वज] एक देव-विमान (सम २६) । 'पम न [प्रम] देव विमान विशेष (सम २६) । 'मई स्वी [मती] एक भन्तउत्त साध्वी (अन्त २५, राज) । 'मित पु [मित्र] भरतक्षेत्र मे होने वाला द्वितीय वासुदेव (सम १५४) । 'नेस न [नेयर] एक देव विमान (सम २६) । 'वई खी [वनी] १ सातवें वासुदेव की माता (पउम २०, १८६) । २ रतिकर पवत पर स्थित एक देव नगरी (देव) । 'वणन न [वण] देव विमान-विशेष (सम २६) । 'सिग न [शृङ्ग] एक देवविमान (सम २६) । 'सिद्ध न [सुधु] देव विमान-विशेष (सम २६) । 'सिरी खी [श्री] स्वनाम-स्वात एक थेहि कन्या (सी ३७) । 'सेनिया खी [सेनिना] एक जैन साध्वी (अत २५) ।

पद पु [नन्द] गोप विशेष, श्रीधण्य का पातक गोपाल (भजा १२२) ।

पद पुखी [नन्दा] पत की पक्षी (प्रतिपदा), पछो श्रीर एकादशी तिथि (सुज १०, १५) ।

पद न [दे] १ ऊल पीलने या पेरने का काएड । २ कुएडा, पात्र विशेष (दे ४, ४५) ।

पदम पु [नन्द] वासुदेव का खड्ड (पएह १, ४) ।

पदण पु [नन्द] १ पुत्र, लडका (भा ६०२) । २ राम का एक स्वनाम-स्वात सुमट (पउम ६७, १०) । ३ स्वनाम-स्वात एक भलदेव (सम ६३) । ४ भरतक्षेत्र का भावी सातवां वासुदेव (सम १५४) । ५ स्वनाम-प्रसिद्ध एक अश्वी (उप ५५०) । ६ अश्विक राजा का एक पुत्र (मिर १, २) । ७ मेघ पर्वत पर स्थित एक प्रसिद्ध वन (ठा २, ३, ६क) । ८ एक चैत्य (मग ३, १) । ९ बुद्धि (पएह १, ४) । १० नगर विशेष (उप ७२ न टी) । 'नर वि [नर] बुद्धि कारक । 'कूड न [कूट] नन्दन वन का छिहर (राज) । 'भद पु [भद्र] एक जैन मुनि (बप्प) । 'वण न [वन] १ स्वनाम-स्वात एक वन जो मेघ

पर्वत पर स्थित है (सम ६२) । २ उगान-विशेष (मिर १, ५) ।

पदण पु [दे] भुल, नीवर, दास (दे ४, १६) ।

पदण पुन [नन्द] एक देव-विमान (देवेन्द्र १४३) । २ न सतोप (एदि ४५) ।

पदणा खी [नन्दना] लडकी, पुत्री (पाभ) । पंदणी खी [नन्दनी] पुत्री, लडकी (सिदि १४०) ।

पंदतणय पु [नन्दतय] धीबुण (प्राक २७) ।

पदमाणग पु [नन्दमानक] पत्नी की एक जाति (पएह १, १) ।

पदयारात्त पु [नन्दारत्त] १ एक देव-पदारात्त } विमान (देवेन्द्र १३४) । २ पु-चतुर्दिन्द्रिय जीव की एक जाति (उप १६, १४८) । ३ न लगासार एकीस दिनों का उपवास (सबोध ५८) ।

पदा खी [नन्दा] १ भगवान् श्रवणदेव की एक पत्नी (पउम ३, ११६) । २ राजा मेरुकि की एक पत्नी और भयवदुमार की माता (पाया ११) । ३ भगवान् श्री शीतलनाथ की माता (सम १५१) । ४ भगवान् महावीर के अचलभ्रातृ नामक गणेश की माता (भावम) । ५ राखण की एक पत्नी (पउम ७४, १०) । ६ परिबस रुकन-पर्वत पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८) । ७ ईशानेश्वर की एक प्रथमहिणी की राजधानी (ठा ४, २) । ८ स्वनाम-स्वात एक पुष्करिणी (ठा ४, १) । ९ पयोसिप शास्त्र मे प्रसिद्ध तिथि विशेष—प्रतिपदा, पछो श्रीर एकादशी तिथि (पव १०) ।

पदा खी [दे] गो, गैया (दे ४, १८) ।

पदारात्त पु [नन्दारत्त] १ एग प्रकार का स्वन्तिक (सुपा ५२) । २ बुद्ध जन्तु की एक जाति (जीव १) । ३ न. देव विमान-विशेष (सम २६) ।

पंदि पुखी [नन्दि] १ पाए प्रकार के बायो ना एक हो साथ भावान (पएह २, ५, सुदि) । २ प्रमाद, हर्ष (ठा ५, २) । ३ मतिमान भादि पांचा जान (एदि) । ४ नाभिद्ध अर्थ की प्राप्ति । ५ मंगल (बुह १, अजि ६) । ६ समुद्धि (पएह) । ७ जैन

भागम ग्रंथ-विशेष (एरि) । = वाग्धा, भूमिलाप, नाह (सम ७१) । ६ गन्धार ग्राम की एक मूर्धना (ठा ७) । १० पुं-स्वनाम स्यात् एक राजकुमार (विपा १, १) । ११ एण जैन मुनि, जो धरने भाग्यामी भव में शिरोय धलदेव होगा (पउम २०, १६०) । १२ वृत्त-विशेष (पउम २०, ४२) । १ आनत्त देवो 'यानत्त (इक) । उड्डठ पुं ['वृद्ध] एक प्राचीन कवि का नाम (कप्प) । १ कर, 'गर वि ['कर] मंगल-कारक (कप्प, लाया १, १) । १ गाम पुं ['ग्राम] ग्राम-विशेष (पउ ६१७, पात्र १) । १ योम पुं ['घोष] १ गारह प्रचार के यात्री की छायाज (एरि) । २ न. देशविमान-विशेष (सम १७) । १ चुणगा न ['चूर्णक] होठ पर लगाने का एक प्रकार का चूर्ण (सूम १, ४, २) । १ तूर न ['तूर्य] एक साय यज्ञया जाता गारह तूरह का वाद्य (इह १) । १ पुर न ['पुर] तादृश्य देश का एक नगर (उप १०३१ टी) । १ फल पुं ['फल] वृक्ष-विशेष (लाया १, ८, १५) । १ भाण न ['भाजन्] उपकरण-विशेष (इह १) । १ मित्त पुं ['मित्र] १ देवो गंद-मित्त (राज) । २ एक राजकुमार, जिसने भगवान् मल्लिनाथ के साथ दोहा ली थी (लाया १, ८) । १ मुडंग पुं ['मुद्गन्] एक प्रकार का मुद्ग, वाद्य-विशेष (राय) । १ सुह न ['सुह] पक्षि-विशेष (राज) । १ यर देवो 'कर (पउम ११८, ११७) । १ यावत्त पुं ['आवत्त] १ शक्ति-विशेष (घीय, परह १, ४) । २ एक लोकपाल देव (ठा ४, १) । ३ बुद्ध भन्तु-विशेष (पएह १) । ४ न. देश-विमान-विशेष (राज) । १ राय पुं ['राय] पाएरुनो के सप्त-कालीन एक राजा (लाया १, १६—पउ २०८) । १ राय पु ['राय] समुद्रि मे हर्ष (भा २, ५) । १ रुक्ख पुं ['वृक्ष] रुक्ख-विशेष (पएह १) । १ उड्डठणा देवो 'वद्धणा (इक) । १ वद्धण पु ['वर्धन] १ भगवान् महावीर का वृद्ध भ्राता (कप्प) । २ पय-विशेष (कप्प) । ३ एण राजकुमार (विपा १, ६) । ४ न. नगर-विशेष (गुपा ६८) । १ वट्टणा श्री ['वर्धना] १ एक

दिक्कुमारी देवी (ठा ८) । २ एक पुष्परिणी (ठा ४, २) । १ 'सेण पुं ['पेण] १ ऐश्वर्य वर्ण में उत्पन्न वस्तुयें जिन-देव (सम १५३) । १ एक जैन कवि (प्रजि ३८) । ३ एक राज-कुमार (ठा १०) । ४ स्वनाम स्यात् एक जैन मुनि (उव) । ५ देव विशेष (राज) । १ 'सेणा श्री ['पेणा] १ पुष्परिणी-विशेष (जीव ३) । २ एक दिक्कुमारी देवी (जीव) । १ 'सेणिणा श्री ['पेणिना] राजा थेलिक की एक पत्नी (धंत) । १ रुसर पुं ['स्वर] १ देवो गंदीसर (राज) । २ गारह प्रकार के वाद्यों का एक ही साथ छायाज (जीव ३) । १ पंदिअ न ['दे] सिंह की विल्लाएट, दहाइ (दे ४, १६) । १ पंदिअ वि ['नन्दित] १ समुद्र (घीय) २ जैनमुनि-विशेष (कप्प) । १ गंदिक्ख पुं ['दे] सिंह, मुनेद्र (दे ४, १६) । १ गंदिपोस पुं ['नन्दिपोस] वाय विशेष (राय ४६) । १ पंदिल न ['नन्दीय] जैन मुनियों का एक कुल (कप्प) । १ गंदिणी श्री ['नन्दिनी] पुत्री, लहकी (पउम ४६, २) । १ पिउ पुं ['पिउ] भगवान् महावीर का एक स्वनाम-स्यात् पृष्ठस्थ उपासक (उवा) । १ गदिणी, श्री ['दे] गड, गोधा, गाय (दे ४, १८, पाथ) । १ गंदिल पुं ['नन्दिल] भार्यमयु के शिष्य एक जैनमुनि (एरि ५०) । १ गंदिसर पुं ['नन्दीसर] १ एक द्वीप । २ गंदीसर १ एक समुद्र (मुज १६) । ३ एक देव विमान (देवेइ १४४) । १ गंदी देवो गदि (यहा, श्रीय ३२१ भा, परह १, १, श्रीय-सम १५२, एरि) । १ गंदी श्री ['दे] वज्र, गाय, गैया (दे ४, १८, पाथ) । १ गंदीसर पुं ['नन्दीसर] स्वनाम प्रसिद्ध एक द्वीप (लाया १, ८, महा) । १ वर पुं ['वर] नन्दीसर द्वीप (ठा ४, ३) । १ वरोद पुं ['वरोद] समुद्र-विशेष (जीव ३) । १ गंडुसर पुं ['नन्दीसर] देव-विशेष, नाम-कुमार के भूतानन्द-नामक इन्द्र के रथ-नीय का शनिपति देव (ठा ४, १; इक) । १ वडि-

सग न ['वर्तसक] एक देव-विमान (सम २६) । १ पंडुत्तरा श्री ['नन्दोत्तरा] १ पश्चिम रुक्क पर्वत पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८; इक) । २ वृष्णनामक इन्द्राणी की एक राजधानी (जीव ३) । ३ पुष्परिणी-विशेष (ठा ४, २) । ४ राजा थेलिक की एक पत्नी (धंत ७) । १ पणार पुं ['णार, नार, 'ए' या 'न' मशर (विसे २८६७) । १ पण पुं ['नण] १ जलजन्तु-विशेष, ग्राह, वाचा (पएह १, १; कुमा) । २ दावण का एक स्वनाम स्यात् मुनेद्र (पउम ५६, २८) । १ पण पुं ['दे] १ नाक, नासिका (दे ४, ४६; विपा १, १; श्रीय) । २ वि. भूक, वाचा-वाचा-शक्ति से रहित, दूंगा (दे ४, ४६) । १ 'सरा श्री ['सरार] नाक का छिद्र (पाथ) । १ पणंवर पुं ['नक्षत्र] १ राक्षस । २ चोर । ३ विशाल । ४ वि. रात्रि में चलने फिरने-वाला (हे १, १७७) । १ पणर पुं ['नक्ष] नक्ष, नाखून (हे २, ६६; प्राप्र) । १ अ वि ['ज] मल से उत्पन्न (गा ६७१) । १ आउद पुं ['आरुध] सिंह, गुमारि (कुमा) । १ पणरत्त पुन ['नक्षत्र] कृत्तिका, श्रद्धिनी, भरणी श्रादि ज्योतिष-विशेष (पाथ, कप्प, इक, सुज १०) । १ 'दमण पुं ['दमन] राक्षस-वश का एक राजा, एक लक्ष्य (पउम ५, २६६) । १ 'मास पुं ['मास] ज्योतिष-शास्त्र में प्रसिद्ध समय-मान-विशेष (वर १) । १ 'सुह न ['सुह] चन्द्र, चांद (राय) । १ 'संवच्छर पुं ['संवत्सर] ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्ध वर्ष-विशेष (ठा ६) । १ पणस्सत्त वि ['नक्षत्र] १ क्षत्रिय-जाति के भ्रमोद्य वर्ण करवाला (पर्मवि २) । २ पुन, एक देव विमान (देवेइ १४३) । १ पणस्सत्त वि ['नक्षत्र] नक्षत्र-सम्बन्धी, नक्षत्र का (ज ७) । १ पणस्सत्तपेमि पुं ['दे. नक्षत्रनेमि] विष्णु, नारायण (दे ४, २२) । १ पणरत्तण न ['दे] नक्षत्र चरकटक विहा-लने का राक्ष विशेष (इह १) ।

पञ्चिख वि [नरिन्] सुन्दर नखवाला (बृह १)।

पण देखो पणर (कुप्र ५८)।

पण देखो पण = नग (पणह १, ४, ज ३३६ टी, सुर ३ ३४)। राय पु [राज] मेर पर्वत (ठा ६)। [र] पु [र] श्रेष्ठ पर्वत (छाया १, १)। [रिंद पु [रिन्द] मेर-पर्वत (पडम ३, ७६)।

पणर न [नहर, नगर] शहर, पुर (बृह १ कप्य, सुर ३, २०)। गुत्तिय, गोत्तिय पु [गुत्तिय] नगर रत्नक, कोटपाल, कोतवान दरोगा (छाया १, १८ श्रीग, पणह १, २, छाया १ २)। बाय पु [पाल] शहर में कृ-पा- (छाया १, १८)। [गिद्धमग न [नियमन] नगर का पानी जान का रास्ता, मोरी हाल (छाया १, २)। [रिन्दिय पु [रिन्द] देखो [गुत्तिय (निबू ४)। [नास पु [नास] राजधानी, पाटनगर (ज १—यत्र ७४)।

पणरी बला पणरी (राज)।

पणगिआ की [पणगिआ] छद विरोध (विग)।

पणिंद पु [नगोन्] १ श्रेष्ठ पर्वत (पडम ६७, २७)। २ मेर पर्वत (सुम १, ६)।

पणिग वि [नम] नगा, बन्न रहित (भाचा, उर ६ १६३)।

पणग देखो पण (तडू ४४)।

पणग वि [नम] नगा, बन्न रहित (प्राप्र दे ४, २८)। [इ पु [जिन्] गचार देश का एह स्वनाम-स्वात राजा (श्रीप महा)।

पणगठ वि [दि] निर्गत, बाहर निकला हुआ (पडू—पुष्ट १८१)।

पणगोह पु [पणगोह] वृक्ष विरोध, बड का पेड़ (पाम, सुर १, २०५)। [परिमंडल] [परिमंडल] संख्या विरोध शरीर का भाकार विरोध (ठा ६)।

पणुस ॥ [नपुण] स्वनाम-स्वात एक राजा (पडम २२९, ५५)।

पणिरा देखो अइरा = मणिराज (वि ३६५)।

पण भर [नृ] गवना, नृत्य करना। एचद (पडू) यह पणत, पणमाग (सुर

२, ७५, ३, ७७)। हेरु, पण्डित (पा ३६१) क. पणियन्व (पडम ८०, ३२)।

प्रयो कइ, पणविजित (स २६)।

पण न [इतर] जानकारी, पण्डितई (कुमा)।

पण न [नृत्य] नाच, नृत्य (दे ५, ८)।

पणग वि [नरतक] १ नाचनेवाला। पु. नट, नचवैया (वव ६)।

पणग न [नरतन] नाच, नृत्य (कपू)।

पणगणी की [नरतनी] नाचनेवाली स्त्री (कुमा, कपू सुपा १६६)।

पणग [देखो पण = जा]।

पणगण [देखो पण = जा]।

पणगविज वि [नरतित] नचाया हुआ (पाप २६५, ठा ६)।

पणसमन न [नात्यासमन] यति समीप मे नही (छाया १, १)।

पणिर वि [नरतित] नचवैया, नाचनेवाला नरतन-शील (पा ४२०, सुपा ५४, कुमा)।

पणिर वि [दे] रक्ख-शील (दे ४, १८)। पण्युणह वि [नात्युण] जो धवि गरम न हो (ठा ५, १)।

पणज सक [हा] जानना। एणज (प्राप्र)।

पणज वि [न्यापय] ग्याप सगत (प्राह १६)।

पणजत [देखो पण = जा]।

पणजर वि [दे] मलिन, मैला (दे ४, १६)। पणजर वि [दे] विमल, निर्मल (दे ४, १६)।

पण्ड भक [नट] १ नाचना। २ सव हिंसा करना। एण्ड (दे ४, २३०)।

पण्ट पु [नट] नरतकी की एक जाति, एणक्ति राहु पणएति विप्रा (रमा सण कप्य)।

पण्ट न [नाटय] नृत्य, गीत और वाद्य न-कर्म (छाया १, ३ सम ८३)।

पण्ट पु [पाल] नाटक-स्वामी सूत्रधार (प्राह १)। [मालय पु [मालक] वव विरोध

बएप्रभात गुहा का प्रविष्टाप्रव देव (ठा २ ३)। [अरिज पु [चार्य] सूत्रधार

(मा ४)। पण्ट [नृत्य] नाच, नृत्य (दे १, ८, कपू)।

पण्ट अ न [नाटयक] देखो पण्ट = नाट्य (मा ४)।

पण्ट अ [वि [नरतक] नाचनेवाला, नचवैया पण्टम (प्राप्र छाया १, १ श्रीप)। स्त्री।

ई (प्राप्र, हे २, २० कुमा)।

पण्टर पु [नाटय फर] नाट्य करनेवाला (सण)।

पण्टर अ वि [नरतक] नाचनेवाला (कपू)। पण्टिया स्त्री [नरतिका] नगी, नहाही, नाचने-वाली स्त्री (महा)।

पण्टमुसत पु [नरतमत्त] स्वनाम क्यात एक विगायर (महा)।

पण्ट पु [नट] एक नरक स्थान (देव २ २८)। २ न पणामन (कुप्र ६७)।

पण्ट वि [नट] १ नट धनपत, नारा प्राप्त (सुम १, ३, ३, प्राहू ८६)। २ पुन मही-राज का सतरहवां घुहूत (राज)। सुइअ वि [भ्रुतिक] १ जो बधिर—महारा हुआ हो (छाया १, १—पन ६६)। २ राज के वास्तविक ज्ञान से रहित (राज)।

पण्टु वि [नटयन्] १ नारा प्राप्त। २ न, महीराज का एक घुहूत (राज)।

पण्ड भक [गुप्] १ ब्याकुल होता। २ सक खिन्न करना। एण्ड एणक्ति (दे ४, १५०, कुमा)। कर्म, एण्डिअ (पा ७७)।

कवड, पण्डिजत (सुपा ३३८)।

पण्ड देखो पण्ट = नट। एण्ड (प्राह ६६)।

पण्ड देखो पण्ड = नट (दे २, १०२)।

पण्ड पु [नट] १ नरतका की एक जाति, नट (दे १ १६५ प्राप्र)। [पण्डिया की [पण्डिया] शीपा विरोध, नट की तण्ड कृपिम साधुवन (ठा ४ ४)।

पण्डाल न [एणट] भाव कपाल (दे १, ४७, २५७ उडउ)।

पण्डालिआ की [एणटिका] लपाट-खोना, कपाल मे चन्दन प्रादि का वितेपन (कुमा)।

पण्डाविज वि [गोपित] १ ब्याकुल किया हुआ। विपय किया हुआ (सुपा ३२५)।

पण्डिअ वि [गुपिन] व्यनुल (न १०, ७०, सण)।

पण्डिअ वि [दे] १ वडिअ विप्रवास्ति (दे ४, १६)। २ खदित, खिन्न किया हुआ (दे ४, १६, पाम छाया १, ६)।

गडो को [नटी] १ नट की स्त्री (पा ६० अ ६) । २ लिपि विशेष (विसे ४६४ टी) । ३ नाचनेवाली स्त्री (रह ३) ।

गडुली की [दे] कन्धन, कपड़ा (दे ४, २०) । गडूल न [नड डूल] १ मगर विशेष (मोह ५८) । २ पु. देश-विशेष (तो १५) ।

गडुली की [दे] भेक, भेदक, सेंग (दे ४, २०) । गडुल न [दे] १ रत्न, वैद्युत । २ दुर्दिन, भेदाच्छन्न दिवस (दे ४, ४७) ।

गड बुली देखो गडुली (दे ४, २०) । गणदा की [ननानट] वलि की बहिन, ननद (पह, दे ३, ३५) ।

गणु [नट] इन प्रयोगों का सूचक प्रत्यय— १ धनधारण, निष्पन्न (मासु १६१, निष्प १) । २ प्राणात् । ३ चित्तर्क । ४ प्रथम (उज, सण, प्रति ५५) ।

गणु पु [दे] १ कृप, कुप्रा । २ दुर्जन, क्षत्र । ३ बड़ा भाई (दे ४, ४६) ।

गत्त न [नक] राति, रात (पह १०) ।

गत्त देखो गत्तु 'सकनितेतिगमिनिगमिगुत्त-पडिगुत्ततपुली' (दुपा ६) ।

गत्तचर देखो गकचर (कुमा, पि १७०) ।

गत्तण न [नर्तन] नाच, नृत्य (नाट—रकु ५०) ।

गत्त को [हामि] क्षान (बर्मेज ५२८, एपि ६७ टी) ।

गत्तिय पु [नप्टक] १ पौन, पुन का पुन पोता । २ बौद्धि, पुत्री का पुत्र, नाती (दे १, १३७, कुमा) ।

गत्तिया } की [नप्टी] १ पुत्र की पुत्री, गत्ती } पौरी (कुमा) । २ पुत्री की पुत्री, नातिन, नतिनी (राज) ।

गत्तु } दू [नप्ट, क] देखो गत्तिय गत्तुअ } (निर १, १; हे १ १३७, गुमा १६२, बिना १, ३) ।

गत्तुअ देखो गत्तिया (हर ६ विगा १, ३) ।

गत्तुअ की [नप्टविनी] १ पौन की स्त्री । २ श्रीहिम की स्त्री (विपा १ ३) ।

गत्तुअ देखो गत्ती (विगा १, २, कप्य) ।

गत्तुगिअ पु [नप्ट] १ पौन, पौवा । २ प्रपौव, परपोता (रह ७, १८) ।

गत्तुगिआ देखो गत्तिया (रह ७, १५) ।

गत्तय वि [न्यस्त] स्थापित, निहित (छाया १, १, ३, विसे ६६६) ।

गत्तयण न [दे] भाक भे छिन्न करना (गुर १४, ४१) ।

गत्तया की [दे] नासा रज्जु, नाथा या नाथ (दे ४, १७, उवा) ।

गत्तिय अ [नास्ति] अभाव सूचक प्रत्यय (कण, उवा, सम्म ३६) ।

गत्तियअ पि [नास्तिअ] १ परलोभ भावि नहीं माननेवाला (पाक) । २ पुं. नास्तिव-यत्त वा प्रवर्तक, चार्वाक । ३ वाय पु. [वाद्] नास्तिरु-धरान (उप १९२ टी) ।

गत्तिययाइ वि [नास्तिरुयादिन] आरम्भ भावि के अस्तित्व को नहीं माननेवाला (पर्मवि ४) ।

गद खन [नट] नाद करना, बजावत करना । कहु. गदत (मम ५०, नाट—मुल्ल १२५) ।

गद पु [नट] नाद बजावत, शब्द, 'गदहेव्व गमा मज्जे के विस्सर नयई नव' (सम ५०) ।

गदी देखो गई (सि ६, ६३, पखण ११) ।

गदिय वि [दे] दु कित (दे ४, २०) ।

गदिय न [नर्दित] घोष धावाज, शब्द (राज) ।

गद वि [नट] १ परिहित, भाष्योक्ति (पा ५२०, पत्रम ७, ६२, गुपा ३५५) । २ निव-जित, बंधा हुआ (गुपा ३५५) ।

गद वि [नट] कर्वावत, बर्तित (बर्मवि ४) ।

गद वि [दे] भाक (दे ४, १८) ।

गदहव्वय न [दे] १ कपण, कृपा या चित का अभाव । २ किन्दा (दे ४, ४७) ।

गपहुत्त वि [अप्रभूत] अभागी, अपरिपूर्य, अपेष्टरहित (गड) ।

गपहुत्तत वि [अप्रभवत्] अभागी होता (गड) ।

गपुस } पुन [नपुसक] गर्वुक, नीचन, गपुसअ } नावद, पद (बीय २१, या १६, गपुसय } ठा ३, १ सम ३७, महो) ।

गु [नेद] कर्म-विशेष, जिसके उदय से स्त्री और पुरुष दोनों के स्पर्श की वाञ्छा होती है (छा ६) ।

गपुस सब [ह्य] जानना । छपुअ (प्राप्र) ।

गम देखो गह = गम (हे १, १८७ कुमा, वरु) ।

गमसुरय पु [नम शूरक] कृष्ण पुद्गल-विशेष, राहु (गुज २०) ।

गम सब [नम] तमन करना, प्रणाम करना ।

गममि (भग) । वहु गमत, गममाण (वि ३६७, आवा) । कवहु, गमिज्जत (सि ६, ३५) । सहु गमिज्जण, गमिऊण, गमेऊण (पौ १, वि ५८५, महा) । क-

गमगिज्ज, गमिज्जव (रपण ४६, उ २११ टी, पत्रम ६६, २१) । सहु. गमिअ (कम्म ४, १) ।

गमस सक [नमस्य] तमन करना, नम-स्कार करना । छमसह (भग) । वहु.

गमसमाण (छाया १, १, भग) । सहु गमसित्ता (छा ३, १, भग) । हेहु.

गमसिच्छण (ववा) । छ गमसगिज्ज, गमसियउर (श्रीय, गुपा ६३५ पत्रम ३५, ४६) ।

गमसण न [नमस्यन] तमन, नमस्कार (ब्रजि ५ भग) ।

गमसणया } की [नमस्यता] प्रणाम, गमसणया } नमस्कार (भग गुपा ६०) ।

गमसिय वि [नमस्यित] जिसको तमन किया गया हो वह (पण २, ४) ।

गमस्यार देखो गमोस्यार (गवड, पि ३०६) ।

गमण न [नमन] प्रणमि, प्रणाम, नमना (दे ७, १६, रपण ४६) ।

गमसिअ न [दे] उपचायिक, मनौवी (दे ४, २२) ।

गमि पु [नमि] १ स्वतन्त्र-व्याप्त एतद्गतवो जित देव (सम ४३) । २ स्वतन्त्र प्रसिद्ध राजवि (उव ३६) । भगवात्त न्यपमदेव का एक पौन (पण ४४) ।

गमि वि [नव] प्रणत, जितन तमन किया हो वह पवित्रस्वभाववालो उत्सव राशेरी नमिण' (महा) ।

गमिअ वि [नमित] नमाया हुआ (पा ६६०) ।

गमिअ देखो गम ।

गमिआ की [नमिता] १ स्वनाम-ख्यात एक की । २ 'जाताधर्मक्यासूत्र' का एक अध्याय (छाया २) ।

गमिर वि [नम्र] नमन करनेवाला (कुमा, सुपा २७, सण) ।

गमुइ पु [नमुचि] स्वनाम-ख्यात एक मन्त्री (महा) ।

गमुदय पु [नमुदय] भोजनिक मत का एक उपासक (भा ७, १०) ।

गमेरु पु [नमेरु] बुध विशेष (सुर ७, १६, स ६३३) ।

गमो भ [नमस्] नमस्कार, नमन (भा, कुमा) ।

गमोकार पु [नमस्कार] १ नमन प्रणाम (हे १, ६२, २, ४) । २ जैन शास्त्र में प्रसिद्ध एक सूत्र—मन्त्र-विशेष (विश्वे २८०५) । 'सहित्य न [सहित] प्रत्याख्यान विशेष, व्रत विशेष (पडि) ।

गमोयार देखो गमोकार (वड) ।

गम्म पु न [नर्मन्] १ हंसी, उपहास । २ झोठा, कैल (हे १, १२, धा १४ वे २, ६४, पाषा) ।

गम्मया की [नर्मदा] १ स्वनाम प्रसिद्ध नदी (सुपा १८०) । २ स्वनाम-ख्यात एक राज-पत्नी (स ५) ।

गय देखो गद = नद, विस्तर नमई नद' (सम ५०) ।

गय पु [नग] १ पहाड़ पर्वत (उप २ २५६, सुपा ३४८) । २ वृक्ष, पेड़ (हे १, १७७) । देखो गग ।

गय भ [नच] नहीं (उप ७६८ टी) ।

गय [नत] १ गया हुआ, कुहा हुआ, प्रणत, नम्र (छाया १, १) । २ जिसकी नमस्कार किया गया हो वह 'नीसेरविमण्डविमस्सनयकमो विदमो राया' (सुपा ५६६) । ३ न. देवीवामन-विशेष (सम ३७) । 'सध पु [सत्य] श्रोतव्य, नारायण (ग्या ७) ।

गय पु [नय] १ गाय, नीति (विश्वे ३३६५, सुपा ३४८, स ५०१) । २ मुक्ति (उप ७६८) । ३ प्रकार, रीति, 'जनणा वि घणई पवणा नुययो वे केणद नएण' (स ४४४) । ४ वस्तु

के अनेक धर्मों में किसी एक को मुख्य रूप से स्वीकार कर अन्य धर्मों को उपेक्षा करनेवाला मत, एकाग्र-प्राहुक बोध (सम्म २१, विश्वे ६१४, ठा ३, ३) । ५ विधि (विश्वे ३३६५) । 'चद पु [चन्द्र] स्वनाम-ख्यात एक जैन ग्रन्थकार (रमा) । 'तिथि वि [तिथिन्] न्याय चाहनेवाला (या १४) । 'व, वत वि [वन्] नीतिवाला, न्याय-नारायण (सम ५०, सुपा ५४२) । 'विजय पु [विजय] विष्णु की सतपूजी राधास्त्री के एक जैन मुनि, जो मुद्रसिद्ध विद्वान् श्री यशोविजयजी के गुरु थे (उवर २०२) ।

गयचक्र न [नयचक्र] एक प्राचीन जैन प्रमाण ग्रन्थ (सम्मस ११७) ।

गयण न [नयन] १ ने जाना, प्रापण (उप १३४) । २ जानना, जान । ३ निश्चय (विश्वे ६१४) । ४ वि ने जानेवाला 'वयणाइ सुपहणवणाइ' (सुपा ३७७) । ५ पुन, अक्ष मेन, सोचन (हे १, १३, पाषा) । 'जल न [जल] ग्रन्थ, ब्राह्म (पाषा) ।

गयय पु [दे नयत] ऊन का बना हुआ आस्तरण विशेष (छाया १, १—पन १३) ।

गयर देखो गगर (हे १ १७७, सुर ३ २० श्रीप भा) ।

गयरगणा की [नगराङ्गना] बैरवा, गणिका (भा २७) ।

गयरी की [नगरी] शहर पुरी (उपा, पउम ३६, १००) ।

गर पु [नर] १ मनुष्य, मानुष, पुरुष (हे १, २२६ सुय १, १, ३) । २ बज्रज, मय्यम वाहय्य (कुमा) । 'उसभ पु [उत्तम] श्रेष्ठ मनुष्य, धर्मोद्धत कार्य का निराद्वैत पुरुष (श्रीप) । 'कनप्पवाय पु [कान्तप्रपात] हृद विशेष (ठा २, ३) । 'कना की [कान्ता] नदी-विशेष (ठा २, ३ सम २७) । 'कता-कूड न [कान्ताकूट] इतिम पर्वत का एक शिखर (ठा ८) । 'दत्ता की [दत्ता] १ शुनि-मुद्रत भगवान् की शासनदेवी (राज) २ विद्यादेवी विशेष (सति ५) । 'देव पु [देव] चक्रवर्ती राजा (ठा ५, १) 'नायग पु [नायक] राजा, नरपति (उप २११ टी) । 'नाह पु

[नाथ] राजा, भूपाल (सुपा ६, सुर १, ६१) । 'पट्ट पु [पट्ट] राजा, नरेश (उप ७२८ टी, सुर २, ८४) । 'पौरुसि पु [पौरुषिन्] राज विशेष (उप ७२८ टी) । 'लोअ पु [लोक] मनुष्य लोक (वी २२, सुपा ४१३) । 'वइ पु [वति] नरेश, राजा (सुर १, १०४) । 'वर पु [वर] १ राजा, नरेश (सुर १, १३१, १५, १४) । २ उत्तम पुरुष (उप ७२८ टी) । 'वरिद पु [वरेंद्र] राजा, भूमि-पति (सुपा ५६६, सुर २, १७६) । 'वरीसर पु [वरेंश्वर] श्रेष्ठ राजा (उप १८) । 'वसभ, 'वसह पु [वृषभ] १ देखो 'उसभ (पएह १, ४, सम १५३) । २ राजा, वृषति (पउम ३, १४) । ३ पु. हरिवंश का एक स्वनाम प्रसिद्ध राजा (पउम २२, ६७) । 'वाल पु [पाल] राजा, भूपाल (सुपा २७३) । 'वाहण पु [वाहन] स्वनाम-ख्यात एक राजा (भाक १, सण) । 'वेय पु [वेद] पुरुष वेद पुरुष की की के स्वर्ण की शमितापा (सम्म ४) । 'मिच, 'सिह, 'मीह पु [सिह] १ उत्तम पुरुष, श्रेष्ठ मनुष्य (सम १५३, पउम १००, १६) । २ धर्म भाग में पुरुष का श्रीर धर्म भाग में सिंह का आकाशवा, धीरदण, नारायण (छाया १, १६) 'सुवर पु [सुन्दर] स्वनाम-ख्यात एक राजा (सम्म) । 'दिय पु [धिप] राजा, नरेश (गा ३६४, सुपा २५) ।

गरइय पु [नरेंद्रक] नरक स्थान विशेष (देवद १) ।

गरकठ पु [नरकण्ठ] रत्न की एक जाति (राय ६७) ।

गरसिंह पु [नरसिंह] १ सत्तदेव, स्वतो सोयमि वलदेवो नरसिंहो त्ति पसिदो' (सुम १०३) । २ एक राजकुमार (सुम १०६) ।

गारा पु [नरक] नारक जीवा का स्थान पारय (विजा १, १, पउम १४, १६, धा ३, प्रासु २६, उव) । 'वाल, 'वाल्य पु [पाल, 'रु] परमात्मादि देव, जो नरक के जीवों को मारना (पीदा) देते हैं (पउम २६, ५१०, २३७) ।

गाराच पुं [नाराच] १ सोहमय बाण ।
गाराअ १ संहनन-विशेष, शरीर की रचना
का एक प्रकार (हे १, ६७) । ३ छन्द-विशेष
(पिंग) ।

गारायण पुं [नारायण] श्रीकृष्ण, विष्णु
(पिंग) ।

गारिद पुं [नरेन्द्र] १ राजा, भरेश (सम
१५३; प्राप् १०७, कल्प) । २ गारदिक,
सर्व के विप को उतारनेवाला (स २१६) ।
३ क्रान्त न [क्रान्त] देव-विमान विशेष (सम
२२) ४ पक्ष पुं [पक्ष] राज-मार्ग, महापथ
(पञ्च ७६, ८) । ५ वसह पुं [वृषभ] श्रेष्ठ
राजा (उत्त १६) ।

गारिदुत्तरवडिसग न [नरेन्द्रोत्तरावर्तसक]
देव-विमान विशेष (सम २२) ।

गारीस पुं [नरेश] राजा, नरपति, 'श्री भ-
रद्बनरीसो होही गुरमो न सदैहो' (गुर १२,
८०) ।

गारीसर पुं [नरेश्वर] राजा, नरपति (गजि
११) ।

गरुत्तम पुं [नरोत्तम] श्रीकृष्ण (सिदि
४२) ।

गरुत्तम पुं [नरोत्तम] उत्तम पुरुष (पञ्च
४८, ७५) ।

गरेद देखो गारिद (पि १५६, पिंग) ।

गरेसर देखो गारीसर (उ ७२८ टी, सुपा
५५, ५६१) ।

गल न [नह] गुण-विशेष, भीतर में पीला
शयकार गुण (हे २, २०२, डा ८) ।

गल न [नल] १ ऊपर देखा (परा १, उ १
१०३१ टी, प्राप् ३३) । २ पुं, राजा राम-
चन्द्र का एक सुभट (सि ८८) । ३ वैद्यमण
का एक स्वनाम-स्वान पुत्र (भक्त ५) ।
४ कुञ्जर, कुंजर पुं [कुंजर] १ दुर्लभपुत्र
ना एक स्वनाम-स्वान राजा (पञ्च १२-
७२) । २ वैद्यमण का एक पुत्र (प्राप्तम) ।
३ गिरि पुं [गिरि] चण्डप्रयोत्त राजा का
एक स्वनाम-स्वान हथी (पहा) ।

गलन न [दे] उशीर, रास का गुण (दे ४,
१६, पाम) ।

गलल देखो गलल (हे २, १२३, गुमा) ।

गललहंतव वि [छललहंतव] सलाह को
तपानेवाला (गुमा) ।

गललन न [दे] गृह, घर, मकान (दे ४,
२०, पद) ।

गललण न [नलिन] १ लगातार तेईस दिन का
उपवास (सुवोष ५८) । २ पुन. एक देव-
विमान (देवद १३२) ।

गललण न [नलिन] १ रक्त कमल (राय,
चद १०, पाम) । २ महाविह्वल वर्ष का एक
विजय प्रदेश-विशेष (डा २, ३) । ३
'नलिनारा' को चौपासी साह से गुणने पर जो
सख्या लम्ब हो वह (डा २, ४, इक) । ४
देव-विमान विशेष (सम ३३, ३५) । ५
रुचक पर्वत का एक शिखर (दीव) ।

गलल पुं [कूट] वनस्कार-पर्वत-विशेष (डा २,
३) ।

गलल न [गुल्ल] १ देव-विमान-
विशेष (सम ३५) । २ वृष-विशेष (डा ८) ।

३ श्रद्धयन विशेष (प्राप्त ४) । ४ राजा
श्रेष्ठिक का एक पुत्र (राज) ।

५ गल्लो विह्वल वर्ष का एक विजय, प्रदेश
विशेष (डा २, ३) ।

गललणग न [नलिनारा] संख्या-विशेष, पक्ष
को चौपासी साह से गुणने पर जो संख्या
लम्ब हो वह (डा २, ४, इक) ।

गललणिं १ श्री [नलिनी] कमलिनी, पद्मिनी
गललणि १ (प्राप्त, लाया १, १) ।

२ देखो गललण-गुल्ल (गिर २, १, विसे) ।
३ वण न [वण] उद्यान विशेष (लाया २) ।

गललगोदग पुं [नलिनोदक] समुद्र-विशेष
(दीव) ।

गल्लय न [दे] १ वृत्ति विवर, बाह का छिद्र ।
२ प्रयोजन । ३ निमित्त, कारण । ४ वि.
कर्मोत्त, बीचराता (दे ४, ४६)

गलल देखो गलम । गुलल (पद ७, हे ४, १५८,
२२६) ।

गलल [नल] नया, नूतन, नवीन (गउड,
प्राप् ७१) ।

१ 'वहुया', 'वहु' श्री [वहु] नवीन,
कुल्लि (हला ५१, गुर ३, ५२) ।

गलल वि. व. [नल] संख्या-विशेष, नव, ९
(डा १) । २ श्री [ति] सत्ता-विशेष नव, ९
(एण) । ३ न [क] नव का समुदाय
(दे ३८) ।

४ जोवणिय वि [जोवणिय] नव, ९
(डा १) । ५ श्री [ति] सत्ता-विशेष नव, ९
(एण) । ६ न [क] नव का समुदाय
(दे ३८) ।

७ जोवणिय वि [जोवणिय] नव, ९
(डा १) । ८ श्री [ति] सत्ता-विशेष नव, ९
(एण) । ९ न [क] नव का समुदाय
(दे ३८) ।

नव योजन का परिमाणवाला (डा ६) ।

१ 'गउड', 'गउड' श्री [नवति] संख्या-विशेष,
नित्यानवे, ६६ (सम ६६, १००) । २ उय
वि [नवत] ६६ वां (पञ्च ६६, ७५) ।

३ 'नवइ' देखो 'गउड' (कम्म २, ३०) ।

४ 'नवमिया' श्री [नवमिका] जैन साधु का
व्रत-विशेष (सम ८८) । ५ म वि [म]
नववां (उवा) । ६ श्री [म] विवि-विशेष,
पक्ष का नववां दिवस (सम २६) । ७ मीपन्त्र
पु [मीपक्ष] ब्राह्मण दिन, भद्रमी (जं ३) ।

गवकार देखो गामीकार (सिदि १, कैय ३०;
मण) ।

गवकारसो श्री [नमस्कारसहित] प्रत्या-
स्थान-विशेष, व्रत-विशेष (सदीय ५७) ।

गव (अप) वि [न] भनोता, सुतन, नया
(हे ४, ४२२) । श्री. खी (हे ४, ४२०) ।

गवणीअ पुं [नगनील] नयन, नक्तन, मसका
(कल्प, दीव, प्राप्त), 'गणुलहमोव नव-
लीसो' (पञ्च ११८, २३) ।

गवणीइया श्री [नवनीतिका] वनस्पति-
विशेष (एण १) ।

गवपय न [नगपद] नमस्कार-मन्त्र (सिदि
५७६) ।

गवमालिया श्री [नगमालिका] गुण-अपान
वनस्पति-विशेष, वसती नेवारी, नेवार (कल्प) ।

गवमिया श्री [नगमिना] १ रुचक पर्वत पर
रहनेवाली एक विष्णुमारी देवी (डा ८) ।

२ सक्षुब्ध-नायक इन्द्र की एक श्रद्ध-महिषी
(डा ४, १) । ३ शालेन्द्र की एक पटरानी
(डा ८) ।

गवय देखो गव-य (पञ्च १७, १०) ।

गवय देखो गवय (लाया १, १७) ।

गवयार देखो गवकार (पञ्च १, पि ३०६) ।

गवय सन [कथ] बहना । बर्न, गवयिन्द्र
(प्राप्त, ७७) ।

गवर १ म. १ नेवल, पिर्क कक (हे २, १८७;
गवर १ कुमा, पद उवा, गुमा ८, जो २७,
या १५) । २ अनन्तर, बाद में (हे २, १८८;
प्राप्त) ।

गवरा १ पुं [नवरत्न, 'क'] १ नूतन रंग,
गवराय १ नया वर्ण (गुर ३, ५२) । २
छन्द विशेष (पिंग) । ३ श्रीगुम्भ रंग का
वर्ण (गउड, या २४१, गुर ३, ५२, पाम) ।

गणरत्ति लो [नगरात्रि] नव दिवो का
गणरिव माय का एक पर्व (सङ्ग ७८)।

गणरि अ [दे] शीघ्र, जल्दी, (प्राक् ८१)।

गणरि } देखो गणर (हे २, १८८; से १,
गणरिअ } ३६, प्रामा, मुर, २६; पङ्, मा
१७२)।

गणरिअ न [दे] सह्या, जल्दी, सुपत्त (दे
४, २२; पाप्)।

गणरु देखो गणर (बं०)।

गणरुया लो [दे] वह व्रत, जिसमें पति का
नाम पूजने पर उसे नहीं चतानेवाली लो
पत्नी का लता से ताड़ित की जाती है (हे
४, २१)।

गणरु देखो गण = नव (हे २, १६५, कुमा,
उप ७२८ टी)।

गणसिअ न [दे] उपमाश्रितक, मनीषी (हे
४, २२; पाप्, बजा ८६)।

गणा लो [नरा] १ नरोडा, दुवहिन। २
बुधति लो (सुम १, ३, २)। ३ जिसको
दीक्षा लिए तीन वर्ष हुए हों ऐसी साध्वी
(बव ४)। ४ अ, प्रानार्थक श्रव्य, धववा
नहीं ? (रपण ६७)।

गणि अ, १ वैपरीय-सूचक श्रव्य, 'गणि हा
वणे' (ह २, १७८, कुमा)। २ निपेयार्थक
श्रव्य (गड०)।

गणिअ देखो गणिअ = नव (ह ३, १५६,
मणि)।

गणिअ वि [नव्य] दूतन, नया (भावा २,
३)।

गणीअ वि [नवीन] दूतन, नया (माह ८३,
धर्मि १३१)।

गणुत्तरमय वि [नवोत्तरास्तम] एक नौ
नववो (पठम १८६, २७)।

गणुद्धय (अ) देखो गण = नव (कुमा)।
गणोडा लो [नरोडा] नव विगारिवा लो,
दुवहिन (कात्र ११७)।

गणोद्धरण न [दे] उच्छिद्य, छूटा (दे ४,
२३)।

गणु पुं [दे] धातुक, मय का मुखिया (दे
४, १७)।

गणु वि [नव्य] दूतन, नया, नवीन
(मा २७)।

गणु देखो पा = जा।

गणुअउत्त पुं [दे] १ ईवर, घनाव्य, भोगी।
२ नियोगो का पुत्र, सुवेदार का लवका (दे
४, २२)।

गणस अक [नि + अस्] स्थापन करना।
नयेअ (विसे ६४३)। कर्म, नस्वए (विसे
६७०)। संकु नसिऊण (स ६०८)।

गणस अक [नरा] भागना, पलायन करना।
एवस (पिग)।

गणसन न [न्यसन] न्याम, स्थापन (जीव १)।
गणा लो [दे] नम, नाडी, 'धमुदरसविगमणे
हृदुक्करउत्तिमं यमनसमवे' (सुपा ३५५)।

गणिअ वि [नट] नारा प्राप्ति (कुमा)।

गणस देखो नस = नरा। एत्तमह, एत्तए,
(पङ्, कुमा)। बङ्, नरसत्त, नरसमाण
(या १६; मुपा २१५)।

गणसर वि [नश्वर] विनश्वर, अगु, नारा
पानेवाला, 'खलनस्मयाह ववाह' (सुपा
२४३)।

गणसा लो [नास] नासिका, घ्राणेंद्रिय
(नाट मुण्ड ६२)।

गह देखो गणस (अप ६०, कुमा)।

गह न [नभस्] १ आकाश, गगन (प्राप्, हे
१, ३२)। २ पु. थावण मास (दे ३, १६६)।
'अर वि [वर] १ आकाश में विचरनेवाला
(से १४, ३८)। २ पु. विद्यापार आकाश
विहारी मनुष्य (सुर १, १८६)। 'केउमडिय
['येतुमण्डिन] विद्यापरी का एक
नार (इक)। 'गमा लो [गमा] आकाश-
गामिनी पिद्या (सुर १३, १८६)। 'गामिनी
लो [गामिनी] आकाश गामिनी विद्या
(सुर १, २८)। 'अर देखो 'अर (अप
५६७ टी)। 'उदेणय न [उदेणय]
नव उतारने का शस्त्र (भावा २, १, ७, १)।
'विलय न [विलक] १ नगर-विशेष।
२ सुभट-विशेष (पठम ५५, १७)। 'वाहण
पुं [वाहन] गुप्त विशेष (सुर ६, २६)।
'सिर न [शिरस्] नय का श्व भाग
(अप ५, ४)। 'सिद्धा लो [सिद्धा] नव
का अथ भाग (अप)। 'सेण पु [सेन]
राजा उपलेन का एक पुत्र (राज)। 'हरणी
लो [हरणी] नव उतारने का शस्त्र (इह ३)।

गहंवि वि [नयनत्] नखवाला (अप ६,
६५)।

गहमुह पुं [दे] बूक, उल्लू (दे ४, २०)।
गहर् पुं [नार] नख, नाखून (सुपा ११;
६०६)।

गहर्ण पुं [दे] नखी, नखवाला जन्तु, धापद
(वज्जा १२)।

गहर्णी लो [नटहरणी] नहरनी, नख
उतारने का शस्त्र (अप ३)।

गह्मरा न पुं [नयनम्] नखवाला धापद जंतु
(अप ५३० टी)।

गहरी लो [दे] धुरिया, धुरी (दे ४, २०)।
गह्वरी लो [दे] विद्युत, विजली (दे
४, २२)।

गहाकु न [स्नायु] स्नायु, राग, नस, नाडी।
गहि पुं [नदिम] नल प्रधान जन्तु, श्वापद
जन्तु (अप)।

गहि वि [नदिम] ऊपर देखो (अप १४२)।
गहि अ [नहि] निपेयार्थक श्रव्य, नहीं
(स्वज ४१, पिग, सण)।

गह्म न [नयनत्] ऊपर देखो (नाट—मुण्ड
२६१, छाया १, ६)।

गा तक [हा] जानना, समझना। भवि,
छाहि (विसे १०१३)। छाहि वि (पि
५३५)। कर्म गुणवद, गुणवद (हे ४,
२५२)। बवक, गजत्त, गजमाण (से
१३, ११, उप १००१ टी)। सङ्, गाउं,
गाऊण, गाऊण, गाहा, गाहाण (महा,
रि ५८६, श्रीम, मुत्त १, २, ३, वि ५८७)।
क गाणव्य, गेअ (अप जी ६, सुर ४,
७, ८, हे २, १६६, नव ३१)।

गा अ [न] निपेय-सूचक श्रव्य (गड०)।
गाअअ } देखो गायग (प्राक् २६)।
गाअक }

गाअक (अ) देखो गायग (पिग)।
गाइ पु [जाति] ददवाकु वंश में उत्पन्न
सामय-विशेष। 'सुत्त पुं [सुत्त] भगवान्
श्री महावीर (भावा)। 'सुव पु [सुव]
भगवान् श्री महावीर (भावा)।

गाइ लो [जाति] १ नाट, समान जाति
(पठम १००, ११, श्रीप, उमा)। २ माना-
नित्य भादि स्वयन, मगा (छाया १, १)।
३ ज्ञान, बोध (भावा ठा ४, ३)।

पाइ (अप) देवो इय (कुमा) ।

पाइ (अप) नीचे देखो (अवि) ।

पाइ देखो ण = न (हे २, १६०, उवा) ।

पाइणी (अप) छो [नागो] नागिन, सर्पिखो (अवि) ।

पाइत्त १ पुं [दे] जहाज द्वारा व्यापार पाइत्तग कर्त्तवाला सीमागर (उप पृ १०१, उप ५६२) ।

पाइय वि [नादित] १ उक्त, कथित, पुकारा हुआ (छाया १, १, औप) । २ न. ब्राह्मण, शब्द (छाया १, १) । ३ प्रतिशब्द, प्रतिस्पर्धन (राय) ।

पाइल पुं [नागिल] १ स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि (कण्) । २ जैन मुनियों का एक वंश (पञ्च ११८, ११७) । ३ एक श्रेष्ठो (महावि ४) ।

पाइला १ छो [नागिला] जैन मुनियों की पाइली १ एक शाखा (कण्) ।

पाइल देवो पाइल (विचार ५३४) ।

पाइय वि [क्षातिमत्] स्वजन्म-युक्त, मातेदार (उत्त ४) ।

पाउ वि [क्षाट] जानकार, जाननेवाला (इ ६) ।

पाउकु पुं [दि] १ सङ्क्रान्त, सन्निपात । २ अभिप्राय । ३ मनोरथ, वाञ्छा (दे ४, ४७) ।

पाउल वि [दि] गोमान्, जिसके पास भलेक पैसा हो (दे ४, २१) ।

पाउं } पाऊण } देवो णा = ना ।

पाऊण }

पाण पुं [नाक] स्वर्ग, देवलोक (उप ७१२) ।

पाण पु [नाग] १ सर्व, सार (पञ्च ८, १७८) । २ भवनाति देवो की एक भवनात्तर जाति, नाग-कुमार देव (एदि) । ३ हस्ती, हाथी (औप) । ४ शून्य-विशेष (कण्) । ५ स्वनाम-ख्यात एक गृहस्थ (मंत ४) । ६ एक प्रसिद्ध बंध । ७ नाग-वश में उत्पन्न (राज) ।

८ एक जैन प्राचार्य (कण्) । ९ स्वनाम-ख्यात एक द्वीप । १० एक समुद्र (सुज १६) ।

११ यदास्तर-गर्भत विशेष (छा २, ३) ।

१२ न. ज्योतिष-प्रसिद्ध एक म्पिर करण (विपे ३१४०) ।

१३ कुमार पुं [कुमार]

भवनपति देवो की एक भवान्तर जाति (सप ६६) । 'केसर पुं [केसर] पुष्प-प्रधान वनस्पति विशेष (राज) । 'गह पुं [गह] नाग देवता के आवेश से उत्पन्न ज्वर प्रादि (जीव ३) । 'जण्ण, जण्ण पुं [यज्ञ] नाग पूजा-नाम देवता का उत्सव (छाया १; ८) । 'जुण पुं [जुन] एक स्वनाम-ख्यात जैन प्राचार्य (एदि) । 'दंत पुं [दन्त] खूंटो (जीव ३) । 'दत्त पुं [दत्त] १ एक स्वनाम-ख्यात राज-पुत्र (छा ३, ४, सुपा ३३४) । २ एक श्रेष्ठ-पुत्र (भाक) । 'पइ पुं [पति] नाग कुमार देवो का राजा, नागेन्द्र (औप) । 'पुर न [पुर] नगर-विशेष (पञ्च २०, १०) । 'वाग पुं [वाण] विषय मन्त्र-विशेष (जीव ३) । 'भद्र पुं [भद्र] नाग द्वीप का अधिपति देव (सुज १६) । 'भूय न [भूत] जैन मुनियों का एक कुल (कण्) । 'महाभद्र पुं [महाभद्र] नागद्वीप का एक अधिपति देव (सुज १६) । 'महावर पुं [महावर] नाग समुद्र का अधिपति देव (सुज १६, इक) । 'मिच्छ पुं [मिच्छ] स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि, जो प्रायः महागिरि के शिष्य थे (कण्) । 'राय पुं [राज] नामकुमार देवो का स्वामी, इन्द्र विशेष (पञ्च ३, १४७) । 'रुक्खर पुं [रुक्ख] वृक्ष-विशेष (छा ८) । 'लथा छो [लथा] गल्ली-विशेष, ताम्बूली पत्ता (पण्ण १) । 'वर पुं [वर] १ बंछ सर्व । २ उत्तम हाथी (औप) । ३ नाग समुद्र का अधिपति देव (सुज १६) । 'वल्ली छो [वल्ली] सता-विशेष (शण्) । 'सिरी छो [सि] द्वीपों के पूर्व जन्म या नाप (छा ६४८ टी) । 'सुद्ध न [सुद्ध] एक जैनैतर शास्त्र (सण्) । 'सेण पुं [सेन] एक स्वनाम-ख्यात गृहस्थ (माधम) । 'हस्ति पुं [हस्तिन] एक प्राचीन जैन श्रमि (एदि) ।

पाणविय ॥ [नागव्य] नगनटा, नंगान (सूत्र १, ७) ।

पाणदत्ता छो [नागदत्त] भीष्मदेव जिनदेव की दोहा-विचार (विचार १२६) ।

पाणपरियावणिया छो [नागपरियापनिज] एक जैन शास्त्र (एदि २०२) ।

पागर वि [नागर] १ नगर-सम्बन्धी । २ नगर का निवासी, नागरिक (सुर ३, ६६; महा) ।

पागरिअ पुं [नागरिक] नगर का रहनेवाला (रंश) ।

पागरिआ छो [नागरिका] नगर में रहनेवाली छो (महा) ।

पागरी छो [नागरी] १ नगर में रहनेवाली छो । २ लिपि विशेष, हिन्दी लिपि (विसे ४६४ टी) ।

पागिद पुं [पागेन्द्र] १ नाम देवो का इन्द्र । २ शेषनाग (सुपा ७७; ६१६) ।

पागिणी छो [नागी] १ नागिन । २ एक बणिक्-पुत्री (कुप ५०८) ।

पागिल देवो पाइल (राज) ।

पागी छो [नागी] नागिन, सर्पिणी (माध ४) ।

पागेद देवो पागिद (छाया १, ८) ।

पागोद पुं [नागोद] एक समुद्र (सुज १६) । पाइ देवो पाट्ट = नाट्य (छाया १, १ टी—पञ्च ४३) ।

पाइइल वि [नाटकीय] नाट्य-सम्बन्ध नाट्य में आप लेनेवाला पात्र (छाया १: कण्) ।

णासग वि [नाशक] नाश करनेवाला (सुर २, ५८)।

णासण न [नाशन] १ पलायन, भ्रमकर्मण्य भागना (सुर २)। २ वि, नाश करनेवाला (सि ३, २७, गण २२)। छी णो (सि ३, २७)।

णासग न [न्यासन] स्थापन, रखना, व्यवस्थापन (सणु)।

णासणा छी [नासना] विनाश (विसे ६१६)।

णासन सक [नाशय] नाश करना। छासवह (ह ४, ३१)।

णासविय वि [नाशित] नष्ट किया हुआ, भगवा हुआ (उप ३५७ टी, कुमा)।

णासा छी [नासा] नाक, घ्राणेन्द्रिय (गा २२, प्राचा, कुपा)।

णासि वि [नाशिन] विनश्वर, नष्ट होनेवाला (विसे १६८?)।

णासिकु देखो नासिक (एवि १६५)।

णासिक न [नासिक्य] दक्षिण भारत का एक स्वनाम प्रसिद्ध नगर, जो प्रागजल की 'नासिक' नाम से प्रसिद्ध है, वहाँ शृंगणैला की नाक कटी थी, पञ्चवटी (उप पु २१३, १४१ टी)।

णासिगा छी [नासिग] नाक, घ्राणेन्द्रिय (महा)।

णासिय वि [नाशित] नष्ट किया हुआ (महा)।

णासियक देखो नास = नष्ट।

णासिर वि [नाशिर] नष्ट होनेवाला, विनश्वर (कुमा)।

णासीनय वि [न्यासीनय] सरोहर या धमानत रूप से रखा हुआ (था १५)।

णासेक देखो नासिक (उप १४१)।

णाह ॥ [नाथ] स्वामी, मालिक (कुमा, प्राप्प १२, ६६)।

णाहड पु [नाहट] एक राजा का नाम (तो १५)।

णाहल पु [लाहल] स्तेज्य की एक जाति (हे १, २५६, कुमा)।

णाहि देखो णाभि (कुमा, कप्पु)। *रुह पु [रुह] प्रदा, अनुभूत (मन्हु १६)।

णाहि (मप) म [नाहि] नदी, नाहीं (हे ४, ४१६, कुमा, भवि)।

णाहिणाम न [दे] वितान के बीच की रस्ती (दे ४, २४)।

णाहिय वि [नास्तिनक] १ परलोक यादि को नहीं माननेवाला। २ पुं. नास्तिक मत का प्रवर्तक। *वाइ, *वादि वि [वादिन्] नास्तिक मत का अनुयायी (सुर ६, २०, स १६४)। *वाय पुं [वादि] नास्तिक दर्शन (गण्य २)।

णाहिजिच्छेअ } पुं [दे] जघन, कटी के
णाहीए-विच्छेअ } नौच का भाग (दे ४, २४)।

णि म [नि] इन अर्थों का सूचक अव्यय— १ निधय (उत्त १)। २ निस्सन, निरम (ठा १०)। ३ प्राधिपय, प्रतिशय (उप १, विपा १, ६)। ४ अथोभाय, नीचे (सणु)। ५ नियमन। ६ सशय। ७ आहर। ८ उपरम, विराम। ९ अत्यय, समावेश। १० समीपता, निकटता। ११ लेप, विदा। १२ वयन। १३ निषेध। १४ दान। १५ राशि, समूह। १६ बुद्धि, मोक्ष (हे २, २१७, २१८)। १७ अभिमुखता, समुल्लता (सुम १, ६)। १८ मत्पता, सजुता (पण्ड १, ४)।

णि म [निर्] इन अर्थों का सूचक अव्यय— १ निधय (उत्त ६)। २ प्राधिपय, प्रतिशय। (उत्त १)। ३ प्रतिषेध, निषेध (सय १३७, सुपा १६८)। ४ बहिर्भाव। ५ निर्गमन, निष्क्रमण (ठा ३, १, सुपा १३)।

णिअ सक [हड] देखना। छिमह (पद्, हे ४, १८१)। बड् णिअन (कुमा, महा, सुपा २६६)। सड् निपट (अवि)।

णिअ वि [निज] आसीय, स्वकीय (पा १५०, कुमा सुपा ११)।

णिअ वि [नीत] से जाया गया (सि ५, ६ सणु)।

णिअ वि [नीच] नीच, अधम निकट (बम्म ३, ३)।

णिअ देखा णिअ (सुम २, ६, ५३)।

णिअइ छी [निहति] माया, काट, छन, घोखा (पण्ड १, २)।

णिअइ छी [नियति] १ नियतपन, अवित-व्यता, होनी, भाग्य नियमितता (सुम १, १,

३)। २ अवश्य-भाविता (ठा ४४, सुम १, १, २)। *उउय पु [पर्वत] पर्वत विशेष (जीय ३)। *वाइ वि [वादिन्] 'सब कुछ भवित-व्यता वे अनुसार हो' हुआ करता है, प्रदलन वगैरह सक्रिय-कर है' ऐसा माननेवाला, भाग्यवादी या देववादी (राज)।

णिअटिअ वि [नियन्त्रित] १ नियमित। २ न. प्रदाहान विशेष, हट से या रोगी से अमुक दिन में अमुक तम करने का विद्या हुआ नियम (पव ४)।

णिअटिय वि [नियन्त्रित] १ बंधा हुआ, जकड़ा हुआ। २ न. अवश्य कर्तव्य नियम-विशेष (ठा १०)।

णिअठ वि [निर्ग्रन्थ] १ धन रहित। २ पु. जैनमुनि, सत्य, यति (भग, ठा ३, १, ५, ३)। ३ जिन भगवान् (सुम १, ६)।

णिअठ पु [निर्ग्रन्थ] भगवान् बुद्ध (कुप ४४२)।

णिअठि देखो 'णिगमाथी'। *पुच पु [पुन] १ एक विद्याधर-पुत्र जिसका दूसरा नाम सत्यकि था (ठा १०)। २ एक जैनमुनि, जो भगवान् महावीर का शिष्य था (भग ५, ८)।

णिअठिय वि [निर्मेयिक] १ निर्मेय-संबन्धी। २ जिन देव संबन्धी। टी. *या, 'एसा प्राया छियठिया' (सुम १, ६)।

णिअठी देखो जिग्माथी (ठा ६)।

णिअत वि [नियत] स्थिर (सुम १, ८, १२)।

णिअत वि [निर्यत्] बाहर निकलता (सम्मत् १५६)।

णिअतिय वि [नियन्त्रित] संयमित, जकड़ा हुआ, बंधा हुआ (महा, सणु)।

णिअरण न [दे] बड्, करना (दे ४, २८)।

णिअन पु [नितम्भ] १ पर्वत का एक भाग, पर्वत का वर्सात-स्थान (मोष ४०)। २ छी की बरफ का पीछला भाग बरफ न नीचे का भाग, प्लूड (कुमा गउड)। ३ मूल भाग (से ८, १०१)। ४ बटी प्रदेश, बरफ (जं ४)।

णिअनिणी छी [नितम्बिनी] १ सुन्दर नितम्बवाली छी। २ छी, महिला (कप्पु, पाथ सुपा ५३८)।

गारंग पुं [नारङ्ग] १ वृक्ष-विशेष, सतरे का वृक्ष । २ न. फल विशेष, कमला नीबू, सतरा (पत्रम ४१, ६; सुपा २३०, ५६३, गठड, कुमा) ।

गारंग देखो गारय = नारक (विसे १६००) ।

गारद देखो गारय (प्रयो ५१) ।

गारदीय वि [नारदीय] नारद-सम्बन्धी, नादक का (प्रयो ५१) ।

गारय पुं [नारद] १ मूनि विशेष नारद ऋषि (सम १५४ उप ६४/टो) । २ मन्वन्त सैन्य का अर्धपति देव-विशेष (डा ७) ।

गारय वि [नारक] १ नारक में उलपन्न, नरक-सम्बन्धी, नरक का 'जयप नारय दुसक' (सुपा १६२) । २ पु. नरक में उलपन प्राणी, नरक का जीव (सम) ।

गारसिंह वि [नारसिंह] नरसिंह सम्बन्धी (उप ६४८ टो) ।

गाराय पुं [नाराय] लौहने की छोटी तराछ, काँटा; नाराय निरुत्तर लोहवत दोमुह य तुम्ह कि भणियो । हुं नाए सम कण्ठ तोलतो कह न सजे सति ? (चरना १५८, १५६) ।

गाराय देखो गाराय (हे १, ६७ उवा, सम १४६, भजि १४) । गुला, पुं लाखी (गुप्प-माला ४६, ८६) । 'यज्ज न [यज्ज] सहनन-विशेष (पउम ३, १०६) ।

गारायण पुं [नारायण] १ विष्णु, श्रीकृष्ण (कुमा, स १२२) । २ सभै चक्रवर्ती राजा (पउम ५, १२२, ७३, २०) ।

गारायण पुं [नारायण] एक ऋषि (सूत्र १, १, ४, २) ।

गारायणी स्त्री [नारायणी] देवी विशेष, गौरी, दुर्गा (गठड) ।

गारिं देखो गारी (वप्प राज) । 'कंता स्त्री [वान्ता] नदी विशेष (सम २७, डा २, ३) ।

गारिएर पुं [नारिकेल] १ नारिकेल का गारिएर । २ न. नारियल या नारिएर का फल (अभि १२७, वि १२८) । देखो गारिअर ।

गारिंगा [नारिकेल] गारंगी का फल, मोठा नीबू, बमला नीबू (चप्पु) ।

गारी स्त्री [नारी] १ स्त्री, स्त्रीरन, जनाना, महिला (हेरा २२८, प्राप् ६२, १५६) ।

२ नदी विशेष (इक) । 'कंतप्पवाय पुं [कान्तामपात] द्रव विशेष (डा २, ३) । देखो गारिं ।

गारुट्ट पुं [दे] कसार, गतनिर स्थान (पाघ) ।

गारोट्ट पुं [दे] १ विल, साँप आदि का रहने का स्थान, निवर । २ कसार, गतनिर स्थान (दे ४, २३) ।

गाल न [नाल] १ कमल-दण्ड (से १, २८) । २ गर्भ का भावरण (उप ६७४) ।

गालदण्ड वि [गालन्दीय] १ नालम्बा-सम्बन्धी । न नालवा के भयौप में प्रतिपाठित अक्षयन विशेष, 'सूतकृता' सूत्र का सातवाँ अक्षयन (सूत्र २, ७) ।

गालंदा स्त्री [गालन्दा] राजगृह नगर का एक मुहाना (वप्प, सुप २, ७) ।

गालपिअ न [दे] आरुणित, आरुणित ध्वनि (दे ४, २४) ।

गालमि पुं [दे] कुन्तल, केश कलाप (दे ४, २४) ।

गालय न [गालक] चूत विशेष (मोह ८६) । गाला स्त्री [गालि] नाबी, नम, सिरा (से १, गालि २८, कुमा) ।

गालि स्त्री [गालि] परियाल-विशेष, झबली (आवक ३५) ।

गालि वि [दे] सस्त, गिरा हुआ (पद्) ।

गालिअ वि [दे] मूढ, मूर्ख, भ्रष्टान (से ४, ४२२) ।

गालिअर देखो गारिएर (दे २, १०, पउम १, २०) । 'दीव पुं [दीप] दीप-विशेष (कम्म १, १६) ।

गालिआ स्त्री [गालिआ] १ नाल, बड़ी, गालियाँ । कमत की बड़ी (दस ५, २, १८) ।

२ परिमाण विशेष, ढेंड, धनुष (प्राप् ११७) । ३ सभै मुहूर्त का समय, 'दो नाविया मुहूर्त' (तंदु ३२) । ४ नली, 'जह उ निर नावियाए' (प्राप् ११७) ।

गालिअ वि [दे] चूत विशेष (अ २ टो—पत्र १३६) ।

गालिआ स्त्री [गालिआ] १ बहो-विशेष (दि २, ३) । २ घटिया, घटी, बाल नपने का एक तरह का यन्त्र (पाघ, विसे ६२०) । ३ नपने स्थिर से चार घटुन लम्बी साड़ी (श्रीव ३६) । ४ चूत विशेष, एक तरह का

बुआ (श्रीव, भग ६, ७) । 'खिड्वा स्त्री [खीडा] एक तरह की चूत मोटा (श्रीव) । गालिएर देखो गारिएर (राया १, ६) ।

गालिएरी स्त्री [नारिकेली] गरियर का गद्य (गठड, वि १२६) ।

गाली स्त्री [नाली] १ नमस्त-विशेष, एक लता (पएण १) । २ घटिका, घटी (जीव ३) ।

गाली स्त्री [नाली] १ चूत विशेष (वस ३, ४) । २ तीन हाथ और सोलह घटुन लंबी लट्टी या लग्गी (बांस) (पत्र ८१) ।

गाली स्त्री [नाडां] नाबी, नस, सिरा (विपा १, १) ।

गालीय वि [गालीय] नाल सम्बन्धी (पाघा) ।

गालीया देखो गालिआ (सूत्र १, ६, १८) ।

गानइ (अप) देखो इन (हे ४, ४४४ भवि) ।

गावण न [दे] दान, वितरण (पएण १, ३—पत्र ५३) ।

गावा स्त्री [दे] प्रवृत्ति, झनसी, परिमाण-विशेष (पत्र १०६ टो) ।

गावा स्त्री [नौ] नौका, जहाज, नाव (भग, उवा) । 'वाणिय पुं [वाणिज] सट्ट मार्ग से व्यापार करनेवाला बणिक् (राया १, ८) ।

गावापूरय पुं [दे] डडुक, डडू 'तिहि गावापूरयहि अमामह' (इह १) ।

गाविअ पुं [नापित] नाई, हजान (हे १, २३०, कुमा, पद्) । 'माला स्त्री [शाला] नाइयो श बड़ा (आ १२) ।

गाविअ पुं [नापिक] जहाज चलानेवाला, नौका या नाव हाँकनेवाला, मल्लाह, केवट, मम्बि (छापा १, ६, सुर १३, ३१) ।

पास देखो गारस । पासइ (पद्, महा) ।

वह. पासत (पुर १, २०२, २, २५) ।

ऊ. पासियवन् (पुर ७, १२६) ।

पास सक [नाराय] नारा करना । पासइ (हे ४, ३१) । पासइ (महा-उवा) ।

पास पुं [नारा] नारा, ध्वंस (प्राप् १५३, पाघ) । 'यर वि [नर] नारा-नाकर (पुर १२, १६४) ।

पास पुं [न्यास] १ स्थापन (गा ६६, उप ३०२) । २ घरोहर या ममानत, रखने योग्य वन प्रादि (उप ७६८ टो, धर्म २) ।

णासग वि [नाशक] नाश करनेवाला (सुर २, ५८) ।

णासण न [नाशन] १ पलायन, भ्रमकर्मण भागना (धम्म २) । २ वि. नाश करनेवाला (सि ३, २७, गल २२) । छी णी (सि ३, २७) ।

णासग न [न्यासन] स्नापन, रखना, व्यवस्थापन (अणु) ।

णासणा छी [नासना] विनाश (विसे ६३६) ।

णासन सक [नाशय] नाश करना । शासवह (हे ४, ३१) ।

णासयिष वि [नाशित] नष्ट किया हुआ, भगवा हुम्मा (उप ३५७ टी, कुमा) ।

णासा छी [नासा] नाक, प्राणेश्वर (गा २२, प्राचा, कुमा) ।

णासि वि [नाशिन] विनश्वर, नष्ट होनेवाला (विसे १६८१) ।

णासिक देखो णासिक (एदि १६५) ।

णासिक न [नासिक्य] दक्षिण भारत का एक स्वनाम प्रसिद्ध नगर, जो आजकल भी 'नासिक' नाम से प्रसिद्ध है, वहाँ शृंगण्डी की नाक कटो थी, पचवटी (उप २१३, १५१ टी) ।

णासिगा छी [नासिका] नाक, प्राणेश्वर (महा) ।

णासिय वि [नाशित] नष्ट किया हुआ (महा) ।

णासियक देखो णास = नष्ट ।

णासिर वि [नाशिर] नष्ट होनेवाला, विनश्वर (कुमा) ।

णासीन्य वि [न्यासीन्य] चरोहर या ध्रुमानत रूप से रखा हुआ (था १४) ।

णासेक देखो णासिक (उप १४१) ।

णाह पुं [नाथ] स्वामी, भालिक (कुमा, प्राभु १२, ६६) ।

णाहट पुं [नाहट] एक राजा का नाम (ती १५) ।

णाहल पु [लाहल] स्तेय की एक जाति (हे १, २५६, कुमा) ।

णाहि देखो णाभि (कुमा, वप्पु) । *रह पु [रह] ग्रहा, चतुर्मुख (मज्ज ३६) ।

णाहि (मप) म [नाहि] नहीं, नाहीं (हे ४, ४१६; कुमा, भवि) ।

णाहिणाम न [दे] वितान के बीच की रस्ती (दे ४, २४) ।

णादिय वि [नास्तिन] १ परलोक आदि को नहीं माननेवाला । २ पुं. नास्तिक मत का प्रवर्तन । *वाद्, *वादि वि [वादिन्] नास्तिक मत का अनुयायी (सुर ६, २०, स १६५) । *वाय पुं [वाद्] नास्तिक दर्शन (गच्छ २) ।

णाहिमिच्छेअ पु [दे] जघन, कटी के जाहीए-विच्छेअ १ नीच का भाग (दे ४, २४) ।

णि म [नि] इन श्रवों का सूचक अव्यय— १ निश्चय (उत्त १) । २ निवर्तन, नियम (ठा १०) । ३ आधिक्य, अधिक्य (उत्त १, विपा १, ६) । ४ अचोभाग, नीचे (सण) । ५ निवर्तन । ६ संशय । ७ आदर । ८ उपरम, विराम । ९ अन्तर्भाव, समावेश । १० समीपता, निकटता । ११ लेप, निम्न । १२ वचन । १३ निषेध । १४ दान । १५ राशि, समूह । १६ बुद्धि, मोक्ष (हे २, २१७, २१८) । १७ अविमुक्तता, समुल्लास (सुम १, ६) । १८ अल्पता, सत्पता (पणह १, ४) ।

णि म [निर्] इन श्रवों का सूचक अव्यय— १ निश्चय (उत्त ६) । २ आधिक्य, अधिक्य (उत्त १) । ३ प्रतिषेध, निषेध (सम १३७, सुपा १६८) । ४ बहिर्भाव । ५ निर्गमन, निष्क्रमण (ठा ३, १, सुपा १६) ।

णिअ सक [ट्ठ] देखना । णिमह (पह; हे ४, १८१) । वड्ठ. णिअन (कुमा, घट्टा, सुपा २६६) । सड्ठ. निपडं (अदि) ।

णिअ वि [निज] आत्मीय, स्वकीय (गा १५०, कुमा, सुपा ११) ।

णिअ वि [नीत] ले जाया गया (सि ५, ६, सण) ।

णिअ वि [नीच] नीच, जघन्य निकट (वम्म ३, ३) ।

णिअ देखो णिअ (सुप्र २, ६, ४५) ।

णिअइ छी [निज्जति] माया, काट, छन, पोशा (पणह १०, २) ।

णिअइ छी [नियति] १ निवर्तन, भवितव्यता, होनी, भाग्य, नियमितता (सुप्र १०, १,

३) । २ भवद्वय-भावित (ठा ४, ४, सुप्र १०, १, २) । *पठय पुं [पर्वत] पर्वत विशेष (जीव ३) । *वाद् वि [वादिन्] 'सब कुछ भवितव्यता के अनुसार ही' हुमा करता है, प्रयत्न वगैरह अधिकार है' ऐसा माननेवाला, भाग्यवादी या देववादी (राज) ।

णिअंठिअ वि [नियन्त्रित] १ नियमित । २ न. प्रवृत्तमान-विशेष, हट्ट से या रोगी से अशुभ दिन में अशुभ तप करने का दिया हुमा नियम (पव ४) ।

णिअटिय वि [नियन्त्रित] १ बँधा हुआ, जकड़ा हुआ । २ न. भवद्वय कर्तव्य नियम-विशेष (ठा १०) ।

णिअठ वि [निर्मन्थ] १ घन रहित । २ पुं. जैनमुनि, सयत, यात (भग, ठा ३, १, ५, ३) । ३ जिन भगवान् (सुप्र १, ६) ।

णिअंठ पु [निर्मन्थ] भगवान् बुद्ध (कुप्र ४४२) ।

णिअंठि देखो 'णिगमिथी' । *पुत्त पुं [पुत्र] १ एक विद्याधर-पुत्र, जिसका दूसरा नाम सयकि था (ठा १०) । २ एक जैनमुनि, जो भगवान् महावीर का शिष्य था (भग ५, ८) ।

णिअंठिय वि [निर्मन्थिक] १ निर्मन्थ-सबन्धी । २ जिन देव-सबन्धी । छी. 'यात', 'एसा प्राणा एयठिया' (सुप्र १, ६) ।

णिअठी देखो जिग्गथी (ठा ६) ।

णिअत वि [नियत] स्थिर (सुप्र १, ८, १२) ।

णिअन वि [निर्घ्य] बाहर निकलता (सम्मत् १५६) ।

णिअतिय वि [नियन्त्रित] संयमित, जकड़ा हुआ, बँधा हुआ (महा, सण) ।

णिअण पु [दे] बल, काटा (दे ४, २८) ।

णिअन पु [निर्मन्थ] १ पर्वत का एक भाग, पर्वत का वर्सात-स्थान (श्रीप ४०) । २ छी की चरम का पोटला भाग, चरम क नीचे का भाग, चूतड़ (कुमा, गज्ज) । ३ मूल भाग (सि ८, १०१) । ४ चट्टी प्रदेश, चरम (जे ४) ।

णिअणिगी छी [नितम्बिनी] १ सुन्दर निवर्तमान छी । २ छी, महिला (वप्पु; पाथ, सुपा ५३८) ।

गिअंस सक [नि + यस्] पहनना। एण्य-
सद (महा)। संक. गियंसिचा (जीव ३;
वि ७४)। प्रयो. एयंसोवेइ (वि ७४)।

गिअंसण न [दि. निवसने] बघ, बपडा
(दे ४, २८; गा ३५१; पाप्म; गडड, पण्ह
१, ३; सुपा १५१; हेता २१)।

गअंसणि छी [निवसनी] बघ, बपडा
(पव ६२)।

गिअक सक [ह्य] देवता। एिमयइ
(प्राप्)।

गिअकल वि [दे] बहल. गोताहार पदाथं
(दे ४, ३६; पाप्)।

गिअग वि [निजक] प्राप्तीय, स्वकीय (उवा)।

गिअच्छ सक [ह्य] देवता। एिमच्छइ
(हे ४, १८१)। बह. गिअच्छंत. गिअ-
च्छमाण (गा २३८, गडड, गा ५००)।
संक. गिअच्छिऊण, गिअच्छिअ (सुर
१, १५७; कुता)। क. गिअच्छियव्य
(गडड)।

गिअच्छ सक [नि + यम्] १ नियम
करना, नियन्त्रण करना। २ भवश्य प्राप्त
करना। ३ जोडना। संक. गिअच्छइत्ता
(सूभ १, १, १; २)।

गिअच्छ सक [नि + गम्] १ संगत होना,
युक्त होना। २ सक. भवश्य प्राप्त करना।
नियच्छइ (सूभ १, १, १, १०, १, १, २,
१७, १, १, २, १८)।

गिअच्छिअ वि [हट] देला हुआ (पाप्)।

गिअट्ट सक [नि + घृन्] निवृत्त होना,
पीछे हटना, रचना। एिमट्टइ (सय)। बह.
गियट्टमाण (प्रावा)।

गिअट्ट सक [निर + घृत्] बनाना,
रचना, निर्माण करना (प्राप)।

गिअट्ट सक [नि + अर्द] अनुसरण करना
(प्राप)।

गिअट्ट पुं [निवर्त्त] व्यावर्तन, निवृत्ति, 'प्रणि-
मृदणमीय' (प्रावा)।

गिअट्ट वि [निवृत्त] व्यावृत्त, पीछे हटा हुआ
(धर्म २)।

गिअट्ट वि [निवर्त्तिन्] निवृत्त होनेवाला
(पमेतं ७६४)।

गिअट्टि छी [निवृत्ति] १ निवर्तन, पीछे
हटना (प्राप् १)। २ भवश्यसाय-विरोध
(सम २६)। ३ मोह-रहित धर्मसा (सूभ
१, ११)। *वायर न [वादर] १ छण-
स्थानक-विरोध (सम २६)। २ पुं. छण-
स्थानक-विरोध में वर्तमान जोर (प्राव ४)।

गिअट्टिय वि [निवर्त्तिन्] व्यावर्त्तित, पीछे
हटायी हुआ (प्राप)।

गिअट्टिय वि [निर्धर्त्तित] रचित, निर्मित,
बनाया हुआ (प्राप)।

गिअट्टिय वि [व्यर्द्धित] अनुगत, अनुवृत्त
(प्राप)।

गिअट्टि वि [निरुट] १ निवट, समीप, नज-
दीक, पास (गा ४०२; पाप्म, सुपा ३५२)।
२ वि. पास वा, समीप वा (पाप्म)।

गिअट्टि वि [निरुतिन्] मायावी, बपटी
(सम ६, २३)।

गिअट्टि छी [निरुति] चौ हुई ठगई को
ठकना—छिपाना (राय ११४)।

गिअट्टि छी [दे. निरुति] माया, बपट
(दे ४, २६; पण्ह १, २; सम ५१; भग
१२, ५; सूभ २, २; खायी १, १८;
प्राव ४)।

गिअट्टि वि [निगडित] नियन्त्रित, जकडा
हुआ (गा ५५६; उप वृ ५२; सुपा ६३)।

गिअट्टि वि [निरुति] समीप-वर्त्ति,
पार्श्व में स्थित (बन्पु)।

गिअट्टि वि [निरुति] बपटी, मायावी
(ठा ४, ४; प्राप; भग ८, ६)।

गिअट्ट सक [नि + कृप्] खीबना।
संक. नियद्धिऊण (सम्मत २३७)।

गिअण वि [नम्] गंगा, बल-रहित (पव
२७१)।

गिअण वि [निरुत्त] काटा हुआ, छिन्न
(भग ६, ३३)।

गिअण वि [नित्य] शाश्वत, ध्वनिस्वर,
'सुखक जमनिपत्त' (सुदु ३३; सूभ १, १,
१, १६)।

गिअण देवो गिअण = नि + घृन्। एिमण्ड
(महा. पि २८६)। बह. गिअण्त, गिअण-
माण (गा ७६, ५३७; से ५, ६७; नाट)।
प्रयो. एिमण्ठावेहि (पि २८६)।

गिअण देवो गिअण = निवृत्त (पउम २२,
६२; गा ६५८; सुपा ३१७)।

गिअण न [निवर्त्तन] १ भूमि वा एक
नाप (उवा)। २ निवृत्ति, व्यावर्त्तन (प्राव ४)।

गिअणिय वि [निवर्त्तनिक] निवर्त्तन
परिमाणवाला (भग ३, १)।

गिअण देवो गिअण (उत्त ३१)।

गिअण वि [दि] १ परिहित, पहना हुआ
(दे ४, ३३; मायम, भक्ति)। २ परिमाणित,
जितनी बल प्रादि पहनाया गया हो वह;
'एियया सो गणियाए' (विसे २६०७)।

गिअण सा [नि + राद्] बहना, सोलना।
एिमणदि (शी) (नाट—बैत ४४)। बह.
गिअण्दत (नाट)।

गिअणिय देवो गिअणिय = न्वर्द्धित (राज)।

गिअणिय न [दि] परिमाण, पहनने का बघ
(पड)।

गिअण सक [नि + यमय] नियन्त्रित
करना, नियम में रखना। संक. गिअणेऊण
(पि ५८६)।

गिअण सक [नि + यमय] १ रोकना।
२ बचन से कराना। ३ शरीर से कराना।
नियमे (प्रावा २, ११, १)।

गिअण पुं [नियम] १ निरचय (जी १४)।
२ सो हुई प्रविष्टा, बल, 'प्रविष्टाविजड'
एिमणा एिमनसमती तुमे मण्क' (उप ७२८
टी)। ३ प्रायोपवेशन, संकल्प-पूर्वक धनदान-
निरूपण के लिए उद्यम (से ५, २)। *सा म
[*सात्] नियम से (प्राप)। *सो म
[*सास्] निरचय से (था १४)।

गिअणिय न [नियमन] नियन्त्रण, संयमन
(विसे १२५८)।

गिअमिय वि [नियमित] नियम में रखा
हुआ, नियन्त्रित (से ४, ३७)।

गिअय न [दे] १ रत्त, मैथुन। २ शयनीय,
सप्या। ३ घट, घडा, बलरा (दे ४, ४८)।

४ वि. शाश्वत, नित्य (दे ४, ४८; पाप्म,
सूभ १, ८; राय)।

गिअय वि [निजक] निजका, स्वकीय,
प्राप्तीय, अपना (पाप्)।

गिअय वि [नियत] नियम-बद्ध, नियमानुसारी
(उवा)।

णिअया की [नियता] जम्बू-वृक्ष विशेष,
जिसे यह जम्बू-द्वीप कहा जाता है (इक)।

णिअर पु [निकर] राशि, समूह, जत्था, ढेर
(गा ५६६; पाय (गउड)।

णिअरण न [दे] दण्ड, शिक्षा (स ५४६)।

णिअरिअ वि [दे] राशि रूप में स्थित (दे
५, ३८)।

णिअल न [दे] नूपुर, पैजनी या पावनेत्र,
की का पादामरण-विशेष (दे ५, २८)।

णिअल पु [निगड] बेदी, स कल (से ३, ८;
विवा १, ६)। देखो निगल।

णिअल्लइअ वि [निगडित] साकल से
णिअल्लविअ नियमित, जकड़ा हुआ (गा
णिअल्लिअ ५५४; ५००; पाय; गउड, से
५, ५८)।

णिअल्ल पु [दे. नियल] द्रष्टाभिप्रायक देव-
विशेष (ठा २, १)।

णिअल्ल वि [निय] स्वकीय, प्राथम्य (महा)।
णिअस देखो निअस। नियस (सुपा ६२)।

णिअसण देखो निअसण (हेका ५६; काय
२०१)।

णिअसिय वि [नियसित] परिहित, पहना
हुआ (सुपा १५३)।

णिअह देखो निअह (नाट—मानवी १३८)।

णिआ की [निदा] प्राणि-हिता (पिड १०३)।

णिआ देखो निअय = (दे)। "पाइ वि
[पादिन्] निजवासी, पदार्थ को नियम
माननेवाला (ठा ८)।

णिआइय देखो निआइय (सूय १, ६)।

णिआग पु [नियाम] १ नियत योग। २
निश्चित पूजा। ३ मोक्ष, मुक्ति (भावा:
सूय १, १, २)। ४ न. भ्रामन्त्रण देखर
जो मित्रा की जाय वह (दम ३)।

णिआग देखो गाय = गाय (भावा)।

णिआण न [निदान] १ आरम्भ, सावध
व्यापार (सूय १, १०१)। २ रोग-नारण,
रोग की पहचान (पिड ५५६)।

णिआण न [निदान] १ कारण, हेतु,
मद्दे धन्य निपाण महोत्तु सिवाधो (स
३६०. पाय. एपाय १, १३)। २ निखी
व्रतगुण की फल-प्राप्ति का भविष्य

संकल्प-विशेष (था ३३; ठा १०)। ३
मूल नारण (भावा)। "कड वि [कृत]
निखने अपने युगलुगान के फल ना भविष्य

किया हो वह (सप १५३)। "कारि वि
[कारिन्] वही भनन्तर उक्त धर्म (ठा ६)।

णिआण न [निपान] रूप या तावाय के पास
पशुओं के जल पीने के लिए बनाया हुआ जल-
कुण्ड, आहाव, हौदी, चखी, "पदमवण पदहट्ट
पदमगं पदहट्ट पदमियाण" (उन ७२८ टी)।

णिआणिआ की [दे] खराब चूणों का
जम्बूखन (दे ५, ३५)।

णिआस देखो निअस = नियम। सऊ,
उचमगा निआमिआ धामोक्खाए परिव्वए'
(सूय १, ३, ३)।

णिआस देखो निआस (सूय १, १०, ८)।

णिआसग वि [नियामक] नियम-कर्ता,
निआमय = नियता (सुपा ३१६)। २

निश्चायक, विनिमयक (विसे ३५७०, स
१७०)।

णिआमिअ वि [नियमित] नियम में रखा
हुआ, नियमित (स २६३)।

णिआय पु [नियाम] अशस्त धर्म (सूय १,
१, २, २०)।

णिआर सक [काणेशित कू] कानी नजर से
देखना। शिआर (दे ५, ६६)।

णिआरिअ वि [काणेशित कू] १ कानी
नजर से देखा हुआ, प्राची नजर से देखा
हुआ। २ न. प्राची नजर से निरीक्षण
(कुमा)।

णिआह पु [निदाघ] १ ग्रीष्म काल, ग्रीष्म
श्रावु। २ जण, धर्म, गरमी (गउड)।

णिआइ वि [नैत्यिक] नित्य का, निअइ
पिडे विज्जद' (भावा २, १, १, २)।

णिआइ वि [दे. नित्य, नैत्यिक] नित्य,
णिआइ = शाश्वत, अविनश्य (पहल २, ५—
पय १५१, सूय १, १, ५, २, ५. एदि;
भावा. सप १३२)।

णिआइ वि [निष्कृप] निर्दय, फंडर (प्राक २६)।

णिआइ वि [निवृत्त] परिवर्णित, परोक्षित
(हे १, १३१)।

णिआइ वि [नियुत] सुवर्णित, सुष्ठि (खाया
१, १८)।

णिउचिअ वि [निकुञ्चित] संकुचित, सकुचा
हुआ, थोड़ा मुड़ा हुआ (गा ५६३; से ६,
१६; पाय. स ३३५)।

णिउज सक [नि + युज] जोड़ना, संयुक्त
करना, किसी कार्य में लगाना। कर्म. एउं-
जीप्रति (पि ५५६)। वऊ. निउंजमाण
(सूय १, १०)। संक. निउंजिऊण, निउंजिय
(स १०५, महा)। क. निउंजियव्व,
निउत्तव्व (उप पु १०; कुमा)।

णिउज पु [निउज] १ गहन, लता प्रादि
से निविड स्थान (कुमा. गा ११७)। २
गह्वर (दे ६, १२३)।

णिउंभ पु [निकुम्भ] कुम्भफल का एक
पुन (से १२, ६२)।

णिउंभिला की [निकुम्भिला] यम-स्थान
(से १५, ३६)।

निउक वि [दे] नृप्योक्त, मीन रहनेवाला
(दे ५, २७, पाय)।

निउकय पु [दे] १ वायस, काक, कौमा।
२ वि. मूक. वाक्-शक्ति से हीन (दे ५, ५१)।

निउज न [न्युज] प्राप्त-विशेष (एदि
१२८ टी)।

निउज्जम वि [निरुज्जम] उद्यम-रहित,
भालसी (सूय २, २)।

निउडू सक [मरज, नि + डूड] मज्जन
करना, हवन। एउिडू (हे १, १०१)।
वऊ. निउडूमाण (कुमा)।

निउडू वि [मज्जन, निमुडूडिन्] हवा हुआ,
निमग्न (से १०, १५; १५, ७५)।

निउण वि [निपुण] १ दक्ष, चतुर, कुशल
(पाय, स्वय ५३, प्राप् ११, जी ६)। २
सूक्ष्म, जो सूक्ष्म बुद्धि से जाना जा सके (जी
२, राय)। ३ हिंवि दक्षता से, चतुराई से,
कुशलता से (जीव ३)।

निउण वि [निपुण] १ नियत गुणवाला। २
निश्चित गुण से युक्त (राज)। ३ सुनिश्चित,
विनिश्चित (पवा ५)।

निउणिय वि [नैपुणिक] निपुण, दक्ष, चतुर
(ठा ६)।

निउत्त वि [नियुत] १ व्यापारित, धर्म में
लगया हुआ (पंचा ८)। २ निवद्ध (विसे
३८८)।

पिङ्गित सक [नि + कृन्] काटना, छेदना ।
 स्फितइ (पुष्प ३३७) उव । स्फितय,
 (उव; कात) ।
 पिङ्गितय वि [निरुर्नक] काट डालनेवाला
 (कान) ।
 पिङ्गिट्ट सक [नि + कृट्] १ कूटना । २
 काटना । पिङ्गिट्टेव, पिङ्गिट्टेनि (उवा) ।
 पिङ्गिणय वि [निरुणित] देहा बिचा हुमा,
 वक्र किया हुमा (दे १, ८८) ।
 पिङ्गिणय पुं [निरुणित] गृह, धामय, निवास-
 स्थान (गोपा १, १६, उत २, धावा) ।
 पिङ्गिणय न [निरुणित] ऊपर देखो (सुर
 १३, २१, महा) ।
 पिङ्गिणय पुं [निरुणित] संकोच, सिमट (दे ७,
 १५) ।
 पिङ्गि वि [दे] सुनिर्मल, मर्बया मल-रहित
 (छाया १, १) ।
 पिङ्गि देखो पिङ्गि = निष्क (प्राक २१) ।
 पिङ्गिअव वि [निरुणित] १ वषट-रहित,
 निर्माय (हुमा) । २ कण्ट ना धमाव,
 निष्कण्टकन (गा ८५) ।
 पिङ्गिअव वि [निरुणित] १ आवरण-रहित
 (भीप) । २ उपपात-रहित (सम १३७) ।
 पिङ्गिअव वि [निरुणित] धमिलापा-
 रहित (उत १६, १५) ।
 पिङ्गिअव न [निरुणित] १ धमाका
 का धमाव । २ दर्शनान्तर की धमिल्ला (उत
 २; पङ्क्ति) ।
 पिङ्गिअव वि [निरुणित] १ काता-रहित । २ दर्शनान्तर के पत्रपात से
 रहित (सम २, ७, भीप, राय) ।
 पिङ्गिचण वि [निरुणित] सुवर्ण-रहित,
 धन-रहित, निःस्व, निर्धन (सुपा १६८) ।
 पिङ्गिचण वि [निरुणित] १ वषट-रहित,
 बाधा-रहित, शुद्ध-रहित (सुपा २०८) ।
 पिङ्गिचण वि [निरुणित] १ वषट-रहित,
 स्वयं-वर्जित, २ धन-रहित (गा ४६८) ।
 पिङ्गिचण वि [निरुणित] १ निर्मल, बाहर
 निवला हुमा (सि १, ५६) । २ जित्ने वीरता
 की हो वह, गृहस्थाश्रम से निर्गत (भावा) ।
 पिङ्गिचण वि [निरुणित] धरणी से निर्गत,
 (ठा ३, १) ।

पिङ्गित छी [निरुणित] निष्कण, बाहर
 निवला (प्राक २१) ।
 पिङ्गितु वि [निरुणित] बाहर निकलने-
 वाला (ठा ३, १) ।
 पिङ्गितु मक [नि + कृन्] जम्बुलन करना ।
 निरुणित (समस्त १७५) ।
 पिङ्गितु वि [निरुणित] कम्प-रहित, स्थिर
 (हे २, ४; धमि २०१) ।
 पिङ्गितु वि [दे] प्रत्यक्ष, चक्षु (दे ४,
 ३३, पाप) ।
 पिङ्गितु वि [निरुणित] ह्वा, दुर्बल, क्षीण
 (ठा ४, ४—वच २७१) ।
 पिङ्गितु वि [दे] १ कठिन (दे ४, २६) ।
 २ पु. निवय, निर्णय (पङ्क्ति) ।
 पिङ्गितु वि [निरुणित, निरुणित] बाहर
 लोचा हुमा, बाहर निकाला हुमा (सि ६०,
 ३३५) ।
 पिङ्गितु वि [निरुणित] धाम-वर्ण-रहित,
 अत्यन्त गरीब (विपा १, ३) ।
 पिङ्गितु मक [निरु + कृन्] १ बाहर
 निवला । २ वीरता सेना, सन्ध्या सेना ।
 पिङ्गितु वि [सि ४८१] वक्र, पिङ्गितु
 (हिवा ३३२, शुद्ध, ८२) ।
 पिङ्गितु पुं [निरुणित] नीचे देखो (नाट—
 मुद्रा २२५) ।
 पिङ्गितु न [निरुणित] १ निर्मल, बाहर
 निवला (मुद्रा २२५) । २ वीरता, सन्ध्या
 (भावा) ।
 पिङ्गितु वि [निरुणित] कर्म-रहित, मुक्ति
 प्राप्त, मुक्त (द्वय १४) ।
 पिङ्गितु वि [निरुणित] १ कार्य-रहित,
 निष्काम (गा १६६) । २ मोक्ष, मुक्ति । ३
 संवर, कर्मों का निरोध, (भावा) ।
 पिङ्गितु पुं [निरुणित] १ वदना, उद्बोधन
 (सुपा ३४१, पञ्च ७, १२६) । २ वृत्ति,
 वेदन, मन्त्र (हे २, ४) ।
 पिङ्गितु न [निरुणित] १ विरुणित । २
 परिणाम । ३ विनाश (संकोच १६) ।
 पिङ्गितु वि [निरुणित] कर्ण-रहित,
 दया वर्जित (नाट—भावा ३२) ।
 पिङ्गितु वि [निरुणित] कर्ण-रहित (सुपा १) ।

पिङ्गितु वि [दे] पोलापन से रहित (सुपा १,
 भा १५) ।
 पिङ्गितु वि [निरुणित] बल-रहित,
 वेदाग (सि ४८८, महा; सुपा २५३) ।
 पिङ्गितु देखो पिङ्गितु (पङ्क्ति १, १) ।
 पिङ्गितु वि [निरुणित] १ निर्दोष, निर्मल ।
 २ निरुणित, उपद्रव-रहित (सि १२, ३५) ।
 पिङ्गितु वि [निरुणित] कण्ट-रहित (उप
 पु १६०) ।
 पिङ्गितु वि [निरुणित] कर्ण-रहित, कर्म-
 वर्जित (ठा ४, २) ।
 पिङ्गितु मक [निरु + कृन्] बाहर निक-
 लना । पिङ्गितु (सम १, १५, ४) ।
 पिङ्गितु सक [निरु + कृन्] निवासना,
 बाहर निकालना । कर्म निष्कसिद्ध
 (उत १) ।
 पिङ्गितु न [निरुणित] निर्मल (राज) ।
 पिङ्गितु वि [निरुणित] १ कर्ण-रहित,
 लोभादि वर्जित (प्राक) । २ पु. भरत-लेन के
 एक भावी तीर्थकर-देव (सम १५३) ।
 पिङ्गितु ली [नीरा] वाम-नामिका (हुमा) ।
 पिङ्गितु वि [निरुणित] धमिलापा-रहित
 पिङ्गितु वि [निरुणित] १ वषट-रहित,
 धन-रहित (सुर २, ३६) । २ निवि, विना
 वषट (भावा ६) ।
 पिङ्गितु वि [निरुणित] निरुणित, 'नेत
 निरुणित' (विह ५१६) ।
 पिङ्गितु वि [निरुणित] वषट-
 रहित, हेतु-रहित (धोष ५) ।
 पिङ्गितु वि [निरुणित] विना वषट
 (आस्थान २१ धमिपार, भावादिवाक्या,
 पञ्च २२२) ।
 पिङ्गितु सक [निरु + कृन्] बाहर
 निकालना । सङ्ग, निष्कालेन (सुपा १२) ।
 पिङ्गितु देखो पिङ्गितु (सि १५) ।
 पिङ्गितु पुं [निरुणित] नीका, बाहर निवा-
 लना (पर्व १२५) ।
 पिङ्गितु वि [निरुणित] बाहर निवाला
 हुमा (राज) ।
 पिङ्गितु वि [निरुणित] निर्मल, धर-
 रहित, निःस्व, गरीब (भावा) ।

पिक्किट्ट वि [निट्टु] अथय, नीच, हीन, जघन्य, 'भदन्तिकिट्टुपाविट्टुपावि यहा' (आ १४, २७, सुपा ५७१, सट्टि १५८) ।

पिक्किण सक [निर् + क्कि] मुख्य करना, उत्तराना । पिक्किणसि (मुच्च ६१) ।

पिक्किचिम्म नि [निट्टुचिम्म] अष्टत्रिम, अष्टली, स्वाभाविक (उप ६८६ टी) ।

पिक्किण्य वि [निट्टिकण्य] क्रिया रहित, यक्रिय (पएह १, २) ।

पिक्किण वि [निट्टुण] कृपा रहित, निर्दय (पाम्, भा ३०, सुपा ४०६) ।

पिक्कीलिय वि [निट्टकीलित] गमन, गति (पय २७१) ।

पिक्कुड पु [निट्टुड] तापन, तपाना (राज) ।

पिक्कुड्डळ की [दे] जोता हुआ, विनिजित (दे १, ४) ।

पिक्कोडण न [निट्टकोटन] वधन-विरोध (पएह १, ३—पय ५३) ।

पिक्कोर सक [निर् + कोरय्] १ दूर करना । २ पात्र वगैरह के डुँह का बन्द करना । ३ पात्र आदि का तलण करना । पिक्कोरेड (इह १) ।

पिक्कोरण न [निट्टकोरण] १ पात्र आदि के डुँह का बन्द करना । २ पात्र आदि का तलण (इह १) ।

पिक्कर पु [दे] १ चोर । २ भुवण, काउवन (दे २, ४७) ।

पिक्क पुन [निट्टु] क्षीनार, मोहर, मुद्रा, अशर्की रुपया (दे २, ४) ।

पिक्कत देखो पिकत (मूष १ ८, सम १५१ कस) ।

पिक्कव वि [नि रक्कव] रक्कव रहित डाली रहित (भा ४६८ अ) ।

पिक्कणण न [निट्टणन] गावना (कुप १६१) ।

पिक्कवि वि [नि क्कवि] क्षत्र रहित क्षत्रिय रहित (पि ३१६) ।

पिक्कम अक [निर + क्कम्] १ बाहर निकटना । २ दोषा लेना, सम्पाद लेना । पिक्कमइ (मग) । पिक्कमति (कम्प) ।

भूना, पिक्कमिनु (कम्प) । अवि पिक्क-

मिस्तति (कम्प) । वड्. पिक्कममाण (खाया १, ५, पडम २२, १७) । सङ्क.

पिक्कम्म (कम्प) । हेरु पिक्कमित्तण (कम्प, वस) ।

पिक्कम पुन [निट्टकम्] १ निर्गमन । २ दोषा ग्रहण (ठा १०, दस १०) ।

पिक्कमण न [निट्टमण] ऊपर देखो (सुज १३, खाया १, १६, पडम २३, ४) ।

पिक्कय वि [निराव] गाढा हुमा (कुप २५) ।

पिक्कय वि [दे, निक्षत] निहत्, मारा हुआ (दे ४, ३२, पाम्) ।

पिक्कविअ वि [निक्षपित] नष्ट किया हुआ, विनारित (अच्छु ३१) ।

पिक्कसरिअ वि [दे] भुषित, जो नूट लिया गया हो, अपहृत सार (दे ४, ४१) ।

पिक्कयविअ वि [दे] शान्त, वाराण प्राप्त (पड) ।

पिक्कित्त वि [निक्षिप्त] १ व्यस्त, स्थापित (पाम्, पएह १, ३) । २ भुक्त, परित्यक्त (खाया १, १, वव २) । ३ पाक भाजन में स्थित (पएह २, १) । ४ चर वि [चर] पाक-भाजन में स्थित वस्तु को सिंहा के लिए खोजनेवाला (पएह २, १, धीप) ।

पिक्कित्तपमाण नीचे देखो ।

पिक्किण सक [नि + क्षिप्] १ स्थापन करना, स्वस्थान में रखना । २ परित्याग करना । पिक्किवइ (महा) । पिक्किरयंत (निज् १६) । कक्क पिक्किरप्पमाण (माषा) । सङ्क पिक्किवित्ता, पिक्किविअ, पिक्किविअ (कस, पि ३१६, नाट—जिक १०३, वव १) । क पिक्किरयिअव, पिक्किरेत्तण (पएह १, १, विसे ६१७) ।

पिक्किलव सक [नि + क्षिप्] नाम आदि भेदों से वस्तु का निरुणय करना । निक्किलवे (अच्छु १०) । अवि निक्किलविस्तानि (अच्छु १०) ।

पिक्किण पु [निक्षेप] १ स्थापन । २ न्यास-स्थापन, शरीर, धन आदि जमा रखना (आ १४) ।

पिक्किण न [निक्षेपण] १ स्थापन । २ डालना (सुपा ६२६, पडि) ।

पिक्कुड वि [दे] प्रकम्प, स्थिर (दे ४, २८) ।

पिक्कुड पुन [निट्टुड] १ बोहर, खोतता, बिबर (उडु २६) । २ धुमिल-सह (विसे १५३८, पंच २, ३२) । ३ गृहापाम, उपवन, घर के पास का बगीचा (राय २५) ।

पिक्कुड पु [निट्टुड] भूमि लह (विसे १५३८) ।

पिक्कुत्त न [दे] निश्चित मन्त्री, चोक्कस, अवरय, पसे विष्णुसकाले नासइ बुद्धी मरणा निम्मुत्त (पडम ५३, १३८), 'वत्ता दाहामि निम्मुत्त' (पडम १०, ८५) ।

पिक्कुत्तिअ वि [दे] अहङ्क, अस्थिर (दे ४, ४०) ।

पिक्कुत्त पु [निट्टेत्त] अथमता, नीचता, दुष्टता (सुपा २७६) ।

पिक्कुत्तण देखो पिक्कुत्त = वि + क्षिप् । पिक्कुत्त पु [निक्षेप] १ न्यास, स्थापन (अच्छु) । २ परित्याग, मोचन (प्राचा २, १, १, १) । ३ शरीर, धन आदि जमा रखना (पडम ६२, ६) ।

पिक्कुत्तण न [निक्षेपण] १ निनेप, स्थापन (पव ६) । २ न्ययस्थापन, निमन (विसे ६१२) ।

पिक्कुत्तयणा } की [निक्षेपणा] स्थापना, पिक्कुत्तयणा } विपास (ववा, कय) ।

पिक्कुत्तय पु [निक्षेपक] निमन, उपसहार (इह १) ।

पिक्कुत्तिय वि [निक्षिप्त] १ व्यस्त, स्थापित । २ भुक्त परित्यक्त (सख) ।

पिक्कुत्तिय वि [निक्षेपित] ऊपर देखो (अवि) ।

पिक्कुत्तय पु [नि क्षेप] १ मोम रहित, पिक्कुत्तय } निकम्प (सम १०६, नव ४७) ।

पिक्कुत्तय देखो पिक्कुत्तय (कुप २२३) ।

पिक्कुत्त न [निरुत्त] सख्या विरोध, सी खर्च से धरय (राज) ।

पिक्किन वि [निक्कि] सर्व, सकल, सब (अच्छु, नाट—महावीर ६७) ।

पिण्ड देखो पिण्ड (विसे १३३२) ।

पिण्ड सक [निगाडय्] नियंत्रित करना, बांधना । सङ्क, निगाडिऊण (कुप १८७) ।

गिमाहिय वि [गिमाहित] नियमित (हम्पीर ३०) ।

गिमाह पुं [दि] धर्म, धाम, गरमो (दि ४, २७) ।

गिमाग वि [नम] नमा, वरु-रहित (सूत्र १, २, १, ६) ।

गिमाद् सक [नि + गद्] १ कहना । २ पहना, भ्रम्यास करना । वक्र. गिमाद्माग (चित्ते ५५०) ।

गिमाग पु [गिमाग] १ प्रकट बोध (चित्ते १२८७) । २ व्यापार-प्रधान स्थान, जहाँ व्यापारी, विशेष संस्था में रहते हो ऐसा रहकर भादि (पह १, ३, शीष, भाषा) । ३ व्यापारि-समूह (सम ५१) ।

गिमागय न [गिमागत] धनुमान प्रमाण का एक अवयव, उपसहार (वसति १) ।

गिमासिअ वि [दे] निवासित (पद्) ।

गिमार पु [निकर] सप्रह, राशि, जल्पा (विषा १, ६, उवा) ।

गिमारण न [निकरण] कारण, हेतु (मग ७, ७) ।

गिमारिय वि [निररित] सर्वथा शोधित (पह १, ४) ।

गिमाह देहो गिमाह । २ बेदी के आकार का सौवर्ण धामपुण-विशेष (धीष) ।

गिमाहिय देहो गिमारिय (अ २) ।

गिमाग देहो गिमाग = गिमाग (पिक ६५५) ।

गिमाग न [गिमाग] धावन्त, धतिरण (ठा ५, २, का १६) ।

गिमाग जुं [निकर्ष] परस्पर संयोगन, मिलाना, जोड़ (मग २५, ७) ।

गिमागिअ देहो गिमागिह ।

गिमागिह देहो गिमागिह (सुपा १८३) ।

गिमागि वि [नम] नमन, नया (भावा २, २, ३, ७, १, पि १३३) ।

गिमागिण न [गान्य] नंगानन, नग्नता (उत्त ५, २१, सुल ५, २१) ।

गिमागिह सक [नि + गद्] १ निग्रह करना, दण्ड करना, शिक्षा करना । २ रोचना । ३ क्रम, बैरना, स्थिति करना ।

संक्र. गिमागिअय, गिमागिअ (ठा ७, वप्प, राज) । क. गिमागिअयव्य (उप ५ २३) ।

गिमागि सक [नि + गुञ्] १ श्रुतना, श्रव्यक शब्द करना । २ नीचे नमना । वक्र.

गिमागि देहो गिमागि (छाया १, ६—पन १५७) ।

गिमागि देहो गिमागि = निगुञ् (भावम) ।

गिमागि वि [निरुण] गुण-रहित (पह १, २) ।

गिमागिह देहो गिमागिह (पह १, ४) ।

गिमागि वि [गिमागिह] १ गुप्त, प्रच्छन्न (वप्प) ।

२ नीमी, मौन रहनेवाला (राज) ।

गिमागि सक [नि + गुह] छिपाना, गोपन करना । छिप्रह (उप, महा) । छिप्रहति (सदि ३२) । वक्र. गिमागिह (स ३३५) ।

गिमागिह न [गिमागिह] गोपन, छिपाना (पवा १५) ।

गिमागिह वि [गिमागिह] छिपाया हुआ, शेषित (सुपा २१८) ।

गिमागिह पु [गिमागिह] भक्तन शोको का एक साधारण शरीर-विशेष (मग, पह १) ।

जीन पुं [जीन] गिमागि का जीन (मग २५, ६, कम्म ४, ८५) ।

गिमागि देहो गिमागि = निर + गद् । वक्र.

गिमागि (मवि) ।

गिमागिह (ही) वि [गिमागिह] शुम्भित, श्रवित (पि ५१२) ।

गिमागिह देहो गिमागिह = निर + गद् ।

गिमागिह देहो गिमागिह (मग, धीष ३२८, प्राप् १३६, ठा १, ३) ।

गिमागि वि [नेरीस्थ] निरव्य-सम्बन्धी (छाया १, १३, उवा) ।

गिमागिही ही [गिमागिही] नैन साक्षी (छाया १, १, १४, उवा, वप्प, धीष) ।

गिमागिह सक [निर + गद्] बाहर गिमागि = निकलना । छिप्रह (उवा, वप्प) । वक्र. गिमागिह, गिमागिहमाण, गिमागिहमाण (सुपा ३३०, छाया १, १, सुपा ३३६) । संक्र. गिमागिह, गिमागिह (कप, स १७) । देह. गिमागिह (अ ७२८ धी) ।

गिमागिह पुं [गिमागिह] १ उत्पति, कल (विदे १५३६) । २ बाहर निकलना (सि ६, ३६,

उप ५ ३३२) । ३ बाहर, दरवाजा (सि २, २) । ४ बाहर जाने का रास्ता (सि ८, ३३) ।

५ प्रस्थान, प्रमाण (सुह १) ।

गिमागिह न [गिमागिह] १ नि-सरण, बाहर निकलना (छाया १, २, सुपा ३३२, भग) ।

२ पलायन, भाग जाना । ३ भय-कर्मण (वप १) ।

गिमागिह वि [गिमागिह] बाहर निकाला हुआ, निस्तारित (भा १६) ।

गिमागिह वि [गिमागिह] गमाया हुआ, पसार किया हुआ (सम्मल १२३) ।

गिमागिह वि [गिमागिह] नि-उत्, बाहर निकला हुआ (चित्ते १५५०, उवा) ।

जीन वि [जीन] १ जितना दण्ड बाहर में फैला हो (छाया १, १८) ।

जीन वि [जीन] १ जितना दण्ड बाहर में फैला हो (छाया १, १८) ।

जीन वि [जीन] १ जितना दण्ड बाहर में फैला हो (छाया १, १८) ।

जीन वि [जीन] १ जितना दण्ड बाहर में फैला हो (छाया १, १८) ।

गिमागिह वि [गिमागिह] हावी रहित (मवि) ।

गिमागिह देहो गिमागिह । क. गिमागिहियव्य (सुपा ५८०) ।

गिमागिह पुं [गिमागिह] १ दण्ड, शिक्षा (प्राप् १७०, भाव ६) । २ विशेष, प्रबोध, द्वावट (मग ७, ६) । ३ शरा करना, काहू में रखना, नियमन (प्राप् ५८) ।

गिमागिह न [गिमागिह] व्याप-शाल-प्रवर्द्ध प्रतिभा-हानि भादि पराजय-स्थान (ठा १, सूत्र १, १२) ।

गिमागिह न [गिमागिह] १ निग्रह, शिक्षा, दण्ड (सुर १६, ७) । २ दमन, नियमन, नियन्त्रण (प्राप् १३२) ।

गिमागिहिय वि [गिमागिहिय] १ जिसका निग्रह किया गया हा वह (सि ११५) । २ पराजित पराजित (भावम) ।

गिमागिहिय देहो गिमागिहिय (सुत्र १, १) ।

गिमागिहिय वि [गिमागिहिय] १ हृष्टि, हलदी (दे ४, २५) ।

गिमागिहिय पुन [गिमागिहिय] निचोद, रस, 'सौस-चोदी' (सुद ५१) ।

गिमागिहिय वि [गिमागिहिय] गलाया हुआ (उप ५ ८५) ।

गिमागिहिय वि [गिमागिहिय] निग्रह करनेवाला (उत्त २५, २) ।

गिमागिहिय वि [दे. निर्माण] १ निर्गत, बाहर निकला हुआ (सि ४, ३६, पात्र) । २ बाह्य, वषम किया हुआ (सि ५, २६) ।

गणिगण्ड देखो गणिगण्ड । गणिगण्डाहि
(बिसे २४८२) ।

गणिगण्डिय वि [निर्गण्डित] वान्त, बम
दिया हुआ (न ३५८) ।

गिगण्डो ओ [निगण्डो] ओयवि विशेष,
बनस्पति संभाव्य (पण १) ।

गिगण्डु वि [निगण्ड] गुण रहित, गुण-हीन
(गा २०३, उच, पण १, २, उच ७२८२) ।

गिगण्डु } न [निगण्ड] गुण रहितपन,
गिगण्डु } गुण-हीनता, निगुणत्व (बसु,
मत १४४) ।

गिगण्डु वि [निगण्ड] स्थिर रूप से स्थापित
(सुग २, ७) ।

गिगण्डु दुं [न्यगण्ड] वृण विशेष, बरगद
बड़ का पड़ (पउम २०, ३६, पण ५) । परिमण्डल
न [परिमण्डल] शरीर-संस्थान विशेष,
बटाकार शरीर का भाकार (सम १४६,
ठा ६) ।

गिगण्डु देखो गिण्डु (कण) ।

गिगण्डु वि [दे] कुराव, निपुण, बनुर (दे
४, ३४) ।

गिगण्डु देखो गिगण्ड (विक १०२) ।

गिगण्डित वि [दे] क्षिप्त, बँका हुआ
(पाम) ।

गिगण्डिय वि [निर्गण्डित] १ आघात प्राप्त,
आहत । २ व्यापादित, बिनाशित (छाया १,
३३) ।

गिगण्डिय पु [निर्गण्डित] राक्षस-वरा का एक
राजा (पउम ६, २२४) ।

गिगण्डिय पु [निर्गण्डित] १ आघात, रगिर-
तुगनुरगममुलगनिगण्डियविद्वरिष घराणि (सुपा
३) । २ बिजनी का गिरना (स ३७५, जीव
१) । ३ अन्तर देव गर्वना (ठा १०) । ४
बिनाश (सुम १, १५) ।

गिगण्डिय न [निर्गण्डित] नारा बिनाश,
उच्छेदन (पदि सुपा ५०३) ।

गिगण्डिय वि [निर्गण्ड] निर्दय कण्ठा रहित
(गा ५४२, पण १, १, सुर २, ६१) ।

गिगण्डित देखो गिगण्ड ।

गिगण्डोर वि [दे] निर्दय, दयाहीन (दे ४,
३७) ।

गिगण्डोर पु [निर्गण्ड] महान् अयक शब्द
(पण १, सम १५३) ।

गिगण्डु पु [निगण्ड] शब्द बोरा, नाम संज्ञ
(भौष, भग) ।

गिगण्डु पु [निगण्ड] १ कमीठी का पत्तर
(भलु) । २ कसौटी पर की जाती सुवर्ण
की रेखा (सुपा ३६१) ।

गिगण्डु पु [निगण्ड] संज्ञ संज्ञ (सुम १,
१०, ६) ।

गिगण्डु पु [निगण्ड] १ सपूड, राशि । २
उत्तम, दुष्ट (भौष ४०७, स ३६६, भाषा,
महा) ।

गिगण्डु वि [निगण्ड] १ श्याम, मरपूर
(भनि ५) । २ निविड, पुष्ट (भग) ।

गिगण्डु पु [निगण्ड] वृक्ष विशेष, वजुत वृक्ष
(स १११, बुभा) ।

गिगण्डु वि [निगण्ड] १ श्विनरवर शरवत
(भाषा, भौष) । २ न. निरुत्तर, सर्वदा,
हमेशा (महा, प्रासू १४, ६०१) । ३ गणिय
[अक्षिण] निरुत्तर उत्तरवर्ती (छाया
१, ४) । ४ मंडिया ओ [मण्डित] कन्ध
वृक्ष विशेष (झक) । ५ वाय पु [वाय]
पदार्थों की निरय मानवेवाता मल, 'गुह्युक्क-
सपप्रोगो न जुगज्ज निग्गवापपक्कस्सि' (धम
१८) । ६ ओ य [रास्] सदा, सर्वदा,
निरुत्तर (महा) । ७ ओय, 'लोम, 'लोय
पु [लोके] १ एक विद्याधर राजा (पउम
६, ५२) । २ महाधिष्ठामक देव-वरोध (ठा
२, ३) । ३ न. नगर विशेष (पउम ६, ५२,
झक) । ४ वि. सर्वदा प्रकाशवाता (कण) ।

गिगण्डु देखो जीय = जीव (सम ५५) ।

गिगण्डु वि [निगण्डुस] १ वृक्ष वृद्ध,
मेज हीन, कृपा (पउम ८२, ५१) ।

गिगण्डु (धप) वि [गाण्ड] पाठ, निविड (हि
४, ४२२) ।

गिगण्डु देखो गिगण्ड (प्रयो २१, पि ३०१) ।

गिगण्डु देखो गिगण्ड । गिगण्ड (हे ४,
३६) ।

गिगण्डु स [क्ष] मरना, टपकना, बुना ।
गिगण्ड (हे ४, १७३) । प्रयो गिगण्डादे
(कुमा) ।

गिगण्ड स [सुच्] दुष्ट को छोड़ना,
दुष्ट का त्याग करना । गिगण्ड (हे ४,
६२ दि) । भूरा, गिगण्डमीम (कुमा) ।

गिगण्ड वि [निगण्ड] स्थिर, दृढ़, अचल
(हे २, २१, ७७) । १ पय न [पद] मुक्ति,
मोक्ष (पचव ४) ।

गिगण्ड वि [निगण्ड] बिगता-रहित,
वेदिक (विक ४१, प्रासू २७, सुपा २२५) ।

गिगण्ड वि [निगण्ड] गेठा-रहित (सुपा
१४) ।

गिगण्ड (शौ) देखो गिगण्ड (पि ३०१) ।

गिगण्डोअ पु [निगण्डोअ] नन्दीश्वर
द्वीप के मध्य की दक्षिण दिशा में स्थित एक
अवनगिरि (पव २६६) ।

गिगण्डोअ वि [निगण्डोअ] १ सदा
गिगण्डोअ प्रवाशमुक्त । २ पु गृह विशेष
ज्योतिष्क देव विशेष (ठा २, ३) । ३ न.
एक विद्याधर नगर (झक) ।

गिगण्डु वि [दे] १ उद्धत, बाहर निकला
हुआ (पण ५) । २ निर्दय, दयाहीन (पाम) ।

गिगण्डुविगण्ड वि [निगण्डुविगण्ड] सदा क्षिप्त
(स ५, २) ।

गिगण्डु देखो गिगण्ड (छाया १, २, सुर
३, १७२) ।

गिगण्डेय वि [निगण्डेय] क्षेपना रहित
(महा) ।

गिगण्डेय ओ [निगण्डेय] हमेशा रजस्वला
रहनेवाली ओ (ठा ४, २) ।

गिगण्डेय स [दे] निषोडना । निगण्डेय
(सुम २१५) ।

गिगण्डेय न [निगण्डेय] १ चोरी का
भयाव । २ वि. चोरी-रहित (उप १३६ टी) ।

गिगण्डेय वि [निगण्डेय] १ निरचय-
सम्बन्धी । २ पु निरचय नय द्रव्याधिक नय,
परिराज वाद (बिसे) ।

गिगण्डेय वि [निगण्डेय] १ कपट-रहित
भावा वर्जित (पण ३ सुपा ३५०) । २
क्षिप्र विना कपट (साध ५१) ।

गिगण्डेय वि [दे] १ निर्जल, बेरास, घुट,
दीठ (सह १, वय ५) । २ धवसर को नहीं
पाननेवाला, असमयत (राज) ।

गिच्छम् देखो गिच्छउम (उद, सार्ध १४५)।
गिच्छय सक [निर् + चि] निश्चय करना,
नियुंय करना। बहु. गिच्छयमाण (उप
७२८ धी)।

गिच्छय दु [निश्चय] १ निश्चय, नियुंय
(भग प्राप्त १७७)। २ नियम, प्रतिपादय
(राज)। ३ नय विशेष, द्रव्याधिक नय,
वास्तविक पदार्थ को ही माननेवाला मत,
परिणाम-भाव (इह ४, पंचा १३)। *कहा
की [कथा] प्रसार (निचू ५)।

गिच्छल सक [छिद्र] छेदना, काटना।
गिच्छलद हि ४, १२४)।

गिच्छल्लिअ वि [छिन्न] भाग हुआ (हुमा,
स २५८, गठ३)।

गिच्छाय वि [निश्चय] कान्ति-रहित,
शोभा-हीन (पह १, २)।

गिच्छाय वि [निस्तारक] सार-रहित,
'निश्चारमधारमूलवीर्य' (भा २७)।

गिच्छिद्र वि [निश्चिद्र] छिद्र-रहित (छामा
१, ९, उप २११ धी)।

गिच्छिण्ण वि [निच्छिन्न] वृक्ष-वृत्त, प्रलय
किया हुआ, काटा हुआ (विसे २७१)।

गिच्छिद्र देखो गिच्छिद्र (स ३५०)।

गिच्छिन्न देखो गिच्छिण्ण (पुष्प ४६३,
महा)।

गिच्छिय वि [निश्चित] निश्चिन्, निर्णीत,
सर्वविध (छामा १, १, महा)।

गिच्छीर वि [निक्षीर] क्षीर रहित, दुग्ध-
वज्रित (पण १)।

गिच्छुड वि [दे] निर्दय, कष्टान-रहित (दि
४, ३२)।

गिच्छुट्ट वि [निद्रुट्टित] निद्रुत्त, धूटा
हुमा (सुर ६, ७२)।

गिच्छुम सक [नि + क्षिप्] १ बाहर
निकालना। फेंकना। गिच्छुमद (भग)।
नर्न गिच्छुमद (दि ६६)। कवक. गिच्छु-
दममाण (विगा १, २)। चङ्क. गिच्छुभिचा,
गिच्छुभिउ (भग, निर १, १)। प्रयो.
गिच्छुभावेद (छामा १, ८)।

गिच्छुम पु [निक्षेप] निष्पादन (पिंड
३७५)।

गिच्छुभण न [निक्षेपण] नि सारण,
निकासन (निचू १)।

गिच्छुभाविय वि [निक्षेपित] निस्तारित,
बाहर निकाला हुआ (छामा १, ८)।

गिच्छुह सक [नि + क्षिप्] धातना।
निच्छुह (सुख ७, ११)।

गिच्छुहणा की [निक्षेपणा] बाहर निकलने
की भावा, निर्मलता (छामा १, १६ टो—
पत्र २००)।

गिच्छुड वि [निक्षिप्त] १ उद्धृत, निर्गत
(हे ४, २५८)। २ फेंका हुआ, निक्षिप्त
(भामा)। ३ निस्तारित, निष्पादित (छामा
१, ८—पत्र १४६, १, १६—पत्र १६६)।

गिच्छुट्ट न [निद्रुयूत] धुक, लक्षार (विसे
५०१)।

गिच्छोड सक [निर् + छोटय] १ बाहर
निकलने के लिए धमकाना। २ निर्मल
करना। ३ छुड़वाना। गिच्छोडेद गिच्छोडेति
(छामा १, १६, १८)। गिच्छोडेवा (उवा)।
गह. गिच्छोडइत्ता (भग १५)।

गिच्छोडग न [निश्छोटन] निर्मल, बाहर
निकलने की धमकी (उवा)।

गिच्छोडणा की [निश्छोटना] ऊपर देखो
(छामा १, १६—पत्र १६६)।

गिच्छोडिज वि [निद्रोटित] सपा किया
हुमा (पिंड २७६)।

गिच्छोल सक [निर् + लक्ष] छीलना,
छाल उतारना। गिच्छोलेद (निचू १)। बहु.
गिच्छोलेत (निचू १)। गह. गिच्छोलिऊण
(महा)।

गिजातय वि [नियन्त्रित] नियमित, धट्टित
(सुर ३, ४)।

गिजिण्ण देखो गिजिण्ण (ठा ४, १)।

गिजुंज देखो गिजुज = नि + मुज्। निजुज
(सुर ३४८)।

गिजुड देखो गिजुड (निचू १२)।

गिजोऊण न [नियोजन] नियुक्ति, कार्य में
लगाना, शारपर्यण (उप १७६ टो)।

गिजोऊणिय देखो गिजोऊय (उप १७६ टो)।

गिज वि [दे] सुख, सोया हुआ (दि ४, २५,
वट्)।

गिजित देखो जी = नी।

गिजिण वि [निर्जन] १ विजन, मनुष्य-
रहित, सुनसान। २ न, एकान्त स्थान (गठ३)।

गिजिण्ण वि [निर्याप्य] १ निर्वाह-नारक।
२ निर्मल, बल को नहीं बढानेवाला, 'भरस-
विरसोयमुत्तमसिद्धिपपाणमोपपाद' (पह
२, ५)।

गिजिर सक [निर् + ज] १ क्षय करना,
नाश करना। २ कर्म-मुड़तो को भ्रामा से
भ्रमन करना। गिजिरदेद, गिजिरय, गिजिरेंदि
(भग ठा ४, १)। मुका, गिजिरिद, गिजिर-
रेंदु (दि ५७६, भग)। भवि. गिजिरिरसति
(ठा ४, १)। बहु. गिजिरमाण (भग १८,
३)। बहु. गिजिरिजमाण (ठा १०,
भव)।

गिजिरण न [निर्जरण] क्षीप देखो (हीन)।

गिजिरणा की [निर्जरणा] १ नाश, क्षय।
२ कर्म क्षय, कर्म-नारा। ३ जिससे कर्मों का
विनाश हो ऐसा क्षय (नव १, सुर १४, ६५)।

गिजरा की [निर्जरा] कर्म-क्षय, कर्म-विनाश
(भामा, नव २४)।

गिजरिय वि [निर्जीर्ण] क्षीण, विनाश-
प्राप्त (सुडु)।

गिज्ज वि [निर्याप] निर्वाह करानेवाला
(पचा १५, १४)।

गिज्जवग वि [निर्यापक] १ निर्वाह करने-
वाला। २ भारापक, भारापन करनेवाला
(क्षय २८ भा)। ३ पु. जैनमुनि विशेष,
जो शिष्य के भारी प्रायश्चित का भी ऐसी
वट्ट से विभाग कर दे कि जिससे वह उडे
निवाह सके (ठा ८, भा २५, ७)।

गिजिणणा की [निर्यापणा] १ निगमन,
दक्षित धर्म का प्रत्युत्थारण (विसे २६३२)।
२ हिंसा (पह १, १)।

गिज्जवग देखो गिज्जवग (क्षय २८ भा टी,
द ४६)।

गिज्जविउ वि [निर्यापयिउ] उपर देखो
(पत्र ६४)।

गिज्जा सक [निर् + या] बाहर निकालना।
गिज्जायति (भग)। भवि. गिज्जाइत्तामि
(क्षीय)। बहु. गिज्जायमाण (ठा ४, ३)।

गिज्ञाण न [निर्याण] १ बाहर निरतना,
निर्गम (ठा ५, १) । २ भावुति-रहित गमन
(भीन) । ३ मोक्ष, मुक्ति (भाव ५) ।

गिज्ञाणिय वि [निर्भाणि] निर्माण-सम्बन्धी,
निर्गम-संबन्धी (भाषा १३, ६, निरु ८) ।

गिज्ञामग १ पुं [निर्यामक] बलेंपार,
गिज्ञामय १ जहाज वा नौकला (विसे
२६५६, खामा १, १७ मौष, गुर १३
४८) ।

गिज्ञामण न [निर्यापन] यदना बुजाना,
'वैरिणज्जामण' (भव १) ।

गिज्ञामय पुं [निर्यामक] १ बीमार बी
सेवा-शुभूषा करनेवाला मुनि (पय ७१) ।
२ वि. आराधना-कारक (पय-भाषा १७) ।

गिज्ञामिय वि [निर्यामित] पार पहुँचाया
हुमा, तारित (महा) ।

गिज्ञाय पुं [दे] उपकार (दे ४, ३४) ।
गिज्ञाय वि [निर्यात] निर्गम, निरुत (यधु,
उप पु २८६) ।

गिज्ञायण न [निर्यातन] वैर-शुद्धि, बदला
(महा) ।

गिज्ञायणा क्षी [निर्यातना] ऊपर देखो (उप
४३१ टी) ।

गिज्ञायय देखो गिज्ञामय (अवि) ।
गिज्ञास पुं [निर्यास] दुग्धा वा रस, बोध,
(सुय २, १) ।

गिज्ञिअ वि [निर्जित] जीला हुमा, परामुख
(भाषा १८ भा टी, सुर ६, ३६, भीष) ।

गिज्ञिण सक [निर + जि] जीतना, पराजय
करना (निअण्ड ६ (अवि) सङ्ग, निज्जिणऊण,
(महा) ।

गिज्ञिणिय देखो गिज्ञिअ (सुपा २६) ।
गिज्ञिण १ वि [निर्जीण] नाश प्राप्त,
गिज्ञिण २ शीघ्र (भाषा, ठा ४, १) ।
गिज्ञीव वि [निर्जीव] जीव-रहित, चैतन्य
बिना (भीष, भा २०, महा) ।

गिज्जुज [निर + युज्] उपकार करना
(पिड २६ टी) ।

गिज्जुस वि [निर्युक्त] १ शब्द, समुक्त (विस्सु
१०८५, भीष १ भा) । २ लाचित, जड़ित
(भीष) । ३ प्रहर्षित, प्रतिपादित (भावप) ।

गिज्जुसि क्षी [निर्युक्ति] व्याख्या, विवरण,
टीका (विसे ६६५, भीष २३, सम १०७) ।

गिज्जुद देखो गिज्जुद (स ४७०) ।

गिज्जुद वि [निर्युद्ध] १ निम्त्यासित, निम्त्या-
सित (खामा १, १—यय ६४) २ धमनोद्ध,
समुन्दर (भीष ५४८) । ३ उद्भूत, प्रत्यान्तर
से प्रवर्तित (दसनि १) ।

गिज्जुद वि [निर्युद्ध] रहित, 'निद्राणं रस-
निम्बुद्ध' (दस ८, २२) ।

गिज्जुद सब [निर + युद्ध] १ परिणाम
करना । २ रक्षा निर्माण करना । कर्म,
गिज्जुद्धिद (वि २२१) । हेतु, गिज्जुद्धित्त
(यव २) । ३ गिज्जुद्धियञ्ज (वप) ।

गिज्जुद पुं [दे, निर्युद्ध] १ नीध, छवि,
गृहाच्छादन, पाटन (दे ४, २८, स १०१) ।
२ गवाक्ष, गोश, 'इय जाव चित्तए मंती
एण्णुद्धिद्विपो' (पम्म ६ टी, वव १) । ३
द्वार से पास कर बाध विरोध (खामा १, १—
यय १२, पण्ड १, १) । ४ द्वाय, दरवाजा
(गुर २, ८३) ।

गिज्जुहण वि [निर्युद्धक] प्रत्यान्तर से
उद्भूत करनेवाला (दसनि १, १४) ।

गिज्जुहण न [निर्युद्धण] देखो गिज्जुहणा
(उत्त ३६, २५१; यव २) ।

गिज्जुहणया १ क्षी [निर्युद्धण] १ निस्सा-
गिज्जुहणा १ रण, बाह्य निकालना (यव
१) । परिणाम (ठा ४, २) । ३ विरचना,
निर्माण (विसे ५५१) ।

गिज्जुहिय देखो गिज्जुद (दसनि १, १५) ।

गिज्जुहिय वि [निर्युद्धित] रहित (यव
१३४) ।

गिज्जोअ पुं [दे] १ प्रकार, राशि । २ पुष्पो
का समूह (दे ४, ३३) ।

गिज्जोअ १ पु [निर्योग] १ उपकरण,
गिज्जोअ २ साधन (राय ५५, ५६, पिड
२६) । २ उपकार (पिड २६) ।

गिज्जोअ १ पुं [दे, निर्योग] परिकर,
गिज्जोअ २ सामग्री, 'अपयण्णोअो' (भीष
६६८, खामा, १, १—यय ५४) ।

गिज्जोमि पुं [दे] रण्य रखी (दे ४, ३१) ।

गिज्जुम्रक [निह] स्नेह करना । गिज्जुम्र
(प्रक २८) ।

गिज्जुम्र सब [क्षि] क्षीण होना । गिज्जुम्र
(दे ४, २०; पण्ड १) । पण्ड, गिज्जुम्रत (कुमा
६, १३) ।

गिज्जुम्र वि [दे] जीर्ण, पुराना (दे ४, २६) ।
गिज्जुम्र वृं [निर्मल] मलना, पहाड़ से गिरता
पानी वा प्रवाह (हे १, ६८; २, ६०) ।

गिज्जुम्रण न [निर्मलण] ऊपर देखो (पयम
६४, ५२; गुर ६, ६४, सुपा ३५५) ।

गिज्जुम्रणी क्षी [निर्मलणी] मदी, वरगिणी
(कुमा) ।

गिज्जुम्र सब [निर + म्र] देखना, निरोक्षण
करना । गिज्जुम्र, गिज्जुम्र (हे ४, ६) ।

यह, गिज्जुम्रायत, गिज्जुम्रायमाण (मा ४,
भाषा २, १, १) । यह, गिज्जुम्राऊण,
गिज्जुम्राइता (महा, भाषा) ।

गिज्जुम्र सब [निर + म्र] विशेष चित्तन
करना । यह, गिज्जुम्राइता (भाषा) ।

गिज्जुम्राइ वि [निध्यायिन्] देखनेवाला
(भाषा) ।

गिज्जुम्राइतु वि [निध्यातु] देखनेवाला,
निरीक्षक (उत्त १६, सम १५) ।

गिज्जुम्राइतु वि [निध्यातु] परित्याग चित्तन
करनेवाला (ठा ६) ।

गिज्जुम्राइय वि [निध्यात] १ दृष्ट, विलोकित
(स ३५२, भाषा ५५) । २ म. दर्शन, निरी-
क्षण (महा—पुड ५८) ।

गिज्जुम्राडिय वि [निर्वाडित] विनाशित (उप
६४८ टी) ।

गिज्जुम्राय वि [दे] निर्दय, धमा-रहित (दे ४,
३७) ।

गिज्जुम्राय वि [निध्यात] दृष्ट, विलोकित
(गुर ६, १८८, सुपा ४४८) ।

गिज्जुम्र वि [दे] जीर्ण, पुराना (दे ४, २६) ।

गिज्जुम्रद सक [छिद्] छेदना, काटना ।
गिज्जुम्राड (हे ४, १२४) ।

गिज्जुम्रोण न [छेदन] छेदन, कर्तन (कुमा) ।

गिज्जुम्रोसतु वि [निर्भासितु] लय करने-
वाला, कर्मों का नाश करनेवाला (भाषा) ।

गिट्टिक वि [दे] १ टक-छिन्न । २ विषम,
असमान (४, ५०) ।

गिट्टिकिय वि [निद्राङ्गित] निद्रित, अव-
धारित (सुपा २६०) ।

गिट्-टुअ धव [क्षर] टपकना, चूता ।
गिट्-टुअह (हे ४, १७३) ।

गिट्-टुअ वि [क्षरित] टपका हुआ (पात्र) ।

गिट्-टुह भक [वि + गल्] गल जाना,
नष्ट होना । गिट्-टुहह (हे ४, १७५) ।

गिट्-टु देखो गिट्-टु = नि + स्या (निट्-टु (भवि) ।

गिट्-टुय } सक [नि + स्थापय] १ समाप्त
गिट्-टुय } करना, पूर्ण करना । २ भक्त करना,
सत्तम करना । ३ विरोध रूप से स्थापन
करना, स्थिर करना । भूका, गिट्-टुयसु (मग
२६, १) । संज्ञ, गिट्-टुविअ (विग) । क.
गिट्-टुयगिज (उप ३६७ टी) ।

गिट्-टुवण न [निष्ठापन] १ भक्त करना
ममामि । २ वि नाश-कारक, सत्तम करने-
वाला (सुपा १६१; गड्ड) । ३ समाप्त करने-
वाला (जी ५) ।

गिट्-टुवय वि [निष्ठापक] समाप्त करनेवाला
(भावा ६) ।

गिट्-टुविअ वि [निष्ठापित] १ समाप्त किया
हुआ (पचव २) । २ विनाशित (से ६, १) ।

गिट्-टु भक [नि + स्था] सत्तम होना,
समाप्त होना । गिट्-टुह (विते ६२७) ।

गिट्-टु ओ [निष्ठा] १ भक्त, भक्तान, समाप्त
(विते २८३३, सुपा १३) । २ सत्तम (भावा
१) । *भासि वि [भापिन्] निष्ठा-पूर्वक
बोलनेवाला, निश्चय-पूर्वक आपण करनेवाला
(भावा) ।

गिट्-टुण न [निष्ठान] सर्व-उप-शुक्र भोजन
(वस ८, २२) ।

गिट्-टुण न [निष्ठान] १ वही वहीह व्यञ्जन
(का ४, २, पणह २, ५) । २ समाप्त (निट्-
१) । *वहा ओ [कथा] भक्त-कथा विशेष,
दही वहीह व्यञ्जन की बात-चीत (का ४,
२) ।

गिट्-टुण देखो गिट्-टुवण (सुपा ३५७) ।

गिट्-टुय नि [निष्ठित] १ समाप्त किया हुआ,
पूर्ण किया हुआ (उप १०३१ टी, वस ४,
७५) । २ उत किया हुआ, विनाशित (सुपा
४४६) । ३ स्थिर (से ५, ७) । ४ निष्पन्न,
सिद्ध (भावा २, १, ६) । ५ पु. मोक्ष, मुक्ति
(भावा) । *ट्टि वि [र्ष] वृद्धय (पणह

३६) । *ट्टि वि [र्षिन्] मुमुक्षु, मोक्ष का
इच्छुक (भावा) ।

गिट्-टुय वि [निष्ठिक] निष्ठा-युक्त, निष्ठावाना
(पणह २, ३) ।

गिट्-टुय पु [निष्ठोय] बूक, ग्रंथ का पानी
(रंगा) ।

गिट्-टुवण ओन [निष्ठोयन] बूक, सत्तम ।
२ बूकना (सट्टि ७८ टी) । ओ *णा (वस
१) ।

गिट्-टुअ न [निष्ठयत्] बूक (कुलक ३०) ।

गिट्-टुअय वि [निष्ठोयक] बूकनेवाला (पणह
२, १, शीप) ।

गिट्-टुअण देखो गिट्-टुओण (वेद्य ६३) ।

गिट्-टुअ } वि [निष्ठुर] निष्ठुर, वक्त्र, कठिन
गिट्-टुअ } (भावा हे १, २५४, पाच, गड्ड) ।

गिट्-टुअ न [निष्ठोयन] १ बूक, सत्तम
(वस १) । २ वि. बूकनेवाला (का ५, १) ।

गिट्-टुह भक [नि + स्तम्भ] निष्ठम्भ
करना, निश्चेष्ट होना, स्तम्भ होना । गिट्-टु-
हह (हे ४, ६७, पणह) ।

गिट्-टुह धव [नि + छीव] बूकना
गिट्-टुहरी (गड्ड ४१) ।

गिट्-टुह वि [दे] स्तम्भ, निश्चेष्ट (दे ४,
३३) ।

गिट्-टुहण न [दे निष्ठोयन] बूक, ग्रंथ का
पानी, सत्तम (महा) ।

गिट्-टुहवण वि [निष्ठम्भक] निश्चेष्ट करने-
वाला, स्तम्भ करनेवाला (सुमा) ।

गिट्-टुहिय न [दे] बूक, गिट्-टुवण, सत्तम
(दे ४, ४१) ।

गिट्-टु पु [दे] विद्याच, रात्रय (दे ४, २५) ।

गिट्-टुअ } न [खलाट] माल, सलाट (वि
गिट्-टुअ } २६०, पत्रम १००, ५७, सुपा
२८) ।

गिट्-टु न [नीह] पक्षि-गृह (पाय) ।

गिट्-टुअ न [निर्देहन] जला देना (उप २६३
टी) ।

गिट्-टुह देखो गिट्-टुअ । गिट्-टुहह (सुमा-
पणह) ।

गिण्णय पु [निनाद] शब्द, भावाच, ध्वनि
(सुमा १.१, पत्रम २, १०३, से ६, ३०) ।

गिण्ण वि [निम्न] १ नीचा, भ्रमस्तन (उत
१२, उव १०३१ टी) । २ क्विन्. नीचे, भ्रम.
(हे २, ४२) ।

गिण्णकुलु कि [निस्सारयति] बाहर निका-
सता है, *ठाणाभा ठाण साहरति, बहिया भा
गिण्णकुलु (भावा २, २, १) ।

गिण्णमा ओ [निम्नमा] नदी, क्षोतस्विनी
(पणह १, पणह २, ४) ।

गिण्णट्ट वि [निर्नष्ट] नाश-प्राप्त (सुर ६,
६२) ।

गिण्णय पु [निर्णय] १ निश्चय, ब्रह्मचारण
(हे १, ६३) । २ फैलाता (सुपा ६६) ।

गिण्णया देखो गिण्णया (पाय) ।

गिण्णार वि [निर्नगर] नगर से निर्गत (मग
१५) ।

गिण्णाला ओ [दे] चञ्चु, चीच (दे ४,
३६) ।

गिण्णस सव [निर + नाशय] विनाश
करता । चट्ट, निष्ठासित (सुपा ६५४) ।

गिण्णस पु [निर्णाश] विनाश (भवि) ।

गिण्णसिय वि [निर्णाशित] विनाशित
(सुर ३, २९१, भवि) ।

गिण्णिह वि [निर्निद्र] निद्रा रहित (पा
६५६) ।

गिणिमेस वि [निर्निमेप] १ निमेप-रहित,
विना पलक कपकापे, एक-टक । २ चैष्टा-
रहित । ३ अनुसयोगी (का ५, २) ।

गिणिणी सव [निर + गी] निश्चय करना ।
सह गिण्णइड (ममवि १३६) ।

गिण्णीअ वि [निर्णीत] निश्चित नगरी
किया हुआ (आ १२) ।

गिण्णुणअ वि [निम्नोन्नत] ऊँचा-नीचा,
विषम (ममि २०६) ।

गिण्णह वि [नि स्नेह] स्नेह-रहित (हे ४,
३६७, सुर ३, २२२, महा) ।

गिण्णइया ओ [निष्ठिका] तिपि-विशेष
(वस ३५) ।

गिण्णय पु [निष्ठय] १ सत्य का परताप
गिण्णय बर्तनेवाला, मिथ्यावादी (शेष
गिण्णय ४० भा. का ७, शीप) २ भ्रम-
सात (सर्व ४१) ।

गिण्णय भव [नि + हन्तु] भ्रमताप करना ।
गिण्णयहह (विते २२६६, हे ४, २६६) ।

कर्म. गिणह्वोमदि (शौ) (नाट—रत्ना ३६) । वक्र. गिणह्वंत, गिणह्वेमाणि (उप २११ टी; सुर ३, २०१) ।

गिणह्वग वि [निह्वयक] अग्रताप करने-वाला (श्रोग ४८ मा) ।

गिणह्वण न [निह्वयन] अग्रताप (विपा १, २; उप) ।

गिणह्वण वि [निह्वयन] अग्रताप-वर्त्ता (चंनोप ५) ।

गिणह्विद देखो गिणहुविद (नाट—शुक्र १२६) ।

गिणहुय वि [निह्वयत] अग्रतापित (सुपा २६८) ।

गिणहुय देखो गिणह्वय = नि + ह्व, कर्म. गिणहुयिज्जति (पि ३३०) ।

गिणहुविद (शौ) वि [नि + ह्व, व] अग्र-वर्त्तित (पि ३३०) ।

गितिय देखो गिष (भाषा; ठा १०) ।

गितुडिअ वि [गितुडित] दृष्टा हुआ, द्रिष्ट (अमृद ५५) ।

गित्ता देखो गेत्ता (पाम; सुपा २६१; लहुम १५) ।

गित्तम वि [गित्तमस्] १ अग्रकार-रहित । २ अज्ञान-रहित (अभि ८) ।

गित्तल वि [दे] अनिवृत्त (मग १५) ।

गित्ति (अप) देखो गीह (अभि) ।

गित्तिस् वि [गित्तिस्] निर्दय, कल्याण-हीन (सुपा ३१५) ।

गित्तिरिडि वि [दे] गित्तर, अग्रवर्त्तित (दे ४, ४०) ।

गित्तिरिडिअ वि [दे] कुटित, दृष्टा हुआ (दे ४, ४१) ।

गित्त्तुप वि [दे] स्नेह-रहित, वृत्त भादि से वञ्चित (इह १) ।

गित्तुल वि [गित्तुल] १ नियम, असाधारण (उप ४ ५३) । २ निवि. असाधारण रूप से, 'अणुणा गित्तुलं मरित' (सुपा ३५५) ।

गित्तुस वि [गित्तुस] गुण-रहित, मुखा से रहित, विरुद्ध (पण्ड २, ४; उप १७६ टी) ।

गित्तोय वि [गित्तोयस्] वेज-रहित (खमा १, १) ।

गित्थण्यण न [गित्तनन] विजय-सुषक ध्वनि (सुर २, २३३) ।

गित्थर सक [गिर + वृ] पार करना, पार उतरना । गित्थरेद (सुपा ४५६) ; 'गित्थरति खलु बायरावि पायनिज्जामय-खुणेण महएणव' (स १६३) । वक्र. गित्थरिज्जंत (राज) । क. गित्थरियवव्य (आया १, ३; सुपा १२६) ।

गित्थरयण न [गित्थरण] पार-गमन, पार-प्राप्ति (ठा ४, ४; उप १३४ टी) ।

गित्थरिअ देखो गित्थिण्यण (उप १३४ टी) ।

गित्थाय वि [गित्थान] स्थान-रहित, स्थान-अप (आया १, १८) ।

गित्थाम् वि [गित्थाम्] निर्बल, कमजोर, मन्द (पाम; उदर, सुपा ४८६) ।

गित्थार सक [गिर + तारय] १ पार उतारना, तारना । २ बचाना, छुटकारा देना । गित्थारमु (बाल) ।

गित्थार पुं [गित्थार] १ छुटकारा, मुक्ति । २ बचाना, रक्षा । ३ उदार (आया १, ६ टी—उप १६६; सुर २, ५१, ७, २०१; सुपा २६६) ।

गित्थारग वि [गित्थारक] पार जानेवाला, पार उतरनेवाला (स १८३) ।

गित्थारणा वी [गित्थारण] पार-प्रापण, पार पहुँचाना (अ ३) ।

गित्थारिय वि [गित्थारित] बचाया हुआ, रक्षित, उद्धार (अप, सुपा ४४६) ।

गित्थिण्यण १ वि [गित्थिणे] १ उत्तीर्ण, पार-गित्थण १ प्राप्त, 'गित्थिण्यो सयुद्धं' (स ३६०) । २ गित्थो पार किमा हो वह, 'गित्थिणा भाववा गच्छे' (सुर ८, ८६) ; 'गित्थिण्यणमसयुद्धो' (स ३३६) ।

गित्थंस सक [गिर + दशय] १ उदाहरण बतलाना, दृष्टान्त दिखाना । २ दिखाना । गित्थेण (पि) । वक्र. गित्थंसंत (सुपा ८६) ।

गित्थंसण न [गित्थंस] १ उदाहरण, दृष्टान्त (अभि २०३) । २ दिखाना (ठा १०) ।

गित्थेअ वि [गित्थेअ] प्रदर्शित, दिखाना हुआ, 'अर्थं विचित्रिअणं गित्थेअमो निपकरो

मए वोए' (सुर ६, ८२; उप ६६७; सार्ध ४०) ।

गित्थरिण्यण देखो गित्थंसण (उप, उप ३८४) ।

गित्थरिंसिम वि [गित्थरिंसित] उपदर्शित, बत-साया हुआ (अमर् १०००) ।

गित्था वी [दे] १ वेदन-विशेष, ज्ञान-मुक्त वेदना (मग १६, ५) । २ जानते हुए भी की जाती प्राण-हिंसा (पिठ) ।

गित्थाण देखो गिआण (विपा १, १; अंत १५; नाट—वेणी ३३) ।

गित्थाया देखो गित्था (पण्ड ३५) ।

गित्थाह पुं [गित्थाह] १ धर्म, धाम, उण्य । २ श्रीमन्-काल, गरमी का मौसम । ३ जेठ भास (भास ५) ।

गित्थाह पुं [गित्थाह] तीसरा नरक का एक नरक-स्थान (देवज ८) ।

गित्थाह पुं [गित्थाह] असाधारण बाह (भास ५) ।

गित्थेअ पुं [गित्थेअ] आत्मा, हृदय (हृद ४२६) ।

गित्थेअिअ वि [गित्थेअित] १ प्रदर्शित । २ उक्त, कथित (पण्ड ५, १४५) ।

गित्थेअ न [दे] १ मय का अभाव । २ स्वास्थ्य, तंदुरुस्ती (पण्ड २६८) ।

गित्थेअण न [गित्थेअण] निद्रा मे होता स्थान, दुर्ध्यान-विशेष (प्राय) ।

गित्थेअ वि [गित्थेअ] ब्रह्म-रहित, क्लेश-वञ्चित (सुपा ४५५) ।

गित्थेअ वि [गित्थेअ] दम्भ रहित, कपट-रहित (सुपा १४७) ।

गित्थेअी (अप) देखो गित्था = निद्रा (पि ५६६) ।

गित्थेअ वि [गित्थेअ] १ जलामा हुआ, मत्स्य किया हुआ (सुर १४, २६; अंत १५) ।

२ पुं. गुण-विशेष (पण्ड ३२, २२) । ३ रत्न-प्रधान-मार्ग नरक-मुक्ति की का एक नरकावास (ठा ६) । 'अमग पुं [अमग] नरकावास-विशेष, एक नरक-प्रदेश (ठा ६) । 'वत्त पुं [वत्त] नरकावास-विशेष (ठा ६) ।

'सिद्ध पुं [सिद्ध] नरक-प्रदेश-विशेष (ठा ६) ।

गित्थेअ वि [गित्थेअ] दयाहीन, कल्याण-रहित, निष्ठुर (पण्ड १, १; गवठ) ।

गिहलण न [निर्दलन] १ मर्दन, विदारण (भावा)। २ वि. मर्दन करनेवाला (पञ्चा ५२)।

गिहल्लिअ वि [निर्दलित] मर्दित, विदारित (पाप्र मुर ५, २२२, साप ७६)।

गिहह सक् [निर् + वह्] जला देना, भस्म करना। गिहह (महा. उप)। गिह-हज्जा (वि २२२)।

गिहा भक् [नि + घ्रा] निद्रा लेना, नींद करना। गिहाह (पह)। बह. गिहाअंत (से १, ५६)।

गिहा की [निद्रा] १ निद्रा, नींद (स्वप्न ५६, कण्ठ)। २ निद्रा-विशेष, वह निद्रा जिसमें एकाग्र आशान देने पर ही आसानी जाग उठे (कम्म १, ११)। 'अंत वि [वग्] निद्रा-मुक्त, निद्रित (से १, ५६)। 'करी की [करी] लता विशेष (दे ७, ३५)। 'गिहा की [निद्रा] निद्रा विशेष, वह निद्रा जिसमें बड़ी कठिनाई से आसानी उठाय जा सके (कम्म १, ११; सम १५)। 'ल, 'लु वि [वत्] निद्रावाला (सति २०, पि ५६५, प्राप्)। 'वअ वि [मद्] निद्रा देनेवाला (से २, ४३)।

गिहाअ वि [निद्रात] को नींद में हो (से १, ५६)।

गिहाअ वि [निर्दाव] भगिन-रहित (से १, ५६)।

गिहाअ वि [निर्दाव] साथ रहित, पैरुक्त घन से बर्जित (से १, ५६)।

गिहाअ वि [निद्रित] निद्रा-मुक्त (महा)।

गिहाणी की [निद्राणी] विचारणी विशेष (पउम ७, १४४)।

गिहाया देखो गिदा (पण ३५)।

गिहारिअ वि [निद्रित] बहिष्कृत, विदारित (वि ५, ८२, १३, ६५)।

गिहार वि [निर्दाव] १ धावन रहित। २ जंगल रहित (से ६, ४३)।

गिहिट्ठ वि [निर्दिष्ट] १ कथित, उक्त (भग)। २ प्रतीकादि, निरूपित (पञ्चा ३, दस)।

गिहिट्ठ, वि [निर्दिष्ट] निर्देश करनेवाला (विसे १५०५, विक् ६५)।

गिहिस सक् [निर् + दिश] १ उच्चारण करना, कथन करना। २ प्रतिपादन करना, निष्पण करना। गिहिसद (विसे १५२६)।

कर्म. गिहिसद (भाट—मातवि ५३)। हेह. निर्देहत्तुं (विसे ५५६)। क. गिहिसस, गिहिस (विसे १५२३)।

गिहिट्ठक्ख वि [निर्दे] दु ख रहित, सुखी (सुपा ५३७)।

गिहिट्ठर पु [दे नैसर] देश-विशेष (हक)।

गिहिट्ठसण वि [निर्दिषण] निर्दाव (धर्मवि २०)।

गिहिस पु [निर्देश] १ जित या धर्म मान का कथन (आ ८—पउ ५२७)। २ विशेष का अभिप्राय, 'अविशेषियमुहेसो विसेसिभो होह निहेसो' (विसे १५६७, १५०३)। ३ नियम पूर्वक कथन (विसे १५२६)। ४ प्रतिपादन, निष्पण (उत्त १, छवि)। ५ भाषा, वृत्त (पाप्र. दस ६, २)। ६ वि. जितको देश निकाले की भाषा हुई हो वह (पउम ५, ८२)।

गिहिसस } वि [निर्देशक] निर्देश करने-
गिहिसस } वाला (विसे १५०८, १५००)।

गिहोत्थ न [निर्दाव] १ दु स्वता का भ्रम (पउ ५)। २ वि. स्वप्न, दु स्वप्न-रहित (पउ ७)।

गिहोस वि [निर्दाव] दोष रहित, रूपण-जोषित, विशुद्ध (गउ २, ७३)।

गिद्ध न [स्निग्ध] स्नेह, रस विशेष (आ १, कण्ठ)। २ वि. स्नेह-युक्त विषय (दे २, १०६, उप, पह)। ३ कान्ति-युक्त, तेजस्वी (इह ३)।

गिद्धंत वि [निर्धाव] भगिन-संयोग से विशेषित, अंत-रहित (पण १, ५, धीप)।

गिद्धंघस वि [दे] १ निर्देय, निष्ठुर (दे ५, ३७, धीप ५५३, पाप्र. पुक्क ५५४, सट्ठि २६, सुपा २५५, या ३६)। २ निर्दग्ध, बेधायक (विसे १२८)।

गिद्धण वि [निर्धन] धन-रहित, धनिक (दे २, ६०, छाया १, १८८, दे ५, ५०, उप ७६ टी, महा)।

गिद्धण वि [निर्धान्य] धन रहित (हंडु)।

गिद्धम वि [दे] अविभिन-गृह, एक ही घर में रहनेवाला (दे ५, ३८)।

गिद्धमण न [दे] सात, मोरी, पानी जानेवा रास्ता (दे ५, ३६, उर २, १०, आ ५, १, भावम. तदु, उर, छाया १, २)।

गिद्धमण न [निर्धर्मान] १ तिरस्कार, धन-हेलना (उप ५ ०४६)। २ पु. धन विशेष (भाट ५)।

गिद्धमाय वि [दे] अविभिन-गृह, एक ही घर में रहनेवाला (दे ५, ३८)।

गिद्धम्म वि [दे] एकमुक्त-धामी, एक ही तरह जानेवाला (दे ५, ३५)।

गिद्धम्म वि [निर्धर्मेन्] धर्म रहित, धर्महीन (भा २७)।

गिद्धय वि [दे] देखो गिद्धम (दे ५, ३८)।

गिद्धाङ्गण देखो गिद्धाव।

गिद्धाह सक् [निर + घाट] बाहर निकाल देना। कर्म. गिद्धाहइ (संयोग १९)।

गिद्धाहण न [निर्धाटन] निस्तारण, निष्कासन, बाहर निकालना (पण ६, १)।

गिद्धाहाविय वि [निर्धाटित] कथ्य द्वारा बाहर निकलना वृत्त, कथ्य द्वारा निस्तारित (महा)।

गिद्धाडिय वि [निर्धाटित] निस्तारित, निष्कासित (पाप्र. मवि)।

गिद्धारण न [निर्धारण] १ कृण या जाति भावि को लेकर समुदाय से एक भाग का वृत्तरण। २ नियम, धर्मधारण (विसे ११६८)।

गिद्धान सक् [निर + धाव] दीवना। संक. गिद्धाङ्गण (महा)।

गिद्धाविय वि [निर्धावित] दीवना हुआ, धावित (महा)।

गिद्धण सक् [निर + घृ] १ विनाश करना। २ डर करना। सट. निदुणे, गिधूय (दस ५, २७, सुप १, ७)।

गिद्धणिय } वि [निर्धृत] १ विनाशित,
गिद्धय } नष्ट किया हुआ। २ धर्महीन (सुपा ५६६, धीप)।

गिद्धम वि [निर्धूस] १ धूम रहित (कप्प, पउम ५३, १०)। २ एक तरह का भयनाण (वव २)।

णिद्वय देखो णिद्वय (जीव ३)।

णिद्वोअ वि [निर्वोअ] १ घोया हुआ (गा ६३६, ॥ १४, १६, स १६१)। २ निर्मल, स्वच्छ, 'निद्वोअयदय'स्तिर—(वजा १५८)।
णिद्वोभास वि [स्निग्धायभास] चमकीला,
निष्पन्न से चमकता (छाया १, १—पत्र ४)।

णिधण न [निधन] विनारा, मृत्तु, मौत
(गाढ—मुच्छ २५२)।

णिधत्त जि [निधत्त] निष्काचित, निखित
(ठा ८—पत्र ४३४)।

णिधत्त न [निधत्त] १ बमों का एक तरह
का व्यवस्था, बंधे हुए बमों का ठस सुबो-
सदृह की तरह व्यवस्था। २ वि, निबिद्ध
भाव की प्राप्ति कर्म-मुहल (ठा ४, २)।

णिधत्ति ओ [निधत्ति] करण-विशेष, जिससे
कर्म-मुहल निबिद्ध रूप से व्यवस्थापित होता है
(पंच ५)।

णिधम्म देखो जिद्धम्म = निर्धम्म (घोष ३७
भा)।

णिधाण देखो णिहाण (गाढ—महावीर १२०)।
णिधूय देखो णिद्वुण।

णिमाम सक [निर् + नमय्] नमाला,
झुकाना। णिनामय (सुम १, १३, १५)।

णिमोय देखो णिणोअ (धर्मवि ५)।

णिपट्ट न [दि] गाढ (प्राक् ३८)।

णिपट्ठिय वि [निपटित] नीचे गिरा हुआ
(छल)।

णिपा सक [नि + पा] पीना। सक- निपीय
(सम्मत् २३०)।

णिपाइ वि [निपातिन्] १ नीचे गिरने-
वाला। २ सामने गिरनेवाला (सुम १, ५)।

णिपूर पुं [निपूर] नदीबुल (आवा २, १,
८, ३)।

णिपुअंअ देखो णिपुअंअ वि ६, ७८)।

णिपुअस वि [निपुअदेश] १ प्रदेश रहित।
२ पुं, परमाणु (विशे)।

णिपुअ वि [निपुअ] कर्दम-रहित, पंक्ति-
रहित (सम १३७, भा)।

णिपुअिय वि [निपुअिय] पंक्ति-रहित
(मवि)।

णिपुअस सक [निर् + पश्व] पश-रहित

करना, पंथ सोझना। णिपुअंअ (विपा १,
८)।

णिपुअंअ वि [निपुअंअ] चलन-रहित, स्थिर
(हे २, ४२)।

णिपुअंअ वि [निपुअंअ] कम्प-रहित, स्थिर
(सम १०६, परह २, ४)।

णिपुअर वि [निपुअर] पश-रहित (गठ)।

णिपुअर वि [निपुअर] टपकनेवाला, झरने-
वाला, घुनेवाला (घोष ३५, घोष ३४ भा)।

णिपुअय वि [निपुअय] १ प्रत्यवाय-
रहित, निविध्य (घोष २४ टी)। २ निर्दोष,
विशुद्ध, पवित्र, 'णिपुअयचरण' कर्म
साहंति' (साधं ११७)।

णिपुअय वि [निपुअय] १ शक्ति,
शक्त का (से १२, २१)। २ परिच्छिन्न,
व्यच्छिन्न, बाकी का, 'णिपुअयिन्ना' शक्त
हुत्सालीभाई बहुप्रमुखाई' (गा १०४)।

णिपुअ वि [दि] शक्ति (दे ४, ११)।

णिपुअ वि [निर् + पट] शल्य, शल्यक।

'पसिणवागारण वि [प्रसन्नवाकरण] निर-
त्तर किया हुआ (अम १५, छाया १, ५,
उवा)।

णिपुअ वि [निर् + पट] नहीं हुआ हुआ।

'पसिणवागारण वि [प्रसन्नवाकरण]
निरत्तर किया हुआ (अम १५)।

णिपुअिद्धम्म वि [निपुअिद्धम्म] सत्कार-
रहित, परिष्कार-रहित, मलिन (सम ५७,
सुपा ४८५)।

णिपुअियार वि [निपुअियार] निष्पाय,
प्रतिकार-रहित (परह २, ४)।

णिपुअिय वि [दि] जल धीरे, पानी से धोया
हुआ (पट्ट)।

णिपुअिय देखो णिपुअिय (गा ६८६)।

णिपुअिय वि [निपुअिय] बुद्धि-रहित, प्रता-
पशून्य (उप १७६ टी)।

णिपुअ वि [निपुअ] पत्र रहित (गा ८८७,
उव १)।

णिपुअि वि [दि] देखो णिपुअि वि (पंचा १८, सति
णिपुअि ६)।

णिपुअ वि [निपुअ] कुत्र २०८)।

णिपुअ वि [निपुअ] निक्षेप, फीका
(महा)।

णिपुअिग्गह वि [निपुअिग्गह] परिग्रह-रहित
(उत्त १४)।

णिपुअिउयण वि [निपुअित्ययण] निरत्तर,
उत्तर देने में प्रसमय (सम ६०)।

णिपुअर वि [निपुअर] प्रस-रहित,
जिसका फैलाव न हो (पि ३०५)।

णिपुअ देखो णिपुअ (से १०, १२, हे २,
३३)।

णिपुअिय देखो णिपुअिय (कुत्र १६६)।

णिपुअिय वि [निपुअिय] प्राण-रहित, निर्जीव
(छाया १, २)।

णिपुअ देखो णेपाअ (धर्मवि ६१)।

णिपुअ पुं [निपुअ] एक दिन का उपवास
(संघोष ५८)।

णिपुअ देखो णिपुअ (पि ३०५)।

णिपुअि वि [दि] १ शत्रु, सत्र। २ दृढ़,
मज्जित (दे ४, ४६)।

णिपुअि वि [निपुअि] पीना हुआ (दे ८,
२०, सण)।

णिपुअि न [निपुअि] पेय की समाप्ति
(पिट ६०२)।

णिपुअि वि [निपुअि] विनासा रहित,
दुष्प्रा-रहित, निःसृष्ट (परह १, १, छाया
१, १, सुर १, १३)।

णिपुअि वि [निपुअि] सृष्टा का
बनाव (वि १८)।

णिपुअि वि [निर् + पट] सृष्टा-रहित, निर्मम
(हे २, २३, उप ३२० टी)।

णिपुअि वि [निपुअि] दबाया हुआ
(से ५, २५)।

णिपुअि वि [निपुअि] दबाव, दबाना
(आवा)।

णिपुअि देखो णिपुअि वि १ निबोध
हुआ, 'निपुअिय' पोताई' (स ३३२)।

णिपुअि न [निपुअि] १ पोछना,
मार्जन। २ श्रमिर्दन (हे २, ४३)।

णिपुअि वि [निपुअि] पुण्य रहित (कुत्र
३१८)।

णिपुअि वि [निपुअि] १ पुण्य-रहित।
२ पुं, स्वनाम-क्यात एक बुलपुन (सुपा ५४५)।

णिपुअि पुं [निपुअि] शास्त्री चौबीसी
में होनेवाले एक स्वनाम-क्यात जिन देव (सम
१३३)।

गिप्पुलाय वि [निप्पुलाय] चारिन्-सोप से रहित (स १०, १६) ।
 गिप्फंद देखो गिप्फंद (हे २, २११; ख्या १, २; सुर ३, १७२) ।
 गिप्फंस वि [दे] निष्छिन्न, निर्वय (वह) ।
 गिप्फज्ज भक [निर् + पद] नीपजना, उपजना, सिद्ध होना । गिप्फज्ज (स ६१६) ।
 वहु. गिप्फज्जमाण (पणह १, ४) ।
 गिप्फडिअ वि [निष्फटित] १ विरोध ।
 २ जिसका मित्रान छिपाने पर न हो । ३ धंक्रा-रहित (उप १२८ टी) ।
 गिप्फण वि [निप्पण] नीपजा हुआ, बना हुआ, सिद्ध (स २, १२; महा) ।
 गिप्फन्ति वि [निप्फन्ति] निष्पादन, सिद्धि (उप २८० टी. सार्थ १०६) ।
 गिप्फज्ज देखो गिप्फण (कम्प; ख्या १, १६) ।
 गिप्फरिस वि [दे] निर्वय, दयाहीन (दे ४, १७) ।
 गिप्फल वि [निप्फल] फल-रहित, निरर्थक (स १४, २६; गा १३६) ।
 गिप्फाअ देखो गिप्फाय (प्राप्त) ।
 गिप्फाअण देखो गिप्फाय ।
 गिप्फाअय वि [निप्फादित] नीपजाया हुआ, बनाया हुआ, सिद्ध किया हुआ (विसे ७ टी. उन २११ टी; महा) ।
 गिप्फाय सक [निर् + पाद्य] नीपजाना, बनाना, सिद्ध करना । सङ्क. गिप्फाअ-ऊण (पंचा ७) ।
 गिप्फायग वि [निप्फाद्य] नीपजानेवाला, बनानेवाला, सिद्ध करनेवाला (विसे ४८३, ठा ६; उन २२८) ।
 गिप्फायण न [निप्फादन] नीपजाना, निर्माण, कृति (भाव ४) ।
 गिप्फाय धुं [निप्फाय] धान्य-विशेष, वज्र (हे २, ४३; पणह १, ठा ४, ३, आ १८) ।
 गिप्फाय धुं [निप्फाय] एक माप, बट-विशेष (मयु १४४) ।
 गिप्फड भक [नि + रिफ्ट] बाहर निकलना । वहु. गिप्फडंत (स ५७४) ।
 गिप्फडिअ वि [निस्फटित] निर्गत, बाहर निकला हुआ (पउम ६, २२७. ८०, ९०) ।
 ४१

गिप्फुर धु [निस्फुर] प्रमा, तेज (मउड) ।
 गिप्फेड धुं [निस्फेट] निर्गमन, बाहर निकलना (उप धु २४२) ।
 गिप्फेडय वि [निस्फेटक] बाहर निकलनेवाला (सूम २, २, ८५) ।
 गिप्फोडय वि [निस्फेटित] १ निस्सारित, निकालित (सूम २, २) । २ भगमा हुआ, नचाया हुआ (उपु १२५) । ३ अपहृत, छीना हुआ (ठा ३, ४) ।
 गिप्फेडिया लो [निस्फेटिका] अपहरण, चोरी, 'एसा पडमा सीसनिप्फेडिया' (सुच २, १३; पव १०७) ।
 गिप्फेस धु [दे] शब्द-निर्यम, भाषाज निकलना (सि ४, २६) ।
 गिप्फेस धुं [निप्फेप] १ वेपण, पीसना । २ संघर्ष (हे २, ४३) ।
 गिर्वंध सक [नि + बन्ध] १ बाँधना । २ करना । निर्वंध (गा) ।
 गिर्वंध सक [नि + बन्ध] उपायन करना । एवधति (पया ७, २२) ।
 गिर्वंध धुन [निर्वंध] १ सन्ध, संयोग (विसे ६९८) । २ प्राग्रह, हठ (महा); 'गिर्वन्धाण' (वि ३५८) ।
 गिर्वंधण न [निर्वंधण] कारण, प्रयोजन, निमित्त (पाम, प्रायु ६६) ।
 गिर्वज्ज वि [निर्वज्ज] १ बंधा हुआ (महा) । २ समुक्त; संबद्ध (सि ६, ४४) ।
 गिर्विड वि [निर्विड] सान्ध, घना, गाढ (गउड, कुमा) ।
 गिर्विडिय वि [निर्विडित] निर्विड किया हुआ (मउड) ।
 गिर्वुक्क [दे] देखो गिर्वुक्क (पणह १, ३—पव ४६) ।
 गिर्वुक्क भक [नि + मस्ज] निमज्जन करना, हवन । वहु. गिर्वुज्जित्त, निर्वुहुमाण (मन्नु ६३; उवा) ।
 गिर्वुक्क वि [निमग्ग] हवा हुआ, निमग्न (गा ३०; सुर ३, ४१, ४, ८०) ।
 गिर्वुहुण न [निमज्जन] हवन, निमज्जन (पउम १०, ४३) ।
 गिर्वोल देखो गिर्वुहु = नि + मस्ज । वहु. गिर्वोलिज्जमाण (पउम) ।

गिर्वोह धुं [निर्वोध] १ प्रकट बोध, उत्तम ज्ञान । २ भनेक प्रकार का बोध (विसे २८७) ।
 गिर्वोधण न [निर्वोधन] प्रबोध, समझाना (पउम १०२, ६२) ।
 गिर्वंध धुं [निर्वंध] प्राग्रह (गा ६७५; महा, सुर ३, ८) ।
 गिर्वंधण न [निर्वंधण] निर्वन्धन, हेतु, कारण, 'साटोरियेयनिर्वंधणं वण' (काम) ।
 गिर्वज्ज देखो गिर्वज्ज = निर् + पद । गिर्वज्ज-सद (प्राहु ६४) ।
 गिर्वल वि [निर्वल] बल-रहित, दुर्बल (प्राचा) ।
 गिर्वहिं ॥ [निर्वहिंस्] भयल बाहर (ठा ६—पव ३४२) ।
 गिर्वहादिर वि [निर्वहा] बाहर का, बाहर गया हुआ; 'संजमनिर्वहादिरा जाया' (उवा) ।
 गिर्वुक्क वि [दे] १ निर्मूल, मूल रहित । २ क्वि, मूल से, 'गिर्वुक्कियएणय' (पणह १, ३—पव ४४) ।
 गिर्वुहु देखो गिर्वुहु = निमग्न (स ३६०, मउड) ।
 गिर्वमच्छण देखो गिर्वमच्छण (उप ३०३) ।
 गिर्वमज्जण न [दे] पक्वान के पकाने पर जो शेष धत रहता है वह (पमा ३३) ।
 गिर्वमंत वि [निर्वमंत] नि.संदेह, सदा-रहित (ति १४) ।
 गिर्वमग्ग न [दे] उद्यान, बगीचा (दे ४, ३४) ।
 गिर्वमग्ग वि [निर्वमग्ग] भाग्य रहित, वन-वसी, भगवान (उप ७२८ टी, मुया ३८५) ।
 गिर्वमच्छ सक [निर् + भस्ते] १ निरस्वार करना, प्रपमान करना, भस्महेतु करना, शारीर-मूर्तक प्रपमान करना ।
 गिर्वमच्छेद, गिर्वमच्छेदा (ख्या १, १८; उवा) । सङ्क. गिर्वमच्छेअ (नाड—मालती १७१) ।
 गिर्वमच्छण न [निर्वमस्तेन] तिरस्कार, प्रपमान, प्रपन्न वचन से भस्महेतु (पणह १, ३, मउड) ।
 गिर्वमच्छणा धी [निर्वमस्तेना] ऊपर देखो (भय १५; ख्या १, १६) ।

गिम्भच्छिअ वि [निर्भरित] धपमानित,
भवहितत (गा ८६८; सुपा ४०४) ।

गिम्भय वि [निर्भय] भय-रहित, निडर
(सापा १, ४; महा) ।

गिम्भर सक [निर् + भृ] भरना, पूर्ण
करना । कवक. गिम्भरंत (से १५, ७४) ।

गिम्भर वि [निर्भर] १ पूर्ण, भरपूर (सि १०,
१७) । २ व्यापक, फैलनेवाला (कुमा) । ३
क्रि. पूर्ण रूप से 'मियो य सिम्भरं वरिचह'
(भासम) ।

गिम्भद सक [निर् + भिद्] तोड़ना, विदार-
ण करना । कवक. गिम्भजंत, गिम्भ-
ज्जमाण (से १४, २६; भा १८, २, जोष
३) ।

गिम्भच वि [निर्भीक] भय-रहित, निडर
(सुपा १४३; २४६; २७४) ।

गिम्भजंत
गिम्भजमाण } देखो गिम्भिअद ।

गिम्भिअ वि [दे] भाग्यन्त (भवि) ।

गिम्भिअण वि [निर्मिअ] १ विधार्ति, छोड़ा
हुआ (पास) । २ विद (से ५, ३४) ।

गिम्भीअ वि [निर्भीक] भय-रहित, निडर
(सि १३, ७०) ।

गिम्भुग वि [दे] भग्न, खरिडत (दे ४,
३२) ।

गिम्भुय देखो गिम्भुअ (विद्य ५८६) ।

गिम्भय पुं [निर्भेद] भेद, विचारण (सुपा
३२७) ।

गिम्भेयन न [निर्भेदन] ऊपर देखो (सुर
२, ६६) ।

गिम्भेरिय वि [निर्भेरित] प्रसारित, फैलाया
हुआ (उत्त १२, २६) ।

गिम्भ देखो गिह् = निम् (उत्त; नं ३) ।

गिम्भच्छण देवो गिम्भच्छण (विद २१०) ।

गिम्भं पुं [निम्भ] भजन, खरडन, मोटन
(राज) ।

गिम्भाल सक [नि + भालय्] देखना,
निरीक्षण करना । एिमातेहि (भावय) ।

कव. गिम्भालयंत (उप ५ ५३) । कवक.
गिम्भालजंत (उप ६८६ टी) ।

गिम्भालिय वि [निम्भालि] दृष्ट, निरीक्षित
(उप ५ ५८) ।

गिम्भिअ } देवो गिह्ण (पह २, ३; या
गिम्भुअ } ८००) ।

गिम्भेल सक [निर् + भेलय्] बाहर करना ।

कवक. गिम्भेलंत (पह १, ३—पत्र ४५) ।

गिम्भेयन न [दे] गृह, घर, स्थान (कव) ।

गिम्भ सक [नि + अस्] स्थापन करना ।

एिमह (हे ४, १६६; पद) । एिमेह (वि
११८) । कव. गिम्भंत (से १, ४१) ।

गिम्भंत सक [नि + मन्त्रय्] नियन्त्रण देना,
न्यूना देना । एिम्भेह (महा) । कव. गिम्भ-
तेमाण (भावा २, २, ३) । संह. गिम्भंति-
ऊण (महा) ।

गिम्भतण न [निमन्त्रय] नियन्त्रण, न्यूना,
वृत्तावा (उप ५ ११३) ।

गिम्भंतणा क्षी [निमन्त्रणा] ऊपर देखो (पंच
१२) ।

गिम्भंति वि [निमन्त्रण] जिसको न्यूना
दिया गया हो वह (महा) ।

गिम्भय वि [निमग्न] डूबा हुआ (पहम
१०६, ४; भीप) । जल्ला क्षी [जल्ला]
नदी-विशेष (नं ३) ।

गिम्भज सक [नि + मज्ज्] डूबना, निम-
ज्ज करना । एिम्भज (पि ११८) । कव.
गिम्भजंत (गा ६०६, सुपा ६४) ।

गिम्भजण वि [निमज्जक] १ निमज्जन करने-
वाला । २. वानप्रस्थायी तापस-विशेष, जो
स्नान के लिए बोधे समय तक जलाशय में
निमज्ज रहते हैं (भीप) ।

गिम्भजण न [निमज्जन] डूबना, जल-श्वेत्
(सुपा ३५४) ।

गिम्भाणिअ देखो गिम्भाणिअ = निर्भाविन
(भवि) ।

गिम्भ सक [नि + युज्] जोड़ना । एिमेह
(प्राज्ञ ६७) ।

गिम्भिअ वि [न्यस्त] स्थापित, निहित (कुमा,
से १, ४२; से ८, ७६०, सण) ।

गिम्भिअ वि [दे] भाग्यन्त-सूया हुआ (पद) ।

गिम्भिअ देखो गिम्भाण = निर्भाण (बम्म १,
२५) ।

गिम्भिन न [निमित्त] १ कारण, हेतु (प्रमू
१०४) । २ कारण-विशेष, सहकारि-कारण

(सुम २, २) । ३ शास्त्र-विशेष, भविष्य प्रादि
जानने का एक शास्त्र (मोष १६; भा ८) ।

४ धर्तोरन्त्रिज्ज्ञान में कारण-भूत पदार्थ (ठा
८) । ५ जैन साधुओं की भिक्षा का एक दोष
(ठा ३, ४) । 'पिंड पुं [पिण्ड] भविष्य
प्रादि वस्तुएं कर प्रात की हुई भिक्षा (भावा
२, १, ६) ।

गिम्भित्त वि [निमित्तन्] निमित्त-शास्त्र का
जानकार (सुम १७८) ।

गिम्भित्तिअ देखो गेमिन्तिअ (सुपा ४०२) ।

गिम्भिअ सक [नि + भील] भ्रान्त, भ्रान्त,
भ्रान्त मोक्षना । एिम्भिअ (हे ४, २३२) ।

गिम्भिअ वि [निमीलित] जिसने नेत्र बंद
करा हो, दुष्टित-नेत्र (से ६, ६१; ११, ५०) ।

गिम्भिअ देखो गिमीलण (राज) ।

गिम्भिस सक [नि + मिप्] भाल मूँदना ।

निमिन्ति (तदु ५३) ।

गिम्भिस पुं [निमिप्] नेत्र-संकोच, प्रक्षि-
प्त, पलक मारने भर का समय (गा ३८५;
सुपा २१६; गठक) ।

गिमीलण न [निमीलन] प्रक्षिप्त-संकोच (गा
३६७; सुपा १, ५, १, १२ टी) ।

गिमीलिय वि [निमीलित] दुष्टित (नेत्र)
(गा १३३; से ६, ८६; महा) ।

गिमीस न [निमिअ] एक विद्याधर-भगव
(इक) ।

गिमे सक [नि + मा] स्थापन करना ।

एिमेहि (गठक) ।

गिमेण न [दे] स्थान, जगह (दे ४, ९७) ।

गिमेल क्षी [दे] बल-मात (दे ४, ३०) ।

क्षी. ला (दे ४, ३०) ।

गिमेस पुं [निमेप्] निमीलन, प्रक्षिप्त संकोच,
पलक का खिलना, पलक (भा १६; उत्त) ।

गिमेसि देखो गिमे ।

गिमेसि वि [निमेपिन्] भाल मूँदनेवाला
(सुपा ४४) ।

गिम्भ सक [निर् + मा] बनाना, निर्मा
करना । एिम्भ (पद) । एिम्भेह (बम्म
१२ टी) । कवक. गिम्भाअंत (नाट—
भातवी २४) ।

गिम्भ पुक्षी [निम्] जमीन से ऊँचा निरसता
प्रदेश (राम २७) ।

णिम्मइअ वि [निर्मित] रचित, कृत (पा ५००; ६०० प) ।

णिम्मथण न [निर्मथन] १ विनाश । २ वि. विनाशक, 'तहं य पट्ठुं सिरपं सख्यणिम्मथणं तित्थ' (सुपा ७१) ।

णिम्मस वि [निर्मास] मास-रहित, शुष्क (लुपा १, १; मय) ।

णिम्मसा खो [दे] देवो-विशेष, चातुएडा (दे ४, ३५) ।

णिम्मसु वि [दे. नि.रमधु] तरण, जवान, युवा (दे ४, ३२) ।

णिम्मसियअ देवो णिम्मच्छिअ = निर्मसिक (गाढ) ।

णिम्मच्छ सक् [नि + अक्ष] विलेपन करना । णिम्मच्छइ (मवि) ।

णिम्मच्छण न [निम्रक्षण] विलेपन (मवि) ।

णिम्मच्छर वि [निर्मासर्थ] मासर्थ-रहित, ईर्ष्या-शून्य (उप पु ८४) ।

णिम्मच्छिय वि [निम्रक्षित] विमिस (मवि) ।

णिम्मच्छिअ न [निर्मक्षिक] १ मक्षिका का भ्रमल । २ विजन, निर्जनता (अभि ६८) ।

णिम्मज्जाय वि [निर्माय] मर्यादा-रहित, बेहया (दे १, १३३) ।

णिम्मज्जिय वि [निर्माजित] उपलिप्त (स ७५) ।

णिम्मण वि [निर्मनस्] मन रहित (अध्य १२) ।

णिम्मणुय वि [निर्मणुज] मनुष्य-रहित (सण) ।

णिम्महण वि [निर्महण] १ निरन्तर मर्दन करनेवाला । २ पुं. घोरो की एक जाति (पण्ह १, ३) ।

णिम्महिय वि [निर्महित] जिसका मर्दन किया गया हो (पण्ह १, ३) ।

णिम्मम वि [निर्मम] १ समता-रहित, निरुद्ध (मच्छु ६९; सुपा १४०) । २ पुं. शारत-वर्ष के एक भावी जिनदेव (सम १५४) ।

णिम्मय वि [दे] मल, गन्धा हुआ (दे ४, ३४) ।

णिम्मल वि [निर्मल] मल-रहित, विमुक्त (स्वप्न ७०; प्राप् १३१) । २ पुं. ब्रह्म-देव-लोक का एक प्रस्तर (ठा ९) ।

णिम्मल्ल न [निर्मात्य] देव वा उच्छिष्ट द्रव्य, देवता पर चढ़ाई हुई वस्तु का बचा-खुवा (दे १, ३८; पट् ५) ।

णिम्मथ सक् [निर + मा] बनाना, रचना, करना । णिम्मवइ (दे ४, १६; पट् ५) । कर्म. निम्मवजित (वज्जा १२२) ।

णिम्मथ सक् [निर + मापय] बनवाना, कराना (ठा ४, ४; कुमा) ।

णिम्मथइसु वि [निर्मापयि] बनवानेवाला (ठा ४, ४) ।

णिम्मवण न [निर्माण] रचना, कृति (उप ६४८ ओ. सुपा २३, ६५, ३०५) ।

णिम्मवण न [निर्माण] बनवाना, कराना (कप्प) ।

णिम्मविअ वि [निर्मित] बनाया हुआ, रचित (कुमा. गा १०१, सुर १६, ११) ।

णिम्मविअ वि [निर्मापित] बनवाया हुआ (कुमा) ।

णिम्मह सक् [गम्] १ जाना, यमन करना । २ मक, फैलना । णिम्महइ (दे ४, १६२) ।

सक् णिम्महंत, णिम्महमाण (दे ७, ६२, १५, ३३; स १२६) ।

णिम्मह पुं [निर्मथ] १ विनाश । २ वि. विनाशक (मवि) ।

णिम्महण न [निर्मथन] १ विनाश । २ वि. विनाश करक (सुपा ७५) खो. 'णो' (सुर १६, १८०) ।

णिम्माहिअ वि [गत] गया हुआ (कुमा) ।

णिम्माहिअ वि [निर्मथित] विनाशित (हेका ५०) ।

णिम्मा देखो णिम्म । णिम्माइ (प्राक् ६४) ।

णिम्माअंत देखो णिम्म ।

णिम्माइअ देखो णिम्माय (पि ५६१) ।

णिम्माण सक् [निर + मा] बनाना, करना, रचना णिम्माणइ (दे ४, १६; पट्. प्राप्) ।

णिम्माण न [निर्माण] १ रचना, बनावट, कृति । २ कर्म-विशेष, शरीर के अंगोपांग के निर्माण में नियामक कर्म विशेष (सम ६७) ।

णिम्माण वि [निर्माण] मान-रहित (सि ३, ४५) ।

णिम्माणअ वि [निर्मायक] निर्माण-कर्ता, बनानेवाला (सि ३, ४५) ।

णिम्माणिअ वि [निर्मित] रचित, बनाया हुआ (कुमा) ।

णिम्माणिअ वि [निर्मानित] सममानित, विरस्तृत (मवि) ।

णिम्माणुस वि [निर्माणुप] मनुष्य रहित (सुपा ४४४) । खो. 'सो' (महा) ।

णिम्माय वि [निर्मात] १ रचित, विहित, कृत (उव, पाप्म, वज्जा ३४) । २ निपुण, अभ्यस्त, कुशल (घोप, कप्प), 'नाहिप्रसत्तेनु णिम्माया परिवाराइया' (सुर १२, ४२) ।

णिम्माय न [निर्माय] तप-विशेष, निर्विकृतिक तप (संशो ५८) ।

णिम्माएअ देखो णिम्मल्ल (प्राक् १६) ।

णिम्माथ सक् [निर + मापय] बनवाना, करवाना । णिम्मावइ (सण) । क. णिम्मा-वित्त (सूत्र २, १, २२) ।

णिम्माविय वि [निर्मापित] बनवाया हुआ, कारित, कराया हुआ (सुपा २६७) ।

णिम्माय वि [निर्मित] रचित, बनाया हुआ (ठा ८, प्राप् १२७) । 'याइ वि' 'यादिय' जबल को ईश्वरविरुद्ध माननेवाला (ठा ८) ।

णिम्मिस्स वि [निर्मिअ] १ मिला हुआ, मिश्रित । 'वहो खी' 'वहो' अत्यन्त नजदीक का स्वजन, जैसे माता, पिता, भाई, भगिनी, पुत्र, धीर पुत्री (वज १०) ।

णिम्मोस वि [निर्मिअ] मिश्रण-रहित (देवज्ज २६०) ।

णिम्मोसुअ वि [दे] सम्यु-रहित, सादो-मूछ बतित (पट्) ।

णिम्मुक वि [निमुक्] मुक्त बिन्दा गया (सुपा १७३) ।

णिम्मुकर पुं [निर्माक] मुक्ति, छुड़ावारा (विने २४६८) ।

णिम्मूल वि [निर्मूल] मूल-रहित, मिश्रक मूल काटा गया हो वह (सुपा ५३५) ।

णिम्मेर वि [निर्मय] मर्यादा-रहित, निर्तज (ठा ३, १, धीन, सुपा ६) ।

णिम्मोअ पुं [निर्माक] कन्डुअ, कंडुअ, सर्प की खपा (दे २, १८२; मत ११०, से १, ६०) ।

णिम्मोजणी खो [निर्माचनी] कन्डुक, निर्माच (उव १४, ३५) ।

गिम्मोहण न [निर्मोदन] विनाश (मै ६१) ।
 गिम्मोल्ल वि [निर्मूल्य] मूल्य-रहित
 (कुमा) ।
 गिम्मोह वि [निर्मोह] मोह-रहित (कुमा,
 आ १२) ।
 गिरष्ठ की [निष्ठति] मूल-नशन वा अधि-
 हृत्यक देव (ठा २, ३) ।
 गिरइयार वि [निरित्तयार] अतिवार-रहित,
 दूषण-रहित (मुपा १००) ।
 गिरइसय वि [निरित्तयार] अत्यंत, सर्व-
 धिक (काव) ।
 गिरईआर देवो गिरइयार (मुपा १००;
 यण १८) ।
 गिरंकुस वि [निरंकुस] अंकुश-रहित, स्व-
 च्छन्दी (कुमा; आ २८) ।
 गिरंगय वि [निरङ्गय] निर्लेप, सेप-रहित
 (श्रीप; उव, छाया १, ११—यज १७१) ।
 गिरंगी की [दे] सिर का अवयुज्ज, घृषट
 (दे ४, ३१; २, २०) ।
 गिरंजण वि [निरंजण] निर्लेप, सेप-रहित
 (स ४८२; कप्य) ।
 गिरंतय वि [निरन्तक] अन्त-रहित (उप
 १०३१ टी) ।
 गिरंतर वि [निरन्तर] अन्तर-रहित, ध्वन-
 यान-रहित (गडक; हे १, १४) ।
 गिरंतराय वि [निरन्तराय] १ निविज्ज,
 निर्वाच । २ ध्वनयान-रहित, सतत, 'धम्मं
 करेह विमलं च निरन्तरायं' (पडम ४४,
 ६७) ।
 गिरंतरिय वि [निरन्तरित] अन्तर रहित,
 ध्वनयान-रहित (श्रीप ३) ।
 गिरंथ वि [निरन्ध्र] धिद्र-रहित (वक्र ६७) ।
 गिरंथर वि [निरन्धर] वक्र-रहित, नग्न
 (प्रावम) ।
 गिरंभा की [निरम्भा] एक इन्द्राणी, वैरोचन
 इन्द्र की एक भग्न-अधिपी (ठा ४, १, इक) ।
 गिरंस वि [निरंश] भंग-रहित, अक्षय,
 सम्पूर्ण (विरो) ।
 गिरंहं वि [निरहस] निर्मल, पवित्र, 'पदर्थं
 च वाहिमो यो निरंहसा तेण जलपवाहेण'
 (धम्मं १४६) ।

गिरस्क पुं [दे] १ चोर, स्तेन । २ प्रु,
 पीठ । ३ वि. स्थित (दे ४, ४६) ।
 गिरिक्कय वि [निराकृत] अघात, निरस्त
 (उत १, ४६) ।
 गिरकर सक् [निर् + ईच्छ] निरीक्षण
 करना, देखना । गिररह (दे ४, ४१८),
 'तोवि ताप दिट्ठो एरिस्सज्जा' (महा) ।
 गिरकरार वि [निरकर] मूल, ज्ञान-रहित
 (कप्य; वज्जा १५८) ।
 गिरमार वि [निरमार] अघात-रहित,
 'निरमारणकस्सालोवि भरहंवाइणमुगिम्मत'
 (संबोध ३८) ।
 गिरमाल वि [निराल] १ वरान्त से रहित
 (मुपा १६२; ४७१) । २ स्वच्छन्दी, स्वैरी,
 निरंकुश (पादा) ।
 गिररुच्य वि [निरुच्येन] अर्धन-रहित
 (उव) ।
 गिरट्टु } वि [निरर्थ, 'क' १ निरर्थक,
 गिरट्टग } निष्प्रयोजन, निरम्भा (उत २०) ।
 २ न. प्रयोजन का अभाव, 'एरिदुग्गाम्मि
 विरमो, मेहुणामो मुंसंठुलं' (उत २, ४२) ।
 गिरण वि [निरट्ठण] श्रय-रहित, वरज से
 मुक्त (मुपा ४६३; ४६६) ।
 गिरणास देवो गिरिणास = नर । एरि-
 खासइ (हे ४, १७८) ।
 गिरणुकंप्प वि [निरलुकम्प] अनुकम्पा-रहित,
 निर्दय (छाया १, २, इह १) ।
 गिरणुक्कोस वि [निरलुकोश] निर्दय,
 दया-रहित (छाया १, २, प्राव ६८) ।
 गिरणुताय वि [निरनुताय] परचाताप-रहित
 (छाया १, २) ।
 गिरणुतायि वि [निरनुतायि] पदचाताप-
 वर्जित (पव २७४) ।
 गिरत्थ वि [निरस्त] अघात, निराकृत (अव
 ८) ।
 गिरत्थ वि [निरर्थ, 'क' अर्धार्थक, निरम्भा,
 गिरत्थय } निष्प्रयोजन (दे ४, १६, पडम
 गिरत्थय } ६४, ४, पण्ह १, २, उव, स
 ४१) ।
 गिरत्थय पुं [निरन्वय] अन्वय रहित (धम्मं
 ४६६) ।
 गिरप्प सक् [स्या] बैधान । एरिप्पइ (दे
 ४, १६) । मुक्का, एरिप्पीम (कुमा) ।

गिरप्प पुं [दे] १ प्रु, पीठ । २ वि. उद्दे-
 हित (दे ४, ४६) ।
 गिरप्पण वि [निरात्मीय] अत्यंत, पर-
 कीम (मुप ८६) ।
 गिरभिगाह वि [निरभिगह] अभिग्रह-रहित
 (अन ६) ।
 गिरभिराम वि [निरभिराम] अनुन्द,
 अवाह (पण्ह १, १) ।
 गिरभिलप्प वि [निरभिलप्प] अनिर्व-
 नोय, बाणी से बतलाने की प्रणय (विदे
 ४८८) ।
 गिरभिसंसं वि [निरभिप्यङ्ग] आतकि-
 रहित, निःसृ (पणा २, ६) ।
 गिरय पुं [निरय] १ नरक, पाप-भोग-न्याय
 (ठा ४, १; भावा; मुपा १४०) । २ नर-
 स्थित जीव, मारु (ठा १०) 'पाल पुं
 'पाल' देव-विशेष (ठा ४, १) । 'वालिया
 की 'निलिना' १ जैन आगम-अर्थ विशेष
 (निर १, १) । २ नरक-विशेष (पण्ह २) ।
 गिरय वि [निरत] अस्त, तत्पर, तल्लीन
 (उप ६७९; उव, मुपा २६) ।
 गिरय वि [निरजस] रजो-रहित, निर्मल
 (अन, या ८७८) ।
 गिरय सक् [सुभुज] खाने की इच्छा करना ।
 गिरवइ (पड) ।
 गिरय सक् [आ + क्षिप्] आशेष करना ।
 गिरवइ (पड) ।
 गिरयइक्कय वि [निरपेक्ष] अपेक्षा रहित,
 निरिह, निःसृ (विदे ७ टी) ।
 गिरयकरं वि [निरयसाइक्ष] स्पृहा-रहित,
 नि स्पृह (श्रीप) ।
 गिरयकरि वि [निरयसाइक्षन] नि स्पृह
 (छाया १, २) ।
 गिरयगाह वि [निरयगाह] अघात-रहित
 (पड) ।
 गिरयगाह वि [निरयगह] निरंकुश, स्व-
 च्छन्दी, स्वैरी (पादा) ।
 गिरवव वि [निरपय] अत्यंत-रहित, नि-संतान
 (अन; सव १४०) ।
 गिरवज्ज वि [निरवज्ज] निर्वाच, विमुक्त (उव
 ४, १; गुर ८, १८३) ।

गिरवणाम देखो गिरोणाम (उच) ।
 गिरवयन्त्र देखो गिरवइन्त्र (खाया १, ६, पठम २, ६३) ।
 गिरवयय वि [गिरवयय] भवयव-रहित, निरु (रिसे) ।
 गिरवयास वि [गिरवकाश] भवकाश-रहित (गठड) ।
 गिरवराह वि [गिरवराध] भवराध-रहित, बेनुनाह (महा) ।
 गिरवराहि वि [गिरवराधिन] ऊपर देखो (भाव ६) ।
 गिरवर्ल्य वि [गिरवर्ल्य] सहारा रहित, भसहाय (पण्ड १, ३) ।
 गिरवर्लान वि [गिरवर्लप] १ भवर्लप-रहित । घुम बाल को प्रकट नहीं करनेवाला, दूसरे को नहीं कहनेवाला (सम १७) ।
 गिरवसर वि [गिरवराङ्ग] दुश्का बर्जित (मवि) ।
 गिरवसर वि [गिरवसर] भवसर रहित (गठड) ।
 गिरवसान वि [गिरवसान] भन्त रहित (गठड) ।
 गिरवसेस वि [गिरवरोप] सब, सबस (दे १, १४, पठ; से १, ३७) ।
 गिरवह सक [गिर + यह] निर्वाह करना, निवाहना । गिरवहेजा (सवोय ३६) ।
 गिरवाय वि [गिरपाय] १ उपग्रह रहित, विष्णु-वर्जित । २ निर्वाह, विशुद्ध (धा १६, गुण २७४) ।
 गिरविक्रम देखो गिरवइन्त्र (धा ६, उच, गिरवेन्त्र } वि ३४१, से ६, ७५, सूत्र गिरवेन्त्र } १, ६; पचा ४, निरु २०, नाट—वैव २५७) ।
 गिरस सव [गिर + भस] अपास्त करना । गिरसइ (गण) ।
 गिरसण वि [गिरसन] आहार रहित, उपोषित (उच, गुण १८१) ।
 गिरसन वि [गिरसन] नियन्त्रण, हटा देना, हूर करना, सँज (विद्य ७२४) ।
 गिरसि वि [गिरसि] सङ्ग-रहित (गठड) ।

गिरसिअ वि [गिरस्त] पयास्त, अपास्त (दे ५, २६) ।
 गिरस्ताय वि [गिरास्त] स्वाद-रहित (उच, १६, ३७) ।
 गिरस्तायि वि [गिरास्तानि] नही टपकने-वाला, छिद्र रहित । जो, 'गी' (उच २३, ७१, सुख २३, ७१) ।
 गिरहहार वि [गिरहहार] गर्व-रहित (उच) ।
 गिरहारि वि [गिरहारिन] आहार-रहित, उपोषित, 'हण्ड व वक्कलचारी, निहारी बमवेरवचारी' (गुण २५२) ।
 गिरहिराण वि [गिरविकरण] भविकरण-रहित, हिसा-रहित, निर्दोष (पंचा १६) ।
 गिरहिराणि वि [गिरविकरणिन] ऊपर देखो (भग १६, १) ।
 गिरहिरास वि [गिरमिरास] इच्छा-रहित, निरौह (गठड) ।
 गिरहेड } वि [गिरहेड, 'क' निष्कारण,
 गिरहेडग } कारखरहित (यम ३४३,
 गिरहेडग } ४१७; ४००) ।
 गिराड वि [गिरायत] लम्बा किया हुआ, विस्तारित (से ४, ५२, ७, ३६) ।
 गिराडस वि [गिरायुष] आयु-रहित (प्रक ३१) ।
 गिराडह वि [गिरायुष] आयुष-वर्जित, नि शङ्क (महा) ।
 गिराडर } सक [गिरा + रु] १ निषेध
 गिराडर } गिराडर } करता । २ हूर करना, हटाना ।
 ३ विनाश का फैसला करना । गिराडरिओ (कुप २१५) । सङ्क गिराडिकरुष (सूय १, १, १, ३, ३, १, ११) ।
 गिराडरिअ वि [गिराडर] निषिद्ध (यम ३४६) ।
 गिराडरण न [गिराडरण] गिराड, गिराडण, निषेध, रोक (पचा १७, १६) ।
 गिराडरण न [गिराडरण] १ निषेध, प्रतियेव (पंचा १७) । २ रोकना, निराडरा (स ४०६) ।
 गिराडरिय वि [गिराडर] हटाया हुआ, हूर किया हुआ (पठम ४६, ५१; ६१, ५०) ।
 गिराडस वि [गिराडस] निर्धन, रव (निरु २) ।

गिरागार वि [गिरागार] १ आकृति-रहित २ अपवाद-रहित (यम २) ।
 गिराण्ड वि [गिरानन्द] मानन्द-रहित, शोकहृत् (महा) ।
 गिरागिड (ग्रप) घ. निरिवत, नही (कुमा) ।
 गिराणुरूप देखो गिराणुरूप, 'एकिकनिराणुरूप' को आयुर्गिर भावण कुण्ड (ठा, ४, ४), 'मह' सो गिराणुरूप को (सया ८४; पठम २६, २५) ।
 गिराणुरासि वि [गिरानुरासि] १ अनुसरण नहीं करनेवाला । २ सेवा नहीं करनेवाला (उच) ।
 गिराड वि [दे] नष्ट, विनाश-आन्त (दे ४, ३०) ।
 गिरागार } वि [गिरागार] भावाभा-रहित,
 गिरागार } हारक रहित (मवि १११, गुण २५३, ठा १० भाव ४) ।
 गिरागमग वि [गिरागमग] रूप रहित, निर्दोष चारित्रवाला (भावा, सुप १, ६) ।
 गिरागमय वि [गिरागमय] रोग-रहित, मीरोग (गुण ५७५) ।
 गिरागमि वि [गिरागमि] भावविहीन, निरीह, निर्भयज्ञ, 'भावमि' सम्बन्धिमत्ता विहरिस्तामो गिरागमि' (उच १४, ५६) ।
 गिराय वि [दे] १ शत्रु, सरल । (दे ४, ५०, पाठ) । १ प्रकट, बुला । ३ पु. रिपु, शत्रु (दे ४, ५०) । ४ वि. लम्बा किया हुआ (दे २, ५०) ।
 गिराय वि [दे] दायन्त, भद्र, भविक (सुख २, ७) ।
 गिरायक वि [गिराडक] मातङ्क रहित, मीरोग (बीव) ।
 गिरायरिय देहा गिरायरिय (पठम ६१, ४६) ।
 गिरायव वि [गिरावप] आठर रहित (गठड) ।
 गिरायार देखो गिरागार (पठम ६, १८) ।
 गिरायस वि [गिरायस] परियम-रहित (पण्ड २, ४) ।
 गिरारम वि [गिरारम] भारम वर्जित (गुण १४०, गठड) ।
 गिराडन वि [गिराडन] मानन्द रहित (धा ६५, भाव ८) ।

गिरालंण वि [निरालम्बन] धालम्बन-रहित
(श्रीप. छाया १, ६)।

गिरालंण वि [निरालम्बन] भागसा-रहित,
संशय-रहित, प्राप्ति-रहित, इच्छा-रहित, अनु-
मान-रहित (भाषा २, १६, १२)।

गिरालय वि [निरालय] स्थान-रहित, एकत्र
स्थित नहीं करनेवाला (श्रीप.)।

गिरालोय वि [निरालोक] प्रकाश-रहित,
(निर १, १)।

गिराधकारि वि [निरयकाङ्क्षिण] भागसा-
रहित, निःस्पृह (सूत्र १, १०)।

गिराधयकर वि [निरपेक्ष] अपेक्षा-रहित,
निरोह (छाया १, १; भक्त १४८)।

गिराधरण वि [निराधरण] प्रतिबन्धन-
रहित (श्रीप.)। २ नम (सुर १४, १७८)।

गिराधराह वि [निरपराध] अपराध-रहित
(छाया ४२३)।

गिराधिकर वि देखो गिराधयकर, 'निरपमु
गिराधिकर'। गिराधिकार कर्तृति संसार-
बन्धन (भक्त ४६, पञ्च ६, ८, १००, ११)।

गिरास वि [निराश] १ भासा-रहित, हताश
(पञ्च ४४, ४६; दे ४, ४८; संति १६)।
२ न, भासा का अभाव (पणह १, ३)।

गिरास वि [दे] वृक्ष, हूट (पङ्.)।

गिरासस वि [निराशस] भागसा-रहित,
निरोह (छाया ६२१)।

गिरासय वि [निराशय] निराधार (वज्रा
१५२)।

गिरासय वि [निराशय] आशय-रहित, कर्म-
बन्धन के कारणों से रहित (पणह २, ३)।

गिरासस देखो गिरासस (भाषा २, १६, ६)।

गिराह वि [दे] निर्दय, निष्करुण (दे ४,
३७)।

गिरिअ वि [दे] अवरोधित, बाकी खसा हुआ
(दे ४, ४८)।

गिरिअ देखो गिरिअ (सुज १०, १२)।

गिरिक वि [दे] नम, नमा हुआ (दे ४, ३०)।

गिरिगी [दे] देखो गीरिगी (गज्ज)।

गिरिधाय वि [निरिधन] धन रहित (भग
७, १)।

गिरिधय सक [निर + ईक्ष] देखना,
अवलोकन करना। गिरिधय, गिरिधय

(सख, महा)। यट्. गिरिकरन, गिरि-
करमाण (सख. उप २११ टी)। सक.
गिरिकरज्ज (सख)। इ. गिरिकर-
गिज्ज (बप्पू)।

गिरिकरग न [निरिक्षण] अवलोकन (या
१४०)।

गिरिकरणा खी [निरिक्षण] अवलोकन,
प्रतिवेक्षणा (श्रीप ३)।

गिरिधिरअ वि [निरिक्षव] भासित,
हट (बप्पू; पञ्च ४८, ४८)।

गिरिध सक [नि + स्त्री] १ आलेप करना,
आलिन करना। २ मय, धियना। गिरिध
(हे ४, ४५)।

गिरिधियअ वि [निर्लीन] आच्छिन्न, भासित
(कुमा)।

गिरिण वि [निमृष्टेण] श्लेष-युक्त, उन्मत्त
(ठा ३, १, टी—पञ्च १२०)।

गिरिणास सक [गम्] गमन करना।
गिरिणासह (हे ४, १६२)।

गिरिणास सक [पिप्] पीसना। गिरिणासह
(हे ४, १८५)।

गिरिणास मय [नर] पलायन करना।
भागना। गिरिणासह (हे ४, १७८, कुमा)।

गिरिणासिअ वि [गत] गया हुआ, याव
(कुमा)।

गिरिणासिअ वि [पिष्ट] पीसा हुआ (कुमा)।

गिरिणिज्ज सक [पिप्] पीसना। गिरि-
णिज्जह (हे ४, १८५)।

गिरिणिज्जिअ वि [पिष्ट] पीसा हुआ (कुमा)।

गिरिन्ति खी [निरिति] एक रात्रि का नाम
(कण्ठ)।

गिरीह वि [निरिह] निष्काम, निःस्पृह
(कुमा, ४२१)।

गिरु (अप) अ. निश्चित, तक्की (हे ४, ३४४,
गुण ८६; सख, मवि)।

गिरुअ देखो गिरुअ (विसे १५८५, सुपा
४४६)।

गिरुअ [निरिजीकृत] नीरोध किया गया
(उप ४६० टी)।

गिरुअ सक [नि + रुध] निरोध करना।
गिरुअह (श्रीप)। कवक. गिरुअमाण,
गिरुअभंत (स ३३१, महा)। सक. गिरु-

अइत्ता (सुप १, ४२)। इ. गिरिभियन,
गिरिद्वन्द्व (सुपा ४०४; विसे ३०८१)।

गिरिभण न [निरोधन] प्रवृत्त, स्थावट
(सुप १, ५, मवि)।

गिरिधंठ वि [निरुधण्ठ] उलट्टा रहित,
निःस्वाह (नाट)।

गिरुध देखो गिरिध। गिरुध (पङ्.)।

गिरुधार वि [निरुधार] १ उधार—पुटो-
पोषण के लिए लोगों के निर्माण से वजित
(छाया १, ८—पञ्च १४६)। २ प्राप्त
जाने से जो रोका गया हो (पणह १, ३)।

गिरुधय वि [निरुधय] उरप रहित
(मनि १८६)।

गिरुधयह वि [निरुधयह] उरसाह-हीन
(सं १४, ३२)।

गिरुज वि [निरुज] १ रोग-रहित। २ न.
रोग का अभाव। 'सिर न [शिर] एक
प्रकार की लक्ष्मण' (पञ्च १७१)।

गिरुजम वि [निरुजम] उरप-रहित,
मातली (उव, ४ ३१०, सुपा ३८४)।

गिरुट्टाह वि [निरुयायिन] नहीं उठनेवाला
(उव १, ३०)।

निरुच वि [निरुच] १ उल, कथित (सत
७१)। २ न. निश्चित उक्ति (मणु)। ३
व्युत्पत्ति। (विसे २, १६१)। ४ वेदाङ्ग
शास्त्र-विशेष, जिसमें वैदिक शब्दों को व्याख्या
है (श्रीप)।

निरुच वि [निरुच] १ अनुक्त, अकथित, हट्टाव
'किं नु निरुचो भावो परस्स नमह वनित्तए'
(सिरि ८४६)। २ व्युत्पत्ति-युक्त (सिरि ३१)।

निरुच वि [दे] १ निश्चित, तक्की, बोद्ध
(दे ४, ३०, पञ्च १४, ३२, कुमा, (सख,
मवि), 'निश्चित हू मरह निश्चित पुत्तिओ संनित्तए'
कात्ते' (पञ्च ११, ६१)। २ वि. निश्चित,
चिन्ता रहित (कुमा)।

निरुचच वि [निरुचच] विशेष ताप-युक्त,
संतप (उव)।

निरुचम वि [निरुचम] अत्यन्त श्रेष्ठ (कात्ते)
निरुचर वि [निरुचर] उरप-रहित किया
हुआ, परावत (सुर १२, ६६)।

निरुचि खी [निरुचि] व्युत्पत्ति (विसे
६६२)।

गिरुत्तिअ वि [निरुत्तिकरु] व्युत्पत्ति के भुत्तुवार जिसका प्रथम किया जाय वह शब्द (ग्रन्थ) । गिरुत्तिअ न [निरुत्तिकरु] निरुत्ति, व्युत्पत्ति, 'नो कथयि नाणित्ति निरुत्तिवै वेइसइस' (संशोध—१२) ।

गिरुदर वि [निरुदर] छोटा पेटवाला, भुत्तुदर । श्री. रा (पृष्ठ १, ४) ।

गिरुद्ध वि [निरुद्ध] १ रोकना हुमा (छाया १, १) । २ बाधित, बाध्यादित (सूत्र १, २, ३) । ३ दुः, मस्य को एक जाति (कण्व) ।

गिरुद्ध वि [निरुद्ध] बोधा, सतिवत (सूत्र १, १४, २३) ।

गिरुद्धञ्ज वि [निरुद्धञ्ज] देवो गिरुद्धं । गिरुद्धञ्ज वि [निरुद्धञ्ज] देवो गिरुद्धं ।

गिरुत्ति पुत्री [दे] कुम्भार—नरु की माहति-वाला एक जन्तु (१४, २७) ।

गिरुत्तिविद्ध देवो गिरुत्तिविद्ध (मग) ।

गिरुत्तकम वि [निरुत्तकम] १ जो कम न किया जा सके वह (भाष्य) (सुर २, १३२, सुपा २०४) । २ विरुद्ध, प्रबाध, 'निय-निश्चयकमविद्धमप्रवृत्तमगतिवचनो' (सुपा ३९१) ।

गिरुत्तकय वि [दे] बाधित, नहीं किया हुआ (दे ४, ४१) ।

गिरुत्तिविद्ध वि [निरुत्तिविद्ध] क्लेश-भजित, दुःखरहित (मग २४, ७) ।

गिरुत्तकस वि [निरुत्तकस] शोक भादि श्रेयो वे रहित (ठा ७) ।

गिरुत्तस्य वि [निरुत्तस्य] शब्द से न कहा जा सके वह, अनिर्वचनीय (धर्म २४१, १३००) ।

गिरुत्तय वि [निरुत्तय] प्रतिपादक (तत्त्व १६०) ।

गिरुत्तगारि वि [निरुत्तगारि] उपकार को नहीं माननेवाला, प्रत्युपकार नहीं करनेवाला (भाष्य) ।

गिरुत्तगह वि [निरुत्तगह] उपकार नहीं करनेवाला (ठा ४, ३) ।

गिरुत्तगि वि [निरुत्तगि] निरुत्तगो, भाष्य (भाष्य) ।

गिरुत्तद्वि वि [निरुत्तद्वि] उद्विग्न-रहित, भाष्या वजित (भीष) ।

गिरुत्तम वि [निरुत्तम] प्रसमान, प्रसाधारण (भीष, महा) ।

गिरुत्तयारि वि [निरुत्तयारि] वास्तविक, तथ्य (छाया १, ५) ।

गिरुत्तयार वि [निरुत्तयार] उपचार-रहित (उव) ।

गिरुत्तलेप वि [निरुत्तलेप] लेप वजित, भ-लित (कण्व), 'यण्णविह गिरुत्तलेप' (पद्म १४, १४) ।

गिरुत्तसग वि [निरुत्तसग] १ उपसर्ग-रहित, उपसर्ग-भजित (सुपा २८७) । २ पु. मोक्ष, मुक्ति (पद्म, धर्म २) । ३ न. उपसर्ग का प्रभाव (वच ३) ।

गिरुत्तहय वि [निरुत्तहय] १ उपवात-रहित, प्रवृत्त (मग ७, १) । २ क्वावट से शून्य, अप्रवृत्त (सुपा २६८) ।

गिरुत्तहि वि [निरुत्तहि] माया-रहित, निष्कण्ट (धर्म १) ।

गिरुत्तारक वि [निरुत्तारक] ग्रहण करना । रिच-बाण्ड (हे ४, २०६) ।

गिरुत्तारि वि [गृहीत] उपात, गृहीत (कुमा) ।

गिरुत्तारभ वि [निरुत्तारभ] उपासम्भ-शून्य (गड्ड) ।

गिरुत्तियग वि [निरुत्तियग] उद्वेग-रहित (छाया १, १—पय ६) ।

गिरुत्तसाह वि [निरुत्तसाह] उत्साह-हीन (सूत्र १, ४, १) ।

गिरुत्त सक [नि + रूप्य] १ विचार कर नहना । २ विवेचन करना । ३ देखना । ४ हिसलाना । ५ सतारा करना । निश्चय (पद्म) । वक्. गिरुत्तित, निरुत्तमाग (सुर १५, २०५, कुप्र २७३) । सक.

गिरुत्तियऊण (पय ८) । क. गिरुत्तियऊण (पंथा ११) । हे. गिरुत्तियऊण (कुप्र २०८) ।

गिरुत्तन न [निरुत्तण] १ विलोकन, निरो-क्षण (उप ३३७) । २ वि. दित्तानेवाला श्री. 'गी (पय ११, २२) ।

गिरुत्तयथा श्री [निरुत्तयथा] निष्पल (उप ६३०) ।

गिरुत्तविअ वि [निरुत्तविअ] गवेपित, जिस की खोज बराई गई हो वह (उप ३३६-७४२) ।

गिरुत्तविअ वि [निरुत्तविअ] १ देखा हुआ (दे ३३, १३, सुपा ५२३) । २ भालोचना कर कहा हुआ । ३ विवेचित, प्रतिपादित (हे २, ४०) । ४ दित्तानेवा हुआ । ५ गवेपित (भाष्य) ।

गिरुत्तसुअ वि [निरुत्तसुअ] उल्लस्यता-रहित (गड्ड) ।

गिरुत्त पुं [निरुत्त] भुत्तुवातना-विशेष, एक तरह का विवेचन (छाया १, १३) ।

गिरुत्तय वि [निरुत्तय] निष्कण्ट, स्थिर (मग २४, ४) ।

गिरुत्तयण वि [निरुत्तयण] निष्कण्ट, स्थिर (कण्व, भीष) ।

गिरुत्तगाम पु [निरुत्तगाम] नम्रता-रहित, गवित, उद्वत (उव) ।

गिरुत्तय वि [निरुत्तय] रोप-रहित (भीष; छाया १, १) ।

गिरुत्तय पु [दे] भादेश, भासा, क्वता (सुपा २२४) ।

गिरुत्तयारि वि [निरुत्तयारि] उपकार को नहीं माननेवाला (भीष ११३ भा) ।

गिरुत्तयारि वि [निरुत्तयारि] उपकार को नहीं माननेवाला (भीष ११३ भा) ।

गिरुत्तयिअ देवो गिरुत्तयिअ (सुपा ४५६, महा) ।

गिरुत्त पुं [निरुत्त] क्वावट, रोकना (ठा ४, १, भीष, पाप) ।

गिरुत्तय वि [निरुत्तय] रोकनेवाला (१भा) ।

गिरुत्तय न [निरुत्तय] क्वावट (पृष्ठ १, १) ।

गिरुत्त पु [दे] पदग्रह, दीवदान, दीवन्-पाप, वृक्कने पाप (दे ४, ३१) ।

गिरुत्त पुं [निरुत्त] घर, स्थान, प्रायय (दे २, २, भा ४२१, पाप) ।

गिरुत्तयण न [निरुत्तयण] वसित, स्थान (विशे) ।

गिरुत्तय न [उत्तय] माल, बपाल (कुमा) ।

गिरुत्तय देवो गिरुत्तय । गिरुत्तय (पद्) ।

गिरुत्तय न [निरुत्तय] गिरुत्तय । गिरुत्तय १ स [नी + टी] १ भारतेय करना, गिरुत्तय १ स [नी + टी] १ भारतेय करना । २ दूर करना । ३ घर-दित्त जाना । गिरुत्तय गिरुत्तय (दे ४, ५५) । गिरुत्तय (कण्व) । वक्.

गिलित, गिलिजमाण, गिलीअंत, गिली-
अमाण (यय. सुम २, २; कुमा: उप ४७४)।
गिलीइर वि [गिले] धारयेव बरनेवाला;
अंतेवाला (कुमा)।

गिलुष देखो गिलीअ । गिलुइ (हे ४,
५४, प६) । वड. गिलुइत (कुमा)।

गिलुष सक [गुइ] सोइना । गिलुइ
(हे ४, ११६)।

गिलुष वि [दे. गिली] १ गिलीन, गूल
धिया हुमा, प्रच्छन्न, पुम, तिरोहित (एणाया
१, ८; से १५, २; गा ६४; सुर १, ५; उप
कुपा ६४०)। २ लीन, भासक (विदे ६०)।

गिलुषण न [गिलयन] धिपना (गुप्र २५२)।

गिल्लं [दे] देखो गिल्लं (दे ४, ३१)।

गिल्लंण न [गिल्लंण] रपीर के विसी
अवयव का छेदन (उवा. प६)।

गिल्लंण देखो गेल्लंण (पि ६६)।

गिल्लंण वि [गिल्लंण] १ मूल, वेवकू
(उप ७६७ टी)। २ अणलक्षणवाला, खराब
(आ १२)।

गिल्लंज वि [गिल्लंज] लज-रहित (हे २,
१६७, २००)।

गिल्लंजिम धुंकी [गिल्लंजिमन्] निर्वाजपन,
वेवारी (हे १, ३५)। ओ. मा (हे १,
३५)।

गिल्लं सक [ल + लस्] ललसना,
विकसना । गिल्लं (हे ४, २०२)।

गिल्लंसि वि [ललसित] ललस-मुक्त,
विकसित (कुमा)।

गिल्लंसि वि [दे] निर्गत, नि.छव, निर्वात
(दे ४, ३६)।

गिल्लंलि वि [गिल्लंलि] नि.सारि,
बाहर निकाला हुमा (एणाया १, १; ८—
पत्र १३३; सुर १२, २३४; महा)।

गिल्लं सक [गिर + लि] धिसना ।
गिल्लंहिना (भापा २, २, ३)।

गिल्लं सक [मुच्] छोडना, ध्याग
करना । गिल्लं (हे ४, ६१)।

गिल्लंलि वि [मुक्] ध्यक, छोडा हुमा
(कुमा)।

गिल्लं वि [गिल्लं] विनाशित (विक २५)।

गिल्लं सक [छिद्] छेदन करना, काटना ।
गिल्लं (हे ४, १२४)। गिल्लं (भापा
६८)।

गिल्लंण न [छेदन] छेद, बिन्देर (कुमा)।

गिल्लंण वि [छिद्] काटा हुमा,
बिच्छिन्न, 'भावतारिदुमाहयानिल्लंणियदवि-
संखल' (पउम ८, २५८)।

गिल्लंण वि [गिल्लंण] सेव-रहित (विंते ३०८३)।

गिल्लंण धुं [गिल्लंण] रजप, धोयी (भापा
४)।

गिल्लंण न [गिल्लंण] १ मल को दूर करना
(यय १)। २ वि. गिल्लंण, सेव-रहित (भापा
१६ मा)। ३ काल धुं [काल] वह काल,
जिस समय नरक में एक भी मारक जीव न
हो (भग)।

गिल्लंण वि [गिल्लंण] १ सेव-रहित
विषा हुमा । २ बिन्दुल गूट गया हुमा
(भग)।

गिल्लंण न [गिल्लंण] अवर्तन, पोछना
(भापा २, ३; २)।

गिल्लंण वि [गिल्लंण] लोभ-रहित, अ-
गिल्लंण धुं [गुण] (गुपा ३६१; आ १२;
अवि)।

गिल्लं धुं [गुण] राजा, नरेश (कुपा; दयण
४७)। १ तणय वि [लंघन] राज-
संबन्धी, राजनीय (गुपा ५३६)।

गिल्लं धुं [गुण] ऊपर देखो (ठा ३, १,
पउम ३०, ६)। १ भाग धुं [भाग] राज-
मार्ग, जाहिर रास्ता (पउम ७६, १६)।

गिल्लं वि [गिल्लं] १ नीचे गिरा हुमा
(खामा १, ७)। २ एक प्रकार का विप
(ठा ४, ४)।

गिल्लं वि [गिल्लं] नीचे गिरनेवाला
(ठा ४, ४)।

गिल्लं वि [गिल्लं] नीचे गिरनेवाला
(ठा ४, ४)।

गिल्लंण न [दे] अवतारण, उतारना (दे
४, ४०)।

गिल्लं सक [गिर + पन्] निम्न होना,
नीचपना, नमना । गिल्लंण (प६)।

गिल्लं सक [गिर + सद्] बेठना । गिल्लंण
(स ५०६)। वड. गिल्लंण (स ५०३)।

प्रयो. गिल्लंण (गिर १, १)।

गिल्लं सक [गिर + सद्] सोना । गिल्लंण
(उत २७, ५)।

गिल्लं सक [गिर + यत्तं] निवृत्त करना ।
गिल्लंण (गुम १, १०, २१)।

गिल्लं सक [गिर + यत्तं] १ निवृत्त होना,
सोना, हटना । २ खाना । वड. गिल्लंण
(गुमा १६२)।

गिल्लं वि [गिल्लं] १ निवृत्त, हटा हुमा,
प्रवृत्ति-निवृत्त । २ न, निवृत्ति (हे ४, ३३२)।

गिल्लंण न [गिल्लंण] १ निवृत्ति, प्रवृत्ति-
निरोध । २ जहाँ रास्ता बन्द होता हो वह
स्थान (एणाया १, २—पत्र ७६)।

गिल्लंण वि [गिल्लंण] वका हुमा, फलित,
सिद्ध (भापा २, ४, २, ३)।

गिल्लं सक [गिर + पन्] नीचे पड़ना,
नीचे गिरना । गिल्लंण (उय, प६;
महा)। वड. गिल्लंण, गिल्लंण (गा
१४, सुर ३, १२७)। वड. गिल्लंण,
गिल्लंण (वस ३; महा)।

गिल्लंण न [गिल्लंण] अथ: पवन (राज)।

गिल्लंण वि [गिल्लंण] नीचे गिरा हुमा
(से १४, ३४; गा २३४, उप ६ २६)।

गिल्लंण वि [गिल्लंण] नीचे गिरनेवाला
(गुपा ४६; सण)।

गिल्लंण वि [गिल्लंण] १ बैठा हुमा (महा,
सुपा ६५; ७३)। २ पु. कायोत्सर्ग-विशेष,
जिसमें धर्म आदि किसी प्रकार का ध्यान न
किया जाता हो वह कायोत्सर्ग (भाव ५)।

१ गिल्लंण धुं [गिल्लंण] जिसमें धर्म और
रौद्र ध्यान बिना जाय वह कायोत्सर्ग (भाव ५)।

गिल्लंण धुं [गिल्लंण] जिसमें धर्म और
रौद्र ध्यान बिना जाय वह कायोत्सर्ग (भाव ५)।

गिल्लंण धुं [गिल्लंण] जिसमें धर्म और
रौद्र ध्यान बिना जाय वह कायोत्सर्ग (भाव ५)।

गिल्लंण धुं [गिल्लंण] जिसमें धर्म और
रौद्र ध्यान बिना जाय वह कायोत्सर्ग (भाव ५)।

गिल्लंण धुं [गिल्लंण] जिसमें धर्म और
रौद्र ध्यान बिना जाय वह कायोत्सर्ग (भाव ५)।

गिल्लंण धुं [गिल्लंण] जिसमें धर्म और
रौद्र ध्यान बिना जाय वह कायोत्सर्ग (भाव ५)।

गिल्लंण धुं [गिल्लंण] जिसमें धर्म और
रौद्र ध्यान बिना जाय वह कायोत्सर्ग (भाव ५)।

गिजत्तय वि [निजत्तय] १ बापस भाने-
वाला लौटनेवाला । २ लौटनेवाला, बापस
करनेवाला (हे २, ३०, प्राप्) ।

गिजत्त छी [निजत्त] निवर्तन (उव) ।
गिजत्तअ वि [निजत्त] रोका हुआ, प्रति-
पिद्ध (स ३६५) ।

गिजत्तअ वि [निजत्त] निष्पादित 'निव-
त्तिया सबूया' (स ७६३) ।

गिजट्टि देखो गिजत्त (सखि ६) ।

गिजय देखो गिजयण (स ७६०) ।

गिजय सक [नि + पत्] समाना, झन्तर्भूत
होना । निजयति (पथ ८४ टी) ।

गिजय देखो गिजड । गिजयज्जा, गिजयज्जा
(कय ठा ३, ४) बड़ा गिजयत, गिजयमाण
(उव १४२ टी, सुर ४, ६५, कय) ।

गिजय पु [निपात] नीचे गिरना, ग्रथ-पतन
(सुर १३, १६७) ।

गिजरुण पु [गिरण] बृहत् विशेष (उप
१०३१ टी) ।

गिजस सक [नि + वस्] निवास करना
रहना । गिजसइ (महा) । बड़, गिजसत
(सुपा २२५) । हेऊ, गिजसिउ (सुपा
४६३) ।

गिजसण न [गिजसन] बड़ा कपडा (मनि
१३६, महा; सुपा २००) ।

गिजसिय वि [गिजसित] जिसने निवास
किया हो वह (महा) ।

गिजस्तिर वि [गिजस्तिर] निवास करनेवाला
(गडड) ।

गिजह सक [गम] जाना, गमन करना ।
गिजहइ (हे ४, १६२) ।

गिजह सक [नरा] भागना, पलायन करना ।
गिजहइ (हे ४, १७८) ।

गिजह सक [पिपू] पीसना । गिजहइ (हे
४, १८५, पड) ।

गिजह पुन [गिजह] मगूह, राशि, जल्पा (से
२, ४२, सुर ३, ३५, प्राप् १४४) 'अच्छड़
ता फलनिवह' (पडा १५२) ।

गिजह पुन [दि] मगूह धैर्य (दे ४, २६) ।

गिजहइ वि [नट] नाच प्राप्त (कुमा) ।

गिजहइ वि [पिट] पीसा हुआ (कुमा) ।

गिजाइ वि [गिजातिन्] गिरनेवाला (भावा)

गिजाइ सक [नि + पातय] नीचे गिरना ।
गिजाइइ (स ६६०) । बड़, गिजाइयत (म
६८६) । सऊ, गिजाइइत्ता (जीव ३) ।

गिजाइय वि [गिजायित] नीचे गिरया हुआ
(महा) ।

गिजाइर वि [गिजायित] नीचे गिरने-
वाला (सण) ।

गिजाण न [गिजाण] कूप या तालाब के पास
पशुप्रा के जल पीने के लिए बनाया हुआ
जल-बुरख, बरही (स ३१२) । 'साळा छी
[साळा] पशुओं का पानी पीने का स्थान
(महा) ।

गिजाय देखो गिजाड । गिजायइ (कुमा) ।
गिजायज्जा (वि १११) ।

गिजाय पु [दि] स्वेद, पसीना (दे ४, ३४,
सुर १२, ८) ।

गिजाय पु [निपात] १ पतन, ग्रथ-पतन,
गिरना (गा २२२, सुपा १०३) । २ सायोग,
सबक, 'विद्विगिजासा ससिमुदीप' (गा १४८
उत्त २, गडड) । ३ क. प्र भादि व्याकरण-
प्रसिद्ध ग्रन्थय (पह २, २, सुपा २०३) ।
४ विनाश (गिड) ।

गिजाय वि [गिजात] पवन रहित, स्थिर
(पह २, ३, स ४०३ ७४३) ।

गिजायण न [गिजातन] १ गिरना, निपा-
तन, ढाहना (पह १, २) । २ व्याकरण-
प्रसिद्ध शब्द सिद्धि, प्रकृति भादि के बिना
विनाश किये ही प्रत्यय शब्द की निष्पत्ति
(विसे २३) ।

गिजार सक [नि + वारय] निवारण करना
निषेध करना रोक्ना । गिजारइ (उव महा) ।
बड़, गिजारैत (महा) । कबड़, गिजारी-
अत, गिजारिज्जमाण (गाठ—मुच्छ १४४,
१३५) । क. गिजारियव्व, गिजारियव्व
(सुपा ४८२, महा) ।

गिजारण वि [गिजारक] निषेध करनेवाला,
रोक्नेवाला (सुर १, १२६; सुपा ६३६) ।

गिजारण न [गिजारण] १ निषेध, रोकना
(सग ६, ३३) । २ शीत भादि से रोक्नेवाला,
गूह बरह भादि 'न से निवारण' अथि
प्रविष्टाण न विजड (उत्त २, ७) । ३ वि

निवारण करनेवाला, रोक्नेवाला, 'उवसण-
निवारणो एको' (मनि ३८) ।

गिजारय देखो गिजारा (उव ३३० टी) ।

गिजारि वि [गिजारिन्] निवारक, प्रतिषेधक ।
छी, 'रिणी (महा) ।

गिजारिय वि [गिजारिन्] रोका हुआ, निषिद्ध
(मग प्राप् १६६) ।

गिजास पु [गिजास] १ निवसन, रहना ।
२ वास-स्थान, डेरा (कुमा महा) ।

गिजासि वि [गिजासिन्] निवास करनेवाला,
रहनेवाला (महा) ।

गिजिअ देखो गिजिअ = स्पन्द (से १२, ३०) ।

गिजिट्ट देखो गिजट्ट = निवृत्त (सण) ।

गिजिट्ट वि [गिजिट्ट] १ स्थित, बैठे हुआ
(महा) । २ भासत, लीन (राज) ।

गिजिट्टि वि [गिजिट्ट] लब्ध, उपात, गृहीत
(ठा ५, २) । 'कप्पट्टिहू छी [कप्पट्टियति]
जैन साधुओं का एक तरह का आचार (ठा
५, २) ।

गिजिड देखो गिजिड (पड; हे १, २४०) ।

गिजिडिअ देखो गिजिडिअ (गडड, वि
२४०) ।

गिजित्ति छी [गिजित्ति] १ निवर्तन, उपरान,
प्रकृति का प्रभाव (विसे २०६८, ११५४) ।
२ बापस लौटना, प्रत्यावर्तन (सुपा ३३२) ।

गिजिट्ट वि [दि] १ लोकर उठा हुआ । २
निराश, हताश । ३ उजड़ । ४ गिरास निर्देय
(दे ४, ४८) ।

गिजिन्न वि [गिजिन्न] निश्चित ज्ञान से रहित
(वडु ५५) ।

गिजिस सक [नि + गिज] बैठना । वह,
गिजिसत (ठा १२) ।

गिजिस (पप) देखो गिजिस (मनि) ।

गिजिस्तिर वि [गिजिस्तिर] बैठनेवाला (सण) ।

गिजुग्गमाण वि [गिजुग्गमाण] नियमान, जो
से जाया जाता हो वह (भावा २, ११, ३) ।

गिजुद्ध वि [गिजुद्ध] बरसा हुआ (भावा २,
४, १, ४) ।

गिजुद्ध सक [नि + यय्य] १ त्याग
करना, छोड़ना । २ हानि करना । बड़
गिजुद्धमाण (मुत्र १, १) । सड, गिजु-
द्धिउत्ता (मुत्र १) ।

गिउव्हिड छी [निवृद्धि] १ वृद्धि वा अभाव
(ठा २, ३) । २ दिन की छोटाई (अग) ।
गिउण देखो गिउण (अउ ६६) ।
गिउत्त देखो गिउत्त = निवृत्त (स ५८८) ।
गिउदि छी [निवृत्ति] परिवर्तन (आह १२) ।
गिउद देखो गिउद (सू २, ७, ३८) ।
गिउव अर [नि + वेदय] १ सम्मान-पूर्वक
ज्ञापन करना, अर्थ करना । २ अर्थण करना ।
३ मान्य करना । कर्म. गिउदअइ (निब १) ।
सह. गिउवइऊण (स ५६६) । हेहू. गिउवएउं
(पचा १५) । कृ. गिउवयगोअ (स १२०) ।
गिउवअग वि [निवेदक] सम्मान पूर्वक ज्ञापन
करनेवाला, प्रार्थी (मुा २६८) ।
गिउवअण } न [निवेदन] १ सम्मान-पूर्वक
गिउवअणय } ज्ञापन, दिनस (पचा १, निब
११) । २ नैवेद्य, देवता को अर्पित अन्न आदि
(पउम ३२, ८३) ।
गिउवअणा छी [निवेदना] ऊपर देखो
(आया १, ५) । १ पिंड पु [पिण्ड]
देवता को अर्पित अन्न आदि, नैवेद्य (निब
११) ।
गिउवअय देखो गिउवअग (मुा २२५, स
५१६) ।
गिउवइय वि [निवेदित] सम्मान पूर्वक अर्पित
(महा. अवि) ।
गिउवइइअ वि [निवेदयित] निवेदन
करनेवाला (अभि १३६) ।
गिउवस सक [नि + वेशय] स्थापना
करना, बैठाना । गिउवसइ गिउवसेइ (सण,
कण्य) । सह. गिउवसइत्ता, गिउवसिउं
गिउवसिऊण, गिउवसित्ता, गिउवसिय
(उत ३२, महा, सण, कण्य, महा) । कृ.
गिउवसियअउ (मुा ३६५) ।
गिउवस पु [निवेश] १ स्थापन, आधान
(ठा १, उप पु २३०) । २ प्रवेश (निब ५) ।
३ आवास स्थापन, बैठा (बृह १) ।
गिउवस पु [नृपेश] १ महान् राजा, चक्रवर्ती
राजा (मुा ५६३) ।
गिउवसण न [निवेशन] १ स्थान, बैठना
(आचा) । २ एक ही दरवाजेवाले अनेक गृह
(आय ५) ।

गिउवसण न [निवेशन] गृह, घर (उत
१३, १८) ।
गिउवसायि वि [निवेशित] बैठाना हुआ
(महा) ।
गिउव न [नीत्र] छदि, पटल-प्राप्त (दे ५,
५८, पाग) ।
गिउव १ [नीत्र] छपर ने ऊपर वा खपरैल
(एदि १५६) ।
गिउव न [दे] १ बबुद, चिह्न । २ व्याज,
बहाना (दे ५, ५८) ।
गिउवअर वि [द] पछिहाड-पहित, सत्य
(मुा १६७) ।
गिउवअर वि [निर्मल] कलक-रहित,
(पि ६२) ।
गिउवदृ देखो गिउवस = निर + वसय ।
सह. गिउवदृत्ता (ठा २, ५) ।
गिउवदृ (अर) देखो गिउवदृ (दे ५, ५२२ टि) ।
गिउवदृग वि [निवर्तक] बनावेवाला, बटा
(आय ५) ।
गिउवदृमि देखो गिउवदृमि (स ७, ३३) ।
गिउवदृयि वि [निर्वर्तित] निष्पादित,
बनाया हुआ (आचा २, ५, २) ।
गिउवइ सक [मुच] दुख को छोड़ना ।
गिउवइइ (पउ) ।
गिउवइ अर [भू] १ धक्का होना, बुझा
होना । २ रगड़ होना । गिउवइइ (दे ५,
६२) ।
गिउवइ देखो गिउवइ = निर + पद (मुा
१२२) ।
गिउवइअ वि [भूत] १ धुवय भूत, जो
बुझा हुआ हो (दे ६, ८८) । २ स्पष्टीभूत,
जो व्यक्त हुआ हो (सुर ७, १०५) ।
गिउवइअ वि [निपन्न] सिद्ध कृत, निवृत्त
(आय) 'सुकुलपत्ती य दुण्णया य समं
इणेए गिउवइया' (मुा १२२) ।
गिउवइ वि [दे] नग्न, नंगा (दे ५, २८) ।
गिउवण वि [निर्वाण] अण रहित शत-
वर्जित, बिना पाप वा (आया १, ३, अवि) ।
गिउवण सक [निर + वर्णय] १ श्लाघा
करना, प्रशंसा करना । २ देखना । बहु
गिउवणणत (स ३, ५५, उप १०३१ टी,
महा) ।

गिउवस सक [निर + वसय] बनाना,
बनाना, मिट्ट बनाना । गिउवसेइ (महा) ।
सह. गिउवसिऊण, गिउवसेऊण (नवा) ।
गिउवस नव [निर + वसय] गोत
बनाना, वर्तुल बनाना । कवहू. गिउवसि-
ऊण (अग) ।
गिउवस वि [निवृत्त] निष्पन्न, रचित,
निर्मित (महा, अवि) ।
गिउवस वि [निर्वर्त्य] बनाने योग्य, साध्य
(आह २०) ।
गिउवसण न [निर्वर्तन] निष्पत्ति, रचना,
बनावट (उप पु १८६) । १ 'अधिरगिया,
'अधिरगिया छी [अधिरगिनी] राज
बनाने की क्रिया (ठा २, १, अग ३, ३) ।
गिउवसणया } छी [निर्वर्तना] ऊपर देखो
गिउवसणया } (पण ३५, उत ३) ।
गिउवसय वि [निर्वर्तक] निष्पन्न करनेवाला,
बनावेवाला (विसे ११५२, स ५६३, हे २,
३०) ।
गिउवसि छी [निर्वृत्ति] निष्पत्ति, विनिर्माण
(विसे ३००२) । देखो गिउवसि ।
गिउवसिय वि [निर्वर्तित] निष्पादित, बनाया
हुआ (स ३३६, सुर १५, २२१, सवि १०) ।
गिउवसिय वि [निर्वृत्तित] गोताकार किया
हुआ (अग) ।
गिउवसिअ वि [दे] परिभूत (दे ५, ३६) ।
गिउवय अर [निर + दृ] शान्त होना,
उपशान्त होना । कृ. गिउवयगिअ (स
३०१) ।
गिउवय वि [निर्वृत्त] १ उपशान्त, शान्त प्राप्त
(सू १, ५, २) । २ परिणत, परिणाम-
प्राप्त (सवि १) ।
गिउवय वि [निर्वृत्त] शत रहित, नियम
रहित (पउम २, ८८, उप २६५ टी) ।
गिउवयण न [निर्वचन] १ निश्चित, शब्दाद्यं
कथन (आयव) । २ उत्तर, जवाब (ठा १०) ।
३ वि. निश्चित करनेवाला, निर्वाचक, 'आत
वविअोवअो, अयअिअविअयअिअययो'
(सम ८) ।
गिउवयगिअ देखो गिउवय = निर + वृ ।
गिउवर सक [कथय] दुख कहना ।

गिञ्जरद (हे ४, ३)। भूका गिञ्जरदो (कुमा)। कर्म।

‘कहं तस्मिन् निम्बदिग्गज,
दुक्खं भङ्गुत्तुएण हिमएण।

अहाए पडिबिबेय, जस्मि
दुक्खं न सकमइ (स ३०६)।

गिञ्जर सक [खिद्] खेद करना, काटना।
गिञ्जरद (हे ४, १२४)।

गिञ्जरण न [कथन] दुःख-निवेदन (गा २५५)।

गिञ्जरिअ वि [खिन्न] काटा हुआ, खरिखत (कुमा)।

गिञ्जरल सक [सुख] दुःख को छोड़ना।
गिञ्जलेह (हे ४, ६२२)।

गिञ्जरल भक [निर + पद्] निष्पन्न होना, सिद्ध होना, बनना। गिञ्जलह (हे ४, १२०)।

गिञ्जरल देखो गिञ्जल = क्षर। गिञ्जलह (हे ४, १७३ टि)।

गिञ्जरल देखो गिञ्जल = भू। वहु, गिञ्जरलन, गिञ्जरलमाण (से १, ३६, ७, ४३)।

गिञ्जरमिअ वि [दे] १ जल धौत पानी से धोया हुआ। २ प्रसंगित। ३ विषयित, विद्युत (दे ४, ५१)।

गिञ्जरय सक [निर + वापय] ठंडा करना, बुझाना। गिञ्जवेहि (स ४५५)। गिञ्जवसु (बाल)। वहु, गिञ्जयसत (सुपा २२५)। कृ गिञ्जरयिज्य (सुपा २६०)।

गिञ्जरयण न [निर्वाण] १ बुझाना, शान्त करना। २ वि. शान्त करनेवाला, ताप को बुझानेवाला (सुर ३, २३७)।

गिञ्जरयिअ वि [निर्वाण] बुझाया हुआ, ठंडा किया हुआ (गा ३१७, सुर २, ७४)।

गिञ्जवद् भक [निर + वद्] १ निम्ना, निम्नाई करना, पार पटना। २ आजीविका चलाना। गिञ्जवद् (स १०५, वज्ज ६)। कर्म. गिञ्जवद् (पि ५५१)। वहु. गिञ्जवद् (भा १२, सुप ३३)। कृ- गिञ्जवद्दिज्य (सुप ३७५)।

गिञ्जवद् सक [उद् + वद्] १ धारण करना। २ उभर उठना। गिञ्जवद् (वद्)।

गिञ्जवहण न [निर्वहण] निर्वह, भ्रत, नाटक की एक संधि (सुपा १७५, सुप ३७५)।

गिञ्जवहण न [दे] विवाह, शादी (दे ४, ३६)।

गिञ्जा भक [वि + भ्रम] विधाम करना। गिञ्जाद (हे ४, १६६)। वहु. गिञ्जाअंत (से ८, ८)।

गिञ्जाघाअम वि [निर्जाघातम] व्याघात-रहित स्थलना-रहित (भोग)।

गिञ्जाघाय वि [निर्जाघात] १ व्याघात-वर्जित (छाया १, १, नय कप)। २ न. व्याघात का भ्रमाव (पण २)।

गिञ्जाघाया जी [निर्जाघाता] एक विद्या-देवी (पठम ७, १४५)।

गिञ्जाण न [निर्जाण] १ मुक्ति, मोक्ष, निवृत्ति (विने १६७५)। २ सुख, वैश्व शान्ति, दुःख निवृत्ति, निजलमणी निम्बाए सुंदरि निस्ससय बुण्णद (उप ७२८ टी, पठम ४६, १६)। ३ बुझाना, विष्णायन (भा ४)। ४ वि. बुझा हुआ ‘वह बीवी गिञ्जाणो’ (विने १६६१, सुप ५१)। ५ पु. ऐश्वर्य वर्ष में होनेवाले एक जिन देव का नाम (सम १५४)।

गिञ्जाण न [निर्वाण] दृष्टि (दम ५, २, ३८)।

गिञ्जाण न [दे] दुःख वधन (दे ४, ३३)। गिञ्जाणि दुं [निर्जाणि] भारतवर्ष में अश्वीत उल्लसिणी-काल में सजात एक दिन-देव (वव ७)।

गिञ्जाणी जी [निर्जाणी] भगवान् श्री शान्तिनाथ की शालन-देवी (सति १, १०)। गिञ्जाय वि [निर्जाण] बीजा हुआ, व्यतीत (से १४, १४)।

गिञ्जाय वि [विश्रान्त] १ निजले विश्राम किया हो वह (कुमा)। २ सुखि, निवृत्त (से १३, २३)।

गिञ्जाय वि [निर्वात] वायु रहित (छाया १, १, भोग)। गिञ्जायिअ वि [भायित] शुष्क किया हुआ (से १४, ५४)।

गिञ्जाय देखो गिञ्जर। गिञ्जायेवि (स ३५२)। संज्ञ. गिञ्जायिऊण (निबु १)।

गिञ्जाय दुं [निर्वाण] धी, शाक भादि का परिमाण (निबु १)। ‘कंठा की [कथा] एक तरह की भोजन कथा (अ ४, २)।

गिञ्जायइत्तअ (शौ) वि [निर्वाणपितृक] ठंडा करनेवाला (पि ६००)।

गिञ्जायण न [निर्वाण] बुझाना विष्णायन (वस ४)।

गिञ्जायण न [निर्वाण] बुझाना, ठंडा करना, उपशान्ति (गवड)।

गिञ्जायय वि [निर्वाण] भ्रातृ बुझानेवाला (सुम १, ७, ५)।

गिञ्जायिअ वि [निर्वाण] ठंडा किया हुआ (छाया १, १, वस ५, १)।

गिञ्जायण न [निर्वासन] देश निकाला (स ५३४, सुप १४३)।

गिञ्जायणा जी [निर्वासना] ऊपर देखो (पठम ६६, ४१)।

गिञ्जाह पु [निर्वाह] १ निम्नाता, पार प्राप्ति। २ आजीविका, जीवन-सामग्री, ‘निम्बाह किं पि दाउ व’ (सुपा ५८८)।

गिञ्जाहग वि [निर्वाहक] निर्वाह करने-वाला (रमा)।

गिञ्जाहण न [निर्वाहण] १ निर्वह, निम्नाता (सुपा ३६४)। २ निस्तार करना (राज)।

गिञ्जाहिअ वि [निर्वाहित] प्रतिवाहित, विलासा हुआ, गुलाब हुआ (से ६, ४२)।

गिञ्जाहिअ वि [निर्वाधिक] व्याधि रहित, बीरोग (से ६, ४२)।

गिञ्जिअप्प देखो गिञ्जिअप्प (सम ३३)।

गिञ्जिआर वि [निर्जिआर] विचार रहित (गा ३०६)।

गिञ्जिअइअ वि [निर्बहुतिक] १ घृत आदि विहृतिजनक पदार्थों से रहित (भोग)। २ न. प्रत्यक्षानुबोध, जिसमें घृत भादि विहृतियों का त्याग किया जाता है (वव ४, पंचा ३)।

गिञ्जिअइअ वि [निर्बिभिरस] फल-प्राप्ति में रुका रहित (वस २)।

गिञ्जिअइअ न [निर्बिभिरस] फल-प्राप्ति में रुका हुआ प्रमाण (उत्त २८)।

गिण्विइगिच्छा की [निर्विचित्रिता] फल-
प्राप्ति में शंका का भ्रमाव (श्रीप, पंडि) ।
गिण्विद सक [निर + विन्द] धन्यो उपह
विचारना । गिण्विदए (दस ४, १६, १७) ।
गिण्विद सक [निर + विद] शृणा करना ।
गिण्विदेज (सूय १, २, ३, १२) ।
गिण्विरूप } वि [निर्विरूप] १ सन्देश-
गिण्विराएय } रहित, नि संशय (कुमा, गच्छ
२) । २ भेद-रहित (सम् ३३) ।
गिण्विराह्य देखो गिण्विइय (संबोध ५८) ।
गिण्विराएया न [निर्विराएय] बौद्ध-अभिद
प्रत्यक्ष ज्ञान-विशेष (धर्मसं ३१३) ।
गिण्विगिअ देखो गिण्विइअ (वच २) ।
गिण्विगय वि [निर्विगय] विघ्न-रहित-बाधा-
वर्जित (सुपा १८७; सण) ।
गिण्विचित वि [निर्विचित] चिन्ता-रहित,
निश्चित (सुर ७, १२३) ।
गिण्विज अक [निर + विद] निर्वेद पाना,
विरक्त होना । गिण्विजेज्जा (उच) ।
गिण्विज वि [निर्विज] मूर्ख (उत्त ११, २) ।
गिण्विद वि [निर्वुद] उपार्जित, आनिगिद
सम्पद (पिंड ३७०) ।
गिण्विद वि [दे] उचित, योग्य (दे ४, ३४) ।
गिण्विद वि [निर्विद] उपयुक्त, प्राप्तित,
परिपालित (नाम, मणु) । *काइय न
[कायिक] जैन शास्त्र में प्रतिपादित एक
तरह का चार्पण (मणु; इक) ।
गिण्विण वि [निर्विण] निर्वैध-प्राप्त, खिन्न
(महा) ।
गिण्विज वि [दे] को कर उठा हुआ (दे ४,
३२) ।
गिण्विज देखो गिण्विज । २ इन्द्रिय व
आवर, इन्द्रिय विशेष (विशे २६६४) ।
गिण्विद देखो गिण्विद = निर + विद (सूय
१, २, ३, १२) ।
गिण्विदगुण वि [निर्विजगुण] शृणा-
रहित (धर्म १) ।
गिण्विअ देखो गिण्विण (उच) ।
गिण्विभाग वि [निर्विभाग] विभाग-रहित
(दस ५) ।
गिण्विअ देखो गिण्विअ (संबोध ५७, कुलक
१२) ।

गिण्वियण वि [निर्विजन] १ अनुप-रहित ।
२ न. एवात्त स्पत (सुर १, ४२) ।
गिण्विर वि [दे] विपद, वेडा हुआ; 'भइणि-
वित्तासाए' (सा ७२८ टि) ।
गिण्विराम वि [निर्विराम] विराम-रहित
(उप ४ १८३) ।
गिण्विलव क्रिबि [निर्विलव] विलम्ब-रहित,
शीघ्र (सुपा २५४; कुज ५२) ।
गिण्विवेअ वि [निर्विवेअ] विवेक-शून्य
(सुपा ३२३; ५००; पड, सुर ८, १८१) ।
गिण्विस सक [निर + विश] व्याप करना ।
गिण्विजेज्जा (वच) । वड. गिण्विसंत (राज) ।
गिण्विस सक [निर + विश] उपभोग
करना (पिंड ११६ टी) ।
गिण्विस वि [निर्विप] विप-रहित (श्रीप) ।
गिण्विसंक्र वि [निर्विशक्र] शंका-रहित,
निर्णय (सुर १२, १६) ।
गिण्विसमाण न [निर्विरामान] १ चारित्र-
विशेष (ठा ३, ४) । २ वि. उस चारित्र को
पालनेवाला (ठा ६) । *कप्पटिइ की
[कल्पस्थिति] चारित्र विशेष की भर्पाव
(कस) ।
गिण्विसय वि [निर्विशक] उपभोग-कर्ता
(पिंड ११६) ।
गिण्विसय वि [निर्विपय] १ विषयो की
अभिज्ञाता से रहित (उत्त १४) । २ अनर्थक,
निरर्थक (वचा १२; उप ६२५) । ३ देश से
बाहर किया हुआ, जिसको देशनिकासे की
सजा हुई हो वह (सुर १, ३६; सुपा ५६६) ।
गिण्विसिद्ध वि [निर्विशिद्ध] विशेष-रहित,
समान, तुल्य (उत्त ५३० टी) ।
गिण्विसी की [निर्विपी] एक महोपधि
(ती ५) ।
गिण्विसेस वि [निर्विशेष] १ विशेष-रहित,
समान, साधारण (स २३; सम्म ६६; प्रासू
६८) । २ अग्रिम, जो जुदा न हो (से १५,
६५) ।
गिण्वी की [निर्विकृति] उप-विशेष (संबोध
५७) ।
गिण्वीय देखो गिण्विअ (संबोध ५७) ।
गिण्वीरा की [निर्वीरा] पुन-रहित विषया
की (शोध ५६) ।

गिण्वुअ वि [निर्वृत] निर्वृति-प्राप्त (स
५६३; कप्प) ।
गिण्वुअ की [निर्वृति] १ निर्वाण, मोक्ष,
मुक्ति (कुम; प्रासू १६४) । २ मन की
स्वस्यता, निश्चिन्ता (सुर ४, ८६) । ३
सुख, दुःख-निवृत्ति (माव ४) । ४ जैन साधुओं
की एक शाखा (कप्प) । ५ एक राजकन्या
(उत्त ६३६) । *कर वि [कर] निर्वृतिजनक
(पणए १) । *जणय वि [जनक] निर्वृति
का उत्पादक (सा ४२१) ।
गिण्वुअरा की [निर्वृतिरा] भगवान्
सुमतिनाथ की दोहा-शिवाव (विचार
१२६) ।
गिण्वुअ देखो गिण्वुअ (हुमा; माचा) ।
गिण्वुअ वि [निर्वृत] भावित किया हुआ
(दस ३, ६, ७) ।
गिण्वुअ देखो गिण्वुअ = नि + मण् । वड.
गिण्वुअण (राज) ।
गिण्वुअ देखो गिण्वुअ । वड. गिण्वुअदे-
माण (कुज ६—पत्र ८०) । संक्र. गिण्वु-
अदेत्ता (सुज ६) ।
गिण्वुअ वि [निर्वुद] निराहित, निराया
हुमा (गा ३१) ।
गिण्वुअ देखो गिण्वुअ (गा १५४) ।
गिण्वुअ देखो गिण्वुअ = निर्वुद (पिंग) ।
गिण्वुअ देखो गिण्वुअ (गा ८२८) ।
गिण्वुअ देखो गिण्वुअ (संति ६) ।
गिण्वुअ देखो गिण्वुअ (प्राह ८) ।
गिण्वुअ देखो गिण्वुअ = निर + वड.
गिण्वुअ वि [निर्वुद] १ जिसका निर्वाह
किया गया हो वह । २ कृत, विहित, निर्मित
(गा २५५; से १, ४६) । ३ जिसने निर्वाह
किया हो वह, धार-प्राप्त (विदे ४४) । ४
त्यक्त, परिणुत (से ५, ६२) । ५ बाहर
निकाला हुआ, निस्तारित; 'गिण्वुअ ॥ पणसा
ततो गाढपयोसमाजमा' (उत्त १३१ टी) ।
गिण्वुअ वि [दे] १ सत्य (दे ४, ३३) ।
न. पर वा पश्चिम प्राण (दे ४, २६) ।
गिण्वुअ वि [निर्वुद] किसी वंश से
उद्भूत कर बनाया हुआ वंश (दशनि १,
१२) ।

गिसाम वि [नि इयाम] मानिन्य-रहित,
निर्मल (से ६, ४७)।

गिसामण देखो गिसामण (सुपा २३)।

गिमागिअ वि [दे. निशमित] १ ध्रुव,
भ्रमरिण (दे ४, २७; गा २६)। २ उप-
रहित, दबाया हुआ। ३ सिमटाया हुआ,
संकोचित; 'नस्सामिघो फणाम्मेयो' (स
३५८)।

गिसामर वि [निशमयित्] सुकनेवाला
(सण)।

गिसाय वि [दे.] प्रयुक्त (दे ४, ३५)।

गिसाय वि [निश्रमत्] खान दिया हुआ,
सीधण (पाष)।

गिसाय पुं [निपाद] १ बायडान, एक प्राचीन
जाति (दे ४, ३५)। २ स्वर-विशेष (ठा ७)।

गिसादत्त वि [निशातान्त्] सीधण धार-
वाला (पाष)।

गिसास सक [निर + स्वासय्] निःस्वास
डालना। वहु. गिस्सासयंत (पठम ६१,
७३)।

गिसास'देखो गीसास (पिण)।

गिसि' देखो गिसा (हे १, ८; ७२, पृष्ठ;
सुर १, २७)। 'पालअ पुं [पालक]
छक्क-विशेष (पिण)। 'भत न [भक्त]
रात्रि-भोजन (घोष ७८७)। 'भुत्त न
[भुक्त] रात्रि भोजन (सुपा ४६१)।

गिसिअ देखो गिसीअ शिषिअ (सण,
कण्)। संक. शिषिइत्ता (कण्)।

गिसिअ वि [निशित] खान दिया हुआ,
सीधण (से ५, ४६; महा' हे ४, ३३०)।

गिसिअ सक [नि + सिच्] प्रयोग करना,
डालना। संक. गिसिअकिय (भाषा)।

गिसिअा देखो गिसाअा (कण, सम ३५,
ठा ५, १)। ३ उपाय, साधुओं का स्थान
(पंच ४)।

गिसिअममाण देखो गिसेह = नि + पिप्।

गिसिअ वि [निअट्] १ बाहर निकाला
हुआ (भास १०)। २ दत्त, प्रदत्त (भास)।

३ अनुशास (बृह १)। ४ नगण्य हुआ।
त्रिचि. 'आमयहराई ...पठमो निहो निअिट्'
उवरभेई' (उर ६८६ दी)।

गिसिअ वि [निअिट्] प्रतिपिअ, निवाचित
(पंचा १२)।

गिसिय वि [न्यस्त] स्थापित (घमं ७३)।

गिसियण व [निपदन] उपवेशन (पव)।

गिसिर सक [नि + सज्] १ बाहर निकाल-
ना। २ देना, त्याग करना। ३ करना।

एतिअइ (भास ५, भग); 'शिरवरहाए'
निसिरति वे न दंई, तेवि हु पाविति निवार्ण'
(सुर १५, २३४)। कर्म. निसिरिअइ,
निसिरिअए (विसे ३५७)। वहु. निसिरत
(पि २३५)। वहु. निसिरिअमाण (पि
२३५)। संक. गिसिरिआ (पि २३५)।

प्रयो. निसिरावित (पि २३५)।

गिसिरण व [निसर्जन] १ निस्सारण (भास
२)। २ त्याग (छाया १, १६)।

गिसिरणया' छो [निसर्जना] १ त्याग,
गिसिरणा' धन (भास २, १, १०)।

२ निस्सारण, निकासन (भग)।

गिसीअ सक [नि + पद] बैठना। गिसीअइ
(भास)। वहु. गिसीअंत, गिसीअमाण
(भग १३, ६; सुम १, १०, २)। संक.
गिसीइत्ता (कण्)। हेह. गिसीइसए
(कस)। क. गिसीइवव्य (छाया १, १;
भग)।

गिसीअण न [निपदन] उपवेशन, बैठना
(उर २६४ दी, स १८०)।

गिसीआवण न [निपादन] बैठना (कस ४,
२; दी)।

गिसीअ देखो गिसीह = निशीव (हे १०, २१६;
कुमा)।

गिसीअण देखो गिसीअण (प्रीष)।

गिसीह पुं [निशीय] १ मध्य रात्रि (हे १,
२१६; कुमा)। २ प्रकाश वा अंधाव (निब्र
३)। ३ नैन आगम-अन्य विशेष (एदि)।

गिसीह पुं [नृसिंह] उत्तम पुरुष, श्रेष्ठ यशुव्य
(कुमा)।

गिसीहिय वि [नैरीयिक] निज के लिए
लाया गया है ऐसा नहीं जाना हुआ भोज-
नादि पदार्थ (पिठ ३३६)।

गिसीहिया छो [नैपेधिकी] १ शव-परिष्ठा-
पन-भूमि, स्मशान-भूमि (धणु २०)। २
बैठने की जगह (राय ६३)।

गिसीहिया छो [नैरीयिक] १ स्वाध्याय-
भूमि, अध्ययन स्थान (भाषा २, २, २)।

२ मोड़े समय के लिए उपात स्थान (भग
१४, १०)। ३ भाषा-राज्य सूत्र का एक
अध्ययन (भाषा २, २, २)।

गिसीहिया छो [नैपेधिकी] १ स्वाध्याय-
भूमि (सम ४०)। २ पाप-क्रिया का स्थान
(पडि; कुमा)। ३ व्यापारान्तर के विशेष रूप
भाषार (ठा १०)। देखो गिसेहिया।

गिसीहिया छो [निशीयिनी] रात्रि, रात
(उर ११७)। 'नाह पुं [नाथ] चद्रमा
(कुमा)।

गिसुअ वि [दे. निधुत्] ध्रुत, भ्रमरिण
(दे ४, २७; सुर १, १६६; २, २२६;
महा, पाष)।

गिसुअ पुं [गिसुअ] रावण का एक सुभट
(पठम ३६, २६)।

गिसुअ सक [नि + शुम्भ] मार डालना,
व्यापदन करना। कवक. गिसुअंत, गिसु-
अंत (से ५, ६६; १४, ३; पि ५३५)।

गिसुअ पुं [गिसुअ] १ स्वनाम ब्यात एक
राजा, एक प्रतिवातुदेव (पठम ५, १५६,
पव २११)। २ दैत्य-विशेष (पिण)।

गिसुअण न [गिसुअण] १ मर्दन, व्यापदन,
बिनाश। २ वि. मार डालनेवाला (सुम १,
५, १)।

गिसुअ छो [गिसुअ] स्वनाम-ब्यात एक
हस्तराणी (छाया २, ६६)।

गिसुअिय वि [गिसुअित] निपातित, व्या-
पादित (सुपा ४६०)।

गिसुअ } वि [दे] ऊपर देखो (हे ४,
गिसुअिअ } २५८, से १०, ३६)।

गिसुअ देखो गिसुअ = नम। निबुअइ (पठ)।

गिसुअइ देखो गिसुअइ (हे ४, २५८ टि)।

गिसुअ सक [नम] मार से आक्रान्त होकर
नीचे गमना, झुकना। गिसुअइ (हे ४, १५८)।

गिसुअ सक [नि + शुम्भ] मारना, मार
कर मारना। कवक. गिसुअिअजत (से ३,
गिसुअिअ वि [नत] मार से नमा हुआ
(पाष)।

गिसुअिअ वि [गिसुअिअ] निपातित (से
१२, ६१)।

णिमुडिर वि [नघ] नार से नमा हुमा (हुमा)।

णिमुण नक [नि + ध्रु] सुनना, ध्रुवण करना।
निमुणद, णिमुणै, णिमुणै (सह, महा-
सहि १२८)। बह, निमुणद, निमुणमाण
मुपा १०६; दुर १२, १७४। कवह-
निमुणिज्जत (मुपा ४५; खण १६४)।
सह निमुणितं, निमुणिऊण, णिमुणिऊणं
(मुपा १४, महा, पि ५८५)।

णिमुद वि [दे] १ पावित, गिराया हुआ
(दे ४, १६, पाप, से ५, ६८)।

णिमुवमंठ देवो णिमुम = नि + शुम्भ।

णिमुग देवो णिमुग (मुपा ३७०)।

णिमुद देवो णिमुद = नि + शुम्भ। हेहू.

निमुडि (मुपा १६६)।

णिमुद देवो णिमुद = नि + सह। निमुद
(प्राह ७२)।

णिमुग देवो णिमुग (पंच ५, ४६)।

णिमुगजा क्षो [निपद्या] बह, कपडा (पव
१२७ टी)।

णिमुगजा देवो णिमुगजा (उव, पव ६७)।

णिमुगज वि [निपेय] निपेय-शोध (धर्म-
स ६६३)।

णिमुगि देवो णिमुगि (दुर ११, १६०)।

णिमुगि पुं [निपेय] १ कर्म-पुद्गलो की
रचना-विशेष (डा ६)। २ सेवक, शोचन।

‘ता संपद जिणवर्द्धिदसणमननिएण पीणि-
ज्जत निवर्द्धि’ (मुपा २६६), ‘नाप्रापि

धुल्लि मिच्छिद्वमनिमे’ (मुपा २०)।

णिमुगि सव [नि + सेय] १ सेवा करना,
भावर करना। २ आश्रय करना। निपेवह,
निपेवण (महा, उर)। बह, णिमुगिमाण
(महा)। कवह णिमुगिज्जत (शोध ५६)।

हू, निमुगिज्जत (मुपा ३७)।

णिमुगि सव [नि + सेय] आश्रयना।

णिमुगि (अग्न १७६)।

णिमुगि देवो णिमुगि (सूय २, ६, ५)।

णिमुगिणा क्षो [निपेयणा] सेवा, भजना
(उत्त ३२, ३)।

णिमुगि वि [निपेयक] १ सेवा करनेवाला,
सेवक। २ आश्रय करनेवाला (शुक्क २५१)।

णिमुगि वि [निपेयणा] ऊपर देखो (समत
१५५, संशोध ३४)।

णिसेवि वि [निपेयिन्] ऊपर देखो (स १०)।

णिसेवि वि [निपेयित] १ सेवित, आदृत
(आश्रय)। २ आश्रित (उत्त २०)।

णिसेह सक [नि + पिध] निपेय करना,
निवारण करना। निसेह (हे ४, १३४)।

कवह, निसेज्जमाण (मुपा ५७२)।

हेहू, निसेहिदं (स १६८)। हू, निसेहि-

-वज्जा समयपि माया (सत ३५)।

णिसेह पुं [निपेय] १ प्रतिपेय, निवारण
(उव, प्राह १८२)। २ अश्रय (शोध ५१)।

णिसेहण न [निपेयन] निवारण (आश्रय)।

णिसेहणा क्षो [निपेयना] निवारण (आश्र १)।

णिसेहिया देवो णिसीहिआ = नेपेविरो।

१ बुद्धि, मोक्ष। २ यशस्व-भूमि। ३ वैठने
का स्थान। ४ निवृत्त, द्वार के समीप का
भाग (राज)।

णिस्स वि [नि स्स] निर्धन, धन-रहित
(पाम)। ‘यय वि [कर] १ निर्धन-कारक।

२ कर्म को दूर करनेवाला (आश्र २, १६,
१)।

णिस्सक पुं [दे] निर्मल (दे ४, ३२)।

णिस्सक वि [नि शक्क] १ शक्का-रहित
(सूय २, ७, महा)। २ न, शक्का का
अभाव (पवा ६)।

णिस्सकिअ वि [नि शक्कि] १ शक्का-
रहित (शोध ५६ मा, खाया १, ३)। २ न,
शक्का का अभाव (उत्त २८)।

णिस्सग वि [नि सङ्ग] सङ्ग-रहित (मुपा
१४०)।

णिस्संचार वि [नि संचार] संचार रहित,
समागमन-वर्जित (खाया १, ८)।

णिस्संजम वि [निस्सयम] समय-रहित
(पव २७, ५)।

णिस्सत वि [नि शान्त] प्रशान्त, धर्तिशय
शान्त (राय)।

णिस्सदं देवो पीसद (पण्ड १, १; नाट—
मल्लो ५१)।

णिस्सदेह वि [निस्सदेह] सदेह-रहित,
निधय, नि सयय (नाट)।

णिस्संधि वि [निस्सग्धि] सधि रहित, साधा
से रहित (पण्ड १, १)।

णिस्सस वि [नुंस] बुर, निर्दय (महा)।

णिस्सस वि [नि संस] स्वाभाव-रहित (पण्ड
१, १)।

णिस्ससय वि [नि सराय] १ संशय रहित।

२ निर्वि. नि सदेह, निचय (प्रति १८५;
आश्रय)।

णिस्सक एक [नि + पण्ण] कम करना,
घटना। सङ्ग, निस्सकिय (आश्र २, १,
७, २)।

णिस्सग पुं [नि स्सग] शब्द, पावाण (मुपा
२७)।

णिस्सण वि [नि संस] संज्ञा-रहित (सूय
१, ५, १)।

णिस्सस वि [नि मस] धैर्य रहित, मर-
होन (मुपा ३५६)।

णिस्सस देवो णिस्सण (खण ५)।

णिस्ससम अक [नि + अम] वैज्ञान।

बहू, णिस्ससमंत (सि ६, ३८)।

णिस्सय पु [निशय] देवो णिस्सा (सबोव
१६)।

णिस्सर अक [नि + स] बाहर निकलना।

णिस्सर (कप)। बहू, णिस्सरंत (नाट—
वेत ३८)।

णिस्सरण वि [नि सरण] निर्गमन, बाहर
निकलना (डा ४, २)।

णिस्सरण वि [नि शरण] शरण-रहित,
आश्रय-वर्जित (पवम ७३, ३२)।

णिस्सरिअ वि [दे] वस्त, लिखना हुआ (दे
४, ४०)।

णिस्सह वि [नि शलप] शलप-रहित (उप
३२० टी, द्र ५७)।

णि-सस अक [नि + अस] नि शयान
सेना। निम्पवद, णिस्ससति (मा)। बहू.

णिस्ससिज्जमाण (डा १०)।

णिस्सह वि [नि सह] मन्द, धरक (हे १,
१३, ६३, मुपा)।

णिस्सा क्षो [निशा] १ आश्रय, आश्रय,
सहाय (डा ४, १)। २ अश्रय (उत्त १६०
टी)। ३ वसपाद (ख ३)।

णिस्साग न [निशाग] निशा, भवत्भजन
(पण्ड १, ३)। ‘पय = [पद] आश्रय
(हह १)।

णिस्साण पुं [नि] वाय विशेष, निशान,
‘वज्जित्तिमाणपुरवणो’ (धर्मवि ५६)।

गिस्सार सक [निर + सारय्] बाहर निकालना । निस्सारद (कुत्र १५४) ।

गिस्सार } वि [नि सार] १ सार होन,
गिस्सारण } निरर्थक (अणु, सूत्र १, ७,
भाषा) । २ जोएँ पुराना (भाषा) ।

गिस्सारय [नि सारक] निकालनेवाला (उप २०० टी) ।

गिस्सारिय वि [नि सारित्] १ निकाला हुआ । २ क्यावित, भ्रष्ट किया हुआ (सूत्र १, १५) ।

गिस्सास पु [नि श्वास] नि श्वास, नीचा श्वास (भग) । २ काल नात विशेष (इक) । ३ प्राण-वायु, प्रश्वास (प्राप) ।

गिस्साहार वि [नि स्वाधार] निपाधार, आलम्बन रहित (सण) ।

गिरिसिग वि [नि शृङ्ग] श्रुत रहित (सुपा ३१३) ।

गिरिसिधिय न [नि शिद्धित्] अत्यक्त शब्द-विशेष (विते ५०१) ।

गिरिसिच प्रक [निर + सिच्] प्रलेप करना, डालना कंकना । वक्र. गिरिसिचभाषण (राज) । सङ्ग गिरिसिचिया (वत ५, १) ।

गिरिस्नेह वि [नि स्नेह] स्नेह-रहित (पि १५०) ।

गिरिसिय वि [निभित] १ आधित, प्रबलम्बित (ठा १०, भास ३८) । २ भासक, अवृत्तक तत्त्वोत्त (सूत्र १, १, १, भा ५, २) । ३ न, राग भासक्ति (ठा ५, २) ।

गिरिसिय वि [निभित] १ निबय से बद्ध (सूत्र २, ६, २६) । २ पक्षपाती, रागी (वव १) ।

गिस्सय वि [नि स्त] निर्गत, निर्वात (भास ३८) ।

गिस्सील वि [नि शील] सदाचार रहित, दु शील (पञ्चम २, ८८, ठा ३, २) ।

गिस्सूम वि [नि शूक] निर्दय, निष्कण (व्या १२) ।

गिस्सेजा देखो गिसेजा (पव १२७) ।

गिस्सेणि की [नि श्रेणि] छोटी (पणह १, १, पाप) ।

गिस्सेयस न [नि श्रेयस] १ कल्याण, २ न, लेम (ठा ५, ४, छाया १, ८) ।

२ मुक्ति, मोक्ष, निर्वाण (मीप एदि) । ३ अमृत्युय ऊनति (उत ८) ।

गिस्सेयसिय वि [नि श्रेयसिक] मुमुक्षु, मोक्षार्थी (भग १५) ।

गिस्सेस वि [नि श्रेष] सर्व, सब, सकल (उप २००) ।

गिह वि [निभ] १ समान, तुल्य, सदृश (से १, ५८ या ११४, दे १, ५१) । २ व, बहुना व्याज, खन (पाप) ।

गिह वि [निह] १ मायावी, कपटी (सूत्र १, ६) । २ वीरित (सूत्र १, २, १) । ३ न, आपात-स्थान (सूत्र १, ५, २) ।

गिह वि [निह] रागी, राग-युक्त (भाषा) । गिहतञ्ज देखो गिहण = नि + हन् ।

गिहस पु [निघर्ष] घर्षण (पठड) ।

गिहसण न [निघर्षण] घर्षण, रगड (से ५, ४६ नउड) ।

गिहट्ट ट्ट ध. १ चुदा कर, धुक्क करके (भाषा) । २ स्थापन कर (शाया १, १९) ।

गिहट्ट वि [निघट्ट] घिसा हुआ (दि २, १७४) ।

गिहण सक [नि + हन्] १ निहत करना, मारना । २ कंकना । छिहणामि (कुत्र २६२) । छिहणाहि (कप) । मुका—छिहणित्तु (भाषा) । वक्र निहणंत (सण) । सङ्ग. गिहणिचा (पि ५८२) । कृ गिहतव्य (पञ्चम ६, १७) ।

गिहण सक [नि + खन्] गायना । निहणति बरा धरणीयलभि (वज्जा ११८) । हेक 'बोरो दब निहणि उम् मारदो' (महा) ।

गिहण न [नि] कूल, तीर, किनारा (दि ५, २३) ।

गिहण त [निघन] १ मरण, विनाश (पाप जी ४६) । २ पु राखण का एक सुभट (पञ्चम ५६, ३२) ।

गिहणन न [निहनन] निहति, मारना (महा स १६३) ।

गिहणित्तु वि [निहत] मारा हुआ (सुपा १५८ सण) ।

गिहत्त सक [निघत्तय्] कर्म को निबिड रूप से बानना । मुका छिहणित्तु (भग) । भवि छिहत्तेसति (भग) ।

गिहत्त देखो गिघत्त (भग) ।

गिहत्तण न [निघत्तन] कर्म का निबिड बचन (भग) ।

गिहत्ति देखो गिघत्ति (राज) ।

गिहम्म सक [नि + हम्म्] जाना, गमन करना । गिहम्मद (हे ४, १६२) ।

गिहय वि [निहत] मारा हुआ (गा ११८, सुर ३, ४६) ।

गिहय वि [निहात] गाड़ा हुआ (स ७५६) । गिहूर सक [नि + ह्] पाबाना जाना (श्रामा) ।

गिहूर सक [आ + क्रन्द्] चिल्लाना । छिहूरद (पडू) ।

गिहूर सक [निर + च्] बाहर निकलना । छिहूरद (पडू) ।

गिहूरण देखो गीहूरण (शाया १, २—पञ्च ८६) ।

गिहय देखो गिहुय । छिहवद (नाट, पि ४१३) ।

गिहय वि [दि] सुन्द, सोया हुआ (पडू) । गिहय पु [निघह] समूह (पडू) ।

गिहस सक [नि + घृप्] धितना । सङ्ग. गिहसिजण (उव) ।

गिहस पु [निरुप] १ कपपट्टक, कसौटी का पत्थर (पाप) । २ कसौटी पर की जाती रेखा (हे १, १८६, २९०, प्राप) ।

गिहस पु [निघर्ष] घर्षण, रगड (से ६, ३३) ।

गिहस ॥ [दि] वलीक, सर्व मादि का बिल (दि ४, २५) ।

गिहसण न [निघर्षण] घर्षण, रगड (से ६, १०, गा १२१, गउड वज्जा ११८) ।

गिहसिय वि [निघर्षित्तु] घिसा हुआ (वज्जा १५०) ।

गिहा की [निहा] माया, कपट (सूत्र १, ८) ।

गिहा सक [नि + धा] स्थापना करना । निहव (स ७३८) । कवक. गिहिप्पत (से ८, ६७) । सङ्ग. गिहाय (सूत्र १, ७) ।

गिहा सक [नि + हा] ध्याग करना । सङ्ग गिहाय (सूत्र १, १३) ।

गिहा सक [दहा] देवता । छिहाड, गिहाआ } छिहाआड (पडू) ।

निहाण न [निघाण] बहु स्थान जहाँ पर घन भादि मादा गया हो, खजाना भण्डार (उवा, गा ३१८, गड) ।

निहाय पुं [दे] १ स्वेद, पसीना (दे ४, ४६) ।
२ समूह, जग्या (दे ४, ४६, से ४, ३८, स ४४६, मवि पाप, गडउ, मुर ३, २३१) ।
निहाय पुं [निघात] आघात, आस्फालन (से १५, ७०, महा) ।

निहाय देखो निहा = नि + घा, नि + हा ।

निहाय पु [निहाव] मय्यक्त शब्द (सुस ४, ६) ।

निहार पु [निहार] निर्गम (पण्ड १, ५ का ८) ।

निहारिम ॥ [निहारिम] जिसके मृतक शरीर को बाहर निकालकर सस्कार किया जाय उसका मरण (मग) । २ वि. दूर जाने-वाला, दूर तक फैलनेवाला (पण्ड २, ५) ।

निहाल देखो निभाल । निहालेहि (स १००) । बहू निहालत, निहालयत (उप १४८ टी १८६ थे) । संह. निहालेउ (गण्ड १) । कृ निहालेयउ (उप १००७) ।

निहाणन न [निभालन] निरीक्षण, भ्रमलोकन (उप ७७२, मुर ११, १२, सुभा २३) ।

निहालिख वि [निभालित] निरीक्षित (पाप, स १००) ।

निहि वि [निधि] १ खजाना, भंडार (खया १, ३३) । २ घन भादि से भर हुआ पात्र । (हे १, ३५ ३, १६, ठा ५, ३) 'मन्वेखर एहि निधि सग्ये रजनी व भमयपाण प' (गा १२५) । ३ शत्रुवर्ती राजा की संपत्ति-विशेष, सैन्य भादि नव निधि (ठा ६) ।
'नाह ॥ [नाय] कुबेर, पनेश (पाप) ।

निहि पुकी [निधि] लगातार नव दिन का उपवास (समोष ५८) ।

निहिख वि [निहित] स्थापित (हे २ ६६ प्राप) ।

निहिण वि [निभिन्न] विदारित (भञ्जु १६) ।

निहित देखो निहिख (गा ५६५, काप ६०६, प्राप) ।

निहिपत देखो निहा = नि + घा ।

निहिख वि [निखिल] सब, सकल (भञ्जु ६, प्राप ५५) ।

निहिख देखो निहिख (सुख २, ४३) ।

निही की [दे] वनस्पति विशेष (राज) ।

निहीण वि [निहीन] म्लान (कुप ४५४) ।

निहीण वि [निहीन] तुच्छ, खराब, हलका, सुदृ, 'अथि निहीणे देहे किं पापनिवर्षणं तुष्णं ?' (उप ७२८ टी) ।

निहू की [निहू] औषधि विशेष (जीव १) ।

निहुअ वि [निहूत] १ बुद्ध, ब्रह्मचर, क्षिपा हुमा (से १३, १५, महा) । २ विनीत, मनुद्धत (से ४, ५६) । ३ मन्द, धीमा (पाप, महा) । ४ निबल, स्थिर (उत्त १६) । ५ भ्रमजान्त, सम्भ्रमरहित (दस ६) । ६ घृत धारण किया हुमा । ७ निर्जन, एकांत । ८ अस्त होने के लिए उपस्थित (हे १, १३१) । ९ उपरात (पण्ड २, ५) ।

निहुअ वि [दे] १ व्यापार रहित, अनुद्युत, निस्चेष्ट (दे ४, ५०, से ४, १, सुष १, ८ गृह ३) । २ सुष्णीक, मौन (दे ४, ५०, मुर ११ ८४) । ३ न सुख, मैथुन (दे ४, ५० पद) ।

निहुअण देखो निहुवण (गा ४८१) ।

निहुआ की [दे] नमिला, समोष के लिए प्रायित की (दे ४, २६) ।

निहुण न [दे] व्यापार, व्याध (दे ४ २६) ।

निहुत्त वि [दे] निमग्न, डूबा हुमा (पवम १०२, १६७) ।

निहूतिभगा की [दे] वनस्पति विशेष (पण्ड १—पद ३५) ।

निहुव सक [काम्य] संयोग का प्राप्तिपाय करना । निहुवह (हे ४, ४४) ।

निहुवण न [निहुवन] सुरत, समोष (कम्प काप १६४), निहुवणनुविमणाहिहूविमा' (से ४२) ।

निहुअ न [दे] १ सुरत, मैथुन (दे ४, २६) ।

२ वि. भ्रमिच्छिन्नकर (मिसे २६१७) । देखो नीहूय ।

निहूलेण न [दे] १ गृह घर, मकान (दे ४, ५१, हे २, १७४, कुमा, उप ७२८ टी, स १८०, पाप भवि) । २ जवध, स्त्री के कमर के नीचे का भाग (दे ४, ५१) ।

निहो ॥ [न्यग] १ नीचे (सुम १, ५, १, ५) । निहोड सक [नि + वारय] निवारण करना, निषेध करना ।

निहोड्ड (हे ४, २२) । बहू निहोड्डत (कुमा) ।

निहोड सक [पातय] १ गिराना । २ नाश करना । निहोड्ड (हे ४, २२) ।

निहोड्डि वि [पातित] १ गिराया हुमा (दस ३) । २ विनाशित (उप ५६७ टी) ।

णी सक [गम्] जाना गमन करना । णीइ (हे ४, १६२ गा ४६ म) भवि, णीहसि (गा ७४६) । बहू, णित, णै (से १, २, गडउ, गा ३३४, उप २६४ टी गा ४२०) । संह. णितूय, नीड (गडउ, मिसे २२२) ।

णी सक [नी] १ से जाना । २ जानना । ३ ज्ञान करना, वतलाना । णेइ, णयइ (हे ४, ३३७, मिसे ६१४) । बहू, णैत (गा ५०, कुमा) । कवहू णिज्जत, णीअमाण (गा ६८२ प से ६, ८१, कुपा ४७६) । संह. णइअ, णेउ, णेउआण, णेऊण (माट—मुच्छ २६४, कुमा, पद, गा १७२) । हेऊ. णेउ (गा ४६७, कुमा) । कृ. णेअ, णेअव्व (पवम ११६, १७, गा ३३६) । प्रयो. णेयवइ (सण) ।

णीअअ वि [दे] समीचीन, सुन्दर (पिंग) ।

णीआरण न [दे] बलि पट्टी, बली रखने का छोटा कलश (दे ४, ४१) ।

णीइ की [नीति] १ न्याय, उचित व्यवहार, न्याय व्यवहार (उप १८६, महा) । २ नय वस्तु के एक धर्म की मुख्यतया माननवाला मत (ठा ७) । 'सरथ न [शाक] नीति' प्रतिपादक शाक (मुर ६, ६१, सुभा ३४०, महा) ।

णीअ की [नीका] कुल्या, नहर, सारणि (कुमा) ।

णीअय वि [निक्षत] निक्षिप्त सङ्घर्ष 'नय नीययवस्थाण तीरइ काऊण मुत्तस' (विचार ८) ।

णीअअ न [नीचैत्] १ नीचे, अध (हे १, १५४) । २ वि. नीचा, घन स्थित (कुमा) ।

णीछ्छ देखो णिच्छ्छ (एदि) ।

गीजूह देखो गिज्जूह = दे, निरुह (राज) ।
 गीड देखो गिड्ड (ग १०२; हे १, १०६) ।
 गीण सक [गम] जाना, गमन करना ।
 गीणह (हे ४, १६२) । गीणित (कुमा) ।
 गीण सक [गी] १ ने जाना । २ बाहर ले जाना, बाहर निकालना; 'मारभंडाणि गीणह, भसारं धनउभग्ग' (उत्त १६, २२) । भवि, मोरोहिद (महा) । वक्र, गीणेमाण । वक्क, नीणिज्जन गीणिज्जमाय (वि ६२; भाचा) । संकृ गीणेऊण, गीणेत्ता (महा, उवा) ।
 गीणाविय वि [नायित] दूसरे द्वारा ले जाया गया, ग्रन्थ द्वारा स्नानोद (उप १३६ टी) ।
 गीणिअ वि [गन] गया हुआ (पात्र) ।
 गीणिअ वि [नीत] १ ले जाया गया (उप ५६७ टी, सुपा २६१) । २ बाहर निकाला हुआ (आमा १, ४); 'उपरपविट्ठुरिमाए नीणिमो वंतपभारो' (सुपा ३८१) ।
 गीणिआ औ [नीनिका] चतुरिन्द्रिय जानु की एक जाति (जीव १) ।
 गीम पुं [नीप] १ बुल-विशेष, बर्दब का पेड़ । २ न. फल-विशेष (स ५, २, २१) ।
 गीम पुं [नीप] बुल-विशेष, कदम्ब का पेड़ (पण्ण १; जीप, हे १, २१४) ।
 गीमम वि [निर्मम] ममत्व-रहित (ग्रन्थ १०६) ।
 गीमी देखो गीमी (कुमा, पट्) ।
 गीय वि [नीच] १ नीच, अधम, जघन्य (उवा, सुपा १०७) । २ वि. अपस्तन (सुपा ६००) । 'गीय न [गीत्र] १ सुद गोत्र । २ कर्म-विशेष, जो सुद जाति में जन्म होने का कारण है (अ २, ४, भाचा) । ३ वि. नीच गोत्र में उत्पन्न (सूत्र २, १) ।
 गीय वि [नीत] ले जाया गया (भाचा, उव, सुपा ६) ।
 गीय देखो गिच्च = नित्य (उव) ।
 गीयंगम वि [नीचंगम] नीचे जानेवाला (सुक्क ४०३) ।
 गीयंगमा औ [नीचंगमा] नदी, तरंगिणी (मत्त ११६) ।

गीर न [नीर] जल, पानी (कुमा, प्रामू ६७) ।
 'निहि पुं [निधि] समुद्र, सागर (सुपा २०१) । 'रूह न [रूह] वसत (ती ३) ।
 'वाह पुं [वाह] मेघ, धन्न (उप ५ ६२) ।
 'हर पुं [गृह] समुद्र, सागर (उप ५ ११६) ।
 'हि पुं [धि] समुद्र (उप ६ ८८ टी) ।
 'कर पुं [कर] समुद्र (उप ५ ३० टी) ।
 गीरंगा औ [दि. नीरङ्गा] विर वा मयणुएल्ल, शिरोवल्, धूवट (हे ४, ३१, पात्र) ।
 गीरंज सक [भञ्ज] लोहना, मंगना ।
 गीरंजइ (हे ४, १०६) ।
 गीरंजिअ वि [भग्न] तोड़ा हुआ, छिन्न (कुमा) ।
 गीरंध वि [नीरन्ध्र] निरिच्छ (कण्ण) ।
 गीरण न [दि] घास, चारु, 'विक्कलो वंजलमरं नीरिणएल्लोएणसज्जुल' (सुपा ५०१) ।
 गीरय वि [नीरजस्] १ रजो-रहित, निर्मल, शुद्ध, 'सिद्धि गच्छइ गीरयो' (उप १६; पण्ण १६; सम १३७; पउम १०३, ११४; सावं ११२) । २ पुं. ब्रह्म-देवबोका का एक प्रसव (अ ६) ।
 गीरय सक [आ + क्षिप] भाक्षेप करना ।
 गीरवइ (हे ४, १४४) ।
 गीरय सक [उमुश] खाने को चाहना ।
 गीरवइ (हे ४, ५) । दूक. गीरवीम (कुमा) ।
 गीरव वि [आक्षेपक] भाक्षेप करतेवाला (कुमा) ।
 गीरस वि [नीरस] रस-रहित, शुष्क (गडड, महा) ।
 गीरसजल न [नीरसजल] धार्यविल तप (सबोव ५८) ।
 गीरामा } वि [नीराम] राग-रहित, वीतराग
 गीरया } (गडड, कुप्र १२५. कुमा) ।
 गीरेणु वि [नीरेणु] रजो-रहित, धूल रहित (गडड) ।
 गीरोग वि [नीरोग] योग-रहित, तंडुल्लत (जीव ३) ।
 गील छक [निर + स] बाहर निकलना ।
 नीरुह (हे ४, ७६) ।
 गील पुं [नील] १ हरा वर्ण, नीला रंग (अ १) । २ ब्रह्मविद्यायक देव-विशेष (अ २,

३) । ३ रामचन्द्र का एक मुकुट, धानर-विशेष (स ४, ५) । ४ छन्द-विशेष (निग) ।
 ५ पर्वत-विशेष (अ २, ३) । ६ न. रत्न की एक जाति, नीलम (आमा १, १) । ७ वि. हरा वर्णवाला (पण्ण १, राय) । 'कंठ पुं [कण्ठ] १ शस्त्र का एक सेनापति, शस्त्र का महिष-मेघ का अधिपति देव-विशेष (अ ५, १; इव) । २ मयूर, मोर (पात्र; सुत्र २४७) । ३ महादेव, शिव (कुप्र २४७) । 'कण्डीर पुं [करवीर] हरे रंग के फूलोंवाला वने का पेड़ (राय) ।
 'गुफा औ [गुफा] उद्यान-विशेष (भावम) । 'मणि पुं औ [मणि] रत्न-विशेष, नीलम, मरत्त (कुमा) । 'लेस वि [लेदय] नील रेरयावाला (पण्ण १७) । 'लेसा औ [लेदय] बभ्रुम ग्रन्थवसाय-विशेष (सम ११; अ १) । 'लेस देखो लेस (पण्ण १७) । 'लेसा देखो 'लेसा (राज) । 'वत पुं [वत्] १ पर्वत-विशेष (अ २, ३; सम १२) । २ द्रव-विशेष (अ ५, २) । ३ न. शिखर विशेष (अ २, ३) ।
 गील वि [नील] कच्चा, भद्र' (भाचा २, ४, २, १) । 'केसी औ [केदी] तस्फी, धुवति (वव ४) ।
 गीलरटी औ [दे] बुल-विशेष, बाण-मुत्ता (हे ४, ४२) ।
 गील्य औ [नील] १ नेरया-विशेष, एक तरह का घास का प्रमुख परिणाम (कम्म ४, १३. मव) । २ नीलवर्णवाली औ (पट्) ।
 गीलिअ वि [नि सृत्] निर्गत, निर्पात (कुमा) ।
 गीलिअ वि [नीलिन] नील वर्ण का (उप ५ ३२) ।
 गीलिआ देखो गीला (मव) ।
 गीलिम पुं औ [नीलिमन्] नीलवत्, नीलायन, हरायन (सुत्र १३७) ।
 गीली औ [नीली] १ वनस्पति-विशेष, नील (पण्ण १; उर ६, ५) । २ नील वर्णवाली औ (पट्) ३ ब्राह्म वा रोम (कुप्र २१३) ।
 गीलुङ्ग सक [कु] १ निष्पत्तन करना । २ आन्दोल करना । गीलुङ्गइ (हे ४, ७१, पट्) । वक्र, गीलुङ्गट (कुमा) ।

पीलुङ्ग सक [गम्] जाना, गमन करना ।
पीलुङ्गकइ (हे ४, १६२) ।

पीलुप्पल न [नीलोत्पल] नील रंग का
कमल (हे १, ८४; कुमा) ।

पीलुय पुं [दि] अथ वी एक उत्तम जाति
(सम्मत २१६) ।

पीलोभास पुं [नीलावभास] १ बहाधि-
ह्रायक देव-विशेष (हा २, ३) । २ वि. नील-
चटाय, जो नीला मालूम देता हो (शाया
१, १) ।

पीय पुं [नीय] बुद्ध-विशेष, बन्धन का पेड़
(हे १, २३४; कल्प शाया १, ६) ।

पीनार पुं [नीवार] बुद्ध-विशेष, तिल्ली का
पेड़ (गठङ) ।

पीवार पुं [नीवार] ब्रीहि-विशेष (सुप्त १,
३, २, १६) ।

पीपी क्षी [पीपी] मूल वन, पृथ्वी । २ नाप,
इजारपद्ध (पद्, कुमा) ।

पीसंक देखो गिस्संक = निःशंक (गा ३४४;
कुमा) ।

पीसंक पुं [दि] इवय, बेल (पद्) ।

पीसकिअ देखो गिस्सकिअ (विसे ५६२;
सुर ७, १५५) ।

पीसंर वि [निःसंख्य] सख्या-रहित, असंख्य
(सुपा ३५५) ।

पीसंचार देखो गिस्संचार (पउम ३२, १) ।

पीसंद पुं [निःप्यन्द] रस-स्त्वित, रस का
भक्षण (गठङ) ।

पीसंदिअ वि [निःप्यदिअ] भय हुआ,
टपका हुआ (पाम) ।

पीसंदिर वि [निःप्यदिअ] करनेवाला, टप-
कनेवाला (सुपा ५६) ।

पीसंपाय वि [दि] जहाँ जगज्ज गरीयान्त
हुमा हो वह (हे ४, ५२) ।

पीसट्ट वि [निःसट्ट] १ विमुक्त (पणह १,
१—पण १८) । २ प्रवत (वृह २) । ३ क्रिचि,
भविष्य, भव्यन्त, 'पीसट्टमयेपेणीं शु वा
कर' (उव) ।

पीसण पुं [निःस्वण] भ्रातृन्, शब्द, ध्वनि
(सुर १३, १८२; सुप्त ५६) ।

पीसणिआ } क्षी [दि] निःशेषि, खोटी (दे
पीसणी } ४, ४३) ।

पीसत्त वि [निःसत्त] सर्व-हीन, वत-रहित
(पउम २१, ७५; कुमा) ।

पीसद्द वि [निःशब्द] शब्द-रहित (हे ७,
२८; भवि) ।

पीसर शक [रम्] क्रीडा करना, रमण करना ।
पीसरद्द (हे ४, १६८) क पीसरणिज्ज
(कुमा) ।

पीसर शक [निर + स] बाहर निकलना ।
पीसरद्द (हे ४, ७६) । वङ्ग. नीसरंत
(श्रोष ५४८ टी) ।

पीसरण न [निःमरण] निगलन, रपटन
(वच ४) ।

पीसरण म [निःसरण] निर्गमन (से ६,
१८) ।

पीसरिअ वि [निःसत्त] निर्गत, निर्वात
(सुपा २४७) ।

पीसल वि [निःशाल] १ निरवत, स्थिर ।
२ बह्वा-रहित, उच्चांग, सपाट; 'नीसलतट्ठिय-
पंतायएहि मयियचरविकयादेव' (सुर ३, ७२) ।

पीसल वि [निःशाल्य] शन्य-रहित (भवि) ।

पीसव सक [नि + श्रावय] निर्वास करना,
लथ करना । वङ्ग. नीसवमाण (विसे
२७४६) ।

पीसवग देखो नीसवय (भावम) ।

पीसवत्त वि [निःसपत्त] शब्द-रहित, विपक्ष-
रहित (मुञ्ज ८, पि २७६) ।

पीसवय वि [निःश्रावय] निर्वास करनेवाला
(विसे २७४६) ।

पीसस शक [निर + श्रस्] नीतांग लेना,
शलाक को नीचा करना । पीससद्द (पद्) ।
वङ्ग. पीससंत, पीससमाण (गा ३३,
कुप्र ४३; भाषा २, २, ३) । संक्ष. पीस-
सिअ, पीससिऊण (नाट. भट्टो) ।

पीससण न [निःश्रसन्] निःश्रव्य (कुमा) ।

पीससिअ न [निःश्रसित] निःश्रव्य (से
३, ३८) ।

पीसल वि [निःसह] मन्द, अशक्त (हे १,
१३; कुमा) ।

पीसल वि [निःशास्] शास्त्र-रहित (गा
२३०) ।

पीसा क्षी [दि] पीतले का पत्थर (वच ५,
१) ।

पीसा देखो गिस्सा (कल्प) ।

पीसाइ वि [निःवादिन्] स्वाद-रहित (प्रवि
१०) ।

पीसाण देखो गिस्साण = (दे) धर्म (८०) ।

पीसामण्य } वि [निःसामान्य] १ असा-
पीसामन्य } मारण (गठङ, सुपा ६१, हे २,
२१२) । २ शुद्ध (पाम) ।

पीसार सक [निर + सारय] बाहर
निकालना । पीसारद्द (भवि) । कर्म. नीसा-
रिज्जइ (कुप्र १४०) ।

पीसार पुं [दि] मण्डप (दे ४, ५१) ।

पीसार वि [निःसार] सार-रहित, वल्यु (से
३, ५८) ।

पीसारण न [निःसारण] निष्कासन, बाहर
निकालना (सुर १५, २०३) ।

पीसारय वि [निःसारक] बाहर निकाल ने
वाला (से ३, ५८) ।

पीसारिय वि [निःसारित] निष्कासित (सुर
५, १८८) ।

पीसास देखो गिस्सास (हे १, ६३; कुमा;
पाम) ।

पीसास } वि [निःश्रास, क] निःश्रास
पीसासय } लेनेवाला (विसे २७१५, २७१४) ।

पीसाहार देखो गिस्साहार 'नीसाहारा य
पक्क भूसीर' (सुर ७, २३) ।

पीसिअ वि [निःपिअ] अत्यन्त सिक
(पद्) ।

पीसीमिअ वि [दि] निर्वासित, देश-बाहर
किया हुमा (हे ४, ४२) ।

पीसेयस देखो गिस्सेयस (जोव ३) ।

पीसेणि क्षी [निःश्रेणि] खोटी (सुर १३,
१५०) ।

पीसेस देखो गिस्सेस (गठङ, उव) ।

पीहट्टु # निकाल कर (भाषा २, ६, २) ।

पीहट्टु म [नि + सृय] बाहर निकल कर
(भाषा २, १, १०, ४) ।

पीहड वि [निःहट] १ निर्गत, निर्वात
(भाषा २, १, १) । २ बाहर निकाला हुआ
(वृह १, ४४) ।

पीहडिया क्षी [निःहटिअ] मय्य त्याग में
ले जाया जाता द्रव्य (वृह २, सू० १८) ।
सु० भाषु ।

गीहम्म भक् [निर + हम्म] निरत्तना ।
गीहम्मइ (हे ४, ११२) ।

गीहम्मिअ वि [निहम्मित] निर्गत, निस्वत्त
(दे ४, ४३) ।

गीहर् भक् [निर + ह] बाहर निर-
त्तना । गीहर्इ (हे ४, ७६) । वक्क. नीहर्इत
(मुवा ४८२) । संक. गीहर्इअ (विज् ६) ।
क. गीहर्इयव्व (मुवा ५६०) ।

गीहर् भक् [आ + क्रम्] आक्रम् करना,
चिस्ताना । गीहर्इ (हे ४, १३१) ।

गीहर् भक् [निर + हद्] प्रतिष्थानि
करना । वक्क. गीहर्इत, गीहर्इअत (सि ५,
११, २, ३१) ।

गीहर् सक् [निर + सारय्] बाहर निकालना ।
हे. गीहर्इत्तय (मग ४, ४) । इ.
गीहर्इयव्व (मुवा ४८२) ।

गीहर् भक् [निर + ह्] पाछाना जाना,
पुपोसर्ग करना । गीहर्इ (हे ४, २५६) ।

गीहर्ण न [निस्सरण, निहर्ण] १ निर्ग-
मन, निर्गम, बाहर निकालना (विपा १, ३;
उपाया १, १४) । २ परित्याग (निह् १) ।
३ धनपतन (सुम २, २) ।

गीहर्इअ देखो गीहर् = निर + ह् ।

गीहर्इअ वि [नि स्त] निर्गत, निर्वात (सुर
१, १५५, ३, ७५, पाठ) ।

गीहर्इअ वि [निहर्इत्त] प्रतिष्थानित (सि
११, १२२) ।

गीहर्इअ न [दे] शब्द, भावाज, ध्वनि (दे
४, ४२) ।

गीहर्इअन देखो गीहर् = निर + हद् ।

गीहर्ण पुं [गीहर्] १ हिम, तुषार (मज्झ
७२, स्कन् ५२, कुमा) । २ विच्छा या मृत
का उत्सर्ग (सम ६०) ।

गीहर्ण न [निरसारण] निकालन (ठा २,
४) ।

गीहर्इ वि [निहर्इत्त] १ निकलनेवाला ।
२ फैलनेवाला, 'जोमखण्णोहीरिणा सरेण'
(भावम, सम ६०) ।

गीहर्इ वि [निहर्इत्त] पोष करनेवाला,
भू जनेवाला (ठा १०, सि ४०५) ।

गीहर्इस देखो गीहर्इस (ठा २, ४, भौष,
उपाया १, १) ।

गीहर्इस वि [निहर्इत्त] हास-रहित (उत्त २२,
२८) ।

गीहूय वि [दे] भविष्यत्क, कुछ भी नहीं
कर सकेवाला, 'भवयण्णोहीर्याण' (भावमि
७७) । देखो गिहुअ ।

गु भ [तु] इन धर्मों का सूचक अव्यय—१
व्यंग्य ध्वनि । २ वक्रोक्ति (सि ३५६) । ३
विकर्ष (सण्) । ४ प्रसन्न । ५ विनश्य । ६
अनुयय । ७ हेतु, प्रयोजन । ८ धनमान । ९
अनुताप, अनुशय । १० अपदेश, बहाना
(गड ६, २, २१७, २१८) ।

गु भ [तु] १ निष्ठासूचक अव्यय (सि २,
१) । २ विशेष (सि ६४१) ।

*गुअ वि [हाक्] जानकार (गा ४०५) ।

गुआर पुं [गुआर] 'गुक्' ऐसो भावाज
(राय) ।

गुज्जिय वि [दे] बन्द किया हुआ, बुद्धि-
'कट्टिमा खेण कुरिया, गुज्जियं से वयसं,
क्षिता म हव्या' (सि ५८६) ।

गुत्त वि [तुत्त] १ प्रेक्षित । २ क्षिप्त, फैला
हुआ (सि ३, १५) ।

गुम सक् [नि + अस्] स्थान करना ।
गुमइ (हे ४, १६६) ।

गुम सक् [छादय्] ढकना, आच्छादन
करना । गुमइ (हे ४, २१) ।

गुमउअ भक् [नि + सद्] बैठना । गुमउअ
(यद्) ।

गुमउअ भक् [नि + मस्ज्] ढकना ।
गुमउअइ (हे १, ६४) ।

गुमउअ भक् [शो] सीना, सूतना । गुमउअइ
(प्राक् ७४) ।

गुमउअण न [निमउअण] ढकना (राज) ।

गुमण वि [निपण्ण] बैठना हुआ, उपविष्ट
(पड, हे १, १७४) ।

गुमण्ण } वि [निमग्ग] हुआ हुआ, सीन
गुमन्न } (हे १, ६४, १०४) ।

गुमिअ वि [न्यस्त] स्थापित (कुमा) ।

गुमिअ वि [छादित] ढका हुआ (कुमा) ।

गुल्ल देखो गोल्ल । गुल्लइ (सि २४४) ।

गुवण्ण वि [दे] पुन, मोया हुआ (दे ४,
२५) ।

गुण्ण वि [निपण्ण] बैठना हुआ, उपविष्ट
(गड, उपाया १, ५, ठा २४२), 'पासमि
मुवण्ण' (उप ६४८ टी) ।

गुण्ण सक् [प्र = काशय्] प्रकाशित
करना । गुण्णइ (हे ४, ४५) । वक्क. गुण्णवत्त
(कुमा) ।

गुसा छी [र्तुपा] पुन-वध, पुन को भार्य
(प्रमी १०५) ।

गूअर देखो गिअर = गूर (पड, हे १,
१२३) ।

गूय वि [न्यून] कम, ऊन (उप ४ ११६) ।

गूय } भ [नूनम्] इन धर्मों का सूचक
गूय } अव्यय—१ निन्द्य, धनधारण । २
वर्ष विचार । ३ हेतु प्रयोजन । ४ उपमान ।

५ प्रसन्न (हे १, २६, प्राप्, कुमा, भग, प्राप्
१२; गृह १, आ १२) ।

गूयण वि [नूनत] गया, नवीन (मन ३०) ।

गूर देखो गूर (पाठ ११) ।

गूम सक् [छादय्] १ ढकना, छिपाना ।
गूमइ (हे ४, २१) । गूमति (उपाया १,
१६) । वक्क. गूमत (गा ८५६) ।

गूम न [दे] १ प्रच्छादन, छिपाना । २
असर, झूठ (पड १, २) । ३ माया, कपट
(मम ७१) । ४ प्रच्छादन स्थान, गुहा वगैरह
(सुम १, ३, ३, भग १२, ५) । ५ अव्यकार,
पाठ अन्वकार (राज) ।

गूम न [दे] कर्म (सुम १, ३, ३, २) ।

*गिह न [गृह] भूमि-गृह (प्राचा २, ३,
३, १) ।

गूमिअ वि [छादित] ढका हुआ, छिपाया
हुआ, (सि १, ३२, पाठ, कुमा) ।

गूमिअ वि [दे] पोला किया हुआ (उप ४
३६३) ।

गुल्ल्ये छी [दे] शाखा, डाल (दे ४, ४३) ।

गेअ. पाद-पूर्वित से प्रयुक्त होता अव्यय (राज) ।

गेअ देखो पा = आ ।

गेअ देखो गी = नी ।

गेअ वि [नेक्] धनेक, बहुत (पउम ६४,
५१) । 'विह वि [विध] धनेक प्रकार का
(पउम ११३, ५२) ।

गेअ भ [नेव] नहीं हो, कदापि नहीं, कभी
नहीं (सि ४, ३०, गा १३६, गड २, सुर २,
१८६, सण्) ।

पेअव्य देखो गी = नी ।

पेआइअ } वि [नैययिक, न्याय्य] न्याय
पेआउअ } से धर्वापित, न्यायानुगत, न्यायो-
चित, 'ऐसाइअस्त मगसत दुद्धे अवयरी वहु'
(सम ५१; सौप, पएह २, १) ।

पेआउय } वि [नेत्] १ से जानेवाला
पेउ } (सूय १, ६; ११) । २ प्रणेता,
रचयिता (सूय १, ६; ७) ।

पेआवण न [नायन] अय-द्वारा नयन,
पहुँचाना (उप ७४६) ।

पेआविअ वि [नायित] अय द्वारा से जाया
गया, पहुँचाया हुआ (म ४२, कुप्र २०७) ।

पेउ वि [नेत्] नेता, नायक (पउम १४,
६२; सूय १, ३, १) ।

पेउआण } देखो गी = नी ।
पेउ }

पेउइह पुं [दे] सद्भाव, शिष्टता (दे ४,
४४) ।

पेउण न [नेपुण] निपुणता, चतुराई (अमि
१३२) ।

पेउणिअ वि [नेपुणिक] १ निपुण, चतुर
(ठा ६) । २ न. शत्रुवाद-नामक पूर्व-ग्रन्थ
की एक वस्तु (विसे २३६०) ।

पेउणिअ देखो पेउण (सस ६, २, १३) ।

पेउण्य न [नेपुण्य] निपुणता, चतुराई
पेउअ } (सस ६, २, सुपा २६३) ।

पेउर न [नूपुर] की के पाव का एक आभू-
षण, पायल (हे १, १२३; मा १८८) ।

पेउरिल वि [नूपुरवत्] नूपुरवाला (पि
१२६; मउर) ।

पेऊण } देखो गी = नी ।
पेऊत }

पेऊत देखो गी = गय ।

पेऊन देखो णिकत (गा ११) ।

पेग देखो पेअ = नैक (कुमा, पएह १, ३) ।

पेगम पुं [निगम] १ वस्तु के एक अग्र को
स्वीकारनेवाला पक्ष-विरोध, नय-विरोध (ठा
७) । २ वणिह, व्यापारी, 'दिणयम-
भाविण्णो, न केवत्तं पम्मसो धण्णधोवि ।
नेगमपडहिपसहो, जेण वसो धण्णो
सरिणो' (था २७) । ३ न. व्यापार का
स्थान (भावा २, १, २) ।

पेगुण्य न [नैगुण्य] निपुणता, नि.सखता
(सत १६३) ।

पेचइय पुं [नैचयिक] वाय्य आदि का
शोकान्द व्यापारी (वव ४) ।

पेच्छइअ वि [नैचयिक] निश्चयन-
सम्पन्न, निरूपयित, शुद्ध (विसे २८२) ।

पेच्छंत वि [नेच्छन्] नहीं चाहता हुआ
(हेका ३०६) ।

पेच्छिय वि [नैच्छित] हृच्छा का प्रविषय,
अनभिमतपित (ओव ३) ।

पेठ्ठिअ वि [नैष्ठिक] पर्यन्त-वर्ती (पएह
२, ३) ।

पेठ देखो णिड्ड (कुमा, हे १, १०६) ।

पेठ्ठालो की [दे] सिर का झूपल-विशेष
(दे ४, ४३) ।

पेठ्ठु देखो णिड्ड (हे २, ६६; प्राप्र, पएह १,
३३; भाषा) ।

पेठ्ठरिआ की [दे] भाद्रपद मास की शुक्ल
दशमी का एक उत्सव (दे ४, ४५) ।

पेत्त पुंन [नेत्] नयन, आँख, चक्षु (हे १,
३३; भाषा) ।

पेत्त पुं [नेत्] वृक्ष-विशेष (सूय २, २, १८) ।

पेहा देखो गिहा (पि १६२; नाट) ।

पेपाल देखो पेधाल (उप ३ ३६७) ।

पेग स [निम] १ अर्थ, भाषा (प्राभा) । २
न. मूल, जड़ (पएह १, ३, अग) ।

पेग न [दे] कार्य, काज (राय) ।

पेग पुन [दे] कार्य, काम, काज (पिउ ७०) ।

पेग देखो पेगम = दे (पएह २, ४ टी—पत्र
१३३) ।

पेगाल पुं, अ. [नेपाल] एक भारतीय देश,
नेपाल (पउम ६८, ६४) ।

पेगि पुं [नेमि] १ स्वनाम-ख्यात एक जिन-
देव, वाइसर्ल तीर्थवर (सम ४३, अण्) ।
२ चक्र की धारा (ठा ३, ३, सम ४३) । ३
चक्र परिधि, चक्के का घेरा (जोव ३) । ४
आचार्य हेमचन्द्र के मातुल—माया का नाम
(कुप्र २०) । 'चंद पुं [चन्द्र] एक जैन-
आचार्य (धार् ६२) ।

पेगित देखो णिमित (धामम) ।

पेगित्ति वि [निमित्तान्] निमित्त-शास्त्र
का जानकार (सुर १, १४४; सुपा १५४) ।

पेगित्तिअ } वि [निमित्तिक] १ निमित्त-
पेगित्तिअ } शास्त्र से संबन्ध रखनेवाला (सुर
६, १७७) । २ कारणिक, निमित्त से होने-
वाला, कारण से किया जाता, वदाचितक;
'उदवातो ऐगित्तिमो जमो मयिण्णो' (उप
६८३; उवर १०७) । ३ निमित्त शास्त्र का
जानकार (सुर १, २३८) । ४ न. निमित्त
शास्त्र (ठा ६) ।

पेगो की [नेमो] चक्र धारा (दे १, १०६) ।

पेगम वि [दे, निम] गुल्य, सहाय, समान
(पएह २, ४—पत्र १३०) ।

पेगम देखो पेग = नेम (पएह १, ५—पत्र
६४) ।

पेगइअ वि [नैययिक] १ नरक-संघ-धी, नरक
में उलपन (हे १, ७६) । २ पु. नरक का
बीज, नरक में उलपन प्राणी (सम २, विपा
१, १०) ।

पेगइअ वि [नैययिक] नैययिक कोण, दक्षिण-
पश्चिम दिशा (सुपा २१५) ।

पेगई की [नैययिक] दक्षिण और पश्चिम के
बीज की दिशा (सुपा ६८; ठा १०) ।

पेगुच न [नैययिक] १ व्युत्पत्ति के अनुसार
धर्म का वाक्य शब्द (अण्) । २ वि. निरुक्त
शास्त्र का जानकार (विसे २४) ।

पेगुत्थिय वि [नैययिक] व्युत्पत्ति-नियम
(विसे ३०३७) ।

पेगुत्थी की [नैययिक] व्युत्पत्ति (विसे २१८२) ।

पेग वि [नैय] नील का विकार (मग, धीर) ।

पेगलण देखो गिहलण (स ६६६) ।

पेगलण पुं [दे] मनुष्य, पंड (दे ४, ४४,
पास, हे २, १७४) । २ बुधम, बैल (दे
४, ४४) ।

पेगल पुं [दे, नेलन] खपा (वव १११) ।

पेगिच्छी की [दे] दूधनुता, डँकवा (दे
४, ४४) ।

पेगल्ल देखो पेगल्ल (पि ६६) ।

पेग देखा पेअ = नेव (उव, पि १००) ।

पेगल्ल देखो पेगल्ल (पि ६६) ।

पेगल्ल देखो पेगल्ल (पि ६६) ।

पेगल्ल देखो पेगल्ल (पि ६६) ।

पेगल्ल देखो पेगल्ल (पि ६६) ।

पेगल्ल देखो पेगल्ल (पि ६६) ।

पेगल्ल देखो पेगल्ल (पि ६६) ।

गेवस्थ न [नेपथ्य] १ वज्र आदि की रचना, वेप की सजावट, नाटक आदि में परदे के भीतर का स्थान जिसमें नट-नटी नामा प्रकार का वेश सजाते हैं; रंगशाला, नाट्यशाला (पाया १, १)। २ वेप (जिसे २५८७; सुर ३, ६२; सणः सुपा १५३)।

गेवस्थण न [दे] निहंछन, उत्तरीय वज्र का प्रचल (कुमा)।

गेवस्थिय वि [नेपथ्यत] जिसने वेप-सुपा को हो वह, 'पुरित्तनेवस्थिया' (विपा १, ३)।

गेवाइय वि [नैपातिक] विपात-निष्पन्न नाम, प्रव्यय आदि (जिसे २८४०; मग)।

गेवाल पुं [नेपाल] १ एक भारतीय देश, नेपाल (उप पु ३६३, कुप्र ४५८)। २ वि. नेपाल-देशीय, नेपाली (पउम ६६; ५५)।

गेवजिउं न [नैवेद्य] देवता के समे परा गेवजिउं हुमां धन आदि (धं १२२, आ १६)।

गेव्वाण देखो गिब्वाण—निर्वाण (आचा. सुर ६, २०; स ७७४)।

गेव्बुअ देखो गिब्बुअ (उप ७३० टी)।

गेव्बुइ देखो गिब्बुइ (उप ५६८ टी)।

गेसग्गिय देखो गिसग्गिय (सुपा ६)।

गेसजिउं वि [नैपथिन्] आसन-विशेष से उपविष्ट (पव ६७; पचा १८)।

गेसजिअ वि [नैपथिउं] ऊपर देखो (ठा ५, १; बीप. पएह २, १; मध)।

गेसस्थि पुं [दे] बधिम् मज्जी, बधिम् प्रधान (३४, ४४)।

गेसस्थिया } की [नेसुत्तिरी, नैराजिरी]
गेसस्थिया } १ मिश्रण, मिश्रण। २ निशर्जन से होनेवाला कर्म-व्यय (ठा २, १; नव १८)।

गेसप्प पुं [नैमर्ग] निधि विशेष, चक्रवर्ती राजा का एक देवाधिष्ठित निपाण (ठा ६; उा ६८६ टी)।

गेसर पुं [दे] रवि, सूर्य (४, ४४)।

गेसाय देखो गिसाय—निपाद (राज)।

गेसु पुन [दे] १ मोह, मोह, होंह। २ पावि, 'तह निस्सित्तमंतांता दूयम्मि निहिसिण्णेषुसुणं' (उप ३२० टी)।

गेह पुं [स्नेह] १ राप, घरुराण, प्रेम (पाप)। २ रीत आदि विज्ञाता सम-वर्षा। ३ चित्रनाई, चित्रनाहट (हे २, ७७; ४, ४०६; प्रप)।

गेहुर देखो गेहुर (पएह १, १)।

गेहल पुं [स्नेहल] छन्द-विशेष (मिम)।

गेहल वि [स्नेहल] स्नेही, स्नेह युक्त, 'पियराई नैहलई, घरुरराओ गिहिणीओ' (वर्मा १२५)।

गेहालु वि [स्नेहवन्] स्नेह-युक्त, लिम्ब (हे २, १५६)।

गेहुर पुं [नेहुर] १ देश-विशेष, एक भनार्थ देश। २ उसमें बसनेवाली धनार्थ जाति (पएह १, १—पत्र १४)।

गे हा [नो] इन धर्मों का सूचक शब्द—१ नियम, प्रतिषेध, आशय (ठा ६, वस, गउड)।

२ मिश्रण, मिश्रता, 'नोसहो मित्समावमि' (जिसे ५०)। ३ देश, भाग, धरा, हिस्सा (जिसे ८८८)। ४ धनधारण, निरचम (राज)।

आगम पुं [आगम] १ आगम का धाम। २ आगम के साथ मिश्रण। ३ आगम का एक संरा (धावन, जिसे ४६; ५०; ५१)। ४ धर्मार्थ का धर्मज्ञान (संदि)।

इंदिय न [इन्द्रिय] मन, धातु-करण, वित्त (ठा ६, सग ११; उप ५६७ टी)।

कसाय पुं [कपाय] कपाय के उद्दीपक हास्य वगैरह मन परार्थ, वे ये हैं—हास्य, रति, धरति, शोक, भय, दुःखता, दुर्वेद, शोवेद और ननुवकवेद (कम्म १, १७; ठा ६)।

केवलज्ञान न [केवलज्ञान] धर्माधीन मनःपर्यव शान (ठा २, १)।

गार पुं [कार] 'नो' शब्द (राज)। 'गुण वि [गुण] प्रपार्थ, धनस्तविक (मग)।

जीव पुं [जीव] १ जीव-धर्म प्रजीव से मिल पदार्थ, प्रवत्तु। २ प्रजीव, निर्जीव। ३ जीव का प्रदेश (जिसे)।

तह वि [तथ] जो वैसा ही न हो (ठा ४, २)।

गो घ [दे] इन धर्मों का सूचक शब्द—१ संद, २ धामजलण। ३ विचित्रता। ४ निर्वर्ण। ५ प्रतीक (ग्रह ८०)।

गो पुं [गु] गुरु, नर, 'गोवातामामावमि' (मएह १२५३, १२५६)।

गोकर वि [दे] धनोत्सा, धनार्थ (मिम)।

गोगोण वि [नोगोण] प्रपार्थ (नाम) (मगु १४०)।

गोजुग न [नोयुग] न्यून युग (सुजग ११)।

गोदिअ देखो गोदिअ (राज)।

गोमल्लिआ छी [नयमल्लिआ] सुगमि फल-वाला कुल-विशेष, नेवारी, वासंती (नाटः पि १४४)।

गोमल्लिआ छी [नयमल्लिआ] ऊपर देखो (हे १, १७०; गा २८१; पद्; कुमा; धमि २६)।

गोमि पुं [दे] रसी, रज्जु (दे ४, ३१)।

गोलइआ } छी [दे] चण्ड, चोच, वांच (दे गोल्नइ) } ४, ३६)।

गोल सक [क्षिपु, सुद] १ फेंकना। प्रेरणा करना। खोलकर (हे ४, १४३, पद्)।

खालेइ (गा ८७५)। कवक, गोहिल्लित (सुर १३, १६६)।

गोहिल्लि वि [नोदित] प्रेरित (दे ६, ३२; खाय १, ६; पएह १, ३; स ३४०)।

गोव्य पुं [दे] बायुक्त, सूबा या स्वदेव राज-प्रतिनिधि (दे ४, १७)।

गोहल पुं [लोहल] शब्दक शब्द-विशेष (पद् पि २६०; सति ११)।

गोहिल्लिआ छी [नयमल्लिआ] १ ताजी फली, नवोत्पन्न फली (हे १, १७०)। २ नूतन फलवाली (कुमा)। ३ नूतन फल का उद्गम, 'गोहिल्लिममण्यो कि ए मण्णे, मण्णे, कुवमस्स' (गा ६)।

गोहा छी [सुपा] पुन की भाषा, पुनवधू, पतोह, बहू (पि १४८; संति १४)।

गणअ वि [ज्ञा] जानकार (गा २०३)।

गणास देखो पास = व्यास (स्वज ११४)।

गणुअ देखो 'गणअ' (गा ४०५)।

हं म. १-२ वाक्यान्तर और पावृत्ति में प्रयुक्त किया जाता शब्द (मय; मग)।

पद्म सक [सम्पत्] नृत्ताना, स्नान कराना। खल्लेइ (सुर ११७)। कवक, पद्मिज्जित (सुपा ३३)। संह. पद्मिज्जय (पि २१३)।

पद्मयन न [स्नपन] स्नान कराना, नहलाना (कुमा)।

पद्मिअ वि [स्नपित] जिसने स्नान कराया गया हो वह (सुर २, ५८; मरि)।

पद्म } धम [स्ना] स्नान करना, नहलाना। पद्मण } एहद (हे ४, १४)। एहदण, एहदण्णि (पि ३१३)। मरि. एहदण्णि

(पि ३१३) । वह, पहायमाण (छाया १, १३) । सह, पहाइत्ता, पहाणित्ता (पि ३१३) ।

पहाण न [स्नान] नहाना, नहान (कप्प, प्राप्) । °पीठ पुन [°पीठ] स्नान करने का पट्टा (छाया १, १) ।

पहाणमहिआ की [स्नानमहिआ] स्नान-योग्य पुन-विशेष, मातृ-पुन (राय ३४) ।

पहाणिका की [स्नानिका] स्नान-क्रिया (पह २, ४—पत्र १३१) ।

पहाणिय वि [स्नानिन] जिसने स्नान किया हो वह (पत्र ३८) ।

पहाय वि [स्नात] जिसने स्नान किया हो वह, नहाया हुआ (कप्प, श्रीप) ।

पहायमाण देखो पहा

पहारु न [स्नायु] १ अस्थि-बन्धनी सिपा, नस, घमनी (सम १४६, पह १, १, ठा २, १; प्राचा) । २ यगुदस श्रेणी में की एक श्रेणी, कुम्हार, पटेल आदि (लोकप्रकाश ४६४ पत्र, सम ३१) ।

पहाय देखो पहाय । एहावह, एहावेइ (अवि, पि ३१३) । वह, पहारजन (पि ३१३) ।

संह, पहाविकुण (महा) ।

पहायिअ वि [स्नपित] नहलाया हुआ,

जिसकी स्नान कराया गया हो सह (महा अवि) ।

पहायिअ पुं [नापित] हुआ, नाई (हे १, २३०, कुमा), 'वैतूण एहायिअ भागएण मुंजाविअ कुमारे' (उप ६ टी) । °पसेयय पुं [°असेयक] नाई की मपने उपनयण रखने की धैली (उत्त २) ।

पहु म [हे] निरुपय-सूचक अव्यय (जीवत १८०) ।

एहसा की [स्नुपा] पुन वपु, पुन की माया, पतोहू (भावन, पि ३१३) ।

पहुहा देखो पहुसा (सिदि २४१) ।

॥ ह्य सिरिपाइअसदमहण्यवे पभाराइमदसंक्लणो, अशसेण नभाराइमदसंक्लणो वार्दिसदो तरयो समत्तो ॥

त

त पुं [त] दन्त-स्थानीय ध्वजन बाण-विशेष (प्राप्, प्राप्) ।

त स [तन्] वह (ठा ३, १, हे १, ७, कप्प, कुमा) ।

तं स [तन्] तू । °कय वि [°कृत] तेष किया हुआ (स ६८०) ।

तं देखो तया = तय । °दोसि वि [°दोपिन्] १ चर्म रोगी । २ कुछे (पिठ ४०५) ।

तअ देतो तय = तयस (हाल्म १३५) । तइ वि [तन्] जतना (मय १) ।

तइ (अप) म [तन्] वहाँ, जममें (वट्) ।

तइ म [तदा] उग समय (प्राप्) ।

तइअ वि [तृतीय] तीसरा (हे १, १०१, कुमा) ।

तइअ (अन) वि [तृतीय] कुम्हार (अवि) ।

तइअ म [तदा] उग समय, भणिमा रना मही, मइसागर तइय पव्यउेण ।

ताएण म्हा भणिपो, भणिणी ठाएणिम दाएणा (सुर १, १२३) ।

तइअइ (अप) म [तदा] उग समय (अवि, सण) ।

तइआ म [तदा] उग समय (हे ३, ६५, गा ६२) ।

तइआ की [तृतीया] तिथि विशेष, तीज (सम २६) ।

तइया की [तृतीया] तीसरी तिथि (विद्य ६८३) ।

तइल देखो तेह (उ ६२६) ।

तइलोई की [त्रिलोकी] तीन तीन—स्वर्ग, मर्त्य और पाताल (मुपा ६८) ।

तइलोका } न [त्रिलोक्य] ऊपर देखो तइलोका } (पउम ३, १०५, ८, २०२, स ५०१, सुर २, २०, मुपा २८२, ३५, ४४८) ।

तइस (अप) वि [वाटसा] मैसा, उस तइ का (हे ५, ४०३, पइ) ।

तई की [त्रयो] तीन का समूह (मुपा ५८) ।

तईअ देखो तइअ = तृतीय (गा ५११, मय) ।

तउ } म [त्रयु] बाहु विशेष, सीसा, तउअ } रागा (सम १२५, श्रीप, उप ६८६ टी, महा) । °पट्टिका की [°पट्टिका] बाल का धातूपण विशेष (हे ५, ६३) ।

तउस म [त्रयुप] देखो तउसी (राज) ।

°मिजिया की [°मिजिका] छुद्र मोट विशेष, शीन्डिय जन्तु की एक जाति (जीव १) ।

तउस न [त्रयुप] सीरा, कर्फी (हे ८, ३५) ।

तउसी की [तृयुकी] बर्कंदे-वृक्ष, सीरा का गाछ (गा ५३४) ।

तए म [तनस] उमड़े, उस वारण से । २ वाद में (उत्त १, निपा १, १) ।

तएयारिस वि [त्याहारा] तुम बेसा, तुम्हारे सट्ट का (म ५२) ।

तओ देतो तए (ठा ३, १, प्राप् ७८) ।

तं भ्र [तत्] इन भ्रयो को वतलनेवाला
अन्वय—१ कारण, हेतु (भग १५) । २
वाक्य उपन्यास, 'त तिम्रसद्विभोक्ते' (हे २,
१७६, पड) । 'तं मरणमणारभे वि होइ,
वन्धो उण न होइ' (गा ४२) । 'जहा भ्र
[अन्वय] उदाहरण प्रदर्शक अन्वय (भाषा
भणु) ।

तंथा देखो तया = तदा (गड) ।

तंत न [दे] पृष्ठ गीत (दे ५ १) ।

तंछ न [दे] लगाम में लगी हुई लार । २ वि
मस्तक रहित । ३ स्वर से अधिक (दे ५,
१६) ।

तडव्य (भग) देखो तडव्य । तडव्य (भवि) ।

तडव्य भक [ताण्डव्य] दुर्य करना । तड-
व्यंति (भावन) ।

तडव्य न [ताण्डव्य] १ दुर्य, उडव्य नाच (पाभ
जीव ३, सुपा ८६) । २ उडव्याँ पारसिगु-
डमद्वचनडवाचंरहे कि कुड' (धम्म ८ टी) ।

तडविय वि [ताण्डवित] नवाया हुआ
मणित (गड) ।

तडविय (भग) देखो तडविय (भवि) ।

तडुल पु [तण्डुल] चावल (गा ६६१) ।
देखो तडुल ।

सत न [तन्त्र] १ देश: राष्ट्र (सुर १६, ४८) ।
२ सात, सिद्धांत (उवर ५) । ३ दर्शन, मत
(उप ६२२) । ४ स्वदेश चिता । ५ विष का
बीज्य विरोध (मुद्रा १०८) । ६ मूल, प्राच्य-
विरोध 'सुल मयियं तंत मयिअण्णं ठम्मि
अ जमत्थो' (विसे) । ७ विद्या विरोध (मुपा
४६६) । ८ तु वि [तं] तन्त्र का जानकर
(मुपा ५७६) । 'वाइ पु [वादिन्] विद्या-
विरोध से रोग भादि को मिटानेवाला (मुपा
४६६) ।

सत वि [सान्त] विश्र, क्लाउ (छाया १, ४,
विपा १, १) ।

सतही छी [दे] वस्त्र, वही छीर चावल का
बना भोजन विरोध (दे ५ ४) ।

सतयग } पु [सान्त्रयक] चतुर्विध्य जनु
सतयय } को एक जाति (सुस ३६, १४६,
उत्त ३६, १४६) ।

सतिय पु [सान्त्रिक] बीणा बजावेवाला
(भणु) ।

सतिसम न [तन्त्रीसम] तन्त्री-शब्द के तुल्य
या उससे मिला हुआ गीत, मेघ काव्य का
एक भेद (वसनि २, २३) ।

सती छी [त-त्री] १ बीणा, वाद्य विरोध
(कप, शीप सुर १६, ४८) । २ बीणा-
विरोध (पणह २ ५) । ३ तारि, चमड़े को
रस्ती (विपा १, ६ सुर ३, १३७) ।

सती छी [दे] चिता, 'कामत्स तत्तर्तित'
(पा २) ।

सतु पु [तन्तु] सूत, तागा, धागा (पचम १,
१३) । 'अ, ग पु [क] जलजन्तु विरोध
(पचम १४, १७, कुअ २०६) । 'ज, थ न
[ज] सूती कपडा (उत्त २, ३५) । 'वाय
पु [वाय] कपडा बुननेवाला, जुताहा (आ
२३) । 'साय छी [शाला] कपडा बुनने
का घर, ताँत घर (सग १५) ।

सतुक्खो छी [दे] तनुवाय का एक उप-
करण (दे ५ ७) ।

सतुल देखो तडुल (पचम १२, १३८) । २
मत्स्य विरोध (जीव १) । 'वेयालिय न
[वेचारिक] जैन ग्रन्थ विरोध (सुवि) ।

सतुल्लेखजग पु [तन्दुलीयक] बनस्पति विरोध
(पण १) ।

सतुसय देखो तदुसय (सुर १३, १६७) ।
सब पु [सुतम्ब] ठुणारि का शुब्दा (हे २,
४५ कुमा) ।

सब न [सात्र] १ धातु विरोध, वाँका (विपा
१, ६, हे २, ४५) । २ पु वणं विरोध ।
३ वि श्रल्ल वणंवाला, साल (पणह १७,
शीप) । 'सूल पु [सूड] कुक्कुड, मुर्गा (सुर ३,
६१) । 'वण्णो छी [वण्णो] एक नदी का
नाम (वण्ण) । 'सिह पु [शिरर] कुक्कुड,
मुर्गा (पाभ) ।

संवक्खो पुन [दे] ताम्र वणंवाला द्रव्य-
विरोध (पण १७) ।

सवक्किम पु [दे] बोट विरोध, द्रव्योप (दे
५, ६, पड) ।

संवडुसुम पुन [दे] शूरा विरोध, कुक्कुड,
कटहरैया (दे ५, ६, पड) ।

सवक्क न [दे] बाल विरोध 'मणहयतंवनेगु
वन्धेगु' (ती १५) ।

सवन्निद्धाडिया छी [दे] ताम्र वणं का
द्रव्य विरोध (पण १७) ।

संवटवारी छी [दे] शोफलिका, पुण प्रपान
सत्ता पिरोप (दे ५, ४) ।

सवरत्ती छी [दे] गेहूं में कुकुम की छाया (दे
५, ५) ।

संवा छी [दे] गी घेतु गैया (दे ५, १, गा
४६०, पाभ, वज्जा ३४) ।

सवाय पु [सामाक] भारतीय ग्राम-विरोध
(राज) ।

सविय पुकी [साम्प्रत्य] मरणता, ईषद रत्ता
(गड) ।

सविय न [साम्प्रिक] परिव्राजक का पहनने
का एक उपकरण (शीप) ।

सविर वि [दे] ताम्र वणंवाला (हे २, ५६,
गड भवि) ।

सविरा [दे] देखो सवरत्ती (दे ५, ५) ।

सवुक्क न [दे] माद्य विरोध बुद्धतदुद्धतदुक्कड'
(मुपा ५०) ।

सवरेम पु [सस्मरेम] हस्ती, हाथी (उप ६
११७) ।

सवेही छी [दे] पुण प्रपान वृक्ष विरोध,
शोफलिका (दे ५ ४) ।

सवोल न [साम्बुल] पान (हे १, १२४,
कुमा) ।

सवोलिअ पु [साम्बुलिक] १ समोली, पान
बेचनेवाला (आ १२) । २ पान से होनेवाला
सवोलिआ नाम ।

सवोली छी [साम्बुली] पान का गाछ (पड,
जीव ३) ।

सब देखो श्रम (पड) ।

सस पु [अयरा] जीतरा हिम्मा (पच ५, ३७;
३६, कम्म ५, ३४) ।

सस वि [अयस] वि कोण, तीन कोनवाला
(हे १, २६, गड ठा १, गा १०, प्राभ
भावा) ।

सस सव [तर्क] ठाँ करना, अनुमान
करना, घटबल करना । ससेमि (मे १३) ।

सस, सविसाणं (भाषा) ।

सस न [सस] मट्टा छाछ (भोप ८७, सुपा
५८ न उप ५ ११६) ।

तक पुं [तर्क] १ निमरी, विचार, घटक-
ज्ञान (था १२, ठा ६) । २ न्याय-शास्त्र (सुपा
२, ७) ।

तक्या खी [दे] ह्छा, मभिलाप (दे ५, ४) ।
तक्य वि [तर्कक] तर्क करनेवाला (पण्ड
१, ३) ।

तकर पुं [तकर] चोर (हे २, ४, धीप) ।
तकलि खी [दे] कवली वृत्त केने ना गद्य
(घाचा २, १, ८, ६) ।

तकलि खी [दे] बजयाकार बुध विशेष
तकली (पण्ड १) ।

तका खी [तर्क] देखो तक्ष = तर्क (ठा १
मूम १, १३ भावा) ।

तकाल कि वि [तरकाल] उभी समय (कुमा) ।

तकिअ वि [तार्किक] तर्क शास्त्र का जानकार
(अण्डु १०१) ।

तकियाण देखो तक्ष = तर्क ।

तककु पुं [तर्क] सुत बनाने का यन्त्र, तडुआ,
तकला, बरखा (दे ३, १) ।

तकटुय पुं [दे] स्वजन धर्म, 'सम्माणिया
सामता, महीणिया नायरथा, परिओसिमा
तकटुयणा ति' (स ५२०) ।

तकर सक [तक्ष] छिना, कान्ना ।
तकवह (पह, हे ४, १६४) । कर्म तक्लि-
जइ (कुम १७) । वक्र, तकरमाण (अण्डु) ।

तकर पु [तार्क्य] गड पत्ती (पाभ) ।

तकर पु [तक्षन्] १ तक्षी काटनेवाला,
बडई । २ विश्वकर्मा, शिल्पी विशेष (हे ३,
५६, पड) । 'सिला खी [शिला] प्राचीन
ऐतिहासिक नगर, जो पहले बाहुवालि की
राजधानी थी, यह नगर पञ्जाब में है (पञ्चम
४, ३८, कुप ५३) ।

तकराण पुं [तक्षक] १-२ ऊपर देखो । ३
स्वनाम प्रसिद्ध सर्व-राज (उप ६२५) ।

तकराण न [तक्षण] १ तक्षाल, उभी समय
(ठा ४, ४) । २ निनि शीघ्र, सुगुल (पाभ) ।

तकराण देखो तकराण (स २०६, कुप
१३६) ।

तकराण देखो तकर = तक्ष (हे ३, ५६,
पड) ।

तार देखो टगर (पण्ड २, ५) ।

तगरा खी [तगरा] संनिवेश विशेष (स
५६८) ।

तगरा खी [तगरा] एक नगरी का नाम (सुख
२, ८) ।

तग्ग न [दे] सूत्र-बंधण, धागे का बंधण
(हे ५, १, गड) ।

तग्गधिय वि [तद्गन्धि] उसके समान
गंधवाला (आमु २४) ।

तक्ष वि [तृतीय] तीसरा (सम ८, उवा) ।

तक्ष न [तत्त्वं] सार, परमार्थ (भावा, भारा
११५) । 'नाय पु [वाद्] १ तत्त्व वाद,
परमार्थ-वर्चा । २ दृष्टिवाद, जैन अग्र ग्रंथ-
विशेष (ठा १०) ।

तक्ष न [तत्त्वं] १ सत्य सचाई (हे २, २१,
उत २८) । २ वि. वास्तविक, सत्य (उत
३) । 'त्य पु [त्ये] सत्य, हकीकत (पठम
१, १३) । 'नाय पु [वाद्] देखो ऊपर
'नाय (ठा १०) ।

तक्ष न [नि] तीन बार (मय, सुर २,
२६) ।

तक्षिच वि [तक्षिच] उभी में जिसका मन
सगा हो वह, तल्लीन (विपा १, २) ।

तच्छ सक [तक्ष] दिला काटना । तच्छइ
(हे ४, १६४ पड) । स. तच्छिय (मूम
१, ४, १) । वक्र, तच्छिज्जत (सुर १,
२८) ।

तच्छ १ वि [तष्ट] छिना हुआ, तनुकृत
तच्छिअ १ ते निश्चिदेहा कर्मणं तच्छ' (सुष
१, ५, २, १४, १, ४, १, २१, उत १६,
६६) ।

तच्छण खीन [तक्षण] छिना, नर्वन (पण्ड
१, १) खी. णा (शाया १, १३) ।

तच्छिअ वि [दे] कराल, भयंकर (हे ५,
३) ।

तच्छिज्जन देखो तच्छ ।

तच्छिअ वि [दे] तक्षर (पड) ।

तजा देखो तया = त्वय (दे १, १११) ।

तज सक [तर्जय] तर्जने करना, भर्त्सने
करना । तजइ (मवि) । तज्जेइ (शाया १,
१८) वक्र. तज्जत, तज्जित तज्जयत,
तज्जमाण, तज्जेमाण (मवि, सुर १२,
२३३, शाया १, ८, राज, विपा १, १—

पत्र ११) । वक्र. तजिज्जत (उप पु १३४,
उप १४६ टी) ।

तज्जण न [तर्जन] भर्त्सने, तिरस्कार (धीप,
उज. पठम ६४, ५३) ।

तज्जणा खी [तर्जना] ऊपर देखो (पण्ड
२, १; सुपा १) ।

तज्जणी खी [तर्जनी] दूसरी अंगुली, अंगुठे के
पासवाली अंगुली, प्रदेहिनी (सुपा १, कुमा) ।

तज्जाय वि [तज्जात] समान जातिवाला,
सुख्य-जातीय (भावा ४) ।

तज्जाविअ १ वि [तज्जित] तजित, भर्त्सित
तज्जिअ १ (स १२२, सुपा २६६, मवि) ।

तज्जित १ देखो तज्ज ।

तज्जिज्जत १ तज्जेमाण ।

तट्टयट्ट न [दे] भ्रामरण, भ्रान्तिपण,
'सणिय सणिय बालतण्णाओ
सण्णायै तट्टयट्टाई ।
अवहरिप नियपराओ
हारेइ रहमि लिस्सतो'
(सुपा ३६६) ।

तट्टिका खी [दे] तट्टिका] विगबर जैन साधु
का एक उपकरण (कर्मस १०४६; १०४८) ।

तट्टी खी [दे] कृति, बाह (हे ५, १) ।

तट्टु वि [अस्त] १ डरा हुआ, भीत (हे २,
१३६, कुमा) । २ न. भ्रूहर्त विशेष (सम
५१) ।

तट्टु वि [तट्ट] छिना हुआ (सुस १, ७) ।

तट्टुय न [तत्सप] भ्रूहर्त विशेष (सम ५१) ।

तट्टि वि [तट्टि] तट्टावत, कृतावाता (सुस
१, ७, २०) ।

तट्टि १ पु [तट्ट] १ तक्षक, विश्वकर्मा
तट्टु १ (गड) । २ मक्ष विशेष का अधि-
ह्रायक देव (ठा २, ३) ।

तट्टु पु [त्वट्ट] १ भूराज का बाह्वर्षी
भ्रूहर्त (सुज १०, १३) ।

तड सक [तन्] १ विस्तार करना । २
करना । तडइ (हे ४, १३७) ।

तड पुन [तट] बिनाश, तीर (वाप कुमा) ।

'त्य वि [त्य] १ मध्यस्थ, पण्णात-हीन ।
२ समीप स्थित (कुमा, दे ३, ६०) ।

तडउडा [दे] देखो तडमडा (जीव ३,
जं १) ।

तहकडिअ वि [दि] मननचित्त (पह) ।

तहधार पु [तटकार] चमत्कार, 'तडित-
झनारो' (धुपा १३३) ।

तहटडा धन [तहटढाय] तह-तह धावाज
होना । बह. तहटहट, तहटहट, तह-
तहयत (राज, राया १, ६, सुपा १७६) ।

तहटडा श्री [तहटडा] तह-तह धावाज (स
२५७) ।

तहफड [सक [दि] तहफना, छपटाना,
तहफड] तहफना, ध्याकुल होना । तह-
फड (कुमा, हे ४, ३६६, विवे १०२) ।

तहफसि (सुर १, १५८) । बह. तहफफडह,
हटफहट (उा ७६८ टी, सुर १२, १६४,
सुपा १७६, कुम २६) ।

तहफडिअ वि [दि] १ तन तरफ मे चतित,
तहफनाया हुमा, ध्याकुल (हे ५, ६, स
१८६) ।

तहमड वि [दि] क्षुभित, सोभ प्राप्त (हे ५,
७) ।

तहयड वि [दि] क्रिया-शील, सदाचार-भुक्त
(सहि १०७) ।

तहयडत देखो तहटडा ।

तहवडा श्री [दि] बल विशेष आज्ञाती का
पेड (हे ५, ५) ।

तडाअ] न [तडाग] तालाव, सरोवर (गा
तडाग] ११० वि २३१, २४०) ।

तडि श्री [तडित] विजली (पाम) । "हड
पु [दण्ड] विद्युद्दह (महा) । "फेस
[केश] रामस वरीय एक राजा, एक नका-
पति (पडम ६, ६६) । "वेअ पु [वेग]
विद्याधर वरा का एक राजा (पडम ५,
१८) ।

तडिअ वि [तन] विस्तृत, फैला हुमा (पाम,
राया १, ८—पम १३३) ।

तडिआ श्री [तडित] चीजली (पामा) ।

तडिज वि [दि] बिरल, अत्यल्प (हे १३,
५०) ।

तडिर्मा श्री [तडिनी] नदी तरफिणी
(सण) ।

तडिम न [तडिम] १ भित्त, भीत । २ कुटिम,
पापाण प्रादि से बँपा हुमा भूमित्त (हे २,

२) । ३ द्वार मे ऊपर बा भाग (हे १२,
६०) ।

तडी श्री [तडी] तट, निपात (विपा १, १,
भनु ६) ।

तडु } सक [तन्] १ विस्तार करना । २
तडुय } करना । तडुह, तडुवह (हे ४, १३७) ।
भूमा—सर्वोप (कुमा) ।

तडुयिअ } वि [तव] विस्तीर्ण, फैला हुमा
तडुयिअ } (पाम, महा, कुमा, सुर ३,
७२) ।

तडुह श्री [तडुह] बाठ की बरछी (प्राह
२०) ।

तण स [तन्] १ भिन्तार करना । २
करना । तणह, तणए (पह) । बर्म, तणि-
णए (विवे १३८३) ।

तण न [दि] उत्पल, कमल (हे ५, १) ।

तण न [तृण] तृण, घास (प्राप्त, उब) । इह
वि [यत्] तृणवाग (गड) । "जीयि
वि [जीयिन्] पास खापर जीनेवाला (सुपा
३७०) "राय पु [राज] वाय-भुन, ताह
का पेड (गड) । "विटय, "वेडय पु
[युत्तक] एक बुद्ध जंतु जाति, नीन्द्रिय
जन्तु विशेष (राज) ।

तणम वि [तृणक] तृण का बना हुमा
(प्राचा २, २, ३, १४) ।

तणय पु [तनय] पुत्र, तहका (सुपा २४७,
४२४) ।

तणय वि [दि] सबकी, 'मह तणय' (सुर ३,
८०, हे ४, ३६१) ।

तणयसुदिआ श्री [दि] अष्टौलीक, अष्टौरी
(हे ५, ६) ।

तणया श्री [तनया] लडकी, पुत्री (कुमा) ।

तणरासि } वि [दे] प्रसारित फैलाया
तणरासिअ } हुमा (हे २ ६) ।

तणरडी श्री [दि] उडुप, डोगी, छोटी नौका
(हे ५ ७) ।

तणसोडि } श्री [दि] १ मल्लिका, पुष्प-
तणसोडिया } प्रधान वृक्ष विशेष (हे ५, ६,
राया १, १६) । २ वि तृण-शूय (पह) ।

तणहार } पु [तृणहार] १ शोन्द्रिय जन्तु
तणहार } श्री एक जाति (उत ३६,
१३८) । २ वि. पास काटकर बेचनेवाला,
पविमारा (मणु १४६) ।

तणिअ वि [तन] विस्तीर्ण, फैला हुमा
(कुमा) ।

तणु वि [तनु] १ पतना (जी ७) । २ इय,
दुर्बल (पंचा १६) । ३ मल, दोषा (हे ३,
५१) । ४ लघु, छोटा (जीव ३) । ५ सूदन
(नच) । ६ श्री शरीर, वाय (हे २, ५६,
जी ८) । "तणुई, तणु श्री [तन्वी]
इयवागभारा नामक पुष्पी (ठा ८, ६८) ।

"पञ्चत्ति श्री [पर्याप्ति] उत्पन्न होते समय
जीव द्वारा ग्रहण किये हुए पुद्गल की शरीर
रूप से परिणत करने की शक्ति (बम्म ३,
१२) । "वमन वि [उद्भव] १ शरीर से
उत्पन्न । २ पु तडना (मनि) । "वमभा श्री
[उद्भवया] लडकी (मनि) । "भु पु श्री
[भु] १ लडका । २ लडकी (प्राक) । "य
वि [ज] देखो "वमन (उत १४) । "रुह
पुन [रुह] १ केश, माल (रमा) । २ पु-
पुन, लडका (मनि) । "वाय पु [वात]
सूक्ष्म वायु विशेष (ठा ३, ४) ।

तणुअ वि [तनुत] ऊपर देखो (पडम १६,
७, भाव ५, भा १५, पाम) ।

तणुअ सक [तनय] १ पतला करना । २
छुट करना, दुर्बल करना । तणुए (गा ६१,
काप्र १७४) ।

तणुआ } भक [तनुकाय] दुर्बल होना,
तणुआअ } छुट होना । तणुमाह, तणुमा-
मह, तणुमाभए (गा ३०, २६२, ५६) बह.
तणुआअत (गा २६८) ।

तणुआअरअ वि [तनुप्रकारक] कृतात
उपजनेवाला, दीर्घल्य जनक (गा ३४८) ।

तणुइअ वि [तनुकृत] दुर्बल किया हुमा
छुट किया हुमा (गा १२२, पडम १६, ४) ।

नणुई श्री [त-जी] १ पुष्पी विशेष, मिद-
शिला (सम २२) । २ पतला शरीरवाली,
कृपाणे, कोमलांगी श्री (पह) ।

तणुईकय वि [तनुकृत] पतला किया हुमा
(पाम) ।

तणुग देखो तणुअ (जं २ ३) ।

तणुज तणुय (धर्मवि १२८) ।

तणुजम्म पु [तनुजम्म] पुत्र, लडका
(धर्मवि १४८) ।

तणुभन देखो तणु वभव (धर्मवि १४२) ।

तणुवी } देखो तणुई (हे २, ११३,
तणुवीआ) (कुमा)।

तणु जी [तनु] शरीर काया (भा ७८;
पात्र, २५)। २ ईपटागामा-नामक धूमिवी
(ठा ८)। *अ वि [ज] १ शरीर से
उत्पन्न। २ पुं, लव्हा, पुन (उप ६८६)।
*अतरा जी [कतरा] ईपटागामा-नामक
धूमिवी; जिसपर धुक जीब रहते हैं, सिद्ध-
शिवा (सम २२)। *रह पुन [रह] केरा,
रोम, बाल (उप ५६७ टी)।

तणुइ देखो तणुइअ (गठड)।

तणुण (भप) म. लिप, बास्ते (हे ४, ४२५;
कुमा)।

तणेसि पुं [दे] सुण-पाणि (दे ५, ३, पद)।

तण्णय पुं [तणैक] वरस, बहडा (पात्र, भा
१६; गठड)।

तण्णाय वि [दे] घाट, गीला (दे ५, २;
पात्र; गठड से १, ११; ११, १२६)।

तण्हा जी [तण्हा] १ प्यास, पिपासा
(पात्र)। २ सुहा, बाध्वा; दृष्टा (ठा २, ३,
भीप)। *लु, *लुअ वि [वत्] तण्ण-
वाला, प्यासा 'समरतण्हाह' (पठम ८, ८७,
८, ४७)।

तण्हाइअ वि [तण्हा] तणुतुर, बसित प्यासा
(धर्मि १४१)।

तत देखो तय = तत (ठा ४, ४)।

तत्त न [तत्त] तत्त स्वल्प, तत्त, परमायं
(उप ७२८ टी; पुष्क ३२०)। *ओ म
[तत्त] वस्तुतः (उप ६८६)। *णु वि
[तत्त] तत्त का जानकार (पचा १)।

तत्त पुं [तत्त] १ सीसरी नरक-भूमि का एक
नरक-स्थान (देवेद ८)। २ प्रथम नरक-
भूमि का एक नरक-स्थान (देवेद ४)।

तत्त वि [तत्त] गरम बिगा हुआ (सम १२५,
विपा १, ६; दे १, १०५)। *जला जी
[जला] नदी-विशेष (ठा २, ३)।

तत्त म [तत्त] वहाँ। *भव, *होत वि
[भवत्] प्रथम ऐसे भाप (पि २६३,
ममि ५६)।

तत्तटुसुत्त न [तत्तार्थसुत्त] एक प्रसिद्ध जैन
दर्शन-ग्रन्थ (मगम ७७)।

तत्तडिअ न [दे] रंगा हुआ कपडा (मन्ध
२, ४६)।

तत्ति जी [तुति] तुमि, संदीप (कुमा, कद
२६)। *ह वि [मत्] रुक्मि-युक्त,
सुव, सुगु (राज)।

तत्ति जी [दे] १ भादेय, हुकुम (दे ५, २०;
सण)। २ उत्तरता (दे २०)। ३ चिन्ता,
विचार (गा २; ५१; २७३ म. सुग २३७;
२८०)। ४ वार्ता, बात (भा २; वज्जा २)।
५ कार्य, प्रयोजन (पण्ड १, २; वष १)।

तत्तिवि [तायत्] उत्तरा (प्रासू १५६)।

तत्तिल वि [दे] उत्तर (पद; दे ३, ३,
तत्तिल) गा ५५७, प्रासू ५६)।

तत्तु (भप) देखो तत्त = तत (हे ४, ४०४;
कुमा)।

तत्तुडिअ न [दे] सुत्त, संयोग (दे ५, ६)।

तत्तुरिअ वि [दे] रजित (पद)।

तत्तो देखो ततो (कुमा; वी २६)। *मुह
वि [मुण] कितका मुह उस तरफ हो वह
(सुर २, २३४)।

तत्तोहुत्त न [दे] तदभिमुख, उसके सामने
(गठड)।

तत्त म [तत्त] वहाँ, उसमें (हे २, १६१)।

*भय वि [अभत्] प्रथम ऐसे भाप (पि
२६३)। *य वि [त्य] वहाँ का रहनेवाला
(उप ५६७ टी)।

तत्त वि [तत्त] भीत, डरा हुआ (हे २, १६१;
कुमा)।

तत्त देखो तत्त = तत्त (धर्मि ३०४, लुदि
५३)।

तत्तरि पुं [तत्तरि] नय-विशेष, 'तत्तरिण' एक
ठविष्ठा सोहद मगम पुई (मन्ध ४)।

तत्ता देखो तत्ता = तत्ता (गा ६६६)।

तदीय वि [तदीय] सुद्धाण (महा)।

तदो देखो ततो (हे २, १६०)।

तदीअचय न [दे] वृत्त, मात्र (दे ५, ८)।

तदिअस न [दे] प्रतिदिन, अनुदिन,
तदिअसिज हरेय (दे ५, ८; गठड,
तदिअद) पात्र)।

तदोसि देखो तदोसि = तदोसिपुत्त।

तद्वि पुं [तद्वि] १ व्याकरण-प्रसिद्ध
प्रत्यय-विशेष (पण्ड २, २; विषे १००३)।

२ वदित प्रत्यय की प्राप्ति का कारण-भूत
अर्थ (मणु)।

तत्ता देखो तत्ता (ठा ३, १; ७)।

तत्तय देखो तण्णय (सुर १४, १७४)।

तन्हा देखो तण्हा (सुर १, २०३; कुमा)।

तप देखो तप = तपस् (वंड)।

तप्प सक [तप्] १ तप करना। २ अक,
गलम होना। तप्प, तप्पति (पिग, प्रासू
५३)।

तप्प सक [तप्प] तुम करता। वड,
तप्पमाण (सुर १६, १६)। हेह, 'न हमो
कीसो सब्बो तप्पेअ कामभोगे' (घाट ४०)।

ह. तप्पेय्यव (सुर २३२)।

तप्प न [तप्प] शय्या, बिछौना (पात्र)।

*अ वि [ग] शय्या पर जानेवाला, सोने-
वाला (पण्ड १, २)।

तप्प पुन [तप्] डोंगी, छोटी नौका (पण्ड
१, १; विषे ७०६)।

तप्प पुन [तप्] नदी में दूर से बहकर आता
हुआ काष्ठ समूह (लुदि ८८ टी)।

तप्पविअ वि [तत्पाक्षि] उस पक्ष का
(व्या १२)।

तप्पज न [तत्पर्य] तत्पर्य, मतलब (राज)।

तप्पण न [तप्पण] १ सक्तु, सतुभा, सत्तु (पण्ड
२, ४)। २ जैन, धूमि-करण, प्रीणन (सुपा
११३)। ३ लिग्य वस्तु से शरीर की मालिश
(सुपा १, १३)।

तप्पणग न [दे] जैन साधु का पात्र-विशेष,
तत्पणी (कुलक १०)।

तप्पणाहुआलिआ जी [दे] सक्तुमिश्रित
भोजन (व्य ६०) वू०, वस्तुदेहिनी, धूमि-
लहिनी)।

तप्पभिअ म [तत्तमसुति] तबने, तबसे सेकर
(कय, लुगा १, १)।

तप्पमाण देखो तप = तपस्।

तप्पर वि [तत्पर] भावक (दे ५, २०)।

तप्पुरिअ पुं [तत्पुरिअ] व्याकरण-प्रसिद्ध
समास-विशेष (मणु)।

तप्पेय्यव देखो तप = तपस्।

तन्मत्तिवि [तन्मत्ति] उसका सेवक
(मग ५, ७)।

तन्मय पुं [तन्मय] यही जन्म, इस जन्म के समान पर-जन्म। 'मरण न [मरण] यह मरण, जिसमें इस जन्म के समान हो परलोक में भी जन्म हो, यहाँ मनुष्य होने से प्राणायाम जन्म में भी जिससे मनुष्य हो ऐसा मरण (मग २१, १)।

तन्मयिण्युं [तन्मयिण्युं] दाण, नीचर, धर्म-बारी, धर्मर (मग १, ७)।

तन्मयिण्युं [तन्मयिण्युं] ऊपर देखो (मग १, ७)।

तन्मय वि [तन्मय] उनी भूमि में उदात्त (इह १)।

तन्मयि म [दे] शीघ्र, जल्दी (श्राद्ध ८१)।

तन्मय [तन्म] १ लेद करना। २ सब-इच्छा करना। तन्मय (श्राद्ध. ६६)।

तन्म पु [दे] शीघ्र, जल्दी (दे ५, १)।

तन्म पुन [तन्म] १ धन्यकार। २ भक्षण (हे १, ३२, वि ४०६, धीय, धर्म २)।

तन्म पु [तन्म] सातवीं नरक-शुचिकी का जीन (कर्म ५, पत्र ५)। 'तन्मयभा जी [तन्मयभा] सातवीं नरक-शुचिकी (अधु)।

तन्मा जी [तन्मा] सातवीं नरक-शुचिकी (सम ६६, भा ७)। 'तन्मिर न [तन्मिर] १ धन्यकार (इह ४)। २ भक्षण (पठि)।

३ धन्यकार-समूह (इह ४)। 'व्यभा जी [प्रभा] छठवीं नरक-शुचिकी (पण १)।

तन्मग पुं [तन्मग] मतवारण, घर का वरणा, छाया (पुर ११, १५६)।

तन्मयधार पु [तन्मयधार] प्रबल धन्यकार (पठन १७, १०)।

तन्मय न [दे] धूल, जिसमें धाग रखकर रस्ती की जाती है वह (दे ५, २)।

तन्मयि पुकी [दे] १ भुज, हाथ। २ भुज, बुज विशेष की छाया, मोचन (दे २, २०)।

तन्मय पु [तन्म] १ नीचा नरक का एक नरक-स्थान (देवेन्द्र १०)। २ पाँचवीं नरक-भूमि का एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ११)।

तन्मय न [तन्म] धन्यकार, 'तन्मय न मे रिता व' (पठन ३६, ८)।

तन्मय वि [तन्म] धन्यकारवाला (दत्त ५, १, २०)।

तन्मय देखो तन्म = तन्मय; 'धन्यकारो वा तन्मय वा नन्दई नन्दई उ दोहों' (पत्र २)।

तन्मयई जी [तन्मयई] धन्यकारवाली रात (इह १)।

तन्मा जी [तन्मा] १ छठवीं नरक-शुचिकी (सम ६६, भा ७)। २ धन्यकार (भा १०)।

तन्माइ घर [धन्य] पुमाना, पिता। तन्माइ (हे ५, १०)। यह, तन्माइत (धुमा)।

तन्माल पुं [तन्माल] १ बुज-विशेष (उप १०३१ दी, पत्र ४२)। २ न. तन्माल बुज का कूल (सि १, ६३)।

तन्मस पुं [तन्मस] धन्यकार नरक का एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ११)।

तन्मस न [तन्मस] १ धन्यकार (सूत्र १, ५, १)। 'गुहा जी [गुहा] गुहा विशेष (इव)।

तन्मसधवार पुं [तन्मसधवार] प्रबल धन्यकार, धन्यकार, धन्यकार (सूत्र १, ५, १)।

तन्मस देखो तन्मस (दे २, २६)। तन्मी जी [तन्मी] राति, रात (गवड)।

तन्मय देखो तन्मय (मग ६, ५-पत्र २, ६८)।

तन्मयय पुं [तन्मयय] धन्यकार-धन्य (भा ५, २)।

तन्मय वि [तन्म] १ जन्मान्त, जायकय। २ धन्यकार (सूत्र २, २)।

तन्मोक्तिय वि [तन्मोक्तिय] प्रचन्द्र क्रिया करनेवाला (सूत्र २, २)।

तन्मय धन्य [तन्म] लेद करना। (भा ४८३)। तन्म देखो तन्म = तन्म। तन्मय (श्राद्ध. ६६)।

तन्मय वि [तन्म] तन्मय, तन्मय (विपा १, २)।

तन्मय वि [तन्मय] १ तन्मय, तन्मय। २ उसका विकार (पण १, २)।

तन्मि न [दे] वह, वपडा (गवड)।

तन्मि न [तन्मि] खेद करनेवाला (भा ५८६)।

तन्मि वि [तन्मि] १ तन्मि, तन्मि (दे १, ४६, दे २, ३१, मग)। २ न. वाय-विशेष (भा २, २)।

तन्म न [तन्म] तीन का समूह, त्रि, 'वाल-तए रि न मय' (वड ४५, भा २८)।

तन्म देखो तन्म = तन्म। 'व्यभिध म [प्रभुति] वय से (व ३१६)।

तन्म देखो तन्म = तन्म। 'कराय वि [कराय] तन्म को तन्मिताला (भा ४, १)।

तन्म य [तन्म] उम समय (धुमा)।

तन्म जी [तन्म] १ तन्म, छाया, धन्य (सम ३६)। २ दासधनी (मत ४१)। 'मंत वि [मंत] तन्म वाला (धुमा १, १)। 'निस पुं [निस] सब की एक जाति (जीय १)।

तन्मयनर न [तन्मयनर] उल्लेख बाद (धीय)।

तन्मयि म [तन्मयि] उत समय (वि ३५८, हे १, १०१)।

तन्मयुग वि [तन्मयुग] उसका अनुसरण करनेवाला (सूत्र १, १, ४)।

तन्म य [तन्म] बुजल धन्य, नीचर रहना। तन्म (वि ४१७)।

तन्म य [तन्म] तन्म होना, जल्दी होना, तेज होना। तन्म (वि २६०१)।

तन्म य [तन्म] धन्य होना, धन्य। तन्म (हे ५, ८६)। वह, तन्म (धीय ३२४)।

तन्म य [तन्म] तन्म, तन्म (हे ५, ८६)।

तन्म य [तन्म] तन्म, तन्म (हे ५, ८६)।

तन्म य [तन्म] तन्म, तन्म (हे ५, ८६)।

तन्म य [तन्म] तन्म, तन्म (हे ५, ८६)।

तन्म न [तन्म] १ वेग। २ बल, पराक्रम। 'महि वि [महि] १ वेगवाला। २ बल-वाला। 'महिहायन वि [महिहायन] तन्म, युवा (धीय)।

तन्म पु [तन्म] १ मन्मथ, धीन, सहर (पण १०३, धीय)। 'तन्म न [तन्म] धन्य-विशेष (वस ३)। 'मालि पु [मालि] समुद्र, सागर (धाम)। 'वई जी [वई] १ एक नाविका। २ कर्मा-धन्य-विशेष (वस ३)।

तन्मलोख जी [तन्मलोख] धन्यमहि-विशेष एक धन्यमहि जैन कर्मा-धन्य (समन १३८)।

तरंगि वि [तरङ्गिन्] तरंग-युक्त (गठ, कण्ठ) ।

तरंगिअ वि [तरङ्गित] तरंग युक्त (गठ, से ८, ११, मुषा १५७) ।

तरंगिणी लो [तरङ्गिणी] नदी, सरिता (प्राप् ६६, गठ, मुषा ५३८) ।

तरंगिणीनाथ पु [तरङ्गिणीनाथ] समुद्र, सागर (वज्रा १५६) ।

तरङ्ग } पुंन [तरण्ड, *क] डोगो, नौका
तरङ्गय } (मुषा २७२, ५००; मुर ८, १०६;
मुफ १०५) ।

तरंग वि [तर, *क] तरंगेवाला, तराक (ठा ४, ४) ।

तरण्ड पुत्री [तरण्ड] श्याम जन्तु-विशेष, श्याम की एक जाति (पण्ड १, १, छाया १, १, स २५७) । लो. 'लण्डो (पि १२३) । 'भल पुत्री [भल] श्याम जन्तु-विशेष (पठम ४२, १२) ।

तरट्ट वि [दे] प्रालम्ब, झुट, समर्थ, कटुर, हासिरजवाब 'तरट्टो' (प्राड ३८) ।

तरट्टी } लो [दे] प्रालम्ब लो. श्रीडा नाथिवा,
तरट्टी } होशियार की, 'भाणेण दुट्टवि चिरं
तरट्टी तरट्टी' (कपू, काप्र ५६६), 'भट्टेव
भागयासी तरणतट्टापी प्यासी' (मुषा ४२) ।

तरण न [तरण] १ तैला (प्रा १४, स १५६, मुषा २६२) । २ जहाज, नौका (विने १०२७) ।

सरणि पु [सरणि] १ सूर्य, रवि (कुमा) । २ जहाज, नौका । ३ धनकुमारी का पेड़, चौकुमार का पेड़ । ४ झर्रे वृक्ष, झकवन वृक्ष (हे १, ११) ।

तरतम वि [तरतम] न्यूनाधिक, 'तरतम-जोगमुसेहि' (कण्ठ) ।

सरसाण देखो तर = वृ ।

तरल वि [तरल] चबल, चपल (गठ, पाथ, कपू, प्राप् ६६; मुषा २०४, मुर २, ८६) ।

तरल सक [तरलम्] चबल करना, चलिब करना । तरलेड (गठ) । वड, तरलंत (मुषा ४४०) ।

तरलण न [तरलण] तरल करना, हिलाना, 'भरणाडीण कुणता कुसतरलण' (कण्ठ) ।

तरलानिअ वि [तरलित] चबल किया हुआ, चलायमान किया हुआ (गठ, शनि) ।

तरलि वि [तरलिन्] हिलानेवाला (कण्ठ) ।

तरलिअ वि [तरलित] चबल किया हुआ (पा ७८, जय पु ३३, सार्ध ११५) ।

वरवट्ट पु [दे] वृक्ष विशेष, चरवड, पमाड, पवार (दे ५, ५, पाथ) ।

तरस न [दे] मास (दे ५, ४) ।

तरसा भ [तरसा] शीघ्र, जल्दी (मुषा ५८२) ।

तरा लो [तरा] जल्दी, शीघ्रता (पाथ) ।

तरिअउ देखो तर = वृ ।

तरिअउ न [दे] उडुप, एक तरह की छोटी नौका (दे ५, ७) ।

तरिउ वि [तरिउ] तरिनेवाला (विने १०२७) । तरिउ देखो तर = वृ ।

तरिया लो [दे] दूध मादि का सार, मलाई (प्रभा ३३) ।

तरिहि, *तरिहि [तरिहि] चो, तब (मुर १, १३२, १, १३२) ।

तरी लो [तरी] नौका, डोगो (मुषा १११, दे ६, ११०, प्राप् १४६) ।

तरु पुं [तरु] वृक्ष, पड, गाछ (लो १४, प्राप् २६) ।

तरुणि वि [तरुण] जवान, मध्य वयवाला (पठम ५, १६८) ।

तरुगग वि [तरुग] बालक, किशोर तरुगय (सुप्र १, १, ४) । २ नवीन, नया (भग १५) । लो. 'णिगा, 'णिया (प्राचा २, १) ।

तरुगरहस पुन [दे] रोप, बीमारी (मोप १३६) ।

तरुणिम पुत्री [तरुणिमन्] यौवन, जवानो (कण्ठ) ।

तरणी लो [तरणी] युवावति ली, जवान ली (गठ, स्वप्न ८२, महा) ।

तल सक [तल] तलना, भुजना, तेन आदि मे भुजना । तलेना (पि ४६०) । वड, तलेत (विपा १, ३) । हेऊ-तलिजिउ (स २५८) ।

तल न [दे] १ लम्पा, बिछौना (दे ५, १६, पण्ड) । २ पुं. शमिश, मांघ का मुखिया (दे ५, १६) ।

तल पु [तल] १ वृष विशेष, ताड का पेड़ (छाया १, १ टी—पन ४३, पठम ५३,

७६) । २ न, स्वरूप, 'धरणिवलति' (कण्ठ), 'वासविततलि' (कुमा) । ३ हथेली (जं १) । ४ तला, भूमिका, 'सततने पाताए' (मुर २, ८१) । ५ प्रयोग, नोचे (छाया १, १) । ६ हाथ, हस्त (कण्ठ, पण्ड २, ५) । ७ मध्य खण्ड (ठा ८) । ८ तलवा, पानी के नीचे का भाग या सतह (पण्ड १, ३) । 'ताल पुंन [ताल] १ हस्त-ताल, ताली । २ वाद्य विशेष (कण्ठ) । 'प्यहार पुं [प्रहार] तमाचा, चपेटा (हे) । 'मंगय न [मङ्गक] हाथ का घासपण विशेष (मोप) । 'वट्ट न [पट्ट] बिछौने की बहुर (वज्रा १०४) । 'वट्ट न [पट्ट] ताड भुज का पत्ता (वज्रा १०४) ।

तल पुंन [तल] १ हाथ विशेष (राय ४६) । २ हथेली, 'धममाउलो कलले' (सुप्र २, १, १६) । ताल वृक्ष की पत्ती (सुप्र १, ५, १२) । 'वर पुं [वर] राजा ने प्रसन्न होकर जिसको रत्न जटित सोने का पट्टा दिया हो वह (मणु २२) ।

तलअट सक [अण] भ्रमण करना, घूमना, फिरना । तलअटहि (हे ५, १६१) ।

तलआगति पुं [दे] दूध, दमाद (दे ५, ८) ।

तलआखा लो [दे] बन्धनविशेष (पण्ड १) ।

तलण न [तलण] तलना, भजन (पण्ड १, १) ।

तलप एक [तप्] तपना, गरम होना । तलपइ (पिप) ।

तलपफल पु [दे] शालि, मोहि, धान (दे ५, ७) ।

तलउत पु [दे] १ कान का घासपण-विशेष (दे ५, २१; पाथ) । २ बराण, उत्तमान (दे ५, २१) ।

तलउर पु [दे, तलउर] नगर रक्षक, कोतवाल (छाया १, १, मुषा ३, ७३, पाथ, महा, ठा ६, कण्ठ, राय, मणु, उवा) ।

तलविट { न [तालवृन्त] ध्वनन, पंखा (हे
तलवेट { १, ६७, प्राप्) ।
तलवेट {

तलसारिअ वि [दे] १ गानित । २ मुच, मूल (दे ५, ६) ।

१, जो २) । २ एक स्थान से दूसरे स्थान में जाने-माने की शक्तिवाला प्राणी (निष्ठ १२) ।
 "काइय पुं ["कायिक] जंगम प्राणी, द्वीन्द्रियादि जीव (पहल १, १) । "काय पुं ["काय] १ वस-समूह (ठा २, १) । २ जगम प्राणी (आवा) । "णाम, "नाम न ["नामन्] कर्म-विशेष, जिससे प्रभाव से जीव भक्तकाय में उत्पन्न होता है (बम्भ १; सम ६७) । "रेणु पुं ["रेणु] परिमाण-विशेष, बत्तीस हजार सात सौ घटसठ परमाणुओं का एक परिमाण (मणु, पृष्ठ २५४) ।
 "वाइया की ["पादिका] नीन्द्रिय जन्तु-विशेष (जीव) ।

ससण न ["ससन्] १ स्वप्न, कलन, हिलन (राज) । २ पलायन (सूत्र १, ७) ।

ससनाडी की ["ससनाडी] मन जीवा के रहने का प्रदेश, जो ऊपर-नीचे नितावर चौदह राज्ज परिमित है (पृष्ठ १४३) ।

ससर देखो टसर (कम्पू) ।

ससिअ वि ["दे] शुक्र, सूखा (दे ५, २) ।

ससिअ वि ["दुषित] तुषापुर, पिपासित, प्यासा हुआ (पण ८४) ।

ससिअ वि ["नर] भीत डरा हुआ (जीव ३, महा) ।

ससियवन् देखो तस = वस ।

ससेयर वि ["शेसेतर] ऐकैन्द्रिय जीव, स्थावर प्राणी (सुपा १६८) ।

सह ["तथा] १ उची तरह (कुमा, प्राहु १६, स्वप्न १०) । २ मीर, तथा (दे १, ६७) । ३ पाद-पुलि में प्रयुक्त किया जाता अभ्यस (निष्ठ १) । "वार पुं ["वार] "तथा शब्द उपचारण (उत्त २६) । "णाण वि ["ज्ञान] प्रश्न के उत्तर की जातनेवाला (ठा ६) । २ न, सत्य ज्ञान (ठा १०) । "त्ति अ ["इति] स्वीकार-योग्य अभ्यस—जैसा ही (जैसा धारण करते हैं) (खाया १, १) । "य अ ["य] १ उक्त धर्म की दृढ़ता-सूचक अभ्यस । २ समुच्चय-सूचक अभ्यस (पंचा २) । "वि अ ["पि] तो भी (गड) । "विह वि ["विध] उस प्रकार का (सुपा ४५६) । देखो तहा ।

तह वि ["तथ्य] सत्य, सत्य, सच्चा (सूत्र १, १३) ।

तह पुं ["तथ्य] आज्ञाकारण, दास, नौकर (ठा ४, २—मय ११३) ।

तह ["तथ्य] १ स्वभाव, स्वल्प तहीय ["सुमति १२२) । २ सत्यवचन (सूत्र १, १५, २१) ।

तह देखो तह = तथा (घीप) ।

तहरी की ["दे] पशुवालो सुरा (दे ५, २) ।

तहलिआ की ["दे] गो-वाण, गौभो का बाका, मोराला (दे ५, ८) ।

तहा देखो तह = तथा (कुमा, गड, आषा, सुर ३, २७) । "गय पुं ["गत] १ युक्त आत्मा । २ मर्त्य (आषा) । "भूय वि ["भूत] उप प्रकार का (पउम २२, ६५) ।

"रूप वि ["रूप] उभ प्रकार का (अप १५) । "रि वि ["चिन्] १ निगुण, चतुर २ पुं सर्वज्ञ (सूत्र १, ४, १) । "हि अ ["हि] वह इस प्रकार (उप ६८६ टी) ।

तहि देखो तह = तथा (गा ८७८, उत्त ६) ।

तहि ["तत्र] वहाँ, उसमें (गा २०६, तहि ["प्राप्त] गा २३४, ऊप १०५) ।

तहिय वि ["तथ्य] सत्य, सच्चा, वास्तविक (खामा १, १२) ।

तहिय ["तत्र] वहाँ, उसमें (विसे २७८) ।

तहेय ["तथ्य] उची तरह, उची प्रकार तहेय ["कुमा, पद] ।

ता अ ["तद्] उभे, उस कारण से (दे ५, २७८, गा ४६ ६७ उव) ।

ता देखो ताय = तावत् (दे १, २७१, गा १४१, २०१) ।

ता अ ["तदा] तब, उस समय (रमा, कुमा, सण) ।

ता अ ["तदि] तो, तब (रमा, कुमा) ।

ता की ["ता] लट्ठी (सुर १६, ४८) ।

ता ["तद्] वह । "गय पुं ["गन्ध] १ उष्णक भन । २ उसके गन्ध के समान गन्ध (पण १७) । "कास पुं ["स्पर्श] १ उष्णक स्पर्श । २ वैसा स्पर्श (पण १७) । "रस पुं ["रस] १ वह स्पर्श । २ वैसा स्पर्श (पण १७) । "रूप न ["रूप] १ वह रूप । २ वैसा रूप (पण १७—मय ५२२) ।

ताअ देखो ताव = ताप (गा ७६७, ८१४; हका ५०) ।

ताअ पुं ["तात] १ तात, पिता, बाप (सुर १, १२३, उत्त १४) । २ पुत्र, वंश (सूत्र १, ३, २) ।

ताअ सक ["त्रे] रखण करना । क. तायवन् (था १२) ।

ताअप्प न ["तादात्म्य] सङ्गता, धनेव, यजिप्रता (प्राहु २४) ।

ताइ वि ["स्यागिन्] व्याप करनेवाला (गा २३०) ।

ताइ वि ["सायिन्] रसक, परिमाणक (उत्त ८) ।

ताइ वि ["तापिन्] ताप-युक्त (सूत्र १, १५) ।

ताइ वि ["नायिन्] रसक, रसाण करनेवाला (उत्त २१, २२) ।

ताइ वि ["तायिन्] उष्णकरी (सूत्र १, २, २, १७) ।

ताइ पुं ["त्रायिन्] बुनि, ताहु (वसनि २, ६) ।

ताइअ वि ["आत] दक्षित (उव) ।

ताअ (अप) देखो ताय = तावत् (कुमा) ।

ताठा (इपे) देखो दाढा (दे ७, १२४) ।

ताह सक ["ताह्य] १ ताहन करना, पीटना । २ श्रेयणा करना, भाषात करना । ३ गुलाकार करना । ताहइ (दे ५, २७) ।

भवि. ताहइत्स (रि २४०) । बह. ताहइत्स (काल) । बह. ताहइत्समाग, ताडीअत्त, ताडीअमाण (सुपा २६, पि २४०, भनि १५१) हेह ताडिअ (कम्पू) । क. ताडिअ (उत्त १६) ।

ताह पुं ["ताह] ताह का पेठ (स २१६) ।

ताहक पुं ["ताहक] काल का भानुपण-विशेष, कुण्डल (दे ६, ६३, कम्पू कुमा) ।

ताहण न ["ताहन] १ ताहन, पीटना (उप ६८६ टी गा ५४६) । २ श्रेयणा, भाषात (सि १२, ८३) ।

ताडाविण वि ["वादिन] पिटवाया गया (सुपा २८८) ।

ताडिअ देखो साड = ताड्य ।

ताडिअ वि ["ताडित] १ जिसका ताहन किया गया हो वह, पीटा हुआ (पाद) । २

ताल नी तरह सम्यो जीवमाना (शाया १, ८) । 'अमय पुं' [ध्वज] १ बलदेव (भावम) । २ गुण-विशेष (देव १) । ३ शकुन्य पहाड (ती १) । 'पलव पुं' [प्रलम्ब] मोरालक का एक जगसक (भा ८, ५) । 'पिसाय पुं' [पिशाच] दोष-काय रासस (पएण १) । 'पुड देखो' उड (भा १२) । 'यर पु' [चर] एक मनुष्य-जानि, बारण (मोप ७६६) । 'जिंट, पित, 'वेड, 'घोट न [वृन्त] व्यजन, पत्ता (पि ५३, नाट—वेणी १०४, हे १, ६७, प्राप) । 'सबुड पुं' [संपुट] ताल ने पनो का संपुट, ताल-पन संभव (सूम १, ५, १) । 'सम वि' [सम] ताल के अनुसार स्वर, स्वर-विशेष (ज ७) ।

ताल क पु [ताडक] १ कुएडन, कान का भाभूषण-विशेष । २ छन्द-विशेष (पिग) ।

तालकि पुकी [ताडकि] छन्द-विशेष । की. 'णी (पिग) ।

तालग न [तालक] ताला, द्वार बन्द करने का यन्त्र (ज ३३६ टी) ।

तालग देखो ताडण (भीप) ।

तालग्ना की [ताडना] चपेटा भादि का प्रकार (पएण २, १, भीप) ।

तालफली की [दे] वाली, नीकरानी (दे ५, १) ।

तालव देखो ताला (सुपा ४१४, कुप्र २५२) ।

तालसम न [तालसम] गेय काव्य का एक भेद (दसनि २, २३) ।

तालइल पु [दे] शानि, कीहि (दे ५, ७) ।

ताला प्र [तदा] उस समय, 'ताला जाग्रति गुणा' जाला ते सहिषएहि पिप्पति' (हे ३, ६५, काप्र ५२१) ।

ताला की [दे] जाना, खोई, घान का ताला (दे ५, १०) ।

तालाचर पुं [तालचर] ताल (वाद्य) बजाने-वाला (निपु १५) ।

तालाचर पुं [तालाचर] ॥ प्रेशक-विशेष, तालाचर ॥ ताल देनेवाला प्रेशक (शाया १, १) । १ नट, नर्तक भादि मनुष्य-जाति (इह ३) ।

तालिअ वि [ताडित] आहत, पीटा हुआ (शाया १, ५) ।

तालिअंट सक [अमय] धुमाना, फिराना । तालिअंट (हे ४, ३०) ।

तालिअंट न [तालमृन्त] व्यजन, पंखा (स ३०८) ।

तालिअंटर वि [अमयित] धुमानेवाला (हुमा) ।

तालिअंत देखो ताल = ताडय ।

तालिअ देखो तारिस (उत्त ५, ३१) ।

ताली की [ताली] १ वृक्ष विशेष (बाह ६३) ।

२ छन्द विशेष (पिग) । 'पत्त न [पत्र]

ताल-वृक्ष के पत्ता का बना हुआ पंखा (बाह ६३) ।

तालु } न [ताल, क] तालु, मुँह के मन्दर
तालु } का ऊपरी भाग, अनुमा (सत ४६,
शाया १, १६) ।

तालग्पाडणी की [तालोद्वाटनी] विद्या-विशेष, ताला खोलने की विद्या (बसु) ।

तालुर पुं [दे] १ फैन, फीण । २ कपिल वृक्ष, नैष का पेड (दे ५, २१) । ३ पानी का भावत (दे ५, २१, गा ३७, पाय) । ४ पु,

पुष्प का मत्व (विरु ३२) ।

तालेवि देखो ताल = तालय ।

ताय सक [तापय] १ तपाना, गरम करना । २ सताप करना, दुःख उपजाना । तावेति (गा ८५०) । कर्म. ताविज्वति (गा ७) । क.

सापिणज (भग १५) ।

ताय पुं [ताप] १ गरमी, ताप (सुपा ३८६, कण्ठ) । २ सताप, दुःख (भाव ४) । ३ सूर्य, रवि । 'दिसा की [दिम्] सूर्य-तापित विशा (राज) ।

ताय प्र [तावत्] इन अर्थों का सूचक अव्यय । १ तबतक (पउम ६८, ५०) । २ प्रस्तुत अर्थ (भावम) । ३ अवधारण, नियम । ४ अवधि, हद । ५ पक्षान्तर । ६ प्रसंशा । ७ वाक्य-युगा । ८ मान । ९ साकल्य, संपूर्णता । १० तब, उस समय (दे १, ११) ।

तावअ वि [तावक] त्वदीय, तुम्हारा (धन्तु २३) ।

तावअइ वि [तावत्] उतना (सम १४४, भग) ।

तायें देखो ताप = तावत् (भग) ।

तायें } (अप) देखो ताय = तावत्
तावेहि } (हुमा) ।

तावण पुं [तापन] चौथी नरकभूमि का एक नरकस्थान (देवद ८) । २ वि. तपानेवाला (वि ६७) ।

तावण न [तापन] १ गरम करना, तपाना (निपु १) । २ पुं, इक्ष्वाकु वंश का एक राजा (पउम ५, ५) ।

तापणिज देखो ताप = तापय ।

तावचीस तावचीसा } देखो तायचीसय (भीप-
तायचीसय } वि ४४५, ४३८, काल) ।

तावचीसा देखो तायचीसा (पि ४३८) ।

तावस पु [तापस] १ तपस्वी, योगी, सन्यासि-विशेष (भीप) । २ एक जैनमुनि (कण्ठ) । 'गोह न [गोह] तापसो का मठ (पाय) ।

तावसा की [तापसा] जैन मुनियों की एक शाखा (कण्ठ) ।

तावसी की [तापसी] तपस्विनी, योगिनी (सवड) ।

ताविअ वि [तापित] तपाया हुआ, गरम किया हुआ (गा ५३, विपा १, ३, मुर ३, २२०) ।

ताविआ की [तापिआ] सवा, प्रसा भादि फकाने का पाय (दे २, ५६) । २ कबाही, छोटा कबाह (भावम) ।

ताविच्छ पुं न [तापिच्छ] वृक्ष विशेष, तमाल का पेड (हुमा, दे १, १७, सुपा ५८८) ।

तावी की [तापी] नदी-विशेष (पउम ३५, १, गा २३६) ।

तास पुं [त्रास] १ भय, डर (ज ५ ३५) । २ उड्डेग, सताप (पएण १, १) ।

तासण वि [त्रासन] त्रास उपजानेवाला (पएण १, १) ।

तासि वि [त्रासिन्] १ त्रास-युक्त, घबरा ॥ २ त्रास जनक (ठा ४, २, कण्ठ) ।

तासिअ वि [त्रासित] निचकी त्रास उप-जाया गया हो वह (भवि) ।

तादे थ [तदा] उस समय, तब (दे ३, ६५) ।

ति थ [तिन] तीन बार (भीप ५४२) ।

ति देखो तइअ = सुतोय (बम्म २, १६) ।
 भाग, भाय, हाअ पुं [भाग] सुतोय
 भाग, तीसरा हिस्सा (बम्म २, छाया १,
 १६—पद २१८: बप्पु) ।

ति देखो धी; 'उज्जुत गायति भुणि सन्नतिपुत्ता
 तिमे चचरियाउदति' (रंभा) ।

ति वि.ब. [त्रि] तीन, दो घोर एक (नव ४;
 महा) । अणुअ न [अणु] तीन पर-
 मारुमी से बना हुआ द्रव्य, 'मणुमतएहि
 मणुद्धव्वे भिण्णुमं ति तिदेत्ता' (सम्म
 ११६) । 'उण वि [गुण] १ तीनपुत्ता ।
 २ सत्त, तवस्स घोर तमस्स पुणवाला (अणु
 १०) । 'उणिय वि [गुणित] तीनपुत्ता
 (अवि) । 'उत्तरसय वि [उत्तरशततम]
 एक ती तीसरा, १०३ वां (पठम १०३,
 १७६) । 'उल वि [तुल] १ तीन को
 जीतनेवाला । २ तीन को जीतनेवाला (छाया
 १, १—पद ६४) । 'ओयन [ओजस्स]
 विपम शक्ति विशेष (ठा ४, ३) । 'कंड,
 'कंडग वि [काण्ड, क] तीन काण्डवाला,
 तीन भागवाला (बप्पु, सूम १, ६) । 'कडुअ
 न [कटुक] सोड, मरीच घोर पीपल
 (मणु) । 'करण देखो 'राण (राज) ।
 'काल न [काल] भूत, अविष्य घोर वर्त-
 मान काल (मग, सुपा ८८) । 'काल देखो
 'काल (सुपा १६६) । 'दंड वि [राण्ड]
 तीन खण्डवाला (उप ६८६ टी) । 'जंडा-
 द्विच पुं [जण्डाधिपति] षष्ठ चक्रवर्ती
 राजा, वामुदेव (पठम ६१, २६) । 'गडु,
 'गडुअ देखो 'कडुअ (स २५८, २६३) ।
 'गण न [करण] सत्त, वचन घोर भाषा
 (इ २०) । 'गुण देखो 'उण (अणु) ।
 'गुत्त वि [गुप्त] मनोप्राप्ति प्राप्त तीन
 दुर्गिताला, सम्यो (स ८) । 'गोण वि
 [कोण] तीन कोनेवाला (राज) । 'चत्ता
 ओ [चत्वारिंशत्] तेतालीस (कम्म ४,
 ५५) । 'जय न [जगत्] स्वर्ण, मर्त्य
 घोर पाताल लोक (ति १) । 'णयण पुं
 [नयन] महादेव, शिव (सि १५, ५८, सुपा
 ११८; ५६६; गउड) । 'शुल देखो 'उल
 (छाया १, १ टी—पद ६७) । 'त्तिस
 (अप) देखो 'त्तीस । 'त्तीस ओन [त्रय-

किंरात्] १ संख्या-विशेष, ३३ । २ तेतीस
 संख्यावाला, तेतीस (बप्पु, जो ३६; सुर १२,
 १३६; दं २७) । 'दंड न [दण्ड] १ हथि-
 यार रखने का एक उपकरण (महा) । २ तीन
 दण्ड (घोष) । 'दंडि पुं [दण्डिन] संख्यामी,
 साक्ष्य मत का अनुयायी साधु (उप १३६ टी,
 गुपा ४३६ महा) । 'नय ओ [नयवि] १
 संख्या विशेष, तिरानवे । २ तिरानवे संख्या-
 वाला (बम्म १, ३१) । 'पंच वि.ब.
 [पञ्चन] पंद्रह (घोष १४) । 'पंचासइम
 वि [पञ्चाश] निपनवां (पठम ५३, १५०) ।
 'पह न [पय] जहाँ तीन रास्ते एकत्रि
 होने हो बहु स्थान (राज) । 'पायण न
 [पातन] १ शरीर, इन्द्रिय घोर प्राण इन
 तीनों का नाश । २ मन, वचन घोर भाषा
 का विनाश (पिंड) । 'पुंड न [पुण्ड]
 तिलक-विशेष (स ६) । 'पुर पुं [पुर]
 दानव-विशेष । २ न, तीन नगर (राज) ।
 'पुरा ओ [पुरा] विद्या-विशेष (सुपा
 १६७) । 'उमंगी ओ [भङ्गी] छन्द विशेष
 (पिंम) । 'मधुर न [मधुर] गो, शकर घोर
 मधु (मणु) । 'मासिआ ओ [त्रैमासिकी]
 जिसकी धनवि तीन मास की है ऐसी एक
 प्रतिमा, व्रत विशेष (सम २१) । 'मुह वि
 [मुत्त] १ तीन मुखवाला (राज) । २ पु.
 भगवान् सत्रवर्णनबी का शासन-देव (सति
 ७) । 'रत्त न [रत्त] जैन रात (स
 ३४२), 'बम्मपरस्स दुहुतीवि दुल्लो विपुए
 तिरत्त' (दुप्र ११८) । 'रासि न [राशि]
 जीव, शरीर घोर मोक्षीव रूप तीन राशिवां
 (राज) । 'ओअ न [लोकी] स्वर्ण, मर्त्य
 घोर पाताल लोक (कुपा, माहु ८६; स १) ।
 'ओअ पुं [लोचन] महादेव, शिव
 (था २८, पठम ५, १२२, पिंम) । 'लोअ-
 पुज पुं [लोकपूज्य] पातकीपण्ड के विदेह
 में उत्पन्न एक जित्तेव (पठम ७५, ३१) ।
 'लोई ओ [लोकी] देखो 'लोअ (मउड,
 भत्त ४५२) । 'लोग देखो 'लोअ (उप पु
 ३) 'वई ओ [पदी] १ तीन पदों का समूह ।
 २ भूमि में तीन बार पाँव का न्यास (घोष) ।
 ३ गति-विशेष (अंत १६) । 'वग्ग पुं
 [वर्ग] १ घर्ण, घर्ण घोर काम के तीन

पुरुषार्थ (ठा ४, ४—पद २८३; स ७०३;
 उा पु २०७) । २ लोक, वेद घोर समय
 दोनों का समूह (माहु १; भावम) । 'वण
 पुं [वर्ण] पलाय घृष्ट (कुपा) । 'वरिस वि
 [वर्ष] तीन वर्षों को मरत्यावाला (वव
 ३) । 'वलि ओ [वलि] चमरी की तीन
 रेखाएँ (बप्पु) । 'वलिण वि [वलिङ्]
 तीन रेखावाला (राय) । 'वली देखो 'वलि
 (मा २७८; घीप) । 'वट्ट पुं [वृष्ट] भरत-
 क्षेय के भावी नयन वामुदेव (सम १५४) ।
 'वय न [पद] तीन पाँववाला (दे ८, १) ।
 'वहआ ओ [पथगा] गंगा नदी (सि ६,
 ८, अणु ३) । 'वायणा ओ [पातना]
 देखो 'पायन (पह १, १) । 'विट्,
 'विट्ठु पुं [वृष्ट, मिट्] भारतक्षेय ने
 उत्पन्न प्रथम धर्म-चक्रवर्ती राजा का नाम
 (सम ८८, पठम ५, १५५) । 'विह वि
 [विध] तीन प्रकार का (उवा, जी २०,
 नव ३) । 'विहार पु [विहार] राजा
 कुमारपाल का बनवाया हुआ पाटण का
 एक जैन मन्दिर (कुप्र १४४) । 'संकु पुं
 [राकु] सूर्यवशीय एक राजा (अभि ८२) ।
 'संम न [सम्भ] प्रनाल, मय्याही घोर
 सार्वकाल का समय (मुर ११, १०६) ।
 'सट्ट वि [पट्ट] तिरस्का, ६३ वां (पठम
 ६३, ७३) । 'सट्ठी ओ [पट्टि] तिरस्का,
 ६३ (अभि) । 'सत्त वि.ब. [सप्तम]
 एकादश (था ६) । 'सत्तल्लुओ म [सप्त-
 कवस्स] द्वासी बार (छाया १, ६, सुपा
 ४४६) । 'समइय वि [सामयिक] तीन
 समय में उत्पन्न होनेवाला तीन समय की
 शिववाला (ठा ३, ४) । 'सरय न [सरक]
 तीन सरा या सड़ीवाला हार (छाया १,
 १, भीप, महा) । २ वाद्य-विशेष (पठम ६६,
 ४४) । 'सरा ओ [सरा] मन्दली पकड़ने
 का जाल-विशेष (विपा १, ८) । 'सरिय न
 [सरिक] १ तीन सरा या सड़ी वाला हार
 (कप्प) । २ वाद्य-विशेष (पठम ११३, १११) ।
 ३ वाद्य-विशेष-संबन्धी (पठम १०२,
 १२३) । 'सीस पुं [शीर्ष] देव-विशेष
 (वीव) । 'शुल न [शूल] छत्र-विशेष (पठम

१२, २४, ६६६)। 'मृदुपाणि' पृष्ठ [शुल-
पाणि] १ मृदुत्व, शिष्ट। २ विदुष का
हाथ में स्वेनेवाया मुक्त (पदम ३६, ३३)।
'मृदुला श्री [मृदुला] छाया विदुष
(सूय १, १, १)। 'हृत्तर वि [ममत्र]
विदुष', ३२ नां (पम ३, ३६)। 'हृ
म [वा] तन प्रकार वे (वि ४४१, ४५)।
'हृत्तरा, 'हृत्तरा, 'हृत्तरा न [सुनन]
१ तन जन्म, स्वर्ग, मर्त्य और पञ्चाय साक्ष
(हृत्तरा १, २, २, २, २, २)।
२ पु. यत्ना हृत्तरात्तर क विज्ञा का मन
(हृत्तरा १४४)। 'हृत्तरात्तर पु [सुनन-
पाठ] यत्ना हृत्तरात्तर का विज्ञा (हृत्तरा
१४४)। 'हृत्तरात्तर पु [सुननात्तरा]
पाठय क पदुत्तरा का नाम (पदम ८१,
१०२)। 'हृत्तरात्तर पु [सुननविहारा]
पाठय (हृत्तरात्तर) में यत्ना हृत्तरात्तर का मन
भावा हृत्तरा एक जैन मन्दिर (हृत्तरा १४४)।
वत्ता ते'।

'वि वत्ता हृत्तरा = हृत्तरा (हृत्तरा वत्ता २, १२,
२३)।

विज्ञ (भा) मरु [विम्, विम्] १ भास्
हाना। २ मरु भास् बनला। विज्ञ (मरु
१००)।

विज्ञ न [विज्ञ] १ तन का मरुत्तर (भा १,
२, ३२८ टी)। २ वह जन्म जन्म तन
राम विज्ञा हों (सूय १, ११)। 'मनज
पृष्ठ [मनज] एक यत्न (पम ३, ३१)।
वत्ता विज्ञ।

विज्ञ वि [विज्ञ] तन से उत्तर हृत्तरा
(यत्ता)।

विज्ञात्तर पु [विज्ञात्तर] स्वतन्त्र-वत्तर एक
मनजुनि (यत्ता)।

विज्ञा न [विज्ञा] तन का मरुत्तर (विज्ञ
२३४३)।

विज्ञा श्री [विज्ञा] स्वतन्त्र-वत्तर एक
यत्ता (म ११, ८३)।

विज्ञा श्री श्री [विज्ञा] स्वतन्त्र-वत्तर (विज्ञ)।

विज्ञा न [विज्ञा] तन का मरुत्तर (विज्ञ
१४३२)।

विज्ञात्तर न [विज्ञात्तर] तन जन्म—
विज्ञात्तर [स्वर्ग, मर्त्य और पञ्चाय साक्ष
(यत्ता ६०, मरुत्तर ६)।

विज्ञात्तर पु [विज्ञात्तर] देव, वत्तरा (हृत्तरा मरु १,
६)। 'गज्ञ पु [गज्ञ] ऐतन्त्र का ऐतन्त्र
हृत्तरा वत्तर का हाथा (म ६ ६१)। 'नाद पु
[नाथ] वत्तर (हृत्तरा ६८६ यत्ता मुता ४४)।

'पृष्ठ पु [पृष्ठ] वत्तर, वत्तरात्तर (मुता
४३ १०६)। 'विम् पु [विम्] नाद
वत्तर (हृत्तरा ३३३)। 'योग पु [योग]
स्वर्ग (हृत्तरा १०१६)। 'विज्ञा श्री
[विज्ञा] वत्तर, का वत्तरा (मुता २३७)।

'मरि श्री [मरि] रत्ता नदी (हृत्तरा)
'मेष्ठ पु [मेष्ठ] मर पर्वत (हृत्तरा ४८)।

'हृत्तरा पु [हृत्तरा] स्वर्ग (हृत्तरा १६ वत्तर
७२८ टी मरु १, १०२)। 'हृत्तरा पु
[हृत्तरा] वत्तर (मुता ३४)। 'हृत्तरा पु
[हृत्तरा] वत्तर (मुता ७६)।

विज्ञात्तर मरि पु [विज्ञात्तर मरि] वत्तरा
(ममत्ता १००)।

विज्ञात्तर पु [विज्ञात्तर] वत्तर वत्तरा
(वत्तरा १३४)।

विज्ञात्तर वत्तरा विज्ञात्तर (वत्तरा ६१०)।

विज्ञात्तर मरु पु [विज्ञात्तर मरु] वत्तर, वत्तरात्तर
(हृत्तरा १, १०)।

विज्ञात्तरा श्री [विज्ञात्तरा] यत्ता, यत्ता (मरुत्तर
४४)।

विज्ञात्तरा वत्तरा [विज्ञात्तरा] वत्तरा वत्तरा।
विज्ञात्तरा (भावा)। वत्तरा विज्ञात्तरा
(भावा)।

विज्ञात्तरा श्री [विज्ञात्तरा] वत्तरा, वत्तरात्तरा
(भावा)।

विज्ञात्तरा श्री [विज्ञात्तरा] वत्तरा, वत्तरात्तरा
(भावा)।

विज्ञात्तरा श्री [विज्ञात्तरा] वत्तरा, वत्तरात्तरा
(भावा)।

विज्ञात्तरा श्री [विज्ञात्तरा] वत्तरा, वत्तरात्तरा
(भावा)।

विज्ञात्तरा श्री [विज्ञात्तरा] वत्तरा, वत्तरात्तरा
(भावा)।

विज्ञात्तरा श्री [विज्ञात्तरा] वत्तरा, वत्तरात्तरा
(भावा)।

विज्ञात्तरा श्री [विज्ञात्तरा] वत्तरा, वत्तरात्तरा
(भावा)।

विज्ञात्तरा श्री [विज्ञात्तरा] वत्तरा, वत्तरात्तरा
(भावा)।

विज्ञात्तरा श्री [विज्ञात्तरा] वत्तरा, वत्तरात्तरा
(भावा)।

विज्ञात्तरा श्री [विज्ञात्तरा] वत्तरा, वत्तरात्तरा
(भावा)।

विज्ञात्तरा श्री [विज्ञात्तरा] वत्तरा, वत्तरात्तरा
(भावा)।

विज्ञात्तरा श्री [विज्ञात्तरा] वत्तरा, वत्तरात्तरा
(भावा)।

विज्ञात्तरा श्री [विज्ञात्तरा] वत्तरा, वत्तरात्तरा
(भावा)।

विज्ञात्तरा श्री [विज्ञात्तरा] वत्तरा, वत्तरात्तरा
(भावा)।

विज्ञात्तरा श्री [विज्ञात्तरा] वत्तरा, वत्तरात्तरा
(भावा)।

विज्ञात्तरा श्री [विज्ञात्तरा] वत्तरा, वत्तरात्तरा
(भावा)।

विज्ञात्तरा श्री [विज्ञात्तरा] वत्तरा, वत्तरात्तरा
(भावा)।

विज्ञात्तरा श्री [विज्ञात्तरा] वत्तरा, वत्तरात्तरा
(भावा)।

विज्ञात्तरा श्री [विज्ञात्तरा] वत्तरा, वत्तरात्तरा
(भावा)।

विज्ञात्तरा श्री [विज्ञात्तरा] वत्तरा, वत्तरात्तरा
(भावा)।

विज्ञात्तरा श्री [विज्ञात्तरा] वत्तरा, वत्तरात्तरा
(भावा)।

विज्ञात्तरा श्री [विज्ञात्तरा] वत्तरा, वत्तरात्तरा
(भावा)।

विज्ञात्तरा श्री [विज्ञात्तरा] वत्तरा, वत्तरात्तरा
(भावा)।

विज्ञात्तरा श्री [विज्ञात्तरा] वत्तरा, वत्तरात्तरा
(भावा)।

विज्ञात्तरा श्री [विज्ञात्तरा] वत्तरा, वत्तरात्तरा
(भावा)।

विज्ञात्तरा श्री [विज्ञात्तरा] वत्तरा, वत्तरात्तरा
(भावा)।

विज्ञात्तरा श्री [विज्ञात्तरा] वत्तरा, वत्तरात्तरा
(भावा)।

विज्ञात्तरा श्री [विज्ञात्तरा] वत्तरा, वत्तरात्तरा
(भावा)।

विज्ञात्तरा श्री [विज्ञात्तरा] वत्तरा, वत्तरात्तरा
(भावा)।

विज्ञात्तरा श्री [विज्ञात्तरा] वत्तरा, वत्तरात्तरा
(भावा)।

तंदूस [तुंन [तिन्दूस, *क] १ वृत्त विशेष
तंदूसग (परण १) । २ बन्दुक, गेंद
तंदूसय (खाना १, १८, गुप्ता ५३) ।
३ क्रीडा-विशेष (भावम) ।

तेकड़ न [त्रैकाल्य] तीनों काल का विषय
(परह २, २) ।

तेकड़ पुं [चिकूट] १ लंका के समीप का
एक पहाड़, सुबेल पर्वत (पठम ५, १२७) ।
२ शीता महानदी के दक्षिण किनारे पर
स्थित पर्वत-विशेष (ठा २, ३—पृथ ८०) ।
३ 'मामिय पुं [स्वामिन्] सुबेल पर्वत का
स्वामी, राजा (पठम ६५, २१) ।

तिकर वि [तीक्ष्ण] १ तेज तीखा, पैना
(महा-पा ५०४) । २ सूक्ष्म । ३ बोला,
शुद्ध (हुमा) । ४ पक्ष, निष्ठुर (भग १६,
३) । ५ वेध-मुक्त, निद्रा-बाधे (ज २) । ६
क्रोधी, गरम प्रवृत्तिवाला । ७ तीखा, बड़वा
न बरसाही । ८ भास्वर-पटित । ९० चतुर,
बल । ११ न. विप, पहर । १२ लोहा ।
१३ युद्ध, सभाम । १४ राज, हथियार । १५
समुद्र का मोन । १६ बबलार । १७ धेत-
कूट । १८ पयोपित-प्रसिद्ध तीक्ष्ण पण, यथा
प्रलेपा, भाद्र, ज्येष्ठा भीर मूल नक्षत्र (हि
२, ७५, ८२) ।

तिक्ष्ण सव [तीक्ष्णय] तीक्ष्ण करना,
तेज करना । तिक्तेड (हि ४, ३४४) ।

तिन्मग न [तीक्ष्णय] तेज-करण, उत्तेजन
(हुमा) ।

तिफयाल मक [तीक्ष्णय] तीक्ष्ण करना ।
बर्म, दिवजालिजर्जित (पुर १३, १०६) ।

तिफ्यालिज वि [दि] तीक्ष्ण विद्या हुमा
(दि ५, १३, पात्र) ।

तिफ्युतो स [त्रिस्] तीन बार (निय
१, १, बन्ध, भीष, राय) ।

तिफ देतो तिज = त्रिक (जी १२, गुप्ता ३१;
खाना १, १) । यस्सि वि [पशिन]
मन, यत्न भीर शरीर को भाग्य में रखनेवाला,
'नरन् विपान्निस्त विस् तलउडं जहाँ'
(गुप्ता १६७) ।

तिगसंपुण्य न [त्रिकसंपूर्ण] सगावार तीव्र
वि या उत्तम (उपवी ५८) ।

तिगिंछ पुं [तिगिच्छ] द्रव-विशेष (इक) ।
तिगिच्छायण न [तिगिच्छायन] गोज-विशेष
(गुज १०, १६ टी) ।

तिगिछि पुं [तिगिच्छि] १ पर्वत-विशेष
(ठा २, ३—पृथ ७०; इक, सम, ३३) ।
२ द्रव-विशेष, निषय पर्वत पर स्थित एक
हृद (ठा २, ३—पृथ ७२) ।

तिगिच्छ सक [चिन्तिस्] प्रतीकार-करना,
इलाज करना, दवा करना । तिगिच्छ उक्त
१६, ७६; वि २१५, ५१५) ।

तिगिन्छ पुं [चिन्तिस्] वैद्य, हकीम
(वष ५) ।

तिगिन्छ पुं [तिगिच्छ] १ द्रव-विशेष,
निषय पर्वत पर स्थित एक द्रव (इक) । २
न. देशविमान-विशेष (मम ३८) ।

तिगिन्छ न [चैन्तिस्] चिकित्सा-शास्त्र
(तिरि १६) ।

तिगिन्छग वि [चिन्तिस्] प्रतीकार
तिगिन्छय करनेवाला । २ पुं. वैद्य, हकीम
(ठा ४, ४६; वि २१५; ३२७) ।

तिगिन्छय न [चिन्तिस्] चिकित्सा
(मिड १८८) ।

तिगिन्छय न [चैकित्य] चिकित्सा-कर्म
(ठा ६—पृथ ५५१) ।

तिगिन्छा जी [चिन्तिस्] प्रतीकार, इलाज,
दवा (ठा ३, ४) । 'संथ न [शाख]
आमुनेद, वैद्यशास्त्र (राज) ।

तिगिन्छायण न [तिगिन्छायन] गोज-
विशेष (गुज १०, १६) ।

तिगिन्छ देखो तिगिछि (ठा २, ३—पृथ
८०, सम ८४; १०४; वि ३५४) ।

तिगिन्छय पुं [चैन्तिस्] वैद्य, चिकित्सक
(पठम ८, १२४) ।

तिग्य वि [तिग्य] तीक्ष्ण, तेज (हि २, ६२) ।
तिग्य वि [तिग्य] तिगुना, तीन-गुना (राज) ।

तिघुड पुं [तिघुड] विद्याधर नरा का एक
राजा (पठम ५, ४३) ।

तिजड पुं [तिजड] १ विद्याधर वंश के एक
राजा का नाम (पठम १०, २०) । २ राजस
वंश का एक राजा (पठम ५, २६२) ।

तिजामा पुं [त्रियामा] राशि, रास (गुप्ता
विजामी २४०; रंजा) ।

तिज वि [तार्थ] तेरे योग्य (मात ६३) ।
तिजु पुंजी [दि] अन्न-नाश करनेवाला कीट,
टिड्डी (जी १८) । जी. 'हुं' (गुप्ता ५४६) ।
तिजुय सक [ताडय] ताड़न करना ।
तिजुइ (प्राक ७६) ।

तिण न [तृण] तुण, घास (गुप्ता २३३,
ग्रमि १७३; स १७६) । 'स्य न [शुक्र]
तुण का मम भाग (मग १५) । 'हृत्थय पुं
[हृत्थक] घास का गुता (मग ३, ३) ।
तिणिस पुं [तिमिश] वृक्ष-विशेष, बेंत (ठा
४, २; बन्ध १, १६, भीष) ।

तिणिस न [दि] मधु-पाल, मधुसूता (दि ५,
११; ३, १२) ।

तिणिस वि [तेनिग] तिमिश-वृक्ष-संबंधी,
बेंत का (राय ७४) ।

तिणीय वि [तृणीकृत] तुण-तुल्य माना
हुमा (कुप ५) ।

तिण्य पुं [मक [तिम्] १ भाद्र होना ।
तिण्यआइ २ सक. भाद्र करना । तिण्य-
मर (प्राक ७४) ।

तिण्य वि [तीर्ण] १ बार पहुँचा हुमा (भीष) ।
२ शक्त, समर्थ (से ११, २१) ।

तिण्य न [स्तेन्य] चोरी, 'तिनहिण्युत्तप्यो'
(सप ५६७ टी) ।

तिण्य देखो ति = वि । 'भंग वि [भङ्ग]
वि-खण्ड, तीन खण्डवाला (ममि २२४) ।
'जिह वि [निय] तीन प्रकार का (माट—
वैत ४३) ।

तिण्यय पुं [तिमिन्] देखो तिन्तिज =
तिन्ति (हर) ।

तिण्य देखो तिन्त्य (हि २, ७५; ८२; वि
३१२) ।

तिण्य देखो तण्य (राज. वज्र ६०) ।

तिवउ पुं [तिवउ] चाली या चलनी, माता,
माया या मैदा धानने का पात्र (मामा) ।

तिवय देपो तिअय (वष १) ।

तिविक्रय देखो तिहृग्य । तिनिग्य,
तिविग्य (बन्ध, वि ४५७) । यट,
तिविक्रयमाग (राज) ।

तिविक्रय न [तिविग्य] सटन करना
(ठा ६) ।

तिविक्रयया देपो तिद्विग्य (वि ९९६) ।

वित्तिक्का देखो तिदक्का (सम ५७) ।
वित्त वि [वृत्त] रुम, सनुठ, घुग (विने
२४०६; श्रीप, दे १, १६; युपा १६३) ।
वित्त वि [वित्त] १ लीता, कडुभा (ग्यामा
१६) । २ पुं. लीता रस (ठा १) ।

वित्ति देखो तत्ति = दे (तिरि २७, संवोव ६) ।
वित्ति की [वृत्ति] वृत्ति, सतोप (उा ५६७
ठी, दे १, ११७, युपा ३७५; प्रामू १४०) ।
वित्ति [दे] सारपय, सार (दे ५, ११, पइ) ।
वित्तिअ वि [तावन्] उठना (हे २, १५६) ।
वित्तिअ पुं [वित्तिअ] १ स्नेच्छ देश-विशेष ।
२ उस देश में रहनेवाली स्नेच्छ जाति
(पएह १, १) । देखो तिपिगअ ।

वित्तिरि १ पुं [वित्तिरि] पत्ति-विशेष, लीतर
वित्तिरि १ या वित्तिरि (हे १, ६०, युप ५२७) ।
वित्तिरिअ वि [दे] स्नान से भाद्र (दे ५,
१२) ।

वित्तिअ वि [तावन्] उठना (पइ) ।
वित्तिअ पुं [दे] द्वापराज, प्रलीहार (गा
५५६) ।

वित्तिअ वि [दे] घुग, मारी (दे ५, १२) ।
वित्तिअ (मर) देखो वित्तिअ (हे ४, ५३५) ।
वित्ति पुं [वित्ति] साधु, साध्वी, ध्याक कीर
ध्याविका का सनुदाय, जैनसंघ (विने १०३५) ।
वित्ति पुं [वित्ति] ऊपर देखो (विने ११००) ।
वित्ति न [तीर्थ] प्रथम मणघर (छादि
१३० टी) ।

वित्ति न [तीर्थ] १ ऊपर देखो (विने
१०३५; ठा १) । २ दरान, मत (सम्म ८,
विने १०४) । ३ माना स्थान, पवित्र जगह
(धर्म २, राप. मन्त्रि १२७) । ४ प्रवचन,
शासन, जिन-देव प्रणीत द्वापराज्ञी (धर्म
१) । ५ पुन. भवताप, भाट, मरी वनेच्छ में
उतरने का रास्ता (विने १०२६, विक्र ३२,
प्रति ८२, प्रामू ६०) । *कर, *गर देवो
*यर (सम ६७; कण्य पउम २०, ८, हे
१, १७७) । *जत्ता की [यात्रा] तीर्थ-
गमन (धर्म २) । *णाद, *नाह पुं [नाव]
जिन-देव (म ७६६; जय पु ३५०, युपा
६५६; साध ५३, सं ३५) । *यर वि [कर]
१ तीर्थ का प्रवर्तक । २ पुं. जिन-देव, जिन भग-

वान् (ग्यामा १, ८, हे १, १७७; सं १०१) की.
री (कुंदि) । *यरणा म [करनामन्]
कर्म विशेष, जिसके उदय से जीव तीर्थकर
होता है (ठा ६) । *राय पुं [राज] जिन-
देव (उप ५४००) । *सिद्ध पुं [सिद्ध]
तीर्थ-प्रवृत्ति होने पर जो मुक्ति प्राप्त करे वह
जीव (ठा १, १) । *हिनायम पुं [गिनाय-
क] जिनदेव (उप ६८६ टी) । *हिंवि पुं
[गिपि] संघनायक, जिन-देव (उप १४२
टी) । *हिंवि पुं [गिपिपति] जिनदेव,
जिन भगवान् (पाम) ।

वित्तिरकर पुं [तीर्थकर] देखो वित्तिर-
कर (वेह ६५१) ।

वित्तिरि वि [तीर्थिन्] १ दारानिक, दारान-
साध का विद्वान् । २ किसी दरान का अनु-
यायी (पु ३) ।

वित्तिरिअ वि [तीर्थिक] ऊपर देखो (प्रवो
७४) ।

वित्तीय वि [तीर्थीय] ऊपर देखो (विने
११२६) ।

वित्तिरकर पुं [तीर्थेश्वर] जिन-देव, जिन
भगवान् (युग ५१; ८६; २६०) ।

वित्तिअ देखो तिअस (भाट—विक्र २८) ।

वित्तिअ न [वित्तिअ] स्वर्ग, देवलोक (युपा
१४२; युग ३२०) ।

वित्तिअ (मर) देखो तहा (हे ४, ४०१; कुमा) ।

वित्तिअ देखो तिण (सम १) ।

वित्ति वि [दे] स्तोमित, भाद्र, गीला (ग्यामा
१, ६) ।

वित्तिअ देखो ते-मण्ण (पच ५, १८) ।

वित्तिअ सक [वित्ति] देना । वित्तिअ (पिठ
२६७) ।

वित्तिअ सक [वृत्ति] लुप्त होना । वृत्ति. वित्पत
(पिठ ६४७) ।

वित्तिअ सक [वृत्ति] लुप्त करना, हट्क. *न
इमा जीवो सको तिप्येउं नाममोहेहि (पच
५५) । क. तिपियन्त्र (पउम ११, ७३) ।

वित्तिअ मन् [निपु] १ फलना, कृता । २
भगवान् कृता । ३ रोना । ४ मन्, मुख-
च्युत करना । वित्तिअ, वित्तिअ (युग २, १;
२, २, ५५) । वृत्ति. वित्पमाग (ग्यामा १,

१—पच ४७) । प्रवो. वृत्ति. वित्पयंत (सम
५१) ।

वित्तिअ पुन [वेप] भपान आदि घटने की
विधा, शीघ्र (गच्छ २, ३२) ।

वित्तिअ वि [वृत्ति] वृत्ति, घुग (हे १, १२८) ।

वित्तिअ न [वित्तिअ] पीडन, हैरानी (युग २,
२, ५५) ।

वित्तिअ ग्यामा की [वित्तिअ] वृत्ति-विमोचन,
रोदन (ठा ४, १; श्रीप) ।

वित्तिअ न [वित्तिअ] तप-विशेष, लीवी
(सवीप ५८) ।

वित्तिअ (मर) देखो तहा (हे ४, ४०१; मवि;
कम्म १) ।

वित्तिअ पुं [वित्तिअ] मत्स्य की एक जाति (पएह
१, १) ।

वित्तिअ गिळ पुं [दे] मत्स्य, मछली, तिमि
(मत्स्य) की गिलावेवाला मत्स्य (दे ५, १३) ।

वित्तिअ गिळ पुं [वित्तिअ गिळ] मत्स्य की एक
जाति (दे ५, १३; से ७, ८, पएह १, १) ।

*गिळ पुं [गिळ] एक प्रकार का महान्
मत्स्य, बड़ी भारी मछली (युग २, ६) ।

वित्तिअ गिळ पुं [वित्तिअ गिळ] मत्स्य की एक
जाति (पउम २२, ८३) ।

वित्तिअ गिळ देखो वित्तिअ गिळ = वित्तिअ गिळ (उप
५१७) ।

वित्तिअ गिळ पुं [दे] वविक, युगाकर (दे
वित्तिअ गिळ ५, १३) ।

वित्तिअ न [दे] गीला भाट (दे ५, ११) ।

वित्तिअ न [वित्तिअ] १ भगवान्, भविष्य
(पवि; कण्य) । २ विवाचित कर्म (धर्म २) ।

३ मत्स्य ज्ञान । ४ मत्तान (माइ ५) । ५ पुं.
वृत्ति-विशेष (स २०६) ।

वित्तिअ रिच्छ पुं [दे] वृत्ति विशेष, करन का
वेद (दे ५, १२) ।

वित्तिअ रिच्छ पुं [दे] वृत्ति विशेष (पएह १—
पच ३३) ।

वित्तिअ कीन [वित्तिअ] वाद्य-विशेष (पउम
५७, २२) । की. *छा (पच) ।

वित्तिअ पु [वित्तिअ] एक प्रकार का वीज,
पेटा, कुम्हड़ा (कण्य) ।

वित्तिअ १ की [वित्तिअ] वैजात्य पूर्वत
वित्तिअ १ की एक घटा (ठा २, ३; पएह
१, १—पच १४) ।

तिम्म थक [स्तीम्] भोजना; भाद्र होना ।
वह. तिम्ममाण (पत्र ३५, २०) ।

तिम्म सक [तिम्] १ भाद्र करना । २
थक. गोला होना । तिम्मइ (प्राक ७४) ।
संक. तिम्मेट (सिंह ३५०) ।

तिम्म देको तिग्ग (हे २, ६२) ।

तिम्मिअ वि [स्तीमित] भाद्र, गोला, (दे
१, ३७) ।

तिया जी [तिरा] जी, महिला; 'होही तुम
तियवक्का कुई जपो एरियमे जीये' (पुल
४, ६) ।

तियाल देको ते-आलीस (कम्म ६, ६०) ।

तिरकर सक [तिरस् + कृ] तिरस्कार करना,
मनषीयणा करना । कृ. तिरस्करणीअ (नाट) ।

तिरकार पुं [तिरस्कार] तिरस्कार, धममान,
मनषेलाना (प्रबो ४१, सुपा १४४) ।

तिरकारिणी } जी [तिरस्करणी] यकनिका,
तिरक्करणी } परा (मि ३०६; ग्रन्थि
१८६) ।

तिरच्छ देको तिरिच्छ (प्राक १६; ३८) ।

तिरि } अ [तिर्यक्] तिरछा, टेढा (प्राक
तिरिअं = ००, १६) ।

तिरिअ नि [तिरिअ] तिर्यक् का, 'तिरिया
मणुया य दिब्बगा उवसग्गा विविहाहिमाधिया
(सुप १, २, २, १५) ।

तिरिअ } नि [तिर्यक्] १ थक कुटिल,
तिरिअच } बाका (थव २, उप ५ ३६६,
तिरिअन } मुर ११, १६३) । २ पुं. पयु,
तिरिअन } पसी भादि प्राणी, देव, नारक

और मनुष्य से भिन्न योनि में उत्पन्न जन्तु
(पण ४४, हे २, १४३, सुभ १, ३, १,
उप ५ १८६, प्राप् १७६, महा. भाषा ४६,
पत्रम २, ४६, जी २०) । ३ मर्यलोक, मध्य
लोक (ठा ३, २) । ४ न. मध्य, बीच-
भाग, मग १५, ५), 'तिरिअं भस्सेआएणं
दीवसमुदाएणं मज्ज मज्जेए जेजेव जमुदेवे
दीवे' (कप्प) । गइ जी [गति] १ तिर्यग्-
योनि (ठा ५, ३) । २ थक गति, टेढ़ी चाल,
मुटित गमन (चंद २) । 'जंसग्ग पुं
[जम्भक] देको बी एक जाति (कप्प) ।
'जोणि जी [योनि] पयु, पसी भादि बा

उत्पत्ति-स्थान (महा) । 'जोणिअ वि
[योनिअ] तिर्यग्-योनि में उत्पन्न (सम २;
मग जीव १, ठा ३, १) । 'जोणिणी जी
[योनिअ] तिर्यग्-योनि में उत्पन्न जी
जन्तु, तिर्यक् जी (पण १७—पत्र ५०३) ।
'दिसा 'दिसि जी [दिश] पुवं भादि
दिशा (भावम, जवा) । 'पव्वय पुं [पव्वे]
बीचे मे पठ्ठा पहाड, मार्गारोचक पर्वत
(मग १५, ५) । 'भित्ति जी [भित्ति]
बीच की भित्त (भावा) । 'लोग पु [लोक]
मर्य लोक, मध्य लोक (ठा ५, ३) । 'वसइ
जी [वसति] तिर्यग्-योनि (पण १, १) ।
तिरिच्छ नि [तिरिच्छीन] १ तिर्यग् गत
टेढा गया हुआ (राज) । २ तिर्यग्-सम्बन्धी
(उत्त २२, १६) ।

तिरिच्छि देको तिरिअ (हे २, १४३; पद) ।
तिरिच्छिय देको तेरिच्छिय (भाषा २, १५,
५) ।

तिरिच्छी जी [तिरिअ] तिर्यक् जी (कुमा) ।
तिरिछ पुं [दे] एक जाति का पेड़, तिमिर
वृक्ष (दे ५, ११) ।

तिरिडिअ नि [दे] १ तिमिर-वृक्ष । २ बिचित
(दे ५, २१) ।

तिरिडि पुं [दे] उष्ण वात, गरम पवन (दे
५, १२) ।

तिरिडिअ (मा) देको तिरिच्छि (हे ४, २६५) ।
तिरीड पुन [तिरीट] वृक्ष, तिर का प्राभूषण
(पण १, ४, सम १५३) ।

तिरीड पु [तिरीट] वृक्ष-विशेष (वृह २) ।
'पट्टय = [पट्टक] वृक्ष-विशेष की छाल का
बना हुआ कपडा (ठा ५, ३—पत्र ३३८) ।

तिरीडि नि [किरीटिन्] वृक्ष-वृक्ष, वृक्ष-
विभूषित (उत्त ६, ६०) ।

तिरोभाव पुं [तिरोभान] लव, भन्तर्धान
(विसे २६६६) ।

तिरोवइ नि [दे] वृत्ति से भन्तहित, नाह से
व्यवहित (दे ५, १३) ।

तिरोडा सक [तिरस् + धा] भन्तहित करना,
तोड़ करना, भट्टय करना । तिरोहति (मर्गनि
२४) ।

तिरोहिअ नि [तिरोहित] वृक्ष, भन्तहित,
भट्टय, भाव्यहित, बना हुआ (राज) ।

तिल पुं [तिल] १ स्वनाम प्रसिद्ध भद्र-विशेष,
तिल (गा ६६४, थाया १, १; प्राप् ३४,
१०८) । २ ज्योतिष्क देव-विशेष, ग्रह-विशेष (ठा
२, ३) । 'कुट्टी जी [कुट्टी] तिल की बनी हुई
एक भोज्य वस्तु तिलकुट (धर्म २) । 'पप्प-
डिया जी [पप्पटिका] तिल की बनी हुई एक
खाद्य चीज, तिल पात्र (पण १) । 'पुप्पवण्ण
पुं [पुप्पवर्ण] ज्योतिष्क देव-विशेष, ग्रह-
विशेष (ठा २, ३) । 'मही जी [मही]
एक खाद्य वस्तु (धर्म २) । 'संगलिया जी
[संगलिन] तिल की कली (मग १५) ।
'सककुलिया जी [सककुलिन] तिल की
बनी हुई खाद्य वस्तु-विशेष, तिलबुजिया (राज) ।
विलइअ नि [विलिअ] तिलक की तरह
भाचरित, विभूषित, 'जयजयसइतिलमो
मंगलमुली' (धर्मा ६) ।

विलिअ पुं [विलिअ] देश-विशेष, एक भारतीय
क्षेत्र देश, भाषा प्रात (कुमा, इक) ।

विलिअकरणी जी [विलिअकरणी] १ तिलक
करने की सलाई । २ गोरौचना, पीले रंग का
एक सुगंधित द्रव्य, जो गाय के पिताशय से
निकलता है (सूष १, ४, २, १०) ।

विलिअ पुं [विलिअ] १ वृक्ष विशेष (सम
विलिअ १५२, मीम, कप्प, थाया १, ६,
उप ६८६ टी, गा १६) । २ एक प्रतिभासु-
क्षेत्र राजा, भरतसेन में उत्पन्न पट्टा प्रति-
भासुदेव (सम १५४) । ३ द्वीप-विशेष । ४
समुद्र-विशेष (राज) । ५ न. पुष्प-विशेष
(कुमा) । ६ टीका, सलाह में दिया जाता
चन्दन भादि का बिड़ (कुमा धर्मा ६) । ७
एक विद्याधर-नगर (इक) ।

विलिअट्टी जी [विलिअपट्टी] तिल की बनी हुई
एक खाद्य वस्तु, तिलपट्टी (पत्र ४ टी) ।

विलिअविलय पुं [दे] जल-जन्तु विशेष (कप्प) ।

विलिम जीम [दे] वाद्य-विशेष (मुना २४२,
सण) । जी. 'मा (पुर ३, ६८) ।

विलुका न [विलोकय] स्वर्ग, मर्य पीर
पताल सोन (दे २१) ।

विलुसमा देयो विलोसमा (सम्मत १८८) ।

विलेअ न [विलिअ] तिल का तेल (कुमा) ।
विलोक्ष देको विलुक्ष (पुर १, ६२) ।

विठोत्तमा की [तिठोत्तमा] एक स्वर्णय
अक्षरा (उप ७६८ दो, महा) ।

तिलोदग } न [तिलोदक] तिल का घोवन—
तिलोदय } जब (आवा, कप) ।

तिह न [तैल] तैल, तेल (सूत्र ३५, मुद्र
२४०) ।

तिह न [तिह] छन्द विशेष (पिंग) ।

तिल्लग वि [तैलरु] तैल बेचनेवाला, तेलो
(इह १) ।

तिहदुडी की [दे] गिलहरी, गुं लोमकोवी
(नदी टि पन, १३३ मुद्रित) मारवाडी मे
लातोरी लाती ।

तिहोदा की [निलोदा] नदी विशेष (निज्ज १) ।
तिथे (प्रप) देखो तद्वा (हे ४, ३६७) ।

तिउण्णी की [तिउण्णी] एक महीपक्षि (ओ
५) ।

तिनाय सक [ति+पातय] मन, वचन
और काय से नष्ट करना, जान से मार
अनना । तिनायए (सूत्र १, १, १, ३) ।

तिविक्कम पु [तिविक्कम] जैनमुनि 'गहिया
निपण्हि (? तिपण्हि) मही, तिजिदमो
तण विक्कामो' (धर्मवि ८६) ।

तिविडा की [दे] वूकी, सूई (हे ५, १२) ।

तिविडी की [दे] मुटिका, छोटा पुडवा (हे ५,
१२) ।

तिव्व वि [तीव्र] १ प्रबल, प्रचण्ड, उत्कट
(मग १५, आचा) । २ रीट, भयानक, डरावना
(सूत्र १, ५, १) । ३ गाढ, निविड (पण्ह १,
१) । ४ तिल, कटुमा (मग ३, २४) । ५
प्रकट, उलम, प्रकर्ष-बुक् (णामा १, १—
पन ४) ।

तिव्व वि [द तीव्र] १ दुःख, जो कठिनता
से सहन हा सके (हे ५, ११, सूत्र १, ३,
३ १, ५, १ २, ६, आचा) । २ अत्यन्त
अधिक, अत्यर्थ (हे ५—११, धर्म २, शीघ,
पण्ह १, ३, पचा १५, धाम ६, उवा) ।

तिसय वि [तिसस्य] तीन बार मुनन से
अच्छी तरह याद कर लेन की शक्तिवाला
(धर्मस १२०७) ।

तिसला की [तिराल] भगवान् महावीर को
माता का नाम (सम १५१) । 'सुअ पु
[मुअ] भगवान् महावीर (पउम १, ३३) ।

तिसा की [तृषा] प्यास, पिपासा (सुर ६,
२०६, पाय) ।

तिसाइय } वि [तृषित] गुणगुर, प्यासा
तिसिय } (महा, उव, पण्ह १, ४, सुर १,
१६६) ।

तिसिर पु व [तिशिरस] १ देश विशेष
(पउम ६८, ६५) २ पु तृष विशेष (पउम
६६, ४६) । ३ रावण का एक पुत्र (से
१२, ५६) ।

तिससगुत्त देखो तीसगुत्त (राज) ।

तिह (प्रप) देखो तद्वा (हुमा) ।

तिहि पकी [तिवि] पचदरा चन्द्र-कसा मे
बुक् काल, पिन, ठारोस (चव १०, पि
१८०) ।

तीअ वि [तृनीय] तीसरा (सम १५०, सति
२०) ।

तीअ नि [अतीव] १ डबरा हुमा, बीया
हुमा (मुषा ४४६, भग) २ पु भूतकाल (ठा
३, ४) ।

तीइल पु [तैतिल] ज्योतिष प्रसिद्ध करण
विशेष (जिमे ३३४८) ।

तीमण न [तीमन] कडी, लाय विशेष, फोर
(हे २ ३५, सण) ।

तीमिअ वि [तामिन] आद, गोला (कुप्र
१७३) ।

तीय वि [तेन] तीन (सूत्र, १, २, २,
२३) ।

तीर अक [राक्] मयर्थ होना । तीरइ (ह
५, ८६) ।

तीर सक [तीरय] समास करता, परिपूर्ण
करना । तीरइ, तीरइ (हे ५, ८६ भग) ।
सक तीरित्ता (कप) ।

तीर पुन [तीर] विनाश, छ, पार (स्वप्न
११६ प्रासु ६०, ठा ४, १ कप) ।

तीरगम वि [तीरगम] पार गामो, पार जाने
वाग (आचा) ।

तीरट्ट पु [तीरस्य, तीरार्थ] साधु भुनि,
अमण (सतिन २, ६) ।

तीरिय वि [तीरित] समापित, परिपूर्ण किया
हुमा (पन ५) ।

तीरिया की [दे] शर या तीर रखने का शैला,
तखत, तूपाय, वण्डि (?) 'गहियमण्ण
पासस्य धणुअर, सविअो तीरियासरो' (स
२६७) ।

तीस न [तिशत्] १ सख्या-विशेष, तीस,
३० । २ तीस-सख्यावाला (महा, भवि) ।

तीसआ } की [तिशत्] ऊपर देखो (सति
तीसइ } २१) । 'वरिस वि [वर्ध] तीस
वर्ष की उम्र का (पउम २, २८) ।

तीसइम वि [तिश] १ तीसवा (पउम ३०,
६८) । २ न लगातार चौदह दिना का उप-
वास (आमा १, १) ।

तीसग वि [तिशरु] तीस वर्ष की उम्रवाला
(तदु १७) ।

तीसगुत्त पु [तिथ्यगुत्त] एक प्राचीन आचार्य-
विशेष, जिसने अन्तिम प्रवेश मे जीव की सत्ता
का पन्थ बताया था (ठा ७) ।

तीसभइ पु [तिथ्यभइ] एक जैनमुनि
(कप) ।

तीसम वि [तिश] तीसवा (भवि) ।

तीसा की, देखो तीस (हे १, ६२) ।

तीसिया की [तिशिरा] तीस वर्ष के उम्र
की की (चव ७) ।

तु अ [तु] इन अर्थों का सूचक अर्थव्य—१
मिदवा, भेद विशेषण (आ २७ विसे
३०३५) । २ अन्वधारण, निश्चय (सूत्र १,
२, २) । ३ समुच्चय (सूत्र १, १, १) ।
४ कारण हेतु (निज्ज १) । ५ पाद-पूरक
अर्थव्य (विसे ३०३५ पचा ४) ।

तुअ सक [तुअ] व्यपका करना पीडा करना ।
तुअइ (पण्ह) । अयो. सक. तुआनइत्ता (ठा
३, २) ।

तुअर पु [तुअर] आन्य विशेष, रहस्य (ज
१) ।

तुअर अक [त्वर] त्वरा होना, शीघ्र होना,
जल्दी होना । तुअर (पा ६०६) ।

तुअ वि [तुअ] १ ऊँचा, उच्च (गा २५६,
श्रीप) । २ ५ छन्द विशेष (पिंग) ।

तुंगार पु [तुंगार] अग्निकोण का पवन
(आवम) ।

तुगिम पुकी [तुगिमन्] ऊँचाई, उच्चत्व
(मुषा १२४, वजा १५०, कपू, सण) ।

तुगिय पु [तुगिक] १ ग्राम विशेष (आवम) ।
२ पर्वत विशेष, 'तुंगे तुगियसिहरे गतु तिअ
तव तवई' (कुप्र १०२) । ३ पुकी गाम विशेष
में उन्नत, 'असमई तुगिय वेद' (एदि) ।

तुंगिया छो [तुङ्गिका] नगर-विशेष (भग) ।
तुंगियायण न [तुङ्गिकायण] एक गोन का
नाम (वण) ।

तुंगी छो [दे] १ रात्रि, रात (दे ५, १५) ।
१ श्रापन-विशेष, 'असिपरमुकुंतुगोसंपट्ट'—
(नाल) ।

तुंगीय पुं [तुङ्गीय] पवंत-विशेष (सुर १,
२००) ।

तुंड छोन [तुण्ड] १ तुल, मुंह (ग ४०२) ।
२ अय-भाग (निष् १) । छो, 'डी, कि
कोवि जीविपत्नी कटुयद ग्रहिस्स तुंडोए'
(सुपा ३२२) ।

तुंडीर न [दे] मधुर-विश्वी-कल (दे ५,
१५) ।

तुंडुअ पुं [दे] जीणं घट, पुयना घटा (दे
५, १५) ।

तुमुखुडिअ वि [दे] त्वरा-मुक्त (दे ५,
१६) ।

तुंद न [तुन्द] उदर, नेट (दे ५, १५, उप
७२८ टी) ।

तुदिल } वि [तुन्दिल] बडा पेठमाला, तोदेल
तुदिल } (कण्, वि २६५, उत ७) ।

तुय न [तुम्ब] तुम्बी, भलावू, लौकी (पउम
२६, ३४, भोप ३८, कुप १३६) । २ गाडी
की नाभि, 'न हि तु'यमि विणु' भरया
साहारया हति' (भावम) । ३ 'जातायकम्पा'
सूत्र का एक अध्ययन (सम) । 'यज्ज न
[यज्ज] सनिवेर विशेष, एक गांव का नाम
(साधं २५) । 'वीण वि [वीण] वीणा-
विशेष को बजानेवाला (जीन ३) । 'वीणिय
वि [वीणिण] वही दूसीं कर्ष (भीष,
पणह २, ४, शाया १, १) ।

तुन न [तुम्ब] पहिए के बीच का गोल धन-
मन (साधं ५३) । 'वीणा छो [वीणा]
वाद्य विशेष (राय ४६) ।

तुंवह देवो तुं वुरु (दक) ।

तुंवा छो [तुम्बा] लोचपाल देवो की एक
अभ्यन्तर परिपद (ठा ३, २) ।

तुंवाग पुंन [तुम्बक] बहू, लौकी (दस ५, १
७०) ।

तु विगो ओ [तुम्बनी] बल्ली विशेष (दे ५,
४२७, राज) ।

तुविछो छो [दे] १ मधु पटल, मधपुडा ।
२ उद्दल, ऊपल (दे ५, २३) ।

तुवी छो [तुम्बी] १ तुम्बी, भलावू, लौकी,
कहू (दे ५, १५) । २ बैन साधुयो वा एक
गान, तपनी (सुपा ६४१) ।

तुवुरु पुं [तुवुरु] १ वृक्ष-विशेष, टिबल
का पेठ (दे ५, ३) । २ गन्धर्व देवो की एक
जाति (पणए १, सुपा २६५) । ३ भयवान्
सुमतिनाथ का शास्त्रनायिकायक देव (सति
७) । ४ शस्त्रेन्द्र के कर्णवर्त्तय वा अक्षिपति
देव-विशेष (ठा ७) ।

तुक्कार पुं [दे] एक उत्तम जाति का भरव
या घोडा, 'अन्त च तस्य पत्ता तुक्कारुत्तमा
बहुविहीय' (सुर ११, ४६, मवि) । देखो
तोक्कार ।

तुच्छ पुकी [तुच्छा] रिक्ता तिथि, चतुर्थी,
नवमी तथा चतुर्दशी तिथि (सुख १०,
१५) ।

तुच्छ वि [दे] अवशुक्त, सूखा, नीरस
(दे ५, १५) ।

तुच्छ वि [तुच्छ] १ हलका, अल्प, निरुद्ध,
हीन (शाया १, ५, शासु ६६) । २ अल्प,
थोडा (भम ६, ३३) । ३ शून्य, रिक्त, खाली
(आको) । ४ असार, नि सार (भग १८,
३) । ५ अपूर्ण (ठा ४, ४) ।

तुच्छद्वय } वि [दे] रजित, अनुराग प्राप्त
तुच्छद्वय } (दे ५, १५) ।

तुच्छम पुकी [तुच्छम] तुच्छता (वज्ज
१५६) ।

तुज्ज न [तुज्ज] बाग, बाजा (सुख १०) ।

तुद भक [तुद, तुद] १ हटाना, छिन्न होना,
परित्यक्त होना । २ सूटना, घटना, बीटना ।
तुद (महा सण, दे ४, ११६) । 'अणुवरं
देतस्सवि तुद'ति न सायरे खणाय' (वज्ज
१५६) । वः- तुद्वै (सण) ।

तुद वि [तुदित] हटाना, छिन्न, परित्यक्त
(स ७१८, सूक १७, दे १, ६२) ।

तुटण न [टोटन] निच्छेद, वृषाचरण (सूय
१, १, १, वज्ज ११६) ।

तुटिअ वि [तुदित, तुदित] छिन्न, परित्यक्त
(सुमा) ।

तुटिर वि [तुदित] हटानेवाला (सुमा सण) ।

तुद वि [तुद] तोप प्राप्त, दान, संतुष्ट खुश
(सुर ३, ४१, उवा) ।

तुटि छो [तुदित] १ खुशी, आनन्द, संतोष
(स २००, सुर ३, २५, सुपा २४६, निर
१, १) । २ कृपा, मेहरबानी (सुप्र १) ।

तुद भक [तुद] हटना, अलग होना । तुद
(दे ५, ११६) ।

तुडि छो [तुदित] १ दूतता, कमी । २ दोष,
दुपण (दे ५, ३६०) । ३ संशय, संदेह (सुर
३, १६१) ।

तुडिअ न [तुदिक] अन्त पुर, रत्नवास
'तुदिकमत्त पुरमदिशये' (जोवाभिः ७०) ।
तुडिअ न [तुदिक] अन्त पुर, जमानलाना
(सुज १८—पत्र २६५) ।

तुडिअ वि [तुदित] हटा हुआ, विच्छिन्न
(अचु ३३, दे १, १५६, सुपा ६५) ।

तुडिअ न [दे, तुदित] १ बाध, बाधित,
बाधा (भीष, चय, न १, पणह २, ५) । २
बाध रोक, हाथ का आभरण-विशेष (भीष;
ठा ८, पउम ८२, १०५, राय) । ३ सध्या-
विशेष, 'तुडिअ' को बीरशी लाल से छुनने
पर जो सध्या लग्न हो वह (दक, ठा २, ४) ।
४ साध्या, फटे हुए वस्त्र धादि वि लगायी जाती
पट्टी, वेन (निष् २) ।

तुडिअग न [दे, तुदित] १ सध्या-
विशेष, पुर्व को बीरशी लाल से छुनने पर
जो सध्या लग्न हो वह (दक, ठा २, ४) ।
२ पु. बाध देनेवाला मत्त-भुन (ठा १०,
सम १७, पउम १०२, १२३) ।

तुडिआ छो [तुडिता] लोकपाल देवो के
अग्र महिषियो की अभय परियद् (ठा
३, २) ।

तुडिआ छो [दे, तुदिका] बाहु रक्षिका,
हाथ का आभरण विशेष (पणह १, ४,
शाया १, १, टी—पत्र ४३) ।

तुणय पुं [दे] बाध विशेष (दे ५, १६) ।

तुणाय देवा तुणाय (राज) ।

तुण्ण न [तुण्ण] फटे हुए वस्त्र का तपान
(उप ५ ४३३) ।

तुण्णाग } पुं [तुण्णाय] वस्त्र को साँपने-
तुण्णाय } वाला, रूढ़ बजनेवाला, रिन्नी
(शुदि, उत ५ २१०, महा) ।

तुणिणय वि [तुजित] ररु किया हुमा, सांघा हुमा (वृह १)।

तुण्डि म [तूणीम] मोन, चुप्पी, चुप्की, चुपवान, चुपनेसे, मोन होकर (भवि)।

तुण्डि पुं [दि] सुकर, सुसर (दे ५, १४)।
तुण्डि देखो तुण्डि = तूणीम (प्राक ३२)।
तुण्डिअ वि [तूणीक] मोन रहा हुमा।
तुण्डिअ वि मोन रहनेवाला, चुप रहनेवाला (प्राक, गा ३५४, सुर ४, १८८)।

तुण्डिअ वि [दि] भृदु-निधल (दे ५, १५)।
तुण्डीअ देखो तुण्डिअ (स्वप्न ४२)।
तुत्त देखो तोत्त (मुपा २१७)।
तुद देखो तुअ। तुयए (पद)। वड. तुदें (बित्ते १४७०)।

तुद पु [तोद] प्रतोद, भरदार डडा, चाडुक (सूम १, ५, २, ३)।

तुभ्रण न [तुभ्रन] ररु करना (गच्छ ३, ७)।

तुभ्राय देखो तुण्णाय (एवि १६४)।

तुभ्राए पु [तुभ्रनार] ररु करनेवाला शिल्पी (भर्मवि ७३)।

तुप्प पुं [दि] १ कौतुक। २ विवाह, शादी। ३ सपर्य, सरसो, धान्य विशेष। ४ कुतुप, धी भादि भरने का भर्म पान (दे ५, २२)। ५ वि. अश्रित, चुपडा हुमा, धी भादि से लित (दे ५, २२, कप्प, गा २२, २८६, हे १, २००)। ६ लिगम, स्नेह-भुन (दे ५, २२, भोप ३०७ भा)। ७ न. घुत, धी (से १५, ३८, मुपा ६१४, कुमा)।

तुप्प वि [दि] कैलित (प्रणु २६)।

तुप्पइअ वि [दि] धी ने लित (गा तुप्पलिअ ५२० भा)।

तुमंतुम पुं [दि] कोष-वृत्त मनो-विचार विशेष (ठा ८—पय ४४१)।

तुमंतुम पुं [दि] १ सुकारवाला वचन, विपकार वचन, तू तू (सूम १, ६, २७)। २ वाच-फलह, 'भ्रमपुतुम' (उत्त २६, ३६)। ३ वि. सुकर से बात कहनेवाला (संबोध १७)।

तुमुल पुं [तुमुल] १ क्षोभ-हर्षण युद्ध, भयानक सभाम (गडड)। २ न. शोरसुल (पाप)।

तुम्ह स [युप्पत्त] तुम, भाप (हे १, २४६)।

तुम्हकेर वि [त्वंदीय] तुम्हारा (कुमा)।

तुम्हकेर वि [युप्पदीय] भापका, तुम्हारा (हे १, २४६, २, १४७)।

तुम्हारे (भप) ऊपर देखो (भवि)।

तुम्हारिस वि [युप्पाटरा] भापके जैसा, तुम्हारे जैसा (हे १, १४२, गडड, महा)।

तुम्हेचय वि [योप्माक] भापका, तुम्हारा (हे २, १४६, कुमा, पद)।

तुयट्ट भक [त्वय् + वृत्त] पार्थको चुपाना, भरवट फिराना। तुयट्टह, (कप्प, भप)।

तुयट्टअ, तुयट्टजा (भग, भोप)। हेऊ, तुयट्टिचए (भाभा)। क. तुयट्टियवज (छाया १, १, भग, भोप)।

तुयट्टण न [त्वय्यर्तन] पार्थ-परिवर्तन, करवट फिराना (भोप १५२ भा, भोप)।

तुयट्टायण न [त्वय्यर्तन] करवट बदलवाना। (भाभा)।

तुययवत्ता देखो तुअ।

तुर भक [त्वर] त्वरा होना, गल्ली होना, शीघ्र होना। वड. तुरत, तुरेंत, तुरमाण, तुरेमाण (हे ५, १७२, प्रासू ५८, पद)।

तुर^१ की [त्तरा] शीघ्रता, जल्दी (दे ५, तुरा १६)। भंत वि [वन्] त्वच-भुक्त, तुरग पुं [तुरज] भय, घोडा (कुमा, प्रासू ११७)। २ यमचक्र का एक कुण्ड (पडम ५६, २८)।

तुरंगम पुं [तुरज्जम] भय, घोडा (पाप, पिग)।

तुरगिआ की [तुरज्जिका] घोडी (पाप)।

तुरेंत देखो तुर।

तुरक पुं [दि-तुरुक] १ देश-विशेष, तुकि-स्तान। २ प्रनाय जाति विशेष, तुर्क (ती १४)।

तुरा देखो तुरय (भग ११, ११; यय)।

*सुह पुं [सुर] भनाय देश-विशेष (सूम १, ५ टी)। *मिदग पुं [मिदक] भनाय देश विशेष (सूम १, ५, १ टी)।

तुरमाणी देखो तुरमणी (सद्धि ५७ टी)।

तुरमाण देखो तुर।

तुरय पुं [तुरग] १ भय, घोडा (पद १, ४)। २ छन्द-विशेष (पिग)। *देहपिंजरण न [देहापजरण] भय को सिगारना, संवा-रना, शृंगार करना (पाप)। देखो तुरग।

तुरयसुह देखो तुरग-सुह (पय २७४)।

त्वरावाला, जल्दवान (से ५, २०)।

तुरिअ वि [त्वरित] १ त्वरा-भुक्त, उठावला (पाप, हे ४, १७२, भोप, प्राप्र)। २ त्रिवि. शीघ्र, जल्दी (मुपा ४६४, भवि)। *गड् वि [गति] १ शीघ्र गतिवाला। २ पुं. भमितगत नामक इन्द्र का एक लोचपाल (ठा ४, १)।

तुरिअ वि [तुर्य] कौमा, चतुर्थ (सुर ४, २५०; कम्म ४, ६६, मुपा ४६४)। *निहा की [नित्रा] मरणावस्था (उप ५ १४१)।

तुरिअ न [तुर्ये] वाद्य, वासिध, वाजा; 'तुरि-याए संनिताएण, दिव्हेण गणए कुंसे' (उत्त २२, १२)।

तुरिमिणी देखो तुरमणी (राज)।

तुरी की [दि] १ पीन, पुष्ट। २ शय्या का उपकरण (दे ५, २२)।

तुरु न [दि] वाय विशेष (विक ८७)।

तुरुअ न [तुरुअ] गुणविशेष इन्द्र-विशेष, जो धूप करने में काम आता है, लोबान, निल्हक (भम १३७, छाया १, १, पडम २, ११, भोप)।

तुरुअ पुं [तुरुअ] १ देश-विशेष, तुकिस्तान। २ वि. तुकिस्तान का (स १३)।

तुरुकी की [तुरुकी] लिपि-विशेष (बित्ते ४६४ टी)।

तुरुमणी की [दि] नगरी-विशेष (भत ६२)।

तुरेंत देखो तुर।

तुरेमाण } देखो तुर।

तुल स [तोलय] १ लीलना। २ उठाना। ३ ठीक-ठीक नियंत्र करना। तुल, तुलेइ (हे ५, २५, उप, वजा १५८)। वड. तुलेंत (पिग)। सऊ. तुलेऊण (वृह १)। इ. तुलेअव्व (से ६, २६)।

तुल^१ देखो तुला (मुपा ३६)।

तुलया देखो तुलया (भन्डु ८०)।

तुलया न [दि] कानवालीय ग्याय (दे ५, १५; से ४, २७)।

तुलगा की [दे] यह्वा, स्वेरिता, स्वेच्छा, अपनो मशा (विज ३५) ।

तुलन [तुलन] तौलना, तौलन (कप्पु, वजा १५७) ।

तुलगा की [तुलना] तौलना, तौलन (उप पु २७४, स ६६२) ।

तुलगा की [तुलना] तौल, वजन (धम्मि ६) ।

तुलय वि [तोलरु] तौलनेवाला (सुपा १६७) ।

तुलसिआ की [तुलसिआ] नीचे देखो (कुमा) ।

तुलसी की [दे तुलसी] सता विशेष, तुलसी (दे ५, १४, पण १, ठा न. पात्र) ।

तुला की [तुला] १ राशि-विशेष (सुपा ३६) । २ सराफ़, तौलने का साधन (सुपा ३६०, गा १६१) । ३ उपमा, सादृश्य (सुम २, २) । 'सम वि [सम] राग द्वैपसे रहित, मध्याव्य (वह ६) ।

तुला की [तुला] १०५ या ५०० पल का एक नाप (मणु १५४) ।

तुलित वि [तुलित] १ उठायो हुआ, ऊँचा किया हुआ (स ६, २०) । २ होला हुआ (पात्र) । गुना हुआ (राग) ।

तुलितकर देखो तुल ।

तुल वि [तुल्य] समान, सटीका (मग, प्राप्पु १२, १४६) ।

तुल देखो तुल्य । तुल्टे (वज ४) ।

तुल्ट पुं [तुल्यते] शयन, लेटना (वज ४) ।

तुल्य भू [तुल्य] खरा होना, शीघ्र होना, तेज होना । तुल्यदे (हे ४, १७०) । वहु. तुल्यते (हे ४, १७०) । प्रयो. वहु. तुल्यताते (नाट—मावती ५०) ।

तुलर पुं [तुलर] १ रत विशेष, बग़ाय रख (दे ५, १६) । २ वि. बग़ाय रखवाला, भर्तृता (दे ३, ५५) ।

तुलरा देखो तुला (नाट—महावीर २७) ।

तुलरी की [तुलरी] मत्त विशेष, धारहर (था १०, गा ३५०) ।

तुस पुं [तुस] १ मोटव—मोटव या मोटो भादि तुसद भाग्य (ठा न) । २ भाग का दिनरा, मूनी (दे २, ३६) ।

तुसणीअ वि [तुणीक] मौनी (प्रमक १७६) ।

तुसली की [दे] धान्य-विशेष, 'त तत्त्ववि सो तुसल वावद सो निरुवि यरवीये' (सुपा ५४५), 'देवगिहे जंतोए तुसक तुसली भणुएकाम' (सुपा १३ टि) ।

तुसार व [तुसार] हिम, वर्षा, फाला (पात्र) । 'वर पुं [कर] चन्द्र, चन्द्रमा (सुपा ३३) ।

तुसारअर देखो तुसार-कर (वि १०३) ।

तुसिण देखो तुसणीअ (सबोय १७) ।

तुसिणिय } वि [तुणीक] मौनी, बुध,
तुसिणीय } वचन-रहित (छाया १, १—
पय २८ ठा ३, ३) ।

तुसिणी म [तुणीम] मौन, बुयो. 'तदमा तुसिणीए भुनए पढमो' (वि १२२, ३१३) ।

तुसिय पु [तुपित] लोकात्मिक देवो की एक जाति (छाया १, ८, सप्त ८५) ।

तुसेअजम न [दे] बाह, लवली, बाण (दे ५, १६) ।

तुसोदम } न [तुपोदक] दीहि भादि का
तुसोदन } पीत-बल—मोवन (रात्र, कप्प) ।

तुस देखो तुस = तुप । तुसद (विने ६३२) ।

तुह } ह [तुह] तुम । 'तणय वि [संभ-
निय] तुम्हाए, तुमसे संभव रखनेवाला
(सुपा ५५३) ।

तुहण पुं [तुहण] गन्द वी एक जाति (उत्त १६, ६६) ।

तुहार (मप) वि [तुदीय] तुम्हारा (हे ४, ४३४) ।

तुहिण न [तुहिण] हिम, तुपार, वर्षा (पात्र) । 'इरि पुं [गिरि] हिमावत पर्वत (गजद) । 'वर पुं [कर] चन्द्रमा (मणु) । 'गिरि देखो 'इरि (सुपा ६५८) । 'तलय पुं [तलय] हिमालय पर्वत (सुपा ८८) ।

तुहिणायल ॥ [तुहिनाचल] हिमालय पर्वत (पर्मि २४) ।

तुअ पुं [दे] रंज बा नाम रखेवाला (दे ५, १६) ।

तुअ पुं [तुण] इष्टुपि, भाग्य, वरदान-तुलोए (हे १, १२५, पड्डु ५) ।

तुणइल पुं [तुणवत्] तुणा नामक वायु वजनेवाला (पण २, ४, मीप, कप्प) ।

तुणय पुं [तुणक] वायु-विशेष (धवा २, ११, १) ।

तुणा } की [तुणा] १ वायु विशेष (राय,
तुणि } मणु) । २ इष्टुपि, भाग्य (ज ३, वि १२७) ।

तुयरी की [तुयरी] रहर, धारहर (वि ६३३) ।

तुर देखो तुरय । तुरद (हे ४, १७१, पड्डु) । वहु. तुरद, तुरंत, तुरमाण, तुरेमाण (हे ४, १७१, सुपा २६१, पड्डु) ।

तुर पुं न [तुर] बाग्य, बाग्य, तुली (हे २, ६३; पड्डु, प्रात्र) । 'वह पुं [पति] नदी का नदी का मुखिया (वह १) ।

तुरत } देखो तुर = तुरय ।
तुरमाण } देखो तुर = तुरय ।

तुरविअ वि [तुरवित] जिसको शीघ्रता कराई गई हो वह (स १२, ८३) ।

तुरिय पुं [तुरिय] वायु वजनेवाला, वज-निर्मा (स ७०५) ।

तुरी की [दे] एक प्रकार की मिट्टी (जी ४) ।

तुरंत देखो तुर = तुरय ।

तुरेमाण } देखो तुर = तुरय ।

तुल न [तुल] बई, सभा, बीच-रहित कपास (मीप, पात्र, मवि) ।

तुलिय न, नीचे देखो, 'नणु विणासिगज भइयिय तुलिय महुयमादय' (महा) ।

तुलिया की [तुलिया] १ लई ते सरा मोटा बिल्लीना, गढ़ा, तोराव (दे ५, २२) । २ सस-बीर—विज बनाने की बलम (छाया १, ८) ।

तुलिणी की [दे] बुद्ध विशेष, शास्त्रमी बा वेद (दे ५, १७) ।

तुल्लि वि [तुल्लिण] सतवीर याने की बनवावाला, वृत्ति-युक्त (गजद) ।

तुली की [तुली] देखो तुल्लिआ (सुर २, ८२, पजम ३५, २४, सुपा २६२) ।

तुयर देखो तुलर (विपा १, १—गज १६) ।

तुयस वज [तुय] छुरा होना । वृद्ध, वृष्य (हे ४, २३६, सगि ३६, पड्डु) । इ. तुसियव्य (पण २, ५) ।

तुह देना तिय (हे १, १०४, २७, मुना, दे ५, १६) ।

सूहन पुं [दे] पुरप, प्रादयी (दे ५, १७) ।
 ते देको नि = वि । आलीस खीन
 [चरवारिशत] १ संस्था-विशेष, चालीस
 और तीन की संस्था । २ तेमालीस की
 संस्थावाला (सम ६८) । आलीसइम वि
 [चत्वारिंश] तेमालीसवा, ४३वां (पउम ४३,
 ४६) । आसी खी [अशीति] १ संस्था-
 विशेष, असी और तीन । २ तिरासी की
 संस्थावाला (पि ४४६) । आसीइम वि
 [अशीतिसम] तिरासीवां (सम ८६, पउम
 ८३, १४) । इंदिय पु [इन्द्रिय] स्पर्श,
 जीभ और नाक इन तीन इन्द्रियावाला प्राणो
 (ठा २, ४, जी १७) । ओय पु
 [ओजस्] विपम राशि-विशेष (ठा ४,
 ३) । णउइ खी [नरति] तिरानवे, नन्वे
 और तीन, ६३ (सम ६७) । णउय वि
 [नवत] तिरानवेवा, ६३ वां (कप्य, पउम
 ६३, ४०) । णवइ देखो णउइ (सुपा
 ६५४) । तीस, तीस खीन [त्रयसिं-
 शान्] तेतीस, तीस और तीन (भग, सम
 ५८) । खी, सा (हे १, १६५, पि ४४७) ।
 तीसइम वि [त्रयसिंश] तेतीसवां (पउम
 ३३, १४८) । वट्टि खी [पट्टि] तिराक,
 साठ और तीन, ६३ (पि २६५) । वण्ण, वण्ण
 खीन [पञ्चाशन्] त्रेपन, पचास और
 तीन, ५३ (हे २, १७४; पट्, सम ७२) ।
 वचरि खी [सप्तति] तिहतर (पि २६५) ।
 बीस खीन [त्रयोविंशति] तेइस, बीस और
 तीन, २३ (सम ४२, हे १, १६५) । बीस,
 बीसइम वि [त्रयोविंश] तेइसवां (पउम
 २०, ८२, २३, २६, ठा ६) । संकन न
 [सन्ध्य] प्रातः, मध्याह्न और सायंवाला का
 समय (पउम ६६, ११) । सट्टि खी
 [पट्टि] देखो वट्टि (सम ७७) । सीइ
 खी [अशीति] तिरासी, असी और तीन
 (सम ८६, कप्य) । सीइम वि [अशीति]
 तिरासीवां (कप्य) ।

तेअ सक [तेजय्] तेज करना, पैनाना, धार
 तेज करना, लोखण करना । तेइम (पट्) ।

तेअ देखो तइअ = तृतीय (रमा) ।

तेअ पुं [तेजस्] १ कान्ति, बोधि, प्रसाध,
 प्रभा (उवा, भग, कुमा, ठा ८) । २ ताप,

प्रभिताप (कुमा, सुम १, ५, १) । ३ प्रताप ।
 ४ माहात्म्य, प्रभाव । ५ बल, पराक्रम
 (कुमा) । मत वि [विन्] तेजवाला,
 प्रमा-युक्त (पण्ण २, ४) । योरिय पुं
 [वीर्य] मरत चक्रवर्ती के प्रवीन का पौर्य,
 विमर्को आदर्श भवन में केवलज्ञान हुआ था
 (ठा ८) ।

तेअ न [स्तेय] चोर (भग २, ७) ।

तेअ देखो तेअय (भग) ।

तेअ पुं [२] टेक, स्तम्भ ।

तेअंसि वि [तेजस्विन्] तेजवाला, तेज-युक्त
 (भीष, खण्ड ४, भग, महा, सम १५२,
 पउम १०२, १४१) ।

तेअग देखो तेअय (जीव) ।

तेअण न [तेज्जन्] १ तेज करना, पैनाना ।
 २ उत्तेजन (हे ४, १०४) । ३ वि, उत्तेजित
 करनेवाला (कुमा) ।

तेअय न [तेजस] शरीर सहचारि सुदम
 शरीर-विशेष (ठा २, १, ५, १, भग) ।

तेअलि पु [तेजलिन्] १ मनुष्य जालि-विशेष
 (जं १, इक) । २ एक मन्त्री के पिता का
 नाम (छाया १, १४) । पुत्त पुं [पुत्र]
 राजा जनकपुत्र का एक मन्त्री (छाया १,
 १४) । पुर न [पुर] नगर-विशेष (छाया
 १, १४) । सुय पु [सुत] देखो पुत्त
 (राज) । देखो तेतलि ।

तेअय अक [प्र + दीप्] १ दीपना,
 जमजना । २ जलना । तेअवइ (हे ४, १५२;
 पट्) ।

तेअवाल देखो तेजपाल (हम्मीर २७) ।

तेअविय वि [प्रदीप्त] जला हुआ (हुमा) ।
 २ जमका हुआ, उड़ीहा (पात्र) ।

तेअविय वि [तेजित्] तेज किया हुआ (दे
 ८, १३) ।

तेअसि पुं [तेजस्विन्] इक्ष्वाकु यश ने
 एक राजा का नाम (पउम ५, ५) ।

तेआ खी [तेजा] पल की तेरहवीं रात
 (सुज्ज १०, १४) ।

तेआ खी [तेजस्] यमोदरी तिथि (जो
 ४, जं ७) ।

तेआ खी [त्रेता] युग-विशेष, दूसरा युग,
 त्रेमालुने य दासही रामो सीयालकखण-
 संजुणीवि (वी २६) ।

तेआ देखो तेअय (सम १४२; पि ६४) ।

तेआलि पुं [दे] वृक्ष-विशेष (पण्ण १,
 १—पउ ३४) ।

तेइच्छ न [चैत्रिस्स्य] चित्रिस्ता-कर्म,
 प्रतीकार (दस ३) ।

तेइच्छा खी [चित्रिस्ता] प्रतीकार, इलाज,
 दवा (भाचा, छाया १, १३) ।

तेइच्छिय देखो तेगिच्छिय (विपा १, १) ।

तेइच्छी खी [चित्रिस्ता, चैत्रिस्सी]
 प्रतीकार, इलाज (कप्य) ।

तेइज्जग वि [तार्त्तीयीक] १ तीसरा । २
 उबर-विशेष, जाड़ा केकर तीसरे-तीसरे दिन
 पर घानेवाला उबर, तिजारा (उत्तमि ३) ।

तेइल देखो तेअंसि (सुर ७, २१७, सुपा
 ३३) ।

तेउ पुं [तेजस्] १ भाग, भगिन (भग; वं
 १३) । २ सेरया-विशेष, तेजो-सेरया (भग;
 कम्म ४, ५०) । ३ भगिनराल नामक इन्द्र
 का एक लोकपाल (ठा ४, १) । ४ छाप,
 अभिताप (सुम १, १, १) । ५ प्रकाश,
 उद्योत (सुम २, १) । आय देखो काय
 (भग) । कंन पुं [कान्त] लोकपाल देव-
 विशेष (ठा ४, १) । काइय पुं [कायिक]
 भगिन का जीव (ठा ३, १) । काय पुं
 [काय] भगिन का जीव (पि ३५५) ।
 क्काइय देखो काइय (पण्ण १; जीव
 १) । क्पभ पुं [प्रभ] भगिनराल नामक
 इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १) । क्फास
 पुं [क्फास] जल स्वर्ग (भाचा) । लेस
 वि [लेश्य] तेजो-नेरयावाला (भग) ।
 लेसा खी [लेदया] सप विशेष के प्रभाव
 से होनेवाली शक्ति-विशेष से उत्पन्न होती
 तेज की ज्वाला (ठा ३, १, सम ११) ।
 लेस्स देखो लेस (पण्ण १७) । लेस्सा
 देखो लेसा (ठा ३, ३) । सिद्ध पुं
 [शिप्प] एक लोकपाल (ठा ४, १) ।
 सीय न [सीच] भस्म भादि से किया
 जाता शीव (ठा ३, २) ।

तेउ देहो तेअय (पव २३१) ।

तेडुअ न [दे] वृक्ष-विशेष, टीवृक्ष का पेड (दे ५, १७) ।

तेडु पुं [तिन्दुक] १ वृक्ष-विशेष, तेंडु
तेडुअ का पेड (पराण १, डा ८, पउम
तेडुआ ४२, ७) । २ गेंद, कन्दुक (पउम
१५, १३) ।

तेडुमय पुं [दे] कन्दुक, गेंद (खाम्पा १, ८) ।
तेवस पु [दे] शुद्ध कौट-विशेष, शीन्द्रिय जन्तु
की एक जाति (जीव १) ।

तेगिच्छ देहो तेइच्छ (सुर १२, २११) ।

तेगिच्छय वि [चिक्खिससु] १ चिक्खिससा
करनेवाला । २ पुं, वैद्य, हकीम (उप ५६४) ।

तेगिच्छा देहो तेइच्छा (सुर १२, २११) ।

तेगिच्छायण देहो तिगिच्छायण (राज) ।

तेगिच्छि देहो तिगिच्छि (राज) ।

तेगिच्छिय वि [चौत्थिससु] १ चिक्खिससा
करनेवाला । २ पुं, वैद्य, हकीम । ३ न.

चिक्खिसा-कर्म, प्रतीकार-करण । 'साळा ली
[शाळा] बवालागा, चिक्खिसावय (णामा
१, १३—पव १७६) ।

तेजचारीस देहो ते-आलीस (प्राक ३१) ।

तेज देहो तेज = तेजस । तेजई (प्राक ७५) ।

तेज पुं [तेज] देश-विशेष (सम्मत २१६) ।

तेजसि देहो तेजसि (वि ७४) ।

तेजपाल पुं [तेजपाल] गुजरात के राजा
भीरपयस का एक पराखी मंत्री (सी २) ।

तेजलपुर न [तेजलपुर] विरानार पर्वत के
पाल मंत्री तेजपाल का बग्याय हुआ एक
नगर (सी २) ।

तेजसि देहो तेजसि (वव १) ।

तेज्ज (अप) देहो चय = धन । तेज्जइ (विग) ।

सट्. तेजिजअ (विग) ।

तेजिजअ (अप) वि [त्यक्त] छोड़ा हुआ
(विग) ।

तेड सव [दे] बुढावा । तेईलि (सम्मत
१६१) ।

तेडु पुं [दे] १ राजन, अपन-नामक भीट,
फिरो । २ पिशाच, राक्षस (दे ५, २३) ।

तेण म [तेन] १ मरण-मूक भयम्बर, 'अव-
रूपं तेण ममलवणं' (दे २, १८३, कुमा) ।

२ उग्र शरक (अप) ।

तेण पुं [तेन] चोर, तस्कर (शोध

तेणग ११, कथ, गच्छ ३, शोध ४०२) ।

तेणय पुं [पञ्चोग पुं] 'प्रयोग' १ चोर को
चोरी करने के लिए प्रेरणा करना । २ चोरी
के साधनों का दान या विक्रय (धर्म २) ।

तेणिअ न [स्तेन्य] चोरी, च्यवत वस्तु
तेणिअ न वा ग्रहण (था १४, शोध ५६६;
पह १, ३) ।

तेणिस वि [तेनिस] विनिरावुल-सबन्धो, बँट
का (अप ७, ६) ।

तेणो ली [तेनो] चोर ली (सम्मत १६१) ।

तेण न [स्तेन्य] चोरी, परद्रव्य का अपहरण
(निबू १) ।

तेण्हाइअ वि [सुण्णित] सुण्णा-युक्त, प्यासा
(से १३, ३६) ।

तेतलि पुं [तेवल्लि] १ बरखेन्द्र के गन्ध-
सेमा का नायक (इक) । २ देहो तेअलि
(खाम्पा १, १४—पव १६०) ।

तेतिल देहो तीइल (व ७) ।

तेत्तिअ वि [तायत्] उतना (प्राप्र, गउड,
गा ७१, कुमा) ।

तेत्ति (सी) देहो तेत्तिअ (प्राक ६५) ।

तेत्तिर देहो तित्तिर (जीव १) ।

तेत्तिल वि [वावत्] उतना (हे २, १५७,
कुमा) ।

तेत्तिल न [तेत्तिल] व्योतिप-प्रसिद्ध करण-
विशेष (सुप्रमि ११) ।

तेत्तुल (अप) ऊपर देहो (हे ४, ४०७,
तेत्तुल) कुमा, हे ४, ४३५ टि) ।

तेत्थु (अप) देहो तत्थ = तन (हे ४, ४०४,
कुमा) ।

तेदह देहो तेत्तिल (हे २, १५७, प्राप्र, पड,
कुमा) ।

तेद्रे देहो तेणण (नय) ।

तेम (अप) देवा वह = तथा (विग) ।

तेमासिअ नि [त्रिमासिक] १ तीन महीने में
होनेवाला (अप) । २ तीन मास-संबन्धो (सुर
६, २११, १४, २२८) ।

तेम्य देहो तेम (हे ४, ४१८) ।

तेर वि [त्रयोदश] तेरहवा (अप ६, १६) ।

तेर (अप) वि [त्यदीय] तेप, तुम्हाप (प्राह
१२०) ।

तेर नि व. [त्रयोदशान्] तेरह, दस

तेरस } भीर तीन (था ४४, ई २१, कम्म
२, २६, ३३) ।

तेरच्छ देहो तिरेच्छ = तिर्यच् (प्राक १६) ।

तेरस देहो तेरसम (कम्म ६, १६, पव ४६) ।

तेरसम वि [त्रयोदश] तेरहवा (अप २५,
खाम्पा १, १—पव ७२) ।

तेरसया ली [दे] जैन मुनिमो की एक शाखा
(कम्म) ।

तेरसी ली [त्रयोदशी] १ तेरहवा । २ तिथि-
विशेष, वेस (अप २६, सुर १, १०१) ।

तेरसुत्तरसय वि [त्रयोदशोत्तरशततम]
एक बी तेरहवा, ११३ वां (पउम ११३,
७२) ।

तेरह देहो तेरस (हे १, १५, प्राप्र) ।

तेरासि पु [त्रैराशिक] ननुंसक (विड ५७३) ।

तेरासिअ वि [त्रैराशिक] १ मत विशेष का
अनुयायी, त्रैराशिक मत-जीव, प्रजीव भीर
नोबीव इन तीन राशियों को मानने वाला
(भीप; डा ७) । २ न. मत विशेष (अप
४०, विने २५४१, डा ७) ।

तेरिच्छ देहो तिरेच्छ = तिर्यच् (पव ३८) ।

तेरिच्छ देहो तिरेच्छ = तिर्यचोय, 'तिर्यच्
व मणुस्सं वा तेरिच्छं वा सपणहिमएण'
(आप २१) ।

तेरिच्छ न [तिर्यक्] तिर्यचपन, पयु-
पशियन (उप १०११, टी) ।

तेरिच्छिअ वि [तेरिच्छि] तिर्यच्-संबन्धो
(शोध २६६, अग) ।

तेल न [तेल] १ मोम-विशेष, जो माएइय
पीन की एक घासा है (डा ७) । २ तिन
वा बिबारा तेल (सति १७) ।

तेलग पु. य. [तेल्ल] १ दण्ड विशेष । २
पुंल्लो. देश विशेष या निवासी मनुष्य, तेलंगी
(विग) ।

तेलादी ली [तेलादी] भीट विशेष, मंधोनी
(दे ७, ८४) ।

तेलुफ न [तेलोफ] तीन जगल—त्यम्, न,
तेलोअ } कार्य भीर पातान लोफ (मातृ ६७,
तेलोअ } प्राप्र, खाम्पा १, ४, पउम ८, ७६,
हे १, १४८, २, ६७, पड, संति १७) ।

'देसि वि [देसिअ] तथेन, सर्वस्व

(घोष ५६६) । "गाह पु ["नाय] लोनी जगत् का स्वामी, परमेस्वर (पद्) । "मंडण न ["मण्डन] १ लोनी जगद् का भूषण । २ धुं. राखण का पट्ट-हस्ती (पउम ८०, ६०) ।

तेह न [तेल] तेल, तिल का विकार, लिप्य द्रव्य विशेष (हे २. ६८, प्रणु पव ४) । "केला छी ["केला] मिट्टी का भाजन विशेष (राज) । "पह न ["पह्य] तैल रखने का मिट्टी का भाजन-विशेष (वत्ता १०) । "पाइया छी ["पायिरा] खुद जन्तु विशेष (प्रावम) ।

तेहमा न [तेलक] गुरा-विशेष (जीव ३) । तेहलिअ धुं [तेलिक] तेल बेचनेवाला (वव ६) । तेहोअ { तेहोअ } देहो तेलुक (पि १६६, प्राप्र) । तेवुं { (घप) देवी तह = ठया (ह ४, तेवह १६७, कुमा) ।

तेवट्ट वि [टैपट्ट] तिरमठ की सखावाला, जिसमें तिरमठ मरिच हो ऐसी संस्था, "तिरि तेवट्टाई पावाडुपसाई" (पि २९५) ।

तेनह (घप) वि [तानन्] जना (हे ४, ४०७, कुमा) ।

तेवणगासा छी [त्रिपञ्चाशात्] जेग, ५३ (प्राह ३१) ।

तेथीमह छी [प्रतोयिराति] तेईस (प्राह ३१) ।

तेथुत्तरि देवा ते-यत्तरि (बन्म ५, ४) ।

तेह (घप) वि [ताहश] डमके जैना, वैना (हे ४, ४०२, पद्) ।

तेहिं (घप) ॥ गाते, लिप (हे ४, ४२५, कुमा) ।

तेहिय रि [डयादिक] तीन दिन का (जीरम ११६) ।

तेहुत्तरि देगो ते-यत्तरि (प्रणु १७६) ।

तो देगो तजो (घापा, कुमा) ।

तो प [तदा] तर, उस समय (कुमा) ।

तोअय धुं [दे] पाउर पत्तो हे ४, १८) ।

तोह देगो तुह (हे १, ११६ प्राप्र) ।

तोनहि छी [दे] बरग्य, दही-भाउ की बनी हई एग पाउर क्यु (दे ५, ४) ।

तोकाय वि [दे] बिना ही बारण तपर होने-वाला (दे ५, १८) ।

तोक्सार देहो तुम्सार. "छुरकुम्पयलोणीस-समसंखतोक्सारलम्पुको" (पुर १२, ६१) ।

तोटाअ न [टोटक] छन्द विशेष (पिग) ।

तोह सक [तुह] १ तोटना, भेदन करना ।

२ घक. टूटना । तोहड (हे ४, ११६) । चक.

तोहव (मवि) । संछ. तोहडिं (मवि),

तोहिया (तो ७) ।

तोह धुं [जोह] झुटि (उप ५ १८) ।

तोडण वि [दे] भगहन, भसहिण्णु (हे ५, १८) ।

तोडण न [तोदण] व्यया, पीडा-करण (राज) ।

तोडर न [दे] दोडर, मात्प-विशेष (तिरो १०२३) ।

तोडहिआ छी [दे] वाय-विशेष (घापा २, ११) ।

तोडिअ वि [टोटिअ] तोभा हुमा (महा, सण) ।

तोहू पु [दे] खुद कोट-विशेष, चतुरिद्विप

जीव की एग जाति (राज) ।

तोण पुन [तण] शरधि, भापा, तरकश, तूणीर

(पाम, भीप, हे १, १२५, विना १, ३) ।

तोणीर पुन [तूणीर] शरधि, भापा (पाम, हे १, १२४, मवि) ।

तोच न [तोत्र] प्रनोद, वेल को मारने या

हाने का बांस का धातुप विशेष पैना,

साटा, चातुर (पाम, दे ३, १६, गुपा २३७,

गुर १४, ५१) ।

तोचडि [दे] देहो तौनडि (पाम) ।

तोदमा रि [तोदक] व्यया उरनानेनाला,

पीडा-बाख (उत्त २०) ।

तोमर पुन [दे तोमर] मण्डुडा, मण्डुसरो

का पर का छना मह बहिआउ तोमर मुत्ताउ

महुयस्मियाउ सगरतो" (धर्मि १२४) ।

तोमर धुं [तोमर] १ बाण विशेष, एग प्रकार

का बाण (पट्ट १, १, गुर २, २८, चीर) ।

२ न. छन्द विशेष (पिग) ।

तोमरिअ धुं [र] १ छत्र का प्रसारन करने-

वाला (दे ३, १८) । २ छत्र-भारन (पद्) ।

तोमरिगुडी छी [दे] बल्लो-विशेष (पाम) ।

तोमरी छी [दे] बल्लो, लता (दे ५, १७) ।

तोम्हार (घप) देहो तुम्हार (पि ४३४) ।

तोय न [तोय] पानी, जल (पह १, ३,

बजा १४, दे २, ४७) । "धारा, धारा, छी

["धारा] एग दिक्कुमारो देवी (इक, डा ८) ।

"पट्ट, "पिट्ट न ["पृष्ठ] पानो का डग-रि-

भाग (पह १, ३, भीप) ।

तोय पु [तोद] व्यया, पीडा (डा ४, ४) ।

तोरण ॥ [तोरण] १ द्वार का धवयन-विशेष,

बहिडार (पा २६२) । २ बन्दनवार, फूल

या पत्तो की माला (भालर) जो उरनन में

सटवाई जाती है (भीप) । "उर न ["पुर]

नगर विशेष (महा) ।

तोराविअ वि [दे] उत्तेजित (पाम, कुप्र १६२) ।

तोरायमा छी [दे] नेत्र का रोग-विशेष

(महानि ३) ।

तोल् देहो तुल् = तोल्य । तोलह, तोलेह

(पिग महा) । बह. तोलन (बजा १५८) ।

बबकु तोलिजमाण (गुर १५, ६४) । इ.

तोन्विक्य (स १६२) ।

तोल् पुन [दे] मगर देश प्रसिद्ध बग, परि-

माल-विशेष (वहु) ।

तोलग पु [दे] घुरप, भादमी (दे ५, १७) ।

तोलग ॥ [तोलन] चीन करना, चीनना,

नाप करना (राज) ।

तोलिय रि [तोलिन] चीन हुमा (महा) ।

तोह न [नीनय, तोल] चीन, बगन (कुप्र १४६) ।

तोमट्ट पु [दे] १ बात का धामूगण-विशेष ।

बन्म की बलिपरा (दे ५, २१) ।

तोस नव [तोपय] मुछी करना, सन्नुट

करना । तावर (उर) । बर्मे. तोविअ (पा ५०८) ।

तोम धुं [नोप] मुछी, धान्य, धान्य (पाम,

मुना २०५) । "यर रि ["यर] संजोप-

कारण (पाम) ।

तोम न [दे] घन, दौलत (दे ५, १०) ।

तोमलि धुं [तोमलिन] १ घन गिरेन । २

देह विशेष । ३ एक देन धापाव (राज) ।

“पुत्त [“पुत्त] एक प्रक प्रसिद्ध जैन धाचार्य (प्राप्त) ।

तोसलिय पुं [तोसलिक] तोसलि-ग्राम का ग्रामीण क्षत्रिय (प्राप्त) ।

तोसविअ } वि [तोपिन्] कुछ किया हुआ,
तोसिअ } संतोषित (हे ३, १५०, पठम ७७, ८८) ।

तोहार (ग्र) देखो तुहार (पिंग; पि ५३४) ।

“त्त वि [“त्र] शाण-कर्ता, राक्षस, ‘सकलत्तं संनुद्धो सकल लोको नरो होइ’ (सुपा ३९६) ।

“त्तण देखो तण (से १, ६१) ।

“त्ति म [इति] उपासम्म सूचक अव्यय (प्राक् ७८) ।

“त्ति देखो इअ = इति (कम्प, स्वप्न १००, सण) ।

“त्य देखो एत्य (गा १३२) ।

“त्य वि [“स्य] स्थित, रहा हुआ (प्राचा) ।

“त्य देखो अत्य (वाप्र १५) ।

“त्यअ देखो थय = स्तुत (से १, १) ।

“त्यउठ देखो थउठ (गउठ) ।

“त्यव देखो थय (चाए २०) ।

“त्यंभ देखो यंभ (कुमा) ।

“त्यंभण देखो थंभण (वा १०) ।

“त्यरु देखो थरु (पि ३२७) ।

“त्यल देखो थल (वाप्र ८७) ।

“थली देखो थली (पि ३८७) ।

“थव देखो थव = लु । वरु “थयत्त (नाट) ।

“थवअ देखो थवय (से १, ४०, नाट) ।

“थ्याण देखो थाण (नाट) ।

“थ्याल देखो थाल (कुमा) ।

“थिअ देखो थिअ (गा ४२१) ।

“थिर देखो थिर (कुमा) ।

“थीअ देखो थोअ (नाट—बैणी २४) ।

॥ इअ निरिपाइअसदमहणवन्नि तयाराइसदसकलणो

तेवीसदमो तरंगो समतो ॥

थ

थ पुं [थ] दन्त स्थानीय व्यञ्जन विशेष (प्राप्त, प्राप्ता) ।

थ म. १-२ भास्वार्त्तवार श्रीर पाव-भुति में प्रयुक्त किया जाता अव्यय, ‘किं थ तय पङ्कट्ट ज थ सया मो जयत्त पवरम्मि’ (छाया १, १—पत्र १४८, वंषा ११) ।

“थ देखो एरथ (गा १३१, १३२, सण) ।

थइअ वि [स्थगित] भास्वादि, ढवा हुआ (से ५, ४९, गा ५७०) ।

थइअं [“] स्त्री [स्थगिता] पानदानी, पान थइआ [रत्तन का पान, पानदान (महा)] इत्त

पुं [“पन्] जम्बूल-नाग-वाहन नीकर (सुप्र ७१) । “थर पुं [“थर] जम्बूल-नाग का पाद्व नीकर (सुपा १०७) । “वाहक ॥

[“वाहक] पानदानी का माह्व नीकर (सुपा १०७) । देखो थमिय ।

थइआ ओ [“दि] सेली, सेली, सेली या समनी—हमर में बाँपने की रस्सी में सेली “संभवअद्यापराणो”, “सकिया धोवत्तर्षी (७ द) मा’ (सुप्र १२, ८०) ।

थइत्त देखो थय = स्तम्भ ।

थउठ न [स्थपुट] १ विपम श्रीर उल्लत प्रदेश (से २, ७८) । २ वि. नीचा-ऊँचा (गउठ) ।

थउठिअ वि [स्थपुटित] १ विपम श्रीर उल्लत प्रदेशवाला । २ नीचा-ऊँचा प्रदेशवाला (गउठ) ।

थउठ्ठ न [“दि] भस्मातक, वृण विशेष, भिलावा (दे ५, २६) ।

थंग सव [उद्ध + नामन्] ऊँचा करना, उन्नत करना । थंगइ (प्राक् ३५) ।

थंडिल पुं [स्थण्डिल] १ शुद्ध भूमि, जल-रहित प्रदेश (वय, निरु ४) । २ कोष, गुस्ता (सुप्र १, ६) ।

थंडिल पुं [स्थण्डिल] कोष, गुस्ता (सुप्र १-६, ११) ।

थंडिल न [स्थण्डिल] शुद्ध भूमि (सुपा ५५८; (प्राचा) ।

थंडिल न [“दि] मरहट, वृत्त प्रदेश (दे ५, २५) ।

थंत्त देखो था ।

थंय वि [“दि] विपम, असम (दे ५, २५) । थंय पुं [स्तम्भ] कुछ मादिक का गुच्छ (दे ८, ४६, घोष ७७१, सुप्र २२९) ।

थंभ सक [स्तम्भ] १ खना, स्तम्भ होना, स्थिर होना, निरचल होना । २ सक. स्थिर-निरोप करना, मरठाना, रोचना, निरचल करना । थंभइ (सवि) । कर्नै, थंभिगइ (हे २, ६) । सक. थंभिअ (सुप्र ३८५) ।

थंभ पुं [स्तम्भ] पेरा, ‘मंसतिरपायमल्ल एइ रोतणसरवतुसिमो नाहे सगामवीहो’ (हम्मोद २२) । “तिरय न [“वीर्थे] एन वैन तीर्थे (हम्मोद २२) ।

थंभ पुं [स्तम्भ] १ स्तम्भ, पम्मा, सम्मा (हे २, ८, कुमा, प्राप् ३१) । २ अभिमान, गर्व, महार (सुप्र १, १३, उत ११) । “विज्जा ओ [“विद्या] स्तम्भ—वेदोदा या निरपेठ करने की विद्या (सुपा ५६१) ।

थंभण न [स्तम्भन] १ स्तम्भ-नरण, पम्माना (विसे ३००७, सुपा ५६६) । २ स्तम्भ करने का मन्त्र (सुपा ५६६) । १

थर पुं [दे] दही को तर, दही के ऊपर की मलाई (दे ५, २४)।

थरथर [दे] थरथरा, कांपना। थरथर { थरथर, थरथर, थरथर (संज्ञा) थरथर } १६, पि २०७, सुर ७, ६, गा १६५)। वक्र. थरथरंत, थरथर-राजंत, थरथराजमाण, थरथरंत (शोध ४७०; पि ५५६, नाट—मालती ५५, पत्रम ३१, ४४)।

थरहरिज वि [दे] वस्त्रित (दे ५, २७, भवि. सुर १, ७, सुपा २१; जप १०)। थर पुं [दे. वस्तु] लङ्ग-मुष्टि, तनवार की मूठ (दे ५, २४)। थरुगिण पु [थरुगिण] १ देश-विशेष। २ पुष्पी. उस देश का निवासी। क्षी. 'गिणिआ (दक)।

थल न [स्थल] १ भूमि, जगह, भूमी जमीन (हुमा, उप ६६६ टी)। २ भास लेते समय छुने हुए मुँह की फाक, छुने हुए मुँह की खाली जगह (वप ७)। 'इल वि [वल्] स्थल-युक्त (गठ)। 'हुकुडियल न [हुकु-ट्यण्ड] बल प्रलेप के लिए छुला हुआ मुँह (वप ७)। 'चार पु [चार] जमीन में बलना (भावा)। 'नलिणी क्षी [नलिनी] जमीन में होनेवाला कमल का गाछ (हुमा)। 'य वि [ज] जमीन में उलट होनेवाला (परपा १, पत्रम १२, ३७)। 'यर वि [यर] १ जमीन पर चलनेवाला। २ जमीन पर चलनेवाला पक्षिनिपतिर्य ब प्राणी (जीव ३, जी २०, भीप)। क्षी. 'री (जीव ३)। थलय पुं [दे] मंडप, हट्टादि-निर्मित गृह (दे ५, २५)।

थलहंगा { क्षी [दे] मुक्त-स्मारक, रत्न को थलहिया } गाढवर उस पर बिना जात एक प्रकार का पत्रुतरा (स ७५६, ७५७)। थली क्षी [थली] जल शून्य भू-भाग (हुमा, पाम)। 'घोडय पुं [घाटक] पशु-विशेष (वप ७)।

थली क्षी [थली] जमीन (उत्त ३०, १७, गुल ३०, १७)। थलिया क्षी [दे. स्थालि] बलिया, छोटा पात्र, मोल बरने का बरतन (पत्रम २०, १९६)।

थलहिया { क्षी [दे] मुक्त-स्मारक, रत्न को थलहिया } गाढवर उस पर बिना जात एक प्रकार का पत्रुतरा (स ७५६, ७५७)। थली क्षी [थली] जल शून्य भू-भाग (हुमा, पाम)। 'घोडय पुं [घाटक] पशु-विशेष (वप ७)।

थली क्षी [थली] जमीन (उत्त ३०, १७, गुल ३०, १७)। थलिया क्षी [दे. स्थालि] बलिया, छोटा पात्र, मोल बरने का बरतन (पत्रम २०, १९६)।

थली क्षी [थली] जमीन (उत्त ३०, १७, गुल ३०, १७)। थलिया क्षी [दे. स्थालि] बलिया, छोटा पात्र, मोल बरने का बरतन (पत्रम २०, १९६)।

थली क्षी [थली] जमीन (उत्त ३०, १७, गुल ३०, १७)। थलिया क्षी [दे. स्थालि] बलिया, छोटा पात्र, मोल बरने का बरतन (पत्रम २०, १९६)।

थल सक [स्तु] स्तुति करना। वक्र. थवंत (नाट)।

थव देखो थय = स्तव (हे २, ४६; सुपा ४४६)।

थव पुं [दे] पशु, जानवर (दे ५, २४)।

थवइ पुं [स्यपति] वर्षीक, बढई (दे २, २२)।

थवइय वि [स्तवकि] स्तवकवाला, गुच्छ-युक्त (छापा १, २, भीप)।

थवइल वि [दे] जाँघ पैताकर बैठा हुआ (दे ५, २६)।

थपक पुं [दे] थोक, समूह, जत्था, 'लमइ कुलवहुमुए थवकपो सबलसोवकाए' (वजा ६६)।

थयण देखो थयण (भाव २)।

थयणिया क्षी [स्थापनिश] न्यास, जमा रखी हुई वस्तु, 'जतगोमुमानियथयणियथव-हारकुडसनिजल' (सुपा २७५)।

थयय पुं [स्तमक] कूज भावि का गुच्छ (दे २, १०३, पाम)।

थयिआ क्षी [दे] प्रवेष्टि, वीरणा के भन्त में लगाया जाता छोटा काष्ठ-विशेष (दे २, २५)।

थयिय वि [स्थापित] -यस्त, निहित (भवि)।

थयिय वि [स्तुत] जितकी स्तुति की गई हो वह, श्रापित (सुपा ३४३)।

थविर वि [स्थविर] बूढ़, बूढ़ा (भसंवि १३५)।

थवी [दे] देखो थयिआ (दे २, २५)।

थस { वि [दे] वित्तीर्ण (दे ५, २५)।

थस पुं [दे] नित्य, आश्रय, स्थान (दे ५, २५)।

था देखो ठा। थाइ (भवि). भवि. थाइइ (पि ५२४)। वक्र. थंत (पत्रम १४, १३४, भवि)। संठ. थाऊण (दे ५, १६)।

थाइ वि [स्थापित] रहनेवाला। 'णा क्षी [नो] तप-तप पर प्रवव करनेवाली थोड़ी (राज)।

थामस न [दे] जहान के मोतर पुछा हुआ पानी (सिदि ४, २५)।

थाण देखो ठाण (हे ४, १६, विसे १=५६; उप पु ३३२)।

थाणय न [स्थानरु] भालवान, कियारी (दे ५, २७)।

थाणय न [दे] १ चौकी, पहरा, 'भयाणया भववि चि निविद्वयं पाणमाई', 'तपो बहुवो-लियाए य्मणोए काणयनिविद्व', 'तुटियमुटिय-माणा सवरपुत्ता' (स ५३७, ५४६)। २ पु. चौकीदार, चौकी करनेवाला श्राम्मी, पहरेदार, 'वहायसमए य विंसंसिएपु पाण-एपु' (स ५३७)।

थाणिज वि [दे] गौरवित, सम्मानित (दे ४, ५)।

थाणीय वि [स्थानीय] स्थानात्म (स ६६७)।

थाणु पुं [स्थाणु] १ महादेव, शिव (हे २, ७, हुमा; पाम)। २ कूडा वृत्त (गा २३२, पाम), 'ववइइहाणुसरित' (हुप्र १०२)। ३ बीना। ४ स्तम्भ (राज)।

थाणेसर न [स्थानेश्वर] समुद्र के किनारे पर का एक शहर (उप ७२६ टी, ॥ १४८)।

थाम वि [दे] वित्तीर्ण (दे ५, २५)।

थाम न [स्थापित] १ बल, वीर्य, पराक्रम (हे ४, २६७, ठा ३, १)। २ वि. बल-युक्त (निष्ठ ११)। 'य वि [वत्] बलवान् (उत्त २)।

थाम पुन [स्थानम्] १ बल : २ प्राण, 'था (? वा) मो वा परिहायइ ठुणुणु (? ठुण-खणु) प्हाणु म भसतो' (पिठ ६६४)।

थाम न [दे स्थान] स्थान, जगह (सति ५७, ॥ ४६; ७४१), 'सेवालियमुमितले फिल्लुसमाणा ॥ थामथामि' (सुर २, १०५)।

थार पुं [दे] पन, पेप (दे ५, २७)।

थारुणय वि [थारुकि] देश-विशेष में उपग्रह। क्षी. 'गिया (भीप)। देखो थरुणिण।

थाल पुन [थाळ] बड़ी बलिया, मोलन बरने का पात्र (दे ६, १२, भंत ५; उा पु २५७)।

थाळइ वि [स्थाळकि] १ पालवाला। २ पु. वातप्रप्य वा एह भेद (भीप)।

थाळ क्षी [दे] थार (पर)।

थाली छी [थाली] पाक पात्र, हू की, बटनोही (ठा ३, १, पुग ४८७) । 'पाग वि [पाक] हूही में पकया हुमा (ठा ३, १) ।

थान सक् [स्थापय] १ स्थिर करना । २ रखना । पावए (उत २, ३२) ।

थानया छी [स्थापय] द्वारा कानिवासी एक गृहस्थ छी (छाया १, ५) । 'पुन ३ [पुन] स्थापयता का पुन, एक जैन मुनि (छाया १, ५, प्रत) ।

थानन न [स्थापन] न्याय, मापान (स २१३) ।

थानय पु. [स्थापक] समर्थ हेतु, स्वपदा-साधक हेतु (ठा ४, १—पन २५४) ।

थावर वि [स्थानर] १ स्थिर रहनेवाला । २ पु. एनेन्द्रिद्र प्राणी, वैवल स्थरिन्द्रियवाता—श्रुति, पानी और वनरति प्रादि का जीव (ठा ३, २, जो २) । ३ एक विशेष-नाम, एक नीकर का नाम (उप २६७ टो) । 'पाय पु [पाय] एनेन्द्रिद्र जीव (ठा २, १) । 'णाम, 'नाम न [नामन] कर्म विशेष, स्वावतर प्राप्ति का कारण मूल कर्म (पंच ३, सम ६७) ।

थासग [दे] कुदात (पाव० टिप्पण—पन ५६, १) ।

थासग [दे] [स्थासक] १ दण्ड, भादर, थासय [शौरा (विपा १, २—पन २४) । २ दण्ड के भादर का पात्र विशेष (धीप, मनु छाया १, १ टो) । ३ भद्र का भादर-विशेष (राज) ।

थाह पु [दे] १ स्थान, जगह । २ वि. भस्ताय, गनीर जल-वाता । ३ निस्तीर्ण । ४ दीर्घ, सम्भा (दे ५, ३०) ।

थाह पु [स्थाप] थाह ठाना, गहराई का मन्त्र, सोमा (पाप विपे १३३२ छाया १, २; १४, से ८, ४०) ।

थादिअ पु [दे] मातार, स्वर विशेष (पुग १६) ।

थिअ वि [थित] यदा हुमा (स २७० विपे १०३५, भवि) ।

थिइ देनो डिइ (वि २, १८ गजड) ।

थिदिणी छी [दे] पन्त्र-विशेष, विधिनिष्कर्ष-पण्ये (सम्मत १४१) ।

थिप धक [तुप] तुम होना, सतुट होना । थिइ (प्राप्र) । मवि थिपिहिंति (प्राप्र ८, २२ टो) । सऊ. थिपिअ (प्राप्र ८, २२ टो) ।

थिगाल न [दे] १ निति-द्वार, मोत में किया हुमा दरवाजा (दस ५, १, १५) । २ फटे-छुटे वस्त्र में किया जाता सधान, वस्त्र प्रादि क सडित भाग में सगाई जाती जोड (पण्य १७, विपे १४६६ टो) ।

थिगाल पुन [दे] १ छिद्र । २ गिरने के बाद दुस्त (ठोक) किया हुमा गूह-भाग (भापा २, १, ६, २) ।

थिजल देनो थेजल = स्वेयं (सबोध ४६) ।

थिणग वि [स्थान] कठिन, जमा हुमा (दे १, ७४, २, ६६, से २, ३०) । देनो वीग ।

थिणग वि [दे] १ स्नेह रहित ब्यावाला । २ धम्मिमानो, गर्व-युक्त (दे ४, ३०) ।

थिण वि [दे] गवित्र, धम्मिमानो (पाप) ।

थिण्य देनो थिप । थिण्य (दे ४, १३८) ।

थिण्य धक [वि + गज] गन जाना ।

थिण्य (दे ४, १७५) ।

थियुक्त पु [रिगुक्त] कन्द विशेष (पुन ३६, ६६) ।

थिम वक [तिम] भाद्र' करना, गीसा करना । हेऊ. थिमिउ (राज) ।

थिमिअ वि [दे तिमित] स्थिर, निचल (दे ५, २७, से २, ४३, ८, ६१, छाया १, १, विपा १, १, २४६ १, ४, २, ५, कीड गुज १, नूप १, ३, ४) । २ मन्वर, घोमा (पाप) ।

थिमिअ पु [स्तिमित] राजा अथवाश्रुणि के एव पुत्र का नाम (सत ३) ।

थिम्म वर [स्तिम] १ भाद्र' करना । धर. भाद्र' होना । थिम्मइ (प्राप्र १२०) ।

थिर वि [स्थिर] १ नियन, निरन्ध्र (विपा १, १, सम ११६, छाया १ ८) । २ नियन, संनर (दण ७ ३५) । 'णाम, 'नाम न [नामन] कर्म-विशेष, त्रिके वर से दन्त, हृदी प्रादि धारयती की निपटारा होती है (कम्म १, ४६ सम ६७) । 'वलिआ छी [वलिअ] नन्तु विशेष, वर की एक जाति (जो २) ।

थिरणाम वि [दे] चल-चित्त, धंचल-मनस्क (दे ५, २७) ।

थिरणोस वि [दे] स्थिर, चलत (पड) ।

थिरसीस वि [दे] १ निर्मोक, निडर । २ निर्मर । ३ जिसने तिर पर बच बर्षा हो वह (दे ५, ३१) ।

थिरिम पु छी [रयेय] स्थिरता (सण) ।

थिरिअ न [स्थिरीकरण] स्थिर करना, हड़ करना, जमाना (या ६, पण्य ६६) ।

थिल वि [दे] धुम (चटपन० विदुपानद) ।

थिलि छी [दे] धान विशेष—१ दो मोहे की बापी । २ दो लख प्रादि से बाण धान (धूम २, २, ६२, छाया १, १ टो—पन ४३, सौन) ।

थिविथिय धक [थिअथियाय] 'थिव थिअ' भावात्र करना । वऊ. थिविथियत (विपा १, ७) ।

थियुग [पुं [स्तिमुक्त] जल-विन्दु (विपे थियुय] ७०४, ७०५, सम १४६) । 'सकम पुं [सकम] कर्म-प्रवृत्ति का भावत में संक्षमल विशेष (पवा ५) ।

थीहु पु छी [दे] बन्द विशेष (उत १६, ६६) ।

थिहु पु [स्तिमु] वनस्पति विशेष (राज) ।

थी छी [छी] छी, महिला पाटी, सीरल (दे २, ३३०, कुमा, प्राप्र ६५) ।

थीण देतो थिणग (दे १, ७४, दे १, ६३, कुमा, पाप) । 'गिदि छी [गुडि] निडर निद्रा विशेष (ठा ६; विपे २१४, उत ३३, ५) । 'दि छी [दि] धम्म निद्रा विशेष (सम १५) । 'द्विय वि [द्विअ] स्थानदि निद्रा भाषा (विपे २३२) ।

थु घ. तिरन्वार-गृहक प्रत्यय (प्रति ८१) ।

थुअ वि [रुअ] मिथरी सुवि की गई हो वह प्रवृत्ति (द ८, २७, पण्य २०, पवि १८) ।

थुअ देनो थुअ । थुअ (प्रा ६७) ।

थुइ छी [स्तुवि] स्तर, उप-जीवन (हुमा, थैय १, पु १०, १०१) ।

थुड्याय पुं [मुनिआइ] मरणा-वचन (पेअ ७४४) ।

शुक्र भ्रक [श्रुत् + कृ] १ भूकना । २ सक. तिरस्कार करना, घुसकारना, भ्रान्नादर के साथ निकलना । घुसकेद (वजा ४६) । सक. शुक्रिजण (मुपा ३४६) ।

शुक्र न [श्रुत् + कृ] भूक, कक, खलार (दि ४, ४१) ।

शुक्रार पु [श्रुत् + कृ] तिरस्कार (राय) ।

शुक्रार सक [श्रुत् + कृ] तिरस्कार करना । कक, शुक्रारिजमाण (पि ४६३) ।

शुक्रिअ वि [दे] वसत, जँचा (दे ५, २८) ।

शुक्रिअ वि [श्रुत् + कृ] भूक हुमा (दे ५, २८, मुपा ३४६) ।

शुद्ध न [दे. शुद्ध] वृत्त का सङ्ग 'कीरोठ बरेज्या बडा तारण घुमेमु' (मुपा ५८४, ३६६) ।

शुद्धकिअय न [दे] रोप दुक वचन (पाप्र) ।

शुद्धकिअ न [दे] १ भव्य-भुक्ति बृह का सकोच, घोडा पुस्ता होने से होता शुद्ध का सकोच । २ मौन, चुपकी (दे ५, ३१) ।

शुद्धहीर न [दे] चामर (दे ५, २८) ।

शुण सक [श्रु] स्तुति करना, श्रुण-वर्णन करना । शुणह (दि ४, २४१) । कर्म. शुण्वह, शुण्विह (दि ४, २४२) । वह शुण्वत (भवि) । कवक शुण्वत, शुण्वमाण (मुपा ८८, गुर ४, ६९, त ७०१) । वंछ. थोऊण (वाल) । हेह. थोशु (मुपि १०८७५) । क. शुण्व, थोअव्व (भवि, वैय ३५, से ७१०) ।

शुणण न [स्तव] श्रुण-वीर्यन, स्तुति (मुपा ३७) ।

शुणिर वि [स्तोत्र] स्तुति करनेवाला (कात) ।

शुण्ण वि [दे] हत, भगिनामो (दे ५, २७) ।

शुस न [स्तोत्र] स्तुति, स्तुति-पाठ (भवि) ।

शुसुपायिरि वि [शुसुपायिरि] शुसुपाय हुमा, तिरस्त्व, भगिनामि (भवि) ।

शुसुपायि पु [शुसुपायि] तिरस्कार (प्रवी ८१) ।

शुसुपायि न [दे] शय्या, बिटीना (दि ५, २८) ।

शुसुम पु [दे] पट-मुटी, संत, पत्र-गृह, बपठ-मोट, सेमा (दे ५, २८) ।

शुद्ध वि [दे] परिवर्तित, बदला हुमा (दि ५, २७) ।

शुद्ध वि [स्थूल] मोटा (हे २, ६६, प्रामा) ।

शुद्ध वि [स्थूल] मोटा, तगडा । जो. 'हो (मिह ४२६) ।

शुद्ध देखो शुण । शुद्ध (प्राक ६७) ।

शुद्धअ वि [स्तावक] स्तुति करनेवाला (हे १, ७५) ।

शुद्धव न [स्तव] स्तुति, स्तव (कुप्र ३५१) ।

शुद्धव } देखो शुण ।

शु म निन्दा-सूचक शब्द, 'शू नित्तजो सोधो' (हे २, २००, कुमा) ।

शूण पु [दे] भव्य, घोडा (दे ५, २६) ।

शूण देखो तेण = स्तेन (हे २, १४७) ।

शूणा जो [शूणा] खन्मा, खूटी (पट, पण १४) ।

शूणाम पु [शूणाक] सनिवेश विशेष, ग्राम-विशेष (बाबम) ।

शूण म [दे] शूणा सूचक शब्द (वंह) ।

शूण पु [स्तु] बृहा, टीला, बृह, स्तुति स्तव्य (विसे ६६८, मुपा २०६, कुप्र १६५, पाचा २, १, २) ।

शूभिया } जो [स्तु] १ छोटा स्तुप शूभियागा (भीप ४३६, भीप) । २ छोटा शिखर (सम १३७) ।

शूरी जो [दे] तनुवाय का एक उपकरण (दे ५, २८) ।

शूद्ध देखो शुद्ध (पाप्र. पत्र १४, ११३, उवा) । 'अह पु [अह] एक सुप्रतिद जैन महर्षि (हे १, २५५, पडि) ।

शूद्धोण पु [दे] सुकर, बराह (दे ५, २६) । शू } देखो शूभ (दे ७, ४०, गुर १, बृह ५८) ।

शूद्ध पु [दे] १ प्रासाद का शिखर (दे ५, ३२, पाप्र) । २ चातर पत्ती । ३ मल्लोक्त, दोमक (दे ५, ३२) ।

शूअ वि [शूअ] १ खने योग्य । २ जो रह सकता हो । ३ पु. पैठला करनेवाला, न्याय-धीर (दि ५, २६७) ।

शूअ पु [दे] बन्द विशेष (पा २०, जो ६) ।

शूअ न [शूअ] स्थिरता (विसे १४) ।

शूअ देखो शूअ (पत्र ३) ।

शूअ पु [स्तेन] चोर, तस्कर (हे १, १४७) । शूअिअ वि [दे] १ हत, छीना हुमा । २ भीत, डरा हुमा (दे ५, ३२) ।

शूअ देखो शूअिअ । शूअिअ (पि २०७, सति ३४) ।

शूअ वि [स्ववि] १ बृद्ध, बृह (हे १, १६६) । २, ८६, भग ६, ३३) । २ पु. जैन साधु (भीप १७, कण) । 'कण पु [कण] १ जैन मुनियो का भाचार-विशेष, गच्छ में रहने-वाले जैन मुनियो का प्रमुखा । २ भाचार-विशेष का प्रतिपादक ग्रन्थ (डा ३, ४, भीप ६७०) । 'कणिय पु [कणिय] भाचार-विशेष का भाष्य करनेवाला, गच्छ में रहने-वाला जैन मुनि (पत्र ७०) । 'भूमि जो [भूमि] स्थिर का पद (डा ३, २) । 'वलि वि [वलि] १ जैन मुनियो का सन्नह । २ जैन से जैन मुनि शण के चरित्र का प्रतिपादक ग्रन्थ विशेष (एदि, कण) ।

शूअ पु [दे. स्थवि] ब्रह्मा, विवाता (दे ५, २६, पाप्र) ।

शूअरण न [दे. स्थविरासन] पथ, बमल (दे ५, २६) ।

शूअरिअ न [स्थै] स्थिरता (हुमा) ।

शूअरिया } जो [स्थविरा] १ बृद्ध, बुद्धिया थैरी (पाप्र, भीप २१ टी) । २ जैन साध्वी (कण) ।

शूअरिअ न [दे. स्थविरासन] बमल, बमल, पथ (पट) ।

शूअ पु [दे] बिट्ट (दे ५, २६, पाप्र, पट) ।

शूअ देखो शूअ (हे २, १२५, पाप्र, गुर १, ८११) । 'काठिय वि [काठिक] मल काक रहनेवाला (मुपा ३७५) ।

शूअरिअ न [दे] जन्म-समय में बनाया जाता वाद्य (दे ५, २६) ।

शूअ देखो शूअ (हे २, १२५, गा ४६, गउड, सति १) ।

शूअ पु [दे] १ रत्नक, धोरो । २ मूलक, मूला, बन्द विशेष (दि ५, ३२) ।

शूअव्व } देखो शुण ।

शूअ देखो शूअ (प्राक ३८) ।

शूअ } देखो शूअ (हे २, १२५, जो १) ।

योडेस्य देवो घाडेस्य (उप ७२८ टी) ।
 योणा देवो थूणा (हे १, १२५) ।
 योत्त न [स्तोत्र] स्तुति, स्त्वव (हे २, ४५,
 सुपा २६६) ।
 योत्तु देवो थुण ।
 योभ } पुं [स्तोभ, "क" 'ज', 'वै' भादि
 योभय } निरर्थक मन्वय का प्रयोग, 'उय-

वदकारा हति य मकारणा योमया हति' (बृह
 १; विते ६६६ टी) ।
 योर देवो थुल (हे १, २५५; २, ६६; पठम
 २, १६; से १०, ४२) ।
 योर वि [दे] क्रम से विस्तीर्ण भय च गोल
 (दे ५, ३०, मन्वा ३६) ।
 योल पुं [दे] वल का एक देश (दे ५, ३०) ।

योव } वि [स्तोक] १ मल, योवा (हे
 योवाग } २, १२५; उव; या २७; क्षीप
 २५६; विते ३०३०) । २ पुं, समय का एक
 परिमाण (ठा २, ३; मग) ।
 योह न [दे] वत, पराक्रम (दे ५, ३०) ।
 योहुर पुं क्षी [दे] वनस्पति-विरोध, बृहद का
 पेड़, सेहड़ (सुपा २०३) । क्षी, 'री' (व
 १०३१ टी; यो १०; धर्म ३) ।

॥ इम सिरिपाइअसहमहणवन्नि थयाराइसहसंनल्लो
 पल्लोसइमो तरंगो समत्तो ॥

द

द पुं [दे] दन्त स्थानीय व्यञ्जन-वर्ण विरोध
 (त्राप, प्रामा) ।
 दअच्छर पुं [दे] ग्राम-स्थानी, गांव का
 भाग्यपति (दे ५, ३६) ।
 दअरी क्षी [दे] सुपा, मदिरा, दाक (दे ५,
 १४) ।
 दइ क्षी [हति] मराज, चर्म-निर्मित जल-पान
 (क्षीप ३८) ।
 दइअ वि [दे] रसित (दे ५, १५) ।
 दइअ पुं क्षी [हतिना] मराज, चर्म-निर्मित
 जल-पान, चमड़े का बना हुआ वह पैसा
 जिसमें पानी भरकर लाते हैं, 'दइएण
 मयिणा वा' (पिड ४२) । क्षी, 'आ' (मणु
 १५२, पिडमा १४) ।
 दइअ वि [दयित] १ प्रिय, प्रेम-पान-
 'जामो नररामिणीदरमो' (सुर १, १८३) ।
 २ झरोटा, यात्रिधन, 'मग्हाण मणोददयं
 दंसणमवि दुल्लहं मन्ने' (सुर ३, २३८) ।
 ३ पुं पति, स्वामी, भर्ता (पाम; कुमा) ।
 'यम वि [तम] १ भाग्यवत् प्रिय । २ पुं,
 पति, भर्ता (पठम ७७, ६२) ।
 दइआ क्षी [दयिता] क्षी, प्रिया, पत्नी
 (कुमा; महा-सुर ४, १२६) ।

दइअ पुं [दयित] दानव, क्षुर (हे १, १५१;
 कुमा; पाम) । 'शुर पुं [शुरु] शुक,
 शुभानाम' (पाम) ।
 दइअ न [दय्य] चीनता, गरीबपन, गरीबी
 (हे १, १५१) ।
 दइय पुं न [देय] देव, माय्य, घट्ट, आरम्भ,
 पूर्व-कृतवर्म (हे १, १५१; कुमा; महा-
 पठम २८, ६०); 'अइया इविमो दइवो
 पुरिसं कि हण्ड लउयेल' (सुर ८, ३४) ।
 'अ, 'ण्ण पुं [क्ष] ज्योतिषी, ज्योति-
 शास्त्र का विद्वान् (हे २, ८३; वड) । देवो
 देय = देव ।
 दइयव न [दियन] देव, देवता (पण्ड २, १;
 हे १, १५१, कुमा) ।
 दइयिग वि [दयिक] देव-संबन्धी, दिव्य,
 उत्तम (स २०६) ।
 दइय देवो दइय (हे १, १५३, २, ६६,
 कुमा; पठम ६३, ४) ।
 दउत्ति (सी) अ [द्राग] छीप, जन्तो
 (प्राह ६३) ।
 दउदर } न [दकोदर] रोम-विरोध,
 दओदर } जंतोर, पानी से बेट का कृतना
 (पामा १, १३; विपा १, १) ।

दओभास पुं [दनाभास] लवण-समुद्र
 में स्थित वेत्तपर-मागराज का एक भाग्यस-
 पर्वत (इर) ।
 दंठा देवो दाढा (भाट—मानवी ५६) ।
 दंठि वि [दंठिन्] बड़े दाँतवाला, दिसव
 जन्तु (भाट—वेणी २४) ।
 दंड सग [दण्डय] सजा करना, निग्रह
 करना । वगइ, दंडिजंत (पामु ६६) ।
 दंड पुं [दण्ड] १ बीज-हिंसा, प्राण-नाश
 (सम १, एपाया १, १; ठा १) । २ मरपायी
 की मरपाय के अनुसार शारीरिक या भाविक
 दण्ड, सजा, निग्रह, दमन (ठा ३, ३; पामु
 ६३, हे १, १२७) । ३ साठी, दंष्ट्रि (व
 ५३० टी; पामु ७४) । ४ दुःख-जनक,
 परिहाय-जनक (पामा) । ५ मन, वचन क्षीर
 शरीर का क्षुद्र व्यंगार (उत १६; ई
 ४६) । ६ छन्द-विरोध (पिग) । ७ एक जैन
 उपासक का नाम (संभा ६१) । ८ पुं न,
 परिमाण-विरोध, १६२ संतुन का एक मान
 (इर) । ९ पाण (ठा २, १) । १० पुं न,
 मैत्र्य, मरकर, वीर्य (पण्ड १:०८ ठा २, १) ।
 'अल पुं [दल] छन्द-विरोध (पिग) । जुगम
 न [युद्ध] दंष्ट्रि-युद्ध (पामा) । 'पायग पुं

[नायक] १ दण्ड-शता, अपराधविचार-कर्ता । २ सेनापति, सेनानी, प्रतिनियत सेन्य का नायक (पहल १, ४, शोध. कण्ठ. छाया १, १) । 'जीइ छी' [नीति] नीति-विशेष, अनुशासन (ठा ६) । 'पहल पुं' [पथ] मार्ग-विशेष, सीधा मार्ग (सूय १, १३) । 'पासि पुं' [पाशिन, पाशिन] १ दण्ड दाला । २ कोतवाल (राज. आ २७) । 'पुंछणय न' [प्रोच्छन्नक] दण्डकार काह (ज ५) । 'भी वि' [भी] दण्ड से डरने-वाला, दण्ड-भीरु (भाषा) । 'लत्तिय वि' [लत] दण्ड सेनेवाला (बय १) । 'पहल पुं' [पति] सेनानी, सेनापति (सुधा १२२) । 'वासिग, वासिय पुं' [दाण्डपाशिक] कोतवाल (कुम १५५, स २६५; उप १०३१ टी) । 'वीरिय पुं' [वीर्य] राजा भरत के बंश का एक राजा, जिसकी आदर्श-गुरु में कैवलज्ञान उपपन्न हुआ था (ठा ८) । 'रास पुं' [रास] एक प्रकार का नाच (कण्ठ) । 'इय वि' [यत] दण्ड की तरह लग्ना (कत, शीर) । 'यइय वि' [यतिक] पैर की दण्ड की तरह लग्ना फैलानेवाला (शोध, कत, ठा ५, १) । 'रखियग पुं' [रक्षिक] दण्डकारी प्रतीहार (निचू ६) । 'रण न' [रण्य] दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध जंगल (पउम ४१, १; ७६, ५) । 'सगिय वि' [सत्निक] दण्ड की तरह पैर फैला कर बैठनेवाला (कत) । देखो दंडग, दंडय ।

दंड पुं [दण्ड] १ दण्ड-नायक, सेनापति (बय १) । २ उवाल, उफान, 'उतिशोधन विदुष्क-लिय फासुयजलति जइ कण्ठ' (पय १३६, पिठ १८, विचार २५७) ।

दंडग } पुं [दण्डक] १ कण्ठ कुण्डल नगर
दंडय } का एक राजा (पउम १, १६) ।
२ दण्डकार वाक्य-पद्धति, अन्याय-विशेष (राज) । ३ भवनपति भादि चौबीस दण्डक, पय-विशेष (दं १) । ४ न. दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध जंगल (पउम ३१, २५) । 'गिरि पुं' [गिरि] पर्वत विशेष (पउम ५२, १४) । देखो दंड (उप ८६१, बृह १, सूय २, २, पउम ४०, १३) ।

दंडण न [दण्डन] दण्ड-भरण, शिक्षा (सूय २, २, ८२३ ८३) ।

दंडपासिग पुं [दाण्डपाशिक] कोतवाल (मोह १२७) ।

दंडलइय वि [दण्डलतिक] दण्ड सेनेवाला, अपराधी (बय १) ।

दंडावग न [दण्डन] सजा करना, निपट्ट करना (आ १४) ।

दंडाविअ वि [दण्डित] जिसकी दण्ड दिलाया गया हो वह (शोध ५६७ टी) ।

दंडि वि [दण्डिन] १ दण्ड-शुलक । २ पुं. दण्डकारी प्रतीहार, दरवाल (कुमा, जं ३) ।

दंडि देखो दंडी (कुम ४४) ।

दंडिअ पुं [दण्डिक] १ सामन्त राजा (बय २६८) । २ राज कुलानुगत पुरय (बय ६१) । ३ दण्डपाशिक, कोतवाल (बय ५६६) ।

दंडिअ वि [दण्डित] जिसकी सजा दी गई हो वह, कैदी (सुधा ४६२) ।

दंडिअ वि [दण्डिक] १ दण्डवाला । २ पुं. राजा, नृप (बय ४) । ३ दण्ड-दाता, अपराध-विचारकर्ता (बय १) ।

दंडिआ छी [दि] लेख पर लगाई जाती राज-सुत्रा, ठप्पा, मोहर (बृह १) ।

दंडिक्किअ वि [दि] अपमानित, 'दंडिकिमो समारो समवहुरिण नीणेइ' (उप ६४८ टी) ।

दंडिणी छी [दि.दण्डिनी] यानी, राज-पत्नी (पिठ ५००) ।

दंडिम वि [दण्डिम] १ दण्ड से निहूँत । २ न. सजा करके बसून किया हुआ प्रथ्य (छाया १, १—पय ३७) ।

दंडी छी [दि] १ सुन-जनक । २ साधा हुआ बल्ल गुग्ग (दि ५, ३३) । ३ साधा हुआ जोरें बल्ल (छाया १, १६—पय १६६, पहल १, ३—पय ५३) ।

दंत वि [दन्त] दान कर्ता, दाता (पिठ १६४) ।

दंत पुं [दान्त] दो उपवास, बेला (संघोष ५८) ।

दंत वि [दान्त] दो उपवास (संघोष ५८) ।

दंत पुं [दि] पर्वत का एक देश (दि ५, ३३) ।

दंत वि [दान्त] १ जिसका दमन किया गया हो वह, नरा में किया हुआ, 'दतेण चितेण

चरति घीरा' (साम्प १६५) । २ जितेन्द्रिय (छाया १, १४, दस १०) ।

दंत पुं [दन्त] दांत, दशन (कुमा, कण्ठ) । 'हुंडी छी' [हुटी] दंष्ट्रा, दाढ़ (तंडु) । 'नछअ पुं' [च्छद] मोठ, झोठ, होठ (पाष) ।

'धावण न' [धावन] १ दांत साफ करना, दतवन करना । २ दांत साफ करने का वाद्य, दतवन (पहल २, ४, निचू ३) । 'पकखालण न' [प्रक्षालन] बहो बूँकों भयं (सूय १, ४, २) । 'पाय न' [पात्र] दंत का बना हुआ पात्र (साम्प २, ६, १) । 'पुर न' [पुर] नगर-विशेष (बय १) । 'पहोयण न' [प्रधानन] देखो 'धायण' (बय ३) । 'माल पुं' [माल] गुप्त-विशेष (ज २) । 'यक पुं' [यक] दन्तपुर नगर का एक राजा (बय १) ।

'बलहिया छी' [बलभिन] उद्यान विशेष (स ७०) । 'वागिज न' [वागिज] हाथी-बाँत वगैरह दांत का व्यापार (बय २) ।

'रि पुं' [रार] दंत का नाम करनेवाला शिल्पी (पहल १) ।

दंतार पुं [दन्तार] दांत बनानेवाला शिल्पी (साम्प १४६) ।

दंतकुंडी छी [दन्तकुण्डी] दाढ़, दंष्ट्रा (तंडु ४१) ।

दंतयक पुं [दान्तयाक्य] चक्रवर्ती राजा (सूय १, ६, २२) ।

दंतवण न [दि. दन्तपवन] १ दन्त-शुद्धि । २ दतवन, दाँत साफ करने का काष्ठ (दि १, १२, ठा ६—पय ४६०, उवा, पय ४) ।

दंतवण पुं न [दि. दन्तपवन] दतवन (दस ३, ६) ।

दंतसोहण न [दन्तशोधन] दतवन (उत्त १६, २७) ।

दंताल पुछी [दि] राज-विशेष, घास काटने का हथियार (सुधा ५२६) । छी. 'ली (कम्म १, ३६) ।

दति पु [दन्तिन] १ हस्ती, हाथी (पाष) । २ पर्वत-विशेष (पउम १५, ६) ।

दंतिअ पुं [दि] शराक, खरगोश, खरहा (दि ५, ३४) ।

दंतिदिअ वि [दान्तेन्द्रिय] जितेन्द्रिय, चन्द्रिय-पनिहो (शोध ४६ भा) ।

भर्य का पात्रोपिक, दान, भेंट (कम्पु, सूय २, ५)। 'कंसि वि' [काक्षिन्] दक्षिण का प्रक्षिप्तो (पठम ३०, ६३)। 'यण न' [यन] १ सूय का दक्षिण दिशा में गमन। २ कर्क की संरुन्ति से घन की संरुन्ति तक के ३ मास का काल (जो १)। 'यध, यध पु' [यध] दक्षिण देश (भृगु, १४२ टी)।

दक्षिणगुप्ता देहो दक्षिणगुप्ता (पथ १०६)।

दक्षिणगिह वि [दाक्षिणत्य] दक्षिण दिशा में उत्पन्न या स्थित (सम १००, पठम ६, १५६)।

दक्षिणगेय वि [दाक्षिणेय] जिसको दक्षिण की जाती हो वह (विश्व १२७१)।

दक्षिणगण न [दाक्षिण्य] १ गुप्ताहजा, दक्षिण्य } मुख्यतः, 'दक्षिणगण्य वि एतो' सुहम सुहावेति भृहृ दिग्भासा' (भा ८५, स्वप्न ६८)। २ उदारता, भौवायें। ३ सरलता, मार्ग (सुर १, ६५, २, ६२, जाम्बू ८)। ४ अनुकूलता (शस २)।

दक्षिण्य वि [दक्षित] दिक्साया ह्रस्वा (भवि)। दक्षु देहो दक्ष्य = दृष्ट्।

दक्षु देहो दक्ष्य = दक्ष (सूय १, २, ३)।

दक्षु वि [परय, द्रष्टु] १ देखनेवाला। २ पु. सर्वज्ञ, जिन-देव (सूय १, २, ३)।

दक्षु वि [दृष्ट] १ विलोकित। २ पु. सर्वज्ञ, जिन-देव (सूय १, २, ३)।

दग न [दक] १ पानी जल (शं ५१, दं ३४, कम्पु)। २ पु. ग्रह विरोध, ग्रहाभिघातक देव-विरोध (डा २, ३)। ३ लक्षण-सम्पन्न में स्थित एक भ्रातृपत्न्य पर्वत (सम ६८)। 'गदभ पु' [गर्भ] भ्रम, वादल (डा ४, ५)। 'सुद पु' [सुपृष्ठ] पक्षि विरोध (पथ १, १)। 'पचयज पु' [पञ्चवर्ण] ज्योतिष्क देव-विरोध, एक ग्रह का नाम (डा २, ३)। 'पासाय पु' [प्रासाद] स्फटिक रत्न का बना हुआ महल (ज १)। 'पिपपल्ली ली' [पिपपल्ली] वनस्पति विरोध (पथ १)। 'भास पु' [भास] वेतपर नागराज का एक भ्रातृपत्न्य पर्वत (सम ७३)। 'भगय पु'

[भग्नक] स्फटिक रत्न का भग्न (जं १)। 'भदय पु' [भण्डय] १ भण्ड विरोध, जिसमें पानी टपकता हो (पथ २, ५)।

२ स्फटिक रत्न का बनाया हुआ भण्ड (जं १)। 'भट्टिया, भट्टी ली' [भुत्तिका] १ पानीवाली मिट्टी (इह ४, पठि)। २ कसा विरोध (जं २)। 'स्वसस पु' [स्वसस] जल-मानुष के आकार का जल-विरोध (सूय १, ७)। 'रय पु' [रजस्] जल विन्दु, जल-भण्डिका (कम्पु)। 'वण पु' [वर्ण] ज्योतिष्क ग्रह विरोध (सुग २०)। 'वारग, 'वारय पु' [वारक] पानी का छोटा घरा (राय, छाया १, २)। 'सीम पु' [सीमन] वेतपर नागराज का एक भ्रातृपत्न्य पर्वत (राज)।

दग न [दक] स्फटिक रत्न (राय ७५)। 'सोपरिज वि [शौरिक] सांख्य मत का अनुयायी (निड ३१४)।

दसा देहो दा।

दच्छ देहो दक्ष्य = दृष्ट्। भवि, दच्छ दच्छति, दच्छिहिति (प्राय, उत २२, ४४, भा ८११)।

दच्छ देहो दक्ष्य = दक्ष, 'रीगसमदच्छ मोसह' (उप ७२८ टी, पथ २, ३—यज ४५, हे २, १७)।

दच्छ वि [दे] तीक्ष्ण, देख (दे ५, ३३)।

दग्मन्त } देखो दृष्ट् = दृष्ट्।
दग्ममाण } देखो दृष्ट् = दृष्ट्।

दद्वि वि [दृष्ट] जिसकी दांत से काटा गया हो वह (पद, महा)।

दद्वि वि [दृष्ट] देहा ह्रस्वा, विलोकित (यज)। दद्वितिय वि [दाष्टी-नितक] जिसपर दृष्टान्त दिया गया हो वह वर्ष (सप ५ १४३)।

दद्व्य } देखो दक्ष्य = दृष्ट्।
दद्व्यु } देखो दक्ष्य = दृष्ट्।

दद्व्यु वि [दृष्ट्] देखनेवाला, प्रेक्षक, स्पर्शक (विश्व १८६५)।

दद्व्युआण

दद्व्यु

दद्व्यु

दद्व्यु

देहो दक्ष्य = दृष्ट्।

दद्व्यु पु' [दे] १ पाटी, दर्रा, प्रवल्क (दे ५, १५, हे ४४२२, भवि)। २ शीघ्र, जल्दी (चंद)।

दद्वि ली [दे] वायु विरोध (भवि)।

दद्वि वि [दग्ध] जला हुआ (हे १, २१७, भाग)।

दद्विदालि ली [दे] श्व-भाग (पद)।

दद्वि वि [दृष्ट] १ मज्जत, बलवान्, पोड (वीप, वे ८, ६०)। २ निरुद्ध, स्थिर, निष्कम्प (सूय १, ४, १, या २८)। ३ समर्थ, ताम (सूय १, ३, १)। ४ प्रति-निदिष्ट, प्रगाढ (राय)। ५ कठोर, कठिन (पथा ४)। ६ क्षिप्र, प्रतिष्ठ, धरयत्त (पथा ३, ७)। 'वेद पु' [केतु] ऐश्वर्य क्षेत्र के एक भावी जिन-देव का नाम (पथ ७)। 'नेमि देहो' [नेमि (राज)]। 'धनु' [धनुष] १ ऐश्वर्य क्षेत्र के एक भावी कुलकर का नाम (सम १५३)। २ भरत-क्षेत्र के एक भावी कुलकर का नाम (राज)। 'धम्म वि [धम्म] १ जो धर्म में निरुद्ध हो (इह १)। २ देव विरोध का नाम (धायय)। 'धिईय वि [धृत्ति] प्रतिष्ठ धैर्यवाला (पठम २६, २२)। 'नेमि पु' [नेमि] राजा सुभद्रविजय का एक पुत्र, जिसने भगवान् नेमिनाथ के पास दीक्षा ली थी और सिद्धाचल पर्वत पर मुक्ति पाई थी (भत १४)। 'पृष्ण वि [प्रतिष्ठ] १ स्थिर प्रतिष्ठ, सत्य-प्रतिष्ठ। २ पु. सूर्याय देव का धारणी जन्म में होनेवाला नाम (राय)। 'पृष्णारि वि [प्रहारिन्] १ मज्जत प्रहार करनेवाला। २ पु. जैनमुनि विरोध, जो पहले बारों का नायक था और वीक्ष से दीक्षा लेकर मुक्त हुआ था (छाया १, १८, महा)। 'भूमि ली [भूमि] एक गाँव का नाम (भावग)। 'मूढ वि [मूढ] नितात्त भूखें (दे १, ४)। 'रद पु' [रथ] १ एक कुलकर पुत्र का नाम (सम १५०)। २ भगवान् श्री शिवलयायजी के पिता का नाम (सम १५१)। 'रदा ली [रथा] लोचपाल आदि देवों के भद्र महिषियों की वास परिपद (डा ३, १—यज १२७)। 'उद पु' [गुपु] भगवान् महावीर के समय

में तीर्थंकर नामकें उपासने करने वाला एक मनुष्य (ठा ६—पत्र ४५५)। २ भरत-शेष के एक भावी कुलकर पुरुष का नाम (सम १५४)।

दृढगालि श्री [दे] वक्र-विशेष, घोमा हुआ सदश वक्र (पत्र ८५; दशनि १, ४६ टी) देखो दाढ़गालि।

दृढिअ वि [दृढिअ] दृढ़ किया हुआ (कुमा)। दणु १ पुं [दणुज] शैत्य, दानव (हे १, दणुअ १ २६७, कुमा, पद)। ईद, एद पुं [ईद] १ दानवों का प्रियपति (मउउ, से १, २)। २ राजपु, लंकारिनि (पत्रम ६६, १०)। बइ पुं [बवि] देखो ईद (पत्रम १, १, ७२, ६० कुमा ५५)।

दत्त वि [दत्त] १ दिया हुआ, दान किया हुआ, पितृणी (हे १, ४६)। २ मयन्त, स्थापित (ज १)। ३ पुं, स्व नाम-भ्यात् एव धेहि-भुज (उप ५६२; ७६८ टी)। ४ भरत-वर्ष ॥ एक भावी कुलकर पुरुष (सम १५४)। ५ चतुर्थ बलदेव के पूर्व-जन्म का नाम (सम १५४)। ६ भरत-शेष में उपन्न एक धर्म-चर्यासी राजा, एक बामुदेव (सम ६३)। ७ भरत-शेष में मतीत उत्तरपिण्डी बाल में उपन्न एक जिन-देव (पत्र ७)। ८ एक जैनमुनि (भाए)। ९ भुज-विशेष (धिया १, ७)। १० एक जैन साधार्म्य (कुत्र ६)। ११ न. दान, उत्तम (उत्त १)।

दत्त न [दत्त] दांती, धाम बाटने का हँसिया (हे १, १५)।

दत्ति श्री [दत्ति] एक बार में जिनका दान दिया जाय वह, प्रविच्छिन्न रूप से प्रवृत्ती भिन्ना भी जाय वह (ठा ५, १, चंवा १८)।

दत्तिय धुंछी [दत्तिया] ऊपर देखो, 'चंछो दत्तियम्' (पत्र ६)।

दत्तिय धुं [दत्तिअ] यन्त्र पुणें चर्म (पत्र)।

दत्तिया धुं [दत्तिया] १ छोटी दांती, धाम बाटने का उपर शिखर (राज)। २ देवरात्री श्री, दान करनेवाली श्री (पाह २)।

दत्तर पुं [दे] हय-गायक, बर-गायक (हे ५, १५)।

ददंन देतो दा।

ददर पुं [दे. दर्दर] कुतुप भादि के मुँह पर बांधा जाता कपडा (पिठ ३४७; ३५६; राय ६८; १००)।

ददर वि [दे. दर्दर] १ घना, प्रचुर, अत्यन्त, 'गोखसससरत्तचदणददरिदएणपंचमुत्तित्ता' (सम १३७)। २ पुं. चपेटा, हस्त-संल का भाषात (सम १३७, धीर, लाया १, ८)।

३ भाषात, प्रहार, 'पापददरएणं कंययेते मेइणित्तल' (लाया १, १)। ४ वचनाटोप (पएह १, ३—पत्र ४४)। ५ सोपान-श्रीवी, सीढी (सम १३७)। ६ वाद्य-विशेष (ज २)।

ददरिगा देखो ददरिया (राय ४६)।

ददरिया श्री [दे. दर्दरिया] १ प्रहार, भाषात (लाया १, १६)। २ वाद्य-विशेष (पत्र)।

ददरु पुं [ददर] दाह, छुद्र कुष्ठ-रोग (मग ७, ६)।

ददरुर पुं [दर्दुर] प्रहार, भाषात (धर्मवि ८५)।

ददरुर पुं [दर्दुर] १ मेढ़, मेढ़क, बेंग (सुर १०, १८७, प्रासू ५५)। २ चपड़े से सज्जन

मुँहवाला बलश (पएह २, ५)। ३ देव-विशेष (लाया १, १३)। ४ यद्ग, प्रह-विशेष (मुत्र १६)। ५ पर्यंत विशेष (लाया १, १६)। ६ वाद्य-विशेष (दे ७, ६१, गउह)।

७ न दर्दुर देव का मिहलान (लाया १, १३)। 'वहिंसय न [निरसक] देव-विशेष, सीमर्ग देवलोह का एक विमान (लाया १, १३)।

ददरुरी श्री [दर्दुरी] श्री-देव, भेरी (लाया १, १३)।

ददरुल वि [ददुमन] दाह-रोगमाला (निरि ११६)।

दधि देतो दहि (सम ७०, नि १०६)।

ददर देखो ददरु (सुर २, ११२; नि २२२)।

ददर पुं [दर्धे] १ धर्हरार, धर्मिन्, नर्त (प्रासू ११२)। २ बन्, पराक्रम, मोर (से ४, ५)। ३ पुरुषा, दिखाई (मग १२, ५)।

४ धर्मवि मे धाम का धर्मिन् (निजु १)।

ददर्य पुं [दर्पण] १ बाण, सीछा, घात (लाया १, १; प्रासू १११)। २ वि, दर्-जनक (पएह २, ४)।

ददर्यणिज वि [दर्पणीय] धत-जनक, पुष्टि-कारक (लाया १, १, पएह १७, धीव, वण)।

दर्पि वि [दर्पिन्] प्रसिमानो, गविष्ठ (मणू)।

दर्पिअ वि [दर्पिक] दर्प-जनित (उवर १११)।

दर्पिअ वि [दर्पित] प्रसिमानो, गविष्ठ (सुर ७, २००, पएह १, ४)।

दर्पिअ वि [दर्पिअ] अत्यन्त प्रहंवादी (मुया २२)।

ददरुल वि [दर्पयन्] भर्हरावाला (हे २, १५६, पद)।

ददर पुं [दर्भ] लुण विशेष, डाम, बाण, कुश (हे १, २१७)। 'पुपक पुं' [पुप्य] सीप की एक जाति (पएह १, १—पत्र ८)।

ददरमायण } न [दार्भायन, दार्भायन]
ददरिमायण } विमानसत्र का मोर (इह, मुत्र १०)।

ददरिमाय न [दार्भिक] मोर-विशेष (मुत्र १०, १६ टी)।

ददर सक [दमय] निग्रह करना, दमन करना, रोकना। दमेइ (घ २८६)। दम, दमद (वय)। बयट, दमस्त (वय)। संद, दमिऊण (कुत्र १६१)। इ. दमियऊन, दम्म, दमेयऊन (बान, प्राचा २, ४, २, उर)।

दम पुं [दम] १ दमन, निग्रह। २ इन्द्रिय-निग्रह, बाध वृत्ति का निरोध (पएह २, ४; छि)। 'घोस पुं' [घोय] घेदि देह के एक रज्ज का नाम (लाया १, १६)। 'दम पुं' [दम] १ हलिच्छीर नगर के एक राजा का नाम (उप ४५८ टी)। २ एक जैन मुनि (विगे २७६६)। 'धर पुं' [धर] एक जैन मुनि का नाम (पत्रम २०, १६३)।

दमग देतो दमय (लाया १, १६; मुना ३८२, वय ३, निजु १२, ११; उर)।

दमग नि [दमग] दमन करनेवाला (निजु ६)।

दमग देतो दमगक (पत्र १५; १२१)।

दमग न [दमन] १ निग्रह, दमन। २ वय में बरग, बणू में बरग, 'धर्मिन्पयण' (बाए ४०)। ३ जाजर, सीछा (पएह १, १५)।

३) । ४ पशुको को दो जाति शिवा (पञ्च १०३, ७१) ।

दमणक } पुन [दमनक] १ दौता, मुषवित
दमणग } पत्रवाली वनस्पति-विशेष (पण्ड
दमणय } २, ५, पण्ड १, गजठ) । छन्द-
विशेष (मिग) । ३ गन्ध-द्रव्य-विशेष (राज)

दमदमा भक [दमदमाय] आढम्बर
करना । दमदमाइ, दमदमाइइ (हे ३, १३८) ।

दमय वि [दे. द्रमय] दरिद्र, रंक, गरीब
(दे ५, ३४, विते २८४५) ।

दमयती स्त्री [दमयन्ती] राजा मल की पत्नी
का नाम (पवि. कुप्र ५४, ५६) ।

दमि वि [दमिन्] जितेन्द्रिय (उत्त २२) ।

दमिज वि [दमित] निगूह्यत, रोका हुमा
(गा ८२३, कुप्र ५८) ।

दमिल पु [दमिल] १ एक भारतीय देश ।
२ पुष्पों, उसके निवासी मनुष्य, द्रामिल (कुप्र
१७२, इक, भीप) । स्त्री. 'ली (छाया १,
१, इक, भीप) ।

दमेयक्य } श्लो दम = दमय ।
दम्म

दम्म पु [दम्म] सोने का सिक्का, सोना-
मोहर (उप पु ३८८, हे ४, ४२२) ।

दम्मत देखो दम = दमय ।

दय सक [दय] १ रक्षण करना । २ कृपा
करना । ३ चाहना । ४ देना । दयइ (भावा) ।
बहु दअत, दअमाण । (हे १२, ६४, ३,
१२, अमि १२) ।

दय न [दे. दक] जल, पानी (दे ५, ३३,
बुह १) । 'सीम पु [सीमन्] लवण-समुद्र
में स्थित एक प्राचात पर्वत (सम ६८) ।

दय न [दे] शोक, प्रपन्नोस विलगीरी (दे ५,
३३) ।

दय देखो दव = दव (हे १, ३१, १२, ६५) ।

'दय वि [दय] देवता (कय, पवि) ।

दया स्त्री [दय] कष्ट, श्रुतम्पा, कृपा
(दस ६, १) । 'यर वि [यर] दयालु
(पञ्च २६, ४०, उप पु १६१) ।

दयाइअ वि [दे] रसित (दे ५, ३५) ।

दयालु वि [दयालु] दयालुता, बरण (हे १,
१७७, १८०, पञ्च १६, ३१, सुपा ३४०,
या १६) ।

दयावण } वि [दे] दीन, गरीब, रंक (दे
दयावण } ५, ३५, अमि, पञ्च ३३, ८६) ।

दर सक [ट] आदर करना । दरइ (पद्) ।

दर पुन [दर] गय, डर (कुमा) । २ घ-
ईयत, भोला, भ्रष्ट (हे २, २१५) ।

दर पुन [दर] १ कुमा, कन्दरा । २ गाँ,
गड्डा, गडा या गड्डाह, दरार, 'ते य दरा
मिख्या ते य' (धर्मवि १४०) ।

दर न [दे] भड्ड, भाषा (दे ५, ३३, अमि,
हे २, २१५, बुह ३) ।

दरदर पु [दे] उल्लास (दे ५, ३७) ।

दरमत्ता स्त्री [दे] बलात्कार, जबरदस्ती
(दे ५, ३७) ।

दरमल सक [मर्दय] १ चूर्ण करना,
विदारना । २ भाषात करना । दरमलइ
(अमि) । बहु, दरमलत (अमि) ।

दरमलिय वि [मर्दित] आहत, वृणित
(अमि) ।

दरमलिय वि [दे] उपश्रुत (कुमा) ।

दरषल पु [दे] आम स्वामी, गाँव का मुखिया
(दे ५, ३६) । 'णिहेल्लण न [दे] शून्य
गृह, छाती बर (दे ५, ३७) । 'बल्लइ पुं

[यल्ल] १ दण्ड, प्रिय (दे ५, ३७) । २
कातर, बरपोक (पद्) । 'विंदर वि [दे]

१ दोष, लम्बा । २ विरल (दे ५, ५२) ।

दरस (श्री) देखो दरिस । दरसेदि (प्रह
६६) ।

दरि न [दरी] कन्दरा, छुका, 'दरीणि नां
(भावा २, १०, २) ।

दरि देखो दरी । 'अर पुं [चर] किनर
(हे ६, ४४) ।

दरिअ वि [अर] गविष्ठ, अग्निमानी (हे १,
१४४ भाषा) ।

दरिअ वि [दीर्ण] १ डरा हुआ, नीत (कुमा,
सुपा ६४५) । २ फाटा हुआ, विदारित
(अत ७) ।

दरिअ (धप) पुं [दरिअ] छन्द विशेष (मिग) ।

दरिआ स्त्री [दरिअ] कन्दरा, कुआ (अत—
विक ८४) ।

दरिइ वि [दरिअ] १ निर्धन, नि स्व, धन-
रहित । २ दीन, गरीब (पाषा, प्रासु २३,
कय) ।

दरिइ } वि [दरिअ], 'क' ऊपर देखो,
दरिइय } 'अन्हे' दरिइणी, कई विवाहमंगल
रत्नों का पूरा करेगा (महा, सण, पि २५७) ।

दरिइय वि [दरिअ] वृ स्थित, जो धन-
रहित हुआ हो (महा, पि २५७) ।

दरिदीहय वि [दरिदीभूत] जो निर्धन हुआ
हो (अ ३, १) ।

दरिस सक [दर्शय] दिखलाना, बतलाना ।

दरिसइ, दरिसइ (हे ४, ४२, कुमा, महा) ।

बहु, दरिसंत (सुपा २४) । बहु, दरिसणिज,

दरिसणीय (भीप, पि १३५, सुर १०, ६) ।

दरिसण देखो दसण = दर्शन (हे २, १०५) ।

'पुर न [पुर] नगर-विशेष (इक) ।

'आवरणी स्त्री [गरणी] विद्या विशेष
(उपम ५६, ४०) ।

दरिसणिज न [दर्शनीय] १ प्राकृति रूप ।
२ भवलोका (तनु ३६) ।

दरिसणिज } देखो दरिस । २ न, भेंट, उप-
दरिसणीय } हार, गहियण दरिसणीय
संपन्न राखण मूल' (सुर १०, ६) ।

दरिसाव देखो दरिस । बहु दरिसावत (वप
पु १८८) ।

दरिसाव पु [दर्शन] दर्शन, साक्षात्कार,
'एलो य महत्ता कवचयमेरो दरिसाव दाऊण
पनिमिपस' (महा), 'पई व दाव छलमेग
दरिसाव पुणोवि भइसणीहो' (सुपा ११५) ।

दरिसाव पु [दर्शन] दिखाना (वप १) ।

दरिसावण न [दर्शन] १ दर्शन, साक्षात्कार
(भावा १) । २ वि, दर्शन, दिखलाना
(अमि) ।

दरिसि वि [दर्शन] देखनेवाला (वप, पि
१३५, स ७२७) ।

दरिसिअ वि [दर्शत] दिखलाना हुआ
(कुमा, उप) ।

दरी स्त्री [दरी] कुमा, कन्दरा (छाया १, १,
हे ६, ४४, उप पु २६८, स ४१३) ।

दरम्मिल्ल वि [दा] पन, निविड (हे ५, ३७) ।

दल सक [दा] देना, दान करना, धर्मण
करना । दलइ (कय, वस) । 'जं तस्य मोल्ल
तमहं दलामि' (अ २११ टी) । बहु, दल-

माण, दलेमाण (कय, छाया १, १६—
पञ्च २०४, ठा ४, २—पञ्च २१६) बहु,
दलिआ (कय) ।

दल सक [दल] १ विकसना । २ फटना, खरिखत होना, टिप्पा होना, 'अहिंसप्रति-
रणजिउरवदु' विप्र दलद बमलवण' (भा
४६५), 'कुडय दलद' (कुमा) । वक्र. दल्लंत
(से १, ५८) ।

दल सक [दलय] पूर्ण करना, ठुकरे-ठुकरे
करना, विदारना । वक्र. 'निम्भूस दलभाणो
सयनतरससुसिदवस' (सुपा ८५) । कवक.
दलिज्जत (से ६, ६२) । संक्र. दल्लिऊण
(कुमा) ।

दल न [दल] १ मैन्य लरकर, फीज (कुमा) ।
२ पत्र, पत्ता, पक्षी या पंखुड़ी, दूहकल्लहल्ल
गोसम्मि भासि ग्रहो मिलाएणमल्लरवो'
(हेका ५१, गा ०; १८०; २५७, ३६६,
५६२, ५६१, सुपा ६३८) । ३ पन,
सम्यक्ति । ४ समूह, समुदाय, गरोह (सुपा
६३८) । ५ खएह, भाग, मरा (से ६, ६२) ।
दलण न [दलन] १ पीसना, चूरेन (सुपा
१५, ६६६) । २ वि. चूरे करेनासा (सुपा
२३४, ५१७, कुम ११२, ३८३) ।

दलमाण देखो दल = वा ।

दलमाण देखो दल = दलय ।

दलमल देखो दरमल । वक्र. दलमलत (भवि) ।
दलय देखो दल = वा । दलयद (भौप) । भवि.
दलदलसवि (भौप) । वक्र. दलयमाण (छाया
१, १—पन १७, भा १, १—पन ११७) ।
संक्र. दलदल्ला (भौप) ।

दलय सक [दापय] दिवाना दलयद
(कप्प) ।

दलयद देखो दरमल । दलयदद (भवि) ।

दलयदिय देखो दलमलिय (भवि) ।

दलाय सक [दापय] दिवाना । दलावेद
(पि ५५२) । वक्र. दलावेमाण (ठा ४, २) ।

दलिअ वि [दलिन] १ विनमित्त, सिता हुआ
(से १२, १) । २ पीना हुआ (पाप) ।
'दलिसनमसालिउंनुपयसमि माराय राउंय'
(गा ६६१) । ३ विदारित, खरिखत (से १,
१५६, गुर ४, १५२) ।

दलिअ ॥ [दलिक] १ चीज, वस्तु द्वय (भौप
५५) । 'जह जोगममिव दलिए सवम्मि न
भीए पडिमा' (विते १६३७) । २ परिखत
(सह ८० मा ७० ४) ।

दलिअ वि [दे] १ निरूपिताज, जिसने
देवी नजर की हो वह । २ न, जैसी (दे ५,
५२) । काष्ठ, लकड़ी (दे ५, ५२, पाप) ।

दलिज्जत देखो दल = दलय ।

दलिइ देखो दरिइ (हे १२५४, गा २३०) ।

दलिइअ भक [दरिद्रा] दुर्गात होना, दरिद्र होना ।
दलिहाइ (हे १, २५४) । भूका. दलिहाइअ
(सवि ३२) ।

दलिअ वि [दलय] दल-युक्त, दलवाला
(सण) ।

दलेमाण देखो दल = वा ।

दय सक [द्रु] १ गति करना । २ छोड़ना ।
दयए (विते २८) ।

दय पुं [दय] १ जलन का अग्नि, वन की
भाग (दे ५, १३) । २ वन, जंगल । 'गिग
पुं [गिगि] जलन का अग्नि (हे १, १७७,
प्राप) ।

दय पुं [द्रय] १ परिहास (दे ५, ३१) । २
पानी, जल (पच २) । ३ पनीली वस्तु,
रसीली चीज (विते १७०७) । ४ वेग, 'दव-
दवचारी' (सम ३७) । ५ सयन, विरति
(भाचा) । 'वर वि [कर] पछिआसकारक
(मन ६, ३३) । 'कारी, 'गारी की [कारी]
एक प्रकार की दासी, जिसका काम परिहास-
जनक बातें कर जी बहाना होता है (मय
११, ११, छाया १, १ टी. पन ४३) ।

दलय न [दवन] यान, वाहन (द्रुपति
१०८) ।

दवणय देखो दमणय (भवि) ।

दयदन ॥ [द्रवद्रवम्] शीघ्र, जल्दी;
दयदवसस 'दवदवसस पयतवखा' (संबोध
१४ वस १७, ८), 'दवदवसस न गण्डेआ' (दम
५, १२) । 'जह वणुदो वणं दव-
वस जलियो राणेण निहूद' (धम्मि ८६) ।
दयदवा छो [द्रवद्रवा] वेगमाली गति,
'माअय गयं सुद्धि नयनलो पाविओ द-
ववा' (पच ८, १७३) ।

दवर पुं [दे] १ वस्तु, खोप, चागा (दे ५,
३५, पावम) । २ रज्जु, रसी (छाया
१, ८) ।

दवरिया छो [दे] छोटी रसी (विते) ।

दवहुत्त न [दे] शीघ्र मुक्त, शीघ्र बाल का
आरम्भ (दे ५, ३६) ।

दवाय सक [दापय] दिवाना । दवावेद
(महा) । वक्र. दवावेमाण (छाया १, १४) ।
सक्र. दवावेऊण (महा) । हेक्र. दवावेत्तए
(वस) ।

दवाण न [दापन] दिवाना (निद्र २) ।

दवागिअ वि [दापित] दिवाया हुआ (सुपा
१३०, से १६३, महा, उप पु ३८५,
७२८ टी) ।

दविअ पुन [द्रव्य] १ भव्यवी वस्तु, जीव
आदि मौलिक पदार्थ, मूल वस्तु (सम्म ६,
विते २०३१) । २ वस्तु, गुणाधार पदार्थ
(भौप ५, भाचा, कप्प) । ३ वि. भव्य,
शक्ति के योग्य (सूत्र १, २, १) । ४ भव्य,
शुद्ध, शुद्ध (सूत्र १, १६) । ५ राग-द्वेष ने
विरहित, नीतराग (सूत्र १, ८) । 'गुणयोग
पुं [गुणयोग] पदार्थ विचार, वस्तु की
मीमासा (ठा १०) । देखो दव्व ।

दविअ वि [द्रविक] संयम वाता, सयम युक्त,
सयमी (भाचा) ।

दविअ वि [द्रवित] द्रव-युक्त, पनीली वस्तु
(भौप) ।

दविअ देखो दविअ (सुपा ५८०) ।

दविअ छो [द्राविअ] लिपि विशेष, सामिल
भाषा (विते ५६४ टी) ।

दविण न [द्रविण] घन, पैसा, संपत्ति (पाप,
कप्प) ।

दविण न [द्रव्य] १ पाद का जंगम, घन में
पाद के लिए सरदार से प्रवदद भूमि (भाचा
२, ३, ३, १) । २ गुण भावि द्रव्य-मनुष्यन
(सूत्र २, २, ८) ।

दविअ पुं [द्रविअ] १ देश-निरूपे दविअ
देश निरूपे, मद्रान प्राप्त । पुंछी. दविअ देश का
निरासी मनुष्य, दविअ (पच १, १—पन
१४) ।

दव्व देखो दविअ = द्रव्य (सम्म १२, भग,
विते २८, मणु उत २८) । ६ घन, पैसा,
संपत्ति (पाप, प्राप् १३१) । ७ मूत्र या
अनिय पदार्थ का कारण (विने २८, पंचा
६) । ८ नीय, धनधान । ९ भास, धन्य
(पंचा ४० ९) । 'द्रिय पुं [द्रियं], 'दियन,
'सिअ' द्रव्य को ही प्रयान माननेवाला

पल, नय-विशेष, 'द्वचद्विपल' सर्व सया
अणुपन्नमविण्ट' (सम् ११; विरे ४१७)।
'लिग न [लिङ्ग] बाह्य वेप (पंचा ४)।
'लिगि नि [लिङ्गिन्] जेपारी साधु (पु
१०)। 'लेसा ओ [लेसा] शरीर भादि
पौदात्त वस्तु का रंग, रूप (भग)। 'वेध
पुं [वेध] गुरुय भादि का बाह्य आकार
(राज)। 'यारिय पुं. [यार्य] अग्रधान
आचार्य, आचार्य के गुणों से रहित आचार्य
(पंचा ६)।

द्वच न [द्वच] योग्यता, 'समयमि द्वच-
सद्वच पाय न जोग्याए एको ति, एिहच-
रितो' (पंचा ६, १०)।

द्वचहलिवा ओ [द्वचहलिवा] वनस्पति-
विशेष (पण १—पत्र ३४)।

द्वचि न [द्वचि] देखो द्वचि (पण १)।

द्वचिदिअ न [द्वच्येन्द्रिय] दृश्य इन्द्रिय
(भग)।

द्वचिओ [द्वचि] १ बर्षी, कलषी, चमषी, कोई
(पाप)। २ साप की फल (दे ५, ३७)।
'अर' कर पुं [कर] साप, सर्व (दे ५,
३७, पण १)।

द्वचिओ [दे] वनस्पति-विशेष (पण १—
पत्र ३४)।

दस नि. व. [दशान] दस, नौ और एक (हे
१, १६२, ठा ३, १—पत्र ११६, सुपा
२६७)। 'उर न [पुर] नगर विशेष
(विरे ३३०३)। 'वंठ पुं [कण्ठ] रावण,
एक खान-मति (से १५, ६१)। 'कपर पुं
[कपर] राजा रावण (गड ४) 'काळिय
न [काळिक] एक जैन आगम ग्रन्थ (दसनि
१)। 'ग न [क] दस का समूह (दं
३८, नन १२)। 'गुण नि [गुण] दस
गुण (ठा १०)। 'गुणिअ नि [गुणित]
दस-गुण (भग, आ १०)। 'गुणी पु
[गुणी] रावण (पत्र ७३, ८)। 'दस
मिया ओ [दसमिया] जैन साधु का
एक पवित्र अनुष्ठान, प्रतिमा विशेष (सम
१००)। 'दियसिय नि [दियसिक] दस
दिन का (गुण १, १—गुण ३०)। 'द
पुं [धि] राप, ५ (सम ६०, गुण १, १)

१)। 'धणु पुं [धनु] ऐकत सेन के
एक भावी कुलकर पुरुष (सम १५३)।
'पपसिय नि [प्रादेशिक] दस भयव-
वाला (ठा १०)। 'पुर देखो 'उर (महा)।
'पुत्ति नि [पूत्ति] दस पूर्व-जन्मों का
अभ्यासी (धोय १)। 'यल पुं [यल]
मगवान् बुद्ध (पाप ६१, २६२)। 'म नि
[म] १ दसवां (राज)। २ चार दिनों का
लगभग उपवास (आचा छाया १, १, सुर
४, ५५)। 'मभत्तिय नि [मभत्तिक]
चार दिनों का लगातार उपवास करनेवाला
(पण २, ३)। 'मासिअ नि [मासिक]
दस मासे का तौलनामा दस मासे का परि-
माणवाला (कपू)। 'मी ओ [मी] १
दसवीं। २ तिथि विशेष (सम २६)। 'मुहि-
यापतगा न [मुद्रिमानन्तक] हाथ की
उपलियों की दस अङ्गुलियाँ (और)। 'मुह
पुं [मुख] रावण, राक्षस पति (हे १,
२६२, प्राप्, हेका ३४४)। 'मुहसुअ पुं
[मुखसुत] रावण का पुत्र, मेघनाद भादि
(से १३, ६०)। 'य देखो 'ग (ठा १०)।
'रत्त न [रान] दस रात (विपा १, ३)।
'रह पुं [रथ] १ रावचन्द्रजी के पिता का
नाम (सम १५२, पत्र २०, १६३)। २
भरीत उत्सपिणी-नल में उल्लस एक कुलकर
पुरुष (ठा ६—पत्र ४४४)। 'रहस्य पुं
[रथसुत] राजा दशरथ का पुत्र—राम,
लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न (पत्र ५६, ८७)।
'यअण पुं [यदन] राजा रावण (से १०,
५)। 'यल देखो 'यल (प्राप्)। 'विह नि
[विध] दस प्रकार का (कुमा)। 'वेजा-
लिअ न [वेजालिक] जैन आगम ग्रन्थ-
विशेष (दसनि १, एहि)। 'हा व [धा]
दस प्रकार से (जो २४)। 'णण पुं [नन]
राक्षसेश्वर रावण (से ३, ६३)। 'हिया
ओ [हिआ] पुन-जन्म क उत्सव में
किया जाता दसदिनों का एक उत्सव (कपू)।

दसग नि [दशक] दस वर्ष की उम्र का
(वडु १७)।

दसण पुं [दशान] १ दंत, दन्त (भग कुमा)।
२ न. दश, काटना (पव ३८)। 'च्यय पुं
[च्यय] होठ, भयर, घोट (मुर १२, २३४)।

दसण पु [दशान] देश-विशेष (उप २११
टी. कुमा)। 'कूठ न [कूट] शिवर-विशेष
(आम)। 'पुर न [पुर] नगर-विशेष
(ठा १०)। 'भद पुं [भद्र] दशार्णपुर
का एक विख्यात राजा, जो मद्रितीय आगम
से भागवान् महावीर को वन्दन करने गया था
और जिनसे मगवान् महावीर ने पाँच दोला
लौ ली (पठि)। 'यह पुं [पति] दशार्ण
देश का राजा (कुमा)।

दसतोन न [दे] पाप्य विशेष (पण १—
पत्र ३४)।

दसत्र देखो दसण (सत ६७ टी)।

दसा ओ [दशा] १ स्थिति, अवस्था (ग
२२७, २८४, प्राप् १६०)। २ सौ वर्ष के
प्राणी की दस-दस वर्ष की अवस्था (दसनि
१)। ३ सूत या जल का छोटा और पतला
भाग (भोय ७२५)। ४ व. जैन आगम-
ग्रन्थ विशेष (अणु)।

दसार पुं [दशाह] १ समुद्रविजय भादि दश
यादन (सम १२६, हे २, ८५, पत २,
छाया १, ४—पत्र ६६)। २ बासुदेव,
श्रीकृष्ण (छाया १, १६)। ३ बलदेव
(आम)। ४ बासुदेव की सतति (राज)।
'णेउ पुं [नेउ] श्रीकृष्ण (उव)। 'नाह
पुं [नाथ] श्रीकृष्ण (पाप)। 'यह पुं
[पति] श्रीकृष्ण (कुमा)।

दसिया देखो दसा (पुपा ६४१)।

दसु पुं [दे] शोक, तिलगिरी (दे ५, ३४)।

दसुत्तरसय न [दशोत्तरशत] १ एक सौ
दस। २ वि. एक सौ दसवा, ११० वा
(पत्र ११०, ४५)।

दसुपु पुं [दसु] दुष्ट, डाकू, चोर, तत्कर
(उत १०, १६)।

दसेर पुं [दे] सूत बनन (दे ५, ३३)।

दसस देखो दस—दशय. छ. दससणोअ
(स्वप् ६५)।

दससण देखो दसण (मे २१)।

दसु पुं [दसु] चोर, तत्कर (आ २७)।

दह स [दह] जलना, भस्म करना।

दह (महा)। बर्मे. दहिअ (हे ४, २५६),
दगद (आवा)। बह. दहत (आ २८)।

कवक, दुअमंत, दुअममाण (नाट—मालती ३०, पि २२२) ।

दह पुं [दह] हद, बडा जलाशय, झील, सरोवर (भग, उवा, छाया १, ४—पत्र ६६, सुपा १३७) । "कुलिया छी [कुलिया] बझी विशेष (पण १) । "वई, [वई] छी [वती] नवी विशेष (छा २, ४—पत्र ८०, जे ४) ।

दह देलो दस (हे १, २६२, द १२, पि २६२, पत्र ७८, २४, से १३, ६४, प्राप्र, से १४, १६, ३, ११, १०, ४ पत्र ८, ४४, प्राप्र) ।

दहण न [दहण] १ बाह भस्मीकरण । २ पुं, भस्मि, वहि (पण १, १, उप पु २२, सुपा ४७४, था २८) ।

दहणी छी [दहनी] निदा विशेष (पत्र ७ ११८) ।

दहयोही छी [दे] स्थायी, पलिया, गरिया (दे ४, ३६) ।

दहाण वि [दाहक] जलातेवाला (सख) ।

दहि न [दधि] दही, दूध का बिकार (छा ३ १, छाया १, १, प्राप्र) । "वण पु [वण] दधि पण्ड, दधियय जमा हुआ दही (पण १७—पत्र ४२६) । "मुह पु [गुर] १ दूध विशेष (पत्र ४१, १) । २ एक नगर (पत्र ४१, २) । ३ पर्वत विशेष (राज) । "वण, "वण पु [वण] १ एक राजा, नृप-विशेष (कुप्र ६६) । २ नृप-विशेष (बीप, सम १५२, पण १—पत्र ३१) । "वासुया छी [वासुरा] वनसति-विशेष (जीन ३) । "वाहण पु [वाहन] नृप विशेष (महा) । "सर पुं [सर] साय-द्रव्य विशेष, मलाई, (दे ३, २६, ४, ३६) ।

दहि वि [दधि] १ दही "कुहादरीय महण" (वर्मवि ४४) "भयतु दही" (सूप्र २, १, १६) । २ लेता, लगातार छीन दिना का उपवास (संबीप ४८) ।

दहिउक न [दे] नरनीत, मैत्रं मन्वन (दे ४, ३४) ।

दहिठ पुं [दे] दूध विशेष, दधिय बँध या बँध का पेठ (दे ४, ३४) ।

दहिण देसो दाहिण (नाट—वेणी ६७) ।

दहित्यर } पु [दे] दधिसर, दही पर की
दहित्यर } मलाई, साय विशेष (दे ४, ३६) ।

दहिसुह पु [दे] कपि, वानर (दे ४, ४४) ।

दहिय पु [दे] पति विशेष, "ज सावयविति-रिदहियमोर मारति अहोस वि ने वि मोर" (कुप्र ४२७) ।

दा सक [दा] देना, उत्सर्ग करना । दाह देह (भवि हे २, २०६, छाया, महा, कस) ।

भावि दाह दाहमि, दाहिमि (हे ३, १७०, छाया) । कर्म दिहइ (हे ४ ४३८) । वक, दिव, दँव, दसव, देयमाण (सुर १, २१२, गा २१, ४६४, हे ४, ३७६, वृह १, छाया १, १४—पत्र १८६) । कवक, दिजव, दिजमाण, दीअमाण (भा १०१, सुर ३, ७६ १०, ४, ४, सम ३६, सुपा ४०२, मा ३३) । सऊ, दसा दाह, दाऊण (विपा १, १, पि ४७०, दुमा, उव) । हेह दाह (उवा) । क दायवज, देय (सुर १, ११०, सुपा २३३, ४४४, ४३२) । हेह, देव (भप) (हे ४, ४४१) ।

दा देलो दग । "आलग न [स्थालक] जन से गीला पाल (भग १४—पत्र ६८०) ।

कलम पुं [कुलश] पानी का छोटा बरत । "कुभ [कुम्भ] जल का घड़ा । "गरा पु [वारक] जल का पात्र-विशेष (भग १४—पत्र ६८०) ।

दा देलो ता = तावत (से ३, १०) ।

दाअ देलो दाअ = दर्शय । दाए (विसे ४४४) । बर्म, दाहज (विसे ४६०) । कवक दाह-जमाण (वण) ।

दाअ पु [द] प्रतिभू जागिनदार, जमानत जलवाला (दे ४, ३८) ।

दाअ पु [दाय] दात, उमर्ग (छाया १, १ पत्र ३७) ।

दाइ वि [दायिन] दाता, देनेवाला (उप पु १६२) ।

दाइअ वि [दासित] दियताया हुआ (विन १०२२) ।

दाइअ पु [दायिक] १ पैसु खपति का हितेजर (उप पु ४७, महा) । २ योजन, समान-योग्य (वण्य) ।

दाअजमाण देसो दाअ = दर्शय ।

दइज्य न [दियक] पाणिग्रहण के समय वर-वधू को दिया जाता द्रव्य (सिदि ४६६) ।

दाउ वि [दाउ] दाता, देनेवाला (महा, सं १, सुपा १६१) ।

दाउ देसो दा = दा ।

दाओयरिय वि [दाओवरिक] जसोदर रोग-वाला (विपा १, ७) ।

दाअपन (भप) देलो दअपन । दाअलवड (प्राह ११६) ।

दाप देसो दाह (हे १, २६४) ।

दाडिम न [दाडिम] फल विशेष, अनार (महा) ।

दाडिमी छी [दाडिमी] अनार का पेठ (पि २४०) ।

दाहगालि देसो दहगालि (दसनि १, ४६ टी) । दादा छी [ददा] बडा दाँत, दन्त विशेष-चीमड, चहू, दाह (हे २, १३०, गउड) ।

दाहि वि [दहिम] १ दाढ़वाला । २ पु, हिसक पशु (वेणी ४६) । सुप्र, वराह, "कि दाहीमपमीमो नियय पुह केसरी रियद" (पत्र ७, १८) ।

दाडिआ छी [दे] दाढ़ी, मुल के नीचे का भाग, समुद्र दुबडी के नीचे या छूट पर के बाल (दे २, १०१) ।

दाडिआलि १ छी [दहिम] १ दाढ़ा दाडिआलि १ की वंति । २ वज्र विशेष (वृह ३, जीव) ।

दाण पुन [दान] १ दान, उत्सर्ग स्वाम "एए हवति दाण" (पत्र १४, ४४ वण, प्रावू ४८ ६७ १७२) । २ हाया का मड (वाप ४३ गउड) । ३ जो दिसा जाय वह (गउड) । "निरय पु [निरत] एक राजा (सुपा १००) । "साला छी [शाला] सनागर (छो ८) ।

दाणनराय न [दानान्तराय] बर्म विशेष, जिनके उदय से दान देने की इच्छा नहीं होती है (राय) ।

दाणपारमिया छी [दानपारमिया] दान, उत्सर्ग समर्पण "दिस हिरनारी समन्या देमादियं येर । दान्तराणिविती जा द्हा सा दाणपारमिया" (पर्वत ७३७) ।

दाणय पु [दानय] दैत्य, असुर, दनुज (दे १, १७७ अञ्जु ४१, प्रासू ८६) ।

दाणत्रिद पु [दानवेन्द्र] असुरो का स्वामी (छाया १, ८, पदम ६२, ३६, प्रासू १०७) ।

दाणि छी [दे] शुल्क, छुगो (छुपा ३६०, ५४८) ।

दाणि भ [इदानीम्] इस समय, अभी (प्रति १६, स्वप्न २०, हे १, २६, दाणी ४, २७७ अमि ३७, स्वप्न ३१) ।

दाथ वि [दास्थ] १ द्वार पर स्थित । २ पुं प्रतीहार, द्वारपाल, चपरासी (दे ६, ७२) ।

दादलिआ छी [दे] असुरी उगयो (दे ५, ३८) ।

दापण न [दापन] दिलाता, 'अन्धुदुष्टा अन्धलिकरण सहेवासणदापण' (सत्त २६ टी) ।

दाम न [दामन्] १ माला, छञ् (पह १, ४, कुमा) । २ रज्जु रस्ती (गा १७२, हे १, ३२) । ३ पु, वेश घर मारण का एक आवास-वर्त (राज) । ४ त वि [वत्] मालाजाला (कुमा) ।

दामद्वि पु [दामरिथ] सौम्य देवलोके के हनु के वृषभ-मन्य का प्राविपति देव (हक) ।

दामद्वि पु [दामरि] ऊपर देखो (ठा ५, १—पत्र १०३) ।

दामन न [दामन] बन्धन, पशुको का रस्ती से नियन्त्रण (पव १८) ।

दामन छीन [दामनी] पशु को बांधने की डोरी—रस्ती, पगहा (पमैवि १४४) । छी. 'पा. (मुज १०, ८) ।

दामनी छी [दामनी] १ पशुको की बांधने की रस्ती (मग १६, ६) । २ भगवान् कुन्नु नाथ की मुख्य शिष्या (तिल्य) । ३ छी और पुरुष का रज्जु के भारदारवाला एक छुम सभाए (पह २, ४ टी—पत्र ८४, पह २, ४—पत्र ६८, ७६, अं २) ।

दामणा छी [दे] १ प्रसव, प्रसूति । २ नयन, प्रास (दे ५, ५२) ।

दामिय वि [दामित] सवर्णिन नियन्त्रित (सण) ।

दामिरी छी [द्राविडी] द्रविड देश की लिपि में निबद्ध एक मन्त्रिया (मृष २, २) ।

दामो छी [दामो] तिपि विशेष (सम ३५) ।

दामोअर पु [दामोदर] १ शीकृष्ण वासुदेव (तो ४) । २ अतीत उत्तरिणी काल मे भरत-क्षेत्र में उत्पन्न नववां जिनदेव (पव ७) ।

दायग वि [दायक] दाता, देनेवाला (उप ७२८ टी महा, सुर २, ४४, सुपा ३७८) ।

दायण न [दान] देना, 'दाण्ये अ निकार अ अन्धुदुष्टोति भावरे' (सम २१), 'तवो-विहाण सह वाणवाप (२ व) छ' (सत्त २६) ।

दायणा छी [दापना] दृष्ट मर्त्य की ब्याख्या (विसे २६३२) ।

दायय देखो दायम 'अभिप्रसवितपायया हवु मे भिवसुहाण दायया' (प्रजि ३४) ।

दायव देखो दा = दा ।

दायाद पु [दायाद] पैतृक संपत्ति का भागी-दार, पुत्र, सर्विक कुटुम्बी (भाषा) ।

दायार वि [दायार] याचक प्रार्थी (कण्) ।

दार सक [दारय] विदारता, लोभना, ब्रूण करना । बह. दारत (कुमा) ।

दार पु [दे] कटी-सूत्र, काँची (दे ५, ३८) ।

दार पुन [दार] कलत्र, छी, महिला (सम ५०, ४, १३७, सुर ७, २०१, प्रासू ६५)

'द्वयेण अण्णालं गहिंया वेसावि होइ परत्तार' (सुपा २८०) ।

दार न [दार] दरबाना, निनकने का मार्ग (शेष, सुपा ३६७) । 'गल्ला छी [गोल] दरबाने का मार्ग (गा ३२२) । 'ह, 'त्य वि [त्य] १ द्वार पर स्थित । २ पु. दरबान, प्रतीहार (बह १, ६, ५२) । 'पाल, 'वाल पु [पाल] दरबान, द्वार-रक्षक (उप ५१० टी. सुर १०, १३६, महा) । 'वाल्य, 'वालय पुं [पालक, पालिक] दरबान, प्रतीहार (पदम १७, १६, सुपा ४६६) ।

दार पु [दारक] शिष्य, शिष्य, बन्वा (उप ५ ३०८ सुर १५, ११६, नय) । देखो दारय ।

दारुता छी [दे] पैटी, सड़क (दे ५, ३८) ।

दारय वि [दारय] नस्तेवाला, धिक्कत (कुप्र १३०) । २ देखो दारमा (नय) ।

दारिअ वि [दारित] विदारित, पाटा हुआ (पम) ।

दारिआ छी [दारिआ] सबकी (स्वप्न १५, छाया १, १६, महा) ।

दारिआ छी [दे] वेश्या, वारागना (दे ५, ३८) ।

दारिद न [दारिद्र्य] १ निर्धनता । २ दीनता (गा ६७१, महा, प्रासू १७३) । ३ घालस्य (प्राभा) ।

दारिदिय वि [दारिद्रित] दरिद्रता-प्राप्त, दरिद्र (पदम ५५, २५) ।

दारु न [दारु] काष्ठ, लकड़ी (सम ३६, कुप्र १०४, स्वप्न ७०) । 'गाम पु [ग्राम] ग्राम विशेष (पदम ३०, ६०) । 'द्वय पुन [द्वयक] काष्ठ दारु, साधुको का एक उपकरण (कम) । 'पञ्चय पु [पर्वत] पर्वत विशेष (वीष ३) । 'पाय न [पात्र] काष्ठ वा बना हुआ भाजन (ठा ३, ३) । 'पुत्तय पु [पुत्रक] कठुलता (मञ्जु ८२) । 'मह पुं [मह] भरत-क्षेत्र के एक भावी जिन देखे के पूर्व जन्म का नाम (सम १५४) । 'संसम पु [सक्रम] काष्ठ का बना हुआ पुल, वेतु (भाषा) ।

दारुअ पु [दारु] १ शीकृष्ण वासुदेव वा एक पुत्र, जिसने भगवान् मैत्रिणाथ के पास शीदा लेकर उत्तम गति प्राप्त की थी (सत्त ३) । २ शीकृष्ण का एक शारिप (छाया १, १६) । ३ न काष्ठ, लकड़ी (पदम २६, ६) ।

दारुअ वि [दारुनीय] काष्ठ निर्मित, लकड़ी का बना हुआ । 'पञ्चय पु [पर्वत] काष्ठ का बना हुआ साधुन पट्टा पर्वत (राय ७५) ।

दारुण वि [दारुण] १ विषम, भयकर, भीषण (छाया १, २, नाम मउ३) । २ क्रोध युक्त, रौद्र (वव १) । ३ न कट दुःख (सत्त ३२२) । ४ दुष्प्रिय बर्तन (उप १३६ टी) ।

दारुणी छी [दारणी] विदायेवी विशेष (पदम ७ १४०) ।

दालि न [दारण] निदारण, छहटन (पह १, १) ।

दालि छी [दे, दालि] १ दाल, दना हुआ चना, भाहर, मूँग आदि दान (मुपा ११, १) । २ राति, रत्ना, लकीर (शेष ३२३) ।

दालिअ न [दे] नेत्र, दाँत (दे ५, ३८) ।

दालिद देको दारिद (हे १, २५४, प्रामू ७०) ।

दालिदिय देको दारिदिय (गुर १३, ११६, यज्जा १३८) ।

दालिम देको दालिम (प्रार) ।

‘दालियन न [दालिअन्] दान वा बना हुमा साथ विरोध (पहल २, ५) ।

दालिया खी [दालिअ] देको दालि (उवा) । दाली देको दालि (प्रोप ३२३) ।

दाय सब [दयेय] दिवसाना, बनलाना । दाहद, दाहेद (ह ४, ३२, मा ३१५) । बह, दार्यत (मा २२०) ।

दान सक [दापय] दिवाना, दान बरवाना । दाहेद (बन) । बह, दायेन (पउम ११७, २६, मुया ६१८) । हेह, दावेत्तए (बन) ।

दान देको दात = दातल (मि ३, २६; खन १२; प्रमि ३६) ।

दात पु [दाव] १ बन, जंगल । २ देव, देवता (मि ६, ४१) । ३ जंगल वा प्रमि (पाम) ।

‘मि पु [मि] जंगल की भाग (हे १, ६७) । ‘मिल, ‘मिल पु [मिल] जंगल की भाग (खण, मुया १६७, पडि) ।

दायग न [दासन] छान, पशुओं का घेर में बांधने की रस्ती (हुज ४३६) ।

दायग [दापन] दिवाना (मुया ४६६) । दायगया खी [दापना] दिवाना (म ४१, पडि) ।

दायहन पु [दायन] बुन-विरोध (लाया १, ११—पउ १७१) ।

दायर पु [दापर] १ गुण विरोध, बीमर युग । २ न, दिअ, दो, ‘नो दिअ नो येर दायर’ (गुम १, २, २, २३) । ‘जुम पु [जुम] रासि विरोध (डा ४, ३—पउ २३७) ।

दायाय स [दापय] दिवाना । संह, दायायेउ (मरा) ।

दायिअ रि [दासात] शिन्ताया हुमा, प्रर्यउय (पाम, मे १, १२, ५, ८०) ।

दायिअ रि [दापित] दिवाना हुमा (मुया २४१) ।

दायिअ रि [दापित] १ म्छया हुमा, टन-बाया हुमा । २ मरम दिवा हुमा (पउ ८८) ।

दावेत देको दाव = दापय ।

दास पु [दास] दरान, धनलोकन (पह) । दास [दास] १ नौबर, बर्बर (ह २, २०६, मुया १२२, प्रामू १७५; स १८, कपू । २ बीबर, मल्लाह ‘बेनट्टो बीबरों दासों’ (पाम) ।

‘चेह, ‘चेटग पु [‘चेट] १ छोटे उम्र का नौबर । २ नौबर का लहना (महा, लाया १, २) । ‘मस पु [‘सय] यीहयण (पउ १७) ।

दासरदि पु [दासरधि] राजा दशरथ का पुत्र रामचन्द्र (मे १, १४) ।

दासी खी [दासी] नौकरानी (बीर, महा) । दासीरअन्दिआ खी [दासीरअन्दिआ] जैन मुनियों की एक शाखा (बन) ।

दाह पु [दाह] १ ताप, जलन, गरमी । २ दहन, भस्मीकरण (हे १, २६५, प्रामू १८) ।

३ रोग विरोध (विपा १, १) । ‘ज्वर पु [‘ज्वर] ज्वर-विरोध (मुया ३११) । ‘बक-तिय वि [‘व्युत्काम्ति] जिनकी दाह उत्पन्न हुमा हो बह (लाया १, १—पउ ६४) ।

दाह देको दा = दा । दाहग वि [दाहक] जलानेवाला (उवर ८१) ।

दाहन न [दाहन] जगाना, भस्म बनाना (पउम १०२, १६१) ।

दाहिय रि [दादिह] जलवाना हुमा, पाग मारवाना हुमा (हम्मोर २७) ।

दाहिण देको दन्तिम (मग, बन, हे १, ४२, २, ७२, मा ४३७, ८१६) । ‘दारिय वि [‘द्वारिक] दक्षिण दिशा में ब्रिक्का द्वार हो बह । २ न, प्राथिनी-प्रमुख सा मयज (डा ७) । ‘पचरियम रि [‘पश्चिमीय] दक्षिण धोर पविम दिशा क बीच का भाग, मैग्नेट कोण (मग) ।

‘पह पु [‘पथ] १ दक्षिण द्य को धार का समता । २ दक्षिण दश ‘मन्दादि दाहिणयह’ (पउम ३२, १३) । ‘पुर्स्थिम रि [‘पूर्तीय] दक्षिण धोर पूर्व दिशा क बीच का भाग, प्रथिमी-कोण (मग) ।

‘पव रि [‘पवने] दक्षिण में धारउरणा (रंग बरि) (डा ४, २—पउ २१६) ।

दाहिना देको दक्षिणा (डा ९, मुय १०) ।

दाहिणिह देको दन्तिमणिह (पउम ७, १७, विपा १, ७) ।

दाहिणी खी [दक्षिणा] दक्षिण दिशा (कुमा) । दि वि. व. [दि] दो, दो की संख्यावाला (हे १, ६४, से ६, ५३) ।

दि देको दिसा (मा ८६६) । ‘वरि पु [‘वरि] दिग्-हस्ती (कुमा) । ‘गगद पु [‘गजेन्द्र] दिग्-हस्ती (गउह) । ‘गग पु [‘गज] दिग्-हस्ती (स १११) । ‘यकासार न [‘चक्रमार्] विद्यापरीं का एक नगर (इक) । ‘मोह पु [‘मोह] दिशा-भन (मा ८८६) । देको दिसा ।

दिअ पुन [दि] दिवस, दिन (दि ५, ३६), ‘राउदिआ’ (कम) ।

दिअ पु [दिज] १ ब्राह्मण, विप्र (कुमा, पाम, उप ७६८ टी) । २ दन्त, दाँत । ३ ब्राह्मण चादि तीन वर्ण—ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य । ४ पण्डित, धार्य से सम्बन्ध होनेवाला प्राणी । ५ पत्नी । ६ बुन-विरोध, टिबक वा देह (हे १, ६४) । ‘राय पु [‘राज] १ उत्तम दिन । २ बन्दना (मुया ४१२, कुज १६) ।

दिअ पु [दिज] बाह, बीमा (उउ ७६८ टी) । दिअ पु [द्विप] हस्ती, हाथी (हे २, ७६) । दिअ न [दिन] स्वर्ग, देवता (मि) ।

‘लोअ, ‘लोम पु [‘लोक] स्वर्ग, देवलोक (पउम २२, ४५, गुर ७, १) ।

दिअ रि [दिन] दिन, बाज हुमा (पामो १) ।

दिअ रि [हन] हन, मार डाना हुमा, ‘वरीय व दिपराय येण पाणुदिमं भुरल’ (हुन १६) ।

दिअन पु [दिगन्] दिशा का प्रात्य भाग (महा) ।

दिअय रि [दिगमय] १ नय, मंगल, पत्र-रहित । २ पुं एव जैन संन्यास (मरि, उवर १२२, कुम ४४१) ।

दिअम पु [दि] गुरउरार, मोरार (दि २, १६) ।

दिअयुस पु [दि] बाह, बीमा (दि २, ४१) ।

दिअर पु [दिपर] पडि ब। योग मर्द (मा १२, पउम ४४६ हे १, १४९, मुया ४८०) ।

दिअलिअ वि [दे] मूल, प्रजाती (दे ५, ३६)।
दिअली ओ [दे] स्वरूपा, खम्मा, वूटी
(पात्र)।

दिअस पुन [दिवस] दिन, दिवस (गउठ,
पि २६४)। *कर पुं [कर] सूर्य, रवि (सि
१, ५३)। *नाह पुं [नाथ] सूर्य, सूरज
(पउम १४, ८३)। *यर देखो *कर (पात्र)।
देखो दिवस।

दिअसिअ न [दे] १ सदा-भोजन (दे ५,
४०)। २ अनुदिन, प्रतिदिन (दे ५, ४०,
पात्र)।

दिआइ देखो दिअस (पात्र, पात्र)।

दिअहुअ न [दे] पूरहि वा भोजन, दुपहर
वा भोजन (दे ४, ४०)।

दिआ म [दिआ] दिन, दिवस (पात्र, पा
६६, सम १६, पउम २६, २६)। *गिस
न [निश] दिन-रात, सदा (पिण)। *राअ
न [रात्र] दिन-रात, सर्वदा (सुपा ३१८)।
देखो दिवा।

दिआहम पुं [दे] भास पको (दे ५, ३६)।
दिआइ देखो दुआइ (पात्र)।

दिइ ओ [द्वि] मशक, चमड़े का जल-पात्र
(समु ५, कुप १४६)।

दिउण वि [द्विगुण] द्वा, दुगुणा (पि २६८)।
दिउ देखो दा = दा।

दिक्कण पुं [द्वेण्ण] मेप आदि लग्गो का
बसवा हिस्सा (राज)।

दिकख सक [दीख] दीक्षा देना, प्रव्रज्या
देना, सत्यास देना, शिष्य करना। दिकले
(उद)। वक्क. दिक्खत्त (सुपा २२६)।

दिकर देखो देखर। दिकख (पि ६६)।

दिकखा ओ [दीक्षा] १ प्रव्रज्या देना, दीक्षा
(सोप ३ भा)। २ प्रव्रज्या, सत्यास (धर्म २)।

दिविरअ वि [दीक्षित] जिसको प्रव्रज्या दी
गई हो वह, जो साधु बनाया गया हो वह
(उव)।

दिगद्ध देखो दिगिद्धा (पि ७४)।

दिगउर देखो दिअवर (इक, प्रायम)।

दिगिद्धा ओ [जिपत्सा] कुष्ठण, मूष (सम
४०, सिसे २४६४, उत १, भाप्र)।

दिगिच्छ स [जिपत्स] साने की चाहना।
वक्क. दिगिच्छत्त (भावा. पि ५५५)।

दिग्ग पुं [द्विगु] व्याकरण-शिक्षण एक समास
(अणु. पि २६८)।

दिग्गु देखो दिग्ग (अणु १४७)।

दिग्घ देखो दीह (दे २, ६१, प्राप्र, सति
१७, स्वप्न ६८, सिसे ३४६७)। *णागूल,
लंगूल वि [लाङ्गूल] १ समी पृष्ठवाला
२ पुं. वानर (पह)।

दिग्घिआ ओ [दीघिका] चापी, सीडीवाला
कूप-विशेष (स्वप्न ५६, विक्र १३६)।

दिग्घा ओ [दिग्घा] देने की इच्छा (कुप
२६६)।

दिज देखो दिअ = दिज (कुमा)।

दिज्ज वि [द्वेय] १ देने योग्य। २ जो दिया
जा सके। ३ पुं. कर-विशेष (विपा १, १)।

दिज्जत [द्विजत] १ देखो दा = वा।
दिज्जमाण [द्विजमाण] १ देखो दा = वा।

दिट्ठ वि [द्विट्ठ] कथित, प्रतिपादित, कहा
हुआ (उप ७६८ टी)।

दिट्ठ वि [द्विट्ठ] १ देखा हुआ, विलोकित (ठा
४, ४, स्वप्न २८, प्राप् १११)। २ धर्ममत
(अणु)। ३ जात, प्रमाण से जाना हुआ (उप
८८२, वृह १)। ४ न. दर्शन, विलोकन
(ठा २, १)। *पादि वि [पाठित्त] चरक-
सुश्रुतादि का जानकार (सोप ७४)।

*लाभिय पुं [लभिय] दृष्ट वस्तु को ही
ग्रहण करनेवाला जैन साधु (पह २, १)।

दिट्ठ न [द्विट्ठ] श्रव्य या अनुमान प्रमाण
से जानन योग्य वस्तु (धर्म स ५१८, ५१६)।

*साहम्मय न [साधर्म्ययन्] अनुमान का
एक भेद (अणु २१२)।

दिट्ठा वुं [द्विट्ठा] उदाहरण, निदर्शन
(ठा ४, ४, महा)।

दिहुत्तिअ वि [द्विहत्तिका] १ जिस पर
उदाहरण दिया गया हो वह (विने १००४
टी)। २ न. अभिनय विशेष (ठा ४, ४—
पत्र २८५)।

दिट्ठव्य देखो दक्ख = दट्ठ।

दिट्ठि ओ [द्विट्ठि] १ नेत्र, आँख, नजर (ठा
३, १, प्राप् १६, कुमा)। २ दर्शन, मत-
(पहण १६, ठा ४, १)। ३ दर्शन, अव-
लोकन, निरीक्षण (अणु)। ४ बुद्धि, गति
(सम २५, उत २)। ५ विवेक, विचार

(सुप २, २)। *कोव पुं [कलीव] नपुंसक-
विशेष (निष्पु ४)। *जुद्ध न [युद्ध]

युद्ध विशेष, शक्ति की स्मिरता की लड़ाई
(पउम ४, ४४)। *बंध पुं [बन्ध] नजर

बाँधना (ठा ७२८ टी)। *म, मत वि
[मत्] प्रशस्त दृष्टिवाला, सम्यग्-दर्शी

(सुस १, ४, १, भावा)। *राय पुं [राय]

१ दर्शन-नाम, अपने धर्म पर अनुराग (धर्म
२)। २ चाक्षुष स्नेह (अभि ७४)। *ल्ल वि

[मत्] प्रशस्त दृष्टिवाला (पउम २८,
२२)। *वाय पुं [पात] १ नजर डालना

(सि १०, ५)। २ बारम्बार जैन मंत्र प्रत्य (ठा
१०—पत्र ४६१)। *वाय पुं [वाह]

बारम्बार जैन मंत्र-प्रत्य (ठा १०; सम १)।

*विपरिआसिआ ओ [विपर्यासिका,
सिता] मति भ्रम (सम २५)। *यिस पुं

[विप] जिसकी दृष्टि में विप हो ऐसा सर्व
(सि ४, ५०)। *शूल न [शूल] नेत्र का

रोग-विशेष (आया १, १३—पत्र ८८१)।

दिट्ठि ओ [द्विट्ठि] तारा, मित्रा आदि योग दृष्टि
(सिदि ६२३)।

दिट्ठिआ म [द्विट्ठिआ] इन भयों का सूचक
अव्यय १ नंगल। २ हर्ष, मानस, क्षुशी :

३ भाग्य से (दे २, १०४, स्वप्न १६, अभि
६५, कुप ६५)।

दिट्ठिआ ओ [द्विट्ठिआ, *जा] १ क्रिया-
विशेष—दर्शन के लिए गमन। २ दर्शन में

कर्म का उदय होना (ठा २, १—पत्र ४०)।

दिट्ठीआ ओ [द्विट्ठीआ] ऊपर देखो (नव १८)।

दिट्ठीआओनएसिआ ओ [द्विट्ठिआदो-
पदेसिओ] सत्ता विशेष (दे ३३)।

दिट्ठेक्खय वि [द्विट्ठे] देना हुआ, निरीक्षित
(भावम)।

दिड्ढ देओ दढ (गाट—मातवी १७, से
दिड्ढ १, १४, स्वप्न २०५, प्राप् ६२)।

दिण पुन [दिन] दिवस (सुपा ५६, दं २७,
जी ३५, प्राप् ६५)। *इद पुं [इन्द्र]

सूर्य, रवि (अणु)। *कय पुं [कय]
सूर्य, रवि (राज)। *कर पुं [कर] सूर्य,
सूरज (पउम ३१२)। *नाह पुं [नाथ]
सूर्य, रवि (महा)। *वधु पुं [वन्धु]
सूर्य, रवि (पुष्क ३७)। *मणि पुं [मणि]

न [मानुष] देव और मनुष्य संनवीं हकी-
कतो का जिसमें वर्णन हो ऐसी कथा-वस्तु
(स २)।

दिव्य न [दिव्य] १ तैला, तीन दिन का
सगातार उपवास (संघोष ५८)। २ वि. देव-
सम्बन्धी, 'तिरिया मणुया य दिव्यया, जव-
सग्गा ति विहादियासिया' (सूय १, २, ३,
१५)।

दिव्य देखो दृश्य (सुपा १६१)।

दिव्य देखो देयः 'ममोहं दिव्यदसण्ति' (कुप
११२)।

दिव्याम पु [दिव्याम] सर्व की एक जाति
(पण १)।

दिव्यासा की [दे] चापुण्डा, देवी-विशेष
(दे ५, ३६)।

दिस सक [दिश] १ कहना। २ प्रतिपादन
करना। दिसइ (सवि)। कवड, दिस्समाण
(पण)।

दिस पु [दिश] एक देव-विमान (देकेद
१११)।

दिस वि [दिश्य] दिशा में चलन (स ६,
५०)।

दिसवा की [दपद्] पाथर, पापाण (पड्)।

दिसाइ देखो दिसा-दि (सुज ५ टी—पण
७८)।

दिसा } की [दिश] १ दिशा, पूर्व प्रादि
दिसि - दस दिशाएँ (मड; प्राप् ११३;
दिसी) महा, सुपा २९०, पण १, ४,
६ ३१, भग)। २ प्रीडा की (स १, १६)।

*अक न [चक] दिशामो का समूह (गा
५३०)। *कुमरी की [कुमारी] देवी-
विशेष (सुपा ५०)। *कुमर पु [कुमार]
मवनपति देवी की एक जाति (पण २;
भीप)। *कुमरी देखो *कुमरी (महा, सुपा
५१)। *गज पु [गज] दिग-हत्ती (स
२, ३, १०, ५६)। *गज्ज पु [गजेन्द्र]
दिग-हत्ती (सि १३६)। *चक देखो *अक,
(सुपा ५२३; महा)। *चक्राल न [चक्र-
वाल] १ दिशामो का समूह। २ वप-विशेष
(निर १, ३)। *चर पु [चर] देशाटन
करनेवाला वज्र. (भग १५)। *जसा देखो

*यत्ता (उप ७६८ टी)। *जत्तिय देखो
*यत्तिय (उवा)। *डाह पु [दाह]
दिशामो में होनेवाला एक तरह का प्रसंग,
जिसमें नीचे श्रवणकार और ऊपर प्रकाश
बोखता है, यह भावी जपद्रवो का सूचक है
(भग ३, ७)। *धुवाय पु [अनुपाव]
दिश का अनुसरण (पण ३)। *दति पु
[दन्तिन] दिग-हत्ती (सुपा ५८)। *दाह
देखो *डाह (भग ३, ७)। *दि पु [आदि]
मेघ पर्वत (सुज ५)। *देवया की [देवता]
दिश की प्रपिहानी देवी (रंगा)। *पोक्सि
पु [पोक्षिन्] एक प्रकार का वानप्रस्थ
(भीप)। *भाज पु [भाग] दिग्भग
(भग, भीक कपू, विपा १, १)। *मस न
[मात्र] अत्यल्प, संक्षिप्त (उप ७५६)।
*मोह पु [मोह] दिश का भ्रम (निबू
१६)। *यत्ता की [यात्रा] देशाटन, मुसा-
फरी (स १६५)। *यत्तिय वि [यात्रिक]
दिशामो में करनेवाला (उवा)। *लोय पु
[आलोक] दिश का प्रकाश (विपा १,
६)। *वह पु [वय] दिश-रूप मानें
(उप २, १००)। *वाल पु [वाल]
दिक्पाल, दिश का अधिपति (स ३९६)।
*वेरमण न [विरमण] जैन गुरुत्व को
पानने का एक नियम—दिशों में जाने-आने
का परिमाण करना (धम्म २)। *व्यय न
[व्रत] देखो *वेरमण (भीप)। *सोस्थिय
पु [स्यस्तिक] स्वस्तिक-विशेष (भीप)।
*सोवस्थिय पु [सोवस्तिक] १ स्वस्तिक-
विशेष, बसिछावर्त्त स्वस्तिक (पण १, ५)।
२ न. एक देव-विमान (सम ३८)। ३ रुचक
पर्वत का एक शिखर (ठा ८)। *हत्थि पु
[हस्तिन] दिग्गज, दिशामो में स्थित ऐश्वर्य
प्राप्ति प्राप्त हस्ती। *हत्थिकूड पु [हस्ति-
कूट] दिश में स्थित हस्ती के आकारवाला
शिखर-विशेष, वे शब्द हैं—पयोत्तर, नील-
वन्ध, सुहस्ती, ध्वजगिरि, कुमुद, पलाश,
अवतंस और रोचनगिरि (जं ५)।

दिसेम पु [दिग्गम] दिग्गज, दिग-हत्ती
(गजक)।

दिसि वि [दिय] देखने योग्य, प्रत्यक्ष ज्ञान
का विषय (धम्म ४२८)।

दिसस
दिससं
दिसमाण

देखो दक्खर = दृश्य।

दिसमाण देखो दिस।

दिससा देखो दक्ख = दृश्य।

दिहा व [दिधा] दो प्रकार (हे १, ६७)।

दिहि छो [धृति] धर्म, वीर्य (हे २, १३१;
कुमा)। *म वि [मन्] धर्म-शाली,
वीर (कुमा)।

दीअ देखो दीय = दीप (गा १३५; ५५७)।

दीअअ देखो दीयय (गा १३५)।

दीअमाण देखो दा = दा।

दीण वि [दीन] १ रंक, गरीब (प्राप् २३)।

२ दुःखित, दुःख (छाया १, १)। ३ हीन,
न्यून (ठा ४, २)। ४ शोक प्रवृत्त, शोकानुद
(विपा १, २; भग)।

दीणार पु [दीनार] सोने का एक सिक्का
(कल्प; उप पु ६४, ५६७-टी)।

दीपक (सप) पुन [दीपक] छद्म विशेष
दीपक (विग)।

दीय देखो दिव = दिग्। वड. 'मस्सेहि कुमु-
सेहि दीययं' (सम १, २, २, २३)।

दीय सक [दीपय] १ दीपाना, शोमाना।

२ जलाना। ३ तेज करना। ४ प्रदत्त करना।

५ निवेदन करना। ६ बह (भीप ४३४)।

दीवेद (महा)। वड. दीययत्त (कल्प)।

वड. दीवेत्ता (भीप ५३५, कस)। क.
दीयगिज (कस)।

दीय पु [दीप] १ प्रदीप, दिया, चिराग, झालोक
(चार १६; छाया १, १)। २ वत्पवृत्त की
एक जाति, प्रदीप का कार्य करनेवाला
वत्पवृत्त (सम १७)। *चंपय न [चम्पक]
दिया का वक्राना, दीप-विधान (सम ८, ६)।

*ली की [ली] १ दीप-वर्तिका। २
दीवाल, पर्व-विशेष, बार्तिक यदी धमवास
(दे ३, ४३)। *रली की [रली]
पुष्पों की धर्म (दी १६)।

दीय पु [दीप] १ जगके चारों ओर जल
भरा हो ऐसा भूमि-भाग (सम ५१; ठा १०)।

२ भवनपति देवी की एक जाति, दीपवृत्त
देव (पण १, ४ भीप)। ३ श्याम (भीप १)।

‘हुमार पुं [हुमार] एक देव-जाति (सम १६, १३)। ‘णु वि [‘ज्ञ] द्वीप के मायं का जानकार (उप ५६५)। ‘मागरपञ्जति की [‘सागरप्रज्ञप्ति] जैन ग्रन्थ विशेष, जिसमें द्वीपो और समुद्रों का वर्णन है (ठा ३, २—पृ १२६)।

दीन पुं [द्वीप] सौराष्ट्र का एक नगर दीव (पृ १११)।

दीयअ पु [दि] टकलास, गिरिगि (दे ५, ४१)।

दीअउ पुं [दीपउ] १ प्रदीप, दिया चिराग, झालोह (ग २२२ महा)। २ वि दीपक, प्रकाश, शोभा-कारक (हुमा)। ३ न, छन्द-विशेष (मजि २६)।

दीहअ पु [दीपाह] प्रदीप का काम देनेवाले कल्पवृक्ष की एक जाति (ठा १०)।

दीगअ देवो दीअउ = दीपक (आ ६ प्रायम)।

दीनड पु [दि] जलजलु-विशेष, ‘कुलरसिगि-संपुड समंतकोषदीवड’ (सुर १०, १८८)।

दीगन न [दीपन] प्रकाशन (क्षीप ७४)।

दीयणा पो [दीपना] प्रकाश बुझी संछुण-दीवणाहि (स ६७५)।

दीगिजि जि [दीपनीय] १ जठराग्नि को बढ़ानेवाला (छाया १, १—पृ १६)। २ शोभायमान, देदीप्यमान (पण १७)।

दीयउ देवो दीन = दिव्य।

दीययत देवो दीन = दीपय।

दीयायण पुं [दीपायन, दीपयन] एक प्राचीन श्रृंगि, जिसने शारदा नगरी जलाने का निदान किया था, और जो भ्रातागो जगन्निशो बाल में भरत-क्षेत्र में एक तीर्थवर हागा (संत १५, सम १५४, कृप ६३)।

दीवि } पुं [दीपिव] व्यापक को एक जाति, दीविज } चीता (ग ७६१, छाया १, १—पृ ६५, पण १, १)।

दीविअ वि [दीपिन] १ जलाय हुआ (पवम २२, १७)। २ प्रकाशित (क्षीप)।

दीविअं पु [दीपिअं] कल्पवृक्ष को एक जाति जो भयभक्त को दूर करता है (पवम १०२, १२५)।

दीविआ की [दि] १ जदेरिका, घुन कीट-सिंहो। २ व्याप की हुरिणी, जो दूसरे

हुरिणी के प्रायण करने के लिए रखी जाती है (दे ५, ५३)। ३ व्याप संवन्धी पिण्डों में रखा हुआ तितर पत्थी (छाया १, १७—पृ २३२)।

दीविआ की [दीपिअ] छोटा दिया, लघु प्रदीप (जीव ३)।

दीविअग वि [द्वैप्य] द्वीप में उत्पन्न, द्वीप में पैदा हुआ (छाया १, ११—पृ १७१)।

दीनी (अप) देवो देवी (रमा)।

दीरी की [दीपिअ] लघु प्रदीप, छोटा दिया, सोवि ब्व सीह कुडी (आ १६)।

दीयूसय पु [दीपोत्सव] वारिब वदी भगवान, दीवानी, दीपावली (सी १६)।

दीसत } देवा दकर = दरा।
दीसमाग }

दीह वि [दीर्घ] १ मायत लम्बा (ठा ४, २ आग, हुमा)। २ पु दो मायावाला स्वर-पिण्ड)। ३ कोशर देश का एक राजा (उप पृ ५८०)। ‘काय [‘काय] क्षत्रिकाय [‘काय]—पृ १—५)। ‘शालिणी की [‘कालिणी] रत्ना विशेष, बुद्धि विशेष, जिससे सुदीर्घ भूतकाल की बातों का स्मरण और सुदीर्घ भविष्य का विचार किया जा सकता है (दे ३२, विमे ५०८)। ‘शालिय वि [‘कालिक] १ दीर्घ काल में उत्पन्न चिरंतन-दीहकालिएण योगावेसो (ठा ३, १)। २ दीर्घकाल-सम्बन्धी (प्रायम)। ‘जसा की [‘यात्रा] १ लम्बी सफर। २ मरण मीत (म ७२६)। ‘डह वि [‘दृष्ट] जिसको साप न भाव हो वह (जिबू १)। ‘णहा की [‘निद्रा] मरण, मीत (राज)। ‘दंत पुं [‘दान] १ मारतवर्ष का एक भावी चक्र वर्षी राजा (मम १५४)। २ एक जैनमुनि (संत)। ‘दंस वि [‘दरिद्र] दूरदर्श, दूरदेखी (सुर ३, ३, सं ३२)। ‘दसा की, व, [‘दशा] जैन संघ विशेष (ठा १०)।

‘द्विदि वि [‘द्विदि] १ दूरदर्श, दूरदेखी। २ की, दीर्घ दशिता (पयं १)। ‘पट्ट पुं [‘पट्ट] १ सयं, साँप (उप पृ २२)। २ यवराज का एक मन्त्री (रुह १)। ‘पास पुं [‘पास] ऐतव क्षेत्र के मोहनर्षी भावो जिन-देव (पय ७)। ‘पिदि वि [‘पिदि] दूर-

दर्शो (पवम २६, २२, ३१, १०६)। ‘वाहु पुं [‘वाहु] १ भरत-क्षेत्र में होनेवाला तीसरा वासुदेव (सम १५४)। २ भगवान् चन्द्रप्रभ का पूर्व जन्मीय नाम (सम १५१)। ‘भद पु [‘भद्र] एक जैन मुनि (कप्य)। ‘मद्र वि [‘मध्य] लम्बा रास्तावाला (छाया १, १८, ठा २, १, ५, २—पृ २४०)। ‘मद्र वि [‘मद्र] दीर्घकाल से गम्य (ठा ५, २—पृ २४०)। ‘माउ न [‘युप] लम्बा वायु (ठा १०)। ‘रत्त, ‘राय पुन [‘राज] १ लम्बी रात। २ बहु राजवाला, चिर-मान (संदि १७ राज)। ‘राय पु [‘राज] एक राजा (महा)। ‘छोग पु [‘छोर] यमरसति का जीव (प्राचा)। ‘छोगसस्य न [‘नोक-शरू] सविन, वहि (प्राचा)। ‘वेयड्ड पुं [‘वेताड्ड] स्वनाम-भ्यात पर्यंत (ठा २, ३—पृ ६६)। ‘सुत्त न [‘सुत्त] १ बडा सुता (जिबू ५)। २ प्राप्त्य, मा कुण्डु

दीहसुत पवन-जं सोयन पणिगुत्ता (पवम ३०, ६)। ‘सेण पु [‘सेन] १ मनुज-देवलोक-भावी मुनि-विशेष (सु २)। २ इन भगवाणिशो बाल में उत्पन्न ऐतव क्षेत्र के भाटवं जिन-देव (पव ७)। ‘उ, ‘उय वि [‘युप, ‘युपक] लम्बी अन्नराता वही प्रायुवाला, चिरजीवी (हे १, २०, ठा ३, १, पवम १४, ३०)। ‘सिण न [‘सिन] शब्दा (जं १)।

दीह देवो दिअह (हुमा)।

दीह वि [‘द्विपसंग] दिन को दमने में असमर्थ रहितया दीह्या (प्राग १७६)।

दीहजीह पुं [दि] रंज (दे ५, ४१)।

दीहपिट्ट दलो दीह-पट्ट (गिरि ६०५)।

दीहर देणे दाह = दीर्घ (हे २, १७१, सुर २, २१८, प्राग ११३)। ‘द्व वि [‘द्वि] लम्बी पसराला, बडे नववाला (गुग १४७)।

दीहरि वि [‘दीपित] लम्बा किया हुआ (पवम)।

दीहिया की [‘दिचिअ] भावो, प्रकाशन-मिष्ट (सुर १, ६१ कप्य)।

दीदीअ गर [‘दीपी + कृ] लम्बा करता। दीदीअ रंति (मग)।

दु देखो तु (दे २, ६४) ।

दु देखो दुय = दु । कर्म = दुगए (विने २८) ।

दु वि य. [दि] दो, संख्या-विशेषवाला (हे १, ६४, कम्म १, उवा) ।

दु प [दु] २ वृत्त, पेठ, गाछ (उर ५) ।
२ रुता सामान्य (विने २८) ।

दु य [द्विस्] दो बार, दो दफा (सुर १६, ५५) ।

दु थ [दुर] दूर धरों का सूचक अव्यय—
१ धमाव । २ दुपता, लरावी । ३ मुक्तिव,
कठिनाई । ४ निन्दा (हे २, २१७ प्राप्ता
१५८, सुपा १४३, छाया १, १ उवा) ।

दुअ न [द्वत्] धमियन विशेष (राय ५३) ।

दुअ न [द्विक] दुगम, दुगल, जोडा (से
६२१) ।

दुअ वि [द्वत्] १ पीठित, हैरान किया हुआ
(उप ३२० टी) । १ बेग-मुक्त । ३ निवि,
शोष, जल्दी (सुर १०, १०१, प्राप्ता) । *विल-
विअ न [विलम्बित] १ छन्द विशेष ।
२ धमियन विशेष (राय) ।

दुअन्तर पुं [दे] पण्ड, मनुषक (दे ५,
४७) ।

दुअन्तर वि [द्वयधर] १ अन्तान, मूर्ख,
मल्लभ (उर १२६ टी) । २ पुत्री, दास,
नीर (निड) । श्री, *रिया (भायम) ।

दुअणुअ पुं [द्वयणुक] दो परलक्षणों का
स्वल्प (विने २१६२) ।

दुअर वि [दुपर] दुरित, कठिनाई से जो
रिया जा सके वह (प्राक् २६) ।

दुअर न [दुक्कल] १ वज्र, कपडा । २ महिन
वज्र मृदमवज्र (हे १, ११६, प्राप्ता) । देखो
दुक्कल ।

दुआद पुं [द्विजावि] ब्राह्मण, धर्मिय धीर
मेय ये तीन वर्ण (हे १, ६४, २, ७६) ।

दुआदरस वि [दुपक्षेय] दुस से बहनें
योग (छा ५, १—पय २६६) ।

दुआर न [द्वार] रस्ताग, प्रवेश-मार्ग (हे
१, ७६) ।

दुआराह वि [दुआराप] जिसका धारण
कठिनाई से हो सके वह (पण्ड १, ४) ।

दुआरिआ श्री [द्वारिका] १ छोटा द्वार । २
पुत द्वार, भग्नाद (छाया १, २) ।

दुआवत्त न [द्व्यावत्] दृष्टिवाद का एक सूत्र
(सम १४७) ।

दुअअ [वि द्वितीय] दूसरा (हे १, १०१,
दुअअ [२०६, कुमा, कप्पू रखण ४) ।

दुअअ (अप) वि [द्विचतुर] दो-चार, मे या
चार (प्राक् २२०) ।

दुअअ २ सक [जुगुप्स] निन्दा करना,
दुअअ ३ भ्रष्टा करना । दुअअद, दुअअद
(हे ४, ४) ।

दुअण वि [द्विगुण] दूना, दुगुना (दे ५,
५५ हे १, ६४) । *अर वि [उर] दूने
मे भी विशेष, धम्यन्त (से ११ ४७) ।

दुअणअ वि [द्विशृण्व] ऊपर देखो
(कुमा) ।

दुअल देखो दुअल (प्राप्ता ५६६, पद) ।

दुअल १ पुं [दुअल] १ सपं को एक कावि
दुअल २ (दे ७, ११) । २ पयोतिष्क विशेष,
एक महाह (छा २, ३—पय ७८) ।

दुअल देखो दुअल (पय ६, १३) ।

दुअलअ न [दे] गले की भाषाव (दे ५,
४५, पद) ।

दुअलमिणी श्री [दे] रूपवाली श्री (दे ५, ४५) ।

दुअल पुत्री [दुअल] वाय विशेष (रूप,
सुर ३, ६८, गज, कुप ११८) ।

दुअल श्री [दे] सखि, नदी (दे ५, ४८) ।

दुअल देखो दुअल (दे ४७) ।

दुअल देखो दुअल (पद) ।

दुअल न [दुअल] पाप, निन्दित काज
या काम (प्रा २७, भवि) ।

दुअल पुं [दुअल] भगवान्, दुमिण (सिदि
४१) ।

दुअल देखो दुअल (भवि) ।

दुअल पुं [दुअल] १ वृत्त विशेष । २ वि,
उत्त वृत्त नी छान से बना हुआ वज्र भादि
(छाया १, १ टी—पय ४२) ।

दुअल वि [दुअल] धारण धारण
करनेवाला (भवि) ।

दुअल न [दुअल] पाप कर्म, निन्द्य धारण
(सम १२४, हे १, २०६, पडि) ।

दुअल ३ [दुअल] ३ वृत्त विशेष । २ वि,
उत्त वृत्त नी छान से बना हुआ वज्र भादि
(छाया १, १ टी—पय ४२) ।

दुअल वि [दुअल] धारण धारण
करनेवाला (भवि) ।

दुअल न [दुअल] पाप कर्म, निन्द्य धारण
(सम १२४, हे १, २०६, पडि) ।

दुअल ३ [दुअल] ३ वृत्त विशेष । २ वि,
उत्त वृत्त नी छान से बना हुआ वज्र भादि
(छाया १, १ टी—पय ४२) ।

दुअल वि [दुअल] धारण धारण
करनेवाला (भवि) ।

दुअल न [दुअल] पाप कर्म, निन्द्य धारण
(सम १२४, हे १, २०६, पडि) ।

दुअल ३ [दुअल] ३ वृत्त विशेष । २ वि,
उत्त वृत्त नी छान से बना हुआ वज्र भादि
(छाया १, १ टी—पय ४२) ।

दुअल पुं [दुअल] शिपित साधु वा
भाचरण, पतित साधु का भाचार (पयमा) ।

दुअल न [दुअल] दुष्ट कर्म, भयदाचरण
(सुपा २८, १२०, ५००) ।

दुअल न [दुअल] पाप कर्म (पण्ड १, १,
वि ४६) ।

दुअल वि [दुअल] जो दुस से रिया जा
सके, भ्रुशित, नष्ट-साध्य (हे ४, ४१४,
पंचा १३) । *आरअ वि [कारक]
भ्रुशित कार्य को करनेवाला (गा १७६,
हे २, १०४) । *करण न [करण] कठिन
कार्य को करना (ह ४७) । *कारि वि
[कारि] देखो *आरअ (उप ५ १६०) ।

दुअल न [दे] माघ माघ में रात्रि के चारो
प्रहर मे किया जाता स्नान (दे ४, ५२) ।

दुअलकरण न [दुअलकरण] पांच दिन का
लगातार उपवास (सवीय ५८) ।

दुअल वि [दे] धरविवासा, धरवन्तो
(सुर १, १६, जय २७) ।

दुअल पुं [दुअल] भगवान्, दुमिण (साधं
३०) ।

दुअल देखो दुअल (भवि) ।

दुअलकुणिया श्री [दे] पीकदान, पीकदाती
(दे ५, ४८) ।

दुअल न [दुअल] निर्विज कुल (पमं १) ।

दुअल वि [दे] १ धरहन, भसहिण्ड, विह-
विह । २ रजि-रहित (दे ५, ४४) ।

दुअल पुं [दुअल] १ मनुष्य, कष्ट, पीडा,
कनेरा, मन का शोभ (हे १, ११), *दुअल
साथेया माणसा न ससारे (छाया १०१,
भावा भा स्वल्प ५१, ५८, प्राप्ता ६६,
१२२, १८२) । २ निवि, कष्ट से, दुरितन
मे, कठिनाई से (वसु) । ३ वि दु सवाना,
दु विज दु सवुज (वे ३३) । जो, *करा
(पय) । *कर वि [कर] दु स-जना (सुपा
१६५) । *च वि [च] दु स से पीठित
(सुपा १६६, स ६४२, प्राप्ता १४४) ।

*चतवेसण न [चतवेसण] दुस स
पीठित हो सेवा, मार्त-गुण्य (पंचा १६) ।

*मज्जिय वि [अजितदुस] जितने दुस
उपार्जन किया हो वह (उत्त ६) । *पण्ड वि
[पण्ड] दुस से धारण-योग्य (वज्रा

११२)। 'गह वि [गिह] दु स-अद
(पठम १५, १००)। 'सिसया जो
[सिसा] वेदना, पीडा (छ ३, ४)।
देखो दुह = ॥ ५।

दुकरन [दि] जपन, छी ने नमर ने पीछे
वा माग कूठ (दे ५, ४२)।

दुकरन मन [दु-राय] १ दुखना, दर्द
होना। २ सफ, दु खी करना, 'मिर में
दुखई' (स ३०४)। दुक्सामि (सि ११,
१२७)। दुखवि (सुम २, २, ५५)।

दुकरन देखो दुषर (बाह २३)।

दुकरनग [दु-रान] दुखना, दर्द होना
(ज ७५१, सूम २, २, ५५)।

दुकरन वि [दु-क्षम] १ क्षमयई। २
भयव (उत २०, ११)।

दुकरन देखो दुषर (स्वज ६६)।

दुकरनरिय पुं [दु-करिफ] बाध, नीकर
(नि १६)।

दुकरनरिया जी [दु-करिका] १ दाही,
नीकरानी (नि १६)। २ बैरवा, बादाङ्गना
(नि १६)।

दुकरनरिय (मप) वि [दु-रित] दु स-अद
(मपि)।

दुकरनरिय वि [दु-रित] दु खी किया हुमा
(उप ६१४, मपि)।

दुकरनाय सब [दु-रान्य] दु स-अदना,
दु खी करना। दुसावेह (पि ५५६)।
बह दुकरनायेन (पठम ५८, १८)। बह
दुकरनायिजन (भावप)।

दुकरनायणया जी [दु-राना] दु खी करना,
दर्द उदनाता (भग ३, १)।

दुकिन वि [दु-किन] दु खी, दु स-अद
(भाषा)।

दुकिनय वि [दु-किन] दु स-अद दुनिया
(ह २, ७२, श्राप श्रापू ६९, महा मुर
३, १६१)।

दुकुनुसार वि [दु-कुनुसार] जो दु स-अद पार
किया जान गिगरो पार करते में कडिनाई
हो (एत १, १)।

दुकुनुतो म [दु-सु] दो बार, दो दम
(छ ३, २—पठ १०८)।

दुकुसुर देखो दुसुर (पि ५३६)।

दुकुसुल देखो दुकुल (मपि २१)।

दुकुसोह पुं [दु-सोह] दु स-अद (पठम
१०३, १५५, सुभा १६१)।

दुकुसोह वि [दु-क्षोम] कष्ट-क्षोम, सुस्विर
(सुभा १६१, ६२६)।

दुसह वि [दु-सह] दो दुकडेवाला (उप
६८६ दी, मपि)।

दुसुचो देखो दुकुसुचो (कस)।

दुसुर पुं [दु-सुर] दो सुखाना प्राणी, मौ,
मंस मादि (पण १)।

दुग न [दु-ग] दो, गुम, गुगल, जोडा (नव
१०, मुर ३, १७, ली ३३)।

दुगंज देखो दुगुज। बह, दुगदमाण (उत
५, १३)। ह, दुगंजिज (उत १३, १६,
पि ७४)।

दुगदणा जी [जुगुप्सना] दृणा, निदा
(पठम ६५, ६५)।

दुगंजा जी [जुगुप्सा] दृणा, निदा (पाम,
मुम ४०७)। देखो दुगुडा।

दुगय देखो दुगय (पठम ५१, १७)।

दुगच्छ १ सक [जुगुप्स] दृणा करना
दुगच्छ २ निदा करना। दुगच्छ, दुगच्छ
(पह, ह ५, ४)। बह, दुगुदव, दुगुद-
माण (कुमा पि ७४, २१५)। संट,
दुगुद्विउ (पठ २)। ह, दुगुद्वितीय
(पठम ५६, ६२)।

दुगसंपुण न [दु-गसंपूर्ण] सगातार बीच
दिन वा उपवास (संवाप ५८)।

दुगदग वि [जुगुप्सक] दृणा करलाना
(पाम ३)।

दुगदण न [जुगुप्सन] दृणा, निदा (पि
७४)।

दुगदणा देगो दुगदणा (भाषा)।

दुगुहा देखो दुगुहा (मा)। 'कम न
[धमन] यग पीछे वा सवे (छ १०)।
'मोहपाय न [मोहनीय] बर्न गिरेय,
मिम नय न नीर की धनुष बनू पर
हटा होई ई (कम १)।

दुगुदि वि [जुगुप्सिन] दृणा करलाना,
नरत करलाना (उत २, ४, ६, ८)।

दुगुद्विज वि [जुगुप्सित] दृणित निदिन
(मोष ३०२)।

दुगुद्विगु [दु-गुद्विगु] एक समुद्रि शाली
देर (सुभा ३२८)।

दुगुद्वि देखो दुगुद्वि। दुगुद्वि (हे ४, ४,
पह)। बह दुगुद्वि (पठम १०५,
७५)। ह, दुगुद्वितीय (पठम ८०, २०)।
दुगुण देखो दुगुण (छ २, ४, पामा १, १,
६६, मुर ३, २१६)।

दुगुण सब [दु-गुण] दृणा करना।
दुगुण (मुम २८५)।

दुगुणिअ देखो दुगुणिअ (कुमा)।

दुगुल देखो दुगुल (हे १, ११६, कुमा,
दुगुल) मुर २, ८०, ज २)।

दुगोचा जी [दु-गोचा] बली गिरोप
(पण १)।

दुगान न [दि] १ दुख, कष्ट (दे ५, ५१,
पह, पण १, ३)। २ बदी, नमर (दे ५,
५३)। ३ राण, संवाप, मुदः 'मादतें ब
ऐलिमें दुग' (स ६३६)।

दुगा नि [दु-ग] १ जहां दु स से प्रवेश किया
जा सवे बह, दुगन स्थान (मग ७, ६ विदा
१, ३)। २ जो दु स से जाना जा स (मुम
१, ५ १)। ३ पुन बिता, गद, कोट
(मुम १४८)। 'नायग पुं [नायक] गिने
वा मासिब (मुम ४६०)।

दुगुइ जी [दु-गुति] १ दुगुति, नरप मादि
गुतिब मोदि (छ ३, ३, ५, १, उत ७,
१८, भाषा)। २ गिरात, दुग। ३ दुगुहा,
बुधे भरस्या। ४ बगानियत, दियवा (एत
१, १ महा छ ३, ४ मप २)।

दुगुति छी [दु-गुति] दुगुति, गिरा,
बदिन गद (पि १११)।

दुगुगं पुं [दु-गुगं] १ साराय मप। २ रि,
साराय मपका, दुगुगं (छ ८—पठ ५१८,
मुम २१ महा)।

दुगुगं वि [दु-गुगं] दुगुगं (पुम
४८७)।

दुगुगं वि [दु-गुगं] वा बदिन में गे जाना
वा सवे बह (पठम ५)।

दुगुगं १ वि [दु-गुगं] १ बह दु स न
दुगुगं २ प्रवेश किया जा सवे बह (पठम
५०, १३, मोष ७५ मा) 'परिलसार्ति-

दुग्गम्मं (सुर ६, १३५) । २ न कठिगाई, मुस्किन (ठा ५, १) ।

दुग्गय वि [दुर्गत] १ दण्ड, धन हीन (ठा ३, ३; भा १८) । २ दुःखी, विपत्ति प्रसूत (पाप. ठा ४, १—अथ २०२) ।

दुग्गय न [दुर्गन] १ दण्डिता । २ दुःख, बोहोली जिएदथ बोहिव्वं दुग्गय राहइ (संयोग ४) ।

दुग्गाह वि [दुर्गह] जिसका ग्रहण दुःख से हो सके वह (उप ५ १६०) ।

दुग्गाही [दुर्गा] १ पार्वती, सौरी शिव-पत्नी (पाप, सुपा १४८) । २ देवी विशेष (वर्ग) । ३ पति-विशेष (भा १६) ।

दुग्गाई की [दुर्गादेवी] १ पार्वती, दुग्गापेरी शिव पत्नी, सौरी । २ देवी-दुग्गादेई विशेष (पह, हे १ २७०, दुग्गापी, कुमा) । ३ रमण पु [रमण] महादेव, शिव (पह) ।

दुग्गास न [दुर्गास] दुर्गिअ, प्रकाल (पिठ-भा ३३) ।

दुग्गासक वि [दुर्गास, दुर्गह] जिसका ग्रहण दुःख से हो सके वह (सुपा २५५) ।

दुग्गाह वि [दुर्गाह] अत्यन्त दुःख, अति प्रचण्डन (वप ७) ।

दुग्गेसक देको दुग्गासक (से १, ३) ।

दुग्गट्ट वि [दुर्गट्ट] जिसका आच्छादन दुःख से हो सके वह 'पारदसीउहएहएहएहएहएहएह' (पह १, १—अथ ५४) ।

दुग्गट्ट वि [दुर्गट्ट] जो दुःख से हो सके वह, कट्ट-सत्य (सुपा ६९, ३६५) ।

दुग्गट्ट वि [दुर्गट्ट] असत (पर्विअ २७०) ।

दुग्गट्टिअ वि [दुर्गट्टिअ] १ दुःख से समुत् । २ खराब चीस से बना हुआ, 'दुग्गट्टिममन-मन म चणे खणे पापमपट्टोए' (भा ११०) ।

दुग्गट्ट = [दुर्गट्ट] दुष्ट पर (मति) ।

दुग्गवास पु [दुर्गास] दुर्गिअ, प्रकाल (पह ३) ।

दुग्गट्ट ५ [दे] हस्ती, हाथी, बरी (दे ५, दुग्गट्ट ५४, पह; मति) ।

दुग्गण पु [दुग्गण] एक प्रकार का मुदब, ओगरी, मृगए (पह १, १—अथ ४४) ।

दुग्गक न [दुग्गक] गाड़ी, सवट (शेष ३८३ भा) । १ वध पु [पति] गादी का अधिपति या मालिक (शेष ३८३ भा) ।

दुग्गिण देको दुग्गिण (पि ३४०, औप) । दुग्ग न [दुग्ग] दूत कर्म, समाचार पहुँचाने का कार्य (पाप) ।

दुग्ग देको दोष = द्वितीय, द्विस (वप) ।

दुग्गिअ वि [दे] १ दुर्लभित । दुर्बलध, दुर्लभित (दे ५, ५५, पाप) ।

दुग्गबाल वि [दे] १ कलह निरत, कलहाखोर ।

२ दुश्चरित, दुष्ट आचरणवाला । ३ परप-भायी कलह बोलनेवाला (दे ५, ५४) ।

दुग्गज ५ [दुग्गज] दुःख से व्यापने दुग्गय ५ योग्य (कुमा उप ७६८ टी) ।

दुग्गर ५ [दुग्गर] १ जिसने दुःख से दुग्गरि ५ जाया जाय वह (भापा) । २ दुःख से जो किया जाय वह (उप ६४८ टी, पत्रम २२, २०) । ३ लाट पु [लाट] ऐसा ग्राम या देश जिसमें दुःख से बाधा जा सके (भापा) ।

दुग्गरिअ न [दुग्गरित] १ खराब आचरण, दुष्ट वर्तन (पत्रम ३८, १२, उप १११) । २ वि. दुग्गचारी (दे ५, ५४) ।

दुग्गरि वि [दुग्गरि] दुग्गचारी (मवि) ।

दुग्गरि वि [दुग्गरि] दुग्गचारी, दुष्ट आचरणवाला (स ५०९) । जो. 'जो' (महा) ।

दुग्गितिय वि [दुग्गितित] १ दुष्ट चिन्तित (पत्रम ११८, ६०) । २ न पराव किन्तन (पदि) ।

दुग्गिअिअ वि [दुग्गिअिअ] जिसका प्रवी-कार दुग्गिअ से हो वह (म ७६१) ।

दुग्गिण न [दुग्गिण] १ दुष्ट आचरण दुग्गित १२ दुष्ट बर्तन—द्विआदि । २ वि. दुग्ग चचित, एकचित को द्वि दुष्ट वस्तु (विपा १, १, खया १, १६) ।

दुग्गिट्टिअ न [दुग्गिट्टिअ] खराब चेष्टा, शारी-रिक दुष्ट आचरण (पदि, सुर ६, २३२) ।

दुग्गक वि [दुग्गक] बाध प्रकार का—'मूल दारं पद्धरण, भादारी भापणं निही' ।

दुग्गनस्तावि धम्मसं, सम्मत परिचितियं (पा ६) ।

दुग्गक वि [दुग्गक] दुस्तयन, दुःख से छोड़ने योग्य, 'दुग्गक जोविआसा य' (धर्मवि १२४) ।

दुग्गक वि [दुग्गक] जिसका देवन दु खसे हो सके वह (पत्रम ३१, ५६) ।

दुग्गक देको दुग्गक (धर्म २) ।

दुग्गिअ पु [दुग्गिअ] उद्योतिष्क देव-विशेष, एक महापह (ठा २, ३) ।

दुग्गय देको दुग्गय (महा) ।

दुग्गीह पु [दुग्गीह] १ सर्व. सप्त । २ दुर्जन खन पुरुष (सहि ६३, कुमा) ।

दुग्गीत देको दुग्गीत (राज) ।

दुग्गीअ पु [दुग्गीअ] जन, दुष्ट मनुष्य (प्रापू २०, ४०; कुमा) ।

दुग्गीअ वि [दुग्गीअ] जो दुष्ट से जीता जा सके (उप १०१ टी, सुर १२, १३८, सुपा २६) ।

दुग्गीअ न [दे] व्यसन, बुरा दुःख, उपद्रव (दे ५, ४४, से १२, ६३, पाप) ।

दुग्गीअ वि [दुग्गीअ] दुःख से निकलने योग्य (से १२, ६३) ।

दुग्गीअ न [दुग्गीअ] दुष्ट मनन, दुर्निस्त मात (भापा) ।

दुग्गीअ पु [दुग्गीअ] एक प्राचीन वैतर्कन (कप) ।

दुग्गीअ न [दुग्गीअ] प्राचीनविषा का सय (विसे ३४४२) ।

दुग्गीह देको दुग्गीह (महा १५०) ।

दुग्गीअ वि [दुग्गीअ] दुःख से जीतने योग्य (सुपा २४८, महा) ।

दुग्गीअ पु [दुग्गीअ] धृतराष्ट्र का ज्येष्ठ पुत्र (ठा ४, २) ।

दुग्गीअ वि [दुग्गीअ] दोहने योग्य (दे १०, ७) ।

दुग्गीअ न [दुग्गीअ] दुष्ट चित्तन (धर्म २) ।

दुग्गीअ वि [दुग्गीअ] जिसक विषय में हुए चिन्तन विषय गया हा वह (धर्म २) ।

दुग्गीअसय वि [दुग्गीअ] जिसकी सेवा बुरा से हो सके ऐसा (भापा) ।

दुग्गीअसय वि [दुग्गीअ] जिसका नाश बुरा-बाप्य हो वह (भापा) ।

दुग्गीअसिअ वि [दुग्गीअ] दुःख से रोहित (भापा) ।

दुष्मोसिअ वि [दुक्षपित] कष्ट से नाशित (भाषा) ।

दुष्ट वि [दुष्ट] दोष-युक्त, दूषित (ग्रन्थ १६२; पात्र, दुमा) । १ प्य पुं [१स्मन्] दुष्ट जीव, पात्री प्राणी (पत्रम ६, १३६, ७५, १२) ।

दुष्ट वि [दे. द्विष्ट] द्वेष-युक्त (शोध ७५७, कय), 'भरतदुष्टस' (कुर ३७१) ।

दुष्टान न [दु स्थान] दुष्ट जगद् (मय १६, २) ।

दुष्टदु म [दु+दु] क्षराय, मनुवर (ज २० टी, निर १, १, मुग १२०, ह ४, ४०१) ।

दुष्प्रय देवा दुष्प्रय (विह ३७, भाष्य) ।

दुष्णाम न [दुर्नामन्] १ भयभीत, घायय । २ दुष्ट नाम, क्षराय भाष्या । ३ एक प्रकार का गर्भ (मय १२, ५) ।

दुष्णिअ वि [दुन्] पीडित, दुःखित (भा ११) ।

दुष्णिअ देवो दुष्प्रिय (राज) ।

दुष्णिअन्ध न [दि] १ जघन पर स्थित यक्ष । २ जघन, लो की बमर के नीचे का भाग (दे ५, ५१) ।

दुष्णिअ वि [दि] दुषित दुराचारी (दे ५, ५५) ।

दुष्णिअम् वि [दुर्निष्क्रम] जहाँ से निवृत्तना बहु-साध्य हो वह (राज ७, ६) ।

दुष्णिअन्निवत्त वि [दि] १ दुराचारी । २ कष्ट से जो देखा जा सके (दे ५, ५५) ।

दुष्णिअस्तेन वि [दुर्निक्षेप] दुःख से स्वापन करने योग्य (भा १५५) ।

दुष्णिअं देवो दुग्निगेह (राज) ।

दुष्णिअमिअ वि [दुर्निर्गोत्र] दुःख से जोड़ा हुआ (मि १२, १६) ।

दुष्णिअमिअ न [दुर्निमित्त] क्षराय शत्रुन, भयरागुन (पत्रम ७०, ५) ।

दुष्णिअिद्वि वि [दुर्निमित्त] दुष्प्रसहो हठा, निहो (नि ११) ।

दुष्णिअिद्विया लो [दुर्निर्गया] कष्ट-जन्य स्वाभ्याय-स्थान (पण्ड २, ५) ।

दुष्णेय वि [दुर्ज्ञेय] जिसका ज्ञान कष्ट-मात्र ही वह (उत्तर १२०, ज २२०) ।

दुष्टिविक्कर वि [दुष्टिविअ] दुष्प्रह, जो दुःख से सहन किया जा सके वह (अ ५, १) ।

दुत्तर वि [दुस्तर] दुस्तरणीय, दुर्लभ्य (मुग ४७, ११५, सार्प ६१) ।

दुत्तरी लो [दुस्तरती] १ नदी । २ क्षराय किनारा वाली नदी (धम्म १२ टी) ।

दुत्तय वि [दुत्तरण] कष्ट से तपने योग्य, दुःख से करने योग्य (वप) (धर्मा १७) ।

दुत्तार वि [दुस्तार] दुःख से पार करने योग्य, दुस्तर (मि ३, २५, ६, १०) ।

दुत्ति म [दि] शीघ्र, जल्दी (दे ५, ४१, पात्र) ।

दुत्तिडक्क } देवो दुष्टिविक्कर (भाषा,
दुत्तिविक्क } राज) ।

दुत्तुड पु [दुत्तुण्ड] दुत्तुङ्ग, दुर्जन, (मुग २५०) ।

दुत्तोस वि [दुत्तोय] जिसकी संतुष्ट करना कठिन हो वह (वस ५) ।

दुत्थ न [दि] जघन, लो की बमर के नीचे का भाग (दे ५, ५२) ।

दुत्थ वि [दु स्थ] दुर्गत, दुःस्थित (अ ३, १, नवि) ।

दुत्थ न [दी स्थ] दुर्गति, दुःस्थता (मुग २५५), 'गहि विधुरमहावा हवि दुत्थेवि धीरा' (कुमा ५५) ।

दुत्थिअ वि [दु स्थित] १ दुर्गत, विपत्ति-ग्रस्त (रमण ७५, नवि, सण) । २ निर्जन, गरीब (कुर १५६) ।

दुत्तुरहं दुग्गी [दि] मयाक्षोर, कलह-शील (दे ५, ५७) । लो. डा (दे ५, ५७) ।

दुत्तयोअ पु [दि] दुर्गम मन्ना (दे ५, ५३) ।

दुर्दत्त वि [दुर्दत्त] च्छद, दहन करने को भराय, दुर्बल 'निश्वसयन्ता दुर्दत्तद्विया देहिणी बन्' (मुर ८, १३० शाया १, ५, मुग ३८०, महा) ।

दुर्दत्त वि [दुर्दत्त] दुष्प्रसहो, जो बर्तनाई न देना जा सके (उत्तर १५१) ।

दुर्दत्त वि [दुर्दत्त] जिनका दर्शन दुर्गम हो वह (भा ३०) ।

दुर्दम वि [दुर्दम] १ दुर्जय, दुर्निवार (मुग २५), 'दुर्दमदम' (था १२) । २ दुर्गम भयभीत का एक दूत (भाषा) ।

दुर्दम पु [दि] देव, पति का छोटा भाई (दे ५, ५५) ।

दुद्धि वि [दुर्द्ध] १ बुरी तरह से देखा हुआ । २ वि. दुष्ट दर्शनवाला (पण्ड १, २-पत्र २६) ।

दुद्धि न [दुर्द्धि] वादवो से व्याप्त विवस (शोध ३६०) ।

दुर्दय वि [दुर्दय] दुःख से देने योग्य (ज ६२४) ।

दुदोलना लो [दि] गौ, गैया (पह १) ।

दुदोलो लो [दि] वृष-नरि, पेड़ों को बनार (दे ५, ४३, पात्र) ।

दुद्ध न [दुग्ध] दूध, क्षीर (विपा १, ७) ।

'जाह लो [जाहि] मदिरा विरोध, जिसका स्वाद दूध के जैसा होता है (जीव ३) ।

'समुह पु [समुद्र] क्षीर-समुद्र, जिसका पानी दूध की तरह सफाई है (भा ३८८) ।

दुद्धस वि [दुर्धस] जिसका नाश मुश्किल से हो (मुर १, १२) ।

दुद्धाधिअमुह पु [द] बाल, शिशु, छोटा लड़का (दे ५, ५०) ।

दुद्धाधिअमुही लो [दि] छोटी लड़की (पात्र) ।

दुद्धी लो [दि] १ प्रसूति के बाद तीन दुद्धी } दिन तक का मो-दुग्ध (पत्रा ३२) ।

२ खट्टी छाछ से मिश्रित दूध (पत्र ४-भा २२८) ।

दुद्धर वि [दुर्धर] १ दुर्दत्त, जिसका निर्वोह मुश्किल न हो सके वह (पण्ड १-पत्र ४; मुर १२, ५१) । २ गहन, विपन्न (अ ६, नवि) । ३ दुर्जय (कुमा) । ४ दुर्ग, पर्वत का एक भुज (पत्रम ५६, ३०) ।

दुद्धरिस् वि [दुर्धर] १ जिसका सामना बर्तनाई न हो सके, जोतने को भयाव्य (पण्ड २, ५, कय) ।

दुद्धरनेहो लो [दि] बाजल का भाटा मानवर पराया जाता दूध (पत्र ४-भाया २२८) ।

दुद्धसाडी लो [दि] भागा निवारण पराया जाता दूध (पत्र ४-भाया २२८) ।

दुद्धिअ न [दि] बहु, सीसो, दुग्धजी में 'दुद्धि' (पात्र) ।

दुद्धिअ-ना लो [दि] १ देव भाई रखने दुद्धिना } का भाजन । २ मुग्धी (दे ५, ५५) ।

दुद्धोअहि } दु [दुग्धोदधि] सद्युद विरोप-
दुद्धोदहि } जिसका पानी दूध की तरह
स्वास्थि है, क्षीरसमुद्र (गा ४७२, उप २११
टी)।

दुद्धोर्णी की [दे] गो-विरोप जिसको एक
बार दोहने पर फिर भी दोहन किया जा सके
ऐसी गाय, कामधेनु (दे ५, ४६)।

दुधा देलो दुहा (अभि १११)।

दुग्धिमित्त देखो दुग्धिमित्त (धा २७)।

दुग्धय पुं [दुर्नय] १ दुग्ध नीति कुनीति । २
अनेक धर्मबाली बल्लु मे किसी एक ही
धर्म को मानकर धर्म धर्म का प्रतिवाद करने
वाला पक्ष (सम्म १५) । ३ वि दुग्ध नीति,
धर्माय जारी (उप ७६८ टी) । *कारि वि
*कारिन् धर्माय करनेवाला (सुपा ३४६) ।

दुग्धिरुम देखो दोनिकम (मग ७, ६ टी—
पत्र ३०७)।

दुग्धिग्गह वि [दुग्धिग्रह] जिसका निग्रह दुग्ध
से हो सके वह, धनियार्थ (उप ५ १५३)।

दुग्धियोह वि [दुग्धिगोघ] १ दुग्ध से जानने
योग्य । २ दुर्लभ (सुम १, १५, २५)।

दुग्धिमित्त देखो दुग्धिमित्त (धा २७)।

दुग्धिय न [दुर्नीत] दुग्ध कर्म, दुष्कर्म, 'बधति
वेदति य दुग्धियाति' (सुम १, ७, ४)।

दुग्धियथ वि [दे] विट का मेघवाता, निम्न-
नीय वेप को धारण करनेवाला, वेवल जयन
पर हो बल्लभहिता हुमा, 'लोप वि दुर्लसमी-
पिय जणं दुग्धियथमद्वसणं निददं' (उप)।

दुग्धिरिक्क वि [दुर्गिरीक्ष्य] जो कठिनाई से
देखा जा सके वह (अप, नवि)।

दुग्धियार वि [दुर्निार] रोक्ने के लिए
धराय, जिसका निवारण दुग्धिस से हो
सके वह (सुपा १२३, महा)।

दुग्धियारणीज वि [दुग्धियारणीय, दुर्निार] ऊपर
देखो (स ३४३, ७४१)।

दुग्धिसण्ण वि [दुग्धिपण्य] खराब रीति से
बैठा हुमा (ठा ५, २—पत्र ११२)।

दुप देखो दिज = दिज (राज)।

दुपगम वि [द्विप्रदेश] १ दो धर्मयवाला ।
२ पुं. दम्पत्य (उत्त १)।

दुपयसिय वि [द्विप्रदेशिक] दो प्रदेशवाला
(मग ५, ७)।

दुपक्क पुं [दुप्पक्ष] दुग्ध पक्ष (सुम १, ३,
३)।

दुपक्क न [द्विपक्ष] १ दो पक्ष (सुम १, २,
३) । २ वि. दो पक्षवाला (सुम १, १२, ५)।
दुपडिग्गह न [द्विप्रतिग्रह] दृष्टिवाद का
एक सूत्र (सम १५७)।

दुपडोआर वि [द्विपदावतार] दो स्थानों में
जिसका समावेश हो सके वह (ठा २, १)।

दुपडोआर वि [द्विप्रत्यवतार] ऊपर देखो
(ठा २, १)।

दुप्पजिय देखो दुप्पमजिय (सुपा ६२०)।

दुपय वि [द्विपद] १ दो पैरवाला । २ पुं
मनुष्य (आया १, ८, सुपा ४०६)। ३ न
गाड़ी, शकट (श्लोक २०५ गा)।

दुपय पुं [द्विपद] कापिलपुर का एक राजा
(आया १, १६)।

दुपरिच्च वि [दुप्परित्यज] दुत्पयन, दुग्ध
से छोकर योग्य (उप ७६८ टी, दयण ३४)।

दुपरिच्चणीय वि [दुप्परित्यजनीय,
दुप्परित्यज] ऊपर देखो (काल)।

दुपस देखो दुप्पस (ठा ५, १—पत्र
२६६)।

दुपुत्त पुं [दुप्पुत्त] कुतुन, कपूत (पठम २६,
२३)।

दुपेण्ड वि [दुप्पेक्ष] दुर्दृष्ट, धरांणीय
(नवि)।

दुप्पे पुं [दुप्पति] दुग्ध स्वामी (नवि)।

दुप्पेत्त वि [दुप्पयुक्त] १ दुग्धयोग करने-
वाला (ठा २, १—पत्र ३६) । २ जिसका
दुग्धयोग किया गया हो वह (मग ३, १)।

दुप्पेत्तिय ३ वि [दुप्पेत्तिय] ठीक-ठीक
दुप्पेत्त ३ नहीं पका हुमा, अपक्वा (उवा,
पत्ता १)।

दुप्पयोग पुं [दुप्पयोग] दुग्धयोग (स ४)।

दुप्पयोगि वि [दुप्पयोगिन्] दुग्धयोग
करनेवाला (पणह १, १—पत्र ७)।

दुप्पक वि [दुप्पय] देखो दुप्पेत्त (सुपा
४७२)।

दुप्पकराल वि [दुप्पश्चाल] जिसका प्रस-
न्न नष्टपाय हो वह (सुपा ६०८)।

दुप्पच्चप्पेस्मिय वि [दुप्पत्तयुत्प्रेक्षित] ठीक-
ठीक नहीं देखा हुमा (पत्र ६)।

दुप्पजीवि वि [दुप्पजीविन्] दुग्ध से जीने-
वाला (दसव १)।

दुप्पडिक्क वि [दुप्पतिमान्त] जिसका
प्राथमिक ठीक ठीक न किया गया हो वह
(विपा १, १)।

दुप्पडिगर वि [दुप्पतिन्तर] जिसका प्रतीकार
दुग्ध से किया जा सके (बृह ३)।

दुप्पडिपूर वि [दुप्पतिपूर] पूरने के लिए
धराय (संदु)।

दुप्पडियार्णव वि [दुप्पत्यार्णव] १ जो
बिबी तरह सतृप्त न किया जा सके । २ प्रति
कष्ट से तोषणीय (विपा १, १—पत्र ११,
ठा ४, ३)।

दुप्पडियार वि [दुप्पतिकार] जिसका प्रती-
कार दुग्ध से हो सके वह (ठा ५, १—पत्र
११७, ११६, स १८४, उप)।

दुप्पडिल्लेह वि [दुप्पतिस्तेर] जो ठीक-ठीक
न देखा जा सके वह (पत्र ८४)।

दुप्पडिल्लेहण न [दुप्पतिस्तेरन्] ठीक-ठीक
नही देखा (पत्र ४)।

दुप्पडिल्लेहिय वि [दुप्पतिस्तेरित] ठीक से
नही देखा हुमा (सुपा ६१७)।

दुप्पडिवूह वि [दुप्पतिवूह] १ बड़ने को
धराय । २ पालने को धराय (भावा)।

दुप्पडिवूहण वि [दुप्पतिवूहण] ऊपर
देखो (भावा)।

दुप्पणिहाण न [दुप्पणिधान] दुग्धयोग,
अभुम प्रयोग, दुग्धयोग (ठा ३, १, सुपा
५४०)।

दुप्पणिहिय वि [दुप्पणिहित] दुग्धयुक्त,
जिसका दुग्धयोग किया गया हो वह (सुपा
५४८)।

दुप्पणीहाण देखो दुप्पणिहाण, 'बधतामद-
धोनि दुप्पणीहाण' (सुपा ५५३)।

दुप्पणीहिय वि [दुप्पणीय] दुत्पयन, छोड़ने
को धर्मयोग (सुम १, ३, २)।

दुप्पण्णगणिज वि [दुप्पण्णगणीय] बट
से प्रबोधीनीय (भावा २, १, १)।

दुप्पतर वि [दुप्पतर] दुत्तर (सुम १,
५, १)।

दुष्पधस वि [दुष्पधस्य] दुष्पं, दुर्जय (उत्त
६; वि ३०५)।

दुष्पमज्जग न [दुष्पमार्जनं] शीत-शीत
मया नहो करना (धर्म ३)।

दुष्पमज्जय वि [दुष्पमार्जनं] धर्मो लह
से सका नहो रिया हुवा (मुपा ११७)।

दुष्पय देसो दुष्पय = द्विद (सम ६०)।

दुष्पयार वि [दुष्पयार] जिहवा प्रचार
हुट माना जाता है वह, धन्याय-युक्त (धन्य)।

दुष्परकलन वि [दुष्परकलन] दुरो लह
से धारान्त (भाषा)।

दुष्परिजल वि [दे] १ मर्याद है ५, ५५;
नाम: से ४, २६; ६, १८; ना १२२)। २
द्विगुण, दुगुणा। ३ धनमय, धन्याय-रहित
(दे ५, ५५)।

दुष्परिद्वि वि [दुष्परिचित] अनर्पित
(ने ११, १५)।

दुष्परिचय देसो दुष्परिचय (उत्त ८)।

दुष्परिणाम वि [दुष्परिणाम] जिसका
परिणाम लक्षण हो, दुष्परिण (मंत्रि)।

दुष्परिमास वि [दुष्परिमास] नट-नाम्य
लक्षणवाला (से ६, २५)।

दुष्परिपत्तय देसो दुष्परिपत्तय (संदु)।

दुष्परिपल वि [दे] दुर्गम, 'मालिहिम
दुष्परिपल वि रोह लणं यणु' बाहो' (ना
१२२)।

दुष्परिपत्तय वि [दुष्परिपत्तय] १ जिसका
परिपत्तय दुर्गम हो हो करे पद। २ न. दुर्गम
से पीछे सीटना (संदु)।

दुष्पर्यय वृ [दुष्पर्यय] दुष्ट प्रत्यय (मंत्रि)।

दुष्पर्यय वृ [दुष्पर्यय] दुष्ट वात (मंत्रि)।

दुष्पर्यय वि [दुष्पर्यय] जहां नट से प्रत्यय
हो लो वह (प्राया १, १; पत्र ५३, १२;
॥ २५६; मुपा ५५५)। 'तर वि [तर]
प्रत्यय करने को प्रत्यय (पद १, ३—
पत्र ५५)।

दुष्पर्यय वृ [दुष्पर्यय] पंचन क्रोरे के फल
में होनेवाला एक दिन धारार्थ, एक श्रावो
दिन मृति (रा ८०१)।

दुष्पर्यय वि [दुर्गम] जो दुर्गम में
लिंगनामा वा सक कह (छा ५, १ टी—
पत्र २११)।

दुष्पर्यय वि [दुष्पर्यय] जिसका नाम
कठिनाई से हो सके वह (प्राया १, १८—
पत्र २३६)।

दुष्पर्यय वि [दुष्पर्यय] धर्म, दुर्जय
(प्राया १, १८)।

दुष्पर्यय वि [दुष्पर्यय] जो दुष्ट से मूल सके
वह; दुर्गम (मोह ७२)।

दुष्पर्यय न [दुष्पर्यय] तन-विशेष, धारार्थित
तन (संकोष ५८)।

दुष्पर्यय वृ [दुष्पर्यय] दुष्ट विता (मुपा ३८७;
मंत्रि)।

दुष्पर्यय देसो दुष्पर्यय (सुर २, ५, मुपा
६२)।

दुष्पर्यय वि [दुष्पर्यय] धर्म, 'कामाति
वि [आपि] धर्म-यत्ना (मुपा ३१५)।

दुष्पर्यय देसो दुष्पर्यय (पत्र १०५, ७२; मंत्रि;
मुपा ५०५)।

दुष्पर्यय वि [दुष्पर्यय] जो कठिनाई में पूरा
रिया जा सके (म १२३)।

दुष्पर्यय देसो दुष्पर्यय (सणु)।

दुष्पर्यय वि [दुष्पर्यय] नट से
लक्षण (नाह—वैष्णो २५)।

दुष्पर्यय देसो दुष्पर्यय (महा)।

दुष्पर्यय देसो दुष्पर्यय (आ २१)।

दुष्पर्यय वि [दुष्पर्यय] मृतिवत् से फटने
योग्य (वि ८३)।

दुष्पर्यय वि [दुष्पर्यय] जिसका लक्षण लक्षण
दुष्पर्यय है वह (पत्र २६, ५६, १०१,
दुष्पर्यय ७१; डा ८, मंत्रि)।

दुष्पर्यय वि [दुष्पर्यय] निगम और श्रोत
आदि धर्मिक दो लक्षणों में युक्त (मंत्रि)।

दुष्पर्यय वि [दुर्बल] लक्षण शीत से बंधा
हुवा (भाषा २, ६, ३)।

दुष्पर्यय वि [दुर्बल] निगम, न-हीन (विता
१, ७, मुपा १०१, प्रामू २३)। 'पंचपर्य-
मित्र वृ [प्रत्ययमित्र] दुर्बल को पद
करनेवाला (छा ६)।

दुष्पर्यय वि [दुर्बल] दुर्बल, निगम
(मंत्रि १२, २)। 'मृतिमित्र वृ [पुष्प-
मित्र] स्वतन्त्र मंत्रि एक दिन धारार्थ
(छा ८, टी ७)।

दुष्पर्यय न [दुर्बल] श्रम, पाक, पकानट
(भाषा २, २, २, ३)।

दुष्पर्यय वि [दुर्बल] १ दुष्ट दुर्बला,
लक्षण निगमवाला (उप ७२८; मुपा ५५५;
३०६)। २ शी, लक्षण दुर्बल, दुष्ट निगम
(आ १५)।

दुष्पर्यय वृ [दे] उपलम्भ, उपलम्भ या
उत्ताहना (दे ५, ५२)।

दुष्पर्यय वि [दुर्बल] दोहा हुवा। २ न. दोहन
(प्राह ७७)।

दुष्पर्यय देसो दुष्ट = दुष्ट।

दुष्पर्यय वि [दुर्बल] १ नमनीय, प्रमाणा।
२ धर्म, धर्म (पद १, २; प्रामू १५१)।

'नाम, नाम न [नाम] धर्म-विशेष
जिसके लक्षण में उपलम्भ, लक्षणवाली लोको
को धर्म होता है (धर्म १; सम ६७)।

'नरा श्री [करा] दुर्बल बननेवाली निया-
विशेष (मंत्रि २, २)।

दुष्पर्यय न [दुर्बल] दुर्बल, लोह में
धर्म (वि ५०२)।

दुष्पर्यय श्री [दुर्बल] दुष्ट में निगम,
श्री धर्मवाली लोह दुर्बल को पद दुष्ट-
लक्षण (मुपा १७०)।

दुष्पर्यय वृ [दुर्बल] १ देव पदार्थ (पत्र
८६, ९६)। २ धर्म-नाम, धर्म-धर्म,
'निगम' लक्षण लोह लोह लोह (पत्र १,
१६)।

दुष्पर्यय वृ [दुर्बल] १ देव पदार्थ (पत्र
३, १६)।

दुष्पर्यय वृ [दुर्बल] १ देव पदार्थ (पत्र
१६०)।

दुष्पर्यय न [दुर्बल] लक्षण लक्षण
(पत्र ११८, ६७; पत्रि)।

दुष्पर्यय वृ [दुर्बल] १ लक्षण लक्षण (पत्र
५१)। २ वि. धर्म, लक्षण, धर्म (छा
१)। ३, लक्षण लक्षण, धर्म (भाषा)।

'नरा [गन्ध] दुर्बल लोह धर्म
(छा १; भाषा: प्राया १, १२)। 'मह वृ.
[दुर्बल] लक्षण लक्षण (प्राया १, १२)।

दुष्पर्यय वृ [दुर्बल] १ लक्षण लक्षण,
दुष्ट वा धर्म (पत्र १०; मुपा ११८)।

'नामने लक्षण, दुष्ट लोह लक्षण लक्षण।

जस्त मुहं जोइज्जद, सो पुरिसो महोवले
विरलो' (रमण ३२) ।

२ निष्ठा वा भ्राता (ठा ५, २) । ३ वि.
जहाँ पर निष्ठा न मिल सके वह देश आदि
(ठा ३, १—पत्र ११८) ।

दुग्मिज्ज देखो दुग्मेज्ज (पत्र ८०, ६) ।
दुग्भूइ श्री [दुभूति] अशिव, अमंगल
(चह ३) ।

दुग्भूय पुंन [दुभूत] १ दुःकरण करनेवाला
जन्तु—टिड्डी बगैरह (मग ३, २) । २ न,
अशिव, अमंगल (जीव ३) ।

दुग्भूय वि [दुभूत] दुराचारी (उत्त १७,
१७७) ।

दुग्मेज्ज वि [दुभेज] लोकमें को घराब
(वि ८४, २८७, नाट—मुच्छ १३३) ।

दुग्मेय वि [दुभेद] ऊपर देखो (राय) ।
दुग्म देखो दुग्मग (नन १५) ।

दुग्मय न [दुग्मय] वर्तमान श्रीर भागामी
जन्म, 'दुग्महृदयजो' (धा २७) ।

दुग्मग पुं [दुग्मग] भाषा, शब्द (भा ७, १) ।

दुग्म सक [धयलय] १ संकेद करना । २
हुना आदि से पोतना । दुग्म (हे ४, २४) ।

दुग्मपु (गा ७४७) । वक्र, दुग्मत (कुमा) ।

दुग्म पुं [दुग्म] १ बुद्ध, पेर, गाछ (कुमा,
प्राप् ६, १४६) । २ बमरेन्द्र के पदाधि-
क्षेय वा एक अधिपति (ठा ५, १—पत्र

१०२, ६४) । ३ राजा धैर्यिक का एक
पुत्र, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा
लेकर भगुत्तर देवलोका की गति प्राप्त की थी
(भनु २) । ४ न एक देश-विमान (सम

१५) । ५ त न [पान्त] एक विद्यापर-
नगर (इक) । ६ पत न [पत्र] १ बुद्ध का
पता । ७ 'उत्तराध्ययन' सूत्र का एक अध्याय
(उत्त १०) । ८ पुच्छिका की [पुच्छिका]

'दशपेवालि' सूत्र का परला अध्याय (दस
१) । ९ राय पुं [राज] उत्तम वृद्ध (ठा ४,
४) । १० 'सेण पुं [सेन] १ राजा योगि

न का एक पुत्र, जिसने भगवान् महावीर के
पास दीक्षा लेकर भगुत्तर देवलोक में गति
प्राप्त की थी (भनु २) । २ मर्वर्ष बसदेव

धीर कापुत्र के पूर्व-जन्म के भर्ष-पुत्र (सम
१५१, पत्र २०, १७७) ।

दुग्मंतय पुं [दे] वेश-वस्त्र, धम्मिल्ल—बैंची
बोटी, बूझ (दे ५, ४७) ।

दुग्मग न [घवलन] चूना आदि से लेपन,
सफेद करना (पह २, ३) ।

दुग्मणी श्री [दे] सुधा, मकल आदि पोतने
वा येत इय-विशेष, चूना (दे ५, ४४) ।

दुग्मच वि [द्विमात्र] दो मात्रावाला स्वर-
बणें (हे १, ६४) ।

दुग्मासिय वि [द्विमासिक] दो मास का, दो
मास-सम्बन्धी) सण) ।

दुग्मिज वि [घासित] चूना आदि से पोता
हुआ, सफेद किया हुआ (गा ७४४, सुज २०) ।

दुग्मिल देखो दुग्मिल (पिंग) ।

दुग्मह पुं [द्विसुर] एक राजपति (उत्त १) ।

दुग्मह देखो दुग्मह = दुग्गुत्त (वि ३४०) ।

दुग्मुत्त पुंन [दुग्मुत्त] खराब मुहूर्त, दुष्ट
समय (सुपा २३७) ।

दुग्मोक्क वि [दुग्मोक्क] जो दुःख से छोटा
जा सके (सुप्त १, १२) ।

दुग्म देखो दूग्म = दावय । दुग्म (अवि) ।

दुग्मति, दुग्मति (गा १७७, ३४०) । कर्म,

दुग्मज्ज (गा ३२०) ।

दुग्मइ वि [दुग्मति] दुग्गि, दुष्ट दुष्टिवाला
(धा २७, सुपा २५१) ।

दुग्मइणी श्री [दे] भगवासोर की (दे ५,
४७, पइ) ।

दुग्मण वि [दुग्मनस्] १ दुर्बला, क्षिण-
मनस्क, उद्विग्नचित्त, उदास (विपा १, १,
सुर ३, १४७) । २ दीन, दीनतायुक्त । ३

द्विष्ट, द्वेष-युक्त (ठा ३, २—पत्र १३०) ।

दुग्मण भव [दुग्मनाय] उद्विग्न होना,
उदास होना । वक्र- दुग्मणाजित्त, दुग्मणा-

यमाण (नाट—महवी ६६, भावली १२८,
खण ७६) ।

दुग्मणिज न [दीर्घमनस्य] उदासी, उद्वेग,
चिन्ता, बेचैनी (दस १, २) ।

दुग्मणिज न [दीर्घमनस्य] दुष्ट मनो भाव,
जिसका वा दुष्ट विचार, दुर्जनता (दा ६, ३,
८) ।

दुग्मय पुं [दुग्मक] निषादी, भीषमगा (दस
७, १४) ।

दुग्माहिला श्री [दुग्महिला] दुष्ट श्री (मोघ
४६४ टी) ।

दुग्माण पु [दुग्मान] भूला भ्रमिमान, भिन्नित
गवें (मज्जु ५४४) ।

दुग्मार पु [दुग्मार] विषम मार, भयंकर
ताण, 'दुग्मारण मन्त्रो सोवि' (धा १२) ।

दुग्मारि श्री [दुग्मारि] उलट मारो-रोग
(सवीच २) ।

दुग्मास्य पु [दुग्मास्य] दुष्ट पवन (अवि) ।

दुग्मिज वि [दूज] जगपति, पीडित (गा
७४, २२४, ४२३, भवि, वात्र ३०) ।

दुग्मिल चीन [दुग्मिल] छान्द विशेष । श्री-
'शा (पिंग) ।

दुग्मुह देखो दुग्मुह = द्विगुल (महा) ।

दुग्मुह पुं [दुग्मुह] बलदेव का शारणी देवी
से उत्पन्न एक पुत्र, जिसने भगवान् नेमिनाय
के पास दीक्षा लेकर मुक्ति पाई थी (प्रत ३,
पह १, ४) ।

दुग्मुह पुं [दे] मर्कट, वावर, बन्दर (दे ५,
४४) ।

दुग्मेह वि [दुग्मेपस्] दुग्गि, दुग्मति (पह
१, ३) ।

दुग्मोय वि [दुग्मोय] दुःख से छोड़ने
योग्य (अभि २४४) ।

दुग्गुण देखो दुग्गुण (धर्म ६४०) ।

दुग्गकम वि [दुग्गतिकम] दुर्लभ, निम्न
उत्पन्न दुःख साम्य हो वह (भावा) ।

दुग्गकमिज्ज वि [दुग्गतिकमिज्ज] ऊपर
देखो (खाया १, ४) ।

दुग्गवि [दुग्गवि] १ जिसका परिणाम—
विपाक परावर्त हो वह, जिसका पर्यन्त दुष्ट
हो वह (खाया १, ४, पह १, ४—पत्र

६१, स ७१०, ववर) । २ जिसका विनाश
व्यर्थ-साम्य हो वह (संहु) ।

दुग्गदर वि [दे] दुःख से लीपों (दे ५, ४६) ।

दुग्गस्य वि [दुग्गस्य] जिसकी रक्षा करना
बहिन हो वह (पुपा १४१) ।

दुग्गस्य वि [दुग्गस्य] पूरक, बटोर, बड़ा
(वचन) (अवि) ।

दुग्गाद पुं [दुग्गाद] नडाग्रह (कुत्र ३७६) ।

दुग्गमासिय न [दुग्गमासिय] दुष्ट चित्तन
(सुपा ३७७) ।

दुष्पुत्र च [दुष्पुत्र] जिसका भगवान्
 कठिनाता मे हो मरे वह, दुष्पुत्र 'एवो जइस
 धम्मो दुष्पुत्रो मयमणाण' (सुर १४, ७५;
 अ ५, १—यत्र २६६, एणा १, १)।
 दुष्पुत्राल च [दुष्पुत्राल] जिसका पालन
 कष्ट-साध्य हो (उत्तर २३)।
 दुष्पुत्र पु [दुष्पुत्र] दुष्ट भावा, दुर्जन
 (वर, महा)।
 दुष्पुत्रास पु [दुष्पुत्रास] सगल भावत
 (मुपा १६७)।
 दुष्पुत्रास वलो दुष्पुत्र (समु ५०, ५०,
 १०२, ५५; पण २, ५, भाषा)।
 दुष्पुत्रिगम च [दुष्पुत्रिगम] १ जहा दुष्ट से
 गमन हो सक वह, कष्ट-गम्य (अ १, ५)।
 २ दुर्बोध, कष्ट से जो जाना जा सके (राज)।
 दुष्पुत्रिगम पु [दुष्पुत्रिगम] दुष्ट मंत्री (सुर
 २६१)।
 दुष्पुत्रिगम च [दुष्पुत्रिगम] दुर्बोध (सुर ५८)।
 दुष्पुत्रिगम वलो दुष्पुत्रिगम (सिध २५६)।
 दुष्पुत्रिगम च [दुष्पुत्रिगम] दुष्पुत्रिगम, जहाँ
 प्रवेश करना कठिन हो वह (हे १, २६, सम
 १५५)।
 दुष्पुत्रि च [दुष्पुत्रि] सगल स्वाभावता (मग,
 एणा १, १२, अ ८)।
 दुष्पुत्रिगम पु [दुष्पुत्रिगम] १ मर्ग, साध २
 दुर्जन, दुष्ट मनुष्य (मुपा ५६०)।
 दुष्पुत्रि वलो दुष्पुत्रि (अ ७२८ दो संज्ञ)।
 दुष्पुत्रिगम वलो दुष्पुत्रिगम (सम १५५, विवे
 ६०६)।
 दुष्पुत्रिगम च [दुष्पुत्रिगम] १ से जानने
 योग्य दुर्बोध भगवत् विषय नयगम्यदुष्ट-
 लोणा दुष्पुत्रिगम (सम्म १६६)।
 दुष्पुत्रिगम च [दुष्पुत्रिगम] दुष्पुत्रिगम, जहाँ
 दुष्पुत्र जो कष्ट से गहन किया जा सके
 (एणा १, १, भाषा अ १०३१ टी. स
 १५७)।
 दुष्पुत्रिगम पु [दुष्पुत्रिगम] विद्यापर बंध का एक
 राजा (पम ५, ५५)।
 दुष्पुत्रिगम च [दुष्पुत्रिगम] जिसका भगवान्
 कष्ट-साध्य हो वह (सुर १)।
 दुष्पुत्रिगम च [दुष्पुत्रिगम] दो राज (अ ५, २,
 वय)।

दुष्पुत्रा च [दुष्पुत्रा] १ दुष्पुत्रा, दुष्ट
 भावराजा (सुर २, १६३, १२, २२६,
 वेणी १०१)। २ पु. दुष्ट भावराज (मर्ग)।
 दुष्पुत्रा च [दुष्पुत्रा] ऊपर देखो
 (मर्ग)।
 दुष्पुत्रा च [दुष्पुत्रा] जिसका भावराज
 दुष्ट से हो सके वह (मर्ग)।
 दुष्पुत्रा च [दुष्पुत्रा] जिस पर दुष्ट से चढ़ा
 जा सके वह, दुष्पुत्रा (उत्तर २३, गा ५६८)।
 दुष्पुत्रा पु [दु] विमर्ष, भगवत् (दे ५,
 ५६)।
 दुष्पुत्रा च [दुष्पुत्रा] जो दुष्ट से देखा
 जा सके, देखने को भगवत् (दे ५, ८,
 दुष्पुत्रा)।
 दुष्पुत्रा च [दुष्पुत्रा] ऊपर देखो,
 'दुष्पुत्रावो दुष्पुत्रावो सत्तेतो' (मर्ग)।
 दुष्पुत्रा च [दुष्पुत्रा] दुर्बोध, दुर्बोध (पम
 ६८, ६)।
 दुष्पुत्रा च [दुष्पुत्रा] १ दुष्ट भावराजा।
 २ सगल इच्छावाला (मर्ग, सधि १६)।
 दुष्पुत्रा च [दुष्पुत्रा] दुष्ट भावराजा
 (मुपा १११)।
 दुष्पुत्रा च [दुष्पुत्रा] दुष्ट से जिसका
 भावराज किया जा सके वह, भावराज करने को
 भगवत् (पण १, १, उत्तर १)।
 दुष्पुत्रा च [दुष्पुत्रा] १ दुष्पुत्रा, दुर्बोध।
 २ दुर्बोध। ३ दुष्ट (सुर २, ५, राज)।
 दुष्पुत्रा च [दुष्पुत्रा] पाप (पाप, मुपा २५३)।
 दुष्पुत्रा च [दु] दुष्ट, शीघ्र, जल्दी (पण)।
 दुष्पुत्रा च [दुष्पुत्रा] भगवान् संभवता
 को शासनदेवी (संज्ञ ६)।
 दुष्पुत्रा च [दुष्पुत्रा] देखने को भगवत्
 (मुपा)।
 दुष्पुत्रा च [दुष्पुत्रा] सगल नग्न (सधि १,
 १०५)।
 दुष्पुत्रा च [दुष्पुत्रा] सगल यज्ञ—भाषा (पण
 १, १०३)।
 दुष्पुत्रा च [दु] कोड़ा पीसा हुआ, टुक टुक
 कड़ा पीसा हुआ (भाषा २, १, ८)।
 दुष्पुत्रा च [दु] १ भगवत् कला,
 भूमा। २ दैर्घ्य ही पीय की कोय में
 भूमा। ३ वह, दुष्पुत्रा (सुर १५, २१२)।

दुष्पुत्र न [दुष्पुत्र] दुष्पुत्र, दुष्ट
 (साध १०१)।
 दुष्पुत्र च [दुष्पुत्र] १ दो बार कहा हुआ,
 पुनरुक्त। २ दो बार कहने योग्य (रमा)।
 दुष्पुत्र च [दुष्पुत्र] १ दुष्पुत्र, दुर्लभ्य
 (मुपा १, ३, २)। २ न. दुष्ट उत्तर, भगवत्
 यथा (हे १, १५)।
 दुष्पुत्र च [दुष्पुत्र] दो से अधिक। १ सय
 वि [शततम] एक ही दो बार, १०२ वीं
 (पम १०२, २०५)।
 दुष्पुत्रा च [दुष्पुत्रा] दुष्ट से पार करने
 योग्य (मुपा २६७)।
 दुष्पुत्रा च [दुष्पुत्रा] जिसका उद्धार कठिन
 से हो वह (मुपा १, २, २)।
 दुष्पुत्रा च [दुष्पुत्रा] जिसका उपनय
 कठिन हो ऐसा (उद्धारण) (संज्ञ १)।
 दुष्पुत्रा च [दुष्पुत्रा] जिसका उपचार
 कष्ट-साध्य हो वह (नष्ट)।
 दुष्पुत्रा च [दुष्पुत्रा] दुष्ट विरोध, दूष (स
 १२५, अ ११८)।
 दुष्पुत्रा च [दुष्पुत्रा] भाव होना,
 बदना। दुष्पुत्रा (नि ११८, ११६)। वह,
 दुष्पुत्रा (भाषा २, ३, १)। सग,
 दुष्पुत्रा, दुष्पुत्रा, दुष्पुत्रा (मग
 महा, नि ५८१, ५८२)।
 दुष्पुत्रा च [दुष्पुत्रा] भगवत्, ऊपर चढ़ा
 हुआ (एणा १, १, २, १; मीय)।
 दुष्पुत्रा च [दुष्पुत्रा] १ सगल सगल, दुष्पुत्र,
 दुष्पुत्र (अ ८, भा १६)। २ मनमूर्ख का
 बर्णन (सुर १०, पूर्णा गा ११७)।
 दुष्पुत्रा च [दुष्पुत्रा] भगवत् भावित सगल भगवत्
 (मुपा १, ५, १, २०)।
 दुष्पुत्रा च [दुष्पुत्रा] सगल दुष्पुत्र, दुष्पुत्रा,
 दुष्पुत्रा (मुपा १, ५, २, १५), 'जग भागा-
 विधि नाना पादपयो दुष्पुत्रा' (मुपा १,
 ११, २०)।
 दुष्पुत्रा च [दुष्पुत्रा] भगवत्, ऊपर चढ़ा
 चढ़ कला (स ११)।
 दुष्पुत्रा च [दुष्पुत्रा] भगवत्, भगवत् (पम ६
 १, ६५)।
 दुष्पुत्रा च [दुष्पुत्रा] भगवत्, पण (पम)।
 दुष्पुत्रा च [दुष्पुत्रा] भगवत् (सुर २३)।

दुलंघ देखो दुलंघ (भवि) ।

दुलभ देखो दुलंघ (भवि) ।

दुल्लिखि [दुल्लिख] जिसकी प्राप्ति दुख से हो सके वह (कुमा, गलठ, प्रामू १३४) । २ पुं. एक वरिष्क पुत्र (सुपा ६१७) । देखो दुल्लिख ।

दुल्लि पुखी [दि] कच्छप, कछुमा (दे ५, ४२, उप ४ १३५) ।

दुल्लि न [वि] वल, कपडा (दे ५, ४१) ।

दुल्लिखि [दुल्लिख] जिसका उल्लंघन कठिन है से हो सके वह, भलघनीय (पत्रम १२, ३८, ४१, हेक ११, सुर २, ७८) ।

दुल्लिखि [दुल्लिख] दुपप, दुप्राप्य (उप ४ १३६, सुपा १६३, सण) ।

दुल्लिखि [दुल्लिख] १ दुविशेष, जो दुख से जाना जा सके, भलघ्य (सि ८, ५, स ६६, वजा १३६, या २८) । २ जो कठिन है से देखा जा सके (कपू) ।

दुल्लिखि [दि] मध्यमान, मयूक (दे ५, ४१) ।

दुल्लिखि न [दुल्लिख] दुप लग्न, दुप श्रुते (सुपा २१५) ।

दुल्लिखि देखो दुल्लिख, 'कि दुल्लिखि जखो दुल्लिखि' शृणगाही' (गा ६७५, निव ११) ।

दुल्लिखि अ [दुल्लिखि] १ दुप्राप्तवाला । २ दुप इच्छावाला, 'वितसद वेसाण गिहे विविहिलगाहेहि दुल्लिखिमी', 'वीनइ दुल्लिखि-वालीताए' (सुपा ४८५, ३२८) । ३ व्यसनी, भास्तवाला, 'धमा हा पुनुरितसिनिमया विदुमणेवि तुह जणछो ।

जी२ प्रभूमी सि मु वीणुदरणिअ-दुल्लिखिमी' (सुपा २१६) । ४ दुविदग्ग, दुशिक्षित (पाम) । ५ न. दुपरा. दुर्जन यस्तु की क्षमिताया (महावि ६) ।

दुल्लिखि अ [दि] दामि, नीपराजी (दे ५, ४६) ।

दुल्लिखि [दुल्लिख] १ दुपप, जिसकी प्राप्ति कठिन है से हो वह (रज्य ४६, कुमा, जो २०, प्रामू ११; ४६, ४७) । २ विरम

की ग्याह्वनी शताब्दी का युवराज का एक प्रसिद्ध राजा (गु १०) । 'राय पुं [राज] वही अर्थ (सार्थ ६६, कुप्र ४) । 'लंम वि [लंम] जिसकी प्राप्ति दुख से हो सके वह (पत्रम १५, ४७, सुर ४, २२६, वै ६८) ।

दुवई की [दुवई] क्रन्द-विशेष (स ७१) । दुवण न [दावन] उपताम, पीछन (पह १, २) ।

दुवण [वि] [दुवण] सराव हपवाला (मय, दुवण [अ ८] ।

दुवण पु [दुवण] एक राजा, दीपदी का पिता (राया १, १६, उप ६४८ टी) । 'सुया की [सुया] पाण्डव-पत्नी, दीपदी (उप ६४८ टी) ।

दुवणयया की [दुवणयया] राजा दुवण की लड़की, दीपदी, पाण्डवी की पत्नी (उप ६४८ टी) ।

दुवणययया की [दुवणययया] ऊपर देखो (उप ६४८ टी) ।

दुवणय न [दुवणय] सराव बचन, दुप वकि (पत्रम ३५, ११) ।

दुवणय न [दुवणय] दो का बोधक व्याकरण-प्रसिद्ध प्रत्यय, दो संख्या की वाचक विभक्ति (हे १, ६४, डा १, ४—पत्र १३८) ।

दुवार [देखो दुवार (हे २, ११२, प्रति दुवारय ४१, सुपा ४८७), 'एगदुवारय' (कव) । 'पाल पुं [पाल] दरबार, प्रवोहार (सुर १, १३४, २, १४८) । 'वाहा की [वाहा] द्वार भाग (भावा २, १, २) ।

दुवारि वि [द्वारि] १ द्वारवाला । २ पुं. दरबार, प्रवोहार, 'बहुपरिवारे पत्तो राय-दुवारो तहि वरयो' (सुपा २६४) ।

दुवारि अ [द्वारि] दरवाजावाला, 'अध-गुपदुवारि' (कव) ।

दुवारि अ पुं [दीनारि] दरबार, द्वारपाल (हे १, १६०, संशि ६, सुपा २६०) ।

दुवालम निव [द्वारान] बाह्य, १२ (कन, कुमा) । 'मुदिस्तअ वि [भीहस्ति] बाह्य छुहोँ का वरिमाणवाला (सम २२) । 'विह नि [विध] बाह्य प्रकार का (सम २१) । 'दा म [धा] बाह्य प्रकार (सुर

१४, ६१) । 'वित न [वित] बाह्य भावतला बन्दन, प्रणाम-विशेष (सम २१) ।

दुवालमग छोन [द्वारशाही] बाह्य जैन आगम-ग्रन्थ, 'भावाराण' आदि बाह्य भूत ग्रन्थ (सम १, हे १, २५४) । छी, 'मी (राज) । दुवालसंगि वि [द्वारशाही] बाह्य अग्र-ग्रन्थों का जानकार (कप) ।

दुवालसम वि [द्वारम] १ बाह्यवा । २ न. सगातार पाँच दिनों का उपवास (भावा, राया १, १, डा ६, सण) । छी, 'मी (राया १, ६) ।

दुविट्ट [दुविट्ट, द्विविष्टप] १ भरत-दुविट्ट [दुविट्ट] क्षेत्र में इस प्रवर्तपिणी काल में उत्पन्न द्वितीय वर्ष की राजा (सम १५८ टी, पत्रम ५, १५५) । २ भरत-क्षेत्र में उत्पन्न होनेवाला भाठवा भर्ष-पक्षी राजा, एक वामु-देव (सम १५४) ।

दुविभज वि [दुविभाज] जिसका विभाग करना कठिन हो वह—परमाणु (डा ५, १—पत्र २६६) ।

दुविभज देखो दुविभज (डा ५, १ टी) ।

दुविदग्ध वि [दुविदग्ध] दुश्शिक्षित, मान-काफी का झूठा प्रतिमान करनेवाला (उप ८३३ टी) ।

दुविदग्ध पु [दुविदग्ध] दुप विवर्क (भवि) ।

दुविलय पुं [दुविलय] एक अनाथ देश, 'दु (१ पु) विलय-सत्सङ्गसत्सत्—' (पत्र २७४) ।

दुविह वि [द्विनि] दो प्रकार का (हे १; ६४, नव १) ।

दुयोस खोन [द्वारिशलि] बाईन, २२ (नर २०; पह १) ।

दुवणय [देखो दुवणय (पत्रम ४१, ७७, दुवणय १, पह १, ४) ।

दुवणय न [दुवणय] १ दुप नियम । २ नि. दुप प्रव करवाला । ३ प्रव रहित, नियम-बजित (डा ४, ३, विपा १, १) ।

दुवणय न [दुवणय] दुप वकि, सराव बचन (पत्रम ३३, १०६; विहे ५२०, उप का २६०) ।

दुवणय देखो दुवणय (महा) ।

दुवणयण न [दुवणयण] सराव भादत, दुपे भादत (सुपा १६४, ४८६; मरि) ।

दुव्यसु वि [दुर्वसु] धर्म्य, सारां इय्य (भाषा) । सुणि पुं [सुनि] युक्ति के लिए प्रयोग्य सामु (भाषा) ।

दुव्यह वि [दुर्वह] दुर्घर, जिसका बहून बठिनाई से हो सके वह (स १११; गुर १, १४) ।

दुव्या देवो दुर्व्या (दुपा; गुर १, १३८) ।
दुव्याइ वि [दुर्वादिन] अप्रियवक्ता (स ६, २) ।

दुव्याय पुं [दुर्पाक] दुर्वचन, दुष्ट जक्ति 'यमणेणि दुप्पामो न ॥ कायलो परस्स पोम्परो' (पञ्च १०१, १४४) ।

दुव्याय पुं [दुर्वात] दुष्ट पवन (एभि ४) ।
दुव्यार वि [दुर्वार] दुःस ने चीने योग्य, भवार्य (स १२, ६३; उर ६८६ टी, गुपा १६७; ४७१; ममि ११६) ।

दुव्यारिअ देवो दुवारिअ = दीवारिण (प्राप्र) ।
दुव्यालो क्षी [द्वि] द्वा-यंक्ति (प्राप्र) ।
दुव्याम पुं [दुर्वासस्] एक भावि (ममि ११८) ।

दुव्यिअह वि [दुर्विशृत] परिपालन-पतिव्रत, नान, गंगा (ठा ५, २—पञ्च ११२) ।

दुव्यिअहट्ट वि [दुर्विदग्ध] ज्ञान का कूटा दुव्यिअहट्ट वि [दुर्विदग्ध] भविमान बल्लेगता, दुर्विदग्धित (प्राप्र, गा ६५) ।

दुव्यिजाणय वि [दुर्विज्ञेय] दुष्ट से जानने योग्य, जानने की भराय, 'अनुत्तपरिणाम-मन्दुविज्जणदुव्यिजाणय' (पण्ड १, १) ।

दुव्यिद्वप वि [दुर्वज्ज] दुःस से भर्जन बल्ले योग्य, बठिनाई से बर्जाने योग्य (गुर २३८) ।
दुव्यिगोअ वि [दुर्विनीत] भविनीय, उच्च (उज्ज १६, १३; गा) ।

दुव्यिण्णाय वि [दुर्विण्णाय] प्रणय रीति से जाना हुआ (भाषा) ।

दुव्यिभज देवो दुविभज (राज) ।

दुव्यिभय वि [दुर्विभाय] दुर्भय, दुःस ने निगरी भावोपना हो सके पर (ठा ५, १ टी—पञ्च २१९) ।

दुव्यिभाय वि [दुर्विभाय] ऊपर देवो (रिणे) ।

दुव्विलसिय न [दुर्विलसित] १ स्वच्छन्दी विनास । २ निष्ठुर नाम्यं, जयन्य काम, नीच काम (उप १३६ टी) ।

दुव्वियसह वि [दुर्वियसह] अत्यन्त दुःसह, भयसा (गा १५८; गुर ३, १४४; १४, २१०) ।

दुव्विसोग्ग वि [दुर्विसोध्य] शुद्ध करने को भराय (पंचा १७) ।

दुव्विह्दिअ न [दुर्विहित] दुष्ट अनुष्ठान (सज्ज १, १२) ।

दुव्विहियि वि [दुर्विहित] १ साराय रीति से किया हुआ, 'दुव्विहियि विलानिय विहियो' (गुर ५, १४, ११, १४३) । २ अनुविहित, भयस्वी (गात्र ३) ।

दुव्वोग्ग वि [दुर्वोह] दुर्बल, दुःस से होने योग्य (स १, ५; ४, ४४, १३, ६३; बजा १८) ।

दुव्वोग्ग वि [द्वि] दुर्पाय, दुःस से मारने योग्य (स ३, ५) ।

दुस्सकट न [दुस्संयट] विषय विपत्ति (ममि) ।

दुस्संवर देवो दुस्संवर (ममि) ।

दुस्संघ वि [दुस्संघ] दो बार सुनने से ही उसे अच्छी तरह याद कर लेने की शक्तिवाला (पर्व १२०७) ।

दुस्सन्नप वि [दुस्संसाध्य] दुर्बोध्य (ठा ३, ४—पञ्च १६५) ।

दुस्समदुस्समा देवो दुस्समदुस्समा (मम ६, ७) ।

दुस्सममुस्समा देवो दुस्सममुस्समा (ठा १) ।

दुस्समा देवो दुस्समा (मम ६, ७, ममि) ।

दुसह देवो दुस्सद (ह १, ११५; गुर १२, ११७, ११६) ।

दुसाद वि [दुस्साध] दुःनाय, बट्ट-नाय्य (पञ्च ८६, २२) ।

दुसिक्खिअ वि [दुस्सिक्खित] दुस्सिक्ख (पञ्च २५, २१) ।

दुसुग्ग देवो दुस्सुग्गि (ममि) ।

दुसुग्गय न [द्वि] कने का धाम्मण-विदेव (म ७९) ।

दुसस वर [द्विष्ट] देव बरता । वर, दस्समान (गुप १, १२, २२) ।

दुस्सउण न [दुस्सउण] भयउण (एभि २०) ।

दुस्संवर वि [दुस्संवर] जहाँ दुःस से जाया जा सके, दुर्गम (स २३१; सज्ज १७) ।

दुस्संचार वि [दुस्संचार] ऊपर देवो (गुर १, ६६) ।

दुस्संत पुं [दुप्पन्त] पदस्थीय एव राजा, शुन्तला का पति (पि ३२६) ।

दुस्संमोह वि [दुस्संमोह] दुर्बोध्य (भाषा) ।

दुस्सग्ग वि [दुस्साध्य] दुर्घर (दुपा ८; ५६६) ।

दुस्सग्गप देवो दुस्सन्नप (ह ४) ।

दुस्सत्त वि [दुस्सत्त] दुपामा, दुष्ट जीव (पञ्च ८७, २) ।

दुस्सन्नप देवो दुस्सन्नप (मम) ।

दुस्समदुस्समा क्षी [दुप्पमदुप्पमा] बाल-विशेष, सर्वान्न काय, भवतापिणी बाल का छवर्ग दीर कण्ठपिणी बाल का पहला भाग, इतने सब पदार्थों के गुणों की सर्वोत्कृष्ट हानि होती है, इसका परिमाण एतन्म हजार वर्षों का है (ठा १, ६; ६८) ।

दुस्समदुस्समा क्षी [दुप्पमसुप्पमा] बेया-नीच हजार मन एत कीडापीटि सागरीय का परिमाणमाना बाल-विशेष, भवतापिणी बाल का चतुर्थ दीर कण्ठपिणी काय का तीसरा भाग (पञ्च, ६४) ।

दुस्समा क्षी [दुप्पमा] १ दुष्ट बाल । २ एतन्म हजार वर्षों के परिमाणमाना बाल-विशेष, भवतापिणी-बाल का चौथवा दीर उल्लपिणी बाल का दूसरा भाग (उप ६४८; ६८) ।

दुस्समाग्ग देवो दुस्समा ।

दुस्सर पुं [दुस्सर] १ साराय भाराय, दुष्कृत बरट । २ सर्व-विशेष, निगदे उज्ज वी सर-बज्ज बट्ट होता है (मम १, २७; न १२) । 'नाम, 'नाम न 'नामग्ग' दुस्सर का बाराह-द्वय वर्ग (पंच-गम ७७) ।

दुस्सल वि [दुस्सल] दुस्सीय, मस्सीय (ह १) ।

दुस्सद वि [दुग्गद] जो दुःस में मरन हो सके, धमद (पञ्च ७३; ह १, ११, ११५; १५) ।

दुस्सहिय वि [दुस्सोद] दुःख से सहन किया हुआ (सूत्र १, ३, १)।

दुस्सासन पुं [दुस्सासन] दुर्गन्धन का एक छोटा भाई, कौरव-विशेष (चार १२; वेणी १०७)।

दुस्साह्व वि [दुस्सह्वत] दुःख में एकत्रित किया हुआ, 'दुस्साहर्ष' धण हिच्चा बहु संघिणिष्या रसं (उत्त ७, ८)।

दुस्साहिअ वि [दुस्साधिक] दुस्साध्य कार्य को करनेवाला (पि ८४)।

दुस्सिन्धु वि [दुस्सिन्धु] दुष्ट सिन्धुवाला, दुस्सिन्धु, दुस्सिन्धु (उप १४६ टी, कुप्र २८३)।

दुस्सिन्धुअ वि [दुस्सिन्धुअ] ऊपर देखो (मा ६०३)।

दुस्सिन्धुअ वि [दुस्सिन्धुअ] ऊपर देखो (मा ६०३)।

दुस्सिल्लि वि [दुस्सिल्लि] दुस्सिल्लि रत्न-वाला (वि १३६)।

दुस्सील वि [दुस्सील] दुष्ट स्वभाववाला। २ धर्मिचारो (पण्ड १, १; सुना ११०)। जी. 'ला' (पाम)।

दुस्सुमिण पुं [दुस्सुमिण] दुष्ट स्वप्न, साराव स्वप्न—मपना (पण्ड १, २)।

दुस्सुय न [दुस्सुय] १ दुष्ट राजा। २ वि. मृति-युद्ध (पण्ड १, २)।

दुस्सोज्जा देखो दुस्सिन्धु (उप)।

दुह सण [दुह] दूधना, दूध निशालना। दुहण्ड (महा)। कर्म. दुहण्ड, दुग्ध (हे ४, २४५), भवि. दुहण्ड, दुग्ध (हे ४, २४५)।

दुह सण [दुह] दूध करना, दूध करना, दूध करना (विचार ६४७)।

दुह देतो दोह = दोह (राज)।

दुह देतो दुग्ध = दुग्ध (हि २, ७२, प्राप् २८, २८; १६२)। 'अ' वि [द] दुग्ध देना, दुग्ध-जनक (मुप ४१५)। 'द' वि [त] दुग्ध में पीठ (विप्रा १, १; सुप ३३८)। 'टि' वि [ति] दुग्ध से पीठ (पीर)। 'ट' पुं [ति] मल-स्नान (सूत्र १, ५, १)। 'त' देतो 'द' (उप ५

७६; ७२८ टी)। 'कास पुं [स्पष्ट] दुग्ध-जनक स्पर्श (पामा १, १२)। 'भागि वि [भागि] दुःख में भागीदार (मुप ४३१)। 'मच्छु पुं [मच्छु] मच्छु, मच्छु मल (सुर ८, ५३)। 'विपार पुं [विपार] दुग्ध रूप कर्म-फल (विप्रा १, १)। 'सिन्धु, 'सेन्धु जी [शय्या] दुग्ध-जनक शय्या (अ ४, ३)। 'विह वि [विह] दुग्ध-जनक (पउम ८२, ६१; सुर ८, १६२, प्राप् १६६)।

दुह देतो दुग्ध (सप ८, ८)।

दुहअ वि [दु] वृणित, वृण-वृण किया हुआ (दे ५, ४५)।

दुहअ वि [दुह] लज्जित रीति से मारा हुआ (माप)।

दुहअ वि [दुह] दो से मारा हुआ (माप)।

दुहअ देखो दुग्धम (पण्ड)।

दुहअ म [दुहावस] दोनों तरफ से, उभय प्रवार से (पामा, अ ५, ३, कस, मय; पुष्प ४७०, आ १७)।

दुहअ वि [दुह] दो दुग्ध-वाला; किन्हेव विह (२ गो) दुह (रमा)।

दुहअ देखो दुग्धम (कर्म ३, ३)।

दुहअ वि [दुह] दुग्ध, दुग्ध (पामा १, ८)।

दुहअ देखो दुग्ध (पण्ड १, १—पण्ड १८)।

दुहअ पुं [दुह] प्रहरण-विशेष, 'मग्ध-पण्डोद्विगीमरवरकसिद्धवत्वरदुहण्यो-मुपेणी' (पण्ड १, ३—पण्ड ४५)।

दुहअ म [दोह] दोह, दोहना (पण्ड १, २)।

दुहअदुग्ध पुं [दुहदुग्ध] 'दुह-दुग्ध' भावान (पण्ड १०१)।

दुहअ देतो दुग्ध (पि ३४०; हे १, ११२ टी)। जी. वी (पि २३१)।

दुहअ [दुह] दो प्रवार को तरफ, उभय-मया (जी ८; प्राप् १४५)। 'दुह वि [दुह] जिसको दो तरफ दिने गये हो वह (पाम, मुप)।

दुहअर सक [दुह] दो तरफ करना। कर्म. दुहअर, दुहअर (पाम: हे १, १३)।

६७)। कवक, 'कज्जमाण, 'किज्जमाण (पि ५४७; ४३६)। संज्ञ. 'काउं (महा)।

दुहअ सक [दुह] घेरना, घेरना करना, घेरना करना। दुहअ (हे ४, १२४)।

दुहअ सक [दुह] दुग्ध को करना, दुग्ध को सुखाना (पामा)।

दुहअण वि [दुह] दुग्ध को करनेवाला (सण)।

दुहअविअ वि [दुह] घेरना (पाम; कुमा)।

दुहअविअ वि [दुह] दुग्ध को किया हुआ (मण्ड)।

दुह वि [दुह] दुग्ध, व्यपित। पीठित (उप ६८६ टी)। जी. 'पो (कुमा)।

दुह वि [दुह] पीठित, दुग्ध (हे २, १६४; कुमा; महा)।

दुह वि [दुह] जिसका दोहना किया गया हो वह (हे १, ७)। 'दुह वि [दोह] एक बार दोहने पर फिर भी दोहने योग्य, फिर-फिर दोहने योग्य (हे १, ७, ५, ४५)।

दुह वि [दुह] लक्ष्मी, पुत्री (मुप १७६; हे ३, ३५)। 'दुह पुं [दयित] जामाता (मुप ४४७)।

दुह पुं [दुह] लक्ष्मी, पुत्री (मुप १७६; हे ३, ३५)। 'दुह पुं [दयित] जामाता (मुप ४४७)।

दुह पुं [दुह] लक्ष्मी, पुत्री (मुप १७६; हे ३, ३५)। 'दुह पुं [दयित] जामाता (मुप ४४७)।

दुह वि [दुह] लक्ष्मी, पुत्री (मुप १७६; हे ३, ३५)। 'दुह पुं [दयित] जामाता (मुप ४४७)।

दुह वि [दुह] लक्ष्मी, पुत्री (मुप १७६; हे ३, ३५)। 'दुह पुं [दयित] जामाता (मुप ४४७)।

दुह वि [दुह] लक्ष्मी, पुत्री (मुप १७६; हे ३, ३५)। 'दुह पुं [दयित] जामाता (मुप ४४७)।

दुह वि [दुह] लक्ष्मी, पुत्री (मुप १७६; हे ३, ३५)। 'दुह पुं [दयित] जामाता (मुप ४४७)।

दुह वि [दुह] लक्ष्मी, पुत्री (मुप १७६; हे ३, ३५)। 'दुह पुं [दयित] जामाता (मुप ४४७)।

दुह वि [दुह] लक्ष्मी, पुत्री (मुप १७६; हे ३, ३५)। 'दुह पुं [दयित] जामाता (मुप ४४७)।

दूआ देखो दूआ (पद) ।

दूई देखो दूई । *पलासय न [पलाशक]
एक वलय (उवा) ।

दूइज सक [दु] गमन करना, विहरना,
जाना । दूइजद (भावा) । वहु-दूइजंत,
दूइजमाण (भोग, खाया १, १; मग,
भावा, महा) । हेरु, दूइजितए (वम) ।

दूइज न [दूतीव] दूती का कार्य, दूतीपन
(पदम ५१, ५५) ।

दूई की [दूनी] १ दूत के काम में नियुक्त की
हुई की, समाचार-हारिणी, कुटनी (हे ४,
३६७) । २ जैन साधुओं के लिये मित्रा का
एक शेष (ठा ३, ४—पम १६६) । *पिड
पुं [पिण्ड] समाचार पहुँचाने से मिली हुई
मित्रा (मावा २, १, ६) । देखो दूई* ।

दूण वि [दून] हैरात किया हुआ, 'हा विष-
वयंस दूही (?) एो) मए मुम' (स ७६३) ।

दूण पुं [द्वे] हस्ती, हाथी (हे ५, ५४; पद) ।
दूण (मप) देखो दुण्डण (विग) ।

दूणावेड वि [दे] १ घरायः । २ तडाग,
छानाव, छानाव (हे ५, ५६) ।

दूभ मर [दुःमय] दुःख, दुःखित होना,
'तगहा पुसोवि दुमिगज पहमिगज व दुगजो'
(आ १२) ।

दूभग देखो दुवभग (छाया १, १६—पम
१६६) ।

दूभग्य न [द्वीभांग्य] डुट भाग्य, सराव
नतीष (उप ५ ११) ।

दूम सर [दु, दामय] परिहाय करना,
गंवा करना । दूमद, दूमद (मुपा ८; प्रागः
हे ४, २१) । वम दूमिगजद (मवि) ।
वट, दूमन (स १०, ६१) । वयक, दूमि-
जज (मुपा २२६) ।

दूम देखो दुम = धनतप (हे ४, २४) ।

दूमर [वि [दायक] उपताप-जनक, पीडा-
दूमाग] जनक (पद १, २, राग) ।

दूमाग वि [दायक] उपताप करनेवाला (सूय
१, २, २, २७) ।

दूमण न [दयन, दानन] परिहाय, पीडा
(पद १, १) ।

दूमण न [धयलन] सहेद करना (वय ४) ।

दूमग देखो दुम्मण = दुर्मनस् (सूय १,
२, २) ।

दूमणाइज वि [दुर्मनायित] जो उदास हुआ
हो, उद्विग्न-मनस्क (नाट—भागती ६६) ।

दूमिअ [दून, दाचिन] संतापित, पीडित
(मुपा १०; १३३; २३०) ।

दूमिअ वि [पयलिज] सहेद किया हुआ (हि
४, २४, कण) ।

दूयारा न [दे] बला विशेष (स ६०३) ।

दूर न [दूर] १ अनिष्ट, घमभीर, 'कवेव
जस्त किती गया दूर' (कुमा) । २ प्रतिशय,
भयलन, 'दूरमहरं डसते' (कुमा) । ३ वि,
दूरस्थित, घमभीरवर्ती (सूय १, २, २) ।

४ व्यवहित, भयलित (गडड) । *ग वि
[ग] दूरवर्ती, घमभीरवर्त (उप ६४८ टी,
कुमा) । *गइ, *गइअ वि [गलिक] १
दूर जानेवाला । २ चोर्म भावि देवलो में
उपलब्ध होनेवाला (ठा ८) । *तराग वि

[तर] भयलन दूर (पण १७) । *थ वि
[थ] दूरस्थित, दूरवर्ती (कुमा) । *भनिय
पुं [भनय] दीपं जाल में बुझि को प्राप्त
करने की योग्यतावाला जीव (उप ७२८
टी) । *य देखो *ग (सूय १, ५, २) ।
*पति वि [वर्तिन] दूर में रहनेवाला
(सि ६४) । *लदय वि [लदयिक] भुवि-
नामी (भावा) । *लदय पुं [लदय] १ दूर-
स्थित भाष्य । २ मोक्ष । ३ बुद्धि का मार्ग
(भावा) ।

दूरगइअ देखो दूर-गइअ (भोग) ।

दूरतरिअ वि [दूरतरित] भयलन व्यवहित
(स ६५८) ।

दूरचर वि [दूरचर] दूर रहनेवाला (घमो
१०) ।

दूराय सक [दूराय] दूरस्थित की तरह
मातृप होना, दूरवर्ती मानून पढ़ना । वट,
दूरायमाण (गडड) ।

दूरीइय वि [दूरीइय] दूर किया हुआ
(आ २८) ।

दूरीइअ वि [दूरीभूत] जो दूर हुआ हो
(मुपा १५८) ।

दूरद वि [दूरव] दूरस्थित, दूरवर्ती
(भाय ४) ।

दूरद देखो दुहद (सवि १७) ।

दूस सक [दुप] दूषित होना, विकृत होना ।
दूमद (ह ४, २३५; वसि ३६) ।

दूस सक [दूपय] दोषित करना, दूषण—
दोष नगाना । दूसइ (मवि, दूमद (वह ४) ।

दूस ग [दूपय] १ वज्र, कषा (सम १५१;
वय) । २ तंत्र, पट-कुटी (हे ५, २८) ।
*गणि पुं [गणिन्] एक जैन मार्गार्थ
(सुदि) । *मिन्त पुं [मिन्त] मौर्यवंश के
मारा होने पर पाटलिपुत्र में अभिषिक्त एक
राजा (राज) । *हर न [गृह] तंत्र, पट-
कुटी (स २६७) ।

दूसअ वि [दूपक] दोष प्रकट करनेवाला
(वज्रा ६८) ।

दूसग वि [दूपक] दूषित करनेवाला (मुपा
२७५; स १२४) ।

दूसग वि [दूपक] दूषण निकासनेवाला,
दोष देखनेवाला (घमवि ८५) ।

दूसण न [दूपग] दूषित करना (मगक ७३) ।

दूसण न [दूपण] १ दोष, अपराध । २
कर्त्तक, दाग (तंडु) । ३ पुं, रावण की मौसी
का लब्ध (पदम १६, २५) । ४ वि, दूषित
करनेवाला (स ५२८) ।

दूसम वि [दूपम] १ खराब, डुट । २ पुं,
जान विशेष, पाँचवाँ मारा, 'दूसमे बाने'
(सुदि १५६) । *दूमना देखो दुस्सम-
दुस्समा (सम ३६; ठा १; ६) । *सुममा
देखो दुस्समसुममा (ठा २, ३; सम ६४) ।

दूसमा देखो दुस्समा (सम ३६; उप ८३१
टी, स १४) ।

दूसर देखो दुस्सर (राज) ।

दूसल वि [द्वे] दुर्मन, घमना (हे ५, ४१,
पद) ।

दूमद देखो दुम्मद (हि १, ११, ११२) ।

दूसदणीअ वि [दुस्सदनीय] दुग्ध, घनम
(सि ५७१) ।

दूससाण देखो दुस्सासण (हि १, ४१) ।

दूमाइअ वि [दुस्साधिअ] दुगाय जाति
में उल्लन, घमनाय जाति का (भाट १०) ।

दूसि पुं [दूपिन्] नरुपका का एक मंत्र
'देनुवि वेयुज गमर दूमि' (६२ ४) ।

दूसिअ वि [द्वित] १ द्वयण युक्त, बलङ्क-
युक्त (महा: भवि) । २ पुं एक प्रकार का
नपुंसक (ग्रह ४) ।
दूसिआ छो [द्वीपका] प्राँस का मेल (कुमा) ।
दुसुमिण देखो दुस्सुमिण (कुमा) ।
दूहअ वि [दु रक्त] दु ल-जन्म, 'भगईएँ'
दूहयो चंदो (वज्रा ६८) ।
दूहट्ट वि [दे] लज्जा से उद्दिग्ध (दे ५,
५८) ।
दूहय देखो दोषअ (सिदि ६६१) ।
दूहल वि [दे] दुर्भण, मन्दभाग्य (दे ५, ५१) ।
दूहय देखो दुक्कमग (हे १, ११५, १६२;
मुमा, मुपा ५६७, भवि) ।
दूहय सक [दु रय] दुमाना, दु ली करना ।
दूहवेइ (सिदि १६७) ।
दूहयिअ वि [दु, रित] दु ली किया हुआ
दूमाना हुआ, 'कि वेणवि दूहयिया' (कुम्मा
१०) ।
दूहिअ वि [दु रित] दु ल-युक्त (हे १, १३,
सति ७७) ।
दे म. इन प्रयोगों का सूचक शब्दार्थ । १ संकुल-
नरण । २ सली की भ्रामण्य (हे २,
१६२) ।
दे म [दे] पाल-पूरक शब्दार्थ (ब्राह्म ८१) ।
देअ देखो देय (मुद्रा १६१; चंद) ।
देअर देखो दिअर (कुमा, वाप २२४, महा) ।
देअराणी छो [देयरली] देयरली, पति के
छोटे भाई की गद्द (दे १, ५१) ।
देइ देखो देयी (गाठ—उत्त १८) ।
देउल न [देयुल] देव मन्दिर (हे १,
७७१, कुमा) । 'गाह पुं [नाथ] मन्दिर
का स्वामी (पद) । 'वाहय पुन [पाटक]
मेवाइ बा एक गाँव, 'देउसवाइयपरी मुट्टण-
लील प भ्रमहर्षा' (वज्रा ११६) ।
देउलिअ वि [देयुलिअ] देव स्थान वा
परिपालन (भोप ५० भा) ।
देउलिआ छो [देयुलिआ] छोटा देव-स्थान
(वा ५ ३६६, ३७० टी) ।
देउ देतो दा = वा ।
देगम रा [हर] देता, भक्तोत्पन्न
करना । देगम (हे ५, १८१) । यः

देकतंत (प्रति १४१) । यः, देनिरअ
(प्रति १६६) ।
देकपालिअ वि [दरित] दिक्कामा हुआ,
बतलाया हुआ (सुर १, १५२) ।
देख (अप) देखो देकर । देख (भवि) ।
देइ देखो दिइ = दृष्ट (प्रति ४०) ।
देण देखो दण्ण (आया १, १—पत्र ३३) ।
देपाल पुं [देवपाल] एक मनी का नाम
(ती २) ।
देप देखो दिप = दीप । वः—देप्पमाण
(कुप्र ३४४) ।
देय } देखो दा = वा ।
देयमाण }
देर देखो दार = द्वार (हे १, ७६, २, १७२;
दे ६, ११०) ।
देय उम [दिथ] १ जीतने की इच्छा
करना । २ पण करना । ३ व्यवहार करना ।
४ चाहना । ५ भ्रान्त करना । ६ शक्य
शब्द करना । ७ दिक्का करना । देवइ
(सति ३३) ।
देव पुंन [देय] १ भगव, गुरु, देवता,
'देवालि, देवा' (हे १, ३४, जी १६, प्राह
८६) । २ मेघ । ३ आनारा । ४ राजा,
नरपति, 'सहेल मेहं न मह न मारणं न देव
देवति गिरं बण्णज' (वम ७, ५२, भास
६६) । ५ पुं. परमेस्वर, देवाधिदेव (अप
१२, ६, संस ५, गुपा १३) । ६ साधु,
मुनि, श्रवि (अप १२, ६) । ७ द्वीप-विशेष ।
= समुद्र विशेष (पयल १३) । ८ स्वामी,
नायक (प्राह ५) । ९ पुं, गुरु, पुननीय
(पंचा १) । 'उत्त वि [उत्त] देव से
कीया हुआ । २ देव-भूत, 'देवउते भवं सोद'
(सुर १, १, ३) । 'उत्त वि [गुम] १
देव से रचित (सुर १, १, ३) । २ ऐश्वर्य
लेन से एक भावी जिनदेव (स १५४) । 'उत्त
पुं [पुय] देव-युक्त (सुर १, १, ३) ।
'उल न [युल] देव-गुल, देव-मन्दिर (हे
१, २०१, गुपा २०१) । 'उलिआ छो
[युलिआ] देहरी, छोटा देव-मन्दिर (कुप्र
१४४) । 'वन्ना छो [कन्ना] देव-मुनी
(आया १, ८) । 'पदक्ययपुं [पदक्यय]
देवताओं का भोताएत (जी ३) । 'विजियस

पु [किलियप] चाण्डाल-स्थानीय देव-जाति
(अ ४, ४) । 'किन्विसिय पुं [किलि-
यिअ] एक अग्रम देव-जाति (अप ६, ३३) ।
'किन्विसीया छो [किन्विपीया] देखो
देवकिन्विसीया (ग्रह १) । 'हुरा छो
[हुरा] दोन विशेष, वर्ण-विशेष (इक) ।
'कुरु पुं [कुरु] वही अर्थ (पयह १, ४,
सम ७०, इक) । 'कुल देखो 'उल (पि
१६८, कम्प) । 'कुलिय पुं [कुलिअ] गुजारी
(आयम) । 'कुलिआ देखो 'उलिआ (कुप्र
१४४) । 'गइ छो [गति] देवयोनि (अ ५,
३) । 'गणिया छो [गणिआ] देव-वैश्य,
मन्तरा (आया १, १६) । 'गिह न [गह]
देव-मन्दिर (मुपा, १३, ३४८) । 'गुत्त पु
[गुम] १ एक परिजानन का नाम (भोप) ।
२ एक भावी जिनदेव (तिथ) । 'चद पु
[चन्द्र] एक जैन उपासक का नाम (मुपा
६३२) । गुप्रसिद्ध थी हिनचन्द्राचार्य के गुरु
का नाम (कुप्र १६) । 'बय वि [वैरुअ]
१ देव की पूजा करनेवाला । २ पुं. मन्दिर
का गुजारी (कुप्र ४५१, ती १६) । 'चलंदग
न [चलन्दग] जिनदेव का प्रास्तन (जीव
३; राव) । 'जस पुं [यरास] एक जैन
मुनि (पंत ३, मुपा ३४२) । 'जाण न
[यान] देव का वाहन (पंचा २) । 'जिण
पुं [जित्त] एक भावी जिनदेव का नाम
(पय ७) । 'हिइ देखो देयिहिइ (अ ३,
३; राव) । 'याअअ पुं [नायक] नीचे
देखो (अनु ३७) । 'गाह पुं [नाथ] १
इन्द्र । २ परमेस्वर, परमात्मा (अनु ६७) ।
'तम न [तमस्] एक प्रकार का कण-
नार (अ ४, २) । 'थुइ, 'थुइ छो
[तुवि] देव का गुणानुवार (आय) । 'दत्त
पुं [दत्त] धर्मिचारक नाम (उत्त ६,
पिद, पि २६६) । 'दत्ता छो [दत्ता]
धर्मिचारक नाम (पिपा १, १, ठा १०) ।
'दव्व न [द्वय] देव-नीचरी ग्रन्थ (वम
१, ५६) । 'दर न [द्वार] देव-गृह विशेष
का पूर्वीय द्वार, विद्यालय का एक द्वार
(अ ४, २) । 'दरु पुं [दरु] दार विशेष,
देगार का पेड़ (पय ५३, ७६) । 'दाटी
छो [दाटी] वनलपि-विशेष, सोईयो

(पण १७—पत्र ५३०) । 'दिण्ण', 'दिञ्ज' पुं ['दत्त'] व्यति-वाचक नाम, एव सायंवाह-पुन (राज, छाया १, २—पत्र ८३) । 'दीव' पुं ['दीप'] दीन विशेष (जीव ३) । 'दूस' न ['दृष्ट्य'] देवता का वस्त्र, दिव्य वस्त्र (जीव ३) । 'देव पुं' ['देव'] १ परमेश्वर, परमात्मा, (गुप्त ५००) । २ इन्द्र, देवों का स्वामी (माइ ५) । 'नट्टिया की' ['नट्टिका'] माचनेवाली देवी, देव-नट्टी (अभि ३१) । 'नयती की' ['नगरी'] भ्रमरावली, स्वयं-युती (पत्र ३२, १५) । 'पडिस्सोभ पुं' ['प्रति-श्रोभ'] समस्त्य, भ्रम्यकार (भग ६, ५) । 'पडिस्सोभ पुं' ['परिश्रोभ'] कृष्ण-राजि (भग ६, ५) । 'पव्यय पुं' ['वर्षत'] पवेत-विशेष (छा २, ३—पत्र ८०) । 'पपमाय पुं' ['प्रमात्र'] राजा कुमापाल के पितामह का नाम (कुप्र ५) । 'फलिह पुं' ['परिघ'] समस्त्य, भ्रम्यकार (भग ६, ५) । 'भह पुं' ['भट'] १ देव-दीप का प्रविष्टा देव (जीव ३) । २ एक प्रविष्ट जित्त्यामी (सामे ८१) । 'भूमि की' ['भूमि'] १ स्वयं, देवलोच । २ मरुत, मुहुत, 'मह भूम्या य' छिन्नी विरहेयो देवमुमिलपुत्तो (गुप्त ५५२) । 'महाभह पुं' ['महाभट्र'] देव-दीप का प्रविष्टा देव (जीव ३) । 'महानर पुं' ['महानर'] देव नामर मरुत का प्रविष्टा देव विशेष (जीव ३, ६४) । 'रह पुं' ['रति'] एक राजा (मा १२२) । 'रमण पुं' ['रमण'] राजमन्त्रीय एव राज-मुत्तार (पत्र ५, १६६) । 'रण्य न' ['रण्य'] सम नाम, भ्रम्यकार (छा ५, २) । 'रमण न' ['रमण'] १ तीक्ष्णानी नगरी का एक उद्यान (विपा १, ४) । २ राण्य का एक उद्यान (उत्तम ४६, १५) । 'राप पुं' ['राज'] इन्द्र (पत्र २, ३८; ४६, ३६) । 'रसि पुं' ['श्रुति'] नारद मुनि (पत्र ११, ६८; ७८, १०) । 'लेअ', 'लेग' पुं ['लेक'] १ स्वयं (मा, छाया १, ४ गुप्त ६१५ पा १६) । २ देव-जाति बन्दिता एं जते देवता परमात्मा ? गोपना चर्चामा देवोप परमात्मा, तं जहा—महात्मनी, वाएनय, जोरिम्या, केमालिना (मा ५, ६) ।

'लोगमण न' ['लोकामन'] स्वयं में उत्पत्ति, पायोवगमण देवोयोगमण देवो मुमु-नपचाभाषा पुणो मोहिलाभा (सम १४२) । 'वर पुं' ['वर'] देव-नामक मरुत का प्रविष्टा-यक एक देव (जीव ३) । 'यहू की' ['यहू'] देवगना, देवी (अभि ३०) । 'सणत्तो की' ['सन्ति'] १ देव-हृत् प्रविष्टो २ देवता के प्रविष्टो से ती हुई दीक्षा (छा १०—पत्र ४७३) । 'संणिपाय पुं' ['सन्निपाय'] १ देव-समागम (छा १, १) । २ देव-समूह । ३ देवों की मीठ (छा) । 'सम्म पुं' ['साम्य'] १ इस नाम का एक ब्राह्मण (महा) । २ ऐश्वर्य क्षेत्र में उत्पन्न एक जिनदेव (सम १५३) । 'साल न' ['शाल'] एक नगर का नाम (उप ७६८ टी) । 'सुंदरी की' ['सुन्दरी'] देवगता, देवी (अभि २८) । 'सुय देवो' ['स्युय (पत्र ७) । 'सेण पुं' ['सेन'] १ शब्दा नगर का एक राजा, जिसका दूसरा नाम महापय का (छा ६—पत्र ४३६) । २ ऐश्वर्य क्षेत्र में एक जिनदेव (पत्र ७) । ३ मत्त-क्षेत्र में एक मावो जिनदेव के पूर्वज का नाम (सी १६) । ४ भगवान् नेमिनाय का एक शिष्य, एक भगवद् मुनि (अभ) । 'स्स न' ['स्व'] देव-द्रव्य, जिन-मन्दिर-संकेतों घन (वषा ५) । 'स्युय पुं' ['सुत'] मत्त-क्षेत्र में छहों मावो जिनदेव (सम १५३) । 'हर न' ['गृह'] देव-मन्दिर (उप ४१६) । 'इदेव पुं' ['तिदेव'] महान् देव, जिन भगवान् (भग १२, ६) । 'णद पुं' ['नन्द'] ऐश्वर्य क्षेत्र में भगवान् वसिष्ठी नाम में उत्पन्न होनेवाले बीजोक्त के जिनदेव (सम १५४) । 'णंदा की' ['नन्दा'] १ भगवान् मराठोर की प्रथम माता (छाया २, १५, १) । २ पत्र की पन्डुनी रति का नाम (भय) । 'णुपिय पुं' ['णुमिय'] नट, महापुन, महापुन, वरत-नट्टी (श्रीन विपा १, १० महा) । 'ण्यरिय पुं' ['ण्यार्य'] एक सुप्रविष्ट जेव भाष्य (उप ८) । 'णस देवो' 'रण्य (मा ६, ५) । २ देवों का मीठा-स्थान (जो ६) । 'णद पुं' ['णद'] स्वयं (उप २६४ टी) । 'हिदेव पुं' ['तिदेव'] परदेव, परमात्मा, जिनदेव (सम ४१; सं

५) । 'हिद्व पुं' ['धिपति'] इन्द्र, देव-नामक (भूष १, ६) । 'देव पुं' ['देव'] एक देव-विमान (देवद १३३) । 'कुरु की' ['कुरु'] भगवान् मुनि-सुवत्त स्वामी की दीक्षा-शिषिका का नाम (विचार १२६) । 'चदय पुं' ['चन्दक'] भगवान् धूमन्वाला दिव्य भासन-स्थान (भाया २, १५, ५) । 'तमिस्स पुं' ['तमिस्स'] भ्रम्यकार-राशि, समस्त्य (भग ६, ५—पत्र २६८) । 'दिशा की' ['दिता'] भगवान् वायुपुत्र की दीक्षा-शिषिका (विचार १२६) । 'पलिकोभ पुं' ['परिश्रोभ'] इच्छा-राजि, इच्छा-पर्वण्डुनी की रक्षा (भग ६, ५—पत्र २७०) । 'रमण पुं' ['रमण'] मन्वीधर क्षेत्र के मध्य में पूर्व-दिशा स्थित एक भवनगिरि (पत्र २६६ टी) । 'वूह पुं' ['व्यूह'] समस्त्य (भग ६, ५—पत्र २६८) । 'देव देवो डडन (उप १५६ टी; महा ह १, १५३ टी) । 'नु वि' ['ह'] कीलिय-राज का जलनगर (मुपा २०१) । 'पर वि' ['पर'] भाग्य पर ही बड़ा स्वनेता (वह) । 'देव्य की' ['देवकी'] कीलिय की माता, मायावी उज्जयिणी बाल में होनेवाले एक तीक्ष्ण देव का पूर्व जन्म (पत्र २०, १८५, सम १५२, १५४) । 'देवो देवरी । 'देउउक न' ['दे'] पत्र पुन, पत्र हृदा पत्र (दे ५, ४६) । 'दे देवो दा = दा । 'देयंग न' ['दे-विद्यान्त'] देवपुत्र ब्रह्म (उप ७३८) । 'देयंग न' ['दे-विद्यान्त'] स्वयं, 'दिन' गहिले व देयंग रमद' (समत १६०) । 'देवंगर देवो देवंगर (भग ६, ५—पत्र २६८) । 'देवंगर पुं' ['देवाग्रार'] जिनर निवत्त, भ्रम्यकार का मरुत (छा ४, २) । 'देवचित्रिय पुं' ['देवचित्रिय'] एक भ्रम्य देव जाति (छा ४, ४—पत्र २७४) । 'देवचित्रियसिया की' ['देवचित्रियसिया'] भगवान्-विशेष, जो भ्रम्य देव-जाति में उज्जयि का बाण्ट है (छा ४-४) ।

देवनी देखो देवई । °णदण पु [°नन्दन]
श्रीकृष्ण (वेणी १८२) ।

देवय वि [देवय] देव-सम्बन्धी (पत्र १२१) ।

देवय न [देवत] देव, देवता (सुपा १५७) ।

देवय देखो देव = देव (महा, एणा १, १८) ।

देवया बी [देवता] १ देव, भगर (अभि
११७, अणु) । २ परमेश्वर, परमात्मा (पंचा
१) ।

देवर देखो दिअर (हे १, १८६ सुपा ४८५) ।

देवराणी देखो देअराणी (दे १, ५१) ।

देवसिय वि [देवसिअ] दिवस-सम्बन्धी (धोष
४२६, ६३६ सुपा ४१६) ।

देवसिआ बी [देवसिस] एक पतिव्रता बी,
जिमका सुतरा नाम देवसेना था (सुफ ६७) ।

देविद धुं [देवेन्द्र] १ देवी का स्वामी, इन्द्र
(हे ३, १६२, एणा, १, ८, प्राप् १०७) ।

२ एक प्रसिद्ध जैनार्थार्थी और ग्रन्थकार (भाव
२१) । ३ सुरि पु [सुरि] एक प्रसिद्ध जैन
धर्म और ग्रन्थकार (कम्म ३, २४) ।

देविद्वय पुं [देवेन्द्रक] देवविमान-विशेष
(देवद १२८) ।

देविडिड बी [देविडि] १ देव का पैरन ।
२ पु एक मुनिसिद्ध जैन धर्मार्थ और ग्रन्थकार
(कम्म) ।

देविय वि [देविक] देव-संबन्धी (सुर ५,
२३६) ।

देविल पु [देविल] एक प्राचीन ऋषि (सुम
१, ३, ४, ३) ।

देवी बी [देवी] १ देव बी (पचा २) । २
रानी राज-कली (विपा १, १, ५) । ३ दुर्गा,
पार्वती (कम्म) । ४ सातवें चक्रवर्ती और
महादेव जिन देव की माता (सम १५१,
१५२) । ५ दशवें चक्रवर्ती की धर्म महिणी
(सम १५२) । ६ एक निचापर-कन्या (पजम
६, ५) ।

देवीधय वि [देवीधुत] देवी से बनाया हुआ,
अणिमिअण्णो समीचीनी बीए देवीधो
तोषी (गा ५६२) ।

देवुफलिआ बी [देवोत्तलिआ] देवी की
ठठ, देवी की भोड़ (ठा ५, ३) ।

देवेसर पुं [देवेसर] इन्द्र, देवी का राजा
(हमा) ।

देवोद पुं [देवोद] समुद्र विशेष (जीव ३,
इक) ।

देवोवयाय पुं [देवोवपाव] भरतदेव मे
आगामी उत्तराण्णी काल मे होनेवाले तेईसवें
जिन-देव (सम १५४) ।

देव्य देखो दिअ = दिअ (उप ६८६ टी) ।

देव्य देखो दइअ (गा १३२, महा, सुर ११,
४ अभि ११७) 'एसो य देखो खास
अण्णहणीओ विणएण' (स १२८) । 'ज्ज,
°ण्ण, °ण्णु वि [°ज्ज] जोतिवी, ज्जोनिप-
शाळ को जाननेवाला (पद्, कम्म) ।

देव्यजाणुअ } देखो देव्य-ज्ज (प्राक् १८) ।
देव्यणुअ }

देस पुं [देश] एक ही हाथ परिमित जमीन,
'हलसय लउ देता' (पिंड ३४४) । 'देस
पुं [देश] ही हाथ से कम जमीन (पिंड
३४४) । २ गा पु [राग] देश विशेष
(माचा २, ५, १, ७) ।

देस सक [देशाय] १ कहना उपदेश देना ।
२ बल्लाना । वक्क. देसयत (सुपा ४८५,
सुर १५, २४८) । संक्क. देसिआ (हे १,
८८) ।

देस पुं [देश] १ धंदा, भाग (ठा २, २,
कम्म) । २ देश, जनपद (ठा ५, ३, कम्म,
प्राप् ४२) । ३ घनसर (विसे २०६३) ।

४ स्थान, जगह (ठा ३, ३) । 'इहा बी
[कया] जनपद-वासी (ठा ४, २) । 'काल
देखो 'याल (विसे २०६३) । 'जइ पु
[यति] धानक, उपासन, जैन ब्रह्म
(कम्म २ टी घाउ) । '°ण्णु वि [°ज्ज]
देश की स्थिति को जाननेवाला (उप १७६
टी) । 'भासा बी [भापा] देश की बोली
(सह ६) । 'भूसण पुं [भूपण] एक
मेवसज्जानी मूर्ति (पजम ३६, १२२) ।
'याल पुं [काल] प्रलय, घनसर, योग्य
समय (पजम ११, ६३) । 'राय वि
[राज] देश का राजा (सुपा ३५२) ।

'वगासिय देखो 'वगासिय (सुपा ५६६) ।
'विट् बी [विरि] धानक, धर्म, जैन
गुरुधर का वन, मण्डल, हिवा धादि का
आशिक ह्यास (पचा १०) । 'विरय वि
[विरत] धानक, उपासन । २ न पवित्र

गुण-स्थानक (पत्र २२) । 'विराहय वि
[विराधक] वत आदि मे आशिक हूण
समानेवाला (सम ८, ६) । 'विराहि वि
[विराधिन] वही धर्म (एणा १, ११—
पत्र १७१) । 'वगास न [वगास]
आनक का एक वत (सुपा ५६२) । 'वगा-
सिय न [वगासिक] वही धर्म (भीप,
सुपा ५६६) । 'हिय पुं [धिप] राजा
(पजम ६६, ३३) । 'हियह पुं [धि-
पति] राजा (सह ४) ।

देस देखो देस = द्वेप (एण ३६) ।

देसंतरिअ वि [देशान्तरिक] भिन्न देश का
विदेशी (उप १०३१ टी, कुप्र ४१३) ।

देसग देखो देसय (स २६) ।

देसण न [देशान] कथन, उपदेश, प्रपण
(हे १) । २ वि. उपदेशक, प्रवचक । बी
°णी (स ७) ।

देसणा बी [देशाना] उपदेश, प्रवचण
(राज) ।

देसय वि [देशक] १ उपदेशक, प्रवचक
(सम १) । २ दिललादेवाला, वतलादेवाला
(सुपा १८६) ।

देसराग वि [देशराग] 'देशराग' देश में
बना हुआ, 'देसरागाणि वा' (माचा २, ५,
१, ७) ।

देसि वि [देसिअ] द्वेप करनेवाला (एण
३६) ।

देसि } वि [देसिअ] १ मरी, आशिक,
देसिअ } भागवाला (विसे २२५७) । २
विललनेवाला । ३ उपदेशक (विसे १४२५,
भास २८) ।

देसिअ वि [देशय, देशिक] देश में उपसन,
देश संवर्णी (उप ७६८ टी, मण्ड ६) । 'सह
पुं [राउट] देवीभापा का शब्द (वजा ६) ।

देसिअ वि [देशिन] १ कवि, उपदिष्ट ।
२ उपदेशक (१६ २२, प्राप् ५२, १३३,
मवि) ।

देसिअ वि [देशिक] श्रुतेश्वर-व्यापी,
विश्वेश्वर (माचा २, १, ३, ७) ।

देसिअ वि [देशिक] १ पवित्र, मुक्ताकर
(पजम २४, १६, उप पु ११५) । २ उप-
देश, उप (विसे १४२५) । ३ प्रोपिष्ट, प्रवात

में गया हुमा (सुर १०, १६२) । "सहा जी
[सभा] धर्मशाला (उप ५ ११५) ।
देसिय देखो देसियअ, 'पदिकमे देसिय सव्व'
(पडि; आ ६) ।
देसियअ वि [देसितयन्] बितने उपदेश
दिया हो वह (सुम १, ६, २४) ।
देसिल्लग देखो देसिय = देख (वृह ३) ।
देसी जी [देशी] भाषाविशेष, अत्यन्त प्राचीन
प्राकृत भाषा का एक भेद (दे १, ४) ।
"भासा जी [भाषा] वही अर्थ (शाया १,
४; भीष) ।
देसुण वि [देशोन] कुछ कम, अंग की बनी-
वाला (सम २, १०५; दे २८) ।
देस्स वि [दृश्य] १ देखने योग्य । २ देखने
की शक्त (स १६६) ।
देह देखो देवस्य । देहई, देहए (उत्त १६; ६;
वि ६६) । वट, देहमाण (मग ६, ३३) ।
देह पुंन [देह] १ शरीर, काम (श्री २८; कुप
१५३; प्रासू ६५) । २ पुं. पिराच-विशेष
(रुक्; पणए १) । "इय न [रत्न] मैयुन
(वज्रा १०८) ।
देहयलिया जी [देहयलिका] भिक्षा-भूति,
भोज की भाजीविका (शाया १, १६—पन
१६६) ।
देहणी जी [दे] पंक, बर्देम, कादा, कांरो
(दे ५, ५८) ।
देहरय (मग) न [देवगृहक] देव-मन्दिर
(वज्रा १०८) ।
देहली जी [देहली] चीलड, डार के मोचे की
लकड़ी (गा ५२५; दे १, ६५; कुप १८३) ।
देहि पुं [देहिन] भारमा, जीव (स १६५) ।
देहुए (मग) ॥ [देवकुल] देव-स्थान, मन्दिर
(भवि) ।
दो म [द्विधा] दो प्रकार से, दो तरह (मुपा
२३३; ३१२) ।
दो वि. य. [द्वि] दो, समय, गुण (हि १,
६४) ।
दो पुं [दोस्] हाथ, बाहु (विक ११३;
रमा, मज्जु) ।
दोअई जी [द्विपदी] छन्द-विशेष (पिंग) ।
दोआल पुं [दो] गुण, देव (दे ५, ४६) ।
६१

दोइ देखो दो = द्विधा (वृह ३) ।
दोखुर [दे] देखो दोखुर (पट) ।
दोकिरिय वि [द्विक्रिय] एक ही समय में दो
क्रियाओं के अनुगत को माननेवाला (छा ७) ।
दोकर देखो दुकर (भवि) ।
दोक्कर पुं [द्वि-अक्षर] पण्ड, नपुंसक
(वृह ४) ।
दोरंड देखो दुलंड (भवि) ।
दोरंडअ वि [द्विसंघट] जिसके दो टुकड़े
किए गए हो वह (भवि) ।
दोगांळि वि [जुगुप्तिन्] छुणा करनेवाला
(पि ७५) ।
दोगाष न [दीर्घांश] १ दुर्गांत, दुर्दशा (बंचव
४) । २ खादिय, निर्गन्ता (मुपा २३०) ।
दोगुंळि देखो दोगांळि (पि २१५) ।
दोगुंद्य पुंन [दोगुन्दक] एक देव-विधान
(देवेन्द्र १५५) ।
दोगुंद्य पुं [दौगुन्दक] उत्तम-आतीय देव-
विशेष (मुपा ३३) ।
दोग्ग न [दे] गुण, गुणल (दे ५, ४६; पट) ।
दोग्गइ देखो दुग्गइ (सुर ८, १११) । "कर
वि [कर] दुर्गति जनक (पउम ७३, १०) ।
दोग्गब देखो दोग्ग (गा ७६) ।
दोग्गट्ट १ पुं [दे] हाथी, हस्ती (पि ४३६,
दोग्गोट्ट १ पट, पाष, महा, लह्म ४, स
पोष्ट १) ५६१) ।
दोचूट्ट पुं [द्विचूट्ट] विजायर बंध के एक
छात्र का नाम (पउम ५, ५५) ।
दोष वि [द्वितीय] दूसरा (सम २, ८; विपा
१, २) ।
दोष न [दीप्त्य] इतपन, इत-बर्मे (शाया १,
८, गा ८४) ।
दोष म [द्विस्] दो बार, दो वक्त, एवं
व निरामित्ता दोषं तच्चं समुत्पावत्स' (सुर
२, २६) ।
दोषंग न [द्वितीयार्ह] १ दूसरा अंग । २
पन्थमा हुमा शाक (वृह १) । ३ सीमन्त,
कड़ो (भीष २६७ या) ।
दोजीह पुं [द्विजिह्व] १ दुर्जन । २ साँप
(सुर १, २०) ।
दोन्म वि [दोह] दोहने योग्य (प्राचा २,
४, २) ।

दोण पुं [द्वोण] १ पशुवैद के एक सुप्रसिद्ध
आचार्य, जो पाण्डव और कौरवों के गुरु थे
(शाया १, १६; वेणी १०५) । २ एक
प्रकार का परिमाण (जो २) । "सुह न
[मुस] नगर, जल और स्थल के मार्गवाला
शहर (पण्ड १, ३; कप्पा; भीष) । "मेह पुं
[मेघ] मेघ-विशेष, जिसकी घाटा से बड़ी
बत्तरी भर जाय वह वर्षा (विसे १४५८) ।
"सुया की [मुता] लक्ष्मण की जी का
नाम, विशल्या (पउम ६४, ४४) ।
दोणअ पुं [दे] १ घामुक, गाँव का मुखिया ।
२ हासिक, हलवाह, हल जोतनेवाला, हरबारा
(दे ५, ५१) ।
दोणक्का जी [दे] सरपा, मधुमक्खी (दे ५,
५१) ।
दोणी जी [द्वोणी] १ नीका, छोटा जहाज
(पण्ड १, १; दे २, ४७; घम्म १२ टी) ।
२ पानी का बड़ा कुँडा (मणु, कुप ४४१) ।
दोचडी जी [दुत्तडी] हुए नदी, 'एकतो
सहो मयतो दोत्तडी वियदा' (उन ५३०
टी; मुपा ४६३) ।
दोत्य न [दीप्त्य] दुत्पत्ता, दुर्दशा, दुर्गांत
(सव ४; ७) ।
दोदाण वि [दुदान] दुष्ट से देने योग्य
(सवि ४) ।
दोदिअ पुं [दे] धर्म-भूषण धर्म के वा ब्रह्मा
हुमा भावन-विशेष (दे ५, ४६) ।
दोदु वि [दोग्घ] दोहन-कर्ता (इस १, १ टी) ।
दोपअ १ न [दोषक] छन्द-विशेष
दोषक (पिंग) ।
दोघार पुं [द्विधाकार] द्विधाकरण, दो भाग
करना (छा ५, ३—पण ३४६) ।
दोनिक्क वि [दुनिक्क] अत्यन्त बट्ट से
चलने योग्य (मग ७, ६—पण ३०५) ।
दोखुर पुं [दे] दुन्दुष्ट, स्वर्ण-गायक (पट) ।
दोव्वलिय देखो दुव्वलिय (प्राचा २, २,
२, ३) ।
दोव्वलिय न [दीनेल्य] दुर्वन्ता (पि २८७;
कप्पा ८२) ।
दोमाय वि [द्विभाग] दो भागवाना, दो
सहचराना (उन १४७ टी) ।

दोमणसिय वि [दौर्मनस्यिक] खिन्व, शोक-
ग्रस्त (ठा ५, २—पत्र ३१३) ।

दोमणस्स ग [दौर्मनस्य] वैमनस्य, द्वेष,
मन की दुष्टता (सूय २, २, ८२, ८३) ।

दोमासिअ वि [द्वैमासिक] दो मास का
(भा. सुर १५, २२८) । श्री आ (सम
२१) ।

दोमसिअ (अप्र) देखो दूमिअ = दानित (अवि) ।

दोमिली श्री [दोमिली] विप्र-विशेष (राज) ।

दोमुह वि [द्विमुख] १ दो मुँहवाला । २
पु. दुप-विशेष (महा) । ३ दुर्जन (भा २५३) ।

दोर पु. [दे] १ दोरा, बाग, सूत (पञ्च ४,
५०, सुप्र २२६, सुर ३, १५१) । २ छोटी
रस्ती (श्रीय २३२, २५ भा) । ३ कटि-मूल
(दे ५, ३८) ।

दोरिया देखो दोरी (सिप्र ६९) ।

दोरी श्री [दे] छोटी रस्ती (भा १६) ।

दोल अक [दोलय] १ हिलना । २ झूलना ।
बोलव (दे ४, ४८) । दोलति (कप्प) ।

दोलगय न [दोलनरु] झूलन, झूलान
(दे ८, ४९) ।

दोलया [] श्री [दोला] झूला, झुंडोला (सुपा
दोला [] २८६, कुमा) ।

दोलाइय वि [दोलायित] १ हिला हुआ ।
२ सशयित (हिका ११६) ।

दोलायमाण वि [दोलायमाण] १ हिलता
हुआ । २ संयम करता हुआ (सुपा ११७,
गज्ज) ।

दोलिया देखो दोला (सुर ३, ११६) ।

दोलिर वि [दोलियत्] झूलनेवाला (कुमा) ।

दोत्र पुं [दोत्र] एक धनार्थ जालि (पत्र) ।

दोवई श्री [द्वीपदी] राना दुपद श्री नय्या,
पाएडन पत्नी (एल्ला १, १६, उप ६५८ टी,
पडि) ।

दोवयण देखो दुवयण = द्विवचन (हि १,
६५, सुपा) ।

दोवार (मरा) देखो दुवार (वय) ।

दोधारिज [] पुं [दीनारिक] द्वारपाल, दर-
दोधारिय } वान, प्रतीहार (निबु ६, छाया
१, १. मग ६, ५. सुपा ४२६) ।

दोविह देखो दुविह (उत्तर २, नव ३) ।

दोवेली श्री [दे] सार्यकाल का भोजन (दे ५,
५०) ।

दोव्वल देखो दोव्वल (दे ४, ४२; ८,
८७) ।

दोस देखो दूस = द्वय (श्रीय, उप ७६८ टी) ।

दोस पुं [दोप] द्वपण, दुष्पण, द्वेष (श्रीय,
सुर १, ७३; स्पन ६०, प्रामू १३) । 'न्नु
वि [] दोय का जानकार, निबान् (पि
१०५) । 'ह वि [] दोप-माराक, 'कुवति
पोहस दोसह मुड' (सुपा ६२१) ।

दोस पुं [दे] १ मर्ष, भाषा (दे ३, ५६) । २
कोप, क्रोध, गुस्सा (दे ५, ५६; पद) । ३ द्वेष,
द्रोह (श्रीय, कप्प; ठा १, उत्तर ६; सुप्र १,
१६; पणए २३; सुर १, ३३; सण, अवि,
सुप्र ५७१) ।

दोस पुं [दोस] हाथ, हस्त, बाहु (वि
२, १) ।

दोसभिज्जत पुं [दे] चन्द्र, चन्द्रमा, चाँद (दे
५, ५१) ।

दोसा श्री [दोपा] रात्रि, रात (सुर १, २११) ।

दोसाकरण न [दे] कोप, क्रोध (दे ५, ५१) ।

दोसाणिय वि [दे] निर्मल किया हुआ (दे
५, ५१) ।

दोसायर पुं [दोपाकर] १ चन्द्र, चाँद (उप
७२८ टी, सुपा २७५) । २ दोपा की खान,
दुष्ट (सुपा २७५) ।

दोसारअण पुं [दे दोपारल] चन्द्र, चाँद
(पद) ।

दोसासय पुं [दोपाश्रय] दोप-श्रव, दुष्ट
(पञ्च ११७, ४१) ।

दोसि वि [दोपिय] दोपवाला, दोषी (सुप्र
४३८) ।

दोसिय पुं [द्विपियरु] वस्त्र का व्यापारी
(भा १२, वज्रा १६२) ।

दोसिण [दे] देखो दोसीण (पणह २, ५) ।

दोसिणा [दे] नोच देखो (ठा २, ४—पन
८६) । 'भा श्री [] भा' पत्र की एक पट-
राने (ठा ४, १, ६८, एल्ला २) ।

दोसिणी श्री [दे दोपिणी] ज्योत्स्ना, चन्द्र-
प्रकाश (दे ५, ५०) । 'सविनुल्ला दोसिणी
जल्प' (सुप्र ४३८) ।

दोसियण्ण न [दोपिकान] भासी अन्न
(राज) ।

दोसिद्ध वि [दोपयत्] दोप-युक्त (वग्ग
११ टी) ।

दोसिद्ध वि [दे] द्वेष-युक्त, द्वेषी (विसे
१११०) ।

दोसीण न [दे] रात का भासी अन्न (पणह २,
५; धीप १५५) ।

दोसील वि [दुस्सील] दुष्ट स्वभाववाला (पव
७३) ।

दोसीलह नि. व. [द्विपोडशान] बत्तीस,
३२ (कप्प) ।

दोह सक [मुह] दोह करना । वक्क दोहँत
(संबोध ४) ।

दोह व. [दोह] दोहन (दे २, ६५) ।

दोह वि [दोह] दोहने योग्य (मात ८६) ।

दोह पुं [दोह] ईर्ष्या, द्वेष (प्राप्त, अवि) ।

दोहग्ग न [दोमोग्ग] दुष्ट भाग्य, दुष्टदृष्ट,
कमनखोरी (पणह १, ४; सुर ३, १७५, गा
२१२) ।

दोहग्गि वि [दीर्माग्गि] दुष्ट भाग्यवाला,
कमनखी, मन्त्र-भाग्य (भा १६) ।

दोहण न [दोहण] दोहना, दूध निकालना
(पणह १, १) । 'वाडण न [पाटन]
सोहन-स्वान (निबु २) ।

दोहण्हारी श्री [दे] १ दोहनेवाली श्री (दे
१, १०८, ५, ५६) । २ पतिहारी, पत्नी
अपनेपत्नी की, पतिहारिन (दे ५, ५६) ।

दोहणी श्री [दे] पक, काढ़ा, कढ़वा (दे ५,
४८) ।

दोहय वि [दोहक] दोहनेवाला, (गा ५६२) ।

दोहय वि [दोहक] द्रोह करनेवाला, ईर्ष्या
(उत्तर ३५७ टी, अवि) ।

दोहल पुं [दोहल] गमिणी श्री का मनोरथ
(हि १, २१७, २२१, कप्प) ।

दोहा य [द्विधा] दो प्रकार (दे १, ६७) ।

दोहाइअ वि [द्विधाइअ] जिसका दो एवम
किया गया हो वह (दे १, ६७ कुमा) ।

दोहासल न [दे] बटो-बट, नमर (दे ५,
५०) ।

दोहि वि [दोहिय] करनेवाला, टकरनेवाला
(भा ६३६) ।

दोहि वि [दोहिन्] द्रोह करनेवाला (भवि) ।
दोहिण वि [द्विभिन्न] द्विसदृश, जिसका दो दुकड़ा किया गया हो वह (प्राकृ ५१) ।
दोहिसि पुं [दोहित्र] लटकी का लटका, नाती (दे ६, १०६, गुणा ३६४) ।

दोहित्री स्त्री [दोहित्री] लटकी की लटकी, भतिनी (महा) ।
दोहूअ पु [दे] राव, मृत्तव, मुरदा (दे ५, ४६) ।
दोस देखो दोस = (दे), 'अभियाराग' दोसो (पुत्र ३०) ।

द्रवक (भप) न [दे. भय] भय, डर, भीति (हे ५, ४२२) ।
द्रह पु [हृद] बड़ा जलाशय, सरोवर, झील (हे २, ८०, कुमा) ।
द्रेहि (भप) स्त्री [दृष्टि] नजर (हे ५, ४२२) ।
द्रोह देखो दोह = द्रोह (वि २६८) ।

॥ इय तिरिपाइअसदमहणरम्मि द्वापाइसदसकलणो
पंचवीसदमो सरंगो सनतो ॥

घ

घ पुं [घ] दन्त-स्थानीय व्यञ्जन कर्ण-जिह्वी (प्राय, प्राणा) ।
घअ देखो घ (गा २०) ।
घर पुं [घ्याहृ] वात, कौमा (उप ८२३, पचा ११) ।
घंग पुं [दे] मीरा, भ्रमर, भमरा (दे ५, ५७) ।
घंत न [ध्यान्त] भ्रम्यवार, भ्रमिषा (सुर १, १२, कच ११) ।
घंत न [ध्यान्त] घसाल (देवप्र १) ।
घंत न [दे] भति, भतिशय, भ्रम्यन्त, 'घंत-वि सुमसिद्धो' (पञ्च २६, विवे ३०१६, बृह १) ।
घंत वि [ध्यात] १ घन में लगाया हुआ (लामा १, १, भीष, पण १, ५७, विवे ३०२६, मजि १४) । २ शब्द-युक्त, उचित (विज) ।
घघा स्त्री [दे] सज्जा, शरम (दे ५, ५७) ।
घंघुबल्य न [घंघुबल्य] पुनरावृत्ति का एक नगर, जो भाव बल 'घंघुबल' नाम से प्रसिद्ध है (गुप्ता ६५८, कुप्र २०) ।
घंघोलिय (भर) वि [धमिल] घुमाया हुआ (सण) ।
घंस भर [ध्यंस] नट होना । घंसद, घंसद (पद्) ।

घसत सव [धंसय] १ मारा करना । २ दूर करना । घसह (सूय १, २, १) । घसेह (सय ५०) ।
घसाह सक [मुच] ध्याय करना, छोड़ना । घंसाह (हे ५, ६१) ।
घसाहिल वि [मुक्त] परित्यक्त, छोड़ा हुआ (कुमा) ।
घंसाहिल वि [दे] व्यपगत, नट (दे ५, ५६) ।
घगघग भ्र [धगघगाय] १ 'व्यू व्यू' आवाज करना । २ जलना, भ्रतिशय जलना । बह. घगघगन (लामा १, १, पदम १२, ५१, भवि) ।
घगघगाइअ वि [धगघगायित] 'व्यू-व्यू' आवाजवाना (कण्य) ।
घगघग देखो घगघग । बह. घगघगज-भाण (वि ५५८) ।
घगगीरय वि [दे] जलाया हुआ, भ्रम्यन्त प्रदीपित, 'घगगीरयघो ज्ञ पवलेण' (प्रा १४) ।
घज देखो घय = घन (कुमा) ।
घट्ट देखो घिट्ट (हे १, १३०, पदम ४६, २६, कुमा १, ८२) ।

घट्टजुण पुं [घुट्टजुण] राजा कुपद का घट्टजुण (दे) एक पुत्र (हे २, ६४, लामा १, १९, कुमा, पद्. वि २७८) ।
घह न [दे] बह, गले से नीचे का शरीर (गुप्ता २४१) ।
घहहहिय न [दे] गर्जना, गर्जित्व (गुप्ता १७६) ।
घण न [घन] १ वित्त, विभव, स्थावर-जंगम सम्पत्ति (उत्त ६, सूय २, १, प्राप् ५१, ७६, कुमा) । २ गणित, परिम, मेष, या परिच्छेद इत्यम्—गिनतो मे श्रीरत्नमर्थादि मे बय विजय योग्य पदार्थ (कण्य) । ३ पुं. कुबेर, धन-पति, 'धुप यो मिट्ठी घणोष घणविकी' (गुप्ता ३१०) । ४ स्त्रिय-भोजन एवं येशी (उप ५५२) । ५ धन सार्यगह का एक पुत्र (लामा १, १८) । 'इत्ता, इत्त वि [व्यू] पनी, धनवाना (कुप्र २४५, वि ५६५, संति ३०) । 'गिरि पुं [गिरि] एक वैत महापु, जो बहसामो के पिता थे (कण्य, उप १४२ धी) । 'गुप्त पुं [गुप्त] एक वैत कुनि (प्रायय) । 'गोय पुं [गोय] धन्य सार्यगह का एक पुत्र (लामा १, १८) । 'दह पुं [दह्य] एक वैतकुनि (कण्य) । 'गदि पुं [गदि] दुपना देव-रत्न, देव-

द्वहं दुपुणं धणुणंदी भण्णइ (दंत १) ।
 *णिहिं पुं [निधि] खजाना, भण्डार (डा
 १, ३) । स्थि वि [स्थिन्] घन का अभि-
 लापो (रखण ३८) । *दत्तं पुं [दत्त] १
 एक सार्यवाह । २ तृतीय वायुदेव के पूर्व-
 जन्म का नाम (सम १५३, रुद्रि प्रायम) ।
 *देव पुं [देव] १ एक सार्यवाह,
 मरिहक-गणधर का पिता (धायम, धाचू
 १) । २ अन्य सार्यवाह का एक पुत्र (एया
 १, १८) । *पह देलो 'बह (विपा २, १) ।
 *पवर पुं [पवर] एक श्रेष्ठी (महा) ।
 *पाल पुं [पाल] अन्य सार्यवाह का एक
 पुत्र (एया १, १८) । देलो 'वाल ।
 *पपमा ली [प्रभा] कुलशतवर द्वीप की
 राजधानी (बीव) । *मत, मण वि [मन्]
 घनी, घनवान् (पिंगा हे २, १५६, चंड) ।
 *मित्तं पुं [मित्त] एक जैनमुनि (पञ्च
 २०, १७१) । *य पुं [य] १ एक सार्य-
 वाह (सुपा ५०१) । २ एक विशाखर राजा,
 जो राजा रावण की मौसी का लड़का था
 (पञ्च ८, १२४) । ३ कुबेर (महा) । ४
 वि. घन देवता, 'धणयो धणुण्यमाह' (रखण
 ३८) । *खिन्त्य पुं [खित्त]
 अन्य सार्यवाह का एक पुत्र (एया १, १८) ।
 *बह पुं [पति] १ कुबेर (एया १, ४—
 पञ्च ६६, जप ४ १८०, सुपा ३८) । २ एक
 राजकुमार (विपा २, ६) । *वई ली
 [वती] एक सार्यवाह-पुत्री (दंत १) ।
 *वत, वस देलो 'मंत (हे २, १५६,
 चंड) । *वह पुं [वह] १ एक श्रेष्ठी (दंत
 १) । २ एक राजा (विपा २, २) । *वाल
 देलो 'पाल । २ राजा भोज के समकालिक
 एक जैन महाकवि (धण ५०) । *सचपा
 ली [संचपा] एक यणुण्य-महिला (महा) ।
 *सम्म पुं [शामन्] एक यणुण्य (मन्त्र
 २) । *सिरी ली [श्री] एक यणुण्य-महिला
 (भाय ४) । *सेण पुं [सेन] एक राजा
 (दंत ४) । *ल वि [यत्] घनी (प्राय) ।
 *नह वि [नह] १ घन को धारण
 करनेवाला, घनी । २ पुं. एव श्रेष्ठी (दंत
 ४) । ३ एक राजा (पिंगा २, २) ।

धर्णजय पुं [धनजय] १ धनुन्, मध्यम

पाण्डव (विष्णु ११०) । २ वहि, धनि ।
 ३ सर्व-विशेष । ४ वायु-विशेष, शरीर-अधारी
 पवन । ५ वृक्ष-विशेष (हे १, १७७, २,
 १८५, पड) । ६ उत्तरा माद्रपदा नक्षत्र का
 गोत्र (इक) । ७ पञ्च का नववां दिन (जो
 ४) । ८ श्रेष्ठि विशेष (भाय ४) । ९ एक
 राजा (धायम) ।

धणि पुं [धनि] शम्भ, धावाज (विसे
 १२०) ।

धणि ली [धानि] १ लुहि, सन्तोष (मौप) ।
 २ धनुषि उपलब्ध करने की शक्ति, 'मणिधनि-
 वितरह्याई' (विसे १६५३) ।

धणि वि [धनिन्] धनिक, घनवान् (हे २,
 १५६) ।

धणिअं पुं [धनिक] यवन-भत का प्रवर्तक
 पुण्य-विशेष (मोह १०१, १०२) ।

धणिअ वि [धनिक] १ पैसादार, बनी (हे
 १, १५८) । २ पुं. मालिक, स्वामी (प्रा
 १४) ।

धणिअ न [दि] अयत्त, गाढ, अतिशय (दि
 ५, ५८, वीक्ष, मग, बहक, कप, गुर १,
 १७५; भत ७३; पञ्च ८२, जीव ३; उत्त
 १, बव २, स ६६७) ।

धणिअ वि [धन्य] धन्यवाद के योग्य,
 प्रशंसनीय, स्तुतिपात्र, 'नाल धणिअयन
 भूरभो निवर्तित रणमि धसिनाया' (पञ्च
 ५६ २५, धनुज ४२) ।

धणिआ ली [दि] १ प्रिया, भार्या, पत्नी
 (दि ५, ५८, गा ५८२, मवि) । २ धन्या,
 स्तुतिपात्र ली (पड) ।

धणिट्टा ली [धनिट्ट] नक्षत्र विशेष (धम
 १०, १३, गुर १६, २४६, इक) ।

धणी ली [दि] भार्या, पत्नी । २ पर्यापित ।
 ३ जो सेवा दूधा होने पर जो भय-रहित हो
 वह (दि ५, ६२), 'समवेत मंखणीए धणीए
 तं कंखी बढा' (कुप्र १८२) ।

धणु पुं [धनुप] १ धनुष, चाप, धनुष
 (पड; हे १, २२) । २ चार लक्ष का
 परिमाण (मणु, जी २६) । ३ पुं. परमा-
 धार्मिक देवों की एक जाति (सम २६) ।
 *कुटिल न [कुटिल-धनुष] यन्त्र धनुष
 (धय) । *गाह पुं [मह] वायु-विशेष (हृद

३) । *दय पुं [धज] वृष-विशेष (ठा
 ८) । *हर वि [धर] धनुषिया में निपुण,
 धानुष्क (राज, पञ्च ६, ८७) । *धिट्ट न
 [धृष्ट] १ धनुष का धृष्ट-मात्र । २ धनुष
 के पीठ के आकारवाला क्षेत्र (सम ७३) ।
 *पुहत्तिया ली [धृत्तित्तिया] जो कोम,
 नव्युति (पण १) । *वेअ, 'वेअ पुं
 [वेद] धनुषिया योषक शास्त्र, हनु-शास्त्र
 (जप ६८६ टी. सुपा २७०, ज २) । *हर
 देलो 'धर (मवि) ।

धणु पुं [धनुस्] ज्योतिष-प्रसिद्ध एक
 राशि (विचार १०६, सकोप ५४) । *ह वि
 [मन्] धनुषवाला (प्राह ३३) ।

धणुक् [ऊपर देलो (एधि, धणु, हे १,
 धणुह १२२, कुमा) ।

धणुही ली [धनुष] काष्ठिक, विधायी व
 धणुहीयो गुणवत्ताभीवि पयहकुडिलाभी
 (कुप्र २७४; स ३८१) ।

धणेसर पुं [धनेश्वर] एक प्रसिद्ध जैनमुनि
 और धन्यकार (गुर १, २४६; १६, २५०) ।

धण्य पुं [धन्य] १ एक जैनमुनि । २
 'धनुषरीपातिकरसा' सूत्र का एक धन्यमन्त्र
 (धनु २) । ३ यज्ञ-विशेष (विपा २, २) ।
 ४ वि. कुतार्थ । ५ धन-स्नान के योग्य । ६
 स्तुति-पात्र, प्रशंसनीय । ७ धान्यराशी,
 धान्यवान् (एया १, १; कप, जीव) ।

धण्य देलो धन = धान्य (प्रा १८; डा ५,
 ३; बव १) ।

धण्यतरि पु [धन्यतरि] १ राजा वनजय
 का एक रश्मन ल्याल बंध (विपा १, ८) ।
 २ देव-देव (जप २) ।

धण्याउस वि [दि] १ जिसरी भारीबंद
 दिया जाता हो वह । २ पु. भारीबंद (दि
 ५, ५८) ।

धस वि [दि] १ निहित, स्थापित (धायम) ।
 २ पुं. वनस्पति विशेष (जीव १) ।

धत्त वि [धात्त] निहित, स्थापित (राज) ।

धत्तरुम पुं [धार्तरुम] हस्त की एक
 जाति, जिसके कुँह पीर पाँव काले होने हैं
 (पण १, १) ।

धृती लो [ध्यात्रो] १ धाई, उमाता, दाई (स्वयं १२२) । २ श्रुतिवो, भूमि । ३ धाम-लक्षो-वृत्त, श्रविते वा पेठ (हि २, ८१) । देखो धाई ।

धत्तू पुं [धत्तूर] १ वृत्त-विशेष, धत्तूर । २ न. धत्तूर का पुत्र (मुपा १२४) ।

धत्तूरिअ वि [धात्तूरिअ] जिसने धत्तूर का मारा किया हो वह (मुपा १२४, १७६) ।

धरय वि [धरय] धरत प्राप्त, नष्ट, नाश हुआ (हि ३, ७६, ७७) ।

धर देतो धरण = धन्य (हुमा, प्रामू ५३, ८४, १५४, उवा) ।

धर न [धान्य] १ धान, भानज, धान (उवा, सुर १, ५६) । २ धान्य विशेष 'धुसय तह धानय बत्ताया' (पव १५६) । ३ धनिया (धमि ६) । 'कोट पुं [कीट] नाम में होनेवाला कीट, कीट-विशेष (जी १७) ।

'गिहि पुं [निधि] धान रखने का घर, कोठामार, भंडार (डा ५, ३) । 'पटय पुं [प्रथय] धान का एक नाप (धन १) ।

'पिटग न [पिटग] नाग का एक नाप (धन १) । 'उजिय न [उजिनधान्य] दूधड़ा जिया हुआ भानज (डा ४, ४) ।

'निरिअ न [निरिअधान्य] बिभीषण भानज (डा ४, ४) । 'निरिअ न [निरिअधान्य] गात्र से दूधड़ा जिया हुआ भानज (डा ४, ४) । 'संरुद्धिय न [संरुद्धिधान्य] क्षेत्र से बाहर पले—उनिहाय में लामा गया धान्य (डा ४, ४) । 'गार न [गार] कोठामार, धान रखने का गृह (निबु ८) ।

धक्षा लो [धान्य] धान, भानज, 'सावित्र-बाईयाभा धलामो उम्पज्जिअसो' (उप ६८६ टी) ।

धक्षा लो [धन्या] एक की बर नाम (उवा) ।

धम गर [ध्या] १ धमना, धीरता, मग में ठानना । २ शर बरना । ३ गात्र पुला । पकर (मरा) । पमेर (हुम १५६) । वर-धमान (निबु १) । वनइ, धम्ममाग (उवा छाया १, ६) ।

धमग रि [ध्याय] धमनेगता (धैर) ।

धमग न [धमन] १ धाम भगता (ध्यावि १, १, ७) । २ वायु-मूल (पट्ट १, १) । ३ रि, धम, धमनी, धमो (धम) ।

धमणि लो [धमनि, नी] १ भद्रा, धमणी धमनी, धीरनी । २ नादी, विरा (विपा १, १, उवा श्रव २७) ।

धमधम धक [धमधम] 'धम धम' धावाज करना, 'धमधमइ शिरं धमिय धामइ सुतपि नरुअ दिट्ठो' (मुपा ६०३) । वर-

धमधमंत, धमधमाअत, धमधमंत (मुपा ११४, नाट—पालतो ११६, छाया १, ८) ।

धमास पु [धमास] धम विशेष (पण १७) ।

धमिअ वि [ध्यान] जिसमें गात्र भर दिया गया हो वह 'धमिआ सवा' (हुम १५६) ।

धमिय वि [ध्यात] धाम में लामा हुआ 'धमियवणुय पु काए हाएवड हुअ' (मोह ७७) ।

धम्म पुं [धम्म] १ एक देव-विमान (देवज १५३) । २ एक दिन का उत्राव (संबोध ५८) ।

धम्म पुन [धम्म] १ शुभ धर्म, कुशल-जनक भद्रपुत्र, सदाचार (डा १, सम १, २, धावा, मूपा १०, ६, प्रामू ५२, ११४, सं ५७) । २ शुभ्य सुरत (सुर १, ५४, धाव ४) । ३ स्वभाव, श्रद्धा (निबु २०) । ४ शुच, पर्याय (डा २, १) । ५ एक धम्मवी पदार्थ, जो जीव को गति किया में सहायता पहुंचाना है (नर ५) । ६ धर्मवान धर्मविष्णु बाल में लगन पनहरे धर्म-द्वय (सम ५३, पटि) । ७ एक बौद्ध (उा ७२८ टी) । ८ ध्वनि, धर्मादा (धाव २) । ९ धनुष गात्र (सुर १, ५४ धाम) । १० एक तीन भुवि (धम्म) । ११ 'सुवहाता' धर्म का एक धम्मयन (मम ५२) । १२ धावा, रोहि, व्याहार (धम्म) ।

'उत्त पुं [पुन] धिन् (धाम) । 'वर न [पुन] नरनिदो (धन १) । 'संरिअ रि [वाहित] धर्म की वाहना (नग) । 'व्हा लो [रथा] धर्म-सम्पत्ति वाट (म, सम १२०, छाया २) । 'व्हि रि [धिय] धर्म-धाम कहनेवाला, धर्म का ज्येष्ठ (धोप ११५ ना, धा ६) । 'धमव वि [धमि] धर्म की धारणा (धम) । 'धाय पुं [धाय] धर्म का गहन धुन-रुदोर (पवा १८) । 'धाय वि [धियाय] धर्म प्रवर्धन (धोर) । 'धाय वि

[ध्याति] धर्म से ध्यातिवाला, धर्मात्मा (धोप) । 'गुरु पुं [गुरु] धर्म-दर्शक गुरु, धर्माचार्य (६ १) । 'गुव वि [गुप्] धर्म रक्षक (पट्ट १) । 'धोस पुं [धोप] कई एक जैन धुनि धोर धावायो का नाम (भाव १, ती ७, धाव ४ मग ११, ११) । 'धम न [धम] धितदेव का धर्म प्रसारक धम (पव ४०, मुपा ६२) । 'वकपट्टि पुं [वक-वर्तिन] जिन देव (भाव १) । 'वधि पुं [वाकिन्] जिन भगवान् (हुमा १०) । 'जणणी लो [जननी] धर्म की प्राप्ति करनेवाली लो, धर्म-देहिना (पवा १६) । 'जस पुं [यरास्] जैनधुनि विशेष का नाम (धाव ४) । 'जागरिया लो [जागरी] १ धर्म चिन्तन के लिए किया जाता जागरण (मग १२, १) । २ जन से छड़ने दिन में किया जाता एक उत्तर (धम्म) । 'उमप पुं [उमज] १ धर्म-बोधन धम, धम धम (राव) । २ ऐतव क्षेत्र के पाँचों मानो दिन-देर (सम १५४) । 'उमप न [ध्यान] धर्म चिन्तन, शुभ ध्यान विशेष (मग ६) । 'उमप रि [ध्यानिन्] धर्म ध्यात से युव (धाव ४) । 'ट्टि वि [धिन्] धर्म का धमिनाली (मूपा १, २, २) । 'णाय रि [नाय] १ धर्म का नेत्रा (सम १, पटि) । 'णु रि [न] धर्म का नावा (धन ४) । 'निरयय पुं [तीर्थर] धितवावा (उत्त २३, पटि) । 'रय न [रि] धम विशेष, एक प्रकार का धियाव (पव ७१, ६३) । 'रिय सेगो [रि] (पव ४) । 'रिदाय पुं [रिदाय] गति-क्रिया में सहायता पहुंचाने वाला एक धर्मवी पदार्थ (मग) । 'रय रि [रय] धर्म की प्रति करनेवाला, धर्म देव (मग) । 'दार न [द्वार] धर्म का उपाय (डा ४, ४) । 'दार पुं [द्वार] धर्म-गती (मग) । 'दास पुं [दास] भगवान् महावीर का एक धिन् धोप ज्येष्ठता का धर्म (उवा) । 'दय पुं [दय] एक श्रद्धा जैन (ध्याव [धाय] ७८) । 'देग, 'दम रि [दशक] धर्म का ज्येष्ठ करनेवाला (राव, मग पटि) । 'पुप लो [पुप] धर्म-य

धुरा (छाया १, ८) । 'नायग देखो' 'णायग (भग) । 'पडिमा छी' 'प्रतिमा' १ धर्म की प्रतिमा । २ धर्म का साधन-भूत शरीर (ठा १) । 'पण्णत्ति छी' 'प्रज्ञप्ति' धर्म की प्रहण (उवा) । 'पटिणी (दो) छी' 'पत्नी' धर्म-पत्नी, छी, भार्या (अभि २२२) । 'पिपासय वि' 'पिपासक' धर्म के लिए प्यासा (भग) । 'पिपासिय' वि 'पिपासित' धर्म की प्यासवाला (तंडु) । 'पुरिस पुं' 'पुरुष' धर्म प्रवर्तक पुरुष (ठा १, १) । 'पलज्जण वि' 'प्रज्जण' धर्म में शासक (छाया, १, १८) । 'प्पाइ वि' 'प्रधादिन्' धर्मोपदेशक (भाचावि १, ४, २) । 'प्पह पुं' 'प्रभ' एक जैन भाचार्य (एण ५८) । 'प्पागलय वि' 'प्रावाटुक' धर्म-प्राप्ति, धर्मोपदेशक (भाचावि १, १४, १) । 'बुद्धि वि' 'बुद्धि' धार्मिक, धर्म मति । २ पुं, एव राजा का नाम (उप ७२८ टी) । 'मिच्च पुं' 'मिच्च' भगवान् पद्मप्रभ का पूर्वमवीय नाम (सम १५१) । 'य वि' 'द' धर्म-ज्ञाता, धर्म देशक (सम १) । 'रुइ छी' 'रुचि' १ धर्म-प्रीति (धर्म २) । २ वि, धर्म में रुचि-वाला (ठा १०) । ३ पुं, एव जैन भुवि (विपा १, १; उप ६४८ टी) । ४ नायणसी का एक राजा (भावम) । 'लाम पुं' 'लाम' १ धर्म की प्राप्ति । २ जैन साधु द्वारा दिया जाता माशीवाँद (सुर ८, १०६) । 'लामिअ वि' 'लामित' जिसकी 'धर्मसङ्ग' रूप माशीवाँद दिया गया हो वह (स १६) । 'लाह देखो' 'लाम (स ३६) । 'लाहण न' 'लामन' धर्मलाम-रूप माशीवाँद देना, 'कयं धम्मसाहण' (स ४६६) । 'लाहिअ देखो' 'लामिअ (स १४८) । 'यत्त वि' 'यत्त' धर्मवाता (भाचा) । 'वय पुं' 'व्यय' धर्मपति दान, धर्मदा (सुपा ६१७) । 'वि, 'विउ वि' 'वित्त' धर्म का जानकार (भाचा) । 'विज्ज पुं' 'विज्ज' धर्मोपाय (वंच १) । 'व्यय देखो' 'वय (सुपा ११७) । 'सदा छी' 'धदा' धर्म-विधान (उप २६) । 'साण्ण देखो' 'साम्मा (भग ७,

६) । 'सत्य न' 'शास्त्र' धर्म प्रतिपादक शास्त्र (दंस ४) । 'सज्जा छी' 'संज्ञा' १ धर्म-विधास । २ धर्म-बुद्धि (एण १, ३) । 'सारहि पुं' 'सारथि' धर्मरथ का प्रवर्तक, धर्म-देशक (एण २७, पवि) । 'साळा छी' 'शाला' धर्म-स्थान (कर ३३) । 'सील वि' 'शील' धार्मिक (सुप २, २) । 'सीह पुं' 'सिंह' १ भगवान् अभिनन्दन का पूर्व-मवीय नाम (सम १५१) । २ एक जैन भुवि (सपा ६६) । 'सेण पुं' 'सेन' एक बलदेव का पूर्वमवीय नाम (सम १५१) । 'इगर वि' 'दिकर' धर्म का प्रथम प्रवर्तक । २ पुं, जिन-देव (धर्म २) । 'णुट्टाण न' 'णुट्टाण' धर्म का भाचरण (धर्म १) । 'णुण्ण वि' 'नुज्ज' धर्म का अनुमोदन करनेवाला (सुप २, २, छाया १, १८) । 'णुय वि' 'नुग' धर्म का अनुसरण करने-वाला (धौप) । 'त्यरिय पुं' 'चार्थ' धर्म-दाता पुत्र (सम १२०) । 'नाय पुं' 'वाद' १ धर्म-वर्चा । २ बारहवाँ जैन ऋष-अन्य, दृष्टिवाद (ठा १०) । 'हिगारिय पुं' 'धिकारिण' न्यायाधीश, न्यायकर्ता (सुपा ११७) । 'हिगारि वि' 'रिचिका-रिन्' धर्म-ग्रहण के योग्य (धर्म १) । धम्म वि [धर्म्य] धर्म-युक्त धर्म सगत्, 'जं गुण तुम कहैसि तमेव धम्म' (महावि ४, ४१) । धम्ममण पुं [दे] बुद्ध विशेष (उप १०३१ टी, पजय ४२, ६) । धम्ममाण देखो धम्म । धम्मय पुं [दे] १ बार मयत्त का हस्त-मण । २ बाएँ देखी की तरफ-ति (दे ५, ६३) । धम्मि वि [धर्मिन्] १ धर्म-युव, हव्य, पदार्थ । २ धार्मिक, धर्म-परायण (सुपा २६; ३३६, ५०६, नज्जा १०६) । धम्मि वि [धम्मिन्] तर्कवाज प्रविद्ध पक्ष (धर्मसं ६६) । धम्मिअ वि [धार्मिक] १ धर्म तत्त्व, धर्म-धम्मिअ २ परायण (भा १६७, उप ८६२, एण २, ४) । २ धर्म-सम्पत्ति (उप २६४, वंचा ६) । ३ धार्मिक-सम्पत्ति (ठा १०, ४) । धम्मिअ वि [धर्मिष्ठ] धर्मरथ धार्मिक (धौप सुपा १४०) ।

धम्मिअ वि [धर्मिष्ठ] धर्म-प्रिय (धौप) । धम्मिअ वि [धर्मिष्ठ] धार्मिक जन को प्रिय (धौप) । धम्मिअ पुं [धम्मिअ] १ संयत नेत्र, धम्मिअ २ बँधा हुआ केश, छियो के नापे हुए बाल की 'पटिया या लूटा', बीच में फूल रखकर ऊपर से मोतियों की या अन्य किसी रत्न की लड़ियों से बँधा हुआ केश-नवाप (आप्र, पद, संक्षि ३) । २ पुं, एक जैन भुवि (भाव ६) । धम्मोसर पुं [धर्मधर] भरीत उन्मर्षणीकाल में भरतवर्ष में उत्पन्न एक जिन-देव (पव ७) । धम्म्युत्तर वि [धर्मोत्तर] १ उणी, उणी से श्रेष्ठ (आप्र ५) । २ न, धर्म का प्राप्ताय, 'धम्म्युत्तर बहुर' (पवि) । धम्मोवएसरा वि [धर्मोपदेशक] धर्म का धम्मोवएसरा २ उपदेश देनेवाला (छाया १, १६, सुपा १७२, धर्म २) । धय सक् [धे] पान करना, स्तन-पान करना । बह, धयत्त (सुर १०, ३७) । धय वुं छी [धज्ज] ध्वजा, पताका (हे २, २७, छाया १, १६, एण १, ४, गा ३४) । छी, 'या (पिग) । 'धह पुं' 'पट' ध्वजा का वज्र (हुमा) । धय पुं [दे] नर, पुरुष (दे ५, ५७) । धयण न [दे] गृह, घर (दे ५, ५७) । धयट्ठ पुं [धुतराष्ट्र] हस्त पत्ती (भोस) । धर सक् [धे] १ धारण करना । २ धरना । बह, धरेह (हे ४, २३४, ३३६) । नर्म, धरिअ (वि ५३७) । बह, धरत्त, धरमाण (एण, पवि, गा ७६१) । बह, धरत्त, धरत्त, धरिअत्त, धरिअत्तमाण (वि ११, १२७, १४, ८१, राज, एण १, ४, धौप) । बह, धरिअत्त (हुम ७) । ध, धरियवट्ट (सुपा २७२) । धर सक् [धरय] धुपिरी का पालन करना । बह, धरत्त (सुर २, ११०) । धर न [दे] तुल, रई (दे ५, ५७) । धर पुं [धर] १ भगवान् पद्मप्रभ का पिता (सम १२०) । २ मयुध नगरी का एक राजा (छाया १, १६) । ३ धर्म, पहाड़ (दे ८, ६३, धाम) । धर वि [धर] धारण करनेवाला (नय्य) ।

धरगा पुं [दे] कपास (दे ५, ५८) ।

धरण पुं [धरण] १ नाग-कुमार देवो का दक्षिण दिशा का इन्द्र (ठा २, ३; धीप) ।
२ यदुर्वशीय राजा मन्धक-मुष्टि का एक पुत्र (प्रत ३) । ३ श्रेष्ठ-विशेष (उप ७२८ टी. गुप्ता ५५६) । ४ न. धारण करना (से ३, ३; सार्ध ६; वजा ४८) । ५ सोलह सोले का एक परिमाण (जो १) । ६ बरना देना, सपन-पूर्वक उपदेशान (पव ३८) । ७ सोलने का साधन (जो २) । ८ वि. धारण करनेवाला (कुमा) । 'अप्रभ पुं [अप्रभ] धरगेन्द्र का उपात्त पर्वत (ठा १०) ।

धरणा स्त्री [धरणा] देवो धारणा (सहि) ।
धरणि स्त्री [धरणि] १ भूमि, पृथिवी (भीष; कुमा) । २ भगवान् धरनाथ की शासन-देवी (संति १०) । ३ भगवान् वासुदेव की प्रथम शिष्या (सम १५२, पव ६) । 'दोल पुं [दोल] मेघ पर्वत (गुज ५) । 'धर पुं [धर] मनुष्य (पठम १०१, ४७) । 'धर पुं [धर] १ पर्वत, पहाड़ (मजि १७) । २ मयोध्या नगरी का एक सूर्य-वंशीय राजा (पठम ५, ५०) । 'धरपन्नर पुं [धरपन्नर] मेघ पर्वत (मजि १५) । 'धरनद पुं [धर-पति] मेघ पर्वत (मजि १७) । 'धरा स्त्री [धरा] भगवान् विमलनाथ की प्रथम शिष्या (मम १५२) । 'यल न [यल] भूमि तल, भूतल (छाया १, २) । पइ पुं [पनि] भू-पति, राजा (गुप्ता ३३४) । 'यट्ट न [यट्ट] मही-नीड, भूमि-तल (महा) । हर देवो धर (से ६, ३६) ।

धरणिद पुं [धरणिन्द्र] नाम-कुमारो की दक्षिण दिशा का इन्द्र (पठम ५, ३८) ।

धरणिमि पुं [धरणिमिन्द्र] मेघ पर्वत (गुज ५) ।

धरणी देवा धरणि (प्राप् २३, वि ५३, से २, २४, कुप्र २२) ।

धरा स्त्री [धरा] पृथिवी, भूमि (गज, गुप्ता २०१) । 'धर, 'हर पुं [धर] पर्वत पहाड़ (मे ६, ७६; ३८; स २६६, ७०१, ठा ७६८ टी) ।

धराधीस पुं [धराधीरा] राजा (मोह ४३) ।

धराविअ वि [धारित] पकड़ा हुआ (स २०६, सुभा ३२५, संमि ३४) । २ स्थापित, 'धराविषं मध्य' (कुप्र १४०) ।

धरिअ वि [धृत] १ धारण किया हुआ (गा १०१; सुभा १२२) । २ रोका हुआ (स २०६) ।

धरिज्वत } देखो धर = धृ ।
धरिज्जमाण }

धरिणी स्त्री [धरिणी] पृथिवी, भूमि (पाम) ।

धरिती स्त्री [धरित्री] पृथिवी, भूमि (धु १२७, सम्यत २२६) ।

धरिम न [धरिम] १ जो सदाचर में तीन कर देना जाय वह (था १८, छाया १, ८) । २ श्रद्धा, करना (छाया १, १) । ३ एक तरह की नाप, तोल (जो २) ।

धरियठन देवो धर = धृ ।

धरिस मक [धृप्] १ संहत होना, एकपित होना । २ प्रगल्भता करना, बौद्धाई करना ।

३ भित्तिना, संघट्ट होना । ४ सफ-हिसा करना, मारना । ५ धर्मय करना, सहन नहीं करना । धरिसइ (राज) ।

धरिस सक [धर्यै] सुख्य करना, विचलित करना । धरिसइ (सत ३२, १२) ।

धरिसण न [धर्यै] १ परिवर्त, धर्मिवर । २ संहति, समूह । ३ धर्मय, धर्महिणुता । ४ हिंसा, ५ बधन, योजन (निद्र १, राज) । ६ प्रगल्भता, पटुता, बौद्धाई (भीष) ।

धरित देवो धर = धृ ।

धर पुं [धर] १ पति, स्वामी (छाया १, १, पव ७) । २ वृत्त-विशेष (पण १, ठा १०३१ टी. भीष) ।

धरज्ज मक [दे] धरना, मय से व्यापृत होना, धुक्नुपाना । धरज्जइ (मण) ।

धरियिअ वि [दे] धरना हुआ, मने व्यापृत बना हुआ (मण) ।

धरण न [धावन] धीन, शासत यदि का धारण-कर (मुक् ८८) ।

धरण पुं [दे] हर-पति में जनम (दे ५, ५७) ।

धयल न [धयल] सगनार सोन-दिन का उजवाला (संभाष ३८) ।

धवल वि [धवल] १ सफेद, श्वेत (पाम, सुभा २८५) । २ पुं. उत्तम बैल (गा ६३८) । ३ पुं. ध्वज-विशेष (विम) । 'गिरि पुं [गिरि] बैलास पर्वत (ती ४६) । 'गोह न [गोह] प्रासाद, महल (कुमा) । चद पुं [चद] एक दिन मुनि (दे ४७) । 'रव पुं [रव] मंगलगीत (गुप्ता २६५) । 'हर न [गृह] प्रासाद, महल (था १२; महा) ।

धवल सन [धयल] सफेद करना । धवलइ (वि ५५७) । कवक. धयलिज्जत (मठइ) । धयलक न [धयलक] ग्राम-विशेष, जो भागवत 'धोलक' नाम से पुनरास में प्रसिद्ध है (ती ३) ।

धयलण न [धयलन] सफेद करना, स्वेदी-करण (कुमा) ।

धयलसउण पुं [दे] हंस (दे ५, ५६; पाम) ।

धयला स्त्री [धयला] गी, गैया (गा ६३८) ।

धयलाअ मक [धयला] सफेद होना ।

धयलाअन (गा ६) ।

धयलाइअ वि [धयलायित] १ उत्तम बैल की तरह जितने कार्य किया हो वह । २ न. उत्तम कुपन की तरह भावपूर्ण (धार्ध ६) ।

धयलिम पुं [धयलिमन] मनेदवन, मुक्ता, सफेदी (गुप्ता ७५) ।

धयलिय वि [धयलिन] मनेद किया हुआ (मवि) ।

धयलो स्त्री [धयली] उत्तम गी, श्रेष्ठ गैया (मठइ) ।

धयल पुं [दे] बैग (दे ५, ५७) ।

धस मक [धस्] १ पचना । २ जींचे जाना । ३ प्रसव करना । पसइ, पयउ (विम) ।

धस पुं [धस्] 'पन्' देना धाराज, गिरने की धाराज, 'पयसि मडिहइये पडिहो' (महा, छाया १, १—पव ४७) ।

धसय. पुं [दे] हयन की पयलउ की धाराज, बुद्धादी में 'पयसं' । 'ठा जायहिपारा' (था १४ बुज ३३५) ।

धमज्जिअ वि [दे] मूत्र परगया हुआ (पा १४) ।

धमल वि [दे] गिहो-उ, पैता हुआ (दे ५, ५८) ।

धसिअ वि [धसित] दसा हुमा (हम्मीर १३)।

धा सक [धा] धारण करना। धाड, धामइ धामए (पड्)। कर्म, धोयए (विड)।

धा सक [धै] ध्यान करना, चिन्तन करना। धामति (सति ७६)।

धा सक [धाव] १ दौडना। २ शुद्ध करना, धोना। धाइ, धामइ (हे ४, २४०)। मवि धाहिइ (पड्)।

धाइअ वि [धावित] दौडा हुमा (से ८, ६८, मवि)।

धाइअसद्ध देखो धायइ-सद्ध, (महा)।

धाई देखो धत्ती (हे २, ८१, पव ६७)। ४ धाई का काम करने से प्राप्त की हुई भिन्ना (ठा १, ४)। ५ छन्द विशेष (पिग)। 'पिंड पु' [पिण्ड] धाई का काम कर प्राप्त की हुई भिन्ना (पव ६७)।

धाई देखो धायई, (उप ६४८ टी)।

धाड पु [धातु] १ सोना, चाँदी, राजा, लोहा, रंगा, सोना और जस्ता ये सात वस्तु (जी ३)। २ गेह, मनसिल आदि पदार्थ (हे ४, ४, परह १, २)। ३ शरीर-धारण वस्तु—कफ, वात, पित्त, रस, रक्त, मांस, मेद, प्राण, मज्जा और शुक्र (भीर, कुप १४८)। ४ धूमिको, जल, तेज और वायु ये चार महाभूत (सुम १, १, १)। ५ व्याकरण प्रसिद्ध शब्द योनि, 'धू', 'ध्व' आदि (भणु)। ६ स्वभाव, प्रकृति (स २४१)। ७ नाट्य शास्त्र प्रसिद्ध भालसिन्धा विशेष (कुमा २, ६६)। 'य वि [ज] १ धातु से उत्पन्न। २ वज्र विशेष (पचमा)। ३ नाम, शब्द (भणु)। 'धाइअ वि [धादिक] धीपथि आदि के योग से तात्र प्रथि की सोना बदेइ बनलेवाला, निर्मियामर (कुप ३६७)। धाड पु [धाट] कणपनि नामक अन्तर देखो का एक इन्द्र (ठा २, ३)।

धाडसोसण न [धातुरोपण] धायविल तर (संकोप ५८)।

धाट मर [निर + च] बाहर निकलना। धाट्ट (हे ४, ७६)।

धाट सक [निर + सारय] बाहर निकालना। सद्ध, धाडिऊण (कुप ८३)। कवकू, धाडिज्जत (पउम १७, २८, ३१, ११६)।

धाट सक [धाट] प्रेरणा करना। २ मास करना। धाटोति (सुमनि ७०)। कवकू, धाडीयत (परह १, ३—पत्र ५४)।

धाडण न [धाटन] बाहर निकलना (वव ४)।

धाडण न [धाटन] १ प्रेरणा। २ नाश (भौप)।

धाडय वि [दे + धाटक] डाका डालनेवाला, 'पाडयपुरिसा हया तय' (तिरि ११४६)।

धाडाडिअ वि [निस्सारित] बाहर निकाली हुमा, निष्सारित (पउम २२, ८)।

धाडि वि [दे] निरस्त, निरुद्ध (दे ५, ५६)।

धाडिअ वि [नि चूत] बाहर निकला हुमा (कुमा)।

धाडिअ पु [दे] आराम, बगीचा (दे ५, ५६)।

धाडिअ वि [निस्सारित] निष्सारित, बाहर निकाला हुमा (पउम १०१, ६०, स २६८, उप ७२८ टी)।

धाडी छी [धाटी] १ डाकुओं का दल (सुर २, ३, प्राक्)। २ हमला, आक्रमण, घावा (कपु)।

धाण देखो धण्ण = धन्य (वजा ६०)।

धणा छी [धाना] धनिया, एक प्रकार का मसला (दे ७, ६६, प्राक्)।

धाणुक वि [धाणुक] धनुर्धर, धनुर्विद्या में निपुण (वप पु ८६, सुर १३, १६२, वेणी ११४, कुप ४२२)।

धाणूरिअ न [दे] जल-जेद (दे ५, ६०)।

धाम पुन [धामय] गृहकार, गर्व। २ रख आदि में सम्पत्ता। ३ वि. गर्व-युक्त। ४ रम आदि में सम्पत् (संकोप १६)।

धाम न [धामर] बल, पटाक्रम (धारा ६३, सण)।

धाय वि [धाव] १ रुम, संतुष्ट (धोप ७७ भा. सुर २, ६७)। २ न. सुख, सुखाल (वह ५)।

धामइ १) छी [धावकी] वृत्त विशेष, धाय धायई } का पंड (परए १; पउम ५३, ७६, ठा २, ३, सम १५२)। 'खड पु' [खण्ड] स्वनाम-ख्यात एक द्वीप (ठा २, ३, भणु)। 'संड पु' [पण्ड] स्वनाम-ख्यात एक द्वीप (वीव ३, ठा ८, इक)।

धार सक [धारय] १ धारण करना। २ करना रखना। धारैद (महा)। वड्, धारत, धारअंत, धारेमाण, धारयमाण, धारित (सुर ३, १८६, नाट—विरू १०६, भग, सुपा २४४, २६४)। हेइ धारिई, धारिचय, धारिचय, (पि ५७३, कस, ठा ५, ३)। क. धारणिज, धारणीय, धारे-यव्य (सामा १, १, भाग ७, ६, सुर १४, ७७, सुत ५८२)।

धार न [धार] १ धारा-संबन्धी जल। २ वि धारण करनेवाला (राज)।

धार वि [दे] वज्र, छोटा (दे ५, ५६)।

धारवि [धारक] धारण करनेवाला (कप्य उप पु ७५, सुपा २५४)।

धारण न [धारण] १ धारने की प्रवृत्ति। २ ग्रहण। ३ रखण, रखना। ४ परिचान करना। ५ अवलम्बन (भीप, ठा १, ३)।

धारणा छी [धारणा] १ मर्यादा, स्थिति (भावम)। २ विषय ग्रहण करनेवाली बुद्धि (ठा न. दस ५)। ३ नाव विषय का अविलक्षण (विते २६१)। ४ अवधारण, निरवय (भावम)। ५ मन की स्थिरता। ६ धर का एक प्रवय, धरणी या धरन (भाग ८, २)। 'वन्दहार पु' [वन्दहार] व्यवहार विशेष (ठा ५, २)।

धारणा छी [धारणा] मकान का ढंभा, धरन (धारा २, २, ३, टी. पव १३१)।

धारणिज देखो धार = धारय।

धारणी छी [धारणी] १ धारण करनेवाली (भीप)। २ स्याद्धे जिनदेव की प्रथम शिष्या (सप १२२)। ३ धनुदेव आदि धनेक राजाओं की रानी का नाम (पंत, धाचू. १, विपा २, १, खया १, १)।

धारणीय देखो धार = धारय।

धारय देखा धारण (धोप १, मवि)।

धारयमाण देखो धार = धारय।

धारा की [दे] रख कुछ, रख-भूमि का प्रप्रमाण (दे ५, ५६)।

धारा की [धारा] १ धारा के भागे का भाग, धार (गुड्ड प्राप् ६२)। २ प्रवाह, खाली (महा)। ३ धार की गति विशेष (मुमा, महा)। ४ जल धारा, पानी की धारा। ५ वर्षा, वृष्टि। ६ द्रव पदार्थों का प्रवाह रूप से पतन (गुड्ड)। ७ एक राज-पत्नी (भावम)। *कयन पु [*नृम्भ] पदम्व की एक जाति, जो बषा से फलती-फूलती है (हुमा)। *धर पु [*धर] मेघ (मुग २०१)। *धारि न [*वारि] धारा से गिरता जल (भा १३६)। *धारिय वि [*वारिक] जहाँ धारा से पानी गिरता हो वह (मम १३, ६)। *हय वि [*हल] वर्षा से सित (कम्प)। *हर देतो धर (सुर १३, १६५)।

धारा की [धारा] मातल देश की एक नगरी (मोह ५८)।

धारावास पु [दे] १ श्रेक, मेढक, बेंग (दे ५, ६३ पद)। २ मेघ (दे ५, ६३)।

धारि वि [धारिन्] धारण करनेवाला (श्रीप, कम्प)।

धारित देखो धार = धार्य।

धारिह न [धारिह] घृष्टता, जहृष्टता, गर्व, साहस (भास्व ० म० कोश ० म० २३ भावदीश कषा पद्य ५२६)।

धारिणी देखो धारणी (भीप)।

धारित्प देखो धार = धार्य।

धारिय वि [धारित] धारण किया हुआ (मति, भाषा)।

धारी देतो धत्ती (हे २, ८१)।

धारी देतो धारा (हुमा)।

धारेत्तण } देखो धार = धार्य।
धारेयन् }

धाय सत [धाय] १ दीवना। २ गुड्ड करना, घोना। धायद (हे ५, २२८, २३८)।

धाय धावत, धायमाण (भाप् ८५, महा, कम्प)। धर, धाधिकण (महा)।

धायग न [धायन] १ वेग से गमन, दीवना। (सूप १, ७)। २ प्रगलन, घोना, (हुम १६५)।

धावणय पु [धायन] दीवते हुए समानार पहुँचाने का काम करनेवाला, हुरकार, सर्वेसिया (मुमा १०३, २६५)।

धावणया की [धान] स्तन पाल करना (उप, ८३३)।

धानमाण देखो धाव।

धाविअ वि [धाविउ] दीवडा हुमा (मति)।

धाविर वि [धाविह] दीवनेवाला (सण, मुग ३५)।

धावी देखो धाई = धात्री (उप १३६ टी, स ६६, सुर २, ११२, १६, ६८)।

धाहा की [दे] धाह, पुकार, बिल्साहट (पदम ५३, ८८, मुग ११७, ३५०)।

धाहानिय न [दे] धाह, पुकार, बिल्साहट (स ३७०, मुग ३८०, ५६६, महा)।

धाहिय वि [दे] पनायित, भाषा हुमा (पम्प ११ टी)।

धि म [धिक्] चिक्कार, छी (रमा)।

धिइ की [धुति] १ धैर्य, चोरज (सूप १, ८, पद)। २ धारण (भावम)। ३ धारणा, ज्ञात विषय का अवित्स्मरण (विशे)। ४ धारण, धवत्याल (सूप १, ११)। ५ धहिना (पह २, १)। ६ धैर्य की अप्रतिष्ठा देवी। ७ देवी की प्रतिमा विशेष (राज, छाया १, १ टी—पद ५३)। ८ तिलिच्छि-द्रह की अप्रतिष्ठा देवी (द्रह, ठा २३)।

*धूड न [*धूट] धुति-देवी का अप्रतिष्ठित स्वरूप विशेष (ज ५)। *धर पु [*धर] १ एव धनद महवि। २ धनगद-रसा' सुन ना एव धनयन (सत १८)। *म, *संत वि [*मत्] धीरजनाला (ठा ८, पह २, ४)।

धिइ की [धुति] तेना, सगातार तीन दिन का उपवास (संताम ३८)।

धिक्कय वि [धिक्कट] १ चिक्कार हुमा (धर १)। २ न चिक्कार, चिक्कार (सह ६)।

धिक्कण न [धिक्कण] चिक्कार, चिक्कार (छाया १, १६)।

धिक्किय वि [धिक्किय] चिक्कार हुमा (हुम १२७)।

धिक्कार पु [धिक्कार] १ चिक्कार, चिक्कार (पह १, ३, द २६)। २ कुलिक मनुष्यों के समय की एक दण्ड-नीति (ठा ७—पद ३६८)।

धिक्कार सक [धिक् + कारय] चिक्कारना, चिक्कार करना। कक्क धिक्कारिजमाण (पि ५१३)।

धिज न [धिये] धीरज, धुति (हे २, ६५)।

विज वि [धिये] धारण करने योग्य (छाया १, १)।

धिज वि [धिये] ध्यान योग्य, किन्तनीय (छाया १, १)।

धिज्जाइ पुकी [धिजाति, धिग्जाति] ब्राह्मण, विर। की, *तय महा नाम धिज्जाणी (भावम)।

धिज्जाइय } पुकी [धिजातिक, धिग्जा-
धिज्जाइय } तीय] ब्राह्मण, विर (महा
उप १२६, भाव ३)।

धिज्जीविय न [धिग्जीवित] किन्तनीय जीवन (सूप २, २)।

धिइ वि [धुट] डीठ, प्रगम। २ निर्लज्ज, बेधरम (हे १, १२०, सुर २, ६, गा ६२७, या १५)।

धिइज्जुण देखो धट्टज्जुण (पि २०८)।

धिइम पुकी [धुट्टर] घृष्टता, डीठारी (मुग १२०)।

धिइ } म [धिक् धिक्] छी छी (उप,
धिइ } व ६१, रमा)।

धिप्य म [दीप्] दीपना, चमकना। विप्यद (हे १, २२३)।

धिपियर वि [धीप] देदीप्यमान, चमकीला (हुमा)।

धिय म [धिक्] चिक्कार, छी, *बिद गिद विप धुतिव (उप ६१५)।

धिरयु म [धिरायु] चिक्कार हो (छाया १, १६ महा, प्राप्)।

धिसम पु [धियम] बुद्ध्यादि, गुर-गुद (वाप)।

धिसि म [धिक्] चिक्कार, छी, (मुग ३६३ सण)।

धी देखो धीआ, *न मन्त *धुनियल धीर
मन्तीद धरिधरिधरि *धर (ममन १२, २०)।

धी क्षी [धी] बुद्धि, मति (पात्र, राया १, १६, कुप्र ११६, २४७, प्रासू २०) । 'धण वि [धन] १ बुद्धिमान, विद्वान् । २ पु- एक मनो का नाम (उप ७८ टी) । 'म, 'मंत वि [मन्] बुद्धिशीलो, विद्वान् (उप ७२ टी, कय, राज) ।

धी अ [धिक्] धिक्कार, छो (उव, वै ५५) ।

धीआ क्षी [दुहितृ] सहकी, पुनो (मूच १०६, नि ३६२, महा, भवि, पच ५२) ।

धीइ देखो धिइ, 'बुद्धा गारवस्विया चलि- त्थिया दुग्गला य धीरे' (पव ६२ टी) ।

धीउत्थिया क्षी [दे] पुतलो (स ७३७) ।

धीमल न [धिम्मल] निम्नतीय मैल (तडु ३०) ।

धीर अक्ष [धीरय्] १ धीरज धरना । २ सक. धीरज देना, आस्वाप्तन देना । धीरंत (गउड) ।

धीर वि [धीर] १ धैर्यवाला, सुस्थिर, अ- षडमल (से ५, ३०, गा ३६७, ठा ५, २) । २ बुद्धिमान, पण्डित, विद्वान् (उप ७६ टी, पमं २) । ३ धिवेकी, शिष्ट (सूप्र १, ७) । ४ सहस्रियु (सूप्र १, ३, ४) । ५ वृ. परमेश्वर, परमात्मा, जित्त-देव । ६ गणधर-देव (भावा, भाव ४) ।

धीर न [धैर्य] धीरज, धीरता (हे २, ६४, कुमा) ।

धीरय सय [धीरय्] सान्त्वना देना, विलासा देना । कर्म. धीरविगति (कुप्र २७३) ।

धीरयण न [धीरण] धीरज देना, सान्त्वना (वव १) ।

धीरिय वि [धीरित] जिसको सान्त्वना दी गई हो वट, भाषावित (स ६०४) ।

धीराअ भव [धीराय्] धीर होना, धीरज धरना । वट् धीराअत (से १२, ७०) ।

धीराविअ देना धीरानिय (नि ५५६) ।

धीरिअ देवो धीर = धैर्य (हे २, १००) ।

धीरिअ देवो धीरविय (भवि) ।

धीरिम पुक्षी [धीरत्त] धैर्य, धीरज (उप ६२, सुपा १०६, भवि, कुप्र १५०) ।

धीवर पुं [धीवर] १ मछलीमार, अलुप्रा, मल्लाह, नातजीवी (कुमा, कुप्र २४७) । २ वि. उत्तम बुद्धिवाला (उप ७८ टी, कुप्र २४७) ।

धुअ देखो धुव = धान् । धुषद (गा १३०) ।

धुअ सक [धु] १ कंपाना । २ कंकना । ३ व्याप करना । वक्र धुअमाण (से १४, ६६) ।

धुअ वि धुव = धुन (भवि) । छन्द विरेप (पिंम) ।

धुअ वि [धूत] १ वम्पित । २ न कम्प (प्रक्र ७०) ।

धुअ वि [धुत] १ कम्पित (गा ७८ ३१, १७३) । २ त्यक्त (भीप) । ३ उच्छ्वित (से ४, ४) । ४ न. कर्म (सूप्र २, २) । ५ भोज, मुक्ति (सूप्र १, ७) । ६ व्याप, सय व्याप, सयम (सूप्र १, २, २, भावा) ।

'वाय पु [वाद्] कर्म नारा का उपदेश (भावा) ।

धुअगाय पु [दे] अवर, नीच, नमर (दे ५, ५७, पात्र) ।

धुअण देखो धुण (पव १०१) ।

धुअराय पु [दे] ऊपर देखो (पद्) ।

धुधुमार पुं [धुधुमार] गुण-विरोध (कुप्र २६३) ।

धुधुमारा क्षी [दे] इन्द्राणी, शची (दे ५, ६०) ।

धुष सक [धुष] मूल लगना । धुष्कद (भावा ६३) ।

धुषाधुष सक [धुष्] बाँधना, 'धुष्-धुष्' होना । धुष्काधुष्क (गा ५८३) ।

धुषधुधुअ } वि [दे] उल्लसित, उल्लास-
धुषधुधुअगिअ } धुन (दे ५, ६०) ।

धुष्कधुअ देखो धुषाधुष । वक्र. धुनकु-
धुअत (भवि) ।

धुषोदिअ न [दे] सशय, संदेह (वजा ६०) ।

धुषुधुमा अक्ष [धुषुधुमाय्] 'धुष्-धुष्' धावाज करना । वक्र. धुषुधुगत (पह १, ३—पव ५५) ।

धुदुअ देवो धुदुअ । धुदुअद (हे ४, ३६५) ।

धुण सक [धू] १ कंपाना, हिलाना । २ दूर करना, हटाना । ३ नारा करना । धुणद, धुणद

(हे ४, ५६; भावा. पि १२०) । कर्म. धुणव, धुणिअद (हे ४, २४२) । वक्र. धुणत (सुपा १८५) । संक्र. धुणिकण, धुणिया, धुणेरुण (पद्; सव ६, ३) । हेक्. धुणितार (सूप्र १, २, २) । कं. धुणेअ (भावा १) ।

धुणण न [धूनन] १ भयनयन । २ परित्याग, छोड़ना (राज) ।

धुणणा क्षी [धूनना] कम्पन, हिलना (भीप १६५ भा) ।

धुणा देखो धुणगा (उत २०, २७) ।

धुणाय सक [धूनय्] कंपाना, हिलाना । धुणावद (वजा ६) ।

धुणागिअ वि [धूनित] कंपाना हुआ (उप ७९८ टी) ।

धुणि देखो सुणि (पद्) ।

धुणिकण } देखो धुण ।
धुणित्तार }

धुणिय वि [धूत] कम्पित, हिलाना हुआ, 'मलयय धुणिय' (सुपा ३२०, २०१) ।

धुणिया } देखो धुण ।
धुणिअ }

धुण वि [धाव्य] १ दूर करने योग्य । २ न. वाप । ३ कर्म (सव ६, १, दसा ६) ।

धुत्त वि [धूत्त] १ ठग, वक्क; प्रतारक (प्रासू ४०, था १२) । २ लुभा खेतनेवाला । ३ वृ. बहुरो का पेठ । ४ लोहे की वाट—मैल । ५ सवण विशेष, एक प्रकार का नोन (हे २, ३०) ।

धुत्त वि [दे] १ विलोप (दे ५, ५८) । २ भाषात (पद्) ।

धुत्त } सक [धूत्तय्] ठगना । धुत्तरति
धुत्तार } (धुपा ११४) । वक्र. धुत्तरत (भा १२) ।

धुत्तारिअ वि [धुत्तित] ठगा हुआ. वञ्चित (उप ७२८ टी) ।

धुत्ति क्षी [धूत्ति] जरा, बुढ़ापा (राज) ।

धुत्तिअ वि [धुत्तित] वञ्चित, प्रतारित (गुपा ३२४, था १२) ।

धुत्तिम दुक्षी [धूत्तय्] धूत्तता, धूत्तन, ठगाई (हे १, ३५, कुमा, था १२) ।

धुत्ती क्षी [धूत्ती] धूत्त क्षी (वजा १०६) ।

धुत्तरीय न [धत्तूरक] धत्तूर का धुण (वज्रा १०६)।

धुदधुअ (भा) धक [शब्दाय] धावाज करना। धुदधुअ (हे ४, २३५)।

धुप देलो धिपप। धुपइ (प्राक् ७०)।

धुमप पु [धूम] १ धूम, धुमा। २ वण-विशेष वपोत-वर्ण। ३ वि कोषत वर्ण वाला। 'धुप पु [१३] एक रागस (हे १२, ६०)।

धुर न, देलो धुरा (उप पु ६३)।

धुर पु [धुर] १ ज्योतिष्क ग्रह विशेष (छा २, ३)। २ कर्जदार, ऋणी 'जस कल सौमि बहिवाजडाइ तस धुरपण सभ मूरपरि देउ धुराए' (सुपा ४२६)।

धुरधर वि [धुरधर] १ भार को बहल करने में समर्थ, किसी कार्य को पार पहुँचाने में शक्तिमान, भारवाहक (सि ३, ३६)। २ नेता मुखिया समुदा (सण उतर २०)। ३ पु गाँधी, हल आदि खींचनेवाला बेल (दि ८, ४४)।

धुरा की [धुर] १ गाँधी बौरह का मय भाग, धुरी (उप)। २ भार, बोझ। ३ बिता (हे १, १६)। 'धार वि [धार] धुरा की बहल करनेवाला, धुरधर (पउम ७, १७१)।

धुरी की [धुरी] मझ, धुरा, गाँधी का सूमा (मणु)।

धुरीण वि [धुरीण] धुरधर, मुखिया, समुदा (धर्मवि १३६, सम्मत ११८)।

धुप सव [धाव] मोला, मुठ करना। धुवइ, धुवति (हे ४, २३८, गा ४३१, पिठ २८)। बह, धुपत (सि ८, १०२)। बवह धुपत, धुवमाण (गा ४६३, से ६, ४५, वजा २४, पि ३३८)।

धुप सक [धु] बँजाना, हिलाना। धुवइ (हे ४, ५६, पद)। बने, धुवइ (सुमा)। बवह धुवत (सुमा)।

धुप वि [धुप] १ निरवत, स्थिर (जीव ३)। २ नित्य, शरवत, वरदा-स्वाधी (छा ५, ३, सूम २, ४)। ३ धारयमात्री (सूम २, १)। ४ निरिचत, निमत (भावा)। ५ पु, धव ने शरीर का भावत (सुमा)। ६ मोप,

मुक्ति। ७ समय, इन्द्रियादि निग्रह (सूम १, २, १)। ८ सखार (मणु)। ९ न मुक्ति का कारण, मोक्ष-मार्ग (भावा)। १० कर्म (मणु)। ११ श्रवत, श्रितराय, 'धुवमो गिएहइ (छा ६)। 'कम्मिय पु [कर्मिक] मोहार आदि शिल्पी (वव १)। 'चारि वि [चारिण] मुमुक्षु, मुक्ति का अभिन्नापी (भावा)। 'गिगाह पु [निग्रह] धाव-स्थक, श्रवय करने योग्य अनुष्ठान विशेष (मणु)। 'मग्ग पु [मार्ग] मुक्ति मार्ग, मोक्ष मार्ग (सूम १, ४ १)। 'राहु पु [राहु] राहु विशेष (सम २६)। 'वण पु [वर्ण] १ समय। २ मोक्ष मुक्ति। ३ शरवत यरा (भावा)। देलो धुअ = धुव।

धुयण न [धानन] १ प्रदासन (मोच ७२ ३४७ छ २७२)। २ वि. कपावेनाला, पिलावताला। जो 'णी (सुमा)।

धुण धुन [धूपन] १ धूप देना। धूप पान (यस ३ ६)।

धुविया की [धुवित] कर्म विशेष, धुव-वर्णिनी कर्म प्रकृति (वव ५, ६६)।

धुव देलो धुप = धाव। धुवइ (सदि ३६)।

धुवत देलो धव = धु।

धुवत } देलो धुव = धाव।
धुवमाप }

धुइअ वि [दे] ठुरखत, भागे लिया हुआ (पद)।

धूअ वि [धूत] देलो धुअ = धुत (भावा, वस ३, १३, पि ३१२, ३२२ सूम १, ४, २)।

धूअ देलो धुव = धूप (सुपा ६३७)।

धूअ न [धूत] पहले बँधा हुआ कर्म, पूर्व-कर्म (सूम २, २, ६५)।

धूआ की [दुहिय] तख्ती, पुनी (हे २, १२६, प्राप् ६४)।

धूण पु [दे] गज, हाथी (दे ५, ६०)।

धूणिय वि [धूनिन] नमित (सूम ६८)।

धूम पु [धूम] १ होग धाँस बगार (पिठ २४०)। २ जोष, झुला। ३ वि जोषी (संबोध १६)।

धूम पु [धूम] १ धूम, धुमा, धग्नि-विह (गउड)। २ द्वेप, धग्नि (पएह २, १)।

'इमाल पु व [ध्मार] द्वेप धीर राग (मोच २८८ भा)। 'केउ धू [केत] १ ज्योतिष्क यह विशेष (छा २, ३, पएह १, ५, मोच)। २ वहि धग्नि धाम (उत्तर २२)। ३ अशुभ उपात का सूचक तारा-धूम (गउड)। 'चारण पु [चारण] धूम के भवसम्बन्ध से आकार में गमन करने की शक्तिवाला धुनि विशेष (गच्छ २)। 'जोणि पु [धोनि] बावन, नेप (वास)। 'ज्मय देलो 'द्वय (राज)। 'द्वय पु [द्वोप] भिन्ना वा एक दोष, द्वेप से भोजन करना (भावा २, १, १)। 'द्वय पु [ध्वज] वहि धग्नि (वास उर १०३ १ टी)। 'पभमा, 'पवहा की [प्रभा] पाचवी नर-धुविकी (छा ७ प्राक्)। 'ल वि [ल] धुमा वाला (उप २६४ टी)। 'वडल पुन [पटल] धूम-समूह (हे २, १६८)। 'वण वि [वर्ण] पाण्डुर वर्णवाला (सुपा १, १७)। 'सिहा की [शिरसा] धुरै वा धमनाप (छा ४, २)।

धूमस पु [दे] धमर, नीरा, ममरा (दे ५, ५७)। धूमण न [धूमन] धूम पान (सूम २, १)। धूमहार न [दे] गबाज, तातावन, भरोला (दे ५)। धूमद्वय पु [दे] १ तबाग तलान, तालाव २ महिय, मैता (दे ५, ६१)। धूमद्वयमहिंसी की व [दे] इतिहा नमान (दे ५ ६२)। धूमपलियाम नि [दे] गर्त में डालकर माय लगान पर भी जो बच्चा रह जाय वह (निद्र १५)। धूममहिंसी की [दे] मोहार, कुहावा, कुहावा (दे ५ ६१ वाप)। धूमरी की [दे] १ मोहार, कुहावा (दे ५, ६१)। २ दुहिन, हिम (पद)। धूमसिद्धा की [दे] मोहार, कुहावा (दे ५, धूमा ५११, छा १०)। धूमा देलो धूमात्र। धूमाइ (प्रा ७१)। धूमाइ यव [धूमाय] १ धूमा करना। २ जलाना। ३ धूप की छद्म धावतला।

धूमार्ति (सि ८१६, गउड) । वक्र. धूमायंत (गउड, से १, ८) ।

धूमाभा की [धूमाभा] पाँचवीं नरक-पृथिवी (पउम ७५, ४७) ।

धूमिअ वि [धूमित] १ धूमयुक्त (पिंड) । २ छौंया हूमा (शाक आदि) (दे ६, ८८) ।

धूमिआ की [दे] नोहार, कुहासा (दे ५, ६१; पाप, ठा १०, गग ३, ७, अणु) ।

धूयरा देखो धूआ (सूय १, ४, १, १३) ।

धूरिअ वि [दे] धीरं. सम्भा (हे ५, ६२) ।

धूरिअवट्ट पुं [दे] भय, धोडा (हे ५, ६१) ।

धूलिआ (पग) देखो धूलि (हे ४, ४३२) ।

धूलि } की [धूलि, 'ली] धूल, रज, रेणु
धूली } (गउड, प्रासु २८, ८४) । 'कंज,
'कंजव पुं [कदम्य] धूमि श्रुत मे निक-

सनेवाला कदम्य-श्रुत (कुमा) । 'जघ वि [जङ्ग] जिसके पाँव में धूल लगी हो वह (वव १०) । 'धूसर वि [धूसर] धूल से लित (गा ७७४, ८२६) । 'धोड वि [धोड] धूल को साफ करनेवाला (सुपा ३३६) । 'पंथ पु [पय] धूलि-बहुल मार्ग (मोप २४ टी) । 'वरिस पु [वर्य] धूल की वर्षा (भावम) । 'हर न [गृह] वर्षा श्रुत में लकने लोग जो धूल का घर बनाते हैं वह (उप ५६७ टी) ।

धूरिहडी की [दे] पर्व-विशेष, होली, धूमि-हडीपमसणसरिस सम्भेति हड्डिण्यज' (बुलक ५) ।

धूलोयट्ट पुं [दे] भय, धोडा (दे ५, ६१) ।

धूय सक [धूपय] धूप करना । धूवेज (भाषा २, १३) । वक्र. धूयंत (पि ३६७) ।

धूल पुं [धूप] १ सुगन्धि द्रव्य से उत्पन्न धूम । २ सुगन्धि द्रव्य-विशेष, जो देव-यूजा आदि में जलाया जाता है (छाया १, १, सुर ३, ६५) । 'घटी की [घटी] धूप-पात्र, धूप से गरी हुई कलरी (वं १) । जंत न [यन्त्र] धूप-पात्र (दे ३, ३५) ।

धूपण न [धूपन] १ धूप देना । २ धूप-पात्र, रोग की निवृत्ति के लिए किया जाता धूप का पात्र, 'धूपणे त्ति वगणे य व लीकम्मविरेयणे' (वस ५, ६) । 'वट्टि की [वत्ति] धूप की बनी हुई वत्तिका, भगवत्पत्नी (कम्पु) ।

धुविअ वि [धूपित] १ तापित, गरम किया हुआ । २ हींग आदि से छौंका हुआ (बाद ६) । ३ धूप दिया हुआ (मोप, मज्ज १) ।

धूसर पुं [धूसर] १ हलका पीसा रंग, ईश्वर पाएहु वर्ये । २ वि. धूसर रंगवाला, ईश्वर पाएहु बलवाला (प्रासु ८४, गा ७७४, से ६, ८२) ।

धूसरिअ वि [धूसरित] धूसर बलवाला (पाप, मवि) ।

घे सक [घा] धारण करना । वेड (सवि ३३), 'पेहि घीरह' (कुप १००) ।

घेअ } वि [घेय] ध्यान योग्य (मणि
वेअ } १४, छाया १, १) ।

घेउल्लिया देखो घीउल्लिया (सुल ३, १) ।

घेअ वि [घेय] धारण करने योग्य (छाया १, १) ।

घेअ न [घेय] धारण, धीरता (पण्ड २, २) ।

घेणु की [घेणु] १ नव-प्रयुक्त गी । २ सवत्सा गी । ३ दूसरा गाय (हे ३, २६, बंठ) ।

घेर देखो घीर = घेर्य (विक १७) ।

वेवय पुं [वेवत] स्वर-विशेष, 'वेवयस्वरसं-पण्णा भवति वलहस्पिधा' (ठा ७—पय ३६३) ।

घोअ सक [घाय] शोना, रुद्ध करना, पसारना । घोएज (भाषा) । वक्र. घोर्यंत (सुपा ८३) ।

घोअ वि [घीत] घोया हुआ, प्रभावित (से १, २५, ७, २०, गा ३६६) ।

घोअग वि [घावक] १ शोनेवाला । २ पुं, घोदी (उप पु ३३३) ।

घोअण वि [घावन] घोना, प्रशानन (या २०, रमण १८, मोप ३४७) ।

घोइअ देखो घोअ = घीत (गा १८) ।

घोअ वि [घुय] १ धुरीण, भार-बाहक । २ भयुष्मा, नेता, धुरन्धर (वव १) ।

घोरण न [दे] गति-वातुय (मोप) ।

घोरणि } की [घोरणि, 'जी] पक्ति, कतार
घोरणी } (सुपा ४६, मवि, प) ।

घोरिय देखो घोअ (सुपा २८२) ।

घोरुगिणी की [घोरुगिनि] देश-विशेष में उत्पन्न की (छाया १, १—पय ३७) ।

घोरेय वि [घीरेय] देखो घोअ (सुपा ६५०) ।

धोव देखो धोअ = धाव । धोवइ (स १५७; पि ७८) । धोवेजा (भाषा) । वक्र. धोवत (मवि) । कवक. धोव्यत, धोव्यमाण (पउम १०, ४४, छाया १, ८) । क. धोवणिय (छाया १, १६) ।

धोवण देखो धोअण (पिंड २३) ।

धोवय देखो धोवग (दे ८, १६) ।

धुव (मप) म [धुवम्] भटल, स्थिर (हे ४, ४१८) ।

॥ इय चिरिपाइअसहस्रहण्यग्निमि धमासदसर्वसखो

ख्योसिद्धमो तरंगो सगतो ॥

न देखो रा

१ प्राकृत भाषा में नकारादि सब शब्द एकारादि होते हैं, मर्यादादि के नकार के स्थान में नित्य या विकल्प से 'ए' होनेका व्याकरणी का सामान्य नियम है (प्राप्र २, ४२; दे ५, ६३) टी० हे १, २२६; पट्ट १, ३, ५३), और प्राकृत-साहित्य ग्रन्थों में दोनों तरह के प्रयोग पाए जाते हैं। इससे ऐसे सब सब शब्द एकार के प्रकरण में आ जाने से यहाँ पर पुनरावृत्ति कर व्यर्थ में पुस्तक का कनेवर बढ़ाना उचित नहीं समझा गया है। पाठवण एकार के प्रकरण में आदि के 'ए' के स्थान में सर्वत्र 'अ' समझ लें। यही कारण है कि नकारादि शब्दों के भी प्रमाण एकारादि शब्दों में हो दिए गए हैं।

प

प पुं [प] १ श्रोष्ठ स्त्रीयादि व्यञ्जन बल-विशेष (प्राप्र)। २ पाप-न्याय, 'पति य पापवन्धने' (भावम)।

प भ [प्र] इत मर्यादा का सूचक अव्यय—१ प्रकर्ष, 'पप्रोत्' (से २, ११)। २ प्रारम्भ, 'पणमिष', 'पक्वेद' (ज १; भाग १, १)। ३ उपपत्ति। ४ क्पाति, प्रसिद्धि। ५ व्यवहार। ६ चारों ओर से (निष्ठा १, हे २, २१७)। ७ प्रसवण, मूल (विने ७८१)। ८ फिर-फिर (निष्ठा ३, १७)। ९ गुजरा हुआ, विनष्ट, 'पागुम' (ठा ४, २—पत्र २१३ टी)।

प वि [पाच्] पूर्वं तत्क स्थित (भक्ति)। पञ्जाम पुं [पञ्जम] ध्वज-विशेष (विग)। पञ्जपुं [प्रजह] रासज-विशेष (से १२, ८३)।

पञ्चम देखो पाञ्चम = पञ्चम (प्राप्र ७८)। पट्ट म [प्रति] १ अपेक्षा-सूचक (पुननि ३, १)। २ तत्प, सरफ, शोर 'अत्यन्त पट्ट बलियं' (सम्मत १४१; पमंति १६)।

पट्ट पुं [पति] १ पय, भर्जा, परस्परि कृते-पाला (पाप्र, ना १५६; कम्प)। २ मानित।

३ रसक, 'पूवई', 'तिमसपणवई', 'नरवई' (गुण ३६; भवि १७, १६)। ४ श्रेष्ठ, उत्तम, 'परणवरवई' (भवि १७)। ५ घर न [गृह] समुदास (पट्ट)। ६ वया, वया की [मृता] पति-सेवा-परायण की, मूलवती की, सती (भा ४१७, सुर ६, ६७)। ७ घर देखो 'घर' (हे १, ४)।

पट्ट देखो पट्टि (ठा २, १, काल, उवर २१)। पट्ट वि [दे] १ अक्षित, तिरस्कृत। २ न, पहिया, रथ चक्र (दि ६, ६४)।

पट्ट देखो पट्ट = प्रकृति (से २, ४५)।

पट्ट देखो पय = पच्।

पट्टउपकरण न [प्रत्युपकरण] प्रत्युपकार, प्रति-सेवा (रंभा)।

पट्टल देखो पट्टिल (नाट—विक् ४५)।

पट्टवया देखो पट्ट-वया (पाप्र १, १६—पत्र २०४)।

पट्ट (मप) देखो पाइक (विग)।

पट्टिदि देखो पट्टिदिदि (नाट—शुद्ध ११६)।

पट्ट देखो पाइक (विग नि १६४)।

पट्टिदि देखो पट्टिदिदि (से ६२३)।

पट्टिच्छन्न पुं [प्रतिच्छन्न] भूत-विशेष (रान)।

पट्टिज (मप) वि [पतिन] गिरा हुआ (विग)।

पट्टिज (मप) वि [प्राप्त] मिला हुआ, लभ्य (विग)।

पट्टिजा देखो पट्टिजा (भक्ति सण)।

पट्टि वि [दे] १ जिसने रस को जाना हो वह। २ विरल। ३ पुं, मार्ग, रास्ता (दि ६, ६६)।

पट्टि देखो पट्टि (सुट्टि ५ टी)।

पट्टि वि [दे] प्रेषित, भेजा हुआ, 'जह अह-भुवर मिच्छो भमपरट्ट विणस पट्टिबि' (संनोष ३)।

पट्टि पुं [प्रतिष्ठ] भगवान् सुपाईनाय के पिता का नाम (कम्प १५०)।

पट्टि वि [प्रविष्ट] जिसने प्रवेश किया हो वह (म ४२१)।

पट्टिय चक्र [प्रति-स्थापय] प्रति आदि की स्तिथिपूर्वक स्थापना करना। पट्टिरेखा (पंचा ७, ४३)।

पट्टियन देखो पट्टियायन (पत्र)।

पइसार सक [प्र + चेश्य] प्रवेश करना ।
पइमारइ (भवि) ।

पइसारिय वि [प्रवेशित] जिसका प्रवेश
कराया गया हो वह, 'पइसारिमो य नयति'
(महा, भवि) ।

पइइंत पु [दे] जयन्त, इन्द्र का एक पुत्र
(दे ६, १६) ।

पइहा सक [प्रति + हा] त्याग करना ।
सह पइहिऊण (उर) ।

पइं देखो पइ = पति (पइ; हे १, ४, सुर
१, १७६) ।

पइइ वि [प्रतीत] १ विज्ञात । २ विरवस्त ।
३ प्रसिद्ध, विख्यात (विदे ७०६) ।

पइइ न [प्रतीक] भ्रम, धन्यत्व (रंभा) ।

पइइं छी [प्रतीति] १ विरवास । २ प्रसिद्धि
(उर) ।

पइइ देखो पलीन । पइइइ (वस) ।

पइइ पु [प्रदीप] दीपक, दिया (पाप
जी १) ।

पइइ वि [प्रतीप] १ प्रतिकूल (हे १,
२०६) । २ पुं. शत्रु, दुश्मन (उर ६४८ टी,
हे १, २२१) ।

पइइस (भग) देवा पइस । पइइइ (भवि) ।

पइ (भग) नि [पठित] गिरा हुआ (गिग) ।

पइअ देखो पाणय = प्राइव (प्राह ५) ।

पाइअ पु [दि] दिन, दिवस (दे ६, ५) ।

पइअ न [प्रयुत] संख्या विशेष, 'प्रयुताज्ञ'
को बीजतरी लाभ से गुणने पर जो संख्या
लब्ध हो वह (दा २, ४) ।

पइअंग न [प्रयुताज्ञ] संख्या विशेष, 'प्रयुत'
को बीजतरी लाभ से गुणने पर जो संख्या
लब्ध हो वह (दा २, ४) ।

पउंज सब [प्र + युज्] १ जोड़ना, युक्त
करना । २ उन्वारण करना । ३ प्रवृत्त
करना । ४ प्रेरणा करना । ५ ध्वस्त
करना । ६ बला । पउंजइ (महा, भवि; नि
५०७) । पउंजइति (भय) । वट्. पउंजवत्,
पउंजमाण (पीर, पउम २५, ३६) । वपट्.
पउंजमाण (प्रवी २३) । वट्. पउंजअउर,
पउंज (पइ २, ३, ज ७२८ टी; नि
११८४), पउंजव (भर) (हुमा) ।

पउंजग वि [प्रयोजक] प्रेरक, प्रेरणा करने-
वाला (पंच १) ।

पउंजग वि [प्रयोजन] प्रयोग करनेवाला
(पउम १४, १०) । देखो पउओअण ।

पउंजणया १ स्त्री [प्रयोजना] प्रयोग (घोष
पउंजणा ११४), 'दुस्स कीरइ वण'
वड्मि वए पउंजणा दुस्स' (वज्ज २) ।

पउंजिअ वि [प्रयुक्त] जिसका प्रयोग किया
गया हो वह (मुग १४०; ४७७) ।

पउंजिउ वि [प्रयोज्य] प्रवृत्ति करनेवाला
(ठा ५, १) ।

पउंजिउ वि [प्रयोजयिह] प्रवृत्ति करनेवाला
(ठा ५, १) ।

पउंज } देखो पउज ।

पउंजमाण }

पउट् घ [परिपुत्य] मार कर । 'परिहार पु
[परिहार] मर कर फिर उसी खीरे में
उत्पन्न होकर उस खीरे का परिभोग करना,
'एव सखु गोसाला । वणस्सइ-वाइयामो पउट्-
परिहारं परिहरति' (मग १५—पय ६६७) ।

पउट् वि [परिवर्त] १ परिवर्त, मर कर
फिर उसी खीरे में उत्पन्न होना । २ परिवर्त
वाक्य, 'एव सो गोयमा । गोसालस्स मंखलि-
पुत्तम पउट्' (मग १५—पय ६६७) ।

पउट् वि [प्रउट] बरना हुआ (हे १,
१११) ।

पउट् पुं [प्रउट] हाथ का पहना, बनाई और
देहती के बीच का भाग (पइ १, ४—पय
७८, वण, हुमा) ।

पउट् वि [प्रउट] १ विशेषेण विहित । २ न
भवि उत्पन्न (वड्) ।

पउट् वि [प्रउट] द्वेप-पुत्र, 'तो सो पउट्
चित्तो' (मुग ४०५) ।

पउट् न [दे] १ गृह घर । २ पुं. घर का
परिभोग प्रवेश (दे ६, ४) ।

पउग घ [प्रयुणय] वण्डस्त होना,
नीरोग होना 'वणस्स विगियायाए वणउ
मत्तो न सोममि' (वर्षत् ११८४) ।

पउग पुं [दे] १ वल प्रवेह । २ नियम-
विशेष (दे ६, ६२) ।

पउग नि [प्रयुग] १ पउ, निर्दोष 'वह' ।

सन्वरणविहाणं जामइ पउण्डियाणं (मुग
४७२; महा) । २ तीमार, तय्यार (दस ३) ।

पउणाड पुं [प्रनुनाट] वृक्ष विशेष, वमाड
का पेड, चनवड (दे ५, ५ टि) ।

पउत्त भ्र [प्र + वृत्] प्रवृत्ति करना । वट्.
पउत्तिउव (श्री) (नाट—शुभ ८७) ।

पउत्त वि [प्रयुत्त] जिसका प्रयोग किया
गया हो वह (महा, भवि) । २ न. प्रयोग
(छाया १, १) ।

पउत्त पुं [पीर] लठके का लठका, पीता
(प्राह १०, शु ११७) ।

पउत्त न [प्रनो] प्रतीक, प्राज्ञ, पात्र, पैना
(दमा १०) ।

पउत्त वि [प्रउत्त] जिसने प्रवृत्ति की हो वह
(उवा) ।

पउत्ति स्त्री [प्रउत्ति] १ प्रवर्तन (मग १५) ।
२ समाचार, वृत्तांत (वाघ, सुर २, ४८,
३, ८५) । ३ कार्य, राज, काम । 'याउय वि
[व्यावृत्त] कार्य में लगा हुआ (मीन) ।

पउत्ति स्त्री [प्रयुत्ति] यान, हवीकट (उर
पु २२८, राव) ।

पउत्तिउव देखो पउत्त = प्र + वृत् ।

पउत्तु [प्रयोज्य] १ प्रयोग-कर्ता । २ प्रेरणा
कर्ता । ३ कर्ता, निर्माता । स्त्री 'त्ती (सं
४५) ।

पउत्तय न [दि] १ गुण, घर (दे ६, ६६) ।
२ वि. प्राप्ति प्रवास में गया हुआ, 'एहि
गोवि पउयो मई न वण्णय सवि वण्णयेअ'
(या ७७ ६६७ हुमा ३०, पउम १७, ३,
वज्ज ७७, विव १३२, वर, दे ६, ६६,
नवि) । 'उट्ठया स्त्री [पतिरा] मिमरा
पति देवात्तर गया हो वह स्त्री (घोष ४१३,
मुग ५०८) ।

पउट्ठव देता पउंन ।
पउट्ठय देता पउओपय (मग ११, ११ टी) ।
पउट्ठय देतो पउओपय = प्रतीति (मा
११, ११ टी) ।

पउम न [पउ] १ पूर्ण विरापी कनक (ह
२, ११३ पइ १, ३, वण, पीर, प्राह
११३) । २ देशमान विशेष (मग ३३,
३५) । ३ संस्कार-विशेष, 'पउा' का चौथी
लाभ से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह

(ठा २, ४, इक) । ४ गण्य द्रव्य विशेष (घीप, जेव ३) । ५ सुपमां समा का एक सिद्धासन (छाया २) । ६ दिन का नववीं मुहूर्त (जो २) । ७ दक्षिण रचक-पर्वत वा एक शिखर (ठा ८) । ८ पुं. राजा रामचन्द्र, सीता-पति (पउम १, ५; २५, ८) । ९ धातवीं बलदेव, योद्धा के बड़े भाई । १० इस ध्वसिपिणीकाल में उत्पन्न नववीं चक्रवर्ती राजा, राजा पयोत्तर वा पुन (पउम ५, १५३, १५४) । ११ एक राजा का नाम (उप ६४८ टी) । १२ मात्य नामक पर्वत का मयिष्ठाता देव (ठा २, ३) । १३ भरतसेन मे भगामी उत्सर्पिणी मे उत्पन्न होनेवाला धातवीं चक्रवर्ती राजा (सम १५४) । १४ भरत क्षेत्र का भावी धातवीं बलदेव (सम १५४) । १५ चक्रवर्ती राजा का निधि, जो दोग-नाशक सुन्दर वल्लो की पूति करता है (उप ६८६ टी) । १६ राजा शैलिक का एक पौत्र (निर २, १) । १७ एक जैन मुनि का नाम (कप्य) । १८ एक हृद (कप्य) । १९ पद्म वृक्ष का मयिष्ठाता देव (ठा २, ३) । २० महापद्म नामक जिनदेव के पास दीक्षा लेनेवाला एक राजा, एक भावी राजपि (ठा ८) । २१ शुम्भ न [शुम्भ] १ धातवीं देव-लोक में स्थित एक देव विमान का नाम (सम ३५) । २ प्रथम देवलोक में स्थित एक देव-विमान का नाम (महा) । ३ पुं. राजा शैलिक का एक पौत्र (निर २, १) । ४ एक भावी राजपि, महापद्म नामक जिनदेव के पास दीक्षा लेनेवाला एक राजा (ठा ८) । ५ चरित न [चरित] १ राजा रामचन्द्र की जीवनी—चरित । २ प्राकृत भाषा वा एक प्राचीन ग्रंथ, जैन रामायण (पउम ११८, १२१) । ६ णाम [नाम] १ बामुदेव, विष्णु (पउम ४०, १) २ भगामी उत्सर्पिणी-वात में भरतसेन में होनेवाला प्रथम जिनदेव का नाम (पव ४६) । ३ भक्ति-नामुदेव के एक मारुदन्ति राजा का नाम (छाया १, १६—पत्र २१३) । ४ दल [दल] पद्म-पत्र (महा) । ५ दह पुं [द्रह] विविध प्रकार के कमलों से परिपूर्ण एक मद्य हृद का नाम (सम १०४, ४५; पउम १०२,

३०) । ६ द्यय पुं [ध्वज] एक भावी राजपि, जो महापद्म नामक जिनदेव के पास दीक्षा लेता (ठा ८) । ७ नाह देखो [णाभ (उप ६४८ टी) । ८ पुर न [पुर] एक दक्षिणार्ध नगर, जो धातकल 'नासिक' नाम से प्रसिद्ध है (राज) । ९ प्पभ पुं [प्रभ] इस भव-सर्पिणी काल में उत्पन्न पृष्ठ जिनदेव का नाम (कप्य) । १० प्पभा छो [प्रभा] एक पुष्प-रिणी का नाम (इक) । ११ प्पह देखो [प्पभ] (ठा १, १, सम ४३, पठि) । १२ भह पुं [भद्र] राजा शैलिक का एक पौत्र (निर २, १) । १३ मालि पु [मालिन] विद्यावर-चर के एक राजा का नाम (पउम ५, ४२) । १४ मुह देखो पउमाण्य (पह) । १५ रथ पुं [रथ] १ विद्यावर-चर का एक राजा (पउम ५, ४३) । २ मधुरा नगरी के राजा जयसेन का पुत्र (महा) । ३ राय पु [राय] रक्त वर्ण मणि विशेष (१३६, १६६) । ४ राय पु [राज] घातकीयदेव की भर-कंका नगरी का एक राजा, जिसने द्रौपदी का अपहरण किया वा (ठा १०) । ५ रक्षत्र पुं [रुक्ष] १ उत्तर-कुक्षेत्र में स्थित एक वृक्ष (ठा २, ३) । २ वृक्ष सहस्र बड़ा वन्य (जीव ३) । ३ लया छो [लत] १ कमलिनी, पद्मिनी (जीव ३, भग, वप्य) । ४ कमल के शाकारवाली वल्ली (छाया १, १) । ५ वडिंसय, 'वडिंसय न [वडिंसरु] पयावती देवी का लौघर्ष नामक देवलोक में स्थित एक विमान (राज, छाया २—पत्र २५३) । ६ वरवेइया छो [वरवेइडा] १ कमलों की थंछ देखिवा (मग) २ जम्बू द्वीप की जगती के ऊपर रही हुई देवी की एक भोग-मुनि (जीव ३) । ७ बूह पु [व्यूह] सैन्य की पचाकार रचना (पह १, ३) । ८ सर पुं [सरस] कमलों से युक्त सरोवर (छाया १, १, कप्य, महा) । ९ सिरी छो [श्री] १ भट्टम चक्र-वर्ती सुभुगराज की पटरानी (सम ११२) । २ एक छी वा नाम (धुमा) । ३ सेण पुं [सेन] १ राजा शैलिक के एक पौत्र का नाम, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी (निर १, २) । २ नागपुरा-जातीय एक देव का नाम (दीव) । ३ 'सेहर पुं

[सेहर] पृथ्वीपुर नगर के एक राजा का नाम (सम ७) । ४ गर पुं [कर] १ कमलों का समूह । २ सरोवर (उप १३३ टी) । ३ सण [सिन] पचाकार भ्रमन (ज १) ।

पउमग पुन [पद्मरु] केसर (दस ६, ६४) ।

पउमप्यह पुं [पद्मप्रभ] विष्णु की तेरहवीं शताब्दी का एक जैन प्राचार्य (विपा ३) ।

पउमा छो [पद्मा] १ लदनी । २ देवी-विशेष । ३ सौग, लवंग । ४ पुष्प विशेष, कुसुम्भ-पुष्प (प्राह २८) ।

पउमा छो [पद्मा] १ बीलवें तीर्थंकर श्री मुनिमुक्तस्वामी की माता का नाम (सम १५१) । २ तीर्थमें देवलोक के इन्द्र की एक पटरानी का नाम (ठा ८—पत्र ४२६, पउम १०२, १५६) । ३ भीम नामक राजसेन की एक पटरानी (ठा ४, १—पत्र २०४) । ४ एक विद्यावर कन्या का नाम (पउम ६, २४) । ५ रावण की एक पत्नी (पउम ७४, १०) । ६ लसो (राज) । ७ वनस्यानि-विशेष (पह १—पत्र ३६) । ८ चौदहवें तीर्थंकर श्रीमन्महावीर की मुख्य शिष्या का नाम (पव ६) । ९ सुदर्शन-जम्बू की उत्तर दिशा में स्थित एक पुष्करिणी (इक) । १० दूतरे बलदेव और वासुदेव की माता का नाम । ११ तेरह-विशेष (राज) ।

पउमाड पु [दे] वृक्ष विशेष, पनाड वा पेड वनवट (दे ५, ५) ।

पउमाण्य पुं [पद्मानन] एक राजा का नाम (उप १०३१ टी) ।

पउमाभ पुं [पद्माभ] पृष्ठ तीर्थंकर का नाम (पउम १, २) ।

पउमार [दे] देखो पउमाड (दे ५, ५ टि) ।

पउमारुदे छो [पद्मावती] १ जम्बूद्वीप के सुभेद पर्वत के पूर्व तरफ के रचन पर्वत पर रहनेवाली एक दिव्यमारी-देवी (ठा ८) । २ मगधवा पार्थनाय की शायन-देवी, जो मागध धरसेन की पटरानी है (पति १०) । ३ योद्धा की एक पत्नी का नाम (संत १५) । ४ भीम-नामक राजसेन की एक पटरानी (सम १०, ५) । ५ शक्रेन्द्र की एक

पटरानी (छाया २—पन २५३) । ६ चम्पे-
खर राजा विषाहान की एक श्री का नाम
(छाया ४) । ७ राजा कृष्ण की एक पत्नी
(मग ७, ६) । ८ धर्मोपा के राजा हरिसिंह
की एक पत्नी (पम ८) । ९ तैत्तिरीय के
राजा वनवनेतु की पत्नी (सं १) । १०
कौरावमी नगरी के राजा शतानीक के पुत्र
हरयन की पत्नी (विपा १, ५) । ११ खेलक-
पुर के राजा खेलक की पत्नी (छाया १, ५) ।
१२ राजा कृष्ण के पुत्र बालकृष्ण की
भार्या का नाम । १३ राजा महात्म की भार्या
का नाम (निर १, १, ५; नि १३६) । १४
वीरसर्द हीरसंवर श्रीधुनिमुद्रतत्त्वामी की माता
का नाम (पम ११) । १५ पुण्डरीकिणी
नगरी के राजा महापद्म की पटरानी (भाषु
१) । १६ रम्यनामक विजय की राजधानी
(जं ५) ।

पटमायसी (मर) श्री [पटमायसी] छन्द-
विधेय (विम) ।

पटमिणी श्री [पटिमिनी] १ बमसिनी,
बमल-लता (कन्य; मुवा १३५) । २ एक श्रेष्ठ
की श्री का नाम (ज ७१६ टी) ।

पटमुत्तर पुं [पट्मोत्तर] १ नरपे पत्नी
श्रीमहापद्म के पिता का नाम (मम
१५२) । २ मन्दर पर्वत के भद्रराज वन का
एक सिंहली पर्वत (धर) ।

पटमुत्तरा श्री [पट्मोत्तरा] एक प्रकार की
शरद, लाई, चीनी (छाया १, ७—पन
पण २२६; १७) ।

पटर नि [पटुर] प्रभु, गृह (हि १, १८०;
हुमा, गुर ४, ७४) ।

पटर नि [पौर] १ कुर-संस्थी, मगर के संक्षय
रत्नसना । २ मगर में रहनेवाला (हि १,
११२) ।

पटरय पुं [पीरय] पुनानम कट-सटीय
द्रु का पुत्र (सं १) ।

पटराग (मर) देतो पुटान (मरि) ।

पटरिस नि [पीरयेय] दुर्ग-वृत्र, दुल का
बनाया हुआ 'वेतना सह दारु-विषम' (वर्ष ८६२) ।

पटरिस पुं [पीरय] पुष्पल, पुष्पार्थ,
पटरुस } बोरता, मरदानी (हि १, १११;
१६२); 'पटरुस' (प्रम); 'पटरुस' (सं १) ।

पडल सक [पच] पवाना । पडल (हि
४, ६०; दे ६, २६) ।

पडलग न [पचन] पवाना, पान (पह १,
१) ।

पडलिअ नि [पफ] पग हुमा (पाघ) ।

पडलिअ नि [प्रजलिअ] दण, जता हुमा
(जग) ।

पडल देतो पडल । पडल (पह; हि ४, ६०
दि) ।

पडल नि [पफ] पग हुमा (पवा १) ।

पडलग न [पचनक] खोई का पान (दर ०
हुं हारि ० पन ६७, २) ।

पडयिय नि [प्रमुपित] विरोप कुपित, क्रुड
(महा) ।

पडस सक [प्र + द्विप्] द्वेप बरता । पड-
सेजा (मोप २५ भा) ।

पडसय नि [दि] देश-विरोप में उग्र । श्री,
'मिया (मोप) ।

पडस देतो पडस । पडसावि (हुम ३७७) ।
मह. पडसंन, पडसमाग (राज; सं २२) । संह. पडसिऊण (म ५१३) ।

पडहण (मर) देतो पडहण (मरि) ।

पडल न [दि] गृह, घर (दे ६, ४) ।

पड म [मगे] पहते, पूर्व; 'विषयमयण-
करतो क्षामरिभारो वयं पर होई' (मोप
४७ भा); 'जह पुण विमानपता पर म पता
उरससं व लने' (मोप १६८) ।

पडमियार पुं [मिणीचार] व्याप की एक
भाति, जो हरिणों की पकड़ने के लिए
हरिणी-मनुष्य की बजाये एवं पालते हैं (पह
१, १—पन १४) ।

पगर पुं [दे] १ कृति-विवर, काष्ठ का छिद्र ।
२ मार्ग, रास्ता । ३ बंटीदार नामक दुर्ग-
विरोध । ४ लो का छिद्र । ५ सेकना-भार-
स्तर । ६ नि, दुरात्म, दुष्टापी (दे ६,
१७) ।

पगरा पुं [दि] कृति-विवर, पटोली (दे ६,
१) ।

पएस पुं [प्रदेश] १ विजरा विभाग न हो
सके ऐसा मृम मयव (ठा १, १) । २
कर्म-द्वय का संघ (नव ३१) । ३ स्थान,
जगह (हुमा ६, ५६) । ४ देश का एक भाग,
प्रान्त (हुमा ६) । ५ परिमाण-विरोध, निरंश-
व्यवस्था-परिमित माप । ६ छोटा भाग । ७
परमाणु । ८ द्रव्यलुका । ९ व्यलुका, तीन
परमाणुओं का समूह (राज) । 'कर्म न
[कर्मन] कर्म-विरोध, प्रदेश-मय कर्म
(मग) । 'ग न [म] कर्मों के दक्षिणों का
परिमाण (मग) । 'पण नि [घन] निविड
प्रदेश (मोप) । 'णाम न [नामन] कर्म-
विरोध (ठा ६) । 'णाम पुं [नाम] कर्म-
द्रव्यों का परिमाण (ठा ६) । 'बंध पुं
[बन्ध] कर्म-द्वयो का क्षाम-प्रदेशों के साथ
संबन्ध (मम ६) । 'संक्रम पुं [संक्रम]
कर्म-द्रव्यों की निर स्थाय धाते कर्मों के रूप
में परिवर्तन करना (ठा ४, २) ।

पएसण न [प्रदेशान] जादेश, 'पणलणं
क्षाम जणयो' (भाषु १) ।

पएसय नि [प्रदेशक] जादेश, प्ररंन,
'मिद्विहवपम एधे' (मिती १०२५) ।

पएस पुं [प्रदेशान] स्थान व्याप एक
राज, जो श्री पार्थनाय मगान के वेदि-
नामक गणवर में प्रभु हुमा का (राय, हुम
१५५; या ६) ।

पएसिणी श्री [दि] पक्षों में रहनेवाली श्री,
पक्षिणी (दे ६, १ टी) ।

पएसिणी श्री [प्रदेशान] संभु के वन
की संवत्ती, वंसीनी (मोप ३६०) ।

पएसिय देतो पदेसिय (राज) ।

पओअ पुं [पयोद] मेघ (म ७, ५२) ।

पओअ देतो पओअ (दे १, २४४, मम ६;
म, नि ८२) ।

पओअन न [प्रयोजन] १ हेतु, निमित्त,
कारण (हुम १, १२) । २ कार्य, काम ।
३ मज्ज (महा, ज २३; मम ४८) ।

पओअ (टी) नि [प्रयोजित] विजरा
प्रदेश बनना पता हो रह (मर—मि
१०३) ।

पओअ पुं [प्रयोग] प्रयोग (हुम २, ७, ३) ।

पओग पुं [प्रयोग] १ शब्द-योजना (भास ६३) । २ जीव का व्यापार, चेतन का प्रयत्न, 'उपामो दुविगमो पद्योगवन्मिथो य विस्ससो चेव' (सम २५; ठा ३, १, सम्प १२६, स ५२४) । ३ प्रेरणा (आ १४) । ४ उपाय (आहु १) । ५ जीव के प्रयत्न में कारण-भूत मन भादि (ठा ३, ३) । ६ वाद-विवाद, शास्त्रार्थ (दसा ४) । 'कम्म न [कर्म] मन भादि को चेठा से आत्म-प्रदेशो के साथ चँधनेवाला कर्म (राज) । 'करण न [करण] जीव के व्यापार द्वारा होनेवाला किसी वस्तु का निर्माण, 'होह उ एगो जीववत्तावरो तेण ज विणिग्गमाण पमोकरण तय बहुहो' (विसे) । 'किरिया छी [क्रिया] मन भादि की चेठा (ठा ३, ३) । 'कनुय न [रूपधर्म] मन भादि के व्यापार-स्थान की बुद्धि द्वारा कर्म-परमाणुओं में बढनेवाला रस (सम्प २३) । 'बंध पु [बंध] जीव प्रयत्न द्वारा होनेवाला बन्धन (मग १८, ३) । 'मइ छी [मति] वाद-विषय-परिज्ञान (दसा ४) । 'संपया छी [संपत्ति] भाचार्य का वाद-विषयक सामर्थ्य (ठा ८) । 'सा घ [प्रयोगेण] जीव-प्रयत्न से (पि ३६४) ।

पओज देखो पउज = प्र + जुन् । पओजए (पच ६४) ।

पओजग वि [प्रयोजक] विनिर्वायक, निर्माणक, समज (परमं १२२३) ।

पओहु देखो पउहु = प्रओह (आप्र, औप, पि ८४) ।

पओत्त न [प्रतोत्त] प्रतोद, प्राज्ञन कटि, पैना । 'धर पु [धर] देतगछी हाकिनेवाला, बटल मान या गाडीमान (आमा १, १) ।

पओद पुं [प्रतोद] ऊपर देखो (औप) ।

पओप्पय पुं [प्रपीत्रक] १ प्रपीत्र, पीत्र या पुत्र । २ प्रस्थि या स्थि, 'विणु बनेलें तेणें समएण विमलरा आहमो पओप्पय धम्मपाग नामं धएगाए' (मग ११, ११—पच ५४८) ।

पओप्पिय पुं [दे. प्रपीत्रक] १ वंश-परम्परा । २ स्थि-मंतिक, स्थि संवात (मग ११, ११—पच ५४८ टी) ।

पओरासि पुं [पयोराशि] समुद्र (सम्पत्त १७४) ।

पओल पुं [पटोल] पटोल, परवर, परोप (एण १) ।

पओली छी [प्रतोली] १ नगर के भीतर का रास्ता (आणु) । २ नगर का दरवाजा, 'गोउरं पओली य' (पाप्र: सुपा २११, आ १२, उप पु ८५, भवि) ।

पओवट्टाव देखो पजवट्टाव । पओवट्टावेहि (पि २८४) ।

पओवाह पुं [पयोवाह] भेष, वाहन (पउम ८, ४६, से १, २४, सुर २, ८५) ।

पओस सक [प्र + द्विप्] द्वेय करना, बैर करना । पओसइ (सुल १, १४) ।

पओस पुं [दे. प्रद्वेप] प्रद्वेप, प्रकट्ट द्वेप (ठा १०, धल, राय, भाव ४, सुर १५, ५८, पुष्क ४६५, कम्म १, महाणि ४, कुप्र १०, स ६६६) ।

पओस पुन [प्रदोष] १ सन्यासाल, दिन श्रीर रात्रि का सन्धि-काल (से १, ३४, कुमा) । २ वि. प्रभुत सोपो से युक्त (सि २, ११) ।

पओहण (घप) देखो पउहण (भवि) ।

पओहर पुं [पयोधर] १ स्तन, धन (पाप्र: से १, २४, गउर, सुर २, ८५) । २ भेष, वाहन (बजा १००) । ३ छन्द-विशेष (पिग) ।

पंक पुं [पङ्क] १ कर्म, कौष्ठ, वादा, कांदो, बीर, 'धम्मसितपि नो धम्मं पंदव ययसुंगलें' (आ २८, हे १, ३०, ४, ३५७, प्राप् २५) । 'गुवइ व पं' (बजा १३४) । २ पाप (सुब २, २) । ३ अथवा, इन्द्रिय वगैरह का धर्मिह (निद्र १) । 'आवलआ छी [पलिरा] छन्द विशेष (पिग) । 'पपभा छी [प्रभा] चौथी नरक-भूमि (ठा ७, ६३) । 'वहुल वि [धहुल] १ कर्म प्रचुर (सय ६०) । २ पाप-प्रचुर (सुब २, २) । ३ पुन. रत्नप्रा नामक नरक भूमि का प्रथम बाएट (जीव ३) । 'य न [ज] बमत, पच (हे ३, २६, गउर, कुमा) । 'वई छी [वना] नदी विशेष (ठा २, ३—पच ८०) ।

पंकउ देखो पंचय (सम्पत्त ११८) ।

पंभा छी [पङ्का] चौथी नरक-भूमि (इक, कम्म ३, ५) ।

पंछभा छी [पङ्काभा] चौथी नरक-भूमि (उत्त ३६, १५८) ।

पंकावई छी [पङ्कानती] कुल नामक विजय के पश्चिम तरफ की एक नदी (इक, नं ४) ।

पंकिंय वि [पङ्कित] पंकभुल, कौचवाला (मग ६, ३, भवि) ।

पंकिल वि [पङ्किल] कर्ममत्ताला (आ २८; मा ७६६, वप्प, कुप्र १८७) ।

पंकेह न [पङ्केरुह] बमत, पच (वप्प, कुप्र १४१) ।

परा पुं [परा] १ पल, पांलि, पांल, पल (पि ७४, राय, पउम ११, ११८; आ १४) । २ पणह दिन, पलवाह (राज) । 'सण न [सन] भासन विशेष (राय) ।

पंखि पुं [पङ्खि] पंखी, चिड़िया, पक्षी (आ १४) । की. 'पी (पि ७४) ।

पंखुडिआ छी [दे.] पल, पन (कुप्र २६, पउरुषी ३, ६६, ८) ।

पंग सक [प्रङ] ग्रहण करना । पंगइ (हे ४, ४०६) ।

पंगण न [प्राङ्गण] भागन (कुप्र २५०) ।

पणु वि [पङ्गु] पाद विच्छेद, खज्ज, लंगडा, खूला, खोडा (पाप्र, पि ३८०, रिप) ।

पणुर सक [प्रा + घृ] डकना, भाषाश्रवण करना । पणुरइ (भवि) । संह. पंगुरिपि (भवि) ।

पंगुरण न [प्रावरण] वस्त्र, कपडा (हे १, १७५, कुमा, मा ७८२) ।

पंगुल वि [पङ्गुल] देखो पंगु (विपा १, १, स ७५, पाप्र) ।

पंच वि. व. [पञ्चन] पाँच, ५ (हे १, १२३, वप्प, कुमा) । 'उल न [कुल] पंचायल (म २२२) । 'उलिय पुं [कुलिक] पंचायत न बैठ कर विचार करनेवाला (म २२२) । 'वत्तिय पुं [वत्तिक] भगवान् बुद्धनाथ जिनके पाँच बत्त्याए इतिहास नपत्र में हुए थे (ठा ५, १) । 'वप्प पुं [वप्प] (पंचमहाभूमि-मृत प्राचीन ग्रन्थ का नाम) (दसा) । 'वट्ठापय न [वट्ठ्याणक] १ तीर्थंकर का ब्यजन, जप, दीपा,

नेवजन्तात भीर निवण्णि । २ काम्मिह्मपुर, जहाँ तेहवें जिनदेव श्रीविजयनाथ के पांचो कल्याणक हुए ये (वी २४) । ३ लप-विशेष (जीत) । कोट्टग वि [कोट्टक] १ पांच कोटो से युक्त । २ पु. पुष्प (तंडु) । गम्य न [गम्य] गाय के ये पांच पदार्थ—तृष, दही, घृत, गोमय भीर मूत्र, पंचगव्य (पम्पु) । गाह न [गाथ] गाथाछन्द वाले पांच पद्य (कस) । गुण वि [गुण] पांचगुण (ठा ५, १) । चित्त पुं [चित्र] पट्ट जिनदेव श्रीनरप्रभ, जिनके पांचो कल्याणक चित्रा नम्राय मे हुए ये (ठा ४, १; कम्प) । जाम न [याम] १ द्रष्टा, सय, अश्वीर्य, कल्याण भीर त्याग ये पांच महाव्रत । २ वि. जिसमें इन पांच महाव्रतो का निरूपण हो वह (ठा ६) । णडइ ओ [नयति] पंचानने, ६५ (बाल) । णडय वि [नयत] ६५ बां (काल) । वालोस (अप) जौन [चत्वारिंशत्] पैंतालीस, ४५ (विण. वि ४४५) । तित्थी ओ [तीर्थ] पांच तीर्थों का समुदाय (पम २) । तीसइम वि [तिंशत्तम] पैंतीसवां, ३५ बां (पणए ३५) । दस वि. व. [दशान] पनट्ट, १० (कम्प) । दसम वि [दशम] पनएवां; १५ बां (छाया १, १) । दसी ओ [दशी] १ पनट्टवां, १३ वां (विसे ५७६) । २ पूणिमा । ३ अमावास्या (मुज १०) । दसुत्तरसय वि [दशोत्तराशत-तम] एक सौ पनट्टवां, ११५ बां (पठम ११५, २४) । नडइ देवो णडइ (वि ४४५) ; नाणि वि [शान्ति] मति, ध्यान, भगवि, मन.पर्यय भीर केवल इन पांचो ज्ञानों से युक्त, सर्वज्ञ (सम्प ६६) । पब्बो ओ [पर्व] मास की दो अष्टमी, दो चतुर्दशी भीर कुछ पंचमी के पांच तिथियां (सपए २९) । पुक्यासाट्ट पुं [पुष्यासाट्ट] दमयं जिनदेव श्रीशततनाथ, जिनके पांचो कल्याणक पुष्यासा नम्राय मे हुए ये (ठा ४, १) । पुस [पुष्य] पनट्टवें जिनदेव श्रीचर्य-नाथ (ठा ५, १) । दाण पुं [दान] कामदेव (गुर ४, २४६; कुमा) । मूय न न [मूय] वृषिनी, जल, मग्न, वायु भीर

आचार्य के पांच पदार्थ (मूष १, १, १) । भूयवाइ वि [भूतवादिन्] आत्मा आदि पदार्थों को न मान कर केवल पांच भूतो को ही माननेवाला, नास्तिक (मूष १, १, १) । महव्यइय वि [महाव्रतिक] पांच महाव्रतोवाला (मूष २, ७) । महव्यय न [महाव्रत] हिंसा, असत्य, चोरी, मैथुन, भीर परिग्रह का संन्या परित्याग (पणह २, ५) । महाभूय न [महाभूत] वृषिनी, जल, मग्न, वायु भीर आचार्य के पांच पदार्थ (विसे) । मुट्टिय वि [मुट्टिक] पांच मुट्टियों का, पांच मुट्टियों से बूझें किया जाता (सोच) (छाया १, १; कम्प. महा) । मुह पुं [मुच] मिह, पंचानन (अप १०३१ टी) । यसो देखो दसी (पठम ६६, १४) । रत्त, राय पुं [रात्र] पांच रात (मा ४३; पणह २, ५—पम १४६) । रासिय न [राशिक] मणिक-विशेष (ठा ४, ३) । रूयिय वि [रूपिक] पांच प्रकार के बखेंवाला (ठा ४, ४) । वस्युग न [वस्तुक्त] आचार्य हरि-भद्रभूति-रचित ग्रन्थ-विशेष (पंचव १, १) । यरिस वि [वर्ष] पांच वर्ष की अवस्था-वाला (गुर २, ७३) । विह वि [विध] पांच प्रकार का (अणु) । योसइम वि [यिंशतितम] पचीसवां (पठम २२, २६) । संगह पुं [संग्रह] आचार्य श्रीहरिभद्रभूति-कृत एक वैत ग्रन्थ (पंच १) । संवच्छरिय वि [सांस्तरीक] पांच वर्ष परिमाण-वाला, पांच वर्ष की ब्राह्मनाला (सम ७५) । सट्ट वि [पट्ट] पैंतडां, ६५ बां (पठम ६५, २१) । सट्टि ओ [पट्टि] पैंतडा, ६५ (कम्प) । समिय वि [समित] पांच शर्मिनीओं का पानन करनेवाला (सं ८) । सर पुं [शर] कामदेव (पाप. गुर २, ६३; गुग ६०, रंभा) । सोस पुं [शोषे] देव-विशेष (दीर) । सुणय न [शुण्य] प्रायश्चित्तग्रन्थनाम (मूष १, १, ४) । मुसग न [मूयक्त] आचार्य-श्रीहरिभद्रभूति-निर्मित एक वैत ग्रन्थ (पम्पु १) । सेल, सेल्य, सेलय पुं [सैल, क] तपरोपनि में स्थित भीर पांच वर्षों

से विमुक्ति एक छोटा द्वीप (महा; बृह ४) । सोगमिअ वि [सौगमिधक] इलायची, लवंग, कपूर, नंकोल भीर जादोफल—जापफल इन पांच सुगन्धित वस्तुओं से संस्तुत; 'नम्रल पञ्चसोमपिण्यं तंकोलेणं, अमरसेमुह-वागविर्हि पञ्चसस्माभि' (अवा) । हत्तर वि [सप्तत] पचहत्तरवां, ७५ बां (पठम ७५, ८६) । हत्तरि ओ [सप्तति] १ संख्या विशेष, ७५ । २ जिनकी संख्या पचहत्तर हो वे (वि २६४, कम्प) । हत्थुत्तर पुं [हस्तोत्तर] भगवान् महावीर, जिनके पांचो कल्याणक जनराफाक्यूनी-नम्राय मे हुए ये (कम्प) । उह पुं [उच] कामदेव (सण) । णडइ ओ [नयति] १ संख्या-विशेष, पंचानने, ६५ । २ जिनकी संख्या पंचानने हो वे (सम ६७, पठम २०, १०३; वि ४४०) । णडय वि [नयत] पंचाननां, ६५ बां (पठम ६५, ६६) । णग पुं [नन] मिह, गजद (मुपा १७६, अर्थ) । णुवइय वि [णुनिक] हिंसा, अमरय, चोरी, मैथुन भीर परिग्रह का आर्थिक व्ययनाला (अवा; दीप, छाया १, १२) । ययाम देखो 'जाम (इह ६) । 'स ओन [शान] १ संख्या-विशेष, पचास, ५० । २ जिनकी संख्या पचीग हो वे; 'पचासं प्रजियासाहस्तीसो' (मम ७०) । 'सग न [शक्त] आचार्य श्रीहरिभद्रभूति-कृत एक वैत ग्रन्थ (पंचा) । 'मोइ ओ [शोति] १ संख्या विशेष, दसवीं की पांच, ८५ । २ जिनकी संख्या पचासी हो वे (सम ६२; वि ४७६) । 'सोइम वि [शोतिनम] पचासीवां, ८५ बां (पठम ८५, ३१, कम्प, वि ४४६) ।

पंचजण्य देवो पंचजण्य (गडर) ।

पंचन न [पञ्चान्न] १ दोहाय, दो जानु भीर मल्ल के पांच शरीरायन । २ वि. दूरोक पांच धनराजा (अणम आदि). 'पंचने बरिय लाइ परिपार्य' (गुर ४, १८) ।

पंचगुलि पुं [दि] दलह-इग, रंसी का मास (दि ९, १७) ।

पंचगुलि पुं [पञ्चागुलि] हय, हाथ (छाया १, १; कम्प) ।

पंडव पुं [पाण्डव] राजा पाण्डु का पुत्र—१ मुचिष्ठिर, २ भीम, ३ भद्रुन, ४ सहदेव और ५ नकुल (छाया १, १६; उप ६४८ टी)।

पंडव पुं [दे] भरव-रत्नक (?)। 'मिद्धि सुद्धेहि तासिपपंडववयणेहि नरवरो रूठो' (धम्मप २१६)।

पंडयिज वि [दे] पलाइ, पानी से भीजा हुआ (दे ६, २०)।

पंडिअ वि [पण्डित] १ विद्वान्, शास्त्री के समे को जाननेवाला, बुद्धिमान्, तत्वज्ञ, 'काममग्गया धाम गणिया होप्पा वात्तरी-कमापडिमा' (विपा १, २; प्राप् ७४; १२६)। २ संवत्, साधु (सूत्र १, ८, ६)। 'मरण न [मरण] साधु का मरण, सुम मरण-विशेष (मग, पच ४६)। 'माण वि [धम्म] निचामिमाणी, निज को परिष्ठत माननेवाला, दुर्बिधाव, धमपक्का, मूर्ख, सनारी (लोच २७ भा)। 'माणि नि [मानिन्] देवो पुव्वो क मयं (पउम १०५, २१; उप ११४ टी)। 'वीरिअ न [वीर्य] संवत्त का काम-बल (मग)।

पंडिअमाणि वि [पाण्डित्यमानिन्] पांडिताई का धर्मिमान् करनेवाला, निष्ठना का पमंड रखनेवाला (सह १६)।

पंडिअ } मे [पाण्डित्य] परिष्ठताई, पंडित } विद्वान् ऐवुप्प (उप, मुर १२, ६८; मुपा २६, रंभा, सं ५७)।

पंडी देवो पंड = पाण्डव।

पंडीअ (मप) देवो पंडिअ (मि)।

पंडु पुं [पाण्डु] १ भूव-विशेष, पाण्डवों का पिता (उप ६४८ टी, मुपा २७०)। २ योग-विशेष, पाण्डु योग (अं १)। ३ बर्ण-विशेष, सुन पीर पीर वर्ण। ४ श्वेत वर्ण। ५ वि, भूत पीर पीरउरुवाला (कम्प, गउर)। ६ मरेउ, श्वेत, 'केमि सिपं कम्मसं सरदासं पंडु परसं थ' (पाप, गउर)। ७ शिवा-विशेष, पाण्डुरम्भना मामक पिता (ज ४: १८)। 'कंसवलिता छो [धम्मज्जिअ] मेउ पयंत वे पाण्डव वन के दंसण पीर पर लिउए एउ टिआ, शिव पर जिआ-देवों का कन्माभिरेउ रिआ जाता है (अं ४)।

'कंवला छो [कम्बल] वही पुव्वो क मयं (उप २, ३)। 'तणय पुं [तनय] पण्डु-राज का पुत्र, पाण्डव (गउर ४८५)। 'भद पुं [भद्र] एक जैन मुनि, जो धार्य संभुति-विजय से शिष्य थे (कम्प)। 'मट्टिया, 'मत्तिया छो [मत्तिना] एक प्रकार की सफेद मिट्टी (जीव १; पणए १—पत्र २५)। 'मधुरा छो [मथुरा] स्वनाम-ख्यात एक नगरी, पाण्डवों द्वारा बनाई हुई भारतवर्ष के दक्षिण उत्तर की एक नगरी का नाम (छाया १, १६—पत्र २२५; पंथ)। 'राय पुं [राज] राजा पाण्डु, पाण्डवों का पिता (छाया १, १६)। 'सुय पुं [सुन] पाण्डव (उप ६४८ टी)। 'सेग पुं [मेन] पाण्डवों का द्वीपरी में उत्पन्न एक पुत्र (छाया १, १६; उप ६४८ टी)।

पंडुइय वि [पाण्डुकिंन] १ श्वेत रंग का किया हुआ (छाया १, १—पत्र २८)।

पंडुगु } पु [पाण्डु] १ चक्रवर्ती का पाण्यों पंडुय } की प्रति करनेवाला एक निधि (यउ ४२, १—पत्र ४४; उप ६८६ टी)। २ सर्व को एक जाति (भापू १)। ३ न, मेघ पर्वत पर स्थित एक वन, पाण्डव-वन (मम ६६)।

पंडुर पुं [पाण्डुर] १ श्वेत वर्ण, श्वेत रंग। २ पीत-मिश्रित श्वेत वर्ण। ३ वि, मरेउ वर्ण-वाला। ४ श्वेत-मिश्रित वर्ण वर्णवाला (कम्प, उप, से ८: ४६)। 'आ छो [वि] एउ पेन माथो भा नाम (मारम)। 'रिंदय [सिंधक] एक गय का नाम (भापू १)।

पंडुरंग पुं [पाण्डुरंग] सन्यासी को एक जाति, मय सपानेवाला सन्यासी (मगु २४)।

पंडुरगु पुं [पाण्डुरगु] १ शिखरक पंडुरगु } सन्यासियों को एक जाति (छाया १, १२—पत्र १६३)। २ देवो पंडुर, 'केसा पंडुरया हवति ते' (उप ३)।

पंडुरिअ } वि [पाण्डुरिअ] पाण्डुर वर्ण-पंडुइय } वाला बना हुआ (पा १८८, विपा १, २—पत्र २७)।

पंड वि [पान्] १ धनवर्ती, धनिन (मप ६: १३)। २ धनीयन, धनुर (धाषा:

लोच १७ भा)। ३ इन्द्रियों के धनुर, इन्द्रिय प्रवृत्त (पणए २, ५)। ४ धनद, धन्यम्, भक्षि (लोच ३६ टी)। ५ धनसद, नीच, दुष्ट (छाया १, ८)। ६ दक्षि, निर्धन (लोच ६१)। ७ जोणं, फटा-टूटा, पत-वत् (वह २)। ८ ध्यापन, विनत, 'णिप्पावणणमाई धंत, पंतव होइ पारम' (वह १, भाषा)। ९ नीरम, मूला (उत ८)। १० भुत्तापरिउ, ला लेने पर बका हुआ। ११ पुणुं पित, वासी (छाया १, ५—पत्र १११)। 'कुल न [कुल] नीच कुल, अपय जाति। (उप ८)। 'वर वि [वर] नीरव साहार -को खोज करनेवाला सपत्नी (पणए २, १)। 'जीवि वि [जीविन्] नीरव साहार से खरवर-निर्वाह करनेवाला (उप ५, १)। 'हार वि [हार] रुखा-मूला साहार करनेवाला (उप ५, १)।

पंताय सब [दे] साधन करना, मारना। पंतावे (मि ३२५)।

पंनि छो [पण्डि] १ पंनि, बेणी, गडार (हे १, २५; कुपा, कम्प)। २ सेना-विशेष, जिनमें एक हाथी, एक रथ, तीन घोड़े और पांच पदाती हो ऐसी सेना (पउम ५६, ४)।

पंति छो [दे] बेणी, केउ-रचना (दे ६, २)। पंतिव छो [पण्डि] पंति, धे लो, 'सलणि का मरपणिमाणि का सलवरपणिमाणि का' (पाषा २, ३: १, २)। छो, 'पंडिनामो' (मगु)।

पंथ पुं [पन्थ, पथिन्] मार्ग, रास्ता: 'पंसं निर दंसिता' (हे १, ८८), 'पंथमि पन्-परिअट्ट' (मुपा २५०; हे ५; प्राप् १७३)।

पंथ पुं [पन्थ] पथि, मुपाथि (हे १, ३०; पणउ ७४)। 'इट्टन न [इट्टन] मार-पीटर मुपाथि को मूला (गाना १, १८)। 'येट्ट पुं [इट्ट] बहो मयं (विपा १, १—पत्र ११)। 'येट्टि छो [इट्ट] बहो मयं, 'ये कोरेणगारई मयपाव का मार पंथरेट्टि का काट बचटि' (उप १, १८)। पंथग पुं [पन्थग] एक पैर कुंज (उप १, ५: कम्प ६ टी)।

पंथाण देखो पंथ = पन्थ, पथिन्; 'पंथकाणे पयाणंकाणे' (भाट ११)।

पंथिअ पुं [पन्थिक, पथिक] मुसाकिर, पाव्य; 'पन्थिअ एं एथ संथर' (काप्र १५८; महा: कुमा: खाया १, ८; बजा ६०; १५८)। पंथुच्छुद्धणीओ [दि] धशुन-गात्र से पहली बार धानीत की (दे ६, ३५)।

पंथुअ वि [दि] दीर्घ, लम्बा (दे ६, १२)।

पंफुल वि [प्रफुल] विकसित (पिण)।

पंफुल्लिअ वि [दि] गवेयित, जिसकी खोज की गई हो वह (दे ६, १७)।

पंस तक [पांसय] मलिन करना। पसेई (विसे ३०५२)।

पंसया वि [पांसन] कलकित करनेवाला, हृषय लगानेवाला (हे १, ७०; सुपा ३४५)।

पंसु पुं [पांसु, पांशु] ध्रुवी, रज, रेणु (हे २६; पाप, आचा)। 'कीलिय, कीलिय वि [कीहित] जिसके साथ बचपन में पाशु-कीड़ा की गई हो वह, बचपन का दोस्त (महा: सण)। 'पिसाय पुंकी [पिशाच] जो रेणु-लित होने के कारण पिशाच के तुल्य मालूम पड़ता हो वह (उत १२)। 'मूलिय पुं [मूलिक] विद्याधर, मनुष्य विशेष (राज)।

पंसु पुं [पशु] कुठार, चरता (हे १, २६)।

पंसु देखो पसु (पइ)।

पंसुसार पुं [पांशुसार] एक तरह का मोन, ऊपर लवण (सत ३, ८)।

पंसुल पुं [दि] १ कौजित, कोयल। २ जार, उपरित (दे ६, ६६)। ३ वि. बद्ध, रोकता हुआ (पइ)।

पंसुल पुं [पांसुल] १ गुंबज, परकी-सम्पट (पा ५१०; ५६६)। २ वि. धूलि-शुक्ल (गड)।

पंसुला श्री [पांसुला] कुलटा, व्यभिचारिणी श्री (हुमा)।

पंसुल्लिअ वि [पांसुल्लिअ] धूलि-शुक्ल किया हुआ 'पंसुलिप्रकरणे' (पउर)।

पंसुल्ला श्री [दि. पांसुलिमा] गार्थ की हद्दी (पय २५१)।

पंसुली श्री [पांसुली] कुलटा, व्यभिचारिणी श्री (पाप. सुर १५, २; दे २, १७६)।

पकंय देखा पगथ (आचा १, ६, २)।

पकंयग पुं [प्रकन्थक] शयन-विशेष, एक प्रकार का पोछा (डा ४, ३—पय २४८)।

पकंय पुं [प्रकम्प] कम्प, काँपना (भाव ४)।

पकंपण न [प्रकम्पन] ऊपर देखो (सुपा ६३१)।

पकंपिअ वि [प्रकम्पित] प्रकम्प-शुक्ल, काँपा हुआ (भाव २)।

पकंपिर वि [प्रकम्पित्] काँपनेवाला (उप ४ १३२)। श्री. 'ती (रंभा)।

पकड वि [प्रकृत] १ प्रस्तुत, प्रज्ञात, उपस्थित, प्रसूतो, सचा (मग ७, १०—पय ३२४, १८, ७—पय ३५०)। २ कृत, निमित्त (मग १८, ७)।

पकड देखो पगड = प्रकट (मग ७, १०)।

पकड्ड देखो पगडड। कवक, पकडिड्ड-माण (धीय)।

पकड्ड वि [प्रकट्ट] १ प्रकर्ष-शुक्ल। २ खीचा हुआ (मीय)।

पकड्डण न [प्रकर्षण] आकर्षण, खींचा (निष्ठ २०)।

पकय तक [प्र + कथ्] खाया करना, प्रशंसा करना। पकयइ (सुप १, ४, १, १६; वि ५४३)।

पकप्य थक [प्र + कल्प्] १ काम में आना, उपयोग में आना। २ काटना, छेदना। क पकप्य (डा ५, १—पय ३००)। देखो पगप्य = प्र + कल्प्।

पकप्य सक [प्र + कल्पय्] १ करना, बनाना। २ संकल्प करना, 'वासं ययं वित्त पनपयामो' (सुप २, ६, ५२)।

पकप्य पुं [प्रकप्य] १ उल्टा आचार, उल्टा आचरण (डा ४, ३)। २ धपवाद, आशय-नियम (ज ६७७ टी; निष्ठ १)। ३ अध्ययन-विशेष 'आचारण' सूत्र का एक अध्याय। ४ व्यवस्थान 'महावीरसिद्धे आचारणवर्ण' (सत २८)। ५ चरणा। ६ प्रत्युपा। ७ विन्द्ये, प्रष्ट घेत (निष्ठ १)। ८ जैन साधुओं का एक प्रकार का आचार, स्वरि-

कल्प (पयभा)। ९ एक महाग्रह, ज्योतिष देव-विशेष (सुज २०)। 'गंथ हूँ [अन्थ]

एक प्राचीन जैन ग्रन्थ, 'निशोय' सूत्र (जीव १)। 'जड पुं [यवि] 'निशोय' अध्ययन का कानकार साधु; 'धम्मो जिएपनतो पकप्यज्झा कहेयवो' (धर्न १)। 'धर वि [धर] 'निशोय' अध्ययन का जानकार (निष्ठ २०)। देखो पगप्य = प्रकल्प।

पकप्यणा श्री [प्रकल्पना] प्रकल्पना, व्याख्या-पदव्युत्पत्ति वा पकपयत्ति वा पगट्टा' (निष्ठ १)।

पकप्यणा श्री [प्रकल्पना] कल्पना (वेदय १४१; बल्ल १४२)।

पकप्यचारि वि [प्रकल्पधारिन्] 'निशोय' सूत्र का जानकार (वद १)।

पकपि वि [प्रकल्पिन्] ऊपर देखो (वद १)।

पकपिअ वि [प्रकल्पित] काटा हुआ, 'एसा पकपित्तसा एण पकोपि (१ कपि)। आ जेसा' (बल्ल १०२)।

पकपिअ वि [प्रकल्पित] १ संकल्पित (द्र २)। २ निमित्त (महा)। ३ न. पूर्वोक्तित द्रव्य; 'ए एो मयि पकपिय' (सुप १, ६, ३, ४)। देखो पगपिअ।

पकय वि [प्रकृव] प्रकृत, कार्य में लगा हुआ (उप ६२०)।

पकर सक [प्र + कृ] १ करने का प्रारम्भ करना। २ प्रवर्धन करना। ३ करना। पकरेइ, पकरेति, पकरेति (मग, वि ५०६)। वड. पकरेमाण (मग)। संकृ. पकरिता (मग)।

पकर देखो पयर = प्रकर (नाट—वेणी ७२)।

पकरण्या श्री [प्रकरण्या] करण, हस्ति (मग)।

पकडिअ वि [प्रकथित] जितने कहने का प्रारम्भ किया हो वह (उप १०३ १ टी; वसु)।

पकसय न [प्रवास] १ आशय, प्रसक्त (जाया १, १; महा, नाट—शकु २७)। २ पु. प्रष्ट धर्मिण (मग ७, ७)।

पकाव (मय) सक [पक्] पकाना। पकावउ (विग वि ५४४)।

पकास देखो पयास = प्रकाश (पिंग) ।
 पकिट्ट देखो पगिट्ट (राज) ।
 पकिण्य वि [प्रकीर्ण] १ उभ, बोधा हुमा ।
 २ दत्त, दिया हुमा, 'जहि पकिण्णा (प्रा)
 विरुत्ति पुण्णा' (उत्त १२, १३) । देखो
 पङ्गण्य = प्रकीर्ण ।
 पकिस्तिअ वि [प्रकीर्स्ति] वाणित, कथित
 (धु १०८) ।
 पकिदि देखो पगइ = प्रकृति (प्राकृ १२) ।
 पकिदि (सौ) देखो पइइ = प्रकृति (स्वप्न
 ६०, धम्म ६५) ।
 पकिन्न देखा पकिण्य (उत्त १२, १३) ।
 पकिरण न [प्रकिरण] देने के लिए फँकना
 (वव १) ।
 पकुण्ण देखो पकर = प्र + कृ । पकुण्ण (कम्म
 १, ६०) ।
 पकुप्प सक [प्र + कुप्] क्रोध करना,
 गुस्सा करना । पकुप्पति (महाणि ४) ।
 पकुप्पित (वृथे) वि [प्रकुप्पित] क्रुद्ध, क्रुपित
 गुस्साया हुमा (हि ४, ३२६) ।
 पकुधिअ ऊपर देखो (महाणि ४) ।
 पकुत्त सक [प्र + कृ, प्र + कुत्त] १
 करने का प्रारम्भ करना । २ प्रकर्ष करना ।
 ३ करना । पकुत्तव (वि ५०८) । वक्र.
 पकुत्तमाग (सुर १६, २४, वि ५०८) ।
 पकुत्ति वि [प्रकारित, प्रकुत्ति] १ करने-
 वाला कर्ता । २ पु. प्रायश्चित्त देकर शुद्धि
 करने में समर्थ युव (अ ४६, ठा ८, पुष्प
 ३५६) ।
 पकुत्तिअ वि [प्रकुत्तित] ऊँचे स्तर से चिन्ताया
 हुमा (उप ४ ३३२) ।
 पकोट्ट देखो पकोट्ट (राज) ।
 पकोय पु [प्रकोय] गुस्सा, क्रोध (था १४) ।
 पका वि [पक] पका हुमा (हि १, ४७, २,
 ७६, पाप) ।
 पका वि [दे] १ रुम, गणित । २ समर्थ,
 पका, पहुँचा हुमा (दे ६, ६४, पाप) ।
 पकत वि [प्रकाप्त] प्रस्तुत, प्रकृत (हुमा
 २७) ।
 पकगगाह पु [दे] १ मकर, मगरगन्ध (दे
 ६, २३) । २ पातो में बसनेवाला सिंहकार
 'जल-जलु' (वि ५, ५७) ।

पकग वि [दे] १ भसहन, भसहिय्यु । २
 समर्थ, शक् (दे ६, ६६) । ३ पुं चारुङ्गल
 (स ६३) । ४ एक प्रनाय देश । ५ बुद्धी-
 प्रनाय देश विशेष में रहनेवाली एक मनुष्य-
 जाति (औप. राज) । छी. 'णी' (खाया १, १,
 औप, इक) । ६ पु. एक नीच जाति का घर,
 शबर-गृह (परा २३) । 'उल न [कुल]
 १ चारुङ्गल का घर (बृह ३) । २ एक गहित
 कुल, 'पक्कणउने वसतो सउणी इयरोवि
 गरह्मो होइ' (भाव ३) ।
 पकगि वि [दे] १ अतिराग शोभमान, खूब
 शोभता हुमा । २ भान, भाँगा हुमा । ३
 प्रियवच, प्रियभाषी (दे ६, ६५) ।
 पकगिय पुको [दे] एक प्रनाय देश में
 रहनेवाली मनुष्य जाति (पएह १, १—परा
 १४, इक) ।
 पकन्न न [पकान्न] केवल धी से बनी हुई
 वस्तु, मिठाई भादि (धुपा ३८७) ।
 पक्कम सक [प्र + कम्] प्रकर्ष से समर्थ
 होना । पक्कमह (सग १५—परा ६७८) ।
 पक्कम सक [प्र + कम्] १ प्रकर्ष से जाना,
 बला जाना, बमन करना । २ सक. प्रयत्न
 होना । प्रवृत्ति होता । पक्कमई (उत्त ३,
 १३) । पक्कमति (उत्त २७ १४, वस ३,
 १३) । 'अणुमासणयेव पक्कमई' (सूअ १, २,
 १, ११) ।
 पक्कम पु [प्रक्कम] प्रस्ताव, प्रसंग (सुपा
 ३७४) ।
 पक्कमणी की [प्रक्कमणी] विद्या-विशेष (सुअ
 २, २, २७) ।
 पक्कल वि [दे] १ समर्थ, शक्त (हि २,
 १७४, पाप. सुर ११, १०४, वज्जा ३४) ।
 १ रक्ष-युक्त, गणित (सुर ११, १०४, मा
 ११८) । ३ श्रीक. 'वतारि पक्कलवहला'
 (या ८१२, वि ४३६) ।
 पक्कस देखो पक्कस (भावा) ।
 पक्कसानअ पु [दे] १ शरज । २ व्याप (दे
 ६, ७५) ।
 पक्काइय वि [पक्काइय] पकाया हुमा,
 'पक्काइयमाउलियसात्ति' (वज्जा ६२) ।

पकिर सक [प्र + कृ] फँकना । वक्र.
 'धार न वृत्ति ॥ कम्मरं च-उत्तर पकिर-
 माणा' (खाया १, २) ।
 पकीलिय वि [प्रकीलित] जिसने बीड़ा का
 'प्रारम्भ किया हो वह (खाया १, १, कप्य) ।
 पकील्य वि [पक] पका हुमा (उवा) ।
 पक्कस पु [पक्क] वेदिका का एक भाग (राय
 ८२) ।
 पक्कस पुं [पक्क] १ पाल, पलवारा, घाघा
 महोवा, पक्कह दिन-रात (ठा २, ४—परा
 ८६, कुमा) । २ युक्त और कृष्ण पक्ष,
 उज्जैन और अंधेरा पाल (जीव २, हे २,
 १०६) । ३ पारव, पजिर, कच्चा के नीचे
 का भाग । ४ पक्षियों का शयन-विशेष,
 पक्ष, पर, पतन (कुमा) । ५ तर्कशास्त्र-
 प्रसिद्ध अनुमान-प्रमाण का एक भव्यव,
 साध्यवाली वस्तु (विसे २८२४) । ६ तरक,
 शीर । ७ जप्ता, दल, टीली । ८ मित्र,
 सखा । ९ शरीर का आधा भाग । १०
 तरफदार । ११ शीर का पक्ष (हे २, १४७) ।
 १२ तरफदारी (वव १) । 'ग वि [ग]
 पक्ष-भाषी, पक्ष पर्यंत स्वाधी (कम्म १, ८८) ।
 'पिड पुंन [पिण्ड] प्राप्त विशेष—
 जानु शीर जाँघ पर वक्ष बाँध कर बैठना ।
 २ दोनों हाथों से शरीर का मन्थन कर बैठना
 (उत्त १, १६) । 'य पु [क] पक्षा. ताल-
 वृत्त (कप्य) । 'यत वि [यत्] तरफ-
 दारीवाला (वव १) । 'वाइइ वि [पातिन्]
 पक्षपात करनेवाला, तरफदारी करनेवाला
 (उप ७२८ टी. कम्म १ टी) । 'वाइ पुं
 [वात] तरफदारी (उप ९७०, स्वप्न
 ४२) । 'वादि (शो) देखो 'वाइइ (नाट—
 विक २ मालवी ६५) । 'वाय देखो 'वाइ
 (धुपा २०६ २६३) । 'वाय पु' 'वाइ'
 पक्ष-सम्बन्धी विवाद (उप ३ ३१२) । 'वाइ
 पु [वाइ] वेदिका का एक देश विशेष
 (व १) । 'वाडिअ वि [पातिन्] पक्ष-
 पाधी (ह ४, ४०१) । 'वाइया की
 [वापिस] होम-विशेष (न ७३७) ।
 पक्कज न [पक्कज] धातुवर इतिव जात,
 'अन्यवर इतिवजात पक्कज चएण' (निवृ
 ६) ।

पक्खंतर न [पक्षान्तर] अन्य पक्ष, मिल पक्ष, दूसरा पक्ष (नाट-महावी १५) ।

पक्खंद सक [प्र + स्कन्द] १ आक्रमण करना । २ दौडकर गिरना । ३ अघ्यवसाय करना, 'पक्खदे जलिय जोइ धूमकेउ दुरासय' (राज), 'अगणि व पक्खद पयंगवेण' (उत्त १२, २७) ।

पक्खंदण न [प्रस्कन्दन] १ आक्रमण । २ अघ्यवसाय । ३ दौडकर गिरना (निज्ज ११) ।

पक्खंदोलम पुं [पक्ष्यन्दोल] पक्षी का हिडोला, झूला (राय ७५) ।

पक्खज्जमाण वि [प्रखाद्यमान] जो खाया जाता हो वह (सूम १, ५, २) ।

पक्खण्डिअ वि [वे] प्रस्तुरित, विजृम्भित, समुत्पन्न, 'पक्खण्डिअ सिहिपडिअरे विरुद्धे' (दे ६, २०) ।

पक्खर सक [सं + नाहय] संनद्ध करना, अरव को कवच से सज्जित करना । पक्खरेह (सुपा २८८) । सक्क पक्खरिअ (पिग) ।

पक्खर पुं [प्रक्षर] तरण, उपकना (अपूर् २६) ।

पक्खर पुं [वे] अण्णा की रसा का एक उप-करण, सामग्री (सिउरि ३८७) ।

पक्खर न [वे] पाखर, अघ-सनाह, घोडे का कवच (सुपा ४४६, पिग) ।

पक्खरा की [वे] पाखर, अघ-सनाह (दे ६, १०), 'भोसासिअपक्खरे (विपा १, २) ।

पक्खरिअ वि [संनद्ध] कवचिअ, संनद्ध, कवच से सज्जित (अरर) (सुपा ५०२, सुप्र १२०, अवि) ।

पक्खल अक [प्र + खल] गिरना, पडना, स्थलित होना । पक्खलद (अस) । वड्ठ । पक्खलद, पक्खलमाण (दस ५, १, पि ३०६, नाट-कुण्ड १७, वृह ६) ।

पक्खलउज्ज न [पक्षातोद्य] पक्षाज, पक्षाज, एक प्रकार का जाना, मुदाग (कम्पु) ।

पक्खाय वि [प्रख्यात] प्रसिद्ध, विप्रसूत (प्राह) ।

पक्खारिण पुं [प्रक्षारिण] १ अनाय-देश विशेष । २ पुंकी. उस देश का निवासी मनुष्य । की. 'णी (राय) ।

पक्खाल सक [प्र + क्षालय] पछारना, शुद्ध करना, धोना । कवड्ठ. पक्खालिअमाण (खाया १, २) । संक पक्खालिअ, पक्खालिऊण (नाट-चैत ४०, महा) ।

पक्खालण न [प्रक्षालन] पछारना, धोना (स ५२, कीप) ।

पक्खालिअ वि [प्रक्षालित] पछारा हुआ, धोया हुआ (कीप, अवि) ।

पक्खालण न [पदयासन] आसन विशेष, जिसके नीचे अनेक प्रकार के पक्षियों का चित्र हो ऐसा आसन (जोव ३) ।

पक्खि पुंकी [पक्खि] पक्षी, पक्षी (ठा ४, ४, पाषा, सुपा ५६२) । की. 'णी (आ १४) । 'विराल पुंकी ['विराल] पक्षि-विशेष (अग १३, ६) । की. 'ली (जोव १) । 'राय पुं [राज] गरुड (सुपा २१०) । नीचे देखो ।

पक्खिअ पुंकी [पक्षिक] १ ऊपर देखो (आ २८) । २ पि. पक्षपाती. सरफसासे करनेवाला, 'तपक्खिमो मुखो अण्णो' (आ १२) ।

पक्खिअ वि [पक्षिक] स्वबन, जाति का (वव २६८) ।

पक्खिअ वि [पक्षिक] १ पाख में होने-वाला । २ वस से सम्बन्ध रखनेवाला, अघ-मास सम्बन्धी (कम्प, अर्म २) । ३ न. पूर्व-विशेष, अतुर्दशी (लहृम १६, द्र ४५) । 'पक्खिअ पुं [पक्षिक] नृपक्ष-विशेष, जिसको एक पाख में तीव्र विषयान्तरण होता हो और एक पक्ष में अल्प, ऐसा नृपक्ष (पुण १२७) ।

पक्खिअयण न [पक्षिकायण] गौर विशेष, जो कौशिक गौर को एक खाद्या है (अ ७) ।

पक्खिअ देवो पक्खि, 'वह पक्खिअण गहरो' (पडम १४, १०४) ।

पक्खिणी देवो पक्खि ।

पक्खिअ वि [अक्षिअ] कंठा हुआ (महा, पि ६२२) ।

पक्खिअण पुं [पक्षिनाय] गरुड पक्षी (अर्म ८४) ।

पक्खिअप पक्खिअपमाण } देखो पक्खिअप ।

पक्खिअ सक [प्र + क्षिप्] १ फेंकना, फेंक देना । २ छोड़ना, त्यागना । ३ डालना । पक्खिअव (महा, कम्प) । पक्खिअव (महा, कम्प) । पक्खिअव, पक्खिअवण (आवा २, ३, २, ३) । कवड्ठ. पक्खिअपमाण (खाया १, ८-पत्र १२६, १४७) । सक्क. पक्खिअण, पक्खिअप (महा, सूम १, ५, १, पि ३१६) । क्क. पक्खिअवण (अप ६४८ टी) । अयो, वड्ठ. पक्खिअवेमाण (खाया १, १२) ।

पक्खीण वि [प्रक्षीण] क्षयन्त क्षीण, 'अह पक्खीणविअो' (महा) ।

पक्खुडिअ वि [प्रखण्डित] खण्डित, टूट-खण्ड (सुपा ११६) ।

पक्खुड्ढ अक [प्र + छुभ्] १ क्षोभ पाना । २ डूब होना, बढ़ना । वड्ठ. पक्खु-ड्ढंत (से २, २४) ।

पक्खुड्ढंत देखो पक्खोभ ।

पक्खुड्ढिअ वि [प्रखुड्ढित] क्षोभ प्राप्त, प्रखुब्ध (कीप) ।

पक्खेव पुं [प्रक्षेप] शाल में पीछे से किसी के द्वारा डाला या मिलाया हुआ वायु (अर्म १०११) । 'हारा पुं [हारा] कलाहार (सुप्रि १०१) ।

पक्खेव } पुं [प्रक्षेप, 'क] १ सेपण, पक्खेवण } फेंकना, 'अहिया पोगलपक्खेवे' (अवा) । २ पूर्ति करनेवाला अर्थ, पूर्ति के लिए पीछे से डाली जाती वस्तु, 'अपक्खेव-गस पक्खेवे दलय' (आया १, १५-पत्र १६३) ।

पक्खेवण न [प्रक्षेपण] सेपण, प्रक्षेप (कीप) ।

पक्खेवय देखो पक्खेवय (वृह १) ।

पक्खोड सक [वि + फोशय्] १ खोलना । २ फैलाना । पक्खोड (दे ४, ४२) । संक. पक्खोडिअण (सुपा ३३८) ।

पक्खोड सक [शार्द] १ फेंकना । २ फाड़ कर गिराना । पक्खोड (दे ४, १३०) । संक. पक्खोडिअ (अप ५८४) ।

पक्खोड सक [प्र + छाद्य] ढवना, प्राच्छादन करना। सक. पक्खोडिय (उप ५८४)।

पक्खोड सक [प्र + स्फोटय] १ सूत्र भाडना। २ धारस्वार भाडना। पक्खोडिजा, वक्र. पक्खोडंत (दस ४, १)। प्रयो. पक्खोडा-विजा (दस ४, १)।

पक्खोड पुं [प्रस्फोट] प्रमाणन, प्रतिबलन की क्रिया-विरोध (पव २)।

पक्खोडण ॥ [शद्वन] ध्वनन, बँपाना (कुमा)। पक्खोडिअ वि [शद्वित] निर्मादित, फाट कर गिराना हुमा (वे ६, २७; पाग)।

पक्खोडिय देखो पक्खोड = शद्व, प्र + छाद्य।

पक्खोभ सक [प्र + क्षोभय] क्षुब्ध करना, क्षोभ उत्पन्न कर हिला देना। कम्ह पक्खोभत (सि २, २४)।

पक्खोडण न [शद्वन] १ स्तवित होनेवाला। २ वि. वृत्त होनेवाला (राज)।

पक्खम (कै) देखो = पक्खम, 'पक्खमलणमल' (प्राठ. १२४)।

पक्खोड देखो पक्खोड = प्रस्फोट (पव २)।

पक्ख वि [प्रखर] प्रचण्ड, तीव्र, तेज (प्राप्र)।

पगइ की [प्रकृति] १ प्रकृति, स्वभाव (अग. कम्म १, २; सुर १४, ६६; सुपा ११०)।

२ प्रकृत धर्म, प्रस्तुत धर्म, 'पडिसेहदुय पगइ गमेइ' (विते २५०२)। ३ प्राकृत लोक, सामारण जन-समुह; 'वित्तमुदारे बहुदव्वं पगइए' (सुपा ५६७)। ४ कुम्भकार भादि अठारह मनुष्य जातियाँ, अष्टारसपगदमैतराण की सी न जो एइ (भाक १२)। ५ कर्मों का भेद (सम ६)। ६ सत्त्व, रज बीर तम की साम्या-वस्था। ७ बलदेव के एक पुत्र का नाम (राज)।

'बंध पुं [बंध] कर्म पुद्गलौ भिं मित्र-शक्तिषो का पैदा होना (कम्म १, २)। देखो पगडि।

पगठ पुं [प्रकण्ठ] १ पीठ विशेष। २ अन्न का अन्नत प्रदेश (जीव ३)।

पगंय सक [प्र + पथय] निन्दा करना, 'असियं पगं(कं)पे भदुवा पगं(कं)पे' (भावा)।

पगड वि [प्रकट] व्यक्त, खुला, स्पष्ट, पृथक्, (वि २१६)।

पगड वि [प्रकृत] प्रविहित, विनिर्मित (उत्त १३)।

पगड पुं [प्रगर्त] बड़ा गड्ढा या गड्ढा (भावा २, १०, २)।

पगडण न [प्रकटन] प्रकाश करना, खुला करना (एदि)।

पगडि क्षी [प्रकृति] १ भेद, प्रकार (अग)। २—देखो पगइ (सम ५६; सुर १४, ६६)।

पगडोक्कय वि [प्रकटोक्कत] व्यक्त किया हुआ, स्पष्ट किया हुआ (सुपा १८१)।

पगइड सक [प्र + कृप्] खीचना। बबट.

पगइडिअमाण (विपा १, १)।

पगप्प देनो पकृप्प = प्र + कल्पय। सक.

पगप्पएत्ता (सूम २, ६, ३७)।

पगप्प देखो पकृप्प = प्र + कल्प (सूम १, ८, ५)।

पगप्प वि. [प्रकल्प] १ उत्पन्न होनेवाला, प्रादुर्भाव होनेवाला, 'बहुपुण्यपगप्पाइं कुञ्जा अतसमाहिइ' (सूम १, ३, ३, १६)। देखो पकृप्प = प्रकल्प (भावा)।

पगप्पिअ वि [प्रारक्षिपत्] प्रक्षिप्त, कथित, 'ए उ एयाहिं विट्ठीहिं पुक्कमासि पगप्पियं' (सूम १, ३, ३, १६)। देखो पकृप्पिअ।

पगप्पिअ वि [प्रकल्पयितु, प्रकर्तयितु] कालेनाला, बतलेवाला, 'हवा छेता पगम्भि- (गंयि)ता भायसायाणुमागिखो' (सूम १, ८, ५)।

पगदम सक [प्र + गल्म] १ घृष्टा करना, घृष्ट होना। २ समर्थ होना। पगदमइ, पगदमई (भावा: सुय १, २, २, २१, १, २, ३, १०, उत्त ५, ७)।

पगम्भ वि [प्रगल्भ] घृष्ट, ढीठ (पत्तम ३३, ६६)। २ समर्थ (उप २६४ टी)।

पगदम न [प्रगल्भ्य] घृष्टा, ढीठाई, 'पगमि पाए बहुएतिवातो' (सूम १, ७, ८)।

पगदमणा क्षी [प्रगल्भना] प्रगल्भता, घृष्टता (सूम १, १०, १७)।

पगदमा क्षी [प्रगल्भा] अगवान् पारवन्नाय की एक शिखा (भावम)।

पगम्भिअ वि [प्रगल्भिअ] घृष्टा-शुक्त (सूम १, १, १, १३; १, २, ३, ४)।

पगम्भिअ वि [प्रगल्भिअ] कालेनाला, 'हवा छेता पगमिता' (सूम १, ८, ५)।

पगय न [प्रकृत] १ प्रस्ताव, प्रसंग (सूमवि ४७)। २ पुं. गाँव का अधिकारी (पव २६८)।

पगय वि [प्रगत] संगत (भावक १८६)।

पगय वि [प्रकृत] प्रस्तुत, अधिष्ठत (विते ८३३; उप ४७६)।

पगय वि [प्रगत] १ प्राप्त (राज)। २ जितने गमन करने का प्रारम्भ किया हो वह, 'मुत्ति-खोवि जहामिमं पगया पगएण कज्जेण' (सुपा २३५)। ३ न. प्रस्ताव, अधिवार (सूम १, ११; १५)।

पगय न [दे] पग, पाँव, पैर, 'एत्यंतरम्मि खगो बड्ढामलो'। तेण भगो गुरयपगयमगो' (महा)।

पगय पुं [प्रर] समूह, राशि (सुपा ६५५)।

पगरण न [प्रकरण] १ अधिकार, प्रस्ताव। २ अथ कण्ड विशेष, प्रसार-विशेष (विते १११५)। ३ किसी एक विषय को लेकर बनाया हुआ छोटा ग्रन्थ (अव)।

पगरिअ वि [प्रगलित] गलित्पुट, कुट-विशेष की बीमारोवाला (पिड ५७२)।

पगरिस पुं [प्रकर्ष] १ उत्कर्ष, अँष्टता (सुपा १०६)। २ आश्रय, भ्रष्टिधाय (सुर ४, १६६)।

पगरिअ न [प्रकर्षण] ऊपर देखो (यति १६)।

पगल सक [प्र + गल्] करना, टपकना। वक्र. पगलत (विपा १, ७, महा)।

पगहिय वि [प्रगृहीत] ग्रहण किया हुआ, उपात (सुर ३, १६७)।

पगइय वि [प्रगीत] जितने गाँव का प्रारम्भ किया हो वह, 'पगाइयाइ मगलमठेउराइ' (स ७३६)।

पगाड वि [प्रगाड] मत्तन्त गाड़ (विपा १, १, सुपा ३३०)।

पगाम देखो पसम (भावा, या १४, सुर ३, ८७, कुप्र ३१५)।

पगामसो अ [प्रकामम्] घावन्त, धतिशय,
'पगामसो भुक्वा' (उत १७, ३) ।

पगार पुं [प्रकार] ? भेद (भाजू १) । २
रीति 'एएए पगारेण सव्व, ढव्व दवाविओ'
(महा) । ३ घादि, वगेरह, प्रभृति (सूत्र १,
१३) ।

पगास देखो पयास = प्र + काशम् । वहू,
पगासेत (महा) ।

पगास पुं [प्रकाश] ? प्रभा, दीप्ति, चमक
(णया १, १), दग मह नोलुप्पलवलवुलि-
यमवसिक्कुसुमपगमासं धंसि सुरधार महामं'
(उवा) । २ प्रसिद्धि, ख्याति (सूत्र १, ६) ।
३ भाविर्भाव, प्रादुर्भाव । ४ उद्योत, घातप
(राज) । ५ क्षोभ, पुस्त्य, 'छन्न च पसस
खो करे न य उक्कोस पगास माहणे' (सूत्र
१, २, २६) । ६ वि. प्रकट, व्यवह (निष्
१) ।

पगासाग देखो पगासय (राज) ।

पगासाण देखो पयासाण (धौप) ।

पगासाणश की [प्रकाशानता] ? प्रकाश,
भालोक (भोग ५५०) ।

पगासाण की [प्रकाशना] प्रकटीकरण
(उत ३२, २) ।

पगासाय वि [प्रकाशक] प्रकाश करनेवाला
(विते ११५५) ।

पगासाय वि [प्रकाशित] उद्योतित, दीप्त,
'सूत्रियस्स भन्नुगमेषेण मय विद्यासाह
पगासिमि' (सूत्र १, १५, १२) ।

पगिइ देखो पगइ (संबोध ३६) ।

पगिइम भव [प्र + गृष्] आसक्ति का
प्रारम्भ होना । पगिइम्मा (उत ८, १६,
सुल ८, १६) ।

पगिइमिय देखो पगिइह (कस, धौप वि
५६१) ।

पगिइह वि [प्रकट] ? प्रयाण, मुख्य (गुण
७७) । २ उद्यम, संघ (कुप्र २०, सुण
२२६) ।

पगिइह सक [प्र + मद्] ? इ ग्रहण करना ।
२ उठाना । ३ धारण करना । ४ करना ।

सह, पगिइहत्ता, पगिइहत्तानं, पगि-
इम्मय (वि ५८२, ५८३, धौप, भावा २,
३, ४, १०, वत) ।

पगीअ वि [प्रगीत] ? गाया हुआ (पठम
३७, ४८) । २ जिसकी गीत गाई गई हो
वह (उप २११ टी) ।

पगीय वि [प्रगीत] जिसने गाते का प्रारम्भ
किया हो वह (राय ४६) ।

पगुण देखो पठण (सूत्र १, १, २) ।

पगुणीकर सक [प्रगुणी + कृ] प्रगुण करना,
सम्भार करना, सज्ज करना । ववहू, पगु-
णीकीरत (सुर १९, ३१) ।

पगे अ [प्रगे] सुबह, प्रभात काल (सुर ७,
७८, कुप्र १५५) ।

पगा सक [ग्रह] ग्रहण करना । पगाइ
(पद्) ।

पगाल वि [दे] पागल, उन्मत्त (प्राह.
१०) ।

पगह पुं [प्रग्रह] काल के लिए उठाया
हुआ भोजन पान (सूत्र २, २, ७३) ।

पगह पुं [प्रग्रह] ? उपधि, उपकरण
(भोग ६६६) । १ लगाम (वे ६, २७, १२,
६६) । २ पशुओं को नाक में लगाई जाती
डोरी, नाक की रस्ती, धाग । ४ पशुओं को
बाँधने की डोरी, रस्ती, पगहा (खारा १ ३,
उवा) । ५ नायक, मुखिया (ठा १) । ६ ग्रहण,
उपादान । ७ योजन, जोड़ना, 'अजसिपग-
हेण' (भा) ।

पगाहिअ वि [प्रगृहीत] ? अभ्युपगत,
सम्पद स्वीकृत (धनु ३) । २ प्रकर से गृहीत
(भा धौप) । ३ उठाया हुआ (वने ३,
ठा ६) ।

पगाहिय वि [प्रग्रहीत] ऊपर देखो (उवा) ।

पगिगम } (वप) अ [प्रायस्] प्राय
पगिगम्य } बहुधा (पद्, हे ४, ४१४,
कुमा) ।

पगोज पुं [दे] निकर, समूह (हे ६, ११) ।

पघस सक [प्र + घृप्] फिर फिर घिसना ।

पघसेज्ज (निष् १७) : प्रयो वह पघसायत
(निष् १७) ।

पघसाण न [प्रघर्षण] पुन पुन घर्षण,
'एक दिण्ण घाघरण, दिण्णे दिण्णे पघसाण'
(निष् ३७) ।

पघोल सक [प्र + घूर्णय] घिसना, संगत
होना । वह, 'वठपपोलतवपुणगारो' (कुप्र
२२६) ।

पघोस पुं [प्रघोप] उच्चै शब्द प्रकाश,
उद्योपण (भवि) ।

पघोसिय वि [प्रघोपित] घोषित किया
हुआ, उच्च स्वर से प्रकाशित किया हुआ
(भवि) ।

पच सक [पच्] पकाना । पचइ, पचए,
पचवि, पचवि, पचसे, पचह, पचत्थ पचामि,
पचामो, पचामु, पचाम, पचिमो, पचिमु
(सति ३०, वि ४१६, ४५५) । ववहू,
पचमाण, 'नएए नेरइयाण महोनिंसि पच-
माणाण' (सुर १४, ४६, सुपा ३२८) ।

पच (भग) देखो पच । 'आलीस, 'तालीस
कीन ['वदगारिशात्] ? सत्त्वा विरोध,
पेतालीस, ४५ । २ पेतालीस सत्त्वा जिनकी
हो वे (पि २७३, ४४५, विग) ।

पचक्रमणम न [प्रचङ्क्रमण, 'क] पान से
चलना (धौप) ।

पचक्रमावण न [प्रचङ्क्रमण] पान से
संचारण, पान से चलाना (धौप १०५ टि) ।

पचइ देखो पयइ (वव ८) ।

पचलिय देखो पयलिय = प्रचलित (दीप) ।

पचार सक [प्र + चारय्] चलाना । पचा-
रेइ (सिदि ४१५) ।

पचार पुं [प्रचार] विस्तार, फैलाव (भोह
२०) । देखो पचार = प्रचार ।

पचाल सक [प्र + चालय्] प्रतिपाद
कलाना, छव चलाना । वह, पचानेमाण
(भग १७, १) ।

पचिय वि [प्रचित] समूह (स्वण ६६) ।

पचोस (वप) कीन [पच्चविंशति] ? पचोस,
संख्या विरोध कीय प्रौर पचि, २५ । २

जिनकी संख्या पचोस हो वे (विग वि २७३) ।

पचुन्निय वि [प्रघृणित] बुर-बुर किया
हुआ (सुर २, ८७) ।

पचेत्तिम वि [पचेत्तिम] पक्व, पका हुआ
'सहमद्वरपवेत्तिमपवेहि' (गुण ८३) ।

पचोइअ वि [प्रचोदित] प्रेरित (सूत्र १,
२, ३) ।

पचइय देखो पघइय = प्रत्ययिन (गुण २,
१७) ।

पञ्चद्वय वि [प्रत्ययिक] १ विरवाभी, विश्राम-
वाला (शाखा १, १२) । २ ज्ञानवाला,
प्रत्ययवाला । ३ न. श्रुत ज्ञान, भागम-ज्ञान
(विते २१३६) ।

पञ्चद्वय वि [प्रत्ययित] विरवासवाला, विश्र-
स्त (महा. सुर १६, १६६) ।

पञ्चद्वय वि [प्रात्ययिक] प्रत्यय से उत्पन्न,
प्रतीति से संज्ञात (ठा ३, ३—यत्र १११) ।

पञ्चद्वय न [प्रत्यय] हर एक अवयव (गुण
१५, वच्यु) ।

पञ्चगिरा की [प्रत्यय] विद्यादेवी विशेष,
“ईतिविषयसममणा पमण्ड पञ्चगिरा ग्रहं
विद्या” (सुभा ३०६) ।

पञ्चतं पु [प्रत्यय] १ धनादेश (प्रवी
१६) । २ वि. समीपस्थ देश, समिष्टप्राप्त
भाग (सुर २, २००) ।

पञ्चतिंग देवो पञ्चतिय = प्रत्यगित्त (भाषा
२, ३, १, ५) ।

पञ्चतिय वि [प्रत्ययिक] समीप-देश में
स्थित (उप २१११) ।

पञ्चतिय वि [प्रत्ययिक] प्रत्यय देश से
भाषा हुआ (धम्म ६ टी) ।

पञ्चकर न [प्रत्यय] १ इन्द्रिय आदि की
सहायता से विना ही उत्पन्न होनेवाला ज्ञान
(विते ८६) । २ इन्द्रियों से उत्पन्न होनेवाला
ज्ञान (ठा ४, १) । ३ वि. प्रत्यक्ष ज्ञान का
विषय, ‘पञ्चकामो भ्रूणो एवो तरणो
महामार्गो’ (सुर ३, ७११) ।

पञ्चकर } सक [प्रत्या + खय] त्याग
पञ्चकरा } करने, त्याग करने का नियम
करना । पञ्चकरा (मग) । वक्र. पञ्चकर-
माण, पञ्चकराप्रमाण (पि ५६१, उवा ३)
संक्र. पञ्चकरादत्ता (पि ५८२) । क.
पञ्चकरेय (भाव ६) ।

पञ्चकराण न [प्रत्याख्यायन] १ परिमाण
करने की प्रविज्ञा (भाग, उवा) । २ जैन
प्रवर्तनविशेष, नवर्गो पूर्व-अव्य (सम २६) । ३
सर्व सावध—नियम नमो से निवृत्ति (कम्म १,
१७) । ४ नरण पुं [‘नरण’] कर्मावधि-विशेष,
सावध निरति का प्रतिपन्थक बोध आदि
(कम्म १, १७) ।

पञ्चकराणि वि [प्रत्याख्यायन] त्याग की
प्रविज्ञा करनेवाला (मग ६, ४) ।

पञ्चकराणी की [प्रत्ययानी] भाषा विशेष,
प्रतिपेयवचन (मग १०, ३) ।

पञ्चकराय वि [प्रत्याख्याय] ध्वज, छोड़
दिना हुआ (शाखा १, १ मय. कण) ।

पञ्चकराय वि [प्रत्याख्यायक] त्याग
करनेवाला, ‘मत्तपञ्चकराय’ (मग १४, ७) ।

पञ्चकराय सक [प्रत्या + खयापय]
त्याग करना, किसी विषय का त्याग करने
की प्रविज्ञा करना । वक्र. पञ्चकरायित
(भाव ६) ।

पञ्चकिरि वि [प्रत्यय] प्रत्यक्ष ज्ञानवाला
(वच १) ।

पञ्चकिरय देवो पञ्चकराय (सुभा ६२४) ।

पञ्चकरीकर सक [प्रत्यय + कृ] प्रत्यक्ष
करना, साक्षात् करना । भवि. पञ्चकरीक-
रित्सं (मग १८८) ।

पञ्चकरीरिन्द (सौ) वि [प्रत्यक्षीकृत] प्रत्यक्ष
किया हुआ, साक्षात् जाना हुआ (पि ५६) ।

पञ्चकरीभू सक [प्रत्यक्षी + भू] प्रत्यक्ष
होना, साक्षात् होना । संक्र. पञ्चकरीभूय
(भावम) ।

पञ्चकरेय देवो पञ्चकरा ।

पञ्चगम वि [प्रत्यय] १ प्रवाल, मुख्य (स
२४) । २ वक्र. सुन्दर (उप ६८६ टी, सुर
१०, १५२) । ३ नवीन, नया (पाप) ।

पञ्चच्छिम देवो पञ्चतियम (राज, ठा २,
३—यत्र ७६) ।

पञ्चच्छिमा देवो पञ्चतियमा (राज) ।

पञ्चच्छिमिह वि [प्राश्चात्य] पश्चिम दिशा
में उत्पन्न, पश्चिम दिशा-सम्बन्धी (सम ६६,
पि ३६५) ।

पञ्चच्छिमुत्तर देवो पञ्चतियमुत्तरा (राज) ।

पञ्चद्व प्र [क्षर] करना, टपकना । पञ्चद्व
(हे ४, १३३) । वक्र. पञ्चद्वमाण (कुमा) ।

पञ्चद्व सक [गम] जगना, गमन करना ।

पञ्चद्व दे (हे ४, १६२) ।

पञ्चद्विअ वि [क्षरित] मरा हुआ, टपका
हुआ (हे २, १७४) ।

पञ्चद्विआ की [दे. प्रत्यय] मल्लों का एक
प्रकार का नख (विते ३३३७) ।

पञ्चणीय वि [प्रत्ययनीक] विरोधी, प्रतिपक्षी,
दुरमन (उप १४६ टी; सुभा २०७) ।

पञ्चणुभव सक [प्रत्यय + भू] भ्रुणुभव
करना । वक्र. पञ्चणुभवमाण (शाखा १,
२) ।

पञ्चणुदे देवो पञ्चणुभव । पञ्चणुहोद (उत्त
१३, २३) ।

पञ्चत्त वि [प्रत्यय] जिसका त्याग करने का
प्रारम्भ किया गया हो वह (उप ८२८) ।

पञ्चत्तर न [दृ] बाढ़, छुआमद (दे ६, २१) ।

पञ्चत्वरण न [प्रत्यास्तरण] विद्यौता (पि
२८५) । देवो पञ्चत्वरण ।

पञ्चतिय वि [प्रत्यय] प्रतिपक्षी, विरोधी,
दुरमन (उप १०३१ टी; पाप, कुप १४१) ।

पञ्चस्थिम वि [प्राश्चात्य, पश्चिम] १ पश्चिम
दिशा तरफ का, पश्चिम का । २ न. पश्चिम
दिशा, ‘पुरतिथेण लघुसमुदे जोयणसाह-
स्तिर्यं क्षेत्रं जाणइ, पातइ, एवं दक्षिणोणं,
पञ्चतियमेण’ (उवा. मग. भाषा, ठा २, ३) ।

पञ्चस्थिमा की [पश्चिमा] पश्चिम दिशा
(ठा १०—यत्र ४७८, भाषा) ।

पञ्चस्थिमिह वि [प्राश्चात्य] पश्चिम दिशा
का (विषा १, ७, पि ५६५; ६०२) ।

पञ्चस्थिमुत्तरा की [पश्चिमोत्तरा] पश्चिमोत्तर
दिशा, वायव्य कोण (ठा १०—यत्र ४७८) ।

पञ्चस्थुय वि [प्रत्यासृत] प्राश्चादित, डक
हुआ (पठम ६४, ६६, जीव ३) । २
विद्याया हुआ (उप ६४८ टी) ।

पञ्चद्व न [प्राश्चा] पिछला भाषा, उत्तरार्ध
(पठम) ।

पञ्चद्वचक्रयि धुं [प्रत्यय + चक्रयि] वादु-
देव का प्रतिपक्षी रागा, प्रतिवायुदेव (सौ
३) ।

पञ्चपपण न [प्रत्यय] वापस देना, लौट
देना (विने ३०५७) ।

पञ्चपिपण सक [प्रति + अपिप] १
वापस देना, लौटाना । २ सप्ति हृद कार्य की
करने निवेदन करना । पञ्चपिपणइ (वच्यु) ।
वर्म. पञ्चपिपिपण (पि ५५७) । वक्र.
पञ्चपिपिपणमाग (ठा ५, २—यत्र ३११) ।
संक्र. पञ्चपिपिपिणा (पि ५५७) ।

पञ्चमलोक वि [दे] प्राप्त-चित्त, तल्लो-
मनस (दे ६, ३५) ।

पञ्चभ्रास पुं [प्रत्याभ्रास] निगमन,
प्रत्युच्चारण (विसे २६३२) ।

पञ्चभिआण देलो पञ्चभिजाण । पञ्चभि-
आणदि (श्री) (वि १७०, ५१०) ।

पञ्चभिआणदि (श्री) देलो पञ्चभिजाणिअ
(वि ५६५) ।

पञ्चभिजाण सक [प्रत्यभि + जा] पहि-
चाना, पहिचान लेना । पञ्चभिआण
(महा) । षट् पञ्चभिजाणमाण (शापा
१, १६) । सट् पञ्चभिजाणिकुण
(महा) ।

पञ्चभिजाणिअ वि [प्रत्यभिज्ञात] पहि-
चाना हुमा (स ३६०) ।

पञ्चभिजाण न [प्रत्यभिज्ञान] पहिचान
(स २१२, नाट—शकु ८४) ।

पञ्चभिआय देलो पञ्चभिजाणिअ (स
१००, सुर ६, ७६, महा) ।

पञ्चमाण देलो पञ्च = पञ्च ।

पञ्चय पुं [प्रत्यय] १ प्रतीति, ज्ञान, योध
(उव, ठा १, विसे २१४०) । २ निर्णय,
निश्चय (विसे २१३२) । ३ हेतु, कारण (ठा
२, ४) । ४ शयन, विश्रान्त उपमन करने के
लिए किमा मा बराया जावा तस माप भादि
का बर्णन वगैरह (विसे २१३१) । ५ ज्ञान
का कारण । ६ ज्ञान का विषय, ज्ञेय पदार्थ
(राज) । ७ प्रत्यय-जनक, प्रतीति का
उत्पादक (विसे २१३१, भावम) । ८ विधाय,
यथा । ९ शब्द, भावाज । १० शिष्ट, विवर ।
११ आधार भाग्यम । १२ व्याकरण प्रसिद्ध
प्रकृति में लगता शब्द विशेष (हि २, १३) ।

पञ्चयल वि [दे] १ पञ्चा, समर्थ, पहुँचा
हुमा (दे ६, ६६, सुपा ४८, सुर १, १४,
कुप ६६, पात्र) । २ भवहन, भवहिण्यु
(दे ६, ६६) ।

पञ्चयलित } (भाष) म [प्रत्युत्] वैपरीत्य,
पञ्चयलित } वरुष, वरु (दे ४, ४२०) ।

पञ्चमगद (श्री) वि [प्रत्यमगत] ममा हुमा,
‘एस म कोदि पञ्चमगदसिरोहरे’ उम्भु विप्र
विएण (?) मंग बरेदि (प्रति २२४) ।

पञ्चमथय वि [प्रत्ययस्तुत] १ विद्याया
हुमा । २ भाञ्छादित (भावम) ।

पञ्चमस्थान न [प्रत्ययस्थान] १ शङ्का-
परिहार, समाधान (विसे १००७) । २
प्रतिवचन, छाडन (शुद्ध १) ।

पञ्चवर न [दे] मुक्त, एक प्रकार की मोटी
लकड़ी जिससे चावल आदि अन्न कूटे जाते
हैं (दे ६, १५) ।

पञ्चवाय पुं [प्रत्यवाय] १ वाधा विघ्न,
व्याघात (शापा १, ६, महा, स २०६) ।
२ चोप, दूधल (फम ६५, १२, मच्छ ७०,
मोप २४) । ३ गाय, ‘इहपञ्चवायमरिभो
मिहवायो’ (सुपा १६२) । ४ दुःख, पीडा
(कुप ५१२) ।

पञ्चवाय पुं [प्रत्यवाय] १ उपघात हेतु,
नाश का कारण (उत १०, ३) । २ धनर्थ
(पंचा ७, १६) ।

पञ्चवेक्सिद (श्री) वि [प्रत्यवेक्षित]
निरीक्षित (नाट—शकु १३०) ।

पञ्चह न [प्रत्यह] हत्यारण, प्रतिविन (प्रति
६०) ।

पञ्चहिजाण देलो पञ्चभिजाण । पञ्च-
पञ्चहिजाण } हिवालेदि (वि ५१०) । पञ्च-
हिजाणह (म ४२) । सट् पञ्चहिजाणिकुण
(स ४४०) ।

पञ्चा छी [दे] तुल्य विशेष, बलवत् (ठा ५, ३) ।
‘विश्विथय न [दे] बलज तुल्य की कूटी
हुई छात का बना हुमा रगेहरण—लेन
साधु का एक उपकरण (ठा ५, ३—पञ
३३८) ।

पञ्चा देलो पञ्छा (प्रवी ३६, नाट—रत्ना ७) ।

पञ्चाअच्छ सक [प्रत्या + गम्] पीछे
लौटना, वापस आना । पञ्चाअच्छह (पट्) ।

पञ्चाअद (श्री) देलो पञ्चागय (प्रवी २५) ।

पञ्चाअस्स देलो पञ्चस्स = प्रत्या + ह्या ।

पञ्चाअस्सामि (भाषा २, १५, ५, १) ।

अवि. पञ्चाअस्सामि (वि ५२६) । वट्.

पञ्चाअस्सामाण (वि ४६२) ।

पञ्चाअट्ठयायी [प्रत्यानर्त्तनना] ब्रवाय—

सहय रहित निष्कलम ज्ञान विशेष निष्-

कलम मति-ज्ञान (खदि १७६) ।

पञ्चाअस्स पुन [प्रत्यादेश] दृष्टाव, निदर्शन,
उदाहरण, ‘पञ्चाअस्सो न धम्मनिर्वाण’ (न

३५, उव, कुप ५०), ‘पञ्चाअस्स दिट्ठ’
(पाष) । देलो पञ्चाअस्स ।

पञ्चागय वि [प्रत्यागय] १ वापस आया
हुमा (गा ६३३, दे १, ३१, महा) । २ न,
प्रत्यागमन (ठा ६—पञ ३६५) ।

पञ्चाचकर सक [प्रत्या + चक्ष्] परित्याग
करना । हेऊ, पञ्चाचविपटु (श्री) (वि
४६६, ५७५) ।

पञ्चाणयण न [प्रत्यानयन] वापस ले आना
(बुदा २७०) ।

पञ्चाणि } सक [प्रत्या + णी] वापस ले
पञ्चाणी } आना । वक्क पञ्चाणिज्जत (सि
११, १२५) ।

पञ्चाणीद (श्री) वि [प्रत्यानीत] वापस
लाया हुमा (वि ८१, नाट—विक् १०) ।

पञ्चाथरण न [प्रत्यास्तरण] सामने होकर
सजना (राज) ।

पञ्चादिट्ठ वि [प्रत्यादिष्ट] निरस्त, निराकृत
(वि १४५, मुग्ग ६) ।

पञ्चादेस्स पुं [प्रत्यादेश] निराकरण (अभि
७२, १७८ नाट—विक् ३) । देलो पञ्चापस्स ।

पञ्चापड अक [प्रत्या + पत्] वापस
आना लौटकर आ पडना । वट्, भगपवि-
हयपुणरविपञ्चापडतवचलमिदिक्कवय (मोप) ।

पञ्चामित्त पुन [प्रत्यमित्त] अमित्र, दुश्मन
(शापा १, २—पञ ७७, मोप) ।

पञ्चाय सक [वि + आयय्] १ प्रतीति
करना । २ विद्वांस बनाना । पञ्चामह (गा
७१२) । पञ्चाएमी (स ३२४) ।

पञ्चाय देलो पञ्चाया ।

पञ्चायण न [प्रत्यायन] ज्ञान बनाना, प्रतीति-
जनन (विसे २१३६) ।

पञ्चायय वि [प्रत्यायक] १ निर्णय जनक ।

२ विद्वांस-जनक (विक् ११३) ।

पञ्चाया अक [प्रत्या + जन्] उत्पन्न होना,
जन्म लेना । पञ्चायति (मोप) । अवि,
पञ्चायाहिद (मोन, वि ५१७) ।

पञ्चाया अर [प्रत्या + या] ऊपर देलो ।
पञ्चायति (स ३२७) ।

पञ्चायाइ श्री [प्रत्याजाति, प्रत्यायाति]
रूपति, जन्म-मरण (ठा ३, ३—पञ १४४) ।

पञ्चायाय वि [प्रत्यायाव] उत्पन्न (भग) ।

पञ्चार सक [उपा + लभ्] उपालभ्य
देना, उताहना देना । पञ्चारद, पञ्चारति (दि
४, १५६; कुमा) ।

पञ्चारण न [उपालभ्] प्रतिशेद (पाम) ।

पञ्चारिय वि [प्रचारित] चलाया हुआ (विचि
४३६) ।

पञ्चारिय वि [उपालभ्] जिसको उताहना
दिया गया हो वह (भवि) ।

पञ्चालिय वि [दि. प्रत्यादित्] घाट किया
हुआ, गोला किया हुआ; 'पञ्चालिया य से
ग्रहियवर बाहसलिनैए रिद्धो' (स ३०८) ।

पञ्चालिङ्ग न [प्रत्यालिङ्] साम पाद को
कोड़े हटा कर और दक्षिण पाँव को मागे
रखकर लड़े रहनेवाले मानुष की स्थिति
मानुषादि को ना पैरुत (बब १) ।

पञ्चावड पुं [प्रत्यावत्] घात के सामने ना
भावर्त्त, पानी का जैरर (पाप ३०) ।

पञ्चारण्ड पुं [प्रत्यापराह्] मध्याह्न के बाद
समय, दोमरा पहर (विपा १, ३ डि, वि
३३०) ।

पञ्चासण वि [प्रत्यासन्न] समीप में स्थित,
सन्निकट, बहुत पास (विसे २६११) ।

पञ्चासति श्री [प्रत्यासत्ति] समीपता,
समीप्य (दुद्रा १११) ।

पञ्चासन्न देखो पञ्चासण, 'निधं पञ्चासन्नो
परिअवड सव्वमो मच्च' (बब ६ टी) ।

पञ्चासा श्री [प्रत्याशा] १ भाषाशा, भाषा,
अभिधाया । २ निराशा से बाद की आशा
(स २६८) । ३ लोभ, लालच (उप ४७६) ।

पञ्चासि नि [प्रत्याशिन] बात या वच किया
हुआ वस्तु ना अणु करनेवाला (भाषा) ।

पञ्चाह सक [प्रति + मृ] उत्तर देना ।
पञ्चाह (दि ३७८) ।

पञ्चाहर नरु [प्रत्या + ह्र] उपदेश देना ।
पञ्चाहरओ नि एं हिपयामणोमो
जोएणोदीदो सरो' (मम ६०) ।

पञ्चाहुत्त किनि [पञ्चागुत्त] कोड़े, कोड़े
की तरफ; 'जान न सतुत्त पण पञ्चाहुत्त निवसो
नि' (पनीर ५४) ।

पञ्चिम देगो पञ्चिदम (दिग वि ३०१) ।

पञ्चुअ (दे) देगो पञ्चुदिअ (दे ६, २४) ।

पञ्चुअआर देखो पञ्चुवयार (पाह ३६;
नाट—मुच्छ ५७) ।

पञ्चुगच्छणया श्री [प्रत्युद्गमनता]
अभिमुख गमन, (मम १४, ३) ।

पञ्चुयार पुं [प्रत्युयार] अनुवाद, अनुभाषण
(स १८४) ।

पञ्चुल्लुहणी श्री [दि] नूनन सुख, ताना
साह (दे २, ३५) ।

पञ्चुल्लोविअ वि [प्रत्युल्लोवित] पुनर्निवित
(गा ६११; कुम ३१) ।

पञ्चुद्धिअ वि [प्रत्युद्धित] जो सामने लड़ा
हुआ हो वह (सुर १, १३४) ।

पञ्चुणम सक [प्रत्युद् + नम्] बोझ
ऊँचा होना । पञ्चुणमद (बप्) । संक.
पञ्चुणमिता (बप्; भीप) ।

पञ्चुत्त वि [प्रत्युत्त] फिर से बोधा हुआ
(दे ७, ७७; गा ६१८) ।

पञ्चुत्तर सक [प्रत्यव + त्] भीषे भाला ।
पञ्चुत्तर (वि ४४७) । संक पञ्चुत्तरिता
(राज) ।

पञ्चुत्तर न [प्रत्युत्तर] जवाब, उत्तर (था
१२; सुपा २१; १०४) ।

पञ्चुत्त वि [दि] प्रथम, फिर से बोधा हुआ
(दे ६, ११) ।

पञ्चुत्थय } वि [प्रत्यवमृत्] आच्छादित
पञ्चुत्थय } (लाया १, १—पन १३, २०,
नप्) ।

पञ्चुत्तरिअ वि [दि] समुवागत, सामने
आया हुआ (दे ६, २४) ।

पञ्चुत्तार पुं [दि] अनुस भाषयन (दे ६, २४) ।

पञ्चुत्पण्ण } वि [प्रत्युत्पन्न] वर्तमान काल-
पञ्चुत्पन्न } संबन्धी (वि ५१६; नग. लाया
१, ८. सम्म १०३) । 'नय पुं [नय]
वर्तमान वस्तु को ही लय माननेवाला पञ्च,
निरवय नय (विसे ३१६१) ।

पञ्चुत्पन्न पुं [प्रत्युत्पन्न] वर्तमान बात
(सुर १, २, ३. १०) ।

पञ्चुत्पल्लिअ नि [प्रत्युत्पल्लित] धानस
धारा हुआ (दे १४, ८१) ।

पञ्चुत्पल्लिअ नि [प्रत्युत्पल्लित] धानस
धारा हुआ (दे १४, ८१) ।

पञ्चुत्पल्लिअ नि [प्रत्युत्पल्लित] धानस
धारा हुआ (दे १४, ८१) ।

पञ्चुत्पल्लिअ नि [प्रत्युत्पल्लित] धानस
धारा हुआ (दे १४, ८१) ।

पञ्चुत्तर न [प्रत्युत्तर] हृदय के सामने
(राज) ।

पञ्चुत्त वि [दि. प्रत्युत्त] प्रत्युत्त, उत्तर, 'न
तुमं रुद्धो, पञ्चुत्तं ममं पूरति' (बन १) ।

पञ्चुवयार देखो पञ्चुवयार (नाट—मुच्छ
२३५) ।

पञ्चुवगच्छ सक [प्रत्युप + गम्] सामने
जाना । पञ्चुवगच्छद (मम) ।

पञ्चुवयार पुं [प्रत्युपकार] उपकार के
पञ्चुवयार] वस्त्रे उपकार (हा ४, ४; पलम
४६, ३६; स ४४०; प्राक) ।

पञ्चुवयारि वि [प्रत्युपकारित] प्रत्युवयार
करनेवाला (सुना ५६५) ।

पञ्चुवैक्ख सक [प्रत्युप + ईक्ष्] निरोक्षण
करना । पञ्चुवैक्खेद (भीप) । संक. पञ्चु-
वैक्खितता (भीप) ।

पञ्चुवैक्खिय वि [प्रत्युपेक्षित] अवलोकित,
निरीक्षित (स ४४१) ।

पञ्चुहिअ वि [दि] प्रत्युव, प्रसारित, पञ्चो
उल्लूखने या व्यननेवाला (दे ६, २५) ।

पञ्चुह न [दि] धान, धार, भोजन करने
का पात्र, बड़ी धाकी (दे ६, १२) ।

पञ्चुस [दि] देखो पञ्चुह = (दे), 'विह्वहिं
पयसेणवि धादग्गद वह सु पञ्चुसो' ?
(सुर १, १३४) ।

पञ्चुत्त पुं [प्रत्युत्त] प्रभात काल (हे २,
पञ्चुत्त १४; लाया १०, गा ६०४) ।

पञ्चुह पुं [प्रत्युह] निधन, अन्तराव (पाम,
कुम ५२) ।

पञ्चुह पुं [दि] पूर्व, पवि (दे ६, ५; गा
६०४. पाम) ।

पञ्चुअअ [प्रत्येअ] प्रवेष्ट, हरएए (वह) ।

पञ्चो न [दि] कुपित (दे ६, १२) ।

पञ्चोल्लिअ (घर) देगो पञ्चोल्लिअ (मरि) ।

पञ्चोगिअ सक [प्रत्यय + गिअ] भास्वान्त
करना, रस का स्वाद देना । वह. पञ्चोगिअ-
मान (पम ५, १०) ।

पञ्चोणामिनी श्री [प्रत्ययनामिनी] विद्या-
स्थित, विद्या प्रमाण के पुत्र का विद्या देने
के लिए स्वयं को देव मनर्त्त (हा ५ १५३) ।

पचोणियत्त वि [प्रत्ययनिवृत्त] ऊँचा उल्लव कर नीचे गिरा हुआ (परह १, ३—पत्र ५४)।

पचोणियय सक [प्रत्ययनि + पत्] उल्लव कर नीचे गिरना। वङ्ग. पचोणिययंत (श्रीप)।

पचोणी [दे] देखो पचोवणी (स २३५, ३०२, सुपा ६१; २२५, २७६)।

पचोयड न [दे] १ तट के समीप का ऊँचा प्रवेश (जीव ३)। २ वि. प्राच्छादित (राय)।

पचोयर सक [प्रत्यय + य] नीचे उतरना। पचोयरह (प्राचा २, १५, २८)। सङ्ग. पचोययित्ता (प्राचा २, १५, २८)।

पचोरुम } सक [प्रत्यय + रुह] नीचे
पचोरुह } उतरना। पचोरुह (छाया १, १)। पचोरुह (कप)। सङ्ग. पचोरुहित्ता (कप)।

पचोषणिवि [दे] सट्टल आया हुआ (दे ६, २५)।

पचोषणी की [दे] सट्टल आगमन (दे ६, २५)।

पचोसड सक [प्रत्यय + पच] १ नीचे उतरना। २ पीछे हटना। पचोसडह, पचोसडंत (वडा: वि १०२, अंग)। सङ्ग. पचोसकित्ता (वडा, अंग)।

पच्छ सक [प्र + अर्थय] प्रार्थना करना। कवङ्ग. पच्छलमाण (कप, श्रीप)।

पच्छ वि [पद्य] १ रोगी का हितकारी आहार (हे २, २१, प्राप्, कुमा, स ७२४, सुपा ५७६)। २ हितकारक, हितकारी, 'पच्छा यामा' (छाया १, ११—पत्र १७१)।

पच्छ न [पञ्चात्] १ चरम, शेष (संय १)। २ पीछे, श्रुत भाग। ३ अंशिम दिशा, 'पुष्पेण सणे पच्छेण सज्जता दाहिणेण वरविज्जो' (वजा ६६)। 'ओ म [तस्] पीछे, पीछ की ओर, हृथी केनेण पच्छपी सगो' (महा), 'बहद व महीसतगणिसो होत्तेह पच्छपी बरेह व गुरो' (सि १०, १०), 'तो केइयामी सत्ताणमणालेअण पच्छपी बाहं बदे सस' (सुपा २२१)। 'वग्ग न [वर्मन्] १ अगतर का बर्ग,

वाद की क्रिया। २ यतियों की मित्रा का एक दोष, दास-बन्धु का दान देने के बाद की पात्र को साफ करने आदि क्रिया (श्रीप ५१६)। 'ताज पुं [वाप] अनुताप (वजा १४२)। 'इ न [अर्थ] पीछला आया, उत्तरार्ध (मउद, महा)। 'वत्थुका न [वास्तुक] पिछला घर, घर का पिछला हिस्सा (परह २, ४—पत्र १३१)। 'याव पुं [ताप] पचाताप, अनुताप (मावम)। देखो पच्छा = पथात्।

पच्छइ } (अप) म [पञ्चात्] ऊपर देखो
पच्छप } (हे ४, ४२०; पद, भवि)। 'ताय पुं [ताप] अनुताप, अनुशय (कुमा)। पच्छेव सक [गम्] आना, यमन करना। पच्छेवह (हे ४, १६२)।

पच्छदि वि [गन्तु] गमन करनेवाला (कुमा)। पच्छभाग पु [पञ्चाद्भाग] १ विरल का पिछला भाग (राज)। २ पुन. नक्षत्र-विशेष, कन्य श्रुत देवर जिसका भोग बरता है वह नक्षत्र (ठा ६)।

पच्छण बीन [प्रतक्षण] रक्क का वारीक विदारण, बाजू आदि से बतरी छील निकालना, 'तच्छणेहि य पच्छणेहि य' (विपा १, १), 'तच्छणाहि य पच्छणाहि य' (छाया १, १३)।

पच्छणवि [प्रच्छन्न] पुन. अक्षरट, (गा १८३)। 'पह पुं [पति] जाद, उपपति, थार (सूप १, ४, १)।

पच्छद देखो पच्छय (श्रीप)।

पच्छदण न [प्रच्छदन] शास्त्रज्ञ, बादर—शम्भू के ऊपर का आच्छादन-बद्ध, 'पुणपच्छद-णाएससपपाणिदु ख सवामि' (स्वप्न ६०)।

पच्छम देखो पच्छण (ज, सुर २, १८४)। पच्छय पुं [प्रच्छद] नक्षत्रविशेष, कुपट्टा, पिठोरी (छाया १, १६)।

पच्छयण देखो पत्थयण ("")।

पच्छयण देखो पत्थयण (मोह ८०)।

पच्छट्टिउ (अप) देखो पच्छट्टिउ (पद)। पच्छा म [पञ्चात्] १ अगतर, बाद, पीछे (सुर २, २४४, प्राप्, प्राम् ५७), 'पच्छा तम विवासे प्पति बत्तुण महादुस्सो' (प्राम् १२६)। २ पत्तोक, पत्रागम, 'पच्छा

बहुमविवासा' (राज)। ३ पिछला भाग, श्रुत। ४ चरम, शेष (हे २, २१)। ५ पश्चिम दिशा (छाया १, ११)। 'उत्त वि [आयुत्त] जिसका मासोजन पीछे से किया गया हो वह (कप)। 'कड पुं [कृत] साधुपन की छोटकर फिर गृहय बना हुआ (इ ५०, इह १)। 'वग्ग देखो 'पच्छ-कम्म (वि ११२)। 'णिवाइ देखो 'निवाइ (राज)। 'णुताव पुं [अनुताप] पचाताप, अनुताप, 'पच्छाणुतवेण सुमग्गसाणेण' (भावप)। 'णुपुज्जी की [आनुपज्जी] उलटा कम (प्राप्, कम्म ४, ४३)। 'ताय पुं [ताप] अनुताप (प्राय ४)। 'ताविय वि [तापिक] पचाताप (परह २, ३)। 'निवाइ वि [निपातिन्] १ पीछे से गिर जानेवाला। २ बारिज ग्रहण कर बाद में सबसे च्युत होनेवाला (प्राचा)। 'भाग पुं [भाग] पिछला हिस्सा (छाया १, १)। 'मुह वि [मुख] परागुल, जिसने मुँह पीछे की तरफ फेर लिया हो वह (भा १२४)। 'यव, 'याव देखो 'ताय (पदम ६४, ६६, सुर १५, १५५, सुपा १२१, महा)। 'यावि वि [तापिन्] पचाताप करनेवाला (जप ७२८ दी)। 'याय पुं [याव] पश्चिम दिशा का पवन। २ पीछे का पवन (छाया १, ११)। 'सरसि की [दे-सस्सुति] १ पिछला संस्कार। २ सत्ता के उपसर्ग में आति—हुट्टी की बगैरह प्रभूत मनूयो के लिए पकाये जाती रसोई (प्राचा २, १, ३, २)। 'संथय पुं [संस्थय] १ पिछला सबन्ध, बी, पुत्री बगैरह का सबन्ध। २ जैन भूमियों के लिए मित्रा का एक दोष, श्वरुद आदि पक्ष में अच्छी मित्रा मिलने की लाजब से पहले मित्रार्थ जाना (ठा ३, ४)। 'संथय वि [संस्थुत] पिछले सबन्ध से परिचित (प्राचा २, १, ४, ५)। 'हुत्त वि [दे] पीछे की तरफ का, 'यसपपपमि पच्छा-हुत्ताइ पयाइ तीए बट्ठण' (सुपा २८१)। पच्छा की [पथ्या] हरे, हरीतकी (हे २, २१)।

पच्छाज सक [प्र + छदय] १ बढना। २ दिशाना। वङ्ग. पच्छाजंत (सि ६, ४६; ११, ६)। इ. पच्छाज (यदु)।

पञ्चाश वि [प्रच्छाद्य] प्रचुर छायावाला (अभि ३६) ।

पञ्चाश्वि वि [प्रच्छादित] १ ढका हुआ, आच्छादित । २ छिपाया हुआ (पद्म, गवि) ।
पञ्चाश्वि देखो पञ्चाश = प्र + छाद्य् ।

पञ्चाश पुं [प्रच्छादक] पाव बांधने का कपडा (श्रीव २६५ भा) ।

पञ्चाहिद (श्री) वि [प्रक्षालित] घोषा हुआ (नाट—पृच्छ २५५) ।

पञ्चाणिअ [दे] देखो पञ्चोवणिअ (य ५) ।

पञ्चाणुताविअ वि [पञ्चादनुतापिक] पञ्चा-
ताप-मुक्त, पछतावा करनेवाला (राम १५१) ।

पञ्चाशो (श्री) देखो पञ्चा = पचाव (वि ६६) ।

पञ्चायण न [पच्यदन] पावेय, रास्ते में खाने का भोजन, 'बहुण करिय पञ्चायणसु भारिय' (महा) ।

पञ्चायण न [प्रच्छादन] १ आच्छादन, ढकना । २ वि आच्छादन करनेवाला । 'या श्री [ता] आच्छादन, 'परवृत्तपञ्चायणया' (उव) ।

पञ्चाल देखो पञ्चाल । पञ्चलेह (काल) ।

पञ्चि श्री [दे] पिटिका, पिटाही, वैशाख-
रवित भाजन विशेष (दि ६, १) । 'पिडय
॥ [पिटक] 'पञ्चो' रूप पिटाही (भग ७,
८ टी—पत्र ३११) ।

पञ्चि (भाप) देखो पञ्चइ (हे ४, ३८८) ।

पञ्चिज्जमाण देखो पञ्च = प्र + अर्घ्य् ।

पञ्चिज्ज न [प्रायश्चित्त] १ पाप की क्षुद्धि करनेवाला कर्म, पाप का क्षय करनेवाला कर्म (उव, गुप्ता ३६६, ३५२) । २ मन की शुद्ध करनेवाला कर्म (पचा १६, ३) ।

पञ्चिज्जति वि [प्रायश्चित्त] प्रायश्चित्त का भागो, दोषो (उप ३७६) ।

पञ्चिज्ज ॥ [पञ्चिम] १ पश्चिम दिशा (उपा ७५ टि) । २ वि. पश्चिम दिशा का, पाश्चात्य (महा हे २, २१, प्राप्र) । ३ विद्वान्. बाद का, 'विद्यमस्त पञ्चिजे भाए' (वप्य) । ४ प्रतिम, चरम, 'पुरिमपञ्चिमगाण विद्य-
गाण' (सम ४४) । 'द्ध न [पञ्चि]

उत्तरार्ध, उत्तरी भाषा हिंसा (महा, ठा २, ३—पत्र ८१) । 'सेल पुं [शैल] मस्ताचल पर्वत (मउड) ।

पञ्चिज्जमा श्री [पञ्चिमा] पश्चिम दिशा (कुमा, महा) ।

पञ्चिमिह वि [पाश्चात्य] पीछे से उत्पन्न, पीछे का (विसे १७६१) ।

पञ्चियापिहय देखो पञ्चि-पिहय (राम १४०) ।

पञ्चिखल (भप) देखो पञ्चिम (अवि) ।

पञ्चिखल १ वि [पञ्चिम, पाश्चात्य] १ पञ्चिखल्य १ पश्चिम दिशा का । २ पिद्वान्, गृध्रवर्तो (वि ५६३, ५६३ टि ४) ।

पञ्चुत्ताय पुं [परचाहुत्ताय] पछतावा, परचाताप (सम्मत १६०, यमवि ३५, १२२, १३०) ।

पञ्छुत्ताविअ (भप) वि [परचात्तापित] जिसको परचात्ताप हुआ हो वह (अवि) ।

पञ्छेज्जम देखो पञ्छ-ज्जम (हे १, ७६) ।

पञ्छेणय न [दे] पावेय, रास्ते में निवाह करने की भोजन सामग्री, कनेवा (दे ६, २४) ।

पञ्छोउरण्ण १ वि [परचाहुत्ताय] पीछे पञ्छोयपन्नक १ से उत्पन्न (भप) ।

पञ्चप स [प्र + जल्प] बोलना, कहना ।

पञ्चवह (वि २६६) ।

पञ्चपावण न [प्रजल्पन] बोलाना, बचन कराना (श्रीव वि २६६) ।

पञ्चपिअ वि [प्रजल्पन] कथित, उक्त, कहा हुआ (या ६४६) ।

पञ्चणय वि [प्रजनन] उत्पादन, उत्पन्न करनेवाला (राम ११४) ।

पञ्चणय न [प्रजनन] विग, कुसुम-बिह (विसे २५७ टी, शीप ७२२) ।

पञ्चल भए [प्र + जल्] १ विशेष जनना, प्रतिशय दाघ होता । २ चमकना । वद्ध, पञ्चलव (अवि) ।

पञ्चलि वि [प्रजलि] भगवत् जन्मेवाला, 'विमग्गमणुनवपजितरम्मरतारुवमहद्धम्य' (गुप्ता १) ।

पञ्चह स [प्र + ह] स्थान करना । पञ्चहिम (वि २००) । इ. पञ्चद्वियव (भावा) ।

पञ्चाला श्री [प्रज्वाला] भस्मि शिला, धाम की ली या लपट (कुप्र ११७) ।

पञ्चोवय न [प्रजोवन] भागीविका, जीवनी-
पाय, रोजी (विद ४७८) ।

पञ्चुत्त देखो पञ्चत्त = प्रयुक्त (वद) ।

पञ्हुहिअ वि [प्रयूथिक] मृष या समूह को दिया हुआ, वाचक गण को प्रतिष्ठ (भावा २, १, ४, २) ।

पञ्जेमण न [प्रजेमन] भोजन ग्रहण, भोजन लेना (राम १४६) ।

पञ्ज सक [पायय] पिताना, पान कराना ।

पञ्जद (विपा १, ६) । कवक, 'सहसादया ते तज तव तत्ता पजिज्जमाणद्वतर रसवि' (सुम १, ५, १, २५) । इ. पञ्जेयव (भत ४०) ।

पञ्ज न [पञ्] छन्दो-बद्ध वाक्य (ठा ४, ४—पत्र २८७) ।

पञ्ज न [पाद्य] पाद प्रक्षालन जल, 'भाप च पञ्ज च गहाय' (शायी १, १६—पत्र २०६) ।

पञ्ज देखो पञ्जत्त (दे १३; कम्म ७, ७) ।

पञ्जत्त पुं [पर्यग] मत्त, सीमा, प्राप्त भाग (हे १, २८, २, ६५, ३४४, २६६) ।

पञ्जय न [दे] पान, पीना (दे ६, ११) ।

पञ्जय न [पायन] पिताना, पान कराना (मन १४, ७) ।

पञ्जण्य देखो पञ्जण्य (सुपनि ५७) ।

पञ्जण्यो १ पुं [पर्यययोग] प्ररत (यमवत् पञ्जण्यो १) (७६, २६२) ।

पञ्जण्य पुं [पर्यय] वेप, बारल (भग १४, २, नाट, पृच्छ १७५) । देखो पञ्जन्न ।

पञ्जवर वि [दे] दलित, विदारित (पट्ट) ।

पञ्जत्त वि [पर्याप्त] १ 'पर्याप्त' से युक्त, 'पर्याप्त' वाला (ठा २, १, पण्ड १, १, कम्म १, ४६) । २ यमर्थ, उत्तिमान् । ३ सत्य, प्रास । ४ बाटी, व्येष्ट, उज्जाना जितने स बाय चत जाय । ५ न. इति । ६ सामर्थ्य । ७ निवारण । ८ योग्यता (हे २, २५; प्राप्र) । ९ कर्म-विशेष, त्रिमते उरय से जीव भान्ती भान्ती 'पर्याप्तियों' से युक्त होता है वह कर्म (कम्म १, २६) । 'याम, 'नाम न

[नामन्] अनन्तर उक्त कर्म-विशेष (राज; सम ६७) ।

पञ्चत्त न [पर्याप्ति] लगातार चौबीस दिन का उपवास (संयोग ५८) ।

पञ्चत्तर [दे] देखो पञ्चत्तर (पद्—पत्र २१०) ।

पञ्चत्ति स्त्री [पर्याप्ति] १ शक्ति, सामर्थ्य (सूच १, १, ४) । २ जीव की वह शक्ति, जिसके द्वारा पुद्गल को ग्रहण करने तथा उनको आहारा, शरीर आदि के रूप में बदल देने का काम होता है, जीव की पुद्गलों को ग्रहण करने तथा परिवर्तमानों का पचाने की शक्ति (सम; कम्म १, ४६, त्व ४, वं ४) । ३ प्राप्ति, पूर्ण प्राप्ति (दे ५, ६२) । ४ पुत्ति-‘नियतसंश्रयणजीविणाय को सहह पञ्चत्ति ?’ (उप ७६८ टी) ।

पञ्चत्ति स्त्री [पर्याप्ति] १ पुत्ति, पूर्णता (वर्मेदि ३८) । २ शक्त, श्रवण (सुख २, ८) ।

पञ्चज्ज पुं [पञ्चज्य] मेघ-विशेष, जिसका एक बार बरसने से भूमि में एक हजार वर्ष तक निष्पाव रहती है, ‘पञ्जु- (7ज) ने एं महामेह एगे एं बासेणं इत्त वाससमाई नापेति’ (ठा ४, ४—पत्र २७०) ।

पञ्जय पु [दे, प्रार्थक] प्रियतामह, पितामह का पिता, परदादा (भग ६, ३; दस ७, सुर १, १७४, २२०) ।

पञ्जय पु [पर्यय] १ श्रुत-ज्ञान का एक भेद, उत्पत्ति के प्रथम समय में सूक्ष्म निगोद के तन्मय-स्पर्शात्त जीव को जो कुछ का भय होता है उससे दूसरे समय में ज्ञान का जितना भय बढ़ता है वह श्रुतज्ञान (सम्म १, ७) । २—देखो पञ्जाय (सम्म १०३, खुदि विसे ४७८, ४८८, ४९०, ४९१) । ३ समास पुं [समास] दृष्टज्ञान का एक भेद, अनन्तर उक्त पर्यय श्रुत का अनुदाम (सम्म १, ७) ।

पञ्जयण न [पर्ययन] निरवय, अवधारण (विसे ८३) ।

पञ्जर ख [वधय] बहना, मोलना । पञ्जर, पञ्जर (दे ४, २, ६ ६, २८, कुमा) ।

पञ्जरय पुं [प्रजरक] रत्नप्रभा-नामक नरक-पृथिवी का एक नरकावास (ठा ६—पत्र ३६५) । मज्झ पुं [मध्य] एक नरकावास (ठा ६—पत्र ३६७ टी) । विट्ट पुं [वित्त] नरकावास विशेष (ठा ६) । सिद्ध पुं [विशिष्ट] एक नरकावास, नरक-स्थान-विशेष (ठा ६) ।

पञ्जल देखो पञ्जल । पञ्जलेइ (महा) । बहू, पञ्जलत्त (कण) ।

पञ्जलण वि [प्रज्वलन] जलानेवाला (ठा ४, १) ।

पञ्जलिअ पुं [प्रजालित] तीसरी नरक-भूमि का एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ८) ।

पञ्जलिय वि [प्रज्वलित] १ जलाया हुआ, धम (महा) । २ खूब चमकनेवाला, देदीप्यमान (नन्द २) ।

पञ्जलिर वि [प्रजलिर] १ जलनेवाला । २ खूब चमकनेवाला (सुपा ६३८, सण) ।

पञ्जलीड वि [प्रयवलीड] मशित (विचार ३२६) ।

पञ्जय पुं [पर्यय] १ परिच्छेद, निर्लुप (विसे ८३, भावम) । २ देखो पञ्जाय (भावा, भग, विसे २७५२, सम्म ३२) । ३ कसिण न [कृत्स्न] अनुदाम पूर्व-शय तक का ज्ञान, अनुज्ञान-विशेष (पञ्चमा) । ४ जाय वि [जात] १ मित्र भवत्वा को प्राप्त (पह २, ५) । २ नाम आदि गुणानवाला (ठा १) । ३ न, विपयोगयोग का अनुदान (भावा) । ४ जाय वि [जात] ज्ञान-प्राप्त (ठा १) । ५ द्विय पुं [सिन्धु, शिथिक, सिन्धु] नय-विशेष, द्वय की छोटकर देवत पर्यायो को ही मुख्य माननेवाला यल (सम्म ६) । ६ णय, नय पुं [नय] बड़ी अनन्तर उक्त धर्म (राज, विसे ७५), उपज्जोति ययति या भावा नियमेण पञ्चवयसत् (सम्म ११) ।

पञ्जवण ॥ [पर्ययन] परिच्छेद, निरवय (विसे ८३) ।

पञ्जरत्ताय ख [पर्यय + स्थापय] १ शब्दी भवत्वा में रहना । २ विशेष करना । ३ प्रतिपत्ति से साध बाध करना । पञ्जरत्तायिदु

(श्री), (भा ३६) । पञ्जरत्तायिदि (पि ५५१) ।

पञ्जरसाण न [पर्यवसान] श्रुत, श्रवसान (भग) ।

पञ्जरसाअ न [पर्यवसित] श्रवसान, श्रुत, ‘अपञ्जरसाअ तोए’ (भावा) ।

पञ्जा देखो पञ्जा (हे २, ८३) ।

पञ्जा स्त्री [पथा] मार्ग, रास्ता ‘मेअ व पवुख समा भावाए पञ्जावपञ्जा’ (सम्म १५७, २ ६, १, कुप्र १७६) ।

पञ्जा स्त्री [दे] नि ओति, सीडी (दे ६, १) ।

पञ्जा स्त्री [पर्याय] माधिकार, प्रथम भेद (दे ६, १, पात्र) ।

पञ्जा देखो पञ्जा; ‘अणणपञ्जति नासे विज्जा दक्खिणती नासे पञ्जा’ प्राप् ६६) ।

पञ्जाअर पुं [प्रजागर] जागरण, निद्रा का श्रमाव (प्रमि ६६) ।

पञ्जाउल वि [पर्याकुल] विशेष माकुल, म्हाकुल (स ७२, ६७५, हे ५, २६६) ।

पञ्जाभाय ख [पर्या + भाजय] माग करना । सङ्ग, पञ्जाभाहत्ता (राज) ।

पञ्जाय पुं [पर्याय] १ समान धर्म का वाचक शब्द (विसे २५) । २ पूर्ण प्राप्ति (विसे ८३) । ३ पदार्थ-धर्म, वस्तु-गुण । ४ पदार्थ का नृप या स्त्री लक्षण (विसे ३२१, ४७६, ४८०, ४८२, ४८३, ४८४, ४८५, ४८६, ४८७, ४८८, ४८९, ४९०, ४९१, ४९२, ४९३, ४९४, ४९५, ४९६, ४९७, ४९८, ४९९, ५००, ५०१, ५०२, ५०३, ५०४, ५०५, ५०६, ५०७, ५०८, ५०९, ५१०, ५११, ५१२, ५१३, ५१४, ५१५, ५१६, ५१७, ५१८, ५१९, ५२०, ५२१, ५२२, ५२३, ५२४, ५२५, ५२६, ५२७, ५२८, ५२९, ५३०, ५३१, ५३२, ५३३, ५३४, ५३५, ५३६, ५३७, ५३८, ५३९, ५४०, ५४१, ५४२, ५४३, ५४४, ५४५, ५४६, ५४७, ५४८, ५४९, ५५०, ५५१, ५५२, ५५३, ५५४, ५५५, ५५६, ५५७, ५५८, ५५९, ५६०, ५६१, ५६२, ५६३, ५६४, ५६५, ५६६, ५६७, ५६८, ५६९, ५७०, ५७१, ५७२, ५७३, ५७४, ५७५, ५७६, ५७७, ५७८, ५७९, ५८०, ५८१, ५८२, ५८३, ५८४, ५८५, ५८६, ५८७, ५८८, ५८९, ५९०, ५९१, ५९२, ५९३, ५९४, ५९५, ५९६, ५९७, ५९८, ५९९, ६००, ६०१, ६०२, ६०३, ६०४, ६०५, ६०६, ६०७, ६०८, ६०९, ६१०, ६११, ६१२, ६१३, ६१४, ६१५, ६१६, ६१७, ६१८, ६१९, ६२०, ६२१, ६२२, ६२३, ६२४, ६२५, ६२६, ६२७, ६२८, ६२९, ६३०, ६३१, ६३२, ६३३, ६३४, ६३५, ६३६, ६३७, ६३८, ६३९, ६४०, ६४१, ६४२, ६४३, ६४४, ६४५, ६४६, ६४७, ६४८, ६४९, ६५०, ६५१, ६५२, ६५३, ६५४, ६५५, ६५६, ६५७, ६५८, ६५९, ६६०, ६६१, ६६२, ६६३, ६६४, ६६५, ६६६, ६६७, ६६८, ६६९, ६७०, ६७१, ६७२, ६७३, ६७४, ६७५, ६७६, ६७७, ६७८, ६७९, ६८०, ६८१, ६८२, ६८३, ६८४, ६८५, ६८६, ६८७, ६८८, ६८९, ६९०, ६९१, ६९२, ६९३, ६९४, ६९५, ६९६, ६९७, ६९८, ६९९, ७००, ७०१, ७०२, ७०३, ७०४, ७०५, ७०६, ७०७, ७०८, ७०९, ७१०, ७११, ७१२, ७१३, ७१४, ७१५, ७१६, ७१७, ७१८, ७१९, ७२०, ७२१, ७२२, ७२३, ७२४, ७२५, ७२६, ७२७, ७२८, ७२९, ७३०, ७३१, ७३२, ७३३, ७३४, ७३५, ७३६, ७३७, ७३८, ७३९, ७४०, ७४१, ७४२, ७४३, ७४४, ७४५, ७४६, ७४७, ७४८, ७४९, ७५०, ७५१, ७५२, ७५३, ७५४, ७५५, ७५६, ७५७, ७५८, ७५९, ७६०, ७६१, ७६२, ७६३, ७६४, ७६५, ७६६, ७६७, ७६८, ७६९, ७७०, ७७१, ७७२, ७७३, ७७४, ७७५, ७७६, ७७७, ७७८, ७७९, ७८०, ७८१, ७८२, ७८३, ७८४, ७८५, ७८६, ७८७, ७८८, ७८९, ७९०, ७९१, ७९२, ७९३, ७९४, ७९५, ७९६, ७९७, ७९८, ७९९, ८००, ८०१, ८०२, ८०३, ८०४, ८०५, ८०६, ८०७, ८०८, ८०९, ८१०, ८११, ८१२, ८१३, ८१४, ८१५, ८१६, ८१७, ८१८, ८१९, ८२०, ८२१, ८२२, ८२३, ८२४, ८२५, ८२६, ८२७, ८२८, ८२९, ८३०, ८३१, ८३२, ८३३, ८३४, ८३५, ८३६, ८३७, ८३८, ८३९, ८४०, ८४१, ८४२, ८४३, ८४४, ८४५, ८४६, ८४७, ८४८, ८४९, ८५०, ८५१, ८५२, ८५३, ८५४, ८५५, ८५६, ८५७, ८५८, ८५९, ८६०, ८६१, ८६२, ८६३, ८६४, ८६५, ८६६, ८६७, ८६८, ८६९, ८७०, ८७१, ८७२, ८७३, ८७४, ८७५, ८७६, ८७७, ८७८, ८७९, ८८०, ८८१, ८८२, ८८३, ८८४, ८८५, ८८६, ८८७, ८८८, ८८९, ८९०, ८९१, ८९२, ८९३, ८९४, ८९५, ८९६, ८९७, ८९८, ८९९, ९००, ९०१, ९०२, ९०३, ९०४, ९०५, ९०६, ९०७, ९०८, ९०९, ९१०, ९११, ९१२, ९१३, ९१४, ९१५, ९१६, ९१७, ९१८, ९१९, ९२०, ९२१, ९२२, ९२३, ९२४, ९२५, ९२६, ९२७, ९२८, ९२९, ९३०, ९३१, ९३२, ९३३, ९३४, ९३५, ९३६, ९३७, ९३८, ९३९, ९४०, ९४१, ९४२, ९४३, ९४४, ९४५, ९४६, ९४७, ९४८, ९४९, ९५०, ९५१, ९५२, ९५३, ९५४, ९५५, ९५६, ९५७, ९५८, ९५९, ९६०, ९६१, ९६२, ९६३, ९६४, ९६५, ९६६, ९६७, ९६८, ९६९, ९७०, ९७१, ९७२, ९७३, ९७४, ९७५, ९७६, ९७७, ९७८, ९७९, ९८०, ९८१, ९८२, ९८३, ९८४, ९८५, ९८६, ९८७, ९८८, ९८९, ९९०, ९९१, ९९२, ९९३, ९९४, ९९५, ९९६, ९९७, ९९८, ९९९, १०००) । ५ प्रकार, भेद (भावम) । ६ भवसर । ७ निर्वाण (हे २, २५) । देखो पञ्जाय तथा पञ्जाव ।

पञ्जाय पु [पर्याय] तालय, भावार्थ, रहस्य (भूमि १३६) ।

पञ्जाल ख [प्र + पञ्जाल्य] जलाला, सुललाना । पञ्जालद (मिदि) । सङ्ग, पञ्जालिअ, पञ्जालिकण (दस ५, १, महा) ।

पञ्जालण न [प्रज्जालन] सुललाना (उप ५१७ टी) ।

पञ्जालिअ वि [प्रज्जालित] जलाया हुआ, सुललाना हुआ (सुपा १५१, प्राप् १८) ।

पञ्जिआ स्त्री [दे, प्रार्थिना] १ माता की मातामही, परनादी । २ पिता की मातामही, परदादी (दर ७, ६ ३, ४१) ।

पञ्जिजमाण देखो पज = पायव् ।

पज्जुद्ध वि [पर्युद्ध] कडफडाय हुमा (?) ,
'मिठरी ए कडा, कट्टु खालविघ्न घट्टरभ ए
पज्जुद्ध' (मा ६२१) ।

पज्जुच्छुअ वि पर्युत्सुक] अति उत्सुक
(नाट) ।

पज्जुणसर न [दि] ठल के तुल्य एक प्रकार
का तुण (दि ६, ३२) ।

पज्जुण पु [प्रमुञ्ज] ? ओङ्कण के एक पुन
का नाम (अत) । २ कामदेव (कुमा) । ३
दैव्याण शास्त्र मे प्रतिपादित चतुर्थीह रूप
विष्णु का एक संत (दि २, ४२) । ४ एक
जैनमुनि (निष् १) । देखो पज्जुन ।

पज्जुत्त वि [प्रमुक्त] जटित, खचित 'माणिक्क-
पज्जुत्तकणयकडयसणाहेहि' (स ३१२), 'दिक्ख-
खण्यमामरपज्जुत्तुत्तुत्तरासाइ' (स ५६, मवि) ।
देखो प्रज्जुत्त ।

पज्जुदास पु [पर्युदास] निषेव, प्रतिषेव
(विसे १०१) ।

पज्जुन देखो पज्जुण (छाया १, ५, अत
१४, दुप १०; सुपा ३२) । ३ वि. धनी,
श्रीमत्, प्रभूत धनवाला, 'पज्जुललोवि
पडिमुनसयसणा' (सुपा ३२) ।

पज्जुवट्ठा सक [पर्युप + स्था] उपस्थित
होना । हेह, पज्जुवट्ठाडु (शी) (नाट—
वेणी २५) ।

पज्जुवट्ठिय वि [पर्युपस्थित] उपस्थित,
भीरूद, हाजिर, तसर (उत १०, ४५) ।

पज्जुवास सक [पर्युप + आस्] सेवा
करना, भक्ति करना । पज्जुवासड, पज्जु-
वासति (अव, भग) । बह पज्जुवासमाण
(छाया १, १, २) । कबह पज्जुवासिज्ज-
माण (सुपा ३०८) । सह, पज्जुवासिच्चा
(भग) । ऊ, पज्जुवासणिज्ज (छाया १,
६; मीप) ।

पज्जुवासण न [पर्युपासन] सेवा, भक्ति,
आसना (भग, स ११६, उव ३५७ टी,
ममि ३८) ।

पज्जुवासणरा } क्षी [पर्युपासना] ऊपर
पज्जुवासणा } देखो (छा ३, ३, भग-
छाया १, १२, मीप) ।

पज्जुवासय वि [पर्युपासक] सेवा करनेवाला
(कात) ।

पज्जुसण }
पज्जुसणण } न, देखो पज्जुसणा (धर्मेवि
पज्जुससणण } २१, विचार ५३१) ।
पज्जूसणण }

पज्जुसणा क्षी [पर्युपणा] देखो पज्जोसवणा;
'परिवसणा पज्जुण्णा पज्जोसवणा य वास-
वासोय' (निष् १०) ।

पज्जुसुअ } वि [पर्युत्सुक] अति उत्सुक,
पज्जुसुअ } विशेष उत्कण्ठित (ममि १०६,
वि ३२७ ए) ।

पज्जोअ पु [प्रयोत्त] १ प्रकार, उद्गोत ।
२ उज्जयिनी नगरी का एक राजा (अव) ।
'गर वि [कर] प्रकार कर्ता (सम १,
(कप्प, मीप) ।

पज्जोइय वि [प्रयोतित] प्रकाशित (अव
७२८ टी) ।

पज्जोय सक [प्र + योसय] प्रकाशित
करना । बह, पज्जोयत्त (बेद्य ३२५) ।

पज्जोयण पु [प्रयोतन] एक जैन धारार्थ
(राज) ।

पज्जोसय सक [परि + यस्] १ वास
करना, रहना । २ जैनधर्म प्रोक्त पयु'एणा-
पर्व मनावा । पज्जोसवेद, पज्जोसविति,
पज्जोसवेंति (कप्प) । बह, पज्जोसयंत,
पज्जोसवेमाण (निष् १०, कप्प) । हेह
पज्जोसवित्तप, पज्जोसवेत्तप (कप्प,
कस) ।

पज्जोसण न, देखो पज्जोसणणा (पंचा
१७, ६) ।

पज्जोमणणा क्षी [पर्युपणा] १ एक ही
स्थान में वर्षा बाल व्यतीत करना (छा १०,
कप्प) । २ वर्षा-काल (निष् १०) । ३ पूर्व-
विशेष, आग्रह के प्राप्त दिनों का एक प्रसिद्ध
जैन पर्व, 'जाराविधो धर्मादि पज्जोसवण्णामु
विहीणु' (सुणि १०६००; मुर १६, १६१) ।

'कप्प पु [कल्प] पर्युपणा में करने योग्य
शास्त्र विहित धारार्थ, वर्षाकल्प (छा ५, २) ।
पज्जोसवणा क्षी [पर्योसणना, पर्युपणमना]
ऊपर देखो (छा १०—पत्र २०६) ।

पज्जोसविय वि [पर्युपित] स्थित, रहा हुआ
(कप्प) ।

पज्जोम सक [प्र + मज्जम्] शब्द करना,
छावाज करना । बह, पज्जोममाण (राज) ।
पज्जोमट्टिआ क्षी [पज्जोमट्टिका] छन्द-विशेष
(पिंग) ।

पज्जोम सक [क्षर, प्र + क्षर] भरना,
टपकना । पज्जोमइ (हे ४, १७३) ।

पज्जोम पु [प्रक्षर] प्रवाह-विशेष (पण २) ।
पज्जोमण न [प्रक्षरण] टपकना (वज्ज
१०८) ।

पज्जोमरिअ वि [प्रक्षरित] टपका हुआ (वाम,
कुमा, महा, सज्जि १५) ।

पज्जोमल देखो पज्जोम = वार । पज्जोमल (पिंग) ।

पज्जोमलिआ देखो पज्जोमट्टिआ (पिंग) ।

पज्जोमाय न [प्रध्यात] प्रतिपाद चिन्तन (अणु
१३६) ।

पज्जोमाय वि [प्रध्यात] चिन्तित, सोचा हुआ
(अणु) ।

पज्जोमुस वि [दि] खचित, जटित, जडा हुआ
(वाम) । देखो पज्जुत्त

पज्जोम देखो पज्जुम । बह, पज्जोममाण
(राय ८३) ।

पटउडो क्षी [पटउटी] तंहु, बल-गूद, वपड-
बोट (मुर १३, ६) ।

पटल देखो पडल = पटल (कुमा) ।

पटह देखो पडह (ममि १०) ।

पटिमा (वे. बूरे) देखो पडिमा (पड, वि
१६१) ।

पटोला क्षी [पटोळ] बली विशेष, गोरखली,
क्षारलत्नी (मिरि १६६) ।

पट्ट सक [पा] पीना, पान करना । पट्टह
(हे ४, १०) । बूजा पट्टीय (कुमा) ।

पट्ट पु [पट्ट] १ पटन का कपडा, 'पट्टो वि
होइ इको देउपमाणेण सो थ मइय' (बह
३, मीप ३४) । २ रम्या, कुल्ला, 'तिलुवि
मातिवपट्टु मणूए करे बया माना' (सुपा
३७३) । ३ पापण भादिता तल्ला, फनर,
'मणिसितापट्टमणहो माड्ढोमंडो' (ममि
२००), 'पिमणियापट्टए अरविट्ठा' (स्वन्
२२), 'पट्टसडियमर्याविपरणपिट्ठो' (जीन ३) । ४ सनाट पर से बँधी जाओ एक
प्रकार की पगड़ी, 'अमिदि' पट्टवडा रायालो
जाया पुव मडइयडा सावो' (महा) । ५

पट्टा, चक्रनामा, किसी प्रकार का श्रृंगार-
वन (कुप्र ११, जं ३) । ६ रेशमी कपडा,
सन (गा ५२०, नयू) । = रेशमी कपडा ।
६ सन का कपडा (कल्प, श्रौप) । १०
सिंहासन, गद्दी, पाट (कुप्र २८, सुपा २८५) ।
१२ कलावतू (राज) । १३ पट्टी, फोडा
बादि पर बोधा जाता लम्बा वस्त्रा, बाटा,
‘बउरगुनपमाएपट्टवसेए सिरिलच्छासं-
कियं छाइयं वण्डवत्त’ (महा, विपा १, १) ।
१३ शाक विशेष (सुप्र २०) । ‘इल्ल पुं
[यन्]’ पंत्त, गांव का मुखिया (जं ३) ।
‘उडी छी [कुटी] तं, वल्ल-गृह (सुर १३,
१५७) । ‘करि पु [करिन्] प्रमान हस्तो
(सुपा १७३) । ‘वार पु [वार] तनुवाय,
वल्ल बुननेवाला, बुलाहा (परए १) । ‘वासिआ
छी [वासिआ] एक शिरो-भूषण (दे ४,
५३) । ‘शाला छी [शाला] उपाध्य, जैन
मुनि के रहने का स्थान (सुपा २८५) । ‘सुत्त
न [सुत्त] रेशमी सूता (भाषम) । ‘हस्तिय
पुं [हस्तिय] प्रमान हाथी (सुपा १७२) ।
पट्टइल ५ पुं [दे] पेटल, गांव का मुखिया
पट्टइल (सुपा २७३, १६१) ।
पट्टसुअ न [पट्टासुअ] १ रेशमी वस्त्र । २
सन का वस्त्र (गा ५२०, नयू) ।
पट्टग देखो पट्ट (वत्स) ।
पट्टण न [पत्तन] नगर, शहर (भा, श्रौप,
प्राप्त, कुमा) ।
पट्टदेवी छी [पट्टदेवी] पट्टरानी (सिदि
१२१२) ।
पट्टय देखो पट्ट (वत्स) छाया १, १६) ।
पट्टसुत्त न [पट्टसुत्त] रेशमी वस्त्र (अर्धवि
७२) ।
पट्टा छी [दे] पट्टा, सोडे की पेटी, कसन,
‘दोडिमा पट्टाडा, ऊतायि वल्लाए’ (महा,
सुन १८, ३७) ।
पट्टिय वि [पट्टिक] पट्टे पर दिया जाता
तब सौदे, ‘मुअिं पट्टियमाप्पिन्नु लुट्टवत्तल्ल
पट्टणो नरमानो पुअिं ओ मायि कुत्तीए
तिलो’ (सुपा ७३३) ।
पट्टिया छी [पट्टिया] १ छोटा लस्त्रा, पाटी-
‘चित्तापट्टिया’ (सुर १, ८८) । २ देखो
पट्टी, ‘पयसणपट्टिया’ (राज—जं ३) ।

पट्टिस पुं [दे. पट्टिया] प्रहरण-विशेष, एक
प्रकार का हथियार (परह १, १, पठम ८,
४५) ।
पट्टी छी [पट्टी] १ कपुयंठि । २ लक्ष्मण्टिका,
हाथ पर की पट्टी, ‘ऊप्योडियसरणपट्टि’
(विपा १, १—पठ २४) ।
पट्टुअ पुन देखो पट्टुया, ‘पट्टुएहि’
(सुख ६, १) ।
पट्टुया छी [दे] पाद-प्रहार, लात, पुनरावो
में ‘पाट्ट’, ‘सिखिण्णो गोरोएण त्वाह्वो
पट्टुयाए हियमि’ (सुपा २३७) । देखो
पट्टुआ ।
पट्टुहिय न [दे] कपुयित नल, गया नल,
‘पट्टुहियं जाण कपुजनल’ (पास) ।
पट्ट वि [प्रप] १ भग्यामी, मप्रसर, मनुष्या
(छाया १, १—पठ १६) । २ कृत्र, निपुण ।
३ प्रमान, मुखिया (श्रौप, राज) ।
पट्ट वि [पट्ट] जिसका स्पर्श किया गया हो
वह (श्रौप) ।
पट्ट न [पट्ट] १ पीठ, शरीर के पीछे का
भाग (छाया १, १८, कुमा) । २ सल, ऊपर
का भाग, ‘वलिमं पट्टं च तलं’ (पास) ।
‘वर वि [वर] मनुयायी, मनुगामी (कुमा) ।
पट्ट वि [पट्ट] १ जिसकी पूछा गया हो
वह । २ न. प्रसन्न, सवाल, ‘छविह्णे पट्टे
परएत्ते’ (ठा ६—पठ ३७५) ।
पट्टव सब [प्र+स्थापय] १ प्रस्थापित
कराना, भेजना । २ प्रवृत्ति करना । ३
प्रारम्भ करना । ४ प्रवर्ष से स्थापना करना ।
५ प्रायश्चित्त देना । पट्टवट्ट (दे ४, ३७) ।
भुरा. पट्टवट्टु (नय) । ह. पट्टवियवट्ट
(कस, सुपा ६२७) ।
पट्टवग देखो पट्टवय (कम्म ६, ६६ टी) ।
पट्टवण न [प्रस्थापन] १ प्रकट स्थापन ।
२ प्रारम्भ ‘इयं पुण पट्टवणं पट्टव’ (परु) ।
पट्टवणा छी [प्रस्थापना] १ प्रकट स्थापना ।
२ प्रायश्चित्तदाता, ‘डुविहा पट्टवणा सत्तु’
(वय १) ।
पट्टवय वि [प्रस्थापक] १ प्रवर्तक, प्रवृत्ति
करानेवाला (छाया १, १—पठ ६३) । २
प्रारम्भ करनेवाला (विसे ६२७) ।

पट्टविअ वि [प्रस्थापित] भेजा हुआ (पास,
कुमा) । २ प्रवर्तित (निपु २०) । ३ सिद्ध
किया हुआ (सग १२, ४) । ४ प्रकर्ष से
स्थापित, व्यवस्थापित (परए २१) ।
पट्टविअ १ छी [प्रस्थापिता] प्रायश्चित्त-
पट्टविया १ विशेष, प्रवर्तक प्रायश्चित्तो में
जिसका पहले प्रारम्भ किया जाय वह (ठा
५, २, निपु २०) ।
पट्टाअ देखो पट्टाय । वट्ट. पट्टाएत्त (गा
४४०) ।
पट्टाण न [प्रस्थान] प्रयाण (सुपा १४२) ।
पट्टान देखो पट्टव । पट्टाव (दे ४, ३७०) ।
पट्टावे (वि ५४३) ।
पट्टाविअ देखो पट्टविअ (दे ४, १६, कुमा,
पि ३०६) ।
पट्टि छी देखो पट्ट = पट्ट (गवड, सण) । ‘मस
न [मांस] पीठ का मांस (परह १, २) ।
पट्टिअ वि [प्रस्थित] जितने प्रस्थान किया
हो वह, प्रयात (दे ४, १६; श्रौप ८१ भा,
सुपा ७८) ।
पट्टिअ वि [दे] मलकन, विपुलित (पट्ट) ।
पट्टिअअम वि [प्रस्थापकाम] प्रयाण का
इच्छुक (वा १४) ।
पट्टिसग न [दे] कटुक, बैल के कंधे पर
का बूझ, डिल्ला (दे ६, २३) ।
पट्टी देखो पट्टि (महा, काल) ।
पट्टावत्त पुं [पट्टवत्त] घर के मूल दो जनों
पर शिरछा रखा जाता वस्त्रा सम्मा (पव
१३३) ।
पठ देखो पड । पठि (श्री) (गाट—पूच्छ
१४०) । पठति (विग) । नय. पठाविअह
(पि ३०६, ५५१) ।
पठग देखो पाठग (नय) ।
पठ अक [पठ] पठना, गिरना । पठ
(जव, पि २१८; २४४) । वट्ट. पठैत्त,
पठमाण (गा २६४, महा, भवि, वट्ट ६) ।
सट्ट. पठिअ (गाट—शुड ६७) । ह.
पठणीअ (वार) ।
पठ पुं [पट्ट] वस्त्र, कपडा (श्रौप, उव, स्वज
८५; स ३२६, गा १८) । ‘वार देखो ‘गार
(यज) । ‘कुछो छी [कुटी] तं, वल्ल-गृह
(दे ६, ६; वी ३) । ‘गार पुं [वार]

तनुवाय, कपडा दुनवेवाला (पहल १, २—
पत्र २८)। 'बुद्धि' वि ['बुद्धि] प्रभुत
सुशायो को प्रष्ट करे में समर्थ बुद्धिवाला
(गौर)। 'मंडव पु' ['मण्डप] वंश, वज्र-
मण्डप (भाक)। 'मा वि' ['वन्'] पटवाला,
वज्रवाला (पट)। 'वास पु' ['वास]
वज्र में डाला जाता कुंकुम-चूर्ण आदि
सुगन्धित पदार्थ (गडह; स ७३)। 'साडय
पु' ['शाटक'] १ वज्र, वज्रपात। २ घोटी,
पहनेने का सम्बन्ध वज्र (मग ६, ३३)। ३
घोटी घोर बुष्टा (छाया १, १—पत्र ५३)।
पदंचा छो ['द, प्रत्ययस्था] गया, घनुप का
चिन्ना या घेरी (दे ६, १४, पाग)।

पडंसुअ देखो पडिमुद (वि ११५)।

पडंसुआ छो ['प्रतिधुन्'] १ प्रतिराब्द,
प्रतिव्यक्ति (हे १, ८८)। २ प्रतिज्ञा (कुमा)।
पडंसुआ छो ['दे] गया, घनुप का चिन्ना
(दे ६, १४)।

पडंसुअ देखो पडिमुद (प्राह १२)।

पडवर पुं ['दे] साला जैना विद्रुप आदि
(दे ६, २५)।

पडवर पुं ['पटवर] चोर, लकड़ार (नाट—
मुच १३८)।

पडममाण देखो पडह = प्र + दह् ।

पडण न [पवन] पात, गिरना (छाया १,
१, प्राप् १०१)।

पडणीअ वि [प्रत्यनीक] विरोधी, प्रतिपक्षी,
वैरी (स ४६६)।

पडणीअ देखो पड = पन् ।

पडपुत्तिया छो ['पटपुत्तिना] छोटा वज्र,
रमाल (संघोष ५)।

पडम देखो पडम (वि १०४; नाट—शु ६८)।

पडल न [पटल] १ समूह, संगठ, कुट्ट
(कुमा)। २ जैन साधुओं का एक उग्ररथ-
मिता के समय पात्र पर डबा जाता वज्र-
खण्ड (पहल २, ५—पत्र १४८)।

पडल न [दे] नीध, गरिया, मिट्टी का बना
हुआ एक प्रकार का खाद्य निम्नने मात्र
पाए जाते हैं (दे ६, ५; पाग)।

पडल्य १ धीन [दे, पटलक] गठरी, गंठ
पडल्य २ गुजराती में 'घोटु', 'घोटरी'।

'पुष्पमडलमहणवो' (छाया १, ८)। छो.
'लिया', 'लिया (स ११३; सुपा ६)।

पडवा छो ['दे] पटकुटी, पट-मण्डप, वज्र-
गृह, वंश (दे ६, ६)।

पडह सक [प्र + दह्] जलाना, दण्ड
करना। कवक, पडममाण (पहल १, २)।

पडह पुं [पटह] वाय-विशेष, नगाड़ा, डोल
(भीष, एदि; महा)।

पडहय वि [दे] पूर्ण गरा हुआ (स १८०)।

पडहिय पुं [पाटहिक्] डोल बजानेवाला,
डोली, डोल किंवा (पत्र ४८, ८६)।

पडहिया छो [पटहिक्] छोटा डोल (सुर
३, ११५)।

पडाअ देखो पडाय = परा + अय् । क.
पडाअअय (से १४, १२)।

पडाअ वि [पडायित] जिसने पलायन
किया हो वह, भागा हुआ (से १५, १५)।

पडाअअय देखो पडाअ ।

पडाअया छो [पटाकिन्] छोटी पटाका,
मल्ल-पटाका (हुन १४५)।

पडाग पुं [पटाक, पटाक] पताका, ध्वजा
(वण्य, भीष)।

पडागा छो [पटाका] ध्वजा, ध्वज (महा-
पडाया)। पाग, हे १, २०६, प्राप् २४८)।

'इपडाग पु' ['तिपटाक] १ मय्य की
एक जाति (विपा १, ८—पत्र ८३)। २

पताका के ऊपर की पताका (भीष)। 'हरण
न [हरण] विजय-शक्ति (संघा)।

पडागार न [] नीका में सजने-
वाला वज्र (हरवै० पू० १ प्रारम्भ और अग०
१११)।

पडायाण देखो पलाण (हे १, २५२)।

पडायाणिय वि [पर्याणित] जिन पर पर्याण
बांधा गया हो वह (कुमा २, ६३)।

पडाळी छो ['दे] १ पंक्ति, पंखी (दे ६,
६)। २ घर के ऊपर की चटाई आदि की
बच्ची छत (वव ७)।

पडास देखो पडस (नाट—मुच २४३)।

पडि वि [पडित्] वज्रगाला (सुपु १४४)।

पडि य [पडि] इन धर्मों का सूचक शब्द—
१ धर्म (दे १)। २ सम्पुर्णता (बेय
७८२)।

पडि य [पडि] इन धर्मों का सूचक शब्द—
१ विरोध, 'पडिक्क', 'पडिवामुदेव' (गडह;
पत्र २०, २०२)। २ विरोध, विरुद्धता;

'पडिमंजरिवाडिसय' (भीष)। ३ चोखा, व्याप्ति;

'पडिबुवार', 'पडिक्कल' (पहल १, ३; से ६,
३२)। ४ वापस, पीछे; 'पडिगय' (विपा
१, १; मग, सुर १, १४६)। ५ भविष्यत्व,
संभुवता, 'पडिबिरद', 'पडिब' (पहल २,
२; गडह)। ६ प्रतिदान, बदला, 'पडिदेह'
(विने ३२४५)। ७ फिर से, 'पडिबिद'।

'पडिबिद' (सार् ६४५; दे ६, १३)। ८
प्रतिनिधित्व, 'पडिबिद' (उप ७२८ दी)।

९ प्रतिपेक्ष, निषेध, 'पडिपादिकिय' (मग,
सम ५६)। १० प्रतिकूलता, विपरीतता,

'पडिबिद' (से २, ४६)। ११ स्वभाव;

'पडिबा' (ठा २, १)। १२ सामीप्य, निक
जाना, 'पडिबिसि' (सुपा ५५२)। १३

साधिय, प्रतिपक्ष, 'पडिबाण' (भीष)। १४,
साधरय, तुल्यता, 'पडिबिद' (पत्र १०५,
१११)। १५ लघुता, छोटाई, 'पडिबुवार'
(वण्य, पण २)। १६ प्रवृत्तता, श्लाघा;

'पडिबिद' (जीव ३)। १७ सामान्यता,
वर्तमानता (ठा ३, ४—पत्र १५८)। १८

निरर्थक भी इसका प्रयोग होता है, 'पडिबिद'
(पत्र १०५, ६); 'पडिबिद' (मग)।

पडि देखो परि (सि ४, ५०; ५, १६, ६६;
अ ७)।

पडिअ रि [दे] विपटित, विद्रुप (दे ६, १२)।

पडिअ रि [पडित] १ गिरा हुआ (पा ११;
प्राप् ५; १०१)। २ जिसने बनने को

प्रारम्भ किया हो वह, 'आगयमणेण य
पडिपो' (वणु)।

पडिअ देखो पड = पन् ।

पडिअअिअ रि [प्रत्ययहित] १ विद्रुपित।

२ अस्मिन्, 'बटपणुविणयिनि पडिअअिअ'
(अरि)।

पडिअअअ पुं [दे] नमंवर, नीवर (दे
६, ३२)।

पडिअअअ वि [अनु + प्रन्] अनुसरण
करना, छोटी जाना। पडिअअअ (हे ४,
१०७; वट्)।

पडिअग्ग सक [प्रति + जाग] १ सम्वलन।
२ सेवा करना, भक्ति करना। ३ शुश्रूषा
करना, 'वचय'। पडिअग्गेहि मणिमोत्तिपादयं
सारदण्वं (स २८८), पडिअग्गह (स ५४८)।

पडिअग्गिअ वि [दे] १ परिशुक्त, जिसका
परिभोग किया गया हो वह। २ जिसको
बर्षाई दी गई हो वह। ३ पालित, रक्षित
(दे ६, ७४)।

पडिअग्गिअ वि [अनुप्रजित] अनुसृत
(दे ६, ७४)।

पडिअग्गिअ वि [प्रतिजागृत] भक्ति से
प्राप्त (स २१)।

पडिअग्गिर वि [अनुग्रजित्] अनुमरण
करने की भावत वाला (हुमा)।

पडिअग्गमय पु [दे] उपागमय, विद्या-दाता
मुख (दे ६, ३१)।

पडिअग्गिअ वि [दे] घट्ट, पिशा हुमा
(स ६, ११)।

पडिअत्त देखो परि + यत्त = परि + वृत् ।
सह, पडिअत्तञ्ज (नाह)।

पडिअत्तण न [परिपत्तन] फेरफार,
हेरहेर (स ५, ६६)।

पडिअत्तित्तं पु [प्रत्यमित्र] मित्र शत्रु, मित्र
होकर पीछे से जो शत्रु हुमा हो वह (राज)।

पडिअम्मिय वि [प्रतिपत्ति] मरिच्छ,
विपुत्ति (दे ६, ३५)।

पडिअर सक [प्रति + चर] १ बीमार
की सेवा करना। २ प्रार करना। ३
निरोधण करना। ४ परिहार करना। संज्ञ.
पटियरिअण (निबु १)।

पडिअर सत्त [प्रति + छ] १ बदला चुकाना।
२ हलान करना। ३ स्वीकार करना। देह.
पडिअत्त (मा ३२०)। सङ्ग. 'वहति
पडिअरुण्णं ठाविमो एतो' (हुप ४०)।

पडिअर पु [दे] शुक्ली-भूत, कुन्हे का मूल
भाग (दे ६, १७)।

पडिअर पु [परिवर] परिवार, 'पडिअरि
(१२) ओ गुरिमो म्य निमत्तो वेहि चेव
पण्हि नरो' (हुप ५७)।

पडिअग्ग वि [प्रतिचारक] सेना-शुश्रूषा
करोगाना (पिपु १, ४१)।

पडिअरण न [प्रतिचरण] सेवा, शुश्रूषा
(श्लो ३६ भा. या १, मुपा २६)।

पडिअरणा ओ [प्रतिचरण] १ बीमार की
सेवा-शुश्रूषा (श्लो ८३)। २ भक्ति, यादर,
स्वकार (उप १३६ टी)। ३ शालीचन,
निरोधण (श्लो ८३)। ४ प्रतिष्मण, पाप-
कर्म से निवृत्ति। ५ सत्-कार्य में प्रवृत्ति
(भाव ४)।

पडिअलि वि [दे] स्वरित, वेग युक्त (दे
६, २८)।

पडिआइय सक [प्रत्या + पा] फिर से पान
करना। पडिआइयइ (दस १०, १)।

पडिआइय सक [प्रत्या + दा] फिर से ग्रहण
करना। पडिआइयइ (दस १०, १)।

पडिआगय वि [प्रत्यागत] १ वापस माया
हुमा, तौटा हुमा (पउम १६, २६)। २ न.
प्रत्यागमन, वापस आना (भाबु १)।

पडिआयण न [प्रत्यापन] फिर से पान,
'वत्तस्स पडिआयण' (दस ३, १)।

पडिआयण न [प्रत्यादान] फिर से ग्रहण
(स्मृ १, १)।

पडिआर पु [प्रतिनार] १ विकित्ता, उपाय,
हलाज (भाव ४, कुमा)। २ बदला, शोध
(भावा)। ३ पूर्ववर्तित कर्म का अनुभव
(सूत्र १, ३, १, ६)।

पडिआर पु [प्रत्याहार] लतवार की व्यान
(दे २, ५, स २१५), 'न एस्समि पडिआरे
दोनि करवालाई मायति' (महा)।

पडिआर पु [प्रतिचार] सेना शुश्रूषा (छाया
१, १३—पउम १७६)।

पडिआरय वि [प्रतिचारक] सेवा शुश्रूषा
करनेवाला (छाया १, १३ टी—पउम १८१)।

ओ. 'रिया (छाया १, १—पउम २८)।

पडिआरि नि [प्रतिचारिन्] ऊपर देखो
(वव १)।

पडिइ थक [प्रति + इ] मोहे लौटना, पापम
आना। वक्र. पडिईत (उप १६७ टी)।

हेह. पडिइत्तय (वम)।

पडिइ ओ [प्रतिवि] पतन, नात (वव ५)।

पडिईद पु [प्रतीन्द्र] १ दन्त, दे-पउम
(पउम १०२, ६)। २ दन्त का सामानि-
देव, दन्त के मुख्य धैर्यवाता देव (पउम

१०५, १११)। ३ वानर-वंश के एक राजा
का नाम (पउम ६, १५२)।

पडिईधण न [प्रतीग्वन] मन्त्र विशेष, द्रव्य-
नाम का प्रतिपत्ती मन्त्र (पउम ७१, ६४)।

पडिइक देखो पडिइ (भावा)।

पडिउत्तण न [दे] भपकार का बदला (पउम
११, ३८, ४४, १६)।

पडिउत्तण न [परिचुम्बन] संगम, संयोग
(से २, २७)।

पडिउत्तचार सक [प्रत्युत् + चारय] उच्चा-
रण करना, बोलना (भा. उवा)।

पडिउत्तम सक [प्रत्युद् + यम्] सम्पूर्ण
प्रयत्न करना। पडिउत्तमत्ति (वेदय ७८२)।

पडिउत्तिअ वि [प्रत्युत्थित] जो फिर से
जन्मा हुमा हो वह (सि १५, ८०, पउम ६१,
४०)।

पडिउत्तण देखो परिपुण्ण (सि ५, १६)।

पडिउत्तर न [प्रत्युत्तर] जवाब, उत्तर (सुर
२, १५८, अवि)।

पडिउत्तरण न [प्रत्युत्तरण] पार जाना, पार
उतारना (निबु १)।

पडिउत्ति ओ [दे] खबर, समाचार, 'अम्मा-
पियस्स कुलपडिउत्तो ससिण्ह परिउत्ता'
(महा)।

पडिउत्थ वि [पर्युपित] सपूर्ण हन से
व्यवस्थित (सि ४, ५०)।

पडिउद्ध वि [प्रतिबुद्ध] १ जागृत, जगा
हुमा (सि १२, २२)। २ प्रज्ञा-युक्त, 'जल-
णिगिह्वरिद्ध आम्माणाप्रिद्धमं विमंभइ
व धणु' (सि ४, २७)।

पडिउत्तयार पु [प्रत्युपनार] उपहार वा
भक्षना, प्रक्षिपन (पउम ४८, ७२, मुपा
११५)।

पडिउत्तसस थक [प्रत्युत् + थस्] कुनर्जी
नित शान्त, फिर से जोता। वट. पडिउत्तस-
सत्त (सि ६, १२)।

पडिउत्त देवा पडिउत्त (वचउ ८०, से १,
३२)।

पडिउत्तय देखो पडिइ।

पडिपण्णिय वि [दे] दृढता, दृढ-वृत्त (दे १,
३२)।

पडिओसह न [प्रत्ययपद्य] एक भीषण वा प्रतिपक्षी भीषण (सम्मत १४२) ।

पडिसुआ देखो पडिसुआ = प्रतिपक्ष (भीषण) ।

पडिसुद वि [प्रतिश्रुत] मंगीहउ, स्वीहउ (आप्र. पि ११५) ।

पडिकंय वि [प्रतिश्रुत] प्रतिपक्षी (राय) ।

पडिकन देखो पडिकन (उप २२० टी) ।

पडिन्नु वि [प्रतिश्रुत] इलाज करनेवाला (ठा ४, ४) ।

पडिन्प मरु [प्रति + मरु] १ सजाना, सजावट करना; 'लिप्यामेव सो देवाणुणिया । कूणियस्स एणो निमिमारपुत्तस्स आभिमेहं हविस्सएण पडिन्पेहि' (भीषण), पडिन्पेह (भीषण) ।

पडिक्कपअ वि [प्रतिक्लृप्त] सजाया हुआ (विपा १, २—पन् २१; महा. भीषण) ।

पडिन्म देखो पडिन्म । कृ. 'पडिन्मए पडिन्मओ पडिन्मिअअरु व आणुपुब्बीए' (आनि ४) ।

पडिन्मय न देखो पडिन्मय (आनि ४) । पडिन्म न [प्रतिश्रुत, परिश्रुत] देखो परिश्रुत (भीषण. सण) ।

पडिन्य नि [प्रतिश्रुत] १ निषण बदना हुआ गया हो यह । २ न. प्रतिहार, बदला (ठा ४, ४) ।

पडिनाउ पडिनारुण } देखो पडिनाउ = प्रति + उ । पडिनारुण देखो पडिनामणा (आनआ ३६ टी) ।

पडिवाय वृ [प्रतिश्राय] प्रतिश्रुत, प्रतिमा (पेद्य ७५) ।

पडिदिदि ओ [प्रतिश्रुति] १ प्रतिवार, इत्यादि । २ बदना (दि ९, १६) । ३ प्रति-विन्, प्रति (आनि १६६) ।

पडिन्मि न [प्रतिश्रुत] ऊपर देखा (पेद्य ७५) ।

पडिन्मिया ओ [प्रतिश्रुति] प्रतीकार, बदला वयागर्शरित (भीषण) ।

पडिण्डु वि [प्रतिश्रुत] १ निषण्ड, पडिण्डु-हण्ड । प्रतिश्रुत (भीषण ४०३, पण ८, गुण २०७), 'पडिण्डुमर्दतो बज्जेज

मर्दमि च नवमि च' (वव १) । २ प्रतिश्रुत (स २७०), 'अन्तीन पडिण्डुआ दोतिवि एए असव्याया' (सम्मत १५३) ।

पडिण्डुहण्ड देखो पडिण्डुहण्ड (वव १) ।

पडिकूड देखो पडिकूड = प्रतिश्रुत (सुर ११, २०१) ।

पडिकूल वव [प्रतिश्रुत] प्रतिश्रुत आचरण करना । वव. 'पडिकूलतम्प मग्ग जिण-वयण' (गुण २०७, २०६) । इ. पडिकूले-यव (गुण २४२) ।

पडिकूल वि [प्रतिश्रुत] १ विपरीत, उलटा (उत्त १२) । २ अनिष्ट, अनिमित्त (आवा) । ३ विरोधी, विपक्ष (दि २, ६७) ।

पडिकूलओ ओ [प्रतिश्रुत] १ प्रतिश्रुत आचरण । २ प्रतिश्रुतता, विरोध (धर्मि ५८) ।

पडिकूलिय वि [प्रतिश्रुत] प्रतिश्रुत किया हुआ (आन) ।

पडिकूय वृ [प्रतिश्रुत] रूप के समीप वा छोटा रूप (न १००) ।

पडिकेय वृ [प्रतिश्रुत] वानुदेव वा प्रतिपक्षी राजा, प्रतिवानुदेव (पद्य २०, २०४) ।

पडिकेस वव [प्रति + मृदा] आशय करना, कीयना, खाया या गाया देना । पडि-योनह (गुण २, ७, ६) ।

पडिकेह वृ [प्रतिश्रुत] दुन्ना (दम ६, ५८) ।

पडिकक न [प्रत्येक] प्रत्येक, एएए (आवा) ।

पडिकक वि [प्रतिश्रुत] पीछे हटा हुआ, निवृत्त (आ. पण्ड २, १, वा ४१, धं १६६) ।

पडिन्म वव [प्रति + मृदा] निवृत्त होना, पीछे हटना । पडिन्म (उप महा) । पडिन्मे (आ ३, ५, पण १२) । इ. पडिन्मिउ, पडिन्मिउए (धर्म २, वन. ठा २, १) । इ. पडिन्मिउ (आवा २, १२) । इ. पडिन्मिउए, पडिन्मिउए (आनआ ८००) ।

पडिन्म वृ [प्रतिश्रुत] देखो पडिन्मए, 'पडिन्मिआमए' (पण—आवा २) ।

पडिन्म न [प्रतिश्रुत] १ निवृत्त, व्यावर्तन । २ प्रमाद-यत्न गुण योग से निरकर मृगुम योग की प्राप्त करने के बाद फिर से गुण याग की प्राप्त करना । ३ मृगुम व्यावर्तन से निवृत्त होकर उत्तरोत्तर शुद्ध योग में वर्तन (पण्ड २३, भीषण. चउ ५, पडि) । ४ मिथ्या-दुष्ट प्रदान, विद् हूए पाप का परवाताप (ठा १०) । ५ जैन साधु भीर गृहस्था का सुवह भीर शम की करने का एक प्रावरण मृगुम (आवा ४८) ।

पडिन्म वि [प्रतिश्रुत] प्रतिश्रुत करनेवाला, 'जोओ उ पडिन्मओ मृगुम' पावन्मओगए' (आनि ४) ।

पडिन्मिउ देखो पडिन्म । 'काम नि [याम] प्रतिश्रुत करने की इच्छावाता (आवा १, ५) ।

पडिन्म वृ [दि] प्रतिश्रुति, प्रतीकार (दि ९, १६) ।

पडिन्मओ ओ [प्रतिश्रुत] देखो पडिन्म (भीषण ३६ मा) ।

पडिन्म देखो पडिन्म (दि २, ६७, पण्ड) ।

पडिन्म वव [प्रति + ईश्वर] १ प्रतीक्षा करना, बाट देना, बाट जोहना । २ प्र. स्थिति करना । पडिन्म (पण्ड, महा) । वव, पडिन्म (पद्य ५, ७२) ।

पडिन्म वि [प्रतीक्षा] प्रतीक्षा करने वाला, बाट जोहनेवाला (गा ५५७ म) ।

पडिन्म वृ [प्रतिश्रुत] प्रतीक्षा, आचरण, आशीर्वाद (दि ९, १३) ।

पडिन्म न [प्रतीक्षा] प्रतीक्षा, बाट, राह (दि १, २४, गुण) ।

पडिन्म वि [दि] १ वृ, निर्देश (दि ९, २५) । २ प्रतिश्रुत (पण्ड) ।

पडिन्म वव [प्रति + मृदा] १ हटना । २ मिला । ३ दाना । ४ गण, राजा । वव पडिन्म (मर्) ।

पडिन्म वव [प्रतिश्रुत] १ पण्ड । २ आशय (आनआ) ।

पडिन्म वि [प्रतिश्रुत] १ पण्ड, निर्देश हुआ (ग १, ७) । २ दाना हुआ (दि १, ७, मर्) । देखो पडिन्म ।

पडिक्खाविअ वि [प्रतीक्षित] ? स्थापित ।
२ कृत 'निरमालिण ससारे जेण पडिक्खा-
विआ समयत्था' (कुमा) ।

पडिक्खिअ वि [प्रतीक्षित] जिसकी प्रतीक्षा
की गई हो वह (दे ८, १३) ।

पडिक्खित्त वि [परिक्षिप्त] विस्तारित
(शत ७) ।

पडिक्ख न [दे] ? जल बहुत, जल भरने
का इति भावि पात्र । २ जलवाह मेघ, बादल
(दे ६, २८) ।

पडिक्खी क्षी [दे] ऊपर देखी (दे ६, २८) ।

पडिक्ख वि [दे] हल, मारा हुआ (?) ,
'किमेषा सुणहणएण पडिक्खेण' (महा) ।

पडिक्खल देखो पडिक्खल (भवि) । कर्म,
पडिक्खलिय (कुप्र २०५) ।

पडिक्खलण देखो पडिक्खलण (धर्मवि ५६) ।

पडिक्खल्लि वि [प्रतिस्खलित] ? उका
हुमा (भवि) । २ रोका हुआ, 'सहसा उतो
पडिक्खल्लिभो प्रमदक्खेण' (सुपा ५२७) ।
देखो पडिक्खल्लिअ ।

पडिक्खिज भ्रक [परि + रिज्] चित्त होना,
क्लान्त होना । पडिक्खिज्ज (श्री) (नाट—
मालवी ३१) ।

पडिगमण ॥ [प्रतिगमन] व्यावर्तन, पीछे
लौटना (वच १०) ।

पडिगय पु [प्रतिगत] प्रतिपक्षी हाथी (गउड) ।

पडिगय पु [प्रतिगत] पीछे लौटा हुआ,
वापस गया हुआ (विपा १, १, भग भीष,
महा सु १, १५६) ।

पडिगाह देखो पडिगाह (दे ५, ११) ।

पडिगाह सक [प्रति + ग्रह] ग्रहण
करना, स्वीकार करना । पडिगाहद (भवि) ।
पडिगाह, पडिगाहेहि (कप्प) । संक पडिगा-
हिया, पडिगाहिया, पडिगाहेचा (कप्प,
भाषा २, १, ३, ३) । हेऊ पडिगाहिएण
(कप्प) ।

पडिगाहा वि [प्रतिमाहक] ग्रहण करने
वाता (शपा १, १—यत्र ५२, उप पु
२९१) ।

पडिगाहिय वि [प्रतिगृहित] विना हुआ,
उजाट (सुपा १५३) ।

पडिगाह पु [पतद्ग्रह, प्रतिग्रह] ? पात्र,
भाजन (प्रेह २, ५, शीप भाष ३६, २५१,
दे ५, ४८ कप्प) । २ कर्म प्रकृति विशेष, वह
प्रकृति जिसमें दूसरी प्रकृति का कर्म दल
परिखत होता है (कम्मप) । 'धारि वि
[धारिन्] पात्र रखनेवाला (कप्प) ।

पडिग्गहिअ वि [प्रतिग्रहन्, पतद्ग्रहन्]
पात्रवाला, समझे भग्न महावीर सवन्धर
साहिय मास जाव चीवरपात्री होणा,
तेण पर प्रचेत्तए पाणिपडिग्गहिण् (कप्प) ।

पडिग्गहिद (श्री) वि [प्रतिगृहित, परि-
गृहीत] स्वीकृत (नाट—मुच्च ११०, रत्ना
१२२) ।

पडिग्गहा देखो पडिग्गहा । पडिग्गहेह
(जवा) । संक पडिग्गहेचा (जवा) । हेऊ,
पडिग्गहेचाए (वस धीप) ।

पडिग्गहा सक [प्रति + प्राहय] ग्रहण
करना । क पडिग्गहिदव्य (श्री) (नाट) ।

पडिग्गहाय वि [प्रतिप्राहक] प्रत्यादाता,
वापस लेनेवाला (दे ७, २६६) ।

पडिग्गयाय पु [प्रतिपात] ? निरोध, प्रतकाव
(वस ६, ५८) । २ विनाश (धर्मवि ५५) ।

पडिग्गयाय पु [प्रतिपात] ? नाश, विनाश ।
२ निराकरण, निरसन, 'दुक्खपडिग्गयाये' (भाषा,
सुर ७, २३५) ।

पडिग्गया वि [प्रतिपातक] प्रतिपात करने-
वाला (उप २६५ टी) ।

पडिघोलि वि [प्रतिघूर्णित] दोलनेवाला,
हिलनेवाला (दे ६, ५१) ।

पडिघत पु [प्रतिघन्] द्वितीय बज्ज, जो
ज्वाला भादि वा सूचन है (अणु) ।

पडिघक न [प्रतिघक] धनुष्क चक्र—समु-
दाय (यत्र) । देखो पडिघक = प्रतिघक ।

पडिघर देखो पडिघर = प्रति = चर । संक
पडिघरिय (वस ६, ३) । क. 'धम्मो
पडिघरियव्यो' (धाय ५) ।

पडिघर सक [प्रति + चर] परिग्रहण
करना । पडिघरद (सुउज १, ३) ।

पडिघरा पु [प्रतिघरक] जासूज, चर पुरुष
(वस १) ।

पडिघरणा देखो पडिघरणा (राज) ।

पडिघार पु [प्रतिघार] कला विशेष—१
ग्रह धादि की गति का परिज्ञान । २ रोगी
की सेवा शुश्रूषा का ज्ञान (ज २, शीप, स
६०३) ।

पडिघारय पुछी [प्रतिघारक] नीकर,
कर्मकर । छो, 'रिया (सुपा ३०५) ।

पडिघोइअमाण देखो परिघोय ।

पडिघोइय वि [प्रतिघोदित] ? प्रेरित (उप
पु ३६५) । २ प्रतिमणित, जिसकी उत्तर
दिया गया हो वह (उप ५५, ५६) ।

पडिघोएत्तु वि [प्रतिघोदयित्] प्रेरक (उ
३, ३) ।

पडिघोय सक [प्रति + चोइय] प्रेरणा
करना । पडिघोएत्ति (यत्र १५) । कवक
पडिघोइअमाण (भग १५—यत्र ६७६) ।

पडिघोयणा क्षी [प्रतिघोदना] प्रेरणा
(उ ३, ३, यत्र १५—यत्र ६७६) ।

पडिघोयणा क्षी [प्रतिघोदना] निर्मलसंता,
निष्ठुरता से प्रेरणा (विचार २३८) ।

पडिघोयणा देखो पडिघारय (उप ६८६
टी) ।

पडिच्छ देखो पडिक्ख । वह पडिच्छत,
'प्रहिनेयविणं पडिच्छमाणो विट्ठ' (उव,
स १२५, महा) । क. पडिच्छियच्च
(महा) ।

पडिच्छ सक [प्रति + छप्] ग्रहण करना ।
पडिच्छद, पडिच्छति (कप्प, सुपा ३६) ।
वक. पडिच्छमाण, पडिच्छेमाण (भीष,
कप्प शपा १, १) । संह. पडिच्छइत्ता,
पडिच्छिअ, पडिच्छिअ, पडिच्छिअण
(कप्प, यत्र १८५, सुपा ८७, निज्ज २०) ।
हेऊ. पडिच्छिउ (सुपा ७२) । क पडि-
च्छियव्य (सुपा १२५, सुर ५, १८६) ।
प्रयो. कर्म. पडिच्छापीअदि (श्री) (वि
५२२, नाट) । वह पडिच्छावेमाण
(कप्प) ।

पडिच्छद पुन [प्रतिच्छन्द] ? प्रति,
बिम्ब (उप ७२८ टी स १११, ९०९) ।
२ लुप्य, समान (वि ८, ५६) । 'कय वि
[कृत] समान किया हुआ (कुमा) ।

पडिच्छंदं पुं [दि] घृष्ट, घृष्ट (दे ६, २४) ।
 पडिच्छदा वि [प्रत्येपक] ग्रहण करनेवाला
 (नित् ११) ।
 पडिच्छण न [प्रतीक्षण] प्रतीक्षा, बाट, राह
 (उप २७८) ।
 पडिच्छण न [प्रत्येपण] १ ग्रहण, आदान,
 सेना । २ उत्सारण, विनिवारण, 'बुलितपडि-
 च्छणजोग्गा पच्छा बढया महिदराण' (मउड) ।
 पडिच्छणा [प्रत्येपणा] ग्रहण, आदान
 (नित् १६) ।
 पडिच्छण्णं वि [प्रतिच्छन्न] आच्छादित,
 पडिच्छन्न [अ] बढा हुआ (छाया १, १—पय
 १३; कप्प) ।
 पडिच्छय पुं [दि] समय, काल (दे ६, १६) ।
 पडिच्छय देखो पडिच्छया (सीप) ।
 पडिच्छयण न [प्रतिच्छदन] देखो पडि-
 च्छायाण (राज) ।
 पडिच्छया की [प्रतीच्छा] ग्रहण, प्रतीक्षा
 (इ १३, मण) ।
 पडिच्छयाय न [प्रतिच्छादन] आच्छादन-
 पत्र, प्रच्छादन-पत्र, 'हिरिपट्टिच्छायणं न नो
 संचापमि महिमांसप' (भाषा: छाया १,
 १—पय १५ टी) ।
 पडिच्छायण न [प्रतिच्छादन] आच्छादन,
 आनरण (मुज २०) ।
 पडिच्छयाया की [प्रतिच्छाया] प्रतिष्मिन्,
 परछाई (उप ५६१ टी) ।
 पडिच्छायेमाग देखो पडिच्छ = प्रति + एप् ।
 पडिच्छिअ वि [प्रतीष्ट, प्रतीप्सित] १
 गृहीत, स्वीकृत (म ७, ५४; उरा: सीप; मुग
 ८४) । २ रिशेय रूप से मागिय (मग) ।
 पडिच्छिअ देखो पडिच्छ = प्रति + एप् ।
 पडिच्छिआ की [दि] १ प्रतिष्ठापि । २ विर-
 षाण से स्थायी हुई भेंट (दे ६, २१) ।
 पडिच्छिउं
 पडिच्छिऊण देखो पडिच्छ = प्रति + एप् ।
 पडिच्छियच्च
 पडिच्छिअ वि [प्रतीक्षिअ] प्रतीक्षा करने-
 वाला, बाट देनेवाला (पग्गा २६) ।
 पडिच्छिय वि [प्रतीक्षिअ] करने दीक्षा-
 पुत्र की भांति सेनर दूतरे गच्छ के आचार्य
 के पास लगी धनुमति से काल पकनेवाला
 मुनि (उरि ५४) ।

पडिच्छिअ वि [दि] सहय, समान (हे २,
 १७४) ।
 पडिच्छंद देखो पडिच्छंदं, 'घडियं निपपडिच्छंदं'
 (उप ७२८ टी) ।
 पडिच्छा की [प्रतीक्षा] प्रतीक्षण, बाट (सीप
 १७५) ।
 पडिच्छाया देखो पडिच्छाया (वेद्य ७५) ।
 पडिजप सक [प्रति + जल्प्] उत्तर देना ।
 पडिजपद (अवि) ।
 पडिजगा देखो पडिजागर = प्रति + जाप् ।
 पडिजगइ (इह ३) ।
 पडिजगय वि [प्रतिजागरक] सेवा-शुभूषा
 करनेवाला (उप ७६८ टी) ।
 पडिजगिय वि [प्रतिजागृत] निगधी सेवा-
 शुभूषा को गई हो वह (पुर ११, २४) ।
 पडिजागर सक [प्रति + जागृ] १ सेवा-
 शुभूषा करना, निवह करना, निमाना । २
 गवेपणा करना । पडिजागरति (कप्प) । बहू,
 पडिजागरमाण (विपा १, १; उवा: मट्ट) ।
 पडिजागर पुं [प्रतिजागर] १ सेवा-शुभूषा ।
 २ चिपिस्ता, 'मणियो मिट्ठी भाणमु विज
 पडिजागराए' (मुग ५७६) ।
 पडिजागरण न [प्रतिजागरण] ऊपर देखो
 (बव ६) ।
 पडिजागरिय देखो पडिजगिय (दे १,
 ४१) ।
 पडिजायणा की [प्रतिजायना] प्रतिष्मिन्,
 प्रतिमा, परछाई (वेद्य ७५) ।
 पडिजुअ की [प्रतिजुअति] १ स्वभमान
 धन्य भवति । २ मणली (मुज ४) ।
 पडिजोग पुं [प्रतियोग] कार्यण आदि योग
 का प्रतिपातन योग, आणु-विशेष (पुर ८,
 २०४) ।
 पडिउ वि [पडिउ] अत्यन्त निगुण, बटुत
 चतुर (पुर १, १२३; १३, ६६) ।
 पडिटुविअ वि [प्रतिस्थापित] संस्थापित (हे
 २, ५२) ।
 पडिटुविअ वि [प्रतिस्थापित] निगधी
 प्रतिष्ठा की गई हो वह (पच्छ ६४) ।
 पडिट्टा देखो पडिट्टा (गाठ—मालती ७०) ।
 पडिट्टाय मर [प्रति + स्थापय] प्रतिष्ठित
 करना । पडिट्टेहि (नि २२०; ३२१) ।

पडिट्टावअ देखो पडिट्टावय (गाठ—वेणी
 ११२) ।
 पडिट्टाविद (रु) देखो पडिट्टाविय (अमि
 १८७) ।
 पडिट्टिअ देखो पडिट्टिय (पड; नि २२०) ।
 पडिट्ठाण न [प्रतिस्थापन] हर जगह (अमि
 ४) ।
 पडिण देखो पडिण (नि ८२; ६६) ।
 पडिणव वि [प्रतिनय] नया, नूतन, 'बुरम-
 पडिणवपुमाद पुरितरप्पेहि' (विम्व २६) ।
 पडिणिअंसण न [दि] रात में पहनने का
 वस्त्र (दे ६, ३६) ।
 पडिणिअत्त थक [प्रतिनि + धृत्] पीछे
 सीटना, पीछे वापस जाना । पडिणियत्तई
 (सीप) । बहू, पडिणिअत्तन, पडिणिअत्त-
 माग (दे १३, ७५; गाठ—मालती २६) ।
 संट, पडिणियत्तित्ता (सीप) ।
 पडिणिअत्त वि [प्रतिनिधत्त] पीछे सीट
 पडिणिउत्त [अ] हुआ (गा ६८ म, विपा १, ५;
 उवा: मे १, २६; अमि १२४) ।
 पडिणिआस वि [प्रतिनिरादा] वमान,
 तुल्य (राय ६७) ।
 पडिणिअत्त थक [प्रतिनिर + फ्रम्]
 यादुर निरतना । पडिणिअत्तद (उवा) ।
 संट, पडिणिअत्तमित्ता (उवा) ।
 पडिणिआत्त थक [प्रतिनिर + गम्]
 यादुर निरतना । पडिणिआत्तद (उवा) ।
 संट, पडिणिआत्तित्ता (उवा) ।
 पडिणिआय मर [प्रतिनिर + वापय]
 वापस करना । पडिणिआयमि (छाया १,
 ७—पय ११८) ।
 पडिणिअ वि [प्रतिनिअ] १ राह, तुल्य,
 बराबर । २ हेतु-विशेष, बाटो की प्रतिमा का
 गठन करने के लिए प्रतिमा की तरह से
 प्रयुक्त समान हेतु—दुष्टि (छा ४, १) ।
 पडिणिअत्त देखो पडिणिअत्त = प्रतिनि +
 बहू । बहू, पडिणिअत्तमाग (गाठ, रत्ना
 ५४) ।
 पडिणिअत्त देखो पडिणिअत्त = प्रतिनिगु
 (बत्त) ।
 पडिणिअत्त वि [प्रतिनिअत्त] मिट्ट, ईप-
 प्रक (पण्ड १, १—पय ७) ।

पडिणिबुत्त देसो पडिणिअत्त = प्रतिनि + बुत्त । वक्तु पडिणिबुत्तमाण (वेणो १३) ।

पडिणिबुत्त देसो पडिणिअत्त = प्रतिनिबुत्त (प्रमि ११८) ।

पडिणिवेस देसो पडिनिवेस (राज) ।

पडिणिवत्त देसो पडिणिअत्त = प्रतिनि + वत्त । वक्तु पडिणिवत्तंत (हेवा ३३२) ।

पडिणिसत्त वि [प्रतिनिश्रान्त] १ बियात्त । २ तिन्नो (साया १, ४—पत्र ६७) ।

पडिणोय न [प्रत्ययोक्त] १ प्रतिसैन्य, प्रति पक्ष की सेना (भग ८, ८) । २ वि, प्रतिवृत्त, विपरीत, विपरीत प्राचरण करनेवाला (भग ८, ८, एणमा १, २, सभम १६३; भोप, भोप ६३, ३ ३३) ।

पडिण्णत्त वि [प्रतिज्ञात्त] उक्त, कथित, 'जस्स एं भिक्खुस्स भय पण्ये, मग्ग न खलु पडिण्ण (अ) सो मग्गिण्ण (ल) सीहि' (भावा १, ८, ४, ४) ।

पडिण्णा देसो पडिण्णा (स्वप्न २०७, सूच १, २, २, २०) ।

पडिण्णाद् देसो पडिण्णाद् (पि २७६, ५६५, नाट—मालवि १२) ।

पडित्त वि [प्रतिवत्त] स्व-शास्त्र ही मे प्रतिष्ठ प्रथं, 'यो खलु सत्तसिद्धो न म पर-तत्तेषु सो उ पडित्तो' (बृह १) ।

पडित्तु की [प्रतिवत्त] प्रतिभा, प्रतिबिम्ब (वेद्व ७५) ।

पडित्तप्प सक [प्रतिवर्त्य] भोजनवि से वृत्त करना । पडित्तप्प (भोप ५३५) ।

पडित्तप्प सक [प्रति + तप्] १ पिन्ता करना । २ खनर रत्नना । पडित्तप्प (उत्त १७, ५) ।

पडित्तप्पिय वि [प्रतिवर्तित] भोजन खादि से वृत्त निपा हुमा (वत १) ।

पडित्तु देसो पडित्तु (भाट—मुक्क ८१) ।

पडित्तु वि [प्रतिवृत्त्य] समान, सदृश (पउम ५, १५६) ।

पडित्त देसो पडित्त = प्रतीत्य (मि १, १, ५, ८७) ।

पडित्ताण देसो पडित्ताण (नाट—शुक्र १५) ।

पडित्थियर वि [दे] समान, सदृश (दे ६, २०) ।

पडित्थियर वि [परित्थियर] स्थिर, 'गुणत्त-पडित्थियर' (वे २, ४) ।

पडित्थि वि [प्रतिस्तब्ध] कथित (उत्त १२, ५) ।

पडित्थ पुं [प्रतिदण्ड] मुख्य दण्ड के समान दूसरा दण्ड 'संपडित्थेण धरिज्जपाणेण भाववत्तेण विरागवे (भोप) ।

पडित्थ सक [प्रति + दर्शय] दिखलाना । पडित्थेह (भग, उवा) । सङ्ग, पडित्थेत्ता (उवा) ।

पडित्था सक [प्रति + दा] पीछे देना, दान का करना देना । पडित्थे (विसे ३२४१) । ३ पडित्थाय्य (कस) ।

पडित्थाण न [प्रतिदान] दान के बदले में दान, 'दाणपडित्थाणवधिप' (उप ५६७ टी) ।

पडित्थासिया की [प्रतिदासिया] दासी (वस १, १ टी) ।

पडित्थिमा १ की [प्रतिदिश] विदिया, पडित्थिसि १ विदिक् (राज, पि ४१३) ।

पडित्थुग्धि वि [प्रतिजुगप्सित] १ निन्दा करनेवाला । २ परिहार करनेवाला, 'क्षीमो-दग्गपडित्थुग्धिणो' (सूम १, २, २ २०) ।

पडित्थुवार न [प्रतिद्वार] १ द्वार एक द्वार (पणह १, ३) । २ छोटा द्वार (कप्प, पणह २) ।

पडित्थि देसो परिहि, 'भूरियपडित्थीतो बहिता' (सूज्ज ६) ।

पडित्तमुक्कार पुं [प्रतिनमस्कार] नमस्कार के बदले में नमस्कार—प्रणाम (रंभा) ।

पडित्तिरसत्त वि [प्रतिनिपज्जन्त] बाहर निकला हुआ (एणमा १, १३) ।

पडित्तिरसत्त देसो पडिणिअत्तमा । पडित्ति-कम्मह (कप्प) । सङ्ग, पडित्तिरसत्ता, (कप्प, भग) ।

पडित्तिगच्छ देसो पडिणिगच्छ । पडित्ति-गच्छ (उवा) । पडित्तिगच्छत्ति (भग) । सङ्ग, पडित्तिगच्छत्ता (उवा, पि ५८२) ।

पडित्तिम देसो पडिणिम (वसति १) ।

पडित्तिम देसो पडिणिअत्त = प्रतिनि + बुत्त । पडित्तिमत्त (महा) । हेह, पडित्तिमत्त (कप्प) ।

पडित्तिमत्त देसो पडिणिअत्त = प्रतिनिबुत्त (साया १, १५, महा) ।

पडित्तिमत्त की [प्रतिनिबुत्त] वापस लौटना प्रत्यावर्तन (मोह ६३) ।

पडित्तिवेस पुं [प्रतिनिवेश] १ भाट, बदायह, दुवायह, कनवित्त हट (पण ६) । २ गाढ कुराया, पञ्चात्ताप (विसे २२६६) ।

पडित्तिस्स वि [प्रतिनिपिक्क] निवारित, हटाया हुआ (उप ३ ३३३) ।

पडित्त देसो पडिण्णत्त (भावा १, ८, ५, ४) ।

पडित्तव सक [प्रति + हपय] कहना । सक पडित्तविच्चा (कप्प) ।

पडित्तव सक [प्रति + ज्ञापय] १ प्रतिज्ञा करना । २ निबम दिताना । पडित्तविच्चा, पडित्तवेच्चा (वस ५, ८) ।

पडित्ता देसो पडिण्णा (भावा) ।

पडित्तप पुं [प्रतिपथ] १ जलदा मार्ग विपरीत मार्ग । २ प्रतिवृत्तता (सूम १, ३, १, ६) ।

पडित्तपि वि [प्रतिपथिन्] प्रतिवृत्त, विरोधी, 'अप्ये पडित्तासि पडित्तपिमागता' (सूम १, ३, १, ६) ।

पडित्तप देसो पडित्तप (भोप १३) ।

पडित्तपि वि [प्रतिपत्ति] फिर से गिरा हुआ, सत्यो सिरविद्यो बालियावि पडित्तपिमा मशराले (साप ६४) ।

पडित्तपि १ देसो पडित्तपि (नाट—वेत्त पडित्तपि ३५, सति ६) ।

पडित्तप पुं [प्रतिपथ] १ उन्मार्ग, विपरीत रास्ता (स १४७, पि ३६६ ए) । २ न-प्रमिगुल संयुत (सूम २, २, ३१ टी) ।

पडित्तपि वि [प्रतिपथिक्क] संयुक्त प्रादे-वाला (सूम २, २, २८) ।

पडित्ताअ सक [प्रति + पादय] प्रतिपादन करना, कथन करना । ३. पडित्ताअगीअ (नाट—शुक्र ६५) ।

पडित्ताय पुं [प्रतिपाद] मुख्य वाद को सहा-यता पहुँचाना वाद (राज) ।

पडिपाहुड न [प्रतिप्राभृत] बढने की मेट
(मुपा १५५) ।

पडिपिडिअ वि [दि] प्रवृद्ध, बढा हुआ (दे
६, ३४) ।

पडिपिल्ल सक [प्रति + क्षिप, प्रतिप्र +
ईर्य] प्रेरणा करना । पडिपिल्लइ (भवि) ।
पडिपिल्लण न [प्रतिप्रेरण] १ प्रेरणा (सुर
१५, १५१) । २ दक्कन, पिपान । ३ वि.
प्रेरणा करनेवाला; 'दीवसिहापडिपिल्लणमस्से
मिल्लति नोत्तरे' (कुप्र १३१) ।

पडिपिहो देहो पडिपेहा । संक. पडिपिहिता
(वि ५२२) ।

पडिपीलण न [प्रतिपीडन] विशेष पीडन,
अधिक दबाव (गड) ।

पडिपुच्छ सक [प्रति + प्रच्छ] १ वृक्षा
करना, पृथना । २ फिर से पृथना । ३ प्ररन
का जवाब देना । पडिपुच्छइ (उव) । वहु.
पडिपुच्छमाण (कप्य) । क. पडिपुच्छ-
गिज, पडिपुच्छणीय (उवा, छाया १,
१, राय) ।

पडिपुच्छण न [प्रतिप्रच्छन] नीचे देखो
(भा, उवा) ।

पडिपुच्छणया } छो [प्रतिप्रच्छना] १
पडिपुच्छणा } पृथना, वृक्षा । २ फिर से
वृक्षा (उत २६, २०; बीप) । ३ उत्तर,
प्ररन का जवाब (इह ४, उर पु ३६८) ।

पडिपुच्छगिज } देखो पडिपुच्छ ।
पडिपुच्छणीय }

पडिपुच्छा की [प्रतिपृच्छा] देखो पडिपु-
च्छणा (वंचा ३; ख २, इत १) ।

पडिपुच्छिअ वि [प्रतिपृष्ट] निश्चय प्ररन
किया गया हो वह (भा २६६) ।

पडिपुजिय वि [प्रतिपुजित] पूजित प्रचित,
'अटणवरत्तणपत्तममुविणिण्मियपडिपुजि' (?)
पुजि, पूजे) यपरसरराममोहनदारणाए'
(छाया १, १—पन १२) ।

पडिपुण देहो पडिपुण (उवा, वि २१८) ।

पडिपुत्त पुं. [प्रतिपुत्त] प्रपुन, पुन का पुन,
पीना, 'अकनिसेसदिपनिपुत्तपराडिपुत्तण-
पुधीय' (मुग ६) । देखो पडिपोत्तय ।

पडिपुस वि [प्रतिपूर्णा] परिपूर्ण, संपूर्ण
(छाया १, १; सुर ३, १८; ११४) ।

पडिपूय देखो पडिपुजिय (राज) ।

पडिपूयय } वि [प्रतिपूजक] बना करने-
पडिपूयय } वाला (राज, सम ११) ।

पडिपूयय वि [प्रतिपूजक] प्रत्युपकार-वर्त
(उत १७, ५) ।

पडिपूरिय वि [प्रतिपूरित] पूर्ण किया हुआ
(पउय १००, ५०, ११५, ७) ।

पडिपेहण देखो पडिपिहण (गड, से ६,
३२) ।

पडिपेहण न [परिप्रेरण] देखो पडिपिहण
(वि २, २४) ।

पडिपेसिय वि [प्रतिप्रेरित] प्रेरित, जिसको,
प्रेरणा की गई हो वह (सुर १५, १८०;
महा) ।

पडिपेहा सक [प्रतिपि + धा] डकना,
आच्छादन करना । सक. पडिपेहिता (मृष
३, २, ५१) ।

पडिपोत्तय पुं [प्रतिपुत्तक] नया, बन्या
का पुन, लटकी का लटका, नाती (मुपा
१६२) । देखो पडिपुत्तय ।

पडिपेह देखो पडिपेह (उर ७२८ टी) ।

पडिप्फडि वि [प्रतिस्पर्धिन] स्पर्धा करने-
वाला (हे १, ४४, २, ३३, प्राप्र. संवि १६) ।

पडिप्फलणा छो [प्रतिफलना] १ स्वलना ।
२ संक्रमण, 'पडिहपडिप्फलणाविजिरीये-
समुत्तरे' (मुपा ८७) ।

पडिप्फलिअ } वि [प्रतिफलित] १ प्रति-
पडिप्फलिअ } धिष्ठित, सहाय (से १५,
३१, दे १, २७) । २ स्थलित (खर) ।

पडिबंध सक [प्रति + बन्ध] रोकना, मट-
कना । पडिबन्धइ (वि ३१३) । क. पडि-
बन्धेयव्य (वमु) ।

पडिबन्ध सक [प्रति + बन्ध] १ बैठन
करना । २ सेवना । पडिबन्धइ, पडिबन्धति
(सुप्र १, ३, २, १०) ।

पडिबंध पुं [प्रतिबन्ध] ब्यापि, नियम
(यमस १११) ।

पडिबंध पुं [प्रतिबन्ध] १ रखावट (उवा,
कप्य) । २ विन, बन्तसम (उर ८८७) ।

३ अयादर, बहुमान (उर ७७६, उर
१४६) । ४ स्नेह, प्रीति, राग (छा २; वंचा
१७) । ५ आश्रय, अमित्र्य (छाया १, ५;
कप्य) । ६ बैठन (सुप्र १, ३, २) ।

पडिवंधअ } वि [प्रतिबन्धक] प्रतिबन्ध
पडिवंधअ } करनेवाला, रोकनेवाला (प्रमि
२३३, उर ६४५) ।

पडिवंधण न [प्रतिबन्धन] प्रतिबन्ध, रखावट
(वि २१८) ।

पडिवंधेयव्य देखो पडिवंध = प्रति + बन्ध ।

पडिवद्ध वि [प्रतिवद्ध] १ रोना हुआ,
संबद्ध; 'अगुणिं अण्डिबद्धे' (कप्य, परह
१, ३) । २ अजन्त, अत्यादिन (गड
१८२) । ३ ससक्त, संबद्ध, संलग्न, 'समिआण
समिअयकवडसपडिबद्धवाडुयामसिआण' ...

पुसिआणियमाण' (गड, कुप्र ११५, उवा) ।

४ सामने बैठा हुआ; 'अडिबद्धे अण्ड तुने
नरिदवक्के पायावियडिअ' (गड) । ५ बन्धव-
स्थित (वंचा १३) । ६ वेष्टित (गड) । ७

समीप में स्थित, 'सं वेव अ सागरिये जस
अट्टे स वडिबद्धे' (इह १) ।

पडिवद्ध वि [प्रतिवद्ध] नियत, ब्याप (वंचा
७, २) ।

पडिवाह सक [प्रति + धाप्] रोना ।

हेह. पडिवाहिहुं (शी) (माट—महावी
६६) ।

पडिवाहिर वि [प्रतिवाह्य] अनविहारी,
समीप (मम ५०) ।

पडिनिन न [प्रतिविमन] १ पराधी, प्रति-
च्छाया (मुपा २६६) । २ प्रतिमा, प्रतिनृत्ति

(वाप्र, प्रमा) ।

पडिनिविअ वि [प्रतिविमियन] निमना
प्रतिविम्ब पडा हो वह (कुपा) ।

पडिदुग्ग सक [प्रति + दुग्] १ बीप
पाना । २ जागृत होना । पडिदुग्गइ (उवा) ।

बह. पडिदुग्गमन, पडिदुग्गमाण (कप्य) ।

पडिदुग्गमया } छो [प्रतिदुग्गना] १ बाध,
पडिदुग्गमया } समक । २ जागृति (स
१५६, बीप) ।

पडिदुग्ग वि [प्रतिदुग्] १ बोध-ब्राह्म (प्रा
१३५, उर) । २ जागृत (छाया १, १) ।

३ न. प्रतिमाप (माचा) । ४ पुं एण राजा
का नाम (छाया १, ८) ।

पडिवृहणया छो [प्रतिवृहणा] उन्नय,
गुटि (सुप्र २, २, ८) ।

पडिघोड रूपो पडिघोह = प्रडिघोष (माट—
माली २६) ।

पड्योधिअ देखो पडियोहिय (अभि ५६) ।
 पडियोह सक [प्रति + योधय्] १ जगना ।
 २ वोध देना, समझना, ज्ञान प्राप्त करना ।
 पट्टोहेह (कप्य, मट्ट) । कवक, पडि-
 योहिवजत (अभि ५६) । संक. पडियोहिय
 (नाट—मातली १३६) । हेह. पडियोहिं
 (महा) । क. पडियोहियम्य (स ७०७) ।
 पडियोह पु [प्रति + योध] १ वोध, समझ ।
 २ जागृति, जागरण (मउड, पि १७१) ।
 पडियोहय वि [प्रति + योधकृ] १ वोध देने-
 वाला । २ जगानेवाला (विसे २४७ टी) ।
 पडियोहण न [प्रति + योधन] देखो पडि-
 योह = प्रतिवोध (काल, स ७०८) ।
 पडियोहि वि [प्रति + योधिन्] प्रतिवोध प्राप्त
 करनेवाला (आचा २, १, १, ८) ।
 पडियोहिय वि [प्रति + योधित] जिसको प्रति-
 वोध किया गया हो वह (शुभा १, १,
 काल) ।
 पडिभग पु [प्रति + भग] भग, विनाश (से ५,
 १६) ।
 पडिभंज भक [प्रति + भञ्ज] भंगना,
 टूटना । हेह. पडिभंजिअ (वव ४) ।
 पडिभंड न [प्रति + भाण्ड] एक बस्तु को
 बंधनर उत्तरे बंधने में खरीदी जाती चीज
 (स २०५, सुर ६, १५८) ।
 पडिभंस सक [प्रति + भ्रं + य्य] झट करना,
 छुट करना, 'पंचाक्षो य पडिभंस' (स १६१) ।
 पडिभग्य वि [प्रति + भग्न] भागा हुआ,
 पलायित (भोय ५१३) ।
 पडिभड पु [प्रति + भट] प्रतिपत्ती योद्धा (सि
 १३, ७२, मारा ५६, भवि) ।
 पडिभग्न सव [प्रति + भग्न] उत्तर देना,
 जगान देना । पडिमण्ड (महा, उवा. सुपा
 २१५), पडिमण्णि (महानि ४) ।
 पडिभणिय वि [प्रति + भणित्] प्रत्युत्तरित,
 जिसका उत्तर दिया गया हो यह (महा, सुपा
 ६०) ।
 पडिभणिय वि [प्रति + भणित्] १ निवृत्त
 (पनंस ६५०) । २ न. प्रत्युत्तर, निवारण
 (पनंस ६१) ।
 पडिभग सव [प्रति, परि + भ्रम्] घुमना,
 पर्यटन करना । हं. 'नत्थइ बहुयाचिय गयह

पति पडिभमिय सुहृदोसई वसंत' (भवि) ।
 पडिभमिय वि [प्रति + भ्रान्त, परि + भ्रान्त]
 भ्रमा हुआ (भवि) ।
 पडिभय न [प्रति + भय] भय, डर (पउम ७३,
 १२) ।
 पडिभा भक [प्रति + भा] मालूम होना । पडि-
 भावि (शौ) (नाट—रत्ना ३) ।
 पडिभाग पु [प्रति + भाग] १ अंश, भाग
 (भग २५, ७) । २ प्रतिबिम्ब (राज) ।
 पडिभास भक [प्रति + भास्] भासूम
 होना । पडिभासवि (शौ) (नाट—मृच्छ
 १४१) ।
 पडिभास सक [प्रति + भाप्] १ उत्तर
 देना । २ बोलना, कहना; 'कस्ये पडिभा-
 सति' (सुप्र २, ३, १, ६) ।
 पडिभिण्य वि [प्रति + भिन्] सबद्ध, संलग्न
 (सि ४, ५) ।
 पडिभिन्न वि [प्रति + भिन्न] भेद-प्राप्त
 (पव—आधा १६; वेहर ६४२) ।
 पडिभुअं पु [प्रति + भुज्] प्रतिपत्ती
 भुजग—वैश्या लपट (कपूर २७) ।
 पडिभू पु [प्रति + भू] जामिनदार, जमानत
 करनेवाला, मनीषिया (नाट—वैत ७५) ।
 पडिभेअ पु [वि. प्रति + भेद] उपालम्भ, निदा,
 'पडिभेओ पञ्चारण' (पाभ) ।
 पडिभोइ वि [प्रति + भोगिन्] परिभोग करने-
 वाला, 'अकालपडिभोइ' (आचा २, ३,
 १, ८, पि ४०५) ।
 पडिभ वि [प्रति + भ] समान, तुल्य (मोह
 ३५) ।
 पडिभे देखो पडिभा । 'ट्टाइ वि [श्वायिन्]
 १ बायोत्तरे में खड़ेवाला । २ नियम विशेष
 में स्थित (पउह २, १—पव १००, डा ५,
 १—पव २६६) ।
 पडिभंत सक [प्रति + भन्तय्] उत्तर
 देना । पडिभंत (उत १८, ६) ।
 पडिभल्ल पु [प्रति + भल्ल] प्रतिपत्ती मल्ल
 (भवि) ।
 पडिभाओ [प्रति + भा] १ मूर्ति, प्रतिबिम्ब,
 'त्रिणपडिभादंगणेषु पडिभू' (दगनि १,
 पाभ. गा १; ११४) । २ बायोत्तरे । ३
 जैन श्राद्धक. नियम-विशेष (पउह २, १;

सम १६, डा २, ३; ५, १) । 'गिह न
 [गृह] मन्दिर (निबू १२) । देखो पडिभ' ।
 पडिमाण न [प्रति + भा] जिसमें सुवर्ण आदि
 का लोह किया जाता है वह रत्ती, माता
 आदि परिमाण (अणु) ।
 पडिमाण न [प्रति + भा] प्रतिमा, प्रतिबिम्ब
 (वेद्य ७५) ।
 पडिमि १ सक [प्रति + मा] १ लोह
 पडिमि २ करना, माप करना । २ निमित्त
 करना । बर्भ. पडिमिण्णइ (अणु) । कवह.
 पडिमिज्जमाण (राज) ।
 पडिमुंच सक [प्रति + मुच] छोड़ना ।
 हेह. पडिमुंचिअ (सि १५, २) ।
 पडिमुण्डाओ [प्रति + मुण्डन] निषेध,
 निवारण (इह १) ।
 पडिमुक्त वि [प्रति + मुक्त] छोड़ा हुआ (सि ३,
 १२) ।
 पडिमोअणाओ [प्रति + मोचन] छुटकारा
 (सि १, ४६) ।
 पडिमोक्कण न [प्रति + मोचन] छुटकारा (स
 ४१) ।
 पडिमोयण वि [प्रति + मोचक] छुटकारा करने-
 वाला (राज) ।
 पडिमोयण देखो पडिमोक्कण (भीय) ।
 पडियक देखो पडिक्क (आचा) ।
 पडियक न [प्रति + चक] बुद्धबला-विशेष,
 'लेण पुत्तो विव निष्पाहत्तो ईसत्ते पडियके
 जन्तुपुरे य पमाहुवि वनासु' (महा) ।
 पडियग्गण न [प्रति + जगण] सम्हाल,
 खबर (पनंस १०१३) ।
 पडियध देवो पत्तिअ = प्रति + द ।
 पडियरण न [प्रति + रण] प्रतीकार, इनाम
 (पिड ३६६) ।
 पडियरिअ वि [प्रति + रिअ] सेवित, सेवा
 किया हुआ (मोह १०५) ।
 पडियाओ [प्रति + भा] १ उद्देश्य, 'विश्राय-
 पडियाए' (कम, आचा) । २ अभिप्राय (डा ५,
 २—पव ३१४) ।
 पडियाओ [प्रति + भा] यज्ञ विशेष,
 'युग्मणाय य युगुला,
 वट्ठ्वा पड य मोयला सिस्सि ।

वत्तो पुण्णेहि विणा,

वेसा पडियव्व संपट्ट,
(धमा ११६) ।

पडियाइम्स सक [प्रत्या + यया] व्याण
करता । पडियाइम्से (वि १६६) ।

पडियाइम्सिय वि [प्रत्या + यात्] व्यव,
परिवक्त, धोला हुमा (ठा २, १, भग उवा
बन्, विपा १, १, शीप) ।

पडियाणय न [दि. पर्याणक] पर्याण ने
नीचे दिया जाता धर्म भादि का एक उपकरण
(आया १, १७—पत्र २३०) ।

पडियाणंद पुं [प्रत्यानन्द] विशेष आनन्द,
प्रभूत आनन्द, बहुत आनन्द (श्रीप) ।

पडियाणय न [दि पदतानक, पर्याणक]
पर्याण ने नीचे रखा जाता ब्रह्म भादि का
एक पुस्तकवादी का उपकरण (आया १,
१७—पत्र २३२ टी) ।

पडियारणा श्री [प्रतिगारणा] विशेष (धमा
१७, १४) ।

पडियासुर मक [दि] चिट्ठा, गुप्ता होना ।
ह. 'पडियासुरेयस्य न क्याइवि पाण-
काएणि' (मात्र २५, १४) ।

पडिर वि [पडिउ] गिरनेवाला (हुमा) ।

पडिअ देसो पडिये (गा ५५ म से ७,
१६) ।

पडिरजिअ वि [दि] अन्न, दूध हुमा (दि
६, १२) ।

पडिरिअय वि [प्रतिरक्षित] निगरी रणा
की गई हो बद (मवि) ।

पडिरय पु [प्रतिरय] प्रतिपन्नि, प्रतिशब्द
(गउर. गा ५५: सुर १, २४४) ।

पडिराय [प्रतिराग] भावी, स्वप्न
'अयह दसपहियाहोउडिअजंठरामाअियय ।
पाओनरंठपदर व पडिअयय इमा वण्ण'
(गउर) ।

पडिरिगअ [दि] देसो पडिरिअ (धर) ।

पडिर मक [प्रति + रु] प्रतिपन्नि करना,
प्रतिशब्द करना । धर. पडिरिअ (वि १२,
६, वि ७७३) ।

पडिरिं [सक] [प्रति + रूप] १ रोचना,
पडिरिं २ धारणा । २ आते करना । पडि-

रिअ (से ८, ३६) । वरु. पडिरिंघंत (वि
११, ५) ।

पडिरिउ वि [प्रतिरुउ] रोका हुमा, अटवाना
हुमा (गुपा ८५, ववा ५०) ।

पडिरिउ } वि [प्रतिरूप] १ रम्य, सुन्दर,
पडिरिउ } चारु, मनोहर (गम १३७, उवा-
भीप) । २ रूपवान, प्रयत्न रूपवाला, श्रेष्ठ
आडितवाला (श्रीप) । ३ धारणाएव रूपवाला ।

४ नूतन रूपवाला (जीव ३) । ५ योग्य,
उचित (स ८७, भग १५, वस ६, १) ।

६ सहज, समान (आया १, १—पत्र ६१) ।

७ समान रूपवाना, सहज धारणावाला (उत
२६, ४०) । ८ न. प्रतिरिम्ब, प्रतिबुद्धि,
'कइयावि चित्तफलए कइया वि पडिअ सत्तन
पडिरुं लिहिरुण' (सुर ११, २३८, राय) ।

९ समान रूप, समान आडित, तुल्यपडिरु-
भादि पासह निज्जाट्टमुवां (गुपा २६८) ।

१० पुं. इन्द्र विशेष, भूत निजय का उत्तर
दिया का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५) । ११
विजय का एक भेद (वव ६) ।

पडिरुत्ति वि [प्रतिरुत्ति] रमणीय,
सुन्दर (मावा २, ४, २, १) ।

पडिरुवग पुन [प्रतिरूपक] प्रतिबिम्ब,
प्रतिमा, 'तिरिदि पडिरुवग य देवता' (माव.
इह) ।

पडिरुवगया श्री [प्रतिरूपणना] १ समा-
नता, सहजता या साहचर्य । २ समान वेध-
वाण (उत २६, १) ।

पडिरुवा श्री [प्रतिरुपा] एक कुतर पुरय
की वस्ती का नाम (वम १५०) ।

पडिरुप पु [प्रतिरोप] नुत्तररोपण (हुम
५५) ।

पडिरुह पु [प्रतिरोध] रबावट (गउर,
गा ७२४) ।

पडिरुहि वि [प्रतिरोधिन्] रोचनेवाला
(गउर) ।

पडिरुं सक [प्रति + लम्] प्राप्त करना ।
धर. पडिरुंभिय (गुप १, ११) ।

पडिरुं पु [प्रतिरुंभ] प्राप्त, लाभ (गुप
२, ५) ।

पडिरुग वि [प्रतिरुग] सम हुमा, समद
(वि १०, ८६) ।

पडिरुमाल न [दि] वस्ती, कौट-विशेष-कृत
श्रुतिवा-स्तुप (दे ६, ३३) ।

पडिरुम सक [प्रति + लम्] प्राप्त करना ।
पडिरुमेज (उत १, ७) । संह. पडिरुंभ
(सूत्र १, १३, २) ।

पडिरुंभ } सक [प्रति + लाभय, लम्भय]
पडिरुंभ } साधु भादि को दान देना । पडि-
साहेटगह (वास) । वरु. पडिरुंभेमाण
(आया १, ५, भग उवा) । संह. पडिरु-
भित्ता (भग ८, ५) ।

पडिरुहण न [प्रतिरुभन] दान देना
(रंसा) ।

पडिरुं हअ वि [प्रतिरुत्ति] दिया हुमा,
सम्प मरं दुवारि पडिरुंहिम' (वि १४) ।

पडिरुं वि [प्रतिरुं] प्रयत्न लोन
(धर्मवि ५३) ।

पडिरुं वर [प्रति + लेखय] १ निरीक्षण
करना, देखना । २ विचार करना । पडिरुंहेह
उव, वस, मय; 'एतेनु जाणे पडिरुंहेह नायं,
एतेण वएण म प्रायसहे' (सूत्र १, ७, २) ।

संह भूएहि जाणे पडिरुंहेह ताव' (सूत्र १,
७, १६), पडिरुंहिता (मग) । हेर. पडि-
लेटिआण, पडिरुंहेहाए (वय) । ह. पडि-
लेटिअय (श्रीप ४, वय) ।

पडिरुं पु [प्रतिनेय] देसो पडिरुंहेहा
(वेय, २९६) ।

पडिरुं देसो पडिरुंहेह (पत्र) ।

पडिरुंहेह न [प्रतिनेयन] निरीक्षण (श्रीप
३ या धर) ।

पडिरुंहेहया देसो पडिरुंहेहया (उत ३६,
१) ।

पडिरुंहेहया श्री [प्रतिनेयना] निरीक्षण,
निम्नए (मग) ।

पडिरुंहेहणी श्री [प्रतिनेयनी] साधु का एक
उपकरण, 'बृहणी' (वव ९१) ।

पडिरुंहेह वि [प्रतिनेयन] निरीक्षण,
देखनेवाला (श्रीप ४) ।

पडिरुंहेहा श्री [प्रतिनेयगा] निरीक्षण, धा-
नोका (श्रीप ३, डा १, १, वर) ।

पडिरुंहेहि वि [प्रतिनेयिन्] निरीक्षण
(सूत्र १, ३, १, ३) ।

पडिलेहिय वि [प्रतिलेखित] निरीक्षित,
देखा हुआ (उवा)।

पडिलेहियव्य देखो पडिलेह ।

पडिलोम वि [प्रतिलोम] प्रतिकूल (भा)।
२ विपरीत, उलटा (भावा २, २, २)। ३
न. परचादानुपूर्वी, उलटा क्रम, 'वरह दुहाणुमो-
मेण तह्य पडिलोममो भवे वर्य' (सुर
१६, ४८, निबू १)। ४ उदाहरण का एक
दोष (वसति १)। ५ अपवाद (राज)।

पडिलोमइत्ता घ [प्रतिलोमयित्ता] चाव-
विरोध, वादभावे सदस्य या प्रतिवादी को
प्रतिकूल बनाकर किया जाता वाद—छायाई
(ठा ६)।

पडिली की [दे] १ कृति बाह १ २ यवनिका,
परादा (दे ६, ६४)।

पडिय देखो पलोय = प्र + दीप्य । पडिवेद
(से ५, ६७)।

पडियइर न [प्रतिवैर] वैर का बलना (भवि)।

पडियइ देखो पडिवया (पत्र २७१)।

पडियचण न [प्रतिपञ्चन] बदला, 'वैर-
पडिवचण्ड' (पत्रम २६, ७३)।

पडिवय देखो पडिपय (से २, ४६)।

पडिवय देखो पडिअंध (भवि)।

पडिनस पु [प्रतिपरा] छोटा भास (राय)।

पडिनस सक [प्रति + वच्] प्रत्युत्तर देना,
जवाब देना। पडिवकइ (भवि)।

पडिवनस पु [प्रतिपन्न] १ पिपु, डुरपन,
विरोधी (नाम, गा १४२, सुर १, ५६, २,
१२६, से ३, १५)। २ छद्म विरोध (पत्र)।

३ विपर्यय, विपरीत (सण)।

पडिवपियय वि [प्रतिपक्षिक] बिच्छ पञ-
चाला विरोधी (सण)।

पडिनस सर [प्रति + अञ्] वापस जाना।

पडिवचइ (वि ५६०)।

पडिनच्छ देखो पडिवनस, मह एवरमस
सोसो पडिवच्छेहिय पडिवणो (गा ६७६)।

पडिअज सब [प्रति + पद्] स्वीकार
करना, भंगीकार करना। पडिवअइ, पडि-
मअइ (उर. महा, भासू १४१)। भवि,
परिवर्तितामि, परिवर्तितामो (वि २७०,
भीन)। वर. पडिअजमाण (वि ५६२)।

सर. पडिवजिऊण, पडिवजिआण.

पडिवजिय (वि ५६६, ५८३, महा,
रमा)। हेइ, पडिअजिउं, पडिवजिअए,
पडिवचु (पचा १८, ठा २, १, कस,
रमा)। ६. पडिवजियवच, पडिअजेयवच
(उत ३२, उय ६८४, १००१)।

पडिवजण न [प्रतिपदन] स्वीकार, भंगी-
कार (कुप्र १४७)।

पडिवजण न [प्रतिपादन] भंगीकारण,
स्वीकार करवाना (कुप्र १४७, ३८६)।

पडिवजणया की [प्रतिपदना] स्वीकार
(एवि २३२)।

पडिवजणया की [प्रतिपादना] प्रतिपादन
(एवि २३२)।

पडिवजय वि [प्रतिपादक] स्वीकार करने-
वाला 'एस ताव कसणयवतपडिवजयो ति'
(स ५०५)।

पडिअजण न [प्रतिपादन] स्वीकारण,
स्वीकार करना (कुप्र ६६)।

पडिवज्जाविय वि [प्रतिपादित] स्वीकार
करवा हुआ महा)।

पडिअजिय वि [प्रतिपक्ष] स्वीकृत (भवि)।

पडिअट्टअ न [प्रतिपट्टक] एक प्रकार का
रेखी बपका (कपु)।

पडिवइटावअ वि [प्रतिपथापक] १ बघाई
देने पर उसे स्वीकार कर धर्मवाद देनेवाला।

२ बघाई के बदले में बघाई देनेवाला। की
'विआ (कपु)।

पडिअण्य वि [प्रतिपन्न] १ प्राप्त, (वप)।

२ स्वीकृत, भंगीकृत (वट्)। ३ आश्रित
(धोष, ठा ७)। ४ निवृत्ति स्वीकार किया हो
गइ (ठा ४, १)।

पडिअन पु [परिवर्त] परिवर्तन (नाट. मुच्छ
३१८)।

पडिअचण देखो पडिअचण (नाट)।

पडिवचि की [प्रतिपत्ति] १ प्रति-द्विति।
२ प्रवृत्ति, प्रकार (विसे ५७८)। ३ प्रवृत्ति,
उत्तर (पत्रम ४७, ३०, ३१)। ४ ज्ञान
(सुर १४, ७४)। ५ आदर, भौर (महा)।

६ स्वीकार, भंगीकार (एवि)। ७ साथ,
प्रतिध, 'धम्मपडिवचिहेउतएण' (महा)।

८ मतान्तर। ९ प्रसिद्ध-विरोध (सप १०६)।

१० शक्ति, सेवा (कुमा, महा)। ११ परि-
पाटी, क्रम (भाय ४)। १२ श्रुत विशेष, गति,
शक्ति आदि द्वारों में से किसी एक द्वार के
जरिये समस्त संसार के जीवों को जानना
(कम्म २, ७)। 'समास पु' [समास]
श्रुत-ज्ञान विशेष—गति आदि दो चार
द्वारों के जरिये जीवों का ज्ञान (कम्म १, ७)।

पडिवचुं देखो पडिवजण।

पडिअइ देखो पडिवचि (माप्र)।

पडिअइवअ देखो पडिअइवअ। की.
'विआ (रमा)।

पडिवअ देखो पडिवअ, 'पडिवनसपल्लो
सुपुत्तिसाव होइत होइ' (भासू ३, शाया
१, ५, उवा, सुर ४, ५७, स ६५६, हे २,
२०६, पाय)।

पडिअजिय (अप) देखो पडिअण्य (भवि)।

पडिवय सक [प्रति + पत्] ऊँचे जाकर
गिरना। वट् पडिवयमाण (भावा)।

पडिवय सक [प्रति + वच्] उत्तर देना।
भवि, पडिवक्तामि (पूय १, ११, ६)।

पडिवयण न [प्रतिवचन] १ प्रत्युत्तर,
जवाब (गा ४१६, सुर २, १२३, भवि)।

२ आदेश, आज्ञा, 'देहि मे पडिवयण'
(भावय)। ३ पु. हरिवश में एक राजा का
नाम (पत्रम २२, ६७)।

पडिअया की [प्रतिपत्ति] पडवा, पक्ष की
पक्षी तिथि (हे १, ४४, २०६, वर)।

पडिवविय वि [प्रत्युस] फिर से बोया हुआ
(दे ६, १३)।

पडिअस सक [प्रति + पस्] निवास करना।

वट्. पडिवसत (वि ३६७, नाट—मुच्छ
३२१)।

पडिवसम पु [प्रतिपुत्रभ] मूल स्थान से
दो बेटों की दूरी पर स्थित गंव (पत्र ७०)।

पडिवइ सक [प्रति + वट्] बहन बलना,
छोना। वट्. पडिवउममाण (वण)।

पडिवइ देखो पडिपव (से ३, २४, ८, १३,
पत्रम ७३, २४)।

पडिवइ पु [प्रतिवय, परिवय] वय, हवा
(पत्रम ७३, २४)।

पडिया देखो पडिवया (कुप्र १०, १४)।

पडिनाइ वि [प्रतिपादिन्] प्रतिवाद करने-
वाला, वादी का विपक्षी (मंत्रि ५१, ३)।

पडिनाइ वि [प्रतिपादिन्] प्रतिपादन करने-
वाला (मंत्रि ५१, ३)।

पडिनाइ वि [प्रतिपातिन्] १ निजस्वर, नष्ट
होने के स्वभाववाला (ठा २, १, श्लोक
५३२, उग ४ ५५८)। २ अग्रपिज्ञान वा
एक श्रेष्ठ, पूर्व से दीपक के प्रकाश व समान
एकान्त नष्ट होनेवाला अवधिज्ञान (ठा ९,
कम्म १, ८)।

पडिनाइअ वि [प्रतिपातित] १ फिर से
लिखा हुआ। २ नष्ट किया हुआ (मंत्रि)।

पडिनाइअ वि [प्रतिपादित] जिनका प्रति-
पादन किया हो वह, निष्पत्ति (मन्तु ५,
स ५६, ५५१)।

पडिनाइअ वि [प्रतिपाचित] १ लिखने के
बाद पढ़ा हुआ। २ फिर से बोका हुआ
(कुप्र १६७)।

पडिनाइअण् देसो पडिनाय=प्रति +
पडिनाइअण् } वाच्य।

पडिनाइअ देसो पडिनाइ=प्रतिपातिन् (एदि
८१)।

पडिनाइ देसो परिनाइ (ठा ५३०)।

पडिनाइ (श्री) सर [प्रति + पादय्]।
प्रतिपादन करना निरूपण करना। पडिनाइदि
(नाट—रत्ना ५७)। इ पडिनाइणिगज
(मंत्रि ११७)।

पडिनाइय वि [प्रतिपादक] प्रतिपादन
करनेवाला। श्री, दिआ (नाट—वैद्य ५४)।

पडिनाय स [प्रति + याचय्] १ निज
के बाद उग पड़ लेना। २ फिर से पड़ लेना।

श्रु, पडिनाइअण् (कुप्र १६७)। इ
पडिनाइअण् (कुप्र १६७)।

पडिनाय गर [प्रति + पादय्] प्रतिपादन
करना, निरूपण करना। पडिनायवदि (गुप्त
१, १४, २९)।

पडिनाय पु [प्रतिपा] १ पुन-व्रतन, फिर
से गिरा (गर १९)। २ नाट, रचना
(श्लोक ५७७)।

पडिनाय पु [प्रतिपाद] विशेष (मंत्रि)।

पडिनाय पु [प्रतिपा] प्रतिपादन करने
(मात्रम)।

पडिनायण न [प्रतिपादन] निरूपण (कुप्र
११६)।

पडिनाय देसो परिवार, पडिनायपरि-
वारिणो (महा)।

पडिनाल स [प्रति + पालय्] १ प्रतीका
करना, बाट जाना। २ रक्षण करना।
पडिनालेद (हे ४, २५१)। पडिनालेदु (श्री),
(स्वप्न १००)। पडिनालेद (मंत्रि १८५)।
वह, पडिनालअत, पडिनालेमाण (नाट—
रत्ना ५८, छाया १, ३)।

पडिनालण न [प्रतिपालन] १ रक्षण। २
प्रतीका, बाट (नाट—महा ११८, उग
६६६)।

पडिनालिअ वि [प्रतिपालित] १ रक्षित।
२ प्रतीका, जिसकी बाट देखी गई हो वह
(महा)।

पडिनाल पु [प्रतिपास] शीघ्र भादि को
विशेष उद्यत बनानेवाला पूर्ण भादि (उर
८, ५, गुप्ता ६७)।

पडिनासर न [प्रतिनासर] प्रतिदिन, हर
रोज (मन्त्र)।

पडिनामुदेय पु [प्रतिनामुदेय] वापुदेन का
प्रतिपत्ती राजा (पद्म २०, २०२)।

पडिनिषिक्क स [प्रतिनि + षी] बेचना।
पडिनिषिक्क (मात्र ३३, वि ५११)।

पडिनिगजा श्री [प्रतिविद्या] प्रतिपत्ती विद्या,
विरोधी विद्या (विद ५६७)।

पडिनिधय पु [प्रतिविस्तर] विस्तर, विस्तार
(गुप्त २, २, ६२ टी. राज)।

पडिनिधसण न [प्रतिविधसण] निनाल
बंद (राज)।

पडिनिधिय न [प्रतिविधिय] मनार का
बन्ना, बन्दे के दर में रिया जाता अनिष्ट
(महा)।

पडिनिदु को [प्रतिनिधे] निवृत्ति (पद्म
२, ३)।

पडिनिरय वि [प्रतिनिधे] निवृत्त (मन्त्र
५१, गुप्त २, २, ७२, श्लोक, उर)।

पडिनिरय स [प्रतिनिधे + मन्त्र]।
निवृत्त करना, निरा करना। पडिनिरयद
(बन्, धोर)। पडिनिरयद (विद ५६६)
(धोर)।

पडिनिरयिजय वि [प्रतिनिधे] निरा
किया हुआ, निरजित (छाया १, १—पद्म
३०)।

पडिनिहाण न [प्रतिनिधान] प्रतीकार (स
५६७)।

पडिनुग्गमाण देसो पडिनुग्ग प्रति + वहु।
पडिनुत्त वि [प्रत्युत्त] १ जिसका उत्तर
दिया गया हो वह (मन्तु ३, सप ७२८ टी)।
२ न प्रत्युत्तर (उग ७२८ टी)।

पडिनुद (श्री) वि [परिपुत्त] परिवर्तित
(मंत्रि ५७, नाट—गुप्ता २०५)।

पडिनुह पु [प्रतिपुह] व्यूह का प्रतिपत्ती
व्यूह मन्त्र रचना विशेष (धोर)।

पडिनुह वि [प्रतिपुह] १ बड़नेवाला
(मात्रा १, २, ५, ४)। २ न, वृद्धि, वृद्धि
(मात्रा १, २, ५, ४)।

पडिनेस पु [दे] विशेष, कॅवना (दे ९, २१)।

पडिनेसिअ वि [प्रतिपेक्षिक] पडासो,
पडास में रत्नेवाला (दे ९, १, गुप्ता ५५२)।

पडिनेह देसो पडिनेह (सल)।

पडिनेश श्री [प्रतिशब्दा] भय, संका
(पद्म ६७, १५)।

पडिनेस स [प्रति + कया] व्यवहार
करना, व्यवहार करना। पडिनेसाए (मात्रा)।

पडिनेसिय स [प्रति + क्षिप्] क्षेप
करना। पडिनेसिय (मन्त्र १५, ७)।

पडिनेसिय सर [प्रति + क्षेप]।
सहना करना। पडिनेसियेमाण
(सप ५२)।

पडिनेसिय सर [प्रति + क्षेप]।
रिखन करना। पडिनेसिय (रा २, ११)।

पडिनेसिय सर [प्रति + क्षेप]।
रिखन करना। पडिनेसिय (मात्रा)।

पडिनेसिय वि [परिपुत्त] सप, उरप
(न ९, ९१)।

पडिनेसिय वि [प्रतिपुत्त] विपुत्त (इह १)।

पडिनेसिय वि [दे] १ पडिनेसिय, पडिनेसिय
(दे ९, १९)।

पडिनेसिय } सर [प्रति + धा] १ फिर
पडिनेसिय } से पडिनेसिय। २ उत्तर देना।

३ अनुकूल करना। पडिसंघए (उत्तर २७, १)। पडिसंघयाइ (सूत्र २, ६, ३)। सऊ.
पडिसंघाय (सूत्र २, २, २६)।
पडिसंघ } सक [प्रतिसं + धा] १ भादर
पडिसंघा } करना। २ स्वीकार करना। पडि-
संघए (पञ्च ७)। सऊ. पडिसंघाय (सूत्र
२, २, ३१, ३२, ३३, ३४, ३५)।
पडिसंमुह न [प्रतिसंमुह] समुच्च, सामने,
'गमो पडिसंमुह पज्जोपसं' (पहा)।
पडिसंलाय पु [प्रतिसंलाय] प्रत्युत्तर, जवाब
(सि १, २६, ११, ३४)।
पडिसंलीण वि [प्रतिसंलीण] १ सम्मक्
लीन, प्रच्छेदी तद्ध लीन। २ निरोध करने-
वाला (डा ४, २, धोप)। *पडिया ली
[प्रतिमा] लोघ भादि के निरोध करने की
प्रतिज्ञा (भीम)।
पडिसंविक्कन सक [प्रतिसंवि + ईक्]
विचार करना। पडिसंविक्के (उत्तर २, ३१)।
पडिसंवेद } सक [प्रतिस + वेदय्]
पडिसंवेय } अनुभव करना। पडिसंवेदेइ,
पडिसंवेयदि (मग, पि ४२०)।
पडिसंसाहणया ली [प्रतिसंसाधना]
अनुजन, अनुगमन (भीम, मग १४, ३,
२५, ७)।
पडिसहर सक [प्रतिस + ह] १ निवृत्त
करना। २ निरोध करना। पडिसंहरेणजा
(सूत्र १, ७, २०)।
पडिसन्नक देखो परिसक। पडिसन्नक
(भवि)।
पडिसहण न [प्रतिशदन, परिशदन] १
सह जाना। २ विनाश, 'निरन्तरपडिसहण-
सीलाणि भाउदसाणि' (काव)।
पडिसहिय वि [परिशद्वि] जो सह गया
हो, जो विशेष जीएँ हुआ हो वह (पिंड
५१७)।
पडिसत्तु पु [प्रतिशानु] प्रतिष्ठी, दुरमन,
वेरी (मग १५३, पञ्च ५, १५६)।
पडिसमय पु [प्रतिसार्ध] प्रतिकूल युग (निनु
११)।
पडिसह पु [प्रतिशान्] १ प्रतिपन्नि (पञ्च
१६, २३, मवि)। २ उत्तर, प्रत्युत्तर, जवाब
(पञ्च ६, ३५)।

पडिसहिय वि [प्रतिशद्वि] प्रतिपन्नि-
युक्त (सम्पत् ११८)।
पडिसम भक [प्रति + शम्] विरत होना।
पडिसमइ (सि ६, ४७)।
पडिसमाहर सक [प्रतिसमा + ह] पीछे
खींच लेना 'दिट्ठि पडिसमाहरे' (दस ८,
३५)।
पडिसय पु [प्रतिप्रय] उपाध्य, साधु का
निवास-स्थान (दस २, १, टी)।
पडिसर पु [प्रतिसर] १ सेव्य का पचाङ्गाय
(प्राप्र)। २ हस्त-सूत्र, वह धागा जो विवाह
से पहले बर-बनू के हाथ में रत्ताई बाँधते हैं,
ककण (धर्म २)।
पडिसरण न [प्रतिसरण] ककण (पचा
८, १५)।
पडिसरीर न [प्रतिशरीर] प्रतिभूति, 'पट्ट-
विग्रो पडिसरीर व' (धर्मवि ३)।
पडिसलागा ली [प्रतिशलाका] पत्य-विशेष
(मम्म ४, ७३)।
पडिसन सक [प्रति + शप्] शप के बदले
में शप देना 'अहमहो ति न य पडि-
हणति सत्तावि न य पडिसवति' (उव)।
पडिसन सक [प्रति + धु] १ प्रतिज्ञा
करना। २ स्वीकार करना। ३ भादर करना।
ह. पडिसनणीय (सण)।
पडिसयच वि [प्रतिसपत्त] विरोधी शत्रु
(दमणि ६, १८)।
पडिसा भक [शम्] शान्त होना। पडिसा
(हि ४, १६७)।
पडिसा भक [नर] नायना, पलायन
होना। पडिसाह, पडिवि (हि ४, १७८,
कुण)।
पडिसाह वि [दे] जिसका गला बैठ गया
हो, घर्षण कण्ठवाला (दे ६, १७)।
पडिसाह सक [प्रति + शादय्, परि-
शादय्] १ शयना। २ पतना। ३ नाश
करना। पडिसाहंति (भाषा २, १५, १८)।
सह. पडिसाहंति (भाषा २, १५, १८)।
पडिसाहणा ली [परिशद्वि] प्युट करना,
भट्ट करना (धव १)।
पडिसम भय [शम्] शान्त होना। पडिसा-
महि (हि ४, १६७; पट्ट)।
पडिसाय वि [शान्व] शान्त, शम प्राप्त
(पुमा)।

पडिसाय पु [दे] घर्षण कण्ठ, बैठा हुआ
गला (दे ६, १७)।
पडिसार सक [प्रतिस्मारय्] याद दिलाना।
पडिसारेउ (मग १५)।
पडिसार सक [प्रति + सारय्] सजाना,
सजावट करना। पडिसारेदि (शौ), कर्म-
पडिसारीप्रदि (शौ) (कप्प)।
पडिसार सक [प्रति + सारय्] खिमकाला,
हठाना, अग्न्य स्थान में ले जाना। पडिसारेह
(सि १०, ७०)।
पडिसार पु [दे] १ पट्टा। २ वि. निवृत्त,
पट्ट, बतुर (दे ६, १६)।
पडिसार पु [प्रतिसार] १ सजावट। २
अपसरण। ३ विनाश। ४ पराङ्मुलता (हि
१, २०६, दे ६, ७६)।
पडिसार पु [प्रतिसार] अपसारण (हि १,
२०६)।
प्रडिसारण न [प्रतिस्मारण] याद दिलाना
(वव १)।
पडिसारणा ली [प्रतिस्मारणा] रस्मारण
(मग १५)।
पडिसारिअ वि [दे] स्मृत, याद किया हुआ
(दे ६, ३३)।
पडिसारिअ वि [प्रतिसारित] १ दूर किया
हुआ, अपसारित (सि ११, १)। २ विनाशित
(सि १४, ५८)। ३ पराङ्मुल (सि १५,
१२)।
पडिसारी ली [दे] जवनिना, परदा (दे ६,
२२)।
पडिसाह सक [प्रति + कयय्] उत्तर देना।
पडिसाहिय (सूत्र १, ११, ४)।
पडिसाहर सक [प्रतिसं + ह] निवृत्त करना।
पडिसाहरेणजा (सूत्र २, २, ८५)।
पडिसाहर सक [प्रतिसं + ह] १ शयना,
शयना। २ बाध ले लेना। ३ ऊँचे से
जाना। पडिसाहरद (भीम, छाया १, १—
पन ३३)। सह. पडिसाहरिता, पडिसा-
हरिय (छाया १, १; मग १४, ७)।
पडिसाहरण न [प्रतिसाहरण] १ शमेद,
संकोच। २ विनाश, 'सोपयेयेन्नापडिसाहर-
णदुष्सा' (मग १५—पन ६६६)।

पडिमिद्ध वि [दे] १ भीर, डरा हुआ । २ भय, घृष्ट (दे ६, ७१) ।

पडिसिद्ध वि [प्रतिपिद्ध] निपिद्ध, निवारित (पाय, उब, घोष १ दो, सछ) ।

पडिसिद्धि ओ [दे] प्रतिस्पर्ष (पट) ।

पडिसिद्धि ओ [प्रतिसिद्धि] १ अनुवृत्ति सिद्धि । २ प्रविष्टल सिद्धि (हे १, ४४; पट) ।

पडिसिद्धि देवो पटिफडि (सति १६) ।

पडिसिल्लो ग पुं [प्रतिरलो] स्लोष के उत्तर में कहा गया श्लोक (सम्मत १४६) ।

पडिसिस्सिगण पुं [प्रतिरप्पण] एक स्वप्न का निरोधी दण्ड, स्वप्न का प्रतिरूप स्वप्न (कण) ।

पडिसोसअ } न [प्रतिशीपे] १ शिरो-
पडिसोसअ } घट्टन, पगो (कण) । २
निर के प्रतिस्पर्ष विर, पिसान (माटा) भादि का
बनाया हुआ गिर (एवह १, २—पत्र ३०) ।

पडिमुद्ध पुं [प्रतिमुत्त] १ ऐलव वर्ष के एक
भांसी कुलवर (सम १४३) । २ ब्रह्मतेज में
उत्पन्न एक कुलवर पुरुष का नाम (पत्र
३, ५०) ।

पडिमुण तव [प्रति + भु] १ प्रतिज्ञा
करना । २ स्वीकार करना । पडिमुणह,
पडिमुणेर (भीर, कण, डरा) । वट्ट,
पडिमुणमाण (वट १, वि ५०३) । संट,
पडिमुणिता, पडिमुणेसा (माय ४, कण) ।
हेट, पडिमुणेषण (वि ५७७) ।

पडिमुण न [प्रतिभय] भीषीवार (उर
४६१) ।

पडिमुण ओ न [प्रतिभय] १ गुलना,
मुनार उगवा जगदैनो, प्रमुणर (वट २) ।
ओ. 'णा (पत्र २) । २ यण (पत्र १२,
१५) ।

पडिमुणगा ओ [प्रतिभय] १ भीषीवार,
स्वीकार । २ पुं विगा का एव दाय,
भाषार्थ-स्वीकारणी विगा साने पर उगवा
स्वीकार ओर अनुमोदन (पत्र ३) ।

पडिमुण वि [प्रतिमुत्त] गणो, विग्,
रूप 'अव निपत्ता निवारिमुत्त' (ठा ५
दो—पत्र २६) ।

पडिमुणि वि [दे] प्रतिगृह (दे १, १८) ।

पडिमुद्ध वि [परिभुद्ध] अत्यन्त शुद्ध (विद्य
८०७) ।

पडिमुय वि [प्रतिभुत] १ स्वीकृत, अभीष्ट
(उर ६ १८४) । २ ग. धनोहार, स्वीकार
(उर २६) । देखो पडिस्सुय ।

पडिमुया देवो पडिमुआ = प्रतिभुत (एवह
१, १—पत्र १८) ।

पडिमुया ओ [प्रतिभुना] प्रव्याय-विशेष,
एक प्रकार की दोसा (ठा १० दो—पत्र
४५४) ।

पडिमुद्ध पुं [प्रतिमुभट] प्रतिपत्ती बोधा
(साल) ।

पडिमुय ग पुं [प्रतिमूचक] कुलवरो की एक
थेली, नगर-द्वार पर रखेवाला जामूग
(वट १) ।

पडिमुय वि [दे] प्रतिगृह (दे १, १६, नवि) ।

पडिमुय पुं [प्रतिमूर्त्य] मूर्त के मानने देला
जाता उपासित मूर्त दिव्यो मूर्त (समु
१२०) ।

पडिमुय पुं [प्रतिमूर्त्य] द्वाय-पुत्र (रान) ।
पडिसेग्गा ओ [प्रतिशय्या] शय्या-विशेष,
उत्तर-शय्या (मग ११, ११; वि १०१) ।

पडिसेग पुं [प्रतिपेक] नक्ष के नीचे का भाग
(पाय ६४) ।

पडिसेय ख [प्रति + सेय] १ प्रतिगृह
मेवा करना, निपिद्ध वस्तु की सेवा करना ।

२ गृहा करना । ३ सेवा करना । पडिसेय,
पडिसेय, पडिसेयति (मग, वट ३, उर) ।

वट्ट, पडिसेयन, पडिसेयमाण (पत्र ५,
सम ३६; वि १७). 'पडिसेयमाणो पडिसेय
अचने अगव पीट्या' (साभा) । ट्ट,
पडिसेयियट्ट (वट १) ।

पडिसेय देवो पडिसेय (निष् १) ।
पडिसेय न [प्रतिपेय] निपिद्ध वस्तु का
सेवा (कण) ।

पडिसेयगा ओ [प्रतिपेयगा] ऊपर देया
(मा २५, ७, उर, मोष २) ।

पडिसेय वि [प्रतिपेय] प्रतिगृह सेवा
करावना, निपिद्ध वस्तु का सेवा करवावना
(मग २५, ७) ।

पडिसेय ओ [प्रतिपेय] १ निपिद्ध वस्तु
का भावना (उर ८०१) । २ सेवा (उर
३२) ।

पडिसेयि नि [प्रतिपेयिन्] शास्त्र-प्रतिपिद्ध
वस्तु का सेवा करनेवाला (उर, पत्र ५;
२८) ।

पडिसेयि वि [प्रतिपेयिन्] जिस निपिद्ध
वस्तु का भावना किया गया हो वह (कण,
धीर) ।

पडिसेयि व [प्रतिपेयिन्] प्रतिपिद्ध वस्तु
की सेवा करनेवाला (ठा ७) ।

पडिसेह व [प्रति + सिध] नियेय करना,
निवारण करना । ट्ट, पडिसेहअन (मग) ।

पडिसेह पुं [प्रतिपेय] नियेय, निवारण,
सेवा (मोष ६ मा, पत्र ६) ।

पडिसेह वि [प्रतिपेय] नियेय-कर्ता
(पत्र ४०, ६१२) ।

पडिसेह न [प्रतिपेय] ऊपर देवो (विदे
२७५१, मा २७) ।

पडिसेहिय वि [प्रतिपेयिन्] जिसका
अतिर किया गया हो वह, निवारित (विना
१, ३) ।

पडिसेहेअउ देवो पडिसेह = प्रति + विपु ।
पडिसेह पुं [प्रतिस्तेनस] प्रतिगृह
पडिसेह प्रगह, वट्टा प्रगह (ठा ४,
४, ह, २, ६८, उर २५२, वि ६१) ।

पडिसेह वि [दे] प्रतिगृह (पट) ।

पडिसेह देवो परिस्तेन (माट—मुग्ग
१८८) ।

पडिसेमि ओ [परिश्रानि] परिश्रम (माट—
मुग्ग ३२१) ।

पडिस्तेय पुं [प्रतिभय] दिन चापुतो की
रुने का स्थान उपाय (मोष ८७ मा,
उर ५७१, स ६८७) ।

पडिस्तेय देवो पडिस्तेय (पत्र ८, ४६) ।
पडिस्तेय तव [प्रति + भाष] १ प्रतिज्ञा
करना । २ स्वीकार करना । वट्ट, पडि-
स्तेयअन (माट—वेणी १८) ।

पडिस्तेय वि [प्रतिस्तेयिन्] करनेवाला,
उपनेवाला (रान) ।

पडिस्तेय तव [प्रति + भु] १ गुलना । २
भीषीवार करना । पडिस्तेय (मग २, १,
३०) । पडिस्तेयगा (मग १० १४, ६) ।
पडिस्तेय (उर १, २१) ।

पडिस्तेय वि [प्रतिभु] १ प्रतिभय ।
२ स्वीकार (मग, ठा १०) । देवा पडिस्तेय ।

पडिसुया देखो पडंसुआ (खाया १ ५) ।
पडिसुया देखो पडिसुया = प्रतिश्रुता (ठा
१०—पत्र ४७३) ।

पडिहच्छ वि [दे] पूर्ण (सण) । देखो
पडिहस्थ ।

पडिहट्ट ॥ [प्रतिहृत्य] अपेक्ष करके (कस,
बृह ३) ।

पडिहड पु [प्रतिभट] प्रतिपत्नी बोद्धा (सि
३, ५३) ।

पडिहण सक [प्रति + हण्] प्रतिपात करना,
प्रतिहिंसा करना । पडिहणति (जम्) ।

पडिहणन [प्रतिहणन] १ प्रतिपात । २
वि, प्रतिपातक (कुप ३७) ।

पडिहणणा की [प्रतिहणन] प्रतिपात (ओप
११०) ।

पडिहणिय देखो पडिह्य (सुपा २३) ।

पडिहणिय देखो पडिमणिय (वर्मसं ७०८) ।

पडिहस्थ वि [दे] १ पूर्ण, नष्ट हुआ (दे ६,
२८, पाप कुप ३४, वज्रा १२६; उप पु
१८१, सुर ४, २३३, सुपा ४८८) । 'पडिह-
स्थविमहब्रह्मप्रणे सा वज्र उज्जाए' (वाग्
१५) । २ प्रतिक्रिया, प्रतिकार बदला । ३ वचन,
बाणी (दे ६, १६) । ४ प्रतिप्रभृत (जीव
३) । ५ मूर्ख, अक्षितीय (पद्) ।

पडिहस्थ सक [दे] प्रत्युपकार करना, उपकार
का बदला चुकाना । पडिहस्थेहि (सि १२,
६६) ।

पडिहस्थ वि [प्रतिहृत्य] तिरस्कृत (बंद) ।

पडिहस्था की [दे] बुद्धि (दे ६, १७) ।

पडिहम्म देखो पडिहण । पडिहम्मेज्जा (सि
५४०) । भवि, पडिहम्मिहहि (सि ५४६) ।

डिह्य वि [प्रतिहृत्य] प्रतिपात प्राप्त (भीप,
कुमा, महा, सण) ।

पडिहण सक [प्रति + हण्] फिर से पूर्ण करना ।
पडिहण (दे ४, २५६) ।

पडिहा भक [प्रति + भा] मान्य होना,
सगना । पडिहाय (वज्रा १६२, सि ४८७) ।

पडिहा की [प्रतिभा] बुद्धि विशेष, ज्ञान-
ज्ञान उत्पन्न करने में समर्थ बुद्धि (कुमा) ।

पडिहा देखो पडिहाय = प्रतिपात, 'पचविहा
पडिहा पजता, तं जहा, पडिपडिहा' (ठा ५,
१—पत्र ३०३) ।

पडिहाण देखो पणिहाण 'मण्डुपडिहाणो'
(जवा) ।

पडिहाण न [प्रतिमान] प्रतिभा, बुद्धि-
विशेष । 'व वि [वत्] प्रतिभावावा (सुप
१, १३, १४) ।

पडिहाय देखो पडिहा = प्रति + भा । पडिहा
यस (स ४६१, स ७५६) ।

पडिहाय पु [प्रतिपात] १ प्रतिज्ञान, पात
का बदला । २ निरोध, मरकाव, रोक
(पवम ६, ५३) ।

पडिहार पु [प्रतिहार] इन्द्र नियुक्त देव (पव
३६) ।

पडिहार पु की [प्रतिहार] द्वारपाल, दरवान
(हे १, २०६ खाया १, ५, स्वप्न २२८,
पवि ७७) । की, 'री (बृह १) ।

पडिहारिय देखो पाडिहारिय (कस, भाचा
२, २, ३, १७, १८) ।

पडिहारिय वि [प्रतिहारिय] शवरुद्ध, रोका
हुआ (स ५४६) ।

पडिहास भक [प्रति + भास्] मान्य
होना, सगना । पडिहासेहि (सी) (साट) ।

पडिहास पु [प्रतिभास] प्रतिभास, प्रतिमान
(हे १, २०६, पद्) ।

पडिहासिय वि [प्रतिभासित] जिसका
प्रतिभास हुआ हो वह (उप ६८६ टी) ।

पडिहुअ पु [प्रतिभू] जापोन, जापोन
पडिहु } बार, मनीतिया (पाप, दे ५, ३८) ।

पडिहु भक [परि + भू] परामर्श करना,
हराना । कवड, पडिहुअमाण (पवि ३६) ।

पडो की [पडो] बक, कपडा (वज्र, सुर ३,
४१) ।

पडोआर पु [प्रतीकार] देखो पडिआर =
प्रतिकार (वेणी १७७, कुप ६१) ।

पडोआर सक [प्रति + क] प्रतिकार करना ।
पडोकरेणि (मे ६६) ।

पडोआर देखो पडिआर (पद् १, १) ।

पडोह देखो पडिच्छ = प्रति + छ् । पडो-
छति (सि २७३) ।

पडोण वि [प्रतीचोन] पश्चिम दिशा से संबन्ध
रखनेवाला (भाचा, भीप, ठा ५, ३) । 'वाय
पुं [वात] पश्चिम का वायु (ठा ७) ।

पडोणा की [प्रतीची] पश्चिम दिशा (ठा
६—पत्र ३५६, सुम २, २, ५८) ।

पडोर पुं [दे] चोर समूह, चोरो का गूथ (दे
६, ८) ।

पडोव वि [प्रतीप] प्रतिहूल, प्रतिपत्नी,
विरोधी (भवि) ।

पडु वि [पडु] निगुण, जतुर, कुमान (भीप,
कुमा, सुर २, १४५) ।

पडु (मग) देखो पडिअ = पतिन (पिंग) ।

पडुआळिअ वि [दे] १ निगुण बनाया
हुआ । २ लाठित, पिटा हुआ । ३ धारित
(दे ६, ७३) ।

पडुकखेव पु [प्रत्युत्क्षेप] १ बाण ध्वनि ।
२ उच्चापन, उठान (मणु १३१) ।

पडुम्खेव पुं [प्रत्युत्क्षेप, प्रनिक्षेप] १ वाग-
ध्वनि । क्षेपण, केंचना, 'समतातपडुकखेव'
(ठा ७—पत्र ३६४) ।

पडुब ॥ [प्रतीत्य] १ श्राद्ध करके (भाचा:
सुम १, ७, सम ३६, नव ३६) । २ भेषजा
करके (मग) । ३ अधिकार करके, 'पडुब ति
वा पण्य ति वा ग्रहिषिच ति वा एण्ढा'
(भाट्ट १, मणु) । 'करण न [करण]
जिंसी की भेषजा से जो कुछ करना, श्राध्दे-
क्षिक कृति (बृह १) । 'भान पु [भाव]
सप्रतियोगिक परार्थ, आपन्निक वस्तु (भास
२८) । 'वयण न [वचन] श्राधेक्षिक वचन
(धम्म १००) । 'सच्चा की [सत्या] सत्य
भाषा का एक भेद, भेषजा-श्रुत सत्य वचन
(पण्य ११) ।

पडुबका उपर देखो, 'जे हिंसंति प्रायमुह
पडुबका' (सुम १, ५, १, ४) ।

पडुजुवइ की [दे] भुवति, सखी (दे ६,
३३१) ।

पडुत्तिया की [प्रत्युक्ति] प्रत्युत्तर, जवाब
(भवि) ।

पडुप्पण ॥ [प्रत्युत्पन्न] १ वर्तमान
पडुप्पन्न } काल (ठा ३, ४) । २ वि.
वातंभाविन, वर्तमान वायु में विद्यमान (ठा
१०, भग ८, ५, सम १३२, उवा) । ३
प्रातःकाल (ठा ४, २), 'न पडुप्पणो य स
जहोचिओ माहारे' (स २६१) । ४ उत्पन्न,

जात (छ ४, २), 'होति य पटुपत्रविण्णस-
खम्मि गयन्त्रिया उदाहरण' (दत्तनि १)।

पट्टल न [दे] १ लघु पिठर, छोटी बाती। २
वि. विप्लवत (दे ६, ६८)।

पट्टवइअ वि [दे] तीक्ष्ण तेज (दे ६, १४)।

पट्टवत्ती स्त्री [दे] जवनिका, परदा (दे ६,
२२)।

पट्टह देखो पट्टहुइ। पट्टहइ (हे ४, १५४
दि)।

पट्टोअ वि [दे] बाल, लघु छोटा (दे ६, ६)।
पट्टोच्छन्न वि [प्रत्ययच्छन्न] भास्त्रावित-

'भावून भट्टविहकम्मत्तपडपपट्टोच्छन्ने' (उवा)।

पट्टोयार सक्र [प्रत्युप + चारय] प्रतिकूल
उपचार करना। पट्टोयारेहि पट्टोयारेहु (मग
१५—पत्र ६७६)। पट्टोयारेहु (मग १५—
पत्र ६७१)। पट्टोयारे (पि १५५)। कवक,

पट्टोय (१ या) रिजमाण, पट्टोयारेउज-

माण (पि १६३, मग १५—पत्र ६७६)।

पट्टोयार पु [प्रत्युपचार] उपकरण (पिठ २८)।

पट्टोयार पु [प्रत्युपचार] प्रतिकूल उपचार

(मग १५—पत्र ६७१, ६७६)।

पट्टोयार पु [प्रत्युपचार] १ भवतरण। २

भाविभाव, 'भट्टहस वासस केरिएण भागार-

भावपट्टोयारे होत्वा' (मग ६, ७—पत्र २७६,
७, ६—पत्र ३०५, सीप)।

पट्टोयार पु [पदायनार] किसी वस्तु का

पक्षों में विचार के लिए भवतरण (छ ४,
१—पत्र १८८)।

पट्टोयार पु [प्रत्युपचार] उपचार का उपचार

(राज)।

पट्टोयार पु [दे] १ सामग्री। २ परिकर,

'पायस पट्टोयार' (सीप ३५२)।

पट्टोल पुष्पी [पटोल] लता विशेष, वरवल

का मांस (परण १—पत्र ३२)।

पट्टोलर न [दे] घर का पीढ़ना भाषण (दे
६, ३२, गा ३१३, काप्र २२४)।

पट्टु नि [दे] घरल, सरेड (दे ६, १)।

पट्टुस पु [दे] गिरि प्रह, पट्टा भी भुग्रा (दे
६, २)।

पट्टुच्छी स्त्री [दे] भैंस, 'पट्टुच्छी' (सीप
८७)।

पट्टुथी स्त्री [दे] १ बहुत रूपवाली। २

सोतेगामी (दे ६, ७०)।

पट्टुय पुं [दे] मैसा, पाडा, युवराजों में
'पाडो', 'शो चैव हमो वसमो पट्टुयपिठ्ठण'
सहइ' (महा)।

पट्टुला स्त्री [दे] चरण-पात, पाद प्रहार (दे
६, ८)।

पट्टुस वि [दे] सुसंयमित, शन्यो तरह से
संयमित (दे ६, ६)।

पट्टाविअ वि [दे] समापित, समाप्त कथा
हुमा (पट्ट)।

पट्टिया स्त्री [दे] १ छोटी भैंस, पाडी। २

छोटी गौ, बटिया (विपा १, २—पत्र २६)।

३ प्रथम प्रसूता गौ। ४ न प्रसूता महिषी

(वव ३)। पट्टी स्त्री [दे] प्रथम प्रसूता (दे
६, १)।

पट्टुआ स्त्री [दे] चरण पात, पाद प्रहार

(दे ६, ८)।

पट्टुहुइ भक [क्षुभ] दुष्प होता। पट्टु-

हुइ (हे ४, १५४, कुमा)।

पट्ट सक्र [पट्ट] १ पठना, श्रम्यास करना।

२ बीतना, बहना। पट्टइ (हे १, १६६,
२३१)। कर्म, पट्टोसइ, पट्टिअइ (हे ३,
१६०)। बह, पट्टैत (गुर १०, १०३)।

कवक, पट्टिअत, पट्टिअमास (गुप २६७,
उप ५३० टी)। छट, पट्टिता (हे ४,
२७१, पट्ट)। पट्टिअ, पट्टिअण (शी) (हे
४, २७१), पट्टि (मप) (पिग)। हेह

पट्टिअ (मा २, कुमा)। क, पट्टियअ,

पट्टेयअ (पसु १, वजा ६)। प्रयो, पट्टावइ

(कुप्र १८२)।

पट्ट पु [पट्ट] भारतीय देश विशेष (इक)।

पट्टग वि [पाठक] पढ़नेवाला (कण)।

पट्टण न [पठन] पाठ, श्रम्यास (जिते
१३८४, कण)।

पट्टम नि [प्रथम] १ पहला भाग (हे १,
३५, कण, उवा, मग कुमा, प्राप् ४८,
६८)। २ प्रथम, नया (दे)। ३ प्रथम, मुख्य

(कण)। 'करण न [वरण] भासा का

परिणाम विशेष (पंचा ३)। 'कसाय पु

[कपाय] कपाय विशेष, फलानुगुणी

कपाय (कम्म)। 'ठाणि, ठाणि नि

[स्थाणिव] अनुगुणानुवि, फलानुगत

(पंचा १६)। 'पाउम पुं [पाठय]

भायाइ मास (निष्ठ १०)। 'समोसरण न

['समयसरण] वर्षा काल, 'विश्वसमोसरण

उजुवइ तं पट्टुच वासावासीगहो पढमसमो-

सरण भएणइ' (निष्ठ १)। 'सरय पुं

['शरन्'] मार्गशीर्ष मास (मग १५)।

'सुप स्त्री [सुरा] नया दास, शराव (दे)।

पट्टमा स्त्री [प्रथमा] १ प्रतिपदा तिथि, पटना

(सम २६)। २ व्याकरण-प्रसिद्ध पहली

विभक्ति एण्देशे पठमा होइ' (मणु)।

पट्टमालिआ स्त्री [दे. प्रथमालिआ] प्रथम

भोजन (सीप ४७ भा, पत्र ३)।

पट्टमिअ } वि [प्रथम] पहला भाग

पट्टमिल्लुअ } मग आ २८, गुप ५७, पि

पट्टमिल्लुग } ४४६, ५६५, जिते १२२६,

पट्टमुअ } (णाया १, ६—पत्र १४४,

पट्टमेरुअ } इह १, पत्र ६२, ११, पण

१६, सण)।

पट्टाइइ [श्री] नीचे देखो (मात्—सैत ८६)।

पट्टाअ सक्र [पाठय] पठाना। पट्टावइ (प्राह

६०)। संक पटापिअण, पट्टावेअण (प्राह

६१)। हइ पटापिअ, पट्टावेअ (प्राह

६१)। क, पटापिअण, पट्टाविअण

(प्राह ६१)।

पट्टावअ वि [पाठक] श्रम्यास (प्राह ६०)।

पट्टाण न [पाठन] पठाना (कुप्र ६०)।

पट्टाविअ वि [पाठिअ] पढ़ाया हुआ (गुप

४५३, कुप्र ६१)।

पट्टाविअअन वि [पाठितयन्] जिसने

पढ़ाया हो वह (प्राह ६१)।

पट्टाविअ } वि [पाठयिअ] श्रम्यास (प्राह

पट्टाविअ } ६०)।

पट्टि } देखो पट्ट = पट्ट।

पट्टिअ } पट्टिअ वि [पट्टिअ] पढ़ा हुआ (कुमा) प्राप्

१८८)।

पट्टिअत } देखो पट्ट = पट्ट।

पट्टिअमाण } पट्टिअ वि [पट्टिअ] पढ़नेवाला (सण)।

पट्टिका वि [प्रदीपिअ] मंड से लिए उन्मत्त-

पित (अवि)।

पट्टुम देखो पट्टम (हे १, ३२, नट—रिक्

२४२)।

पट्टेयअ देखो पट्ट = पट्ट।

पट्टे देखो पट्टाअ। पट्टे (प्राह ६०)।

पण देखो पच (सुपा १, नव १०, कम्म २, ६, २६, ३१) । पण्डो की [नवति] पचानवे, नववे और पच (वि ४४६) । तीस खीन [त्रिंशत्] पैंतीस, तीस और पांच (धीप, कम्म ४, ५३, वि २७३, ४४५) । 'सुवइ देखो' पण्डो (सुपा ६७) । 'रस जि व. [दशन्] पणरह (सण) । 'वन्निय वि [वर्णिक्] पांच रण का (सुपा ४०२) । 'वीस खीन [विंशति] पचोस, बीस और पांच (सम ४४, नव १३, कम्म २) । 'शीसइ की [विंशति] वही अर्थ (पि ४४४) । 'सट्ठि की [पट्ठि] पैंसठ, साठ और पांच (सम ७८, पि २०९) । 'सच न [शत] पांच सौ (व ६) । 'सीइ की [शीति] पचासी, सस्ती और पांच (कम्म २) । 'सुअ न [सुन्] पाँच हिंसा स्थान (राज) ।

पण पुं [पण] १ शई, होऊ, 'लक्खणएणु बुद्धावैतस्स' (महा) । २ प्रतिज्ञा (आक) । ३ धन । ४ विज्ञेय वस्तु, क्लृपाणक, 'तत्थ विदोमिअ पणणण' (सौ ३) ।

पण पुं [प्रण] पन, प्रतिज्ञा (नाट—भातलो १२४) ।

पण पुं न [पञ्चक] १ पाँच का समूह (पच पणन) ३, १६) । २ तप-विशेष, मोची तप (संयोग ५७) ।

पणअत्तिअ वि [दि] प्रकटिअ, ध्यक किया हुआ (दे ९, १०) ।

पणअअ देखो पणपअ (हे २, १७४ टि, राज) ।

पणइ की [पणति] प्रणाम, नमस्कार (पणम ६६, ६९, सुर १२, १३३, कुमा) ।

पणइ वि [पणयिन्] १ प्रणयवाला, स्नेही, प्रेमी । २ पुं. पति स्वामी (पाम, पण्ड ८३७) । ३ याचक, शर्मा, शर्मा (गण्ड २४६, २४१, सुर १, १०८) । ४ मृत्यु, दान, 'पणइराप्पिअ पणइणवो' (गण्ड ७६७) ।

पणइणी की [पणयिनी] पत्नी, शर्मा, प्रिया, जोर (गुप २१६) ।

पणइय वि [प्रणयिक, प्रणयिन्] देखो पणइ=प्रणयिन् (सण) ।

पणगणा की [पणङ्गना] वेरया, वायपना (उप १०३१ टी, सुपा ४६०, कुप्र ५) ।

पणग न [पञ्चक] पच का समूह (सुर ६, ११२, सुपा ६३६, जी ६, द ३१, कम्म २, ११) ।

पणग पुं [दि-पनरु] १ शैवाल, सेवार या सिवार, छुण विशेष औजस में उत्पन्न होता है (बह ४, दस ८, एण १ एदि) । २ कई, वर्षा-काल में भूमि, काष्ठ आदि में उत्पन्न होने-वाला एक प्रकार का जल पैल (पाचा, पदि, अ ८—पण ४२६, कण) । ३ कर्म विशेष, सूक्ष्म पैल (हह ६ भग ७, ६) । देखो पणय (दे) । 'मट्ठिया, 'मत्तियइ की [मृत्तिका] मदी आदि के पूर के क्षतम होने पर रह जाती कोमल चिकनी मिट्टी (जीव १, एण १—पण २२) ।

पणअ अक [प्र + नृत्] नाचना, नृत्य करना । वहु पणअमाण (णया १, ८—पण १३३; सुपा ४७२) । जी. 'णी (सुपा २४२) ।

पणअण न [अनर्त्तन] नृत्य, नाच (सुपा १५४) ।

पणअिअ वि [अनृत्तित] नाचा हुआ, जिसका नाच हुआ हो वह (णया १, १—पण २५) ।

पणअिअ वि [अनृत्त] नाचा हुआ, 'अनया रायपुरी पणअिअ देवस्ता' (महा, कुप्र १०) ।

पणअिअ वि [अनर्त्तित] नचाया हुआ (मवि) । पणट्ट वि [अनर्त्त] अर्थ से नाच को प्राप्त (सूर १, १, २, से ७, ८, सुर २, २४७, ३, ६९, मवि, सव) ।

पणअइ वि [अणअइ] परिगत (धीन) ।

पणपण्णी देखो पणपअ (गण १४७ टि) ।

पणपण्णइम देखो पणपअइम (गण १७४ टि, पि २७३) ।

पणपअ खीन [दे-पञ्चपआगान्] पचपन, पचास और पाँच (हे २, १७४, कण, सम ७२, कम्म ४, ३४, ५३, वि ५) ।

पणपअइम वि [दे-पञ्चपआगान्] पचपनवा, ५४ वां (गण्य) ।

पणपअिअ देखो पणयअिअ (हव) ।

पणपअिअ पुं [पंचप्रसंगिक] व्यतर देवों की एक आति (पव १६४) ।

पणम सक [प्र + नम्] प्रणाम करना, नमन करना । पणमइ, पणमए (स ३४४, मग) । वहु. पणमत (सण) । कवहु. पणमिअत्त (सुपा ८८) । सक. पणमिअ, पणमिऊण पणमिऊण, पणमिआ, पणमिचु (ममि ११८, प्राहु, पि ५६०, भग, नात्त) ।

पणमण न [प्रणमण] प्रणाम, नमस्कार (उव, सुपा २७, ५६१) ।

पणमिअ देखो पणम ।

पणमिअ वि [प्रगत] १ नमा हुआ (भग, धीप) । २ जिसने नमने का प्रारम्भ किया हो वह (णया १, १—पण ५) । ३ जिसको नमन किया गया हो वह 'पणमिओ अणए राया' (स ७३०) ।

पणमिअ वि [प्रगमित] नमाया हुआ (मवि) ।

पणमिर वि [प्रगअ] प्रणाम करनेवाला, नमनेवाला (कुमा, कुप्र १५०, सण) ।

पणय सक [प्र + णी] १ स्नेह करना, प्रेम करना । २ प्रार्थना करना । वहु. पणअंत (से २, ६) ।

पणय वि [प्रगत] १ जिसको प्रणाम किया गया हो वह, 'नरणाहपणयपयकमत्त' (सुपा २४०) । २ जिसने नमस्कार किया हो वह, 'पणयपअिवस्स' (सुर १, ११२, सुपा ३६१) । ३ प्राय (सूर १, ४, १) । ४ निम्न, नीचा (जीव ३, राय) ।

पणय पु [प्रगय] १ स्नेह, प्रेम (णया १, ६, महा, गा २७) । २ प्रार्थना (गण्ड) । 'वत्त वि [वन्] स्नेहवाला, प्रेमी (उप ३३१) ।

पणय पुं [दि] १४, कर्म (दे ६, ७) ।

पणय पुं [दि-पनरु] १ शैवाल, सेवार, छुण विशेष । २ कई, जल-मैल (धोप ३४६) । ३ सूक्ष्म पैल (एह १, ४) ।

पणयात्त वि [दे-पञ्चचत्वारिंश] पैंतालीसवाँ, ४४ वां (पण ४४, ४६) ।

पणयात्त पुं धीन [दि-पञ्चचत्वारिंश] पणयालीस पैंतालीस, पालीस और पाँच, ४४ (सम ६८, कम्म २, २७, वि ३, भग, सम ६८, धीप, पि ४४४) ।

पणन देहो पणम । पणवद (भवि) । पणवह
(हे २, १६५) । पणवेंन (भवि) ।

पणन पुं [पणव] धौवार, 'धौ' धवार (सिरि
१६६) ।

पणन पुं [पणव] पट्ट, दोन, वाच विरोप
(धौगः कम्प, धौव) ।

पणनयिय देहो पणनयिय (धौग) ।

पणनयण } देहो पणनय (सि २६५; २७३;
पणनय } मग हे २, १७५ डि) ।

पणनयिय पुं [पणनयिय] ध्यन्तर देहो की
एक जाति (पणह १, ५) ।

पणनिय देहो पणनिय = प्रणल (भवि) ।

पणनीसी की [पञ्चविंशतिन] पचोस वा
समूह (संबीष २५) ।

पणन पु [पणन] वृष-विरोप, बटहल या
बटह (सि २०८, नाट—मुच्छ २१८) ।

पणनुंदरी की [पणनुन्दरी] देखा (धर्मवि
१२७) ।

पणाम सव [अपैय] अपैय करना, देने
के लिए उपस्थित करना । पणामद (हे ४,
१६), 'पणिमी य पणामद वस्त्याणद'
पणामद' (मुषा ३६३) ।

पणाम सव [प्र + नमय] नमना । पणामेद
(महा) ।

पणाम सव [उप + नी] उपस्थित करना ।
पणामेद (महा ७१) ।

पणाम पुं [पणाम] समवार, समन (हे ७,
६, भवि) ।

पणामिणिया की [दि] क्षीविपम प्रणय
(हे ६, ३०) ।

पणामय रि [अपैय] देखा (मुष १, २, २) ।
पणामय रि [प्रणामक] १ नमानेगा ।
२ रुन्ध भावि विषय (मुष १, २, २७) ।

पणामिअ रि [अपिन्] समर्पित, देने के
लिए परा हुआ (पाप, मुषा), 'धन्यामि-
सि गतिं दुमुसुरेण महामनस्सीए मुं'
(देवा ५०) ।

पणामिअ रि [प्रणामित] नमाया हुआ
(ने ४, ११, मा २३) ।

पणामिअ रि [प्रामिअ] नन, नमा हुआ,
'पणामिअ सवद' (म ११६) ।

पणायक } वि [प्रणायक] ते जानेवाला,
पणायक } 'निज्जाणमलममपणायक'
(पणह २, १; पणह २, १ टी, वव १) ।

पणाल पुं [पणाल] मोरी, पानी भादि जाने
का रास्ता (सि १३, ५४, उर १, ५; ६) ।

पणालिआ की [प्रणालिक] १ परम्परा
(मुष १, १३) । २ पानी जाने का रास्ता
(मुषा) ।

पणाली की [प्रणाली] मोरी, पानी जाने का
रास्ता (पणह) ।

पणाली की [प्रणाली] शरीर-प्रमाण लम्बी
साडी (पणह १, ३—पण ५४) ।

पणाम सक [प्र + नाशय] विनाश करना ।
पणामेद, पणसए (महा) ।

पणाम पु [प्रणार] विनाश, उच्छेदन
(भावम) ।

पणामसण रि [प्रणामान] विनाश करने-
वाला, 'धन्यामपणामसणो' (पणिः कम्प) ।
की, 'णी' (श्रा ५६) ।

पणामसिय रि [प्रणामित] जिसका विनाश
किया गया हो वह (कम्प, भवि) ।

पणाम रि [दि] प्रकट, व्यक्त (हे ६, ७) ।

पणाम रि [प्रणीत] रचित (मुषनि ११२) ।

पणाम न [पणित] १ बेचने योग्य बस्तु
(हे १, ७४, ६, ७, छाया १, १) । २
व्यवहार, लेन-देन, व्यवहार्य (अप १५,
छाया १, ३—पण ६५) । ३ शर्त, होर,
एक तरह का मुषा (माय ६२) । 'भूमि,
'भूमि की ['भूमि, 'भूमि] १ धारण
देख-विरोप, जहाँ अगवान गहरीर ने एक
कीमत्त वितामा का (सव, कम्प) । २ रिजेय
बस्तु रखने का स्थान (मग १५) । 'साया की
['साया] हाट, दूकान (इह २, निह १६) ।

पणाम न [पणय] निजेय बस्तु (मुषा २०५,
धीन, धावा) । 'गिह, 'धर न ['गुह]
दूकान, हाट (निह १२, धावा २, २, २) ।

'साया की ['साया] हाट, दूकान (मावा) ।
'धय पुं ['धय] दूकान, हाट (मावा) ।

पणाम रि [प्रणीत] मुन्दर, मनोहर । 'भूमि
की ['भूमि] मनोज्ञ भूमि (मा १३) ।

पणामिअ रि [पणितार्थ] धोर (एव ७,
३७) ।

पणामिआ की [पणयशाळा] बजार, धन
या माल रखने का घरा हुआ स्थान, गोदाम
(धावा २, २, २, १०) ।

पणिआ की [दि] कठोटिका, मिरली हड्डी,
लोपडी (हे ६, ३) ।

पणिदि } वि [पञ्चेन्द्रिय] स्वप्न, जीवन,
पणिदिय } नाक, घ्रांस धीर कान इन पाँचों
इन्द्रियोंवाला प्राणी (कम्प २; ४, १०, १६,
१६) ।

पणिद्ध रि [प्रनिगय] विरोप लिगय (मणु
२१५) ।

पणिधाण देहो पणिहाण (भवि १८६;
नाट—विक्र ७२) ।

पणिधि पुकी [प्रणिधि] माया, धन, 'पुणो
पुणो पणिधि' (धीए हरिता उगहसे जण'
(सम ५०) । देहा पणिहि ।

पणियथ रि [प्रणियसित] पहना हुआ
(धीए) ।

पणिलिअ रि [दि] हट, माप हुआ (पट्ट) ।

पणितइअ रि [प्रणिपतित] नव, नया हुआ,
'पणितइअपणितइ ए देनालुणिया । उत्तम-
पुरिस' (छाया १, १६—पण २१६; स ११;
उव ७८८ टी) ।

पणितइअ रि [प्रणिपतित] जिसको नमस्कार
रिचा गया हो वह, 'नत्पहूहि पणितइयो...'
कीरे' (धर्मवि ३७) ।

पणियथ सव [प्रणि + पण] नमन करना,
गन्दन करना । पणियथामि (कम्प, साध
६१) ।

पणियाय पुं [प्रणिपात] गन्दन, नमस्कार
(मुष ४, ९८, मुषा २८, २२२; महा) ।

पणिहा सव [प्रणि + धा] १ पणाय विनमन
करना, ध्यान करना । २ धरना करना । ३
प्रतिपादन करना । ४ बेठा करना, प्रवृत्त
करना । ५ पणिहाय (छाया १, १०;
मा १३) ।

पणिहाण न [प्रणिधान] १ पणाय ध्यान,
मना-निवेग, धरपान (उप १६, १७, म ८३,
प्राय) । २ प्रयोग, ध्यान, बेठा; 'जिहिई
पणिहाणे पणुपेते' (महा—मणुपणुपेते,
कम्पणुपणुपेते, कम्पणुपणुपेते' (दा १, १, ५,
१०, मा १८; उवा) । ३ धनितार, धनमात

‘सनायाणाणि सव्याणि वज्जेज्जा पणिहाणव’
(उत्त १६, १४)।

पणिहाय देखो पणिहा।

पणिहि पुळी [प्रणिधि] १ एकाग्रता, धनवान
(पण्ह १, ५)। २ कामना, धर्मिता (स
८७)। ३ पु. वरपुत्र वृत्त (पण्ह १, ३,
पात्र, सुर १, ४, सुवा ४६२)। ४ वेणु,
व्यापार (वसति १)। ५ माया, कपट (भाव
४)। ६ व्यवस्थापन (राज)।

पणिहि पुळी [प्रणिधि] बडा निधि (दस
८, १)।

पणिहिय वि [प्रणिहित] १ प्रयुक्त व्यावृत्त
(वसति ८)। २ व्यवस्थित (भाव ४)।

पणीय वि [प्रणीत] १ निर्मित, कृत, रचित
‘वहसेसिप पणीय’ (विसे २५०७, सुर १२,
६२, सुवा २८ १६७)। २ निर्माक, कृत
आदि लोह की प्रचुरतावाला, ‘विमूना इत्थी-
संसग्गी पणीयसभोपण’ (वस ८, ५७, उत्त
१६, ७ शोध १५० भा, श्रीप. बृह ५)। ३
निर्वसित, प्रदत्त, आश्रयित (धनु, भाव
३)। ४ मनोक्त, सुदर (भग ५, ४)। ५
सम्यक् आचरित (सुम १, ११)।

पणीहाण देखो पणिहाण (भाव ८, हित
१५)।

पणुण् देखो पणोळ। वरु. पणुहेमाण (पि
२२४)।

पणुल्लिअ देखो पणोल्लिअ (वास, सुवा २४,
प्राप् १६६)।

पणुनील छीन [पञ्चविंशति] सख्या विशेष,
पचीग बीग श्रीर पांच। २ जिनकी संख्या
पचीस हो वे (स १०९, पि १०४ २७३)।

पणुनीसइम वि [पञ्चविंशतितम] पचीसवा,
२५ वां (विसे ३१२०)।

पणोह वर [प्र+पुन] १ प्रेरणा करना।
२ फैलना। ३ गार करना। पणोत्तइ
(प्राप्) पणोत्तइ वण्माइ पणोत्तवण्माइ (उत्त
१२, ४०)। वण्ह. पणोल्लिजमाण (छाया
१, १ पण्ह १, ३)। संघ. पणोह (सुम
१, ८)।

पणोएण न [प्रणोदन] प्रेरणा (छा ८, उ
५ ३४१)।

पणोएय वि [प्रणोदर] प्रेर (भाव)।

पणोल्लि वि [प्रणोदिन] १ प्रेरणा करनेवाला।

२ पु. प्राज्ञन दण्ड, बैल इत्यादि हड्डिने की
लठकी (पण्ह १, ३—पत्र ५४)।

पणोल्लिअ वि [प्रणोदित] प्रेरित (श्रीम. पि
२४४)।

पणण वि [प्रण] जानकार दस, निपुण (उत्त
१, ८, सुम १ ६)।

पणण वि [प्रण] १ प्रज्ञावाला बुद्धिमान् दस
(हि १, ५६; उव ६२३)। २ वि. प्राज्ञ-
सम्बन्धी (सुम २, १)।

पणण न [पर्ण] वन पत्ता, पत्तो (कुमा)।

पणण देखो पणिअ = पण (वाट)।

पणण छीन [दे] पचास, ५०। छी. °ण्णा
(पह)।

पणण देखो पंच, पग (पि २७१, ४४०,
४४५)। °रस पि. व. [°दरान्] वनह,
१५ (सम १६, उवा)। °रसम वि [°दश]
पनहवा (उवा)। °रसी छी [°दशी] १
पनहवी। २ तिथि विशेष (पि २७३, वय)।
°रह देखो °रस (प्राप्)। °रह वि [°दश]
वनहवा, १५ वां (प्राप्)। देखो पन =
पच।

पणण वि [पाणी] पूर्ण सम्बन्धी, पत्ते का,
पत्ती से सन्ध रखनेवाला (दान)।

पण्ण° देखो पण्णा°। °व वि [°वन्] प्रज्ञा-
वाला (उव ६१२ टी)।

पण्णइ [पञ्चमा] भगवान् धर्मनाथ की शासन-
देवी (पत्र ७७)।

पण्णग पु [पञ्चग] सच, सपि (उव ७२८
टी)। °सन पुं [°शन] गहक पत्ती (पिच)।
देखो पञ्चय।

पण्णग वि [दे. पञ्चग] दुर्गची। °तिल पु
[°तिल] दुर्गची तिल (राज)।

पण्णट्ठि छी [पञ्चपट्ठि] पैठक, साठ श्रीर
पांच, ६५ (पण्ह)।

पण्णत्त वि [प्रज्ञा] निरचित, चर्चित, बचित
(श्रीप. उवा, छा ३, १, ४, १, २, निपा
१, १, प्राप् १२१)। २ प्रणीत, रचित
(भाव, वंद २०, वय ११, ११, श्रीप)।
पण्णत्ति छी [प्रज्ञा] १ विद्यादेवी विशेष
(व १)। २ वैरा ध्यान रस निषेध मुनि-
प्रज्ञा आदि उपाय-वय (छा ३, १, ४, १)।

३ विद्या विशेष (मावृ १)। ४ प्रत्यय,
प्रतिपादन (उवा, वय ३)। °विज्जणां छी
[°क्षेपणां] कथा का एक भेद (छा ४, २)।
°वस्सेज्जणां छी [°क्षेपणां] कथा का एक
भेद (राज)।

पण्णपणिय पु [पण्णपणि] व्यन्तर देवो
की एक जाति (इक)।

पण्णय देखो पण्णग (सि ४, ४)।

पण्णय सक [प्र+ज्ञापय] प्रत्यय करना,
उपदेश करना, प्रतिपादन करना। पण्णवेह,
पण्णवैति (उवा, भग)। वरु. पण्णययत
पण्णवेसाण (भग, पि ५५१)। कृ पण्ण-
यणिज्ज (इ ७)।

पण्णयग वि [प्रज्ञापक] प्रत्ययक, प्रतिपादक
(विसे ५४६)।

पण्णयण न [प्रज्ञापन] १ प्रत्यय, प्रति-
पादन। २ शास्त्र, सिद्धान्त (विसे ८६४)।

पण्णयण वि [प्रज्ञापन] ज्ञापक, निरूपक
(ब्रह्मो ५)।

पण्णयणा छी [प्रज्ञापना] १ प्रत्ययणा, प्रति-
पादन (छाया १, ६, उवा)। २ एक जैन
आयम वय, ‘प्रज्ञापना’ सूत्र (भग)।

पण्णयणिज्ज देखो पण्णय।

पण्णयणी छी [प्रज्ञापनी] भाषा विशेष, धर्म-
बोधक भाषा (भग १०, ३)।

पण्णयण छीन [दे. पञ्चपञ्चाशात्] पच-
पन, पचास श्रीर पांच (दे ६, २७, पह)।
पण्णयय देखो पण्णयग (विसे ५४७)।

पण्णययत देखो पण्णय।

पण्णययि वि [प्रज्ञापित] प्रतिपादित, प्रह-
पित (धनु. उत्त २६)।

पण्णयैत्तु नि [प्रज्ञापयित्] प्रतिपादक, प्रह-
पक करनेवाला (छा ७)।

पण्णवेमाण देखो पण्णय।

पण्णय वय [प्र+हा] १ प्रवर्ष से जानना।
२ ग्रन्थी लपट जानना। बर्ष. पण्णयपति
(भग)।

पण्णय देखो पण्ण (दे)।

पण्णय छी [प्रज्ञा] मनुष्य की दस धरत्वायो
में पाँचवीं धरत्वा (सु १६)।

पण्णय छी [प्रज्ञा] १ बुद्धि, मति (उव १५४,
७२८ टी; भिच् १)। २ मा (सुम १,

१२) । *परिसद, *परीसद धुं [परिपद, *परीपद] १ बुद्धि वा बर्धन करना । २ बुद्धि के भ्रमावर्धन में रोक न करना (मग ८, ८; पव ८६) । *मय धुं [भद] बुद्धि का अभिमान (सूत्र १, १३) । *वंत वि [वन्] ज्ञानवान् (राज) ।

पण्णाग वि [प्रज्ञ] विद्वान् (पचा १७, २७) ।

पण्णाड देवा पन्नाड पण्णाड (दि ६, २६) ।

पण्णाग न [प्रज्ञान] १ प्रष्टृ ज्ञान । २ सम्यग् ज्ञान (सन ५१) । ३ ज्ञान, शास्त्र (मावा) । *य वि [वन्] १ ज्ञानवान् । २ शास्त्र (मावा) ।

पण्णागह (मग) पि. न [पञ्चदशन] पनरह (पिग) ।

पण्णागीसा श्री [पञ्चजिंशति] पचीस, बीस बीर पांश, २५ (पद्) ।

पण्णास श्रीन [दे. पञ्चाशत्] पचास, ५० (दि ६, २७, पद्, वि २७३; ४४५; कुमा) । देवी पचास ।

पण्णासग वि [पञ्चाशक] पचास वर्ष की उम्र का (तेंदु १७) ।

पण्णुगीम देवो पण्णुगीस (स १४६) ।

पण्णु धुंजी [प्रन] प्रन, प्रच्छा (दि १, ३५; कुमा) । श्री. °ण्हा (दि १, ३५) । (दि १, १५) । *पाहण न [पाहन] जैन मुनि गण का एक कुल (वी ३८) । *पामरण न [प्यारण] ग्याहण जैन भग-भग (पण्ण २, ५; ठा १०; विवा १, १; मग १) । देवी पसिण ।

पण्णअ मर [प्र+न्त्] भरल, टपनता, 'एको पण्णअ मणो' (मा ४०६, ४६२ म) ।

पण्णअ धुं [दे. प्रनर] १ सन-पाच, पण्णअ १ सन व द्रुप का ऋता (दि ६, ३; वि २२१; राज, संठ ७, पद्, २ भरल, टपनता, सिंगुएर' (दि ४८७) ।

पण्णअ धुं [पहुर] १ क्षताय देह-विशेष । २ वि. उच देवा का निरागो (पण्ण १, १—पत्र १४) ।

पण्णअग न [प्रनपन] सरण, भरता (विन १, १२) ।

पण्णविअ देवो पण्णअ (दि ६, २३) ।

पण्हा देवो पण्ण ।

पण्णि धुंजी [पारिग] पीतो का ग्रयोभाग, शुल्क की नीचला हिस्सा, एही (पण्ण १, ३; दे ७, ६२) ।

पण्णिया श्री [प्रदिनम] एही, शुल्क का ग्रयोभाग, भित्तु पहिहयमी चरणे विवा-रिज्ज वाहिरमो (विहय ४८६) ।

पण्णअ वि [प्रनुत्] १ क्षरित, ऋत हुआ । २ बिखरे ऋते का प्रारम्भ किया हो यह, 'एण्हवपवोहयमी' (पत्र ७६, २०. हे २, ७५) ।

पण्णअर वि [प्रलोह] ऋतेवाला, 'हवण्णसेल्ल जरणगीवि एण्हअर वोहमणुणे' । अन्नवीक्षणपण्णअर पुत्तम पुण्णहि पाविहि' (मा ४६२) ।

पण्णोत्तर न [प्रनोत्तर] सवान-जवाव (सुर १६, ४१, कम्प) ।

पण्णु देवो पण्णु (राज) ।

पतार सव [प्र+सारय्] ठगना । सह-पतारिज (मगि १७१) ।

पतारग वि [प्रतारक] बचन, ऊग (पर्मसं १७७) ।

पनिण्ण [वि [प्रतीर्ण] वार पहुँचा हुआ, पतिप्र [निन्तील] (राज, पण्ण २, १—पत्र ६६) ।

पनुण्ण [वि [प्रनुज] गलत का बना हुआ पनुज १ वल (मावा २, ५, ७) ।

पनेरस [वि [प्रयोदश] प्रष्ट तेहदा । पनेलस [वास न [वर्ष] १ प्रष्ट तेहदा । वर्ष । २ प्रष्ट तेहदा वर्ष । ३ प्रस्थित तेहदा वर्ष (मावा) ।

पत्त वि [प्रात्] मिना हुआ, पावा हुआ (पत्र, सुर ४, ७०, मुगा ३५७, जी ४४ दे ४६, प्रागु ३१, १६२, १८२, मा २४१) । *यान्, *यात् न [वाय्] १ ज्येष्ठ-विशेष (राज) । २ वि सरमरोचित (स ४६०) ।

पत्त न [पत्र] १ पगी, पगा दण, पत्र (पत्र, सुर १, ७२. जी १०, प्रागु ६२) । २ पत्र पत्र, पत्र (पगा १, १—पत्र २४) । ३ पत्र, निवार निगा जडा है यह, बाज, पत्ता

(स ६२; सुर १, ७२. से २, १७३) । *च्छेज्ज न [च्छेय] कला-विशेष (मीप, स ६५) । *मंत वि [वत्] पत्रवाला (पगा १, १) । *रह धुं [रथ] पत्ती (पावा) । *सेहा जी [लेहा] चन्दनादि से पत्र के झाड़िवाली रचना विशेष, भूपा ना एक प्रकार (मगि २८) । *वही जी [वही] १ पत्रवाली लता । २ मुंह पर चन्दन यादि से की जाती पत्र-श्रेणी-मुक्त्य रचना (कुप्र ३६५) । *विट न [वृत्त] पत्र का कथन (वि ५३) । *विटिय वि [वृत्तक, *वृत्तीय] शीघ्रिय जन्तु-विशेष, पत्र वृत्त में उद्यम होता एक प्रकार का शीघ्रिय जन्तु (पण्ण १—पत्र ४५) ।

*विच्छुय धुं [वृश्चिक] जीव-विशेष, एक तरह का बुधिक, चतुरिन्द्रिय जीवों की एक जाति (जीव १) । *येंट देवो [विट (वि ५३) । *सगडिआ जी [शरटिका] पत्तों से मरी हुई गांधी (मग) । *ममिद्ध [समृद्ध] प्रभूत वस्त्रवाला (पावा) । *हार धुं [हार] शीघ्रिय जन्तु विशेष (पण्ण १—पत्र ४५, उत ३६, १३८) । *हार धुं [हार] पत्ती पर निरिह करनेवाला वातप्रत्य (मीप) ।

पत्त न [पान्] १ मानन (हुमा, प्रागु १६) । २ भाषा, भाष्य, स्थान (हुमा) । ३ दान देने योग्य कुली लोक (उप ६४८ जी, महा) । ४ सगतार बहीन उपवास (सबोध ५८) । *यंध धुं [वण्ण] पावो की बाँधने का बपटा (मीप ६६८) । देवो पाय = पाव ।

पत्त वि [प्रात्] प्रसारित (वन्) ।

पत्तअ वि [प्रत्ययित्] निरग्न (मग) ।

पत्तअ वि [पत्रनि] १ मग पत्रवाला । २ बुधिय पत्रवाला (पगा १, ७—पत्र ११६) ।

पत्तअ धुं [दे] वनहानि-विशेष, एक प्रकार का वृक्ष (पण्ण १—पत्र ३१) ।

पत्तच्छेज्ज न [पश्चच्छेय] माण से पगी केपने की कता (जं २ ही पत्र ११७) । २ मरवाही का काम, शोधने का काम (पगा २, १२, १) ।

पत्तट्ट वि [दे प्रासा] १ बट्ट टिप्पण, निदान-विष्ट टिप्पण (दि ६, ९८; सुर १,

८१, सुपा १२६, मग १४, १, पाप्म १२
समर्थ (जीवस २८४) ।

पत्तु वि [दे] सुन्दर, मनोहर (दे ६, ६८) ।

पत्तण देखो पट्टण (राज) ।

पत्तण न [दे. पट्टण] १ इषु फलक, बाण
का फलक । २ पुल, बाण का मूल भाग (दे
६, ६४; गा १००) ।

पत्तणा की [दे. पट्टणा] १—२ ऊपर
देखो (मउठ, से १५, ७३) । ३ पुल से की
जाती रचना-विशेष (से ७, ५२) ।

पत्तणा की [प्रापणा] प्राप्ति (पञ्च ४) ।

पत्तपसाइआ की [दे] पत्तिम की एक
की पगड़ी, जिसे भील लोग पहनते हैं (दे
६, २) ।

पत्तपिसालस न [दे] ऊपर देखो (दे ६, २) ।

पत्तय न [पन्नक] एक प्रकार का श्वे (ठा
४, ५) ।

पत्तय देखो पत्त (महा) ।

पत्तरक न [दे. प्रतरक] भाग्यपूर्ण विशेष
(पण्ड २, ५—पत्र १४६) ।

पत्तल वि [दे] १ शीघ्र, तेज (दे ६, १४),
‘मयणाई समायिपत्तलाह

परुरिसजीवहरणाह ।

प्रतिपत्तिपार्श्व न मुझे खगमा

इक न न मारति १’

(बज्जा ६०) । २ पतला, हवा (दे ६, १४,
बज्जा ४६) ।

पत्तल वि [पन्नल] १ पत्र समूह, बहुत पत्ती-
वाला (पाप्म, से १, ६२, गा ५३२, ६३५,
दे ६, १४) । २ पत्रमाला (भीष, जै २) ।

पत्तल न [पन्न] पत्ती, पत्तें (हे २, १७३,
प्राणा, सण, हे ४, ३८७) ।

पत्तलण न [पन्नलण] पत्र-समूह होना, पत्र-
बटल होना, ‘प्रागनिपारिखिअणुडुडगत्त-
सणमुलहवनेम’ (गा ६२६) ।

पत्तली की [दे] कर-विशेष, एक प्रकार का
राज देग, ‘गिरहह सदैवपत्तलि मति’ (सुपा
४६३) ।

पत्तहारय वि [पन्नहारक] पत्तों को देखने
का काम करनेवाला (सणु १४६) ।

पत्ताना सक [दे] पताना, मिटाना ‘मुन्छत
अनु कोवि जो जाणद को मुन्छह विवात
पताणह’ (अवि), पत्ताणहि (अवि) ।

पत्तामोह पुन [आमोटपन्न] तोडा हुआ पत्र,
‘दमे य कुमे य पत्तामोह च गेएहद’ (अत
११) ।

पत्ति की [प्राप्ति] लाभ (दे १, ४२, उअ
२२६; वेदय ८६४) ।

पत्ति पु [पत्ति] १ सेना विशेष, जिसमें एक
रथ, एक हाथी, तीन घोड़े और पाँच पैदल
हों । २ पैदल चलनेवाली सेना (उअ
७२८ टी) ।

पत्ति २ सक [प्रति + इ] १ जाचना । २
पत्तिअ ३ विरवास करना । ३ आयय करना ।

पत्तिप्रह, पत्तियवि, पत्तिप्रमि, पत्तिप्रमि
(से १३, ४४, पि ४८७, से ११, ६०,
मग) । पत्तिपजा, पत्तिम, पत्तिहि, पत्तिपु
(सुपा, गा २१६, ६६६, पि ४८७) । बहू,

पत्तिअंत, पत्तियमाण (गा २१६, ६७८,
प्राचा २, २, १०) । सङ्क. पडियम्ब,
पत्तियाइत्ता (सुम १, ६, २७, उअ
२६, १) ।

पत्तिअ वि [पत्ति] सजाव-पत्र, जिसमें पत्र
उल्लेख हुए हों वह (छाया १, ७, ११—
पत्र १७१) ।

पत्तिअ वि [प्रतीति, प्रत्ययित] प्रतीति-
वाला, विश्वस्त (ठा ६—पत्र ३५५, कप्य,
वस) ।

पत्तिअ न [श्रीतिरु] श्रीति, स्नेह (ठा ४,
३, ठा ६—पत्र ३५५) ।

पत्तिअ पुन [प्रत्यय] प्रत्यय, विरवास (ठा
४, ३—पत्र २३५, धर्म २) ।

पत्तिअ न [पत्तिरु] मलव पत्र (कप्य) ।

पत्तिआ की [पत्तिरा] पत्र, पत्तें, पत्ती
(हुमा) ।

पत्तिआअ देखो पत्तिअ = प्रति + इ ।
पत्तिप्रायह (प्राह ७५), पत्तिप्रापति (पि
४८७) ।

पत्तिआय सव [प्रति + आयय] विरवास
करना, प्रतीति बनाना । पत्तिप्रावेद (प्राव
२३) ।

पत्तिग देखो पत्तिअ = प्रीतिक (पचा ७,
१०) ।

पत्तिज देखो पत्तिअ = प्रति + इ । पत्तिअसि,
पत्तिअमि (पि ४८७) ।

पत्तिज्जाव देखो पत्तिआन । पत्तिज्जाव
(सुपा ३०२) । पत्तिज्जेमि (धर्मवि १३४) ।

पत्तिसमिद्ध वि [दे] तीक्ष्ण (दे ६, १४) ।

पत्ती की [दे] पत्ती की बनी हुई एक तरह
की पगड़ी जिसे भील लोग सिर पर पहनते
हैं (दे ६, २) ।

पत्ती की [पत्ती] की, भार्मा (उअ ७ १६३,
आप ६६, महा, पाप्म) ।

पत्ती की [पत्ती] भाजन, पात्र (उअ ६२२,
महा धर्मवि १२६) ।

पत्तु देखो पाय = इ + आप ।

पत्तुगद (श्री) वि [प्रत्युपगत] १ सामने
गया हुआ । २ वापस गया हुआ (नाद,—विज
२३) ।

पत्तेअ २ न [प्रत्येक] १ हर एक, एक एक
पत्तेअ ३ (हे २, १०, हुमा जिन् १; पि
३४६) । २ एक की तरह, एक के सामने,

‘पत्तेय पत्तेय बणनअपरिविज्जातमि’ (जीव ३) ।
३ न कर्म विशेष, जिसके उदय से एक जीव

का एक भ्रमण शरीर होता है, ‘पत्तेयतण
‘पत्तेयतण’ (कम्म १, ४०) । ४ पुनर्-पुनर्,

अनव भ्रमण (कम्म १, ४०) । ५ पुन. वह
जीव जिसका शरीर भ्रमण हो, एक स्वतंत्र

शरीरवाला जीव ‘साहाराणपत्तेमा बणत्सह
जीवा दुहा सुए भणिया’ (जी ८) । ‘गाम

न [नानाम] देखो ऊपर का तीसरा धर्म
(राज) । ‘निगोयय पु [निगोदक] जीव-

विशेष (कम्म ४, ८२) । ‘मुद्ध पु [मुद्ध]
अनियमवि भावना दे नारणमुत्त निस्सो ए’

वस्तु से परमाणु का भाग मिलती उत्पन्न
हुमा हो ऐसा जैन भुजि (महा, नव ४३) ।

‘मुद्धसिद्ध पु [मुद्धसिद्ध] अन्धेअमुद्ध
होतर भुजि को प्राप्त जीव (धर्म २) ।

‘रस वि [रस] विभिन्न रसवाला (ठा ४,
५) । ‘शरीर वि [शरीर] १ विभिन्न

शरीरवाला ‘पत्तेयतणएण हं हत्तो तिउर-
संभाया’ (वच ३) । २ न, कर्म विशेष, जिसके
उदय से एक जीव का एक निमित्त शरीर

होवा है (पह १, १)। 'सरीरनाम न
[सरीरनामन] वही पूर्वोक्त अर्थ (सम
६७)।

पत्तये वि [प्रत्येक] याद्वय वारण (सुदि
१२०, १३१ टी)।

पत्तय सव [प्र + अर्थय] १ प्रार्थना करना।
२ अभिनया करना। ३ घटकाना, रोकना।
पत्तये, पत्तयति (उव, धीय)। नर्म, पत्तयञ्चि
(महा)। वह पत्तयत, पत्तयित, पत्तयेअमाण
(माट—मागवि २५, मुग २११, प्राप् १२०)
नाम पत्तयेमाणा अनामा अति
मुगड' (उ १५७ टी)। बबहु पत्तयज्जत,
पत्तियज्जमाण (गा ४००, सुर १, २० से
१, २३१, कय)। वृ, पत्तय, पत्तयिज्ज,
पत्तयेयज्ज (मुग १७०, सुर १, ११६, मुग
१४८ पह २, ४)।

पत्तय वृ [पार्थ] १ धनुं, मयम पाएइव
(न ६१२ वला १२६, कुमा)। २ पाछाल
देश के एक राजा का नाम (उत्तम १७, ८)।
३ महिषपुर नगर का एक राजा (मुग
६२६)।

पत्तय वृ [पार्थ] १ प्रार्थन प्रार्थना (राय)।
२ वीरिनों का उवचाम (संवीष ५८)।

पत्तय देखो पत्तय = पत्तय (गा ८१४, पत्तम
१७, ६४, राज)।

पत्तय दलो पत्तय = प्र + अर्थय।

पत्तय वृ [पार्थ] १ बुद्ध का एक परिमाण
(बु ३ जीयव ८८ वृ २६)। २ संनिवा,
एक बुद्ध का परिमाण (उप वृ ६६)
'पत्तया व उवुरा माओ हीएमाणा उ तेपुणा'
(बव १)।

पत्तय देवा पत्तय = प्र + अर्थय।

पत्तय देवो पत्तया।

पत्तया दलो पत्तय (उव)।

पत्तय वृ [प्रानर] १ रचना-विशेषना
गुरु (डा १ ४—पत्त १०६)। २ मानों
क बीच का अउपण मग (पएण २ वम
२५)।

पत्तय वि [प्रानर] १ विद्याना हुआ। २
पेना हुआ (मग ९ ८)।

पत्तया न [प्रार्थन] प्रार्थना (बहा २६)।

पत्तयणा } श्री [प्रार्थना] १ अभिनाया,
पत्तयणा } वाग्धा (पाव ४)। २ याचना-
माग। ३ विज्ञानि, निवेदन (मग १२, ५,
सुर १, २, मुग २६६, प्राप् २१)।

पत्तय देखो पत्तय = पत्तय (छाया १, १)।

पत्तय वि [प्रार्थक] अभिनाया करनेवाला
(मुग १, २, २, १६, न २५३)।

पत्तय देवा पत्तय = प्रत्य (उव १७६ टी,
धीय)।

पत्तययज न [पत्तयदने] सम्भन, पापेय, मानं
मं खाने का गुरुव, नैत्रा (छाया १, १५,
॥ १३०, उर ८, ७ मुग ६२४)।

पत्तय सव [प्र + स्तु] १ विद्याना। २
पैलाणा। वृ, पत्तयेला (बव, डा ६)।

पत्तय वृ [प्रानर] पत्तय पात्राण (धीय,
उव, पत्तम १७, ३६, मिरि १३२)
'पत्तयेलाहोमो कोवो पत्तय' उवुरिमिच्छई।
मिगारिमा सरं पत्तय सक्कति विमग्गई'
(सुर ६, २०७)

पत्तय न [दि] पाद-साहन सात (पह १)।

पत्तय देखो पत्तयार (श्राव, सणि २)।

पत्तयण न [प्रानर] विद्योना, 'वट्टारपवर-
णव वहा एव' (वमवि १४७)।

पत्तयभङ्गिअ न [द] वीजाहन करना (दि ६,
१६)।

पत्तया श्री [दि] वरण पाल नाल (दि ६,
८)।

पत्तयिअ वृ [दि] पत्तय, कोम (दि ६, २०)।

पत्तयिअ वि [प्रानर] विद्याना हुआ
'पत्तयिअ अणुम (पाम)।

पत्तय देवा पत्तयाय (ह १, ६८ कुमा पत्तम
५, २१९)।

पत्तया अ [प्र + श्या] प्रचाल करना
प्राप्त करना। वृ पत्तय (मि ३ ५७)।

पत्तया न [प्रधान] प्रयाण, गमन (मणि
८१, मणि ६)।

पत्तया वृ [प्रानर] १ विलार (उत्तर १६)।
२ हृणन। ३ वल्लभवि निमित्त कथा। ४
गिन प्रविष्ट प्रविष्टा विरोध (प्राय)। ५
प्राविकण श्री रचना-विशेष (डा १—पत्त
३७१, कठ)। ६ स्निग्ध (मि २०१
३११)।

पत्तया श्री [दि] १ निरर, सद्गुह (दि ६,
६६)। २ शम्भा, विद्योना, पुनरातो में
'पत्तया' (दि ६, ६६, पाम मुग ३२०)।

पत्तयाय सव [प्र + स्तायय] प्रार्थन
करना। वृ पत्तयायअन (हास्य १२२)।

पत्तया वृ [प्रानर] १ भवसर। २ प्रमग,
प्रवरण (हे १, ६८, कुमा)।

पत्तियअ वि [प्रार्थित] १ जिसने प्रयाण
किया हो वह (से २, १६, सुर ४, १६८)।

२ न प्रचाल, मति, चाल (मणि ६)।

पत्तियअ वि [प्रार्थित] १ जिसके पाप प्रार्थना
की गई हो वह। २ जिस चीज की प्रार्थना
की गई हो वह (मग सुर ६, १८, १६,
६, उर)।

पत्तियअ वि [दि] श्रीम जन्मी करनेवाला (दि
६, १०)।

पत्तियअ वि [प्रार्थिक] प्रार्थी, प्रार्थना करने-
वाला (उव)।

पत्तियअ वि [प्रार्थित] विरोध भाषणापाना,
प्रहृष्ट मन्दापाना (उव)।

पत्तियअ } श्री [दि] बंध का बना हुआ
पत्तियअ } मानन विरोध (धीय ४७९)।

'पिहण, 'पिहय न [पिटठ] बांध का
बान हुआ मानन विरोध (विता १, ३)।

पत्तियद देवो पत्तियअ = प्रस्वय, प्रार्थित
(माह २५)।

पत्तिय वृ [पार्थिय] १ राजा, नरोर (छाया
१, १६, पाम)। २ वि, दुविदी का विचार
(रात्रा)।

पत्तया श्री [द पार्थी] पाव, मानन 'अंध
नरवारसिप व माउमा मद् वई विनुर्वीय'
(वा २४० म)।

पत्तयाय न [दि] १ स्तुत बह मोडा कथा।
२ वि स्तुत माडा (दि ६, ११)।

पत्तयाय वि [प्रानर] १ प्रवरण-प्राप्त, प्रारर-
पिण (सुर ३, ११९, महा)। २ प्रात,
सम्प (सुर १, ४, १, १०)।

पत्तया दलो पत्तय = प्र + अर्थय। धी, पत्तय-
देवा (बव)।

पत्तयेअमाण }
पत्तयेअ }
पत्तयेमा }
पत्तयेयव } } देवो पत्तय = प्र + अर्थय।

पथोउ वि [प्रस्तोउ] १ प्रस्ताव करनेवाला।
२ प्रवर्तक। छो. 'थोई' (पथह १, ३—
पथ ४२)।

पथम (थे) देखी पथम (पि १६०)।

पद देखो पय = पद (भग, स्वयं १५; हे ४,
२७०; पथह २, १. नाट—शकु ८१)।

पदअ सक [गम] जाना, गमन करना।
पदमइ (हे ४, १६२)। पदप्रति (कुमा)।

पदंसिअ वि [प्रदर्शित] विललाया हुआ,
बहलाया हुआ (था ३०)।

पदकिरण वि [प्रदक्षिण] १ जिसने दक्षिण
की तरफ से लेकर मण्डलाकार भ्रमण किया
हो वह। २ न. दक्षिणावर्त्त भ्रमण, 'पदविख-
खीकरप्रतो मट्टार' (प्रयो ३५)। देखो
पदाहिण।

पदकिरण सक [प्रदक्षिणय] प्रवर्तित
करना; दक्षिण से लेकर मण्डलाकार भ्रमण
करना। हेक. पदकिरणेई (पथम ४८,
१११)।

पदकिरणया जी [प्रदक्षिणा] दक्षिण की
ओर से मण्डलाकार भ्रमण (नाट—नैत
३८)।

पदण न [पदन] प्रत्यागम, प्रतीति करना
(उप ८८३)।

पदण (शी) न [पतन] गिरना (नाट—
भालरी १७)।

पदम (शी) देखो पथम (नाट—मुच्छ १३६)।

पदय देखो पयय = पदय, पदक, पतय, पतंग
(हक)।

पदसिसय देखो पदंसिअ (भवि)।

पदहण न [प्रदहन] संताप, गयी (हुमा)।

पदाइ वि [प्रदायिन्] देनेवाला (नाट—
विक्र ८)।

पदाण न [प्रदान] दान, वितरण (भौष,
भमि ५५)।

पदादि (शी) पुं [पदाति] पैदल चलनेवाला
सैनिक (प्रयो १७; नाट—वेणी ६६)।

पदायग वि [प्रदायक] देनेवाला (विसे
३२००)।

पदाय देखो पयाय (भा ३२६)।

पदाहिण वि [प्रदक्षिण] प्रष्ट दक्षिण,
प्रकर्ष से दक्षिण दिशा में स्थित (जीव ३)।

देखो पदक्खिण।

पदिनिदि (शी) देखो पडिनिदि (भा १०;
नाट—विक्र २१)।

पदिन्त देखो पलित (राज)।

पदिस' खी [प्रदिअ] विदिशा, ईशान भादि
कोण; 'वसति पाणा पदिमो दिसासु य'
(भाचा)।

पदिरसा देखो पदेकर।

पदीव सक [प्र + दीपय] १ जलाना। २
प्रकाश करना। पदीवेसि (पि २४४)। बहु
पदीवेत्त (पथम १०२, १०)।

पदीव देखो पईव = प्रदीप (नाट—मुच्छ
३०)।

पदीविअ जी [प्रदीपिका] छोटा दिया
(नाट—मुच्छ ५१)।

पदुग पुंन [प्रदुर्ग] कोट, किला (भाचा,
२, १०, २)।

पदुइ वि [प्रद्विष्ट, प्रदुष्ट] विरोध द्वेष की
प्राप्त (उत्त ३२, वृह ३)।

पदुअइय न [पदोद्देवक] पद-विनाश और
शब्दार्थ मान का पारामण (राज)।

पदूमिय वि [प्रदावित, प्रदून] अत्यन्त
पीड़ित (वृह ३)।

पदूस सक [प्र + द्विप्] द्वेष करना।
पदूसति (वंचा २, १५)।

पदूसणया जी [प्रद्वेपणा, प्रद्वण] द्वेष,
माखर्ष (उप ४८६)।

पदेकर सक [प्र + हट्] प्रकर्ष से देखना।
पदेकरइ (भवि)। संक. 'पदिरसा य दिसा'
व्यमण' (भग १८, ८; पि ३३४)।

पदेस देखो पएस = प्रदेस (भग)।

पदेस पुं [प्रद्वेप] द्वेष (वर्मसं ६७)।

पदेसिअ वि [प्रदेशित] अर्पित, प्रतिपादित
(भाचा)।

पदोस देखो पओस = दे, प्रदेय (संत १३;
निज १)।

पदोस देखो पओस = प्रदीप (राज)।

पद न [दे] १ ग्राम-स्थान (दे ६, १)। २
छोटा गाँव (भाचा)।

पदन न [पथ] श्लोक, वृत्त, काव्य (प्राहु
२१)।

पदेस देखो पदेस = प्रदेय (सुम १, १६, ३)।

पदइ जी [पदति] १ मार्ग, रास्ता (सुपा
१८६)। २ पक्ति, श्रेणी (ठा २, ४)। ३
परिपाटी, क्रम (भावम)। ४ प्रक्रिया, प्रकरण
(वजा २)।

पदंस पुं [प्रधंस] धंस, नाश। 'भाव पुं
[भाय] भभाव-विरोध, वस्तु के नाश होने
पर उसका जो अभाव होता है वह (विसे
१८३७)।

पदर वि [दे] प्रजु, सरल, सीधा (दे ६,
१०)। २ शीघ्र-गुजरती में 'पावर्ह', 'पदर-
पण्हि मुइके पवारो' (सिरि ४३५)।

पदरु वि [दे] दोनों पाश्वर्कों में अग्रवृत्त
(पद)।

पदरार वि [दे] जिसका धूँध कट गया हो वह,
धूँध कटा (दे ६, १३)।

पधाइय देखो पधाविय (भवि)।

पधाण देखो पहाण (नाट—मुच्छ २०५)।

पधार देखो पहार = प्र + धारय। भूका-
पधारेल (भौष, राया १, २—पन ८८)।

पधाव सक [प्र + धाय] दौड़ना, अधिक
वेग से जाना। संक. पधाविय (नाट)।

पधानण न [प्रधावन] १ दौड़, वेग से
गमन। २ कार्य की शीघ्र सिद्धि (था १)।
३ प्रशालन (वर्मसं १०७८)।

पधाविअ वि [प्रधावित] १ दौड़ा हुआ
(वहा, पथह १, ४)। २ गति-रहित (राज)।

पधाविर वि [प्रधावित] दौड़नेवाला (था
२८)।

पधूवण न [प्रधूपन] १ धूप देना। २ एक
प्रकार का आलेपन द्रव्य (कस)।

पधूविय वि [प्रधूपित] जितनी धूप दिया
गया हो वह (राज)।

पधोअ सक [प्र + धाप्] धोना। संक.
पधोइत्ता (भावा २, १, ६, ३)।

पधोअ वि [प्रधीत] धोया हुआ (भोर)।

पधोव सक [प्र + धाप्] धोना। पधोवित
(पि ४८२)।

‘इम भणिएएण एणंगी पञ्चुल्लिविणोपणाजामा’
(काप्र १६१) ।

पञ्चुल्लिङ्ग वि [प्रकुल्लित] ऊपर देखो (सम्मत
१८६, भवि) ।

पञ्चुल्लिङ्गा स्त्री [प्रकुल्लिङ्गा] देखो उपकु-
ल्लिङ्गा (गा १६६ म) ।

पञ्चुल्लिय न [प्रचृष्ट] उत्तम स्पर्श (राय
१८) ।

पण्कोड देखो पण्कुट्ट । पण्कोड्ड, कण्कोड्ड
(वात्सा १४३) ।

पण्कोड्ड सक [प्र + ण्कोट्य] १ झाटना,
झाडकर गिराना । २ झाटालन करना । ३
प्रक्षेपण करना । पण्कोड्ड (गा ४३३) ।
पण्कोडे (उत्त २६, २४) बहु. पण्कोड्डंत,
पण्कोड्डयंत, पण्कोडेमाण (गा १४४, पि
४६१; ठा ६) । संठ. ‘पण्कोडेऊण सेसयं
कम्म’ (आल ६७) ।

पण्कोड्डण न [प्रकोटन] १ झाटना, प्रहट
घूमन (भोय मा १६३) । २ झाटोटेन,
झाटालन (पण्ह २, १—पत्र १४८, पिंड
२६३) ।

पण्कोड्डा स्त्री [प्रकोटना] ऊपर देखो
(भोय २६६; उत्त २६, २६) ।

पण्कोड्डि वि [दे. प्रकोटित] निर्मादित,
‘झाड कर गिराया हुआ (दे ६, २७, वाप्र),
‘पण्कोटिमोहणतल्ल’ (पडि) । २ कोडा
हुआ, होना हुआ. ‘पण्कोटिमसज्जिपडंगं व
ते हुति निस्साय’ (संनोय १७) ।

पण्कोडेमाण देखो पण्कोड = प्र + ण्कोट्य ।

पण्कुल्ल देखो पण्कुल्ल (पह) ।

पण्कुल्लिङ्ग देखो पञ्चुल्लिङ्ग (हे ४, ३६६,
णिग) ।

पयंध सव [प्र + यन्ध] प्रकथ रूप से
कहना, विस्तार से कहना । पयंधिजा (रस
५, २, ८) ।

पयंध पुं [प्रयन्ध] १ सन्तन्, कथ्य, परस्पर
अनित नायय समूह (रभा ८) । २ अविच्छेद,
निरंतरता (उत्त ११, ७) ।

पयंधय न [प्रयन्धन] प्रगथ, सन्तन्, अनित
वायय-समूह की रचना. ‘वहण्य ए पयंधये’
(उत्त २१) ।

पवल वि [प्रवल] वलित, प्रचण्ड, प्रसर
(कुमा) ।

पवाहा स्त्री [प्रवाधा] प्रहट वाधा, विशेष
पीडा (आया १, ४) ।

पवुद्ध वि [प्रवुद्ध] १ प्रवीण, निपुण (से
१२, ३४) । २ ज्ञाता हुआ (सुर ५-२२६) ।

३ जिसने अच्छी तरह जानकारी प्राप्त की हो
वह (आचा) ।

पवोघ सक [प्र + बोधय] १ जागृत करना ।
२ ज्ञान करना । कर्म. पवोघोमामि (पि
३४३) ।

पवोघण न [प्रवोघन] प्रहट बोधन (राज) ।

पवोह देखो पयोघ । क. पवोहणाय (पडय
७०, २८) ।

पवोह पुं [प्रवोघ] १ जागरण । २ ज्ञान,
समक (वाय ५४; पि १६०) ।

पयोहण देखो पवोघण (राज) ।

पयोहय वि [प्रवोघक] प्रवोघ कर्ता (विदे
१७३) ।

पयोहिअ वि [प्रवोघित] १ जागया हुआ ।
२ जिसको ज्ञान न कराया गया हो वह (सुपा
१३३) ।

पण्नाल देखो पवाल (से ४, २५; ६, ३३) ।

पण्वाल देखो पण्वाळ = छाद्य । पण्वालह
(हे ४, २१) ।

पण्वाल देखो पण्वाळ = स्वावय । पण्वालह
(हे ४, ४१) ।

पण्नुद्ध देखो पण्नुद्ध (पि १६६) ।

पण्भ वि [प्रह्व] नम्र (भीष. प्राक २४) ।

पण्भट्ट } वि [प्रभट्ट] १ परिजट,
पण्भसिअ } प्रस्तुतित, चूका हुआ (पण्ह
१, ३, भवि ११६; गा ३१८, सुर ३,
१२३, गा ३३, ६५) । २ विद्वत् (से १४,
४२) । ३ पुं. नरनावास विशेष (देवन्द २८) ।

पण्भार पुं [दे. प्राग्भार] १ संघात, समूह-
कथा (दे ६, ६६; से ४, २०; सुर १,
२२३, कण्. गड, कुल २१) ।

पण्भार पुं [दे] गिरि-पुष्प, पर्यंत-चन्द्रा (दे
६, ६६). ‘पण्भारदणया साध्वी भण्णो
मह’ (पुं ८१) ।

पण्भार पुं [प्राग्भार] १ प्रहट भार, ‘हुमरे
संविगयज्जण्णमाते’ (यम ८ टी) । २ ऊपर

का भाग (से ४, २०) । ३ थोडा नमा हुआ
पर्यंत का भाग (आया १, १—पत्र ६३, भग
१, ७) । ४ एक देश, एक भाग (से १, ५८) । ५
उत्कर्ष, परमाण (गडठ) । ६ पुं. पर्यंत के
ऊपर का भाग (एदि) । ७ वि. थोडा नमा
हुआ, ईष्यवत (प्रत ११; ठा १०) ।

पण्भारा स्त्री [प्राग्भारा] दया विशेष, पुष्प
की सतर से धास्ती वर्ष तक की अवस्था (ठा
१०—पत्र ५१६, संदु १६) ।

पण्भूअ वि [प्रभूत] उत्पन्न, ‘मंडुवकीए गम्मे,
पण्भूयो द्दुदुरतेण’ (धर्मवि ३५) ।

पण्भोअ पुं [दे. प्रभोग] भोग, विलास (दे
६, १०) ।

पभ पुं [प्रभ] १ हरिकान्त नामक इन्द्र का
एक लोहपात (ठा ४, १, इह) । २ दीप-
विशेष धीर समुद्र-विशेष का अविपत्ति देव
(राज) ।

‘पभ वि [प्रभ] सट्ट, तुल्य (कय, उवा) ।

‘पभइ देखो ‘पमिह, ‘वडाणं चंडदण्णमिण’
(भ्रमक १४१) ।

पभंकर पुं [प्रभंकर] १ ग्रह विशेष, ज्योतिष-
देव-विशेष (ठा २, ३) । २ पुं. देव-विमान
(सम ८; १४, पत्र २६७) ।

पभंकर वि [प्रभाकर] प्रकाशक, ‘सवलोय-
पभंकरे’ (उत्त २३, ७६) ।

पभंकर स्त्री [प्रभंकरा] १ विदेह-वर्ष की
एक नगरी का नाम (ठा २, ३) । २ कट्ट
की एक अग्रमहिषी का नाम (ठा ४, १) ।
३ सुवं की एक अग्रमहिषी का नाम (मग
१०, ५) ।

पभंकराई स्त्री [प्रभंकरायती] विदेह वर्ष
की एक नगरी (आज १) ।

पभंशुर वि [प्रभंशुर] अति चित्तस्वर
(आचा) ।

पभंजण पुं [प्रभंजन] १ वायुमार-निवाय
के उत्तर दिशा का द्ध (ठा २, ३, ४, १;
सय ६६) । २ सवण-समुद्र के एक पातान-
नक्षत्र का अधिपत्य देव (ठा ४, २) ।

३ वायु. पवन (से १४, ६६) । ४ मायुपोतर
पर्यंत के द्ध शिखर का अविपत्ति देव (राज) ।

‘वणअ पुं [तनय] इन्द्रमाय (से १४, ६६) ।

परमंशण न [प्रभंशन] स्वलता (धर्म १०७६)।

परमंशण पुं [प्रभंशण] १—२ विद्युत्कुमार देवो के हरिकान्त और हरिस्वह नामक दोनों इन्द्रो के लोचपालों के नाम (आ ४, १—परम १६७, इति)।

परमंशण सक [प्र + भण] कहना, बोलना। परमण्ड (महा, सण)।

परमंशण वि [प्रभणिन] उक्त, बणित (सण)।

परमंशण सक [प्र + भण] भणण करना, भजना। परमंशण (सु १५१)।

परमंशण भव [प्र + भू] १ समर्थ होना, पहुँचना। २ होना, उत्पन्न होना। परमवद (वि ४७५)। वरु, परमवत (सुपा ८६, माट—वि ४५५)।

परमंशण पु [प्रभय] १ उत्पत्ति, जन्म, प्रसूति, प्रसव (आ ६, वसु)। २ प्रथम उत्पत्ति का कारण (एवि)। ३ एक जैनमुनि, जम्बुस्वामी का शिष्य (अण, वसु, एवि)।

परमंशण की [प्रभया] सुतीय मासुदेव की पटरानी (पउम २०, १८६)।

परमंशण वि [प्रभूत] जो समर्थ हुआ हो, 'सा विजया विदुमुए उदग्गमुप्रसिन्ध परमंशण नेव' (धर्म १२३)।

परमा की [प्रमा] १ कान्ति, तेज (महा, धर्म १३३३)। २ प्रमाय, 'निचुडुजोमा रम्मा, सर्वपत्ता ते विरायति' (देवेन्द्र ३२०)।

परमाइअ } पुं [प्रमा] १ शाल बाल, सुवह परमाय } (पउम ७०, ५६, मुर ११, ६६, महा, आ २४४)। २ वि. प्रशस्ति, रमणीय परमाय (उ ६४८ टी)। 'तवग वि [संविचयन्] प्रमाविच, प्रमाउ-सम्बन्धी, सुवह वा (मुर १, २४८)।

परमाइअ पुं [प्रमा] प्रहृष्ट मार (अम १३३)।

परमाइअ देतो पहाय = प्र + भाय्। परमाइअ, परमंशित (अण, पव १४८)। वरु, परमायित (सुपा १०६)।

परमाइअ देतो पहाय-प्रमाय (अण ६८)।

परमाइअ दे तो [प्रमायतो] १ उन्नीचने क्रि-देर की माटा का नाम (अम १३३)। २ एण की एक पत्नी का नाम (पउम ७४,

११)। ३ उदायन राजपि की पटरानी और चेढा नरेरा की पुत्री का नाम (पठि)। ४ बनदेव के पुत्र निपय की भार्या (आइ १)। ५ राजा वल की पत्नी (अम ११, ११)।

परमाइअ वि [प्रमायठ] प्रमाव बदलेवाला, शोभा की वृद्धि करनेवाला (आ ६, द २३)। २ उत्पत्ति-कारक। ३ गौरव जनक (अण १६८)।

परमाइअ न [प्रमायन] नीचे देतो (सु ९)।

परमाइअ की [प्रमायना] १ मशाय्य, गौरव। २ प्रसिद्धि, प्रश्रमायि (आया १, १:—परम १२२, आ ६, महा)।

परमाइअ वि [प्रमायक] गौरव बढ़ानेवाला (धर्मो ३११)।

परमाइअ पुं [प्रमायाल] वृद्ध-विशेष (राज)।

परमाइअ देतो परमाय = प्र + भाय्।

परमाइअ सक [प्र + भाय्] बोलना, भाषण करना। परमायति (वि ४६६ टी)। वरु परमासत, परमासयत, परमासमाय (अण २३, पउम ५५, १८, ८६, १०)।

परमाइअ सक [प्र + भाय्] प्रशस्ति होना। परमायति (अण १६)। वरु—परमायिपु (अण, सुज १६)। भवि. परमायिस्सति (अण १६)। वरु. परमासमाय (अण)।

परमाइअ सक [प्र + भाय्] प्रशस्ति करना। प्रमायिद (अण)। परमायति (अण ३—परम ६४)। वरु. परमासयत, परमासमाय (पउम १०८, ३३, अण ७३, अण, उवा कीय अण)।

परमाइअ पुं [प्रमास] १ भगवान् महावीर के एक गणवर का नाम (अम १६, अण)। २ एक विराटासी पत्नी का अधिष्ठाता देव (आ २, ३—परम ६६)। ३ एक जैन मुनि का नाम (धर्म ३)। ४ एक चित्रकार का नाम (अम ३३ टी)। ५ न. तोप विशेष (जं ३, महा)। ६ देव विमान-विशेष (अम १३, ४१)। 'तित्थ न [वि]धे' तोप विशेष, भास्तर्य की पवित्र दिशा में स्थित एक तोप (इफ)।

परमाइअ की [प्रमासा] धर्मसा. दया (परम २, १)।

परमासिय वि [प्रमायित] उक्त, कथित (अम १, १, १, १६)।

परमासेमाण देवो परमास = प्र + भाय्।

परमाइ देतो परमाइ (अ २५)।

*परमाइ वि व. [प्रभृति] इत्यादि, वगैरह (अण, उवा, महा)।

परमाइ } अ [प्रभृति] प्रारम्भ कर, (वहा परमाइ } से) शुरू कर, लेहर, 'वानमावायो परमाइ } परमाइ' (मुर ४, १६७, अण, परमाइ } महा, स ७३६, २७५ णि)।

परमाइ वि [प्रभोत] प्रति भोत, दायित्व दया हुआ (अण ५, ११)।

परमाइ पुं [प्रमा] १ इत्यादि, वय के एक राजा का नाम (पउम ५, ७)। २ स्वामी, मालिक (पउम ६३, २६, मुर २)। ३ राजा, हुप, 'वसु राया वसुपुत्र वसुपुत्रा' (निचु २)। ४ वि. समर्थ, शक्तिमान् (आ २४, अण १५, उवा, आ ४, ५)। ५ योग्य, लायक, 'वसुति वा योग्योति वा एण्ठा' (निचु २०)।

परमाइ सक [प्र + भुज्] भोग करना। परमाइ वि (मो) (इय ६)।

परमाइ वि (मो) देवो परमाइ (हुमा)।

परमाइ वि [प्रमुक्त] १ जिनने खाने का प्रारम्भ किया हो वह (मुर १०, ५८)। २ जिसने भोजन किया हो वह (अ १०४)।

परमाइ देतो परमाइ (पउम ९, ७६; स परमाइ } २७५)।

परमाइ वि [प्रभूत] प्रहृष्ट, बहुत (अण, पउम ५, ५, आया १, १, मुर ३, ८१, महा)। परमाइ (अण) देतो उभोग, 'भोग-भोगमाणु व विजह' (अण)।

परमाइ वि [प्रमलिन] प्रति मलिन (आया १, १)।

परमाइअ वि [प्रमक्षण] १ सम्पन्न, विवेक वन। २ विवाद के समय किया जाता एक तरह का उद्घटन (अ ७४)।

परमाइअ वि [प्रमक्षिण] १ विजित। २ विवाद के समय विरोधी उद्घटन किया गया हो वह (अण, अण ७४)।

परमाइ सक [प्र + भुज्, मार्ज्] मार्जन करना, साठ-मुचर करना, भाग्य धर्म के पुत्र को दया के दूर करना। परमाइ (अण,

उवा)। पमज्जिया (भावा)। वहु. पमज्जोमाण (ठा ७)। संकु पमज्जित्ता (भग, उवा)। हेहु, पमज्जित् (पि ५७७)। पमज्जण न [प्रमार्जन] मार्जन, भूमि-शुद्धि (अंत)।

पमज्जणिा) छो [प्रमार्जनी] भाह, भूमि पमज्जणी) साक करने का उपकरण (छाया १, ७, पर्व ३)।

पमज्जय वि [प्रमार्जक] प्रमार्जन करनेवाला (हे ५, १८)।

पमज्जिअ वि [प्रमृष्ट, प्रमार्जित] साक किया हुआ (उवा, महा)।

पमत्त वि [प्रमत्त] १ प्रमाद-युक्त, भ्रमाव-धात, प्रमादी, बेदरकार (उव, अगि १८५, प्राप् १८)। २ न. छठवीं गुण-स्वात्मक (कम्म ४, ५७, ५६)। ३ प्रमाद (कम्म २)।

‘जोग पुं [‘जोग] प्रमाद-युक्त भेष (अग)। ‘संजय पुं [‘संजय] प्रमादी साधु, प्रमाद-युक्त भूमि (भग ३, १)।

पमद देखो पमय (स्वण ५१, कप्पु)।

पमदा देखो पमया (माट—यहु २)।

पमद सक [प्र + मृद] १ मर्दन करना। २ विनाश करना। ३ कम करना। ४ चूर्ण करना। ५ रई की पूछी—पूरी बनाना। वहु. पमदमाण (पि ५७४)।

पमद पुं [प्रमद] १ ज्योतिष शास्त्र में प्रसिद्ध एक योग (सम ११, सुज १०, ११)। २ संघर्ष, संमर्ष (राज)। ३ वि. मर्दन करने-वाला। ४ विनाश, ‘सार मणएइ सअं पचवत्ताए पु मवदुपमद’ (सवोप ३७)।

पमहण न [प्रमर्दन] १ चूर्ना, चूर्ण करना (राप)। २ नाश करना। ३ कम करना (सम १२२)। ४ रई की पूछी करना (पि ६०३)। ५ वि. विनाश करनेवाला (पचा १४, ४२)।

पमदय वि [प्रमदक] प्रमर्दन वर्त्ता (दगनि १०, २०)।

पमदि वि [प्रमदिन्] प्रमर्दन करनेवाला (सोप, पि १११)।

पमय पुं [प्रमद] १ घालन, हर्ष (वाल, या २७)। २ न. पतने का कर्म। ‘च्छी छो [‘क्षी] छी, महिला (सुपा २३०)। ‘वण

न [‘वन] राजा का अन्त-पुर-स्थित वह वन या बागीचा जहाँ राजा रानियों के साथ क्रीडा करे (सि ११, ३७, छाया १, ८, १३)।

पमया छो [प्रमदा] उत्तम छो, श्रेष्ठ महिला (उव, वहु ४)।

पमह पुं [प्रमय] शिव का शत्रुचर (पाप)।

‘णाह पुं [‘नाय] महादेव (सपु १५०)।

‘हिय पुं [‘विप] शिव, महादेव (मा ४४८)।

पमा सक [प्र + मा] सत्य-सत्य ज्ञान करना। कर्म. पमोए (विसे ६४८)।

पमा छो [प्रमा] १ प्रमाण, परिमाण ‘दीप्र-सवावविणिमिप्रमविहियममाहुल्लिगमाहुरए’ (कुमा)। २ प्रमाण, ‘नाय ‘मत्तिपसपो पमासिदो’ (पर्व ६८१)।

पमा देखो पमाय = प्रमाद (वव १)।

पमाह वि [प्रमादिन्] प्रमादी, बेदरकार (सुपा १३४, उव, भावा)।

पमाइअज देखो पमाय = प्र + मद्।

पमाइल देखो पमाइ, ‘वम्मपमाइले’ (उव ७२८ टी)।

पमाण सक [प्र + मानय] विशेष रीति से मानना, आदर करना। क. पमाणण्ज (या २७)।

पमाण न [प्रमाण] १ यथार्थ ज्ञान, सत्य ज्ञान। २ जिससे वस्तु का सत्य सत्य ज्ञान हो वह, सत्य ज्ञान का साधन (असु)। ३ जिससे नाप किया जाय वह, ‘असुपमाणरि’ (या २७, भग, असु)। ४ नाप, माप, परिमाण (विचार ५४४, ठा ५, ३; नीवस ६४, भग, विपा १, २)। ५ सरया (असु, जी २६)। ६ प्रमाण शास्त्र, व्याय-शास्त्र, तर्क-शास्त्र, ‘सक्कयुसाहित्तपमाणोदसाहिंसा पाद’ (सुपा १०३)। ७ पुन. सत्य रूप से जिसका स्वीकार किया जाय वह। ८ भान-नीय, आदरणीय। ९ सचा, सही, ठीक ठीक, यथार्थ, ‘वमाणो जो य जेत्ति तिस घम्पो सो य पमाणो तेहि’ (सुपा ११०, या १४५)। ‘तुचिरपि अच्चमाणो नवधो विच्छ इच्छुसाडिमि।

भीष न जायद महरो जइ सेसणी पमाणे ते’ (प्राप् ३३)।

‘वाय पुं [‘वाद] व्याय-शास्त्र, तर्क-शास्त्र

(अम्मत ११७)। ‘संयच्छर पुं [‘संस्तर] वर्ष विशेष (सुज १०, २०)।

पमाण सक [प्रमाणय] प्रमाण रूप से स्वीकार करना। पमाण, पमाणह (विग)। वहु. पमाणत (उवर १८६)। क. पमाण-यव्व (सिदि ६१)।

पमाणिअ वि [प्रमाणिन्] प्रमाण रूप से स्वीकृत (सुपा ११०, या १२)।

पमाणिआ } छो [प्रमाणिका, प्रमाणी] पमाणो } छद विशेष (पिग)।

पमाणिकर धन [प्रमाणी + क] प्रमाण करना, सत्य रूप से स्वीकार करना। कर्म. पमाणिकरोपदि (शी) (पि ३२४)। संकु. पमाणोकिअ (माट—मालवि ४०)।

पमाद देखो पमाय = प्र + मद्। क. पमादे-यअ (छाया १, १—पन ६०)।

पमाद देखो पमाय = प्रमाद (भग, श्रीप, स्वण १०६)।

पमाय सक [प्र + मद्] प्रमाद करना, बेदरकारी करना। पमायद, पमायए (उव, पि ४६०)। वहु पमायंल (सुपा १०)। क. पमाइअज (भग)।

पमाय पुं [प्रमाद] १ कर्तव्य कार्य में अप्रवृत्ति और अकर्तव्य कार्य में प्रवृत्ति का पलायनता, बेदरकारी (भावा, उत ४, ३२, महा, प्राप् ३८, १३४)। २ दुःख, कष्ट, ‘समागतोयाए वि जा विमादासमा सपुपाय्यनुपमाया’ (सत ३५)।

पमार पुं [प्रमार] १ मरण का प्रारम्भ (भग १५)। २ उरी तरह मारना (ठा ५, १)।

पमारणा छो [प्रमारणा] बुरी तरह मारना (वव ३)।

पमिय वि [प्रमित] परिमित, नाश हुआ, ‘असुल्लासल्लिप्रमाणमिया उहोति सेदीमो’ (पच २, २०)।

पमिल्लय वि [प्रम्लान] मरिचय मुरमाया हुआ (ठा ३, १, पर्व ५५)।

पमिल्लय धर [प्र + म्ले] मुरमाया, ‘पण-पन्नाय वरेण जोणी पमिल्लाय महिल्लियाए’ (वहु ४)।

पमिल्ल अक् [प्र + मील] विशेष संबोधन करना, संकुचन। पमिल्लइ (हे ४, २३२; प्राप्)।

पमोय देतो पमा = प्र + मा।

पमोल देखो पमिल्ल। पमोलइ (हे ४, २३२)।

पमुइअ वि [प्रमुदित] हर्ष-प्राप्त, हर्षित (भीष, जीव ३)।

पमुंच सक [प्र + मुच्] छोटना, परित्याग करना। पमुंचवि (उव)। वमं, पमुचइ (वि ५४२)। मरि, पमोक्खति (भाषा)।

बह्, पमुंचमाग (राज)।

पमुक्क वि [प्रमुक्] परित्यक्त (हे २, ६७, पद्)।

*पमुक्क देखो *पमुइ (गुपा १०, गु ११, जी १०)।

पमुच्छिअ पुं [प्रमुच्छिअ] तरावान-विशेष (देवद २७)।

पमुत्त देतो पमुक्क (वि ५६६)।

पमुदिय देतो पमुइअ (सुर १, २०)।

पमुइ वि [प्रमुइ] अमल भुण (गाढ—मालतो ४४)।

पमुइ वि [प्रमुइ] १ सत्वीन दृष्टिवासा, 'एणमपुदे' (भाषा)। २ पुं, प्ह-विशेष, पमोत्तिय देव विशेष (ठा २, ३)। ३ न, प्रष्ट भाष्य, आदि, आवात, 'विपागमन-हरिचो भोगा पमुइ हर्षति पुणमहर्ष' (पठम १०८, ३१, पाम)।

*पमुइ वि. व. [प्रमुइ] १ बगैर, आदि। २ अनात, भेट, भुष (भीष, प्राप् १६६)।

पमुइर वि [प्रमुइर] भाचार, बापाती (वत १७, ११)।

पमेइल वि [प्रमेइलिय] मित्रके शरीर में बर्षी बंदूक ही पड़, फुले पंढरने बग्गने पादेनेति य मो यर (दा ७, २२)।

पमेय वि [प्रमेय] प्रमाण-विषय, सत्य-वर्ण्य (पर्य ११६०)।

पमेइ पुं [प्रमेइ] योग विदेश, मेह योग, भूत-योग, बह्मनात (विह १)।

पमुअ पुं [प्रमोइ] १ मानन्द, सुखी, हर्ष (गुर १, ७८, मदा, एरि)। २ आगम-वैरा के एक राजा का नाम, एक संसार-वधि (पठम ५, २६१)।

पमोक्क देतो पमुंच।

पमोक्क पुंन [प्रमोक्ख] १ मुक्ति, निर्वाण (सुम १, १०, १२)। २ प्रत्युत्तर, जवाब, 'नो संचाएइ' विविध पमोक्कवत्तादेउ' (मय)।

पमोक्कग न [प्रमोचन] परित्याग, 'बंठा-बंठियं अयवासिय बाह्मपमोक्कअ बरेइ' (छाया १, २—पत्र ८८)।

पमोयणां खो [प्रमोदना] प्रमोदन, प्रमोद, भागाद, आनंद (विश्व ४११)।

पम्मालअ अक् [प्र + म्ले] अधिक स्थान होना। पम्मालादि (श्री), (वि १३६, नाट—मालती १३)।

पम्माअ २ वि [प्रम्लान] १ विशेष म्लान, पम्माइअ १ अमल भुणमाया हुआ, 'पम्माअ-सिरोसार व। ग्ह से जायाइ अगाइ' (पा ५६, गा ५६ डि)। २ दुःख, 'अवहा य जायवासा, गापा पम्मायचित्तवत्ता' (वर्मवि ५३)।

पम्माअ वि [प्रम्लान] १ म्लित, भुरगाया हुआ। २ न, वीरपत्त, मुक्कलता 'पम्मा' (? म्मा) अवरणलितो' (पणु १३६)।

पम्मि पुं [प्] पाणि, हाथ, कर (पद्)।

पम्मुक्क देखो पमुक्क (हे २, ६७, पद्, पुमा)।

पम्मुइ वि [प्राइमुइ] पूर्व की ओर निरवता हुई हो यह (अवि, मगा १६४)।

पम्ह पुंन [पद्मम्] १ अति-सोम, बरतनी, मल के माल (पाम)। ३ पम आदि का बेसर, निज-र (वरा, मग विरा १, १)। ३ मूत्र आदि का अत्यल्प भाग। ४ वत, पल (हे २, ७४, प्राप्)। ५ वेरा का अग्र-भाग (वे ६, २०)। ६ अग्र-भाग, 'एणमह्म-आणएउरउणमह्म' (वे १५, ७३)। ७ महाविदेह वर्ष का एक निजय—अदेय (ठा २, ३, इर)। ८ न. एउ देव-विमान (सम १५)। 'कंठ व [कान्त] एक देव-विमान का नाम (सम १५)। 'कूड पुं [कूट] १ परवत-विशेष (पत्र)। २ न कान्तोरा नामक देवतोरा का एक देव विमान (सम १५)। ३ परवत-विशेष का एक स्थान (ठा २, ३; ६)। 'उमय न [उमय]

देव-विमान-विशेष (सम १५)। *पपम न [*प्रभ] प्रभुलोक का एक देवविमान (सम १५)। 'लेस, 'लेस्स न [लेश्य] प्रभुलोक-स्थित एक देव-विमान (सम १५; राज)। 'वण्ण न [वर्ण] वही पूर्वोक्त अर्थ (सम १५)। 'सिंग न [शृङ्ग] वही अर्थ (सम १५)। 'सिद्ध न [सुद्ध] वही पूर्वोक्त अर्थ (सम १५)। 'वत्त न [वत्त] वही अर्थ (सम १५)।

पम्ह देखो पठम (पह १, ४—पत्र ६७; ७८, जीव १)। 'मंथ वि [मंथ] १ कमल की मय। २ वि, कमल के समान मयवासा (मग ६, ७)। 'लेस वि [लेश्य] पमा नामन लेयानाता (मग)। 'लेसा खी [लेस्या] लेस्या-विशेष, पांचवीं लेस्या, आमा का सुमनर परिणाम-विशेष (ठा ३, १, सम ११)। 'लेस्स देखो 'लेस (पणु १७—पत्र ५११)।

पम्हअ स [प्र + स्मृ] भूल जाना, विस्मरण होना। पम्हअइ (प्राह ६१)।

पम्हगायइ खी [पद्मगायत्री] महाविदेह वर्ष का एक निजय, प्रवेश विशेष (ठा २, ३, इर)।

पम्हट्ट वि [पद्मट्ट] १ निम्बु (वे ४, ४२)। २ निजको विस्मरण हुआ हो यह, 'वि पम्हट्ट हिह बाह्म कुर वत्तणुअणविद-मलविज्जण (वे १, १२)।

पम्हट्ट वि [प्] १ प्रभट्ट, निजुन (मि ४, ४२)। २ वीरा हुआ, प्रसन्न, 'पम्हट्ट' या परिदृश्य वि का एण्ड' (वर् १)।

पम्हय वि [पद्मय] १ पद्म में डगल। २ न, एक प्रकार का मृगा (वंचमा)।

पम्हर पुं [प्] पामट्ट, आल तरण (वे ३, ३)।

पम्हल वि [पद्मल] पद्म-गुच्छ, सुंदर अति-सोमगाना (हे २, ७४, पुमा, पद्, भीष, मउर, गुर ३, ११६, वाम)।

पम्हल पुं [प्] निज-र, पम आदि का बेसर (हे ६, ११, पद्)।

पम्हलिय वि [पद्मलिय] परविज, मंडित किया हुआ, 'आणएउरउणमह्म-विदवग्गिगमो' (ग ३६)।

पम्हस सक [वि + स्मृ] विस्मरण करना, भूल जाना । पम्हसइ (पइ), पम्हसिज्जासु (गा ३४८) ।

पम्हसाविय वि [विस्मारित] भूलाया हुआ, विस्मृत कराया हुआ (सुख २, ५) ।

पम्हा की [पद्मा] १ सेरया-विशेष, पय-सेरया, आरामा का सुमतर परिणाम विशेष (कम्म ३, २२; आ २६) । २ विजय-सोत्र विशेष (राज) ।

पम्हार पुं [दे] भपगुण्ड, बेनीत मरण (दे ६, ३) ।

पम्हायई की [पद्मायती] १ विजय-विशेष की एक नगरी (ठा २, ३; इक) । २ पर्वत-विशेष (ठा २, ३—पय ८०) ।

पम्हुट्ट वि [दे] १ नष्ट, नाश प्राप्त (हे ४, २४८) । २ विस्मृत, 'पम्हुट्ट' निम्हरिअ (पाम), 'कि य तय पम्हुट्ट' (छाया १, ८—पय १४८, विचार २३८) ।

पम्हुत्तरयडिसग न [पद्मोत्तरायतंसक] ब्रह्मलोक में स्थित एक देव विमान (सम १५) ।

पम्हुस सक [वि + स्मृ] भूलना, विस्मरण करना । पम्हुसइ (हे ४, ७५) ।

पम्हुस सक [प्र + मुह] स्वयं करना । पम्हुसइ पम्हुइ (हे ४, १८४, कुमा ७, २६) ।

पम्हुस सक [प्र + मुप] चोरना, चोरी करना । पम्हुसइ, पम्हुसइ, पम्हुसति (ह ४, १८४, सुपा १३७, कुमा ७, २६) ।

पम्हुसण न [विस्मरण] विस्मृति (पचा १५, ११) ।

पम्हुसिअ वि [निस्मृ] विसका विस्मरण हुआ हो वह (कुमा उप ७६८ टी) ।

पम्हुइ सक [स्मृ] स्मरण करना, आद करना । पम्हुइइ (हे ४, ७५) ।

पम्हुइण वि [स्मर्तु] स्मरण करनेवाला (कुमा) ।

पय सब [पच्] पचाना, पाक करना । पयइ (हे ४, ६०) । वरु पयत (वप्) । संह. पइइं (सुप २६६) ।

पय सब [पइ] १ जाना । २ जानना । ३ विचारना । पयइ (सिरे ४०८) ।

पय पुंन [पयस्] १ क्षीर, दूध, 'पयो' (हे १, ३२, शोध १२, पात्र) । २ पानी, जल (सुपा १३६, पात्र) । ३ हर देशों पयोहर (पिंग) ।

पय पु [प्रज] प्राणी, जन्तु (आचा) ।

पय पुन [पइ] १ विभक्ति के साथ का शब्द, 'पयमत्यवाययं जोगय च त नामियाई पंचविह' (सिरे १००३, प्राप् १३८, आ २३) । २ शब्द समूह, वाक्य, 'उवएसपया इह समक्काया' (उप १०३८, आ २३) । ३ पैर, पांव, चरण, 'जालं च तज्जणतज्जणीइ लग्गो ठवेमि मदपए, कम्पवहे बालो इव', 'आय न सत्तट्ठ पए पचाहुत्त नियतो ति' (सुपा १, धर्मेवि ५४, सुर ३, १०७, आ २३) । ४ पाद चिह्न, पदाङ्क (सुर २, २१२, सुपा ३५४, आ २३, प्राप् ५०) । ५ पद का चौथा हिस्सा (अणु) । ६ निर्मित, कारण (आचा) । ७ स्थान, 'अवमाणपय हि तेव ति' (सुर २, १६७, आ २३) । ८ पदवी, अधिकार, 'जुवरायपए कि तवि अहिंसिअ वेव मे पुतो' (सुर २, १७५, महा) । ९ नाण, शरणा । १० प्रवेश । ११ व्यवसाय (आ २३) । १२ कूट, जाल विशेष (सुम १, १, २, ८) । १३ 'रेम न [क्षेम] शिव, बल्याण, 'कुम्बइ अ सो पयसेमणए' (दव ६, ४, ६) । १४ पु [स्थ] पदावि, पैदल, प्यादा, नुरएण सह तुरंगो पाइको सह पयसेण' (पय ६, १८२) । १५ 'पास पु [पाश] बाण, जाल आदि बन्धन (सुप १, १, २, ८, ६) । १६ रसक पु [रक्ष] पदावि, प्यादा (अकि, हे ४, ४१८) । १७ 'यग्गह पु [निग्रह] पदविच्छेद (सिरे १००६) । १८ 'विभाग पु [विभाग] उत्तम श्रीर अमनाद का यथा-स्थान निवेश, सामान्य विशेष (प्राव १) । १९ 'वीड देवो पाय-वीड (पय ४०, सुपा ६५६) । २० 'समास पुं [सिमास] पदो का अनुपात (कम्म १, ७) । २१ 'णुसारि वि [नुसारि] एक पद में धनेक अनुसृ पदो का भी अनुसंधान करने की शक्तिवाला (अण, वृह १) । २२ 'नुसारिणी की [नुसारिणी] बुद्धि-विशेष, एक पद के ध्वज से दूसरे अनुसृत पदों का स्वयं पता लगानेवाली बुद्धि (पण २१) ।

पय (अप) देवो पत्त = प्राप्त (पिंग) ।

पय देवो पया = प्रजा । 'पाल वि [पाल] १ प्रजा का पालक । २ पुं. गुप-विशेष (सिरी ४५) ।

'पय वि [प्रद] देनेवाला, 'पीहपय' (रंमा) ।

पयइ की [प्रकृति] संघि का प्रभाव (अणु ११२) ।

पयइ देवो पगइ (गा ३१७, गउड, महा, नव ३१, भत ११४, वप्प, सुप १४६) ।

पयइंद पुं [पतगेन्द्र, पदकेन्द्र] वानव्यन्तर-जातीय देवों का इन्द्र (ठा २, ३) ।

पयई देवो पययी (गउड) ।

पयम पुं [पन्न] १ सूर्य, रवि (पाम), 'तो हरितपुल्लयगो चको इव सिद्धिजगययगो' (उप ७२८ टी) । २ रग विशेष, रज्जु-द्रव्य-विशेष (उर ६, ४, सिरी १०५७) । ३ शयन, कतिगा, उठनेवाला छोटा कीट (छाया १, १७, पाम) । ४—५ देवों पयय = पतन, पदक, पदग (पण १, ४—पय ६८, राज) । 'वीहिंया की [वीथिका] १ शयन का उठना । २ निशा के लिए पतन की तरह चलना, बीच में दो बार घरो को छोड़ते हुए निशा लेना (उत ३०, १६) । 'वीही की [वीथी] वही पूर्वोक्त मार्ग (उत ३०, १६) ।

पयचुल पुन [प्रपञ्चल] मत्स्यवन्धन विशेष, मछली पकड़ने का एक प्रकार का जाल (विपा १, ८—पय ८५) ।

पर्यंड वि [प्रचण्ड] १ अत्युप, तीव्र, प्रबल । २ अत्यंत, अत्यंत (पण १, १, १, ४, उव) ।

पर्यंड वि [प्रकाण्ड] अत्युप, अत्यंत (पण १, ४) ।

पयत देवो पय = पच् ।

पर्यप सक [प्र + पप्प्] अधिकतम जानना । वरु. पयपमाण (त १६६) ।

पयप सब [प्र + जल्प] १ बहना, बोलना । २ बचाना करना । पयपए (महा) । उट. पर्यपिऊण, पयपिऊण (महा, पि ५८५) । ३ पर्यपिअव (गा ५५०, सुपा ५५२) ।

पयंपण न [प्रजल्पन] कथन, उक्ति (उप
पु २१७)।

परंपिय वि [प्रकम्पित] भति कांपा हुमा
(स ३७७)।

पयपिय वि [प्रजल्पित] १ कथित, उक्त।
२ न. कथन, उक्ति। ३ वचनवाद, व्यर्थ
जलन (विपा १, ७)।

पयपिर वि [प्रजल्पित] १ बोलनेवाला।
२ बाचाट, बकबाजी (सुर १६, ५८, सुपा
४१५, भा २७)।

पर्यस सक [प्र + दर्शय] दिल्लाना।
पर्यसेति (चित्ते ६३२)।

पयसण न [प्रदर्शन] दिल्लाना (स ६१३)।

पयसिअ वि [प्रदर्शित] दिल्लामा हुमा
(सुर १, १०१, १२, १२)।

पयस देवो पाइस ()।

पयसण सक [प्रसा + क्य] प्रत्याख्यान
करना प्रतिज्ञा करना। पयसणेइ (विचार
७५५)।

पयसिण देवो पदांसण = प्रवसिण (खामा
१, १६)।

पयसिण देवो पदसिण = प्रवसिण।
सह. पयसिणिकण (सुर ८, १०५)।

पयसिण देवो पदसिण (उप १४२ दी
सुर १४, ३०)।

पयस देवो पयस = पतन, पदर, पदन (राज,
पव १६४)।

पयसण सब [प्र + यण] देना, भरण
करना। पयसण (महा)। संड पयसिणिकण
(राज)।

पयसण न [प्रदान] १ दान, भरण (सुर
२, १५१)। २ वि देनेवाला (सण)।

पयट्ट सक [प्र + ट्ट] प्रवृत्ति करना।
पयट्ट (हे २, ३० ४, ३४०, महा)। क.
पयट्टअण (सुपा १२६)। प्रयो पयट्टावे
(स २२) संड. पयट्टाविउं (स ७१५)।

पयट्ट वि [प्रवृत्त] १ जिसने प्रवृत्ति भी हो
वह (हे २, २६, महा)। २ वनिता, 'पयट्टने
बलिय' (पाप)।

पयट्ट वि [प्रवृत्त] प्रवृत्ति करनेवाला
(पएह १, १)।

पयट्टाव वि [प्रवृत्त] प्रवृत्ति करनेवाला
(कण्ण)।

पयट्टाविअ वि [प्रवृत्त] प्रवृत्ति किया हुआ,
निजी कार्य में लगाया हुआ (महा)।

पयट्टिअ वि [दे. प्रवृत्त] ऊपर देखो (दे
६, २६)।

पयट्टिअ वि [प्रवृत्त] प्रवृत्ति-युक्त (उत्त ४,
२, सुख ४, २)।

पयट्टाण देवो पदट्टाण (काल, पि २२०)।

पयड सक [प्र + कट्टय] प्रकट करना,
व्यक्त करना। पयड पयडेइ (सण महा)।
वह पयडल (सुपा १, गा ४०६, भवि)।
हेह पयडित्तु (पि ५७७)। प्रयो. पयसा-
वड (भवि)।

पयड वि [प्रकट] १ व्यक्त, खुला (कुभा,
महा)। २ विख्यात, विप्रसृत, प्रसिद्ध,
'विस्मयो विसुयो पयडो' (पाप)।

पयडण न [प्रकटन] १ व्यक्त करना, खुला
करना (सण)। २ वि. प्रकट करनेवाला, 'जि
मुक्क पुला बहुनेहपयडण' (धर्मवि ६६)।

पयडावण न [प्रकटन] प्रकट करना (भवि)।

पयडाविय वि [प्रकटित] प्रकट कराया हुआ
(काल, भवि)।

पयडि देवो पगड (पएण २३, पि २१६)।

पयडि की [दे] मार्ग, रास्ता, 'जे पुण
सम्महिदो तेवि मणो चहणपयडीए' (सुद्धि
१४२)।

पयडिय वि [प्रकटित] प्रकट किया हुआ
(सुर ३, ४८, भा २)।

पयडिय वि [प्रवृत्त] गिरा हुआ (खामा
१, ८—पव १३३)।

पयडोकरय वि [प्रकटीकृत] प्रकट किया
हुआ (महा)।

पयडोसर सक [प्रकटी + क] प्रकट करना।
प्रयो. पयडोसरोसि (महा)।

पयडोभूअ } वि [प्रकटीभूत] जो प्रकट
पयडीहूअ } हुआ हो (सुर ६, १८४, भा
१६ महा सण)।

पयडहणी की [दे] १ प्रविष्टा। २ माइटि,
भारपेण। ३ महिषी (दे ६, ७२)।

पयण देवो पयण (गा ७७७)।

पयण देवो पडण (चित्ते १८५६)।

पयण } [पचन, क] १ पाक, पकाना
पयणग } (भीप, कुमा)। २ पान विवेक,
पकाने का पान (सुमान ८०, जीव ३)।

'साला की [शाला] एकस्थान (इह २)।

पयणु } वि [प्रवृत्त] १ कृत्र, पतला। २
पयणुअ } सूक्ष्म, भारीक। भल्ल, घोडा (स
२४६, सुर ८, १६५, भा ३, ४, न २,
पडम ३०, ६६, से ११, ५६, गा ६८२,
गडड)।

पयणय देवो पडणग (सुं १)।

पयत्त सक [प्र + यत्त] प्रयत्न करना।
प्रयत्त (श्री) (पि ४७१)।

पयत्त देवो पयट्ट = प्र + वृत्त (काल)।

पयत्त पु [प्रयत्न] शेष, उग्र, उद्योग (सुपा,
उव, सुर १, ६, २, १८२, ४, ८१)।

पयत्त वि [प्रवृत्त, प्रत्त] १ दिया हुआ
(मग)। २ वस्तुभात, संमत (प्रनु १)।

पयत्त देवो पयट्ट = प्रवृत्त (सुर २, १५६,
३, २४८, से ३, २४, ८, ३, गा ४३६)।

पयत्ताविय वि [प्रवृत्त] प्रवृत्ति किया हुआ
(काल)।

पयथ पु [पदार्थ] १ शब्द का प्रतिपाद,
पद का अर्थ (चित्ते १००३, वेदम २७१)।

२ तत्व (सम १०६, सुपा २०५)। ३ वस्तु,
बीज (पाप)।

पयथ देवो पडण = प्रतीक (भवि)।

पयथा देवो पडण (उप १४२ दी)।

पयपण न [प्रकल्पन] कल्पना, विचार
(धर्मस ३०७)।

पयय देवो पायय = प्राहुत (हे १, ६७,
गडड)।

पयय वि [प्रयत्न] प्रयत्न शील, सतत प्रयत्न
करनेवाला (भीप, पडम ३, ६५, सुर १, ४,
उव), 'इच्छिअ न इच्छिअ न तहं पययो
निमंतेए सण' (पुण ४२६ पटि)।

पयय पु [पतन, पदक, पदन] १ पान
व्यतर देवा को एक जाति (ठा २, ३, पएण
१ इव)। २ पतन देवो का दत्त रिश्टा का
दत्त (ठा २, ३)। 'वड पु [पवि] पतन देवों
का उत्तर रिश्टा का दत्त (ठा २, ३—पव
८२)।

पयय न [दे] धनिर, निरुत्तर (दे ६, ६)।

पयर सक [स्मृ] स्मरण करना। पयरेइ (हि ४, ७४)। वहु. पयरत (कुमा)।

पयर भक [प्र + चर] प्रचार होना, 'रत्ना सुमारा भणिया व लोए पयरइ त सब्ब सब्बे रंघइ' (भावक ७३ टी)।

पयर भक [प्र + चर] १ खेलना। २ व्याकुल होना, काम में लगना। पयरइ (शुदि ५१)।

पयर पु [प्रकर] समूह, साथ, जत्था, 'पयरो पिबीलियाए भीमपि भुवेगम डसई' (स ४२१, पात्र, कण्ठ)।

पयर पुं [प्रदर] १ योनि का रोम-विशेष। २ विदारण, भंग। ३ शर, बाण (दे १, १४)।

पयर देखो पडर = वप, 'कोडुविमो य खित्तें धल पयरेइ' (सुवा ३६०)।

पयर = देखो पयार = प्रकार (दे १, ६८, पद)।

पयर देखो पयार = प्रकार (दे १, ६८)।

पयर पुन [प्रतर] १ पत्रक, पत्रा, पतरा, 'बणपययलबमाएमुतासुज्जल' वरविमाराएकुटीय' (कण्ठ, जीव ३, भाव १)। २ वृत्त पत्राकार भ्राम्यपत्र विशेष, एक प्रकार का गहना (भीम छाया १, १)। ३ गांछत विशेष, सूची से छुली हुई सूची (कम्म ५, ६७, जीवम ६२, १०२)। ४ मेढ विशेष, धाँस धाँसि की तरह पदार्थ का घुमगमाव (मास ७)। 'तप पुन [तपस्] सव विशेष, 'यदु' [वृत्त] संस्मान विशेष (राज)।

पयर न [प्रतर] गणित विशेष, घेणी से गुनी हुई घेणी (सणु १७३)।

पयरण न [प्रवरण] १ प्रस्ताव, प्रसंग। २ एकाग्र प्रतिपादन रूप। ३ एकाग्र प्रतिपादन प्रयोग दुग्धसहमरण' (दे १, २४६)।

पयरण न [प्रतरण] प्रथम दातव्य निद्रा (राज)।

पयरिस देखो पर्यस। यः पयरिसंत (पउम ६, ६४)।

पयरिस देखो पगरिस (महा)।

पयल सव [प्र + चल] १ चलना। २ खलित होना। पयनेग (भाषा ९, २,

३, ३)। वहु. पयलेमाण (भाषा २, २, ३, ३)।

पयल देखो पयड = प्र + कट् + पयल (पिंग)। सहु. पयलि (श्रप) (पिंग)।

पयल देखो पयड = प्रकट (पिंग)।

पयल (श्रप) सक [प्र + चालय] १ चलाना। २ निराना। पयल (पिंग)।

पयल वि [प्रचल] चलायमान, चलनेवाला (पउम १००, ६)।

पयल पु [दे] नीड, पसि गृह (दे ६, ७)।

पयल } खी [दे. प्रचला] १ निद्रा, नीड पयला } (दे ६, ६)। २ निद्रा विशेष, बैठे-बैठे क्षीर खड़े खड़े जो नीड प्राती है वह।

३ जिसके उदय से बैठे बैठे क्षीर खड़े-खड़े नीड प्राती है वह कर्म (सन १५, कम्म १, ११)। 'पयला खी [दे. प्रचला] १ कर्म-विशेष, जिसके उदय से चलते चलते निद्रा प्राती है वह कर्म। २ चलते चलते माने-वाली नीड (कम्म १, १, टा ६, निज्ज ११)। पयला भक [प्रचलाय] निद्रा सेना, नीड कला। पयलाइ (पात्र)। हेहु. पयलाइचए (कस)।

पयलाइअ न [प्रचलायित] १ नीड, निद्रा। २ घूर्णन, नीड के कारण बैठे बैठे सिर का झोलना (सि १२, ४२)।

पयलाइया खी [दे] हाथ से चलनेवाले जन्तु की एक जाति (सूम २, ३, २५)। प्रचलाय देखो पयला = प्रचलाय। पयलायइ (जीव ३)। वहु. पयलायत (राज)। पयलाय पु [दे] १ हट, महादेव (दे ६, ७२)। २ सव, साथ (दे ६, ७२, पद)। पयलायण न [प्रचलायन] देखो पयलाइअ (इह ३)।

पयलायभक्त पु [दे] मगुर, मोर (दे ६, ३६)।

पयलिअ देखो पयलिअ (पिंग, पि २३८)। पयलिय वि [प्रचलिय] १ स्वतंत्र, गिरा हुआ (राय भात)। २ हिना हुआ (पउम ६८, ७३, छाया १, ८, कण्ठ, क्षीर)।

पयलिय वि [प्रदलिय] भगा हुआ, छोटा हुआ (कण्ठ)।

पयले वर [प्र + चालय] चलायमान करना, खलित करना। पयलेइ (पउम १, १७)।

पयल भक [प्र + सृ] पसरना, फैलना। पयलाइ (दे ४, ७७, प्राकृ ७६)।

पयल भक [कृ] १ शिपिलता करना, ढोता होना। २ लटकना। पयलाइ (दे ४, ७०)।

पयल वि [प्रसृ] फैला हुआ (पात्र)।

पयल पुं [प्रकल्य] महाग्रह-विशेष (सुज्ज २०)।

पयहिर वि [प्रसृमर] फैलनेवाला (कुमा)।

पयहिर वि [शैथिल्यकृत] शिपिल होने-वाला, ढोला होनेवाला (कुमा ६, ४३)।

पयहिर वि [लम्बनकृत] लटकनेवाला (कुमा ६ ४३)।

पयव सक [प्र + तप्, तापय] तपाना, गरम करना। पयवेज्ज (सि ४, २८)। वहु. पयविज्जत (सि २, २४)।

पयव सक [पा] पीना, पान करना। वचहु. 'धीरस सद्धुहल पणपयविज्जंतअ' (सि २, २४)।

पयवई खी [दे] सेना, लश्कर (दे ६, १६)।

पयवि खी [पदवि] देखो पयवी (कण्ठ ८७२)।

पयविअ वि [प्रतप्त, प्रतापित] गरम किया हुआ, तपाना हुआ (पा १८५, सि २, २४)।

पयवी खी [पदवी] १ मार्ग, रास्ता (पात्र, गा १०७, सुवा ३७८)। २ विरद, पदवी (उप पु ३८६)।

पयइ सक [प्र + हा] व्याग करना, छोड़ना। पयइ, पयहिज, पयहेज्ज (सूम १, १०, १५, १, २, २, ११, १, २, ३, ६, उत ४, १९; स १३६)। सहु. पयहिय (पउम ६३, १६, कण्ठ १, २४)। वृ. पयहियकन (ता ७१४)।

पयहिण देखो पदविण्यन = प्रदाण (मवि)।

पया सक [प्र + जनय] प्रसर करना, जन्म देना। पयामि (विपा १, ७)। पयाएज्जाति (विपा १, ७)। मवि. पयाहिति, पयाहिंति, पयाहिंति (कण्ठ, पि ७६, कण्ठ)।

पया सव [प्र + या] प्रयाण करना, प्रस्थान करना। पयाइ (उत १३, २४)।

पया खी [दे] झुली, झुहा (राज)।

पया खी, व. [प्रजा] १ पसरती मनुष्य, देवत 'जहय पयाए गरिते' (उत, विपा

१, १) । २ कोक, जन समूह (सिरि ४२, पंचा ७, ३७) । ३ जंतु-समूह, 'निबिण्ण-चारी धरए पयायु' (भाषा; सुम १, ५, २, ६) । ४ सतान वाली स्त्री; 'निबिण्ण नदि धरए पयायु भमोहदेसी' (भाषा; सुम १, १०, १५) । ५ सतान, सतति (सिरि ४२) । 'पंद पुं [नन्द] एक कुलकर पुष्य का नाम (पउम ३, ५३) । 'नाह पुं [नाथ] राजा, नरेरा (सुवा ५७५) । 'पाल पुं [पाल] एक जैन मुनि जो पांचवें बलदेव के पूर्वजन्म में शुक्र थे (पउम २०, १६२) । 'वइ पुं [वति] १ ब्रह्मा, विपाता (पाम, सुवा ३०५) । २ प्रथम नागदेव के पिता का नाम (पउम २०, १८२, सम १५२) । ३ नतान-देव विशेष, रौहिणी-नक्षत्र का प्रसिद्धाधिक देव (ठा २, ३—पत्र ७७; सुज १०, १२) । ४ दश, वरपय प्रादि श्रुति । ५ राजा, नरेरा । ६ सूर्य, रवि । ७ बहि, भगिन । ८ लघु । ९ पिता, जनक । १० कीट-विशेष । ११ जामाता (हे १, १७७, १८०) । १२ भलो राज का ज्योतिर्वा श्रुत (सुज १०, १२३) ।

पयाइ पु [पदाति] व्यास, पाँच से (वेद) चलनेवाला वैदिक (हे २, १९८, पइ, कुमा, महा) ।

पयाग पुन [पयाग] तीर्थ-विशेष, जहाँ गंगा नीर यमुना का संगम है (पउम ८२, ८३; हे १, १७७) ।

पयाग न [प्रदान] दान, वितरण (उवा, उव ५६७ टी, सुर ४, २१०, सुवा ४६२) ।

पयाग न [प्रदान] विस्तार (अव १६, ६) ।

पयाग न [प्रयाग] प्रस्थान, गमन (श्यामा १, ३; पएह २, १; पउम ५४, २८; महा) ।

पयाग देवो पयाम (स ६५६) ।

पयाम न [दे] भद्रपूर्व, क्पातुसार (दे ६, ६, पाम) ।

पयाय देवो पयाग (हुमा) ।

पयाय वि [प्रयात] निरुने प्रयाण किया हो पद (उज २११ टी, महा, कीप) ।

पयाय वि [प्रजात] उत्पन्न, संजात, 'पयान-लाया रिमि' (दश ७, ३१) ।

पयाय वि [प्रजात, प्रजनिन] प्रजुत, जिसके जन्म दिया हो यह; 'दाराय पयाय' (विवा १,

१; २; कप, श्यामा १, १—पत्र ३३), 'पयाया पुत्त' (वसु) ।

पयाय देवो पयाव = प्रताप (गा ३२६; वे ४, ३०) ।

पयाय सक [प्र + चारय] प्रचार करना ।

पयारद (सण) । संक. पयारिवि (पप) (सण) ।

पयार सक [प्र + तारय] प्रवारण करना, ठगना । पयारद, पयारवि (सण) ।

पयार पुं [प्रार] १ मेद, किम्प । २ टय, रोति, लपह (हे १, ६८, कुमा) ।

पयार पुं [प्राकार] चित्ता, दुर्ग (पउम ३०, ४६) ।

पयार पुं [प्रचार] १ संचार, सचरण (सुवा २४) । २ प्रसार, कैलाव (हे १, ६८) ।

पयार पु [प्रचार] १ प्रकय-प्राप्ति (दसनि १, ४१) । २ भाषण, भाषार (दसनि १, १३५) ।

पयारण न [प्रतारण] बहचान, ठगई (सुर १२, ६१) ।

पयारिअ वि [प्रतारित] ठगा हुमा, बहिबत (पाम, सुर ४, १५५) ।

पयाल पुं [पाताल] भयान्क नरनरनायको का शासन-यन्त्र, 'छम्पुह पयाल किप्रर' (सति ८) ।

पयाव स [प्र + तापय] ठगना, गरम करना । वक. पयावमाण (सि ५५२) । हेक. पयावित्तय (वय) ।

पयाव पुं [प्रताप] १ तेज, प्रवर्तता (हुमा, सण) । २ प्रहृष्ट ताप, प्रवर्जता (पव ४) ।

पयायण न [पाचन] पक्वाना, पाव करना (पएह १, १, आ ८) ।

पयायण न [प्रतापन] १ गरम करना, ठगना (शोप १८० मा-पिड ३४, भाषा) । २ क्षति (हुज ३८८) ।

पयावि वि [प्रतपित्त] १ प्रताप-शाली । २ पुं. इत्यानु संघ के एक राजा का नाम (पउम ५, ५) ।

पयास सक [प्र + साराय] १ श्वक बनना । २ थमराना । ३ प्रविष्ट करना ।

पयाइ (हे ४, ४५) । बट. पयासंत, पयासेत, पयामअंत (सण, गा ४०३; उज

८३३ टी; पि ३६७) । क. पयासणिज, पयासिपवज (उज ५६७ टी, उज पु ५५) ।

पयास देवो पगास = प्रकाश (पाम, कुमा) ।

पयास पुं [पयास] प्रयन, उद्यम (वेदय २६०) ।

पयास (भप) नीचे देखो (भवि) ।

पयासमा वि [प्रशाशक] प्रशास करनेवाला (सं ७८) ।

पयासण न [प्रकाशन] १ प्रकाश-करण (भाषा, सुवा ४१६) । २ वि. प्रकाशन, प्रकाश करनेवाला, 'परमत्पयासण नीर' (हुक १) ।

पयासय देवो पयासग (विसे ११३०, सं १, पव ८६) ।

पयासि वि [प्रशाशित] प्रशास करनेवाला (सण, हम्मीर १४) ।

पयासिय देवो पयासिय (भवि) ।

पयासिरि वि [प्रशाशित] प्रशास करनेवाला (भवि) ।

पयासेत देवो पयास = प्र + साराय ।

पयाहिण देवो पदन्तिग = प्रदतिण (उमा, बीप, भवि, सि ६५) ।

पयाहिण देवो पदन्तिग = प्रदतिणय । पयाहिण (भवि) । पयाहिणित (हुज २६३) ।

पयाहिणा देवो पदन्तिग (सुवा ७७) ।

पयययथाण (सी) न [पर्ययस्थान] ग्रहति में प्रवस्थान (सज्ज ४८) ।

पर सक [धम्] भ्रमण करण, हूणण ।

परह (हे ४, १६१, कुमा) ।

पर देवा प = प्र (तंजु ४६) ।

पर वि [पर] १ भय, भिन्न, इनर (गा ३८४, महा, प्राप् ८, १५७) । २ लपट, ललान 'कोअल्लनरा' (महा, कुमा) । ३ श्रेष्ठ, उत्तम, प्रधान (प्राका, सण १५) ।

४ प्रत्यक्ष, प्रहृष्ट (भाषा, धा २३) ।

५ उत्तरवर्ती, बाद का 'परमोण' (महा) ।

६ दूरवर्ती (पूष १, ८, निरु १) । ७ भयान्गीय, धरतीय (उज १, निरु २) । ८ पुं शत्रु, दुश्मन, रिउ (सुर १२, ६२, कुमा, प्राप् ८) । ९ न. वेदन, कन (कुमा, भवि) ।

१० वृद्धि [पुट्ट] पय से पणित । २ पुं. कोपित पयो (हे १, १७६) । ३ अत्यय नि

[‘सीधिक’ मित्र दर्शनवाला (भग)]। ‘एस पुं [‘देश’] विदेश, मित्र, अन्य देश (मवि)। ‘ओ म [‘वसु’] १ बाद में, परलो—द्वितीय वरको, ‘अवधौ परमो’ (महा)। २ मित्र मे, इतर मे (कुमा)। ३ इतर से, अन्य से (सुष १, १२)। ‘गणित्य वि [‘गणीय’] मित्र मण से संबन्ध रखनेवाला। श्री. ‘खिया (निबु =)। ‘गहिहंभान न [‘गहोभ्यान’] इतर को नित्य का विचार (प्राठ)। ‘घाय पु [‘घात’] १ दूसरे को घात पड़वाना। २ पुं, कर्म-विशेष, जिसके उदय से जीव अन्य बलवानो की भी दृष्टि में अन्य समझा जाता है वह कर्म, ‘परपाउव्या पाणी परेसि बलीएणि होइ दुद्धरितो’ (बम्म १, ४४)। ‘चिचत्तु वि [‘चित्तज्ञ’] अन्य के मन के भाव को जाननेवाला (उप १७६ टी)। ‘च्छंढ, ‘छंढ पुं [‘च्छन्द’] १ पर का प्रतिप्राय, अन्य का आशय (ठा ४, ४, भग २५, ७)। २ पराधीन, परतन्त्र (राज, पात्र)। ‘जाणुअ वि [‘ज्ञ’] १ पर को जाननेवाला। २ प्रकृत पानकार (प्राठ १८)। ‘हुं पुं [‘थि’] परोपकार (राज)। ‘हुं ली [‘थि’] दूसरे के लिए, ‘कंठं परहुए’ (मात्रा)। ‘जिदंभान न [‘निम्बोभ्यान’] अन्य की निम्दा का चिन्तन (प्राठ)। ‘णुअ देवो [‘जाणुअ (प्राठ १८)। ‘तंत वि [‘तन्त्र’] पराधीन, परतन्त्र (सुपा २३३)। ‘तिरिअ देवो [‘उत्तिय’] (भग, सम्म ८५)। ‘तीर न [‘तीर’] सामनेवाला विपारी (पात्र)। ‘त्त न [‘त्य’] १ निजत्व, पारम्य। २ वैशेषिक दर्शन में प्रसिद्ध गुण-विशेष (विसे २४६१)। ‘त्त म [‘त्र’] १ नमान्तर मे, परलोके में (सुपा ५३)। २ म. जन्मान्तर से द्वह्रस्त्रि पत्ते नरमपादं बति नियमेण’ (सुपा ५२१), ‘इह लोए चिय दीउद सगो नरमो म किं परतेण (वजा १३८)। ‘त्य म [‘त्र’] जन्मान्तर में, ‘इह परतवायि म य विद्ध न विजए तपि सया निशिद’ (सत्त ३७, सुर १४, २३, ३२)। ‘त्य देवो [‘हुं (सुर ४, ७३)। ‘त्यो ली [‘ली’] परलोकी की (प्राप् १५५)। ‘दार पुं न [‘दार’] परवीय स्त्री (पठि), ‘जो यजद परदार सो सेवद नो ब्याय

परदार’ (सुपा ३६६), ‘द्वेलेण अण्यकर्त्तं गहिया वेसावि होइ परदार’ (सुपा ३८०)। ‘दारि वि [‘दारि’] परलोकीयत्वा ‘ता एस वुमईए कएण परलोयिए आयाभो’ (सुर ६, १७६)। ‘पकर वि [‘पक्ष’] वैषमिक, मित्र घर्म का अनुपायी (द्र १७)। ‘परिवाइय वि [‘परिवादिक’] इतर के दोषो को बोलनेवाला, पर निन्दक (मीप)। ‘परिवाय पुं [‘परिवाद’] १ पर के गुण-दोषो का चिप्रीणी वचन (मीप, कप्प)। २ पर-निन्दक, इतर के दोषो का परीकीर्त्तन (ठा १; ४, ४)। ३ अन्य के सदगुणो का अपलाप (पंज)। ‘परिवाय पुं [‘परिपाव’] अन्य का पातन, दोषोपादान-द्वारा दूसरे को गिराना (भग १२, ५)। ‘पुट्ट देवो [‘उट्ट’] (पराए १७, स ४१६)। ‘भव पुं [‘भव’] आमासी भग्न (मीप, परह १, १)। ‘अविअ वि [‘अविक’] आमासी जन्म से संबन्ध रखनेवाला (भग, ठा ६)। ‘भाग पुं [‘भाग’] १ श्रेष्ठ प्रश। २ अन्य का हित्सा। ३ अत्यन्त उत्कृष्ट (उप ४ ६७)। ‘महेल ली [‘महेला’] १ उत्तम ली। २ परस्त्री ली (सुपा ४७०)। ‘यत्त देवो [‘यत्त’] ‘परपतो परछवो’ (पात्र)। ‘लोअ, ‘लोअ पु [‘लोक’] १ इतर जन, स्वजन से भिन्न (उप ६८६ टी)। २ जन्मान्तर (पराह १, २, विसे १६५१; महा, प्राप् ७५, सण)। ‘वस वि [‘वश’] पराधीन, परतन्त्र (कुमा, सुपा २३७)। ‘वाह पुं [‘वादिन्’] इतर दाह-निक (मीप)। ‘वाय पुं [‘वाद’] १ इतर दर्शन, निज मत (मीप)। २ श्रेष्ठ वादी (था २३)। ‘वाय पुं [‘वाच’] १ सज्जन, सुमन। २ वि. श्रेष्ठ वाणीवाला (था २३)। ‘वाय वि [‘वाज’] १ श्रेष्ठ गतिवाला। २ पुं, श्रेष्ठ मय (था २३)। ‘वाय वि [‘वाय’] पानकर, ज्ञानी (था २३)। ‘वाय वि [‘पाक’] १ सुन्दर खोई बनाये-वाला। २ पुं, रसोदया (था २३)। ‘वाय पुं [‘पात’] १ मुपावी, जुए वा खेलावी। २ अशुभ समय (था २३)। ‘वाय पुं [‘व्याद’] ब्राह्मण, मित्र (था २३)। ‘वाय पुं [‘वाय’] धनी पुलाहा, धनान् तनुवाय

(था २३)। ‘वाय वि [‘प्रात’] १ प्रकृत समूहवाला। २ न, सुभिक्ष समय का घाय्य (था २३)। ‘वाय पुं [‘वात’] श्रेष्ठ समय का जलपित्त (था २३)। ‘वाय पुं [‘व्याच’] धूर्त, ठग (था २३)। ‘वाय वि [‘पाय’] धनोक्तिवाला (था २३)। ‘वाय वि [‘वाक’] वेदन्त, वेदवित (था २३)। ‘वाय वि [‘पाट’] १ दयालु, कारुणिक। २ शूब पान करनेवाला। ३ शूब सूखने-वाला। ४ पुं, पावुड काल का दयालु वृक्ष। ५ मय व्यवनी (था २३)। ‘वाय वि [‘वाद’] सुस्तिर (था २३)। ‘वाय वि [‘व्याट’] १ श्रेष्ठ ब्राह्मणिक। २ पुं, वस, वपका (था २३)। ‘वाय वि [‘वाट’] १ प्रकृत बहन करनेवाला। २ पुं, श्रेष्ठ सन्तु-वाय, उत्तम पुलाहा। ३ महान् पवन (था २३)। ‘वाय वि [‘व्यागस’] १ भक्ति बढा धरपायी, सुन्दर धरपायी (था २३)। ‘वाय वि [‘व्याप’] प्रकृत विस्तारवाला (था २३)। ‘वाय वि [‘वाक’] १ जहाँ पर प्रकृत वक्तव्य हो वह स्थान। २ न. मत्स्य-परिवृष्टि सरोवर (था २३)। ‘वाय वि [‘व्याय’] १ श्रेष्ठ धातुवाला। २ जहाँ पर पक्षियों का विशेष आगमन होता हो वह। ३ पुं, अनुपल पवन से चलता हवाज। ४ सुन्दर घर। ५ धनोद्देश, धन प्रवेश (था २३)। ‘वाय वि [‘वाय’] १ जहाँ पानी का प्रकृत आगमन हो वह। २ न, जलधि-शुष, समुद्र का कुँह। ३ पुं, महासमुद्र, महा-सागर (था २३)। ‘वाय वि [‘व्याज’] अन्य के पास-विशेष गमन करनेवाला। २ आर्यना-नरायण (था २३)। ‘वाय वि [‘पाय’] १ आर्यत हीन भाग। २ निल-वर्द्धि (था २३)। ‘वाय वि [‘वाप’] १ प्रकृत वपनवाला। २ पुं, वृषक (था २३)। ‘वाय वि [‘पाप’] १ महापापी। २ हत्या करनेवाला (था २३)। ‘वाय पुं [‘पाक’] १ पुष्करार, पुष्पार। २ युक्त जीव। ३ पहवी सोन नर-भूमि (था २३)। ‘वाय वि [‘पाय’] वृक्ष-रहित, वृक्ष-वर्जित (था २३)। ‘वाय नि [‘वाज’] शत्रु-नाशक (था २३)। ‘वाय पुं [‘वाद’] महान् इत,

महा वेड (था २३)। *वाय वि [पात्] प्रष्टु पवताला (था २३)। *वाय वि [वाच] फलित शान्ति (था २३)। *वाय वि [वाप] १ विरोप भाव से शत्रु की चित्ता करनेवाला। २ पुं. मन्त्री, दयालय। ३ मुमुक्षु, योद्धा (था २३)। *वाय वि [पात] भाषात-मुन्दर, जो प्रारम्भ में हो मुन्दर हो वह (था २३)। *वाय वि [त्राय] श्रेष्ठ विवाहवाला (था २३)। *वाय वि [पाय] श्रेष्ठ रक्षावाला, जिसरी रक्षा का उत्तम प्रबन्ध हो वह। ४ विरक्त प्याना। ३ पुं. राजा, नरेश (था २३)। *वाय वि [व्यात] १ दूत के पास विरोप पमन करनेवाला। २ पुं. मित्रक, याचक (था २३)। *वाय वि [पायस्] १ दूसरे की रक्षा के लिए हथियार रखनेवाला। २ पुं. मुमुक्षु, योद्धा (था २३)। *वाया क्षी [व्याता] बैरया, भारागना (था २३)। *वाया क्षी [व्यागस्] क्षतलो, कुतारा (था २३)। *वाया क्षी [व्यापा] क्षतिम सुदृढ की स्थिति (था २३)। *वाया क्षी [पाता] पूर्ण-श्री (था २३)। *वाया क्षी [त्राया] नृप-बन्दा (था २३)। *वाया क्षी [पागा] मर-भूमि (था २३)। *वाया क्षी [वाप्] बरमीर-भूमि (था २३)। *वाया क्षी [वाज्] नृप-स्थिति (था २३)। *वाया क्षी [पान्] शत्रुपरी, कन्धु-विरोध (था २३)। *वाया क्षी [व्याग] भेरी, वाद्य-विरोध (था २३)। *विमस पुं [विदेश] परदेश, विदेश (पञ्च १२, १६)। *व्यस देगो 'वस (वह) ना २६५, मवि)। *संतिग वि [सतर] वर-संगी, परीय (पह १३)। *समय पुं [समय] दूर दर्शन का निदान 'वायस्या मयराया सायसा येन परामया' (गम् १५५)। *हुअ वि [भृा] १ दूसरे से पुत्र, अन्य से पालित (ग्रन्थ)। २ पुं. कोपन, रिच पत्नी (बन)। क्षी. आ (गुर ३, ५४: पाय)। *पाय देगो 'पाय (ग्रन्थ १०५, मय ६७)। *पीन देगो 'हीन (बर्हि १०५)। *यस वि [तरा] पपीता, पराज (पञ्च १५,

३४, उअ पु १८२; महा)। *हीण वि [धीन] पराज, पराजत (भाट—मातवि २०)।

परं देखो परा—अ (था २३; पञ्च ६१, ८)।

परं म [परम्] १ परन्तु निन्तु; 'जं तुमं धाणवेसिति, परं तुह दूरे नयर' (महा)। २ उतरान्त, 'नो से बण्ड एतो नाहि; तेण परं, जलय नाणदंशचरिताई उल्लसपवि ति वेमि' (बम १, ११, ३, ४—७५, १२—२६)। ३ बैयल, फलत. 'एस मह संतावी, परं माणससरमजणेण जइ धवणच्छदिति' (महा)।

परं म [परन्] धागानो बरं, 'भगजं बल्ल परं परारि' (वे २), 'भगजं परं परारि गुरिला बिजति मयसपति' (प्रागू ११०)। परंग सक [परि+अङ्ग] वतना, गति कला। बवह. परंगिजमाण (वीर)।

परगमग न [पर्यङ्गन] पांव से वतना, चंक्रमण (मीर)। परंगमग न [पर्यङ्गन] चलाना, चंक्रमण कराना (अग ११, ११—पञ्च २५४)।

परंतम वि [परतम] अन्य को हटान करने-वाला (ठा ४, २—पञ्च २१६)। परंतम वि [परतमम्] १ अन्य पर शेष करनेवाला। २ अन्य विषयक अज्ञान रखने-वाला (ठा ४, २—पञ्च २१६)।

परंतु म [परन्तु] निन्तु (गुया ५६६)। परंदम वि [परंदम] १ अन्य को पीड़ा पहुँचाने वाला (उत ७, ६)। २ अन्य को शान्त करनेवाला। ३ धरर धारि को मितानेवाला (ठा ४, २—पञ्च २१६)।

परंपर } वि [परम्पर] १ भिन्न भिन्न परंपरा } (उदि)। २ धारित, 'परंपर परंपरय' मिड—'एलए १. ठा ३, १, १०)। ३ पुं. परम्परा, धर्मिचिह्नन धारा (ठा ७३३), 'पुमिपरंपरएण तं हि दृग्य धारिण्य', 'एण दन्तारपरयो' (धार १), 'परंपरेण' (बन, धर्म १११, ११०६)। परंपरा क्षी [परम्परा] १ अनुक्रम. परितारी (धर, क्षीर, पाषाण)। २ धर्मिचिह्नन धारा, प्रगाढ़ (राना १, १)। ३ निरन्तर, अन-परान्त (अग १, १)। ४ धरधान, धन्य

'मणैतरोववएणया येन परपरोववएणया वेच' (ठा २, २; मग १३, १)।

परंमरि वि [परम्भरि] दूसरे का पेट भरने-वाला (ठा ४, ३—पञ्च २५७)।

परंमुह वि [पराहमुह] मुह-फिता, निमुल (वि २६७)।

परकीअ वि [परकीय] अन्य-सम्बन्धी, दूतर परकेर } से सम्बन्ध रखनेवाला (विसे ५१; परका } गुग ३५६; ममि १५१; पङ्क; स्वय ४०३; म २०७; पङ्क; 'न मेविपया पयया परकाव' (मीर १३)।

परक न [दि] छोटा प्रगाढ़ (दि ६, ८)।

परकन वि [पराकान्त] १ जितने पराक्रम किया हो वह। २ अन्य से आश्रय; 'गामा-गुगामं दूधजगमाएल्ल दुग्गायं दुग्गरसंतं भवई' (प्राचा)। ३ न. पराक्रम, धन। ४ उग्रम, प्रयत्न। ५ अनुमान, 'जै मनुदा महाभाया धीरा मयम्मतरमिणो, मनुदं तेमि परासंतं' (गुप १, ८, २२)।

परकाम मव [परा+क्रम] पराक्रम करना। परकामे, परकमेगना, परकमेगनासि (प्राचा)। बह. परकमंत, परकममाण (प्राचा)। ह. परकमियज्ज, परकम्म (प्राया १, १; मूय १, १, १)।

परकम सर [परा+क्रम] १ जाना। २ आनेवाला करना। ३ धन. प्रवृत्ति करना। परकामे (दन ३, १, ६)। परकमिगना (दन ८, ५१)। छह. परकम्म (दन ८, ३२)।

परकम पुं [पराक्रम] गई प्रादि मे मिल मार्ग (दन ३, १, ५)।

परकम पुंन [पराक्रम] १ वीर्य, वन, रुचि, नापय्यं (रिगे १०५६; ठा १, १, १, गुमा), अन्य परकमे दीयमाएण न ठर मुयं (नम्वन १७६)। २ उतराह। ३ पेट, प्रयत्न (प्राह १, प्रागू ६३; प्राचा)। ४ ठुठु का नाश करने की शक्ति (जं ३)। ५ धर-आक्रमण, पर-पराक्रम (ठा ४, १; धारम)। ६ दन्त, दंत (मूय ३, १, ६)। ७ मार्ग (दण ४००; पुं १०० ८३)।

परकमि वि [पराक्रमिन्] परक्रम-शाल (बर्हि ११, १२०)।

परग न [दि. परक] ? सुण-विशेष, जिसे
फूल धूप जते हैं (भाषा २, २, ३, २०,
सूत्र २, २, ७) । २ धान्य-विशेष (सूत्र
२, २, ११) ।

परग वि [पारग] परग सुण का बना हुआ
(भाषा २, १, ११, ३, २, २, ३, १४) ।
परगासय वि [प्रकाशक] प्रकाश करनेवाला
(संयु ५६) ।

परग्य वि [पराग्य] महर्षि, महर्षि, बहुवचन
(संयु ७, ४३) ।

परज (अप) सक [परा + जि] पराजय
करना, हारना । परजह (अवि) ।

परजिय (अप) वि [पराजित] पराजय-
भ्रष्टा, हारना हुआ (अवि) ।

परजम वि [दि] १ परवश, पराधीन,
परतन्त्र, जिसद्वारा, सुव्यवस्थावादी से केज-
बोसायुगमा परजम (उत्त ४, १३ वृह ४) ।
२ पुन, परतन्त्रता, पराधीनता (ठा १०—
पद्य ५०५, भाग ७, म—पद्य ३५४) ।

परह देखो परिअष्ट = परिवर्त (जीवस २५२,
पद्य १६२; नम ५, ५६) ।

परडा छी [दि] सर्व-विशेष (दि ६, ५),
‘उच्चारं कुलमाणो भगणद्वेष्टमि नव-
परडाए, दण्डो पीडाए ममी’ (सुधा ६२०) ।

परदारिअ पु [पारदारिक] परछी-सम्पद
(उत्तम १०५, १०७) ।

परद वि [दि] १ शीघ्र, दुःखित (दि ६,
७०, पाम, सुर ७, ४, १६, १४४, उप पु
२२०, महा) । २ पठित । ३ भीर, डरपोक
(दि ६, ७०) । ४ व्याप्त, ‘जोह परदा जीवा
न शोषणुधनिणो होवि’ (धम्मो १४) ।

परप्पर देखो परोपर (वि ३११, नाट—
माततो १६८) ।

परवममाग देखो पराभय = परा + भू ।

परभस वि [दि] भीर, डरपोक (पह) ।

परभाज पु [दि] मुख, मेष्ठ (दि ६, २७) ।

परम वि [परम] १ उत्कृष्ट, सर्वोच्च (सूत्र
१, ६, जो १७) । २ उत्तम, सर्वोत्तम,
श्रेष्ठ (पंचय ४, धर्म ३, कृमा) । ३ धर्म्य,
धर्म्य (पह १, ३; मय, भीम) । ४
प्रमाण, मुख्य (भाषा, रम ६, ३) । ५ पुं.

मोक्ष, भुक्ति । ६ संयम, चारित्र्य (भाषा,
सूत्र १, ६) । ७ न. सुख (संय ४) । ८
सगातार पांच दिनों का उपवास (संनोव
५८) । ९ पुं [‘र्य’] १ सत्य पदार्थ,
वास्तविक चीज, ‘अयं परमद्वे सेसे मण्ड’
(भग, धर्म १) । २ मोक्ष, मुक्ति (उत्त १८,
पह १, ३) । ३ संयम, चारित्र्य (सूत्र १,
६) । ४ पुं. देखो नीचे ‘र्य = र्य’, ‘पर-
मद्विद्विषम’ (पह, धर्म २) । ५ पुं. देखो
‘नन (संय १५१) । ६ र्य पुं [‘र्य’] १

सत्य, सत्य, ‘सत् परमद्व’ (पाम), ‘परम-
द्वयो’ (अभि ६१) । २—४ देखो ‘हुं
(सुधा २४, ११०, सण, प्रासु १६४, महा) ।

‘र्य न [‘र्य’] सर्वोत्तम हृदयार, अमोघ
अक्ष (सं १, १) । २ सि वि [‘र्य’] १
१ मोक्ष देखनेवाला । २ मोक्ष मार्ग का
ज्ञानकार (भाषा) । ३ न [‘र्य’] १ क्षीर,
दुग्ध प्रधान मिष्ट भोजन (सुधा ३६०) । २
एक दिन का उपवास (संनोव ५८) । ५ पुं

न [‘पद’] मोक्ष, निर्वाण, भुक्ति (पाम,
अभि, मजि ४०, वंवा ३४) । ५ पु पु
[‘र्य’] सर्वोत्तम धारणा, परमेस्वर
(सुधा, सुधा ८३, रण ४३) । ५ पु
देखो ‘पय (सुधा १२७) । ५ पु देखो
‘पय (अभि) । ५ पु छी [‘र्य’] भुक्ति,
मोक्ष, ‘सेसेति धारहिउ अरिसेसिरी

परमपन्न पत्तो’ (सुधा १२७) । ५ पु
पु [‘र्य’] परमार्थ, महर्षि देव का
परम ज्ञान (मोह ३) । ५ पु [‘र्य’] न
[‘संयु’] सत्त्वा विशेष (नम ५, ७१) ।

‘सोमणसिय वि [‘सोमनसिय’] त
सर्वोत्तम मनवाता, सत्तु मनवाता (भीष,
नम) । ‘सोमणसिय वि [‘सोमनसिय’]
वही धर्म (भीष, नम) । ‘हेला छी [‘हेला’]
उत्कृष्ट विरक्तार (सुधा ४७०) । ५ पु न
[‘र्य’] १ सत्त्वा धातुय, वही उमर
(उत्तम १०, ७) । २ नोचित माल, उमर
(निपा १, १) । ३ पु पु [‘र्य’] सर्वोत्तम
यसु (अप, गज) । ४ पु [‘र्य’] १ धर्म्य, २

अमर, विशेष, नाटक जीवों को दुःख देनेवाले
देवों को एक पाति (नम २८) । ५ पु [‘र्य’]
वि [‘र्य’] धर्म्य, अमर, विशेष, नाटक,
ज्ञान-विशेष (अप) ।

परमाहमिय वि [परमधार्मिक] सुख का
अभिप्राय (संय ४, १) ।

परमिद्धि पु [परमेष्ठिन] १ ब्रह्मा, चतुरानन
(पाम, सम्मत ७८) । २ महर्षि, सिद्ध,
आचार्य, उपाध्याय श्रीर मुनि (सुधा ६५,
पाम ६८; गण ६, निपा २०) ।

परमुक्त वि [परामुक्त] परित्यक्त (उत्तम ७१,
२६) ।

परसुवागारि } वि [परमोपनारि] ब्रह्मा
परमुक्ताय } उपकार करनेवाला (सुर २,
४२, २, ३७) ।

परसुह देखो परसुह (सं २, १६) ।

परमेष्ठि देखो परमेष्ठि (सुधा, अभि, देव
४६६) ।

परमेसर पुं [परमेस्वर] सर्वधर्म-संपन्न,
परमात्मा (सम्मत १४४, अभि) ।

परसुह वि [परसुह] विमुक्त, मुक्ति-कार,
उदासीन (छाया १, २, काप्र ७२३, गा
६८८) ।

परय न [परक] भाविक, अतिशय (उत्त
३४, १४) ।

परलोइअ वि [परलोइक] जन्मांतर-
संबन्धी (भाषा सन ११६, पह १, ५) ।

परवाय वि [परवाज] १ श्रेष्ठ शब्द से
श्रेष्ठ करनेवाला । २ पु. सारथि, रथ
हाकिनेवाला (था २३) ।

परवाय वि [परवाय] १ श्रेष्ठ माना जाने-
वाला । २ पु. उत्तम गवैया (था २३) ।

परवाय पुं [प्रपाज] माज (अन) भले वा
नोड, वह पर जहाँ नाज संगृहीत किया
जाता है, कोठार, बलार (था २३) ।

परवाय छी [प्रपाज] गिरि नदी, पहाड़ी
नदी (था २३) ।

परस (अप) देखो फास = स्वर्ग (विग भवि) ।

‘मणि पुं [‘मणि’] रत्न विशेष, जिसे
स्वर्ग से खोजा जाता है (विग) ।

परसण्य (अप) देखो पसण्य (विग) ।

परस पुं [परस] धर्म विशेष, परधन, कुठार,
कुल्हारी (अप ६, ३३, प्रासु ६, ६२,
पाम) । २ पुं [‘राम’] जमानत या
वा पुं, जिसने दसों बार ११ शनिव प्रथिनी
की थी (सुधा, वि २०८) ।

परसुहृत् वुं [दि.] वृत्, वेह, वरुत् (दे ६, २६) ।

परस्तर वुंकी [दि. पराशर.] नम, पशु विरोध (पराश १: राज.) छी. 'री (पराश ११) ।

परहृत् वि [परामृत.] पराजित, हराया गया (वज्र ६१, ८) ।

परा व [परा] इन प्रती का सूचक अर्थ—
१. मानिपुत्र, संयुक्ता । २. रत्ना । ३. शर्वण । ४. प्राप्ति, मुख्यता । ५. विष्णु ।

६. मति, गमन । ७. भद्र । ८. अनादर । ९. विरस्कार । १०. प्रायावर्तन (हे २, २१७) ।

११. शूर, मानस (छा ३, २, आ २३) ।

परा छी [दि. परा] वृत् विरोध (वह २, ३—न १२३) ।

पराहृत् स [परा + जि] हराया, पराजय करना । सङ्ग, पराहृत्ता (मूलनि १६६) ।

पराहृत् वि [पराजित] पराजित-प्राप्त (वज्र २, ८६; श्रीम, न ३३४, गुर ६, २३; १३, १७१; उत्त ३२, १२) ।

पराहृत् (अर्थ) वि [परागत] गया हुआ (अर्थ) ।

पराजय देलो पराजित । पराजय (वि ४७३; मग) ।

पराहृं छी [परकीया] इतर से संबंध रखने-वाली, यह मायिना जो परसुहृत् से भेन करे (हे ४, ३५०, ३६७) । देलो पराय = परकीय ।

पराजय देलो पराजय (मूल २, १, ६) ।

पराजय वि [पराजित] निराजित, निर्णय (मग ३०) ।

पराजय म [परा + हृ] निराकरण करना । पराजयि (छी) (माट—५३ ३५) ।

पराजय वुं [पराजय] पराजित, पराजित, हार (अर्थ) ।

पराजय } स [परा + जि] पराजय पराजित } करना, हराया । शूरा, पराज-
नित्य (वि ५१७) । अर्थ, पराजित्यम (वि ५२१) । गौर, पराजित्य (छा ४, २) । हेर पराजित्य (मग ७, ८) ।

पराजित्य } देलो पराजित = पराजित पराजित } (मग ५ १२; मग) ।

पराज देलो पराज = प्राप्त (माट—५३ ३५; वि १२२) ।

पराजय वि [परकीय] अन्य का, दूसरे का 'जय हिरण्यसुवर्णं हृत्वेण पराजयं वि नो हिरण्यं' (गज २, १०) ।

पराजय वि [पराजित] पहुँचा हुआ (अर्थ) । पराजित स [परा + जि] पहुँचाया । पराजय (मवि) । पराजयि (स २३४); 'जह मण्डि ता निवेष्टिसेछु बुधं तापयिदं पराजयि' (दुय ६०) ।

पराजय न [पराजयन] पहुँचाना; निमन-निष्पेक्षित (अर्थ) । पराजयि (स २३४); 'जह मण्डि ता निवेष्टिसेछु बुधं तापयिदं पराजयि' (दुय ६०) ।

पराजय न [पराजयन] पहुँचाना; निमन-निष्पेक्षित (अर्थ) । पराजयि (स २३४); 'जह मण्डि ता निवेष्टिसेछु बुधं तापयिदं पराजयि' (दुय ६०) ।

पराजय स [परा + श्र] हराया । कवट, पराजयिज्जव, पराजयमाग (ज ३२० टी, लाया १, २, १८) ।

पराजय वुं [पराजय] पराजय, हार (वि १, १) ।

पराजयि वि [पराजित] पराजित, हराया हुआ (अर्थ) । पराजयि (स २३४); 'जह मण्डि ता निवेष्टिसेछु बुधं तापयिदं पराजयि' (दुय ६०) ।

पराजयि स [परा + श्र] हराया । कवट, पराजयिज्जव, पराजयमाग (ज ३२० टी, लाया १, २, १८) ।

पराजयि वुं [पराजय] पराजय, हार (वि १, १) ।

पराजयि वि [पराजित] पराजित, हराया हुआ (अर्थ) । पराजयि (स २३४); 'जह मण्डि ता निवेष्टिसेछु बुधं तापयिदं पराजयि' (दुय ६०) ।

पराजयि स [परा + श्र] हराया । कवट, पराजयिज्जव, पराजयमाग (ज ३२० टी, लाया १, २, १८) ।

पराजयि वुं [पराजय] पराजय, हार (वि १, १) ।

पराजयि वि [पराजित] पराजित, हराया हुआ (अर्थ) । पराजयि (स २३४); 'जह मण्डि ता निवेष्टिसेछु बुधं तापयिदं पराजयि' (दुय ६०) ।

पराजयि स [परा + श्र] हराया । कवट, पराजयिज्जव, पराजयमाग (ज ३२० टी, लाया १, २, १८) ।

पराजयि वुं [पराजय] पराजय, हार (वि १, १) ।

पराजयि वि [पराजित] पराजित, हराया हुआ (अर्थ) । पराजयि (स २३४); 'जह मण्डि ता निवेष्टिसेछु बुधं तापयिदं पराजयि' (दुय ६०) ।

पराजयि स [परा + श्र] हराया । कवट, पराजयिज्जव, पराजयमाग (ज ३२० टी, लाया १, २, १८) ।

पराजयि वुं [पराजय] पराजय, हार (वि १, १) ।

पराजयि वि [पराजित] पराजित, हराया हुआ (अर्थ) । पराजयि (स २३४); 'जह मण्डि ता निवेष्टिसेछु बुधं तापयिदं पराजयि' (दुय ६०) ।

पराजयि स [परा + श्र] हराया । कवट, पराजयिज्जव, पराजयमाग (ज ३२० टी, लाया १, २, १८) ।

पराजयि वुं [पराजय] पराजय, हार (वि १, १) ।

पराय श्र [प्र + राज] विरोध रोमना । वक्र, परायत (अर्थ) ।

पराय वुं [पराय] १. शूरी, राज; 'रिणु वंशु रमो परायो य' (वाम) । २. वृण-रज (कुमा; गज ७) ।

पराय } वि [परकीय] पर-संबन्धी, इतर पराय } से संबंध रखनेवाला; 'नो भयणा पराय गुरुषो बन्धयि हृति मुद्राय' (सट्टि १०५; हे ४, ३७६; मग ५, ५) ।

पराय वि [परायण] तार (अर्थ १, ६१) ।

परायि प्र [परायि] आगामी तीसरा वर्ष (प्रासू ११०; वै २) ।

पराय देलो पलाय (प्रासू ११०) ।

पराय (अर्थ) स [प्र + आय] प्राप्त करना । परायि (हे ४, ४४२) ।

पराय स [परा + श्र] १. बदनाम, बदनाम । २. पीछे लीजा । परायत (उदर ८८) । परायतमाग (राज) ।

पराय स [परा + श्र] १. बदनाम, बदनाम । २. पीछे लीजा । परायत (उदर ८८) । परायतमाग (राज) ।

पराय स [परा + श्र] १. बदनाम, बदनाम । २. पीछे लीजा । परायत (उदर ८८) । परायतमाग (राज) ।

पराय स [परा + श्र] १. बदनाम, बदनाम । २. पीछे लीजा । परायत (उदर ८८) । परायतमाग (राज) ।

पराय स [परा + श्र] १. बदनाम, बदनाम । २. पीछे लीजा । परायत (उदर ८८) । परायतमाग (राज) ।

पराय स [परा + श्र] १. बदनाम, बदनाम । २. पीछे लीजा । परायत (उदर ८८) । परायतमाग (राज) ।

पराय स [परा + श्र] १. बदनाम, बदनाम । २. पीछे लीजा । परायत (उदर ८८) । परायतमाग (राज) ।

पराय स [परा + श्र] १. बदनाम, बदनाम । २. पीछे लीजा । परायत (उदर ८८) । परायतमाग (राज) ।

पराय स [परा + श्र] १. बदनाम, बदनाम । २. पीछे लीजा । परायत (उदर ८८) । परायतमाग (राज) ।

पराय स [परा + श्र] १. बदनाम, बदनाम । २. पीछे लीजा । परायत (उदर ८८) । परायतमाग (राज) ।

पराय स [परा + श्र] १. बदनाम, बदनाम । २. पीछे लीजा । परायत (उदर ८८) । परायतमाग (राज) ।

पराय स [परा + श्र] १. बदनाम, बदनाम । २. पीछे लीजा । परायत (उदर ८८) । परायतमाग (राज) ।

पराय स [परा + श्र] १. बदनाम, बदनाम । २. पीछे लीजा । परायत (उदर ८८) । परायतमाग (राज) ।

पराय स [परा + श्र] १. बदनाम, बदनाम । २. पीछे लीजा । परायत (उदर ८८) । परायतमाग (राज) ।

पराय स [परा + श्र] १. बदनाम, बदनाम । २. पीछे लीजा । परायत (उदर ८८) । परायतमाग (राज) ।

पराहुत } वि [पराभूत] प्रभिमूत, हराया
पराहुत } हुमा (उ ६२८ यो, पाष्) ।

परि म [परि] इन ग्रंथों का सूचक अन्वय—
१ सर्वतोभावात्, समतात्, चारो ओर (पा २२,
सूत्र १, ६) । २ परिपाटी, क्रम (विम) ।
३ पुन पुन, फिर फिर (पणह १, १,
आवक २८४) । ४ सामोप्य, समोपता-
(गडड ७७६) । ५ विनिमय, बदला, 'परि-
याण' = परिवान (भवि) । ६ भविष्य,
विशेष (स ७३४) । ७ संपूर्णता, 'परिद्धिम'
(एव ६६) । ८ बाहरव्य (आवक २८४) ।
९ ऊपर (हे २, २११, सुपा २६६) । १०
रोप, बाकी । ११ पूजा । १२ व्यापकता ।
१३ उपरम, निवृत्ति । १४ शोक । १५
क्षी की प्रकार की प्राप्ति । १६ आश्रयान । १७
संतोष भाषण । १८ भूषण, श्लकरण ।
१९ आलिप्त । २० नियम । २१ वर्जन,
प्रतिषेध (हे २, २१७, भवि, गडड) । २२
निरर्थक भी इसका प्रयोग होता है (गडड
१०, सण) ।

परि देखो पडि = प्रति (ठा ५, १—पत्र
३०२, एण १६—पत्र ७७४, ७८१) ।

परि ओ [दे] गीति, गीत (कुमा) ।

परि सव [क्षिप्] कंकमा । परिड (पट्) ।

परिअज सक [परि + भञ्ज्] भांगना,
तोडना । परिअजइ (वाल्वा १४३) ।

परिअत सक [क्षिप्] १ आलिप्तन करना ।
२ ससर्ग करना । परिअतइ (हे ४, १६०) ।

परिअत देखो पञ्जत (पणह १, ३, पत्रम ६५,
१६, सूत्र २, १, १५) ।

परिअतया ओ [परियत्तया] भविष्य
मन्त्रणा (नाट—मासती २८) ।

परिअतिअ वि [अिष्ट] आलिप्त (सुमा) ।
परिअभिअ नि [परिजृम्भत] विकसित (वि
२, २०) ।

परिअट्ट मय [परि + घृत्] पतटना, बट
सना । वट्ट, 'दिट्ठो मपरिअट्ठोप सहा-
रच्छयाए एवो' (कुम ४५, महा), परियट्ट-
माण (महा) ।

परिअट्ट सव [परि + यवैय्] १ पतटना,
बटना । २ भावित करना, पठित पाठ को

याद करना । ३ फिरना, पुमाना । परियट्टइ,
परियट्टइ (भवि, उव) । हेऊ, 'परियट्टि-
मादत्तो नल्लोपुम्म वि अणमय्य' (कुम
१७३) ।

परिअट्ट सक [परि + अट्] परिअमण
करना, घूमना । परियट्टइ (हे ४, २३०) ।
सट्ट, परियट्टि वि (अप) (भवि) ।

परिअट्ट पु [दे] रजक, घोवो (दे ६, १५) ।

परिअट्ट पु [परिवर्त] १ पतटव, बदला ।

२ समय का परिणाम विशेष, अमन्त उत्सर्गिणी
ओर अवसर्गिणी काल (विपा १, १, सुर १६,
१४५, पत्र १६२) ।

परिअट्टग वि [परिवर्त] परिवर्तन करने-
वाला (निबु १०) ।

परिअट्टण न [परिवर्तन] १ पतटाव, बदला
करना (पिड ३२४, वे ६७) । २ द्विगुण,
त्रिगुण आदि उपकरण (भाषा १, २, १,
१) ।

परिअट्टणा ओ [परिवर्तना] १ फिर फिर
होना (पणह १, १) । २ आशुति, पठित
पाठ या भावर्तन (भाषा २, १, ४, २, उत
२६, १, ३०, ३४, औप, ठा ५, ३) । ३
द्विगुण आदि उपकरण (पि २८६) । ४ बदला
करना (पिड ३२४) ।

परिअट्टय वि [पर्यटक] परिअमण करने-
वाला, 'विश्वगरिययपरियट्टय' (वण्य ३६) ।

परिअट्टिअ वि [दे] परिच्छिन्न (दे ६,
५६) ।

परिअट्टिय वि [दे] परिच्छिन्न (पट्) ।

परिअट्टिय वि [परिघटित] बदलाया हुमा
(ठा ३, ४, पिड ३२३, पंचा १३, १२) ।
देखो परिअत्तिअ ।

परिअट्ट सक [परि + अट्] परिअमण
करना । परिअटि (आम १३३) । वट्ट,
परिघटित (सुर २, २) ।

परिअट्टण न [पर्यटन] परिअमण (स
११४) ।

परिअट्टि ओ [दे] १ बुझि, नाह । २ वि,
पूर्व, वेवफू (दे ६, ७३) ।

परिअट्टिअ वि [पर्यटित] परिअमण, बदला
हुमा (सिक्का १७) ।

परिअट्टिअ वि [दे] प्रकटित, ध्यत्त किया
हुमा (पट्) ।

परिअट्ट सक [परि + घृत्] बदना,
'परिअट्टइ लापण' (हे ८, २२०) ।

परिअट्ट सक [परि + वर्धय्] बदना
(हे ४, २२०) ।

परिअट्टि ओ [परिघटि] विशेष वृद्धि
(प्राह २१) ।

परिअट्टिअ वि [परिविन्, 'क' बदलने-
वाला, 'समणएवइपरियट्टि' (मौप) ।

परिअट्टिअ वि [पर्याव्यक] परिपूर्ण
(सौप) ।

परिअट्टिअ वि [परिकर्षित, 'क' लौचने-
वाला, आकर्षक (मौप) ।

परिअट्टिअ वि [परिघट्ट] लोचा हुमा,
आकृष्ट, 'नत्त समरेसु देहइ हयगममयमित्त-
परियट्टणमा' । इदपरिमद्विगमपरिकरि-
कलावो व्व खगलमा' (सुपा ११) ।

परिअण पु [परिजन] १ परिवार, कुटुम्ब,
पुन-कलत्र आदि पालनीय वर्ग । २ अनुचर,
अनुगामी (पा २८३, गडड, पि ३५०) ।

परिअत्त देखो परिअत्त = सितप् । परिअत्त
(हे ४, १६० टो) ।

परिअत्त देखो परिअट्ट = परि + घृत् । परि-
यत्त (भवि), 'नटुव्व परिअत्त जीवो'
(वे ६०), परियत्त (उवा) । वट्ट, परिय-
त्तमाणा (महा) ।

परिअत्त देखो परिअट्ट = परि + यवैय् । सट्ट,
परियत्ते (सु ३८) ।

परिअत्त देखो परिअट्ट = परिवर्त (मौप) ।

परिअत्त वि [दे] प्रवृत्त, पैला हुमा, 'सव्वा-
सएउत्तिसंमवहो वरपरिमत्ता ताव' (हे ४,
३६१) ।

परिअत्त वि [परिवृत्त] पतटा हुमा (भवि) ।

परिअत्तण देखो परिअट्टण (गडड),
'आइएवरपरपरपरियत्तएवैययसपरियत्ता ।
अत्था किविणपट्ठा सुत्तावत्ता गुपति व' (सुपा
६३३) ।

परिअत्तणा देखो परिअट्टणा (राज) ।

परिअत्तमाणा देखो परिअत्त ।

परिअत्तमाणी ओ [परिवर्तमाना] कर्म-
प्रवृत्ति विशेष, वट्ट कर्म प्राप्ति को अन्य प्रवृत्ति

के वण्य या उदय को रोक कर स्वयं वण्य या उदय को प्राप्त होती है (पंच ३, १४, ३, ४३; बम्म ५, १ डी)।

परिजत्ता श्री [परिवर्ता] ऊपर देखो (बम्म ५, १)।

परिजत्तिअ वि [परिजत्ति] १ मोटा हुआ-
'वासिमयं परिजत्तिअ' (पाप)। २ देखो
परिजट्टिय (मति)।

परिजअर सक् [परि + चर] सेवा करता।
घट. परिजअरन (भाट—रुट्ट १५८)।

परिजअर नि [दि] तीन निमग्न (दि ६, २४)।

परिजअर ठुं [परिचर] १ बटि-अन्धन, 'सल्लद-
बद्धपरिवरभेदि' (मति)। २ परिवार, 'विरण-
लसामियपरिवरधुयगविसजलणधूममतिमिरेदि'
(गउड, वेइम ६४)।

परिजअर ठुं [परिचर] सेवक, भूषण, 'अणु-
लिज्जंतं रत्तमापरिचरधुमपन्नत्तमापणुहेण'
(गउड)।

परिजअरण न [परिचरण] सेवा (संवीप ३६)।

परिजअरणा श्री [परिचरणा] सेवा (सम्मत २१५)।

परिजअरिय नि [परिजअरिय, परिचर] १ परि-
वार-धुक्, 'हयगण्ठोदमुदुदपरिवारिणी'
(महा, मति, राण)। २ परिचरिण, 'समो सं
सगायणिएऊण मुदुगुहं ताए वेप मयंतमो
परिवारिया सम्यलगेण' (महा, मति १२८२)।

परिजअल मर [गम्] जाना, मग्न करता।
परिमन (दि ४, १९२)।

परिजअल [पु] श्री [दि] पान, बसिया, भोजन-
परिअति [पा] (मति ६ ६, १२)।

परिजअलिअ नि [मा] गया हुआ (कुमा)।

परिजअल देगो परिजअल। परिमन (दि ४, १९२)। घट. परिजअलिऊन (कुमा)।

परिजअरअ नि [परिजअर] सेवा, भूषण
(वार ५१)। श्री, 'रिया (मम १६६)।

परिजअन मर [वेटर] बैठन करता,
ताना। परिजाने (दि ४, २६)।

परिजअन नि [दि] बसित, परिभेदित।

'सो बपद यामत्तायमणु-

मुत्तायिबलदरिधय'।

सच्छिन्निसेतेरवई व

जो बहूद बण्णमालं' (गउड)।

परिजअल देखो परिवार (णामा १, ४; ठा ४, २; बीप)।

परिजअलिअ नि [वेष्टि] सपेय हुआ, वेड़ा
हुआ (कुमा, पाप)।

परिजआय देखो परिवान (द्व ६, २, १४)।

परिजआयिअ सक् [पर्या + पा] पीना।
परिमायिअ (सुप्र २, १, ४६)।

परिजआसमंत (मय) ॥ [पर्यासमन्तान्]
चारों ओर से (मति)।

परिज सक् [परि + च] पर्यटन करना। परि-
यति (उस २७, १३)।

परिजण नि [परिजीर्ण] खराब (सम्मत १५६)।

परिजइ (श्री) नि [परिवित] परिवय निशिट,
जात, पहचाना हुआ (ममि २४५)।

परिजेंन सक् [परि + चुम्ब] चुम्बन करना।
परिजेंन (मति)।

परिजथय न [परिचुम्बन] खरंत, चुम्बन
(गा २२, हाय १३४)।

परिजथया श्री [परिचुम्बना] ऊपर देखो:
'मंजपरिजथयापुसदमण वुणो विपारम्मा'
(पा २०)।

परिजथिअ नि [पर्युजिअ] खरंवा धक्क
(ममि)।

परिजठु नि [परिठु] विशेष गुट (स ७३४)।

परिजथ नि [दि] शोधित, प्रयास में गया
हुआ (दि ६, ११)।

परिजतिअ नि [पर्युपन] शानी, छेडा,
आर निरन्ता हुआ (माकर) (दि १, २७)।

परिजठ नि [दि] परिगुट] साम, इन्ध पत्ता,
'ल्लुत्तिमपान वेजउमा

उं बादि होउ परिऊा।

मा नत्तामपरिअदि बुलिअमंती

विनिमिदि' (स १६९)।

परिजअ न [परिपूरण] परिपूरण (भाट—
रुट्ट ८)।

परिणम देगो परिवेस = परि + रि + पण्ठ।

परिणसिप्रमा (भाषा २, १, २, १)।

परिणस देखो परिवेस = परिवेस (स ३१२)।
परिओस सक् [परि + तोपय] संतुट
करना, खुशी करना। परिओस (मति;
सण)।

परिओस ठुं [परितोप] मानन्द, संतोष,
खुशी (से ११, ३; गा ६८; २०६; स ६;
सुभा २७०)।

परिओस ठुं [दि-परिटोप] विशेष हेष
(मति)।

परिओसिय नि [परिओसित] संतुट किया
हुआ (से १३, २५, मति)।

परिअ देखो परी = परि + ह।

परिकंअ सक् [परि + काङ्क] १ विशेष
धमिनाया करना। २ प्रतीता करना।

परिकंअ (उस ७, २)।

परिकंइ ठुं [परिकंइ] धाम्म, विन्ताइ
(हम्मर ३०)।

परिकेवि नि [परिकेविअ] मतिउप
बंणानेया (मउड)।

परिकेविअ नि [परिअविअ] विशेष बंणने-
याया (सण)।

परिकिअय नि [परिश्रित] परिगुहोउ
(सम)।

परिकिअय नि [दि] पात्र निगुहोउ
(दि २३६)।

परिकइ मर [परि + हृ] १ पारं
भाग में सीपना। २ आरम्भ करना। घट.
परिकइमाग (सउर)। घट. परिअट्टिऊण
(वेप २)।

परिकइय नि [परिकइय] धाम्म बठिन
(मउड)।

परिकप मर [परि + कपय] १
निपादन करना। २ काना करना।

परिकपयि (सुप्र १, ७, ११)। घट.

परिकपयण (वेद १४)।

परिकपिय नि [परिकपिय] पिल, काटा
हुआ (मउर १, १)। देगा परिगदिय।

परिकपुअ नि [परिकपुअ] विशेष करता—
विजअर (मउर)।

परिकम ॥ न [परिकमंअ] १ मउर निरेय
परिकमंअ] वा सपन्न, संसार-कर्मणः
परिकमंअ-विरेय-कर्मणं मउरिअ-

परिणामो (विसे ६२३, मुर १३, १२४),
'तेहि पयट्टा कांडं सतीरपरिक्रमाण एव'
(कुप २७१, वप, उव) । २ सस्कार का
करण भूत शास्त्र (सुदि) । ३ गरिष्ठ-
विशेष । ४ सस्वान विशेष, एक तरह की
गलना (ठा १०—एव ४६६) । ५ निष्पादन
(पव १३३) ।

परिक्रमणा स्त्री, ऊपर देखो, 'लेतयल्ल
निज्ज न तस्स परिक्रमणा नय विण्णासो'
(विसे ६२४, सम्म १४, संबोध ५३,
उपप ३४) ।

परिक्रम्य वि [परि+क्रि] परिकर्म
विशिष्ट, सत्कारित (वप) ।

परिकर देखो परिअर = परिकर (पिग) ।

परिकलण न [परिकलन] उपभोग 'भमर-
परिकलणकमकमलभूसियसरो' (सुपा ३) ।

परिकलिअ वि [परिकलित] १ युक्त, संहित
(सिदि १=१) । २ व्याप्त (सम्मत्त २१५) ।

३ प्राप्त, 'अजलिपरिकलियजल न गलह इह
जोय' (धर्मवि २५) ।

परिकलणना स्त्री [परिकलना] भस्मण,
'हरिपरिकलणापुट्टगीसडुला' (सुपा ३) ।

परिकलिअ वि [परि+कलि] सर्वतोभावे से
कल्पित बर्णवाला (गउठ) ।

परिकविस वि [परिकविश] अतिशय कविश
रंगवाला (गउठ) ।

परिउत्तण न [परिक्रि] खोबाय (गउठ) ।

परिउह सक [परि + उहय] प्रक्षयण
करना, बहना । परिउहेइ (उवा) परिउहुहु
(कम्म ६, ७५) । कर्म, परिउहिउह (पि
५५३) । हेइ परिउहेइ (औप) ।

परिउण न [परिउधन] भाष्यन, प्रहण
(सुपा २) ।

परिउण्णा स्त्री [परिउयणा] ऊपर देखो
(भावम) ।

परिउहा स्त्री [परिकया] १ बावनीत । २
चालन (सिदि १२६) ।

परिउहिय नि [परिउहित] प्रहृत,
भास्यत (महा) ।

परिउण्णा देखो परिउत्तिन्न, 'विमियाससवाल-
परिउण्णा' (उवा) ।

परिकिन्तिअ वि [परिकिन्ति] व्यावर्णित,
श्लाघित (श्रु ११०) ।

परिकिन्ति वि [परिकीर्ण] १ परिकृत, वेष्टित,
'नियपरिणयपरिकिन्नो' (धर्मवि ५४) । २
व्याप्त (मुर १, ५६) ।

परिकिन्ति वि [परिक्लान्त] विशेष छिन्न
(उप २६४ टी) ।

परिकिल्लेस सक [परि + क्लोश] दु खो
करना, हैरान करना । परिकिल्लेसति (भग) ।
सक परिकिल्लेसिआ (भा) ।

परिकिल्लेस पु [परिक्लेश] दु ख, बाधा,
हैरानी (सुम २, २, ५१, औप, ॥ ६७५,
धर्मस १००४) ।

परिकील्लि वि [परि+कील्लि] अतिशय क्रोडा
करनेवाला (सण) ।

परिकुठिय वि [परिकुठित] जहीभूत
(विसे १८३) ।

परिकुठिल वि [परिकुठिल] विशेष वक्र
(मुर १, १) ।

परिकुद्ध वि [परिकुद्ध] अत्यन्त कुपित
(धर्मवि १२४) ।

परिकुविय वि [परिकुपित] अतिशय कुद्ध
(सुपा १, ८, उव, सण) ।

परिकोमल वि [परिकोमल] सबंधा कोमल
(गउठ) ।

परिकत वि [परिकान्त] पराक्रम-युक्त (सुप
१, ३, ४, १५) ।

परिकाम सक [परि + क्रम्] १ पाव से
बलना । २ स्वीय में जाना । ३ परामर्श
करना । ४ प्रक्रम पराक्रम करना । परिकामदि
(रुविम ४६) । परिकामसि (रुविम १५) ।

परिकामेय (सो) (पि ४८१) । वहु परिकर्मंत
(नाट) । इ परिकामियकर (सुपा १,
३—एव १०३) । वहु परिकम्म (सुप १,
४, १, २) ।

परिकम्म देखो परिकम्म = पराक्रम (सुपा १,
१, सण उत १८, २४) ।

परिकहिअ देखो परिउहिय (सुपा २०८) ।

परिकाम देवा परिकाम = परि + क्रम् ।
परिकामदि (पि ४८१, नि ८७) ।

परिकर शक [परि + ईश] परधना,
परीक्षा करना । परिकरअ, परिकरए, परिकरसि,

परिकरउ (भवि, महा, वज्जा १५८, स
४५७) । वहु, परिकरउ, परिकरमाणा

(मोघ ८० भा, था १४) । सउ, परिकरय
(उव) । क, परिकरियव्य (काल) ।

परिकरअ वि [परीक्षक] परीक्षा करनेवाला
(सुपा ४२७, था १४) ।

परिकरअ वि [परिक्षत] भाहत, जिसको
पाव हुआ हो वह (से ८, ७३) ।

परिकरअ पु [परिक्षय] १ क्रमशः हानि,
'बहुतपक्षवत्तस जोएहापरिकरअो विम'
(बाद ८) । २ क्षय, नाश (गउठ) ।

परिकरण न [परीक्षण] परीक्षा (स ४६६,
कम्प, सुपा ४४६, सुपा १, ७ भवि) ।

परिकरण्णा स्त्री [परीक्षणा] परीक्षा (पउम
६१, ३३) ।

परिकरण्णा देखो परिकर ।

परिकरल्ल सक [परि + करल्ल] स्थित
होना । वहु, परिकरल्लत (से ४, १७) ।

परिकरल्लिअ वि [परिस्खलित] स्तनना-
प्राप्त (पि ३०६) ।

परिकरल्ल स्त्री [परीक्षा] परच, जांच (नाट—
मासवि २२) ।

परिकरल्लअ वि [दे] परीक्षाए (पह) ।

परिकरल्ल वि [परिक्षाम] अतिशय कुद्ध
(उत्तर ७२, नाट—रत्ना ३) ।

परिकरि वि [परिकरिन्] परल्लेवाला,
परीक्षक (था १४) ।

परिकरिअ वि [परिक्षिम्] १ वेष्टित वप
हुआ (औप, वास, से १, ५२, वसु) । २ सर्वथा
क्षित (भावम) । ३ शरीर शरीर से व्याप्त
(राय) ।

परिकरिअ वि [परोक्षित] जिसकी परीक्षा
की गई हो वह (प्राप् १५) ।

परिकरिअ सक [परि + क्षिप्] १ वेष्टन
करना । २ तिरस्कार करना । ३ व्याप्त
करना । ४ फेंकना, 'एवे पु जरावरणं
परिकरिअवद वरुण व मयज्जह' (सुउ ३३,
जोयस १८६) । ५ बर्ष परितोषामो (पि
३१६) ।

परिकरिअयि वि [परिहित] फेंका हुआ
(हम्मो ३२) ।

परिकरिअ वि [परिक्षेप] पेशा, परिधि (भग
सम ३६, वक्र, औप) ।

परिक्रेशि वि [परिक्रेशिन्] विरस्वार
करनेवाला (उत्त ११, ८)।

परिराघ पुं [वि] नारा, कृहाट, जवादि-
वाहक, नोकर (हे २, २७)।

परिराज सक [परि + राज्] खुबाना,
खुजलाना। कवक 'परिराजमासमव्ययदेवो'
(उप २८६ टि)।

परिराण न [परीक्षण] परीक्षा-करण परीक्षा
लेने, परखने या जाँच करने का काम (पञ्च
३८)।

परिरूपयि वि [परिरूपयिन्] परिशील
'दुष्टमृगमाणपरिक्लेशिपरीक्षी' (महा)।

परिरागम वि [परिरागम] मति दुर्बल, विरोध
हटा (गा १६६)।

परिरित्त देखो परिक्लित्त (सण)।
परिरित्त देखो परिक्रित्त। परिक्रित्त
(मार्ग), 'राया तं परिक्रित्तं दोहगवईण
मज्जमि' (सम्मत्त २१७, वेद्य ६५५)।

परिरिधिय देखो परिरित्त (सण)।
परिक्षुद्धि वि [परिक्षुद्धि] प्रतिष्ठय क्षीम
को प्राप्त (मवि)।

परिरिद्धय वि [परिरिद्धय] विशेष स्निह
किया हुआ (सण)।

परिरिद्ध (सी) पुं [परिरिद्ध] विशेष खेद
(सन्त्त १०, ८०)।

परिरिधय सक [परि + रिधय्] प्रतिगम
चलन करता। परिरिधय (सण)। छंड,
परिरिद्धयि (मप) (सण)।

परिरिधियि (मप) देखो परिरित्तियि (सण)।

परिगनु देखो परिगम।

परिगण सक [परि + गणय्] १ गणना
करना। २ विनतन करना, विचार करना।
बह्—एग वक्ता मम मणएत्त त्ति परि-
गणतेण निएएविमो रया' (मत्ता)।

परिगणपण न [परिगणपण] बलना (धम्मं
९८१)।

परिगणपणा धी [परिगणपणा] ऊपर देखो
(धम्मं १०५)।

परिगणपिय रि [परिगणपिय] निक्की बलपना
को रई हो बह (उ १११; धम्मं ६६६)।
देवो परिकणपिय।

परिगम सक [परि + गम्] १ जाना,
५७

गमन करना। २ चारो ओर से घेरना करना।
३ व्याप्त करना। सङ्ग, परिगंतु (सण)।

परिगमण न [परिगमण] १ गुण, पर्याय,
'परिमण्य पञ्चाधो मणेरकरणुणोत्ति
एगत्वा' (सम्म १०६)। २ समताद गमन
(जिनु ३)।

परिगमिर वि [परिगमिन्] जानेवाला (सण)।

परिगत वि [परिगत] १ परिवेष्टित, 'मल्लु-
स्सवग्गुणपरिगत' (उवा, गा २६), बहुपरि-
यणपरिगया' (सम्मत्त २१७)। २ व्याप्त,
विस्परिगयाई दाढाई' (उवा)।

परिगर पुं [परिगर] परिचार, 'सिंहाण तु
हरिक्ख परिगरविह्वकालमादीणि खात्तं'
(धम्मं २२६)।

परिगरिय वि [परिगरिय] देखो परिजरीय
(सुवा १२७)।

परिगल सक [परि + गल] १ गन जाना,
क्षीण होना। २ करना, टपकना। परिगल
(गण)। बह्—परिगला (पदम ११२,
१५, उट्ट ४४)।

परिगलिय वि [परिगलिय] गला हुआ,
परिगल (कुत्र ७, महा, सुपा ८७, ३६९)।

परिगलिर वि [परिगलिर] गल जानेवाला,
क्षीण होनेवाला (सण)।

परिगह देखो परिगेण्ड। सङ्ग, परिगहिय
(मा ४८)।

परिगह देखो परिगह (दुमा)।

परिगहिय देखो परिगहिय (उह १)।

परिगा सक [परि + गी] गान करना।
बह्—परिगिज्जमाण (छाया १, १)।

परिगाळण न [परिगाळण] गालन, छानन
(पण्ड १, १)।

परिगिज्जमाण देखो परिगा।

परिगिज्ज
परिगिज्जिय } देखो परिगेण्ड।

परिगिण्ड देवो परिगेण्ड। परिगेण्ड (भाष्
१)। बह्—परिगिण्डन, परिगिण्डमाण
(सुप २, १, ४४ टा ७—पञ्च ३८३)।

परिगिला बन [परि + ग्ले] ग्लान होना।
बह्—परिगिण्यमाण (भाष्)।

परिगुण सक [परि + गुणय्] परिगुण
करना, गिनती करना। परिगुण्ड (मप)
(विग)।

परिगुणग न [परिगुणग] स्वाध्याय (मोप
६२)।

परिगुण सक [परि + गुप्] १ व्याकुल
होना। २ सक, सतत भ्रमण करना। बह्,
परिगुणंत (राज)।

परिगुण सक [परि + गु] शब्द करना।
बह्—परिगुणंत (राज)।

परिगुण्य सक [परि + गुप्] १ व्याकुल
होना। २ सक, सतत भ्रमण करना। बह्,
परिगुण्यत (ठा १०—पञ्च ५००)।

परिगू सक [परि + गू] शब्द करना।
बह्—परिगुण्यत (ठा १०—पञ्च ५००)।

परिगेण्ड सक [परि + मण्ड] ग्रहण
परिगाह करना, स्वीकार करना (माणा)।
बह्—परिगाहमाण (भाष् १, ८, ३, १)।
सङ्ग, परिगिज्जिय, परिचेत्तु (राज, वि
५८६)। हेइ, परिचेत्तु (वि ५७९)। इ,
परिगिज्ज, परिचेत्तु, परिचेत्तु (उत्त
१, ४३, सुपा ३१, मूत्र २, १, ४८, वि
५७०)।

परिगय देखो परिगय (उत्त ६, २, ८)।

परिगह पुं [परिमह] १ ग्रहण, स्वीकार।
२ यन भादि या संग्रह (पण्ड १, ८, मीन)।
३ मयल, मूर्च्छा (ठा १)। ४ मन्य पूजन
जिसका संग्रह किया जाय बह (भाष्, ठा
३, १, धम्मं २)। 'विरमग न [परिमग]
परिग्रह न निवृत्ति (ठा १, पण्ड २, ५)।
'यन रि [परि] परिग्रह-पुत्र (भाष्,
वि ३६६)।

परिगहिय रि [परिमहिय] परिग्रह-पुत्र
(सुप १, ६)।

परिमहिय रि [परिमहिय] स्वीकृत (यन
मीन)।

परिमहिया धी [परिमहिकी] परिग्रह-
सम्बन्धी विद्या (ठा २, १, नव १७)।

परिमधर रि [परिपरि] बेडी हुई
(भाष्) हरिण बह् चिह्नवत्परि-
मधर 'मण्ड' (गङ्ग)।

परिघट्ट सक [परि + घट्ट] आघात करना ।
 कबहु. परिघट्टिजंत (महा) ।
 परिघट्टण न [परिघट्टन] आघात (वज्रा ३८) ।
 परिघट्टण ॥ [परिघट्टन] निर्माण, रचना (निबु १) ।
 परिघट्टिय वि [परिघट्टित] आहत, ताडित (जीव ३) ।
 परिघट्ट वि [परिघट्ट] १ जिसका पर्यण किया गया हो वह, मिसा हुमा, 'मदरयडपरिघट्ट' (हे २, १७४) ।
 परिघाय देखो परीघाय (राज) ।
 परिघास सक [परि + घासय] जिमाना, भोजन कराना । हेकु परिघासेड (आवा) ।
 परिघासिय वि [परिघासित] परिघर्ष युक्त, 'रयसा वा परिघासियपुब्बे भवति' (भाषा २, १, ३, ५) ।
 परिघुम्मिर वि [परिघुम्मि] शनै शनै कपिता हिलता, डोलता (पउम ८, २८३; भा १४८) ।
 परिघेतव्व }
 परिघेतव्व } देखो परिगेणह ।
 परिघेतु
 परिघेतु }
 परिघोल सक [परि + घूर्ण] १ डोलना ।
 २ परिभ्रमण करना । बडु परिघोलत, परिघोलेमाण (हे १, ३३, शीप, खाम्पा १, ४—पत्र २७) ।
 परिघोलण न [दे. परिघोलन] विचार (आ ४, ४—पत्र २८३) ।
 परिघोलिह वि [परिघूर्णिह] डोलनेवाला (गड्ड) ।
 परिघअ देखो परियय = परिचय (नाट—शकु ७७) ।
 परिघअ देखो परिअ । सङ्ग. परिअइऊण, परिअइय (महा) ।
 परिचंचल वि [परिचञ्चल] अतिशय चंचल (वे १४) ।
 परिचत्त देखो परिचत्त (महा शीप) ।
 परिचरणा छी [परिचरणा] सेवा, शक्ति (गुहा १२६) ।

परिचल सक [परि + चल] विशेष चतना ।
 परिचलइ (विम) ।
 परिचल्लिअ वि [परिचल्लित] विशेष चला हुआ (दे ५, ६) ।
 परिचारअ वि [परिचारअ] सेवा करनेवाला, सेवक (नाट—मालवि ६) । छी. 'रिआ (नाट) ।
 परिचारणा छी [परिचारणा] मैथुन प्रवृत्ति (अ ४, १) ।
 परिचित सक [परि + चिन्तय] चिन्तन करना, विचार करना । परिचितइ, परिचितेइ (सण, उव) । कर्म परिचितियइ (मय) (सण) । बडु परिचितत, परिचितयत (सण पउम ६६, ४) ।
 परिचितिय वि [परिचिन्तित] जिसका चिन्तन किया गया हो वह (सण) ।
 परिचितिर वि [परिचिन्तियिह] चिन्तन करनेवाला (सण) ।
 परिचिट्ट म [परि + स्था] रहना, स्थिति करना । परिचिट्टइ (सण) ।
 परिचित वि [परिचित] भाव, जाना हुआ, बिहा हुआ, पहिचाना हुआ (शीप) ।
 परिचुव देखो परिउव । परिचुविजमाण (शीप) । सङ्ग. परिचुविअ (अभि १५०) ।
 परिचुवण देखो परिउवण (पउम १६, ७६) ।
 परिचुविय वि [परिचुम्भित] जिसका बुम्बल किया गया हो वह, 'परिचुविमनहारी' (उव ५६७ टी) ।
 परिअ सक [परि + त्यज] परित्याग करना, छोड़ देना । परिअइ, परिअइह (महा, अभि १७७) । बडु. परिअअंत (अभि १३७) । सङ्ग. परिअइअ, परिअज्ज, परिअइऊण (पि ५६०, उत ३५, २, राज) । हेकु परिअइअच, परिअत्तु (ज्या, नाट) ।
 परिअत्त वि [परित्यक्त] जिसका परित्याग किया गया हो वह (सि ८, २०, सुर २, १२०, सुपा ४१८, नाट—शकु १३२) ।
 परिअयण न [परित्यजन] परित्याग (स ३३) ।
 परिआइ वि [परित्यागिन्] परित्याग करने वाला (शीप, अभि १४०) ।

परिआग ॥ [परित्याग] त्याग, मोचन परिआय १ (पवा ११, १४, उव ७६२, शीप, भा) ।
 परिआय वि [परित्याग्य] त्याग करने लायक, 'अएणेवि अमुहजोगा सोहिपमाणे परिआया' (सबोव ५४) ।
 परिआिअ वि [दे] उल्लिख, ऊपर फेंका हुआ (पद) ।
 परिआिअ देखो परिचिय (उव १४२ टी) ।
 परिच्छ देखो परिकख 'मणवयणकाययुतो सज्जो मरुण परिच्छिज्ज' (पव ६८, पिड ३०), परिच्छति (पिड ११) ।
 परिच्छा वि [परीक्ष] परीक्षा-कर्ता (धर्मसं ५१६) ।
 परिच्छण १ वि [परिच्छज्ज] १ प्राक्कादित, परिच्छज्ज २ हका हुआ (महा) । २ परिच्छद-युक्त, परिवार सहित (वव ४) ।
 परिच्छय वि [परीक्षक] परीक्षा करनेवाला (सम्म १५०) ।
 परिच्छा छी [परीक्षा] परत, नाँव, मात्रमाइरा (शोय ३१ भा, विसे ८४८, उव ५ १०८) ।
 परिच्छिअ देखो परिमिअय (आ १६) ।
 परिच्छिअ सक [परि + छिद] १ निधय करना, निर्णय करना । २ काटना, काट झलना । परिच्छिअइ (धर्मसं ३७१) । सङ्ग. 'परिच्छिदिय माहिरण च साय निक्कमवसी इह मच्चिह' (भाषा—टि, पि ५०६, ५६१) ।
 परिच्छिण वि [परिच्छिज्ज] १ शान्त हुआ, 'नय सुहत्तएहा परिच्छिण' (पव ६५) । २ निर्णीत निश्चित (भाव ४) ।
 परिच्छिज्जिअ छी [परिच्छिज्ज] १ परिच्छद, निर्णय । २ परीक्षा, जांच (उव ८६१) ।
 परिच्छिज्ज देखो परिच्छिण (स ५६६, सम्मत् १४२) ।
 परिच्छट्ट वि [दे. परिक्षिप्त] १ उल्लिख, फेंका हुआ (दे ६, २५, नमि ६) । २ परि-त्यक्त (सि १३, १७) ।
 परिच्छेअ पुं [परिच्छेद] निर्णय, निधय (विसे २२५४, ॥ ६६७) ।
 परिच्छेअ वि [दे. परिच्छेक] सपु, छोग (शीप) ।

परिणममाण (ठा ७, छाया १, १—पत्र ३१) ।

परिणमण न [परिणमन] परिणाम (धर्मसं ४७२; उप ८६८) ।

परिणमिअ } वि [परिणन] १ परिणम्य
परिणय } (पाम) १ २ बुद्धि प्राप्त, 'वह
परिणमिमो धम्मो जहं तं लोभति न सुरावि'
(धर्मवि ८) । ३ भवत्पान्तर को प्राप्त (ठा
२, १—पत्र ५३, पिंड २६५) । 'वयं वि
[वयस्] १ बुद्ध दूढा (छाया १, १—
पत्र ४८) ।

परिणयण न [परिणन] विवाह (उप
१०१४ सुत्र २७१) ।

परिणयणा औ, ऊपर देखो (धर्मवि १२६) ।

परिणन देखो परिणम । परिणवह (भाष
३१, महा) ।

परिणाइ पु [परिहाति] परिचय, 'कह तुजक
तेण समय परिणाई तत्त्वणेण उण्यो'
(पदम ५३, २५) ।

परिणाम सक [परि + णमय] परिणत
करना । परिणामेह (ठा २, २) । कवक,
परिणामसिजमाण, परिणामसजमाण (भग,
ठा १०) । हेह परिणामिचए (भा ३,
४) ।

परिणाम पुं [परिणाम] १ भवत्पान्तर प्राप्ति,
स्वांतराभाष (धर्मसं ४७२) । २ दीर्घ काल
के अनुभव से उत्पन्न होनेवाला प्रायः धर्म
विशेष (ठा ४, ४—पत्र २८३) । ३ स्वभाव,
धर्म (ठा ६) । ४ धर्मसंज्ञा, मनो भाव
(निबु २०) । ५ वि, परिणत करनेवाला,
'द्विष्टा परिणाम' (भव १०, इह १) ।

परिणामणया } औ [परिणामना] परिष्क-
परिणामणा } माता, स्थांतरकरण (पण्य
३४—पत्र ७७४ विसे २२७८) ।

परिणामय वि [परिणामक] परिणत करने-
वाला (इह १) ।

परिणामि नि [परिणामिन] परिणत होने-
वाला (दे १, १, भाष १८३) । 'कारण
न [कारण] कार्य रूप में परिणत होनेवाला
कारण, उपादान कारण (उत्तर २७) ।

परिणामि वि [परिणामिक] १ परिणाम-
कर, परिणाम से उत्पन्न । २ परिणाम-
संबन्धी । ३ पुं, परिणाम । ४ भाव विशेष,

'कण्ठदन्वपरिणइरुको परिणामिमो सव्वो'
(विसे २१७६, ३४६५) ।

परिणामिअ वि [परिणमित] परिणत किया
हुआ (पिंड ६१२, भग) ।

परिणामिआ औ [परिणामि-औ] बुद्धि-
विशेष, दीर्घ काल के अनुभव से उत्पन्न होने-
वाली बुद्धि (ठा ४, ४) ।

परिणाय वि [परिणाय] जाना हुआ, परिणत
(पदम ११, २७) ।

परिणाव सक [परि + णायय] विवाह
करना । परिणावमु (कुम ११६) । क,
परिणावियठन, परिणावेयठन (कुम १३०,
१५४) ।

परिणावण न [परिणायन] विवाह करना
(सुपा ३६८) ।

परिणाविअ वि [परिणावित] जिसका विवाह
कराया गया हो वह (सुपा १६५, धर्मवि
१३६ कुम १४) ।

परिणाह पु [परिणाह] १ सम्बन्ध विस्तार
(पाम) से ११, १२) । २ परिधि (सं ३१२,
ठा २, २) ।

परिणिऊण देखो परिण ।

परिणिंत देखो परिणी = परि + गय ।

परिणिज्जत देखो परिणी = परि + ली ।

परिणिज्जरा औ [परिनिज्जरा] विनाश, क्षय
(पदम ३१, ६) ।

परिणिज्जिय वि [परिनिजित] पदग्रत,
पराजय प्राप्त (पदम ५२, २१) ।

परिणिह्ठा औ [परिनिह्ठा] समूलता, समाप्ति
(उत्तर १२५) ।

परिणिह्ठण न [परिनिह्ठान] अपसान, भ्रष्ट
(विसे ६२६) ।

परिणिह्ठिअ वि [परिनिह्ठित] १ पूर्ण किया
हुआ, समाप्त किया हुआ (स्यण २५) ।
२ वार प्राप्त (छाया १, ८, भाष ६८,
पंचा १२, १४) । ३ परिज्ञात (भव १०) ।

परिणिह्ठिया औ [परिनिह्ठिता] १ कृति-
विशेष, जिसमें दो या तीन बार तुल्य-उपपन्न
किया गया हो वह श्रुति, धर्मादि दो या तीन

बार की सोहनी (मिह्ठि ६) की हुई सेत । २
दीक्षा विशेष, जिसमें बारबार प्रतिबन्ध की
यातोचना की जाती हो यह दीक्षा (उत्तर १६) ।

परिणिय वि [परिणीत] जिसका विवाह
हुआ हो वह (सण, भवि) ।

परिणिज्जय सक [परिनिज् + या + य] ।
सर्व प्रकार से प्रतियोग परिणत करना ।
सक, परिणिज्जयिय (कस) ।

परिणिज्जा सक [परिनिज् + या] १ सात
होना । २ मुनि पाना, मोक्ष को प्राप्त
करना । परिणिज्जायति (भग) । भूका,
परिणिज्जासु (पि २१६) । भाव, परि-
णिज्जाहिंति (भग) ।

परिणिज्जाण न [परिनिर्वाण] मुक्ति, मोक्ष
(धाना, कण) ।

परिणिज्जुअ औ [परिनिर्वाति] ऊपर देखो
(राज) ।

परिणिज्जुअ देखो परिनिर्वाण (प्रीप) ।

परिणी सक [परि + णी] १ विवाह करना ।
२ से जना । कवक, परिणिज्जत, परिणीय-
माण (कुम १२७, माभा) ।

परिणी सक [परि + गम्] बाहर निकलना ।
सक, परिणित (सं ६६१) ।

परिणीअ वि [परिणीत] जिसका विवाह
किया गया हो वह (महा प्राहु ६१, सण) ।

परिणील औ [परिनील] सर्वथा हरा रंग
वा (पदम) ।

परिणे देखो परिणी । परिणेह (महा, पि
४७५) । हेह, परिणेत (कुम ५०) । क,
परिणेतव्व (सुपा ५५५, कुम १३८) ।

परिणेपिअ (भग) वि [परिणामित] जिसका
विवाह कराया गया हो वह (सण) ।

परिणेषुअ देखो परिनिष्पुअ (उत्तर १८,
३५) ।

परिण्य वि [परिह] ज्ञाता, ज्ञानार (भाषा
१, १, ६, ४) ।

परिण्य* देखो परिण्य* (माचा १, २,
६, ५) ।

परिण्य सक [परि + ह्य] जानना । सक,
परिण्याय (माचा, भग) । हेह, परिण्यहुं
(छी) (प्रमि १८६) ।

परिण्य औ [परिह्य] १ ज्ञान, ज्ञानरूपी
(भाषा, वमु पंचा १, २५) । २ विवेक
(भाषा) । ३ पर्याप्तत्व, विचार (धूम १,

१, १)। ४ ज्ञान-पूर्वक प्रयासान् (ठा ५, २)।

परिणाम वि [परिणाम] ज्ञान, चालवारी (पर्वस १२५३, उप ४ २७४)।

परिणामय देखो परिणाम = परि + मा।

परिणामय वि [परिणाम] विदित, आना हुआ (सम १६, भाषा)।

परिणिज वि [परिणिज] परित्ता युक्त, नीम-जुष्टो ज पराएणो तह जिण्ड परीसहाणीय (पव १)।

परितन वि [परितान्त] सर्वथा खिन्न, निर्विण्ण (आवा १, ४—पत्र ६७, विषय १, १, उप)।

परितथि वि [परिताथ] विशेष साध—मरण वर्णनाला (गठ ४)।

परितज्ज सक [परि + तज्ज] छिन्नकार करना। बहुत परितज्जय (पत्रम ४८, १०)।

परितकुपिय वि [परितत्त] घृण विनाशा हुआ (सण)।

परितपु वि [परितपु] मध्यत पतला (सुपा ५८)।

परितपन्न भर [परि + तप्] १ संकष्ट होना, गरम होना। २ परकाताप करना। ३ दुःखी होना। परितपन्न (महा, उप), परितपति (सुम २, २, ५५) 'ठा कोहमात्वाद्भनकरत्त' परितपणे पच्छा' (पर्वसि ६)। संकट, परित-सिद्धकार (हरर)।

परितपन्न सार [परि + तापय] परितपन्न करना। परितपति (सुम २, २, ५५)।

परितपण न [परितपण] परितपण होता (सुम २, २, ५५)।

परितपण न [परितापण] परितपण करना (सुम २, २, ५५)।

परितलिज वि [परितलित] रना हुआ (मोप ८८)।

परितयि वि [परितत] परितपण युक्त (सण)।

परिताय म [परिताय] १ रण। २ पादुकाय बचन (सुम १, १, २, ६)।

परिताय देतो परितपण = परि + तापय। ४ परितायेय (वि ५७०)।

परिताय पु [परिताय] १ सताप, दाह। २ परकाताप। ३ दुःख, पीडा (महा, भीर)।

*यर वि [कर] दुःखोत्पादक (पत्रम ११०, ६)।

परिताय देतो परितपण = परितापन (भीर)।

परितायिज वि [परितायित] १ सतापित (भीर)। २ तला हुआ (मोप १४०)।

परितास पु [परितास] धरुत्मात् होनेवाला भय (आवा १, १—पत्र ३३)।

परितुट्टि वि [परितुट्टि] दुःखेनाला (सण)।

परितुट्टि वि [परितुट्ट] तोप प्राण, सतुट्ट (उप, वेदय ७०१)।

परितुलिय वि [परितुलित] रीता हुआ (सण)।

परितेजि देतो परितज्ज।

परितोल स [परि + तोल] उठाना। भट, 'जुगन परितोलता' सत्य सन्दरभणमि तो बोधि' (सुपा ५७२)।

परितोस सर [परि + तोपय] सतुट्ट करना। मवि, परितोमदसं (वर्ग ३२)।

परितोस पु [परितोप] मानन्द, खुशी (नाट—मानवि २३)।

परितोसिय वि [परितोपित] सतुट्ट किया हुआ (सण)।

परित वि [परित] १ स्थान (सिदि १८३)। २ प्रसन्न (सुम २, ६, १८)। ३ सम्बन्ध विवर्ती भिन्नती हो सके ऐसा (सम १०६)।

४ परिमित नियम परिमापयता (उप ४१७)। ५ सतु पुत्र। ६ पुत्र हार (उप २७०, ६६४)। ७ एत ते तिर

मसंवेय जोयो का भाषय, एत ते तिर मसंवेय जीवनाला (मोप ४१)। ८ एक जीवनाला (पण १)। *रय न [करय]

सतुपण (उप २७०)। *जोय पु [जोय]

एक सतिर में एराको रहनाला जोर (पण १)। *पंन न [पिन्द] संस्था विवेक (पत्रम ४ ७१, ८३)। *ससारिज वि [ससारिज] परिमित संसाराला (उप ४१७)। *संसय न [संसय] संस्था-

विदेर (पत्रम ४, ७१, ७८)।

परित्तज देखो परिसय। संक, परित्तजिज (स्वन् ५१), परित्तजिज (मप)। (विग)।

परित्ता } सर [परि + त्त] रखा करना। परित्ताथ } परित्ताह, परित्तामनु, परित्ताहि, परित्तामह (प्राक ७०, वि ४७६, हे ४, २६८)।

परित्ताहि वि [परित्तायित] रखण-कर्ता (सुपा ४०५)।

परित्ताण न [परित्ताण] रण (हे १४, ३५, सुपा ७१, मापानु ८, सण)।

परित्ताणतय पुन [परित्ताणतय] सखा-विशेष (सुपा २३४)।

परित्तास देतो परित्तास (कप)।

परित्तासदेजय पुन [परित्तासदेजय] संस्था विशेष (सुपा २३४)।

परित्तीकय वि [परित्तीक] सम्बन्ध विद्या हुआ, सपुत्र (आवा १, १—पत्र ६६)।

परित्तीकर सक [परित्ती + कर] सपुत्र करना, छाया करना। परित्तीकर (मप)।

परित्तीम न [परित्तीम] १ मत्तक। २ वि, बर 'चित्तपरित्तीमपच्छ' (वीर)।

परिपिभिज वि [परिपिभिज] स्तम्भ विद्या हुआ (सुपा ४०५)।

परिपु सार [परि + पु] स्तुति करना। बर परिपुत्रन (सुपा ६०७)।

परिपुत्र } रि [परिपुत्र] विशेष स्तुत, परिपुत्र } नृप भोग (पर्वसि ८३, वेदय ८५४, मा ११)।

परिदा स [परि + दा] देना। बर्म, परि-दिमनु (मप) (विग)।

परिदाह पु [परिदाह] संहाप (उप २, ८ भाग)।

परिदिण वि [परित] दिवा हुआ (पवि १२२)।

परिदिह वि [परिदिह] उगिण्ड (सुन २, ३७)।

परिदिन देतो परिदिण (सुपा २२)।

परिदिन स [परि + देय] विहाप करना। परिदेय (उप २, ११)। बर, परिदिन (उप २६, ६२, ४२, ३६)।

परिदेय न [परिदेय] विहाप, 'उप बन्धुगोपपरिदेय' (विग ११) (पर्वस ४१, ३६८)।

परिदेवणया की [परिदेवना] ऊपर देखो
(ठा ४, १—पत्र १८८) ।

परिदेवि वि [परिदेविन्] विलाप करनेवाला
(गाट—शुक्र १०१) ।

परिदेविअ न [परिदेवित] विलाप (पाम,
से ११, ६४; सुर २, २४१) ।

परिदो म [परितस्] भारो ओर से (गा
४५४ ध) ।

परिधम्म पुं [परिधम्म] छन्द-विशेष (पिंग) ।

परिधवलिय वि [परिधवलित] खूब सकेद
किया हुआ (सण) ।

परिधाम पुंन [परिधामम्] स्थान (शुभा
४६३) ।

परिधाविअ वि [परिधावित] बीडा हुआ
(हम्मरी ३२) ।

परिधाविर वि [परिधाविर] बीडनेवाला
(सण) ।

परिधूणिय वि [परिधूणित] झलन्त कँपाय
हुमा (सम्मत ११६) ।

परिधूसर वि [परिधूसर] धूसर बणुवाला
(वज्जा १२८; गडड) ।

परिणद्ध वि [परिणट] विनष्ट (महा) ।

परिनिस्सम देखो पडिनिस्सम । परिनिस्स-
मेइ (कय) ।

परिनिट्ठिय देखो परिणट्ठिअ (कण्, रंभा
३०) ।

परिनिय सब [परि + ट्ठा] देखना, धन-
लोचन करना । बहू. परिनियत (शुभा
५२२) ।

परिनिविट्ठ वि [परिनिविट्ठ] ऊपर बैठा
हुमा (शुभा २६६) ।

परिनिविड वि [परिनिविड] विशेष निविड
या घना (महा) ।

परिनिट्ठा देवो परिणिट्ठिया । परिनिट्ठाइ
(भग), परिनिट्ठाइति (कण्) । भवि. परि-
निट्ठाइसीति (भग) ।

परिनिट्ठाण देखो परिणिट्ठाण (एम्मा १,
८; ठा १, १; भग, कण्, पव १३८ टी) ।

परिनिट्ठुअ } नि [परिनिट्ठ] १ धुक,
परिनिट्ठुअ } मोर नो प्राप्ति (ठा १, १,
पउम २०, ८४, कण्) । २ शाछ, टंडा

(सुप १, ३, ३, २१) । ३ स्वल्प (शुभा
१८३) ।

परिज देखो परिण (भावा) ।

परिज देखो परिण (प्रान्ता) ।

परिज्जा देखो परिण्णा (उप ५२५) ।

परिज्जाण देखो परिण्णाण (भावा) ।

परिज्जाय देखो परिण्णाय = परिज्जात (शुभा
२६२) ।

परिज्जाय वि [प्रतिज्जाय] जिसकी प्रतिज्ञा की
गई हो वह (पिंड २८२) ।

परिपंडुर } वि [परिपाण्डुर] विशेष
परिपंडुल } पाण्डुर—धूसर बणु वाला (शुभा
२५६, कण्, गडड, से १०, ३३) ।

परिपथग वि [प्रतिपथग] दुरमन, विरोधो,
प्रतिबूल (ह १०५) ।

परिपथिअ } नि [परिपथिक] ऊपर देखो
परिपथिग } (स ७४६, ज ६३६) ।

परिपक्क वि [परिपक्व] पका हुआ (पव
४, भवि) ।

परिपल्लिअ (अप) वि [परिपलित] पिटा
हुमा (पिंग) ।

परिपाग पुं [परिपाक] विपाक, फल, 'गुब्ब-
भवविहिममुचरिपरिपागो एव ज्ञयसपत्तो'
(एवण ५२, भावा) ।

परिपाडल वि [परिपाटल] सामान्य लाल
रंगवाला, गुलाबी रंग का (गडड) ।

परिपाडिअ वि [परिपाटित] फाटा हुआ,
विदारित (दे ७, ६१) ।

परिपाल सब [परि + पालय्] रखा
करना । परिपालइ (भवि) । क. परि-
पालणीअ (स्वन् २६) । सङ्क. परिपालिअ
(शुभा ३४२) ।

परिपालग न [परिपालन] रखा (गुप्र
२२६, गुभा ३०८) ।

परिपालिय वि [परिपालित] रखात (भवि) ।

परिपासय [दे] देखो परिपास (३)
(पाम) ।

परिपुअ सब [परि + पा] पीना, पान
करना । कवहू. परिपुजजत (गाट—
बेत ४०) ।

परिपुअय वि [परिपुज्ज] विशेष पीव-
रस बणुवाला (गडड) ।

परिपिण्डिय वि [परिपिण्डित] १ एकत्र
समुदित, इकट्ठा किया हुआ (पिंड ४६७) ।

२ न. गुह-चन्दन का एक बोध (पम १) ।

परिपिक्क देखो परिपक्क (पि १०२) ।

परिपिज्जत देखो परिपिज ।

परिपिट्ठन न [परिपिट्ठन] पीटना, ताडन
(वव १) ।

परिपिरिया की [दे] वाय विशेष (भग ५,
४—पत्र २१६) ।

परिपिल्ल सक [परिप + ईरय्] प्रेरणा ।

परिपिल्लइ (शुभा ६५) ।

परिपिह्वा सक [परिपि + धा] ढकना,
माच्छादन करना । सङ्क. परिपिहिता,
परिपिह्वा (कण्, पि ५८२) ।

परिपीडिअ वि [परिपीडित] जिसकी पीडा
बहुँवाई गई हो वह (भवि) ।

परिपील सक [परि + पीडय्] १ पीडना ।
२ पीसना, खाना । परिपीलण (पि
२५०) । सङ्क. परिपीलत्ता, परिपीलिय,
परिपीलियाण (भग, राज, भावा २, १,
८, १) ।

परिपीलिअ देखो परिपीडिअ (राज) ।

परिपुल्ल वि [दे] श्रेष्ठ, उत्तम (?), 'ज'पइ
भविसयुध परिपुल्लु होइइ रिद्धिभिद्धिगुह-
मंगलु' (भवि) ।

परिपुच्छ सक [परि + प्रच्छ] प्रश्न
करना । परिपुच्छइ (भवि) ।

परिपुच्छण न [परिप्रच्छण] प्रश्न, पुच्छा
(भवि) ।

परिपुच्छिअ वि [परिपुच्छ] पूछा हुआ,
परिपुच्छ } जिज्ञासित (गा ६२३, भवि,
गुभा ३८७) ।

परिपुण } नि [परि + पुण] संपूर्ण (भग,
परिपुण } भवि) ।

परिपुण सब [परि + पण] संपूर्ण
करना । परिपुणइ (से ४, ५) ।

परिपुज सब [परि + पूजय्] पूजना ।
परिपुज (अप) (पिंग) ।

परिपूणग पुं [दे. परिपुण] पणि विशेष
का नौड, मुपरी नामक पत्ती का पोसत
(मिसे १४४, १४६४) ।

परिपूणग पुं [दे. परिपूण] कीटपूण मावो
का कपड, धानका (एदि ५५) ।

परिपूर्य वि [परिपूर] ध्याना हुमा (कण्, लुट् ३२)।

परिपूर सव [परि + पूरय्] पूर्ण करना, भरपूर करना। वट् परिपूरत (पि ५३७)। संट् परिपूरिअ (माट—मातवि १५)।

परिपूरिय वि [परिपूरित] भरपूर, व्याप्त (सुर २, ११)।

परिपेच्छ सव [परिप + ईक्ष्] देखना। वट् परिपेच्छत (मन्त्रु ६९)।

परिपेरत वु [परिपर्यन्त] प्राल भाग (छाया १, ४, १३, सुर १५, २०२)।

परिपेरिय वि [परिपेरित] त्रितोय प्रेरणा की गई हो वह (मुवा १८६)।

परिपेछय वि [परिपेछन] १ सुबर सहज, सहज, सामान (सि ३, १९)। २ मण्ड। ३ नि सार। ४ बटान, दीन (राज)।

परिपेछिय देखो परिपेरिय (गा ५७७)।

परिपेस सव [परिप + इप्] भेजना। परिपेसद (मवि)।

परिपेसण न [परिपेसण] भेजना (मवि)।

परिपेसळ वि [परिपेसळ] सुन्दर, मनोहर (मुवा १०६)।

परिपेसिय नि [परिपेसिय] भेजा हुआ (मवि)।

परिपोस वन [परि + पोषय] वृष्ट करना। मण्ड, परिपोसिजत (राज)।

परिपोसाण न [परिपोसाण] परिष्णा (मवि)।

परिपवन सव [परि + पव्] ठेला, गोसा लगाना। वट् परिपवर्तन (सि २, २८, १०, १३, पाप)।

परिपुय वि [परिपुन] धान्य, व्याप्त (राज)।

परिपुया छो [परिपुना] दीगा विशेष (राज)।

परिपुन्द वु [परिपुन्द] १ रचना विशेष 'जयद पायापरिपुन्दो' (मण्ड)। २ समन्तात् बसर (पाव ४५)। ३ वेष्ट, प्रमन 'योपा रमेवि रिशिम्नि क्षायगमे वर सखणुपुञ्जि'।

सगलिन्देति विच एभा मभिसारयन्ते व' (मण्ड)।

परिपुड वि [परिपुट] धन्यवष्ट (सि ११, १०, सुर ४, २१४, मवि)।

परिपुड वु [परिपुट] १ प्रसोटन, भेदन। २ वि, फोडनेवाला, विभेदक, 'समपदल-पल्फुडि चैव तेषसा पञ्जलतत्त्व' (कण्)।

परिपुन सव [परि + पुन] चलना। परिपुनद (श्री) (माट—उत्तर २८)।

परिपुनण न [परिपुनण] हिलन, चलन (सण्)।

परिपुनिय वि [परिपुनित] स्फूर्ति-युक्त, 'बयणु परिपुनित' (मवि)।

परिपुस वु [परिपुस] स्पर्श, छूना (पि ७४, ३११)।

परिपुसण न [परिपुसण] ऊपर देखो (ज ६८६ टी)।

परिपुसु वि [परिपुसु] निस्सार, बसार (वर्णत ६५३)।

परिपुसिय वि [परिपुसु] व्याप्त (रन ५, १, ७२)।

परिपुड देखो परिपुड = परिपुट (पउम ३, ८, प्राप् ११६)।

परिपुडिय वि [परिपुडित] कृता हुआ, भजन (पउम ६८, १०)।

परिपुड देखो परिपुड। परिपुड (सण्)। वट् परिपुडत (सण्)।

परिपुडिय देखो परिपुडिय (सण्)।

परिपुडिय वि [परिपुडित] कृता हुआ, वृत्तुमित (पिग)।

परिपुस सव [परि + पृश] स्पर्श करना, छूना। वट् परिपुसंत (वर्णित १२६, १३६)।

परिपुसिय वि [परिपुसिय] बाँझा हुआ (ज ६४ ५४)।

परिपुसिय वि [परिपुसु] हुआ हुआ 'उदपासिस्त्रिगिपाए दम्भोरित्स्त्रिगिपाए भिमिपाए विष्ठीयति' (छाया १, १६-ज ६४८ टी)।

परिपुडण न [परिपुडण] बुद्धि, उदयन (मूय २, २, ६)।

परिपुडन वि [दि] १ निषिद्ध निराति। २ मेट, इटोय (सि ६, ७२)।

परिपुसिद (श्री) मोचे देखो (सा ५०)।

परिपुड वि [परिपुड] वज्र, मण्डि (छाया १, १३ मुग ५०६; मवि १४४)।

परिपुस सव [परि + पुस] पर्वत बनना, भवन। परिपुसद (प्राव ७६, मवि, उज)। वट् परिपुसमत (सुर २, ८७, ३, ४, ४, ७१, मवि)।

परिपुसण न [परिपुसण] पर्वत (महा)।

परिपुसिय वि [परिपुसित] भट्टा हुआ (सि ६३, सण्, मवि)।

परिपुसिय वि [परिपुसित] भट्टा हुआ (सि ६३, सण्, मवि)।

परिपुसिय वि [परिपुसित] भट्टा हुआ (सि ६३, सण्, मवि)।

परिपुसिय वि [परिपुसित] भट्टा हुआ (सि ६३, सण्, मवि)।

परिपुसिय वि [परिपुसित] भट्टा हुआ (सि ६३, सण्, मवि)।

परिपुसिय वि [परिपुसित] भट्टा हुआ (सि ६३, सण्, मवि)।

परिपुसिय वि [परिपुसित] भट्टा हुआ (सि ६३, सण्, मवि)।

परिपुसिय वि [परिपुसित] भट्टा हुआ (सि ६३, सण्, मवि)।

परिपुसिय वि [परिपुसित] भट्टा हुआ (सि ६३, सण्, मवि)।

परिपुसिय वि [परिपुसित] भट्टा हुआ (सि ६३, सण्, मवि)।

परिपुसिय वि [परिपुसित] भट्टा हुआ (सि ६३, सण्, मवि)।

परिपुसिय वि [परिपुसित] भट्टा हुआ (सि ६३, सण्, मवि)।

परिपुसिय वि [परिपुसित] भट्टा हुआ (सि ६३, सण्, मवि)।

परिपुसिय वि [परिपुसित] भट्टा हुआ (सि ६३, सण्, मवि)।

परिपुसिय वि [परिपुसित] भट्टा हुआ (सि ६३, सण्, मवि)।

परिपुसिय वि [परिपुसित] भट्टा हुआ (सि ६३, सण्, मवि)।

परिपुसिय वि [परिपुसित] भट्टा हुआ (सि ६३, सण्, मवि)।

परिपुसिय वि [परिपुसित] भट्टा हुआ (सि ६३, सण्, मवि)।

परिपुसिय वि [परिपुसित] भट्टा हुआ (सि ६३, सण्, मवि)।

माण (राज)। संज्ञ. परिभाष्यता, परिभाष्यता (कम्प; चीन)। हेक. परिभाष्यतं (वि ५७३)।

परिभाष्य वि [परिभाषित] विमल विया
हुमा (प्राचा २, २, ३, २)।

परिभाष्यतं देखो परिभाष।

परिभाषण न [परिभाजन] बँटवा देना
(पिंड १६३)।

परिभाष सक [परि + भाष्य] १ पर्या-
लोचन करना। २ उल्लत करना। परिभाषह
(महा)। संज्ञ. परिभाषिकण (महा)।
क. परिभाषणीय (राज)।

परिभाषहस्त वि [परिभाषयित्] प्रभावक,
खलति-कर्ता (ठा ५, ४—पन २६५)।

परिभाषि वि [परिभाषित्] परिवम करने-
वाला (मभि ७१)।

परिभास सक [परि + भाष] १ प्रति-
पादन करना, कहना। २ निम्ना करना। परि-
भासह, परिभासति, परिभासेह, परिभासए
(उत १८, २०; सुम १; ३, ३; ८; २,
७, ३६; जिसे १४४३)। वक्र. परिभास-
माग (पठन ५३, ६७)।

परिभासा क्री [परिभाषा] १ खलत (संबोध
५८; भास १६)। २ तिरस्कार। ३ वृष्टि-
दीक्षा-विशेष (राज)।

परिभासि वि [परिभाषित्] परिमल-कर्ता,
‘राहणियपरिमसी’ (सम ३७)।

परिभासिय वि [परिभाषित्] प्रतिपासित
(सूत्रनि ८८, भास २१)।

परिमिद सक [परि + मिद्] भेदन करना।
वक्र. परिमिदमाण (उप ४ ६७)।

परिमीय वि [परिमीत] बरा हुमा (उव)।

परिमुंज सक [परि + मुंज] १ खला-
नोजन करना। सेवन करना, सेवना। ३
बारबार उपभोग में लेना। कर्म. परिमुंजिजबद
परिमुंजद (वि ५५६; गन्ध २, ५१)।
वक्र. परिमुंजत, परिमुंजमाण (निबु १;
खाना १, १; कण्ठ. परिमुंजमाण
(मोत. उप ६ ७; खाना १, १—पन ३७)।
हेक. परिमुंजु (दस ५, १)। क. परिमोय,
परिमुंजतव्य (पिंड ३५; कस)।

परिमुंजण न [परिभोजन] परिमोय (उप
१३४ टी)।

परिमुंजणया क्री [परिभोजना] ऊपर देखो
(सम ४४)।

परिमुत्त वि [परिमुत्त] जिसका परिभोग
किया गया हो वह (सुपा ३००)।

परिमुत्त वि [परिमुत्त] वेष्टित, परिकरित,
परिमुत्त वि [सपेटा हुमा, पेट हुमा (प्राचा २,
११, ३; २, ११, १६)।

परिभूय वि [परिभूय] अभिभूय, विरुद्ध
(सुम २, ७, २, सुर १६, १२६, केदय
७१४; महा)।

परिभोज देखो परिभोग (मभि १११)।

परिभोज वि [परिभोगित्] परिभोग करने-
वाला (पि ४०५, नाट—शकु ३५)।

परिभोग दु [परिभोग] १ बारबार भोग
(ठा ५, ३ टी, भाव ६)। २ जिसका बार-
बार भोग किया जाय वह वक्र आदि (बौप)।
३ जिसका एक ही बार भोग किया जाय—
जो एक ही बार काम में लाया जाय वह—
आहार, पान आदि (जवा)। ४ बाह्य वस्तुओं
का भोग (भाव ६)। ५ आसेवन (पह १;
१)।

परिभोग }
परिभोचक } देखो परिमुंज।

परिभोचु
परिमदल एक [परि + मुज्] मार्जन करना
(सखि ३५)।

परिमदल वि [परिमुदुक्त] विशेष बोधत।
२ अत्यन्त मुक्त, सरल (धर्मसं ७६१,
५६२)। क्री. “डई” (जिसे ११६६)।

परिमदलित वि [परिमुदुक्त] चारों ओर
से संकुचित (सण)।

परिमदणन [परिमदणन] बलकरण, विमूपा
(उत १६, ६)।

परिमदल वि [परिमदणल] वृत्त, गोलाकार
(सुम २, १, १५; उत ३६, २२; स ३१२,
पान. औप. पण १; ठा १, १)।

परिमदित वि [परिमदणल] विमूचित,
मुक्तचित्त (कम्प; मौक्त सुर ३, १२)।

परिमदियर वि [परिमदियर] मन्द, बीया
(पठन; व ७१६)।

परिमदिय वि [परिमदित] अत्यन्त आलो-
चित (सम्मत २२६)।

परिमद वि [परिमद] मन्द, मराक (सुर
४, २४०)।

परिमद सक [परि + मार्गय] १ अन्वे-
षण करना, खोजना। २ मांगना, प्रार्थना
करना। वक्र. परिमदमाण (नाट—विक
३०)। सङ्ग. परिमदगेतं (महा)।

परिमदि वि [परिमदि] खोज करनेवाला
(गा २६१)।

परिमदिर वि [परिमदित्] हृषनेवाला
(सुपा ६)।

परिमद वि [परिमद] १ पिशा हुमा (से
६, २, ८, ४३)। २ आस्फालित, ‘परिमदु-
भेदित’ (वि ४, ३७)। ३ मार्जित, शोधित
(कण)।

परिमद सक [परि + मद्] मर्दन करना।
वक्र. परिमदयंत (सुर १२, १७२)।

परिमदण न [परिमदन] मर्दन, मालिश
(कण, चीन)।

परिमदा क्री [परिमद] संवापन, दबाना,
वैचयी—दूर दबाना आदि (निबु ९)।

परिमद सक [परि + मन्] भावर करना।
परिमद (मभि)।

परिमल सक [परि + मल्, मूद्] १
धिसला। २ मर्दन करना, ‘जो मरलयासि
परिमलद हृष्ट’ (कुप ५५२),

‘एलिलोमु भवसि परिमलसि
सत्तल मालहं वि यो दुमसि।
सत्तलसं वुद भो महुपर
वद पाठना हृद’।
(गा ११६)।

परिमल दु [परिमल] १ कुंकुम-चन्दनादि का
मर्दन (से १, ६४)। २ सुगन्ध (कुमा. पात्र)।

परिमलण न [परिमलन] १ परिमदन। २
विचार (गा ४२८; पठन)।

परिमलित वि [परिमलित, परिमदित]
जिसका मर्दन किया गया हो वह (गा ६३७;
से ७, ६२; महा; वक्र ११८)।

परिमहिय वि [परिमहित] पूजित (पठन
१, १)।

परिमा (पा) देवो पडिमा (मवि) ।

परिमाइ औ [परिमाति] परिमाण, 'जिणु-
साठणि छज्जीवदयाइ व पडियमर्तणि गुणद-
परिमाइ व' (मवि) ।

परिमाण न [परिमाण] मान, माप, नाप
(मोन, स्वज ४२; प्रागु ८७) ।

परिमास पुं [परिमस] स्पर्श (छाया १, ६;
गठ ६, ९, ४८, ६, ७६) ।

परिमास पुं [दे] नौवा का काष्ठ-विशेष
(छाया १, ६—पत्र १५७) ।

परिमासि वि [परिमसिंह] स्पर्श करनेवाला
(वि ६२) ।

परिमिज्ज नीचे देखो ।

परिमिज्ज सक [परि + मा] आपना, गीलना ।
बट. परिमिर्णन (सुता ७७) । बट. परिमिज्ज,
परिमोय (पथ ५६, पठन ५६, २२) ।

परिमिअ वि [परिमित] परिमाण-युक्त
(बण; छा ५, १; मीय, पण्ड २, १) ।

परिमिअ वि [परिपूत] परिपूरित, वैष्टित
(पठन १०१, मवि) ।

परिमिला भय [परि + म्ले] म्लान होना ।
परिमिलावि (ही) (वि १९६; ४७६) ।

परिमिलान वि [परिमिलान] म्लान, विच्छाद्य,
मिलने (महा) ।

परिमिद्धिअ वि [परिमोद्ध] परिमाण करने-
वाला (गण) ।

परिमुअ सक [परि + मुअ] परिमाण
करना । परिमुअइ (गण) ।

परिमुअ वि [परिमुअ] परिमाण (सुता
२५२; महा; गण) ।

परिमुट्ठ वि [परिमुट्ठ] स्पृष्ट (मा ४४) ।

परिमुण सक [परि + मुण] जानना । परि-
मुणवि (बजा १०४) ।

परिमुणिअ वि [परिमात] जाना हुआ
(पठन १६, ११, ४७) ।

परिमुस सक [परि + मुप्] कोपी करना ।
बट. परिमुसंत (पा २७) । बट. परिमु-
सिअण (कट्ट २६) ।

परिमुस सक [परि + मुअ] स्पर्श करना,
टूटना । परिमुअ (मवि) ।

परिमुमन न [परिमोमन] १ कोपी । २
कम्पा, छन्द (मा २६) ।

परिमुसिअ वि [परिमुट्ठ] स्पृष्ट (महानि ४;
मवि) ।

परिमुसण देवो परिमुसण (मा २६) ।
परिमोय देखो परिमिण ।

परिमोअळ वि [दे. परिमुअ] स्पर्श,
स्पर्शदेवी (मवि) ।

परिमोअळ पुं [परिमोअ] १ मोल; मुक्ति
(भावा) । २ परिमाण (सूत्र १, १२, १०) ।

परिमोय सक [परि + मोअ] छोड़ना,
छुटना करना । परिमोअइ (सूत्र २, १,
१६) ।

परिमोचन न [परिमोचन] मोल, छुटकारा
(सुर ४, २५०; मीय) ।

परिमोस पुं [परिमोय] कोरो (महा) ।

परियंअ सक [परि + अञ्च] १ पास में
जाना । २ स्पर्श करना । ३ विप्रुपित करना ।
संक्र. परिअंअवि (भर) (मवि) ।

परियंअ सक [परि + अञ्च] पूजना । संक्र.
परिअंअवि (भर) (मवि) ।

परियंअ वि [परि + अञ्च] पूजना । संक्र.
परिअंअवि (भर) (मवि) ।

परियंअण न [परियंअण] स्पर्श करना (सुल
३, १) । देखो पडियंअण ।

परियंअिअ वि [परियंअिअ] विप्रुपित, 'पय-
रायमामापरियंअिअ' (मवि) ।

परियंअिअ वि [परियंअिअ] दूजित (मवि) ।

परियंद सक [परि + यन्द] बन्द करना,
लुप्त करना । बट. परियंदिअणना
(मीय) ।

परियंदण न [परियन्दन] बन्द, लुप्त
(भावा) ।

परियचळ सक [चळ] १ देना । २
जानना । परियचळ (मवि; उव), परियचळवि
(उव) ।

परियचिअण देवो परियचिअण (पठन) ।

परियच्छी औ [परिच्छी] परत (परमरत
पुं मां ३१ पत्र २३, २) ।

परियत्थि औ [पर्यत्थि] देखो पण्हत्थिय,
'पण्हो बाण्ड परण्हो परियत्थी दिग्गए तलो'
(पेय ११०) ।

परियप्प सक [परि + अज्ज] करना
करना, बिलत करना । बट. परियप्पमना
(भावा १, २, १, २) ।

परियप्पण न [परिकल्पण] कल्पना (परमं
१२०८) ।

पारयय पुं [परिचय] जान-गहवान, विशेष
रूप से जान (गठ ६, ६६; मवि
१३१) ।

परियय वि [परिगत] द्रवित, मुक्त (स
२२) ।

परियाइ सक [पर्या + दा] १ समता
ग्रहण करना । २ विमान से ग्रहण करना ।

परियाइयह (सूत्र २, १, १७) । बट.
परियाइता (छा ७) ।

परियाइअ वि [पर्याअ] संदुर्ग रूप से गृहीत
(छा २, ३—पत्र ६३) ।

परियाइअ देखो परियाइय (छा २, ३—पत्र
६३) ।

परियाइणया औ [पर्यादान] समता
ग्रहण (पण्ड १४—पत्र ७७४) ।

परियाइअ वि [पर्याअ] काफी (राज) ।

परियाइय नि [पर्यायातीत] पर्याय को
पतिगन्त (राज) ।

परियाण देवो पञ्चाय (मोय; उवा, महा,
बण) ।

परियाणय वि [पर्यागन] १ पर्याय से
भाग (उत ५, २१, मुल ५, २१; छाया
१, ३) । २ सर्वथा निगल (छाया १, ७—
पत्र ११६) ।

परियाण सक [परि + णा] जानना ।
परियाण्ड, परियाण्ड (वि १७०; उवा) ।

परियाण न [परिजाण] रक्षण (सूत्र १, १,
२, ६, ७) ।

परियाण न [परिदान] १ प्रीतिमान, बचना,
सेवेन । २ समतादाय (मवि) ।

परियाण न [परियाण] १ मन (छा १०) ।
२ भाव, मान (छा ८) । ३ धरतरण (छा
१, ३) ।

परियाणन न [परिधान] जानकारी (स
११) ।

परियाणिअ वि [परियाणित] परिमाण-
युक्त (सूत्र १, १, २, ७) ।

परियाणिअ वि [परिधान] जाना हुआ,
निर्दिष्ट (पठन ८८, ११; पत्र १६; मवि) ।

परियाणिअ पुंन [परियाणिअ] १ यान.
वाहन । २ विमान विशेष (ठा ८) ।

परियादि देखो परियाइ । परियादित्ति
(कप्प) । संक परियादित्ता (कप्प) ।

परियाय देखो पज्जाय (ठा ४, ४, मुपा १६.
विसे २७६१, भौप, भाचा, उवा) । ६
अभिप्राय, मत, 'सएहि परियाएहि लोय वूया
कथेति य' (सूय १, १, ३, ६) । १०
प्रव्रज्या, दीक्षा (ठा ३, २—पन १२६) ।
११ ब्रह्मचर्य (भाव ४) । १२ जिन-देव के
केवल-ज्ञान की उत्पत्ति का समय (खाया १
८) । १३ 'शेर पुं' [स्थविर] दीक्षा की प्रव्रज्या
के बुद्ध (ठा ३, २) ।

परियायंतकदमिं छी [पर्यायान्तकद-
भूमि] जिन देव के केवल ज्ञान की उत्पत्ति
के समय से लेकर तदनन्तर सर्व प्रथम मुक्ति
पानेवाले के बीच के समय का अन्तर (खाया
१, ८—पन १५४) ।

परियार सक [परि + चारय्] १ सेवा-
शुश्रूषा करना । २ समोण करना, विषय-
सेवन करना । परियारेइ (ठा ३, १, भग) ।
बहु परियारिमाण (राज) । कयहु परि-
रिच्छमाण (ठा १०) ।

परियार पु [परिचार] मैटुन, विषय सेवन
(पण ३४—पन ७८०, ठा ३, १) ।

परियारवा वि [परिचारक] १ विषय-सेवन
करनेवाला (पण २, ठा २, ४) । २ सेवा-
शुश्रूषा करनेवाला (विपा १, १) ।

परियारण न [परिचारण] १ सेवा-शुश्रूषा
(सुख १८—पन २६५) । २ काम भोग
(पण १४) ।

परियारणया } छी [परिचारण] ऊपर
परियारणा } देखो (पण ३४, ठा ५,
१) । 'सह पु' [शब्द] विषय-सेवन के
समय का छी वा शब्द (निबु १) ।

परियाल देखो परिवार (राय ५४) ।

परियालेयण न [पर्यालोचन] विचार,
चिन्तन (मुपा ५००) ।

परियाव देखो परिताव = परिताप (भाचा,
भोप १५२) ।

परियावज भव [पर्या + पद्] १ योद्ध
होना । २ ह्यान्तर में परितर होना । ३

सक, सेवना । परियावज्जइ, परियावज्जति
(कप्प, भाचा) ।

परियावज्जण न [पर्यापादन] ह्यान्तर-
प्राप्ति (पिंड २८०) ।

परियावज्जणा छी [पर्यापादन] आतेवन
(ठा ३, ४—पन १७४) ।

परियावण देखो परितावण (सूय २, २,
६२) ।

परियावणा छी [परितापना] परिताप,
सताप (भोप) ।

परियावणिया छी [परियापनिमा] कालान्तर
सक भवस्थान, स्थिति (खाया १, १४—पन
१८६) ।

परियावण्ण } वि [पर्यापण] स्थित, भव-
परियावण्ण } स्थित (भाचा २, १, १००-
८, भग ३४, २, कस) ।

परियावण्ण वि [पर्यापण] सम्प, प्राप्त (भाचा
२, १, ६, ६) ।

परियावस सक [पर्या + वासय्] भावास
करना । परियावसे (उत १८, ५४, सुख
१८, ५४) ।

परियावसहइ [पर्यावसथ] मठ, संन्यासी
का स्थान (भाचा २, १, ८, २) ।

परियाविय वि [परितापित] योद्ध (पडि) ।

परियाविय वि [परिधासित] बासी रखा
हुआ (कठ) ।

परिरंज सक [भञ्ज्] गाँवना, तोड़ना ।
परिरंजइ (प्राहु ७४) ।

परिरंभ सक [परि + रंभ्] आतिवगन करना ।

परिरंभलु (शी) (पि ४६७) । सङ्क ।

परिरंभिद (हुम २४२) ।

परिरंभण न [परिरंभन] आलिङ्गन (पाध,
गा ८३५; मुपा २, ३६६) ।

परिरक्ख सक [परि + रक्ख्] परिपालन
करना । परिरक्खइ (अवि) । ६. परिरक्ख-
णीअ (सिक्ख ३१) ।

परिरक्खण न [परिरक्खण] परिपालन (गा
६०१; अवि) ।

परिरक्खा छी [परिरक्खा] ऊपर देखो (पठम
५६, ५१, अवि ३३, गड्ड) ।

परिरक्षिय वि [परिरक्षित] परिपावित
(अवि) ।

परिरद्ध वि [परिरद्ध] आलिङ्गित (गा
३६८) ।

परिरय पुं [परिरय] १ परिधि, परिछेप (उत
३६, ५६, पठम ८६, ६१; पन १५८, भौप) ।
२ पर्याय, समानार्थक शब्द, 'एगपरिरय
त्ति वा एगएज्जाय त्ति वा एगएगमेव त्ति
वा एगट्ठा' (भाहु १) । ३ परिप्रमण, फिर
बराजाना, 'महुवा थेरो, तस्स य अउरा
हुा डोहरा वा, जे समत्था ते उज्जुएण
वच्चति, जो अममयो सो परिरएण—अमा-
देण वचइ' (भोयना २० टी) ।

परिराय भक [परि + राज्] विराजना,
शोभना । बहु, परिरायमाण (कप्प) ।

परिरिख सक [परि + रिद्ध्] चलना,
करकना, हिलना । बहु, परिरिखमाण (उप
५३० टी) ।

परिरंभ सक [परि + रंभ्] रोकना,
मटकाना । भर्मे, परिरंभइ (गड्ड ४३४) ।
सङ्क, परिरंभिकण (उवट्ट १) ।

परिलोचि वि [परिलोचिन्] लपन करनेवाला
(गड्ड) ।

परिलोचि वि [परिलोचिन्] लटकनेवाला
(गड्ड) ।

परिलोभिअ वि [परिलोभिअ] प्राप्त करामा
हुआ, 'सो पपवरो सुणीएण (सुणीए) बयाण
परिलोभिओ पणनया' (पठम ८४, १) ।

परिलम्प वि [परिलम्प] लगा हुआ, व्यापृत
(उर ३५६ टी) ।

परिलिअ वि [दे] सीन, लग्न (दे ६, २४) ।

परिली भक [परि + ली] सीन होना । बहु,

परिलिअ, परिलेत, परिलीयमाण (खाया
१, १—पन ५; भोप, वे ६, ४८, पण १,
३, राय) ।

परिली छी [दे] आतोच-विशेष, एक तरह का
बाजा (राय) ।

परिलीण वि [परिलीण] मिलो (पाध) ।

परिलुंण सक [परि + लुण्] छुट बटना,
भट्ट बटना । बहु, परिलुण्णमाण (पहा) ।

परिलेअ देखो परिली = परि + ली ।

परिलोयण न [परिलोचन, परिलोकन]
असोचन, निरोधण । २ वि, देखोनासा,
'पुणं तत्परितोयणाय दिट्ठीए' (उवा) ।

परिह देखो पर = पर (सि ६, १७) ।
 परिह्नास वि [दि] भ्रान्त-मति (दे ६, ३३) ।
 परिहो देखो परिहो = दे (राय ४६) ।
 परिहो देखो परिहो । वक्र. परिह्रित्त,
 परिह्रित्त (श्रीप) ।
 परिह्रस सक [परि + ह्रस्] गिर पठना,
 सक जाना । परिह्रसहि (ह ४, १६७) ।
 परिवङ्गु वि [परिगङ्गु] गमन करने के
 समर्थ (ठा ४, ४—पत्र २७१) ।
 परिवकड (भप) वि [परिवक] सचंवा टेढा
 (भवि) ।
 परिवच सक [परिवच्य] ठगना । सक.
 परिवचिऊण (हम्मस ११८) ।
 परिवचिअ वि [परिवचिअ] जो ठगा गया
 हो (दे ४, १८) ।
 परिवधि वि [परिपथियन्] विरोधो, दुरमन
 (पि ४०५, नाट—विक्र ७) ।
 परिवधण न [परिजन्दन] स्तुति, प्रयासा
 (भाषा) ।
 परिवधिय वि [परिजन्त] स्तुत, पूजित
 (पत्रम १, ६) ।
 परिवधियय देखो परिवधियय (श्रीप) ।
 परिवगग पु [परिवर्ग] परिवज वर्ग (पत्रम
 २१, २४) ।
 परिवच्छ न [वि] भवपारण, मिथ्य. 'साम-
 राय परिवच्छे' (कल्याण ० २१४२) ।
 परिवच्छिय देखो परिकच्छिय 'उज्जलनेवत्य-
 हज्जपरिच्छिय' (णाय १, १६ टी—पत्र
 २२१, श्रीप) । देखो परिवधियय ।
 परिवज्ज सक [प्रति + पद्] स्वीकार करना ।
 परिवज्जह (भवि) ।
 परिवज्ज सक [परि + वर्ज्य] परिहार
 करना, परिव्याग करना । परिवज्जह (भवि) ।
 संह. परिवज्जिय, परिवज्जियया (भाषा
 वि ५६२) ।
 परिवज्जण न [परिजर्ज] परिव्याग (धर्मसं
 ११२०) ।
 परिवज्जणा श्री [परिजर्जना] ऊपर देखो
 (उर) ।
 परिवज्जिय वि [परिजर्जित] परिव्यक्त (उमा,
 भग्न भवि) ।

परिवट्ट देखो परिवत्त = परि + वर्तय् । परि-
 वट्ट (भवि) । सक. परिवट्टिवि (भप)
 (भवि) ।
 परिवट्टण न [परिवर्तन] धावर्तन, धावृत्ति,
 'आमपपरिवट्टण' (बोधो ३६) ।
 परिवट्टि देखो परिवत्ति (मा ५२) ।
 परिवट्टिय देखो परिवत्तिय (भवि) ।
 परिवट्टुल वि [परिवर्तुल] भोलाकार (स
 ६८) ।
 परिवड सक [परि + पत्] पठना । वक्र.
 परिवडव, परिवडमाण (पत्र ५, ६२, ६७,
 उप पु ३) ।
 परिवडिअ वि [परिपठित] गिरा हुआ (गुण
 ३६०, वसु, पति २१, हम्मोर ३०, पत्ता
 ३, २४) ।
 परिवडड सक [परि + वृष्] बढना ।
 परिवडुड (महा, भवि) । भवि. परिवडुडसहि
 (श्रीप) । क. परिवडडव, परिवडडमाण,
 परिवडडमाण (गा ३४६, णाय १, १३,
 महा, णाय १, १०) ।
 परिवडुडण न [परिवर्धन] परिगुडि, बढाव
 (गडड, धर्मसं ८७५) ।
 परिवडिअ श्री [परिवृद्धि] ऊपर देखो (सि
 ५, २) ।
 परिवडिअ देखो परिअडिअ = परिवर्धन
 (श्रीप १६ डि) ।
 परिवडिअ वि [परिवर्धित] बढाया हुआ
 (गा १४२, ४११) ।
 परिवडमाण देखो परिवडव ।
 परिवण सक [परि + वर्णय्] वर्णन
 करना । क. परिवण्णोअन्न (भा) ।
 परिवण्णिअ वि [परिवर्णित] निवर्तना वर्णन
 किया गया हो वह (भाण ७) ।
 परिवत्त देखो परिवट्ट = परि + वर्त । परि
 तई (उत्त ३३, १) । परिवत्तगु (मा ८०७) ।
 वक्र. परिवत्तत (गा २८३) ।
 परिवत्त देखो परिवट्ट = परि + वर्तय् । वक्र.
 परिवत्तत, परिवत्तयत (स ६, सूय १, ५,
 १, १५) । संह. परिवत्तिऊण (कन) ।
 परिवत्त देखो परिवट्ट = परिवर्त 'विहियन्-
 परिवत्तो' (हुप १३४) । २ संवरण, भ्रमण
 (पत्र) ।

परिवत्त देखो परिवत्त = परिवृत्त (कात्) ।
 परिवत्तण देखो पडिअत्तण (पि २८६;
 नाट—विक्र ८३) ।
 परिवत्तर (भप) वि [परिपक्वम्] पकाया
 गया, गरम किया गया. 'धनु मनेवि सुगवा-
 मोए निमज्जित परिवत्तरतोए' (भवि) ।
 परिवत्ति वि [परिवर्तिन्] बदलानेवाला,
 'अपरिवर्तिणी विज्जा' (हुप १२६, महा) ।
 परिवत्तिय देखो परिवट्टिय (गुण २६२) ।
 परिवत्थ न [परिवत्थ] बल, बपडा (भवि) ।
 परिवत्थिय वि [परिवत्थित] आच्छादित,
 'उज्जलनेवच्छहत्थ' (१७८) परिवत्थिय (श्रीप) ।
 देखो परिवच्छिय ।
 परिवड देखो परिवडव । वक्र. परिवडमाण
 (राज) ।
 परिवड देखो पडिअण (उप ११६ टी) ।
 परिवय सक [परि + वत्] तिवर्ग गिरना ।
 परिवयति (राय १०१) ।
 परिवय सक [परि + वत्] निन्दा करना ।
 परिवयणा, परिवयति (भाषा) । वक्र.
 परिवयत (पट्ट १, ३) ।
 परिवयिअ वि [परिवृत्त] परिकरित, वेष्टित
 (गुण १२५) ।
 परिवडिअ वि [परिवर्धित] वेष्टित (मुत्त
 १०, १) ।
 परिवस सक [परि + यस्] बढना, रहना ।
 परिवसड, परिवसति (भा. महा, वि ४१७) ।
 परिवसण न [परिवसन] आनास (राज) ।
 परिवसणा श्री [परिवसना] क्युपणा पर्व
 (निष् १०) ।
 परिवसिअ वि [पर्युषित] रहा हुआ बात
 किया हुआ (पण) ।
 परिवड सक [परि + यह्] बहन करना,
 डोना । २ घर आहु रहना । परिवह
 (बन्) । परिवहति (गडड) । वक्र. परिवहन
 (पिंड २५६) ।
 परिवहन न [परिवहन] डाना (राज) ।
 परिवह सक [परि + या] मृगना । परिवह
 (गडड) ।
 परिवह वि [परिवादिन्] निन्दा करनेवाला
 (उत्त) ।

परिवाइय वि [परिवाचिन] पढा हुमा (पठम् ३७, १५) ।

परिवाई की [परिवाद] कलक-वार्ता, 'दह-यस्त ताम वत्ता जणपरिवाई सह पत्ता' (पठम् ६५, ५१) ।

परिवाड सक [घट्टय्] १ घटाना, समत करना । २ रचना, निर्माण करना । परिवाडेइ (हे ४, ५०) ।

परिवाडल देखो परिपाडल (बड्ड) ।

परिवाडि की [परिपाटि] १ पदति, रीति (विस्ते १०८५) । २ पत्ति धेरि (उत्त १ ३२) । ३ कर्म परंपरा (सवे ६) । ४ सूत्रार्थ-वाचना, प्रख्यापन, विरपरिवाडी गहियवको (धर्मवि ३६) 'एतथेहि बलि न करे परि-वाडिआमवि तासि' (कुलक ११) ।

परिवाडिअ वि [घटित] रचित (कुमा) ।

परिवाडो देखो परिवाडि 'परिवाडीआमय हवइ रज्ज' (पठम् ३१, १०६; पात्र) ।

परिवाद दुं [परिवाद] निन्दा, बोग कीर्तन (धर्मसं ६५४) ।

परिवादिणी की [परिवादिनी] बीणा विशेष (राज) ।

परिवाय देखो परिवाद (कप, दीप, पठम् ६५, ६०, छाया १, १, स ३२, आरमहि १५) ।

परिवायग दुं [परिवाजक] ख्यालो, परिवायय १ बाबा, (सण, गुर १५, ५) ।

परिवायणी की [परिवादनी] सात हातवाली बीणा (राय ५६) ।

परिवार सक् [परि + धारय्] १ बैठन करना । २ बृद्धय करना । बह, परिवारयत (उत्त १३, १४) । संठ, परिवारिया (सुम १, ३, २, २) ।

परिवार दुं [परिवार] गृह-शोक, घर के अनुष्य (दीप, महा, कुमा) । २ न, म्यान (पात्र) ।

परिवारण न [परिवारण] १ निराकरण (पण १, १—पत्र १६) । २ आच्छादन, ढाना (२ १, ८६) ।

रिवावि १ वि [दि] पठिठ, रचित (दे ६, ३०) ।

परिवारिअ वि [परिगारित] १ परिवार-संपन्न । २ वेष्टित 'बहा से उडुवई चदे मक्खतपरिवारिए' (उत्त ११, २५, काल) ।

परिवाल देखो परिआल । परिवालइ (दे ६, ३५ टी) ।

परिवाल सक् [परि + पाळय्] पालन करना । परिवालइ, परिवालेइ (भवि, महा) । बह, परिवालयत (गुर १, १७१) । सक्, परिवालिय (राज) ।

परिवाल देखो परिवार = परिवार (छाया १, ८—पत्र १३१) ।

परिवाविय वि [परिवापित] उल्लाह कर फिर से बोया हुमा (ठा ५, ५) ।

परिवायिया की [परिवापिता] दोहा विशेष फिर से महावको का प्रारोपण (ठा ५, ५) ।

परिवास दु [दि] खेत में सोनेवाला पुत्र (दे ६, २६) ।

परिवास न [परिवासस्] यक, कपडा, 'अणोयगुअभतरपासई सुनिपयई मि भीख-परिवासई' (भवि) ।

परिवासि वि [परिवासिन्] बसनेवाला (सुपा ५२) ।

परिगसिय वि [परिवासित] सुवासित, सुगन्ध-युक्त, 'अमपरिमलपरिवासियदूर' (भवि) ।

परिवाह सक् [परि + बाहय्] १ बहन करना । २ अश्रादि लेवाना, अश्रादि बीजा करना, 'खिवरीयिस्सुवदुरय परिवालइ बाहियालोए' (महा) ।

परिवाह पु [परिवाह] जन का उद्धार, बहाव, 'अरिउबररंतपसिअपिअसमरणपिसुलो वटाईए' ।

परिवाहो विम दुक्खस बहइ अणणद्विओ बाहो' (भा ३७७) ।

परिवाह दुं [दि] दुर्जनय, भविजनय (दे ६, २३) ।

परिवाहण न [परिगहन] अश्रादि-लेन, 'आसपरिवाहणमिमत गण' (स ८१, महा) ।

परिविआल सक् [परि + विश] बैठन करना । परिविआलइ (प्राट ७५, पात्रा १५४) ।

परिविचिट्ठ अक् [परिवि + स्था] १ उत्पन्न होना । २ रहना । परिविचिट्ठइ (भाचा १, ४, २, २, वि ५८३) ।

परिविच्छय वि [परिविच्छत] सर्वथा छिन्न-हृत (सुम १, ३, १, २) ।

परिविट्ठ वि [परिविट्ठ] परोसा हुमा (स १८६, सुपा ६२३) ।

परिवित्तस अक् [परिवि + त्स] डरना । परिवित्तसति परिवित्तसेअ (भाचा १, ६, ५, ५) ।

परिवित्ति की [परिवृत्ति] परिवर्तन (सुपा ५८७) ।

परिविट्ठ वि [परिविट्ठ] जो बिबा गया हो बह (सुपा २७०) ।

परिविट्ठस सक् [परिवि + ध्वंसय्] १ विनाश करना । २ परिवान उपनाना । सक् परिविट्ठसित्ता (भा) ।

परिविट्ठस्य वि [परिविभ्रस] १ विनष्ट । २ पतितापित (सुम २, ३, १) ।

परिविष्कुरिय वि [परिविष्कुरित] स्फूर्ति-युक्त (सण) ।

परिवियलिय वि [परिविगलित] हुआ हुमा, टपका हुमा (सण) ।

परिविवालिह वि [परिविगलित्ठ] भरनेवाला, बूनेवाला (सण) ।

परिविरल वि [परिविरल] विशेष विरल (गउअ, या ३२६) ।

परिविल्लिरि वि [परिविल्लिरि] विलासी (सण) ।

परिविस सक् [परि + विश] बैठन करना । परिविसइ (प्राह ७५) ।

परिविस सक् [परि + विप्] बरोसना, बिलाना । सक्, परिविसस (उत्त १५, ६) ।

परिवियास दुं [परिविवाद] समन्तात् तैर (धर्मवि १२६) ।

परिविट्ठुरिय वि [परिविचुरित] प्रति पीठित, 'अणिसुअउदेविअपरिविट्ठुरिओ गव मातु' (गुर १५, १५) ।

परिवीअ सक् [परि + वीजय्] पैदा करना, हवा करना । परिवीअमि (ग ६७) ।

परिवीइअ वि [परिवीजित] विहरो हवा की गई हो बह (उत्त २११ टी) ।

परिवीढ न [परिपीठ] घासन विशेष (मनि) ।
 परिवील सक् [परि-वीलय्] दगना ।
 सङ्क, परिवीलियाण (मात्रा २, १, ८, १) ।
 परिवुद्ध वि [परिवृद्ध] परिवृत्ति, वैष्टि
 (छाया १, १४, धर्मवि २४, धीप, महा) ।
 परिवुत्त्य वि [परिवृत्त] ? रहा हुआ । २
 न. बान, निवास (गठ २४०) । देखो
 परिवुत्तिज ।
 परिवुद्ध देखो परिवुद्ध (गठ १२) ।
 परिवृत्ति श्री [परिवृत्ति] भेटन (गठ १२) ।
 परिवृत्तिज वि [परिवृत्ति] स्थित, रहा हुआ ।
 'जे निम्न भवेत्ते परिवृत्ति' (मात्रा १, ८,
 ७, १, १, ६, २, २) । देखो परिवुत्त्य ।
 परिवृत्तिज वि [परिवृत्ति] गठ, गुजरत हुआ
 (मात्रा २, १, १, ३) ।
 परिवृद्ध वि [परिवृद्ध] समर्थ (उत्त ७, २) ।
 परिवृद्ध नि [परिवृद्ध] स्थूल (भास ८६,
 उत्त ७, ६) ।
 परिवृद्ध वि [परिवृद्ध] ? बलवान्, बलिष्ठ
 (द्व ७, २३) । २ मांसल, गुष्ट (मात्रा २,
 ४, २, ३) ।
 परिवृद्ध वि [परिवृद्ध] बहन किया हुआ,
 होया हुआ, 'न चत्तस्मान्नि ग्रहं पृथ विपरि-
 बृद्ध इमं कोह' (धर्मवि ७) ।
 परिवृद्ध देखो परिवृद्धण (राज) ।
 परिविद्ध सक् [परि + वेष्ट्] वेष्टना,
 लपेटना । परिविद्ध (मनि) । संक परिविष्टिय
 (निष् १) ।
 परिविद्ध वृ [परिविष्ट] भेटन, घेरा, 'ना जागइ
 हो निवेदइ सेनापरिदुह्मपरिविद्ध' (सिदि
 ६३८) ।
 परिविष्टानिय नि [परिविष्टित] वैष्टि करना
 हुआ (नि १०४) ।
 परिविष्टिय वि [परिविष्टित] बेड़ा हुआ, घरा
 हुआ, लपेटा हुआ (उत्त ७६८ टी. पण २०,
 नि १०४) ।
 परिवेय घक् [परि + वेप्] बाँधना,
 'नामपरिणि परिवेय' (मनि) ।
 परिवेष्टि वि [परिवेष्टित] कम्पन-शील
 (नट २) ।
 परिवेय घक् [परि + वेप्] बाँधना । बट.
 परिवेयमान (भाषा) ।

परिवेस सक् [परि + विप्] परोसना ।
 परिवेसइ (छाया ३८६) । कर्म. परिवेसिज्जइ
 (छाया १, ८) । बट. परिवेसंत, परि-
 वेसयंत (पिउ १२०, छाया ११, छाया
 १, ७) ।
 परिवेस वृ [परिवेश, 'प' ? वेष्टन, गठइ] ।
 २ मडल, भेपादि से नृय-चन्द्र का वेष्टनाकार
 मंडल, 'परिवेसो अवरे फल्लवण्णो' (पठम
 ६६, ४७, ॥ ३१२ टी. गठइ) ।
 परिवेसण न [परिवेषण] परोसना (स
 १८७, पिउ ११६) ।
 परिवेसणा श्री [परिवेषण] ऊपर देखो
 (पिउ ४४४) ।
 परिवेसि [परिवेशिन्] समीप में खूने-
 वाला (गठइ) ।
 परिवेज्ज सक् [परि + जज्] ? समवाद
 गमन करना । २ क्षोभा लेना । परिवेज्ज.
 परिवेज्जआसि (सूत्र १, १, ४, ३, नि
 ४६०) ।
 परिवेज्ज वि [परिवृत्त] परिवेष्टित, 'वाता-
 परिवेज्जो विव सत्यपुण्णिमावेत्ते' (बुद्ध) ।
 परिवेज्ज नि [परिवेज्जय] विशेष व्यय
 (गाठ—मुच्छ ७) ।
 परिवेज्ज पु [परिवेज्जय] खर्चा, खर्च करने
 का पन (द्व ३, १ टी) ।
 परिवेज्ज सक् [परि + वेष्ट्] बहन करना,
 धारण करना । परिवेज्जइ (सखी २२) ।
 परिवेज्जाइया श्री [परिवेज्जाजिक्] संन्यासिनी
 (छाया १, ८, महा) ।
 परिवेज्जाजि (श्री) वृ [परि + जज्] सयानी
 (भास ४८) ।
 परिवेज्जाजि (श्री) पु [परिवेज्जाजिक्] सयानी
 (नि २८७, गाठ—मुच्छ ८४) ।
 परिवेज्जाजिआ (श्री) देवो परिवेज्जाइया
 (मा २०) ।
 परिवेज्जाय देखो परिवेज्जाज (सूत्रनि ११२,
 बीप) ।
 परिवेज्जायग पु [परिवेज्जाजिक्] सयानी,
 परिवेज्जायय पु [परिवेज्जाजिक्] सयानी ।
 परिवेज्जायय नि [परिवेज्जाजिक्] परिवेज्जाज-
 सयानी (बट २) ।
 परिवेज्जायय नि [परिवेज्जाजिक्] परिवेज्जाज-
 सयानी (बट २) ।
 परिवेज्जायय नि [परिवेज्जाजिक्] परिवेज्जाज-
 सयानी (बट २) ।

परिसंक्क भक् [परि + शङ्क] भय करना,
 डरना । वक्. परिसंक्कमाण (सूत्र १, १०,
 २०) ।
 परिसंक्किय वि [परिशङ्कित] भौत (पणह
 १, ३) ।
 परिसंगा सक् [परिसं + ख्या] ? मन्दी
 तरह जानना । २ गिनती करना । संक.
 परिसंगाय (द्व ७, १) ।
 परिसंगया श्री [परिसंख्या] सत्या, गिनती
 (पठम २, ४६, जीवस ४०, पव—गाथा
 १३, वुड ४, सण) ।
 परिसंग वृ [परिपङ्क] संग, सोहबत (हम्मोर
 १६) ।
 परिसंग वृ [परिपङ्क] भालिङ्गन (पठम
 २१, ४२) ।
 परिसंगय वि [परिसंगय] मुक्त, सहित
 (धर्मवि १३) ।
 परिसंठव सक् [परिसं + स्थापय्] ?
 संस्थापन करना । परिसंठव (भर) (पिग) ।
 वट. परिसंठवित (उत्त ४३) ।
 परिसंठविय वि [परिसंस्थापित] सथापित
 (वुड १८) ।
 परिसंठिय वि [परिसंस्थित] स्थित, रहा
 हुआ (महा) ।
 परिसत वि [परिस्थान्त] घरा हुआ (महा) ।
 परिसंथाविय वि [परिसंस्थापित] भाषास्थित
 (स ५६६) ।
 परिसक् सक् [परि + प्यक्] चलना,
 घमन करना, दृष्ट-दृष्ट घूमना । परिवेज्जइ
 (उत्त ६ टी. दुप्र १७४) । वट. परिसंबव,
 परिसंबमाण (गज ६१७, स ४१, ११६) ।
 वट. परिसांजि (छाया ११३) । इ.
 परिसंजियव (स १६२) ।
 परिसंबण न [परिपङ्कज] परिप्रेमण (सि
 १, २२ १३, २६, छाया २०१) ।
 परिसंजिज नि [परिपङ्कज] ? गठ
 (मनि) । २ व परिप्रेमण, परिप्रेमण (मा
 ६०६) ।
 परिसंकर नि [परिपङ्कज] गहन बाले-
 वाला (छाया १, १, नि २६६) ।
 परिसंजिज (भर) नि [परिपङ्कज] परिप्रेमण
 (सण) ।

परिसड भक [परि + शट्] उपयुक्त होना ।
परिसडइ (आचा २, १, ६, ६) ।
परिसडिय वि [परिशटित] सडा हुमा,
विनष्ट (आया १, २, भोप) ।
परिसण्ड वि [परिश्रद्धण] सूक्ष्म, छोटा (से १, १) ।
परिसन्न वि [परिपण] जो हेराम हुमा हो,
सीडित (पडम १७, ३०) ।
परिसत्प सक [परि + सप्] चलना ।
परिसत्पेइ (माट—विक्र ६१) ।
परिसत्पि वि [परिसत्पिच] १ चलनेवाला
(कपू) । २ पुखी, हाथ और पैर से चलने-
वाला जन्तु—मकल, सर्प आदि प्राणि-
गण । जो, ०णी (बोव २) ।
परिसम देखो परिससम (महा) ।
परिसमत्त वि [परिसमात्त] समुल्ल, जो पूरा
हुमा हो वह (से १५, ६५, सुर १५,
२५०) ।
परिसमत्ति जो [परिसमात्ति] समानि'
पूर्णता (उप ३५७ स ५२) ।
परिसमापिय वि [परिसमापित] जो समाप्त
किया गया हो, पूरा किया हुआ (विसे
३६०२) ।
परिसमान सक [परिसम् + आप्] पूर्ण
करना । सङ्ग परिसमाधिस (ममि ११६) ।
परिसर पु [परिसर] नगर आदि के समीप
का स्थान (भोप, सुपा १३०, मोह ७६) ।
परिसडिय वि [परिशालियत] शल्य-युक्त
(सण) ।
परिसड सक [परि + स्तु] भरना, टपकना ।
बहु परिसर्यंत (तनु ३६, ४१) ।
परिसह पुं [परिषह] देखो परीसह (भग) ।
परिसा जो [परिषद्] १ समा, पर्वद (गाम
भोप, उवा विभा १, १) । २ परितार (ठा
३, २—पत्र १२७) ।
परिसाइ देखो परिससाइ (पज) ।
परिसाइयाण देखो परिसाव ।
परिसाइ सक [परि + शाटय्] १ ख्याम
करना । २ भलग करना । परिसाइइ (कपू,
भग) । सङ्ग, परिसाइइचा (भग) ।

परिसाइ सक [परि + शाटय्] १ श्वर-
उपर फँकना । २ भरना । ३ खलना, 'परिसा-
डिज्ज भोग्ग' (दस ५, १, २८) । परिसा-
डित्ति, भूका, परिसाडियु, भवि, परिसाडित्सति
(आचा २, १०, २) ।
परिसाइणा जो [परिशाटना] वपन, बोना
(वव १) ।
परिसाइणा जो [परिशाटना] पृथक्करण
(सूनि ७, २०) ।
परिसाइ वि [परिशाटित्] परिशाटन युक्त
(भोप ३१) ।
परिसाइ वि [परिशाटि] परिशाटन, वृत्त-
करण (पिंड ५५२) ।
परिसाइयि जो [परिशासित] विराया हुमा
(दस ५, १, ६६) ।
परिसाम भक [शम्] खान्त होना । परि-
सामइ (हे ४, १६७) ।
परिसाम वि [परिश्याम] नीचे देखो
(गडड) ।
परिसामल वि [परिश्यामल] कृष्ण, काला
(गडड) ।
परिसामिअ वि [शान्त] खान्त, शम युक्त
(हुमा) ।
परिसामिअ वि [परिद्वामित] कृष्ण किया
हुमा (आया १, १) ।
परिसार सक [परि + स्त्राय्] १ निचो-
ड़ना । २ गालना । सङ्ग, परिसावियाण
(आचा २, १, ८, १) ।
परिसावि देखो परिससानि (बह १) ।
परिसाहिय वि [परिकथित] प्रतिपादित,
उक्त (सण) ।
परिसिच सक [परि + सिच्] सीचना ।
परिसिचिवा (उत २, ६) । बट, परिसिच-
माण (आया १, १) । कबळ, परिसिचमाण
(हपू, पि ५५२) ।
परिसिट्ट वि [परिशिट्ट] भवशिट्ट, बाकी
बचा हुआ (आचा १, २, ३, ५) ।
परिसिटिलि वि [परिशियिल] विशेष स्थिति,
क्षोडा (गडड) ।
परिसित्त वि [परिपित्त] १ सोचा हुआ
(गा १८५, सण) । २ न. परिपेय, तेचन
(पह १, १) ।

परिसिद्ध वि [पर्वद्वत्] परिषद् वाला
(बह ३) ।
परिसील सक [परि + शील्य] भ्रम्यास
करना, भ्रात दलना । सङ्ग, परिसीलिचि
(भप) (सण) ।
परिसीलग न [परिशीलन] भ्रम्यास, भ्रात
(रभा, सण) ।
परिसीलिचि वि [परिशीलित] भ्रम्यस्त
(सण) ।
परिसीसग देखो पडिसीसअ (राज) ।
परिसुक् वि [परिशुक्] खूब सूखा हुआ
(विपा १, २, गडड) ।
परिसुण वि [परिशून्य] खाली, रिक्त, सुप्त
(से ११, ८७) ।
परिसुच वि [परिसुत्त] सत्ता सोया हुआ
(माट—उत्तर २३) ।
परिसुद्ध वि [परिशुद्ध] निर्मल, निर्दोष (उव,
गडड) ।
परिसुद्धि जो [परिशुद्धि] विशुद्धि, निर्मलता
(गडड, ड ६५) ।
परिसुन्न देखो परिसुण (विसे २८५०,
सण) ।
परिसुस (भप) सक [परि + शोपय्]
सुखाना । सङ्ग, परिसुसिचि (भप) (सण) ।
परिसूअणा जो [परिसूचना] सूचना (हुपा
३०) ।
परिसेय पुं [परिपेय] तेचन (भोप १४७) ।
परिसेस पु [परिशेप] १ बाकी बचा हुआ,
अवशिष्ट (से १०, २३, पडम ३५, ४०, गा
८८, धम्म ६, ६०) । २ धनुमान प्रमाण का
एक भेद, परिशेपातुमान (धर्मस ६८, ६६) ।
परिसेसअ वि [परिशेपित] १ बाकी बचा
हुमा (भग) । २ परिनिवृत्त, निर्णीत,
'धम्मसि डग्गमसु बट्टसि
नट्टपु म्हा कुडवि हिमप ता कुडुम ।
तट्ठवि परिसेसिभो जियम
सो ॥ मप धम्मसम्भासो' (गा ४०१) ।
परिसेह पुं [परिपेह] प्रतिषेध, निवारण,
पाबट्टाणण जो उ परिसेहो, भाणउभयणा-
द्विज जो य विही, एव धम्मकवो' (वात) ।

परिसोन वि [परिशोण] लान रंग ना (गण्ड)।

परिसोसण न [परिशोषण] सुखाना (गा ६२८)।

परिसोसिअ वि [परिशोषित] सुखाया हृषा (सण)।

परिसोह सक [परि + शोधय्] गृह्य करना। क्वह, परिसोह्जित (सण)।

परिस्सअ सक् [परि + स्सञ्] आतिगन करना। परिस्समदि (शौ) (पि ३१५)।

सट्. परिस्समइअ (पि ३१५; नाट—शकु ७२)।

परिस्सत देवो परिस्सत (णामा १, १, स्वप्न ४०, धम्म ११०)।

परिस्सज (शौ) देवो परिस्सज। परिस्सजह (उत्तर १७५)। बह, परिस्सज्जत (धम्म १३३)। सट्. परिस्सज्जित (धम्म १२५)।

परिस्सम पुं [परिश्रम] मेहनत (धम्म ३८८, स्वप्न १०, धम्म ३६)।

परिस्सम्म मक् [परि + श्रम्] १ मेहनत करना। २ विद्याम लेना। परिस्सम्मइ (विधे ११६७, धम्म ७८६)।

परिस्सय सक [परि + स्सु] कृता, भरना, टपकना। बह, परिस्सयमाण (विषा १, १)।

परिस्सय पुं [परिस्सय] मालव, नर्मन्त्य ना बारण (भाषा)।

परिस्सह देवो परोसह (भाषा)।

परिस्साइ देवो परिस्सायि = परिस्सायिन् (ठा ४, ४—पत्र २७६)।

परिस्साय देवो परिसाय। संह, परिस्सायि-याण (पि ५६२)।

परिस्सायि वि [परिस्सायिन्] १ नर्मन्त्य करनेवाला (अग २५, ६)। २ जूनेवाला, टपकनेवाला। ३ गुप्त बात को प्रकट कर देने-वाला (गण्ड १, २२, पंचा १५, १४)।

परिस्सायि वि [परिस्सायिन्] मुनावेगाता (इम्म ५६)।

परिह सक [परि + धा] पहिरना, पहनना। पहिर (धम्म १५०, भवि), 'कन्वेसीलेरि पट्टए म्नु रएणमालंकारे' (धम्म १४६)।

परिह पुं [दे] रोप, गुस्ता (दि ६, ७)।

परिह पुं [परिध] ध्रंगला, धागल (ध्रगु)।

परिहच्छ दि [दे] १ पट्ट, दास, निगुण (दि ६, ७६; भवि)। २ पुं. मन्थ, रोप, गुस्ता (दि ६, ७१)। देवो परिहत्थ।

परिहच्छ देवो पडिहच्छ (मौप)।

परिहट्ट सक [मृद्, परि + घट्ट्] मर्दन करना, बुर करना, बचरना, कुचलना। परिहट्टइ (हे ४, १२६, नाट—साहित्य ११६)।

परिहट्ट सक [नि + लुल्ल] १ मारना, मार कर मार देना। २ धातना करना। ३ छूट लेना। ४ झक, जमीन पर सोटना। परिहट्टइ (भाष ७३)।

परिहट्टण न [परिघट्टण] १ धमिपाठ, मापाठ (सि १०, ४१)। २ घपंण, पित्तना (सि ८, ४३)।

परिहट्टि औ [दे] भाङ्गि धाकपंण, लोचन (दि ६, २१)।

परिहट्टिअ वि [सुदित] त्रिकका मर्दन किया गया हो बह, 'पडिहट्टिमी माणो' (कुत्ता, भाषा)।

परिहण न [दि. परिधान] बह, कपडा (दि ६, २१; पास, हे ४, ३४१, मुर १, २५, भवि)।

परिहत्थ पुं [दे] १ जलजन्तु विशेष, 'परिहत्थमण्डपुण्ड्रधम्मदोहणोच्चरतस्सिलोह' (मुर ११, ४१)। 'भोक्कएणो.....परिहत्थममममण्डपुण्ड्रधम्मदोहणोच्चरतस्सिलोह' (णामा १, १३—पत्र १७६)। २ वि. दास, निगुण: 'अन्ने रणपट्टिया मूय' (पत्रम ६१, १; पण्ड १, ३—पत्र ५५, पात्र, भाव ४)। ३ परिपुण (मौप, कप्प)। देना परिहच्छ, पडिहत्थ।

परिहर सक [परि + घृ] धारण करना। संह, परिहरिअ (अग १२, ५)।

परिहर सक [परि + हृ] १ व्याम करना, लोढ़ना। २ करना। ३ परिभोग करना, धारण करना। पट्टिइ (हे ४, २५६, उव, महा)। परिहरिअ (अग १५—पत्र ६७)। बट्. परिहरिअ, परिहरिमाण (गा १९६; अग)। संह. परिहरिअ (निग)।

हेह, परिहरित्तए, परिहरित्तं (ठा ५, ३; काप्र ४८८)। क. परिहरणीअ, परिहरि-अव्व (पि ५७१, गा २२७; मोप ५६, मुर १४, ८३; सुपा ३६६, ५८८; पण्ड २, ५)।

परिहरण न [परिधरण] धारण करना (वन १)।

परिहरण न [परिहरण] १ परिध्याग, वर्जन (महा)। २ भावेवन, परिभोग (ठा १०)।

परिहरणा औ [परिहरणा] ऊपर देवो (विह १६७), 'परिहरणा होइ परिभोगो' (ठा ५, ३ टी—पत्र ३३८)।

परिहरिअ वि [परिहृत] परिष्कृत, वाजित (महा, गण, भवि)।

परिहरिअ देवो परिहर = परि + घृ, ह।

परिहरिअ वि [परिधृत] धारण किया हुआ, 'परिहरिअणमण्डुल्लगणपलमणहारेणु सव-णेणु। अणुणम। समभवतेणं परिहृज्जह सालवैट्ठुमं' (गा ३६८ म)।

परिहल्लामिअ पुं [दे] पल्ल-निर्गम, मोटो, पनाला (दि ६, २६)।

परिहव सक [परि + भू] परामर करना। बह, परिहवण (वन १)। ट. परिह्वनियठर (अग १०३६)।

परिहय पुं [परिभय] परामर, विस्वकार (सि १३, ४६; गा ३६६, हे ३, १८०)।

परिहवण न [परिभयन] ऊपर देवो (घ ५७२)।

परिहयिय वि [परिमूत्] पराजित, विरुद्ध (अग पु १८०)।

परिहस सक [परि + हस्] उपहास करना, हँसी करना। पट्टिइ (नाट)। नर्म, परिह-लोमदि (शौ) (नाट—शकु २)।

परिहसस रि [परिह्वर] धातन लघु (घ ८)।

परिहा सक [परि + हा] होन होना, कम होना। पट्टिअ, पट्टिअइ (अग, मुर २, ३०)। भवि, पट्टिअहवादि (शौ) (धम्म ६)।

बट्ट. परिहायन; परिहायमाण (गु १०, ६, १२, १४, छाया १, १३, श्रौत, डा ३, २), पांडोअमाण (पा ५२२)।

परिहा सक [परि + धा] पहिरना। अरि, परिह्वामि (भाषा १, ९, १, १)। संह.

परिहिरुण, परिहिचा (कुप्र ७२, सुप्र १, ४, १, २५) । क. परिहियव्व (स ३१५) ।

परिहा की [परिहा] साई (सर ४, २, पात्र) ।

परिहाइअ वि [दे] परिहीण (पड) ।

परिहाइवि देखो परिहाउ = परि + घापय ।

परिहाण न [परिधान] १ वज्र कण्ठा, (कुप्र ५६, सुपा ५५) । २ वि. पहिलेवाला, पहिलेवाला, 'महिलिया सलिलकथपरिहाणो' (पउम ११, ११६) ।

परिहाणि की [परिहाणि] हास, मुक्कान, कति (सम ६७, उप ३२६, जी ३३, आशु ३६) ।

परिहाय वि [वे] कीण, दुर्गत (दे ६, २५, पात्र) ।

परिहारयव } देखो परिहा = परि + हा ।
परिहायमाण }

परिहार पु [परिहार] करण, कति (वव १) ।

परिहार पु [परिहार] १ परिस्त्राग, वजन (गठ) । २ परिभोग, मासेवन, 'एव' छलु मोहाला । ब्राह्मणकाह्यामो पठुपरिहार परिहारि' (मग १५) । ३ परिहार विशुद्धि नामक समय विशेष (कम्म ४, १२, २१) । ४ विषय (वव १) । ५ तप विशेष (ठा ५, २, वम १) । 'विशुद्धिअ, 'विसुद्धीअ न 'विशुद्धिअ' चारिअ विशेष, समय विशेष (ठा ५, २, पउ २५) ।

परिहारि वि [परिहारि] परिहार करनेवाला (बह ४) ।

परिहारिअ वि [परिहारिअ] आचारवान् मुनि, उद्युक्त विहारी कैत साधु (शाखा २, १, ४) ।

परिहारिणी की [दे] देर ते घ्याई हुई नैस (दे ६, ३१) ।

परिहारिय वि [परिहारिक] १ परिस्त्राग के योग्य (बह २) । २ परिहार नामक तप का पातक (पव ६६) ।

परिहाल पु [दे] पल निर्गम, मोरी (दे ६, २६) ।

परिहाय सक [परि + घापय] पहिणाना ।
. छ. परिहारिअ (मग) (मवि) ।

परिहाय सक [परि + घापय] हास करना, कम करना, होन करना । वक्र परिहावेमाण (शाखा १, १—पउ २८) ।

परिहायिअ वि [परिहायित] होन किया हुआ (वव ४) ।

परिहायिअ वि [परिधापित] पहिराया हुआ (महा, सुप्र १०, १७, स ५२६, कुप्र ६) ।

परिहास पु [परिहास] उपहास, हँसी (गा ७७१, पात्र) ।

परिहासणा की [परिभाषणा] उपासना (भाव १) ।

परिहि पुकी [परिधि] १ परिवेष्ट, 'सलिविअ व परिहिण' रूढ सिल्लेण तत्त रावगिह' (वव २५५) । २ परिणह, विस्तार (राज) ।

परिहिअ वि [परिहित] पहिरा हुआ (उवा, अग, कण, मीप, पात्र, सुप्र २, ८०) ।

परिहिरुण देखो परिहा = परि + हा ।

परिहिंड सक [परि + हिण्ड] परिभ्रमण करना । परिहिण्ड (ठा ४, १ टी—पउ १६२) । वक्र. परिहिंडव, परिहिंडमाण (पउम ८, १६८, ६०, २, १५५, मीप) ।

परिहिण्डिय वि [परिहिण्डित] परिभ्रान्त, भ्रंका हुआ (पउम ६, १११) ।

परिहिचा } देखो परिहा = + हा ।
परिहियव्व }

परिहीअमाण देखो परिहा = परि + हा ।

परिहीणवि [परिहीण] १ वम, मून (मीप) ।

२ कीण, विनष्ट (मुज १) । ३ रहित, वर्जित (उव) । ४ न. हास, भाषण (चाप) ।

परिहुअ वि [परिहुअ] निवृत्ता भोग किया गया हो बह (दे १, ६४, दे ४, ३६) ।

परिहुअ वि [परिभूत] पराजित, अनिभूत (गा १३४, पउम ३, ६, से २८) ।

परिहेरण न [दे. परिहार्यक] मामुपण-विशेष (मीप) ।

परिहो सक [परि + भू] पराभव करना ।

परिहोअ (मवि) ।

परिहोअ देखो परिभोग (पउठ) ।

परिहलस (मग) घा [परि + हलस्] वम होना । परिहलस (पिण) ।

परी सक [परि + ह] जाना, वमन करना ।

परिति (वि ४६१) । वक्र. परिति (पि ४६३) ।

परी सक [क्षिप्] क्लृप्ता । परीइ (हे ४, १४३) । परीति (कुमा) ।

परीइ सक [भूम] भ्रमण करना, घूमना । परीइ (हे ४, १६१) । परंति (पउह १, ३—पउ ४६) ।

परीघाय पु [परिघात] निर्वात, विनाश (पव ६४) ।

परीणम देखो परिणम = परि + णम. 'सस-गमो पणवणापुणामो लोमुत्तरतेण परी-णमति' (उपप ३५) ।

परीभोग देखो परिभोग (सुपा ४६७, आवक २८४, पचा ८, ६) ।

परीमाण देखो परिमाण (वीस १२३, ११२, पव १५६) ।

परीय देखो परित (राज) ।

परीयल पु [दे. परिवर्त] केवल, 'विपरी-यल्लमणिसुद्ध रयहरणं चाएण एण' (मोप ७०६) ।

परीरम पु [परिरम] भातिगण (कुमा) ।

परीयल वि [परिवर्त्य] वर्जनीय (वम ६, ६ टी) ।

परीयाय देखो परिवाय = परिवार (पउम १०१, ३, पव २३७) ।

परीवार देखो परिवार = परिवार (कुमा, केय ४८) ।

परीसण न [परिवेणण] परोक्षता (दे २, १४) ।

परीसम देखो परिसम (मवि) ।

परीसह पु [परीह] भूत भावि से होनेवाली पीडा (भाषा, मीप उव) ।

परुहय वि [परुहित] जो दोनै लगा हो बह (स ७५५) ।

परुहय देखो परोकय (मिने १४०१ टी, सुपा १३३, था १, कुप्र २५) ।

परुण } देखो परुहय (दे १, ३५, १०, परज १६४, गा ३२४, ८३८, महा, स २०४) ।

परुणर देखो परोणर (कुप्र ५) ।

परुभासिद (शी) वि [मोद्भासित] प्रभावित (मवी २०) ।

परुस वि [परुस्] बहोर (गा ३४४) ।

परुह वि [परुह] १ उपन (मवि १२१) । २ बड़ा हुआ (मीप, वि ४०२) ।

पलविअ } वि [प्रलपित] १ अनर्थक कहा
पलवित } हुमा । २ न, अनर्थक भाषण (बेद,
पह १, २) ।

पलविर वि [प्रलपित] बकवादी (दे ७,
५६) ।

पलस ग [दे] १ कर्पास-फल । २ स्वेद,
पसीना (दे ६, ७०) ।

पलस (भग) न [पलाश] पत्र, पत्ती (भवि) ।
पलसु की [दे] सेवा, पूजा, भक्ति (दे
६, ३) ।

पलहि पुकी [दे] कगम (दे ६, ४, पात्र
वज्रा १६६, हे २, १७४) ।

पलहिअ वि [दे] १ विषय प्रसंग । २ पुन,
प्रावृत्त जनीन का वास्तु (दे ६, १४) ।

पलहिअ वि [दे, उपलहृदय] मूर्ख,
पापाण-हृदय (पह) ।

पलहुअ वि [प्रलपुक्] १ स्वल्प, थोड़ा । २
छोटा (सि ११, ३३, गवह) ।

पला देखो पलाय = परा + भय, 'न ज
भगामि मय सवसपि बहि पलाइ ती तुउअ'
(भासव २३), पलासि, पलासि (पि
५६७) ।

पलाअत } देखो पलाय = परा + भय ।
पलाइअ }

पलाइअ वि [पलायित] १ भागा हुआ,
पलाण न गट, 'पलाए हलए' (सा ३६०),
'रिउयो सिल गह पलाण' (धर्म १६,
५१, पत्र ५३, ८४, शोध ५६७, उप १३६
टी, सुपा २२, ५०१, टी १५, सख, गहा) ।
२ न पलायन (धर्म ४, ३) ।

पलाण न [पलायन] भागना (सुपा ५६४) ।

पलाणिअ वि [पलायनित] जिसने पलायन
किया हो वह, भागा हुआ, 'तेणवि मागएच्छो
विनामो तो पलाणियो दूर' (सुपा ५६४) ।

पलाव वि [प्रलाव] गहौल (पह) ।

पलाय थक [परा + थय] भाग जाना,
नासना । पलाय, पलायसि (महा, पि
५६७) । भवि, पलायसि (पि ५६७) । बह
पलाअत, पलायमाण (गा २६१, शाया
१८, भाक १८, उप १२६) । सख, पलाइअ
(गद, पि ५६७) । हेह, पलाइअ (भाक
१६, सुपा ५६४) । छ पलाइअव्य (पि
५६७) ।

पलाय पु [दे] चोर, तस्कर (दे ६, ८) ।

पलाय देखो पलाइअ = पलायित (शाया १,
३, स १३१; उप १५७, एण ५८) ।

पलायण न [पलायन] भागना (शोध २६,
गुर २, १४) ।

पलायणया की ऊपर देखो विद्य ५४६) ।

पलायमाण देखो पलाय = परा + भय ।

पलाव वि [प्रलाव] प्रह्ला सावावा (अणु
१४१) ।

पलाव न [पलाव] तुण गिरोप, पुणाल (पह
२, ३, पात्र, प्राचा) । 'पीठय न [पीठक]
पलाव क भायन (निबू १२) ।

पलाव वि [पलावक] पलाव—पुणाल का
बना हुआ (प्राचा २, २, १४) ।

पलाय सक [नाराय] मगना, नष्ट करना ।
पलावह (हे ४, ३१) ।

पलाय पुं [प्लाव] पानी को बाढ (तदु ५०
टी) ।

पलाय पु [प्रलाप] अनर्थक भाषण, बकवाद
(महा) ।

पलायण न [नाशन] नष्ट करना, भगना
(कुमा) ।

पलायि वि [प्रलापिन्] बकवादी, 'धसबद-
पलायिणी एस' (कुप्र २२२, सवोध ५७,
धमि ५६) ।

पलायिअ वि [प्लायित] डुबाया हुआ,
निगाथा हुआ (गुर १३, २०४, कुप्र ६०,
६७, एण) ।

पलायिअ वि [प्रलायित] अनर्थक पोषित
करवाया हुआ, 'मसुदु कि पुचवरिउ पलायिअ
सज्जएवणहो मारि सज्जाविउ' (भवि) ।

पलाविर वि [प्रलपित] बकवाद करनेवाला,
'महह भसबदपलाविरस सउयस पेच्छ मह
पुरमो' (सुपा २०१), 'दिग्नालीय बपेड,
एसो एव पलाविरो' (सुपा २७७) ।

पलास पुं [पलाश] १ वृक्ष विशेष, किन्तु
का बुल, बाक (वज्रा १५२, गा ३११) । २
राखत (वज्रा १३०, गा ३११) । ३ पुन,
भग, पत्ता (पात्र, वज्रा १५२) । ४ अश्राव
वन का एक लिहली फूट (ठा ८—पत्र ५३६,
इक) ।

पलासि की [दे] भल्ली, छोटा माला, शस्त्र-
विशेष (दे ६, १४) ।

पलासिया की [दे पलाशिका] स्वकाष्ठिका,
छाल की बनी हुई लकड़ी (सुप्र १, ४,
२, ७) ।

पलाह देखो पलास (सक्षि १६, पि २६२) ।

पलि देखो परि (सुप्र १, ६, ११, २, ७,
३६, उत्तर २६, ३४, पि २५७) ।

पलिअ न [पलित] १ वृद्ध मवस्था के कारण
बालों का पकना, केशों की क्षेपता । २ बदन
की भूरिया (हे १, २१२) । ३ कर्म कर्म-
पुद्गल, 'जे केइ सता पलिय बर्याति' (प्राचा
१, ४, ३, १) । ४ दृष्टिगत अनुमान, 'सि
भाकुट्टे वा हए वा खु पिण वा पलिय वकये'
(प्राचा १, ६, २, २) । ५ कर्म, काम
(प्राचा १, ६, २, २) । ६ ताप । ७ पक,
काढ़ा । ८ वि. शिथिल । ९ वृद्ध, बूढ़ा (हे
१, २१२) । १० पका हुआ, पक्व (धर्म २,
निबू १५) । ११ बर-प्रसन्न, 'न हि दिग्गह
माहरण पलियत्तयकएहएस्स' (दान) ।
'ठाण, 'ठाण न [स्थान] कर्म-स्थान,
कारखाना (प्राचा १, ६, २, २) ।

पलिअ न [पल] बार कर्म या तीन सौ बीस
मुद्रा की नाप (तदु २६) ।

पलिअ देखो पल्ल = पल्य (पत्र १५८, मग
की २६, मव ६, ६ २७) ।

पलिअ (पत्र) देखो पडिअ (पिण) ।

पलिअक पुं [पर्यङ्क] परीक, जाट (हे २,
६८, सव ३५, शीव) । 'आसण ३
[आसन] भावन विशेष (सुपा ६५५) ।

पलिअंसा की [पर्यङ्क] पपासन, भासन-
विशेष (ठा ५, १—पत्र १००) ।

पलिउंअ सक [परि + पुञ्ज] १ अपलाप
करना । २ ठगना । ३ झिपाना, गोपन
करना । पलिउपति, पलिउचयति (उत्तर २७,
१३, सुप्र १, १३, ५) । सङ्क पलिउचिय
(भाचा २, १, ११, १) । वह, पलिउचमाण
(भाचा १, ७, ४, १, २, ५, २, १) ।

पलिउचण न [परिउचन] माया, बपट
(सुप्र १, ६, ११) ।

पलिउचणा की [परिउचणा] १ लज्जी
बात को छिपाना । २ माया (ठा ४, १

टो—यन २००) । ३ प्रावरित्त-विशेष (अ ४, १) ।

पलिउंचि वि [परिक्लिष्टम्] मामावो, कपटो (वव १) ।

पलिउंचिय वि [परिक्लिष्टम्] १ वञ्चित । २ न. माया, कुटिलता (वव १) । ३ गुण-बन्धन वा एक दोष, पूरा बन्धन न करवे हो

गुण के साथ बातें करने लग जाना (वव २) ।

पलिउंचिय देखो परिउंचिय (भग) ।

पलिउंच्यु देखो पलिओंच्यु (भावा १, ५, १, ३) ।

पलिउंच्यु देखो पलिओंच्यु (मीप—व ३० टि) ।

पलिउंचिय वि [परियोगिक] परिजानो, जानकर (भग २, ५) ।

पलिउल देखो पडिउल (गाढ—विक १८) ।

पलिओंच्यु वि [पलिउाच्यु] बर्मा-बुद्ध, बुध्मा (भावा, १, ५, १, ३) ।

पलिओंच्यु वि [पर्यवशिष्टम्] ऊपर देखो (भावा, वि २५७) ।

पलिओंच्यु वि [पर्यवशिष्टम्] प्रसारित (मीप) ।

पलिओयम पुन [पत्तोपम] समय-मान-विशेष, बान वा एक दीप परिमाण (अ २, ४; भग महा) ।

पलिचा (सी) देखो पडिण्णा (वि २७६) ।

पलिउंचणया देखो पलिउंचणा (सम ७१) ।

पलिउरीण वि [परिओण] शव-प्राण (मृग २, ७, ११; मीप) ।

पलिउोप पु [परिओप] १ पट्ट, काटा, बाटो । २ मासिक (मृग १, २, २, ११) ।

पलिउचण्ण वि [परिउचण्ण] १ समताद पलिउचण्ण स्थाप (एणा १, २—वव ७८, १, ४) । २ निष्ठ, रीखा हृद्या

‘पुत्तेहि पणिउचण्णहि’ (भावा १, ४, ४, २) ।

पलिउच्यार स [परि + उाद्य] बचना, भाष्यारण करना । पणिउच्यार (भावा २, १, १०, ६) ।

पलिउद्वद ग [परि + उिद्व] दोन करना, बाटना । उद्व. पलिउिद्विय, पलिउिद्वियाने (भावा १, ४, ४, १, १, ३, २, १) ।

पलिउिच्छन्न वि [परिउिच्छन्न] निच्छन्न, बाटा हुआ (मृग १, १६, ५; उव ५८५; मुर १, २०६) ।

पलित वि [प्रदीप्त] ज्वलित (मृग ११६; सं ७७, भग) ।

पलिपाग देखो परिपाग (मृग २, १, २१; भावा) ।

पलिप्प भक [प्र + दीप्] चलना । पलिप्प (पद्; प्राह १२) । वट्ट. पलिप्पमाण (वि २४४) ।

पलियाडर वि [परिवास] ह्मेण बाट्ट

पलियाडिर होनेवाला (भावा) ।

पलिमाण पुं [परिभाग, प्रतिभाग] १

निविभानो भंग (बम्म ५, ८२) । २ प्रति-

नियत भंग (वीवस १५४) । ३ छातरय, समानता (राज) ।

पलिभिद स [परि + भिद] १ जानना । २ बोलना । ३ मेदन करना, घोड़ना । वट्ट.

पलिभिदियाण (मृग १, ४, २, २) ।

पलिभेय पुं [परिभेद] बुरना (निवृ ५) ।

पलिमंथ स [परि + मंथ] बांधना ।

पलिमंथ (उत १, २२) ।

पलिमंथ पुं [परिमंथ] १ निनाश (मृग २, ७, २६; निग १४३७) । २ स्वाभ्याप

(उत २६, ३४; धर्म १०१७) । ३ विघ्न, भाषा (मृग १, २, २, ११ टी) । ४ भुषा

भ्याप, धर्म किया (भ्याप १०६; ११२) ।

पलिमंथग पुं [परिमंथग] १ धान्य-विशेष,

बाला बना (मृग २, २, ६३) । २ बोन

बना । ३ विलस (राज) ।

पलिमंथु वि [परिमंथु] सर्वा धातव (अ ६—पत्र ३७१, वट्ट) ।

पलिमह देगो परिमह । परिमहेग्गा (वि २४७) ।

पलिमह वि [परिमह] मातृव करनेवाला (निवृ ६) ।

पलिमोस देगो परिमोस (भावा) ।

पलिउंचग न [पर्यवधान] परिमरण (मृग ७, २४३) । देगो परियंचग ।

पलिउंच पुं [पर्यव] १ कन्त भाग (मृग १, ३०, १३) । २ वि. बासनावाला, कन्त-

वाला, ‘परियंचं मणुपाण जीविय’ (मृग १, २, १, १०) ।

पलिउंच न [पल्यान्वर] पत्तोपम के

भीतर (मृग १, २, १, १०) ।

पलिउरस न [परिपाथ] समीप, पास,

निकट (मृग ६, ४—पत्र २६८) ।

पलिउ देखो पलिउ = विलस (१, २१२) ।

पलिउ देगो पलीव । पलिउे (वि २४४) ।

पलिउग देखो पलीवग (राज) ।

पलिविअ वि [प्रदीपित] जलाया हुआ (पद्; ६, १०१) ।

पलिविउं स भक [परिधि + ध्वंस] नष्ट होना । पलिविउंसिग्गा (मणु १८०) ।

पलिउय स [परि + इउ] भातित

पलिउय करना, स्पर्श करना, छूना ।

पलित्तपग्गा (वट्ट ४) । वट्ट. पलित्तयमाणे

गुणा दो लहणा भाणमार्णि’ (वट्ट ४) ।

हेक्. पलित्तसुउं (वट्ट ४) ।

पलिउ देखो परिहू = परिप (राज) ।

पलिह वि [दि] मुल्ल, बेरहूक (दि ६, २०) ।

पलिहू छी [दि] क्षेत्र, क्षेत्र, ‘नियमिहूद्वि

वोहिमि किउिन्नम बाउनाडत्त’ (मुर १५, २०१) ।

पलिहस न [दि] ऊर्ध्व बाध, बाध विशेष (दि ६, १६) ।

पलिहाय पुं [दि] ऊपर देगो (दि १, १६) ।

पली स [परि + ह] पर्यटन करना, भ्रमण

करना । पलेइ (मृग १, ११, ६), पलिति

(मृग १, १, ४, ६) ।

पली प [प्र + छी] लीन होना, धामक

करना । पलिति (मृग १, २, २, २२) ।

वट्ट. पलीमाण (भावा १, ४, १, १) ।

पलीग वि [प्रलीन] १ धित लीन (मृग २५, ७) । २ संघट (मृग १, १, ४, २) । ३

प्रत्य-आवृ, गट्ट (मृग ४, १५४) । ४ दिता

हुषा, निनीन (मृग १, २८) ।

पलीमंथ देखो पलिमंथ (मृग १, २, १२) ।

पलीय स [प्र + दीप्] जमाना । पलीय

सक [प्र + दीप्] जमाना, हुषणना । पलीय, पलीय (महा, दि १, २२१) । वट्ट. पलीयिऊन, पलीयिअ

(मृग १८०; दा ११) ।

पलीव पुं [प्रदीप] दीपक, दीप्ता (प्राक १२, 'पद्') ।

पलीवग वि [प्रदीपक] ग्राग वगनेवाला (पण १, २) ।

पलीवण न [प्रदीपन] ग्राग लगाना (था २८, कुप २६) ।

पलीवणया स्त्री. अवर देखो (निबू १६) ।

पलीविअ देखो पलीव = प्र + दीपम् ।

पलीविअ वि [प्रदीप] प्रज्वलित (पाप) ।

पलीविअ वि [प्रदीपित] जलाया हुआ (उक्) ।

पलुपण न [प्रलोपन] प्रलोप (भौप) ।

पलुट् वि [प्रलुठित] लोटा हुआ (दि १, ११६) ।

पलुट् देखो पलोट् = पर्यस्त (हे ४, ४२२) ।

पलुट्तिअ देखो पलोट्तिअ = पर्यस्त (कुमा ४, ७५) ।

पलुट्ति वि [प्लुट्] दाय, जला हुआ (सुर ६, २०९, सुपा ४) ।

पलोमाण देखो पलो = प्र + लो ।

पलोय पु [प्रलोप] एक जाति का पत्थर, पाषाण विशेष (वी १) ।

पलोअ सक [प्र + लोभ्, लोभय्] बैलना, निरीक्षण करना । पलोअइ, पलोअए, पलोअइ (सण, महा) । कर्म. पलोअइअइ (कम्प) । वङ्. पलोअअ, पलोअअअ, पलोअअअ, पलोअमाग (रयण १४, ना—सागरी ३२, महा. वि २६३, सुपा ४४, ६५१) ।

पलोअण न [प्रलोकन] प्रलोकन (ति १४, ३३, गा ३२२) ।

पलोअणा स्त्री [प्रलोकना] निरीक्षण (भौप ३) ।

पलोइ वि [प्रलोकिन्] प्रेक्षक (भौप) ।

पलोइअ वि [प्रलोकित] देखा हुआ (गा ११८, महा) ।

पलोइर वि [प्रलोकित्] प्रेक्षक (गा १८०, भवि) ।

पलोएत } देखो पलोअ ।

पलोमाण } देखो पलोअ ।

पलोपर [दि] देखो परोह (गा ३१३ म) ।

पलोट् सक [प्रत्या + गम्] लौटना, वापस आना । पलोट्ति (हे ४, १६६) ।

पलोट् सक [परि + अस्] १ फेंकना । २ मार गिराना । ३ भ्रम चलाना, विपरीत होना । ४ प्रवृत्ति करना । ५ गिराना । पलोट्तिअ (हे ४, २००, भग. कुमा) । वङ्. पलोट्ति (जवा ६६, गा २२२) ।

पलोट्ति भ्रम [प्र + लुट्] जमीन पर लोटना । वङ्. पलोट्ति (स ५, ५८) ।

पलोट्ति वि [पर्यस्त] १ लिस, फेंका हुआ । २ हत । ३ विक्षिप्त (ह ४, २५८) । ४ पतित, गिरा हुआ (गा १७०) । ५ प्रवृत्त, 'रिक्ता वयमाणा तस्मै पलोट्ति ववा जला णोषा' (कुमा) ।

पलोट्तिजोह वि [दि] रहस्य नेदी, बात को प्रकट करनेवाला (हे ५, ३५) ।

पलोट्ति न [प्रलोठन] हुलकाना, लुडकाना, गिराना (उप ३ ११०) ।

पलोट्तिअ देखो पलोट्ति = पर्यस्त (कुमा) ।

पलोअ सक [प्र + लोभय्] धुमाना, लालच देना । पलोअेदि (शी) नाट—मुच ३१३) ।

पलोअविअ वि [प्रलोभित] धुमाया हुआ (वर्मवि ११२) ।

पलोअि वि [प्रलोभिन] विशेष लोभी (वर्मवि ७) ।

पलोअिअ देखो पलोअविअ (सुपा ३४३) ।

पलोअ (अप) देखो पलोअ । पलोअइ (अवि) ।

पलोअर [दि] देखो परोह (गा ६८५ म) ।

पलोअि (शी) देखो पलोअिअ (नाट) ।

पल्ल कु [पल्य] १ बोल आकार का एक वाक्य रखने का पाठ (पव १५८, ठा ३, १) ।

२ काल परिमाण विशेष, पत्थोपम (पउप २०, ६७, व २७) । ३ संस्थान-विशेष, पल्लक संस्थान, 'पल्लासठाणुधठिया' (सम ७७) ।

पल्ल पु [पल] वाक्य रखने का बड़ा कोश, 'बहवे पल्ला सालीए पडिगुएणा चिट्ठि' (रुपाया १, ७—पत्र ११२) ।

पल्लक देखो पल्लिअक (हे २, ६८, पद्) ।

पल्लक पु [पल्लक] खाफ विशेष, बन्ध विशेष (था २०, बी ६, पव ४, संघोष ४४) ।

पल्लघण न [प्रलङ्घन] १ शक्तिरूप (ठा ७) । २ गमन, गति (उत्त २४, ४) ।

पल्लग देखो पल्ल = पल्ल (विसे ७०६) ।

पल्लट् देखो पल्लट् = परि + प्रस् । पल्लट्ति (हे ४, २००; अवि) । सङ्. पल्लट्तिअ (पवा १३, १२) ।

पल्लट् पु [दि] पर्यंत विशेष (पण १, ४) ।

पल्लट् पु [दि. परिवर्त] काल-विशेष, भ्रमन्त काल चक्रों का समय (पण ४७) ।

पल्लट् } देखो पलोट्ति = पर्यस्त (हे २, ४७, पल्लट्ति ६८) ।

पल्लरिथ स्त्री [पर्यस्ति] भासन विशेष, पलभी, 'पायपासारए पल्लरिथवण विषपट्टिदाए व । उवासाएवेवणमा विणपुग्गो भनइ ववमा ।।' (वेद्य ६०) । देखो पल्लरिथिया ।

पल्ल न [पल्लल] छोटा तलाव (प्राक १७, छाया १, २; सुपा ६४६, स ४२०) ।

पल्लय पु [पल्लय] १ किसलय, भङ्गुर (पाप, भौप) । २ पत्र, पत्ता (स १६) । ३ देश-विशेष (अवि) । ४ विस्तार (कम्प) ।

पल्लय देखो पल्लय (सम ११३) ।

पल्लवाय न [दि] क्षेत्र, क्षेत्र (दि ६, २६) ।

पल्लविअ वि [दि] साक्षात्-रक्त (हे ६, १६, पाप) ।

पल्लविअ वि [पल्लवित] १ पल्लवाकार (हे ६, १६) । २ भङ्गुरित, प्राङ्मुख, उत्पन्न (हे १, १) । ३ पल्लव-युक्त (रंभा) ।

पल्लविअ वि [पल्लवयत्] पल्लव-युक्त (सुपा ५; पण २४) ।

पल्लविअ देखो पल्लन (हे २, १६४) ।

पल्लस्स देखो पलोट्ति = परि + प्रस् । पल्लस्स (प्राट् ७२) ।

पल्लण न [पर्याण] ग्रन्थ आदि का साज, 'वि करिणो पल्लाए उणोडु रासमो तरइ' (अवि १७, प्राप) ।

पल्लण सक [पर्याणय्] ग्रन्थ आदि को खनाना । पल्लाणह (स २२) ।

पल्लाणिअ वि [पर्याणित] पर्याण-युक्त (कुमा) ।

पडि स्त्री [पडि] १ छोट गंध । २ भोरो के निगाह का गन्ध स्थान (उप ७२८ टी) ।

नाह पुं [नाथ] पत्नी वा स्वामी (सुग ३५१; मुर २, ३१) । 'वइ पुं [पति] वही भयं (मुर १, १११; सुपा ३५१) ।

पट्टिअ वि [दे] १ आनन्त (निवृ २) । २ मत्त (निवृ १) । ३ प्रेरित, 'पट्टा पत्ति-माएट्टव' (पण ५७) ।

पट्टिअ वि [दे] पर्यस्त (पट्ट) ।

पट्टी देखो पट्टि (गजड, पंचा १०; ३६; मुर २, २०५) ।

पट्टीण वि [प्रलीन] विरोध सोन. 'गुतिविण पट्टीणो पट्टीणो बिट्ठर' (मग २५, ७; कप) ।

पट्टोह्नीह [दे] देखो पट्टोह्नीह (पट्ट) ।

पट्टहथ देखो पट्टोह्नीह + परि + धव् । पट्टहथ (हे ४, २००) । वट्ट. पट्टहथं (सि १०, १०; २, ५) । कवक. पट्टहथं (सि ८, ८३; ११, ६६) ।

पट्टहथ सक [वि + रेचय्] बाहर निष्कासना । पट्टहथ (हे ४, २०) ।

पट्टहथ देखो पट्टोह्नीह = पर्यस्त, 'बरतल-पट्टहथदे' (सुम २, २, १६; हे ४, २५८) ।

पट्टहथयन न [पर्यमन] कैं देना, प्रोपण, 'ममना मुवणपट्टहथयनयो छमुट्ठियो दुट्ट-पवणो (मोह १२) ।

पट्टहथयण देखो पट्टहथयण (सि ११, १०८) ।

पट्टहथ्यायिअ वि [विरोचित] बाहर निष्कासना हुआ (कुमा) ।

पट्टहथ्यायिअ देखो पट्टोह्नीह = पर्यस्त (सि ७, २०; छाया १, ४६—पत्र २१६, सुपा ७६) ।

पट्टहथ्यायिओ [पर्यस्तिअ] आनन्त-विरोध— १ दोनो वानु पट्टा कर पीठ के छाप चारर लोचनर बेठना (पत्र ३८) । २ जेपा पर वल लोचनर बेठना । ३ जेपा पर बाव रखकर बेठना (उग १, १६) । 'पट्ट पुं [पट्ट] योग-पट्ट (पत्र) ।

पट्टय } पुं [पट्टय] १ घनायं देण-पट्टय } विरोध (ज्म. कुन ६७) । २ गुंथी. पट्टय देख ना डिग्री (मग ३, २—पत्र १७०, मस) । ३. 'यो, 'जिया (सि ३१०, धीम. छाया १, १—पत्र २७, इक) ।

पट्टहवि गुंथी [दे. पट्टलवि] हाथी को पीठ पर बिछाया जाता एक तरह का कपडा, 'पट्टहवि हल्लवण' (पत्र ८४) ।

पट्टहविआ } देखो पट्टहव ।
पट्टहवी }

पट्टहाय सक [प्र = हल्दा] आनन्त करता, छुरी करता । पट्टहाय (संकोष १२) । वक. पट्टहायं (उव, मुर ३, १२१) । क. देखो पट्टहायजिअ ।

पट्टहाय पुं [प्रहल्दा] १ आनन्त, छुरी (कुमा) । २ हिल्लवणछिनु नामक दैत्य का पुत्र (हे २, ७६) । ३ माठवां प्रतिवागुदेव राजा (पत्रम ५, १५६) । ४ एक विद्यापर नारा (पत्रम १५, ५) ।

पट्टहायण न [प्रहल्दा] १ चित्त-प्रसन्नता, छुरी (उत २६, १७) । २ वि. आनन्द-दायक (सुपा ५०७) । ३ पुं. खण का एक मुमट्ट (पत्रम ५६, ३६) ।

पट्टहायणजिअ वि [प्रहल्दा] आनन्त-जनक (छाया १, १—पत्र १३) ।

पट्टहीय पुं. व. [प्रहल्लीक] देण-विरोध (पत्रम ६८, ६६) ।

पत्र सक [पा] पीना । क. 'अरसमेहा'—'अ-पवणजिओ दया'—'बास वासिहि' (मग ७, ६—पत्र ३०५) ।

पत्र अक [पु] १ कलना । २ सक. उद्यन कर जाला । ३ हीला । पत्रक (सुम १, १, २, ८) । वट्ट. पत्रं, पत्रमाग (सि ५, १७, छाया २, ३, ४) । हेट. पत्रिं (सुम १, १, ४, २) ।

पत्र पुं [पत्र] १ पूर (कुमा) । २ उद्यन, बूढ़ता । ३ छण, छेला । ४ भेक, भेड़न । ५ खानर, कट्टर । ६ बाएडा, डीम । ७ जल-बाक । ८ पातुसु का पट्ट । ९ बारएडर पत्ती । १० गड्ड, धाराज । ११ रिपु, दुश्मन । १२ भेप, भेड़ा । १३ जल-मुकट्ट । १४ वल, पानी । १५ जलकर पत्ती । १६ नीला, गाय (हे २, १०६) ।

पत्र छीन [प्रपा] पानी-छानना, प्याऊ: 'अराणि या पाराणि का' (पात्रा २, २, १०) ।

पत्रय पुं [पत्रय] १ खानर (२, ४६, ४, ४७) । २ खानर-वही मनुष्य । 'नाइ पुं

[नाथ] खानर-वंशीय राजा, बाली (पत्रम ६, २६) । 'यइ पुं [पति] खानरराज (सि ३७६) ।

पत्रंगम पुं [पत्रंगम] १ खानर (पात्र, से ६, १६) । २ छन्द-विरोध (सिग) ।

पत्रंय पुं [प्रपत्र] १ विस्तार (उप ५३० टी; शीप) । २ संसार (सुम १, ७; उव) । ३ प्रसारण, ठगई (उव) ।

पत्रंयण न [प्रपत्रा] विप्रतारण, वज्रना, ठगई (पण १, १—पत्र १४) ।

पत्रना श्री [प्रपत्रा] मनुष्य की दत्त बरामो में सातवीं दशा—६० से ७० वर्ष की अवस्था (छा १०; उट्टु १६) ।

पत्रंयिअ वि [प्रपत्रित] विस्तारित (या १४, कुप ११८) ।

पत्रंय सक [प्र + पाञ्च] बाछना, अस्मिता करना । वक. पत्रंयमाण (उप पु १८०) ।

पत्रंय देखो पत्र = पट्ट ।

पत्रंयुल पुंन [दे] मण्डी पकड़ने का जाल-विरोध (विपा १, ८—पत्र ८५) ।

पत्रक वि [पत्रक] १ उद्यन-कूट करनेवाला । २ छेलेवाला (पण १, १ टी—पत्र २) । ३ पुं. पत्ती । ४ देवनागि-विरोध, मुपण्डुमार नामक देव-जाति (पण २, ४—पत्र ११०) ।

पत्रंयणमाण देखो पत्रय = प्र + पव् ।

पत्रय देखो पत्रक (पण २, ४; कण, बीर) ।

पत्रय सक [प्र + पट्ट] स्वीकार करना । पत्रयज, पत्रयिअ (अधि, हि २०) । अधि. पत्रयिहि (या १६१) । वट्ट. पत्रयंज (या २७) । उट्ट. पत्रयिअ (मोह १०) । इ. पत्रयिअ (पंचा १६) ।

पत्रयण न [प्रपद] स्वीकार, संकीर्ण (छा २०८, पंचा १४, का. प्याऊ १११) ।

पत्रयण देखो पत्रयण (या ४) ।

पत्रयिअ वि [प्रपत्र] स्वीकार, संकीर्ण (अधि २३; कुप २६५; सुपा ५०७) ।

पत्रयिअ वि [प्रपादित] को करने लगा हो (छा ७४६) ।

पत्रयिअ देखो पत्रयज ।

पट्ट सक [प्र + पट्ट] मड़िना करना । पट्टन (पत्र) ।

पवट्ट वि [प्रवृत्ति] जितने प्रवृत्ति की हो वह (पट्ट; हे २, २६ ति)।

पवट्टि वि [प्रवर्त्तक] प्रवृत्ति करानेवाला (राज)।

पवट्टि छी [प्रवृत्ति] प्रवर्तन (हम्मोर १५)।

पवट्टिअ वि [प्रवर्त्तित] प्रवृत्त किया हुआ (भवि, दे)।

पवट्ट देखो पवट्ट = प्रकोष्ठ (हे १, १५६)।

पवड् भक [प्र + पन्] पडना, गिरना।

पवड्ड, पवड्डिअ, पवड्डिअ (सग, कप, भाचा २, २, ३, ३)। बहू, पवड्डत, पवडेमाण (णाय १, १, सिरि ६६६, भाचा २, २, ३, ३)।

पवड्डग न [प्रपतन] भय प्राप्त (बह ६)।

पवड्डणया छी [प्रपतना] ऊपर देखो (ठा पवड्डण) ४, ४—यय २८०, राज)।

पवडेमाण देखो पवड्ड।

पवड्ड भक [दे] पीडना, सोना, 'जाव राया पवड्ड ताव कहेहि किचि भक्खाण्य' (सुल १, १)।

पवड्ड भक [प्र + वृध] बडना। पवड्ड (उव)। बहू, पवड्डमाण (कप, सुर १, १८१, मू १२५)।

पवड्ड वि [प्रवृद्ध] बडा हुआ (भक्क ७०)।

पवड्डण न [प्रवर्धन] १ बडाव, प्रवृद्धि (सवोष ११)। २ वि. बढानेवाला, 'संसारस्त पवड्डण' (सूत्र १, १, २, २५)।

पवड्डिअ वि [प्रवर्धित] बढाया हुआ (भवि)।

पवण वि [प्रवण] १ उत्तर (कुप्र १३५)। २ सजुस्त, स्वस्थ, सुल्य, 'पवणिरिओ तह, पवणो पुव्वं व जहा स संसाप्पी' (उप ५६७ टी, कुप्र ५१८)।

पवण न [प्लवन] १ उछल कर मग्न (जीव ३)। २ तरण, 'तरिज्जामस्त पवणं (?) वण' (रिथं) (णाय १, १५—पत्र १६१)।

'दिश पुं [धृत्य] नीव, नाव, शैथी (णाय १, १५)।

परण [पवन] १ पवन, वायु (पाथ: प्राप् १०२)। २ देव-जाति विशेष, भवनाति देवी की एक भगन्तर जाति, पवनबुमार (धौन, पण १, ५)। ३ हनुमान का पिता (हे १,

४८)। 'गइ पुं [गति] हनुमान का पिता (पउम १५, ३७), बानरद्वीप के राजा मन्दर का पुत्र (पउम ६, ६८)। 'वड पुं [चण्ड] व्यक्ति वाचक नाम (महा)। 'तणअ पुं [तनय] हनुमान (हे १, ४८)। 'नंदण पुं [नन्दन] हनुमान (पउम १६, २७; सम्मत १२३)। 'पुत्त पुं [पुत्र] हनुमान (पउम ५२, २८)। 'वेग पुं [वेग] १ हनुमान का पिता (पउम १५, ६५)। २ एक जैन मुनि (पउम २०, १६०)। 'सुअ पुं [सुत] हनुमान (पउम ४६, १३; से ४, १३, ७, ४६)। 'णंद पुं [नन्द] हनुमान (पउम ५२, १)।

पवणजअ पुं [पवनजय] १ हनुमान का पिता (पउम १५, ६)। २ एक शैथियुन (कुप्र ३७७)।

पवणिय वि [प्रवणित] सुल्य किया हुआ, सजुस्त किया हुआ (उप ७६८ टी)।

पवण देखो पवण (सण)।

पवत्त देखो पवट्ट = प्र + वृत्। पवत्त, पवत्त (पन २४७, उव)।

पवत्त सक [प्र + वत्तय] प्रवृत्त करना।

पवत्त, पवत्तहि (वय १; कप)।

प्रपत्त देखो पवट्ट = प्रवृत्त (पउम ३२, ७०, ॥ ३७६, २भा)।

पवत्तग वि [प्रवर्त्तक] प्रवृत्ति करानेवाला (उप ३३६ टी, धर्मवि १३२)।

पवत्तन न [प्रवर्त्तन] १ प्रवृत्ति (हे २, १०; उत ३१, २)। २ वि. प्रवृत्ति करानेवाला (उत ३१, ३, पण १, ५)।

पवत्तय वि [प्रवर्त्तक] १ प्रवृत्ति करानेवाला (हे २, ३०)। वि. प्रवृत्त करानेवाला, 'तिथवरणवत्तय' (भवि १८, गन्ध १, १०)।

पवत्ति छी [प्रवृत्ति] प्रवर्तन। 'वाउय वि [वजापुत्त] प्रवृत्ति में सपा हुआ (धीप)।

पवत्ति वि [प्रवर्त्तिन्] प्रवृत्ति करानेवाला (ठा ३, ३, कप कप)।

पवत्तिणी छी [प्रवर्त्तिनी] साध्वियों की कल्पना, मुख्य जैन साध्वी (सुर १, ४१, महा)।

पवत्तिय देखो पवट्टिअ (कान)।

पवत्तिया छी [दे] सन्यासी का एक उपकरण (कुप्र ३७२)।

पवड् देखो पवय = प्र + वड्। वड्, पवडमाण (भाचा)।

पवदि छी [प्रवृत्ति] डकना, धाञ्छान (संति ६)।

पवड् देखो पवड्ड = प्र + वृष्। वड्, पवडमाण (वेय ६१६)।

पवड्ड पुं [दे] पन, हथौडा (दे ६, ११)।

पवड्डिय देखो पवड्डिअ (महा)।

पवड्ड वि [प्रवड्ड] १ स्वीकृत, अंगीकृत (वेय ११२, प्राप् २१)। २ प्राप्, 'पुत्तयपुत्तयपवड्डमाणसो' (महा)।

पवमाण देखो पन = पनु।

पवमाण पुं [पवमान] पवन, वायु (कुप्र ४४५, सुपा ८६)।

पवय सक [प्र + वड्] १ बकवास करना।

२ वाद-विवाद करना। वड्, पवयमाण (भाचा १, ५, १, ३)।

पवय सक [प्र + वड्] बोलना, कहना।

भवि, कवड्, पवयकरणमाण (धर्मसं ११)।

कर्म, पवुक्कह, पवुक्कहि, पवुक्कहि (कप, पि ५४४, भग)।

परय देखो पवक = पवक (उप ३२१०)।

पवय पुं [प्लवाग] बानर, कपि (पउम ६५, ५०; हे ४, २२०, पाथ, से २, ३७, १५, १७)। 'पइ पुं [पति] बानरों का राजा

मुशी (से २, ३६)। 'हिय पुं [धिप] वही पूर्वांक मय (से २, ४०, १२, ७०)।

परयण पुं [प्राजन] कौडा, पादुक (हे २, ६७)।

पवणय न [प्रवचन] १ जिन-देव-प्रणीत सिद्धान्त, जैन शास्त्र (पग २०, ८, प्राप् १८२)। २ जैन धर्म, 'पुत्तयपुत्तयो संवो पवणय तिथ ति होइ एण्डा' (वेवा ८, ३६, विपे १११२, उप ४२१ टी, धौन)।

३ भाषण-ज्ञान (विपे १११२)। 'माया छी [माता] पव संमिति भीर दीन मुति रूप यमं (वम १३)।

परय नि [प्रवर] योष्ठ, उत्तम (उवा, मुपा ३१६, ३४१, प्राप् १२६, १५५)।

पन्तरा न [दि. प्रनारह] सिध, मस्तक (दे ६, २८)।

पन्तरपुडरीय पुन [प्रतरपुडरीक] एक देव विमान (प्राचा २, १५, २)।

पवरा श्री [प्ररा] भगवान् वासुपुत्र्य की शासनदेवी (पव २७)।

पनरिस सक [प्र + वृप्] बरसना, वृष्टि करना। पनरिसद (भवि)।

पनल देखो पनल (कप्पु कुप्र २५७)।

पनस सक [प्र + वस.] प्रपाण करना विदेश जाना। बह. पनसत (से १, २४, गा ४५)।

पनसण न [प्रवसन] प्रवास, विदेश यात्रा, मुताफिरी (स १६६, उप १०३१ टी)।

पयसिअ वि [प्रोपित] प्रवास में गया हुआ (गा ४५, ८४ सु ५, २११, सुपा ५७३)।

पनह सक [प्र + वह] १ बहना। २ सब टपबना, करना। पनहद (भवि, विग)। बह, पनहत (दुर २, ७५)। संह पवहिस्ता (सम ८४)।

पनह सक [प्र + हन्] मार डालना। बह. पिच्छत पनहंत मग्न करयल कलिय-करवात (सुपा ५७२)।

पनह वि [प्रनह] १ बहनेवाला। २ टपकने-वाला चुनवाला, मट्ट छालीको घूमनतरण-बहामो (विपा १, १—पन १६)।

पनह पुं [प्रनाह] १ लोट बहान, जल धारा (गा १६६, ५४१, कुपा)। २ प्रवृत्ति। ३ व्यवहार। ४ उत्तम मरय (हे १, ६८)। ५ प्रसाव (राज)।

पनहण पुंन [प्रनहण] १ नौका जहाज (छापा १, १, वि ३५७)। २ गाढी भादि भाटन, 'मुगणया गित्तिसया पल्लिगया पनहणया' (वीन, वसु चाह ७०)।

पनहाइअ वि [दि] प्रवृत्त (दे ६, ३५)।

पनहाविय वि [प्रनाहित] बहाया हुआ (भवि)।

पना श्री [प्रपा] जलदान-स्थान, पानी-छाया, प्याज (मीन, पणह १, १, मट्टा)।

पनाइ वि [प्रनादिन] १ बार बरनेवाला, बारो। २ दारोनिन (मुप १, १, १, चउ ५७)।

पनाइअ वि [प्रनात] बहा हुआ (वापु), 'पनाइया कलबवाया' (स ६८६, पनम ५७, २७, छाया १, ८ स ३६)।

पनाइअ वि [प्रनादित] बजाया हुआ (कप्प, श्रीप)।

पनाण (धन) देखो पमाण—प्रमाण (कुमा, वि २५१, भवि)।

पनाह सक [प्र + पातय] धिराना। बह. पनाहमाण (मय १७, १—पन ७२०)।

पनादि देखो पनाइ (धर्मस १३३)।

पनाय सक [प्र + या] १ मुल पाना। २ बहना (हवा का)। ३ सक. गमन करना। ४ हिंसा करना। पनायद (प्राह ७६)। बह. पनायंत (भावा)।

पनाय पुं [प्रनाइ] १ किंवदन्ती, जनश्रुति (सुपा १००, उप ५ २६)। २ परपरा-प्राप्त उपदेश। ३ मठ, दरान, 'पवाएण पनायं जालेजा' (भावा)।

पनाय पु [प्रपात] १ गर्त, गड्ढा (छाया १, १४—पन १६१, दे १, २२१)। २ ऊँच स्थान से गिरता जल-समूह (सम ८५)। ३ लट रहित निरुधार पर्वत स्थान। ४ रात में पकनेवाली घास, घारा (राज)। ५ पतन (ठा २, ३)। 'इह पुं [त्रह] बह कुएर, जहाँ पर्वत पर से नदी गिरती हो (ठा २, ३—पन ७३)।

पनाय पु [प्रनान] १ प्रकट पवन (पणह २, ३)। २ वि. बहा हुआ (पवन) (संवि ७)। ३ पवन रहित (इह १)।

पनायग वि [प्रनाचक] पाठक, शब्दायक (विदे १०६२)।

पनायग न [प्रनाचन] प्रारंभ, शम्भवन (सम्मत ११७)।

पनायणा श्री [प्रनाचना] ऊपर देखो (विदे २८३५)।

पनायय देखो पनायग (विदे १०६२)।

पनाल पुन [प्रनाल] १ नवाहुड, किन्नरय (ताप ३४१ छाया १, १, मुपा १२६)।

२ मूँगा, विडुन (पाघ बग)। 'मंत, यन वि [बन्] प्रवानशला (छाया १, १, श्रीप)।

पनालिअ वि [प्रपालित] जो पालने लगा हो वह (उप ७२८ टी)।

पनास पुं [प्रवास] विदेश गमन, परदेश-यात्रा (सुपा ६५७ हेका ३७ तिरि ३५६)।

पनासि वि [प्रनासित] मुवाकिर (गा पनासु) ६८, पड, वि ११८, हे ५, ३६५)।

पनाह सक [प्र + वाहय] बहाना, चलाना। पनाहद (भवि)। भवि पनाहेहिंति (विदे २४६ टी)।

पनाह देखो पनह = प्रवाह (ह १, ६८ ८२, कुमा छाया १, १४)।

पनाह पु [प्रवाध] प्रकट पीडा (विपा १, ६—पन ६०)।

पनाहण न [प्रनाहन] १ जल, पानी (भावम)। २ बहाना, बहन कराना (विदेय ५२३)।

पवि पु [पवि] बन्न इन्न का मन्न विरोध (उप २११ टी, सुपा ५६७ कुमा, धर्मवि ८०)।

पविअभिअ वि [प्रविजुम्भित] प्रोक्षित, समुपलन (गा ५१६ म)।

पविआ श्री [दे] कमी वा पान-पान (दे ६, ४, ८, ३२, पाप)।

पविइण वि [प्रवितीर्ण] दिया हुआ (मीर)।

पविइण वि [प्रवितीर्ण] १ व्याप्त पविइण (मीर, छाया १, १ टी—पन ३)। २ विनिम, निस्त (छाया १, १)।

पविइय सक [प्रवि + कय] धारन-रनापा करना। पविकल्पद (सम ५१)।

पविइसिय वि [प्रविइसित] प्रवर्ध के विव-सित (राज)।

पविइर सक [प्रवि + क] चेंकना। बह. पविइरमाण (ठा ८)।

पविइरिअ वि [प्रतोमिअ] निर्दोष, अनलोपित (उ ७४५)।

पविइरिअ देखो पविइर, 'नामिअणे म मंठ पविइरिअ सवुरम्भ' (दुर १३, २०६)।

पविगय वि [दे] विरुद्ध (वह)।

पविचरिय वि [प्रविचरित] गमन यात्र सर्वत्र व्याप्त (पप)।

पविजल वि [प्रविजल] १ प्रवर्तित (सूत्र १, ५, २, ५) । २ स्वरित से विच्छिन्न—
अपत्य (सूत्र १, ५, २, १६; २१) ।

पविट्ट वि [प्रविट्ट] घुसा हुआ (उवा. सुर ३, १३६) ।

पविणी सक [प्रवि + णी] दूर करना ।
पवित्तेति (भग) ।

पविच पुं [पवित्र] १ धर्म, कुरा, सुण-विरोध
(दे ६, १५) । २ वि, निर्दोष, निष्कलङ्क, शुद्ध,
स्वच्छ (कुमा. भग. उत्तर ४५) ।

पविच देहो पवट्ट = प्रवृत्त (सि ६, ५७) ।

पविच सक [पवित्रय] पवित्र करना । पक्क-
पविचार्यत (सुपा ८५) । ३. पविच्छियव्य
(सुपा ५८५) ।

पविचय न [पवित्रक] ग्रंथी, शृंगलीयक
(पाया १, ५; धीर) ।

पविचायि वि [प्रवित्त] प्रवृत्त किया हुआ
(भवि) ।

पविचि देहो पवचि = प्रवृत्ति (सुपा २; भोप
६३; धीर) ।

पविचिणी देहो पवचिणी (कम) ।

पविस्थर भक [प्रवि + हत्त] फैलाना । वक्क-
पविस्थरमाण (पव २५५) ।

पविस्थर पुं [प्रविस्तर] विस्तार (उवा. सूत्र
२, २, ६२) ।

पविस्थरि वि [प्रविस्वत्त] विस्तीर्ण (स
७५२) ।

पविस्थरि वि [प्रविस्तरिन्] विस्तारवाला
(पज—पण १, ५) । देहो पविस्थरिय ।

पविस्थरि वि [प्रविस्तरिन्] फैलनेवाला
(गज) ।

पविद्ध देहो पविद्ध (पव २) ।

पविद्धं सक [प्रवि + ध्वंस] १ विनाशप्र-
मुख होना । २ विनष्ट होना, तेण पर जोणी
पविद्धं, तेण पर जोणी विद्धं (अ ३,
१—पण १२३) ।

पविद्धय वि [प्रविध्यस्त] विनष्ट (धीर १) ।

पविभत्ति धो [प्रविभक्ति] शुक्ल-पुष्प-
विभाग (उत्तर २, १) ।

पविभाग पुं [प्रविभाग] ऊपर देहो (विने
१६५२) ।

पविमुक्त वि [प्रविमुक्त] परित्यक्त (सुर ३,
१३६) ।

पविमोयण न [प्रविमोचन] परित्याग
(भोग) ।

पवि य वि [प्राप्त] प्राप्त, 'पुवि उवहासं
पविमा दुस्साणं हुंति ते पिण्डमा' (भारा ४४) ।

पविमंभिर वि [प्रविज्जम्भित्] १ उल्लसित
होनेवाला । २ उत्पन्न होनेवाला (सण) ।

पवियकिय न [प्रवित्तिकित] विकल्प, वितर्क
(उत्तर २३, १५) ।

पवियक्खण वि [प्रविचक्षण] विरोध प्रवीण
(उत्तर ६, ६३) ।

पवियार पुं [प्रवीचार] १ काया और वचन
की चेष्टा-विरोध (उप ६०२) । २ काम-क्रोडा,
मैकुल (देवद ३४७; पव २६६) ।

पवियारण न [प्रविचारण] संचार, 'बाजय-
विचारणट्ठा छमायं अण्यं कुमा' (पिट
६५०) ।

पवियारणा जो [प्रविचारणा] काम-क्रोडा,
मैकुल (देवद ३४७) ।

पवियास सक [प्रवि + काशय] फाटना,
खोलना, 'पवियासह नियवयण' (धम्मपि
१२५) ।

पवियासिय वि [प्रविशसित्त] विकसित
किया हुआ, 'पवियासियकमलवणं सणं
निहावेह दिण्णाह' (सुपा ३५) ।

पविइज वि [दि] स्वरित, शीघ्रता-युक्त (दे
६, २८) ।

पविर्ज सक [अञ्] भाषना, तोटना ।
पविर्जह (हे ४, १०६) ।

पविर्जव वि [दि] स्तम्भ, स्नेह-युक्त (वह) ।

पविर्जिज वि [अस] भाषा हुआ (कुमा;
दे ६, ७५) ।

पविर्जिज वि [दि] १ स्तम्भ, स्नेह-युक्त ।
२ वृत्त-निषेध, निवारित (दे ६, ७५) ।

पविरल वि [प्रविरल] १ शविर्विद । २
विच्छिन्न (पवड) । ३ शयनत बोधा, बहुत
ही काम-परिष्कारणरहितिया धोचंति भट्टोए
पविरलरिदा' (सुपा २४०) ।

पविरहिय वि [दि] विस्तारवाला (पण १,
५—पण ६१) । देहो पविरहिय ।

पविरिक्क वि [प्रविरिक्क] एकदम शून्य,
बिभक्तुल खाली (गज ६८५) ।

पविरेहिय [दि] देहो पविरहिय (पण १,
५ टी—पण ६२) ।

पविलुं प सक [प्रवि + लुप] बिलकुल नष्ट
करना । क्वक्क, पविलुप्पमाण (महा) ।

पविलु च वि [प्रविलुप्त] बिभक्तुल नष्ट (उप
५६७ टी) ।

पविलुप्पमाण देहो पविलुं प ।

पविस सक [प्र + विश] प्रवेश करना,
घुमाना । पविसद (उप, महा) । शवि,
पविसस्साभि, पविसिहिह (पि ५२६) ।

वक्क, पविसत्त, पविसमाण (पव ७६,
१६; सुपा ४४८; विपा १, ५; कल्प) । संकट,
पविसित्त, पविसित्तु, पविसिअ,
पविसिअण (कल्प, महा, भवि ११६;
काम) । हेह, पविसित्तप, पवेदुं (कस,
कल्प, पि ३०३) । क. पविसिअण्य
(श्रौय ६१; सुपा ३८१) ।

पविसण न [प्रवेरान] प्रवेश, पैठ (पिट
३१७) ।

पविमु सक [प्रवि + लू] उत्पन्न करना ।
संकट, पविमुद्धता (सूत्र २, २, ६५) ।

पविस देहो पविस । पविसह (महा) । वक्क,
पविसमाण (भवि) ।

पविहर सक [प्रवि + ह्] विहार करना,
विचरना । पविहरंति (उप) ।

पविहस सक [प्रवि + हस्] हतना, हास्य
करना । वक्क, पविहसंत्त (पव ५६, १७) ।

पवीदय वि [प्रवीजित] हवा के लिए चलाया
हुआ (धीर) ।

पवोण वि [प्रवीण] निपूण, दक्ष (उप ६८६
टी) ।

पवोणी देहो पवोणी । पवोणेइ (धीर) ।

पवील सक [प्र + पीडय] पीटना, दमन
करना । पवील (माता १, ५, ५, १) ।

पवुअ देहो पवय = प्र + वय ।

पवुद्ध नि [प्रपुट्ट] १ छत्र बरसा हुआ,
जबने प्रयुक्त वृष्टि भी हो वह (माता २, ४-
१, १३) । २ न. प्रयुक्त वृष्टि, वर्षण; 'पाने
पुट्ट' निम अहिणंदिदं देवस तासणं' (मनि
२२०) ।

पुटुद्ध वि [प्रवृद्ध] बड़ा हुआ, विशेष बृद्ध (दे १, ६)।

पुटुद्धि छी [प्रवृद्धि] बढ़ाव (पर्व ५, १३)।

पुत्तु वि [प्रोक्त] १ जो कहने लगा हो, जिसने मोक्षदा श्रावण किया हो वह (पर्व २७, १६; ६४, २१)। २ उक्त, कथित (पर्व ८२)।

पुत्तुय [दे] देखो पत्तय, 'पुत्तुयं पुत्तं पेतु गामे पुत्तुय' (भाषा २१; २५)।

पुत्तु वि [प्रवृत्त] प्रकृत से बाह्यद्वित (प्राह १२)।

पुत्तु वि [प्रवृत्त] १ श्रावण किया हुआ (स ५११)। २ निर्गत (राज)।

पवेइय वि [प्रवेदित] १ निवेदित, प्रतिपादित, 'तमेन सार्थं नीर्षणं जं मिणेहि पवेइय' (उप १७४ टी. भग)। २ विज्ञात, निश्चित (राज)। ३ भेंट किया हुआ (उत्त १३, १३; सुख १३, १३)।

पवेइय वि [प्रवेपित] बन्धित (पर्व ५, ७)।

पवेइय सब [प्र + पवेइय] १ विदित करना। २ भेंट करना। ३ अनुभव करना।

पवेइय (सूत्र १, ८, २५)।

पवेइय वि [प्रवेष्टित] पिरा हुआ, वेड़ा हुआ (गुर १२, १०४)।

पवेइ देखो पवेइ। पवेइति (भाषा १, ६, २, १२)। हेइ. पवेइत्तय (कस)।

पवेयण न [प्रवेदन] १ श्रमण, प्रतिपादन। २ ज्ञान, निर्णय। ३ अनुमान (राज)।

पवेयि वि [प्रवेपित] प्रबन्धित (छाया १, १—पर्व ४७, उत्त २२, १६)।

पवेयि वि [प्रवेपित] बन्धनशासन (पर्व ८०, ५५)।

पवेस ता [प्र + पवेस] कुमाता। पवेसेह (महा)। पवेसमवि (वि ५६०)।

पवेस पुं [पवेस] भेंट की स्तुति (ठा ४, २—पर्व २२२)।

पवेस पुं [पवेस] १ रैड, कुमाता (हुमा: पज, प्राप् २२)। २ मच्छ का एक हिस्सा (पर्व)।

पवेस पुं [पवेस] कपिच ईव (मवि)।

पवेसण पुंन [प्रवेशन, °क] १ प्रवेश, पवेसणय } पैठ (पर्व १, १; प्राप् ३८, पवेसणय } द्रव्य ३२)। २ विनाशोप

बन्धनार में उत्पत्ति, विनाशोप योनि में प्रवेश (भग ६, ३२)।

पवेसि वि [प्रवेशिन] प्रवेश करनेवाला (घोष)।

पवेसियवि [प्रवेशित] धुसाया हुआ (सण)।

पवेस पुं [पवेस] गौर का पुत्र (भाषा ८)।

पव्व पुंन [पव्व] १ ग्रन्थ, गाँठ (घोष ४८६, जी १२, सुपा ५०७)। २ उत्तर, त्योहार (सुपा ५०७, था २८)। ३ पुणिया कीर समानाया तिवि। ४ पुणिया कीर समानायावाला पत्र (ठा ६—पर्व ३७०, गुज १०)। ५ ब्रह्मो, चतुर्दशी, पुणिया कीर समानाया का दिन।

'ब्रह्मो चतुर्दशी पुणियाया य चहमावसा हवइ पव्व'।

मासमि पव्वइ तिवि य

पव्वइ पव्वमि' (पर्व २)।

६ मेघला, गिरिवेन। ७ बंटा-पर्वत (सूत्र १, ६, १२)। ८ संख्या विशेष (क)।

'वीय पुं [वीय] द्यु-सावि वृष, विजया पर्व—ग्रन्थ—ही उत्पत्ति का कारण होता है (राज)। 'राहु पुं [राहु] राहु विशेष, जो पुणिया कीर समानाया में कमर बाँध कीर मूर्ध का पहण करता है (गुज १६)।

पव्वइ न [पव्वित] १ गोन-विशेष, बारबर गोन की एक शाखा। २ वृक्षी, उव गोन में उत्पन्न (राज)। देखो पव्वइत्तइ।

पव्वइ देखो पव्वइ (भा ४५३)।

पव्वइय वि [पव्वित] १ लोहित, संमत्त (वीर: हवि २—गाथा १६५)। २ मृत्, प्रातः 'मृत्प्रातो धण्णारिं पव्वइय' (वीर: सय, कय)। ३ न. लोहा, संख्या (वव १)।

पव्वइय पुं [पव्वित] मरु पर्वत (गुज ३ टी)।

पव्वइय देखो पव्वइय (उप ३ १३३)।

ही 'गा (उप ३ १५)।

पव्वइय वि [दे] बल-मय बल—सावीर (दे ६, ११)।

पव्वइ छी [पव्वित] गौरी, शिव-पत्नी (पाष)।

पव्वंय पुंन [पव्वंय] संख्या-विशेष (क)।

पव्वक } पुंन [पव्वक] १ वाय विशेष (पर्व पव्वका } २, ५—पर्व १४६)। २ ईव वैसी ग्रन्थवाली वनस्पति (पर्व १)। ३ लुण-विशेष (निच १)।

पव्वक वि [पव्वक] पर्व—ग्रन्थ—गाँठ का बना हुआ (भाषा २, २, १, २०)।

पव्वक पुं [दे] १ नय। २ शर, बाण। ३ वाय वृष (दे ६, ६६)।

पव्वका छी [प्रपवा] १ गमन, गति। २ वीर्य, संख्या (ठा ३, २, ४, ५, प्राप् १६७)।

पव्वका छी [पव्वका] काठिरी प्रादि पर्व-तिवि (छाया १, १—पर्व ५१)।

पव्वइत्तइ न [पव्वइत्तइ] देखो पव्वइ (ठा ७—पर्व ३६०)।

पव्वय सब [प्र + पव्व] १ जाना, गति करना। २ लोहा सेना, संख्या सेना। पव्वयइ (महा)। मवि. पव्वइत्तइ, पव्वइति (वीर)। वट. पव्वयव, पव्वयमाथ (गुर १, १२३, ठा ३, १)। हेइ. पव्वइत्तय, पव्वइत्त (वीर, भग, मुग २०६)।

पव्वय देखो पव्वय (पर्व १—पर्व १३)।

पव्वय देखो पव्वइय 'मगारमारसंतावि भरणा ववि पव्वय' (सूत्र १, १, १६)।

पव्वय } पुंन [पव्वय, °क] १ गिरि, पव्वय } (ठा ३, ४, प्राप् १५४, उग), 'पव्वयवि बटायि य' (वट ७, २६, ३०)।

२ वृ. डिगो वासुदेव का पूर्व-भरी नाम (भग १२३, पर्व २०, १७१)। ३ एक काम-पुत्र का नाम (पर्व १३, ६)। ४ एक राजा (मवि)। ५ एक राज-कुमार (उप ६:७)। 'राय पुं [राय] मेर पर्वत (गुज ३)। 'विदुग पुं [विदुग] पर्वतोप देव, पहाड़वाला प्रदेश (म)।

पव्वयवि न [पव्वयवि] पर्वत की छटा (भाषा २, १, १, १)।

पव्वय सब [प्र + पव्व] १ लोहा, इव देव। पव्वइय (सूत्र १, १, ४, ६)।

कक्क. पठ्यहिज्जाण (राप्ता १, १६—
पत्र ११६)।

पठ्यदशा की [प्रव्यथना] व्याथा, पीडा
- (श्रीप)।

पठ्यद्विय वि [प्रव्यथित] अति दुःखित
(भावा १, २, ६, १)।

पठ्या की [पया] लोकपातो की एक बाधा
परिपद (ठा ३, २—पत्र १२७)।

पठ्याथंत देखो पठ्याय = अन्तः।

पठ्याइअ वि [प्रवाजित] १ जिसकी बोला
की गई हो; बहु (सुपा ५६६)। २ न बोला
देना (राज)।

पठ्याइअ नि [स्तान] विचाराय, शुष्क (कुमा
६, १२)।

पठ्याइअ की [प्रवाजित] परिवाजित,
सम्पादिनी (महा)।

पठ्याइअ देखो पठ्यालिअ = प्लावित (से
५, ४१)।

पठ्याण वि [स्तान] शुष्क, सूखा (श्रीप
४८८)।

पठ्याय देखो पयाय = प्र + वा। पठ्याइअ
(प्राक ७६)।

पठ्याय सक [प्र + प्राजय] दीक्षित करना
(सुपा ५६६)।

पठ्याय सक [स्त] सूखना। पठ्याय (हे ५,
१८)। वङ्ग. पठ्याजत (मि ७, ६७)।

पठ्याय वि [स्तरान, प्रमाण] शुष्क, सूखा
हुआ (पाम. श्लो १६१, स २०१, से ५८,
६, ६१, विठ ४४)।

पठ्याय पु [प्रात] प्रकट पवन (शा ६२३)।

पठ्याल सब [छादय] ढकना, आच्छादन
करना। पठ्यालद (हे ५, २१)।

पठ्याल सक [प्लाथय] धूँद मित्राना,
तरावोर करना। पठ्यालद (हे ५, ४१)।

पठ्यालण ॥ [प्लाथन] तरावोर करना (से
६, १५)।

पठ्यालिअ वि [प्लावित] नल-म्यान्व, सप-
नोर बिना हुआ (पाम. कुमा. से ६, १०)।

पठ्यालिअ वि [छादित] ढका हुआ (कुमा)।

पठ्याय सक [प्र + प्राजय] दीक्षित करना,
संन्यास देना। पठ्यावेद (महा)। संङ्ग. पठ्या-

वेउण (पंचव २)। हेङ्ग. पठ्यायित्तप,
पठ्यावेत्तए, पठ्यावेत्त (ठा २, १, कव,
पञ्च)।

पठ्यावण न [प्रवाजित] बोला देना (उप,
श्रीप ४४२ टी)।

पठ्यावण न [दे] प्रयोजन (विठ ५१)।

पठ्यावणा की [प्रवाजित] बोला देना (श्रीप
४४३, पत्र २३, सुपनि १२७)।

पठ्याविय वि [प्रवाजित] दीक्षित, छाधु
बनाया हुआ (पामा १ १—पत्र ६०)।

पठ्याव सक [प्र + वाहय] वहाना, प्रवाह
में चलना। वङ्ग. पठ्याहमाण (मय ५, ४)।

पठ्याइ वि [दे] प्रेरित (दे ६, ११)।

पठ्याइ वि [प्रयुद्ध] महान, बड़ा (से १४,
५१)।

पठ्याइ न [प्रविद्ध] गुरु-बन्धन का एक दोड़,
बन्धन को समाप्त किये बिना हो भागना
(पत्र २)।

पठ्यासग न [दे. पठ्यासीसग] राय विशेष
(पमह १, ५—पत्र ६८)।

पठ्याइ की [प्रवृत्ति] १ नाप विशेष, दो प्रवृत्ति—
पतर का एक परिमाण (सु २६)। २ पूर्ण
अव्यक्ति, दो हस्त-यत्न—संयुक्त मिला कर
करे हुई चीज (कुम ३७५)।

पठ्या पुन [प्रसङ्ग] १ परिवय, उपलब्ध (स
१०५)। २ समति, संवन्ध, जोड़ पसोख
पिन बलावृत्तपसखेण (ठा ५, ५, कुम
२६)।

३ 'कर चिद्विचिन्तो सन्तो वर हलाहल विश।
हीराण्यारासीत्यवयवस्यार्थं पु एते महे'
(खचोष १६)। ४ प्रापति, अविष्ट-प्राप्ति
(स १७४)। ५ संयुक्त, बाध-जीडा (पमह १,
५)। ६ प्रासक्ति। ७ प्रस्ताव, अधिवार
(वज्र, अवि. पत्रा ६, २६)।

पठ्या वि [प्रसङ्गित] प्रसंग करनेवाला,
आशय, 'ब्रह्मपरमो' (महा. छाया १, २)।

पठ्या सक [प्र + सज] १ प्रासक्ति करना।
२ प्रापति होना, अविष्ट प्राप्ति होना। पठ्याइ
(उप). 'अविष्टे जीवतो गमि कि द्विषाए
पठ्याइ' (सत १८, ११, १२)। पठ्याइआ
(विसे २६६)।

पठ्या वि [दे] वक्क, सुवर्ण (दे ६, १०)।

पठ्या नि [प्रशान्त] १ प्रकट शान्त, राम-
प्राप्त (कम्प. स ४०३, कुम)। २ साहित्य-
शास्त्र प्रसिद्ध रस विशेष, शान्त रस (मनु)।

पठ्या की [प्रशान्त] नारा, विनाश, 'सर्व-
दुःखस्य संतोष' (मजि ३)।

पठ्याय न [प्रसङ्गान] सतत प्रवर्तन (विठ
४६०)।

पठ्या सक [प्रशंस] स्तुति करना। पठ्या-
स (महा. अवि.)। वङ्ग. पठ्यासंत, पठ्यास-
माण (पत्रम २८, १५, २२, ६८)। कवङ्ग.

पठ्यासिज्जाण (वत्त)। सङ्ग. पठ्यासिज्जाण
(महा)। इ. पठ्यासिज्जा, पठ्यास, पठ्या-
सिज्जा (सुपा ४७, ६४५, गुर १, २१६,
पत्रम ७५, ८), देखो पठ्यास।

पठ्या वि [प्रशस्य] १ प्रशंसा-योग्य। २
धुं. लोभ (सुम १, २, २, २६)।

पठ्याय न [प्रशसन] प्रशंसा, स्तुति (उप
१४२ टी; सुपा २०६; उप प १७)।

पठ्यासय वि [प्रशंसक] प्रशंसा करनेवाला
(पम ६, अवि)।

पठ्याइ की [प्रशंसा] स्तुति, वार्ता
(प्राक १६७, कुमा)।

पठ्यासिअ वि [प्रशंसित] स्तुति (वत्त १४,
१८)।

पठ्याइ देखो पसज।

पठ्याइ ॥ [प्रसङ्ग] १ छुले सौर से, प्रकट
पठ्याइ ॥ रीति से (सुम १, २, २, १६)।

२ हठाव, बलावत्तर से (स ११)।

पठ्याइकेय न [प्रसङ्गयेत्स] धर्म निरपेक्ष
चित्त, कदाही मन (पमह १, १५)।

पठ्या वि [प्रसङ्ग] अनेक दिन रखकर छुला
किया हुआ (पम ५, १, ७२)।

पठ्या वि [प्रसङ्ग] भाष्य राट (सुम १,
५, ३)।

पठ्या देखो पठ्याइ (सत ५, १, ७२)।

पठ्या वि [प्रसिधित] विशेष बोला (हे
१, ८६)।

पठ्या वि [प्रसङ्ग] १ चुप, स्वप्न (से ५,
४६ या ४६४)। २ स्वप्न, निर्मल (श्रीप,
श्रीप ३४३)। 'चंद धुं' [चन्द्र] मगान
महावीर से समय का एक रत्नाय (उप,
पमह)।

पसण्या खी [प्रसन्ना] मदिप, दाह (खाया १, १६; विपा १, २)।

पसत् वि [प्रसक्त] १ विपका हुमा (गठ ५१)। २ भासक (गठ ५३१; उव)। ३ भापति-यत्, अनिट् प्राप्ति के दोष से युक्त (विसे १८५६)।

पसत्ति खी [प्रसत्ति] १ भासति, अभिव्यक्त (उप १३१)। २ भासति-दोष (अज्ज ११६)।

पसत्थ वि [प्रसत्त] १ प्रशस्तीय, स्तुतीय। २ षेठ, अच्छा (हे २, ५५; कुमा)।

पसत्थि खी [प्रशस्ति] बंशोत्पीठन, बरा-बर्णन (गठ, सम्मत ८३)।

पसत्थु पु [प्रशस्त] १ लेकाचार्य, गणित का अध्यापक (ठा ३, १)। २ मर्यादा का पाठक (ठा ३, १; भीम)। ३ मन्त्री, भगवाय (सूत्र २, १, १३)।

पसन्न देखो पसण्ण (महा, भवि, सुपा ६१५)।

पसन्ना देखो पसण्या (पाग, पठम १०२, १२२; गुह २, २६)।

पसप्प पुं [प्रसर्प] विस्तार, फैलान (अब्ध १०)।

पसप्पग वि [प्रसर्पक] १ प्रवर्ध से जाने-धाना, मुनाफिरी करनेवाला। २ विस्तार को प्राप्त करनेवाला (ठा ५, ४—पठ २६५)।

पसम मर [प्र + शम्] अच्छी तरह शान्त हुआ। पसमति (मात १९)।

पसम पु [प्रशम] १ प्रशान्त, शान्त (हुमा)। २ लाताहार की उपपत्ति (मंथोप ५८)।

पसम पु [प्रशम] विधेय भेद-नठ—छेद (आन ५)।

पसमण न [प्रशमन] १ प्रहट शमन (दि ६६३, सुर १, २५६)। २ वि. प्रशान्त करने-वाला (ग ६६५)। धी. 'णी (हुमा)।

पसमाविअ वि [प्रशमिन] प्रशान्त किया हुआ (ग ६२)।

पसमिक्ख सक् [प्रसम् + ईक्ष्] प्रवर्ध से देवता। छेद. पसमिक्ख (उप १५, ११)।

पसमिण वि [प्रशमिन] प्रशान्त करनेवाला, भास करनेवाला, 'भावति, पावपसमिण पाच-णिण सुहं प्पभावण' (एभि १७)।

पसम्भ देखो पसम = प्र + शम्। पसम्भ (गठ)। वक्र. पसम्मत (से १०, २२, गठ)।

पसय पुं [दे] १ मृग-विशेष (दे ६, ५, पण्ड १, १; भवि, मण. महा)। २ मृग सिन्धु (विपा १, ५)।

पसय वि [प्रसूय] फैला हुआ, 'पसयण्डि' (सका ११२, १४५)। देखो पसिअ = प्रसूय।

पसर मर [प्र + स] फैलना। पसरद (वि ५७७, भवि)। वक्र. पसरद (सुर १, ८६; भवि)।

पसर पुं [प्रसर] विस्तार, फैलाव (हे ५, १५७; कुमा)।

पसरण न [प्रसरण] ऊपर देखो (बन्धु)। पसरिअ वि [प्रसूय] फैला हुआ, विस्तृत (भीम, गा ५, भवि, खाया १, १)।

पसरेह पुं [दे] किजक (दे ६, १३)। पसरेहिअ वि [दे] प्रेरित (पह)।

पसय सक् [प्र + स] जन्म देना, उत्पन्न करना। पसवद (हे ५, २३३)। पसवति (उव)। वक्र. पसयमाण (सुग ५३५)।

पसय (भय) सक् [प्र + यिअ] प्रवेश करना। पसवद (प्राह ११६)।

पसय पुं [प्रसय] १ जन्म, उत्पत्ति (हुमा)। २ म. पुण्य, कृत, 'कुपुमे पसवं पसुमे व' (पाग), 'पुष्पाणि म कुपुकाणि म कुप्पाणि सहेज होंति पसवाणि' (दग्गि १, ३६)।

पसय [दे] देतो पमय। 'पसवा हर्षति ए' (पठम ११, ७७)। 'नाह पुं [नाय] मृग-राज, सिंह (स ६२७)। 'राय पुं [राज] सिंह (स ६२७)।

पसरेहव न [दे] वितोषन (दे ६, ३०)। पसयण न [प्रसयन] प्रवृत्ति, जन्म दान (मग. उव ७४५; सुर ६, २४८)।

पसयि वि [प्रमयिन्] बन्ध देना (नाट—शु ७५)। पसयि वि [प्रमूय] जो जन्म देने लगा हो, जिसने जन्म दिया हो वह 'धम्मज पसयि

हं महाकिनेण मरणा' (सुर १०, २३०; सुपा ३६)। देखो पसूअ = प्रसूत।

पसविर वि [प्रसवित्] जन्म देनेवाला (नाट)।

पसस्स देखो पसंस।

पसस्स वि [प्रशास्य] प्रभूत शस्त्रवाला (सुपा ६५५)।

पसाइअ वि [प्रसादित्] १ प्रसन्न किया हुआ (स ३८६, ५७६)। २ प्रसन्न होने के कारण दिया हुआ, भगवित्तममसे पमादयं कथयपाइ' (सुर १, १६३)।

पमाइया खी [दे] भित्त के निर पर का पर्ण-पुट, भित्तों की पगड़ी (दे ६, २)।

पसाइयवर देखो पसाय = प्र + सादय्।

पसाम वि [प्रशाम्] शान्त होनेवाला (पह)।

पसाय सक् [प्र + सादय] प्रमन करना, चुन करना। पसामति, पसाणि (ग ६११ चिक्का ६१)। वक्र. पसाअमाण (गा ७५५)। हे. पसाइअ, पसापइ (महा. गा ५०५)। वक्र. पसाइयवर (सुग ३६५)।

पसाय पुं [प्रसाद] १ प्रवृत्ति, प्रगल्भता, सुखी, 'जणमणपवायणणो' (बन्धु)। २ हुपा, मेहूबानी (हुमा)। ३ प्रणय (ग ७१)।

पसायण म [प्रसादन्] प्रसन्न करना, 'देव-पसायणपवायणणो' (हुम ५; सुपा ७, महा)।

पसार मर [प्र + सारय्] पगारना, फैलाना। पसारेद (महा)। वक्र. पसरिमाण (खाया १, १ शाका)। वक्र. पसारिअ (नाट—मृच्छ ५५५)।

पसार पुं [प्रसार] विस्तार फैलान (बन्धु)।

पसारण न [प्रसारण] ऊपर देखा (सुग २८३)।

पसारिअ वि [प्रसारिअ] १ फैलाना हुआ (सण नाट—उवो २३)। २ न. प्रारण्य (समत्त १३३, वग ५, ३)।

पसास सक् [प्र + शामय्] १ शान्त करना, हृष्टकर करना। २ छिद्र देना। ३ पालन करना। वक्र 'पस पमामेमाने विहर' (खाया १, १ टी—पठ १, १, १४—पठ १८६; भीम, महा)।

पसाह सव [प्र + साधय्] १ घस मे करना । २ सिद्ध करना । पसाहेह (नाट, भवि) । वक्र. पसाहेमाण (श्रौप) ।

पसाहण वि [प्रसाधक] साधक, सिद्ध करनेवाला (धर्मसं २६) । 'तम वि [तम] १ उक्तुष्ट साधक । २ न. व्याकरण-प्रसिद्ध कारक-विशेष, करण कारक (विसे २११२) । देखो पसाहय ।

पसाहण न [प्रसाधन] १ सिद्ध करना, साधना 'विज्ञापसाहणुजयविज्ञाहण-सन्निष्ठापमो' (सुर ३, १२) । २ उक्तुष्ट साधन, 'संयुक्तम मायुसस दुल्लभ नवसमुद्दे पसाहण वेव्वाणस्स न निर्देजंति चप्पे' (स ७४४) । ३ धनकार, भूपण (खाया १, ३; से ३, ४४) । ४ भूपण प्रावि की सजावट, 'भूषणपसाहणाईवर्हि' (वग्ग ११४, सुपा ६६) ।

पसाइय देखो पसाहण (काल) । २ सजने-बाबा (भग ११, ११) ।

पसाहा जो [प्रशाखा] शाखा की शाखा, छोटी शाखा (खाया १, १; श्रौप महा) ।

पसाहाविय वि [प्रसाधित] विमृषित बरणा गया, लजबाया हुआ (भवि) ।

पसाहि वि [प्रसाधिय] सिद्ध करनेवाला, 'अनुवपपसाहिणी' (सबोय ८, ५४) ।

पसाहिअ वि [प्रसाधित] प्रलकृत किया हुआ, सजाया हुआ (से ४, ६१; नाम) ।

पसाहिह वि [प्रशाखिन्] प्रशाखा-मुल (सुर ८, १०८) ।

पसिअ प्रक [प्र + सद्] प्रसन्न होना । पसिम (गा ३८४, ४६६; हे १, १०१) । पसियइ (सण) । सङ्ग पसिकण, पसिकण (सण, सुपा ७) ।

पसिअ वि [प्रसुत] फैला हुआ, विस्तार, 'पसिमिअ' (गा ६२०; ६२३) ।

पसिअ न [दे] भूत-जल, सुपाई (दे ६, ६) । पसिअ सव [प्र + सिच्] हेचन करना । यः पसिचमाण (सुर १२, १०२) ।

पसिडि (दे) देनी पसडि (नाम) ।

पसियग्ग अ [प्रशिक्षक] सोसनेवाला (गा १२४८) ।

पसिज्जण न [प्रसदन] प्रसन्न होना, 'अत्य-द्वल्लण खणपसिज्जण अतिप्रवअणुणिवंघो' (गा ६७५) ।

पसिडिल देखो पसडिल (हे १, ८६, गा १३३; गड) ।

पसिण पुन [प्रश्न] १ वृद्धा, प्रश्न (सुपा ११, ४५३) । २ दर्पण आदि मे देवता का आह्वान, मन्त्रविद्या विशेष (सम १२१, वृह १) । 'विज्ञा जो [विज्ञा] मन्त्रविद्या-विशेष (छा १०) । 'पसिण न [प्रश्न] मन्त्रविद्या के धन मे स्वप्न प्रादि मे देवता के आह्वान द्वारा जाना हुआ शुभाशुभ फल का कथन (पव २ वृह १) ।

पसिणिय वि [प्रश्नित] प्रश्ना हुआ (सुपा १६, ६२५) ।

पसिद्ध वि [प्रसिद्ध] १ विख्यात, विप्रसृत (महा) । २ प्रवर्ष मे युक्ति को प्राप्त, युक्त (सिदि ५६५) ।

पसिद्धि जो [प्रसिद्धि] १ क्याति (हे १, ४४) । २ शका का समाधान, भाषेप का परिहार (मणु वेद ४६) ।

पसिस्स देखो पसीस (विसे १४) ।

पसीअ देखो पसिअ = प्र + सद् । पसीयइ, पसीयउ (सुर १) । सङ्ग. पसीअण (सण) ।

पसीस पु [प्रसिपय] शिष्य का शिष्य (पठम ४, ८६) ।

पसु पु [पसु] १ जल विशेष, सींग पूर्ववाला प्राणी, चतुष्पाद प्राणि मान (कुमा, श्रौप) । २ धन, वस्त्र (मणु) । 'अय वि [मूल] पसु-मुल्य (सूय १, ४, २) । 'मेह पु [मेध] जिसमें मयु का भोग दिया जाता हो वह पस (पठम ११, १२) । 'वइ पु [पवि] महादेव, शिव (गा २, सुपा ३१) ।

पसुअ वि [प्रसुत] सोया हुआ (हे १, ४४; प्राप्, खाया १, १६) ।

पसुति जो [प्रसुति] कुछ रोप विशेष, नखादि विदारण होने पर भी अनेकनता (राज) । देखो पसुइ ।

पसुय (पण) देखो पसु (भवि) ।

पसुहस पु [दे] वृत्त, पत्र (दे ६, २६) ।

पसु सव [प्र + सू] जन्म देना, प्रसन्न करना । वक्र. पसुअमाण (गा १२३) ।

सङ्ग. पसुइत्ता (राज) ।

पसु वि [प्रसु] प्रसन्न-कर्ता, जन्म-दाता (मोह २६) ।

पसुअ न [दे] दुग्ध, फूल (दे ६, ६, नाम, भवि) ।

पसुअ वि [प्रसुत] १ ज्यपन्न, जो पैदा हुआ हो (खाया १, ७; उव, प्राप् १५६) । २ देखो पसविय (महा) ।

पसुअण न [प्रसदन] जन्म-दान (सुपा ४०९) ।

पसुइ जो [प्रसुति] १ प्रसन्न, जन्म, ज्यपति (पठम २१, ३४; प्राप् १२८) । २ एक प्रकार का कुछ रोग, नखादि से विचारण करने पर भी दुःख का असवेदन, चमड़ी का भर जाना (पिड ६००) । 'रोग पु [रोग] रोग विशेष (समस्त ५८) ।

पसुइय पु [प्रसुतिक] वातरोग विशेष (सिदि ११०) ।

पसुण न [प्रसून] फूल, दुग्ध (कुमा, सण) ।

पसेअ पु [प्रसेव] पसीना (दे ६, १) ।

पसेदि जो [प्रश्रेणि] अवातर श्रेणि—पति (पि ६६; यय) ।

पसेण पु [प्रसेन] भगवान् पारंगनाय के प्रथम यावक का नाम (विचार ३७८) ।

पसेणइ पु [प्रसेनजित्] १ हुलकर-मुख-विशेष (पठम ३, ५५, सम १५०) । २ यदुवरा के राजा अग्रकवृष्णि का एक पुत्र (पव ३) ।

पसेणि जो [प्रश्रेणि] अवातर जाति, 'अवातरसेणिपसेणोमो सहावेद' (खाया १, १—पत्र ३०) ।

पसेयग देखो पसेयय (राज) ।

पसेय सव [प्र + सेय्] विशेष सेवा करना । वक्र. पसेयमाण (सु ५५) ।

पसेयय पु [प्रसेयक] गोपाल, भैरव, गृहावि-यपसेयमोचन उरति संवति दीपि हस्त यण्णा (जवा) ।

पसेविया जो [प्रसेयिना] पैती, गोपनी (दे ५, २५) ।

पस सक [दृश] देखना । पसह (पह; प्राक ७१) । बह. पसमाण (भावा; श्रोत; वसु, विपा १, १) । क. पस (ठा ४, ३) । पस (श्री) देखो पस = पार (ममि १८६; मवि २६, स्वय ३६) ।

पस देखो पस = दृश ।

पसओहर वि [पश्यतोहर] देखते हुए चोरो करनेवाला, सुनार, उबका; 'नणु एखो पसओहरो देखो' (उर ७२८ टी) ।

पसि वि [दर्शित] देखनेवाला (पण ३०) ।

पस्ये देखो पसेअ (मुल २, ८) ।

पह वि [प्रह] १ मग्न । २ विनीत । ३ भासक्त (प्राक २४) ।

पह पुं [पयिन्] मार्ग, रास्ता (हे १, ८८; पाग; बुना; धा २८; विसे १०५२; कण, श्रीप) । 'देसय वि [देशक] मार्ग-दर्शक' (पठम ६८, १७) ।

पहएल पुं [दे] भद्र, पूजा, खाद्य-विशेष (दे १, १८) ।

पहकर देखो पभकर (उत २३; ७६; मुल २३, ७; हक) ।

पहकरा देखो पभकरा (दक) ।

पहजण पुं [प्रभजन] १ बाण, पवन (पाग) । २ देव-जाति-विशेष, भवनपति देवो की एक भगान्तर जाति (मुपा ४०) । ३ एक राजा (ममि) ।

पहकर [दे] देखो पहयर (णामा १, १; कण, श्रीप, वर ४७; विपा १, १; राय. भग ६, ३३) ।

पहहु वि [दि] १ दत्त, उद्धत (दे ६, ६; वट्ट) । २ अचिरतर दृष्ट, छोड़े हो समय के पूर्व देता हुआ (पह) ।

पहहु वि [प्रहृष्ट] आनन्दित, हर्ष-प्राप्त (सोम. भाग) ।

पहण सक [प्र + हन्] मार डालना । पहण; पहणे (महा; उत १८, ४६) । कर्म, पहणिअ (महा) । बह. पहणन (पठम १०५, ६२) । बह. पहर्मन, पहर्ममाण (मि ४४०, गुर २, १४) । हे. पहणिउ, पहणिउं (कुप २५; महा) । पहण म [दि] कुल, वंश (रि ९, ५) ।

पहणि खो [दि] संमुखागत का निरोध, सामने आए हुए का घटना (दे ६, ५) ।

पहणिय देखो पहय = प्रहृत (मुपा ४) ।

पहय पुं [प्रहय] रावण का मामा (मि १२, ५३) ।

पहद वि [दि] सदा दृष्ट (दे ६, १०) ।

पहम्म सक [प्र + हम्म] प्रवर्ष से गति करना । पहम्मद (हे ४, १६२) ।

पहम्म न [दि] १ गुर-खात, देव-गुह्य (दे १, ११) । २ खान-जन, कुल । ३ विवर, छिद्र (मि ६, ५३) ।

पहर्मन } देखो पहण = प्र + हन् ।
पहर्ममाण }

पहय वि [प्रहय] १ घृष्ट, पिघा हुआ (मि १, ५८; वट्ट १) । २ मार डाला गया, निहल (महा) ।

पहय वि [प्रहृत] जिस पर प्रहार किया गया हो वह, 'पहया प्रहमतिवजलेण' (महा) । पहयर पुं [दि] निकर, खूब, गुप्त (दे ६, १५; जय १३; पाग) ।

पहर सक [प्र + ह] प्रहार करना । पहर (जग) बह. पहरत (महा) । संक. पहरिऊण (महा) । हे. पहरिउं (महा) ।

पहर पुं [प्रहार] १ मार, प्रहार (हे. १, ६८; बह. प्राग; सति २) । २ जहाँ पर प्रहार किया हो वह स्थान (मि २, ४) ।

पहर पुं [प्रहर] तीन घंटे का समय (गा २८; ३१; पाग) ।

पहरण न [प्रहरण] १ मग्न, मानुष (भावा; भीष; विपा १, १; गठ) । २ प्रहार-क्रिया (मि ३, ३८) ।

पहराइया देखो पहाराइया (पण १—पठ ६४) ।

पहराय पुं [प्रभराज] भरतोज का पुत्रां प्रतिगमुदेव (सम १३४) ।

पहरिअ वि [प्रहन] १ प्रहार करने के लिए उद्यत (गुर ६, १२६) । २ जिस पर प्रहार किया गया हो वह (ममि) ।

पहरिस पुं [प्रहय] बालन्द, गुदी; 'घाभोपो पहसिको कोस' (पाघ. गुर ३, ४०) ।

पहलादिउ (श्री) वि [पहलादिउ] आनन्दित (स्वय १०६) ।

पहल सक [पूर्ण] धूमना, कांपना, डोलना, हिलना । पहलद (हे ४, ११७; पट्ट) । बह. पहलन (गुर १, ६६) ।

पहलिर वि [प्रधुणिउ] धूमनेवाला, डोलता (कुमा; मुपा २०४) ।

पहय सक [प्र + भू] १ उत्पन्न होना । २ समर्थ होना । पहवद (पना १०१०; स ७०; सति ३६) । मवि, पहविसि (मि ४२१) । बह. पहवत (नाट—मालवि ७२) ।

पहय पुं [प्रभव] सर्वाति-स्थान (ममि ४१) ।

पहय देखो पहाय = प्रभाव (स ६३७) ।

पहय देखो पह = प्रहृत (विसे ३००८) ।

पहय पुं [प्रभव] एक जैन महर्षि (कुमा) ।

पहयि वि [प्रभूत] जो समर्थ हुआ हो, 'मणिकुंडलायामा सत्तं नो पदविषं मरिदल' (मुपा ६१५) ।

पहस सक [प्र + हस] १ हसना । २ उगहाम करना । पट्टद (मवि; सण) । बह. पहसंत (सण) ।

पहसण न [प्रहसन] १ उगहास, पट्टहास । २ नाटक का एक भेद. हास्य-रस प्रधान नाटक, कण-विशेष, 'पहसणभार्य कामतय-मयल' (स ७१३; १७७; हास्य १६६) ।

पहसिय वि [प्रहसित] १ जो हसने लगा हो (ममि) । २ जिसका उगहास किया हो वह (मवि) । ३ न. हास्य (वट्ट १) । ४ पुं. पवनजय का एक निदापर-मित्र (पठम १५, ५६) ।

पहा ता [प्र + हा] १ त्याग करना । २ दान. कम होना, सोख होना. 'पहेज सोह' (उत ४, १२; रि ५६६) । बह. पहिजमाण, पहिजमाण (मग. राज) । सं. पहाय, पहिऊण (भावा १, ६, १, १. पव ३) ।

पहा खी [प्रया] १ रोहि, स्वरहार । २ क्वाचित्, प्रसिद्ध (पट्ट) ।

पहा खी [प्रभा] बाणित, वेग, धावनी, दीति (सोम. पाग; गुर २, २३४; कुमा; वेद ५१४) । 'मंडद देवो भार्मंडन' (पठम ३०, ३२) । 'वर पुं [कर] देव, गिरि । २ रामचन्द्र के भार्य वर से काय दीया मैत्रेया एक चरवि (पठम ८२, ५) । 'बंद खी

[प्यती] घाठवें वासुदेव की पटरानी (पत्रम २०, १८७)।

पहाड सक [प्र + धाटय्] इधर उधर भ्रमना, घुमाना। पहाडति (सुप्रमि ७० टी)।

पहाण वि [प्रधान] १ नायक, मुखिया, मुख्य; 'प्रधाननद्र सखेवि हू पुरूपहारेवि' (सुपा ३०८), 'तत्प्रायि वरिणमहापो सेट्टी बेसमणनामयो' (सुपा ६१७)। २ उत्तम, प्रशस्त, श्रेष्ठ, शोभन (सुर १, ४८, महा, कुमा पंथा ६, १२)। ३ क्रीन प्रवृत्ति—सत्त, रज और तमोगुण की सामावावस्था, 'ईतरैय कडे लीए पराणाड ठहाकरे' (सुप्र १, १, २, ६)। ४ पु. सविष मन्त्री (मवि)।

पहाण पुं [पापाण] परर (चउपलन०)।

पहाण न [प्रहाण] धपगम, विनाश (धर्मसं ८७५)।

पहाणि क्री [प्रहाणि] ऊपर देखो (उत्त ३, ७ उप ६८६ टी)।

पहाम सक [प्र + अमय्] फिराना घुमाना। कवळ, पहामिजत (हे ७, ६६)।

पहाय देखो पहा = प्र + हा।

पहाय न [प्रभात] १ प्रात काल, सबेरा (गडड, सुपा ३६ ६०२)। २ वि. प्रभा-श्रुत (हे ६, ४४)।

पहाय देखो पहाय = प्रभाव (हे ४, ३४१, हास्य १२२, मवि)।

पहाया देखो वाहाया (मड)।

पहार सक [प्र + धारय्] १ चिन्तन करना, विचार करना। २ नियम करना। झुका पहारेण, पहारेण, पहारिण (सुप्र २, ७, ३६, धीप, वि ५१७, सुप्र २, १, २०)। वळ पहारिमाण (सुप्र २, ४, ४)।

पहार देखो पहर = प्रहार (पाश, हे १, ६८)।

पहाराइया क्री [प्रहाराविगा] तिपि विशेष (सम ३४)।

पहारि वि [प्रहारिण] प्रहार करेवाला (सुग २१४, प्रासू ६८)।

पहारिय वि [प्रहारित] जिस पर प्रहार किया गया हो वह (स ५६८)।

पहारिय वि [प्रवारित] विकल्पित, चिन्तित (राज)।

पहारेत्तु वि [प्रधायित्] चिन्तन करनेवाला, 'प्रहारेत्तमे अखुवजेति मण पहारेता भवति' (मम ५, ६)।

पहाय सक [प्र + भावय्] प्रभाव-युक्त करना, गौरवित करना। पहलड (सख)। सक्र. पहाविऊण (सख)।

पहान (अप) अक [प्र + भू] समर्थ होना। पहलड (मवि)।

पहान पु [प्रभाव] १ शक्ति, सामर्थ्य 'तुमं मे सेतपितुसस पहारेण' (पाया १, १४, मवि ३८)। २ कोप और दण्ड का तेज। ३ महात्म्य, 'सायपहावघो चेव मे मविणं मविस्सइ ति' (स २६८, गडड)।

पहाणणा देखो पभावण, (कुप्र २८४)।

पहाविज वि [प्रभावित] दौडा हुमा (स ५८४, गा ५३५, गडड)।

पहाविर वि [प्रधावित्] वीजनेवाला (वजा ६२, गा २०२)।

पहास सक [प्र + भाप्] बोलना। पहासई (सुख ४, ६), 'नाऊण बुनिय स पहिडुहियया पहासई पावा' (महा)।

पहास अक [प्र + भास्] चमकना, प्रकाशना। कळ. पहासंत (सायं ५६)।

पहास पुं [प्रहास] मट्टहास आदि विशेष हास्य (सत १०, ११)।

पहासा क्री [प्रहासा] देवी विशेष (महा)। पहिज वि [पान्थ, पथिक] भुवाफिर (हे २, १५२ कुमा पड, उव, बडड)। 'सांला क्री [सांला] भुवाफिरखाना, धर्मशाला (धमवि ७०, महा)।

पहिज वि [प्रवित] १ विस्तृत। २ प्रसिद्ध, विख्यात (भीप)। ३ राजस-वंश का एक राजा एक लंका पति (पत्रम ५, २६२)।

पहिज वि [प्रहित] मेना हुमा, प्रेषित (उप ४ ४४, ७६८ टी, मम ६ टी)।

पहिज वि [दे] मयिष, विलोडित (दे ६, ६)।

पहिऊण देखो पहा = प्र + हा।

पहिस्सय वि [प्रहिसक] हिंसा करनेवाला (धोष ७५३)।

पहिज्जमाना देखो पहा = प्र + हा।

पहिट्ट देखो पहट्ट = प्रहट्ट (भीप, सुर ३, २४८, सुपा ६३, ४३७)।

पहिर सक [परि + धा] पहिरना, पहनना। पहिळ, पहिरति (मवि; धर्मवि ७)। कर्म, पहिरिळइ (सवोध १४)। वळ पहिरंत (सिदि ६८)। सळ, पहिरिउ (धर्मवि १५)। प्रयो. सळ, पहिरावेऊण, पहिराविऊण (सिदि ४५६, ७७०)।

पहिरावण न [परिधापन] १ पहिराना। २ पहिरापन, भेंट मे—ह्वान मे दिया जाता बखति, पुनराती मे—पहिरावणी (आ २८)। पहिराविय वि [परिधापित] पहिराया हुमा (महा, मवि)।

पहिरिय वि [परिहित] पहिरा हुमा, पहन हुमा (समस्त २१८)।

पहिल वि [दे] पहला, प्रथम (सवि ४७; मवि, वि ४४६)। क्री 'ली (वि ४४६)।

पहिल अक [दे] पहल करना, माने करना। पहिलइ (पिग)। सळ, पहिलिअ (पिग)।

पहिलिर वि [प्रधूगिण्ट] खूब हिलनेवाला, अत्यन्त हिलता (समस्त १८७)।

पहियी देखो पुहयी = धुवियी (नाट)।

पहीण वि [प्रहीण] १ परिहोण (पिड ६११, अण)। २ अट्ट, स्वतित (सुप्र २, १, ६)।

पहु पुं [प्रसु] १ परमेश्वर, परमात्मा (कुमा)। २ एक राज पुत्र, जयपुर के विन्ध्यराज का एक पुत्र (बसु)। ३ स्वामी, मालिक (सुर ४, १२६)। ४ वि समर्थ, शक्तिमान, 'दाण खरिह्ल पहस्त सती' (प्रासू ४८)। ५ मयि-पति, मुखिया, नायक (हे ३, १८)।

*पहुइ देखो 'पमिइ (कपु)।

पहुइ देखो पुहुवी (पड)।

पहुक पुं [पुयु] लाय पदार्थ विशेष, पिउडा (दे ६, ४४)।

पहुच सक [प्र + भू] पहुँचना। पहुचड (हे ४, ३६०)। वळ, पहुचमाण (भीप ५०५)।

पहुट्ट देखो पपुट्ट। पहुट्ट (कपु)।

पहुडि देखो पमिइ (हे १, १११, ती १०; पड)।

पहुण पुं [प्राधुण] मतिवि, मेहमान (उ ६०२)।

पटुणाइय न [प्राधुण्य] आतिम्य, अतिवि-
सकार. 'नृणांभोग्यत्वाद्गणदण्डाणां पटु-
णाडि (३ इय संपादे) (रमा)।

पटुत्त वि [प्रभुत्त] १ पर्याप्त, काफी, गजत्त
च पटुत्त (पाय, गजत्त, गा २७७)। २
समर्थ (स २, ६)। ३ पटुत्ता ह्रस्वा (ली
१५)।

पटुदि देवो पमिइ (संति ४, ग्राह १२)।
पटुप्प १) सक [प्र + भू] १ समर्थ होना,
पटुत्त १) सकना। २ पटुत्तना। पटुप्पइ (हे
४, ६३ ग्राह ६२), 'एषाधो बालियामो निय
निगोहेसु जह पटुप्पति सह कुण्ह' (पुत्रा
२५०)। पटुप्पामो (बाल) पटुप्पिरे (हे ३
१४२)। वड्ड, कि सहइ बोधि वस्मवि पाप्म-
पटार पटुप्पनो' पटुप्पमाग (गा ७, भोग
५०५, विराट १६)। बवइ, पटुप्पन (स
१४, २५, व १०)। हेइ, पटुप्पिड
(महा)।

पटुयी लो [पृथिवी] भूमि, धरती (नाट—
मालती ७२)। *पटु पु [प्रभु] राजा
(हम्मीर १७)। *पटु पु [पति] बहो भव्य
(हम्मीर १०)।

पटुऊत्त देवो पटुत्त।

पटूअ नि [प्रभुत्त] १ बहुत, प्रचुर (स
४५६)। २ उत्तम। ३ भूत। ४ उत्तम
(ग्राह ६२)।

पटूज्जमाग देवो पटू = प्र + हा।

पटूण न [दि] बहु जो वे जाने पर विटा ने
धर दी जाती जमीन (भाषा २, १, ४, ६)।

पटूण [न [दि] १ भोजनोपायन, खाद्य
पटूणय १) कन्ठ की मेट (भाषा: मूत्र २, १,
पटूणय ५६; गा ३२८, ६०३ पिड ३३५,
पाय, ६ ७, ७३)। २ उत्तर (दे ६, ७३)।

पटूरक न [पटूरक] भाग्यरूप विशेष (पण्ड
२, ५—पत्र १४६)।

पटेलिया धी [पटेलिया] दृढ़ कारणवाची
बनिता (मुद्रा १२५ भोज)।

पटोअ त [प्र + धा] प्रसादन करना
धोना। पटोअज (भाषा २, २, १, ११)।

पटोइ वि [प्राधुयिन्] चोनेगता (स ४,
२६)।

पटोइअ वि [दि] १ प्रवर्तित। २ प्रभुत्त
(दे ६, २६)।

पटोइ सक [वि + लुल] हिलोला, अन्वो-
लना। पटोइड (पाला १४४)।

पटोणय लोन [प्रधान] प्रखालन, 'दत्तपटो-
णय य' (दत्त ३, ३)।

पटोलि वि [प्रवृत्ति] हिलनेवाला, डोलता
(गा ७८, ६६६, से ३, ४६, पाय)।

पटोव देवो पटोव। पटोवाहि (भाषा २, १,
६, ३)।

पा सक [पा] पीना, पान करना। पवि
पाहिनि, पाहामि पाहामो (कप्प वि ३१५,
कप्प)। कर्म, पिअ (उव), पीमति (पि
५३६)। कण्ह, पिअत्त (गजत्त, कुप्र १२०)।
पीयमाण (स ३८२), पेट (मन) (मण)।
सक पाऊण, पाऊण (नाट—मुद्रा ३६,
गजत्त, कुप्र ६२)। हेइ, पाउ, पायग (भाषा)।
क पायवज, पिअ (मुद्रा ४३८, पण्ड १,
२, कुमा २, ६) पेअ, पेयवज (कुमा
रखण ६०), पेअ (छाया १, १, १७,
उवा)।

पा सब [पा] रखण कला। पाइ, पायइ
(विसे ३०२५ हे ४, २४०), पाउ (पिंग)।
पा सक [प्रा] भूषण, गन्ध लेना। पाइ,
पायइ (प्राय ८, २०)।

पाइ वि [पानिन्] मिलनेवाला (पत्रा ३,
२०)।

पाइ वि [पायिन्] पीनेवाला (गा ५६७,
हि ६)।

पाइअ न [दि] बदन विस्तार, बृंह वा फैलाव
(दे ६, ३६)।

पाइअ देवो पायय = प्रभुत्त (दे १, ४, ग्राह
८, प्राहु १ वजा ८ पाय वि ५३), 'ग्रह
पाइअधो नावाधो' (कुमा १, १)।

पाइअ वि [पायिन्] पिनाया ह्रस्वा, पान
कराया ह्रस्वा (कुप्र ७६, मुद्रा १३०, स
४२४)।

पाइत्त देवो पाय = पण्य।

पाइअ पु [पदादि] प्यादा. पेर से चन्देगता
वेनित (हे २, १३८, कुमा)।

पाइदि धी [प्राधुयिन्] प्रचरण, बज्र (ग
२३८)।

पाइण देवो पाइण (पि २१५ डि)।

पाउत्ता (प्रप) ली [पमिग] छद्म विशेष
(पिंग)।

पाउट् [शो] वि [पाचित] पत्रवाया ह्रस्वा
(गा—वेत १२६)।

पाइअ देवो पाइण (एदि ४६)।

पइअ न [प्रातिभ] प्रतिभा, बुद्धि विशेष (कुप्र
१५५)।

पाउम वि [पाकय] १ पकाने योग्य। २
बाल प्राप्त मूल (दत्त ७, २२)।

पाइम वि [पात्य] गिराने पाय्य (भाषा २,
४, २, ७)।

पाई धी [पात्रो] १ भाजन विशेष (छाया १,
१ टी)। २ छोटा पात्र (मूत्र २, २, ७०)।

पाईण वि [प्राचीन] १ पूर्वदिशा-संबन्धी,
'ववहार-पाइण' (७ ईणाइ) (पिड ३६,
कप्प स १०४)। २ न गोन विशेष। ३
बुद्धि, उस भोज में उत्पन्न, 'येरे मज्जमह-
बाहू पाईणसगोते (कप्प)।

पाईणा ली [प्राचीन] पूर्व दिशा (मूत्र २,
२, ५८, ठा ६—पत्र ३६६)।

पाउ देवा पाउ = प्राहुत्त (मूत्र २, ६, ११,
उवा)।

पाउ पु [पायु] मुद्रा, गांठ (ठा ६—पत्र
४४०, सण)।

पाउ पुत्री [दि] १ भव, मात्र, भोजन। २
हनु, उन्न (दे ६, ७५)।

पाउअ न [दि] १ हिम, भवराय (दे ६,
३८)। २ भव। ३ हनु (दे ६, ७५)।

पाउअ देवो पाउअ = प्राहुत्त (गा ५२०, न
३५० भोज, सुर ६, ८, पाय हे १,
१३१)।

पाउअ देवो पायग (गा २, ६६८, प्राय,
कप्प पिंग)।

पाउआ धी [पादुका] १ चमड़ा, जूता वा
रुता (मण, मुप्र २ २६, पिड ५७२)। २
जूत, चमड़े (मुद्रा २४४, धीर)।

पाउ देवो पा = पा।

पाउं ध [प्राहुत्त] प्राट, ध्वज 'वंदि
धविं बरिपामि पाउं' (मूत्र १, १, ३,
१)।

पाउछण } न [प्रादुप्रोच्छन, 'क' जैन
पाउछणग } मुनि का एक उपकरण, खोहरण
(पव ११२ टी. श्रोप ६३०, पंचा १७,
१२)।

पाउरर सक [प्रादुस् + कृ] प्रकट करना।
नवि. पाउररसामि (उत ११, १)।

पाउरर वि [प्रादुप्कर] प्रादुर्भाविक (सूत्र १,
१५, २५)।

पाउररण न [प्रादुप्करण] १ प्रादुर्भाव। २
वि. जो प्रकाशित किया जाय वह। ३ जैन
मुनि के लिए एक भिन्ना दोष, प्रकाश कर दी
हुई भिन्ना, 'पक्षिणपाउररणपामिन्' (पव १,
५—पन १५८)।

पाउरराम वि [पाउरराम] कीने की इच्छा
वाला, 'तं जो एण एविपाए माजवाए दुइ
पाउररामे से एण निगमच्छ' (आया १, १८)।
पाउरर वि [दे] मार्गीकृत, मार्गित (दे ६,
५१)।

पाउररण देको पाउररण (राज)।

पाउररालय न [दे. पायुक्षालक] १
पालाना, टट्टी, मनोःसर्गस्थान 'ठाइ जेव
एषो पाउररालयसिम्म दयणीए' (स २०५;
अत ११२)। २ मनोःसर्ग क्रिया, 'दयणीए
पाउररालयसिमित्तुहिमा' (स २०५)।

पाउरग वि [दे] सम्म, सत्तासद (दे ६, ५१,
सख)।

पाउरग वि [प्रायोग्य] संचित, सामय (सुर
१५, २३३)।

पाउरगह पु [पतदुग्रह] पाग (आचानि
२८८)।

पाउरगिग वि [दे] १ घुमा लेलानेवाय।
२ सोड, बहन किया हुआ (दे ६, ५१,
पाग)।

पाउर देको पागय (प्राह १२, मुद्रा १२०)।

पाउर वि [प्रादुत] १ आच्छादित, उभा हुआ
(सूत्र १, २, २, २२)। २ वर, वपरा
(अ ५, १)।

पाउर सक [प्रा + घृ] आच्छादित करना,
पहिरना। पाउरर (पिंड ३१)। सङ्घ. 'पदं
पाउरिज्जण रति गिण्णमो' (महा)।

पाउर सर [प्रा + शाप] प्राप्त करना।
पाउरर (महा)। पाउररति (भीष. सूत्र १,

११, २१)। पाउररमा (आचा २, ३, १, ११)
नवि. पाउररसामि, पाउररहिदि (पि ५३१,
उवा)। सङ्घ. पाउररिजा (भीष. आया १,
१, विपा २, १, वप्य उवा)। हेङ्क. पाउररि-
त्तए (आचा २, ३, २, ११)।

पाउर (अप) देको पावण = पावन (विग)।

पाउर देको पउत्त = प्रयुक्त (भीष)।

पाउरपभाय वि [प्रादुप्पभाय] प्रभा-युक्त,
प्रकार युक्त, 'कल्प पाउरपभायाए दयणीए'
(आया १, १, मग)।

पाउरभय सक [प्रादुस् + भू] प्रकट
होना। पाउरभवद (पव ४०)। भूक्त
पाउरभविता (उवा)। वङ्क. पाउरभभवत,
पाउरभभवमाण (सुपा ६, कुप्र २६, आया
१, ५)। सङ्घ. पाउरभभविताण (उवा,
भीष)। हेङ्क. पाउरभभवित्तए (पि ५७८)।

पाउरभय वि [पापोद्भय] पाप से उत्पन्न
(उप ७६८ टी)।

पाउरभयणा को [प्रादुर्भवन्] प्रादुर्भाव (मग
३, १)।

पाउरभुय (अप) नीचे बैठो (सख)।

पाउरभुय वि [प्रादुर्भूय] १ उत्पन्न, सजात।
२ प्रकटित (भीष. मग, उवा; विपा १, १)।
पाउरण न [प्राउरण] वर, कपडा (सूत्रनि
८६, हे १, १७५, पचा ५, १०; पव ४,
पइ)।

पाउरण न [दे] वच, वर्म (पइ)।

पाउरणी को [दे] वच, वर्म (दे ६, ५३)।

पाउररि देको पाउर = प्रादुत (सुप्र ५५२)।

पाउर वि [पापकुल] हलके कुल वा, जन्म
कुल में उत्पन्न, दवाविध पाउरराण दविण-
पाय' (स ६२६), 'नसदपउरपाउररमंत-
रणीयपररवेस्सखय' (सुर १०, ५)।

पाउर न, देको पाउरा, 'पाउरस्ताई संभट्टाए'
(सूत्र १, ५, २, १५)।

पाउर न [पादोद] पाद प्रयातन-जल,
'पाउरवदाई च रहणुवदाई च' (आया १,
७—पन ११७)।

पाउर पुं [प्राउ] वर्षा श्रुत (हे १,
१६, प्राप्र, महा)। 'कीट पुं [कीट]
वर्षा श्रुत में उत्पन्न होनेवाला कीट-विशेष

(दे)। 'गम पुं [गम] वर्षा प्रारम्भ
(पाग)।

पाउरसि वि [प्रादुपिक] वर्षा-सम्बन्धी
(राज)।

पाउरसि वि [प्रोपित, प्रनासिन्] प्रवास
में गया हुआ,

'तह मेहुमससियप्रागमणाए पईए मुदामो।
मगमवलोयमाणीउ नियइ पाउरसियददामो।'
(सुपा ७०)।

पाउरसिआ की [प्राद्वेपिकी] द्वैप—मत्सर
से होनेवाला कर्म बन्ध (सम १०, ठा २, १;
मग, नव १७)।

पाउरारी को [दे पाकहारी] भक्त को
सन्नेवाली, भ्रात-पानी से भानेवाली (गा
६६४ म)।

पाए अ [दे] प्रभृति, (वहा से) शुरु करते
(भीष ११६; इह १)।

पाए सक [पायय] पिलाना। पाएइ (हि
३, १४६)। पाएजाह (महा)। वङ्क. पाइत,
पाययत (सुर १३, १५४, १२, १७१)।
वङ्क. पाएत्ता (माक ३०)।

पाए सक [पादय] गति करना। पाएइ
(हे ३, १४६)।

पाए सक [पाचय] पकवाना। पाएइ
(हे ३, १४६)। कर्म पाइजइ (आवक-
२००)।

पाएण १ [प्रायेण] बहुत बरके, प्राय
पाएण २ [पिं ११६६, काल, कप्य, प्राप्नू
५३)।

पाओ य [प्रायस्] ऊपर देको (आ २७)।

पाओ म [प्रातस्] प्रात काल, प्रमात
(सुप्र १, ६, कप्य)।

पाओकरण देको पाउकरण (पिंड २६८)।

पाओग देको पाउग (सूत्रनि ६५)।

पाओगिय वि [प्रायोगिक] प्रयत्न-जनित,
अस्मानविवि (वेद्य ३५३)।

पाओग देको पाउग (आत १०, धर्मद
११८०)।

पाओपमम न [पादनोपमम] देको पाओ-
यमण (वव १०)।

पाओयर पुं [प्रादुदरार] देको पाउकरण
(अ ३, ५, पंचा १३, ५)।

पाअ वगमण न [पादपोपगमन] अन्नरत्न-
विशेष, मरण विशेष (सम ३३, धौय, वप्प,
मग) ।

पाओवागय वि [पादपोपगत] अन्नरत्न विशेष
से मुत्त (मीय, वप्प, धंत) ।
पाओस पु [दि. प्रदेय] मत्तर, डेय (अ ४,
४—पत्र २८०) ।

पाओसिय देखो पाओसिय (घोष ६६२) ।

पाओसिया देखो पावसिआ (धर्म ३) ।

पाहविअ वि [दे] जलप्र, पानी से गीला
(दे ६, २०) ।

पाहु देखो पंडु (पव २४७) । *सुअ पुं
[मुत्त] अन्निय का एक मेद (अ ४,
४—पत्र २८५) ।

पाहु देखो पाग (वप्प) ।

पाअम्म न [प्राअम्म] योग की साठ सिद्धियों
में एक सिद्धि, 'पाअम्मपुणेण सुणी सुवि अ
नोरे जील अजु वि करे' (कुप्र २७७) ।

पाआर पु [प्राआर] किला, दुर्ग (उप ५८४) ।
पाअि (ही) देखो पागय (प्रसी २४, नाट—
देवी ३८, वि ५१, ८२) ।

पाअंह देखो पासड (वि २६५) ।

पाग पुं [पाक] १ पचन क्रिया (धीय, उवा-
मुवा ३७४) । २ देय-विशेष (मउड) । ३
विपाक, परिणाम (धर्म ६६५) । ४
बलवान् बुरमन (मायम) । *सासण पुं
[शसण] इन्द्र, देव-पति (दे ४, २६५;
गउड, वि २०२) । *सासणी ओ [शासनी]
इन्द्रजाल किला (सूय २, २, २७) ।

पागइअ वि [प्राइतिक] १ स्वाभाविक ।
२ पुं. साधारण मनुष्य, प्राइत लोक (पव ६१) ।

पागड वक [प्र + कटय] प्रकट करना,
मुला करना, व्यक्त करना । वक- पागडेमाण
(अ ३, ४—पत्र १७१) ।

पागड वि [प्रकट] व्यक्त, मुला (उत्त ३६,
४२, धौय, उर) ।

पागडण ॥ [प्रकटन] १ प्रकट करना । २
वि. प्रकट करनेवाला (धर्म ८२६) ।

पागडिअ वि [प्रसटिव] व्यक्त किया हुआ
(उर, धौय) ।

पागडिड १ वि [प्राकर्षण, *क] १ धम-
पागडिडक १ गामी, 'पागडि (२ पुं) पडुवए
कूहवई (धौया १, १) । २ प्रवर्तक, प्रवृत्ति
करनेवाला (पएह १, ३—पत्र ४५) ।

पागअम न [प्रागल्भ्य] घृष्टता, डिडाई (सूय
१, ५, १, ५) ।

पागअमि १ वि [प्रागल्भिन्, *क] घृष्टता-
पागअमिअ १ बला, घृष्ट, ढीठ (सूय १, ५, १,
५, २, १, १८) ।

पागय वि [प्राकृत] १ स्वाभाविक, स्वभाव-
सिद्ध । २ धर्म्यवर्त की प्राचीन लोक-भाषा-
'सकपा पागया केव' (अ ७—पत्र १६३;
विसे १४६ टी, वएण ६४, मुवा १) ।
३ पुं. साधारण बुद्धिवाला मनुष्य, सामान्य
लोक, 'जैसि एआमागेत्त न पागया पएणवेहिंति'
(सुअ १६), 'विजु महापद्ममो दुल्लगम्मो
पागयनएत्त' (विद्य २५६, सुअ २, १३०) ।
'भासा ओ [भाषा] प्राइव भाषा (था
२३) । *वागएण न [व्याकरण] प्राइव
भाषा का व्याकरण (विसे ३४५५) ।

पागार पुं [प्राआर] किला, दुर्ग (उर, सुअ
३, ११४) ।

पाजापय पुं [प्राजापत्य] १ वनस्पति का
महिष्ठाता देव । २ वनस्पति (अ ५, १—
पत्र २६२) ।

पाटप (धूरे) देखो बाहउ (पह) ।

पाठीण देखो पाठीण (पएह १, १—
पत्र ७) ।

पाह देखो पाह = पाटय, 'अधिसत्तवगूहि
पाहति' (सूयनि ७६) ।

पाह वर [पातय] गिराना । पाहइ (उर) ।
संक्र. पाडिअ, पाडिऊण (कप १६६,
सुअ ४६) । वचड. पाडिज्जव (उर
३२० टी) ।

पाह देखो पाहय = पाटव; 'जो सो दिट्ठण्णे
उय मयो वेत्तपाअम्मि' (मुवा ३३०) ।

पाहयार वि [दे] आसक्त चित्तवाला (दे ६,
३४) ।

पाहयार पुं [पाहयार] चोर, चलर (पाय-
दे ६, ३४) ।

पाहण न [पाटन] विदारण (धौय ६) ।

पाहण न [पातन] १ गिराना, पाटना
(सूयनि ७२) । २ परिग्रहण, हथर-उभार
ग्रहण, 'लहुण्डरपिडरपिआरआणएत्ताए
कयकीलो' (मुवा २, ३७) ।

पाहणा ओ [पातना] ऊपर देखो (विपा १,
१—पत्र १६) ।

पाहय पुं [पाटक] घृष्टता, रम्या, 'नडाव-
पाहए गवु' (धर्मवि १३८, विपा १, ८,
महा) ।

पाहयवि [पातक] गिरानेवाला । ओ. 'डिआ
(मृच्छ २४५) ।

पाडल पु [पाटल] १ बर्ण विशेष, श्वेत धौय
रत्न बर्ण, मुलाकी रंग । २ वि श्वेत-रत्न
बर्णवाला (पाय) । ३ न. पाटलिका-मुल्ल,
मुलाव का फूल (गा ४६६, सुअ ३, ५२,
मुवा) । ४ पाटला वृक्ष का पुष्प, पाडल का
फूल (गा ३०) ।

पाडल पुं [दे] १ हस्त, पक्षि विशेष । २ वृक्ष
वैत । कमल (दे ६, ७६) ।

पाडलसउण पु [दे] हंस, पक्षि विशेष (दे
६, ४६) ।

पाडली ओ [पाटली] वृक्ष विशेष, पाटल का
पेठ, पाडरि (गा ४५६, सुअ ३, ५२; सम
१५२), 'अपा म पाडलसको जया य वनु-
पुग्गपत्तिवो होर' (पउम २०, ३८) ।

पाडलि ओ [पाटलि] ऊपर देखो (गा
४६८) । *उत्त, 'पुत्त न [पुत्त] नगर-
विशेष, पटना, जो आनकन विहार प्रदेश
का प्रधान नगर है (दे २, १५०, महा,
वि २६२, बाह ३६) । *पुत्त वि [पुत्त]
पाटलिपुत्र-संबन्धी, पटना का (पव १११) ।
*सड न [वण्ड] नगर विशेष (विपा १,
७, मुवा ८३) । देखो पाडली ।

पाडलिय वि [पाटलि] श्वेत रत्न बर्णवाला
क्रिया हुआ (पाउड) ।

पाडली देखो पाडलि (उर ५ १६०) । *पुअ
न [पुअ] पटना नगर (धर्मवि ४२) । *पुत्त
न [पुत्त] पटना नगर (पह) ।

पाडर न [पाटर] पटुण, निगुणता (पम्म
१० टी) ।

पाडरण न [दे] पाटवण, पैर पर गिराना,
प्रणाम विशेष (दे ६, १८) ।

पाडहिग } वि [पाटहिग] डोल बनानेवाला,
पाडहिय } डोलिया, डोलकिया (स २१६) ।
पाडहुक वि [दे] प्रतिभु, मनीतिया,
आमिनवार (पड) ।
पाडिअ वि [पाटित] काडा हुमा, विदारित
(स ६६६) ।
पाडिअ वि [पातित] गिराया हुमा (पाम,
पामु २, नवि) ।
पाडिअगम पुं [दे] विषाम (दे ६, ४४) ।
पाडिअगम पुं [दे] पिता के घर से बच्चा को
पति के घर से जानेवाला (दे ६, ४३) ।
पाडिआ देखो पाडय = पातक ।
पाडिएक } न [प्रत्येक] हर एक हि २,
पाडिएक } २१०, कप, पाम, खाया १,
१६, २, १, सुपनि १२१ टी, कुमा), 'एगे
ओवे पाडिएकए सरीरए' (ठा १—पम
१६) ।
पाडिनिय न [प्रायनिक] अभिनय-विशेष
(राम ५४) ।
पाडिचरण न [प्रतिचरण] देवा, उपासना
(उप व ३४६) ।
पाडिच्छय वि [प्रतीप्सक] ग्रहण करनेवाला
(सुव २, १३) ।
पाडिजत देखो पाड = पातय ।
पाडिपह न [प्रतिपथ] अभिप्रेत, सामने
(सुप २, २, ३१) ।
पाडिपहिल देखो पडिपहिल (सुप २, २,
३१) ।
पाडिपिद्धि छी [दे] प्रतिस्पर्धा (पड) ।
पाडिप्यराग पुं [पाटिप्यरक] पति विशेष
(पम १४, १०) ।
पाडिप्यरवि वि [प्रतिपथिन] स्वर्ण करने-
वाला (हे १, ४४, २०६) ।
पाडिप्यतिय न [प्रायनिक] अभिनय विशेष
(राज) ।
पाडियक देखो पाडिएक (पीप) ।
पाडियवि वि [पाटिपड] १ प्रतिपक्ष-संबन्धी,
पट्या विपि वर, 'जह घटो पाडियको पाडियुओ
मुक्कपवामि' (उवर ६०) । २ पुं. एक
मासी जैन भाचार्य (निवार ५०६) ।
पाडियया छी [प्रतिपन्] विपि विशेष, पस
को पहली विपि, पट्या (सम २६, खाया १,
१०, हे १, १५, ४४) ।

पाडिवेसिय वि [प्रातिवेसिमक] पडोसी ।
छो, 'या (सुपा ३६४) ।
पाडिसार पुं [दे] १ पडवा, निपुणता । २
वि. पड, निपुण (दे ६, १६) ।
पाडिसिद्धि देखो पडिसिद्धि = प्रतिपद्धि (हे
१, ४४, प्राप्र) ।
पाडिसिद्धि छी [दे] १ स्वर्ण (दे ६, ७७,
कण्ठ, कुप ४६) । २ समुदाचार । ३ वि.
सदृश, तुल्य (दे ६, ७७) ।
पाडिसिरा छी [दे] खान-मुका (दे ६, ४२) ।
पाडिस्सुइय न [प्रातिश्रुतिक] अभिनय का
एक भेद (राज) ।
पाडिहच्छा } छी [दे] शिरो-माल्य, मस्तक-
पाडिहस्थी } स्थित पुष्पमाला (दे ६, ४२,
राज) ।
पाडिहारिय वि [प्रातिहारिक] वापस देने
योग्य वस्तु (विसे ३०५७, पीप, उवा) ।
पाडिहेर न [प्रातिहार्य] १ देवता-व्रत प्रती-
हार-कर्म, देवव्रत पूजा विशेष (पीप, पय
३६), 'हय सामहए भारा इहएवि नागवत-
नरनाहो । जामो सपाडिहेरो' (सुपा ५४४) ।
२ देव शान्तिम (भक्त ६६), 'बहुण सुरेहि
कय पाडिहेर' (धु ६४, महा) ।
पाडो छी [दे] भैंस की बधिया, पाडी या
पटिया जुगपती मे 'पाडी' (का ६५) ।
पाडुंकी छी [दे] कणी—जलमयाने की
पालकी (दे ६, ३६) ।
पाडुंगोरि वि [दे] १ विपुल, गुण रहित ।
२ मय मे भासक । ३ छी. मजबूत घेटन-
वाली बाह, 'पाडुंगोरि व बुतिद्विंय मस्या
विघेटन पठित' (दे ६, ७०) ।
पाडुक पुं [दे] समासमूल, बन्दन श्रादि का
शरीर मे उपलेप । २ वि. पड, निपुण (दे ६,
७६) ।
पाडुचिय वि [प्रातीतिक] जिसी मे धायय
से होनेवाला, चापेतिव । छो, 'या (ठा २,
१, नव ६०) ।
पाडुको छी [दे] तुरग-मण्डन, छोटे का
डिगार (दे ६, ३६, पाष) ।
पाडुअज वि [दे] प्रतिभु मनीतिया, आधि-
न (दे ६, ४२) ।
पाडेक देखो पाडिका (सम १५) ।

पाडोस पुं [दे] पडोस, प्रातिवेरिमकता (या
२७) ।
पाडोसिअ वि [दे] पडोसी, पडोसिया (सिरि
३१२, या २७, सुपा ५५२) ।
पाड खक [पाठय] पढ़ाना, अध्ययन कराता ।
पाडइ, पाडैइ (प्राक ६०, प्राप्र) । कर्म, पाडिअइ
(प्राप्र) । सक्र. पाडिऊण, पाडेऊण (प्राक
६१) । हेऊ, पाडिउं, पाडेउं (प्राक ६१) ।
क. पाडणिजण पाडिअज्य, पाडेअज्य
(प्राक ६१) ।
पाड पुं [पाठ] १ अध्ययन, पठन (मोपमा
७१, विसे १३५४, समत १४०) । २ शाक,
धामप १ । ३ शाक का उत्प्रेल, 'पाडो ति वा
सत्य ति वा एगडु' (पामु १) । ४ अध्ययन,
शिक्षा (उप व ३००, विसे १३५४) ।
पाड देखो पाडय = पातक (या ६१ टी) ।
पाडतर न [पाडातर] भिन्न पाड (थाव
३११) ।
पाडग वि [पाठक] १ उच्चारण करनेवाला,
'पडिय मगलपाडोहि' (कुप ३२) । २
अध्यासी, अध्ययन करनेवाला । ३ अध्यापन
करनेवाला, अध्यापक, 'वस्तुपाठग', 'कुमिण-
पाठगण', 'सवखणसुमिणपाठगण' (समवि
३३, खाया १, १, कप) ।
पाडण न [पाठन] अध्यापन (उप व १२०,
प्राह ६१, समत १४२) ।
पाडणया छी [पाठना] ऊपर देखो (पंचमा
४) ।
पाडय देखो पाठग (कप, स ७, खाया १,
१—पम २०, महा) ।
पाडन वि [पाडिय] धुक्की का विहार,
धुक्की का 'पाडन' शरीर हिचा' (उत १,
१३) ।
पाडा छी [पाठा] वनस्पति विशेष, पाड, पाड
का गाछ (परए १७) ।
पाडान स [पाठय] पढ़ाना, अध्यापन
करना । पाडाअ (प्राप्र) । क. पाडाविऊण,
पाडावेऊण (प्राह ६१) । हेऊ. पाडाविउं,
पाडावेउं (प्राह ६१) । क. पाडावणिजण,
पाडाविअज्य (प्राह ६१) ।
पाडावअ वि [पाठक] अध्यापन (प्राह ६०) ।
पाडावण न [पाठन] अध्यापन (प्राह ६१) ।

पाठाविज वि [पाठित] श्रम्यापित (प्राक ६१) ।

पाठाविजअवंत वि [पाठितवन्] जिखने पढावा हो वह (प्राक ६१) ।

पाठाविज } वि [पाठयि] पढलेवाला
पाठाविज } (प्राक ६१, ६०) ।

पाठिअ वि [पाठित] पढावा हुमा, श्रम्यापित (प्राक) ।

पाठिअवंत देखो पाठाविजअवंत (प्राक ६१) ।

पाठिआ छी [पाठिआ] पढनेवाली छी (बन्धु) ।

पाठिउ } वि [पाठयि] श्रम्यापव, पढले-
पाठिउ } वाला (प्राक ६१) ।

पाठीण पुं [पाठीण] मल्ल-विशेष, 'पोडिया' मछली, मल्ल की एक जाति (गा ४१४, विक ३२) ।

पाठोआमास पुं [बृधगामसो] बाह्रवें ब्रह्म-
न्मस का एक मास (एति २१४) ।

पाण सव [प्र + आनय] जितला । बहु-
पाणअंत (नाट—मालती ५) ।

पाण पुंछी [वि] धवच, बगडान (दे १, ३८; जट ५ १५४, महा, पात्र, डा ४, ४, वच १) । 'छी' (गुल ६, १, महा) । 'उछी' छी [छुटी] बागडान की महीपटो (गा २२७) । 'विलया' छी [पलित] बागडाली (जट ७९८ टी) । 'हँसर' पुं [हँस्यार] मश-विशेष (वच ७) । 'हियि' पुं [हियि-पति] बागडान-नायक (महा) ।

पाण न [पान] १ पीना, पीने की क्रिया (गुर १, १०) । २ पीने की चीज, पानी घादि (गुर २० टी; पति महा, पात्र) । ३ पुं, पुच्छ विशेष, 'सणपाणवासमहमपाणमना-मतिगुवारे य' (पल्ल १) । 'पस न [पात्र] पीने का नीचन, पात्रा (दे) [पात्र] न [पात्र] मय-गुद (पात्रा १, २, महा) । 'हार पुं [हार] एगठन वन (संघोष ५८) ।

पाण पुंन [प्राण] १ जीवन के आधार-भूत से दस पराये—पौष इन्द्रियाँ, मन, बचन और हृदय का बाग, उपद्रव्य तथा नि पाण (जी २६; पल्ल १, महा; डा १, ९) । २ मयद-परिमाण विशेष, उपद्रव्य-नि कर्म-परिमाण (दे २२ पाणु) । ३ वन्धु प्राणी, जीव-

'पाणयि' सेवे विरिहनि मंडा' (सुम १, ७, १६, डा ६; भाषा, बन्धु) । ४ जीवित, जीवन (गुपु २६३, ५०२, बन्धु) । 'इच वि [वत्] प्राणवान्, प्राणी (नि ६००) । 'बाय पुं [त्यय] प्राण-नाश (गुर २६८; ६१६) 'बाय पुं [त्याग] मरण, मौत (गुर ४, १७०) । 'जाइय वि [जाति] प्राणी, जीव, जन्तु (भाषा १, ६, १, १) । 'नाह पुं [नाय] प्राणनाश, पति, स्वाभो (रंभा) । 'पियया छी [प्रिया] छी, पत्नी (गुर १, १०८) । 'वह पुं [वच] हिमा (पल्ल १, १) । 'यिस्ति छी [युति] जीवन-निवाह (महा) । 'सम पुं [सम] पति, स्वाभो (पात्र) । 'सुहुम न [सुहम] सुहम जन्तु (बन्धु) । 'हिय वि [हृत्] प्राण-नाशक (रंभा) । 'इंत वि [वत्] प्राणवाला, प्राणी (प्रात्र) । 'हिनाइय छी [तिपातिरी] क्रिया-विशेष, हिंस से होने-वाला कर्म-कर्म (नव १७) । 'इराय पुं [तिपात] हिंस (वचा) । 'इ पुंन [युस्] श्रम्यार विशेष, बाह्रवृत्त पुंन (सम २५, २६) । 'पाण, 'पाणु पुंन [पात्र] उपद्रव्य और नि स्वास (धर्म १०८, ६८) । 'प्याम पुं [प्याम] योषाङ्ग-विशेष—रेचन, कुम्भ और पूरत नायक प्राणी को दमने का उपाय (मदर) ।

पाणनर वि [प्राणान्तर] प्राण-नाशक (गुपु ६१४) ।

पाणयि वि [प्राणान्तर] प्राण-नाशका-
'पाणयिवाह पड' (गुपु ४५२) ।

पागग पुन [पाणक] १ वेपद्रव्य-विशेष (पवभा १, गुल २० टी, बन्धु) । २ वि. पाग बलेवाला (?) । 'ए पाणयो न लतो मण्यो' (धर्म ८२, ७८) ।

पागदि छी [वि] रम्या, कुत्ता (दे ६, ३६) ।

पागम दक [प्र + अग] निरवास सेना-
नीचे सावना । पाणमदि (सम २, मग) ।

पागय न [पाणक] देतो पाण = पात्र (विसे २३७८) ।

पागय पुं [प्राण] हरम-विशेष, दजवा दे-
सोय (सम ३०, मग बन्धु) । २ विमलेन्द्र-
देरिमास विशेष (देमट ११३) । ३ प्राणव

स्वर्ग का इन्द्र (डा ४, ४) । ४ प्राणव देव-
लोक में रहनेवाला देव (मणु) ।

पागहा छी [उपानह] जूता, 'पाणहाभो
म छतं च छातोयं बालवीर्य' (सुम १, ६,
३८) ।

पागाअअ पुं [दे] धवच, बागडान (दे ६,
३८) ।

पागाम पुं [प्राण] नि स्वास (मग) ।

पागामा छी [प्रागामी] दोता-विशेष (मग
३, १) ।

पागाली छी [दे] दो हाथो का प्रहार (दे ६,
४०) ।

पाणि पुं [प्राणिम्] जीव, प्राणा, श्वेतन
(भाषा, प्राणु ११६; १४४) ।

पाणि पुं [पाणि] हस्त, हाथ (कुमा, स्वज
५३, ६०) । 'गहण देतो गहण (मवि) ।
'गाह पुं [मह] निवाह (गुपु ३७३, धर्मि
१२३) । 'गाहण म [महण] विवाह,
शादी (विषा १, ६; स्वज ६३, मवि) ।

पाणिअ न [पानीय] पानी, जल (दे १,
१०१, प्रात्र, पल्ल १, ३; कुमा) । 'पायिया
छी [परिका] पतिहारी, नियसुत्तय एणो
पाणिअय (प)रियं सहावे' (पात्रा १,
१२—२२) । 'हारी छी [हारी] पतिहारी (दे ६, ५६; मवि) । देखो पागीअ ।

पागिणि पुं [पाणिनि] एक प्रविद्ध व्याकरण-
कार प्राणि (दे २, १४७) ।

पागिगीअ वि [पाणिगीय] पाणिनि संबंधी,
पाणिनि का (ह २, १४७) ।

पागी देखो पाग = (दे) ।

पागी छी [पानी] पत्नी-विशेष, 'पाणी कामा-
बलो पुं जावलो म बधायो' (पल्ल १—५३
३३) ।

पगीअ देखो पागिअ (दे १, १०१, प्राणु
१०२) । 'परी छी [परी] पतिहारी (पात्रा
१, १ टी—५३ ४३) ।

पायु पुंन [प्राण] १ प्राण बाहु । २ धात्री-
व्युत्पन्न (सम २, ४०, धीन, बन्धु) । ३
समय-परिमाण विशेष, 'देो कगामीकोवे एण
पायुनि कुबड' । सग पन्थुन ते कोरे
(मंडु ३३) ।

पात १ देखो पाय = पात्र (सूत्र १, ४, २, पाद १ पण्ह २, ५—पत्र १४८) । बंधण न [वन्धन] पात्र बंधने का वस्त्र सारइ, जैन मुनि का एक उपकरण (पण्ह २, ५) ।

पाद देखो पाय = पाद (विपा १, ३) । 'सम वि [सम] गेय विशेष (छा ७—पत्र ३६४) । 'ओष्ठपय न [ओष्ठपद] दृष्टिवाद नामक बारहवें जैन धामम ग्रन्थ का एक प्रतिपाद्य विषय (सम १२८) ।

पाहुं १ देखो पाउ = प्राहुं । पाहुंरेण (वि ३४१) । पाहुंरकसि (सूत्र १, २, ७) ।

पाओ देखो पाओ = प्राप्त (सुज १, ६) ।

पादोसिय वि [प्रादोपिक] प्रदोष-काल का, प्रदोष सवन्धी (सोप ६५८) ।

पादु देखो पायव (मा ५३७ म) ।

पायइ देखो पाहज (धर्मस ७८६) ।

पाधार सक [रान + गम्, पाद + धारय] पधारता, 'पाधारह निमोहे' (आ १६) ।

पायइ वि [प्रायइ] विशेष धैरा ह्रस्वा, पाशित (मिहू १६) ।

पाभाइय } वि [प्राभासिक] प्रभात-
पाभातिय } सयधी (सोपम ३११, अनु ६, धर्मव ५८) ।

पास सक [प्र + आप्] प्राप्त करना, गुजरानी में 'पामनु' ।

'काराजिद पडिम शिलाए शिररोगवेसमोहण्ण ।
को भनमरे पामइ भनमसण धम्मवररण्ण ॥'
(रमण १२) । धर्म, पामिजइ (समस्त १४२) ।

पासण्ण न [प्रासापय] प्रमाणका, प्रमाणपन (धर्मस ७४) ।

पामहा छी [दे] दोना पैर से धामय मर्दन (दे ६, ४०) ।

पामन देखो पासण (विसे १४६६, वेइय १२४) ।

पामर पु [पामर] जपोवस, कर्षण, खेती का काम करनेवाला गृहस्थ 'पामरहवसेमाए वासमा दोएयया हनिमा' (पाम, वजा १३४, वासइ, दे ६, ४१, सुर १६, ५३) । २ हलवी जाति का गनुय (मणू, गा २३८) । ३ मूर्ख केयरूक, भगानी (पा १६४), नौ नाम पामर पुं, मण्ड दुग्धवर्धे (या १२) ।

पामा छी [पामा] रोग विशेष, बुखली, खाज (सुवा २२७) ।

पामाड पुं [पदाट] पमाड, पमार, पवाड, चकवड, बुख-विशेष (पाम) ।

पामिअ सक [दे] उचार लेना । पामिन्नेअ (भाना २, २, २, ३) ।

पामिअ न [दि-अपमित्य] १ धार लेना, वापस देने का वादा कर ग्रहण करना । २ वि. जो उचार लिया जाय वह (पिड ६२, ३१६, भाचा, छा ३, ४, ६, मौप, पण्ह २, ५, पव १२५, पचा १३, ५, सुवा ६४३) ।

पामिअिय वि [दे] उचार लिया हुआ (भाचा १, १० १) ।

पामुअ वि [प्रमुअ] परित्यक्त (पाम स ६५७) ।

पामूल न [पाइमूल] पैर का मूल भाग, पांव का मूल भाग (पत्रम ३, ६, सुर ८, १६६, पिड ३२८) । देखो पायमूल = पादमूल ।

पामोअ देखो पमुइ = प्रमुअ (आया १, ४, ८, महा) ।

पामोअल पु [प्रमोअ] मुक्ति, छुटकारा (उप ४४८ टी) ।

पाय पु [दे] १ रघ-नक्ष, रघ का पहिया (दे ६, ३७) । २ कण्ठी, ताप (यइ) ।

पाय पु [पाऊ] १ पावन-क्रिया । २ रसोई (प्राड १६, उप ७२८ टी) ।

पाय वि [पाकय] पाक योग्य (पत्र ७, २२) ।

पाय देखो पाव (यइ) ।

पाय पुं [पाव] १ पवन (पचा २, २५, से १, १६) । २ सवन्ध, 'पुओ पुओ तरनदिहि-पाएहि' (सुर ३, १३८) ।

पाय पुं [पाय] पाव, पीने की क्रिया (या २३) ।

पाय पु [पाद] १ भवन, गति (आ २३) । २ पैर चरण पांव, चलका कमा य पावा' (पाम, आया १, १) । ३ पत्र का चौथा हिस्सा (दे ३, १३४, विग) । ४ विरह, 'अंशु रखी पाया' (पाम, मनि २८) । ५ सात, पर्वत का गठन (पाम) । ६ एराउन तर (खंवीय ५८) । ७ छ अंगुल का एक नाप (इक) । 'वंचणिया छी [पाअनिना] पैर प्रलातन का एव मुख-पाव (ताव) ।

'कवल पुन [कमवल] पैर पोछने का वस्त्र-
सारइ (उत १७, ७) । 'कुक्कुड पु [कुक्कुड] कुक्कुट विशेष (आया १, १७ टी—पत्र २३०) । 'घाय पुं [घात] चरण-
प्रहार (विग) । 'चार पुं [चार] पैर से गमन (आया १, १) । 'चारि वि [चारिअ] पैर से यातयात करनेवाला, पाद बिहारी (पत्रम ६१, १६) । 'जाल, 'नालग न [जाल, क] पैर का मासुपण विशेष (सोप, मनि ३१, पण्ह २, ५) । 'साण न [त्राण] जूता, पचरकी (दे १, ३३) । 'पलस पु [प्रलस्य] पैर तब लटकनेवाला एक मासु-
पण (आया १, १—पत्र ५३) । 'वीड देखो 'वीड (आया १, १, महा) । 'पुंछण न [प्रोअञ्जन] रजोहरण, जैन साधु का एक उपकरण (भाचा, सोप ५११, ७०६, मग, उवा) । 'पडण न [पवन] पैर पर गिरना, प्रणाम विशेष (पत्रम ६३, १८) । 'मूल न [मूल] १ देखो पामूल (कव) । २ मनुष्यो की एक साधारण जाति, मर्तों की एक जाति 'समागयाइ पायमूलाइ', 'युवहज्जमाओ पायमूलेहि पतो रहसमोवे', 'पण्णियाइ पायमूलाइ', सहायियाइ पायमूलाइ', 'पण्ण-
बेहिहि पायमूलेहि' (स ७२१, ७२२, ७३४) । 'लेहिणआ छी [लेसनिना] पैर पोछने का जैन साधु का एक काष्ठमय उपकरण (सोप ३६) । 'यदय वि [यन्दक] पैर पर गिरकर प्रणाम करनेवाला (आया १, ११) । 'वडण न [पवन] पैर पर गिरना, प्रणाम-
विशेष (ह १, १७०, कुमा, सुर २, १०६) । 'यडिया छी [युति] पाद पतन, पैर छूना, प्रणाम विशेष, 'पायडियाए खेमनुसस पुअरि' (आया १, २, सुवा २५) । 'विहार पुं [विहार] पैर से सति (मग) । 'वीड न [पाठ] पैर रखने का भासन (दे १, २००; कुमा, सुवा ६८) । 'खीसम न [श्रीपत्र] पैर के ऊपर का माग (राय) । 'उलअ न [इलअ] द्यत विशेष (विग) ।

पाय देखो पत = पात्र (भाचा, मौप, सोपमा ३६, १७४) । 'कसरिआ छी [कसरिवा] जैन साधुओं का एक उपकरण, पात्र-प्रमाणन का वपना (सोप ६६८, विसे २५४२ टी) ।

‘दृवण, ‘ठयण न [‘स्थापन] जैन मुनियो का एए उपकरण, पात्र रखने का बख-सएड (विसे २५२२ टी, घोष ६६८) । ‘णिज्जोग, ‘निज्जोग धुं [‘नियोग] जैन साधु का यह उपकरण-समूह—पात्र, पात्रगम्य, पात्रम्यापन, पात्रवेसविष्ण, पटल, रज्जपाण घौर बुद्धक (विड २६; गृह ३; विसे २३५२ टी) । ‘पडिमा छी [‘प्रतिमा] पात्र-संकेपी क्षत्रिगृह—प्रतिमा-विशेष (अ ५, ३) । देखो पाद = पात्र ।

पाय (अप) देखो पत्त = प्राप्त (विग) ।

पायं घ [प्रायस्] प्राय, बहुत करने, व्यापपाण बरोद ति (विड ५४३) ।

‘पाय धुं. व. [‘पाद] दूध, ‘सधुमा क्षत्रिप्र-संनिपायया (प्रजि ३५) ।

पायद देखो पा = पा ।

पाधं देखो पायं (स ७९१, गुण २८; ५६६, धारन ७३) ।

पायं म [प्रातस्] प्रभात (सूत्र १, ७, १४) ।

पायंगुह धुं [पादाङ्गुष्ठ] पैर का संशुद्ध (छाया १, ८) ।

पायंगुह धुं [पानाङ्गु] पतञ्जलिपूत शाल, पानजन योग-गुह (एदि १६४) ।

पायंत न [पादान्त] गीत का एए अंत, पाद-बुद्धगीत (सूत्र ५४) ।

पायंदुय धुं [पादान्दुक] पैर बांधने का बाहुल्य उपकरण (विग १, ६—पत्र ६६) ।

पायद देखो पायय = पाठन (पत्र १) ।

पायद देखो पाइद (सम्मत १७६) ।

पायविजयग न [प्रादिश्रय] प्रदक्षिणा (पत्र ३२, ६२) ।

पायय न [पानय] पार (धारन २४८) ।

पायचिद्वध धुं [प्रायश्चित्त] पारनाशन कर्म, पारनाशन करनेवाला कर्म, ‘पारविधो नाम पायचिद्वधो धनुतो’ (सम्मत १४५; उवा ७०९, न २६) ।

पायद देखो पागद = प्र + बटय् । ‘पयदह (अंर) । यद, पायदह (गुण २२६) ।

यद, पायदिहिन (ग ६८२) । हेर. पायदिहिन (दुप १) ।

पायद न [दि] संरण, धीन (दि ६, ४०) ।

पायद देखो पागद = प्रकट (हे १, ४४, आश्र, घोष ७३; जी २२, प्रासू ६४) ।

पायद देखो पागद = प्राहृत, ‘अर्धं दाव दिप्रते सुधरं परित्थमिध भलद्वेधोपा पाप-दण्डिमा विम रति पत्तसो सद्धु आमन्दमि’ (अवि २६) ।

पायद वि [प्रावृत्त] आच्छादित (विने २५७६ टी) ।

पायदिअ वि [प्रकटित] व्यक्त किया हुआ (दुप ४, से १, ५३, गा १६६; २६०, गद, स ७६८) ।

पायदिह वि [प्रकट] चुना (वग्ना १०८) ।

पायन न [पायन] पिलान, पान करना (छाया १, ७) ।

पायय न [पादात्] पदाति-समूह, व्यादो का लक्षण (उत्त १८, २, घोष, वण) । ‘गिय न [‘नीक] पदाति मय्य (वि ८०) ।

पायपुंछण न [पादपुञ्जन] पात्र-विशेष, छाप, चकोरा ।

पायपण्यण धुं [दि] कुशुट, पूर्ण (दि ६, ४४) ।

पायय न [पानक] पाप (मन्वु ४३) ।

पायय देखो पाय = पाप (पाप) ।

पायय देखो पायय (हे १, ६७) ।

पायय देखो पायय (वि ६, ७) ।

पायय देखो पायय = पातन (अवि १२३) ।

पायय देखो पाय = पाद (वण) ।

पाययाम धुं [प्रातरास] प्रातः पान का भोजन, जन्पाय, जलखाना (आया, छाया १, ८) ।

पायल न [दि] बज्र, घंट (दि ६, ३८) ।

पायय धुं [पादय] दूध, पैर (पाप) ।

पायय देखो पा = पा ।

पायस धुं [पायस] दूध का मिश्रण, घोर ‘पायसो मीरी’ (पाप, गुण ४३८) ।

पायसो घ [प्रायश्चित्त] प्राय, बहुत कर (उवा ४४६, यवा ३, २७) ।

पायय धुं [प्राहार] निगा, को, दुर्ग (पत्र ६, २६८, दुगा) ।

पायाल न [पाताल] रक्षा-वन, धपो बुरन (हे १, १८०, पाम) । ‘कटस धुं [‘कटस]

समुद्र के मध्य में स्थित कतरावार वस्तु (अणु) । ‘पुर न [‘पुर] नगर-विशेष (पत्र ४३, ३६) । ‘मंदिर न [‘मन्दिर] पाताल-स्थित गृह (महा) । ‘हर न [‘गृह] यही धर्म (महा) ।

पायाल न [पाददल] पादाप गम्य, पैरन मंत्रिक (चउप्यत्र ० पत्र १८५) ।

पायालमारपुर न [पाताललङ्कापुर] पाताप-लका, रावण की राजधानी, ‘पायालमारपुरं सिन्धु पत्ता भवजिन्गा’ (पटल ६, २०१) ।

पायायन न [प्राजापय] प्रहोराय का बीर-हर्षा कुहल (सम ५१) ।

पायायि वि [पायित] रित्ताया हुआ (पत्र ११, ५१) ।

पायाहिण न [प्रादक्षिण्य] १ वैद्यन (पत्र ६१) । २ दक्षिण की ओर, ‘पायाहिणेण विहि वतिमाहि कापह सविप’ (सिदि १६६) ।

पायाहिणा देखो पयाहिणा, ‘पायाहिणं कलिते’ (उत्त ६, ५६, गुण ६, ५६) ।

पार घक [शक] सक्ता, करने में समर्थ होना । पारद, पारद (हे ४, ८६, पाम) । यद, पारत (दुमा) ।

पार नर [पारय] पार पहुँचना, पूर्ण करना । पारद (हे ४, ८६, पाम) हेर. पारितस (अग १२, १) ।

पार धुन [पार] १ लट, निगा (पाम) । २ वर्ता, निगा, ‘पारोर् पार’ (पाम), ‘विह न्ह होरी मरमत्तिपा’ (निगा ३) । ३ पारोर्, धायी जन । ४ मनुज-मोक्ष-मित्र नरक धारि (सूत्र १, ९, २८) । ५ मोक्ष, मुक्ति, निर्वाण, ‘पारं धुणुत्तरे धुता विदि’ (पत्र ४) । ‘ग रि [‘ग] पार काये-याना (पौन, गुण २२४) । ‘गय रि [‘गय] १ पार-मन्त्र (वग, प्री) । २ गृ, निम-देन, मयसद्ध धरुत (उवा ११२ टी) । ‘गामि रि [‘गामिन्] पर पर्वक-गमा (पाम, वग; वी) । ‘पानय न [‘पानक] पैर दम-विहिन (पाम १, १७) । ‘विह रि [‘विह] पार की कल-पाना (सूत्र २, १, १०) । ‘मोय रि [‘मोय] पार-वग (वग) ।

पार देखो पायार (हे १, २६८; कुमा)।
 पारंक न [दे] मरिा नाने का पाय (दे ६, ४१)।
 पारंगम वि [पारंगम] १ पार जनेवाला।
 २ पार-गमन (आवा)।
 पारंगय वि [पारंगत] पार-प्राप्त (कुय २१)।
 पारंवि वि [पारावि] सर्वोक्त—द्वयम
 प्रायश्चित्त करनेवाला, 'पारवीण दोहृवि'
 (बृह ४)।
 पारंविचय न [पाराविचय] १ सर्वोक्त प्राय-
 श्चित्त, तप-विशेष से प्रतिपत्ति की पार-
 प्राप्ति (आ ३, ४—पन १६२; औप)। २
 वि, सर्वोक्त प्रायश्चित्त करनेवाला (आ
 ३, ४)।
 पारंविचय [पाराविचय] ऊपर देखो (पन,
 बृह ४)।
 पारंपज न [पारम्य] परम्परा (रंभा १३)।
 पारंपर पु [दे] रासत (दे ६, ४४)।
 पारंपर } न [पारम्य] परम्परा (पञ्चम
 पारंपरिय २१, ८०; आरा १६; धर्मस
 १११८; १३१७), 'पारंपरियार्य' (?) रिण
 ए भाग्य' (मूलवि १२०—कुड ४८०)।
 पारंपरिय वि [पारम्यपरिक] परंपरा से बला
 भावा (उप ७२० टी)।
 पारंभ सक [प्रा + रभ] १ आरम्भ करना,
 शुरू करना। २ हिंसा करना, मारना। ३
 पीडा करना। पारंभे (कुय ७०)। नवह,
 'सहृण्य पाउज्मभाणा' (औप)।
 पारंभ पु [पारम्य] शुरू, उदभव (विसे
 १०२०, पन १६६)।
 पारंभिय वि [पारम्य] आरम्भ, उदभव
 (धर्मि १४४, सुर २, ७७, १२, १५६,
 गुवा ५५)।
 पारंभे } वि [पारम्य] पर वा, भूम्यो
 पारम्य } (दे १, ४४, २१४८, कुमा)।
 पारमिज देखो पारमा (माव १६२)।
 पारमज्जाण देखो पारंभ=प्रा + रभ।
 पारण न [पारण, फ] भव से दूसरे दिन
 पारणमा भौ भोजन, तप की समाप्ति के अनन्तर
 पारणमा भौ भोजन (सण; उमा; महा)।
 पारणा क्षि [पारणा] ऊपर देखो। 'इत्त वि
 [..पण] पारणवाला (रंभा १२, ३३)।

पारतंत न [पारतम्य] परतन्त्रता, पराधीनता
 (उप २५२; पंभा २, ४१; ११, ७)।
 पारतंत अ [पारत] परलोक में, आगामी जन्म
 में, 'पारत विज्जज्जो धम्मो' (पञ्चम ५,
 १६३)।
 पारत वि [पारत, पारत्रिक] पारलौकिक,
 आगामी जन्म से संबन्ध रखनेवाला, 'इत्तो
 पारतद्विय ता कीरल देव! धकृणुल्लिख'
 (धर्मि ६०; औप ६२, स २४६)।
 पारति क्षी [दे] कुमुद-विशेष (गण्ड,
 कुमा)।
 पारतिव वि [पारत्रिक] देखो पारत =
 पारत (स ७०७)।
 पारदारिय वि [पारदारिक] परलौकिक-
 (छाया १, १८—पन २३६)।
 पारद्वि वि [पारद्व्य] १ जिसका प्रारम्भ किया
 गया हो वह, 'पारद्वि य विवाहनिमित्त सयला
 क्षान्ता' (महा)। २ जो प्रारम्भ करने लगा
 हो वह, 'तमो भवरहस्यमप पारद्वो नचिच' (महा)।
 पारद्वि न [दे] पूर्व-कृत कर्म का परिणाम,
 प्रारम्भ। २ वि. आदित्य, शिकारी। ३
 गोविंद (दे ६, ७७)।
 पारद्वि क्षी [पापद्वि] शिकार, मुग्धा (दे १,
 २३५, कुमा, सप पु २५७, गुवा २१६)।
 पारद्वि अ वि [पापद्वि] शिकार, शिकार
 करनेवाला, गुनगती में 'पारम्य', 'भयणमहा-
 पाद्वियनितापवाणास्सीविदा' (गुवा ७१;
 मोह ७६)।
 पारमिया क्षी [पारमिता] वीड-शाल-परि-
 भाषित प्राणालिप्त-विरमणदि शिखा-व्रत,
 अहिंसा आदि व्रत (धर्मव ६८८)।
 पारम्य न [पारम्य] परमाता, जल्लुता (धर्म
 ११४)।
 पारय वि [पारग] समर्थ (पाना २, ३,
 २, ३)।
 पारय पु [पारद] पादु विशेष, पाद, रख-
 यातु। 'महण न [मर्देन] पादुयेंद-विहित
 रीति से पाद का मारण, रसायन विशेष,
 'श्रीम-त्रिपुण्यहेतु' से सेवित पारयद्वय' (स
 २८६)। २ वि. पार-प्रापन (पु १०६)।

पारय न [दे] सुरा-भाण्ड, दाऊ रखने का
 पात्र (दे ६, ३८)।
 पारय देखो पार-ग (कप, भग; पञ्च)।
 पारय पु [पारारक] १ पट, वस्त्र। २ वि.
 आच्छादक (हे १, २७१; कुमा)।
 पारलोइम वि [पारलोकि] परलोक-संबन्धी,
 आगामी जन्म से संबन्ध रखनेवाला (पणह १,
 ३; ४, सुय २, ७, २३; कुम ३८१; सुपा
 ४६१)।
 पारवस्त न [पारवद्व्य] परवशता, पराधीनता
 (रयल ८१)।
 पारस पु [पारस] १ भार्य देश-विशेष,
 फारस देश, ईरान (इक)। २ मणि-विशेष,
 जिसके स्पर्श से तोड़ा धुवर्ण हो जाता है
 (सबोध ५३)। ३ पारस देश में रहनेवाली
 मनुष्य-जाति (पणह १, १)। 'उल न [कुल]
 १ ईरान देश, 'भरिकण भइस बहुणा' पत्तो
 पारसवर्त', 'इमो य तो भयलो पारसवर्ते
 विविध बहुवं धव' (महा)। २ वि. पारस
 देश का, ईरान का निवासी, 'मागद्वपारसवला
 कालिना सोलाय य महा' (पञ्चम २६, ५५)।
 'कुल न [कुल] ईरान का निवासी, ईरान
 देश की सीमा (भावन)।
 पारसिय वि [पारसिक] फारस देश का,
 'सहला पारसियमुधो समामो रायपमूले',
 'पारसियकीरिमुध' (गुवा २६७; ३६०)।
 पारसी क्षी [पारसी] १ पारस देश की स्त्री
 (औप; छाया १, १—पन १७, इक)। २
 लिपि विशेष, फारसी लिपि (विने ५६४ टी)।
 पारसीअ वि [पारसीक] फारस देश का
 निवासी (गण्ड)।
 पारई क्षी [दे] मोह-मुग्धी विशेष, मोहों की
 दंभारण क्षीये वस्तु, 'बध्वेलावन्मपट्टपारई
 (?) ई' धिचयसलवररत्नेतय्यद्वारसयतालिय-
 गर्भमा' (पणह २, ३)।
 पाराय देखो पारावय (प्राय)।
 पारायण न [पारायण] १ पार-प्राप्ति (विने
 ५६५)। २ पुराण-यात्र विशेष, 'भयीं
 (?) यमसत्परायणो साक्षात्पारो जायो'
 (गुल २, १३)।
 पारावय देखो पारेवय (पाप, प्राय; मा
 ५४, नय ५६ डि)।

पारावर पुं [दि] पाराव, वातावरण (दि ६, ४३)।
पारावार पुं [पारावार] समुद्र, सागर (पाद्य,
कुप्र १७०)।

पाराजिन वि [पारित] जिसको पारण कराया
गया हो वह (कुप्र २१२)।

पारासर पुं [पारासर] १ अग्नि विशेष (सूत्र
१, २, ४, ३)। २ म मोन विशेष, जो
मणिष्ठ मोन की एव शाखा है। ३ वि. उम
मोन में उपाय (डा ७—पत्र ३६०)। ४
पुं, नियुक्त। ५ कर्म-स्वांगी संयाती, 'अनेन
पारामरा मयि' (सुत्र २, ३१)।

पारिआमिय नि [पारितोषि] वृष्टि जनक
दान, प्रगणता मुखर दान, पुरस्कार (मम्मत्
१२२, ॥ १६३, मुर १६, १८२, निचार
१७१)।

पारिच्छा देखो परिच्छा, 'व्यवरिणामे विता
मिहं समणेमि कामि पारिच्छा' (उप १७३,
उप ७ २७५)।

पारिच्छेज्ज देखो परिच्छेज्ज (छाया १,
८—पत्र १३२)।

पारिजाय देखो पारिय = पारिजा (कुमा)।
पारिष्टानिया की [पारिष्टापमिनी] समिति-
विशेष, मस प्रादि के उपाय में सम्पाद प्रवृत्ति
(सम १०, धौत, कप)।

पारिडि की [प्राडि] प्रावरण, धनु, कपडा,
'शिरिण्ड माटमलमि पामरो पारिडि बह-
ल्लेण' (ग २३८)।

पारिणामिअ देखो परिणामिअ = पारिणामि
(सगु कम्म ४, ६६)।

पारिणामिअ देखो परिणामिअ (साव
पारिणामिमी) १, पाया १, १—पत्र ११)।

पारिणानिया की [पारिणामिनी] दूगरे
को वरिणान—दुत उत्राने से होनेवाला
कर्म-कथ (सम १०)।

पारिणायनी की [पारिणायनी] ऊपर देखो
(मर १७)।

पारिणोमिअ देखो पारिओमिय (मत्तु सुवा
२७ प्राया)।

पारिण देता पारत = पत्तक 'पारिण विद्वज्जो
पय्या' (मंजु २६)।

पारिण्डर पुं [पारिण्डर] पनि विशेष (पट्ट
१, १—पत्र ८)।

पारिभद पुं [पारिभद] वृद्ध विशेष, पच्छद
का पेठ (कम्प)।

पारिय वि [पारित] पूर्ण किया हुआ (रमण
१६)।

पारिय पुं [पारिजात] १ देव-वृक्ष विशेष,
'वृक्ष तस विशेष'। २ कच्छ का पेठ, 'अणुर-
पारियाय य अहिमयरो मानईंगवो' (कुमा
५, १३)। ३ व. पुण्य-विशेष, कच्छ का
झून जो रक्त वर्ण का और अत्यन्त शोभाय-
मान होता है, 'गृहिण य विरुण्ड पारियच्छि
सुंशिरह सखद पवड लच्छि' (मवि)।

पारियत्त पुं [पारियात्त] देश विशेष, 'परि-
ममंते पतो पारियत्तविमय' (कुप्र ३६६)।

पारियल्ल न [दि. पारियल्ले] पहिर के वृद्ध
भाग की बाधा परिधि (छदि ४३)।

पारियाय देखो पारिय = पारिजात (सुपा
७६, से १, ५८, महा. स ७५६)।

पारियायनिया देखो पारिजायनिया (डा २,
१—पत्र ३६)।

पारियायनिया देखो पारियायनिया (स
५५६)।

पारियासिय नि [पारियासित] बासी रखा
हुआ (कम)।

पारिव्यज्ज न [पारिव्याज्ज] संयागियान,
समाध (पत्र ८२, २४)।

पारिव्याई की [पारिव्याजी, पारिव्याजिअ]
संयासिनी (उप ७ २७६)।

पारिव्याय वि [पारिव्याज] संयासि-संबन्धी
(यम)।

पारिस्स वि [पारिपण] सम्म, समाखद
(वमवि ६)।

पारिस्साणिया की [पारिस्साणिनी] परि-
हास्य—परिहास्य व होनेवाला कर्म-कथ
(पाव ४)।

पारिहद्वी की [दि] माना (दि ६, ४२)।

पारिहृती की [दि] १ प्रविष्टी। २ कष्ट,टि,
आर्यण। ३ निर प्रगुता महिला, बहू देर
से कामी हुई मंस (दे ६, ७२)।

पारिहृथिय वि [पारिहृथिअ] स्वमय से
निपुण (डा ६—पत्र ४५१)।

पारिहारिय वि [पारिहारिक] वस्त्रो-विशेष,
परिहार मानक वस्त्र करनेवाला (कम)।

पारिहासय ॥ [पारिहासक] कुल विशेष,
जैन मुनियो के एक कुल का नाम (कम्प)।

पारी की [दि] दोहन-माएड, जिनमें दोहा
बिया जाता है वह पात्र-विशेष (दे ६, ३७,
गउड ५७७)।

पारीण वि [पारीण] पार-प्राप्त, 'धोवर-
सत्याण पारीणो' (वमवि १३, विरि ४८६,
सम्मत् ७५)।

पारुअग्ग पुं [दि] विधाम (दे ६, ४४)।

पारुअल्ल पुं [दि] प्रयुक्त, बिठवा (दे ६, ४४)।

पारुसिय देखो फारुसिय (मावा १, ६,
४, १ डि)।

पारुहल्ल वि [दि] मानीहून, श्रेणी रूप में
स्थापित, 'पालोबयं य पारुहल्लोम्मि' (दे
६, ४४)।

पारुई की [पारापती] बहुरी, बहुर
की माता (सिपा १, १)।

पारुवय पुं [पारावत] १ पति-विशेष, बहुर
(दे १, ८०; कुमा, गुपा ३२८)। २ वृक्ष-
विशेष। ३ व. वन विशेष (पण्य १७)।

पारोअ नि [पारोअ] वरोत नियम,
वराण सम्बन्धी (वमवि ५०२)।

पारोह देखो परोह (ह १, ४४, ना ५७५,
गउड)।

पारोहि नि [प्रोहिन्] प्रोहना, प्रोह-
नाता (गउड)।

पाल वर [पालय्] पावन करना, रखा
करा। पालेइ (मग, महा)। वर, पालयंत,
पालन, पालिन, पालेमाय (गु २, ७१,
से ४६, मत्तु धौत, कप)। उहं, पाउहत्ता,
पालिहा, पालेअग्ग (कम्म, महा) पालेनि
(मर) (दे ४, ४४१)। ह, पाळियव्व,
पालेयव्व (गुपा ४३२, १७६, महा)।

पाल द्यो पार = पारय्। उहं, पाउहत्ता
(कम्म)।

पाल पुं [दि] १ कनका उपाय केनेवाला।
२ वि. ओट्ट, कण-दूग (दे ६, ७२)।

पाउ पुं [पाउ] कम्मदण-विशेष, 'मुट्टेय का
पाव का नियम का बहिर्गुलन का' (दीर)।
२ वि. बानक, बानक-वर्त, 'आ गदन्निपु-
आयएत्ते पाउ' (मर)। की, 'दा (वर ४)।

पालक न [पालङ्क्य] सरकारी विशेष, पालक का शाक (देह १)।

पालंगा छी [पालङ्क्या] ऊपर देखो (उवा)।

पालत देखो पाल = पालव्।

पालव पु [पालम्ब] १ भवलयम्ब, सहारा, 'पावइ तदविदविपालव' (सुपा ६३५)। २ गले का प्रामुपण-विशेष (क्षीप, कम्प)। ३ दीर्घ, सम्बा (क्षीप, राय)। ४ पुन, ध्वजा के नीचे सटकता बखान्बल, 'भोक्तसं पालवं' (पाप)।

पालवा छी [पालक्या] देखो पालगा 'बहुपुनपोगमज्जारपोइवल्ली य पालक्या' (पण १—पत्र ३४)।

पालवा देखो पालय (कम्प, क्षीप, विने २८५६, सति १, सुर ११, १०८)।

पालण न [पालन] १ रक्षण (महा, प्राप् ३)। २ वि, रक्षण-कर्ता, धम्मस्स पालखी चेव' (धलोप १६, स ६७)।

पालदुहुद पु [दे] बृह विरोध (उप १०३१ टी)।

पालप्प पु [दे] १ प्रसिद्धार। २ वि, विन्दुत (दे ६, ७६)।

पालय वि [पालक] रत्नक, रक्षण कर्ता (सुपा २७६, सार्थ १०)। २ पु लोचमज्ज का एक धार्मिकीतिक देव (ठा ८)। ३ योइप्प का एक पुत्र (पत्र २)। ४ भगवान् महावीर के निर्धार के दिन प्रभावित भवती (उज्जैन) का एक राजा (विचार ४६२)। ५ देव-विमान-विशेष (सम २)।

पालस कु [पालाश] पलाश-सम्बन्धी। २ न, पलाश वृक्ष का फल, विशुद्ध-भन (गड्ड)।

पाल छी [पालि] १ तालाव प्रादि का कम्प (सुर १३, ३२, अठ १२ महा)। २ प्रान्त भाग (गा ६४६)। देखो पाली = पाली।

पाल छी [दे] १ घाय मापने की नाप। २ पत्तोपन, समय ॥ मुदीपं परिमाण-विशेष (उत्त १८, २८, सुभ १८, २८)।

पालिआ छी [दे] सट्म-मुष्टि, सववार की मूठ (पाप)।

पालिआ देखो पाली = पाली, उज्जणप्रति-पाहि निरिउतीहि बहुरसइहि (पर्यवि १३)।

पालित पु [पादलिम्] एक प्रसिद्ध जैनाचार्य (पिड ४६८, कुप्र १७८)।

पालिना न [पादलिनीय] सौराष्ट्र देश का एक प्राचीन नगर, जो ब्राह्मणक भी 'पालितणा' नाम से प्रसिद्ध है (कुप्र १७६)। पालिन्तिआ छी [दे] १ राजधानी। २ मूल-नीची। ३ भण्डार, निवि। ४ मंगी, प्रकार (कम्प)।

पालिय वि [पालिन] रक्षित (ठा १०, महा)।

पालियाय देखो पारिय = पारिजात (पत्र ३०)।

पाछी छी [पाछे] पक्षि, शैलि (गड्ड)। देखो पाछि।

पाली छी [दे] विरा (दे ६, ३७)।

पालीवध पु [दे] तालाव, सरोवर (दे ६, ४५)।

पालीहम्म न [दे] बृद्धि, बाड (दे ६, ४५)।

पालेन पु [पादलेण] पैर में बिया हुआ सेप (पिड ५०३)।

पाव सक [प्र + आप] प्राप्त करना। पावइ (हे ४, २३६)। भवि, पाविहिंसि (पि ३३१)। कर्म पाविजइ (उव)। वक्र, पावत, पावेंत (पिंग, पत्रम १४, ३७)। कवक, पावियंत, पावेज्जमाण (पण १, १, अठ २०)। सक्, पाविउण (पि ५८६)। टैक, पवु, पावेउ (हास्य ११६, महा)।

ऊ, पायणिज्ज, पाविअव्व (सुर ६, १४२, स ६८६)।

पाव देखो पव्याल = प्लाव्। पावेइ (हे ४, ४१)।

पात्र पुन [पाप] १ अशुभ कर्म-मुदगल, कुकर्म (पावा, कुमा ठा १०, प्राप् २५), 'जम्मतवरण पावे पाणी पुहुत्तेण विह्वे' (मण्ड १, ६)। २ पापी, अप्रयमी, कुकर्मी (पण १, १, कुमा ७, ६)। 'कम्म न [कर्मन्] अशुभ कर्म (पावा)। 'कम्मि वि [कर्मिन्] कुकर्म करनेवाला (ठा ७)। 'दठ पु [दण्ड] नरनाल विशेष (देव २६)। 'पाइ छी [प्रवृत्ति] अशुभ कर्म प्रवृत्ति (राज)। 'यारि वि [वारिन्] दुस्तरारी (पत्रम ६३, ४३, महा)। 'समण पु [भ्रमण] ॥ साधु (उत्त १७, १, ४)। 'मुमिण पुन [राम]

दुष्ट स्वप्न (कम्प)। 'सुय न [श्रुत] दुष्ट शास्त्र (ठा ६)।

पाव पु [दे] सर्व, साथ (दे ६, ३८)।

पाव (अप) देखो पत्त = प्राप्त (पिंग)।

पावस वि [पावीयस्] पापी, कुकर्मी (ठा ४, ४—पत्र २६५)।

पावम्प्यालय न [दे, पापक्षालक] देखो पाठम्प्यालय (स ७४१)।

पावग वि [पावक] १ पवित्र करनेवाला (राज)। पु, प्राणि, बहि (सुपा १४२)।

पावग वि [प्रापक] पहुँचानेवाला (सुपा ५००)।

पावग देखो पाव = पाप (पावा, धर्मसं ५४३)।

पावज्जा (भर) देखो पवज्जा (भवि)।

पावडण देखो पाय-वडण = पाय पतन (प्रप्र-कुमा)।

पावडि देखो पारडि (सिदि ११०८, १११०)।

पावण वि [पावन] पवित्र करनेवाला (मण्ड ४७, सपु १५०)।

पावण न [पनावन] १ पानी का प्रवाह। २ सरोवर कला (पिड २४)।

पावण न [प्रापण] १ प्राप्ति, लाभ (सुर ४, १११, उपप ७)। २ योग की एक स्थिति, 'पावणसतीए छिइ मेवसिरमहुलीए सुणी' (कुप्र २७७)।

पावडि देखो पारडि (पर्यवि १४८)।

पावय देखो पात्र = पाप (प्राप् ७४)।

पावय वि [प्रावृत्त] ब्राह्मणवित, डवा हुआ (सुर २, ७, २)।

पावय पुन [दे] बाध विशेष, पुत्रराती में 'पावो' (पत्रम ५७, २३)।

पावय देखो पात्रग = पावक (उप ७२८ टी, कुप्र २८३, सुपा ४, पाप)।

पावयण देखो पययण (हे १, ४४, उवा, लाया १, १३)।

पावयणि वि [प्रयचनिन्] सिद्धांत का जानकार, सिद्धान्त (विद्य १२८)।

पावयणिय वि [प्रायचनिक] ऊपर देखो (सम ६०)।

पावरअ देखो पावरय (स्वप्न १०४)।

पावरण पुं [पावरण] एक म्नेच्छ नाति (मुच्य १५२)।

पावरण न [पावरण] वस्व, वपडा (हे १, १७५)।

पावरिय वि [पावृत] भाग्यादित (कुप्र २८)।
पावस देखो पावस (कुप्र ११७)।

पावा श्री [पावा] नगरो निरोप, जो भावनन श्री विहार के पास पावापुरी के नाम से प्रसिद्ध है (कप्प, लो ३; पंथा १६, १७; पव ३४, विचार ४६)।

पावाड वि [प्रवादित्] काबाड, दारौलिक (सुप्र १, ६, ११)।

पावाइअ नि [प्राज्ञाजिक] संन्यासी (रपण २२)।

पावाइअ वि [प्राज्ञादिक] देखो पावाइ (भाषा)।

पावाइअ } वि [प्राज्ञादिक] बाचाड, दारौ-
पावाडुय } लिक (सुप्र १, १, ३, १३; २, २, ८०; वि २६५)।

पावार पुं [पावार] १ हँदावाला वपडा। २ मोटा कम्बन (पव ८४)।

पावारय देखो पारय = प्रावारक (हे १ २७१; कुमा)।

पावालिया श्री [प्रपापाडिरा] प्रपा या व्याज पर निगुक्त श्री (गा १६१)।

पानामु } वि [प्रसिन्नु, 'क'] प्रवास
पावामुअ } करनेवाला (वि १०५; हे १, ६५; कुमा)।

पाविअ वि [प्राप्त] लप्प, मिला हुआ (सुर १, १६; स ६८६)।

पाविअ वि [प्रापित] प्राप्त करना हुआ (सण, माट—मुच्छ २७)।

पाविअ वि [प्लावित] सरानोर किया हुआ, भूय भिनाया हुआ (कुमा)।

पाविट्ट वि [पापित्त] भयन्त पापी (उप ७२८ टी, सुर १, २१३; ९, २०५; सुपा १६६; पा १४)।

पावीट्ट देखो पायवीट्ट (पठम ३, १; हे १, २७०; कुमा)।

पावीस देखो पावस (वि ४०६, ४१४)।

पावुअ वि [पावृत] भाग्यादित (संति ४)।

पावेजमाग देगो पार = प्र + भाग।

पावेस वि [पावेस्य] प्रवेसोचित, प्रवेश के साथ (धीप)।

पावेस पुं [पावेश] वस्त्र के दोनों तरफ लटकता हँदा (छापा १, १)।

पास सक [हृद्] १ देवता। २ जानना।

पासक, पासेड (कप्प)। पाविमं = 'पर्य' (भाषा १, ३, ३, २)। कर्म. पासिअड (वि ७०)। वट्ट. पासंत, पासमाण (स ७५; कप्प)। संक. पासिडं, पासित्ता, पासित्तार्ण, पासित्था (वि ४६५, कप्प, वि ५८३; महा)।

हेक. पासिसत्त, पासिडं (वि ५८३; ५७७)।

ह. पासियव्व (कप्प)।

पास पुं [पार्य] १ वर्षमान व्यवसिणी-काल के तैर्द्वयं त्रिन-देव (सम १३; ४३)। २ मयवान् पारवर्णाय का वसिष्ठायक यज्ञ (संति ८)। ३ न, कप्पा के नीचे का भाग, पाँवर (छापा १, २६)। ४ समीप, निवट (सुर ४, १७६)। ५ विच्छिन्न वि [पर्यीय]

भगवान् पारवर्णाय की परम्परा में संज्ञात (मग)।

पास पुं [पारा] फोमा, कचन-रज्जु (सुर ४, ३३७; धीप, कुमा)।

पास न [दि] १ भाव। २ दंत। ३ कुल, प्रास। ४ वि. विरोध, नुहील, शोमा-हीन (दि ६, ७५)। ५ पुन. अन्य वस्तु का अल्प-मिथुण, 'निच्छुतो तत्रोलो पायेण विष्णु न होइ जह रंजो' (भाज २)।

*पास वि [पास] अपनद, मिट्ट, जपन्य, नुसित, 'एव पासंविमालो किं वरिसिडं' (धम्मत्त १०२)।

पासंगिअ वि [प्रासङ्गिक] प्रसंग-संबन्धी, आधुनिक (कुम्मा २७)।

पासंड न [पासण्ड] १ पाण्ड, अतस्य धर्म, धर्म का डोम (ठा १०, छाया १, ८, उवा, भाव ६)। २ बत (धणु)।

पासंड वि [पासण्ड, 'क'] १ पासंडिय २ पायंड, लोक में पुनः पाने के लिए धर्म का डोम रखनेवाला (महाति ४; कुप्र २७६, मुगा ६६, १०६, १६२)। २ पु. ब्रह्म, साधु, बुद्धि, 'पण्यए सणपारे पायंडे (३ टी) बरत छावसे सिम्भू। पत्तिपाए य सणपे' (द्वल्लि २—गाथा १६४)।

पासंदण न [प्रस्यन्दन] मरन, उपवना (वह १)।

पासग वि [दूरक] देखनेवाला (भाषा)।

पासग पुं [पाशक] १ काँडा, कचन-रज्जु (उप पु १३; सुर ४, २३०)। २ पाला, जुगा खेतने का उपकरण-विशेष (जं ३)।

पासग न [प्राशक] कला-विशेष (धीप)।

पासण न [प्राशन] भवतोवन, निरोपण (पिठ ७७५; उप ६७७; धीप ५४, सुपा ३७)।

पासणया श्री, ऊपर देखो (धीप ६३; उप १४८; छाया १, १)।

पासणिअ वि [दि] साक्षी (दि ६, ४१)।

पासणिअ वि [प्राशिनक] प्रन-कर्ता (सुप्र १, २, २, २८; धावा)।

पासस्य वि [पार्यस्य] १ पार्य ने स्थित, निकट-स्थित (पठम ६८, १८; स २६७; सुप्र १, १, २, ५)। २ शिथिलाचापे साधु (उप ८३३ टी; छाया १, ५; ६—पव, २०६; सार्थ ८८)।

पासस्य वि [पारास्य] पार में कैडा हुआ, पाणित (सुप्र १, १, २, ५)।

पासल न [दि] १ द्वार (दि ६, ७६)। २ वि. तिर्यक्, वक्र (दि ६, ७६; दि ६, ६२; गठ)।

पासल देखो पास = पार्य (दि ६, १८, गठ)।

पासल सक [तिर्यक्, पार्थाय] १ वक्र होना। २ पार्थ कुमाना, 'पासल्लंति महिहए' (दि ६, ४२)। वट्ट. पासल्लं (दि ६, ४१)।

पासल्लइअ देखो पासल्लिअ (दि ६, ७७)।

पासल्लि वि [पार्थिन्] पार्थ-शयित, 'उत्ताण-गवाज्जी नेमजी भावि टाए ठाट्ठा' (पव ६७, पंथा १८, १५)।

पासल्लिअ वि [पार्थिन्, तिर्यक्] १ पार्थ = किया हुआ। २ टेंका किया हुआ (गठ); वि १६५)।

पासल्लग न [प्रसल्लग] धूत, वेण्डा (पम १०; कप्प, कप्प; उवा, मुगा ६२०)।

पामाइअ देखो पामादाय (पम ११७; उवा)।

पामाकुमुम न [पाशाकुमुम] दुःख-विशेष, 'छपम कम्मपु विविरे पाशाकुमुमि हाव, मा मरुट्ट' (या ८६६)।

पासाण पुं [पापाण] पत्थर (हे १, २६२, कुमा)।
 पासाणिअ वि [दे] सागो (दि ६, ४१)।
 पासाद् देवो पासाय (बीय, स्वप्न २६)।
 पासादिय वि [प्रसादित] १ प्रसाद दिया हुआ। २ न. प्रसाद करना (छाया १, ६—पत्र १६५)।
 पासादीय वि [प्रासादीय] प्रसन्नता-जनक (ववा, बीय)।
 पासादीय वि [प्रसादित] महलयाना, प्रसाद-युक्त (सूत्र २, ७, १ टी)।
 पासाग पुन [प्रासाद्] महत्त्व, हृदय (पात्र, पञ्च ८०, ४)। *यहिसय पुं [चित्तसक] श्रेष्ठ महत्त्व (भाग, बीय)।
 पासाययडसग पुं [प्रासादायतंसक] श्रेष्ठतम महत्त्व, प्रसाद-विशेष (राय ६६)।
 पासासा बी [दे] भली, छोटा माला (दि ६, १५४)।
 पासाय } पुं [दे] गवास, वातायन, ऋषीका
 पासायय } (पद्, दि ६, ४९)।
 पासि वि [पाश्चिन्] पार्श्व, पश्चिमागारे साधु, 'पासिपारिचो' (दंडोय ३५)।
 पासिद्धि देवो पसिद्धि (हे १, ४४)।
 पासिम वि [इरय] दशमीय, ज्ञेय (प्राचा)।
 पासिम देवो पास = इत्थु।
 पासिय वि [पाशिक] फासे में फँसानेवाला (पद् १, २)।
 पासिय वि [रुष्ट] क्रुमा हुआ (भावा—पानिम)।
 पासिय वि [पाशित] पाश युक्त (राज)।
 पासिया बी [पाशिका] छोटा पाश (महा)।
 पासिया देवो पास = इत्थु।
 पासिह वि [पाशिक] १ पास में रहनेवाला। २ पार्श्वस्थ (पत्र २४ वृत्त १३, वग)।
 पासी बी [दे] बूझा, चोटी (दि ६, ३७)।
 पासु देवो पसु (हे १, २८, ७०)।
 पासुत देवो पसुत (गा ३२४, सुर २, ८२ ६, १६८, हे १, ४४, पुत्र २५०)।
 पासेइय वि [प्रत्वेदित] प्रत्वेद-युक्त, पलीना-वाला (भवि)।
 पासेइय वि [पार्थिवत्] पार्थिव्यो, वगल में सोनेवाला (राज)।

पासोअल देवो पासल—विषय। वट्.
 पासोअल (दि ६, ४७)।
 पाद् (भप) सब [प्र + अर्थय] प्राप्तिना बनाना। पार्हस (पि ३५६)।
 पाहंड देवो पासंड (वि २६५)।
 पाहण देवो पाहाण, 'महंत पाहणं तय' (वा १२), 'पठरोणा समतोरा पाहणयदा य निम्मविया' (पर्मवि ३३, महा, भवि)।
 पाहणा देवो पाहणा, 'तैमिच्छ पाहणा पाद्' (दत्त ३, ४)।
 पाहण्य } न [प्राधान्य] प्रधानता, प्रधानपन
 पाहण्य } (प्राप्ति ३२, बीय ७७२)।
 पाहुर सब [प्रा + ह] प्रपन्न से लाना, ले जाना। पाहुरहि (सूत्र, ४, २, ६)।
 पाहुरिय वि [प्राहुरिक] पहेवार (स ५२५, सुपा ११२, ४५५)।
 पाहावय देवो पाभाइय (सुपा ३५, ५५६)।
 पाहाण पुं [पापाण] पत्थर (हे १, २६२, महा)।
 पाहिज देवो पाहेज (पात्र)।
 पाहुड न [प्राभुत्] १ ज्वहार, पाहुड, भेंट (हे १, १३६, २०६, विपा १, ३, बरूर २७, वप्पु, महा, कुमा)। २ जैन ग्रन्था-विशेष, पारिच्छेद, भव्ययन (सुज १, २, ३)। ३ प्राहुत का ज्ञान (कम्म १, ७)। *पाहुड न [प्राभुत्] १ ग्रन्थाय विशेष, प्राभुत का भी एक बय (सुज १, १, २)। २ प्राभुत-प्राभुत का ज्ञान (कम्म १, ७)। *पाहुडस-सास पुन [प्राभुतसमास] अनेक प्राभुत-प्राभुत का ज्ञान (कम्म १, ७)। *समास पुन [समास] अनेक प्राभुत का ज्ञान (कम्म १, ७)।
 पाहुड न [प्राभुत्] १ ज्ञेश, कलह (कस, इह १)। २ इच्छादि के पुरों का भव्याय विशेष (सुप्पु २३४)। ३ सावय नर्म, पाप-क्रिया (पात्रा २, २, ३, १, वव १)। *छेय पुं [च्छेद] बाह्यं धय-अन्य के पुरों का प्रकरण विशेष (वव १)। *पाहुडिआ बी [प्राभुतिका] इच्छादि का प्रकरण विशेष (सुप्पु २३४)।
 पाहुडिआ बी [प्राभुतिका] १ इच्छादि का छोटा भव्याय (सुप्पु २३४)। २ पञ्चैकिक, विलेपन आदि (वव ४)।

पाहुडिआ बी [प्राभुतिका] १ भेंट, ज्वहार (वव ६७)। २ जैन मुनि की शिष्या का एक दोष, विवशित समय से पहले—पन में संनलित भिन्ना, ज्वहार रूप से दी जाती भिन्ना (पचा १३, ५; पत्र ६७, ठा ३, ४—पत्र १५६)।
 पाहुण वि [दे] विज्ञेय, वेबने की वस्तु (दि ६, ४०)।
 पाहुण } पुं [प्राधुग, *क] प्रतिपि, पाहुना,
 पाहुणग } मेहमान (भोपना ५६, सुर ३, ८५,
 पाहुणय } महा, सुपा १३, पुत्र ४२, बीय, कान)।
 पाहुणिअ पुं [प्राधुनिक] प्रतिपि, पहुना, मेहमान (कात्र २२४)।
 पाहुणिअ पुं [प्राधुनिक] प्रह-विशेष, ब्रह्म-पिप्प्राय देव-विशेष (ठा २, ३)।
 पाहुणिज वि [प्राधुनीय] प्रकट संप्रदान, जिसको दान दिया जाय वह (छाया १, १ टी—वव ४)।
 पाहुण्य } न [प्राधुण्य, *क] प्रतिप्य
 पाहुण्यग } प्रतिपि का सत्कार, पहुनाई,
 पाहुण्यय } *कम मंत्रोपे पाहुण्य (एण)गं
 (सुत्र ४२, वव १०११ टी)।
 पाहेज न [पायेय] रास्ते में ध्यय करने की सामग्री, सुसाफिरी में लाने का भोजन (उत्त १६, १८, महा, पनि ७६, गा ६८, सुपा ४२४)।
 पाहेज न [दे. पायेय] ऊपर देखो (दि ६, २४)।
 पाहेणग (दे) देवो पहेणग (पिड २८८)।
 पि देवो अवि (हे २, २१८, स्वप्न ३७ कुमा भवि)।
 पिअ सक [पा] पीना। पिअद (हे ४, १०, ४१६, गा १६१)। मुका, भविदय (भावा)। वट्, पिअंत, पियमाण (गा १३ म, २४६, से २, ५; विपा १, १)। संह पिचा, पेचा, पियऊण (कप्प, उत्त १७, ३, पर्मवि २५), पियविणु (भप) (सण)। प्रयो पियवण (दत्त १०, २)।
 पिअ पु [पिय] १ पवि, कान्त, स्वामी (कुमा)। २ वि. वट्, प्रीति-जनक (कुमा)। *अम पुं [तम] पति, कान्त (गा १६,

कुमा) । 'अमा छी [तमा] पत्नी, भार्या (कुमा) । 'अर वि [कर] श्रीति-जनक (नाट—पिण) । 'वारिणी छी [वारिणी] भगवान् महावीर की माता का नाम, त्रिलला देवी (रूप) । 'गंय पुं [ग्रन्थ] एक प्राचीन जैन मुनि, प्राचार्य सुप्रिय और मुप्रतिपद का एक शिष्य (रूप) । 'जाअ वि [जाय] जिसको पत्नी प्रिय हो वह (या ११८) । 'जाआ छी [जाया] प्रेम-प्राप्त पत्नी (या १६६) । 'दंसण वि [दर्शन] १ जिसका दर्शन प्रिय—श्रीतिचर हो वह (छाया १, १—पत्र १६; जीप) । २ पुं. देव-विरोध (ठा २, ३—पत्र ७६) । 'दंसणा छी [दर्शन] भगवान् महावीर की पुत्री का नाम (भावम) । 'धम्म वि [धर्म] १ धर्म की यद्वा-वाला (छाया १, ८) । २ पुं. यी रामचन्द्र के साथ जैन दोसा लेनेवाला एक राजा (पत्रम ८५, ५) । 'भाउग पुं [आठ] पति का भाई (उप ६४८ टी) । 'भास्ति वि [भाषित] प्रिय-वक्ता (महा ५८) । 'भित्त पुं [मित्र] १ एक जैन मुनि, जो अपने पीछले भ्रम में पंचवर्षा वासुदेव हुआ था (पत्रम २०, १७१) । 'मेलय वि [मेलक] १ प्रिय का मेल—सयोग करनेवाला । २ न. एक तीर्थ (स ५५१) । 'डय वि [युद्ध] जीवित-प्रिय (भाषा) । 'यय वि [यत्त, 'त्यक्त] प्रालम्-प्रिय (भाषा) ।

पिअ देखो पीअ; 'पीमापीम पिमापिम' (प्राप्र, सण, भवि) ।

पिअ देखो पिउ (प्रापु ७६, १०८) । 'हर न [गृह] पिता का घर, पीहर, नेहर, बेका (पत्रम १७, ७) ।

पिअआ देखो पिआ (था १६) ।

पिअइउ (भप) वि [प्रीणयितृ] श्रीति उप-जानेवाला, बुद्ध करनेवाला (भवि) ।

पिअउडिय (भप) देखो पिआ (भवि) ।

पिअंकर वि [प्रियंकर] १ समीप-कर्त, सह-जनक (उत्त ११, १४) । २ पुं. एक चक्रवर्ती राजा (उप ६७२) । ३ रामचन्द्र के पुत्र लव का पूर्व जन्म का नाम (पत्रम १०४, २६) ।

पिअंगु पुं [प्रियङ्गु] १ पुत्र-विरोध, प्रियङ्गु, 'चक्र'दनी का पेठ (पाप्र, जीप; सम १५२) । २ भंङ्ग, मालकान्नी का पेठ, 'प्रियंगुणो भंङ्ग' (पाप्र) । ३ छी. एक छी का नाम (विवा १, १०) । 'लइया छी [ल्यतिका] एक छी का नाम (महा) ।

पिअंथय वि [प्रियंवद] मधुर-भाषी (सुर १, ६५; ४, ११८; महा) ।

पिअंबाइ वि [प्रियवादिन] ऊपर देखो (उत्त ११, १४; मुख ११, १४) ।

पिअण न [दे] दुष, दूष (दे ६, ४८) ।

पिअण न [पान] पीना, 'तुधयनपियणनिरयं' (धर्मवि १२५, मुख ३, १; उप १३६ टी, स २३६; मुवा २४५; चैद्य ५७०) ।

पिअणा छी [धृतना] सेना विरोध, जिसमें २४३ हाथी, २४३ रथ, ७२६ घोड़े और १२१५ प्यारें हो वह सत्कर (पत्रम ५६, ६) ।

पिआमा छी [दे] प्रिययु कृष् (दे ६, ४६, पाप्र) ।

पिआमाह्यो छी [दे] कौकिला, पिकी (दे ६, ५१, पाप्र) ।

पिअय पुं [प्रियरु] बुद्ध-विरोध, विजयनार का पेठ (जीप) ।

पिअर पुन [पितृ] १ माता-पिता, मां-बाप, 'सुणउ निएणममि पियरा', 'पियराई वय-ताई' (धर्मवि १२२) । २ पुं. पिता, बाप (प्राप्र) ।

पिअरअ सक [अञ्ज] भांगना, ठोठना । पिअरअह (प्राप्र, ७४) ।

पिअल (भप) देखो पिअ = प्रिय (पिन) ।

पिआ छी [पिआ] पत्नी, कान्ता, भार्या (कुमा; हेका ६६) ।

पिआमह पुं [पितामह] १ ब्रह्मा, चतुरानन (दे १, १७; पाप्र, उप ५६७ टी, स २३१) । २ पिता का पिता, दादा (उप) । 'तणअ पुं [तनय] ज्ञानवान्, वानर-विरोध (स ४, ३७) । 'त्य न [रु] भद्र-विरोध, ब्रह्माक्ष (स १५, ३७) ।

पिआमही छी [पितामही] पिता की माता-दादी (मुवा ४७२) ।

पिआर (भप) वि [प्रियतर] प्यारा (दुप्र ३२, भवि) ।

पिआरी (भप) छी [प्रियतरा] प्यारी, प्रिया, पत्नी (पिन) ।

पिआल पुं [प्रियाल] बुद्ध-विरोध, पियाल, चिरौनी का पेठ (कुमा, पाप्र, दे ३, २१; पण १) ।

पिआलु पुं [प्रियालु] बुद्ध विरोध, खिरी, खिरनी का माछ (उर २, १३) ।

पियासा देखो पिवासा (ग ८१४) ।

पिइ देखो पीइ; 'तेणं पिइए सिइ' (पत्रम ११, १४) ।

पिइ पुं [पितृ] १ पिता, बाप (उप ७२८ टी) । २ मया-मत्तन का मसिहायक देव (मुख १०, १२, वि ३६१) । 'मेह पुं [मेघ] यज्ञ-विरोध, जिसने बाप का होम किया जाय वह यज्ञ (पत्रम ११, ४२) । 'वग न [वन] श्मशान (मुवा ३५६) । 'हर न [गृह] पिता का घर, पीहर (पत्रम १८, ७; सुर ६, २३६) । देखो पिह ।

पिइल पुं [पितृव्य] बाबा, बाप का भाई, 'सुपावो कीरजिएपिइवो (?) एज' (विचार ४७८) ।

पिइय वि [पैटृक] पिता का, पितृ-संबन्धी (भप) ।

पिउ पुं [पु] १ बाप, पिता (सुर १, पिउअ १ ७७६, जीप, उप; दे १, १११) । २ पुं. मां बाप, माता पिता, 'भमनया मह पिऊणि नामं पत्ताई' (धर्मवि १४७ मुवा ३२६) । 'कम्म पुं [कम्म] पितृ-वध, पितृ-मुल (कुमा) । 'डुल न [कुल] पिता का वंश (वह) । 'घर न [गृह] पिता का घर, पीहर (मुवा ६०१) । 'छड़ा, 'छड़ी छी [प्यस] पिता की बहिन, क्रूपा, दूधा, पुष्प (या ११०; दे २, १४२; पाप्र; छाया १, १६) । 'कोति पिउति (?) जिउ सक्करेई' (छाया १, १६—पत्र २१६) । 'पिंड पुं [पिण्ड] मृतक-भोजन, प्राद में दिया जाता भोजन (भाषा २, १) । 'भमिणी छी [भमिनी] कूखें, पिता की बहिन (सुर ३, ८२) । 'यइ पुं [पति] यम, यमराज (दे १, १३४) । 'यण न [वन] श्मशान (पत्रम १०५, ५१, पाप्र, दे १, १३४) । 'सिआ छी [प्यस] भूरी (हे

२, १४२; कुमा) °सेणरुण्हा छो [°सेन-
कृष्णा] राजा धेरिक की एक पत्नी (घंत
२५)। °स्सया देखो 'सिआ (विपा १,
३—पन ४१)। °हर देखो 'घर (सुर १०,
१६; मवि)।

पिउअ देखो पिइय (राज)।

पिउआ छो [दे-पिउण्वत्] फूफो, पिता की
बहिन (पद्)।

पिउआ छो [दे] सखी, बयस्या (पद् १७५;
पिउच्छा १२१०)।

पिउली छो [दे] १ कपास, कपास। २ तूल-
सतिका, रुई की सूनी (दे ६, ७८)।

पिउल देखो पिउ (हे २, १६४)।

पिउार पुं [अपिकार] १ 'अपि' शब्द। २
अपि शब्द की व्याख्या (ठा १०—पन
४६५)।

पिउा छो [प्रेहा] हिडोला, बोला (पाम)।

पिउोल सब [प्रेलेख्य] झूलना। वड़,
पिउोलमाण (राज)।

पिंग देखो पंग = पङ्ग (हुमा ७, ४६)।

पिंग पुं [पिङ्ग] १ कपिसा बणें, पीत बणें।
२ वि. पीला, पीत रंग का (पाम, हुमा,
एमि १४)। ३ पुंछी. कपिजल पत्ती। छो,
°गा (सम १, ३, ४, १२)।

पिंगां पुं [दे] मरंड, मन्दर (दे ६, ४८)।

पिंगल पुं [पिङ्गल] १ नील-पीत बणें। २
वि. नील-मिश्रित पीत-बणेंवाला (हुमा, ठा
४, २, बी५)। ३ पुं. ग्रह विरोध (ठा २,
३)। ४ एव यश (मिदि ६६६)। ५ चक्र-
बर्त्ता का एर निधि. भानूपयो की वृत्ति करने-
वाला एर निपा (ठा १; उर ६८६ दो)। ६
हृण्य उदात्त-निधेय (सुग्ग २०)। ७
प्राइत-पिंगल का बर्त्ता एव बवि (पिंग)। ८
एव जैन उपासक (भग)। ९ न. प्राइत का
एक द्युत संघ (पिंग)। °कुमार पुं [°कुमार]
एक राजकुमार, जिसने भगवान् सुपारवनाय
के समीप दोसा की की (हुमा ६६)। °बख
वि [°ख] १ नीलो-नीली धातुवाला (ठा
४, २—पन २०८)। २ पुं. बर्त्ता-विरोध
(पद् १, १; बी५)।

पिंगलयण न [पिङ्गलायन] १ भोज-विरोध,
जो कौत्स भोज की एक शाखा है। २ पुंछी.
उस भोज में ऊपर (ठा ७)।

पिंगलिअ वि [पिङ्गलिअ] नीला-नीला किया
हुमा (से ४, १८; बउठ, सुपा ८०)।

पिंगलिअ वि [पेङ्गलिअ] पिंगल-संबन्धी
(पिंग)।

पिंगा देखो पिंग।

पिंगावण न [पिङ्गवन] मद्या-नस्न का भोज
(इक)।

पिंगिअ वि [गृहीत] ग्रहण किया हुमा
(हुमा)।

पिंगिम पुंछी [पिङ्गिमन्] पिंगठा, पीतापन
(गउड)।

पिंगीकय वि [पिङ्गीकन] पीता किया हुमा,
'पाणयणुसुतिणिगुण्णकपिगीकय ज्' (सदुम
७)।

पिंगुल पुं [पिगुल] पलि-विरोध (पण्ड १,
१—पन ८)।

पिंचु पुंछी [दे] पक्क करीर, पक्का करील
(दे ४, ४६)।

पिंछ } देखो पिच्छ (भाचा, गउड, सुपा
पिंछड ६४१)।

पिंछी छो [पिच्छी] साधु का एक उपकरण,
'नावि सेइ जिणा पिंछी (पिंछि)' (विचार
१२८)।

पिछोटी छो [दे] पुंछ के पवन से बनावी
जाता सुण-अय वाद्य-विरोध (दे ६, ४७)।

पिंअ सक [पिअ] बीजना, रुई का धुना।
वड़. पिंजैत (पिं ५७४; बी५ ४६८)।

पिंअय न [पिअन] बीजना (पिं ६०३,
दे ७, ६१)।

पिंअर पुं [पिअर] १ पीत-रक्त बणें, रक्त-
पीत मिश्रित रंग। २ वि. रक्त-पीत बणें-
वाला (गउड, सुपा १०७)।

पिंअर सक [पिअरय] रक्त-मिश्रित पीत-
बणेंशुक्र करना। वड़. पिंअरयंत (पउम
६२, ६)।

पिंअरण न [पिअरण] रक्त-मिश्रित पीत-
बणेंवाला करना (पण)।

पिंअरिअ वि [पिअरिअ] पिंअर बणेंवाला
किया हुमा (हम्मीर १२, गउड, सुपा
३२४)।

पिंअरुठ पुं [दे] पलि-विरोध, माल्टड पत्ती,
जिसे के मुंह होते हैं (दे ६, २०)।

पिंअिअ वि [पिअिअ] बीजा हुमा (दे ७,
६४)।

पिंअिअ वि [दे] विधुत (दे ६, ४६)।

पिंड सक [पिण्डय्] १ एकत्रित करना,
संलिष्ट करना। २ मक. एकत्रित होना,
मिलना। पिंदेह, पिंडयय (उव, पिंड ६६)।
संझ. पिण्डिऊण (हुमा)।

पिंड पुं [पिण्ड] १ कठिन द्रव्यो का संरलेय
(पिएमा २)। २ समूह, सघात (बी५
४०७, जिसे ६००)। ३ वृद्ध वगैरह की बनी
हुई मोत वस्तु, बर्तुलाकार पदार्थ (पण्ड २,
५)। ४ मिला में मिलता आहार, मिठा
(उव, ठा ७)। ५ देह का एक देश। ६ देह,
शरीर। ७ घर का एक देश। ८ द्रव्य का
गोला जो पितरो के उडेर से दिया जाता है।
९ कय-अय विरोध, सिद्धक। १० जपा-
पुण्य। ११ कवल, प्राप्त। १२ गज-कुम्भ।
१३ मदनक वृक्ष, दमनक का पेड़। १४ न.
भावीविक्र। १५ लोहा। १६ भाउ, पितरो
को दिया जाता दान। १७ वि. संतुष्ट। १८
पन, निविड (हे १, ८५)। °कपिअ वि
[°कलिपक] सर्वथा निर्वोप निशा लेनेवाला
(वव ३)। °गुला छो [°गुल] ठुड-विरोध,
बहुत का विचार-विरोध, रककर बतने के
पहले की अवस्था-विरोध (पिंड २८३)। °घर
न [°गृह] बर्त्तन से बना हुमा घर (वव ४)।
°थ्य पुं [°स्थ] जिन भगवान् की अवस्था-
विरोध, 'न पिंथयययथाकायंतस्मावणा सम' (संनोय २)। °थ्य पुं [°थ्य] समुदायार्थ
(राने)। °दाण न [°दान] पिण्ड देने की
क्रिया, श्राद्ध (परमि २६)। °पयडि छो
[°प्रयति] भगवान् भेदवाची प्रयति (भम्म
१, २५)। °वडण न [°वर्धन] आहार-वृद्धि,
कवल-वृद्धि, धन प्राप्ति (मंत)। यद्धा-
यण = [°यधेन] आहार बढ़ाना (मीर)
°वाय पुं [°पात] मिला-साम, आहार-आति
(ठा ५, १०. बउड)। °वास पुं [°वास]
गुदभन (भव)। °विसुदि, °विसोदि छो
[°विशुदि] मिठा की निर्वोपता (संत:
भोपमा ३)।

पिंडग पु [पिण्डक] ऊपर देखो (वस) ।

पिंडग न [पिण्डन] १ द्रव्यों का एवम संरलेय (पिंडमा २) । २ ज्ञानावरणोपाधि कर्म (पिंड ६६) ।

पिंडगा श्री [पिण्डना] १ समूह (शोध ४०७) । २ द्रव्यों का परस्पर संयोजन (पिंड २) ।

पिंडय देखो पिंड (शोधमा ३३) ।

पिंडरय न [दे] दाडिम, भनार (दे ६, ४८) ।

पिंडलइय वि [दे] पिएडीइल, पिएडाकार बिया हुआ (दे ६, ५४, पाम) ।

पिंडलग न [दे] पटलक, पुण्ड का भाजन (ठा ७) ।

पिंडमाइअ वि [पिण्डपातिक, पेण्डपातिक] भक्त-लाभवाला जिसको मित्रा में आहार की प्राप्ति हो वह (ठा ५, १, वस, शोध, प्राक ६) ।

पिंडार पु [पिण्डार] गोप, गवाला (मा ७३१) ।

पिंडाल पु [पिण्डाल] कन्द विशेष (आ २०) ।

पिंडि देखो पिंडी (भाग, राया १, १ टी—पत्र ५) ।

पिण्डिम वि [पिण्डिम] १ पिएड से बना हुआ, बहल (पएह २, ५—पत्र १५०) । २ पुत्रन-समूहक, संघाताकार (छाया १, १ टी—पत्र ५, शोध) ।

पिण्डिय वि [पिण्डित] १ एकत्रित, इकट्ठा किया हुआ (सुधनि १४०, पचा १४, ७, महा) । २ गुणित (शोध) ।

पिण्डिया श्री [पिण्डिका] १ पिएडी, पिंडली, जानू के नीचे का मांसल भयव (महा) । २ धनुंलाकार वस्तु (शोध) । देखो पिंडी ।

पिंडी श्री [पिण्डो] १ बुन्नी, कुच्छा (शोध, भाग, राया १, १; उप द्र ३६) । २ घर का आचार-भूत काष्ठ विशेष, पीड़ा, 'विचण्डि-यपिंडोवसविपरिल विवातणिम्मोमा' (गउड) । ३ धनुंलाकार वस्तु, गोला, 'पिण्डाणपिंडी' (सूय २, ६, २६) । ४ बहुरूप-विशेष (माट—शकु ३३) । देखो पिण्डिया ।

पिंडी श्री [दे] मज्जरी (दे ६, ४७) ।

पिंडीर न [दे. पिण्डीर] दाडिम, भनार (दे ६, ४८) ।

पिण्डेसणा श्री [पिण्डेपणा] मित्रा ग्रहण करने की रीति (ठा ७) ।

पिण्डेसिय वि [पिण्डेपिक] मित्रा की खोज करनेवाला (भाग ६, ३३) ।

पिण्डोलाय वि [पिण्डोलायक] मित्रा से पिण्डोलाय निर्वह करनेवाला, मित्रा का पिण्डोलाय प्राप्ति, मित्रु (पामा, उत्त ५, २२, सुख ५, २२, सूय १, ३, १, १०) ।

पिण्ड (भय) सक [पि + घा] डकना । पिण्ड (पिग) । सक. पिण्ड (पिग) ।

पिणध (भय) न [पिधान] डकना (पिग) ।

पिंसुली श्री [दे] डूँह से पवन भरकर बजाया जाता एक प्रकार का तुल्य वाद्य (दे ६, ४७) ।

पिक पुं श्री [पिक] कोविल पत्नी (पिग) । श्री. 'की (दे ६, ५१) ।

पिक देखो पक = पवन (दे १, ४७, पाम, मा १६५) ।

पिकख सक [प्र + ईक्ष] देखना । पिकख (शवि) । वड. पिकरत (शवि) । क. पिकखेयव्य (सुर ११, १३३) ।

पिकरमा वि [प्रेक्षक] निरीक्षक, द्रष्टा (श्री १०, धर्मनि १५) ।

पिकरण न [प्रेक्षण] निरीक्षण (राज) ।

पिकरय वि [प्रेक्षित] दृष्ट (पि ३६०) ।

पिग देखो पिक (कुमा) ।

पिचु पु [पिचु] कार्पास, रुई (दे ६, ७८) ।

पिला श्री [लिता] पुनी, रुई की पुनी (दे ६, ५६) ।

पिचुमद पु [पिचुमन्द] मित्र वृष, नीम का पेड़ (मोह १०३) ।

पिषा ॥ [पिष] पर लोक, आगामी जन्म पिषा ॥ (आ १४, सुपा ५०६, सूय १, १, ११) । देखो पेष्ठा ।

पिषा देखो पिअ = पा ।

पिषिय वि [दे पिषिन] कूटी हुई छान (ठा ५, ३—पत्र ३३८) ।

पिच्छ सक [टश, प्र + ईक्ष] देखना ।

पिच्छ, पिच्छवि, पिच्छ (वष, प्रासू १६०, ३३) । वड. पिच्छत, पिच्छमाण (सुपा ३४६, शवि) । कवड. पिच्छजमाण (सुपा ६२) । सक. पिच्छज, पिच्छऊग (प्रासू ६१, शवि) । क. पिच्छणिज (वष, पुर १३, २२३, रयस १६) ।

पिच्छ न [पिच्छ] १ पत्र वा भयव, पत्र का हिस्सा (उवा, पाम) । २ मयूर-पिच्छ, शिखर (छाया १, ३) । ३ पत्र, पौल (उप ७६८, टी, गउड) । ४ पूर्व, लागूल (गउड) ।

पिच्छन न [प्रेक्षण] १ दर्शन, भवतांजन (आ १४, सुपा ५५) ।

पिच्छण ॥ न [प्रेक्षण, 'क] तमारा, खेल, पिच्छणय ॥ माटक, 'पारदं पिच्छण तहि तारं' (सुपा ५८५), 'तो जवणियदिउईहि पिच्छं भतेउरपि पिच्छणम' (सुपा २००) ।

पिच्छल वि [पिच्छल] १ स्निग्ध, स्नेह-युक्त । २ मछल (सण) ।

पिच्छा श्री [प्रेक्षा] निरीक्षण । 'भूमि श्री [भूमि] रंग मएव, रंगमंच (पाम) ।

पिच्छि वि [पिच्छिन्] पिच्छवाला (शोध) ।

पिच्छिर वि [प्रेक्षिण] प्रेक्षक, द्रष्टा, देखने-वाला (सुपा ७८, कुमा) ।

पिच्छिल वि [पिच्छिल] १ स्नेह-युक्त, स्निग्ध । २ मछल, चिकना (गउड, हास्य १४०, दे ६, ४६) ।

पिच्छिली श्री [दे] सज्जा, शरम (दे ६, ४७) ।

पिच्छी श्री [दे] बूझा, कोटी (दे ६, ३७) ।

पिच्छी श्री [पिच्छिना] पीछी (पा ५२२) ।

पिच्छी श्री [पृष्णी] १ दुबकी, बरिनी, बरती (कुमा) । २ बगी इलायची । ३ पुनर्वा । ४ कण्य पीरक । ५ हिउपनी (दे १, १२८) ।

पिच्छोला श्री [दे] वीन बजाने की बकिना (सूय ८०, पु १५६) ।

पिज सक [पि] पीना । पिजग (दे ५, १०) । क. पिजणिज (कुमा) ।

पिज पुन [प्रेमक] प्रेम, मयुराण (सूय १, १६, २, कप) ।

पिज देखो पो = पा ।

पिजवि ॥ पोया ॥ यवाण (पिंड ६२४) ।

पिजाविअ वि [पायित] जिसको पान कराया गया हो वह (सुख २, १७) ।

पिट्ट सक [पीडय] पीड़ा करना । पिट्टति (सूय २, २, ५५) ।

पिट्ट सक [अश] नोचे गिरना । पिट्ट (पट्ट) ।

पिट्ट सक [पिट्टय्] पीटना, ताडन करना ।
पिट्टइ पिट्टइ (भाचा पिग गा १७१, छिरि ६५५) । वक्क पिट्टत (पिय) ।

पिट्ट न [दे] पेट, उदर (पचा ३, १६, चर्मवि ६६ वेइय २३८, कर २६ सुपा ५६३, से २१) ।

पिट्टण न [पिट्टन] ताडन आघात (सूप २, २, ६२ पिड ३४ परह १ १, औप ५६६ छप ५०६) ।

पिट्टण न [पीडन] पीडा, श्लेश (सूप २, २, ५५) ।

पिट्टणा औ [पिट्टन] ताडन (औप ३१७) ।
पिट्टायणया औ [पिट्टना] ताडन कराना (मय ३, ३—पन १८२) ।

पिट्टिय वि [पिट्टित] पीटा हुआ, ताडित (सुख २, १५) ।

पिट्ट न [पिट्ट] सण्डुल भादि वा भाटा, कूएँ (छाया १, १, ३, दे १ ७८, गा ३८८) ।

पिट्ट न [पुट्ट] पीठ, शरीर के पीछे का हिस्सा (औप उव) ।

ओ म [तस्] पीछे से, पुष्ट भाग से (उवा विपा १ १, औप) । *करहण न [करण्डक] पुष्ट वरा पीठ की बनी हुई (हंडु ३५) । *वर वि [वर] पुष्ट-गामी, भद्रगामी (कुमा) । देखो पिट्ठि ।

पिट्ट वि [सुष्ट] १ छुपा हुआ । २ न स्वयं (वव १५७) ।

पिट्ट वि [पुष्ट] १ पूछा हुआ । २ न प्ररन प्रश्नार्थ, नैपथि विरुधं ए जपवे पिट्ट (गा ६५३) ।

पिट्ट न न [दे] प्रश्नार्थ] गुदा, गोंड (दे ६, ४६) ।

पिट्टरउरा औ [दे] पङ्क-सुरा, वज्रुप मदिरा (दे ६, ५०) ।

पिट्टरउरिआ औ [दे] मदिरा दाह (पाम) ।

पिट्टउय वि [प्रष्टव्य] पूछन योग्य नियम-रक्षोदेवि निरये कि पिट्ठि (७७) ज्वा (रंजा) ।

पिट्टायय पुंन [पिष्टातक] बेसर भादि गण-द्रव्य (गड्ड ३ ७३४) ।

पिट्ठि औ [पुष्ट] पीठ शरीर के पीछे का भाग (दे १, १२६ छाया १, ६, रमा,

कुमा पड) । *ग वि [ग] पीछे चलनेवाला (धा १२) । *चम्पा औ [चम्पा] चम्पा नगरी के पास की एक नगरी (कम्प) । *मस न [मास] परोप में त्रय के दोष का कीर्तन *पिट्ठिमसं न खाइज्वा' (दव ८, ४७) । *मसिय वि [मासिक] परोप में दोष बोलनेवाला, पीछे निन्दा करनेवाला (मय ३७) । *भाइया औ [मातृका] एक अनुत्तर-गामिनी औ 'चदिमा पिट्ठिमाइया' (भनु २) । देखो पिट्ट = पुष्ट ।

पिट्ठि औ [पिष्टी] भाटा की बनी हुई मदिरा (वह २) ।

पिड पुं [पिट] १ वरा-पन भादि का बना हुआ पात्र विशेष । २ बन्ना धरोपगता जा ताव तेण अणिय २२ २२ बाल मद्द विडे पडिओ (सुपा १७६) ।

पिडग देखो पिडय = पिटक (औप, उवा, सुज १६) ।

पिडच्छा औ [दे] सखी (दे ६, ४६) ।

पिडय न [पिटक] १ वराभय पात्र विशेष, भोग्यणि (७ वि) डम करेवि' (छाया १, १—पन ८६) । २ दो चत्र और दो सुयों का समूह (सुज १६) ।

पिडय वि [दे] भाविन (पड) ।

पिडय सक [अर्ज] पैदा करना उपार्जन करना । पिडवड (पड) ।

पिडिआ औ [पिटिका] १ वरा मय भोजन विशेष (दे ५, ७, ६, १) । २ छोटी मज्जूपा पेटी, पिठारी (उप ५८७ ५६७ टी) ।

पिट्ट सक [पीडय्] पीडना । पिट्टइ (भाचा (वि २७६) ।

पिट्ट अक [अंश] पीचे गिरना । पिट्टइ (पड) ।

पिट्टइअ वि [दे] प्रशात (पड) ।

पिट्ट म [पुष्टक] भक्षण, जुदा (पड) ।

पिट्टर पुन [पिटर] १ भोजन विशेष, स्थाली (पाम, भाया, कुमा) । २ गृह विशेष । ३ सुस्ता मोमा । ४ मयान दहक मयनिया (दे १, २०१, पड) ।

पिणद्ध सक [पि + नह, पिनि + धा] १ डबना । २ पहिनना । ३ पहिराना । ४

बांधना । पिणद्ध, पिणद्धे (वि ५५६) । हेऊ, पिणद्धू, पिणद्धित्तए (अमि १८५, राज) । पिणद्ध वि [पिनद्ध] १ पहना हुआ (पाम, औप, गा ३२८) । २ बद्ध मन्त्रित (राय) । ३ पहनाया हुआ निगमठोवि पिणद्धो तस्स सिरे रयणचिचओ' (सुपा १२५) ।

पिणद्धाविद (ही) वि [पिनिधापित] पहनाया हुआ (नाट—शकु ६८) ।

पिणाइ पु [पिनाकिन] महादेव, शिव (पाम गड्ड) ।

पिणाई औ [दे] मामा, मायेरा (दे ६, ४८) ।

पिणाग पुन [पिनाक] १ शिव धनुष । २ महादेव का शूलछ (धर्मवि ३१) ।

पिणागि देखो पिणाइ (धर्मवि ३१) ।

पिणाय देखो पिणाग (गड्ड) ।

पिणाय पु [दे] बलाकार (दे ६, ४६) ।

पिणिद्ध वि [पिनद्ध, पिनिहित] देखो पिणद्ध = पिणद्ध (परह २, ४—पन १३०, कप, औप) ।

पिणिघा सक [पिनि + घा] देखो पिणद्ध = पि + मह् । हेऊ पिणिघत्तए (औप, पि ५७८) ।

पिण्णारा देखो पिन्नाग (राज) ।

पिण्णया औ [दे] पिण्यका] गण-द्रव्य विशेष, व्यामन, गण-दण (उत्तनि ३) ।

पिण्णो औ [दे] कामा कुश औ (दे ६, ४६) ।

पित्त पुंन [पित्त] शरीर स्थित बाहु विशेष, तिर बाहु (मा उव) । *ज्जर पु [ज्जर] पित्त ही होता बतार (छाया १, १) ।

*सुच्छा औ [भूच्छा] पित्त की प्रवृत्त से होनवाली वेदोयो (पडि) ।

पित्तल न [पित्तल] बाहु विशेष, दोतल (सुप्र १४४) ।

पित्तज्ज पु [पिट्ठव्य] बाचा, पित्त का पित्तिय } माई (कप सम्यत १७२, सिदि २६३ धर्मवि १२७, स ४६५, सुपा ३३४) ।

पित्तिय वि [पैतिक] पित्त का, पित्त संबधी (सुदु १६, छाया १, १ औप) ।

पिघ म [पुष्टक] भक्षण, जुदा (दे १, १८८ कुमा) ।

पिघाण देखो पिहाण (नाट—विरू १०३) ।

पिन्नाग पु [पिण्णाय] सखी, तिल भादि पिन्नाय } का तेल निजाल लेनेपर की उसका

भाग बचना है वह (सूत्र २, ६, २६, २, १, १६, २, ६, २८) ।

पिपीलिज पुं [पिपीलिक] कौट-विशेष, चीन्टी (कण्) ।

पिपीलिआ } की [पिपीलिआ] चीटी,
पिपीलिआ } चीन्टी (पण्ड १, ६, जो १६,
छाया १, १६) ।

पिप्पड सक [दे] बडबडाना, जो मन में आवे
तो बकना । पिप्पड (दे १, ५० टी) ।

पिप्पडा की [दे] ऊर्ण-पिपीलिका (दे ६,
५८) ।

पिप्पडिअ वि [दे] १ जो बडबडाना हो । २
न. बडबडाना, निरर्थक उल्लास, बकवाद (दे
६, ५०) ।

पिप्पय पु [दे] १ मशक (दे ६, ७८) । २
पिशाच, भूत (पात्र) । ३ वि. उन्मत्त (दे ६,
७८) ।

पिप्पर पुं [दे] १ हस । २ कुपन (दे ६,
७६) ।

पिप्परी की [पिप्परी] पीपर का गाछ
(पण्ड १) ।

पिप्पल पुन [पिप्पल] १ पीपल वृक्ष,
शरबल (उ १०३१ टी, पात्र, हि १०) ।
२ छुरा, छुरक (विपा १, ६—पत्र ६६,
मोप ३५६) ।

पिप्पलगा वि [पिप्पल] पीपल के पान का
बना हुआ (भाषा २, २, ३, १४) ।

पिप्पलि } की [पिप्पलि, 'ली] शोपवि-
पिप्पली } विशेष, पीपर, 'महुन्पिपलिसुह'ई
मणैगहा साहम होह' (पचा ५, ३०; पण्ड
१७) ।

पिप्पिडिअ देखो पिप्पडिअ (पण्ड १) ।

पिप्पिया की [दे] दौध का मेल (छादि) ।

पिप् देखो पिअ = पा । पिपासो (वि ५८३) ।
सह. पिपित्ता (भाषा) ।

पिप्प न [दे] जल, पानी (दे ६, ५६) ।

पिप्प पुं [पिप्प] प्रेम, प्रीति, मनुष्य (पात्र,
सुर २, १७२, रमा) ।

पिप्पाल पु [पिप्पाल] १ वृक्ष विशेष, खिरनी
का पेड़ । २ न. फल विशेष, खिरनी, खिनी
(सत ५, २, २५) ।

पिपास (मप) की [पिपासा] व्यास (मवि) ।

पिपिरी की [दे] शकुनिका, पिपिया (दे ६,
५७) ।

परिपिरिया देखो परिपिरिया (राज) ।

पिरिलो की [पिरिलो] १ गुच्छ विशेष,
बसन्ति-विशेष (पण्ड १) । २ वायु-विशेष
(राज) ।

पिल देखो पील । कर्म. पिलिजइ (गाट) ।

पिल्लु } पुं [पिल्लु] १ वृक्ष विशेष,
पिल्लु } पित्तवृक्ष, पाकड़ का पेड़ (सम
१५२; मोप २६, पि ७४) । २ एक तरह
का पोषक वृक्ष, 'पिल्लु पिप्पसमेदो' (विद्व
३) ।

पिल्लन न [दे] पिच्छिन देश, चिकनी जगह
(दे ६, ५६) ।

पिल्ला देखो पीला (पि २२६) ।

पिलगम न [पिटक] कोडा, कुन्नी (सूत्र १,
३, ४, १०) ।

पिल्लु देखो पिल्लु (विचार १५८) ।

पिल्ला की [पिल्ला] अग-विशेष, पिलही,
तिल्ली (वदु ३६) ।

पिल्लुअ न [दे] वृक्ष, छीक (पण्ड १) ।

पिल्लु } देखो पिल्लु (वि ७४, पण्ड
पिल्लुकर } १—पत्र ३६) ।

पिल्लु देखो पिल्लु (भाषा २, १, ८, ३) ।

पिल्लु वि [पिल्लु] बग (हे २, १०६) ।

पिल्लेस पुं [पिल्लेस] बाढ़, बहल (हे २, १०६) ।

पिल्ले देखो पिल्ले = पिल्लु । पिल्ले (अदि) ।

पिल्ल सक [अ + ईरय] १ प्रेरणा करना ।

२ प्रवृत्त करना । पिल्लेइ (सव १) ।

पिल्लन न [दे] पत्ती का बंधा ।

पिल्लन न [पिल्लन] प्रेरणा (अ ३) ।

पिल्लगा की [पिल्लगा] प्रेरणा (कण्) ।

पिल्लि की [दे] मान विशेष (सदा ६) ।

पिल्लिअ वि [पिल्लिअ] फेला हुआ (पात्र, मवि,
कुमा) ।

पिल्लिअ वि [पिल्लिअ] जिसको प्रेरणा की गई
हो वह (कुमा ३६१) ।

पिल्लिरी की [दे] १ वृक्ष-विशेष, मण्डू वृक्ष ।

२ बीरी, कौट विशेष । ३ धर्म, पत्नी (दे
६, ७६) ।

पिल्लु (दे) देखो पिल्लुअ (सव २) ।

पिल्ल न [दे] छोटे पत्ती के तुल्य (दे ६,
५६) ।

पिव देखो इव (हे २, १८२, कुमा, महा) ।

पिव सक [पा] पीना । पिवइ (पिण) । भूका-
अपित्त्या (भाषा) । कर्म. पिबोमति (पि
५३६) । सह. पिविअ, पिविइसा,

पिवित्ता (गाट, ठा ३, २, महा) । हेह-
पिनिअ, पिवित्तर (भाष ५२, मोप) ।

पिवग देखो पिवण = (दे) (मवि) ।

पिवासय वि [पिपासक] पीने की इच्छा-
वाला (मग—मल्य) ।

पिवासा की [पिपासा] व्यास, पीने की
इच्छा (मप, पात्र) ।

पिवासिय वि [पिपासित] वृषित (सवा,
दे. . .) ।

पिबीलिआ देखो पिपीलिआ (उज, व ५२०,
भा ५६) ।

पिब्व देखो पिब्व (पण्ड १) ।

पिस सक [पिप्] पीसना । पिसइ (पण्ड १) ।

पिसग पुं [पिसग] १ पिंगल बर्ण, मडिवाप
रंग । २ वि. पिंगल बर्णवाला (पात्र, कुप्र
१०५, ३०६) ।

पिसडि [दे] देखो पसडि (मुपा ६०७, कुप्र
६२, १५५) ।

पिसडि पुं [पिसाच] पिशाच, अन्तर-योनिज
देवों की एक जाति (हे १, १६३, कुमा
पात्र, उर २६४ टी, ७६८ टी) ।

पिसाजि वि [पिसाचिन्] नृवाविष्ट (हे १,
१७५, कुमा, पण्ड, वट) ।

पिसाय देखो पिसल (हे १, १६३, पण्ड १,
४, महा छक) ।

पिसिअ न [पिसिअ] मोस (पात्र, महा) ।

पिसुअ पुं की [पिशुक] क्षुद्र कौट-विशेष ।
की 'या (राज) ।

पिसुण सक [कयय] बहना । पिसुणइ,
पिसुणोइ, पिसुणवि, पिसुणेंवि, पिसुणमु (हे
५, २, भा ६८५, मुर ६, १६९, भा ५५६;
कुमा) ।

पिसुण पुं [पिशुन] खल, दुर्जन, पर-निन्दक,
कुलखोर (सुर ३, १६, प्राप् १८; भा
३७७, पात्र) ।

पिसुणिअ वि [कथित] १ कहा हुआ । २ सूचित (सुपा २३, पात्र, कुप्र २७८) ।

पिसुमय (वि) पु [विश्रमय] आशय (प्राक १२४) ।

पिह सक [समुह] इच्छा करना, चाहना ।

पिहाइ (भग ३, २—पत्र १७३) । संज्ञ. पिहाइत्ता (भग ३, २) ।

पिह वि [पृथक्] मिल, जुग, 'विहणिहाण' (विसे ८४८) ।

पिहं अ [पृथक्] मतलब (हे १, १३७, पङ्) ।

पिहंड पु [दे] १ वाहन-विशेष । २ वि. विवरण (दे ६, ७६) ।

पिहंड देखो पिढर (हे १, २०१, कुमा, जवा) ।

पिहण न [विधान] १ ढकन, विहान (सुर १६, १६५) । २ ढकना, भाषावाचन (पचा १, ३२, सवोष ४६, सुपा १२१) ।

पिहणया लो [विधान] भाषावाचन, ढकना (स ५१) ।

पिहय देखो पिह = पृथक् (कुमा) ।

पिहा सक [पि + धा] १ ढकना । २ बँद करना । पिहाइ (भग ३, २) । संज्ञ. पिहाइत्ता, पिहिकण (भग ३, २, महा) ।

पिहाण देखो विहण (ठा ४, ४, एन २४, कण) ।

पिहाणिआ लो [पिधानिका] ढकनी (पात्र) ।

पिहाणी लो [पिधानी] ऊपर देखो (दे) ।

पिहिल वि [पिहित] १ ढका हुआ । २ बँद किया हुआ (पात्र, कण, ठा २, ४—पत्र १६६, सुपा ६३०) । 'सम वि [सम] १

सितने भाव्य के रोता हो (रस ४) । २ पु. एक जैन मुनि का नाम (पत्रम २०, १८) ।

पिहिल देखो पिहण, 'माणवले पेववले पिहिले वणएल मच्छरे वेव' (पा ३०, पङि) ।

पिहिमि* (भग) लो [पृथिवी] भूमि, धरती ।

*माल पुं [माल] राजा (नीब) ।

पिहोकर वि [पृथक्कृत] भगन किया हुआ (पिङ ३६१) ।

पिहु वि [पुय] १ विस्तीर्ण (कुमा) । २ पु. एक राजा का नाम (पत्रम ६८, ३४) ।

*रोम पुं [रोम] मील, मत्स्य (दे ६, ५० दी) ।

पिहु देखो पिह = पुयक (सुर १३, ३६, सण) ।

पिहु* देखो पिहुय; 'पिहुएज्ज ति नो वए' (रस ७, ३४) ।

पिहुंड पुं [पिहुण्ड] नगर-विशेष (उत्त ३१, २) ।

पिहुण [दे] देखो पेहुण (माचा २, १, ७, ६) । 'हृत्य पुं [हस्त] मयूर-पिच्छ का

किया हुआ पंखा (माचा २, १, ७, ६) ।

पिहुत्त देखो पुहुत्त (बंदु ४) ।

पिहुय पुंन [पुयुक] साव विशेष, बिडवा (माचा २, १, १, ३, ४) ।

पिहुल वि [पुयुल] विस्तीर्ण (पएह १, ४, मीप, दे ६, १४३, कुमा) ।

पिहुल न [दे] मुंह के बाहु से बचाया जाता लुण-बाण (दे ६, ४७) ।

पिहे देखो पिहा । पिहेइ, पिहे (उत्त २६, ११, भूम १, २, २, १३) । संज्ञ. पिहेऊण (पि ५८६) ।

पिहो अ [पृथक्] मतलब, मिल (विसे १०) ।

पिहोअर वि [दे] तनु, कण, दुबल (दे ६, ५०) ।

पी सक [पी] पाल करना । वक्र. 'तन्नुहस-सकतिपीउसअर पीयमाणी' (रसण ५१) ।

पीअ पु [पीत] १ पीत वस्त्र, पीला रँग । २ वि. पीन बसुंवाला, पीला (हे २, १७३; कुमा, प्राप्र) । ३ जिसका पाल किया गया हो वह (से १, ४०, ६६, १४४) । ४ जिसने पाल किया हो वह (प्राप्र) ।

पीअ वि [पीत] प्रीति युक्त, संतुष्ट (मीप) ।

पीअर (भग) नीचे देखो (पिग) ।

पीअल देखो पीअ = पीत (हे २, १७३; प्राप्र) ।

पीअसी लो [प्रेयसी] प्रेम-याग की (कुमा) ।

पीइ पुं [दे] भस्व, घोडा (दे ६, ५१) ।

पीइ लो [प्रीति] १ प्रेम, भवुराग (कण; पीइ* महा) । २ राखण की एा पत्नी का नाम (पत्रम ७४, १६) । 'वर पुंन [वर]

एक विमानवाण, छाटा घेवय-विमान (देवद १३०, पव १६४) । 'गम न [गम]

महाभुक्त देवद का एा यान विमान (क-मीप) । 'दाण न [दान] हर्ष होने के

कारण दिया जाता दान, पारितोषिक (मीप, सुर ४६१) । 'धम्मिय न [धार्मिक] जैन

मुनियों का एक कुल (कण) । 'मण वि [मनस] १ प्रीति-युक्त चित्तवाला (भग) ।

२ पु. महाभुक्त देवदेव का एक यान विमान (ठा ८—पत्र ४३७) । 'वद्धण पुं [वर्धन]

कारिक मास का लोकतर नाम (मुज्ज १०, १६; कण) ।

पीईय पुं [दे] दुस्त-विशेष, गुलम का एक

मेद. 'पीईयपाणकणइरुऊज्ज सह सिन्दुवारे य' (पएण १) ।

पीऊस न [पीयूष] मनुज, सुपा (पात्र) ।

पीड सक [पीडय] १ हैरात करना । २ दवाना । पीडइ, पीडतु (पिग; हे ४, ३८५) ।

कर्म. पीडिऊइह (पिग) । कवक. पीडिऊत, पीडिऊमाण (से ११, १०२, गा ५४१-सण) ।

पीड* देखो पीडा । 'अर वि [कर] पीडा-कारक (पत्रम १०३, १४३) ।

पीडरइ लो [दे] बोर की ली (दे ६, २१) ।

पीडा लो [पीडा] पीडन, हैरानी, वेदना (पात्र) । 'कर वि [कर] पीडा-कारक,

'अभिधन न भासियव अरिय हुत्तर्चणं जं न वत्तव' । सच्चि त न सच्च जं परपीडाकरं वयए' (था ११, प्राप् १५०) ।

पीडिअ वि [पीडित] १ पीडा से जो कुछ ली हो वह, अभिभूत, पराजित, व्याकुल, दुःखित । २ बचाया गया (हे १, २०३, महा, पात्र) ।

पीड पुन [पीड] १ भासन, पीडा. 'पीडं सिद्धर भाएण' (पात्र, रसण ६३) । २ भासन विशेष, बसो का भासन (पङ, हे १, १०६, जवा, मीप) । ३ तन. 'अत्तए नेहपीड' (कुमा) । ४ पु. एक जैन महर्षि (संदि ३१ दी) । 'अथ पु [अथ] अथ की अवतरणिका, भूमिका, 'अथ पीडमय-रहितं कर्हिज्जमाएणि देव भावय' (पत्रम ३, १६) । 'मह, 'महाअ पुंलो [महक]

गाम-पुत्राणं में सहायक मायवका कीपेवर्त्ता

गुह्य, राजा खादि का यवस्य विशेष (छाया १, १—पत्र १८, कण) । 'अरिआ (था १६) । 'सपि वि [सपिण] सपु-

विशेष (माचा) ।

पीठ न [दि] १ ईस परले का यन्त्र (दे ६, ५१) । २ समूह, ग्रुप, 'उद्विंस चरुणईदपीठे, पण्डा दितो दितो (१ति) कण्ठिया' (स २३३) । ३ पीठ, शरीर के पीछे का भाग, 'हृत्पिपीठसमाख्ये' (त्रि ६६) ।

पीठग } न [पीठक] देखो पीठ = पीठ पीठय } (कस, गच्छ १, १०, दस ७, २८) । पीठरखंड न [पीठरखण्ड] नर्मदा तीर पर स्थित एक प्राचीन जैन तीर्थ (पञ्च ७७, ६४) ।

पीठाणिय न [पीठानीक] शरत्-सेना (ठा ५, १—पञ्च ३०२) ।

पीठिका श्री [पीठिका] ब्राह्मण-त्रिपेय, गच्छ, 'मार्गदी पीठिका' (पाम) । देखो पेठिया ।

पीठी श्री [दि पीठिका] काष्ठ-विशेष, घर का एक आधार-काष्ठ, पुनरावी में 'पीठिरे', 'तसो निवर्तितकण सतुष्ट पयाई जाय गहरेदे' । ता उवरिपीठिपलणे क्षण्णेण खड्गविनय सत्य' (धर्मवि ५६) ।

पीण सक [पीण्य] गृष्ट करना । पीण्णि (राय १०१) ।

पीण सक [पीण्य] छुरा करना । कू देखो पीणगिज ।

पीण वि [दि] चतुरस्र, चतुष्कोण (दे ६, ५१) ।

पीण वि [पीण] गृष्ट, मामल, उपचित (दे २, १५४, पाम, कुमा) ।

पीणण न [पीणण] गृष्ट करना (धर्मवि १४८) ।

पीणगिज वि [पीणनीय] शीति जनक (श्रीय, कप्प, पण १७) ।

पीणाइय नि [दि, पीनायिक] गर्व से निर्वृत्त, गर्व से किया हुआ 'पीणाइयविरसोऽस्मयदृष्टो कोट्यसे वे भंवरत्त' (पाम १, १—पञ्च ६३) ।

पीणाया श्री [दि, पीनाया] गर्व, गर्हवार (पाम १, १) ।

पीणिय वि [पीणित] १ लोपित (सण) । २ उपचित, परिवृद्ध (स ७, २३) । ३ पुं-अयोधित-प्रसिद्ध योग-त्रिपेय, जो पहले सुवं या चन्द्र वा किसी ग्रह या नक्षत्र के साथ होकर बाद में दूसरे पूर्व आदि के साथ उपचय को प्राप्त हुआ हो वह योग (सुग १२) ।

पीणिम बुंछी [पीनता] गृष्टता, मासलता (दे २, १५४) ।

पीयमाण देखो पा = पा ।

पीयमाण देखो पी = पी ।

पीरिपीरिया श्री [दि] वाद्य विशेष (राय ५५) ।

पील सक [पील्य] १ पीलना, पेलना, दबाना । २ पीडा करना, हैपान करना । पीलक, पीलेइ (पावा १४५; वि २४०) । कबक, पीलिज्जत (पा ६) ।

पीलय न [पीलन] दबाव, पीलन, पेलना, 'माणसिण्णेण माणो पीलयमीम व्व हिमभाहि' (पाम १६६), 'अंतपीलयकम्मे' (उवा) ।

पीला देखो पीडा (उप ४३६, सुपा ३५८) ।

पीलावय वि [पीलक] १ पेलनेवाला । २ पुं, तेलो, यंत्र से तेल निकालनेवाला (वज्जा ११०) ।

पीलिअ वि [पीलित] पीला या पेटा हुआ (श्रीय, ठा ३, ३, उप) ।

पीलिम वि [पीडावत्] दाबवाला, दाबने से बना हुआ (वज्जा आदि की माहुरि) (वसति २, १७) ।

पीलु पुं [पीलु] १ वृक्ष विशेष, पीठु का पेड़ (पण १, वज्जा ४६) । २ हाथी (पाम, ॥ ७३५) । ३ न. दुध, 'एणद्धं बहुमानं दुद पधो पीठु खीरं च' (पिठ १११) ।

पीलुअ पुं [दि, पीलुक] दाबन, दबाव, 'सद्वर्द्धिमण्णोदेव' लपीलुमारकण्णेसदिण्णम-खा' (पा १०२) ।

पीलुट्ट वि [दे-प्लुट] देखो पीलुट्ट (दे ६, ५१) ।

पीवर वि [पीवर] उपचित, गृष्ट (पाम १, १, पाम, सुपा २११) । 'गच्छा श्री [गम्म] जो निवृत्त अविद्य में ही प्रलय करनेवाली हो वह श्री (शोपा ८३) ।

पीलट्ट देखो पीअ = पीत (दे १, २१३; २, १५३; कुमा) ।

पीस सक [पिप्] पीसना । पीसद (पि ७६) । वट, पीसंत (पिठ ५७४, पाम १, ७) । सट, पीसिऊण (स ५२) ।

पीसण न [पिपण] १ पीसना, दबना (पण्ड १, १; उप ४ १४०; सण १८) । २ वि. पीसनेवाला (सुम १, २, १; १२) ।

पीसय वि [पिपक] पीसनेवाला (सुपा ६३) ।

पीह सक [स्पृह, प्र + ईह] समिलापा करना, बाहना । पीहति, पीहेज्जा (श्रीय, ठा ३, ३—पञ्च १४४) ।

पीहग पुं [पीठक] नवजात शिशु को पीनाइ जाती एक वस्तु (उप ३११) ।

'पु श्री [पुर] शरीर (विते २०६५) ।

पुअ न [प्लुत] १ तिथिग गति । २ कल्पना, कल्प-गति, 'जुअम्मो पुं (१ पु) यथाएहि' (विते १४३६ टी) । 'जुअ न [युअ] भवम युअ का एक प्रकार (विते १४७७) ।

पुअंड पुं [दि] तरण, पुवा (दे ६, ५३; पाम) ।

पुआइ वि [दि] १ तरण, पुवा (दे ६, ८०) । २ उन्नत (दे ६, ८०, पण्ड) । ३ पुं, पिराख (दे ६, ८०, पाम, पण्ड) ।

पुआइणी श्री [दि] १ पिराख-गृहीत श्री, भूलावृत्त महिमा । २ उन्नत श्री । ३ कुलटा, व्यभिचारिणी (दे ६, ५४) ।

पुआय सक [प्लारय] से जाना । सट, पुआयइत्ता (ठा ३, २) ।

पुं पुं [पुंस] गृह्य, मर्द (पि ४१२; धम्म २ टी) । देखो पुंअ, पुंनाग, पुंयउ आदि ।

पुंउ पुं [पुत्त] १ बाण का मय भाग, 'वसत य सत्तस पुंउं विद्ध भन्नेण निक्खराण्णेण' (धर्मवि ६७, उप ४ ३६५) । २ न. देव-विमान-विशेष (सम २२) ।

पुंखण्य न [दि, प्रोद्धणक] घुमाना, रियाह की एक रीति, पुनरावी में 'पीखणु' (सुपा ६३) ।

पुगिअ नि [पुद्धि] गृह्य-मुक्त किया हुआ, 'पण्डे वित्तो सरो पुंत्तिमो' (कप्प) ।

पुंगल पुं [दि] श्रेष्ठ, उत्तम (भवि) ।

पुमाय वि [पुमय] श्रेष्ठ, उत्तम (सुपा ५:८०; सु ४१, वज्जा) ।

पुंउ सक [प्र + उच्छृ] घोटाना, घरा करना । पुंउद (पाठ ६७: दे ४, १०५) । इ. पुंउज्जोअ (पि ८२) ।

पुंज पुंन [पुच्छ] पुंछ. सांख्य (सक १२; हे १, २६)।

पुंछण न [प्रोच्छन्] १ मार्जन (कण्ठ उवा. गुण २६०)। २ रजोहरण, जैन मुनि का एक उपकरण (इह १)।

पुंछणी छी [प्रोच्छनी] पोछने का एक छोटा लुपमय उपकरण (राय)।

पुंछिअ वि [प्रोच्छिअ] पोछा हुआ, मृष्ट (पाय; कुमा; भवि)।

पुंज सक [पुञ्ज, पुञ्ज] १ शकटवा करना। २ फैलाना, वित्तार करना। पुंजइ (हे ४, १०२, भवि)। कर्म. पुंजिअइ (कण्ठ)। कवच. पुंजइज्जमाण (सि १२, ८६)।

पुंज पुंन [पुज] देव, राशि (कण्ठ, वस, कुमा), 'वारिकण्डू'जवादे कवच' (सिदि ११६६)।

पुंजइअ वि [पुजित] १ एवमित (सि ६, ६३; पउम ४, २६१)। २ व्याप्त, भरपूर (पउम ४, २६१)।

पुंजइज्जमाण देको पुंज = पुञ्ज।

पुंजक } वि [पुजक] १ राशि रूप से पुञ्जय } स्थित, 'न उल्ल पुंजकपुंजक' (पिड ८२)। २ देको पुंज = पुञ्ज।

पुंजय पुंन [दे] कतराए, पुजवासी में 'पूजो', 'बामोपि सहि पुंजयपुंछण'।

पुंजयेअ निषयगगणय।

पुंजयणीपो दय
वारविदि जिणुमदिरंगणय'
(गुण २६०)।

पुंजाय वि [दे] विप्रेवारा किया हुआ, 'पुंजाय विस्सद' (पाय)।

पुंजायिय वि [पुजिय] एवमित कराया हुआ (राय)।

पुंजिअ वि [पुजित] एवमित (सि १, ७२; कुमा; कण्ठ)।

पुंज पुं [पुज] १ देव-विशेष, विष्णुवापय के शरीर का भूभाग (सि २२५; मय १५)। २ दण्ड-विशेष (पउम ४२, ११; भा ७४०)।

३ वि. पुंजइ-देवो (पउम ६६, १५)। ४ धातु, शैल, शरीर (उपाय १, १७ टी—नय

२३१)। ५ पुंन. तिलक (सि ६; पिडमा ४३; कुण २६४)। ६ देव-विमान विशेष (सम २२)। 'वट्ठण न [वर्धन] सार-विशेष (सि २२५)। देको पोंड।

पुंजइअ वि [दे] विप्रेवारा, विप्रेवकार किया हुआ (दे ६, ५४)।

पुंजरेक देको पुंजरीअ (सुम २, १, २)।

पुंजरेकि वि [पुण्डरीकिन्] पुण्डरीकवाला (सुम २, १, १)।

पुंजरेकिणी छी [पुण्डरीकिणी] पुण्डरीकवाली विजय की एक नगरी (उपाय १, १६; इक. कुण २६५)।

पुंजरेय देको पुंजरीअ = पुण्डरीक. पीएडरीक (उव. काल; सि ३५४)।

पुंजरीअ पुं [पुण्डरीक] १ ग्याह अर पुण्यो मे सारवां छ (विचार ७७३)। २ एक राजा, महापरा राजा का एक पुत्र (कुण २६५; उपाय १, १६)। ३ व्याप्त, शास्त्र (पाय)। ४ पुंन. तन-विशेष (पउ २७१)।

५ श्वेत पथ, सफेद कमल (सुमति १४५)। ६ कमल, पथ, 'अंजुहं सयवसं सरोवहं पुंजरीअमरिबंद' (पाय; सम १; कण्ठ)। ६ देव-विमान विशेष (सम ३५)। ७ वि. शैल, सफेद (संग १३२)। 'गुम्म न [गुम्म] देव-विमान-विशेष (सम ३५)। 'दह, 'दह पुं [द्रह] शिखरी वसंत पर का एक महा-हृद (हा २, ३; सम १०४)।

पुंजरीअ वि [पुण्डरीक] १ श्वेत पथ का श्वेत-पथ-संभवनी (सुमति १४५)। २ प्रधान, मुख्य। ३ शाल, अंग, उत्तम (पुमति १४५; १४८)। ४ न. गृहस्थाव सूर के द्वितीय श्रुतत्व का पहला अध्ययन (सुमति १४७)। देको पोंडरीअ।

पुंजरीअ थ्ये [पुण्डरीअ] देको पोंडरी (राय)।

पुंज पुं [दे] जायो (दे ६, ५२)।

पुंज देको पुंज (उव ७६५)।

पुंज पुं [दे] गल, गहल, गदा (दे ६, ५२)।

पुंजाग पुं [पुजाग] १ पुन-विशेष, पुण्य-प्रधान एक पुन-जाति, पुनाय, पुनास, पुन-सान वनरा, पाउर का नाम (उव पु १८; ७६ टी; सम्मत १७२)। २ बह पुण्य,

उत्तम मय (यम्म १२ टी; सम्मत १७५)। देको पुजाग।

पुंजय पुं [दे] संगम (दे ६, ५२)।

पुंम पुंन [दे] नीरस, दाहिम का छिलका (?)। 'मगाइ अततय जा निपोलिय पुंम-मणए ताव' (धर्मवि ६७); [भततए मणिअ नीरसं पणामेइ' (महा ५६६)]।

पुंमव पुंन [पुंमवस्] व्याकरणिक संस्कार-पुनः शब्द-विशेष, पुंजाग शब्द (पण ११—पण ३६३)।

पुंमय पुं [पुंमय] १ पुण्य को धौ-स्पर्श का अभिस्तार। २ उत्तम धारण/भूत वन (पि ४१२)।

पुंम सक [पुंस्, सुज्] मार्जन करना, पोखना। पुंमइ (हे ४, १०५)।

पुंम देको पुं। 'कोइल, 'कोइलण पुं' [कोइल] मरदाना कोयल, पिन (हा १०—पण ५६६; पि ५१२)।

पुंसण न [पुंसण] मार्जन (कुमा)।

पुंसइ पुं [पुंसाइ] 'पुंसा' ऐसा नाम (कुमा)।

पुंसली छी [पुंखली] कुलदा, वनिवारिणी छी (कण्ठ ६८; धर्मवि १३७)।

पुंसिय वि [पुंसित] पोछा हुआ (दे १, ६६)।

पुक्क } सक [पुक्क] पुकारना, डाँटना, पुकार } धातुन करना। पुक्करेइ (यम्म ११ टी)। वर. पुक्कत, पुक्करत (वट्ठ १, १—पण ४५; धा १२)। देको पोषा।

पुक्करि वि [पुक्क] पुकारा हुआ (कुमा ३८१)।

पुक्कत देको पुक्कत (पण २, ५—पण १११)।

पुका छी, देको पुकार = पुकार (पाय; गुण ११७)।

पुकार देको पुकार। पुकाररिदि (राय)। वर. पुकाररत, पुकारित, पुकारेमाय (गुण ४१५; १८१; २४८; उपाय १, १८)।

पुकार पुं [पुकार] पुकार, डाँक, धातुन (गुण ११७; महा. सण)।

पुकरअ देको पुकरअ = पुकर (कण्ठ; महा; पि १२५)। 'कज्जिअा छी [कज्जिअ]

पय वा बीज-कोर, कमल वा मण्य भाग (घोष) । 'कय पुं' [अ] विष्णु, श्रीकृष्ण । २ कयरी के एक राजा का नाम (बुद्धा २४२) । गय न [गत] वाय विरोध का ज्ञान, कय विरोध (घोष) । 'द्ध न' [ध] पुस्तकतर नामक द्वीप वा भाषा हिस्सा (सुख १६) । 'वर पुं' [वर] द्वीप-विरोध (ठा २, ३, पवि) । 'सयट्टा देखो पुस्तकल सवट्टय (राज) । 'रत्त देखो पुस्तकलवट्टय (राज) ।

पुस्तकविणी देखो पोस्तकविणी (सूत्र २, १, २, ३, घोष नाम) ।

पुस्तकरोज पुं [पुस्तकरोज] सधुस विरोध पुस्तकरोज (इक, ठा ३, १, ७, सुख १६) ।

पुस्तकल पुं [पुस्तकल] एक विजय, प्रात-विरोध, जिसकी मुख्य नगरी का नाम सोपवि है (इक) । २ पय, कमल, 'मिसमिसमुणाल-पुस्तकलताए' (सूत्र २, ३, १८) । ३ पय-मसर (भावा २, १, ८—सूत्र ४७) । 'विभाग न [विभाग] पय-मसर (भावा २, १, ८—सूत्र ४७) । 'सवट्ट, 'सयट्टय पुं' [सयट्ट, 'क] मय विरोध, जिसके बर-सने से होए हुमा वयं तक दुषिणी वासित रहती है (वर २, ६, ठा ४, ४—पय २७०) । देखो पुस्तकर ।

पुस्तकल पुं [पुस्तकल] १ एक विजय, प्रदेश-विरोध (ठा २, ३—पय ८०) । २ भगवै देय विरोध । ३ पुदी. उस देश में उपग्र, उर्वरें रहतेनासा, 'विपनौहि पुतिविहि पुस्तकीहि (?)' (भा ६, १३—पय ४४७), ['महितीहि पुतिविहि पत्तकीहि (?)' (भा ६, ३३ टी—पय ४६०)] । ४ वि. मायल, प्रसुत (सुत्र ४१०) । ५ सपूठ, परिपूठ (सूत्र २, १, १) ।

पुस्तकलचिदभग पुं पुन [दे] जलपर्व-विरोध, पुस्तकलचिदभग } जल में होनेवाली बनपति-विरोध (सूत्र २, ३, १८, १६) । देखो पोस्तकलचिदनय ।

पुस्तकनायई देखो [पुस्तकनाय, पुस्तकनायनी] महाविदेह वयं का विजय—प्रात-विरोध (ठा २, ३, १६५ महा) । 'कूट पुन [कूट] एक-ऐन पर्वत का एक शिखर (इक) ।

पुस्तकलवट्टय पुं [पुस्तकलवट्टय, पुस्तकल-वट्टय] मेघ-विरोध, 'पुस्तकल (७ता) वट्टय' यह महेदे एगेए बाणेए दस वाससहस्राई भावेहि' (ठा ४, ४) ।

पुस्तकलवत्त पुं [पुस्तकलवत्त, पुस्तकलवत्त] महाविदेह वयं का एक विजय—प्रात (जं ४) । 'कूट पुं [कूट] एगरील पर्वत का एक शिखर (इक) ।

पुगारिया ओ [दे] बलादि सादन जंतु विरोध (सूत्र ० ७० गां २८२) ।

पुगा पुन [दे] वाय-विरोध, 'सो पुगमि पुगाई बाएई' (सुत्र ४०३) ।

पुगल पुं [पुगल] १ वृज-विरोध । २ न. कल विरोध । ३ मांस (वन ५, १, ७३) ।

पुगल देखो योगल (सिखा १५, नव ४२, वि १२५) । 'परट्ट, 'परायत्त पुं' [परायत्त] देखो योगल परिअट्ट (कम्म ५, ८९; वे. ५०, सिकता ८) ।

पुगड देखो पोचड, 'सिपपलपुगड (?) च' डम्मी' (सुत्र ४०) ।

पुच्छ सक [अच्छ] पुच्छा, प्रसन्न करना । पुच्छा (हे ४, ६७) । पुका, पुच्छिनु, पुच्छीप, पुच्छे (वि ५१६, कुमा, भाग) । नमं. पुच्छिगड (मवि) । वड पुच्छिन (भा ४७, ३५७, कुमा) । वडक. पुच्छिज्जत (भा ३४७, सुर ३, १५१) । सड. पुच्छिन्ता (भा) । हेक. पुच्छिउ, पुच्छिन्तए (वि ५७३, भाग) । इ. पुच्छणिज्ज, पुच्छणीअ, पुच्छियव्य, पुच्छियव्य (भा १४, वि ५७१, वर ८६४, कम्म) ।

पुच्छ देखो पुच्छ = प्र + उच्छ । पुच्छा (वड) । पुच्छ देखो पुच्छ = पुच्छ (वण) ।

पुच्छल पुं वि [अच्छल] पुच्छेनासा, पुच्छगा } प्रसन्न-वर्त (घोषा २८, सुर १०, ६५) । छी. 'च्छिआ (मवि १२५) ।

पुच्छण न [अच्छण, प्रदन] पुच्छा (मूचनि १६३, मवि ८, वायक २३ टी) ।

पुच्छणया पुं वि [अच्छण] ऊपर देखो पुच्छणा } (वर ४६६, घोष) ।

पुच्छणी ओ [अच्छणी] प्रसन्न की भाषा (ठा ४, १—पय १८२) ।

पुच्छण (मग) देखो पुट्ट = पुट्ट (पिंग) ।

पुच्छा ओ [पुच्छा] प्रसन्न (ववा, सुर ३, ३५) ।

पुच्छिअ वि [पुट्ट] पुच्छा हुमा (घोष; कुमा, भग, वण, सुर २, १६८) ।

पुच्छिर वि [पुट्ट] प्रसन्न-वर्त (गा ५६८) । पुच्छल देखो पुच्छल (पिंग) ।

पुज सक [पूजय] पूजना, भादर करना । पुजगड (सुत्र ४२३, मवि) । नमं. पुजिगज्ज (मवि) । वड. पुज्जत (सुत्र १२१) । वडक. पुजिज्जत (मवि) । सड. पुजिउ, पुजिऊण (सुत्र १०२, मवि) । इ. पुजिअज्ज (घो ७) । प्रमो. पुज्जावड (मवि) ।

पुज देखो पूज = पूजय ।

पुजल देखो पुजल=पूजय ।

पुजल देखो पूर = पूरय ।

पुजण न [पूजन] पूजा, मर्चा (सुत्र १२१) ।

पुजमाण देखो पूर = पूरय ।

पुजा ओ [पूजा] पूजा, मर्चा (वर ४ २४२) ।

पुजिय वि [पूजित] सेवित, मर्चित (मवि) ।

पुट्ट सक [प्र + उच्छ] पाछा । पुट्ट (भाक ९७) ।

पुट्ट न [दे] वेद, उबर (धा २८, मोह ४१, पय १३३, सम्मत २२९, सिरि २४२, सण) ।

पुट्टल पुं पुन [दे] गडर, गडि, पुजानी पुट्टलय } में 'पोटलु', 'संयलपुट्टलय च गडि' (सम्मत ६१) ।

पुट्टिया ओ [दे] छोटी गडरी, पोटीनी, मोटी (मुपा ४३, ३४४) ।

पुट्टिल पुं [पोटिल] १ भगवान् महावीर का एक शिष्य, जो मरिय्य में तोरनर होनेवाला है (सिखा व४८) । २ एा मनुतर-देवकोक-गाथी जैन महावि (मनु २) ।

पुट्ट वि [पुट्ट] १ मुपा हुमा (भा, घोष, हे १, १११) । २ न. सरं (ठा २, १, नव १८) ।

पुट्ट वि [पुट्ट] १ पुछा हुमा (घोष सण २, ३४) । २ न. प्रसन्न (ठा २, १) ।

'लामिय वि [लामिय] ममियट्ट विदेव-वासा (मुनि) (घोष, पय २, १) ।

'सोमियापरिअम्म पुन [अमियापरिअ-मैन्] हटिमार का एक प्रणिगाय विप (वय १२८) ।

पुष्ट वि [पुष्ट] उपचित (आया १, ३, स ४११)।

सुष्ठु देवो पिष्ट = सुष्ठु (आप्र, संति १६)।

पुष्टय वि [सुष्टयन्] जिह्वे स्पर्श किया। हो वह (आया १, ७, ८, ८)।

पुष्टयई देवो पोष्टयई (पुञ्ज १०, १)।

पुष्टयया क्षी [प्राप्यपदा] मन्त्र विरोध (पुञ्ज १०, ५)।

पुष्टि क्षी [पुष्ट] पोषण, उपपन्न (विं २२१, वेपथ ८)। २ प्रहिता दया (पण्ड २, १—पन १६)। ३ म वि [मन्] १ पृष्टिमात्र।

२ पु भावान् महावीर का एक सिप्य (भनु)।

पुष्टि देवो पिष्टि = सुष्ठु, 'पाथराडिमस्त पशुलो पुष्टि पुष्टे समालहन्ति' (गा ११, ३३, ८७, आप्र, संति १६)।

'पुष्टि क्षी [पुष्टि] पुष्पा, प्रसन्न। 'य वि [ज] प्रसन्न जनिव (डा २, १—पन ४०)।

पुष्टि क्षी [सुष्टि] स्पर्श। 'य वि [ज] स्पर्श-जनिव (डा २, १)।

पुष्टिया क्षी [पुष्टि] प्रसन्न से होनेवाली क्रिया—कर्मवच्य (डा २, १)।

'पुष्टिया क्षी [सुष्टि] स्पर्श से होनेवाली क्रिया—कर्मवच्य (डा २, १)।

पुष्टिल देवो पोष्टिल (मनु २)।

पुष्टीया क्षी [सुष्टीया] देवो पुष्टिया = सुष्टिया (नव १८)।

पुष्टीया क्षी [पुष्टीया] पुष्पा से होनेवाली क्रिया—कर्मवच्य (नव १८)।

पुष्ट पु [पुष्ट] १ परमाल-विरोध। २ पुष्ट-परिवर्त वस्तु (राय १४)।

पुष्ट पुन [पुष्ट] १ मिथ, संबन्ध, परस्पर की कृपा, मित्राज, मित्राज, 'अजलिपुष्ट'—

'वाहे वरसपुष्टेय नीलो क्षी' (भीम, महा)।

२ शास्त्र, दोल भादि का चमका, 'हृन्मपुष्ट-संज्ञाणयक्रिया' (उवा १४ टी, मण्ड ११६७, कुमा)। ३ सपट दण्डय, मिता हुषा दो

दत्त, 'सिप्यपुष्टमठिया' (उवा, मण्ड ३०६)।

४ भोगवि पक्षे का पाय विशेष (आया १, १३)। ५ पनादि चित्त का, योग (राम)। ६ माचदायन, डारन (उवा, मण्ड)। ७ नमल, पण, 'पुष्टाणी' (विक २३)। 'अप्येण

न [भेदन] नम, रहुर (कत)। 'वाय पु [पाक] १ पुष्ट-पाको से भोगवि का पाक-विरोध। २ पाक-निगम धीयय-विरोध: 'पुष्ट (७३) वापुहि' (आया १, १३—पन १८१)।

पुष्ट (टी) देवो पुष्ट = पुन (पि २६२, आप्र)।

पुष्टइय वि [दे] पिण्डीकृत, एकचित (दे ६, ५४)।

पुष्टइणी क्षी [दे पुटकिनी] नसिनी, कम-सिनी (दे ६, ५४, विक २३)।

पुष्टम पुन [पुष्ट] देवो पुष्ट = पुट (उवा)।

पुष्टपुष्टो क्षी [दे] कुं से सीटी बजाना, एक प्रकार की मध्यम भावाज (पव ३८)।

पुष्टम देवो पुष्टम (प्रति ७१, पि १०४)।

पुष्टय देवो पुष्टम (उवा, सुपा ६५६)।

पुष्टिम न [दे] कुं, वदन। २ किपु (दे ६, ८०)।

पुष्टिया क्षी [पुष्टिका] पुष्पो, पुष्पिया (दे ५, १२)।

पुष्ट (टी) देवो पुष्ट = पुन (आप्र)।

पुष्ट देवो पिष्ट (पद)।

पुष्टम वि [पथम] पहला (हे १, ५५, कुमा, रवज २३१)।

पुष्टवि देवो पुष्टवी (भाषानि १, १, २, म १६, ३, पि ६७)। 'वाइय, 'वाइय वि [वायिक] शुषिनी शरीराला (जीव),

(पण्ड १, म १६, ३, डा १, भाषानि १, १, २)। 'वाय देवो पुष्टवी-नाय (भाषानि १, १, २)।

पुष्टवी क्षी [पुष्टिवी] १ शुषिनी, वाती, भूमि (हे १, ८८, १११, वा १, ४)। २ वाकि-न्यावि प्रुषयभाता पदार्थ, द्रव्य विशेष—

मुष्टिका पाषाण, धातु भादि (पण्ड १)। ३ शुषिकोपाय का जीव (वी २)। ४ ईश-मेत्र के एक साधन को भय-पुष्टिवी (डा ५, १—पन २०४)। ५ एक दिनभारी

देवी (डा ८—पन ५३६)। ६ नमराज गुणार्थनाय की माता का नाम (पय)।

'काइय देवो पुष्टवि-नाइय (यद)। 'वाय वि [वाय] शुषिनी, शरीराला—(जीव), (भाषानि १, १, २)। 'वद कुं [पुष्टि]

राजा (डा ७)। 'सत्य न [राख] १ शुषिनी का राज। २ शुषिनी का राज, हल, कुटल भादि (भाषा)। देवो पुष्टई, पुष्टवी।

पुष्टीभूय वि [पुष्टयभूत] जो भवत हुषा हो (सुपा २३६)।

पुष्टम वि [प्रथम] पहला, भाय (हे १, ५५, कुमा)।

पुष्टो म [पुष्टय] मलग, मित (सुपा ३६२, रण्ड ३०, यावक ५०, भाषा)। 'हृद वि [हृद] विनिन प्रमिषायवाता (भाषा, पि ७८)। 'जण कुं [जन] प्राकृत मनुष्य,

माधारल लोक (सूम १, ३, १, ६)। 'जिय कुं [जीव] विनिन प्राणी (सूम १, १, २, ३)। 'विमार्थ, 'वेमार्थ वि [विमान]

भलेक प्रकार का, बहुविध (राज, डा ४, ४—पन २८०)।

पुष्टोजय वि [दे-पुष्टयज] पुष्टयभूत, मित व्यवस्थित, 'जमिण जगती पुष्टोजा' (सूम १, २, १, ४)।

पुष्टोवम वि [पुष्टिपुष्टम] शुषिनी की तरह सब सहज कलियाला (सूम १, ६, २६)।

पुष्टोसिय वि [पुष्टिवीशित] शुषिनी के भाग्य में खा हुषा (सूम १, १२, १३, भाषा)।

पुण सक [पू] १ पवित्र करना। २ धान्य भादि की उपरहित करना, साक करना।

पुण्ड (हे ४, २४१)। पुणति (आया १, ७)। कर्ष, पुण्ड, पुण्ड (हे ४, २४२)।

पुण थ [पुनर] १ म धर्मों का सूचक मध्यम—१ भेद विशेष (विदे ८११)।

२ भवधारण, निरवय। ३ पथिकार, प्रस्ताव। ४ द्वितीय बार, बारान्तर।

५ पशान्तर। ६ सपुष्प (पण्ड २, ३, गडक, कुमा, भीम, जी ३७, प्राप् ६, ५२, १६८, स्वप्न ७२, पिण)। ७ वायुचित में भी इसका प्रयोग होता है (निष्ठ १)। 'करण न

[करण] फिर से बनाने की भाव वद, 'मिम सरो न होइ पुण्डर' (उव)। 'पुनर वि [नय]

फिर से नया बना हुषा, तादा (उव ७६८, नय, नय)। 'पुण थ [पुनर] फिर-फिर, बार-बार। 'पुणकरण न [पुनकरण]

फिर फिर बनाना, बार-बार निर्माण (दे १,

(३२) । 'अभ्य वृं [भय] क्रि से अर्थात्,
 'क्रि से जन्म-ग्रहण (विद्य ३५७; धौ३) ।
 'अभू छो [भू] क्रि से विवाहित छो,
 जिसका पुनर्लिंग हुआ हो वह महिला; 'भयि
 पुणभूतप्यो त्ति विवाहिता पण्डित्यं' (मूत्र
 २०८; २०६) । 'रयि, 'रावि स [अपि]
 क्रि भी (इवा) उत्त १०, ११; १६) ।
 'रायित्ति छो [आयुत्ति] पुनः भारत्तं
 (यहि) । 'रुत्त वि [उत्त] क्रि से बड़ा
 हुआ । १ न. पुनर्लिंग (विद्य ५३८) । 'यि
 स [अपि] क्रि भी (संति १६; प्रा३
 ८७) । 'उत्तमु वृं [यसु] १ नग्न-विशेष
 (संति १०; १६) । २ छात्रों वायुदेव से
 पूर्य जगत्ता नाम (सम १५३; पद्म २०,
 १७२) ।

पुण (मर) देखो पुण्ण = पूर्य । *मत्त वि
[*मन्] पूर्यशाली (पिंग) ।

पुणज गर [दृष्ट] देखा। पुणमद (पावा
१४५)।

पुगः ५ [दि] शपथ, पाएडाल (दि ६, २८) ।

पुण्यं यि [पयन] पवित्र वस्त्रेणाम् । क्षी.
*णी (पुमा) ।

पुण्यरत्न' भ. कृत-भरण, मारंवार, विर-विद.
पुण्यरत्न' 'मद पुण्यद वंगुनि एतदेहि धनेहि
पुण्यरत्न' (ह १. १७६, कुमा), 'ए वि तह
ऐसामाईवि हरति पुण्यरत्नप्रणिमाई'
(गा २७४)।

पुणः ॥ म. दशो पुणः = पुनरु (पि ३४३).
पुणः ॥ हे १, १५; कृमाः ५३३ ६, ६७.
पुणः ॥ उभा) ।

पुण्य (पर) देशो पुनः = पुनरु. (कृमा. वि.
१४२) ।

पुणो देवो पुन = पुनर (पुनः, पुनः, पुनः
६७) ।

पुनोक्त देवो पुन-रुक्त, पुनरुक्त (मात्र १०)।
पुनोक्त सक्त [प्र + नोदय्] १ श्रेष्ठ
कला । २ कन्दन दूर कला : सुपोद्भवो
(उत्त १२, ४०)।

पुण्य दुन [पुण्य] १ दुम कम, गुह्य (वीर
महा, भाग्य ७५. नाम) । २ का जरायु
वेना. 'मद' दुन (? एन) मुनी (? हि)

‘धदुमत्स एण्ठा’ (संयोग १८)। ३ वि.
पवित्र, ‘वाणपियाजलपुण्य’ (कुमा)।
बलसा जो [‘बलशा’] साठ देश के एक
गोत्र का नाम (पत्र)। ‘घण पुं’ [‘घन’]
विद्यापरो का एक स्वनाम ख्यात राजा (पदम
१, ६१)। ‘मंत’, ‘मंत वि’ [‘यन्’]
पुष्पगाला, भाग्यवान् (हिं २, ११४, चंड)।
दुष्टो पुत्र = एण्य।

पुण्य वि [पुर्ण] १ संपूर्ण, भरपूर, पूरा (भीष, भग, उवा) । २ पुं, दीपकुमार देवों का प्रतिष्ठापक इन्द्र (इण) । ३ हनुमत् समुद्र का अधिपति देव (राज) । ४ तिथि विशेष, पक्ष की पांचवी, दशवीं और पनरहवीं तिथि (पुत्र १०, १५) । ५ पुं, शिखर विशेष (इण) । *कलस पुं [कलश] संपूर्ण वर्त (इ १) । *घोस पुं [घोष] ऐकत घट का एक भागो जिन-देव (सम १५५) । *चंद पुं [चन्द्र] १ सपूर्ण चन्द्रमा । २ विद्याधर चंद्र के एक राजा का नाम (पद्म ३, ४५) । *पभ पुं [प्रभ] हनुमत् दीप का अधिपति देव (राज) । *भद पुं [भद्र] १ स्वनाम-स्वात एक गृह-पति, विमान भेषमाय महावीर के पाद दोहा सेवक भुक्ति पादों की (पद्म) । २ यज्ञ विधाय का एक द्रष्ट (५, १) । ३ पुन, धनेन मृद-शिरसों का नाम (इण) । ४ यज्ञ का शेष विशेष (भीष, विषा १, १, उवा) । *मासी छी [मासी] प्रलिया तिथि (इ) । *सेण पुं [सेन] राजा धर्मिक का पुत्र, मित्रने भानाय महावीर के पाद दोहा की की (पद्म) । देवो पुत्र - पुण्य

पुण्यमासिर्ना श्री [पौर्णमासी] त्रिपि-श्रेय,
पूर्णिमा (धीर भग) ।

पुण्यप्रसन्न [दे] आनन्द से हृत यत्र (दे १, २१: पाप) ।

पुण्या की [पुर्वा] १ डिपि-निदे, वग हो
२, १० वीर १२ वी डिपि (संयोग २४-
मुम १०. १२) २ पुर्वा २ वीर मजिग
द्व की एक म्हादेगी—महा-वर्हि (२४
राजा २). 'पुर्वा'म २ वीर मजिग
महादेगी मजिग म्हादेगी वग-गापी
१ वीर—पुर्वा (२ राजा) म्हादेगी मजिग

‘तारगा, एवं माणिमद्दस्सवि’ (ठा ४, १—
पत्र २०४) ।

पुण्णाग } देवो पुत्राग (पञ्च ४३, ३६; मे
पुण्णाम } ६, ५६; हे १, १६०; पि २३१)।
पुण्णाली श्री [दे] मत्तजो, कुत्तडा, पुंयत्तो
- (दे ६, ५३, पढ) ।

पुण्याह पुन [पुण्याह] १ पुण्य दिन, शुभ
दिनस (पा १६५; गठ) । २ वायु-विशेष,
'पुण्याह्नुरेण' (स ४०१; ७३४) ।

पुण्ड्रिमसी श्री [पूर्णमासी] पूणिना (संक्षेप
३६) ।

पुण्ड्रिमा शो [पुण्ड्रिमा] तिथि विशेष, पूर्ण-
मासी (वात्र १६४)। *यद् वृं [*चन्द्र]
पुण्ड्रिमा वा चन्द्र (महा, हेवा ४६)।

पुण्ड्रमासिर्णः देखो पुण्ड्रमासिर्णो (नम
६६; था २६, गुज १०, ६) ।

पुत्रं पुं [पुत्र] लङ्गा (छ १०; कुमा, मुपा
६१; ३३४, प्रायू २७, ७७; एपा १, २)।
*वर्द्धो [वर्ती] लङ्गापानी जी (मुपा
३८१)।

पुत्तजोरय पुं [पुत्तजोरयक] कृष्ण मितेन,
पुत्तजोरया, मियापोठा का पेड़ा; 'पुत्तजोरयमरिट्टे'
(पएण १—पन ३१)। २ न. मियापोठा
का बीज, 'पुत्तजोरयमानावविण्ण' (न
३३७)।

पुत्तप ५ [पुत्ररु] देवो पुत्त (महा) ।
पुत्तरे वृद्धी [दि] योनि, उत्पत्ति-अपान, 'पुत्तरे
योनी' (घटि ४७) ।

पुत्तलय वृ [पुत्रक] पूवना (गिरि = ६१;
६२, ६४)।

पुत्रान्त्या } श्री [पुत्रि] शाल्यापि, पुत्रो
पुत्रांती } (ताम्र, कुम्भा ६; मरि ६१; गुरा
२६६. गिरि ८१६) ।

પુત્રદ્વયેષામ્ પુત્ર (પ્રા. ૧૨) :

पुस्तानुत्तिव रि [प्रीशानुपुत्रिक] पुन-
 पौनरि के योग, 'पुस्तानुत्तिव रिनि
 कप्येति' (प्राग १. १—पन १०)।

पुस्तिका की [पुस्तिका] १ पुस्तिका, गद्य
(पृष्ठ १७८) : २ पुस्तिका (११, १२,
१३) :

पुनिद देशो पुन (२४ १२) ।
पुनो ओ [पुन] नदनी (२४ २) ।

पुत्नी श्री [पोती] १ बल-खण्ड, मुख-नज्जिका (पृष्ठ ६०; संक्षेप ५४) । २ साठी, कटी-नज्ज (पृष्ठ १७) । देखो पोत्नी ।

पुत्तुल्ल पुं [पुत्र] पुत्र, लडका (प्राक् ३१) ।
पुत्थ वि [दे] मुटु, कोमल (दि ६, ५२) ।
पुत्थ } पुंन [पुस्त, 'क' १ लेपादि कर्ण
पुत्थय } (आ १) । २ पुस्तक, पोथी,
किताब 'पुत्थय लिहावे' (कुप्र ३४८),
'अवहारिपो पुत्थयो सहसा' (सम्मत ११८) ।
देखो पोत्थ ।

पुथवी देखो पुढवी (बंङ) ।

पुथुणी } (१) देखो पुढवी (प्राक् १२४);
पुथुथी } वि १६०) । नाथ (३) पुं [नाथ]
राजा (प्राक् १२४) ।

पुथ देखो पिह = पुष्क (अ १०) ।

पुथं देखो पिथं (हे १, १८८) ।

पुथम } (५) देखो पुढम, पुढुम (पि
पुथुम } १०५; हे ४, ३१६) ।

पुथ देखो पुण्य = पुण्य, 'कह मह हितियमुदा
ज सो दीसिज पञ्चल' (सुर १२, ११८; उप
७६८ टी, कुमा) । 'कंठिअ वि [काहिंखल,
'काहिंखल' पुण्य की चाहवाला (अम) ।
'कलस पुं [कलश] एक राजा का नाम
(उप ७६८ टी) । 'जसा श्री [यशस्]
एव श्री का नाम (उप ७२८ टी) । 'वत्तिथा
श्री [प्रत्यथा] एक जैन मुनि-शाखा (अम) ।
'वियासय वि [विपासक] पुण्य का
व्यास, पुण्य की चाहवाला (अम) । 'आमि
वि [आमिण] पुण्य का आमी, पुण्य-वाली
(मुपा ६४१) । 'सम्म पुं [शमने] एक
ब्राह्मण का नाम (उप ७२८ टी) । 'सार पुं
[सार] एक स्वनाम-स्वात श्रेष्ठी (उप
७२८ टी) ।

पुत्र देखो पुण्य = पुण्य (सुर २, ६७, उप
७६८ टी, अ २, ३; मनु २) । 'तल्ल पुं
[तल्ल] एक जैन मुनि-अण्ड (कुम ६) ।
'पाय वि [प्राय] बरीय-बरीय संपुण्य,
मुष्ट बम पुण्य (उप ७२८ टी) । 'अह पुं
[अह] १ यज्ञ-विशेष (सिंरि ६६६) । २
यज्ञ-निकाय एक इन्द्र (अ २, ३) । ३ एक
भन्तरद मुनि (अंत १८) । ४ एक जैन मुनि,

आर्य श्री संभूतिविजय का एक शिष्य (अम) ।
पुत्रयण पुं [पुत्रयजन] यज्ञ, एक देव-जाति
(आम) ।

पुत्राग देखो पुंनाग (अम, कुमा; पञ्चम
पुत्राग २१, ४६; आम) । ३ न. पुत्राग का
पुत्राग पुंन (कुमा; हे १, १६०) ।

पुत्रालिया } [दे] देखो पुण्णाली (मुपा
पुत्राली } २६६; २६७) ।

पुत्रिम देखो पुणिम (रंभा) ।

पुप्पुअ वि [दे] पीन, पुष्ट, उपचित (दि ६,
५२) ।

पुप्फ न [पुप्फ] १ कूल, कुसुम (आया १, १;
अम, सुर ३, ६३; कुमा) । एक विमानवाह,
देवविमान-विशेष (देवैन्द्र १३५; सम ३८) ।
३ श्री का राज । ४ विकास । ५ अर्ध का
एक रोग । ६ कुबेर का विमान (हे १,
२३६; २, ५३; ६०, १५४) । 'इरि पुं
[गिरि] एक पर्वत का नाम (पञ्चम ७६, १०) ।

'कंत न [कान्त] एक देव-विमान; 'पुष्क-
कंत' (सम ३८) । 'करंछय पु [करण्डक]
हस्तिरीयं नगर का एक उद्यान, 'पुष्करंछय
उज्जयि' (विपा २, १) । 'केउ पुं [केतु]
१ ऐश्वर्य क्षेत्र का सातवां आधी तीर्थकर—

जिन्देव (सम १५४) । २ अह विशेष, महा-
विष्णवक देव-विशेष (अ २, ३) । 'ग न
[क] १ मूल भाग, 'आणस्स पुष्करंछो देहिं
नग्गेहि पत्तिहे' (अप २८६) । २ पुण्य,
कूल (अम) । ३ देखो नीचे 'य (श्रीप) ।

'मूला श्री [मूला] १ भगवान् पार्वत्योप
की मुख्य शिष्या का नाम (सम १५२;
अम) । २ एक महासती, अन्निकाचार्य की
सुधोष्य शिष्या (पदि) । ३ सुभाहुकुमार की
मुख्य पत्नी का नाम (विपा २, १) । 'चूलिया
श्री [चूलिया] एक जैन अम्य (निर १,
४) । 'चालिया श्री [चालिया] पुण्य से
पूजा (आया १, २) । 'चिणिया श्री

[चालिनी] कूल किलेवाली श्री (आम) ।
'छालिया श्री [छालिया] पुण्य-वाय-विशेष
(राज) । 'जमय न [जमय] एक देव-
विमान (सम ३८) । 'जंदि पुं [जंदि] एक
राजा का नाम (अ १०) । 'नालिया
देखो 'नालिया (तुं) । 'दंत पुं [दन्त]
१ नववीं जिनदेव, श्री मुनिविद्याय (सम ६२;

अ २, ४) । २ ईशानेन्द्र के हस्ति-सैन्य का
अधिपति देव (अ ५, १; इक) । ३ देव-
विशेष (सिंरि ६६७) । 'दंती श्री [दन्ती]
दमयन्ती की माता का नाम, एक रानी
(कुप्र ४८) । 'नालिया श्री [नालिया]
पुण्य का बेट—छंछल (तुं ४) । 'निज्जास पुं
[निर्यास] पुण्य-रस (जीव ३) । 'पुर न
[पुर] पाटलिपुत्र, पटना शहर (राज) ।
'पुरय पुं [पुरक] पुण्य की रचना-विशेष
(आया १, १६) । 'प्यम न [प्रम] एक
देव-विमान (सम ३८) । 'यलि पुं [यलि]
उपचार, पुण्य-पूजा (आम) । 'याण पुं
[याण] कामदेव (रंभा) । 'अह श्रीन
[अह] नगर-विशेष, पटना शहर (राज) ।
'अह वि [वत्त] पुण्य-माला (आया १, १) ।
'माल न [माल] वैशाख की उत्तर श्रेष्ठी
का एक मगर (इक) । 'माछा श्री [माल]
ऊर्ध्वं लोक में रहनेवाली एक चिड़कुमारि
देवी (अ ८—पञ्च ४३४) । 'य पुं [क]
१ जैन, विष्णु (आम) । २ न. ईशानेन्द्र
का एक पारिवर्तिका विमान, देव-विमान-
विशेष (अ ८; इक; पञ्चम ७६, २८; श्रीप) ।
३ पुण्य, कूल (अम) । ४ लताट का एक
पुष्पाकार धातुपण्य (जं २) । देखो ऊपर
'ग । 'लाई, 'हावी श्री [लावी] कूल
विननेवाली श्री (आम, दि १, ६) । 'लेस
न [लेस] एक देव-विमान (सम ३८) ।
'यई श्री [यती] १ श्रुतमती श्री (दि ६,
६४, या ४८०) । २ सत्पुरुष नामक किमु-
पेन्द्र की एक अम-महिषी (अ ४, १; आया
२) । ३ वीसवें जिनदेव की प्रवर्तिनी—
प्रमुल साध्वी का नाम (सम १५२; पञ्च
४) । ४ वैद्य-विशेष (अम) । 'वण्ण न
[वर्ण] एक देव-विमान (सम ३८) । 'सिग
न [सिद्ध] एक देव-विमान (सम ३८) ।
'सिद्ध न [सिद्ध] देव-विमान-विशेष
(सम ३८) । 'सुय पुं [शुक्र] व्यक्ति-
वाचक नाम (उर) । 'पित्त न [पित्त]
एक देव-विमान (सम ३८) ।

पुष्कस न [दे] केफरा, शरीर का एक
नीचरी धंन (पञ्चम १०५, ५५) ।

पुष्फा श्री [दे] झुकी, पिता की बहिन
(दि ६, ५२) ।

पुष्पिज वि [पुष्पित] कुसुमित, सजात-
पुष्प (धर्मवि १४८, कुमा, शाया १, ११;
सुभा ५८) ।

पुष्पिजा श्री [दे] देखो पुष्पा (पाप) ।
पुष्पिजा श्री [पुष्पिता] एक जैन धामम-
ध्य (निर १, २) ।

पुष्पिम पुत्री [पुष्पत्व] पुष्पन (हि २,
१५४) ।

पुष्पी [दे] देखो पुष्पा (पद्) ।

पुष्पुआ श्री [दे] वरीय (सोपदा) का धर्मि
‘सूत्रजह हेमवर्त्मि दुग्गमो पुष्पुमापुष्पवेण’
(गा ३२६) ।

पुष्पुत्तर न [पुष्पोत्तर] एक विमान (कण्य) ।
‘वटिसग न [वितसक] एक देव विमान
(धम ३८) ।

पुष्पुत्तरा श्री [पुष्पोत्तरा] शस्त्र की
पुष्पोत्तरा एक जालि (शाया १, १७—
पत्र २२६, परण १७—पत्र ५१३) ।

पुष्पोद्दय न [पुष्पोद्दक] पुष्प रख से मिश्रित
जल (शाया १, १—पत्र १६) ।

पुष्पोदय वि [पुष्पोपग] पुष्प प्राप्त
पुष्पोदा [वन्देवाता, पूजनेवाता (हुण)
(ठा ३, १—पत्र ११३) ।

पुम पु [पुस्] १ दुग्ध, नर, ‘बीक्षुमाण
विमुन्मो’ (पत्र ५, ७२), ‘पुमत्तमागम
कुमार दावि’ (उत्त १४, ३, ठा ८ कीप) ।

२ पुष्प-वद (कर्म ५, ६०) । ‘आणमणी
श्री [आज्ञापनी] पुष्प की माता देवना
भाषा भासा विदेय (परण ११) । ‘पद्मावर्णा
श्री [प्रज्ञापनी] माया-विशेष पुष्प के
सगणों का प्रतिपादन करनेवाली भाषा
(परण ११—पत्र १६४) । ‘वयण न
[वचन] पुष्पिग राज्य का उच्चारण (परण
११—पत्र ३०१) ।

पुम्न (धर) स [हट] देवता । पुम्न
(माट ११६) ।

पुमही श्री [दे] पुत्र-अदेश कर्म के मोचे
का भाग ‘पुमनि पद्माभा’ (मग १५—
पत्र ५७६) ।

पुयायइता देतो पुआन ।

पु (पर) देतो पूर = पूष्प । पुष्ट (ति) ।

पुन [पुन] १ नगर, शहर (कुमा, कुप्र
४३८) । २ शरीर देह (कुप्र ४३८) । ‘चद
हु [चन्द्र] विद्यापर यश का एक राजा
(पत्रम ५, ४४) । ‘भेयण वि [भेदन]
नगर का भेदन करनेवाला । श्री—णी
(उत्त २०, १८) । ‘भइ पु [पति] नगर
का अधिपति (भवि) । ‘वर न [वरी]
श्रेष्ठ नगर (ववा, परण १, ४) । ‘वरी श्री
[वरा] श्रेष्ठ नगरी (शाया १, ८, लका
कुर २ १५२) । ‘वाल पु [पाल] नगर-
रक्षक, राजा (भवि) ।

पुन देखो पुन ‘पुनम्ममि यपुच्छा’ (हृह १) ।
पुनएअ } देखो पुनदेय (भवि) ।
पुनएय }

पुनओ य [पुनत्स्] १ धन, भागे (सम
१५१, ठा ४, २, गा ३५०, कुमा कीप) ।
२ पहले, पूर्व में ‘पुनओ कय जं तु तं
पुनम्म’ (मीप ४८६) ।

पुनं म [पुनस्] १ पहले, पूर्व में । २
समय, तब एण के दहिदे सुबुद्धिं सगाले
पच्छा पुनं च एण विदन्मो गममि विदममरादे
यावि विहरिज्जा’ (ठा २, १—पत्र ११७) ।
३ अग्रे, भागे । ‘गम वि [गम] धन
भागी, पुरोवर्ती (सूत्र १, ३, ६) । देखो
पुनं, पुनो ।

पुनजय पु [पुनजय] एक विद्यापर राजा ।
‘पुन न [पुन] एक विद्यापर-नगर (इत) ।
पुनदर पु [पुनदर] १ हन, देवराज । २
यय इय विरोध (हे १, १७७) । ३ कुण-
विषय, कय वा पद ‘पुनदरुमुत्तान-
मुक्खिए नूदया जाया’ (वर ८८६ दी) ।
४ एक राजवि (पत्रम २१, ८०) । ५ मदर-
कुत्र नगर का एक विद्यापर राजा (पत्रम
६, १७०) । ‘जसा श्री [यसास्] एक
राज-कन्या का नाम (वर ६७३) । ‘दिमि
श्री [दिम] पूर्व दिशा (वर १४२ दी) ।

पुनं वि [पुनं] १ बहु नृप-सबको
पुरधी श्री । २ पांड और पुनराणा की
(कुमा कुप्र १०७, पुत्र २६ पाप) । ३
अनेक बात पहले क्यारी हुई की (कण्य) ।

पुनइद देतो पुनइद (सूत्र २, २, ८८) ।

पुनइर पु [पुनइर] १ भागे करना, धन-
स्वापन (भावा) । २ सम्मान, भादर
(धम ४०) ।

पुनइरउ वि [पुनइरउ] १ भागे किया हुआ
(या ६) । २ पुरोवर्ती, भागामी, ‘गहण-
धमयपुसखे पोण्णे लोरोति’ (मग १, १) ।

पुनइरउ देखो पुनइर (राज) ।

पुनइरउ देखो पुनइर (राज) ।
पुनइरउ देखो पुनइर (राज) ।
पुनइरउ देखो पुनइर (राज) ।
पुनइरउ देखो पुनइर (राज) ।

पुनइरउ देखो पुनइर (राज) ।
पुनइरउ देखो पुनइर (राज) ।
पुनइरउ देखो पुनइर (राज) ।
पुनइरउ देखो पुनइर (राज) ।

पुनइरउ देखो पुनइर (राज) ।
पुनइरउ देखो पुनइर (राज) ।
पुनइरउ देखो पुनइर (राज) ।
पुनइरउ देखो पुनइर (राज) ।

पुनइरउ देखो पुनइर (राज) ।
पुनइरउ देखो पुनइर (राज) ।
पुनइरउ देखो पुनइर (राज) ।
पुनइरउ देखो पुनइर (राज) ।

पुनइरउ देखो पुनइर (राज) ।
पुनइरउ देखो पुनइर (राज) ।
पुनइरउ देखो पुनइर (राज) ।
पुनइरउ देखो पुनइर (राज) ।

पुनइरउ देखो पुनइर (राज) ।
पुनइरउ देखो पुनइर (राज) ।
पुनइरउ देखो पुनइर (राज) ।
पुनइरउ देखो पुनइर (राज) ।

पुनइरउ देखो पुनइर (राज) ।
पुनइरउ देखो पुनइर (राज) ।
पुनइरउ देखो पुनइर (राज) ।
पुनइरउ देखो पुनइर (राज) ।

पुनइरउ देखो पुनइर (राज) ।
पुनइरउ देखो पुनइर (राज) ।
पुनइरउ देखो पुनइर (राज) ।
पुनइरउ देखो पुनइर (राज) ।

पुनइरउ देखो पुनइर (राज) ।
पुनइरउ देखो पुनइर (राज) ।
पुनइरउ देखो पुनइर (राज) ।
पुनइरउ देखो पुनइर (राज) ।

पुनइरउ देखो पुनइर (राज) ।
पुनइरउ देखो पुनइर (राज) ।
पुनइरउ देखो पुनइर (राज) ।
पुनइरउ देखो पुनइर (राज) ।

पुराअण वि [पुरातन] पुराना, प्राचीन ।
‘को. ‘नी (नट—चैत १३१) ।

पुराअर सक [पुरा + कृ] भागे करना ।
पुराअरति (सूत्र १, ५, २, १) ।

पुराण वि [पुराण] १ पुरातन, पुरातन
(गजद; उत्त ८, १२) । २ न. व्यासादि-
मुनि-प्रणीत ग्रन्थ-विशेष, पुरातन इतिहास के
द्वारा जिसमें धर्म-तत्त्व निरूपित किया जाता
हो वह शास्त्र (धर्मवि ३८; नवि) । ‘पुरिस
पुं [‘पुरय] श्रीकृष्ण (बन्ना १२२) ।

पुरिकोचेर पुं. न. [पुरिकोचेर] देश-विशेष
(पद्म २८, ६७) ।

पुरिस्थिमा देवो पुरिस्थिमा (सूत्र २, १, ६) ।

पुरिम देवो पुत्र्य = पूर्व (हे २, १५; प्राक्
२८; मग; कुमा); ‘पंचवस्त्रो लघु धम्मो
पुरिमस्स य पच्छिमस्स य जिणस्स’ (पद्म
७५; पंचा १७, १) । ‘इह पुंन [‘धिं]
१ पूर्वा १ । २ अष्टाव्यान-विशेष (पंचा ५;
पडि) । ३ तप-विशेष; निबिडुत्तिक तप
(संबोध ५७) । ‘दिट्ठय वि [‘धिंकि]
‘पुरिमइह’ अष्टाव्यान करनेवाला (पद्म २,
१; डा ५, १) ।

पुरिम वि [वीरस्स] अन्न-मन्त्र, अन्नोत्तम, आगे
का; ‘यद्दुत्तपत्तज्जे काण्णेषु पद्ममुणिं सु
निच्छतं । पुरिमदुणे सम्मत्तं’ (संबोध ३२) ।

पुरिम धुं [‘प्रसोद्ध] प्रतिवेदन की क्षिया-
विशेष, ‘य पुरिमा नन खोवा’ (भोप २६५) ।

पुरिमताल न [पुरिमताल] नागर-विशेष
(विपा १, १; श्रीप) ।

पुरिमिल्ल वि [पूर्वीय] पहले का, पुरातन,
प्राचीन; ‘मासि नरा पुरिमिल्ला, तां हि
भाहेवि तह होमो’ (वेद्य ११५) ।

पुरिल पुं [‘दे] शय, वानव (पद्) ।

पुरिल वि [पुरातन] पुरा-मन्त्र, पहले का,
पूर्वर्था (विने १३२६; हे २, १६३) ।

पुरिल वि [वीरस्स] पुरो-अन्न, पुरो-वर्त्ता,
अन्न-नामी (से १३, २; हे २, १६३; प्राक्
पद्) ।

पुरिल वि [वीर] पुर-मन्त्र, नागरिक (प्राक्
१५; हे २, १६३) ।

पुरिल वि [‘दे] मन्त्र; ‘येह (दे ६, ५३) ।

पुरिल देवो पुरिल्ला = पुरा, पुरख; ‘पुरिल्लो’
(हे २, १६५; पद्) ।

पुरिलदेव पुं [‘दे] मन्त्र, वानव (दे ६, ५२) ।

पुरिलपहाणा खो [‘दे] सांघ को दाढ (दे ६,
५६) ।

पुरिल्ल म [पुरा] १ निरन्तर क्रिया-करख,
निच्छेद-रहित किया करना । २ प्राचीन,
पुरातन । ३ पुरातन समय में । ४ भावी । ५
निश्च, संधिहित । ६ इतिहास, पुरातन (हे
२, १६५) ।

पुरिल्ल म [पुरस्] भागे; अन्नतः (हे २,
१६५) ।

पुरिस पुंन [‘पुरय] १ पुमान्, नर, मर्द हि
१, १२५; मग; कुमा; प्राप् १२६) । ‘इत्थोणि
या पुरिसाणि वा’ (आवा २, ११, १८) ।
२ यौव, जोवागमा (विसे २०६०; सूत्र २,
१, २६) । ३ ईश्वर (सूत्र २, १, २६) ।
४ शङ्कु, छाया माने का काष्ठानिर्गमित
कीलक । ५ पुरुष-शरीर (एवि) । ‘कार,
‘कार, ‘भारपुं [‘वर] १ वीर्य, पुरुषवन,
पुरुष-नेत्र, पुरुष-अन्न (प्राप् ५३; जवा; सु
२, ३५; जवर ५७) । २ पुरातन का
अभिमान (भोप) । ‘जाय पुं [‘जात] १
पुरुष । २ पुरुष-जातीय (सूत्र २, १, ६; ७;
डा ३, १; २; ५, १) । ‘जुग न [‘जुग]
क्रम स्थित पुरुष (सम ६८) । ‘जेह पुं
[‘जेष्ठ] प्रयात पुरुष (पंचा १७, १०) ।
‘स, ‘जय न [‘त्व] वीर्य, पुरुषवन; ‘नहि
निमज्जससतहिया पुरिसा पुरिततणमुविं’
(सुर २, २४; नहा; सुभा ८५) । ‘थ्य पुं
[‘थ्य] धर्म, अर्थ, काम वीर मोक्ष रूप पुरुष-
प्रयोग । ‘सयसपुरित्तयकारणमुद्वहो
माणुसो नवो एवो’ (धर्मवि ८२; कुमा;
सुभा १२६) । ‘पुंडरीय पुं [‘पुण्डरीक]
इस अन्नसंविणी बाल में उत्पन्न यह वामुदेव
(वव २१०) । ‘पणीय वि [‘प्रणीत] १
ईश्वर-निमित्त । २ जीव-संघ (सूत्र २, १,
१६३) । ‘येह पुं [‘मेध] यत-विशेष, जिसमें
पुरुष का होम किया जाय वह बज (राज) ।
‘यार देवो ‘वार (गजद; सुर २, १६, सुभा
२७१) । ‘लसय न [‘लक्षण] कला-
विशेष, पुरुष के कलापुत्र चित्र पहचानने की

एक सामुद्रिक कला (जं २) । ‘लिंग, न
[‘लिङ्ग] पुरुष-चित्र; ‘लिंगासिद्ध पुं
[‘लिङ्गासिद्ध] पुरुष-शरीर से जो मुक्त हुआ
हो वह (एवि) । ‘वयण न [‘वचन]
मुनिग यन्त्र (आवा २, ५, १, ३) । ‘वर पुं
[‘वर] श्रेष्ठ पुरुष (भोप) । ‘वरगंधवहिय पुं
[‘वरगन्धवहस्तिन्] १ पुरुषों में श्रेष्ठ
गन्धहस्ती के तुल्य । २ जित-देव (मग; पडि) ।
‘वरपुंडरीय पुं [‘वरपुण्डरीक] १ पुरुषों
में श्रेष्ठ पक्ष के समान । २ जित-देव, पहलू
(मग, पडि) । ‘विजय पुं [‘विजय],
‘विजय] ज्ञान-विशेष (सूत्र २, २, २७) ।
‘वैय पुं [‘वैद] १ काम विशेष, जिसके
उदय से पुरुष को क्षी-संभोग की इच्छा होती
है वह कर्म । २ पुरुष को क्षी-भोग की इच्छा-
साध (एवण २३; सम १५०) । ‘सिंह,
‘सीह पुं [‘सिंह] १ पुरुषों में सिंह के
समान, श्रेष्ठ पुरुष । २ पुं. जित-देव, जित
अभवाद् (मग, पडि) । ३ भगवान् धर्मनाथ
के प्रथम याचक का नाम (विचार ३७८) ।
४ इस अन्नसंविणी बाल में उत्पन्न दाँववा
वामुदेव (सम १०५; पद्म ५, १५५; पद्
२१०) । ‘सेण पुं [‘सेन] १ भगवान्
मैमिाण के पास दोहा लेकर मोक्ष जानेवाला
एक धर्मकृद् महावि, जो वामुदेव के अग्र्यतम
पुत्र थे (सत १५) । २ भगवान् महावीर के
पास दोहा लेकर मनुत्तर विमान में उत्पन्न
होनेवाले एक मुनि, जो राजा वेदिक के
पुत्र थे (एव १) । ‘दागिअ, ‘दाणीय पुं
[‘दातीय] उपादेय पुरुष, आत पुरुष (सम
१३, ५५) ।

पुरिसाअरिआ खो [‘पुरय; अरिआ, ‘ता]
पुरुषार्थ, प्रयत्न (सत, ५, २, ६) ।

पुरिसाअ मक [‘पुरुषाय] विपरीत मैथुन
करना । वर, पुरिसाअंत (गा १२६; ३६१) ।
पुरिसाअ न [‘पुरुषायित] विपरीत मैथुन
(दे १, ५२) ।

पुरिसाअर वि [‘पुरुषायिह] विपरीत रख
करनेवाला, ‘दरुगिराअरि विमविदि तुजण
पुरिसाअ न दुअं’ (गा ५२; ४५६) ।

पुरिसुत्तम पुं [‘पुरुषोत्तम] १ उत्तम
पुरिसोत्तम १ पुरुष, श्रेष्ठ पुमान् । २ जित-

देन, ग्रहं (सम १; मग, पठि) । ३ चीया
त्रिखण्डापिपति, चतुर्थ वामुदेव (सम ७०;
पत्रम ५, १५५) । ४ भगवान् अमन्तनाय का
प्रथम थावक (विचार ३७८) । ५ श्रीकृष्ण
(सम्मत २२६) ।

पुरी स्त्री [पुरी] नगरी, शहर (कुमा) । "नाह
पु [नाथ] नगरी का अधिपति, राजा (ठा
७२८ टी) ।

पुरीस पुन [पुरीप] विष्ठा (एया १, ८,
उप १२६ टी; १२० टी, पाम) । "सुतपुरीसे
य पिरसंति" (धर्मवि १६) ।

पुरु पुं [पुरु] १ स्व-नाम-व्याप्त एक राजा
(ममि १७६) । २ वि. प्रभुर, प्रभूत । जी.
"ई (प्राह २८) ।

पुरपुरिया बी [दे] जलएला, जलसुखा
(दे ६, ५) ।

पुरमिल देवी पुरिमिल (गठ३) ।

पुरव्य } देवी पुव्य = पूर्व; "ए हिरलो
पुरव्य" विद्रुपकी (स्वज ५५), "ममद-
भाणउठ'वनपुव्य" (सुभा २२, नाट—पुच
१२१; वि १२५) ।

पुरस (शी) देवी पुरिस (प्राह ८३; स्वज
२६; मवि ८५; प्रवी ६९) ।

पुरसोत्तम (शी) देवी पुरिसोत्तम (वि
१२५) ।

पुरहूअ पुं [दि] पूक, उल्लू (दे ६, ५५) ।

पुरहूअ पुं [पुरहूअ] हन, देव-राज (गठ३) ।

पुरहय पुं [पुरहयस्] एक चंद्र-वंशीय
राजा (वि ५०८; ५०६) ।

पुरे देतो पुरि "जस नयि पुरे पद्म मग्ने
तस कुपो सिपा" (भाषा) । "कड वि [कुन]
भागे किया हुआ, पूर्व में किया हुआ (मोप-
सूत्र १, ५, २, १; उत १००, १) । "कम्म
न [कर्मन] पहले करने का काम पूर्व में
की जाती किया 'पुरयो कर्णं ज तुं पुरेयम्'
(मोप ५८६; हे १, ५७) । "फार पुं [फार]
समान, भार (उत २६, ७; सुप २६, ७) ।
"कराउ देतो 'कड (पण १६—पत्र ७६६,
पण १, १) । "बाय पुं [बाय] १ समेह
बायु । २ पूर्व दिशा का पवन (खाय १,
११—पत्र १७१) । "संगडि स्त्री [दे-

संस्कृति] पहले ही किया जाता जिनवार
—मोजनोस्वज (भाषा २, १, २, ६; २, १,
४, १) । "संयुय वि [संस्तुत] १ पूर्व-
परिचित । २ स्व-पत्र का संग (भाषा २,
१, ४, ५) ।

पुरेस पुं [पुरेश] नगर-स्वामी (मवि) ।

पुरो देखे पुरि (मोह ५६, कुमा) । "अ, 'ग'
वि [ग] भगवामी, ग्रहेश्वर (प्रति ४००; विने
२५५८) । 'गम वि [गम] वही धर्म
(उप ३ ५५१) । "भाइ वि [भागिन्]
दोष की छोड़ कर गुण-भोग को ग्रहण करने
वाला (नाट—विक ६७) ।

पुरोकर सक [पुरस् + क] १ धागे करना ।
२ स्वीकार करना । ३ सम्मान करना । सकृ.
पुरोकरिअ, पुरोकाई (मा १६, सूत्र १,
१, ३, १५) ।

पुरोत्तमपुर न [पुरोत्तमपुर] एक विद्याधर-
नगर का नाम (इक) ।

पुरोग पुं [पुरोपक] बुद्ध-विशेष (मीर) ।

पुरोह पुं [पुरोपस] पुरोहित (उप ७२८
टी; धर्मवि १४६) ।

पुरोहड वि [दि] १ विपम, धयम । २
पञ्चोक्त (१) (दे ६, १५) । ३ पुन,
मायुत नृपि का वास्तु (दे ६, १५) । ४
महाशर, दरवाजा का मयमाण (मीप ६२२) ।
५ बाह्य, बाह्य. 'संसासमए पत्तं मग्ने वनहा
पुरोहडसंघो । मह दिट्ठीए दसिदि टापय्वा'
(सुभा ५५५, बुह २) ।

पुरोहिअ पुं [पुरोहित] पुरोधा, याजक, होम
भादि से शान्ति-धर्म करनेवाला ब्राह्मण
(कुमा, बात) ।

पुल पुं [दि. पुल] छोटा कोडा, कुनवी, 'ते
पुसा निजंति' (ठा १०—पत्र ५२१) ।

पुल वि [पुल] समुद्रिज, उन्नत, 'पुलतिपुकाए'
(दम १०, १६) ।

पुल धक [पुल] उन्नत होना (दस १०,
१६) ।

पुल } सक [हड] देवना । पुनइ, पुनघड
पुलअ } (प्राह ७१; हे ५, १८१. प्राय ८,
१६) । पुनएड (पठ १०६३), पुनएडि
(मा ३५१) । बर. पुलंड, पुलअंड, पुलनं
(पण्. नाट—मानवि ६; पत्रम १, ७०; ८,

१६०, सुर ११, १२०, १२, २०४; ७,
२१२) । संक. पुलइअ (त ६८६) ।

पुलअ पुं [पुलअ] १ रोमाञ्च (कुमा) । २
रत्न-विशेष, मणि की एक जाति (पण १;
उत ३६, ७७; मण) । ३ जलवर जनु-
विशेष, ग्राह का एक मेद, 'सीमागारपुल(न)-
यमुपुमार—' (पण १, १—पत्र ७) ।
"कंड पुन [काण्ड] रत्नप्रभा नरक-सुमित्री
का एक काण्ड (ठा १०) ।

पुलअण वि [दर्शन] देवनेवाला, प्रेक्षक
(कुमा) ।

पुलअणन [पुलअण] पुलभित होना (पण्.) ।

पुलआअ सक [उत् + लस्] उल्लसित
होना, उल्लास पाना । पुलआपमड (हे ५,
२०२) । बह. पुलआअमाण (कुमा) ।

पुलइअ वि [हड] देला हुमा (गा ११८; सुर
१५, ११; पाम) ।

पुलइअ वि [पुलइअ] रोमांचित (पाम,
कुमा ५, १६; कण्. महा, गा २०) ।

पुलइअ भक् [पुलइअ] रोमांचित होना ।
बह. पुलइअजत (मण) ।

पुलइअ वि [पुलइअ] रोमाञ्च-मुक्त, रोमा-
ंचित (बजा १६५) ।

पुलपंत देवी पुलअ = हय ।

पुलधअ पुं [दि] भमर, मौरा (पण्.) ।

पुलपुल न [दि] भनचरत, निरंतर (पण १,
३—पत्र ५५; मीर) ।

पुलक } देवी पुलअ = पुलक (वि २०१ डि
पुलाय } साया १, १; सम १०५, मण्.) ।

पुलव पुं [पुलअ] कौट-विशेष (भाषा २,
११, १) ।

पुलाय } पुंन [पुलाय] १ भक्षार भक्ष, 'भक्ष-
पुलाय' मक्षार भक्ष कुपायवहेण' (संशेष
२८; पत्र ६३), 'निर्भारए होइ जहा पुलाए'
(सूत्र १, ७, २६) । २ बना भादि कुन
भक्ष (उत ८, १२०. मुख ८, १२) । ३ तह-
नुन भादि दुर्गन्ध द्रव्य । ४ दुष्ट रमराना
द्रव्य, 'सिदिहं होइ पुलाय घण्टे गंधे भरत-
पुलाय य' (बुह ५) । ५ पुं. भक्षने संयम को
निस्तार बनानेवाला भुति, शिदिनाचारी
मायुको का एक भेद (ठा ३, २; ५, १;
संशेष २८. पत्र ६३) ।

पुलासिअ पुं [दि] ग्रन्थि-कण (दि ६, ५५)।
पुलिंद पुं [पुलिन्द] १ श्वायं देश-विशेष
(इक)। २ पुंछी. उस देश में रहनेवाला मनुष्य
(पह १, १; शीप; नपू; जव)। छी, 'दी
(गया १, १; शीप)।

पुलिम न [पुलिम] तट. विनारा, 'भोदएणो
नदपुलिणामो' (पह १०, ५४)। २ लघातार
बाईत दिनों का उपवास (शबीष ५८)।

पुलिम न [पुलिम] गति-विशेष (शीप)।

पुलुट्ट वि [पुलुट्ट] क्षय (पाप)।

पुलोअ सक [ह्रस्व, प्र + लोफ] देवता।
पुनोएह (दि ४, १८१; सुर १, ८६)। बहू.
पुलअंत, पुलोएंत (पि १०४, सुर ३,
११८)।

पुलोअण न [दर्शन, प्रलोकर] मिलोकर (दि
६, ३०; गा १२२)।

पुलोइअ वि [ह्रस्व, प्रलोकिन] १ देवा ह्रस्वा
(सुर १, १६४)। २ न. ब्रह्मलोक (ते ७,
५६)।

पुलोएंत देलो पुलोअ।

पुलोम पुं [पुलोम] देख विशेष। 'तणया
'छी' [तनया] शनी, ह्रस्वाणी (गम)।

पुलोमी छी [पौलोमी] ह्रस्वाणी (प्राह १०;
दि १, १९०)।

पुलोय देलो पुलोअ। पुलोवेदि (श्री) (पि
१०४)।

पुलोस पुं [पुलो] वाह, दहन (पउड)।

पुह [दि] देलो पोह (सुह ६, १)।

पुहि पुंछी [दि] १ व्याघ्र, शेर (दि ६, ७६;
पाप)। २ सिंह, पञ्चालन, कुण्ड (दि ६,
७६)। छी. 'को निपयद पयं व पुलोए' (सुपा
३१२)।

पुन [सप] [पुन] गति करता, चलता।
पुनव [पुन] (पि ४०३), पुनवति (मप
१५—मन ६७०, टी—पन ६७३)।

पुव्व देलो पुन = पु।

पुव्व नि [पुव्व] १ दिशा, देश और बाल की
घेराव से पहले का, प्राय, प्रथम (ठा ४, ४;
पि १, प्राह १२२)। २ समस्त, सब।

१ उभेय भाता (दि २, १३५; पद)। ४ पुन.
'नाम-मान विशेष, चौरासे लाख की चौरासी

लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो सकने
वर्ष (ठा २, ४; मप ७४; जी ३७; इक)।

५ जैन ग्रन्था-विशेष, चारहवें श्रम ग्रन्थ का
एक विशाल विभाग, अथर्वान, पच्छिन्द,
'नोदसपुव्वी' (विपा १, १)। ६ दन्त,
बहु-वर प्रादि युग्म, 'पुव्वद्वाराणि' (भावा
२, ११, १३)। ७ पूर्व-ग्रन्थ का ज्ञान (कम्म
२, ७)। ८ कारण, हेतु (एदि)। 'कालिय
वि' [कालिक] पूर्व काल का, पूर्व काल से
संबन्ध रहनेवाला (पह १, २—गन २८)।

'गय न' [गत] जैन शास्त्र-विशेष, चारहवें
श्रम का विभाग-विशेष (ठा १०—पन ४६१)।

'गह पुं' [गह] २ दिन का पूर्व भाग,
सुबह से दो पहर तक का समय (दि १,
६७)। २ उप-विशेष, 'पुरिष्ठ' तप (संशेष
५८)। 'तय पुंन' [तयस्] वीतराय

प्रवस्था के पहले का—सराग प्रवस्था का
तप (मप)। 'दारिअ वि' [दारिक] पूर्व
दिशा में गमन करने के कल्याण-कारी (नयव)

(सम १२)। 'ह पुंन' [धे] पहला प्राया
(माट)। 'धर वि' [धर] पूर्व-ग्रन्थ का ज्ञान-
वाता (पह २, १)। 'पय न' [पद]

उत्तम-स्थान (निह १)। 'पुट्टवा छी
[प्रोत्पदा] नञ-विशेष (सुह १०, ५)।

'पुरिस पुं' [पुरय] पूर्व, पुरा (पुर २,
१६४)। 'पुओग पुं' [प्रयोग] पहले की
क्रिया, पूर्व काल का प्रयत्न (मप ८, ६)।

'कग्गुणी छी' [कालुणी] नञ-विशेष
(राज)। 'भदवया छी' [भद्रपदा] नञ-
विशेष (राज)। 'अय पुं' [अय] यत् जन्म,

शरीर जन्म (गया १, १)। 'भयि वि
[भयि] पूर्वजन्म संबंधी (अवि)। 'य पुं
[ज] पूर्व पुरय, पुरा (पुपा २३२)।

'रत्त पुं' [रात्र] राति का पूर्व भाग (मप,
महा)। 'य न' [यन्] अनुमान प्रमाण
का एक शब्द (मप)। 'विदेह पुं' [विदेह]

महाविदेह वर्ष का पूर्वार्ध हिंसा (ठा २, ३,
इक)। 'ममाम पुंन' [समास] एक से
ज्यादा पूर्व-शब्दों का ज्ञान (मप १, ७)।

'सुय न' [सुन] पूर्व का ज्ञान (राज)।
'मुरि पुं' [मुरि] पूर्वापार, प्राचीन प्राचार्य
(जीय १)। 'हर देयो' [हर] पञ्च ११८,

१२१)। 'गुपुव्वी छी' [गुपुव्वी] क्रम,
परिपाटी (मप, विपा १, १; शीप, महा)।

'गह देखो' [गह] (दि १, ६७; पद)।
'कग्गुणी देखो' [कग्गुणी] (सम ७, इक)।

'मदवया देखो' [मदवया] (सम ७)।
'सादा छी' [पाठा] नञ-विशेष (सम
६)।

पुव्वंग पुंन [पूर्वाङ्ग] १ समय-परिमाण-
विशेष, चौरासी लाख वर्ष (ठा २, ४; इक)।
२ पञ्च के पहले दिन का नाम, प्रतिपत्त (सुह
१०, १४)।

पुव्वंग वि [दि] मुद्रित (पद)।

पुव्वी छी [पूर्वा] पूर्व दिशा (कुमा)।

पुव्वीह वि [दे] पीन, मासल, पुट्ट (दि ६,
५२)।

पुव्वामेय वि [पूर्वमेय] पहले ही (वत्त)।

पुव्वीहईपय न [पूर्वाचरणीक] नगर-विशेष
(इक)।

पुव्वि वि [पूर्वि] पूर्व-शास्त्र का ज्ञानकार
(विपा १, १; राज)।

पुव्वि, क्वि [पूर्व] पहले, पूर्व में
पुव्वि (मप, जवा, सुर १, १६४; ५,
१११; जीय)। 'संथय पुं' [संथय] पूर्व
में की जाती क्षापा, जैन धृति की भिगा का

एक शेष, भिगा-प्राप्ति के पहले दायक की
स्तुति करना (ठा ३, ४)।

पुव्विम पुंछी [पूर्व] पहिलापन, प्रथमता
(पद)।

पुव्विह नि [पूर्व, पूर्वीय] पहले का, पूर्व
का; 'पुव्विहममं वरत्त' (विषय ८८६);
'पुव्विहल्लर विविचि वुट्टममे' (निता ४; सुपा
३५६; सज्ज)।

पुव्वत्त नि [पूर्व] पहले बढ़ा हुआ, पूर्व
में उक्त (पुर २, २४८)।

पुव्वत्तरा छी [पूर्वत्तरा] ईशान की ओर
(राज)।

पुस सक [प्र + उच्छ, सृज्] साफ
करना, शुद्ध करना, पीछना। पुसद (प्राह
६६; दि ४, १०५, का ४३३)। बहू.

पुसिज्जत (गा २०६)।
पुस देलो पुसस (प्राह २६; प्राह)।

पुस पुं [पौष] मास-विशेष, पौष मास, 'पुषो' (प्राकृ १०) ।

पुसिअ वि [प्रोच्छिन्न, मृष्ट] पोछा हुमा (गउड, से १०, ४२, गा ४४) ।

पुसिअ पुं [पुषत] मृग विशेष (गा ६२६) ।

पुसस पु [पुष्य] १ नक्षत्र-विशेष, कृत्तिका से आठवाँ नक्षत्र (प्राकृ २६; प्राग्न, सम ८; १७ ठा २, ३) । २ देवता नक्षत्र का अधिक-पति देव (सुज १०, १२) । ३ ऋषि-विशेष (राज) । 'माणअ, 'माणय पुं ['मानय] मागय, ह्युति पाठक, मात-चारण आदि (छाया १, ८—पय १३३, टी—पय १३६) । देखो पुस = पुष्य ।

पुससदेवय न [पुष्यदेवत] कैतेतर शास्त्र-विशेष (छवि १५४) ।

पुससायण न [पुष्यायण] मोन विशेष (सुज १०, १६) ।

पुह १ देखो पिह = पुष्क (हे १, १८८) । पुह २ 'बभूय वि [भूत] भलय, जो ब्रुवा हुमा हो (मगम ६०) ।

पुहइ १ को [पृथिवी] १ सतीय बासुदेव की पुहई १ माता का नाम (पउम २०, १८४) । २ एक नगरी का नाम (पउम २०, १८८) । ३ मगवान् मुपाधेनाय की माता का नाम (सुपा १६) । ४—देखो पुडवी, पुहवी (कुमा १, ८, ८८, १३१) । 'धर पुं ['धर] राजा (पउम, ८५, ४) । 'नाह पुं ['नाथ] राजा (सुपा १२२) । 'पहु पुं ['प्रभु] राजा (उप ७२८ टी) । 'पाल पुं ['पाल] राजा (सुर १, २४३) । 'राय पुं ['राज] विक्रम की बाहवी शताब्दी का शासक-महाराज देवा का एक राजा, 'पृहृदराण सयमरीतरिदेव' (सुलि १०६०) । 'पह पुं ['पति] राजा (सुपा २०१, २४८, ४१६) । 'पाल देखो 'पाल (उप ६४८ टी) ।

पुहईसर पु [पृथिवीभार] राजा (सुपा १०७, २४४) ।

पुहत्त न [पृथक्तर] १ भेद, पार्थक्य (पयु) । २ विस्तार (राज) । ३ बहुरूप (मग १, २, ठा १०) । ४ वि. निद्र, प्रसंग, 'भयमुहत्तम' (विसे १०९६) । 'विचक न ['चितक]

मुक्त ध्यान का एक भेद (सबोध ५१) । देखो पुहुत्त, पोहत्त ।

पुहत्तिय देखो पोहत्तिय (मग) ।

पुहय देखो पिह = पुष्क, 'पुहय देवीण' (कुमा) ।

पुहवि १ देखो पुडवी, पुहई (वि ३८६, या पुडवी) १४. प्राग्न, प्रासु ५. ११३; सम १४१. स १४२) । २ मगवान् शेषासनाय की दीक्षा शिविका (विचार १२६) । १० एक छन्द का नाम (विष) । 'चंद पुं ['चन्द्र] एक राजा (यति ५०) । 'पाल पुं ['पाल] १ एक राजकुमार (उप ६८६ टी) । २ देखो पुहई-पाल (सिरि ४५) । 'पुन न ['पुन] एक नगर का नाम (उप ८४४) ।

पुहयीस पुं [पृथिवीश] राजा (हे १, ६) ।

पुहु वि [पृथु] विद्याल, वित्तीय । को. 'ई (प्राकृ २८) ।

पुहुत्त न [पृथक्तर] १ वो से नव तक की सख्या (सम ४४, जी ३०, मग) । २—देखो पुहत्त (ठा १०—पय ४७१, ४६५) ।

पुहुवी देखो पुहुई (हे २, ११३) ।

पू १ देखो पुं । 'सुअ पुं ['शुक्र] सीता, नवें मिक पति (गा ५६३ म) ।

पूअ सक [पूजय] पूजा करना । पुअइ (महा) । कर्म, पूजति (गउड) । वक्र. पूयंत (सुपा २२४) । कवक. पूइजत (पउम ३२, ६) । क. पूजगीअ, पूअअय, पूअणिज (नाट—मुण्ड १६५. उवर १६६, धीप, छाया १, १ टी. पचा २, ८. उप ३२० टी) । सक. पूइऊण (महा) ।

पूअ न [दे] संवि, दही (हे ६, ५६) ।

पूअ पुं [पूग] १ बुन विशेष, सुपारी का गाछ (गउड) । २ न. फल विशेष, सुपारी (स ३४५) । देखो पूग । 'फफली, 'फली को ['फली] सुपारी का पेड़ (पउम ५३, ७६, पयण १) ।

पूअ ॥ [पूर्व] जालाव, दुर्गा आदि मुद्राना, भल्ल-दान करना, देव मन्दिर बनाना आदि नम-समूह ने दित का कार्य, 'गर्हियाणि हट्टपूयाणि' (स ७१३) ।

पूअ वि [पूत] १ पवित्र, शुद्ध (छाया १, ४, धीप) । २ न. सगादार छ दिनों का

उपवास (सबोध ५८) । ३ वि. सूप आदि से साफ—तुप-रहित किया हुआ (छाया १, ७—पय ११६) ।

पूअ न [पूय] पीव, दुर्गन्ध रक्त, ब्रण से निक्का हुआ गन्दा सफेद विगडा हुआ खून (पहइ १, १, छाया ३, ८) ।

पूअण न [पूजन] पूजा, सेवा (कुमा, धीप, सुपा ५८४, महा) ।

पूअणा को [पूजना] १ ऊपर देखो (पहइ २, १, से ७६३, सबोध ६) । २ काम-विमूषा (सूत्र १, ३, ४, १७) ।

पूअणा १ को [पूतना] १ इष्ट व्यवहारी, शान्त, पूअणी १ शक्तिनी (सूत्र १, ३, ४, १३. पिडमा ४१, सुपा २६; पहइ ४, ४) । २ गावर, मेढी, मेढी (सूत्र १, ३, ४, १३) ।

पूअय वि [पूजक] पूजा करनेवाला (सुर १३, १४३) ।

पूअर देखो पोर = पूतर (या १४, जी १५) ।

पूअल पु [पू] बभूय, पूष, जाय विशेष (हे ६, १८) ।

पूअलिया को [पूपिर] ऊपर देखो (पव ४) ।

पूआ को [दे] विद्याक-गृहीता, भूताविष्ट को (हे ६, ५४) ।

पूआ की [पूजा] पूजन, प्रार्थ, सेवा (कुमा) । 'भक्त न ['भक्त] पूज के लिए निष्पादित भोजन (श्रु २) । 'मह पुं ['मह] पूजोत्सव (कुप्र ८५) । 'रह पुं ['रथ] रासस-न्याय में उल्लेख एक राजा का नाम, एक सक्का-पति (पउम ५, २२६) । 'रिह, 'रह वि ['रिह] पूजा-भोग्य (सुपा ४६१, मगि ११८) ।

पूआदिज वि [पूजादार्थ] पूजित-भूजन (ठा २, ३ टी—पय ३४२) ।

पूइ वि [पुति] १ दुर्गन्ध, दुर्गन्धनाला (पउम ४४, ५४' उप ७२८ टी. ठा ४१) २। मय-वित्र (पचा १३, ५) । ३ को. दुर्गन्ध । ४ अपवित्रता (संदु ३८) । ५ निगा का एक दोष, दुर्गन्ध (पिड २६८) । ६ रोग विशेष, एक नाडिका-रोग, नासा-भोग्य (विसे २०८) । ७ पूय, पीव, 'गर्न्धपूरनिवह' (महा), 'पूर-नसहिरगुल' (सु १४, ४६), 'बहा मुषी

पूइकरणी' (उत्त १, ४) । = वृक्ष-विशेष, एकात्मिक वृक्ष की एक जाति, 'पूईय निब-करण' (परख १—पत्र ३१) । 'बम्म पुंन' ['कर्मन्'] मुनि मित्रा का एक दोष, अवित्र वस्तु में अविविध वस्तु को मिलाकर दी जाती मित्रा का ग्रहण (ठा ३, ४ टी, श्रौष, पचा १३, ५) । 'म वि' ['मत्'] १ दुर्गन्धी । २ अपवित्र (तदु ३८) ।

पूइ वि [पूति] कुचित, सदा दुःखा (भाषा २, १, म, ४) । 'विस्त्राग पुंन' ['पिण्याक'] सर्प-जल, सरसो की लकी (वत्त ५, २, २२) ।

पूइअ वि [पूयित] ऊपर देखो (राय १८) । पूइआलुगन [दे. पूयालुक] जल में होने-वाली वनस्पति-विशेष (भाषा २, १, म—सूत्र ४७) ।

पूइजत देखो पूअ = पूज्य ।

पूइम वि [पूय] पूजा योग्य, सम्माननीय, 'भयाय व पूइमो होइ पच्छा होइ अपूइमो' (दसह १, ४) ।

पूइय वि [पूजित] अचित, सेवित (श्रीप, उप) ।

पूइय वि [पूतित] १ अपवित्र, अशुद्ध, दूषित (परह २, ५, उप पृ २१०) । २ दुर्गन्धी, गुट गन्धवाला (खामा १, म, तदु ४१) । ३ दूति नामक मित्रा दोष से युक्त (विड २६८) ।

पूइय देखो पोइय = (दे), 'बलो गमो पूइया-बाण' (सुल २, २६, उप) ।

पूइअज्य देखो पूअ = पूज्य ।

पूइरिअ न [दे] कार्य, काम, बाज, प्रयोजन (दे ६, ५७) ।

पूग पु [पूग] १ समूह, संघात (मोह २८) । २ देखो पूअ = पूग (स ७०, ७१) ।

पूगी छो [पूगी] गुगरी का पेड़ । 'फल न' ['फल] गुगरी, मसीली (रखल ५४) ।

पूज देखो पूअ = पूज्य । बर्ग, पूजए (ज) । बट. पूजयंत (विंते २८८८) । क. पूज, पूज (परम ११, ६५, गुग १८०, मुर १, १७, उपर ११६, उप, उप ५६८) ।

पूजग देखो पूजय (पंचा ४, ४४) ।

पूजग देखो पूजग (पंचा ६, ३८) ।

पूजा देखो पूआ = पूजा (उप १०१६) ।

पूजिय देखो पूइय = पूजित (श्रीप) ।

पूण पु [दे] हल्ली, हाथी (दे ६, ५६) ।

पूणिआ } छी [दे] घुणो, घुनी, रई की
पूणी } पहल (दे ६, ७८; ६, ५६) ।

पूप देखो पूअल (निड ५५७) ।

पूपइ पुं [पूपविन्] हनवाई (एदि १६४) ।

पूर्यत देखो पूअ = पज्य ।

पूयली छी [दे] रोटी (भाषा २, १, ८, ६) ।

पूयावणा छी [पूजना] पूजा कराना (सबोष १५) ।

पूर सक [पूर्य] दूति करना, भरना । पूरक, पूरए (हे ४, १६६, श्रीप, भय महा वि ४६२) । बह. पूरत, पूरयल (कुमा, कल्प, श्रीप) । कव. पुज्जत, पुज्जमाण, पूरिज्जत,

पूरत, पूरमाण (उप पृ ११४, गुग ६८, उप ११६ टी, भवि, भा ११६, से ११, ६३, ६, ६७) । बह. पूरिआ (भय), पूरि (भय) (विंग) । हे. पूरिइत्तए (वि ५७८) ।

क पूरिअन् (से ११, ४४) ।

पूर पुं [पूर] १ जल समूह, जल प्रवाह, जल-भारा (कुमा) । २ साय विशेष, 'अपूरपूरसहिए तबोले' (सुर २, ६०) । ३ वि. पूर, पूर्य,

'पूरणिय से सभं पणइमणोरेहि अग्नेव सत्त राइदिमाई, अविस्सइय सुए साविणी विजासिदी' (स ३६३) ।

पूरइत्तअ (श्री) वि [पूरयित] पूर्य करनेवाला (मा ४३) ।

पूरतिया छी [पूरयन्तिआ] राजा की एक परियत्—परियार (राज) ।

पूरग वि [पूरक] दूति करनेवाला (बण, श्रीप, रखल ७७) ।

पूरण न [पूरण] सूर्य, सूर, सिरवी का बना एक पात्र जिसमें भग्न पछोरा जाता है (दे ६, ५६) ।

पूरण न [पूरण] १ दूति, 'वामसापूरए' (सिरि ८६८) । २ पालन (मानु ५) । ३ पुं. सूर्यवंश के राजा अमरकशृण्य का एक पुत्र (मत ३) । ४ ए. ए. गृह-पति का नाम (उग) । ५ वि. दूति करनेवाला (राज) ।

पूरमाण देखो पूअ = पूज्य ।

पूरय देखो पूग, 'बतोसं निर कवला माहारी कुच्छिपुसो भणिमो' (विड ६४२) ।

पूरयत } देखो पूर = पूर्य ।
पूरिअन् }

पूरिगा छी [पूरिका] मोटा कपडा (राज) ।

पूरिम वि [पूरिम] पूरने से—भरने से होनेवाला (खामा १, १३, परह २, ५; श्रीप) ।

पूरिमा छी [पूरिमा] गन्धार भाम की एक मूर्च्छना (ठा ७—पत्र ३६३) ।

पूरिय वि [पूरित] भरा हुआ (गडड, रख, भवि) ।

पूरी छी [पूरी] तन्तुबाप का एक उपकरण (दे ६, ५१) ।

पूरंत देखो पूर = पूर्य ।

पूरोट्टी छी [दे] भवकर, कसवार, कूडा (दे ६, ५७) ।

पूअ पुं [पूअ] पूला, घास की मँटिया (उप ३२० टी, कुग २१५) ।

पूर } देखो पूअल (कत दे ६, ११७;
पूअल } निवृ १) ।

पूअलिआ } देखो पूअलिआ (दह १, निवृ
पूअिगा } १६) ।

पूस भक [उप्] गुट होगा । पूसह (हे ४, २३६, ग्राह ९८) ।

पूस देखो पुस्स = पूय (खामा १, ८, हे १, ४३) । 'मिरि पुं' ['मिरि] एक जैन मुनि (बण) । 'कली छी' ['कली] बल्ली विशेष (परख १) । 'माण, 'मागग पुं' ['माण, 'मानु'] मागघ, मङ्गल पाठक, —बद्धमाण-

पूमाणअपठियपणेहि' (बण, श्रीप) । 'माणग पुं' ['भानक] पयोतिदेवता विशेष, ब्रह्मचि-

हापक देव-विशेष (ठा २, ३) । 'माणय देखो 'माण (श्रीप) । 'मिन्त पु' ['मिन्त]

१ स्वनाम प्रसिद्ध जैन मुनि त्रय—१ एव-

ज्यमित्र, २ वज्रज्यमित्र, ३ दुर्वाभिका-

ज्यमित्र, जो भार्य रचितपूरि मे शिष्य मे

(विने २५१०, २२८६) । २ ए. राजा

(विचार ४६३) । 'मिन्तिय न' ['मिन्तिय] एक जैन मुनि-कुल (बण) ।

पूस पुं [दि] १ राजा सातवाहन (दे ६, ८०)। २ शुक्र, तोता (दे ६, ८०, गा २६३, वज्रा १३४, पात्र)।

पूस पुं [पुप] १ सूर्य, रवि (दे ३, ५६)। २ मणि विशेष (पद्म ६, ३२)।

पूसा श्री [पुप्या] व्यक्ति वाचक नाम, बुराई-कोलिक थावक की पत्नी (उवा)।

पूसाण देखो पूस = एपन (दे ३, ५६)।

पूह पुं [अपोह] विचार, मीमांसा 'पूहपूह-मार्गणवेसए' करमाणस (श्रीप, पि १४२; २८६)। देखो अपोह = प्रगोह।

पूधुम (पै) देखो पद्धम, 'पूधुमसिनेहो' (प्राक १२४)।

पेअ पुं [प्रेत] १ व्यन्तर-मेव, एक देव-जाति (सुपा ४६१, ४६२, जय २६)। २ मृतक (पद्म ५, ६०)। 'कम्म न [कम्मव] भव्येति क्रिया, मृत का दाहादि कार्य (पद्म २३, २४)। 'करणिज न [करणीय] भव्येति क्रिया (पद्म ७५, १)। 'दाइय वि [कायिक] प्रेत मोनि में उत्तम, व्यन्तर-विशेष (मग ३, ७)। 'देवयनाइय वि [देवयानायिक] प्रेत-देवता का, प्रेत-सम्बन्धी (मग ३, ७)। 'नाह पुं [नाय] यमराज, जम (स ३१६)। 'भूमि, भूमी श्री [भूमि, मी] रमराज (सुपा २६५)। 'लौय पुं [लोक] रमराज (पद्म ८६, ४३)। 'वइ पुं [पति] यम (उप ७२८ टी)। 'यण न [यन] रमराज (गाम, सुर १६, २०४, वज्रा २, सुपा ५१२)। 'दिय पुं [धिप] यम, जमराज (गाम)।

पेअ वि [प्रेयस] प्रियतर प्रिय। श्री. 'सी (सम्मत १७५)।

पेअ देखो पा = पा।

पेआ श्री [पेया] यथा, पीने की वस्तु-विशेष (दे १, २४८)।

पेआल न [दि] १ प्रमाण (दे ६, ५७, विसे १६६ टी, एदि ज)। २ विचार (विसे १३६१)। ३ सार, रहस्य (छ ४, ४ टी—पद्म २८३, उर पु २०७, ४ प्रथान, प्रुस्य (उवा)।

पेआलणा श्री [दि] प्रमाण-करण, 'पञ्चव-पेआलणा पिठे' (पिठ ६५)।

पेआलुय वि [दि] विचारित (विसे १४२)।

पेइअ वि [पेटु] १ पिता से भ्राता हुआ, पितृ क्रम प्राप्त, 'पेइओ धम्मो' (पद्म ८२, ३३, सिरि ३४८, स ५६६)। २ न. श्री के पिता का घर, पीढ़, गैह, मैका, 'वा जा जुले नल्लं नो पयइ ताव पेइए एयं पेगेम', विमनेण तपो भणिय मण्ड पिण पेइयमियायि' (सुपा ६००)।

पेइहूर न [पिटुगृह, पेटुगृह] पीढ़, श्री के पिता का घर, 'इय चित्तिजए सिग्घं धणसिपेइहूरम्म सबलिसो' (सुपा ६०३)।

पेरुस न [पीयूप] समुद्र, सुपा (दे १, १०५, गा ६५, कपू)। 'सण पुं [शिरान] देव, सुर (सुपा)।

पेरिरा वि [पेरित्त] कम्पित (कपू)।

पेटोला मक [पेटोलेय] कूनना, हिलना।

बहु पेटोलामाण (छाया १, १—पद्म ३११)।

पेइ देखो पिइ = निइ (दे १, ८५, प्राक ५, प्राप्र कुमा)।

पेइ न [दि] १ छएइ, टुकड़ा। २ बलय (दे ६, ८१)।

पेइघम पुं [दि] छह, तलवार (दे ६, ५६)।

पेइयाल वि [दे] देखो पेइलिअ (दे ६, ५४)।

पेइय पुं [दि] १ तरण, युवा। २ एइइ, नपुंसक (दे ६, ५३)।

पेइल पुं [दि] रस (दे ६, ५८)।

पेइलिअ वि [दि] पिण्डीइल, पिण्डीवार किया हुआ (दे ६, ५४)।

पेइय सक [प्र-स्थापय] १ रखना, स्थापन करना। २ प्रस्थान करना। पेइवइ (हे ४, ३७)।

पेइवि वि [प्रस्थापयित्] प्रस्थान करने-वाला (सुपा)।

पेइार पुं [दि] १ गोप, गो-मान, ग्वाना। २ गहिली-मान (दे ६, ५८)।

पेइोली श्री [दे] मोटा (दे ६, ५६)।

पेइा श्री [दे] कतुप मुख, पञ्चाली भदिरा (दे ६, ५०)।

पेट टेपो पा = पा।

पेक्क सक [प्र + ईक्ष्] देखना, भवलोचन करना। पेक्कइ, पेक्कए (सण, पिण)। बहू. पेक्कंरत (पि ३६७)। नवहू. पेक्किसज्जंत (से १५, ६३)। सक पेक्किअ, पेक्किअऊण (अभि ४२, काप्र १५८)। ह. पेक्कणिज्ज (नाट—वेणी ७३)।

पेक्खअ [वि] प्रेक्षक देखनेवाला, निरीक्षक, पेक्खग [द्रष्टा (सुर ७, ८०, स ३७६, महा)।

पेक्कअ न [प्रेक्षण] निरीक्षण, भवलोचन (सुपा १६६, अभि ५३)।

पेक्कअण न [प्रेक्षण] जेत, तमाशा, पेक्कअणय [नाटक (सुर ७, १८२, कुप्र ३०)।

पेक्कणा श्री [प्रेक्षणा] निरीक्षण, भवलोचन (श्रीव ३)।

पेक्कणी [प्रेक्षा] ऊपर देखी (पद्म ७२, २६)। देखो पेक्कड़ा।

पेक्कय देखो पेक्कअ (राज)।

पेत्तिल (मप) वि [प्रेतित] दृष्ट (रमा)।

पेच [म] प्रेत्य परलोक, भ्रातामी जन्म पेचा [मग, श्री], 'संकीही छवु पेच कुलहा' (दे ७३)। 'भय पुं [भय] भ्रातामी जन्म, परलोक (श्रीप)। 'भाविअ वि [भावि] जन्मांतर सम्बन्धी (पएइ २, २)।

पेचा देखो पिअ = पा।

पेच्छ सक [च्छ्, प्र + ईक्ष्] देखना। पच्छइ, पेच्छइ (ह ४, १८१, उर, महा, पि ४५७)। अवि, पच्छिहिंति (पि ५२५)। बहू. पेच्छत (गा ३७३, महा)। सक.

पेच्छऊण (पि ५८५)। हेइ पेच्छई, पेच्छलए (उप ७२८ टी, श्रीप)। ह. पेक्कणिज्ज, पेक्किअअउर (गा ६६; श्रीप, पएइ १, ४ से ३, ३३)।

पेच्छ वि [प्रेक्ष] द्रष्टा, दर्शन, 'भरमत्तपच्छो' (स ७१५)।

पेच्छइ देखो पेक्कअ (मग ४७ धर्मंत ७४३)।

पेच्छण देखो पेक्कअ (सुपा ३७)।

पेच्छणय देखो पेक्कअण (पचा ६, ११, पेक्कअणय महा)।

पेच्छय वि [प्रेक्ष] द्रष्टा, निरीक्षण (पद्म ८६, ७६, स ३६१, गा ४६८)।

पेच्छय वि [दे] जो देखे उसी को चाहनेवाला,
दृष्ट-मात्र का प्रगतिवापी (दे ६, २८)।

पेच्छा छी [प्रेक्षा] प्रेक्षणक, तमाशा, खेल,
नाटक, पेच्छाछणो सिएएविलोप्रणायण जहा
मुचिमेखोवि न निचिदेव (उपर्व ३७, सुत्र
१३, ३७, धीप)। देखा पेक्खा । धर न
[गृह] देखो हूर (ठा ४, २)। मंडव
पु [मण्डप] नाटव गृह, खेल भादि में
प्रेक्षको के बैठने का स्थान (पव २६६)।
हूर न [गृह] नाटव-गृह, खेल-तमाशा का
स्थान (पवम ८०, ५)।

पेच्छि वि [प्रेक्षिन्] प्रत्यक, द्रष्टा (बिद्य
१८६, गा २१४)।

पेच्छिअ वि [प्रेक्षित] १ निरीक्षित, अव-
लोकित (हुमा)। २ न, निरीक्षण, मनसोकन
(सुर १२, १८३, गा २२५)।

पेच्छिअ वि [प्रेक्षिअ] निरीक्षक, द्रष्टा (गा
१७४, ३७१)।

पेज देखो पा = पा।

पेज पुन [प्रेमन्] प्रेम अनुवाग (सुष २,
५, २२, भाषा, भग, ठा १, बिद्य ६३४)।
दसि वि [दशिम्] अनुवाग (भाषा)।

पेज वि [प्रेयस्] प्रत्यत प्रिय (धीप)।

पेज वि [प्रेयस्] प्रिय, प्रीति (राज)।

पेज देखो पेर = प्र + ईर्य।

पेजाल न [दे] प्रमाण (दे ६, ५७)।

पेजालिअ वि [दे] सपटित (पव)।

पेजा देखो पेजा (धीप १४६ हे १, २४८)।

पेजाल वि [दे] विदुल विद्याल (दे ६, ७)।

पेट १ न [द] पेट, पदर (पिग पव १)।

पेट २ न [द] पेट, पदर (पिग पव १)।

पेट देखो पिट्ट = पिट्ट (सकि ३, प्रक ५,
प्राप्र)।

पेट व्हो पेय्य नवपेयनिहा (सवोष १८)।

पेटइअ पु [दे] धान्य भादि बेचनवाला
नपिक (दे ६, ५६)।

पेटक १ न [पेटक] समूह, ग्रुप 'नवपेयक-
पेटय' सनिहा जाण (सवोष १५, सुभा
५४६, सिरि १६३, महा)।

पेटा छी [पेटा] १ मन्त्रणा, गेटी (दे ५,
३८, महा)। २ पत्रकार चतुष्कोण गृह पकि
में निताप प्रमाण (उत ३०, १६)।

पेटाल पु [दे. पेटाल] बडी मन्त्रणा, बडी
गेटी (मुद्रा ११०)।

पेटानइ पु [पेटकपति] ग्रुप वा नायन (सुभा
५४६)।

पेटिआ छी [पेटिका] मन्त्रणा (मुद्रा २४०)।

पेटु छी पु [दे] महिप, भैंसा (दे ६, ८०)।

पेट्हा छी [दे] १ भित्ति, नील। २ द्वार,
दरवाजा। ३ महिपी, भैंस (दे ६, ८०)।

पेट देखो पीठ = पीठ (दे १, १०६, हुमा)।

काजण पेटं टविया तव्य एसा पडिमा (पुत्र
११७)।

पेटाल वि [दे] १ विपुल (दे ६, ७, गडह)।

२ वल्लुल, गोलाकार (दे ६, ७, गडह, पाप)।

पेटाल वि [पीठन] पीठ-युक्त (गडह)।

पेटाल पु [पेटाल] १ भारत वर्ष का भाठवां
भासो जिनदेव, 'पेटाल अनुमय भाणदविय
नमसामि' (पव ४६)। २ ग्यारह वद पुण्या
मे दसवां (विषार ४७३)। ३ एक ग्राम,
जहाँ भगवान् महावीर का विचरण हुमा था।
'पेटालगाममाओ भयव' (भाषा)। ४ न.
एक उद्यान, 'तमो सामी ददभुमि यधो, तसि
बाहि पेटाल नाम उज्जाए' (दाव १)। 'पुत्त
पु [पुत्र] १ भारतवर्ष का भाठवां भावी
जिन देव, 'उदए पेटालपुते य' (सम १५३)।
२ नगवान् पार्श्वार्थ के सताल में उत्पन्न एक
जैन मुनि, 'अहे ए उदए पेटालपुते भयव
पासायथिबे नियठे मेयज्जे मोत्तेण' (सूत्र २,
७, ५, ८, ६)। ३ भगवान् महावीर के पास
दीक्षा लेकर अनुत्तर विमान में उत्पन्न एक
जैन मुनि (अनु २)।

पेटिया देखो पीडिआ, 'बतारि मणिविदि
यासो' (ठा ४ २—पव २३०)। २ वय
की भूमिका, प्रस्तावना (वसु)।

पेटी देखो पीठी (जीव ३)।

पेणी छी [प्रेणी] हरिणी का एक भेद (पवह
१, ४—पव ६८)।

पेदइ वि [दे] क्रुश दण्डक, जुए मे जो द्वार
गया हो बह, जिसका दाव चला गया हो वह
(मुच्छ ४६)।

पेम थुन [प्रेमन्] प्रेम, अनुवाग, प्रीति, स्नेह
(उवा. धीप, सं ५, सुभा २०४, खख ४२)।

पेमाअुअ वि [प्रेमिन्] प्रेमी, अनुवाग (उप
६८६ टी)।

पेम्मा देखो पेम (दे २, ६८, ३, २५, हुमा, गा
१२६, ग्राम् ११६)।

पेम्मा छी [प्रेमा] छद विरोध (पिग)।

पेया छी [पेया] वाद्य विशेष, वडी काट्वा
(राम ४४)।

पेर सव [प्र + ईर्य] १ पठाना, मेगना,
प्रेषण करना। २ बड़ा लगाना, द्यावात
करना। ३ भादेश करना। ४ किसी कार्य में
जोड़ना—लगाना। ५ पूर्वपत्र करना, प्ररन
करना, सिद्धान्त का विरोध करना। ६
गिराना। पेरह (धर्म ५६०, भवि)। बह.
पेरत (हुप्र ७०, पिग)। बहक. पेरिज्जत
(सुभा २५१, महा)। क. पेज (राज)।

पेरत देखो पज्जत (दे १, ५८, ६३, भाप्र,
धीप, गडह)। 'वक्ष्णाल न [वक्ष्णाल]
वाज परिधि, बाहर का घेरण (पवह १, ३)।
'वक्ष न [वक्षस्] मण्डप, लुणादि-
निर्मित गृह (राज)।

पेरण वि [प्रेक] मेरणा करनेवाला, पूर्वपक्षी
(धर्म ५८७)।

पेरण न [दे] १ ऊर्ध्व स्थान (दे ६, ५६)।

२ खेल, तमाशा (स ७२३, ७२५)।

पेरण न [प्रेरण] मेरणा (हुप्र ७०)।

पेरणा छी [प्रेरणा] ऊपर देखो (समस्त
१५७)।

पेरिअ वि [प्रेरित] जिसको मेरणा की गई
हो वह (दे ६, १२, भवि)।

पेरिअ न [दे] साहाय्य, सहायता, मदद (दे
६, ५८)।

पेरिज्जत देखो पेर = प्र + ईर्य।

पेरइ वि [दे] निपेक्षित, निपेक्षक विद्या
(दे ६, ५४)।

पेलय वि [पेलय] १ कोमल, लुटमार, मुट
(पाप से २, २७, धमि २६, धीप)। २
पतला, कुश। ३ सुकम, लघु (पाया १, १—
पव २५, हे १, २३८)।

पेलु छी [पेलु] पूर्णी, रई की पहल, 'कतामि
ताप पेठु' (विडमा ३५)। 'करण न
[करण] पूर्णी—पूर्नी बनाने का उपकरण,
सततता भादि (सिंते ३३०५)।

पेह सक् [क्षिप] पैवना । पेहइ (हि ४, १४३) । बर्म, पेह्लिअइ (उव) । वरु. पेह्लेन (कुमा) । सहु. पेह्लिऊण (महा) ।

पेह देतो पेह = प्र + ईरय् । पेह्लेइ (ग्राह ६०) । वरु. पेह्लिऊण (सि ६, २५) । सहु. पेह्लि (भव), पेह्लिअ (पिन) । इ. पेह्लेयवज (भोवमा १८ टी) ।

पेह सक् [पीछय] पीलना, दबाना, पीहना । पेह्लेमि, पेह्लिमि (स ५७४ डि) ।

पेह सक् [पूरय] पूरना, भरना । वरु. पेह्लिऊण (सि ६, २५) ।

पेह [पुन [दे] बषा, शिपु, मातर (उव पेहमा २१६), 'भोममि पेहमाइ' (उव २२० टी) ।

पेहमा देतो पेहमा (मिबु १६) ।

पेहण देतो पेहण (पहइ १, ३, गउड) ।

पेहण न [क्षेपण] पैवना (वर्म २) ।

पेहय पु [दे] देतो पेहय = (दे) (विपा १, २-पय १६) 'सपेलियं सिलामि' (मुस २, ३३) ।

पेहय देतो पेहया (वृह १) ।

पेहय पु [पेहक] भगवान् महावीर के पास बीसा लेटर धनुतर विमान में ऊपर एक जैन भुनि (मनु २) ।

पेहण } देतो पेह । पेहवइ, पेहमावइ (ग्राह पेहमाय ६०) ।

पेहलि नि [दे. पीहित] पीहित (दे ६, ५७), 'बलिपराइयेलिमो' (महा) ।

पेहलिअ देतो पेहलि (गा २२१, विना १, १) ।

पेह्लेयवज देतो पेह्ले = प्र + ईरय् ।

पेह्लेअ भामनए-गुपव भामय (पइ) ।

पेस सक् [प्र + एपय] भेजना, पठाना । पेसइ, पेसइ (मि. महा) । वरु. पेसअन (सि ४६०, रंभा) । रं. पेसिअ, पेसिउ (मा ४०, महा) । इ. पेसइयवज, पेसिअवज, पेमेयवज (मुपा ३००, २७०, ६३०, उव १३६ टी) ।

पेस देतो पीस । वरु. पेसयन (राज) ।

पेस पुछी [मिण्य] १ बर्मर, नीवर, दाव, पातर (मम १६, मुप १, २, २, ३, उरा) । २ रि. भेजो घोय (हि २, ६२) ।

पेस पु [दे. पेरा] १ मिण्य देस में होनेवाली एक पञ्चांगि (भापा २, ५, ६, ८) ।

पेस वि [दे पैरा] पेस मामन जानवर के चमड़े का बना हुआ (वस्त्र) (भापा २, ५, १, ८) ।

पेसण न [दे] कार्य, काज, प्रयोजन (दे ६, ५७, भवि, छाया १, ७—पय ११७, पयम १०३, २६) ।

पेसण न [प्रेषण] १ पठाना, भेजना । २ नियोजन, व्यापार (कुमा, गउड) । ३ भाता, मादेश (सि ३, ५४) ।

पेसणआरी } जो [दे] इतरी, इत-कर्म करने-
पेसणआली } वाली स्त्री (दे ६, ५६, पइ) ।

पेसणा स्त्री [पिपण] पीसना, पेपण, 'तिसाए जवगेहमपेकणाए हेऊए' (उव ५६७ टी) ।

पेसल वि [पिशल] १ गुल्दर, मनोज (भापा गउड) । २ मधुर, मधु (पाप) । ३ कोमल (गउड) ।

पेसल } न [दे] मिण्य देस के पेस नामक
पेसलेस } पशु के चर्म के सूखे पदम से
निपलन वस्त्र, 'पिसाणि वा पेससाणि वा'
(२ भापा २, ५, १—सूत्र १४५), 'पिसाणि
वा पेसिसाणि वा' (३ भापा २, ५, १, ८,
(राज) ।

पेसय सक् [प्र + एपय] भेजवाना । इ

पेसवेयवज (उव १३६ टी) ।

पेसणन म [प्रेषण] भेजवाना, दूसरे के द्वारा प्रेषण (उवा पइ) ।

पेसयिअ नि [प्रेषिन] भेजवाना हुआ, प्रत्या-
पित (पाप, उव ५८) ।

पेसाय नि [पेसाच] पिछान संबन्धी (वृह २) ।

पेसि स्त्री [पेसि] देतो पेसि (मुपा ४८७) ।

पेसिअ नि [प्रेषिन] १ भेजा हुआ प्रहित (गा ११७, भवि, वास) । २ प्रेषण (पयम ६, ३३) ।

पेसिआ स्त्री [पेसिआ] सार, दुबका, 'धर-
पमिया नि का सबाकगमिया नि वा' (मनु
१ भापा २, ७, २, ७, ८-६) ।

पेसिआर पु [प्रेषितकार] नीवर, वृष, बर्मर (पयम ६, ३२) ।

पेसिद्वयं (यो) नि [प्रेषिनय] स्थित
भेजा हो वृह (सि ५६६) ।

पेसी स्त्री [पेसी] मास-वहइ, मास-पिण्ड
(तदु ७) । देतो पेसिआ ।

पेसुण्ण } न [पेसुण्य] परोक्ष में दोष-
पेसुण्ण } कीर्तन, चुगली (भीप, सुम १,
१६, २, छाया १, १, भग मुपा ४२१) ।

पेसेयवज देतो पेस = प्र + एपय ।

पेसिद्वयं देतो पेसिद्वय (सि ५६६) ।

पेह सक् [प्र + ईह] १ देलना, निरोक्षण
करना, ध्यान-पूर्वक देखना । २ चिन्तन करना ।

पेहइ, पेहइ (सि ८७ उव), पेहति (कुप १६२) । भवि. पहिस्तामि (सि ५३०) । वरु.

पेहंत, पेहमाण (उपउ १५४, बेहम २४०,
सि ३२३) । सहु. पेहाण, पेहिया (वस,
सि ३२३) ।

पेह सक् [प्र + ईह] १ इच्छा करना,
चाहना । २ प्रार्थना करना । पेहइ (वस ६,
४, ७) ।

पेहण न [प्रेक्षण] निरोक्षण (पवा ४, ११) ।

पेहा स्त्री [प्रेक्षण] १ निरोक्षण (उव, सम
३२) । २ वायोसर्ग का एक दोष, वायो सर्ग
में यन्त्र की तरह झोड़-मुट की हिलाने रहना
(पय ५) । ३ पर्यायपन, चिन्तन (भाप ४) ।

४ बुद्धि, मति (उस १, २७) ।

पेहायि वि [प्रेक्षिन] दक्षिण, क्षिप्राया
हुमा (उव ५ ३८८) ।

पेहिवि [प्रेक्षिन] निरोक्षण (भापा, उर) ।

स्त्री. 'पी' (सि ३२३) ।

पेहिय नि [प्रेक्षित] निरोक्षित (महा) ।

पेहुण न [दे] १ निच्छ वस (दे ६, ५८,
पाप गा ७३, ७६५, वजा ४४, भग
४४१, गउड) । २ मत्तर निच्छ, मत्तर-
पय निच्छ (पहइ १, २, ५, ८, १;
छाया १, ३) देता पिहुण ।

पोअ नक् [प्र + पे] निरोक्षा, प्रवृत्ता ।
पोसित (मय ३, १८, मूषित ७४) । वरु.
पोयगाग (स २१२) । रं. पोडण
(भववि ९७) ।

पोअ नि [प्रान] पिछाया हुआ (दे १, ७६) ।

पोअ पु [पोअ] १ जहान, प्रवृत्त, नीरा
(पाप, मुपा ८८ २६६) । २ बालक, छिपु,
बच्चा (६ ६, ८१, पाप मुपा १६६) । ३
न. बह, बगडा (दा १, १—गुन ११८) ।

पोअ पुं [दे] १ पय वृत्र, धाय, चौं का पेड ।
 २ छोटा साँप (दे ६, ८१) ।
 पोअइआ छी [दे] निद्राकारी सता, सता-
 विशेष (दे ६, ६३, पाठ) ।
 पोअंड रि [दे] १ भय-रहित, निडर । २
 पल्ल, नामदं (दे ६, ६१) ।
 पोअत पुं [दे] रापय, सौगम (दे ६, ६२) ।
 पोअग न [प्रवयत, प्रोतन] विरोता, गुप्फन,
 हूँ पना (भावम) ।
 पोअणपुर न [पोतनपुर] नगर विशेष (सुपा
 ५०६, मधि) ।
 पोअणा छी [प्रयपना, प्रोतना] विरोता
 (उप १५६) ।
 पोअय वि [पोतज] पीत से उत्पन्न होनेवाला
 प्राणी—हत्ती आदि (डा १, १) ।
 पोअय पुं [पोतक] देखो पोअ = पीत (उवा,
 छीप) ।
 पोअलय पुं [दे] १ भारिवन मांस का एक
 जखम, जिसमें पत्नी के हाथ से लेकर पति
 अपूप को खाता है । २ एक प्रकार का
 अपूप—क्षाय विशेष, पूसा । ३ बाल बसंत
 (दे ६, ८१) ।
 पोआई छी [पोताही] १ शकुनि को उत्पन्न
 करनेवाली विद्या-विशेष २ शकुनिका, पक्षि-
 विशेष (विते २५५१) ।
 पोआडय वि [पोतायुज, पोतज] देखो
 पोअय (पठम १०२, १७) ।
 पोआय पुं [दे] आम-अनाज, फाँद का सुतिय
 (दे ६, ६०) ।
 पोआल पुं [दे] वृषभ वलीबर्द (दे ६, ६२) ।
 पोआल [दे. पोतक] वक्ता, शिष्ट, बालक
 (सोप ४४७) ।
 पोअय पुं [दे] १ हलवाई मिठाई बेचनेवाला ।
 २ खोच (दे ६, ६३) । ३ निमान, हूना
 हुमा (सोप १३६) । ४ सन्दिह (वृह १) ।
 पोइअ वि [प्रोत] विशेष हुमा (दे ७, ४४,
 उप ५ १०६, पाठ) ।
 पोइअल्य देखो पोइअ = प्रोत (सोप ५३६
 ठो) ।
 पोइआ छी [दे] निद्राकारी सता, वल्ली-
 पोई } विशेष (दे ६, ६१, पल्ल १—
 पन १५) ।

पोअआ छी [दे] वरीय—सूखा गोबर (पोईठा)
 वा मगिन (दे ६, ६१) ।
 पोंग पुं [दे] धाव, पकन (स १८०) ।
 पोंगिल वि [दे] पना हुमा, परिपन्न, परि-
 पाक-भुक्त, अच्छी भाषा में 'पोंगिल';
 'मन्त्रिय सङ्गमदितयनिगीय-
 गुप्फनविणियगोंगिल्ला ।
 मलिणजरवप्पडोच्छइय-
 विगमदा वहीवि ह्रिदवि ।'
 (स १८०) ।
 पोंड न [दे] फल, पुष्प, 'एणं खावियरोड
 वडो भावेलगो होई' (उत्तम ३) ।
 पोंड देखो पुंड । 'पड्डण न [वर्धन] नगर-
 विशेष (महा) । 'पड्डणिया छी [वर्धनिश]
 जैन मुनि-गण की एक शाखा (वप्प) ।
 पोंड } पुं [दे] सूय का अतिपति (दे ६,
 पोंडय ६०) । २ फल (पल्ल १, ४—पन
 ७८) । ३ अतिवर्धित अवस्थावाला कमल
 (विते १४२५) । ४ वपास का सूता, 'दर्य
 पु वोडवाही भावे सुतविह सुयय नाछ'
 (सूचन ३) ।
 पोंडरिणी देखो पुडरिणी (डा २, १) ।
 पोंडरिय देखो पुडरीअ = पुण्डरीक (स
 ४३६) ।
 पोंडरी छी [पोंडरी, पुण्डरीका] जम्बुद्वीप के
 मेरु के उत्तर एक पर रहनेवाली एक
 दिक्कुमारी देवी (डा ८) ।
 पोंडरीअ देखो पुंडरीअ = पुण्डरीक (बीव,
 राया १, ५, १६, सम ३३, वेक्कर ३१८,
 सूचन १४६) ।
 पोंडरीअ } न [वीण्डरीक] १ गणित-
 पोंडरीग } विशेष, रज्जु गणित (सूचन
 १५४) । २ देखो पुडरीअ = वीण्डरीक (सूय
 २, १, १, सूचन १४६, १५१) ।
 पोड सक [व्या + ह, पन् + क] पुका-
 रना, धाँहान करना । पोकरह (दे ४,
 ७६) ।
 पोका वि [दे] घाले स्थूल और जलत लया
 बीच में निम्न (मासिका), 'पोफकनाले' (उत्त
 १२, ६) ।
 पोकाण पुं [पोकाण] १ भनायं देह विशेष ।
 २ उस देश में बसनेवाली म्लेच्छ जाति (पल्ल
 १, १) ।

पोकाण न [व्याहरण, पूरकरण] १ पुकारं,
 आह्वान । २ वि, पुकारनेवाला (कुमा) ।
 पोकर देखो पुकर । पोकररति (महा) । वक्क,
 पोकरत (सुपा ३८०) ।
 पोकरिय वि [पुट्टव] १ पुकारा हुमा (सुर
 ६, १६४) । २ न. पुकार (दंत ३) ।
 पोकार देखो पुकार = पुकार (उप ५१८५) ।
 पोकिअ देखो पोकरिय (उप १०११ टी) ।
 पोकरर न [पुट्टर] १ जल, पानी । २
 पक्ष, कमल । ३ पक्ष-कोप । ४ एक तीर्थ,
 मज्जेर नगर के पास बा एक जलाशय—
 तीर्थ । ५ हाथी की सूँढ़ का अग्र भाग । ६
 बाघ-आएड । ७ आपण, दूकान । ८ पक्षि-
 कोप, जलवार की म्यान । ९ मुल, मुँह ।
 १० कुछ रोग की ओपधि । ११ दीप-विशेष ।
 १२ युद्ध, लड़ाई । १३ रज, बाघ । १४
 आकाश, 'वीक्कर' (दे १, ११६, २, ४,
 सवि ४) । १५ पु, नाग विशेष । १६ रोग-
 विशेष । १७ सारस पक्षी । १८ एक राजा
 का नाम । १९ परंत विशेष । २० बहल-
 पुन, 'वीक्कर' (प्राय) । देखो पुकरर ।
 पोकरर वि [वीडर] १ पुकर-सम्बन्धी ।
 २ पचाकार रचनावाला, 'वीक्कर पवहण'
 (पाठ ७०) ।
 पोकररिणी छी [पुण्डरिणी] १ जलाशय-
 विशेष, बसुल बापी (राया १, १—पन
 ६३) । २ पक्षिनी, कमलिनो, पक्ष लता;
 'जलेख वा पोखरिणीपतास' (उत्त ३२,
 ६०) । ३ बापी (कुमा) । ४ पक्ष-समूह । ५
 पुकरर दंत (दे २, ४) । ६ श्रीकोता जला-
 शय, पोतरी, बापी (पल्ल १, १, दे २, ४) ।
 पोकरर देखो पुकरर (पल्ल १—पन ३५,
 आना २, १, ८, ११) ।
 पोकररल्लिच्छल्य } देखो पुकररल्लिच्छ-
 पोमसल्लिच्छल्य } भय (पल्ल १—पन
 १५, राय) ।
 पोक्सलि पुं [पुडरल्लि] एक जैन उपा-
 संक जिसका दूसरा नाम शतक वा (राज) ।
 पोगर } पुन [पुडमल] १ ल्पादि विशिष्ट
 पोगल } द्रव्य, मूर्त द्रव्य, रूपयता पदार्थ,
 'पोगल' (मय ८, १, डा २, ४, ४, ४,

५, ३; ८), 'पोगलाइ' (मुज्ज ६; पंच ३, ४६) । २ न. मास (पव २६८; हे १, ११६) । 'त्थिआय वुं' ['स्तिअन] पुद्गल-अन्य, पुद्गल-राशि (मग, ठा ५, ३) । 'परट्ट', 'परियट्ट वुं' ['परियते'] १ समस्त पुद्गल-द्रव्यो के साथ एव-एक परमाणु का संयोग-नियोग । २ समय का उत्कृष्ट-नियोग परमाणु-विरोध, अनन्त काल-चक्र-परिमित समय (कम्म ५, ८६; अण १२, ४; ठा ३, ४) ।

पोगालि वि [पुद्गलान्] पुद्गलबाला, पुद्गल-मुक्त (मग ८, १०—पत्र ४२३) ।

पोगमलि वि [पौद्गमलिन्] पुद्गल-मय, पुद्गल-संघनो, पुद्गल का (पिडमा ३२४) ।

पोष वि [दे] मुकुमार, कोमल, गुणराती में 'पोष' (दे ६, ६०) ।

पोषड वि [दे] १ ध्वार, निस्सार (छाया १, ३—पत्र १४) । २ प्रतिनिविड (पण्ह १, १—पत्र १४) । ३ सलिन (निवु ११) ।

पोचडल भक [प्रोन् + शल्] उडलना, ऊँचा जाना । वड्. पोचडलन (गुर १३, ४१) ।

पोच्छाहण न [प्रेस्ताहन] उत्तेजन (केली १०५) ।

पोच्छाहिअ वि [प्रोत्साहित] विरोध उत्साहित किया हुआ, उत्तेजित (गुर १३, २६) ।

पोट्ट वुं [पुन] लडवा, 'एकडेण चारमड-पोट्टेण' (पव १, ६) ।

पोट्ट न [दे] पेट, उदर, मराठी में 'पोट' (दे ६, ६०; छाया १, १—पत्र ६१; ओपमा ७६; गा ८३; १७१; २८५; स ११६, ७३८; उवा; सुस २, १५; गुपा ५४३, प्राट्ट ३७, पय ११५, जं २) । 'साल वुं' ['शाल] एव' बरिआनन का नाम (विने २५२, ५५) । 'सारणी' की 'सारणी' धरोतार रोग (पार ४) ।

पोट्ट न [दे] पोस्ता, गट्ट, गठरी, पोट्टल 'ब्राम्मणिनिर्वाचिके' बरिआननासय-हाणिति । न मुण्ड भनेमभोट्ट' (गुपा ३५५; दे २, २४; स १००) ।

पोट्टलिया की [दे] पोस्ती, गठरी (गुर २, १७) ।

पोट्टलिय वि [दे] पोस्ती उठनेवाला, गठरी-बाहक (निवु १६) ।

पोट्टलिया [दे] देखो पोट्टलिया (उप ४ ३८७; गुर १२, ११, मुप २, १७) ।

पोट्टि की [दे] उदर पेशी (मुच्छ २००) ।

पोट्टिल वुं [पोट्टिल] १ मारतवर्ष का भावी नववीं तीर्थवार—जिन देव (सम १५३) । २ मारतवर्ष के चौथे भावी जिन-देव का पूर्वभवीय नाम (सम १५४) । ३ भगवान् महावीर का व्युत्पन्न से छठवें भव का नाम (सम १०५) । ४ एक जैन मुनि, जिसने भगवान् महावीर के समय में तीर्थवर-नाम-नर्म रखा था (ठा ६) । ५ एक जैन मुनि (पचम २०, २१) । ६ देव-विधि (छाया १, १४) । ७ देखो पोट्टिल (राज) ।

पोट्टिल की [पोट्टिल] व्यक्ति-वाचक नाम, एक की का नाम (छाया १, १४) ।

पोट्टिस वुं [पोट्टिस] एक बलि का नाम (कप्पू) ।

पोट्टई की [म्रीठपदी] १ भाद्रपद मास की पूर्णिमा । २ भाद्र की अमावस्या (मुज्ज १०, ६) ।

पोट्टिल वुं [पुट्टिल] भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेनेर अनुत्तर-विमान में उत्पन्न एव जैन मुनि (अनु) ।

पोडडल न [दे] सुण-विरोध (पण्ह १—पत्र ३३) ।

पोड वि [प्रीड] १ समर्थ (पाष) । २ निगुण, चतुर । २ प्रगल्भ । ४ प्रबुद्ध, यौवन के बाद की अवस्थावाता (उप ४ ८६; गुपा २२४, रत्ना, नाट—मालती १३६) । 'वाय वुं' ['वाद'] प्रतिभा-पूर्वक प्रत्यस्तान (गा ५२२) ।

पोडा की [प्रोडा] १ तीस से पचपन वर्ष तक की की (गुर १८५) । २ नायिका का एक भेद, प्रह्लाद रस में काम-नता भादि धरती तरह जाननेवाली (प्राट्ट १०) ।

पोदिम वुं की [प्रोदिमन्] प्रोडता, प्रोपान (कोह २) ।

पोडी की [प्रोडी] ऊपर देखो (गुर ४०७) ।

पोमिअ वि [दे] पूर्ण (दे ६, २८) ।

पोमिआ की [दे] मृते से भरा हुआ ठगवा (दे ६, ६१) ।

पोत देखो पोअ = पोत (श्रीव; वृह १; छाया १, ८) ।

पोतगया देखो पोअया (उप ४ ४१२) ।

पोत्त वुं [पोत्र] पुन का पुन पोता (दे २, ७२; आ १४) ।

पोत्त न [पोत्र] प्रवहण, नीचा, 'दिताउलमिं भौयारियाणि सव्वाणि तेण पोत्ताणि' (उप ५६७ टी) ।

पोत्त न [पोत्त] १ वज्र कपडा (या पोत्ता) १२; पीन १६८; कप्पू; स ३३२) । २ पोती, कटो-वज्र (गच्छ ३, १८; वस, वव ८४, श्रावक ६३ टी, महा) । ३ वज्र-खण्ड (पिड ३०८) ।

पोत्तय वुं [दे] कोता, कुपण, अष्टकोश (दे ६, ६२) ।

पोत्तिअ न [पोत्तिअ] वज्र, सुती कपडा (ठा ५, ३—पत्र ३३८; वस २, २६ टी) ।

पोत्तिअ वि [पोत्तिअ] १ वज्र धारो । २ पुं. वानप्रस्थों का एक भेद (पीन) ।

पोत्तिआ की [पीतिआ] पुन की लड़की (रत्ना) ।

पोत्तिआ की [दे] चतुर्विध जन्तु की एक जाति (उत्त १६, १४७) ।

पोत्तिआ की [पोत्तिआ, पोती] १ पोती, पोती पहनने का वज्र, साडी (विने २६०१) । २ छोटा वज्र, वज्र-खण्ड, 'यड-पडालपाए पोतीए गृह दधेता' (छाया १, १—पत्र ५३, पिडमा ६), 'गृहपोत्तिआए' (विपा १, १) ।

पोत्ती की [दे] बाब, छोटा (दे ६, ६०) ।

पोत्तुअया देता पोत्तिआ (छाया १, १८—पत्र २३३) ।

पोत्य वुं [पुन, 'क'] १ पत्र, कपडा पोत्यया (छाया १, १३—पत्र १७६) । २ पोत्यया ३ देखो पुत्त, 'पोत्ययममया विव निषिद्धा' (बनु. दा १२, गुपा २८६; विने ३४२४, वृह ३, प्रा. भौग) ।

पोत्या की [प्रेत्या] प्राप्यता, भूतोत्पत्ति (उत्त २०, ११) ।

पोत्यार वुं [पुनकसार] पोती निगनेगना, पोती बनाने का काम करनेवाला शिल्पो, दस्तकारी, बिस्त्रायन (ओर ३) ।

पोथिया छो [पुतिष्ठा] पोथी, पुस्तक, 'सरसाइ च पोथियावलमहण' (बाल) ।
 पोप्पय पुन [दे] हस्त-परिमण, हाथ किराना (उप पु २५३) ।
 पोफ्फल न [पूगफळ] गुपारी (हे १, १७०, कुमा) ।
 पोफ्फली छो [पूगफळी] गुपारी का पेड़ (हे १, १७०, कुमा) ।
 पोम देखो पडम: 'जहा पोम जले नाय' (उत्त २५, २७, सुग २५, २७, पडम ५३, ७६) ।
 पोमर न [दे] मुसुम रत्न बर (दे ६, ६३) ।
 पोमाड पु [दे, पद्माट] पमाड, पमार, बरुब वा पेड़ (स १५५) । देखो पडमाड ।
 पोमायई जो [पद्मायती] छन्द-विशेष (पिस) ।
 पोमिणी देखो पडमिणी (सुपा ६४६, सम्मत १७१) ।
 पोम्म देखो पडम (हे १, ६१, १, २, ११२, गा ७५, कुमा, प्राक २८, कपू, नि १६६) ।
 पोम्मा देखो पडमा (प्राक २८, गा ४७१, नि १६६) ।
 पोम्ह देखो पम्ह = पडमन्, 'जह उ किर छातिगाए बणिय निठुल्लपमोम्हभरियाए' (धर्मसं ६८०) ।
 पोर पु [पूतर] जल में होनेवाला छुद्र जन्तु (हे १, १७०, कुमा) ।
 पोर वि [वीर] पुर में—नगर में उत्पन्न, नागरिक (प्राक ३५) ।
 पोर देखो पुर = पुरह् । 'कऊय ॥ [काऊय] शीघ्रकविल (पज) ।
 पोर पुन [दे पर्वन] पथि गौड (ठा ५, १ धनु) । 'बीय वि [बीज] पर्व बीज से उगनवाली वनस्पति, झुनु प्रादि (ठा ४, १) ।
 पोरा पु ॥ [पर्वक] वनस्पति का एक भेद, पर्वनाली वनस्पति (पण्ण १—पज ३३) ।
 पोरच्छ पु [दे] दुर्जन, शत्रु (दे ६, ६२ पाय) ।
 पोरच्छिम देखो पुरच्छिम (कुमा ५१) ।
 पोराय वि [दे] मत्सरी ईर्ष्यालु देखो (पद्) ।
 पोराय न [दे] क्षेत्र (दे ६, २६) ।

पोरय पु [वीर्य] राजा पुत्र की शतान (धमि ६५) ।
 पोरवाड पुं [वीरवाट] एक जैन यावन-कुल (वी २) ।
 पोरण देखो पुराण (पण्ण २८, श्रीप, मय, हे ५, २८७, वन, गा ३५७) ।
 पोरण वि [वीराण] १ पुराण-सम्प्रदाय (पय) । २ पुराण शास्त्र का शाखा (पज) ।
 पोरणिय वि [वीराणिक] पुराण शास्त्र-संबन्धी (स ३५४) ।
 पोरिस न [वीर्य] १ पुरुषत्व, पुरुषार्थ (प्राक् १७) । २ पुरुषत्व (कुमा) ।
 पोरिस वि [वीर्येय] पुरुष-जन्य, पुरुष-प्रणीत (धर्मसं ८६२ टी) ।
 पोरिसिम्डल न [वीर्यीमण्डल] एक जैन शास्त्र (एदि २०२) ।
 पोरिसिय देखो पोरिसीय, 'भर्याहमठारम-पोरिसियति उयगति भणाय भुवति' (छाया १, १५—पज १००) ।
 पोरिसी छो [वीर्यो] १ पुरुष शरीर-प्रमाण छाया । २ जो समय में पुरुष-परिमाण छाया हो वह काल, प्रहर (उवा, विपा २, १, भाचा कय, पय ५) । ३ प्रथम प्रहर तक भोजन प्रादि का ध्याय, प्रत्याख्यान विशेष, तप विशेष (पय ५, संवीप ५७) ।
 पोरिसीय वि [वीर्यिक] पुरुष-प्रमाण, पुरुष-परिणित, 'कुनी महवाहियपोरिसीया' (सुम १, ५, १, २५) ।
 पोरुस पु [पुरुष] अत्यन्त बृह पुरुष (सुम १, ७, १०) ।
 पोरुस देखो पोरिस (स २०५, उप ७२८ टी म्हा) ।
 पोरेवञ्च ॥ [वीरसुत्त] पुरस्कार कथा पोरेगञ्च विशेष (श्रीप राव श्रीप १०७ टि) ।
 पोरेवञ्च न [वीरोवृत्त] पुरोवर्तित, अग्रोवस्था (श्रीप सम ८६, विपा १, १, वप्य) ।
 पोल्ड सक [प्रोत + लङ्घ] विशेष उत्त्थपन करना । पोल्डेइ (छाया १, १—पज ६१) ।
 पोल्पा छो [दे] लटित भूमि, कूट जमीन (दे ६, ६३) ।

पोलास न [पोलास] १ नगर-विशेष, पोलासपुर (उवा) । २ सदात विशेष (राज) ।
 'पुर न [पुर] नगर-विशेष (उवा श्रुत) ।
 पोलासाड न [पोलापाड] श्वेतविका नगरी का एक बौद्ध विस्ते २३५७) ।
 पोलिअ पुं [दे] सींग, बसाई (दे ६, ६२) ।
 पोलिआ छो [दे. पोलिआ] पाग-विशेष, पूरी (?) 'सुणभो इव पोनिमात्तो' (उप ७२८ टी, पज) ।
 पोला देखो पओली, 'बडेबु पोनिवारेसु, न्वेसंती म पुत्तय' (था १२, उप पु ८५, धर्मवि ७७) ।
 पोल्ह वि [दे] पोला, शूयिर, लाली, रित्त, 'पोलो म्ब बुद्धी जह से मणारे' (उत्त २०, ४२, छाया १, १—पज ६३, पय ८१), 'बंका कीटवसइया चित्तया पोल्सया य दइया य' (महा) ।
 पोल्ह वि [दे] ऊपर देखो, 'बंका कीटवसइया चित्तया पोल्जा य दइया य' (श्रीप ७३५, विचार ३३६) ।
 पोल्हर न [दे] तप विशेष, निषिद्धकित तप (संवीप ५८) ।
 पोस सक [पुप्] शुष्ट होना । पोसह (बावाया १५५, अदि) ।
 पोस सक [पोपय] १ शुष्ट करना । २ पालन करना । पोसेइ (पचा १०, १५), मायर पियर पोस' (सुम १, ३, २, ५), पोसहि (सुम १, २, १, १६) । कवळ, पोसिज्जत (गा १२५) ।
 पोस वि [पोय] १ पोषक, पुष्टि-कारक, 'अभिसणण पोसकयं परिहितं' (सुम १, ५, १, ३) । २ पु. पोयण, पुष्टि (संवीप ३६) ।
 पोस पु [पोस] १ ध्यान देण, गुदा (पण्ण १ ५—पज ७८ श्रीप ५५६, श्रीप) । २ योगि (निजु ६) । ३ निग, वरस्य, खवसो-उपरिस्सवा बोदी पण्णत्ता, त जहा, दो सोत्ता दो शेत्ता दो धाणा, मुह, पोते पाळ' (ठा ६—पज ५४०) ।
 पोस पु [वीप] वीच मास (धम ३५) ।
 पोसगा वि [पोपक] १ पुष्टि-भारक । २ पालन-वर्ध (पण्ण १, २) ।

पोसण न [पोपण] १ पुष्टि (पण्ह १, २) ।
२ पालन । ३ वि. पोपण-नर्ता, 'लोप परं

यि जहासिरोसणो' (धूम १, २, १, १६) ।

पोसण न [पोसन] प्रमान, युवा (ज ३) ।

पोसणया छी [पोपणा] १ पोपण, पुष्टि ।

२ भरण, पालन (उवा) ।

पोसय देतो पोस = पोम, 'पोमए ति' (ठा

६ टी—पय ४५०, बृह ४) ।

पोसय देला पोसा (राज) ।

पोसद पु [पोपध, पोपध] १ भट्ठी,

बनुईछी भादि पर्वीतिपि मे बरले योग्य जैन

आश्वक वा बत विरोध, भादरा भादि के त्याग

पूर्वक किया जाता भट्टान विरोध (सम १६,

उवा बीप, महा, गुमा ६१६, ६२०) । २

पर्व दिवस—भट्ठी, बनुरेछी भादि पर्व-

तिपि 'पोसहतहो रवीए एथ पञ्चाशुवायमो

नण्णमो' (गुमा ६१६) । 'पडिमा छी

[प्रतिमा] जैन ध्यान को करने योग्य

भट्टान विरोध, बत विरोध (पंचा १०, १) ।

'यय न [मन] पही पूर्वोक्त मर्ष (पहि) ।

'साला छी [शाला] पीपय-व्रत करने का

स्नान (छाया १, १—पय ३१; भत, महा) ।

'पोयास पु [पोयास] पर्वदिन में उर-

यास पूर्वक किया जाता जैन धावक वा भट्ट-

हान विरोध, जैन आश्वक वा ग्यारहवां व्रत

(बीग, गुमा ६१६) ।

पोसाहिय वि [पोपधिक] जिनम पोपय-

व्रत किया हो बट, पीपय बटलशाला (छाया

१, १—पय ३०, गुमा ६१६, धर्मवि २०) ।

पोमिज वि [दि] डु ल्य, दण्ड, डु बी (दि

६, ६१) ।

पोसिअ वि [पुष्ट] पोपण-कुट (भरि) ।

पोसिअ वि [पोपिन] १ पुष्ट किया हुआ ।

२ पालित (उत २०, १४) ।

पोसिद (बी) वि [प्रिपि] प्रमान—विरोध में

रखा हुआ । 'भनुपा छी [भनुपा] जिसका

वर्ति प्रमाण—परदा में रखा हो बट्ठी

(रखन १३४) ।

पोसा छी [पोसा] १ पीपय-व्रत की प्रतिष्ठा ।

२ पीप माग की प्रसारण (गुज १०, ६,

६४) ।

पोह पु [दि] जैन भादि की विद्या का ढेर

बद्धी भाषा में 'पोह' (विज २४५) ।

पोह पु [प्रोय] भरल के मुख का प्रान्त भाग

(गठक) ।

पोहण पु [दि] छोटी मछली (दे ६, ६२) ।

पोहत्त न [पुशुत्त] चौलाई (भग) ।

पोहत्त देखो पुहत्त (पि ७८) ।

पोहत्तिय वि [पार्थिवित्यक] धृषरूव संनग्यो

(पण्ह २२—पय ६३६, ६४०, २३—पय

६६४) ।

पोहल देखो पोप्पल (पह) ।

'पप देखो प = प्र, विप्पोसहिपत्ताण' (सति

२, गठक) ।

'पपत्रास देखो पयास = प्रयास (भनि ११७) ।

'पपउत्त देखो पउत्त = प्रवृत्त (मा ३) ।

'पपछल देखो पछय (भनि १०६) ।

'पपडर (मा) मय [प्र + तप्] पय होला ।

पपवदि (पि २१६) ।

'पपडिआर देखो पडिआर = प्रतिहार (मा

४३) ।

'पपडिहा देखो पडिहा = प्रतिमा (हुमा) ।

'पपगइ देखो पणइ = प्रणयि (हुमा) ।

'पपगाम देखो पगाम = प्रणाम (हे ३,

१०५) ।

'पपगास देखो पगास = प्रणाय (गुमा

६४७) ।

'पपणा देखो पण्णा = प्रणा (हुमा) ।

'पपथाग देखो पयथाग (भनि ८१) ।

'पपदेस देखो पदेम (भा—निक ४) ।

'पपपुरिद (बी) देखो पपपुरिअ (भाट—

भातरी २४) ।

'पपउंध देला पउंध (रंभा) ।

'पपभिदि देखो पभिइ (रंभा) ।

'पपभूद (बी) देला पभूय (भाट—देरी

३६) ।

'पपमत्त देखो पमत्त (भनि ८२४) ।

'पपमाग देखो पमाग (रि ३६६ ए) ।

'पपमुष देखो पमुष (भाट—उगर २६) ।

'पपमुद देला पमुद (गट्ट) ।

'पपयर देखो पयर (हुमा) ।

'पपयाय देखो पयाय (हुमा) ।

'पपयास देखो पयास = प्रयास (गुमा ६४७) ।

'पपलावि देखो पलावि (भनि ४६) ।

'पपउत्तण देखो पवत्तण, 'भनिप्रणिण मुह-

पवत्तण' (भनि ४) ।

'पपइ देखो पयइ (हुमा) ।

'पपवेस देखो पवेस (रंभा) ।

'पपवेसि देखो पवेसि (भनि १७५) ।

'पपसर देखो पसर = प्र + छ। पह, 'पपसरत

(रंभा) ।

'पपसर देखो पसर = प्रसर ।

'पपसर देखो पसय = (भाट—मालवि १७) ।

'पपसाय देखो पसाय = प्रसाद (रंभा) ।

'पपसुत्त देखो पसुत्त (रंभा) ।

'पपसूद (बी) देखो पसूअ = प्रसूत (भनि

१४०) ।

'पपहर देखो पहर = प्रहार (सि २, ४, पि

२६७ ए) ।

'पपहा देखो पहा (हुमा) ।

'पपहाग देखो पहाग (रंभा) ।

'पपहाय देखो पहाय = प्रमाद, 'पहाड'

(रंभा) ।

'पपहार देखो पहार (रंभा) ।

'पपहान देखो पहान (भनि ११६) ।

'पपहु देखो पहु (रंभा) ।

'पपारम देखो पारम (रंभा) ।

'पपिअ देखो पिअ = द्विप (भनि ११८, मा

१८) ।

'पपिआ देला पिआ (हुमा) ।

'पपिन देखो इन (भाट २६) ।

'पपेम देखो पेम (पि ४०४) ।

'पपेमा देखो पेम्मा (हुमा) ।

'पपोड देला पोड (रंभा) ।

'पपम देखो पम = पय (पय ७४१ ग

४६२ ४६५) ।

'पपना देखो पना (गुमा २३४) ।

'पपदा देखो पदा (हुमा) ।

'पपल देखो पल (सि २००) ।

'पपाउ कर [पपाउ] १ पालन करना ।

२ पपाउन । पपाउ (पि) ।

फाल्गुन न [रफालन] प्रापात (वसङ्ग गा ५४६) ।	प्रस (प्रप) देतो पसस = दृश् । प्रस्तोदि (हि ४, ३६३) ।	प्रिय (प्रप) देतो प्रिय = प्रिय (हि ४, ३६८; कुमा) ।
फुड देखो फुड (हुपा, रमा) ।	प्राइन्व (प्रप) देतो पाय = प्रायस् (हि ४, ४१४; कुमा) ।	प्रेकिअ न [दे] वृष रचित, वृष की पिछाइट (वट) ।
फोडग देखो फोडग (गा ३८१) ।		प्रेवंड वि [दे] पूर्व, ठग (दि १, ४) ।

॥ ह्य तिरिपाइअसदमहणयमि पधारादसदसंनतछो

सताबीसहमो तरको परितमतो ॥

फ

फ बुं [फ] श्रोत्र-स्थानीय व्यञ्जन बल-विशेष (प्राप) ।	फंस सक [रघु] छूना । फंसद, फंसद (हि ४, १८२; प्राह २७) । फंस, फंसिखइ (कुमा) ।	फगु वूं [दे. फलु] बहल वा उत्सव, फगुवा (दे ६, ८२) ।
फंद भक [रपन्द] घोड़ा हिलना, फरना । फंद, फंदति (हि ४, १२७; उत्त १४, ४५) ।	फंस बुं [रपस] रस्यो, छूना (पाम; प्राप, प्राह २७; गा २६६) ।	फगुण वूं [फाल्गुन] १ नाच-विशेष, फगुन का महिना (पाम, कप) । २ बर्जुन, मध्यम परावृत्त (बजा १३०) ।
वड. फंदत, फंदमाण (सूय १, ४, १, ६; ठा ७—पय १८६; कप) ।	फंसन न [रपसन] छूना, स्पर्श करना (उप ३३० टी; धर्मवि ४१, मोह २६) ।	फागुणी खी [फाल्गुनी] १ फागुन मास की पूर्णिमा (इत; सुज १०, ६) । २ फागुन मास की अनावस्था (सुज १०, ६) । ३ एक गृह-पति की खी (बजा) ।
फंद बुं [रपन्द] बिखिन् चलत (पद; सण) ।	फंसण वि [पांसन] अपसद, अपसम; 'कुल-फंसणो' (सुज २, ६; स १६८, भवि) ।	फागुणी खी [फरगुनी] नक्षत्र-विशेष (ठा २, ३) ।
फंदण न [रपन्दन] ऊपर देतो (विते १८५७; हे २, ५३; प्राप) ।	फंसण वि [दे] १ झुक, संयत । २ मलिन, मैला (दि ६, ८७) ।	फट्ट भक [रफट्ट] कटना, टूटना । फट्टइ (भवि) ।
फंदणा खी [रपन्दना] ऊपर देखो (सूचनि न टी) ।	फंसुख वि [दे] झुक, व्यक्त (दि ६, ८२) ।	फड सक [रफड] १ खोदना । २ शोधना ।
फंरिअ वि [रपन्दित] १ झुझ हिला हुआ, फरका हुआ (पाम) । २ हिलामा हुआ, ईश्वर बालित (जीव ३) ।	फंसुखी खी [दे] नवमासिका, गुल्म-अपात बुज-विशेष (दे ६, ८२) ।	वड. 'यतं फडमाणीमो' (हुपा ६१३) ।
फंक (भप) पक [खद + गम्] उछलना । फकाइ (पिग १८४, ५) ।	फफिया खी [फफिया] श्रम का विषय स्थान, कठिन स्थान (सुर १६, २४७) ।	हेड. फडिवं (हुपा ६१३) ।
फंकसय वुं [दे] लटा-भेद, बली-विशेष (दि ६, ८३) ।	फग्गु नि [फरगु] १ अक्षर, निरर्थक, चुल्ह (सुर ८, ३; संबीय १६; गा ३६६ अ) ।	फड न [दे] साँप का सर्व शरीर (दे ६, ८६) ।
फंफाइ (भप) वि [कम्पायित, कम्पित] कंपाया हुआ, कम्प-प्राप्त (पिग) ।	२ खी. भगवान् धनितनाथ की प्रथम शिष्या (सय १५२) । 'मिस्त वुं [मिस्त] स्वनाप-व्यात एक जैन मुनि (कप) । 'रसिखय वुं [रसिख] एक जैन मुनि (भार १) । 'सिरी खी [श्री] इस भवसाँपणो काल के रचन भारि मे होनेवाली धर्मिज जैन साध्वी (विचार ५३४) ।	फड वुंन [दे. फट्ट] साँप की कण्ठा (दे ६, ८६; सुत्र ४०२) ।
फंस भक [विसम + वट्ट] भसत्य प्रमाणित होना, प्रमाण विषय होना, अग्रमस्य सावित होना । फंसद (हि ४, १२६) । अयो, भूका-फंसाविही (कुमा) ।		फडही [दे] देखो फलही (गा ५५० अ) ।

फडा खी [फटा] साँप की फन, सर्व-कण्ठा (खाय १, ६; पडम ५२, ५; पाम, बीप) ।
ल वि [वत्] फनवाला (हे २, १५६; चंड) ।

फटिअ वि [स्फटित] खोदा हुआ, 'वो बीवे-समरेंहि नरेंहि फटिया भइति सा मत्ता' (सुपा ६१३)।

फटिअ देखो फलिह = स्फटिक (नाट—फटिग) रत्ना ८३; 'फटिगपाहारणिमा' (निबू ७)।

फटिह देखो फडा-ल (चंड)।

फटिह पुं [परिच] १ भंगला, भ्रामल (से १३, १८)। २ कुठार (से ५, ५४)।

फटिहा देखो फटिहा = परिला (से १२, ७५)।

फहु पुन [दि. स्पर्ध, 'क'] १ भंरा, फहुग भाग, निस्सा, पुनरासी मे 'फहिउ'; फहु, 'बन्मियकहमिस्सा कुल्लो खला य फहुहुग' फहुगपुया उ' (चिउ २५३)। २

संपूर्ण गण के प्रसिद्धाता के बराबरी गण का एक लघुतर हिस्सा, समुदाय का एक अति छोटा विभाग जो संपूर्ण समुदाय के अध्यक्ष के अधीन हो, 'गद्यगाण्ठिं शुम्भायुग्मि फहुगहि' (मीय. वृह १)। ३ द्वार आदि का छोटा छिद्र, बिबर। ४ अर्थविज्ञान का निर्गम स्वान, 'फहुा य प्रसलेज', 'फहुा य धाणुगामी' (विसे ७१८, ७३६)। ५ समुदाय, 'तल पव्वययगा फहुोहि एति' (भावम. भाणू १)। ६ समुदाय विशेष, वर्गणा-समुदाय, 'नेहपव्वय-फहुगमिं प्रविभागराणा एता' (कम्मप २८, ४४; पव ३, २८, ५, १८३; १८४, जीवल ७६), 'तं इगिगइडुं सति', 'तासि खलु फहु हुगाई पुं' (पव ५, १७६, १७९)। 'यह पुं [पति] गण के अन्तर्गत विभाग का नाम' (वृह १)।

फग पु [फग] कल, सौंय की फगा (वि ६, ५५; पाम. गा २४०, गुपा १, प्रासू ५१)।

फगया पुं [दि. फनक] बपा, केश सर्वाले का उत्तरण (उत २२, २०)।

फगगुय पुं [दि.] बंनस्पति विशेष, 'तुनसो गहह भोरावे फगगुय भणए म भुपणए' (पणए १—पन ३४)।

फगस पु [पनस] बटहर वा षेड (पणए १, हे १, २१२; प्राप्)।

फगा ओ [फगा] पन (सुर २, २२६)।

फणि पुं [फणि] १ सांय, स्यां, नाग (उप ३५७ टी, पाय, गुपा ५५६, महा, कुमा)।

२ दो कला या एक युव अक्षर की सजा (पिंग)। ३ प्राकृत-पिंगत का कर्ता, पिंगला-चार्य (पिंग)। 'चिध पुं [चिह] भगवान् पार्वनाय (कुमा)। 'पहु पुं [प्रसू] १ नागकुमार देवो का एक स्वामी, घरणेन्द्र (वी ३)। २ शेष नाग (सर्पवि ५७)। 'राय पुं [राज] १ शेष नाग (कुप २७२)। २ पिंगल-कर्ता (पिंग)। 'लता ओ [लता] नागलता, धली-विशेष, (कपू)। 'वड पुं [पति] १ इन्द्र-विशेष, घरणेन्द्र (सुपा ३१)। २ नाग-राज (मोह २६)। ३ पिंगलकार (पिंग)। 'सेहर पुं [शेतर] प्राकृत-पिंगल का कर्ता (पिंग)।

फणिद पुं [फणीन्द्र] १ नाग-राज, शेष नाग (प्रासू ११३)। २ पिंगलकार (पिंग)।

फणिह सक [चोरय] चोरी करना। फणिहह (बावा १४६)।

फणिह पुं [दि. फणिह] कंधा, केश सर्वाले का उपकरण (सुप १, ४, २, ११)।

फणीसर पुं [फणीशर] देखो फणि-यह (पिंग)।

फणुजय देखो फणगुय (राज)।

फड पुं [स्पर्ध] स्पर्धा, हिर्ष (कुमा)।

फडा ओ [स्पर्धा] ऊपर देवो (दि ८, १३, कुमा ३, १८)।

फटि वि [स्पर्ध] स्पर्धा करनेवाला (प्राह २३)।

फर पुं [दि. फल, 'क'] १ बाण आदि फरक का सजा। २ ढाल। (दे १, ७६-९, ८२; कपू. सुर २, ११)। देखो फल, फल्य।

फरअ पुं [दि. स्पर्ध] धन विशेष, 'फरएहि धाइअणं तेवि हु गिएहिंवि जीवेत' (धर्मवि ८०)।

फरविद वि [दि.] फरगा हुआ, हिता हुआ, नमित्त (कपू)।

फरस देखो फरिस = स्पर्ध (रंभा. नाट)।

फरस पुं [परस] कुठार, कुन्हाका, परखा (अवि. नि २०४)। 'राम पुं [राम] बाण-विशेष, अमर्षित श्रेयि बा पुन (मत १३३)।

फरहर सक [फरफराय] फरफर भावान करना। वड. फरहरंत (अवि)।

फरिन देखो फलिह = स्फटिक (इक)।

फरिस सक [स्पर्श] धूना। फरिह (पद), फरिह (प्राह २७)। कर्म. फरि-सिजह (कुमा)। कवक. फरिसिज्जत (धर्मवि १३६)।

फरिस पुं [स्पर्श, 'क'] स्पर्श, धूना फरिसग (माका, पणह १, १; गा १३२; प्राप्. पाय. कपू), 'न य कीरह तणुफरिस' (गण्ड २, ५४)।

फरिसण न [स्पर्शन] इन्द्रिय-विशेष, ध्वनि-द्रव्य (कुप २२४)।

फरिसिय वि [स्पर्ध] धुना हुआ (कुप १६, ५२)।

फरिहा देखो फलिहा = परिला (पामा १, १२)।

फरुस वि [परुप] १ कंधा, कठिना (डवा, पाय. हे १, २१२, प्राप्)। २ न. कुपवन, निष्ठुर वाय, 'ए यावि किचो फरुं बदेजा' (सुप १, १४, ५, ११)।

फरुस पुं [दि. परुप, 'क'] कुम्भकार, फरुसग (कुन्हा, बोहाइ, कुन्हा, 'पोगममो-यणकमणवे' (वृह ४)। 'शाला ओ [शाला] कुम्भार-गृह (वृह ३)।

फरुसिया ओ [परुपता, पारुय] बर्णशता, निष्ठुरता (भाषा)।

फला सक [फल्] फलना, फलान्वित होना। फल (गा १७, ८६४), फरति (विदि १२८२)। वड. फलन (से ७, ५६)।

फल पुं [फल] १ वृद्धादि वा शस्य (भाषा. कपू. कुमा. डा ६, जी १०)। २ लाम 'पुच्छर ते गुमिणएणं एणवि विविह महु फलो होइ' (उर ८८६ टी)। ३ कार्य, 'हेउतामा-यमो हो' (पचर १; धर्म १)। ४ इष्टानिष्ठ-इष्ट कर्म वा शुभ वा घटुम फल—परिणाम (सम ७२, हे ४, १३३)। ५ उद्देश्य। ६ प्रयोजन। ७ विनया। ८ जायक। ९ भाषा का अध्ययन। १० पाप। ११ दान। १२ भुक्त. धरणीय। १३ दान। १४ बटोर, बच इन्द्र-विशेष (हे १, २३)। १५ धन माय, 'पडु वा मृष्टिण मडु

हुताफलैणं (भावा १, ६, ३, १०) ।
 भंत, 'व वि [यत्] फलयासा (एया
 १, ४; वया ४) । 'पडिदुय, यदिय न
 [वदिक] १ नवर-विशेष, पत्तोपि-नामक
 मन्देशीय नगर । २ यहाँ का एक जैन मन्दिर
 (तो ५२) ।

फलअ १ पुन [फलक] १ बाण आदि का
 फलक । तस्ता (भावा; या ६५६; तं दु
 २६; गुर १०, १६१, धीप) । २ जुए का
 एक उभरण (धीप, एण ३२) । ३ बाल,
 'भरिएहि पत्तहि' (विपा १, ३; कुमा,
 सार्थ १०१) । ४ देतो फल (भावा) ।
 'सजा छी [शय्या] बाण का तस्ता
 विस्वर सोमा जाम (भग) ।

फलण न [फलन] फलना (मुपा ६) ।

फलह १ पुन [फलह, 'क' फलक, बाण
 फलह] भादि का तस्ता, 'धरसंजण भिन्नु-
 पडिआए पीड वा फलह मा एहिसेलि वा
 उडूहल वा भाहदुड उस्तिय दुखेज्जा'
 (भावा २, १, ६, १), 'भूनिसेज्जा फलह-
 सेज्जा' (धीप), 'धरसुह' (दे १, ८; पि
 २०६), 'पेस्सह मविदाई फलहदु' भाडिय-
 जालगवकाई, 'भह फलहतेण दारिय-
 गुम्मतदेसई' (भवि),

'विह्वत्तासयमयलं पुणियरनिबद्धपलहसंघायं ।
 संजमियसज्जोर्णो बोहिणं भुणिवरसरिण्यं'
 (गुर १३, २६) ।

फलहिआ १ छी [फलहिना, फलही] काठ
 फलही । भादि का तस्ता, 'भरिए भवामिए
 फलहिमं घडेमाडवई, 'हव पहाएफलही
 बिटुह' (तो ११), 'कवावईए कयं सिगं
 भासिहनु चिसफलहीए' (गुर १, १५१) ।

फलही छी [दे] १ कपास, कपास (दे ६,
 ८२, गा १६४, ३५६) । २ कपास की
 तस्ता, 'वरकुसमवेत्तमारोणमाह हसिमं व
 फलहीए' (गा ३६०) ।

फलाय सक [फलाय] फलवाय बनाना,
 सफल करना, 'ततोभि भ घएणतमा निअय-
 फलेणं फनावदि' (एय २६) ।

फलायह वि [फलायह] फलायह, फल की
 चारण करनेवाला (पउम १४, ४४) ।

फलासय पुं [फलासय] गज-विशेष (पएण
 १७) ।

फलि पुं [दे] १ लिंग, बिह । २ वृषभ,
 बैल (दे ६, ८६) ।

फलिय वि [फलिय] १ विनसित, 'पुडिपिं
 फलिमं च दलिमपुडिपिं (पाम) । २ फल-
 युक्त, जिसकी वस्तु हुआ हो वह (एया
 १, ११) ।

फलिय न [दे] धायन, धायन, भोजन भादि का
 बाँटा जाता उपहार (ठा ३, ९—पन १४७) ।
 फलिआरी छी [दे] इर्षा, कुय गुण (दे
 ६, ८३) ।

फलिणी छी [फलिनी] प्रियगु-भुवा (दे १,
 ३२; ६, ४६, पाम, कुमा, गा ६६३) ।

फलिह पुं [परिय] १ धर्गला, धायन,
 'भगला फलिह' (पाम; धीप), 'ऊदिय-
 फलिह' (भग २, ५—पन १३४) । २
 मरु-विशेष, लोहे का मुहर आदि मरु । ३
 गृह, घर । ४ चान-पट । ५ योनिप-शास्त्र-
 प्रसिद्ध एक योग (हे १, २३२; प्राय) ।

फलिह पुं [स्फटिक] १ मणि-विशेष, स्फटिक
 मणि (ओ ३; हे १, १६०; कय) । २ एक
 विमानवास, देव-विमान-विशेष (देवद १३२,
 एक) । ३ रत्नभूषा धुपिरी का एक स्फटिक-
 मय काण्ड (ठा १०) । ४ गन्धमादन पर्वत
 का एक कूट (इर) । ५ गुरुदत्त पर्वत का
 एक कूट । ६ चक्र पर्वत का एक शिखर
 (राज) । 'गिरि पुं [गिरि] नेलास पर्वत
 (पाम) ।

फलिह पुं [फलिह] फलक, काठ भादि का
 तस्ता, 'यवेसिणी फलिह' (पाम), 'नाणी-
 नगरणमुयाए कवसियाफलिहपुटियमाईए'
 (भाप ८) ।

फलिह पुं न [स्फटिक] आवाय (भग २०,
 २) ।

फलिह न [दे] कपास का टेंटा, टेंट या
 डेरी (भणु ३३ टी) ।

फलिहंस पुं [फलिहंसक] वृद्ध-विशेष (दे
 ४, १२) ।

फलिहा छी [परिहा] सार्ई जिने या नगर
 के चारो ओर की नहर (धीप; हे १, २३२;
 कुमा) ।

फलहि देतो परिहि (प्राह १५) ।

फलहि देतो फलही = दे (भणु ३५ टी) ।

फली छी [फली] बाण भादि की छोटी
 तस्ती; 'ततो चंदणफलीउ थयिएहट्ठमि
 विविनं वहुवि (मुपा ३८५) ।

फलोयय १ वि [फलोयम] फल-प्राप्त, फल-
 फलोया' । सद्धि (ठा ३, १ पन—१११) ।

फल वि [फल्य] सुने का वज्र, सूती वपदा
 (इह १) ।

फन्नीह सत् [लम्] यपेट साम प्राप्त
 करना, गुमराती में 'फाफु' । फन्नीहामो
 (इह १) । फन (इह ० भगसव ० सु ०
 ३०३) ।

फसल वि [दे] १ सार, चितकबरा; 'फसलं
 सबलं सारं फिन्मोरं चितलं व कोमिलं'
 (पाम; दे ६, ८७) । २ स्यासक (दे ६, ८७) ।

फसलाणिय १ वि [दे] कृत-विभूष, जिसने
 फसलिय १ निभूषा की हो वह, शृङ्गारित
 (दे ६, ८३), 'फसलियाणि कुकुमारएण'
 (स ३६०) ।

फसुल वि [दे] दुक (दे ६, ८२) ।

फाड छी [स्फाति] वृद्धि (धीप ४७) ।

फाईकय वि [स्फोटीकृत] १ फाया हुआ ।
 २ प्रसिद्ध किया हुआ, 'वहनेसियं पुरीयं
 फाईयमएणमएणोहि' (निते २५०७) ।

फागुण देतो फागुण (पि ६२) ।

फाड सक [पाटय, स्फाटय] फाटना ॥
 फाडे (हे १, १६८; २३२) । वह, फाईत
 (कुमा) ।

फाडिय वि [फाडित, स्फाडित] विचारित
 (भवि) ।

फाणिय पुं न [फाणित] १ पुट, 'फाणियो
 गुणे भएणति' (निबू ४) । २ पुट का
 विकार-विशेष, भाद पुट, पानी से ड्रावित
 पुट (धीप; वस, पिद २३६; ६२५; पव
 ४) । ३ कपास (पएण १७—पन ५३०) ।

फाय वि [स्फोट] १ वृद्ध । २ विसृति । ३
 ब्यात (विते २५०७) ।

फार वि [स्फार] १ पट्टर, बट्टर, 'फारफल-
 मारभन्निक्कहामपसंजुतो महासाही' (पमंवि
 ५५) । २ विशाल, विपुल । ३ विस्तृत,

फेला हुआ (सुर २, २३६, काप्र १७०, गुपा १६४, कुप्र ५१) ।

फारक वि [दे. स्फारक] स्फरकात्र को धारण करनेवाला, 'त नासत दृष्टुं' फारकका तनुद्वययणो हुक्का' (पर्यट ८०) ।

फारसिय न [फारस्य] पश्यता, बहोरता, कर्षता, 'फारसिय समादयति' (भाषा) ।

फाल देखो फाल ।

फाल देखो फाल । फालेद (हे १, १६८, २३२) । कवहु, फालिजंत, फालिजमाण (गा १५३, समत १७४) । संहु, फालेऊण (गा ४८६) ।

फाल पुन [फाल] १ सोहमय बुद्ध, एक प्रकार की सोहे की लम्बी कोल (उवा) । २ फाल से की जाती एक प्रकार की लिप्य-परीक्षा, रापय विशेष (गुपा १८६) । ३ फलाग, लॉक, 'दीवि ह्य विहलफालो' (कुप्र १२) ।

फालण न [पाटन, स्फाटन] विदारण, 'लोणी किं सहेदि सोरुहुमो तं तारितं फालण' (रंभा, सन १२५) ।

फालण देखो फालण ।

फाला जी [फाल] फलाङ्ग, लॉक (कुप्र २७८, कुलक ३२) ।

फालि जी [दे. फालि] १ फनी, छोटी, फलियां २ शब्द "सिर्लिफालिब्य अगिण्णा दड्ढो" (संघा ८५) । ३ फकि, टुकड़ा "—मागवज्जीदत्तपूगीकनरासिपुडु—" (रघण ४५५) ।

फालिअ रि [पाटित, स्फाटित] विदारित (कुपा, पण्ड १, १—पत्र, पठम ८२, ३१, शीप) ।

फालिअ न [दे. फालि] देश विशेष में होता यद्र निरोप, "ममिताणि वा गज्जाणि वा फालिपाणि वा वापहाणि वा (भाषा २, ५, १, ७) ।

फालिअ } पु [स्फाटिक] १ खनविरोध
फालिअ } (बन्ध) । २ रि. स्फटिक-रत्न वा
फालिअ } (वि २२६; उप ६८६, गुपा ८८) ।

फालिहद पु [परिमद] १ फलद का पेड़ । २ देवदारु का पेड़ । ३ निम्ब का पेड़ (१, २३२) ।

फास घक [स्पृष्ट, स्पृश्य] १ स्पर्श करना, छूना । २ पालन करना । फासद, फागेद (हे ४, १८२, भग) । कर्म. फासिबद (कुपा) । वक्तु फासत, फासयंत (पंचा १०, ३१ पण्ड २, ३—पत्र १२३) । कवहु फासा-इजमाण (भग—ध) । घक फासइत्ता, फासित्ता (उत्त २६, १, सुख २६, १, बप्प, भग) ।

फास पुन [स्पृशे] १ स्पर्श, छूना (भग प्राप् १०४) । २ ग्रह विशेष, ज्योतिष्क देव विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८) । ३ दुःख विशेष, 'एयंयं फासाद दुर्घटि जात' (सुप्र १, ५, २, २२) । ४ शब्द प्रादि विषय (उत्त ४, ११) । ५ स्पर्श इन्द्रिय, त्वचा (भग) । ६ रोम । ७ ग्रहाण । ८ युद्ध, लड़ाई । ९ पुन फल जायूस । १० बाण, पवन । ११ दात । १२ 'क' से लेकर 'म' तक के अक्षर । १३ वि. स्पर्श करनेवाला (हे २, १२२) । 'कीय पुं ['क्षीय] क्षीय का एक भेद (निष् ४) । 'णाम, नाम न ['नामन] कर्म विशेष, कर्षण प्रादि स्पर्श का कारणभूत बर्न (राज, सम ६७) । 'मत वि ['मत्] स्पर्शवाला (ठा ५, १, भग) । 'मय वि ['मय] स्पर्श-मय, स्पर्श से निर्वृत्त, 'फाला-मयामो सोक्ष्माभो' (ठा १०) ।

फासग वि [स्पर्शक] स्पर्श करनेवाला (प्रमक १०४) ।

फासण न [स्पर्शन] १ स्पर्श-क्रिया (धा १६) । २ स्पर्शेन्द्रिय, त्वचा (पव ६७) ।

फासणया } जी [स्पर्शना] १ स्पर्श क्रिया
फासणया } (ठा ६, स १२६, जीवत्त १८१) । २ प्राप्ति (सज) ।

फासिअ वि [स्पृष्ट] १ छुआ हुआ (नन ४१, निवे २७८३) । २ प्राप्त 'अचिए फासे विदिण पत्त ज फामियं त्वं मणियं' (पव ४) ।

फासिअ वि [स्पर्शित] स्पर्श करनेवाला (विषे १००१) ।

फासिअ वि [स्पर्शित] १ स्पर्श-युक्त, स्पर्श । २ प्राप्त (पव ४—गाथा २१२) ।

फासिदिय न [स्पर्शेन्द्रिय] ज्वगिन्द्रिय (भग, छाया १, १७) ।

फासु } वि [प्राप्त, 'क] प्रवेतन, जीव-
फासुअ } रहित, निजीव, प्रचित वस्तु (भग,
फासुग } पचा १०, ६; शीप, उवा छाया १, ५, पठम ८२, ५) ।

फिबर घक [फिन् + छ] प्रेत—पिराच का बिल्ला, 'तह फिन्करति पेया' (गुपा ४६२) ।

फिक्कि घुकी [दे] हर्ष, छुरी (दे ६, ८३) ।

फिज न [दे स्फिक्] निरम्ब, चूवर, जघा का उपरि भाग (सुख ८, ११) ।

फिट्ट भव [अंश] १ नीचे गिरना । २ दृटना, भागना । ३ ब्रवत्ता होना । ४ पलायन करना, भागना । फिट्टह (हे ४, १७७, प्राक् ७६, गा १८३, वेदय ५८७), फिट्टई (उत्त २०, ३०), फिट्टि (विदि १२६३) । भवि. फिट्टिहद, फिट्टिहिदि (कुप्र १९५, गा ७६८) ।

फिट्टे वि [अट्ट] विण्ट, 'पाणिण्ण तपह विरप न फिट्टे' (गा ६३, भवि) ।

फिट्टा जी [दे] १ मार्ग, रास्ता, 'ठा फिट्टाप सिलिय कुट्टियनलेडिय एण' (विदि २६६) । २ प्रणाम विशेष, मार्ग में दिया जाता प्रणाम (ग्राम १) । 'मिच्छ पुन ['मित्र] मार्ग में मित्रने पर प्रणाम करने तक की भवविवादी मित्रतावाला (गुपा १८६) ।

फिड देखो फिट्ट । फिडह (हे ४, १७७) ।

फिडिअ वि [अट्ट, स्फिटिअ] १ भ्र श-भास, मष्ट, श्रुत (श्रीप ७, १११, ११२, ते ४, ५४, ६२) । २ यतिज्ञान, जन्मपित्त (श्रीपना १७४, श्रीप) ।

फिट्टे वि [दे] वापन (दे ६, ८४) ।

फिप्प रि [दे] इप्पिम, बनारसी (दे ९, ८३) ।

फिप्पिम न [दे] यत्त—यत्त निपट मांस-विरोध पेरमा (पुप्रनि ७२, पण्ड १, १) ।

फिर घक [गम्] फिरला, बचना । वट्ट. फिरत (पर्यट ८१) ।

फिरफः पुंन [दे] पातो गादी, भार दोने-
पातो पातो गादी; 'समचिता दुवि वसद्धा
सगटं वडुद्धति जयनभरियं। अट्टुवि विभि-
प्रचिता फिरवकुत्तावि तम्पति' (गुपा
४२४)।

फिरिय वि [गत] गया हुमा,
'मोपणुगानएहेउं पुरिया द्द
केवि मयमो फिरिया।

अं सुम्भइ भासलो
सुम्भेवि हु एस संसारयो'
(पमंवि १३६)।

फिरिअ देखो फिरिअ (सि ८, ६८)।

फिरिलस मरु [दे] फिरिलना, रिरावना,
गिरना। वरु. 'सेयाविमभूमितो फिरिलस-
माणा य वामपावमि' (सुर २, १०४)।
देपो फिरिलस।

फीअ देखो फाय (सुर २, ७, १)।

फीगिया छी [दे] एक जात की भीठाई,
गुजराती मे 'फेगी'; (सम्मत ५७)।

फुंनारी छी [दे] फूँक, गुह से हवा निगालना
(मोह ९७)।

फुंनार पुं [कुद्दार] कुकनार, कुपित सभं
भावि की भावना (सुर २, २३७)।

फुंदा की [दे] केश-वन्ध (दे ६, ८४)।

फुंद देखो फंद = सत्य। फुंदइ (सि १५, ७७)।

फुंफमा } छी [दे] करीपाणि, बनकएदे
फुंफुआ } की भाग (पात्र: दे ६, ८४) तडु
फुंफुआ } ४४; जीव २; बह १; कम्म १,
२२)।

फुंफमा की [दे] १ करीपाणि, 'महवा डग्गळ
निदुव निदुव' फुंफुम व्व चिररसो' (उप
७२८ टी)। २ कववर-वह, कुडा करकट
की भाग (सुर १, ८)।

फुंफुल } सक [दे] १ जपाटन करना।
फुंफुल } २ कहना। फुंफुलइ (दे २, १७४)।
फुंस सक [गुज, प्र + उच्छ्र] पोखना;
साफ करना। फुंसवि (प्राक ६३)।

फुंसण देखो फासण (उप ३ ३४)।

फुंस मरु [फून् + छ] १ कुकनारना, फूँ
फूँ भावना करना। २ सक, फुंद से हवा
निकालना, फूँकना। फुंसद (पिंग)। वरु.
फुंसत (गा १७६), फुंसिअत (स) (दे
४, ४२२)।

फुम्मा की [दे] १ मिथ्या (दे ६, ८३)। २
फूँक (गुप्र १५०)।

फुम्मार पुं [फूरनार] कुकनार, फूँ फूँ की
भावना (गुप्र १८८ सण)।

फुम्किय वि [फूकल] फुफनारा हुमा (भाव
४)।

फुम्मी की [दे] रक्की, मोचिन (दे ६, ८४)।
फुम्मा कीन [दे- रिफच] शरीर वा प्रवयव-
विशेष, कटि-शेष (सूचन ७६)।

फुम्माफुम्मा वि [दे] विकीर्ण रोमवाला,
परस्पर ससंयद्ध—विपरे हुए केशगताः सल
गुपमायो फुम्माफुम्मायो' (उपा)।

फुट } मरु [स्फुट, अंश] १ विस्फटना,
फुट } जीलना। २ प्रवट होना। ३ फूटना,
फटना, हुटना। ४ मट होना। फुटइ, फुटई,
फुटई, फुटव (सति ३६; प्राक ६६; दे ४,
१७७, २३१, उव, मवि, पिंग, गा २२८)।

मवि. 'फुटिस्तइ कोहियं महिलानज्जकियमं
वा' (धमंवि १३), फुटिहिइ (सि २२६)। वरु.
फुटव, फुटमाण (पह १, १; गा २०४);
सुर ४, १५१; छाया १, १—पत्र १६)।

फुट वि [फुटित, अण] १ फूटा हुमा; हुट
हुमा, विदीय (उप ७२८ टी; सम्मत १४५;
सुर २, २०; ३, २४३, १३; २१०)। २
अण, पठित (कुमा)। ३ विपट: 'फुटइहा-
हसोस' (छाया १, १६; विपा १, १)।

फुटण न [फुटन] १ फूटना, हुटना (गुप्र
४१७)। २ वि. फूटनेवाहा, विदीय होनेवाला
(दे ४, ४२२)।

फुटिअ वि [फुटित] विचारित, 'फुटिमोहो'
(कुमा ७, ६४)।

फुटिअ वि [फुटित] कूटनेवाहा (अण)।

फुट देखो फुट = स्पष्ट (सि ३११)।

फुट देखो फुट = स्पष्ट, अंश। फुटइ (दे ४,
१७७, २३१, प्राक ६६), 'फुटति सर्वव-
संघोयो' (उप ७२८ टी)। वरु. फुडमाण
(सुर ३, २४३)।

फुट देखो फुट = स्पष्ट (पहण ३६, डा ७—
पत्र ३८३, जीवस २००, भा)।

फुड वि [फुट] स्पष्ट, व्यक्त, साफ, विशद
(पात्र, दे ४, २५८, उवा)।

फुडम न [फुटन] हुटना, सफिदल होना
(पह १, १—पत्र २३)।

फुडा की [रुट्टा] प्रतिपादनामक महोरगेन्द्र
की एक पदवी, इन्द्राणी-विशेष (डा ४,
१; दक)।

फुडा की [फटा] सांग की कन, 'उमडकु-
डुडिममडितवतवियडकुडोडोवरएणदन्ध'
(उपा)।

फुडिअ वि [स्फुटित] १ विपठित, खिना
हुमा (पात्र; गा ३६०)। २ फूटा हुमा,
विदीय (स ३०१)। ३ विवट (पह १,
२—पत्र ३०)।

फुडिअ (धा) देखो फुरिअ (मवि)।

फुडिआ की [स्फोटिअ] छोटा कोड़ा,
गुनमी (गुपा १३८)।

फुड देखो फुट। फुडइ (पह ३)।

फुड वि [दे. स्पष्ट] फूटा हुमा (पत्र १५८
टी, कम्म ५, ८५ टी)।

फुरकुस व [दे] उदरवर्त्ती मय-विशेष,
फेफडा (सूचन ७३; पत्र २३, ५४)।

कुम सक [अम] अन्नण करना। कुमइ
(दे ४, १६१)। प्रयो. कुमावइ (कुमा)।

कुम सक [दे. फून् + छ] फूँक मारना,
गुँह से हवा करना। कुमेरा (पत्र ४, १०)।
वरु. कुमंत (वस ४, १०)। प्रयो. कुमावेजा
(वस ४, १०)।

फुर मरु [फुर] १ फरकना, हिलना।
२ तडफटना। ३ विक्कना, खीलना। ४
प्रकाशित होना, प्रकट होना। 'फुरइ म
गीताइ तसखण वामच्छ' (सि १५, ७६;
पिंग)। वरु. फुरंत, फुरमाण (गा १६२;
सुर २, २२१; महा. पिंग. दे ६, २४; १२,
२६)। वरु. फुरिआ (डा ७)।

फुर सक [अप + ह] मयहरण करना,
खीनना। प्रयो. फुरावित (वस ३)।

फुर पुं [फुर] शत्रु-विशेष; फुरनभावरण-
गहिय—' (पह १, ३—पत्र ४६)।

फुर (मप) देखो फुड = स्पष्ट (पिंग)।

फुरण [दे. फुरण] १ फरना, कुछ हिलना,
हैलत कम्पन, 'अं पुण मच्छिक्कुरेणं मह होदी
मारिया सेण' (सुर १३, १२७)। २ स्फूर्ति
(गुपा ६; वजा ३४; सम्मत १११)।

कुरकुर घव [पोस्कराय] ब्रूव काँपना,
वयराणा, तढफङ्गना। कुरकुरा (महानि
१)। वक्र. कुरकुरंत, कुरकुरंत (सुर १४,
२२३; त ६६६; २५६)।

कुरिअ वि [कुरित] १ वणित, हिला हुमा,
फरवा हुमा, वलित (दे ६, ८४; सुर ५,
२२६, ॥ १३७)। २ दीत (दे ६, ८४)।

कुरिअ वि [दि] निवित (दे ९, ८४)।

कुरकुर देवो कुरकुर। वक्र. कुरकुरंत, कुर-
कुरंत (पण्ड १, ३; निड ५६०; सुर ७,
२३१; छाया १, ८—पत्र १३३)।

कुल देवो कुल = कुट्ट। कुल (नाट)। कुले
(मय) (पिंग)।

कुल (मय) देवो कुर = कुर। कुला (पिंग)।

कुल (मय) देवो कुल = कुट्ट (पिंग)।

कुल (मय) देवो कुल = कुल (पिंग)।

कुलिअ देवो कुलिअ = कुट्टि (सि ५, ३०)।

कुलिअ (मय) देवो कुलिअ (पिंग)।

कुलिअ पुं [कुलिअ] भगिन-वण (छाया १,
१; दे ६, १३५, महा)।

कुल मय [कुल] ब्रूवना, पुन-बुक होना,
विबचना। कुल, कुल, कुल (रमा,
समस्त १४०), पुन्रति (दे २, २६)। भवि.
कुलिदिनि (मा ८०१)।

कुल देवो वम = वम। कुल (बाया १४६)।

कुल न [कुल] १ ब्रूव, पुन (हुमा, धर्मवि
२०; समस्त १४३, वसति १)। २ ब्रूवा
हुमा, पुणित (मा, छाया १, १—पत्र १८;
हुमा)। *मालिआ की [मालिआ] ब्रूव
देवनेवाणी, मालारार की की. मालिन (सुर
३, ७४)। *यलि की [यलि] पुन-मयान
वता (छाया १, १)।

कुलंधय पुं [कुलंधय, पुणंधय] भमर,
नीरा (ज ६८६ टी)।

कुलंधय पुं [दि] भमर, नीरा (दे ६, ८५;
पाया हुमा)।

कुलम न [कुल] हुन की माहतिपाता
सनात वा माहता (धीग)।

कुलन न [कुल] निराज (वक्रा १३२)।

कुलना की [कुल, पुल] बली-विशेष,
कुलाहा, रजपुना, गोवा का माह, 'दहनुय-
५६

बोगलिमा (१ गो)ली य तह प्रब्रवीदीया'
(पण्ड १—पत्र ३३)।

कुलंड न [दि] पुन-विशेष, मदिग-नामक
पून (कुप ४५३)।

कुलविष १ वि [कुलित] कुलाया हुमा
कुलानिया १ (समस्त १४०; विक २३)।

कुलिअ वि [कुलित] पुणित, विकसित (मय
१२, ॥ ३०३, समस्त १४०; २२७)।

कुलिम पुं की [कुलना] विवाह, कुरन,
'मवसुत ता फरनासे कुलिमसमए
वि नासिमा वणये।
इय वनिडं य पतामो चतो
पतोहि विविषो व' (सुर ३, ४४)।

कुलिअ वि [कुलित] ब्रूवनेवाला, प्रपुल,
'हियण दणवदणकुलिअकुलेहि' (समस्त
२१४)।

कुल सक [भ्रम] भ्रमण करना। कुल
(हे ४, १९१)।

कुल गज [भ्रज] मारन करना, पोखना,
साक करना। कुल (हे ४, १०५; भाव)।

बर्म. कुलिअ, कुलिअ (हुमा, पुना १२४)।

बक्र. कुलन, कुलमाग (भवि, कुप २८५)।

संक्र. कुमिऊग (महा)।

कुल सक [भ्रज] स्वयं करना, पूना।

कुल (मग. धीग, वन २, ६), कुलति (पिंगे
२०२३), कुलंतु (मग)। वक्र. कुलंत,
कुलमाग (धीग ३८६; मग)। संक्र.
कुलिअ, कुलिआ, कुलिआण (वंश २,
३८, मग. धीग, नि ५८३)। इ. कुलस
(डा १, २)।

कुलम न [स्पनन] स्वयं-ब्रिया (मग. पुना
५)।

कुलमा की [स्पनना] ऊपर देवो (पिंगे
४३२, पत्र ३२)।

कुलिअ देवो कुल = वक्र।

कुलिअ वि [स्पष्ट] हुमा हुमा (नीग
१६६)।

कुलिअ वि [स्पष्ट] वीज हुमा (ज ४ ३४२,
पुना २११, पुन २३१)।

कुलिअ पुं [पुना] १ बिन्दु, कुर, कुर
(पाया, वण)। २ बिन्दु-मात (मन ९०)।

कुलिअ वि [भ्रमित] बुनाया हुमा (हुमा
७, ४)।

कुलिआ की [दि] बली विशेष, 'वेमविदुगो-
चकुमिया' (पण्ड १—पत्र ३३)।

कुलस देवो कुल = वक्र।

फूअ पुं [दि] लोहकार, लोहार (दे ६, ८१)।

फूम देवो फूम। वक्र. फूमंत (राज)।

फूमिय वि [फूरकृत] फूँवा हुमा (ज ४
१४१)।

फूल देवो फूल = फूल, 'फूलब्रूवलिआहु
मूवणपतालि योयाणि' (जी १३)।

फेकार पुं [फेकार] १ शृंगार की भावान
(सुर ६, २०४)। २ भावान, बिलाहट
(बण्)।

फेकारिय न [फेकारित] ऊपर देवो (स
३७०)।

फेड सक [स्फेट] १ निनाश करना।
२ डूर हटाना। ३ परिमाण करना। ४
वर्षादन करना। फेड, फेडे; फेडिउ (डन;
हे ४, ३५८; संवोध ५४; स ४१४)। कर्म.
फेडिअ (भवि)।

फेडन न [स्फेटन] १ निनाश। २ घननयन
(पत्र ३३५)।

फेडणय की [स्फेटना] ऊपर देवो (निड
३८७)।

फेडायणिय न [दि] निनाश-मय की एक
रीति, वक्र को प्रयम मार लक्षण-विहार के
वस्तु दिया जाता बाह्यार (स ७८)।

फेडिअ वि [स्फेटिन] १ गट किया हुमा,
निनाशित (वजन ३६, २२)। २ रवान
(गिरि ६५३)। ३ मनीन (धोपना ४२)।
४ उदपाठित (स ७८)।

फेग पुं [फेग, फेन] फेण. माग. जन-मय,
पानो धारि के ऊपर वा वृक्ष-माग पदार्थ
(पाया, छाया १, १—पत्र ६२; वण)।

*मालिआ की [मालिआ] मनी-विशेष
(ज २, ३, ६४)।

फेगंधय पुं [दि] वण (दे ९, ८५)।

फेगाय घा [फेगाय, फेगाय] फेग—
पत्र का घनन करना, मय निराजना।
वक्र. फेगायमाग (मनी ०४)।

फेफकस } न [दे] देतो फिफकस,
फेफम } फुफुस (राज सङ्ग ३६) ।

फेरण न [दे] फेरना, घुसना 'हु फणफेरण-
मुंवारणहि' (पुर २, ८) ।

फेल तर [क्षिप] १ फेंटना । २ दूर
बरना । फेनदि (श्री) (गाठ) । सट्ट.
फेळिय (नाट) ।

फेला छी [दे] झूठन फाँन, जूठन, भोजन
से बघा घुसा, वचिष्ट

'तत्स य मलुपाए देवी

हासी य तम्मि दूवम्मि ।

निर्धं खिपति फेलं सीए

सो जियइ सुणउण्व ।'

'दुग्गपज्जवासी गम्भी,

जएणीइ बाविपरनेहि ।

अं गम्भीपोसण पुण ते फेलाहारसंवासं ।'

(सर्ग १४६) ।

फेलाया छी [दे] मानुसानी, मामी (दे ६,
८५) ।

फेळ पुं [दे] दरिद्र, निर्धन (दे ६, ८५) ।

फेलुस सक [दे] फिसलना, खिसबना,
खिसबजर गिरना । फेलुसइ (दे ६, ८६) ।

सङ्क. फेलुसिकण (दे ६, ८६, स ३५५) ।

फेलुसण न [दे] १ फिसलन, पतन । २
पिच्छिल जमीन, बह जगह जहाँ पाँव फिसल
पड़े (दे ६, ८६) ।

फेल्हण देवो फेलुसण (बब ४ टी) ।

फेस पुं [दे] १ नाव, डर । २ सङ्क्रान्त (दे
६, ८७) ।

फोअ पु [दे] वद्यम (दे ६, ८६) ।

फोइअय वि [दे] १ युक्त । २ विस्तारित
(दे ६ ८७) ।

फोफा छी [दे] डराने की भावाङ्क, भयोत्पाद
शब्द (दे ६, ८६) ।

फोड सब [स्फोटय] १ फोडना, विदारण
बरना । २ राई भादि से शास्त्र भादि को
बघारा । फोडेज (दुप्र ६७) । वट्ट फोडन,
फोडेमाण (मुषा २०१, ५६३ धीप) ।

फोड पुं [स्फोट] १ पाटा, घल विशेष (ठा
१०—पत्र ५२०) । २ बल विशेष शब्द-
भेद (राज) । ३ वि, गणक, बहुफोडे
(भोषमा १६१) ।

फोडन (श्री) पुं [स्फोटक] ऊपर देवो (प्राङ्क
८६) ।

फोडन न [स्फोटन] १ विदारण (बब ६
टी, मउड) । २ राई भादि से शास्त्र भादि को
बघारना (पिङ २५०) । ३ राई भादि
संस्कारक पदार्थ (पिङ २५५) । ४ वि,
कोइनेगात्ता, विदारण बरनवाला 'वायर-
जएणियकोइल' (खाया १, ८) 'भाई
ममएणमराहमहिमम'बराणएण धीध' (गा
३८१) ।

फोडय देवो फोडअ (पञ्च ६१, २६) ।

फोडय सब [स्फोटय] १ फोडवाना ।
तोडवाना । २ चुतवाना । सङ्क फोडयिऊण
(स ५६०) ।

फोडाविय वि [स्फोटिव] १ तोडवाया
हुमा । २ चुतवाया हुमा 'कोडाविया सपुडा'
(स ५६०) ।

फोडि छी [स्फोटि] विदारण, भेदन. 'भाडो-
कोडीनु वजए कम्म' (पडि) । 'कम्म न
[कर्मण] १ जमीन भादि का विदारण करने
का काम, हल भादि से भूमि-दारण, कूप,
तडाग भादि खोदने का काम । २ उक्त काम
कर भाजीविका चलाना (पडि) ।

फोडिअ वि [स्फोटित] १ फोडा हुमा,
विदारित (खाया १, ७, स ५७२) । २
राई भादि से बघारा हुमा (बब १) ।

फोडिअय वि [दे. स्फोटित, क] राई से
बघारा हुमा सापादि (दे ६, ८८) ।

फोडिअय न [दे] रात से समय जगन में
सिहादि से रणा का एक प्रकार (दे ६, ८८) ।
फोडिया छी [स्फोटिअ] छोटा फोडा (ठा
७६८ टी) ।

फोडी छी [स्फोटी, स्फीटी] देतो फोडि
(ठना पब ६ पडि) ।

फोफकस न [दे] शरीर का भ्रमयन विशेष,
'कानियअयमतपित्तजरहिययफोफकसनेकसपि-
विहीदर—' (सङ्ग ३६) ।

फोफल न [दे] गप शब्द विशेष, एक प्रकार
की धीपधि 'महुरविरेयणमेसो कायणो
कोफनाइस्वेहि' (मत ४२) ।

फोफस देवो फोफकस (परह १, १—
पत्र ८) ।

फोरण न [स्फोरण] निरुत्तर प्रवर्तन,
विसर्गमि भ्रमसति ॥ एयसतिस्फोरणएण
कलसिद्धी' (उवर ७५) ।

फोरयिअ वि [स्फोरिअ] निरुत्तर प्रवृत्त
किया हुमा, 'शेदिपि नियनियसतो फोरनीया'
(सम्मत् २२७, हम्मीर १५) ।

फोस देवो फुस = वृश्, 'तव्व फोसति
वर्ग' (जीवत् १६६) ।

फोस पु [दे] वृद्धम (दे ६, ८६) ।

फोस पुं [दे] पोस' मपान-देश, दुहा
(सङ्ग २०) ।

फोसणा छी [स्फोर्णा] स्पर्श क्रिया (जीवत्
१६६) ।

॥ इम विरिपाइअसहमहण्ये फापाइअइस्सकलणो
पट्टापोसइमो वरंगो सपत्तो ॥

व

वा पुं [व] श्रोत्र-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष (प्राग) ।

वअर (सौ) न [वदर] १ कव-विशेष, वेर । २ कपास का बीज (प्राक् ८३) ।

वइट्ट (मप) वि [उपविट्ट] बैठा हुआ (हि ४, ४४४; मवि) ।

वइल्ल पुं [दे] बैल, बरध, बुधम (दि ६, ६१; गा २३८; प्राक् ३८; हे २, १७४; पमवि ३; थावक २५८ टी, सु १३३; प्राप् ५५; कुप २७६; ती १५, वि ६; कण्ठ) ।

वइस (मप) मक [उप + विश] बैठना, गुजराती में 'बैसठु' । बइसह (मवि) ।

वइसणय (मप) म [उपवेशनक] आसन (ती ७) ।

वइसार (मप) सन [उप + वेशय] बैठाना । बइसारह (मवि) ।

वइस्स देवो वइस्स (पि ३००) ।

वइस्स (मप) देवो वइस्स । बइसह (मवि) ।

वइस्स (मप) न [उपवेश] बैठ, बैठन, बैठना- 'तोवि मोट्टुका कराविमा मुट्टप उट्टु-बईस' (हि ४, ४२३) ।

वडणीं की [दे] कार्पासी, कार्पास-बल्ली (दे ३, ५७) ।

वडल पुं [वडल] १ वृक्ष-विशेष, मौलनरी का पेड़ (मय १५२; पाक, छाया १, ६) । २ बडुल का पुष्प (सि १, ५६) । 'सिरी की' [श्री] १ बडुल का पेड़ । २ बडुल का पुष्प (या १२) ।

वडस पुं [बडुरा] १ प्रमायं देश-विशेष । २ मुंकी, उस देश का निवासी (पणह १, १—पन १४) । की, 'सी (छाया १, १—पन ३७) । ३ वि. शबल, बिल्ववृक्ष । ४ मलिन वरिचवाला, शरीर के ऊपर छल्ले विल्लुपा भादि से संयम को मलिन करनेवाला (ठा ३, २; ४, ३; गुप ६, १), की, 'एण्णं सा सुमाविपा मज्जा मदीरवडमा जामा यारि होत्वा' (छाया १, १६) । ४ पुंन. मलिन संयम, शिथिल चालि-विशेष (गुप ६, १) ।

वडहारी की [दे] झुहारी, समारंजी, माह (दि ६, ६७) ।

वंग पुं [वङ्ग] १ भगवान् आदिनाथ के एक पुत्र का नाम (ती १४) । २ देश-विशेष, बंगाल देश (उप ७६५; ती १४) । ३ वंग देश का राजा (पिप) ।

वंगल (मप) पुं [वङ्ग] वंग देश का राजा (पिप) ।

वंगाल पुं [वङ्गाल] बंगल देश 'बंगालदेम-वइणो लेणं तुह ससुरयस्स दिन्ना हं' (मुपा ३७७) ।

वंग देवो वंग (पि २६६) ।

वंडि पुं [दे] देवो वंडि = बन्दि (पट्ट) ।

वंदु न [दे] वैदी, काण-बद्ध मनुष्य, 'बंदेपि किये' (स ४२१), 'बंदारं गिह्द कयावि', छत्तेण गिह्दं बंदारं', 'बंदारं मोयावणुप' (पमवि ३२), 'एण्णवंधेवगमहिपहियकीरत-कण्णलसरा' (पमवि ५२) । 'गाह पुं [मह] वैदी रूप से पकड़ना, 'पररोहण्ट-वाणुबन्धमहल्लोसणुसुपुहा' (कुप १३३) ।

वंदण न [दे] वैदी (नदीटिप्प) वैदिय की वृद्धि में ३३ वां कथानक) ।

वंदि की [वन्दि] देवो वंदी (हि १, १४२, २, १७६) ।

वंदि पुं [वन्दि] स्तुति-पाठक, मंगल-यदिपुं पाठक, मायाधः 'मंगलपाठयमायह-कारणप्राप्तिमा वंदी' (पाप, उप ७२८ टी; पमवि ३०), 'उदामसद्वदियवदसमुपुट्ट-नामाह' (म ५७६) ।

वंदि न [दे] समुद्र-वाणिज्य प्रधान नगर, वंदर (सिरी ४३३) ।

वंदी की [वन्दी] १ हठ-हठ की, बंदी (दि २, ८०; वड १०५; ८४३) । २ वैद किया हुआ मनुष्य (गड ४२६; गा ११८) । ३ वैद किया हुआ [वन्दीट्ट] वैद किया हुआ, बांध कर धानीत (मउठ) ।

वदुरा की [वन्दुरा] धरव-शाला, गच्छ निष्पेदि बडुलो, मुहेदि तुरए' (स ७२२) ।

बंध सक [बन्ध] १ बांधना, नियन्त्रण करना । २ कर्मों का जीव-प्रदेशों के साथ संयोग करना । बंध (मग; महा; उप, हे १, १८७) । भूक, बंधिषु (पि ५१६) । कर्म, बंधिगह, बंधिगह (हि ४, २४७), मवि, बंधिहि, बंधिहि (हि ४, २४७) । वड, बंधत, दंपमाण (कम्म २, ८, पण २२) । संध, बंधइत्ता, बंधाध, बंधिऊण, बंधिऊण, बंधिप्ता, बंधिप्ता (मग, पि ५१३, ५८५, ५८२) । हड, बंधेउं (ह १, १८१) । क, बंधियव्व (बंध १, ३) । कवड, वडमत, वडममाण (मुपा १६८; कम्म १, ३५; मीप) ।

बंध पुं [दे] धृत्, मौकर (दि ६, ८८) । बंध पुं [बन्ध] १ कर्म-युगलो का जीव-प्रदेशों के साथ दूध-पानी की तरह मिलना, जीव-कर्म-सयोग (प्राचा, कम्म १, १५; ३२) । २ बन्धन, नियन्त्रण, संयमन (या १०; प्राप् १५३) । ३ छन्द-विशेष (पिप) । 'सामि वि [स्वामिन्] कर्म-बन्ध करते-वाला (कम्म ३, १; २४) ।

बंधई की [बन्धयी] पुंरवली, भस्ती की (नाट—मालती १०६) ।

बंधय वि [बन्धय] १ बांधनेवाला । २ कर्म-बन्ध करनेवाला, आत्म-प्रदेश के साथ कर्म-युगलो का संयोग करनेवाला (बंध ५, ८४; थावक ३०६, ३०७; पंचा १६, ४०, कम्म ६, ६) ।

बंधण न [बन्धन] १ बांधने का—संस्लेष का साधन, जिससे बांधा जाय वह नियन्त्रण-तदि पुण (मग ८, ६—पण ३६४) । २ जो बांधा जाय वह । ३ कर्म, कर्म-युगल । ४ कर्म-बन्ध का कारण (सुप १, १, १, १) । ५ संयमन, नियन्त्रण (प्राप् ३) । ६ नियन्त्रण का साधन, रज्जु भादि (उर) । ७ कर्म-विशेष, जिस कर्म के उदय से पुंन-पुद्गीत कर्म-युगलो के साथ गुणमाण कर्म-युगलों का साधन में सम्बन्ध हो वह कर्म (कम्म १, २४; ३३; ३५; ३६; ३७) ।

बंधगया लो [बन्धन] बन्धन (भय) ।
बंधणी लो [बन्धनी] निवा-विशेष (पत्रम
७, १११) ।

बंधय देशो बंधग (लुदि ४२) ।

बंधव पुं [बन्धव] १ भाई, भ्राता । २
दिन, वयस्य होम् । ३ मानेदार, संबंधी,
नवत । ४ माता । ५ पिता । ६ माता-पिता का
सम्बन्धी माता, चाचा आदि (हे १, १०;
प्राप् ७६; उत १००, १४) ।

बंधाप (मशो) मक [बन्धय] बंधाना,
बंधवाना । बंधापमहि (वि ७) ।

बंधायिअ रि [बन्धित] बंधाका हुआ (सुपा
३२४) ।

बंधिअ देखो घट्ट (सुम १, २, १, १८;
घमवि २३) ।

बंधु पुं [बन्धु] १ भाई, भ्राता । २ माता ।
३ पिता । ४ मित्र, दोस्त । ५ स्वजन,
मानेदार, नवत (हुमा, महा, प्राप् १०८,
सुपा १६८; २४१) । ६ छन्द विशेष (विम) ।
"जीष पुं [जीष] घृण-विशेष, दुपहरिया
का पेठ (स्वप्न ६६; कुमा) । "जीषग पुं
[जीषग] यही घर्ष (छाया १, १; गण्य,
भग) । "दत्त पुं [दत्त] १ एक श्रेष्ठ का
नाम (महा) । २ एक जैन मुनि का नाम
(राज) । "मई, "यई ली [मती] १
भगवान् मल्लिनाथ की मुख्य साखी का नाम
(छाया १, ८; पव १; सम १४२) । २
स्वनाम-ख्यात लो-विशेष (महा, राज) ।
"सिरी ली [श्री] श्रीराम राजा की पत्नी
(विना १, ६) ।

बंधुर वि [बन्धुर] १ सुन्दर, रम्य (पाप्र) ।
२ मन्त्र, भवन्त (गड २०५) ।

बंधुरि वि [बन्धुरित] १ पिरोइत (गड
३८३) । २ मन्त्रील, नमा हुमा (गड
५५६) । ३ मुकुटित, मुकुटयुक्त । ४ निमृषित
(गड ५३३) ।

बंधुल पुं [बन्धुल] बेरया-पुन, भस्ती-पुन
(मुन्द २००) ।

बंधूय पुं [बन्धूक] वृक्ष-विशेष, दुपहरिया का
पेठ (स ३१२) ।

बंधोछ पुं [दे] मेजर, भेल, संगडि (हे
६, ८६; पट्ट) ।

बंधु पुं [बन्धु] १ ब्रह्मा. विधाता (उप
१०३१ टी. दे. ६, २२; कुप्र २०३) । २ भगवान्
अनित्याय का शासनाभिधायक यम (संति
७) । ३ भयरा का धर्मदायक देव (छा ५,
१—यव २६२) । ४ पाचर्व देवलोका का इन्द्र
(छा २, ३—यन ८४) । ५ बाटुएँ चक्रवर्ती
का पिता (सम ४२२) । ६ द्वितीय यमदेव
बीर बागुदेव का पिता (सम १२२, छा ६—
पव ४४७) । ७ यमानिप शास्त्र प्रसिद्ध एक
योग (पत्रम १७, १०) । ८ ब्राह्मण, मित्र
(कुसुन ३१) । ९ चक्रवर्ती राजा का एक
देव-युत प्रसाद (उत १३, १३) । १० दिन
का मरवाँ घुड़न (सम ५१) । ११ छन्द-
विशेष (विम) । १२ ईश्वरप्रणामा बुधिशे
(सम २२) । १३ एक जैन मुनि का नाम
(कल्प) । १४ पुंन. एक विमानागत, देव-
विमान-विशेष (देवेन्द्र १३१; १३४; यम
१६) । १५ मोक्ष, धन्यवर्ष (सुम २, ६,
२०) । १६ ब्रह्मवर्ष (सम १८; शोपमा
२) । १७ सत्य प्रतुष्टान (सुम २, ५, १) ।
१८ निविभक्त सुख (भावा १, ३, १, २) ।
१९ योगशास्त्र-प्रसिद्ध दशम द्वार (कुमा) ।
"कंत न [कान्त] एक देव-विमान (सम
१६) । "कूड पुं [कूट] १ महाविदेह वर्ष
का एक यमलार पर्वत (ज ४) । २ न. एक
देव-विमान (सम १६) । "चरग न [चरण]
ब्रह्मवर्ष (कुप्र १६१) । "चारि वि
[चारि] १ ब्रह्मवर्ष पालन करनेवाला
(छाया १, १ उवा । २ पुं. भगवान् पाचर्व
नाम का एक गणधर—प्रमुख मुनि (छा ८—
पव ४२६) । "चेर, "चेर न [चर्व] १
मेखन-विरहित (भावा. पट्ट २, ४ हे २,
७४; कुमा, भग, स ११; उत ३ ४३३) । २
जिनेन्द्र-शासन, जिन-प्रवचन (सुम २, ५,
१) । "चमय न [च्यज] एक देव-विमान
(सम १६) । "दत्त पुं [दत्त] भातवर्ष में
उत्पन्न बाह्यर्षी चक्रवर्ती राजा (छा २, ४,
सम १२२; उव) । "दीव पुं [दीप] द्वीप
विशेष (राज) । "दीयिया ली [दीपिया]
जैन-मुनि गण की एक शाखा (कल्प) । "प्यम

न [प्रम] एक देव-विमान (सम १६) ।
"भूट पुं [भूति] एक राजा, द्वितीय बागु-
देव का पिता (पत्रम २०, १८२) । "चारि
देखो "चारि (छाया १, १; सम १३, कल्प;
सुपा २७१; महा. राज) । लो. "जी (छाया
१, १४) । "गुड पुं [गुचि] स्वनाम-प्रसिद्ध
एक ब्राह्मण, नारद का पिता (पत्रम ११,
५२) । "लेस न [लेश्य] एक देव-विमान
(सम १६) । "लोअ, लोग पुं [लोक] एक
स्वर्ग, पांचवें देवलोका (भग; धनु; गम
१३) । "लोगगडिसय न [लोनागनंसक]
एक देव-विमान (सम १७) । "य, "यंत वि
[यन्] ब्रह्मवर्षवाला (भावा) । "यडिसय
पुं [यनंसक] सिद्ध-शिला, ईश्वरप्रणामा
पुषिरी (सम २२) । "यण न [वर्ण]
एक देव-विमान (सम १६) । "यय न
[यन] ब्रह्मवर्ष (छाया १, १) । "वि
वि [विगु] ब्रह्म का जाननार (भावा) ।
"अय देखो "यय (सं ५६; प्राप् १५६) ।
"संति पुं [शान्ति] भगवान् महावीर का
शासन-यम (गण ११; ती १५) । "सिंग न
[श्रृंग] एक देव-विमान (सम १६) ।
"सिद्ध न [सद्ध] एक देव-विमान (सम
१६) । "सुत्त न [सुत्त] ज्ञानी, यमो-
पवीत (मोह ३०; सुल २, १३) । "हिअ
पुं [हित] एक विमानागत, देव-विमान-
विशेष (देवेन्द्र १३४) । "यत्त न [यवर्]
एक देव-विमान (सम १६) । देखो बंधगण,
बन्धह ।

बंधेड न [ब्रह्माण्ड] जगत्, संसार (गड
कुप्र ४, सुपा ३६८, ५६३) ।

बंधण पुं [ब्रह्मण] ब्राह्मण, मित्र (स २६०;
सुर २, १३०, सुपा १६८; हे ४, २८८;
महा) ।

बंधणिआ लो [ब्राह्मणिआ] पञ्चेन्द्रिय
जन्तु-विशेष (गुफ २६७) ।

बंधणिआ } लो [दे. ब्राह्मणिआ] कीट-
बंधणी } विशेष (हे ६, ६०, पाप्र, दे न,
६३, ७५) ।

बंधण्य } लो [ब्रह्मण्य, ब्राह्मण्य, "क]
बंधण्यय } १ ब्राह्मण का हित । २ ब्राह्मण-
संबन्धी । ३ न. ब्राह्मण-सदृह । ४ ब्राह्मण-

घमं, 'वमएएणउण्णे सुज्जे' (सम्मत १५०.
वण, धीप, वि २५०)।

बंभडीविंग वि [ब्रह्मदीपिक] ब्रह्मदीपिका-
शास्त्र मे उत्पन्न (एदि ५१)।

बंभडीविंगो ओ [ब्रह्मदीपिका] एक जैन-
मुनि-शास्त्र (एदि ५१)।

बभल्लिज्ज त्र [ब्रह्मलीय] एक जैन मुनि कुल
(कण्ण)।

बभहर व [दे] कमल, पय (दे ६, ६१)।

बभण देवो बभ (पज्ज ५, १२२)। 'गच्छ
पु [गच्छ] एक जैन-मुनि गच्छ (ती २८)।

बभि' } ओ [ब्राह्मी] १ भगवान् अथर्वदेव
बभी } की एक पुत्री (कण्ण, पज्ज ५ १२०,
ठा ५, २ सम ६०)। २ लिपि विशेष (सम
३५ भग)। ३ जल्प विशेष (सुपा ३२५)।

४ सरस्वती देवी (सिरि ७६५)।

बभुत्तर पु [ब्रह्मोत्तर] एन विमानावास,
देव विमान विशेष (देवेत्तर १३५)। 'बडिसक
न [यत्तसक] एक देव विमान (सम १६)।

बहि पु [बहिन्] मयूर, मोर (उत्तर २६)।

बहिण (यप) ऊपर देवो (वि ५०६)।

बक देवो बय (पण्ह १, १—पण् ८)।

बकर न [दे. बर्कर] परिहास (दे ६, ८६,
कुम्भ १६७ कण्ण)।

बहस न [दे] भजन विशेष, 'बक्कस' श्रुद्धमापा-
दिमपिकाविप्लवमन' (मुख ८, १२० उत्त ८,
१२)।

बग देवो बय (दे २, ६, कुम्भ ६६)।

बगदादि पु [यागदादि] देश विशेष, बगदाद
देश 'बगदादिबिगमसुहादिहवस जलोपना-
भवेयत्त' (हम्मो ३५)।

बर्गा ओ [बर्गा] बगुली, बगुले की मादा
(विपा १, ३ मोह ३७)।

बगाल पु [द] देश विशेष (ती १५)।

बग्ग वि [बाग्] बाहर का, बहिरङ्ग (पण्ह
१, ३, प्राप् १७२)। 'ओ घ [वसु]
पादसे बहिरंग से जि से जुज्जेण बग्गको' (भावा)।

बग्ग न [वग्ग] बघन, बाघने का बाघुरा
भा' तापन, बह् तं पवेज बग्गं, बहे
बग्गम्म बा यए' (सूप् १, १, २, ८)।

बग्ग वि [वद्ग] १ बघनाकार व्यवस्थित,
'बह् तं पवेज बग्गं' (सूप् १, १, २, ८)।
२ बघा हुमा (प्रति १५)।

बग्गमत् } देखो वग्ग = बन्ध्।
बग्गमाण }
वठर पु [वठर] मूखं छात्र (कुम्भ १६)।

वड (यप) वि [दे] बडा, महान् (पिंग)।
देवो वड्ड।

वडवड अक् [वि + लप्] विनाश करना,
बडबडाना। बडवड (पह्)।

वडहिला ओ [द] धुरा के मूल मे थी जाती
कील, कीसक-विशेष (सट्ठि ११६)।

वडिस देवो वलिस (हि १, २०२)।

वड्ड } पु [वड्ड, क] सडका, छोकडा (उप
यड्डुअ) ७१३, सुपा २००)।

वड्डास [दे] देवो वड्डास (दे ७, ५७)।

वत्तीस } (अप) देवो वत्तीस (पिंग)।
वत्तिस }

वत्तीस ओन [द्वात्रिंशत्] १ सख्या विशेष,
वत्तीस, ३२। २ जिनको सख्या वत्तीस हा वे,
'वत्तीसं जोगसंगहा पत्तत्त' (सम ३७ धीप,
उव, पिंग)। ओ 'सा (सम ५७)।

वत्तीसइ ओ ऊपर देवो (मम ५७)। घटय
न [यट्ठक] १ वत्तीस प्रकार रचनाभा से
बुत्त। २ वत्तीस पाडा से निबद्ध (नाटक)
'वत्तीसइयट्ठहं नाट्ठहि' (छाया १, १—
पण ३६, विपा २, १ टी—पण १०५)।

'विह वि [विध] वत्तीस प्रकार का (सम
५७)।

वत्तीसइम वि [द्वात्रिंशत्तम] १ वत्तीसवां
३२ वां (पज्ज ३२, ६७ पण्ण ३२)। २
न पण्डित्ति का सगत्तर उपगम (छाया
१, १)।

वत्तीसा देवो वत्तीस।
वत्तीसिया ओ [द्वात्रिंशिका] १ वत्तीस
पद्यो का निबन्ध—अथ (सम्मत १५५)।

२ एक प्रकार का नाप (अणु)।

वट्ट वि [वट्ट] १ बघा हुमा विपन्नित,
'वट्ट सताण्णम निमल्लिघ च' (पाप)। २
रट्टि रंजुक (मग पाप)। ३ निबद्ध
रचित (भायम)। 'फल, फल पु [फल]
१ बरज का पट (हे २, ६७)। २ वि.

फल-बुक्त, फल संपन्न (छाया १, ७—पण
११६)।

वट्टम पु [वट्टक] तृण काय विशेष (राय
५६)।

वट्टय पु [दे] वान का एक भानूपण
(दे ६, ८६)।

वट्टेला } देखो वट्ट (अणु, महा)।
वट्टेहय }

वट्ट पु [दे] १ सुमट, मोटा (दे ६, ८८)।
२ वाप पिता (दे ६, ८८ दस ७, १८,
स ५८१, उव १२० टी, सुर १, २२१, कुम्भ
५३ जय भवि, पिंग)।

वट्टहट्ठि पु [वट्टमट्ठि] एन सुविख्यात जैन
भावाय [विचार ५३३, ती ७)।

वट्टीह पु [दे] पनीहा, वातक पत्ती (दे
६, ६०, ८६ ६८६, पाद, हे ४, ३८३)।

वट्टुह वि [दे] देवादा, दीन, धनुस्मनीय
गुजराती में बापट्ट' (ह ५, ३८७, पिंग)।

वट्टक पुन [वाट्ठ] १ भाप, ऊष्मा 'बन्तो'
(हे २, ७० पह्), वण्ण' (प्राह २३, जिसे
१५३३)। २ जैन जट, अणु 'वण्ण' बाहो
यापणजल' (पाप), 'वण्णजाललोमणहि'
(स ५६१, स्वण ८५)।

वाप्पणल वि [दे. वाप्पाणल] भविष्य
उप्पण (दे ६, ६२)।

वा'र पु [वर्ष] १ वषाव देश विशेष (पज्ज
६८ ६५)। २ वि. वर्षर देश का निवासी
(पण्ह १, १ पज्ज ६६, ५५)। 'कूल न
[कूल] बर्बर देश का निवासी (सिरि
५३०)।

वट्टरी ओ [द] देश रचना (दे ६, ६०)।

वट्टरी ओ [वट्टेरा] बर्बर देश की ओ (छाया
१, १, धीप, दस)।

वट्टूल पु [वट्टूल] वृष विशेष, बटूल का
पट (जा ८३३ टी महा)।

वट्टम पु [दे] वट्ट, घमं, पनडे की रज्जु,
'वट्टो यट्टे' (दे ६, ८८); 'वट्टो बटो =
(? बटो बटो) (पाप)।

वट्टभागम वि [वट्टभागम] बट्ट-पूज, शास्त्रो
का भट्टा जानकार (वट्ट)।

वर्णभासा छी [दे] नदी-भेद, वह नदी जिसने
दूर से भावित पानी मे घातक आदि बोया
जाता हो (राज)।

वर्णिभायण न [वाभ्रव्यायन] गोत्र-विशेष
(हक)।

बमाल पु [दे] कलवल, कोसाहल (दे ६,
६०)।

बमह पु [बमह] १ प्योतिष्य देव-विशेष
(ठा २, ३—पत्र ७७)। २ देखो बंभ (दे
२, ७४; कुमा। गा ८१६, बमचु १३, वजा
२६, सम्मत ७७, हे १, ४६, २, ६३, ३,
४६)। ३ चरिअ देखो बंभ-चेर (हे २, ६३,
१०७)। ४ तरु पु [तरु] पलाश का पेड़
(कुमा)। ५ धमणी छी [धमनी] ब्रह्माक्षी
(बमचु ८४)।

बमहज (शी) देखो बभण्य (प्राक ८७)।
बमहण देखो बभण्य (बमचु १७, प्रवी ३७)।
बमहणय देखो बंभणय (भग)।

बमहहर [दे] देखो बंभहर (पद्)।
बमहाल पु [दे] आत्मार, वायु रोग विशेष,
मूली रोग (पद्)।

बय पु [बय] १ पक्ष विशेष, बगुला। २
कुवेर। ३ महादेव। ४ पुण्य-शुभ विशेष,
मलिका का गाछ (आ २३)। ५ राजस-
विशेष (आ २३)। ६ असुर-विशेष, बकासुर
(वेणी १७७)।

बयाल देखो बा याला (पत्र १६)।

बरह पु [दे] धान्य विशेष (पत्र १५४ टी)।
बरह न [बरह] १ मयूर पिच्छ (भ ५००)।
२ पत्र। ३ परिवार (प्राक २८)। देखो
बरिह।

बरहि [पु [बहिन्] मयूर, मोर (पत्र,
बरहिण] प्राक २८, पत्र, २८, १२०,
छाया १, १, पण्ड १, १, भौष)।

बरिह देखो वरह (हे २, १०४)। २ हर पु
[धर] मयूर (पद्, प्राक २८)।

बरिहि [दे] देखो वरहि (कम्प, हे ४, ४२२)।
बरिहिण] देखो वरहि (कम्प, हे ४, ४२२)।

बरुअ न [दे] गुण विशेष, शङ्ख-सदृश गुण
(हे २, १६, ६, ६१, पाम)।

बरुह पु [दे] शिल्पी विशेष, चटाई बनाने-
वाला शिल्पी (मणु १४६)।

बल अक [बल] बलता, युवराज्ञी में
'बल्लु'। बलति (हे ४, ४१६)।

बल अय [बल] १ जीना। २ सक. खाना।
बलह (हे ४, २४६)।

बल सव [ग्रह] ग्रहण करना। बलह
(पद्)। देखो बल = ग्रह।

बल पु [बल] १ बलदेव, हतधर, वायुदेव का
बहा भाई (पत्र २०, ८४; पाम)। २ छन्द-
विशेष (पिंग)। ३ एक दायिष परिव्राजक
(भौष)। ४ न. मामर्ग्य, पराक्रम (जी ४२,
स्वण ४२, प्राप् ६३)। ५ शारीरिक पराक्रम,
बलवीर्यपूर्ण जमी भेषो (मज्ज ६४)।

६ सैन्य, सेना (उत्त ६, ४, कुमा)। ७ बाध-
विशेष, 'मासाहाडि बसेहि भोजा कज' साधेति'
(गुज १०, १७)। ८ अष्टम तप, लगभग
तीन दिनों का उपवास (बौष ३८)। ९

पर्वत विशेष का एक कूट—शिखर (ठा ६)।
१० 'च्छि वि [च्छिन्] १ बल का नाशक।
२ न. जहर, विष (हे २, ११)। ३ गुण देखो

'अ (राज)। ४ देव पु [देव] हवी, वायुदेव
का बड़ा भाई, राम (सम ७१; बौष)। ५

वि [क्ष] बल को जाननेवाला (भाचा)।
६ 'अद् पु [अद्] १ अस्तत्रेण का भावी
सातवां वायुदेव (सम १५४)। २ राजा

अस्त का एक प्रवीण (पत्र ५, ३)। ३ एक
विमानावास, देवविमान-विशेष (देवेन्द्र
१३३)। देखो 'हद्'। ४ भाणु पु [भाणु]

राजा बलमित्र का भागिनिय (कल)। ५ 'महणा
छी [महनी] विद्या विशेष (पत्र ७,
१४२)। ६ 'मिच पु [मिच] इस नाम का

एक राजा (विचार ४६४, कल)। ७ 'व वि
[वत्] १ बलवान्, बलिष्ठ (जिसे ७६८)।
२ प्रभूत सैन्यवाला (भौष)। ३ पुं. ब्रह्मरूप

का आठवां शुद्ध (सुज १०, १३)। ४ 'वद्
पु [वत्ति] सेनापति, सेनाध्यक्ष (महा)।

५ 'वत्, 'व' देखो 'व (छाया १, १, भौष,
छाया १, ४)। ६ 'वत् न [वत्] बलिष्ठता
(भौषमा ६)। ७ 'वाउय वि [व्यापुत्] सैन्य

में लगाया हुआ (भौष)। ८ 'हद् पु [अद्]
१ बलदेव। २ छन्द विशेष (पिंग)। देखो

'अद्'।

बलकार } पुं [बलात्कार] जबरदस्ती (पत्र
बलधार } ४६, २६; दे ६, ४६, भगि
२१७, स्वण ७६)।

बलकारिद (शी) वि [बलात्कारित] जिस
पर बलात्कार किया गया हो वह (नाट—
मासो १२३)।

बलद् पु [दे] बलघ, बैल (गुमा ५४४,
नाट—मृच्छ ६०)।

बलमझा छी [दे] बलात्कार, जबरदस्ती (दे
६, ६२)।

बलमोडि देखो बलामोडि, 'मगिगमलदे बत-
मोडिबुविप बण्णणे उवलीदे' (गा ८२७)।

बलमोडिअ देखो बलमोडिअ, 'बेसेनु बल-
मोडिप तेण समरम्मि जणसिरी महिमा' (गा
६७७)।

बलय पु [दे] बलघ, बैल (पत्र ८०, १३)।

बलया देखो बलाया (हे १, ६७)।

बलवट्टि छी [दे] १ सखी। २ भ्यायाम को
सहन करनेवाली स्त्री (दे ६, ६१)।

बलहट्टया छी [दे] चने की रोटी (बज्ज-
११४)।

बला अ. छी [बलात्] जबरदस्ती, बलात्कार
(से १०, ७८, भौषमा २०)। 'बलाद्' (उत्त
१०३१ टी)।

बला छी [बल] १ मनुष्य की दश दशाभो-
ने चौथी प्रसव्या, तीस से चालीस वर्ष तक
की अवस्था (तुडु १६)। २ दृष्टि-विशेष, योग
को एक दृष्टि। ३ भगवान् बुद्धनाथ की
शसन-देवी, ब्रम्हता (राज)।

बलाका देखो बलाया (पण्ड १, १—पत्र ८)।

बलाणय न [दे] १ वधान आदि में मनुष्य
को बैठने के लिए बनाया जाता व्यान—बैठ
आदि (पमंवि ३३, सिरि ५८६)। २ दार,
दवाजा, 'बसितो वेव बलाणयम्मि कुज्जा
निसोहिंया तिप्पि' (वेद्व १८८)।

बलामोडि छी [दे. बलामोडि] बलात्कार
(हे ६, ६२)।

बलामोडिअ स [दे. बलादाभोड्य] बला-
त्कार से, जबरदस्ती से, 'बेसेनु बलामोडिअ
तेण न समरम्मि जणसिरी महिमा' (पाम
१६७, उत्तर १०३, पि २३८)।

बलामोलि देखो बलामोडि (हे १०, ६४) ।

बलाया ओ [बलाका] बक-विशेष, विस-
कटिका, बगुले की एक जाति (हे १, ६७;
उप १०३१ टी) ।

बलाहग पुं [बलाहक] भेष, जीमूत, 'गलिय-
जलबलाहगपंडुर' (बसु) ।

बलाहगा देखो बलाहया (ठा ८) ।

बलाहय देखो बलाहग (छाया १, ५; कण्य;
पाम) ।

बलाहया ओ [बलाहका] १ बक-विशेष,
बलाका (उप २६४) । २ देश-विशेष, जनेक
बलिङ्गमारी देखियो बा नाम (हक—पन
२३१, २३४) ।

बलि पुं [बलि] १ भसुरकुमारो का उत्तर
दिशा का इन्द्र (ठा २, ३; १०, हक) । २
स्वनाम-प्रसिद्ध एक राजा (गा ४०६) । ३
सातवां प्रतिपादुदेव (पत्रम ५, १५६) । ४
एक दानव, देव-विशेष (कुमा) । ५ पुंकी-
उपहार, भेंट (पिंड १६५; दे १, ६९) । ६
भूगोपहार, देवता की धरा जात नैवेद्य,
'सुरहिनिबलुवरकुमुमदामबलिबीरगोहि च'
(पव १ टी) । 'बंशपुष्पणगलिडोमणु' (वेद्व
५२; पव १३९, सुट ३, ७८; सुट १७४) ।
७ भूत आदि को दिया जाता भोग, बलिदान,
'भूमवनिष' (दे ४६) । ८ पूजा, अर्घा,
मर्प्या । ९ राज-भाष भाग । १० चामर का
बहड । ११ उपप्लव (हे १, १५) । १२
छन्द-विशेष (पिंग) । 'उट्टु पुं [उट्ट] वाक,
कीमा (पाम) । 'कम्म ॥ [५मं] १
पूजन, पूजा की क्रिया । २ देवता की उज-
हार—नैवेद्य धरने की क्रिया (भग, सुम
२, २, ५५; छाया १, १; ८, कण्य, शीप) ।
'बंवा ओ [२अ] बलीन्द्र की राजमात्री
(छाया २, हक) । 'सुद पुं [सुप] वन्दर,
बनि (पाम) । 'यम्म देखा 'कम्म (पत्रम
३७, ४६) ।

बलि वि [बलिन्] १ बलवान्, बलिष्ठ (पुपा
५५; कुम २७७) । २ पुं-रामचन्द्र का
एक सुभ (पत्रम ५६, १८) ।

बलिअ वि [दे] १ पीन, मामल, खूल, मोटा
(दे ६, ८८; उप १४२ टी, बृह ३) । २

क्रिय, गाढ, बाढ़, अतिशय, अत्यर्थ; 'गाढं
बाढं बलिअं घण्डिअं दढमइएण अचर्य'
(पाम, छाया १, १—पत्र ६४; भग ६,
३३) ।

बलिअ वि [बलिन्, बलिङ्] १ बलवान्,
सबल, पराक्रमी, 'वत्थावि जीवो बलिप्रो
कल्ववि कम्माइं हंति बलियाइ' (प्रासु १२३),
'एस अम्ह तासो बलियदाइभेल्लियो इमं
बिसमं पडिं सममिओ' (यहा, पत्रम ४८,
११७; सुपा २७५; शीप) । २ प्राणवाला
(ठा ४, ३—पत्र २४६) ।

बलिअ वि [बलित] जिनको बल उत्पन्न
हुआ हो, सबल (कुम २७७) । २ पुं-छन्द-
विशेष (पिंग) ।

बलिअं कुं [बलिताङ्ग] छन्द-विशेष (पिंग) ।

बलिआ ओ [दे-बलिका] सूयं, सुय, अन्न
की गुणादि-रहित करने का एक उपकरण
(आभम) ।

बलिङ्ग वि [बलिङ्] बलवान्, सबल (प्रासु
१५४) ।

बलिइ पुं [दे-बलीयई] बलघ, वृषभ, 'दो
चारबलिहावि हुं' (पुपा २३८) ।

बलिमङ्गा ओ [दे] बलात्कार, 'अनह बलि-
मङ्गाए गहिउमणो सोम ! एकविम' (उप
७२८ टी) ।

बलिनइ देखो बलीयइ (पत्रम ३३, ११६) ।
बलिस न [बडिस] मदरी पकबने का कांटा
(हे १, २०२) ।

बलिसइ पुं [बलिस्सइ] स्वनाम-ख्यात एक
जैन मुनि, भार्य महागिरि का एक शिष्य
(कण्य) ।

बलीअ वि [बलीयस्] अधिक बनवाला,
बलिष्ठ (अधि १०१) ।

बलीयइ पुं [बलीयई] बैल, वृषभ (विपा
१, २) ।

बलुलुट (मप) देखो बल-बल (हे ४, ४३०) ।

बले घ. इन घणों का भुवक अन्वय—१
निधय, निर्लभ्य । २ निर्पारण (हे २, १८३;
कुमा) ।

बल्ल न [बाल्य] बालत्व, बालरूपन, छिल्ला
(कुमा ३, ३३) । देखो बाल-बाल्य ।

बव सक [बू] बोलना, कहना । बवइ, बवए
(पट) । देखो बुव, बू ।

बव न [बव] ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्ध एक कण
(विसे ३३४८; सूमनि ११; सुपा १०८) ।

बव्वाइ पुं [दे] दक्षिण हस्त (दे ६, ८६) ।

बहइ वि [बृहत्] बड़ा, महान् । 'इश न
[दित्] नगर विशेष (टी ३५) ।

बहत्तरी देखो वाहत्तरी (पत्र २०) ।

बहप्पइ १ देखो वहरसइ (हे १, १३८; २,
बहप्पइ ६६, १३७, पट, कुमा, सम्मत
१३७) ।

बहरिय देखो यहिरिय, 'तालरववहरियदितंर'
(महा) ।

बहल न [दे] पंक, कंदम, कादा (दे ६,
८६) । सुपा ओ [सुरा] पक्वाली मदिरा
(दे ५, २) ।

बहल वि [बहल] १ निबिड, सान्द्र,
निरंतर, गाढ (गडइ, हे २, १७७) । २
स्थूल, मोटा (ठा ४, २, गडइ) । ३ पुटकल,
अस्थल (कण्य) ।

बहलिम पुंकी [बहलत्] १ स्थूलता, मोटाई ।
२ सातत्य, निरंतरता, बजा ५२, गा ७५५) ।

बहली ओ [बहली] १ देश-विशेष, भारतवर्ष
का एक उत्तरीय देश, 'तस्मसिलाइ पुरीए
बहलीविषयावयंसमूपाए' (कुम २१२) । २
बहली देश की ओ (छाया १, १—पत्र
३७, शीप, हक) ।

बहलीय वि [बहलीक] देश-विशेष में—
बहली देश में रहनेवाला (पणह १, १—
पत्र १४) ।

बहव देखो बहु; 'बाने समदहनेत ग्रहबहने'
(पत्रम ४१, ३६), 'सोहागकथत्तरपमुहवने
सा कुणइ बहने' (सम्मत २१७), 'जामवि
बहववेरगलकुत्रुसिणो मति' (हे ५) ।

बहसइ पुं [बृहस्पति] १ ज्योतिषक देव-
विशेष, एक महाभूत (ठा २, ३—पत्र ७७;
सुम २०—पत्र २६४) । २ मुराचार्य, देव-
गुरु (कुमा) । ३ मुख्य नक्षत्र का मण्डिताना
देव (सुम १०, १२) । ४ राजनीति प्रणेता
एक ऋषि । ५ नास्तिक मत का प्रवर्तक एक
विद्वान् (हे २, १३७) । ६ एक ब्राह्मण,
पुणेहित-पुत्र । ७ विनाशमृत का एक अन्वयन

(विपा १, १)। 'दत्त पुं' ['दत्त'] देखो धव
के दो धर्म (विपा १, ५)।

वहि ॥ [वहिस्] वाहर, 'अवहितेते परिवर्ण'
(भावा), 'गामवर्हिमि यत ताविअण गामतरे
पक्खि सो' (उप ६ टी)। 'हुत्त वि' ['दे']
बहिण्डु (गड्ड)।

वहिअ वि ['दे'] मयित, विसोडित (पद्)।

वहि देखो वहि (भावा, उप)।

वहिगिआ } जो [भगिनी] वहिन (अवि
वहिया } १३७, कम्प, पाप, पउम ६,
६, हे २, १२६, कुमा)। २ सलो, वयस्या
(संक्षि ५७)। 'तणअ पु' ['तनय'] भगिनी-
पुत्र (दे)। 'वह पुं' ['पति'] वहनोई (दे)।
देखो भइणी।

वहिता म [वहिस्तात्] बाहर (मुजज ६)।

वहिद्धा म [दे] १ बाहर। २ मैयुन, जी-
सभोग (हे २, १७५, ठा ४, १—पत्र
२०१)।

वहिद्धा म [वहिधां] बाहर की तरफ (दस
२, ४)।

वहिया म [वहिस्, वहिस्तात्] बाहर
(विपा १, १, भावा, उवा, मौन)।

वहिर वि [वाह] वहिण्त, बाहर का (प्राक
३८)।

वहिर वि [वधिर] बहरा, जो सुन न सकता
हो वह (विपा १, १, हे १, १८७, प्राप्ता
१४३)।

वहिरिय वि [वधिरित] वधिर किमा हुआ
(मुर २, ७५)।

वहु वि [बहु] १ प्रचुर, प्रभूत, अनेक, अनन्त
(ठा ३, १, भग प्राप्ता ५१, कुमा, था २७)।

वहु, हुई (वहु, प्राक २८)। २ क्रिवि।
अव्यत, अविशय (कुमा ५, ६६, काल)।

'वदग पु' ['वदक'] वानप्रस्थ का एक वेद
(मौर)। 'वूड पु' ['वूड'] विद्याधर वर
का एक राजा (पउम ५, ४६)। 'जपिर वि'
['जलिपत्'] वापाट, यकवाय (पाप)।

'जण पु' ['जने'] अनेक लोग (सम)। २ न.
—शालीयना का एक प्रकार (ठा १०)। 'णड'
देखो नड (रान)। 'णाय न' ['नाद']

—नगर विशेष (पउम ५५, ५३)। 'देसिअ'
वि ['देश्य'] कुछ ज्यादा, मोटा बहुत
(भावा २, ५, १, २२)। 'नड पुं' ['नट']
नट की तरह अनेक भेष की धारण करने-
वाला (भावा)। 'पडिपुण्ण', 'पडिपुत्र वि'
['परिपूर्ण'] पूरा पूरा (ठा ६, भग)।
'पडिय वि' ['पठेत'] अति शिवित,
अतिशय शिवात (खाया १, १४)।
'पलावि वि' ['प्रलापिन'] बववादी (ज
५ ३३६)। 'पुत्तिअ न' ['पुत्रिक] बहु-
पुत्रिका देवी का सिंहासन (निर १, ३)।
'पुत्तिआ जो' ['पुत्रिका] १ पूर्णभद्र नामक
यक्षेन्द्र की एक भद्र-महिषी (ठा ४, १,
खाया २)। २ सीधमें देवलोक की एक देवी
(निर १, ३)। 'प्यएस वि' ['प्रदेश']
प्रचुर प्रदेश—बर्मन्सल वाला (भग)।
'फोड वि' ['स्फोट'] बहुभयक (सोपमा
१११)। 'भगिय न' ['भङ्गिक] दृष्टिवाद
का सूत्र-विशेष (सम १२८)। 'मय वि'
['मत्'] १ अत्यंत प्रमोद (जोव १)। २
अनुमोदित, समत, अनुमत (काप्र १७६, मुर
४, १८८)। 'माइ वि' ['मायिन'] अति
कपटी (भावा)। 'माण पु' ['मान'] अति-
शय बाहर (भावम, वि ६००, नाट—विज
५)। 'माय वि' ['माय'] अति कपटी
(भावा)। 'मूल्ल', 'मोल्ल वि' ['मूल्य']
मूल्यवान्, कीमती (रान, पद्)। 'रय वि'
['रित'] १ अत्यन्त आसक्त (भावा)। २
जमाति का अनुयायी। ३ न. जमाति का
चलाया हुआ एक मत—क्रिया की निष्पत्ति
अनेक समयों से ही माननेवाला मत (ठा १०,
मौर)। 'रय न' ['रजस्'] आद्य-विशेष,
चिटडा की तरह का एक प्रकार का आद्य
(भावा २, १, १, ३)। 'रव वि' ['रव']
१ प्रभूत यशवाला, यशस्वी (सम ५१)। २
न. एक विद्याधर-नगर (इक)। 'रूवा जो'
['रूपा'] मुख्य नामक भूलेन्द्र की एक भद्र-
महिषी (ठा ४, १, खाया २)। 'लैव पु'
['लेप'] चावल आदि के चिकने मोह का
लेप (पडि)। 'वयण न' ['वचन'] बहुल-
बोध-प्रत्यय (भावा २, ४, १, ३)। 'विह'
वि ['विध'] अनेक प्रकार का, नावाविध
(कुमा, उप)। 'विहिय वि' ['विध],

'विधिक] विविध, अनेक तरह का (सूत्रनि
६४)। 'संपत्त वि' ['संप्राप्त'] कुछ कम
संप्राप्त (भग)। 'सय पु' ['सत्त'] महोदय
का दरबार झूठें (मुज १०; १३)। 'सो म'
['शस्'] अनेक बार (उव, था २७, प्राप्ता
४२, १५६, स्वन ५६)। 'स्सुय वि'
['श्रुत'] राज्ञ, शासक या प्रच्छा ज्ञानकार,
परिव्रत (भग, सम ५१, ठा ६—पत्र ३५२,
मुपा ५६४)। 'हा म' ['धा'] अनेकधा
(ज, अवि)।

बहुअ } वि [बहु, 'क] ऊपर देखो हि
बहुअय } २, १६४, कुमा, था २७)।

बहुआरिआ } जो [द] बुराई, माहू (दि
बहुआरी } ८, १७ टी)।

बहुई देखो बहु = ई।

बहुदयज वि [बहुपाद्य] १ बहु-भक्ष्य, खूब
खाने योग्य। २ वृक्ष—चिटडा बनाने योग्य
(भावा २, ४, २, ३)।

बहुदा देखो बहुअ (भावा ७)।

बहुजाण पु [दे] १ चोर, तत्कर। २ घूर्त,
ठग। ३ जार, उपपत्ति (पद्)।

बहुण पु [दे] १ चोर, तत्कर। २ घूर्त (दे
६, ६७)।

बहुणाय वि [बाहुनाइ] बहुनाय नगर का
(पउम ५५, ५३)।

बहुत्त वि [प्रभूत] बहुत, प्रचुर (हे १,
२३३)।

बहुसुह पु [दे, बहुसुर] दुर्जन, छल (दे ६,
६२)।

बहुराथा जो [दे] बहुराथ, तबवार की
थार (दे ६, ६१)।

बहुराथा जो [दे] रिया, शृणाली (दे ६,
६२)।

बहुरिया जो [दे] बुराई, माहू (इह १)।

बहुल वि [बहुल] १ प्रचुर, प्रभूत, अनेक
(कुमा था २८)। २ बहुविध, अनेक प्रकार
का (भावम)। ३ व्याप्त (मुपा ६३०)। ४
पु कृष्ण पक्ष (पाप)। ५ स्वनाम ह्वात
एक बह्मस्य (भय १५)।

बहुल पुं [बहुल] भावार्थ महागिरि के शिखर
एक प्राचीन जैन मुनि (एडि ४६)।

बहुला श्री [बहुला] १ गौ, गैया (पाम्) ।
२ इस नाम की एक श्री (सवा) । 'वर्ण न
[वन] मधुरा नगरी का एक प्राचीन वन
(तो ७) ।

बहुलि वृं [बहुल्यम्] स्तनाम स्यात् एक
रान पुन (उप ६३७) ।

बहुली श्री [दे] माया, वपट, दम्प (सुपा
६३०) ।

बहुल्लिआ श्री [दे] बड़े भाई की श्री (पङ्) ।

बहुली श्री [वे] कीलचित शालभिला, लेलेने
की पुतली (पङ्) ।

बहुनी देवो बहुई (हे २, ११३) ।

बहुवर्गाह पुं [बहुव्रीहि] व्याकरण प्रसिद्ध
एक समास (मणु १४७) ।

बहुव्रि [प्रभूत] बहुव्र, प्रभुर (गउइ) ।

बहुडय पुं [विभीतक] १ बहेडा का पेड़
(ह १, ८८, १०५, २०६) । २ न. बहेडा
का पत्र (कुमा) ।

बां वि. व. [द्वा, द्वि] दो, दो की सख्या-
वाला । 'इस (घर) देवो 'बीस (पिंग) ।

'ईस देवो 'बीस (पिंग) । 'णउइ श्री
[नरति] बानवे, ६२ (सम ६६, बम्म
६, २६) । 'णउय वि [नरत] ६२ बां
(पउम ६२, २६) । 'णुइ देवो 'णउइ
(रपण ६२) । 'याल, 'यालेस जीन

[चत्वारिंशन्] बयालीस, बानीस श्रीर
दा, ४२ (उव. नव २, भग, सम ६६,
बप्प, श्रीन, श्री 'याला, 'यालीसा (बम्म
६, ६, बप्प) । 'यालीसम वि [चत्वा-

रिंशत्तम्] बयालीसवा, ४२ बां (पउम ४२,
३७) । 'र, 'रस वि. व. [दशान्] बाहू-

१२, बारमिण्डुअसिपयो (सवीय २२,
बम्म ४, ५, १५, नव २०, ६७, कप्प,
जो २८, उगा) । 'रस वि [दश] बाहूबां,

१२ बां (सुव २, १७) । 'रसम जीन
[दशान्] बाहू जीन बग-भय (पि ४११),

श्री. 'गो (राज) । 'रसम वि [दश]
बाहूना (गुम २, २, २१, पय ४६, मही) ।

'रसमासिय वि [दशमासिक] बाहू
गाम का बाहू-मान-सवयो (कुप १४१) ।

'रसय न [दशान्] बाहू का समूह (वीयमा
१५) । 'रसपरिसिय वि [दशपार्षिक]

बाहू वर्ष का (मोह १०२, कुप ६०) । 'रसविह वि [दशविध] बाहू प्रकार का
(नव ३०) । 'रसाह न [दशाह],
'दशाह्य' १ बाहूबां दिन । २ जन्म के बार-

हूबे दिन किया जाता उत्सव, बहरी (आया
१, १, बप्प, श्रीक. गुर ३, २५) । 'रसी श्री
[दशी] बाहूबां तिथि, द्वादशी (सम २५,
पउम ११७, ३२, तो ७) । 'रसुत्तरसय वि

[दशोत्तरसात्] एक सौ बाहूबां (पउम
११२, २३) । 'रह देवो 'रस = दशन् (हे
१, २१६) । 'वट्टि श्री [पट्टि] बासठ,
६२ (सम ७५, पंच ५, १८, गुर १३,
२३८, देवेन्द्र १३७) । 'वण (भप) । देवो
'वन्न (पिंग) । 'वण्ण देवो 'वन्न (कुमा) ।
'वत्तर वि [सप्तत्त] बहत्तरवां, ७२ बां
(पउम ७२, ३८) । 'वत्तरी श्री [सप्तवि]

बहत्तर, ७२ (सम ८३, भग श्रीप. प्राप्प
१२६) । 'वन्न जीन [पञ्चारात्त] बावन,
पचास श्रीर दो, ५२ (सम ७१, मही),
'बावन होंति जियमवणा' (मुच ६, १) ।
'वन्न वि [पञ्चारात्त] बावनवां (पउम ५२,
३०) । 'वीस जीन [निराति] बाईस,
२२ (भग जो ३४), श्री. 'सा (पि ४४७) ।
'वीस वि [निरा] बाईसवां, २२ बां (पउम
२०, ८२, पय ४६) । 'वीसइ देवो वीस =
विशति (भग पन १८६) । 'वीसइ वि
[निरातिवत्तम्] १ बाईसवां, २२ बां (पउम
२२, ११०, घट २६) । २ लगातार दस
दिन का उजवास (आया १, १—पत्र ७२) ।
'वीसमिह वि [निरातिविध] बाईस प्रकार
का (सम ४०) । 'सट्ट वि [पट्ट] बासठवां,
६२ बां (पउम ६२, ३०) । 'सट्टि श्री
[पट्टि] बासठ ६२ (सम ७५, पिंग) ।
'सी, 'सीइ श्री [अशोति] बयालीस, ८२
(नव २, सम ८६, बप्प, बम्म ५, १७) ।
'सीइम वि [अशोतिवत्तम्] बयालीसवां, ८२
बां (पउम ८२, १२२) । 'हत्तर (भप) देवो
'हत्तरी (सण) । 'हत्तरी श्री [सप्तवि]
बहत्तर, ७२ (बप्प, कुमा, गुभा ३१६) ।

बाज पुं [दे] बाज, पिण्ड (पङ्) ।

बाइया श्री [दे] मां, माता, पुत्रादी में 'बाई'
(कुप ८७) ।

बाउहुयां श्री [दे] पञ्चालिका, पुतली,
वाउडिआ 'मासिहियमिस्तिवाउल्लय वन ॥
वाउडि' मुजिउ तरह' (वज्जा ११८,
कप्प, दे ६, ६२) ।

बाउस देवो वउस (पिड २४, भोष ३४८) ।

बाउसिय वि [वाकुशिक] 'बकुश' चारिद-
वाला (सुव ६, १) ।

बाउसिया श्री [वकुशिका] 'वकुश' चारिद-
वाली (आया १, १६—पत्र २०६) ।

बाउ किवि [बाउ] १ धरियाय, भयन्त, जना
(उप ३२०, पाम मही) । 'कनार पु
[नार] स्वीकार मूक उक्ति (विस् ५६५) ।

बाण पुं [दे] १ पतन कुच, कटहर का पत्र ।
२ वि. सुमग (दे ६, ६७) ।

बाण दुंजी [बाण] १ वृष विरोध, बटसरदा
का बाण (पण १७—पत्र ५२६, कुमा) ।
२ पुं शर, बाण (कुमा, गउइ) । ३ पान की
सख्या (गुर १६, २४६) । 'वच्च न [पान]

तुणीर, शरवि (से १, १८) ।

बाप देवो बाइ = बापू । कलह' बायीअमाण
(पि ५६३) ।

बाधा श्री [बाधा] विरोध (पमस ११७) ।

बाधिय वि [बाधित] विरोधशाला, प्रमा-
विच्छ (वर्मस २५६) ।

बाहण देवो बह्ण (हे १, ९७ पङ्) ।

बाय न [बाऊ] वज्र समूह (पय २३) ।

बायर वि [बादर] १ सूर्य, मात्रा अनुसम
(पण ११, १ पय १६२, दे ४४) । २ नववां
गुल्ल-प्लान्त (बम्म २, ३ ५ ७) । 'नाम
न [नामन्] बनें विरोध स्मृतता हेतु बनें
(सम ६७) ।

बार न [द्वार] दरवाजा (हे १, ७६) ।

बारगा श्री [द्वारगा] स्वनाम-अभिद्ध नगरी,
जो बाजन न मो बाडियाबाह में 'द्वारा' के
ही नाम से प्रसिद्ध है (उत्त २२, २२, २७) ।

बारयई श्री [द्वारयई] १ ऊपर देवा (सम
१५१, आया १, ५, उर ६४८ टी) । २
भगवान् नमिनाय की दैशा शक्ति (गिरार
१२६) ।

बाज पुं [दे] बाज, पिण्ड (पङ्) ।

बाज पुं [दे] बाज, पिण्ड (पङ्) ।

बाज पुं [दे] बाज, पिण्ड (पङ्) ।

बाज पुं [दे] बाज, पिण्ड (पङ्) ।

घाल पुं [घाल] १ घाल, वेश (उप ८३४) ।
 २ बाक, शिष्ट (कुमा; प्राम् ११६) । ३
 वि. मूल, प्रज्ञानी (पाष) । ४ नया, नूतन
 (कम्पू) । ५ पुं. स्वनाम-ख्यात एक विद्याधर
 राजा (पठम १०, २१) । ६ वि. असंयत,
 संयम-रहित (ठा ४, ३) । *कह पुं [कवि]
 तरुण कवि, नया कवि (कम्पू) । *क पुं
 [क] उचित होता मूर्ख (कुमा) । *ग्गाह पुं
 [ग्गाह] बालक की सार-सम्हात करने-
 वाला गौकर (सुर १, १६२) । *ग्गाहि पुं
 [ग्गाहिन्] बही पूर्वोक्त भयं (छाया १,
 २—पत्र ८४) । *घाय वि [घायत] बाल-
 हत्या करनेवाला (छाया १, २, १८) । *तय
 पुंन [तपस्] १ प्रज्ञानी की तपस्वर्या
 (भग, श्रीन) । २ वि. प्रज्ञान पूर्वक तप करने-
 वाला (कम्म १, ५६) । *तयस्सि वि
 [तपस्विन्] प्रज्ञान-पूर्वक तप करनेवाला,
 मूल तपस्वी (पि ४०५) । *पंडिअ वि
 [पण्डित] भारिक ध्याक करनेवाला, कुछ
 श्रोता में ध्यामी श्रीर कुछ में शरणागो (भग) ।
 *डुद्धि वि [डुद्धि] भ्रमभित्त (घण ५०) ।
 *मरण न [मरण] भ्रवितर दशा का मरण,
 असंयमी की मौत (भग, सुपा ३५७) । *वियण,
 *वीयण पुंकी [वियजन] बामर, चँवर
 (छाया १, ३), की. *उवणहामो बालवी-
 मणी (ठा ५, १—पत्र ३०३) । *हार पुं
 [धार] बालक का सार-सम्हात करनेवाला
 नौकर (सुपा ५५८) ।

घाल देखो बल । *ण, *अ वि [ङ्ग] बल
 की जाननेवाला (भाषा १, २, ५, ५;
 भाषा) ।

घाल न [घाल्य] घालस्थ, बचपन, लड़कपन,
 बालपन, मूर्खता (उत्त ७, ३०) । देखो बल ।

घालअ देखो घाल = बाल (गा १२६) ।

घालअ पुं [दे] वसिष्ठ-पुत्र (३६, ६२) ।

घालगपोइआ की [दे] १ जल-मन्दिर,
 तलाब भादि में बनवाया जाता छोट प्रसाद ।
 २ बलमी, प्रदुलिका (उत्त १, २४) ।

घाल की [घाल] १ कुमारी, सड़की
 (कुमा) । २ मनुष्य की दस अवस्थाओं में
 पहली परा, दस वर्ष तक की अवस्था (तुं
 १६) । ३ छन्द-विशेष (पिंग) ।

घाललुंवी की [दे] तिरस्कार, अवहेलना
 (कुपा १४) ।

घालि वि [घालिन्] बाल-प्रधान, मुन्दर वेश-
 वाला (भ्रम, गृह १) ।

घालिआ की [घालिआ] बाला, कुमारी,
 लड़की (प्राम् ५१; महा) ।

घालिआ की [घालिआ] १ बालवपन, शिशुता
 (भग) । २ मूर्खता, बेवकूफी, 'विद्या मंदस्ता
 घालिया' (भाषा) ।

घालिअ वि [घालिअ] मूल, बेवकूफ (पाम,
 घण २३) ।

घाह सक [घाघ] १ विरोध करना । २
 रोचना । ३ पीडा करना । ४ विनाश करना ।
 बाह, बाहए (पंचा ५, १५; हे १, १८७,
 ८२), बाहँति (कुप्र ६८) । कवळ, बाहिजंत,
 बाहीआमाण (पत्रम १८, १६, सुपा ६४५;
 पमि २४४) क. बाहिणिज (कम्पू) ।

घाह पुं [घाघव] भ्रमु, घाँसू (हे २, ७०;
 पाम; कुमा) ।

घाह पुं [घाघ] विरोध (भास ३४) ।

घाह देखो बाह (प्रमो ३७) ।

घाह पुं [घाह] हाथ, भुजा (संति २) ।

घाहण वि [घाघक] १ रोकनेवाला (पंचा १,
 ४६) । २ विरोधी, 'अन्मुवमयबाहण निबमा'
 (धामक १६२) ।

घाहड पुं [घाहड, घागभट] राजा कुमारपाल
 का स्वनाम-प्रसिद्ध मंत्री (कुप्र ६) ।

घाहण न [घाघन] १ बाधा, विरोध (धर्मस
 १२७६) । २ विरोधन (पंचा १६, ५) ।

बाहणा की [घाघना] ऊपर देखो (धर्मस
 १११) ।

बाहर देखो बाहिर (पाषा) ।

बाहल पुं [बाहल] देश-विशेष (धाम) ।

बाहल न [बाहल्य] खूनता, मोटाई (सम
 ३५, ठा ८—पत्र ४४०; श्रीप) ।

बाहा की [बाधा] १ हरकत, हल्ला । २
 विरोध (सुपा १२६) । ३ पीडा, परस्पर
 संस्लेष से होनेवाली पीडा (जं १; भग
 १५, ८) ।

बादा की [बाहु] हाथ, भुजा (हे १, ३६,
 कुमा; महा; उता; श्रीप) ।

बाहा की [दे. बाहा] नरकावास-श्रेणी
 (देवेन्द्र ७७) ।

बाहि १ म [बाहिस्] बाहर (सुज १६—
 बाहिं) पत्र २७१; महा; भाषा; कुमा; हे २,
 १४०; पि ४८१) ।

बाहिज न [बाधियं] बधिरता, बहरापन
 (विसे २०८) ।

बाहिर म [बाहिस्] बाहर (हे २, १४०;
 पाम; भाषा; उत) । *ओ म [तस्]
 बाहर से (कल्प) ।

बाहिर वि [बाह्य] बाहर का (भाषा; ठा
 २, १—पत्र १५, भग २, ८ टी) । *उद्धि
 पुं [ऊर्ध्विन्] कायोत्तरंग या एक दोप,
 दोनों पार्थिव मिलाकर श्रीर पैर को फैलाकर
 रिया जाता कायोत्तरंग (वेदम ४८६) ।

बाहिरंग वि [बाहिरङ्ग] बाहर का, बाह्य
 (सुम २, १, ४२) ।

बाहिरिय वि [बाहिरिक, बाह्य] बाहर का,
 बाहर से संबंध रखनेवाला (मम ८३; छाया
 १, १; पिड ६३६; भोप; कल्प) ।

बाहिरिया की [बाहिरिका] किले के बाहर
 की गृह-पथ, नगर के बाहर का मुहल्ला
 (सुम २, ७, १; स ६६) ।

बाहिरिल्ल वि [बाह्य] बाहर का (भग, पि
 ५६५) ।

बाहु पुंकी [बाहु] १ हाथ, भुजा (हे १,
 ३६; भाषा; कुमा) । २ पुं. भगवान् श्रद्धाभवे
 का पुत्र, बाहुबलि (कुप्र ३१०) । *बलि
 पु [बलि] १ भगवान् आदिनाथ का एक
 पुत्र, तस्यिना का एक राजा (सन ६०;
 पत्रम ४, ५२; उत) । २ बाहुबलि के प्रपौत्र
 का पुत्र (पत्रम ५, ११) । *मूल न [मूल]
 कक्षा, बगल (कम्पू) ।

बाहुअ पुं [बाहुक] स्वनाम-ख्यात एक ऋषि
 (सुप १, ३, ४, २) ।

बाहुअडिअ वि [दे] लज्जित, शरमिदा (सुपा
 ४७४) ।

बाहुया की [बाहुका] भौतिक जन्तु-विशेष
 (राज) ।

बाहुल्य देखो बाहु (तुं ३६) ।

बाहुलेय पुं [बाहुलेय] गोवत्स, बैल, गुपन
 (पाषा) ।

वाहुलेर पु [वाहुलेय] वाली गाय का बछड़
(मणु २१७) ।

वाहुल्ल न [वाहुल्य] बहुलता, प्रचुरता
(गिह ५६, मग सुपा २७, उग ६०७) ।

वाहुल्ल वि [वाप्यन्त] मधुवाला (मुया
सुपा ४६०) ।

वि वि, व [वि] दो, २, 'विनि' (हे ४,
४१६ नव ४, ठा २, २, कम्म ४, २, १०,
सुल १, १४) । 'जहि पु [जटिय] एक
महाप्रह्म ज्योतिषि देव विशेष (मुज्ज २०) ।
'ठल न [ठल] घना भाति वह प्राय
निकले दो दूकने बराबर के होते हैं, 'जह
विदरं मूनीण' (वि ३) । 'याल देखो
वायाल (कम्म ६, २८) । 'यालसय पुन
[चत्वारिंशच्छत] एक सौ चत्वारिंशत्
१४२ (कम्म २, २६) । 'यिह वि [वि]य'
का प्रकार का (विग) । 'तट्टि की [पट्टि]
बासठ, ६२ (मुज्ज १०, ६ टी) । 'सत्तरि,
'सयरी की [सत्तरि] बहत्तर, ७२ (पव
१६, जीवस २०६, कम्म ३, ५) ।

निं } वि [द्वितीय] दूसरा (कम्म ३, १६,
निं } विग) । 'कसाय पु [कपाय]
अप्रत्याख्यावावरण नामक कपाय (कम्म
४, ५६) ।

विज न [विक्रि] दो का समुदाय, कुम्भ, युगल
(मग कम्म १, ३३, प्राप् १६) ।

विजाया की [दे] कीट विशेष, छलार रहने-
वाला कीट-जय (दे ६, ६३) ।

विइज देखो निइज (हे १, ५, पव १६४) ।
विइआ देखो बीआ (रान) ।

निइज वि [द्वितीय] १ दूसरा (हे १,
२४८, प्राप् ५६) । २ मधुवा, मदद करने-
वाला (पाग सु १, १४) ।

'जे उदिममि न उदिगा,
भावइपते विइज्या नेव ।
पट्टणी ॥ से च भिन्ना,
पुता परमपयो रोय'
(सुर ७, १४४) ।

विजय वि [विजय] दुटना (हे १, ६४
२, ७६, म २८६) । 'रय वि [कारक]
दुटना बलवाना (मवि) ।

विजय सक [विजय] दुटना करना ।
विजयेद (पि ५५६) ।

निंद न [उन्त] फसादि का बचन, 'बचण
बिंद' (पाग) । 'सुरा की [सुरा] मदिरा,
दाह, 'विमुरा निदुववरिया मदर' (पाग) ।

निंद देखो वू=वू ।

निदिन वि [दीन्द्रिय] जिसको खचा ओर
जीम ये दो हो इन्द्रिया हो वह (बीप) ।

विदु पुन [विदु] १ मन्त्र मय । २ विन्दी,
रुप्य, धनुस्वार । ३ दोना झू का मन्त्र
भाग । ४ रेखागणित का एक चिन्ह, 'विदुणी,
विदूद' (हे १, ३४ कम्म उग १०२२, स्वप्न
३६, कस कुमा) । 'कला की [कल्य]
धनुस्वार, विन्दी (गिरि १६६) । 'सार न
[सार] १ चौदहवां पूर्व, जैन प्रयाग-
विशेष (सम २६, विसे ११२६) । २ पु
मौर्य वरा का एक राग, राग चन्द्रगुप्त का
पुन (विसे ८२२) ।

निंदुइज वि [निन्दुन्ति] विदु-मुक्त, विदु-
विलिप्त (पाग, गडठ) ।

निंदुइजत वि [विन्दुमान] विन्दुमा से
व्याप्त होता (से ११, १२५) ।

निद्रानग न [युन्दानन] मधुरा के पास
का एक वैष्णव-तीर्थ (प्राप् १७) ।

निन सक [निन्त्य] प्रतिविम्बित करना । कर्म,
विनिगज (सूक्त ४६) ।

निन न [निन्ध] १ प्रथिमा, पूर्ति (कुमा) ।
२ छन्द विशेष (पिग) । ३ न विन्धीजन,
कुन्दर का फल (छाया १, ८—पव १२६
पाग कुमा दे २, ३६) । ४ प्रतिगिन्ध,
प्रतिच्छाया । ५ धर्म-शून्य धारादर, 'अएण
जलं पलवि विमयुय' (सुग १, १३, ८) ।
६ मूर्धं तथा चट का मण्डल (गडठ: कण्ठ) ।

निनय न [दे] फर विशेष, भित्तावा,
'विबवय मन्त्राय' (पाग) ।

निविसार देखो भिभिसार (अत) ।

निनी की [विन्धी] सता विशेष, कुन्दर का
गाछ (कुमा) । 'फल न [फल] कुन्दर का
फल (सुपा २६३) ।

निनीय न [दे] १ धोय । २ विचार ।
३ धोयोस, उन्मेषक (दे ६, ६८) ।

निह सक [वृह] पीपण करना । क. देखो
निहणिजज ।

निहणिजज नि [वृहणीय] पुष्टि जनक (ठा
६—पव ३७५, छाया १, १—पव १६) ।

निहिय वि [वृ हित] पृष्ट, उपवित्र (हे १,
१२८) ।

निग्गाइआ } की [दे] कीट विशेष सन्नम
निग्गाइ } रहता बीट-युग्म, पुनराती न
'बगा' (दे ६, ६३) ।

निज देखो चीन, 'विज्जं विव बडिया बहुवे'
(पव ११, ६६) ।

विज्जउर न [वीजपूर] सन-विशेष एक तरह
का नील विज्जउरविनिर्मल हिण्ड विहा-
णाड सन्नर' (सुपा ६३०) ।

विज्जय (मग) देखो विइज (मवि) ।

विट्ट पुं [दे] वेग, लडका, पुप (पव) ।

विट्टी की [दे] बेटी, पुत्री, लडकी (पव, हे
४, १३०) ।

विट्ट वि [दे विट्ट] बैठा हुआ, उपविट्ट
(बीप ४०१) ।

विडाल पु [विडाल] मार्जार, बिनाक, बिस्तार,
बिल्ला (पि २४१) ।

विडालिआ } की [विडालिआ, 'ली']
विडाली } बिल्ली, मार्जार, बिनारी,
बिलैया (मम्मत् १२२, पि २४१) । देखो
निरालिआ ।

विहिस देखो वाहिस (उग १४२ टी) ।

विहिय देखो निइज (उग २७६) ।

विन्ना की [विन्ना] भास की एक नदी
(विह ५०३) ।

विन्जोअ पु [विन्जोक] १ की की शृंगार-
केतु विशेष, इष्ट धर्म की प्राप्ति होने पर
गर्भ से उत्पन्न भगवत्तरीया (पवह २, ४—
पव १३१, छाया १, ८—पव १४२ मत
१०६) । २ न, उत्पन्न सनिया भोलीसा
'सन्जोअं तूनिधं सविन्जोअ' (गड ३, ८) ।

विन्जोअ पु [विन्जोक] काज विहार (मणु
१३६) ।

विन्जोइअ न [विन्जोफि] की की शृंगार-
केतु का एक भेद (पवह २, ४—पव १३१) ।

बिन्जोय न [दे] उत्पन्न, सनिया, भोलीसा
(छाया १, १—पव १३१) ।

विभेलय देतो यदेहय (पएण १—पत्र ३१) ।
विराड धुं [विडाळ] १ विमल-प्रतिष्ठ मध्य-
समुच्च पाच मायावाला धरतर-समूह । १ दंड-
विशेष (विम) ।

विराळ देतो विडाळ (गुर १, १८) ।

विराळता देतो विडाळिया (सम्मत
विराळी } १२९, पाग) । २ भुजपरिमर्ष-
विशेष, हाथ से चलनेवाला एक प्रकार का
आणो (सूप २, १, २५) ।

विरालिया की [विरालिका] स्थल-नन्द-
विशेष (भाषा २, १, ८, १) ।

विरुद्ध न [विरुद्ध] हलकाव, पदवी (सम्मत
१४१) ।

विल न [विल] १ रत्न, विवर, चाप आदि
जन्तुओं के रहने का स्थान (विषा १, ७,
गठ) । २ रूप, कुमा (राय) । 'कोलीकारक
वि [दे, 'कोलीकारक' दूसरे की व्यामृग
करने के लिए स्थिर वचन धोकरवाला
(पएह १, ३—पत्र ४४) । 'पतिया की
[पचिक्कता] खान की पट्टि (पएह २,
५—पत्र १५०) ।

विडाळ } देतो विडाळ (भग; पि २४१) ।
विडाळ }

विरालिया देतो विरालिया (पि २४१) ।

विड धुं [विलय] १ वृक्ष-विशेष, बेल का पेड़
(पएण १, उप १०३१ टी) । २ न. बेल का
फल (पाग) ।

विडल धुं [विलवळ] १ अनाथ देश-विशेष ।
२ उस देश में रहनेवाली मनुष्य-जाति (पएह
१, १—पत्र १४) । देतो विडल = विलवळ ।

विस न [विस] कमल आदि के गल का
लन्तु, मृणाल (पाषा १, १३, कुमा, पाग) ।
'कंठी की [कण्ठी] बलाक, बक पक्षी की
एक जाति (दे ६, ६३) । देतो मिस =
विस ।

विसि देतो विसी (दे १, ८३) ।

विसिणी की [विसिनी] कर्मजिनी, बमल
का गाछ (पि २०६) ।

विसी की [वृषी] शक्ति का सासन (दे १,
८३, पि २०६) ।

विह भक [भी] डरना । विहेह (भक ६४,
पि ५०१) ।

विह वि [वृहन्] बढा, मढान् । 'जगर धुं
[नल] छन्द विशेष (विम) ।

विहम्पड } देतो यहस्सड (हे ३, १३७;
विहम्पड } १, १३८; २, ६६-६७, कुमा) ।
विहम्पड }

विहिय देतो विहिय (प्राट ८) ।

विहेल्य देतो विभेलय (पत्र ५, २, २४) ।

वीअ देतो विदुअ (हे १, ५, २, ७६, गुर १,
३८; गुपा ४८५) ।

वीअ न [वीअ] १ वीअ, बीया, 'साधनबीअं
इहं नासह मांरं गुडस नह सहगं' (प्रागु
१५१; प्राचा, जो १३, बीअ) । २ मूल
कारण, 'साधेमाएताएदुस्सनीयमूयान्म-

मएणसहएणहं' (महा) । ३ बीअं, शरीरान्तर्गत
सप्त धातुओं में से मुख्य धातु, मुक्त (गुपा
३६०; वय ६) । ४ 'हो' भजार (सिदि
१६६) । 'बुद्धि वि [बुद्धि] मूल अर्थ की
जानने से शेष अर्थों का निज बुद्धि से स्वयं
जाननेवाला (भीष) । 'संत वि [यत्]

बीअवाला (छाया १, १) । 'रुइ की
[रुचि] एक ही पद में छन्दक पद बीअ
अर्थों का अनुसंगान द्वारा करनेवाली शक्ति ।

२ वि. उक्त शक्तिवाला (पएण १) । 'इह वि
[रुह] बीअ से उत्पन्न होनेवाली वनस्पति
(पएण १) । 'वाय धुं [वाय] बुद्ध जन्तु-
विशेष (राज) । 'सुहम न [सुहम] हिलके
का अन्न माग (वय) ।

बीअऊरय न [बीअपूरक] फल-विशेष, एक
तरह का नीरु (मा ३६) ।

बीअजमण न [दे] बीअ मतने का खल—
लम्हिल (दे ६, ६३) ।

बीअण धुं [दे] नीचे देखो (दे ६, ६३ टी) ।

बीअय धुं [दे] बीअक] वृक्ष-विशेष, बसन
वृक्ष, बिजयसार का गाछ (दे ६, ६३, पाग) ।

बीअवावय धुं [बीअवापक] विकलेन्द्रिय
जन्तु की एक जाति (भाणु १४१) ।

बीआ की [द्वितीया] १ तिथि-विशेष, द्वज
(सम २८; स्र २६, रमस २, छाया १,
१०, गुपा १७१) । २ द्वितीया निर्माक
(चिदय ५०६) ।

बीअ देतो बीअ = बीअ (कुमा, पएह २,
१—पत्र ६६) ।

बीअग न [बीअक] बीआ, पाग या बीआ,
सञ्चित ताम्बूल (गुपा ३३६) ।

बीडि } बी [बीटि, 'टी] ऊपर देखो;
बीडी } 'बिहलबीटीओ बीतेवि मुहम्मि
पम्हिलवह' (पमंरि १४०) ।

बीमच्छ धुं [बीभरस] साहित्य प्रविष्ट एक
रस (भाणु १३५) ।

बीमच्छ } वि [बीभरस] १ छुणोत्पादक,
बीभरस } छुणा-जनक । २ भयंकर, भय-
जनक (उअ संदु ३८; छाया १, २; संवीच
४४) । ३ वृ. शवण का एक मुमट (पत्रम
५६, २) ।

बीयसिय वि [दे. बीजयित्] बीज धोनेवाला,
वपन करनेवाला । २ धुं, पिता, 'बीय बीयसि-
यस्सेव' (गुपा ३६०; ३६१) ।

बीलय धुं [दे] ताड़क, चण्डेयुपल-विशेष,
गान का एक गहना (दे ६, ६३) ।

बीह भक [भी] डरना । बीहह, बीहेह (हे
४, ५३, महा, पि २१३) । वरु. बीहंत
(भीषमा १६; उप ७६६ टी. कुमा) । व.
बीहियवज (स ६८२) ।

बीहच्छ देतो बीमच्छ (पि ३२७) ।

बीहण } वि [भीषण, 'क] भय-जनक,
बीहणग } भयंकर (पि २१३, पएह १, १,
बीहणवय } पत्रम ३५, ४४) ।

बीहयिय वि [भीषित] डराना हुआ (सम्मत
११८) ।

बीहिअ वि [भीत] १ डरा हुआ (हे ४,
५३) । २ न. भय, डर, 'न य बीहिअं
मयावि ह' (या १४) ।

बीहिर वि [भरु] डरनेवाला (कुमा ६, ३५) ।

बुआय सक [धाचय] बुनवाना । सक,
बुआयवज्जत्ता (ठा ३, २—पत्र १२८) ।

बुदुअ वि [उक] कवित (सम १, २, २,
२४, १, १४, २५, पएह २, २) ।

बुंदि धुंकी [दे] १ बुज्ज्वन । २ सूकर, सुगर
(दे ६, ६८) ।

बुंदि की [दे] शरीर, देह, 'इह बुंदि चडताए
सव गतुय विक्कड' (ठा १ टी—पत्र २४,
गुज २०, संदु १६, गुपा ६५६, यम्म ६
टी. पाग) । देखो वीदि ।

बुंदिणी की [दे] कुमारी-समूह (दे ६, ६४) ।

चुंदीर पुं [दि] १ महिष, भैसा । २ वि, महान्, बड़ा (दे ६, ६८) ।

सुंघ न [सुंघ] १ वृत्त वा मूल । २ कोई भी
मूल, मूलमात्र (हि १, २६; पङ्.) ।

चुंवा क्षी [दे] चिल्लाहट, पुरार (मुपा ५६५)।

बुंयु पुं [दे] ऊपर देखो (कर ३१) ।

संयुज न [दि] वृन्द, मूय, समूह (दि ६, ६४)।

युष्मद् वि [दे] विस्मृत (वच १) ।

गुह्य [गर्ज, धुक्] गर्जन करना,
गरजना । बुद्ध (हि ४, ६८) ।

युक् प्रक [भष्, युक्] शान—कृता वा
भयना । ब्रह्म (पद) ।

शुक्रं पुन [दे] १ सुप, धिलवा (मुष् १८, १७) । २ माय विधेय; 'बुद्धतद्बुद्धसंबुद्धसंबुद्ध-
क' (मुष् ५०) ।

युष्मन् पुं [दे] वाच, वीष्म (दे ६, ६४)
पाप्म) ।

धुवस देशो धोवस (राज) ।

सुखा श्री [दे] १ मुष्टि (दे ६, ६४, पाप) ।
२ श्रीहस्तमुष्टि (दे ६, ६४) । ३ पायनविशेष
‘दमश्चक्रद्वन्द्वानुक्तं सुखरविभिर्दृष्टं प्रा-
ज्वाल’ (सुभा १९५) ।

युष्मा स्त्री [गर्जना] गर्जन, गर्जारय (पञ्चम ६,
१०८; गण्ड) ।

युष्कारं पुं [दे. यृद्धार] गर्जन, गर्जना (पठन
७, १०५; गठह) ।

युष्मानुं [दे] वल्लुनाय, पुलाहा (भाषा २,
१, २, २) ।

मुषामर रि [दे] भीरु, बरण (दे ६
६५) ।

सुषिञ्ज वि [गर्जित] त्रियो गर्जना भी है
 यह, 'बह सुषिञ्जा तुह भग' (कुमा) ।

युष्मत् नमः [युष्म] १ जानना, ज्ञात करना
 सम्ममना । २ जानता । युष्मत् (उत्)
 नृणां युष्मत् (मा) । मयि, युष्मद्भिः
 (पौत) । वर, युष्मन्तं, युष्मन्मात्रं (विष्णु
 पापा) । संद. युष्मत् (दि २, १२) ।
 युष्मद्, युष्मद्भ्यः, युष्मद्भ्यः (विष्णु युष्मत्
 २१; मा. जी २१) ।

शामयिय } वि [मोहित] । शिवको दान
मुग्धाविभ } करपा दान हो बहु ।

जगाया गया (कुप्र ६४; सुपा ४२५; प्राद्व ६८) ।

बुद्धिम्बु वि [बुद्ध] ज्ञात, विदित (पाप्म) ।
 धुग्भिर् वि [योद्धृ] १ जाननेवाला । २
 जाननेवाला (प्राक् ६८) ।

गुह्यबुद्ध मत [बुद्धबुद्धय] बुद्धबुद्ध भावाज
करना, 'सुख जहा बुद्धबुद्धे मन्वत्त' (चिद्व्य
४६२) ।

बुद्ध भक्त [बुद्ध, भक्त] द्वयम् । बुद्ध
(हे ४, १०१; उव, बुद्धा; भक्ति) । भक्ति,
बुद्धिम् (भक्ति) (हे ४, ४२३) । बुद्ध, बुद्धि, व,
बुद्धिमान् (बुद्धा, उव १०३१ टी) । प्रयो,
बुद्ध, बुद्धार्थ (संयोग १५) ।

युद्धं वि [श्रुद्धित, मद्र] ह्वा ह्मा, निमग्न
(घम्म १२ टी; गा ३७; रंमा २३, सुर १०,
१-२; मद्रि) (युद्ध-मद्रि-मद्रि) (युद्ध ५ टी)

नवका म धिाहन्ती इवता (मंजे ३. ५५५) ।

घटिदि पं [टि] मटिण. भँसा (पड)

बुद्ध नि [बुद्ध] वृद्धा (निग) । स्त्री. *हृदा,
*हृदी (गात्र १६७; मित्रि १७१)

घुण्ण नि [दि] १ ग्रीतः, डरा हुमा । ९
वडिग्न (दे ७. ६५ टी) ।

पत्नी धी [दि] कृतमती स्त्री (दि ६. ३५) ।

मुद्र बि [मुद्र] निद्रान्, परिस्थः जात-
 त्वल (सम १: रा ११२ टी, या १२: कुप
 ४०: द्रु १) । २ जागा हृषा, जागृत (सुर
 ६: २४३) । ३ भुज, अभिव्य श्रीर वर्तमान
 बा मान्यार (वेद्य ७१३) । ४ निगात,
 निद्रित (डा ३, ४) । ५ पुं. निन-देव, धर्तु,
 तीर्थर (सम १०) । ६ बुद्धदेव, भगवान्
 बुद्ध (साध. ६७, ४१; उ १.७. कुप
 ४४०) धर्मव १७२) । ७ धार्या, धृति
 (जग १, १७) । *मुष्ट वुं [मुष्ट] धार्या
 धित्य (जग १.७) । *धाहियरि [धाघिन]
 धार्या-नाथित (नर ४३) । *धागि रि
 [धानिन्] निज की परिस्थ माननेसगा
 (गुप १, ११, २४) । *लिय पुन [लिय]
 बुद्ध-धरिदर (गुप ४४२) ।
मुद्र रि [बोद्ध] १ बुद्ध-नक. २ बुद्ध-संघी,
 बुद्ध का (गो ७. समन ११६) ।

बुद्धं पुन [बुध्नान्] अयो-भाग, नीचे का
हिस्सा: 'ता राहू णं देवे चंदं वा सूरं वा
गेहमाणे वृद्धतेणं गिण्हिता बुद्धतेणं मुयद'
(सुज २०) ।

बुद्धि की [बुद्धि] १ मति, मेधा, मनोपा,
 प्रज्ञा (डा ४, ४; बी ६; कुमा; वप्प; प्राम्
 ४७) । २ देव प्रतिमा-विशेष (एणा १, १
 टी—पय ४३) । ३ महापुराणोंक हृद की
 प्रथियुग्मो देवी (डा २, ३—पय ७३;
 हक) । ४ चन्द्र-विशेष (विग) । ५ सोर्यरती ।
 ६ साष्ठी (राज) । ७ ग्रहिणा, दया (पहृ
 २, १) । ८ पुं. ह्य नाम का एक मन्त्री (उन
 ८४४) । *कूड न [कूड] पर्वत-विशेष
 का शिखर (राज) । *बोधिंय वि [बोधित]
 १ सोर्यरती—झो-सोर्यरत से प्रतिबोधित ।
 २ सामान्य साष्ठी से बोधित (राज) । *मंत
 वि [मन्] बुद्धिगता (उन ३३६; गुग
 ३७२, महा) । *ल पुं [ल] १ एक स्थाना-
 प्रसिद्ध श्रेष्ठी (महा) । २ देवो ल्ल (राज) ।
 *ल्ल वि [ल्ल] पुं, पूर्ण, दूसरे की बुद्धि
 पर जीतना। *सत्त वं विद्यमाए (णि) म्
 बुद्धिजल्ल दुस्सणों (भोपमा २६ टी; २७) ।
 *यन देवो मंत (मत्रि) । *सागर, *सायर
 पुं [सागर] विजय की पारदर्शी शक्तियों
 का एक मुखसिद्ध जेतनापर्यं पीर कय्यहार
 (गुर १६, २४४; साधं ६६; सम्मत ७६) ।
 *सिद्धं बुं [सिद्ध] बुद्धि में सिद्धन्त,
 चिह्नों की बुद्धिमान (भामस) ।
 *सुन्दरी पुं [सुन्दरी] एव मन्त्री-नन्या (डा ७३८ टी) ।
 सुष देतो वुड (पहृ १, ४; मूत्र २०) ।

सुत्तुअ भन [सुत्तु] 'तु' 'सु' भागान बनना,
 दाय—बचत का भावना । सुत्तुअ (सुत्तु
 २४) । यह. सुत्तुयंत (सुत्तु २४) ।

सुदुअ वं [सुदुअ] सुदुआ, पाती का
सुदुआ (रे ६, २१; ओग. रिह १६; एआ
१, १; वि ४४. प्रायु २६; दं ११) ।

युगस्य श्री [युगशा] ह्य, साते की दग्ग
(पनि २०७) ।

सुय रि [६३] श्रीरवेरामा (ग्रुप १, ७, १०)।

सुराज देवो सुर ।

मुल वि [वे] मोह, भदत, घमिष्ट (पिग १६८)।

मुलमुला छो [दे] कुलकुला, मुलमुल (दे ६, ६५)।

मुलमुल दुं [दे] ऊपर देखो (पद्)।

मुल्ला देखो योल्ला। मुल्ला (कुप २६; या १४)। मुलति (प्राग ४)। प्रयो. मुल्लावेह, मुलावेमि, मुलावए (कुप १२७; सिरि ४४०)।

मुय सक [मू] बोलना। मुय (पद्, कुमा)। यद्. मुयंत, मुयाण, मुयाण (उत २३, २१, सूम १, ७, १०, उत २३, ३१)। देखो वू।

मुस न [मुस] १ भूला, यव भादि का बरंगर, नाम का छिलका (ठा ८—पत्र ४१७)। २ मुच्छ धान्य, फल-रहित धान्य (गउड)।

मुसि छो [मुपि, सि] मुनि वा भासन। 'म, संत वि [मं] संयमी, वती, मुनि (सूम २, ६, १४, भावा)।

मुसिजा छो [मुसिका] यव भादि का बरंगर, भूला (दे २, १०१)।

मुह पु [मुय] १ ग्रह विशेष, एक प्रयोगिक देव (सुर ३, ५३, धर्मवि २४)। २ वि. परिणत, विद्वान् (ठा ४, ४, सुर ३, ५३, धर्मवि २४, कुमा, पाग)।

मुहप्पह [दे] देखो यहस्सह (दे २, ५३, १३७, मुहप्पह)। यद्, कुमा)।

मुहस्सह [दे] ५, पद्)।

मुहुक्कल सक [मुमुक्ष] जाने की इच्छा करना। मुहुक्कल (दे ५, पद्)।

मुहुक्कल देखो मुमुक्का (राज)।

मुहुनियअ वि [मुमुक्षित] भूला (कुमा)।

वू सक [वू] बोलना, कहना। वूम, वूया, वूहि (उत २५, २६, सूम १, १, ३, ६, १, १, १, २)। विरि, बेंति, बेमि, कुमा (क्रम ३, १२, महा, कप्य)। भूका, सम्बवी (उत २३, २१, २२, २५, ३१, ठा ३, २)। यऊ, विव, बेंत (उप ७२८ टी. मुग १६०, निसे ११६)। सऊ, वूइता (ठा ३, २) देखो यय, युय।

वूर पु [वूर] वनस्पति विशेष (णाय १, १—पत्र ६, उत ३४, ६६. कप्य. धीय)।

'नालिया, 'नालिजा छो [नालिजा] वूर ते मरी हुई नली (राज, पाग)।

वूल वि [दे] मूग, वाचा शक्ति से रहित (पिग १६८ टी)।

वूह य [वूह] गृष्ट करना। वूहए (सूम २, ५, ३२)।

वे देखो वि (वजा १०, हे ३, ११६, १२०, पिग)। 'आसी (मप) छो [अशीवि] बयासी, ८२ (पिग)। 'इदिय वि [इन्द्रिय] ल्वाषी घीर जीव ये दो ही इन्द्रियगला प्राणी (ठा १, मग, त ८३, जी १३)। 'हिय [द्वयाहिक] दो दिन का (जीवस ११६)।

वेंट देखो वेंट (महा)।

वेंत देखो वू।

वेंदि देखो वे-इदिय (पत्र ५, २६)।

वेट्ट देखो गिट्ट (धोपभा १७४)।

वेह } पु [दे] नीना, जहाज (दे ६, ६५, वेहय } सुर १३, ५०)।

वेडा } छो [दे] मौका, जहाज (उप वेडिया } ७२८ टी. सिरि १८२; ४०७, वेडी } था १२, धम्म १२ टी), 'पारोहि वि दारद भरितववेहि वेडिक्क' (धर्मवि १३२)।

वेड्डा छो [दे] रमयू, दादी-भूँछ के बाल (दे ६, ६५)।

वेदोणिय वि [विदोणिक] दो द्रोण का, द्रोण-अय-परिमित, 'कप्पह मे वेदोणिएए कपाईए हिराणभरियाए सबवहरितए' (उवा)।

वेमेल पु [वेमेल] विन्यास के नीचे का एक सन्निवेश (भाग ३, २—पत्र १७१)।

वेमासिय वि [वेमासिक] दो भास का, दो महीने का सक्क खरनेवाला (पत्रम २२, २८)।

वेलि छो [दे] स्मृणा, खूँटा (दे ६, ६५, पाग)।

वेल्ल देखो बिल्ल (प्राग ५)।

वेल्लमा पु [दे] बैल, वलीवर्द (भावम)।

वेस प्रक [विश, स्या] बैठना, 'वसंत गोस्वामि ति वेसए पुनए य तह वेव' (धोय ५७१)।

वेसकिरअज न [दे] हेण्यए, रिपुता, दुर्मनाई (दे ७, ७६ टी)।

वेसन न [दे] पचनीय, सोमापवाद, सोव-निता (दे ७, ७५ टी)।

वेदिम वि [दे] द्वैधिक] दो दुकटे करने योग्य, क्षएणिय (वस ७, ३२)।

वोगिल्ल वि [दे] १ मृगित, भनइत। २ पुं. भाटोप, भाटप्पर (दे ६, ६६)।

वोटण न [दे] वूडण, स्तन का मग्न भाग (दे ६, ६६)।

वोंड न [द] १ वूडक, स्तन वृत्त (दे ६, ६६)। २ पल-विरोध, पनास का फल (मीय, तडु २०)। 'य न [ज] वृत्ती वज्र, वृत्ती कपका (सूम २, २, ७३; धीय)।

वोंद न [दे] मुल, मुह (दे ६, ६६)।

वोंदि छो [दे] १ एय। २ मुल, मुह (दे ६, ६६)। ३ शरीर, देह (दे ६, ६६; परह १, १. कप्य. मीय, उत ३५, २०, त ७१२, विसे ३६१; पव ५५, पंवा १०, ४)।

वोंदिया छो [दे] शाखा (सूम २, २, ५६)।

वोरड } पुं [दे] धान, बकरा, गुजराती में वोरड } 'वोरड' (मी २, ६, ६६)।

वो. 'डी (दे ६, ६६ टी)।

वोक्कस पुं [वोक्कस] १ भगवान् देश विशेष (पत्र २७४)। २ वणंसकर जाति-विशेष, निपाद से ब्रह्मी की वृत्ति मे उत्पन्न (सूक ३, ४)।

वोक्कसातिय पु [दे] तनुवाय, 'कोट्टागकुलाणि वा गामरक्ककुलाणि वा वोक्कसातियकुलाणि वा' (भावा २, १, २)।

वोकार देखो सुकार (सुर १०, २२१)।

वोक्खिय न [वूक्कत] गर्जन, गर्जना (पत्रम ५६, ५४)।

वोगिल्ल वि [दे] चितकबरा, 'फसल सबल सारं किम्मीर चित्तल च वोगिल्ल' (पाग)।

वोट्ट सक [दे] उच्छिष्ट करना, हूटा करना। गुजराती में 'वोट्ट', 'रसलीए रसलियच चरति वोट्ट वि यममाईव' (पुपा ४६१)।

वोड वि [दे] १ धार्मिक, धर्मिष्ठ। २ तपए, युवा (दे ६, ६६)। ३ मृगित-मस्तक, 'एमेव थड्ड वोंवो, गुजराती में 'वोंवो' (पिड २१७)।

बोधघेर न [दे] पुल्ल विरोध (पाघ) ।
 बोधिय ॥ [बोधि] १ दिगम्बर जैन संप्र-
 दाय । २ वि. दिगम्बर जैन संप्रदाय का
 अनुयायी, 'बोडियसिबमूर्धो बोडियसिबस्त
 होइ उज्जती' (विसे १०४१; २५५२) ।
 बोडिय वि [दे] मुद्रित-मस्तक (?) ,
 'बोडियमणि पुव मरण' (धोमना ८३ टी) ।
 बोडुर न [दे] रमणु शाही मूँछ (दे ६, ६५) ।
 बोड्डिया लो [दे] बपरिवा, लोडो, 'बेसि
 न लहइ बोड्डिय गय सन्नेति वेपति' (दे
 ४, ३३५) ।
 बोदर वि [दे] दुधु, बियाल (दे ६, ६६) ।
 बोदि देखो बोदि (मीन) ।
 बोदह [दे] देखो बोदह (पाग) ।
 बोद वि [बोद] बुद्ध भक्त (सबोय १४) ।
 बोदवन् देखो बुद्धक ।
 बोदह वि [दे] तरुण, जवान (दे०, ८०) ।
 बोधण न [बोधन] बोध, शिक्षा, उपदेश
 (धम ११६) ।
 बोधव्य देखो बुद्धक ।
 बोधि देखो बोहि (ठा २, १—पत्र ५६) ।
 'सत्त पु [सत्त्व] मय्यपु दर्शन को प्राप्त
 प्राणी, महँन देव का भक्त जीव (बोह १) ।
 बोधिय नि [बोधित] भाषित, प्रवर्णित
 (धर्मसं ५०६) ।
 बोधयइ नि [दे] मुक्त (धरा० मगन्ध ५०
 पत्र २४३) ।
 बोर न [बुद्ध] वन विरोध, बेर (गा २००,
 हे १७०, पद, कुमा) ।
 बोरी लो [बुद्धी] बेर का माघ (प्राह ४, हे
 १, १७०, कुमा हेका २५६) ।
 बोल मर [बोहय] कुमारा, 'संबोली तं
 बोहइ जिल्लमहिणुण जेण सडो' (पायं
 ११४), 'हुहुन बोलेण भान' (पुच ६६),
 बोनेइ, बोलेण (संबोय १३), 'बेसि ब बसितु
 मने मिनामो उदरपि बोलेसि मद्दालयसि'
 (पुच १, ४, १०), बोलेसि (सिरि १३८) ।
 'मुत्तमेले लोए बोनेइ बह' (उवर १२२) ।

बोल सक [व्यति + क्रम] १ पसार होना,
 बुझना । २ सक. उत्सर्जन करना, 'हुई छ
 एइ, चढोवि लम्पयो, जागिणीवि बोनेइ' (गा
 ८५४), 'धुणो तं बंधेण न बोलेइ कयाइ'
 (धावन ३३) । बोलए (चढ) देखो
 बोल = मय ।
 बोल पुं [दे] १ बलबल, कोलाहल (दे ६,
 ६०, मय, मवि, कपू, उप उप ५०६),
 'हासबोलबहुल' (मीर) । २ समूह, 'कमदा-
 नुरेण रदयमि मोसणे पलयनुल्लजलबोले'
 (भाब १; कुलक ३४) ।
 बोला पुन [दे. प्रोड] १ मज्जन, हुनना ।
 २ बर्णण, बौध्वाव, 'उचुन बोला पउत्ति'
 (विपा १, ६—पत्र ६८) ।
 बोलिअ वि [बोहित] कुमारा हुमा (बज्जा
 ६८) ।
 बोलींदी लो [दे] लिपि-विरोध, ब्राह्मी लिपि
 का एक भेद, 'माहेसरोलिको दामिलिवी बोलि-
 दिलोयो' (धम १५) ।
 बोल्ह सक [कथय] बोलना, कहना । बोल्ह
 (हे ४, २ प्राह ११६, सुर ८, १६७,
 मवि) । कर्म, बोल्हपाइ (भय) (कुमा) ।
 क, बोल्हेय (भय) (कुमा) । प्रयो, बोल्हा-
 वइ (कुमा) ।
 बोल्हअ पुं [कथन] बोल, बचन (गा ६०३) ।
 बोल्हअ वि [कथयितु] बोलने का स्वभाव-
 वाला (हे ४, ४४३) ।
 बोला लो [कथा] वार्ता, बात, 'नीमबोलाए'
 (उप १०१५) ।
 बोलाविय वि [कथित] कुनवाया हुमा (व
 ४६१; ६६६) ।
 बोल्हिय वि [कथित] १ उल । २ न, क्लिप्त
 (मवि हे ४, ३८३) ।
 बोल्ह न [दे] क्षेत्र खेत (दे ६६) ।
 बोह सक [बोधय] १ समझना, ज्ञान
 करना । २ जानना । बोहेइ (उव) । कर्म
 बोहिजइ (उव) । वड बोहिह, बोहेन
 (सुर १२, २४६, महा) । बज्ज, बोहिहल्ल
 (सुर २, १४४, ८, १६२) । हेइ, बोहेहं
 (मज्ज १७६) ।

बोह पुं [बोध] १ ज्ञान, समझ (जी १) ।
 २ जागरण (कुमा) ।
 बोहम देखो बोहय (दे १) ।
 बोहण देखो बोधण (उर २०६, सुर १, १७;
 उवर १) ।
 बोहय वि [बोधक] बोध देनेवाला, ज्ञान-
 दाता (धम १, खामा १, १, मय, कप) ।
 बोहहर पुं [दे] मागध, लुट्टि-पाठ (दे ६,
 ६७) ।
 बोहारी लो [दे] ब्रुहारी, समारंजी, भाह
 (दे ६, ६७) ।
 बोहि लो [बोधि] १ बुद्ध धर्म का नाम,
 सद्धर्म की प्राप्ति, 'बुद्धहा बोही' (उत्त ३६,
 २५८), 'बोही गिणेहि भणिया भवँवरे सुव-
 धम्मसपत्ति' (बेहय ३३२, सबोय १४, मय
 ११६, उव ४८१ टी) । २ महीना, अनुकम्पा,
 दया (पह २, १) । देखो बोधि ।
 बोहिय नि [बोधित] १ भाषित, समझाया
 हुमा (भय) । २ विचारित, विबोधित, 'रवि-
 विरणएरणवाहियसहस्वरत' (कप) ।
 बोहिय पु [बोधिक] मनुष्य बुझानेवाला
 चोर (निह १, वेदय ४४६) ।
 बोहित देखो बोह = बोधय ।
 बोहिय देखो बोहिय = बोधिक (राज) ।
 बोहित्य पुन [दे] प्रहण, जहाज, यानवाह,
 नौका (दे ६, ६६; स २०६, वेदय २३४,
 सुत्र २२२, सिरि ३८३, सम्मत १५७,
 सुता ६४, मवि) ।
 बोहितिय वि [दे] प्रहण स्थित (बज्जा
 १५८) ।
 'अंस देखो अंस (गुमा ५०६) ।
 'अमर देखो अमर (नाट—मुदा ३६) ।
 'अमर देखो अमरस, 'चित्तु यदहमा सा
 दिग्गममेवि कुण्ड ॥ हुबोइ' (गुता १६७) ।
 'तिम नि [भिन्] मेदत कलेमाता, नाउ-
 कर्ता, 'सगरमि' (पापा १, ३, ४, १) ।
 मो (धय) देनो यू । बोहि (माह १२१) ।

भ

भ भुं [भ] १ शोष्ठ-स्थानीय व्यञ्जन पर्य-
विशेष (प्रायः प्राणा) । २ विपन-प्रसिद्ध
मादि-पुत्र मीर दो हस्त प्रसारो बौ शंभा,
मण्ड (पिप) । ३ न, नराय (सुर १६,
४३) । ४ आर भुं [वार] १ 'भ' धनर ।
२ भगण (पिप) । ३ गण भुं [गण] भगण
(पिप) ।

भइ देतो भय = भू ।

भइ छी [भृति] वेतन, सनपाट (छाया १,
८—पत्र १५०; विपा १, ४, उवा) । देखो
सुइ ।

भइअ रि [भक्त] १ विभन (भावय १८५;
सम ७६) । २ क्षत्रिय, 'भंजुनसत्तायंभय-
समभयं पुढो पयरे' (पंच २, १२, श्रीप) ।
३ विवलिप्त (वय ६) ।

भइअ न [भक्त] भागवार (वय १) ।

भइअ } देवो भय = भू ।
भइअव्य }

भइअ } वि [भृति] धर्मवर, नैभर,
भइअ } चार (राय २१) ।

भइगिं } छी [भगिनी] बह्नि, स्वसा
भइणिआ } (मुपा १५, स्वय १५, १७;
भइणी } विपा १, ४, प्राप् ७८; कुल
२१५; कुमा) । 'वइ भुं [पति] बहोई
(मुपा १५; ५१२) । 'सुअ भुं [सुव]
भगिनेय, भगना (मुपा १७) । देखो
बहिणी ।

भइरय वि [भैरव] १ भयवर, श्रीपण, भय-
जनक (पाभ, मुपा १८२) । २ पुं, मात्तादि-
प्रसिद्ध एक रम, भयानक रम । ३ महादेव,
स्विव । ४ महादेव का एक भवसार । ५ राय-
विशेष, भैरव राग । ६ मय-विशेष (हे १,
१५१, प्राप्) । देखो भैरव ।

भइरवी छी [भैरवी] शिव-पत्नी, पार्वती
(गउठ) ।

भइरहिउ [भगीरथि] समर बल्लवर्ती का
एक पुत्र, भगीरथ (पउम ५, १७५) ।

भइल वि [वे] भया, जात (रमा ११) ।

भउन्हा (छी) देखो भमुहा (वि २५१) ।

भउहा (पण) देखो भमुहा (पिप) ।

भएयव्य देतो भय = भू ।

भंनार भुं [भंनार] भानार, भयान प्राणा
विशेष (वय पु ८६) ।

भंनारि वि [भंनारि] भनार बरनेवाला
(वय) ।

भंग भुं [भङ्ग] १ भाना, राएड, राएडन
(वय ७८८, प्राप् १७०, जी १२; कुमा) ।
२ प्रवार, भेड, विपल (भग, वम ३, ५) ।
३ विनाश (कुमा, प्राप् २१) । ४ रचना-
विशेष; 'सरंगरंगतयं' (रव्य) । ५ पय-
जय । ६ पयदा (पिप) । 'रय न [रत]
मेधुन-विशेष (पयजा १०८) ।

भंग भुं [भृङ्ग] धार्य देश-विशेष, जिसरी
राजधानी प्राचीन वाय में पावापुरी थी
(हर) ।

भंग (पय) देखो भग्ग = भय (पिप) ।

भंगरय भुं [भृङ्गरज, भृङ्गारक] १ वीषा
विशेष, भृङ्गराज, भंगरा, भंगरैवा । २ न,
भंगरा का झूत (पयजा १०८, मुपा १२४) ।

भंगा छी [भङ्गा] १ वनलवि विशेष, पाट,
कुष्ट; 'वयड छिरणपाए वा शिणंभीयए वा
पंच मायाई धारितए वा परिहरेतए वा, तं
जहा—जगिए भगिए साएए पोतिए तिरिह-
पट्टए छागं पंचमए' (ठा ५, ३—पत्र
३३८) । २ वाय-विशेष; '—पबहहउंडुंडु-
भकामेरीमंभाहृदिगुरिजजसंतुमुन—' (पिक
८७) ।

भंगि छी [भङ्गि] १ प्रकार, भेड (हे ४,
३३६, ४११) । २ व्याज, छप, बहाना,
'वह्निभगिभसिधसत्ताविभावपहाए' (गा
६१३) । ३ विच्छिन्ति, विच्छेद (राज) ।
४ [छो], देश विशेष, 'पावा भगी य' (पय
२७५; विचार ४६) ।

भंगिअ न [भङ्गिअ, भङ्गिअ] १ भया मय,
एक तरह का वज्र, पाट का बना हुआ वपण
(ठा ३, ३; ५, ३—पत्र १३८; वय) । २
शास्त्र-विशेष; 'बोगदियसवि भगियमुते
किरिया जयो गणिया' (वेद्य २४५) ।

भंगिह वि [भङ्गवत्] प्रकारवाला, भेड-
पतित, 'पदमभंगिला' (संयोग ३२) ।

भंगी छी [भङ्गी] देखो भंगि (हे ४, ३३६;
गा ६१३; विचार ४६) ।

भंगी छी [भृङ्गी] वनलवि-विशेष—१
भंग, भिजया । २ धतिगिया, धतिग वा
माध (पएण) १—पत्र ३६; पएण १७—
पत्र ५३११) ।

भंगुर वि [भङ्गुर] १ स्वयं भानेवाला,
विनयक, विनाश रोल, 'वह्निंशंडवरभंगुराई
हो तिसणोखाई' (उन ६ टी, पएड १,
४, सुर १०, १८; रा ११४, धर्म ११७१;
विदे ११४) । २ कुटिल, वाक; 'कुटिल यंक
भंगुर' (पाभ) ।

भंझ देखो भय्या (राह) ।

भंज रा [भञ्ज] १ भांगना, तोटना । २
पलायन कराना, भगना । ३ पराजय करना ।
४ विनाश करना । भंजइ, भंजए (हे ४,
१०६; पट्ट; वि ५०६) । भंज, भंजिह
(वि ५१२) । धर्म, भंजइ (भग, महा) ।
पट्ट, भंजंत (गा १६७, मुपा ५६०) ।
बरह, भंजंत, भंजमाण (वि ९, ४४,
सुर १०, २१७, म ६१) । वरह, भंजिअ,
भंजिअ (पय) (हे ४, ३६५) । हेरह,
भंजितए (छाया १, ८), भंजणई (पय)
(हे ४, ४४१ टि) ।

भंजअ वि [भञ्जअ] भांगेवाला, भंग
अजवा १ करलवाला (गा ५५२, पएड १,
४) । २ पुं, वृष, वेड; 'भंजगा इव सनिवेई
नो चपल' (धारा) ।

भंजण न [भञ्जण] १ भग, लएडन (पय
३८; सुर १०, ६१) । २ विनाश (मुपा
३७६, पएड १, १) । ३ वि, भंजन करे-
वाला, सोदनेवाला, विनाशक, 'भयभंजण'
(मिरि ५४६), 'रिउसंभंजणेल' (कुमा) ।

छी, 'छी (गा ४४४) ।

भजणा छी [भञ्जना] ऊपर देखो, 'विणुमो-
नयारम- (१२ मा-) रास भजणा पूयणा
गुह्यणस' (विदे ३४६६, निह १) ।

मंजाविज } वि [मंजित] १ मंगाया हुआ, मंजित } लुटवाया हुआ; (स ५४०) । २ मंगाया हुआ (विप) । ३ भ्रान्त (तंडु ५०) । मंजित देखो भग्ना = भग्न (कुमा ६, ७०; विप; प्रति) ।

मंड सक [भाण्ड] मंडारा करना, संग्रह करना, हथडा करना । मंडे (मुख २, ४५) ।

मंड सक [भण्ड] मंडना, भस्त्रा करना, गाली देना । मंडइ (मण) । बह. मंडंत (मा ३७६) । संज्ञ. मंडितं (वच १) ।

मंड पुं [भण्ड] १ बिट, मट्टा (वच ३८) । २ मंड, बहूपिया, मुल प्रादि के बिचार से हँसाने का काम करनेवाला, निमंजज (प्राय ६) ।

मंड न [दि] १ बुडाक, बैंगन, मंडा (दि ६, १००) । २ पुं. मागय, लुगि-पाठक । ३ मंडा, मित्र । ४ बीहिय, मुनी का पुत्र (दि ६, १०६) । ५ पुं. मण्डन, धामपण, गहना (दि ६, १०६; भग्न मीप) । ६ वि. धिन्, मूर्धा, निर-कडा (दि ६, १०६) । ७ न. छुर, छुप । ८ छुरे से छुरान (राज) ।

मंड } पुंन [भाण्ड] १ बरतन, बालन, पान; मंडग } दुग्गदुग्गदे चड्ड मसखे (संवेग १४; दि ३, २१; या २७; गुप्ता १६६) । २ क्वाणुक, पण्य, बेचने की वस्तु (राया १, १—यन ६०; मीप. पणह १, १; उवा. कुमा) । ३ गृह; स्थान (जीव ३) । ४ वध-पात्र प्रादि घर का उपकरण (ठा ३, १; कच; मीप ६६६; लाया १, ५) ।

मंडग न [दि. भण्डन] १ बह, वाह, कलह, गाली-प्रदान (दि ६, १०१; उवा. महा, लाया १, १६—यन २१३; मीप २१५; मा ६६६; उवा ३३६; तंडु ५०) । २ कोप, गुस्सा (नय ७१) ।

मंडगा छो [भण्डना] मंडना, गाली-प्रदान (उवा ३३६) ।

मंडय देखो मंड = मण्ड (दि ५, ४२२) । मंडय देखो मंडग. 'पापसमयसहिमाए मरि-ऊए भण्ड गण' (मरा ८०, २४५ उवा २६, ८) ।

मंडयेआठिअ वि [भाण्डवैचारिक] बरि-याता बेचनेवाला (पाणु १४६) ।

मंडा श्री [दे] सम्बोधन-मुक्त शब्द (संवि ४७) ।

मंडाआर } पुं [भाण्डागार] मंडार, कोठा मंडागार } या कोठार, बखार (छुदा १४१; स १७२; गुप्ता २२२, २६) ।

मंडागारि } पुंछो [भाण्डागारिन्, 'क] मंडागारिख } मंडारी, मंडार का मन्थन (छाया १, ८; कुप्र १०८) । छो. 'रिणो' (छाया १, ८) ।

मंडार देखो मंडागार (महा) ।

मंडार पुं [भाण्डागार] वर्गन बनानेवाला शिल्पी (राज) ।

मंडारि } देखो मंडागारि (स २०७; सुर मंडारिअ } ४, ६०) ।

मंडिअ पुं [भाण्डिक] मंडारी, मंडार का मन्थन (मुख २, ४५) ।

मंडिआ छो [भाण्डिक] स्वाती, यलिया (ठा ८—यन ४१७) ।

मंडिआ } छो [दे] १ मंत्री, गारी (बृह १; मंडी } दे ६, १०६; आनय, निबू ३, वच ६) । २ शिरोप कुत । ३ मंडवी, जंगल । ४ मंडवी, कुलद (दि ६, १०६) ।

मंडीर पुं [भण्डीर] वृत्त-निरूप, शिरोप कुत (कुमा) । 'वडिसय, बडैसयन [विधैसक] मधुप नगरी का एक उद्यान; 'बडुराए लखरीए मंडि (१ बीर) बडैसय उग्याले' (राज, छाया २—यन २५३) । 'वधन [यन] १ मधुरा का एक वन (वी ७) । २ मधुरा का एक चैत्य (प्रायम) ।

मंडु न [दि] कुलद (दि ६, १००) ।

मंडुइ देखो मंड = मण्ड (मवि) ।

मंत वि [भ्रान्त] १ गुमा हुआ; 'मंतो जलो मेरिणी (ए)' (पञ्चम ३०, ६८) । २ भ्रांति-युक्त, भ्रमवाला, नूरा हुआ (दि १, २१) । ३ अपठ, अनवस्थित (विसे ३४४८) ।

४ पुं. प्रथम नरक का तीसरा मरीचक—मन्तावास-निरूप (देवद २) ।

मंत वि [भगवन्] भगवान्, ऐश्वर्य-शाली (ठा ३, १; या. विने ३४४८—३४४६) ।

मंत वि [भदन्त] १ क्वाणु-कारक । २ गुल-कारक । ३ पुण्य (विसे ३४६८, कण्य विप्रा १, १, कन विसे ३४७४) ।

मंत वि [भजन्] देवा बरता (विसे ३४४६) ।

मंत वि [भात्, भ्राजत्] चमकडा, प्रचलता (विसे ३४४७) ।

मंत वि [भवान्त] भव का—संसार का श्रत करनेवाला, मुक्ति का वारण (विसे ३४४६) ।

मंत वि [भयान्त] भय-नाशक (विसे ३४४६) ।

मंति छो [भ्रान्ति] भ्रम मिथ्य मान (धर्मसे ७२१; ७२३, गुप्ता ११२; मवि) ।

मंति (मप) छो [भक्ति] भक्ति, प्रकार (विप) ।

मंभल वि [दे] १ मप्रिय, अनिष्ट (दि ६, ११०) । २ मूल, महान, पावल, बेवचक (दि ६, ११०, सुर ८, १६५) ।

मंभसार पुं [भम्भसार] भगवान् महावीर के समकालीन धीर उनके परम भक्त एक भगवाधिपति, वे धैर्यिक धीर गिनसार के नाम से भी प्रसिद्ध थे (छाया १, १३; मीप) । देखो भिभसार, मिभिसार ।

मभा छो [दे. भम्भा] १ वाज-निरूप, मेरी (दि ६, १००, लाया १, १७; विसे ७८ टी. सुर ३, ६६; समस्त १०६; राय, माग ७, ६) । २ 'भा' 'भा' की प्रावान (मग ७, ६—यन २०५) ।

मभी छो [दे] १ मसली, कुलद (दि ६, ६६) । २ नीति-निरूप (राज) ।

मंस सक [भंज] १ नीचे गिरना । २ मट्ट होना । ३ स्थलित होना । मंसइ (दि ५, १७७) ।

मंस पुं [भंश] १ स्तनना । २ विनाश (गुप्ता ११३, सुर ४, २३०), 'मंताइ संशयामंत' (कुप्र ४१) ।

भसग वि [भ्र शरु] विनाश (यन १) ।

भसग न [भ्र शान] उतर देला; 'को लु उगामो गिणयम-भंछो होग एरं' (गुप्ता ११३; सुर ४, ११) ।

भसना छो [भ्र शाना] उतर देतो (पण्ड २, ४ याचक ६३) ।

भसय सक [भस्य] मसण करना, मना । बसदे (मट्ट) । कर्म, मलिनयद (कुमा) । बह. भसयन (स १०२) । हेर. भसिअई (महा) । क. भसय, भसनेय, भसयगिअ

(पत्र ८४, ४; सुपा ३७०; छाया १, १०; सुर १४, २४; या २७) ।

भक्तर पुं [भक्ष] भक्षण, भोजन; 'भो कीर खीरसरवरत्नमयं करहि ताव' (सुपा २६७) ।

भक्तर देखो भक्ष = भक्ष्य ।

भक्तर पुं [भक्ष्य] खाद्य खाद्य, खीर का दूध। दूध खाद्य द्रव्य, मिठाई (सुज २० टी) । भक्तरा वि [भक्षक] भक्षण करनेवाला (सुज २६) ।

भक्तरा न [भक्षण] १ भोजन (पण २८) ।

२ वि. जानेवाला, 'सर्वमन्त्रो' (या २८) ।

भक्तराया जी [भक्षणा] भक्षण, भोजन (उवा) ।

भक्तर पुं [भारर] १ सूर्य, रवि (उत्त २३, ७८; लक्ष्म १०) । २ धर्म, बलि । ३ धर्म कृत (वद) ।

भक्तराभ न [भारराभ] १ भोजन-विशेष, जो गौतम गौतम की शाखा है । २ पुंजी. उस भोजन में उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३६०) ।

भक्तरावग न [भक्षण] क्षिताना (उप ११० टी) ।

भक्तर वि [भक्षिन्] जानेवाला (धीप) ।

भक्तर वि [भक्षित] खाया हुआ (भवि) ।

भक्तर देखो भक्तर = भक्ष्य ।

भग पुं [भग] १ ऐश्वर्य । २ रूप । ३ श्री । ४ यश, कीर्ति । ५ धर्म । ६ प्रयत्न, 'हस्तारिक्यसिद्धिरस्यमप्यपत्ता मया भगान्तरा' (विसे १०४८, वेद २८८) । ७ सूर्य, रवि । ८ माहात्म्य । ९ वैराग्य । १० मुक्ति, मोक्ष । ११ वीर्य । १२ इच्छा (कप्य-लो) । १३ ज्ञान (शामा) । १४ पूर्वाकालीनी वस्तु (मणु) । १५ श्री, योगि, उत्पत्ति-स्थान (पण १, ४—पत्र ६८; सुज १०, ८) ।

१६ देव-विशेष, पूर्वाकालीनी नक्षत्र का शक्तिमान् देव, ज्योतिष्क देव-विशेष (ठा २, ३; सुज १०, १२) । १७ गुदा कीर शब्द-कोश के बीच का स्थान (वृह ३) । 'दत्तं पुं

दत्त' द्वय विशेष (हे ४, २६६) । 'व देखो' यंत (मग, महा) । 'वही जी' यती । १ ऐश्वर्य-सामान्य, पुण्या (पण) । २

भगवती-युव, पाँचवाँ जैन ग्रंथ-ग्रन्थ (पंच ५, १२५) । यंत वि ['यन्तु'] ऐश्वर्य-विशेष-गुण-सम्पन्न । २ पुं. परमेश्वर, परमात्मा (कप्य, विसे १०४८, शामा) ।

भगवंत पुं [भगन्तर] योग विशेष—युवा के भीतरी भाग में होनेवाला एक प्रकार का फोटा (छाया १, १३; विपा १, १) ।

भगवंत वि [भगन्तरिन्] भगन्तर योगवाला (या १६, संवीध ४३) ।

भगवंत वि [भगन्तरिक] ऊपर देखो (विपा १, ७) ।

भगवंत देखो भगन्तर (राज) ।

भगिणी देखो बहिणी (छाया १, ८; कप्य, सुज २३६; महा) ।

भगिरहि पुं [भगीरहि] सगर चक्रवर्ती भगीरहि का एक पुत्र, भगीरथ (पत्र ५, १७६; २१५) ।

भगा वि [भग] १ कण्टक, भाँगा हुआ (सुर २, १०२; वं ४४; उवा) । २ पराजित । ३ पलायित, भागा हुआ, 'जद भगा पारह' (हे ४, ३७६, ३५४, महा, वर २) । 'इ पुं ['जित्'] क्षयि परित्याजक-विशेष (धीप) ।

भगा वि [दे] निम्न, पोटा हुआ (दे ६, १६६) ।

भगा न [भाग्य] नवीव, देव (सुर १३, १०५) ।

भगाय पुं [भार्गव] १ श्व-विशेष, शुक श्व (पत्र १७, १०८) । २ श्व-विशेष (सुज १८१) ।

भगावेस न [भार्गवेश] भोजन-विशेष (सुज १०, १६ टी, इव) ।

भगिआ (भग) । देखो भगा = भग्न (विग) ।

भग पुं [दे] शान्ति, शान्ति (पद) ।

भगिआ वि [भगिआ] विरक्त (दे १, ८०, कृपा ३, ८६) ।

भग देखो भग = भग्न । वर-भजंत, भजंत, भजमाण, भजेमाण (पद) ।

भग्न सक [भग्न] पकना, सुना । भग्नति, भग्नति (सुज ८२; विपा १, ३) । वर-भजंत, भजंत (पिड ५७४, विपा १, ३) ।

भग्न देखो भग्न (छाया २, १, १, २) ।

भग्न देखो भग्न = भग्न ।

भग्नत देखो भग्न ।

भग्नण } न [भग्नण] १ भुनन, भुनना
भग्नणय } (पण १, १, मृग ५) । २ भुनने

का पत्र (मृग ८९; विपा १, ३) ।

भग्नमाण देखो भग्न ।

भग्न जी [भार्ग] पत्नी, जी (कृपा; प्राप् ११६) ।

भग्न जी [भार्ग] देखो भग्न ।

भग्न देखो भग्न = भग्न, 'तद्यपि वा धिगाधि धमिस्त्वतयजिज्म वेहाप' (छाया २, १, १, २) ।

भग्न वि [भृष्ट, भजित] भुना हुआ, पकया हुआ (पा ५५७, छाया २, १, १, ३; विपा १, २, उवा) ।

भग्न जी [भजित] १ भागी, शाक-भेद, पक्का सब्जियों (पत्र २५६) । २ पक्कन, शान्ति-भोजन (कप्य-पा ३६१८) ।

भग्न वि [भजित] भुनने योग्य (छाया २, ४, २, १५) ।

भग्न वि [भग्न] भोजनेवाला, 'काफल-भारभजितसाहासककुलो महासाही' (धर्म ५५; सण) ।

भग्नत देखो भग्न = भग्न ।

भट्ट पुं [भट्ट] १ अनुप-जाति-विशेष, स्तुति-पाठक की एक जाति, भट्ट, 'जयजयसद्वक्-रंतनुभट्ट' (सिंह १५४, सुपा २७१; उप ५ १२०) । २ वैदिक पण्डित, ब्राह्मण, विप्र (उप १०३१ टी) । ३ स्वामित्व, भाविकपन, मालिकपन (प्रति ७) ।

भट्टाण पुं [भट्टारक] १ पूज्य, पूजनीय भट्टारक (छाया ३, महा) । २ नाटक की भाषा में राजा (मह ६५) ।

भट्ट देखो भट्ट = भट्ट (ठा ३, १, सम ८६; कप्य ४ १४४, प्रति ३, स्वप्न १५) ।

भट्टिण पुं [दे] विष्णु, श्रीकृष्ण (हे २, १७४, दे ६ १००) ।

भट्टिणी जी [भट्टि] स्वामिनी, मालिकिनी (स १३४) ।

भट्टिणी जी [भट्टिनी] नाटक की भाषा में वह पत्नी जिसका प्रतिपेक न किया गया हो (प्रति ७) ।

१६७; प्राप् १६) । २ गुणलं. सोना । ३ मुक्तव. गोपा. नागरगोपा (हे २, ८०) । ४ वो उपवास (संयोग ५८) । ५ देव-विमान विशेष (सम ३२) । ६ शरासन, मूढ (छाया १, १ टी—पत्र ४३) । ७ मद्रासन, मासन-विशेष (पलम) । ८ वि. राधु. सरत, भना, सज्जन । ९ उत्तम, धैष्ट (भा. प्राप् १६; सुर ३, ४) । १० गुप्त-जनक, कस्याए-नारक (छाया १, १) । ११ पुं. हाथी की एक उत्तम जाति (छा ४, २—पत्र २०८; महा) । १२ भारतवर्ष का तीसरा भावी यमदेव (सम १५४) । १३ अंगनिया का जानवार द्वितीय श्व दुरुष (विचार ४७३) । १४ विवि-विशेष—द्वितीया, सप्तमी और द्वासी तिथि (सुख १०, १५) । १५ छन्द-विशेष (पिंग) । १६ स्वनाम-व्याप्त एक जैन आचार्य (महावि ६; कप्य) । १७ व्यक्तित्व-वाचक नाम (तिर १, ३; छाव १; घम्भ) । १८ भारतवर्ष का चौबीसवां भावी जिनदेव (पय ७) । १९ शुस पुं [गुम्] स्वनाम-प्रसिद्ध एक जैनार्थ (एति. सार्ध २३) । २० गुप्तिन न [गुप्तिन] एक जैन मुनि-मुल (कप्य) । २१ जस पुं [शशस्] १ भगवान् धार्मिक का एक गणधर (छा ८—पत्र ४२६) । २ एक जैन मुनि (कप्य) । ३ जसिय न [यशस्] एक जैन मुनि-मुल (कप्य) । ४ नैदि पुं [नन्दिन्] स्वनाम-व्याप्त एक राज-कुमार (विपा २, २) । ५ बाहु पुं [बाहु] स्वनाम प्रसिद्ध प्राचीन जैनार्थ और ग्रन्थकार (कप्य, एति) । ६ सुधा की [सुधा] वनस्पति-विशेष, भद्रगोपा (पण १) । ७ वया की [पदा] नक्षत्र-विशेष (सुर १०, २२४) । ८ शाल न [शाल] मेरु पर्वत का एक वन (छा ३, ३; इक) । ९ सेण पुं [सेन] १ घरोन्द्र के पदाति-सैन्य का अधिपति देव (छा ५, १; इक) । २ एक श्रेष्ठ का नाम (भाव ४) । ३ स न [स] नगर-विशेष (इव) । ४ सण न [सन्] आसन-विशेष, सिंहासन (छाया १, १; पण्ड १, ४; नाम. शीप) ।

भट्टार ॥ [भट्टार] देवदार, देवदार की नक्षत्री (उत्तमि ३) ।

भट्ट १ पुं [भट्टपद] मात-विशेष, मादो भट्टय १ पा महीना (वज्रा ८२; सुर ३, १३८) ।

भट्टसिरी की [दे] श्रीलङ्क, चन्दन (दे ६, १०२) ।

भट्टा श्री [भट्टा] १ रावण की एक पत्नी (पत्र ७४, ६) । २ प्रथम नवदेव की माता (सम १५२) । ३ तीसरे चक्रवर्ती की पत्नी (सम १५२) । ४ द्वितीय चक्रवर्ती की स्त्री (सम १५२) । ५ मेरु के पूर्व रूचक पर्वत पर रहनेवाली एक दिगुमारी देवी (छा ८) । ६ एक प्रतिमा, वल-विशेष (छा २, ३—पत्र ६७) । ७ राजा योखि की एक पत्नी (संत २४) । ८ विवि-विशेष—द्वितीया, सप्तमी और द्वासी तिथि (संयोग ५४) । ९ छन्द-विशेष (पिंग) । १० रामदेव याचक की भार्या का नाम । ११ कुलनीपिता नामक उपसर्ग की माता का नाम (जवा) । १२ एक सार्वभौम की वर नाम (विपा १, ४) । १३ गोशालक की माता का नाम (पय १५) । १४ महिषा, दया (पण्ड २, १) । १५ एक पापी (देव) । १६ एक नगरी (पाप् १) । १७ अनेक शिखों का नाम (छाया १, ८; १६, भाव) ।

भट्टाखरि वि [दे] प्रसभ्य, शक्ति सम्भा (दे ६, १०२) ।

भट्टा श्री [भट्टिका, भट्टा] १ शोयन, सुन्दर (श्री) (शोषभा १७) । २ नगरी-विशेष (कप्य) ।

भट्टिजिया श्री [भट्टीया, भट्टीयिना] एक जैन मुनि-शाखा (कप्य) ।

भट्टिलपुर न [भट्टिलपुर] भारतवर्ष का एक प्राचीन नगर (प्रत ४, कुञ्ज ८४; इक) ।

भट्टदुत्तरावर्द्धिसग न [भट्टोत्तरावर्द्धिसग] एक देव-विमान (सम ३२) ।

भट्टदुत्तर १ श्री [भट्टोत्तर] प्रतिमा-महोत्तर १ विशेष, प्रतिज्ञा का एक वेद, भट्टोत्तरा १ एक तरह का व्रत (शौच, संत ३०; पत्र २७१) ।

भट्ट देखो भट्ट (हे २, ८०, प्राक् १७) ।

भट्ट न [भट्ट] देखो अण्य = अण् ।

अण्य देखो भट्ट = भमन् (हे २, ५१; कुमा) । भम सक [भ्रम] भ्रमण करना, घूमना । भमद (हे ४, १६१; प्राक् ६६) । भट्ट, भमत, भममाण (पा २०२; ३८७; कप्य; शीप) । संट, भमिजा, भमिऊण (पद्, पा ७४६) । इ. भमिअव्य (पुत्र ४३८) । भम पुं [भ्रम] १ भ्रमण (कुत्र ४) । २ भ्रान्ति, मोह, मिथ्या-ज्ञान (सं ३, ४८; कुमा) ।

भमग न [भ्रमक] लगातार एवतस्त दिनों का उपवास (संयोग ५८) ।

भमद देखो भम = भ्रम, 'भ्रमि भमद' एतुषिष' (विवे १०८; हे ४, १६१) ।

भमदिअ वि [भ्रान्त] १ घूमा हुआ, फिरा हुआ (स ४७३) । २ भ्रान्ति-मुक्त (कुमा) । देखो भमिअ ।

भमण न [भ्रमण] घूमना, चक्कराना । (दे ४६; कप्य) ।

भमसुह पुं [दे] भावतं (दे, १०१) ।

भमया श्री [भ्रू] भीड़, नेत्र के ऊपर की रेखा-पंक्ति (हे २, १६७; कुमा) ।

भमर पुं [भ्रमर] १ मधुहर, भीरा (हे १, २४४; कुमा, जो १८; प्राप् ११३) । २ पुं. छन्द-विशेष (पिंग) । ३ विट, रंजीबाज (कप्य) । ४ रुअ पुं [रुच] प्रनाय देश-विशेष (पत्र २७४) । ५ पछि श्री [पछि] १ छन्द-विशेष (पिंग) । २ भ्रमर-पंक्ति (राय) ।

भमरट्टा की [दे] १ भ्रमर की तरह प्रक्षि-पोलववाली । २ भ्रमर की तरह प्रक्षिपर साचरववाली । ३ सुक वृक्ष के दागवाली (कप्य) ।

भमरिया श्री [भ्रमरिना] जन्तु-विशेष, बर्दे (जो १८) । देखो भमलिया ।

भमरी श्री [भ्रमरी] श्री-भ्रमर, भीरी (दे) । नीचे देखो ।

भमलिया श्री [भ्रमरीका, 'री'] १ पित्त भमली १ के प्रकोप से होनेवाला रोग-विशेष, चक्र, 'भमली पित्तदुष्यो भमलमहिदसल' (चिद्व ४३३, पठि) । २ वाद्य-विशेष (राय) ।

भमस पुं [दे] गुण-विशेष, ईल की तरह का एक प्रकार का घस (दे ६, १०१) ।

भमाइअ वि [भ्रमित] घुमाया हुमा, फिरोया हुमा (सि ३, ६१)।

भमाइ सभ [भ्रमय] घुमाना, फिराना।

भमाइइ (हे ४, ३०), भमाइयु (सुभा ११४)।

वह. भमाइत (पठम १०६, ११)।

भमाइ देखो भम = भय। भमाइइ (हे ४, १६१; नवि)।

भमाट पुं [भ्रम] भ्रमण, घूमना, चक्कर (घोषमा २६ टी. ८३ टी)।

भमाठण न [भ्रमण] घुमाना (उर पु २७८)।

भमाठअ देखो भमाडिअ (हुमा)।

भमाडिअ वि [भ्रमित] घुमाया हुमा, फिरोया हुमा (पठम १६, २५)।

भमाय देखो भमाट = भ्रमय। भमावइ, भमावइ (सि ५५३; हे ४, ३०)।

भमास [दे] देखो भमस (दे ६, १०१; पाष)।

भमि छी [भ्रमि] १ भ्रमण, घानी वा चक्का-कार भ्रमण (मनुउ ६३)। २ बिभ्र-भ्रम करने की शक्ति (विसे १६५१)। ३ रोम-विशेष, चण्ट, 'ममिपतिममिपटी' (हम्मीर २८)।

भमिअ देखो भमडिअ (जो ४८; नवि)। ३ न. भ्रमण; 'भमिममिपतिवहेहवीदेव' (गा ५२५)।

भमिअ वेणो भमाइअ (पाष)।

भमिअठन } देखो भम = भ्रम।
भमिआ }

भमिर नि [भ्रमिर] भ्रमण करनेवाला (हे २, १४५; गुर १, ५५, ३, १८)।

भमुह न [भ्र] नीचे देखो, 'दीहार्द भमुहार्द' (भाषा २, १३, १७)।

भमुहा छी [भ्र] भी, घाँस के ऊपर की रोम-जाली (पठम ३७, ५०; भीष; भाषा, पाष)।

भम्मा } देखो भम = भ्रम। भम्माइ (अरु भम्माइ) ६६, भम्मायु (गा ४१५, ४४७)।

भम्माइ (हे ४, १६१)। भम्माइ (हुमा)।

भम्मार (पठ) देखो भमार (नवि)।

भय देखो भद। भद. देखो भयन = भयंत।

भय श्रक [भज्] १ सेवा करना। २ विकल्प से करना। ३ विभाग करना। ४ ग्रहण करना। भयइ, भयइइ (सम्म १२४; हुमा), भय, भय्वा (इह १), भयति (विसे १६६०); 'तम्हा नय जीव वेरनय' (यु ६१)। वह. भयंत, भयमाण (विसे ३४४६; सुम १, २, २, १७)। कवह.

'संभवतुभदमाणमुहेहि' (वप)। सइ.

भइसा (हा ६)। क. भइअ, भइअव्य, भपयव्य, भअ, भयणज (विसे ६१८; २०४६; उत ३६, २३, २४; २५; वम्म ५, ११; विसे ६१५; उर ६०४; विसे ३२०२; ७४८; १८१; जीम १४५; पंच ५, ८; विसे ६१६; जीवस १४७)।

भय न [भय] इद, प्राप्त, मोति (भाषा; शाया १, १; गा १०२; हुमा, प्रायु १६; १७३)।

'अर वि [कर] नय-जनक (सि ५, ४४, ११, ७५)। 'जणणी छी [जननी] १

नास उपास करनेवाली (इह १)। २ विद्या-विशेष (पठम ७, १४१)। 'बाह पुं [बाह]

पसस-बंरा वा एक राजा, एक लंका-पति (पठम ५, २६३)।

भय देखो भय (उवा; हुमा, सण, सुभा ४२०; गउड)।

भय देखो भय (जीव. निग)।

भयंरर वि [भयंरर] १ भय-जनक, जोषण (हे ४, ३३१, सण, नवि)। २ प्राणि-वय, हिमा (पणह १, १)।

भयंत देखो भय = भय।

भयंत देखो भयंत = भयन् (सुम १, १६, ६)।

भयंत देखो भयंत (घोष ४८; उत २०, ११; जीव)।

भयंत देखो भयंत = भयन् (विसे ३४४६, ३४४३, ३३४४)।

भयंत देखो भयंत = भयन् (निगि ३४४६; जीव)।

भयंत नि [भयय] नय से रसा करनेवाला (घोष; सुम १, १६, ६)।

भयंत देखो भयंत = भयन् (विसे ३४४६, ३४४३, ३३४४)।

भयंत देखो भयंत = भयन् (निगि ३४४६; जीव)।

भयंत देखो भयंत = भयन् (निगि ३४४६; जीव)।

भयंत देखो भयंत = भयन् (निगि ३४४६; जीव)।

भयंत देखो भयंत = भयन् (निगि ३४४६; जीव)।

'धम्ममाइसखे भयंताते' (सुम १, ४, १, २३)।

भयंतु वि [भयंत] सेवक, सेवा करनेवाला (जीव)।

भयक १ पुं [भयक] १ नीकर, कर्मकर भयग (हा ४, १, २)। २ वि. गोपित (पणह १, २; शाया १, २)।

भयन न [भयन] १ सेवा (ताज)। २ विभाग (मम्म ११३)। ३ पुं. लोभ (सुम १, ६, ११)।

भयण देखो भयण (गाट—वैत ४०)।

भयणा छी [भयना] १ सेवा (निह १)। २ विकल्प (मग; सम्म १२४; वं ११; उर)।

भयणइ १ देखो यहसइ (हे २, ११७; भयणइ १ पद)।

भयणगाम पुं [दे] मोरेरक, पुनराट वा एक गाँव (दे ६, १०२)।

भयाणय वि [भयानक] भयंर, भय-जनक (सि १२१)।

भयालि पुं [भयालि] भारतवर्ष के भावी मठारहर्षे जिनदेव वा पूर्व-भवीय नाम (मन १५४)। देखो सयालि।

भयालु वि [भीरु] भीर, डरलोक (दे ६, १०७; नाट)।

भयावण (मन) देखो भयाणय (नवि)।

भयावह वि [भयावह] भय-जनक, भय-कारक (सुम १, १३, २१)।

भर वष [भ्र] १ करना। २ पारण करना। ३ जोषण करना। भरइ (नवि, निग), भरयु (कम्म ४, ७६)। वह. भरन (नवि)।

भरइ. भरंर, भरंत, भरिजज (सि १, ५८, ४, ८, १, १७)। वं. भरैऊण (पाठ ६)। इ. भरणिज, भरणीअ, भत्तन्न, भरैऊव्य (पाठ, नाट पाठ, ने ६, ३)।

भर रा [भ्र] स्मरण करना, याद करना। भरइ (हे ४, ७५; प्राय)। वं. भरन (गा ४८१; नवि)। वं. भरिज, भरिऊण- (हुमा)। प्रयो. वा. भययन (हुमा)।

भर दून [भर] १ कट्टर. प्रकट निरुद्ध (भरदून वं. एगणितानि भयानिदुद्धन)

(प्रति १२; सुपा ७; पाप) । २ बार, थोक (से ३, ५; प्राप् २६, सा ६) । ३ सुरतर कार्य, 'मरुतिपरणसमत्वा' (विसे १६६ टी, डा ४, ४ टी—पत्र २८३ । ४ प्रचुता, प्रतिशय । ५ कर—राजदेय भाग की प्रचुता, वर की चुता, 'करहि यरेहि य' (विपा १, १) । ६ पूर्णता, सम्पूर्णता, 'दय विहाए विहं प्रसहंते निसिभरमि नरनाहो' (कुप ६) । ७ मय्य भान । ८ जमावट; 'भरभुवण कोलापमोए, (स ५१०) ।

भरअ देखो भरह (पट्) ।

भरह पुं [भरह] वृत्ति विशेष, एक प्रकार का नाचा, 'सिबभवाहागिरिणा भरहण' (सम्मत १४५) ।

भरण न [स्मरण] स्मृति (गा २२२, ३७७) ।

भरण न [भरण] १ भरना, पूरना (गठक) । २ पापण (गा ५२७) । ३ शिल्प-विशेष, 'बसौं बेल-जूटा प्रावि झाकार की रचना, वहीणें सुमण मरण' (गण्ड १, ७) ।

भरणी की [भरणी] नसन-विशेष (सम ८, दक) ।

भरध (शौ) देखो भरह (प्राक् ८५) ।

भरह पुं [भरत] १ भागवान् आदिनाथ का ज्येष्ठ पुत्र और प्रथम चक्रवर्ती राजा (सम ६०, कुमा, सुर २, १३३) । २ राजा रामचन्द्र का छोटा भाई (पत्रम २५, १४) । ३ नाट्य शास्त्र का कर्ता एक मुनि (तिरि ५६) । ४ वर्ष विशेष, भारत वर्ष, 'द्वैव जनुदोवे दोवे सत बासा पत्रसा, त जहा— भरह हेमवत हरिनासे महाविदेहे रमए एरएणवए एणव' (सम १२, ज १, पठि) । ५ भारतवर्ष का प्रथम भावी चक्रवर्ती (सम १५४) । ६ शवर । ७ तनुबाय । ८ नृप-विशेष, राजा दुष्यन्त का पुत्र । ९ भरत के चरण राजा । १० नट (हे १, ११४, पट्) । ११ देव-विशेष (ज ३) । १२ कूट-विशेष, पर्वत विशेष का शिखर (ज ४, डा २, ३, ६) । 'खित्त न [क्षेत्र] भारतवर्ष (सण) । 'वास न [वर्ष] भारतवर्ष, भाग्यवर्त्त (पणह १, ४) । 'सत्य न [शास्त्र] भरतमुनि-प्रणीत नाट्यशास्त्र (तिरि ५६) । 'हाह पु [पिय] १ संपूर्ण भारतवर्ष का राजा,

चक्रवर्ती । २ भरत चक्रवर्ती (सण) । 'हियइ पुं [पिय] वही धर्म (सण) ।

भरहोसर पुं [भरतोसर] १ संपूर्ण भारतवर्ष का राजा, चक्रवर्ती । २ चक्रवर्ती भरत (कुमा २, १७, पठि) ।

भरिअ वि [सूत, भरित] गप हुमा, पूर्ण, व्याप्त (विपा १, ३, औप, बर्षवि १४४, काप्र १७४, हेका २७२, प्राप् १०) ।

भरिअ वि [सूत] याद बिया हुमा, 'भरिअं बुदिअं सुमरिअं' (पाप, कुमा, मवि) ।

भरिउलट्ट वि [दे. सृवोल्लुठित] भर वर सानो बिया हुमा (दे ७, ८१, पाप) ।

भरिम वि [भरिम] भर कर बनाया हुमा (धणु) ।

भरिया (भय) देखो भारिया (कुमा) ।

भरिलो औ [भरिली] चतुर्दिग्व जनु-विशेष (राज) ।

भरु पुं [भरु] १ एव अनार्य देश । २ एक भवार्य मनुष्य जाति (दक) ।

भरुअच्छ पुं [भरुअच्छ] गुजरात का एक प्रसिद्ध शहर जो धानकल 'भडीच' के नाम से प्रसिद्ध है (वात, मुनि १०६६, पठि) ।

भरोच्छय न [दे] तात का फल (दे ६, १०२) ।

भल देखो भर = स्मृ । भलइ (हे ४, ७४) । प्रयो, बह, भलायंत (कुमा) ।

भल सक [भल] सम्हालना । भलिजानु (कुपा ४५६) । भवि, भलिस्माभि (का) ।

भल, अलेयक (औप ३८६ टी) । प्रयो, सक, भलाचिऊण (तिरि ३१२, ५६६) ।

भलत वि [दे] स्वतित होवा, गिरता (दे ६, १०१) ।

भलाविअ वि [भालि] सांगा हुमा, सम्हालने के लिये दिया हुमा (पा १६) ।

भलि पुं की [दे] कदाग्रह, हठ, प्रभुलहेच्छण जहाँ मलित ते नवि दूर पणति' (हे ४, ३३१, चंड) ।

भल पुं [भल] १ भाव् रीछ (पणह १, १) । २ पुन, भल विशेष, भला, बरछी (गा ५०४, ५८५, ५६४) ।

भल } वि [भद्र] भला, उत्तम, श्रेष्ठ, भल्य } अग्रा (कुमा, हे ४, ३५१, मवि) । 'तण, 'पण न [प] भलमनवी, भलाई (कुमा) ।

भलय [भलरु] देखो भल = मल (उप ७ ३०, सण धावम) ।

भलाअय } पु [भलात, 'क] १ कुन-भलावक } विशेष, भिलावा भा पेट (गण १, दे १, २३) । २ न. भिलावा का फल (दे १, २३, ५, २५, पाप) ।

भलि औ [भलि] देखो भली (कुमा) ।

भलिम पुं की [भलरु] भलाई, भला (सुपा १२३, कुप १०८) ।

भली औ [भली] भला, बरछी, द्रव्य विशेष (सुर २, २८, कुप २७४, सुपा ५२०) ।

भल्लु पुं की [दे] भाव्, रीछ (दे ६, ६६) ।

भल्लुकी औ [दे] शिवा, भृगुनादी (दे १, १०१, सण) । 'भल्लुंकी वट्टिया विवट्टी' (सपा ६६) ।

भल्लोड पुं न [दे] बाण का पुत्र, सार का धर्म भाग, गुजराती में 'भालोडु', 'बहावहि-वणपुण्ड्रवैसवमल्लोड' (सुर २, ७) ।

भय सक [भू] १ होना । २ सक-ज्ञात करना । भयइ, भवए (कप, महा), मए (भग, डा १, १) । भूका, भविमु (भग) ।

भवि, भविस्सइ, भविस्स (कप, भग, पि ५२१) । बह, भवत (गठ ५८८), 'भूयना-विमा (भ)रमाग भाविही' (कुप ४३७) ।

सक-भविअ, भविचा, भविचाण (प्रति ५७, कप, भग, पि ५८३), भइ (धण), (पिण) । ■ भविअक (पाया १, १, सुर ४, २७७, वव, भग, सुपा १६४) । देखो भव्य ।

भव पु [भव] १ संसार (अ ३, १, उवा, भग विपा २, १, कुमा, जो ४१) । २ संसार का कारण (सम १) । ३ जन्म, उत्पत्ति (डा ४, ३) । ४ नरकादि योनि, जन्म-स्थान (भापा, ता २, ३, ४, ३) । ५ महा-देव, शिव (पाप) । ६ वि. होनेवाला, भावी (डा १) । ■ जपन, 'बयगुदर नामेण उव गवो हं महामां' (सुपा ५८४) । ■ न. देव-विमान-विशेष (सम २) । 'लिंग

वि [°जित्] रागादि को जीतनेवाला, 'सासणं जिहाण भवजियाणं' (सम्म १) । 'द्विइ लो [°स्थिति] १ देव धादि योनि में उत्पत्ति को माल-मर्यादा (ठा २, ३) । २ संसार में भ्रमस्थान (पंचा १) । 'रथ वि [°स्थ] संसार में स्थित (ठा २, १) । 'स्थकेवल्लि वि [°स्थकेवल्लि] जीवन्मुक्त (सम्म ८६) । 'धारगिज्ज न [°धारणीय] जीवन्मर्यन्त संसार में धारण करने योग्य शरीर (मग, इक) । 'पचइय वि [°प्रत्ययिक] १ मरणादि योनि-हेतुक । २ न, भवविज्ञान का एक भेद (ठा २, १; मम १४५) । 'भूइ पुं [°भूति] संसृष्ट का एक प्रसिद्ध कवि (गण्ड) । 'सिद्धिय, 'सिद्धीय वि [°सिद्धिक] जन्म जन्म में या बाद के किसी जन्म में मुक्त होनेवाला, मुक्ति-नामी (सम २; पण १८; भग, विसे १२३०; जीवस ७५; श्रवक ७३; ठा १; विसे १२२६) । 'भिण्णदि, 'भिन्दि, 'हिन्दि वि [°भिनन्दि] संसार को पसंद करनेवाला, सत्कार को प्रशंसा माननेवाला (राज, संयोग ५; ३३) । 'किग्गाहि न [°°प्राहिन्] बर्न विरोप (पार्से १२६१) ।

भय देखो भव्य (कम्म ४, ६) ।

भय } पुं [°भयत्] गुण, धातु (कुमा, भयत्) हे २, १७४) ।

भयन देखो भय = भू ।

भयं (भय) भय = भय । भयं (सण) । बह, भयन (भवि) । संह, भविं (सण) ।

भयण (भय) देखो भयण (भवि) ।

भयण न [°भयन] १ उत्पत्ति, जन्म (वर्मे १७२) । २ गृह, मर्यादा, वसति (पाप, कुमा) । ३ मनुकुमार धादि देवों का विमान (पण २) । ४ सत्ता (विगे ६६) । 'वइ पुं [°पनि] एक देव-जाति (भग) । 'वासि पुं [°वासिन्] यही पूर्वोक्त भयं (ठा ०, धीप) । 'वासिणी लो [°वासिनी] देवी विरोप (पण १७, महा ६८, १२) । 'द्वि पुं [°विपि] एक देव-जाति (गुण ६२०) ।

भयमाण देखो भय = भू ।

भयर देखो भयर (चंड) ।

भवाणी लो [°भवानी] शिव-पत्नी, पार्वती (पाप; सपु १५७) । 'कंउ पुं [°कान्] महादेव (पिग) ।

भवारिस वि [°भवारि] तुम्हारे जैसा, भापके तुल्य (हे १, १४२; चंड, गुण २७) ।

भवि पुं [°भविन्] भव्य जीव, मुक्ति-नामी प्राणी (भवि) ।

भविअ देखो भव = भू ।

भविअ वि [°भव्य] १ सुन्दर (कुमा) । २ श्रेष्ठ, उत्तम (सवोष १) । ३ मुक्ति-योग्य, मुक्ति-नामी (पण १; उव) । ४ भावी, होनेवाला (हे २, १०७, पद) । देखो भव्य = भव्य ।

भविअ वि [°भवि] १ मुक्ति-योग्य, मुक्ति-नामी । २ संघाटी, संसार में रहनेवाला (गुर ४, ८०) ।

°भविअ वि [°भवि] भव-सदृशी (मण) ।

भविन्ती लो [°भविन्] होनेवाली (पिग) ।

भवियव्य देखो भव = भू ।

भवियक्या लो [°भवितव्यता] नियति, भवव्यवस्था, होनी (महा) ।

भविल वि [°भवि] निन्दुर (वरा ० भवत्य ७० पञ १६८, नून ३२६) ।

भविस (भय) देखो भवीस । 'त्त, 'यत्त पुं [°दत्त] एक कथा-नायक (भवि) ।

भविसस पुं [°भविस्स] १ भविष्य काल, ध्यामी समय (पडम ३५, ५६, पि ५६०) । २ वि. भविष्य काल में होनेवाला, भावी (एणा १, १६—पञ २१४, पडम ३५, ५६; गुर १, १३५; कप्पु) ।

भवीस (भय) ऊपर देखो (भवि) ।

भव्य वि [°भव्य] १ सुन्दर, 'सर्वं सर्वं वरिस्सामि' (गुण ३३६) । २ उचित, योग्य (विसे २८; पण) । ३ श्रेष्ठ, उत्तम (वज्जजा १८) । ४ होत, वर्तमान, 'एवं भूयं वा भव्यं वा भविस्सं वा' (एणा १, १६—पञ २१४; कप्प, विसे १३४२) । ५ भावी, होनेवाला (विने ५८, पंच २, ८) । ६ मुक्ति-योग्य, मुक्ति-नामी (विने १८२२, ३; ४; ५; ६) । 'मिद्धीय देखो भय सिद्धीय;

'पञ्जतापञ्जता सुहमा किंचहिया भव्य-सिद्धीया' (पंच २, ७८) ।

भव्य पुं [°दे] मागियेय, मानजा (दे ६, १००) ।

भस सक [°भप्] भूकना, खान का बोधना । भगद (हे ४, १८६; पड—पञ २२२), भसति (सिरि ६२२) ।

भसग पुं [°भसक] एक राज-कुमार, श्वीष्ट्य के बड़े भाई जयकुमार का एक पौत्र (उव) । भसण देखो भिसण । भयणेनि (पि ५५६) । भसण न [°भपण] १ कुत्ते का शब्द (था २७) । २ पुं, खान, कुत्ता (पाप; सिरि ६२२) ।

भसणअ (भय) वि [°भपित्] भूकनेवाला, 'गुणउ भवण' (हे ४, ४४३) ।

भसम पुं [°भसम्] १ ग्रह-विरोध, 'भय-मगहोडि' इति सित्य' (सद्धि ४२ टी) । २ राघ, भूत, 'भयमुद्रसुखियगलो' (महा, सम्पत् ७६) । देखो भास = भस्म ।

भसल देखो भमर (हे, १, २४४; २५४, कुमा, गुण ४; पिग) ।

भसुआ लो [°दे] रिया, शृगाली, सितारित (हे ६, १०१, पाप) ।

भसुम देखो भसम (प्राह ३७) ।

भसेह पुं [°दे] पाय्य धादि का तीव्रण भय भाग, 'साविमनेत्तसरिस्सा ते वेसा' (उवा) । भसोल न [°दे. भसोल] एक नाट्य-नयि (राज) ।

भस्य (भा) देखो भट्ट (पद) ।

भस्यालय (भा) देखो भट्टारय (पद) ।

भस देखो भसं = भय । भसद (प्राह ७६) । बह, भसंतं (काव) ।

भसत पुं [°भस्मन्] १ ग्रह-विरोध । २ राग (हे २, ५१) ।

भसिसअ वि [°भस्मित] जनार राघ विद्या हृमा, भय विद्या हृमा (कुमा) ।

भा यक [°भा] पचराना, दीपना, प्रचारना; 'भा मायो वा दित्ती' (विसे ३४४७) ।

नाद (कप्प), नाभि (गण्ड) । बह, देवो भंत = मातृ ।

भा लो [°भा] दीप्ति, प्रभा, कान्ति, तेज (कुमा) । 'भंडल पुं [°मण्डल] पचा जल

का पुत्र (पत्र २६, ८७)। 'घलय न
[घलय] जिन देव वा एक महाप्रातिहार्य,
पीठ के पीछे रखा जाता दीप्ति-मंडल (इबोध
२, सिरि १७७)।

भा } शक [भी] डरना मय करना। भाइ,
भाअ } भाप्रद, भाप्रामि (हे ४, ५३; पद,
महा, स्वप्न ८०), भादि (शी) (प्राकृ ६३),
भायइ (सण)। भवि. भाइस्तवि, भाइस्त
(शी) (सि ५१०)। बह, भायंत (गुमा)।
क. भाइयव्य (पण्ह २, २, स ५६२,
सुपा ४१)।

भाअ देखो भा = भा। भाप्रदि (शी)
(प्राकृ ६३)।

भाअ सक [भायय] डरना। भाप्रद,
भापइ (प्राकृ ६४), भाप्रसि (मूर्ति २४)।
वह भायमाग (सुपा २४८)।

भाअ देखो भाव = भावय। क. भाएअअ
(नव २५)।

भाअ पुं [भाग] १ योग्य त्वान। २ एव
देश (सि १३, ६)। ३ भरा, विभाग, हिस्सा
(पाम, सुपा ४०७ पय—माया ३०, उवा)।
४ भाग्य, नसीब (सार्ध ८०)। 'घेअ,
'हेअ पुन [घेय] १ भाग्य, नसीब (सि
११, ८५, स्वप्न ५१, हम्मिर १४, मणि
१६७)। २ कर, राज देव। ३ दायाद,
भागीदार, 'भाप्रहेयो भाप्रहेय' (प्राकृ ८८,
माट—मैत ६०)। देखो भाग।

भाअ पु [दे] ज्येष्ठ भगिनी का पति (दे ६,
१०२)।

भाअ देखो भाय (भवि)।

भाआय देखो भाअ = भावय। भाप्रवेद
(प्राकृ ६४)।

भाइ देखो भागि, 'कारिख बयवहमरगभाइयो
जिए ए हति तह दिहु' (घण ३२, उव
६८६ टी)।

भाइ } पुं [भ्रातृ] भाई, बंधु (उप ५१६,
भाइअ } महा भावन)। 'वीथी की [हिं-
तीया] पर्व विरोध, भेदाद्वय, कारिख शुक्ल
द्वितीया तिथि (ती १६)। 'सुअ पु [सुत]
भतीजा (सुपा ४००)। देखो भाउ।

भाइअ वि [भाजित] १ विभक्त किया हुआ,
बाँटा हुआ (पिठ २०८)। २ खरिदत
(पच २, १०)।

भाइअ वि [भीत] १ डरा हुआ। २ ध.
डर, मय (हे ४, ५३)।

भाइणिज } पुष्ठी [भागिनेय] भगिनी-पुत्र,
भाइणअ } बहिन का लड़का, भावजा (धम्म
भाइणअ } १२ टी नाट—रत्ना ८५, स
२७०, छाया १, ८—पत्र १३२, पत्रम
६६, ३६, वृष ४४०, महा)। श्री [जी
(पत्रम १७, ११२)।

भाइयव्य देखो भा = भी।

भाइर वि [भीरु] डरलोक (हे ६, १०४)।

भाइह पुं [दे] हासिक, बर्षक, हृषीक,
विमान (दे ६, १०४)।

भाटल वि [भागिन, 'क' भागीदार,
साम्प्रदाय, भरा प्राही (सूय २, २, ६३,
पण्ह १, २, ठा ३, १—पत्र ११३, छाया
१, १४)। देखो भागि।

भाइइंख न [दे भ्रातृभाण्ड] भाई, बहिन
आदि स्वजन, पुत्रपत्नी में 'साविड' (कुप्र
१५६)।

भाईरही श्री [भागीरथी] गया नदी (गवड,
हे ४, ३४७, नाट—विक २८)।

भाउ } पु [भ्रातृ] भाई बंधु (महा,
भाउअ } सुर ३, ८८ सि ५५, हे १, १३१
उव)। 'जाया, 'ज्जाइया श्री [जाया]
भोजाई, भाई की श्री (दे ६, १०३, सुपा
२६४)।

भाउअ देखो भाअ = (दे) (दे ६, १०२ टी)।

भाउअ न [दे] भापाद मास में मनाया
जाता गौरी-पार्वती का एक उत्सव (दे
६, १०३)।

भाउग देखो भाउ (उप १४६ टी, महा)।

भाउज्जा श्री [दे] बीजाई भाई की पत्नी
(दे ६, १०३)।

भाउराअण पु [भागुरायण] व्यक्ति-वाक्य
नाम (मुद्रा २२३)।

भाएअअव्य देखो भाअ = भावय।

साग पु [भाग] १ भरा, हिस्सा (कुपा, जी
२७, दे १, १६७)। २ बचिन्व्य शक्ति,
प्रभाव, महात्म्य भागीचिता सत्ता स महा
भागो महण्मगलो ति' (विसे १०५८)। ३
पूजा, भजन (सूय १, ८, २२)। ४ भाग्य,
नसीब, 'चला कयपुना ॥ महवभागोदोषोवि
मह भवि' (सिरि ८२३)। ५ प्रकार, गौरी

(राज)। ६ भवकारा (मुद्रा १०, ३—पत्र
१०४)। 'घेअ, 'घेज्ज' 'हेअ देखो भाअ-
हेअ (पत्रम ६, ५७; २८, ८६, ॥ १२,
सुर १४, ६, पाम)। देखो भाअ = भाग।

भागअय वि [भागनत] १ भगवान् से संबंध
रखनेवाला। २ भगवान् का भक्त (धर्मसं
३१२)। ३ न. घष विरोध (एदि)।

भागि वि [भागिन] १ भजनेवाला, सेवन
करनेवाला, 'भास्स भागे' (उव), 'कि गुण
मरएवि न मे संजाय मदमभागिमासि' (सुपा
५४७)। २ भागीदार, साम्प्रदाय, भरा-भाही
(पाम)।

भागिणेज्ज } देखो भाइणेज्ज (महा, कुप्र
भागिणेय } १७१)।

भागीरही देखो भाईरही (पाम)।

भाज घव [भाज्] चमकना। बह.
भाजत, भव (विसे ३४७७)।

भाज पुं [दे] भाव, वह बड़ा पृच्छा जहाँ
भर भुल जाता है भट्टी जाया भाजसमाणा
मग्गा उत्ततवाहुया महेय' (धर्ववि १०४,
सण)।

भाडय न [भाटक] भाग, किराया (सुर ६,
१५७)।

भाडिय वि [भाटनित] भाडे पर लिया
हुआ, 'वोहिथ भाडिय विवड' (सुर १३,
३५)।

भाडिया } श्री [भाटिना, 'टी] भाडा,
भाडी } शुक्ल, किराया, 'एककाण देह
भाडि घटाहि सम रमेइ रमयोए', विला-
सिणीए वाऊण इच्छिय भाडि' (सुपा ३८२,
३८३, उवा)। 'कम्म न [कम्मन्] बैल,
गाड़ी आदि भाडे पर देने का काम—घग्गा,
'भाडियकम्म' (स ५०, या २२, पडि)।

भाण देखो भण = मण। सङ्क. भाणिऊण,
भाणिऊण (पिठ ६१५, उव)। क.
भाणियव्य (ठा ४, २, सप्त ८४, मग-
उवा, वण, शीप)।

भाण देखो भावण (धोप ६६५, हे १,
२६७, कुमा)।

भाणिअ वि [भाणित] १ पढाया हुआ,
पाठित, मण्यस्तव्याद भाणिम' (रयण

६८) । २ कहनाया हुआ, 'मयलखितरामाए रसो भञ्जाए माणिको मंती' (सुपा ५८७) ।

भाणु पुं [भाणु] १ सूर्य, रवि (पत्र ४६, ३६ पुष्प १६४, विरि ३२) । २ विरण (प्राप्ता) । ३ मयवास धर्मनाथ का पिता, एक राजा (सम १५१) । ४ छी, एव द्वात्राण्यो, शत्रु की एक द्वात्राण्यो (पत्र १०२, १५६) । ५ कण्ठ पुं [कण्ठ] राखल बा एव धनुज (पत्र ७, ६७) । ६ मई छी [मंती] राखल की एक पत्नी (पत्र ७४, १०) । ७ माणिकी [माणिनी] विद्या-विशेष (पत्र ७, १३६) । ८ मित्त न [मित्र] उज्जयिनी के राजा वलमित्त का छोटा भाई (जात, विचार ४६४) । ९ वैग पु [वैग] एक विद्यापथ का नाम (महा-सण) । १० सिरी छी [श्री] राजा वलमित्त की बहिन (जात) ।

भाभ देखो भमाड = भयम् । भाभेह (हे ४, ३०) । बवह, भाभिज्जत (भा ४५७) । ६. भाभेयठन (वी ७) ।

भाभण न [भ्रामण] धुमना, किराना (सम्मत १७४) ।

भाभर न [भ्रामर] १ मधु विशेष, झमरी का बनाया हुआ मधु (पत्र ४) । २ घुं, दोपन धान्द बा एव भेद (मिग) ।

भाभरी छी [भ्रामरी] १ घोणा विशेष (छाया १, १७—पत्र २२६) । २ प्रसिद्धा (कण्ठ, मवि) ।

भाभिअ वि [भ्रामिन] १ धुमना हुआ (वि २, ३२) । २ भ्रान्त किया हुआ, भ्रातचित्त किया हुआ, 'मत्तूरामाभिओ ह्व' (मन २७, धर्मवि २३) ।

भाभिणी छी [भागिनी] भाग्यवन्ती (हे १, १६०, कृपा) ।

भाभिणी छी [भागिनी] १ कौन-सीवा छी । २ छी, महिला (धा १२, गुर १, ७६, सुपा ४७४, सम्मत १६३) ।

भाय देगो भाउ (कृपा) ।

भायत देगो भा—भी ।

भायण पुंन [भाजन] १ पात्र । २ भाजार । ३ योग्य 'भायण-भायण' (ह १, १३, २९७), 'वि विव पत्ता ते पुनभायण, ठण्ठ वीविह सहल' (सुपा ५६७, कृपा) ।

भायण न [भाजन] भाकाश, गयन (मय २०, २—पत्र ७७६) ।

भायणंग पुं [भाजनाङ्ग] कलत्रवृक्ष की एक जाति, पाव देनेवाला कलत्रवृक्ष (पत्र १०२, १२०) ।

भायणिज्ज देखो भाङ्गिज्ज (धर्मवि १२; काल) ।

भायमाण देखो भाअ = भायम् ।

भायर देखो भाउ (कृपा) ।

भायल पुं [दे] जाय धरव, उत्तम जाति का घोडा (दे ६, १०४, पाव) ।

भाउ पुं [भाउ] १ बोका, गुरल (कृपा) । २ भाउवाली बस्तु, बोकनानी चीज (या ४०) । ३ काम संपादन करने का व्यवहार, 'भाउकसविपुले जो नियमार ठवित्तु नियपुले, न य साहेह सवण्ड' (प्राप्ता २७) । ४ परिमाण-विशेष, 'साउमवीम इका' नासद भाउं पुस्त जह सहसा' (प्राप्ता १५१) । ५ परिपद, धन-भाय्य प्रादि का सबह (पदह १, ५) । ६ गतो ॥ [मशस्] भाउ भाउ के परिमाण से, 'दसदबनमल्लं कुम्भगवो य भाउगवो म' (छाया १, ८—पत्र १२५) । ७ वह वि [वह] बोमा दोनेवाला (या ४०) । ८ वह वि [वह] वही धर्म (पत्र ६७, २६) ।

भाउई छी [भाउती] भापा, बाणी, वाय, बचन (पाव) । देगो भाउही ।

भाउदाय } न [भाउदाज] १ गोर विशेष, भाउदाय } जो पाठम गोर की एक छाया है (कण्ठ, मुग्न १०, १६) । २ घुं, भाउदान गोर में उलान, 'जे गोमया ते कगा ते भाउदा' (१ हाभा), 'ते धर्मिण' (ठा ७—पत्र ३६०) । ३ विजि विशेष (धोयपा ८४) । ४ मुनि-विशेष (वि २३६, २६८, ३६३) ।

भाउय देगो भाउ (सुपा १४, ३८२) ।

भाउह न [भाउन] १ भाउनधर्म, भाउ-नेत्र (उता) 'जहा निरति ठण्ठणिकानी पनगई नेसभाउह गुं' (दम ६, १, १४) । २ पाउरन गोरों का घुड, महापाउल (पत्र १०५, १६) । ३ दंत-विशेष, जिनमें पाउरन-गोरल घुड का बल्लेन है, क्यज-मुनि प्रदीन महापाउल (कृपा उर ३, ८) । ४ नरल

मुनि प्रणीत नाट्य-शास्त्र (प्रणु) । २ वि. भाउतवर्ष-सम्बन्धी, भाउतवर्ष का (ठा २, ३—पत्र ६६), 'वत्त सवुटु ह्मे हुने मूरिया पमत्ता, तं जहा—भाउहे वेव सूरिए, एवए वेव सूरिए' (मुग्न १, ३) । ३ 'रित्त न [क्षेत्र] भाउतवर्ष (ठा २, ३ टी—पत्र ७१) ।

भाउहिय वि [भाउरीय] भाउत सवन्धी, 'जा भाउहियकहा ह्व भीमगुणनवनसरणि-सोहिल्या' (सुपा २६०) ।

भाउही छी [भाउती] १ सरस्वती देवी (वि २०७) । २ देखो भाउई (स ३१६) ।

भाउरि वि [भाउरि] भाउरी, भाउवाना, पुद (हे ४, २० छाया १, ६ पत्र—११४) ।

भाउरि वि [भाउरि] १ भाउवाना, भाउरी (उप पु १३४) । २ जिस पर नार लदा गया हो वह, भाउ-मुक्त किया गया (मुप २, २५) ।

भाउरिआ देगो भञ्जा (हे २, १०७, उता, छाया २) ।

भाउरि वि [भाउरि] भाउरी, बोकनानी (धर्मवि १३७) ।

भाउरड पुं [भाउरड] वा घुं ह्व बीर एव शरीर याता पथी, पति विशेष (कण्ठ, धीन, महा, दे ६, १०८) ।

भाउल न [भाउल] लवाट (पाव) हुआ ।

भलु री [दे] देगो भलु री (पत्र १६०) ।

भाउ पुव [दे] मदन-वेदना, काम-गोहा (सति ४७) ।

भाउ सव [भाउय] १ वाहित करना, छुला-वान करना । २ बिना करना । भाउेद (मिगे ६८), मरिठि (मिह १२६), भाउग्न कवण' (दि १६), भाउेगु (पदा) । कर्म. भाउग्न (प्राप्ता ३३) । कट. भाउेन, भाउमाण, भाउेमाण (गुर ८, १८१, मुता २६२, उता) । धह. भाउेसा, भाउेजिउ (उता, महा) । ६. भाउेजिउ, भाउेजिउ, भाउेजिउ (कण्ठ; काना गुर १४, ८६) ।

भाउ घट [भाउ] १ दिवाना, मनना, मन्त्रुप हाना । २ कण्ठ होता, उपाता माउन हाना

‘सो वेव देवतोमो देवसहस्रोवसोहिमो रम्भो ।
सुहृ विरहिमाह दक्षिह भावहनरयोवसो मन्मथ ।’
(सुर ७, १६) ।

‘तं चिय द्म विमणं रम्भं
मणिवरणमरणविन्दुरियं ।

सुनप पुनं भावद

पट्टियालयच्छहं नाह ।’
(सुर ७, १७) ।

‘एम्भहि राहपमोहह जे भावद ॥ होठ’
(हि ४, ४२०) ।

भाव पु [भाव] १ पदार्थ, वस्तु ‘भावो वस्तु
परमार्थ’ (पाम विते ७०, १६६२) । २
मनिप्राय, धाराय (धावा पवा १, १, प्रासु
४२) । ३ चित्त विकार, मानस विवृति,
‘हावभावपवमिपविकलेविलासमनिप्रीहि’
(पहह २, ४—पत्र १३२) । ४ जन्म,
उत्पत्ति, निरोध वज्जं पदमममभावात् (विते
७१) । ५ पर्याय, धर्म, वस्तु का परिणाम,
द्रव्य की पूर्वापर भवत्वा (पहह १, ३,
उत्त ३०, २३, विते ६६, कम्म ४, १,
७०) । ६ धारणं युक्त पदार्थ विवर्तित क्रिया
का अनुभव करनेवाली वस्तु, पारमार्थिक
पदार्थ (विते ४६) । ७ परमार्थ, वास्तविक सत्य
(वित ४६) । ८ स्वभाव, स्वस्व (भणु, एहि) ।
९ भवन, सत्ता (विते १०, गउड ६७८) ।
१० ज्ञान, उपयोग (भासू १, विते ५०) ।
११ श्रेष्ठा (एणा १, ८) । १२ क्रिया,
धारण्यं (भणु) । १३ विधि वर्तव्योपदेश,
‘भावभावमणतो’ (सग ४१—पत्र ६७६) ।
१४ मन का परिणाम (पवा २, ३३ उव,
कुमा ७, ५५) । १५ सत्तरण बहुमान प्रेम,
राग (उव, कुमा ७, ८३, ८५) । १६ भावना,
किन्तु गउड १२०४, खनोप २४) । १७
नाटक की भाषा में विविध पदार्थों का चित्तक
परिणत (मनि १८२) । १८ आत्मा (सग १७,
३) । १९ भवत्वा, दशा (कणु) । ‘वेउ पु
[किन्तु] व्योतिष्कदेव विशेष, महाबह-विशेष
(ठा २, ३) । ‘य्य पु [‘र्य] वाल्य,
रहस्य (स ६) । ‘अ न्युय वि [अ]
भूमिप्राय की जाननेवाला (आवा, म्हा) ।
‘पाण पु [‘प्राण] ज्ञान अर्थात् आत्मा
का धनतरण गुण (पहह १) । ‘सञ्जय पु

[‘संयत] घमा, साधु (उन ७३२) । ‘साहु
पु [‘साधु] वही धर्म (सग) । ‘सव पु
[‘सग] यह घाल-गरिणाम, जिससे धर्म
का प्राणमन हो, ‘घातवदि जेण धम्म परि-
णामेणमणो ष विणोमो भावासवो’ (द्वय
२६) ।

भाव पु [भाव] महान् पाटी, समर्थ विद्वान्
(दत्त १, १ टी) ।

भावव वि [भावक] होनेवाला (प्राह ७०) ।
देखो भावग ।

भावइआ वी [दे] घामिन-गृहिणी (दे ६,
१०४) ।

भावग वि [भावक] वातर पदार्थ, गुणायाम
वस्तु (भासू ३) । देखो भावज ।

भाउड पु [भावक] स्वभाव-व्याप्त एक जैन
गृह्य (सी २) ।

भाउण पु [भावन] १ स्वभाव-व्याप्त एक
वर्णिक (पठम ५, ८२) । २ नीचे देखो
(खनोप २४, वि ६) ।

भाउणा वी [भाउना] १ वातना, गुणायान,
संस्कार-रक्षण (धीव) । २ अनुपेक्षा, वित्तन ।
३ धर्माधीन (धीपमा ३, उव, प्रासू ३७) ।

भावि वि [भावित] भविष्य में होनेवाला
(कुमा, सग) ।

भाविज वि [दे] गृहीत, उपात (दे ६,
१०३) ।

भाविज न [भाविक] एक देव विमान (सम
३३) ।

भाविज वि [भावित] १ वासित (पहह २,
५, उत १४, ५२, भग, प्रासू ३७) । २
भाव-युक्त, ‘जिणपवयणतिवभावियमइस्त’
(उव) । ३ शुद्ध, निर्दोष (इह १) । ‘एष
वि [‘त्सम] १ वासित अन्त करणवाला
(धीव, एणा १, १) । २ गुह्य विशेष,
अधोराय का ठेकवाँ या अग्रहर्षाँ प्रहूँ
(सुज १०, १३, सम ५१) । ‘प्या वी
[‘त्मा] भगवन्त वर्णनाय की मुख्य शिष्या
(सम १५२) ।

भाविज न [भावेन्द्रिय] उपयोग, ज्ञान
(भग) ।
भाविज वि [भाविन, भविज] भविष्य में
होनेवाला, भवत्यभावी, ‘अहं भाविजोहृ-

पवासउद्धिया मिवाए’ (गुण ६), ‘एव्यत-
रम्म भाविजनियजिणुत्तविह्मिगमियमणे’
(गुण ७५) ।

भाविल वि [भावयन्] भाव-युक्त, पण-
धीर्ष भावलाई भाविल्लो पचमहवमार्ण’
(खनोप २४) ।

भाविसस देखो भविस्स, ‘भाविससमयमवत-
भाववालीयोमण विमत्त’ (गुण ८६) ।

भावुक वि [दे] वयाय, मित्र (सति ४७) ।

भावुग [वि] [भावुक] धर्म के धर्म की
भावुय [जिस पर धर्म ही सत्य ही वह
वस्तु (धीव ७७३, सवाध ५४) ।

भास सक [भाप] बहना, बौलना । भावइ,
भासति (सग, उव) । भवि, भासिस्सामि
(भग) । बह, भासत, भासमाण (धीव,
भग, वित १, १) । कवह, भासिजमाण
(भग, सम ६०) । सह, भासिस्सा (भग) ।
ह, भासिजज्व (भग, म्हा) ।

भास सक [भास] १ बौलना । २ लगना,
भासुप होना । ३ प्रकाशना, चमकना । भासइ
(हि ४, २०३), भासए, भासति, भासति
(मोह २६, मत ११०, सुर ७, १६२) ।
बह, भासत (पञ्चु ५४) ।

भास सक [भीषय] बरना । भासइ (पामा
१४७) ।

भास पु [भास] १ पति विशेष (पहह १,
१, दे २, २२) । २ क्षीत, प्रकाश ‘मान-
रिजइ कयावि । उवोतावरणमिनि ज-
यच्छप्रकाशो व’ (विते ४६८ भवि) ।

भास पु [भस्मज] १ ग्रह विशेष, ज्योतिष्क
देव विशेष (ठा २, ३ विचार ५०७) । २
भस्म राज (एणा १, १, पहह २, ५) ।
‘रासि पु [‘राशि] ग्रह विशेष (ठा २, ३,
कण) ।

भास व [भाष्य] व्याख्या-विशेष, पय बह
टीका (चैय १, उव ३५७ टी, विचार ३५२,
सम्यक्लो ११) ।

भास देखो भासा (कुमा) । ‘ण्यु वि [अ]
भास के गुण-धीव का जानकार (धर्म
६२५) । ‘व वि [‘वत्] वही धर्म (सग
१, १३, १३) ।

भासग वि [भापक] बोलनेवाला, वक्ता, प्रतिपादक (विशे ४१०; पंचा १८, ६; ठा २, २—पत्र ५६)।

भासण न [भासन] चमक, दीप्ति, प्रकाश, 'वरमन्त्रमासणाय' (श्रीप)।

भासण ॥ [भापण] ध्वन, प्रतिपादन (महा)।

भासणया } छी [भापणा] ऊपर देखो (उप
भासणा } ५१६, विशे १४७, उब)।

भासय देखो भासग (विशे ३७४, पण १८)।

भासय वि [भासक] प्रकाशक (विशे १०४)।

भासल वि [दे] दीप्त, प्रगलित (दे ६, १०३)।

भासा छी [भापा] १ योली, 'बहुतरसेदो-भासाविसाए' (श्रीप १०६; कुभा)। २ बाय, बाणी, गिरा, वचन (पाप)। 'जडू वि [जड] बोलने की शक्ति से रहित, दूक' (भाव ४)। '४जसित छी [पवांसि] दुहलो को भापा के रूप में परिणम करने की शक्ति (भा ६, ४)। 'विजय पु [विचय] १ भापा का निर्णय। २ दृष्टिवाद, बाह्यता केन संग-अन्य (ठा १०—पत्र ४६१)।

'विजय पु [विजय] दृष्टिवाद (ठा १०)। 'समिअ वि [समित] बाणी का संयम-वाला (भा)। 'समिअ छी [समिति] बाणी का संयम (मम १०)। देखो भास'।

भासा छी [भास] प्रकाश, छातीक, दीप्ति (पाप)।

भासि वि [भापिन्] भाषक, वक्ता (धर्मवि ५२, भवि)।

भासिअ वि [भापित] १ उब, बयित, प्रतिपादित (मग, भापा, सण, भवि)। २ न, भाषण, उक्ति (भासम)।

भासिअ वि [भापिन्, *क] वक्ता, बोलने-वाला (भवि)।

भासिअ वि [दे] दत्त, प्राप्त (दे ६, १०४)।

भासिअ वि [भासिन] प्रकाशवाला, प्रकाश-युक्त (निष् ११)।

भासिर वि [भापिन्] वक्ता (सुग २३८; सुण)।

भासिर वि [भास्वर] दीप्त, देखीयमान (कुभा)।

भासिअ वि [भापावन्] भाषा-युक्त, बाणी-युक्त (उत्त २७, ११)।

भासीक्य वि [भसीकृत] जलाकर राख किया हुआ (उप ६८६ टी)।

भासुंड धप [दे] बाहर निकलना। भासुंडइ (दे ६, १०३ टी)।

भासुखि छी [दे] नि सरण, निर्गमन (दे ६, १०३)।

भासुर वि [भासुर] १ भास्वर, दीप्तिमान, चमकता (सुर ६, १८४, सुग ३३, २७२, कुप ६०, धर्मस १३२६ टी)। २ चोर, भीषण, भयंकर, 'चोरा दाएणभासुरमहरन-ललकभीमभीसयण' (पाप)। ३ एक देव-विमान (सम १३)। ४ अन्य विशेष (भवि ३०)।

भासुरिअ वि [भासुरि] देखीयमान किया हुआ, 'भासुरसूणभासुरिसंभा' (भवि २३)।

भि देखो 'विभ (भावा)।

भिअपइ भिअकइ } देखो बहरसइ (पि २१२, वइ)।
भिअसइ

भिइ देखो भइ = भुति (पत्र)।

भिउ पुं [भुरा] १ स्वनाम-व्याप्त श्रवि-विशेष। २ पर्वत शिखर। ३ शुरु-ग्रह। ४ महादेव, शिव। ५ बमदग्नि। ६ ऊँचा प्रदेश। ७ भुज का वंछन। ८ देखा, रहित (हे १, १२८, वइ)। 'कच्छ न [कच्छ] नगर-विशेष, मंडीच (पत्र)।

भिउड न [दे] संग विशेष, शरीर का अवयव-विशेष (?)। 'भुत्तल लुण्ठनउडे धामे पिठुमि उचरोवे' ब', तो लोचन व सनने चित्तको मोहिअए पाणको' (धर्मवि ५१)।

भिउडि छी [भुत्तुटि] १ भौं भंग, भौं का विकार (विवा १, ३, ४)। २ पुं. भपान् नमिनाथ का शायन-देव (संति ८)।

भिउडिय वि [भुत्तुटि] जितने भी चढ़ाई हो वह (एना १, ८)।

भिउडो देखो भिउडि (मुभा)।

भिउर वि [भिदुर] विनष्ट (भावा)।

भिउव्व पुं [भागेव] मृग मुनि का वंछन, पवित्रान्न-विशेष (श्रीप)।

भिग वि [दे] कृष्ण, काला (दे ६, १०४)। २ नील, हरा। ३ स्वीकृत (पट्)।

भिग पुं [भृङ्ग] १ भ्रमर, मधुहर (पत्रम ३३, १४८, पाप)। २ पक्षि-विशेष (पण १७—पत्र ५२६)। ३ बीट-विशेष। ४ निश्चित संगार, नीयता (एना १, १—पत्र २७, श्रीप)। बल्लभ की एक जाति (मम १६)। ६ छन्द-विशेष (पिग)। ७ लार, उपपति। ८ मंगरा का पेड़। ९ पत्र-विशेष, भारी (हे १, १२८)। 'गिभा छी [गिभा] एव पुटारिणी (इक)। 'एपभा छी [प्रभा] पुनरिखी-विशेष (जं ४)।

भिगारी छी [भृङ्ग] एव पुनरिखी, धानी-विशेष (इक)।

भिगार } पुं [भृङ्गार, *क] १ भाजन-
भिगारक } विशेष, भारी (पण १०४
भिगारा } भीषण। २ पक्षि-विशेष, निमा-
रवतमेरवदे' (एना १, १—पत्र ६५),
'भिगारनदीएवदियलेव' (एना १, १—
पत्र ६३, पण ११, श्रीप)। ३ स्वर्ण मय
जल-पात्र (हे १, १२८; जं २)।

भिगारी छी [दे. भृङ्गारी] १ बीट-विशेष, बिचरी, मझो (दे ६, १०४, पाप, उत्त ३६, १४८)। २ मरार, डोच (दे ६, १०४)।

भिजा छी [दे] धम्मन्, नातिरा (मम १०, ४, २, ८)।

भिडिया छी [दे. भृत्वाकी] भंडा का गाछ (उप १०३१ टी)।

भिडिमाल } पुं [भिन्दिपाल] रत्न विशेष
भिडिमाल } (पण १, १, श्रीप, पत्रम ८,
१२०, व ३८४, सुग, हे २, ३८, शाय)।

भिद या [भिद] १ भेदना, तोटना। २ विनाश कला। विदर विदए (महा. पट्)। भवि. सेचई, निरिस्थिति (हे १, १७१; कुभा: पि २३२)। ३ धर्म. विग्रह (भावा. पि २४६)। ४. भिद्व, भिदमाग (ग ३६, पि २०६)। ५. भिद्व, भिजमान (मे ४, १२; ठा २, १. भा ६; मग. उता. एना १, ८. विशे १११)। ६. भिजन्,

भित्तुणं, भिदिअ भिदिऊण, भेत्ताण, भेत्तण (रंभा; उत ६, २२; नाट—विक् १७, पि ५८६; हे २, १४६; यहा) । हेऊ भिदित्तण, भित्तुं, भेत्तुं (पि ५७८; वण; पि ५७४) । क. भिदियव्य (पह २, १), भेअव्य (मे १०, २६) ।

भिदण न [भेदण] वण्डन, विण्डे (सुर १६, ५६) ।

भिदणया ली [भेदना] ऊपर देवो (सुर १, ७२) ।

भिदिवाल (ही) देवो भिडिवाल (प्रा ८७) ।

भिमल देवो भिचमल (सुपा ८१; १६५, पि २०६) ।

भिमलिय वि [विह, वलित] विहस निवा हुपा; 'हा वज्र भाग्यो विकल्यो य (१ म) मयवाहनिमलियो' (धर्मपि ८०) ।

भिमसार पुं [भिम्भसार] देवो अंभसार (बीम) ।

भिभा ली [भिम्भा] देवो अंभा (राज) ।

भिभिसार पुं [भिम्भिसार] देवो अंभसार (डा ६—पत्र ४५८; पि २०६) ।

भिभी ली [भिम्भी] वाय-विशेष, दडा (डा ६ टी—पत्र ४६१) ।

भिक्ख सक [भिक्ख] भील भागना, मापमा करना । भिक्ख (संनौय ११) । वड, भिक्खमाणा (उत १४, २६) ।

भिक्ख न [भेक्ख] १ भित्ता, भील । २ भित्ता-समुह (भीमा २१६, २१७), 'न कज्जं मम भिक्खेण' (उत २५, ४०) । 'जीविअ वि [जीविअ] भील से निर्वाह करनेवाला, भिक्खमाणा (प्रा ६, पि ८४) ।

भिकर' देवो भिक्खा (पि ६७, कुप १८३, धर्मपि ३८) ।

भिकखण न [भिखण] भील भागना, याचना (धर्मपि १०००) ।

भिकखा ली [भिक्षा] भील, याचना (उव; सुपा २७७, पिग) । 'यर वि [चर] भिमुक (कण) । 'यरिया ली [वर्या] भित्ता के लिये पर्यटन (भावा, बीप; धोपाया

७४; उवा) । 'लामिय पुं [लामिक] भिमुक-विशेष (बीप) ।

भिकराय } वि [भिक्षाक] भित्ता भागने-
भिकराय } वाला, भित्ता से उपरि-निर्वाह
करनेवाला (डा ४, १—पत्र १४; भावा २, १, ११, १; उत ५, २८; वण) ।

भिकख पुंभी [भिक्ख] १ भील से निर्वाह करनेवाला, साधु, भुनि, संन्यासी, ऋषि (भावा; सव २१, कुपा; सुपा ३४६, प्रायु १६६), 'भित्तणणीतो य तमो भिक्खु ति निर्दिशियो समए' (धर्मपि १०००) । २ बीड संन्यासी, 'नमं वरं न गच्छद वरणिअं भिक्खुमपर्यायं' (सुधन ११) । ली. 'णी (भावा २, ५, १, १; वण्ड ३, ११; कुप १८८) । 'पडिमा ली [प्रतिमा] साधु का प्रतिग्रह-विशेष, भुनि का वट-विशेष (प्रा; बीप) । 'वडिआ ली [प्रतिमा] साधु का वट; साधु के निमित्त, 'से भिक्खु का भिक्खुणी वा से जं पुण वरं पाएउआ मसंवरं भिक्खु-पडिवाए कीयं वा धोय वा रत्तं वा' (भावा २, ५, १, ४) ।

भिकखुंड देवो भिक्खुंड (राज) ।

भिकराड देवो भिक्खुंड (सुपु २४) ।

भिकरारि (पण) वि [भिक्षारारि] भित्ताय, भील भागनेवाला (पिग) ।

भिगु देवो भिड (पठम ४, ८६; धोप ३७४) ।

भिगुडि देवो भिगुडि (पि १२४) ।

भिग पुं [भृगु] १ दास, सेवक, नौकर (प्रा. सुर २, ६२, सुपा ३०७) । २ वि, बच्छी तरह पोषण करनेवाला (विपा १, ७—पत्र ७५) । ३ वि. मरछीय, पोषणीय (पह १, २—पत्र ४०) । 'भाव पुं [भाद] नौकरी (सुर ४, १४६) ।

भिच्छ' देवो भिक्ख' (पि ६७) ।

भिच्छा देवो भिक्खा (पा १६२) ।

भिक्खुंड वि [दे. भिक्खुण्ड] १ भित्ताय, भित्ता से निर्वाह करनेवाला । २ कुं. बीड साधु (सामा १, १५—पत्र १६३) ।

भिज न [भेय] कर-विशेष, वण्ड-विशेष (विपा १, १—पत्र ११) ।

भिज्जा देवो भिज्जा (डा २, २—पत्र ७१; सव ७१) ।

भिजिय देवो भिजिय (पण) ।

भिज्जा ली [अभिज्या] गुडि, लोम (वण) ।

भिजिय वि [अभिजित] लोम वा विपय, पुनर (प्रा ६, ३—पत्र २३१) ।

भिट्ट सक [दे] भेटता । वमं. 'वहुविहमिट्ट-णएहि भिट्टिअ लदमाणेहि' (तिरि ६०१) ।

भिट्टण न [दे] भेट, उपहार; पुत्रपत्नी में 'भेटयु' (तिरि ७५६; ६०१) ।

भिट्टा ली [दे] ऊपर देवो (तिरि १६२) ।

भिड सक [दे] भिडना—१ भित्ता, घटना, घट जाना । २ लडा, मुठमेड करना । भिड (महि), निर्दिष्ट (तिरि ४५०) । वड. भिडंत (उर ३२० टी; मवि) ।

भिडण न [दे] लडाई, मुठमेड; 'लोमेशुहड-विडिणकलंय' (सुपा ५६६) ।

भिडिय वि [दे] भिडने मुठमेड की हो वह, लडा हुपा (यहा. मवि) ।

भिणासि पुं [दे] पक्षि-विशेष (पह १, १ पत्र ८) ।

भिण्य देवो भिन्न (गठ; नाट—पैत ३४) ।

'मरुट (भा) पुं [महाराष्ट्र] ध्वज का एक भेद (पिग) ।

भिच देवो भिच (संति ५) ।

भित्तण } न [दे. भित्तक] १ वण्ड, भित्तय } हुका । २ भावा हिस्सा (भावा २, ७, २, ८; ७) ।

भित्तर न [दे] १ द्वार, दरवाजा (दे ६, १०३) । २ बीतर, मंदर (पिग) ।

भित्ति ली [भित्ति] भील (गठ; कुपा) । 'संध न [सन्ध] नील—बीवार का प्रधान, 'वाएवि भित्तिये खयियं वणं सुत्तित्त-मल्लेण' (यहा) ।

भित्तिरुव वि [दे] टंक से ध्रिप (दे ६, १०२) ।

भित्तिल न [भित्तिल] एक देव-विमान (सम ३८) ।

भित्तु वि [भेत्त] भेदन करनेवाला (वव २) ।

भित्तुं } देवो भिद ।
भित्तुण }

भिद देवो भिद । निर्दिष्ट (भावा २, १, ६, ६) । मवि. भिदित्तंवि (भावा २, १, ६,

६)। नवि, मिदिस्संति (पाचा २, १, ६ ६; वि १२२)।

मिअ वि [मिअ] १ विदारित, खण्डित (छाया १, ८; उव; मय, पाच, महा)। २ प्रस्फुटित, स्फोटित (डा ४, ४; पण २, १)। ३ मय विहरण, विलक्षण (डा १०)। ४ परिवर्तक, उल्लिखित, 'जीवजड भावसो भिन्न' (वह १; प्राव ४)। ५ ऊन, वम, म्लान (मग)। 'वहा छो [कया] मेधुन-संबद्ध बात, यहुत्तापाव (मोय ६६)। 'पडपाइय वि [पिण्डपातिक] स्फोटित अन्न खादि लेने की प्रतिभावाला (पण २, १—पत्र १००)। 'मास पुं [मास] पचीस दिन का महीना (जीत)। 'मुहुत्त न [मुहुत्त] मल्लभूत, न्यून मुहुत्त (मग)।

मिअ पुं [भीयम] १ स्वनाम-ख्यात एक कुलवर्गीय क्षत्रिय, गणिय, भीष्म पितामह। २ साहित्य-प्रसिद्ध रस-विशेष, भयानक रस। ३ वि. भय-जनक, भयंकर (हे २, ४४; प्राङ् ६५; कुमा)।

मिअमल वि [विहृयल] व्याकुल (हे २, ५८; ६०; प्राङ् २४; कुमा; वज्रा १५६)।

मिअमलग न [विहृयलन] व्याकुल बनाना (कुमा)।

मिअमस मक [मास + यह = वामास्य] मर्यादित दीपना। वहु. मिअमसमाण, मिअमसमीण (छाया १, १—पत्र ३८, राम-वि ५५६)।

मिमोर पुं [दि. हिमोर] हिम का मय माग (१) (हे २, १७४)।

मियग देगो भयग (छण)।

मिहंम पुं [दि] मगल। देगो मिहिन (सुन इलाय पुत्र २८५ पृष्ठा)।

मिलगा देगो मिलगा (वस ६, ६२)।

मिलिा सन [दि] धर्म्य, धर्म, मानिअ करना। मिलिअ (छाया २, १३, २; ४; ५; निपू १७)। यद. मिलिअन (निपू १७)। प्रयो. मिलिअनेज (निपू १७) यद. मिलिअन (निपू १७)।

मिलिा } पुं [दि] पाच-विशेष, मयूर
मिलिगु } (रक्त पंखा १०० ७३)।

मिलिज पुं [दि] धर्म्य, म्पापद-मस्तक-वैल-मदं (सुम १, ४, २, ८ टी)।

मिलुंग पुं [दि. मिलुङ्ग] हिंसक पशु (राम १२४)।

मिलुगा छो [दि] कठी हुई जमीन, मृमि की रेखा—काट (पाचा २, १, ५, ५)।

मिल पुं [मिल] १ प्रनाय देश-विशेष (पत्र २७४)। २ एक प्रनाय जाति (पुर २, ४; ६, १४; महा)।

मिहमाल पुं [मिहमाल] स्वनाम-ख्यात एक प्रसिद्ध लणिय-वंश (जिने ११४)।

मिहायई छो [मिहानकी] मिलान का पेड़ (उप १०३१ टी)।

मिहिन वि [मिलिन] खण्डित, टोका हुआ, 'पंचवर्षययुगो पापारो मिलिमो जेण' (छव)।

मिस देगो मास = मास। मिस (हे ४, २०१; पड)। वहु. मिसंत, मिसमाण, मिसमीण (पत्र ३, १२७; ७५, ३७; छाया १, १; मीय; कुमा; छाया १, १; वि ५६२)।

मिस स [प्लुप] कलाना (प्राङ् ६५; पाचा १४७)।

मिस स [भायय] करना। मिसद, मिसेद (प्राङ् ६४)।

मिस न [भूरा] १ मयल, क्षत्रिय, क्षत्रिय-धर्म, 'मनंत्तियमिन्नदेहे य' (वि ५८३, उव १२० टी, वस ११, नवि)।

मिस देगो मिस (प्राङ् १५; पण १; सुप २, ३, १८)। 'कंदय पुं [कन्दय] एक प्रकार की खाने की मिट मलु (पण १७—पत्र ५३३)। 'मुणालो छो [मुणालो] कमलिनी (पण १)।

मिसअ पुं [मिपज] १ वैद्य, चिकित्सक (हे १, १८, कुमा)। २ मयान् मन्विनाय का प्रथम गणपति (पत्र ८)।

मिसंत देगो मिस = मास।

मिसंत म [दि] मनस (हे ६, १०५)।

मिसग देगो मिमअ (छाया १, १—पत्र १५४)।

मिसग स [दि] चंजना, शम्पना। मिपटोमि (पा ११२)।

मिसमाग देगो मिस = मास।

मिसरा छो [दि] मय्य पक्कने का जाल-विशेष (विपा १, ८—पत्र ८५)।

मिसान स [भायय] करना। मिलावेद (प्राङ् ६४)।

मिसिआ } छो [दि. वृषिका] मानव-विशेष,
मिसिगा } क्षत्रिय का मानव (दे ६, १०५; मय; कुप ३७३; छाया १, ८; उव ६४८ टी, मीय, सुप २, २, ४८)।

मिसिग देगो मिसग मिलिणमि (पा ३१२ म)।

मिमिगो छो [मिसिनी] कमलिनी, पयिनी (हे १, २३८; कुमा, पा १०८; राम ३१; महा पाप)।

मिसी छो [वृषी] देगो मिसिआ (पाप)।

मिसोल न [दि] दृश्य-विशेष (डा ४, ४—पत्र २८५)।

मिह } मक [मी] करना। मिह (पड)।
मी } क. भेजव्य (सुपा ५८४)।

मी छो [मी] १ मय, 'नो दंभी की दंभ सवार-मेगवसि' (पाचा)। २ वि. इलेराना, ओर (माचा)।

मीअ वि [मीव] बरा हुआ (हे २, १६३; ४, ५३; पाप, कुमा, वज्रा)। 'मीय वि [मीत] मयल बरा हुआ (पुर ३, १६५)। मीह छो [मीवि] बर, मय (पुर २, २३७; निरि ८३६, प्राङ् २४)।

मीअ वि [मीव] बरा हुआ (व ६४०)।

मीह वि [मिह] इलेराना, 'ता मरणमीदं निगदेह मं, मयसि' (वगु)।

मीड [दि] देगो मिड। वद, मीडिनि (पा) (नवि)।

मीडिअ [दि] देगो मिडिय (सुपा ११२)।

मीतर [दि] देगो मितर (कुमा)।

मीम वि [मीम] १ नरंज, भीपण (पाप; उप, पण १, १; जी ४४; प्राङ् १४४)।

७ पुं. एक पाण्डव, भीमसेन (पा ४२३)।

३ छानव-विनाय का दण्डित रिता का छट (डा २, १—पत्र ५२)। ४ मातरं का मायि बंजरी प्रसिद्धादित 'मरपय य जोये मरानिमे य मुदी' (मय १५४)।

५ छानव-वंश का एक राजा, एक महाराज

उत्त ६, ३. वि ५०७; हे २, १५; कुमा, प्राह ३४। हेरु. सुंजित्तय, भोचुं, भोत्तण (वि ५७८; हे ४, २१२; आवा). सुंजण (भप) (कुमा)। क. सुज, सुंजि-यव्य, सुंजियव, भोत्तव्य, सुत्तव्य, भोज, भोगा (तं ३३; धर्मवि ४१; उप १३६ टी, धा १६; सुपा ४६५; पिठमा ४५; सम्यत् २१६; शाया १, १; पवम ६४, ६५; हे ४, २१२; सुपा ४६५; पवम ६८, २२; हे ७, २१; भोप २१४; उप ७ ७५; सुपा १६३; भवि)।

सुंजग वि [भोजक] भोजन करनेवाला (पिठ १२३)।

सुंजण देखो सुंज = बुज।

सुंजण न [भोजन] भोजन (पिठ ५२१)।

सुंजणा छी, ऊपर देखो (पव १०१)।

सुंजय देखो सुंजग (सण)।

सुंजाव मक [भोज्य] १ भोजन बनाना।

२ पालन बनाना। ३ भोग बनाना। सुंजावेइ (महा)। बवक, सुंजाविज्जत (पवम २, ५)। संह. सुंजायिकण, सुंजायित्ता (वि ५८२)। हेरु. सुंजायेठं (पंचा १०, ४८ टी)।

सुंजायय वि [भोजक] भोजन करनेवाला (स २५१)।

सुंजायिअ वि [भोजित] जिनको भोजन कराया गया हो वह (धर्मवि १८; कुप १६८)।

सुंजिअ देखो सुंज = बुज।

सुंजिअ देखो सुत्त (मरि)।

सुंजिर वि [भोजक] भोजन करनेवाला (सुपा ११)।

सुंजि पुंछी [दि] सूरज, पराट; पुनराती में 'पुंज' (हे ६, १०६)। छी. 'छी', 'छिणो' (हे ६, १०६ टी मरि)।

सुंटीर [दि] ऊपर देखो (हे ६, १०६)।

सुंभल न [दि] भयमान (बम्म १, ५२)।

सुंहदि (भप) देखो भूमि (हे ४, १६३)।

सुह. पर [सुह] सुंभना. खान का

रोतना। सुहद (पा १६४ घ)।

सुहण पुं [दि] १ खान, कुछा। २ पय

मात्रि का मान (हे ६, ११०)।

सुकिअ न [सुक्ति] खान का खब्द (पाध, वि २०६)।

सुकिर वि [सुक्ति] सुंभनेवाला (कुमा)।

सुक्खा छी [दि. वुमुखा] सूख, छुषा (दि

६, १०६; शाया १, १—पत्र २८; महा,

उप ३७६; धारा ६६; सम्मत १५७)।

'लु वि [वत्] सूखा (धर्मवि ६६)।

सुकिअअ वि [दि. वुमुक्ति] सूखा, सुपातुर

(पाध, कुप १२६; सुपा ५०१; उप ७२८

टी; स ५८३, ३२६)।

सुगसुग मक [सुगसाय] 'सुग' 'सुग'

भावज बनाना। वरु. सुगसुगेंत (पवम

१०५, ५६)।

सुग वि [सुग] १ मोटा हुमा, वरु, कुटिल

(शाया १, ८—पत्र १३३; उवा)। वि.

मन, हूडा हुमा (शाया १, ८)। ३ दारप,

जला हुमा. 'कि मरक बोविएणं एवंहिएरा-

भवमिगुमए' (उप ७६८ टी)। ४ भूना

हुमा; 'षणउण कुण' (कुप ४३२)।

सुज (भप) देखो सुंज। सुजइ (सण)।

सुजग देखो सुभग (मरि)।

सुजग देखो सुभग = सुभग (धर्मवि १२४)।

सुज देखो सुंज सुजइ (वद)।

सुज पुं [भूज] १ बुझ-विशेष। २ न. बुझ-

विशेष की छाव (बप्पू, उप ७ १२७; सुपा

२००)। 'पत्त, 'वत्त न [पत्र] वही धर्म

(भावम. नाट, विरु ३३)।

सुज देखो सुंज।

सुज वि [भूयस्] प्रवृत्त, धनत्व (धीव,

वि ४१४)।

सुजिय वि [दि सुभ] १ भूना हुमा धाम्य।

२ पुं धाना, भूना हुमा पर (पणह २ ५—

पत्र १४८)।

सुजो मक [भूयस्] विर, पुन: (उवा,

सुपा २०२)।

सुभण पुं [भूण] १ छी का गर्भ। २ बावह,

लिरु (सति १७)।

सुत्त वि [सुत्त] १ मज्झ (शाया १, १,

उवा. प्रमू ३८)। २ जिनने भोजन किया

हो वद. 'जे पायरी न सुत्ता' (सुप १, १३;

कुप १२)। ३ मेवित. ४ मनुपुन: 'अम

ताय मए भोगा भुत्ता विमफलोवमा' (उत्त १६, ११; शाया १, १)। ५ न. भजण, भोजन, 'हासमुत्तासियाणि य' (उत्त १६, १२)। ६ विप-विशेष (ठा ६)। 'ओमि वि [भोगिम्] जिनने भोगो का सेवन दिया हो वह (शाया १, १)।

सुत्तवत्त वि [सुत्तयत्त] जिनने भोजन

किया हो वह (वि १६७)।

सुत्तव्य देखो सुंज।

सुत्ति छी [सुत्ति] १ भोजन (धम्म १७;

मरक ८२)। २ भोग (सुपा १०८)। ३

आजोविदा के लिए दिया जाता गांव, क्षेत्र

आदि गिरास, 'उग्गेणी नाम पुपे दिना

वत्त य कुमारसुत्तीए' (उप २११ टी, कुप

१६६)। 'वाल पुं [वाल] गिरासदार

(धर्मवि १५४)।

सुत्तु वि [भोक्त्तु] भोगनेवाला (धा ६,

संतोप ३५)।

सुत्तण पुं [दि] सुय, नीकर (हे ६, १०६)।

सुत्थल पुं [दि] बिल्ली को फंसा जाता भोजन

(बप्पू)।

सुम देखो अम = अम। सुमइ (हे ४, १६१;

सण)। संह. सुमिवि (भप) (सण)।

सुम'] छी [भू] मी, मात के ऊपर

भूमगा] की रोम राजि (मग उवा; हे २,

भुमया] १६७; मीप, हुमा. पाप, पप

भुमा] ७३)।

सुमिअ देखो अमिअ = अमत्त, 'सुमिअयू'

(हुमा)।

सुम्मि (भप) देखो भूमि (विग)।

सुरहिअ छी [दि] छिरा, श्रृगाली, पिदा-

ल्लि (हे ६, १०१)।

सुरहिय] नि [दि] वदन्ति, प्रति-तिष्ठ;

मरुहिय] 'प्रतिपुरिस्सुवेदि पतिपया वि-

मरुहिय' वए सतो' (सुपा २२६; हे ६,

१०६)। 'सुहुर (१८) सुहिये' (उप

२६३, सुह ६० सुहोँ गा० २८२)।

सुह पर [भूज] १ बुझ होना। २

जितना। ३ भूतना; 'सुत्तयि ते मग्गा मग्गा

हा पमया सुहदो' (पाप १६; हे ४,

१७७)।

भुल वि [भ्रष्ट] भूला हुआ, 'वामपथो वि पथोति भुलो' (यु १५३, सुपा १२४, ५१६, वप्पु)।

भुलविअ वि [भ्रशिन] भट किया हुआ (कुमा)।

भुल्लि वि [भ्रशिन] भूलनेवाला, 'भयण-भुल्लि'रदुल्लिविमल्लिगुमहल्लितक्खमल्लोहि' (सुपा १२३)।

भुल्लुकी [वि] देखो भल्लुकी (वाय)।

भुव देखो हुव = भू। भुरइ (पि ४७५)।
भुवदि (शी) (वावा १४७)। भूका, भुवि (भग)।

भुव देखो भूभ = भुज (भवि)।

भुवइद देखो भुअइद (वि ५, ७१)।

भुवण न [भुवन] १ जगत् सोच (जी १, सुपा २१, कुमा २, १५)। २ जीव, प्राणी, 'भुवणाययवाणल्लिभस' (कुमा)। ३ साकारा (प्राप् १००)। 'करोहणी की

['क्षोभनी] विद्या विशेष (सुपा १७४)।

'शुक्र पु [शुक्र] जगद् का शुक्र (सुपा ७५)।

'नाह पु [नाह] जगद् का आता (उप ४ ३५७)।

'पाल पु [पाल] विष्णु की बारहवीं शताब्दी का मोरमिर का एक राजा (मुनि १०८६६)।

'यधु पु [यधु] १ जगद् का बधु। २ जितदेव (उप २११ १)।

'सोह पु [शोभ] सातवें बलदेव के दोहाक एक जैन मुनि (पठम २०, २०५)।

'लकाकार पु [लानार] रावण का एक पट्ट हस्ती (पठम ८२, १११)।

सुवणा की [सुवना] विद्या विशेष (पठम ७, १४०)।

सुवका (मा) देखो भुक्का (प्राङ् १०१)।

सुस देखो सुस। 'सुसरसी इवा सुसरसी इवा' (भग १५)।

सुसुदि की [दे. सुसुण्डि] लज्ज विशेष (सण)।

भू देखो भुव = भू। भोमि (वि ४७६)।

सह भोत्ता, भोदृण (शी) (हे ४, २०१)।

भू की [भू] भौ, प्राँस के ऊपर की रोम-तकि, 'रसा भूसाता' (सुपा ५७६, आ १५, सुपा २२६, कुमा)।

भू की [भू] १ श्रुतिगी, परती (कुमा, पुत्र ११६, जीवस २७६, तिहि १०४४)।

२ प्रत्युक्ताय, पापिव शरीरवाता जीव (वम्म ४, १०, १६, ३६)।

'आर पु [दार] सूक्त, सुमर (निराव १)।

'कंन पु [कान्त] राजा, नर-रूपि (या २८)।

'गोल पु [गोल] गोलाकार भूमरुद्ध (वप्पु)।

'चद पु [चन्द्र] श्रुतिगी का चन्द्र, भूमि-चन्द्र (वप्पु)।

'चर वि [चर] भूमि पर चलने फिरेनेवाला मनुष्य आदि (उप ६८६ टी)।

'चल्लत्त पुन [चल्लत्त] वनस्पति विशेष (दे १, ६४)।

'तणम देखो 'यणय (राज)।

'धण पु [घन] राजा (या २८)।

'धर पु [धर] १ राजा, नररूपि (धर्मवि ३)।

२ पर्यंत, पहाड़ (धर्मवि ३, कुप्र २६४)।

'नाह पु [नाथ] राजा (उप ६८६ टी, धर्मवि १०७)।

'मह पु [मह] भद्रोरण का सप्तार्द्धवर्ष मुहूर्त (सम ५१)।

'यणय पुन [यणय] वनस्पति-विशेष (पणए १—पत्र ३४)।

'रुह पु [रुह] वृक्ष, पेड़ (गवड, पुष्प ३६२, धर्मवि १२८)।

'व पु [प] राजा (उप ७२८ टी, ती ३, मृ ६६, काल)।

'वह पु [पति] राजा (सुपा ३६, विग)।

'वाल पु [वाल] १ राजा (गवड, सुपा ५६०)।

२ व्यक्ति वाचक नाम (भवि)।

'वित्त पु [वित्त] राजा (आ २८)।

'वीड न [वीड] भूतल, भूमि तल (सुपा ५६१)।

'हर देखो 'धर (सण)।

भू १ पुं [भूयस्] कर्म बन्ध का एक भूय १ प्रकार (कम्म ५, २२, २३)।

'गार पु [कार] वही धर्म (कम्म ५, २२)।

देखो भूओगार।

भूअ पु [दे] यत्रवाह, यन्त्र-वाहक पुरुष (दे ६, १०७)।

भूअ वि [भूत] १ वृत्त, सजात, बना हुआ।

२ अतीत, जुलरा हुआ (पठ्. पिग)। ३ प्राप्ति, लब्ध (शाय १, १—पत्र ७४)। ४ समान, सरस, सुख 'तसमूह' (सुम २, ७, ७, = टी)। ५ वास्तविक, यथार्थ, सत्य 'भूयणवि विप सुणेहि' (गवड) 'भूयणसत्य-गवी' (वम्मत्त १३६)। ६ विचमान, 'एव

जह स हत्थो सतो भूयो तदन्तहाभूयो' (विसे २२४१)। ७ उपमा, धीपम्य। ८ तादर्थ्य, तदर्थ-भाव, 'धोवम्मे तादर्थे य द्वाज एहिण्व भूयसदो ति' (वायव १२४)। ९ न. प्रकृत्यर्थ, 'उम्मत्तगमू' (ठा ५, १)। १०

पुं. एक देव-नाति (पणए १, ४, इक, शाय १, १—पत्र ३६)। ११ पिशाच (पाम्. दे ४, २५)। १२ समुद्र-विशेष (देवद २५५)। १३ द्वीप विशेष (सुज १६)। १४ पुन. जन्तु, प्राणी, 'पाणाई भूयाई जीवाई सत्ता'।

'भूयाणि या जीवाणि वा' (प्राचा १, ६, ५, ४, १, ७, २, १, २, १, १, ११, वि ३६७)।

'हरियाणि भूमाणि जितवाणाणि' (सुम १, ७, ८, खवर १३६)। १५ श्रुतिगी आदि पाँच

द्रव्य, महाभूत (स १६५), 'किं मल्ले पव भूय' (विसे १६८६)। १६ वृष, पेड़, वनस्पति (प्राचा १, १, ६, २)।

'इद पुं [इन्द्र] भूत देवों का इन्द्र (पि १६०)।

'गह पुं [ग्रह] भूत का आदेश (जीव ३)।

'गाम पु [ग्राम] जीव-समूह (सम २६)।

'रथ वि [रथ] यथार्थ वास्तविक (गवड, पठम २८, १४)।

'विण्णा देखो 'विन्ना (पदि)।

'दिन्न पु [दिन्न] १ एक जैन आचार्य (एदि)। २ एक चारणाल-नायक (पहा)।

'विस्सा जो [विस्सा] १ एक भग्न कुल की भत। २ एक जैन साध्वी, महर्षि स्तूतभद्र की भगिनी (कप्प)।

'मडलपयि-भत्ति न [मण्डलप्रयिभत्ति] नाट्य विधि का एक भेद (राज)।

'लिपि की [लिपि] लिपि-विशेष (सम ३५)।

'बहिंसा की [वितसा] १ एक इन्द्राणी (जीव ३)।

२ एक राजधानी (शिव)।

'वाइ, 'वाइय, 'वादिन [वादिन, 'वादिन] १ एक देव-नाति (इक, पणए १, ४, धीप)। २

वि भूत ब्रह्म का उपाचार करनेवाला, मन्त्र-तन्त्रादि का ज्ञानकार (सुज १, १४)।

'वाय पु [वाय] १ यथार्थवाद। २ दृष्टिवाद, नारदवा जैन धर्मग्रन्थ (ठा १०—पत्र ५६१)।

'वेज्जा, 'वेज्जा की [विज्जा] आनुवंशिक का एक भेद, भूत निग्रह विद्या (पिपा १, ४—पत्र ७५ टी)।

'णद पु [णन्द] १ नामकुमार देवों का दक्षिण दिशा का इन्द्र

(६४, ठा २, ३—यन ८४) । २ राजा
कृष्ण का पट्टहस्ती (मग १७, १) ।
‘गण्डपद्म धुं [निन्दप्रभ] भूतानन्द इन्द्र
वा एव उत्पात-मरति (राज) । ‘नाय देवो
‘वाय (निरे १५१, पय ६२ टी) ।

भूगण्य धुं [दे] जोती हुई छत-भूमि में किया
जाता यम (दे ६, १०७) ।

भूआ छो [भूता] १ एक जैन साध्वी,
महावि स्मृत्यन्तरी एव मणिली (कल्प; पडि) ।
२ इन्द्राणी की एक पायवली (जोन ३) ।

भूह छो [भूति] १ पर्वत, पान, दीनत-
‘ता परसेरि गुं जिद्विस्ता भ्रुविभूदयन्मारे’
(गुर १, २२१, गुवा १४८) । २ मन्म,
राज, ‘भारमगाणमनुमनमृष्टुष्टुमसविष्कि-
रसीए’ (मा ४०८; ग ६; गडड) । ३ महा-
देव के संग की मन्म, ‘भूहभूमिर्ग हृत्तरीर’
य’ (गुवा १४८, ३६३) । ४ बुद्धि (गुम
१, ६, ६) । ५ जीन-रसा (उग १२, ६१) ।
‘कर्म धुं [कर्मन्] शरीर धादि की रसा
के नि ए किया जाता मन्मवेतन-भूतवयभादि
(पर ७३ टी; वृ १) । ‘वगण, ‘पक्ष नि
[मन्] १ जीन-रसा की बुद्धिपाता (उत
१२, ३१) । २ ज्ञान की बुद्धिपाता, धनत-
ज्ञानो (गुम १, ६, ६) । देवो ‘भूह’ ।

भूहं धुं [भूहन्] भूतो का द्रव्य (नि
१६०) ।

भूहट्ट नि [भूयिष्ठ] क्षति प्रभूत, धाव्य
(निरे २०१६, नि १४१) ।

भूहट्टा छो [भूहटा] कट्टरी जीवि (आरु) ।

भूहं देवा भूह (वा २—११२) । ‘कर्मिय
वि [कर्मिय] भूति-मर्म बनेरसाग (मीग) ।

भूओ ध [भूयम्] १ निर मे, दुा (पउम
१८, २८, पय २, १८) । २ बाह्यार, निर
निर, ‘भूयो य संहर्तय’ (टा १५१) ।
‘गार धुं [वार] र्म-यय का एक प्रकार,
कोरी कर्म द्रुति के रूप के का होरासा
धरित-दाति-मन्म (पय २, १३) ।

भूओर धुं [भूओर] गुर-रिणे (गुम १६) ।

भूओपादाध वि [भूओपादाध] ‘व’ ओरो
की निग बनेरसाग (मय १०, ६१) ।

भूहं, (मा) देवो भूमि (दे ४, ११२ डि) ।

भूण देवो भूण्य (सनि १७; सम्मत ८६) ।

भूज देवो भूज = भूज (आइ २६) ।

भूप देवो भूय (वव १) ।

भूमआ देवो भूमया (आप्र) ।

भूमणया छो [दे] स्वयन, धाच्छादन (वव
१) ।

भूमि छो [भूमि] १ धृति, धरती (पउम
६६, ४८; गडड) । २ शेष (कुमा) । ३
स्वयन, जमीन, जगद्, त्यान (आप्र, उगा,
कुमा) । ४ बाल, समय (कल्प) । ५ भाल,
मजिस्ता, तना, ‘सत्तभूमिय पादावमरु’
(महा) । ‘कप धुं [कम्प] भूतन्म (पउम
६६, ४८) । ‘मिह, ‘घर न [गृह] गोषे
वा घर, भुंरपरा, लह्याना (था १६, महा) ।

‘गोयरिय नि [गोचरिक] स्वयन, मनुय
मादि (पउम ५६, ५२) । छो, ‘रो (पउम
७०, १२) । ‘नद्धत न [नद्धत] वनस्पति-
विशेष (दे) । ‘तल न [तल] पया-गड,
भूतन (गुर २, १०५) । ‘देय धुं [देय]
काटल (मोह १०७) । ‘कोह धुं [कोहट]
वनस्पति-विशेष (जी ६) । ‘काटो छो
[कोटी] एक प्रकार का बहरीना जन्तु,
‘पामवण कुणमाणो दट्टो दुम्तमि भूमि-
कोटो’ (गुवा ६२०) । ‘भाग धुं [भाग]
भूमि प्रदेश (महा) । ‘रुह धुं [रुह]
भूमिरोट, वनस्पति-विशेष (था २०, पर
४) । ‘वह धुं [वडि] राजा (टा वृ
१८६) । ‘वाल धुं [वाल] राजा (गडड) ।
‘सुअ धुं [सुअ] मंगन द्रव्य (पुव १४६) ।
‘हर देवो ‘घर (महा) । देवा भूमी ।

भूमिआ छो [भूमिआ] १ तना, मंजित,
पान (महा) । २ नाटक में नाच का देवातर-
पट्टा (महा) ।

भूमिद धुं [भूमिद] राजा, नरनि (गम्मत
२१७) ।

भूमिविस्तार धुं [वि-भूमिविस्तार] ठा
डार, काह का पद (दे ६, १०७) ।

भूया देवो भूय (ये १२, ८८; कट्ट, निर
४४८, पउम १४, १०) । ‘गुहगहूह न
[गुहगहूह] एक विद्याभ-नरा (इ८) ।
‘सुयध धुं [सुयध] राजा (मेर ८६) ।

भूमीस धुं [भूमीरा] राजा (था १२) ।

भूमीसर धुं [भूमीश्वर] राजा (गुवा ५०७) ।

भूयिठ देवा भूहट्ट (हाथ १२१) ।

भूरि वि [भूरि] १ प्रउर, धाव्यन, प्रभूत
(गडड, कुमा, गुर १, २४४, २, ११४) ।
२ न. स्वर्ण, तोना । ३ धन, दीनत (साप
८४) । ‘स्मन धुं [अवस] एक पद-
बंधीय राजा, भूरिपया (माट—वेणो १७) ।

भूम गव [भूपय] १ राजावट बनता ।
२ छोनावा, भर्तृहृत् बनता । भूमेमि (कुमा)

वट. भूमयन (रंभा) । इ. भूम (रंभा) ।

भूमण न [भूयण] १ धनवार, गट्टा (पाप;
कुमा) । २ राजावट । ३ छोना-नराण (पवह
२, ४, सण) ।

भूमा छो [भूया] ऊपर देवो (दे ३, ८;
कुमा) ।

भूसिअ नि [भूपिअ] महिद्व, धनहट्ट (मा
५२०, कुमा; बाम) ।

भूहरी छो [दे] निरन-रिणे (गिरि
१०२२) ।

भे घ [भोस्] धामागण-भूयन धाम्य
(मीर) ।

भेज धुं [भेज] १ प्रकार, ‘गुहनिमाह
इवादि’ (जी ४, ५) । २ विरोध, पार्षत्य
(ठा २, १, गडड, कण्) । ३ एक राज-
नीति, इन्द्र, ‘दाणमाणोसवरोरि नामर्मेमाह’
य’ (आप्र ६३) । ‘मामर्मेमेवरा-वाणली-
गुनरगणवविनि’ (दावा १, १—यन
११२) । ४ धार, धापाज, ‘बहु डि मन्मद-
रिदरगणवविनि’ (आप्र ६३) । ५ विर
विता-मर्मा (कट्ट) । ६ मर्मा का सारा-
दान, बीच का मात

‘पदिसीमा उर उर धम्यमर्मेनु य ।
अवरा (वा) वा बरलुगता

गुहमन्म मर्मा य द।’
(गुम १, १) ।

६ विरोध, वृद्धाण, रिदरगण (मीर,
कण्) । ‘वर नि [वर] रिदरगण-
(मीर) । ‘वाय धुं [वाय] धन के बीच
में धन (गुम १, १) । ‘ममावम नि
[ममावम] मेर द्रव्य (कट्ट) ।

७ विरोध, वृद्धाण, रिदरगण (मीर,
कण्) । ‘वर नि [वर] रिदरगण-
(मीर) । ‘वाय धुं [वाय] धन के बीच
में धन (गुम १, १) । ‘ममावम नि
[ममावम] मेर द्रव्य (कट्ट) ।

८ विरोध, वृद्धाण, रिदरगण (मीर,
कण्) । ‘वर नि [वर] रिदरगण-
(मीर) । ‘वाय धुं [वाय] धन के बीच
में धन (गुम १, १) । ‘ममावम नि
[ममावम] मेर द्रव्य (कट्ट) ।

९ विरोध, वृद्धाण, रिदरगण (मीर,
कण्) । ‘वर नि [वर] रिदरगण-
(मीर) । ‘वाय धुं [वाय] धन के बीच
में धन (गुम १, १) । ‘ममावम नि
[ममावम] मेर द्रव्य (कट्ट) ।

१० विरोध, वृद्धाण, रिदरगण (मीर,
कण्) । ‘वर नि [वर] रिदरगण-
(मीर) । ‘वाय धुं [वाय] धन के बीच
में धन (गुम १, १) । ‘ममावम नि
[ममावम] मेर द्रव्य (कट्ट) ।

११ विरोध, वृद्धाण, रिदरगण (मीर,
कण्) । ‘वर नि [वर] रिदरगण-
(मीर) । ‘वाय धुं [वाय] धन के बीच
में धन (गुम १, १) । ‘ममावम नि
[ममावम] मेर द्रव्य (कट्ट) ।

१२ विरोध, वृद्धाण, रिदरगण (मीर,
कण्) । ‘वर नि [वर] रिदरगण-
(मीर) । ‘वाय धुं [वाय] धन के बीच
में धन (गुम १, १) । ‘ममावम नि
[ममावम] मेर द्रव्य (कट्ट) ।

भेअण वि [भेदक] भेद-कारण (घोष, भाग) ।

भेअण न [भेदन] १ विदारण, विच्छेदन-
‘कु तस्म सत्ताप्याताभेयेले मृण सामर्थ्य’
(विजय ७४६, प्राप् १४०) । २ भेद, फूट
बरना (पय १०६) । ३ विनाश, ‘कुतस्यण-
मित्तभेयणारारिणाधो’ (संदु ४६) ।

भेअय देतो भेअण (भाग) ।

भेअव्व देतो भिद ।

भेअव्व देता भी = भो ।

भेइल्ल वि [भेदय] भेद वाता, ‘मामत्त-
माणपणा पत्तेयं मट्ठमट्ठेइल्ला’ (संघोष
२२, पंच ४, १) ।

भेअर देतो भिअर (प्राया, ठा २, ३) ।

भेअी छो [भिण्डा, ण्डी] गुण्ड-विशेष, एक
जाति की यनपति (पह १—पय १२) ।

भेमल देतो भिमल (सि ६, १७) ।

भेमलिद (ही) देतो भिमलिअ (वि २०६) ।

भेक देतो भेग (दे १, १४७) ।

भेकरास पुं [दे] रासत रिपु, रासत का
प्रतिपत्ती (कुप ११२) ।

भेग पुं [भेक] मँवर (दे ४, ६, धर्मसं ५१७) ।

भेच्छं देतो सिद ।

भेज देतो भिज (विपा १, १ टी—पय
१२) ।

भेज { वि [दे] भोव, डरपोक (दे ६,
मेखल्य } १०७, पद } ।
भेजल्ल

भेज वि [दे. भेर] भोव, कातर (हि १,
२५१, दे ६, १०७, कुमा २, ६२) ।

भेइल देतो भेलन (मुच्य १००) ।

भेत्तु वि [भेत्त] भेदन कर्ता (प्राचा) ।

भेत्तुआण
भेत्तु
भेत्तुण
} देतो भिद ।

भेद देतो भिद । संह. भेदिअ (मुच्य १४३) ।

भेद देतो भेअ (भय) ।

भेअ देतो भेअय (वेणी ११२) ।

भेअणया देतो भेअण (उप ३ ३२१) ।

भेदिअ देतो भेद = भिद ।

भेदिअ वि [भेदित] भिन्न किया हुआ
(भाग) ।

भेरंड पुं [भेरण्ड] देश-विशेष (राज) ।

भेरन व [भेर] १ भय, डर (वण १) । २
पुं. राजस मादि भयकर प्राणी (सुम १, २,
२, १४, १६) । ३ देतो भेरय (पउम
६, १८३, भेरय १००, घोष; मड; वि ६१) ।
‘णंद पुं [‘नन्द] एक योगी का नाम
(वज्र) ।

भेरि } छो [भेरि. ‘री] वाज-विशेष, बड़ा
भेरी } (वण, विग, घोष, सण) ।

भेरंड पुं [भेरण्ड] माहंड वसी, दो मुँद
घोर एक शरीरवाला पतित-विशेष (दे ६,
५०) ।

भेरंड पुं [दे] १ बिचर, बीछा, ररापद
पशु-विशेष (दे ६, १०८) । २ निजिय सर्व,
‘सविस्ती हम्मद सणो भेरंडो ताव कुचई’
(सामु १६) ।

भेरुवाल पुं [भेरुवाल] कुप-विशेष (राज) ।

भेल व [भेल्य] मिथ्यु बरना, मिनावा ।
गुनराती में ‘भेल्यपु’ । संह. भेलइत्ता (वि
२०६) ।

भेलय पुं [दे. भेलरु] देहा, उडार, गीरा
(दे ६, ११०) ।

भेलविय वि [भेलिअ] मिथित, युक्त: ‘लो
भयभेलवियदिट्ठी वत्तं ति नम्रमाणी’ (पवु) ।

भेली छो [दे] १ माभा, हुकूम । २ देहा,
नींझ । ३ बेटी, दासी (दे ६, ११०) ।

भेस व [भेपय] डराना । भेवइ, भेवइ
(पाया १४८, प्राड ६४) । कर्म, भेतिगए
(धर्मवि ३) । बड. भेसंत, भेसयत (पउम
५३, ८६; या १२) । कवड. भेसिज्जव
(पउम ४६, ५४) । सड. भेसेऊण (कात,
वि ५८६) । हेड. भेसेड (सुप १११) ।

भेसग पुं [भोप्पक] हविमणी का पिता,
कौटिल्य-नगर का एक राजा (पाया १,
१६; उप ६४८ टी) ।

भेसज न [भेपज] भोपय (पउम १४, १४,
५६) ।

भेसज न [भेपज] भोपय, दवाई (उवा;
घोष, रंग) ।

भेसण देतो भीसण (भाग ७, ६—पय
३०७) ।

भेसण न [भोपण] डराना, विनाशन (घोष
२०१) ।

भेसणा छो [भोपणा] ऊपर देतो (पह २,
१—पय १००) ।

भेसयत देतो भेस ।

भेसाय देतो भेस । भेगावद (पाया १४८) ।

भेसाविय } वि [भोपिअ] बराया हुआ
भेसिअ } (पउम ४६, ५३; स ७, ४५;
सु २, ११०; थाय ६३ टी) ।

भो देतो भुंज । संह. भोजण, भोत्तण
(पाया १४८, संति ३७) । हेड. भोड
(पाया १४८, संति ३७) । ड. भोत्तव
(संति ३७), भोअव्व (पाया १४८) ।

भो घ [भोस्] सामान्य-न्योतव द्रव्य
(प्राह ७६, उवा. पीप, जी ५०) ।

भो व [भवत्] तुम, भाव । छो, मोई (उत
१४, २३; स ११६) ।

भोअ व [भोजय] खिलाता, पाजन
बराना । भोवइ, भोयए (सम्मत् १२५, सुम
२, ६, २६) । संह. भोइत्ता (उत ६, ३०) ।

भोअ पुं [दे. भोग] भावा, किराया (दे ६,
१०८) ।

भोअ देतो भोग (म ६५८; पाय, गुवा
४०४, रमा ३२) ।

भोअ पुं [भोज] उगमिनी नगरी का एक
सुप्रसिद्ध राजा (रमा) । ‘राय पुं [‘राज]
वही धर्म (सम्मत् ७५) ।

भोअ वि [भोत] भ्रम से उपपन्न (धर्मसं
४१) ।

भोअग वि [भोजरु] १ खातेवाला (विड
११७) । २ पाजन-कर्ता (बड १) ।

भोअडा छो [दे] कच, लंगोठ, ‘लोकथं
भोवडालोय’ (विह १) ।

भोअण न [भोजन] १ नखण, खाना । २
यात मादि खाद्य वस्तु (पाया, ठा ६, उवा.
प्राप् १८०, स्वय ६२, सण) । ३ लगातार
सतरह दिनों का उपवास (संघोष ५८) । ४
उपभोग, ‘विस्मयवादि कामभोगादि समारंभति
भोयणए’ (सुम २, १, १७) । ‘रुक्ख पुं
[‘रुख] भोजन देतेवालो एक वस्तुधन-जाति
(पउम १०२, ११६) ।

भोजल (घप) पुं [दे. भोल] छन्द-विशेष
(पिण) ।

भोल्य न [दे] पापेय-विरोध, प्रकल्प-प्रयुक्त
पापेय (दे ६, १०८) ।

भोवाल (मग) देवो भू-वाल (मवि) ।
भोहा (मग) देवो भू = भू (मिग) ।

भ'त्रि (मग) देवो भंति = भान्ति (दे ४,
१६०) ।

॥ हम तिरिपाइअसदमहण्यो नमि भमाराइसदसंभल्यो

चोसदमो छरयो समतो ॥

म

म पुं [म] शीष्ट-स्वाभाव्य व्यञ्जन वर्ण विरोध
(मग) ।

म घ [मा] मत, नहीं (दे ४, ४१८, कुमा-
पि ६४; ११४; मवि) ।

मअआ छी [मृगया] शिकार (मवि ५५) ।

मइ छी [मृति] मीत, मरण (सुर २, १४३) ।

मइ छी [मति] १ बुद्धि, ज्ञेया; मनीषा;
'मेहा मई मणीसा' (पाम; सुर २, ६५;
कुमा; प्राप् ७६) । २ ज्ञान-विरोध, द्वाविष्य

झीर मत से छपन होनैवाला ज्ञान (ठा ४,
४; छंदि, बम्म ३, १८; ४, ११; १४;
चिदे ६७) । ३ अज्ञान न [अज्ञान] विपरीत

मति-ज्ञान, मिथ्यादर्शन-युक्त मति-ज्ञान (मग
चिदे ११४, बम्म ४, ४१) । ४ 'नाण्य,
'पणाय, 'नाण न [ज्ञान] ज्ञान-विरोध

(चिदे १०७, ११४; ११७; बम्म १, ४) ।
'नाणावरण न [ज्ञानावरण] मति-ज्ञान

का आवरण कर्म (चिदे १०४) । ५ 'नाणि
वि [ज्ञानिन्] मति-ज्ञानवाला (मग) ।

'पत्तिया छी [पात्रिका] एक जैन ग्रन्थि-
शास्त्र (कप) । ६ 'मंस पुं [अ'य] बुद्धि-

विनाश (मग, सुपा १३४) । ७ 'म, 'मव,
'वंत वि [मत्] बुद्धिमान (मोय ६३०,

आवा; मवि) ।

मई देखो मई = मृगी (कुम ४४) ।

मइअ वि [मत्] भव-युक्त, उन्मत्त (दे ७,
६६; गा ४६८, ४०६, ७६१) ।

मइअ देखो मा = मा ।

मइअ वि [दे. मलिक] १ मरिगत, तिरछत
(दे ६, ११४) । २ न. बोधे हुए बीजों के

आच्छादन के काम में लगनो एक बाहु-मय
वस्तु, देखो बा एक बीजाद; 'नंगने मइअ

सिवा' (दस ७, २८; पएह १, १—पन ८) ।
'मइअ वि [मय] व्यावरण-प्रसिद्ध एक

तठित-प्रत्यय, निवृत्त, बना हुआ; 'धम्ममइएहि
मइअरुंहे' (उन), 'जिएपनिमं सोलोमचंद-

णमइअ' (महा) ।

मइआ छी [मृगया] शिकार (सिरि १११५) ।

मईद पुं [मिन्द] राम का एक सेनिक, वानर-
विरोध (दे ४, ७०; १३, ८३) ।

मईद पुं [मृगेन्द्र] १ सिंह, वंचान (मरु
१०; सुर १६, २४२, गडह) । २ छत्र का

एक भेद (मिग) ।

मइअ देखो मईअ = मदीय (पइ) ।

मइतो ब [मत्] युक्त (मग) ।

मइमोहणी छी [दे. मतिमोहनी] मृग,
मदिरा, दालू (दे ६, ११३; पइ) ।

मइरा छी [मदिरा] ऊपर देखो (पाथ; दे
२, ११; ना २७०, ६६, ११३) ।

मइरेय न [मिरेय] ऊपर देखो (पाथ) ।

मइल वि [मलिन] मैला, मत-युक्त, धूल-चूरा
(दे २, २८, पाथ ना ३४; प्राप् २५;

मवि) ।

मइल पुं [दे] कलकल, कोलाहल (दे ६,
१४२) ।

मइल वि [दे. मलिन] गन-जैजहर, तेज-
रहित, कीटा (दे ६, १४२; दे ३, ४७) ।

मइल सक [मलिनय] मैला करना, मलिन
बनाना । यइअइ, मइअइ, मइलति, मइलेंति

(मवि; वच, पि ५५६) । ४ मई. मइलियजइ
(मवि; पि ५५६) । ५ मइ. मइलन (पडम २,

१००) । ६ मइलियकर (स ३६६) ।

मइल भक [दे. मलिनय] तेज-रहित
होना, कीटा लगना । मइ. मइलेंति (दे ३,

४७; १०, २७) ।

मइलणन [मलिनना] मलिन करना (गडह) ।

मइलणा छी [मलिनना] १ ऊपर देखो
(मोय ७८८) । २ मालिय, मलिनता । ३

कर्मक, 'तइह हुस मइलणं जैण' (सुर ६,
१२०), 'इमाए मइलणाए मइगुमि नमइआ-

खासने नगोहपायवे उम्वंभणैए भत्ताएयं
परिणवइउ बवसिभो बरकदेवो' (म ६४) ।

मइलपुत्ती छी [दे] पुनपत्ती, रजस्वला छी
(पइ) ।

मइलिअ वि [मलिनित] मलिन किया हुआ
(आवक ६५, पि ५५६; मवि) ।

मइल वि [मृत्] मरा हुआ । छी. 'डिया,
'एवं छलु सामी । पडमावती देवी मइलिये

दारियं पयाया । तए छं कएगइहे राया तीसे
मइलियाए दारियाए मोहरणं करति, कइए

लोइयाई मयकिआइ' (पाया १, १४—पन
१८६) ।

मइहर पुं [दे] घास-प्रधान, गाँव का मुखिया
(दे ६, १२१) । देखो मयहर ।

महं छी [दे] मरिदा, दाह (दे ६, ११३)।
महं छी [मृगो] हरिणी, हरिण की मादा,
हिस्ती (गा २८७; से ६, ८०; दे ३, ४६;
बुध १०)।

महं देवो महं = मति। 'म', 'य' वि [मन्]
गुडिवाला (रि ७३; १६६; जय १४२ टी)।

महं अ रि [मदीय] मेरा, अपना (पद्;
कुमा, ग ४७७; महा)।

महं वुं [दे] परंत, पड़ाह (दे ६, ११३)।

महं } रि [मृदु, 'क] कोमल, मुकुमार
महं } (दे १, १२७; पद्; सम ४१; मुर
३, ३७, कुमा)। छी, 'उई' (प्रा २८,
मह)।

महं अ रि [दे] दीन, मरीच (दे ६, ११४)।

महं अ रि [मृदुकिन] जो कोमल बना
हो (मह)।

महं देवो महं = मुहु।

महं वुं [मुपुद्] १ विष्णु, श्रीहृष्ण
(राम)। २ बाय-रिसेण, 'कुंडहिमरदेमरु-
विनिमात्रमुद्देण पूरणदेण' (गुर ३, ६८),
'महामहंरंदाणसंदि' (मग)।

महं देवो महं = मुहुन (पद्)।

महं वुं [मुपुद्] शिरो-भूषण, शिरीट,
गिरवेंग (पर ३८; दे १, १०७, प्राप्र,
कुमा, पाप, सीग)।

महं वुं [दे] धम्मिय, बचरी, दूट,
महं उ [पू] (गाम दे ६, ११७)।

महं देवो मोग (दे १, ११२; पद्)।

महं वुं [मुपुद्] १ पाप-मुल, पूरा की
बनी, गिर (कुमा)। २ दण्ड, कारना,
हीला। ३ कुप-पद। ४ कुप का वेद।
५ मी-रना-कु। ६ बोली-मुल। ७ धर्म-
पद-मुल, मोर (दे १, १०७; प्रा ७)।

महं वुं [दे] कु-रिसेण, धनमारी,
महं उ [पू] मांग, महं उ [पू] विविध (दे ६,
११८)।

महं देवो महं = मुहु (वि ४, ३३)।

महं वुं [मुपुद्] बोरी विरिजि बनी,
बंरिग, बीर (रंका २६)। २ दे, खटेर।

३ पामा 'महं, महं' (दे १, १०७;
मह)।

महं वुं [मुपुद्] सनुचना, संनुचित
होना 'महं वुं सनुचना' (पा ५)। बह,
महं वुं, महं वुं (दे ११, ६२; वि ४६१)।
महं वुं न [मुपुद्] संनोच, 'जं वेध
महं वुं सोमपाण' (दे २, १८४; वि
११०६; मह)।

महं वुं [मुपुद्] १ सनुचना। २
सह, संनुचित करना। बह, महं वुं
(माट—मातो ५४; वि १२३)।

महं वुं [मुपुद्] सनुचना हुआ,
संनोचिन (वजा १२६)।

महं वुं देवो महं वुं। बह, महं वुं
(वि १२३)। बह, महं वुं (पद् १३,
८३)।

महं वुं [मुपुद्] संनुचित करने-
वाला, 'हरिमविदेना विपत्तारमोय महं वुं
न सन्धी' (पद्)।

महं वुं देवो महं वुं (जय ५ ३२१;
गुवा २००; मति)।

महं वुं [दे] दृढ रस का उपपन्न
(दे ६, ११३)।

महं वुं [मुपुद्] महं-विदेण (पद् १,
१—पद् ८, पद् १—पद् ५०)।

महं वुं [मि] १ शिरीट, मुहुट, शिरो-
भूषण (गाम)। २ महं, मिर (कु ३८६;
कुमा, मति २२, मरु ३४)। ३ शिरो-
वेष्टन विवेध, एकतरफ की वमरी (पर ३८)।
४ गुल, बोरी। ५ संन वेध। ६ गु,
धोरी कु। ७ छे, मूनि, धुवरी (दे १,
११३; प्रा १०)।

महं वुं [मुपुद्] १ संनुचिन (गुर
३, ४३, गा ३२३; से १, ६२)। २ मुपु-
कार रिता हुआ (सीग)। ३ दण्ड विप
(कुमा)। ४ मुपु-गुर, विप-महं
(मर)।

महं देवो महं (दे २, ११३; कुमा)।

महं वुं [मुपुद्] महं-विदेण, मोर (माट,
दे १, १०१; पद् १, ३)। छी, 'री
(विग १, ३)। 'माट न [माट] दृढ
महं (पद् २०, ३)।

महं वुं [मुपुद्] दृढ छी, महं वुं
बहं-वी की माट (पद् १०, १४३)।

महं वुं [मुपुद्] १ विरल, रसि (गाम)।
२ माटि, सेन। ३ शिला। ४ सोमा (दे
१, १७१; प्राप्र)। ५ रातन वंश के एक
राना का नाम, एक रंता-पति (पद् ५,
२६५)।

महं वुं [मुपुद्] महं-वुं करना, उन्नत
करना। बह, महं वुं (दे २, १७)।

महं वुं [माट] मेरे पैना, मेरे
गुल, 'महं वुं माट' गुरिमाट' इमं
वेधोचि' (म ३३)।

मं (पद्) देवो मं = मा (पद्; दे ४, ४१८;
कुमा)। 'कार वुं [कार] 'गा' मय्य (डा
१०—पद् ४६५)।

मं वुं देवो महं (गाम)।

मं वुं [मुपुद्] महं-वुं, मुहु वीट-रिसेण
मुपुदवी में 'मं वुं' (जी १६)।

मं वुं [दे] महं-वुं, महं, महं। छी,
'मं, महं-वुं महं-वुं महं-वुं महं-वुं'
बहं (कु १८५)।

मं वुं [मुपुद्] महं-वुं, महं-वुं, महं-वुं
(मं १८)।

मं वुं [मुपुद्] 'मं' महं (डा १०—
पद् ४६५)।

मं वुं [मि] दृढ महं वुं (दे ८,
१५)।

मं वुं देवो महं = महं (दे २, मति)।
'मं वुं [मि] महं-वुं महं-वुं महं-वुं महं-वुं'
(पद् १—पद् ४६)।

मं वुं [दे] देवा महं (गा ७८१)।

मं वुं देवो महं = महं। बह, महं
(पद्)।

मं वुं [दे] महं वुं (दे ६, ११७)।

मं वुं [मि] महं-वुं महं-वुं महं-वुं महं-वुं'
पद् विपत्तार वीट-रिसेण महं वुं (पद्
१, १०१; पद् २, ४, ११३ २६;
गाम)। 'मं वुं न [मं वुं] १ महं वुं
महं। २ महं-वुं महं-वुं महं-वुं महं-वुं'
(पद् १०, १४३)।

मं वुं [मि] महं-वुं महं-वुं महं-वुं महं-वुं'
मुपुदवी महं-वुं (जय १४८ टी)। २
महं-वुं, महं-वुं (पद् १२, ८)।

मंरलि पुं [मंरलि] एक मंघ-भिद्यु, गोश-
सक का पिता । पुत्र पुं [पुत्र] गोशालय,
माशोवच मत वा प्रवर्तक एक मिथु जो पहले
मगवान महावीर का शिष्य था (अ १०;
उवा) ।

मंग सक [मङ्ग] १ जाना । २ साधना ।
३ जानना । ४ मंगिजए (विशे २२) ।

मंग पुं [मङ्ग] १ धर्म (विशे २२) । २ रजत-
द्रव्य-विशेष, रंग के काम में आता एक द्रव्य
(तिरि १०५७) ।

मंगइय देखो मगइय (निर १. १) ।

मंगरिया छी [दे] बाय विशेष (राय) ।

मंगल पू [मङ्गल] १ ग्रह विशेष, अगारक
ग्रह (इक) । २ न. कल्याण, शुभ, धेम, थैय
(कुमा) । ३ विवाह सून-वन्दन (त्वन् ४६) ।
४ विजय-शाय (ठा ३, १) । ५ विजय शाय के
विष किया जाता इष्टदेव-नमस्कार आदि शुभ
बाये । ६ विजय-शाय का कारण, दुरित-
नाश का मिमिक्त (विशे १२, १३; २२, २३;
२४; मीप, कुमा) । ७ प्रशंसावाक्य, छुआमद
(सूत्र १, ७, २५) । ८ इष्टार्थ-सिद्धि, वांछित-
प्राप्ति (कप्य) । ९ सप-विशेष, आयविल
(संयोष ५८) । १० लगातार आठ दिनों का
उपवास (संयोष ५८) । ११ वि. इष्टार्थ-
साधक, मंगल-कारक (प्राय ४) । 'उम्कय पुं'
[ध्वज] मार्गलिक ध्वज (अम) । 'रुर न'
[नूर] मंगल-वाद्य (महा) । 'दीव पुं'
[दीप] मार्गलिक दीप, देव-मन्दिर में आरती
के साथ किया जाता दीपक (धर्मवि १२३,
पंथा ८, २३) । 'पाठय पुं [पाठक]
माग, चारण (पात्र) । 'पाठिया छी
[पाठिका] वीणा-विशेष, देवता के आगे
सुख और सन्मया में बजाई जावी वीणा
(राज) ।

मंगल वि [दे] १ सहाय, सगान (दे ६,
११८) । २ न. भाग, भाग । ३ दौरा चलने
का एक साधन । ४ बन्दनमाला (विशे २७) ।

मंगलान पुन [मङ्गलक] स्वस्तिक आदि पाठ
मार्गलिक पदार्थ (सुपा ७७) ।

मंगलसम्मान न [दे] वह खेत जिसमें बीज
बीना बाकी हो (दे ६, १२६) ।

मंगला छी [मङ्गला] मगरान् श्रीगुप्तताप
की माता का नाम (सम १५१) ।

मंगलालया छी [मङ्गलालया] एक नगरी
का नाम (भाय १) ।

मंगलवइ पुं [मङ्गलापातिन्] सीमनस-पर्वत
का एक बूट (इत, जं ४) ।

मंगलवई छी [मङ्गलवती] महाविदेह वर्य
का एक निजय, प्रान्त-विशेष (ठा २, ३,
इक) ।

मंगलावच पुं [मङ्गलवर्त] १ महाविदेह
वर्य का एक विजय, प्रान्त-विशेष (ठा २, ३,
इम) । २ देव-विशेष (ज ४) । ३ न. एक
देव विमान (सम १७) । ४ पर्वत-विशेष का
एक शिखर (इत) ।

मंगलिअ [वि] [माङ्गलिक] १ मंगल-
मंगलीअ जनक 'समस्तजीवनोभयप्रतिम-
जन्मसाहस' (उत्तर ६०, अष्ट ३६; सुपा
७८) । २ प्रशंसा वाक्य बोलनेवाला, 'गुह्य-
गवीर' (सूत्र १, ७, २५) ।

मंगल वि [मङ्गल्य, माङ्गल्य] मंगल-नारी,
मंगल-जनक, मार्गलिक 'पदमाष्टो विष्णुगुण-
गणनिर्दिष्टमङ्गलविज्ञा' (वेदय १६०; शाखा
१, १, सम १२२, कप्य, धीप, मुर १, २३८,
१५, १७३; सुपा ५५) ।

मंगी छी [मङ्गी] पड़्य थाय की एक प्रवृत्ति
(ठा ७—पत्र ३६३) ।

मंगु पुं [मङ्गु] एक सुप्रसिद्ध जैन आचार्य,
आर्यमपु (सुदि, ती ७, साल २३) ।

मंगुल न [दे] १ अग्रिष्ट (दे ६, १४५, सुपा
३३८, सूक ८०) । २ पाप (दे ६, १४५,
बजा ८, गड, सूक ८०) । ३ पुं. चीर,
तस्कर (दे ६, १४५) । ४ वि. समुन्दर,
खराब (पात्र, ठा ४, ४—पत्र २७१, स
७१३; दस ३) । छी. 'छी. 'मंयुली खं'
समस्तस भगवतो महावीरस कम्मपएणुत्ती'
(उवा) ।

मंगुस पुं [दे] नकुल, न्यौला, मुनपरिसर-
विशेष (दे ६, ११८, सूष २, ३, २५) ।

मंय पुं [दे] कप्य (दे ६, १११) ।

मंच पु [मञ्च] १ बधान, उपासन (कप्य;
गठक) । २ शशिवशाल प्रसिद्ध दस योगों में
तीसरा योग, जिसमें चन्द्रादि मन्त्राकार से

रहते हैं (सुज १२—पत्र २३३) । 'इमंच
पुं [तिमिञ्च] १ मवान के ऊपर का मञ्च-
ऊपर ऊपर रखा हुमा मच (धीप) । २
शशिवशाल एक योग जिसमें चन्द्र; सूर्य
आदि नक्षत्र एक दूसरे के ऊपर रहते हुए
मंचों के आधार से मपस्थित होते हैं (सुज
१२) ।

मंची छी [मञ्चा] छटिया, छाटा 'ता भावह
मंचीए' (सुर १०, १६८, १६६) ।

मंछुलु (वाय) म [मञ्छु] शीम, जटो
(मवि) ।

मंजर पुं [माजरी] मजार, बिल्ला, बिलान
(दे २, १३२, भूमा) । देलो मंजार, मंजार ।
मंजरी छी [मञ्जरी] देलो मंजरी (मीप) ।
मंजरिअ वि [मञ्जरित] मञ्जरी-युक्त, 'मंजरिओ
क्यनिकरी' (स ७१६) ।

मंजरिआ [छी] [मञ्जरिका, 'री] नवीरस
मंजरी । बुदुनार पञ्जगाकार लता, बीर
(कुमा, गठक) । 'गुडी छी [गुण्डी] वल्ली-
विशेष, 'तोमिगुडी य मंजरीगुडी' (पात्र) ।

मंजार देलो मंजर (दे १, २६) ।

मंजिआ छी [दे] तुलसी (दे ६, ११६) ।

मंजिह वि [माजिह] मजीठ रंगवाला,
साव । छी. डी (कप्य) ।

मंजिहा छी [मजिहा] मजीठ, रंग-विशेष
(कप्य, दे ४, ४३८) ।

मंजीर न [मंजरी] १ मृग, 'हंसयं मेजर
' मंजरी' (पात्र, स ७०५; सुपा ६६) । २
छन्म-विशेष (पिंग) ।

मंजीर न [दे] मृदुलक, सिकल, जंजीर,
सिकद (दे ६, ११६) ।

मंजु वि [मंजु] १ सुन्दर, मनोहर (पात्र) ।
२ कोमल, सुकुमार (मीप, कप्य) । ३ प्रिय,
छट (राम, जं १) ।

मंजुआ छी [दे] तुलसी (दे ६, ११६,
पात्र) ।

मंजुल वि [मंजुल] १ सुन्दर, रमणीय, मधुर
(सम १५२, कप्य, विपा १, ७, पात्र, पिंग) ।
२ कोमल (खाया १; १) ।

मंजुसा [छी] [मंजुसा] १ विदेह वर्य की
मंजुसा । एक नगरी (ठा २, ३—पत्र ८०,
इक) । २ पिढारी, छोटी बंदक (सुपा ३२१,
कप्य) ।

मंठ वि [दे] १ शठ, लुचा, बदमाश । २ पुं.
नव्य (दे ६, १११) ।

मंड सक [मण्ड] भूषित करता, सजाना ।
मंडइ (पह), मंडति (वि ५५७) ।

मंड सक [दे] १ आगे घटना । २ प्रारम्भ
करना, गुजराती में 'मांडु' ; 'जो मंडइ रख-
भरपुखो खंयु' (भवि) ।

मंड पुन [मण्ड] रस, 'तयारखतरं च सुं
भयविहिरिमासे करेइ, मन्त्रस्थ सारहणें
गोपयमंडेण' (जवा) ।

मंडअ देखो मंडय = मण्डय (गाठ—शकु
६८) ।

मंडअ, पु [मण्डरु] पात्र-विशेष, माँडा,
मंडअ एक प्रकार की रोटी (उप ४ ११४,
पव ४ टी, कुप ४३, धर्मवि ११६) ।

मंडग वि [मण्डरु] निपुणक, शोभा बढ़ाने-
वाला, 'सति च.....जोइसमुहंअण' ।
(कल्प) ।

मंडग न [मण्डन] १ भूषण, भूषा (गठइ,
प्राप् १३२) । २ वि. विपुणक, शोभा बढ़ाने-
वाला (गठइ, कुमा) । ३ 'गी (प्राप् ६४) ।
'धाई' की 'धायी' धामुपण पहनानेवाली
दासी (आपा १, १—पत्र ३७) ।

मंडल पु [दे. मण्डल] घान, कुता (दे ६,
११४, पापः स ३६८; कुप २८०, सम्मत
१६०) ।

मंडल न [मण्डल] १ समूह, दूध (कुमा,
गठइ, सम्मत १६०) । २ देश (उप १४२
टी, कुप ४६; २८०) । ३ गोल, बुलाकार
पदार्थ (कुमा, गठइ) । ४ गोल आकार से
बेटन (ठा ३, ४—पत्र १६६; गठइ) । ५
चन्द्र-सूर्य आदि का चार-दोस (सम ६६३
गठइ) । ६ संसार, जगत् (उत ३१, ३,
४; ५; ६) । ७ एक प्रकार का कुट रोम ।
८ एक प्रकार की बुतावार बाद—बटु (पिड
६००) । ९ विम्व, 'अममद समिमस्तवतम-
दिएणरंअणह मणो' (गठइ) । १० सुकटों
का स्थान विशेष (राज) । ११ मण्डलाकार
परिभ्रमण (गुज १, ७; स ३४६) । १२
दमित रोम (ठा ७—पत्र ३६८) । १३ पुं.
नरनामान-विशेष (देवेन्द्र २६) । 'व वि
[यन्] मण्डल में परिभ्रमण करनेवाला

(गुज १, ७) । 'हिव पुं [विपि] मण्डलापीछ (भवि) । 'हिवइ पुं [विपिपवि] वही धर्म (भवि) ।

मंडल पुन [मण्डल] योद्धा का मुद्र समय का
आसन (वव १) । 'पवेस पुं [प्रवेश] एक प्राचीन जैन शास्त्र (सुदि २०२) ।

मंडलगा पुन [मण्डल्य] तलवार, खट्वा
(दे ३, ३४, भवि) ।

मंडलय पुं [मण्डलरु] एक भाग, चारह
कर्म-भागों का एक बाँट (मणु १५५) ।

मंडलि पुं [मण्डलिक] १ मण्डलाकार बसता
वायु, चक्र-वात, बवंडर (जो ७) । २ माण्ड-
लिक राजा, 'तेवीस तिलयकरा पुण्वमने
महत्तिरियाणो हात्या' (सम ४२) । ३ सर्व
की एक जाति (पह १—पत्र ५१) । ४
न, गोन-विशेष, जो कौरव गोन की एक
खास है । ५ पुंकी. उस गोन में उपन (ठा
७—पत्र ३८०) । 'पुरी की [पुरी] नगर-
विशेष, गुजरात का एक नगर, जो आजकल
की 'माडल' नाम से प्रसिद्ध है (कुमा ६५६) ।

मंडलिय वि [मण्डलिन] मण्डलाकार बना
हुआ, 'मंडलियचंरकोदंठपुकरकोसिरंदिपि-
चिरंदि' (कुमा ४; बज्जा ६२, गठइ) ।

मंडलिय वि [मण्डलिक, माण्डलिक] १
मण्डलाकारस्थाना । २ पुं. मंडल रूप से स्थित
पर्वत विशेष (ठा ३, ४—पत्र १६६, पह २,
४) । ३ मण्डलापीछ, सामान्य राजा
(आपा १, १, पण १, ४; कुमा, कुप
१२०, महा) ।

मंडली की [मण्डली] १ पंक्ति, घेणी, समूह
(दे ४, ७६; गण्ड २, ५६) । २ मध की
एक प्रकार की गति (मि १३, ६६; महा) ।
३ बुतावार मंडल—समूह (संबोध १७;
उप) ।

मंडलीअ देखो मंडलिय = मण्डलिक, 'तह
तनवरयेणाहिनकोसाहियमंडलीयसामते' (मुपा
७३; ठा ३, १—पत्र १२६) ।

मंडर पुं [मण्डप] १ विमान-स्थान । २
यही आदि से वेष्टित स्थान (जो ४; स्वय
३६; महा, कुमा) । ३ स्थान आदि करने का
गृह, 'हाणमंडवणि', 'भोयणमंडवलि' (कल्प;
पीर) ।

मंडर म [माण्डव्य] १ गोन-विशेष । २ पुंकी.
उस गोन में उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३६०) ।

मंडरिया की [मण्डपिका] छोटा मण्डप
(कुमा) ।

मंडव्यायण न [माण्डव्यायन] गोन-विशेष
(गुज १०, १६; इक) ।

मंडागण न [मण्डन] सजाना, विभूषित
कराना । 'धाई की [धायी] सजानेवाली
दासी (आपा २, १५, ११) ।

मंडायवि [मण्डक] सजानेवाला (निबू ६) ।

मंडि वि [मण्डि] १ भूषित (कल्प;
मंडिअ कुमा) । २ पुं. भगवान् महावीर के
पष्ठ गणधर का नाम (सम १६; विसे
१८०२) । ३ एक चौर का नाम (धर्मवि
७२; ७३) । 'कुच्छि पुन [कुच्छि] कैत्य-
विशेष (उत २०, २) । 'पुत्त पुं [पुत्त]
भगवान् महावीर का छठवाँ गणधर (कल्प) ।

मंडिअ वि [दे] रचित, बनाया हुआ । २
विश्रामा हुआ, 'संभारे हयविहिया महिलाप्पेण मंडिअ पाने ।
बज्जकति जायमाण्णा मयाणमाण्णावि बज्जमंति ॥'
(रयण ८) ।

३ आगे बरा हुआ, 'मह मंडिउ रणमरपुखो
खंयु' (भवि) । ४ धारण, 'एण मंडिउ
जण्हाविहिए तान' (भवि, सण) ।

मंडिल पु [दे] झरूर, पूषा, पक्षात्र-विशेष
(दे ६, ११७) ।

मंडी की [दे] १ विप्रादिका, डकनी (दे ६,
१११, पापः) । २ भन का मर रस, माँड़ ।
३ माँडी, कलप, लेई (माव ४) । 'पाहुडिया
की [प्रासुतिना] एक मित्रा-दोस, भन के
माँड भयना माँडी को दूसरे पात्र में रखकर
दो जाली मित्रा का प्रहण (माव ४) ।

मंडुक देखो मंडुअ (आ २८; पण १, १;
मंडुक; दे २, ६८; पण; पापः) ।

मंडुकलिया, की [मण्डूकिका, 'की' १ की
मंडुकिया } मंडर, भेनी, बाउरी (उप १४७
मंडुकी } टी, १३७ टी) । २ शाक-
विशेष, बनस्पति-विशेष (उप, पण १—
पत्र ३४७) ।

मंडुग पुं [मण्डक] १ मेढर, दादुर-
मंडूअ 'मंडुगदसिखो सखु ब्रह्मिणो होइ
मंडूक सुतस्स' (वर ७, पुमा) । २ धुर-
मंडूर विषेय, रघोनाक, कोनापठा । ३
नव विषेय (सवि १७), 'मंडूरो' (प्राप्त) ।
४ छन्द विशेष (पिंग) । 'प्युअ न [प्युत]
भेक की पात । २ पुं, ज्योतिष प्रसिद्ध योग
विशेष, भेव की गति की तरह होनेवाला
योग (सुत्र १२—पत्र २३३) ।

मण्डोर न [मण्डोर] मन्त्र विशेष (तो
१५) ।

मत सक [मन्त्र्य] १ पुत्र परामर्श करना,
समानता करना । २ आमन्त्रण करना । मतइ
(महा भवि) । भवि, मतही (भय) (पिंग) ।
बह, मतत, मतयत (सुपा ३५५, ३०७,
भाषि १२०) । सह, मतिअ, मतिऊण,
मतेऊण (भाषि १२४, महा) ।

मत पुन [मन्त्र] १ पुत्र बात, पुत्र भालो-
चना 'न बहिषज्ज एसिमेरिय मंत' (सिंरि
६२५), 'कुट्टिस्सइ वीहिंयं महिलानणकदिय-
मत व' (धर्मवि १३, कुमा) । २ जन्म, जाप
करने वाला प्रणवदिक ब्रह्मर पदवि (सुपा
१, १५, छा ३, ४ टी—पत्र १५६, पुमा-
मासू १४) । 'जमग पु [जुमग] एव
देव ताति (मन १५, ८ टी—पत्र ६५४) ।
'देयया की [देयता] मन्त्राधिप्रायक देव
(आ १) । 'न्तु वि [इ] मन्त्र का जानकार
(सुपा ६०३) । 'पाइ वि [वादिन्]
मानिक, मन्त्र की ही श्रुत माननेवाला (सुपा
५६७) । 'सिद्ध वि [सिद्ध] १ सय मन्त्र
जिस्के स्वाधीन हो यह । २ बहु-मन्त्र । ३
प्रधान मन्त्रवाला 'साहोयस्समयो बहुमयो
वा पहाणमयो वा मयो स मतसिद्धो'
(भावम) ।

मंत वि [मान्त्र] मन्त्र सम्बन्धी, मान्त्रिक ।
छो, मतो ठकारपविन्व' (धर्मवि २०) ।

मत देखो मा = मा ।

मतकख ॥ [दे] १ वज्रा, शरय । २ दुःख
(दे ६, १४१) । ३ अपराध 'न लेइ गयसिं
राम मतकख' (गठ) ।

मतण ता [मन्त्रण] १ पुत्र भालोचना, पुत्र
मसलहव (पत्रम ५, ६६, ८२, ४६) । २
मसलहव, परामर्श, सलाह 'मतणत्थं हवा-
रियो अण्णे जिणवत्तेत्ते' (कुप ११६) ।
३ जाप, 'पुणो पुणो मंतमत्तण सुहम (पेइय
७६३) ।

मतर देखो मंतर (धय) ।

मता म [मन्त्रा] जानकार (सुपा १, १०, ६,
मापा १, १, ५, १, १, ३, १, ३, पि
५८२) ।

मति पुं [मन्त्रिन्] १ मन्त्री, वमाय, दीवान
(धय, मीप, पाष) । २ वि मन्त्रा का जान
कार (पु १२) ।

मति पु [दे] विवाह गणव, जोरों, ज्योतिषवि
(दे ६, १११) ।

मतिअ वि [मन्त्रित] पुत्र रीति से भालो
चित (महा) ।

मतिअ देखो मत = मन्त्र्य ।

मतिअ वि [मान्त्रिक] मन्त्र का ज्ञाता,
'अतेण मतिमस्य व जालीए ताकिमो तुम' (धर्मवि ६, मन ११) ।

मतिण देखो मति = मन्त्रिन्, निरुद्धिमी मति-
णेहि कुसलेहि' (पत्रम २१, ६०, ६५, ८,
मापा १) ।

मंतु वि [मन्त्र] १ ज्ञाता, जानकार । २ पुं,
जीव, प्राणी (विसे ३५२५) ।

मंतु देखो मण्णु (दे २, ४४, पत्र, निवृ २) ।
'म वि [मन्त्र] कोषवाला, कोष पुत्र ।
छो, 'मई (कुमा) ।

मंतु पुन [मन्त्रु] अपराध 'मंतु वितिय
वितिय' (पाष) ।

मंतुआ छो [दे] लजा, शरय (दे ६, ११६
भवि) ।

मतेइछ छो [दे] शारिका, नैना (दे ६,
११६) ।

मय सक [मन्थ] १ विलोडन करना । २
माला हिंगा करना । ३ भ्रम, क्लेश पाना ।
मयइ (दे ५, १२१, प्रक, ३३, पट्ट) ।
मयक मयिज्जत, मयिज्जमाण, मच्छत
(पत्रम ११३, ३३, सुपा २५१, १६५, पट्ट
१, ३—पत्र ५३) । सक, मयिचु (सम्मत
२२६) ।

मंथ पु [मन्थ] १ दही विलोने—महने का
दण्ड, मयनी (पिसे ३८४) । २ वैजति समुदात
के समय मन्थकार किया जाता जीव प्रदेश-
समूह (छा ६, मीप) ।

मंथ (धय) देखो मन्थ = मन्त्र (पिंग) ।

मथण म [मन्थन] १ विलोडन, विलोने की
क्रिया, 'छोरोममयणुच्छित्तप्रमुदमितो ध्व
महमहणो' (मा ११७) । २ धर्मय, 'मयण-
ओए मग्गा' (सरोष १) । ३ पुंन, मयनी,
दही भादि मयने की लकड़ी (प्राक १४) ।

मथणिआ छो [मन्थनिआ] १ मयनी,
महनी, दही मयने की छोटी लकड़ी (राम) ।
२ मयानी, दधि-लकड़ी, दही महने की हथिया
(दे २, ६५) ।

मथणी छो [मन्थनी] ऊपर देखो (दे २,
५५) ।

मथर वि [मन्थर] १ मन्त्र, बीमा (दे १,
१८, मरक, पाष, पुपा १) । २ वितम्ब से
होनेवाला (पचा ६, २२) । ३ पु, मन्थन-
दण्ड, 'बीसाममयणुच्छित्तप्रमुदमितो ध्व
महमहणो' (पत्रम २१, ६०, ६५, ८,
मापा १) ।

मथर वि [दे, म-थर] १ कुटिल, बक, टेढ़ा
(दे ६, १४५, भवि) । २ छीन, कुसुम,
वृण विशेष, कुसुम का पेड़ (दे ६, १४५) ।
छो 'रा मयरा कुमुनी' (पाष) ।

मथर वि [दे] बह, प्रभुर, प्रभुत (दे ६,
१४५, भवि) ।

मंथरिय वि [मन्थरित] मन्थर किया हुआ
(गठ) ।

मथाय पु [मन्थान] १ विलोडन दण्ड,
'ततो विमुद्धपरिणाममेकमयाणमधिभवज-
सही' (धर्मवि १०७, दे ६, १४१, वज्रा
५ पाष सपु १५०) । २ छन्द विशेष
(पिंग) ।

मथिअ वि [मथित] विलोडित (दे २, ८८,
पाष) ।

मथु पु [दे] १ बदरादि तृणों (पट्ट २, ५,
उत्त ८, १२, सुल ६, १२, सप ५, १, ६८,
५, २, २४, भाषा) । २ तृणों, तृण, तुक्की
(भाषा २, १, ८) । ३ दूध का विचार-
विशेष, मट्ठा और मासक के बीच की अवस्था
वाला पदार्थ (सिंद २८२) ।

मंद पु [मन्द] १ यह विशेष, अनिश्चर (सुर १०, २२४) । २ हाथों की एक जाति (ठा ४, २—पत्र २०८) । ३ वि भलस, धीमा, मुटु (पाप, प्राप् १३२) । ४ घल, बोझ (प्राप् ७१) । ५ मूर्ख, जड़ भनानी (सुप्र १ ४, ३१, पाप) । ६ नीच खल 'मुदमेव धहीए तह य मदस' (प्राप् १६) । ७ रोग ग्रस्त, रोगी (उत्त ८, ७) । ८ उणिण्या की [पुण्यसा] देखी विशेष (पचा १६, २४) । ९ भग वि [भाग्य] कमनखीव (सुग ३७६ महा) । १० आश वि [भाग, भाग्य] बही भयं (त्वण २२, कुमा) । ११ भाइ वि [भागिन] बही भयं (स ७५६, मुपा २२६) । १२ भाग देखो 'आश (सुर १०, ३८) ।

मद न [मान्य] १ बीमारो, रोग न भ मदेए मरई कोइ तिरिओ ग्रहण मणुषो वा' (मुपा २२६) । २ मूर्खता, बेवकूफी 'बालस मय बीय' (सुप्र १, ४, १, २६) ।

मंदकर न [मन्दाकर] लज्जा, शरम (राज) ।

मंदार न [मन्दार] गेय विशेष, एक प्रकार मंदय का गाता (राज, ठा ४, ४—पत्र २५५) ।

मंदर पु [मन्दर] १ पर्वत-विशेष, मेघ पर्वत (सुप्र ४, सम १२ ह २, १७४ वप, सुग ४०) । २ मगवान् विमलनायक प्रथम गणपति (सम १५२) । ३ वातरुद्र का एक राजा, मरुतुनार का पुत्र (पठम ६, १७) । ४ पत्न का एक भद (पिग) । ५ मन्दर-पर्वत का मणिधाम देव (ज ४) । ६ 'पुर १ [पुर] नगर विशेष, (रक) ।

मंदा धी [मन्दा] १ मन्द-धी (बज्ज १०६) । २ मनुष्य की दस मरुत्यावा में तीसरी मरुत्या २१ से २० वर्ष तक की दशा (सु १६) ।

मंदाइय की [मन्दायिनी] १ मंग बत्ती, भगीरथी (पठम १०, ५० पाप) । २ रामचन्द्र का पुत्र सती की धी का नाम (पठम १०६, १२) ।

मंदाय गिरि [मन्द] री, चौथे से 'मंदाय मंनय पगराए' (वीर ४) ।

मंदाय न [मन्दाय] गेय विशेष (ज १) । मंदार पुं [मन्दार] १ बलवृक्ष विशेष (सुपा १) । २ पारिषद वृक्ष । ३ न. मन्दार वृक्ष का फूल, 'मदारदामरमणिज्जुय' (वप पठम) । ४ पारिषद वृक्ष का फूल (बज्ज १०६) ।

मंदाय वि [मान्दिक] मन्दावाना, मन्द; बाते य मदिए मुडे' (उत्त ८, ५) ।

मंदिर न [मन्दिर] १ गृह पर (पठम, मवि) । २ नगर विशेष (इक धाव १) ।

मंदिर वि [मान्दिर] मन्दिर नगर का 'सीह पुत सोहा वि य मीयपुरा मंदिर य बहुणाया' (पठम ५४, ५३) ।

मंदीर न [दि] १ गृहस्थ, साधन । २ मयात-दण्ड (दे ६, १४१) ।

मंदुय पु [दि. मन्दुक] जन्मनु विशेष (पणह १, १—पत्र ७) ।

मंदुरा की [मन्दुरा] धरप शाला (मुपा ६७) ।

मंदोदरी की [मन्दोदरी] १ रावण-पत्नी मंदोदरी (सि ११, ६७) । २ एक वणिक् पत्नी (वप ५६७ टी) ।

मंदोशण (मा) । वि [मन्दोष्ण] धल्य गरम (प्रा १०२) ।

मंघाउ पु [मांघाउ] हरिवंश का एक राजा (पठम २२, ६७) ।

मंघादन पु [मन्घादन] मय गाढर 'जहा मंघाए (१, ७) नाम बिमिसी भुवती दग' (सुप्र १ ३, ४ ११) ।

मंघाय पुं [दि] धाम्य धीमंत (दे ६, ११६) ।

मंभीस (पग) । मं [मा + भी] इत्ते का नियम करना समय बना । छै. मंभीसिवि (मंभि) ।

मंभीसिय देखो माभीसिअ (मंभि) ।

मंस पुन [मास] मास गेय, तिथिउ 'ममगाजो मंते धयं धट्टे' (सुप्र २, १, १६ धावा धीयमा २४६ कुमा, दे १ २६) ।

'इत वि [वा] मांज-सोतर (सुप्र १ १२) । मंन न [मन] मांग गुमान का रत्न (मावा २, १, ४, १) । 'मंन्नु पुन [मन्नु] १ मांन-मय वपु । २ वि. मांन-मय वपुगण, मंन-मय-रिय, मंरित

मसवच्छुणा' (सम ६०) । 'सिग वि [मान] मास मन्क (कुमा) । 'सि, 'सिगण वि [शिग] बही भयं (पठम १०५, २४, महा) 'मंसामिणस' (पठम २६, २७) ।

मस न [मास] पत्न का गर्भ, पत्न का पुत्र (मावा २, १, १० ५ ६) ।

मसल वि [मासल] पीन, पुत्र उपचित (पाप, हे १, २६ पणह १, ४) ।

मसी की [मामी] गद्य-व्यय विशेष नगमासी (पणह २, ५—पत्र १५०) ।

मसु पुन [मसु] बाकी-मूँछ—दुरूप के मुख पर का बात (सम ६० बीय कुमा), मसू' (हे १, २६, प्राप्) मसू' (उवा) ।

मसु देखो मस मसूणि मित्रपुत्राई' (मावा) ।

मसुडग न [दि, मासोन्दुक] मास पण्ड (पिठ ५८६) ।

मसुह वि [मामयत्] मामयाना (हे २, १५६) ।

मसुडेअ पुं [मार्सुडेअ] मंभि विशेष (मंभि २४३) ।

मसुड पु [मसुड] १ बाहर, बनस, बाहर (गा १७०, वा पु १८८, सुपा ६०६ दे २, ७२ कुप्र ६० कुमा) । २ मसु बात बनानवाता कीडा (मावा, मस गा ६३ दे ६, ११६) । ३ छत का एक भय (पिग) । 'मस पु [मस] मय विशेष नाराच मय (बम्प १, ३६) । 'संताग पु [संतान] मरवा का जान (पठि) ।

मसुडन न [दि] गृहस्थाचार कीना मूषण (दे ६, १२७) ।

मसुडी की [मसुडी] बाहरी बहरी (सुप्र ३०२) ।

मसुड (पग) देखो मसुड (पिग) ।

मसार पु [मासार] मां भयं । २ मा' के प्रयोगवाती दण्डीय, विशेष-मूषण मं प्राणीय दण्डी-यिनि (ठा ७—पत्र ३८८) ।

मसण देखो मसुग (पत्र २६२ दे १, १६) ।

मसुड पु [दि] १ मन्त्र-मुद्राकार्य राति, ज्वर ग्ने के मिय बनाई जाती राति (दे १, १४२) । २ मुँछो, बीज-रिपो बीज, पुन-राती में 'मरोमा', मंरोमा' (मिग १, धाम्य की १६) । की 'टा (दे १, १४२) ।

मन्त्र सक [मन्त्र] १ पुण्डना, स्नेहान्वित करना । २ ची, तेल आदि लिग्य द्रव्य से मालिश करना । मन्त्रद (पङ्), मन्त्रेति (उप १४७ टी), मन्त्रिस्त्रज, मन्त्रेस्त्रज, (घाना २, १३, २, ३) । हेङ्. मन्त्रेस्त्रज (कस) । क. मन्त्रिस्त्रज (शोध ३८५ टी) ।

मन्त्रय न [मन्त्रय] १ मन्त्रन, नवनीत (स २५८, पभा २२) । २ मालिश, मन्त्रय (निद्र ३) ।

मन्त्रर पुं [मन्त्रर] १ गति । २ शान । ३ भंश, वास । ४ धिक्प्रवला वास (सति १५, वि ३०६) ।

मन्त्रिअ वि [मन्त्रित] चुपडा हुमा (पाम, घे ८, ६२, शोध ३८५ टी) ।

मन्त्रिअ न [मन्त्रिअ] मन्त्रिअ-मन्त्रित मनु (राज) ।

मन्त्रिअ की [मन्त्रिका] मन्त्री (दे ६, १२१) ।

मगद्ध वि [दे] हल पारित, हाथ में बाधा हुमा (विपा १, १—पन ४८, ४६) ।

मगण पुं [मगण] छव् खाळ-प्रसिद्ध तीन पुव प्रलो की संज्ञा (पिंम) ।

मगद्विअ की [दे] १ मालती का फूल । २ मोगरा का फूल, 'कुमुभ वा मगद्विअ' (वस ५, २, १४, १६) ।

मगद्विअ की [दे. मगद्विअ] १ मेदी या मेहदी का गाछ । २ मेदी की पत्ती (वस ५, २, १४, १६) ।

मगर पुं [मकर] १ मगर-मच्छ, जलजन्तु-विशेष (पराह १, २, शोध उप, सुर १३, ४२, लाभा १, ४) । २ राहु (सुज २०) । देखो मयर ।

मगरिया की [मकरिका] काय-विशेष (राय ४६) ।

मगसिर खोन [मगसिरस्] नक्षत्र विशेष, 'कतिय रोहिणी मगसिर म्हा य' (श २, ३—पन ७७) । जी. 'रा, 'दो मगसिरापो' (श २, ३—पन ७७) ।

मगह देखो मगाह । 'तित्थ न [तीर्थ] तीर्थ विशेष (इक) ।

मगाह पुं व. [मगाह] देश विशेष (कुमा) । मगाह [वर्द्ध] [वरोद्ध] धामाण-विशेष

(शोध ५ ४८ टि) । 'पुन न [पुन] मगर-विशेष (महा) । देखो मयह ।

मगा [दे] परचाव, पीछे, मराठी मे 'मय' (दे १, ४, टी) ।

मगुंद देखो मरुंद = मुकुन्द (उत्ति ३) ।

मग सक [मार्ग्य] १ मानना । २ खोजना । मगह, मगात (उप, पङ्, हे १, ३४) । वङ्. मगवत, मगमाण (गा २०२; उप ६४८ टी, महा, सुपा ३०८) । सङ् मगोयिषु (षप) (अवि) । हेङ्. मगिगई (महा) । क. मगिअअ, मगोयअ (से १४, २७, सुपा ५१८) ।

मग सक [मग] गमन करना, चलना । मगह (हे ४, २३०) ।

मग पुं [मार्ग] १ रास्ता, पथ (शोध ३४, कुमा, प्रासू ५०, ११७, भग) । २ मन्त्रेपण, खोज (विसे १३८१) । 'ओ ष [तस] रास्ते से (हे १, ३७) । 'णु वि [क] मार्ग का जानकार (उप ६४४) । 'दव वि [स्य] १ मार्ग में स्थित । २ सोलह से ज्यादा वर्ष की उम्रवाला (सूत्र २, १, ६) । 'द्वय वि [द्वय] मार्ग-दशक (मय, पवि) । 'पिउ वि [पिग] मार्ग का जानकार (शोध ८०२) । 'ह वि [च] मार्ग-नाराक (शु ७४) । 'णुसारि वि [नुसारि] मार्ग का अनुयायी (धर्म २) ।

मग पुं [मार्ग] १ आकाश (मग २०, २—पन ७७५) । २ धावश्यक-कर्म, सामयिक धाव पद-कर्म (अणु ३१) ।

मगा पुं [दे] परचाव, पीछे (दे ६, मगमा १११; से १, ५१, सुर २, ३६, पाम; भग) ।

मगग वि [मार्गक] मागनेवाला (पवम ६६, ७३) ।

मगग पुं [मार्गेण] १ याचक (सुपा २४) । २ बाण, शर (पाम) । ३ न. मन्त्रेपण, खोज (विसे १३८१) । ४ मार्गला, विचारणा, पर्यालोचन (शोध, विसे १८०) ।

मगगण पुं [मार्गेण] १ मन्त्रेपण, मगगणया खोज (उप ५ २७६, उप ६६२, मगगणा शोध ३) । २ अन्यय धर्म के पर्यालोचन द्वारा मन्त्रेपण, विचारणा, पर्यालोचना (कम ४, १, २३, जीवर २) ।

मगगया की [मार्गेण] ईश-ज्ञान, क्हापोह (छदि १७५) ।

मगगण वि [दे] अनुगमन करने की धावतना (दे ६, १२४) ।

मगसिर पुं [मार्गशिर] मात-विशेष, मगसिर मास, मगहन (कप्य, हे ४, ३५७) ।

मगसिरी की [मार्गशिरी] १ मगसिर मास की पूर्णिमा । २ मगसिर की धमावस (सुज १०, ६) ।

मगिअ वि [मार्गित] १ क्रान्तेवित, गवेपित (से ६, ३६) । २ मांगा हुमा, याचित (महा) ।

मगिर वि [मार्गयित] खोज करनेवाला (सुपा ५८) ।

मगिअ वि [दे] पारचाव, पीछे का (विसे १३२६) ।

मगु पुं [मदगु] पक्षि-विशेष, जल-काक (सुप १, ७, १५; हे २, ७७) ।

मच पुं [मच] मेप (भग ३, २; पण २) ।

मचमय सक [प्र + च] जैलना, गन्ध का पहरना; गुजराती मे 'मचमचउ', मराठी मे 'मचमचुं' । वङ्. मचमयत, मचमयित, मचमयत (सम १३७, कप्य, शीप) ।

मचय पुं [मचयन] १ दण्ड, दैव-दान (कप्य, कुमा ७, ६४) । २ दुतीय चक्रवर्ती राजा (सम १५२; पवम २०, १११) ।

मचया की [मचया] छठवीं तरक-भूमि, 'मचय वि मायवति य पुढवीण नामधेया' (जीवत १२) ।

मचा की [मचा] १ ऊपर देखो (श ७—पन ३८८, इक) । २ देखो महा = मया (राज) ।

मचोण पुं [दे. मचयन] देखो मचय (पङ्, वि ४०३) ।

मच शक [मच] गव करना । मचवद (पङ्, हे ४, २२५) ।

मच (षप) देखो मंच, 'मंकुणमचद सुत बरद' (मवि) ।

मच न [दे] मल, मैल (दे ६, १११) ।

मच पुं [मच्ये] मनुष्य, मानुष (व मचिअ १२०८, रंभा, पाम, सुम १, ८, २, घाना) । 'लोअ पुं [लोअ] मनुष्य-

लोक (कुप्र ४११) । 'लोईय वि [लोईय]
मनुष्य-लोक से सम्बन्ध रखनेवाला (गुप्ता
५११) ।

मन्थन वि [दि] मल-युक्त (दे ६, १११ वे) ।

मन्थन वि [मदिर] यव करनेवाला (कुप्ता) ।

मन्थु पुं [मन्थु] १ मोत, मरण (भाषा,
सुर २, १३८; प्राप्ता १०६; महा) । २ यम,
ममराज (पद्) । ३ रावण का एक मैत्रिक
(पठम ५६, ३१) ।

मन्थु पुं [मन्थु] १ मन्थनी (भाषा १,
१; भाषा, जो २०; प्राप्ता ५०) । २ राहु
(सुर २०) । ३ देश-विशेष (द्वि, मन्थि) ।
४ छन्द का एक भेद (पिंग) । 'रत्न न
[रत्न] मन्थनी की सुकाने का स्थान (भाषा
२, १, ५, १) । 'यथ पुं [यथ]
मन्थनीमार, धीवर (पण्ड १, १; महा) ।

मन्थु पुं न [मन्थु] मन्थ के भाग्य की
एक वनस्ति (भाषा २, १, १०, ५, ६) ।

मन्थुडिआ की [मन्थुडिआ] लक्षणार्क,
एक प्रकार की शककर (पण्ड २, ५, छाया
१, १७, पण्ड १७, पिठ २८३; भा ५३) ।

मन्थुडी की [मन्थुडी] शककर (पण्ड
१४७) ।

मन्थुव देवो मन्थ = मन्थु ।

मन्थुव देवो मन्थु-यथ (विषा १, ८—पत्र
८२) ।

मन्थुव पुं [मन्थु] १ ईर्ष्या, द्वेष, डाह,
पर-भारति की प्रसहिष्णुता (उव) । २
कोप, क्रोध । ३ वि. ईर्ष्या, द्वेषी । ४
क्रोधी । द्वेष (हे २, २१) ।

मन्थुव न [मन्थुव] ईर्ष्या, द्वेष (से ३,
१६) ।

मन्थुव वि [मन्थुव] मन्थरवाला (पण्ड
२, ३, उवा, पाषा) । श्री. 'णी (पा ८५,
महा) ।

मन्थुव वि [मन्थुव, मन्थुव] ऊपर
देतो (पठम ८, ४६; पंचा १, ३२; मन्थि) ।

मन्थुव देवो मन्थुव = मन्थर (हे २, २१;
पद्) ।

मन्थुव देवो मन्थुव = माथिक (पत्र
४—गाथा २२०) ।

मन्थुव वि [माथिक] मन्थुमार (धा
१२; मन्थि १८७, विषा १, ६; पिठ ६३१) ।

मन्थुव (मा) देवो माउ = माथु (प्राक्
१०२) ।

मन्थुव देवो मन्थुव (पि ३२०) ।

मन्थुव [मन्थुव] श्री [मन्थुव] मन्थुव (छाया
मन्थुव) १, १६; जो १८; उत ३६,
६०; प्राप्ता, गुप्ता २८१) ।

मन्थुव सक [मन्थुव] मन्थमान करता । मन्थुव,
मन्थुव, मन्थुव (उव, सुप्र १, २, २०, १,
धर्म ७८) ।

मन्थुव सक [मन्थुव] १ स्नान करना । २
रूना । मन्थुव (हे ५, १०१), मन्थुव
(मा ५७, ७; धर्म ८६५) । वक्क.
मन्थुव (पा २४६, छाया १, १) ।

सक. मन्थुव (महा) । प्रयो., संक.
मन्थुव (ठा ३, १—पत्र ११७) ।

मन्थुव सक [मन्थुव] साफ करना, मार्जन
करना । मन्थुव (पद् प्राक् ६६; हे ५,
१०५) ।

मन्थुव न [मन्थुव] दाह, मदिरा (धीव; उवा,
हे २, २४, मन्थि) । 'इत वि [यन्]
मदिरा तोलुप (मुक् १, १५) । 'य वि
[य] मन्थ-यान करनेवाला (पाषा) । 'वीव
वि [वीव] विषये मन्थ-यान किया हो वह
(विषा १, ६—पत्र ६७) ।

मन्थुव वि [माथिक] मन्थ-सम्बन्धी, 'मन्थं वा
मन्थयं रत्न' (उव ५, २, ३६) ।

मन्थुव न [मन्थुव] १ स्नान । २ रूना
(सुर ३, ७६, कन्थु; गठ; कुप्ता) । 'धर न
[गृह] स्नान-गृह (छाया १, १—पत्र
१६) । 'भाई की [भाई] स्नान करने-
वाली दासी (छाया १, १—पत्र ३७) ।

'पाटी की [पाटी] वही धर्म (मन्थ) ।
मन्थुव न [मार्जन] १ साफ करना, शुद्धि
(कन्थु) । २ वि. मार्जन करनेवाला (कुप्ता) ।
'धर न [गृह] शुद्धि गृह (कन्थु, धीव) ।

मन्थुव देवो मन्थुव (प्राक् ५) । श्री. 'री. 'नो
कुलमन्थुव न्निण्ण पन्थिरित्तं तद' (सुर
३, १३३) ।

मन्थुव वि [मन्थुव] १ स्तुति । २
स्नात. 'एव धरे रे पन्थि मन्थरुहपाउ
मन्थुव' (वन्था ६०) ।

मन्था की [दे. मन्था] मन्था (दे ६, ११३;
मन्थि) ।

मन्था की [मन्था] धानु-विशेष, चर्वी, हठी
के भीतर का दूदा (सण) ।

मन्थाइल वि [मन्थाइल] मन्थाइल (निचु
५) ।

मन्थाया की [मन्थाया] १ व्याध-यन्त्र-व्यति,
व्यवस्था: 'रयलपरस मन्थाया' (प्राप्ता ६८,
भावम) । २ सोमा, हृद, मन्थि । ३ कूल,
विनार (हे २, २४) ।

मन्थार पुं की [मन्थार] १ विलास, विलास
(कुप्ता, मन्थि) । २ मन्थार-विशेष: 'तन्मन्थ-
पौरमन्थारपोहवस्ती य पालका' (पण्ड १—
पत्र १५) । श्री. 'देआ, 'री (कन्थु, पाषा) ।

मन्थार पुं [मन्थार] धानु-विशेष (मन्थ १५—
पत्र ६८) ।

मन्थाविज वि [मन्थुव] स्तुति (महा) ।

मन्थुव वि [दे] १ मन्थुव, निरोधित ।
२ रीत (दे ६, १५५) ।

मन्थुव वि [मन्थुव] स्नात. (पिठ ४२३;
महा, पाषा) ।

मन्थुव वि [मन्थुव] साफ किया हुआ
(पठम २०, १२७; कन्थु, धीव) ।

मन्थुव की [मन्थुव] रसाला, मन्थ-
विशेष—दही, शकर भादि का बना हुआ
और सुगन्ध से वासित एक प्रकार का साध,
श्रीलण्ड (पाषा, दे ७, २, पत्र २५६) ।

मन्थुव वि [मन्थुव] मन्थन करने को वाद-
वाला (पा ४७३, सण) ।

मन्थुव वि [दे] मन्थन, मन्थन (दे ६,
११८) ।

मन्थुव न [मन्थुव] १ मन्थन, मन्थन कीव
(पाषा, गुप्ता, द ३६, प्राप्ता ५०; १६७) ।
२ शरीर का मन्थन-विशेष (कन्थु) । ३

सन्ध-विशेष, मन्थ कीव पदार्थ के बीच की
स्थिति (हे २, ६०, प्राप्ता) । ४ वि. मन्थन,
कीव का (प्राप्ता १२५) । 'एव पुं [देआ]
देश-विशेष, मन्थ कीव धानु के बीच का

प्रदेश, मन्थ प्रात (पठम) । 'गय वि [गय]
१ कीव का, मन्थ में मन्थ (भाषा, कन्थु) ।
२ पुं. धनविमान का एक भेद (छादि) ।

‘गेवेज्जाय न [‘प्रैवेयक] देवलोक्क विशेष (इक) । ‘ट्ठिअ वि [‘स्थित] तट्ठस्य, मध्यस्य (रमण ४८) । ‘ण्ण, ‘ण्ह पुं [‘ह] दिन का मध्य नाप, दोषहर (भ्रात्र, भाट १८, कुमा, धमि ५५, हे २, ८४, महा) । २ न, तप विशेष, पूर्वाधे तप (सवोष ५८) । ‘ण्हतरु पु [‘हतरु] वृष विशेष मध्याह्न समय में द्यत्यन्त कृतमेवाणे साल रंग हे कृतवाला वृक्ष (कुमा) । ‘रथ वि [‘रथ] तट्ठस्य (उप, उप ६४८ टी, सुर १६, ६५) । २ बीच मे रहा हुआ (सुपा २५७) । ‘देस देखो ‘पस (सुर ३, १६) । ‘अ देखो ‘ण्ण (हे २, ८४, सण) । ‘म वि [‘म] मध्य का, मन्त्रा, बीच का (भग, नाट—विक्र ५) । ‘रत्त पु [‘रत्त] विशेष (उप १३६, ७२८ टी) । ‘रयणि ओ [‘रजनि] मध्य रात्रि (स ६३६) । ‘लंग पु [‘लोक] मेघ पर्वत (राज) । ‘पान्ति वि [‘वर्तिन्] घनगर्त (गोह ६४) । ‘पलिअ वि [‘पलित] १ बीच मे घुसा हुआ । २ चित्त मे कुटिल (वज्जा १२) ।

मज्झम पु [‘वे] नापित, नाई, हजाम (दे ६, ११५) ।

मज्झमआर न [‘वे] मभार, मध्य, अन्तराल (दे ६, १२१, विक्र २८, उप, गा ३, विसे २६११, सुर १, ४५, सुपा ४६, १०३, बा १) ‘मसोपवणिआभा मज्झमआरिम्’ (भाव ७) ।

मज्झमिअ त [‘वे] मध्यन्दिन, मध्याह्न (दे ६, १२४) ।

मज्झमिण न [‘मध्यमिण] मध्याह्न (दे ६, १२४) ।

मज्झमसज्ज न [‘मध्यमसज्ज] ठीक बीच (मग, विपा १, १, सुर १, २४४) ।

मज्झमगार देखो मज्झमआर (राज) ।

मज्झमिण्य वि [‘माध्याह्निक] मध्याह्न सब ची (धर्मवि १०५) ।

मज्झम्य न [‘माध्यत्य] वटस्पत्य, मध्यस्पत्या (उप ६१५, सवोष ४५) ।

मज्झिम वि [‘मध्यम] १ मध्य-वर्ती बीच का (हे १, ४८, सम ४३, जवा, कण, धौप,

कुमा) । २ पुं. स्वर विशेष (ठा ७—पत्र ३६३) । ‘रत्त पुं [‘रत्त] विशेष, मध्य-रात्रि (उप ७२८ टी) ।

मज्झिममगड न [‘दे] उदर, पट (दे ६, १२५) ।

मज्झिमा ओ [‘मध्यमा] १ बीच की रंगली (धोप ३६०) । २ एक जैन मुनि-शाखा (कण) ।

मज्झिमिह वि [‘मध्यम] मध्य-वर्ती, बीच का (भगु) ।

मज्झिमिहा देखो मज्झिमा (कण) ।

मज्झिमिह वि [‘माध्यिक, मध्यम] मन्त्रा, बीच का (पव ३६, देवेन्द्र २३८) ।

मट्ट वि [‘दे] मृत्त रहित (दे १, ११२) ।

मट्टिआ ओ [‘मृत्तिमा] मट्टी, मिट्टी, माटी (एपाया १, १, धौप कुमा, महा) ।

मट्टी ओ [‘मृत्, मृत्तिका] ऊपर देखो (जी ४, पवि दे) ।

मट्टुडिअ न [‘दे] १ परिणीत ओ का कोप । २ वि. मनुष्य । ३ मनुष्य, मैला (दे ६, १४६) ।

मट्टु वि [‘दे] भल्ल, घातशी, मन्द, जड़ (दे ६, ११२, पाष) ।

मट्टु वि [‘मृष्ट] १ मांजित, शुद्ध (सुष १, ६, १२, धौप) । २ मल्ल, चिकना (सम १३७, दे ८, ७) । ३ पिता हुआ (धौप, हे २, १७४) । ४ न. मित्त, मरिच (हि १, १२८) ।

मट्ट वि [‘दे मृत्] १ मरा हुआ, निर्जीव (दे ६, १४१), ‘मठोव्व म्पाणा’ (वज्जा १४८), ‘मठे’ (भा) प्राज्ञ (१०३) । ‘इ वि [‘दिन्] निर्जीव वस्तु को जानना (मग) । ‘सय पु [‘अय] समान (मिधु ३) ।

मट्ट पु [‘दे] कंठ, गला (दे ६, १४१) ।

मट्टव पुन [‘दे मट्टव] घाम विशेष, जिसके चारों ओर एक योजन तक कोई गाँव न हो ऐसा गाँव (खाया १, १, मक, कण, धौप, पट्टह १, ३, गवि) ।

मट्टक पुं [‘दे] १ गर्व, घमिमान, ‘न किंच वयणु संचलिय मट्टक’ (गवि) । २ मटका, बत्तार, चटा, मराटो में ‘मटके’ (गवि) ।

मट्टकिया ओ [‘दे] छोटा मटका, कलरी (कुप्र ११६) ।

मट्टप्प पुं [‘दे] गर्व, घमिमान, घटकार, मट्टप्पर } ‘मज्जावि पदप्पमट्टप्पत्तंहे वहुइ मट्टप्पर पवि’ (मुग २६, कुप्र २२१, २८४, पट्ट, दे ६, १२०, पाष सुपा ६, प्राप् ८५, कुप्र २५५, सम्मत १८६, यम्म ८ टी. गवि, सण) ।

मट्टम वि [‘मट्टम] पुच्छ, वामन (राज) ।

मट्टमड } मक [‘मट्टमडाय्’ १ मड मडमडमड] मड धावाज करना । २ सक,

मड मड धावाज हो उस तरह मारना । मडमडमड (पटम २६, ५३) । गवि, मडमडमडरा, मडमडमडरा (मा), (पि ५२८, चार ३५) ।

मडमडाअ वि [‘मडमडाअित] ‘मड’ ‘मड’ धावाज हो उस तरह मारा हुआ (उत्तर १०३) ।

मडय न [‘मृतक] मुहदा, मुर्दा, राव (पाष, हे १, २०६, सुपा २१६) । ‘मिह न [‘मृह] ब्रज (निद्र ३) । ‘वेइअ न [‘वैय्] मृतक के सह होने पर या गाढे पर बनाया गया कैय—स्मारक मन्दिर (भाचा २, १०, १६) । ‘डाह पुं [‘दाह] चिता, जहाँ पर शव जूँके जाते हो (भाचा २, १०, १६) । ‘थुभिया ओ [‘स्तूपिका] मृतक के स्थान पर बनाया गया छोटा स्तूप (भाचा २, १०, १६) ।

मडय पुं [‘दे] माराम, बगीचा (दे ६, ११५) ।

मडवोअ ओ [‘दे] शिविका, पातली (दे ६, १२२) ।

मडह वि [‘दे] १ लघु, छोटा (दे ६, ११७, पाष सण) । २ स्वल्प, थोड़ा (गा १०५, स ८, गडह, वज्जा ४२) ।

मडहण पु [‘दे] गर्व, घमिमान (दे ६, १२०) । मडहिय वि [‘दे] मलोक्त, मूल किया हुआ (गडह) ।

मडहुस वि [‘दे] लघु, छोटा, ‘मडहुसियाए कि तुह झीए कि चा दतेहि तल्लिणेहि’ (वज्जा ४८) ।

मडिआ ओ [‘दे] समाहृत ओ, माहृत महिता (दे ६, ११४) ।

मडुवअ वि [‘दे] १ हत, विच्यत्त । २ तोरण (दे ६, १४६) ।

मडु तक [‘मृद] मर्दन करना । मडुह (दे ५, १२६, प्राप् ६८) ।

मध्य पुं [वि. मङ्क] वाय-विशेष (राय ४६) ।

मङ्गु ली [दे] १ बलाकार, हठ, ज्वरदस्ती (दे ६, १४०, पात्र, सुर ३, १३६, मुख २, १४५) । २ धाता, हुकुम (दे ६, १४०, सुपा २७६) ।

मङ्गिअ वि [मर्दित] जिसका मर्दन किया गया हो वह (हे २, ३६, पद, पि २६१) । मङ्गुअ देखो मद्दुअ (राय) ।

मठ देखो मङ्गु । मठ (हे ४, १२६) ।

मठ पुंन [मठ] सत्पासियों का भाष्य, श्रितियों का निवासस्थान 'मठो' (हे १, १६६, सुपा २३४, वज्रा ३४, मवि), 'मठ' (प्राज्ञ) ।

मठिअ देखो मङ्गिअ (कुमा) ।

मठिअ वि [दे] १ खचित पुत्रराश्री मे 'मठेउ', 'एमउ मोसहोमो तिपाउमडिवाउ चोरिजा' (सिदि ३७०) । २ परिश्रुति (हे २, ७४, पात्र) ।

मठी ली [मठिअ] छोटा मठ (सुपा ११३) ।

मण सक [मन्] १ मानना । २ जानना । ३ चिन्तन करना । मणइ, मणसि (पद, कुमा) । बबह, मणजिमाग (मग १३, ७, विसे ८३३) ।

मण पुंन [मनस्] मन, धर्म करण, चित्त (मग ११, ७, विसे १४२५; स्वज ४४; ई २२, कुमा, प्राप् ४४, ४८, १२१) । 'अरुति ली [अरुति] मन का असम (पि १३६) । 'हरण' ली [हरण] चित्त-पर्यालोचन (भाष्य १३७) । 'शुत वि [शुत] मन का संयम में रखनेवाला (मग) । 'शुत ली [शुति] मन का संयम (उत्त २४, २) । 'जाणुअ पि [ज्ञ] १ मन को जाननेवाला, मन का जानकार । २ सुन्दर, मनोहर (प्राज्ञ १८) । 'जीविअ वि [जीविक] मन की भाषा माननेवाला (पद १, २—पद २८) । 'जोअ पुं [योग] मन की चेष्टा, मनोव्यापार (मग) । 'ज, 'णु, 'णुअ देखो 'जाणुअ (प्राज्ञ १८, पद) । 'धंभणा ली [संभन्ना] विद्या विशेष, मन को संयम करनेवाली दिव्य शक्ति (पदम ७, १३७) । 'नाग न [ज्ञान] मन का साक्षात्कार करनेवाला ज्ञान, मन-

पर्यव ज्ञान (बम्भ ३, १८; ४, ११; १७; २१) । 'नाणि वि [ज्ञानिन्] मनःपर्यव नामक ज्ञानवाला (बम्भ ४, ४०) । 'पञ्चत्ति ली [पर्याप्ति] पुद्गलों को मन के रूप में परिणत करने की शक्ति (मग ६, ४) । 'पञ्चव पुं [पर्यव] ज्ञान-विशेष, दूसरे के मन की धनस्या को जाननेवाला ज्ञान (मग, श्रीप, विसे ८३) । 'पञ्चवि वि [पर्यविन्] मनःपर्यव ज्ञानवाला (पद २१) । 'पसिण-विज्जा ली [प्रश्नविद्या] मन के प्रश्नों का उत्तर देनेवाली विद्या (सम १२३) । 'बलिअ वि [बलिन्, 'क] मनो-बलवाला, हठ मनवाला (पद २, १; श्रीप) । 'मोहण वि [मोहन] मन को भ्रष्ट करनेवाला, चित्ताकर्षक (गा १२८) । 'योगि वि [योगिन्] मन की चेष्टावाला (मग) । 'वग्गणा ली [वर्गणा] मन के रूप में परिणत होनेवाला पुद्गल-समूह (राय) । 'वज्ज न [वज्र] एक विद्यापर नगर (इक) । 'समिइ ली [समिति] मन का समय (ठा ८—पद ४२२) । 'समिअ वि [समित] मन को समय में रखनेवाला (मग) । 'हंस पुं [हंस] धन-विशेष (पिंग) । 'हर वि [हर] मनोहर, सुन्दर, चित्ताकर्षक (हे १, १४६, श्रीप, कुमा) । 'हरण पुंन [हरण] विपल-श्रद्धि एक भाषा-पद्धति (पिंग) । 'भिराम, 'भिरा मेळ वि [अभिराम] मनोहर (सम १४६, श्रीप, उप ४ ३२२; उप २२० टी) । 'म वि [आप] सुन्दर, मनोहर (सम १४६; विपा १, १, श्रीप, वज्ज) । देखो 'मणो' ।

मण देखो मणय (प्राज्ञ ३८) ।

मणसि वि [मनसिन्] प्रशस्त मनवाला (हे १, २६) । ली. 'णी (हे १, २६) ।

मणसिल' ली [मन शिला] लाल मण मणसिला' की एक उपभाषा, मनसिल, नैनसिल (कुमा, हे १, २६) ।

मणग पुं [मनक] एक जैन बाल-मुनि, महावि शम्भुवर्धन की पुत्र और शिष्य (बम्भ; पर्यवि ३८) । देखो मणय ।

मणगुलिया ली [दे] गौडिया (राय) ।

मणण न [मनन] १ मान, जानना । २ समझना (विसे ३४२५) । ३ चिन्तन (आवक ३३७) ।

मणय पुं [मनक] द्वितीय नरक-भूमि का तीसरा नरक-द्रक—नरकापास-विशेष (देवेन्द्र ६) । देखो मणग ।

मणयं ण [मनाग] मन्त्र, शोभा (हे २, १६६, पात्र, पद) ।

मणस देखो मण—मन्त्र; 'पल्लमणसो करिस्सामि' (पदम ६, ४६), 'जामो वेव उरसिस्स होइ भरीणमणसत्त' (श्रीप ४३७) ।

मणसिल' देखो मणसिला (कुमा, हे १, मणसिला' २६, जो ३; स्वज ६४) ।

मणसीरुय वि [मनसिकृत] चित्तित (पण ३४—पद ७८२; सुपा २४७) ।

मणसीरर सक [मनसि + क] चिन्तन करना, मन में रखना । मणसीकरे (उत्त २, २५) ।

मणसि देखो मणसि (वर्गवि १४६) ।

मणा देखो मणय (हे २, १६६, कुमा) ।

मणाउ (मग) ऊपर देखो (कुमा, मवि, पि मणाउ' ११४, हे ४, ४१८; ४२६) ।

मणाग ऊपर देखो (उप ११२; मठा) ।

मणाल देखो मणाल (राय) ।

मणालिया ली [मणालिया] पद-बन्ध का बंध (हुं २०) । देखो मणालिआ ।

मणसिला देखो मणसिला (हे १, २६, पि ६४) ।

मणि पुली [मणि] पत्थर विशेष, कुमा खादि रत्न (बम्भ, श्रीप, कुमा, जो ३; प्राप् ४) । 'अग पुं [अग] बन्ध-बन्ध की एक जाति जो धातुपूर्ण होती है (सम १७) । 'आर पु [कार] जीहरी, रत्नों के गहनों का व्यापार (दे ७, ७७, कुमा ७६; राया १, १३, धर्मेवि ३६) । 'कंचण न [काञ्चन] रत्न-पर्यव का एक रत्नपर (ठा २, ३—पद ७०) । 'ईड न [ईट] दन्त पर्यव का एक रत्नपर (देव) । 'बमइअ वि [रचित] रत्न-रचित (पि १६६) । 'बइया ली [बयिया] मण-

विशेष (विपा २, ६) । 'चूड पुं' [चूड] एक विद्या-धर रूप (महा) । 'जालं न' [जालं] भूपण-विशेष, मणि माता (श्रीप) । 'तोरण' [तोरण] नगर-विशेष (महा) । 'प देखो' [प] (से ६, ४३) । 'पेटिया' [पेटिया] मणि मय पोटिका (महा) । 'प्यम पुं' [प्रम] एक विद्याधर (महा) । 'भद पुं' [भद] एक जैन मुनि (कण्) । 'भूमि' [भूमि] मणि सचित जमीन (स्वप्न ५४) । 'मइय, मय वि' [मय] मणि मय, रान निवृत्त (सुपा ६२, महा) । 'रह पुं' [रथ] एक राजा का नाम (महा) । 'य पुं' [प] १ मय । २ सयं, नाय (से २, २३) । ३ समुद्र (से ६, ५०) । 'यई' [यई] [मयी] नगरी विशेष (विपा २, ६—पत्र ११४ टि) । 'यध पुं' [यध] हाथ और प्रकोष्ठ के बीच का मध्यम (सण्) । 'वालथ पुं' [पालक, वालक] समुद्र (से २, २३) । 'सलागा' [शलाका] मय विशेष (राज) । 'हियय पुं' [हृदय] देव-विशेष (बीव) ।

मणिअ न [मणित्] संयोग-समय का की का श्रम्यक्त शब्द (गा ३६२, रमा) ।

मणिअं देखो मणय (पद्, हे २, १६६, कुमा) ।

मणिअड (अण) पुं [मणि] माता का सुमेर (हे ४, ४१४) ।

मणिअड्डिअ वि [मनईप्सित] मनोज्ञोटी (सुपा १८४) ।

मणिअमाण देखो मण = मय ।

मणिट्ट वि [मनइट्ट] मन की प्रिय (अवि) ।

मणिपायहर न [दि, मणिनागपृष्ठ] समुद्र, सागर (दे ६, १२८) ।

मणिरइया' [दे] कटीसूत (दे ६, १२६) ।

मणीसा' [मनीपा] बुद्धि, मेधा, प्रज्ञा (पाय) ।

मणीसि वि [मनीपिन] बुद्धिमान् परिश्रित (कण्) ।

मणीसिद वि [मनीपिन] बाण्डित (नाट—मृच्छ ५७) ।

मणु पुं [मणु] १ स्मृति-कर्ता मुनि-विशेष (विसे १५०८, उप १५० टी) । २ प्रजापति-

विशेष; 'बोहहमणुवोणुणभो' (कुमा, राज) । ३ मनुज, मनुष्य, 'देवसामो मणुत्तं' (पउम २१, ६३, वम्म १, १६, २ १६) । ४ न. एक देव-विमान (सम २) ।

मणुअ पुं [मनुअ] १ मनुष्य, मानव (उवा; मग. हे १, ८, पाय; कुमा, स ८२, प्रासु ४५) । २ भगवान् श्रेयासनाय का शासन यत्न (सति ७) । ३ वि. मनुष्य सम्बन्धी, 'तिरिया मणुया य दिव्वा उवसग्गा विविहादिया-सिया' (सुम १, २, २, १५) ।

मणुइद पुं [मनुजेन्द्र] राजा, नरपति (पउम ८५, २२, सुर १, ३२) ।

मणुई' [मनुजी] मनुष्य-की, मारी, महिला (एवि १२६ टी) ।

मणुएसर पुं [मनुजेश्वर] ऊपर देखो (सुपा २०४) ।

मणुअ } वि [मनोज्ञ] सुन्दर, मनोहर
मणुण्ण } (पाय, उप १४२ टी, सम १४६, मग) ।

मणुस } पुत्री [मनुष्य] १ मानव, मरत्य
मणुस्स } (प्राचा, पि ३००, प्राचा, ता ४, २, मग, आ २८; सुपा २०३, की १६, प्रासु २८) । २ 'स्तो' [मा वएण १८, पत्र २४१] । 'खेत्त न' [क्षेत्र] मनुष्य-लोक (जीव ३) । 'सेणियापरिकम्म पुं' [क्षेत्रापरिकर्म्मन्] दृष्टिवाद का एक सूत्र (सम १२८) ।

मणुस वि [मानुष्य] मनुष्य-सम्बन्धी, 'दिअ व मणुस्स वा तेरिअ व सयणहिणएण' (आय २१) ।

मणुसिद पुं [मनुजेन्द्र] राजा, नरपति (उत्त १८, ३७, उप १४२ टी) ।

मणुस देखो मणुस्स (हे १, ४३, शीप, उवर १२२, पि ६३) ।

मणे [मन्ये] विमर्यं भूतक अन्वय (हे २, २०७, पद्, प्रासु २६, गा १११, कुमा) ।

मणो' देखो मण = मनस् । 'गम न' [गम] देवविमान विशेष, 'पालमपुण्णलोमणसत्तिरि-वच्छेदीयावतकायमपीतियमगणोपगमविमल-सवभोमहरसितनामयेज्जंहि विमाणेहि भो-इएण' (अण) । 'अ वि' [अ] १ सुन्दर, मनोहर (ह २, ८३; उप २६४ टी) । २

पुं, शुभ-विशेष, 'सरिया' लोमानियकोरिटय-मत्तुलोवमणउज्जे' (पएण १—पत्र ३२) । 'ण्ण, 'अ वि' [अ] सुन्दर, मनोहर (हे २, ८३, पि २७६) । 'अव पुं' [अव] कामदेव, कल्प (सुपा ६८, पिग) । 'भिरमणिअ वि' [भिरमणीय] सुन्दर, चित्ताकर्षक (पउम ८, १४३) । 'भू पुं' [भू] कामदेव, कल्प (कण्) । 'मय वि' [मय] मानसिक; 'सारोरमणोमाया वि दुक्काए' (पटह १, ३—पत्र ४५) । 'माणसिय वि' [मानसिक] मन में हो रहनेवाला—वचन से प्रप्रकटित—मानसिक दुःख आदि (एआया १, १—पत्र २६) । 'रम वि' [रम] १ सुन्दर, रमणीय (पाय) । २ पुं. एक विमानेन्द्र, देवविमान विशेष (देवत्त ३३६) । ३ मेघ पर्वत (सुअज ५) । ४ राक्षस-वंश का एक राजा, एक लका-पति (पउम ५, २६५) । ५ किन्नर-देवों की एक जाति। कचक टोप का अभिष्टायक देव (राज) । ७ लोचन देवैक विमान (पत्र १६५) । ८ आठवें देवलोक के इन्द्र का पारियायिक विमान (इक) । ९ एक देव-विमान (सम १७) । १० मिथिला का एक चैत्य (उत्त ६, ८, ६) । ११ उपनयन-विशेष (उत्त ६८ टी) । 'रमा' [रमा] चतुर्थ वासु-देव की पत्नी का नाम (पउम २०, १८६) । २ भगवान् सुपारवनाय की दीक्षा शिबिका (सुपा ७५, विचार १२६) । ३ शक्त की यन्त्रवा नामक इन्द्राणी की एक राजधानी (इक) । 'रह पुं' [रथ] १ मन का अभिलाष (शीप, कुमा, हे ४, ४१४) । २ पक्ष का सुशीप दिवस (सुअज १०, १४—पत्र १४७) । 'हस पुं' [हस] छद्म-विशेष (पिग) । 'हर पुं' [हर] १ पक्ष का सुदीप दिवस (सुअज १०, १४) । २ छद्म-विशेष (पिग) । ३ वि. रमणीय, सुन्दर (हे १, १४६, पद्, स्वप्न ५२, कुमा) । 'हरा' [हरा] भगवान् पद्मप्रभ की दीक्षा-शिबिका (विचार १२६) । 'हव देखो' [अव स ८१, कण्] । 'हिराम वि' [भिराम] सुन्दर (अवि) । मणोसिअ देखो मणसिला (हे १, २६, कुमा) ।

मण्ण देखो मण = मय । मएण (पि ४८८) ।

वर्म. मरिण्डज (कुप १०६)। वरु.
मणगनाम (ना. चैत १३३)।
मण्णन न [मानन] मलना, भावर (उप
१५४)।
मण्णा देतो मन्ना (दाज)।
मण्णिय देतो मन्णिय (राज)।
मण्णु देतो मन्नु (ग १:१५००; दे १, ७३;
वेणी १७)।
मण्णे देतो मणे (वन्)।
मच वि [मच] १ मच-गुल, मचवाला (उवा.
भासू १५; ६८; भवि)। २ म. मच, राह
(डा ७)। ३ मच, मचा (पद १७१)। 'जला
छी [जला] मचो विरोध (डा २, ३; हर)।
मच देतो मेच = मान, 'चयणमलमिद्वार'
(रंश)।
मच न [अमच, मात्र] पाव, मानन (भास
२, १, ६, ३. मोप २५१)। देतो मचय।
मच (मच) देतो मच = मच (मच)।
मचणय पुं [मचाङ्क, 'द' वल्लभ वी
एक भास, मच देतो]। कलनर (छम १७;
पत्र १७१)।
मचंठ पुं [मार्चण्ड] मच, रचि (ममच १५५,
तिरि १००८)।
मचन न [दि] वेला, मच (कुतक ६)।
मचय } पुन [अमच, मात्रक] १ पाव.
मचय } मानन। २ छोटा पाव। विद्वज्जो
मचो हो' (हृ ३; वन्)।
मचय देतो मचय = दे (कुता १३)।
मचाछी छी [दि] घनारार (दि ९, १११)।
मचवाण पुन [मचवाण] वरंछा, वणमडा,
काण (दे ६, १९१, गुर ३, १००;
भवि)।
मचवाल पुं [दि] मचवाण, मचोमच (दे ६,
१२२, पद. गुण २, १७; गुणा ४८६)।
मचा छी [मात्र] १ परिमाण (नि ६५१)।
२ चंरा, पाव, रिणा (ग ४८३)। ३ मचय
वा मचय गार। ४ मचय उचारण-मचय
परावर (नि)। ५ मच, मच, मच (पाव)।
मचा म [मच] कानर (मूष १, २, २,
१२)।
मचालय पुं [दि. मचालय] वरंछा, वच-
मा (दे ६, १२३; गुर १, २०)।

मचिया छी [मचिया] मिट्टी (पल्ल १—
पत्र २५)। 'वई छी [वई] नचि-विरोध,
दशाछी वी राजधानी (पत्र २७२)।
मचय } पुन [मच, 'क' भावा, तिर (सि
मचय } १. १. च ३०२) मोप)। 'वच वि
मचय } [स्य] विर में स्थित (गठ)।
'मचि पुं [गणि] शिरोमणि, प्रान, मुख्य
(उप ६४८ टी)।
मचय पुन [मचनक] मच, फल खादि वा
नचयभाण—मच.सार (भावा २, १, ८,
१)।
मचयघोय वि [दि. धौतमचक] रामच
दे मुक्त, कुलागे दे मुक्त रिपा हुवा (गुण्य
१, १—पत्र १०)।
मच्युलुंग न [मच्युलुंग] १ मचय-कन्ह.
मच्युलुंग } तिर में से निरालता एव प्रवार
वा बिना पचाय (पल्ल १, १; तंडु १०)।
२ मच वा विजिण खादि (छ ३, ४—पत्र
१००; मच, तंडु १०)।
मचिय देतो मचिय = मचिय (पल्ल २, ४—
पत्र १३०)।
मच देतो मच = मच (कुमा, मचो १६, वि
२०२)।
मच (मा) देतो मच = मच (प्रा. १०३)।
मचय देतो मचय (लपन ६३, नाट—गुण्य
२३१)।
मचयसना(मा) देतो मचयसना (पल्ल
१—पत्र २८)।
मचय देतो मचय = मचय (पावा ३—पत्र
२५१)।
मचयिज वि [मचनीय] वानोदीपक, मच-
यच (पावा १, १—पत्र १६३; मोप)।
मचि देतो मच = मचि (मा १२, कुमा, वि
१६३)।
मचनी देतो मचनी (छ २३२)।
मचुपी देतो मचुपी (वच)।
मचोनी छी [दि] दूरी, दूरवर्म बलेशो
छी (पद)।
मचय [मच] १ पुन बचना। मानिय
बचना, मचयना, मचना। मचि (वच)।
मचि मचि (मच—गुण्य १६३)। हर.
मचि (वि २०२)।

मचय न [मचन] १ मच-पत्ती, माविया
(गुणा २५)। २ रिता कला: 'वचयारमच-
मचय विवि' (उप)। ३ वि. मचन करने-
पावा (तो ३)।
मचल पुं [मचल] वाय-विरोध, मचन, मचन
(दे ६, ११६; गुर ३, ६८; तिरि १५७)।
मचलिज वि [मचलिज] मचय मचयवाला
(गुणा २६५, ४५३)।
मचय न [मचय] मचुका, मचय, विनय,
मचयार मचय (मोप; वच)।
मचि वि [मचिय] मच, विनय, 'मच-
विम मचयि' सापवि' (मूष २, १, ५७;
भावा)।
मचयि वि [मचयि] 'व' कान देतो
(हृ ४; वच १)।
मचिय देतो मचिय (पाव)।
मचो छी [माच] १ राजा शिवाला वी मा
वा नाय (मूष १, ३, १, १ टी)। २ राजा
पल्लु वी एक छी वा नाम (वेणी १७१)।
मचुलुंग पुं [मचुलुंग] मचय मचारी वा
रायमच-विजो एक उपाव (मच १६,
७—पत्र ७५३)।
मचदुग पुं [मचदुग, 'क' वलि-विरोध, जन-
वाय (मच ७, ६—पत्र ३०८)। देतो
मचु।
मचदुग देतो मचुग (पत्र)।
मचु देतो मचु (पद: रंभा, विन)।
मचुपाव पुं [मचुपाव] एव मचय-मचि
(गुण्य १२२)।
मचुर देतो मचुर (निपू १, प्रा. ६२)।
मचुसिय देतो मचुसिय (डा ४, ४—पत्र
२०१)।
मचुला छी [दि. मचुला] पाव-माच (पत्र)।
मच घ [दि] निदेशार्थ पाव, मच, मच
(कुमा)।
मचुम देतो मचुम (पद. वच)।
मच देतो मचय मचय, मचय (भावा, मच),
मचय, मचयि (रंभा)। मच, मचय
(मच)। वच. मचय, मचय (गुर १५,
१०१; मचय, मच, गुण १००; गुर १,
१०८)।

मन्त्र देखो माण = मान्य । ॥ मन्त्र, मन्त्राय
मन्त्रिण्य, मन्त्रियव्य, मन्त्रिय (उप
१०३६, पर्वत ७६, भद्रि: सुर १०, ३८,
सुपा २६८, ठा १ टी—पत्र २१, ॥ ३५) ।

मन्त्रा श्री [मन्त्र] १ यति, बुद्धि (ठा १—
पत्र १६) । २ बालोचन, चिन्तन (सूत्र २
१, ४१, ठा १) ।

मन्त्रा श्री [मान्या] मन्त्र्युपग, स्वीकार (ठा
१—पत्र १६) ।

मन्त्राय देखो मन्त्र = मान्य ।

मन्त्राविय वि [मानित] मन्त्राया हुमा (सुपा
१५६) ।

मन्त्रिय वि [मन्त्र] माना हुमा (सुपा ६०५,
हुमा) ।

मन्त्रु पु [मन्त्रु] १ शीघ्र गुस्ता (सुपा
६०४) । २ दैन्य, वीरणा 'सोयसमुन्मूलगल-
मनुमना' (सुर ११, १४४) । ३ मृहकार ।
४ शोक, मफलोस । ५ मन्त्रु यत्त (हे २,
२५ ४४) ।

मन्त्रुय वि [मन्त्रयित] मन्त्रु युत्त, कुम्भित
(सुपा ४, १) ।

मन्त्रुलिय वि [दे] उद्भिन्न (स १६६) ।

मन्त्रे देखो मन्त्रे (हे १, १७१, रमा) ।

मन्त्रे न [दे] माप, बोट, 'तेल य सह वर-
णेष भाणेयि य वस्त हट्टमपाणि' (सुपा
३६२) ।

मन्त्रेसीसी } (मप) श्री [मा मैपी] मन्त्र-
मन्त्रेसीसा } वचन (हे ४, ४२२) ।

मन्त्रशर पु [मन्त्रशर] मन्त्र, मोह, प्रेम,
स्नेह (पञ्च २, ४२) ।

मन्त्रय वि [मन्त्रय] मन्त्र (सुख २, १५) ।

मन्त्रन न [मन्त्र] मन्त्रा, मोह, स्नेह (सुपा
२६) ।

मन्त्रा श्री [मन्त्रा] ऊपर देखो (पत्र १५,
३२) ।

मन्त्रा सक [मन्त्राय] मन्त्रा करना । मन्त्रा,
मन्त्राय (सूत्र २, १, ४२, उव) । कर्ह-
मन्त्रायमान, मन्त्रायमीण (भाषा, सूत्र २,
६, २१) ।

मन्त्रा वि [मन्त्रित] मन्त्रितवला (सूत्र १,
१, ४, ४) ।

मन्त्राविय वि [मन्त्रायित] जिसपर मन्त्रा की
गई हो वह (भाषा) ।

मन्त्राय वि [दे] ग्रहण करना । मन्त्रायति
(दत्त ६, ४६) ।

मन्त्राय वि [मन्त्राय] मन्त्रव नलोवाला (निद्र
१३) ।

मन्त्रि वि [मन्त्रिक] मेघ, मदीय, 'मम था
ममि वा' (सूत्र २, २, ६) ।

मन्त्रु सक [चूर्णय] चूर्णा । मन्त्रुद (धात्वा
१४८) ।

मन्त्रु पु [मन्त्रु] १ जीवन त्याग । २
सचि-त्याग (गा ४४६, उप ६६१, हे १,
३२) । ३ मरण का मरण भूत वचन भादि
(छाया १, ८) । ४ गुप्त बात (भाषा ११,
सुपा ३०७) । ५ रहस्य तात्पर्य (यु २८) ।
'य वि [ग] मन्त्र-वाचक (राष्ट्र) (उत्त १,
२५, सुख १, २५) ।

मन्त्रमपु पु [दे] गर्व, भ्रह्मकार (पद्) ।

मन्त्रमवा श्री [दे] १ जल-एठा । २ गर्व (दे
६, १४३) ।

मन्त्रमन [मन्त्रमन] १ भ्रम्यक्त वचन (हे २,
६१, दे ६, १४१, विपा १, ७, वा २६) ।
२ वि. भ्रम्यक्त वचन बोलनेवाला (था १२) ।

मन्त्रमपु पु [दे] १ मदन, कलह । २ शय,
गुस्ता (दे ६, १४१) ।

मन्त्रमणिवा श्री [दे] नील मणिका (दे ६,
१२१) ।

मन्त्रमर पु [मन्त्रमर] शुक्ल पत्तो की भावान
(गा ३६५) ।

मन्त्रमह पु [मन्त्रमह] कामदेव, कलह (गा
४३०, ग्रमि ६५) ।

मन्त्रमी श्री [दे] मामी मातुल पत्नी (दे ६,
११२) ।

मन्त्र न [मन्त्र] मन्त्र, गात्र (सूत्र २, १,
४०) । २ धर्मिप्राय धारण (श्रीपति १६०,
सुखनि १२०) । ३ समय दरौन, मर्म

'सममो मर्म' (पाम: सम्पत्त २२८) । ४ वि.
माना हुमा (वम् ४, ४६) । ५ शृष्ट, फणीष्ट
(सुपा ३७१) । 'मनु वि [ब] दार्शनिक
(सुपा २८२) ।

मन्त्र ह [मन्त्र] १ मृदु, कट (सुख ६, १) ।
२ मन्त्रर, खचर, 'मन्त्रमहिमन्त्ररहेसक्ति-'

(पञ्च ६, ५६) । ३ एक विद्यापर-नरेश
(पञ्च ८, १) । 'हर पु [घर] कटवाला
(सुख ६, १) ।

मन्त्र वि [मन्त्र] मन्त्रा हुमा, जीव रहित (छाया
१, १, उव. सुर २, १८, भाषा १७, प्राप्ते) ।
'विश्व ॥ [कृत्य] मन्त्र के उपलब्ध मे
किया जाता थाद भादि वर्म (विपा १, २) ।

मन्त्र पुंन [मन्त्र] १ गर्व, मन्त्रिमान 'एयाह
मन्त्रा विमिक्त धीरा' (सूत्र १, १३, १६,
सम १३, उप ७२८ टी. हुमा कम्म २,
२६) । २ हाथी के मृदु-स्थल से भरवा
प्रवाही पदार्थ (छाया १, १—पत्र ६५,
हुमा) । ३ भ्रामोह, हर्ष । ४ कस्तूरी । ५
मत्ता, नशा । ६ नद, बड़ी नदी । ७ धीर,
शुक्र (प्राप्ते) । 'करि पु [करिन्] मन्त्रावा
हाथी (महा) । 'गल वि [कल] १ मद से
उत्पन्न, नदी में चूर, 'मन्त्रगलकुचरामणी'
(पिंष) । २ पु हाथी (सुपा ६०, हे १,
१८२, पाम: दे ६, १२५) । ३ छन्द विरोध
(विश्व) । 'गासणी श्री [नाशनी] विवा-
विरोध (पञ्च ७, १४०) । 'धम्म पु [धर्म]
विद्यापर वश के एक राजा का नाम (पञ्च
५, ४३) । 'मन्त्ररी श्री [मन्त्ररी] एक श्री
का नाम (महा) । 'धारण पु [धारण]
मन्त्रवाला हाथी 'मन्त्रवारणो उ मन्त्रो निवा-
डियलाएवरल्लो' (महा) ।

मन्त्र पु [सुग] १ हरिण (हुमा उप ७२८
टी) । २ परु, जानवर । ३ हाथी की एक
जाति । ४ मन्त्रन विरोध । ५ कस्तूरी । ६
सकर राशि । ७ धर्मप्रेष । ८ दायम,
बाग । ९ यत्त विरोध (हे १, १२६) । 'छ्छी
श्री [श्री] हरिण के नेत्रो के समान मन-
वाली (सुर ४, १६, सुपा ३५५, हुमा) ।
'गाह पु [नाथ] सिंह (स १११) । 'गाहि
पु श्री [नाथ] कस्तूरी (पाम, सुपा २००,
गउउ) । 'तण्हा श्री [तृण्णा] धूप मे जल-
भ्राति (दे से ६, ३५) । 'तण्हाआ श्री
[शृण्णिका] बहो धूप (पि ७७५) । 'तण्हा
देखो 'तण्हा (वि ५४) । 'तण्हाआ देखो
'तण्हाआ (पि ५४) । 'धुत्त पु [धुत्त]
गुम्फा, शिवार (दे ६, १२५) । 'नाभि
देखो 'गाहि (हुमा) । 'राय पुं [राज]

सिह, बेसरी (पउम २, १७; जप ५ ३०) ।
 'लेङ्गण पुं [लाङ्गण] बन्दा (पात्र, कुमा; गुर १३, ५३) । 'लोअणा छी [रोचना] मोरोवन, मोरोवना, पीत-यण्ड द्रव्य-विशेष (अभि १२७) । 'रिउ पुं [रि] मिह (पात्र) । 'रिदमय पुं [रिदमन] रादात-वंश का एक राजा, एक संतापति (पउम ५, २६२) । 'रिहिय पुं [रिपि] सिह, बेसरी (पात्र, स ६) । देखो मिअ, मिग = मृग ।

मयंक [देवो मिअंक] हि १, १७७; १८०; मयंग [कुमा, पड; गा ३६६; रंभा] ।

मयंग देला मायंग = मातंग; 'बूर वरणी मिउडी मोमेही धामए मयंगो' (वय २६) ।

मयंग पुं [मुदङ्ग] बाह-विशेष (प्राङ ८) ।

मयंगय पुं [मयङ्गय] हाथी, हस्ती (पउम ८०, ६६; जप ५ २६०) ।

मयंगा छी [मुतङ्गा] जहाँ पर गंगा का प्रवाह रह गया हो वह स्थान (छाया १, ४—पत्र ६६) ।

मयंतर न [मान्तर] मित्र मत, अन्य मत (भा) ।

मयंद देखो मईद = मृगेन्द्र (मुपा ६२) ।

मयंद कि [मदङ्ग] मद के कारण मर्या बना हुआ, मर्यामत्त (गुर २, ६६) ।

मयंग नि [मुतक] १ भरा हुआ । २ न, मुर्दा (छाया १, ११; बुध २६; बीर) । 'निश न [हृत्] याद भादि बर्म (छाया १, २) ।

मयह पुं [दे] मायम, बगीचा (दे ६, ११४) ।

मयण पुं [मदन] १ बादर, बादल (पात्र, पण २५; कुमा; रभा) । २ समूह का एक पुन (पउम ६१, २०) । ३ एक बलिष्ठ-पुन (छाया ११७) । ४ छन्द का एक भेद (निग) । ५ नि, मद-नार, मानव; 'मयणा ददिनपतिना पिपतिना जह मोहया तिबिह' (निग १२२०) । ६ न. मोन, मोम; 'मयणो मयण्ड मिम नितीणो' (पण २५; पात्र गुर २, २४६) । 'पतिनी छी [मुदिनी] काम निमा, रति (कुप १०६) । 'वालक पुं

[वालङ्क] छन्द-विशेष (निग) । 'तेरसी छी [त्रयोदशी] बैरा मास की शुक्ल त्रयोदशी तिथि (कुप ३७८) । 'दुम पुं [द्रुम] वृक्ष-विशेष (मि ७, ६६) । 'फल न [फल] फल-विशेष; मैनफल; 'तमो तेणुपल मयणफलेण भावियं मयुसहले विल्लं, एयं वररुहस्स देजाहि' (गुर २, १७) । 'मजरी छी [मजरी] १ राजा वररुहप्रेत की एक छी का नाम । २ एक योद्धा-नर्या (महा) । 'रेहा छी [रेखा] एक कुकरान की पत्नी (महा) । 'वेय पुं [वेण] पुष्प-विशेष का नाम (मवि) । 'सुदरी छी [सुन्दरी] राजा श्रीमाल की एक पत्नी (सिदि ५३) । 'हरा छी [गृह] छन्द विशेष (निग) । 'हल देखो 'फल, 'मयणहल' यमो हा ज्वमिया बंद-हासपुरा' (यमोवि ६४) ।

मयणउस पुं [मदनाकुश] श्रीरामचन्द्र का एक पुत्र, कुरा (पउम ६७, ६) ।

मयणसलाया [मो] [दे. मदनसाला] मयणसलाया [मैना, सारिना (जीव १ टी—पत्र ४१, दे ६, ११६) ।

मयणसला छी [दे. मदनसाला] सारिना-विशेष (पण १, १—पत्र ८) ।

मयणा छी [दे. मदना] मैना, सारिना (जप १२६ टी; प्राव १) ।

मयणा छी [मदना] १ बेरोवन बन्दी की एक पटरानी (डा ५, १—पत्र ३०२) । २ शत्रु के लोचपाल की एक छी (डा ४, १—पत्र २०४) ।

मयणाय पुं [मैनाक] १ शीप-विशेष । २ पर्वत-विशेष (मवि) ।

मयणिज देला मदिजिज (कपा पण १७) ।

मयणिजास पुं [दे] बन्दर, बादर (दे ६, १२६) ।

मयण पुं [मर] १ जलजन्तु-विशेष, मगर-मच्छ (मोप, गुर १३, ४६) । २ राक्ष-विशेष, मर राक्षि (गुर १३, ४६; निवार १०६) । ३ राक्ष का एक मुण्ड (पउम २६; २६) । ४ छन्द-विशेष (निग) । 'विउ पुं [विउ] कामदेव, बन्दर (बपु) । 'दय पुं [पय] बरी (पात्र, कुमा; रंभा) । 'लङ्गण पुं [लाङ्गण] बरी (बपु, नि

५४) । 'हर पुं [गृह] बही (पात्र, से १, १८; ४, ४८; बजा १५४; मवि) ।

मयरंद पुं [दे. मरन्द] पुष्प-रज, पुष्प-पराग (दे ६, १२३; पात्र, कुमा ३, ५४) ।

मयरंद पुं [मरन्द] पुष्प रज, पुष्प-मधु (दे ६, १२३; गुर ३, १०; प्राप् ११३; कुमा) ।

मयल देखो मइल = मलिन (मुपा २६२) ।

मयलगा देखो मइलगा (मुपा १२४, २०६) ।

मयलुत्ती [दे] देखो मइलपुत्ती (दे ६, १२५) ।

मयलिअ देखो मलिगिअ (जप ७२८ टी) ।

मयलिगा छी [मर्तालिगा] प्रधान, श्रेष्ठ, 'कृत्तरविमो(?)मयलिगाण' (रंभा १७) ।

मयह देखो मगह । 'सामिय पुं [स्वामिन्] मय देश का राजा (पउम ६१, ११) ।

'पुन न [पुर] राज-नृह नगर (बपु) ।

'रिहिय पुं [रिपिपति] मयन देश का राजा (पउम २०, ४७) ।

मयहर पुं [दे] १ ग्राम-प्रधान, ग्राम प्रवर, गाँव का मुखिया (वय २६८; महा, पउम ६३; ६६) । २ नि, बहील, मुखिया, नायक, 'सपनहृत्परोहपहाणमयहरेण' (स २८०; महा नि ४; पउम ६३, १७) । की. 'रिगा, 'रिया, 'री (ज १०१ १ टी; गुर १, ४१; महा, मुपा ७६; १२६) ।

मवाई छी [दे] शिरी-माया (दे ६, ११५) ।

मयार पुं [मसार] १ 'म' धार । २ मरा-रदि धरनील—मराच्य राज, 'जय जयार-मयार वमणी जैद गिहायपारा' (पउम ३, ४) ।

मयाल (मय) देखो मराड (निग) ।

मयालि पुं [मयालि] यन मय निशेष— १ एक भन्तड़ कुनि (सं १४) । २ एक भुवनेश्वरी-मयि (सु १) ।

मयाडी छी [दे] लता-विशेष, निडापी लता (दे ६, ११६; पात्र) ।

मर मर [म] मरना । मर, मार (दे ४, २३४ मग, उय; मग, पड) । मर (दे ३, १४१) । मरिअ, मरिअ (मरि, नि ४७३) ।

मुदा, मयरी, मयेम (मया, नि ४६६) ।

मरि, मरिअ (नि १२२) । मर, मरन,

मरमाण (गा ३७५, प्रासु ६४, गुपा ४०५, भाग, गुपा ६५१, प्रासु ८३) । संक्र. मरिकण (वि ५८६) । हेक्र. मरिउ, मरुउं (सति ३४) । क्र. मरियवउ (सर २४, गुपा २१५, ५०१, प्रासु १०६), मरियवउ (घप) (हे ४, ४३८) ।

मर पु [दि] १ मरक । २ उल्लु वूक (वि ६, १४०) ।

मरअड } पुन [मरकत] नील बरौवाला
मरगाव } रन विशेष. पन्ना (सति ६, ६
१, १८२, शीप, पड गा ७५ काप्र ३१),
'पत्किम्मिपोवि बहुसो काषो कि मरगमो
होह' (पुत्र ४०३) ।

मरजीवय पु [दि मरजीवक] समुद्र के भीतर
उतर कर जो यस्तु निवासने का काम करता
है वह (तिरि ३८५) ।

मरह पु [दि] गव, भईकार (हे ६, १२०,
गुप ४, १५४, प्रासु ८५, ती ३, अवि, सण
हे ४, ४२२, तिरि ६६२), 'मरालमह
(१२) दृवल्ममहो लठममपकायन्त' (धर्मवि
६७) ।

मरहा जी [दि] उलपं

'एईह बहउरिधराणिममरहाई
(१६) लखमाछाई ।

बिबकलाह उव्यधरा व

बल्लीमु, विरयाति ॥

(गुप २६६) ।

मरह (मन) देलो मरहटु (पिंग) ।

मरह देलो मरहटु । जी 'दी (कण्) ।

मरज पुन [मरण] नील गुपु (भाषा मन
पाम, जी ३३ प्रासु १०७ ११८) 'सिंसा
मरणा सवे लमवमरणेण शायव्वा' (पव
१४७) ।

मरल सन मराल = मराल, हस (प्राक ५) ।

मरह सन [मुप] धमा करना, 'धर्मसु
मरहउ ए देगाएणिग' (शाय १, ८—
पत्र १३५) ।

मरहटु पुन [महाराष्ट्र] १ बडा देश । २
देश-विशेष, महाराष्ट्र, मराठा, 'मरहटो मरहटु'
(हे १, ६६, प्राक ६, गुमा) । ३ गुजरा
(गुमा ३, ९०) । ४ पु. महाराष्ट्र देश का

निवासी, मराठा (पएह १, १—पत्र १४,
पिंग) । ५ छद विशेष (पिंग) ।

मरहट्टी जी [महाराष्ट्री] १ महाराष्ट्र की
रहनेवाली जी । २ प्राकृत भाषा का एक वेद
(वि ३५४) ।

मराल वि [दि] शलस, मन्द शालसी (हे ६,
११२, पाम) ।

मराल पुं [मराल] १ हस पत्ती (पात्र) । २
छद विशेष (पिंग) ।

मराली जी [दि] १ सारपी, सारस पत्ती की
मादा । २ दूती । ३ सली (हे ६, १४२) ।

मरिअ वि [मुत] मरा हुमा (सम्मत् १३६) ।

मरिअ वि [दि] १ धुत्ति हटा हुमा । २
विस्तोर्ण (पड) ।

मरिअ देखो मरिअ (प्रवी १०५, भास
= दो) ।

मरिइ देखो मरीइ, 'मह उलपने नाणे जिणस्त,
मरिइ सधो य निवसतो' (पत्रम ८२, २४) ।

मरिअ लक [मुप] सहन करना क्षमा
करना । मरिअद, मरिअद, मरिअद (हे ४,
२३४, महा स ६७०) । क्र. मरिसियवर
(स ६७०) ।

मरिसाणजा जी [मर्याणा] क्षमा (स ६७१) ।

मरीह पु [मराचि] १ भगवान् श्रवणदेव का
एक पीर मोर भरत चक्रवर्ती का पुत्र, जो
भगवान् महावीर का जीव था (पत्रम ११,
६५) । २ पुजी किरण (पएह १, ४—पत्र
७२ धर्मत् ७२३) ।

मरीइया जी [मरीचिका] १ किरण-समूह ।

२ गुण गुणा, किरण में जल ज्ञाति (राज) ।

मरीचि देखो मरीइ (श्रीप गुज १, ६) ।

मरीचिया देखो मरीइया (श्रीप) ।

मरु पु [मरु] १ पवन, वायु । २ देव,
देवता । ३ गुण की गुण विशेष मरुमा, मरमा
(पड) । ४ हनुमान का पिता (पत्रम ५३,
७६) । 'जदण पु [नन्दन] हनुमान्
(पत्रम ५३, ७६) । 'सुय पु [सुव] वही
(पत्रम १०१, १) । देखो मरुअ = मरुत् ।

मरु } पु [मरु, 'क] १ निर्जल देश
मरुअ } (शाय १, १६—पत्र २०२,
श्रीप) । २ देश विशेष, मारवाह (ती ३,
महा, इक, पएह १, ४—पत्र ६८) । ३

पर्वत, ऊँचा बहाद (निनु ११) । ४ कुल-
विशेष, मरुमा, मरवा (पएह २, ५—पत्र
१५०) । ५ ब्राह्मण, विप्र (सुत २, २७) ।
६ एक गुप वश । ७ मरु वशी राजा 'तस
म पुट्टीए नदो पणपत्रसय च होइ मासाण ।
मरुपाण मरुसय' (विचार ४६३) । ८ मरु
देश का निवासी (पएह १, १) । कतार न
[सन्तार] निर्जल जगल (मन्त्र ८५) ।
'थलो जी [स्थली] मरु भूमि (महा) ।
'मू जी [मू] वही (धा २३) । 'य वि
[ज] मरु देश में उवन (पएह १, ४—
पत्र ६८) ।

मरुअ देखो मरु = मरुत् (पएह १, ४—पत्र
६८) । २ एक देव-जाति (ठा २, २) ।
'कुमार पु [कुमार] बानरजीप के एक
राजा का नाम (पत्रम ६, ६७) । 'यसभ
पुं [वृषभ] इक (पएह १, ४—पत्र ६८) ।

मरुअअ } पु [मरुअ] गुप विशेष मरुमा,
मरुअय } मरवा (गड, पएह १—पत्र
३४) ।

मरुआ जी [मरुता] राजा थोशिक की एक
पत्नी (शत) ।

मरुइणी जी [मरुकिणी] ब्राह्मण जी, ब्राह्मणी
(विते ६२८) ।

मरुड देखो मरुड (शत शीप लाया १,
१—पत्र ३७) ।

मरुद पु [दि मरुद] मरुमा, मरुवे का
गाव (मवि) ।

मरुग देखो मरुअ = मरुत् (पएह १, १—
पत्र १४, इक) ।

मरुदेव पु [मरुदेव] १ ऐश्वर्य क्षेत्र में
उलपण एव लिनदेव (सम १५३) । ३ एक
कुलकर पुत्र का नाम (सम १५०, पत्रम
३, ५५) ।

मरुदेवा } जी [मरुदेवा, 'वी] १ भगवान्
मरुदेवी } श्रवणदेव की माता का नाम (उव,
सम १५०, १५१) । २ राजा थोशिक की
एक पत्नी, जिसने भगवान् महावीर के पास
दीक्षा लेकर मुक्ति पाई थी (शत) ।

मरुदेवा जी [मरुदेवा] भगवान् महावीर के
पास दीक्षा लेकर मुक्ति पानेवाली राजा
थोशिक की एक पत्नी (शत २५) ।

मरुल पुं [दि] मूल-निशाच (दि ६, ११४) ।
मरुवय देवो मरुअअ (गा ६७७, कुमा, निक्क २६) ।

मरुस देवो मरिस । मरुसिज्ज (मवि) ।

मल सक [मल्] पारण करना (भग ६, ३१ टी—पत्र ४८०) ।

मल देवो मद् । मलद्, मलेद् (हे ४, १२६, प्राक्क ६८, मवि), मलेमि (से ३, १३३), मलेंति (सुर १, ६०) । कर्म, मलिअद् (पचा १६, १०) । बह्, मलेन (मे ४, ४२) । कवह्, मलिज्जत (मे १, १३) । सक्क, मलिऊण, मणिऊण (कुमा, पि ४८५) । क, मलेव्व (वै ६६, निवा १) ।

मल पुं [दि] स्वेद पसीना (दि ६, १११) ।

मल पुंन [मल] १ मैल (कुमा, प्रासु २५) । २ पाप (कुमा) । ३ यथा कुमा कर्म (विद्य ६२२) ।

मलपिअ वि [दि] गर्वा, महकायी (दि ६, १२१) ।

मलण न [मदैन, मलन] मदन, मलना (सम १२५, गलड, दे ३, ३४, सुपा ४४०, पंचा १६, १०) ।

मलय पु [दि, मलरु] मास्तरण विशेष (छाया १, १—पत्र १३, १, १७—पत्र २२६) ।

मलय पुं [दि, मलय] १ पहाड का एक भाग (दि ६, १४४) । २ उद्यान, बगीचा (दि ६, १४४, पाप्म) ।

मलय पु [मलय] १ दक्षिण देश में स्थित एक पर्वत (सुपा ४५६, कुमा, पद्) । २ मलय-पर्वत के निवट-वर्षा देश विशेष (पत्र २७५, विग) । ३ छन्द विशेष (विग) । ४ देवविमान विशेष (शेवन्द १४३) । ५ न. श्रीसएण, चन्दन (मोव ३) । ६ पुक्षी, मलय देश का निवासी (पहल १, १) । 'फेड पुं [वि] पुं एन राधा का नाम (सुपा ६०७) । 'मिरि पुं [मिरि] एन सुमसिद्ध केन प्राचाय्य और इन्द्रवार (इक, राज) । 'चद पुं [चट्ट] एन केन राससक का नाम (सुपा ६४४) । 'हि पुं [ट्रि] पर्वत विशेष (सुपा ४७७) । 'भय वि [भय] १ मलय देश में जन्म । २ न. चन्दन (गज्ज) । 'मई की

[मती] राजा मलयवेनु की स्त्री (सुपा ६०७) । 'य [ज] देवो 'भव (राज) । 'रुद् पुं [रुद्] चन्दन का पेड (सुर १, २८) । २ न. चन्दन-काष्ठ (पाप्म) । 'चल पु [चल] मलय पर्वत (सुपा ४५६) । 'णिगल पुं [निगल] मलयचल से बहता शीतल पवन (कुमा) । 'पिल देवो 'चल (रमा) ।

मलय वि [मालय] १ मलय देश में जलन (मणु) । २ न. चन्दन (मवि) ।

मलयट्टी की [दि] तरुणी, युवति (दि ६, १२४) ।

मलयट्ट पुं [दि] युवत जनि (दि ६, १२०) ।

मलि वि [मलिन] मलवाला, मल-युक्त (मवि) ।

मलिअ वि [मुदित] जिसका मदन किया गया हो वह (गा ११०, कुमा, हे ३, १३५, कौप, छाया १, १) ।

मलिअ न [दि] १ लघु क्षेत्र । २ कुएँ (दि ६, १४४) ।

मलिअ वि [मलित] मल-युक्त, मलिन, 'मलमलियदेहवत्ता' (सुपा १६६, गज्ज) ।

मलिज्जत देवो मल = मृदु ।

मलिण वि [मलिन] मैला, मल-युक्त (कुमा, सुपा ६०१) ।

मलिणिय वि [मलिनित] मलिन किया हुआ (जव) ।

मलीमस वि [मलीमस] मलिन, मैला (पाप्म) ।

मलेव्व देवो मल = मृदु ।

मलेच्छ देवो मिलिच्छ पि ८४, नाट—वैत १८) ।

मल सक [मल्ल] देवो मल = मल (भग ६, ३३ टी) ।

मल पु [मल] १ पहलवान, कुस्ती खेने-वाला, बाहु योद्धा (वीप, नण्, पल्ल २, ४, कुमा) । २ राजा, 'दीवसिद्धादिपित्तण-

मले मिलित्वि नोसावे' (कुप्र १३१) । ३ शीत का अत्युत्कृष्ट-रसम् । ४ छपरण का आधार भूत पद्म (भग ८, १—पत्र ३७६) ।

'जुद्ध न [जुद्ध] कुस्ती (नण्, हे ४, ३८२) । 'दुद्ध पुं [दुद्ध] एक राज-

कुमार (छाया १, ८) । 'वाइ पुं [वादिन्] एक सुविख्यात प्राचीन जैन आचार्य और ऋषिकार (सम्मत १२०) ।

मल ॥ [माल्य] १ पुष्प, फूल (छ ४, ४) । २ फूल की गुंथी हुई माला (पाप्म, मीप) । ३ मल्ल-स्थित पुष्पमाला (हे २, ७६) । ४ एक देव-विमान (सम १६) । ५ मल्लि, 'मल्ल ति बलीए एण' (भाव० वृत्ति० भा० १ पत्र ३३२) ।

मल्ल पुं [मल्लि, निम्न] मूल विशेष (भग, मीप, पि ८६) ।

मल्ल न [दि, मल्लक] १ पान विशेष, मल्लय शराब (विसे २४७ टी, पिड २१०; तदु ४४, महा, कुलक १४, छाया १, ६, दे ६, १४५, प्रदी ६७) । २ चपक, पानपात्र (दि ६, १४५) ।

मल्लय न [दि] मृदु-भेद, एक तरह का वृक्ष । २ वि. कुसुम से रत्न (दि ६, १४५) ।

मल्लणी की [दि] मातुलानी, मामी (दि ६, ११२, पाप्म, प्राक्क ३८) ।

मलि वि [मलिन] पारण-कर्ता (भग ६, ३३ टी) ।

मलि वि [मालिन्य] माल्य-युक्त, मालावाला (मीप) ।

मलि की [मलि] १ स्त्रीसर्वे जिन-देव का नाम (सम ४३, छाया १, ८, मगल १२, पवि) । २ वृक्ष विशेष, मोतिया का गाछ (दि २, १८) । 'णाह, 'नाह पुं [नाथ] जलोसर्वे जिन-देव (महा, कुप्र १३०) ।

मलि की [मलि] पुष्प-विशेष (भग ६, ३३ टी) ।

मलिअज्जुग पु [मल्लिराजुंन] एक राजा का नाम (कुमा) ।

मलिआ की [मल्लिरा] १ पुष्प-वृक्ष विशेष (छाया १, ८, कुप्र ४६) । २ पुष्प-विशेष (कुमा) । ३ छन्द विशेष (विग) ।

मलिहाण न [माल्याधान] १ पुष्प-व्ययन-स्थान । २ बैराज-नाम (भग ६, ३३ टी—पत्र ४८०) ।

मलो देवो मलि (छाया १, ८, पत्र २० ३५; विचार १४८, कुमा) ।

मल्ल शक [दि] मौज मानना, लोला करना ।
 वह. मल्लत (दि ६, ११६ टी. भवि) ।
 मल्लण न [द] लोला, मौज (दि ६, ११६) ।
 मय सक [मापय] मापना, माप करना,
 नापना । मयति (सिदि ४२५) । कर्म.
 'मापयाई मयिजति' (कम्म ५, ८५ टी) ।
 कवक. मयिजमाण (विसे १४००) ।

मयिथ वि [मापित] मापा हुआ (वैतु ३१) ।
 मयली (मा) की [मस्य] मयली (पि
 २३३) ।

मस पुं [मश, 'क'] १ शरीर पर का
 मसअ [सिताकार काला दाब, तिल (पव
 २५७) । २ मच्छद, छुद्र जन्तु-विशेष (गा
 ५६०, चाह १०, वज्ज ५६) ।

मसकसार न [मसकसार] हड्डों का एक
 स्वयं भ्रामाण्य विमान (देवेन्द्र २६९) ।

मसग देखो मसअ (मा, मीप, पठम ३३,
 १०८, की १८) ।

मसण वि [मसण] १ स्निग्ध, चिकना ।
 २ सुकुमाल, कोमल, धर्मेकश । ३ मन्द,
 धीमा (हे १, १३०, कुमा) ।

मसरय सव [दि] सटुचना, खेदना । सक
 'बलवि करपुलीउ मसरकिवि (अप ५)
 (मवि) ।

मसाण न [मसगान] मसाण, मरपट (गा
 ४०८, प्राप्, कुमा) ।

मसार पु [दि, मसार] मल्लता सपादक
 पायाए विशेष, कसीटी का पत्थर (आया १,
 १—पत्र ६, मीप) ।

मसारगल पु [मसारगल] एक खल जाति
 (आया १, १—पत्र ३१, कप्प उत ३६,
 ७६, इक) ।

मसि डी [मसि] १ काल, वज्जल (कप्प) ।
 २ स्मार्त, सियारी (सुर २, ५) ।

मसिहार पु [मसिहार] पानिय-परिभाजक
 विशेष (मीप) ।

मसिण देखो मसण (हे १, १३०, कुमा,
 मीप से १, ४५, ५, ६४) ।

मसिण वि [दि] रम्य, सुन्दर (दि ६, ११८) ।

मसिणिअ वि [मसणिअ] १ गृष्ट, सुद
 रिया हुआ, भाजित, 'रेसिणिअ मसिणिअ'

(पाप) । २ स्निग्ध किया हुआ (से ६,
 ६) । ३ विपुलित, विमदित (से १, ५५) ।
 मसी देखो मसि (उवा) ।

मसूर पुन [मसूर, 'क'] १ पान्य विशेष,
 मसूरग मसुरि (ठा ४, ३, सम १४६, लिड
 मसूरय ६२३) । २ उच्छीर्षण, श्रोतोसा
 (सुर २, ८३, कप्प) । ३ वज्र या चर्म का
 वृताकार प्रासन (पव ८४) ।

मसु देखो मसु (सति १२, पि ३१२) ।
 मसूरग देखो मसूरग 'मसूरय य पितो'
 (वीवस ५२) ।

मह सक [काह] चाहना, बा-छना ।
 महइ (ह ४, १६२, कुमा सण) ।

मह सक [मय] १ मयना, बिलोडन
 करना । २ मारना । महज्जा (उवा) ।

मह सक [मह] पूजना । महइ (कुमा),
 महइ (सिदि ५६६) । सक, महिअ (कुमा) ।
 क. महणिज्ज (उप पु १२६) ।

मह पुन [मह] छलन (विपा १, १—पत्र
 ५, रमा, पाप्, सण) ।

मह पु [मह] वज्र (चक्र, गज) ।

मह वि [मह] १ बडा, बूझ । २ विपुल,
 विस्तीर्ण । ३ उत्तम, श्रेष्ठ 'एय मह सत्तुसेह'
 (आया १, १—पत्र १३, काल, जी ७,
 हे १, ५) । जी. 'ई (उव, महा) । 'पवी
 जी [देवी] पटरानी (भवि) । 'कतजस
 पु [वा-तयशासु] रासल वर-का एक
 राज, एव सक-पति (पव ५, २६५) ।
 'कमलगा न [वमलाङ्ग] सख्या विशेष,
 न-४ लाल कमल की सख्या (पो २) ।

'कन न [काव] सर्ग-वद उत्तम काव्य-
 ग्रन्थ (भवि) । 'काल देखो महा-काल
 (देवेन्द्र २४) । 'गइ पु [भाव] राजल वर
 का एक राजा, एव लवरा (पव ५, २६५) ।
 'गइ देखो महा-गइ (सम ६३) । 'गघ
 वि [अर्थ] महा मूल्य, नीमती (सुर ३,
 १०३, सुपा ३७) । 'गघिअ वि [अर्पित]
 १ मरणा दुर्लभ (से १४, ३७) । २
 विभूषित, 'विमलयोगवगुणमहपयिअ' (सुपा
 १, ६०) । ३ सम्मानित भविष्यवत्पुरुष-
 सम्प्राप्तिपरशुमित्रो मर्यादविधो (उव) ।
 'गियम (अप) वि [अर्पित] बहु-मूल्य,

महंगा (भवि) । 'वद पु [चन्द्र] १
 राजकुमार-विशेष (विपा २, ५, ६) । २
 एक राजा (विपा १, ५) । 'ब वि [अर्थ]
 १ बडा ऐश्वर्यवाला । २ बडी पूजा—सत्कार-
 वाला (ठा ३, १—पत्र ११७, भग) ।
 'ब वि [अर्थ] १ प्रति पूज्य (ठा ३, १,
 भग) । 'च्छरिय न [आश्चर्य] बडा
 आश्चर्य (सुर १०, ११८) । 'जकप पु
 'यथा' भवमान् ब्रजितनाय का शासना-
 विधायक देव (पव २६, सति ७) । 'आहा
 जी [ज्वाला] विद्यादेवो-विशेष (सति ६) ।
 'जुइय वि [द्युति] महान् तेजवाला
 (भग, मीप) । 'डिड जी [यद्धि] महान्
 वैभवं (राय) । 'डिडय, 'डुहीअ वि
 [मृद्विक] विपुल वैभववाला (भग, मीपमा
 १०) । 'णय पु [अर्णय] महा सागर
 (सुपा ४१७, हे १, २६६) । 'णया जी
 [अर्णय] १ बडी नदी । २ सुदूर गामिनी
 (कस ४, २७ टि, वृह ५) । 'तुडियार न
 [मुदिताङ्ग] न-४ लाल द्रुति की सख्या
 (पो २) । 'त्तण न [त्त] बडाई, महत्ता
 (आ २७) । 'त्तर वि [तर] १ बहुत बडा
 (स्वयं २८) । २ द्रुतिमा, नायक, प्रपान
 (कप्प, मीप, विपा १, ८) । ३ भ्रात पुर
 का रक्षक (मीप) । जी. 'रिया, 'री (ठा
 ४, १—पत्र १६८, इक) । 'त्य वि [अर्थ]
 महान् भवेवाला (आया १, ८, आ २०) ।
 'त्य न [अरु] मरु विशेष, बर हृषियार
 (पठम ७१, ६७) । 'थियम पुत्री [थिय]
 मर्यादा (भवि) । 'द्विल्लि वि [द्विल्ल]
 बडा दलवार (प्राप् १२३) । 'दह पु
 [द्रह] बडा हृद (आया १, १—पत्र ६४,
 मा १८६ अ) । 'इ जी [अत्रि] १ बडी
 मायका । २ परिहृह (पह १, १—पत्र
 ६२) । 'दुटुम पु [द्रुम] १ महान् वृक्ष
 (हे ४, ४४५) । २ वैरोपन इन्द्र के एक
 पदाति-नीत्य का अधिपति (ठा ५, १—पत्र
 ३०२) । 'द्वि वि [द्वि] बडी शक्तिवाला
 (कुमा) । 'धम पु [धम] बडा धुवां
 (महा) । 'जय देखो 'णय (आ २८) ।
 'पाण न [प्राण] व्यात विशेष (सिदि १३३०) ।
 'पुंडरीअ पु [पुण्डरीक] प्रह विशेष

(हे २, १२०) । °पु पुं [आत्मन्] महान्
आत्मा, महा-पुरुष (पउम ११८, १२१) ।
°फल वि [फल] महान् फलवाला (धुपा
६२१) । °वाहु पु [वाहु] राखस वंश का
एक राखा, एक सका-भति (पउम ५, २६५) ।

°बोह पुं [अबोध] महा-सागर,

‘दूय दुसत सोव खण्ण

निव्वासिया उहा मुगया ।

महबोहे जैरुणं जह

पुणरवि नागया तय्य

(सम्मत् १२०) ।

°बजल पुं [बज] १ एक राज-कुमार
(जिवा २, ७, मग ११, ११, अत) । २ वि.
विपुन बलवाला (मग, मौप) । देखो महा-
बल । °बभय वि [भय] महामय-जनक
(पएह १, १) । °भयुय न [भूत] धुविवी
आवि पांच इय्य (सुप २, १, २२) । °मरुय
पु [मरुत] एक महर्षि अन्तर्द्ध युनि विशेष
(यत् २५) । °मास पु [अभ] महान्
माघ (मौप) । °गर देखो °तर (छाया १,
१—पम ३७) । °रय पु [रय] राखस
वंश का एक राजा, एक सका-भति (पउम ५,
२६५) । °रिसि पु [रुधि] महर्षि, महा-
युनि (उव, रमण ३७) । °रिह वि [अर्ह]
वदे के योग्य, बहु मूल्य, बीमती (जिवा १,
३, मौप, जि १४०) । °याय पु [यान]
महान् पन्न (मौप ३८७) । °जइय वि
[अगिक] महाव्रतवाला (मुग ५७५) ।
°जय पु न [अत] महान् व्रत, ‘महत्त्वया
पंच हुति इमे’ (पउम ११, २३), वेदा
महत्त्वया ते उतगुणसंयुग्यानि न ॥ सम्म’
(सिक्का ४८, मग, उव) । °जयय पु
[जयय] मित्र खर्च (उप पु १०८) ।
°सलाग छी [शलाग] पत्य विशेष, एक
प्रकार की नाप (जीवत १३१) । °सिप पु
[शिप] एक राजा, पठ बलदेव और वामदेव
का पिता (सम १५२) । °सुख देखो महा-
सुख (देव १३५) । °सेण पु [सेन]
१ आठवें जिनदेव का पिता (सम १५०) ।
२ एक राजा (महा) । ३ एक यादव (उव
६४८ वी) । ४ न. वन विशेष (जिते
१४४) । देखो महा-सेण । देखो महा ।

महअर पुं [दे] गह्वर-पति, निकुञ्ज का मालिक
(दे ६, १२३) ।

महइं थ [महाति] १ अति बड़ा । २ अत्यन्त
निपुण । °जड वि [जट] अति बड़ी जटा-
वाला (पउम ५८, १२) । °महाइंइ पु
[महेन्द्रजित्] इस्वाकु वंश के एक राजा
का नाम (पउम ५, ६) । °महापुरिस पुं
[महापुरिष] १ सर्वोत्तम पुरुष, सर्व श्रेष्ठ
पुरुष । २ जिनदेव, जिन भगवान् (पउम १,
१८) । °महालय वि [महत्] अत्यन्त
बड़ा, ‘महम्महालयसि संसारसि’ (उवा, सम
७२) । छी. °छिया (मग, उवा) ।

महई देखो मह = महत् ।

महग पु [दे] उच्छ, ऊट (दे ६, ११७) ।

महत देखो मह = महत् (आचा, मौप, कुमा) ।

महघ न [माहत्] १ महत्त्व । २ महत्त्ववाला
(ठा ३, १—पम ११७) ।

महण न [दे] पिता का घर (दे ६, ११४) ।

महण न [मयन] १ विलोडन (से १, ४६,
वजा ८) । २ वर्षण (कुम १४८) । ३ वि.
मालेवाला, ‘वरितनागदयमहणा’ (पएह १,
५) । ४ जिनास करनेवाला, ‘ताण व
वरण व अवमहण’ (सबोध ३५, मुर ७,
२२५) । छी °जो (आ ५६) ।

महण पुं [महन] राखस थरा का एक राजा,
एक सका-भति (पउम ५, २६२) ।

महजिअ देखो मह = महत् ।

महति देखो महईं (ठा ३, ५, छाया १,
१, मौप) ।

महती छी [महती] बीणा विशेष, सी ताँत-
वाली बीणा (राय ५६) ।

महत्तरार वि [दे] १ आदद, भाजन । २
भोजन (दे ६, १२५) ।

महपुस पु [दे] माहात्म्य, प्रभाव, ‘तुह
कुचपयहाए करिहाए महपुसो एखो’ (रमा
४३) ।

महमह देखो मयमय । महमह (दे ५, ७८
पद, का ४१७) महमहेद (उव) । बहु
महमहंत (गाम् २१७) । सह महमहिअ
(कुमा) ।

महमहिअ वि [प्रसूत] १ पैना हुआ (हे १,
१५६, वज्जा १५०) । २ सुरजित (रमा) ।

महम्मह देखो महमह, ‘जिप्रलोअसिरी महम्म-
हईं’ (गा ६०४) ।

महया देखो मश; ‘महमाहिमवतमहंतमलय-
मदरहिंदसारे’ (छाया १, १ वी—पम ६,
मौप, जिवा १, १, मग) ।

महर वि [दे] प्रथमर्ध, अशक्त (दे ६,
११३) ।

महलयपकय देखो महालयक्य (पह—पउ
१७५) ।

महल वि [दे, महत्] १ बड़ा, बड़ा (दे
६, १४३, उवा, गउड, मुर १, ५५, पवा
५, १६, सबोध ५७, मोप १३६, प्राप्
१५८, जय १२, धुपा ११७) । २ बुद्ध, ज्ञान,
विद्या, विस्तीर्ण (दे ६, १४३; प्रवि १०;
स ६६२, मवि) । छी. °छिया (मौप, धुपा
११८, ५८०) ।

महल वि [दे] १ मुल, नाचा, बकवादी
(दे ६, १४३, पद) । २ पुं. जनवि,
समुद्र (दे ६, १४३) । ३ सलूह, निवह (दे
६, १४३; मुर १, ५५) ।

महलिर देखो महल; ‘हृतिहकडिणमहलिर-
पयनहएरपएण विकारलो’ (मुग ११) ।

महय देखो मघन (कुमा मवि) ।

महा छी [मघा] मघन विशेष (सम १२,
मुज १०, ५, इक) ।

महा देखो मह = महत् (उवा) । °अडड न
[अटड] सख्या-विशेष, ८४ लाख महाप्र-
या की सख्या (जो २) । °अडडन न
[अटडन] सख्या-विशेष, ८४ लाख प्रड
(जो २) । °आल देखो °आल (नाड—वैत
८२) । °ऊह न [ऊह] सख्या विशेष,
८४ लाख महाऊहा की सख्या (जो २) ।
°कड पुं [कडि] श्रेष्ठ कवि, समर्थ कवि
‘वडड वैदय ८४३, रमा) । °कडिय पुं
[कडित] व्यस्तर देखो भी एक जाति
(पएह १, ४, मौप इक) । °कच्छ पुं
[कच्छ] १ महाहिंदेह वर्ष का एक विजय-
दिवस—प्रातः (ठा २, ३, इम) । २ देव-
विशेष (अ ४) । °रन्दा छी [रन्दा]
अतिवाय नामक इन्द्र की एक भय-भट्टि
(ठा ४, १—पम २०४, छाया २, इम) ।
°रण्ड पुं [रुण्ड] राजा श्रेष्ठिक का एक

पुत्र (निर १, १) । 'कण्हा' की ['कण्णा'] राजा श्रेणिक को एक पत्नी (अंत २५) । 'कप्प' पुं ['कल्प'] १ जैन ग्रन्थ-विशेष (एरि) । २ काल का एक परिमाण (मग १५) । 'कमल' न ['कमल'] सख्या-विशेष, चौरासी लाख महाकमला की संख्या (जो २) । 'कव्व' देखो 'मह-कव्व' (सम्मत १५६) । 'काय' पुं ['काय'] १ महोरार देवों का उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३; इक) । २ वि. महान् शरीरवाला (उवा) । 'काल' पुं ['काल'] १ महाप्रह-विशेष, एक प्रह-देवता (सुज २०; ठा २, ३) । २ बसिए खवा-समुद्र के पाताल-कलरा का अधिपत्यक देव (ठा ४, २—पत्र २२६) । ३ एक इन्द्र, पिशाच-निकाय का उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८३) । ४ परमा-धार्मिक देवों की एक जाति (सम २८) । ५ बाण-कुमार देवों का एक लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १६८) । ६ वेल्मन्न इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १६८) । ७ वन निधियों में एक निधि, जो धातुओं की वृत्ति करता है (उप ६८६ टी, ठा ६—पत्र ४४४) । ८ सावनी देव-भूमि का एक नरकावास (ठा ५, ३—पत्र ३४१, सम ५८) । ९ पिशाच देवों की एक जाति (राज) । १० उज्जयिनी नगरी का एक प्राचीन जैन मन्दिर (कुम १७४) । ११ शिव, महादेव (माल ६) । १२ उज्जयिनी का एक शमशान (प्रत) । १३ राजा श्रेणिक का एक पुत्र (निर १, १) । १४ न. एक देव-विमान (सम ३५) । 'काली' की ['कालां'] १ एक विद्या-देवी (सति ५) । २ भगवान् सुमतिनाम की रासन-देवी (सति ६) । ३ राजा श्रेणिक की एक पत्नी (अंत २५) । 'किण्हा' की ['कण्णा'] एक महान-नदी (ठा ५; ३—पत्र ३५१) । 'कुमुद', 'कुमुय' न ['कुमुद'] १ एक देव-विमान (सम ३३) । २ संख्या-विशेष, चौरासी लाख महाकुमुय की संख्या (जो २) । 'कुमुय' अंग न ['कुमु-दाह'] संख्या, बुट्टों की चौरासी लाख से छुणने पर जो संख्या सत्य हो वह (जो २) । 'कूम' पुं ['कूमे'] दुर्गावतार (पउठ) ।

'कुल' न ['कुल'] १ श्रेष्ठ कुल (निचु ८) । २ वि. प्रख्यात कुल में उत्पन्न, निस्संवा जे महाकुला (सुज १, ८, २४) । 'गंगा' की ['गङ्गा'] परिमाण-विशेष (मग १५) । 'गह' पुं ['गह'] १ सूर्य भादि ज्योतिष्क (साधं ८७) । 'गह' वि ['आग्रह'] आग्रही, हठी (साधं ८७) । 'गिरि' पुं ['गिरि'] १ एक जैन महर्षि (उव; वण्) । २ वडा पर्वत (गउड) । 'गोव' पुं ['गोव'] १ महान् रसक । ३ जिन भगवान् (उवा; विसे २६५६) । 'घोस' पुं ['घोष'] १ ऐरवत क्षेत्र के एक भावी जितदेव (सम १५४) । २ एक इन्द्र, स्वामि कुमार देवों का उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८३) । ३ एक कुलकर कुपुत्र (सम १५०) । ४ परमाधार्मिक देवों की एक जाति (सम २६) । ५ न. देवविमान-विशेष (सम १२, १७) । चद पुं ['चन्द्र'] ऐरवत वर्ष के एक भावी तीर्थंकर (सम १५४) । 'जण्ण' पुं ['जनि'र] अँहो, सार्धवाह भादि नगर के अण्य-माय्य लोभ (कुमा) । 'जलहि' पुं ['जलधि'] महा-सागर (सुपा ७७४) । 'जस' पुं ['यसास्'] १ भल्ल चक्रवर्ती का एक पौत्र (ठा ८—पत्र ४२६) । २ ऐरवत क्षेत्र के चतुर्थ भावी तीर्थंकर-देव (सम १५४) । ३ वि. महान् यशस्वी (सत १२, २३) । 'जाह' की ['जाति'] कुल-विशेष (एण १) । 'जाण' न ['थान'] १ वडा यान—वाहन । २ कारिज, संयम (घाथा) । ३ एक विद्याधर-नगर का नाम (इक) । ४ पुं. मोक्ष, मुक्ति (आभा) । 'जुद्ध' न ['युद्ध'] मोक्ष लडाई (जीव ३) । 'जुम्म' पुं न ['युम्म'] महान् राशि (मग ३५) । 'ण' देखो 'यण'; 'गामकुमारभासे धमदमयवे महाराजम्भो वा' (मोघ ६६) । 'णई' की ['नदी'] बड़ी नदी (गउड, पउठ ४०, १३) । 'णदियावत्त' पुं ['नन्धावत्त'] १ घोष नामक इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १६८) । २ न. एक देवविमान (सम ३२) । 'णगर' देखो 'नगर' (राज) । 'णल्लिण' देखो 'नल्लिण' (राज) । 'णील' न ['नील'] १ रत्न-विशेष । २ वि. मति नील वर्णवाता (जीव ३; मीप) । 'णीय' देखो

'नील' (राज) । 'णुभाअ', 'णुभाग' वि ['अनुभाग'] महानुभाव, महारथ (नाट—यातवी ३६; गउड १, ४; मग, सिरि १६) । 'णुभाव' वि ['अनुभाव'] वही प्रभं (सुड २, ३५; ३६६) । 'तमपहा' की ['तम-प्रभा'] सप्तम नरक-भूयित्री (पव १७२) । 'तमा' की ['तमा'] वही (पउठ ७५६) । 'तीरा' की ['तीरा'] नदी-विशेष (ठा ५, ३—पत्र ३५१) । 'तुडिय' न ['तुडित'] महानुविताग की चौरासी लाख से छुणने पर जो संख्या सत्य हो वह, संख्या-विशेष (जो २) । 'दामदि' पुं ['दामादि'] दैतानेन्द्र के बुधम-सीय का अधिपति (इक) । 'दामदि' पुं ['दामदि'] वही प्रभं (ठा ५, ३—पत्र ३०३) । 'दुम' देखो 'मह-दुम' (इक) । २ न. एक देव-विमान (सम ३५) । 'दुमसेण' पुं ['दुमसेन'] राजा श्रेणिक का एक पुत्र जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा की थी (सुड ३) । 'देव' पुं ['देव'] १ श्रेष्ठ देव, जिन-देव (पउठ १०६, १२) । २ शिव, गौरी-वति (पउठ १०६, १२; सम्मत ७६) । 'देवी' की ['देवी'] पटरानी (कप्प) । 'धंग' पुं ['धन'] एक वणिक् (पउठ ५४, १८) । 'धणु' पुं ['धनु'] बलदेव का एक पुत्र (निर १, ५) । 'नई' की ['नदी'] बड़ी नदी (सम २७, कस) । 'नदियावत्त' देखो 'णदियावत्त' (इक) । 'नगर' न ['नगर'] वडा शहर (पउठ २, ४) । 'नय' पुं ['नय'] ब्रह्मपुत्र भादि बड़ी नदी (माल ६) । 'नल्लिण' न ['नल्लिण'] १ संख्या-विशेष, महानुविताग की चौरासी लाख से छुणने पर जो संख्या सत्य हो वह (जो २) । २ एक देव-विमान (सम ३३) । 'नल्लिण' न ['नल्लिणाङ्ग'] संख्या-विशेष, नलिन की चौरासी लाख से छुणने पर जो संख्या सत्य हो वह (जो २) । 'निज्जामय' पुं ['नियामरु'] श्रेष्ठ कर्णधार (उवा) । 'निहा' की ['निद्रा'] युल्लु, मरण (पउठ ६, १६८) । 'निनाद', 'निनाय' वि ['निनाद'] प्रख्यात, प्रसिद्ध (मोघ ८६, ८६ टी) । 'निसीह' न ['निसीय'] एक जैन धाम-ग्रन्थ (गउड ३, २६) । 'नीळा' की ['नीला'] एक महानदी

(ठा ५, ३—पत्र ३५१) । 'पडम पुं' [पडा] १ भरतदेव का भावी प्रथम तीर्थकर (सम १५३) । २ पुंडरीखी नगरी का एक राजा और मोक्ष से राजपि (छाया १, १६—पत्र २४३) । ३ भारतवर्ष में उत्पन्न नववां चक्रवर्ती राजा (सम १५२, पत्र २०, १४३) । ४ भरतदेव का भावी नववां चक्रवर्ती राजा (सम १५४) । ५ एक राजा (ठा १) । ६ एक निधि (ठा ६—पत्र ४४६) । ७ एक इह (सम १०४, ठा २, ३—पत्र ७२) । ८ राजा श्रीणिष का एक पौत्र (निर १, १) । ९ देव-विशेष (दीव) । १० वृक्ष विशेष (ठा २, ३) । ११ न. सूर्या-विशेष, महापद्म का चौरासी ताल से गुणने पर जो सख्या सत्य हो वह (जो २) । १२ एक देव-विमान (सम ३३) । 'पडमअग' न [पडमाइ] सूर्या-विशेष, पद्म की चौरासी ताल से गुणने पर जो सख्या सत्य हो वह (जो २) । 'पडमा की' [पडमा] राजा श्रीणिष की एक पुत्र वधू (निर १, १) । 'पडिय नि' [पडित] अष्ट विद्वान् (रत्ना) । 'पट्टण न' [पत्तन] बड़ा शहर (उवा) । 'पण्ण, पण वि' [प्रज्ञ] श्रेष्ठ बुद्धिवाला (उप ७७३; नि २७६) । 'पभ न' [प्रभ] एक देव-विमान (सम १३) । 'पभा की' [प्रभा] एक राक्षी (उप १०३१ टी) । 'पग्ह पु' [पदम] महाविदेह नर का एक निगम—प्राप्त (ठा २, ३) । 'परिण्णा, परिहा की' [परिहा] आचार्य सुन के प्रथम धृतस्वयं का सातवां अध्ययन (राज, भाष) । 'पमु पुं' [पश] मनुष्य (गड्ड) । 'पह पु' [पय] बड़ा रास्ता, राज-मार्ग (मग. पण्ड १, ३, भीष) । 'पाण न' [प्राण] मृद्धानोक्त-पित एक देव विमान (उत्त १८, २८) । 'पायाल पुं' [पानाल] बड़ा पाठान-नगरा (ठा ४, २—पत्र २२६, सम ७३) । 'पालि की' [पालि] १ बड़ा पत्थ । २ सागरोगम-परिमित भव-स्थिति—धायु, 'महमासि महापाणे' उद्यम वरिसमधोवसे । जा ॥ पालिमहाताली दिग्धा वरिससमोवमा' (उत्त १८, २८) ।

'पिड पु' [पिड] पिता का बड़ा भाई (विपा १, ३—पत्र ४०) । 'पीठ पु' [पीठ] एक पैर महर्षि (सुट्टि ८१ टी) । 'पुरि न' [पुह] एक देव-विमान (सम २२) । 'पुड न' [पुण्ड] एक देव-विमान (सम २२) । 'पुंडरीय न' [पुण्डरीक] १ विशाल श्वेत कमल (राय) । २ पु. ग्रह-विशेष (सम १०४) । ३ देव विशेष । ४ देवो 'पुंडरीय' (राज) । 'पुर न' [पुर] १ एक विद्याधर नगर (इव) । २ नगर-विशेष (विपा २, ७) । 'पुरा की' [पुरी] महापदम विजय की राजधानी (ठा २, ३—पत्र ८०) । 'पुरिस पुं' [पुरि] १ श्रेष्ठ पुरुष (पण्ड २, ४) । २ निपुण्य निचय का उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८३) । 'रुरी देवो' 'पुरा' (इक) । 'पौंडरीय न' [पुण्डरीक] एक देव विमान (स ३३) । देवो 'पुंडरीय' (ठा २, ३—पत्र ७२) । 'फल देवो मह-पफल' (उवा) । 'फलिह न' [स्फटिक] शिखरो पर्वत का एक उत्तर-दिशा-स्थित कूट (राज) । 'वल वि' [वल] १ महान् बलवाला (मग) । २ पु. ऐश्वर्य क्षेत्र का एक भावी तीर्थकर (सम १५४) । ३ चक्रवर्ती भरत के वंश में उत्पन्न एक राजा (पत्र ५, ४, ठा ८—पत्र ४२०) । ४ सोमवहीष एक नर-वलि (पत्र ५, १०) । ५ शीवों वलदेव का पूर्वजन्मीय नाम (पत्र २०, १६०) । ६ भारतवर्ष का भावी छठवां वामुदेव (सम १५४) । 'वाहु पुं' [वाहु] १ भारत नर का भावी चतुर्थ वामुदेव (सम १५४) । २ रावण का एक पुत्र (पत्र ५६, ३०) । अरार विदेह-नर में उत्पन्न एक वामुदेव (भाव ४) । 'मह न' [मह] वा विशेष (पत्र २७१) । 'मह-प-हिमा की' [महप्रनिमा] नीचे देवो (भीष) । 'महा की' [महा] व्रत विशेष, वायोत्तरम-ध्यान का एक व्रत (ठा २, ३—पत्र ६४) । 'मय देवो मह-वमय' (भाषा) । 'आअ, भांग वि' [आग] महामुखाव, महाशय्य (पनि १७४, महा. गुप्ता १६८; उप ३ ३) । 'मीम पुं' [मीम] १ राक्षसों का उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५) । २ भारतवर्ष का भावी आठवां प्रणिशामुदेव

(सम १५४) । ३ वि. बड़ा मयानक (देव ४) । 'भीमसेण पुं' [भीमसेन] एक कुलकर पुरुष का नाम (सम १५०) । 'भुअ पुं' [भुज] देव-विशेष (दीव) । 'मुअग पुं' [मुअग] शेष नाम (सं ७, ५६) । 'भोया की' [भोगा] एक महा-नदी (ठा ५, ३—पत्र ३४१) । 'मउद पुं' [मुकुन्द] वाद्य-विशेष (मग) । 'मति पुं' [मन्त्रिन्] १ सर्वोच्च समार्य, प्रधान मंत्री (भीष. गुप्ता २२३, छाया १, १) । २ हस्ति-नैय का मय्यस (छाया १, १—पत्र १६) । 'मंस न' [मांस] मनुष्य का मांस (कपू) । 'मय पुं' [अमार्य] प्रधान मंत्री (कुमार) । 'मत्त पुं' [मात्र] हस्तिक, हाथी का महावत, 'ततो मरतिहनिवत्स कुंजरा' सिंहमयविह्वलिमया ।

मयगणियमहामत्ता मत्तायि

पलादिया मति'

(कुप ३६४) ।

'मरुया की' [मरुता] राजा श्रीणिष की एक पत्नी (मत्त) । 'मह पुं' [मह] महो-त्सव (भाव ४) । 'महंत वि' [महन्] अति बड़ा (गुप्ता ५६४, स ६६३) । 'माई' (मप) की [माया] छन्द-विशेष (पिप) । 'माउया की' [माउरा] माता की वही महुन (विपा १, ३—पत्र ४०) । 'माडर पुं' [माडर] ईशानदेव के रघु-रथ का अभिपति (ठा ५, १—पत्र ३०३, इक) । 'माणसिआ की' [मानसिका] एक विद्या-देवी (सति ६) । 'माण पुं' [प्रादण] श्रेष्ठ शास्त्र (उवा) । 'मुणि पुं' [मुनि] श्रेष्ठ शास्त्र (कुमा) । 'मेह पुं' [मेघ] बड़ा मेघ (छाया १, १—पत्र ४, ठा ४, ४) । 'मेह वि' [मेघ] बुद्धिमान् (उप १२२ टी) । 'मोकर वि' [मूर] बड़ा वेचरूक (उप १०३१ टी) । 'यण पुं' [जन्] श्रेष्ठ लोग (गुप्ता २६१) । 'यस देवो' 'जस' (भीष. वण) । 'रररम पुं' [राशम] संवा नवरी का एक राजा जो वनराहुत का पुत्र था (पत्र ५, १३६) । 'रह पुं' [रय] १ बड़ा रण (पण्ड २, ४—पत्र १२०) । २ वि. बड़ा रघुनाथ । ३ बड़ा योद्धा, दस

हजार योधाभो के साथ थकेला बुभनेवाला
(सूय १, ३, १, १; गठ)। 'रहि वि
[रथिम्] देवो पूर्व का २रा और ३रा
अर्थ (उप ७२८ टी)। 'राय पुं [राज]
१ बड़ा राजा; राजाधिराज (उप ७९८
टी; रंभा, महा)। २ सामाजिक देव, इन्द्र-
समान ऋद्धिवाला देव (सुर १५, ६)। ३
लोकपाल देव (सम १५)। 'रिद्ध पुं [रिद्ध]
बलि मामक इन्द्र का एक सेनापति (इक)।
'रिसि पुं [रिद्धि] बड़ा मुनि, श्रेष्ठ साधु
(उप)। 'रिह, रूह देवो मह-रिह (पि
१४०; मजि १८७)। 'रोरु पुं [रोरु]
अप्रतिष्ठान नरदेन्द्र की उत्तर दिशा में स्थित
एक नरनावास (धैरेन्द्र २४)। 'रोरुअ पुं
[रोरुक, रौरव] सातवीं नरक-भूमि का
एक नरकवास—नरक-स्वान (मम ५८, ठा
५, ३—पन ३५१, इक)। 'रोहिणी स्त्री
[रोहिणी] एक महा-विद्या (राज)। 'लंजर
पुं [अलंजर] बड़ा गल-कुम्भ (ठा ४,
२—पन २२६)। 'लच्छी स्त्री [लक्ष्मी]
१ एक श्रेष्ठ-भार्या (उप ७२८ टी)। २ छन्द-
विशेष (मिग)। ३ श्रेष्ठ लक्ष्मी। ४ लक्ष्मी-
विशेष (माठ)। 'ल्यग न [लताङ्ग]
संख्या-विशेष, लता नामक सब्जी की बीरासी
लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह
(इक; जो २)। 'लया स्त्री [लता] संख्या-
विशेष, महान्तोष की बीरासी लाख से गुणने
पर जो संख्या लब्ध हो वह (जो २)।
'लोहिअकप पुं [लोहिताक्ष] कबीर के
महिष शिष्य का अभिपति (ठा ५, १—पन
१०२, इक)। 'यक्ष न [यक्ष] परस्पर-
संबन्ध प्रार्थना के वाक्यों का समुदाय (उप
८५६)। 'यक्ष पुं [यक्ष] विजय-विशेष-
विदेह वर्ण ॥ एक प्रान्त (ठा २, ३; इक)।
'यच्छा स्त्री [यक्षा] यही (इक)। 'यण
न [यन] मयुरा के निरट का एक वन
(तो ७)। 'यण पुन [आपण] बड़ी इकाय
(मजि)। 'यप्प पुं [यप्प] विजयनेत्र-विशेष
(ठा २, ३—पन ८०; इक)। 'यय देवो
मह-व्यय (मुपा ६५०)। 'यराह पुं
[यराह] १ विष्णु का एक अवतार (गठ)।
२ बड़ा गुरजर (सूय १०७, २५)। 'यद

देवो 'यह (सि १, ५८)। 'याच पुं [वायु]
ईशानिन्द्र के अश्व-सैन्य का अभिपति (ठा ५,
१—पन ३०३; इक)। 'वाड पुं [वाट]
बड़ा याही, महान् गोष्ठ; 'विद्यामहावाड'
(उवा)। 'विगाइ स्त्री [विकृति] अति
विकार-जनक धे वस्तु—मधु, मांस, मद्य धीर
माखन (ठा ४, १—पन २०४; अंत)।
'विजय वि [विजय] बड़ा विजयवाला;
'महाविजयमुक्तपरवरपुंडरीयाभो महाविमा-
णभो' (कप)। 'विदेह पुं [विदेह] वर्ण-
विशेष, क्षेत्र-विशेष (सम १२, उवा, लोप;
अंत)। 'विमाण न [विमान] श्रेष्ठ देव-
गृह (उवा)। 'विल न [विल] कन्दरा
भादि बड़ा विवर (कुमा)। 'वीर पुं [वीर]
१ वर्तमान समय के अन्तिम तीर्थंकर (सम
१, उवा, विपा १०)। २ वि, महान् परा-
क्रमी (किरात १६)। 'वीरिअ पुं [वीर्य]
इन्द्राहु मरा के एक राजा का नाम (पठम
५, ५)। 'वीहि, 'वीही स्त्री [वीथि, वी]
बड़ा बाजार (पठम ६६, ३५)। २ श्रेष्ठ
मार्ग (भाजा)। 'वेग पुं [वेग] एक
देव-जाति, भूतों की एक प्रकार की जाति
(राज, इक)। 'वेजयंती स्त्री [वेजयन्ती]
बड़ी पाठका, विजय-पठका, (कप)। 'सई
स्त्री [सती] उत्तम पतिव्रता स्त्री (उप ७२८
टी, पठि)। 'सछणि स्त्री [शकुनि] एक
विद्याधर-स्त्री (पण्ड १, ४—पन ७२)।
'सद्धि वि [शद्धि] बड़ी अष्टाध्याय
(भाजा, पि ३३३)। 'सच वि [सत्त्व]
पराक्रमी (इ ११; महा)। 'समुह पुं
[समुह] महासागर (उवा)। सयग,
'सयय पुं [शतक] भगवान् महावीर का
एक उपसक्त (उवा)। 'सामाण न
[सामान] एक देव-विमान (सम ३३)।
'साल पुं [साल] एक मुचरान (पठि)।
'सिलाट्टय पुं [सिलाट्टक] राजा
नृणिक और वेत्यराज की सजाई (मग ७,
६—पन ३१५)। 'सीह पुं [सिंह] एक
राजा, पण्ड बलदेव धीर वासुदेव का पिता
(ठा २, ५—पन ४५०)। 'सीहणिपीरि
'सीहनिरीडि य [सिहनिरीडि]
तप-विशेष (राज; पन २७१—भाजा
१५२२)। 'सीहसेण पुं [सिहसेन]

भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर अनुत्तर
देवलोका में उत्सव राजा श्रेणिक का एक
पुत्र (भनु २)। 'सुका पुं [शुक] १ एक
देवलोका; सातवीं देवलोका (सम ३३; विपा
२, १)। २ सातवें देवलोका का इन्द्र (ठा २,
३—पन ८५)। ३ न. एक देव-विमान (सम
३३)। 'सुमिण पुं [स्वप्न] उत्तम फल का
एक सूचक स्वप्न (णामा १, १—पन १३;
पि ४४७)। 'सुर पुं [असुर] १ बड़ा
दानव। २ दानवों का राजा हिट्टयकशिपु
(सि १, २, गठ)। 'सुवय, 'सुवया
स्त्री [सुवता] भगवान् नैमिषाणी की दुष्य
थाविका (रम्प, भावम)। 'सुला स्त्री
[शुला] फाँसी (पा २७)। 'सैअ पुं
[श्रेष्ठ] एक इन्द्र, कृष्णाएड नामक वान-
व्यन्तर देवों का उत्तर दिशा का इन्द्र (इक;
ठा २, ३—पन ८५)। 'सेण पुं [सेन]
१ ऐतव क्षेत्र के एक भावी जित-देव (मम
१५४)। २ राजा श्रेणिक का एक पुत्र
जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली
ही (भनु २)। ३ एक राजा (विपा १, ६—
पन ८८)। ४ एक भावव (णामा १,
५)। ५ न. एक घन (विदे २०८६)। देवो
मह-सेण। 'सेणरुह पुं [सेनरुण]
राजा श्रेणिक का एक पुत्र (पि ५२)।
'सेणरुहा स्त्री [सेनरुणा] राजा
श्रेणिक की एक पत्नी (मज २५)। 'सेल
पुं [शैल] १ बड़ा पर्वत (णामा १, १)।
२ न. वार-विशेष (पठम ५५, ५५)।
'सोआम, 'सोदाम पुं [सौदाम] वैदिक
कबीर के अश्व-सैन्य का अभिपति (ठा ५,
१०; इक)। 'हरि पुं [हरि] एक नर-पति,
दशवें चक्रवर्ती का पिता (सम १५२)।
'हिमय, 'हिमयय पुं [हिमयत] १
पर्वत-विशेष (पठम १०२, १०५; ठा २,
२, महा)। २ देव-विशेष (ज ४)।
महाअत्त वि [दे] मान्, योगत (दे ६,
११६)।
महाइय पुं [दे] महारा (मजि)।
महाण्ड पुं [दे. महानट] छ, महादेव (दे
६, ५, १२१)।
महाणस न [महानस] रतोई-पर, पाव-स्नान
(णामा १; न; गा १३; ठा २५६ टी)।

महाणसि वि [महानसिन्] खोई बनाने-
वाला, खोइया। औ. (छाया १, ७—
पत्र ११७)।

महाणसिय वि [महानसिन्] ऊपर देखो
(विषा १, ८)।

महाविल न [दे. महाविल] व्योम, आकाश
(दे ६, १२१)।

महामति पुं [महामतिन्] महावत, हस्ति-
पक (राम १२१ टी)।

महारिय (अप) वि [महीय] मेरा (जय
१०)।

महाल पुं [दे] जार, उपपति (दे ६,
११६)।

महालन्ध वि [दे] सरण, जवान (दे ६,
१२१)।

महालय देखो मह = महर् (छाया १, ८, उवा,
भीप), 'मा कासि कम्माई महालयाई' (उत्त
१३, २६)। औ. 'लिया (भीप)।

महालय पुम [महालय] रजसर्वों का स्थान
(सम ७२)। २ बड़ा आलय। ३ वि.
बृहत्काय, बड़ा शरीरवाला (सूत्र २, ५, ६)।

महालयकरन पु [दे. महालयपक्ष] याद-यस,
भारिवन (पुत्रजारी भाद्रपद) भास का कृष्ण
पक्ष (दे ६, १२७)।

महान्नी औ [दे] मलिनो, कमलिनो (दे ६,
१२२)।

महाविजय पु [महाविजय] एक देवविमान
(भाषा २, १५, २)।

महासडण पु [दे] जल्लू, धुक-पत्थी (दे ६,
१२७)।

महासदा टी [दे] शिवा, श्रृगाली (दे ६,
१२०, पात्र)।

महासेल वि [माहासेल] महासेल नगर से
संबन्ध रखनेवाला, महासेल का (पत्रम ५५,
५३)।

महि देखो मही (कुमा)। 'अल न [वल]
भूनीड, भूमि-भूड (कुमा, गडड, प्राप् ५५)।

'गोयर पुं [गोचर] अनुप (अभि: सण)।

'पट्ट न [पट्ट] भूमि-वन (पट्ट)। 'पाल पुं
[पाल] राजा (उप)। 'मंडल न [मण्डल]
भू मण्डल (अभि: दे ४, ३७२)। 'रमण पुं
[रमण] राजा (भा २७)। 'बड पुं

[पति] राजा (छाया १, १ टी, भीप)।

'वट्ट देखो 'पट्ट (हे १, १२६; कुमा)।

'वल्ह पुं [वल्लभ] राजा (पु १०)। 'वाल
पुं [पाल] राजा, नरपति (हे १,
२२६)। २ व्यक्ति वाचक नाम (अभि:)

'वेड पुं [वेष्ट, 'वीड] गही-तन, भू-तल
(हे १, ४, ५६)। 'सामि पुं [स्वामिन्]
राजा (कुमा)। 'हर पुं [धर] राजा

(पात्र, से ३, २८, ४, १७, कुम ११७)।
२ राजा (कुम ११७)।

महिअ वि [मयित] विलोडित (से २, १८,
पात्र)।

महिअ वि [महित] राजा, सत्कृत (से
१२, ५७, उवा, भीप)। २ न. एक देव-
विमान (सम ४१)। ३ पुत्रा, सत्कार (छाया
१, १)।

महिअ वि [महीयस्] बड़ा, युद्ध, 'राघ-
निघोषो महिषो को छाम यन्त्राघनिह करेह'
(सुदा १८७)।

महिअदुल्ल न [दे] बी का किट्ट, धृत-यल
(धोज)।

महिआ औ [महिआ] राजा, सुदम बर्षा, सुदम
जल-नुषार (पण १, की ५)। २ धूमिका,
धूप, कुहरा (भीप ३०, पात्र)। ३ मेघ-
समूह, 'धयनिबहो कालिमा महिआ' (पात्र)।

देखो मिहिआ।

महिद पुं [महेन्द्र] राजा इन्द्र, देवाधीश
(भीप, वप, छाया १, १ टी—पत्र ६)।

२ परवैत-विशेष (से ६, ५६)। ३ प्रति महान्
जल बहा (छा ४, २—पत्र २३०)। ४ एक
राजा (पत्रम ५०, २३)। ५ ऐश्वर्य वर्ण का

भावी १५ वां तीर्थकर (पत्र ७)। ६ पुन
एक देव-विमान (सम २२, देन्द्र १४१)।

'कत न [कान्त] एक देव-विमान (सम
२७)। 'केड पुं [केतु] इन्द्रमान के मातापद

का नाम (पत्रम ५०, १६)। 'ऊमय ॥
[ध्वज] राजा ध्वज। २ इन्द्र के ध्वज

के समान ध्वज, बड़ा दृढ़ ध्वज (छा ४,
४—पत्र २३०)। ३ न. एक देव विमान
(सम २२)। 'डुहिया औ [डुहिया]
अज्ञानाभुम्बरी, इन्द्रमान की माता (पत्रम ५०,
२३)। 'विहम पुं [विष्म] इन्द्राकु

बन्ध का एक राजा (पत्रम ५, १)। 'सीह
पुं [सिंह] राजा कुश देश का एक राजा
(उप ७२८ टी)। २ सनकुमार चक्रवर्ती का

एक मित्र (महा)।

महिद वि [महिन्द्र] राजा महेन्द्र-सम्बन्धी।
२ उपात विशेष (पण २१५)।

महिदुसरवडिसय न [महेन्द्रोत्तरावतसर]
एक देव विमान (सम २७)।

महिगा देखो महिआ (जीवत ३१)।

महिच्छ वि [महेच्छ] महत्वाकांक्षी (सूत्र
२, २, ६१)।

महिच्छा औ [महेच्छा] महत्वाकांक्षा-
अपरिमित वाग्दत्त (पण १, ५)।

महिट्ट वि [दे] मट्टा से संछट्ट, तल्ल-सत्कारित
(विषा १, ८—पत्र ८३)।

महिच्छिद वि [महिच्छि, 'क] बड़ी कटि-
महिच्छिद्वय } वाता, महान् वैभवावाला (भा
महिच्छिद्वय } २७, भाग भीपभा ६; भीप,
पि ७३)।

महिम पुं [महिमन्] महत्त्व, माहात्म्य,
गौरव (हे १, ३५, कुमा, गडड, अभि:)

२ योगी का एक प्रकार का ऐश्वर्य (हे १, ३५)।

महिल देखो मिहिला (महा, राज)।

महिला औ [महिला] औ, नारी (कुमा,
हे १, ५१, पात्र)। 'धूम ॥ [स्त्र] रूप

आदि का विनाश (विसे २०६४)।

महिलिया औ [महिलिना, महिला] ऊपर
देखो (छाया १, २, पत्रम १५, १५५,
प्राप् २४)।

महिलिया औ [मिथिलिना, मिथिला]
देखो मिहिला (अप)।

महिस पुं [महिप] मैसा (गडड, भीप,
भा ५४८)। 'सुर पुं [सुर] एक

दास (से ४३७)।

महिसद पुं [दे] द्वा विशेष, शिष्ट का पद
(दे ६, १२०)।

महिसिअ वि [महिषिक] मैसवाला, मैस
चरानेवाला (पण १४५)।

महिसिका न [दे] महिपो-गद्दह (दे ६,
१२४)।

महिसी औ [महिपी] राज-नारी (छा ५,
१)। २ मैस (पात्र, पत्रम, २६, ५१)।

महिस्सर पुं [महेश्वर] एक इन्द्र, भूतवादि-
देवो का उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—
पत्र ८५)। देखो महेसर।

मही छो [मही] १ पृथिवी, भूमि, धरती
(कुमा, पात्र)। २ एक नदी (ठा ५, २—
पत्र ३०८)। ३ छन्द विशेष (पिण)। 'नाह
पुं [नाथ] राजा (उप पु १६१)। 'पहु
पुं [प्रभु] राजा (उप ७२८ टी)। 'पाल
पुं [पाल] वही शर्ष (ठा १५० टी, उप)।
'रुह पुं [रह] वृत्त, पेड़ (पात्र, सुर ३,
११०, १६, २४८)। 'वह पुं [पति]
राजा (भा २८, उप १५६ टी, सुपा ३८)।
'वीठ न [वीठ] भूमि-तल (सुर २, ७४)।
'स पुं [श] राजा (भा १४)। 'सक पुं
[शक्र] वही शर्ष (भा १४)। देखो
महि'।

महु पुं [महु] १ एक शैव्य (सि १, १,
महु ४०)। २ वस्तुतः, 'छुड़ी महु
बलती' (पात्र, कुमा)। ३ बैन मास (सुर
३, ४०; १६, १०७, पिण)। ४ वर्षावर्षा
प्रति-वासुदेव राजा (पत्रम ५, १५६)। ५
एक राजा (भु ६१)। ६ मधुरा का एक
राज-कुमार (पत्रम १२, २)। ७ चक्रवर्ती
का एक देव-कुल महुल (वत्त १३, १३१)।
८ मधुक का पेड़, महुमा का गाछ (कुमा)।
९ अशोक-वृक्ष (चक्र)। १० न. मय, दाक
(सि २, २७)। ११ क्षीर, शहब (कुमा, पत्र
४, ठा ४, १)। १२ पुष्प-रस। १३ मधुर-
रस। १४ जल, पानी (प्राप्र, हे ३, २५)।
१५ छन्द-विशेष (पिण)। १६ मधुर, मिष्ट
वस्तु (पह २, १)। 'अर पुं [कर]
अमर, नीरा (पात्र, ह्यज ७३, शीष-
कल्प, पिण)। छी. 'रिआ', 'री (श्रमि
१६०, नाट—मुद्र ५७)। 'अरविचि छी
[करवृत्ति] माधुक्री, भिक्षा-वृत्ति (सुपा
८३)। 'अरीमोय न [करीमीत] नाट्य-
विधि-विशेष (महा)। 'आसय वि [आश्रय]
सन्धि-विशेषवाला, निजके प्रभाव से बन-
मधुर लगे ऐसी सन्धिवाला (पह २, १—
पत्र १००)। 'गुलिया छी [गुटिका]
शहब की गोली (ठा ४, २)। 'पडल न
[पटल] मधुमा (हे ३, १२)। 'भार

पुं [भार] छन्द-विशेष (पिण)। 'मस्त्रिया,
'मच्छिआ छी [मक्षिण] शहब की
मस्त्री, 'भह उट्टियाउ तंभरमुहाउ महन्नि
(मन्नि)याउ सम्बत्तो' (वर्षवि १२४,
गा ६३४)। 'मय वि [मय] मधु से
मरा हुआ (सि १, ३०)। 'मह पुं [मय]
विष्णु, वायुदेव, उषेन्द्र (पात्र, सि १, १७)।
२ अमर (सि १, १७)। 'मह पुं [मह]
वस्तु का उत्तरव (सि १, १७)। 'महण
पुं [मयन] १ विष्णु (सि १, १, वज्रा २४,
गा ११७, हे ४, ३८४, पि १४३, पिण)। २
समुद्र, सागर। ३ छेनु, पुल (सि १, १)।
'मास पुं [मास] बैत मास (मवि)।
'मिच पुन [मिच] कामदेव (सुपा
५२६)। 'मेहण न [मेहन] रोग-विशेष,
मधु-मेह (मात्रा १, ६, १, २)। 'मेहणि
वि [मेहनिन्] मधु-मेह रोगवाला
(मात्रा)। 'मेहि पुं [मेहिन्] वही शर्ष
(मात्रा)। 'राय पुं [राज] एक राजा
(रमण ७४)। 'लट्टि छी [यष्टि] १
शोषाधि-विशेष, यष्टिमधु, मुवेडी, बेले मधु।
२ लुट्ट, हँस (हे १, २४७)। 'वक पुं [पर्क] १
दमियुक्त मधु, वही शीर शहब। २ दोषोप-
चार पुजा का छठवाँ उपचार (उत्तर १०३)।
'वार पुं [वार] मय, दाक (पात्र)।
'सिंगी छी [टङ्गी] वनराति-विशेष
(पह १—पत्र ३५)। 'सुयण पुं
[सूदन] विष्णु (गठ, सुपा ७)।

महुअ पुं [मधुक] १ मधु विशेष, महुमा
का गाछ (गा १०३)। २ न. महुमा का
फल (प्राप्र, हे १, २२२)।
महुज पुं [दे] १ पक्षि-विशेष, शीवव पक्षी।
२ मागव, स्तुति-पाठक (हे ६, १४४)।
महुण सक [मय] १ विनोदन करना।
२ विनाश करना। वक्र, विषुष्टदृष्टमा
जसिपजलणपिगलवेसा महुगित-नालाभ रास-
पिसाया मुक्का' (महा)।

महुच (पप) देखो मुहुच (मवि)।

महुपल न [महोपल] कयल, पप, 'महुपल
पंकयं नलिण' (पात्र)।

महुसुह पुं [दे-मधुसुल] भिन्न, दुर्बल,
खल (हे ६, १२२)।

महुर पुं [महुर] १ अग्राय देश-विशेष। २
उस देश में रहनेवाली धनार्थ मनुष्य-जाति
(पह १, १—पत्र १४)।

महुर वि [मधुर] १ मीठ, मिष्ट (कुमा
प्राप्र ३३, गठ, गा ४०१)। २ कोमल
(मग ६, ३१; शीप)। 'भासि वि
[भापिन्] मित्र-भावी (पत्रम ६, १३३)।
महुरा छी [मधुरा] भारत की एक प्रसिद्ध
नगरी, मधुरा (ठा १०; सप १५३, पह
१, ३, हे २, १५०, कुमा, वज्रा १२२)।
'मंगु पुं [मङ्ग] एक प्रसिद्ध जैनाचार्य
(सिक्ता ६२)। 'हिय पुं [धिप] मधुरा
का राजा (कुमा)।

महुरालिअ वि [दे] परिवित (हे ६, १२५)।
महुरिम पुं [मधुरिमन्] मधुरता, माधुर्य
(सुपा २६४, कुम ५०)।

महुस पुं [मधुरेरा] मधुरा का राजा
(कुमा)।

महुला छी [दे] रोग-विशेष, पाद गण्ड
(निच २)।

महुसिस्थ न [मधुसिस्थ] १ मदन, मीम
(उप २ २०६)। २ पंक-विशेष, जी के पैर
में लगा हुआ मलता तक लगनेवाला कादा
(भीषका ३३)। ३ बला-विशेष (सि ६०२)।
महुस्स न देखो महुस (राज)।

महुअ देखो महुअ=मधुक (कुमा, हे १,
१२२)।

महुसन पुं [महोसन्ध] बड़ा उत्सव (सुर ३,
१०८, नाट—मुद्र ५४)।

महुद देखो महिद (सि ६, २२)।

महेट्ट पुं [दे] पंक, कादा (हे ६, ११६)।

महेचम पुं [महेच्य] बड़ा शोध (भा ११)।

महेभ पुं [महेभ] बड़ा हाथी (कुमा)।

महेला छी [महेला] छी, नारी (हे १,
१४६, कुमा)।

महेस पुं [महेसा] नीचे देखो (पि ६४, मवि)।

महेसर पुं [महेश्वर] १ महादेव, शिव (पत्रम
३५, ६४, धर्मवि १२८)। २ विनोद,
महँव (पत्रम १०६, १२)। ३ श्रोतल,
ग्राम्य (सि ४२)। ४ भूतवादि देवों के
उत्तर दिशा का इन्द्र (इक)। 'दत्त पुं
[दत्त] एक दुरोहित (पिण १, ५)।

संयुग्मादि माडयाहि उवसोहियाई' (शाया १, ६—पय १५८)।

माडआपय न [माडुनापय] मूलधार, 'य' से 'ह' तक के ध्वन्य (दसनि १, ८)।

माडक वि [सुदु, क] कोमल, कुमार (हि १, १२७, २, ६६-कुमा)।

माडक न [सुदुन] कोमलता (हे १, १२७; २, २-कुमा)।

माडचा की [दे. माडुचस] देखो माड-च्छा (पय)।

माडचा की [दे] सही, सहेली (पय)।

माडच्छा वि [दे] सुदु, कोमल (दे ६, १२६)।

माडच } देखो माडक = सुदुल (कुमा, हे माडचण } २, २; पय)।

माडल पु [माडुल] मा का माई, मामा (सुर १, ८१; रमा, महा)।

माडलिअ देखो मडलिअ (सि ११, ६१)।

माडलिग देखो माडुलिग (राज)।

माडलिगा } की [माडुलिगा, डी] बीबीरे
माडलिगी } का गाछ (पण १—पय ३२, पय ४२, ६)।

माडलुग देखो माडुलिग (हि १, २१४; क्तु)।

मागदिअ पु [मागदिक] मागदिकपुन मागक एक जैन मुनि (मय १८—१ टी)।
'पुच' पु [पुच] बही मय (मय १८—३)।

मागसीसी की [मार्गसीपी] १ मगहन माच की पुणिमा। २ मगहन की ममावास्या (इक)।

मागह } वि [मागय 'क'] १ मगय-
मागहय } देशीय, मगय देश में उत्पन्न, मगय देश का, मगय-सम्बन्धी (घोष ७१३; विरो १४६६; पय ६१; शाया १, ८-पय ६६, ५५)। २ पु. खुलि-पावन, बन्दी, पारण (पाय; घोष)। 'मासा की [माया] देखो मागदिआ का पहला मय (राज)।

मागदिआ की [मागधिअ] १ मगय देश की माया, प्राकृत भाषा का एक भेद। २ बन्त-विशेष (घोष)। ३ छन्द-विशेष (सुत २, ४५; पय ४)।

माघवई की [माघवती] सातवी नरक-मुनि (पय १४३; इक, ठा ७—पय ३८८)।

माघवा } [माघवा, 'की] ऊपर देखो, 'मयव माघवी } वि माघव ति य पुढवीय नामवेयाई' (लोचन १२; इक)।

माज्जार देखो मज्जार (संलि २)।

माडविअ पु [माडमियक] १ 'मडब' का मयिपति (शाया १, १-घोष, कय)। २ प्रत्यन्त—सोपा-प्रान्त का राजा (पण १, ५—पय ६४)।

माडविअ वि [माडमियक] चिन मंडप का मय्यक्ष (राय १४१)।

माडिअ न [दे] गृह, घर (दे ६, १२८)।

माडर पु [माडर] १ लोचमन्त्र के रय सैय का मयिपति (ठा ५, १—पय ३०३, इक)। २ न. गोच-विशेष (कय)। ३ शाख विशेष (खुनि)।

माडर पुकी [माडर] माडर-गोन में उत्पन्न (संलि ४६)।

माडरी की [माडरी] बतसवति-विशेष (पण १—पय १६)।

माडिअ वि [माडित] सहाह-मुक, सविअ (कुमा)।

माडी की [माडी] कच, वन, बस्तर (दे ६, १२८ टी; पण १, ३—पय ४४, पाय; से १२, ६२)।

माण सक [मानय] १ सम्मान करना, आदर करना। २ अनुभव करना। माणइ, माणेइ, माणय, माणेम (हे १, २२८; महा; कुमा; सिरि ६६)। वड, माणंत, माणेमाण (सुर २, १८२; शाया १, १—पय ३३)। कच, माणिजंत (पा ३२०)। हेड, माणित, माणेड (पहा; कुमा)। कु-माणणिज, माणणीअ माणेयन (उव; सुर १२, १६३; धनि १०७; उप १०३१ टी), 'ज्या य माणिमो होइ पच्छा होइ य-माणिमो' (दवड १, ५)।

माण पुन [मान] १ मय, महेंकार, प्रमिमान; 'बडबडोकर्याणिमाणी' (कुमा), 'पुच' विडुहमसंख सुरणी एमस यडियं माण' (सम्मत ११६)। २ मा, परिमाण। ३ नाने का साधन, बाट—बटवरा धारि (मयु);

कय; जी ३०; था १४)। ४ प्रमाण, धनूत (विसे ६४६; धर्मसं ५२५)। ५ भावर, सरकार (शाया १, १; कय)। ६ पु. एक धं-मुन (सुपा ५४५)। 'इंत, 'इत्त, 'इह वि 'वत्' मान-वाला (पय; हे २, १५६; हेका ७३; प ५६५) की. 'त्ता, 'त्तो (कुमा, गड)। 'तुंग पु [तुङ्ग] एक प्राचीन जैन कवि (नमि २१)। 'वई की [वती] १ मानवाली की (सि १०, ६६)। २ रावण की एक पत्नी (पयन ७५, ११)। 'संघ न [संघ] एक विद्याधर-मयर (इक)। 'वाइ वि [वादिन्] महाकवी (भावा)।

माण वि [मान] मान-संबन्धी, मान का; 'कोहाए मणए मायाए' (पडि)।

माण न [दे] परिमाण-विशेष, वस शेर की नाप, सुरासी में 'मायु' (उप १५४)।

माणसि वि [दे] १ मयाबी, कपटी (दे ६, १४०, पय)। २ की. बन्त-बन्धु (दे ६, १४७)।

माणसि देखो मणसि (काप्र १६६; संलि १७; पय)।

माणय न [मानन] १ भावर, सरकार (भावा)। २ मानना (खण ८४)। ३ अनुभव। ४ सुख का अनुभव; 'सुखमाणये' (पयि ३१)।

माणया की [मानना] ऊपर देखो (पण २, १; खण ८४)।

माणय देखो माण = (दे) (सुपा १५८)।

माणय पु [मानय] १ अनुभव, मय (पाय, सुपा २४३)। २ भावान् महावीर का एक गुण (ठा ६—पय ४५१, कय)।

माणवग } पु [मानयक] १ एक निधि,
माणयय } मय राखे की प्रति करनेवाला निधि (उप ६८९ टी, ठा ६—पय ४४६; इक)। २ ज्योतिषक ग्रह-विशेष, एक महापह (ठा २, ३-गुड २०)। ३ लोचन देवतोक का एक वैद्य-स्वम् (सम ६३)।

माणवी की [मानवी] एक विद्या-देवी (संलि ६)।

माणस न [मानस] १ सरोवर-विशेष (पण १, ४; घोष; महा; कुमा)। २ मन, प्रान्त-वरण (पाय, कुमा)। ३ वि. मन-संबन्धी,

मन वा (सुर ४, ७५) । ४ पुं, मृतान्द के गण्यवैनीय वा नायक (इक) ।

माणसिअ वि [मानसिक] मन-संबन्धी, मन वा (या २४, भीष) ।

माणसिअ की [मानसिका] एक विद्या-देवी (संति ६) ।

माणि वि [मानिन्] १ मान-शुक्ल, मानगता (उवा; कुर २७६, बम्म ४, ४०) । २ लो, 'णिगी' (कुमा) । २ पुं, राखण वा एक सुन्दर (पठम ५६ २) । ३ पर्वत-विशेष । ४ कूट-विशेष (राज, इक) ।

माणिअ नि [दे. मानिन्] मनुवुत्त (दे ६, १३०, पाष) ।

माणिअ वि [मानिन्] सल्लत (पठम) ।

माणिक्क न [माणिक्य] रत्न विशेष, माणिक (सुरा २१७; वजा २०; वण्णु) ।

माणिग देहो माणि (पठम ७९, २७) ।

माणिमइ पु [माणिभद्र] १ यज्ञ निवाय के उत्तर दिशा वा इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५; इक) । २ यज्ञदेवों की एक जाति (सिंरि ६६६; इक) । ३ देव-विशेष । ४ सिंघर-विशेष (राज, इक) । ५ एक देव-विमान (राज) ।

माणिम देहो माण = मानय ।

माणी की [मानिना] २५६ वनों का एक माय (सल्ल १५२) ।

माणुम पुंन [माणुप] १ मनुष्य, मानव, माय (सूम १, ११, ३; पण्ह १, १; उवा; सुर १, ५६; माय, कुमा) । २ पुं, पुण्ह दिग्गजों के लोह तं माणुपे निररं (कुर ६), 'ममाणि माणिरुत्तु; माणुसाणि ममाणि' (कुर २६) । ३ नि, मनुष्य-संबन्धी, 'निनिहं बहाराणुं नि पुंमण्यपिण्णसो, तं जहा, दिम्मं दिग्गजमाणुत्तं माणुयं वं' (प २) ।

माणुमी की [माणुमी] १ की-मनुष्य, मानव (पठ २४१, कुर १९०) । २ मनुष्य के संबंध रखनेवाली, 'माणुमी मासा' (कुर १७) ।

माणुमुत्तर } पुं [माणुयोत्तर] १ पूर्व-
माणुमीचर } विशेष, मनुष्योत्तर वा योवा-
बाद पूर्व (उवा; ठा १, ४; भीष ३) । २ म. एक देव-विमान (पठ २) ।

माणुस्स देहो माणुस्स (पाचा. भीष; वर्रवि १३; उवां २; विगे ३००७) : 'माणुस्सं सोमं' (ठा ३, ३—पत्र १४२), 'माणुस्साई भोगभोगई' (वण्ण) ।

माणुस्स } न [माणुप्प्य, 'क' मनुष्यत्व,
माणुस्स्य } मनुमानव, मनुष्यता (सुरा १६६;
स १३१ प्रावु ४७; पठम ३१, ८१) ।

माणुस्सो देहो माणुमी (पठ २४०) ।

माणूस देहो माणुम (सुर २, १७२; ठा ३, ३—पत्र १४२) ।

माणेसर पुं [माणेसर] माणिभद्र यज्ञ (भवि) ।

माणोरामा (पठ) की [मनोरमा] कूट-विशेष (पिण्ण) ।

मातंग देहो मायंग (भीष) ।

मातंजण देहो मायजण (ठा २, ३—पत्र ८०) ।

मातुल्लिग देहो माहुल्लिग (पाचा २, १, ८, १) ।

मादल्लिआ की [दे] माता, जननी (दे ६, १३१) ।

माडु देहो माड = की (प्राह ८) ।

माघयी देहो माहयी = माघवी (हाप्प १११) ।

मामाइ पुंकी [दे] धमय प्रधान, धमय-दान, धमय (दे ६, १२६; पण्ह) ।

माभीसिअ न [दे] ऊपर देहो (दे ६, १२६) ।

माम थ, कीमय धामन्दण वा सुषर धम्मय (पठम ३८, ३६) ।

माम } पुं [दे] मामा, मां का माई (सुरा
मामग } १९, १६५) ।

मामग } वि [मामग] १ मदीय, मेरा
मामय } (भाय; पण्ड ७३) । २ ममतावाला (सूम १, २, २, २८) ।

मामय देहो मामग = (दे) (पठम ६८, ५५; स ७३१) ।

मामा की [दे] माती, माया की बहू (दे ६, ११२) ।

मामाय वि [मामाक] 'मा' 'मा' बोतनेवाला, निवारक (भीष ४१५) ।

मामास पुं [मामाय] १ बनावं देह-विशेष । २ बनावं देह में पुंनवासी मनुष्य जाति (इक) ।

मामि थ, सत्ती के मामन्दण में प्रयुक्त विद्या जाता धम्मय (हि २, १६५; कुमा) ।

मामिया } की [दे] मामा की बहू (विपा
मामी } १, ३—पत्र ५१; दे ६, ११२;
या २०४, प्राह ३८) ।

माय वि [माय] समया हुमा (बम्म ४, ८५ टी, पुण्ह १७२; महा) ।

माय वि [मायावन्] कपटवाला, 'बोहाए माणए मायाए सोमाए' (पण्ह) ।

माय देहो मेत्त = माय, 'लोनुत्तण्णमायमहि' (सूर २, १, ४८) ।

माय देहो माया = माया (प्राचा) ।

माय देहो मत्ता = मात्रा । 'अ वि [दा] परिमाण वा जाननार (सूर २, १, ५७) ।

मायइ की [दे] कूट-विशेष (पठम ५१, ७६) ।

मायंग पुं [मावद्] १ भगवान् सुगार्हपत्य वा सासनपत्य । २ भगवान् महावीर का शासन-यज्ञ (संति ७, ८) । ३ हन्ती, हाथी (पम; कुर १, ११) । ४ चाएदान, दान (पम) ।

मायंगी की [मावद्दी] १ चाएकान्त (विहू १) । २ विद्या-विशेष (मापू १) ।

मायंजण पुं [मातजण] पर्वत-विशेष (इक) ।

मायंठ पुं [मातंठ] सूर्य, रवि (सुरा २४२; कुर ८७) ।

मायंद पुं [दे. मानन्द] माघ, माघ वा पण्ह (दे २, १०४, प्राय, दे ६, १२८; कुर ७१, १०६) ।

मायंदिअ देहो मागंदिअ (पठ १८, १) ।

मायंदी की [मागंदी] नपटी विशेष (थ ६; कुर १०६) ।

मायंदी की [दे] श्रेष्ठतर शास्त्री (दे ६, १२६) ।

मायलिहया की [मृगशृणिहया] विरगु में पत की प्राप्ति, मर-मरीचिका,

'अहं मुद्धमो मायलिहयाए' ।

विधिमे करेइ भन-मुत्ति ।

उह निरियेयन-विधि

सुरा प्रपमेइ भम्मन्द' (सुरा १००) ।

मायहिय (अप) देखो मागहिया (अपि) ।

माया = देखो माइ = मातृ, 'मायाइ ग्रहं भगिणो' (धर्मवि ५, पाप, विवा १, ६; ॥५) ।

°पिइ, °पिति पुन [°पितृ] मां-वाप (पि ३६१; स १८४) । °मह पुं [°मह] मां का वाप (सुर ११, ४६, गुप्ता ३८४) ।

°वित्त देखो °पिइ, °दुहियाए होइ सरखं मायावित्तं महितियाए' (पञ्चम १७, २१); 'तेणेइ देवेण तहि मायावित्ताई रोवमाण्णाई' (सुर ६, २३५, १, २३६, धर्मवि २१, महा) ।

माया देखो मत्ता = माया, 'नो भद्रमायाए पाणभोयएँ आहारेत्ता' (उत्त १६, ८; श्रीप; उव कस) ।

माया स्त्री [माया] १ कपट, छल, शाठ्य, धोखा (भग; कुमा; ठा ३, ४, पाप, प्राबू १७५) । २ इन्द्रजाल (दे ३, ५३; उप ८२३) । ३ मन्त्रालय-विशेष, 'हो' अक्षर (सिरि १६७) । ४ छन्द-विशेष (पिग) ।

°गर पुं [°नर] पुरुष वेश धारी की भादि (धर्मसं १२७८) । 'वीय न [°बीज] "हो" अक्षर (सिरि ४०१) । °मोस पुन [°मृपा] कपट-पूर्वक भ्रमत्व वचन (छाया १, १; पयह १, २; मग, श्रीप) । °वत्तिअ, °वत्तीय वि [°प्रत्ययिक] कपट से होनेवाला, छल-भूलक (भग; ठा २, १; नव १७) । °वि नि [°भूलक] मायायुक्त (पञ्चम ८८, ११) । स्त्री, °विणी (गुप्ता ६२७) ।

मायि नि [मायिन्] माया-युक्त, मायावी (उवा, पि ४०५) ।

मार सक [मारय] १ ताड़न करना । २ हिंसा करना । मारद, मारेइ (भावा, कुमा, भग) । भवि, मारिहिंस (पि ५२८) । कर्म, मारिअइ (उव) । मरु, मारंत, मारंत (भक्त १२, पञ्चम १०५, ७६) । कवक, मारिजंत (गुप्ता ५४७) । संट-मारैत्ता (महा), मारि (भग) (दे ४, ४१६) । हंड-मारैउं (महा) । इ. मारियअ, मारियअ (पञ्चम ११, २२), मारणिअ (उा ३५७ ले) ।

मार पुं [मार] १ ताड़न (गुप्ता २२६) । २ मरटा, मोटा (भावा; मूय २, २, १७, उव ३०८) । ३ मय, कम (मूय १, १, ३,

७) । ४ कामदेव, कंदर्प (उप ७६८ टी) । ५ चौथा नरक का एक नरकावास (ठा ४, ४—पञ्च २६५; वेदेन्द्र १०) । ६ वि, मारै-वाला (छाया १, १६—पञ्च २०२) । °बहु स्त्री [°वधू] रति (गुप्ता ३०४) ।

मार पुं [मार] मरिण का एक लक्षण (उय ३०) ।

मारय वि [मारय] मारनेवाला । स्त्री, °रिया (कुप्र २३५) ।

मारण न [मारण] १ ताड़न । २ हिंसा (भग, स १२१) ।

मारणअ (अप) वि [मारयितृ] मारनेवाला (हे ४, ४४३) ।

मारणतिअ वि [मारणात्तिक] मरण के अन्त समय का (सम ११, ११६; श्रीप, उवा, कप्य) ।

मारणया स्त्री [मारणा] मारना (भग, मारणा ३ पयह १, १; विवा १, १) ।

मारय देखो मारय (उव, सचीप ४३) ।

मारा स्त्री [मारा] प्राणि-वध का स्थान, सूना (छाया १, १६—पञ्च २०२) ।

मारि स्त्री [मारि] १ रोग-विशेष, मृत्यु-दायक रोग (स २४२) । २ मारख (भावम) । ३ मौत, मृत्यु (उप ३२६) ।

मारि हेको मार = मारय ।

मारि वि [मारिन्] मारनेवाला (महा) ।

मारिअ पुं [मारिअ] रावण का एक गुप्त (पञ्चम ५६, ७) । देखो मारीअ ।

मारिअि देखो मरिअ (पञ्चम ८२, २६) ।

मारिय वि [मारिअ] भाप हुमा (महा) ।

मारिलग्या स्त्री [दे] दुहित स्त्री (दे ६, १३१) ।

मारिय पुं [दे] मौल, 'मौले मारिये' (कति ४७) ।

मारिस वि [माटस] भरे जैसा (कुमा) ।

मारी स्त्री [मारी] देखो मारि (स २४२) ।

मारिअ पुं [मारीअ] अग्नि-विशेष (धर्मि २४६) । देखो मारिअ ।

मारीइ पुं [मारीअ] एक विद्याधर मारीअि सामन्त राजा (पञ्चम ८, १३२) ।

२ रावण का एक गुप्त (पञ्चम ५६, २७) ।

मारुअ पुं [मारुत्] १ पवन, वायु (पाप, गुप्ता २०४, सुर ३, ४०; १३, १६४; पाप १४, महा) । २ हनुमान का पिता (सि २, ४४) । °तणय पुं [°तनय] हनुमान (सि ४४, हे ३, ८७) । °त्य न [°स्त्र] मरु-विशेष, वातावरण (पञ्चम ५६, ६१) ।

मारुअ पि [मारुत्] मरु देश का, मरु-संबन्धी, 'एो भययवत्तरी मारुअग्नि कपड बने होइ' (उप ६८६ टी) ।

मारुइ पुं [मारुति] हनुमान (सि १, ३७) ।

माल सक [माल] १ शोभना । २ वैदित होना । कृ 'मणिसहस्रमालगोय' (छाया १, १—पञ्च ३८) ।

माल पुं [दे] १ आराम, बनीचा (दे ६, १४६) । २ मरुच, आसन-विशेष (दे ६, १४६, छाया १, १—पञ्च ६३; पंचा १३, १४) । ३ वि मरुतु (दे ६, १४६) ।

माल पुं [दे, माल] १ देश विशेष (पञ्चम ६८, ६५) । २ घर का उपरि-भाग, तला, मंगिल, गुजरती में 'माको' (छाया १, १—पञ्च ५७; वैद्य ४८१; पंचा १३, १४, ठा ३, ४—पञ्च १५६) । ३ नवम्पति-विशेष (जं १) ।

माल वि [दे, माल] १ देश विशेष (पञ्चम ६८, ६५) । २ घर का उपरि-भाग, तला, मंगिल, गुजरती में 'माको' (छाया १, १—पञ्च ५७; वैद्य ४८१; पंचा १३, १४, ठा ३, ४—पञ्च १५६) । ३ नवम्पति-विशेष (जं १) ।

माल पुं [दे, माल] १ देश विशेष (पञ्चम ६८, ६५) । २ घर का उपरि-भाग, तला, मंगिल, गुजरती में 'माको' (छाया १, १—पञ्च ५७; वैद्य ४८१; पंचा १३, १४, ठा ३, ४—पञ्च १५६) । ३ नवम्पति-विशेष (जं १) ।

माल वि [दे, माल] १ देश विशेष (पञ्चम ६८, ६५) । २ घर का उपरि-भाग, तला, मंगिल, गुजरती में 'माको' (छाया १, १—पञ्च ५७; वैद्य ४८१; पंचा १३, १४, ठा ३, ४—पञ्च १५६) । ३ नवम्पति-विशेष (जं १) ।

माल पुं [दे, माल] १ देश विशेष (पञ्चम ६८, ६५) । २ घर का उपरि-भाग, तला, मंगिल, गुजरती में 'माको' (छाया १, १—पञ्च ५७; वैद्य ४८१; पंचा १३, १४, ठा ३, ४—पञ्च १५६) । ३ नवम्पति-विशेष (जं १) ।

माल वि [दे, माल] १ देश विशेष (पञ्चम ६८, ६५) । २ घर का उपरि-भाग, तला, मंगिल, गुजरती में 'माको' (छाया १, १—पञ्च ५७; वैद्य ४८१; पंचा १३, १४, ठा ३, ४—पञ्च १५६) । ३ नवम्पति-विशेष (जं १) ।

माल पुं [दे, माल] १ देश विशेष (पञ्चम ६८, ६५) । २ घर का उपरि-भाग, तला, मंगिल, गुजरती में 'माको' (छाया १, १—पञ्च ५७; वैद्य ४८१; पंचा १३, १४, ठा ३, ४—पञ्च १५६) । ३ नवम्पति-विशेष (जं १) ।

माल वि [दे, माल] १ देश विशेष (पञ्चम ६८, ६५) । २ घर का उपरि-भाग, तला, मंगिल, गुजरती में 'माको' (छाया १, १—पञ्च ५७; वैद्य ४८१; पंचा १३, १४, ठा ३, ४—पञ्च १५६) । ३ नवम्पति-विशेष (जं १) ।

माल पुं [दे, माल] १ देश विशेष (पञ्चम ६८, ६५) । २ घर का उपरि-भाग, तला, मंगिल, गुजरती में 'माको' (छाया १, १—पञ्च ५७; वैद्य ४८१; पंचा १३, १४, ठा ३, ४—पञ्च १५६) । ३ नवम्पति-विशेष (जं १) ।

माल वि [दे, माल] १ देश विशेष (पञ्चम ६८, ६५) । २ घर का उपरि-भाग, तला, मंगिल, गुजरती में 'माको' (छाया १, १—पञ्च ५७; वैद्य ४८१; पंचा १३, १४, ठा ३, ४—पञ्च १५६) । ३ नवम्पति-विशेष (जं १) ।

माल पुं [दे, माल] १ देश विशेष (पञ्चम ६८, ६५) । २ घर का उपरि-भाग, तला, मंगिल, गुजरती में 'माको' (छाया १, १—पञ्च ५७; वैद्य ४८१; पंचा १३, १४, ठा ३, ४—पञ्च १५६) । ३ नवम्पति-विशेष (जं १) ।

माल वि [दे, माल] १ देश विशेष (पञ्चम ६८, ६५) । २ घर का उपरि-भाग, तला, मंगिल, गुजरती में 'माको' (छाया १, १—पञ्च ५७; वैद्य ४८१; पंचा १३, १४, ठा ३, ४—पञ्च १५६) । ३ नवम्पति-विशेष (जं १) ।

माल पुं [दे, माल] १ देश विशेष (पञ्चम ६८, ६५) । २ घर का उपरि-भाग, तला, मंगिल, गुजरती में 'माको' (छाया १, १—पञ्च ५७; वैद्य ४८१; पंचा १३, १४, ठा ३, ४—पञ्च १५६) । ३ नवम्पति-विशेष (जं १) ।

माल वि [दे, माल] १ देश विशेष (पञ्चम ६८, ६५) । २ घर का उपरि-भाग, तला, मंगिल, गुजरती में 'माको' (छाया १, १—पञ्च ५७; वैद्य ४८१; पंचा १३, १४, ठा ३, ४—पञ्च १५६) । ३ नवम्पति-विशेष (जं १) ।

मालयत पुं [माल्यवत्] १ पर्वत विशेष (छा २, ३—पत्र ६६, ८०, सम १०२) । २ एक रामकृतार (पत्र ६, २२०) । ३ परि-
याग, परिभाषा पुं [पर्याय] पर्वत विशेष
(छा २, ३—पत्र ८०, ६६) ।

मालविणी की [मालविनी] लिपि विशेष
(विते ४६४ टी) ।

माला की [माला] १ मूल मादि का हार,
'मल्लं माला दार्यं' (पाप, स्वप्न ७२, सुषा
३१६, प्राम् ३०, कुमा) । २ पति, श्री (पाप)
(छा २, ३) । ३ सद्गुरु, 'जलमालहृद्मास' (सुषनि
१६१) । ४ छन्द विशेष (विग) । 'इल वि
[वन्] माला वाला (प्राम्) । 'कारि वि
[कारिन्] माली, पुष्प व्यवसायी । की, 'गी
(सुषा ५१०) । 'गार वि [वार] वही
मयं (छा १४२, टी; प्रत १८, सुषा ३६२,
उप ५ १५६) । 'धर पुं [धर] प्रसिद्धा
के ऊपर के भाग की रचना-विशेष (वेद
६३) । 'यार, 'र देखो 'वार (प्रत १८,
छा ५ १५७, गा ५६६) । की, 'री (कुमा,
गा ६७) । 'ह्रा की [धरा] छन्द विशेष
(विग) ।

माला की [दि] ग्योदयता, चन्द्रिका (दि ६,
१२८) ।

मालाकुटुम न [दि] प्रपात कुटुम (दि ६,
११२) ।

मालि बुद्धी [मालि] बुद्ध-विशेष (सम
१५२) ।

मालि पुं [मालिन्] १ पाताल लंका का एक
राजा (पत्र ६, २२०) । २ देश विशेष
(छा २) । ३ दि. माली, पुष्प-व्यवसायी
(कुमा) । ४ शोभनेवाला (कुमा) ।

मालिअ पुं [मालिक] ऊपर देखो (दि २, ८,
'पण १, २, गुप्ता २७३, छा ५ १५७) ।

मालिअ रि [मालिन्] सौमित्र, मित्रवत्,
परस्पर पुल वक्तृवाणमात्मिमात्मिमा वमेलोऽ
(गा २१, पाप, छा २६४ टी) ।

मालिआ की [मालिहा, माला] देगो माल्य
= माला (गा २२, रत्न २३, घोर, उवा) ।

मालिअ न [मालीय] छद येन मुनि-मुनि
(रत्न) ।

मालिणी की [मालिनी] १ माली की की
(कुमा) । २ शोभनेवाली (घोर) । ३ छन्द-
विशेष (विग) । ४ मासावाली (गठ) ।

मालिण्य न [मालिन्ध] मलिनता (उप
मालिन्ध) ५ २२, गुप्ता ३५२, ५८६) ।

मालुग पुं [मालुक] १ शीघ्रिय जन्तु-
मालुग] विशेष (सुषा ३६, १२८) । २
बुद्ध विशेष (पण १—पत्र ३१, छाया १,
२—पत्र ७८) ।

मालुया की [मालुया] १ वल्ली, लता (सुष
१, ३, २, १०) । २ वल्ली विशेष (पण
१—पत्र ३१) ।

मालुहाणी की [मालुधानी] लता विशेष
(गठ) ।

मालूर पुं [दि मालूर] कर्तव्य, कैच का
गाछ (दि ६, ११०) ।

मालूर पुं [मालूर] १ विल्व वृक्ष, बेल का
गाछ (दि ३, १६, गा १७६, गठ, कुमा) ।
२ म. बेल का फल (पाप, गठ) ।

माहय पुं [माहल] माला (पुष्पमाला
माहयह ३२ खो० = मयमावता) ।

माविअ वि [मापित] मापा हुआ (दि ६,
६०, दि ८, ४८) ।

मास देखो मंस = मास (दि १, २६, ७०,
कुमा, छा ७२८ टी) ।

मास पुं [मास] १ महिला, बीस दिन का
समय (छा २, ४, छा ७६८ टी, की ३५) ।
२ समय, काल, 'कालमासे कालं विचरा'
(विपा १, १-२, कुप् ३५), 'पसवमासे'
(कुप् ४०४) । ३ पर्व—वनवसति विशेष,
'वीरणा- (१ खी) वह दसदि य मासे य'
(पण १—पत्र ३३) । 'उस देखो 'तुस
(रत्न) । 'कप पुं [कप] एक स्थान में
महिला तर रहने का साधार (रह ६) ।
'रमण न [क्षपण] लगातार एक मास
का उपास (छाया १, १, विपा २, १,
मग) । 'शुरु न [शुरु] वन-विशेष, एरा-
का छा (संयोग १७) । 'तुस पुं [तुप]
एक दिन मुनि (सिने ३१) । 'तुरी की
[तुरी] १ नवरी विशेष, बुद्धो देह की
उपस्थिति (रत्न) । २ 'वर्ग' देह की उपस्थिति,
'पासा बंभी य, मायदुको बट्टा' (पत्र २७५) ।

'पुरिया की [पुरिका] एक जैन मुनि शाखा
(वप) । 'लु न [लु] उप विशेष,
'पुरिमह' तप (संयोग ५७) ।

मास पुं [माप] १ समय देह विशेष । २
देह विशेष में रहनेवाली मनुष्य-जाति (पण
१, १—पत्र १४) । ३ धाम्य विशेष, उद्ध
(दि १, ६८) । ४ परिमाण विशेष, मासा
(वज्ज १:०) । 'पण्णी की [पणी]
वनस्पति विशेष (पण १—पत्र ३६) ।

मासल देखो मंसल (दि १, २६, कुमा) ।

मासलिय वि [मांसलिन] घुट किया हुआ
(गठ, सुषा ४४४) ।

मासाहस पुं [मासाहस] पति-विशेष,
'मासाहसउत्तिसमो किं वा बिद्वान्नि धंधलियो'
(संवे ६, उवा, छा ३, ३) ।

मासिअ पुं [दि] विग्रह, खल, दुर्जन (दि ६,
१२२) ।

मासिअ वि [मासिक] मास-सम्बन्धी (उवा,
कीप) ।

मासिआ की [मानृप्पस] मां की वहिन
(पर्ववि २२) ।

मास देखो मसु = समय (दि २, ८६) ।

मासुरी की [दि] रम्य, बाड़ी-मूँछ (दि ६,
१३०, पाप) ।

माह पुं [माप] १ मान विशेष, माप का
महिता (पाप, दि ४, ३५७) । २ सहाय
का एक प्रसिद्ध मणि । ३ एक संवत्स काल-
ग्रह, शिषुपाल वष काप (दि १, ८८७) ।

माह न [दि] मूह का पूरा (दि ६, १२८) ।
माहण की [माहण, माहण] हिवा से
निबृत्त, महिष—१ मुनि, शास्त्र, श्रद्धा ।
२ धारक, जैन उपासक । ३ ब्राह्मण (माप,
सुषा २, ४८, ५४, मग १, ७, २, ५,
प्राम् ८०, मग) । की, 'ग, (मग) । 'हुं
न [हुण्ड] मग्य देह ॥ एर धाम
(माह १) ।

माहप्य पुन [माहात्प्य] १ महत्प, गौरव ।
२ महिमा, प्रचार (दि १, ३३, गठ कुमा,
गुर ३, २३, प्राम् १७) ।

माहप्यवा की, ऊपर देखो (छा ७६८ टी) ।

माहय [दि] चतुर्विध नोट-विशेष (उप
३६, ४५६) ।

माहय पुं [माधव] १ श्रीकृष्ण, नारायण (गा ४४३, वज्र ११०)। २ वसन्त ऋतु। ३ वैशाख मास (गा ७७७, कवि ५३)। ४ पण्डिणी स्त्री [पण्डिनी] सद्यो (स ५२३)।

माहयिआ स्त्री [माधयिआ] नीचे देखो (पाश)।

माह्यो स्त्री [माधयो] १ लता-विशेष (गा ३२२, धर्म १६६, स्वप्न ३६)। २ एक राज-पत्नी (पद्म ६, १२६, २०, १८४)।

माहाय्यन न [वे] १ बल, कपडा। २ बज्र-विशेष (दे ६, ११२)।

माहिंद पुं [माहेन्द्र] १ एक देव-लोक (सम ८)। २ एक इन्द्र, माहेन्द्र देवलोक का स्वामी (हा २, १—पद्म ८५)। ३ पद्म-विशेष, 'माहिंदलरी जामो' (सुभा ६०६)। ४ जिन का एक मुहूर्त (सम ३१)। ५ वि. माहेन्द्र सम्बन्धी (पद्म ५५, १६)।

माहिंदफल न [माहेन्द्रफल] इन्द्रवज्र, कौरवों का बीज (उत्तमि ६)।

माहिल पुं [वे] महिला पाल, बैल चरानेवाला (दे ६, १९०)।

माहिवाय पुं [वे] १ शिशिर पवन (दे ६, १३१)। २ माघ का पवन (पद्म १)।

माहिसी येखो माहिसी (कव्य)।

माही स्त्री [माधी] १ माघ मास की पूर्णिमा। २ माघ की धनवास्या (सुज १०, ६)।

माहुर वि [मायुर] मधुर का (अत १५६)।

माहुर वि [वे] शाक, लहसुन (दे ६, १३०)।

माहुर पुं वि [मायुर, क] १ मधुर रस-माहुरय वाता। २ श्वात्स रस से मिलन रसवाला (उवा)।

माहुरिअ न [माधुर्य] मधुरता (प्राक् १६)।

माहुलिंग पुं [माहुल्लिङ्ग] १ भोजपुर क्षत्र-भोजौरानीय का पद (हे १, २४४, बज्र)। २ न. भोजौर का फल (पद्म, सुभा)।

माहेवर वि [माहेधर] १ महेस्वर-भक्त (तिरि २८)। २ न. नगर-विशेष (पद्म १०, १५)।

माहेसरी स्त्री [माहेधरी] १ निम्ब-विशेष (सम ३५)। २ नगरी-विशेष (पाज)।

मि (मप) देखो अयि—मपि (मवि)।

मिं स्त्री [मृत्] मिट्टी, मट्टी, 'जह मिले-वायमपादलानुपौनस्सयेव गदमायो' (विशे ३२५२)। 'पिण्ड पुं [पिण्ड] मिट्टी का पिंडा (धर्म २००)। 'मय वि [मय] मिट्टी का मया द्रुमा (अ २४२, पिंड ३३४, सुभा २७०)।

मिअ देखो मअ = मृग, 'धवलिस्सिपेदेणं मिअो मयो वाहमायो' (सुर ८, १४२; उत १, ५, पएह १, १, सम ६०, रंभा, हा ४, २, पि ५४)। 'चक्र न [चक्र] विद्या विशेष, प्राय प्रवेश आदि से मृगों के दर्शन आदि से शुभाशुभ फल जानने की विद्या (सुभा २, २, २७)। 'नयणा स्त्री [नयना] देखो मय च्छी (नाद, सुर ६, १५३)। 'मय पुं [मय] च्छरी (रंभा ३५)। 'रिउ पुं [रिउ] सिंह (सुभा ५७१)। 'वाहन पुं [वाहन] भरलोचन के एक वाली घोवर (सम १२१)।

मिअ पुं [मृग] हरिण के आकार का पशु-विशेष, जो हरिण से छोटा और जिसका मुँह लम्बा होता है। 'लोमिअ वि [लोमिक] उसके बालों से बना हुआ (सणु ३५)।

मिअ देखो मिअ = मित्र (प्राय)।

मिअ वि [वे] धनकृत, विनूयित (पद्म १)।

मिअ वि [मित] मानोषेत, परिमित (उत १६, व, सम १५२, कप)। २ शोभा, श्रव्य, 'मिमं सुखं' (पाश)। 'वाइ वि [वादिन] आत्मा आदि पदार्थों को परिमित माननेवाला (हा ८—पद्म ४२७)।

मिअ देखो मिअ = इव (गा २०६ प्र. नाट)।

मिअ देखो मिआ। 'अग्रम पुं [ग्राम] ग्राम विशेष (विपा १, १)।

मिअआ स्त्री [मृगया] खिलार (गाट—शुद्ध २७)।

मिअक पुं [मृगाङ्ग] १ पन्न, चाँद (हे १, १३०, प्राय कुभा, वाप १६४)। २ चन्द्र का पिपाव (सुज २०)। ३ इक्ष्वाकु वंश का एक राजा (पद्म ५, ७)। 'अणि पुं [अणि] पन्नवान्त मणि (कण्ठ)।

मिअंग देखो मयंग = मृगं (कण्ठ)।

मिअसिर देखो मासिर (वि ५४)।

मिआ स्त्री [मृगा] १ राजा विजय की पत्नी (विपा १, १)। २ राजा बलभद्र की पत्नी (उत १६, १)। 'उत्त, 'पुत्त पुं [पुत्त] १ राजा विजय का एक पुत्र (विपा १, १, कर्म १५)। २ राजा बलभद्र का एक पुत्र, जिसका दूसरा नाम बलभी था (उत १६, २)। 'वई स्त्री [यती] १ प्रथम बाहुदेव की माता का नाम (सम १५२)। २ यथा शताशोक की पटरानी का नाम (विपा १, ५)।

मिइ स्त्री [मिति] १ मान, परिमाण। २ हृद, धर्म, 'किं पुकरमुवायाए न मिइं चतुपावसतीए' (धर्मवि १४१)।

मिइ देखो मिउ = मृत् (धर्मवि ५५८)।

मिइंग देखो मयंग = मृग (हे १, १९७, कुभा)।

मिइंद देखो मइंद = मृगैर (धर्मि २४२)।

मिउ स्त्री [मृद] मिट्टी, मट्टी, 'मिउवडवक्क—बीवरसामगीवसा कुमाडुव' (समत्त २२४), 'मिनिपिडी वक्कवो सुमवगो वह व दवसाह वि' (अ २३५ टी)।

मिउ वि [मृदु] कोमल, मुकुमार (वीप, कुभा, सणु)।

मिउ वि [मृदु] मनोहा, सुन्दर, 'मिउमह—संफने' (रौहि ५२)।

मिचण न [वे] मोचना, निमोलन (दे ३, ३०)।

मिज स्त्री [मज्जा] १ शरीर-रिपल बाहु-मिज्या } विशेष, हाड के बीच का द्रव्य-मिजिय } विशेष (पएह १, १—पद्म ८, महा, उवा, शोप)। २ गण्यवर्ती प्रवचन, पितृण-मिजिया दत्ता (पएह १७—पद्म ५२६)।

मिठ पुं [वे] हस्तिपद, हाथी का महादात सिठिल (अ १२८ टी; कुप ३९८, महा, अत ७६, धर्मवि ८१; ११५, सम १०, अ ११०)। देखो मेठ।

मिड पुं [मिड] १ मेठा, मेठ, मेप, गाडर मिडय (विशे २०४ टी, अ ५ २०३, कुप १६२), 'देव सए मिडयो से य' (धर्मवि

१४०)। श्री. 'दिया (पात्र)। २ न. पुरप-
त्तिग, पुरप चिह (राज)। 'मुह पुं ['मुप]
१ मनार्थ देश विरोध (पत्र २७४)। २ न
नगर विरोध (राज)। देखो मंड।

मिथिय पुं ['मिण्डक] ग्राम-विरोध (कर्म १)।

मिग देखो मय=मृग (विना १, ७, गुर २,
२२७, मुपा १६८, वर)। 'सोहो मिगाएँ
मलिलाए गवा' (सूपा १, ६, २१)। 'गध
पुं ['गम्ध'] मुगलिन मनुष्य की एष जाति
(इज)। 'नाह पुं ['नाथ'] सिंह (मुपा
६१२)। 'यह पुं ['पति'] सिंह (पह १,
१, मुपा ६१६)। 'मालुही श्री ['मालुही']
वनस्पति विरोध (पह १७—पत्र २३०)।

'रि पुं ['रि'] सिंह (उप, गुर ६, २७०)।

'हिय पुं ['धिप'] सिंह (पह २, ५)।

मिगाया श्री ['मृगाया] शिकार (मुपा २१४,
बुत्र २३, माह ६२)।

मिगाव्य न ['मृगाव्य] ऊपर देखो (उत्त
१८, १)।

मिगमिर देखो मगसिर (उप ८, इज, पि
४१६)।

मिगावई देखो मित्रा वई (पत्रम २०, १८४
२२, ५५, उप धंत बुत्र १८३, वडि)।

मिमी श्री ['मृमी'] १ हरिणी (महा)। २
विद्या विरोध (राज)। 'पद न ['वड'] श्री
वा दुम स्थाना चीन (राज)।

मिन्चु देखो मन्चु (पह, मुपा)।

मिच्छ (मन) देखो इच्छ=इष्ट; 'न उ देह
बन्धु मिच्छर न ग बंडु' (मवि)।

मिच्छ पुं ['मिच्छ'] बहन, भनार्थ मनुष्य
(पत्रम २७, १८ ३४, ४१; श्री १५; हलोप
१६)। 'पु पुं ['प्रसु'] स्नेहणी का राजा
(रमा)। 'पय न ['प्रय] वसएह, प्याज,
गट्टा, मिच्छलिय पु पुन का मेषा हा न
हिरि' (इ ५)। 'दिय पुं ['धिप']
मरुती का राजा (पत्रम १२, १४)।

मिच्छर न ग बंडु' (मवि)।

मिच्छ पुं ['मिच्छ'] बहन, भनार्थ मनुष्य

(पत्रम २७, १८ ३४, ४१; श्री १५; हलोप
१६)। 'पु पुं ['प्रसु'] स्नेहणी का राजा
(रमा)। 'पय न ['प्रय] वसएह, प्याज,
गट्टा, मिच्छलिय पु पुन का मेषा हा न
हिरि' (इ ५)। 'दिय पुं ['धिप']
मरुती का राजा (पत्रम १२, १४)।

मिच्छर न ग बंडु' (मवि)।

मिच्छ पुं ['मिच्छ'] बहन, भनार्थ मनुष्य

(पत्रम २७, १८ ३४, ४१; श्री १५; हलोप
१६)। 'पु पुं ['प्रसु'] स्नेहणी का राजा
(रमा)। 'पय न ['प्रय] वसएह, प्याज,
गट्टा, मिच्छलिय पु पुन का मेषा हा न
हिरि' (इ ५)। 'दिय पुं ['धिप']
मरुती का राजा (पत्रम १२, १४)।

मिच्छर न ग बंडु' (मवि)।

मिच्छ पुं ['मिच्छ'] बहन, भनार्थ मनुष्य

(पत्रम २७, १८ ३४, ४१; श्री १५; हलोप
१६)। 'पु पुं ['प्रसु'] स्नेहणी का राजा
(रमा)। 'पय न ['प्रय] वसएह, प्याज,
गट्टा, मिच्छलिय पु पुन का मेषा हा न
हिरि' (इ ५)। 'दिय पुं ['धिप']
मरुती का राजा (पत्रम १२, १४)।

मिच्छर न ग बंडु' (मवि)।

मिच्छ पुं ['मिच्छ'] बहन, भनार्थ मनुष्य

(पत्रम २७, १८ ३४, ४१; श्री १५; हलोप
१६)। 'पु पुं ['प्रसु'] स्नेहणी का राजा
(रमा)। 'पय न ['प्रय] वसएह, प्याज,
गट्टा, मिच्छलिय पु पुन का मेषा हा न
हिरि' (इ ५)। 'दिय पुं ['धिप']
मरुती का राजा (पत्रम १२, १४)।

मिच्छर न ग बंडु' (मवि)।

मिच्छ पुं ['मिच्छ'] बहन, भनार्थ मनुष्य

(पत्रम २७, १८ ३४, ४१; श्री १५; हलोप
१६)। 'पु पुं ['प्रसु'] स्नेहणी का राजा
(रमा)। 'पय न ['प्रय] वसएह, प्याज,
गट्टा, मिच्छलिय पु पुन का मेषा हा न
हिरि' (इ ५)। 'दिय पुं ['धिप']
मरुती का राजा (पत्रम १२, १४)।

मिच्छर न ग बंडु' (मवि)।

मिच्छ पुं ['मिच्छ'] बहन, भनार्थ मनुष्य

(पत्रम २७, १८ ३४, ४१; श्री १५; हलोप
१६)। 'पु पुं ['प्रसु'] स्नेहणी का राजा
(रमा)। 'पय न ['प्रय] वसएह, प्याज,
गट्टा, मिच्छलिय पु पुन का मेषा हा न
हिरि' (इ ५)। 'दिय पुं ['धिप']
मरुती का राजा (पत्रम १२, १४)।

मिच्छर न ग बंडु' (मवि)।

हियाहियविभागानाएसएलाभमनिमो कोइ
(विगे ५१६)।

मिच्छ देखो मिच्छा (कर्म ३, २, ४)।

'वार पुं ['वार] मिया-नरख (पावम)।

'त न ['त्व] सय तव पर मयदा,
सय धर्म का धरिदराह (ठा ३, ३,
प्राप् ६, मग, शीप, उप ५११, कुमा)।

'ति वि ['तिन] सय धर्म पर विरवास
नहीं बननेवाग, परमार्थ का मयदाहु (द
१८)। 'दिहि, 'दिहीय, 'दिहि, 'दिहिय
वि ['दिहि, 'रु] सय धर्म पर यदा नहीं
रखनेवाग, जिन धर्म से मित्र धर्म को मानने-
वाला (सम २६, कुमा, ठा २, २; शीप,
ठा १)।

मिच्छा ध ['मिच्छा] १ भसत्य, झूठा
(पाव)। २ धर्म विरोध, मियावय मोहनीय
धर्म (कर्म २, ४, १४)। ३ गुण-स्थान
विरोध, प्रथम गुण-स्थान (कर्म २, २, ३,
१३)। 'दसन न ['दसन] १ सत्य सत्य
पर मयदा (मग ८, मग, शीप)। २ भसत्य
धर्म (कुमा)। 'नाग न ['क्षान] भसत्य
ज्ञान, निपरीत ज्ञान, प्रज्ञान (मग)। 'मुज
न ['भत] भसत्य शास्त्र, मियाहटि प्रणीत
शास्त्र (संदि)।

मिच्छा ध ['मिच्छा] १ भसत्य, झूठा

(पाव)। २ धर्म विरोध, मियावय मोहनीय

धर्म (कर्म २, ४, १४)। ३ गुण-स्थान

विरोध, प्रथम गुण-स्थान (कर्म २, २, ३,
१३)। 'दसन न ['दसन] १ सत्य सत्य

पर मयदा (मग ८, मग, शीप)। २ भसत्य

धर्म (कुमा)। 'नाग न ['क्षान] भसत्य

ज्ञान, निपरीत ज्ञान, प्रज्ञान (मग)। 'मुज

न ['भत] भसत्य शास्त्र, मियाहटि प्रणीत

शास्त्र (संदि)।

मिच्छ ध ['मिच्छ] मरुता। मिच्छति (सूपा १,
७, २)। वड. मिच्छमाण (मग)।

मिच्छन { } देखो म्या=मा।

मिच्छमाण { } देखो म्या=मा।

मिच्छ वि ['मिच्छ] शुधि, धर्म (उप ७२८
टी)।

मिच्छ वर ['दि] मिगना, तार बनना। मिच्छ-
बनु (विम)। प्रयो. मिच्छह (विम)।

मिच्छ वि ['मिच्छ] शुधि, धर्म (उप ७२८
टी)।

मिच्छ वर ['दि] मिगना, तार बनना। मिच्छ-
बनु (विम)। प्रयो. मिच्छह (विम)।

मिच्छ वि ['मिच्छ] शुधि, धर्म (उप ७२८
टी)।

मिच्छ वर ['दि] मिगना, तार बनना। मिच्छ-
बनु (विम)। प्रयो. मिच्छह (विम)।

मिच्छ वि ['मिच्छ] शुधि, धर्म (उप ७२८
टी)।

मिच्छ वर ['दि] मिगना, तार बनना। मिच्छ-
बनु (विम)। प्रयो. मिच्छह (विम)।

मिच्छ वि ['मिच्छ] शुधि, धर्म (उप ७२८
टी)।

मिच्छ वर ['दि] मिगना, तार बनना। मिच्छ-
बनु (विम)। प्रयो. मिच्छह (विम)।

मिच्छ वि ['मिच्छ] शुधि, धर्म (उप ७२८
टी)।

मिच्छ वर ['दि] मिगना, तार बनना। मिच्छ-
बनु (विम)। प्रयो. मिच्छह (विम)।

मिच्छ वि ['मिच्छ] शुधि, धर्म (उप ७२८
टी)।

मिच्छ वर ['दि] मिगना, तार बनना। मिच्छ-
बनु (विम)। प्रयो. मिच्छह (विम)।

मिच्छ वि ['मिच्छ] शुधि, धर्म (उप ७२८
टी)।

मिच्छ वर ['दि] मिगना, तार बनना। मिच्छ-
बनु (विम)। प्रयो. मिच्छह (विम)।

मिच्छ वि ['मिच्छ] शुधि, धर्म (उप ७२८
टी)।

मिगाय न ['दि] बगवार, जवरदली (दे ६,
११३)।

मिगाळ देखो मुगाळ (म्राट ८, रमा)।

मिच पुं ['मिच] १ सूर्य, रवि (मुपा ६४५,
मुख ४, ६, पाव, वमा १४४)। २ नयादेन-
विरोध, मनुष्या नया वा धर्मिष्ठायक देव
(ठा २, २—पत्र ७७, मुज १०, १२)। ३
महोरान वा तीसरा मुहूर्त (मम ११, मुज
१०, १३)। ४ एक राजा का नाम (विना
१, २)। ५ पुन, दोल, धर्मय सत्ता, मितो
सही धर्मों (पात्र) 'पहाणमिता' (स
७०७), तिन्हो मितो हब' (उ ७१५,
मुपा ६४५, प्राप् ७६)। 'वेसी श्री ['वशी]
इक पर्वत पर रहनेवाली एक दिव्यमारी
देवी; 'मल्लुसा मित (त) वेसी' (ठा ८—
पत्र ५१७, इज)। 'गा श्री ['गा] वैतोचन
बसीह की एक धर्म-मदियों, एक इन्द्राणी
(ठा ४, १—पत्र २०४)। 'गदि पु
['नदिन] एक राजा का नाम (विना २,
१०)। 'दाम पुं ['दाम] एक कुत्तर
पुख का नाम (सम १५०)। 'देया श्री
श्री ['देया] मनुष्या नया (पात्र)। 'व
वि ['व'] मिन्नाना (सम ३, १८)। 'सेण
पुं ['सेन] एक कुटीरिज पुन (मुपा
५०७)।

मिच पुं ['मिच] १ सूर्य, रवि (मुपा ६४५,
मुख ४, ६, पाव, वमा १४४)। २ नयादेन-

विरोध, मनुष्या नया वा धर्मिष्ठायक देव

(ठा २, २—पत्र ७७, मुज १०, १२)। ३

महोरान वा तीसरा मुहूर्त (मम ११, मुज

१०, १३)। ४ एक राजा का नाम (विना

१, २)। ५ पुन, दोल, धर्मय सत्ता, मितो

सही धर्मों (पात्र) 'पहाणमिता' (स

७०७), तिन्हो मितो हब' (उ ७१५,

मुपा ६४५, प्राप् ७६)। 'वेसी श्री ['वशी]
इक पर्वत पर रहनेवाली एक दिव्यमारी

देवी; 'मल्लुसा मित (त) वेसी' (ठा ८—
पत्र ५१७, इज)। 'गा श्री ['गा] वैतोचन

बसीह की एक धर्म-मदियों, एक इन्द्राणी

(ठा ४, १—पत्र २०४)। 'गदि पु

['नदिन] एक राजा का नाम (विना २,

१०)। 'दाम पुं ['दाम] एक कुत्तर

पुख का नाम (सम १५०)। 'देया श्री

श्री ['देया] मनुष्या नया (पात्र)। 'व

वि ['व'] मिन्नाना (सम ३, १८)। 'सेण

पुं ['सेन] एक कुटीरिज पुन (मुपा

५०७)।

मिच देखो मेच=मान (का, श्री ११;
प्राप् १४५)।

मिचल पुं ['दि] कदर, तार (दे ६, १२६,
गुर १३, ११८)।

मिच्छि श्री 'मि' १ मान, परिमाण। २
मारेणला

'जयगगरावयार मिच्छि मई ए भायरी हुई।
उसकयनवायारी मिच्छि एह उमरए'

(मग १७)।

मिच्छि श्री 'मिच्छि' मिच्छि मच्छि (मम
२४३)। 'यई श्री ['वा] एछाउं देत को

प्राप्तेन चनवाये (विना ४८)।

मिच्छि धर ['मिच्छि'] विन का बनना।
वा मिच्छिमान (मग ११, ७)।

मिच्छि न ['मिच्छि'] १ मच्छि-विन, या रूप
मेच की एक टंगा १। २ दुई, उम मय मे

उमर (ठा ७—पत्र १६०)।

मिच्छि न ['मिच्छि'] १ मच्छि-विन, या रूप

मेच की एक टंगा १। २ दुई, उम मय मे

उमर (ठा ७—पत्र १६०)।

मित्तविय पुं [दि] ज्येष्ठ, पति का बड़ा भाई (दे ६, १३२)।
 मित्ती श्री [मैत्री] मित्रता, दोस्ती (सुप्र २, ७, ३६, था १४, प्राप् ८)।
 मिथुण देखो मिहण (पत्रम ६६, ३१)।
 मिदु देखो मिउ (अभि १८३, नाट—रत्ना ८०)।
 मिरिआ पुन [मिरिच] १ मरिच का गाछ।
 २ मिरच, मिर्चा (परण १७—पत्र ३३१, हे १, ४६, ठा ३, १ टी, पत्र २५६)।
 मिरिआ श्री [दि] कुटी, झोपड़ी (दे ६, १३२)।
 मिरिइ } पुत्री [मरोचि] किरण, प्रभा,
 मिरि } तेज 'मचलमिरिइकचय' (मीप),
 मिरिइ } 'तण्हा समिरि (१टी) या' (मीप),
 मिरिय } 'मिरककडण्हाया समिरीया' (मीप,
 ठा ४, १—पत्र २२६), 'विउडुणमिरिइमूर-
 लिपतलेय' (मीप), 'सुरमिरीयकचय
 विण्णुमुवतेहि' (परह १, ४—पत्र ७२)।
 मिला अक [मिला] मिलना। मिलइ (हे ४, ३३२, रत्ना, महा)। कर्म, मिलिजइ (हे ४, ४३४)। वक्र. मिलत (से १०, १६)।
 मिलफल पुंन, देखो मिच्छ = स्नेच्छ (भोष ४४०, अर्मस ५०८, तो १५, उत १०, १६), 'मिलसुणि' (पि ३८१)।
 मिलाण न [मिलन] मेल, मिलना, एकनित होना, 'लोगमिलएणिम' (उप ५७८, मुपा २५०)।
 मिलणा श्री. ऊपर देखो (उप १२८ टी, उत ७०६)।
 मिळा } अक [रत्ता] न्मान होना, निस्तेज
 मिलाअ } होना। मिळाइ, मिलाअइ (दे २, १०६, ४, १८, २४०, पडू)। वक्र. मिळ-
 अंत, मिलाअमाण (पि १३६, ठा ३, ३,
 छाया १, ११)।
 मिलाअ } पि [म्लान] निस्तेज, विच्छाद्य
 मिलाण } (छाया १, १—पत्र ३७, स
 ४२५, हे २, १०६, कुमा, महा)।
 मिलाण न [दि] पर्याण (?) '—यासयमिला-
 णचमरोडपर्मडिमइशेण' (मीप)।
 मिलाणि श्री [म्लानि] विच्छाद्यता (उप १४२ टी)।

मिलिअ वि [मिलित] मिला हुआ (गा ४४३, कुमा)।
 मिलिअ वि [मेलित] मिलाया हुआ (कुमा)।
 मिलिच्छ देखो मिच्छ = स्नेच्छ (हे १, ८५, हम्मीर ३४)।
 मिलिट्टु वि [मिट्ट] १ अस्पष्ट वास्तवता।
 २ म्लान। ३ न, अस्पष्ट वाक्य (प्राक् २७)।
 मिलिमिलिमिल अक [दि] चमकना। वक्र.
 मिलिमिलिमिलंत (परह १, ३—पत्र ४४)।
 मिलोण देखो मिलिअ (भोषमा २२ टी)।
 मिल्ह सक [मुच] छोटना त्यागना। मिल्ह
 (अवि)। वक्र. मिल्हत (सुपा ३१७)। क.
 मिल्हव (अप) (कुमा)। प्रयो., कवक.
 मिल्हाविज्जत (कुप्र १६२)।
 मिल्हाविअ वि [मोचित] छुड़ाया हुआ (सुपा ३८८, हम्मीर १८, कुप्र ४०१)।
 मिद्धिअ (अप) देखो मिलिअ (पिप)।
 मिद्धिअ वि [मोच] छोड़नेवाला (कुमा)।
 मिहइ देखो मिल्ह। मिल्हइ (छायापुन २२),
 मिल्हति (कुप्र १७)। अवि. मिल्हत्स (कुप्र १०)। क. मिल्हियव (सिरि ३५७)।
 मिल्हिय वि [मुक] छोटा हुआ (था २७)।
 मिव देखो इष (हे २, २८२, प्राप्. कुमा)।
 मिस सक [मिस्] खन्ड करना। वक्र.
 मिसत (तु ४४)।
 मिस न [मिप] बढ़ाना, झल, व्याज (बेइय ८३१, सिक्का २६, रंथा, कुमा)।
 मिसमिस अक [दि] १ अत्यंत चमकना। २
 खूब जतना। वक्र. मिसमिसंत (छाया १, १—पत्र १६, तुं २६, उत ६४८ टी)।
 मिसल (अप) सक [मिश्रय] मिश्रण करना
 मिलाता। भराटी में 'मिसलण'। मिसलइ
 (अवि)।
 मिसल (अप) देखो मीस, मीसालिअ
 (अवि)।
 मिसिमिस देखो मिसमिस वक्र. मिनि-
 मिसत, मिसिमिसित, मिसिमिसिमाण,
 मिसिमिसीयमाण, मिसिमिसित मिनि-
 मिसिमाण (मीप, मप, पि ५५८, उवा,
 पि ५५८, छाया १, १—पत्र ६४)।

मिसिमिसिय वि [दि] उद्दीप्त, उत्तेजित
 (सुर ३, ५०)।
 मिसस सक [मिश्रय] मिश्रण करना,
 मिलाता। मिससइ (हे ४, २८)।
 मिसस देखो मीस = मिश्र (मग)।
 'मिसस पुं [मिश्र] पूज्य, पूजनीय, 'वसिठु-
 मिसेतु' (उत्तर १०३)।
 मिससाकूर पुंन [मिश्राकूर] छाव विरोध,
 'बसुराहाहि मिससाकूर भोक्का कज्जं सार्धति'
 (सुप्र १०, १७)।
 मिह अक [मिध] स्नेह करना। मिहति
 (सुर ४, २१)।
 मिह देखो मिस = मिय, 'मिरागो मलिग्या-
 मतरगमणमिहो' (महा)।
 मिह देखो मिहो (माचा)।
 मिहिआ श्री [दि] मेघ-समूह (दे ६, १३२)।
 देखो महिआ।
 मिहिआ श्री [मिधिका] अल्प मेघ (से ४,
 १७)। देखो महिआ।
 मिहिर पु [मिहिर] सूर्य, रात्रि (उप पु ३५०;
 सुपा ४१६, पार्ता ५),
 'सायरिसायाएण मेहिसिहरीण
 मिहिरनसिणीण।
 दूरेवि बसताणं पडिबस
 नगहा होइ'
 (उप ७२८ टी)।
 मिहिला श्री [मिधिला] तपरी विरोध (ठा
 १०, पत्र २०, ४५; छाया १, ८—पत्र
 १२४, इक)।
 मिहू } देखो मिहो (उप ६४७, आचा)।
 मिहू }
 मिहण न [मिधुण] १ ली दुष्य का दुग्म,
 दपती (हे १, १८७, पात्र. कुमा)। २
 ज्योतिष प्रतिष्ठ एक राशि (विचार १०६)।
 मिहो = [मिथस] परस्पर, आपस में (उप
 १७६, स ३३६, पि ३४७)।
 मीअ न [दि] समकाल, उद्यो समय (दे ६,
 १३३)।
 मीण पु [मीन] १ मत्स्य, मछली (पात्र,
 पड. मीप ११६, सुर ३, ५१, १३, ४६)।
 २ ज्योतिष प्रतिष्ठ राशि विरोध (सुर ३, ५३;
 विचार १-६, संवीप ५४)।

मीत देखो मित्र = मित्र (सदि १०) ।
 मीमस सक [मीमांस] विचार करना ।
 क. 'म-मीमसा मुक्' (स ७३०) ।
 मीमसा जी [मीमासा] जैनियों दर्शन,
 पूर्वमीमासा (सुख ३, १, पर्मवि ३८) ।
 मीमंसिय वि [मीमांसित] विचारित (उप
 ६८६ टी) ।
 मीरा जी [दे] दीर्घ पुल्लि, बड़ा कुन्हा
 (सूपनि ७६) ।
 मील एक [मील्] मोचाला, बन्द होना,
 सङ्कुचाना । मीलइ (हे ४, २३२ पद) ।
 मील देखो मिल (वि ११) ।
 मीलच्छीकार पु [मीलच्छीनार] १ यवन
 देश विशेष, 'मीलच्छीकारदेसोवरि चलिदो
 लप्परछाएराया' (हम्परी ३५) । २ एक
 ध्वन राजा (हम्परी ३५) ।
 मीलण न [मीलन] सकोष (हुमा) ।
 मीलण देखो मिलण, 'लखलखमलमीलणोवमा
 विसमा' (वि ११, राज) ।
 मील्लिअ देखो मिल्लिअ = मिलित (पिंम) ।
 मीस सक [मिश्रय] मिलावना, मिश्रण
 करना । कर्म. मीसिअइ (वि ६४) ।
 मीस वि [मिश्र] १ संयुक्त, मिला हुमा,
 मिश्रित (हे १, ४३, २, १७०, हुमा, कम्म
 २, १३, ४, १३, १७, २४, मग,
 श्रीव, ६ २२) । २ न, लयावहार तीन दिनों
 का उपवास (सबोव ५८) ।
 मीसालिअ वि [मिश्र] सङ्गुक्त, मिला हुमा
 (हे २, १७०, हुमा) ।
 मीसिय वि [मिश्रित] ऊपर देखा (हुमा,
 कम्म, भवि) ।
 मुअ सक [मोदय] छुड़ा करना । कबइ,
 मुअजंत (से ७, ३७) ।
 मुअ सक [मुअ] छोड़ना । मुअइ (हे ४,
 ६१), मुअति (गा ३१६) । वक. मुअव,
 मुअमाण (गा ६४१, से ३, ३६, पि ४८३) ।
 वठ. मुअत्ता (मग) ।
 मुअ वि [सूत] मरा हुमा (से ३, १२, गा
 १४२; मज्जा १५८, प्राप् ४७, पठम १८,
 १६, उप ६४८ टी) । बहण न [बहण]
 शय-यान, ठट्टी, भरपी (दे ३, २०) ।

मुअ वि [स्मृत] याद किया हुमा (सुभ २,
 ७, ३८, आचा) ।
 मुअक देखो मिअक (प्राक ८) ।
 मुअग देखो मिअग (पद, सम्पत् २१८) ।
 मुअगी जी [दे] कीटिका, चींटी (दे ६,
 १३४) ।
 मुअगरा पु [दे] 'भारता नाथ श्रीर अम्यन्तर
 पुदगलो ते बना हुमा है' ऐसा विम्या ज्ञान
 (ठा ७ टी—पत्र ३८३) ।
 मुअण न [मोचन] छुटकाय, छोड़ना (सम्पत्
 ७८, विसे ३३१६, उप ४२०) ।
 मुअल (मप) देखो मुअ = मूल (पिंम) ।
 मुआ जी [सूत] मिट्टी (सदि ४) ।
 मुआ जी [मुअ] हर्ष, खुशी, आनन्द,
 'सुरमरसाभोवि सुअ भविं उअउअउ तसस
 सा एसा' (रमा) ।
 मुआइणी जी [दे] डुन्डी, जेमिन, चाण्डासिन
 (दे ६, १३२) ।
 मुआविअ वि [मोचित] छुड़वाया हुमा (स
 ४४६) ।
 मुअ वि [मोचिन] छोड़नेवाला (विसे ३४०२) ।
 मुअ वि [मुदित] १ हृषित, मोद-आस (सुर
 ७, २२३, प्राप् १०५, उव, श्रीव) । २ पुं
 राखण का एक मुअट, (पठम ५६, ३२) ।
 मुअ वि [दे] योनि मुअ, निर्दोष मातावाला,
 'मुअयो जो होई जोखिमुदो' (श्रीप—टी) ।
 मुअआगा देखो मुअगी, 'उवलिप्यते काया
 मुअभाई नवरि छुट' (पिंड ३५१) ।
 मुअग देखो मिअग (हे १, ४६, १३७, प्राप्,
 उवा, कम्म, सुपा ३६२, पात्र) । 'पुअर
 पुन [पुअर] मुअग का ऊपरवाला भाग
 (मग) ।
 मुअगलिया } जी [दे] कीटिका, चींटी (उप
 मुअगा } १३४ टी, सवा ८६, विसे
 १२०८, पिंड ३५१ टी) ।
 मुअं वि [मुअंजिन] मुअन बजानेवाला
 (हुमा) ।
 मुअद देखो मुअद = मुअद (प्राक ८) ।
 मुअजत देखो मुअ = मोदय ।
 मुअ वि [मोच] छोड़नेवाला (सण) ।
 मुअ देखो मिअ (नाल) ।

मुअउद पुं [मुअकुन्द] १ नृप-विशेष (अन्तु
 ६६) । २ पुअपुअ विशेष (कम्म) ।
 मुअद पु [मुअकुन्द] विष्णु, नारायण (नाट—
 चैत १२६) ।
 मुअर देखो मअर = मुअर (पद) ।
 मुअल देखो मअल = मुअल (पद, मुद्रा ८४) ।
 मुआयण न [मुद्रायण] गोत्र विशेष, विशाला
 नक्षत्र का गोत्र (इक) ।
 मुंअ देखो मुअ = मुअ । मुंअइ, मुअए (पद,
 हुमा) । भूका मुंअ (नल ७६) । भवि.
 मोअं मोअंछिह मुअंछिह (हे ३, १७४,
 पि ५२६) । कर्म. मुअइ, मुअए, मुअ ति
 (भावा, हे ४, २०६, महा भग) । भवि.
 मुअंछिह (मग) । बह. मुअत (हुमा) ।
 कवक मुअत (पि ५४२) । सह. मोचु,
 मोचुआण, मोचूण (हुमा, पद; प्राक ३४) ।
 हेह. मोचू (हुमा), मुअंछिह (मप) (हुमा) ।
 क. मोचंज, मुअंज (हे ४, २१२, गा
 ६७२, सुपा ५८६) ।
 मुअ पुन [मुअ] मूँज, लण विशेष, जिसकी
 रस्ती बगई जाती है (सुभ २, १, १६,
 गच्छ २, ३६, उप ६४८ टी) । 'मेहला
 जी [मेहला] मूँज का कल्पित (एया १,
 १६—पत्र २१३) ।
 मुअइ न [मोअंज] १ गोत्र विशेष । २
 पुत्री, गोत्र में उल्लन (ठा ७—पा ३६०) ।
 मुअकार पु [मुअकार] मूँज की रस्ती
 बनानेवाला शिल्प (मणु १४६) ।
 मुआयण पु [मोआयन] ऋषि विशेष (हे
 १, १६०, प्राप्) ।
 मुअि पु [मोअि] ऊपर देखो (प्राक १०) ।
 मुअ वि [दे] हीन शरीरवाला,
 जे यमनेरमुद्रा पाए पाइति बमयायीए ।
 ते हवि दुट्टया बोहीवि मुअइरा ठेवि'
 (सबोव १४) ।
 मुअ सक [मुअय] १ डूँडना, बाल
 उखाड़ना । २ दीया देना, संगात देना ।
 मुअइ (भवि), मुअइ (पुम २, ६३) ।
 प्रयो., बह. मुअंज (पंचा १०, ४८ टी) ।
 हेह. मुअंजवि, मुअंजवत्तप, मुअंजवत्तप
 (पंचा १०, ४८, ठा २, १, कय) ।

सुंढ पुंन [मुण्ड] १ मस्तक, तिर (हे ४, ४४६, पिंग) । २ वि. मुण्डित, दोषित, प्रजलित (कप, उवा, निह ३१४) । "परसु पुं [परसु] नंगा कुल्हाडा, तोषण कुडार (पणह १, ३—पन ५४) ।

सुंढण न [मुण्डन] केशो का धपनक (धवा २, २ स २७१, सुर १२, ४५) ।

सुंढा लो [दे] मुनी, हरिली (हे ६, १३३) ।

सुंढाविअ वि [मुण्डित] सुंढाया हुपा (भग, महा, गाय १, १) ।

सुंढि वि [मुण्डित] मुण्डन करनेवाला (उव, भौप, भत १००) ।

सुंढिअ वि [मुण्डित] मुण्डन-युक्त (भग, उप ६३४, महा) ।

सुंढी लो [दे] तोरङ्गी, शिरो घट, पूंघट (हे ६, १३३) ।

सुंढ } पुं [मूर्धन] मूर्धा, मस्तक, तिर
सुंढाण } (हे १, २६, २, ४१, पङ्) ।
देखो सुंढ = मूर्धन ।

सुंढस्त्राय सक [दे] भेजवाना, पुजराती में 'मोक्यानहु' । संठ. सुंढाविअण (तिरि ४०४) ।

सुंढर पुं [सुंढर] धरण, धाईना (हे १, १४) ।

सुंढ (मप) सक [सुंढ] घोडना, पुजराती में 'मूकनु' । सुंढद (प्राह ११६) । संठ.

सुंढिअ (नाट—हैत ७६) ।

सुंढ वि [सुंढ] वाक्-शक्ति से रहित, धूँगा (हे २, ६६; मुग ५५२, पङ्) ।

सुंढ देखो सुंढल (तिरे ५५०) ।

सुंढ वि [सुंढ] १ छोटा हुपा, धक (उवा, मुग ४७८, महा, पाप) । २ मुक्ति-प्राप्त, मोक्ष-प्राप्त (ह २, २) । ३ सगलार पाँच दिन का उपवास (सर्वोप ५८) । देखो सुंढ = युक्त ।

सुंढय न [दे] बुलहिन के धार्मिक धन्य निमन्त्रित बग्याभावा निवाह (हे १, १३५) ।

सुंढाउ वि [दे] १ उचित, योग्य (दे ६, १४७, सुर १, २३३; विरे १८; मठद; तिरि १५३; पाप, मुग १६८) ।

सुंढलिअ वि [दे] कपन युक्त किया हुपा, धनियमित्र (हे १, १५६ टी) ।

सुंढकुंडी लो [दे] बूट (हे ६, ११७) ।

सुंढकुंड पुं [दे] राशि, ढेर (हे ६, १३६) ।

सुंढेय्य देखो मुंढ = युक्त (प्रापु १६८) ।

सुंढल पुं [मोक्ष] १ मुक्ति, निर्वाण (सुर १४, ६५, हे २, ८६; सार्ध ८६) । २

कुटकारा, 'रिणमुक्क' (रयण ६५, धर्मवि २१) ।

सुंढल वि [मूर्ध] अनामी, वेवकूफ (हे २, ११२, कुमा, गा ८२; मुग २३१) ।

सुंढल वि [सुंढ] प्रधान, नायक (हास्य १२५) ।

सुंढर पुंन [मुटक] १ धरहकोप । २ वृक्ष-विशेष । ३ चौर, लस्कर । ४ वि. मासत गुर (प्राप) ।

सुंढस्वण देखो मोक्खण (सिखा ४५) ।

सुंढरणी लो [मोक्षणा] स्तम्भन से कुटकारा करनेवाली विद्या विशेष (धर्मवि १२४) ।

सुंढ देखो सुंढ = युक्त (प्रापु ६; राय) ।

सुंढ पुं [सुर] १ एक म्लेच्छ-जाति (मुच्छ १५२) । २ गादी के ऊपर का डकन (प्रापु १५१) ।

सुंढ देखो सुंढा, 'एगमुगमसबहणे धनमस्वो वि तिरि वहह' (सुपा ५६१) ।

सुंढद देखो मठद = मूकन्द (भावा २, १, २, ४, विरे ७८ टी) ।

सुंढस पुंली [दे] हाथ से चलनेवाले जन्तु लो एक जाति, भुनपरितर्प-जातीय एव प्राणी (पणह १, १—पन ८) । लो. 'सा (उवा) ।

देखो मगुस, मुगस ।

सुंढा पुं [सुंढा] १ वायव-विशेष, बूँग (उवा) । २ रोग विशेष (ति १३) । ३ पति-विशेष, जन-नाक (प्राप) । "पणी लो [पणी] वनराजित विशेष (पणह १—पन ३६) । "सेल पुं [रील] पर्वत विशेष, बभी नहीं भीगेनेवाला एक पर्वत (उप ७२८ टी) ।

सुंढाद पुं [दे] मोगल, म्लेच्छ-जाति विशेष (हे ४, ४०६) । देखो मोगम ।

सुंढार न [सुंढार] १ पुण्ड-विशेष (तजना १०६) । २ देखो मोगार (प्राप. धार १६; कप) ।

मुग्गारय न [दे. मुग्गारत] मुग्गा के साथ रमण (तजना १०६) ।

मुग्गल देखो मुग्गाड (तो १५) ।

मुग्गस पुं [दे] नकुल, न्यूना (हे ६, ११८) ।

मुग्गाह भक [प्र + छ] फैलना । मुग्गाहद (?) (वात्वा १४८) ।

मुग्गिल } पुं [दे] पर्वत-विशेष (तो ७; भत
मुग्गिल } १६१) ।

मुग्गसु देखो मुग्गास (हे ६, ११८) ।

मुग्गध देखो मुग्गाड (हे ४, ४०६) ।

मुग्गुरुड देखो मुंढुरुड (हे ६, १३१) ।

मुचकुंद } देखो सुउउद (सुर २, ७६;
मुचकुंद } कुमा) ।

मुच्छ भक [मुच्छ] १ मूर्छित होना । २ भासक होना । ३ बढना । मुच्छद, मुच्छद (कस, सुप १, १, ४, २) । बह. मुच्छत, मुच्छमाण (गा ५४६, भावा) ।

मुच्छणा लो [मूर्च्छना] गान वा एक भंग (ठा ७—पन ३६५) ।

मुच्छा लो [मूर्च्छा] १ मोह (ठा २, ४; प्रापु १०६) । २ मचेतनावस्था, बेहोशी (उव, पङ्) । ३ गूढ, प्रासक्ति (सन ७१) । ४ मूर्च्छना, गीत का एक भंग (ठा ७—पन ३६३) ।

मुच्छाविअ वि [मूर्च्छित] मूर्च्छा-युक्त किया हुपा (हे १२, ३८) ।

मुच्छिअ वि [मूर्च्छित] १ मूर्च्छा-युक्त (प्रापु ५७, उवा) । २ पुं. नरकावास-विशेष (देवद २७) ।

मुच्छिज्जत वि [मूर्च्छायमान] मूर्च्छा लो प्राप्त होता (हे १३, ४३) ।

मुच्छिअ पुं [मुच्छिअ] मल्लय विशेष, 'वायप वाएण मण्हिमाण न दाएणं बभन । जोषामसहससाणो मुच्छिममच्छो उमाएणं' (पन ३) ।

मुच्छिर वि [मुच्छिअ] १ बड़नेवाला । २ बेहोरीगला (कुमा) ।

मुग्ग भवा [सुंढ] १ मोह करना । २ धनवाना । मुग्गर (भावा; उव, महा) । भवि. मुग्गिहिति (भौप) । इ. मुग्गिभयवद (पणह २, ५—पन १४६; उव) ।

मुद्रिम् पुं० [दि] नर्व, महंकार, मुद्रातो में
'मोटाई', 'कयमुद्रिम्नोकारो' (हम्मीर ३५)।
देखो मोद्रिम्।

मुद्रि वि [मुद्र, सुपित] जिसकी कोखें हई
हो वह (पिंड ४६६; सुर २, ११२, सुपा
३६१, महा)।

मुद्रि प्रुषो [मुद्रि] मुद्रो, मुद्रो, मुद्रा, मुद्रा,
'मुद्रिणा', 'मुद्रोय' (पि३७६, ३८५, पाय,
रमा भवि)। 'मुद्रम् न [मुद्र] मुद्रि से
की जाती लडाई, मुद्रापूर्वी (पावा)।
'मुद्रय न [मुद्रक] १ चार अंगुल लम्बा
कुत्ताकार मुद्रक। २ चार अंगुल लम्बा
चतुर्लोक मुद्रक (पय ८०)।

मुद्रि अ पु [मोद्रि] १ अर्थाय देश विशेष।
२ एक अर्थाय मनुष्य-जाति (पय १, १—
पय १४)। ३ मुद्रो से लडनेवाला मल्ल
(पय २, ५—पय १४६)। ४ वि, मुद्रि-
सम्बन्धी (कय)।

मुद्रि अ पु [मुद्रि] १ मल्ल-विशेष, जिसकी
सतदेव ने मारा था (पय १, ४—पय
७२, पिग)। २ अर्थाय देश विशेष। ३ एक
अर्थाय मनुष्य जाति (हिका)।

मुद्रिका औ [दि] हिका, हिचकी (हे ६,
१३४)।

मुद्र देखो मुद्र (कुमा)।

मुद्र वि [मुद्र, मुद्र] मुद्र, वेवकूक
(हम्मीर ५१)।

मुण सक [ज्ञा, मुण] जलना। मुण्ड,
मुण्डि, मुण्डो (हे ४, ७, कुमा)। नर्व,
मुण्डजइ (हे ४, २५२), मुण्डजानि
(हास १३८)। वहु. मुण्ड, मुण्डन (महा,
पय ४८, ९)। वहु. मुण्डिजमाण (से
२, ३६)। संह. मुणिय, मुण्डि, मुण्डि-
ऊण, मुण्डऊण (भीर, महा)। कु.
मुण्डिजव्य, मुण्डिजव्य (कुमा से ४, २४,
नव ४२, कय, उव, जो ३२)।

मुणन न [ज्ञान मुणन] ज्ञान, जानकारो
(कुप १८४; संवोय २५, यमवि १२५,
सण)।

मुणमुण सक [मुणमुणाय] कयल शब्द
बलना, यवबलना। वहु. मुणमुणन,
मुणमुणित (महा)।

मुणाल पुं० [मुणाल] १ पचकन्द के ऊपर
की बेल—लता (भावा २, १, ८, ११)।

२ बिच, पचनाल। ३ पच आदि के नाल
का उल्लु—मुण (पाय, छाया १, १३,
भीर)। ४ बीरण का मुल। ५ पच, कमल,
'मुणालो', 'मुणाल' (आय हे १, १३१)।

मुणालि पुं० [मुणालिन्] १ पच-समुद्र। २
पच-मुद्र प्रदेश, कमलवाला स्थान, 'मुणाली
काणाली' (सुपा ४१३)।

मुणालिआ औ [मुणालिका, 'ली] १
मुणाली बिच-उल्लु, कमल-नाल का मूला
(नाट—रमा २६)। २ बिच का अलुर
(गवड)। ३ कमलिनी (राज)। देखो
मणालिया।

मुणि पु [मुनि] १ राज-देव-रहित मनुष्य,
सत, साधु आदि, यति (भावा, पाय, कुमा,
गवड)। २ अणस्य आदि, 'बलहिजल व
मुणिणा' (सुपा ४८६)। ३ सात की
संख्या। ४ ध्वज विशेष (पिग)। 'चद पु
[चन्द्र] १ एक अखंड जैन आचार्य भीर
अकार, जो बादी देवसुर के पुत्र थे (सम्मी
२५)। २ एक राज-गुन (महा)। 'नाह पुं
[नाथ] साधुको का नायक (सुपा १६०,
२४०)। 'पुगन पुं [पुङ्गव] श्रेष्ठ मुनि
(सुपा ६७, यु. ४१)। 'राय पुं [राज]
मुनि-नायक (सुपा १६०)। 'वइ पु [पति]
वही पद (सुपा १८१, २०६)। 'वर पुं
[वर] श्रेष्ठ मुनि (सुर ४, ५६, सुपा
२४४)। 'वैजयत पु [वैजयन्त] मुनि-
प्रधान, श्रेष्ठ मुनि (सुपा १, ६, २०)। 'सीह
पु [सिंह] श्रेष्ठ मुनि (पि ४३६)।
'सुव्यय पु [सुव्रत] १ वर्तमान बाल में
उल्लु आलतर्पण के बीसवें तीर्थंकर (सम
४३)। २ आलतर्पण के एक भावी तीर्थंकर
(सम १५३)।

मुणि पु [दि, मुनि] वृष विशेष, अणसि-
कप (दे ६, १३३, कुमा)।

मुणिअ वि [ज्ञान, मुणिअ] जाना हुया
(हे २, १६६, पाय, कुमा भवि १६, पय १,
२, उव १४३ टी)।

मुणिअ वि [दि मुणिअ] बह-गरीह, भुजा-
विट, आपस (भा १५—पय ६६५)।

मुणिद पुं० [मुनीन्द्र] श्रेष्ठ मुनि (हे १, ८४,
भग)।

मुणिर वि [ज्ञाट, मुणिट] जाननेवाला
(सण)।

मुणीरा पु [मुनीश] मुनि-नायक (उप १४१
टी, भवि)।

मुणीसर पुं० [मुनीश्वर] ऊपर देखो (सुपा
३६६)।

मुणीसिम (भग) पुं० [मनुष्यत्व] १
मनुष्यन। २ पुण्यार्थ (हे ४, ३३०)।

मुत्त सक [मुत्रय] मृतना, पेशाव करना।
मुत्तति (कुप ६२)।

मुत्त न [मूत्र] प्रसवण, पेशाव (सुपा ६१६)।

मुत्त देखो मुक्त=मुक्त (सम १, से २, ३०,
जो २)। 'लिय प्रुषी [लिय] मुत्त जोको
का स्थान, ईशधामाया नामक दुधिवी (हका)
की. 'या (ठा ८, —पय ४४०, सम २२)।

मुत्त वि [मूर्त] १ स्मृतिवाला, स्मृतिवाला,
आकाशवाला (वैय ६१)। २ कठिन। ३
मूढ। ४ मूर्ख-मुत्त (हे २, ३०)। ५ पुं,
उपवास, एक दिन का उपवास (संवोय
५८)। ६ एक प्राण का नाम (कय)।

मुत्त देखो मुत्ता (भीय, पि ६७, वैय १४)।

मुत्तव्य देखो मुत्त'च।

मुत्ता औ [मुत्ता] मोती, मोक्षिक (कुमा)।

'जाल न [जाल] मुत्ता-मूद्र, मोतियों
की माला (भीय, पि ६७)। 'दाम न
[दामन्] मोतियों की माला (ठा ४,
२)। 'बलि, 'बली औ [बलि, 'ली] १

मोती की माला, मोती का हार (सम ४४,
पाय)। २ तप-विशेष (प्रल ३१)। ३ द्वीप-
विशेष। ४ समुद्र विशेष (राज)। 'मुत्ति औ
[शुक्ति] १ मोती की शोष। २ मुद्रा-विशेष
(वैय २४०, पचा ३, २१)। 'हल न [फल]
मोती (हे १, २३६, कुमा, प्राप् २)।
'हल्लि वि [फलनन्] मोतीवाला
(कय)।

मुत्ति औ [मूर्ति] १ रूप, आराध, 'मुत्ति-
विपुलेप' (पिंड ५६; विवे ३१८२)। २
प्रतिबिम्ब, प्रतिमूर्ति, प्रतिमा, 'चउमुद्रमुत्ति-

चऊँ (संबोध २) । ३ शरीर, देह (सुर १, ३; पात्र) । ४ काठिय, कठिनत्व (हे २, ३०; प्राप्ति) । 'मंत वि ['मंत' मृतिवाला, मूर्त, स्त्री (परमवि ६, सुपा ३८६, खु ६७) ।

मुक्ति छी [मुक्ति] १ मोक्ष, निर्वाण (आचा; पात्र; प्राप्ति १५५) । २ निर्वाणता, संतोष (पा ३१) । ३ मुक्त जीवो का स्थान, क्षीतप्राप्तारा प्रविष्टी (ठा ८—पत्र ४५०) । ४ निस्तंगता (आचा) ।

मुक्ति वि [मुक्ति] बहु-मून रोगवाला, 'उयारि वा पास मुक्ति व सुणियं व मिलासियं' (आचा) ।

मुक्ति वि [मौक्तिक, मौक्तिक] मोती पिरोने या हूँने वाला (उप ४ २१०) ।

मुक्तिअ न [मौक्तिक] मुक्ता, मोती (सि ३, ४६; कुप्र ३, कुमा, सुपा २४, २४६; प्राप्ति १६१ १७१) । देखो मौक्तिक ।

मुक्तोली छी [दे] १ मृताशय (तंडु ४१) । २ वह छोटा कोठा जो ऊपर नीचे सबीछीं श्रीर मध्य मे विशाल हो (राज) ।

मुक्त्य वि [मुक्त] मोक्षा, नागरमोक्षा (गजड) । छी, 'य्या (संबोध ४४, कुमा) ।

मुद्रग देखो मुअग (ठा ७—पत्र ३८२) ।

मुद्रा छी [मुद्र] हर्ष, क्षुशी । 'गर वि ['कर' हर्षजनक (सुप्र १, ६, ६) ।

मुद्रग पु [दे] ग्राह-विशेष, जल-जम्बु की एक जाति (जीय १ टी—पत्र ३६) ।

मुद्र सक [मुद्रय] १ मोहर लगाना । २ बन्ध करना । ३ मंत्रन करना । मुद्रह (धम्म ११ टी) ।

मुद्रग पु [दे] १ उत्सव । २ सम्मान (?) (स ४६३, ४६४) ।

मुद्रग पु [मुद्रिवा] मृगशी (ज्या), 'सदो मुद्रय' भद्र । तुने कि भद्र भद्रतिमुद्रयो एसो' (पत्रम ४३, २४) ।

मुद्रा छी [मुद्रा] १ मोहर, छाप (सुपा ३२१, वजा १५६) । १ मृगशी (ज्या) । ३ धर्म-विन्यास-विशेष (सिय १४) ।

मुद्रिअ वि [मुद्रित] १ जिस पर मोहर लगाई गई हो वह । २ बंध किया हुआ (शाया १, २—पत्र ८६, ठा ३, १—पत्र १२३, मन्पा मुपा १५४, कुप्र ३१) ।

मुद्रिअ } छी [मुद्रिका] मृगशी (पराह १, मुद्रिआ } ४, कम्प, शीप, तंडु २६) । 'बंध पुं ['बन्ध'] ग्रन्थि कन्ध, कन्ध विशेष (मोप ४०२; ४०५) ।

मुद्रिआ छी [मुद्रिका] १ द्रव्या की सत्ता (पराह १—पत्र ३३) । २ द्रव्या-दाह (ठा ४, ३—पत्र २३६; उत्त ३४, १५; पत्र १५५) ।

मुद्री छी [दे] मुम्बन (दे ६, १३३) । मुद्रुदुय देखो मुद्रुदा (पराह १—पत्र ४८) । मुद्र देखो मुंड (श्रीप, कम्प, शीपना १६, कुमा) । 'ज वि ['ज'] मस्तक मे उत्पन्न । २ मस्तक स्व, अनेपर । ३ मूर्धन्यानीय रत्नार भावि वणं (कुमा) । 'य पुं ['ज'] केश, दात (पराह १, ३—पत्र ५४) । 'सुल न ['शूल'] मस्तक-पीडा, रोग विशेष (शाया १, १३) ।

मुद्र वि [मुग्ध] १ मूढ़, मोह-मुक्त । २ मुन्द, मनोहर, मोह-जनक (हे २, ७७ प्राप्ति, कुमा, विपा १, ७—पत्र ७७) ।

मुद्रा छी [मुग्धा] मुग्धा छी, नायिका का एव भेद, वाम-वेष्टा-रहित अक्रुरित यौवना (कुमा) ।

मुद्रा (धम्म) देखो मुद्रा (कुमा) । मुद्राण देखो मुद्र (उवा, कम्प, पि ४०२) । मुम्बन पु [दे] घर के ऊपर वा तिर्यक् काष्ठ, गुजराती में 'मोम' (दे ६, १३३) । देखो मोदभ ।

मुम्बलु वि [मुम्बल] मुक्त होने की बाह-वाला (सम्मत १४) ।

मुम्बुदु } वि [मूकमूक] १ श्रव्यत्व मूक । मुम्बुदु } २ श्रव्यकामपी (सुप्र १, १२, ५, राज) ।

मुम्बुर सक ['पूर्ण'] पूरना, पूर्ण बनना । मुम्बुद (प्राक् ७५) ।

मुम्बुर पुं [दे] कपोल मोरना (दे ६, १४७) ।

मुम्बुर पुं [दे] मुम्बुर १ कपोलानि, मोरना की भाषा (दे ६, १४७, जी ६) । २ मुपाणि (पुर ३, १८७) । ३ मल-व्यस्र म्रनि, अन्ध-गन्धित धनिन-वण (उप ६४८ टी, जी ६, जीव १) ।

मुम्बुदी छी [मुम्बुदी] मनुष्य की दस व्याप्तो में नववीं दशा—८० से ९० वर्ष

तक की अवस्था (ठा १०—पत्र ५१६; तंडु १६) ।

मुर धक [लड्] १ शिलास करना । २ सक, उत्पीड़न करना । ३ जीम बताना । ४ उपलेप करना । ५ व्याप्त करना । ६ वीलना । ७ फेंकना । मुरद (प्राक् ७३) ।

मुर धक [स्फुट्] खोलना । मुरद (हे ४, ११४; मद्र) ।

मुर पुं [मुर] दैत्य-विशेष । 'रिउ पुं ['रिपु'] श्रीकृष्ण (ती ३) । 'वेरिय पु ['वैरि'] बही धर्म (कुमा) । 'रि पु ['रि'] बही धर्म (वजा १५४) ।

मुरई छी [दे] प्रसती, कुलठा (दे ६, १३५) ।

मुरज पुं [मुरज] मुद्रग, वाग-विशेष (कम्प, मुरय १ पात्र; ना २५३, सुपा १६१; संत; धर्मवि ११२, कुप्र २८८, श्रीप, उप पु २३६) । देखो मुरज ।

मुरल पुं.व. [मुरल] एक भारतीय दक्षिण देश, केरल देश, 'विमर ए विद्रा नुप मुरल' (गा ८७६) ।

मुरन देखो मुरय (श्रीप, उप पु २३६) । २ अग विशेष, गल-वणिका (श्रीप) ।

मुरवि छी [दे, मुरजिय] मामरग-विशेष (श्रीप) ।

मुरिअ वि [स्फुटित] खोला हुआ (कुमा) ।

मुरिय वि [दे] १ मुद्रित, हटा हुआ (दे ६, १३५) । २ मुद्रा हुआ, बन्ध बना हुआ (सुपा ५४७) ।

मुरिअ पुं [मीर्ष] १ प्रसिद्ध लाभिम-वर्षा (उप २११ टी) । २ मीर्ष वर्ग में उत्पन्न; 'रायगिहे मू(१)मुरियवमर्दे' (जिते २३५७) ।

मुरद पुं [मुरुड] १ अनाथ देश-विशेष (दफ, पत्र २७४) । २ पालितसूत्रि के समथ वा एक राजा (पिड ४६४, ४६८) । ३ पुष्पी, मुलद देश वा निवासी मनुष्य (पराह १, १—पत्र १४) । छी, 'डी (द्व) ।

मुरकि छी [दे] पत्रास विशेष (सुप) ।

मुरम्प देखो मुक्कन = मूर्ख (हे २, ११२; कुमा, सुपा ६११; प्राक् ६७) ।

मुरमुंड पुं [दे] पूटा, बेथी की लट (दे ६, ११७) ।

सुस्मुरिज न [दे] शरणलुक्, उल्लुङ्गना (दे ६, १३६, पाप्म) ।

सुद्ध देवो सुस्मन् (पद्) ।

मुलासिज पुं [दे] स्फुल्लिग, अग्नि-वण (दे ६, १३५) ।

मुल (अप) देवो मुच् । मुल्ल (प्राङ् ११६) ।

मुल्ल पुं न [मूल्य] कीमत, 'को मुल्लो' मुल्लिअ (वजा १५२; औप, पाप्म, कुमा, प्रयो ७७) ।

मुव (अप) देवो मुअ = मुव् । मुवह (अवि) ।

मुवह देवो उव्वह = उव् + वह् । मुव्वह (हे २, १४०) ।

मुस सक् [मुप] चोरी करना । मुसह (हे ४, २३६; साथ ६२) । भवि, मुसिस्सह (धर्मि ४) । धर्म, मुसिज्जामो (वि ४५५) । बह् मुसत (महा) । बक्क मुसिज्जत, मुसिज्जमाण (मुपा ४५०, पुत्र २४७) । बह्, मुसिऊण (स ६६३) ।

मुसुदि देवो मुसुदि (सम १३७, पणह १, १—पत्र ८, उत ३६, १००, पणह १—पत्र ३५) ।

मुसण न [मोपण] चोरी (साथ ६०, धर्मि ५६) ।

मुसल पुं न [मुसल] १ वृक्ष या वृक्षर, एक प्रकार की मोटी लकड़ी जिससे चावल आदि भान्न कूटे जाते हैं (औप, उवा, पद्, हे १, ११३) । २ मान विशेष (मम ६८) । धर पुं [धर] बलदेव (कुमा) । उह पुं [मुच] बलदेव (पाप्म) ।

मुसल वि [दे] मावल, वृष्ट (पद्) ।

मुसलि पुं [मुसलिन्] बलदेव (दे १, ११८, सण) ।

मुसलो देवो सोमश्री (औपमा १६१) ।

मुसह न [दे] मन की भाउसता (दे ६, १३४) ।

मुसा ध. ओ [मुपा] निम्बा, धनु, कूट, भण्य भाण (उवा, पद्, हे १, १३६; बस) । 'भण्यलंवा मुसं वर' (पुष १, १, ३, ८-उर) । 'वाद् देवो वाय (पुष १, ३, ४, ८) । 'वादि नि [वादिन्] कूट चोलेनाला (पणह १, २; भावा २, ४, १,

८) । 'वाय पुं [वाद्] कूट चोलेना, असय भाण (सम १०, भग, कस) ।

मुसाविज वि [मोपित] उरवाया हुमा, चोरी करमा हुमा (औप २६० टी) ।

मुसिय वि [मुपित] उरवाया हुमा (मुपा २२०) ।

मुसुंदि पुं [दे] १ प्रहरण-विशेष, रात्र-विशेष (औप) । २ वनस्पति-विशेष (उत ३६, १००, मुख ३६, १००) ।

मुसुमूर सक् [अञ्] नागना, तोडना । मुसुमूरह (हे ४, १०६) । हह्, तेसि व केसवि मुसुमूरि [सुमूरि] रिडममलो (समस्त १२३) ।

मुसुमूरण न [मञ्ज] तोडना, खण्डन (समस्त १८७) ।

मुसुमूरानिज वि [अञ्जित] भैयाया हुमा (समस्त ३०) ।

मुसुमूरिज वि [भग्न] भैया हुमा (पाप्म, कुमा, सण) ।

मुद् देवो मुम्क, 'ह्य मा मुहु मुणेण' (औवा १०) । सक्, मुद्दिअ (पिप) । बवह् मुद्दिज्ज (हे ११, १००) ।

मुद् न [मुत्] १ मुह, वदन (पाप्म, हे ३, १३४; कुमा, प्राप् १६) । २ अन्न भाग (मुख ४) । ३ उपाय (उत २५, १६, मुख २५, १६) । ४ द्वार, दरवाजा । ५ धारण । ६ नाटक आदि का सवि विशेष । ७ ना व भाषा का शब्द विशेष । ८ धान्न, प्रथम । ९ प्रयात, मुख्य । १० शब्द, भाषाव । ११ नाटक । १२ वेद-शास्त्र (प्राङ्, हे १, १८७) । १३ प्रवेश (निबु ११) । १४ पुं, बुद्ध-विशेष, बहल का गाय (मुख १०, ८) । 'णतम, 'णतय न [नन्तक] मुख-यज्ञिना (औपमा १५८, पत्र २) । 'तूरय न [तूर्य] मुह से बचाया जाता वाय (अप) । 'धोराणिया ओ [धारानिका] मुह धाने को समझो, दवरन भादि, 'मुहोरोणियं धियं उरुपेहि' (उप ६४८ टी) । 'पत्ती ओ [पत्ती] मुख-यज्ञिना (उवा औप ६६६, द्र ३८) । 'पुत्तिया, 'पोत्तिया, 'पोत्ती ओ [पोत्तिका] मुख-यज्ञिना, योगी सम्य मुह के धाने रखने का बल-सह (संबोध ५, पिपा १, १, पत्र

१२७) । 'कुल्ल न [कुल्ल] १ बहल वा फूट । २ विद्या-नक्षत्र का संस्थान (मुख १०, ८) । 'भंडग न [भाण्डक] बुद्धाभरण (औप) । 'मगलिय, 'मंगलोअ वि [माङ्ग-लिङ्] मुह से पर प्रशंसा करनेवाला, सुरा-मदी (कप, औप, पुष १, ७, २५) । 'मक्कडा, 'मक्कडिया ओ [मक्कटा, 'डिरा] गला पकट कर मुह को मोडना, मुख-बन्धनकरण (पुर १२, ६७, उपा १, ८—पत्र १४४) । 'वंत वि [वन्] मुहवाला (अवि) । 'वड पुं [पड] मुह के धाने रखने का बल (से २, २२; १३, ५६) । 'वडण न [पतन] मुह से गिरना (दे ६, १३६) । 'वणण पुं [वणण] प्रयास, छुरामन (निबु ११) । 'वाम पुं [वास] भोजन के अन्नरस खाया जाता पान, पूर्ण आदि मुह को सुगन्धी बनानेवाला पदार्थ (उवा ४२, उर ८, ५) । 'वीणिया ओ [वीणिना] मुह से विकृत शब्द करना, मुह से वाय का शब्द करना (निबु ५) । मुद्द देवो मुद्दल । 'सय न [राय] एक नगर (टी १५) ।

मुद्दथदी ओ [दे] मुह से गिरना (दे ६, १३६) ।

मुद्द देवो मुद्दल = मुद्दर (मुपा २२८) ।

मुद्दिय वि [मुत्तित] बाघाल बना हुमा, भावात करना (पुर ३, ५४) ।

मुद्दोमपाइ ओ [दे] भू, मी (दे ६, १३६; पद्, १७३) ।

मुद्दल न [दे] मुख, मुह (दे ६, १३४, पद्) ।

मुद्दल वि [मुत्तर] १ बाघाट, बरबादी (पा ५७८, पुर ३, १८, मुपा ४) । २ पुं, बाघ, बीघा । ३ शब्द (हे १, २५५, प्राप्) । 'ख पुं [र] तुपुन, भोगहल (पाप्म) ।

मुद्दा ध. ओ [मुपा] व्यर्थ, निरर्थक (पाप्म, पुर ३, १, धर्म ११३२, या २८, प्राप् ६) । 'पुराद् हाविण भाणल' (संबोध ४६) । 'जीवि वि [जीविन्] भिता पर निराह करनेवाला (उत २५, २८) ।

मुद्दिअ न [दे] धुरत, विना मूल्य, धुरत में करना (दे ६, १३४) ।

मुद्दिआ ओ [दे-मुपाम] ऊपर देना (दे ६, १३४, कुमा, पाप्म) ; ठि सम्भवि ह् कुमरस्त

तस मुहिमाद सेवगा जाया' (सिदि ४५७);
'जिणसासणं प कहमवि सद्ध' हारिणि मुहियाए'
(मुपा १२४); 'मुह (?) हि) याद मिहह लक्ख'
(कुप २३७)।

मुहु } म [मुहुस्] बार बार (प्रासू २६;
मुहु } हे ४, ४४४ वि १८१)।

मुहुत्त } पुन [मुहुत्त] दो घड़ी का काल,
मुहुत्ताग } मर्यादीत मिनिट का समय (ठा
२, ४, हे २, २०; मीप, भग, कण, प्रासू
१०५; इक, स्वण ६५, भाषा; धोप ५२१)।

मुहुमुह देखो मुहुमुह (पाम)।

मुहुल देखो मुहुल = मुलर (पाम)।

मुहुल देखो मुह = मुल (हे २, १६४, पद;
मवि)।

मूअ देखो मुक्क = मूक (हे २, १६६; भाषा,
गठड; विपा १, १)।

मूअ देखो मुअ = मुत, 'लजाइ कह थ मूओ
सेवतो गामवाहलिय' (वजा ५४)।

मअल } वि [दे. मूक] मूक, वाक्-शक्ति
मूअल } से हीन (दे ६, १३७; सुर ११,
१५४)।

मूअलअ } वि [दे. मूकयित] मूक बना
मूअलअ } हुमा (से ५, ४१; गठड,
वि ५६५)।

मईगालिया } देखो मुईगालिया (उप १३४
मईगा } टी, धोप ५५८)।

मूअलअ } वि [वृत्त] मरा हुमा।

मूयलअ } वि [वृत्त] मरा हुमा।

'परिह नारेह बणो तदसा
प्रलसप्रो, कहि व गो।

जाहे विस व जार्न
सर्वगमहोतिरि वेम'

(गा ६६६ म)।

मूड } पुं [दे] मूअ का एक क्षेत्र परिमाण,
मूड } 'द्वामूहलससमहियमवि घनं मवि
वापमिह' (मुपा ४२७), 'तो वेहि ताथिओ
सो गाई मणमुडउव सववेहि' (घमवि
४०)।

मूड वि [मूड] मूअ, मुअ (प्राप, कस, पउम
१, २८; महा; प्रासू २६)। 'नइय न

[नयिक] अत-विशेष, शाख-विशेष
(भावम)। 'विमुइया ओ [विमुइयिका]
रोप-विशेष (मुपा ११)।

मूण न [मीन] मुणी (स ४७७, परह २,
४—पत्र १३१)।

मूया पुं [दे. मूयक] मेवाड़ देश में प्रसिद्ध
एक प्रकार का लुण (परह २, ३—पत्र
१२३)।

मूर सक [अज] भांभा, तोडना। मूरड
(हे ४, १०६)। भूवा. मूरीध (कुमा)।

मूरा वि [भञ्जक] भांगनेवाला, चूनेवाला
(परह १, ४—पत्र ७२)।

मूल न [मूल] १ पद (ठा ६; गठड; कुमा,
गा २३२)। २ निबन्धन, कारण (परह १,
३—पत्र ४२)। ३ छवि, छारम्प (परह
२, ४)। ४ भाव कारण (भाषावि १, २,
१—भाषा १७३, १७४)। ५ समीप, पास,
निकट (धोप ३८४, सुर १०, ६)। ६ नख-
विशेष (पुर १०, २२३)। ७ ब्रतो का पुनः
स्थापन (धोप; पंचा १६, २१)। ८ पिप्पली-
मूल (भाषावि १, २, ११)। ९ बशीकरण
भादि के लिए किया जाता शोषित-प्रयोग,
'अमृतमूल बशीकरण' (प्रासू १४)। १०
प्राय, प्रथम, पहला। ११ मुख्य (संबोध ३;
भावम, मुपा ३६४)। १२ मूलबन, पुंजी
(उत्त ७, १४; १५)। १३ चरण, पैर। १४
सुरण, वन्द विशेष, धोल। १५ टीका भादि
से व्याख्येय शब्द (संति २१)। १६ प्रायश्चित्त-
विशेष (विसे १२४६)। १७ पुंन. कन्ध-
विशेष, गूली (धनु ६; था २०)। 'छेज
वि [छेज] मूल नामक प्रायश्चित्त से नाश-
योग्य (विसे १२४६)। 'दत्ता ओ [दत्ता]
कृण पुत्र शम्भ की एक पत्नी (अत १५)।
'देव पु [देव] व्यक्ति वाष्पक नाम; (महा-
मुपा ५२६)। 'देवी ओ [देवी] विष-
विशेष (विगे ४६४ टी)। 'नायग पुं
[नायक] मन्दिर की अनेक प्रतिमाओं में
मुख्य प्रतिमा (संबोध ३)। 'प्याठि वि
[उत्पाटित] मूल को उखाड़नेवाला (संति
२१)। 'विंवि न [विन्वि] मुख्य प्रतिमा
(संबोध ३)। 'राय पु [राय] उजरात
का नीलवर्ण-वैशेष (एक प्रसिद्ध राजा (कुप
४)। 'वंत वि [वंत] मूलवाला (धोप,
खामा १, १)। 'सिरि ओ [सी] शम्भ-
कुमार की एक पत्नी (अत १५)।

मूला } न [मूलक] १ बन्द-विशेष, मूली,
मूलय } मूई (परह १; जी १३)। २
शाम-विशेष (पव १५४; कुमा)।

मूलात्तिआ ओ [मूलात्तिआ] मूले—मूली
की पत्ती फांक (दस ५, २, २३)।

मूलवेलि ओ [दे. मूलवेलि] घर के छपर
का आधार-मूल-स्तम्भ-विशेष (भावा २, २,
३, १ टी. पव १३३)।

मूटिया ओ [मूटिका] धोपवि विशेष (उप
१०३)।

मूटिय न [मूटिक] मूलबन, पुंजी (उत्त ७,
१६; २१)।

मूटिल वि [मूल, मौलिक] प्रधान, मुख्य;
'मूटिलवाहणे' (सिदि ४२३)।

मूटिल वि [मूलवत्] मूलबनवाला, पुंजी-
वाला, 'मलिय व सेवस्ताए गाढापुरतो
मूटिलो मित्तसेओ अणलनामा सधवावुत्तो'
(महा)।

मूली ओ [मूली] धोपवि-विशेष, बशीकरण
भादि के कार्य में लगती धोपवि (महा)।

मूस देखो मुस = मुप। मूसड (संति ३६)।

मूसग } पुं [मुपक, मुपिक] मूला, चूहा
मूसय } (उप, सुर १, १८; हे १, ८८;
पद; कुमा)।

मूसरि वि [दे] भग्न, भौगा हुमा (दे ६,
१३७)।

मूसल वि [दे] उचित (दे ६, १३७)।

मूसल देखो मुसल = मुसल (हे १, ११३;
कुमा)।

मूसा देखो मुसा (हे १, १३६)।

मूसा ओ [मूसा] मूअ, धातु मालने—मालने का
पाव (कय, मारा १००, सुर १३, १८०)।

मूसा जी [दे] लघु द्वार, छोटा दरवाजा (दे
६, १२७)।

मूसाअ न [दे] ऊपर देखो (दे ६, १२७)।

मूसिय देखो मूसय (भावा)। 'रि पु'
[रि] माजोर, जिला (भावा)।

मे अ [मे] १ धरा। २ मुकले (स्वण १५;
ठा १)।

मेअ पु [मेद] १ अनाय देश-विशेष (इक)।
२ एक अनाय मनुष्य-वाति (परह १, १—
पत्र १४)। ३ पुंजी. चाण्डाल (सम्मत्
१७२)। ४. मेई (सम्मत् १७२)।

मेल्या मय [मिल] एकमित होना, पडि-
निसमिता एगयो मेलायति (मग)। संड.
मेल्यायिता (मग)। इ. मेल्याइयन्त्र (घोषमा
२२ टी)।

मेलान देको मेलन। मेलान्द (गवि)।
मेलाय पुन [मेल] १ मिलाय, संगम, मिलन
(सुपा ४६६), 'निच्यं चिय मेलानं सुगम-
निरयाए मयडुलह' (सिद्धि १४३)।

मेलायग देको मेलय (मालमहि १६)।
मेलयाड (मग) देको मेलय, 'मयुल्लहमेना-
षड्ड पुंमहि लगमह एहुं' (सिरि ७३)।

मेलनय देको मेलायग (सुपा ३६१, भवि)।
मेलयिअ वि [मेलित] मिलाया हुमा, दबडा
चिया हुमा (सि १०, २८)।

मेलिअ वि [मिलित] मिला हुमा (अ ३,
१ टी—पत्र ११६, महा, उर)।

'एवं सुनीलवती मसीलवतीहि मेलिमा सती।
पावेइ एउपरिहाणी मेलयदोसापुखीए'
(प्रासु ३५)।

मेली छी [दे] संडवि, जन-समूह का एकजित
होना, मेला (दे ६, १३८)।

मेलीण देको मिलीण (पत्रम २, ६), 'अएणो-
'एणककलतरपेतिममेलीएविद्धिपसराह' (गा
६६६, ७०२ म)।

मेल देको मिल। मेल्ल (दे ४, ६१), मेल्लेनि
(हुप्र १६)। बह्म. मेह्लत (महा)। सह-
मेल्या, मेहेरिपणु (मग) (दे ४, ३५३,
पि ५८८)। छ. मेह्लियठन (उप ५५५)।

मेलण न [मोचन] छोडना, परित्याग (प्रासु
१०२)।

मोहायि वि [मोचित] छुडवाया छुमा (सुर
८, ६८, महा)।

मेय देको एय (पि ३३६)।

मेयाड } देको मेजयाडय (वी १५, मोह
मेयाड } ८८)।

मेस पु [मेय] १ मंडा, मेठ, गाहर (सुर ३,
५३)। २ राशि विशेष (विचार १०६, सुर
३, ५३)।

मेह पु [मेय] १ भद्र, जलपर (भीप)। २
कालागुह, मुगधी सुप-द्रव्य विशेष (सि ६,
४६)। ३ भगवान् मुमतिनाथ का पिता (सम
१५०)। ४ एक जैन महर्षि (अत १८)। ५

राजा थेरिणक वा एक पुत्र (आया १, १—
पत्र ३७)। ६ एव देव-विमान (देवज
१३२)। ७ छन्द विशेष (पिग)। ८ एव
वणिग्-पुत्र (सुपा ६१७)। ९ एक जैनपुत्रि
(बन्ध)। १० देव-विशेष (पत्र)। ११ मुलक,
मोषधि-विशेष, मोया। १२ एक रासस।
१३ रास-विशेष (प्राप्र, हे १, १८७)। १४
एक विद्याधर-नगर (ह्व)। 'हुमार पु'
[कुमार] राजा थेरिण वा एक पुत्र (आया
१, १; उव)। 'वमण पु' [ध्यान] रासत-
वंश का एक राजा, एव लबापति (पत्रम ५,
२६६)। 'गाअ पु' [नाद] रावण वा एक
पुत्र (सि १३, ६८)। 'पुर न [पुर]
वैताज्य पर्वत के दक्षिण थोली वा एक नगर
(पत्रम ६, २)। 'सुह पु' [सुर] १ देव-
विशेष (राज)। २ एक भक्तटीग। ३ भक्त-
टीग-विशेष का निवासी मनुष्य (अ ४, २—
पत्र २२६, ह्व)। 'रन न [रव] विन्ध्य-
स्थली वा एक जैन तीर्थ (पत्रम ७७, ६१)।

'वाहन पु [वाहन] १ रासत वंश का
भावि पुत्र्य, जो लंबा का राजा वा (पत्रम
५, २३१)। २ रावण का एक पुत्र
(पत्रम ८, ६४)। 'सीह पु' [सिंह]
विद्याधर-वंश का एक राजा (पत्रम ५, ४३)।
देको मेय।

मेह पु [मेह] १ खेचन (सुम १, ४, २,
१२)। २ रोग विशेष, प्रमेह (प्रा २०, सुल
१, १५)।

मेहंकरा देको मेयंकरा (ह्व)।

मेहच्छीर न [दे] जल, पानी (दे ६, १३६)।

मेहण न [मेहन] १ भजन, टपकना। २
प्रसवण, युव, 'भट्टमेहण' (भाचा १, ६,
१, २)। ३ गुल्फ-लिंग (राज)।

मेहणि वि [मेहनिम्] करनेवाला (भाचा)।

मेहर पु [दे] ग्राम-प्रवर, गाँव का मुखिया
(दे ६, १२१; सुर १५, १६८)।

मेहरि शुधी [दे] काष्ठ-कीट, पुन (वी १५)।

मेहरिया } छी [दे] गानेवाली छी (सुपा
मेहरी } ३६४)।

मेहल्य पु ब. [मेसलक] देश-विशेष (पत्रम
६८, ६६)।

मेहला छी [मेसला] काठवी, वरपयो
(पाम, एह १, ४; भी, मा ४६३)।

मेहलिखिया छी [मेसलिया] एक जैन
मुनि-शाखा (बन्ध)।

मेहा छी [मेघा] एव ईराणी, चमरेर की
एक भद्र-महिनी (अ ५, १—पत्र ३०२,
ह्व)।

मेहा छी [मेघा] बुद्धि, मनीषा, प्रज्ञा (सम
१२५, से १, १६, हात्य १२५)। 'अर वि
[कर] १ बुद्धि-वर्षक। २ पुं. छन्द विशेष
(पिंग)।

मेहा छी [मेघा] मयग्रह-ज्ञान (एवि १७४)।

मेहानई देको मेघ वई (ह्व)।

मेहावण न [मेघानणे] एक विद्याधर-
नगर (ह्व)।

मेधावि वि [मेधाविन्] बुद्धिमान, प्राज्ञ
(अ ५, ३, आया १, १, भाचा, कप्प,
भी, उव १४२ टी, कुप्र १४०, धर्मवि
६८)। भी. 'जी (नाद—यन् ११६)।

मेहि देको मेडि (से ६, ४२)।

मेहि वि [मेहिव] प्रसवण करनेवाला,
'महमेहिण' (भाचा)।

मेहिय न [मेधिय] एक जैन मुनि-मुल
(बन्ध)।

मेहिल पु [मेधिल] भगवान् पारसनाथ के
वश का एक जैन मुनि (मग)।

मेहुण } न [मेधुन] रति-क्रिया, सनीग
मेहुणय } (सम १०; पएह १, ४, उवा,
भी, प्रासु १७६, महा)।

मेहुणय पु [दे] फूला का लडका (दे ६,
१४८)।

मेहुणिअ पु [दे] मामा का लडका (ह्व ४)।

मेहुणिआ छी [दे] १ साली, सार्या की
बहिन (दे ६, १४८)। २ मामा की लडकी
(दे ६, १४८, ह्व ४)।

मेहुन देको मेहुण, 'हिवालयिचोरिके मेहुन-
परिगहे य नितिसमते' (घोष ७८०)।

मेरेअ न [मेरेय] मय-विशेष (माल १७७)।

मो म. ह्व ग्रन्थों का सूचक शब्द—१
भवधारण, निरवय (सूत्रनि ८६, श्रावक
१२२)। २ पाद-वृत्ति (पत्रम १०२, ८६;
धर्मस ६४५, धावक ६०)।

मोअ सक [मुच.] छोड़ना, त्यागना ।
मोअ (प्राक ७०; ११६) । वरु. मोअंत
(ले ८, ६१) ।

मोअ सक [मोचय्] छुड़वाना, त्याग
कराना । मोअमदि (शी) (नाट—मातवि
५१) । बवह. मोइज्जत (गा ६७२) ।

मोअ पुं [मोद] हर्ष, सुखी (रयण १५,
महा. भवि) ।

मोअ वि [दि] १ धियगत । २ पुं. विमंत
धादि का मोअबोरा (दि ६, १४८) । ३ पून,
पेयाव (सुम १, ४, २, १२; पिउ ४६८;
कस, पमा १५) । 'पदिमा श्री [प्रतिमा]
प्रसवण-विषयव' नियम-विशेष (डा ४, २—
पत्र ६४, श्री, वष ६) ।

मोअइ पुं [मोचकि] मुअ-विशेष, 'सन्तइ-
मोअमाहुअवजलपलाय करजे य' (पण
१—पत्र ३१) ।

मोअग वि [मोचक] मुअ करनेवाला (सम
१; पकि, गुपा २१४) ।

मोअग पुं [मोदक] लड्डू, मिठाई-विशेष
(भव ६; गुपा ४०६) । देलो मोदअ ।

मोअन न [मोचन] नीचे देलो (स ४७५;
गठ) ।

मोअणा श्री [मोचना] १ परिव्राम (आवक
११५) । २ मुक्ति, मुक्ताकार (सम १, १४,
१८) । ३ छुड़वाना, मुक्त; बराना (उप
५१०) ।

मोअय देलो मोअन (मग; वज्ज ११५, ६;
गुपा ४०६; नाट—विह २१) ।

मोआ श्री [मोचा] बढनी कुआ, बेला का
गाछ (पत्र) ।

मोआय वर [मोचय्] छुड़वाना । मोआ-
वेमि, मोआमदि (नाट—शुनु २५, मुच ५
११६) । भवि. मोआवरमसि (वि ५२८) ।
बर्न, मोआगिन्द (हुन २११) । वरु.
मोआयंत (गुपा १८६) ।

मोआयन ॥ [मोचन] छुड़वाना बराना
(विह ११८; ॥ ४७) ।

मोआयिअ [वि [मोचन] छुड़वाना हुआ
मोइअ [वि ५५३; नाट—मुच ८६;
गुर १०, ६; गुपा ४७७; मरा; गुर २,
१६; १, ७८; गुपा २१३; भवि) ।

मोइल पुं [दि] मलय-विशेष (नाट) ।
मोइ देलो मुइ = मुइ (दि १, ११६;
२०२) ।

मोऊ पुं [मोऊ] सप-कंडुक, सप का कंडुक ।
मोऊल सक [दे] मेजना; गुजराती में
'मोचलनु', मराठी में 'मोचलणें' । मोऊलइ
(भवि) ।

मोऊ देलो मुऊ = मुऊ (प ५) ।

मोऊणिआ } श्री [दे] कण्ठ कणिका, कमल
मोऊणी } का काला मय्य भाग (दि ६,
१४०) ।

मोऊल देलो मोऊल, 'निपनिवर' भणु
मुन मोऊलइ जेण सिमधि' (मुपा ६१२) ।

मोऊल देलो मुऊल (मुपा ५८०; हे ४;
३६६) ।

मोऊलिय वि [दे] १ मेषित, मेवा हुआ
(मुपा ५११) । २ विहट (मुपा १४०) ।

मोऊर देलो मुऊर = मोर (श्री; कुमा;
हे २, १७६; उर २६४ टी; अग, वसु) ।

मोऊर देलो मुऊर = मूछ (उप ५५५) ।

मोऊर न [दे] बनस्पति-विशेष (सुम २,
२, ७) ।

मोऊरण न [मोऊण] मुक्ति, छुड़वाना
(प ५१८; गुर २, १७) ।

मोऊग पुं [दे] मयल-विशेष (मुपा ४०८) ।
देलो मुऊग ।

मोऊर पुं [दे] कुस, बनिफा, नीर (दि ६,
१३६) ।

मोऊर पुं [मुदगर] मुगय, मींगरी । २
बमरप ॥ वेद (हे १, ११६; २, ७७) ।

३ पुणकुन-विशेष, मींगरा का गाछ (पण
१—पत्र ३२) । ४ देलो मुऊर । 'पाणि
पुं [पाणि] एन देन महवि (भव १८)

मोऊरिअ वि [दे] संतुषित, मुतुषित (दि
६, १११ टी) ।

मोऊलयण } न [मोइगलयण, 'क्या']
मोऊलायण } मोन-विशेष (दक; डा ७,
गुर १०, १६) । २ मुंझी, उब मोन में

उपम (डा ७—पत्र ३६०) ।

मोऊग देलो मुऊग । मोऊगइ (१)
(पाया १४६) ।

मोच देलो मोह = मोय; 'मोपमणोहा'
(पण १, ३—पत्र ५५) ।

मोच देलो मोअ = मोचम् । संक. मोचिअ
(भवि ४७) ।

मोच न [दे] धर्मनंभी, एक प्रकार का जूता
(दि ६, १३६) ।

मोच देलो मोअ = (दे) (सुम १, ४, २,
१२) ।

मोचग देलो मोअग = मोचक (वसु) ।

मोहाय सक [रम्.] क्रीड़ा बरत । मोहायइ
(हे ४, १६८) ।

मोहाइअ न [रत] रति-क्रीड़ा, रत, मैथुन
(कुमा) ।

मोहाइअ न [मोहायित] केटान-विशेष, प्रिय-
बला धादि में भावना से उत्पन्न केट (कुमा) ।

मोह्मि न [दे] बलात्कार (पि २३७) ।
देलो मुह्मि ।

मोह सक [मोहय्] १ मोचना, देहा
बरत । २ भांगना । मोहति (गुर ७, ६) ।

वह. मोहंत, मोहिव, मोहयंत (भवि;
महा य २५७) । बवह. मोहजिमाग
(उप ५ १४) । संक. मोहें (मुपा १३८) ।

मोह पुं [दे] जूट, लट (दि ६, ११७) ।

मोहग वि [मोहक] मोहनेवाला (पण १,
४—पत्र ७२) ।

मोहन न [मोहन] मोहन, मोहना (पत्रज
१८) ।

मोहवा श्री [मोहना] ऊपर देना (पण १,
३—पत्र ५३) ।

मोहिय वि [मोहित] १ भजन, भांगा हुआ
(गा ५४६, गुपा १, ६—पत्र १५७;
पण १, ३—पत्र ५३) । २ धारोहित,
मोहा हुआ (पिपा १, ६—पत्र ६८; स
३३१) ।

मोह पुं [मोह] पर कपिर-दुप (हुन २०) ।

मोहिय न [मोहिय] नगर-विशेष (दि ६,
१०२; सी ७) ।

मोण न [मोन] मुनिन, बाणो का संन,
कुनो (मीन, गुपा २१७; मरा) । 'वर वि

['वर] मीन वज्जगना, बाणो का संन-
बाना, बाणंदन (दा १, १—पत्र २६६)

पहल २०१—पत्र १००)। 'पय न' [पद]
संयम, चरित (मुख १, १९ ६)।

मोगावणा की [दे] प्रथम प्रसूति के समय
पिता की ओर से किया जाता उत्सव-पूर्वक
निमन्त्रण (उप ७६८ टी)।

मोगि वि [मोनिन्] मोनवाला (उव, सुपा
१४, सवोध २१)।

मोच देखो मुच = मुच (धर्मस ७५)।

मोचअ देखो मु'च।

मोचा देखो मुत्ता (सि ७, २५, सति ४,
प्राह ६, पद ८०)।

मोत्ति देखो मुत्ति = मुक्ति (पहल १, ५—
पत्र ६५)।

मोत्तिअ देखो मुत्तिअ (गा ११०, स्वन् ६१,
भीप, सुपा २३१, महा, गडह)। 'दाम न
[दाम] छन्द विशेष (पिंग)।

मोत्तुआण }
मोत्तु } देखो मु'च = मु'च।
मोत्तूण }

मोत्तय देखो मु'य (जी १, सति ४, पि १२५,
प्राभा)।

मोदअ देखो मोअग = मोदक (स्वन् ६०)।
२ न, छन्द विशेष (पिंग)।

मोदम [दे] देखो मुदम (दे ८, ४)।

मोर पु [दे] श्वष, बाएडाल (दे ६, १४०)।

मोर पु [मोर] १ पति विशेष, मयूर (हे १,
७७, कुमा)। २ छन्द विशेष (पिंग)।
'यव ॥ [यव] एक प्रकार का गन्धन
(सुपा ३४४)। 'सिहा की [शिहा] एक
महीपथि (सी ५)।

मोरडहा } घ. मुण ध्यार् (हे २, २१४,
मोरडुहा } कुमा, चउपम ० पत्र—७७,
सुमतिजिन चरित्र)।

मोरड पु [दे] शिल भादि वा मोदन, भाय-
विशेष (राज)।

मोरग वि [मायूरक] मयूर के पिच्छों से
निष्पन्न (भाषा २, २, १, १८)।

मोरस्तय पु [दे] श्वष, बाएडाल (दे ६,
१४०)।

मोरिय पुं [मोर्य] १ एक क्षत्रिय-वंश। २
मोर्य वंश में उत्पन्न (पि १३४)। 'मुत्त पुं
[मुत्त] मगवान् महावीर का एक गणपर—
प्रधान शिष्य (सम १६)।

मोरी की [मोरी] १ मयूर पक्षी की भादा,
मोरली (पि १६६, नाट—मुच्छ १८)। २
विद्या विशेष (सुपा ४०१)।

मोठम पुं [दे-मोलक] बांधने के लिए गाछ
कुमा बूँटा (उव)।

मोलि देखो मउलि (काल सम १६)।

मोह देखो मुह (हे १, १२४, उव, उप पु
१०४, रासा १, १—पत्र ६०, भव)।

मोस पुं [मोप] १ चोरी। २ चोरी का नाल,
'रामा जेपइ मोसं एंसि मयसु' (सुप २२१,
महा)।

मोस पुन [मूपा] झूठ, भ्रमस्थ भाषण,
'बजविहे मोसे पणएते', 'वसवि मोसे
पणएते' (ठा ४, १, १०, भीप, कण्य)।

मोसण वि [मोपण] चोरी करनेवाला (कुप्र
४७)।

मोसलि } की [दे-मुराली, मोराली]
मोसली } ब्रह्मवि निरोपण का एक दोष,
ब्रह्म भादि की प्रतिवेदना करते समय मुसल
की तरह ऊँचे या नीचे शीत भादि का स्पर्श
करना, प्रतिवेदना का एक दोष, 'बजवेदया
य मोसली तव्या' (उत्त २६, २६, २५, मोष
२६५, २६६)।

मोसा देखो मुसा (जवा, हे १, १३६)।

मोह सक [मोहय] १ भ्रम में डालना।
२ ग्रुथ करना। मोहइ (शवि)। बह.
मोहल, मोहल (पदम ४, ८९, ११, २६)।
कु देखो मोहणिज।

मोह देखो मऊह (हे १, १७१, कुमा, कुप्र
४३७)।

मोह वि [मोच] १ निष्पन्न, निरर्थक (सि १०,
७०, ना ४८२), 'मोहाड पणएण सो कुण
सोएइ मणएण' (धम्म १७५, धारप १)।
त्रिवि, 'मोह बभी पयातो' (विद्य ७५०)।
२ वसल, विषया, 'विषया मोह विहसं
पयिअं वसण पसमूय' (पाप)।

मोह पु [मोह] १ मूढता, झूठता, भ्रमन
(भाषा कुमा, पणए १, १)। २ विपरीत
ज्ञान (कुमा २, ५३)। ३ वित्त की व्याकुलता
(कुमा ५, ५)। ४ राग, प्रेम। ५ काम-
भीष, 'मोहाठरा मणुसा तह कामडुह दुहं
बिंति' (भासु २८, पहल १, ४)। ६ मूर्खता,
बेहोरी (स्वन् ११, स ६६६)। ७ कर्म-
विशेष, मोहनीय कर्म (कम्म ४, ६०, ६६)।
८ छन्द-विशेष (पिंग)।

मोहण न [मोहन] १ ग्रुथ करना। २ मन्त्र
भादि से बरा करना (सुपा ५६६)। ३ मूर्खता,
बेहोरी (निसा ६)। ४ वशीकरण, ग्रुथ
करनेवाला मन्त्रादि-कर्म (सुपा ५६६)। ५
काम का एक बाण। ६ प्रेम, मन्त्राण (कण्य)।
७ मैथुन, रति क्रिया (स ७६०, रासा १, ८,
जीव ३)। ८ वि. व्याकुल बनानेवाला
(स ५५७, ७४४)। ९ मोहक, ग्रुथ करने-
वाला 'मोहलं पणएण' (धर्मवि ६५, सुर
३, २६, कपूर् २५)।

मोहणिज वि [मोहनीय] १ मोह-जनक।
२ न कर्म-विशेष, मोह का कारण-भूत कर्म
(सम ६६, भग धत, भीप)।

मोहणी की [मोहनी] एक महीपथि (सी ५)।
मोहर न [मोखर्य] वाचाट्या, बकवाद (पहल
२, ५—पत्र १४८, पुष्क १८०)।

मोहर वि [मोहर] वाचाट, बकवादी (ठा
१०—पत्र ५१६)।

मोहरिअ वि [मोहरिक] ऊपर देखो (ठा
६—पत्र ३७१, भीप, सुपा ५२०)।

मोहरिअ न [मोहरय] वाचालता, बकवाद
(जवा, सुपा ५१४)।

मोहि वि [मोहिय] ग्रुथ करनेवाला (शवि)।

मोहिणी की [मोहिनी] छन्द विशेष (पिंग)।

मोहिय वि [मोहित] १ ग्रुथ किया हुआ
(पहल १, ४, द १४)। २ न. निषुब्ध,
मेथुन, रति-भीष (रासा १, ६—पत्र
१६२)।

मोहसिय वि [मोहसिक] ज्योतिष शास्त्र वा
जानकार (कुमा ५)।

मोलिअ देखो मोरिय, 'एनैदेह दान एउदन्त-

खण्डुलिमस्त मीतिप्रकुत्तपट्टावकस्त भज-
चाणुकस्त' (मुद्रा ३०६)।

मिम् भ. पाद-वृत्ति में प्रयुक्त किया जाता
अव्यय (पिप)।

मिम्न देवो इन् (प्राह २६)।
महस देवो भस = भ'श'। श्दहस (प्राह ७६)।

॥ इय चिरिपाइअसहमहणवमि यमापइसदृसकल्लो
एणतोसदो तरंयो समतो ॥

य

य पुं [य] सामु-स्वामीय व्यपन वल्ल-विरोध,
अन्तस्थ यवार (प्राप्ति, प्रामा)।

य प्र [य] १ हेतु-सूचक अव्यय (घर्मसं
३८५)। २ देवो य = य (ठा ३, १०, ८,
पठम ६, ८५, १५, २, या १२; प्राचा,
रंभा, वम्म २, ३३, ४, ६; १०, हेवेन्द्र
११, प्राप्ति २७)।

*य देवो 'ज (प्राचा)।

*य नि [य] देवराजा (मौव, राय, जीव ३)।
यडणा देवो जैडणा (सति ७)।

*यंच सन [अस्स] १ गमन करना। २
पूजा करना। संज्ञ. 'यंचिय (ठा ५, १—
पठ ३००)।

*यंत वि [यत] प्रयागशील, उग्रोष्ण, 'य-यंत'
(गुप्त २, २, १३)।

*यंद देवो चंद (मुद्रा २२६)।

*यका देवो यका, 'दिता-यका' (पठम ६, ७१)।

*यह देवो तह = तड (गउड)।

*यण देवो जण = जन (गुर १, १२१)।

यणहण (भय) देवो जणहण, 'तो वि य
देव यणहण गोमरोहोह मणस्सु' (पि १४
टि)।

*यण देवो कण्ण = कण (पठम ६६, २८)।

*यत्तिअ वि [यत्तिअ] यात्रा करनेवाला,
भ्रमण करनेवाला, 'सगडसएहि विसायत्तिएहि'
(उवा ६६ १)।

यदायि य [यदायि] अम्युरम-सूचक अव्यय,
स्वीकार-दीतन निपात (यंवा १५, ३६)।

यश्रोवइय देवो जणोउइय (उर ६५८
ठे)।

यम देवो जम = यम, 'तो अरुना दो यम'
(ठा २, ३—पठ ७७)।

*यर देवो अर = अर (गउड)।

*यल देवो तल = तल (उवा)।

या देवो जा = या, 'गुलारया य सम्महिट्ठो'
जं यति सुमणुण्णु' (विठे ४३१; गुमा
८, ८)।

याण सक [ज्ञा] जानना। याणइ, याणाइ,
याणइ, याणति, याणामी, याणिमी (पि
५१०, उव, भय, धर्मवि १७, वै ६३; प्राप्ति
१०२)।

याण देवो जाण = जान (सम २)।

*याल देवो वाल (पठम ६, २४३)।

याय (घर) देवो जाय = यावत् (गुमा)।

*यावद्व वि [यावद्व] यथेष्ट, जितने की
आवश्यकता हो उठना (उव ५, २, २)।

*युच देवो जुत्त = युक्त, 'एयम् अमुत्तं वम्हा'
(पठम १६७, रंभा)।

येय } (वै. मा) देवो एय (पि ६०,
येय्य } ६५)।

युचिया (या) } देवो चिट्ठे ल्या। युचि-
युचिद्व (वै) } छदि (शाफापी भाषा) (प्राह
१०५)। युचिरवि (वै) (प्राह १२६)।

य्येय (छो) देवो एय (वै ४, २८०)।

य्येय देवो येय (पि ६५)।

॥ इय चिरिपाइअसहमहणवमि यमापइसदृसकल्लो
अतोसदो तरंयो समतो ॥

र

र पु [र] मूढ-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण विशेष (चिरि १६६, पिंग) । 'गण पु' [गण] छन्द शास्त्र प्रसिद्ध मध्य लघु अक्षरवाते तीन स्वरों का समुदाय (पिंग) ।

र म पाठ-सूक्त शब्दार्थ (हे २, २१७; कुमा) ।

र म [दे] निबन्ध-सूचक शब्दार्थ (दशमि १, १५२) ।

रह की [रति] १ काम क्रीडा, मुरत, मैथुन (से १, ३२, कुमा) । २ कामदेव की स्त्री (कुमा) । ३ प्रीति, प्रेम, धनुषराग (कुमा, सुपा ५११) । ४ कर्म-विशेष (कम्म २, १०) । ५ भगवान् परमेश्वर की मुख्य शिष्या (पञ्च ८) । ६ पुं. भूतानन्द नामक इन्द्र का एक सेनापति (इक, ठा ४, १—पञ्च २०४) । 'अर, कर वि [कर] १ रति-जनक (गा ३२६) । २ पु. पर्वत-विशेष (पण्ड १, ५, ठा १०, महा) । 'क्रीला की [क्रीडा] काम क्रीडा (महा) । 'वेलि की [वेलि] वही भयं (काप्र २०१) । 'घर न [गृह] मुरत-मन्दिर, निवास-गृह (चि १६६ ए) । 'गाह, 'नाथ पु' [नाथ] कामदेव (कुमा, सुर ९, ३१) । 'यहु पु' [प्रभु] वही भयं (कुमा) । 'प्यभा की [प्रभा] विभक्त नामक इन्द्र की एक अग्र-महिषी (इक, ठा ४, १—पञ्च २०४) । 'पिय पु' [प्रिय] १ कामदेव (सुपा ७५) । २ एक इन्द्र । ३ विभक्त देवी की एक जाति (राज) । 'पिया की [प्रिया] वानस्पत्यो के इन्द्र विशेष की एक अग्र महिषी (शामा २—पञ्च २५२) । 'भयन न [भयन] कामक्रीडा-गृह (महा) । 'मंत वि [मन्त्र] १ राग-जनक । २ पुं. कामदेव, कन्दर्प (संजु ५६) । 'मन्दिर न [मन्दिर] शयन-गृह (पाप) । 'रमण पु' [रमण] कामदेव (सुपा ४, २८६, कप्य) । 'लभ पु' [लभ] १ मुरत की प्राप्ति । २ कामदेव (से ११, ८) । 'वह पु' [वति] कामदेव (कुमा, सुपा २२२) । 'वदि की [वृद्धि] निवास-विशेष (पञ्च ७, १५४) । 'रुद्री की [सुन्दरी] देव राज-मन्या (उप ७२८ टी) । 'सुहृद

पु' [सुभग] कामदेव (कुमा) । 'सेणा की [सेना] मित्रसेन की एक अग्र-महिषी (इक, ठा ४, १—पञ्च २०४) । 'हर न [गृह] शयन गृह, मुरतमन्दिर (उप ६५८ टी, महा) ।

रइ पु [रवि] सूर्य, सूरज (गा ३४; से १, १४, ३२; कप्य) ।

रइअ वि [रचित] बनाया हुआ, विनित (सुर ४, २४४, कुमा, शीघ्र, कप्य) ।

रइअ वि [रचित] महत्त आदि की पोट-भित्ति (मणु १५४) ।

रइआव सक [रचय] बनवाता । संह. रइआविअ (टी ३) ।

रइगोल वि [दे] समितपित (दे ७, ३) ।

रइगेझी की [दे] रति-गुण्या (दे ७, ३) ।

रइज्जत देखो रय = रचय ।

रइलकल न [दे] जघन, नितम्ब (दे ७, १३, पञ्च) ।

रइलकल न [दि. रतिलक] रति-सयोर, मैथुन (दे ७, १३) ।

रइलिय वि [रजस्यल] रज से युक्त, रजवाला (चि ५६५) ।

रइवाडिया देखो राय-वाडिया. 'वापिय रइवाडियासमो' (चिरि १०६) ।

रईसर पुं [रतीश्वर] कामदेव, कन्दर्प (कुमा) ।

रइताणिया की [दे] रोग-विशेष, पाप्मा, सुकृती (चिरि ३०६) ।

रइउ देखो रोह = रीह, 'रइउरुईह मसोह-सिखो' (मति ५२, मवि) ।

रउरय वि [रीरय] बयकर, घोर । 'काल पु' [काल] माता के उदर में पसारा दिया जाता समय-विशेष, 'नवमासहि नियकुकाहि परियउ पुसु रउरयनललो नीउरियउ' (मवि) ।

रउरसल वि [रजस्यल] रजो-युक्त, पुलि-युक्त (मण ७, ७—पञ्च ३०५) ।

रओ' देखो रय = रजय (चि ६ टी, सण) ।

रंक वि [रङ्ग] नदीय, दीन (रिफ) ।

रंरोल सक [दोलय] १ झूलना । २ हिलना, चलना, कोपना । रंरोलइ (हे ४, ४८, वज्जा ६४) ।

रंरोलिय वि [दोलित] कम्पित (गठड) ।

रंरोलिर वि [दोलित] झूलनेवाला (गठड, कुमा, पाष) ।

रंगा सक [रङ्गा] इधर-उधर चलना । वक्र, रंगत (कप्य, पठम १०, ३१, पण्ड १, ३—पञ्च ५५) ।

रंग सक [रङ्गय] रंगना । कर्म. रंजिज्जइ (संबोव १७) । वक्र. 'रायगिह वरनयरं वर-नय-रंगत-मंरिंरं मयि' (कुम्मा १८) ।

रंग वि [राङ्ग] रंगा हुआ, रंग कर बनाया हुआ (वसति २, १७) ।

रंग व [दि] रंग, रंगा, धातु विशेष, सीसा (दे ७, १; से २, २६) ।

रग पुं [रङ्ग] १ राग, प्रेम (चिरि ५१५) । २ नाट्यशास्त्र, प्रेक्षा-भूमि (पाप, सुपा १, कुमा) । ३ युद्ध-मण्डप, जय-भूमि (पर्मसं ७८६) । ४ सप्रमाण, लड़ाई (पिंग) । ५ रक्त कर्ण, वासी (से २, २६) । ६ कर्ण, रंग (मवि) । ७ रंगना, रंजन, रंग बदलना (गठड) । 'अ वि [द] कृतकल-जनक (से १, ४२) । 'वलि की [आवलि] रंरोली (वज्जपल्ल ० पञ्च ३२६ मा ७१४) ।

रगण न [रङ्गन] १ राग, रंगना । २ पु. जीव, प्राण्या (मण २०, २—पञ्च ७७६) ।

रगिर वि [रङ्गिर] चलनेवाला (सुपा ३) ।

रगिल वि [रङ्गन] रंगवाला (उर ९, २) ।

रंज सक [रञ्जय] १ रंग लगाना । २ सुखी करना । रंजण, रंजेड (वज्ज १३६, हे ४, ४६) । कर्म. रंजिज्जइ (महा) । वक्र. रंजत (ध्वे ३) । संज्ञ. रंजिऊण (चि ५८६) । क. रंजियज्ज (भावि ६) ।

रंजग वि [रञ्जक] रंजन करनेवाला (रंमा) ।

रंजण न [रञ्जन] १ रंगना (चि २६६१) । २ सुखी करना. 'परवत्तरंजणे' (उा ६८६

टी. सवे ५)। ३ पुं. छद्म-विशेष (विण)।
४ वि. सुखी करनेवाला, रागजनक (हुमा)।

रंजन पु [दि] १ घटा, कुम्भ (दि ७, ३)।
२ कुण्डा, पात्र विशेष (दि ७, ३. पात्र)।

रंजविय } वि [रंजित] राग-श्रुत किया
रंजित } हुमा (सण. से ६, ४८, गडड,
महा. हेना २७२)।

रहा की [रण्डा] रौं, विषया (उपपु ११३,
वज्रा ४४, कणू विण)।

रंडुअ न [द] रण्ड, रस्ती, गुजराती में
'राड्डु' (दि ७, ३)।

रध सक [रध्, राधय्] राधना, पकाना।
'रधो राधयते स्मृत.' रंध (माह ७०),
रंधिह (स २४६)। वडू. रधत (छाया १,
७—पत्र ११७)। सडू. रंधिऊज (कुम
२०४)।

रंध न [रन्ध] छिद्र, विवर (गा ६५२, रंभा,
मवि)।

रंधन न [रन्धन, राधन] राधना, पकन,
पाक (गा १४, पत्र १८, मूपति १२१ टी,
मुपा १२, ४ १)। रंध न [रंध] पाक-
गृह (खण ११)।

रंधन न [रंधन] पाक-गृह, रसोईघर (भाषा
२, १०, १४)।

रप सक [रध्] छिद्रना, पकना करना।
रंध (हि ४, १६४, माह ६५, पद)।

रंधन न [रंधन] पकाना, पकना करना
(हुमा)।

रफ देखो रंध। रंध, रंध (हि ४, १६४,
पद)।

रंधन देखो रंधन (हुमा)।

रंध सक [गम्] जाना, मति करना। रंध
(हि ४, १६२), रंधति (हुमा)।

रंध देखो रंध। रंध (भाषा १४६)।

रंध सक [जा + रम्] पारन करना।
रंध (पद)।

रंध पुं [दि] घटोलत-छवर, द्रोक्षो वा
छटा (दि ७, १)।

रंधा की [रंधा] १ बजरी, बेना का लुप
(हुमा २५४, ६०५ कुम ११७, पात्र)। २
दोषना-विशेष, एक लुप (हुमा २५४)

खण ५)। ३ वैरोचन नामक बलीन्द्र की
एक धर्म-महिली (आ ५, १—पत्र ३०२,
छाया २—पत्र २५१)। ४ राजल की एक
पत्नी (पत्र ७४, ८)।

रख सक [रख्] रखण करना, पालन
करना। रखद (उव, महा)। भूका रखलोम
(हुमा)। वडू. रखलन (गा ३८, धीप, भा
३७)। बडू. रमर्याअमाण (नाट—मालती
२८)। इ. रखर, रखरणिज, रखरियक,
रखसियक (से ३, ५, साध १००, गडड,
मुपा २४०)।

रखल पुन [रखल] रखल (पात्र, कुम
११३, मुपा १३०, सट्टि ६ टी, संवोध ५४)।

रखल वि [रख] १ रखक, रपा करनेवाला
(उप ५ ३६८, कणू)। २ पुं. एक बिन मुनि
(कणू)।

रखल देखो रखल = रख।

रखरअ } वि [रखर] रखल-बर्छा (नाट—
रखरग } मालवि ५३, रंभा, कुम २३३,
साध ६६)।

रखरन न [रखन] रपा, पालन (गुर १३,
११७, गडड, मालू २३)।

रखरगा की [रखगा] ऊपर देखो (उप ८५०,
स ६६)।

रखरणिगा की [दि] रखी हुई की, रखलिन,
रखनी, रखात (मुपा ३८३)।

रखरगल वि [दि] रखरगला, रखा करनेवाला
(महा)।

रखरस पुं [राअस] १ देवी की एक जाति
(पद १४, ५—पत्र ६८)। २ विद्याप-भक्त्या
वा एक वंश (पत्र ५, २५२)। ३ वंश-
विशेष में उत्पन्न मनुष्य एक विद्यापरायण
लेख विषयवाचक रचयिता बंध सोई
(पत्र ५, २५७)। ४ निवाचक, ब्रह्मदा (मि
११, १७ नाट मुप १३२)। ५ धरोराय
की तीसरी भूतल (गम ५१, गुज १००, १३)।

रखी की [पुप] लंगा गयी (मि १२,
८४)। १ गंधरा की [गंधरी] बरी
धर्म (मि १२, ७८)। २ नाह पुं [नाय]

पगलों वा राना (मि ८, १०४)।

रख न [रख] धर्म-विशेष (पत्र
७१, ६३)। २ दान पुं [दोष] विद्वत्

क्षीप (पत्र ५, १२६)। ३ नाह देखो नाह
(पत्र ६, ३६)। ४ वडू पुं [पति] राजा
वा मुखिया (पत्र ५ १२३, से ११, १)।
'विहस पुं [विध] बही धर्म (से १५, ८७,
६१)।

रखसिद पुं [राखसेन्द्र] राजा की वा राजा
(पत्र १२, ४)।

रखरसी की [राखसी] १ राजा की की
(नाट—मुप २३८)। २ निवि विशेष (विसे
४६४ टी)।

रखरसेंद देखो रखरसिंद (से १२, ७७)।

रखरा की [रखा] १ रखण, पालन (या १०,
मुपा १०३, १११)। २ रख, भल्ल, 'सो
बंधल रखरक बहिजा' (सत २८ मुपा
५४७)।

रखरअ रि [रखित] १ पालित (गडड; गा
३३३)। २ पुं. एक प्रसिद्ध बिन महवि (क्या;
विसे २२८८)।

रखरअ देखो रखरमी (रंभा १७)।

रखरी की [रखी] मगवाय भरवाय की मुख्य
साधनी (सम १५२, पत्र ८)।

रखरीग वि [रखरीग] रखण में ललर
(सम ११५)।

रखिह [दि] देखो रङ्गोह (पद)।

रग वगो रत्त = रक (हि २, १०, ८६;
पद)।

रगाय न [दि] कुमुम-वडू (दि ७, १, पात्र,
गडड)।

रुस पुं [रुप] हविष्य वा एक राजा
(पत्र २२, ६६)।

रथ धर [दि. रड्] राधना, धारण हेना,
भुतुपण करना। रथर रथवि, रथदे (हुमा;
वज्रा ११२)। कर्न. 'रथे रथिअर जगो'
(हुम १३२)। पद. रथंड (मवि)। मजो.
रथारवि (वज्रा ११२)।

रथान न [दि. रजन] २ भुतुपण। २ वि,
भुतुपण करनेवाला, राधनेवाला (हुमा)।

रथि वि [दि. रजिअ] राधनेवाला (हुमा)।

रथि देखो रथगा (रंभा १६)।
रथि की [रथि] भुतुपण (गा ११६, मीरा
कणू)।

रच्छामय पुं [दि. रच्छामय] श्वान, कुत्ता (दि ७, ४) ।

रज देखो रज = रजस (कुमा) ।

रजरुं मुंकी [रजरुं] घोड़ी, कपड़ा धोने रजरां वा धोना करनेवाला (आ १२; दि ५, ३२) । छी, की (दि १, ११४) ।

रजय देखो रजय = रजत (इक) ।

रज मरु [रजु] १ धनुषाग करना, भासक होना । २ रंगाला; रंग-युक्त होना । रजइ (भावा; लभ) । रजइह (छाया १, ८—पत्र १४८) । नवि, रजिन्हिहि (मीन) । वरु, रजंत, रजमाण (सि १०, २०; छाया १, १७; उत्त २६, ३) । क. रजियउव (पण्ड २, ५—पत्र १४६) ।

रजन [राज्य] १ राज, राजा का अधिकृत देश । २ शासन, हुकूमत (छाया १, ८; बुना; दि ४७; भाग, प्राक) । 'पालिया छी [पालिका] एक जैन मुनि-शाखा (बम्) । 'यहू दुं [रति] राजा (बम्) । 'सिरी छी [सो] राज्य लक्ष्मी (महा) । 'हिसेय दुं [निमेषक] राजमही पर बैठने का समय (पठन ७७, १६) ।

रजन मुंन. मोचे देखो, 'सररजनेमु कडा' (पठन १६, ११९) ।

रगजु छी [राजु] १ रानी (पाम, उवा) । २ एक प्रकार की ताप, 'बदसररजु सीर्गो' (पर १४३) ।

रगजु वि [रज] सेवन, मिलने का काम करने-वाला (बम्) । 'सभा छी [सभा] १ सेवन गृह । २ दुल्ल-गृह, पुं-सी-पट, 'हलिय-वागव रतो रज्जुमाए' (बम्) ।

रगिज देतो रहिअ = रहिअ, 'बरगिजमा-मिनावा लखी ठरिअ' (सुम १, ५, १७) ।

रह म [राहु] देश, जनपद (सुम ३०७; महा) । 'उह, 'हूड पुं [हूट] राज-मनुष्य प्रतिनिधि, मूदेनार (पिपा १, १ टी—पत्र ११; पिपा १, १—पत्र ११) ।

रहिय नि [राहिय] १ देश-मन्त्रणी । २ पु. काच की भासा में राजा का काला (चमि १६४) ।

रहिय पुं [राहिक] देश की कित्ता के लिए मनुष्य राज-प्रतिनिधि, सूदेदार (पण्ड १, ५—पत्र १४४) ।

रह मरु [रह] १ रोना । २ क्लिप्ताना । रहइ (नवि) । वरु-रहंत (दि ४, ४४५) नवि ।

रहण व [रहन] क्लिप्ताहट, चीस (विठ २२५) ।

रहिय न [रहित] १ रहन, रोना (पण्ड २, ५) । २ भावाग करना, शब्द-करार; 'परदुय-वहय रहियं कुहकुहमहरसहेण' (रमा) । ३ क्लिप्ताना, चीस (छाया १, १—पत्र ६३) । ४ वि. वलहायिअ, भागवत, वगड़वोह; 'कलहाइअं रहियं' (पाम) ।

रहरहिय न [रहरहित] शब्द-विरोध, वाच-विरोध की भावाग (सुपा ५०) ।

रहू वि [रू] सिसक कर मिरा हुआ, गुजरती में 'रहेउ' (सुप्र ४३९) ।

रहु छी [रहु] छत्र विरोध (पिप) ।

रण पुंन [रण] १ संघाम, लड़ाई (बुना; पाम) । २ पु. शब्द, भावाग (पाम) । 'लंभउर न [रंभभुर] भयभर के समीप का एक प्राचीन नगर; 'रखसंभउरविहारे चडाविया बखयमवतता' (सुति १०६०१) ।

रणकार पुं [रणकार] शब्द-विरोध (गठ) ।

रणमग्न मरु [रणमगाय] 'रु मरु' भावाग करना । रणमग्न (पञ्जा १२८) । वरु, रणमग्न (नवि) ।

रणमग्न वि [रणमगायि] 'रु मरु' भावाग करनेवाला (सुपा ६४१; धर्मि ८८) ।

रणमग्न मरु [रणमगाय] 'रु मरु' भावाग करना । वरु, रणमग्न (पिप) ।

रणरण पुं [दि. रणरण] १ निरराग, रणरण; नोशाक 'मइउहहा रणरणया दुजेण्डा दूगहा दुतापोय' (पञ्जा ७८) । २ उद्वेग, पीडा, धुपिनि, 'यदयनिगंधमासा-भंसमनुदुनिपरखण्डनिग' (सुर ४, २३०, पाम) । ३ ऊर्ध्व, धौलुम्ब (दि १, १९६, गठ; रमि ४८; मंके २) ।

रणरणाय देखो रणरण = रणरणाय । वरु, रणरणाय (पठन १४, ३६) ।

रणिअ न [रणित] शब्द, भावाग (सुर १, २४८) ।

रणिर वि [रणित] भावाग करनेवाला (सुपा ३२७; गठ) ।

रणन न [अरण्य] जंगल, घटवी (हे १, ६६; प्राग; मीन) ।

रच पुं [रक्त] १ राल वण, लाल रंग । २ कुमुम । ३ बुझ-विरोध, हिजल का रंग (हे २, १०) । ४ न, कुकुम । ५ ताम, लोहा । ६ सिंदूर । ७ त्रिभु । ८ धून, रधिर । ९ राग (प्राग) । १० वि, रंगा हुआ (हेका १७२) । ११ लान रंगवाला (पाम) । १२ धनुषाग-युक्त (कोप ७५७; प्रासु १५५; १६०) । 'कंबडा छी [कम्बडा] मेरु पर्वत के पच्छिम वन में स्थित एक शिला, जिसपर जिनदेवी का समिपक किया जाता है (डा २, ३—पत्र ८०) । 'कूड न [कूट] शिखर-विरोध (राज) । 'कोरंटिय पुं [कुरण्टक] बुझ-विरोध (पठन ५९, ७६) । 'कल, 'उह वि [रि] १ लाल कलियावाला (पञ्जा सुर २, ६) । छी, 'बन्दी (धोपमा २२ टी) । २ पु. महिप, मंसा (दि ७, १३) । 'हू पुं [रु] विचापर धंरा का एक राजा (पठन ५, ४४) । 'पाउ पुं [पाउ] बुझल पर्वत का एक शिखर (दीव) । 'पड पुं [पट] परिवानर, संन्यासी (छाया १, १५—पत्र १३९) । 'प्यनाय पुं [प्रपात] इह-विरोध (डा २, ३—पत्र ७३) । 'प्य पुं [प्रभ] बुझल-पर्वत का एक शिखर (दीव) । 'रणय न [रण] रल की एक कवि. वच-राग मणि (सोप) । 'वदी छी [वती] एक मने (सम २७; ४३; ६४) । 'वद देखो 'पड (सुन ८, १३) । 'सुमहा छी [सुमहा] कीदृश्य की एक मंगिनी (पण्ड १, ४—पत्र ८५) । 'सोम, 'सोय पुं [सोच] लाल मरोक का पेड़ (छाया १, १, महा) ।

'रत पुं [रात्र] रात्र, जिला (मी १४) ।

रसम देखो रस = रस (महा) ।

रसंदन न [रसन्दन] लान फरत (सुपा १८१) ।

रत्नकर न [दे] सीधु, मन्-विशेष दि ७, ४)।

रत्नच्छ पुं [दे] १ हंस। २ व्याघ्र (७, १३)।

रत्नडि (मप) देखो रत्ति = राति (पि ५६६)।

रत्तय न [दे. रत्तय] क्यूक वृक्ष का फूल (दे ७, ३)।

रत्ता की [रत्ता] एक नदी (सम २७: ४३; ह्क)। *वह्पथाय पुं [वतीप्रपात] बह-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७३)।

रत्ति की [दे] भाता, हुकुम (दे ७, १)।

रत्ति की [राति] रात, निरा (हे २, ७६; कुमा, प्राप् ६०)। *अंधय वि [अन्धक]

रात को नहीं देख सक्नेवाला (गा ६६७, हेका २६)। *अर वि [चर] १ रात में

बिहरनेवाला। २ पुं. रातख (पद्)।

*दियह न [दियस] रात-दिन, भ्रान्ति

(पि ५८)। देखो राहू = राति।

रत्तिचर देखो रत्ति = अर (धर्निप ७२)।

रत्तिविअह न [रातिदियस] रात-दिन,

भ्रान्ति, निरुत्तर (मन्तु ७८)।

रत्तिदिय } न [रातिदिय] ऊपर देखो

रत्तिदिय } (पत्र ८, १६४, ७५, ८५)।

रत्तिच वि [रातवन्ध] जो रात में न देख

सक्ता हो वह (प्राप् १७५)।

रत्तीअ पुं [दे] नातिव, हजान (दे ७,

२, पात्र)।

रत्तुप्पल न [रत्तोप्पल] लाल कमल (पणह

१, ४)।

रत्तोआ की [रत्तोदा] एक नदी (ह्क)।

रत्तोप्पल देखो रत्तुप्पल (नाट—मृच्छ १४५)।

रत्था देखो रत्च्छा (गा ४०; संत १२; सुर

१, ६६)।

रत्त वि [रत्त, राह] राधा हुआ, पक्व (पि

१६५; मुपा ६३६)।

रत्ति वि [दे] प्रयात, घेठ (दे ७, २)।

रत्त वि रत्ण (मुपा ४०१, कुमा)।

रत्त सक [आ + म्] भावमण करना।

रत्त (प्राक् ७३)।

रत्त पुं [दे] बलीक, पुनरासी में 'राफडे'

(दे ७, १; पात्र)। २ रोग-विशेष, 'करि कं' पु

पामयुग्मिनु रत्तय' (सण)।

रत्तडिआ की [दे] गोपा, मोह (दे ७, ४)।

रत्ता वि [दे] राब, यवाण (था १४; उर २,

१२; धर्निप ४२)।

रत्तस देखो रत्तस = रत्तस (गा ८७२, ८६४,

६३४)।

रत्त भक [रत्] १ बीजा करना। २ संयोग

करना। रत्त, रत्त, रत्ति, रत्तिज, रत्तिजा

(कुमा)। भवि. रत्तिसवि, रत्तिहि (कुमा)।

कर्मे. रत्तिजह (कुमा)। बह. रत्त, रत्त-

माण (गा ४४; कुमा)। संह. रत्तिअ, रत्तिउ,

रत्तिऊक, रत्तूण (हे २, १४६, ३, १३६;

महा. पि ३१२). रत्तिपि, रत्तिपिणु,

रत्तिपि (मप) (पि ५८८)। हेह. रत्तिउ

(उप ५ ३८)। ह्. रत्तिअव्य (गा ४६१),

देखो रत्तिज, रत्तिजीअ, रत्तस। प्रयो.

रत्तावैति (पि ५५२)।

रत्तण न [रत्तण] १ बीजा, बीजन। २ सुख,

संयोग. रत्ति-बीजा (पत्र ३८; कुमा, उप ५

१७)। ३ सम-कूपिका, मोनि (कुमा)।

४ पुं. जपन, निम्व (पात्र)। ५ पति, वर,

स्वामी (पत्र ५१, १६, पिग)। ६ दन्त-

विशेष (पिग)।

रत्तणीअ वि [रत्तणीय] १ सुन्दर मनोहर,

रत्त (प्रात्र, पात्र, धनि २००)। २ न. एक

देव-विमान (सम १७)। ३ पु. नन्दिरवर

द्वीप के मध्य में उत्तर दिशा की ओर स्थित

एक मन्जन्-निरि (पत्र २६६ टी)। ४ एक

विजय, प्रात-विशेष (ठा २, ३—पत्र ८०)।

रत्तणी की [रत्तणी] १ नारी, की (पात्र,

उप ५ १८७; प्राप् १५५; १८०)। २ एक

गुप्तस्थि (ह्क)।

रत्तणीअ वि [रत्तणीय] रत्त, मनोरम (प्रात्र,

स्वप्न ४०, गउड, मुपा २५५, धनि)।

रत्ता की [रत्ता] लसी, श्री (कुमा ३)।

रत्तिअ देखो रत्त।

रत्तिअ वि [रत्] १ बीजित, जिसने बीजा की

जो वह (कुमा ४, ५०)। २ न. रत्त,

बीजा (पात्रा १, ६—पत्र १६५; कुमा,

मुपा ३७३; प्राप् ६३)।

रत्तिअ वि [रत्तिअ] लसी हुआ (कुमा ३,

८६)।

रत्तिर वि [रत्त] रत्तण करनेवाला (कुमा)।

रत्त वि [रत्त] १ मनोरम, रत्तणीय, सुन्दर

(पात्र; से ६, ४७; सुर १, ६६; प्राप् ७१)।

२ पुं. विजय-विशेष, एक प्रात (ठा २,

३—पत्र ८०)। ३ चम्पक का मात (से ६,

४७)। ४ न. एक देव-विमान (सम १७)।

रत्तमा } पुं [रत्तमा] १ एक विजय, प्रात-

रत्तमा } विशेष (ठा २, ३—पत्र ८०)।

२ एक युगलिक-मोन, जंजू-द्वीप का वर्ष-विशेष

(सम १२; ठा २, ३—पत्र ६७; ह्क)। ३

न. एक देव-विमान (सम १७)। ४ पर्वत-

विशेष का एक कूट (ज ४)।

रत्त देखो रत्त। रत्तह (प्राक् ६५)।

रत्त सक [रत्त] रंगना, 'नो बोएजा, नो

रत्तजा, नो बोएरताई बत्ताई धारेजा'

(भावा)।

रत्त सक [रत्त] बनाना, निर्माण करना।

रत्त, रत्त (हे ४, ६४; पद्; महा)। कवह,

रत्तजव (से ८, ८७)।

रत्त पुं न [रत्तस] १ रेणु, धूल (बीप; पात्र,

कुप्र २१)। २ पात्रा, पुन-पत्र (से ३,

४८)। ३ सात्य-चरान में उक्त प्रकृति का एक

गुण (कुप्र २१)। ४ बध्यमान कर्मे (कुमा

७, २८, वेदप ६२२; उप)। *साण न

[साण] जैन मुनि का एक उपकरण (मोप

६६८, पणह २, ५—पत्र १४८)। *रत्तला

की [रत्तला] श्रुतमती की (दे १, १२५)।

*हर पुं न [हर] जैन मुनि का एक उपकरण

(संवीप १५)। *हरण न [हरण] बहो

धर्म (पात्रा १, १; कन)।

रत्त वि [रत्त] १ श्रुतक, मानक (मोप, वन,

सुर १, १२; मुपा ३०६; प्राप् १६६)। २

स्थित (से ६, ४२)। ३ न. रत्त-कर्म, नैतुन

(सम १५; वन, गा १५५; स १८०; वन्या

१००; मुपा ४०३)।

रत्त पुं [रत्त] वेप (कुमा, ने २, ७; सण)।

रत्त देखो रत्त (पत्र ११५, १७)।

रत्तमा देखो रत्तय = रत्तन (था १२; मुपा

५८८)।

रत्तण न [रत्तण] रंगना; रंग-मुक्त करना

(सुप १, ६, १२)।

रथण वि [रथन] करनेवाला, निर्माता, व्यवस्थितकारण्य (सण) ।

रथण पुं [रथन] दारि, दशन (उप ६८६ टी) पाथ पाथ १७२, नाट राजु १३१ ।

रथण पुंन [रथन] १ मानिप्य यदि बहुपुत्र्य पत्नर मणि, 'दुवे रमण समुप्यता' (निर १, १, उप ५६३, लाया १, १, सुपा १४७, जी ३, कुमा, हे २, १०१) । २ श्रेष्ठ, स्वजाति मे उत्तम (सन २६, कुमा १, ४७), 'सत्रवि हु बर-सन्निध्या विरला रथ-पाथरे रथण' (वज्रजा १५६) । ३ छन्द-विशेष (पिग) । ४ द्वीप विशेष (लाया १, ६, पठम ५५, १७) । ५ पर्वत-विशेष का एक कूट (डा ४, २, ८) । ६ पु. ब. रत्न-द्वीप का निवासी (पठम ५५, १७) । 'उर न [रथु] नगर विशेष (सण) । 'चित्त पु [रथि] विद्यापर वश का एक राजा (पठम १, १५) । 'दीन पु [रथी] द्वीप विशेष (लाया १, ६—पत्र १६५) । 'निहि पु [रथि] समुद्र, सागर (सुपा ७, १२६) । 'पुठवी जी [रथि] पहली नरक-भूमि, रत्नप्रभा नामक नरक-भूमि (स १३२) । 'पुर देखो 'उर (कुप ६ महा, सण) । 'प्यभा, 'प्यहा जी [रथभा] १ पहली नरक भूमि (डा ७—पत्र ३८८, मीप, मग) । २ भीम नामक दानसेन्द्र की एक पटरानी (डा ४, १—पत्र २०४) । ३ रत्न का क्षेत्र (स १३३) । 'मय वि [रथय] रत्नों का मया हुआ (महा) । 'माला जी [रथाल] छद्म विशेष (मणि २४) । 'मालि पु [रथालि] विद्यापर वश में उत्तम मणि-राज का एक पुत्र (पठम ५, १५) । 'सुस वि [रथु] रत्नों को डुरानेवाला (पद) । 'रथ पुं [रथ] विद्यापर वश का एक राजा (पठम ५, १४) । 'रासि पु [रथि] समुद्र (महा) । 'यइ पु [रथि] रत्नों का मालिक, धनी, भीमव (सुपा २६६) । 'यइ जी [रथी] एक रानी (रमण ३) । 'वज्र पु [रथ] विद्यापर-वशीय एक राजा (पठम ५, १५) । 'यह वि [यह] रत्न-मारक (पठम १०४१) । 'सथय न [सथय] १ रथन पर्वत का कूट (र) । २ एक नगर

(इक, सुर ३, २०) । 'सचया जी [संचया] १ मगलावती नामक विजय की राजधानी (डा २, ३—पत्र ८०) । २ ईशान-केन्द्र की समुद्ररा-नगर इलाखी की एक राजधानी (इक) । 'समया जी [समया] मगलावती नामक विजय की एक राजधानी (इक) । 'सार पु [सार] १ एक राजा (रज) । २ एक श्रेष्ठ का नाम (उप ७२८ टी) । 'सिह पु [सिह] एक जैन आचार्य, सवेगधुविकाकुलक कर्ता (सवे १२) । 'सिह पु [सिर] एक राजा (उप १०३१ टी) । 'सेहर पु [शेहर] १ एक राजा (रथण ३) । २ विक्रम की पनरहवीं शताब्दी में विद्यमान एक जैन आचार्य शौर ग्रन्थकार (विरि १३४०) । 'अर, 'गर पुं [कर] १ रत्न की लाल (पद) । २ समुद्र (पाथ, सुपा ३७, ग्रास ६७, लाया १, १७—पत्र २२८) । 'भा जी [भा] देखो 'प्यभा (उप ३६, १५७) । 'मय देखो 'मय (महा मीप) । 'यरसुज पु [रसुज] १ चन्द्रमा । २ एक वणिक् पुत्र (या १६) । 'गलि, 'गली जी [गलि, 'गली] १ रत्नों का हार (सम्प २२) । २ सप-विशेष (सत २५) । ३ ग्रन्थ विशेष (दे ८, ७७) । ४ एक विद्यापर राजकन्या (पठम ६, ५२) । 'गह न [गह] नगर विशेष (महा) । 'सथ पुं [सथय] राखण का पिता (पठम ७, ५६, ७१) । 'सथसुज पु [सथसुज] राखण (पठम ८, २२१) । 'हिय वि [हिक] ग्रेष्ठ, अवस्था में बड़ा (राज) ।

रथणप्राप्य वि [रत्नप्रमिक] रत्नप्रमा-संनयी (पत्र २, ६६) ।

रथणा जी [रथना] निर्माण, कृति (उप १५, १८, वेदय ८६६, सुपा ३०४, रमा) ।

रथणा जी [रत्ना] रत्नप्रमा नामक नरक-भूमि (पत्र १७३) ।

रथणि पुषी [रत्नि] एक हाथ को नाथ, बद्ध-मुष्टि हाथ का परिमाण (कतः पत्र ५८ १७६) ।

रथणि जी [रत्नि] देखो रथणो = रजनी (लाया १, २—पत्र ७८, वण) । 'अर पुं [रर] १ राजस (दे १०, ६६; पाथ) ।

'अर, 'कर पुं [कर] चन्द्रमा (हे १, ८ टि, कण) । 'गाह, 'नाह पुं [नाथ] चन्द्रमा (पाथ, सुपा ३३) । 'भत न [भक्त] रत्नि मे लाना (सुपा ४६५) । 'रमण पु [रमण] चन्द्रमा (सण) । 'वहह पु [वहभ] चन्द्रमा (रम्प) । 'विराम पु [विराम] प्रातः काल, सुबह (पाथ) ।

रथणिद पुं [रजनीन्द्र] चन्द्रमा (सण) ।

रथणिदय न [दे] कुमुद, वनन (दे ७, ५, पद) ।

रथणी जी [रत्नी] देखो रथणि = रत्नि (डा १, सत १२, जीवत १७७, जी ३३, मीप) ।

रथणी जी [रजनी] १ रात्रि, रात (पाथ, ग्रास १३६, कुमा) । २ ईशानकेन्द्र के लोकपाल की एक पटरानी (डा ४, १—पत्र २०५) ।

३ चमरेन्द्र की एक भद्र पत्नी (डा ४, १—पत्र ३०२) । ४ मध्यम ग्राम की एक मूर्च्छना (डा ७—पत्र ३६३) । ५ पड़ज ग्राम की एक मूर्च्छना, 'मगो कोरन्वीया हृदो य रथ-वणी (यणी) सारकता य' (डा ७—पत्र ३६३) । 'ओअय न [ओअन] रात में लाना (या २०) । 'सार न [सार] गुरत, मैथुन (दे ३, ४८) । देखो रथणि = रजनि (हे १, ८) ।

रथणी जी [रजनी] मीपवि विशेष—१ पिडवाच । २ हृदि, हृदयी (वतनि ३) ।

रथणुचय } पु [रत्नोचय] १ मेघ-पर्वत
रथणोचय } (सुज ५ टी—पत्र ७७, ह) ।

२ कूट विशेष (इक) ।

रथणोचया जी [रत्नोचया] बहुपुत्रा नामक इलाखी की एक राजधानी (इक) ।

रथत } न [रजत] १ रथ्य, पारि (एरु रा
रथद } १, १—पत्र ६६, ग्रास १२, मीप,
रथय } पाथ, उवा मीप) । २ एक वैक-
मिमान (देवन्द १३१) । ३ हाथी का दाँत ।
४ हार, माला । ५ मुखर्ष तोना । ६ रथि,
गुन । ७ रीत, पर्वत । ८ वनन वण । ९
शिवर-विशेष । १० वि. सारेण यणवहा,
शेत (ग्रास १२, ग्रास ११, पठम १८०,
२०६) । 'मिरि पुं [मिरि] १ रत्न विशेष
(लाय १, १, मीप) । 'पत्त न [पात्र]

चौदी का बरतन (गडड)। 'मय वि [मय]
चौदी का बना हुआ (एग्या १, १—पत्र
५४; वि ७०)।

रयय पुं [रयय] घोड़ी (स २८६; पाम)।

रयवली स्त्री [दे] शिराव, बाल्य (दे ७, ३)।

रयवाड़ी देवी राय-वाड़िया (गिरि ७५८)।

रयाय सक [रयय] बनवाना, निर्माण
कराना। रयाविह, रयाविहि, रयावेह (कप्य)।
रह्म, रयावेसा (कप्य)।

रयाविय वि [रचित] बनवाना हुआ (स
५१५)।

रहा स्त्री [दे] प्रियपु, मालकीनी (दे ७,
१)।

रहि पुं स्त्री [दे] लम्बा मधुर शब्द (माल
६०)।

रय सक [रु] १ बहना, बोलना। २ घब
बरना। ३ गति करना। ४ मर, रोना।
५ शब्द करना; 'मुह रयति परिसाए' (सुम
१, ४, १, १८), रवह (दे ४, २१३; संति
१३)। बह, रयंत, रयंत (एग्या १: १—
पत्र ६५; पिंग, भीग)।

रय सक [रायय] बुलवाना, भाहान करना।
बह, रयंत (भीग)।

रय सक [दे] भाद्र करना। भवि—रयेहिह
(एचि)।

रय पुं [रय] १ शब्द, भावान (कप्य) महा;
सण; भवि। २ वि. मधुर शब्दवाता; 'रय
सलत बलसजुल' (पाम)।

रय (मय) देवी रय = रयव (मय)।

रयय } (मय) देवी रमण (मय)।
रयय }

रयय न [रयय] भावान करना, 'पणामने य
करेणुया यया रययनीला भासी' (महा)।

रययन } (मय) देवी रमण = रम्य (दे ४,
रयय } ५२२; मय)।

रयय पुं [दे] मयल-एह, बितोनेकी सखी।
गुजराती में 'रयय' (दे ७, ३)।

रयय सक [रोयय] १ गूज भावान
करना। २ बारबार भावान करना। बह,
रययंत (भीग)।

रयि वि [रयिन] भावान करनेवाला (सि २,
२६)।

रयि न [रयि] १ सूर्य, सूरज (सि २, २६;
गडड; सख)। २ राधात-यंश का एक राजा
(पत्रम ५, २६२)। ३ भक्त बुद्ध, भाक का
पेड़ (हि १, १७२)। 'तेज पुं [तेजस]
१ इस्वाकु वंश का एक राजा (पत्रम ५-
४)। २ राधात वंश का एक राजा, एक
सैन्य (पत्रम ५, २६५)। 'तेया स्त्री
[तेजा] एक विद्या (पत्रम ७, १४१)।

'नंदन पुं [नन्दन] रानि-मह (या १२)।

'प्यम पुं [प्रम] वानरद्वीप का एक राजा
(पत्रम ६, ६८)। 'असा स्त्री [अस] एक
महोपधि (सि ५)। 'भास पुं [भास]
खट्वा-विशेष, सूर्यहास खट्वा (पत्रम ५५,
२६)। 'वार पुं [वार] दिल-विशेष, रविवार
(कुप ४११)। 'सुअ पुं [सुअ] १ रानिबर
गह (सि ८, २८, सुपा ३६)। २ रामकन्न
का एक सेनापति, सुधीर (सि १५, ५६)।

'हास पुं [हास] सूर्यहास खट्वा (पत्रम
५३, २७)।

रयिाय न [रयिगत] जिसपर सूर्य हो वह
नमन (वव १)।

रयि वि [दे] भाद्र किया हुआ, मिनाया
हुआ (सि १५४६)।

रय्यारिज पुं [दे] हूत, संदेश-हारक, 'जेण
भवज्जो ख्यायिओ ति' (मुपा ५२८)।

रस सक [रस] चिल्लाना, भावान करना।
रवह (गा ५३६)। बह, रसंत (मुप २,
७४; सुपा २७३)।

रस पुं न [रस] १ जिह्वा का विषय—मधुर,
तिक्त, आदि, 'एणे रसे', 'एवं गंधार्द्र रसाई
कामार्द्र' (ठा १०—पत्र ५७१, प्राप्ता १७४)।
२ स्वाभाविक प्रवृत्ति (सि ४, ३२)। ३ साहित्य-
शास्त्र-अभिहित श्रृंगार आदि सब रस (उत
१४, ३२; धर्मवि १३; गिरि ३६)। ४
जन, पानी (सि २, २७; धर्मवि १३)।
५ मुख (उत १४, ३१)। ६ आरक्ति,
दिलचस्पी (उत ३३; गडड)। ७ छन्दोग,
श्रेम (पाम)। ८ मय भादि द्वय पदार्थ (एह
१, १, ८, ८, ८)। ९ पाद, पाव (निह ११)।
१० भुक्त भोजन का प्रथम परिणाम, शरीरस्य
पानु-विशेष (गडड)। ११ धर्म-विशेष (स्म
२, ३१)। १२ छन्द-शास्त्र-अभिहित प्रस्ताव-

विशेष (पिंग)। १३ माधुर्य भादि रसवाता।
पदार्थ (सम ११; नव २८)। 'नाम न
[नामन] धर्म-विशेष (सम ६७)। 'अ
वि [अ] रस का जानकार (सुपा २६१)।
'भेद वि [भेदिन] रसवाती चीजों का
मेल-मेल करनेवाला (पत्रम ७५, ५२)।

'भंत वि [वन्त] रस-युक्त (मग, ठा ५,
५—पत्र ३३३)। 'वई स्त्री [वती] खोई
(सुपा ११)। 'ल, 'लु वि [वन्त]
रसवाता (हे २, १५६; सुस ३, १)।

'वण पुं [वण] मय की दूरान (वव
११२)।

रस पुं न [रस] निव्यन्त, निबोध, सार (दसनि
३, १६)।

रसन न [रसन] जिह्वा, जीभ (एह १,
१—पत्र २९, भावा)।

रसणा स्त्री [रसना] १ मेखना, बाकी (पाम;
गडड, सि १, १८)। २ जिह्वा, जीभ (पाम)।
'ल वि [वन्त] रसनावाला (सुपा ५५६)।

रसह न [दे] गुल्ली-मूल, चूहे का मूल भाग
(दे ७, २)।

रसा स्त्री [रसा] दूधियो, घरती (हे १, १७७;
१८०, दुना)।

रसाउ पुं [दे, रसायुप] धनर, मीरा (दे
७, २; पाम)।

रसाय पुं [दे] ऊपर देवी (दे ७, २)।

रसायन न [रसायन] वैद्यक-प्रसिद्ध औषध-
विशेष (विवा १, ७, प्राप्ता १६२; मय)।

रसाल पुं [रसाल] धात्र-श्रुत, पाम का गाल
(सम्पत् १७३)।

रसाला स्त्री [दे, रसाला] माजिदा, वैद्य-
विशेष (दे ७, २; पाम)।

रसालु पुं [दे, रसालु] माजिदा, राज-
योग्य पाक-विशेष—दो पत्र पी, एक पत्र
मधु, भावा धात्र-रही, योग निरवा तथा
दस पत्र चीनी या छुट से बनता पाक (ठा
३, १—पत्र ११८, गुज २० टी, पत्र
२५६)।

रसि देवी रस्मि (प्राप्ता २६)।

रसिज वि [रसिज] १ रमण, रयिवा,
श्रीकीन (सि १, ६)। २ रम-गुज, रसमान
(सुपा २६; २१७; पत्रम ३१, ५६)।

रसिअ वि [रसित] १ रस-युक्त, रसवाला (पत्र २) । २ न. शब्द, धावाज (गठडः परह १, १) ।

रसिआ औ [दे. रसिआ] १ पुष, पीक, वण से निकलदा गंदा सफेद छून, छुनरातो में 'रतो' (धा १२; बिना १, ७; परह १, १) । २ छन्द-विशेष (विग) ।

रसिद पुं [रसेन्द्र] पारद, पारा (बो ३, ध्रु १५८) ।

रसिग देखो रसिअ = रसिक (पत्रा २, ३४) ।

रसिर वि [रसिर] धावाज करनेवाला (सण) ।

रसोइ (प्रप) शैतो रस-यई (भवि) ।

रसिस पुंऔ [रसिम] १ किरण, 'बरहै लमा-तियापौ प्रादह' केव रससीम' (पउम ८०, ६४; पाम, प्राज) । २ रसो, रण्डु (प्रास ११७) ।

रह भक्त [दे.] रहना । रहइ, रहए, रहै (विग; महा, सिरि ८६३), रहहु, रहह (सिरि ३५५, ३५३) ।

रह सक [रह_] ध्यागना, छोटना (कप्पु; विग) ।

रह पुं [रमस] जराहा, 'हुणो हुणो ते स-रहै डुहै' (सुभ १, ५, १, १८) । देखो रहस = रमस ।

रह पुंन [रहस] १ एकान्त, निर्जन; 'तल रहो रिग प्रागच्छ' (छिम ८२), 'लहु मे रहै भेद' (सुभा १७४, बजा १५२) । २ प्रच्छन्न, गोप्य (ठा ३, ४) ।

रह पुंन [रथ] १ मान-विशेष, स्वन्दन, 'बम्मल निज्याएपहे दहाणि' (सत १८, पाम, कुमा) । २ पुं. एण केन महवि (रथ्य) । 'कार पुं [कार] रथ निर्माता, वर्षपि, वड़ई (सुभा ४४४; कुप्र १०४; जर) । 'चरिया औ [चर्या] रथ को हौबना; 'दिसलपहारहचरियाहुचलो' (महा) । 'जता औ [याम] लखव-विशेष (सुभा ५४१; सुर १६, १६; सिरि १७३५) । 'गेजर न [नूपुर] मगर-विशेष (पउम २८, ७; इक) । 'गेजरचपयाल न [नूपुर-चपयाल] बैलास पर्वत पर स्थित एक नगर (पउम ५, १४, इक) । 'नेमि दु'

[नेमि] भगवान् नेमिनाथ का भाई (उत्त २२, ३६) । 'नेमिज न [नेमीय] उत्तप-ध्याल पुत्र का बाहसर्वा भयमन (उत्त २२) । 'मुसल पुं [मुसल] भारतवर्ष की एक प्राचीन लड़ाई राजा कोणिक और राजा केटक का संग्राम (अप ७, ६) । 'यार देखो 'कार (पाम) । 'रेण पुं [रेण] एक गाव, ग्राह चवरेण का एक परिमाण (इक) । 'वीरउर, 'वीरपुर न [वीरपुर] एक नगर (राज; विसे २५५०) ।

रहई म [रभसा] वेग से (स ७६२) ।

रहंस पुंऔ [रयाङ्ग] १ चक्रवाक पक्षी, चक्रवा (पाम; सुर ३, २४७; कुमा) । औ. 'भी (सुभा ४६८; सुर १०, १८३; कुमा) । २ न. चक्र, चरिया (पाम) ।

रहइ देखो अरहइ (ग ४६०; पि १४२) ।

रहण न [दे.] रहना, स्थिति, निवास (बर्मवि २१; रणए ६) ।

रहण न [रहण] १ व्याप, २ विपटित, विराम; 'रहणह' (विग) ।

रहमाण पुं [दे.] १ यवन मव का एक उत्प-वेता (मोह १००) । २ बुदा, बल्बा, परमेश्वर (ती १५) ।

रहस पुं [रभस] १ क्षीरसूक्ष्म, चरकण्डा (कुमा) । २ वेग । ३ हर्ष । ४ पूर्वपद का परिवार (संवि ७; गठड) ।

रहस देखो रहस = रहस्य; 'रहसामरहाणे' (उवा; बबोय ४२; सुभा ४५४) ।

रहसा म [रभसा] वेग से (गठड) ।

रहसस वि [रहस्य] १ गुप्त, गोपनीय (पाम; सुभा ३१८) । २ एकान्त में उपनय, एकान्त का हिं २, २०४) । ३ न उत्तर, तात्पर्य, भावार्थ (मोष ७६०; रमा १६) । ४ अपवाद-स्थान (रह ६) ।

रहसस वि [हस्य] १ लघु, छोट (विता १, ३—पत्र ८३) । २ एक मात्रावाला स्वर (उत्त २६, ७२) ।

रहसस न [हस्य] १ वायव, छोटई । 'मंत वि [मंत] सप्त, छोट (सुभ २, १, १३) ।

रहसिय वि [राहसिक] प्रच्छन्न, गुप्त (विता १, १—पत्र २) ।

रहाविअ वि [दे.] स्थापित, रखवाया हुआ (हम्मौर १३) ।

रहि वि [रथिन्] १ रथ से लवनेवाला योद्धा (उप ७२८ टो) । २ रथ को हाकिनेवाला (कुप्र २८०; ४६०, धर्मवि १११) ।

रहिय वि [रथिक] उपर देखो, 'रहिएह महारहियो' (उप ७२८ टी, परह २, ४—पत्र १३०; धर्मवि २०) ।

रहिय वि [रहित] परित्यक्त, वजित, सूय (उवा; दं ३२) ।

रहिय वि [रहित] एकाकी, श्रकेला (वव १) ।

रहिय वि [दे.] रहा हुआ, स्थित (धर्मवि २२) ।

रहु पुं [रहु] १ सूर्य बंश का एक स्वनाम-स्थात राजा (उत्तर ५०) । २ पुं. ब. रघु-बंश में उत्पन्न क्षत्रिय (सि ४, १६) । ३ पुं. श्रीरामचन्द्र; 'ताहे कयंतसरिसी देह रहु रिबुबले विठ्ठी' (पउम ११३, २१) । ४ कालिदास-प्रणीत एक संस्कृत काव्य-ग्रन्थ (गठड) । 'आर पुं [कार] रघुवंश मानक संस्कृत काव्य-ग्रन्थ का कर्ता, कवि कालिदास (पउम) । 'गाह पुं [नाथ] १ श्रीरामचन्द्र (सि १४, १६; पउम ११३, ५५) । २ लक्ष्मण (सि १४, ६२) । 'तजय पुं [तनय] बही धर्म (सि २, १; १४, २६) । 'तिलय पुं [तिलक] श्रीरामचन्द्र (सुभा २०४) । 'तम पुं [तत्तम] बही धर्म (पउम १०२, १७६) । 'पुंगव पुं [पुंगव] बही (सि ३, ५; हं २, १८८; ३, ७०) । 'सुज पुं [सुत] बही (सि ५, १६) ।

रहो देखो रह = रहस्य (कप, मौर) । 'कम्म न [कर्मन] एकात्म-व्यापार (ठा ६—पत्र ४६०) ।

रा सक [रा] देना, दान करना । राइ (धात्वा १४६) ।

रा भक्त [रे] शब्द भरना, धावाज करना । राइ (प्रास ६६) ।

रा भक्त [री] श्लेष करना, चिरचना । राइ (पट) ।

राजल औ [दे] प्रियपुत्र, मालवागमी (दे ७, १) ।

राइ देखो रत्ति (हे २, ८८; काप्र १८६; महा; पइ) । २ चमरेन्द्र की एक श्रम-महिणी (ठा ५, १—पत्र ३०२) । ३ ईशानेन्द्र के सोम रोकपान की एक पटरानी (ठा ४, १—पत्र २०४) । 'भक्त न [भक्त] रानिभोजन, राइ ये सत्ता (सुपा ४८५) । 'भोजन न [भोजन] वही भयं (सम ३६, ४५) । देखो राई = रात्रि ।

राइ की [राजि] पत्ति, ओणो (पाप्र, बीप) । २ देखा, लमीर (कम्म १, १६, सुपा १६७) । ३ राई, राज-संघर्ष, एक प्रकार का मसाला (हे ६, ८८) ।

राइ वि [रागिन्] राग-युक्त, रागवाला (दमा ६) । बी. 'णी (महा) ।

राइ वि [राजिन्] शोभनेवाला (निबू १६) । राई देलो राय = राजन् (हे २, १४८; ३, ५२, ५३; कुमा) ।

राइअ की [राजित] शोभित (हे १, ५६; कुमा, ६, ६१) ।

राइअ वि [राजिक] राजि-सम्बन्धी (उत्त २६, ४६; बीप, पडि) ।

राइआ की [राजिका] राई का गाछ, 'गोलाएईम बच्छे बबजलो राइआइ पत्ताई' (गा १७१ अ) । देखो राइगा ।

राईव दु [राजेन्द्र] बडा राजा (कुमा) ।

राईविअ दु [रात्रिनिद्व] रात-दिन, बहोरात्र (मग, भाषा, कप्य, पत्र ७८, सम २१) ।

राइक वि [राजनीय] राज-सम्बन्धी (हे २, १४८, कुमा) ।

राइगा की [राजिगा] राई-राज-सहरो (कुप्र ४५) ।

राइगिअ वि [राजिक] १ चारित्रवाला, संयमी (पंचा १२, ६) । २ पर्याय से प्रयेष्ठ, साधुत्व-प्राप्ति की भवत्वा से बडा (सम ३७; ५८, कप्य) ।

राइगिअ वि [राजकल्प] राजा के गमान वैभववाला, धीमत् (सुप्र १, २, ३, ३) ।

राइण्य दु [राजन्य] राजवंशीय, सविय राइस (सम १५१; कप्य; बीप; सम) ।

राइसेऊण संठ. बीरवर (नंवेदिपणक यमिण पादिसिउत्ता येनमिनी बुद्धि विपयक) ।

राइल वि [रागिन्] राम-युक्त (देवेन्द्र २७८) ।

राई की [राजी] देखो राइ = राजि (मठ; सुपा ३४; मासु ६२; पत्र २५६) ।

राई की [रात्रि] देखो राइ = रात्रि (पाप्र; छाया २—पत्र १३०; बीप; सुपा ४६१; कय) । 'दिवस न [दिवस] रात्रिदिवस, अहर्निश (सुपा १२७) ।

राईमई की [राजीमनो] राजा उग्रसेन की पुत्री भीरु भगवान् नेमिनाथ की पत्नी (पडि) । राईय न [राजीय] नमन, पत्र (पाप्र, हे १, १८०) ।

राईसर दु [राजेस्वर] १ राजाओं के मातृक, महाराज । २ युवराज (बीप; उवा; कप्य) ।

राउत्त दु [राजपुत्र] राजपूत, सविय (भाक ३०) ।

राउल दु [राजकुल] १ राजाओं का मूय, राज-समूह (कुमा; हे १, २६७, भाप्र) । २ राजा का बंरा (पइ) । ३ राज-गृह, दरबार; 'ए ईविस्वस राजन्स दूरेण पणामी कीरदि, जल वनणावि एवे विईविज्जेति' (मोह ११) । देखो राओल ।

राउलिय वि [राजकुलिक] राजकुल-सम्बन्धी (सुप्र २, १६) ।

राउल देखो राइक (भाक ३५) ।

राएसि दु [राजपि] १ श्रेष्ठ राजा । २ श्रमि-मुल्य राजा, सयताया भूपति (ममि ३६; विक्क ६८, मोह ३) ।

राओ भ [रात्री] राव में (छाया १, १—पत्र ६१, सुपा ४६७; कप्य) ।

राओल देखो राउल ।

'तो किंति बाणं सयवेहि वित्तियं क्विपाणिउत्तहि ।

किंति गयं रामोते एत मुत्तुत्तति भणिकण ॥ (धर्मि १४०) ।

राग देखो राय = राग (वण, सुपा २४१) ।

रागि देखो राइ = रात्रि (पत्र ११७, ४१) ।

राय देखो राहव । 'परिणी की [गृहिणी] लोता, जामनी (पत्र ४६, ४७) ।

राय [पू. ६] देखो राय = रात्रि (हे रायि) ४, २२२; ३०४, भाप्र) ।

राज देखो राय = राजन् (हे ४, २६७; वि १६८) ।

राजस वि [राजस] रजो-गुण-प्रधान, 'राज-सचित्तस्य पुरस्स' (कुप्र ४२८) ।

राडि की [राडि] बूम, चित्ताहट (मुख २, १५) ।

राडि की [दे. राडि] संग्राम, लड़ाई (दे ७, ४) ।

राडा की [राडा] १ निभूया (धर्मि १०१८, कप्य) । २ भयता (वज्जा १८) । ३ बंगाल का एक प्रान्त । ४ बंगाल देश की एक नगरी (कप्य) । 'इत्त वि [वत्त] भग्य धात्वा, 'गंजणएहिमी धम्मो राडाइताण संपवड' (वज्जा १८) । 'मणि पुं [मणि] बाच-मणि (उत्त २०, ४२) ।

राण सक [वि + नय] विशेष नमना । राणइ (?) (भावा ४४६) ।

राण दु [राजन्] राणा, राजा (पंड. सिरि ११४) ।

राणय दु [राजक] १ राणा, राजा (ही १५, सिरि १२३; १२५) । २ छोटा राजा (सिरि ६८६, १०४०) ।

राणिआ की [रासिना, 'ही] रानो, राज-राणी ३ पत्नी (कुमा ३; धावक ६३ टी. सिरि १२५; २६७) ।

राम सक [रमय] रमण करना । इ. रामेयव्य (मत्त ८५) ।

राम पुं [राम] १ श्री रामचन्द्र, राजा बरार का बडा पुत्र (गा १५, उप ३ ३७५; कुमा) । २ परमुखा (कुमा १, ३१) । ३ सविय परिवारन-विशेष (बीप) । ४ बलदेव, बलभद्र, बागुदेव का बडा भाई (राम) । ५ वि. रमने-वाला (उत्त ३ ३७५) । 'कण्ड पुं [कण्ड] राजा येणिक का एव पुत्र (रात्र) । 'कण्डा की [कण्डा] राजा येणिक की एक पत्नी (संव २२) । 'गिरि पुं [गिरि] परत-विशेष (पत्र ४०, १६) । 'गुत्त पुं [गुत्त] एक राजपि (सुप्र १, १, ४, २) । 'देव पुं [देव] श्रीरामचन्द्र (पत्र ४४, २६) । 'पुत्त पुं [पुत्त] एक धैर मूनि (पत्र २) । 'पुतो की [पुता] धर्माग्या नगरी (ही ११) । 'रक्षित प्रा की [रक्षित]

ईशानेन्द्र की एक पटरानी (ठा ८—पत्र ४२६; इक) ।

रामणिज्जअ न [रामणीयक] रमणीयता, सौन्दर्य (विक्र २८) ।

रामा छो [रामा] १ छो, महिला, भारी (वंदु ५०, कुमा, नाम, बजा १०६, उप ३२७ थे) । २ नवयें जिनदेव की माता (सम १५१) । ३ ईशानेन्द्र की एक पटरानी (ठा ८—पत्र ४२६; इक) । ४ छत्र-विशेष (पिंग) ।

रामायण न [रामायण] १ बाल्मीकि-कृत एक सङ्कलित काव्यग्रन्थ (पत्रम २, ११६, महा) । २ रामचन्द्र तथा रावण की लड़ाई (पत्रम १०५, १६) ।

रामिअ वि [रमित्त] रमण करामा हुआ (गा ५६, पत्रम ८०, १६) ।

रामेसर पुं [रामेश्वर] दक्षिण भारत का एक हिन्दू तीर्थ (सम्मल ८५) ।

राय भक [राज] समबन्ध, शोभना । रायइ (हि ५, १००) । कः राय, रायमाण (वप्य) ।

राय देखो रा = रै । रायइ (प्राक् ६६) ।

राय पु [राग] १ प्रेम, प्रीति (प्राप् १८०) । २ मत्सर, द्वेष, 'न पेनराइज' (दिवेन्द्र २७८) । ३ रँगना, रंजन । ४ बल्लेन । ५ झटुराग । ६ राजा, राजसि । ७ चन्द्र, बाद । ८ लाल बर्ण । ९ लाल रँगवाली वस्तु । १० वस्तु भावि स्वर (हे १, ६८) ।

राय पुं [राज्य] १ राजा, नर-पति, नरेश (भाषा. उवा. था २७, सुपा १०३) । २ चन्द्र, चन्द्रमा (था २७, हम्मीर ३, धर्मवि ३) । ३ एक महाप्रह (सुज २०) । ४ इन्द्र । ५ क्षत्रिय । ६ दत्ता । ७ कुवि, भवित्र । ८ श्रेष्ठ, उत्तम (हे ३, ५६, ५०) । ९ इन्द्र, प्रभितामा (ये ३, ६) । १० दृढ विशेष (पिंग) । ११ इअ वि [कीय] राज-संघी (प्राक् ३५) । १२ उत पुं [पुत्र] राज-पुत्र, राज-कुमार (सुर ३, ११५) । १३ उल देखो राजल (हे १, २६७, कुमा; पद. प्राप्. ममि १ ५) । १४ ईअ देखो ईअ (माट—शु १०५) । १५ सुल देखो, 'उल (महा) ।

'केर, 'क वि [कीय] राज-संघी (हे २, १५८, कुमा, पद) । 'गिह न [गृह] मगव देश की प्राचीन राजधानी, जो आजकल 'राजगिर' नाम से प्रसिद्ध है (ठा १०—पत्र ४७७, उवा. श्रंत) । 'गिह छो [गृही] वही भयें (तो ३) । 'चपय पुं [चम्पक] वृक्ष-विशेष, उत्तम चम्पक-वृक्ष (था १२) । 'धम्म पुं [धर्म] राजा का कर्तव्य (माट—उत्तर ५१) । 'धानी छो [धानी] राज-नगर, राजा का मुख्य नगर, जहाँ राजा रहता हो (माट—चैत १३२) । 'पसी छो [पत्नी] रानी (सुर १३, ५, सुपा ३७५) । 'बसेणीय वि [प्रसीय] एक जैन भ्रामन-ग्रन्थ (पय) । 'पह पुं [पय] राज-मार्ग (महा. माट—चैत १३०) । 'पिंड/पुं [पिण्ड] राजा के घर की मिला—आहार (सम ३६) । 'पुत्त देखो 'उत्त (पत्रम) । 'पुर न [पुर] नगर-विशेष (पत्रम १, ८) । 'पुरिस पुं [पुरुष] राजा का मादमी, राज-नर्मचावे (पत्रम २८, ४) । 'भगन पु [भार्ग] राजपथ, सड़क (प्रीत. महा) । 'भास पु [भाप] भाग्य विशेष, बरखटी (था १८, संवोच ५३) । 'राय पु [राज] राजाभी का राजा, राजेश्वर (सुपा १०७) । 'रिसि देखो रापसि (एणा १, ५—पत्र १११, उप ७२८ टी, कुमा, सण) । 'रुम्पर पुं [रुस] वृक्ष-विशेष (मीष) । 'लच्छी छो [लक्ष्मी] राज-वैभव (प्रवि १११, महा) । 'ललिय पुं [ललित] भाठवें बनेदेवे के पूर्व जन्म का नाम (सम १५३) । 'वट्टय न [वार्त्तक] राज-सवयो वार्त्ता मसूह (हे २, ३०) । 'वही छो [वही] सदा विशेष (पण १—पत्र ३६) । 'वाडिआ, 'वाही छो [पाटिया, 'पाटा] चतुरंग शैल्यन्म-नखण, राजा की चतुरवि सेना के सुपा सवारी (कुमा, सुपा ११६, १२०; सुपा २२२) । 'सद्दुल पुं [सार्दूल] चम्पकती राज, श्रेष्ठ राजा (सम १५२) । 'सिद्धि पुं [सिद्धि] नगर-सेठ (मवि) । 'सिरी छो [सी] राज-सदमी (वे १, १३) । 'सुअ पुं [सुत] राज-पुत्र (वप्य. उप ७२८ टी) । 'सुअ पुं [शुक] उत्तम गोता (वप्य ७२८,

टी) । 'सुअ पुं [सूय] यत्न विशेष, 'पिहने-हमाइयेहें रायसुए भाससेहणसुमेहे' (पत्रम ११, ४२) । 'सेण पुं [सेन] छत्र-विशेष (पिंग) । 'सेहर पुं [शेखर] १ महादेव, शिव । २ एक राजा (सुपा ५२६) । ३ एक कवि, कर्पूरमंजरी का कर्ता (वप्य) । 'हंस पुं [हंस] १ उत्तम हंस पक्षी । २ बहुत राजा (सुर १२, ३५, गा ६२५, गड्ड, सुपा १३६, रंभा, भवि) । छो, 'सी (सुपा ३३५, माट—रत्ना २३) । 'हर न [गृह] राजा का महल (पत्रम ८२, ८६, हे २, १५५) । 'हाणी देखो 'धाणी, (सम ८०, पत्रम २०, ८) । 'हिराय, 'हिराय पु [अधिराज] राजाभी का राजा, चक्रवर्ती राजा (काव; सुपा १०५) । 'हिय पुं [धिप] वही प्रथम (सुपा १०५) ।

राय देखो राय = राव (सि ६, ७२) ।

राय पुं [रै] चटक, गौरैया पक्षी (वे ७, ५) ।

राय पुं [राय] रावि, रात (भाषा) ।

राय देखो राय = राव ।

रायेंछुअ पुं [दे] १ वेतल या बॅल का रायेंयु पेठ (प्राप्. २७, १५) । २ दुः-खप (हे ७, १५) ।

रायंस पुं [राजांस] राज-यसना, दाय का व्याधि (भाषा) ।

रायसि वि [राजांसिन्] राज-यसनावाला, दाय का रोगी (भाषा) ।

रायगइ स्त्री [रै] जलीना, जोन (वे ७, ५) ।

रायमाल पुं [राजार्गल] पञ्चोत्पन्न प्रह-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८) ।

रायणिअ देतो राइणिअ = रासिन् (उज, भोषमा २२३) ।

रायणी स्त्री [राजादनी] सिसो, सिरली का पेठ (पत्रम ५३, ७६) ।

रायण देखो राइण (ठा ३, १—पत्र ११५; उप ३५६ टी) ।

रायनीइ स्त्री [राजनीति] राजा की शासन करने की रीति (पय ११७) ।

रायमहया स्त्री [राजोमविता] देवो राई-मई (पुत्र १) ।

रायस देखो राजस (घ ३, वे १, १५) ।

रायाण देखो राय = राजन्, (हे १, ५६, पङ्.) ।

राळ } पुंन [राळ, °क] धान्य विशेष,
राळ्या } एक प्रकार की वस्तु (सूत्र २, २,
राळय } ११, डा ७—पत्र ४०५, पिङ
१६२, वजा ३४) ।

राळा ली [दे] प्रियय, मालवांगी (दे ७, १) ।

राय सक [दे] धार्ष्ट करना। भवि, रावेहिंति
(विस्ते २४६ टी) ।

राय देखो रज = रज्य । रावेह (हे ४, ४६) ।
हेङ, रायिउ (कुमा) ।

राय सक [रायय] पुकारना, माह्वान करना।
वह, रायेल (धीव) ।

राय पु [राय] १ रोला, बलकल (पात्र) ।
२ पुकार, मावाज (सुपा ३४८, कुमा) ।

रावण [रावण] १ एक स्वनाम प्रसिद्ध
लका-पति (पि ३६०) । २ गुल्म-विशेष
(वणए १—पत्र १२) ।

राविज वि [रविज] रेंगा हुमा (दे ७, ५) ।

राविज वि [दे] मालावित (दे ७, ५) ।

रास } पु [रास, °क] एक प्रकार का वृक्ष,
रासाग } जिसमें एक दूसरे का हाथ पकड़कर
माथेसे-माथे घीर गान करते-करते मड़लाना
करना होता है (दे २, ३८, पात्र, वजा
१२२, सम्मत १४१, धर्मवि ८१) ।

रासम देखो रासह (सुर २, १०२) ।

रासय देखो रासाग (सुर १, ४६, सुपा ५०,
४३३) ।

रासह पुषी [रासम] गर्दन, गदहा (पात्र,
पात्र, रमा) । ली. ही (कास) ।

रासागदिअय न [रासानन्दितक] छन्द-
विशेष (मजि १३) ।

रासालुद्वय पु [रासालुद्वयक] छन्द विशेष
(मजि १०) ।

रासि देखो रसि (संति १७) ।

रासि पुंषी [राशि] १ समूह, ढग, डेर (सोप
४०७, धीव, सुर २, ५, कुमा) । २
ज्योतिष्य-मंडप में पादि बाह्य राशि
(पिचार १०६) । ३ राशि-विशेष (डा ४,
३) ।

राह पुं [राध] १ वैशाख मास । २ वसन्त
श्रुत (से १, १३) । ३ एक जैन आचार्य
(उप २८५; सुस २, १५) ।

राह पुं [दे] १ दमित, प्रिय । २ वि.
निस्तार । ३ शोभित । ४ सनाय । ५ पलित,
रफेद केशवाला (दे ७, १३) । ६ कचिर,
—सुन्दर (पात्र) ।

राहय } पु [राधय] १ द्युवृंश में उत्पन्न
राहय } (उत्तर २०) । २ श्रीरामचन्द्र (से
१२, २२, १, १३, ४७) ।

राहा ली [राधा] १ कुन्दावन की एक प्रधान
गोपी, श्रीकृष्ण की पत्नी (वजा १२२,
पिग) । २ राधाविष में रखी जाती पुतली
(उप पु १३०) । ३ शक्ति-विशेष । ४ कर्णों
का पालन करनेवाली माता (प्राङ ४२) ।
“मडव पुं [मण्डप] जहाँ पर राधाविष
किया गया वह स्थान (सुपा २६६) । “वेह
पु [वेध] एक तरह की वेध क्रिया, जिसमें
बलानार धूमती पुतली की चाम चबु बीधी
जाती है (उप ६३५, सुपा २५५) ।

राहिआ } ली [राधिका] ऊपर देखो (पा
राही } ८६; हे ४, ४४२, प्राङ ४२) ।

राहु पु [राहु] १ वह विशेष (डा २, ३—पत्र
७८, पात्र) । २ कृष्ण पुत्रल विशेष (सुरज
२०) । ३ विक्रम की पहली शताब्दी के एक
जैन आचार्य (पत्र ११८, ११७) ।

राहुहय न [राहुहय] जिसमें सूर्य घीर चन्द्र
का ग्रहण हो वह नमन (वव १) ।

राहेअ पु [राधेय] राधा-पुत्र, कर्ण (गडङ्ग) ।

रि म [दे] संभाषण-सूचक धम्मय (तंडु ५०,
५२ टी) ।

रि सक [रि] गमन करना । कर्म, भजनए
(विस्ते १३६६) ।

रिअ सक [री] गमन करना । रिअ रिपति,
रिप (सूत्र २, २, २०, सुपा ४४५, उत्त
२४, ५) । वह, रिअंठ (पत्र २८, ४) ।

रिअ सक [प्र + रिअ] प्रवेश करना, पठना ।
रिअह (हे ४, १८३, कुमा) ।

रिअ न [रिअ] १ गमन, ‘पुरयो रिअ सोह-
माणे’ (मा) । २ राय (अप ८, ७) ।

रिअ वि [दे] सूर, बाटा हुमा (पङ्) ।

रिअ देखो सउ (हे १, १४१, कुमा, पत्र
१४१) ।

रिअ वि [रिअ] १ सत्त, ‘सोपा (सुपा
३४६) । २ न, विशेष पराई गायाना मित
वस्तु (पत्र २००) । ‘सुन पुं [सुन] नय-
विशेष (विस्ते २२३१; २६०८) । देखो उउउ ।

रिअ पु [रिअ] शत्रु वैरो, दुश्मन (सुर २,
६६, कुमा) । ‘महण पु [मथम] राजस-
वंध का एक राजा (पत्र ५, २६३) ।

रिअ ली [रिअ] वेद का नियत धरार-
पादनाला धरा । ‘वेद न पुं [वेद] न धे-
धय (सुपा १, ५, कम्प) ।

रिअण न [रिअण] संपण, गति, बाल (पत्रम
२५, १२) ।

रिअि वि [रिअि] चलनेवाला, ‘गिदाव-
रंजि हृदयए’ (गिदयु वर रिली हृदयए)
(पिङ ४७१) ।

रिग देखो रिग । रिगह, रिगए (हे ४, २५६
डि, पङ्, पिग) । वह, रिगट (हाय
१४६) ।

रिगण न [रिगण] चलना, संपण (पत्र २) ।
रिगणी ली [दे] बल्लो-विशेष, बण्टकारिका,
गुजराती में ‘रिगणी’ (दे २, ४, उर २, ८) ।

रिगिअ न [रिगिअ] भ्रमण (दे ७, ६) ।

रिगिअ न [रिगिअ] १ रंगना, कण्ठर की
तर्ह हाथ के बल चलना । २ पुत्र-वन्दन का
एक शेष (हुमा २४) ।

रिगिसिया की [दे] बाध विशेष (राज) ।

रिछ (मर) देखो रिच्छ = शस (मवि) ।

रिछोली की [दे] पक्ति, धोली (हे ७, ७,
सुर ३, ३१, विस्ते १४३६ टी, पात्र, वेधप
४४, सम्मत १८८, धर्मवि १७, मवि) ।

रिछी ली [दे] बन्धाप्राप्ता, कन्या की तर्ह का
पट्टा हूय पाच्छादन-वस्त्र (दे ७, ५) ।

रिछ वि [दे] स्तोक, योग (दे ७, ६) ।

रिछ देखो रिअ = रिअ (भावा, पात्र, पत्रम
८, ११८, सुपा ४२२, वट १६) ।

रिअिअ वि [दे] शठिउ, सदा हुमा (दे ७,
७) ।

रिअय धन [रिअय] बनना । वह,
‘गिरिअ धनिदमास्तो संतरिअे रिअयंजो
समिगमन’ (सुर ६७) ।

रिक्ख वि [दे] १ बुद्ध, बूढ़ा (दे ७, ६) ।
परिणाम, बुद्धता (दे ७, ६) ।

रिक्ख पुं [श्रेष्ठ] १ भानू, स्वपद प्राणि-
विशेष (हे २, १६) । २ न. नक्षत्र (प्रायः,
सुर ३, २६; ८, ११६) । ३ पद पुं [पथ]
आकाश (सुर ११, १७१) । ४ राय पुं
[राज] बालरवंश का एक राजा (पठम
८, २३४) ।

रिक्खण न [दे] १ उपसम्म, अभिषम । २
वपन (दे ७, १४) ।

रिक्खा देवो रेहा = रेहा (भोष १७६) ।

रिग १ धक [रिग्ग] १ रंगना, धीरे-धीरे
रिगा १ श्रीर जमीन से रगड़ खाते हुए चलना ।
२ प्रवेश करना । रिगह, रिगह (हे ४, २५६;
टि) ।

रिगा पुं [दे] प्रवेश (दे ७, ५) ।

रिच कीन. देखो रिज = श्रच् (पि ५६,
११८) । की. १ चा (नाट—रत्ना १८) ।

रिच्छ वि [दे] बुद्ध, बूढ़ा (दे ७, ६) ।

रिच्छ देखो रिक्प = कक्ष (हे १, १४०,
२, १६, पाप) । १ दिव्य पुं [धिपि]
जाम्बवान्, राम आ एक सेनापति (से ४,
१८, ४४) ।

रिच्छलभ पुं [दे] भानू, शीघ्र (दे ७, ७) ।

रिजु देखो रिज = श्रच् (भा) ।

रिजु देखो रिज = श्रजु (मिसे ७८४) ।

रिज देखो रिज = री । रिजह (भावा) ।

रिजु देखो रिज = श्रजु (हे १, १४१, संति
१७; कुमा) ।

रिज्म भक [श्रेष्ठ] १ बटना । २ रीमना,
धुरी होना । रिज्मह (मवि) ।

रिद्ध पुं [दे. अरिष्ट] १ मरिष्ट, दुःखित (पद्,
पि १४२) । २ दैत्य विशेष (पद्; से १,
३) । ३ बाण, गोमा (दे ७, ६; शाया १,
१—पत्र ६२, पद्, पाप) । ४ नेमि पुं
[नेमि] वारिचं जिनदेव (पि १४२) ।

रिद्ध पुं [रिद्ध] १ देव-विशेष, रिद्ध नामक
विमान का निवासी देव (शाया १,
८—पत्र १५१) । २ देवताय श्रीर प्रम-
थन नामक द्रवों के सोनपात्र (ठा ४,
१—पत्र १६८) । ३ एक हथ वंश, जिसको

श्रीकृष्ण ने मारा था (पद् १, ४—पत्र
७२) । ४ पति विशेष (पठम ७, १७) ।
५ न. रत्न-विशेष (विद्य ६१५; भोष,
शाया १, १ टी) । ६ एक देव-विमान (सम
३५) । ७ पुन. फल-विशेष, रोड़ा (उत्त ३४,
४, सुख ३४, ४) । ८ पुत्री की [पुत्री]
कच्छापती-विजय की राजधानी (ठा २, ३—
पत्र ८०, इक) । ९ मणि पुं [मणि] श्याम
रत्न-विशेष (सिरि ११६०) ।

रिद्धा की [रिद्धा] १ महाकच्छ विजय की
राजधानी (ठा २, ३—पत्र ८०; इक) । २
पवित्री नरक-भूमि (ठा ७—पत्र ३८८) ।
३ मरिष्ट, दाह (राज) ।

रिद्धाभ न [रिद्धाभ] १ एक देव-विमान
(सम १४) । २ लौकालिक देवों का एक
विमान (पत्र २६७) ।

रिद्धि की [रिद्धि] १ खश्न, उत्तवार (दे ७,
६) । २ अश्रुम । ३ पुं. रत्न, विवर
(सति ३) ।

रिद्ध सक [मण्डय] विप्रुषित करना । रिद्ध
(पद्) ।

रिण न [श्रेण] १ करना या कर्ज, उधार
लिया हुआ धन (गा ११३, कुमा, प्रास ७७) ।
२ जल, पानी । ३ दुर्ग, किता । ४ दुर्ग भूमि ।
५ आवश्यक कार्य, फल । ६ कर्म (हे १,
१४१, प्रास) । देखो अण = श्रेण ।

रिणज वि [श्रेणित] बरजदार, भयमलं
(कुप्र ४३६) ।

रिते भ [श्रुते] विवाय, मिता (पिठ ३७०) ।
रित वि [रित] १ खाली, शून्य (से ७,
११; गा ४६०, पर्ववि ६, भोषमा १६६) ।
२ न. विवर, भयान (उत्त २८, ३३) ।

रिपूडित वि [दे] शाहित, मडवाया हुआ
(दे ७, ८) ।

रित्य न [रित्य] धन, द्रव्य (उप ५२०,
पाप ४ ६०, सुख ४, ६, महा) ।

रिद्ध वि [श्रेद्ध] श्रद्धि संपन्न (शाया १,
१, उवा. भोष) ।

रिद्धि वि [दे] धन, पात्रा (दे ७, ६) ।

रिद्धि पुं श्री [दे] मण्डू, राशि (दे ७, ६) ।

रिद्धि की [श्रेद्धि] १ संघात, समुद्रित, वैभर
(पाप पिपा २, १, कुमा, सुर २, १६८;

प्रास १२; ६२) । २ बुद्धि । ३ देव-विशेष ।
४ भोषवि-विशेष (हे १, १२८; २, ४१;
पंचा ८) । ५ छन्द-विशेष (मिग) । ६ म, ह
वि [मत्] समुद्र, श्रद्धि-सम्पन्न (भोष
६८४, पठम ५, ५६, सुर २, ६८, सुपा
२२३) । ७ सुंदरी की [सुन्दरी] एक
पणिक-कन्या (उप ७२८ टी) ।

रिपु देखो रिपु (कप) ।

रिप्प न [दे] छ, पीठ (दे ७, ५) ।

रिभिव न [रिभित] १ एक प्रकार का नाव्य
(ठा ४, ४—पत्र २८५) । २ स्वर का
घोलन । ३ वि. स्वर घोलन से युक्त (राज,
शाया १, १—पत्र १३) ।

रिमिण वि [दे] रों की आपतवाता (दे ७,
७; पद्) ।

रिरंसा की [रिरसा] रमण की बाह,
मैथुनच्छा (मज्ज ७६) ।

रिरिअ वि [दे] लीन (दे ७, ७) ।

रिद्ध भक [दे] शोमना । वद्ध. रिद्धंन (मवि) ।
रिद्ध देखो रिड = रिपु (उत्त १८, ४१;
४४, ५०, से १३८, उप ७ १२१) ।

रिसभ पुं [श्रेषभ] १ स्वर-विशेष (ठा
रिसह ५—पत्र ३६३) । २ महोराम का
प्रथमसत्तौ सुहृत् (सम ५१; सुज १०,
१३) । ३ संवत् अस्ति-द्वय के ऊपर का
बनयावार वेष्टन-पट्ट, 'रिसहो व होह पट्टो'
(कीयस ४६) । देखो उसभ (मीन. हे १,
१४१, सम १४६, वम २, १६; सुपा
२६०) ।

*रिसह पुं [श्रेषभ] श्रेष्ठ, उत्तम (कुमा) ।

रिसि पुं [श्रेषि] मुनि, संत, तापु (भोष,
कुमा, सुपा ३१, मवि १०१, ठा ७६८
टी) । ४ वाय पुं [पान] मुनि हवा (उप
४६६) ।

रिद्ध स [प्र + विश] प्रवेश करना, बैठना ।
रिद्ध (पद्) ।

री १ भक [री] जाना, चलना । रीयह,
रीअ १ रीयह, रीयवे, रीयवा (भावा, सुम १,
२, २, ५; उत्त २४, ७) । २ भूरा. रीयत्पा
(भावा) । ३ रीयत्, रीयमाण (भावा) ।

रीह की [रीति] प्रचार, र्वन, पदति; 'ते जलं
निर्द्वंद्वं निचं नयनरीहं' (पर्ववि ३२,
मण्डू) ।

रीड सक [मण्डय्] भलंकृत करना। रीड
(हे ४, ११५)।

रीडण न [मण्डन] भलंकरण (कुमा)।

रीड छीन [दि] भवणएन, भनदर (दे ७,
८)। छी. ड (पाप, धम्म ११ टी; चंवा
१, ८; वृह १)।

रीण वि [रीण] १ सरिह, सुख। २ पीडित
(नत २)।

रीर भक [राज्] शोमना, चमकना, दीपना।
रीर (हे ४, १००)।

रीरिअ वि [राजित] शोमित (कुमा)।

रीरी जी [रीरी] घातु-विशेष, पीठल (कुप्र
११, सुपा १४२)।

रु जी [रुज्] रोग, भीमारी. 'गर (१ रु)
जवसरगो' (तंडु ४६)।

रुअ भक [रुअ] रोना। रुअह (पद्, संधि
३६, प्राक् ६८; महा)। भवि. रोष्य (हे ३,
१७१)। वड. रुअं, रुअंत, रुयमाण (गा
२२६; ३७६, ४००; सुर २, ६६, ११२;
४, १२६)। रंड. रोचूय (कुमा, प्राक्
३४)। हे. रोचुं (प्राक् ३४)। रु. रोचब्ज
(हे ४, २१२; से ११, ६२)। प्रयो. र्वावेह
(महा), र्वावति (पुष्क ४४७)।

रुअ न [रुत] रुद्ध, मावाज (से १, २८,
छाया १, ११, पव ७१ टी)।

रुअ देखो रुअ = रूप (इक)।

रुअ देखो रुअ = (दे) शीप)।

रुअनी जी [रुती] बल्ली-विशेष (संबोध
४७)।

रुअस देखो रुअस (इक)।

रुअग पुं [रुचक] १ कान्ति, प्रभा (पएह
१, ४—पत्र ७८, शीप)। २ पर्वत-विशेष,
'मनुत्तमो होह पव्वमो स्यगो' (दीव)। ३
क्षीप-विशेष (दीव)। ४ एक समुद्र (गुज
१६)। ५ एक विमानावास—देव-विमान
(देवेन्द्र १३२)। ६ न. इन्द्रो का एक
ग्रामाण्य विमान (देवेन्द्र २६३)। ७ तल-
विशेष (उत ३६, ७६, गुज ३६, ७६)।
८ रुचक पर्वत का पीचवां कूट (दीव)। ९
निपय पर्वत का घाटवां कूट (इक)। 'प्यम
न [प्रभ] महाहिमवंत पर्वत का एक कूट

(छा २, ३)। 'वर पुं [वर] १ क्षीप-
विशेष (गुज १६)। २ पर्वत-विशेष (पएह
२, ४—पत्र १३०)। ३ समुद्र-विशेष। ४
रुचकवर समुद्र का एक ग्रन्थिवाता देव (जीव
३—पत्र ३६७)। 'वरमद् पुं [वरमद्]
रुचकवर क्षीप का ग्रन्थिवाक एक देव (जीव
३—पत्र ३६६)। 'वरमहाभद् पुं [वर-
महाभद्] वही भयं (जीव ३)। 'वरमहावर
पुं [वरमहावर] रुचकवर समुद्र का एक
ग्रन्थिवाता देव (जीव ३)। 'वरावभास पुं
[वरावभास] १ क्षीप-विशेष। २ समुद्र-
विशेष (जीव ३)। 'वरावभासभद् पुं
[वरावभासभद्] रुचकवरवभास क्षीप का
एक ग्रन्थिवाता देव (जीव ३)। 'वरावभास-
महाभद् पुं [वरावभासमहाभद्] वही
भयं (जीव ३)। 'वरावभासमहावर पुं
[वरावभासमहावर] रुचकवरवभास
नामक समुद्र का एक ग्रन्थिवाता देव (जीव
३)। 'वरावभासवर पुं [वरावभासवर]
वही भयं (जीव ३—पत्र ३६७)। 'वरोद
पुं [वरोद] समुद्र-विशेष (गुज १६)।
'वरोभास देखो वरावभास (गुज १६)।
'वई जी [वती] एक इन्द्राणी (छाया
२—पत्र २२२)। 'वेद पुं [वेद] समुद्र-
विशेष (जीव ३—पत्र ३६६)।

रुअगिंद पुं [रुचकेन्द्र] पर्वत-विशेष (सम
१३)।

रुअगुत्तम न [रुचगुत्तम] कूट-विशेष
(इक)।

रुअण न [रोदुन] रुद्ध, रोना (संबोध ४)।

रुअय देखो रुअग (सम ६२)।

रुअरइआ जी [दे] उलछा (दे ७, ८)।

रुआ जी [रुज्] रोग, भीमारी (जव, घर्षतं
५६८)।

रुआविअ वि [रोदित] रूपाया हुपा (गा
३८६)।

रुद जी [रुचि] १ कान्ति, प्रभा, तेज (सुर
७, ४; कुमा)। २ धनुएन, प्रेम (जो ५१)।
३ धावक (प्राप् १६६)। ४ रुद्ध, कनि-
साप। ५ शोभा। ६ दुःखता, छाते की
दृच्छा। ७ मोरोचना (पद्)।

रुइअ वि [रुचित] १ धर्मोप, पसंद (सुर ७,
२४३; महा)। २ पुन. विमानावास-विशेष,
एक देव-विमान (देवेन्द्र १३२)।

रुइअ देखो रुण = रुदित (स १२०)।

रुइर वि [रुचिर] १ सुन्दर, मनोरम (पाप)।
२ दीप, कान्ति-मुक्त (तंडु २०)। ३ पुन.
एक विमानेन्द्रक, देवविमान-विशेष (देवेन्द्र
१३१)।

रुइर वि [रोदित्] रोनेवाला। जी. 'री (वि
५६६, गा २१६ म)।

रुइल वि [रुचिर, 'ळ] १ शोमन, सुन्दर
(श्रीप, छाया १, १ टी, तंडु २०)। २ दीप्त,
चमकता हुपा (पएह १, ४—पत्र ७८; सुम
२, १, ३)। ३ पुन. एक देव-विमान (सम
३८)।

रुइल न [रुचिर, रुचिमत्] एक देव-
विमान (सम १५)। 'कंन न [कान्त]
एक देव-विमान (सम १५)। 'कूड न [कूट]
एक देव-विमान (सम १५)। 'उमय न
[अज] देवविमान-विशेष (सम १५)।
'प्यभ न [प्रभ] एक देवविमान (सम
१५)। 'लेस न [लेश्य] एक देवविमान
(सम १५)। 'वणन न [वणं] देवविमान-
विशेष (सम १५)। 'सिंग न [सिंह]
एक देवविमान (सम १५)। 'सिद्ध न
[सुष्ट] एक देवविमान (सम १५)। 'रत्त
न [रिच] एक देवविमान (सम १५)।

रुइल्लुत्तरभडिसग न [रुचिरोत्तरावतंत]
एक देवविमान (सम १५)।

रुंच रुच [रुद्ध] रई से सनके बीज की
प्रत्यय करने की क्रिया करना। वड. रुंचन
(विठ ५७४)।

रुंचण न [रुञ्जत] रई से बपास की प्रत्यय
करने की क्रिया (विठ ५८८)।

रुंचणी जी [रे] पट्टी, दाते या पत्थर-पत्थर
(दे ७, ८)।

रंज भक [रु] भावान करना। रंजद (हे ४,
५७; पद्)।

रंजग पुं [दे. रुद्ध] दूध, पेड़, गाढ़ 'दुआ
महीछा वज्झा रोवगा रंजगाई ध' (द्वगनि
१)।

रंजिय, न [रवण] शब्द, भावाज, गर्नना (स ४२०)।

रंज दोनो रंज। रंज (हे ४, ५७, पद)। वक्र. रंज (स ६२, पदम १०५, ५५, गठ)।

रंजणया श्री [दे] भवजा, भनादर (पिड २१०)।

रंजणिया श्री [दे रवणिका] रोदन क्रिया (एगमा १, १६—पद २०२)।

रंजिअ न [रा] एगारव, भावाज 'रंजिअ' अलिबिरम' (पाम कुमा)।

रंज पुन [रुण्ड] विना सिर का पद, वक्रव. 'पथिया य मुवरा' (कुप्र १३५, गठ. भवि सण)।

रंज पु [दे] आधिक, कितव, जूमाही (दे ७, न)।

रंजिअ वि [दे] सकल (दे ७, न)।

रंज वि [हे] १ विपुल, प्रभुर (दे ७, १४, गा ४०२, गुमा २६३; वजा १२८, १६२)। २ विद्या, विस्तीर्ण (हिमे ७००, स ७०२, पव ६१, मीव)। ३ स्तूल, मोटा, पीन (पाम)। ४ सुतर, बाचाल (दे ७, १४)।

रंजी श्री [दे] दिल्लीगैता, लम्बाई (वजा १६४)।

रंजिअ [रुध] रोचना, अटकाना। वक्र (हे ४, १३३; २१८)। कर्म. रंजिअ, रुमद, रुमय (हे ४, २४५, कुमा)। वक्र. रंजव (कुमा)। कवच. रुचमत, रुचभाषण, रुचमंत (पदम ७३, २६, से ४, १७, भवि)। क. रुचिअव (भवि ५०)।

रंजिअ वि [रुद्र] रोका हुमा (कुमा)।

रंज पुन [दे] १ लवा, मृदम दाल (गा ११४; १२०, वजा ४२)। २ उल्लिखन (वजा ४२)।

रंजण न [रोपण] रोपणा, वपन कराना, वापन (पिड १६२)।

रंज दोनो रंज (पि २०८)।

रंज दोनो रंज। रंज (हे ४, २१८, प्राप्र)। वक्र. रुमत (पि ५३५)। क. रंजिअज्य (से ६, ३)।

रंजण न [रोधन] रोध, अज्याव, भररोध (पयह १, १०, गुप्र ३७७, गा ६६०)।

रंजय वि [रोधक] रोकनेवाला (स ३८१)। रुमाविअ वि [रोधित] रुमावा हुमा, नंद क्रिया हुमा (भा २७)।

रुमिय वि [रुद्र] रोका हुमा (हेस ६६, गुमा १२७)।

रुम न [दे] बैल आदि की तरह शब्द कराना (प्रास २६)।

रुमिणी देखो रुमिणी (पि २७७)।

रुमल पुन [युस] वेद, गाढ़, पादप (एगमा १, १ हे २, १२७, प्राप्र, वन, कुमा, की २७, प्रति ६, प्रास १६८), 'ल्लखई, ल्लखि' (पि ३५८)। २ समय, विरति (सूप्र १, ४, १, २५)। 'मूल न [मूल] वेद की जड़ (कठ)। 'मूलिय पु [मूलिक] वृक्ष के मूल में रहनेवाला वानप्रस्थ (मीप)। 'सत्य न [शास्त्र] वनस्पति-शास्त्र (स ३११)। 'रुवेद पु [रुवेद] वही भय (विसे १७५)।

रुमल अर देखो (पद)। रुमिलम पुत्री [युक्षस्त्र] वृक्षपन (पद)। रुम वि [रुण] भग्न, नागा हुमा (पाम, गठ, ५६६)।

रुच } सक [दे] पीमना। रुचति, रुचति, रुच } भूमा, रुचिमु, रुचिमु, भवि, रुचिस्तति, रुचिस्तति (भावा २, १, ६, ५)।

रुचिर देखो रुचिर (दे १, १४६)।

रुच प्रक [रुच] रुचना, पसव पडना। रुचद, रुचए (वजा १०६, महा, सिर १०६, भवि)। वक्र. रुचचत, रुचचभाषण (भवि, उर १४३ ठे)।

रुच सव [दे] ग्रीहि आदि को यज्ञ में निरुप कराना। वक्र. रुचचत (एगमा १, ७—पद ११७)।

रुचि देखो रुचि = रुचि (कपू)।

रुच देखो रुचर (समि १५)।

रुचि देखो रुचि (हे २, ५२०, कुमा)।

रुज न [रोदन] रुदन, रोना, वीहएहा छीसावा, एणरछमी, रुजगगिरव गेभ' (गा ८५३)।

रुमक देखो रुंघ। रुमद (हे ४, २१८)।

रुमक देखो रुंघ = रुंघ।

रुमक देखो रुंघ।

रुमिअ वि [रुद्र] रोका हुमा (कुमा)। रुद्रिया श्री [दे] रोटी (सहि ३६)।

रुद्र वि [रुद्र] रोप युक्त (उवा, सुर २, १२१)। २ पुं. नखावास-विशेष (वेदेन २८)।

रुमरुन न [दे] कएण रुन्दन (भवि)।

रुमरुन अक [दे] कएण रुन्दन कराना।

रुमरुन (वज्जा ५०, भवि)। वक्र.

रुमरुन (भवि)।

रुमरुन देखो रुमरुन (पदम १०५, ५८)।

रुमरुमिय वि [दे] कएण रुन्दनवाला (पदम १०५, ५८)।

रुमन न [रुद्रिव] रोदन, रोना (हे १, २०६; प्राप्र, गा १८)।

रुने देखो रिते (वव ४)।

रुथिणी देखो रुथिणी (पद)।

रुदिअ देखो रुण (नाट—मालती १०६)।

रुद पु [रुद्र] १ महादेव, शिव (सम्मत १४५, हेका १६)। २ शिव मूर्ति-विशेष (एगमा १, १—पद ३६)। ३ जित, वैद, जित भगवान् (पदम १०६, १२)। ४ पर-माधामिक देखो की एक जाति (सम २८)। ५ गुप विशेष, एक वासुदेव का पिता (पदम २०, १८२; सम १५१)। ६ उद्योतिष्क देव विशेष (ठा २, ३—पद ७७, सुप्र १०, १२)। ७ भग-विद्या का जानकार गुरु (विचार ४८४)। ८ वि. भयंकर, भय-जनक (सम्मत १४५)। देखो रोह = रुद्र।

रुद देखो रोह = रोह (सम ६)।

रुदकर पु [रुद्राक्ष] वृक्ष-विशेष (पदम ५३, ७६)।

रुदानी श्री [रुद्राणी] शिव पत्नी, दुर्गा (समु १५४)।

रुद्र वि [रुद्र] रोका हुमा (कुमा)।

रुद्र दोनो रुद्र (हे २, ८०)।

रुद्र देखो रुण (सुर २, १२६)।

रुप वक्र [रोपय] रोचना, बोना, 'सह्यार-अरियदेते रुपमि पत्तुर पुन वन्दे' (पमंवि ६७)।

रुप न [रुम] १ काचन, घोना। २ सोहा। ३ वस्तु। ४ नामावर (प्राप्र)। ५ चाँदी, रजत (नं ४)।

रूप न [रूप्य] चांदी, रजत (श्रीप. सुर ३, ६; कपू)। 'कूड पु' [कूट] खिम पर्वत का एक कूट (राज)। 'कूलप्पवाय पु' [कूलप्रपात] इह विशेष (ठा २, ३—पत्र ७३)। 'कूला ओ' [कूला] १ एक महानदी (ठा २, ३—पत्र ७२, ८०, मम २७, इक)। २ एक देवी। ३ खिम पर्वत का एक कूट (ज ४)। 'मय वि' [मय] कंदो का बना हुआ (णाय १, १—पत्र ५२, कुमा)। 'भास पु' [भास] एक ज्योतिष्क महा-ग्रह (ठा २, १—पत्र ७८)। रूप वि [रूप्य] रूपा का, चांदी का (णाय १, १—पत्र २४, वर ८, ४)।

रूपय देखो रूप = रूप्य, 'रूपयं रयय' (पात्र. महा)।

रूपि पु [रुक्मिन्] १ कौरिख्य मगर का एक राजा, रुक्मिणी का भाई (णाय १, १६—पत्र २०६, कुमा, वमि ४२)। २ कुणाल देव का एक राजा (णाय १, ८—पत्र १४०)। ३ एक वर्षा-वर्षत (ठा २, ३—पत्र ६६, सम १२, ७२)। ४ एक ज्योतिष्क महा-ग्रह (ठा २, ३—पत्र ७८)। ५ देव विशेष (ज ४)। ६ रुक्मि पर्वत का एक कूट (ज ४)। ७ वि. सुखैवाला। = चांदी वाला (हे २, ५२, ८६)। 'कूड पुन' [कूट] खिम पर्वत का एक कूट (ठा २, ३; सम ६१)।

रूपिणी ओ [रुक्मिणी] १ द्वितीय वासुदेव की एक पटरणी (पत्रम २०, १८६)। २ श्रीकृष्ण वासुदेव की एक भग्न-महिषी (पत्रम २०, १८७, पवि)। ३ एक सौष्ठव पत्नी (मुपा ३१४)।

रूपोभास पु [रूप्यायभास] १ एक महाग्रह (गुज २०)। २ वि. रजत की तट्ट चमकता (ज ४)।

रुभत [रु] देखो रुध।

रुमिणी देखो रूपिणी (वह)।

रुम्ह सक [रुप्ताय] स्नान करना, मलिन करना। 'प रुम्हाइ जत' (सि ३, ४)।

रु पु [रु] १ मुग विशेष (पत्रम ६, ५६, पएह १, १—पत्र ७)। २ यक्षस्तति विशेष

(पएह १—पत्र ३५)। ३ एक भनायं देव। ४ एक भनायं मनुष्य-जाति (पएह १, १—पत्र १४)।

रुसु भक [रुसु] १ खूब भ्रातृजन करना। २ बारबार चित्ताना। वड, रुसुत (स २१३)।

रुल भक [रुल] सेटना। वड, रुलत, रुलित (पएह १, ३—पत्र ४५, 'पडियग-पडियुय रुलउवरसुहृदयडसयाडल' (धर्मवि ८०)।

रुलुलुल भक [रु] नीचे सिस लेना, नि स्वास झलना। वड, रुलुलुलत (मवि)।

रुव देवो रुज = रुद। रुवह (हे ४, २२६; प्राक ६८, सति ३६, मवि, महा), रुवामि (कुप्र ६६)। कर्म, रुवव, रुविणवह (हे ४, २४६)।

रुवण न [रुवण] रोना (उप ३१५)।

रुणणा ओ. ऊपर देखो (श्रीयमा १०)।

रुवणा ओ [रुवणा] भारोपण, प्रायश्चित्त का एक भेद (वव १)।

रुनिल देखो रुल (श्रीप)।

रुन देखो रुज = रुद। रुवह (सति ३६, प्राक ६८)।

रुसा ओ [रुप] रोप, गुल्मा (कुमा)।

रुसिय देखो रुसिय (पत्रम ५५, १५)।

रुद भक [रुद] १ जलन होना। २ सक. भाव को सुखाना। रुदह (नाट)। कर्म. 'जेण विनापिद्वीवि खग्गाइयहारे इपीए पकडालोयएणएण पणट्टेयएण तण्डला नेव रुग्गइ ति' (स ४१३)।

रुह वि [रुह] जलन होनेवाला (भाचा)।

रुहण व [रुहण] निवारण (वव १)।

रुह-रुह भक [रु] मन्द मन्द बढ़ना, 'वामं वि सुति रुह-रुह वाट' (मवि)।

रुह-रुह पु [रु] उलटना (मवि)।

रुज न [रु रुत] रुई, तुल (दे ७, ६, कप, पव ८४, देवेन्द्र ३३२, धर्मसं ६८०, मा सवोय ३१)।

रुज पु [रुप] १-२ पूर्णभद्र श्रीर विशिष्ट नामक इन्द्र का एक लोचपाल (ठा ४, १—पत्र १६७)। ३ छात्रवि, भ्रातार (मा १३२)। ४ वि. सद्य, तुल्य (दे ६, ४६)।

'कत पुं [कान्त] १-२ पूर्णभद्र श्रीर विशिष्ट नामक इन्द्र का एक लोचपाल (ठा ४, १)। 'कंता ओ [कान्ता] १ भूतानन्द नामक इन्द्र को एक भग्न-महिषी (णाय २—पत्र २५२)। २ एक विष्णुमारी महतरिका (राज)। 'पपम पु' [पपम] पूर्णभद्र श्रीर विशिष्ट नामक एक लोचपाल (ठा ४, १—पत्र १६७, १६८)। 'पपमा ओ [प्रमा] १ भूतानन्द इन्द्र की एक भग्न-महिषी (णाय २—पत्र २५२)। २ एक विष्णुमारी देवी (ठा ६—पत्र ३६१)। देखो रुज = रूप (गड)।

रुसस पु' [रुपांश] १-२ पूर्णभद्र श्रीर विशिष्ट नामक एक लोचपाल (ठा ४, १—पत्र १६७, १६८)।

रुससा ओ [रुपांश] १ भूतानन्द इन्द्र की एक भग्न-महिषी (णाय २—पत्र २५२)। २ एक विष्णुमारी देवी (ठा ६—पत्र ३६१)।

रुसग पु [रुपक] १ रुपया (हे ४, रुसय ४२२)। २ पु. एक गृहत्व (णाय २—पत्र २५२)। ३ रुपा देवी का सिंहासन (णाय २—पत्र २५२)। 'बडिसस न

[निससन] रुपा देवी का भवन (णाय ३)। 'सिरी ओ [श्री] एक गृहत्व ओ (णाय २)। 'वई ओ [वती] भूतानन्द नामक इन्द्र की एक भग्न-महिषी (णाय २)। देखो रुसय = रूपक।

रुसरुसा [रु] देखो रुसरुसा (पड)।

रुसा ओ [रुपा] १ भूतानन्द इन्द्र की एक भग्न-महिषी (णाय २—पत्र २५२)। २ एक विष्णुमारी देवी (ठा ४, १—पत्र १६८)।

रुसामाला ओ [रूपमाला] छंद विशेष (सिप)।

रुसार वि [रूपकार] मूर्ति बनानेवाला, 'मोत्तुपजोगय जोगे दल्लि एहं करेइ रुसारो' (विये १११०)।

रुसावई ओ [रूपवती] एक विष्णुमारी देवी (ठा ४, १—पत्र १६८)।

रुड वि [रुड] १ परंपरागत, दृढ सिद्ध। २ प्रसिद्ध, 'रुडरुमेण सजे नपट्टिया तप जवविट्ठा' (उप ६४८ टी)। ३ प्रयुज, संकुचत (पाय)।

रुढ वि [रुढ] उगा हुआ, उत्पन्न (दे ७, ३५)।

रुढि की [रुढि] परम्परा से बनी जाती प्रसिद्धि. 'पोसहसहोस्तीए एव पव्वाणुवाक्को भणियो' (सुपा ६१६; कपू)।

रूप पुं [रूप] पशु, जानवर (मुच २००)।

रुअ = रूप (ठा ६—पत्र ३६१)।

रूपि पुं [रूपि] सौनिक, कसाई (मुच २००)।

रुइय न [दे] उत्पन्नता, उत्पन्न (पाथ)।

रुव पुंन [रुव] १ आहति, आकार (खाया १, १; पाथ)। २ सीन्ध, सुन्दरता (कुमा-ठा ४, २; प्राहु ५७, ७१)। ३ वण, युक्त आदि रंग (मौप: ठा-१, २, ३)। ४ मूर्ति (विसे १११०)। ५ स्वभाव (ठा ६)। ६ शब्द, नाम। ७ श्लोक। ८ माटक आदि इय काय (हे १, १४२)। ९ एक की संख्या, एक (कम्म ४, ७७; ७८; ७९; ८०; ८१)। १०—११ लनवाला, बणवाला (हे १, १४२)। १२—देखो रुअ, रूप = रुव।

'कंता देखो रुअ-कंता (ठा ६—पत्र ३६१; इक)। 'जनय पुं [यक्ष] परंपाठक (व्यव ० भा० गा० ६१५)। 'घार वि [घार] रूप-धारी: 'जलयरमक्कणएणं भणो-मचछाईरुवधारेणं' (बा ६)। 'प्यभा देखो रुअ-प्यभा (इव)। 'मंत देखो 'वंत (पत्रम १२, ५७; ६१, २६)। 'पई की [वती] १ नूतनान्द नामन इन्द्र की एक धर्म-महिषी (ठा ६—पत्र ३६१)। २ मुख्य नामक भूदेवी की एक धर्म-महिषी (ठा ४, १—पत्र २०४)। ३ एक दिग्गमावे महत्तरिवा (ठा ५)। 'वंत, 'सिम वि [वन्] रूपवाला, मुख्य (था १०, उवा: ठा ५ ३३२; सुपा ४७४; उव)।

रुयग पुंन [रूप] १ शय्या (उर ३ २८०; धम्म ८ थे, कुन ४१४) २ साहिब-असिद्ध एव धर्मकार (सुर १, २६; विसे ६६६ थे)। देखो रुअग = रुयन।

रुयग पुंन [रूप] १ शय्या (उर ३ २८०; धम्म ८ थे, कुन ४१४) २ साहिब-असिद्ध एव धर्मकार (सुर १, २६; विसे ६६६ थे)। देखो रुअग = रुयन।

रुयग पुंन [रूप] १ शय्या (उर ३ २८०; धम्म ८ थे, कुन ४१४) २ साहिब-असिद्ध एव धर्मकार (सुर १, २६; विसे ६६६ थे)। देखो रुअग = रुयन।

रुयग पुंन [रूप] १ शय्या (उर ३ २८०; धम्म ८ थे, कुन ४१४) २ साहिब-असिद्ध एव धर्मकार (सुर १, २६; विसे ६६६ थे)। देखो रुअग = रुयन।

रुयग पुंन [रूप] १ शय्या (उर ३ २८०; धम्म ८ थे, कुन ४१४) २ साहिब-असिद्ध एव धर्मकार (सुर १, २६; विसे ६६६ थे)। देखो रुअग = रुयन।

रुयग पुंन [रूप] १ शय्या (उर ३ २८०; धम्म ८ थे, कुन ४१४) २ साहिब-असिद्ध एव धर्मकार (सुर १, २६; विसे ६६६ थे)। देखो रुअग = रुयन।

रुयग पुंन [रूप] १ शय्या (उर ३ २८०; धम्म ८ थे, कुन ४१४) २ साहिब-असिद्ध एव धर्मकार (सुर १, २६; विसे ६६६ थे)। देखो रुअग = रुयन।

रुयग पुंन [रूप] १ शय्या (उर ३ २८०; धम्म ८ थे, कुन ४१४) २ साहिब-असिद्ध एव धर्मकार (सुर १, २६; विसे ६६६ थे)। देखो रुअग = रुयन।

रुयग पुंन [रूप] १ शय्या (उर ३ २८०; धम्म ८ थे, कुन ४१४) २ साहिब-असिद्ध एव धर्मकार (सुर १, २६; विसे ६६६ थे)। देखो रुअग = रुयन।

रुयग पुंन [रूप] १ शय्या (उर ३ २८०; धम्म ८ थे, कुन ४१४) २ साहिब-असिद्ध एव धर्मकार (सुर १, २६; विसे ६६६ थे)। देखो रुअग = रुयन।

रुयग पुंन [रूप] १ शय्या (उर ३ २८०; धम्म ८ थे, कुन ४१४) २ साहिब-असिद्ध एव धर्मकार (सुर १, २६; विसे ६६६ थे)। देखो रुअग = रुयन।

रुयग पुंन [रूप] १ शय्या (उर ३ २८०; धम्म ८ थे, कुन ४१४) २ साहिब-असिद्ध एव धर्मकार (सुर १, २६; विसे ६६६ थे)। देखो रुअग = रुयन।

रुयग पुंन [रूप] १ शय्या (उर ३ २८०; धम्म ८ थे, कुन ४१४) २ साहिब-असिद्ध एव धर्मकार (सुर १, २६; विसे ६६६ थे)। देखो रुअग = रुयन।

रुयग पुंन [रूप] १ शय्या (उर ३ २८०; धम्म ८ थे, कुन ४१४) २ साहिब-असिद्ध एव धर्मकार (सुर १, २६; विसे ६६६ थे)। देखो रुअग = रुयन।

रुयग पुंन [रूप] १ शय्या (उर ३ २८०; धम्म ८ थे, कुन ४१४) २ साहिब-असिद्ध एव धर्मकार (सुर १, २६; विसे ६६६ थे)। देखो रुअग = रुयन।

रुवसिणी देखो रुवमिणी (पट्)।

रुवा देखो रुआ (इक)।

रुवि वि [रुविन्] रूपवाला (भावा, भग, स ८३)।

रुवि पुंकी [दे] मुख्य-विशेष, अर्क-बुद्ध, आक का पेठ (पण १—पत्र ३२, दे ७, ६)।

रुस अक [रुप्] गुस्ता करना। रुसद, रुसए (उव; कुमा: दे ४, २३६; प्राहु ६८, पट्)। कर्म, रुसिज्जह (हे ४, ४१८)।

हेह, रुसिउं, रुसेउं (हे ३, १४१; वि ५७३)। क. रुसिअव्व, रुसेयव्व (गा ४६६; पण २, ५—पत्र १५०; सुर १६, ६४)। प्रयो, सं. रुसविअ (कुमा)।

रुसण न [रोपण] १ रोप, गुस्ता (गा ६७५; दे ४, ४१८)। २ वि. गुस्ताखोर, रोप करने-वाला (सुल १, १४, सबोध ४८)।

रुसिअ वि [रुट्] रोप-युक्त (सुल १, १३; १६)।

रे अ [रे] इन धर्मों का सूचक अव्यय—१ पहिहास। २ अधिरोप (सति ४७)। ३ संभाषण (हे २, २०१; कुमा)। ४ बाली (सति ३८)। ५ तिरस्कार (पत्र ३८)।

रेअ पुं [रेअस] बीय, शुक्र (राज)।

रेअव सक [मुच] छोड़ना, त्यागना। रेअ-वड (हे ४, ६१)।

रेअविअ वि [मुक] छोड़ा हुआ, व्यक्त (कुमा: दे ७, ११)।

रेअविअ वि [दे. रेवि] सखीकृत, रूप किना हुआ, खाली किया हुआ (दे ७, ११; पात्र, वे ११, २)।

रेआ की [रे] १ वन। २ सुरक्ष, सोना (पट्)।

रेइअ वि [रेविअ] रिक किया हुआ (वे ७, ३१)।

रंकिअ वि [दे] १ प्राप्ति। २ लीन। ३ श्रोत्रि, सक्ति (दे ७, १४)।

रेअर पुं [रेअर] 'रे' शब्द, 'रे' की धावाज (पत्र ३८)।

रेट्टि देखो रिट्टि (सति ३)।

रेणा की [रेणा] महर्षि प्लुतम की एक यक्षिनी, एक जैन साध्वी (कण: पटि)।

रेणु पुंकी [दे] बद्ध, बद्ध (दे ७, ६)।

रेणु पुंकी [रेणु] १ रज, धूली (कुमा)। २ पराग (स्वन ७६)।

रेणुया की [रेणुका] भोषवि-विशेष (पण १—पत्र ३६)।

रेम पुं [रेफ] १ 'रे' अवसर, रकार (कुमा)। २ वि. वुट्। ३ धम्म, नीच। ४ क्रूर, निर्दय। ५ क्षण, गरीब (हे १, २३६; पट्)।

रेरिअ अक [रायाज्] भतिशय शोभना। बह. रेरिअअण (खाया १, २—पत्र ७८; १, ११—पत्र १७१)।

रेस सक [प्लायय्] सरबोर करना। बह. रेख्त (कुमा)।

रेखि की [दे] रेत, मोत, प्रवाह (राज)।

रेखिनक्खस पुं [रेवतीनअत्र] धर्म नाग-हस्ती के शिष्य एक जैन मुनि (एवि ५१)।

रेवइय पुं [रेवतिक] स्वर-विशेष, रैवत स्वर (भाणु १२८)।

रेवइय न [रेवतिक] एक उद्यान का नाम (कण)।

रेवइआ की [रेवतिक] वृत्त-मह विशेष (सुल २, १६)।

रेवई की [रेवती] १ बलदेव की की (कुमा)। २ एक आधिका का नाम (ठा ६—पत्र ४५५; खन १५४)। ३ एक मन्त्रन (सम ५७)।

रेवई की [दे. रेवती] मातुका, देवी (दे ७, १०)।

रेवंत पुं [रेवन्त] सूर्य का एक पुत्र, देव-विशेष. 'रेवंतएणुअ इव मत्सकितोर मुलक्खणियो' (पर्मवि १४२; सुपा ५६)।

रेवजिअ वि [दे] उपानय (दे ७, १०)।

रेवण पुं [रेवण] प्पच्छि-नाचण नाम, एक साधारण शब्द-ग्रथ या कर्ता (धर्मवि १४२)।

रेवय = [दे] प्रणाम, नमस्कार (दे ७, ६)।

रेवय पुं [रेवन] गिरानार पर्वत (खाया १, ५—पत्र ६६; पत्र. पुत्र १८)।

रेवय पुं [रेवन] स्वर विशेष (भाणु १२७)।

रेवलिआ की [दे] वायुवाहन, वृल ना धावत (दे ७, १०)।

रेवा की [रेवा] नदी-विशेष, नर्मदा (गा ५७८; पात्र; कुमा: प्राणु १७)।

रेसगिआ } जो [दे] १. करोटिका. एक
रेसणी } प्रकार का कास्-मालन (पाप,
दे ७, १५) । २ ग्रति-निकोच (दे ७, १५) ।
रेसम्मि देखो रेसम्मि, 'जो उण सदा-रहिमो
वाणें देइ जसकिरिरेसम्मि' (स १२७) ।
रेसि (प्रप) देखो रेसिं (दे ४, ४२५; सण) ।
रेसिअ वि [दे] छिन्न, काटा हुआ (दे ७,
६) ।
रेसिं (प्रप) नीचे देखो (दे ४, ४२५) ।
रेसिमि प्र. निमित्त, लिए, बास्ते, 'बंसण-
नाणचरिसाण एस रेसिमि मुयसत्यो' (पंचा
१६, ४०) ।
रेह अक [राज] दीपना, रोमना, चमकना ।
रेहइ, रेहए (हे ४, १००; पावो १५०;
महा) । बह, रेहंत (कण्ठ) ।
रेहा जो [रेखा] १ चिह्न-विशेष, लकीर
(प्रोप ४८६; गडउ, सुपा ४१; नजा ६४) ।
२ पंक्ति, श्रेणी (कण्ठ) । ३ छन्द-विशेष
(विण्ठ) ।
रेहा जो [राजना] शोभा, वीप्ति (कण्ठ) ।
रेहिअ न [दे] छित्त पुच्छ, कटी हुई प्रँख
(दे ७, १०) ।
रेहिअ वि [राजित] शोभित (सुर १०,
२८६) ।
रेहिर वि [रेखावन्] रेखावाला (हे २,
१५६) ।
रेहिर } वि [राजित] शोभनेवाला (सुर
रेहिल } १, ५०; सुपा ५६, 'नवरे नमरे-
हिले' (उप ७२८ दी) ।
रेहिल देखो रेहिर = रेखावन् (उप ७२८
दी) ।
रोअ देखो रुअ = रु. रोअइ (संति ३६, प्राक
३८) । बह, रोअंत, रोयमाण (गा ५४६,
उप १२८; सुर २, २२६) । हेह, रोअं
(संति ३७) । २ रोअचअ, रोअअव्य (सि
३, ४८; गा ४८८, हेगा ३३) ।
रोअ देखो रुअ = रु. रोअइ, रोयए (भग,
उप), 'रोएइ न पहुणें तें नेव मुणेंति सेवगा
निचवं' (रमा) । बह, रोयंत (गा ६) ।
रोअ सक [रोचय्] १ रुचि करना । २
पचन करना, चाहना । रोयइ, रोएणि, रोएहि
(उत्त १८, ३३, भग) । संह, रोयइचा
(उत्त २६, १) ।

रोअ सक [रोचय्] निरुण्य करना । रोयए
(दस ५, १, ७७) ।
रोअ पुं [रोच] रुचि,
'हुकरुरोया विजसा बाला
अखियेपि नेव दुज्जति ।
वो मज्झिमवुद्धोणं हियएमेसो
पयामो मे' (विजय २६०) ।
रोअ पुं [रोग] भ्रामय, बीमारी (पाप) ।
रोअग वि [रोचक] १ रुचि-जनक । २ न,
सम्यक् का एक भेद (संबोध ३५, सुपा
५५१) ।
रोअण न [रोइन] रोना, रुदन (दे ५, १०;
कुर २३५; २८६) ।
रोअण पु [रोचन] १ एक विग्रहस्त-भूट
(इक) । २ न, मोरोचन (गडउ) ।
रोअणा जो [रोचना] मोरोचन (सि ११,
४५; गडउ) ।
रोअणिआ जो [दे] कानिनी, काइन (दे ७,
१२; पाप) ।
रोअत्तअ देखो रोअ = रु ।
रोआविअ वि [रोदिन] खताया हुआ (गा
३५७, सुपा ३१७) ।
रोह वि [रोमिन्] रोगवाला, बीमार (गडउ) ।
रोइ देखो रुइ = रुचि, 'अवि सुदरेवि विण्णे
हुकरुरोई कलहमाई' (पिट ३२१) ।
रोइअ वि [रोचित] १ पसंद आया हुआ
(भग) । २ चिकीपित (ता ६—पत्र ३५५) ।
रोइर वि [रोदिह] रोनेवाला (गा ३८६,
पद) ।
रोंकण वि [दे] रंक, गरीब (दे ७, ११) ।
रोंच सक [रिप्] पीसना । रोचइ, (हे ४,
१८५) ।
रोकअ वि [दे] शोभित, प्रति सिक्त (पद) ।
रोकणि } वि [दे] १ श्रुंयो, श्रृणवाला ।
रोकणिअ } २ नृपस, निर्दय (दे ७, १६) ।
रोग पुं [रोग] १ बीमारी, व्याधि (उवा-
पणह १, ४) । २ एक ब्राह्मण-नातीय व्याक
(उप २३६) ।
रोगि वि [रोमिन्] बीमार (हुगा ५७६) ।
रोगिअ वि [रोगि, 'ठ'] ऊपर देखो (मुख
१, १४) ।

रोमिगिआ जो [रोमिगिआ] रोग के कारण
सी जाती बीमारी (ता १०—पत्र ४७३) ।
रोमिल देखो रोमि (प्रामा) ।
रोघस वि [दे] रंक, गरीब (दे ७, ११) ।
रोच देखो रोंच । रोचइ (पद) ।
रोजक पुं [दे] शरय, पशु-विशेष, गुजरातो में
'रोम' (दे ७, १२; विवा १, ४; पाप) ।
रोट्ट पुं [दे] १ सडुन पिट्ट, चावल आदि का
आटा, पिसान, गुजरानो में 'लोट' (दे ७,
११; शीघ २६१; ३७४, पिड ४४, बह १) ।
रोट्टग पुं [दे] रोटी, रोठ (महा) ।
रोड सक [दे] १ रोकना, बटकाना । २
भगार करना । ३ हेरात करना । रोडिं (स
५७५) । कवक, रोडिज्जंत (उप १ ३३) ।
रोड न [दे] घर का मान, गृह-व्यमाण (दे
७, ११) ।
रोडी जो [वि] १ इच्छा, प्रसिद्धता । २ ब्रह्मो
की शक्तिका (दे ७, १५) ।
रोचअव देखो रुअ = रु ।
रोह पुं [रोइ] १ अश्वेराज का पहला मुहूर्त
(सम ११) । २ एक नृपति, सुतोय बलदेव
और बाहुदेव का पिता (ता ६—पत्र ४४७) ।
३ बलंकार-शास्त्र-प्रसिद्ध नव रत्नों में एक रत्न
(प्रणु) । ४ वि, बाण, भयंकर, भीषण
(ता ४, ४, महा) । ५ न व्यान-विशेष,
हिंसा प्रादि क्रूर कर्म का चिह्नन (प्रीन) ।
रोह पुं [कइ] अश्वेराज का पहला मुहूर्त
(सुज १०, १३) । देखो रुइ = रु ।
रोह वि [दे] १ कृणितता । २ न, मत (दे
७, १५) ।
रोम पुं [रोमन्] लोम, बाल, रोंमा (प्रोप;
पाप, गडउ) । 'कून पुं' [कूण] लोम का
छिद्र (णायो १, १—पत्र १३; सुर २,
१०१) ।
रोम न [रोम] खान में होता तवण (दस
३, ८) ।
रोमंच पुं [रोमाच] रोंमों का खटा होना,
भय वा हर्ष से रोंमों का उठ जाना, मुनक
(हुगा, बाल, ग्रति, सण) ।
रोमंचइअ } वि [रोमाचिन्] मुनकित,
रोमंचिअ } जिमके रोम खड़े हुए हों वह
(पत्रम ३, १०४, १०२, २०३; पाप,
अवि) ।

रोमंथ पु [रोमंथ] गुरुराता, चबाई हुई वस्तु का पुन चबाना, पाघुर (सि ६, ८७, पात्र, सण)।

रोमंथ } अक [रोमंथय] चबाई हुई
रोमंथाअ } चीज का फिर से चबाना, पुन-
राभा, जुगली करना। रोमंथ (हे ४, ४३)।
वह. रोमंथाअमाण (चाह ७)।

रोमाग } पु [रोमक] १ धनायें देना विशेष,
रोमाय } रोम देश (पव २७४)। २ रोम
देश में रहनेवाली मनुष्य-जाति (पणह १,
१—पत्र १४)।

रोमय पु [रोमज] पति विशेष, रोम की
बाबलाला पत्नी (जी २२)।

रोमराह ओ [दे] जपन, नितम्ब (दे ७, १२)।

रोमलयासय न [दे] वेद, उदर (दे ७, १२)।

रोमस वि [रोमश] रोम-कुत्त, रोमवाला
(दे १, ११, पात्र)।

रोमसल म [दे] जपन, नितम्ब (दे ७, १२)।

रोर पु [रोर] बीबी नरक भूमि का एक
नरकावास (ठा ४, ४—पत्र २६५)।

रोर वि [दे] एक, गरीब, निर्धन (दे ७, ११,
पात्र, सुर २, १०५, सुवा २६६)।

रोर पु [रोर] सातवीं नरक भूमि का एक
नरकावास (देवैद २४, इक)।

रोरुअ पु [रोरक, रौरक] १ रत्नप्रभा नरक-
भूमि की का दूसरा नरकेन्द्रक—नरकावास
विशेष (देवैद ३)। २ रत्नप्रभा का तेरहवां
नरकेन्द्रक (देवैद ५)। ३ सातवीं नरकभूमि की
का एक नरकावास—नरक स्वाम (ठा ५,
३—पत्र ३४१ सम ५८ इक)। ४ चौथी
नरक भूमि का एक नरकावास (ठा ४, ४—
पत्र २६५)।

रोल पु [दे] १ कलह, कगडा (दे ७, १५)।
२ रत्न, कोटाहल, कलकल आवाज (दे ७,
१५ पात्र हुमा, सुवा ५७६, वेदम १८४,
मोह ५)।

रोलम पु [दे] रोलम्ब] झमर, मधुकर (दे
७, २, कुप ५८)।

रोला ओ [रोला] छंद विशेष (पिंग)।
रोच देखो रुअ=रुद। रोचइ (हे ४, २२६,
सति ३६, प्राक ६८, वद, महा सुर १०,
१७१, भवि)। वह. रोचत, रोचमाण (पत्रम
१७, ३०, सुर २, १२४, ६, २३५, पत्रम

११०, ३५)। सङ्क रोचिऊण (वि ५८६)।
हेरु-रोचिउं (स १००)।

रोय पु [दे] रोय] गोपा, गुनराती में 'रोयो'
(सम्पत्त १४४)।

रोयण न [रोदन] रोना (सुर ६, ७६)।

रोयण न [रोपण] जपन, बीज बोना (वव
१)।

रोवाविअ देखो रोआविअ (वज्जा ६२)।

रोविअ वि [रोपित] १ बोया हुआ। २
स्वामित (सि १३, ३०)।

रोविंदय न [दे] केय विशेष, एक प्रकार का
गान (ठा ४, ४—पत्र २८५)।

रोयिर देखो रोइर (दे ७, ७, कुमा, हे २,
१४५)।

रोयिर वि [रोपयित] बोनेवाला (हे २,
१४५)।

रोस देखो रूस। रोसइ (?) (पाखा १५०)।

रोस पु [रोप] गुल्मा, ज्वेध (हे २, १६०,
१६१)। इत्त, इत्त वि [वत्] रोप-
(संति २०, प्राप्र)।

रोसाण वि [रोषण] रोपकरनेवाला, गुल्माखोर
(उप १४७ वे, सुर १, १३)।

रोसाविअ वि [रोपित] कोपित, कुपित किया
हुमा (पत्रम ११०, १३)।

रोसाण सक [मृज्] मार्जन करना, शुद्ध
करना। रोसाणइ (हे १, १०५, प्राक ६६,
वद)।

रोसाणित वि [मृष्ट] शुद्ध किया हुआ,
माजित (पात्र, कुमा पिंग)।

रोसिअ देखो रोसविअ (पत्रम ६६, ११,
भवि)।

रोइ अक [रुह] उत्पन्न होना। रोहित
(गठक)।

रोइ देखो रुंघ। सङ्क. रोहिऊण, रोहेउं
(काल, ३)।

रोइ पु [रोध] १ बेरा, नगर आदि का रीय
से वेधन (शाया १, ८—पत्र १४६, उप पु
८८, कुप १५८)। २ रुकावट, रोक, घटकाल
(कुप १, इव्य ४६)। ३ वेद (पुण्य १८६)।

रोइ पु [रोधस्] रुट, किनारा (पात्र)।

रोह पुं [रोह] १ एव जैन मुनि (माग)। २
प्ररोह, प्रण आदि का सूख जाना (दे ६,
६५)। ३ वि. रोहन, रोहण-नत्ता (भवि)।

रोह पुं [दे] १ प्रमाण। २ नमन। ३ मार्गेण
(दे ७, १६)।

रोहम वि [रोधक] घेर डालनेवाला, घटकाव
करनेवाला, 'रोहणसजुतीए रोहिमो भुमारोण'
(स ६३१), 'रोहणसजुती उण कीरठ' (सुर
१२, १०१)।

रोहण देखो रोह=रोध (स ६३५, सुर
१२, १०१)।

रोहण पु [रोहक] एक नट-कुमार (उप पु
२१५)।

रोहगुत्त पु [रोहगुम] १ एक जैन मुनि
(वच)। २ वैरागिन् मत का प्रवर्तक एक
आचार्य (विसे २४२२)।

रोहण न [रोधन] १ घटकाव (भारा ७२)।
२ वि. रोहनेवाला (इव्य ३४४)।

रोहण व [रोहण] १ चढना, घाटोहण (सुवा
४३८, कुप ३६६)। २ उत्पत्ति (विसे
१७२३)। ३ पुं. पर्वत विशेष (सुवा ३२,
कुप, ६)। ४ एक विरहसित-कू, (इक)।

रोहिअ [दे] देखो रोअम्ब (दे ७, १२, पात्र,
पणह १, १—पत्र ७)।

रोहिअ वि [रोधित] घेरा हुआ, 'रोहिअ
पावलिपुत्र लेख' (वर्मावि ४२, कुप ३६६, स
६३५)।

रोहिअ वि [रोहित] १ हुलाया हुआ (पात्र)
(उप पु ७६)। २ पु. द्वीप विशेष (ज ४)।
३ पु. मलय विशेष (स २५७)। ४ न. दुष्ण-
विशेष (पणह १—पत्र ३३)। ५ कूट-
विशेष (ठा २, ३, ८)।

रोहिअस पु [रोहितारा] एक द्वीप (ज ४)।

रोहिअंस } ओ [रोहितासा] एक नदी
रोहिअसा } (सम २७, इक)। 'पवाय पु
[अपत] ब्रह्म विशेष (ठा २, ३, ज ४)।

रोहिअप्पवाय पु [रोहिताप्रपात] ब्रह्म विशेष
(ठा २, ३—पत्र ७२)।

रोहिआ ओ [रोहित, रोहिता] एक नदी
(सम २७ इक ठा २, ३—पत्र ७२, ८०)।

रोहिंसा ओ [रोहिदशा] एक नदी (इक)।

रोहिणिअ पु [रोहिणय] एक प्रसिद्ध बोर का
नाम (था २७)।

रोहिणी स्त्री [रोहिणी] १ नक्षत्र-विशेष (सम १०) । २ चन्द्र की पत्नी (आ १६) । ३ भोपचि-विशेष (उत ३४, १००; सुर १०, २२३) । ४ भविष्य में भारतवर्ष में तीर्थंकर होनेवाली एक आदिका (सम १५४) । ५

नवै बलदेव का भाटा वा नाम (सम १५२) । ६ एक विद्या देवी (उति ५) । ७ शकेन्द्र की एक पटरानी (ठा ८—यत्र ४२६) । ८ सत्पुरुष नामक त्रिपुरोन्न की एक भय-महिषी (ठा ४, १—यत्र, २०४) ।

१ शकेन्द्र के एक लोकनाल की पटरानी (ठा ४, १—यत्र २०४) । १० तप-विशेष (पव २७१, पचा १६, २३) । ११ मो, नैया (पाप) । १२ रमण पुं [रमण] चन्द्रमा (पाप) । रोहीडग न [रोहीतक] नगर-विशेष (संवा ६८) ।

॥ इम तिरिपाइअसद्महण्यो रमा राइमदर्सकल्यो

तेसीडइमो तरंगो समतो ॥

ल

ल पुं [ल] मूर्ध-स्थानीय अन्तस्त्व व्यञ्जन वर्ण विशेष (प्राप्त) ।

लङ् म, ले, लध्वा, लोक (भवि) ।

लङ् देखो लय = ला ।

लङ्ग नि [दे. लंगित] १ परिहित, पहना हुआ । २ धन में पिनड (दे ७, १८, पिड ५६१, भवि) ।

लङ्गल पुं [दे] वृषभ, बैल (दे ७, १६) ।

लङ्गा स्त्री [लङ्गिका, लङ्गा] देखो लया (गाढ—रला ७, गड, उप ७६८ टी) ।

लङ्गा स्त्री [दे] लता, बल्ली (पह, दे लङ्गी) ७, १८) ।

लङ्गल पुं [लङ्गल] वृक्ष-विशेष, बड़हल का गाछ (भीप, पि १६८) ।

लङ्गल पुं [लङ्गल] मन्त्री, लाली, ठंडा, लउर, लउल [मह] (दे ७, १६, सुर २, ८, भीप) ।

लउस पुं [लउरा] १ भ्रान्त्यं देश-विशेष लउसय (पव २७४, दक) । २ पुत्री, लकुच देश का निवासी मनुष्य । स्त्री. "सिया (श्यामा १, १—यत्र ३७, भीप, दक) ।

लंरा स्त्री [लङ्गा] नगरी-विशेष, सिंहलद्वीप की राजधानी (मे ३, ६२, पचम ४६, १६, कण्ठ) । लय नि [लय] लगा-निवासी (वजा १३०) । लंदरी स्त्री [मुन्दरी] हनुमान की एक पत्नी (पचम ५२, २१) । लोण

पुं [शोक] रासस रंग का एक राजा (पचम ५, २६५) । दिव पुं [धिप] लका का राजा (उप पु ३७५) । दिवद पुं [धिपति] बही भयं (पचम ४६, १७) ।

लंरा स्त्री [दे] शाला (वजा १३०) ।

लंग पुं [लङ्ग] बड़े बांस के ऊपर खेत लंगरा करनेवाली एक नट-जाति (श्यामा १, १—यत्र २, पचम २, ५—यत्र १३२, भीप, कण्ठ) । स्त्री. "रिंगा (उप १०१४) ।

लंगल न [लङ्गल] हल, 'खितेयु बहति सनलण सय' (भयंवि २४, दे १, २५६, पद ८०) ।

लंगलि पुं [लङ्गलि] वनप्रद, बलदेव (कुमा) ।

लंगलि स्त्री [लङ्गली] बल्ली-विशेष, लंगली [मारो लता (कुमा) ।

लंगिम पुत्री [दे] १ जवानी, यौवन । २ लानाए, नवीनता, 'सिमुयड तपुलठो लंगिम चगिंय च' (कण्ठ) ।

लंगल न [लङ्गल] गुच्छ, पूँछ (दे १, २५६; पाप, कण्ठ, कुमा) ।

लंगलि नि [लङ्गलि] गुच्छवाला, पयु (कुमा) ।

लंगोल देखो लंगूल (गुज १०, ८) ।

लंघ सक [लङ्घ, लङ्घय] १ लापना, अतिक्रमण करना । २ भोजन नहीं करना । लंघ, लघेड (महा, भवि) । कर्म, लघिगज (कुमा) । बड़, लंघत, लघयंत (मुवा २७१; पचम ६७, २१) । लंघ, लंघिता, लघिऊण (महा) । हेड, लघेड (पि ५७३) । ल लंघजिज (मे २, ४४), लंघ (कुमा १, १७) ।

लघन न [लङ्घन] १ अतिक्रमण (सुर ५, १६२) । २ भ भोजन (उप १३५ टी) ।

लघि नि [लङ्घि] लंघन करनेवाला (कण्ठ) । लंघिज नि [लङ्घिज] जिसका लघन किया गया हो वह (पचम) ।

लंघ पुं [दे] कुकुर, दुर्गा (दे ७, १७) ।

लंघा स्त्री [लङ्गा] बूध, रिरवत, ललोव (पाप, पचम १, ३—यत्र ५३; दे १, ६२, ७, १७, मुवा ३०८) ।

लंघि नि [लङ्घि] बूधखोर, रिरवत ले कर काम करनेवाला (वज १) ।

लंघ सक [लङ्घ] १ मारना, तोड़ना । २ कर्त्तव्य करना । कर्म, लंघिगज (दयनि ८, १४) ।

लंघ पुं [लङ्घ] चोरो की एक जाति (विपा १, १—यत्र ११) ।

लङ्घन न [लङ्घन] १ चिह्न, निशानी (पात्र) । २ नाम । ३ मनन, चिह्न करना (हे १, २५, ३०) ।

लङ्घना क्षी [लङ्घना] चिह्न करना (उप ५२२) ।

लङ्घिअ वि [लङ्घिअ] निहित, कृत चिह्न (पव १५४, एया १, २—पत्र ८६, ठा ३, १, वस, वपु) ।

लङ्घुअ वि [दे लङ्घित] चरित, चङ्ग-यात्रासङ्घो विप्र वरुणो पञ्चवादी दूर भारो-विप्र भाविषो मिह (बाह ३) ।

लंतक पु [लान्तक] १ एक देवलोक, लंतग छठवाँ देवलोक (भाग शीप, धन, लंतय इक) । २ एक देवविमान (सम २७, देवैत्र १३४) । ३ पट्ट देवलोक के निवासी देव । ४ पट्ट देवलोक का इन्द्र (राज, ठा २, ३—पत्र ८५) ।

लद पुन [लन्द] काल, समय (वपु, पव) ७०) ।

लदय पुन [दे] वलित्वक, गो भादि का लादन पात्र (पव २) ।

लंपड वि [लम्पट] लोपु, लालची, लुप्य (पात्र, सुपा १०७, ५६६, सुर ३, १०) ।

लपाग पु [लम्पाक] देश विशेष (पत्र ६८, ५६) ।

लंपिअल पु [वे] भोर, तत्कर (दे ७, १६) । लंथ सक [लथ] १ सहाय सेना, भालम्भन करना । २ दक लटकना । लथेड (महा) ।

वक्तु लथत, लथमाण (शीप, सुर ३, ७१, ४, २४२ कप्य वपु) । इह, लथिकण (महा) ।

लत्र वि [लत्र] लम्बा, लोचन 'लुड्ड लट्टस चैव लत्रा' (उवा, एया १, ८—पत्र १३३) ।

लत्र पु [दे] गोघात, गो बाधा (दे ७, २६) ।

लत्रअ न [लत्रक] ललटिका, नामि-पर्यन्त लट्कती माला भादि (इरपन ६३) ।

लवणा क्षी [लवना] रज्जु, रखी (स १०१) ।

लंया क्षी [दे] १ वलरी, लता (पद) । २ वेरा, बाल (पड, दे ७, २६) ।

लयाली क्षी [दे] पुण विशेष (दे ७, १६) ।

लवि वि [लविअ] लटकना (लटड) ।

लविअ वि [लविअ] १ लटकता हुआ लविअय (गा ५३२, सुर ३, ७०) । २ पु. वानप्रस्थ का एव भेद (शीप) ।

लविर वि [लविअ] लटकनेवाला (कुमा, गड) ।

लवुअ वि [लवुअ] १ लम्बी लवडी के धन भाग में बँटा हुआ मिट्टी का देला । २ भौत में लमा हुआ दियो वा सप्रह (मृच्छ ६) ।

लवुत्तर पुन [लवुत्तर] कायोत्तरां वा एव शीप, चीलपट्ट को नामि मंडल से ऊपर रख-कर धीरे जलु को चीलपट्ट में नीचे रख कर कायोत्तरां करना (वेदय ४८४) ।

लवुस पुन [दे लवुस] वन्दुव के प्राकर का एव प्रामरण, छत चमत्-पडाया टण्ण-लवुसया भियाण च' (पत्र ३२, ७६; ६६, १२) ।

लउदर वि [लउदर] १ बडा केटवाला लउयर (सुख १, १४, उवा) । २ पु. गणपति, वरुण (या १२, कुम ६७) ।

लभ सक [लभ] प्राप्त करना, लभैवाह न लभामि अवि लामो गुण सिवा' (उत २, ११) । अवि लभिस (पि ५२५) । कर्प. लभीअदि, लभीआमो (शी) (पि ५४१) ।

लभ. लंभिअ, लभिता (गा १६, नाट—चैत ११, ठा ३, २) ।

लभ सक [लभय] प्राप्त करना । सक. लभिअ (नाट—चैत ४४) । क. लभइद्वय (शी), लभजिअ, लंभणीअ (गा ५१, नाट—मातवी ३६, चैत १२५) ।

लभ पु [लभ] प्राप्ति (पत्र १००, ५६, दे ११, ११, गड, विरि ८२२, सुपा ३६५) । देवो लभ = लाम ।

लभण ॥ [लभन] भल्य की एक जाति (विपा १, ८ टी—पत्र ८४) ।

लंभिअ देवो लभ = लम्, लम्भय ।

लभिअ वि [लभय] प्राप्त (नाट—चैत १२५) ।

लभिअ वि [लभिअ] प्राप्त कराया हुआ, प्रापित (सुप २, ७, ३०, स ३१०, मपु ७१) ।

लवुड न [दे लवुड] लकी, गिट्ट, लखी, लाठी (दे ७, १६, पात्र) ।

लमर सक [लभय] १ जानना । २ पहचानना । ३ देवना । लमइ (महा) । कर्प. लमिअव, लमोयति (विसे २१४६, महा, बाल) । कवड लमिअजत (से ११, ५५) । क. लमरणीअ (नाट—शकु २४), देवो लमर = लय ।

लमर पुन [दे] नाम, शरीर, देह (दे ७, १७) ।

लमर पुन [लम] सख्या विशेष, लाल, लोहवार (बी ५५, सुपा १०१, २४८, कुमा, प्रासु ६६) । 'पाग पु' [पाक] लाल स्वयी के व्यय से बनता एक तरह का पाक (अ ६) ।

लमर वि [लमय] १ पहचानने योग्य, 'चिर-लमरलो' (पत्र ८२, ८४) । २ जिससे जाना जाय वह, लयाण, प्रकाशक, 'लुप्रदमनी-भलनल चार्द' (से ५, १७) । ३ वैद्य, निशाना, 'लकलविपण'—(धर्मि ५२, दे २, २६, कुमा) ।

लमर देवो लमरा (पडि) ।

लमरा वि [लमर] पहचाननेवाला (पत्र ८२, ८४, कुम ३००) ।

लमरा पुन [लमरा] १ इतर से भेद का बोधक चिह्न । २ वस्तु स्वरूप (ठा ३, ३, ४, १, बी ११, विसे २१४६, २१४७, २१४८) । ३ चिह्न लकलपुण्य (कुमा) ।

४ व्याकरण शास्त्र, 'लकलपुण्यसाहित्यपाण-जोइसादिगि सा पडइ' (सुपा १४१, ६५७) ।

५ व्याकरण भादि का सूत्र । ६ प्रतिपाद्य, विषय (दे २, ३) । ७ पु. लमण । = सारस पक्षी, 'लकलपु' (प्रासु २२) । 'लवच्छर पु' [संघसर] वर्ण विशेष (सुज १०, २०) ।

लमरा पु [लमरा] श्रीराम का द्योटा भाई (से १, ४८) । देवो लमराण ।

लमराण न [लमरा] कारण, हेतु (वसति १, १५) ।

लमराण क्षी [लमरा] १ शब्द-वृत्ति विशेष, शब्द की एक शक्ति जिससे मुख्य धर्म के बाध होने पर भिन्न धर्म की प्रतीति होती है (वि १, २) । २ एक महोपनि (सी ५) ।

लमराण क्षी [लमराण] १ भाटवें जिनदेव की माता (सम १५१) । २ उसी जन्म में मुक्ति

पानेवाली श्रीकृष्ण की एक पत्नी (श्रंत १५) । ३ एक ब्रमावत की स्त्री (उप ७२८ वी) ।

लक्ष्मणिय वि [लक्ष्मणिक, लक्ष्मण्य] १ सप्तर्षी का जानकार । २ तक्षक-युक्त (सुपा १३६) ।

लक्ष्मण्य } पु [लक्ष्मण] विष्णु की वार-
लक्ष्मण्य } हवीं शताब्दी का एक बौद्ध मुनि
और संघाचार (सुपा ६५८) ।

लक्ष्म्या स्त्री [लक्षा] लाक्ष, लाह, जनु, चपड़ा (साया १, १—पत्र २४; पएह २, ५) ।
*लक्ष्मिय वि [लक्षित] लाक्ष से रंगा हुआ (पाम) ।

लक्ष्मिअ वि [लक्षित] १ जाना हुआ । २ पहचाना हुआ । ३ देखा हुआ (गठह, नाट—रत्ना १४) ।

लग न [दे] निकट, पास (पिप) ।

लगंड न [लगण्ड] वक्र काष्ठ (पचा १८, १६, स ५६६) । *साह वि [शायिष] वक्र बाण की तरह सीमेवाला (पएह २, १—पत्र १००, श्रीप, कस, पंचा १८, १६, ठा ५, १—पत्र २६६) । *सण न [सिन] घासन विशेष (सुपा ८५) ।

लगडह देखो लउड (दुप्र ३८६) ।

लगम मरु [लग] लगना, संग करना, संबंध करना । लगह (हे ४, २३०, ४२०, ४२२, प्राक ६८; प्राप्, उव) । भवि, लगित्स, लगिगहि (पि ५२०) । लगमंत, लगममाण (विद्य ११२, उप ६६६; गा १०४) । लह, लगमूण (दुप्र ६६), लगिगवि (भा) (हे ४, ३३६) । क. लगिगअन (धुर १०, ११२) ।

लगम न [दे] १ चिह्न । २ वि. भषटमान, भसम्बद्ध (हे ७, १७) ।

लगम न [लगम] १ मेप प्रादि राशि का उदय (मुर २, १७०; मोह १०१) । २ वि. संसार, सबद्ध (पाम, गुमा, मुर २, ५६) । ३ पु. स्तुति-पाठक (हे २, ६८) ।

लगम न [लगन] संग, संबंध, 'वक्षपाथ-वसाहलमण्ये' (मुर १५, १४, उव १३४, ५३८) ।

लगमण्य भुं [लगनक] प्रविभू, जमानत करनेवाला, जामीन (पाम) ।

लगमण देखो लगम = लय ।

लगिम पुत्री [लगिमन] १ सपुता, नाथन । २ योग की एक मिट्टि, जिसके प्रभाव से मनुष्य छोटा बन सरता है, 'संपिज्ज लघिमणुण्यो भविलस्सपि लाघव सार्ह' (दुप्र २७७) । ३ विद्या-विशेष (पत्रम ७, १६६) ।

लगय न [दे] लुण-विशेष, गण्डुन लुण (हे ७, १७) ।

लगड् देखो लग्न = लय (नाट) ।

लगड् देखो लग ।

लगड् देखो लग्न = लय (सुपा ६४, प्राक २२, नाट—चैत ५५) ।
लच्छिं स्त्री [लक्ष्मी] १ संपत्ति, वैभव । २ लच्छो } वन, इष्य । ३ कान्ति । ४ श्रीप-विशेष । ५ फसिनी बुद्ध । ६ स्वप्न-पथिनी । ७ हृदि । ८ मुद्रा, मोहो । ९ शरी नामक भोपपि (कुमा, प्राक ३०, हे २, १७) । १० सोमा (सि २, ११) । ११ विष्णु परनी (पाम, से २, ११) । १२ राक्ष की एक पत्नी (पत्रम ७४, १०) । १३ यष्ट वासुदेव की माता (पत्रम २०, १८४) । १४ पुत्रीक इह की भविष्ठात्री देवी (ठा २, ३—पत्र ७२) । १५ देव-प्रतिमा विशेष (साया १, १ वी—पत्र ४३) । १६ छन्द-विशेष (पिप) । १७ एक वणिक्-पत्नी (७२८ वी) । १८ सिलरी पर्वत का एक कूट (इक) । *निलय पु [निलय] वासुदेव (पत्रम ३७, १७) । *मई स्त्री [मती] १ छर्वे वासुदेव की माता (मम १५२) । २ ग्याहसे कन्नवी का की-रल (सम १५२) । *मदिर न [मन्दिर] नगर विशेष (सुपा ६३२) । *वड पु [पति] सखी का स्वामी, श्रीहृण (प्राक ३०) । *वई स्त्री [वनी] वणिक् स्वक पर रहनेवाली एक दिगुमाटी देवी (ठा ८—पत्र ४३६, इक) । *हर पु [घर] १ वासुदेव (पत्रम ३८, ३४) । २ छन्द-विशेष (पिप) । ३ न. नगर-विशेष (इक) ।

लगुन (प्रमो) देखो खजु = (दे) (कण—खजु) ।

लग्न मरु [लग्न] शरणा । लग्नइ (उव, महा) । कर्म, लग्नज्जइ (हे ४, ४१६) ।

बहु. लग्नंत, लग्नमाण (उप ५ ५५, महा, प्राचा) । क. लग्नगिज्ज (सि ११, २६, साया १, ८—पत्र १४३) ।

लग्नण } न [लग्नन] १ शरम, लाज
लग्नण्य } (सा ८, राज) । २ वि. लग्न-
कारक, 'कि एतो लग्नण्य'.....'जं मह-
रिज्जइ वोए पलापमाणे पमत्ते वा' (सुपा २१४, मवि) ।

लग्ना स्त्री [लग्ना] १ लाज, शरम (श्रीप, कुमा, प्राक ६६, गा ६१०) । २ छन्द-विशेष (पिप) । ३ समय (मग २, ५, श्रीप) ।

लग्नापइत्तअ (श्री) वि [लग्नयित्] लगने-
वाला, 'जुवइसेलज्जगपइत्तअ' (मा ४२) ।

लग्नालु वि [लग्नालु] लग्नावान्, शरमिदा (उप १७६ वी) ।

लग्नालु स्त्री [लग्नालु] १ लता-विशेष, लग्नालुआ } लाजवती, लग्नवती, छुईछुई
लग्नालुइणी (पट्ट : हे २, १५६, १७४) । २ लग्नावाली स्त्री (पट्ट : हे २, १५६, १७४, मुर २, १५६, गा १२७, प्राक ३५) ।

लग्नालुइणी स्त्री [दे] कण्ह-कारिणी स्त्री (पट्ट) ।

लग्नालुइणी वि [लग्नालु] लग्नाशील, लग्नालुइ } शरमिदा । स्त्री. 'री' (गा ४८२, ६१२ घ) ।

लग्नाप सक [लग्नय] शरमिदा बनाना, लग्नवाना । लग्नापेदि (श्री) नाट—बुद्ध (११०) । क. लग्नापणिज्ज (सि १६८, मवि) ।

लग्नारण वि [लग्नन] शरमिदा करनेवाला (पएह १, ३—पत्र ५४) ।

लग्नाविय वि [लग्नित] लग्नवाया हुआ (पएह १, ३—पत्र ५४) ।

लग्निय वि [लग्नित] १ लग्ना-मुक्त (पाम) । २ न. लग्ना, शरम, न लग्निय भयण्योवि पतिपण्य' (या १४) ।

लग्निर वि [लग्नित्] लग्नाशील (हे २, १४५, गा १५०, कुमा, वज्ज ८, मवि) । स्त्री. 'री' (पि ५६६) ।

लग्नु स्त्री [रज्जु] १ रस्सी, लज्जरी, सेतुरी या सेतुर । २ वि. रस्सी की तरह सरल, सीधा, 'चाई रज्जु बनने तवस्ती' (पएह २, ५—पत्र १४६, मवि) ।

लज्जु वि [लज्जावत्] लज्जावाला, एमणा-
समिमी लज्जु गामे भ्रमिययो चरे (उत्त ६,
१७) ।

लज्जु देवो रिज्जु = श्रज्जु (भग) ।

लज्जं देवो लभ ।

लट् } न [दे] १ खसलस आदि वा लेल
लट्ठय } (पमा ३१) । २ कुसुम्भ, 'लट्ठय-
सणा' (दे ७, १७) ।

लट्ठा श्री [दे. लट्ठा] पाल्य विशेष, कुसुम्भ
धाम्य (पव १५४) ।

लट्ठा श्री [लट्ठा] १ वृक्ष विशेष (कुमा) ।
२ कुसुम्भ (हह १) । ३ मौरैया, पक्षि-
विशेष । ४ जम्पर, भैंस । ५ वाय विशेष
(दे २, ५५) ।

लट्ठ वि [दे] १ भग्नवासक (दे ७, २६) । २
मनोहर, सुन्दर, रम्य (दे ७, २६, पात्र,
पाया १, १, पण्ड १, ४, सुर १, २८,
कुम १, ५, ५; पुष्क ३४, सार्थ २१, पण
५, सुपा १५१) । ३ भिषयक, भिष-भायी
(दे ७, २६) । ४ प्रधान, मुख्य, 'लमियव्वो
मववहो ममावि पाविहल्लट्ठस' (उप ७२८
दे) । 'दंतं पुं [दन्त] १ जैन मुनि (भनु
१) । २ द्वीप-विशेष, एक अन्तर्द्वीप । ३
द्वीप विशेष में रहनेवाला मनुष्य (ठा ४,
२—पत्र २२६, हक) ।

लट्ठरी श्री [दे] सुन्दर, रमणीय (कुम २१०) ।
लट्ठि श्री [यष्टि] लठी, छठी (श्रीय कुमा) ।
लट्ठिअ न [दे] बाण विशेष, 'जेठाहि लट्ठिएण
भोवा कज्ज साहिंवि' (सुज्ज १०, १७) ।

लट्ठह वि [दे] १ रम्य, सुन्दर (७, १७, सुपा
६, सिरि ४७, ८७५, गडव, श्रीय, कण्य,
कुमा, हेका २६५, सण, भवि) । २ कुकुमार,
कोमल (काप्र ७६५, भवि) । ३ विदग्ध,
चतुर (दे ७, १७) । ४ प्रधान, मुख्य (कुमा) ।
लट्ठहकलमिअ वि [दे] विपटित, विपुक्त
(दे ७, २०) ।

लट्ठा श्री [दे] निवासवती श्री (पट्) ।

लट्ठा लैवो गट्ठा ल (प्राक् ३७, पि २६०) ।

लट्ठिय न [दे] लट्ठ, छोट, प्यार (भवि) ।

लट्ठुअ } पु [लट्ठुअ] लट्ठ, मोदक
लट्ठुअ } (मा ६४१; प्रयो ८३, कुम २०६,
भवि, पठम ४, ४, पिड २७७) ।

लट्ठुअर वि [लट्ठुअर] लट्ठुअर बगने-
वाला, हलवाई (पुत्र २०६) ।

लट्ठ सक [स्मृ] स्मरण करना, याद करना ।

लट्ठ (हे ४, ७४) । यट्, लट्ठव (कुमा) ।

लट्ठिअ वि [स्मृत] याद निमा हुपा (पाप्र) ।

लट्ठ वि [इलट्ठ] १ चिकना, मखण (सम
१३७; ठा ४, २, श्रीय, कण्य) । २ कल्प,
बोहा । ३ न लोहा, धातु विशेष (हे २,
७७, प्राक् १८) ।

लट्ठ वि [लट्ठ, लपित] उक्त, कथित (सुपा
२३४) ।

लट्ठा } श्री [दे] १ लाल, पाणिप-ग्रहार
लट्ठाअ } (कुपा २३८, ठा २, ३—पत्र
६३) । २ मातृत्व विशेष (ठा २, ३, बापा
२, ११, ३) ।

लट्ठण } (मा) देवो रयण = रत्न (प्रभि
लट्ठन } १८४, प्राक् १०२) ।

लट्ठ सक [दे] भार भरना, बोझ डालना,
लादना, गुजराती में 'लाववु' । हेक, लट्ठेउ
(सुपा २७५) ।

लट्ठण न [दे] भार-लेप लादना (स ५३७) ।

लट्ठी श्री [दे] हाथी आदि की छिटा, गुजराती
में 'लौद' (सुपा १३७) ।

लट्ठ वि [लट्ठ] प्राप्त (भग, उवा, श्रीय,
हे ३, २३) ।

लट्ठि श्री [लट्ठि] १ क्षयोपशम, शान आदि
के आवात कर्मों का विनाश और उपशान्ति
(विशे २६६७) । २ सामर्थ्य विशेष, योग
आदि से प्राप्त होती विशिष्ट शक्ति (पव
२७०, सलोष २८) । ३ ब्रह्मिणा (पण्ड २,
१—पत्र ६६) । ४ प्राप्ति, लाभ (सम ८,
२) । ५ इन्द्रिय और मन से होनेवाला विज्ञान,
धृत ज्ञान का उपयोग (विशे ४६६) । ६
योग्यता (भणु) । 'पुल्लय पु [पुल्लयक]
लब्धि विशेष सपन्न भुवि, 'संपादयमाण कज्जे
सुणिण्णजा चकवट्टिमवि जोए' । तीए लट्ठोइ
नुयो लट्ठिपुलायो' (सलोष २८) ।

लट्ठिअ वि [लट्ठ] प्राप्त (दे ६६) ।

लट्ठिअ वि [लट्ठिअ] लब्धि-युक्त (पंच
१, ७) ।

लट्ठुअ } देवो लभ ।
लट्ठुअ }

लट्ठिसिया श्री [दे] लपसी, एक प्रकार का
पक्वान्न (पव ४) ।

लट्ठम नीचे देखो ।

लभ सक [लभ] प्राप्त करना । लभइ,
लभए (भाव, वम, विशे १२१५) । भवि,
सम्पत्ति, समित्त, लभिसाणि (उव, महा,
पि ५२५) । कर्म, लभइ, लभइ (महा
६०, १६, हे १, १८७, ४, २४६, कुमा) ।
संछ, लभिय, लट्ठुअ, लट्ठूण (पव ५,
१६४, धावा, काल) । हेक, लट्ठुअ (काल) ।
क, लठम (पण्ड २, १; विशे २८३७, सुपा
११, २३३; स १७५; सण) ।

लभ सक [ल] ग्रहण करना । लपइ, लपति
(उव) । कर्म—लज्जणइ, लिज्जणइ (भवि,
सिरि ६६३) । बट्ठ, लयंत (वज्ज २८,
महा, सिरि ३७५) । संछ, लइ, लउमि,
लपयिणु (भग) (पिंग, भवि) । देखो
ले = ला ।

लभ न [दे] नव वस्तुति का प्राप्त से नाम
लेने का उत्तरव (दे ७, १६) ।

लभ देखो लय = लव (गडव, से ५, १४) ।

लभ पु [लभ] १ स्नेह । २ मन की साम्या-
बल्ला (कुमा) । ३ लीनता, ललीनता । ४
विशेषाव (विशे २६६६) । ५ समीत का
एक ध्वं, स्वर-विशेष (स ७०५, हास्य
१२३) ।

लभ देवो लया । 'हरय न [गृहक] लवा-
गृह (सुपा ३८१) ।

लभ पु [लभ] तन्त्री का स्वन—स्वनि-विशेष ।
'सम न [सम] गेय काव्य का एक भेद
(दलनि २, २३) ।

लभण न [लवाङ्ग] सख्या विशेष, चौपसी
नाथ पूर्व, पुं-वाए सवसहस्रं पुतसीखण
सर्गगमिह होइ' (को २) ।

लभण वि [दे] १ तनु, कृश, साम (दे ७,
२७, पाप्र) । २ पृष्ठ, कोमल । ३ न वक्षी,
लता (दे ७, २७) ।

लभण न [लभण] १ त्रिप्राव, क्षिप्रा
(विशे २८१७, दे ७, २४) । २ भवस्थान
(सुर ३, २०६) । ३ देवो लेण (राज) ।

ल्यणी श्री [दे] लता, वक्षी (पाप्र, पट्) ।

लघा की [लघा] १ वल्ली, वल्ली (पण्ण १, गा २८; काप्र ७२३, कुमा, कण्ण)। २ प्रकार, भेद, 'सपायो ति वा लघ ति वा पमायो ति वा एणदु' (इह १)। ३ तप-विशेष (पत्र २७१)। ४ सख्या विशेष, चौरासी लाख सताय परिमित सख्या (जो २)। ५ कम्पा, छटो, यटि, 'वसण्हारे व लघणहारे व जिवापहारे व' (आया १, २—पत्र ८६, विपा १, ६—पत्र ९६)। ६ जुद्ध न 'युद्ध' लब्धे को एक कला, एक तरह का युद्ध (दीप)।

लघापुरिस पु [दि] वह त्पान, जहाँ पच-हस्त की का चित्रण किया गया, 'पत्रमकरा जण्ण वहु लिहिज्जए सो लघापुरिसो' (दि ०, २०)।

लल भक [ल, लङ्] १ विलास करना, मीन करना। २ झूलना। लसद, लसेह (प्राक् ७३, सण, महा, सुपा ४०३)। वहु, लल्लत, ललमाग (गा ४४६, सुर २, २३७, भवि, दीप, मुपा १८०, १८७)।

ललगा की [ललगा] की, महिला, नारी (तदु ४०, सुपा ४७)।

ललाह देखो गण्डाल (दीप, लि २६०)।

ललाम न [ललामम्] प्रधान, नामक (अभि ६५)।

ललित न [ललित] १ विलास, मीन, लीला (पाप्र, पत्र १६६, दीप)। २ अग-विश्यास-विशेष (पण्ण १, ४)। ३ प्रसन्नता, प्रसाद (विपा १, २ टी—पत्र २२)। ४ वि, कीडा-प्रधान, मीन (आया १, १६—पत्र २०९)। ५ सोमा-मुक्त, सुन्दर, मनोहर (आया १, १; दीप, राय)। ६ मज्ज, मधुर (पाप्र)। ७ ईप्सित, अभिनयित (आया १, ६)। ८ 'मस पु' ['मित्र'] साधवें माण्डव का पूर्वजन्मीय नाम (सम १३३, पत्रम २०, १७१)। ९ 'विरथरा की' ['विलस'] आचार्य श्रीहरिमरुति का बनाया हुआ एक जैन ग्रन्थ (विप २५६)।

ललितंग पु [ललितान्] एक रात्र-कुमार (उप ६८६ टी)।

ललितय न [ललितक] छन्द विशेष (अभि १८)।

ललिता की [ललिता] एक पुरोहित-की (उप ७२८ टी)।

लल वि [दि] १ समूह, स्त्रहावाला। २ न्यून, मधुरा (दे ७, २६)।

लल वि [लल] ध्वत्क धावाजवाला (पण्ण १, २)।

ललक पु [ललक] छठीवी नरक भूमि की का एक नरक-स्थान (देवेन्द्र १२)।

ललक वि [दि] १ भीम, भयकर (दे ७, १८, पाप्र, सुर १६, १४८), 'सल्लनयविपरिणामो' (मल ११०)। २ पुं, लमकार, ललाई आदि के लिए आह्वान (उप ७६८ टी)।

लल्लि की [दि] छुगामव (धर्मवि ३८, जय १६)।

लल्लि की [दि] मछली पकड़ने का जाल-विशेष (विपा १, ८—पत्र ८८)।

लन सक [ल] कटना। सक लचिऊण। हेह, लमिउ। क. लविअव्व (प्राक् ६६)।

लन सक [लप्] बोलना, कहना। लवद (कुमा, सवोप १८, सण), लवे (मास ६६)। वहु, लयत, लनमाण (सुपा २६७, सुर ३, ६१)।

लन सक [प्र + वर्तय] प्रवृत्ति कराना, 'णो विज्ज लवति' (सुग्ग २०)।

लन वि [ल] बाधा, बकवादी (सुप २, ६, १५)।

लन पु [ल] १ समय का एक सूक्ष्म परिमाण, सात लोक, ग्रहर्त का सतरहवां घटा (ठा २, ४—पत्र ८६, सम ८४)। २ लेश भल्ल, थोडा (पाप्र, प्राभू ६६, ११८, सण)। ३ न. कर्म (सुप १, २, २, २०, २, ६)। ४ 'सत्तम पु' ['सप्तम'] अनुत्तरविमान निवासी देव सर्वोत्तम देव-जाति (पण्ण २, ४; उप, सुप १, ६, २४)।

लनअ पु [दि लनक] माद, लामा, बेा निर्वासित, लचमो युवों (पाप्र)।

लनइ वि [दि. लनइ] वृत्त दल से गुफ, भंडित पल्लवित (भीम, भय, आया १, १ टी—पत्र ५)।

लनंय पुन [लनइ] १ वृत्त विशेष, लौग का पद (पण्ण १—पत्र ३४, पुत्र २४६)। २ वृत्त-

विशेष का कून, लौग (आया १, १—पत्र १२; पण्ण २, ५)।

लनण न [लनण] धेदन, बाटना (विते ३२०६)।

लनण न [लनण] १ लोन वृत्त, लोन, नमक (कुमा)। २ पु. रस विशेष, सार रस (मण्ण)। ३ समुद्र विशेष (सम ६७, आया १, ६, पत्रम ६६, १८)। ४ लीता का एक पुत्र, लव (पत्रम ६७, १६)। ५ मधुरा का एक पुत्र (पत्रम ८६, ४७)। ६ जल पु ['जल'] लवण समुद्र (पत्रम ५७, २७)। ७ 'लौ पु' ['लौ'] लवण समुद्र (पत्रम ६४, १३)। देखो लोण। लनणिम पुकी [लनणिमम्] लवण (कुमा)। लनल न [लनल] पुन विशेष (कुमा)। लनली की [लनली] लता विशेष (सुपा ३८, पुत्र २४६)।

लनर वि [दि] मुत्र, सोया हुआ (पद्)। लनरि वि [लपित] उल, कपित (सुप १, ६, ३५, कुमा सुपा २६७)।

लविच न [लविच] दाप, दावी हनुमा मा हँसिया, चास काटने का एक यंत्र (दे १, ८२)। लविर वि [लविच] बोलनेवाला (सण)। की 'रा (कुमा)।

लस भक [लस] १ रसेप करना। २ चमकना। ३ मीडा करना। लसद (प्राक् ७२)। वहु, लसत (सण)।

लसइ पु [दि] काम, कन्दर्प (दे ७, १८)। लमक न [दि] लवन्धीर, वेड का रूप (दे ७, १८)।

लसण देखो लमुण (सुप १, ७, १३)।

लसिर वि [लसिच] १ लिट होनेवाला। २ चमकनेवाला, शीघ्र (वे ८, ४४)।

लमुअ न [दि] तेव, तेव (दे ७, १८)।

लमुय न [लमुय] लहनुन, कन्द विशेष (धा २०)।

लद देवा लभ। लहइ लहेइ, लहइ (महा, लि ४५७)। मवि, लहिलामो (महा)। कर्म, लहिवन्द (ह ४, २४६)। वहु लहत (प्राक्)। लहइ, लहइण (पुत्र १, महा) लहेइण, लहेइणु लहेइ (मय, नि ५८८)। क. लहणिज्ज, लहइअव्व (आ १४, सुर ६, ४३, मुपा ४२७)।

लहग पुं [दे] वासी घन में पैदा होनेवाला
 द्विग्रिय पीठ-विशेष (जी १५)।

लहण न [लभन] १ लाभ. प्राप्ति। २ ग्रहण,
 स्वीकार (आ १४)।

लहर पुं [लहर] एव वलित-पुत्र (मुपा
 ६१७)।

लहरी } श्री [लहरि, 'री] तरंग, बल्लोल
 लहरी } (साण, प्रामू ६६ कुमा)।

लहाविअ वि [लम्भित] प्राप्त, प्राप्तकराया
 हुआ (कुप्र २३२)।

लहिअ देखो लउ (कप्प, पिम)।

लहिम देखो लधिम (पङ्)।

लहु } वि [लघु] १ छोटा, जल-य (कुमा,
 लहुअ } मुपा ३६०, कम्म ५, ७२, महा)।
 २ हलवा (से ७, ४४, पाप)। ३ तुच्छ
 नि सार (पणह १, २—पत्र २०, पणह २,
 २—पत्र ११६)। ४ स्लाघनीय, प्रशंसनीय
 (से १२, ५३)। ५ घोडा, माल्य (मुपा
 ३५५)। ६ मनोहर सुन्दर (हि २, १२२)।
 श्री, 'हे', 'की' (पद, प्राक २०, गउड, हे
 २, ११३)। ७ न. कृष्णागुल, सुगन्धि धूप-
 द्रव्य विशेष (१० वीरग-मूल (हे २, १२२)।
 ६ शीघ्र, लक्ष्मी (द्र ४६, पणह २, २—पत्र
 ११६)। १० स्वयं-विशेष (मणु)। ११
 लघुपदार्थ नामक एक कर्ममेव (कम्म १, ४१)।
 १२ पुं. एक मात्रावाला मसूर (हे ३, १३४)।
 *कम्म वि [‘कर्मन्’] जिसके मल्ल ही कर्म
 भवशिष्ट रहे हो, शीघ्र मुक्ति गामी (मुपा
 ३५५)। *करण न [‘करण’] दस्तता,
 बाहुरी (आया १, १—पत्र ६२, उवा)।
 *पक्कम पु [‘पक्कम’] ईशानेन्द्र का एक
 भवति-सेनापति (हा ५, १—पत्र ३०३,
 ५५)। *सविज्ज न [‘सक्खेय’] सख्या-
 विशेष, जल-य सख्यात (कम्म ४, ७२)।

लहुअ सक [लघय, लघु + कृ] लघु करना,
 छोटा करना। लहुअति, लहुअति (आ २०,
 गा ३४५)। वरु लहुअत (से १५, २७)।

लहुअवड पु [दे] -गमोप पुत्र, बरगद ना पेठ
 (हे ३, २०)।

लहुआइअ } वि [लघुवृत्त] लघु किया
 लहुअइअ } हुआ (से ६, ४, १२, ५४, स
 २०७, गउड)।

लहुई देखो लहु।

लहुग देखो लहु (वप्प, द्र ५८)।

लहुयो देखो लहु।

लइअ वि [लामित] लगाया हुआ (से २,
 २६, वळा ५०)।

लइअ वि [दे] १ गृहीत, स्वीकृत (दे ७,
 २७)। २ श्रुति (से २, २६)। ३ न. भूपा,
 मरुत (दे ७, २७)। ४ भूमि की गोबर
 प्रासि स कोपना (सम १३७, वप्प, श्रीप,
 आया १, १ टी—पत्र ३)। ५ चर्मार्थ,
 भाषा चमड़ा (दे ७, २७)।

लइअअर देखो लाय = लावय।

लइअजत देखो लाय = लावय।

लइम वि [लउय] बाटने योग्य (द्व ७,
 ३४)।

लइम वि [दे] १ साजा के योग्य, छोई के
 योग्य। २ रोपण के योग्य, बोने लायक
 (माचा २, ४, २, १५)।

लइम पुं [दे] वृषभ, बैल (दे ७, १६)।

लाउ देखो अलाउ (हे १, ६६, भग, कस,
 श्रीप)।

लाउलोअय न [दे] गोमय भाति से लूवि का
 लेपन श्री लखी भाति से भीत भाति का
 पोतना (पाव ३५)।

लाउ देखो अलाउ (हि १, ६६, कुमा)।

लाउ (पण) देखो लउरुप = लख (पिग)।

लाग पु [दे] पुत्री, एक प्रकार का सरकारी
 नर, लगान, बुनराती से 'लागी' (तिरि ४३३,
 ४३५)।

लाघन न [लघय] लघुता, छोटाई, लघुपन
 (भग, कप्प, मुपा १०३, कुप्र २७७, किरात
 १६)।

लाघवि वि [लाघयिन्] लघुता-युक्त, लाघव-
 वाला (उत २६, ४२, भावा)।

लाघविअ न [लाघविक] लघुता, छोटापन,
 लाघव (हा ५, ३—पत्र ३४२, विसे ७ टी,
 सुप्र २, १, ५७, भग)।

लाउ देखो लाय = लाव (दे ५, १०)।

लाठ पुं [लाठ] देश विशेष (मुपा ६५८, कुप्र
 २५४, सत ६७ टी, भवि, सण, दन)।

लाठी श्री [लाठी] तिपि विशेष (विसे ४६४
 टी)।

लाठ पुं [लाठ] देश विशेष, एक भाग देश
 (भाषा. पत्र २७५, विचार ४६)।

लाठ वि [दे] १ निर्दोष माहार से भाता
 का निर्वह करनेवाला, समी, भास निग्रही
 (मुप १, १०, ३. मुख २, १८)। २ प्रधान,
 मुख्य (उत १५, २)। ३ पुं. एव जैन
 भाषा में (राज)।

लाठ वि [दे] श्रेष्ठ, उत्तम (माचा २, ३, १,
 ५)।

लाण न [लान] ग्रहण, पादान (से ७, ६०)।

लायू देना लाऊ (पङ्)।

लाभ पुं [लाभ] १ नका, फायदा (उव, मुख
 ८, १३)। २ प्राप्ति (हा ३, ५)। ३ सुद,
 ग्यान (उप ६५७)।

लाभतराइय न [लामान्तरायिक] लाभ का
 प्रतिबन्धक कर्म (पर्वसे ६४८)।

लाभिय } वि [लाभिक] लाभ-युक्त, लाभ-
 लाभिल } वाला (श्रीप, कर्म १७)।

लाभ वि [दे] रण्य, सुन्दर (श्रीप)।

लाभजय न [वृ] लघु-विशेष, उशीर लुण,
 खस—गाँवर पात की जड़ (पाप)।

लाभा श्री [दे] भाविनी, बाहन (दे ७, २१)।

लाय वन [लायय] लगाता, जोड़ता।

लाएवि (विसे ४२३)। वरु, लायंत (भवि)।

कवक. लाइअजत (से १३, १३)। वरु.
 लाइवि (पण) (हे ४, ३३१, ३७८)।

लाय सक [लायय] १ कटवाना। २ काटना,
 धेरना। क. लाइअव्य (से १५, ७५)।

लाय देखो लाइअ = (दे), 'लावलोअय'
 (श्रीप)।

लाय वि [लात] १ भात, स्वीकृत, गृहीत।
 २ न्यस्त, स्थापित (श्रीप)। ३ न. लगन का
 एक दोष, 'लायाइसमुक्क नवर बइसोहण
 सग' (मुपा १०८)।

लाय पुत्री [लाज] १ भाद' तपहुन। २ व
 अष्ट पाय, पुंजा हुआ नाव, कोई (कप्प)।

लायण न [लागन] लगवाना (गा ४५८)।

लायण्य न [लायण्य] १ शरीर-हीनत्व विशेष,
 शरीरकाति (पाप, कुमा, सण, वि १८६)।
 २ वरकण्य, सातव (हे १, १७७, १८०)।

लाल सक [लायल] स्नेह-पूर्वक पालन
 करना। सावति (मुं ५०)। कवक.
 लाइअजत (मुं २, ७३, मुपा २४)।

लालप सक [वि + लप] क्लिप्त करना, विकल होकर रोना । लालपइ (प्राकृ ७३) ।
लालपिअ न [दे] १ प्रवाल । २ खलीन ।
३ भ्रान्ति (दे ७ २७) ।

लालभ देवो लालप । लालभइ (प्राकृ ७३) ।
लालण न [लालन] स्नह पूर्वक पालन (पद्म २६ ८८) ।

लालप्प देवो लालप । लालप्पइ (प्राकृ ७३) ।
लालप्प सक [लालप्प] १ ब्रूय बनना ।
२ बारबार बोलना । ३ गह्वर बोलना ।
लालप्पइ (सूत्र १ १० १६) । बहु
लालप्पनाण (उत्त १४ १० आवा) ।

लालप्पना न [लालपन] गह्वर जल्पन (पह्ल १ २—पत्र ४३) ।

लालम्भ [देवो लालप लालम्भ लालम्भइ लालम्भ] (प्राकृ ७३ भा वा १५०) ।

लालय न [लालक] लाला लार (दे १ १६) ।

लालस वि [दे] १ द्रुत कोमल । २ लीन इच्छा (दे ७ २१) ।

लालस वि [लालस] लप्पत लोपु (पाश्च ४ ४०१) ।

लाला ली [लाल] लार मुह से गिरता जल सन (मौप गा ५५१ कुमा सुगा २२६) ।

लालिअ देवो लालिअ कुमुमिग्रहप्रदण कण्णवडपरिरमनालिमनीमो (गण्ड १) ।

लालिअ वि [लालित] स्नह पूर्वक पालित (मवि) ।

लालिअ (मप) पु [नालिअ] बुध विशेष (विम) ।

लालिअ वि [लालानत्] लारवाला (मुगा ५३१) ।

लाय सक [लायय] बुलवाना कहलाना ।
सावएणा (सूत्र १ २४) ।

लाय देवो लायग (उप ५०७) ।

लायन न [दे] मुगापी सुख विशेष उशीर सत (दे ७ २१) ।

लायक पु [लायक] १ पति विशेष (विपा लायग) । २ ७—पत्र ७५ पह्ल १ १—पत्र ८) । २ वि कान्तेनाला (विसे ३२०६) ।

लायणिअ वि [लायणिक] सबल से संहत (विपा १ २—पत्र २७) ।

लायण्ण [देवो लायण्ण (मौप रंभा काल लायन) १ अमि ६२ मवि) ।

लायय देवो लायग (उवा) ।

लायिय (मप) वि [लाय] लाया हुआ (मवि) ।
लायिया की [दे] उपतोमन (सूत्र १ २ ११) ।

लायि वि [लायि] काटनवाला (गा ३५५) ।

लास सक [लासय] नाचना । लासति (राय १०१) ।

लास न [लास्य] १ भरतशत्रु प्रसिद्ध गेयक भादि (कुमा) । २ नृत्य नाच (पाम) । ३ ली का नाच । ४ वाद्य नृत्य श्रीर गीत वा सनुवाय (हि २ ६२) ।

लसक पु [लसक] १ राम मानवाला ।
लासग २ २ जय राक्ष बोलनेवाला भाएड (गाया १ १ टी—पत्र २ मौप पह्ल २ ४—पत्र १३२ कप्प) ।

लासय पु [लासक हलासक] १ प्रनाय देश विशेष । २ पु ली प्रनाय देश विशेष का रहनवाला । कौ (सदा (मौप याया १ १—पत्र ३७ इक अत) । देवो रुदासिय ।
लासयविहय पु [दे लासनायहय] मयूर मोर (दे ७ २१) ।

लाह सक [लाय] प्रशंसा करना । लाहइ (हि १ २८७) ।

लाह देवो लाभ (उव दे ४, ३६०, था १२ लाभा १ ६) ।

लाहण न [दे] मोन्यभद लाय बलु की भेंट (दे ७ २१ ६ ७९ सट्टि ७८ टी रभा १३३) ।

लाहल देवो लाहल (से १ २५ कुमा) ।

लाहय देवो लायन (किरात १७) ।

लाहयि देवो लायवि (मवि) ।

लाहयिय देवो लायणिअ (राज) ।

लिअ सक [लिप] लेपन करना लीपना ।

लिअ वि [लिप] लिपन करना लीपना ।

लिअ वि [लिप] लिपन करना लीपना ।

लिअ वि [लिप] लिपन करना लीपना ।

लिअ वि [लिप] लिपन करना लीपना ।

लिअ वि [लिप] लिपन करना लीपना ।

लिअ वि [लिप] लिपन करना लीपना ।

लिअ वि [लिप] लिपन करना लीपना ।

लिअ वि [लिप] लिपन करना लीपना ।

लिग सक [लिहग] १ जानना । २ गति करना । ३ प्रालिप्त करना । कर्म निमित्त (सवोष ५१) ।

लिग न [लिहग] १ विह निशानो (प्रासू २४ गण्ड) । २ दाशानिको का नेप धारण साधु का अपन धर्म के अनुसार वेप (कुमा विसे १५८१ टि ठा ५ १—पत्र ३०३) ।

३ अनुमान प्रमाण का सापक हेतु (विसे १५५०) । ४ पुत्रिह वृष का प्रसापण विह (गण्ड) । ५ राक्ष का धम विशेष पुत्रिह भादि (कुमा राज) । ६ अय पु [धनज] वेपधारी साधु (उप ४८६) ।

जीर पु [जीर] वही धम (ठा ५ १) ।

लिग वि [लिहग] १ साप्य हेतु से जानी जाती वस्तु (विसे १५५०) । २ किसी धर्म के वेप को धारण करनेवाला साधु स यासी (पद्म २२ ३ सुर २ १३०) । ली (गा (उप ४४४) ।

लिमिय वि [लिहग] १ अनुमान प्रमाण (विसे ६५) । २ किसी धर्म के वेप को धारण करनेवाला साधु स यासी (मोह १०१) ।

लिख न [दे] १ बुद्धो स्थान कुहा का धाम । २ धर्मन विशेष (ठा न टी—पत्र ४१६) । देवो लिख्ख ।

लिख न [दे] १ हाथी भादि की विष्ठा पुत्राती म लीद (गाया १ १—पत्र ६३ उप २६४ टी टी २) । २ शैवस रहित पुत्राता पत्नी (पह्ल १ ५—पत्र १५१) ।

लिखिअ की [दे] १ धर्म—वक्ता भादि की विष्ठा लेंबी पुत्राती में लिखी (उप १ २३०) ।

लिंन लो ले = ला ।

लिप सक [लिप] लीपना लेप करना । लिपइ (दे ४ १४६ प्राकृ ७१) । नम लिपइ (धामा) । यह लिपेमाण (गाया १ ६) । बवह लिपपत, लिपपमाण (लोभाय १६५ वयण २६) ।

लिपण न [लिपन] लेप लीपना (विह २४६ मुगा ६१६) ।

लिपायिय वि [लिपित] लेप कराया हुआ (सूत्र ४४०) ।

लिपिय नि [लिपन] लीपना हुआ (कुमा) ।

लिङ्ग पुं [लिङ्ग] वृध-विशेष, नीम बापेड, मराठी में 'लिव' (हे १, २३०, कुमा, स ३५)।

लिङ्ग वि [दे] १ कोमल । २ नम्र (राय ३५)।
 लिङ्ग पुं [दे. लिङ्ग] भास्तरण विशेष (छाया १, १—पत्र १३)।

लिङ्गद (भप) देखो लिङ्ग = लिङ्ग, गुजराती में 'लिवडो' (हे ४, ३८७, पि २४७)।

लिङ्गोहली की [दे] निम्न-फल (सूक्त ८६)।
 लिङ्गार देखो लिङ्गार (पि ५६)।

लिङ्गक [नि + लो] धिन्ना । लिङ्गक (हे ४, ५५, पद) । वड, लिङ्गक (कुमा)।

लिङ्गल न [लेङ्ग] लेला, लिङ्गल, 'सिक्क' गणिकण 'चित्त सिद्धि' (सिद्धि ४१८, सुपा ४२५)। देखो लेङ्गल।

लिङ्गल कीन [दे] छोटा कीन (दे ७, २१)।
 की. 'कला' (दे ७ २१)।

लिङ्गला की [लिङ्गा] १ सपु मूला, छोटा बूँ, सोल—सर के बालों में होता कीडा (दे ८, ६६, स ६७) । २ परिमाण-विशेष (इन)।

लिङ्गाप (प्रयो) सक [लेङ्गाय] लिङ्गवाना । भवि. लिङ्गापिसिं (पि ७)।

लिङ्गापित (प्रयो) वि [लेखित] लिङ्गवाना हुमा (पि ७)।

लिङ्गक सक [लिङ्ग्] प्राप्त करने को चाहना । लिङ्गक (हे २, २१)।

लिङ्गक देखो लिङ्ग (ठा ८—पत्र ४३७)।

लिङ्गवि देखो लेङ्गद = लेङ्गवि (प्रत)।

लिङ्गवा की [लिङ्गा] साम की हन्ना (उप ६३०, प्राक २३)।

लिङ्गवि [लिङ्गु] नाम की बाह्वाला (सुख १, १, कुमा)।

लिङ्गिअ (भप) वि [लित] गृहीत (पिग)।

लिङ्गिअ न [दे] १ चाङ्ग, सुभाय (दे ७, २२) । २ वि. समेट, लोड (सुपा ५६३)।

लिङ्गु देखो लेङ्गु (वमु)।

लित वि [लित] १ वेप युक्त, लिपा हुमा (हे १, ६, कुमा, भवि) । २ संवेष्टित (सुख १, ३, ३, १३)।

लिति पुकी [दे] खड्ग भादि का दोप (दे ७, २३)।

लिङ्ग देखो लिङ्ग (भा ५१६, पद)।

लिङ्ग देखो लेङ्ग (सुप्र ३८४)।

लिङ्गपत } देखो लिङ्ग।
 लिङ्गमाण }

लिङ्गासण न [लिङ्गासन] भयो-भाजन, दोत, दोमात, दावात (राय ६६)।

लिङ्गमंत देखो लिङ्ग = लिङ्ग।

लिङ्गिर वि [दे] १ हय, भाद्र । २ हरा रंगवाला, 'महालिङ्गिरपट्टवणमिसेण' चोरसु पट्टवण व जो फुड राय 'लव्ह' (पर्मवि ७३)।

लिङ्गि } की [लिङ्गि, 'पी'] भसर सेवन प्रक्रिया
 लिङ्गी } (सम ३५, भग)।

लिस सक [स्वप्] सोना, सुतना, शयन करना । लिस (हे ४, १४६)।

लिस सक [लिङ्ग] प्राप्तगन करना । भवि. लिङ्गिसाभो (सुप्र २, ७, १०)।

लिसय वि [दे] वनूज कीण (दे ७, २२)।

लिसय देखो लिस = लिङ्ग। लिसवि (सुप्र १, ४, १, २)।

लिङ्ग सक [लिङ्ग] १ लिङ्गना । २ रेखा करना । लिङ्ग (हे १, १८७, प्राक ७०)।

कर्म लिङ्गद (उप) । प्रयो लिङ्गवेड, लिङ्गवात (सुप्र ३४८, सिद्धि १२७८)।

लिङ्ग सक [लिङ्ग] बाटना । लिङ्ग (कुमा, प्राक ७०)। कर्म, लिङ्गिजद, लिङ्गद (हे ४, २४५)। वड, लिङ्ग (भत १४२)।

कर्म, लिङ्गमत (वे ६, ४१)। क. लेवम (छाया १, १७—पत्र २३२)।

लिङ्ग न [लेङ्ग] बाटन (उर १, ८, पद. रमा १६)।

लिङ्ग न [लेङ्गन] १ लिङ्गना, लेख (सुप्र ३६८)। २ रेखा करण (रुद्र ५०)। ३ लिङ्गवाना, पनयणलिङ्ग सार्वस्व लक्ष

लिङ्गभवकाखण' (संयोप ३६)।

लिङ्गा की [लेङ्गा] देखो रेङ्गा = रेखा एक चिय मह भदणी मयणा घनाण घू (१) पुंरि

लहद निह' (सिद्धि ६७७)।

लिङ्गावण न [लेङ्गन] लिङ्गवाना (उप ७२४)।

लिङ्गावय वि [लेङ्गित] लिङ्गवाना हुमा (स ६०)।

लिङ्गिअ वि [लिङ्गित] १ लिङ्गा हुमा (प्रास ५८)। २ उल्लिखित (व्या)। ३ रेखा किया हुमा. चित्रित (कुमा)।

लिङ्गअ (भप) वि [लित] लिङ्गा हुमा, गृहीत (पिग)।

लंड वि [लंड] १ बाटा हुमा (सुपा ६५१)। २ स्पृष्ट, 'नरिवसि' (?) सिद्धि

कुमुपसोडपायवोड' (सुप्र ५)। ३ युक्त (पत्र १२५)।

लीण वि [लीन] लय-युक्त (कुमा)।

लीड वु [दे] पत्र (दे ७, २३)।

लीला की [लीला] १ विलास, मीन । २ लीला (कुमा पात्र, प्रास ६१)। ३ खन्ध-विशेष (पिग)। 'यई की' 'यती' १ विलास-वती की (प्रास ६१)। २ खन्ध विशेष (पिग)।

'यह रि' 'यह' लीला बाहक (गडड)।

लीलाइअ न [लीलायित] १ लीला केलि (कप)। २ प्रभाव, 'धम्मस लीलाइय' (उप १०३१ टी)।

लीलाय सक [लीलाय] लीला करना । वड, लीलायत (छाया १, १—पत्र १३, कप)। क. लीलाइयक (गडड)।

लीर पु [दे] बाल, बाहक (दे ७, २२, सुप्र १५, २१८)।

लीडा देखो लिङ्गा (छाया १, ८—पत्र १४५, कुमा भवि, सुपा १०६, १२५)।

लुअ सक [लु] धैरता, बाटना । सुपण्णा (पि ७७३)।

लुअ देखो लुण । लुअ (प्राक ७१)।

लुअ वि [लुअ] काटा हुमा, धिन (हे ४, २५८, पा ८, वा ८, से ३, ४२, दे ७, २३, सुप्र १३, १७५, सुपा ५२४)।

लुअ वि [लुअ] १ जिसका लोप किया गया हो वह । २ न. लोप (प्राक ७७)।

लुअवि वि [लुअवत्] जिसने छेदन किया हो वह (छाया १५१)।

लुंरु वि [दे] सुभ, सोया हुमा (दे ७, २३)।

लुंरुणी की [दे] चुकना, छिपना (दे ७, २४)।

लुंरु पुं [दे] निमग्न (दे ७, २३)।

लुंरुय पु [दे] निमग्न (दे ७, २३)।

लुअिअ वि [दे] कलुप, मलिन (सि १५, ४२)।

लुअ सक [लुअ] १ बाल उल्लाङ्गना। २ मपनयन करना, दूर करना। लुअइ (अभि)। भूवा, लुअियु (भावा)।

लुअिअ वि [लुअिअ] केरा-रहित किया हुआ, मुण्डित (कुप २६२; सुपा ६४१)।

लुअ सक [लुअ] प्र + लुअइ [मार्जन करना; पोछना। लुअइ (हे ४, १०५; प्राक ६७; भावा १५१)। वरु, लुअंत (कुमा)।

लुअ सक [लुअ] सूटना। लुअंति (सुपा ३५२)। वरु, लुअंत (अभि ११३)। वरु, लुअिअंत (सुर २, १४)।

लुअण न [लुअण] सूट (सुर २, ४६, कुमा)।

लुअक वि [लुअक] सूटनेवाला, लुअक (अभि १२३)।

लुअण वि [लुअण] खल, दुर्जन, 'बहवद-वेदिमा उवहसिअमणा लुअणोएण, अणु-कसिअन्तो धम्ममज्जणेण' (मुख २, ६)।

लुअिअ वि [लुअिअ] वसाइ गृहीत, जबर बली से किया हुआ (सिग)।

लुअ सक [लुअ] १ लोप करना, विनाश करना। २ लोपिअ करना। लुअइ, लुअहा (प्राक ७१; सूम १, २, ४, ७)। कर्म, लुअइ (अभा), लुअए (सूम १, २, १, १३)। वरु, लुअंत, लुअमाण (सि (सि ५४२, उवा)। वरु, लुअिअ (सि ५४२)।

लुअइ लु [लोपयिअ] लोप करनेवाला (भावा; सूम २, २, ६)।

लुअणा ली [लोपना] विनाश (परह १, १—अत्र ६)।

लुअिअ वि [लोअ] लोप करनेवाला (भावा)।

लुअी ली [दे, लुअी] १ स्तवक, फलो का गुच्छ (दे ७, २८, कुमा, भा ३२२, कुप ४६०)। २ सत्ता, बली (दे ७, २८)।

लुअ सक [नि + लो] लुअना, क्षिपना। लुअइ (हे ४, ५५; पद)। वरु, लुअंत (कुमा, वग ५६)।

लुअ सक [लुअ] सूटना। लुअइ (हे ४, १०५; प्राक ६६; भावा १५१)। वरु, लुअंत (कुमा)।

लुअिअ वि [लुअिअ] मुण्डित, केरा-रहित किया हुआ, मुण्डित (कुप २६२; सुपा ६४१)।

लुअ सक [लुअ] प्र + लुअइ [मार्जन करना; पोछना। लुअइ (हे ४, १०५; प्राक ६७; भावा १५१)। वरु, लुअंत (कुमा)।

लुअ सक [लुअ] सूटना। लुअइ (हे ४, १०५)।

लुअ वि [दे] सुभ, सोया हुआ (पद)। लुअ वि [निलेन] लुअ हुआ, क्षिप हुआ (भा ४६, ५५८; सिग)।

लुअ वि [रुण] १ मन (कुमा)। २ बीमार, रोगी (हे २, २)।

लुअ वि [लुअिअ] मुण्डित, केरा-रहित (अभा; सिग २१७)।

लुअमाण देवो लोअ = लोक।

लुअिअ वि [लुअिअ] सूटना हुआ, क्षिपित (कुमा)।

लुअिअ वि [निलेन] लुअ हुआ, क्षिप हुआ (सिग)।

लुअण पुं [रुअ] १ स्पर्श विशेष, लुअ स्पर्श (ठा १, सम ४१) २ वि, रुअ स्पर्शवाला, स्नेह रहित, लुअ, रुअ (खाया १, १—अत्र ७३, अभा, बीप)। देवो लुअ = रुअ।

लुअ वि [दे, रुअ] १ मन, भांग हुआ (दे ७, २३, हे २, ४, २५८)। २ रोगी, बीमार (हे २, २, ४, २५८ वद)।

लुअ देवो लुअ = मृत्। लुअइ (पद)।

लुअ सक [लुअ] सूटना। लुअइ (पद)।

लुअ देवो लुअ = त्वत्। लुअइ (कुमा ६, १००)।

लुअ वि [लुअिअ] सूटना गया (अभि ७)।

लुअ पुं [लोअ] रोडा, देवा, ईंट आदि का टुकड़ा (दे ७, २६)।

लुअ देवो लुअ (प्राक २१)।

लुअ सक [लुअ] लुअकना, लेटना। वरु, लुअमाण (स २५४)।

लुअिअ वि [लुअिअ] लेटा हुआ (सुपा ५०३, स ३६६)।

लुअ देवो लुअ = सू। लुअइ (हे ४, २४१)। कर्म, लुअिअइ, लुअइ (भाप, हे ४, २४२)।

वरु, लुअिअण, लुअेअण (प्राक ६६, पद), लुअेअिअ (अभा) (सि ५८८)।

लुअिअ वि [लुअ] लुअ हुआ (अभि १२६; सिग ४०४)।

लुअ वि [लुअ] लोप-प्राप्त; 'करेअ लुअो इत्तरो ख' (वेअ ६७७)।

लुअ न [लोअ] चोरी का माल (आवक १३ टी)।

लुअ पुं [लुअ] १ व्याप (परह १, २, निबु ४)। २ वि. लोपण, लपट (प्राक, विपा १, ७—अत्र ७७; प्रासु ७६)। ३ न. लोम (सुह ३)।

लुअ न [लोअ] गन्ध-द्रव्य-विशेष, 'सिगएअं भद्रवा कर्क लुअं पउमगाणि भ' (वस ६, ६४)। देवो लुअ = लोअ।

लुअ पुं [लोअ] क्षार-विशेष (भावा २, १३, १)।

लुअण } देवो लुअ।

लुअण } अक [लुअ] १ लोम करना।

लुअ } २ प्रासक करना। लुअइ, लुअिअ (हे ४, १५३, कुमा), लुअइ (पद)। कर्म, लुअिअइ (परह २, ५—अत्र १४६)।

लुअ देवो लुअ = मृत्। लुअइ (सिग १५)।

लुअणी ली [दे] वायु-विशेष (दे ७, २४)।

लुअ देवो लुअ। लुअइ (सिग)। वरु, लुअंत, लुअमाण (सुपा ११७, सुर १०, २३१)।

लुअिअ वि [लुअिअ] लेटा हुआ (सुर ४, ६८)।

लुअिअ वि [लुअिअ] धूँएल, बलित (उवा, कुमा, काप ८६३)।

लुअ देवो लुअ = सू। लुअइ (भावा १५१)।

लुअ देवो लुअ = लुअ। लुअइ (भावा १५१)।

लुअ सक [लुअ] मार्जन करना, पोछना। लुअइ (हे ४, १०५, पद, प्राक ६६; भावा १५१)।

लुअण न [मार्जन] मुण्डित (कुमा)।

लुअ देवो लुअ = लुअ (पद)।

लुअ ली [दे] मृग-मुल्ला, सूर्य-किरण में जल की प्राप्ति (दे ७, २४)।

लुअ ली [लुअ] १ भाविक रोग विशेष (पंचा १८, २७; सुपा १४७; सङ्ग १५)। २ जल बतानेवाला ईमि, मकड़ी (भोप ३२३, दे)।

लुअ [लुअ] सूटना, चोरी करना। लुअइ, लुअइ (अभि ८०; संवेग २६; कुप ५६)। हेअ, लुअंति (सुपा ३०७; अभि १२४)। अयो, वरु, लुअंति (सुपा ३४२)।

लूड वि [लूण्ट] लूडनेवाला । छी. 'डी,
सो नतिथ एव गमे जो
एयं महमहंतामरण ।
तरणारण हिययर्द्धि
परिसकति निवारिद ॥'
(हेवा २६०, बाप ६१७) ।

लूडण न [लूण्टन] लूट, चोरी (स ४४१) ।
लूडिअ वि [लूण्टिअ] लूटा हुआ (स ५३६,
पडम ३०, ६२, सुपा ३०७) ।

लूण देवो लूअ = लून (दे ७, २३, सुपा
१२२, कुमा) ।

लूण न [लूण] १ लून, लून, मोन, नमक
(जी ४) । २ पु वनसति विशेष (आ २०,
धर्म २) । देवो लूण ।

लूण न [लूण] लावण, सुन्दरता, शरीर-
कान्ति (सुपा २६१) ।

लूसक [लूव] काटना । लूरद (हे ४,
१२४) ।

लूरिअ वि [लूजिअ] काटा हुआ (कुमा ६,
८३) ।

लूस सव [लूय] १ बय करना, मार
हालना । २ पीटना, बर्चन करना, हैरान
करना । ३ दूषित करना । ४ चोरी करना ।
५ विनाश करना । ६ भनादर करना ।
तोडना । ८ छोटे को बड़ा और बड़े को
छोटा करना । लूसति, लूनयति, लूसण्ण
(सूम १, ३, १, १४, १, ७, २१, १, १४,
१६, १, १४, २५) । भूला, लूसिदु (भावा) ।
सक लूसिई (आ १२) ।

लूसअ वि [लूयक] १ हिसा, हिसा करने-
लूसग } वाला । २ विनाशक (सूम २, १,
५०, १, ३, ३, ६) । ३ प्रवृत्ति कर, निर्दय ।
४ मसक (सूम १, ३, १, ८) । ५ दूषित
करनेवाला (सूम १, १४, २६) । ६ विनाश-
क, भासा नहीं माननेवाला (सूम १, २, २,
६, भावा) । ७ हेतु विशेष (आ ४, १—पत्र
२५४) ।

लूमण वि [लूण] ऊपर देवो (भावा,
भी) ।

लूमय वि [लूयक] १ परिणाम-कर्ता (भावा
२, १, ६, ४) । २ चोर, उस्कर (धव ४) ।

लूसिअ वि [लूपित] १ लुपित, लुटा गया
(आ १२) । २ उपद्रुत, पीडित (सम्मत
१७५) । ३ विनाशित (संबोध १०) । ४
हिसित (भावा) ।

लूह सक [सृज्, रूक्षय्] पोखना । लूहेद,
लूहेवि (राय, छाया १, १—पत्र ५३) ।
सक लूहिता (पि २५७) ।

लूह पुं [रूक्ष] बुद्धि, साधु भ्रमण (दत्तानि
२, ६) ।

लूह वि [रूक्ष] १ लूना, लूना स्नेह-रहित
भावा, पिड (२६, उव) । २ पु, समय, विरति,
वारिज (सुम, १, ३, १, ३) । ३ न तप-
विशेष, निविकृति तप (संबोध ५८) । देवो
लूस्य ।

लूहिय वि [रूक्षित] पोखा हुआ (छाया १,
१—पत्र १६, कय, भीष) ।

ले सक [ल] लेना, ग्रहण करना । लेद (हे
४ २१८, कुमा) । बक, लित (सुपा २५२,
पि) । सक, लेवि (सक) (हे ४, ४४०) ।

हेक, लेविण (पत्र) (हे ४, ४४१) ।

लेमय न [लेय] १ व्यवहार, व्यापार (सुपा
४२४) । २ लेना, हिसाव (कुप २३८) ।

लेमसा देवो लिह्दा (गवड) ।
लेम देवो लेह् = लेख (सम ३५) ।

लेमापित देवो लिह्दापित (पि ७) ।
लेच्छइ पु [लेच्छकि] १ लज्जित विशेष ।

२ एव प्रतिष्ठ राज-वंश (सूम १, १३, १०,
भय, कय, भीष, गवड) ।

लेच्छइ पु [लिमुसक, लेच्छकि] १ वणिग्-
वैश्य । २ एव वणिग्-जाति (सूम २, १,
१३) ।

लेच्छारिय वि [दे] सरहित, सिम (पिड
२२०) ।

लेम देवो लिह्द = लिह् ।

लेट्ट पु न [लेट्ट] रोडा, ईद, पत्थर आदि
वा टुकड़ा (विशे २४६६, भीष उव, कय,
महा) ।

लेट्ट पु न [दे, लेट्ट] ऊपर देवो (भावा,
लेट्टअ) १ ७, २४५) ।

लेट्टाक पुं [दे] १ रोडा, लोट । २ वि,
समेट (दे ७, २६) ।

लेटिअ वि [दे] स्मरण, स्मृति (दे ७, २५) ।

लेट्टक वि [दे] रोडा, लोट (दे ७, २४,
पात्र) ।

लेण न [लयन] १ गिरि-वर्ती पापाण-गृह
(छाया १ २—पत्र ७६) । २ बिल, जल-
गृह (कय) । ३ विहि पुंजी [विधि] कला-
विशेष (भीष) । देवो लयण = लयन ।

लेप न [लेप] भित्ति, भीत (धर्मस २६,
कुप २००) ।

लेपमार पु. [लेपमार] शिखी विशेष,
राज, राजगीर (प्रलु १५६) ।

लेप्या जी [लेप्या] लेपन किया (उत्त १६,
६५) ।

लेट्ट देवो लेट्ट (भावा, सूम २, २, १८,
पिड ३४६) ।

लेर पु [लेप] १ लेपन (सम १६, पडम २,
२८) । २ नानि प्रमाण जल (भीषना ३४) ।

३ पु. भगवान् महावीर के समय का मासदा-
निवासी एक गृहस्थ (सूम २, ७, २) । ४ कड,
'हड वि [हट] लेप मिश्रित (भीष ५६५,
पत्र ४ टी—पत्र ५६, पिड) ।

लेरण न [लेपन] लेपन-करण (पत्र १३३) ।
लेराड वि [लेपण] १ लेप कारक (वर १) ।

लेस पु [लेस] १ मल, स्तोक, लव, बोझ
(पात्र, दे ७, २८) । २ संज्ञेय (हे १) ।

लेस वि [दे] १ लिखित । २ आश्रय । ३
नि राग, राग रहित । ४ पु, निश (दे ७,
२८) ।

लेस पु [लेप] संज्ञेय, सबध, मिश्रान
(राय) ।

लेसण न [लेपण] उपर देवो (विशे
२००७) ।

लेसणया } श्री [लेपण] ऊपर देवो (भीष-
लेसण } डा ४, ४—पत्र २८०, राज) ।

लेसणी श्री [लेपणी] विद्या विशेष (सूम
२, २, २७, छाया १, १६—पत्र २१३) ।

लेसा श्री [लेपया] १ तेज, दीप्ति । २ मज्ज,
बिम्ब चंदन सेत आभारेणाल चिह्न (सम
२६) । ३ विरह (सुत्र १६) । ४ देह-
सौन्दर्य (राज) । ५ भाषा वा परिणाम-
विशेष, इच्छादि द्रव्यों के तानिष्प मे उत्पन्न
होनेवाला भाषा वा गुण वा द्रव्य परिणाम ।
६ भाषा मे शुभ वा अशुभ परिणाम भी उत्पति

में निमित्त-भूत कृष्णादि द्रव्य (अथ, उवा.
श्रीप. पत्र १५२, जीवस ७५, संशोध ४८,
परण १७, कम्म ४, ३, ३१) ।

लेसा की [लेस्या] उवाला (राय १६, ५७) ।
लेसिय वि [लेयिन] स्वेन-भुक्त (स ७६२) ।
लेमुस्सपतस्स पुं [दे] लसोडा, शु० वृद्धा
(चउपम ० पत्र २४३) ।

लेसा देवो लेसा (मग) ।

लेह देवो लिह = लिख् । लेह (प्राकृ ७०) ।
लेह देवो लिह = लिह् । लेह (प्राकृ ७०) ।
लेह (मर) देवो लह = लम् । लेह (मिग) ।
लेह पु [लेह] मयलेह, चाटन (पउम २,
२८) ।

लेह पु [लेह] १ लिखन, लेखन, मसर-
नियाम (मा २४४, उवा) । २ पत्र, चिट्ठी
(कम्प) । ३ देव, देवता । ४ लिपि । ५ वि,
लेख्य, जो लिखा जाय (हे २, १८६) । ६
लेखक, लिखनेवाला, 'मज्झिमे लेखणे सण्हा'
(अजा १००) । 'वाह वि [वाह] चिट्ठी
से जानेवाला, पत्र-वाहक (पउम ३१, १,
मुपा ५१६) । 'वाहण, 'वाहय वि
[वाहक] वही मर्ष (मुपा १३१, १३२) ।
'साळा की [शाळा] पाठशाला (उप ७२८
दे) । 'रिय पु [चार्य] सगम्माय, शिक्षक
(महा) ।

लेहड वि [दे] लम्पड, लुण्ठ (दे ७, २५,
उव) ।

लेहण [लेहन] चाटन, भास्वानन (पउम
१, १०७) ।

लेहणी की [लेहनी] बलम, लेखनी (पउम
२६, ५, गा २४४) ।

लेहल देवो लेहड (गा ५६१) ।

लेहा देवो लिहा (श्रीप. कम्प, कम्पू कुप
३६६, स्वप्न ५२) ।

लेहिय वि [लेसित] लिखवाया हुआ (वी
७) ।

लेहुड पु [दे] मोह, रोझ, डंका (दे ७, २४) ।

लोअ देवो रोअ = रोचय् । सह. लोएया
(कत) ।

लोअ सह [लोक्, लोक्य] देखना । वह.
लोअअत (नाट) । कवह, लुब्धमाग (उप
१४२ दे) । सह. लोइत् (दुप ३) ।

लोअ पुं [लोक्] १ धर्मास्तिकाय आदि द्रव्यो
का आधारभूत आकाश-क्षेत्र, जगत्, संसार,
भुवन । २ जीव, भ्रवीय आदि द्रव्य । ३
समय, आवृत्तिका आदि काल । ४ गुण,
पर्याय, धर्म । ५ जन, मनुष्य आदि प्राणि-
वर्ग (ठा १—पत्र १३, ये—पत्र १४, मप,
हे १, १८०, कुमा. जो १४, प्रासू ५२, ७१,
उव. सुर १, ६६) । ६ भालोक, प्रकाश
(वजा १०६) । गगं न [गि] १
ईषत्मागमारा नामक बुधिवी, मुक्त-स्थान
(आया १ ५—पत्र १०५, इक) । २ भुवि,
मोक्ष, निर्वण (पाप) । 'गायूभिआ की
[गिस्तूपिका] मुक्त स्थान, ईषत्मागमारा
बुधिवी (इक) । 'गगपडिउउभगा की
[गमपत्तिपोपना] वही मर्ष (इक) । 'गाभि
पु [नाभि] मेव पर्वत (सुज ५) । 'पपाय
पु [प्रमाद] जन-भुवि, कदाचित (सुर २,
४७) । 'मउक पु [मध्य] मेव पर्वत (सुज
५) । 'वाय पुं [वाद] जन-भुवि,
लोकवि (स २६०, मा ४८) । 'गास पुं
[काश] लोक क्षेत्र, भालोक भित्त आकाश
(मग) । 'हाणय न [भाणह] कदाचित,
लोकिक (मि) । देवो लोग ।

लोअ पु [लोच] लुब्धन, मोचना, केसो का
उखाटन, उखाटना (मुपा ६४१, कुप १७३,
आया १, १—पत्र ६०, श्रीप. उव) ।

लोअ पु [लोप] मरहान, विम्वस (वेद्य
६६१) ।

लोअतिय पु [लोअनिक] एक देव जाति
(वप) ।

लोअग न [दे लोचक] गुण रहित धर्म,
स्रय नान (कत) ।

लोअडो (मप) की [लोअमर्षा] कम्पल (ह
४, २२३) ।

लोअण पुन [लोचन] मोक्ष, चयु नेत्र (हे
१, ३३, २, १८४, कुमा. पाप सुर २,
२२२) । 'वत्त न [पत्र] मसि लोम,
वरवनी, पद्म (मि ६, ६८) ।

लोअण्डि वि [लोचनयन्] ध्रुववाला
(मुपा २००) ।

लोआणी की [दे] वनस्वति विशेष (पण
१—पत्र ३६) ।

लोइअ वि [लोकिन] निरीक्षित, हट्ट (मा
२७१; स ७१३) ।

लोइअ वि [लोकिक] लोक-संस्थी, सासारिक
(आवा, विपा १, २—पत्र ३०, आया १,
६—पत्र १६६) ।

लोउत्तर वि [लोकोत्तर] लोभ प्रवृत्त, लोभ-
धैर्य प्रसाधारण 'लोउत्तर पारित' (आ १६,
विसे ८७०) । देवो लोगुत्तर ।

लोउत्तरिय वि [लोकोत्तरिक] ऊपर देवो
(आ १) ।

लोँक वि [दे] वृत्त, सोया हुआ (दे ७, २३) ।

लोग पुं [लोक] मान विशेष, धेयो से गुणित
प्रवर (अणु १७३) । 'यत देवो 'यय
(मणु ३६) ।

लोग देवो लोग = लोक (ठा ३, २, ३,
३—पत्र १४२, कम्प, कुमा, सुर १, ७६,
हे १, १७७, प्रासू २५, ४७) । ७ न एक
देव-विमान (सम २५) । 'कन न [काग]
एक देव विमान (सम २५) । 'कूड न
[कूट] एक देव विमान (सम २५) ।
'गच्छुल्लिआ की [प्रच्छुल्लि] मुक्त स्थान,
स्तिथि स्थान (सम २२) । 'जवा की
[यात्रा] लोक-व्यवहार, रीति (आया १,
२—पत्र ८८) । 'डिह की [स्थिति] लोक-
व्यवस्था (ठा ३, ३) । 'वउन न [द्रव्य]
जीव, भ्रवीय आदि पदार्थसङ्घ (मग) ।
'नाभि पु [नाभि] मेव पर्वत (सुज ५
दे)—पत्र ७३) । 'नाह पु [नाभ] जगत्
का स्वामी, परमेश्वर (सम १, मग) ।
'परिपूर्णा की [परिपूर्णा] ईषत्मागमारा
बुधिवी मुक्त-स्थान (सम २२) । 'पाल पु
[पाल] इन्द्रो के दिशपाल, देव विशेष (ठा
३, १, श्रीप) । 'पपम पुं [प्रम] एक देव-
विमान (सम २५) । 'विहुमार पुंन
[विन्दुसार] चौदहवां पूर्व प्राय (सम
४४) । 'मज्झाससिअ पुन [मज्झाससित]
अतिशय विशेष (ठा ४, ४—पत्र २८५) ।
'मज्झाससाणिअ पुन [मज्झाससानिक]
वही मर्ष (उप) । 'रुव न [रूप] एव
देव विमान (सम २५) । 'सेस न [सेस्य]
एक देव-विमान (सम २५) । 'वण्ण न
[वर्ण] एक देव-विमान (सम २५) ।

वाल देखो पाळ (कुप्र १३५)। वीर पुं [वीर] मगवान महावीर (उव)। सिंग न [सिङ्ग] एक देव-विमान (सम २१)। सिट्ट न [सृष्ट] एक देव-विमान (सम २५)। हिअ न [हित] एक देव-विमान (सम २५)। णय न [णय] नास्तिक-प्रणीत शास्त्र, चार्वाक-दर्शन (एवि)। लोग पुन [लोके] परिपुण्य आकाश-सेन, संपूर्ण अगत (उव, वि २०२)। णय न [णय] एक देव-विमान (सम २५)। ह्राण न [ह्रिय] लोकोक्ति, जन-श्रुति (उप ५३० टी)। लोगतिय देखो लोअविय (वि ५६३)।

लोगिग देखो लोअ—लौकिक (परमं १२४५)।

लोगुसर देखो लोउत्तर। वडियस न [वडियस] एक देव-विमान (सम २५)। लोगुसर पुं [लोकोत्तर] पुनि, साधु। २ जिन-शासन, जैन सिद्धान्त (मनु २६)।

लोगुत्तरिअ वि [लोकोत्तरिक] १ साधु का। २ जिन शासन का (मनु २६)।

लोगुत्तरिय देखो लोउत्तरिय (भोप ७६५)।

लोट्ट मक [स्मृ] लोटना, सोना। लोट्ट (दे ४, १५६)। लोट्ट (पाम)।

लोट्ट मक [लुट्ट] १ लोटना। २ प्रवृत्त होना। लोट्ट लोट्टी (प्राह ७२, सुप्र १, १५, १५)। लोट्ट (सुप्र ५६६)।

लोट्ट पुं [दे] १ कच्चा आवत (निबु लोट्ट ५)। २ पुत्री, हाथी का छोटा बच्चा (एणा १, १—पत्र ६३), ली, ह्रिया (एणा १, १)।

लोट्टिअ वि [दे] उपविष्ट (दे ७, २५)।

लोट्ट वि [दे] स्मृत (प३)।

लोट्ट पुं [लोए] रोग, रोग (दे ७, २५)।

लोटाघिय वि [लोटित] मुमगा हुमा (पा ७६६)।

लोड सव [दे] कपास निजालना, लोडना, पुनराती में 'लोड'। लोडयंत (रान)। लोड पुं [दे] १ लोड, शिवमुखा, लोडने का पत्थर (राम ५, १, ५५; उवा)। २ मोरपि-विशेष, पवित्रीचन्द (पव ५, या

२०, संबोध ५५)। ३ वि, स्मृत। ४ शयित (दे ७, ७२६)।

लोडय पुं [दे, लोट्ट] कपास के बीज निकालने का यन्त्र (मउड)।

लोडिअ वि [लोडिअ] सेटवाया हुमा, सुलाया हुमा (पत्रम ६१, ६७)।

लोण न [लण] १ कुन, नमक। २ सावण्य, शरीर-कान्ति (गा ३१६, कुमा)। ३ पुं, बुझ विशेष (पत्रम ४२, ७, या २०; पव ४)। ४—देखो लण (दे १, १७१, प्राप्र-मउड, भौप)।

लोणिय वि [लोणिक] सवण-युक्त, लवण-सम्बन्धी (भौप ७७६)।

लोणन न [लोणन] शरीर-कान्ति (प्राह ५)।

लोत्त न [लोत्त] चोरो का मास (स १७१)।

लोड पुं [लोड] बुझ-विशेष (एणा १, १—पत्र ६३, पण १, सुप्र १, ५, २, ७, भौप, पुना)। देखो लुड—लोप्र।

लोड देखो लुड—बुझ (पाम, सुप्र १, ५७, १०, २२३; प्राप्र)।

लोप देखो लुप; 'जो एव वयं लोपइ सो विनिवि लोपयंतो कि कैलापि चरित् पारीयइ' (स ५६२)।

लोभ सक [लोभ] लुभावा, लालच देना। कवड, लोभजित (सुप्र २१)।

लोभ पुं [लोभ] लालच, लुप्ता (प्राचा, नय, भौप, उव, ठा ३, ४)। २ वि, लोभ-युक्त (पवि)।

लोभणय वि [लोभन] लोभी, लालची (प्राचा २, १५, ५)।

लोभि } व [लोभिन्] लोभशाला (कम्म लोभिळ ५, ५०, पत्रम ५, ५६)।

लोभ पुन [लोभ] रोग, रोग, रूग्णता (उवा)।

'परिस पुं [पसिअ] रोग में संशयता पसी (ठा ५, ४—पत्र २७१)। 'स वि [श] लोभ-युक्त (मउड)। 'हस्स पुं [हस्स] पीछी, रोगो का बना हुआ मांस (विपा १, ७—पत्र ७८, भौप, एणा १, २)। 'हरिस पुं [हर्ष] १ नरकावास विशेष (देवद २७)।

२ रोगाद, रोगो का उद्घा होना (उव ५, ३१)। 'हार पुं [हार] नारा नर पन

पुनरागता चोर (उव २, २८)। 'हार पुं

[हार] रूग्ण से लिया जाता नारा, लवा से ली जाती छुरक (मग, सुप्रनि १७१)।

लोमंथिय पुं [दे] नट (नदि टिप्पण देवमिक बुद्धिगत १३ वां कथानक)।

लोमसी छो [दे] १ ककड़ी, खोप (उप ५ २५२)। २ बल्ली विशेष, ककड़ी का गाछ (वव १)।

लोय न [दे] सुन्दर भोजन, मिष्ठान (प्राचा २, १, ४, ३)।

लोय पुं [दे] १ नैन, प्राँल। २ मनु, प्राँल (पिप)।

लोड मक [लुड] १ लोटना। २ सक, विचोडन करना। लोड (पिड ५२२, पिग), 'लोडइ रससवन' (पत्रम ७१, ४०)।

लुड, लोडत; लोडमाण (कप; पिग, पत्रम ५३, ७६)।

लोड सक [लोडय] लोटना। लोडइ, लोडिअ (उवा)।

लोड वि [लोड] १ लम्पट, लुप, प्राप्त (एणा १, १ टी—पत्र ५, भौप, पाम, कप; सुप्र ३२५)। २ पुं, रत्न-भ्रमा नरक का एक नरकावास (ठा ६—पत्र ३६५, देवद ३०)। ३ शर्कराभा नामक द्वितीय नरक-प्रपिरी का नववा नरकेन्द्रक—नरक-स्थान (देवद ७)। 'मउड पुं [मउड] नरकावास-विशेष (ठा ६ टी—पत्र ३६७)। 'सिट्ट पुं [सिट्ट] नरकावास-विशेष (ठा ६ टी)। 'वत्त पुं [वत्त] नरकावास विशेष (ठा ६ टी, देवद ७)।

लोडिअ न [दे] बाहु, छुरामद (दे ७, २२)।

लोडय न [लोडन] १ लोटना, लोलन (सुप्र १, ५, १, १७)। २ लोटवाना (उप ५१०)।

लोडयच्छ पुं [लोडयच्छ] नरक-स्थान विशेष (देवद ३०)।

लोडिअ न [लोडय] लम्पटता, लोडपटा (पण १, ३—पत्र ५३)।

लोडिअ पुं [लोडय] ऊपर देखो (कुमा)।

लोडिअ वि [लोडय] १ लम्पट, लुप (पत्रम १, ३०, २६, ५७; पाम, सुप्र १५, ३३)। २ पुं, रत्न-भ्रमा नरक का एक नरकावास

(छ ६—पत्र ३६५) । 'च्युअ पुं' [च्युअ]
रत्नप्रभा-नरक का एक नरक-स्थान (उवा) ।

लोहंवाविअ वि [दि] रचित-मुष्ण, जिसने
मुष्ण की हो वह (दे ७, २५) ।

लोह्य देखो लोह्य (सूय २, ६, ४४) ।

लोय सक [लोय] लोप करना, विध्वंस
करना । लोयेद (महा) ।

लोय पुन [लोय] विध्वंस, विनाश, अदराना
'कम-सोवकाया' (हुय ४), 'भा हुट्टे जागु
बहि लोव' व सुमं अदरणा होयु' (धर्मि
१३३) ।

लोह देखो लोम = लोम (कुमा, प्रासु १७६) ।

लोह पुन [लोह] १ धातु-विशेष, लोहा
(विपा १, ६—पत्र ३६; पात्र, कुमा) । २
धातु, लोह भी धातु; 'जह लोहाय सुयलं
तयाण धलं घणाण रमणाई' (सुपा
६३६) । 'कार पुं' [कार] लोहार (कुप्र
१८८) । 'जंघ पुं' [जंघ] १ भारत में
वल्गल द्वितीय प्रतिवापुदेव राजा (सम
१५४) । २ राजा बएडमचीत का एक ब्रत
(महा) । 'जंघयण न [जंघयण] मधुरा
के समीप का एक वन (वी ७) ।

लोह वि [लोह] लोहे का, लोह-निर्मित (दे
१४, २०) ।

लोहंगिणी की [लोहाङ्गिनी] छन्द-विशेष
(सिग) ।

लोहल पुं [लोहल] शब्द-विशेष, ध्वन्यक्त
शब्द (पद्) ।

लोहार पुं [लोहार] लोहार, लोहे का काम
करनेवाला शिली (दे ८, ७१; ठा ८—पत्र
४१७) ।

लोहिं } देवो लोही; 'कुंभोय य पयसेयु
लोहिअं } य लोहियु य कदुलोहिं कुंभोय'
(सूपनि ८०, ७६) ।

लोहिअ पुं [लोहित] १ सात रंग, रक्त-
वर्ण । २ वि. रक्त वर्णवाला, लाल (दे २,
४; उवा) । ३ न. रविर, सून (पत्रम ५,
७६) । ४ गौर विशेष, जो कौशिक गौर की
एक शाखा है (ठा ७—पत्र ३६०) ।

लोहिअक पुं [लोहित्यक, लोहिताङ्क]
महासी महाप्रहो में लोचरा महाप्रह (सुज
२०) ।

लोहिअकर पुं [लोहिताङ्क] १ एक महाप्रह
(ठा २, ३—पत्र ७७) । २ चमरेन्द्र के
महिय-सैन्य का अधिपति (ठा २, १—पत्र
३०२, ६६) । ३ रत्न की एक जाति (साया
१, १—पत्र ३१, कप, उत्त ३६, ७६) ।
४ एक देव विमान (देवेन्द्र १३२, १४४) ।
५ रत्नप्रभा वृषियों का एक कण्ठ (सम
१०४) । ६ एक पर्वत-दूट (दक) ।

लोहिआ } मक [लोहित्या] सात
लोहिआअ } होमा । लोहिआइ, लोहिआइ
(दे ३, १३८; कुमा) ।

लोहिआमुह पुं [लोहितामुह] रत्नप्रभा का
एक नरकावास (स ८८) ।

लोहिअ पुं [लोहित्य] आचार्य भूतदित्य के
शिष्य एक जैन मुनि (एदि ५३) ।

लोहिअ } न [लोहित्यायन] गौर-विशेष
लोहिआयण } (सुज १०, १९ टी; दक;
सुज १०, १६) ।

लोहिणी } की [दि] वनसति-विशेष, कन्द-
लोहिणीहू } विशेष (पण १—पत्र ३५),
'लोहिणीहू य योहू य' (उत्त ३६, ६६; सुज
३६, ६६) ।

लोहिह वि [दि. लोभिन्] लम्पट, लुब्ध (दे
७, २५; पत्र ८, १०७; गा ४४४) ।

लोही की [लोही] लोहे का बना हुआ
मानव-विशेष, ब्राह्म (स ८३३, चाप १) ।

लह देखो लस = लम् । लहद (प्रक ७२) ।

लहस मक [लस] विधक्ता, सरक्ता,
गिर पटना । लहसद (दे ४, १६७; पद्) ।
बङ्ग, लहसंत (वज्रा ६०) ।

लहसण न [लसन] विधक्ता, पतन (सुपा
५५) ।

लहसाय सक [लसय] क्षिप्तकाना । संङ्ग,
लहसाविअ (सुपा ३०८) ।

लहसाविअ वि [लसिद] क्षिप्तकाया हुआ
(सुपा) ।

लहसिअ वि [लसत] विहक कर गिरा हुआ
(हुय १८७; वज्रा ८४) ।

लहसिअ वि [दि] हूत (बङ्ग) ।

लहसुण देखो लसुण (पण १—पत्र ४०;
पि २१०) ।

लहादि की [लहादि] माहाद, प्रमोद, क्षुरी
(पत्र) ।

लहाय पुं [लहाय] ऊपर देखो (धर्मसं
२१६) ।

लहासिय पुं [लहासिक] एक धनार्थ मनुष्य-
जाति (पण १, १—पत्र १४) ।

लिहक मक [नि + लो] क्षिप्त । लिहकह
(दे ४, ५५, पद् २०६) । बङ्ग. लिहकत
(सुपा) ।

लिहक वि [दि] १ मट (दे ४, २५८) । २
गट (पद्) ।

॥ इय विरिपाइअसदमहण्यग्नि लघायादमदकल्लो
अज्जोअदयो तरंको समतो ॥

व

व पुं [व] १ घन्तरूप व्यञ्जन वर्ण-विशेष, जिसका उच्चारणस्मान दन्त और श्रोष्ठ हैं (प्राप, प्रामा) । २ पुन. वल्ल (से १, १, २, ११) ।

व घ [व] देखो इय (से २, ११; गा १८, ६३; ६४, ७६; कुमा. हे २, १८२, प्राप् २) ।

व देखो वा = व (हे १, ६७, गा ४२, १६४, कुमा. प्राप् २६, भवि) ।

व देखो वाया = वाच् । *क्खेयअ वि [क्खेयक] वचन का निरसन—खण्डन (गा १४२ भ) । *पइयय पुं [पतिराज] एक प्राचीन कवि, 'गउडवहो' नाम्य का कर्ता (गउड) ।

वअणीआली [दे] १ जन्मत्त ली । २ दु शील ली (वड्) ।

वअल मक [प्र + ल] पहरता, कैतना । बमलइ (पट्) ।

वआइ देखो घायाइ = वाचाट (सति २) ।

वइ घ [घे] इन भयों का मूचक अव्यय— १ अवधारण, निधय (विसे १८००) । २ अनुपय । ३ सबोधन । ४ पादवृत्ति (चंड) ।

वइ घ [दे] बदि, इत्यल पण, 'कण्णुवइ-छट्ठीए' (मुपा ८६) ।

वइ वि [प्रतिम्] व्रतवाला, समयी (उव, मुपा ४३६) । ली. 'णी (व ५७१) ।

वइ ली [याच्] वाली. वचन (सम २४, बन्ध, उप ६०४ या ३१, मुपा १८४, बन्ध ४, २४, २७, २८) । *मुत्त वि [गुप्त] वाली वा संयमवाला (माचा. उप ६०४) ।

*मुत्ति ली [गुप्त] वाली वा समय (माचा) । *जोअ, *जोम पुं [योग] वचन-संगार (मन पएट १२) । *जोमि वि [योगिन्] वचन संगारवाला (मग) ।

*मंत वि [मन्] वचनवाला (माचा २, १, ६, १) । *मेत्त न [मात्र] निरर्थक वचन (परमंत २८४, २८५, ८४४) । देखो पदे ।

वइ ली [वृत्ति] बाढ, कटि आदि से बनाई जाती स्थानपरिधि, घेरा, 'घन्याणं रक्खद्धा कीरति वईमो' (या १०, गउड, गा ६६, उप ६४८, पउम १०३, १११, वजा ८८), उच्छू बोलति वइ' (घर्मवि ३३, सबोध ४२) ।

*वइ देखो पइ = पति (गा ६६, से ४, ३४, कण, कुमा) ।

वइ देखो यय = वद् ।

वइ देखो यय = वच् ।

वइअ वि [दे] १ पील, जिसका पान किया गया हो वह (दे ७, ३४) । २ घाच्छादित, ढका हुआ, 'पच्छादइत्तमिमाइ वइमाइ' (पाम) ।

वइअ वि [व्ययित्] जिसका व्यय किया गया हो वह, 'किमिह व्खेए वइएणं वइएण' (मुपा ५७८, ७३, ४१०) ।

वइअउभ पुं [वेदभे] १ विदग्ध देश का राजा । २ वि. विदग्ध देश में उत्पन्न (पट्) ।

वइअर पुं [व्यतिकर] प्रसङ्ग, प्रस्ताव (सुर ४, १३६, महा) ।

वइअउर देखो वय = वच् ।

वइआ ली [प्रजिना] छोटा गोबुल (मिड ३०६, मुल २, ५, शोष ८४) ।

वट्आलिअ वि [वैतालिक] मगल स्तुति आदि से राजा को बगवानेवाला माग्य आदि (हे १, १५२) ।

वइआलीअ पुन [वैतालीय] छद्म विशेष (हे १, १५१) ।

वइएस वि [वेदेश] विदेश संयन्धो, परदेशी (पउम ३३, २४, हे १, १५१; प्राप् ६) ।

वइएड पुं [वेदेह] १ वणिक्, रेय । २ सूद पुरुष और यैरय ली से उत्पन्न जाति-विशेष । ३ राजा जनक । ४ वि. देह-रहित से संबंध रखनेवाला । ५ निषिता देश वा (हे १, १५१, प्राप् ६) ।

वइएण न [दे] वेण, वृत्तात्, मंडा (दे ६, १००) ।

वइकच्छ पुं [वैकश्च] उत्तरासंग (श्रीप) ।

वइकल्लिअ न [वैकल्य] विकलता (गाम्) ।

वइकुंठ पुं [वैकुण्ठ] १ उगेन्द्र, विष्णु (गाम्) । २ लोक विशेष, विष्णु का धाम (उप १०३१ टी) ।

वइकंत वि [व्यतिक्रान्त] व्यतोत्त, गुजरा हुआ (पउम २, ७४, उवा, पडि) ।

वइकम पुं [व्यतिक्रम] विशेष उत्सर्जन, श्रत-लोप-विशेष (ठा ३, ४—पउ १५६, पव ६, टी, पउम ३१, ६१) ।

वइगरणिय पुं [वैगरणिक] राज कर्मचारि-विशेष (मुपा ५४८) ।

वइगा देखो वइआ (मुल २, ५, वट् ३) ।

वइगुण्य न [वैगुण्य] १ वैकल्य, अपरि-पूर्णता, प्रसफणता (घर्मस ८८४) । २ विपरीतपन, विपर्यय (राज) ।

वइचिअ न [वैचित्र्य] विचित्रता (विसे ३११, घर्मस ६५) ।

वइजणन वि [वैजयन] गोत्र विशेष में उत्पन्न (हे १, १५१) ।

वइणी देखो वइ = वत्तिन् ।

वइतुलिय वि [वैतुलिक] तुल्यता रहित (मिड ११) ।

वइत्तए } देखो वय = वद् ।
वइत्ता }

वइत्ता देखो वय = वच् ।

वइत्तु वि [पदित्] बोलनेवाला, 'गुत्त वइत्ता भवि' (ठा ७—पउ ३८६) ।

वइद्वम देखो वइअम्भ (हे १, १५१) ।

वइदिस पुं [वेदिश] १ मन्त्री देश, मालव देश, 'वदिम उजेणीए जियवडिमा एलमण्द च' (उग २०२) । २ वि. विदिश संयन्धो (वट् ६) ।

वइदेस देखो वइएस (प्राप्) ।

वइदेसिअ वि [वेदेशिक] विदेशी, परदेशी (सति ५, मुप ३८०, तिरि ३६९, पि ६१) ।

वइदेइ देखो वइएड (प्राप्) ।

यद्देही की [यैदेही] १ राजा जनक की छोटी, सीता की माता (पत्रम २६, ७५)। २ जन-वात्मजा, सीता। ३ हस्तिना, हस्ती। ४ पिपली, पीपल। वरिण-की (सति ५)।

यद्ध्यम् न [यैध्यम्] विरहधर्मता, विपरीत-पन (विते ३२२८)।

यद्ध्यम्स वि [यैत्यतिमिथ] सममित (आचा २, १, ३, २)।

यद्दर देलो घेर = घेर (हे १, १५२)।

यद्दर पुंन [यय] १ रत्न विशेष, हीरक, हीरा (सम ६३; भौष, कल्प, भग, कुमा)। २ द्रव्य का द्रव्य (यद्)। ३ एक देव-विमान (वेदन् १३१, सम २५)। ४ विद्युत् विजली (कुमा)। ५ पुं. एक सुप्रसिद्ध जैन महर्षि (कल्प, हे १, ६, कुमा)। ६ कौत्सालास मुनि। ७ श्वेत कुशा। ८ श्रीकृष्ण का एक प्रतीक। ९ न, कालक, सिधु। १० प्राची। ११ कान्ची। १२ वज्ररूप। १३ एक प्रकार का लोहा। १४ भद्र-विशेष। १५ ज्योतिष-प्रसिद्ध एक योग (हे २, १०५)। १६ कौलिना, छोटी कौल (सम १४६)।

यद्द न [काण्ड] रत्नप्रभा पृथिवी का एक वज्ररत्न मय काण्ड (राज)। कंत न [वान्त] एक देव-विमान (सम २५)।

यद्दूड न [कूट] १ एक देव-विमान (सम २५)। २ देवी विशेष का आवासभूत एक शिवर (राज)। जंघ पुं [जङ्घ] १ भरत-सेन में पुराण तृतीय प्रतिवागुद्भव (सम १५५)। २ पुष्पकावती विजय के लोहागल नगर का एक राजा (भाव)। ३ पञ्च न [प्रभ] एक देव विमान (सम २५)।

यद्दुम्मा की [मध्या] प्रतिमा विशेष, एक प्रकार का ऋत (ठा ५, १—पत्र १२५)।

यद्दु न [रूप] एक देव विमान (सम २५)। १ ऐस न [ऐदय] एक देव विमान (सम २५)। २ वण न [वर्ण] देवविमान-विशेष (सम २५)। ३ सिंग न [स्ट्रिङ] एक देव विमान का नाम (सम २५)।

यद्दु पुं [सिंह] एक राजा (बाल, वि ५००)।

यद्दु न [सट्ट] एक देव विमान (सम २५)। १ सीह देलो सिंह (कावे)। २ सेग पुं [सेन] एक प्राचीन जैन महर्षि, जो

वज्रस्वामी के शिष्य थे (कप)। ३ सेणा की [सेना] १ एक इन्द्राणी, दाक्षिण्य

वागव्यन्तरेन्द्र की एक धर्म-महिषी (साया २—पत्र २५२)। २ एक विक्रुमारी देवी (झक)। ३ हर पुं [घर] इन्द्र (पद्)।

यद्दु न [मय] वज्र रत्नो का बना हुआ (सम ६३; भौष, वि ७०, १३५)। ४ जो 'मर्द', 'मिली' (जोव ३, वि २०३ टि ५)।

यद्दु न [इनर्त्त] एक देव-विमान (सम २५)। १ सभनाराय न [भृपभनाराय] संहनन-विशेष (सम १४६, भग)। २ देलो वज्र = वज्र।

यद्दरा की [वय्रा] एक जैन मुनि-शाखा (कप)।

यद्दराग न [विराग्य] विरक्ति, उवासीनता (पत्रम २६, २०)।

यद्दराड पुं [वैराट] १ एक भाई देश। २ न, प्राचीन भारतीय नगर विशेष, जो मल्ल देश की राजधानी थी, 'यद्दराड मल्ल वक्ष्य' मज्झा' (पत्र २७५)।

यद्दराय देलो यद्दराग (मवि)।

यद्दरे } वि [वैरिन्] दुश्मन, सिधु (सुर यद्दरिज) १, ७, काल प्राप्ति १७५)।

यद्दरिफ न [दे] विजय, एकांत स्थान, देलो पद्दरिफ, 'ग्रहिय मुएण्ड निरजण्डा यद्दरिफण्डा' (भा ८७०)।

यद्दरिफ वि [यैत्यिरिफ] भिन, भलग (सुर १२, ४७, वेदय ५६५)।

यद्दरी की [वय्रा] एक जैन मुनि शाखा (कप)।

यद्दरुटा की [वैरोट्या] १ एक विद्या-देवी (सति ६)। २ भगवान् मणिमाधवी की शासन-देवी (सति १०)।

यद्दरुत्तरगडिगस न [यत्तोत्तरगतसक] एक देव-विमान (सम २५)।

यद्दरेअ १ पुं [यैत्यिरिक] १ भगवान् (धर्मसं यद्दरेअ ११२)। २ साम्य के भगवान् के देव का निरात भगवान् (धर्मसं ३६२, उप ४१३, विते २६०, २२०५)।

यद्दरोजण पुं [वैरोचन] १ मानि, बहि (मूय १, ६, ६)। २ बनि नामक द्रव्य (वेदन् ३०७)। ३ उत्तर दिशा में रहनेवाले धर्मुर-

निकाय के देव (भग १, १; सम ७४)। ४ पुंन, एक लौकान्तिक देव-विमान (पत्र २६७, सम १४)।

यद्दरोजण पुं [दे] बुद्ध देव (दे ७, ५१)।

यद्दरोड पुं [दे] जार, उपनि (दे ७, ५२)।

यद्दरलण पुं [दे] सप्त की एक जाति, दुष्टुम सर्व (दे ७, ५१)।

यद्दनाग पुं [यत्तीनात] ज्योतिष-प्रसिद्ध एक योग (राज)।

यद्दवेल की [दे] सीमा (दे ७, ३१)।

यद्दस देलो यद्दस = वैश्य, 'वायिज्जकरित्ताण्णोकरत्तण्णपाण्णेषु ज्जुत्ता। ते होति यद्दसनामा वावापरायणा धीरा' (पत्रम ३, ११६)।

यद्दसअ वि [यैत्यिक] विपय से जलम, विपय सबन्धी (सति ५)।

यद्दसंपायण पुं [यैसम्पायन] एक ऋषि, जो व्यास का शिष्य था (हे १, १५१, प्राय)।

यद्दसम्म पुंन [यैत्यम्य] विपमता, 'यद्दसम्मो' (सति ५, वि ६१)।

यद्दसवण पुं [यैशनण] कुबेर (हे १, १५२, मवि)।

यद्दसस न [यैराम] रोमाञ्चकारी पात्र-वृत्त्य (उप ५७५)।

यद्दसानर देलो यद्दससागर (पत्रम १२ टी)।

यद्दसाल देलो [यैशाल] विद्याला में जलम (हे १, १५१)।

यद्दसाह पुं [यैशाराज] १ भास-विशेष (सुर ५, १०२, मवि)। २ मन्थन-दण्ड। ३ पुंन, योदा वा स्थान विशेष (हे १, १५१, प्राय)।

यद्दसाही देलो यैसाही (राज)।

यद्दसिअ वि [यैशिक] वेप न जोविता उजाज करनेवाला (हे १, १५२, प्राय)।

यद्दसिद्ध न [यैशिप्य] विशिष्टता, भेद (धर्मसं ६६)।

यद्दसेसिअ न [यैसेपिक] १ दर्शन-विशेष, ब्रह्मा-दर्शन (विने २५०७)। २ विशेष, 'बोएण्य भावयो वा यद्दसेसिअयण्यं यद्दसा' (विने २५०८)।

यद्दसस पुंकी [यैरथ] वण विशेष, वणिग, मत्तन (विपा १, ५)।

वइस्स वि [द्वेय] अशीलिकर (उत्त ३२, १०१)।

वइस्सदेव पुं [वैश्वदेव] वैश्वानर, अग्नि (निर ३, १)।

वइस्साणर पुं [वैदवानर] १ वडि अग्नि । २ चित्रक वृक्ष । ३ सामवेद का अथर्व-विशेष (हे १, १५१)।

वई देखो वइ = वाच् (प्राप्ता)। *मय वि [मय] वचनात्मक (रस ६, ३, ६)।

वईअ वि [उयतीत] अतीत उज्जर हुमा । *सोग पुं [शोक] एक जैन मुनि (पउम २०, २०)।

वईवय सक [उयति + वज्जु] जाना, पमन करना । वऊ, *कोलापस्स सनिवेस्सस अरूर-सामंतेण वईवयमाणे वडुणएसद निसामेह (उवा)।

वईवाय देखो वइवाय (राज)।

वउ पुंकी [दे] लावण्य, शरीर-कान्ति, 'वऊ अ लावण्ये' (हे ७, ३०)।

वउ न [वपु] शरीर, देह (राज)।

वउल्लिअ वि [दे] शूल प्रोत्त (हे ७, ४४)।

वउमाण देखो वउ = वच् ।

वओ* देखो वय = ववस् (प्राप्ता)। *मय न [मय] बाह्म्य, शास्त्र (विने ५११)।

वओ* देखो वय = वयस् (पउम ४८, ११५)।

वओववउफु पुं [दे] विपुवस, समान वओववस, रात भीर दिनवाला काल (हे ७, ५०)।

व* देखो वाया = वाच् । *नियम पुं [नियम] वाणी की मर्यादा (उप ७२८ टी)।

वैरु वि [वइ, वऊ] १ बाँक, टेढ़ा, कुटिल (कुमा, सुपा १७२, पि ७४)। २ नदी का बाँक (हे १, २६, प्राप्र)।

वइ पु [दे] कलक, दाग (दे ७, ३०)।

*वंक देखो वक (हे १, २६, मउइ)।

वँक, वल्ल पुं [वल्ल, वल्ल] एक प्रसिद्ध राज-कुमार (धर्मवि ५२, पडि)।

वँकवल्लि पुं [वल्लवल्लि] ऊपर देखो, लघो गमा वल्लवल्लिणे गेहे (धर्मवि ५३, ५६, ६०)।

वँरण न [वड्डन, वऊण] यकीकरण, कुटिल बनाना (ठा २, १—पत्र ४०)।

वँकिअ वि [वकिअ] बाँका किया हुमा (पि ६, ५६)।

*वकिअ वि [वकिअ] पंक-मुक्त (हे ६, ५६)। वँकिम पुंकी [वकिमन्] वज्जता, कुटिलता (पि ७४, हे ४, ३४४, ४०१)।

वउठ [देखो वऊ = वक, 'विनिहविसविउ-वँकुण' विनिगयवउठविससमकटइए। एया-रिसम्मि य वणे (स २५६, हे ४, ४१८, भवि, पि ७४)। वकुअ (श्री) ऊपर देखो (प्राह ६७)। वंग न [दे] कृत्ताक, भटा (दे ७, २६)।

वंग वि [वङ्ग] विकृत धाम, 'वडगप-वलोपसियवगदुवज्जनावापिओहरगसोयमुक्काभो' (पएह १, ४—पत्र ७६)। वगच्छ पुं [दे] प्रवय, शिव का अनुचर-विशेष (दे ७, १६)।

वगण न [व्यङ्गन] शव (राज)। वगिय वि [व्यङ्गित] विकृत शरीरवाला (राज)।

वगेवउ पु [दे] सूकर, हूमार (दे ७, ४२)। वच सक [वच्] उगता । वचइ (हे ४, ६३, वउ, महा)। कर्म, वचिउअ (भवि)।

सऊ, वचिऊण (महा) । कृ वचणीअ (प्राप्र)। प्रयो, वऊ 'तो लो वचान्ति लो कुमरपहारं वएद पुरवार्हि' (सुपा ५७२)।

वंच (अप) देखो वच = वच् । वंचइ (प्राह ११६)। सऊ, वंचियि (भवि)।

वंच सक [वच् + नमय] ऊँचा उठाना । वंचइ (?) (वात्ता १५१)।

वच वि [वच्] ठकनेवाला, वृत्त, 'कुटिलतणं व वकतणं च वंचतणं अहमच्च व' (वज्जा ११६, हे ४, ४१२)।

वंचअ [वि [वच्अ] ऊपर देखो (नाट—वंचग) मालवि, व्या २८)।

वंचण न [वच्अण] १ प्रतारण, ठाई (सम्मत् २१७)। २ वि. ठकनेवाला, ठग (सबोष ४१)। *वंचण वि [वंचण] ठकने के चतुर (सम्मत् २१७)।

वंचणा लो [वच्अणा] प्रतारणा (उव, वच्)। वंचियि वि [वंचियि] १ प्रतारित (पाम)। २ रहिय, वजित (मउइ)।

वँज्जा लो [वाञ्ज्जा] इच्छा, चाह (सुपा ४०५)।

वँज सक [वि + अञ्ज] व्यक्त करना, प्रकट करना । कर्म, वजिअइ (विने १६४, ४६२, वमंस ५३)।

वज देखो वच = उद + नमय । वँजइ (?) (वात्ता १५१)।

वँज देखो वँद = वन्द ।

वँजग देखो वँजय (राज)।

वँजण न [उयज्जण] १ वणी, प्रक्षर, अणवजंर होउअ वजणएवरणो (विने, १७०), 'तो नत्थि अल्लेओ वजणएयणा परं मित्ता' (वेहय ८६६)। २ स्वर भिन्न प्रक्षर, क से ह तक वर्ण (विने ४६१, ४६२)। ३ शब्द, वर, 'सो वुण समामभो चिअ वजणएभिअओ य अत्थनिप्रभो अ' (धम्म १०, सूचमि ६, पडि, विने १७०)। ४ तारकाटी, कडी आदि रत्न व्यवहृत वस्तु (सुपा ६२१, मीय ३५६)।

५ शुक्र, बीज (विने २२८)। ६ शरीर का अंश आदि चिह्न (पत्र २५७, मीय)। ७ महा आदि शरीर चिह्न के फल का उपदेशक शास्त्र (सम ४६)। ८ कक्षा आदि के बाल (राज)।

९ प्रकारान, व्यवहारण (विने ४६६)। १० योनिवि इन्द्रिय। ११ शब्द आदि इन्द्रिय। १२ इन्द्रिय भीर इन्द्रिय का संबन्ध (एवि, विने २४०)। १३ वगाह, 'वगाह पुं [विमह] ज्ञान-विशेष, वस्तु भीर मन को छोड़ कर अन्य इन्द्रियो से होनेवाला ज्ञान-विशेष (कम्म १, ४, ठा २, १)।

वजय वि [उयज्जु] व्यक्त करनेवाला (पाम २६)।

वजव पुं [माजोर] बिल्ला, बिलार (हे २, १३२, कुमा)।

वँजर न [दे] नोबी, नटी वज (दे ७, ४१)।

वँजिअ वि [वजिअ] व्यक्त किया हुमा, प्रकटित (कुपा १, १८, २, ६६)।

वँजुल पुं [वज्जुल] १ अशोक वृक्ष (पा ४२२, भा १११)। २ वेतस वृक्ष (पाम), 'वज्जुलस्येण विचं व पत्तोओ पुयइ सो पाव' (धम्म ११ टी, वज्जा ६६, उपा ७२८ टी)। ३ पडि विशेष (पएह १, १—पत्र ८)।

वजुलि वि [वजुलिन्] शैतल वृक्षवाला ।
छो. ०णी (गउड) ।

वंभ वि [वन्भ] शूल, वजित (कुमा) ।

वम्मा छो [वन्ध्या] बांभ छो, शत्रुवर्ती छो
(पउम २६, ८३, सुपा ३२४) ।

वंट न [वृन्त] फल या पत्तो का वन्धन (पिंड
४५) ।

वट्टा पु [वण्टक] बाँट, बिभाण (निष् १६) ।

वठ पु [वै] १ वृद्धत-विवाह, भविवाहित,
गुजराती मे 'वाठो' (दे ७, ८३ श्रोप २१८) ।

२ वृद्ध, ठुका । ३ गण्ड (दे ७, ८३) ।

४ भुज, दात (दे ७, ८३, सुर २, १६८,

२५७ ८३, सिरि १११५) । ५ वि. नि स्नेह,

स्नेह रहित (दे ७, ८३) । ६ घूर्त, ठग

(आ १२) ।

वंठ वि [वण्ठ] खर्ब, वामन नाटा, धीमा

(हे ४, ४४७) ।

वठण (भप) न [वण्टन] बाँटना, बिभाजन

(विंग) ।

वडइअ वि [वै] पीठित (पह) ।

*वंडु देखो पडु (गा २६५) ।

वडुअ न [वै] राज्य (दे ७, १६) ।

*वडुर देखो पंडुर (गा ३७४) ।

वड पु [वै] बष (दे ७, २६) ।

वत वि [वास्त] पतित, गिरा हुआ (वस ३,

१ टी) ।

वत पु [वास्त] १ जिसका धमन किया गया

वो बह (उव) । २ पुन. वमन, 'वते इ वा

पिते इ वा' (मग) ।

वंतर पु [वयन्तर] एक देव-नाति (द २७

महा) ।

वंतरिअ पु [वयन्तरिक] ऊपर देखो (मग) ।

वतरिणी छो [वयन्तरी] वयन्तर-जातीय देवी

(सुपा ६१३) ।

वता देखो वम ।

*वति देखो पति (गा २७८, ४६३) ।

*वथ देखो पन्थ (ते १, १६, ३, ४२, १३,

२०, पि ४०३) ।

वंद सक [वन्द] १ प्रणाम करना । २

स्वप्न करना । वंदइ (उव, महा, बष्प) ।

वहू. वन्दमाण (श्रोप १८, सं १०, भ्रमि
१७२) । कवक वन्दिजमाण (उप ६८६

टी, प्राप् १६५) । सऊ. वन्दिअ, वन्दिओ,

वन्दिऊण, वन्दिचा, वन्दिचु, वंदेवि

(कम्म १, १, चड, कप्प, पड, हे ३, १४६,

चढ) । हेऊ. वंदित्तए (उवा) । ऊ. वंज,

वंद, वदणिज्ज, वदणीअ, वदिम (राज,

भवि १४, इव्य १, राणा १, १, प्राप् १६२,

नाट—मुच्छ १३०; दसप् १) ।

वंद न [वृन्द] समूह, धूप (पउम १, १,

शौप, प्राप्) ।

वदअ } वि [वन्दक] वन्दन करनेवाला

वदरा } (पउम ६, ५८, १०१, ७३, महा

शौप, सुख १, ३) ।

वदप न [वन्दन] १ प्रणमन, प्रणाम । २

स्वप्न, स्तुति (बष्प, सुर ४, ६२, उव) ।

*कलस पु [कलश] मालिक घट (शौप) ।

*घट पु [घट] वही घर्ष (शौप) । *माल,

*मालिआ छो [मालि] घर के द्वार पर

माल के लिए बँधी जाती पत्र-माला (सुपा

५४, सुर १०, ४, गा १६२) । *वडिआ,

*वसिआ छो [प्रत्यय] वन्दन हेतु (सुपा

४३२, पडि) ।

वदणा छो [वन्दना] १ प्रणाम । २ स्वप्न

(पचा ३ २ परह २, १—पन १००,

घत) ।

वदणिआ छो [वै] मोदी, नाला, पनाला,

शक्ति कबलो, गणियाए नमि । वृद्धी । तमो

तोते दिस्सो । तीए व (१ व) दणियाए हूँ

(सुख २, १७) ।

वदर देखो वद = वन्द (प्राप्) ।

वदाप (भरो) देखो वंदान । वदापयति (पि

७) ।

वदारय पु [वृन्दारक] १ देव, देवता

(पाप्, कुमा) । २ वि. मनोहर (कुमा) ।

३ मुख्य, प्रधान (हे १, १३२) ।

वंदरु वि [वन्दारु] वन्दन करनेवाला (वेइय

६२१, लहम) ।

वंदान सक [वन्दय] वन्दन करना ।

वदानइ (उव) ।

वंदानणा न [वन्दन] वन्दन, प्रणाम (धावक

३७४) ।

वंदिअ देखो वंद = वन्द ।

वंदिअ वि [वन्दित] जिसकी वन्दन किया

गया हो वह (बष्प, उव) ।

वंदिम देखो वंद = वन्द ।

वंदुरा छो [मन्दुरा] वाजिशाला, धुडसाल,

अस्तवत ।

वंद्र न [वन्द्र] समूह, धूप (हे १, ५१, २,

७६ पउम ११, १२०, स ६६६) ।

वध पु [वन्धय] एक महाग्रह ज्योतिष्क देव-

विशेष (सुज २०) ।

वफ सक [काहू] चाहना, अभिलाष

करना । वफइ, वफए, वफति (हे ४, १६२,

कुमा) ।

वफ थक [वल] लौटना । वंफइ (हे ४,

१७६, पड) ।

वंफि वि [वलिन] १ लौटनेवाला । २ नीचे

गिरनेवाला (कुमा) ।

वफिअ वि [वाक्क्षित] भविष्यित (कुमा) ।

वफिअ वि [वै] भुक्त, खाया हुआ (दे ७,

३५, पाप्) ।

वस पु [वै] कलंक, दाग (दे ७, ३०) ।

वस पु [वरा] १ बांस, केतु (परह २, ५—

पन १४६ पाप्) । २ वायु विशेष, 'वाइमो

वलो' (कुमा २, ७०, राय) । ३ कुल,

'बुलुपवसवीवमो' (कुमा २, ६१) । ४ सन्तान,

सतति । ५ पुत्रावयन, पीठ का भाग । ६

वर्ग । ७ इष्ट, ऊँख । ८ वृक्ष विशेष, सालवृक्ष

(हे १, २६०) । *इरि पु [गिरि] पर्वत-

विशेष (पउम ३६, ४) । *करील, *गरिल

पुन [करील] वशादुर, बाँस का कोमल

नवावयन (आ २०, पव ४) । *जाली,

*याली छो [जाली] बाँसो का गहन पधा

(सुर १२, २००, उव ३६) । *रोअणा

छो [रोचना] वशलोचन (बष्प) ।

वसमचेल्लुय पुन [वै] धंशकचेल्लुय घट

के नीचे दोनो तरफ तिरछा रखा जाता बाँस

(जीव ३, राय) ।

वसग देखो वसय (राज) ।

वंसप्पाल वि [वै] १ प्रकट, व्यक्त । २ शत्रु,

सरल (दे ७, ४८) ।

वसय वि [वयसरु] १ घूर्त, ठग । २ पु.

दुग हेतु विशेष (आ ४, ३—पन २५४) ।

वंसा को [वंशा] द्वितीय नरक-पृथिवी (ठा ७—पत्र ३८८, इक)।

वंसि देखो वसी = वस (कर्म १, २०)।

वंसिअ वि [वंसिअ] वस वास बजनेवाला (हे १, ७०, कुमा)।

वंसिअ वि [व्यसित] छलित प्रचारित (राज)।

वंसी को [वंशी] १ सुरा-विशेष (बृह २)।

२ बाँस की जाती (ठा ३, १—पत्र १२१)।

*कलसा को [कलसा] बाँस की जाती की बनी हुई बाँस (विपा १, ३—पत्र ३८)।

*पत्तिया को [पत्तिया] योनि विशेष, सराजाओ के पत्र के आकार की योनि (ठा ३, १)।

वंसी को [वंशी] बास विशेष, मुरती (बृह २)। *पट्टिया को [नटिया] वस्त्र-विशेष (परण १—पत्र ३८)। *मुट्ट दु [मुट्ट] क्षीप्रिय जीव विशेष (जीव १ टी—पत्र ३१)।

वंसी को [वंसा] बाँस। *मूळ न [मूळ] बाँस की जड़ (वस)।

वंसी को [वे] नस्तक पर स्थित माला (दि ७, १०)।

वक्ष न [वक्षय] पद-समुदाय, शब्द समूह (उप, उप ८११ ८५६)।

वक्ष न [वक्ष] स्वभा, छात (उप ८३६, शीप)। *वक्ष पु [वक्ष] बलक कन्यन (विपा १, ८)।

वक्ष देखो वक्ष = वक्ष (आमा १, ८—पत्र ११३, ग ६११, धर्म ३४८, ३४६)।

वक्ष न [वक्ष] मुट्ट, कुँह (पठम १११, १७, गा १६४)।

वक्ष न [वे] पिष्ट भिन्न भास (पट्ट)।

वक्ष न पुन [वक्षान्त] प्रथम नरक-भूमि का क्षमन नरकेन्द्र—नरकनाश विशेष (देवेन्द्र ५)।

वक्षत वि [अवक्षान्त] उत्पन्न (कर्म, पि १४२)।

वक्षत धी [अवक्षान्त] उत्पत्ति (कर्म, सम २, मय)।

वक्षत न [वे] १ कुटिल। २ निन्दित वृष्टि (दि ७, १४)।

वक्षद्वय न [वे] कर्णाभरण, कान का आभूषण (दि ७, ५१)।

वक्षम अक्ष [अव + कर्म] उत्पन्न होना।

वक्षमद (मय कर्म)। *मूला, वक्षमिमु (कर्म)।

वक्षि, वक्षमिस्तति (कर्म)। वक्ष, वक्षममाण (मय आमा १, १—पत्र २०)।

वक्षर (वक्ष) देखो वक्ष = वक्ष (वक्षि)।

वक्षन् न [वक्षन्] वृक्ष की छात (प्राग, मुपा २५२, हे ४, ३४१, ४११, प्रति ५)।

*वीरि पु [वीरिन्] एक महर्षि, जो राजा प्रपन्नचन्द्र के छोटे भाई थे (कुप्र २८८)।

वक्षलि } वि [वक्षलिन्] वृक्ष की छात
वक्षलिण } पशुनेवाला (तापस), (कुमा भत १००, सवीष २१, वठम ३६, ८४)।

वक्षल्य वि [वे] पुरल्लय, भागे किया हुआ (दि ७, ४६)।

वक्षस न [वे] १ पुराना धान का चाल। २ पुरातन सक्नु पिछ। ३ बहुत दिनों का बाँसो गोरत। ४ गेहूँ का याद (मावा १, ६, ४, १३)।

वक्षिद (शी) देखो वक्षिअ (पि ७४)।

वक्षत देखो वक्षन् = वृक्ष (वक्ष उप ८५५)।

वक्षत देखो वक्षन् = वक्षन् (सति १५, प्राक् २२, भाट—मुक्क १३३)।

*वक्षत देखो वक्षर (गा ४४२, से ३, ४२, ४, २३, स ६५१)।

वक्षरमाण देखो वक्ष = व्।

वक्षल्य वि [वे] प्राच्छादित, ढका हुआ (पट्ट)।

वक्षरा सक [व्या + कथा] १ शिवराज करना।

२ कहुना। क. वक्षराय (विते १३७०)।

वक्षरा की [व्याख्या] विवरण, विशद रूप से धर्म प्रकरण (विते ६६४)।

वक्षराण न [व्याख्या] १ ऊपरदेखो (चेदय २७१, विने ६६१)। २ वचन (हे २, ६०)।

वक्षराण सक [व्याख्यान] १ विवरण करना। २ कहना। वक्षराणद (वक्षि)।

वक्षि, वक्षराणदस्ते (शी) (पि २७६)।

वक्षि, वक्षराणिप्रद (विते ६८४)। वक्ष, वक्षराणवत (उपर ६८०, वरण २१)।

वक्षि, वक्षराणवत (विते ११)। क. वक्षराणे-अव्य (पठम)।

वक्षराणि वि [व्याख्यान] व्याख्यान-कर्ता (धर्म १ २६१)।

वक्षराणि वि [व्याख्यान] व्याख्यान (विते १०८७)।

वक्षराणिअ (वक्ष) ऊपर देखो (पिग ५०६)।

वक्षराय वि [व्याख्या] १ विवृत, नलित (स १३२, वेदय ७७१)। २ पु. मोन, मुक्ति (प्राचा १, ५, ६, ८)।

वक्षराय दु [वे] वक्षर, अन्न प्रादि रखने का भकान, गोदाम (उप १०३१ टी)।

वक्षराय पु [वक्षर, वक्षराय] १ पवत-विशेष, गन्धर्व के आकार का पर्वत (सम १०१, इक)। २ नू माग, भू प्रदेश (पठम २, ५४, ५५, ५६, ५८)।

वक्षराय न [वे] १ रति-गृह। २ अन्न पुर (दि ७, ४५)।

वक्षराय सक [व्या + व्यापय] व्याख्यान करना। वक्षरायद (प्राक् ६१)।

वक्षराय वि [व्याखि] १ ध्यय, व्याकुल (मोप ११, कुप्र २७)। २ किसी कार्य में व्यापृत (पव २)।

वक्षराय देखो वक्षरा = व्या + व्या।

वक्षराय पु [व्याखेप] १ ध्ययता, व्याकुलता (व्या, उप १३६ टी, १४०)। २ कार्य-बाहुल्य (व्या ३, १)।

वक्षराय पु [अवक्षेप] प्रतिपेय, लक्षण (गा २४२ म)।

वक्षराय देखो वक्षन् = वक्षन्। *रक्ष दु [रक्ष] स्तन, पत्र (मुपा ३८६)।

वक्षराय (शी) देखो वक्षन् = वक्षन् (प्राक् ६७)।

वक्षराय (मर) देखो वक्षराण = व्याख्यान।

वक्षराय (विग)।

वक्षरायिअ (मर) देखो वक्षरायिअ (विग)।

वक्षरायि देखो वक्षरायिअ (मर, वव ६)।

वक्षराय सक [वक्ष] १ जान, गति करना।

२ हुना। ३ बहुत-भाषण करना। ४ धर्मिमान-मुचर शब्द करना, सूँचना।

वक्षराय (मरि, सण, पि २६६), वक्षरायि (मुपा २८८)। वक्ष, वक्षरायि (शी) (विगत १७)। वक्ष, वक्षरायि (स ६८१, मुपा ४६३, मरि)। वक्ष, वक्षरायि (पि २६६)।

वचंसि वि [वचस्विन्] प्रसृत वचनवाला
(छाया १, १-पत्र ६)।

वचंसि वि [वचस्विन्] तेजस्वी (छाया
१, १, सम १५२-मौपः वि ७४)।

यद्यश्च पु [उद्यस्वय] विपयसं, उत्तम-मुलट
(अष्ट २६६, पत्र १०४)। देखो वचस्य।

यद्यश्च (अप) देखो वचा (मवि)।

वचः। देखो वय = वच्।

यद्यश्चमेलिय देखो विद्यामेलिय (विसे
१४८१)।

यद्यश्च पु [उद्यस्वयस] विपयसं, विपयस्य
(मौप २०१, कम्म ५, ८६)।

यद्यश्चि वि [उद्यस्वयसित] उत्तम विना
हुमा (विसे ६५६)।

यद्योसग पु [यद्योसग] वाप विरोध (प्र)।

यद्यो देखो वय = वचं (सुर ६, २८)।

यच्छ न [दे] गारवं, सनीप (दे ७, २०)।

यच्छ पुन [यच्छ] छाती, सीमा (दे २
१७, सति १५, प्राप्रः गा १५१, कुमा)।
"यच्छ न [यच्छ] उर एवम्, छाती (कुमा,
महा)। "सुत न [यच्छ] मातृपुत्र विरोध,
वस स्वल मे पहनने की संवती—सिक्की या
सिक्की (सग ६, ३३ टी—पत्र ४७७)।

यच्छ पु [यच्छ] पेश, शास्त्री, हुम (प्राप्र, कुमा,
दे २, १७, पाप)।

यच्छ पु [यच्छ] यद्यश्च (सुर २, ६५,
पाप)। २ शिमु बच्चा। ३ यच्छ-
वचं। ४ यच्छ स्वयं, छाती (प्राप्र)। ५
वचोविपश्च प्रसिद्ध एक वज्र (गण १६)।
६ देश विरोध (सी १०)। ७ विजय-लोच-
विरोध (ठा २, ३-पत्र ८०)। ८ न गोच-
विरोध। ९ वि, उम गोप मे जन्म (ठा
७-पत्र ३६०, कम्प)। "दर पुत्री [यच्छ]
पुत्र वरत्ता। १० यमनोप यद्यश्च माविः की, "री
(प्राप्र २३)। "मित्रा की [मित्रा] १
मधोनाम मे यदनेगामी एक मित्रुमारी देवी
(ठा ८-पत्र ५१७, दृग्)। २ ऊर्ध्वलोच
मे यदनेगामी शन दिगुमाये देवी (दृग्,
राय)। "वर देवो [दर] (दे ३, ६, ७,
३७)। "राय पुं [राय] एक यज्ज (सी
१०)। "वाल् पुत्री [पाल] गोप, यवाला
(पाप)। की, "उं (मातव)।

वच्छ वि [वात्स्य] वात्स्य नोन का (एदि
५८)।

वच्छगावर्द्ध की [वत्सकावती] एक विजय-
क्षेत्र (ठा २, ३-पत्र ८०, दृग्)।

वच्छर पु [वच्छर] साल, वपे (प्राप्र, सिंरि
६३५)।

वच्छल वि [वत्सल] स्नेही, स्नेह-युक्त (गा
३, कुमा, सुर ६, १३७)।

वच्छल न [वात्सल्य] स्नेह, अनुयाग, प्रेम
(कुमा, पति)।

वच्छल की [वत्सा] १ विजय-क्षेत्र विरोध।
२ एक नगरी (दृग्)। ३ लङ्की (कम्प)।

वच्छल पु [वच्छल] बैल, स्त्रीवर्ध, "वच्छा
वच्छा व वच्छाण" (पाप)।

वच्छलवर्द्ध की [वत्सापती] विजय-क्षेत्र विरोध
(व ५)।

वच्छल देखो वय = वच्।

वच्छलउठ पु [दे] गर्भाशय (दे ७, ५४ टी)।

वच्छल पुत्री [वृक्षल्य] कृपण (पट्ट)

वच्छलपु पु [दे] गर्भ शय्या (दे ७, ५४)।

वच्छलीउठ पु [दे] क्षाण्ड, हुनाम (दे ७,
५७, पाप, स ७५)।

वच्छली पु [दे] गोर, ज्वाला (दे ७, ५१,
पाप)।

वच्छलुल्लिख वि [दे] प्रलुल्ल (वट्ट)।

वच्छलीम न [यक्षोम] नगर विरोध, कुल्ल
देश की प्राचीन राजधानी (कम्प)।

वच्छलीमी की [दे] कल्प की एक वीति
(वण्)।

वज्र प्र [जस्] करना। वज्रद, वज्रए
(हे ४, १६८, प्राप्र ७५, पाप १५१)।

वज्र देखो वज्र = वज्र। वज्रद (माट—पुन्य
१६३), वज्रसि (वि ५८८)।

वज्र स [वज्रए] ध्याप करना। कवड,
वज्रज्वल (पत्रा १०, २७)। संट, वज्रिय,
वज्रोपि, वज्रिऊण, वज्रसा (महा, काल,
वंचा १२, ६)। द-वज्र, वज्रजिञ्ज,
वज्रवज्य (सिंह ५६२, भव, पण्ड २, ४,
मुपा ४८५, महा, वण्ड १, ४ मुपा ११०,
अ १०३७)।

वज्र धन [वट्ट] वज्रना, वाय मादि की
धारावा होना। वज्रद (हे ४, ५०६, मुपा

३३४)। वज्र, वज्रंत, वज्रमाण (सुर ३,
११५, मुपा ६५६)।

वज्र न [वाय] वाया, वादि (दे ३, ५८;
गा ४२०)।

वज्र वि [वर्ष] १ श्रेष्ठ, उत्तम (सुर १०,
२)। २ प्रथम, मुख्य (हे २, २४)।

वज्र वि [वर्ज] १ रहित, वंचित, "विजयज-
देव्याण न नमद की उत्स ठणुधुदी" (आ
६), "सद्वानिभोग्यवज्रा पारं न पवति
यागारी" (वेद ५७१), "लोकववहावज्रा
कुने परमपदुदा व" (धर्मवि ६५५, विसे
२८५०, आत्म ३०७, सुर १५, ७८)।

२ न, छोड़कर, मिना, सिवाय (आ ६, व
१७, कम्म ४, ३५, ५३)। ३ पु, हिंसा,
प्राण वध (पण्ड १, १-पत्र ६)।

वज्र देखो अज्र (सू १, ५, २, १६;
बृह १)।

वज्र देखो वट्ट = वज्र (कुमा, सुर ४, १५२,
पु ५, हे १, १७०, २, १०५, वट्ट, कम्म
१, ३६, जीवस, ५६, सम २५)। १७ पुं,
विद्यापर-वज्र का एक राजा (पत्र ५, १६,
१७, क, १३३)। १८ हिंसा, प्राण-वध
(पण्ड १, १-पत्र ६)। १९ कर्म-विरोध
(पण्ड १-पत्र २६, उत्त, १६, ६६)।

२० न, कर्म-विरोध, बंधावा हुमा कर्म (सू
२, २, ६५, ठा ४, १-पत्र १६७)। २१
पाप (सू १, ५, २, १६)। "वट्ट पु
[कण्ड] वातर-दीप का एक राजा (पत्र
६, १०)। "का न [काट] एव देव-
विधान (सम २५)। "वट्ट पु [वट्ट] एक
प्रकार का वट्ट, वनस्पति विरोध (आ २०)।

"वट्ट न [वट्ट] एव देव-विधान (सम २५)।
"कर्म पु [वट्ट] एव विद्यापर-वज्रोप राजा
(पत्र ५, १३२)। "वट्ट पु [वट्ट]
विद्यापर-वज्र का एक राजा (पत्र ५, ५६)।

"जय पु [जय] विद्यापर-वज्रोप एव
नरोप (पत्र ५, १५)। "पाप पु [पाप]
मगान वज्रिन दन वज्रोप के प्रथम गणधर
(सम १३२)। देवो "नाम। "दत्त पु
[दत्त] विद्यापर-वज्र का एक राजा
(पत्र ५, १५)। २ एव जैन मुनि (पत्र
२०, १८)। "द्वय पु [व्यज] एव विद्यापर-

वंशीय राजा (पठम ५, १५)। 'धर देखो' हर (पठम १०२, १५६; विचार १००)। 'नागरी श्री' [नागरी] एक जैन मुनि राखा (कप्य)। 'नाभ पुं' [नाभ] एक जैन मुनि (पठम २०, १६)। देखो 'नाभ'। 'पाणि पुं' [पाणि] १ इन्द्र (उत्त ११, २३; देवन्द्र २८२, उप २११ थे)। २ एक विद्यावर-नरपति (पठम ५, १७)। 'पभन न' [प्रभ] एक देव-विमान (सम २५)। 'वाहु पुं' [वाहु] एक विद्यावर-वंशीय राजा (पठम ५, १६)। 'भूमि श्री' [भूमि] साठ देश का एक प्रदेश (भाषा १, ३, २)। 'म (प्रप) देखो मय (हे ५, ३६५)। 'मउम पुं' [मय] १ रास-वंश का एक राजा, एक संवेद्य (पठम ५, २६३)। २ रावणापीन एक सामन्त राजा (पठम ८, १३२)। 'मउमा श्री' [मय्या] एक प्रतिमा, वस्तु-विशेष (पीन २५)। 'मय वि' [मय] वस्त्र का बना हुआ (पठम ६२, १०)। श्री. 'मई (नाउ—उत्तर ५५)। 'रिसहनापय न' [रसपयनापय] सहन-विशेष, शरीर का एक तरह का सर्वोत्तम बन्ध (कम्म १, १८)। 'रुह न' [रुप] एक देव-विमान (सम २५)। 'लेस न' [लेय] एक देव-विमान (सम २५)। 'छं (प्रप) देखो 'म (हे ५, ३६५)। 'घणन न' [घर्ण] एक देव-विमान (सम २५)। 'वेग पुं' [वेर] एक विद्यावर का नाम (महा)। 'सिरला श्री' [श्रुतला] एक विद्या-देवी (संति ५)। 'सिंग न' [श्रुत] एक देव-विमान (सम २५)। 'सिह न' [सुष्ट] एक देव-विमान (सम २५)। 'सुदर पुं' [सुन्दर] विद्यावर-वंश में उत्पन्न एक राजा (पठम ५, १७)। 'सुजणहु पुं' [सुजह, उ] विद्यावर-वंश का एक राजा (पठम ५, १७)। 'सिंग पुं' [सिन] १ एक जैन मुनि, जो भगवान् श्रमणदेव के पूर्व जन्म में शुभ से (पठम २०, १७)। २ विक्रम की चौदहवीं शताब्दी के एक जैन भाषार्थी (गिरि १३५६)। 'हर पुं' [धर] १ इन्द्र, देवराज (सि १५, ५८; उप)। २ वि. वज्र को धारण करने वाला (सुपा ३३५)। 'उडहु पुं' [युध] १ इन्द्र (पठम ३, १३७, २१, १८)। २

विद्यावर-वंश का एक राजा (पठम ५, १६)। 'मि पुं' [मि] एक विद्यावर-वंशीय राजा (पठम ५, १६)। 'वृत्त न' [वृत्त] एक देव-विमान (सम २५)। 'स पुं' [रा] एक विद्यावर-राजा (पठम ५, १७)। वज्रक पुं [वज्राङ्ग] विद्यावर-वंश का एक राजा (पठम ५, १६)। वज्रकुसी श्री [वज्राकुसी] एक विद्या-देवी (संति ५)। वज्रत देखो वज्र = वृ। वज्रचर पुं [वज्रचर] विद्यावर-वंश का एक राजा (पठम ५, १६)। वज्रघट्टिया श्री [दे] मन्द-भाग्य श्री (संति ५७)। वज्रण न [वज्रन] परिमाण, पहिार (सुर ५, ८२, स २७१, सुपा २५५, धु ६)। वज्रणअ (प्रप) वि [वदित] वजनेवाला, 'पट्ट वज्रणअ' (हे ५, ४५३)। वज्रयथा श्री [वज्रना] परिमाण (सम वज्रणा) ५४, उत्त १६, ३०, उप)। वज्रमाग देखो वज्र = वृ। वज्रवि वि [वज्रन] व्यापकवाला (उवा)। वज्रर सक [कथय] कहना, बोलना। वज्ररद, वज्ररद (हे ५, २; वृ, महा)। वज्र. वज्ररत (हे ५, २; वेद्य १५६)। संक. वज्ररिऊण (हे ५, २)। क. वज्ररिअव्य (हे ५, २)। वज्रर देखो वज्रर = भावर (वंह)। वज्रर पुं [वज्रर] १ देश-विशेष। २ वि. देश-विशेष में उत्पन्न, 'परिवाहिया व देणुं बहुते बलहीमुरकवज्ररपदथा भाता' (स १३)। वज्ररण न [कथन] उक्ति, वचन (हे ५, २)। वज्ररा श्री [दे] उरगिणी, नदी (दे ७, ३७)। वज्ररिअ वि [वदित] कहा हुआ, उक्त (हे ५, २, सुर १, ३२, गवि)। वज्रा श्री [दे] भाषिना, प्रस्ताव (दे ७, ३२, वज्रा २)। वज्राव (प्रप) सक [वाचय] बचवाना, पढ़ाना। वज्रावद (प्राक १२०)। वज्राव सक [वादय] बजाना। वज्रावद (गवि)।

वज्राविय वि [वादित] बजाया हुआ (गवि)। वज्रि पुं [वज्रि] इन्द्र (संवीध ८)। वज्रिअ वि [दे] भवतोक्ति, दृष्ट (दे ७, ३६; महा)। वज्रिअ वि [वादित] बजाया हुआ (सिंरि ३२५)। वज्रिअ वि [वज्रित] रहित (उवा. भोनः महा. प्राप् ७६)। वज्रियाय पुं [दे] शेषही (ध्वज ० भाष्य ०)। वज्रियाय पुं [दे] शेषही (ध्वज ० भाष्य ०)। वज्रिर वि [वदित] वजनेवाला (सुर ११, ७७२, सुपा ५५; ८७; सिंरि १५५, सण), 'पहिल (१२) जिउरउजगजिउरियवर्नकर्मठो-यरो' (कुप्र २२५)। वज्रुत्तरवहिसग न [वज्रोत्तरान्तसर] एक देव विमान (सम २५)। वज्रोयरी श्री [वज्रोदरी] विद्या विशेष (पठम ७, १३८)। वज्रम वि [वज्र] वज्र के योग्य (सुपा २४८; गा २६, ५६६, वे म, ५६)। 'नेयसिय वि' [नेयसिय] मृग-वंश-प्राप्त को पहनाया जाता वेष वाला (पह १, ३—वम ५५)। 'माला श्री' [माला] वज्र को पहनाई वाली माला, कनर के फूलों की माला (भप १२०)। वज्रम वि [वाह] १ वहन करने योग्य (प्राप्र, उप १५० थे)। २ न. भयम भावि यान (स ६०३)। 'सिह न' [सिल] कला-विशेष, यान की सवारी का इत्तम (स ६०३)। वज्रमा श्री [हरया] वज्र, पात (सुप ५, ६, महा)। वज्रमयायण न [वज्रयायन] गोम-विशेष (सुज १०, १६)। वज्र (प्रप) देखो वज्र = वृ। वज्र, वज्रि (वृ)। वृ सक [वृत्त] १ वर्तना, होना। २ भाषा-रूप बताना। वृद, वृद, वृदि (सुर ३, ३६, उप; कप्य)। वृद. वृद, वृदमाग (गा ४००; कम्म ३, २०; वेद्य ७१३; गवि; उवा. पदि, कप्य, नि ३५०)। देह. वृदुं (वेद्य ३६८)। क. वृदियव्य (उव)।

भग जिसका बाहर निकल भाया हो वह (पं ११०)। ५ जिसका पेट बड़ा होकर भाये निरन भाया हो वह। छो. *भी (छाया १, १—पत्र ३७, शीप, पि ३८७)।

यङ्य देखो यङ्ग = यटक (मुपा ५८५)।

*यङ्गल देखो पङ्गल (गङ्ग)।

यङ्गगिग पु [यङ्गगिग] यङ्गगल, समुद्र के भीतर की प्राय (गा ४०३)।

यङ्गगङ्गक [यि + लप्] विलाप करना। यङ्गगङ्ग (हे ४, ४८८), यङ्गगङ्गति (हुमा)।

यङ्गना छो [यङ्गना] घोड़ी (पाप, पर्वति १४५)। *गल, नल पु [नल] समुद्र के भीतर की प्राय, यङ्गगिग (पि २४०, या १६)। *मुह न [सुज] १ वही भय (से १, ८)। २ एक महा-पानाल (रुह)। *हुआस पु [हुतासा] यङ्गगल (सु १५४)।

यङ्ग देखो यङ्गम (भाषा १, २, ३, २)।

यङ्गह पु [दे] पनि विशेष (दे ७, २३)।

*यङ्ग देखो पङ्ग (से १२, ४७)।

यङ्गही देखो यङ्गही (गङ्ग)।

*यङ्गाआ देखो पङ्गाया (गा १२०)।

*यङ्गालि छो [दे] पति, धेनु (दे ७, २६)।

*यङ्गाहा देखो पङ्गाया घबलघबलगाहे (महा)।

*यङ्गाइ देखो पङ्गाइ (से ५, १०, पुत्र १८१, उवा)।

यङ्गिगि वि [गृहीत] ग्रहण किया हुआ (सुर १, १६६)।

यङ्गिस पु [यतस] १ भेद पर्वत (मुज ५ टी—पत्र ७८)। २ मृगण, 'ययकुलवडिसया वि मुणिवसमा' (उव, कण्)। ३ एक दिहस्त-नू (रुह)। ४ प्रपान, मुप्य। ५ थोड़ा, उत्तम (कण्, महा)। ६ कर्णपूर, कान का भागपण (छाया १, १—पत्र ११)। देखो यङ्गस, अययस।

यङ्गियाग पु [दे] पर्यं करण, बैठा हुआ गया (पङ्)।

यङ्गिया छो [युत्तिता] यतन, 'अययतसण-ययियाए' (प ६८३, भाषा २, ७, १)।

*यङ्गिया देखो पङ्गिया = प्रतिज्ञा (भाषा २, ७, १)।

यङ्गिसर न [दे] बूल्की-मूल, बूल्हे का मूल (दे ७, ४८)।

यङ्गिस्सअ वि [वरिवस्यक] पुनक, पुनक करनेवाला (चाप १)।

यङ्गिसा वि [दे] सुत टपका हुआ (पङ्)।

यङ्गी छो [दे] वही, एक प्रकार का छाया (पं ३८)।

यङ्गुमग } देखो यङ्गुमग (शीप भाषा)।

यङ्गुस पु [यतस] रोखर, मुकुट (मग, छाया १, १ टी—पत्र ५)। देखो यङ्गिस।

यङ्गसा छो [यतसा] किरन नामक किरनेर की एक अग्रमहिषी (डा ४, १—पत्र २०४, छाया २—पत्र २५२)।

यङ्गसिया छो [यतसिका] अयतस की तरह करना मुकुटस्थानापन करना, 'मदुराखव-ज्जालल भोग्य भोग्येता जावजीव पिण्डि-व-सियाए परिवहेण' (डा ३, १—पत्र ११७)।

यङ्गु वि [दे] बड़ा, महान् (दे ७, २६, उड ५५, मुपा १२४, छाया २—पत्र २४८, कम्म १७३, मवि, हे ४, १६६, ३६७, ३७१)। *अथरग [आरारक] ऊँट की पीठ पर रखा जाता घासन (पत्र ८४ टी)। *सण न [एव] यङ्गपन, यङ्गता (हे ४, ३८४, कण्)। *यण (यप) न [एव] वही (हे ४, ३६६, ४३७ पि १००)। *यय वि [तर] विशेष बड़ा (हे २, १७४)।

यङ्गुवास पु [दे] मेप, मग्न (दे ७, ४७ हुमा)।

यङ्गुहलि पु [दे] मालाकार, माली (दे ७ ४२)।

यङ्गुार (पप) देखो यङ्गु-यर (मवि)।

यङ्गुम वि [दे] सुत टपका हुआ (पङ्)।

यङ्गुलि [दे] देखो यङ्गु,

'नयणाए पडउ वज्ज यङ्गुवा वज्जन्स यङ्गुलिं निपि।

अमुणियनणेवि दिट्ठे यणुवंधं

याणि कुप्पति' (सुर ४, २०, वक्का ६२)।

यङ्गुअर देखो यङ्गु-यर (पङ्)।

यङ्गु घक [युध्] यङ्गना। यङ्गुह (हे ४, २२०, महा, काल)। मुता यङ्गुहया (कण्)। यङ्गु यङ्गुत, यङ्गुमाण (सुर १, ११६, महा, गा ११२)। हेरु यङ्गुहउ (महा)।

यङ्गु सक [यय्य] १ बड़ाना वितारना। २ ब्याई देना। यङ्गुति (टा)। यङ्गु, यङ्गुअत (नाट—मृच्छ १८)। कर्म, यङ्गुज्जति (सिदि ४२४)। देता यङ्गु = यय्य।

यङ्गुह पु [यय्यि] बड़ाई, सुतार (सन २७, उप १५१, पाप यय्य ४८६, दे ७, ४४)।

यङ्गुहअ पु [दे] चर्चकार, मोची (दे ७, ४४)।

यङ्गुण न [यय्यन] १ बुद्धि, बड़ाप (कण्)। २ वि. बुद्धि जनक (महा सुर ११, १३६)।

यङ्गुणमिर वि [दे] पीन, घुप (दे ७, ५१)।

यङ्गुणसालि वि [दे] जिसकी पूँछ कट गई हो वह (दे ७, ४६)।

यङ्गुमाण देखो यङ्गु = वृप।

यङ्गुमाण } न [यय्यमान, 'क' १ यङ्गुमाणय] १ पुनरात का एव मगर जो भागन 'यङ्गुवाए' के नाम से प्रसिद्ध है 'मिरिवडमाणनयं पता पुज्जयतवय' (सम्मस ७५)। २ अग्रपिप्पल का एक भेद, उत्तरोत्तर बड़ा जाता एक प्रकार का परोक्ष रूपी द्रव्या का ज्ञान (डा ६—पत्र ३७० कम्म १, ८)। ३ पु. मगवान् महावीर (मवि)। देखो यङ्गुमाण।

यङ्गुय देखो यङ्गु = दे 'पाणमियं यङ्गुयं पियावयणसन्निपि पीयमाए पि टीए सु-उयर मरियमपुहि' (स ३८२)।

यङ्गुय सक [यय्य, यय्यपय] १ बड़ाना, बुद्धि करना। २ ब्याई देना, अमुदय का निवेदन करना। यङ्गुवद (माह ६०)।

यङ्गुवअ वि [यय्यक] १ बड़ानेवाला २ ब्याई देनेवाला (माह ६१)।

यङ्गुयग न [दे] यज का धारण (दे ७, ८७)।

यङ्गुयण न [दे. यय्योपन] ब्याई, अमुदय-निवेदन (दे ७, ८७)।

वह्दविअ वि [वर्धित, वर्धयित] विसनो
बयाई दी गई हो वह्द (दे ६, ७४) ।

वह्दार (भय) सव [वर्धय] बढ़ाना,
गुनराती में 'व्यारयु' । वह्दारर (भयि) ।

वह्दवय देखो वह्दव । वह्दवेमि (प्राक
६१, लि ५५२) ।

वह्दवयअ देखो वह्दवयअ (प्राक ६१; बप्पू,
उवा) ।

वह्दवयिअ वि [दे] समापित, समाप्त किया
हुमा (दे ७, ४५) ।

वह्दिवि वि [वर्धन] बढ़नेवाला (दे १, १) ।
वह्दिवि छी [वृद्धि] बढ़ती, बढाव (उवा, देखेद
३६७, जीवस २७४) ।

वह्दिविअ वि [वृद्ध] बड़ा हुआ (कुमा ७,
५८; गा ४१०, महा) ।

वह्दिविअ वि [वर्धित] १ बढाया हुआ,
'महिषीदे मधुवह्दिवीरो समहिव्य विरथरद'
(सिरि ६२७) । २ छरिहत किया हुआ,
काटा हुआ (दे १, १) ।

वह्दिविअ छी [दे] बूतबुला, हँकुरा (दे ७,
१६) ।

वह्दिविअ छी [वृद्धिमन्] वृद्धि, बढाव;
'पसा विण वह्दिविअ' (प्राक ३३, कप्पू) ।

वह्द देखो वह्द = वट (दे १, १७४, लि २०७) ।

वह्द वि [दे] भूक, बाकूशति से रहित
(ससि ३६) ।

वह्दर } पु [वह्दर] १ मूर्ख छात्र । २
वह्दर } प्राद्वण दुष्य मौर वैश्य छी से
उत्पन्न सत्तात, ब्राम्हण । ३ वि. शठ. भूत ।
४ म-व, मलस (दे १, २५४, पद) ।

वण सक [वन्] माँगना, याचना करना ।
बणेइ (पिड ४४४) ।

वण पुं [दे] १ मसिकार । २ क्षप, चाँडाल
(दे ७, ८२) ।

वण पुन [व्रण] भाव, प्रहार, छत, 'जसेम
वणो लसेम वेमण' (काप्र ८७१, पा ३८१,
४२७, पाद्य) । 'वट्ट पुं [पट्ट] चाव गर
बाँधी जाती पट्टी (गा ४५८) ।

वण न [वन] १ भरयज जंगल (भग, पाद्य,
उवा, कुमा, प्राक ६२, १४५) । २ पानी,
जल (पाद्य, वजा ८८) । ३ निवास । ४

आलय (दे ३, ८८, प्राक) । ५ वनस्पति
(बम्म ४, १०, १६, ३६, दं १३) । ६
उद्यान, बगीचा (उप १८६ टी) । ७ पुं.
देवो की एक जाति, वनव्यतर देव (भग,
कम्म ३, १०) । ८ पुन विरोप (राज) ।
'कम्म पुन [वर्धन] जंगल को वाटने या
बेचने वा वाम (भग ८, ५—पन ३७०;
पडि) । 'कम्मंत न [कमान्त] वनस्पति
वा बारखाना (प्राचा २, २, २. १०) ।
'गय पुं [गज] जंगली हाथी (दे ३, ६३) ।
'मि पुं [गिन] दावानल (पाद्य) । 'यर
वि [यर] वन में रहनेवाला, जंगली
(पहए १, १—पन ११) । जो. 'री
(रायण ६०), देखो 'यर । 'छिद वि
[च्छिद] जंगल वाटनेवाला (पुन १०४) ।
'त्यली छी [त्यली] भरएय भूमि (दे ३,
६३) । 'व्य पुं [व्य] दावानल (पाया १,
१—पन ६५) । 'वजय पुन [वर्जय]
वनस्पति से म्यास पकैत, 'बणणि वा
बणपण्यणि वा' (प्राचा २, ३, ३. २) ।
'विहाल पुं [विहाल] जंगली बिह्ला
(सण) । 'माल न [माल] एक देव-
विमान (सम ४१) । 'माला छी [माला]
१ पैर तक लटनेवाली माला (भौप, बच्चु
३६) । २ एक राज-पत्नी (पजम ११, १४) ।
३ रावण की एक पत्नी (पजम ३६, ३२) ।
'य वि [ज] वन में उत्पन्न, जंगली (वजा
१२८) । 'यर वि [यर] १ वन में
रहनेवाला, बनेला (छाया १, १—पन ६२,
गड) । २ पुली. व्यन्तर देव (विदे ७०७,
पन १६०) । की. 'री (उप ३ ३०) । 'राइ
छी [राजि] तरु-पत्ति, वृक्ष-समूह (संड,
सुर ३, ४२, ब्रमि ५५) । 'राज, 'राय पुं
[राज] १ विभ्रम की आठवीं शाखा की का
गुनरात का एक प्रसिद्ध राजा (मोह १०८) ।
२ सिंह, बेशरी (चड) । 'लइया, 'लया छी
[लता] १ एक छी का नाम (महा) । २
वह वृक्ष जिसकी एक ही शाखा हो (बप्पू,
राज) । 'वाल वि [वाल] उद्यान गालक,
माली (उप ६८६ टी) । 'वास पुं [वास]
परएय में रहना (पि ३५१) । 'वासी छी
[वासी] नगरी विशेष (राज) । 'विदुग
न [विदुग] नानाविध वृक्षों का समूह

(पुन २, २, ८, भा) । 'विरोहि पु
[विरोहिन्] भाषात मात (सुज १०,
१६) । 'संड पुं [पण्ड] अनेविप वृक्षों
की घटा—समूह (आ २, ४, भा, पाया १,
२, भौप) । 'हसिय पुं [हसिन्] जंगल
वा हाथी (दे ८, ३६) । 'लि, 'लि छी
[लि] वन पत्ति (गा ५७६, हे २, १७७) ।
वणइ छी [दे] वन-राजि, वृक्ष-पत्ति (दे ७,
३८, पद) ।

वणण न [वनन] यहदे को उसकी माता से
भिन दूसरी गाय से लगाना (पहए १, २—
पन २६) ।

वणण न [दे. व्यान] बुनना । 'साला छी
[साला] बुनने का बारखाना (दस १,
१ टी) ।

वणखि छी [दे] गो धुन्व, गो समूह (दे ७,
३८) ।

वणनखिअ वि [दे] पुरस्कृत, भागे किया
हुमा (पद) ।

वणपफसावअ पुं [दे] शरम, श्वापद-विरोप
(दे ७, ५२) ।

वणपफइ पु [वनरपति] १ वृक्ष-विरोप, फूल
के बिना हो जिलमें फल लगता हो वह वृक्ष
(हे २, ६६, कुमा) । २ लटा, डुल्ल, वृक्ष
बाँधि कोई भी गाछ, पेड़ मात्र (भग) । ३ न-
फल (कुमा ३, २६) । 'काइअ वि [कायिक]
वनस्पति का जीव (भग) ।

वणय पुं [वनर] दूसरी नरक-पुथि की का एक
नरक स्थान (देवेद ६) ।

वणरसि (भय) देखो वाणारसी (पिप, पि
३५४) ।

वणप पुं [दे] दावानल (दे ७, ३७) ।

वणस्वाइ छी [दे] कोकिला, कोसल (दे
७, ५२, पाद्य) ।

वणस्सइ देखो वणपफइ (हे २, ६६, जी २;
ज, पाए १) ।

वणाय वि [दे] व्यास से व्याप्त (दे ७, ३५) ।

वणार पुं [दे] दमनीय बड़या (दे ७, ३७) ।

वणि वि [व्रणिण] दाववाला, जिसको दाव
हुमा हो वह (दे ६, ३६, पा १६, ११) ।

वणि पुं [वणिज] बनिया, व्यापारी,
वणिअ } वैश्य (भौप, उप ७२८ टी, सुर

१४, २६; गुमा २७६; सुर १, ११३; भामू ८०; कुमा, महा।

वणिज वि [वणिज] ब्रह्म-युक्त, पाववाला (गा ४५८; ६४४; पञ्च; ७५, १३)।

वणिज पु [वनिपक] मिश्रक, मिश्रार, 'बलि जायति ति वणिजो पायप्याण वणेइति' (पिंड ४४३)।

वणिज न [वणिज] ज्योतिष-प्रसिद्ध एक करण (विने ३३४८, सुमानि ११)।

वणिजा जी [वनिजा] बाटिका, बनीया; 'ब्रह्मवणिजप्राद मज्झमादि' (भाव ७, उवा)।

वणिजा जी [वनिजा] जी, महिला, नारी (गा १७, कुमा, तदु ५०, सम्मत १७३)।

वणिज देवो वणिज = वणिज (चार ३४)।

वणिज } न [वाणिज्य] व्यापार, बैपार;
वणिज } 'एतियकालं हट्टे ण हंति चिट्ठेसि
'वणिजक' (सुपा ५१०, २५२), 'उज्जेण-
भ्रागभो वणिज्ये' (पञ्च ३३, ६; स
४४३; सुर १, ६०; कुम ३६३, सुपा ३८४;
भामू ८०, भवि, या १२)। 'रय वि
[वारक] व्यापारी (सुपा ३४३, उष ५
१०४)।

वणिम } देवो वणीमय (वस ५, १, ५१)।
वणीमग } २ वरिष्ठ, निपट (वस ५, २, १०)।
वणी जी [वनी] १ भील से प्राप्त धन (डा ५,
३—पञ्च ३४१)। २ कली-विशेष, जिससे
कपाल निकलता है (राज)।

वणीमग } पुं [वनीपक] याचक, मिश्रक,
वणीमय } मिश्रारी (डा ५, ३; सुपा १६८,
सख, धीय ४३६)।

वणे भ. इन धर्मों का सुचक ग्रन्थ—१ निखय
(हे २, २०६, कुमा)। २ विवस्व। ३
धनुस्सनीय। ४ सनावना (हे २, २०६)।
वणेचर देवो वग-यर (रखण ५६)।

वण्य सक [वण्य] १ वण्य करना। २
प्रशंसा करना। ३ रचना। वण्यभामो (पि
४६०)। कर्म, वणिज्यज (सिदि १२८८),
वणिज्यभद (भग) (हे ४, ३४५)। वरु,
वण्यत (गा ३५०)। हेरु, वणिज्यत (पि
५७३)। क. वण्यणिज, वण्येजव (हे
३, १७६, भग)।

वण्य पुं [वण्य] १ प्रशंसा, स्तुति (उष
६०७)। २ यश, कीर्ति (धोष ६०)। ३
शुक्त आदि रंग (भग, डा ४, ४; उवा)। ४
भकार आदि भस्म। ५ बाल्य, वैश्य आदि
वाति। ६ गुण। ७ भगवत्पुत्र। ८ सुवर्ण,
सोना। ९ विवेचन की वस्तु। १० व्रत-
विशेष। ११ वण्यन। ११ विवेचन क्रिया।
१३ गीत का रूप। १४ चित्र (हे १, १७७;
प्राज)। १५ कर्म-विरूप, शुक्त आदि वर्णों
का कारण-भूत कर्म (कम्म १, २४)। १६
संयम। १७ मोक्ष, मुक्ति (प्राभा)। १८ न,
कुटुम्ब (हे १, १४२)। 'गाम', 'नाम पुंन
[नामन्] कर्म विशेष (राज, सम ६७)।
'मंत वि [वन्] प्रशस्त वर्णवाला
(भग)। 'वाइ वि [वादिन्] स्तुता-कर्ता,
प्रशसक (वस १)। 'वाय पुं [वाय] प्रशसा,
स्तुता (पचा ६, २३)। 'वास पुं
[वास] वर्णन-प्रकरण, वर्णन-पद्धति (वीर
३; उवा)। 'वास पुं [वास] वर्णन-
विस्तार (भग, उवा)।

वण्य पुं [वण्य] पंचम आदि स्वर। 'सम न
[सम] मेय काव्य का एक भेद (वसवि २,
२३)।
वण्य वि [दि] १ अच्छ, स्वच्छ। २ रक्त।
(हे ७, ८३)।
'वण्य देवो पण्य (गा ६०१; गउड)।
वण्य देवो वण्य (उवा; धीय)।
वण्य न [वण्य] १ स्तुता, प्रशंसा
(कम्म)। २ विवेचन, विवरण, निष्कर्ष
(रखण ४)।
वण्यगा जी [वण्यगा] ऊपर देवो (हे १,
२१, सार्थ ४४)।
वण्यग गुन [दि वर्णक] १ चन्दन, यौसएड
(दे ७, ३७, पचा ८, २३)। २ गिष्ठव-
भूत, धीयपण (दे ७, ३७; स्वल्न ६१)।
वण्यग पुं [वण्यक] वर्णन-ग्रन्थ, वर्णन-प्रकरण
(विपा १, १, उवा, धीय)।
वणिज वि [वणिज] विवरण वर्णन किया
गया हो वह (महा)।
वणिज आ देवो वणिज (गा ६२०)।
वणिज पुं [वणिज] १ एक राजा, जो अन्धक-

वणिज नाम से प्रसिद्ध था; 'वणिज पिया
'वादिणी माया' (मंत ३)। २ एक अन्धक
वणिज, 'अन्धजोम पण्येइ वणिज' (मंत)।
३ अन्धकवणिज-वंश में उत्पन्न, यादव (गुदि)।
'दसा जी. व. [दशा] एक जैन धाम-
ग्रन्थ (निर ५)। 'पुंगव पुं [पुंगव] यादव-
श्रेष्ठ (उत २२, ११; लाया १, १६—पुत्र
२११)।

वणिज पुं [वणिज] १ धर्मन, भ्राम (पाय;
महा)। २ लोकान्तर देवों की एक जाति
(लाया १, ८—पञ्च १५१)। ३ विदक
वृत्त। ४ मिलावा का देश। ५ नौक का
गाछ (हे २, ७५)।

वत देवो वय = वत (वंड)।
वति देवो वड = वतिष्ठ (उष ३८१)।
वति देवो वड = वति (वंड)।
वतु पुं [दि] मिश्र, समूह (हे ७, ३२)।

वत देवो वट = वट। वतइ (भवि), वतवि
(शी) (स्वल्न ६०)।
वत देवो वट = वटवृ; वतइ (भवि)। वतत्र
(भाभा २, १५, ४२)। वतैजासि, वतैजासि
(उवा, पि ५२८)।
वत न [वार्त्त] भारोगम (उत १८, ३८)।

वत वि [वार्त्त] केला हुआ, भस्मर (कम्म;
विने ३०३६)।

वत देवो वट = वत (स १०८, महा, सुर १,
१७८; ३, ७६, धीय, हे १, १४५)।

वत वि [वयत्त] प्रकट, खुला (वर्त ५५५)।
वत न [वयत्त] बुद्ध, बुद्ध (हे १, १८;
भवि)।

'वत देवो वत = वत (गा ६०४; हेता ५०;
गउड)।

'वत देवो वत = पाय (गउड, गा ३००)।
वत देवो वता (भवि)। 'वार वि [वार]
वार्त्ता कहनेवाला (भवि)।

वत आ पुं [वयत्त] १ विरय, विवरण।
२ व्यतिक्रम, उल्टापन (महा २१)।

वसए देवो वय = वय।

वसइआ } (भर) देखा गया (कुमा; हे ४,
वसइआ } ४३२, सख)।

वसत न [वर्त्तन] १ भौतिक, निर्वाह; 'किं
न तुम मण्डहिं कुरु वसतं करि' (पुत्र

२८) । २ भावृत्ति, परावरन (वंवा १२, ४३) । ३ स्थिति । ४ स्थापन । ५ वर्तन, होना । ६ वि. वृत्तिवाला । ७ रहनेवाला (संसि १०) ।

वत्तणा छो [वत्तना] ऊपर देखो, 'वत्तणा-लमखो कालो' (उत्त २६, १०, भावम) । वत्तणी छो [वत्तनी] मार्ग, रास्ता (पह १, ३—पत्र २४, विते १२०७, सूचति ६१ टी घुवा ५१८) ।

वत्तद्ध वि [दि] १ सुदर । २ बहु शिस्त (दे ७, ८५) ।

वत्तमाण पुं [वत्तमान] १ काल-विशेष, बलता काल (प्राप्र, संति १०) । २ वि. वर्त्तमान-वालीन, विद्यमान । ३ पु विद्यमानता (वर्मस ५७३) ।

वत्तरि देखो सत्तरि (सम ८३, प्राप् १२६, विते ४४६) ।

वत्तव्य देखो वय = वच् ।

वत्ता छो [दे] सूच बलनक, सूच वेष्टन गन (पह १, ४—पत्र ७८, तटु २०) । देखो चत्ता = (३) ।

वत्ता छो [वात्ता] १ बात, बषा (दे ६, १८, सुपा ३८७, प्राप् १, कुमा) । २ वृत्तान्त, हकीमत (पापे) । ३ वृत्ति । ४ दुर्गा । ५ कृपि कर्म, खेती । ६ जनभूमि, किंवदन्ती । ७ गन्ध का अनुभव । ८ काल-कर्तुं भुत-नारा (दे २, ३०) । 'लाव पु [लाप] बातबीज (सि २८२) ।

वत्तार वि [दि] गवित, गर्व-मुक्त (दे ७, ४१) । वत्ति छो [दे] सीमा (दे ७, ३१) । वत्ति देखो वट्टि (गा २३२, ६५८, विते १३६८) ।

वत्ति नि [वत्तिन्] वर्तनेवाला (महा) । वत्ति छो [वृत्ति] प्रवृत्ति (सुम २, ४ २) । देखो वित्ति ।

वत्ति छो [वत्ति] श्रुत एक वस्तु एकाकी वस्तु । 'पइट्ठा छो [प्रतिष्ठा] प्रतिष्ठा-विशेष, जिन समय में जो वीर्यकर विद्यमान हो उसके बिम्ब की विधि पूर्वक स्थापना (वेद २५) ।

वत्तिअ वि [वत्तिक] कथाकर, 'वत्तिमो' (दे २, २०) । २ पुन, टीका की टीका (सप

४६, विते १४२२) । ३ ग्रंथ की टीका—व्याख्या (विते १३८५) ।

वत्तिअ वि [वत्ति] १ वृत्त—गोल विषय दृष्टा (खाया १, ७) । २ भाव्यावृत्ति (वटि) ।

वत्तिअ देखो पषय = प्रत्यय (धीप) ।

वत्तिआ देखो वट्टिआ (प्राप्र) ।

वत्तिणी छो [वत्तिनी] मार्ग, रास्ता (पाप्र, स ४, सुर १२, १३६) ।

वत्ती देखो पत्ती = परती (वा ७६, १०६, १७३) ।

वत्तु देखो वय = वच् ।

वत्तुक्रम वि [वत्तुक्रम] बोलने की चाह-बासा (स ३१८, प्रावि ४४, स्वज १०, नाट—विक्र ४०) ।

वत्तुल देखो वट्टुल (राज) ।

वत्थ पुन [वत्थ] कपडा (भावा २, १४, २२, उवा, पह १, १, उप ५ ३३३, सुपा ७२, ४६१, कुमा सुर ३, ७०) । 'खेडु न [खेड] कला विशेष (ज २ टी—पत्र १३७) । 'धोव वि [पाव] बल बोनेवाला (सूत्र १, ४, २, १७) । 'पूस् पु [पुव] एक जैन मुनि (कुलक २२) । 'पूस्मिन्त पु [पुव्यमिन्त] एक जैन मुनि (टी ७) । 'विद्या छो [विद्या] विद्या-विशेष, जिसके प्रभाव से बल हासिल करने से ही बीमार भ्रष्ट हो जाय (वव ५) । 'सोहग वि [शोधक] बल बोनेवाला (स ४१) ।

वत्थ वि [व्यस्त] कुशल, भिन, जुवा (सुर १६, ५५) ।

वत्थउठ पु [दे वत्थुपट] ठठ, कपड-कोट, बल-गृह (दे ७, ४३) ।

वत्थए देखो वस = वस ।

वत्थग पु [वत्थाङ्ग] कल्पवृक्ष की एक जाति, जो बल देने का काम करता है (पठम १०२, १२१) ।

वत्थर देखो पत्थर = पत्तर (गा २५१) ।

वत्थलिज्ज न [वत्थलिय] जो जैन मुनि कुलो के नाम (वप्य) ।

वत्थव्य वि [वास्तव्य] रहनेवाला, निवासी (सि ४२७, सुर ३, ६१, सुपा २६५, महा) ।

वत्थाणी छो [दे] बल्लो विशेष (पह १—पत्र ३३) ।

वत्थाणीअ पुन [दे] पात्र-विशेष, 'हत्थेण वत्थाणीएण भोच्चा वज्जं सायंति' (मुज १०, १७) ।

वत्थि पु [वत्थि] २ रति, मस्त (मग १, ६, १८, १०, एया १, १८), 'वत्थिञ्च वागपुएणो वत्तुवरसिण जहा उहा लवई' (संवीप १८) । २ प्रमान, गुदा, 'वत्थी भवए' (पाप्र पह १, ३—पत्र ५१) । ३ छाते में शलाका—ससी—सलाई बैठने का स्थान, छत का एक प्रवयव (धीप) । 'वम्म न [कर्मन्] १ सिर भादि में चर्म-वेष्टन द्वारा दिया जाता रेल भादि का पूरण । २ मत साफ करने के लिए गुदा में बत्ती भादि का किया जाता प्रक्षेप (विपा १, १—पत्र १४, एया १, १३) । 'पुडग पुन [पुटक] पेट का भीतर प्रवेश (निर १, १) ।

वत्थिय पुं [वात्थि] बल बनानेवाला शिल्पी (मपु) ।

वत्थी छो [दे] उजज, तापसो की पण कुटी (दे ७, ३१) ।

वत्थु न [वत्थु] १ पदार्थ, चीज (पाप्र, उवा, सम्म ८, सुपा ४०१, प्राप् ३०, १६१, डा ४, १ टी—पत्र १८८) । २ पुन, पूर्व प्रत्यो का प्रत्ययन—प्रकरा, परिच्छेद (सम २५; एदि वसु, कम्म १, ७) । 'पाल, 'वाल पु [पाल] राजा शोरषव का एक सुप्रसिद्ध जैन यन्त्री (टी २, १२मीर १२) ।

वत्थु न [वात्थु] १ गृह, घर 'क्षेतवधुविहि परिमास करई (उवा) । २ गृहादि-निर्माण-शास्त्र (खाया १, १३) । ३ शाक-विशेष (उवा) । 'पाठग वि [पाठक] वात्थु-शास्त्र का अभ्यासी (खाया १, १३, धर्मवि ३३) । 'वज्जा छो [विद्या] गृह निर्माण-कला (धीप ज २) ।

वत्थुल पु [वत्थुल] गुच्छ धीर हरित वनस्पति विशेष, शाक विशेष (पह १—पत्र ३२, ३४, पव २५६) ।

वत्थूल पुं [वत्थूल] ऊपर देखो, 'वत्थु (शेख) ला पेगलवा' (बी ६) ।

वद् देखो वय = वद । वदसि, वदह (ववा-
भाग, वप्प) । वृका-वदासी (भग) । हेक्क-
वदित्तप्प (वप्प) ।

वद् देखो वय = वत (प्राक् १२, नाट—विक्क
५६) ।

वदिसा देखो वदिसा (इक) ।

वदिकल्लि वि [दे] वलित, लीटा हुआ
(दे ७, ५०) ।

वदुमग देखो वदुमग (घावा) ।

वदल न [दे वार्दल] १ वदल, वादल, मेघ-
घटा, दुर्दिन (दे ७, ३५, दे ४, ४०१, सुपा
६५५, राग, भावन, छा ३, १—पत्र १५१) ।

२ पुं, छतवी मरक का दूसरा मरकेन्द्रक—
मरक-स्थान (देवेन्द्र १२) ।

वदल्लिया ली [दे. वार्दल्लि] बल्ली, छोटा
बदल, दुर्दिन (भग ६, ३३—पत्र ५६७,
मीप) ।

वद्ल देखो वट्ल = वधय् । वद्ले, वदल्लि (सुपा
६०) ।

वद्ल पुन [वध्रं] वधं रण्डु, वज्रो बद्धो
(? वन्नी बद्धो) (पाम, दे ६, ८८, पत्र
८३, सम्मत १७५) ।

वद्ल देखो विल्ल = वृद्ध (पाम, प्राक् ७) ।

वद्लण न [वधंन] १ वृद्धि, वद्धि (छाया
१, १, कप्प) । २ वि. वद्लणवाला (उप
६७३, महा) ।

वद्लणिआ १ ली [वधंनिना, *नी] संग्रामजी, वद्धणी
१ भाङ्ग (दे ८, १७७, ५१ टी) ।

वद्लमाण पुं [वधंमान] १ भगवान् महावीर
(प्रावा २, १५, १०, सम ५३, वत, कप्प,
पटि) । २ एक प्रसिद्ध जैनार्चन (सार्ध ६३,
विचार ७६, ती १५, पु ८) । ३ स्वर्ण-
रोषित पुरुष, वन्ने पर चढ़ाया हुआ पुरुष
(प्रत, मीप) । ४ एक शाश्वत जिन-देव ।

५ एक शाश्वती जिन प्रतिमा (पत्र १६) ।
६ न गृह विरोध (उत्त ६, २४) । ७ राजा
रामचन्द्र का एक प्रेता-गृह—नाट्य शाला
(पत्र ८०, ५) । देखो वट्लमाण ।

वद्लमाणग पुं [वधंमानक] १ भठानी
वद्लमाणग १ महाप्रभो में एक महाप्रद, यथोचित
देव विरोध (छा २, ३—७८) । २ एक देव-
विमान (देवेन्द्र १४०) । ३ न, पात्र विरोध,

शराव (छाया १, १—पत्र ५४, पत्रम
१०२, १२०) । ४ पुं, पुरुष पर आरुढ़ पुरुष,
पुरुष के वन्ने पर चढ़ा हुआ पुरुष । ५
स्वस्तिक पञ्चक । ६ प्रासाद विरोध, एक
तहक का गृहल (छाया १, १—पत्र ५४,
टी—पत्र ५७) । ७ न, एक गांव का नाम,
अस्थिक ग्राम, अद्वित्यामस्व पदम चद्रमाणय
ति नाम होत्वा (भावम) । ८ वि. कृता-
निमान, अग्निमानो, गवित (मीप) ।

वद्लय वि [दं] प्रथान, मुख्य (दे ७, ३६) ।

वद्लार सक [वधय्] बहाना, गुजराती में
“वपारतु” । वद्ल. वद्लारत (सद्धि १२,
सबोव ४, द्र ८) ।

वद्लारिय वि [वधिल्ल] बढाया हुआ (मवि) ।

वद्लाय सक [वधय्, वधोपय्] बधाई
देना । वद्लवेइ, वद्लवेति (कप्प) । कर्ण
वद्लोमपसि (रमा) । वद्ल. वद्लारित (सुपा
२२०) । संक्ष. वद्लारित्ता (कप्प) ।

वद्लारण न [वधंन, वधोपन] बधाई,
अभ्युदय निवेदन (अवि, सुर ३, २४, महा,
गुपा १२२, १३४) ।

वद्लारणिआ ली [वधंनिना, वधोपनिना]
ऊपर देखो (सिदि १३१६) ।

वद्लारय वि [वधंन, वधोपन] बधाई देने
वाला (सुर १५, ७६, स ५७०, सुपा
३६१) ।

वद्लारिय वि [वधित्त, वधोपित्त] जिसको
बधाई दी गई हो वह (सुपा १२२, १६५) ।

वद्लिय पु [दे] १ वद्ल, नपुंसक (दे ७,
३७) । २ नपुंसक विरोध, छोटी उम्र में ही
छेद दे कर जिसका अण्डकोष गलताया गया
हो वह, वधिया (पत्र १०६ टी) ।

वद्लिय देखो वद्लिद्वय = वृद्ध (मवि) ।

वद्ली ली [दे] अवश्य-कृत्य, आवश्यक
कर्तव्य (दे ७, ३०) ।

वद्लोसक १ पुन [सि. वद्लोसक] बाद-विरोध,
वद्लोसण १ एक प्रकार का वाजा (पण्ह २,
१—पत्र १४६, अनु ६) ।

वय देखो वद्ल = वध (छाया) ।

वघय देखो वद्लय (भग) ।

वधू देखो वद्ल (मीप) ।

वन्न देखो वण्ण = वण्य् । वन्नेहि (छाया,
उव) । हेक्क. वन्नित्त (छाया) । क. वन्नणिज्ज
(सुर २, ६७, दमण ५४) ।

वन्न देखो वण्ण = वणं (भग, उव सुपा १०२,
सत्त ५६०, कम्म ४, ४०, छा ५, ३) ।

वन्नग देखो वण्णय (कप्प, धा २३) ।

वन्नण देखो वण्णण (उव ७६८ टी, सिदि
७२७) ।

वन्नणा देखो वण्णणा (रमा) ।

वन्नय देखो वण्णय (सिद्ध ३०८, कप्प) ।

वन्नित्त देखो वण्णिअ (भग) ।

वन्नित्ता ली [वण्णिना] १ वातनी, नपूना-
“समस्त चरित्रा मिव नयरं ह्यहं मयि पाइवी-
पुत्त” (वर्णवि ६४) । २ लाल रंग की मिट्टी
(मी ३) ।

वन्नि देखो वण्हि = वण्यि (उत्त २२, १३) ।

वन्नि देखो वण्हि = वण्हि (वध) ।

वपु देखो वड = वपुस् (वध १) ।

वप्प सक [वत्थ ?] ढकना, माच्छादन
करना । वण्ह (वात्ता १५१) ।

वप्प पु [यम] १ दिनभय-विरोध, जट्टवीर
का एक प्रांत, जिसकी राजधानी विजया है
(छा २, २—पत्र ८०, ज ४) । २ पुन.
किला, दुर्ग, कोट (ती ८) । ३ वेदार, जट्ट,
केमारो वण्यि वण्यो (पाम, प्राचा २,
१, ५, २, दे ७, ८३ टी) । ४ लट, किनारा,
“रोहो वण्यो य तसं” (पाम) । ५ वनत भू-
भाग, ऊँची जमीन ‘वण्यणि वा वण्णिट्ठाणि
वा पापाराणि वा’ (प्राचा २, १, ५, २) ।

वप्प वि [दे] १ लुप्त हय । २ बनबाद,
बलिष्ठ । ३ वृत्त गृहोत्त, भूताविट (दे ७,
८३) ।

वप्पइराय देखो वप्पइराय ।

वप्पगा देखो वप्पा (राज) ।

वप्पगाई ली [वप्पगाई] जट्टवीर का
एक विजय क्षेत्र जिसकी राजधानी का नाम
अपरजिता है (छा २, २—पत्र ८०, दह) ।

वप्पा ली [यम] उन्नत भू भाग, टेकड़ा,
ऊँची जमीन (भग १५—पत्र ६६६) ।

वप्पा ली [यम] १ भगवान् नगिनाजी की
माता का नाम (सम १५१) । २ दरावें

चक्रवर्ती राजा हरिषेण की माता का नाम
(पउम ८, १४४, सम १५२) ।
चरिपअ पुं [दे] १ वेदार, खेत (पइ) ।
२ मनुष्य विशेष (पुक्क १२६) । ३ वि-
रन, राग युक्त (पइ) ।
चरिपण पुन [दे] १ वेदार, खेत (दे ७, ८५,
श्रीप, पाया १, १ टी—पत्र २, पात्र, पउम
२, १२, पइह १, १, २, ५) । २ वि-
उपित, जिसने पास किया हो वह (दे ७,
८५) ।
चरिपण पुन [दे] १ वेदारवाता देश । २
तटवाता देश (भग ५, ७—पत्र २३८) ।
चट्ठी देखो वट्ठा = वट्र (भग १५—पत्र
६६६) ।
चट्ठीअ पुं [दे] चातक पत्ती (दे ७, ३३) ।
चट्ठीअइअ न [दे] क्षेत्र, खेत (दे ७, ४८) ।
चट्ठीह पुं [दे] स्तूप, मिट्टी आदि का कूट
(दे ७, ४०) ।
चट्ठी देखो वट = वटुस् (भग १५—पत्र
६६६) ।
चट्ठी भ [दे] इन धर्मों का सूचक प्रत्यय—१
उपहास युक्त उल्लास । २ विस्मय, आश्चर्य
(संज्ञि ४७) ।
चट्ठाअल देखो वट्ठाअल (दे ६, १२ टी) ।
चट्टर न [दे] शङ्ख-विशेष (सुर १३, १५६) ।
चट्ठमं देखो वह = वह् ।
चट्ठमं पुं [वज्र] पशु विशेष (स ४३७) ।
चट्ठभय न [दे] कमलोदर, कमल का मध्य
भाग (दे ७, १८) ।
चभिचरिअ वि [उपभिचरित्] व्यभिचार
दोष से दूषित (आ १४) ।
चभिचार देखो वहिचार (स ७११) ।
चभिचारि वि [उपभिचारिन्] १ न्याय-
शास्त्रोक्त दोष विशेष से दूषित, ऐकान्तिक
(धर्मसं १२२७ पात्र २, ३७) । २ परस्त्री-
सम्पत् (वव ६, ७) ।
चभियार देखो वहिचार (उवर ७६) ।
चम सक [चम] उलटी करना, कै करना ।
वह् वमंत, वममाण (गउड, विपा १, ७) ।
सह् चता (मावा: सुम १, ६, २६) । क.
वम्म (उर १, ७) ।

चमग वि [चामक] उलटी करनेवाला (विइय
१०३) ।
चमण न [चमन] उलटी, चानि, कै (भावा,
छाया १, १३) ।
चमाल सव [पुज्जय] १ इच्छा करना ।
२ विस्तारना । चमालइ (दे ५, १०२,
पइ) ।
चमाल पुं [दे] नलकल, बोलाहल (दे ६,
६० पात्र, स ४३५, ५२०, भवि) ।
चमाल पुं [पुअ] राशि, रंग (सण) ।
चमालण न [पुअन] इच्छा करना । २
विस्तार । ३ वि. इच्छा करनेवाला । ४
विस्तारनेवाला (कुमा) ।
चम्म पुन [चम्मन्] कवच, संताड़, बस्तर
(प्राप्र, कुमा) ।
चम्म देखो चम ।
चम्मथ पुं [मम्मथ] कामदेव, कर्तव्य
चम्मह (चक, प्राप्र, हे १, २४२, २,
६१, पात्र) ।
चम्मा देखो चामा (कप्प, पउम २०, ४६;
सुल २३, १, पत्र ११) ।
चम्मिअ वि [चमित्] कवचित, संताड़-युक्त
(विपा १, २—पत्र २३) ।
चम्मिअ पुं [चल्लीक] कीट-विशेष-वृत्त
चम्मिअ पुं मिट्टी का स्तूप, बूह या भीटा,
क्षेमको के रहने की बर्तनी (सूत्र २, १, २६,
हे १, १०१, पइ, पात्र, स १२३, सुपा
३१७) ।
चम्मोइ पुं [चाल्मीकि] एक प्रसिद्ध ऋषि,
रामायण कर्तृ मुनि (उत्तर १०३) ।
चम्मोसर पुं [दे] काम, कवर्त (दे ७, ४२) ।
चम्ह न [दे] चल्लीक (दे ७, ३१) ।
चम्ह पुं [चम्मन्] १ क्षुण विशेष, पलाश का
पेड़ 'नगोहवम्हा तल्ल' (पउम ५३, ७६) ।
२ देखो चम (प्राप्र) ।
चम्हल्ल म [दे] केसर, किन्नलक (दे ७, ३३,
हे २, १७४) ।
चम्हाप देखो चमण (कुमा) ।
चय सक [चय] बोलना, कहना । चमइ,
चमए (पइ) । भवि, चञ्चिहइ, चञ्चिइ,
चञ्चिहइति, चञ्चिइति, चोञ्चिइ, चोञ्चिइइ,
चोञ्चिइति, चोञ्चिइहइति, चोञ्च (संज्ञि ३२
पइ, हे १, १७१, कुमा) । कर्म बुवा

(कुमा) । कर्म, भवि, वह्, चक्रमाण
(विदे १०४३) । संह, चइत्ता, चशा,
चोत्तण (ठा ३, १—पत्र १०८, सुम २,
१, ६, हे ४, २११, कुमा) । हेइ, चत्तए,
चत्तुं, चोत्तुं (मावा: प्रभि १७२, हे ४,
२११, कुमा) । क. वष, चत्तव्य, चोत्तव
(विदे २, उप १३६ टी, ६४८ टी, ७६८
टी, पिउ ८७, धर्मसं ६२२, सुर ४, ६७,
सुपा १५०, श्रीप, उवा, हे ४, २११) । देखो
चयणिज्ज ।
चय सक [चद] बोलना, कहना । चयइ,
चयसि (कस, कप्प), चइत्ता, चइत्ता (कप्प) ।
भूका, चमासि, चमाती (श्रीप, कप्प, भग,
महा) । वह्, चयंत, चयमाण, चयमाण
(कप्प, काल, जा ४, ४—पत्र २७४, सम
६६, ठा ७) । संह, चइत्ता (भावा) ।
हेइ, चइत्तए (कप्प) ।
चय सक [चज्ज] जाना, गमन करना ।
चयइ (सुर १, २४८) । चयज (महा), चइज्ज
(गच्छ ३, ६१) । क. चयत्त (सुर ३, ३७,
सुपा ४३२) । क. चइयज्ज (राजा) ।
चय पुं [चुक] पशु विशेष, भेडिया (पउम
११८, ७) ।
चय पुं [दे] गुप्त पक्षी (दे ७, २६, पात्र) ।
चय पुं [चज] १ संस्कार-करण । २ गमन
(आ २३) ।
चय पुं [चज] १ देश-विशेष (गा ११२) ।
२ गौकुल, दल हजार गौओं का समूह (छाया
१, १ टी—पत्र ४३, आ २३) । ३ मार्ग,
रास्ता । ४ संस्कार-करण । ५ गमन, गति
(आ २३) । ६ समूह, गुण (आ २३, स
२६७, सुपा २८८, ती ३) ।
चय पुं [चयय] १ लव (स ५०३) । २
हानि नुकसान (उव, प्राप् १२१) । देखो
विअ = चयय ।
चय न [चयस] चयन, उक्ति (सूत्र १,
१, २, २३, १, २, २, १३, सुपा १६४,
भास ६१ व २२) । 'समिअ वि [समित]
चयन का समयो (भग) ।
चय पु [चद] कथन, उक्ति (आ २३) ।
चय पुन [चव] नियम, धार्मिक प्रतिज्ञा (भग,
पचा १०, ८, कुमा, उप २११ टी, श्रीपमा

२; प्राप् १५४) । 'मंत वि ['वत्] ब्रवी (प्राचा २, १, ६, १) ।

वय पुन [वयस्] १ उग्र, प्राप् (अ ३, ३; ४, ४) गा २३२; उप पृ १८; कुमा; प्राप् ४८; था १४) । २ पत्नी (पठः उप पृ १८) । ३ 'वय वि ['व्य] वरण, युवा (सुख १, १५) । ४ परिणाम पुं ['परिणाम] बुद्धता, बुद्धापा (से ४, २३; पाप्) ।

*वय पुं [पच] पचन, पाक (था २३) ।
*वय देखो पय = पय (स ३४५; था २३; पठः कप्, से १, २४) ।

*वय देखो पय = पयस् (कुमा) ।
वयं न ['व] कल-विशेष (सि ११६८) ।
वयंतिरिअ वि [वृत्त्यन्तरि] बाह से तिरो-हित (दे २, ६३) ।

वयंस पुं [वयस्य] समान उमरवाला मित्र (अ ३, १—पत्र ११४; हे १, २६; महा) ।

वयंसि देखो वयंसि = वचस्विन् (राज) ।
वयंसी की [वयसवा] सही, सहेली (कप्) ।
वयड पुं ['व] बाटिका, बगोचा (दे ७, ३५) ।
वयण न ['दे] १ मन्दिर, गृह । २ शय्या, बिछौनी (दे ७, ८५) ।

वयण पुन [वदन] १ दुख, दुःह, 'वमणो, वमण' (प्राह ३३; पि ३५८; सुर २, २४३; ३, ४४; प्राप् ६२) । २ न. वचन, उक्ति (विते २७६४) ।

वयण पुन [पचन] १ उक्ति, कथन, 'वयणा, वयणाई' (हे १, ३३; पय २; सुर ३, ६४; प्राप् १४; १३४; १५०, कुमा) । २ एतल भादि संस्था का बीचक ध्यावरण-शास्त्रोक्त प्रथम (पएह २, २ टी—पत्र ११८) ।

वयणिअ वि [वचनीय] १ वाच्य, कथनीय, भविष्य, 'वणु धव्यदुमल्ल वयणिअ' (सम्म ८; सुम २, १, ६०) । २ निन्दनीय (सुपा ३००) । ३ उपासम्भनीय, उत्तहना देने योग्य (सुप ३) । ४ न. वचन, शब्द (से ४, १३; सम्म ५३; काप ८६१) । ५ लोपापवाद, निन्दा (स ५३२) ।

वयर वि ['दे] ऋणित (दे ७, ३४) ।

वयर देखो वहर = वय (कप्; उव; शोपमा ८; सार्थ ३५; मग. शीप) ।

*वयर देखो पयर = प्रकर (से १, २२) ।

वयरह देखो वहराह (सत ६७ टी) ।

वयल वि ['दे] १ विकसता, खिलता (दे ७, ८४) । २ पुं. वसकल, कोलाहल (दे ७, ८४; पाप्) ।

वयली की ['दे] सता-विशेष, निद्रान्तरी सता (दे ७, ३४, पाप्) ।

*वयस देखो वय = वयस् ; 'सवयस' (प्राचा १, ८, २२) ।

वयस देखो वयंस (स ३१४; मोह ४७; मवि ५५; स्वन् ७६) ।

वया की [वपा] १ विवर छिद्र । २ मेद, चरवी (था २३) ।

वया की [वचा] १ शोषि विशेष । २ मैता, सारिका (था २३) । दोषो वचा ।

वया की [व्यजा] १ मार्ग-विशेष, ऊप को लीचने के लिए रज्जुबद्ध घट भादि डालने का मार्ग । २ प्रेरण-दराह (था २३) ।

वर सक ['वृ] १ सवाई करना, संबन्ध करना । २ बाधदान करना, ढकना । ३ याचना करना । ४ सेवा करना । बरह (हे ४, २३४; सुज १६; प्राप्. पट्, 'वरं वरेष्ट' (सुप ८०), 'वरं वरतु इच्छिअ' (था १२) ।

मवि. वरिस्सह (सि ८१६) । क. वरणीअ (पत्रम २८, १०४) ।
वर सक [वरय] १ प्राप्त करने की इच्छा करना । २ संछप करना । वरय, वरयति (मवि. सुज ७), 'के सुरिय वरयते' (सुज १, १) । वर. वरित (सुज ७) ।

वर पुं [वर] १ पति, स्वामी, दुल्हा (स ७८, स्वन् ४२, गा ४०४; ४७६, मवि) । २ वरदान, देव भादि का प्रसाद (कुमा. था १२, २७; सुप ८०; मवि) । ३ वि. श्रेष्ठ सत्ताम (कप्; महा. कुमा. प्राप् ५२, १७५) । ४ शमीष्ट (था १२; सुप ८०) । ५ न. वरुछ शमीष्ट, वरुछा, 'वर मे कप्पा संतो' (उत्त १, १६; प्राप् २२, ३८०; १०६) । 'दत्त पुं ['दत्त] १ मगवायु नेमिनायनी का प्रथम स्थिय (सम १५२, कप्) । २ एक राज-कुमार (विपा २, १, १०) । 'दाम न ['दामन] एव शीघ्र (अ ३, १—पत्र १२२, हक. सख) । 'घणु पुं ['घणु] एक मणि-कुमार, यहायत चरुवर्ती का बाल-

मित्र (महा) । 'पुरिस पुं ['पुरय] वागुदेव (पएण १७—पत्र ५२६; राय, भावम. जीव ३) । 'माल पुं ['माल] एक देव-विमान (देवन् १३३) । 'माला की ['माला] वर की पहनायी जाती माला. वरत्व-सूचक माला (सुप ४०७) । 'रुइ पुं ['रुवि] राजा मन्द के समय का एक विद्वान् ब्राह्मण (सुप ४४७) । 'वरिया की ['वरिका] समीष्ट वस्तु मानने के लिए की जाती धोपणा, ईप्सित वस्तु के दान देने की धोपणा (छाया १, ८—पत्र १५१; घामम. स ४०१; सुर १६, १८; सुपा ७२) । 'सरक न ['सरक] बाह्य-विशेष (पएह २, ४—पत्र १४८) । 'सिद्ध पुं ['शिष्ट] यम लोकपाल का एक विमान (भय ३, ७—पत्र १६७; हेवेन्द्र २७०) ।

वर देखो वार । 'विलया की ['वनिता] वरया (कुमा) । 'वर देखो पर. 'जीवाणम-भयदाए' जो देह बयावरो नरो निच' (सुप १८२) ।

वरइअ वि ['दे] वायु-विशेष (दे ७, ४६) ।
वरइअ पुं ['दे. वरयि] मगिन वर, दुल्हा (दे ७, ४४; पट्; मवि) ।

वरई देखो वरय = वराक ।
वरछफ वि ['दे] मृत (दे ७, ४७) ।

वरं देखो परं = परम. 'मो वरं विरुद्धमहाण हय भवत्पाण' (मोह ६२, स्वन् २०६) ।

वरंड पुं [वरण्ड] १ शीघ्र बाध, लम्बी लकड़ी । २ मिति, भीत (मुच्छ ६) ।

वरंड पुं ['दे] १ दुष्ट-युज्ज, दुष्ट संभय (काप ३) । २ प्राकार, जिला (दे ७, ८६; पट्) । ३ मपोताली, माल पर लगाई जावो कन्तुरी भादि नो छग (दे ७, ८६) । ४ सपुह (गा ६३०) ।

वरडिया की ['दे] छोटा बरंड, वरामदा, दालन (सुपा २०३) ।

वरसक न [वरासय] गन्धद्रव्य विशेष, तिहूव (से ६, ४४) ।

वरकर पुं [वराय] १ कोमो । २ यत । ३ वि. श्रेष्ठ इन्द्रियवाना (से ६, ४४) ।

वरकसा की [वराय्या] त्रिकला (मे ६, ४४) ।

वरण न [वरण] महामृत्यु पात्र, वीमती भाजन (शांता २, १, ११, ३)।

वरट्टु पुं [वे] धान्य-विशेष (पत्र १५४)।

वरडा } जी [दे. वरटा] १ सैनाटी, पीट-
वरडा } विशेष, गंधोली । २ संश भ्रमर-
जन्तु-विशेष (मुच्छ १२, दे ७, ८४)।

वरण पू [वरण] १ सगाई, विवाह-संकेत (सुपा १५४; सुत्र १, १२६; ४, १०)। २ छट, भिन्ना (गउड)। ३ पूल, सेतु (प्रोप ३०)। ४ प्राकार, किला (गा २४४)। ५ त्वीवार, ग्रहण (राज)। देखो वीर-वरण। ६ पुं. देश-विशेष, एक प्राय देश, 'वडराड वण्ड वरणा भच्छा' (सूत्रनि ६६ टी. इक), देखो वरण।

वरणय न [वरणय] वृण-विशेष (गउड)।

वरणसि (भव) देखो वाराणसी (पि ३४४)।

वरणा जी [वरणा] १ काशी की एक नदी, वरुणा (राज)। २ प्रच्छ देश की प्राचीन राजधानी (सूत्रनि ६६ टी)। देखो वरुणा।

वरणीअ देखो वर = वृ।

वरत्त वि [वे] १ पीत। २ पतित। ३ वेष्टित, संहत (पड)।

वरत्ता जी [वरत्ता] रज्जु, रस्ती (पात्र, विपा १, ६, सुपा ५५२)।

वरय पुं [वरक] सगाई करनेवाला, विवाह का प्रायंक पुरुष (सुत्र ६, ११५)।

वरय पुं [वे] शान्ति विशेष, एक तरह का धान्य (दे ७, ३६)।

वरय वि [वरक] चीन, वरीम, बेचारा, रक (पात्र, सुत्र २, ११६, ११५, सुपा ६३, गा ५३३)। जी. 'रई' (सति २, पि ८०)।

वरला जी [वरला] हत्ती, हंसपक्षी की माया (पात्र)।

वरसि देखो वरिसि (मोह ३०)।

वरहाड भक [निर + च] बाहर निकलना। वरहाड (हे ४, ७६)।

वरहाडिअ वि [नि स्त] बाहर निकलना हुआ, निर्गत (हुमा)।

वरगा देखो वराय (रंगा)।

वराड } पुं [वराट, 'क'] १ दक्षिण का
वराड } एक देश, जो आजकल भी 'वारट'
वराडय } नाम से प्रसिद्ध है (कुप्र २५४,
सुत्र १८, ३४, राज)। २ नरपद, कौम—

वही वीडी (उत्त ३६, १३०; श्रौय ३३४; या १)। ३ न. वीडियो वा लूमा जिसे मासल खेलते हैं (मोह ८६)।

वराडिया जी [वराटिया] नपदिना, वीडी (सुपा २०३)।

वराय देखो वरय—वरक (गा ६१, ६६, १४१, महा)। जी. 'राइआ', 'राई' (गा ४६२, पि ३४०)।

वरायड पुं. व. [वरायट] देश-विशेष (पडम ६८, ६४)।

वराह पुं [वराह] १ शुक, सुमर (पात्र)। २ भगवान् मुनिविनायक का प्रथम शिष्य (सम १३२)।

वराही जी [वराही] विद्या-विशेष (जिते २४५३)।

वरि म [वरम्] भच्छा-ढीक,
'वरि मरण या विरहो,
विरहो भड्डाहो म् पडिहाइ।
वरि एकं चिय मरण,
जेण समपति दुक्खाई'।
(सुत्र ४, १८२; भवि)।

वरिअ देखो पडज—वर्ष (हे २, १०७, पड)।

वरिअ वि [वृत्त] १ स्त्रीकृत (सि १२, ८८)। २ सेवित (भवि)। ३ जिसकी सगाई की गई हो वह (वधु; बहो)। ४ न. सगाई करना; 'मुवरियं ति' (उप ६४८ टी)।

वरिट्टु पुं [वरिष्ठ] १ भरत-सेन का भाभी वारट्ठा बरुवर्ती राजा (सम १५४)। २ क्षत्रि-श्रेष्ठ (श्रीफ, नय, उप पु ३८४, सुपा ४०३; भवि)।

वरिल व [वे] बल विशेष (कम्पु)।

वरिस वन [वृष] वरसना, वृष्टि करना। वरिसद (हे ४, २३५; प्राय)। वड.

वरिसंव, वरिसमाण (सुपा ६२४; ६२३)। हेरु. वरिसिउ (पि १३५)।

वरिस पुंन [वर्य] १ वृष्टि, वर्षा (कुमा, नय, भवि)। २ खससर, साल (कुमा, सुपा ४५२; नव ६, दे २७, कम्पु; कम १, १८)। ३ जन्तुवृक्ष का भय-विशेष, नात भादि सेन। ४ शेष (हे २, १०५)। 'अ वि [ज] वर्षा में उपज्ज (पड)। 'कहट न [हृण्य] १ एक गोत्र। २ पुंजी. उस गोत्र

में उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३६०)। 'धर पुं [धर] श्रन्त पुर-प्रात पण्ड-विशेष (छाया १, १—पत्र ३७, कम्पु; श्रौय ५५ टि)। 'वर पुं [वर] वही भग्नतरोक भयं (श्रीप)। देखो वास = वर्ष।

वरिसविअ वि [वर्षित] वरसाया हुआ (सुपा २२३)।

वरिसा जी [वर्षा] १ वृष्टि, पानी का वरसना (हे २, १०५)। २ वर्षा-काल, धावण कीर भादो का महीना (प्रयो ७४)। 'वाल पुं [वाल] वर्षा श्रन्तु, प्रावृट् (कुप्र ७५)। 'रत्त पु [रात्र] वही भयं (ठा ६; छाया १, १—पत्र ६३)। 'ल देखो 'वाल (पत्र ८५, महा)। देखो वासा।

वरिसि वि [वर्षिन्] बरसनेवाला (बेसी १११)।

वरिसिणी जी [वर्षिणी] विद्या-विशेष (पडम ७, १४२)।

वरिसोलक पुं [दे. वर्षोलक] वक्राप्र-विशेष, एक प्रकार का जाय (पत्र ४ टी)।

'वरिहरिअ देखो परिहरिअ (सि ७, ३८)।

वरु } पुंन [वे] देखो वरुअ, 'वनयतखो
वरुअ } वरुणो कुलति सुरहिजलसिवा (?)
ता' (संबोध ४७)।

वरुंट पुं [वरुण्ट] एक शिल्पि-जाति (राज)।

वरुड पुं [वरुड] एक भ्रमत्य-जाति (दे २, ८४)।

वरुण पुं [वरुण] १ चमर घादि इन्द्रो का पश्चिम दिशा का लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १६७; १६८, इक)। २ बलि भादि इन्द्रो का उत्तर दिशा का लोकपाल (ठा ४, १)। ३ लोकान्तिक देवों की एक जाति (छाया १, ८—पत्र १५१)। ४ भगवान् मुनिपुत्र का शासनवाधिपत्यक यज्ञ (सति ८)। ५ यज्ञमित्र, नक्षत्र का प्रविष्टता देव (सुत्र १०, १२)। ६ एक देव विमान (रेवेन्द्र १३१)। ७ वृत्त की एक जाति (पत्र ४)। ८ भद्रोरात्र का पनट्ठवां मुहूर्त (सुत्र १०, १३; सम ५१)। ९ एक विद्यावरनरपति (पडम ६, ४४, १६, १२)। १० एक धर्मि-पुत्र (सुपा ५५६)। ११ छन्द विशेष (पिंग)। १२ वरुणवर जीप का एन ग्रथिगुता देव (जीन

वलय्याही छी [दे] वृति, बाह (दे ७, ४३) ।
 घलविअ न [दे] शीघ्र, जल्दी (दे ७, ४८) ।
 वलहि छी [दे] गर्वास, कपास (दे ७, ३२) ।
 घलहि [] छी [घलवि, 'भी'] १ गुरु-ब्रह्म,
 घलही [] छलज, बरामदा । २ बहुल का
 प्रप्रस्थ भाग (प्राप्र) । ३ काठिमावाह का
 एक प्राचीन नगर, जिसको भोजवल् 'वज्य'
 कहते हैं (ती १५; सम्मत् ११६) ।

घलाअ देखो पलाय = परा + घम् । वहु
 'क्षीसह वि पलाअंते' (ते ६, ८६) ।
 घलाअ देखो पलाय = प्रलाप (से ६, ४६) ।
 'वलाअ देखो वल = वल्' । 'भरण देखो
 घलघ-भरण, 'तंजयगीत विस्ताना भरति जे
 'त बलायमरले गु' (पव १५७, छा २, ४—
 पत्र ६३) ।

घलि छी [घलि] १ पेट का अवयव-विशेष,
 'अवरवलमंक्षेहि' (निर १, १) । २ निवलि,
 नाभि के ऊपर पेट की सीम रेखाएँ (पा ४२५;
 भवि) । ३ जरा भादि से होती शिथिल
 चमड़ी (छाया १, १—पत्र ६६) ।

घलिअ वि [दे] भुक्त, क्षित (दे ७, ३५) ।
 घलिअ वि [घलिअ] १ मुद्रा हुमा (गा ६;
 २७०, श्रीप) । २ जिसको बल बढाया गया
 हो बहु (रत्नस भादि) (उत्त २६, २५) ।

घलिअ देखो विलिअ = व्यलीक (प्राप्र) ।
 घलिआ छी [दे] ग्या, धनुष की डोरी (दे
 ७, १४) ।

'वलिच्छत देखो परिच्छन्न (श्रीप) ।
 घलिज्जत देखो घल = वल् ।

'वलिज्जत देखो पलिज्ज (उप ७२८ टी) ।

घलिमोडय पुं [घलिमोटक] वनस्पति में
 अग्नि का चक्षुकार देहन (परण १—पत्र
 ४०) ।

वलि वि [घलिध] लीटनेवाला (सुपा
 ५६) ।

वली छी [वली] देखो वलि (निर १, १) ।
 वलुण देखो वरण (दे १, २५४) ।

वले प. संवीचन-सुषक अय्य (प्राध ८०) ।
 २-२ देखो वले (पद्) ।

वल देखो वल = वल् । वलह (घाला
 १५२) ।

वल भ्रु [वल] चलना, हिलना (कुप्र
 ८४) ।

वल पुं [दे] सिगु, वासक (दे ७, ३१) ।

वल पुं [दे. वल] भ्रम-विशेष, विषाव, गुज-
 राती में 'वाल' (सुपा १३, ६३१; सम्मत
 ११८; सख) ।

वलदे छी [वलदी] गोपी (दे ७, ३६ टी) ।

वलदे छी [दे] गो, गैया (दे ७, १६) ।

वलदे [] छी [वलदी] वीणा (पाम, दे
 वलदी) ७, ३६ टी, छाया १, १७—पत्र
 २२६) ।

वलट्ट वि [दे] पुनक, फिर से बहा हुआ
 (पद्) ।

वलह देखो वलह (पा ६०४) ।

वलर न [दे. वलर] १ मन, गहन (दे ७,
 ८६; पाम; उत्त १६, ८१) । २ क्षेत्र, क्षेत्र
 (दे ७, ८६; परह १, १—पत्र १४) । ३
 भ्रमरय क्षेत्र (पाम) । ४ बाहुका-युक्त क्षेत्र
 (पा ८१२) ।

वलर न [दे] १ भ्रमरय प्रदवी । २ निर्जल
 देश । ३ पुं. महिष, भैंसा, ४ समोर, पवन ।
 ५ वि. बुद्धा, सत्त्व (दे ७, ८६) । ६ वेदुन-
 शील । ७ दक्षिण नामक शालिगन-विशेष
 करने की आवश्यकता। छी. 'री (पा ५३४) ।

वलही छी [वलही] बली, सता (पाम,
 गउड, सुपा ५२६) ।

वलही छी [दे] बेश, बाल (दे ७, ३२) ।

वलह पुंछी [वलह] गोप, भहीर, ग्वाला
 (पाम) । छी. 'गी (पा ८६) ।

वलवाय न [दे] क्षेत्र, क्षेत्र (दे ६, २६)

वलविअ वि [दे] लासा से रेंगा हुआ (पद्) ।

वलह पुं [वलह] १ दमित, पति, भर्ता, बाल्य
 (पद्; कपू, गा १२३, दे ४, ३८३) ।
 २ वि. प्रिय, स्नेह-पाव, 'अहं जाया वल्लहा
 भवे विवणो' (महा, गा ४२; ६७, कुमा
 पत्र १५, ७३, रयण ७६) । 'राय पुं
 'राज' १ गुजरात का एक चौतुक्य मंत्रीय
 राजा (कुप्र ४) । २ दक्षिण के कुत्तल देश
 का एक राजा (कपू) ।

वलह छी [वलह] दमिया, पत्नी (पा
 ७२) ।

वलदय न [दे] आच्छादन, ढकने का वध
 (दे ७, ४५) ।

वलप पुं [दे] १ श्येन पत्नी । २ ननुन,
 ग्नीसा (दे ७, ८४) ।

वलि छी [वलि] सता, बेल (कुमा) ।

वलि वि [वलि] हिलनेगला. 'न विरामद
 बलिस्त्वला वि वरितम्व फलहीणा' (कुप्र
 ८४) ।

वली छी [वली] सता, बेल (कुमा; पि
 १८७) ।

वली छी [दे] देश, धाल (दे ७, ३२) ।

वलहीअ पुं [वाह. लीक] १ देश-विशेष (स
 १३; नाट) । २ वि. बाहीक देश में उत्पन्न,
 बाहीक देश का (स १३) ।

वय सक [वय] बौना, 'जे सतलितसु
 बरति वित' (सत ७२) । वहु, धर्यंत
 (आरहि ७) । कवह, धविज्जत (पा
 ३५८) ।

वय सक [वय] देना । वयह (वय १) ।
 कर्म. उपाह (कुप्र ४१) ।

वयइस सक [वयप + दिग] १ कहना,
 प्रतिपादन करना । २ व्यवहार करना ।
 वयइसति (धर्मसं ४५२; सुमनि १४१) ।

वसे अनासभरणस्तभावप्रो
 वहनिवितिमो मोहा ।

वकासुपपिप्पिपायस-
 निवित्तिल्लं वयइसति ॥'

(भावक १६२) ।
 वयपस पुं [वयपदेश] १ कपन, प्रतिपादन ।
 २ व्यवहार (सि ३, २६) । ३ कपट, बहाना-
 छल (महा) ।

वयगम पुं [वयपगम] नाश (भावक) ।

वयाय वि [वयपगत] १ दूर किया हुआ
 (सुपा ४१) । २ मृत (परह २, ५—पत्र
 १४८) । ३ नारा प्राप्त, मृत. 'वयवविष्पा
 स्मिपं पत्ता हिमदन्दिम ठालं' (एनि ११;
 श्रीप, कपू) ।

ववट्ठं पुं [वयपट्ठम्] अवलम्बन, सहारा
 (सि ४, ४६) ।

ववट्ठावण देखो ववट्ठावण (राज) ।

ववट्ठिअ वि [वयवस्थित] व्यवस्था-प्राप्त
 (सि १२, २२) ।

वचन न [वचन] बोना (वच १, अ ६) ।
 वचन क्षीन [वे] कार्याय, तूला, रुई,
 'पलही वचन तुलो ख्यो' (पाम) । जी. 'जी
 (दे ६, ८२, ७, ३२) ।
 वचस्थम धुं [दे] बल, पराक्रम (दे ७,
 ४६) ।
 वचस्था क्षी [व्यवस्था] १ मर्यादा, स्थिति
 (स १३, मुख ११५) । २ प्रक्रिया, रीति ।
 १ इतजान, प्रबन्ध (मुपा ४१) । ४ निर्णय
 (स १३) । 'पत्तय न [पत्रक] इस्तलेज
 (स ४१०) ।
 वचस्थान न [व्यवस्थापन] व्यवस्था
 करना, जीववत्प्राणदायिणी (धर्मस
 ५२०) ।
 वचस्थाना न [व्यवस्थापना] ऊपर देखो
 (धर्मस ५२०) ।
 वचस्थिअ वि [व्यवस्थित] व्यवस्था युक्त
 (स ४६, ७२७, मुर ७, २०५, सण) ।
 वचस्थिअ वि [व्यवस्थित] जिसने व्यवस्था
 की हो वह (ससि ४, ३५) ।
 वचदेस देहो वचस (उवा, स्वप्न १३२) ।
 वचदेसि वि [व्यपदेशिन्] व्यपदेश करने-
 वाला (माट—शुक्र ६६) ।
 वचधान न [व्यवधान] वस्त्र, दो पदार्थों
 के बीच का झट्टर (ससि २२२) ।
 वचरोन सक [व्यप + रोपय] विनाश
 करना, मार डालना । वचरोवैसि, वचरोवेज्जसि,
 वचरोवेज्जा (उवा) । कर्म, वचरोविज्जसि
 (उवा) । सक, वचरोविस्सा (उवा) ।
 वचरोवण न [व्यपरोपण] विनाश, हिंसा
 (सण) ।
 वचरोविअ वि [व्यपरोपित] विनाशित,
 मार डाला गया, 'जीविमाम्मो वचरोविअ'
 (पडि) ।
 वचस सक [व्यय + सो] १ करना । २
 करने की इच्छा करना । वचसइ (सय
 १०८) ।
 वचस सक [व्यय + सो] १ प्रयत्न करना,
 चेष्टा करना । २ निर्णय करना । वचसइ
 (स २०२) । वड, वचसत, वचसमाण
 (मुपा २३८, स ५६२) । सक, वचसिऊण

(मुपा ३३६) । कवक-वचसिऊमाण (पउम
 ३७, ३६) । हेऊ. वचसिहुं (खी) (माट—
 शुकु ७१) ।
 वचसाय धुं [व्यवसाय] १ निर्णय, निबन्ध ।
 २ अनुष्ठान (ठा ३, ३—पत्र १५१, सुदि) ।
 ३ उद्यम, प्रयत्न (सि ३, १४, मुपा ३५२,
 स ६८३, हे ४, ३८३, ४२२, कुप्र २६) ।
 ४ व्यापार, कार्य, काम (भीर, राय) ।
 वचसायसमा क्षी [व्यवसायसमा] कार्य
 करने का स्थान, कार्यालय (राय १०४) ।
 वचसिअ न [दे] बलाकार (दे ७, ४२) ।
 वचसिअ वि [व्यवसित] १ उद्यम,
 व्यवसित २ उद्यम-युक्त, सेण्णो नाम राया
 पयामुहे सुह वचसिधो' (वसु; उत २२,
 ३०, उव) । २ त्यक्त, शक्ति जीविय वचसिय
 न वेव मुसपरिमवो सहिधो' (उव) । ३
 निव्यवसाया । ४ पराक्रमी (ठा ४, १—पत्र
 १७६) । ५ न, व्यवसाय, कर्म (खाया १,
 १—पत्र ५०) । ६ चेष्टित (स ७५६) । ७
 उद्यम, प्रयत्न (सि ३, २२) ।
 वचहर सक [व्यय + ह] १ व्यापार करना ।
 २ कर्म, वर्तना, आचरण करना । वचहरई,
 वचहरए (उत १७, १८, स १०८, विते
 २२१२) । वड, वचहरत, वचहरमाण
 (उत २१, २३, सग ८, ८, मुपा १५,
 ४४६) । हेऊ. वचहरिउं (स १०५) । क.
 वचहरणिज्ज, वचहरियव्य (उप २११ टी,
 वच १, मुपा ५८५) ।
 वचहरण वि [व्यवहारक] व्यापार करने-
 वाला, व्यापारी (मुप्र २२४) ।
 वचहरण न [व्यवहारण] व्यवहार (खाया
 १, ८—११५, स ५८५, उप ५१० टी,
 मुपा ४६७, विते २२१२) ।
 वचहरय देखो वचहरय (मुपा ५७८) ।
 वचहरियव्य देखो वचहर ।
 वचहार पु [व्यवहार] १ वर्तन, आचरण
 (वच १, सग ८, ८, विते २२१२, ठा ५,
 २, वच १२६) । २ व्यापार, पन्था, रोजगार
 (मुपा ३३४) । ३ नव विशेष, वस्तु-परीक्षा
 वा एव दृष्टिकोण (विते २२१२, ठा ७—
 पत्र ६००) । ४ मुमुषु की प्रवृत्ति निवृत्ति वा
 काखल भुत ज्ञान विशेष (सग ८, ८—पत्र

३८३, वच १, पत्र १२६, द्र ४६) । ५
 जैन ग्राम-व्यय विशेष (वच १) । ६ दोष के
 नाशार्थ किया जाता प्रायश्चित्त, 'घातरे
 वचहारे पलती चेत्त दिट्ठिवाए य' (वसनि
 ३) । ७ विवाद, मामला, मुकद्दमा, 'वचहार-
 विचारणं कुणइ' (पउम १०५, १००, स
 ४६०, वेदय ५६०, उप ५६७ टी) । ८
 विवाद निर्णय, फैसला, मुकामा (उप ५
 २८३) । ९ व्यवस्था (सुप्र २, ५, ३) । १०
 काम काज (विते २२१२, २२१५) । ११
 जीवराशि विशेष (सक्का ६) । 'य वि
 [वत्त] व्यवहार-युक्त (ह ४६) । 'रासिय
 वि [राशिक] जीवराशि विशेष में स्थित
 (सिक्का ६) ।
 वचहार पु [व्यवहार] १ पूर्व-व्यय । २
 जीतकल्प सूत्र । ३ कल्पसूत्र । ४ मार्ग,
 रास्ता । ५ आचरण । ६ ईप्सितव्य (वच १) ।
 वचहारि पु [व्यवहारिन्] १ ऐतत्त क्षेत्र
 में उत्पन्न एक गिन-वेव (सग १५३) । २
 वि, व्यापारी, वणिक् (मोह ६४, ४४, अ
 मुपा ३३४) । ३ व्यवहार किया-प्रवर्तक
 (वच १) ।
 वचहारिअ वि [व्यावहारिक] व्यवहार-
 सम्बन्धी (सोप २८१, सण) ।
 वचहिअ वि [व्यवहित] व्यवधान-युक्त (सण,
 प्रावम) ।
 वचहिअ वि [दे] मत्त, जन्मत (दे ७, ४१) ।
 वचोले देखो यमाल (सण) ।
 वचिअ वि [वत्त] बोया हुआ (उप ७२८ टी,
 प्राप् ६) ।
 वचिउजत देखो वच ।
 वचैअ वि [व्यपेत] व्यवगत (सुप्र २, १,
 ४७) ।
 वचैकरा क्षी [व्यपेक्ष] विशेष अपला,
 परवाह (धर्मस ११६७) ।
 वचय धुं [वचन] गृह विशेष, 'व्ययवचन
 (२०) यमुपचल' (पण्ह २, ३—पत्र
 १२३, वच २, ३०) ।
 वचर वि [वचरे] १ पामर । २ मूर्ख (हुमा) ।
 वचर' देखो वचरय (वच २, ३०) ।
 वचरइ पु [दे] धर्म, वच (दे ७, ३६) ।

यन्त्रीस देखो यन्त्रीराग, यन्त्रीसक (पत्रम ११३, १७)।

यशधि (गा) देखो यसहि = यसति (प्राप्त १०१)।

यश्च (म) देखो यच्छ = वृत्त (प्राप्त १०१)।

यस मक [यस] १ यस करना, रहना। २ सन. वापना। यसइ (कण्, महा)। भूवा. यसीय (उत्त १२, १८)। बह. यसन, यसमाण (सुर २, २१६; ६, १२०; कुप्र १४, कण्)। वंश. यसिस्ता, यसिस्ताणं (भाषा, कण्, पि ५८३)। हेइ. यस्थय यसिर्दं (कण्, पि ५७८; राज)। कु. यसियवन् (ठा ३, ३, सुर १४, ८७, सुपा ४३८)।

यस वि [यश] १ प्रापय, अधीन (भाषा, से २, ११)। २ पुंन. प्रथीनता, परतन्त्रता (कुमा, कण् १, ४४)। ३ प्रमुख, स्वाभिरता। ४ भासा (कुमा)। ५ यत्, सामर्थ्य (एणमा १, १७, कौप)। ७, ग वि [ग] यशी-भुल, पराधीन (पत्रम ३०, २०, कण् २१; सुर २, २११, कुमा, सुपा २३७)। ८ वृ वि [वृ] पराधीनता से पीडित, इन्द्रिय प्रादि की परवशता से कारण दुःखित (भाषा, विपा १, १—पत्र ८, कौप)। ९ मरण [सितमरण] इन्द्रियादि-परवश की मोत (ठा २, ४—पत्र ६३; नग)। १० यत्ति वि [यत्तिन्] यशीभुल, मधीन (उत्त १३६ टी, सुपा २१८)। ११ इत्त वि [यत्त] मधीन. परतन्त्र (धर्मवि ३१)। १२ गुमा वि [गुमा] वही धर्म (पत्रम १४, ११)।

यस तु [युप] १ धर्म (वेदय ५४१)। २ बिल. युपम (स ६४४, कण् १, ४३)। देखो विस = वृत्त।

यसइ की [यसति] १ स्थान, भाष्य (कुमा)। २ राज, रास (दे ७, ४१)। ३ गृह, घर (गा १६६)। ४ वास, निवास (हि १, २२४)।

यसंत देखो यस = वत्।

यसंत पु [यसन्त] १ श्रुत-विशेष, वैत भीर वैशाख मास का समय (एणमा १, १—पत्र ६४, पाप, सुर ३, ३६; कुमा, कण्, प्राप्ति

३४, ६२)। २ चैत्र मास (पुत्र १०, १६)। ३ उर न [पुर] मगर-विशेष (महा)। ४ तिलअ पुं [तिलक] १ हरिवंश में उत्पन्न एक राजा (पत्रम २२, ६८)। २ व एक उद्यान, जहाँ मगरान् श्रमभेदे से बोसा ली थी (पत्रम ३, १३४)। ३ तिलआ छो [तिलग] छद-विशेष (विग)।

यसंयय वि [यशंयय] निज की अधीन रहनेवाला (धर्मवि ६)।

यसण न [यसन] १ यज्ञ, कपड़ा (पाप, सुपा २४४, वेदय ४८२, धर्मवि ६)। २ निवास, रहना (कुप्र ४८)।

यमण पुं [युण] अरुह-नौप, पोता (सम १२४; भग, पण्ड १, ३; विपा १, २; कौप, कुप्र ३६५)।

यमण न [ययसन] १ बट, विपत्ति, दुःख (पाप, सुर ३, १६२; महा, प्राप्ति २३)। २ राजादि-द्वारा उपद्रव (एणमा १, २)। ३ धरात मावत—घात, अध-पान प्रादि खोटी मावत (वृह १)।

यसणि वि [ययसनिन्] खोटी मावतवाला (सुपा ४८८)।

यसम पुं [युपम] १ श्रुति-प्रसिद्ध राशि-विशेष, युप राशि (पत्रम १७, १०८)। २ भगवान् श्रमभेदे (वेदय ५४१)। ३ एक जैन मुनि, जो चतुर्थ बसदेव के पुत्र हैं जन्म में शुभ थे (पत्रम २०, १६२)। ४ मोक्षार्थ मुनि, आनी साधु (वृह १, ३)। ५ वैत, यतीवर्द (उत्त)। ६ उत्तम, मोक्ष, 'युणिवसमा' (उत्त)। ७ करण न [करण] वह स्थान जहाँ बेल बांधे जाते हैं (भाषा २, १०, १४)। ८ क्लेश न [क्लेश] स्थान-विशेष, जहाँ पर वर्षा-नाम में आचार्य भावि रहते हैं वह स्थान (वव १००, निष् १७)। ९ गाम पुं [गाम] ग्राम-विशेष, मुल्लित देश में नगर-मुल्ल गौव, 'अथि ह यममगामा बुदेसनगरोवमा सुहविहाप' (वव १०)। १० गुजय पुं [गुजात] ज्योतिषाज्ञ-प्रसिद्ध दस योगों में प्रथम योग, जिसमें चन्द्र, सूर्य और नक्षत्र बेल के आकार से स्थित होते हैं (मुच १२—पत्र २३३)। देखो उसम, रिसम, यसइ।

यसभुद्ध पुं [दे] बार, बीदा (दे ७, ४६)। यसम देखो यसिम (महा)।

यसमाण देखो यस = वत्।

यसल वि [दे] दीर्घ, सन्धा (दे ७, ३३)।

यसइ पुं [युपम] वैद्ययुद्ध करनेवाला मुनि (मोप १४०)। २ समल का एव पुत्र (पत्रम ६, २०)। ३ वैत, साङ्गि, साङ्गि (पाप)। ४ वान ना छिद्र। ५ मीप-विशेष (पाप)। ६ धं पुं [यिद्धन्] शंकर, महादेव (गठ)। ७ केउ पुं [केतु] इक्ष्वाकु-वध का एव राजा (पत्रम ४, ७)। ८ वाहन पुं [वाहन] १ ईशान देवता का हथ (जं २—पत्र १५७)। २ महादेव, शंकर (वका ६०)। ३ वीही छो [वीधी] शुक्र ग्रह का एव क्षेत्रभाग (ठा ६—पत्र ४६८)।

यसहि देखो यसइ (दे १, २१४, कुमा, गा ८२३; पि ३८७)।

यसा छो [यसा] १ शरीरस्य धातु-विशेष, 'मेययसासं' (पण्ड १, १—पत्र १४, एणमा १, १२)। २ मेव, चरबी (भाषा)। ३ यसारअ वि [यसारअ] पैनानेवाला (से ६, ४०)।

यसारअ देखो यसाइय (से ६, ४०)।

यसाहा छो [प्रसाधा] धनकार, मान्नुपण (से १, १६)।

यसि देखो यसइ, 'यत्थ न नजइ पहि पहि अशविबसिगाणयविसिसे' (सुर १, ५२)।

यसिअ वि [उपिन] १ रहा हुआ, जिसने बात किया हो वह (पाप, स २६५, सुपा २२१, भत ११२; वै ७)। २ वासी, पहुँचित; 'यमणेइ यणिवसियं निम्महं सोमहत्थेण' (संबोध ६)।

यसिद्ध पुं [यशिद्ध] १ भगवान् पारवनाय का एक गणेश (ठा ८—पत्र ४२६; सम ११)। २ एक श्रेष्ठ (नाट—पत्र ८२)।

यसिद्ध पु [यशिद्ध] द्वीपकुमार देवी का उत्तर दिशा का द्यु (इक)।

यसिन्त न [यशिन्त] योग की एक सिद्धि, योग-बन्ध एक ऐश्वर्य, 'साहूवमिन्तयुणेलं पसं वुरावि जैवुणेलं यमि' (कुप्र २७७)।

यसिम न [दे-यसिम] यसतिवाला स्थान (सुर १५२; सुपा १६४; कुप्र २२४, महा)।

वसियन् देवो वस = वस् ।

वसिर वि [वसिर] वास करेवाला, रहने-
वाला (सुभा ६४७, सम्मत २१७) ।

वसोकय वि [वसोक्त] वश में किया हुआ,
मधीन किया हुआ (सुभा ५६०, महा) ।

वसीकरण न [वशीकरण] वश में करने के
लिए किया जाता मन्त्र प्रादि का प्रयोग
(छाया १, १४, ब्राह्म १४, महा) ।

वसीयरणी जी [वशीकरण] वशीकरण-
विद्या (सुर १३, ८१) ।

वसीह्वरि वि [वशीभूत] जो मधीन हुआ हो
बह (उप ६८६ टी) ।

वसु न [वसू] १ धन, द्रव्य (भाषा, सूत्र १,
१३, १८, कुमा) । २ समय, कारिज (भाषा,
सूत्र १, १३, १८) । ३ पुं, जिनदेव । ४
वीतराग, राग-रहित । ५ ध्वज, समयी,
साधु (भाषा १, ६, २, १) । ६ ब्राह्म की
सहाय (विदे १४४, पिंग) । ७ वणिगा मन्त्र
का ग्रथित देव (ठा २, ३, सुज १०,
१२) । ८ एक राजा का नाम (पउम ११,
२१, मत्त १०१) । ९ एक वसुदेव-पुत्री जैन
महर्षि (विदे २३३४) । १० एक ध्वज का
नाम (पिंग) । ११ जी. ईशानेन्द्र की एक
पटरानी (इक) । १२ न लौकान्तिक देवो
का एक विमान (इक) । १३ सुवर्ण, सोना
(कप्य ६८, मग १५, उत १२, ३६) ।
"सुप्ता जी [सुप्ता] ईशानेन्द्र की एक
पटरानी (ठा ८—पत्र ४२६, इक, छाया
२—पत्र २५१) । "देव पुं [देव] नववें
बासुदेव श्रीधर श्रीर वलदेव का पिता (ठा
६, सम १५२, मत्त, उप) । "नन्द्य पु
[नन्द्य] एक राह की उत्तम सलवार (सुर
२, २२, मवि) । "पुज पुं [पूज्य] एक
राजा, भगवान् वासुपूज्य का पिता (सम
१५१) । "वल् पुं [वल्] इक्ष्वाकु-वंश में
जन्म एक राजा (पउम ५, ४) । "भाग पु
[भाग] एक व्यक्ति-नामक नाम (पिंग) ।
"भागा जी [भागा] ईशानेन्द्र की एक
पटरानी (इक) । "भूद पुं [भूति] एक
जैन मुनि का नाम (पउम २०, १७६,
भाष्य) । "म, "मंत वि [मन्] १

द्रव्यवान्, धनी, धीमत् (सुंम १, १३, ८,
१, १५, ११, भाषा) । २ समयी, साधु
(सूत्र १, १३, ८, भाषा) । "मिप्ता जी
[मिग] १ ईशानेन्द्र की एक प्रम-महिली
(ठा ८—पत्र ४२६; छाया २, इक) । "सिंद
पु [सिन्द] छन्द विशेष (पिंग) । "हारा
जी [धारा] १ धाकार से देव-मन्त्र सुवर्ण-
वृष्टि (मग १५, कप्य ६८, उत १२, ३६,
विप १, १०) । २ एक खेडिनी (उप ७२८
टी) ।

वसुआ } एक [उद्ग + वा] गुल्फ होना,
वसुआअ } सुखना । वसुआअ, वसुआअद
(हे ४, ११३, १४५, प्राक् ७४) । वहु.
वसुअंत (हुमा) प्रयो., कवक. वसुआइज-
माण (नवड) ।

वसुआज वि [उद्गात] गुल्फ (पाप. से १,
२०, मत्त, प्राक् ७७) ।

वसुआइज वि [उद्गात] गुल्फ किया गया,
सुसाया गया (से ६, २१) ।

वसुआइजमाण देवो वसुआ ।

वसुधर पुं [वसुधर] एक जैन मुनि (पउम
२०, १६१) ।

वसुधरा जी [वसुधरा] १ शुक्ली, बरही
(पाप, मर्मवि ४१, ब्राह्म १४२) । २ ईशाने-
न्द्र की एक ग्रथ महिली (ठा ८—पत्र
४२६, छाया २, इक) । ३ चमरेंद्र के सोम
प्रादि चारों लोकपालों की एक पटरानी का
नाम (ठा ४, १—पत्र २०४, इक) । ४
एक दिक्कुरारी देवी (ठा ८—पत्र ४३६,
इक) । ५ नववें चक्रवर्ती राजा की पटरानी
(सम १५२) । ६ रावण की एक पत्नी
(पउम ७४, १०) । ७ एक यष्टि-मन्त्रो (उप
७२८ टी) । "वइ पुं [पति] राजा, भूपति
(सुभा २८८) ।

वसुधा (सी) देवो वसुहा (वपन ६८) ।

वसुपुज देवो वासुपुज, "वसुपुजमी नेमी
वसो नोरो कुमारपन्थ्या" (विचार ११५
पंथा १६, १३ १७) । "वसुपुजविष्णो वसु-
त्तमो जाघो" (पव ३३) ।

वसुमर्द } जी [वसुमती] १ शुक्ली, बरही
वसुमर्द } (उप ७९८ टी, नाम सुभा २६०,
४७१) । २ भोग नामक रथप्रेर की एक

ध्वज-महिली, एक ईश्वरी (ठा ४, १—पत्र
२०४, छाया २—पत्र २५२, इक) । "गाह,
"नाह पुं [नाथ] राजा (उप ७६८ टी,
पउम ७४, २६) । "भवण न [भवन्]
भूमि गृह, भोवरा (मुख ४, ६) । "वइ पुं
[पति] राजा (पउम ६६, २) ।

वसुल पुखी [दे वृषल] १ निवृत्ता-बोधक
ग्रामन्यस्य सन्ध, "होति ति वा गोति ति वां
वसुति ति वां" (भाषा २, ४, २, ३), "विहेन
होति गोति ति साणे वा वसुति ति बे"
(दत्त ७, १४) । २ गौरव श्रीर कुत्ता बोधक
ग्रामन्यस्य सन्ध "होति वसुल गोति छाह दहम
पिंय रमण" (छाया १, ६—पत्र १६५) ।
जी. "डी" (दत्त ७, १६, भाषा २, ४,
२, ३) ।

वसुहा जी [वसुधा] शुक्ली, बरही (सम-
कुमा) । "हिम पुं [विप] राजा (सुभा
८७) ।

वसू जी [वसू] ईशानेन्द्र की एक पटरानी
(ठा ८—पत्र ४२६, इक, छाया २—पत्र
२५१) ।

वसेरी जी [दे] गवेपण, जोज (सुभा
४७३) ।

वस्त (सी) देवो वरिस्त । वस्तवि (माट—
मुख १५५) ।

वस्त वि [वश्य] मधीन, धायत (विदे
८७५) ।

वस्सोठ त [दे] एक प्रकार की कीड़ा,
"ग्रसया ॥ वस्सोठेण रमति राय (१५) एं
राणियाय पोलेण काहिति" (भावक ६३ टी) ।

वह सक [वह] १ पहुँचाना । २ धारण
करना । ३ ले जाना होना । ४ ग्रह.
चलना, "परिमलचहलो वहइ परछा" (हुमा,
उव महा), "नाम बहइ पाडन" (मुख २,
४५), वहति (हे २, १६४) । कर्म. वहिजद
वज्जद, वुमइ (हुमा, भाषा १५, १, ५४१,
हे ४, २४२) वहु. वहत, वहमाग (महा
सुर १६, १३, श्रीप) । कव. वुममाण (उत्त
२३, ६५, ६८) । हेह. वहिड, वहित्तार,
वोहुं (पावा १५२, बह, सा १५) । इ.
वहिअव्य, वोडव्य (पावा १५२, प्रवि
३) ।

यह मा [यधु, दग] मार डालना । यहद, यहति (उत्त १८, ३, ५, त ७२८, संकोष ४१) । बने यहिजैत (कुत्र २५) । यह-यहन, यहमाण (पत्रम २६, ७७, गुण ६५१ आनन १३६) । यहद, यहिजन यन्त्रमाग (पत्रम ४६, २०, चाचा) । यहद, यहिजन (मन्त्र) ।

यह सार [यधु] १ घोडा बरना । २ प्रहार करना । कृ. यहैयन (पहल २ १—पत्र १००) ।

यह (यन) देतो यहिस = बुर । यहदि (प्राह १११) ।

यह पुंस्त्री [यध] पान, प्यावा (उवा कुमा, हे १, १३३, प्राप्ता ११६ १५३) । स्त्री. 'हा (मुल १, ३, स ५७) । 'गरी स्त्री [करी] विद्या विशेष (पत्रम ७, १३७) ।

यह पु [दि] १ यन्त्र पर का झण । २ घण, घान (दे ७, ३१) ।

यह पु [वह] १ वृष स्वप्न, वैल वा मन्था (विपा १, २—पत्र २७) । २ वरीवाह, पानी का प्रवाह (दे १, ५५) ।

यह पु [उपध] लट्ट भादि का प्रहार (सूत्र १, ५, २, १४, उत्त १, १६) ।

'यह देतो यह = पत्थि (दे १, ६१, ३, १४, कुमा) ।

यहद्वज वि [दे] यमांत (यह १७७) ।

यहग वि [यधरु] घातक, हिमक, मार डालनेवाला (उवा, स २१३, गुण ५६५, उत पु ७०, आनक २१२, आ २३) ।

यहग वि [यधरु] लाडला करनेवाला (न २) ।

यहद पु [दे] दमनीय बड़का (दे ७, ३७) ।

यहदोल पु [दे] बरपा, घात-सम्पद (दे ७, ४२) ।

यहण न [यधन] वध, घात, हत्या अथवा छत्रजीवकयवहणमि' (गुण ५२२, धर्मवि १७, मोह १०१, महा आनक १४४, २३७, उत पु २५७, गुण १८४, पत्रम ४३, ४६) ।

यहण न [यहन] १ दोना (धर्मवि ७२) । २ घोडा, जहाज, मानवान (पाम, उत ५६६, कुमा १५) । ३ शकट भादि वाहन (उत

२७, २, गुण १८२) । ४ वि, यहन बरो-याना (दे १, ६, सी ३) ।

यहण (सी) देतो पगय = प्रवृत्त (प्राह ६७) ।

यहण (प्र) देतो यमग = यमन (मरि) ।

यहणया स्त्री [यहना] निर्जर (गुण १, २—पत्र ६०) ।

यहणा स्त्री [यवना] वध, घात, हत्या (पहल १, १—पत्र ५) ।

यहण्ण पु [यधण] एव नरन-रथान 'ऊधे-यण ए निगसविमुदे यह निधनी वि (१५) हण्ण य' (देन २८) ।

यहय देतो यहग = वषक (गुण २, ४, ४, पत्रम २६, ४७, आनन २०८, तण) ।

यहलोउ देतो यहलीय (हव) ।

यहा देतो यह = वध ।

यहाय मा [याहय] यहन करना । बने, यहायिगद (आनक २५८ टी) ।

यहायि वि [यधित] बरपाया हुआ (पा २४) ।

'यहायिज देतो यहायिज (दे १, १) ।

यहिय वि [यधियत] रोहित (पत्रा ५, ४४) ।

यहिय वि [ऊठ] वहन किया हुआ (बावा १५२) ।

यहिय वि [यधित] जिनका वध किया गया हो वह (आनक १७०; पत्रम ५, १६५, विपा १, ५, उत, आ २१, २४) ।

यहिय वि [दे] अवलोकित, निरीक्षित 'लेतोयवहियवहियसुप' (उवा) ।

यहियज देतो यहियज (यह) ।

यहियर सक [यधिच + चर] १ पर-पुत्र या पर स्त्री से संयोग करना । २ सक, नियम भंग करना । बहू यहियरन (स ७११) ।

यहियर पु [यधिचर] १ पर स्त्री या पर पुत्र से संयोग (स ७११) । २ न्यायशास्त्र-प्रसिद्ध एक हेतु बोध (धर्मस ६३) ।

यहियज देतो यह = वध ।

यहिया स्त्री [दे] बही, हिसाब लिखने की किताब (सम्मत १४२, गुण ३८५, ३८६, ३८७, ३८८) ।

यहियाली देतो यहियाली, गुप्तजगण-सहितिययहियालि नेह स निवर्द' (धर्मवि ४) ।

यहियल पु [दे यहिलक] ऊँठ, बेल भादि पशु (राज) ।

यहिय वि [दे] शीम, शीमता-युक्त, गुजराती में 'बहता' (दे ४, ४२२, कुमा, पत्रा १२८) ।

यह पुंस्त्री [दे] चिपिडा, तन्त्र-मन्त्र विशेष (दे ७, ३१) ।

यह पुं देतो यह (दे १, ४, यह; प्राप्र) ।

यहयारिणी स्त्री [दे] नवीडा, कुतहित (दे ४, ५०) ।

यहण्णा स्त्री [दे] जेठ माया, पति के बड़े भाई की बहू (दे ७, ४१) ।

यहमास पु [दे] रमण-विशेष, क्रीडा विशेष, जिसमें लैला हुआ पति नवीडा के घर से बाहर नहीं निकलता है (दे ७, ४६) ।

यहुरा स्त्री [दे] शिवा, शिवारिज (दे ७, ४०) ।

यहुरिजा (यन) स्त्री [यधुरिजा] प्रल वध वाली स्त्री, बहुरिया (विग) ।

यहुर्या स्त्री [दे] छोटी सात (दे ७, ४०) ।

यहुराहिणी स्त्री [दे] एव स्त्री के रहते हुए ब्याही वाली दूसरी स्त्री (दे ७, ५०, यह) ।

यह स्त्री [यध] यह भार्या, मादी (स्वप्न ४२, पाम, हे १, ४) ।

यहोल पु [दे] छोटा जल प्रवाह, गुजराती में 'यहेथे' (दे ७, ३६) ।

यहोलिया स्त्री [दे] दली यहोल (बचपन ० पत्र २२४) ।

वा सक [वा] गति करना, चलना । यह (मे ६, ५२, ना ५४३, कुमा) ।

वा सक [वै, म्ल] सूचना । वाइ (दे ६, ५२, हे ४, १८) ।

वा सक [ये] गुना । कृ. वाइम, 'गयिम पुरिमवेदिमवाइमवाइन देग' (धर्मवि २) ।

वा स [वा] इन धर्मों का सूचक धर्मय—१ विकल्प, अथवा या (धोषा, कुमा) । २ समुच्चय, श्रीर तथा (उत ८, १२, गुल ८, १२) । ३ धर्म भी (कुमा कप, गुल ५, २२) । ४ अन्वयार्थ निरूपण (हा ८) । ५ सादर्य, समानता (विसे १८६४) । ६

उपमा, 'कण्ठदुग्धं तण्णेण काण्ठकण्ठेण कामधेणुं वा' (हि १७, सूत्र १, ५, २, १५, मुख २, ६, व १) । ७ पाद-प्राप्ति (उत्तर २८, २८) ।

वाअड पुं [दे] शुक, सोता (पह) ।

वाअड देखो वाचड = व्याधृत, 'रखवाइअ रसतं पिचपि पुत्तं खवइ मापा' (गा ५००) ।

वाइ वि [वादिन्] १ दोलनेवाला, वक्ता (भाषा, भग; उव, ठा ४, ४) । २ वाद-कर्ता, शास्त्रार्थ में प्रवर्तक का प्रतिपादन करनेवाला (सम १०२, विसे १७२१; कुत्र ५४०, बेहम १२८, समस्त १४१, धा ६) । ३ दार्शनिक, लौकिक, इतर धर्म का अनुयायी (ठा ४, ४) ।

वाइ वि [वाचिन्] वाचक, भूमिवाचन, कहने-वाला (विसे ८७४) ।

वाइ देखो वाजि (राज) ।

वाइअ वि [वाचिक] वचन-संवाची (प्रौप; था २४ पवि) ।

वाइअ वि [वाचित] १ पाठित, पढ़ाया हुआ (उत्तर २७, १४, विसे २३५८) । २ पढ़ा हुआ, 'नामनि वाइए तथ' (सुवा २७०), 'मलाहि कि वाइएण सेहेण' (हि २, १८६) ।

वाइअ वि [वातिर] १ वात से उत्पन्न, वायुजन्य (रोग प्रादि) (भग, छाया १, १—प ५०, तंदु १६) । २ वायु से फैला हुआ, वात-रोगवाला (विसे २५७६ टी, प ६१) । ३ उत्कर्षवाला; 'सरयकमरउजवा-इएण सीते पलीएि निमद' (उव), 'विउद मूरी एमो निममती वाइउद दुदुमणे' (धर्मवि ७६) । ४ पु. नयसुख का एक भेद (पुल्ल १२७, धर्म ३) ।

वाइअ वि [वादि] १ यनागा हुआ (गा ५५७, कुमा २, ८, ६६, ७०) । २ वन्दित, भूमिपादित; चलनेमें निरतिउण वाइअ वमठा' (उत्तर २६०) ।

वाइअ न [वाय] १ बाज, वादित्र (वण्ण) । २ बाजा बजाने की कला (सम ८३, प्रीप) ।

वाउअ वि [वात] बड़ा हुआ, बला हुआ, 'मुकुन्दकुण्डसंनियसगमिणुपाइसमसीरे' (सुर २, ७६) ।

वाइंगण न [दे] बैंगन, कुत्ताक, भंडा (उप ५६७ टी, २ ७: २६) ।

वाइंगणी } लो [दे] बैंगन का गाछ,
वाइंगणी } कुत्ताकी (उप, पण्ण १७—
प ५२७) ।

वाइगा [दे] देखो वाइया (उप १०३१ टी) ।

वाइज्जंत देखो वाए = वाचय् ।

वाइज्जंत देखो वाए = वादय् ।

वाइस न [वादिन्] वाध, बाधा (कुम ११०, भवि) ।

वाइइ वि [व्याचिद्ध] विपर्यय से उपन्यस्त, उलट-पुलट रखा हुआ (विने ८५१) ।

वाइइ वि [व्यादिश्य] १ उपदिश्य, उपसित । २ वक्र, टेढ़ा (भग १६, ४—प ७०४) ।

वाइम देखो वा = ध्ये ।

वाइवव्य देखो वाय = वाचय् ।

वाइकरण देखो वाजीकरण (राज) ।

वाउ पुं [वाउ] १ वक्र, वात (कुमा) । २

वायु-शरीरवाला जीव (मणु, बी २, ६ १३) । ३ मुहूर्त-विशेष (सम ५१) । ४ लीचमैत्र के मध्य-सीय का अधिपति देव (ठा ५, १—प ३०२) । ५ नक्षत्र-देव विशेष, स्वाति-नक्षत्र का अधिपति देवता (ठा २, ३—प ७७; सुज १०, १२ टी) । 'आय पुं

[काय] १ प्रचण्ड वक्र (ठा ३, ३—प १४१) । २ वायु शरीरवाला जीव (भग) ।

'वाइय पुं [कायिके] वायु शरीरवाला जीव (ठा ३, १—प १२३, वि ३५५) ।

'वाय देखो 'आय (बी ७, वि ३५५) ।

'कुमार पुं [कुमार] १ एक देव-जाति, भगवति देवों की एक भवान्तर जाति (भग) । २ हनुमान का पिता (पद्म १६, २) ।

'कलिया ली [उरहिलमा] वायु-विशेष, नीचे बहनेवाला वायु (पण्ण १—प २६) ।

'वाइय देवो 'वाइय (भग) । 'काय देखो 'आय (पन) । 'उररहिलमा पुंन [उत्त-राधवंतक] एक देव-विमान (सम १०) ।

'पवेस पुं [प्रवेस] मगध-भरौला-वातायन (भोपभा १८) । 'पइहाण वि [प्रतिष्ठान] वायु के पावार से रहनेवाला (भग) । 'भूइ पुं [भूति] भगवान् महावीर का एक

गणप—मुख्य शिष्य (वण्ण) ।

वाउ पुं [दे] इशु, जल (दे ७, ५३) ।

'वाउड वि [प्रावृत] १ व्याधृष्टित, ढका हुआ (भग २, १, प ६१) । न. कपड़ा, वस्त्र (ठा ५, १—प २६६) ।

वाउच पुं [दे] १ विट । २ जार, उपचित (दे ७, ८८) ।

वाउण्डिया ली [दे. वातोत्पत्तिरा] भुज-परिच्छर्ष की एक जाति, हृय से चलनेवाले जन्तु की एक जाति, 'खउलसउरकनाहमपुउ' ल-लाहिलवाउमि (पण्ड) यभीरीलितयिरीति-

वणये ए' (पण्ड १, १—प ८) ।

वाउन्माम पुं [वातोद्भाम] भगवन्वित पवन, 'वाउरक' (भग) के वाउलनिया' (पण्ड १—प २६) ।

वाउय वि [व्यावृत] किसी कार्य में लगा हुआ (छाया १, ८—प १४६, प्रीप) ।

वाउरा ली [वागुरा] भुज-वन्धन, पशु कसाने का बाल, कटा (पद्म १३, ६७, हेत ११; गा ६५७) । देखो वगुरा ।

वाउरिय वि [वागुरिक] जान में कमाने का काम करनेवाला, व्याप (पण्ड १, १; विपा १, ५—प ६४) ।

वाउल वि [व्याकुल] १ घबराया हुआ (उव, उप ५ २२०, व ३४; हे २, ६६) । २ पुं. लोभ (पण्ड १, ३—प ४८) । 'हूअ वि [भूत] व्याकुल बना हुआ (उप २२० टी) ।

वाउल वि [वातुल] १ वात-रोगी, ज्वरित । २ पुं. वातवृक्ष (हे १, १२१, प्राठ ३०) ।

वाउलम न [दे] सेवा, भक्ति, निष्कं चिय वाउलमं कुलति' (राज) ।

वाउलम न [व्यापारम] व्याकुल किया, व्यापार (व १) ।

वाउलमा ली [व्याकुलमा] व्याकुल करना (व ४) ।

वाउलमि वि [व्याकुलमि] १ व्याकुल बना हुआ (वण्ण) । २ विनोदित, लोभ प्राप्त (पण्ड १, ३—प ४४) ।

वाउलिया ली [दे] छोटी लई (गा ६२६) ।

वाउड देखो वाउल = व्याकुल (हे २, ६६; प ८) ।

वाउल्ल वि [दे वातूल] याथा, प्रताप-शील, यकनादी (दे ७, ५६, पाप, यदु)

वाउल्ल अ पुन [दे] वृत्ता, गुजराती में 'वायु' ; 'मातिहिमितिवाउल्लो' अ ए परम्पुह ठाह' (गा २१७), 'मातिहिमितिवाउल्लय व न परम्पुह ठाह' (वजा १४) ।

वाउल्लआ } ओ [२] देता वाउल्लया,
वाउल्लो } वाउल्लो, 'मातिहिमितिवाउल्लय' अ ए समुह ठाह' (गा २१७ अ, दे ६, ६२) ।

वाउल्ल देतो वाउल्ल = वातूल, 'प्रमिवायण-वाउल्लो हसिअए मयलोएण' (धर्मि १११, प्राक ३०) ।

वाउल्ल देतो प्राउल्ल = व्याकुल (प्राक ३०) ।

वाउल्लिअ वि [वातूलिअ] १ वातूल बना हुआ । २ नास्तिक (धर्मि १, ६६) ।

वाप सक [वाय्] बजाना । वाएह (महा) । बह. वापन (महा) । कवक. वाइज्जत (कुप १६) । डेह. वाइउ (महा) ।

वाए सक [वाचम्] १ पढ़ाना । २ पढ़ना । वाएह, वाएति (भा, बम्) । कवक. वाइज्जत (कुपा १३०, कुप १६) ।

वाएरिअ वि [वातेरित] वयन प्रेरित, हवा से हिलाया वा कपना हुआ (गा १७६) ।

वाएसरी जी [वागीश्वरी] सरस्वती देवी 'वाएसरी पुत्यवगगह्या' (पडि, सम्मत २१५) ।

वाओलि } ओ [वानालि, 'ली] पवन-
वाओली } समुह 'फि मयलो नासिज्जह पण्डवाउ (१ ओ) सिअहि' (धर्मि २७, मवड, एपा १, १—पम ६३) ।

वाक } देलो वक्त = वक्त (मप, विवे ६७,
वाग } विपा १, ६—पम ६१) ।

वागड पु [वागड] गुजरात का एक प्रांत, जो भाषावत् भी 'वागड' नाम से ही प्रसिद्ध है (कुप ६) ।

वागडिअ वि [व्यावृत्त] प्रकट किया हुआ (वव १) ।

वागर सक [व्या + कृ] प्रतिपादन करना, कहना । वागरेड, वागरेजा (कम्प, वि ५०६) । वक वागरमाण, वागरेमाण (सुर ७, ५१, सुपा ५११, भीप) । सक वागरिआ (सम

७२) । हेर. वागरिउं, वागरिआए (कुप २३०, उवा) ।

वागरण न [व्याकरण] १ बचन, प्रतिपादन, उपदेश (विमे ५५०, कुप २, पण्ड १, १ टी) । २ निर्यय, उत्तर (भीप, उवा, बम्) । ३ खण्डसूत्र (धर्मि १८, मोह २) ।

वागरणि वि [व्याकरणम्] प्रतिपादन करनेवाला (सम् २) ।

वागरणी ओ [व्याकरणो] भाषा का एक भेद, प्रताप से उत्तर की भाषा, उत्तर रूप बचन (ठा ४, १—पम १८३) ।

वागरिअ वि [व्यावृत्त] उक्त, बणित (उवा, मय ६ उप १५२ टी, पव ७३ टी) । देतो वायड = व्याडत ।

वागल न [पल्लव] कुन को छान (एपा १, १६—पम २१३) ।

वागल वि [वागल] कुन को खचा—छान से बना हुआ, 'वागलवत्तनियत्ते' (भय ११, ६—पम ११६) ।

वागली जी [दे] बली-विरोध (पएण १—पम ३३) ।

वागिलि वि [वागिन्] बह-भाषी, वाचाल (वव ७) ।

वागुर पु [वागुरा] मुग बचन, बाल, फन्दा, 'दे रे रएह वागुरे' (मोह ७६) ।

वागुरि } वि [वागुरिन्, 'रिक्] देखो
वागुरिय } वाउरिय, गुजराती में 'वायरी', 'सवयपवयरोहिण्य साहित्य वागुरा (१ ओ) ख' (पण्ड १, २—पम २६, कुप २, २, ३६, विपा १, ८—पम ८३) ।

वाघाड्य वि [व्यापातिक] व्याघात से उत्पन्न (जं ७—पम ३३१) ।

वाघाड्म वि [व्यापातिक] व्याघात से होने-वाला (सुज १८—पम २६५) । २ न. मरख विरोध—सिंह, दावागल आदि से होने वाली मौत (भीप) ।

वाघाय पु [व्यापाव] १ स्थाना (सुज १८) । २ किराए (उप ६७६) । ३ प्रतिबन्ध, खलवट (भय, भीपा १८) । ४ सिंह, दावागल आदि से अभिन्न (भीप) । वाघारिय वि [व्याघारित] प्रलम्ब, लम्बा (पचा १८, १८, एव ६७) ।

वायुण्णिय वि [व्याघृणित] दोसायमान, शोकता (एपा १, १—पम ३१) ।

वाघेल पु [दे] एव वयिप-वश (ती २६) ।

वाच देतो धाय = वाचम् । वरु. वाचीअमाण (नाट—मानवि ६१) । सक. वाचिऊण (हमीर १७) ।

वाचय देतो धायग = वाचम् (हम्प ४६) ।

वाचिय देखो वाड्म = वाचित (स ६२१) ।

याज देतो धाय = प्याज (कुप २०१) ।

याजि पु [याजिन्] मध, पोड़ा (विपा १, ७) ।

याजीकरण न [याजीकरण] १ वीर्य-वर्धक औषध-विरोध । २ उन्ना प्रतिपादन यात्रा धामुयेंद का एक भग (विपा १, ७—पम ७५) ।

याड पु [याट] १ बाघ, बंटक आदि से की जाती गृहादि की परिधि (उत्त २२, १४, मान १६५) । २ बाघ, बाघवाली जगह, वृत्तिवाला स्थान, 'निम्वाएनहावाड साहित्य सपावेह' (उवा, ना २२७, दे ७, ५३ टि, गजड), 'धंते सो साहूण गोवाडिनोहए कदेअय' (विचार ५०६) । ३ वृत्ति आदि से परिदृष्टि गृह-मूह, रम्या, गृहल्ला (उत्त ३०, १८), 'महो गछिमावाडस्त सत्तिरीममा' (बाह ७६) ।

याडतया जी [दे] कुटीर, भीपका या कोपकी (दे ७, ५८) ।

याडग देखो याड (पिड १३४, रिपा १, ४—पम ५५, उग २८६) ।

'वाडण देखो पाडण, 'परदोहट्टवाडण' अग-हसतखलएपुगुडाह' (कुप ११३) ।

बाडन पु [याडन] बडवानल, समुद्र-स्थित भूमि (सण) ।

बाडदागण पुन [याटधानक] १ एक छोटा गांव । २ वि, उस गांव का निवासी, 'ताहे तेण वाड्मसुणा हरिएमा विज्जाइया कया' (सुव ६ १, महा) ।

वाडि देखो याडा = पाटी (गा ८, एपा १, ७—पम ११६) ।

वाडिआ जी [वाडिका] वगीचा, उद्यान, 'सणवाडिआ' (गा ६, बाह ५६, दे ७, ३५, रमा) ।

आडिम पुं [दे] पशु-विशेष. गहडक, गेंडा (दे ७, ५७)।

वाडिल पुं [दे] कृमि, कीट (दे ७, ५६)।

वाडी स्त्री [दे] दूति, बाड. 'परवारे कारिया नटपहि वाडी' (कुप्र २६; दे ७, ४३; ५८, ५६)।

वाडो स्त्री [वाटी] बगीचा. उद्यान (धर्मसं ५१)।

वाडि पुं [दे] बणिक्-सहाय, वैश्य-निग्रवाडि } (दे ७, ५६)।

वाण मर [वि + नम्] विशेष नमना—नत होना। वाणइ (?) (घाया १५२)।

याण वि [यान] यन मे उत्पन्न, वन-सबन्धी (सौच. सम १०३)। 'पस्थ, 'प्यराय पुं [प्रस्थ] वन में रहनेवाला तापस, सुतीय प्रायम में स्थित पुत्र (सौच. उप ३७७)। 'मंत, 'मंतर, 'वंतर पुंजी [व्यन्तर] देवो की एक जाति (भग, ठा २, २०; सुर १, १३७, सौच. जी २४; महा. वि २४१)। स्त्री. 'री (परण १७—पत्र ४६६, जीव २)। 'वासिआ स्त्री [वासिका] छन्द-विशेष (भाजि ३३)।

'वाण देखो पाण = पान। 'यत्त न [पात्र] पीने का प्याला (सि १, १८)।

वाणय पुं [दे] बल्यकार, ककण बनायेवाला शिल्पी (दे ७, ५४)।

वाणर पुंन [यानर] १ बन्दर, कपि, मकड़ (परह १, १. पाम)। २ विद्यावर मनुष्यो का एक धरा। ३ वानर-वंश में उत्पन्न मनुष्य (पउम ६, १)। 'वरी स्त्री [पुरी] किन्दिन्या नामक एक भारतीय प्राचीन नगरी (सि १४, ५०)। 'केउ पुं [केतु] वानर-धरा का कोई भी राजा (पउम ८, २३५)। 'दीन पुं [हीन] एक द्वीप (पउम ६, १४)। 'दय पुं [धय] हनुमान (पउम ५३, ५३)। 'यइ पुं [पडि] सुषोम, रामचन्द्र का एक सेनापति (सि २, ४१, ३, ५२)। देखो पानर।

वाणरिद पुं [वानरेन्द्र] वानर-वशीय पुरुषो का राजा, वानी (पउम ६, ४०)।

वाणराल पुं [दे] इन्द्र, पुत्रन्द (दे ७, ९०)।

वाणहा देखो पाणहा, वाहणा = उपाह, (सि १४१)।

वाणा देखो वायणा = वाचना। 'यरिअ पुं [चार्य] ग्रन्थापन करनेवाला साधु, शिक्षक, 'एसो चिय ता बीरत वाणापरिओ, तयो हुरु अण्ण' (उप १४२ टी)।

वाणारसी स्त्री [वाणारसी] भारतवर्ष की एक प्राचीन नगरी, जो आज कल 'बनारस' नाम से प्रसिद्ध है (दे २, ११६; छाया १, ४; उवा. इक्, उव; धर्मवि ५, वि ३८५)। वाणि देखो यणि = वणिज् (भवि)। 'उत्त, 'पुत्त पुं [पुत्र] वैश्य-कुमार, बनिया का लक्ष्य (कुप्र ३६; ८८, २२१, ४०४, सिरि ३८४, धर्मवि १०४)।

याणि स्त्री [याणि] देखो याणी (संति ४)। याणिअ पुं [याणिअ] १ बनिवा, व्यापारी, वैश्य (भा १२; सुर १, २५८; १३, २६; गट—मुत्त ३५; वसु. सिरि ४०)। २ एक गाँव का नाम (उवा. संत. विपा १, २)। वाणिअ (वप) देखो वाणिज् (वण)।

'वाणिअ देखो पाणिअ = पानीय (भा ६८२; सिरि ४०, सुभा २२६)।

वाणिअय पुं [वाणिअय] बनिवा, वैश्य, व्यापारी (वाष्प. काप्र ८६३, गा ६५१; उव, सुभा २२६, २७४, प्रासु १८१)।

वाणिज् न [वाणिज्य] १ व्यापार, बैपार (सुभा १४३, पडि)। २ एक जैन मुनि वृत्त का नाम (कण्)।

वाणिज्जा स्त्री [वाणिज्या] व्यापार, 'ग्रहिच्छत्तं नगरं वाणिज्याए गमितए' (छाया १, १५)।

वाणिज्जिय वि [वाणिज्जिक] वाणिज्य-कर्ता, व्यापारी (भवि)।

वाणी स्त्री [वाणी] १ वचन, वाक्य (पाम)। २ नारदेवा. सरस्वती देवी (कुमा. सवि ४)। ३ छन्द-विशेष (विग)।

'वाणीअ देखो पाणीअ (वाप्र ६२५)।

वाणीर पुं [दे] जम्बू द्वीप, जायुन का पेड़ (दे ७, ५६)।

वाणीर पुं [वानोर] वैतण-वृक्ष, जैत का पेड़ (पाम, का ५६६)।

वाणु'जुअ पुं [दे] वणिक्, वैश्य. 'एसो हत्ता नवत्तो दीसद वाणु'जुओ कीवि' (उप ७२८ टी)।

वात देखो वाय = वात (ठा २, ४—पत्र ८६)।

वातिक } देखो वाइअ = वातिक (परह १, वातिय } ३—पत्र ५४, सौच ७२२)।

वाद् देखो वाय = वाद (राज)।

वादि देखो वाइ = वादिन् (उवा)।

वानर देखो वाणर (विपा १, २—पत्र ३६; विले ८६३, सुभा ६१८), 'पुत्रवमवानराणि क ताई विमत्ति सिच्छाए' (धर्मवि १३१)।

वापक देखो वायंक। वापकह (पट्)।

वापिद (शी) देखो वायड = व्यापुत (माट—वेणी ६७)।

वायाहा स्त्री [व्यावाधा] विशेष पीडा (छाया १, ४; वेदप ३५५)।

याम सक [यमय] वमन कराना, कै कराना। बाहेड, बागेज (मा, सि ४५६)। संठ, बासेला (अप, उवा)।

याम वि [दे] १ जूत (दे ७, ५७)। २ ब्राह्मण (पट्)।

याम वि [याम] १ सव्य, बाया (ठा ४, २—पत्र २१६; कुमा; सुर ४, ५; गडड)। २ प्रतिकूल, अननुकूल (पाम, परह १, २—पत्र २८; गडड ८८; ६६४, कुमा)। ३ सुन्दर. मनोहर, 'बामलोमण' (पाम)। ४ न. सव्य पक्ष, 'बामलो' (पउम ५५, ११)। ५ बाया शरीर (गा ३०३)। 'छोअणा स्त्री [छोअना] सुंदर नैववाली स्त्री, रमणी (पाम)। 'छोकनादि, 'छोगनादि पुं [छोकनादि] दारोक्त-विशेष, जगत् नो अक्षद माननेवाले मत का प्रतिपादक दारोक्तिक (परह १, २—पत्र २८)। 'वट्ट वि [वट्ट] प्रतिकूल भाषण करनेवाला (इह १)। 'वत्त वि [वट्ट] वही धर्म (ठा ४, २—पत्र २१६)।

याम पुं [व्याम] परिपाल-विशेष, नीचे फैलाए हुए दोनों हाथों के बीच का भन्तराल (पत्र २१२; सौच)।

यामान पुंन [यामान] १ संत्यन-विशेष, शरीर का एक तप्य का भाग, जिसमें

हाम्य, वैर भादि भवयय छोटे हो कौर छावी,
पेट भादि पूर्ण या उन्नत हो बहु शरीर (आ
६—पत्र २५७; सम १५६; वम्भ १, ४०)।

२ वि. उक्त. बाबावर वे शरीरवत्ता, ह्रस्व,
वर्त्य (पत्र ११०; से २, ६; वाम)। श्री. श्री
(श्रीप, शापा १, १—पत्र ३७)। ३ पुं.
श्रीहृत्पु का एव भवता (से २, ६)। ४
देव-विशेष, एक दश-देवता (सिद्धि ६६७)।
५ न. कर्म-विशेष, जिसके उदय से वायन
शरीर की प्राप्ति हो वह कर्म (वम्भ १,
४०)। ६ श्री की [स्थली] देव-विशेष
(श्री १५)।

वामनिभ्र वि [दे] गटु बलु—पतामिह की
किर से बहण करनेवाला (दे ७, २६)।

वामनिभ्र श्री [दे] शीर्ष फाड़ की बाढ़ (दे
७, २६)।

वामन्य न [व्यामर्दन] एक वर्ष का
व्यायाम, हृद्य भादि धनो वा एक हस्ते से
मोड़ना (शापा १, १—पत्र १६, नय्य,
भीन)।

वामरि पु [दे] सिंह, मुग्ध (दे ७, ५४)।

वामलूर पु [वामलूर] बल्लोक, दीपक
(वाम, गडह)।

वामा की [वामा] भगवान् परवैनायकी की
माता का नाम (सम १५१)।

वामिरस देखो वामीस (पत्र २३, ३६)।

वामी श्री [दे] श्री, महिला (दे ७, ५१)।

वामीस वि [व्यामिश्र] मिश्रित, युक्त, सहित
(पत्र ७२, ४, सु ४४)।

वामीसिय वि [व्यामिश्रित] ऊपर देखो
(अवि)।

वामुत्तय वि [व्यामुत्तक] १ परिचित,
पहना हुआ। २ प्रसन्नित, सटका हुआ
(भीन)।

वामुह वि [व्यामुह] विमूढ, भ्रान्त (सुर
६, १२६; १२, १४३; सुपा ७०)।

वामोह पु [व्यामोह] मूढता, भ्रांति (ज
२ १२६; सुपा ६५, अवि)।

वामोहण वि [व्यामोहण] भ्रांति जनक
(अवि)।

वाय सक [वाच्य] १ पदना। २ पदना।

वाप, वापि (सुर १६६); 'सायक'।
मुनयणुणी पास्त्या महिय वाम्भ, सेह
(अमवि ४७), 'मुत्त वाप उरमाणी' (संबोध
२५)। वट् वायंत (सुपा २२३)। वट्
वाडुण (सुर १६६)। व. वायणिज्ज (आ
३, ४)।

वाय सक [वा] चला, गति करना, चरना।
वायि (सम ५, २)। वड्. वायंत (पिंड
८२, सुर ३, ४०; सुपा ४२०, दस ५,
१०)।

वाय सक [वे, म्ल] सूचना। वामड (संति
१६; प्राप्र)। वड्. वायंत (गडह ११६५)।

वाय सक [वाद्य] बजाना। वड्. वायंत,
वायमाण (सुपा २६३, ४३२)। व.
वाड्यञ्ज (स ३४४)।

वाय वि [वान] शुक्ल, सूखा, स्थान (गडह,
से ४, ५७, वाम, प्राप्र, सुपा)।

वाय पु [वे] १ वनस्पति-विशेष (सुपा २,
३, १६)। २ न. गन्ध (दे ७, ५३)।

वाय पु [व्रात] सप्रह, सप (वा २३; अवि)।

वाय वि [व्याह] सवरण करनेवाला (वा
२३)।

वाय वि [व्याहास] प्रकट धपराधी (वा
२३)।

वाय पु [वाह] १ पवन, वायु। २ कपडा
जुननेवाला, जुनहा (वा २३)।

वाय वि [व्याप] प्रकट बिलारवाला (वा
२३)।

वाय पु [वाक] शब्दवा भादि वाक्य (वा
२३)।

वाय पु [व्याय] १ गति, बाल। २ पवन,
वायु। ३ पत्थी का धावन। ४ विशिष्ट वाम
(वा २३)।

वाय पु [व्याच] वंचन, ठगई (वा २३)।

वाय पु [वाज] १ पक्ष, वंछ। २ मुक्ति,
अवि। ३ शब्द, धावा। ४ वेग। ५ न.
पुत्र, धी। ६ पत्नी, जन। ७ वज्र का वाय
(वा २३)।

वाय न [वाच] मुक्त वप्रह (वा २३)।

वाय वि [वान्] १ कनेनेवाला। २ वासक
(वा २३)।

वाय पु [व्याज] १ वज्र, माया। २
महामा, छन। ३ विशिष्ट गति (वा २३)।

वाय देखो वाम = बल (विषा १, ६—पत्र
६६)।

वाय पु [त्राय] विवाह, शादी (वा २३)।

वाय पु [व्यात] विशिष्ट समन (वा २३)।

वाय पु [वाप] १ बपन, बीता। २ लेन,
खेत (वा २३)।

वाय पु [वाय] १ समन, गति। २ सूचना।
३ जानना, ज्ञान। ४ इच्छा। ५ क्षाना,
महाय। ६ परिणयन, विवाह (वा २३)।

वाय वि [व्याद] विशेष ग्रहण करनेवाला
(वा २३)।

वाय वि [वाच] वक्ता, बीननेवाला (वा
२३)।

वाय पु [वात] १ पवन, वायु (मग, शापा
१, ११, जी ७; सुपा)। २ उत्कर्ष (व
५५ छि)। ३ पुन. एक देव-विमान (सम
१०)। 'कंन पुन [वात]' एक देव-विमान
(सम १०)। 'वम्भ न [वर्त्मन] भवान् वायु

का सत्ता, पावता, पाद, पर्वत (भीप ६२२
वी)। 'कूह पुन [कूट]' एक देव-विमान
(सम १०)। 'दश पु [दश्व]' पनवात

भादि वायु (आ २, ४—पत्र ८६)। 'पुन्यपुन
[ध्वज]' एक देव विमान (सम १०)।

'निसग पु [निसर्ग] भवान् वायु का
सत्ता, पर्वत (पडि)। 'पल्लिपुन पु

[परिक्षोभ] हृष्यापि, माने पुखी की
रेखा (भग ६, ५—पत्र २७३)। 'पुन

पुन [प्रभ] देव-विमान विशेष (सम १०)।
'कलिद पु [परिष] हृष्यापि (भग ६,

५)। 'रुह पु [रुह] वनस्पति विशेष
(पल्ल १—पत्र ३६)। 'लेटस पुन

[लेटस] एक देव विमान (सम १०)।
'वण पुन [वर्ण] एक देव-विमान (सम

१०)। 'सिय पुन [शुद्ध] एक देव विमान
(सम १०)। 'सिद्ध पुन [सुष्ट] एक देव-

विमान (सम १०)। 'वत पुन [वर्त] एक
देव-विमान (सम १०)।

वाय पु [वाट] १ सत्य विचार, शास्त्रार्थ
(भीषा १७, धर्मिह ८०, प्राप्र ६३)। २
जकि, वचन (वीप)। ३ नाम, आख्या-

‘वह्महावाएण भल मम’ (गा १२३) । ४
बजाना, ‘महत्तवायचउफललोय’ (सिदि
१५७) । ५ स्वयं, स्थिरता (आ २३) ।
‘त्थ पुं [‘त्थि] तत्त्व-वर्णनः’ ‘तेहि समं दुखइ
वायय’ (पउम ४१, ५०) । ‘त्थि वि
[‘त्थिन्] शाखाय की चाहवाला (पउम
१०५, २६) ।

‘वाय पुं [पाक] १ स्तोई । २ बालक । ३
क्षेत्र, दानव (आ २३) । देखो पाग ।

‘वाय पु [पात] १ पतन (स १५७, कुमा) ।
२ गमन । ३ उपतन, कूडन (सि १, ५५) ।
४ पक्षी । ५ न पति-समूह (आ २३) ।

‘वाय वि [पाह] १ रक्षा करनेवाला । २
पीनेवाला । ३ छूलेवाला (आ २३) ।

‘वाय देखो ‘वाय (आ २३) ।

‘वाय पु [पाद] १ पर्यंत । २ पर्यंत । ३
पूजा । ४ मूल । ५ किरण । ६ पैर । ७
बीषा भाग (आ २३) । देखो पाय = पाद ।

‘वाय देखो पाय = पाप (आ २३) ।

‘वाय पु [पाय] १ रक्षा, रक्षण । २ वि.
पीनेवाला (आ २३) ।

‘वाय देखो अवाय = अपाय, ‘बहुलापमि वि
देहे विमुग्धायास्त वर मरुण’ (उव) ।

वायवत्त पु [वि] १ विट, भैरुमा । २ जाद,
उपपत्ति (दे ७, ८८) ।

वायंगग न [वि] बंगन, कृत्ताक, भंडा (आ
२०, सवीच ४४, पव ४) ।

वायतिथि वि [वागमिक] वचन-मात्र में
नियमित (राज) ।

वायणा पुं [वाचर] १ धर्मवाचक, अधिवा-
चन से धर्म का प्रकाशक रुद्र (सम्मत्त
१४१) । २ उपाध्याय, सूत्र-पाठक मुनि (गण
५, सवीच २५, सार्प १४७) । ३ पूर्व-ग्रन्थों
का जालवार मुनि (परण १—पत्र ४,
सम्मत्त १४१, पवा ६, ४५) । ४ एक
प्राचीन जैन महर्षि धीर श्रम्यकार, उत्तरार्ध
सूत्र का कर्ता श्री काम्पासिनी (पंच ६,
४५) । ५ वि. वचन, कहनेवाला । ६ पढले-
वाला (गण ५) ।

वायग वि [वादक] बजानेवाला (कुमा ६,
महा) ।

वायग पु [वायक] तनुवाय, जुलाहा (दे
६, ५६) ।

वायगवंस पुं [वाचकवंश] एक जैन मुनि-वंश
(एदि ५०) ।

वायड पुं [दे] एक धेहि-वंश (कुप १४३) ।

वायड वि [व्याकृत] स्पष्ट, प्रकट धर्मवाला
(स्वनि ७) । देखो वागरिय ।

वायडवड पुं [दे] वाय-विशेष, दुर्दूर नामक
काजा (दे ७, ६१) ।

वायडगग पुं [दे] सप की एक जाति (परण
१—पत्र ५१) ।

वायण न [वाचन] देखो वायणा (नाट—
रत्ना १०) ।

वायण न [वादन] १ बजाना (मुपा १६,
२६३; कुप ४१, महा. कपू) । २ वि.
बजानेवाला (दे ७, ६१ टी) ।

वायण न [दे] भोग्योपावन, जाय पदार्थ
का बौद्ध जाता उद्धार, वायन (दे ७, ५७;
पाग) ।

वायणया } श्री [वाचना] १ पठन, पु-
वायणा } र्णोपे भण्यन (उा २६, १) ।
२ कथन, पढाना (सम १०६; उव) ।
३ ध्यातान (पव ६५) । ४ सूत्र-पाठ (कपू) ।

वायणिअ वि [वाचनिक] वचन-संबन्धी
(नाट—विक ३५) ।

वायय देखो वायग = वायक (दे ५, २८) ।

वायरण देखो वागरण (दे १, २८६; कुमा,
भवि, पद) ।

वायवि वि [वायव] वायु रोगवाला, वात-
रोगी (विपा १, १—पत्र ५) ।

‘वायव देखो पायव (दे ७, ९७) ।

वायवज वि [वायवज] वायवज कोण का
(भणू २१२) ।

वायवज पु [वायवज] १ वायुदेवता-संबन्धी,
‘वायवजवायवज पट्टिविवायं नभेण सत्वाय’
(पउ ८, ४५, महा) । २ न. गी के सुर से
उठी हुई धूलि—रज, ‘वायवजवायवज’
(कुमा) ।

वायवजा श्री [वायवजा] पविम धीर उत्तर
के बीच की दिशा, वायव्य कोण (आ १०—
पत्र ४७८, मुपा ६८, २६०) ।

वायस पु [वायस] १ काक, कोमा (उवा,
प्रासू १६६; हे ४, ३५२) । २ कायोत्सर्ग
ना एक दोष, कायोत्सर्ग में कौए की तरह
दृष्टि को इधर-उधर घुमाना (पव ५) ।
‘परिमंडल न [परिमण्डल] विद्या-विशेष,
कौए के स्वर धीर स्थान भादि से शुभायुम
फल बतलानेवाली विद्या (सूत्र २, २, २७) ।
वाया श्री [वायच्] १ वाचन, वाणी (पाग,
प्रासू ६; पडि, स ४६२, से १, ३७, गा
३२, ४०८) । २ वाणी की प्रविष्टादिका
देवी, सरस्वती (आ २३) । ३ व्याकरण-
शास्त्र (पउड ८०२) । देखो पड = वाच् ।
वायाड पुं [दे-वाचाट] शुक, तीता (दे ७,
५६) ।

वायाड वि [वाचाट] वाचल, बकनादी (मुपा
३६०, वेद्य ११७, सति २) ।

वायाम पुं [उपायाम] कसरत, शारीरिक
यम (आ १—पत्र १६, छाया १, १—पत्र
१६, कपू, बीपः स्वन् ३६) ।

वायाम सक [उपायाम] कसरत करना,
शारीरिक यम करना । बह, ‘मुट्टु वि
वायामेत्तो कार्यं न करेह किंचिद्गुण’ (उव) ।

वायायण पु [वायायण] १ गवाण, कुरोवा
(पउम ३६, ६१, स २४१, पाग, महा) । २
पु राम का एक सैनिक (पउम ६७, १०) ।

वायार पुं [दे] शिशिर-वात, पुनराती में
‘वायरो’ (दे ७, ५६) ।

वायाल वि [वाचाल] मुलर, बकनादी (आ
१२, पाग मुपा ११३) ।

‘वायाल देखो पायाल (सि ५, ३७) ।

वायायिअ वि [वादिन] बजाना हुआ
(स ५२७, कुप १३६) ।

वायु देहा वाय = वायु (मुज १०, १९, कुमा;
सम १६) ।

वार सक [वारय्] रोकना, निषेध करना ।
वारि (उव, महा) । बह वारत (मुपा
१८३) । बह, वारिजत (काप्र १६१;
महा) । हेह, वारिउ (सूत्र १, ३, ७) ।
ऊ. वारियन्, वारियन् (मुपा ५५२;
२०२) ।

वार पु [दे-वार] वरक, तन-पात्र (दे ७,
५५) ।

वार पुं [वार] १ समूह, दूध (सुभा २१४; सुर १४, २४, सार ४६, कुमा, सम्मत १७५) । २ प्रवृत्त, वेला, दशा (उप ६२८, सुपा ३६० अति) । ३ मूर्ध्नि यदि ग्रह से अग्रिष्ठ दिन, जैसे रविवार, सोमवार आदि (गा २६१) । ४ चौथा नरक का एक नरक-स्थान (आ ६—पत्र ३६५) । ५ वारी, परिपाटी (उप ६४८ टी) । ६ कुम्भ घड़ा (दत्त ५, १, ४५) । ७ पुनः-विशेष । ८ न. कल विशेष (पण्य १७—पत्र ५३१) ।
 वारय की [वारयति] वारगना, वेरया (कुमा) । 'जाउगयो की [यौनना] वही मर्थ (प्राहु १४) । 'तसुगी की [वरुणी] वही (सण) । 'वहू की [वधू] वही मर्थ (कुप्र ४४९) । 'विलया की [वनिता] वही पुत्रांक मर्थ (कुमा सुपा ७८, २००) । 'विलासिणी की [विलासिनी] वही (कुमा सुपा २००) । 'हंदरी की [सुन्दरी] वही मर्थ (सुपा ७६) ।

वार न [वार] दरवाजा (प्राहु २६, कुमा गा ८८०) । 'वई की [वती] द्वारका नगरी (कुप्र ६३) । 'वाल पुं [पाल] दरवान, प्रतीहार (कुमा) ।
 वारत देखो वार = वारय ।

वारवार न [वारवार] फिर फिर (सि ६, ३२ गा २६४) ।

वारग पु [वारग] १ वारी, क्रम (उप ६४८ टी) । २ छोटा घडा, लघु नक्षत्र (पिड २७८) । ३ वि. निवारक, निषेधक (कुप्र २६, धर्मसि १६१) ।

वारडिय न [दे] रत वडा, लाल कपडा (गण्ड २, ४६) ।

वारडु नि [दे] मजिरीहित (पट्ट) ।

वारण न [वारण] १ निषेध, रोक, अटकाव, निवारण (कुमा ओप ४४८) । २ छत्र, छाया, 'वारणयवामेरेहि नञ्जति कुट महान्-मुहुरा' (सिदि १०२३) । ३ वि. रोकनासा, निवारक (कुप्र ३१२) । ४ पु. हाथी (पाघ, कुमा सुप्र ३१२) । ५ कण का एक भेद (गण) ।

वारण देखो वागरण (हि १०, २६८, कुमा पट्ट) ।

वारणा की [वारणा] निवारण, अटकाव (कुट १) ।

वारस्त पुं [वारस्त] १ एव अन्तर्हृद् मुनि (अंत १८) । २ एक ऋषि (उप) । ३ एक प्रमात्य । ४ न. एव नगर (पम् ६ टी) ।

वारवाण पुं [वारवाण] बन्दुब, चोली (पाघ) ।

वारय देखो वारग (रंभा, छाया १, १६—पत्र १६६, उप पु १४२, उवा, अट) ।

वारसिया की [दे] मल्लिका, गुल विशेष (दे ७, ६०) ।

वारसिय देखो वारसिय, 'वारसिवमहापाय' (सुपा ७१) ।

वारा की [वारा] १ देरी, विवाह, 'अम्नो किमज कज्जं जे लग्गा एतिया वारा' (सुपा ४५६) । २ वेला, दशा, 'तो पुण्यरवि निज्जयाव वारायो दुसि तिभि वा पाव' (सद्धि ६ टी), 'बहू महई नाटाणिग्गस्स' (निबुवानन्द) ।

वाराणसी देखो वाणारसी (अन्त, सि ३५४) ।

वारायिय नि [वारित] जिसका निवारण कराया गया हो वह (कुप्र १४०) ।

वारह पुं [वारह] १ पांचव वलदेव का पूर्वजन्मीय नाम (सम १२३) । २ वि. रूकर के सहा (उवा) ।

वाराही की [वाराही] १ विद्या विशेष (पत्रम ७, १४१) । २ वराहमिहिर का बनाया हुआ एक ज्योतिष ग्रन्थ, वराह संहिता (सम्मत १२१) ।

वारि न [वारि] १ पानी, जल (पाघ, कुमा, सण) । २ की हाथी की पंखों का स्थान, 'वारो करिषरखट्टाण' (पाघ, सि १७७, ६७८) । 'अहग पु [अद्वर] मल्लिक की

एक जाति, शैलवासी मल्लिक (सुप्रसि ६०) । 'मय वि [मय] पानी का बना हुआ ।

की, 'है (हे १, ४, पि ७०) । 'मुअ पु [मुच] मेघ, जलघर (पट्ट) । 'य पु [द] पानी देनेवाला श्रृंग (सि ७४६) ।

'रसि पु [रसि] शुद्ध, सागर (सम्मत १६०) । 'वाह [वाह] मेघ, अन्न (उप २६४ टी) । 'सेज पु [पेज] १ एक

अच्छद महर्षि, जो राजा वसुदेव के पुत्र से

धीर जिह्मि भगवन् धर्मिष्ठुनि के पास दीक्षा ली थी (अन्त १४) । २ एक अनुतरा नामी मुनि, जो राजा अश्विज के पुत्र से (अनु १) । ३ ऐतव्य वर्ष में उत्पन्न चौबीसवें जिनदेव (सम १५१) । ४ एक शायतो जिन-प्रतिमा (पत्र ५६; महा) । 'सेणा की [पेणा] १ एक शारसी जिन प्रतिमा (आ ४, २—पत्र २३०) । २ अयोध्या में रहने-वासी एक दिक्कुमारी देवी (आ ८—पत्र ४३७, इक २३१ डि) । ३ एक महानदी (आ ५, ३—पत्र २५१, इक) । ४ कर्मलोक में रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (इक २३२) । 'हर पु [धर] मेघ (गण्ड) ।

वारिअ पुं [दे] हजाम, नापित (दे ७, ४७) ।

वारिअ वि [वारित] १ निवारित, प्रतिविद्ध (पाघ, से २, २३) । २ वेदित (सि २, २३) ।

वारिआ की [वारिआ] छोटा दरवाजा, बारी (सी २),

'कपस्त चा(वा)रियाए परितितो साइयामगळे ।'

'जो जलपुरियविट्ठाकूभाओ चा(वा)रियाइ निक्कासो । तो लवचियगम्माओ जोणीए निगमो ह्यए ।' (धर्मसि १४६) ।

वारिअ पुन [दे] विवाह, शादी (दे ७, ४५, पाघ, उप पु ८०) ।

वारिसा देखो वारिसा (पिक १०१) ।

वारिसिय नि [वारिअ] १ बर्त-संबन्धी (सण) । २ वर्षा संकष्टी, 'चिद्वह चवरो मासा वारिसिया विबुहपरिमहिमो' (पत्रम ८२, ६५) ।

वारी की [वारिका] बारी छोटा दरवाजा (सी २) ।

वारी की [वारी] देखो 'वारि' का दूसरा अर्थ, 'वडो वारीयवे कोणए गधो निहए' (सुर ८, १३६, मोघ ४४६ टी) ।

वारी न [वारि] जल पानी (हे १, ४, पि ७०) ।

वारुअ न [दे] १ शीघ्र, जल्दी । २ वि. शीघ्रत-युक्त, 'य पाइसा मग्गे' (दे ७, ४८) ।

वारुण न [वारुण] १ जल, पानी, 'निम्मल-
वाट्ठमंडलमंडिततिवारुणमुपवेधे' (सिरि
३६१)। २ वि. वरुण-सत्रन्धी (पत्रम १२,
१२७, मुर ८, ४५ मन्ना)। ३ य न [वारु]
वराणसिद्धि शब्द (महा)। ४ पुर न [पुर]
परा-विरोध (इत्)।

वारुणी जी [वारुणी] १ मदिरा, सुरा, दाह
(पाय, से २, १७, मुर ३, ५५; पणह २,
५—पत्र १५०)। २ सत्ता विशेष, इन्द्र-
वाट्ठो, इन्द्रायन (कुमा)। ३ पश्चिम दिशा
(ठा १०—पत्र ४७८, सुपा २५५)। ४
मगवान् सुविधिनाथ की प्रथम शिष्या का
नाम (सम १५२, पत्र ६)। ५ एक विष्णु-
मारी देवी (इत्)। ६ कायोत्तरंग का एक
दोष—१ निपत्य होनी मदिरा की तरह
कायोत्तरंग में 'बुड-बुड' आकाज करना। २
कायोत्तरंग में मतवाला की तरह कोलते रहना
(पत्र ५)।

वारुया [जी [दे] हस्तिनी, हस्तिनी (स ७३५;
वारुया [६५)।

वारैज देखो वारिज (स ७३५)।

वारैयव देखो वार = वारय्।

वाल मक [वालय्] १ मोहना। २ वामन
सौदामा। वालर, वालर (हे ४, १३०,
अवि, सिरि ४४२)। कण्ठ. वालिज्ज
(मुर ३, १३६)। सङ्ग. वालैऊण (महा)।

वाल पु [वायाल] १ सर्प, साँप (गड्ड,
छाया १, १ टी—पत्र ६, श्रौग)। २ डुट
हाथी (मुर १०, २१६, वेदम ५८)। ३
हितक, मरु श्वापद (छाया १, १ टी—
पत्र ६, श्रौग)। देखो निआल = व्याल।

वाल न [वाल] १ एक गोय, जो बरगप-नीय
की एक शाखा है। २ पुत्री. उस गोय में
उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३६०)।

वाल देखो बाल = बाल (श्रीय पाय)। 'य
वि [ज] वेरो से बना हुआ' (पत्रम १०२,
१२१)। 'बीजणी छी [बीजनी]'।
चामर 'पंथ रायगडाई, तं जहा—सग्य
छस ऊकेसं बाहुलाभी वालनीयण' (श्रीय)।
२ छोटा व्यजन—पंथा, 'सेववापरवात-
नीयणीहि वीइजमारी' (छाया १, १—
६६)

पत्र ३२; सूत्र १, ६, १८)। 'दि पुं [वि]
वरी श्रयं (पाय, सुपा २८१)।

*वाल देखो पाल = पाल (काल, अवि, कुभा
१, ६६)।

वालफोस न [दे] कनक, सोना (दे ७,
६०)।

वालम न [वालक] पात्र-विशेष, यौ आदि के
बाँस का बना हुआ पात्र (भाषा २, १,
८, १)।

वालमपोतिया [जी [दे] देखो बालमग-
वालमपोइया] पोइआ (सुज ४—पत्र
७०, उट ६, २४, सुख ६, २४)।

वालम न [वालन] सौदामा (मुर १, २४६)।

वालप न [दे] पुच्छ डुम, पूँछ (दे ७,
५७)।

वालप पु [वालक] गन्ध-द्रव्य-विशेष (पाय)।

वालनास पु [दे] मस्तक का घाघ्रपण (हे
५६)।

वालवि पुं [व्यालपिन्] मदारी, साँपो को
पकने आदि का व्यवसाय करनेवाला, खेपरा
(पणह १, २—पत्र २६)।

वालहिह पु [वालरिलय] क्लृप्त से उत्पन्न
पुनस्त्य नग्या के साथ हजार पुत्र, जो धनुष-
पर्व के देह-मानघाले से (गड्ड)। देखो
वालसिखल।

वाल पुष्ठी [वाला] कंठ, अन्न विशेष,
'सपण्ण मातावल्लरय' (गा ८१२)।

वालि पुं [वालि] एक विद्याधर राजा,
वपिराज (पत्रम ६, ६, से १, १३)। *तणअ
पु [तनय] राजा वालि का पुत्र अयद
(से १३, ८३)। *सुअ पुं [सुव] नही
अर्थ (से ४ १२, १३, ६२)।

वालि वि [वालिन्] वरू, टेढ़ा (से १, १३)।

वालि वि [वालिन्] १ वेशवाला। २ पुं.
कपिराज (अणु १२२)।

वालजि वि [वालिज] मोटा हुआ (पाय
स ३३७)।

वालजाफोस न [दे] वनक, सुवर्ण (दे
७, ६०)।

वालदि पुं [वालन्ट] विद्याधर वंश का एक
राजा (पत्रम ५, ५५)।

वालरिल पु [वालरिलय] एक राजर्षि
(पत्रम १४, १८)। देखो वालिहिह।

वालहाण न [वालवान] पुच्छ, पूँछ (छाया
१, ३, उता)।

वालहिह देखो बालहिह (गड्ड ३२०)।

वाली जी [दे] वाघ विशेष, मुँह के पवन से
बनाया जाता तुण वाय (दे ७, ५३)।

*वाली जी [पाली] रत्ना विरोध, गाल आदि
पर की जाती कस्तूरी आदि की छटा (वत्त)।
देखो पाली।

वालअ पुं [वालक] १ परमाधामिक देवा
की एक जाति, जो नरक जीवों को तब
बाहुता—वाल में बने की तरह धुनते हैं (सम
२६)। २ क्षी-सम्बन्धी (उप पु २०५)।

वालअ [जी [वाला] वृत्ति, बाहु, देव, रत्न
वालअ (गड्ड)। *पुदवी जी [पुद्विगी]
दीसरी नरक-मृषी (पत्रम ११८, २)।
*पभा, *पभा जी [भ्रमा] दीसरी नरक-
भूमि (ठा ७—पत्र ३८८, इत्, मत १५)।
*भा जी [भा] वही अर्थ (उत ३६,
१५७)।

वालुक न [दे] पत्रवान् विशेष, एक तरह का
लाय; 'वीरवद्भिषक्कुलरम पुष्टपिन्नङ्ग-
वानु के' (विट ६३७)।

वालुक न [वालुक] बकरी, सीरा (अनु ६,
कुप ५८)।

वालुनी [जी [वालुनी] बकरी का गाद
वालुनी (गा १०, गा १० अ)।

वालु* देखो बालुअ* (स १०२)।

वान सक [वि + आप्] व्याप्त करना।
वावेइ (हे ४, १४१)।

वाय म [वाय] अयता, या (विदे २०२०)।

वाय पु [वाय्] वपन बोना (दे ६, १२६)।

वायइज देखो वायज्। वायइज्जाणि (स
७५१)।

वायइ, अय [वृ] अय करना। वायइ
(हे ४, ६८)।

वायफिर वि [वरिण्यु] अय बरोवाला
(कुमा)।

वायज् अक [व्या + पद] मर जाना।
वायज्जति (अय)।

वायड पुं [दे] वृद्धो, रितास (दे ७, ५४) ।
 वायड वि [व्यापृत] १ व्यापृत (दे ७, ५४ टी) । २ किसी कार्य में लगा हुआ (दे १, २०६, प्राप्, वस, सुर १, २६) ।
 वागड वि [व्यापृत] लौडामा हुआ, वापस किया हुआ (उप ५४४) ।
 वागडय ओन [द] विपरीत मैथुन (दे ७, ५८) । ओ. 'या (वार) ।
 वायण न [व्यापन] व्याप्त करना (विशे ८६) ।
 वायणम वि [व्यापनक] डिगलो, डिगमा, बीना, छोटे बंद का (चउपन० पत्र १६१) ।
 वागणी ओ [दे] धिद्र, विवर (दे ७, ५४) ।
 वागण्य देखो वागन (छापा १, १२) ।
 वागति ओ [व्यापति] विनाश, भरण (छापा १, ६—पत्र १६६, उप ५०६, स १६५, ४३२ धर्मस ६३४, ६७६) ।
 वागति ओ [व्यापृति] व्यापार (उप ५०६) ।
 वागति ओ [व्यापृति] निवृत्ति (ठा ३, ४—पत्र १७४) ।
 वागन वि [व्यापन] विनाश प्राप्त (ठा ५, २—पत्र ३१३, स २४१, सम्मत २८, स ६०) ।
 वावय पु [दे] धातु, गति का मुक्तिया (दे ७, ५४) ।
 वावर सक [व्या + वृ] १ काम में लगना । २ सक. काम में लगाना । वावरदे (हे ४, ८१) वावरह (मवि) 'सय गिह परिचयज परिगिहमि वावरदे' (उत्त १७, १८, सुख १७, १८) । वह वागन (कुमा ५, ५१) । प्रयो, हेह वागनियउ (स ७६२) ।
 वावरण न [व्यापण] कार्य में लगाना (मवि) ।
 वागल देखो वागड = व्यापृत (उप ५०६) ।
 वागल पुन [दे. वागल] शब्द विशेष (सख) ।
 वागहारिअ वि [व्यापहारिक] व्यवहार से सम्बन्ध रखनेवाला (इक. विसे ६५६, जीवस ६५) ।
 वागाअ (?) सक [अ + काश] शक्काश पाला, भण्ड प्रत्ये करना । वावण्ड (वाव्या २५२) ।

वागाअ सक [व्या + पादय.] मार डालना, विनाश करना । वागाएड (स ३१, महा) । बर्म. नावाइज, नावाईड (स ६७३), मवि. वागाइजिस्सड (वि ५४६) । चंड. तागाऊण (म ७५५) । ड. वागाइयउ (स १३५) ।
 वावाइअ वि [व्यापादित] मार डाला गया, विनाशित (छुपा २४१). 'मवावावि(दे)ओ केव विजतो छु एतो' (स ४११) ।
 वावायम वि [व्यापादक] हिवर, विनाश-कर्ता (स २६७) ।
 वावायण न [व्यापादन] हिमा, मार डालना, विनाश (स ३३०, १०२, १०३, ६०५, गुर १२, २१६) ।
 वावायय देखो वागायम (स ७५०) ।
 वागार सक [व्या + पारय.] बाप में लगाना । वह. वावारें (गवड २४४) । क. वागारियउ (मुपा ६६२) ।
 वागार पुं [व्यापार] व्यवसाय (ठा ३, १ टी—पत्र ११४, प्राप् ६१, १२१, नाट—विक १७) ।
 वावारण न [व्यापारण] कार्य में लगाना (विसे ३०७१, उप पु ७१) ।
 वावारि वि [व्यापारिन्] व्यापारवाला (से १४ ६६, हस्मीर १३) ।
 वागारिद (टी) वि [व्यापारित] कार्य में लगाना हुआ (नाट—शकु १२०) ।
 वावि अ [वावि] १ श्रमवा, या (पत्र ६७) । २ ओ देखो वागी (गवड १, १—पत्र ८) ।
 वावि वि [व्यापिन्] व्यापक (विसे २१५, या २८५, धर्मस ५२५) ।
 वाविअ वि [दे] विस्तारित (दे ७, ५७) ।
 वागिअ वि [वापित] १ प्रापित, प्राप्त कलाया हुआ (से ६, ६२) । २ बोया हुआ गुजरतो में वावड 'अ प्रासी पुवमवे वममवेय वाविग सए जीव' (आमहि ८ दे ७, ८६) ।
 वाविअ वि [व्याप] बरा हुआ (कुमा ६, ६५) ।
 वाविस्स वि [व्यापृत्त] व्यापृत्तिलाना, निवृत्त (धर्मस ३२१) ।

वाविचि ओ [व्यापृत्ति] व्यापृतन, निवृत्ति (धर्मस १०५) ।
 वाविद्ध देखो वाइद्ध = व्यादिग, व्याविद्ध (ठा ५, २—पत्र ३१३) ।
 वाविर देखो वागर । वाविरह (पड) ।
 वागी ओ [वापी] चतुष्कोण जगाम विशेष (श्रीप, गड, प्राप्) ।
 वावुड } (टी) देखो वागड = व्यापृत (नाट—वावुड } मुच २०१, वि २१८, चाप ६) ।
 वावाणय न [द] बिबाण, विनाश हुआ (दे ७, ५६) ।
 वाशू (मा) ओ [वाचू] नाटक की भाषा में बाला (मुच २७) ।
 वास देखो वरिस = वृष । वासति (मग) । भुका, वासिनु (पन्) । क. वासिउ (ठा ३, १—पत्र १४१, वि ६२, ५७७) ।
 वास बर [वाश] १ तिर्यको का—पशु पक्षियों का बोलना । २ व्याह्वान करना, 'बीरदुममि वावड वानयो वायसो वलिय-पस्सो' (पत्र ५५, ६१); वासड, वासड (मवि, कुप्र २२३) । वह वासंत (कुप्र २२३, ३८७) ।
 वास सक [वासय्] १ संस्कार डालना । २ सुगन्धित करना । ३ वास करवाना । वासह (मवि) । वह. वासंत, वासयत (श्रीप कप्य) । ॥ वासणिज्ज (विसे १६७७ धर्मस ३२६) ।
 वास बेलो वरिस = वर (सम २, कप्य, जी ३४, गड, कुमा, मग ३, ६, सम १२, हे १, ४३ २, १०५, पड ४६, सुपा ६७) । 'ताण न [ताण] पव, छाता (धर्म ३, शोध ३०) । 'धर, 'हर पु [धर] पर्वत-विशेष (उवा ७४, २५३, ठा २, ३, सम १२, इक) ।
 वास पु [वास] १ निवास, रहना (आचा, उप ४८६, कुमा, प्राप् ३८) । २ सुगन्ध (कुमा, मवि) । ३ सुगन्धी द्रव्य विशेष (गड) । ४ सुगन्धी वृक्ष विशेष, 'पणवज-वासस विविह वोसाउ विपवेहि' (सुपा ६७, दस २) । ५ दोन्द्रिम जलु की एक जाति (पण्ड १—पत्र ४४) । 'धर ॥ [गुह] शयन गुह (छापा १, १६—पत्र

२०१)। भवण न [भवन] वही भव्य (महा)। रेणु पु [रेणु] सुगन्धी रज (धीर)। हर न [युद्ध] शयन गृह (सुर ६, २७, मुवा ३१२; मवि)।

यास पुं [व्यास] श्रमि विशेष, पुराण-कहौ एक मुनि (हे १, ५, वण्)। २ विस्तार (मग २, = टो)।

यास न [यासस्] वज्र, वपडा (पात्र, वज्रा १६२, मवि)।

*यास देनो पास = पास (गउड)।

*यास देनो पास = पारवं (प्राह १०, गउड)।

यासग पुं [व्यासङ्ग] भासति, तत्परता, 'वाहेसा पडिबुद्धा चिंसे म मोछुण विसय-वासग' (उप १११ टी कुप्र ११८ उग पु १२७)।

यासंठ (घं) पुं [यसन्ठ] छद का एव यासत्। मेव (विग १६३, १६३ णि)।

यासन पुं [यसान्] यर्षा वाय वा अन्त-भ्रम (उप ५८८)।

यासतिअ वि [यासतिअ] वसत सम्बधी (मे ३)।

यासतिअ ओ [यासतिअ, *न्तो] कता-यामतिआ } विरेय (मोप वण, कुमा, पण्य यासंती } १—पत्र ३२, छाया १, ६—पत्र ११०, पण्य १, ४—पत्र ७६)।

यामदी ओ [दि] बुद्ध का पुण्य (हे ७, ५५)।

यासग वि [यासक] १ खदेवाना (उप ७६८ टी)। २ वागना कहौ संसारयामन (पर्मसं १२६)। ३ शब्द बरतेगता। ४ पुं, द्वीपय यादि जन्तु (भाषा)।

यामण न [दि] पात्र वरतन, पुत्रराती में 'यामण', 'रिउठे च पयसुआमि' भगलान-विदे हिएणामण' (म ६१, ६२)।

यामण न [यामन] बाधित बला (स्वति ३, ३)।

यामगा ओ [यासगा] संसार (पर्मसं १२६)।

*यामगा ओ [यान] वमोचन, निरोपण (विगे ११७७, उप ५८७)। देतो यामगाया।

यासप देनो यामग। *मग्गा ओ [मग्गा] कविता। का एव मेव बह कविता यो यासप की प्रीणा में मग मग कर देहो (मुवा)।

यासर पुन [यासर] दिवस, दिन (पात्र, यउठ, महा)।

यासव पुं [यासव] १ द्रव, देव पति (पात्र, मुवा ३०५, केव्य ५८०)। २ एक राज-कुमार (विवा १, १—पत्र १०३)। *केउ पुं [केतु] हस्तिश बा एक राजा, राजा जनक का पिता (पत्रम २१, ३२)। *दच पुं [दच] विजयपुर नगर का एक राजा (विवा २, ४)। *दत्ता ओ [दत्ता] एक माध्यायिका (राज)। *धणु पुन [धनुप] द्रव धनुष (द्रुप ५२६)। *नयर न [नगर] समरावती, द्रव-नगरी (मुवा ६०६)। *पुरी ओ [पुरी] वही भव्य (उप ५१ १७६)। *सुअ पुं [सुत] द्रव का पुत्र, जयत (पात्र)।

यामनयुद्धा ओ [यामनयुद्धा] यगा नट प्रयत्न की पुत्री और उदयन—यौलामनराज की पत्नी (उर्मा ३)।

यासवार पुं [दि] १ सुरण, घोडा (दे ७, ५६)। २ श्वान, कुत्ता, विद्वानिज्जइ गया बयाद नि यासवारहि (वेदप १३५)।

यासगाल पु [दि] श्वान, कुत्ता (दे ७, ६०)।

यामस न [यासस्] वज्र, वपडा, *कुमोणया कुवासला' (पण्य १, २—पत्र ४०)।

यासा देतो वरिसा (मुवा, पात्र, सुर २, ७८, गा २३१)। *रसि ओ. देतो वरिसा रस (हे ४, ३६५)। *यास पु [यास] वन्याव में एन स्थान में निया जाता निगाव (मोप, भास वण)। *यासिय वि [यापिक] वर्षावार सबधी (पात्र २, २, ८, ६)।

*ह पुं [यू] भेद, वेदन (दे ७, ५०)।

यासागिया ओ [दि-यासगिया] वनयवि-विरेय (मृप २, ३, १६)।

यासाओ ओ [दि] रण्य, कुत्ता (दे ७, ५४)।

यामि वि [यासिन्] १ निराग बनेगता, खदेवाना (मुप १, ६, उग मुवा ६१८, कुप्र ५६, मीप)। २ यागना-कारक, शस्त्रार-स्वपार (विग १, ७०)।

यामि ओ [यामि] बमूना, बरई का एक वज्र—घोत्रार, न हि यागिनरवईए हई बनेहो कहुंविचि' (पर्मसं ५८६)। देनो यासो।

यासिन् } वि [यासिन्] वर्षावार सबधी यासिक } (मुप १२—पत्र २१६)।

यासिट्ट न [यासिट्ट] १ गोप विशेष (ठा ७—पत्र ३६०; वण्य, मुज्ज १०, १६)।

२ पुत्री, यासिट्ट गोत्र में उत्पन्न (ठा ७)। भो *ट्टा, *ट्टी (वण्य २१५, २६)।

यासिट्टिया ओ [यासिट्टिया] एक जैन मुनि-शाखा (वण्य)।

यासिचु नि [वर्षिचु] वरसनेवाला (ठा ५, ४—पत्र २६६)।

यासिद् } वि [यासित्] १ बसाया हुआ, यासिय } निवासित (मोह २१)। २ बमो रखा हुआ (पत्र यादि) (मुवा १२; ५३२)। ३ सुगन्धित किया हुआ (कण्य; पत्र १३३, महा)। ४ भावित, सकलित (भाष)।

यासी ओ [यासी] बमूना, बरई का एक वज्र (पण्य १, १, पत्रम १५, ७८; वण्य, सुर १, २८; मीप)। *सुह पुं [सुग] बमूने के तुल्य ग्रंथाला एक तरह का बीट, द्वीपिय जन्तु की एक जाति (उत्त ३६, १३६)।

यासुद् } पुं [यासुकि] एक महा-नाम, यामुगि } संपराज, (ते २, ११, गा ६६, यउठ, ती ७, कुमा, समता ७६)।

यासुदेय पु [यासुदेव] १ धीहण्य, मारायण (पण्य १, ४—पत्र ७२)। २ यर्ष वक्रासी राजा, जिहल्ल मूमि का भयोरा (उप १७, १५२, १५३, संत)।

यासुपुद् पु [यासुपुद्] भारलव में उत्पन्न भारहव जिन भगवान् (मम ५३, वण्य, वदि)।

यामुओ ओ [दि] बुद्ध का पून (दे ७, ५५)।

याह गर [याहय] यहन बराना, बराना। बाहह, बाहेह (मवि, महा)। बयह, बाहिसमाग (पत्र)। हेर. यादि (मरा)।

ह. याद, यादिम (ह २, ७८ भाषा २, ४ २ ६)।

याह पुओ [व्याध] गुण्य, बहैया (ह १, १८७, पात्र)। ओ. *हो (गा १२१, नि ३८५)।

याह पु [याह] १ मय भेष (वण्य, मृप १, २, ५. उग ७२८ टी, कुप्र १८७ हम्मीर १८)। २ बला, मीरा, *याहट्टाट्ट वगु' (विगे १०२७)। ३ मरारत, या हाता (मृप १ ३, ४; ४)। ४ परिपात्र विरेय,

माड सो माइव वा एक माव (सं० २६) ।
 ५ शावटि, माडो हावनेमाला (सूय १, २, ३, ५) । 'वाहिया छो' 'वाहिया' बुद्ध-
 सवाये (पर्वणि ४) ।
 वाहगण } पुं [दे] मन्त्रो, धमण्य, प्रपान
 वाहगण्य } (१७, ११) ।
 वाहड वि [दे] भुत, भरा हुमा; 'बहुवाहड
 प्रगाह' (सं ७, २६) ।
 वाहडिया छो [दे] मानर, बहंगो (उप ७
 ३३७) ।
 वाहण पुन [वाहन्] १ रप मावि यान, 'जह
 भिन्नवाहणा लोण' (गच्छ १, १८; उवा,
 मीप, वण्) । २ जहाज, नौका, यानगाय,
 गुजराती में 'महाण' (उवा, तिरि ४२३,
 कुम्मा १९) । ३ न. चलाना; 'वाहवाहण-
 परित्तो' (सुप्र १४७) । ४ शब्द, बोक
 मादि डोमाना, मार लाव कर चलाना (पह
 १, २—पन २६, ३ २६) । 'साख छो
 'शाख' यान रखने का पर (मीप) ।
 वाहणा छो [वाहना] बहन कराना, बोक
 मादि डोमाना (आव २५८ टी) ।
 वाहणा छो [दे] प्रोवा, डोक, गला (दे ७
 ५४) ।
 वाहणा छो [उपानह] जूला (मीप,
 उवा, नि १४१) ।
 वाहणिय वि [वाहनिर] वाहन संबन्धी (उप
 ७२८ टी) ।
 वाहणिया छो [वाहनिरा] बहन कराना,
 चलाना; भासवाहणिया' (स ३००) ।
 वाहनु देवो वाहर ।
 वाहय वि [वाहर] बतानेवाला, हाँननेवाला
 (उत १, ३७) ।
 वाहय वि [व्याहृत] व्यापात प्राप्त (मीह
 १०७, उव) ।
 वाहर सक [व्या + ह] १ नोलना, कलना ।
 २ प्राप्तन करना । वाहरइ (दे ४, २५६,
 सुपा ३२२, महा) । नर्म वाहिण्ड, वाहरिजइ
 (दे ४, २५३), 'वाहिण्ति पहाणा मासिवा'
 (सुर १९, ६१) । ककड वाहिण्पत (सुपा) ।
 वड. वाहरन (गा ५०३, सुर ६, १६६) ।
 संक. वाहरिउ (वन ४) । टेक. वाहनुं
 (सि ११, ११६) ।

वाहरण न [व्याहरण] १ जी, बचन
 (सुपा) । २ प्राप्तन (ग २५२; ५०६) ।
 वाहरानिय नि [व्याहरानि] कृतगाया हुमा
 (सुप्र १४; महा) ।
 वाहरिअ देगो वाहिच = व्याहृत (सुर १,
 १५०, ४, ६; सुपा १३२, महा) ।
 वाहटर वि [दे. वासन्त्यकार] १ स्नेहो,
 धनुषी । २ सगा, गुनराती में 'वाहेत्तरो';
 'मह गल्वा' तमप्रनारवि । नियवगुन
 मन्त्रो लानेद वाहवाहन्' (पर्वणि १२८) ।
 वाहडिया } छो [दे] सुद नदी, छोटा जल-
 वाहले } प्रवाह (सुपा २२, ५४, दे ७,
 ३६) ।
 वाहा छो [दे] वातुरा, रेत (दे ७, ५४) ।
 वाहाया छो [दे] बुद्ध-विरोध; 'उमिर्तगलिया
 ति वा वाहायासंगलिया ति वा मगलित्तगलिया
 ति वा' (सुप्र ५) ।
 वाहायिय नि [वाहित] चलाया हुमा (महा) ।
 वाहि देवो वाहर । संड. वाहिचा (भाव
 १८, नि ५२२) ।
 वाहि पुंछो [व्याधि] रोग, बीमारी, 'चउव्विहे
 वाही पन्त' (ठा ४, ४—पन २६५, पाप;
 सुर ४, ७५, उवा; प्राहु १३३, महा) ।
 'एयामो सत्त वाहीमो दाखणामो' (महा) ।
 वाहि वि [वादिन] बहन करनेवाला, डोनेवाला,
 'जहा लरो चउणमारवाही' (उम) ।
 वाहिअ वि [वाहित] चलाया हुमा; 'वाहियं
 तम्मि वंशकुब्जे स खम' (महा), 'लो तेण
 तेण खण्णे कोसलित्तेण वाहिमो पाभो'
 (सुपा ५२७) ।
 वाहिअ देवो वाहिच = व्याहृत (दे २, ६६,
 पड, महा, सुपा १, १—पन ६३) ।
 वाहिअ वि [व्याधित] रोगी, बीमार (सिदि
 १०७८, सुपा १, ३—पन १७६, विपा
 १, ७—पन ७५, पह १, ३—पन ५४,
 कव) ।
 वाहिमो छो [वादिनी] १ नदी (पर्वणि ३) । २
 सेना, सचकर, सेना वल्लिणी कारिणी मणीअ
 चमू सिन्' (पाप) । ३ सेना विरोध, जिसमें
 न१ हथी, न१ रथ, २४३ घोड़े और ४०५
 प्यारें हो वह सैन्य (पन ५६, ६) । 'गाह
 पुं [नाथ] सेना-पति (किरात १३) । 'स
 पुं [श] नदी (किरात ११) ।

वाहिच वि [व्याहृत] १ उत, पवित्र (हे
 १, १२८; २, ६६; प्राहु) । २ प्राहृत, शब्दित
 (पाप, उत १, २०) ।
 वाहिचि छो [व्याहृति] १ उक्ति, पवन ।
 २ प्राप्तन (मणु २) ।
 वाहिण्' देतो वाहर ।
 वाहिम देतो वाह = वाहय ।
 वाहियाली छो [वाहाली] सरर सेतने को
 जगह (स १३, सुपा ३२७, महा) ।
 वाहिडि वि [व्याधिमन्] रोगी (धम्म न
 टी) ।
 वाही देगो वाह = व्याप ।
 वाहुडिअ नि [दे] गन, पचित, 'लो वाहुडिअ
 जवेण' (सुप्र ५५८) । देवो वाहुडिअ ।
 वाहुय देवो वाहिच = व्याहृत (मीप) ।
 वि देवो आवि = मणि (हे २, २१८; सुपा, गा
 ११; १७; २३; धम्म ४, १९, ६०; ६६;
 रंसा) ।
 वि च [वि] इन धर्मों का सूचक ध्वज—
 १ विरोध, प्रतिपक्षता, 'विगहा',
 'विधोग' (ठा ४, २, गच्छ १, ११; सुर
 २, २१५) । २ विरोध, 'विचत्तिय'
 (सुम १, १, २, २३; भा १, १ टी) । ३
 विविधता, 'विपसन्नाण', 'विउम्मम'
 (मोपमा १८८, भा १, टी, भावम) । ४
 दुखा, खराबी, 'विक्व' (उप ७२८ टी) ।
 ५ धमाव, 'विइए' (सि २, १०) । ६ महत्त्व,
 'विण' (गउड) । ७ भिन्नता, 'विपु' (महा) ।
 ८ कर्षाई, ऊर्ध्वता, 'विक्खेव' (मोपमा
 १६३) । ९ पारवृत्ति (पन १७, ६७) । १०
 पु. पथी (सि १, १, सुर १६, ४२) । ११ वि-
 उदीपक, उत्तेजक । १२ धर्मबोधक, ज्ञापक,
 'धम्म सममत्तविमत्तस चर दिमउ भविपाण'
 (विसे १४३) ।
 वि देवो वि = द्वि, ते पुण होज्ज विहत्या
 कुम्मापुत्तादो जहणेण' (विसे ३१६६) ।
 वि वि [विद्] जानकार, विज्ञ (भावा,
 विसे ५००) । 'उच्छा छो [सुगुत्ता]
 विद्वान् को निन्दा, साधु को निन्दा (भा ३
 टी—पन ३०) ।
 विं छो [विप] वृषोप, विद्या (पह २,
 १—६६, सति २, मीप, विसे ७८१) ।

विअ सक् [विद्] जानना । विअसि (विसे १६००) । मवि, विच्छ वेच्छ (पि ५२३, ५२६, प्राप्, हे ३, १७१) । वक्, विअत (रंभा) । सक्, निद्रता, निद्राणा, विहत्त (प्राचा दप १०, १५) ।

विअ न [वियन्] धावाण, गमन (मे ६, ५८) । धार वि [धार] धाकाण विहारी । धारपुर न [धारपुर] एक विद्याधर नगर (हक्) ।

विअ वि [विक्] १ जानकार विद्वान् 'ते च भिक्खु परित्राय विय तेनु न पुच्छए' (सुप् १, १, ४, २) । २ विज्ञान, जानकारी (राज) ।

विअ देखो टन (हे २, १८२ प्राप्, स्वप् २७ कृपा पठन ११, ८१, महा) ।

विअ पु [पुक] श्वापद जन्तु विशेष, मडिया (माट—उत्तर ७१) ।

विअ पु [वयय] विगम, विनाश, 'पचविहे छेयणे पमत्तं, ते वहा—उपाधेयणे वियच्छे दणे' (ठा ५, ३—पय ३५६) ।

विअ वि [विगत] विमट, मृत । 'था छो [चा] मृन प्राप्ता का शरीर (ठा १—पय १६) ।

विअ देखो अविअ—अपिच (जीव १) ।

विअइ वि [विचियन्] अितनी जोत हुई हो बहु (मा २२) ।

विअइ छो [विगमि] विगम, विनाश (ठा १—पय १६) ।

विअइ देखो विगइ = विहति (ठा १—पय १६ राज) ।

विअइसा देखो विअस = वि + वसन् ।

विअइट्ट पु [विचिक्खि] १ पुण-अण विशेष । २ न पुण विशेष (हे १, १६६, कप्पु या २३ कृपा) । ३ वि. विक्क, विनमित (सण) ।

विअओल्लिअ वि [दि] मलिन (दि ७, ७२) ।

विअ ना [व्यहय] धग से होन बरता—हाप, बान छानि को बरना । निन्दे (प्राचा १, १४—पय १८५) ।

विअण वि [वयय] भी होन 'विअणं' (पय १, १—पय १८) ।

विअगिअ वि [दि] निन्दित (दि ७, ६६) ।

विअगिअ वि [व्यह्वित] खरिखत, छिन्न (पय १, ३—पय ४५, टी—पय ४६) ।

विअजण देखो वजण = व्यञ्जन (प्राह ३१, सम्म ७२) ।

विअजिअ वि [व्यजित] व्यक्त किया हुआ, प्रकट किया हुआ (सुप् २, १, २७, ठा ५, २—पय ३०८) ।

विअट्टव वि [दि] १ अवरोपित । २ मुक्त (पठ १७७) ।

विअति छो [व्यन्ति] घटत क्रिया । 'कारय वि [कारक] भन्त क्रिया करनेवाला कर्मों का भन्त करनेवाला, मुक्ति-भाषक (प्राचा १, ८, ५, ३) ।

विअम मक् [वि + जुम्भ] १ उत्पन्न होना । २ विवसना । ३ जैमाई खाना । निप्रमइ (हे ४ १५७ पट्ट, मवि) । वक्, विअमत, विअममाण (धारवा १५२, से १, ४३, गा ४२५, महा) ।

विअम वि [विदम्भ] निष्कण, सत्य धर्मा-ण्यं विद्यममुहस (स ६६०) ।

विअमण न [विजुम्भण] १ जैमाई, जम्हाई (स ३३६, सुपा १५६) । २ विनाश । ३ उत्पत्ति (मवि, माल ८५) ।

विअमिअ वि [विजुम्भित] १ प्रकाशित (गा ५६५) । २ उत्पन्न (माल ८६) । ३ न, जैमाई (गा ३५२) ।

विअसण वि [विजसन] बर रहित, गन (प्राह ३२) ।

विअसय पु [दि] व्याप, बहेलिया (दि ७ ७२) ।

विअव सक् [वि + तर्कय] विचारना, विमर्श करना मोमामा करना । वक् निय-क्क, विअवमाण (सुपा २६४, जय २२० टी) ।

विअक्क पु छो [विजिअ] विमर्श मोमामा (जीय सम्मत १४१) । छो, 'या (सुप् १ १२, २१ पठम ६३, ६) ।

विअविअ वि [विजिअ] निमिअ, विना-ति (सण) ।

विअर न मा [वि + ट्ठेय] देना । वक् विअरनामा (धायना १८८) ।

विअग्गण वि [विचक्षण] विद्वान् परिष्ठ, दस (महा, प्राप् ४१, मवि, नाट—वेणी २४) ।

विअग्ग वि [व्यग्र] व्याकुल (प्राह ३१) ।

विअग्घ देखो वग्घ = व्याप 'महिसवि (भवि) भग्गानदीविया—' (पय १, १—पय ७ पि १३५) ।

विअग्घ पु [विद्याग्र] व्याप शिष्य (पय १, १—पय १८) ।

विअज्जास देखो वियज्जास (माट—मुच्छ ३२६) ।

विअट्ट सक् [विस + उट्ट] धमनाछित करना धसत्य सावित करना । विअट्टइ (हे ४, १२६) ।

विअट्ट मक् [वि + धुत्त] विचरना, विहरना । वक् 'गिम्हममयति पत्ते वियट्ट-माणे (मु?) वणेण वणवरेणुविह्विण्ण-कयपनुधामो तुम' (प्राचा १, १—पय ६५) ।

विअट्ट वि [विटुत्त] निवृत्त, व्यावृत्त 'विप्र-द्वयमणं विणेण' (सम १, भग, कप्प, धीव, पठि) । 'भोइ वि [भोजिन्] प्रतिदिन भोजन करनेवाला (भग) ।

विअट्ट पु [विपत्त] प्रवञ्च (स १७८) ।

विअट्ट } वि [विसरदित] संवाद रहित, विअट्टअ } धमनाछित विअट्ट विसंबद्ध (प्राचा, कृपा ६, ८८) ।

विअट्ट वि [विट्टट्ट] १ दूर स्थित । २ क्रि, दूर (प्राचा १, १ टी—पय १) ।

विअट्ट सक् [वि + फट्टय] १ प्रफट करना । २ धावोचना करना । विअट्टइ (ठा १० टी—पय ४८५) । वक् विअट्टिअन (राज) ।

विअड वि [वयय] लज्जित, लज्जायुक् (प्राचा १, ८—पय १४३) ।

विअड वि [विट्टव] मुना हुआ, धनावृत्त (ठा ३, १—पय १२१, ५, २—पय ३२२) । 'गिद न [गुद] बारो वरट्ट मुना पर, व्यान-अणिया (बन्ध वन) । 'जायन [याय] मुना बाटन ऊर मे मुना बाट (प्राचा १, १ टी—पय ४३) ।

विअड न [दे] १ प्रामुख जल, जीव-रहित पानी (सुम १, ७, २१, ठा ३, ३—पन १३०, ५, २—पन ३१३, सम ३७, उल २, ४, कप्प) । २ मय, दारु (पिड २३६) । ३ प्रामुख आहार, निर्दोष आहार, 'जं किचि पायनं मगधं तं मनुष्यं विमडं भुजित्वा' (आभा १, ६, १, १८), 'विअडमं भोषा' कप्प) ।

विअड वि [विश्रुत] विचार-प्राप्त (आभा, उल २, ४, कप्प, पि २१६) ।

विअड वि [विपट] १ प्रवट, खुला (सुम १, २, २, २३, पचा १०, १८, पय १५३) । २ विराल, विस्तीर्ण, '—अनोत्तापतपठ-मनोरविअडनामे' (उवा, भौप, गा १०३, गड) । ३ सुन्दर, मनोहर (गड) । ४ प्रयुत, प्रवृत्त (सुम २, २, १८) । ५ पुं, एक ज्योतिष्क महाप्रह (ठा २, ३—पन ७८; सुज २०) । ६ एक विद्याधर-राजा (पल्ल १०, २०) । ७ ओइ वि [ओजिन्] प्रकाश में भोजन करनेवाला, दिन में ही भोजन करनेवाला (सम १६) । ८ नड, 'नाइ पुं [पातिन्] पयंत-विशेष (ठा ४, २—पन २२३, इक, ठा २, ३—पन ६६, ८०) ।

विअड म्म [विपटय्] विस्तीर्ण होना । विअडेह (गड ११६८) ।

विअडण छीन [विफटन] १ मतिचारी की माओचना । २ स्वाभिप्राय निवेदन (पचा २, २७) । छी, 'णा (ओप ६१३, ७६१, पिडभा ४१ आनक ३७६, पचा १६, १६) ।

विअडो छी [वितटी] १ खराब किनारा । २ झटो जंगल (आभा, १ १—पन ६३) ।

विअडि छी [वितटि] वेदिका, हवन-स्थान, वेदी, चीनरा (ह २, ३६, कुमा प्राप्र) ।

विअडट वि [विदग्ध] १ मिश्र, कुशल । २ परिवर्त, विद्वान् (हे २, ४०, गड, महा) ।

विअडट्टक वि [विकर्पक] क्षीचनेवाला, 'महापणुविअट्ट' ('डुका') (पण्ड १, ४—पन ७२) ।

विअडट्टा छी [विदग्धा] नायिका का एक भेद (कुमा) ।

विअट्टिम वृद्धी [विदग्धता] १ निरुणता । २ पाण्डित्य (कुप्र ४०५, यज्जा १३४) ।

विअण पुंन [व्यजन] येना, पंथा (प्राप्र; हे १, ४६, पण्ड १, १—पन ८) ।

विअण नि [विजन्] निर्जन, जन-रहित, 'सपति विअणवाण' (मरि) ।

विअणा छी [वेदना] १ ज्ञान । २ सुख-दुःख भादि वा अनुभूति । ३ विवाह । (प्राप्र, हे १, १४६) । ४ घोडा, दुख, संताप (प्राप्र, गड, कुमा) ।

विअणिय वि [वितनिता, वितत] विस्तीर्ण (मवि) ।

विअणिय वि [विगणित] भगवत, विरसवट (मवि) ।

विअण्ण वि [विपन्न] युत (गा ५४६) ।

विअण्ह वि [विरुण] वृष्णा-रहित (गा ६३) ।

विअत्त सक् [वि + यत्तय्] ब्रुम कर जाना । संक, विअत्ता, विअत्ता, विअत्ता (आभा १, ८, १, २) ।

विअत्त वि [व्यक्त] १ परिस्फुट (सुम १, १, २, २५) । २ मनुष्य, विवेकी (सुम १, १, २, ११) । ३ बुद्ध, परिणत-व्यसल, 'एणगपाण सल्लुहयविअत्ताण' (सम ३५) ।

४ पुं, भगवान् महावीर का चतुर्थ गुणधर—प्रमुल शिष्य (सम १६) । ५ गीतार्थ युनि (ठा ४, १ टी—पन २००) । ६ 'विअन्' [श्रृत्वा] गीतार्थ का कर्तव्य—अनुष्ठान (ठा ४, १ टी) ।

विअत्त वि [विदत्त] विशेष रूप से दिहा हत्था (ठा ४, १ टी—पन २००) ।

विअत्त पुं [विजते] एक ज्योतिष्क महाप्रह (ठा २, ३ टी—पन ७६, सुज्ज १६ टी—पन २६६) ।

विअट्ट वि [वितर्द] हिंसक (आभा १, ६, ४, ५) ।

विअट्ट देखो विअट्टट्ट = विदग्ध (पच ६०, गट्ट—मालतो ५४) ।

विअन्नु देखो विन्नु (गट्टि ८) ।

विअप सक् [वि + कल्पय्] १ विचार करना । २ संशय करना । विअपड, विअपेड

(मवि, गा ४७६) । मट्ट, विअपपंत (महा) । मट्ट, विअपप (उप ४२८ टी) ।

विअप्प पुं [विकल्प] १ विविध तरह की वस्तुना, 'तं जयड निट्ठं विअ विअप्पजालं वरंदाण' (गड) । २ विजर्त, विचार (महा) । ३ भेद, प्रकार, दण्डविमो घ पञ्च-वनमो घ, सेसा विअप्पा ति' (सम ३) । देखो विअपप = विअल ।

विअप्पण न [विकल्पन] ऊपर देखो, 'एगकुच्छेप्रमि वि मुहुदुअविअप्पणमजुत्तं' (सम १८, स ६८४) ।

विअप्पणा छी [विकल्पना] ऊपर देखो (पमसं २१०) ।

विअट्ठम देखो विअट्ठम (प्राप्र ३८, पचम २६, ८) ।

विअट्ट देखो विअंभ = वि + जून् । विअ-मट्ट (प्राप्र ४४) ।

विअय देखो विअय = विअय (भौप, गड) ।

विअय वि [वितत] १ विस्तीर्ण, विराल (महा) । २ प्रसारित, फैलाया हुआ (विते २०६१, थावक २०३) । ३ 'पक्खि पुं [पक्षिन्] मनुष्य लोक से बाहर रहनेवाले पक्षी की एक जाति 'वत्तोलाग्रो भाहि सपुण्यपक्षी विअयपक्षी' (वी २२) । देखो वितत = वितत ।

विअर सक् [वि + चर] विहरना, घूमना-फिरना । विअरड (गड ३८८) ।

विअर सक् [वि + तु] देना, धर्मण करना । विअरड (कच, भवि), विअरेणजा (कप्प) । कर्म, विअरिउअड (उल १२, १०) । वड्ड, विअरत (काल) ।

विअर पुं [दे] १ शरी आदि जलाशय सूख जाने पर पानी निभालने के लिए उसमें किया जाता गर्त, गुजरातो में 'विअरो' (ठा ४, ४—पन २८१, आभा १, १—पन ६३, १, ५—पन ६६) । २ गर्त, खड्डा, 'तथ गुत्तस पाव धनैति च महेण जिअमिअय-पाग्माण दयाण पुजे य निकरे य करेति, करेता विअरण सणति'—विअरे भरति' (आभा १, १७—पन २२६) ।

विअरण न [विचरण] विहार, चलना-फिरना (मवि १६) ।

विअरण न [विअरण] प्रदान, धरण, (पंचा ७, ६; उा ५६७ टी: सण)।

विअरिय वि [विचरित] जिनने विचरण किया हो वह विहृत (महा), 'विमलोपमह चन्नु जहलपया विपरिया गुण्णा तुम्ह' (पिउ ५६३)।

विअल धन [भुज्] मोहना, बह करना। विअनद (पाराया १५२)।

विअल धन [वि + गल्] १ गल जाना, छोए होना। २ टपचना, भरना। बह. विअलेन (पा ३६८, गुर ५, १२७)।

विअल धन [ओजय्] मज्जत होना (संति ३५)।

विअल वि [विन्दल] १ होन, धर्मपूर्ण (एह १, ३—पय ४०)। २ रहित, बजित, बन्ध (सा २)। ३ बिहृत, व्याकुल, 'विमृद-रणमहावा ह्ययति जइ केवि सयुत्तिमा' (पा २८५)। देनो विगल = विफल।

विअल सव [विरुल्य] विफल बनाना। विमलई (सण)।

विअल देसो विअड = विकट (सि ८, २१)।

विअल देसो विदल = दिदल (संबोय ४४)।

विअलधल वि [वि] दीर्घ, सम्भा (दे ७, ३३)।

विअलध वि [विमलित] १ नास-प्रवृत्त, मृष्ट (सि २, ४५; सण)। २ पतित, टपक कर गिरा हुआ, 'विमलित उचन' (वाम)।

विअल धा [वि + चय] १ चुप होना। २ धन्यस्थित होना, 'सतइ ओहा, कुह-यदणु विअलइ' (मरि)।

विअस धन [वि + कस्] निवना। विअसइ (प्राह ७९, हे ४, १६३)। बह. विअसा, विअसमाण (भीर: मुस २०)।

विअसायय वि [विअसक] निरमित करनेवाला (गज)।

विअसारिअ वि [विआसित] विरचित किया हुआ (गुता २३३)।

विअमिअ वि [विअमिन] विराड प्राप् (दा १२, नाम, गुर ३, ३२२, ४, ५८, भीर)।

विअद देनो विअद = वि + ह। संह. विअदिशु (कापा १, १, ३, २)।

विआउआ ओ [विपादिआ] रोप-विशेष, विवाई, या बेवाई (दे ८, ७१)।

विआउरी ओ [विजनायित्री] व्यानेवासी, प्रसव करनेवाली (कापा १, २—पय ७६)।

विआगर देसो वागर। विआगरेड, विआगरसि (भाचा २, २, ३, १; मुस १, १५, १८), विआगरे, विआगरेज्जा (मुस १, ६, २५; जिने ३३६; सुस १, १५, १६)। बह. विआगरेमाग (भाचा २, २, ३, १)।

विआयाय देसो यायाय (भाचा)।

विआण मक [वि + झा] जानना, मावून करना। विआणउ, विआणणि (मय: पा ४८), विआणसि (पि ५१०), विआणहि, विआणहि (एहण १—पय ३६; महा)। बह. विआणिअ (संति १६)। बह. विआणन, विआममाण (भीर, उर)। संह. विआणिआ, विआणिऊण, विआणिआ (बह १, १८; महा; भीर, बय)। ह. विआणियव (उप ५ ६०)।

विआण न [विज्ञान] जानकारी, ज्ञान, 'एकवि माय। इन्हें जियमयविहिरियण-सुविआण' (संति १६)। देनो विआण।

विआण न [वितान] १ विस्तार, फैलाव (गज १७६, ३८६, ५६२)। २ वृत्ति-विशेष। ३ धनसह। ४ यज्ञ (हे १, १७७; प्राय)। ५ पुन. चन्द्रावर, चंद्रका, भाव्यादन-विशेष (गज २००, ११८०, हे १, १७७; प्राय)।

विआणग नि [विज्ञायक] जानकार, विज्ञ (उर ५ ११६)।

विआणण न [विज्ञान] जानना, मावून करना (सि २६७, गुर ३, ७)।

विआणय देनो विआणय (मम १६०; मय भीर, गुर ६, २१, सण)।

विआणिअ वि [विज्ञान] जाना हुआ, चिन्तित (म २६७, गुता ३६१, महा, गुर ४, २१४, १२, ७१-मि)।

विआय सर [वि + जनय्] जन्म देना, प्रसव करना, 'इअयसो मे 'विआय'.' 'विआयद यअय मे विअदिई मरि' (उर ६९८ टी)। संह. विआय (यज)।

विआर सक [वि + कारय्] विहृत करना। विमारेदि (सी) (मा ५१)।

विआर नन [वि + चारय्] विचारना, विमर्श करना। विमारेड (प्राह ७१; मय), विमारिज (सत ३६)। बह. विमारियंत (या १६)। बह. विमारिजंत (मुता १४८)। संह. विआरिअ (ममि ४४)। क. विआरणिज (पा १४)।

विआर सक [वि + दारय्] फाटना, चीरना। विमारे (मय) (ममि)। संह. विमारिऊण (उर २६०)।

विआर दु [विमारे] विहृति, प्रहृति का भिन्न रूपवाला परिणाम (हे १, २३, गज: गुर ३, २६; प्राय ४६)।

विआर दु [विचार] १ सत्य-निर्णय (गज: विचार १; ध १)। २ सत्य-निर्णय के धनुकूल सत्य-रचना (जी ५१)। ३ ब्याप, शेष, 'मएणो यअरुआओ मएणो बअवि-आरुआओ' (बणू)। ४ दिखा-कराना के लिए बाहर जाना (पय २; १०१)। ५ गमनको धनुकूलता (पय १०४)। ६ विचार। ७ अवकाश, 'धतेउरे य रिअएविमारे जने यवि होय' (विता १, ५—पय ६१)। ८ विमर्श, मोमास। ९ मय, धर्मप्राय (ममि)। 'धनल दु [धनल] एक राजा का नाम (उप ७२८ टी, महा)। 'भूमि ओ [भूमि] दिखा-कराना के जाने का स्थान (बय, उर १४२ टी)।

विआरण न [विचारण] १ विचार करना (गुता ४६४, धर्म ९०)। २ वि. विचार करनेवाला 'जय विणुआह मम'बअणुअरमय-विचारण' (गुता ५२)। ३ वि. विचारण करनेवाला, 'अअरउअविआरणिआदि' (धर्म २६)।

विआरण न [विदाराण] चीरना, फाटना (धर्म ४६; स २४१)।

विआरण देनो वागरग (हुन २४२)।

विआरण वि [विदाराण] विचारण संबंधी, विचारण के उपर्य होनेवाला। ओ. 'विआ (नर १६)।

विआरआ ओ [विचारणा] विचार, विमर्श (उर ७२८ टी, ग २४७, पचा ११, १४)।

विआरणा श्री [वितारणा] विप्रतारणा,
ठगई (उप ११६) ।

विआर्य वि [विचारक] विचार करनेवाला
(पत्र ८, ५) ।

विआरि वि [विचारिन्] ऊपर देखो (श्रीप) ।

विआरिअ वि [विचारित] जितना विचार
बिया गया हो वह (दे १, १६८) ।

विआरिअ वि [विचारित] १ खोला हुआ,
काढा हुआ; 'दूरविचारिणमुत् महाबाय—
सोह' (एभि १२) । २ विशेषों किया हुआ,
बीरा हुआ (भनि) ।

विआरिअ वि [वितारित] १ भवित, दिया
गया, 'वालि या सितोहरा विचारिया दिहो'
(त ३१७) । २ ठगा हुआ; विप्रतारित, 'जह
पुल धुतेल मंह विचारियो' (सुग ३२४) ।

विआरिअ जो [दे] पूबालि का भोजन (दे
७, ७१) ।

विआरिअ } वि [विचारयत्] विचारवाला,
विआरुअ } विचारयुक्त (प्राय, हे २,
१५६) । जो, 'हा (मुपा १६४) ।

विआल देखो विआल = वि + चारय् । बह,
वियालन (उपर ८२) ।

विआल देखो विआर = वि + चारय् । ड,
वियालणिय (सुभि ३६, ३७) ।

विआल पु [विनाल] सप्ता, सॉक, चायकाल
(दे ७, ६१, कप्य, विपा १, ५—पत्र ६३,
हे ४, ३७७, ४२४, कस, भनि) । 'वारि वि
[चारिन्] विनाल मे दूननेवाला (छाया
१, १—पत्र ३८, १, ४, प्रीय) ।

विआल पु [दे] बीर लस्तर (दे ७, ६०) ।

विआल वि [व्याल] डु 'मोख विनाल
पडिगे वेहाए, महिल विनाल पडिगे वेहाए,
चितावेल्हम विनाल पडिगे वेहाए' (भाषा
२, १, ५, ४) । देखो वाल = व्याल ।

विआल देखो विचाल (राज) ।

विआलगा देखो विआलय = विकासक (अ
२, ३—पत्र ७७) ।

विआलय देखो विआरण = निचारण (श्रीप
६६ तिते १७६ पिउ ५६७) ।

विआलगा देखो विआरणा = निचारणा (विते
३४७ टी, पिउ ५६७) ।

विआलय नि [विदारण] विदारण-नर्त्ता
(सुभि ३६) ।

विआलय पु [विनालक] एव महाप्रह,
ज्योतिष देव विशेष (सुज २०) ।

विआलित म [दे] व्याप्त, चायकाल का
भोजन, 'जा महु पुताह नरयलि लगद सा
भमिणल विचारित मगई' (भनि) ।

विआलुअ वि [दे] बसहा, प्रमदियु (दे
७, ६८) ।

विआय सर [वि + आय्] व्याप्त करना
(श्रमा) ।

विआउड देखो वायड = व्यापन (धोपना
१६६, पत्र २, ६) ।

विआयत्त पु [व्यायत्त] १ धोप बीरमहाधोप
द्रवो के दारिण दिख के लोचपाल (अ ४,
१—पत्र १६८, इव) । २ शत्रुवालिना नदी
के तीर पर स्थित एक प्राचीन बँय (कप्य) ।
३ पुन, एक देर विमान (सम ३२) ।

विआयाय पु [व्यापाय] प्रसर, नाश (भाषा
१, ६, ५, ६ टि) ।

विआरिअ देखो वायड = व्यापन (धर्मसं
६७६) ।

विआस पु [विशस] १ मुँह भादि की काह—
पुनापन, 'दूल विपास मुँह' (सुप १, ५, २,
३) । २ बरकाह (गड २०१) ।

विआस पु [विशस] प्रयुक्ता (पि १०२,
भनि) ।

विआस देखो वास = व्यास (राज) ।

विआसइत्तअ (श्री) वि [विनासयितुक]
विनसित करनेवाला (पि ६००) ।

विआसगा वि [विनासक] ऊपर देखो (सुपा
६५८) ।

विआसर वि [विकसर] विकसनेवाला,
प्रफुल (पड) ।

विआसि } वि [विवासिन्] ऊपर देखो
विआसिह } (पि ४०५ सुपा ४०२ ६) ।

विआह सक [व्या + ह्या] व्याख्या करना ।
कई, विप्राहिज्यति (एदि २२६) ।

विआह पु [विवाह] १ व्याह परिष्करण,
शादी (गा ४७६, ना—मातरी ६) । २
विधि प्रवाह । ३ विशिष्ट प्रवाह । ४ वि,
विशिष्ट सदानवाला (अग १, १ टी) ।

'पणगत्ति श्री [प्रशस्ति] पांचवां जैन संग-
ग्रन्थ (अग १, १ टी) ।

विआह नि [विवाध] बाध रहित (अग १,
१ टी) । 'पणगत्ति श्री [प्रशस्ति] पांचवां
जैन संग ग्रन्थ (अग १, १ टी) ।

विआह श्री [व्याख्या] १ विशद रूप से
वर्णन का प्रतिपादन । २ कृति, विवरण ।
'पणगत्ति श्री [प्रशस्ति] पांचवां जैन संग-
ग्रन्थ (अग १, १ टी) ।

विआहिअ वि [व्याख्यात] १ जिसरी
व्याख्या की गई हो वह, बलिण (पा २२) ।
२ उक्त, बयित, 'त एव मन्त्रसत्ताए बन्नुमूए
निपाए' (गण्ड १, २६, भग) ।

विइ श्री [वृत्ति] रज्जु बन्धन (श्रीप) । देखो
यइ = वृत्ति ।

विअइ वि [निदित] शाल, जाना हुआ (पाय,
विड ८२, सनेप ४६, स १६२, महा) ।

विइइअ देखो विइकिण्य (अग १, १ टी—
पत्र ३७) ।

विइचिअ वि [वित्तिक] विनाशित (स
१३५) ।

विइत सब [वि + कृन्] वाटना, छेदना ।

विइवेइ (छाया १, १४ टी—पत्र १८७) ।

विइत देखो विचित । बह विइतंत (गड ६
६७८) ।

विइकिण्य वि [व्यतिशीर्ण] व्याप्त, फैला
हुआ (अग १, १—पत्र ३६) ।

विइमं वि [व्यतिमन्त्र] व्यतीत, पुनर
हुआ (अ ६—पत्र ४४५, उवा, कप्य) ।

विइगिंठा } देखो वितिगिंठा (भाषा,
विइमिच्छा } कस उवा) ।

विइगिट्टि वि [व्यतिष्टट] दूर स्थित, विप्रदृष्ट
(बह १) ।

विइगिण्य देखो विइकिण्य (कस) ।

विइज्जत देखो बीज = बीजय् ।

विइज्जत देखो विकिर ।

विइण्य वि [विशीर्ण] १ जिसरा हुआ,
'विइण्यवेसी' (उवा) । २ विसित, फँका
हुआ (से १०, २) । देखो विकिण्य, विकिन्न ।

विइण्य वि [वितोर्ण] दिया हुआ, भवित
(गा ३४६ ६१७ से ८, ६५ १०, ३, हे
४, ४४४, महा) ।

विङ्ग वि [विट् + ग] दृष्ट्या रहित, नि सृष्ट
(से २, १०, प्राप्ता गा ६३, १७६)।

विङ्ग देखो विचिन्ता (मउउ, स २३६, ७४०)।

विङ्ग देखो विचिन्ता (स ७४०)।

विङ्गता } देखो विअ = विद्।
विङ्गताप }

विङ्गति (शी) देखो विचिन्ता (स्वप्न
३६)।

विङ्ग देखो विअ = विद्।

विङ्ग देखो विङ्गण = वितीर्ण (सुर ४, ११)।

विङ्गमिस वि [व्यतिमिश्र] मिश्रित, मिला
हुमा (प्राचा)।

विङ्ग वि [विद्, विद्ग] विद्ग, परिष्कृत,
जानकार (प्राचा १, १६, उप ७६८ टी, सुर
१, १३४, सूत्र २, १, ६०, २३३)।
‘पुनरुद्ध क्षी [प्रवृत्त] १ विद्गान् द्वारा
प्रकाश। २ विद्गान् द्वारा किया हुमा (मग ७,
१० टी—पत्र ३२४, १८, ७—पत्र ७३०)।

विङ्ग वि [विद्युत्] विद्युत्, रहित, ‘द्वन्द्वं
पञ्चविविधं शब्द विद्यता य पञ्चवा नविष’
(सम्म १२)।

विङ्ग वि [विद्युत्] १ विरक्त। २ व्या-
ख्यात (हे १, १३१)।

विङ्ग (मग) देखो निओअ = विवोग (ह ४
४१६)।

विङ्गिआ क्षी [दे. विचिन्ता] रोग विरोध,
पामा रोग का एक भेद, वैवि विविधपामा-
समप्रिया सेवागा तत्स (सिरी ११७)।

विङ्ग सक [वि + युज्] विशेष रूप से
जोड़ना। विङ्गति (सूत्र २, २, २१)।

विङ्गति क्षी [व्युत्पन्नति] उत्पत्ति, ‘प्र-
विङ्गतिम चपमाणे’ (मग १, ७)।

विङ्गति क्षी [व्युत्पन्नति, व्यवक्रान्ति]
मरण मौत (मग १, ७)।

विङ्गम सक [व्यु + म] १ परिश्रम
करना। २ उत्पन्न करना। ३ प्र. व्युत्प
होना, नष्ट होना, मरना। ४ उत्पन्न होना।
विङ्गमति (मग टा ३, ३—पत्र १४१)।
सह. विङ्गम (सूत्र १, १, ६, उत्त ३,
१४ प्राचा १, ८, १, २)।

विङ्गस सक [व्युत् + कर्षय] गव
करना, बड़ाई करना। विङ्गसेजा, (सूत्र १,
१३, ६), विङ्गसे (प्राचा १, ६, ४, २)।

विङ्गस पु [व्युत् + कर्षय] गव, धमिमान (सूत्र
१, १, २ १२)।

विङ्गछा देखो वि-उच्छा = विद् जुगुप्सा।

विङ्गछेअ पु [व्यवच्छेद] विनाश (पचा
१७, १८)।

विङ्गजम सक [व्युद् + यम्] विशेष उद्यम
करना। वङ्ग. ‘धसियवि विङ्गजमतान’
(पचम १०२, १३७)।

विङ्गम सक [वि + गुप्] जागना।
विङ्गमद (मवि, सख)।

विङ्ग सक [वि + कुट्टय] विच्छेद करना,
विनाश करना। हेङ्ग विङ्गट्टिअए (ठा २,
१—पत्र ४६, कस)।

विङ्ग सक [वि + जोटय] तोड़ डालना।
विङ्गद (सूत्र २, २, २०)। हेङ्ग. विङ्गट्टिअए
(ठा २, १—पत्र ४६)।

विङ्ग सक [वि + धृन्] १ उत्पन्न होना।
२ विवृत्त होना। विङ्गट्टि (सूत्र २, ३,
१), विङ्गट्टा (ठा ८ टी—पत्र ४१८)।

विङ्ग सक [वि + वर्तय] १ विच्छेद
करना। २ घूमकर जाना। विङ्गट्टि (स
१७८)। सह. विङ्गट्टाण (प्राचा १, ८, १,
२)। हेङ्ग. विङ्गट्टिअए (ठा २, १—पत्र
४६)।

विङ्ग देखो विङ्गट्ट = विवृत्त (वप्प)।

विङ्गट्टण न [विपत्तं] विवृत्ति (मोव ७६१)।

विङ्गट्टण न [विङ्गट्टण] १ विच्छेद। २ घालो-
चना प्रतिवार विच्छेद (मोव ७६१)। ३
वि. विच्छेद नार्त्ता (धर्मसं ६६६)।

विङ्गट्टा क्षी [विङ्गट्टण] १ विविध वृत्त।
२ पीडा, संताप (सूत्र १, १२, २१)।

विङ्गट्टिअ वि [व्युत्पत्ति] जो विरोध में
बाधा हुमा हो वह, विरोधी बना हुमा (सूत्र
१, १४, ८)।

विङ्ग सक [वि + नाशय] विनाश
करना। विङ्गद (हे ४, ३१)। मर्म.
विङ्गट्टिअ (म ९७६)।

विङ्गण न [विनाशन] १ विनाश (स २७;
६६१)। २ वि. विनाश-कर्ता (स ३७,
२८२)।

विङ्गिअ वि [विनाशित] नष्ट किया गया
(प्राचा, कुमा, उप ७२८ टी)।

विङ्ग वि [विगुण] गुण रहित, गुण-हीन
(हे ६, ७८)।

विङ्ग वि [वियुक्त] विरहित, वियोग प्राप्त
(सुर ३, १२३, १०, १४४, सुपा ११०,
कात, सख)।

विङ्ग देखो विअत्त = मि + वर्तद्।

विङ्गियअ देखो विङ्गट्टिअ (सूत्र २२४,
३६६)।

विङ्ग देखो विअत्त = विवृत्त (प्राचा)।

विङ्ग वि [विद्युत्] १ शण्ड (सुपा १४०)।
२ विकसित (स ७६८)।

विङ्गपण्ड वि [व्युत्पन्न] अतिशय
प्रकट—व्यक्त (मग ७, १० टी—पत्र
३२४)।

विङ्गभाअ सक [व्युद् + भाज्] शोभना,
दीपना, चमकना। वङ्ग विङ्गभाअमाण
(मग ३, २—पत्र १७३)।

विङ्गभाअ सक [व्युद् + भाजय] शोभित
करना। वङ्ग. विङ्गभाअमाण (मग ३, २)।

विअम वि [विद्ग] विद्गान् विअ, विअम
का पवहिक सययं (सूत्र १, २, २, ११)।

विअर देखो विअर (वेणी १३४)।

विअर वि [विपुल] १ प्रभूत, प्रभुर। २
विस्तार, विशाल (उवा, मीर)। ३ जलम,
थेष्ट (मग ६, ३३)। ४ पमाप, गम्भीर
(प्राचा)। ५ पु. राजगिर ने समीप का एक
पर्वत (पचम २, २७)। ‘जस पुं [यरास्]
एक तिनदेव का नाम (उप ६८६ टी)। ‘मद्ग
क्षी [भति] मन पर्यंत नामक ज्ञान का एक
भेद (वम्म १, ८, प्राचम)। २ वि. उक्त
ज्ञानराज (वप्प, मीर)। ‘अरी क्षी
[‘अरी] विद्या विरोध (वम्म ७, १३८)।
देखो विपुल।

विअर देखो विअर = वैश्वि (वम्म ३, २)।
विअरसिय देखो विओसिय = व्याख्यान
(पचम)।

विजयाय पुं [व्युत्पात] हिंसा, प्राणि-व्यय (सूत्र २, ४, ३) ।
 विजय्य तच्च [वि + कृ, वि + युच्] ।
 बनाना—दिश्य सामर्थ्यं मे उत्पन्न करना ।
 २ धनं कृत्य करना मरिच्यन करना । विजय्य
 विजय्य (भग वप महा, पि ५०८) ।
 भूरा विजय्यमु । भवि, विजय्यस्सति (भग
 ३, १—पत्र १५६), विजय्यस्सामि (पि
 ५३३) । वट्ट. विजय्यमाण (गुज २०) ।
 वक्क. विजय्यमाण (ठा १०—पत्र
 ४०२) । वट्ट. विजय्यमाण, विजय्यमाण,
 विजय्यमाण, विजय्यमाण (महा, पि ५८३,
 भग वप सुपा ४७) । वट्ट. विजय्यमाण
 (पि ५८८) ।
 विजय्य न [वैक्रिय] । शरीर-विशेष, अनेक
 स्वभावो धीर क्रियाया को करने में समर्थ
 शरीर (पत्रम १०२, ६८, पत्र १६२, वप
 १, १७) । २ वर्म विशेष, वैक्रिय शरीर को
 प्राति वा कारण भूत वर्म (कम्म १, ३३) ।
 ३ वि. वैक्रिय शरीर से संकम रखनेवाला
 (कम्म ४, २६) ।
 विजय्यणया श्री [विक्रिया, विक्रयणा]
 विजय्यणा } १ बनावट, शक्ति विशेष से
 किया जाता वस्तु निर्माण (सूत्रमि १६३,
 मीप. पत्रम ११७, ३१, पत्र २३०) । २
 शक्ति-विशेष, वैक्रिय-करणा शक्ति (वेवण्ण
 २३०) ।
 विजय्याड वि [वे] । विस्तोर्णः । दुःख-पहित
 (दे १, १२६) ।
 विजय्य वि [वैक्रियिन्, विक्रियिन्] ।
 विक्रयणा करनवाला (उप ३५७ टी) । २
 वैक्रिय शरीरवाला (उत्त १३, ३२, सुख १३,
 ३२) ।
 विजय्यवि वि [विक्रिय, विक्रियिन्] ।
 विमित, बनाया हुआ (भग. महा. मीप. सुपा
 ८८) । २ वस्तु, विभूषित (वट्ट १) ।
 विजय्यवि वि [वैक्रियिन्] वैक्रिय शरीर से
 संकम रखनेवाला (कम्म ४, २४) । देखो
 वेजय्यवि ।
 निज सक [व्युत् + सृज्] फैला ।
 विजय्य (भावा २, ३, २, ५) विजयिरे
 (भावा २, १६, १) ।

विजस नि [विहस] विज, परिहृत (पात्र,
 उप ५ १०६, सुपा १००, प्रागू ६३, भवि,
 महा), 'विजोर्ण' (वेवण्ण ७७४), 'विजमाण'
 (साम्मत २१६) ।
 विजसग देगो विजोसग (हि २, १७४,
 पट्ट) ।
 विजसमण न [व्युत्समण, व्यवशमण] ।
 उराम, उराम्य । २ गुरु वा वयसा,
 'ता ते ए' पुरिते विजसमणालगमममि
 वैरिखए सापाद्योत्तं पचयुत्तमवमाणे जिहरी'
 (गुज २०, मग १२, ६—पत्र ५७८)
 ३ वि. विनाश, 'सम्यक्परायणा विजस-
 मण' (पट्ट २, १—पत्र १००) ।
 विजसमणया श्री [व्युत्समणा] उराम,
 कोप-परित्याग (भग १७, ३—पत्र ७२६) ।
 विजसमिय देतो विजोसमिय (राव) ।
 विजसरण न [व्युत्सर्जन] परित्याग (दस
 १) ।
 विजसरणया श्री [व्युत्सर्जना] ऊपर देतो
 (भग, एपाया १, १—पत्र ४६) ।
 विजसय देतो विओसव । वट्ट. विजसवेत्ता
 (कम्म १, ३६ डि) ।
 विजसयण देतो विजसमण (पट्ट २, ४—
 पत्र १३१) ।
 विजसयि देतो विओसयि (ठा ६—पत्र
 १७०) ।
 विजसिजा देतो विओसिजा (भावा १, ६,
 २, २) ।
 विजसरणया देतो विजसरणया (राव
 १२८) ।
 विजस सक [वि + उडा] विशेष बोलना ।
 विजसति (सूत्र १, १, २, २३) ।
 विजस सक [विहस्य] विद्वान् की तरह
 भावण करना । विजसति (सूत्र १, १
 २, २३) ।
 विजस्सग देतो विओसग (भग १, ६,
 उत्त ३०, ३०) ।
 विजस्सिजा वि [व्युत्सित, व्युत्सिज] ।
 भविनिविष्ट, न्याय-प्रशुभ (सूत्र १, १, १,
 ६) ।
 विजस्सिय वि [व्युत्पित] विशेष रूप से रहा
 हुआ (सूत्र १, १, २, २३) ।

विजस्सिय वि [व्युत्पित] विविध तरह से
 भावित, 'संसारं ते विजस्सिया' (सूत्र १,
 १, २, २३) ।
 विजह वप [व्युह] वेरणा करना । वट्ट.
 विजिहाण (दग ४, १, २२) ।
 विजह नि [विजुध] । परिहृत, मित्रान् । २
 पुं. दय, गुरु (ह १, १७७) । देहा विजुह ।
 विजुरि नि [दे] मट्ट. नारा-प्रात (दे ७,
 ७२) ।
 विजुरि रा [व्युत् + सृज्] परित्याग
 करना, 'विजुरिरे विजु मगारवण' (भावा
 २, १६, १) ।
 विजुह पुं [व्युह] रचना विशेष (पंचा ८,
 ३०) ।
 विजु नि [विनेजस्] महान् प्रकार,
 'अर्थविजुणवि गवमाण ए
 एण्णवति संकप्पा ।
 विजुजुधो बहलसेण मोहेह पच्योर्ण'
 (गट्ट) ।
 विजुण म [दे] चुनकर, 'सुयसापरा विजु-
 ऊण जेण सुयस्यणमुत्तम दिण' (पण
 १—पत्र ४) ।
 विजस पु [विदेरा] । देशान्तर, परदेश
 (सिंह ४६७, महा) । २ कुचित भ्रम, क्लेश
 वाव । ३ वन्यन-स्थान (पा ७६) ।
 विओज पु [वियोग] जुवाई विद्योह, विरह
 (स्वप्न ६३, मगि ४६, हे १, १७७, गुरु
 ४, १५२, महा) ।
 विओज वि [वियोजित] जुवा किया हुआ
 (वे ६, ७१, पा १३२, ॥ ६८, गुरु १५,
 २१७) ।
 विओज देतो विओज (गुरु २, २१५, ४,
 १५१, महा) ।
 विओगिय वि [वियोगित] वियोग प्राप्त
 (वर्मवि १३१) ।
 विओज सक [वि + योजय्] भ्रम
 करना । विओजयति (सूत्र १, ४, १, १६) ।
 विओजय वि [वियोजक] वियोग-कारक
 (त ७५५) ।
 विओदर पुं [वृकोदर] भीमसेन, एक पाण्डव
 (नाट—वेणो ३६) ।
 विओयण न [वियोजन] वियोग, विद्योह
 (गुरु ११, ३२) ।

विओरमण न [व्युपरमण] विराचना-
विनाश 'यकायविओरमण' (श्लोक १६०,
श्लोक ३२६)।

विओट नि [दे] शनि, उद्वेग-युक्त (दि ७,
६३)।

विओवाय पुं [व्यवपात] अश्रु, नाश
(भाषा: सूत्र १, ३, १४)।

विओसग्न पुं [व्युत्सर्ग] परित्याग। २
तत्र विशेष, निरोहण से शरीर भादि का
त्याग (श्लोक)।

विओसमण देखो विउसमण (पराह २, २—
पत्र ११८, २, ५—पत्र १४६)।

विओसमिय वि [व्यवशमित] उपशान्त
किया हुआ (कस ६, १ टि)।

विओसरणया देखो विउसरणया (श्लोक)।

विओसय सक [व्यय + शमय] उपशान्त
करना, ठण्डा करना, दवा देना। सङ्ग.
'न भगिरण भ-विओसयेचा' (कस)।

विओसविय } देखो विओसमिय, 'भवि-
विओसविय } मोक्षविषयाहुते' (कस १,
३५, ५, ५), विमोक्षविय वा पुण्यो उन्दो-
त्तरे' (कस ६, १, ४, ५ टि)।

विओसिज्जा भ [व्युत्सृज्य] परित्याग कर
(भाषा १, ६, २, १)।

विओसिय वि [व्ययसित] पर्यवसित, समाप्त
किया हुआ (सूत्र १, १, १५)।

विओसिय वि [विओशिन] कौर पक्षित,
सितवरण नगा 'विउ(?)सियवरसि—'
(पराह १, ३—पत्र ५५)।

विओसिर देखो विउसिर (पि २३५)।

विओह पु [विओध] नागरण जागृत
(भवि)।

विओ न [दे] वाय निरेण (पत्र)।

विओणिज वि [दे] १ पाठित, विदारित।
२ धारा (दि ७ ६३)।

विओउ पुं [वृश्चिक] जन्तु विशेष, विष्णु (हे
१, १२८ २ १६ ८६)।

विओ सक [वि + पट्] भक्षण होना। विधद
(प्राह ७१)।

विओउ } देखो विओउ (हे १, २६, २,
विओउ } १६ गुण ३६ १४८ पदम
३६, १७, प्राप्ति प्राह २३ गा २३० भ)।

विओण देखो वओण 'तेतोसविओण' (चद)।
विओण देखो विओण = व्यञ्जन, पुनरातो में
'विओण' (रमा २०)।

विओ पुं [विन्ध्य] १ पर्वत विशेष, विन्ध्याचल
(गा ११५, शायमा १, १—पत्र ६४)। २
व्याघ्र, बहेलिया (हे १, २५, २, २६, प्राप्ति)।
३ एक जैन मुनि (विसे २५१२)। ४ एक
न छि पुत्र (मुपा ५७८)।

विओ सक [वेष्टय] वेष्टन करना सपेन्ना,
पुनरातो में 'विट्ठु', 'विट्ठ ॥ उज्जाण
हयगपराहुमुहककोहेहि' (मुपा ५७९)। प्रयो,
सङ्ग विंदाविउ (मुपा १८६)।

विओ न [वृन्त] फल-पत्र भादि का बचन
(हे १ १३६ प्राह ४, रमा, प्राप्ति १०२)।
विओल } न [दे] १ परीवरण विद्या,
विओलिज } 'भगवति कुशलवि(उत्तवि)-
त्ताह करतपावाहे कम्मा' (विदि ५७)।
२ निमित्त भादि का प्रयोग (वह १), विटनि
भाणि पट्ठति' (गच्छ ३, १३)।

विओलिआ ओ [दे] गठरी, पोतली, पुनरातो
में 'विट्ठु', 'ठाव कुमरेण खिता तनुपमा
वत्यविट्ठिया', 'ठीए विन्तियाए' (मुपा
२६१)।

विओतिआ ओ [दे] १ गठरी पोतली (मुल २,
५, वन १४२ टी)। २ मुद्रिका मणुलीयक,
पुनरातो में कीर्ति, 'उज्जावरवि मुका
कणममविट्ठिया नियमा' (मुपा ६११),
'पड्विप्राप्ति मणिविडि(गि)गाहि वह प्रष्ट
सीधो ति' (स ७६)।

विओर पु [वृन्तर] १ विष्णु भादि दुष्ट जन्तु
(वय १६४) दुष्टाण की न बीहड़ विरर
सम्पाण व खाण' (बजा १२)। २ एक
देव-जाति, 'निन्धुगाए नपणे हि विररा भवि
निकरा' (सा १२ ८ २)।

विओमी ओ [वृन्तामी] बैसन का गाछ
विंद सक [विन्द] १ जानना। २ प्राप्त करना
धम्म ज ज विदति तव्य तव्य' (सूत्र १४,
२७)। वृह विंदमाण (शायमा १ १—पत्र
२६, विपा १, २—पत्र ३४)।

विंद देखो वद-वृन्द (भवि पि ३६८)।

विंदारय } देखो वंदारय (मुपा ५०३, नाट—
विंदारय } शुक्र ८८)। वर पुं [वर] इन्द्र
(सम्मत ७२)।

विंदावण पुन [वृन्दानन] मधुरा का एक
वन (ती ७)।

विंदुरिड वि [दे] १ उज्ज्वल, देदीप्यमान।
२ मनुज योगवाना कर-कठ। ३ विद्यापू,
म्लान। ४ विस्तृत, 'पटाहि विंदुरिडामुर-
वल्लीविमाणासुसार नहोती (कण्ठ)।

विंदू देखो वदू (प्राह ३६)।

विंद्रावण देखो विंदावण (प्राह ३६)।

विंध सक [व्यध] बोधना, श्रवना, शेषना।
विंध, विंधेजा (पि ४८६, भग)। वृह.
विंधत (सुर २, ६३)। सङ्ग, विंधिअ
(नाट—मुपद २१३)। हेह विंधिउ (स
६२)। क विंधेयव्य (मुपा २६६)।

विंधण न [व्यधन] श्रवण, शेषना 'सकल-
विंधण—' (पर्वणि ५२)।

विंधिअ वि [विध] जो बोधा गया हो नह,
छिन (सम्मत १५८)।

विंभय देखो विंमहय = विलय (भवि)।

विंभर देखो विंमहर। विंभर (पि ३१३)।

विंभल वि [विहल] व्याकुल, चढहावा
हुआ 'विंभलवि' (वय ५६७ टी, मुप ६०,
५६८, भवि श्लोक ७३)।

विंभिअ वि [विंसित] भाष्ययं चरित
'मोघुणह दीवमो विंभ (?नि)ओ व्व पण्णा-
हमो सीध' (बज्जा ६९, भवि)।

विंभिअ देखो विओभिअ 'सोहगाविमिमासाए'
(बज्जा ८६)।

विंसदि (श्री) ओ [विंशति] बीघ, २०
(प्रयी २०)।

विंरथ सक [वि + पत्थ] प्रशंसा करना।
विंरथदमा (सूत्र १, १४, २१)।

विरूप सक [वि + कम्प] हिल जाना,
चलित होना। वृह. विरूपमाणो (सूत्र १,
१४, १४)।

विरूप सक [वि + कम्पय] १ हिलाना,
चलाना। २ त्याग करना, छोड़ना। ३ शयने
मंडल से बाहर निकलना। ४ नेत्र प्रवृत्त
करना। विरूप (सूत्र १, १)। सङ्ग
विरूपदत्ता (सूत्र १, ६)।

विरप वि [विंरप] गम्प, छिन (पना
१८, १५)।

विहङ्ग देवो विहङ्ग ।

विहङ्ग वि [विहङ्गान्त] १ पराक्रमी, शूर (एणाया १, १—पत्र २१; विवे १०५६; प्राप् १०७. वप्) । २ पुं. पहली नरक-भूमि वा बारहवाँ नरकेन्द्रक—नरक-स्थान विशेष (देवेन्द्र ५) ।

विहङ्गि वी [विहङ्गान्ति] विक्रम, पराक्रम (एणाया १, १६—पत्र २११) ।

विहङ्ग देवो विस्तरंभ = विस्तरम्भ (देवेन्द्र ३-६) ।

विहङ्गण न [विहङ्गण] विहङ्ग, वेचना (सुरा ६०६, सङ्घि ६ टी) ।

विहङ्ग सक [वि + हङ्ग] पराक्रम करना, शूरता विस्तारना । भवि. विहङ्गमस्तवि (श्री) (पार्थ ६) ।

विहङ्ग पुं [विहङ्ग] १ शीघ्र, पराक्रम (हुमा) । २ सामर्थ्य (गडड) । ३ एक राजा का नाम (सुवा ५६६) । ४ राजा विक्रमादित्य (रमा ७) । *जम पुं [*यशस] एक राजा (बहा) । *पुर न [*पुर] एक नगर का नाम (ती २१) । *राय पुं [*राज] एक राजा (महा) । *सेण पुं [*सेन] एक राज-नुमार (सुवा ५६२) । *इक्ष, *इक्ष पुं [*विश्य] एक सुविप्र राजा (गा ५६४ अ, सम्पत् १४६, सुवा ५६२, गा ४६४) ।

विहङ्गण पुं [वि] वनुर चालवाला घोडा (दे ७, ६७) ।

विहङ्गि वि [विहङ्गिन्] पराक्रमी, शूर (हुमा) ।

विहङ्ग वि [विहङ्ग] व्याकुल, बेचैन (पत्र १६६; प्राप्, सबोध २१) ।

विहङ्गयमाण देवो विहङ्ग ।

विहङ्ग देवो विहङ्ग; 'ते माहविनिङ्गयो पुण मिच्छतपरा, न ते मुणिए' (संजोव १६) ।

विहङ्गि वि [वि] सकल, बुधारा हुमा (दस ७, ५३) ।

विहङ्गि वि [विहङ्ग] छिन्न, काटा हुमा (पण्ड १, ३—पत्र ५४) ।

विहङ्गि देवो विहङ्ग (संजोव ५८) ।

विहङ्गि सक [वि + हङ्ग] वेचना । विहङ्गिण्ड (प्राप्) । कर्म. विहङ्गिणीमत्ति (पि ५४८) ।

वह्. विहङ्गिण, विहङ्गिण (पि ३६७; सुवा २७६) । संह. विहङ्गिण (नाट—मुच्छ ६५) ।

विहङ्गिण [वि + विनीत] वेचा हुमा (सुवा विहङ्गि ६४२; भवि) ।

विहङ्गि देवो विहङ्ग = वैहङ्गि. 'वयविहङ्गो सुतो व्व सन्निपसि' (सुवा १८७), 'वयविहङ्गि-नाथो देवुव' (सम्पत् १०४) ।

विहङ्गि सक [वि + हङ्ग] विहरेला, छितराया, फैलाया । कवह. विहङ्गिजमाण (राय १४) ।

विहङ्गिया वी [विहङ्गिया] विकृति, विचार. 'तोए नवणाएहि विहङ्गियं कुणइ' (सुवा ५१४) । देवो विहङ्गिया ।

विहङ्गी देवो विहङ्गि = विहोत (सुर ६, १६५; सुवा ३८३) ।

विहङ्ग सक [वि + हङ्ग] वेचना । विहङ्ग, विहङ्ग (दे ४, ५२; प्राप्, बाला १५२) । क. विहङ्ग (दे ६, ४०; ७, ६६) ।

विहङ्गुण वि [वि] विहङ्ग, वेचने योग्य (दे ७, ६६) ।

विहङ्गो पुं [विहङ्गो] विहङ्गण, शृणा से बुहं विहङ्गना (दे ३, २८) ।

विहङ्गो सक [वि + हङ्ग] विस्तारना । विहङ्गो (मा) (मुच्छ २७) ।

विहङ्गं पुं [वि] १ स्थान, जगह (दे ७, ८८) । २ संतराल, बीच का भाग (दे ७, ८८, दे ६, ५७) । ३ निम्न, छिद्र (पि ३, १४) ।

विहङ्गं पुं [विहङ्गम्] १ विस्तार (पण्ड १—पत्र ५२, ठा ४, २—पत्र २२६; दे ७, ८८, प्राप्) । २ चौड़ाई 'बहुद्वीपे दीपे एग जोयणसहस्रं भायामविस्त्रमेण पणणसे' (सम २) । ३ बाढ्य, स्थूलता, मोटाई (मुज १, १—पत्र ७) । ४ प्रतिक्व, विरोध (सम्यक्त्वो ८) । ५ नाटक का एक अंग (कम्पु) । ६ द्वार के दोनों तरफ के बीच का अन्तर (ठा ४, २—पत्र २२३) ।

विहङ्गिण वि [विहङ्गिण] निहड, रोका हुमा (सम्यक्त्वो ८) ।

विहङ्गण न [वि] नाव, वाय, मान (दे ७, ६४) ।

विहङ्गण वि [विहङ्ग] बण-भुक्त, कृत बण (भग ७, ६—पत्र ३०७) ।

विहङ्गण सक [वि + हङ्ग] १ छितरना, छितर-छितर करना । २ फैलाना । ३ इधर-उधर फैलना । विहङ्गण (कम्पु), विहङ्गण (उवा २०० टि) । वनह. विहङ्गिजमाण (सुवा) ।

विहङ्गण न [विहङ्गण] १ बिनाश । २ वि. विनाशक, 'वज्रं मर्षलाडिवक्कविहङ्गण' (सुवा ५७) ।

विहङ्गण वी [विहङ्गण] प्रसिद्धि (भवि) । विहङ्गाय वि [विहङ्गाय] प्रसिद्ध, विप्रुत (प्राप्, मुर १, ४६; रंभा, महा) ।

विहङ्गाय वि [वि] विहङ्ग, बराब, कुसित (दे ७, ६३) ।

विहङ्गण वि [वि] १ भावत, लम्बा । २ धरतीण । ३ त. जपन (दे ७, ८८) ।

विहङ्गण देवो विहङ्गण (कस) ।

विहङ्गाय वि [विहङ्गाय] १ फैला हुमा (प्राप्, कस, गडड) । २ भास, पालन; 'पनुतविहङ्गायणे परियणे' (वप ७३८ टी; दे १, १३३; महा) ।

विहङ्गण देवो विहङ्गण । विहङ्गण (उवा) ।

विहङ्गिण वि [विहङ्गी] विहङ्गा हुमा, छितरा हुमा, फैला हुमा (सुर ५, २०६; सुवा २४६; गडड) ।

विहङ्गण सक [वि + हङ्गि] १ दूर करना । २ प्रेरना । ३ फैलना । विहङ्गण (महा) ।

विहङ्गण न [विहङ्गण] १ दूरेकरण । २ प्रेरणा (पत्र ६४) ।

विहङ्गण पुं [विहङ्गण] १ सोम. 'द्वीहो विहङ्गो' (प्राप्) । २ उवाट, ग्लानि, खेद (स ४, ३) । ३ ऊँचा फैलना, ऊर्ध्व-क्षेपण (सोपमा ३६३) । ४ फैलना, क्षेपण (गा ५८२) । ५ शृंगार-विशेष, प्रवृत्ति से किया हुमा मण्डल (पण्ड २, ४—पत्र १३२) । ६ चित्त-भ्रम (स २८२) । ७ विहङ्ग, देह (स ७३५) । ८ सैन्य, सरकर (स २४; ५७३) ।

विहङ्गणी वी [विहङ्गणी] वया ना एक मेद (ठा ४, २—पत्र २१०) ।

विक्सेविया स्त्री [विक्सेपिवा] व्योलेष,
विसेन (वव ६) ।

विक्सेरोड सक [दि] निन्दा करना, गुजरवाती
मे 'बलोछु' । विक्सेरोडे (गिरि ८२५) ।

विस्लेडिय वि [विलिण्डित] खलिखत किया
हुमा (पदम २२, ६२) ।

विगा देखो विअ = वृत् (एहह १, १—पत्र
७, सण, श्यामा १, १—पत्र ६५) ।

विगाइ स्त्री [विकृति] १ विकारजनक वृत्त
भादि वस्तु (श्यामा १, ८—पत्र १२२,
उव, स ७२; धा २०) । २ विकार (उत्त
३२, १०१) ।

विगाइ स्त्री [विगति] विनारा (विसे २१४६) ।
विगाइगाल वि [विगतान्नार] राम-रहित
(भोष ५७६) ।

विगाइन्छ वि [विगतोच्छ] इच्छा-रहित,
नि ह्यइ (उप १३० टी, ६१३) ।

विगिंच देखो विगिंच । सङ्क. निगचिउं,
विगिंचिऊण (वव २, सवोष ५७) ।

विगिंचण देखो विगिंचण, 'काए कहुणए कजे
तहा खेतविगचण' (सवोष ३) ।

विगिचिअ देखो विगिचिअ (स १३५ टि) ।

विगच्छ सक [वि + गम्] नष्ट होना ।
वह. विगच्छत (सम् १३५) ।

विगाइक देखो विगाह = वि + ग्रह् ।

विगाइ देखो विअग = विअट (एहह १, ४—
पत्र ७८, चौर) ।

विगाइ देखो विअड = विवृत् (ठा ३, १ टी—
पत्र १२२) ।

विगण सक [वि + गणय्] १ निन्दा
करना । २ धुषा करना । कनक विगणिज्जत
(हुं १४) ।

विगत्त सक [वि + कृत्] काटना, छेदना ।
सङ्क. विगत्तिऊण (सुभ ६, ५, २, ८) ।

विगत्त वि [विकृत्] काटा हुआ, छिन्न
(एहह १, १—पत्र १८) ।

विगत्ता वि [विनर्तक] मान्यवाला (सुभ
२, २, ६२) ।

विगत्तणा स्त्री [विनर्तना] छेदन (उव) ।
विगत्तय वि [विनर्तय] प्रश्ला करनेवाला,
आत्मश्लाया करनेवाला (अवि) ।

विगाप्प देखो विअप्प = वि + पल्पद् । वङ्क.
विगाप्पयंत, विगाप्पमाण (सुर ६, २२४,
३, १२४) ।

विगाप्प पुं [विनरूप] १ एव पद मे प्राप्ति,
'बसहो विगाप्पे' (वव ३, ५४) । २
देखो विअप्प = विकल्प (श्यामा १, १६—
पत्र २८८, सुर ३, १०२; ४, २२२; सुभा
१२६, जो २५) ।

विगाप्पण देखो विअप्पण (उत्तर २३, ३२,
महा) ।

विगाप्पिअ वि [विकल्पित] १ उपेक्षित,
वर्जित (वव २, उव) । २ चिन्तित, विचारित
(वव १४५) । ३ बाटा हुआ, छिन्न, 'हृत्पया-
यपिच्छिन्नं कननानविगप्पिअ' (दस ८, ५६) ।

विगम पुं [विगम] विनारा (सुर ७, २२६,
१२, १६) ।

विगय वि [विकृत्] विनार-प्राप्त (श्यामा १,
२—पत्र ७६, १, ८—पत्र १३३) ।

विगय वि [विगत] १ नारा-प्राप्त, विनष्ट
(सम् १३५, विसे ३३७७, पिंड ६१०) ।

२ पु. एक नरक-स्थान (देवद २६) । 'धूम
वि [धूम] द्वेय-रहित (भोष ५७६) ।

'सोग पुं [शोक] एक महा-ग्रह, ज्योतिष
देव-विरोध (ठा २, ३—पत्र ७८), देखो
वीअ-सोग । 'सोगा स्त्री [शोका] विनय-
विरोध की एक नगरी (ठा २, ३—पत्र ८०) ।

विगरण न [विवरण] परिक्षाण, परित्याग
(कस) ।

विगरह सक [वि + गह्] निन्दा करना ।
वह. विगरहमाण (सुभ २, ६, १२) ।

विगराल वि [विराल] भीषण, समकर
(सुभा १८२, ५०५, सख) ।

विगल सक [वि + गल्] टपकना, घूना ।
विगल (वद्) ।

विगल पु [विरल] १ निकलेन्द्रिय—दो,
तीन या चार ज्ञानेन्द्रियवाला जन्तु (कम्म ३,
११, ४, ३, १५, १६, जो ५१) । २ देखो
विअल = निक्ल (उव, उव पु १८१, पचा
१४, ५७) । 'दिंस पु [दिंस] नय वाक्य
(अनक ६२) ।

विगलिदिय पु [विनलेन्द्रिय] दो, तीन या
चार इन्द्रियवाला जन्तु (ठा २, २, ३, १—
पत्र १२१) ।

विगत सक [वि + कम्] खिलना, फूलना ।
विगर्षित (हुं ५३) । वङ्क. विगर्स्त (श्यामा
१, १—पत्र १६) ।

विगह स [वि + ग्रह्] १ सडाई करना ।
२ वगै मूल विगतता । ३ समान भादि का
समानार्थक वाक्य बनाना । सङ्क. 'भूमो भूमो
विगाइक भूमति' (ववा २, १६) ।

विगह देखो विगाह; 'हातावविगजए विगह-
मुल्ल' (वङ्क २, ३३) ।

विगहा स्त्री [विरुधा] शास्त्र-विरोध वाता,
जो भादि की अनुपयोगी बात (भग, उव, सुर
१४, ८८, सुभा २५२, गच्छ १, ११) ।

विगाड वि [विगाड] १ विशेष गाड, अतिशय
निविड (उव १०, ४ टी) । २ चारो ओर से
व्याप्त (राज) ।

विगाण न [विगान] १ ज्वनीय, लोहापवाद
(दे ३, ३) । २ विप्रतिपत्ति, विरोध (धर्मसं
२६६, वेदम ७५६) ।

विगार पु [विनार] विकृति, प्रकृति का प्रत्यय
परिष्ठाप (वव ६८६ टी, विसे १६८८) ।

विगारि वि [विनारिण] विकृत होनेवाला
(पिंड २८०, पदम १०१, ४८) ।

विगाल देखो विआल = विकाल (सुर १,
११७) ।

विगालिय वि [विगालित] विनम्रित, प्रती-
क्षित, 'एतियमेत काल विना (भा)लिय
जेण प्रासाए' (सुर ६, २३) ।

विगाह सक [वि + गाह्] १ भवगाहन
करना । २ प्रवेश करना । सङ्क. विगाहिआ
(सव ४०) ।

विगिंच सक [वि + विच्] १ धृक्
करन, अवग करना । २ परित्याग करना ।
३ विनारा करना । विगिंचइ, विगिंचए,
विगिंचति (भावा, कस, भाक २६२ टी,
सुभ १, १, ४, १२, पिंड ३६६), विगिंच
(सुभ १, १३, २१, उव ३, १३, पिंड
३६५) । वह. विगिंचव, विगिंचमाण
(भावक २६२ टी, प्राचा) । सङ्क. विगिंचि-
ऊण, विगिंचिता (पिंड ३०५, भावा) ।

हेह. विगिचिउं (पिंड ३६८) । क. विगिचिच्यञ्च (पि ५७०) ।

विगिचण न [विचेचन] परिष्ठाण, परिष्ठाण (पिंड ४८३, वत्त) ।

विगिचणया } की [विचेचना] १ निर्वाच,
विगिचणा } विनारा (ठा ८—पत्र
विगिचिणिआ ४४१) । २ परिष्ठाण (भोपमा
२०६; स ५१, भोय ६०६, ८७) ।

विगिच्छा की [विचिच्छिरसा] संदेह, संशय, सहम (आ ३, पठि) ।

विगिद्ध देखा निक्किट्ट, 'भने तव विगिद्ध' काउ
चोवावसेससाया (पठम २, ८३, ४, २७,
मच्छ २, २५, उल ०६, २५३) । २ रूमग
पु ["अपक"] तरली साधु (राज) । ३ भक्ति
वि ["भक्ति"] लगातार चार या उससे
अधिक दिगो ना उपवास करनेवाला (वप) ।

विगिय देखो विगिय = विहृत (भोपमा २८६) ।

विगिला } एक [वि + गले] विशेष स्थान
विगिलाउ } होना, खिन होना । विगिलाह,
विगिलाएजा (पि १३६, प्राचा २, २, ३,
२८) ।

विगुण वि [विगुण] १ छुल रहित (सिरि
१२३३, प्रादु ७१) । २ मनगुण, प्रसिद्ध
(पचा ६, ३२) ।

विगुत्त वि [विगुत्त] १ तिरस्कृत, अवधोस्त
(आ १२) । २ जो छुला पत्र गया हो वह,
जिसकी पोल खुल गई हो वह, जिसकी कजी-
हत हुई हो वह, 'सदुक्कविगुत्तो' (आ १४,
धर्मि ७७) ।

विगुप्प देहो विगोय ।

विगुज्जणा देखो विज्जवणा (ठा १—पत्र
१६) ।

विगुज्जिय देखो विज्जिज्ज (पठम ३६,
३२) ।

विगोइय वि [विगोपित] जिसका दोष प्रकट
जिया गया हो वह (सण) ।

विगोय सक [वि + गोपय] १ प्रकाशित
करना । २ तिरस्कार करना । ३ कमीद्व
करना । भवि, 'न खु न खु चजेवगुत्तगो
भोइ मुदुदित्त पचाइय मण्णाण विगोवित्त'
(मोह १०) । धर्म, विगुप्पमु (धर्मि १३४),

विगुप्पहि (भप) (भवि) । सङ्क. विगोवित्ता,
विगोवइत्ता (कण, खाया १, १६—पत्र
२४४) ।

विगोयण न [विगोपन] विकास, 'तर्हाय य
वसिज्जवो सोममइविगोवसुममुदु' (थावक
२२८) ।

विग्गह पुं [विग्गह] १ बक्का बाँक (ठा २,
४—पत्र ८६) । २ शरीर, देह (पाम्, स
७२६, सुपा १६) । ३ बुद्ध, सडाई (स
६३४) । ४ समास आदि के समान धर्मवाला
वाक्य (विसे १००२) । ५ विभाग (ठा
१०) । ६ भाकति, प्राकार, 'वरवइरविग्गह'
(मय २, ८) । गइ की [गति] बाँकवाली
गति, वरू गति (ठा २, १—पत्र ३५, भव) ।

विग्गहिय वि [विग्गहिक] शरीर के धनुका,
'विग्गहिय उज्जयुक्की' (पणह १, ४—पत्र
७८) ।

विग्गहीउ वि [विग्गहिक] बुद्ध-प्रिय, 'जे
विग्गहीउ धनयमासी' (सुम १, १३, ६) ।

विग्गाहा (भप) की [विगाथा] छन्द विशेष
(सिग) ।

विग्गुत्त नि [दे] व्यापक किया हुआ
(भवि) ।

विग्गुत्त देखो विगुत्त (धर्मि ५८, ६८) ।

विग्गोच देखो विगोच । सङ्क. विग्गोवित्ता
(वप, भोप) ।

विग्गोय पुं [दे] धातुलता, व्याकुलता (दे ७,
६४, भवि, वजा २३) ।

विग्गोयणा की [विगोपना] १ तिरस्कार ।
२ कमीद्व (उव) ।

विग्ग पुं [विग्ग] १ भन्तराय, व्यापार,
प्रतिवन् (सुपा ३६५, सुपा, प्राप् ५४,
१३५; वप, कम्म १, ६१, पड) । २ धर्म-
विशेष, धारणा के नीय, दान आदि शक्तियों
ना पातक कर्म (वम्म १, ३२, ३३) । ३ कर
वि ["कर"] प्रतिवन्-कर्ता (वम्म १, ६१) ।

'ह वि ["ध"] विज्जनासक (सु ७३) ।

'वह वि ["ह"] विज्जनासक (सु १, ४३) ।

विग्गह वि [विग्गह] गृह रहित, 'वह जयर-
विग्गहिनरगणोवि न य इच्छिय सहइ'
(खाया १, १० टी—पत्र १७१) ।

विग्गिय वि [विग्गिय] विघ्न-युक्त (हम्मोय
१४) ।

विग्गुत्त वि [विग्गुत्त] चिल्लाया हुआ (विपा
१, २—पत्र २६) । देखो विग्गुत्त ।

विघट्ट सक [वि + घट्टय] १ विटुक
करना । २ विनाश करना । विघट्टेइ (उव) ।

विघट्टण न [विघट्टण] विनाश (माट) ।

विघडग देखो विहडण (राज) ।

विघरय वि [विघस्त, विमस्त] १ विरोध
रूप से भक्ति । २ व्याप्त, 'वाहिविघरयस्त
मत्तस्त' (महा, प्राप्) ।

विघर देखो विग्गह (उव) ।

विघाय पुं [विघात] विनाश (कुमा) ।

विघायग वि [विघातक] विनाश-कर्ता
(धर्मस ५२६) ।

विघुत्त न [विघुत्त] विरूप धावान करना
(पणह १, ३—पत्र ४४) । देखो विघुत्त ।

विघुम्म सक [वि + घूर्णय] जोलना ।
वह विघुम्ममाण (सुर ३, १०६) ।

विघयखु वि [विघयखु] चट्ट रहित,
धक्का (उप ७२८ टी) ।

विचचिया की [विचचिका] रोग-विशेष,
पामा (राव) ।

विचलिरि वि [विचलित] बलायमान होने-
वाला (सण) ।

विचलिरि वि [विचलित] चपल बना हुआ
(भवि) ।

विचार केहो विआर = वि + चारम् । विचा-
रति (पुच्छ १०४) ।

विचारण वि [विचारण] विचार-कर्ता (रमा) ।

विचारण देखो विआरण = विचारण (सुत्र
३६७) ।

विचारणा देखो विआरणा = विचारणा
(धर्मस ३०६) ।

विचाल न [विचाल] घन्तराल (दे ७,
८८) ।

विचिय वि [विचित] चुना हुआ (दे ७,
६१) ।

विचित सक [वि + चिन्तय] विचार
करना । विचिदे (महा) । वह, विचित्त
(सुर १२, १६६) । क. विचितियवन्,
विचितिज्ज (पंचा ६, ४६, इय ५०) ।

विचित्रण न [विचित्रित] विचार, विमर्श (धृ ६)।

विचित्रिअ वि [विचित्रित] विचारित (सुर ८, ३)।

विचित्रिअ वि [विचित्रित] विचार-वर्त (आ १२, सण)।

विचिकी छी [दे] वाच-विशेष (राय ४६)।
विचिगिच्छा छी [विचित्रिस्सा] संशय, धर्म-कार्य के फल की तरफ संदेह (सम्मत ६५)।

विचिद्रिअ वि [विचेद्रित] १ जलवी कोशिका की गई हो वह (सुपा ४७०)। २ न, चैष्टा, प्रमल (उप १२० टी)।

विचिण [सक [वि + चि] १ लोच विचिण्य करता। २ फूल आदि चुनना। विचिण्यति (पि ५०२)। वक्र, विचिण्यत (मा ४६)।

विचित्र वि [विचित्र] १ विविध, अनेक तरह का, 'विचित्रतवो कम्मेहि' (महा-राय, प्राय ४२)। २ मनुष्य, माधवकारक, 'विचित्रो विचित्र्यं जालिअ' (सुर १३, ४)। ३ अनेक रंगवाला, शबल (आमा १, ६; कप्प)। ४ अनेक चित्रों से युक्त (कप्प, सुअ २०)। ५ पुं, पर्वत विशेष (पणह १, ४—पन ६४)। ६ वेणुदेव और वेणुदार नामक इन्द्रों का एक लोकपाल (ठा ४, १—पन १६७)। ७ कूट पुं [कूट] शीतोला नदी के किनारे पर स्थित पर्वत विशेष (इक)। ८ पकर पुं [पक्ष] १ वेणुदेव और वेणुदार नामक इन्द्रों का एक लोकपाल (ठा ४, १—पन १६७, इक)। २ अनुविध्य जंतु की एक जाति (पणह १—पन ४६)।

विचित्रा छी [विचित्र] ऊर्ध्व लोक में रहनेवाली एक दिक्कमारी देवी (ठा ७—पन ४१७)। २ अश्वलोक में रहनेवाली एक दिक्कमारी देवी (राज)।

विचित्रिय वि [विचित्रित] विनिराज से युक्त (सण)।

विचुगिद (शी) देवी विचिअ (नाट—मालती ४१)।

विचुन्नण न [विचुर्णन] चूर-चूर करना, टुकड़ा-टुकड़ा करना (इ ३०)।

विचेयण वि [विचेतन] चैतन्य-रहित, निर्जीव (उप ५४६)।

विचेल वि [विचेल] यक्ष-वर्जित, नंगा (पिठ ४७८)।

विश सक [वि + अय] व्यय करना। विच्येद (ती ८)। देखो विव्य।

विश पुन [दे] व्युत्, चुनने की क्रिया (राय ६२)।

विश न [दे. वरमेन्] १ सोच, मध्य; 'विचयमि य सग्गामो कायवो परमपयेइ' (पुष्प ४२७), 'ठिमो अहं कूडकाइविच्ये' (निसा १६)। २ मार्ग, रास्ता (हे ४, ४२१; कुमा, भवि)।

विश सक [दे] समीप में आना। विचवइ (भवि)।

विशयण न [विचययन] अंश, विनाश (विसे २६१)।

विशमेखिय वि [अगरात्रेडित] १ भिल भिन यशो से विधित। २ घरदान में हो छिन हो कर फिर प्रथित, दोहर कर सोचा हुआ (विसे ८५५)।

विशाय पुं [विशयाग] परित्याग, 'पुयमि सोमययं भावो विण्णुइ विसयविचया' (संबोध ८)।

विशि छी [वाचि] तरंग, बल्लोल (पवन १०६, ४१)।

विचु [देखो विचुअ (उप ५६३; पि विचुअ) ५०० पणह १—पन ४६)।

विचुइ छी [विच्युति] अंश, विनाश (विसे १८०)।

विचोअय न [दे] उपमान, मोहोला (दे ७, ६८)।

विचं देखो विअ = विद।

विचंछ सक [वि + छंद्य] परित्याग करना। वक्र, विच्छेदमाण (आमा १, १८—पन २३६)। संक्ष. विच्छेदुत्ता (कप्प)।

विचंछ पुं [विचंद] १ श्रद्धा, विश्वास, संवत्ति (पाम. दे ७, ३२ टी, हे २, ३६, पइ)। २ विस्तार (कुमा, सुपा १६२)।

विचंछ पुं [दे] १ निवह, समूह (दे ७, ३२, गउड, से २, २; ६, ७२, या ३८७)।

२ ठाटवाट, सजधज, धूमधाम; 'महया विच्छेदुत्तां सोहलणममि गुरुमोएण'। वमलावई उ रत्ना परिलोया' (सुर १, १६६; बुध ४१; सम्मत १६३; भर्मेवि ८२)।

विचंछु छी [विचंद] १ विशेष वसन। २ परित्याग (पाम.)। ३ विस्तार; 'निम्मलो वेवनालोपलच्छिअविचंछ' (? वय) हुंकारो' (सिदि १०६१)।

विचंछुअ वि [विचंछुअ] १ परित्याग; 'पामुअं विचंछुअं भयहरिअं उज्जमं वत्त' (पाम, आमा १, १; ठा ८; भौप)। २ विरिस्त, फेंका हुआ (से १०, ४६)। ४ विच्छादित, प्राच्छादित (हम्मोर १७)।

विचंछुमाण देवो विचंछु = वि + छंद्य। विचंछुअ देवो विचंछुअ (नाट—मालती १२६)।

विचंछय वि [विक्षत] विविध तरह से पीछित (सूम १, २, ३, ५)। देखो विचंछय। विचंछल देवो विचंछल (पइ ४०)।

विचंछयि वि [विचंछयि] १ विषय शक्ति-वाला, कुडील (पणह १, १—पन ५४)। २ पुं, एक तरक-स्थान (वेणह १८)।

विचंछाय वि [विचंछायित] निस्तेज किया हुआ (सुपा १६६)।

विचंछाय वि [विचंछाय] निस्तेज, कालि-रहित, फीका (सुर ४, १०६; वपू, प्राय १३७; महा, गउड)।

विचंछाय सक [विचंछायय] निस्तेज करना, विच्छाएइ मिदं' हुसाखरिओ वणुणोएवि' (गउड)। वक्र, विचंछाअत (वपू)।

विचंछय वि [दे] १ पादित, विचारित। २ विवित, चुना हुआ। ३ विरल (दे ७, ६१)।

विचंछय देखो विचंछिअ (उत्त ३६, १४८; पि ५०, ११८, ३०१)।

विचंछद सक [वि + छिद] तोड़ना, अलग करना। विचंछद (पि ५०६)। भवि, विचंछिअविहि (पि ५३२)। वक्र, विचंछद-माण (अप ८, ३—पन ३६५)।

विचंछण वि [विचंछण] अलग किया हुआ (विआ १, २ टि—पन २८, नाट—मुच ८६)।

विच्छित्ति श्री [विच्छित्ति] १ विन्यास,
रचना (पात्र. स ११५; सुपा ५४; ८३;
२६०; गउड)। २ प्रान्त भाग (सुर ३,
७०)। ३ भ्रंगराग (गा ७८०)।

विच्छिन्न देवो विच्छिण्ण (विपा १, २ वं—
पत्र २८)।

विच्छिन्न सक [वि + क्षिप्] विशेष रूप
से स्पर्श करना। कबहु विच्छिप्पमाणा
(कप्प, औप)।

विच्छिन्न सक [वि + क्षिप्] कँकना।
संक्ष. विच्छिन्न (नाट—बैन ३८)।

विच्छु } देवो विच्छुअ (गा २३७, जो
विच्छुअ } १८; उत ३६, १४८; प्राप्
१६; छाया १, ८—पत्र १३३)।

विच्छुद्धिअ वि [विच्छुद्धि] १ विच्छुद्ध
हुमा, जो प्रसंग हुमा हो, विप्रहित, 'जहनि
हु कालवसेण ससो समुदासो बहवि विच्छु
(अणु)विमो' (वज्जा १५६)। २ कुप
(राग)।

विच्छुरिअ वि [दे] प्रवृत्त, प्रवृत्त (पइ)।
विच्छुरिअ वि [विच्छुरिअ] १ क्षिपित,
जडा हुमा, 'जहिमं विच्छुरिअयं जहिमं'
(पात्र)। २ संबद्ध, जोडा हुमा (सि १४,
७६)। ३ व्याप्त (पत्र २, १०१; सुपा ६;
२१२, सुर २, २२१)।

विच्छुद्ध सक [वि + क्षिप्] कँकना, दूर
करना। विच्छुद्ध (सि १०, ७३, गा ४२४
क)। ४, विच्छुद्धव्य (सि १०, ५३)।

विच्छुद्ध सक [वि + क्षिप्] विक्षोभ करना,
बंचल हो उठना। विच्छुद्धि (हे ३, १४२)।

विच्छुद्ध वि [विक्षिप्त] १ कँकना हुमा, दूर
किया हुमा (सि ६, १६)। २ प्रेरित (पात्र)।

विच्छुद्ध वि [दे] विमुक्त, विरहित, विपटित,
'विच्छुद्धा वृद्धासो' (सि १०८)।

विच्छुद्धव्य देवो विच्छुद्ध = वि + क्षिप्।
विच्छेअ पुं [दे] १ विलास। २ जपन (दे
७, ६०)।

विच्छेअ पुं [विच्छेद] १ विभाग, वृषकरण
(विसे १००६)। २ विभोग (गा ६१३)।
३ अनुवन्ध विनाश, प्रवाद-निरोध (कप्प)।

विच्छेअय न [विच्छेदय] ऊपर देखो
(राज)।

विच्छेअय वि [विच्छेदय] विच्छेदय-वर्ता
(मवि)।

विच्छेद वि [विच्छेदिन्] ऊपर देखो (कुप्र
२२)।

विच्छेदय वि [विच्छेदय] विच्छिन्न किया
हुमा (नाट—विक ८२)।

विच्छेदय वि [दे] विरहित (मवि)।

विच्छेद देवो विच्छेद। संक्ष. विच्छेदवि
(मप) (हे ४, ४३६)।

विच्छेद पुं [दे. विदुर्भ] नगर-विशेष,
'विदुर्भ विच्छेदो' (प्राह ३८)।

विच्छेदय पुं [दे] विरुद्ध, विभोग (मवि)।
देवो विच्छेदय।

विच्छेद सक [कम्पय] कँपाना। विच्छे-
दाह (हे ४, ४६)। यहु. विच्छेदोलन,
विच्छेदालिन (कप्प, सुर १०, १०७, १५,
१३)।

विच्छेदोलिअ वि [कम्पित] कँपाना हुमा
(कुमा; गउड)।

विच्छेदोलिअ वि [विच्छेदालिन] बीत, बोया
हुमा; 'भीमं विच्छेदालिअ' (पात्र)।

विच्छेद सक [दे] विमुक्त करना, विरहित
करना।

'कातेण रुद्धमे परोपरं

हिययानिय्यइयमादे।

अणुणहिययो एसो

विच्छेदह सत्तसमाए'

(सि ८६१)।

विच्छेद पुं [दे] विरुद्ध, विभोग (दे ७, ६२,
हे ४, २६६)।

विच्छेद पुं [विक्षोभ] १ विशेष, 'जे संमु-
हागमवोसतवसिअपिअसिअविच्छेदो' (गा
२१०), 'पुनइववोनमुला विमुक्ककख-
'विच्छेदो' (अम्मास १६१)। २ बंचतता
(उा ७ २५८)।

विच्छेद सक [वि + छल्य] छलित करना,
ठगना। कर्म. विच्छेदजइ (महा)।

विच्छेद देवो विच्छेदय। विच्छेद (सि १८६
दि)।

विजइ वि [विजयिन्] विजेता, जीतनेवाला
(कप्प, नाट—विक ३)।

विजंभ देखो विजंभ = वि + जम्भ + यहु.
विजंभत (काप्र १८६)।

विजड वि [वित्तक] परित्यक्त (उत ३६,
८३; सुख ३६, ८३; औप २४६)।

विजण देखो विजण = विजण। 'लक्खण !
देवो इमो विजणो' (पत्र ३३, १३; हे १,
१७७; कुमा)।

विजय सक [वि + जि] १ जीतना, फतह
करना। २ दक, उत्कर्ष मे वर्तना, उत्कर्ष-
युक्त होना। विजयइ (पत्र २७६—गाथा
१५६६), 'विजययु ते पएमा विहिरेइ जय
वीरजिण्णहो' (वर्त्तनि २२)। ३, विजेतव्य
(दे) (कुमा)।

विजय पुं [विजय] १ निर्णय, शास्त्र के अर्थ
का शास्त्र-पूर्वक विषय (ठा ४, १—पत्र १८८;
सुख १०, २२)। २ अनुविचिन्तन, विमर्श
(वीप)।

विजय पुं [विजय] आश्रय, स्थान (सि ६,
५६)।

विजय पुं [विजय] १ जय, जीत, फतह
(कुमा; कम्म १, ५५, अमि ८१)। २ एक
देव-विमान (अनु, मम ५७; ५८)। ३

विजय-विमान-निवासी देवता (सम ५६)।

४ एक मुहूर्त, माहोरान का बारहवां घां
सतर्का मुहूर्त (सम ५१, ५२; १०, ११;
कप्प, छाया १, ८—पत्र १३३)। ५ भग-

वान् नमिनापणी का पिता (सम १५१)।

६ भारतवर्ष के बीतवें भावी जिनदेश (सम
१५४, पत्र ४६)। ७ दुनाय ब्रह्मर्षी के पिता
का नाम (सम १५२)। ८ आश्विन मान

(सुख १०, १६)। भारतवर्ष में उपन
द्वितीय बलदेश (सम ८५, १५८ टी. अनु,
पत्र २०६)। १० भारतवर्ष का भावी दूसरा

बलदेश (सम १५४)। ११ ग्यारहवें ब्रह्मर्षी
राजा का पिता (सम १५२)। १२ एक राजा
(उप ७६८ टी)। १३ एक दानिय का नाम

(विपा १, १—पत्र ४)। १४ भगवान् ब्रह्म-
प्रभ का शासन-देव (सति ७)। १५ जंज-
कीप का पूर्व द्वार। १६ उप द्वार का

अभिप्राय देव (ठा ४, २—पत्र २२५)।

१७ बल्लव समुद्र का पूर्व द्वार। १८ उम
द्वार का अभिप्राय देव (ठा ४, २—पत्र

२२६, इव) । १६ धेय विशेष, महाविदेह
वर्ष का प्रान्त-मुल्य प्रवेश (ठा ८—पत्र ४३३,
इक, जं ४) । २० उत्तरय, 'जएणं विजएणं
वडावेण (आषा १, १—पत्र ३०), धीय,
राज) । २१ पराधय बरने ग्रहण परना
(कुमा) । २२ विजम की प्रथम शास्त्री के
एक जैन आचार्य (पत्रम ११८, ११७) ।
२३ ब्रम्हदय (राय) । २४ समुद्धि (राज) ।
२५ घात की लण्ड का पूर्व द्वार (इक) ।
२६ कानोद समुद्र, पुष्कर परद्वीप तथा
पुष्करोद समुद्र का पूर्व द्वार (राज) ।
२७ दचव पर्वत का एक दूत (ठा ८—पत्र
४३६, इक) । २८ एन राजकुमार (धम्म
११) । २९ छन्द विशेष (विग) । ३० वि,
जोतनेवाला, 'बहुपुत्र विहगादिविजयवेणयने'
(सम्मत २१६) । 'चरपुर न' 'चरपुर'
एक विद्याधर नगर (इक) । 'जत्ता छो
[यात्रा] विजय के लिए किया जाता प्रयाण
(धर्मवि ५६) । 'ढङ्का छो [ढङ्का] विजय-
सूचक मेरी (सुपा २६८) । 'देव पु [देव]
मठारहीन शास्त्री का एक जैन आचार्य
(अन्क १) । 'पुर न [पुर] नगर विशेष
(इक २२३, २२४, ३२६) । 'पुरा, पुरी
की [पुरी] पवनकावती नामक विजय-
क्षेत्र की राजधानी (ठा २, ३—पत्र ८०,
इक) । 'माण पु [मान] एक जैन आचार्य
(अ ७०) । 'घत वि [वन्] विजयी,
विजेता (ति १४) । 'धत्त न [नर्त] कैय-
विशेष (कलहस्तिनक) । 'वट्ठमाण पुन
[वट्ठमान] ग्राम विशेष (विषा १, १) ।
'वेजयती छो [वैजयन्ती] विजय सूचक
पताका (धीय) । 'सायर ॥ [सागर] एक
सूर्यवंशी राजा (पत्रम ५, ६२) । 'सिंह,
'सीह पु [सिंह] १ सुप्रसिद्ध प्राचीन जैन-
आचार्य (सुपा ६५८) । २ एक विद्याधर राज-
कुमार (पत्रम ६, १५७) । 'सूरि पु [सूरि]
चन्द्रगुप्त के समय का एक जैन आचार्य (धर्मवि
४४) । 'सेण पु [सेन] एक प्रसिद्ध जैन
आचार्य जो आश्रमदेव सूरि के शिष्य थे (पत्र
२७९—माणा १५६६) ।

विजयता } की [वेजयन्ती] १ पक्ष की
विजयती } घातकी रात (मुग्ग १०, १४) ।
२ एक रानी का नाम (ठा ७३८ टी) ।

विजया छो [विजया] भगवान् शान्तिनाथ
की दोहा-शिविका (विचार १२६) ।

विजया छो [विजया] १ भगवान् धजित-
नाथकी की माता का नाम (सम १५१) ।
२ पांचवें बलदेव की माता (सम १५२) ।
३ अगस्त मरि ग्रहो की एन पटराती (ठा
४, १—पत्र २०४) । ४ विद्या-विदेश (पत्रम
७, १४१) । ५ पूर्व स्वर्ग पर रहनेवाली एक
दिग्गुप्तारी देवी (ठा ८—पत्र ४३६) । ६
पांचवें चक्रवर्ती राजा की पटरानी—छो रत्न
(सम १५२) । ७ विजय नामक देव की
राजधानी (सम २१) । ८ ब्रह्मा नामक विजय
की राजधानी (ठा २, ३—पत्र ८०, इव) ।
९ पक्ष की सातवी रात (हुज १०, १४) ।
१० एक प्रेक्षिणी (सुपा ६२६) । ११ भगवान्
लघलनाथको की शासन देवी (पत्र २७, संति
१०) । १२ भगवान् सुमतिनाथकी की दोहा-
शिविका (सम १५१) । १३ एक पुष्करिणी
(इव) ।

विजल नि [विजल] १ जल रहित (गठ ४) ।
२ न. जल रहित पक्ष (इस ५, १, ४) ।
देखो विजल ।

विजह सक [वि + हा] परित्याग करना ।
विजह (पि ५७७) । सङ्ग. विजहिचु (उत्त
८, २) ।

विजहणा छो [विहान] परित्याग (ठा ३,
३—पत्र १३६) ।

विजाइय वि [विजातीय] भिन्न जाति का,
दूसरी तरह का (उप १२८ टी) ।

विजाण देखो विज्ञाण = वि + ता । सङ्ग.
विजाणित्ता, विजाणिय (बन्ध) ।

विजाणा } वि [विज्ञायक] जाननेवाला
विजाणय } विज (आना मूर्धनि १४५) ।

विजाणुअ वि [विज्ञ, विज्ञायक] ऊपर देखो
(अन्क १८) ।

विजादीअ (छो) देखो विजाइय (गाठ—चैत
८८) ।

विजाय न [दे] सत्य निराणा, 'सख
विजाय' (गाम) ।

विजिअ वि [विजित] पपमूल, हाथ हुआ
(हुज ६, २५, स ७००) ।

विजुत्त वि [विशुक्त] विरहित (धर्मसं
१७४) ।

विजुरि (धर्म) छो [विजुत्त] विजवी
(विग) ।

विजेट्ट नि [विज्येष्ठ] मध्यम, 'जेट्ट विजेट्टा
वणिज्जा म' (वेण्य १५३) ।

विजेतव्व देखो विजय = वि + जि ।

विजोज सब [वि + योजय्] वियोग
करना, धन्य करना । सङ्ग. विजोजिय
(पत्र ५, १२६) ।

विजोजण न [विजोजन] वियोग, विरह
(मोह ६८) ।

विजोविअ वि [विजोविन] बुला दिया
हुआ (हुज २८८) ।

विजोयानइच्चु वि [विजोययित्] वियोजक,
धन्य करनेवाला (ठा ४, ३—पत्र २३८,
२३६) ।

विजोहा छो [विजोहा] छन्द विशेष (विग) ।

विज्ज यक [विज्ज] होना । विज्जइ विज्जए
(पद्, कस, मग, महा), विज्जइ (सम १,
११, ६) । पक्क. विज्जत, विज्जमाण (हुज
१, १७६, पत्र ६, ४७) ।

विज्ज सक [वीज्य्] पंजा चलाना, हवा
करना । धर्म. विज्जिज्जइ (मदि) । बबद्ध.

विज्जिज्जत (पत्रम ६१, ३७, वज्जा ३६) ।

विज्ज पु [वैद्य] चिकित्सक, हकीम (हुज
१२, २४, गाठ—विज्ज ६५) ।

विज्ज पु व. [दे] देश विशेष (पत्रम ६८,
६२) ।

विज्ज पु [विहस, विह] परिहृत, जानकार
(हे २, १५ कुमा प्राउ १८, सुम १, ६,
५) ।

विज्ज देखो धीरिअ (पत्रम ३७, ७०) ।

विज्जं देखो विज्जा । 'जम्भर (धम) देखो
विज्जा हर (पि २१६) । 'त्थि वि [विधिन्]
छात्र शम्भदासी (सम्मत १४३) ।

विज्जं देखो विज्जु (हुज २६६) ।

'विज्जतव्व देखो विज्जत (से २, २४, पि
६०३) ।

विज्जय न [विद्यक] चिकित्सा (उर ८, १०,
मदि) ।

विज्जल पुं [विजल] १ नरकावास-विशेष, एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २८) । २ वि जल-रहित (निबु १) ।

विज्जल) न [दि विजल] वर्द्धम, पंक, विज्जुल १ कान्दी, कान्दा (प्राप्ता २, १, ५, ३, २१, २) ।

विज्जलिया छी [विजुत्] विजली (कुप्र २८५) ।

विज्जा छी [विद्या] १ शास्त्र ज्ञान, यथायं ज्ञान, सत्यम् ज्ञान (उत्त २३, २; एदि, धर्मवि ३६; कुमा, प्राप्ता ४३) । २ मन्त्र, देवी-प्रतिष्ठित मन्त्र पद्धति । ३ साधनावाला मन्त्र (विह ४६४, क्षीप, डा ३, ४ टी—पन १५६) । ४ अणुप्पवाय ॥ [अनुप्रवाद] जैन धर्म ग्रन्थाया विशेष, दत्तार्थ पूर्व (सम २६) । ५ चारण पुं [चारण] शक्ति-विशेष-संपन्न मुनि (भग २०, ६—पत्र ७६३) । ६ चारणलद्धि छी [चारणलद्धि] शक्ति-विशेष (भग २०, ६) । ७ गुप्पवाय देखो 'अणुप्पवाय (राज) । ८ गुदाय न [गुदाय] दत्तार्थ पूर्व (सिंरि २७७) । ९ विह पु [विपण्ड] विद्या के मत से प्रज्ञित भिक्षा (निबु १३) । १० मत वि [वन्] विद्या-संपन्न (उर ४२५) । ११ लय पुन [लय] पाठशाला (प्राप्ता) । १२ सिद्ध वि [सिद्ध] १ सर्व विद्याओं का प्रथिपति, सभी विद्याओं के संपन्न । २ जिसको बम से बम एक महाविद्या सिद्ध हो चुकी हो वह, 'विज्जाए चक्रवर्ती विज्जासिद्धो स, जसस वेमावि सिद्धमेव महाविज्जा' (भावम) । ३ हर पुं [धर] १ धर्मियों का एक वर (पवम ५, २) । २ पुत्री, उन वर में उत्पन्न (महा) । ३ श्री (महा) उर । ४ वि, विद्या-पात्री, शक्ति विशेष-सम्पन्न (क्षीप, राज, ज ४) । ५ हरगोपाल पुं [धरगोपाल] एक प्राचीन जैन मुनि, जो सुस्थित भीरु मुखविदुष आचार्य के शिष्य थे (वप्प) । ६ हरी छी [धरी] एक जैन मुनि-शाखा (वप्प) । ७ हार (धम) न [धर] छन्द-विशेष (पिम) ।

विज्जायस (भा) देखो वेयावस (विह) ।

विज्जाहर वि [दंशार] विद्यापर-संबन्धी, छी. 'एसा विज्जाहरी माय' (महा) ।

विज्जिद्धिय देखो विज्जिद्धिय (राज) ।

विज्जु पुं [विजुत्] १ विद्यापर-वंश का एक राजा (पवम ५, १८) । २ देवों की एक जाति, भवनपति देवों का एक भेद (पह १, ४—पत्र ६८) । ३ आत्मकाया नगरी का निवासी एक गृहस्थ (शाय २—पत्र २५१) । ४ एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २६) । ५ छी. ईशानेन्द्र के सोम आदि लोकपालों की एक-एक भ्रममहिणी—पटरानी (डा ४, १—पत्र २०४) । ६ चमर नामक इन्द्र की एक पटरानी (डा ५, १—पत्र ३०२, शाय २—पत्र २५१) । ७ पुत्री, विजली, विज्जुला, विज्जुल (हे १, ३३, कुमा, या १३५) । ८ सन्ध्या, शाम (हे १, ३३) । ९ वि. विशेष रूप से चमकनेवाला, 'विज्जुलोयागपिप्पवा' (उत्त २२, ७) । १० कार देखो 'वार (जोव ३—पत्र ३४२) । ११ कुमार पुं [कुमार] एक देव-जाति (भग, इक) । १२ कुमारी छी [कुमारी] विदिरचक पर रहनेवाली विज्जुमारी देवी, 'वतारि विज्जुकुमारिमहत्तरियाओ वएणताओ' (डा ४, १—पत्र १६८) । १३ जिम्क (?) । १४ जिम्भ पु [जिह्व] मनुवेत्तचर नागराज का एक आवास पर्वत (इक, राज) । १५ तेज पु [तेजस्] विद्यापरवश का एक राजा (पवम ५, १८) । १६ दंत पुं [दन्त] १ एक भन्त-हॉप । २ उसमें रहनेवाली मनुष्य-जाति (डा ४, २—पत्र २२६) । ३ दत्त पु [दत्त] विद्यापरवश का एक राजा (पवम ५, १८) । ४ दाढ पुं [दंष्ट्र] विद्यापर-वंश में उत्पन्न एक राजा का नाम (पवम ५, १८) । ५ पह, 'वपम, 'पह ॥ [प्रभ] १ एक वक्ताकार पर्वत का नाम (सम १०२ टी. डा २, ३—पत्र ६६, ५, २—पत्र ३२६, ज ४, सम १०२, इव) । २ कूट-विशेष, विद्युत्कम वक्ताकार का एक शिखर (ज ४, इक) । ३ देव-विशेष, विद्युत्कम नामक वक्ताकार पर्वत का प्रथिपति देव (ज ४) । ४ मनुवेत्तचर नागराज का एक आवास-पर्वत (डा ४, २—पत्र २२६, इक) । ५ उस पर्वत का निवासी देव (डा ४, २—पत्र २२६) । ६ देवकुश पर्व में स्थित एक महाप्रह (डा ५, २—पत्र

३२६) । ७ न. एक विद्यापर-नगर (इक ३२६) । ८ मई छी [मतो] एक छी का नाम (पह १, ४—पत्र ८५) । ९ मालि पुं [मालिन्] १ पवरोन दीप का प्रथिपति एक यक्ष (महा) । २ रावण का एक सुभट (सिं १३, ८५) । ३ ब्रह्मदेवलोक का इन्द्र (राज) । ४ सुह पुं [सुह] १ विद्यापर-वंश का एक राजा (पवम ५, १८) । २ एक भन्त-हॉप । ३ उसका निवासी मनुष्य (डा ४, २—पत्र २२६, इक) । ४ मेह पुं [मेघ] १ विद्युत्कम मेघ, जल-रहित मेघ । २ विजली गिरनेवाला मेघ (भग ७, ६—पत्र ३०५) । ५ वार पु [वार] विजली बनना, विद्युत्-रचना (भग २, ६) । ६ लआ, 'हय' छी [लना] विद्युत्, विजली (नाट—वेणी ६६, कात्) । ७ हहाइ न [लेखायित] विजली की तरह झांचण (वप्प) । ८ यिल-सिअ न [यिलसित] १ छन्द-विशेष (पजि २१) । २ विजली का वित्तास (सिं ४, ४०) । ३ सिहा छी [शिखा] एक रानी का नाम (महा) ।

विज्जुआ छी [विजुत्] १ विजली (नाट—वेणी ६६) । २ बलि नामक इन्द्र में सोम आदि चारो लोकपालों की एक-एक पटरानी, 'मितवा मुमहा विज्जुआ (?) या भमली' (डा ४, १—पत्र २०४, इक) । ३ धरणेन्द्र की एक भ्रम-महिणी (शाय २—पत्र २५१, इक) ।

विज्जुआइवु वि [विद्युत्-रह] विजली बनने-वाला (डा ४, ४—पत्र २६६) ।

विज्जुला देखो विजु = विद्युत् (हे २ विज्जुलिया १७३, पत्र १६१, कुमा, प्राप्ता विज्जुला ३६, प्राप्ति वि २४४) ।

विज्जु देखो विजु । माला छी [माला] छन्द-विशेष (पिम) ।

विज्जु म [दि] १ मागं से, रास्ता से । २ तिर (मनि) ।

निज्जोअ पुं [विद्योत] उद्योत, प्रकाश; 'जोव्यज्जोअ विज्जोअ' स्वयं विज्जुविज्जोअ-वचन' (हित ६) ।

विज्जोअय वि [विद्योतिव] प्रकाशित, निज्जोअय चमरा हुआ (उर पु ३३, त ५७६) ।

विज्ज स [जयध] दीपना, वेध करना, भेदना । विज्जति (सूत्र १, ५, १, ६), विज्जते (गा ४४१) सट् । विज्जधुण (सूत्र १, ५, १, ६) । क. विज्ज (पट्) ।

विज्ज भ्रू [वि + घट्] भ्रतय होना । विज्जह (पारा १५२) ।

विज्ज न [दे] वीर्य, धारण, ठेना जो हृत्प्रीति तन्मि पदे विज्ज दाऊण कुवरमणु मणे (धर्मवि ८१),

‘ताव मणुवारणेण य विज्जह

(१६) नरं धरावमासेण

कुविण्ण विहएणाहं धणियं

मग्गोहृदकवमिं (स १११) ।

विज्ज वि [विट्] विधा हुआ, ‘जहं तं वि तेण बाणेण विज्जते जेण हं विज्जो’ (गा ४४१) ।

विज्ज देखो विज्ज = स्पर्श ।

विज्जहिय वि [दे] १ मिश्रित, व्याप्त, ‘वीउएहलरवससयाविज्जहिय’ (अग ७, ६—पत्र १०७, उव) ।

विज्जमल देखो विज्जमल = विह्वल (अग ७, ६ टी—पत्र १००) ।

विज्जन्तर सक् [वि + ध्यापय] बुझाना, दीपक प्रादि को गुल करना, ठंडा करना । विज्जन्तह (गड, कुत्र ३६७) । कर्म विज्जन्तवज्ज (गा ५०७, II ४८६) । संज्ञ. विज्जन्तवज्ज, विज्जन्तविय (धर्मस ६५८, स ५६६) । क. विज्जन्तवियव्य (पत्रम ७८, ३७) ।

विज्जन्तरण जीव [विध्यापन] बुझाना, उप-शांत (स ४८६ सम्मत १६२, कुत्र २७०) । जी ०णा (सभा १०६) ।

विज्जन्तविय वि [विध्यापित] बुझाना हुआ, गुल किया हुआ, ठंडा किया हुआ (सि ८, १६, १२, ७७, गा ३३३, पत्रम २०, ६२) ।

विज्जमा [भ्रू] भ्रू [वि + घट्] बुझाना, ठंडा विज्जमाथ] होना, गुल होना । विज्जमाह (गा ४३०, हे २, २८) । वक्. विज्जमाअत (गा १०६) ।

विज्जमाअ [वि [विध्यापित] बुझा हुआ, विज्जमाअ] उपशांत (सि १, ३१ शाल्या १, १—पत्र ६६, १, १४—पत्र १६०)

गड, गुप्ता ४४८, प्राप्ता १३७, पत्रम ५, १८२) । २ संज्ञक-विशेष, ‘विज्जमाअनाम-गेण सत्तममेतेण मुज्जति’ (सम्मतसो २१) । विज्जमाअ देखो विज्जन्तर । विज्जमाअह (गा ८३६) ।

विज्जमाअग देखा विज्जन्तरण (उप २६४ टी) । विज्जमाअवि देखो विज्जन्तविय (महा) ।

विज्जिमडिय पु [दे] मल्ल की एक जाति (पण्ण १—पत्र ४७) ।

विट् देखा विट् (माल २३४, राव) ।

विट्ठल सक् [दे] असुरय करना, उच्छिष्ट करना बिगाड़ना, दूषित करना, अपवित्र करना । विट्ठलित (मुल १, १५) । कर्म. ‘विट्ठलितज्जह गया कयाहं वि मासवारोहं’ (वेरय १३५) । वक्. विट्ठलर्यत (सिदि ११३२) ।

विट्ठल पु [दे] असुरय संसर्ग, उच्छिष्टता, अपवित्रता, ‘सुत्त परमि चडात्ती, विट्ठल कुणहं’ ‘सा घरवाहि विट्ठल सुजह य, न तेण देव विट्ठलो’ (कुत्र २४३, हे ४, ४२२) ।

विट्ठलण न [दे] ऊपर देखो (स ७०१) ।

विट्ठल वि [दे] बिगाड़ना, अपवित्र करनेवाला । जी, ०णी (कम्प) ।

विट्ठलिय वि [दे] उच्छिष्ट किया हुआ, अपवित्र किया हुआ, बिगाड़ा हुआ (धर्मवि ४५, सिदि ७१६, गुप्ता ११५, ३६०, महा) ।

विट्ठो जी [दे] गडरी, पोखरी (धीप ३२४) । देखो विट्ठिया ।

विट्ठ वि [वृष्ट] बरसा हुआ (हे १, १३७, पट्) ।

विट्ठ वि [विट्] १ प्रविष्ट पैठा हुआ (सूत्र १, ३, १, १३) । २ उपविष्ट, बैठा हुआ (सिद्ध ६००) ।

विट्ठ वि [दे] सुचोचिष्ठ, सो कर उठा हुआ (पट्) ।

विट्ठमा [वि [विट्]] सुवन, जगत् (सुच्छ १०६) ।

विट्ठम सक् [वि + धम्मय] १ रोकना । २ स्थापित करना, रखना । विट्ठ भति (धीप) । सक्. विट्ठविया (धीप) ।

विट्ठमणया जी [विट्ठमना] व्यापना (धीप) ।

विट्ठर पुन [विट्ठर] मात्तन, ‘विट्ठरो’ (पाम, पत्रम ८०, ७, पाम, गुप्ता ६०) ।

विट्ठा जी [विट्ठा] वीट, पुरीष, मल (पाम, धीपमा २६६, प्राप्ता १५८) । ‘हूर न [“शुह] मलोत्तमं स्थान, टट्टो (पत्रम ७४, ३८) ।

विट्ठि जी [विट्ठि] १ कर्म, काज, काम (हे २, ४३१) । २ ज्योतिष-प्रसिद्ध एक बरणा, धर्म सिधि (सिदि ३३५८; स २६५, गण १६) । ३ भद्रा नक्षत्र (सुर १६, ६०) । ४ वेगार, मज्झरी किए बिना ही जवरहती या वेमन का बरामा जाता काम (हर ६, ११) ।

विट्ठि जी [वृष्टि] वर्षा, बारिश (हे १, १३७, प्राक् ८, ससि ५, पत्रम २८, ८७, कुप्ता, रमा) । देखो वुट्ठि ।

विट्ठित वि [दे] प्रजित (पट्) ।

विट्ठिय न [विस्मियत] विशिष्ट स्थिति (अग ६, ३२ टी—पत्र ४६६) ।

विट्ठ पु [विट्] १ भैंस, घा (कुप्ता, सुर, ३, ११६, रमा) ।

विट्ठ न [विट्] लक्षण विशेष, एक तरह का नयक (वस ६, १८) ।

विट्ठर पुन [विट्ठर] नपोंतपारी, प्रसाद प्रादि के प्राप्ति को भोर का काम बना हुआ पक्षियों के रहने का स्थान, छतरी (छाया १, १—पत्र १२, दे ७, ८६, गड) ।

विट्ठिका जी [दे] वेदिका, वेदी, चौतरा (दे ७, ६७) ।

विट्ठा देखो विट्ठ (पण्ण १, १—पत्र ८) ।

विट्ठा पुन [विट्ठ] १ शीषय विशेष । २ वि धर्माज, विद्वान्,

‘विज्ज न एते जग्गो न

य वाहो एस कोवि सम्भूरो ।

जवसमइ सत्तोणेण विडग्गोया-

मयरसेण’ (वज्जा १०४) ।

विडध सक् [वि + धम्मय] १ शिरस्कार करना, अपमान करना । २ दुःख देना । ३ नकल करना । विडवड, विडवति, विडवेमि (अवि, कुप्ता १६४, स ६६१) । वक्.

विहंवत (पठम ८, ३२) । कवक. विहंविज्जंत
(सुपा ७०) ।

विहंव सक [वि + डम्पय्] विवृत करना,
फैलाना । विहंवदे (मग ३, २—पत्र १७३) ।

विहंव धुन [विहम्भ] १ तिरस्कार, अपमान
(भवि) । २ माया जाल, प्रपंच, 'प्रणिपञ्चं
च कामाणु सेवाविहंव' (धृ ६० कण्ठ) ।

विहंवया वि [विहम्भक] विहम्बना-जनक;
'जह्मदेसविहंवया नवर' (संबोध १४, उव) ।

विहंयण न [विहम्भन] नीचे देखो (भवि) ।

विहंयणा की [विहम्भना] १ तिरस्कार,
अपमान (दे) । २ दुःख, नष्ट (पण ४२) ।
३ भद्रुकरण, नफल । ४ उपहास । ५ कष्ट-
वेग (कण्ठ) ।

विहंयिय वि [विहम्भित] विहम्बना-प्राप्त
(कण्ठ, गठड, ३०२) ।

विहउम्भमाण वि [विहम्भमाण] जो जलामा
जाता हो वह, जलता हुआ (भाषा १, ६,
४, १) ।

विहडह देखो विहडह (गा ६७१) ।

विहट्ठ प [पुं [दे] राहु (दे ७, ६५; पाप,
मिडय) गठड, वज्जा ६८, दे ७, ६५) ।

विहट्ठ पु [विटप] १ पल्लव (सुर ३, ४५) ।
२ शाखा (भवि ११०) । ३ पल्लव-विस्तार ।
४ स्तम्भ गुच्छा (प्राप्त) ।

विहडि वि पुं [विटपिन्] हुआ, पेड़, दरख्त
(पाप; सुपा ८८, गठड, सण्) ।

विहडिह सक [रचय्] बनाना, निर्माण
विहडिह्नु करना । विहडिहड, विहडिहड
(दे ४, ६४, पङ्) । भूका, विहडिहोष
(कुमा) ।

विहडिअ वि [मोडित] सज्जित (से ११,
५०; पि ८१) ।

विहडिअि वि [दे] विकराल, शीपण,
विहडिअि मयंकर (दे ७, ६६) ।

विहडि पु [दे] १ वात-मुन (दे ७, ८६) ।
२ गण्डव, गेंडा (दे ७, ८६, गठड) । ३
कुम, पेड़, कुमा य पापमा रचया भापमा
विहडिमा ठ' (दसि १, ३५) । ४ शाखा
(पण्ड २, ४—पत्र १३०, शीघ्र, तुंड २१) ।

विहडिमा की [दे] शाखा (पण्ड २, ४; तुंड
२१; राज) ।

विहडिच्छअ वि [दे] निषिद्ध, प्रतिषिद्ध
(पङ्) ।

विहडिह वि [दे] शीपण, मयंकर (नाट—
मालवी १३७) ।

विहुर पुं [विहुर] १ पर्वत-विशेष । २ देश-
विशेष, जहाँ वैदूर्य रत्न पैदा होता है (कण्ठ) ।

विहोमिअ पुं [दे] गण्डक युग, गेंडा (दे
७, ५७) ।

विह्व वि [दे] १ शीघ्र, लम्बा (दे ७, ३३) ।
२ प्रपंच, विस्तार (दे १, ४) ।

विह्व वि [मोड, मोडित] सज्जित, शरभित्त,
'सज्जिया विसिया विह्व' (निर १, १, पि
२४०) ।

विह्वर देखो विह्विर, 'अवडविह्वरमेयं कि देव
पाट' (उप ७६८ टी) ।

विह्व की [मोड] लज्जा, शरव (दे ७,
६१; पि २४०) ।

विह्वर न [विह्वार] देखो विह्वर (राज) ।

विह्विर न [दे] १ प्राणोप (दे ७, ६०) ।
२ छाटोप, छाटम्बर (पाप) । ३ वि रौद्र
मयंकर (दे ७, ६०) ।

विह्विरिअ की [दे] रजि, निर्या (दे ७,
६७) ।

विह्वरुम देखो विह्वरुम (पाप) ।

विह्वरु की [दे] छाटोप, छाटम्बर, 'नि
तिगविह्वरुदीवारणेष' (उव) ।

विह्वरुलि वि [वैदूर्यवत्] वैदूर्य रत्नवाला
(सुपा ५६) ।

विह्वरे न [दे. विह्वरे] नक्षत्र-विशेष, पूर्ब
द्वारवाले नक्षत्रों में पूर्ब दिशा से जाने के
बदले परिवर्तन दिशा से जाने पर पल्लवा नक्षत्र
(विसे १४०६) । देखो विह्वार ।

विह्वज (श्री) सक [वि + दद्] जलाना ।
संज्ञ. विह्वजिअ (पि २१२) ।

विह्वणा की [दे] पाण्डि, फोली या नीचला
भाग (दे ७, ६२) ।

विह्वच वि [आजत] उपाजित, पैदा किया
हुमा (हृ ४, २५८, गठड, प्या १०; प्राप्
७४, भवि) ।

विह्वत्ति की [अजित] भर्जन, उपार्जन
(प्या १२) ।

विह्वप्प घक [व्युन् + पद्] व्युत्पन्न होना ।
विह्वप्पति (प्राक ६४) ।

विह्वप्प नीचे देखो ।

विह्व सक [अर्जे] उपार्जन करना, पैदा
करना । विह्वड (दे ४, १०८; महा, भवि) ।
कर्म. विह्वज्जहड, विह्वपड (दे ४, २५१;
कुमा, भवि) ।

विह्वण न [अर्जन] उपार्जन (सुर १,
२२१) ।

विह्विअ वि [अजित] पैदा किया हुआ
(कुमा, सुपा १८०; महा) ।

विह्विअ वि [वेटिन] लपेटा हुआ (सुपा
१८८) ।

विणइ वि [विनयिन्] दूर करनेवाला,
'भारमविणइण' (भाषा) ।

विणइत्त वि [विनययत्त] विनयवाला,
विनय को ही सर्व-प्रधान माननेवाला (सूत्रमि
११८) ।

विणइत्तु वि [विनेह] विनोद बनानेवाला,
विनय की शिक्षा देनेवाला (उत्त २६, ४) ।

विणइत्तु देखो विणी = वि + नी ।

विणइय वि [विनयित] शिक्षित किया हुआ,
सिखाया हुआ (राज) । देखो विणगय ।

विणइल देखो विणइत्त (कुमा) ।

विणपत्तु देखो विणी = वि + नी ।

विणह वि [विनह] विनार-प्राप्त (उव,
प्राप् ३१, नाट—मुण्ड १५२) ।

विणह सक [वि + नटय्, वि + शुप्] १
व्याकुल करना । २ विहम्बना करना ।
विणहड (गठड ६८), विणहडित (उव),
विणहड (दे ४, ३८५, पि १००) ।

विणहडिअ देखो विनहडिअ (गा ६३० टी) ।

विणण = [वान] बुनना (इह १) ।

विणम सक [खेदय्] खिन्न करना ।
विणमड (पाप १५३) ।

विणम सक [वि + नय्] विरोध रूप से
नमना । वहु. विणमन (नाट—मावदि
३४) ।

विणमि देखो विनमि (राज) ।

विणिमित्र वि [विनत्] विशेष रूप से नत्
(भग; भौव, साया १, १ टी—पत्र ३) ।

विणिमित्र वि [विनमित] नमाया हुमा
(गठड) ।

विणय पुं [विनय] १ धर्मस्थान, प्रणाम
भादि भक्ति, श्रुत्यार, शिष्टता, नम्रता (भाषा,
ठा ४, ४ टी—पत्र २८२, हुमा, उग,
भौव, गठड, महा, प्राम् ८) । २ संयम,
चारित्र्य (सम ५१) । ३ नरकावास विशेष,
एक नरक स्थान (देवेन्द्र २६) । ४ भवनयन,
दूरीकरण । ५ शिष्टता, सीता । ६ अनुयय ।
७ वि. विनय-पुत्र, विनोत । ८ निपुत्र,
शान्त । ९ सिम, फँका हुमा । १० जितेन्द्रिय,
समयी (हि १, २५३) । ११ पुं. शास्त्रानुसार
प्रजा का पालन (गठड ६७) । १२ भक्त नि
['वन्] विनय पुत्र (उग पु १६६) ।

विणय वि [विनत्] १ विशेष रूप से नमा
हुमा (भौव) । २ पुं. एक देव-विमान (सम
३७) ।

विणय देको विणया । 'तणय पुं [तनय]
गठड पक्षी (बजा १२२) । 'सुअ पुं [सुत]
बही कर्ष (पाम) ।

विणयइत्त देको विणइत्तु (सुअ २६, ४) ।

विणयधर पुं [विनयधर] एक शेट का नाम
(उप ७२८ टी) ।

विणयण न [विनयन] विनय-शिक्षा, शिक्षण,
'आधारदेसलाओ आयरिया, विणयणउदुन-
उआया' (विसे ३२००) ।

विणया ओ [विनता] गठड की माता का
नाम (गठड) । 'तणय पुं [तनय] गठड
पक्षी (ते १४, ६१, सुपा ३५४) ।

विणस देको विणस । विणसइ (उर ७, ३,
हुमा ८, २१) ।

विणसिर वि [विनथर] विनाश शील, नश्वर
(दे १, ६०) ।

विणसस भक्त [वि + नश्] नष्ट होना,
विज्वस्त होना । विणसइ, विणसए,
विणसते (उव, महा, धर्मसं ४०१) । भवि,
विणसिहिसि (महा) । वक्क. विणससमाण
(उवा) । क. विणसस (धर्मसं ४०२, ४०३) ।

विणससर देको विणसिर (पि ३१५) ।

विणा म [विना] निवाय, निना (गठड, प्राम्
१०; १५६, ६ १७) ।

विणामिद (श्री) देतो विणमित्र = विनमित
(गठ—मुच्छ २१८) ।

विणायण पुं [विनायक] यद्वा, एव देव-जाति,
'तथैव आगयो को विणायको पूज्यो नाय'
(पत्र ३५, २२) । २ मणपति, मणेर
(सहि ७८ टी) । ३ गठड (पत्र ७१, ६७) ।
'इय न [सि] वल विशेष, गठडाव (पत्र
७१, ६७) ।

विणास देको विणसस । विणासइ (भवि) ।

विणास सक [वि + नाशय] ध्वंस करना,
नष्ट करना । विणासेइ (उव, महा) । भवि,
विणासिही, विणासेहामि (पि ५२७, ५२८) ।
कर्म, विणासिज्जइ (महा) । वक्क. विणा-
सिज्जंत (महा) । क. विणासियठर (सुपा
१५३) ।

विणास पुं [विनाश] विध्वंस (उव, हे ४,
४२४) ।

विणासग वि [विनाशक] विनाश-कर्ता (म
१७) ।

विणासण न [विनाशन] १ विनाश, विध्वंस
(भवि) । २ वि. विनाश, वहाँ (पण्ड २, १—
पत्र ६६, दस ८, ३८) ।

विणासिअ वि [विनासित] विनाश प्राप्त
(पाम, महा, भवि) ।

विणि देको विणी ।

विणिअसण न [विनिदर्शन] क्षात जवाहरण,
विशेष दृष्टान्त (ते १२, ६६) ।

विणिअसण वि [विनिवसन] वल-रहित,
बंका (वा १२३) ।

विणिइत्तु देको विणिइत्तु (उत २६, ४) ।

विणिउत्त वि [विनियुक्त] कार्य में प्रवर्तित
(उप पु ७३) ।

विणिओग पुं [विनियोग] १ उपयोग, ज्ञान
(विसे २४३७) । २ कार्य में लगाना (वंचा
७, ६) । ३ विनियम, वेगदेन (कुप्र २०६) ।

विणिओय सक [विनि + योजय] जोड़ना,
लगाना । विणिओयद (भवि) ।

विणित देको विणी = विनिर + इ ।

विणिउट्टिय वि [विनिउट्टित] फूट कर
बैठना हुमा, 'वमगिणिउट्टियाहि पवराहि
साहंजीहि' (सुपा १८८) ।

विणिकम देको विणिरम । विणिकमइ
(गठड २७५; पि ४८१) ।

विणिकस सक [विनि + कृप्] सोच कर
निरालना । गठ. विणिरस (सुम १, ५,
१, २२) ।

विणिरसंत वि [विनिष्पन्न] १ बाहर
निकलना हुमा । २ जियने गृह-त्याग किया हो
पड़, संयम्भ (उग १४७ टी, हुम ३६; महा) ।

विणिरसम भक्त [विनिस् + मम्] १
बाहर निकलना । २ संन्यास लेना । भवि-
कमइ (गठड ८५१, ११८१) । गठ.
विणिरसिगिता (भग) ।

विणिरसमण न [विनिष्कमण] १ बाहर
निकलना । २ संन्यास लेना (पवा १८, २१) ।

विणिकिरस वि [विनिक्षिप्त] फँका हुमा
(गठ—मुच्छ ११६) ।

विणिगिह्द सक [विनि + ग्रह] निग्रह
करना, दंड देना । वक्क. विणिगिह्दत (उप
पु २३) ।

विणिगूह सक [विनि + गूहय] गुप्त रखना,
डकना । विणिगूहिका (भाचा २, १, १०,
२) ।

विणिग्गम पुं [विनिर्गम] नि सरण, बाहर
निकलना (गठड) ।

विणिग्गय वि [विनिर्गत] बाहर निकलना
हुमा, बाहर गया हुमा (ते २, ५; महा,
भवि) ।

विणिघाय पुं [विनिघात] १ मरण, मौत ।
२ ससार, भव-भ्रमण (ठा ५, १—पत्र
२६१) ।

विणिच्छ सक [विनिस् + चि] निश्चय
करना । विणिच्छइ (सण) । सक्क. विणि-
च्छिऊण (सण) ।

विणिच्छय पु [विनिश्चय] निश्चय, निर्णय,
परिधान (पण्ड १, १—पत्र १, ठा ३, ३,
उव) ।

विणिच्छिअ वि [विनिश्चित] निश्चित,
निर्णीत (भग, उवा, कप्प. सुर २, २०२) ।

विणिजुंज सक [विनि + युज्] जोडना, कार्य में लगाना, प्रवृत्त करना । विणिजुंजइ (वृत्त ३६१) ।

विणिज्वंतण वि [विनियन्त्रण] १ नियन्त्रण-रहित । २ प्रकटित, खुला । ३ नित्याज, कपट-रहित (ये ११, २१) ।

विणिज्वमाण देखो विणो = वि + नो ।

विणिज्वरण न [विनिज्वरण] निजरा, निनाश (विसे ३७७६, संबोध ५१) ।

विणिज्वरा ली [विनिज्वरा] ऊपर देखो (संबोध ४६) ।

विणिज्वरि वि [विनिज्वरि] परामृत, जिसका पराभव किया गया हो बह (महा, रंभा, माट—विक्क ६०) ।

विणिह वि [विनिह] खिला हुआ, विकसित (वाग्न) ।

विणिहलिय वि [विनिहलिय] बिदारित, तोड़ा हुआ (सण) ।

विणिहलुण सक [विनिह + लु] कपाना । बहू. विणिहलुणमाण (वि ५०३) ।

विणिप्पन्न वि [विनिप्पन्न] संविद्ध, संपन्न (उप ३६६) ।

विणिप्पिडिअ वि [विनिप्पिडित] विनिगंड, बाहर निकला हुआ, 'सालिग्यामाड सभो बंदणहेवं विणिप्पिडिअ' (पउम १०५, २१) ।

विणिवुडु देखा विणिवुडु (वि ५६६) ।

विणिविभन्न वि [विनिविभन्न] विदारित, 'हुंतविणिगिन्नकरिअसहकुसिकाउपरमि' (एभि १६) ।

विणिमीलअ वि [विनिमीलित] मीचा हुआ, मिला हुआ, 'मसिमपमुत्तमविणिमीलिन' अच्य दे मुत्तम मज्ज भोमास' (गा २०) ।

विणिमुक्क देखो विणिम्मुक्क (वि ५६६) ।

विणिमुय देखो विणिम्मुय । बहू. विणिमुयंत (मीन, वि ५६०) ।

विणिम्मविअ वि [विनिर्मित] विरचित, बनाया हुआ, कृत (उप ७२८ टी) ।

विणिम्माण न [विनिर्माण] रचना, दृष्टि (विसे ३३१२) ।

विणिम्मिअ देखो विणिम्मविअ (गा १५६; २३५; पाप, महा) ।

विणिम्मुक्क वि [विनिर्मुक्क] परित्यक्त, 'सव्व-कम्मविणिम्मुक्कं सं वमं वूम माहणं' (उत्त २५, ३४) ।

विणिम्मुय वि [विनिर् + मुय्] छोड़ना, परित्याग करना । बहू. विणिम्मुयमाण (एभा १, १—पउ ३३, वि ४८५) ।

विणिय देखो विणोअ (मवि) ।

विणियट्ट देखो विगिट्ट । विणियट्टअ (इस ८, ३४) । बहू. विणियट्टमाण (भावा १, ५, ४, ३) ।

विणियट्ट वि [विनिट्ट] १ बोधे हटा हुआ । २ पण्डु, 'विणियट्ट' ति पण्डु' (वेदय ३४६) ।

विणियट्टणया ली [विनियवर्तना] निवृत्ति (उत्त २६, १) ।

विणियत्त देखो विणियट्ट (सुपा १३५, भवि, गा ७१; कुप १८२) ।

विणियत्ति ली [विनिट्टि] निवृत्ति, उपरम (कुप १८२, गडड) ।

विणिरोध तु [विनिरोध] प्रतिबन्ध, अटकान (मवि) ।

विणिरट्ट सक [विनि + वृत्] निवृत्त होना, बोधे हटना । बहू. विणिरट्टमाण (भावा १, ५, ४, ३) ।

विणिरट्टण देखो विनियट्टण (राज) ।

विणिरट्टणया ली [विनियवर्तना] निवर्तन, विराम (अग १७, ३—पउ ७२७) ।

विणियट्टिअ वि [विनियपितव] नीचे गिरा हुआ (दे १, १५७) ।

विणियत्ति देखो विणियत्ति (उप ७२८ टी) ।

विणिगइ वि [विनिपातिव] मार गिरने-वाला (गा ६३०) ।

विणिगइअत्त देखो विणिगए ।

विणिगइय न [विनिपातिव] एक तरह का नाटक (राज) ।

विणिगइय वि [विनिपातिव] मार गिराया हुआ, व्यापाशित (उप ६४८ टी, महा, स ५६; सिक्का ८२) ।

विणिगए सक [विनि + पातव्] मार गिराना । बहू. विणिगइअत्त (पउम ४५, ८) ।

विणिगइअ देखो विणिगइय (दे १, १३८) ।

विणिगइ तु [विनिपात] १ निपात, विणिगइय २ धर्म्म पठन, विनाश; 'पर-सग्गेण वि दिट्ठो विणिगइो किं न लोमि' (धम्मस १२५; १२६; स २६५; उ २) । २ मरण, मौत (सि १३, १६; गडड; गा १०२) । ३ संसार (राज) ।

विणिगइय न [विनिपातन] मार गिराना (पउम ४, ४८) ।

विणिगइर सक [विनि + गारय्] रोकना, निवारण करना, नियंत्रण करना । विणिगइरअ (मवि) । कवहू. विणिगइरअत्त (माट—मुग्घ १५४) ।

विणिगइर न [विनिगारण] १ निवारण, प्रतिषेध । २ वि. निवारण करनेवाला (पवा ७, ३२) ।

विणिगइरि वि [विनिगारि] निवारण-कर्त्ता (पवा ७, ३२) ।

विणिगइरिय वि [विनिगारित] प्रतिविद्ध, निवारित (महा) ।

विणिगइट्ट वि [विनिगट्ट] १ उरविट्ट, स्थित (कुप १५२), 'सकम्मविणिगइरित्तमवेच्छो' (उव, वै ६०) । २ प्राप्त, सहीन (भावा) ।

विणिगइत्त देखा विणियट्ट (उप ७८६) ।

विणिगइत्ति देखो विणियत्ति (विसे २६३६; उर १२७, आचक २५१, २५२, पवा १, १७) ।

विणिवुडु वि [विनिम] निमग्न, बुझा हुआ, तरागेर, सरागेर, 'वेदया डिमो सि ज किं पलोट्टसरमवेअणिगुडो' (गडड ४६०) ।

विणिरैअ वि [विनिवेदित] जनाया हुआ, शापित (वि ४, ४०) ।

विणिवेस तु [विनिवेश] १ स्थिति, उप-पेयन । २ विन्यास, रचना (गडड) ।

विणिवेसिअ वि [विनिवेशित] स्थापित, रखा हुआ (गा ६७४; मुर ३, ६५) ।

विणिगइर न [दे] पवाताप, मनुष्य (दे ७, ६८) ।

विणिञ्जवण ॥ [विनिर्जपन] शान्ति, दाहो-
पराम (गड्ड) ।

विणिस्सरिय वि [विनि सूत] बाहर निवत्ता
हुमा (सण) ।

विणिस्सह वि [विनिस्सह] थान्त, बवा
हुमा, 'कइयावि धणुपरिस्समविणस्सहो दोही-
यासु मज्जेह' (सुपा ५६) ।

विणिहं देखो विणिहण ।

विणिहद्दु देखो विणिहा ।

विणिहण सक [विनि + हण] मार डालना ।
विणिहणोभा, विणिहसि (सूम १, ११, ३७,
१, ७, १६) । कर्म विणिहम्मसि (उत्त
३, १) ।

विणिहय वि [विनिहत्त] जो मार डाला गया
हो, व्यापादित (महा) ।

विणिहा सक [विनि + धा] १ व्यवस्था
करना । २ स्थापन करना । सह. विणिहद्दु,
विणिहाय, विणिहिसु (वेय २६८, सूम
१, ७, २१, वण) ।

विणिहाय देखो विणिचाय (छाया १, १४—
पत्र १८६) ।

विणिहित १ वि [विनिहित] स्थापित (गा
विणिहित ३६१, सुपा ६२) ।

विणिहिसु देखो विणिहा ।

विणी अक [विनिर् + इ] बाहर निकलना ।
विणित्ति, विणित्ति (मा ६५४ वि ४६३) ।
वह. विणित्त (गड्ड ११८) ।

विणी सक [वि + नी] १ दूर करना, हटाना ।
२ विनयग्रहण कराना । विणित्ति (छाया
१, १—पत्र २६, ३०), विणिज्जमि,
विणइज्ज, विणएज्ज, विणोउ (छाया १, १—
पत्र २६, सूम १, १३, २१, वि ४६०,
छाया १, १—पत्र ३२) । भुका. विणइसु
(सूम १, १२, ३) । भवि. विणोहिद्द (पि
५२१) । वह. विणेमाण (छाया १ १—
पत्र ३३) । कवक. विणिज्जामण (छाया १,
१—पत्र २६) । हेह. विणएसु (भाषा १,
५, ६, ४, वि ५७०) ।

विणीअ वि [विनीअ] १ अपनो, दूर किया
हुमा, हटाना हुमा (छाया १, १—पत्र ३३),
'सम्बद्धेषु विणीयतएह' (उत्त २६, १३) ।

२ विनयग्रहण, नम्र, शिष्ट (ठा ४, ४—पत्र
२८५, सुपा ११६, उव) । ३ शिष्टित, 'महो
विणीअविणो' (उव ६) ।

विणीआ ओ [विनीआ] अयोध्या नगरी (सम
१५१, वण, पत्र ३२, ५०, ती १) ।

विणील वि [विनील] विरोध हटा रंग का
(गड्ड) ।

विणु (मग) देखो विणा (हे ४, ४२६, पद्,
हम्मिर २८, कुलक १२, भवि. वम्म २, ६,
२६, २७, ३, ५, कुमा) ।

विणेअ वि [विनेय] शिष्याणीक, शिष्य,
भक्तवासी, चेता (सार्ध ७०, उव १०३१
टी) ।

विणेमाण देखो विगी = वि + नी ।

विणोअ सक [वि + नोदय] १ खण्डित
करना । २ दूर करना, हटाना । ३ छेद
करना । ४ कुतूहल करना । विणोएद्द,
विणोयसि (गड्ड), विणोयेमि (श्री) (स्वप्न
५१) । भवि. विणोएद्दसामो (श्री) (पि
५२८) । वह. विणोदअत (श्री) (गाढ—
उत्तर ६५) । वक्क. विणोदीअमाण (श्री)
(गाढ—मालि ४५) ।

विणोअ धुं [विनोद] १ छेद, क्षीण । २
कौतुक, कुतूहल (गड्ड, सिरि ५६, सुर ४,
२१६, हे १, १४६) ।

विणोइअ वि [विनोदित] विनोद वृत्त किया
हुमा (सुर ११, २३८, सण) ।

विणोदअत देखो विणोअ = वि + नोदय् ।

विणोयक, वि [विनोदक] कुतूहल-जनक
विणोयग (रंभा) ।

विणोयण न [विनोदन] १ अपनय, दूर
करना परित्यज्यविणोयणत्थं (उव १०३१
टी, कुप १४७) । २ कुतूहल कौतुक (मा
४८७) ।

विण देखो विणु (सति १६) ।

विणइद्दव देखो विणयव ।

विण्णत्त वि [विज्ज] निवेदित (सुपा २२) ।

विण्णत्ति ओ [विज्जमि] १ निवेदन, प्रार्थना
(कुमा) । २ ज्ञान (सूम १, १२, १७) ।

विण्णत्ति ओ [विज्जमि] विज्ञान विनिर्णय
(सदि १४४) ।

विण्णय देखो विणइय (ठा १०—पत्र
५१६) ।

विण्णय देखो विण्ण (विपा १६, २—पत्र
१६, १, ८—पत्र ८४) ।

विण्णय सब [वि + हावय] १ विनवी
करना, प्रार्थना करना । २ भावून करना,
विदित करना । ३ बहना । विणएवद्द,
विणएवेमि, विणएवेमो (पि ५५३, ५५१) ।
भवि. विणएविस्स (सकि ४१) । वह.
विण्वंत (कात्त) । संह. विण्णविस्स
(गाढ—मुच्च २६४) । हेह. विण्णविट्ठुं
(श्री) (सकि ५३) । ह. विण्णइद्दव (श्री)
(पि ५५१) ।

विण्णयणा ओ [विहापना] विज्ञापन, निवे-
दन (उवा) । देखो विज्जणना ।

विण्णा सक [वि + हा] जानना । संह.
विण्णाय (वम ८, ५६) । ह. विण्णेय
(कात्त) ।

विण्णाउ देखो विज्ञाउ (राज) ।

विण्णाण देखो विज्ञाण (उवा, महा, पद्) ।
विण्णाण न [विज्ञान] भवाय ज्ञान, निरच-
यात्मक ज्ञान (एदि १७६) ।

विण्णाणि वि [विज्ञानिन्] निपुण, विचक्षण
(कुमा) ।

विण्णाय वि [विज्ञात] १ जाना हुमा,
विदित (पात्र, पड्ड १२०) । २ न विज्ञान
(कप्प) ।

विण्णार देखो विण्णय । विणएवेमि, विणए-
वेहि (मा ३८, ३६) ।

विण्णायस वि [वि + न्यासय] स्थापना
करना, रखना । वह. विण्णासत (पद्म
४३, २६) ।

विण्णायस देखो विज्ञास (मा ५१) ।

विण्णासणा ओ [विन्यासना] स्थापना (उव
३५४) ।

विणु १ वि [विह] परिहृत, जानकार,
विणुय १ विद्वान् (भग, प्राक १८) ।

विण्णेय देखो विण्णा ।

विण्हावणक न [विज्ञापनक] मन्त्र भादि
द्वारा संकृत जल से कराया जाता स्नान
(पह १, २—पत्र ३०) ।

विण्ह देखो वण्ह = वृण्ह (राज)।

विण्हु दुं [विण्यु] १ भगवान् श्रेयोसंन्या के पिता का नाम (सम १५१)। २ शबल नखन का प्रविपति दप (ठा २, ३—पत्र ७७)। ३ यदुवर के राजा श्रम्यवृण्ह का नववां पुत्र (मत ३)। ४ एक जैन मुनि, विण्युकुमार नामक मुनि (कुलक ३३)। ५ एक योही (उप १०१४)। ६ मासुदेव, नारायण, योहण्य। ७ व्यापक। ८ बहि, भ्रानि। ९ शुद्ध। १० एक स्मृति-वर्ता मुनि (हे २, ७५)। ११ शायं जेहिल के शिष्य एक जैन मुनि (राज)। १२ श्री, ग्याएवें जिनदेव की माता का नाम (सम १५१)। १३ कुमार दुं [कुमार] एक विष्णुपति जैन मुनि (पंडित)। १४ लरी श्री [श्री] एक सार्वबाह्य-भरती (महा)। दसो विण्हु।

वितंड देखो वितद (भाषा)।

वितण्ह वि [वितण्य] लुण्ण-रहित, नि.लुह (उप २६४ टी)।

वितत दुं [वितत] १ बाघ का एक प्रकार का शब्द (ठा २, ३—पत्र ६३)। २ एक महाग्रह (मुजज २०—पत्र २६५)। देखो विअत्त। ३ देखो विअय = वितन (ठा ४, ४—पत्र २७१)।

विनत न [वि] कार्य, काम नाज (दे ७, ६४)।

वितत्त वि [वितण्य] विरोध लुत्त (पएह १, ३—पत्र ६०)।

विततय दुं [वितस्त] १ एक महाग्रह, ज्योतिष्य देव-विषय (ठा २, ३—पत्र ७८)। २ वि. भय-नीत, डरा हुआ (महा)।

वितत्सा श्री [वितस्ता] एक महा-नदी (ठा ५, ३—पत्र ३५१)।

विदद वि [वितर्द] १ हिसक। २ प्रगुल्ल (भाषा)।

विनर देखो विअर = वि + त्। वितराम, वितरामो (पि १०, ४५५)।

वितर (भय) भन [वि + स्तारय] विस्तार करना। वितर (विण)।

वितरण देखो विअरण = वितरण (राज)।

वितल नि [वितल] शबन, वितलनकर (राज)।

वितह वि [वितय] गिण्या, असत्य, झूठा (भाषा, कण, सण)।

वितिविच्छिअ वि [वितिविस्सित] फल की तरह सदेह वाला (भय)।

वितिन्निण देखो विद्धिक्कण (निबु १६)।

वितिकंत देखो विद्धकंत (भय)।

वितिगिद्ध सक [वि + चिकित्स] १ बिचार करना, निमर्श करना। २ संशय करना। ३ निन्दा करना। वितिगिद्ध (भूम २, २, ४६-५०, पि ७४, २१५)।

वितिगिठा देखो वितिगिच्छा (भाषा १, ३, ३, १-१, ५, २, २, पि ७४)।

वितिगिद्धिय देखो वितिगिच्छिअ (पि ७४, २१५)।

वितिगिच्छ देखो वितिगिठा। वितिगिच्छामि (पि ११५, ३२७)।

वितिगिच्छा श्री [वितिक्रिस्ता] १ सशय, शंका, सहम (भूम १, ३, २, ५, पि ७४)। २ वित्त विपन्न, वित्त भ्रम। ३ निन्दा (भूम १, १०, ३, पि ७४)।

वितिगिच्छिअ देखो वितिगिच्छिअ (भय)।

वितिगिट्ट देखो विग्गिट्ट (राज)।

वितिमिर वि [वितिमिर] १ श्रम्यकार-रहित, विशुद्ध, निर्मल (सम १३७; पएह १७—पत्र ५१६; ३६—पत्र ८४७, कण)। २ भ्रान्त-रहित (धीप)। ३ वृ. ब्रह्म-देवलोके का एक विमान-प्रस्तट (ठा ६—पत्र ३६७)।

वितिरिद्ध वि [वितिरिद्ध] बक, टेढ़ा (स ३३५, पि १५१; भय ३, २—पत्र १७३)।

वित्त वि [वि] वीर्य, सम्भा (दे ०, ३३)।

वित्त न [वित्त] १ द्रव्य, धन (पाय, भूम १, २, १, २२-धीप)। २ वि. प्रसिद्ध, विख्यात (भूम २, ७, २; उत्त १, ४४)। ३ वि. [वत्त] धनी (द्र ५)।

वित्त न [वृत्त] १ धन्य, पय, कविता (भूमि ३८; सम्मत ८३)। २ धरित, धारण्य (सिरि १०६३)। ३ वृत्ति, वर्तन (हे १, १२८)। ४ वि. उत्पन्न, संज्ञात (स ७३७, महा)। ५ तपोव, पुत्रता हुआ (महा)। ६ दह, मज्जत। ७ वर्तुल, मोन। ८ मपीठ,

पठित। ६ मृत (हे १, १२८)। १० संविद्ध, पूर्ण (पुर ४, ३६; महा)। ११ प्राय वि [प्राय] पूर्ण-प्राय (पुर ७, ८४)। देखो वट्ट = वृत्त।

वित्त देखो वेत्त = वेत्त (सुमनि १०८)।

वित्त देखो पित्त (उप ५२२)।

वित्तद वि [वि] १ गवित, प्रमिमानो। २ पुं. वित्तित, वित्तित। ३ गर्व, प्रहकार (दे ७, ६१)।

वित्तंत दुं [वृत्तान्त] समाचार, खबर (पदम २३, १८; सुपा २०४, मवि)।

वित्तय देखो वितय (सुल ६, १, नाट—वेणो २६)।

वित्तविय देखो वट्टिय, वित्तिय = वित्तित (मवि)।

वित्तस सक [वि + प्रासय] भयभीत करना, डराना। वित्तस (उत्त २, २०)। वक्त. वित्तसंत (पदम २८, २६)।

वित्तस दुं [विज्ञास] भय, नाश, डर (सुपा ४४१)।

वित्तसाय न [विज्ञासन] भय-प्रदर्शन (भाषा)।

वित्तसायि वि [विज्ञासित] डरा कर भगया हुआ (सुपा ६५२)।

वित्ति दुं [वेत्ति] दरवान, प्रतीहार (कम्म १, ६)।

वित्ति श्री [वृत्ति] १ जीविका, निर्वाह-साधन (एपाया १, १—पत्र १७, स ६७६, पुर २, ४६)। २ टीका, निवरण (सम ४६; विते १४२४, सायं ७३)। ३ वर्तन, धारण्य। ४ वृत्ति। ५ वीर्यवी श्रादि देवना-विरोध। ६ मृत करण श्रादि का एक तरह का परिणाम (हे १, १२८)। ७ अत्रि [वृत्त] वृत्ति देवता (धीप, प्रव, एपाया १, १ टी—पत्र ३)। ८ आर नि [आर] टीका-कार, निवरण-कर्ता (कण्)। ९ न्देय, देय [वृत्त] जीविका विनाश (भाषा, मूस १, ११, २०)। देखो वित्तो = वृत्ति।

वित्तिय वि [वित्तिय] वित्त से पुत्र, धन-वाला, वैभवशाली (धीप; भल, एपाया १, १ टी—पत्र ३)।

विचो देवो विच = वृत्त । *वृत्त वि
[कल्प] विदप्राय, वृत्तप्राय (संदु ७) ।

विचो देवो विचि = वृत्ति । *संशेष पुं
[संक्षेप] याज्ञ तप वा एव भेद—रात्रि,
पौने कीर भोगने की पौनो की बग करना
(सम ११) । *संशेषण न [संक्षेपण]
वही ग्रथ, विचोसंशेषण रत्नपाथो (मय
२८, पठि) ।

विचोस वि [विचोस] घनी, धीमंत (उप
७२८ टी) ।

विच्य पुन [विच्य] सुवर्ण, पोना (से १, १) ।

विच्यय भक्त [वि + च्या] १ स्थिर होना ।
२ विस्तम्ब करना । ३ विरोध करना । पट्ट.
विच्ययन (से १, ४, १३, ७०; ७४) ।

विच्यय देवो विच्यय (स १३४ टि) ।

विच्यय वि [विच्यय] १ विस्तार-मुक्त,
विच्यय विराज (मय, कीर, पात्र, वस्तु,
भक्ति, गा ४०७) । २ संबद्ध, पठित (से
१, १) ।

विच्यय भक्त [वि + च्य] १ कैलास । २
वहना । विच्यय (प्राह ७६; स २०१;
६५; सिरि ६२७, मन २५) । वहु.
विच्ययंत (से ३, ३१; स ६८६) । हेह.
विच्ययिर्द (सि ५०५) ।

विच्यय पुन [विच्यय] १ विस्तार, प्रपंच
(गड) । २ शब्द-समुह (गड ८६) ।

विच्यय देवो विच्ययः "तप विच्यय कज्ज-
धुर" (से ४, ४६), विच्यय च तलपट्ट" (वज्ज १०४) ।

विच्ययण वि [विच्ययण] १ कैलासेवाला । २
वृद्धिजनेक (कुमा) ।

विच्ययिण देवो विच्यय (सुर ३, ५४, सुपा
३६८, सि ५०५, भक्ति, सण) ।

विच्यय सक [वि + स्तारय] कैलास ।
विच्ययद (भक्ति), विच्ययदि (श्री) (नाट—
शकु १०६) ।

विच्यय पुं [विच्यय] कैलास, प्रपञ्च (गजद,
हे ४, ३६५, नाट—शकु ६) । *रुह वि
[रुचि] सम्यक्त्व-निशेष पात्र, सब पदार्थों
को विस्तार से जानने की चाहवाला सम्य-
क्त्वो (पन १४६) ।

विच्ययदत्त (श्री) वि [विच्ययदत्त]
कैलासेवाला (भक्ति २८; सि ६००) ।

विच्ययण वि [विच्ययण] कैलासेवाला
(रमा) ।

विच्ययण न [विच्ययण] कैलास; "सोममद-
विच्ययणमिस्तल्योयं यमो समुत्तारो" (यम
१२२, सिरि १२०७) ।

विच्ययिण वि [विच्ययिण] कैलास हुमा
(सण, हे) ।

विच्ययण वि [विच्ययण] विस्तार-मुक्त,
विच्ययण विराज (नाट—मुच्च ६४;
पात्र, भक्ति) ।

विच्यय देवो विच्यय (स ६६७; गा ४०७
म) ।

विच्यय न [वि] विस्तार, कैलास (पट्ट) ।

विच्यय देवो विच्यय (स ६१०) ।

विच्यय वि [विच्यय] जो विरोध में लड़
हुमा हो, विरोधी बना हुमा (स ४६७;
६३४) ।

विद देवो विद = विद । वहु. विदंत (उप
२८० टी) । संह. विदिता, विदिताप
(सूत्र १, ६, २८; सि ५८३) ।

विदं पुं [विदं] कला तक सम्पी लट्ठी
(पन ८१) ।

विदंस देवो विदंसय (पह १, १ टी—
पन १५) ।

विदंसण न [विदंसण] अण्णार-स्थित वस्तु
या प्रकारण (पह १, १—पन ८) । देवो
विदंसण ।

विदंसय वि [विदंसय] स्थेन आदि हितक
पत्नी (उत १६, ६५, सुख १६, ६५) ।

विदं पुं [विदं] वि [विदं] १ पण्डित, विच-
विदं ३] सण (सि ८) । २ विशेष दण्य
(पन १२५) । ३ अनीयं वा एक भेद
(राज) । देवो विदं पुं ।

विदं पुं [विदं] १ देश-विशेष, "इयो
य विदंमदेसमंजसं कुंजिं नय" (कुप ४८; गा
८६) । २ भवान् सुपात्रवन्नाय के गणपर—
मुख्य शिष्य का नाम (सम १५२) । ३ पुत्री,
विदं देश की प्राचीन राजधानी, कुण्डिनपुर,
जो आजकल "नागपुर" के नाम से प्रसिद्ध है,
"दूरे विदंम" (कुप ७०) ।

विदंसण वि [विदंसण] जितने देवने से
भव जलन हो गए वस्तु, विरप भावारगती
विभीषिणा आदि; "एग एं ताए विदंसणें
सिद्धे" (उपा) । देवो विदंसण ।

विदं पुं [विदं] यंश, वांग (मुम १०,
१; ठा ४, ४—पन २७१) ।

विदं पुं [विदं] १ बना आदि पह शुभक
पात्र्य जितने को दुनने समान होते हैं,
"जमि हु पीतिगन्ते नेरो न
हु होह भिति तं विदं ।
विदं वि हु जलन नेदुयं
होह नो विदं" (संघोष ४४) ।

२ वि. जितने को दुनने लिए गए हो यह
(सूत्र ७१) ।

विदं पुं [विदं] वि [विदं] तपित्त,
पुणित (नाट—वेणी २६) ।

विदं देवो विदं = विदं (से १३, २५) ।

विदं देवो विदं = विदं (से १३, २५) ।

विदं देवो विदं = विदं (से १३, २५) ।

विदं देवो विदं = विदं (से १३, २५) ।

विदं देवो विदं = विदं (से १३, २५) ।

विदं देवो विदं = विदं (से १३, २५) ।

विदं देवो विदं = विदं (से १३, २५) ।

विदं देवो विदं = विदं (से १३, २५) ।

विदं देवो विदं = विदं (से १३, २५) ।

विदं देवो विदं = विदं (से १३, २५) ।

विदं देवो विदं = विदं (से १३, २५) ।

विदं देवो विदं = विदं (से १३, २५) ।

विदं देवो विदं = विदं (से १३, २५) ।

विदं देवो विदं = विदं (से १३, २५) ।

विदं देवो विदं = विदं (से १३, २५) ।

विदं देवो विदं = विदं (से १३, २५) ।

विदं देवो विदं = विदं (से १३, २५) ।

विदं देवो विदं = विदं (से १३, २५) ।

विदुम वि [विदुस्] विद्वान्, जानकार
(सूत्र १, २, ३, १७)।

विदुर वि [विदुर] १ विचक्षण, विज्ञ (कुमा)।
२ पौर। नागर, नागर्त्त (दे १, १७७)।
४ पुं. कीटा के एक प्रख्यात मन्त्री (छाया
१, १६—पत्र २०८)।

विदुल्लंग न [विदुल्लान्] सख्या विरोध,
हाहाहूँ की चौरीया नाम से पुनर्ने पर जो
सख्या लम्प हो वह (इक)।

विदुल्लता श्री [विदुल्लता] सख्या-विरोध,
विदुल्लता की चौरीया साह से पुनर्ने पर
जो सख्या लम्प हो वह (इक)।

विदुस देखो विदुः, एण पमाण ग्रन्थि विदुसाण'
(धर्मस ८८०)।

विदुस्य { पुं [विदुस्य] मसल्लार, राजा के
विदुस्य साय रहनेवाला मुसल्लार (साय
१६३, समस्त ३०)।

विदेस देखो निपस=विदेश (छाया १,
२—पत्र ७६; श्रौय, पत्र १, ६६, विदे
१६७१, कुमा, प्रासू ४४)।

विदेसि कि [विदेशिन] परदेसी (छाया ७२)।
विदेसिअ वि [विदेशिक] ऊपर देखो (सिदि
३६४)।

विदेह पु [विदेह] १ राजा जनक (वी ३)।
२ पुं. व. देश विशेष, बिहार का उत्तरीय
प्रदेश जो भागवत 'तिरहुत' के नाम से प्रसिद्ध
है, 'बहेव भादे' बाने पुनर्देसे विदेहा खाम
जणबया' (सी १७, अत)। ३ पुं. व. वर्य-
विरोध, महाविदेह-सीत (वव १६३)। ४
त्रि. विशिष्ट शरीरवाला। ५ निर्लेप, लेप-
रहित। ६ पुं. भगव, कामदेव। ७ गृह-नास
(कण ११०)। ८ निपय पर्वत का एक
दूट। ९ नीलवत पर्वत का एक दूट (ठा
६—पत्र ४४४)। 'जन्मू श्री [जन्मू]
जन्मूरा विरोध, जिनके नाम से यह जन्मू-
द्वीप बहताता है (ज ४, अत)। 'जष पुं
[जाच], 'याय' भगवान् महावीर (कण
११०)। 'दिशा श्री [दिशा] भगवान्
महावीर की माता, रानी त्रियाता (कण)
'दुदिआ श्री [दुदिह] राजा जनक की
पुत्री, सीता (वी ३)। 'पुच पुं [पुच]
राजा वृजिन (मा ७, ८)।

विदेहदित्र पुं [विदेहदर] भगवान् महावीर
(कण ११० टी)।

विदेहा श्री [विदेहा] १ भगवान् महावीर
की माता, त्रिशला देवी (कण ११० टी)।
२ जानकी, सीता (पत्र ४४०, १०)।

विदेहि पुं [विदेहिन्] विदेह देश का
अभिपति, तिरहुत का राजा (सूत्र १, ४,
४, २)।

विदेही की [विदेही] राजा जनक की पत्नी,
सीता की माता (पत्र २६, २)।

विदेहिअ वि [दे] मारित, मट किया हुआ
(दे ७, ७०)।

विदेह पुं [विदेह] एक नरक-स्थान
(देवेन्द्र २७)।

विदेह सक [वि+द्राय] १ विनाश
करना। २ रैरान करना, उपद्रव करना।
३ दूर करना, हटाना। ४ भरना, टपकना।

विदेहई (कुप्र २८०)। बह, निद्वयत
(रयण ७२)। बहक 'रज्ज रक्कड़ न परेहि
विदेहिजंत' (कुप्र २७, मुद्र १३, १७०)।

विदेह पुं [विदेह] १ उपद्रव, उपसर्ग,
'परपक्कवरुणविदेहा दूरपुवपया सबे'
(कुप्र २०)। २ विनाश (छाया १, ६—पत्र
१५७, धर्मस २३)।

विदेहिअ वि [विदेहित] १ विप्लावित (सि
४, ६०)। २ दूर किया हुआ, हटाया हुआ
(मा ८८)। ३ विनाशित (अभि, सण)।

विदेह सक [वि+द्रा] खराब होना। विदेह
(सि ४, २६)।

विदेहा वि [विदेहा] १ म्यान, निनेत्र
पीता, 'विदेहापुत्रा सवोगिला' (सुर ६,
१२४), 'अरीणविदेहापुत्रमती' (यति
४३), 'दारिद्र्यविदेहापुत्रमती' (तुम्ह
१६३)। २ शोभापुत्र, दिनपुत्र,
'विदेहापुत्रपरिणी' (म ४७३, ज ६०४,
उप ३२० टी)।

विदेहा वि [विदेहा] १ विनट (कुमा)
२ पलायित। ३ द्रव-मुक्त, द्रव-प्राप्त (दे १,
१०७, पद)।

विदेहाय भन [विदेहाय] भुन की विद्वान्
मानना। वर विदेहायमाग (भाषा)।

विदेहा देखो विदेहा (वव १)।

विदेहाय (भन) वि [विदेहाय] चोरेवाला,
फाँसेवाला। श्री. 'पी (अभि)।

विदेहाय देखो विदेहाय (अभि)।

विदेह पुं [विदेह] १ प्रवाण, मृगा (सि
२६, गड, जी ३)। २ उत्तम वृक्ष (सि २,
२६)। 'मि पुं [मि] नवनें बलदेव का
पूर्व-जन्म का पुत्र (पत्र २०, १६३)।

विदेह वि [विदेह] अमिन्न, पीहित,
'अमिन्नमविह (७६) मा (छाया १, १—
पत्र ६४)।

विदेह पुं [विदेह] सग्रा, शरम (दे ७,
६४)।

विदेह पुं [विदेह] द्वेय, मस्तर (पण्ड १, २—
पत्र २६)।

विदेह वि [विदेह] द्वेय-योग्य, अमिन्न
(पण्ड १, २—पत्र २६)।

विदेहाय न [विदेहाय] एक प्रकार का
अभिचार-कर्म, जिससे परस्पर में शत्रुता
होती है (सि ६७८)।

विदेहि वि [विदेहिन्] द्वेय-कर्ता (कुप्र
३६७)।

विदेहिअ देखो विदेहिअ (भा १२)।

विदेहिअ वि [विदेहित] द्वेय-भेद (अभि)।

विदेह सक [व्यय] वीरणा, खेद करना।
विदेह (भाषा १५३, नाट—रत्ना ७)।

बहक, विद्विजत (दे ८८)। संह, निद्वधूण
(सूत्र १, ४, १, ६)।

विदेह वि [विदेह] शोभा हुआ, वेध किया
हुआ (सि १, ११, अभि)।

विदेह देखो युद्ध=वृद्ध (उत्त ३२, ३, दे १,
१२८, अभि)।

विदेह सक [वि+प्यस्] विनट होना।
विदेह (ठा ३, १—पत्र १२३)। वर,
विदेहसमाग (सूत्र १, १५, १८)।

विदेह सक [वि+प्यस्] विनट
नरला। अवि. विदेहेहित (मा ७, ६—
पत्र ३०५)।

विदेह पुं [विदेह] १ विनाश (सुर १,
१२)। २ वि. विनाश-कर्ता, 'जहा से
विमिरिबद्ध उत्तिट्टे दे विनाश' (उत्त ११,
२४)।

विपंची श्रो [विपञ्ची] वाय-विशेष, चीणा (पण १, ४—पत्र ६८; २, ५—पत्र १४६) ।

विपक्व वि [विपन्व्] पक्वा दृष्ट्या (उप ४ २११) । देखो विवक्व ।

विपक्व देखो विवक्वः 'निजिविपक्व-लक्त्वो' (सुभा १०३, २४०) ।

विपक्विय वि [विपक्षिक] विरोधी, दुरमन (सन्तोष ५६) ।

विपक्षय न [विप्रत्ययिक] बारहवें जैन मग ग्रन्थ का सूत्र-विशेष (सप्त १२८) ।

विपक्षमाण वि [विपक्ष्यमाण] १ जो पक्या जाता हो वह (आ २०, ८६), 'आमासु मपक्षमासु विपक्षमाणानु मंसपेसोसु' (सन्तोष ४४) । २ दाघ होता, जलता, 'तस्मिन्निहाम-सजाताविपक्षमाणस्य मह निष्' (रघु ४१) ।

विपक्षय देखो विपक्षय (राज) ।

विपक्षास देखो विपक्षास (गाढ—मृच्छ २२६) ।

विपक्षिषति देखो विपक्षिषति (विशे २६१४, सम्पत् २२८) ।

विपक्षिसेह सक [विप्रति + सिध्] निषेध करना । कृ. विपक्षिसेहेयव्य (अग ५, ७—पत्र २९४) ।

विपणोष्ठ सक [विप्र + मोद्घ्] प्रेरणा करना । विपणोष्ठए (भाषा १, ५, २, २, वि २४४) ।

विपण्ण देखो विपण्ण = विपण (वाच ८) । विपत्ति देखो विपत्ति = विपत्ति (गा २८२ अ, राज) ।

विपत्यादिद (शो) वि [विप्रस्ताभित] आरम्भ, जिसका प्रारंभ किया गया हो वह; 'पुद्गल चोरिप्याए एसम्ह घरे बतहो विपत्या-विदो' (हास्य १२१) ।

विपरामुस सक [विपरा + मृश] १ समा-रम्भ करना, हिसा करना । २ पीडा उपनामा, हेतन करना । ३ मर्ग, उत्पन्न होना, उज-जना । विपरामुद, विरामुद्वि, विरामुद्वह (भाषा, वि ४०) । देखो विपरामुस ।

विपराहुत वि [विपराहुत] विशेष पराहुत, प्रतिशय उदासीन (पत्र ११५, २२) ।

विपरिकर्म न [विपरिकर्मन्] शरीर की आकुञ्चन-प्रसारण आदि क्रिया (भाषा २, ८, १) ।

विपरिकुञ्चि वि [विपरिकुञ्चिन्] विपरि-कुञ्चित नामक बन्दन-लोपनामा; 'देववहा-विस्तले बहेइ बरविए विपरिकुञ्चो' (बह ३) ।

विपरिकुञ्चिय देखो विपल्लिञ्चिय (राज) । विपरिखल सक [विपरि + खल] १ स्वस्थित होना, गिला । २ झूल करना । बह. विपरिखल्लेन (अष्ट २२) ।

विपरिणम सक [विपरि + णम्] १ बद-लना, रूपान्तर की प्राप्ति होना । २ विपरीत होना, उलटा होना । विपरिणमे (पिंड ३२७) । बह. विपरिणममाण (अग ७, १०—पत्र ३२५) ।

विपरिणमि वि [विपरिणमि] रूपान्तर की प्राप्ति (पिंड २६५) ।

विपरिणाम सक [विपरि + णम्य] १ विपरीत करना, उलटा करना । २ बदलाना, रूपान्तर की प्राप्ति करना । विपरिणामेह (स ५१३) । हे. विपरिणामिसाए (उवा) ।

विपरिणाम पुं [विपरिणाम] १ रूपान्तर-प्राप्ति (भाषा; बीष) । २ उलटा परिणाम, विपरीत अर्थव्यवस्था (धर्मसं ५११) ।

विपरिणामिय वि [विपरिणमित] रूपान्तर की प्राप्ति (अग ६, १ धै—पत्र २५१) ।

विपरिधाव सक [विपरि + धाव्] इयर उबर दौड़ना । विपरिधावई (उत २३, ७०) । विपरियास देखो विप्परियास (राज) ।

विपरिवसाय सक [विपरि + वासय्] रहना । विपरिवसावेद (छाया १, १२—पत्र १७५) । बह. विपरिवसावेमाण (छाया १, १२) ।

विपरीअ देखो विपरीअ (सूच १, १, ४, ५; भा ५४ ध) ।

विपल्लअ सक [विपरा + अय्] दूर भागना । बह. विपल्लअन (गा २६१) ।

विपल्लय देखो विपल्लय (वि २८५) ।

विपरिस वि [विदृशित] देखनेवाला (भाषा) ।

विपाग देखो विपाग (राज) ।

विपिकर देखो विपिकर । बह. विपिकरंत (राज) ।

विपिण देखो विपिण (कुमा) ।

विपित वि [दि] विकसित, खिलना हुआ (दि ७, ६१) ।

विपुल देखो विपुल (छाया १, १—पत्र ७५; कप, पण २, १—पत्र ६६) । 'वाहण पुं [वाहन] भासतवर्ष में होनेवाला बारहवां बरवर्षी राजा (सप्त १५४) ।

विप्प न [दि] चुचक, डुन, धूँ (दि ७, ५७) ।

विप्प पुं [विप्र] ब्राह्मण, द्विज (दि १, १७७, महा) ।

विप्प पुं [विप्रुप्, विप्र] १ मूल बीर विद्या के सिद्ध । २ विद्या बीर मूल; 'मुत्तपुटोसाए विप्रुमो विप्पा अले विविंति विप्पा भासति य पत्ति पावच्छ' (विशे ७८१; बीष; महा) ।

विप्पइह देखो विप्पिगट्ट (राज) ।

विप्पइण वि [विप्रकीर्ण] बिखरा हुआ, इयर उबर पटना हुआ (वि २, ५; कव) ।

विप्पइर सक [विप्र + क्] इयर उबर पटना, बिखरेला । विप्पइरमि (उवा) । बह. विप्प-इरमाण (छाया १, ६—पत्र १५७) ।

विप्पइज सक [विप्र + जुज्] १ विच्छ प्रयोग करना । २ विशेष रूप से जोड़ना; 'बहुवा वायामो विप्पइजंति' (भाषा १, ८, १, १) ।

विप्पओअ १ पुं [विप्रयोग] प्रसहना, मनन, विप्पओअ २ जुदा, विच्छ, विशेष (उत्तर १२; स २८१; बह. पत्र ४५, ४६; जो ४३, उत १३, ८; महा) ।

विप्पइ वि [विप्रकट] विशेष रूप से प्रकट (अग ७, १८—पत्र ३२४) ।

विप्पिकर देखो विप्पइर । बह. विप्पिकरेमाण (छाया १, १—पत्र ३६) ।

विप्पिअ देखो विप्पिअ (वि १६६) ।

विप्पिअमिय वि [विप्रमहिम] धमपट्ट पुट (सूच १, १, २, ५) ।

विष्पगारिस पु [विप्रकर्ष] दूरी, वासप्रता
या प्रभाव 'देमादविष्पगारिता' (धर्मसं
१२१७)।

विष्पगालन स [नाशय, वि + गाल्य]
नाश करना। विष्पगालन (दे ४, ३१, वि
५५३)।

विष्पगालिअ वि [नाशित, निष्पगालि]
नाशित (हुमा)।

विष्पगिद्ध वि [विप्रकृष्ट] १ दूरवर्ती, दूरी पर
स्थित (स २२६)। २ दीर्घ, लम्बा 'प्राह-
विष्पगिद्धिं यदापेहि' (एणा १, १५)।

विष्पचय सक [विप्र + त्यज्] छोड़ना,
त्याग करना। क. विष्पचयव्य (उदु
३५)।

विष्पशय पु [विप्रत्यय] १ सदेह संशय
(उत्त २३, २४)। २ वि. प्रत्यय रहित,
अविश्वसनीय (उव)।

विष्पजह वि [विप्रहीण] परित्यक्त (एणा
१, २—पत्र ८५, पचा १४, ६, पव
१२१)।

विष्पजह सक [विप्र + हा] परित्याग करना,
छोड़ देना। विष्पजह, विष्पजहति, विष्पजहे
(कस उवा सुम २, १, १८, उत्त ८, ४)।
अवि. विष्पजहिसानो (पि ५३०)। बह.
विष्पजहमाण (जा २, २—पत्र ५६, वि
५००)। बह. विष्पजहिसा, विष्पजहाय
(उत्त २६, ७३ अग)। विष्पजहणिज्ज,
विष्पजहियव्य (आया १, १—पत्र ४८,
पि ५७१, आया १, १८—पत्र २४१)।

विष्पजह् न [विप्रहाण] परित्याग। 'सेणिया
ही [श्रेणिता] बारह्वं जैन भग्न भय्य का
एक परिकर्म—अंश विरोध (सम १२६)।

विष्पजह्णा } ही [विप्रहाणि] प्रकृष्ट
विष्पजह्णा } त्याग, परित्याग (उत्त २६,
७३, भीप जिसे ३०८६ पएण ३६—पत्र
८४७)।

विष्पजहिय वि [विप्रहीण] परित्यक्त (पि
५६५)।

विष्पजोग देहो विष्पजोग (पड)।

विष्पडिअ सक [विपरि + ड] विपरीत होना,
उलटा होना। विष्पडिअ (सुम १, १२, १०)।

विष्पडिघाय पु [विप्रतिघात] प्रतिबन्ध,
धटकाव (आया १, १६—पत्र २५३)।

विष्पडिह पु [विप्रतिपद्य] विपरीत मार्ग
(उव १०३१ टी)।

विष्पडिघण देहो विष्पडिघण (पव ७३
टी)।

विष्पडिवत्ति रो [विप्रतिपत्ति] १ विरोध
(जिसे २४००)। २ प्रतिज्ञा भंग (उव ५१६)।

विष्पडिघन वि [विप्रतिपन्न] १ जिसने
विरोध रूप से स्वीकार किया हो वह, 'निच्छ
एवमेहि परियह्दमाणेहि २ निच्छत्तं विष्प-
डिवत्ते जाए जाए यावि होया' (आया १,
१३—पत्र १७८)। २ विरोध प्राप्त, विरोधी
बना हुआ (आया १, ८, १, ३, सुम १, ३,
१, ११)।

विष्पडिवेअ } सक [विप्रति + वेद्य]
विष्पडिवेद्य } १ जानना। २ विचारना।
विष्पडिवेअ (आया १, ५, ४, ५), विष्पडि-
वेअति (सुम २, १, १३)।

विष्पडिसिद्ध वि [विप्रतिपिद्ध] आपस में
असमत (उवर ३)।

विष्पडोय वि [विप्रतीप] प्रतिदुल (मास
१७७)।

विष्पनट्ठ वि [विप्रनट्ठ] वसायित, नाश-
प्राप्त (स ३२३ उवा)।

विष्पणम } सक [विप्र + णम्] १ नगन।
विष्पणय } २ अक. खपर होना। विष्पणवति
(सुम १, १२, १७)। बह. विष्पणमत
(राज)।

विष्पणस सक [विप्र + नञ्] नष्ट होना,
विनाश प्राप्त होना। विष्पणस (कस)
अवि. विष्पणस्तिहि (अहानि ४)

विष्पणास पु [विप्रणाश] विनाश (धर्मवि
५७)।

विष्पतार सक [विप्र + तारय्] ठगना।
विष्पतारसि (धर्मवि १४७)। कर्म. विष्पत-
रीप्ति (री) (नाट—शकु ७५)।

विष्पटीअ } (री) देहो विष्पटीअ (नाट-
विष्पटीअ } मालती १०६ ११६ भ्रुज्ज
४८)।

विष्पमाय पु [विप्रमाद] विविध प्रमाद
(सुम १, १४, १)।

विष्पमुच सक [विप्र + मुच्] छोड़ना,
मुक्त करना। कर्म. विष्पमुच्च (उत्त २५,
४१)।

विष्पमुक वि [विप्रमुक्त] विमुक्त (भीम सुव
२, २३७ सुमा ४४५)।

विष्पय न [दे] १ तार जिना। २ दात। ३
वि. वापित। ४ पुं वय (दे ७, ८६)।

विष्पयार सक [विप्र + तारय्] ठगना।
विष्पयारति, विष्पयारोमि (सुप्र ६, जि ८८)।
कर्म. विष्पयारीपद (सुप्र ४४)। सङ्क.
विष्पयारिअ (पि ८८)।

विष्पयारणा ही [विप्रतारणा] बचना,
ठगाना (सुप्र ४४, मोह १४)।

विष्पयारिअ वि [विप्रतारित] यज्ञित, ठगा
हुआ (मोह १०१)।

विष्परद्ध वि [दे] विरोध पोषित, 'वरपरण-
दंरुसलपहारेहि विष्परद्धे समाणे ॥ केव
मदहं पाणीय पावेउ (पाव) समोरोवि'
(आया १, १—पत्र ६४)। देहो परद्ध।

विष्परामुस देहो विपरामुस, भावती केयावती
लोगवि विष्परामुसति मट्ठण मण्डुएण वा,
एणु केव विष्परामुसति' (आया)।

विष्परिणम देहो विपरिणम। अवि. विष्परि-
णमिस्सति (अन)।

विष्परिणय देहो विपरिणय (अग ५, ७
टी—पत्र २१६, कल)।

विष्परिणाम देहो विपरिणाम = विपरि +
खण्य्। विष्परिणामति विष्परिणामति
(आया)। सङ्क. विष्परिणामइत्ता (अग)।

विष्परिणाम देहो विपरिणाम = विपरिणाम
(आया अग ५, ७ टी—पत्र २१६)।

विष्परिणामिय देहो विपरिणामिय (अग ६,
१—पत्र २५०)।

विष्परियास सक [विपरि + आसय्]
व्यस्य करना उलटा करना। विष्परियासि
(निप्र ११)। बह. विष्परियासत (निप्र
११)।

विष्परियास पु [विपर्यास] १ व्यस्य-
विपरीतता (आया सुम १, ७, ११)। २
परिभ्रमण (सुम १, १२, १३, १, १३-
१२)।

विपरियासणा श्री [विपर्यासना] व्यत्यय
वरना (निष्ठ ११) ।

विपरुद्ध वि [विपरुद्ध] तिरस्कृत, 'हयनिह
यविपरुद्धो दूषो' (पञ्च ८, ८५) ।

विपल देखो निष्प = विप्र (प्राक् ३७) ।

विपलभ सक [विप्र + लभ] ठाना ।
विपलभेमि (स ५०६) ।

विपलभ पुं [विप्रलभम्] १ बधना, ठगार
(उप २४) । २ शृङ्गार की एक प्रवस्था—
जिसमें उल्लूक अनुप्राण होने पर भी प्रिय
समागम नहीं होता (मुद्रा १६४) । ३ विप-
र्वाप्त, व्यपगत, वैरोप (सर्गस ३०४) । निरह,
विशेष (कप्पू) ।

निष्पलभ वि [विप्रलभक] प्रसारक,
ठगनेवाला (मुद्रा ४७) ।

विपलभ वि [विप्रलभित] १ प्रसारित ।
२ विरहित (मुद्रा २१६) ।

निष्पल वि [विप्रलभ्य] बधिन, प्रसारित
(बाह ४५, स ४१८, ६८०) ।

विपल्य पुन [दि] निविष्टता, निविष्टता,
'तद'कु सो सन्न जाणइ सबंधविपल्य'
(समयि १२७) ।

विपल्यविद् (श्री) न [विप्रलपित] निरर्थक
बधन, बधनाद (स्वप्न ८१) ।

विपल्यविद् देखो विपलाय । भूका, विपला-
हत्या (विपा १, २—पञ्च २६) । वक्र-

विपल्यविमान (छाया १, १—पञ्च ६५) ।

विपल्यवि [विप्रलाप] १ परिवर्तन,
विपल्यवि } रोग, कष्टन, 'मन्त्रिभोगो विप-

लापो' (सुदु ८७, रमण ६४) । २ निरर्थक
बधन, बधनाद (उत्त १३, ३१) । ३ विप्र-
लाप (पञ्च ४४, ६८) ।

विपल्यविचिअ न [विपरिचिअ] गुह-
वन्दन वा एक दोष, संपूर्ण वन्दन न करके
बोच में भावोचित करने लग जाना (पञ्च २—
माया १५२) ।

निष्पल्यवि वि [विप्रलोपक] लुप्तवाला,
छुटेरा (पण्ड १, १—पञ्च ४४) ।

विपल्योदण वि [विप्रलोभन] लुप्तवाला
(स ७६३) ।

विपण पुं [विपण्य] १ देश का उद्भव,
क्रांति । २ दूसरे राजा के राज्य प्राप्ति से
भय (हे २, १०६) । ३ शरीर की निरस्तु-
सत्ता, भवत्पत्ता (मुद्रा) ।

विपणन [दि] भज्जातक, भिन्नावा (दे ७,
६६) ।

विपणन सक [विप्र + यस्] प्रवास में
जाना, देशान्तर जाना । संक्र. विपणनसिय
(आवा २, ५, २, ३) ।

विपणनसिय वि [विप्रोपिन] देशान्तर में
गया हुआ, प्रवास में गया हुआ (छाया १,
२—पञ्च ७६, १, ७—पञ्च ११५) ।

विपणयस पुं [विप्रयास] प्रवास, देशान्तर-
गमन (प्रति १००) ।

विपणस वि [विप्रसन्न] १ विशेष प्रसन्न,
खुश । २ प्रसन्नचित्त का मरल (उत्त ५,
१८) ।

विपणसर सक [विप्र + स्र] फैलना । भूका,
'बहने हृ-यि' दिखो दिस विपणसरित्ता'
(सि ५१०) ।

विपणसाय सक [विप्र + साद्य] प्रसन्न
करना । विपणसाय (आवा १, ३, १, १) ।

विपणसीअ सक [विप्र + सद्] प्रसन्न होना ।
विपणसीअ (उत्त ५, १०, सुख ५, १०) ।

विपणहय वि [विप्रहत] भाहृत, जबली (सुर
६, २२१) ।

विपणहाय वि [विप्रभाजित] विभक्त, बँक
हुआ (भीष) ।

विपणहीण वि [विप्रहीण] रहित बजित
विपणहण } (सं ७७, स १११, पि १२०,
५०३) ।

विपणाय वि [दि] हास्य कर्ता, उहहास
करनेवाला (सुख १, ११) ।

विपणाय पुन [विप्रिय] १ श्रिय, धनित
(छाया १, १८—पञ्च २१३, गा २५०, से
४, ३६, हे ४, ४२३) । २ अपराध, गुनाह
(पाम) । ३ आरय वि [कारक] १ श्रिय-
कर्ता । २ अपराध-कर्ता (हे ४, ३४४) ।

विपणिअ वि [दि] नाशिन (हे ७, ००) ।

निष्पीअ श्री [विप्रोति] भरोति (पण्ड १,
३—पञ्च ४२) ।

विपु श्री [विपु] जिन्दु, भयन, क्रूर
'मुत्तुपेसाण विपुसा विपा' (भीष) बिते
०८१) ।

विपुअ वि [विपुअ] उपद्रव, उग्रवद्र वृक्ष
(दे ६, ७६) ।

विपुस पुन, देखो निष्पु, 'प्रमुहस्स विपु-
सेणवि' (विह १६५) ।

विपेकस सक [विप्र + ईक्ष] निरीक्षण
करना, देखना । वक्र. विपेकस्सेन (पण्ड १,
१—पञ्च १८) ।

विपेकियअ वि [विप्रेक्षित] निवेष्टित
(पण्ड २, ४—पञ्च १३१, मग ६, ३३—
पञ्च ५६६) ।

विपेसहि श्री [विप्रौपधि] माध्यात्मिक-
शक्ति विशेष, जिसके प्रभाव से योगी के
विष्ठा और सून का विन्दु भीषि वा काम
करता है (पण्ड २, १—पञ्च २६, भीष,
विसे ७७६, सति २) ।

विपेद सक [वि + पण्] इधर-उधर
चलना, लड़कना । वक्र. विपेदमाग
(आवा) ।

विपेदिय वि [विपण्दित] इधर-उधर
भटका हुआ, परित्रागत,

'अत्रतेल जलपते सकम्-
विपेदि(वि)एण जीवेण' ।

विपेयने पुनकाइं पुनतएहा-
रिण भुत्ताह' (पञ्च ६५, ५२) ।

विपेरिम पु [विपरि] विच्छेद स्पर्श (प्राप्) ।

विपेकाण वि [विपाटक] चीरनेवाला,
विदारक (पण्ड १, ४—पञ्च ७२) ।

विपेकाडिअ वि [दि. विपाटित] नाशित
(दे ७, ७०) ।

विपेरिय वि [विपारित] १ विस्तारित
(उप ५ १५२) । २ विनाशित (मुद्रा ८३) ।

विपेाल सक [दि] पृथ्वी, शुद्धा करना ।
विपेालेइ (वव १) ।

विपेाल देखो निपाल । वक्र. विपेालिय
(राज) ।

विपेाल पु [दि] शुद्धा, प्रसन्न (वव १ टी) ।

विपेालना श्री [दि] ऊपरदेखो (वव १ टी) ।

निष्पालिय देखो विपेरिय (उप) ।

निष्पु वि [निष्पु] स्पष्ट, व्यक्त (रमा) ।

विपुअ सक [वि + स्र] १ होना । २
विरसना । ३ वगटना । ४ परना,
हिनना । विपुअ (संवाप २४, बाल, भवि) ।
वक्र. निष्पुअ (उत्त १६, ५४, पञ्च
६३, ३) ।

विष्फुरण न [विस्फुरण] १ विष्फमण, विवास (आवक २४५, गुर २, २३७) । २ स्पन्दन, हिलन (गउड) ।

विष्फुरिय वि [विस्फुरित] विष्फमित (सुपा २०४, सण) ।

विष्फुल्ल वि [विफुल्ल] विवमित, प्रभुल्ल, 'तह तह सुल्ला विष्फुल्लगंडविवरंशुही हसद' (वज्जा ४४) ।

विष्फोडअ पुं [विस्फोटक] फोडा (नाट—शङ्ख २७, लि ३११, प्राप्र) ।

विषंद देखो विषंदद । वड्. विषंदमाण (मावा १, ४, ३, ३) ।

विफाल सक [वि + पाटय्] १ बिदारण करना । २ उपायना । सङ्ग, निफालिय (मापा २, ३२, १) ।

विफुट्ट वक [वि + रुट्] फटना । वङ्ग, चिंतित कि विफुट्ट चंदकर्मवस्त रने (सुपा ४५) ।

विफुरण देखो विष्फुरण (सुपा २५) ।

विषंधक वि [विदधक] विरोप रूप से बांधनेवाला (पव २, १) ।

विषद्वि वि [विषद्व] १ विरोप बड् । २ माहित (सुम १, ३, २, ६) ।

विषाहग वि [विषाधक] विरोधी, बाधक (धर्म ४६६) ।

विषुद्ध वि [विषुद्ध] जाण्ट (सिरि ६१५) ।

विषुध (शौ) नीचे देखो (लि ३६१) ।

विषुह पुं [विषुध] १ देक, निदरा (पाध, गुर १, ४५) । २ परिहृत, निदान (गुर १, ४५) । ३ 'चंद पुं [चन्द्र] एक प्रसिद्ध ज्ञानवायं (सुपा ६५६) । 'पहु पुं [प्रभु] ईश्वर (गुर १, १७२) । 'पुर न [पुर] स्वर्ग (सम्पत् १७५) ।

विषुहेसर पुं [विषुधेश्वर] इन्द्र (आवक ५६) ।

विषोद पुं [विषोध] जागरण (पवा १, ४२) ।

विषोहग देखो विषोहय (कण्) ।

विषोहण न [विषोधन] ज्ञान कराना; 'ब्रह्मण्यविषोहणकरस्स' (सज १२३) ।

विषोहय वि [विषोधक] १ विकासक, 'कुपुपवणविषोहय' (कण् ३८ डि) । २ ज्ञान-जनक (सिस्ते १७५) ।

विष्णोअ पुं [विष्णोक] विवाम, सोला, 'हेला सत्तिम सोला विष्णोमी विष्णोमी विलासो य' (पाप्र) । देखो विष्णोअ ।

विष्मगा देखो विर्मगा (मग, पव २२६, वम्म ४, १४, ४०) ।

विष्मंगि वि [विभङ्गि] विमंग-ज्ञानवाला (मग) ।

विष्मंत वि [विभ्रान्त] १ विरोप भ्रान्त, चकर में पडा हुआ (भाषा १, ६, ४, ३) । २ पुं, प्रथम नरव-भूमि का सातवां नर-वेन्द्रक—स्थान-विरोप (देवद ४) ।

विष्मसपु [विभ्रर] प्रतिपाल, हिला, प्राण-वियोजन (राज) ।

विष्मट्ट वि [विभ्रट्ट] विरोप भ्रट्ट (प्रति ४०) ।

विष्मम पुं [विभ्रम] १ विलास (पाप्र, गउड ५५, १६७; कुमा) । २ जो भी श्रृंगार के संग-भूत चेष्टा-विरोप (गउड, गा ५) । ३ चित्त-भ्रम, पागतपन (सय) । ४ शृंगार-समाधी मानसिक भ्रमन्ति (कप्प) । ५ विरोप भ्रान्ति (सुपा ३२७; गउड) । ६ संदेह । ७ भावयं । ८ शोभा (गउड) । ९ भूपणो का स्थान-विषय (कुमा) । १० राखण का एक सुमट (पवम ५६, २६) । ११ मैथुन, प्रसह । १२ काम-विकार (पएह १, ४—पव ६६) ।

विष्मल वि [विह्वल] १ व्याकुल, व्यथ (गुर ८, ५७, १२, १६८) । २ व्यासक्त, तल्लीन । ३ पुं, विष्णु, नारामण (पद् ४०, हे २, ५८) ।

विष्मल्लि वि [विह्वलित] व्याकुल किया हुआ (कुमा) ।

विष्मवण न [दे] उपधान, श्रोतीसा (दे ७, ६८) ।

विष्माडिय वि [दे] नाशित (गवि) ।

विष्ममार देखो वेष्ममार (पि २६६) ।

विष्मिडि पुं [दे] मत्स्य की एक जाति (विपा १, ८ टी—पव ८३) ।

विष्मिड्य वि [दे] सूर्य से बिड (दे ७, ६७) ।

विर्मग पुं [विभ्र] १ विपरीत अवधिज्ञान, वित्त अवधिज्ञान, विष्णुत्व-युक्त अवधिज्ञान

(पव २२६ टी) । २ ज्ञान-विरोप (सुम २, २, २५) । ३ विरापना, छएदन । ४ मैथुन, ब्रह्म (पएह १, ४—पव ६६) । देखो विहंग = विर्मग ।

विर्मग पुं [दे] एण-विरोप, 'एरदे कुविदे करवरसुंते तहा विर्मग य' (पएण १—पव ३३) ।

विर्मगुर वि [विभ्रगुर] विनश्वर (सुपा ६०५; प्राप्र ६६, पुष्क २२०) ।

विर्मज सक [वि + भज्] भोग डालना, सोदना । संट्, विर्मजिऊण (काल) ।

विर्मवडी (मप) छी [विभ्रान्ति] विशिट प्रम (हे ४, ४१४) ।

विभगा वि [विभ्रग] भांगा हुआ, छएदित (पवम ११३, २६) ।

विभज सक [वि + भज्] १ बाटना, विभाज करना । २ विकल से प्राप्त करना, पसतः प्राप्त करना—विधान और विवेक करना । कर्म, विभज्यति (तंदु २) । कवङ्ग, विभज्जमाण (आण १, १—पव ६०; उर २६४ टी) । सङ्ग, विभज्जिऊण (धर्मवि १०५) । देखो विभज्ज ।

विभजण न [विभजन] विभाग, भाग-वैटाई (पव ३८) ।

विभज्ज देखो विभज । विभज्ज (कम्म ६, १०) ।

विभज्जयाद पुं [विभज्ययाद] व्याघ्राद, विभज्जयाय घनेकान्तवाद, जैन दर्शन (धर्मस ६२१, सुम १, १४, २२, उवर ६६) ।

विभज्जि वि [विभक्त] १ विभाज-युक्त, बांटा हुआ (नाट—रुक् ४६, कण्) । २ भित्त, झल, जुवा, विमत घम्म मोसेमाणे (मावा, कण्, महा) । ३ न, विभाज (राज) ।

विभज्जि छी [विभक्ति] १ विभाग, भेद (मग १२, ५—पव ५७४, सुधनि ६६, उत्तमि ३६), 'लोगस्स पएसेमु भएत्तवरपरवरा-विभज्जोहि' (पव २, ३६, ४०, ४१) । २ व्याकरण-प्रसिद्ध प्रत्यय-विरोप (भोपना ४, वेदय २६८, सुधनि ६६) ।

विभमण न [दे] उपधान, श्रोतीसा (दे ७, ६८ टी) ।

विभय देखो विभज । विभए, विभयति (कम्म ६, ३१, प्राचा, उत्त १३, २३) ।

विभयणा छो [विभजना] विभाण (सम्म १०१) ।

विभर सक [वि + रस्य] विस्मरण करना, भूल जाना । विभरइ (पि ३११) ।

विभय देखो निहय (उव, महा) ।

विभयण न [विभयन] विषय-करण, स्तराव करना (राज) ।

विभादम वि [विभाज्य] विभाग योग्य (ठा ३, २—पत्र १३४) ।

विभाइम वि [विभागिम] विभाग से बना हुआ (ठा ३, २—पत्र १३४) ।

विभाग पु [विभाग] भंश, बाँट (काल, सण) ।

विभागिम देखो विभादम = विभागिम (उप ५ १४१) ।

विभाय देखो विभाग (रमा) ।

विभाय न [विभान] प्रकाश, जानित, तेज (सण) ।

विभाय पु [विभान] परिचय 'कस्त विद-मदमाविभाओ न होइ' (स १६८) ।

विभान सक [वि + भावय] १ विचार करना, ध्यान करना । २ विवेक से ग्रहण करना ३ समझना । बहु विभावउ, विभा-येंत, विभावमाण (सुपा ३७७, उत ५६७ टी, बण) । बहु. विभाविज्जत, विभा-विज्जमाग (सि ८, १२, स ७५०) । हेऊ, विभाविसए (वन) । क. विभाजणीय (पुंफ २५४) ।

विभान देखो विभन 'तमो महाविभावेण पुहण्ण पेविण गया य' (महा) ।

विभावसु पु [विभावरसु] १ सूर्य, रवि । २ रविवार (पत्रम १७, १७७) । देखो विदावसु ।

विभाविय वि [विभावित] विचारित (सण) ।

विभास सक [वि + भाय] १ विरोध रूप से बढ़ना स्पष्ट रहना । २ व्याख्या करना । ३ चित्त से विधान करना । विभासइ (पत्र ७२ टी) । इ विभासियण (उत्तमि ३६, १००

पिठ १२४) । हेऊ, विभासिउ (विसे १०८५) ।

विभासण न [विभापण] व्याख्या, व्याख्यान (विसे १४२८) ।

विभासय वि [विभापय] व्याख्याता, व्याख्या-कर्ता (विसे १४२५) ।

विभासा छो [विभाषा] १ विकल्प विधि, पाक्षिक प्राप्ति, भजना, विधि और निषेध का का विधान (पिठ १४३, १४४, १४५, २३५, ३०२, उत ४१५ टी इ १६) । २ व्याख्या विवरण, स्पष्टीकरण (विसे १३८५, १४२१, पिठ ३३७) । ३ विज्ञान, निवेदन (उप ६८०) । ४ विविध भाषण (पिठ ४३८) । ५ विधेयोक्ति (देवेउ ३६७) । ६ परिभाषा, संज्ञेत (कम्म १, २८, २६) । ७ एक महानद (ठा ५, ३—पत्र १५१) ।

विभासिय वि [विभासित] प्रकाशित, उद्घोषित (सम्मत ६२) ।

विभिण्ण देखो विहिण्ण = विभिन्न (गड्ड विभिज ५७०, ११८०, उत १६, ५५) ।

विभीसण पु [विभीषण] १ रावण का एक छोना भाई (पत्रम ८, ६२) । २ विदेह वरं का एक नामदेव (राज) ।

विभीसाणन वि [विभीषण] भय जनक, भयकर (अवि) ।

विभीसिया छो [विभिषिण] भय प्रदर्शन (उव) ।

विमु पुं [विमु] १ प्रभु परसेवर (पत्रम ५, ११२) । २ माय, स्वामी, मालिक (पत्रम ७०, १२) । ३ हवाकु वय के एक राजा का नाम (पत्रम ५, ७) । ४ वि. व्यापक (विसे १६८५) ।

विमूइ छो [विभूति] १ ऐश्वर्य, वैभव (उव घोष) । २ उद्योग, धूमधाम, 'महाविमूइर चलिओ विज्जताए' (सुर ३, ६२, महा) । ३ अद्विजा (पण्ड २, १—पत्र ६६) ।

विमूसण न [विमूषण] १ धनदार, गहना । २ सीमा दिवालकारविमुणसाई (उव, घोष) ।

विमूसा छो [विमूषा] १ शिखर की सजा-वट, शरीर पर अलंकार-वस्त्र आदि की सजा-वट (पाचा १, २, १, ३, घोष जोन ३) ।

२ शरीर-शोभा, 'भेहूणाओ उवसत्तस वि विमूसाइ कारिम' (दस ६, २, ६५, ६६; ६७, उत १६, ६) ।

विभूसिय वि [विभूषित] विभूषा-युक्त, अलंकृत, शोभित (भग उत १६, ६, महा-विषा १, १—पत्र ७) ।

विभेद } पु [विभेद] १ भेदन, विदारण
विभेय } (धर्मस ८२६), 'जयवारणकुम-
विभेयसम्म' (गड्ड, उत ७२८ टी) । २ भेद,
प्रकार 'उद्वाहोतिरिपविभेयं तिहुयएणि'
(वेद्य ६६४) ।

विभेयग वि [विभेदक] भेदवर्तक, परमन्म-विभेयगो (धर्मवि ७६) ।

विमइ छो [विमति] ध्वज विशेष (पिण) ।

विमइअ वि [वि] मलित, तिरस्कृत (दे ७, ७१) ।

विमउल वि [विमुकुल] विकसित, लिला हुआ (पाया १, १ टी—पत्र ३, घोष) ।

विमसिय वि [विमन्त्रित] जिनके बारे में सह-सह—प्रस पुक्ति की गई हो वह (सुर ११, ६७) ।

विमसिअ वि [विमुष्ट, विमर्शित] विचारित-पर्यालोचित (तिरि १०४५) ।

विमग देखो विमय (राज) ।

विमग सक [वि + मार्गय] १ विचार करना । २ धनपण करना, खोजना । ३ भाषना करना, मागना । ४ इच्छा करना, चाहना । विमगाइ, विमगहा (उव, उत १२, ३८) । बहु. विमगण, विमगमाण (गा ३५१, सुर २, १७, न ४, ३६, महा) ।

विममिअ वि [विमार्गित] १ मावित-मया हुआ (तिरि १२०, सुर ४, १०७) । २ धनपित, गतेपित (पाम) ।

विमग्ग न [विमग्ग] धनराल (राज) ।

विमण वि [विमनस्] १ विपण, विद, शोध-सन्तम (अप, सुर ३, १६८, महा) । २ शून्य चित्त, मुक्त चित्तगता (विषा १, २—पत्र २७) । ३ निराश, हताश (गा ७६) । ४ निश्चय मन भयान गया हो वह (व ४, ३१, गड्ड) ।

विमर्द सब [वि + मर्दय्] १ सपथ करना । २ मर्दन करना । वक्र. विमर्द-ज्जमाण (तिरि १०३८) ।

विमर्द पुं [विमर्द] १ विनाश, 'भासतपुरिम-संतद्वालिहविमर्दसंजणय' (गुप्ता ३८; गठउ) । २ सपथ (उ ७२२, दुप्र ४६) ।

विमर्दण न [विमर्दन] ऊपर देखो (मवि) ।

विमर्ग सब [वि + मर्ग] मानना, गिनना । वक्र. 'सर्वं सुविणं व तं विमर्गन्तो' (गुर ४, २४४) ।

विमर्ग पुं [वि] पर्व-वनस्पति-विशेष (पण १—पत्र ३३) ।

विमर् (मर) नीचे देखो । विमरह (विग) ।

विमरिस् सक [वि + मरिस्] विचारना । क. विमरिसिद्धव्य (शौ) (मभि १८४) ।

विमरिस् पुं [विमरिस्] विकल्प, विचार (राज) ।

विमल वि [विमल] १ मल-रहित, विशुद्ध, निर्मल (कप्प, मीप, से ८, ४६; पउम ११, २७; कुमा, प्रासु २; १५७, १६१) । २ पुं, इस अवसर्पिणी-काल में उत्पन्न तेरहवें जिनदेव (सम ४३, पडि) । ३ भारतवर्ष में होनेवाले मार्गमें जिन भगवान् (सम १५४) । ४ एक प्राचीन जैन आचार्य श्रीर बवि जिह्मोने त्रिकम की प्रथम शताब्दी में 'पउमचरि' नामक जैन रामायण बनाई है (पउम ११८ (१८) । ५ एक महापुरुष, ज्योतिष्क-देव-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८) । ६ भगवान् अजित-नाथ का पूर्वजन्मीय नाम (सम १५१) । ७ पुन, सहस्रार देवलोक के इन्द्र का एक पारिमानिक विमान (ठा ८—पत्र ४३७) । ८ ब्रह्म-देवलोक में स्थित एक देव-विमान (सम १३, देवेन्द्र ४४०) । ९ एक वैद्यक देव-विमान (सम ४१, देवेन्द्र १४१) । १० लगातार छ दिनों का उपवास । ११ लगातार सात दिनों का उपवास (संकोष ५८) । १२ पुं, ब्रह्मिष्ठ, दया (पण २, १—पत्र ६६) । १३ 'घोस पुं [घोप] एक कुलकर गुरुप (सम १५०) । 'चंद पु [चन्द्र] एक जैन आचार्य (महा) । 'पव्हा की [प्रभा] भावाय शीतलनाथजी की शोभा-शिविका (विचार १२६) । 'वर

पुं [वर] आनत-प्राणत देवलोक के इन्द्र का एक पारिमानिक विमान (ठा १०—पत्र ५१८) । 'वाहण पुं [वाहन] १ भारतवर्ष के भारी प्रथम जिनदेव, जिनके दूसरे नाम देवेन्द्र तथा महापद्म होंगे (ठा ६—पत्र ४५६) । २ सुत्तरक पुरुष विशेष (सम १०४; १५०, १५३, पउम, ३, ३५) । ३ भारतवर्ष का एक भावी चक्रवर्ती राजा (सम १५४) । ४ एष जैन, जो भगवान् अमिनन्दन के पूर्व जन्म में युव थे (पउम २०, १२, १७) । ५ भगवान् संभवनाथ का पूर्व-जन्मीय नाम (सम १५१) । 'सामि पुं [स्वामिन्] सिद्धचक्रों का अधिपत्यक देव (तिरि २०४) । 'सुद्री की [सुन्दरी] पठ बासुदेव की पटरानी (पउम २०, १८६) ।

विमलग न [विमर्दन] मणि आदि की शाण पर लिखा, घर्षण (दे १, १४८) ।

विमलद्वर पुं [वि] बलकल, कोलाहल (दे ७, ७२) ।

विमला श्री [विमला] १ ऊर्ध्व दिशा (ठा १०—पत्र ४७८) । २ चरखेन्द्र के लोकपालों की अष्ट-महिषियों के नाम (ठा ४, १—पत्र २०४) । ३ गीतरति श्रीर गीतपदा नाम के कण्वेन्द्रों की अष्ट-महिषियों के नाम (ठा ४, १—पत्र २०४) । ४ चौदहवें जिनदेव की शोभा-शिविका (सम १५१) ।

विमलिअ वि [विमर्हित] जिसका मर्दन किया गया हो वह, पउ (से ६, ७) ।

विमलिअ वि [वि] १ मलस्तर से उक्त । २ शब्द-सहित, शब्दवाला (दे ७, ७२) ।

विमलेसर पुं [विमलेश्वर] सिद्धचक्रों का अधिपत्यक देव (तिरि ७७३) ।

विमलेसर पुं [विमलेचर] ऐलत वर्ष का एक भावी जिनदेव (सम १५४) ।

विमहिद (शौ) वि [विमथित] जिसका मघन किया गया हो वह (नाट—मालवि ४०) ।

विमाउ श्री [विमाउ] सोतेली माँ (सत ३५, १७१) ।

विमाण सक [वि + मानय्] धनमान करना, तिस्कार करना । विमाणेज्जह (महा ३६) ।

विमाण पुंन [विमान] १ देव का निवास-भवन (सम २; ८, ६; १०; १२; ठा ८; १०; उवा. कप्प. देवेन्द्र २५१; २५३; पण १, ४—पत्र ६८; ति १२) । २ देव-मान, प्राकार-मान, आवास में गति करने में समर्थ रथ (मे ६, ७२; कप्प) । ३ भयमान, तिस्कार । ४ वि. मान रहित, प्रमाण शून्य (से ६, ७२) । 'प्रविभक्ति श्री [प्रविभक्ति] जैन कल्प-विशेष (सम ६६) । 'भग्न न [भवन] विमानाकार गृह (कप्प) । 'वासि पुं [वासिन्] देवों की एव उतम जाति, वैमानिक देव (पण १, ४—पत्र ६८; ति १२) ।

विमाणणा श्री [विमानना] भयगणना, तिस्कार (वेद ११२) ।

विमाणिअ वि [विमानित] भयगणित (विड ४१३; कप्प; महा) ।

विमिस्म म [विमिस्मय] विचार करने की 'गारि वि [गारि] विचार-पूर्वक करने-वाला (स १८४, ३२४) ।

विमिस्स वि [विमिश्र] मिश्रित, मिला हुआ, युक्त (पंच २, ७, महा) ।

विमिरसण न [विमिश्रण] मिश्रण, मिलावट (सम्मत १७१) ।

विमोसिय वि [विमिश्रित] विमिश्र, मिश्रित (मवि) ।

विमुडल देवो विमडल (राज) ।

विमुंच सक [वि + मुच] १ छोड़ना, न्यून-युक्त करना । २ परित्याग करना । विमुचद (राज) । कर्म. विमुचई (प्राचा २, १, ६, ६) । वक्र. विमुंचंत (महा). विमुच [मुंच] माण (छाया १, १—पत्र ६५) । क. विमोचन्य (उप २:४ टी), विमोय (ठा २, १—पत्र ४७) ।

विमुकुल देवो विमडल (पण १, ४—पत्र ७२) ।

विमुक्क वि [विमुक्त] १ छुड़ा हुआ, छुड़ा, न्यून-रहित, 'जवविमुक्केण मरोए' (महा ४६, पण आचारि ३४३) । २ परित्यक्त, 'विमुक्कजीपाय' (महा ७७) । ३ नि सम, संज रहित (प्राचा २, १६, ८) ।

विमुक्तर पुं [विमोक्ष] छुटकारा, मुक्ति (सि ११, ५६, आचानि २५८, २५६, अवि ५) ।

विमुक्तरण देखो विमोक्तरण (उत्त १४, ४, कुप्र २६६) ।

विमुच्छिद्य अवि [विमुच्छिद्यते] मूर्च्छा-प्राप्त (सि ११, ५६) ।

विमुत्त देखो विमुक्त 'वृत्तिविमुत्तेगुवि' (विट ५६) ।

विमुत्ति स्त्री [विमुक्ति] १ मोक्ष, मुक्ति (आचानि १५३, कुप्र १६) । २ आचाराग सूत्र वा अन्तिम अक्षयन (आचा २, १६, १२) । ३ अहिंसा (पणह २, १-पत्र ६६) ।

विमुत्तयण न [विमोचन] परित्याग (संघोष १०) ।

विमुह वि [विमुल] १ पराह मुल, पलाशिन (गडह, सुग २८, अवि) । २ पु. एक नरक-स्थान (वेदह २८) । ३ पुन. आकाश, गगन (मग २०, २-पत्र ७७६) ।

विमुह अक [वि + मुह] पचराना, व्याकुल होना, बेचैन होना । बहु. विमुहज्जंत (सि २, ५६, ११, ५६) ।

विमुहिय अवि [विमुग्ध] पचराया हुमा (सि ४, ४४, मा ७६२) ।

विमुहिय अवि [विमुत्तिन] पराह मुल विमा हुमा (पणह १, ३-पत्र ५३) ।

विमुह वि [विमुह] १ पचराया हुमा । २ अस्तुट, अस्तुट (गडह) ।

विमुरण वि [विमञ्ज] तोडनेवाला, खण्डन-कर्ता, 'जं मंगल बाहुवलिस्त आसि तैआसिखो माएविमुरणस्त' (मगल १०) ।

विमोदय वि [विमोचित] छुटायो हुमा (आमा १, २-पत्र ८८, सण) ।

विमोक्तर देखो विमुक्तर (सि ३, ८) ।

विमोक्तरण न [विमोक्षण] १ छुटकारा, छुटाना, अन्त्य मोचन (आचा. सुप्र २, ७, १०, पत्रम १०२, १८८, स ६८, ७४२) । २ वि. छुटानेवाला, विमुक्त करनेवाला, 'सम्बुद्धविमोक्तरण' (सुप्र १, ११, २, २, ७, १०) । स्त्री. 'गी' (उत्त २६, १) ।

विमोक्तरय वि [विमोक्षक] छुटकारा पाने-वाला, 'ते दुपण निमोक्तरय' (सुप्र १, १, २, ५) ।

विमोठण न [विमोठन] मोठना (सि) ।

विमोत्तव देखो विमुत्त ।

विमोय सक [वि + मोचय] छुटाना, मुक्त करना । संक. विमोडऊण (सण) ।

विमोय देखो विमुच ।

विमोयण वि [विमोचक] छोडनेवाला, दूर करनेवाला, 'न ते दुक्खविमोयण' (सुप्र १, ६, ३) ।

विमोयण न [विमोचन] १ छुटकारा, मुक्ति । २ वि. छुटानेवाला, 'दुहसयविमोयणकाई' (पणह २, १-पत्र ६६) ।

विमोयणा स्त्री [विमोचना] छुटकारा (सुप्र १, १३, २१) ।

विमोह सक [वि + मोहय] मुग्न करना, मोह उपजाना । विमोहेह (महा) । सक. विमोहिहा, विमोहेहा (मग १०, ३-पत्र ४६८) ।

विमोह देखो विमोक्क (आचा) ।

विमोह वि [विमोह] १ मोह-रहित (उत्त ५, २६) । २ पुं. विशेष मोह, पचरवट (सम्मल २२६) । ३ आचाराग सूत्र का एक अक्षयन (सम १५, डा ६ टी-पत्र ४४५) ।

विमोहण न [विमोहन] १ मोह उपजाना । (सुर ६, ३८) । २ वि. मोह उपजानेवाला (उप ७२८ टी) ।

विमोहिय अवि [विमोहित] मोह-प्राप्त (महा २३, ५२) ।

विमह न [विमहन] गृह, घर (राज) ।

विमहिय अवि [विस्मित] आश्चर्य चकित, अमलुत (सुर १, १६०) ।

विमहय अक [वि + स्मि] चमकत होना विस्मित होना, आश्चर्यान्वित होना । क. विमहयणिज्ज विमहयणीअ (हे १, २४८, अवि २०२) ।

विमहय पुं [विस्मय] आश्चर्य, चमत्कार (हे २, ७४, पट्ट, प्राप्र, उव, मउड, अवि १) ।

विमहर सक [स्मृ] याद करना । विमहरह (हे ४, ७४) ।

विमहर सक [वि + स्मृ] विस्मरण करना, याद न आना, भूल जाना । विमहरह (हे ४, ७५, प्राप्र ६३, पट्ट) । बहु. विमहरंत (या १६) ।

विमहरण ॥ [विस्मरण] विस्मृति (पत्र ६; संघोष ४३; मूक ८०) ।

विमहराइ अवि [दि] १ मूर्च्छित, मूर्च्छा-प्राप्त । २ विस्मापित (मे ६, ५१) ।

विमहरावण वि [स्मरण] स्मरण करानेवाला, याद दिलानेवाला, 'बाणएणोरुहविमहरा-वणा' (कुमा) ।

विमहरि अवि [विस्मृत्] भुला हुमा, याद न किया हुमा (कुमा, पाप्र) ।

विमहल देखो विटभल (उप ५३० टी) ।

विमहलिय देखो विडभलिय (अचु २२) ।

विमहारि अवि [विस्मारित] भुलाया हुमा (कुमा, या २८) ।

विमहारिअ (अप) देखो विमहरिअ (सण) ।

विमहान सक [वि + स्मापय] आश्चर्य-चकित करना । विमहानेह (महा, निवृ ११) । बहु. विमहानंत (उत्त ३६, २६२) ।

विमहावण न [विस्मापन] आश्चर्य उपजाना, विस्मय-करण (अप) ।

विमहावणा स्त्री [विस्मापना] ऊपर देखो (निवृ ११) ।

विमहावय वि [विस्मापक] विस्मय जनक (सम्मल १७४) ।

विमहाविअ वि [विस्मापित] आश्चर्यान्वित किया हुमा (अर्धवि १४७) ।

विमिअ वि [विस्मिअ] विस्मय प्राप्त, चमत्कृत (या २८-पत्र १६०, उव) ।

विमिअ (अप) देखो निमहय । विमिअइ (सण) ।

विमिअर वि [विस्मर] विस्मय पानेवाला, चमत्कृत होनेवाला (या १२ २७) ।

वियखा देखो विअ खा ।

वियट्ट अक [वि + वृत्] भरतना, होना । हेह. विरट्टित्तए (आचा २, २, २, ३) ।

वियद पुं [वयद, वयट्ट] आकाश, गगन (मग २०, २-पत्र ७७६) ।

विर स [अज] मंगल, तोटना । विरद (हे ४, १०६) ।

विर अक [गुप] व्याकुल होना । विरद (हे ४, १२०), विरति (कुमा) ।

विर (अप) देखो वीर (मण) ।

विरइ को [विरति] १ विराम, निवृत्ति । २ सावय—नाप कर्म से निवृत्ति, संयम, त्याग (उच, प्राचा) । ३ सन्द-शास्त्र-प्रसिद्ध विषयम-स्थान, यति (विद्य ५०७) ।

विरइअ वि [विरचित] १ कृत, निर्मित, बनाया हुआ । २ सजाया हुआ (पाप, धर्म, कर्म) । पउम ११८, १२१, कुमा, महा, रंभा, कपू ।

विरइअ देखो विराइअ (कर्म) ।

विरइअय देखो विरय = वि + रचय ।

विरचि पुं [विरचि] बहा, विधावा (कुम ५०३, नि ८७, समस्त १६२) ।

विरच { भक [वि + रच] १ रित होना, विरज { उदासीन होना । २ रस-रहित होना । विरज (उच, उत २६, २; महा) । बह, निरजत, विरजमाण, विरजमाण (से ४, १४, भवि, उत २६, २; गा १४६; २६६) ।

विरचत वि [विरक्त] १ उदासीन, विराग प्राप्त (सम ५७, प्राह १५५, १६६, महा) । २ विविध रंगाना (भाबा १, २, ३, ५) ।

विरक्ति को [विरक्ति] वैराग्य, उदासीनता (उच ५ १२) ।

विरम सक [वि + रम्] निवृत्त होना, घट-कना । विरम (गा ७०८), विरमेजा (प्रापा), विरम, विरमपु (गा १४५, १४६) । प्रयो, हेह, विरमावेड (गा १४६) ।

विरम पु [विरम] विराम, निवृत्ति (गड, गा ४५६, ६०६, सुर ७, १६३) ।

विरमग देखो वेरमग (राज, प्रापा) ।

विरमाण सक [प्रति + पाळय] पावन करना, रक्षण करना । विरमाणइ (पाला १५३) ।

विरमाण सक [प्रति + ईक्ष] राह देखना, वाट जोहना, प्रतीक्षा करना । विरमाणइ (हि ४, १६१) । संह, विरमाणिअ (कुमा) ।

विरमाणिअ वि [प्रतीक्षित] जिसको प्रतीक्षा की गई हो वह (पाप) ।

विरय सक [वि + रचय] १ करना, बनाना । २ सजाना, सजावट करना । विरएड, विरप्रति, विरप्रभाति, विरयड (प्राह ७४,

नपू, पि ५६०, सण) । बह. विरयमाण (सुर १६, १५) । संह. विरइअ (नाट) । हेह. विरइअ (सुपा २) । ह. विरइअय (पउम ६६, १६) ।

विरय वि [विरत] १ निवृत्त, रुका हुआ, विराम-प्राप्त (उच, गा ५४१; दं ४६) । २ पात पापों से निवृत्त, संयमी, त्यागी (प्राचा, उच) । ३ न. विरति, विराम । ४ संयम, त्याग (दं ४६; कम्म २, २) । *विरय वि [विरत] भाषिक संयम रखनेवाला, जैन उपासक, ध्याक (सम २६) ।

विरय पुं [दे] छोटा जल-अनाह, छोटी नदी (दे ७, १६), 'विरया तणुसरिपामो' (पाप) ।

विरय पुं [विरजस्] १ महाबह, ज्योतिष्क देव-विरोध (सुज २०) । २ एक देव विमान (देव १४१) ।

विरयण कोन [विरचन] १ कृति, निर्माण । २ सजावट (नाट—नासली २८; कपू) । को, *गा (सुपा ६५, से १५, ७१), 'पडिबट्टए विम समर-विरमणा' (कपू) ।

विरया को [विरया] १ मो-बीक में स्थित राधा की एक सखी । २ उसके शाप से बनी हुई एक नदी, 'सविप्रविरमासिग' (मन्तु ८६) ।

विरल वि [विरल] १ भल्प, बोझ, 'परदुक्ते दुक्किया विरल' (दे २, ७२, ४, ५१२, उच, प्राह १८०, गड) । २ घनिष्ठ । ३ विच्छिन्न (गड, उच) ।

विरलि को [दे] बल विरोध, डोरिया, डोरी-वाला कपडा, 'विरलिमाई भूरिमे' (पव ८४ दी) ।

विरलिअ नि [विरलित] विरल बना हुआ, विरल किया हुआ (गड) ।

विरलो देखो विरालो (राज) ।

विरल सक [तन्] विस्तारन, फैलाना । विरलह, विरल्लेह, विरल्लति (हि ४, १३७, पड, गड) ।

विरल पुं [तान] विस्तार, फैलाव, (वच ४) । विरलण व [तनन] विस्तार, फैलाव, 'मट्ट-मयविहणो सया रमइ' (उच) ।

विरलिअ वि [तत] विस्तारवाला, विस्तारित (दे ७, ७१; पाप, कुमा, छापा १, १७—पव २३२; अ ४, ४—पव २७६), 'अह उल्ला साधोया भासु सुकइ विरलिपा संतो' (विते ३०३२) ।

विरलिअ देखो विरलिअ (राज, भवि) ।

विरलिअ नि [दे] जसाद, भोजा हुआ (दे ७, ७१) ।

विरस सक [वि + रस्] विज्ञाना, कन्दन करना । बह, विरसत (सण) ।

विरस वि [विरस] रस-रहित, शुष्क (छापा १, ५—पव १११, गड, हे १, ७, सण) । २ विरह रसवाला (भग ७, ६—पव ३०५) । ३ पुं. रामप्राप्ता भरत के साथ जैन दोषा सेनेवाला एक राजा (पउम ८५, १) ४ न. तप-विरोध, निर्विकृतिक तप (सबोध ५८) ।

विरस न [दे] वर्ष, साल, बारह मास (दे ७, १२) ।

विरससुह पु [वे] काक, कौमा (दे ७, ४६) ।

विरसिय वि [विरसित] रस-हीन, रस-विरहित (हम्मोर ५१) ।

विरह सक [वि + रह] १ परित्याग करना । २ भगत करना । कवक. विरहिजल (नाट—राकु ८२) । ह. विरहियअ (शौ) (नाट—राकु ११७) ।

विरह पु [विरह] १ विमोग, बिछोह, जुगई (गड, हे १, ८५, ११५, प्राह १५६, कुमा, महा) । २ भ्रातर, व्यवधान (भग) । ३ पुं. कुस विरोध, 'कुल्लति विरहलखा सोऊ पचमुपार' (सबोध ४७, आ ३५), 'धरा-विमो पचासने विराहो नाम तरु, भाइअण बीए कुलाविमो सो' (कुप्र १३६), 'कुल्लति विरहिणो विरहयव लहिअण पचम केवि' (कुप्र २४८) । ४ भगव । ५ विनाश (राज) । ६ हरिवस मे उल्लस एक राजा (पउम २२, ६८) ।

विरह पि [विरय] रस-रहित (पउम १०, ६३) ।

निरह पुन [दे] १ एकान्त, विजन (दे ७, ६१, छाया १, २—पत्र ७६, सुफ ३४४)।
'सामाए देवीए भतराणि य विद्राणि य विद्राणि य पञ्जिआगरमासीयो २ विहरति' (विमा १, ६—पत्र ८६)। २ कुमुम से रंगा हुआ कपटा (दे ७, ६१)।

निरहाल न [दे] कुमुम से रंगा हुआ वस्त्र (दे ७, ६८)।

विरहि वि [विरहिन्] विद्योगी, विछुड़ा हुआ (हुमा)।

निरहिज वि [विरहित] विरह-वृत्त (अग, उव, हे ४, ३७७)।

विरा मक [वि + ली] १ नष्ट होना। २ इवित होना, पिचलना। ३ मटकना, निवृत्त होना। विराह (हे ४, ५६)।

निराह वि [विरागिन्] विरागवाला, विरत, उदासीन। औ 'णी (नाट)।

निराह वि [विराजिन्] शोभनेवाला चमकता (मे २, २६)।

निराह वि [विराजिन्] शब्द-वृत्त, धावाज-वाला (से २, २६)।

निराहज देखो विराय = विलीन (से २, २६)।

निराहज वि [विराजित] सुशोभित (उवा, औप, महा)।

विराह पु [विराग] १ राग का प्रभाव, वैराग्य उदासीनता (सुख १३, उव ७२८ टी)। २ वि राग रहित, मोतराग (वच १०४, औप)।

निराह पु [निराट] देश विशेष (उप ६४८ टी)। 'नयर न [नगर] नगर विशेष (छाया १, १९—पत्र २०६)।

विराध (विग) पु [विराध] एक राक्षस का नाम (पग)।

निराम पु [निराम] उपरम, निवृत्ति, प्रवसान (गजब)।

विरामण न [विरमण] विरत करना, निवर्तन, विरमाना, देरविरामणपञ्चवसाण' (पह २, ४—पत्र १३१)।

विराय भक [वि + राज्] शोभना, चमकना। विराय (पाग)। वरु, विरायत, विरायमाण (वच औप छाया १, १ टी—पत्र २, सुर २, ७६)।

विराय वि [विलीन] १ विलोप, विगलित, नष्ट (दे ७, ६४, मडक, कुमा ६, ३८)। २ पिचला हुआ (पाग)।

विराय देखो विराग (पह २, ५—पत्र १४६, कुमा, सुपा २०३, वज्जा ६, कुप्र १११)।

विराल देखो विराल (छाया १, १—पत्र ६५, पि २४१)।

विरालिआ औ [विरालिआ] १ पलाश-कण्ड। २ पर्ववाला कण्ड (वस ५, २, १८)। देखो विरालिआ।

विराली औ [विराली] १ कली विशेष (पव ४, भा २०, सनोच ४४)। २ बतुरिन्द्रिय भवु को एक भाति (उत ३६, १४८, सुख १६, १४८)। देखो विराली।

विराय पु [विराय] शब्द धावाज (गजब)।

विरायि वि [विरायिन्] धावाज करनेवाला (गजब)।

विराह सक [वि + राधय्] १ खरबन करना मीमना लीडना। विराहति (उव)।

वरु, विराहव, विराहेंत (सुपा ३२८, उव)।

विराहज } वि [विराधक] खरबन करनेवाला
विराहज } लीडनेवाला, भनक (अग छाया १, ११—पत्र १७१)।

विराहणा औ [विराधना] खरबन, भन (सम ८, छाया १, ११ टी—पत्र १७३, पह १, १—पत्र ६, औप ७८८)।

विराहिज वि [विराधित] १ खरिहव, भन (अग)। २ भनपट, विसका भनपरा किया गया हो वरु, 'अविराहियेरेपिह' (पह १, ३—पत्र ५३)। ३ पुं. एक विद्याधर नरेश (पत्र ७६, ७)।

विरिज वि [अग] भांगा हुआ, तोड़ा हुआ (कुमा)।

विरिज देखो वीरिज (सूचनि ६१, ६४, औप)।

विरिच भक [वि + भज्] विभान ग्रहण करना, भाग लेना, बाँट लेना, 'समणो वि य से रोमं न विरिचद, नेव नावेद' (स १-७)।

विरिच पु [विरिच] जहा, विघाता (पाग)।

विरिचि पु [विरिचि] ऊपर देखो (सुर १२, ७८)।

विरिचिज वि [दे] १ विमल, निर्मल। २ विरत, उदासीन (दे ७, ६३)।

विरिचिर पु [दे] १ भरव, घोड़ा। २ वि विरत (दे ७, ६३)।

विरिचिरा औ [दे] धारा, प्रवाह (दे ७, ६३)।

विरिच वि [दे] पाटित, विदारित (दे ७, ६४)।

विरिच वि [विरिच] जो खानी हुआ हो वह (पत्र ४५, ३२, सुपा ४२२)।

विरिच वि [विभक्त] १ बाँटा हुआ 'जेण चित्तवराण सभा समभागेहि विरिचका' (महा)। २ जिसने भाग बाँट लिया हो वह, अपना हिस्सा ले कर जो भलग हुआ हो वह, 'एवमि सतिएवेसे दो भाज्या वणिआ, ते य परोपर विरिचका' (औप ४६४ टी)।

विरिचि औ [दे] बिन्दु, तब, तैरा (सुख २, २७)।

विरिचिर वि [दे] धारा से विरचन करने वाला (पट्)।

विरिचिज वि [दे] भनुचर, भनगत (दे ७, ६६)।

विरिल सक [वि + रु] विस्तारना, फैलाना। विरिलिह (प्राक ५६)।

विरिओ (अग) देखो विरिओ (पिंग)।

विरिह सक [प्रति + पालय्] पालन करना, रख रखना। विरिहह (प्राक ७५, भात्ता १५३)।

विरु } भक [वि + रु] रोगा, विल्लाना।
विरुज } वरु, निरुयमाण (उप ३३६ टी)।

विरुज न [विरुज] ध्वनि, पट्टी की धावाज, शब्द (पा ६४, से १, २३, नाट—मुच्छ १३६)।

विरुज वि [दे. विरुप] १ वराय, कुडील, छुट रूपवाला, कुडिलन (दे ७, ६३, भवि)। २ विरुद्ध, प्रतिद्वन्द्व (पट्)। देखो विरुज।

विरुद्ध पु [विरुद्ध] नरक-स्थान विशेष (देवेद्र २८)।

विरुद्ध वि [विरुद्ध] विरोधवाला, विपरीत, प्रतिद्वन्द्व, उलटा (घोष; गउड)। *यारि वि [चारिन्] विपरीत घाघरख करेवाला (उप ७२८ टी)।

विरुद्ध देखो विरुद्ध (दे ६, ७५)।

विरुद्ध भक्त [वि + रद्] विरोध रूप से उगना, झटुकाया होना। विरुद्धित (उत्त १२, १३)।

विरुद्ध देखो विरुद्ध (पराण १—पत्र ३६, था २०)।

विरुद्ध वि [विरुप] १ कुरूप, भौंसा, विरुप २ कुडील, खराब, कुसित (गा २६३; भवि, स्वन् ४४; सुर १, २६, उप ७२८ टी)। २ विरुद्ध, प्रतिद्वन्द्व, उलटा (सुर ११, ८०)। ३ बहुविध, भिन्न तरह का, मानाविष (भाषा)।

विरुद्ध पुन [विरुद्ध] झटुकाया द्विदल घाम्य (पत्र ४)।

विरुद्ध सक [वि + रेचय्] १ मल को नीचे से निकालना। २ बाहर निष्कालना। विरोध (दे ४, २६)। वक्र. विरोधित (कुमा ६, १७)।

विरुद्धण न [विरोचन] १ मल-निस्तारण, जुलाब (उपकु २५, लाभा १, १३—पत्र १८१)। २ वि. भेदक, विनाशक, 'सयल-दुक्खविरोधण सनएसणंति' (स २७८; ६६३)।

विरुद्धि देखो विरिद्धि = लस (लाभा १, १७ टी—पत्र २३४, गउड ४३५)।

विरुद्धण दु [विरोचन] अग्नि, वहि (भक्त १२३)।

विरुद्ध सक [मन्ध] विरोधना, विरोधन करना। विरोध (दे ४, १२१, पद)।

विरुद्ध सक [वि + लम्] १ अवलम्बन करना। २ आरोहण करना, चढ़ना। विरोध (पाव्वा १५३)।

विरुद्धि देखो [मयित] विरोधित (पाघ, कुमा, भवि)।

विरुद्ध सक [वि + रोधय्] विरोध करना। विरोधित (संघीय १७)।

विरुद्ध दु [विरोध] विरुद्धता, प्रतीपता, वैर, दुश्मनाई (गउड, नाट—भातती १३८; भवि)।

विरुद्धय वि [विरोधक] विरोध-कर्ता (भवि)। विरोद्धि वि [विरोधिन] दुश्मन, प्रतिपक्षी (वि ४०३, नाट—शकु १६)।

विरुद्धिय नि [विरोधित] विरोध-प्राप्त (गउडा ७०)।

विल भक्त [व्रोड] सम्मान करना, शरमिन्दा होना। संक. विलिङ्ग (स ३७५)।

विल न [विल] नमक-विरोध, एक तरह का नोन (भाषा २, १, ६, ६)।

विलिङ्ग नि [दे] १ अप्रिय, घनुष की ओरी पर चढ़ाया हुआ। २ दोन, शरीर (दे ७, २२)। ३ ऊपर चढ़ाया हुआ, आरोपित 'भाणा करन विलिङ्गा सोते सेखर हृदिहृदि' (परा २५), 'पहुमं चिप रहुवडाणा ज्वरि हिपण तुसिमो भरोव्व विलिङ्गो' (दे ३, ५)।

विलओला दु [दे] छुंटाका, छुंटेरा (राज)।

विलओली की [दे] १ विस्तर बचन। २ विलोचना, ललाशी (परा १, ३—पत्र ५१)। देखो विलकोली*।

विलिङ्ग सक [वि + लङ्] उल्लंघन करना। विलिङ्गति (वर्मसं ८४२)। वक्र. विलिङ्ग (काल)।

विलिङ्ग न [विलिङ्ग] उल्लंघन, अतिक्रमण, 'ही ही सीतविलिङ्ग' (उप १६७ टी)।

विलिङ्ग (भय) देखो विहङ्गल (सण)।

विलिङ्गलिङ्ग (भय) वि [विह वलाङ्गित] व्याकुल शरीरवाना, 'गुच्छविलिङ्गित' (सण)।

विलिङ्ग देखो विलिङ्ग = वि + लङ्। वक्र. विलिङ्गमाण (वर्मसं १००५)।

विलिङ्ग भक्त [वि + लम्] १ देखी करना। २ सक. लटपटना, धारण करना। कर्म. विलिङ्गिद (श्री) (नाट—विक ३१)। वक्र. विलिङ्ग (दे ३, २६)। संक. विलिङ्गि (नाट—वेणी ७०)। क. विलिङ्गिज्ज (था १४)।

विलिङ्ग दु [विलिङ्ग] १ देखी, धरीप्रता (गा ५८८)। २ तप-विरोध, पूर्वाभि तप (संघीय

५८)। ३ न. नमन-विरोध, मूर्ख के द्वारा परि-भोग कर छोड़ा हुआ, नष्ट (विदे ३४०६)।

विलिङ्ग वि [विलिङ्गक] धारण करनेवाला (गुप्त १, ७, ८)।

विलिङ्गण देखो विलिङ्गण (गाम् १०३)।

विलिङ्गण क्षी [विहङ्गना] निर्वर्तना, घनापट, कृति (पणु १३६)।

विलिङ्गि न [विलिङ्गिन्] १ मूर्ख के द्वारा भोकर छोड़ा हुआ नमन। २ मूर्ख जिसपर हो उसके पीछे वा सीधरा नमन (वय १)।

विलिङ्गिअ वि [विलिङ्गित] १ विलिङ्ग युक्त (वय)। २ न. तप-विरोध (वय १)। ३ नाट्य विरोध (राज)।

विलिङ्गण वि [विलिङ्ग] १ लजित, शरमिन्दा (दे १०, ७०; सुर १३, १६; गुना १६८; ३२८; महा; भवि)। २ प्रतिभा शून्य, मूढ़ (दे १०, ७०)।

विलिङ्गण न [विलिङ्ग] विलिङ्गता, लजा, शरम (सुर ३, १७६)।

विलिङ्गिअ पुंश्री ऊपर देखो, 'उदसमिपविलिङ्गिअ' (भवि)।

विलिङ्ग सक [वि + लम्] १ अवलम्बन करना, सहारा लेना। २ चढ़ना, आरोहण करना। ३ पकटना। ४ विपटना। गुप्तवासी में 'विलिङ्ग'। विलिङ्गति, विलिङ्गिज्ज (महा)। वक्र. विलिङ्गिन् (वि ४८८)।

विलिङ्ग वि [विलिङ्ग] १ लगा हुआ, बिपटा हुआ, संलग्न, 'जह लोहसिला अप्पि सीतए तह विलिङ्गुसिं' (संघीय १३, से ४, २; ३, १४२; गा १८८, ३५६, महा)। २ अवलम्बित (सुर १०; ११४)। ३ आच्छा, 'अथवा भावयिया सिद्धसे तेण समं वदया विलिङ्ग' (सुख १, ३)।

विलिङ्ग भक्त [वि + लङ्] शरमाना + विलिङ्गि (गुप्त ५०)।

विलिङ्गि पुंश्री [विलिङ्गि] सादे तीन हाथ में चार घण्टा कम लट्ठी, दैन साधुओं का उपकरण—वक्र (वय ८१)।

विलिङ्ग वि [विलिङ्ग] अन्धरी तरह प्राप्त, सुलभ, (विष)।

विलप्प पुं [विलात्मन्] एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २६)।

विलभ सक [खेदय] क्षिप्त करना, खेद उपजाना। विलभेद (प्राक् ६७)।

विलमा की [दे] ज्या, घटुप की डोरो (दे ७, ३४)।

विलय पुं [दे] सूर्य का घस्त होना (दे ७, ६२, पाश्)।

विलय पुं [विलय] १ विनाश (कुप ११, सुपा १६७, ती ३)। २ लक्ष्मीता (ती ३)। ३ पुं. एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २६)।

विलया की [यनिता] की, महिला, नारी (पाश्, हे २, १२८, पद्; कुमा; रमा, भवि)।

विलन भक [यि + लप्] रोगा, काहना, क्षिप्ता। विलवह (पद्; महा)। वक्र-विलवंत, विलयमाण (महा, छाया १, १—पत्र ७७)।

विलयण वि [विलपन्] रोगेवासा, क्षिप्ता-वाला। 'या की [ता] विलाप, हन्दन (भौप)।

विलयिअ न [विलपित] विलाप, हन्दन (पाश्, भौप)।

विलयिर वि [विलपित्] विलाप करनेवाला (कुमा, सण)।

विलस घक [यि + लस] १ भोज करना। २ चमकना। विलसद, विलसेबु (महा)। वक्र, विलसंत (पन्प; सुर १, २२८)।

विलसन न [विलसन] १ विलास, भोज (उप दृ १८१)। २ वि. भोज करनेवाला (सुर १, २२१ टि)।

विलसिय न [विलसित] १ कैटा-विशेष। २ दीप्ति, चमक (महा)।

विलसिर वि [विलसित्] विलासी, विलास करनेवाला (सुपा २०४; २५४, भर्गवि १६; सण)।

विला देखो विला। 'ममर्ष व मणो प्रथिणोवि हृत तिर्प विष विलाद' (भत १२७), 'तनेण व नवणीयं मिताड सो छडिअतो' (कुप १०५)।

विलल देखो विलाल (पि २४१)।

विलय पुं [विलाप] हन्दन, विलल-विलसय या विलल होकर रोगा परिदेवन (उप)।

विलायिअ वि [विलापित] विलाप-युक्त (वै ८६; भवि)।

विलास पुं [विलास] १ क्षी का नेत्र-विकार। २ क्षी की शृंगार-कैटा विशेष, क्षी की क्रिया-संबन्धी क्षी की कैटा-विशेष (पएह २, ४—पत्र १३२; भौप; गड)। २ दीप्ति, चमक (कुमा, गड)। ३ कैटा-विशेष, भोज (गड)। 'पुर न [पुर] नगर-विशेष (सुपा ६२२)। 'वई क्षी [वती] क्षी, नारी, महिला (से १०, ७१, गड)।

विलासि वि [विलासिन्] १ मौजी, शौकीन (हास्य १३८; गड)। २ चमकनेवाला। क्षी, 'जी, 'चदविलासिणीभो चंददसमसताशमो' (भौप)।

विलासिअ वि [विलासिक, 'सित] विलास-युक्त (गा ४०४)।

विलासिणी क्षी [विलासिनी] १ नारी, क्षी। २ बेरवा (गा २६३, ८०३ अ, गड, नाट—रत्ना ६; पि ३४६, ३८७)। देखो विलासि।

विलिअ न [विलीक] १ बर्तय-सबन्धी अपराध, वह अपराध जो काम के धायेन के कारण किया जाय, दुनाह (कुमा, गा ५३)। २ भर्गव (गा ५३)। ३ प्रमिय, विप्रिय (गा ५३, पाश्)। ४ अग्रत, अग्रतय। ५ अग्रारणा, ठगाई। ६ नित-विपर्यय। ७ वि. अपराधी। ८ भर्गव-वर्ता। ९ विप्रिय-वर्ता। १० झूठ कोलनेवाला (हे १, ४६; १०१)।

विलिअ वि [विलिअ] सजित, शरमिदा (पाश्, पद्)।

विलिअ न [विलिअ] सजा, शरम (दे ७, ६५, सण)।

विलिअ वि [विलिअ] व्यलीक-युक्त, 'विलि (श्लिद)ए विह' (मग १५—पत्र ६८१, राज)।

विलिअ सक [यि + लिह] धातिज्ञान करना, स्पर्श करना। विलिअ (पाचा २, ६, ३)।

विलिअ की [दे] धाना, बुने हुए जी (दे ७, ६६)।

विलिअ सक [यि + लिप्] लेप करना, लेपना, पोतना। विलिअ (सण)। संज्ञ. विलिपिअण (सण)। हेह, विलिपित्तए (कस)। प्रयो., वक्र. विलिपावंत (निबु १७)।

विलिअ भक [यि + ली] १ नष्ट होना। २ पिपलना। विलिअ; विलिअति, विलिअ (हे ४, ५६; ४१८, भवि; घण्ट ५५, संयोग ५२; गच्छ २, २६)। वक्र. विलिअंत, विलिअ-माण (पत्रम ६, २०, ३; २१, २२)।

विलिअ देखो विलिअ = वीहित (उप २६६)। विलिअ वि [विलिअ] लिपा हुआ, जिसकी विशेषण किया गया हो वह (सुर १, ६२; १०, १७, भवि)।

विलिअवली क्षी [वे] कोमल और निर्बल शरीरवाली क्षी, नायुक बदनवाली नारी (दे ७, ७०)।

विलिअ सक [यि + लिप्] १ रेखा करना। २ चित्र बनना। ३ खोदना। विलिअ (भवि)। पद् विलिअमाण (पत्रम ७, १२०)। वक्र, विलिअमाण (पन्प)। हेह, विलिअ (कप्)।

विलिअ सक [यि + लिह] १ वाटना। २ चुम्बन करना। विलिअ (कप्)। वक्र, विलिअ (गच्छ १, १७, भत १४२)।

विलिअ न [विलिअन] रेखा-करण (तंदु ४०)।

विलिअ वि [विलिअन] चित्रित (सुर १२, २०)।

विलिअ देखो विलिअ = वीहित, 'सोगवि-वसो विलिअ' (कुप १३५)।

विलिअ देखो विलिअ = ध्यनीक, 'ममक विलीय नरवसद परिवसद विपि विते' (सुपा ३००)।

विलिअ वि [विलिअ] द्रवण-शील, पिपलने-वाला (कुमा)।

विलीण वि [विलीण] १ पिपना हुआ, दरी-नुत। २ चिन्ट, 'भोवि गुह माणजकणे मणयो मणय विम विलीणो' (पए २४; पाश्, महा, भवि)। ३ युद्धिय (पएह १, १—पत्र १४)।

विलुंगियाम वि [दे] निग्रन्थ, शक्तिचन, साधु.
'एस विलुंगियामो सिजाए' (भाचा २, १,
२, ४)।

विलुंगिय न [विलुङ्गन] उन्मूलन, जड़ से
उखाड़ना (पहल १, १—पत्र २३)।

विलुंग सक [वि + लुप] १ मृटना। २
काटना। ३ विनाश करना। विलुंगति,
विलुंगह (भाचा, सूत्र २, १, १६, पि
४७१), 'मर्य चोरा विलुंगति' (महा)।

वहू, विलुंगमाण (सुपा ५७४)। कवक,
विलुंग्यत, विलुंग्यमाण (पत्रम १६, ३१,
सुपा ८०, सुर २, २१, उवा)।

विलुंग सक [काङ्क्ष] अभिलाष करना,
काहना। विलुंग (हे ४, १६२)।

विलुंगइत्तु वि [विलोप्य] विलोप-कर्ता,
काटनेवाला (सूत्र २, २, ६)।

विलुंगय पुं [दे] कौट, कौडा (हे ७, ६७)।

विलुंगिअ वि [काङ्क्षित] अभिलाषित
(कुमा ७, ३८, दे ७, १९)।

विलुंगपउ पुं [दे, विलुंग] आशित, कवचित,
लामा हुमा। 'मध्य कवचितं प्रसिप्त विलु-
पिप्र संकिप्र लहम' (पाम)। देखो विलुत्त।

विलुंगिपुत्तु देखो विलुंगइत्तु (भाचा)।

विलुङ्क [दे] क्षिपा हुमा (भक्ति)।

विलुङ्क वि [विलुङ्कित] विगुणित, सर्वथा
केम-रहित किया हुमा (पिंड २१७)।

विलुत्त वि [विलुत्त] १ काटा हुमा, छिन्न,
'विलुत्तवेरि' (पत्रम १०२, ५३, पहल १,
३—पत्र ५४)। २ लुण्ठित, लुटा हुमा,
हमाइ मरवीइ बाणियमसत्यो। मह पुनि-
सेहि विलुत्तो, पतं विस सहि पउर' (पुर
११, ४८)। ३ विनष्ट, 'तुमं उण जलविगु-
त्तणसहणं वेव सुमरमि' (कम्पू)।

विलुत्तहिअज वि [दे] जो समय पर काम
करने को न जानता हो वह (दे ७, ७३)।

विलुप्यत } देखो विलुंग।
विलुप्यमाण }

विलुलिअ वि [विलुलित] उपमर्दित (से ६,
१२)।

विलुण वि [विलुण] काटा हुमा, छिन्न (सुपा
६)।

विलेण न [विलेपन] १ खरो पर लगाने
का चन्दन, कुकुम आदि पिट द्रव्य (कुमा,
उवा, पाम)। २ लेपन-क्रिया (मौप)।

विलेविअ वि [विलेपित] विलेपन-शुक्र
(सण)।

विलेविआ क्षी [विलेपिअ] पान-विशेष
(राज)।

विलेहिअ वि [विलेखित] चित्रित किया
हुमा (सुर १२, ११७)।

विलेअ सक [वि + लोक्] देखना। कर्म
विनोड्यजति, विलेईप्रति (पि ११)।

कवक, विलेइज्जमाग (उप ५ ६७)। सक,
विलेइज्जण (काप्र १६३)।

विलेअ पुं [विलोक्त] आलोक, प्रकाश (उप
५ ३५८)।

विलेअ देखो विलेव (सुपा ४४०)।

विलेअण पुन [विलोचन] आल, नेत्र (काप्र
१६१, गा ६७०, सुपा ५२६)।

विलेअण न [विलोचन] १ देखना, निरी-
क्षण। २ वि. देखनेवाला, 'लोयालोयविलो-
यणकेवलनाणेण नामभावस' (सुर ४,
८६)।

विलेट्ट भक [विसं + वट्] १ भ्रममाणित
होना, झूठा साबित होना। २ जलटा होना,
विपरीत होना। विलेट्ट, विलोट्ट (हे ४,
१२६, अवि, स ७१६)।

विलेट्ट } वि [विसं + दित्] १ जो झूठा
विलोट्टिअ } साबित हुमा हो (कुमा ६,
८८)। २ जो कहकर फिर बना हो, प्रतिमा-
ब्युत्त, 'वज्राए सयणमहिलाईयोववस्सो
विहिट्टो सो' (उप ५६७ ये)। ३ विरुद्ध
बना हुमा; 'चउरो महनवरइणो विलोट्टि
(१ टि) या चउरिसि वि अइवविणो' (सुपा
४३२)।

विलेड सक [वि + लोडय] मथन करना।
विलेडेइ (कुप्र ३४७)।

विलेडिय वि [विलेडित] मथित (कुप्र
७८)।

विलेभ सक [वि + लोभय] १ लुभ्य
करना, लुभाना, आसक्त करना। २ सात्व
देना। ३ विस्मय उपवाना। क- विलेभ-
णिज (कुप्र १३८)।

विलेड देखो विलेड। वक, विलेडलंत (उप
५ ८७)।

विलेड सक [वि + लुट्] वेटना, 'विलो-
नति महीतसे विमुणियमंगमा' (पहल १,
१—पत्र १८)।

विलेड वि [विलेड] चंचल, अस्थिर (पे
२, १६, गड, कम्पू)।

विलेव पुं [विलोप] लूट, डकैती, 'सत्य-
विलेवे जाए' (सुर १५, १८)।

विलेवण न [विलोपन] ऊपर देखो, 'परम-
णविलोवणाईण' (उव)।

विलेवय वि [विलोपय] सूटनेवाला, सुटेरा
'महाणमि विलोव' (उव ७, ५)।

विलेह देखो विलेभ। हेह, विलेहइत्तु
(शी) (मा ४२)।

विलेहण वि [विलेभन] १ आरव्य-कारक।
२ लुभानेवाला, 'मुद्धमहविलेहण नेय' (भावक
१३२)।

विल्ल भक [वेल्] चलना, हिलना, 'विल्लंति
दुद्धपल्लवा' (रभा)।

विल्ल देखो विल्ल (हे १, ८५, राज)।

विल्ल वि [दे] १ भण्ड, लवच। २ विलसित,
विलास युक्त (दे ७, ८८)। ३ पुन. सुगमो
द्रव्य विशेष, जो दूध के काम में आता है,
'डङ्कहतविल्लदुग्गुल्लरविमियममसंपाय' (स
४३६)।

विल्लय देखो चिल्लअ (मौप)।

विल्लय देखो वेहण (सुपा २७६)।

विल्लरी क्षी [दे] वेरा, बाल (दे ७, ३२)।

विल्लर देखो विल्लर (इक)।

विल्लर देखो वेहल (प्रवि २३)।

विल्ली क्षी [विल्ली] बुद्ध-वनसति विशेष
(पणण १—पत्र ३२)।

विल्ल वि [दे] पवन, सरेह (दे ७, ६१)।

विअ देखो इअ (हे २, १८२, गा २६०,
६०६ य कुमा)।

विअइ क्षी [विअद्] विपत्ति, कष्ट, दुःख
(उप ७७१, हे ४, ४००)। 'गर वि
[कर] दुःख जनर हुमा'।

विअइ क्षी [विअति] व्याख्या, विवरण,
टीका (कुप्र १६)। देखो विअदि।

विषयण वि [विप्रणी] विहारा हुमा (पत्र ७८, २८, से ५, ५२, १३, ८६) ।

विषय वि [विषय] विशेष बाँका, टेडा (स २५१) ।

विषयिआ छी [विपश्चिन्ता] वाय विशेष, मोणा (पाम) ।

विषयक वि [विषयक] १ अन्धो तरह पूर्ण किया हुआ । २ प्रत्येक को प्राप्त, अत्यन्त पका हुआ । ३ उदय में आगम, पलायिमुख, 'विषयकतवर्गभेदाण' देवाण अत्यन्त वदमाणे (छा ५, २—पत्र ३२१) ।

विषयक तु [विषय] १ दुरमन, रिपु, विरोधी, 'विषयकदेवीहि' (गठ, स ३६४, अण्ड ३१) । २ न्याय शास्त्र प्रसिद्ध विरह पक्ष, वह वस्तु जहाँ साध्य प्राप्ति का अभाव हो (वर्तन १—गाथा १४२) । ३ विपरीत धर्म (भ्रातृ) । ४ वैधर्म्य, विरहगता (छा १ टी—पत्र ११) ।

विषयकाली [विषय] कहने की इच्छा (पत्र १, १० नास ३१, दसनि १, ७१) ।

विषय वि [विषय] व्यास के चमड़े से बड़ा हुआ, व्यास-चर्म-युक्त (आचा २, ५, १, ५) ।

विषय्यास पु [विषय्यास] विषय, विपरीतता, व्यर्थता, उलटा (उत्त ३०, ५, सुख ३०, ५, मोय २६८) ।

विषय्यासी [विषय्यासी] १ एक महापवी (छा १०—पत्र ५७७) । २ नस रहित स्त्री (राज) ।

विषय्य स्रक [वि + पद] मरना, गूँ होना । विषय्यज, विषय्याजि (स ११६, पत्र १४, सुख २, ५५) । मवि, विषय्यगही (कुप्र १८६) । वरु, विषय्यजत (गाठ—रत्ना ७७) ।

विषय्य स्रक [वि + वर्जय] परित्याग करना । विषय्येद (उव) । वरु, विषय्ययत, विषय्यमाण (उव, चर्मस १०३२) । क, विषय्यजिज, विषय्यजीज (उप ५६७ टी अमि १८३) ।

विषय वि [विषय] १ रहित, वजित, 'मउडविषयगहण सव्यं से देह भूटस' (मुपा २७१) । २ परित्याग, परित्याग (विड १२६) ।

विषयजग वि [विषयजक] वर्जन करनेवाला (सुप्र २, ६, ५) ।

विषयजण न [विषयजन] परित्याग (रत्न २२) ।

विषयजणया } स्त्री [विषयजना] परित्याग, विषयजणा } परिहार, वर्जन (सम ५४, उत्त ३२, २, दसतु २, ५) ।

विषयज्य वि [विषय्यस्त] विपरीत, उलटा (पचा ११, ३७, कम्म १, ५१) ।

विषयज्य पु [विषय्यय] विषय्यत, व्यर्थता, वैपरीत्य (पाम, उप १४२ टी, पत्र ११३; पचा ६, १०, कम्म १, ५५) ।

विषय्यास पु [विषय्यास] १ विषय्य, व्यर्थता (पाम, पंचा ८, ११) । २ भय, मिथ्याज्ञान (सुर ६, १५४) ।

विषयजिअ वि [विषयजित] रहित, वजित, परित्याग (उव, स ३६; सुर ३, १५५, रत्ना मवि) ।

विषय्य स्रक [वि + वृत्] बरतना, रहना । विषय्य (हे ५, ११८) । वरु, विषय्यमाण (कुमा ६, ८०, रत्ना) ।

विषय्य वि [विषय्यत] गिरा हुआ (पत्र १६, २२; अण ७, ६ टी—पत्र ३१८) ।

विषय्य स्रक [वि + वृत्] बढ़ना । वरु, विषय्यमाण (छाया १, १० टी—पत्र १७१) ।

विषय्य वि [विषय्यन] बढ़ानेवाला, 'अयविषय्य' (उत्त १६, ७) । स्त्री, 'गी' (उत्त १६, २) । देहो विषय्यण ।

विषय्यि स्त्री [विषय्यि] बढ़ाना, वृद्धि (पचा १८, १३) ।

विषय्यिअ वि [विषय्यि] बढ़ा हुआ (गाठ—रत्ना) ।

विषय्यि पु स्त्री [विषय्यि] १ बाजार (मुपा ३३०) । २ हाट, दुकान, 'विषय्यि वह भावणो हटो' (पाम) ।

विषय्यि वि [विषय्यि] दूर किया हुआ, हटया हुआ (नय) ।

विषय्य देहो विषय्य=विषय्य (उत्त २०, ५४, या ३३० अ) ।

विषय्य वि [विषय्य] १ कुरूप, कुशल (से ५, ५७, दे ६७६) । २ कोका, निस्तेज, स्थान (छाया १, १—पत्र २८, से ८, ८७) ।

विषय्य वि [विषय्य] १ दो पनवाला । २ पुं, कुल, पेड (राज) ।

विषय्य पु [विषय्य] एक महाग्रह, व्योमिक्ष देव-विशेष (मुज २०) ।

विषय्यि स्त्री [विषय्यि] १ विनाश (छाया १, ६—पत्र १५७, विपा १, २—पत्र ३२, मुपा २३५, उव) । २ मरण, मीत (सुर २, ५१, स ११६) । ३ कार्य की अतिथि (मुपा २३५, उव, वृह १) । ४ आपदा, कष्ट (मुपा २३५) ।

विषय्यि वि [विषय्यि] किराया हुआ, घुसाया हुआ (से ६, ८०) ।

विषय्य पु [विषय्य] एक महाग्रह (मुज २०) ।

विषय्यि स्त्री [विषय्यि] १ विवरण, टीका । २ विस्तार (संदि ६) ।

विषय्य न [विषय्यन] वृद्धि, बढ़ाव (नय), देहो विषय्यण ।

विषय्यि स्त्री [विषय्यि] वृद्धि, बढ़ाव (उप ६७५) ।

विषय्य पु [विषय्यि] देव विशेष (भ्रातृ १५५) ।

विषय्य देहो विषय्य = विषय्य (मुपा ३१६) ।

विषय्य वि [विषय्य] १ नारा प्राप्त, जिन्त (छाया १, ६—पत्र १५७, स ३५५, मुपा ५०६) । २ वृद्ध, मरा हुआ (पत्र ५४, १०, उत्त १०, ५४, स ७५६, सुप्रनि १६२, चर्मवि १५५) ।

विषय्य स्रक [वि + वृत्] कण्ठा करना, विचार करना । वरु, विषय्यत (मुपा ५५६, सम्मत २१५) ।

विषय्य वि [वि] विस्तीर्ण (पद) ।

विषय्य स्त्री [विषय्य] कष्ट, दुःख (उप ७२८ टी) ।

विषय्य स्रक [वि + वृत्] १ बान संसारना । २ विस्तारना । ३ व्याख्या करना । विवर (मवि), विवरहि (म ७१७) । वरु, 'देहे विषय्य विषय्य' (म २८५) ।

विवर न [विवर] १ छिद्र (पात्र, गडक, प्राप् ७३) । २ गन्दरा, गुहा (सि ६, ४६) ।

३ दक्षता विजन, 'कात्रगम्याए गणियाए बहणि अतराणि य छिद्राणि य विवराणि य पडिजागरमाणे २ विहरति' (विपा १२—पत्र ३४) । ४ पुन, श्वाकारा (भग २०, २) ।

विवरमुद्द वि [विपराद्धमुख] विमुक्त, पराद्धमुख (पत्रम ७३, ३०, से ६, ४२) ।

विवरण न [विवरण] १ व्याख्यान 'सोऊण मुमिणविवरण' (मुपा ३८) । २ व्याख्या कारक प्रश्न, टीका (विसे ३४२२, पत्र—गाथा ३६, सम्मत ११६) । ३ घाल सँवारना (दे १, १५०, पत्र ३४) ।

विवरामुद्द वि देको विवरमुद्द (नवि, से ११, विवरामुद्द ८५) ।

विबरिअ वि [विद्वत्] व्याख्यात (विसे ११६६, से ७१७) । देको विद्वत् ।

विमरिअ (अप) मोचे देको (सण) ।

विमरीअ वि [विपरीत] उलटा, प्रतिवृत्त (भग १, १ टी, गडक, वप्पू, जो १२, मुपा ६१०) । 'णुवि [क्ष] उलटा, जाननेवाला (धर्मस १२७४) ।

विमरीअ } (अप) ऊपर देको: 'महं विमरीअ
विमरेर } कुटुम्बी होइ निणसहो नाति'
(सि ४, ४२४), 'माइ वगुज विमरेओ दोसव'
(नवि) ।

विमरुअ वि [विपरोक्ष] वरोक्ष, प्र-
विपरोक्ष्य } प्रत्यय, 'भावविषय दहमणो
विपरोक्षो भावतोए धूमाए' (पत्रम ६,
११) । २ न समाय, 'वासमि महकारो
होहिइ मह वा गुणए विवरसत्ते' (गडक
७६) । ३ पराप्ता, अप्रत्ययपन,

'इम ताहे भागमपक्कत्तापसलएखइगुणए ।
विपरोक्षमि वि जाया कईए सवोहएसावा'
(गडक १२०४) ।

विमल भव [वि + यल] मुहमा, टेढा
होना (गडक ४२४) ।

विमला वि [विपदा + अल] पलापन
विमलाअ } करना, भाग जाना । निमलाइ,
विमलाइ, निमलापति (गडक ६१४,
११७६, पि ४१७) । वट, विमलाअन,

विमलाअमाण (सि ३, ६०, गा २६१,
गडक १६६, से १५, १४, गडक ४७२) ।

विमलाअ वि [विपलायित] भाषा दृष्टा
(सि १, २, १४, ३०) ।

विमलाअ वि [विवलित] मोडा हुमा,
परावर्तित (गा ६८०, गडक ४२४, काप्र
१६५) ।

विमलीअ देको विवरीअ, विवलीप्रमाणए'
(प्रणु) ।

विमरुहल्य वि [विपर्यस्त] विपरीत, उलटा
(सि ६, ८) ।

विमस वि [विमरा] १ भ्रमीन, परायत,
परतन्य (प्राप् १०७, बुमा भच्च १, ५७) ।
२ वाय, लाचार (बुप १३५) ।

विमह सक [वि + यह] विवाह करना,
शादी करना (प्राप्) ।

विमहण न [विज्यधन] विनाश (खाया
१, १—पत्र ६५) ।

विमाइअ व [विपादित] व्यापादित, जो
जान से मार डाला गया हो वह, छिड़ूए
विमाइओ वालो' (पत्रम ३, १०, उत १६,
५६, ६३) ।

विमाडमा वि [विमादरु] विवाद-कर्ता (स
४५६) ।

विमाग पु [विपाक] १ कर्म—परिणाम, सुख
दुःखदि मोय टप कर्मफल (ठा ४, १—
पत्र १८८, विपा १, १, उव, मुपा ११०,
सण, प्राप् १२२) । २ प्रवर्ण, यवविवाय-
परिणामो' (ठा ४, ४ टी—पत्र २८३) ।

३ पावचाल, जँ से पुछो होइ दुइ त्रिवने'
(उत ३२, ३३) । 'विजय पुन [विचय]
धर्मध्यान वा एव भेद, कर्म फल का अनु-
चितन (ठा ४, ४—पत्र १८८) । 'सुय
न [धृत] ग्याहवाँ जैन भङ्ग प्रथ (धम
१, विपा १, १, जोप) ।

विमागि वि [विपाणि] विपाकवाला (भग्नक
११३) ।

विमाद पु [विमाद] मग्न, वरकर, वाव-
विमाय } बहद, जमाने लवई (उवा, उव,
य ३८५, मुपा २८२, ३६१) ।

विमाय सक [वि + पादय] मार डालना ।
विमाएमि (विसे २३८५) । वट, विमाएत,
विमायत (पत्रम ५७, ३१, २७, ३७) ।

विमाय देको विमाग (भुर १२, १३६, स
२७५ ३२१, ११ ११८ सण) ।

'सव्व चिय सहदकसँ

पु ३चिअयसुअमुअयविवाया ।

जायइ विमाय ज ता

को खेओ सकयवभोने'

(उव ७२८ टी) ।

विमायण वि [विमादन] विवाद कर्ता: 'ते
दोवि विवायणु ब्व रागुमुसे' (धर्मसि २०) ।
विमायिअ न [दे] प्रतिपद्य गौरव (संसि
४७) ।

विवाह सक [वि + वाहय] लग्न करना,
शादी करना । विवाहेओ (हुप्र १३१) ।

विवाह देको विवाह = विवाह (उवा स्वप्न
५१, सम १, ८८) । 'गणय पु [गणक]
ज्योत्तिषी जोरो (दे ६, १११) । 'जल
पु [वज्र] विवाह उअव (मोह ४४) ।

विवाह देको विवाह = विवाह (सम १,
८८) ।

विवाह देको विवाह = व्याख्या (सम १,
८८) ।

विवाहायिय वि [विवाहित] जिसकी शादी
कराई गई हो वह (महा) ।

विवाहिय वि [विवाहित] जिसकी शादी
हुई हो वह (महा सण) ।

विविइसा ओ [विविदिया] जानने की इच्छा,
जिनासा (भग्नक ६६) ।

विचिक देको विनित्त (भूष १, १, २, १७) ।

विचिय सब [वि + चिय] ध्वस्त करना,
भग्न करना । सँह, विचिचिता (भूष २,
४, १०) ।

विचिय न [विचिय] जंगल, वन (गडक,
नाट—चित ७२) ।

विचित्त वि [विचित्त] १ रहित, वज्रित ।
२ प्रथमभूत (दस ८, ५३, भा ६, ३३,
उत २६, ३१, उर) । ३ विजिय, धनेदविप,
'भाखेहि विचित्तेहि विपमाणी हियामए ।
गवेहि विचित्तेहि धाउतात्तस पाए'
(भापा १, ८, ८, ६, १०) ।

४ न एकान्त, विजन, 'वितु विवितमाइसउ
तामो' (स ७४३) ।

विवित वि [विचित्] १ विवेक-युक्त । २
सुगन्ध, गन्ध गौरव (मन् ५) ।

विवित्तिअ वि [विवित्तित्] विशेष रूप से
ज्ञात (परह २, १—पत्र ६६) ।

विवित्तिआ देखो विविट्सा (पचा ३, २७) ।

विविट्ति पु [विट्ति] उत्तर भाद्रपदा नक्षत्र

का प्रतिष्ठाता देव (ठा २, ३—पत्र ७७) ।

विविट्ति वि [विचिध] अनेक प्रकार का,
बहुविध, भौति भौति का (भाषा राय उव,
महा) ।

विबुअ वि [विबुत्] १ विस्तृत । २ व्याख्यात
(सति ४) ।

विबुअक मक [वि + बुध्] जागना ।
विबुअकि (शी) (आप्र) ।

विबुडिह देखो विबुडिह (भोपना १३६,
॥ १३५) ।

विबुद देखो विबुअ (प्राङ् ८, १२) ।

विबुदिह देखो विबुदि (प्राङ् १२) ।

विबुह देखो विबुह (सण) ।

विबेअ देखो विबेग (कुमा, महा ५२, ७७) ।

*न्तु वि [वि] विवेक साक्षा (पत्रम ५३,
३८) ।

विबेअ पु [विबेप] विशेष रूप (सुपा १४) ।

विबेइ वि [विबेकिन्] विवेकवाला (सुपा
१४८, कुमा, सण) ।

विबेग पु [विबेक] १ परिधाम (सूभ १,
२, १, ठा २, ३, श्रीप, प्राधानि ३०३) ।

२ ठीक-ठीक वस्तु-स्वरूप का निर्णय, विनिश्चय
(श्रीप कुमा) । ३ श्रामधित (भाषा १, ५,
४, ४) । ४ धूमकरण (श्रीप) ।

विबेगि देखो विबेइ (सुपा ५४३, कुप्र ४७) ।

विबेअ सक [वि + वेचय्] विवेचन
करना, ठीक-ठीक निर्णय करना, विवेक
करना । नर्म, विवेचित्रद (पर्मस १३१०) ।

हेह, निवेचित्तु (पर्मस १३११) ।

निवेयण न [निवेचन] विवेक, निर्णय (विसे
१६४२) ।

विबोल पु [दि] विशेष कोलाहल, बसवत

भावना, 'नियोसेण सवणमुह' (स ५७१) ।

विवोलिअ वि [दि] व्यतिश्रान्त, गुजरा हुआ;
'कहकहवि विवोलिया मे रयलो' (स ५०६) ।

विबोह देखो विबोह (मवि) ।

विब्य सक [वि + अय्] व्यय करना,
खर्च करना, 'विचितामखिणभावा सपअइ
तसस दविणमअणवर' । त विबइ जिणमवणे'
(सुपा ३८२) । क 'विबवेयव्वा' (सुपा
४२४, ५८६) । देखो विब - वि = व्यय ।

विब्याय वि [दि] १ अवलोकित । २ विद्यान्त
(दे ७, ८६) ।

विब्योअ देखो विब्योअ (कुमा) ।

विब्योअण [दि] देखो विब्योअण (कप्प) ।

विस सक [विश्] प्रवश करना । विसइ,
विसति (बजा २६, सण, गउइ) । वहु-

विसत (गउइ) । सहु विसिऊण (गउइ) ।

विस सक [वि + श्] १ हिंसा करना । २
गूट करना । कवहु, विसिज्जाण, विसीरत
(विसे ३४३७, मण्ड ७४) ।

विस पुन [विप] १ जहर, गलत, हलाहल,
'कफित नटो दुइवि विनोहविसे' (सम्मस
२२६, उवा, गउइ प्राप् १२०, कुमा) ।

२ पानी, जल (सि ८, ६३) । 'नदि पु
[नदिन्] प्रथम बलदेव का पूर्वसमीप नाम
(सम १५३) । 'अ [अ] विप-विपित्त
अस (उप ६४८ टी) । 'मइअ, 'मय वि
[मय] विप का बना हुआ (दे १, ५०,
पइ) । 'व वि [वत्] १ विपवाला,
विप युक्त । २ पु. सर्प, सर्पि (सि ७, ६७) ।

'हर पु [धर] सर्प, सर्प (सि २, २५, सुर
१, २४८, महा) । 'हरवइ पु [धरपति]
शेप नाव (सि ६, ७) । 'हरिद पु [धरेन्]
शेप नाव (गउइ) । 'हारिणी लो [हारिणी]
पनीहायी, पानी भरनेवाली ली (दे ४,
४३६) ।

विस देखो विस (गा ६४२, गउइ) ।

विस पु [वृप] १ नैल, सांड, कुपन (सुर १,
२४८, सुपा ३६३, ५६७, मुख ८, १३) ।

२ ज्योतिष-प्रसिद्ध एक राशि (सुपा १०८,
विचार १०७) । ३ शूणक, बूढ़ा (दे ७, ६१,
बहु) । ४ धर्म । ५ बल-युक्त । ६ क्षयन
नामक औषध । ७ दुर्ग मठिय (सुपा ३६३) ।

८ नाम, बन्दर्प । ९ शूक-युक्त, धीर्य-युक्त ।
१० शूङ्गवाला कोई भी जानवर (सुपा
५६७) ।

विस्सु वि [विपविस्सु] विस्सु विप-
युक्त (विसे २७००) ।

विसंक वि [विशङ्क] शंका रहित, निश्चय
(उप १३६ टी) ।

विसंखल वि [विश्टल] स्वच्छन्द, स्वैरी,
निरंकुश, उड़त (पाभ, स १८०, से ५,
६८) ।

विसखल सक [विश्टल] निरंकुश
करना, अव्यवस्थित कर डालना । सहु-
विसंखलऊण (सुख २, १५) ।

विसंपट्टिय वि [विसंपट्टित्त] विपुक्त, विप-
टित (कुप्र ६) ।

विसंपड अक [विस + पट्] असंग होना,
जुदा होना । वहु, विसंपडत (गा ११५) ।

विसंपडिय वि [विसंपटित्त] विपुक्त, जो
जुदा हुआ हो वह (आया १, ८—१४१,
महा) ।

विसपाइय वि [विसपावित्त] संहत किया
हुआ (मणु १७६) ।

विसपाय सक [विस + पातय्] सहित
करना । कर्म, विसपाइजइ (मणु १७६) ।

विसंयुक्त वि [विसंयुक्त] विपुक्त, जो असंग
हुआ हो (सम्म २२; सूमनि १२१ टी) ।

विसजोअ पु [विसं + योजय्] विपुक्त
करना, असंग करना । विसजोइ (महा) ।

विसजोअ पु [विसंयोग] विभोग, विपटन,
विसजोग १ वृषगुहा, जुदाई (वम्म ५, ८२,
पच ३, ५४) ।

विसडुल वि [विसरयुल] १ विह्वल, व्याकुल
(पाभ, से १४, ४१, दे २, ३२, ४, ४३६,
मोह २२, वम्मो ५) । २ अव्यवस्थित (गा
१४६, कुप्र ४१७, दे १, ३४) ।

विसतर पु [विसंयुक्त] शयुक्त को सपानेवाला,
दुरमन को हटाने वाले (दे १, १७०) ।

विसयुल देखो विसडुल (पत्रम ८, २००,
॥ ५२१) ।

विसयुलिय वि [विसयुलित्त] व्याकुल बना
हुआ (गण) ।

विंसिंधि पुं [विंसिंधि] १ एक महाग्रह-
ज्योतिष्क देव-विशेष (ठा २, ३—पृथ ७८)।
२ वि वयन रहित (राज)। कल्प,
कल्पेह्य पुं [कल्प] एक महाग्रह (सुत्र
२०)।

विंसिनिधि न [विंसिनिधि] विविध रथ्या,
घनेक मट्ठा (भोप)।

विंसंभ देखो वीसंभ (महा)।

विंसंभगया देखो विंसंभगया (भावा १,
८, ६, ४)।

विंसंभोइय वि [विंसंभोगि] जिसके साथ
भोजन भादि का व्यवहार न किया जाय वह,
मंडली-बाबा, समान-बाबा (ठा ५, १—पृथ
१००)।

विंसंभोग पुं [विंसंभोग] साथ बैठकर भोजन
भादि का व्यवहार (ठा ३, १)।

विंसंभोगिय देखो विंसंभोइय (ठा ३, ३—
पृथ १३६)।

विंसंभोइय वि [विंसंभोइय] १ सबूत रहित,
अप्रमाणित (प्राप्त स ५७६)। २ विपत्ति,
विप्लव (स ११, ३६)।

विंसंभय सक [विंसं + यक्] १ अप्रमाणित
होना, असत्य ठहरना, सबूत से सिद्ध न होना।
२ विपत्ति होना, प्रलय होना। ३ विपरीत
होना, भयना होना। विंसंभयद, विंसंभयति
(ह ४, १२६, उव), 'सो सारिसो घम्मो
नियमेण पत्ते विंसंभयद' (स ६४८, ७१६),
'चरिएण व्हं विंसंभयसि' (मन २६),
विंसंभयणा (महानि ४)। वक्क. विंसंभयत
(उव, उप ७६८ टी, धर्मसं ८८३)।

विंसंभयण न [विंसंभयण] विंसंभय, सबूत
का प्रभाव (उप ४ २६८)।

विंसंभय वि [विंसंभयदि] १ विपत्ति होने-
वाला, विपत्ति होनेवाला (हुमा ६, ८६)।
२ अप्रमाणित होनेवाला, सबूत से सिद्ध नहीं
होनेवाला, प्रमाण ठहराना (हुमा २६४,
समस्त १२३)।

विंसंभय वि [विंसंभयदि] विंसंभय-युक्त
(दे १, ११४, से ३, ३०)।

विंसंभय देखो विंसंभय = विंसंभय (धर्मसं
१४८)।

विंसंवादण देखो विंसंवायण (उत्त २६,
४८)।

विंसंवादणा देखो विंसंवायणा (ठा ४, १—
पृथ १६६)।

विंसंवाय वि [दे] मलिन, मैला (दे ७,
७२)।

विंसंवाय पु [विंसंवाद] १ सबूत का प्रभाव,
विशुद्ध सबूत, विपरीत प्रमाण, 'अणोणोण-
विंसंवायो' (संनोच १७, सुपा ६०८)। २
व्यापार (गा ६१६)। ३ विचलता (वे ३,
३०)।

विंसंवायण वि [विंसंवादक] १ सबूत रहित,
प्रमाण-रहित। २ ठगनेवाला, चक्क (सुपा
६०८)।

विंसंवायण न [विंसंवायण] नीचे देखो (उत्त
२६, ४८, सुत्र २६, ४८)।

विंसंवायणा जो [विंसंवायणा] १ असत्य
कथन। २ वचन, ठगना (उ ४, १—पृथ
२६६)।

विंसंसरिय वि [विंसंसर] उठ गया हुमा,
'वहायसमय य विंसंसरिएयुं पाएयुं' (स
५१७)।

विंसंहणा देखो विंसंभगया (भावा)।

विंसंकल वि [विंसंकल] नीचे देखो (राज)।

विंसंरलिय वि [विंसंरलित] दुकड़ा-दुकड़ा
किया हुमा, खरिबत (भावम)।

विंसंगा पुं [विंसंगा] १ निरंग, व्याध; 'निमि-
रोपि सुयसंमतिरियासंनयिजवज्जवित्तयो'
(विसे २२८)। २ विरजन, छुटकारा, छोट
देना (वि २१४)। ३ अंतर-विरोध, विरजन-
नीय बणें (पिप)।

विंसज सक [वि + सज्, सज्य] १
विदा करना, भेजना। २ त्यागना। विंसज्जेह
(महा)। वक्क. विंसज्जिऊण, विंसज्जिअ
(महा, भसि ४६)। हेऊ. विंसज्जिउ (सी)
(प्रमि ६०)। क. विंसज्जिद्वय (सी)
(भसि ५०)।

विंसज्जण जो [विंसज्जण] विंसज (वच
४)।

विंसज्जिअ वि [विंसज्जिअ, विंसज्जिअ] १ विदा
किया हुमा, भेजा हुमा (भौव. यमि ११६;

महा-सुपा १५०, ३५७)। २ त्यक्त, 'जोविए
जाणि उ विंसज्जिअयाणि जाईएयुं देहाणि'
(उव)।

विंसट्ट सक [दल्] फटना, टूटना, टुकड़े-
टुकड़े होना। विंसट्टद (हे ४, १७६, पड्)
विंसट्टि (गठड), 'तस्स विंसट्टद हिमय'
(कुमा)। वक्क. विंसट्टत (स ५७६)।

विंसट्ट सक [वि + कस] विकसना,
खिलना, फूलना। विंसट्टद (प्राक् ७६),
विंसट्टति (वजा ११८)। वक्क. विंसट्टत,
विंसट्टमाण (वजा ६०, ठा ४, ४—पृथ
२६४)।

विंसट्ट सक [वि + कासय] विकसित
करना, फूलाना, प्रफुल्ल करना। विंसट्टद
(भावा १५३)।

विंसट्ट सक [पत्त] गिरना, स्थलित होना।
विंसट्टि (सुत्र २, २६)।

विंसट्ट वि [दे] १ विपत्ति, विरलित (प्राक्,
गठड १००६)। २ विपत्ति, प्रफुल्ल, खिला
हुमा (प्राक् ७७; गठड ६६७, ८०५; कुमा;
सुर ३, ४२, मत ३०)। ३ वसित, विशीर्ण,
खरिबत, जिसका टुकड़ा-टुकड़ा हुमा हो वह
(से ६, ३०, गठड ५५६, बवि)। ४ उलित
(गठड ७)।

विंसट्टण न [विंसट्टण] विकास, प्रफुल्लता,
'देव'। पणवज्जएल्लाएकट्टविंसट्टएल्लागमि-
हरणुणाणि' (धर्मा ५)।

विंसड } देखो विंसम (पड्); हे १, २४१,
विंसद } कुमा, दे ७, ६२; 'डडेण वहा
विंसदा, विंसदा जह सनत्तिमा जाया' (उव)।

विंसद वि [दे] १ नीराग, राग-रहित। २
नीराग, रोग रहित (दे ७, ६२)। ३ विरोध,
सहन किया हुमा (उर)। ४ विशीर्ण, टुकड़े-
टुकड़े किया हुमा (से ६, ६६)। ५ पाटुल,
व्याकुल (से ११, ८६)।

विंसद वि [विंसद] १ अत्यंत संनो, प्रतिराय
मायावी, 'देहेदि पाटिदरं कि य वयं एव
विंसदं' (पठम १०२, ५२)। २ पुं. एक
नोष्ठ-युग्म (मुसा ५४०)।

विंसण देखो वसण = वसण (दे ६, ६२)।

विंसण न [विंसण] प्ररोस (राज)।

विसरण वि [विसंज्ञ] सत्ता-रहित, चैतन्य-वर्जित (सि ६, ६८) ।

विसरण देवो विमल = विपण (महा. वमु. राज) ।

विसरति नि [विमरति] सत्त्व-रहित (वव ६) ।

विसरत्य देवो वीसत्य (छाया १, १—पत्र १३, मन्त्र १६, ऊ ७२२ टी) ।

विसद देवो विसय = विरद (पह १, ४—पत्र ७२, वण १, नि ६७) ।

विसद पुं [विशद] १ विशिष्ट शब्द । २ नि. विशिष्ट शब्दवाला (गठ) ।

विसन्न वि [विपण] १ छिन्न, शीघ्र वस्तु, विषाद्युक्त (पह १, ३—पत्र ३५, सुर ६, १८०, ध्रु १२) । २ घासक्त, लम्पित (सूत्र १, १२, १४) । ३ निमग्न, 'मत्तरा वेव मेयमि विसन्ने' (छाया १, १—पत्र ६३) । ४ ध्रु. प्रसव्य (सूत्र १, ४, १, २६) ।

विसन्न देवो विसन्न ।

विसन्ना क्षी [विसन्ना] विद्या-विशेष (पत्रम ७, १३६) ।

विसप्य भग [वि + सृप] फैला, विस्तारना, व्याप्त होना । वट. विसप्यत्, विसप्यमाण (बन्ध. भा. धीय. सं ५३) ।

विसप्य पुं [विसर्प] एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २७) ।

विसर्पिषि वि [विसर्पिन्] फैलनेवाला (मुपा ४४७) ।

विसर्पिपर नि [विसर्पिन्] ऊपर देखो (सण) ।

विसम देवो वीसम = वि + धम । विसमदु (रमा ११) ।

विसम नि [विपम] १ ऊँचा-नीचा, उन्नत-वनत (कृमा, गठ) । २ असम, असमान, असुख (मग. गठ) । ३ असुख, एकी सत्या, अवे—एर, तीन, पाँच, गान घाति । ४ दासक, कठिन, कठोर । ५ संज्ञक, संज्ञक, भग बोध, संकीर्ण (हे १, २४१. पट १) । ६ सुन. मात्रा (मा २०, २) । 'वरर वि [विसर] धर्मिण्डावताना, धर्मय किर्ण-वाना (वि ४, २४) । 'लोअनपुं [लोअन] महारेण, सिर (वेणी ११७) । 'वान पुं [वान] वानदे (गठ) । 'मर पुं [मर] यदो (ग १, गुा १६९. सण) ।

विसमय न [दे] भ्रष्टाकर, भिन्ना (दे ७, ६६) ।

विसमय देवो विस मय ।

विसमिअ वि [विपमित] १ बीच-बीच मे विच्छेदित (सि ६, ८७) । २ विपम बना हुआ (गठ) ।

विसमिअ वि [विस्मृत] भुला हुआ, धम्मृत (सि ६, ८७) ।

विसमिअ [विश्रमित] विद्यात्त विद्या हुआ, विद्याभ्यापित (सि ६, ८७) ।

विसमिअ वि [दे] १ विमल, निर्मल । २ उत्थित (दे ७, ६२) ।

विसमिर वि [विश्रमित] विद्याम करनेवाला । क्षी. 'री (मा ५२, प्रा ३०) ।

विसम्भ मरु [वि + भ्रम] विद्याम करना, धारणा करना । मवि. विसम्मिहि (मा २७५) । क. विसम्मिअञ्ज (सि ६, २) ।

विसय वि [विशद] १ निर्मल, स्वच्छ (कुप ४१६, सट्ट ७८ टी) । २ व्यक्त, स्पष्ट (पाम) । ३ धवस, सफेद (वीय) ।

विसय पुन [विशय] १ गृह, घर (उत्त ७, १) । २ संभव, संभावना (भा ३३) ।

विसय पुं [विपम] १ गोबर, इन्द्रिय भादि से जाना जाता पदार्थ—राज, धन, रत्न भादि वस्तु (पाम. गुमा, महा) । २ जनपद, देश (वीयमा ८, गुमा. पत्रम २७, ११. गुमा ३१, महा) । ३ काम-भोग, विलास, 'मोय-गुद्विओ यमज्जविसयगुहे' (हा ३, १ टी—पत्र ११४, वम्म १, २७, गुमा ३१, महा) । ४ बावर्त, प्रवरण, प्रस्ताव, 'बोदवगिण' (उर ६८६ टी. बोधमा ६) । 'विहद पुं [विपति] देश वा मातिर, राजा (गुमा ४६४) ।

विसर सग [वि + सृज] १ व्याप करना । २ विदा करना, भेजना । विसद (पट) ।

विसर भग [वि + सृ] सरचना, धमना, नीचे गिरना, सितवना । वट. विसरत (छाया १, ६—पत्र १२७, वे १४, २४) ।

विसर मरु वि + सृ मुन जाना, बाद न मान । विसर (प्रा ६३) ।

विसर पुं [दे] नीय, सेवक, सरसर (दे ७, ६२) ।

विसर पुं [विसर] समूह, श्रृंखला, संघात (मुपा ३; सुर १, १८५, १०; १४) ।

विसरण न [विशरण] विनाश (राज) ।

विसरय पुं [दे] वाय-विशेष (महा) ।

विसरा क्षी [विसरा] मन्त्रो परवने पा जान विशेष (विा १, ८—पत्र ८५) ।

विसरिअ वि [विस्मृत] माए नहीं घामा हुआ (वि ३१३) ।

विसरिया क्षी [दे] सरट, कृत्वात्, गिरगिट (राज) ।

विसरिस नि [विसरिअ] प्रसमान, विजा-धीय (सण) ।

विसलेय पुं [विश्लेय] जुवादि, विमोग, दुपगुनाव (वट) ।

विसद वि [विशल्य] शब्द-रहित (पत्रम ६३, ११; वेदम ३८७) । 'करणी क्षी [करणी] विद्या-विशेष (सूत्र २, २, २७) ।

विसद्व क्षी [विशल्या] १ एक महीपय (वी ४) । २ सदन्य की एक क्षी (पत्रम ६३, २६) ।

विसद्व सव [वि + श्रम] धम करना, मार डालना, 'विसदेह महिये' (मोह ७६) । वट. विसमिज्जत (गठ ११६) ।

विसस देवो विसस = वि + रस. कृ. विसमिअञ्ज (सि १०८) ।

विससिय वि [विशसिय] धम किया हुआ, जो मार डाला गया हो वह (गठ. ४७५; सममत्त १४०) ।

विसह सव [वि + पट] सहन करना । निमहति (उर) । वट. विसहति (सि १२, २१ गुा २१३) । वट. विसहिं (म ३४६) ।

विसद वि [विपट] गहन करनेवाला, संहिन्नु; 'वर्षुप दान समरासविगहे' (बन्ध. वीय) । विसद देवो यमम (गठ) ।

विसद्व न [विशद्व] १ सहन करना (बर्मेत् ८६७) । २ वि. संहिन्नु (पर ७३ टी) ।

विसदिअ वि [विदेअ] मृदु किया हुआ (सि ६, २३) ।

विमात्र (वट) क्षी [विशय] दान विशेष (विप) ।

विसाइ नि [विपादिन्] विपाद-युक्त, शोक
ग्रस्त (संबोध ३६) ।

विसाण न [विपाण] १ हाथी का दाँत
(पट्ट १, १—पत्र ५, अणु २१२) । २
शृंग, सींग (सुख ६, १; पाप, औष) । ३
सूत्रर का दाँत (उवा) । ४ पुं व. देश-विशेष
(पत्र ६८, ६५) ।

विसाण सक [विसाणय्] विसना, शाण
पर चक्षुना । कर्म विसाणीप्रदि (शो)
(भाट—मुच्छ १३६) ।

विसाणि नि [विसाणिन्] १ सींगवाला ।
२ पुं, हाथी, हस्ती । ३ शृंगटक, सियाखा ।
४ ऋषभ नामक औषध (अणु १५२) ।

विसाय सक [वि + स्वाद्य्] विशेष चक्षुना,
खाना । बहु विसाएमाण (आमा १, १—
पत्र ३७, कण्) ।

विसाय पुं [विपाद्] खेद, शोक, दिनगोरी,
प्रफुल्ल (बव, गडउ, सुपा १०४, हे १,
१५५) । वंति नि [यन्] चित्त, शोक-
ग्रस्त (भा १४) ।

विसाय वि [विसात्] १ सुख-रहित (विने
१३६) । २ पुं न. एक देव-विमान (सम ३८) ।

विसाय वि [विसाद्] स्वाद-रहित, 'ग्राम-
यशरि विसादे मिच्छतं बयसण व जं भुत्त'
(विने १३६) ।

विसार सक [वि + सारय्] विसाना ।
बहु विसारत (उत्त २२, ३४) ।

विसार पुं [दे] सैय, वेता (पद्) ।

विसार वि [विसार] सार-रहित, नि सार
(गडउ) ।

विसारण न [विशारण] खड्गन (पिंड
५६०) ।

विमारणिय नि [विमारणिक] स्मारणा-
रहित, जिमको याद न दिसामा कया हो वह
(रात) ।

विमारय नि [दे] घृष्ट, खीट, चाहसी (दे ७,
६६) ।

विमारय नि [विशारद्] विमान, परित्त,
दात (एट्ट १, ३—पत्र ५३; भग, औष,
गुर १, १३; ग्राम १६) ।

विसारि नि [विसारिन्] फैलनेवाला, व्यापक
(गडउ) । औ, 'णी (कण्) ।

विसारि पुं [दे] कमलासन, ब्रह्मा (दे ७,
६२) ।

विसाल नि [विशाल] १ विस्तृत, बड़ा,
विस्तीर्ण, चौड़ा (पाप, गुर २, ११६, प्रति
१०) । २ पुं. एक ग्रह-देवता, मझसी महा-
ग्रहो मे एक महाग्रह (ठा २, ३—पत्र
७८) । ३ एक इन्द्र, क्वचित्त-निकाय का
उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र
८५) । ४ पुं. देव-विमान विशेष (सम ३५;
देवेन्द्र १३६, पत्र १६४) । ५ न. एक विद्या-
घर-नगर (इक) ।

विसालय पुं [दे] जलधि, समुद्र (दे ७,
७१) ।

विसाला औ [विशाला] १ एक नयी क
नाम, उज्जयिनी, उज्जैन (सुपा १०३; उप
६८८) । २ भगवान् पारवन्माय की वीसा-
रिजिका (विचार १२६) । ३ जवूवुव
विशेष, जिमने यह जवूवुव कहलाता है ।
४ राजधानी-विशेष (इक) । ५ भगवान्
महावीर की माता का नाम (सुम १, २,
३, २२) । ६ एक पुष्करिणी (राज) ।

विसालिस देहो विसरिस (उत्त ३, १४) ।

विसासन नि [विसासन] विपातक, विना-
शक, 'दुसुमयविसासण' (सम १) ।

विसासिज नि [विशासित] १ मारित,
हिसित, जिसका वध किया हो वह । २ विशेष
रूप से मरित । ३ विश्लेषित, विमुक्त किया
हुआ । ४ मार भणया हुआ (वि ८, ६१) ।

विसाइ पुं [विशात्] स्कन्द, बर्तित्वेय
(पाप) ।

विसाइ औ [विशाय] १ नक्षत्र-विशेष
(सम १०) । २ व्याक्ति-नाचक नाम, एक औ
का नाम (वज्जा १२२) । ३ एक विसापर-
न्या (महा) ।

विसाइज नि [विशाधित] १ मिष्ट किया
गया । २ न. संक्षिप्त, 'सम्पाविशाहित्ति
सहृद्दं नित्ति ठहि देवहि माहं' (हे ४, ३८६;
४११) ।

विसाइ औ [विशास्वी] १ वैशाख मास की
पूर्णिमा । २ वैशाख मास की प्रमावस
(सुज्ज १०, ६) ।

विमि श्री [दे] वि-शान्ति, गज पर्याण (दे
७, ६१) ।

विसि देहो विसि (हे १, १२८, प्राग) ।

विसिज्जमाण देहो विस = वि-यु ।

विसिट्ठ नि [विशिट्ठ] १ प्रधान, मुख्य (सुम
१, ६, ७, पणह २, १—पत्र ६६) । २
विशेष-युक्त (महा) । ३ विशेष शिट्ठ, सुसम्प
(वज्जा १६०) । ४ युक्त, सहित (पण
२३—पत्र ६७१) । ५ व्यतिरिक्त, निम्न,
विलक्षण (विने) । ६ पुं. एक इन्द्र, द्वीपकुमार-
देवो का उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, १—
पत्र ८४) । ७ न. लगातार छ दिनों का
उपवास (संबोध ५८) । 'दिट्ठि औ [टिट्ठि]
सहिआ (पणह २, १) ।

विसिट्ठि औ [विट्ठि] निपरीत क्त (विदि
८७८) ।

विसिण नि [दे] रोमश, प्रचुर रोमवाला (दे
७, ६४) ।

विसिस सक [वि + शिप्] विशेषण-युक्त
करना । कर्म, 'विदिआ विसि(ति)सए पुण
वाणउ, पुण जमो भणिए' (सज्ज ५८,
५६) ।

विसिह पुं [विशियन्] १ बाण, वीर (पाप;
पत्र ८, १००, सुपा २२, रिपत्त १३) ।
२ वि. शिखा रहित (गडउ ५६६) ।

विसी देहो विसी (हे १, १२६, प्राग) ।

विसी औ [विशति] कोम, वीस का समूह,
'विसी(ति)माधो भागवदाए विसीपो' (हाथ्य
१३६) ।

विसीअ सर [वि + सद्] १ खेद करना ।
२ निगम होना, दूषना । विसीयद् विसीमति,
विसीमए, विसीयद् (सुम १, ३, ४, १, १,
३, ४, ५, ३, ४, ४—पत्र २७८; उप) । यह,
विसीयंत (वि ३६७) ।

विसीय नि [विशो गै] १ बीज, वृद्धि ।
२ न. दूषना, ज्वरित होना, 'संकोदि विद्विश्य
नित्ति विसीयं वगधोदि' (गुर १२, १६६) ।
विसीरंत देहो विस = वि + यु ।

विशील वि [विशील] १ ब्रह्मचर्य-रहित, व्यभिचारी (यमु. उप ५६७ टी) । २ छतरा स्वभाववाला, विरूप आचरणवाला (उत ११, ५) ।

विशुग्ग सक् [वि + शुच्] शुद्धि करना । विशुग्गद (उर) । वक्. विशुग्गमेव, विशु-ज्जमाणा (उर ३२० टी, छाया १, १—पत्र ६४, उवा. शीघ्र, मुर १६६, १६१) ।

विशुग्गिय वि [विशुत्] विनाश (पणह १, ४—पत्र ८५) ।

विमुत्त वि [विस्सोत्तस] १ प्रत्यूह । २ छतरा, छुट (अवि) ।

विमुत्तिया देवो विस्सोत्तिया (आवक ५६; वन ५, १, ६) ।

विमुत्त वि [विशुत्त] १ निर्मल, निर्दोष (मम ११६; डा ४, ४ टी—पत्र २८३, प्राप् २२, उवा. हे ३, ३८) । २ विशुद्ध, उरग्गल (पणह १७—पत्र ४८६) । ३ पुं. वसिष्ठ-कोन का एक प्रवर (डा ६—पत्र ३६७) ।

विमुत्त वि [विशुत्त] निर्दोषता, निर्मलता (शीघ्र, वा ७१७) ।

विमुत्त सक् [वि + श्च] मूल जाना, याद न माना । विमुत्तरद, विमुत्तराणि (महा वि ३१३), विमुत्तरेहि (स २०४) ।

विमुत्तरि वि [विमृत्त] भिन्नता विम्वरण हुआ हो वह (म २६६; सुच २, २६, मुर १४, १७) ।

विमुत्तरिय वि [विद्वित्] चित्र विद्या हुआ, 'मरुत्तविनाशविमुत्तरियण विमुत्त सोदग्ग' (गठ १११) ।

विमुत्त न [विमुत्त] राज क्षीर दिा की समानतावा बात, वह समय जब क्षीर राज सोना दसकर होते हैं (दे ७, ४०) ।

विमुत्तरा ओ [विमुत्तरा] योग-विरोध हुआ (उर, मुर ११, ७२; छाया २, २, १४) ।

विमुत्तिय वि [विमुत्तिय] १ पुत्रा हुआ, पुत्रा हुआ (पणह १, १—पत्र १८) । २ बाया हुआ, बहण (मुर १, ५, २, ६) ।

विमूर देवो विमुत्त । विमूर (अट ९३) ।

विमूर पक् [विमूर] खेद करना । विमूर (दे ४, ११२; भा. उर) । वह विमूरत,

विमूरमाण (उर; गा ४१४; सुपा २०२; गठ) । क. विमूरियण (गठ) ।

विमूरण न [खिदना] १ खेद । २ पोडा (पणह १, ५—पत्र ६४) ।

विमूरणा ओ [खिदना] खेद, अपमान, दुःख (स ५, ३) ।

विमूरिअ वि [विमूर] खेद-युक्त, दिलगिर (स १०, ७६) ।

विमूरिय पुन [विमूरियहत्त] एक देव-विमान (मम ४१) ।

विसेदि ओ [विसेण] १ विदिशा सम्बन्धी श्रेणि, बहक रेखा । २ वि. विषेणि से चिपट (एकि वि ६६; ३०४) ।

विसेस सक् [वि + रोपय] विशेष-युक्त करना, गुण आदि ढाढ़ दूकर से मिल करना, विशेष से चिन्तित करना, व्यवस्थित करना । विशेष, विसेस (अवि, छा. गुमनि ६१ टी, मग, विने ७६; महा) । बर्मे विसेसिअ (विने ३१११) । सं. विसेसितं (विने ३११४) । क. विसेमणिअ, विसेस (विने २१५६; १०३५) ।

विसेस पुन [विसेण] १ प्रवेद, पार्षत्य, मित्रता, 'य संपर्यासि विसेमणिय' (मुर २, ६, ४६; मग विने १०५, उर) । २ वेद, प्रकार, 'दसविहे विसेस पन्ने' (डा १०, महा, उर) । ३ मनाधारण, अनुक. ध्वनि, साम (उर, जी ३६, महा, अवि २१०) । ४ पण्य, धर्म, गुण (विने २१७) । ५ अधिक, अधिकार, ज्ञान, 'तमो विसेसु स पुन' (मग, प्राप् १७९, महा, जी ३६) । ६ तिरन । ७ साहित्यशास्त्र प्रगति मन्तार-विशेष । ८ धर्मविक-प्रगति धर्मय वसर्प (दे १, २६०) । 'मुत्त [स] विसेस जानने जाना (सं ३२; महा) । 'ओ य [तस] जान करके (महा) ।

विसेस पु [विमूर] कृपाकरण (वक् १) ।

विसेसा ॥ [विरोपण] दूसरे में मित्रता बनानेवाला पुन आदि (उर ४४४; मग ८६; पत्र १, १२; विने ११२) ।

विसेसिअ देवो विसेस = वि + रोपय ।

विसेसय पुन [विरोपण] विलक, चन्दन आदि जा मस्तक-स्थित चिह्न (पाम, से १०, ७४; वेणी ४६; गा ६३८; मुर २४५) ।

विसेसिअ वि [विरोपण] १ विशेष-युक्त किया हुआ, भेदित (मम ३७, विने २६८०) । २ प्रतिश्रुति (पाम) ।

विसेस देवो विसेस = वि + रोपय ।

विसेण वि [विशो] शोक-रहित (आवा) ।

विसेणिया ओ [विस्सोत्तसिअ] १ विमार्ग-गमन, प्रतिफल गति । २ मन वा विमार्ग में गमन, अपमान, छुट चिन्तन (आवा; विने ३०१२, उर, पर्मसं ६२) । ३ शंका (आवा) ।

विसेणिया पुन [वि. विरोपण] कोही वा विसेयण । योगवा हित्वा (पर्मवि ५७, पंचा ११, २२) ।

विसेह सक् [वि + शोचय] १ शूद्र करना, मन रहित करना, निशान बनाना । २ ध्याय करना । विसेह, विसेहेह (उर; सण, वक्) । विसेहेहण (आवा २, ३, २, ३) । हे. विसेहिचण (डा २, १—पत्र ५६) ।

विसेह वि [विरोम] शोभा-रहित (दे १, ११०) ।

विसेहण न [विरोधन] शुद्धि-करण (वक्) ।

विसेहणया ओ [विरोधना] ऊपर देवो (डा ८—पत्र ४४१) ।

विसेहण वि [विरोधण] शुद्धि-कर्ता (मुर १, ३, ३, १६) ।

विसेणिया ओ [विरोधि] १ विमुक्ति, निर्मलता विमुत्ता (पत्रम १०२, १६६; उर विने ९०१, गुग १६२) । २ आराध के योग्य आचरण (धोय २) । ३ आराधक, सामाजिक आदि वट-मर्मा (पणु ३१) । ४ मित्रता वा एक साथ, शिष्य दोस्ताने आहार का ध्याय करने पर होय मित्रता वा मित्रता-प्राप्ति (विमुत्त ओ वह दोन (पत्र ३६४) । 'अदि ओ [विरोधि] पूर्वोक्त विशेष-योग का प्रकार (पत्र ३६४) ।

विसेहणिया वि [विरोधिया] १ शूद्र किया हुआ । २ पुं. मंग मर्मा (मुर १, ११, ३) ।

विस्स देहो विस्स = विश, 'देवीए जेण समयं महणिं अण्णोए विस्समिं' (सुर २, १२७) ।

विस्सं भुं [विस्सं] १ कञ्ची गन्ध, धूपक मोंम भादि की वृ । २ वि. कञ्ची गन्धवाला (आम्र, ममि १८४) । ३ गंधि वि [गंधिन्] आम्रगन्धि, धूपक मास के समान गंधवाला (ममि १८४) ।

विस्सं पुं [विस्सं] १ एक नम्र-देवता, उत्तरापादा नक्षत्र का अष्टिष्ठाता देव (ठा २, ३—पत्र ७७; अणु १४४, सुज १०, १२) । २ स. सर्व, सकल, सब (चित्ते १६०३, सुर १२, ५६) । ३ पुन, जगत्, दुनियाँ (सुपा १३६; सम्मत् १६०, ६३) । ४ पुं [जिन्] यत् विशेष (प्राह ६५) । ५ कम्मं पुं [कम्मं] शिली-वरोध, देव-वर्धक (स ६००; कुप ६) । ६ पुं न [पुं] मगर-विशेष (सुपा ६३५) । ७ भूइ पुं [भूति] प्रथम धानुदेव का पूर्व-जन्मी नाम (सम १५३; पत्र २०, १७१; भत् ११७; तो ७) । ८ यम्म देहो 'कम्म' (स ६१०) । ९ बाइअ पुं [बादि] भगवान् महावीर का एक गण (ठा ६—पत्र ५५१) । १० सेण पुं [सेन] १ भगवान् शान्तिनाथकी का पिता, एक राजा (पम १५१; १५२) । २ महाराज का एक कुल (सम ५१) । देहो दीस = विरद ।

विस्सअ (मा) देहो विरहय = विस्मय (पह) ।

विस्संत देहो दीसंत (सुपा ५८३) ।

विस्संतिअ न [विश्रान्तिअ] मयुरा का एक शीर्ष (ती ७) ।

विस्सं वक्क [वि + वय्क] टपकना, भरना, घुना । विस्संति (ठा ४, ४—पत्र २७६) ।

विस्सम यन् [वि + अम्भ] विस्वास करना । १. विस्संभणज्ज (या १४, उपप १६) ।

विस्संभ पुं [विश्रम्भ] विद्यात, थड़ा (श्रौ ६६; महा) । २ पाइ वि [पातिन्] विश्राम-भातक (णामा १, २—पत्र ७६) ।

विस्संभण न [विश्रभण] विश्राम (भात् १६६) ।

विस्संभणया खी [विश्रम्भणा] विस्वास (भाव) ।

विस्संभर पुं [विश्रम्भर] जन्तु-विशेष, भुजपरितर्प की एक जाति (सुप २, ३, २५; श्रौ ३२३) । २ मूषक, बूढ़ा (श्रौ ३२३) । ३ इन्द्र । ४ निष्पु, नारायण (नाट—चैत ३८) ।

विस्संभरा खी [विश्रम्भरा] धूम्रिणी, चरती (कुप २१३) ।

विस्संभिय वि [विश्रब्ध] विश्राम-प्राप्त, विश्रान्ती (सुब १, १४) ।

विस्संभिय वि [विश्रब्धन्] जगत्-पूरक (उत्त ३, २) ।

विस्संभय देहो दीसंत्त (नाट—शकु ५१) ।

विस्संभय देहो दीसंत्त (ममि १६३, बुदा २२३) ।

विस्सम भक्क [वि + अम्भ] धाक लेना । विस्समइ (प्राह २६) । ५. विस्समिअ (नाट—मावती ११) ।

विस्सम पु [विश्रम] विश्राम, विश्रान्ति (स्वप्न १०६) ।

विस्समिअ देहो विस्संत (सुपा ३७२) ।

विस्सर छक्क [वि + स्सु] भुजना । विस्सरइ (यावा १५१) ।

विस्सर वि [विस्सर] खराब धावाबवाला (सम ५०; पयह १, १—पत्र १८) ।

विस्सरण न [विस्सरण] विस्फुटि, वाद न घाना (पमा २४; कुल १४) ।

विस्सरिय वि [विस्सर] धुना हुआ (उप ५ ११३) ।

विस्सर सक्क [वि + अस्स] विद्यात करना, भरना करना । विस्सरइ (प्राह २६) । वक्क, विस्सरंत्त (या १४) । ५. विस्सरंतिअ (या १४, पत्र ६६) ।

विस्सरंतिअ वि [विश्रंति] विद्यात-मुक्त, भरना-पान (या १४, सुप १८३) ।

विस्सरंतिअ वि [विश्रंति] विद्यात-मुक्त, भरना-पान (या १४, सुप १८३) ।

विस्सरंतिअ वि [विश्रंति] विद्यात-मुक्त, भरना-पान (या १४, सुप १८३) ।

विस्सरंतिअ वि [विश्रंति] विद्यात-मुक्त, भरना-पान (या १४, सुप १८३) ।

विस्सरंतिअ वि [विश्रंति] विद्यात-मुक्त, भरना-पान (या १४, सुप १८३) ।

विस्सरंतिअ वि [विश्रंति] विद्यात-मुक्त, भरना-पान (या १४, सुप १८३) ।

विस्सामण खी [विश्रामणा] ऊपर देहो (पत्र ३८; हित २०) ।

विस्साय देहो विसाय = वि + स्वाद्य । १. विस्सायणिज्ज (णामा १, १२—पत्र १७४) ।

विस्सार सक्क [वि + स्सु] भुल जाना । संक्ष. 'कोउहलपरा विस्सारिअण रायसायणं अण्णिअण नियमुमि पट्ठिअ नमरि' (महा) ।

विस्सार सक्क [वि + स्मार] विस्मरण करवाना (नाट—मावती ११७) ।

विस्सारण न [विस्सारण] विस्मरण, फैलाना (पत्र ३८) ।

विस्सावसु पुं [विश्रावसु] एक गन्धर्व, देव-विशेष (पट्टम ७२, २६) ।

विस्सास पुं [विश्रास] भरना, प्रतीति, थड़ा (सुब १, १०; बुदा ३५२; प्राप) ।

विस्सासिय वि [विश्रासित] जिसको विरवाच कराया गया हो वह (सुपा १७७) ।

विस्साहल पुं [विश्राहल] मंग विद्या का जलकार चतुर्थ रत्न-मुद्रण (विचार ४७३) ।

विस्सुअ वि [विस्सुत] प्रविष्ट, विस्पात (पाम, औप, प्राह १०७) ।

विस्सुमरिय देहो विस्सुमरिअ (उप १२७) ।

विस्सेणि खी [विश्रेणि, 'जी' निःश्रेणि, विस्सेणी] खीकी (भाव) ।

विस्सेसर पुं [विश्रेसर] काशी-विश्रवनाथ, काशी में स्थित महादेव की एक मूर्ति (सम्मत् ७५) ।

विस्सेअसिअ देहो विस्सेसिअ (हे २, ६८) ।

विह सक्क [उपध] वाहन करना । वक्क, विहमाण (उत्त २७, ३; सुप २७, ३) ।

विह देहो विस्स = विप (भाव); पि २६३) ।

विह पुं [वि] १ मार्ग, रास्ता (श्रौ ६०६) । २ अनेक दिनों में चलनेवाले मार्ग (भाव) २, ३, १, १२; २, ३, १५) । ३ हटती-प्राय मार्ग (भाव) २, ५, २, ७) ।

विह पुं [विहायस्] भाषा, गान (पम २०, २—पत्र ७७३; दत्तन १, २१) ।

देहो विहग = विहायस् ।

निह पृथ्वी [विध] १ भेद, प्रकार (उवा, कण) । २ पुन, आचार, गमन (भग २०, २—पत्र ७७५, प्राचा १, ८, ४, ५, दसनि १, २३) ।

निहई ली [दे] बुलावी, बैंगन का गाछ (दे ७, ६३) ।

निहग पु [निहङ्ग] पत्नी, चिटिया, पसेर (गाम, गड, कण, सुर ३, २४५, ग्राम् १७२) । 'गाह पु [नाथ] गड पत्नी (गड ८२३, ८२४, १०२२) ।

निहंग पुं [विभङ्ग] विभाग, टुकड़ा, संरा (पह १, १—पत्र ५४, गड ४०४) ।
देखो विभग (गड भवि) ।

विहगम पु [विहगम] पत्नी चिटिया (गड, मोह १२, शु ७७ मण) ।

विहङ्ग सक [वि + भङ्ग] मंगल, लोडना, विनाश करना । सक, विहजिनि (भग) (भवि) ।

निहजिअ वि [विभक्त] बाटा हुआ, 'भागम-
भुक्तिपमाणविहजिअ' (भवि) ।

विहङ्ग सक [वि + राण्डय] विच्छेद करना, विनाश करना । विहङ्ग (भवि) ।

निहङ्ग न [विराण्डन] १ विच्छेद, विनाश (सम्मत् १०) । २ वि विच्छेद-कर्ता, विनाशक (सण) ।

विहङ्गण वि [विभण्डन] भाँटनेवाला, गालि-
सूचक, 'भरणणि रे जह विहङ्गण वणण' (गा ६१२) ।

निहडिअ वि [विराण्डित] विनाशित (पिग, सण) ।

निहग पु [विहग] पत्नी, चिटिया (पत्रम १४, ८०, स ६६७, उत २०, ६०) ।
'विह पु [विप] गड पत्नी (सम्मत् २१३) ।

विहग पुन [विहायस] भाकाश गमन ।
'गह ली [गति] १ भाकाश में गमन (वना ३, ६) । २ कर्म विशेष, भाकाश में गति पर सवने में बारण भूत कर्म (सम ६७ बम् १, २४४३) ।

विहट्ट दोषो विहट्ट । विहट्ट (भवि) ।

विहट्टिअ वि [विपट्टिअ] सणित, द्विषामुव (से २, १२) ।

निहड भ्रु [वि + घट्] नियुक्त होना, भ्रमण होना, हट जाना । विहड, विहडेड (महा, प्राङ् ७१) । वङ्, निहडत (से २, १४) ।

निहड सक [वि + घटय] लोडना, सणित करना । सक, विहडिअण (सण) ।

विहड देखो निहडल = विहडल (से ४, ५४) ।

निहडण न [विपटन] १ भ्रमण होना, वियोग (मुपा ११६, २४३) । २ भ्रमण करना । ३ लोडना 'तह लोणा जह मडलि-
मलोणउडविहडणो वि असमया' (वजा ८८) ।

निहडण पु [दे] भ्रमण (पड) ।

विहडणा ली [विघटना] वियोजन, भ्रमण करना, 'सपणणविहडणावासेण विहिया जणो नडिमा' (धर्मपि ४२) ।

विहडण्ड वि [दे] १ व्याकुल, व्यग्र (हे ३, १७४) । २ त्रित, शोष (भवि) ।

विहडा ली [विघटा] विभेद, भ्रमेव्य, काट-
फुट, 'जह मह कुडु बविहडा न पडह कस्यापि दवणसण' (मुपा ४२१) ।

विहडाण सक [वि + घटय] वियुक्त करना, भ्रमण करना । विहडावड (महा) ।

विहडाणन न [विपटन] वियोजन (भवि) ।

विहडाणिय वि [विपटित] वियोजित (सार्थ ७१) ।

विहडिय वि [विपटित] १ वियुक्त, विच्छिन्न (महा २६, ५) । २ बुला हुआ (महा ३०, ३०) ।

विहण देखो विहङ्ग । विहणति (पि ४६०) ।

सक, विहणु (सम १, ५, १, २१) ।

विहणु वि [दे] सपूर्ण, सक्त (सण) ।

विहण्य न [दे] पिबन, पीजना, भुजना (दे ७, ६३) ।

विहण्ट देखो विमत्त (से ७, १५, वेदय २७४, सुर १, ४७, मुपा ३६६) ।

निहति देखो विमत्ति (पत्रम २४, २, उय ५ १४०) ।

विहण्टु देखो विहण ।

विहण्ट वि [विहण्ट] १ व्याकुल, व्यग्र (पि १२, ४१, कुप ४०६, छि ३८६, ८३६, सम्मत् १६१) । २ कुशल, दणः 'पहणणवि-

हण्टहण' (कुप १०३, २०६) । ३ पुं-
विशिष्ट हाथ, किसी वस्तु से युक्त हाथ
'पत्रम उत्तरिअण ववलो जा जाड पाहुडवि-
हण्टो' (छि ६६१), 'सद्वभाणविहण्टो'
(उव) । ४ क्लेश (सम्मत् १६१) ।

निहण्टि पृथ्वी [नितरित] परिमाण विशेष,
बारह अणुल का परिमाण (हे १, २१४,
कुपा, ग्रणु १५७) ।

विहण्टि ली [निष्ठिति] १ विशेष धर्म । २
वि. धर्म रहित (सजि ६) ।

विहण्ट } सक [वि + हण्ट] १ मारना,
विहण्ट } साधन करना । २ मारा करना =

३ प्रतिक्रमण करना । विहण्ट (उत २,
२२) । कर्म, विहण्टिजा (उत २, १) । वङ्,
विहण्टमाण, विहण्टमाण (पि ५६२, उत
२७, ३) । कवड, विहण्टमाण (सम १,
७, ३०) ।

विहण्ट वि [विधर्मन] भिन्न धर्मवाला,
विभिन्न, विलक्षण, 'लोसूणापसहाव वडेणज
वण्टु' विहण्टम्मि' (वित २४१) ।

विहण्ट सक [विधर्मय] धर्म-रहित करना ।
वङ् विहण्टमाण (विपा १, १—पत्र ११) ।

विहण्ट न [वेधर्म्य] १ विषमता, विहड-
धर्मता । २ तर्कशास्त्र प्रसिद्ध उदाहरण भेद,
वेधर्म्य दृष्टान्त (मम्म १५३) ।

विहण्टाणा ली [विधर्मणा, विहण्टन] कद-
धना, पीडा (पह १, १—पत्र ५३ विते
२३५०) ।

विहण्ट वि [दे] पिजित, धुना हुआ (दे ७,
६४) ।

विहण्ट वि [विहण्ट] १ मारा हुआ, मारहा
(पत्रम २७, २८) । २ विनाशित (महा) ।

विहण्ट देखो विहण्ट = विहण्ट (गड, सण) ।

विहण्ट देखो विहण्ट = विमव (दे ३, २६-
नाट—मातवि ३३) ।

विहण्ट सक [वि + हण्ट] १ मारा करना,
खेतना । २ रचना, स्थित करना । ३ सक,
गमन करना, जाना । विहरर (ह ४, २५६,
उवा कण उग), विहररि (भग), विहररज
(पत्र १०४) । भूरा, विहरिण, विहरिया
(उत २३, ६० पि ३३०, ५१७) । भवि,
विहरिस्मद (पि ५२२) । वङ्, विहरर,

विहरमाण (उत्तर २३ ७ सुख २३ ७
श्लोक १२४ महा भग) । सक विहरित्ता,
विहरित्ता (भग नाट—वक्र १०२) ।
विहरित्तण, विहरित्त (भग ठा २, १—
पथ ५६ उव) । क विहरियव्व (उप
१३१ टी) ।

विहर सक [प्रति + ह्रस्व] प्रतीणा करना
बाट जोहना । विहरद (पद) ।

विहर देखो निहार (उप ८३३ टी) ।

विहारण न [विहारण] विहार (कुप्र २२) ।

विहरिअ न [दे] सुख सभोग (दे ७ ७०) ।

विहरिअ वि [विह्रन] जितन विहार किया
हो वह (श्लोक २१० उव कुप्र १६६) ।

निहल सक [वि + ह्र दल] व्याकुल होना ।
क विहलन (न ४१५) ।

निहल देखो विहल = वि + पट् । क
विहलन (दे १५, २६) ।

विहल वि [विहल] व्याकुल व्यथ (दे ३,
५८ प्राक् २५ पलम ८, २०० से ५
५८ ना २८५ प्राप् ५ हास्य १४० वज्जा
२५ पद् गठ) ।

विहल देखो विहल = विनल (सति ८) ।

विहल वि [विफल] ३ निष्फल, निरर्थक
(गठ सुपा १६६) । २ प्रत्यय फूटा मिच्छा
मोह विहल प्रणिभ प्रसवमममूर्ध (पाप्र) ।

विहल सक [विफल] निष्फल बनावा,
निरर्थक करना । विहलदि (उव) ।

निहलन ३ वि [विहलन] व्याकुल
निहलप ३ शरीरवाला (पाप्र १६६ स
२५५ सुख १८ ३५ नुर १ १७३ सुपा
५७७) निमणाविहलपत्ता पडिया (सुर
१५ २०५) ।

विहलन वि [विहलन] व्याकुल किया
हुमा (हुमा ३ ५३ प्राप् महा) ।

विहलदि देखो विहलिय (दे ७ ५६) ।

विहलदि वि [विफलित] विफल किया हुमा
(सण) ।

विहल पर [वि + क, वि + ह्र] १
भावना करना । २ सक, किन्तार करना ।
विहलद (पाप्ता १५३) ।

विहल पु [विहल] राजा श्रैणिक का एक
पुत्र (पठि) ।

विहव पु [विभव] समृद्धि संपत्ति धन्य
(पाप्र गठ कुमा दे ५, ६० प्राप् ७२
७६) ।

विहवण न [विधवण] विनाश (राज) ।

विहवा छो [विधवा] जिसका पति मर गया
हो वह छो राह (श्लोक उव गा ५३६
स्वन ५६ नुर १ ५३) ।

विहवि वि [विमवि] संपत्ति शाली धनाढ्य
(हुमा सुपा ४२२ गठ) ।

निहव्व देखो विहव = विमव (नाट—मुच
६६) ।

विहस सक [वि + ह्रस्व] १ विवसना
खिलना, प्रकुल होना । २ हास्य करना मध्यम
प्रकार का हास्य करना । विहसद विहसए
विहसेद, विहसति (प्राक् २६, सण, कुमा
दे ५ ३१५) । विहसेज विहसेज्जा (कुमा
५ ८२) । मवि विहसिदि विहसेदि
(कुमा ५ ८३) । क विहसत, विहसेत
(दे ३ ३६ कुमा ३ ८८ ५ ८५) । झक्
विहसिऊण, विहसिअ, विहसेऊण (गठ—
८५५, ६१३, नाट—शकु ६८ कुमा ५,
८२) । झक् विहसिअ, निहसेउ (कुमा
५ ८२) ।

विहसाय सक [वि + हासय] १ हँसना ।
२ विकसित करना । सक विहसायिऊण,
विहसायेऊण (प्राक् ६१) ।

विहसायिअ वि [विहासित] १ हँसना
हुमा । २ विकसित किया हुमा (प्राक् ६१) ।

विहसिअ वि [विहसित] १ विकसित,
खिला, हुमा, प्रकुल विहसियदिहो विह
सियमुहोए (महा सम्मत ७६) । २ न
मध्यम प्रकार का हास्य (गठ ६६६ ७५१) ।

विहसिर, वि [विहसित] खिलनेवाला
विकसित होनेवाला ।

विहसिअ वि [दे] विकसित खिलना
हुमा (दे ७, ६१) ।

विहस्सद देखो विहस्सदि (पाप्र श्लोक) ।

विहा मर [वि + भा] सोमना चमकना ।
विहादि (टी) (पि ४८७) ।

विहा सक [वि + हा] परित्याग करना ।
सक विहाय (सुप्र १, १४, १) ।

विहा [विहा] निरर्थक व्यर्थ सुपा (पचा
१२ ५) ।

विहा छो [विधा] प्रकार भद (कण महा
अणु) ।

विहा देखो विहग—विहायस् (धर्म
६१६) ।

विहाइ वि [विघायिस्] कर्ता करनेवाला
(बेद्य ४०३ उप ७६८ टी धर्मवि ११५) ।

विहाउ वि [विघाट] १ कर्ता निर्माता
(सिंसे १५७ पचा ६ १६) । २ पु
पणपि देवा के उत्तर विहा का हट्ट (ठा
२, १—पथ ८५) ।

विहाउ सक [वि + घटय] १ विघट्ट
करना भ्रमण करना । २ विनाश करना ।
३ खोना उपाडना । विहाउद विहाउदि
(उप १०४ महा भग), वम्मसमुग विहा
उदि (श्लोक श्लोक) । सक समुगय त
विहाउद (धर्मवि १५) । क विहाउदय
(महा) ।

विहाउ वि [विघाट] विकट (राल) ।

विहाउ वि [विहाउ] प्रकाश कर्ता (सम्म २) ।

विहाउण न [दे] प्रत्यय (दे ७, ७१) ।

विहाउवि वि [विघटित] १ विघटित,
भ्रमण किया हुमा (धर्मवि ७३२) । २ विना-
शित (उप ५६७ टी) ।

विहाउवि वि [विघटित] उद्घाटित, खोना
हुमा (उप ५५४ वहु) ।

विहाउरि वि [विघटित] भ्रमण करनेवाला
विघटित (सण) ।

विहाण पु [दे] १ विवि विपरीत देव भाग्य
(दे ७ ६०) भाग्यमय हवह विहाणवाहो
नरेमाणो (स १२०० मवि) । २ विहाण,
प्रमाद सुवह (दे ७, ६० से ३ ३१ मवि
दे ५ ३३० ३६२ सिरि ५२५) । ३ पूजन
अथवा अथो देव कूरदेवता विहाणनिमित्त
पयारिऊण परित्याग एवाए वावाइमो हविस्सद
(स २६६) ।

विहाण न [विघाण] १ शास्त्र के प्रति (उप
७६८ पथ ३३) । २ निर्माण, रचना (व्या

७, ५; रंभा, महा) । ३ प्रकार, भेद (से ३, ३१; पण्ह १, १, भाग) । ४ व्याकरणोक्त विधि-विशेष (पण्ह २, २—पत्र ११४) । ५ अस्वभाव-विशेष (सूत्र २, १, ३२) । ६ विशेष, 'विद्यालमगण एतुक्क' (भाग १, १ तो) । ७ रीति (महा) । ८-क्रम, परिपाटी (बृह १) ।

विद्याण न [विद्याण] परित्याग (राज) ।
विद्यागिय (अप) वि [विधायिन्] कर्ता, करनेवाला (सण) ।
विद्याय अक [वि + भा] १ सोमना । २ प्रकाशना, चमकना, दीपना । विद्यार्थिनि (स १२) । बह्क, विद्यार्थत (सिरी २६८) ।
विद्याय पुं [विधात] १ भवसान, भव (से १, १६) । २ विशेषी, दुरमन, परिपक्वो (स ८, ५४; स ५१२) ।

विद्याय देवो विभाग (गडक, से १-३२) ।
विद्याय वि [विभात] १ प्रकाशित, 'जिसा विद्याय त्ति उड्डिओ मण्हो' (दुप्र २६८) । २ न. प्रमात, प्रात काल (से १२, १६) ।
विद्याय देवो विद्वग्ग = विद्यायस् (भा २२) ।
विद्याय देवो विद्या = वि + हा ।
विद्याय (अप) देवो विद्विअ (अवि) ।
विद्यार सक [वि + धारय] १ अपेक्षा करना । २ विशेष रूप से धारण करना । बह्क, विद्यार्तर (पत्तम ८, १५६) ।

विद्यार दुं [विद्यार] १ विचारण, समन, गति (पव १०४, उवा) । २ श्रीदा-स्थान (सम १००) । ३ देव-गृह, देव-मन्दिर (उत्त १०, ७) कुमा) । ४ अस्वस्थान, अस्थिति, 'मसा-सवे वट्टु रुम विद्यार' (उत्त १४, ७) । ५ श्रीदा (ठा ८, ८५) । ६ मुनि-वर्चन, मुनि-चर्चा, साध्याचार (पव १, खादि, उव) । 'भूमि खी [भूमि] १ स्वाध्याय-स्थान (विद्यार २, १, ८, कस, कण्) । २ विचारण-भूमि (पव ४) । ३ श्रीदा-स्थान । ४ बीज की जगह (अप, राज) ।

विद्यारि वि [विद्यारिन्] विद्यार करनेवाला (भाषा, उव, या १४) ।

विद्यालिय देवो विद्यालिय, 'दुकार विद्यालिय पागइ' (उव ६४८ वे) ।

विद्याय देवो विभाग = वि + भावय । विद्या-वद्, विद्यावेमि (अवि, अस्मि ५७) । कवक, विद्यालियमाण (स ४१) । क, विद्यावियञ्ज (उप ३४२) ।

विद्याण न [विधापन] निर्माण, करवाना (वेदय ६६) ।

विद्याण न [विभावन्] आलोचना, 'एव विचितियव्व उण्णोसविद्याण परम' (पंचा ६, ४६) ।

विद्यापरी खी [विभापरी] रात्रि, -निरा (पात्र, उव ७६८ टी, सुपा ३६३) ।

विद्यायसु पुं [विभायसु] अग्नि, भाग (पात्र) । देवो विभायसु ।

विद्याविअ वि [विभाविअ] दृष्ट, निरीक्षित, 'विद्वि विद्याविअ' (पात्र, गा ५०७) ।

विद्याविअ वि [विधाविअ] उल्लसित, प्रस्तुतित (स ६७) ।

विद्यास पुं [विद्यान] हँसो, उपहास (अवि) ।
विद्यास } देवो विहसाव । सः, विद्या-
विद्यामान } सिरुण, विद्यासेरुण, विद्या-
सासिरुण, विद्यासावेरुण (अह ६१) ।
विद्यासाविअ } देवो विद्यासाविअ (अह ६१)
विद्यासिअ } ६१) ।

विधि पुं [विधि] १ ब्रह्मा, चतुरानन, विषादा (पात्र, मण्डु ३७, धर्मस ६२६, कुमा) । २ पुंखी, प्रवार, भेद (उवा), 'सव्याहि नयवि-हीहि' (पव १४६) । ३ आशोक विषान, अनुमान, व्यवस्था (पंचा ६, ४८, औप) । ४ क्रम, सिलसिला, परिपाटी (बृह १) । ५ रीति । ६ विभाग, सादेश, भाषा । ७ प्राता-सूचक वाक्य । ८ व्याकरण ना सूत्र-विशेष । ९ धर्म । १० हाथी की खांते का अक्ष (हे १, ३५) । ११ देव, भाग्य, 'अणुपूतो अहव विदो विवा तं जन करेइ' (सुर ६, ८१, पात्र, कुमा, अणु ५८) । १२ नीति, न्याय । १३ स्थिति, मर्यादा (बृह १) । १४ इन्द्रि, करण (पना ११) । 'नुवि [अ] विधि क जानकार (छाया १, १—पत्र ११; सुर ८, ११८) । 'वयण न [वचन] विधि-नास, विधि-नाद, विष्णुपदेश (वेदय ७४४) । 'वाय पुं [वाइ] बही पुरीक धर्म (भास ७३, वेदय ७४४) ।

विद्विअ वि [विहित] १ कृत, अनुष्ठित, निमित्त (पात्र, महा) । २ चेटित (औप) । ३ शास्त्र में जिसका विधान हो, वह, शास्त्रोक्त (पचा १४, ३७) ।

विहिस सक [वि + हिंस] विविध उपायो से मारना, बच करना । विहिसइ (भाषा १, १, ४) । क, विहिस (पण्ह १, १—पत्र ४०) ।

विहिस वि [विहिस] हिंसा करनेवाला, 'अ-विहिसे सुवए दहे' (भाषा १, ६, ४, ३) ।

विहिसग वि [विहिसक] बच करनेवाला (भाषा, गण्ड ३, १०) ।

विहिसण न [विहिसन] विविध प्रकार से मारना (पण्ह १, १—पत्र १८) ।

विहिसा खी [विहिसा] १ विशेष हिंसा (पण्ह १, १—पत्र ५) । २ विविध हिंसा (सूत्र १, २, १, १४) ।

विहिरण वि [विभिर] १ जुटा, अलग विद्विअ] (से, ७, ५१, १३, ८६; अवि) । २ व्यभिचर, भाग कर टुकड़ा-टुकड़ा बना हुआ (से ३, ६०) ।

विहिस म [वे] गगन, अरण्य (उव ८४२ टी) ।

विहिसिदिय वि [वे] विकसित, प्रकुल (पद) ।

विहियव्व देवो विहे = वि + था ।

विहिविअ सक [वि + रचय] बराना, निर्माण करना । विहिविअइ (अह ७४) ।

विहीण वि [विहीन] १ वनित, रहित (अणु १७२) । २ त्यक्त (कुमा) ।

विहीर सक [प्रति + ईश्] प्रतीक्षा करना, बाट जोहना । विहीरइ (हे ४, १६३), विहीरइ (स ४१८) ।

विहीर वि [प्रतीक्ष] प्रतीक्षा करनेवाला (कुमा ७, ३८) ।

विहिरिअ वि [प्रतीक्षिअ] जिसकी प्रतीक्षा की गई हो वह (पात्र) ।

विहीसण देवो विमोसण (पे ४, ५५) ।

विहीसिया देवो विमोसिया (सुता ५४१) ।
विदु पुं [विदु] १ चद्र, चांद (पात्र) । २ विष्णु, श्रीहृण्ण । ३ ब्रह्मा । ४ शंकर

महादेव । ५ वायु, पवन । ६ कपूर (हे ३, १६) ।

विहुअ वि [विधुत] कम्पित (गा ६६०; गउउ) । २ उन्मूलित, उखाड़ा हुआ (से १, ५५) । ३ शक्त (गउउ) ।

विहुंडुअ पुं [दे] राहु, ग्रह-विशेष (दे ७, ६५) ।

विहुण सक [वि+धू] १ कँपाया, हिलाया । २ दूर करना, हटाना । ३ व्याग करना । ४ प्रवृत्त करना प्रलय करना । विहुण्ड, विहुणति (भवि पि ५०३), विहुणाहि (उत १०, ३) । कर्म. विहुण्ड (पि ५३६) । सक विहुणत, विहुणमाण (सुपा २७२, पउम २४, १५) । कवक, विहुण्यत (से ६, १५, ७, २१) । सक, विहुणिय (सुम १, २, १५, यति २१, स ३०८) ।

विहुणण न [विधूनन] १ दूरीकरण (पउम १०१, १६) । २ व्यजन, पक्षा (राज) ।

विहुणिय वि [विधून] देखो विहुअ (सुपा २५३, यति २१) ।

विहुर वि [विधुर] १ विकल, व्याकुल, विह्वल (एवण २३, महा, कुमा, दे १, १५, सुपा ६२, गउउ, सण) । २ क्षीण (गउउ १०३६) । ३ विसहस, विलसता, विषम, 'भवि सिद्धिमवि जोगन्मि बाहिरे होइ विहुरया' (मोष ५१) । ४ विच्छिन्न, विभुल (गउउ ८६) । ५ न व्याकुल-भाव, विह्वलता, 'विहोहण विहुरमि' (स ७३६, वण्णा ३२, ६५, प्रासू ५८, भवि, सण) ।

विहुराइअ वि [विधुरावित] व्याकुल बना हुआ (गउउ १११ टो) ।

विहुरेज्जमाण वि [विधुरायमाण] व्याकुल बनता (सुपा ५१६) ।

विहुरिय वि [विधुरित] १ व्याकुल बना हुआ (सुर २, २१६, ३१५; महा) । २ विपुल बना हुआ, विपुला हुआ, विरहित (गउउ) ।

विहुरीय वि [विधुरीयत] व्याकुल किया हुआ (कुमा) ।

विहुल देखो विहुर (गाम) ।

विहुल वि [विफुल] १ लिता हुआ । २ उल्साही, 'नियकज्जविहुल्ली' (भवि) ।

विहुण्यत देखो विहुण ।

विहुअ वि [विधुत] १ कम्पित, (मात १७८) । २ वज्रित, रहित, 'नयविहिन्-हूयवुद्धी' (पउम ५५, ४) । देखो विधूय, विहुअ ।

विहुइ देखो विभुइ (गण्ड १४, भवि) ।

विहुण देखो विहुण । संक, विहुणिया (भाषा १, ७, ८, २४, सुम १, १, २, १२, पि ५०३) ।

विहुण देखो विहीण (कुमा, उव) ।

विहुणय न [विधूनरु] व्यजन, पक्षा (सुप १, ४, २, १०) ।

विहुसण देखो विभूसण (दे ६, १२७, सुपा १६१; कुप २६) ।

विहुसा जी [विभूया] १ शोभा (सुपा ६२१, दे ६, ८३) । २ प्रत्यकार बादि दे शरीर की सजावट (पभा १०, २१) ।

विहूसिअ वि [विभूपित] विभूण-युक्त, प्रलङ्घित (भवि) ।

विहेहक [वि+पा] करना, बनाना । विहेह, विहेति, विहेसि, विहेमि (धर्मस १०११, स ६३४, ७१२, गउउ, ३३२; कुमा ७, ६७) । सक, विहेऊण (पि ४८५) । हेह, विहेह (हित १) । क, विहियवउ, विहेअ, विहेअव्य (सुपा १५८, हि २२, कर्मो ४, महा, सुपा १६३, आ १२, हि २, पउम ६६, १८, सुपा १५६) ।

विहेह सक [वि+हेटय] १ मारना, हिसा करना । २ पीडा करना । सक, विहेहयति (उत १२, ३६) । कवक, 'विहम्मणविहिट्टे' (गउउ १२, ३६) । कवक, 'विहम्मणविहिट्टे' (पण्ण १, ३—पण ५३) ।

विहेहय वि [विहेठरु] प्रतादर-कर्ता (एव १०, १०) ।

विहेडि वि [विहेटिम्] १ हिसा करनेवाला । २ पीडा करनेवाला, 'अये मते अहिण्वजि पाणपूयविहोहणो' (सुम १, ८, ४) ।

विहेडिय वि [विहेटित] पीडित (मत १३३) ।

विहेहणा जी [विहेठना] कदयना, पीडा (उव) ।

विहोड सक [टाडय] ताडन करना । विहोड (हि ४, २७) ।

विहोडिअ वि [ताडित] जिसका ताडन किया गया हो वह (कुमा) ।

विहोय (मप) देखो विहय (भवि) ।

वी देखो वि=भवि, वि, 'एक' चिय जाव न बी, दुक्ख बोसेइ जणमपियविरह' (पउम १७, १२) ।

वीअ सक [वीजय] हवा डालना, पंखा करना । वीप्रमंति भवि ८६), वीमंति (सुर १, ६६) । सक, वीअंत (गा ८६, सुर ७, ८८) । कवक, विहज्जत, वीहज्जमाण (से ६, ३७; छाया १, १—पण ३३) ।

वीअ वि [दे] १ विधुर, व्याकुल । २ तत्काल, तात्कालिक, उसी समय का (दे ६, ६३) ।

वीअ देखो वीअ=द्वितीय (कुमा, गा ८६, २०६, ४०६, गउउ) ।

वीअ वि [वीत] विगत, नष्ट (भग, धम्म ६६) । 'कम्ह न [कदम ?] १ गोत्र-विशेष । २ पुंछी, उस गोत्र में उत्पन्न (ठा ७—पण ३६०) । 'धूम वि [धूम] देव-रहित (भग ७, १—पण २६१) । 'उभय, 'भय न [भय] १ नगर-विशेष, सिन्धुलीवीर देश की प्राचीन राजधानी (धर्मवि १६, २१, इक, विचार ४८, महा) । २ वि. भय रहित (धर्मवि २१) । 'मोह वि [मोह] मोह-रहित (धम्म ६६) । 'राग, 'राय वि [राग] राग रहित, क्षीण राग (भग, सं ४१) । 'सोग पुं [शोक] एक महाप्रह (सुजज २०, डा २, ३—पण ७६) । 'मोगा जी [शोरा] सत्तिलावती नामक विजय-प्राप्त की राजधानी, नगरी विशेष (छाया १, ८—पण १२१, इक, पउम २०, १४२) ।

वीअजमाण देखो वीअजमाण (दे ६, ६३ टो) । वीअय न [वीजय] १ हवा करना, पंखा से हवा करना (कण) । २ क्षीण, पचा, व्यजन (सुर १, ६६, कुप ३३३, महा) । जी. 'णी (वीर) भूष १, ६, ८, छाया १, १—पण ३२) ।

योआविय वि [वीजित] जिसको पक्षा से हटा कर दी गई हो वह (स ५४६)।

वीड पुकी [वीचि] १ तरंग, कल्लोल (पाप, मोप)। २ माराय, गगन (मग २०, २—७७५)। ३ संप्रयोग, सबध (मग १०, २—पन ४६५)। ४ धृग्य भाव, जुवाई (मग १४, ६ टी—पन ६४४)। ५ दूठन न [दूठन्य] प्रदेश से गन्त द्रव्य, श्रवणवह्नीन वस्तु (मग १४, ६ टी—पन ६४४)।

वीड छी [विटति] १ विहप कृति, दुष्ट क्रिया। २ वि दुष्ट क्रियावाता (मग १०, २—पन ४६५)। ३ देखो निगड (मग ४, ५ टी)।

वीडगाल वि [वीताहार] राग रहित (मग ७, १—पन २६२, पि १०२)।

वीडकत वि [व्यतिनात] १ व्यतीत, गुजरा हुआ, बामोए राहिएहि वीडकतोहि (सम ८६)। २ जिसन छलपन किया हो वह (मग १०, ३ टी—पन ४६६)।

वीडकम सक [व्यति + म्] छलपन करना। वरु वीडकममाण (कच)।

वीडकमाण देखो वीज=वीज्यः।

वीडमिसस वि [व्यतिमिश्र] मिश्रित, मिला हुआ (भावा)।

वीडय वि [वीजित] जिसको हटा की गई हो वह (मोप महा)।

वीडय सक [व्यति + म्] १ पति-भ्रमण करना। २ गमन करना, जाना। ३ छलपन करना। वीडयमड, वीडयडजा, वीडयडजा (सुज २० टी, मग १०, ३—पन ४६८)। वरु वीडयमाण (छाया १, १—पन ३१)। सह-वीडयडजा, वीडयडजा (मग २, ८ १०, ३—पन ४६६)।

वीई छी देखो वीड=वीचि (पाप, मग १०, २, २० २)।

वीई ध [विविच्य] धृग्य होकर, जुदा होकर (मग १०, २—पन ४६५)।

वीई ध [विविच्य] चित्तन करके (मग १०, २—पन ४६५)।

वीईय देखो वीडय। वीईयड (मग सुज २० टी, मग ७, १०—पन ३२४)। वरु वीईयमाण (पय १६, पि ७०, १२१)।

वीचि देखो वीड=वीचि (वप्य, मग १४, ६—पन ६४४)।

वीचि छी [दे] लघु रय्या, छोटा मुहन्ना (दे ७, ७)।

वीज देखो वीज=वीज्यः। वीजड वीजेमि (हे ४, ५, पद मै ६६)।

वीजण देखो वीजण (कुमा)।

वीजिय देखो व ड्य (स ३०८)।

वीडग } देखो वीडग (स ६७)।

वीडय }

वीडय पु [वीडक] लजा, शरम (गड ७३१)।

वीडिज वि [वीडिज] लजित, शरमिन्ना (छाया १, ८—पन १४३)।

वीडिजा छी [वीडिज] सजाया हुआ पान, बीडा (गड)। देखो वीडी।

*वीड देखो वीड (गड, उप २२६, भवि)।

वीण सक [वि + चारय] विचार करना।

वीणड, वीणड (छाया १५३, प्राक ७१)।

*वीण देखो वीण (सुर १३, १८१)।

वीणण न [दे] १ प्रकट करना (उप ७ ११८)। २ विदित करना, तापन (उप ७९५)।

वीणा छी [वीणा] वाद्य विशेष (श्रीप कुमा वा ५६१, ल्वन ६७)। *परिणी छी [वरी] वीणा नियुक्त दासी, 'ठा लहु वीणायरिणि सहैहि, सहिया वीणायरिणी' (स ३०६)। *वायग वि [वायक] वीणा बजावेना (महा)।

वीत देखो वीज=वीत (ठा २, १—पन ५२ परण १७—पन ४६४, सुज २०—पन २६५)।

वीतिकत } देखो वीडकन (मग १०, ३—

वीतिकत } पन ४६८, छाया, १, १—पन ३२, २६)।

वीनियय } देखा वीडय। वीनिययन (मग)।

वीतवय } वीतवयड (छाया १, १२—पन १७५)। वरु वीनियमाण (वप्य)।

संघ वीतिनडजा (मोप)।

वीमंस सक [वि + मृदा, मीमांस] विचार करना, पर्यालोचन करना। सह-वीमसिय (सम्मत ५६)।

वीमसय वि [विमर्शक, मीमांसक] विचार-कता (उव)।

वीमसा छी [विमर्श, मीमांसा] विचार, पर्यालोचन, निष्पत्ती की चाह (सुप १, १, २, १७ विते २८६, १६६, ५६५, उप ५२०)।

वीमसिय वि [विमर्शित, मीमांसित] विचारित, पर्यालोचित (सम्मत ५४)।

वीर पु [वीर] १ भगवान् महावीर (पणह १, १—पन २३, १, २, सुज २०, जो १)। २ छन्द विशेष (पिंग)। ३ साहित्य प्रसिद्ध एक रस (मणु १३६)। ४ वि पराक्रमी, शूर (भावा, सुम १, ८, २३, कुमा)। ५ पुन एक देव विमान (मम १२, इक)। ६ न. वैताञ्च वर्षत की उत्तर येलो में स्थित एक विशावर नगर (इक)। *कत पुन [वा-न] एक देव विमान (सम १२) *कण्ड पु [कृष्ण] राजा येलिक का एक पुत्र (निर १, १, पि ५२)। *कण्डा छी [कृष्ण] राजा येलिक की एक पत्नी (मम २५)। *कूड पुन [कूट] एक देव-विमान (सम १२)। *गत पुन [गत] एक देव विमान (सम १२)। *जस पु [यशस] भगवान् महावीर के पान बीता सेनेवाला एक राजा (ठा ८—पन ४३०)। *जस्य पुन [जस्य] एक देव-विमान (सम १२)। *धनल पु [धनल] गुजरात का एक प्रसिद्ध राजा (टी २, हम्बोर १३)। *निद्रायन [नियान] स्थान विशेष (महा)। *पमन न [प्रम] एक देव विमान (मम १२)। *भद पु [भद्र] भगवान् पारवनाय का एक गण-पर (मम १३, वप्य)। *मदी छी [मदी] एक चोर मलिनो (महा)। *लेस पुन [लेस्य] एक देव विमान (सम १२)। *वण्य पुन [वर्ण] एक देव विमान (सम १२)। *वण्य न [वर्ण] प्रसिद्ध से गुड का स्वामी, 'हस योडा से धी सट्' एसी गुड की मान (कुमा ६, ४६, १२)। *वरणा छी

['वरणी] प्रतिमुत्त से प्रथम राज-प्रहार की याचना (सिंह १०२४)। 'वल्लय न' ['वल्लय] सुभ्र का एक ग्रामपण, वीरव-सूचक कथा (कल्प संदु २६)। 'विराळी' वली विशेष (पण १—पन ३३)। 'सिंग पुन' ['सिंह] एक देव-विमान (सम १२)। सिंह पुन ['सिंह] एक देव-विमान (सम १२)। 'सेण पु' ['सेन] एक प्रसिद्ध वीर यादव का नाम (छाया १, ५—पन १०० ग्रन्थ, उप-६४८ टी)। 'सेणिय पुन' ['सेनिक, प्रेणिक] एक देव विमान (सम १२)। 'सुन पुन' ['सुन] देवविमान विशेष (सम १२)। 'सग न' ['सग] प्राप्त विशेष, नीचे पैर रखकर विहासन पर बैठने के जैना मन्त्रालय (छाया १, १—पन ७२ मग)। 'सगिय वि' ['सगिक] वीरसम से वैष्णवाला (ठा ५, १—पन २६६, नस, मीप)।

वीरंगय पु ['वीरङ्गय'] १ भगवान् महावीर के पास वीसा लेनेवाला एक राजा (ठा ८—पन ४३०)। २ एक राजकुमार (उप १०३१ टी)।

वीरण जीन ['वीरण] दृष्ट विशेष उद्योग, लस (मणु २१२, पाप)।

वीरल पु ['वीरल] रयेंनपत्नी (पण १, १—पन ८, १३)।

वीरिअ पु ['वीर्य'] १ भगवान् पार्श्वनाथ का एक मुनि सभ। २ भगवान् पार्श्वनाथ का एक गणपति (ठा ८—पन ४२६)। ३ पुन, शक्ति सामर्थ्य (उवा, ठा ३, १ टी—पन १०६)। ४ अन्तरंग शक्ति, आत्म-बल (प्राप्ति ४६ ग्रन्थ ६५)। ५ पराक्रम (कर्म १, ५२)। ६ एक देव विमान (वेद १३१)। ७ शरीर स्थित एक धातु, मुक्त। ८ तेज, दीप्ति (हे २, १०७, प्राप्ति)।

वीरुणी की ['वीरुणी] पर्व-वनस्पति विशेष, 'वीरुणी' (१ गी) तह द्वाकडे य माते य' (पण १—पन ३३)।

वीरुधरपडसिग पुन ['वीरोत्तरावर्तसक] एक देव विमान (सम १२)।

वीरुहा की ['वीरुहा] विस्तृत सत्ता (कुप्र १५, १३६)।

वीरण वि ['दे] पिच्छन, लिग्घ, मधुण, चिकनी (दे ७, ७३)।

वीलय देखो वीलय (दे ६, ६३)।

वीली की ['दे'] १ तरंग कल्लोल (दे ७, ७३)। २ वीथी, पक्ति थेली (पद)।

वीवाह देखो विवाह = विवाह, 'एसा एका कृया वल्लहिया ता इमीए बोवाह' (सुर ७, १२१, महा)।

वीवाहण न ['विवाहन] विवाह करण, विवाह किया (उप ६८६ टी सिंह १५१)।

वीवाहिय वि ['विवाहिक] विवाह सम्बन्धी धर्मवि १४७)।

वीवाहिय वि ['विवाहित] जिसकी शादी की गई हो वह (महा)।

वीथी की ['दे'] वीथि, तरंग (पद)।

वीस देखो विस = विस (सूप्र २, २, ६६, सति २०)।

वीस देखो विस = विरव (सूप्र १, ६ २२)।

'उठी की ['पुसे] नगरी विशेष (उप ५६२)।

'सअ वि ['सज] जगत्ता (पद)।

'सेण पु' ['सेन] १ चत्तर्वर्ती राजा 'कोहेसु छाए जह बीसलेखे' (सूप्र १, ६, २२)। २ पुं. अक्षोराय का १८ वाँ मुहूर्त (सुज १०, १३)।

वीस } की ['विंशति] १ संख्या विशेष, वासड } वीस, २०। २ जिसकी संख्या बीस हो वे (कल्प कुमा, प्राक् ३१, सति २१)। 'म वि ['म] १ बीसवाँ, २० वाँ (सुपा ५२२, ५५७, पठम २०, २८, पव ५६)। २ न. लगभग नव दिनी का उपवास (छाया १, १—पन ७२)। 'हा म' ['घा] बीस प्रकार से (वर्म १, ५)।

वीसत वीस ['विशान्त] १ विधाम प्राप्त जिसने विधानों की हो यह, 'परिस्तता वीसता नमोहस्तले' (कुप्र ६२, पठम ३३, १३, दे ७, ८६, पाप: सण, उप ६४८ टी)।

वीसदण न ['विस्यन्दन] दही गो तर भीर भाते ये बाला एण प्रवार का छाया (पव ४ पाप ३३)।

वीसंम देखो विससम = वि + धम्म। वीसंमह (सूप्रनि २१ टी)।

वीसम देखो विससम = विधम्म (उप, प्राप्ति, गा ४३७)।

वीससजिअ देखो विससजिअ (से ६, ७७, १५, ६३, पठम १०, ५२, धर्मवि ४६)।

वीससव वि ['विश्रव] विश्रवस-युक्त (प्राप्ति, गा ६०८)।

वीससव वि ['विश्रव] विश्रवस युक्त (गा ३७६, ग्रमि ११६, मवि, नाट—वृच्छ १६१)।

वीससम देखो विससम = वि + धम्म। वीससमह, वीससमो (पद, महा पि ४८६)। वक्, वीससमण (पठम ३२, ४२, पि ४८६)।

वीससम देखो विससम = विधम (पद)।

वीससम देखो वीससम।

वीससमि वि ['विश्रमि] विधाम करनेवाला (सण)।

वीसर देखो विससर = वि + स्तु। वीसरह (हे ४, ७५, ४२६, प्राक्, ६१, पद; ववि, वीसरसि (रभा)।

वीसर देखो वीसर = विसर, 'वीसरस' रखो जो वो जोणीमुहाओ निफिकड' (संदु १४)।

वीसरणालु वि ['विमल'] मूल जानेवाला (भोप ४२३)।

वीसरिअ देखो विसरिय (गा १६१)।

वीसर (अप) सक [वि + श्रमय] विश्राम करवाना। वीसरह (मवि)।

वसस देखो विसस। वीससह (पि ६४, ४६६)। वक् वीससत (पठम ११३, १)। व्. वीससगिण, वीससणीअ (उत्त १६, ४२, नाट—मालवि ४३)।

वीसस = [विसस] स्वभाव, प्रवृत्ति (ठा ३, १—पन १५२, मग छाया १, १२)।

वीससिय वि ['वैससिक] स्वाभाविक (भावम)।

वीसा देखो वीसड (हे १, २८, ६२, ठा ३, १—पन ११६, पद)।

वीसा की ['विशा] प्रणियों, मरतो (नाट)।

वीसाण पु ['विषाण] माहार, भोजन (हे १, ४३)।

वीसाम पुं [विश्राम] १ विराम, उपराम । २ श्रुत व्यापार का प्रवृत्तान, चालू किया का मत (हे १, ४२, वे २, ३१, महा) ।

वीसामण देवो विस्सामण (हुम ३१०) ।

वीसामणा देवो विस्सामणा (हुम ३१०) ।

वीसाय देवो विसाय = वि + स्वाय् । कृ. विस्सार्थणज (परण १७—पत्र ५२२) ।

वीसार देवो विसार = वि + सृ । वीसार (परम ५११) ।

विस्सारिज वि [विस्सारिज] सुलवाया एषा (हुम ३११) ।

वीसास सन [मिधय] मिलाया, मिलान करवा । वीसास (हे ४, २८) ।

वीसासिअ वि [मिथित] मिलाया हुआ (हुम ३११) ।

वीसासं (मा) देवो वीसाम (हुम ३११) ।

वीसास वेतो विस्सास (प्राग् हुम ३११) ।

वीसिया की [विशिन] वीस शब्दावाता (वद १) ।

वीसु न [दि] युक्त, उपग, वृद्धा (दि ७, ७९) ।

वीसुं म [विपुन] १ समस्त, सब ओर से । २ समस्तान, सामस्त्य (हे १, २४, ४३, ५२, पद्, हुम, दे ७, ७९ टी) ।

वीसुंम देवो वीसंम = वि + अम् । वीसुं, जेवा (हा ४, २—पत्र ३०८, वम) ।

वीसुंम धर [दि] धरण होना, जुवा होना । वीसुंमजा (हा ४, २—पत्र १०८, वम) ।

वीसुंमण न [दि] धरणना, बलण होना (हा ४, २ टी—पत्र ११०) ।

वीसुंमण म [मिधमण] विधास (हा ४, २ टी—पत्र ३१०) ।

वीसुय देवो विस्सुअ (पट्ट १, ४—पत्र १८) ।

वीसेदि } देवो वीसेदि (भात १०, रुदि वीसेदि } १८४) ।

वीहि पुन [प्राहि] धान मान्य विरोध 'तावीणि' या वीहीणि या वीहीणा या 'वहीणि' (हुम २, २, ११; वम) ।

वीहि } जो [वीधि, 'वी', 'वी'] १ मार्ग, वीहीया } रास्ता (भावा सुम १, २, १, वीही } २१, प्रवी १००, गड ११८८) । २ ओखे, पक्ति (स १४) । ३ क्षेत्र-भाग (हा ६—पत्र ४६८) । ४ नगर (ज २८, महा) ।

वुअ वि [दि] १ युवा हुआ । २ युनवाया हुआ, 'जत्र तवदा कीय नेव सुय ज न वहीयणवेस' (पत्र १२१) । देवो वुय ।

वुअ } वि [वुत] १ प्राणित । २ प्रार्थना वुअय } बारि वे निगुण, 'वुअ' (वसि ४) । ३ धर्मित, 'हुअमवुअ' (हुम २३) ।

वुअ वि [उअ] कथित (जल १८, २९) ।

वुअ (?) सक [उअ + नमय] ऊँचा करना ।

वुअड (यत्ता १५४) ।

वुआकी की [धुन्ताकी] बैयन का गाछ (दे ७, ९६) ।

वुअ देवो वुअ = वुअ (मा ३५२, हे १, १३१) ।

वुआय देवो वुआय (दे १, १३२ हुम, पद्) ।

वुआवण देवो विदावण (हे १, १३१, प्राग् वसि ४; हुम) ।

वुअ देवो वुअ (हे १, ५३, हुम १, १८) ।

वुअ देवो वुअ = दे (मग) ।

वुअत वि [वुअतान] १ धर्तिकान्त, व्यतीत, उन्नत हुआ, 'वीणीण वुअत धर्माच्छय' । वीणिध धर्मात्त (पाम), 'वुअती वहीनामो वुअ वमनेधं वुअतस' (हुम ५११) । २ विप्लवत, विनष्ट (राज) । ३ निवृत्त, बाहर निवृत्ता हुआ (विह १६) । देवो वुअत ।

वुअति की [वुअतानि] उत्पत्ति (राज) ।

वुअम पुं [वुअम] १ वृद्धि, बढाव (हुम २, ३, १) । २ उत्पत्ति (हुम २, ३, १, २, ३, १०) ।

वुअस स [वुअ + सृ] पीछे लौकवा, नापन लोचना । कयाहि (प्राग् २, ३, १, ६) ।

वुआर देवो वुआर (मग) ।

वुआर सक [दि-वुआरय] गर्जन करना । वुआरति (पत्र १०१) ।

वुआरिय न [दि-वुआरिय] गर्जना, (म ४४८) ।

वुआह पुं [वुआह] १ वलह, कगडा, विग्रह, लड़ाई (हा ४, १—पत्र ३००, वद १; पत्र २६८) । २ घाट, डागा (उप पु २४१) । ३ बलवान (सवीय ५२) । ४ मिथ्याभिनिवेश, बलाह (राज) ।

वुआहज वि [वुआहज] वलह-नाल, 'नव वुआहमं वद कहिआ' (वम १०, १) ।

वुआहज वि [वुआहज] वलह समर्थी (वद १०, १०) ।

वुआह सक [वुआह + प्राहय] बहकाना, धात-बल करना । वुआहेमो (महा) । वर, वुआहेमाणा (प्राग् १, १२—पत्र १७४, वीय) ।

वुआहणा की [वुआहणा] बहकान (प्रोपम २५) ।

वुआहजि वि [वुआहजि] बहकाना हुआ, भातल किया हुआ (कस, वेरय ११७, विरि १०८१) ।

वुअ देवो वय = वय ।

वुआमण वि [वुआमान] जो महा जाता हो वह (हुम १, ६, ११; मग, उप ५३० टी) ।

वुआ म [उअर] वह कर (हुम २, २, ८१, वि ५८७) ।

वुअ देवो वय = वय (माह—हुम १५४) ।

वुअ देवो वय = वय (वम १, १) ।

वुअ देवो वय = वय ।

वुअिज्जण देवो वुअिज्ज (राज) ।

वुअिज्जि वि [वुअिज्जि] विवि २४०५) ।

वुअिज्ज वि [वुअिज्जि] वयविज्जि १ वयण, वृद्धा हुआ । २ विनष्ट (उप) । ३ न. वगातार वीर्य रितो का उदवास (सवीय ५८) ।

वुअिज्ज देवो वुअिज्ज (पत्र २७३) वम २, २, सुता २५२) ।

वुअिज्ज देवो वुअिज्ज (हा ६—पत्र ३३८) ।

वुअ म [प्रस] करना । वुअ (प्राग्) । देवो वुअ ।

वुअय न [दि] स्पन्दन, धातान, इन्द्रा (परम १०२१ टी, ११०२) ।

गपा (मत १२२) । ४ जगचित, पुष्ट (मे ६, ५०) । ५ नि सन, निरला हृषा
‘नममुहमहटामा दुवाससमी महानई ब्रूया ।
ते गणहरकुसगिरिणो सखे वंतामि भायेण’
(वेअय ४) ।

यूणरु पुन [दि] यानव, वन्ना (राज) ।
यूय वि [दि] कुना हृषा, जैन तयट्टा वृष
मय विणिय नेव गहियमन्नेहि’ (मुपा ६४३) ।
देगो युअ = (३) ।

यूह पुन [क्यूह] १ युद्ध वे लिए की जाती
तीय की रचना विशेष (पएह १, ३—पय
४४, बीय, न ६०३, कुमा) । २ समूह
(सम १०६, कुप ५६) ।

वे देगो यइ = ५ (प्राह ८०, राज) ।
वे मर [यि + इ] गट्ट हाना । वइ (विसे
१७६४) ।

वे } सन [क्ये] सवरण करना । वेह,
वेअ } वेमद वमए (पट) ।

वेअ तव [वेअय] १ अनुसर करना,
भोगना । २ जाना । वेअइ, वेअइ, वएनि
(गम्यात्तो ६, मग) । वट. वेअत, वेअमाण,
वेअमाण (मव्यात्तो ५, पउम ७५, ४५,
मुपा २४३, छाया १, १—पय ६ बीय,
पंच ५, १३२, गुपा ३६६) । वअइ.
वेइआमाण (मग पए १, १—पय ५५) ।
वेअ येअट्टा (गुप १ ६, २७) । इ. वेय
वेअय, वेअयव (डा २, १—पय ७७,
रयण २४, गुप ६, १, गुवा ९१४, मदा) ।
देतो वेअ = (वेय), वेअगिअ, वेअणिय ।

वेअ मर [यि + मर] विशेष कराना ।
वेअर (एनि ४२ टी) । वट. वेअत (डा ७—
पय ३८३) ।

वेअ मर [यि + मर] कराना । वट. वेअमाण
(ग ३१२ म) ।

वेअ पु [वेअ] १ राशिरिण आयेद भादि
संप (गिरा १, ५ टी—पय ६०, पाय
उर) । २ बर्गगिर, भाद्वेय बर्ग का
एक पैद, जिसे के उरग के पैद की हवा
होती है (बम १, २२ लाइ ३५३) ।
३ बाबागम भादि का हय (बाबा १, १,
१, २) । ४ गिर, न नगर (ग) । ५ वि
१०३

[‘वन्’] वेदो का जानकार (भावा १,
३, १, २) । ‘वि,’ निउ वि [‘विद्’] बहो
बर्ग (वि ४१३, या २३) । ‘वत्त न
[‘व्यक्त’] वैय-विशेष (भावा २, १५,
३५) । ‘वत्त न [‘वर्त’] देवो ‘वत्त
(भावा २, १५, ३) ।

वेअ न [वेअ] बर्ग विशेष, सुख तथा दुःख
का कारण मुन बर्ग (कम्म १, ३) ।

वेअ पु [वेअ] शीघ्र गति दौड़, तेजो (पाय,
से ५, ४३, कुमा महा पउम ६३, ३६) ।
२ प्रवाह । ३ रेतख । ४ मृद मादि नि सारण-
यत्त । ५ संस्कार विशेष (प्राह ४१) । देवो
वेग ।

वेअत पु [वेअत] दरुन विशेष, उपनिषद्
का विचार करनेवाला दरुन (अनुत्त १) ।

वेअग वि [वेअक] १ भोगनेवाला अनुसर
करनेवाला (सम्यक्को १२, सवोय ३३,
याव ३०६) । २ न, सम्यक् का एक अंत
(बम्म ३, १६) । ३ वि सम्यक्-विशेष
वाला जीव (बम्म ४, १३, २२) । ‘द्विहिय
वि [द्विअयेदर] जिसका पुरुष बिह मादि
बान गया हो वह (गुप २, ३, ६३) ।

वेअण्ड न [वेअण्ड] १ उतरारुण, छाती
में मनोवशील की तपद् पटना वाला वरु
माना भादि । २ वष विशेष मरिट-बम्म ।
३ कथे क नीचे सटवना (छाया १, ८—
पय १३३) ।

वेअह सव [यय] जट्टना । वेअहह (हि
४, ८६, पट्ट) ।

वेअहिय वि [ययिअ] उरु हृषा उरुह
(कुमा पाय अवि) ।

वेअहिय वि [दि] अणुत्त, गिर के बाया हृषा
(दे ७ ७७) ।

वेअहिय पु [दि] येअट्टिक] मोड़ी वेपनेवाला
छिन्नी जोहो (अणु) ।

वेअइ देगा विगहि (मो) ।

वेअइह न [दि] मन्नाय विताय (दे
७, ९९) ।

वेअइह पु [येअह] पर्वग विशेष (गुर ६,
१०; गुपा २२६ मर, मरि) ।

वेअइह न [येअह] विद्वत्पता, विव-
सायता (मुपा ६२६) ।

वेअण न [वेअण] मज्झो का मूल्य सनताह
(पाय विपा १, ३—पय ४२, उर पु
३६८) ।

वेअण म [वेअण] १ बम्म, कपिना (वेअय
४३५, नाट—उतर ६१) । २ वि, कपि-
वाला (वेअय ४३५) ।

वेअण त [वेअण] अनुसर, भोग (भावा,
बम्म २, १३) ।

वेअणा देवो विअणा (उवा, ह १, १४६
प्रासू १०४, १३३, १७४) ।

वेअणिअ वि [वेअनीय] १ भोगने वाला ।
वेअणिय २ न. बर्ग विशेष, गुप-कु स
भादि का कारण मुन बर्ग (प्रासू, डा २,
४, बम्म १, १२) ।

वेअय देवो वेअग (विगे ५२८) ।

वेअरणी जो [येअरणी] १ नरक नदी
(कुप ४३२, उर) । २ परमापमिह देवों की
एक जाति, जो वेअरणी की निरुत्तला परने
उममें नरक-जीवों को डालता है (गग २६) ।
३ विद्या विशेष (भासम) ।

वेअइ देवो वेअइ = विवसित ‘वेअणुत्त-
नियरयणेण हयदण गिरिटिज’ (पमवि
२०) ।

वेअइ वि [दि] १ मुट्ट, बामन (दे ७,
७५) । २ न, मत्तमव्य (दे ७, ७५, पाय) ।

वेअट न [येअय] गिराता, म्नातुरता
(गउर) ।

वेअय देवो वेअ = वेअय ।

वेअय पु [वेअय] हृषा विशेष, वी का हृ
(ह १ २०७, पट्ट, ग ९४२) ।

वेअयण वि [येअयण] व्याकरण-मोड़ी,
संदर्भ निराकरण के मान्य रतनेवाला
(वयना) ।

वेअर सव [दि] ठाना प्रारण करता ।
वय रर (मरी) बर्ग, वेअरणी (ग १०६) ।
हह. येअरि (ग २८६ ररग ११८) ।

वेअरणि वि [येअरणि] विद्वत्प-
ता की विद्वत्प के उरग (डा २, १—
पय ४०) ।

वेआरणिय वि [दे] प्रतारण-सम्बन्धी, ठगने से सम्बन्ध (ठा २, १—पत्र ४०)।

वेआरणिय वि [वेचाराणिक्] विचार-सम्बन्धी (ठा २, १—पत्र ४०)।

वेआरिअ वि [दे] १ प्रतारित, ठगा हुआ (दे ७, २५, पत्र १४, ४६ गुणा १५२)। २ पु. वेश बाल (दे ७, ६५)।

वेआल पुं [वेताल] १ भूत विशेष, विकृत पिशाच, भ्रैत (पण्ह १, ३—पत्र ४६, गउड, महा, पिग)। २ छन्द विशेष (पिग)।

वेआल वि [दे] १ मरणाः। २ पु. मरणाः (दे ७, ६५)।

वेआलग वि [विदारक] विदारण-कर्ता (सूत्रनि १६)।

वेआलण न [विदारण] काशना, चीरना (सूत्रनि १६)।

वेआलि पुं [वेतालम्] बन्दी, स्तुति पाठक (उप ७२८ टी)।

वेआलिअ देवो यइआलिअ (पाम् १६, १५२, वेइय ७५६)।

वेआलिय वि [वेकिय] विविधा से सम्बन्ध (सूत्र १, ५, २, १७)।

वेआलिय वि [वेचालिक] विचार-सम्बन्धी, अपराध में बना हुआ (वसनि १, ६, १५)।

वेआलिय न [विदारक] विदारण क्रिया (सूत्रनि १६)।

वेआलिय देवो यइआलीअ (सूत्रनि १८)।

वेआलिया औ [वेतालिका] बीणा विशेष (जीव ३)।

वेआली औ [वेताली] १ विद्या विशेष, जिसे प्रमाद से भ्रष्ट करने का उद्योग होता है—चेतन की तरह क्रिया करता है (सूत्र २, २, २७)। २ नगरी विशेष (एण्मा १, १६—पत्र २१७)।

वेइ औ [वाइ] परिष्कृत भूमि विशेष, चीवर (कुमा मग)।

वेइ वि [वादन] १ वादनेवाला (वेइय ११६, गउड)। २ अनुसर करनेवाला (पत्र ५, ११६)।

वेइअ वि [वेदिन] १ अनुसर (मग)। २ नाप, जलना हुआ (मग ४, १, पत्र ६६, ३)।

वेइअ देवो वेविअ = वेपित (गा ३६२ अ)।

वेइअ वि [वेदिक्] १ वेदाश्रित, वेद सम्बन्धी (ठा ३, ३—पत्र १५१)। २ वेदों का जानकार (वसनि ४, ३५)।

वेइअ वि [वेगित] वेलावाला, वेग-मुक्त (एण्मा १, १—पत्र २६)।

वेइअ वि [वेयजित] १ कम्पित, काँपा हुआ (मग १, १ टी—पत्र १८)। २ कँपाया हुआ (राय ७४)।

वेइआ औ [दे] पनीहारी, पानी बोनेवाली औ (दे ७, ७६)।

वेइआ औ [वेदिना] १ परिष्कृत भूमि-विशेष चीवर (मग कुमा, महा)। २ अनुलि मुद्रा, मण्डो (दे ७, ७६ टी)। ३ वर्णनीय प्रतिवेदन का एक भेद, प्रत्युपेयणा का एक दोष (उत्त २६, २६, सुख २६, २६, मोपमा १६३)।

वेइअ अक [वि + एज्] कौपना। अक. वेइअमाण (मग १, १ टी—पत्र १८)।

वेइअमाण देवो वेअ = वेदपु।

वेइअ वि [दे] १ ऊँचा किया हुआ। २ विस्तृत। ३ आविष्ट। ४ स्थिति (दे ७, ६५)।

वेइअ देवो विअइअ (हे १, १६६, २, ६८, कुमा)।

वेइअ देवो वेइअ (गउड)।

वेइअ औ [दे] पुन पुन, फिर फिर (मग)।

वेइअ देवो विअअ = वि + अ, कुर्व, सट्. वेइअउण (सुभा ४२)।

वेइअ वि [वेकिय] १ विवृत्त, विचार प्राप्त (विसे २५७ टी)। २ देवो विअअ = वैश्व (मग ३, १६)। ३ ललित औ [ललित] शक्ति विशेष, वैश्व शरीर उत्पन्न करने का सामर्थ्य (पत्र ७०, २६)।

वेइअ देवो विअअ (पण्ह २, १—पत्र ६६, मग, मोपमा ५७)।

वेइअ देवो विअअ = विवृत्त, विवृत्त, विवृत्त (विसे २५७ टी)। २ देवो विअअ = वैश्व (मग ३, १६)। ३ ललित औ [ललित] शक्ति विशेष, वैश्व शरीर उत्पन्न करने का सामर्थ्य (पत्र ७०, २६)।

वेइअ देवो विअअ (पण्ह २, १—पत्र ६६, मग, मोपमा ५७)।

वेइअ देवो विअअ = विवृत्त, विवृत्त, विवृत्त (विसे २५७ टी)। २ देवो विअअ = वैश्व (मग ३, १६)। ३ ललित औ [ललित] शक्ति विशेष, वैश्व शरीर उत्पन्न करने का सामर्थ्य (पत्र ७०, २६)।

वेइअ देवो विअअ (पण्ह २, १—पत्र ६६, मग, मोपमा ५७)।

वेइअ देवो विअअ = विवृत्त, विवृत्त, विवृत्त (विसे २५७ टी)। २ देवो विअअ = वैश्व (मग ३, १६)। ३ ललित औ [ललित] शक्ति विशेष, वैश्व शरीर उत्पन्न करने का सामर्थ्य (पत्र ७०, २६)।

को करने में समर्थ शरीर (मग १४१, मग, दं ८)। २ वैश्व शरीर बनाने की शक्तिवाला (मग १०३, पत्र—गाथा ६)। ३ विकुर्या से बनाया हुआ, 'विमर्गिरसमोवर्ग' एव

वेइअ देवो वेविअ = वेपित (गा ३६२ अ)।

वेइअ वि [वेदिक्] १ वेदाश्रित, वेद सम्बन्धी (ठा ३, ३—पत्र १५१)। २ वेदों का जानकार (वसनि ४, ३५)।

वेइअ वि [वेगित] वेलावाला, वेग-मुक्त (एण्मा १, १—पत्र २६)।

वेइअ वि [वेयजित] १ कम्पित, काँपा हुआ (मग १, १ टी—पत्र १८)। २ कँपाया हुआ (राय ७४)।

वेइआ औ [दे] पनीहारी, पानी बोनेवाली औ (दे ७, ७६)।

वेइआ औ [वेदिना] १ परिष्कृत भूमि-विशेष चीवर (मग कुमा, महा)। २ अनुलि मुद्रा, मण्डो (दे ७, ७६ टी)। ३ वर्णनीय प्रतिवेदन का एक भेद, प्रत्युपेयणा का एक दोष (उत्त २६, २६, सुख २६, २६, मोपमा १६३)।

वेइअ अक [वि + एज्] कौपना। अक. वेइअमाण (मग १, १ टी—पत्र १८)।

वेइअमाण देवो वेअ = वेदपु।

वेइअ वि [दे] १ ऊँचा किया हुआ। २ विस्तृत। ३ आविष्ट। ४ स्थिति (दे ७, ६५)।

वेइअ देवो विअइअ (हे १, १६६, २, ६८, कुमा)।

वेइअ देवो वेइअ (गउड)।

वेइअ औ [दे] पुन पुन, फिर फिर (मग)।

वेइअ देवो विअअ = वि + अ, कुर्व, सट्. वेइअउण (सुभा ४२)।

वेइअ वि [वेकिय] १ विवृत्त, विचार प्राप्त (विसे २५७ टी)। २ देवो विअअ = वैश्व (मग ३, १६)। ३ ललित औ [ललित] शक्ति विशेष, वैश्व शरीर उत्पन्न करने का सामर्थ्य (पत्र ७०, २६)।

वेइअ देवो विअअ (पण्ह २, १—पत्र ६६, मग, मोपमा ५७)।

वेइअ देवो विअअ = विवृत्त, विवृत्त, विवृत्त (विसे २५७ टी)। २ देवो विअअ = वैश्व (मग ३, १६)। ३ ललित औ [ललित] शक्ति विशेष, वैश्व शरीर उत्पन्न करने का सामर्थ्य (पत्र ७०, २६)।

वेइअ देवो विअअ (पण्ह २, १—पत्र ६६, मग, मोपमा ५७)।

वेइअ देवो विअअ = विवृत्त, विवृत्त, विवृत्त (विसे २५७ टी)। २ देवो विअअ = वैश्व (मग ३, १६)। ३ ललित औ [ललित] शक्ति विशेष, वैश्व शरीर उत्पन्न करने का सामर्थ्य (पत्र ७०, २६)।

वेइअ देवो विअअ (पण्ह २, १—पत्र ६६, मग, मोपमा ५७)।

वेइअ देवो विअअ = विवृत्त, विवृत्त, विवृत्त (विसे २५७ टी)। २ देवो विअअ = वैश्व (मग ३, १६)। ३ ललित औ [ललित] शक्ति विशेष, वैश्व शरीर उत्पन्न करने का सामर्थ्य (पत्र ७०, २६)।

वेकुठं पुं [वेकुठ] १ विष्णु, नारायण । २ इन्द्र, देवाधीश । ३ गण्ड पक्षी । ४ अर्जक वृक्ष, सफेद बवंदी का गाय । ५ लोच-विशेष, विष्णु का पाप (हे १, १६६) । ६ पुन-मधुरा का एक वैष्णव लोच (लो ७) ।

वेग देवो वेज = वेग (उवा, कण्ठ, कुमा) ।
वेद्वी स्त्री [वती] एक नदी का नाम (लो १५) ।
वत वि [वन्] वेगवाना (सुर २, १६७) ।

वेगच्छ देवो वेजच्छ (उवा) ।
वेगच्छिया स्त्री [वेकसिरा, 'क्ष'] कणा वेगच्छी के पास पहना जाता वस्त्र, छत्रासन (पर ६२), 'कयतिवसो वेगच्छि क्षत्रावबहास्यलक्ष' (सवोष ६) ।

वेगह क्षीन [दे] पोट विशेष, एक तरह का जहान, 'चलसुद्धी वेगहाए' (सिरि ३८२) ।

वेगर पुं [दे] क्षापा, लोभ आदि से मिश्रित चीनी आदि (उर ५, ६) ।

वेगुअ देवो वहुगुण (परमं ८८४ मुपा २६०) ।

वेगा देवो विजगा (प्राज्ञ ३०) ।

वेगा देवो वेग (मवि) ।

वेगाळ वि [दे] दूध-बत्ती, पुनराठी में 'वेगळ' (हे ४, १७०) ।

वेचित्त देवो यचित्त (मान ३०, मण्ण ४६) ।

वेघ देवो विघ = वि + घ; वेघ (ह ४, ४१६) ।

वेच्छ देवो विज = विद् ।

वेच्छा देवो वेगच्छिया । 'मुत्त न [मुन्] जणोत्त की तद्ध पत्नी जाली त'वनी (मग ६, ११ टी—४७७ उप) ।

वेजयत पुन [वेजयन्] १ एवं अनुसर देव-निमान (सम ५६, भीर भु) । २-७ जन्-क्षीय, सचल गण्ड, पातकी सारह, बानाव सनु, पुनरार हीन तथा पुनरोद सनु का सणिण हार (ठा ४, २—पत्र २२३ जीष ३, २—पत्र २६०, ठा ४ २—पत्र २२६, जीष ३, २—पत्र ३२७ ३२६ ३३३, ३४७) । ८-१३ पुं-बहुभोज सचल सनु आदि के सणिण हारों के संहिता दे (ठा

४, २—पत्र २२५, जीव ३, २—पत्र २६०, ठा ४, २—पत्र २२६, जीव ३, २—पत्र ३२७, ३२६; ३३१, ३४७) । १४ एक अनुसर देवविमान का निजामी देव (सम ५६) । १५ जन्मन्दर के उत्तर कचन पर्वत का एक शिखर, 'विजय य वि(?) वे जयते' (ठा ८—पत्र ४३६) । १६ वि. प्रधान, श्रेष्ठ (सुम १, ६, २०) ।

वेजयती स्त्री [वेजयन्ती] १ स्वना, पताका (सम ११७ सुम १, ६, १०, सुर १, ७०, कुमा) । २ पठ वलदेव की माता का नाम (सम १५२) । ३ अगारक आदि महापहा की एक-एक अग्रमहिषी का नाम (ठा ४, १—पत्र २०४) । ४ पूर्व कचक पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३६) । ५ विजय विशेष की राजधानी (ठा २, ३—पत्र ८०) । ६ एवं विद्याधर-नगर (सुर ४, २०४) । ७ रामचन्द्रजी की एक समा (पत्रम ८०, ३) । ८ भगवान् पद्मप्रभ की वीणा शिविका (सम १५१) । ९ उत्तर भजनगिरि की सविण हिला में स्थित एक पुष्करिणी (ठा ४, २—पत्र २३०) । १० पत्र की माछीं रात्रि का नाम 'विजया य विजयवा' (१ वेजयती) (सुज १०, १४) । ११ भगवान् कुचुनाथ की दोहा शिविका (विचार १२६) ।

वेज वि [वेज] सोने योग्य, अनुसर करने योग्य (संवीष ३३) ।

वेज पु [वेज] १ विजित्व, हारीम (मा २३७ उवा) । २ कृप विशेष । ३ वि. पवित्र विद्वान् (ह १, १४८ २, २४) । 'सत्य म [शास्त्र] विरित्ता शास्त्र (स १७) ।

वेजग पु [वेजक] १ विजित्ता शास्त्र (प्राप वेजय ६२२ टी, ॥ ७११) । २ वेद-संवीषी जिमा, वेद-बर्ष (पणु २२४, कृप ६८) ।

वेजम वि [वेज] बोधन योग्य (ना—माहित्य १४८) ।

वेष्टण देवो वेष्टा (ना—मानवी ११६) ।
वेष्टणग पुं [वेष्टण] १ मिरर ब'धा जड़ी एक तद्ध की पत्नी । २ बान का एक मानुस (पत्र) ।

वेष्टया देवो विष्टा (सुर १६, १७१) ।

वेष्टि देवो विष्टि, 'गमवेष्टि य मप्रता' (उत २७, १३, प्राज्ञ ५) ।

वेष्टिद (स्त्री) देवो वेष्टिअ (माट—गृध्र ६२) ।

वेड [दे] देवो वेड (दे ६, ६१, कुमा) ।

वेडइअ पुं [दे] वाणिज्य, व्यापारी (दे ७, ७८) ।

वेडग देवो विडग 'जह वेडगनिने' (सवाव १२) ।

वेडस पुं [वेतस] बुद्ध विशेष, बेंत का गाछ (पाप सम १५२, कण्ठ) ।

वेडिअ पु [दे] मणिकार, जीहरी (दे ७, ७७) ।

वेडिअ वि [दे] सवट, सचरा, कमचीडा (दे ७, ७८) ।

वेडिस देवो वेडस (प्राप, ह १, ४६, २०७, कुमा का ७६०) ।

वेडुवक पुं [दे] वृषादि कुल में उग्रत वेडुरा (आ० परि जि० गा० ७६ मान० दीपिवा भा० २ पत्र, ७०, २) ।

वेडुअ देवो वेरुअ (ह २, १३१, वेडुरिअ) पाप, माट—गृध्र ११६) ।

वेडुल रि [दे] गयित, भूमिपानी (दे ७, ४१) ।

वेडु देवो वेड = वट् । वेडइ (प्राप) ।

वेडुअ पु [वेडक] द्वन्द्व विशेष (मज ६) ।

वेड सव [वेड्] सरेया । वड वड (हे ४, २२१, उवा) । बने वडिअ (ह ४, २२१) । बट्, वेडन, वेडिमाग (पत्रम ४० २१, एमा १, ६) । बड, वेडिअ-माण (मुपा ६४) । वड, वेडिअ, वेडिअ, वेडिअ, वेडिअ (मि ३०४, मण्ण) । प्रयो, वेडिअ (मि ३०४) ।

वेड पुं [वेड] १ एर रिरेय (मम १०६, मणु २३३, परि २०६) । २ वट्, सवान (म ६६, २२१, ॥ ११, ११) । ३ एर मणु नियम वास-मणु, बर्षेन दम्य (एमा १, ११—पत्र २१८, १, १०—पत्र २८, मणु) ।

*वेड एवा ब'ड (मण्ण) ।

वेठण न [वेठण] लपेटना (सि १, ६०; ६, ४३; १२, ६५; गा ५६३; धर्मसं ४६७)।

वेठिअ वि [वेठित] लपेटा हुआ (उव, पाथ, सुर २, २३८)।

वेठिम वि [वेठिम] १ वेठन से बना हुआ (पणह २, ५—प १५०; छाया १, १३—प १७८; भौप)। २ पुंस्त्री. छाया-विशेष (पणह २, ५—प १४८; राज)।

वेण पुं [वे] नदी का विपन घाट (दे ७, ७४)।

वेण (मय) देखो वयण = वचन (दे ४, ३२६)।

वेणइअ न [वेनयिक] १ विनय, नम्रता (ठा ५, २—प ३३१; दस ६, १, १२; सट्ठि १०६ टी)। २ मिथ्यात्व-विशेष, लभो देवो सीर धर्मो को सत्य मानना (संवेध ५२)। ३ वि. विनय-संबन्धी (सम १०६; भग)। ४ विनय को ही प्रधान माननेवाला, विनय-वादी (सूत्र १, ६, २७)। "वाद पुं [वाद] विनय को ही मुख्य माननेवाला ब्राह्मण (धर्मसं ६६४)।

वेणइगी } श्री [वेनयिकी] विनय से प्राप्त
वेणइया } होनिवाली बुद्धि (उप ५ ३४०;
छाया १, १—प ११)।

वेणइया श्री [वेणकिया] लिपि-विशेष (सम ३५; पणह १—प ६२)

वेणा श्री [वेणा] महर्षि स्कूलभद्र की एक भागिनी (कथ, पठि)।

वेणि श्री [वेणी] १ एक प्रकार की बैरा रचना, बालों की गूदी हुई चौटी (उवा)। २ वाय-विशेष (सण)। ३ गंगा प्रौर यमुना का समन-स्थान (राज)। "वच्छराय पुं [वत्सराय] एक राजा (कुप ५४०)।

वेणिअ न [वे] वचनीय, लोपापवाद (दे ७, ७५, पड)।

वेणी श्री [वेणी] देखो वेणि (सि १, ३६; गा २७३, कपू)।

वेणु पुं [वेणु] १ शंश, मांस (पाथ; कुमा, पड)। २ एक राजा (कुमा)। ३ वाय-विशेष, वंशी (दे १, २०३)। "दालि पुं [दालि] एक द्रव्य, सुपण्डुमार देवो का उज्ज्वलता का द्रव्य (ठा २, ३—प ८४)

द्रव्य)। "देव पुं [देव] १ सुपण्डुमार-नामक देव-जाति का दक्षिण दिशा का द्रव्य (ठा २, ३—प ८४)। २ देव-विशेष (ठा २, ३—प ६७, ७६)। ३ गण्ड फलो (सूत्र १, ६, २१)। "याणुजाय पुं [कानुजाय] गरिष्ठराज-अग्निद्वय योगो में द्वितीय योग, जिसमें चन्द्र, सूर्य और नक्षत्र वंशान्वार से अवस्थान करते हैं (सुज १२—प २३३)।

वेणुणास } पुं [वे] भ्रमर, भौरा (दे ७,
वेणुसाअ } ७८, पड)।

वेणु वि [वे] धाकान्त (पड)।

वेण्णा श्री [वेण्णा] नदी-विशेष। "यड न [तट] नगर-विशेष (पठम ४८; ६३; महा)।

वेण्डु देखो विण्डु (सजि ३; प्राक ५)।

वेताली श्री [दे] १ तट, किनारा, "जलं नावा पुण्वेतालीउ दारिणवेतालि जलपहेलं गच्छति" (पणह १६—प ४८०)। २ गली (भाव ० वृ० प ३५५)।

वेत्त न [वे] स्वच्छ वस्त्र (दे ७, ७५)।

वेत्त पुं [वेत्त] वृज-विशेष, बेंत का गाछ (पणह १—प ३३, विपा १, ६—प ६६)। "सण न [सण] बेंत का बना हुआ घासन (पठम ६६, १४)।

वेत्तकय वि [वेत्तकय] जानने योग्य (प्राप्र)।

वेत्तिअ पुं [वेत्तिअ] द्वारपाल, चपरासी (मुपा ७३)।

वेद देखो वेअ = वेदय्। वेदेइ, वेदति, वेदेति (भग, सूत्र १, ७, ४; ठा २, ४—प १००), वेदेज (धर्मसं १६६)। भूषा, वेदेगु (ठा २, ४; भग)। भवि, वेदिस्सति (ठा २, ४, भग)। कवक, वेदेज्जमाण (ठा १०—प ४७२)।

वेद देखो वेअ = वेद (पणह १, २—प ४०, धर्मसं ८६२)।

वेदत देखो वेअत (धर्मसं ८६३)।

वेदक } देखो वेअग (पणह १, २—प ५६)
वेदग } २८, धर्मसं १६६)।

वेदणा देखो विअणा (मम, लपन ८०; नाट—मातवि १४)।

वेदन्मी श्री [वेदमी] प्रद्युम्न कुमार की एक श्री का नाम (पत १४)।

वेदम् (श्री) देखो वेडिस्स (प्राक ८३, नाट—शकु ६८)।

वेदि देखो वेइ = वेदि (पठम ११, ७३)।

वेदिग पुं [वेदिग] एक इम्य मनुष्य-जाति, "अंबड्डा य कलदा य

वेवेहा वेदिगतिता (?) इया)।

हरिता कुडुणा वेव

छपेता इम्भनाइयो ॥

(ठा ६—प ३५८)।

वेदिय देखो वेइअ = वेदित (भा)।

वेदिस न [वेदिश] विदिशा की तरफ का नगर (सलु १४६)।

वेदुल्लिय देखो वेदुल्लिअ (पड)।

वेदुणा श्री [वे] लजा, शरम (दे ७, ६५)।

वेदेसिय देखो वइदेसिअ (राज)।

वेदेइ पुं [वेदेइ] एक इम्य मनुष्य-जाति (ठा ६—प ३५८)। देखो वइदेइ।

वेदेहि पुं [वेदेहिम] विदेह देश का राजा (उत्त ६, १२)।

वेधम्म देखो वइधम्म (धर्मसं १८५)।

वेधव्व देखो वेइव्व (सोह ६६)।

वेण्णा देखो वेण्णा (उप ५ ११५)।

वेप्प वि [वे] भूत आदि से गृहीत, पागल (दे ७, ७४)।

वेप्पुअ न [वे] १ शिष्टपुन, वचन। २ वि. भूत-गृहीत, भूताष्टि (दे ७, ७६)।

वेफल्ल न [वेफल्ल] निष्फलता (विसे ४१६; धर्मसं २२; सगळ १३३)।

वेळ्भल्ल वि [विह वल्ल] व्याकुल (प्राप्र)।

वेळ्भार } पुं [वेभार] पर्वत विशेष, राजगृही
वेभार } के समीप का एक पहाड़ (छाया १, १—प ३३; सतिर ४)।

वेम देखो वेमय। वेमइ (प्राक ७४)।

वेम पुं [वेम] कनुवाय का एक उपनगर (विसे २१००)।

वेमइअ वि [भग्न] भागा हुआ (कुमा ६, ८८)।

वेमणस्स न [वेमनस्स] १ मनुष्यव, भीतरि द्वेप (उव)। २ दैत्य, दोन्ता (पणह १, १—प २५)।

वेमय सक [भञ्ज] भाँगना, तोटना ।
वेमयइ (हे ४, १०६; पद १) ।

वेमाउअ [वि [यैमाउक] विमाता की
वेमाउअ] संतान (ममत्त १७१; मोह
८८) ।

वेमाणि पुंछी [विमानिन] विमान-वासी
देवता, एव उत्तम देव जाति (दे २) । छी.
"मिणी (पएल १७—पत्र ५००; पंवा २,
१८) ।

वेमाणिअ पु [यैमासिह] एव उत्तम देव-
जाति, विमानवासी देवता (मग; भीष, पएह
१, ५—पत्र ६१, जो २४) ।

वेमाया छो [यिमाअ] अनियत परिमाण
(मग १, १० टी) ।

वेमि कि [यन्मि] मैं गहटा हूँ (बंछ) ।
वेयंड पुं [वेतण्ड] हस्ती, हाथी (स ६१०;
७१५) । देखो वेंड ।

वेयायय [[यैयाट्टय, यैयापूरय]
देयाउडय] तेषा, सुधुषा (उय, बस, छाया
१, ५; भीष; भीषमा १२१; भाषा, छाया
१, १—पत्र ७५, पर्वत ६६५, पृ ५३) ।

येर न [यै] डुरमार्ह, गडुता (दे १, १५१,
भास १२; प्राप् १२३) ।

येर न [ह्यार] दरपाना (पद १) ।

येरगा म [यैराग्य] विरागता, उदासीनता
(उय, रणए १०; गुप्ता १७१; प्राप् १६६) ।
येरगाअ रि [यैराग्यिक] वैराग्य-शुद्ध,
विरागी (उय, स १६५) ।

येरज न [यैराग्य] १ वैरि-राग्य, निरुद्ध
राग्य (गुग २, १५; बग) । २ जहाँ पर
राजा विजयाना म हो पद राग्य । ३ जहाँ
पर प्रभाव भाति राजा हो त्रिजल शरते हो
पद राग्य (बग; इद १) ।

येरसिय रि [यैरासिय] रात्रि के लुनीय पहर
का समय (उय २६, २०, भीष १६२) ।

येरमम न [यैरमम] विराम, निवृत्ति (मन
१००, भा उय) ।

येराट पु [यैराट] भरतिय देव विशेष, सन-
वर तथा उपर वेगो भार का प्रदेष्ट (भरि) ।

येराय (घर) पु [यैराय] वैराग्य, उदासीनता
(भरि) ।

वेरि [देखो वइरि (गठः) कुमा; पि
वेरिअ] ६१) ।

वेरिज वि [दे] १ भ्रष्टहाय, एकलौ । २
न. सहायता, मदद (दे ७, ७६) ।

वेरलिअ पुन [वेडुर्थ] १ रत्न की एक जाति,
"मुचिरि वि भञ्जमाणो वेरलिओ भाचमणीय
उम्मीमो" (प्राप् ३२; पाष; "वेरलिअ" (हे
२, १३३, कुमा) । २ विमानावास-विशेष
(देवेन्द्र १३२) । ३ शक्र भादि इन्द्रों का एक
भाभाभ्य विमान (देवेन्द्र २६३) । ४ महा-
हिमबंध पर्वत का एक स्थिर (ठा २, ३—
पत्र ७०, ठा ८—पत्र ४३६) । ५ वचक
पर्वत का एक स्थिर (ठा ८—पत्र ४३६) ।
६ वि. वेडुर्थ रत्नवाला (भीष ३, ४, राय) ।
"मय वि [मय] वेडुर्थ रत्नों का बना हुआ
(पि ७०) ।

वेरोयण देखो यइरोअण = वैरोचन (छाया
२, १—पत्र २४७) ।

वेरल न [दे] दन्त-भाग, दाँत के मूल का मास
(दे ७, ७४) ।

वेरलण पुं [वेरलण] एव देव-जाति, नाप-
राज-विशेष (सन ३३) । २ पर्वत-विशेष ।
३ न. नगर-विशेष (पत्रम ५४, ३६) ।

वेरलपर पु [वेरलपर] वेरलपर-संबन्धी (पत्रम
५५, १७) ।

वेरल पुं [वेरल] १ बाण्डुमार नामक देवो
के दक्षिण दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र
८५, इय) । २ पाताल-नक्षत्र का अष्टिगुण
देव-विशेष (ठा ४, १—पत्र १६८, ४, २—
पत्र २२६) ।

वेरल पुं [दे. विहम] १ विहमन (दे
७, ७३, गडः) । २ वि. विहमना नारक
(पएह २, २—पत्र ११४) ।

वेरलया पु [विहमयक] १ विहमक, मयगर
(भीष; छाया १, १ टी—पत्र २, बग) ।
२ वि. विहमना करनेवाला (पुष्क २२६) ।

वेरलया म [वेरलया] सग्या, राग्य (गठः) ।

वेरलया म [दे. अं दनक] १ सग्या, राग्य
(दे ७, ११ टी) २ पुं. नागिन-प्रतिद रा-
विशेष, सग्या-रग्य वस्तु के वर्तन करि के
उत्तर होनेवाला एक रस (पुगु १३३) ।

वेरल सब [उपा + लम्] १ उपास्य
देना, उपाहना देना । २ वंपाना । ३ व्याकुल
करना । ४ ध्यातु करमा, हटाना । वेरलव
(हे ४, १५६; पद १) । वइ. देल्यंत (सि २,
८) । वयक. वेरलवजंत (सि १०, ६८) ।
इ. वेरलणिज (कुमा) ।

वेरल सब [यज्] १ ठगना २ पीड़ा
करना । वेरलव (हे ४, ६१) । वर्र. वेर-
विजयति (मुग ४८२; गडः) ।

वेरलविअ वि [यजित] १ प्रसारित, ठगा
हुआ (पाष; वग्या १२२; त्रिदे ७७; वे
२६) २ पीडित हिरान रिमा हुआ (सा
११) ।

वेरला छी [दे] दन्त भाग, दाँत के मूल का
मास (दे ७, ७४) ।

वेरला छी [वेरला] १ समय, घनसर, बाल
(पाष. वण्) । २ पवार, समुद्र के पानी की
बुझि (पएह १, ३—पत्र ५५) । ३ समुद्र
का विनारा (सि १, ६२; भीष, गडः) । ४
मर्यादा (मूय १, ६, २६) । ५ धार, बहा
(पंवा १२, २६) । "उल न [कुल] कदार,
जहाँ की वे डरते का स्थान (पुर १३, १०;
उय ५६७ टी) । "यासि पुं [यासिन्]
समुद्र-तट के समीर रहनेवाला वायव्य
(भीष) ।

वेरलाइअ वि [दे] मृदु, कोमल । २ दीन,
मीर (दे ७, ६६) ।

वेरलाय (घर) गर [रि + लयय] देवी
करना; विरस्य करना । वैरागि (मिग) ।

वेरलिर रि [वेरलिर] वेरा-शुद्ध (कुमा) ।

वेरली छी [दे] १ सग्या-विशेष, विरागरी सग्या
(दे ७, १४) । २ पर के बार कीलों में
रखा जाया छोटा लयम (पत्र ११३) ।

वेरु देवो वेरु (दे १, ४, २०३) ।

वेरु पुं [दे] १ चोर, चणवर । २ गुण (दे
७, ६२) ।

वेरुल वि [दे] विर, घटव, कृतिग (दे
७, ६१) ।

वेरुग [पुं [वेरुग] १ वेर का मास । २
दन्त] वेर का घर (पाष २, १, ८,
१४) । ३ वंछ. नग, वेरुगिग ठगुगिग
दं (पएह १—पत्र ४३; रि २४१) । ४

भासकरिला, बनस्पति-विशेष (दस ५, २, २१)।

वेलुरिअ } देसो वेरुलिअ (प्राप्र. पि २४१,
हेलुलिअ } दे ७, ७७)।

वेल्लूणा खी [दे] सज्जा लाज (दे ७, ६५)।

वेल्ल भक [वेल्ल] १ कांपना । २ सेटना ।

३ सक. कंपाना । ४ प्रेरना । वेल्लइ (पि १०७)। वेल्लति (गउड)। वड्ड. वेह्लत,

वेह्लमाण (गउड. हे १, ६६ पि १०७)।

वेल्ल भक [रम्] कीडा करना । वेल्लइ (हे ४, १६८)। क. वेह्लणिज (कुमा ७, १४)।

वेल्ल पुं [दे] १ केश, बाल । २ पल्लव । ३

विलास (दे ७, १४)। ४ मदन-वेदना, काम-

पीडा । ५ वि. भविष्य, भूत (सति ४७)।

६ न. देवो वेह्लग (सुपा २७६)।

वेह्लइअ देवो वेह्लइअ (पड्ड)।

वेह्लग न [दे] १ एक तरह की गाड़ी, जो

ऊपर से ढकी हुई होती है गुजरारी मे

‘वेल’। २ गाड़ी के ऊपर का सला (आ १२)।

वेह्लग न [वेह्लन] मेरणा (गउड)।

वेह्लय देवो वेह्लग (सुपा २८१, २८२)।

वेह्लरिअ पुं [दे] केश, बाल (पड्ड)।

वेह्लरिआ खी [दे] बली, लता (पड्ड)।

वेह्लरी खी [दे] केश्या, बारागमा (दे ७,

७६, पड्ड)।

वेह्लविअ देवो वेह्लवि (से १, २६)।

वेह्लविअ वि [दे] विलिप्त, पीता द्रुमा (से १, २६)।

वेह्लइल } वि [दे] १ नीमल, युद्ध (दे ७,

वेह्लइल } १६६, पड्ड, गउड, सुपा ५६२,

स ७०४)। २ विलासी (दे ७, १६, पड्ड,

सुपा ५२)। ३ मुचुर (गा ५६८)।

वेह्लो खी [दे. यही] सला, बली (दे ७,

१४४)।

वेह्लालअ वि [दे] संकुचित, सकुचा द्रुमा (दे ७, ७६)।

वेह्लि देवो वलि (उज, कुमा)।

वेह्लिअ वि [वेह्लिअ] १ कंपाना द्रुमा (से ७,

५१)। २ प्रेत (से ६, ६५)।

वेह्लि वि [वेह्लिअ] कांपनेवाला (गउड)।

वेह्ली देवो वेह्लि (गा ८०२, गउड)।

वेव भक [वेव] कांपना । वेवइ (हे ४,

१४७, कुमा, पड्ड)। वड्ड. वेवव, देवमाण

रमा, कम्प, कुमा)।

वेवज्ज न [वेवज्ज] विपाह, शादी (राज)।

वेवण्ण न [वेवण्ण] फोकापन (कुमा)।

वेवथ पुन [वेवथ] रोम विशेष, कम्प

(भावा)।

वेवाइअ वि [दे] उल्लसित, उल्लास प्राप्त

(दे ७, ७६)।

वेवाहिअ वि [वेवाहिअ] सक्थी, विवाह-

संकथवाला (सुपा ४६६, कुज १७७)।

वेविअ वि [वेविअ] १ कम्पित (गा १६२,

पाप्र)। २ पु. एक तरह-स्वान (वेव्नेर २७)।

वेविर वि [वेविर] कांपनेवाला (कुमा हे २,

४५, ३, ११३)।

वेव्ज्ज म [दे] धामन्त्र-सूचक ग्रन्थ (हे २,

१६४, कुमा)।

वेव्ज्ज म [दे] इन धर्मों का सूचक ग्रन्थ—

१ भय, डर । २ बारण, स्फाट । ३ विपाद,

लेद । ४ धामन्त्र (हे २, १६२, १६४,

कुमा)।

वेस पु [वेव] शरीर पर बज्ज प्रादि की छना-

वट (कम्प, स्वज ५२, सुपा १८६, १८७,

गउड, कुमा)।

वेस वि [वेव] विशेष रूप से बालनीय

(वव ३)।

वेस पु [वेव] १ विरोध, वैर । २ झुगा,

झरोति (गउड. भवि)।

वेस वि [वेव] वेधोचित, वेध के योग्य

(भय २, ५—पत्र १३७, मुज्ज २०—

पत्र २६१)।

वेस वि [वेव] १ वेध करने योग्य, झरो-

विवर (पउम ८८, १६, गा १२६; गुर २,

२०८, दे ४१)। २ विरोध, शत्रु, दुश्मन

(सुपा १२२, उज ७६८ टी)।

देस देवो वइस्स=वेस्य (भवि)।

वेसइअ वि [वेवपिक] विषय से संबंध

रखनेवाला (पि ६१)।

वेसपायण देवो वइस्सपायण (हे १, १५२-

पड्ड)।

वेसभ पुं [विश्रम्भ] विरवास (पउम २८,

५४)।

वेसंभरा खी [दे] गृहगोधा, द्विपत्नी (दे ७,

७७)।

वेसन्निउज न [दे] द्वेप्यत्न, विरोध,

दुश्मनाई (दे ७, ७६)।

वेसण न [दे] सक्थीय, लोकाभाव (दे ७,

७५)।

वेसण न [वेवण] जीरा प्रादि मसाला

(पिड्ड ५४)।

वेसण न [वेसण] बना प्रादि द्विदल—दान

का माटा, वेसन (पिड्ड २५६)।

वेसमण पु [वेसमण] १ यत्नराज, कुबेर

(पाप्र, ख्याय १, १—पत्र ३६, सुपा

१२८)। २ इन्द्र का उत्तर दिशा का लोकापल

(सम ८६; भग ३, ७—पत्र १६६)। ३

एक विद्याधर नरेश (पउम ७, ६६)। ४

एक राजकुमार (विपा २, ६)। ५ एक

शेठ का नाम (सुपा १२८, ६२७)। ६

महोपाय का चौदहवां प्रवृत्त (मुज १०, ११;

सम ५१)। ७ एक देव-विमान (देवन्द

१४४)। ८ सुव हिमवान् प्रादि पर्वतों के

शिखरों का नाम (ठा २, ३—पत्र ७०,

८०, ८—पत्र ४१६, ८—पत्र ४५४)।

‘काइय पु [‘कायिक] वैद्यमण खी ब्रामा

मे रहनेवाली एक देव-जाति (भग ७, ७—

पत्र १६६)। ‘दत्त पु [‘दत्त] एक राजा

का नाम (विपा १, ८—पत्र ८८)।

‘देवराइय पु [‘देवरायिक] वैद्यमण के

प्रयोग्य एक देव-जाति (भग ३, ७—पत्र

१६६)। ‘प्यभ पुं [‘प्रभ] वैद्यमण के

उत्पात-पर्यंत का नाम (ठा १०—पत्र ४८२)।

‘भद पुं [‘भद्र] एक जैन मुनि (विपा

२, ३)।

वेसम्म न [वेवम्म] विषमता, भयमानता

(ग्रन्थ ५, पत्र २११ टी)।

वेसर पुंथी [वेसर] १ पति विरोध (पउह

१, १—पत्र ८)। २ घरवत, सक्थर ।

खी ‘री (गुर ८, १६)।

वेसलगा धुं [वृषल] गृह, शयन-जातीय
मनुष्य (सूत्र २, २, ५४) ।
वेसयण धुं [वैशयण] देसो वेसमण (हे १,
१५२; चंद; देवद २७०) ।
वेसवाडिय धुं [वैशवाडिक] एव जैन मुनि-
गण (बण) ।
वेसवार धुं [वेसवार] घनिया भादि मसाला
(कुप्र ६८) ।
देसा देसो वेस्सा (कुसा; मुर ३, ११६;
सुपा २३५) ।
वेसाणिय धुं [वैसाणिक] १ एक अन्तर्हीन ।
२ अन्तर्हीन विशेष में रहनेवालो मनुष्य-जाति
(ठा ४, २—पत्र २२५) ।
वेसानर देसो वदसानर (मट्टि ६ टी) ।
वेसायण देसो वेसियायण (राज) ।
वेसालिअ वि [वैशालिक] १ समुद्र में
उत्पन्न । २ विरालाख्य जाति में उत्पन्न ।
३ निराल, बडा, विस्तोर्ण; 'मच्छा वेसालिया
वे' (सूत्र १, १, १, २) । ४ धुं, भावान्
श्रमपदेव (सूत्र १, २, ३, २२) । ५
भगवान् महावीर (सूत्र १, २, ३, २२;
भग) ।
वेसाली धी [वैशाली] एक नगरी का नाम
(बण्य, ३१०) ।
वेसास देसो वीसास, 'को निर वेसासु
वेसानो' (धर्मवि ६५) ।
वेसासिअ वि [वैशासिक, विशास्य]
निराल-वोधक, निरालनीय, विश्वास-नाश
(ठा ४, ३—पत्र १४२; पिया १, १—पत्र
१५; बण्य; धी, तं ३५) ।
वेसाह देसो वदसाह (नाम; वव १) ।
वेसाही धी [वैशारो] १ पैराह मास की
गृणिमा । २ पैराह मास की भ्रमान्त (रव) ।
वेसि वि [वैषित्] देव करनेवाला (पउम
८, १८७; मुर १, ११५) ।
वेसिअ देसो वदसिअ (दे १, १५२) ।
वेसिअ धुं धी [वैशिक] १ वैश्य, गणिक
(सूत्र १, ४, २) । २ न, जेअर राज-
निये, नाम साध (धनु १६; राज) ।
वेसिअ वि [वैशिक] वैश्य-वर्ण, वैश्य-सम्बन्धी
(सूत्र २, १, २६; पापा २, ६, ४, १) ।

वेसिअ वि [वैषित्] १ विशेष रूप से
भूमिलपित । २ विविध प्रकार से भूमिलपित
(भग ७, १—पत्र २६३) ।
वेसिट्ठ देसो वदसिट्ठ (धर्मसं २७१) ।
वेसिणी धी [वै] वैश्या, गणिका (गा
४७४) ।
वेसिया देसो वेस्सा, 'कामासतो न मुण्ड
यम्मागम्पि वेसियाणुव' (मत्त ११३; ठा
४, ४—पत्र २७१) ।
वेसियायण धुं [वैश्यायण] एव बाल सायन
(भग १५—पत्र ६६५, ६६६) ।
वेसी धी [वैश्या] वैश्य जाति की धी (सुव
३, ४) ।
वेसुम धुं [वैशमन्] गृह, घर (प्राङ् २८) ।
वेस्स देसो वदस्स = वैश्य (सूत्र १, २, २) ।
देस्स देसो वेस्स = दैव्य (उत्त १३, १८) ।
वेस्स देसो वेस्स = वैष्य (राज) ।
वेस्सा धी [वैश्या] १ पराधाना, गणिका
(विसे १०३०, गा १५६; ८६०) । २
भौषिक-विशेष, पाक का नाश्त (प्राङ् २६) ।
वेस्सासिअ देसो वेसासिअ (भग) ।
वेह सक [प्र + ईक्ष] देखना, धवलोकन
करना, 'जहा संयामवात्सि निट्ठो भीर
वेह' (सूत्र १, ३, ३, १) ।
वेह स [वयध] वीचना, देखना । वेह
(पि ४८६) ।
वेह धुं [वैध] १ वैधन, देह (सम १२५,
वज्जा १४२) । २ अनुवीध, अनुगम, मियण ।
३ धूल-विशेष, एक तरह का लुमा (सूत्र १,
६, १७) । ४ अनुवीध, अत्यन्त देव (परह
१, ३—पत्र ४२) ।
वेह धुं [वैधस्] विधि, विधायता (मुर
११, ५) ।
वेहण म [वैधन] वैधन, देह करना (राय
१४१, धर्मवि ७१) ।
वेहणम देसो वदधणम (ठा १०३१ टी;
धर्मसं १८५ टी) ।
वेहण्य धुं [वैधन्य] राज येतिज का एक
धुन (धनु १, २, निर १, १) ।

वेहण सक [वयध] ठाना । वेहण (हे
४, ६३; पद) ।
वेहण म [वैभय] विभूति, ऐश्वर्य (मयि) ।
वेहविअ धुं [वै] १ मनादर, विरक्तार ।
२ वि. कोषी (दे ७, ६६) ।
वेहविअ वि [वैवचत] प्रतापित (दे ७,
६६ टी) ।
वेहवण न [वैधवण] १ विधवापन, रंडापा,
रक्षित (गा ६३०; हे १, १४८; गदह;
सुपा १३६) ।
वेहाणस देसो वेहायस (भाषा २, १०, २;
ठा २, ४—पत्र ६३, सम १३; छाया १,
१६—पत्र २०२, भग) ।
वेहाणसिय वि [वैहायसिक] फाँसी भादि
से सटक कर मरनेवाला (वीष) ।
वेहायस वि [वैहायस] १ भाषा-सम्बन्धी,
भाषा में होनेवाला । २ न, मरण-विशेष,
फाँसी लगा कर मरना (वव १५७) । ३ धुं,
राजा येतिज का एक धुन (धनु) ।
वेहारिय वि [वैहारिक] विहार-सम्बन्धी,
विहार-प्रवण (सुव २, ५५) ।
वेहाम न [विहायस्] १ भाषा, गगन
(छाया १, ८—पत्र १३४) । अन्तरात्,
वीष भाग (सूत्र १, २, १, ८) ।
वेहाम देसो वेहायस (वव १५७, धनु १) ।
वेहिम वि [वैधिन, वैध] ठोहने वोधक, दो
दुबड़े करने योग्य (दय ७, ३२) ।
वेडंठ देसो वेडुंठ (गनु १५०) ।
वैभय देसो वेहय (वि १०३) ।
वोअस द्वा वोअस । वज्ज, वीयसिज्जमाण
(भग) ।
वोइय वि [वपेन] वज्र, रहित (भरि) ।
वोट देसो वित = वृत्त (हे १, १६६) ।
वोनिअ वि [वै] गृह-गृह, घर में वीर करने-
वाला, मूत्र दूर (दे ७, ८०) ।
वोर्दास न [वै] रोमन्, पसी हुई चीज
को पुन बचाना (दे ७, ८२) ।
वोध म [वि + शपथ] विप्रतिज करना ।
वोअद (हे ४, ३८) । वट. वोअन
(कुसा) ।

बोका सक [व्या + ह, उद् + नद्] पुकारना, ब्राह्मण करना। बोकाइ (पद्, प्राक् ७४)।

बोका सक [उद् + नद्] अभिनय करना। बोकाइ (प्राक् ७४)।

बोकाव वि [व्युत्क्रान्त] १ विपरीत क्रम से स्थित (हे १, ११६)। २ अतिरक्त, 'पञ्च मनयवर्कत त वरुष दवद्विगुस्त बगणैज' (सम्म =)। देखो युक्त।

बोकास सक [व्यप + कृप्] हास प्राप्त करना, कमी करना। कवक बोकासिजमाण (भग ५, ६—पत्र २२८)।

बोकास देखो बोकास (सूत्र १, ६ २)।

बोकास देखो बुकास = व्युत् + कृप्। बोकासाहि (प्राक् २, ३, १, १४)।

बोका की [दे] बाय विशेष, उक्ताबोकाए रवो विधिमो 'यपगणए' (सुपा २४२)। देखो युक्त।

बोका की [व्याहृति] पुकार (उप ७६८ टी)।

बोकार देखो बोकार (सुर १, २४६)।

बोकास देखो बोका = उद् + नद्। बोकाइ (प्राक् ५४४)।

बोकासदय पु [अपरानन्द] आक्रमण (महा)।

बोकासायि वि [दे] विमुक्ति 'अपरदेवग-वत्तवोत्तारियणमस' (स २३६)।

बोगड वि [व्याहृति] १ महा हुमा, प्रतिपावित (सूत्र २, ७, ६८ भग कस)। २ परिस्तुत (आचानि २६२)।

बोगडा की [व्याहृति] प्रकट भय वाली भाषा (पण ११—पत्र ३७४)।

बोगसायि वि [व्युत्क्रपित] निष्पातित, बाहर निकला हुमा (वदु २)।

बोच [पद्] बोचना, कहना। बोचद, बोच [बोचद] (प्राक् १४४)।

बोचय वि [व्यदयवत्] विपरीत, उल्टा 'द्विगित्सेम (पम) बुद्धिबोचय' (उत् ८, ५, मुल ८, ५, विते ८५३)।

बोचय न [दे] निरीत रह (हे ७, ५८)। बोचट देखो वय = वय्।

बोच्छिद सक [व्युत्, व्यप + छिद्] १ भगना, छोड़ना, सहित करना। २ विनाश करना। ३ परित्याग करना। बोच्छिद (उत् २६, २)। अवि बोच्छिद्विहीत (पि ५३२)। कर्म. बुच्छिज्ज, बोच्छिज्ज, बोच्छिज्ज (कम्म २, ७, पि ५४६, काल)। अवि. बोच्छिज्जिहति (पि ५४६)। वक्क बोच्छिदत्त, बोच्छिदमाणा (पि १५, ६२, ठा ६—पत्र ३५६)। कवक बोच्छिज्जत्त, बोच्छिज्जमाण (से ८, ५, ठा ३, १—पत्र ११६)।

बोच्छिज्ज देखो बोच्छिज्ज (विपा १, २—पत्र २८)।

बोच्छिज्ज की [व्यवच्छिज्ज] विनाश 'ससारवोच्छिज्जो' (विते १ ३३)। 'णय पु' [नय] पर्याय नय (णदि)।

बोच्छिज्ज देखो बुच्छिज्ज (भग, कव, सुर ४, ६६)।

बोच्छेअ } पु [व्युच्छेद, व्यवच्छेद]
बोच्छेद } उच्छेद, विनाश, ससारवो-
च्छेदकरे (आया १, १—पत्र ६०, वरस २२८)। २ समाप्त, अभावित (कम्म ६, २३)। ३ प्रतिवन्ध, रुकावट निरोध (उवा, पचा १, १०)। ४ विभाज (मउठ ७४०)।

बोच्छेयण न [व्युच्छेद] १ विनाश (वेद्य १२४, पिड ६६६)। २ परित्याग (ठा ६ टी—पत्र ३६०)।

बोच्च देखो बुच्च। बोच्च (हे ५, १६८ टी)। बोच्च सक [वीज्य] हवा करना। बोच्च (हे ५, ५, पद्)। वक्क बोच्चत्त (कुमा)।

बोच्चर वि [वसित्] उल्टेवाला (कुमा)।

बोच्चर देखो वह = वह्। अवि तेण कालेण तेण समएण गगसिधुमो महानदीधो रवह्प विचरामो अन्तसोयणमाएमेस जणं बोच्चर-द्विति' (भग ७, ६—पत्र ३०७)। क. 'नासालोसावयवोच्चर मनुय' (आया १, १, १—पत्र २५, राम १०२, प्राक्)।

बोच्चर } पु [दे] बोक्क, मार, 'अवि-
बोच्चरमह' } बोच्चर पत्तयवोच्चरमत्त' च
(हे ७, ८०)।

बोच्चर वि [दे] १ अतीत। २ श्वेत, प्रस्त (हे ७, ६६)।

बोद्धि वि [दे] सक, तीन (पद्)।

बोड वि [दे] १ छुट। २ धित्त-कर्ण, जिसका काम कट गया हो वह (गा ५४६)। देखो बोड।

बोडही की [दे] १ तच्छो, पुवति। २ कुमारी, सिक्कतु बोडहीमो (गा ६६२)। देखो बोड्रह।

बोडु वि [दे] मूल, वेवकूक (उव)।

बोड वि [उड] वटन किया हुआ (घावक १५४)।

बोड वि [दे] देखो बोड (गा ५५० प)।

बोडव देखो वह = वह्।

बोडु वि [बोड] वहन कर्ता (महा)।

बोडु देखो वह = वह्।

बोडूण म [उड्ढवा] वहन कर (पि ५८६)। योत्तवय देखो वय = वय्।

बोडूआण म [उड्ढवा] कह कर (पद्—पु १५३)।

बोत्त } देखो वय = वय्।
बोत्तूण }

बोदाण न [व्यवधान] १ कर्म निर्णय, कर्म का विनाश (ठा ३ ३—पत्र १५६, उत्त २६, १)। २ मुक्ति, विशेष कर से कर्म-विशोधन (पचा १५, ४ उत्त २६, १, भग)। ३ तप, तपधर्मा (सूत्र १, १४, १७)। ४ वनस्पति विशेष (पण १—पत्र १४)।

बोद्रह वि [दे] तच्छो मुवा (दे ७, ८०), 'बोद्रहहम्मि पाडिमा' (हे २, ८०)। की. 'ही, सिक्कतुबोद्रहीमो' (हे २, ८०)।

बोमीसण वि [दे] यराक दीन, गरीब (दे ७, ८२)।

बोम न [व्योमन] धारात गगन (प्राक्, विते ६२६)। 'वन्दु पु' [विन्दु] एक राजा का नाम (पत्र ७, ५३)।

बोमज्ज पु [दे] अनुचित वेप (दे ७, ८०)।

बोमज्जिअ न [दे] अनुचित वेप का रहण (हे ७, ८० टी)।

बोमिल पु [व्योमिल] एक जैन मुनि (रूप)।

बोमिला की [व्योमिल] एन जैन मुनि-शाखा (रूप)।

योग पुं [वोह] एक देश का नाम (पत्र ६८, ६४) ।

योरच्छ वि [दे] तरुण, युवा (दे ७, ८०) ।

योरमण ॥ [व्युपमण] हिसा, प्राणि वष (पत्र १, १—पत्र ५) ।

योरली श्री [दे] १ थावण मास की शुक चतुर्दशी तिथि में होनेवाला एक उत्सव । २ थावण मास की शुक चतुर्दशी (दे ७, ८१) ।

योरविअ वि [व्यपरोषित] जो मार डाला गया हो वह, 'सकारिता कुपल दिन्न विदएण योरविओ' (वष १) ।

योरुदी श्री [दे] वई से भरा हुआ वस्त्र (पत्र ८४) ।

योल सक [गम्] १ गति करना, चलना । २ गुजारना, पसार करना । ३ अतिक्रमण करना, उत्तम बनना । ४ सक, गुजरना, पसार होना । योलइ (प्राह ७३, दे ४, १६२, महा, धर्मस ७५५), काल बोवेद (पुत्र २२४), योलति (वज्रा १४८, धर्मवि ५३) । वह, योलंत, योलेंत (कुमा. गा २१०, २२०; पत्र ६, ५५, से १५, ७५ सुपा २२४, से ६, ६९) । सह, योलिऊण, योलेंता (महा, धार) । क, योलेंअण (से २, १, सः ६३) । प्रयो, सह, योलाविउ, योलावेउ (सुपा १४०, गा ३४६ म ७) । देको योल = व्यति + क्क ।

योल देको योल = दे (दे ६, ६०) ।

योल्ट सक [व्युप + लुट्] धनवाना । वह, योल्टमाण (मग) ।

योलायिअ रि [गमित] प्रतिज्ञामित (वज्रा १५, गुपा ३३४, गा २१) ।

योलिअ वि [गन्] १ गया हुआ (प्राह योलीण ७७) । २ गुमरा हुआ, जो पगार हुआ हो वह व्यतीत (सुर ६, १६, महा, पत्र ३५, सुर ३, २५) । ३ अतिमान,

उत्तमिप (पाम, सुर २, १, कुत्र ४५, से १, ३, ४, ४८; गा १७, २५२, ३४०, दे ४, २५८, कुमा महा) ।

योल सक [आ + क्कम्] आक्रमण करना । योलसइ (धत्ता १५४) ।

योलाइ पु [योलाइ] देश विशेष (स ८१) ।

योलाइ वि [योलाइ] देश विशेष में उल्लन (स ८१) ।

योवाल पुं [दे] बुधम, जल (दे ७, ७६) ।

योसग्ग पु [व्युत्सर्ग] परित्याग (विसे २६०५) ।

योसग्ग } सक [यि + उस्] १ विकसना,
योसट्ट } खिलना । २ बढ़ना । योगणइ,
योसट्ट (पट्ट, दे ४, १६५, प्राह ७६) ।

यह, योसट्टमाण (मग गा ८२८) ।

योसट्ट सक [यि + कासय्] १ विनाश करना । २ बरना । योसट्टइ (धत्ता १५४) ।

योसट्ट वि [विउसिन] विनाश प्राप्त (हे ४, २५८, प्राह ७७) ।

योसट्ट वि [दे] मर कर लाना किया हुआ (दे ७, ८१) ।

योसट्टिअ वि [विउसित] विनाश प्राप्त (कुमा) ।

योसट्ट वि [व्युत्सुट्] १ परित्यक्त, छोड़ा हुआ (कण, वस, आष ६०५, उत्त ३५, १६, आषा २, ८, १, पवा १८, ६) । २ परित्यक्त-रहित, तात्कालिक-रहित (सुध १, १६, १) । ३ बायोसर्ग में स्थित (वस ५, १, ६६) ।

योसमिय वि [व्यपशमिन] उपशमित, शांत किया हुआ, 'लामिन् योसमियाई भगिरत्ताइतु जे उलीरेंति । ते पाणा नायय्या' (ठा ६ टी—पत्र ३७१) ।

योसर } सक [व्युत् + म्ज] परित्याग
योसिर } करना, छोड़ना । योसर्मो,
योसिरइ, योसिरमि (पत्र २३७, महा, या

औप), योसिरिआ, योसिरे (पि २३५) । वह, योसिरंत (पुत्र ८१) । सह, योसिज्ज, योसिरिआ (सुप १, ३, ७, पि २३५) । क, योसिरियण (पत्र ४६) ।

योसिर वि [व्युत्सर्जन] छोड़नेवाला (उप पृ २६८) ।

योसिरण न [व्युत्सर्जन] परित्याग (हे २, १७४, या १२, थावण ३७६, योप ८५) ।

योसिरिअ देको योसट्ट (पत्र ४, ५२, धर्मस १०२१, महा) ।

योसेअ वि [दे] लुब्ध गत (दे ७, ८१) ।

योहिअ न [यहिअ] प्रवहण, गहन, नीचा (गा ७४६) । देको योहिअ ।

योहार न [दे] जल-बहन (दे ७, ८) ।

व्युट्ट पु [दे] विद, भट्टमा (पट्ट) ।

ग्रन् देको यद = वृत्त (प्राह) ।

ग्रत्त (धर) देको यय = ग्रन् (हे ४, १६४) ।

आकोस (पत्र) पु [उपाकोश] १ शाय । २ निन्दा । ३ विरुद्ध चिन्तन (प्राह ११२) ।

आगरण (मग) देको आगरण (प्राह ११२) ।

आडि (मग) पु [उपाडि] सक्त व्याकरण

और कोष का कर्ता एक मुनि (प्राह ११२) ।

आस देको वास = ध्याम (हे ४, १६६, प्राह ११२, पट्ट, कुमा) ।

अव देको इअ (हे २, १८२, कम्प, रंभा) ।

अव देको या = अ (प्राह २६) ।

*अअ देको यय = अण (कुमा) ।

अअसिअ देको अअसिय = अयसिअ (मगि १२४) ।

*अअ देको याय = व्याज (मा २२) ।

*अअर देको आरार = व्यापार (मा ३९) ।

*आयुड देको आयुड (मगि २४६) ।

*आहि देको याहि (मा ४२) ।

अय देको इअ (प्राह २६) ।

अवे य [द] सवोधन सूत्र चम्पय (प्राह ८०) ।

॥ इअ गिरिपाइअसहमहण्यमि यपादाइअसहमहण्ये
पचोमिअमो तरंको समतो ॥

श

शिआल (मा) पुं [श्याल] बहू का भाई, | श्रिट (मा) देखो चिट्टु—स्था। श्रिटिदि
साला (प्राक् १०२, मुन्ध २०४)। (धात्वा ११४, प्राक् १०३)।

॥ एम विरिपाइअसइमहण्णमि राभायइसइकतलो
छत्तीसइमो तरगी समतो ॥

स

स पुं [स] वयजन वर्ण-विशेष, इसका उच्चारण स्थान दाँत होने से यह इन्ध कहा जाता है (प्राक्)। *अण, *गण पुं [गण] पिणल प्रसिद्ध एक गण, जिसमें प्रथम के दो ह्रस्व मोर सोहरा प्रसर होता है (पिण)। गार पुं [वार] स अक्षर (वर्तन १०, २)।

स देखो सं = सम् (पद्, पिण)।

स पुं [सम्] धान, कुत्ता (हे १, ५२, ३, ५६, पद्)। *पाग पुं [पाक] अण्डाल (उव)। *सुहि पुं [सुरि] कुत्तों की तरह आचरण, कुत्तों की तरह मरण—भूकना (साया १, ६—पत्र १६०)। *सय पुं [यच] बारडाल (दे १, ६४)। *याग, *वाय देखो *पाग (हे ५६, पाग)।

स ध [सर] सुराजय, स्वर्ग (विसे १८८३)।

स वि [सत्] १ श्रेष्ठ, उत्तम (उवा, कुमा, पुत्र १४१)। २ विद्यमान, जो न उलझाए प्रसं (सूत्र १, १, १, १६)। *वरिस पुं [पुरप] श्रेष्ठ पुण्य, सज्जन (गठ)। *न्य वि [सुत] संमानित (पद् १, ४—पत्र ६८) देखो फिअ। *बहू वि [कथ] सत्य बचा (स ३२)। *विअ न [सुत] सकार, संमान (उत १५, ५), देखो बय। *गडि डी [गति] उत्तम गति—१ स्वर्ग।

२ भुक्ति, मोक्ष (भवि, राज)। *जण पुं [ज्जन] मत्ता प्रादवी सलुण्य (उव, हे १, ११, प्राप् ७)। *त्तम वि [त्तम] प्रतिशय साधु सज्जनों में पतिभेद (सुपा ६५५, या १४, सार्थ ३)। *थाम न [स्थामन] प्रशस्त नल (पठ)। *धम्मिअ वि [धार्मिक] श्रेष्ठ धार्मिक (या १२)। *ज्ञाण न [ज्ञान] उत्तम ज्ञान (या २७)। *प्यभ वि [प्रभ] सुन्दर प्रभा वाला (राय)। *पुुरिस पुं [पुरुष] १ सज्जन, मत्ता प्रादवी (भवि २०१, प्राप् १२)। २ विपुल विकास के दक्षिण दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। ३ श्रेष्ठिष्ण (कुत्र ४८)। *फल वि [फल] श्रेष्ठ फलवाला (पञ्च ३१)। *मान पुं [भाव] १ सम्भ्र, उत्पत्ति (उव ७२६)। २ सत्य, प्रतिलिख (सम् ३७ ३८, ३६)। ३ सुन्दर भाव, चित्त का मन्त्रा अभिप्राय, *सम्भावो पुण उज्जुणणास कोडि विसेसे (प्राप् ६, १७२, उव, हे २, १६७)। ४ भावार्थ, सत्यार्थ (सुत्र १०१)। ५ विद्यमान पदार्थ (पण्णु)। *भावदायाणां को [भावदर्शन] भावोचना, प्रायश्चित्त के लिए निज दोष का गुणवि के समान प्रकटीकरण (भोष ७६१)। *मायिअ वि [भाविन] सद्भावयुक्त (स २०१, ६६८)। *भूअ वि

[भूत] १ सत्य, वास्तविक, सच्चा, 'सम्भू-एहि भावेहि' (उवा)। २ विद्यमान (पचा ४, २४)। *याचार पुं [आचार] प्रशस्त आचरण (रयण ११)। *रूप वि [रूप] प्रशस्त रूपवाला (पठम ८, ६)। *ह्म पुं [लम] प्रशस्त संवरण, इन्द्रिय समम (सूत्र २, २, ५७)। *वाय पुं [वाद] प्रशस्त वाद (सूत्र २, ७, ५)। *वाया की [वाच] प्रशस्त वाणी (सूत्र २, ७, ५)।

स पुं [स्व] १ भात्मा, छुल (उवा, कुमा, सुर २, २०६)। २ ज्ञाति, नात (हे २, ११४, पद्)। ३ वि, भारतीय, स्वीय, निजी (उवा, शोषमा ६, कुमा, सुर ४, ६०)। ४ न पन, इय (पचा ८, ६, पाचा २, १, १, ११)। ५ कर्म (पाचा २, १६, ६)। *गडिअ वि [श्रुतभिद] निज के लिए हुए यमों का विनाश (वि १६६, भावा १, ३, ४, १४)। *जय पुं [जन] १ ज्ञाति सगा। २ प्रामोय लोग (स्वज ६७ पद्)। *तत वि [तन] १ स्वाधेन, स्व-वश (विसे २११२, दे ३, ४३, मन्ध १)। २ न स्वकीय सिद्धान्त (निह ११)। *थ वि [स्थ] १ तंदुरुस्त, स्वभाव स्थित। २ सुख से धारणित (पात्र, पत्र २६, ३१, स्वज १०६, सुर १०, १०४, सुपा २७६, महा, सण)। *पस्सु पुं [पथ] १ साधनिक,

समान धर्मवाला (द्र १७) । २ तरफदार (बुध ११६) । ३ प्रपन्ना पत्र (सम्प २१) । पाय न [पाय] निज का नाम, खुद की संज्ञा (राज) । प्यभ वि [प्रभ] निज से हो शोभनेवाला (यम १३७) । प्यभान, भाय वृ [भाव] प्रकृति, नित्यता, 'नक्षिपारतक नवकण्ठिणारमुदेरिप्रसन्नभाषो' (कुमा ३, ४४, सम्प २१, मुर १, २७, ४, १२५); 'बुधियत्स पादरत्स य

वसणासतत्स भायरत्सत्स ।

मतस्य मरत्सत्स य

सन्मावा पायका हति"

(प्रासू १४) ।

*भायन्तु वि [भायन्] स्वभाव का जान-कार (पठम ८६, ४१) । यण देखो 'जण (उवा, हे २, ११४, मुर ४, ७६, प्रासू ७६, १४) । रुय, रुय न [रुय] स्वभाव (गठक, धर्मसं ६११, बुना, अर्थ, मुर २, १४२) । संयेयण न [संयेदन] स्व-प्रत्यक्षता (धर्मसं ४४) । द्वाअ, द्वाय देखो भाय (वि १, १५, ७, १७, गठक मुर १, २२, प्रासू २, १०१) । द्वायान्द वृ [भायान्द] स्वभाव से हो सब कुछ होता है ऐसा माननेवाला मत (अन १००३) । द्वाअन [द्वाय] निज भा भावा, स्वोय—मननी भगई । २ वि, निज भा भावा करने-वाला, स्वहितकर (मुवा ४१०) ।

सं नि [सं] १ महिद, मुन (सम १३७, भग, उवा, मुवा १६२, सण) । २ समान, मुन्य, 'समुत्ते', 'सपत्ते' (बण, निर १, १) । अण्ड वि [दृण्य] उररिण्ड, उणुव (न १२, १८, गा १४८, गठक, मुवा १८४) । अर नि [र] बर-महित (वि २, २६) । अर वि [गर] विप-मुन, जेरीला (मे २, २६) । इण्ड देला अण्ड (मुवा ४१२) । उग नि [गुग] गुण-मुन (मुवा १८५) । उण्ण, उअ नि [उण्ण] गुण-मुन, गुण-व्यक्ती (महा, मुर २, ६८, मुरा १११) । ओस नि [ओप] कण्टु (उ ७२८ टी) । ओस वि [ओप] दोष-मुन (उर १२८ टी) । भास नि [भास] १ वृद्ध मनोरथवाला (सम्प ३०) । २ मनोरथ-मुन,

हृद्वावाला (राज) । सामणिज्जरा क्षी [कामनिज्जरा] कर्म-निर्णय का एक मेद (राज) । साममरण न [काममरण] मरण विशेष, परिणत-मरण (उत्त ५, २) । कैय वि [केव] १ गृहस्थ । २ प्रत्याख्यान-विशेष (पव ४) । क्खर वि [क्खर] विद्वान्, जानकार (वज्जा १५८ सम्पत्त १३३) । गार वि [गार] गृहस्थ (भोषभा २०) । गार वि [गार] भाकार-मुन (धर्मवि ७२) । गुण वि [गुण] गुणवान्, गुणी (उव, मुवा ३४३, मुर ४, १६६) । ग वि [ग] ओष्ठ, उत्तम (वे १, ४७) । गह वि [ग्रह] उररत्, ग्रहण-मुन, दुष्ट ग्रह से भागत (पाष वव १) । धिण वि [धुण] दयालु (अच्छु ५०) । चम्पु, चक्कुअ नि [चक्षुप, चक्षुण] नेत्र-वाला, देखता (पठम ६७ २३, वसु स ७८, विवा १, १—यव २३) । चित्त वि [चित्त] चेतनावाला, सजीव (उवा, पदि) । चैयण वि [चैतन] वही धर्म (विसे १७५३) । चित्त देवा चित्त (मोप २२, मुवा ६२५, ६२६ वि १६६, १५०) । जिय देवा ज्ञाअ (मुर १२, २१०) । जोइ नि [उद्योतिष] प्राण-मुन (वि ४११, मुर १, ५, १, ७) । जोणिय वि [योनि] उल्फि-स्वल्पवाला, संसार (डा २, १—यव ३८) । जीअ, जीय नि [जीय] १ व्या-मुन, वपुष की ओर-वाला । २ संवेदन, जीववाला (वि १६६, मे १, ४५) । ३ न कला विशेष मुन धातु योग्य हो सजीव करने का ज्ञान (योग, राज, जं २ टी—यव १३७) । हट्ट नि [अपि] डेह । हट्टाल धुं [अपि] सन-रिषे भेद । हट्टाल ठव (अवोष ५८) । णप्पय, णप्पद, णप्पय नि [नयपद] नय-मुन देखता, मिह भादि रगाद जंतु (मुप २, ३, २३, डा ४, ४—यव २७३; मुर १, ५, २, ७, पण १—यव ४६, वि १४८) । णाह वि [नाय] ह्मा-वाला, शिखा बोर्ड मानिक हो बड़ (रिवा १, २—यव ३०, रंभा कुमा) । सण्ड वि [दृण्य] दृष्ट्या-मुन, उररिण्ड,

उत्तुक (वे १, ४६) । त्तर वि [त्तर] १ त्तरा-मुन, वेगवाला । २ न, शीघ्र, जल्दी (मुवा १५६) । त्र वि [त्रि] धर्म सहित, डेह (पठम ६८, ५४) । धवा क्षी [धवा] शीघ्रागवती क्षी, जिसका पति जीवित हो वह क्षी (मुवा ३६५) । नय वि [नय] ग्याय-मुन व्याजवी (मुवा ५०४) । पयर वि [पय] १ पंचावाला, पक्षी से युक्त (वे २, १४) । २ सहायता करनेवाला, सहायक, मित्र (पव २३६, स ३६७) । ३ समान पार्ष्ववाला, दक्षिण भादि तरफ से जो समान हो वह (निर १, १) । पुअ वि [पुण्य] गुणवशती, गुणवशात् (मुवा ३८४) । प्यभ नि [प्रभ] प्रमा-मुन (सम १३०, भग) । प्यरिआय, प्यरिताय वि [परिताय] परिताय—संसार से युक्त (आ ३७, पद्) । प्यिस-आय वि [प्यिआय] पिशाच-गृहीत, घाम (पण्ड २, ५—यव १५०) । प्यिआम नि [प्यिआम] सुगन्ध, सद्गुण (हे २, ६७) । प्यिह वि [प्यिह] सहायता (हे ७, २६) । प्यंइ वि [पयंइ] बलामान (हे ८, ८) । प्कल, प्कल वि [क्कल] सायं (न १५, १४, हे २, २०४, प्रा, डा ७२८ टी) । कल वि [क्कल] बन-वान् बलिष्ठ (विग) । अल बेनी कल (हे १, २३६, कुमा) । मण नि [मनत्] १ मनवाला, विवेक-मुद्रिवाला (पण २२) । २ समान मनवाला, सम-द्रव फरि ग रहित, शुनि गाधु (वसु) । मणअय नि [मनअ] गुरांत धर्म (मुर २, ४, २) । मय वि [मय] मर-मुन (प १, १६, मुवा १८८) । महिदिइअ नि [महदिइ] महाय वेमर-वाला (प्रासू १००) । मिदिअ, मिरीय नि [मिआय] फिण-मुन (भग चीर, डा ४, १—यव ३२६) । मेर नि [मयार] मर्यादा-मुन (डा ३, २—यव १२६) । यण्ड नि [यण्ड] दृष्ट्या-मुन (गठक, मुवा ३८४) । याग नि [हान] सजाना, जानकार (मुरा ३८२) । योनि वि [योनि] १ स्थावर-मुन, योगवाला । २ न, ठेठो दुष्ट स्वान्त (यव २, ११) ।

‘रय वि [रत] नामो (से १. २७) ।
 ‘रहस वि [रभस] वेग-मुक्त, उतावला
 (गा ३५४, सुपा ६३२, कपू) । ‘राग वि
 [राग] राग-सहित (ठा २, १—पत्र ५८) ।
 ‘रागसजत, ‘रागसजय वि [रागसयत]
 वह साधु जिसका राग क्षीण न हुआ हो
 (पण्ड १७—पत्र ४६४, उवा) । ‘रूप
 वि [रूप] समान रूपवाला (पत्रम =,
 ६) । ‘लूग वि [लूगण] लावण्य युक्त
 (सुपा २६३) । ‘लोग वि [लोक] समान,
 सहस्र (सङ्घि २१ टी) । ‘लोग देखो ‘लूग
 (गा ३१६ हे ४ ४४४, कुमा) । लो.
 ‘लोणी (हे ४, ४२०) । ‘वस्त्र देखो ‘पक्क
 (गड्ड, भवि) । ‘वण वि [व्रण] घाववाला,
 ऋण युक्त (सुपा २८) । ‘वय वि
 [वयस्] समान उम्रवाला (दे ८, २२) ।
 ‘वय वि [व्रन] ब्रतो (सुपा ४४१) । ‘वाय
 वि [पाद] सभा (स ४४१) । ‘वाय
 वि [वाय] वाय सहित (सुपा २ ७, ४) ।
 ‘वास वि [वास] समान वासवाला, एक
 देश का रहनेवाला (प्राप् ७६) । ‘वज्र वि
 [विष] विद्यावान् विद्वान् (उप ४ २१५) ।
 ‘वज्र देखो ‘वण (गड्ड, भा १२) ।
 ‘व्यवेक्ष वि [व्यपेक्ष] दूसरे की परवाह
 रखनेवाला, सापेक्ष (धर्मस ११६७) । ‘व्यान
 वि [व्याप] व्याप्ति युक्त, व्यापक (भा
 १, ६—पत्र ७७) । ‘विनर वि [विनर]
 विवरण युक्त सविस्तर (सुपा ३६४) ।
 ‘सक वि [शङ्क] शका युक्त (दे २, १०६,
 सुर १६, ४५ कुप ४४५ गड्ड) । ‘सकिञ
 वि [शङ्कित] बहो (सुर ८ ४०) । ‘सत्ता
 की [सत्ता] सगर्भा, गर्भिणी की (उप
 २१, ३) । ‘सिरिय, ‘सरीय वि [श्रीक]
 श्री युक्त, शोभा युक्त (पि ६८, लाया १, १,
 १) । ‘साह वि [स्पृह] स्पृहवाणा
 (कुमा) । ‘सिह वि [शिर] शिरा-युक्त
 (पत्र) । ‘सृग वि [शृ] वयल (उवा) ।
 ‘सेस वि [शेष] शेषशेष, बालो रहा
 हुआ (दे ८, ५६, गड्ड) । २ शेषभाग सहित
 (गड्ड १५) । ‘सोग, सोमिह वि [शोक]
 दिनपौर, शोक युक्त (पत्रम ६३, ४, सुर ६,
 १२४) । ‘सिसरिअ, ‘सिसरीअ देखो

‘सिरिय (पि ६८, ग्रन्थ १५६; नम सम
 १३७, लाया १, ६—पत्र १५७) ।
 सञ सक [स्वद] १ प्रीति बरना । २ चक्षुष,
 स्वाद लेना । सञइ (प्राक् ७५, पात्वा
 १५४) ।
 सञ न [सदस्] सभा (पद्) ।
 सञअ न [दे] १ शिला, पत्थर का चट्टा ।
 २ वि धूर्णित (दे ८, ४६) ।
 सञअखगत्त पु [दे] किन्तु, जुधारी (दे ८,
 २१) ।
 सञअजिअ } पुकी [दे] प्रातिवैरिमक,
 सञअज्जअ } पकोसी (गा ३३५) । लो. ‘आ
 (गा ३६, ३६ ब), सञअज्जअ सञअतोप’
 (गा ३६, पिठ ३४२) । देखो सञअज्जअ ।
 सञअडिआ देखो सगडिआ (पि २०७) ।
 सञअट्ट पु [दे] सम्भा देश (दे ८, ११) ।
 सञअट्ट पु [सुट्ट] १ वैद्य विशेष (प्राप्र,
 संवि ७, हे १, १६६) । २ पुन यान विशेष,
 गाढी (हे १, १७७, १८०) । ‘रि पु
 [रि] नरसिंह, श्लोक्य (कुमा) । देखो
 सगड ।
 सअर देखो स अर = स कर, स गर ।
 सअर देखो सगर (से २, २६) ।
 सअरा भ [सदा] १ हमेशा, निरन्तर (प्राप्र,
 हे १, ७२, कुमा प्राप् ४६) । ‘चार पु
 [चार] निरंतर गति (रण १५) ।
 सआ की [सज्ज] माला (पद्) ।
 सइ देखो सआ = सदा (पाम, हे १, ७२,
 कुमा) ।
 सइ भ [सहृत्] एव वार, एक दफा (हे
 १, १२८, सम ३५, सुर ८, २४४) ।
 सइ की [स्मृति] स्मरण, विस्मृत, याद (था
 १६) । ‘काल पु [काल] गिला मिलने का
 समय (सस ५, २, ६) ।
 सइ देखो स = स, सङ्चारियजिणपडिमाए’
 (सुपा ११०, भवि) ।
 सइ देखो सय = शत ‘असोक्क सोचावि
 कुट्टए न न सइस’ (सुर १४, २) । ‘कोटि
 की [कोटि] एक सौ शत, एक धन—
 धर (पद्) ।
 सइ देखो सइ = स्वयम् (नाल, हे ४, ३६५,
 ४२०) ।

सइ’ देखो सई = सती (सुपा ३०१) ।
 सइअ वि [शक्ति] सौ का परिमाणवाला
 (लाया १, १—पत्र ३७) । देखो सइग ।
 सइअ वि [शयित] सुप्त, सोया हुआ (दे
 ७, २८, गा २५४, पत्रम १०१, ६०) ।
 सइएल्ल देखो स = स्व, ताव य भाग्यो
 परिव्यायोमो अस्सदेलाभो सएल्लए दालिह-
 पुखिं धेतुल्ल (महा) ।
 सइ देखो सइ = सहृत् (प्राभा) ।
 सइ देखो सय = स्वयम् (ठा २, १—पत्र
 ६३ हे ४, ३३६, ४०२, भवि) ।
 सइग वि [शक्ति] सौ (स्वपा आदि) की
 कीमत का (धर्मि ३, १३) ।
 सइअ } पुकी [दे] प्रातिवैरिमक, पकोसी
 सइअज्जअ } (दे ८, १०) । लो. ‘आ (सुपा
 २७८, पिठ ३४२ टी, वज ६४) ।
 सइअज्जअ न [दे] प्रातिवैरिय, पकोमिपन
 (दे ८, १० टी) ।
 सइण्य न [सि-य] सेना, लश्कर (पद्) ।
 सइत्तए देखो सय = शी ।
 सइदसण वि [दे. स्मृतिदर्शन] मनो-दृष्ट,
 चित्त में अवलोकित, विचार में प्रतिभासित
 (दे ८, १६, पाम) ।
 सइदिट्ट वि [दे. स्मृतिदृष्ट] ऊपर देखो (दे
 ८, १६) ।
 सइस देखो सइण्य (हे १, १५१, कुमा) ।
 सइम वि [शततन] सौवा, १०० वां (लाया
 १, १६—पत्र २१४) ।
 सइर न [स्ये] १ स्वेच्छा, स्वच्छदता (हे
 १, १५१, प्राप्र, लाया १, १६—पत्र
 २३६) । २ वि मन्द, घनस (पाम) । ३
 स्वेरी, स्वच्छदी (पाम प्राप्र) ।
 सइररसद पु [दे. रयेरयुपभ] स्वच्छदी
 खाद, धर्म के लिए छोड़ा जाता वेल (दे २,
 २५, ८, २२) ।
 सइरि वि [स्येरिन्] स्वच्छदी, स्वेच्छाचारी
 (गच्छ १, ३८) ।
 सइरिणी की [स्येरिणी] व्यवहारिणी की,
 कुत्ता (पत्रम ५, १०५) ।
 सइल देखो सेल (हे ४, ३२६) ।
 सइलभ वि [दे स्मृतिलभ] देखो सइ-
 दसण (दे ८, १६, पाम) ।

‘घन्नासुवि ते घन्ना

पुरिसा निस्सोमसत्तिजुत्ता ।

जे विसमसंकडेमुवि पडियावि

चयंति एो घम्मं ॥’

(रयण ७३) ।

संक्रिय वि [संक्रित] सकीर्ण किया हुआ (कुप्र ३६०) ।

संक्रिद्ध वि [दे] निरिद्ध, छिन्न-रहित (दे ८ १५; मुर ४, १४३) ।

संक्रिद्धय वि [संक्रिपत्] भाकपित (राज) ।

संक्रण न [शङ्कन्] शका. सदेह (दन ६, ५६) ।

संक्रप पुं [संक्रप] १ अथ्यवसाय, मन-परिणाम, विचार (उवा, कप्प, उप १०३५) । २ सगत आचार, सदाचार (उप १०३५) । ३ अभिप्राय, बाह्य (गडड) । ४ जोणि पुं [‘योनि] कामदेव, कवयं (पाप) ।

संक्रम सक [सं + क्रम्] १ प्रवेश करना । २ गति करना. जाना । सक्रमद, सक्रमति (पिड १०८, सूम २, ४, १०) । बह्. सक्रममाण (मम ३६, सुज २, १, १मा) । हेह. संक्रमित्तए (वस) ।

संक्रम पुं [संक्रम] १ सेतु, पुल, जल पर से उतरने के लिए काष्ठ आदि से बांधा हुआ मार्ग (वि ६, ६५, वस ५, १, ४, पण १, १) । २ सचार, गमन, गति. ‘पावलाइं सक्रमद्वाए’ (सूम १, ४, २, १५, व्यास २२३) । ३ जीव जिम कर्म-प्रकृति को बाधता हो उसी रूप से अन्य प्रकृति के दल को प्रयत्न द्वारा परिणामान्, बंधी जाती कर्म-प्रकृति में अन्य कर्म-प्रकृति से दल को बल कर उसे बंधी जाती कर्म-प्रकृति के रूप से परिणत करना (ठा ४, २—पण २२०) ।

संक्रम वि [संक्रामक] संक्रमण-वर्ती (पर्यट ३३०) ।

संक्रमण न [संक्रमण] १ प्रवेश. ‘नवरं मुत्तल परं परसंक्रमण कथं वेदि’ (संबोध १५) । २ संचार, गमन (आमू १०५) । ३ पारित, संघम (भापा) । ४ इसी संक्रम का तीव्रता धर्म (पंच ३, ४८) । ५ प्रतिविम्बन (गडड) ।

संक्र पुं [दे] रथ्या, मुरला (दे ८, ६) ।

संक्र पुं [शङ्कर] १ शिव, महादेव (पउम ५, १२२, कुमा; सम्मत ७६) । २ वि. सुख करनेवाला (पउम ५, १२२, दे १, १७७) ।

संक्र पुं [संक्र] १ मिलावट, मिथण (पण १, ५—पण ६२) । २ व्याख्या-प्रसिद्ध एक दोष (उवर १७६) । ३ युगायुम-रूप मिथ भाव (सिरि ५०६) । ४ अमुचि-पुत्र, कवरे का डेर (उत्त १२, ६) ।

संकरण न [संकरण] अन्धी कृति (संबोध ६) ।

संकरिण पुं [संकरण] भारतवर्ष का भावी नववां बलदेव (मम १५४) ।

संक्रो की [शङ्करी] १ विद्या-विशेष (पउम ७, १४२, महा) । २ देवी-विशेष । ३ मुख करनेवाली (गडड) ।

संक्रल सक [स + कल्य] संकलन करना, जोड़ना । सकलेह (उव) ।

सक्रल पुंन [शृङ्खल] १ साकल, विण्ड । २ लोहे का बना हुआ पाद-वन्दन देवी (विपा १, ६—पण ६६, धर्मवि १३६, सम्मत १६०, हे १, १८६) । ३ सिकड़ी, धातूपण-विशेष (सिरि ८११) ।

संक्रल न [संक्रलन] मिथता, मिलावट (माल ८७) ।

संक्रल की [शृङ्खल] देवी संक्रल = शृङ्खल (स १७१, सुपा २६१, प्राप) ।

संक्रलिज वि [संक्रलिज] १ एवम किया हुआ (उा व ३४१, संदु २) । २ मुक्त, ‘तत्त्व य मणिमो तं पुण कापट्टिहसलखस-कलियो’ (सिक्खा १०) । ३ भोजित, जोड़ा हुआ (सिरि १५४०) । ४ संगृहीत (उव) । ५ न, संकलन, मुल जोड़ (वव १) ।

संक्रलिआ की [संक्रलिआ] १ परंपरा (पिड २२६) । २ संकलन । ३ सुवृत्तों का सुत्र कर पनड्यां अध्ययन (राज) ।

संक्रलिआ की [शृङ्खलिआ, ‘ली] साधन, संकली १ तिसरी, जमीर, निगड (सूम १, ५, २, २०; आमा) ।

संस्हा की [संस्था] संभाषण, बातलाप (पउम ७, १५८; १०६, ६, मुर ३, १२६; उप व ३७८, पिड १६४) ।

संसा की [शङ्का] १ सशय, सदेह (पिड) । २ भय, डर (कुमा) । ३ लुअ वि [‘वत्’] शकावाला, शका युक्त (गडड) ।

संसाम देखो संकम = सं + क्रम् । संसामह (सुज २, १, पंच ५, १५७) ।

संसाम सक [सं + क्रमय] सहम करना, बंधी जाती कर्म-प्रकृति में अन्य प्रकृति के कर्म-वलो को प्रसिप्त कर उस रूप में परिणत करना । संसामेति (मग) । भूका, संसामिगु; (मग) । अवि, संसामेस्सति (मग) । कवक. संसामिल्लमाण (ठा ३, १—पण १२०) । संसामण न [संक्रमण] १ सक्रम-करण (मग) । २ प्रवेश कराला (कुप्र १५०) । ३ एक स्थान से दूसरे स्थान में ले जाना (पचा ७, २०) ।

संसामणा की [संक्रमणा] संक्रमण, पैठ (पिड २८) ।

संसामणी की [संक्रमणी] विद्या-विशेष, जिससे एक से दूसरे में प्रवेश किया जा सके वह विद्या (एयाया १, १६—पण २१३) । संसामिय वि [संक्रमित] एक स्थान से दूसरे स्थान में नीत (राज) ।

संसार देखो सकार = सस्तर (धर्म १३५४) । संसाम वि [संसा] १ समान, तुल्य, तरीखा (पाप, एयाया १, ५; उत्त ३४, ४, ५; ६; कप्प, पंच १, ५०, धर्मवि १४६) । २ पुं. एक थावक का नाम (उप ४०६) ।

संसासिया की [संसासिका] एव अज मुनि-शाला (वप) ।

संकि वि [शङ्कि] शका करनेवाला (सूम १, १, २, ६; गा ८०३; संबोध ३४, गडड) ।

संकिज वि [शङ्किज] १ संकावाला, संका-युक्त (मग उवा) २ न. संशय, सदेह (पिड ५६३, महा ६८) । ३ भय, डर (गा ३१३); ‘अविधमवि मेर दयिपल’ (या १४) ।

संकिट्ट वि [संकिट्ट] मिलिखित, जोटा हुआ, संकीट्ट किया हुआ (मीप, एयाया १, १ टी—पव १) ।

संकिट्ट देवो संकिट्ट (राज) ।

संकिण वि [संकीर्ण] ? संकरा, रंग, भ्रमा-
वकाराला (पाय; महा) । २ व्याप्त (राज) ।

३ मिथित, मिता हुमा (ठा ४, २; मग २५,
७ छे—पग ११६) । ४ पुं. हाथी को एक
जाति (ठा ४, २—पग २०८) ।

संकिट देवो संकिअ (छाया १, ३—पग
६४) ।

संकित्तण न [संकीर्तन] उच्चारण (स्वप्न
१७) ।

संकिअ देवो संकिण (ठा ४, २; मग
२५, ७) ।

संकिर वि [संकिर] राक्षस करने की आदत
वाला, शंकाशील (गा २०६; ३३३; ५८२;
मुर १२, १२५; मुपा ४६८) ।

संकिलिह वि [संकिट] संकेत युक्त,
संकेतवाला (उच बीप, पि १३६) ।

संकिलिहस भक [सं + लिह] १ क्लेश-
पाता, दुःखी होना । २ मलिन होना । संकि-
लिहस, संकिहससंति (उत्त २६, ३४; मग
४१०) । बह. संकिहस्समाज (मग १३,
१—पग ५६६) ।

संकिहस पुं [संकेश] १ भ्रमपाथि, दुःख,
कष्ट, हैरानी (ठा १०—पग ४८९; उच) ।
२ मलिनता, भविष्युद्धि (ठा ३, ४—पग
१५६; वंवा १५, ४) ।

संकीलित वि [संकीलित] नील लगाकर
जोड़ा हुमा (ने १४, २८) ।

संकु पुं [राकु] १ शय्य भद्र । २ नीलक,
रौंदा, नील; 'यंतोनिपुंसकुपय' (कुप ४०२;
पाय ३०; भावम) । 'कण्ण म [कर्ण] एक
विचारपर-नगर (हक) ।

संकुइय वि [संकुचित] १ शकुचा हुमा,
संकोच-आप्त (भीर, रमा) । २ न. संकोच
(राज) ।

संकुप पुं [शकुप] वेताम्य पर्वत की उत्तर
श्रेणी का एक विशाल-निक्षिप (राज) ।

संकुना छो [शकुना] विद्या-निक्षेप (राज) ।
संकुन पक [सं + कुप] संकुचन, संकोच
करना । संकुवए (भावा, सदीप ४७) बह.
संकुपमाण, संकुपमाण (भावा) ।

संकुचिय देवो संकुइय (पग ४, १) ।

संकुड वि [संकुट] संकरा, संकीर्ण, संकुचित;
'भंतो य संकुड बाहि वित्थमा चंदसुएण'
(सुज १६) ।

संकुडिअ वि [संकुटित] मनुवा हुमा, संकु-
चित (पा ७, ६—पग ३०७; धर्मसं ३८७;
स ३५८; सिंहर ७८६) ।

संकुड वि [संकुड] कोष-युक्त (वज्रा १०) ।

संकुय देवो संकुच । संकुय (वज्रा ३०) ।
बह. संकुयंत (वज्रा ३०) ।

संकुल वि [संकुल] व्याप्त, पूर्ण भरा हुमा
(से १, ५७; उच; महा; स्वप्न ५१; धर्मवि
५५; प्रासु १०) ।

संकुलि देवो सबकुलि (पि ७४; ठा ४,
संकुली) ४—पग २२६; पग २६२; धाधा
२, १, ४, ५) ।

संकुसुमिअ वि [संकुसुमित] मन्दी तरह
मुष्पित (राय ३८) ।

संकेअ एक [सं + केतय] १ दृष्टार
करना । २ मसतहत करना । संकु. संकेइय
ओमिणियेग (सम्मत २१८) ।

संकेअ पुं [संकिट] १ इशारा, इगित (मुग
४१५; महा) । २ प्रिय-समायप का
ग्रुप्त स्थान (गा ६२६, गडड) । ३ वि.
चिह्न-युक्त । ४ न. प्रत्याख्यान विशेष (भावा) ।

संकेअ वि [साहित] १ संकेत-संबन्धी । २
न. प्रत्याख्यान-विशेष (पग ४) ।

संकेइय वि [संकेति] संकेत-युक्त (धा
१४; धर्मवि १३५; सम्मत २१८) ।

संकेलिअ वि [रे] खेला हुमा, संकुचित
किमा हुमा (गा ६६४) ।

संकिअ देवो संकिहस (उप ३१२; मग
५, ६३) ।

संकोअ एक [सं + कोचय] संकुचित
करना । बह. संकोअन (सम्मत २१७) ।

संकोअ पुं [संकोच] संकोच, लिपट (राय
१४० टी. धर्मसं ३६५, संकोप ४७) ।

संकोअण म [संकोचन] संकोच, संकुचाना
(दे ५, ३१; मग; मुर १, ७६; धर्मसं
१०१) ।

संकोइय वि [संकोचि] संकुचित किया
हुमा, खेला हुमा (उच ७२८ टी) ।

संकोड पुं [संकोट] संकोड़ना, संकोच (पएह
१, ३—पग ५३) ।

संकोडणा छो [संकोटना] ऊपर देखो
(राज) ।

संकोटिय वि [संकोटित] संकोड़ा हुमा,
संकोचित (पएह १, ३—पग ५३; विपा
१, ६—पग ६८; स ७४१) ।

संख पुंन [शहू] १ बाय-विरोध, शंख (छदि;
राय, जो १५; कृपा; दे १, ३०) । २ पुं.
धर्मोक्ति ग्रह-विरोध (ठा २, ३—पग ७८) ।

३ महाविदेह वर्ष का प्रारंभ-विरोध, विजय-
तोत्र विरोध (ठा २, १—पग ८०) । ४ नव
विधि में एक विधि, जिसमें विविध तरह के
बाजों की उत्पत्ति होती है (ठा ६—पग
४४६, उप ६८६ टी) । ५ सबए सुमुद्र में
स्थित वेत्तमर-भागराज का एक क्षात्रम-भरत
(ठा ४, २—पग २२६; सम ६८) । ६ उत्तर
आवास-पर्वत का प्रविष्टावा एक देव (ठा ४,
२—पग २२६) । ७ भगवान् मस्तिनाय के
समय का कारी का एक राजा (छाया १,
८—पग १४१) । ८ भगवान् महावीर के
पास सीता सेनेवाला एक कारी-नरेश (ठा
८—पग ४३०) । ९ तीर्थर-नामक उपा-

जित करनेवाला भगवान् महावीर का एक
यावक (ठा ६—पग ४५५; सम १५५; पग
४६; विचार ४७७) । १० नववें बमदेव का
पूर्वजमीय नाम (पगम २०, १६३) । ११
एक राका (उप ७३६) । १२ एक रानमुत्र
(मुपा ५६६) । १३ रायण का एक मुद्र
(पगम ५६, ३४) । १४ छत्र-विरोध (विग) ।

१५ एक द्वीप । १६ एक सुद्र । १७ शंखर
द्वीप का एक प्रविष्टावक देव (कोर) । १८
पुंन. लताट बी हरी (धर्मवि १७; हे १,
१०) । १९ नवी नामका एक गण-द्रव्य ।

२० वान के समीप को एक हरी । २१ एक
नाम-जाति । २२ हाथी के दांत का मध्य
भाग । २३ क्षत्र-विरोध, उच निखर को
संख्यावाला (हे १, ३०) । २४ दांत के
समीप का धनय (छाया १, ८—पग
१३३) । "उर देवो पुर (सी ३; महा) ।

"नाम पुं [नाम] श्वेतिना महापुं-विरोध
(मुग २०) । "गारो छो [गारो] छत्र-

विशेष (विग) : 'धमग पु ['ध्मायक] वानप्रस्थ की एक जाति (राज) । 'घर पु ['घर] शीकृष्ण, विष्णु (कुमा) । 'पाल देखो 'पाल (ठा ४ १—पत्र १७७) । 'पुर न ['पुर] १ एक विद्यापर नगर (इक) । २ नगर विशेष जो प्राकल गुजरात में सखे-धर के नाम से प्रसिद्ध है (राज) । 'पुरी की ['पुरी] कुरुक्षेत्र दश की प्राचीन राजधानी, जो पीछे वै ब्रह्मिष्ठना के नाम से प्रसिद्ध हुई थी (तिरि ७८) । 'माल पु ['माल] वृष की एक जाति (जीव ३—पत्र १५५) । 'वण न ['वन] एक उद्यान का नाम (उवा) । 'वण्णाम पु ['वर्णाभ] ज्योतिष्क महाप्रह विशेष (सुज २०) । 'वण्ण पु ['वर्ण] ज्योतिष्क महाप्रह विशेष (ठा २, १—पत्र ७८) । 'वण्णाम देखो 'वण्णाम (ठा २, १—पत्र ७८) । 'वर पु ['वर] १ एक द्वीप । २ एक समुद्र (दीव, इक) । 'वरोभास पु ['वरायभास] १ एक द्वीप । २ एक समुद्र (दीव) । 'वाल पु ['पाल] नाम कुमार-देवों के बरण श्रीर भूतानन्द नामक इन्दी के एक लोकपाल का नाम (इक) । 'वाल्य पु ['पालक] १ वैनेतर दर्शन का अनुयायी एक व्यक्ति (भग ७, १०—पत्र ३२३) । एक धार्मिक मत का एक उपासक (भग ८, ५—पत्र ३७०) । 'ल्लम वि ['ल्ल] शखवाला (लामा १, ८—पत्र १३३) । 'नई की ['नती] नगरी विशेष (ती ५) । सत्त वि [सत्त] सख्यात, बिना हुमा, गिनती-वाला (इम ४, १६, ५१) । सत्तम [सत्तय] १ दशन विशेष, बलिमनुजि-प्रणीत धर्म (लामा १, ५—पत्र १०५, सुपा ५६६) । २ वि. साक्ष्य मत का अनुयायी (भीप, भू २) । सत्त पु [दे] माप, स्तुति पाठ (दे ८, २) । सत्तइम वि [सत्तयेय] जिसकी संख्या हो सो वह (विमे ६७०, मणु ६१ टी) । सत्त न [दे] बसह भगदा (विह ३२४, भोप ५५७) । सत्तइ की [दे] १ विचार धर्म के उपनय में नाम-नातेरा धर्म की दिशा जाता जो, जेवनार (आना २ १, २४, २, १३, १, २, ३, पिठ २२८, भोप १२२, ८८, भास ६२) । सत्तइ की [सत्तइति] श्रोत-पाक (कण) । सत्तण्ण पु [सत्तण्ण] छोटा शय्य (उत्त ३६, १२६, पण १—पत्र ४४, जीव १ टी—पत्र ३१) । सत्तइह पु [दे] गोदावरी छद्म (दे ८, १४) । सखयइल पु [दे] कृषक की इच्छानुसार उठ कर खड़ा होनेवाला बैल (दे ८, १६) । सत्तम वि [सत्तम] समर्थ (उत्त ६८६ टी) । सत्तय पु [सत्तय] शय, विनाश (से ६, ४२) । सत्तय वि [सत्तय] सत्कारयुक्त पण्य सत्तयमाह जीविय' (सू १, २, २१, १, २, ३, १०, वि ४६), 'सत्तय जीविय मा पमाय' (उत्त ४, १) । सत्तल्य पु [दे] शम्भूक, शुक्ति के प्रकार-वाला जल बनू विशेष (दे ८, १८) । सत्तला देखो सत्तला (गठ, भाग) । सत्तल पु [दे] कर्ण भूषण विशेष, शङ्ख-पत्र का बना हुमा शालक (दे ८, ७) । सत्तन सक [स + क्षपय] विनाश करना । सक. सत्तयिवाण (उत्त २०, ५२) । संखयिअ वि [संखयित] विनाशित (भन्ड ८) । सत्ता सक [स + कया] १ गिनती करना । २ जानना । सक. सत्तय (सू १, २, २, २१) । इ. सत्तय, सत्तय (उवा, जी ४१ उव, कण) । सत्ता सक [स + सत्ते] १ धावाज करना । २ सहत होना, सान्द्र होना, निबिड बनना । संसाद सत्तासद (दे ४, १५, पद) । सत्ता की [सत्तया] १ प्रज्ञा, बुद्धि (भाषा १, ६, ४, १) । २ ज्ञान (सू १, १३, ८) । ३ विजय (मणु) । ४ गिनती, गणना (भग धणु, कण, सुपा) । ५ व्यवस्था (सू २, ४, १०) । 'इअ वि [सत्त] धर्म (भग १, १ टी, जीव १ टी—पत्र १३, था ४१) । 'दत्तिय वि [दत्तिय] उतनी ही मिला

लेन का व्रतवाला सयमी, जितनी कि शम्भूक गिने हुए प्रलेषों में प्राप्त हो जाय (ठा २, ४—पत्र १००, ५, १—पत्र २६६, भीप) । सत्ताण न [सत्तयान] १ गिनती. गणना, सख्या । २ गणित शास्त्र (ठा ४, ४—पत्र २६३, भग कण, भीप, पठम ८५, ६, जीव १ ३५१) । सत्तयय वि [सत्तययान] १ सान्द्र मद्यन निबिड (कुमा ६, ११) । २ धावाज करनेवाला । ३ सहत करनेवाला । ४ न. स्नेहा । ५ निबिड-पन । ६ सहति, सहात । ७ भालस्य । ८ प्रतिशब्द, प्रतिशब्धि (दे १, ७५, ४, १५) । सत्तय देखो सत्ता = सं + कया । सत्तयय वि [सत्तयय] सत्तय-युक्त (सू १, १३, ८) । सत्तयय न [सत्तययन] गीत विशेष (हुज १०, १६, इक) । सत्तल पु [दे] हरिण की एक जाति, साबर युग (दे ८, ६) । सत्तलगा देखा सत्तलगा = शङ्ख वत् । सत्तयई देखो सत्तयई = शङ्खावती । सत्तययि वि [सत्तययित] जिसकी गिनती कराई गई हो वह (मुपा ३६२, स ४१६) । सत्तिय देखो सत्तय = शास्त्रिक (स १७३, कुम ४५६) । सत्तिय देखो सत्ता = सं + कया । सत्तियइ वि [सत्तयेयतम] सत्तययता (मणु ६१) । सत्तिय वि [सत्तिय] सत्तय-युक्त, छोटा किया हुमा (उवा, ६ ३, जी ४१) । सत्तिय वि [सत्तिय] १ मगल के लिए कन्दन गर्भित शख की क्षेप में धारण करने-वाला । शख बनाकरवाला (कण, भीप) । सत्तिय देखो सत्त = संख (स ४४१, पं २, ११, जीव १ ४६) । सत्तिय की [सत्तिय] छोटा संख (जीव ३—पत्र १४६, ज २ टी—पत्र १०१, राम ५४) । सत्तुइ सक [स] शङ्का करना, संमोह करना । सत्तुइ (दे ४, १६, ८) ।

संखुड्ग न [रमण] ब्रीडा, सुरत ब्रीडा (कुमा)।

संखुत्त (भय) नीचे देखो (भवि)।

संखुद्ध वि [संखुद्ध] सोम प्राप्त (स ५६८; ६७४, सम्मत १५६, सुपा ५१७, कुप्र १७४)।

संखुभिअ } वि [संखुद्ध, संखुभिन्] }
संखुद्धिअ } ऊपर देखो (सम १२५, पव २७२, पलम ३३, १०६, पि ३१६)।

संखिज्ज देखो संजा = सं + ख्य।

संखिज्जइ } देखो संखिज्जइ (भणु ६१,
संखिज्जइम } विते ३६०)।

संखित देखो सखित (ठा ४ २—पत्र २२६, वैद्य ३२५)।

संखेन पु [संखेप] १ भल्य, बम, बोडा (जो २५, ५१)। २ रिड, सपाठ, सहति (भोपभा १)। ३ स्थान, 'सैरसनु बीवसखेपणु' (बम्म ६, ३५)। ४ सामायिक, सम्भाव से अवस्थान (विते २७६६)।

संखेनण न [संखेपण] भल्य करना, म्बुन करना (नव २८)।

संखेयिय वि [संखेयिक] संखेय-युक्त। 'दसा खी, ब, [दसा] जैन ग्रन्थ-विशेष (ठा १०—पत्र ५०५)।

संखोभ } सक [सं + क्षोभय] } खुब
संखोह } करना। संखोह (भवि)। कबहु,
संखोभिज्जमाण (णामा १, ६—पत्र १५६)।

संखोह पु [संखोभ] १ नय भावि से उत्पन्न चित्त की व्यग्रता, क्षोभ (उव; सुर २, २२, उपपु १३१, शु ३; नि ६४, गउठ)। २ चंचलता (गउठ)।

संखोहिअ वि [संक्षोभित] खुब किया हुआ, सोम कुछ किया हुआ (से १, ४६, भनि ६०)।

संग न [गृह] १ सोम, विपाण (पर्मस ६३, ६४)। २ उत्तर (कुमा)। ३ पर्वत के ऊपर का भाग, शिखर। ४ प्रधानता, मुख्यता। ५ वाद विशेष। ६ नाम का उद्देश (हे १, १३०)। शेषो संग = गृह।

संग न [गृह] गृह-सम्बन्धी (विते २८६)। संग पुन [मन्त्र] १ सपर्व, सवन्ध (आचा, मठा, कुमा)। २ सोहबत, 'वह होएआपारज-इनएसंग सहाए पडिदि' (सोथो ३६, आचा, प्रसू ३०)। ३ मालिक, विषयादि राग (मउठ, आचा, उव)। ४ बर्त, बर्तन-सम्बन्ध (आचा)। ५ बन्धन, 'भोपा एमे सगकरा हवति' (उत १३, २७)।

संगइ खी [सगनि] १ क्षीणित्य, उच्चिन्ता (सुपा ११०)। २ मेन (भवि)। ३ विधति (सूय १, १, २, ३)।

संगइअ वि [साङ्गति] १ निवर्ति-कृत्य, नियति सम्बन्धी (सूय १, १, २, ३)। २ परिचित, 'युही ति वा सहाए ति वा सय' (गइए ति वा' (ठा ४, १—पत्र २४३, राज)।

संगथ पु [संग्मथ] १ स्वजन का स्वजन, सगे का संग (आचा)। २ सवन्धी, समुदाय, कुम से जिसका सवन्ध हो वह (पएह २, ४—पत्र १३२)।

संगच्छ सक [स + गम्] १ स्वीकार करना। २ धक, संगत होना, भेल खना। संगच्छइ (वैद्य ७७६, पइ), संगच्छइ (स १६)। क. संगमणीअ (गाट—विक्र १००)।

संगच्छण न [संगमन्] स्वीकार, संगीकार (उव ६३०)।

संगम पु [संगम] १ मेन, मिलान (पात्र, महा)। २ प्राप्ति, 'सग्यापगगसगमहेऊ किए-देसिधो धम्म' (महा)। ३ नदी-सीसक, नदियों का आपस में मिलान (आया १, १—पत्र ३३)। ४ एक देव का नाम (महा)। ५ खी-मुष्य का समीप (हे १, १७७)। ६ एक जैन मुनि का नाम (उव)।

संगमय पु [संगमक] भगवान् महावीर को उत्तम करनेवाला एक देव (वैद्य २)।

संगमी खी [संगमी] एक दूती का नाम (महा)।

संगय वि [दे] मखए, बिकना (दे ८, ७)।

संगय ॥ [संगत] १ मित्रता, मैत्री (सुर ६, २०६)। २ संग, सोहबत (उव, कुप्र १३४)। ३ पु. एक जैन मुनि का नाम (पुक्क १८२)। ४ वि. युक्त, उचित (विपा १, २—पत्र २२)। ५ मिलित, मिता हुआ (प्रामू ३१; पंचा १, १; महा)।

संगयय न [संगनक] छन्द-विशेष (प्रजि ७)।

संगर देखो संगर = संवर (विते २८८४)।

संगर न [संगर] युद्ध, रण, लड़ाई (पात्र, पात्र १६३, कुप ७३, धर्मवि ६३, ह ४, ३४५)।

संगरिगा खी [दे] फनी विशेष, जिसकी सरसरी होनी है, संगरी (पत्र ४—गाथा २२६)।

संगल सक [सं + घटय] मिलना, सपटिन करना। संगलइ (ह ४, ११३)। संक. संगल्लिअ (कुमा)।

संगल थक [स + गल] गल जाना, हीन होना। बइ. संगलत (से १०, ३४)।

संगल्लिया खी [दे] फनी, फलिया, छोटी (भय १५—पत्र ६८०, प्रसू ४)।

संगह सक [स + ग्रह] १ संघय करना। २ स्वीकार करना। ३ आप्रय देना। संगह (भवि)। भवि. संगहिस्स (मोह ६३)।

संगह पु [दे] घर के ऊपर का निरक्षा काठ (दे ८, ४)।

संगह पु [संग्रह] १ सचय, इकट्ठा करना, बटोरना (ठा ७—पत्र १८५, वव ३)। २ संघेय, समान (पात्र, ठा ३, १ टी—पत्र ११४)। ३ उपधि, बख भादि का परेग्रह (घोष ६६६)। ४ नय-विशेष, वस्तु-नाराधा का एक दृष्टिकोण, सामान्य रूप से वस्तु की देखना (ठा ७—पत्र ३६०, विते २२०३)। ५ स्वीकार, ग्रहण (ठा ८—पत्र ४२२)। ६ बट्ट भादि में सहायता करना (ठा १०—पत्र ४६६)। ७ वि. संग्रह करनेवाला (वव ३)। ८ न. नयन विशेष, दुष्ट ग्रह से बचाव नयन (वव १)।

संगहण न [संग्रहण] संग्रह (विते २२०३, संघेय १७, महा)। 'गंहा खी [गाथा] संग्रह गाय (वप ११८)। देखो संग्रहण। संगहणि खी [राग्रहणि] संग्रह-ग्रन्थ, संहित रूप से पदार्थ प्रतिपादक ग्रंथ, सार-संग्राहक ग्रन्थ (सग १, पर्मस ३)।

संगहिज वि [संगहिज्] संग्रहवाला, संग्रह-
नय को माननेवाला (विशे २८५२) ।

संगहिज वि [संगृहीत] १ जिसका संवय
किया गया हो वह (हि २, १६८) । २
स्वीकृत, स्वीकार किया हुआ (सण) । ३
पकड़ा हुआ; 'संग्रहियो हयो' (कुप ८१) ।
देखो संगिहीज ।

संगा मक [सं + गे] गान करना । कवक.
संगिजमाण (उप ५६७ टी) ।

संगा छो [दे] बाला, छोड़े को लगान (दि
८, २) ।

संगाम सक [सङ्गमामय्] लड़ाई करना ।
सगमेह (भग वतु ११) । बक. सगमेमाण
(छाया १, १६—पत्र २२३; निर १, १) ।

संगाम दुं [सङ्गमाम्] लड़ाई, युद्ध (भाषा,
पात्र, महा) । 'सूर दुं [शूर] एक राजा
का नाम (धु २८) ।

सगामिय वि [साङ्गमामिक] संग्राम-संबंधी,
लड़ाई से संबंध रखनेवाला (ठा ४, १—पत्र
३०२; कीप) ।

सगामिया छो [साङ्गमामिकी] शीघ्रपण
वासुदेव की एक नेरी, जो लड़ाई की खबर
देने के लिए बजाई जाती थी (विंसे १४७६) ।

संगामुद्धामरी की [सङ्गमामुद्धामरी] विषा-
विशेष, जिसके प्रभाव से लड़ाई में भासानी
से विजय मिलती है (सुपा १४४४) ।

संगार दुं [दे] संघट (ठा ४, ३—पत्र
२४४; छाया १, ३, भीषमा २२; कुप २,
१४; सुप्रति २६; धर्मसं १३८८ उप २०६) ।

संगाहि वि [संग्राहिज्] संग्रह-कर्ता (विमे
१४३०) ।

संगि वि [सङ्गिज्] संग-युक्त (भग, संबोध
७; कपू) ।

संगिजमाण देतो संग्गा = सं + गे ।

संगिण्ड देखो संगद = सं + प्रह । संगिण्ड
(विमे २२०३) । कर्म. संगिज्जते (विमे
२२०३) । वट. संगिण्डमाण (अप ५,
१—पत्र २३१) । संठ. संगिण्डित्ताणं (पि
५८३) ।

संगिण्डण ण [संग्रहण] भाष्य-खन (ठा
८—पत्र ४४१) । देखो संगहण ।

संगिह वि [सङ्गवन्] बद्ध, संयुक्त
(पात्र) ।

संगिह देखो संगेह (राज) ।

संगिहो देखो संगेहो (राज) ।

संगिहीय वि [संगृहीत] १ प्राथित (ठा
८—पत्र ४४१) । २ देखो संगहिज =
संगृहीत ।

संगीअ न [संगीत] १ गाना, गान-साल
(धुभा) । २ वि. जिसका गान किया गया
हो वह; 'लेण संगीमो दुहू वेव पुच्छगामो'
(सुपा २०) ।

संगुण सक [सं + गुणय्] गुणकार
करना । सगुणए (सुज १०, ६ टी) ।

संगुण वि [संगुण] गुणित, जिसका गुणकार
किया गया हो वह (कुप १०, ६ टी) ।

संगुणिअ वि [संगुणित्] ऊपर देखो (भीष
२१; देवेन्द्र ११६; कम्म ५, ३७) ।

संगुत्त पि [संगुम्] १ छिपाया हुआ,
प्रच्छन्न रखा हुआ (उप ३३६ टी) । २
मुनि-युक्त, मनुजल प्रकृति से रहित (पत्र
१२३) ।

संगेह दुं [दे] समूह, समुदाय (दि ८, ४;
व १) ।

संगेहो छो [दे] १ परस्पर व्यवसन्न;
'हयसङ्गेहीए' (छाया १, ३—पत्र ६३) ।
२, समूह, समुदाय (भग ६, ३३—पत्र
४७४, भीष) ।

संगोदण वि [दे] त्रिखित, त्रय-युक्त (दि
८, १७) ।

संगोफ्फ दुं [संगोफ] बन्ध-विशेष, बन्ध-
संगोफ] कल्प रूप सुफल (उत् २२, ३५) ।

संगोह न [दे] संघात, समूह (पट्ट ५)

संगोहो छो [दे] समूह, संघात (दि ८, ४)

संगोय सक [सं + गोपय्] १ छिपाया,
गुप्त रखना । २ रक्षण करना । संगोय
(प्राक ६६) । बक. संगोयमाण, संगोयमाण
(छाया १, ३—पत्र ६१; विपा १, २—
पत्र ३१) ।

संगोयम वि [संगोयम्] रक्षण-कर्ता (छाया
१, १५—पत्र २४०) ।

संगोवाय देखो संगोय । संगोवायमु (स
८६) ।

संगोविज वि [संगोपित] १ छिपाया हुआ
(स ८६) । २ संरक्षित (महा) ।

संगोविस्तु वि [संगोपयित्] संरक्षण-कर्ता
संगोविस्तु] (ठा ७—पत्र ३५४) ।

संघ सक [कम्] नहना । संघ (हे ४,
२), संघमु (कुमा) ।

संघ दुं [संघ] १ सङ्घ, साम्बो, श्रावक और
श्राविकामों का समुदाय (ठा ४, ४—पत्र
२८१; सुंदि; महानि ४; सिध १; ३; ५) ।
२ समान धर्मवालों का समूह (धर्मसं
६८८) । ३ समूह, समुदाय (सुपा १८०) ।
४ प्राणि-समूह (हे १, १८०) । 'दास दुं
[दास] एक जैन मुनि और धर्म-कर्ता (वी
३; राव) । 'पालिय, 'पालिय दुं [पालिज]
एक प्राचीन जैन मुनि, जो धर्मवृद्ध मुनि के
शिष्य थे (कम्म; राज) ।

संघज वि [संहत] त्रिविध, सान्द्र (दि १०,
२६) ।

संघस दुं [संघर्व] १ घिसाव, रगड़ । २
भाषात, घस्का (छाया १, १—पत्र ६५;
आ २८) ।

संघट सक [सं + घट्ट] १ स्पर्श करना,
छूना । २ झक, भाषात लगाना । सघट्ट
(भावि), संघट्टेह (छाया १, ५—पत्र ११९;
भग ५, १—पत्र २२६), संघट्टए (वस ८,
७) । बक. सघट्टत (पिठ ५७५) । संघ,
संघट्टिऊण (व २) ।

संघट्ट दुं [संघट्ट] १ भाषात, घस्का, स्पर्श
(वस; कुप्र १६; धर्मवि ५७; सुपा १४) ।
२ धर्म-जंभा तक का पावो (भीषमा ३४) ।
३ दूसरा नरक का छतवा नरक-जंभा—स्थान
विशेष (देवेन्द्र ९) । ४ भीड़; जमावड़ा
(भवि) । ५ स्पर्श (राय) ।

संघट्टि वि [संघट्टित] संतान (भवि) ।

संघट्टण न [संघट्टण] १ संमर्द, स्पर्श
(छाया १, ३—पत्र ७१; पिठ ५८६) । २
स्पर्श करना (राय) ।

संघट्टणा छो [संघट्टणा] संघतन, संघात
'गळे संघट्टण उ वट्टुंवेमाणीए' (पिठ
५८६) ।

संघट्टा छो [संघट्टा] कल्लो-विशेष (राय
१—पत्र ३३) ।

संघट्टिय वि [संघट्टित] १ सट्ट, छुआ
छुआ (छाया १, ५—पत्र ११२, पडि)।
२ संघर्षित, संघर्षित (भग १६, ३—पत्र
७६, ७६)।

संघट्ट भक [सं + घट्ट] १ प्रयत्न करना।
२ संबद्ध होना, युक्त होना। ३ संघट्टियव्य
(ठा ८—पत्र ४४१)। प्रयो. संघट्टावेइ
(महा)।

संघट्ट वि [संघट्ट] निरन्तर, 'संघट्टसिणो'
(भावा १, ४, ४, ४)।

संघट्टण देखो संघयण (चड—वृ ४८, भवि)।
संघट्टणा छो [संघट्टना] रचना, निर्माण
(सुनु १५८)।

संघट्टिअ वि [संघट्टित] १ संबद्ध, युक्त
(से ४, २४)। २ गठित, जटित (आसू २)।
संघट्टि (शो) छो [संघट्टि] समूह (पि
२६७)।

संघयण न [दे. संहनन] १ शरीर, काम
(दे ८, १४, पात्र)। २ अस्थि-रचना, शरीर,
के हाडो की रचना, शरीर का ढाँच (भग,
सम १४६, १४५, लव, श्रीप, लवा, कम्म
१, ३८, पड)। ३ कर्म-विशेष, अस्थि-
रचना का कारण-भूत कर्म (सम ६७, कम्म
१, २४)।

संघयणि वि [दे. संहननिन्] संहनन-
वाला (सम १५५, धणु ८ टी)।

संघरिसि देखो संघंस (वप २६४ टी)।

संघरिसिदो (शो) वि [संघर्षित] सघर्ष युक्त;
पिता हुआ (मा ३७)।

संघस सक [सं + घट्ट] सघर्ष करना।
संघसिअ (भावा २, १, ७, १)।

सघसिसद देखो संघरिसिद (नाट—भासवि
२६)।

सघाइअ वि [संघातित] १ सघात रूप से
निष्पन्न (से ३३, ६१)। २ जोड़ा हुआ
(प्राप)। ३ इकट्ठा किया हुआ (पडि)।

संघाइम वि [संघातम] ऊपर देखो (श्रीप,
भावा २, १२, १, पि ६०२, धणु १२;
दसि २, १७)।

सघाइ देखो संघाय = सघात (श्रीपमा १०२,
राज)।

संघाड } पुं [दे. संघाट] १ युगम,
संघाडग } युगल (राय ६६; घर्मस १०६५,
उप वृ ३६७; सुगा ६०२, ६२३, श्रीप
४११; उप २७५)। २ प्रकार, भेद, 'संघाडो
ति वा लय ति वा पगारो ति वा एगडो'
(निबु)। ३ ज्ञाताधर्म-नया नामक जैन भग-
वन्थ का दूसरा ध्वजयन (सम २६)।

संघाडग छो [संघाटग] १ सवन्ध। २
रचना, 'अधत्तरणुणमत्तिस्वाय (३)णाए'
(सुमनि २०)।

संघाडो छो [दे. सघाटो] १ युगम, युगल
(दे ८, ७, प्राक ३८, गा ४१६)। २
उत्तरीय वस्त्र-विशेष (ठा ४, १—पत्र १८६,
छाया १, १६—पत्र २०४, श्रीप ६७७,
विसे २३२६, पत्र ६२, वड)।

संघाणय पुं [शिद्धान्तक] श्लेष्या, नाक में
से बहला द्रव पदार्थ (सुनु १३)।

संघातिअ देखो सघाइम (छाया १, ३—पत्र
१७६, सघड २, ५—पत्र १५०)।

संघाय सह [सं + घातय] १ संहत करना,
इकट्ठा करना, मिलाना। २ हिंसा करना,
मारना। सघायद, सघाएद (कम्म १, ३६;
भग ५, ६—पत्र २२६)। ३. संघायणिअ
(उत्त २६, ५६)।

संघाय पुं [संघात] १ सहति, संहत रूप से
ब्रवत्वात्, निबिडत्वा (भग, दस ४, १)। २
समूह, जल्मा (पात्र; गडड, श्रीप, महा)।

३ संहनन-विशेष, वज्रप्रायश्चित्त-नाराच नामक
शरीर-बन्ध, 'सघाएणं सडाएणं' (श्रीप)।
४ युवज्ञान का एक भेद (कम्म १, ७)।
५ संकोच, संकुचाना (भावा)। ६ न,
नामकर्म-विशेष, जिस कर्म के उदय से शरीर-
गोच्य पुत्रन पूर्व गृहीत पुत्रको पर व्यवस्थित
रूप से स्थापित होते हैं (कम्म १, ३१,
३६)। *समास पुं [*समास] युवज्ञान
का एक भेद (कम्म १, ७)।

संघायण न [संघातन] १ विनाश, हिंसा
(स १७०)। २ देखो 'सघाय' का छठवाँ
अर्थ (कम्म १, २४)।

संघायणा छो [संघातना] सहति। *करण

न [*करण] प्रदेशो को परस्पर सहत रूप
से रखना (विसे ३३०८)।

संघार पुं [संहार] १ बहु-बन्तु-सम, प्रलय
(तंडु ४५)। २ नाश (पत्रम ११८, ८०;
उप १३६ टी)। ३ संक्षेप। ४ विजर्जन।
५ नरक-विशेष। ६ भैरव-विशेष (हि १,
२६४; पड)।

संघार (प्रा) देखो संहार = सं + ह। संह,
संघारि (मि)।

संघारिय वि [संहारित] मारित, व्यापादित
(भवि)।

संघासय पुं [दे] स्पर्धा, बराबरी (द ८,
१३)।

सघिअ देखो संधिअ = सहित (प्राप)।

सघिअ वि [संघयत्] संघ-युक्त, समुदित
(राज)।

सघोडी छो [दे] व्यतिहर, सवन्ध (दे ८,
८)।

संघ (भप) देखो सचिय। सवह (भवि)।

संघ (भप) पुं [संघय] परिचय (भवि)।

संघइ } वि [संघयिन्] संघयवाता,
संघइ } सप्रही, सप्रह कर्मवाला, (भमनि
१०, १०, पत्र ७३ टी)।

संघइय वि [संघयित] संघय-युक्त (राज)।

संघकार पुं [दे] भवकाश, अगह,

‘अविम, सिय कुलकलं इय

कुहियकरकरारो कीम।

विमरसि सघकार सं

नारयतिरियमुचवाण ॥”

(उप ७२८ टी)।

संघच वि [संघय] परित्यक्त (भग्न
१७८)।

संघच पुं [संघय] १ समूह (पण्ड १, ५—
पत्र ६२, गडड, महा)। २ समूह (कम्म,
गडड)। ३ संकलन, जोड़ (वप १)।

*भास पुं [*भास] प्रायश्चित्त-सकथो मान-
विशेष (राज)।

संघर सक [सं + चर] १ चलना, गति
करना। २ गम्यगु गति करना, भग्यो तरह
चलना। ३ धीरे धीरे चलना। संघरइ
(गडड ४२६; भवि)। वड. संघरन (से २,

२४; सुर ३, ७६; नाट—वेत १३०)। क.
संचरणिज्ज, संचरिअठर (नाट—वेणी
१४, वे १४, २८)।

संचरण म [संचरण] १ चलना, गति। २
सम्पन्न गति (गउड, पि १०२; वप्पु)।

संचरिअ वि [संचरित] चला हुआ, जिसने
संचरण किया हो यह (उत ३ २५८, चविम
५६; भवि)।

संचलण म [संचलन] संचार, गति (गउड)।
संचलिअ वि [संचलित] चला हुआ (गुर
३, १४०; महा)।

संचल सक [सं + चल] चलना, गति
करना। सचल्लइ (भवि)।

संचल (अप) देखो संचलिय (भवि)।

संचलिअ देखो संचलिअ (महा)।

संचाइय वि [संचाकित] जो समर्थ हुआ
हो वह (भग ३, २ टी—पय १७८)।

संचाय अक [सं + शक्] समर्थ होना।
संचाएइ (भग, उवा, कत), संचाएमो (सुप
२, ७, १०; लाया १, १८—पय २४०)।

संचाय वृ [संचाय] परियोग (बंधा १३,
३४)।

संचार सक [सं + चारय] संचार करना।
सचाएइ (भवि)। सङ्ग, संचारि (अप)
(विग)।

संचार पु [संचार] संचरण, गति (गउड,
महा, भवि)।

संचारि वि [संचारि] गति करनेवाला
(कण्ठु)।

संचारिअ वि [संचारित] जिसका संचार
कराया गया हो वह (भवि)।

संचारिम वि [संचारिम] संचार-योग्य, जो
एक स्थान से उठा कर दूसरे स्थान में रखा
जा सके वह (विउ ३००, मुपा ३५१)।

संचारी क्षी [दे] द्रुत-कर्म करनेवाली क्षी
(गाम, पट)।

संचाल सक [सं + चालय] चलाना।
संचालइ (भवि)। क्वक, संचालिज्जंत,
संचालिज्जमाण (सं ६, ३६; लाया १,
६—पय १५६)।

संचालिअ वि [संचालित] चलाना हुआ
(सं ४, २७)।

संचिअ वि [संचित] संगृहीत (घोष ३२६
भवि, नाट—वेणी ३७, मुपा ३५२)।

संचित्तण न [संचित्तन] विगहन, विचार
(हि २२)।

संचित्तणया क्षी [संचित्तना] ऊपर देखो
(उत ३२, ३)।

संचित्तर अक [सं + रथा] रहना, ठहरना,
अच्छी तरह रहना, समाधि से रहना।
सचिस्सर (भावा १, ६, २, २)। संचित्से
(उत २, ३३; घोष ६६)।

संचिज्जमाण देखो संचिग।

संचिट्ट देखो संचिगय। सचिट्ठइ (भग उवा,
महा)।

संचिट्ठण न [संचिधान] प्रवस्थान (वि ४८३)।

संचिण सक [सं + चि] १ संग्रह करना,
इकट्ठा करना। २ उपवच्य करना। सचिण्णइ,
सचिण्णं (सु १०७; वि ५०२)।
सङ्ग, संचिणिप्ता (सुप २, २, ६५; भग)।
क्वक, संचिज्जमाण (भावा २, १, ३, २)।

संचिणिअ वि [संचित] संगृहीत (सं ४०३)।

संचिअ वि [संचोर्ण] प्राचरित (अण)।

संचुण सक [सं + चूर्णय] चूर-चूर
करना, खंड-खंड करना, टुकड़ा-टुकड़ा करना।
क्वक, संचुणिज्जंत (पयम ५६, ४४)।

संचुणिअ } वि [संचुणित] चूर-चूर
संचुणिअ } किया हुआ (महा; भवि,
लाया १, १—पय ४७, सुर १२, २४१)।

संचेयणा क्षी [संचेतना] अच्छी तरह सुख,
आनंद, 'खटखचेयणा' (सिदि ६३७)।

संचोइय वि [संचोदित] प्रेरित (ठा ४, ३
टी—पय २३८)।

संछइय } वि [संछ] ढका हुआ (उप
संछण } ३ १२३, सुर २, २४७, मुपा
संछण } ५६२, महा, सख)।

संछाइय वि [संछादित] ढका हुआ (मुपा
५६२)।

संछाय सक [सं + छादय] ढकना। क्वक,
संछायंत (पयम ५६, ४७)।

संछइ सक [सं + क्षिप] एकत्रित कर

छोड़ना, इकट्ठा करना; 'संछुई एणोहमि'
(विउ ३११)।

संछोम वृ [संछेप] अच्छी तरह ढँकना,
ढोपल (बंधा ५, १५६; १८०)।

संछोभग वि [संछेपक] प्रलेपक (राज)।

संछोभण न [संछेपण] पारजत (राज)।

संजइ वृक्षी [संजति] उत्तम धातु, मुनि;
'मर्नईए दमर्तिणोएमंतर मेस्सरिसवरत्तिर्ण'
(संबोष ३६)।

संजई क्षी [संजतो] साध्वी (घोष १६;
महा; द २७)।

संजणय वि [संजनक] उपपन्न करनेवाला
(गुर ११, १६६)।

संजणण न [संजनन] १ उपपत्ति। २ वि,
उत्पन्न करनेवाला (गुर ६, १४२; मुपा
३८२)। क्षी, 'णी' (एत २८)।

संजणय देखो संजणन (विद्य ६१५, मुपा
३८२; सत्ता २६)।

संजणिय वि [संजनि] उत्पादित (प्राह
१४६; सण)।

संजत सक [दे] तैयार करना। संजतेह
(स २२)।

संजचा क्षी [संयात्रा] नहाज की मुसाफिरी
(लाया १, ८—पय १३२)।

संजत्ति क्षी [दे] तैयारी, 'आणत्ता निय-
पूरिअ सजत्ति कुणह गमणायं' (सुर ७,
१३०; स ६३५; ७३५, महा)। देखो
संजुत्ति।

संजत्तिअ वि [दे] तैयार किया हुआ (स
४४३)।

संजत्तिअ } वि [सांयात्रिक] नहाज से
संजत्तिअ } यात्रा करनेवाला, समुद्र-मार्ग का
मुसाफिर (मुपा ६५५; टी ६, सिदि ४३१;
प २७६; हे १, ७०; महा; लाया १,
८—पय १३५)।

संजत्थ वि [दे] १ कुणित, क्रुद्ध। २ वृं,
क्षेत्र (दे ८, १०)।

संजद देखो संजय = संयत (प्राग; प्राह १२;
सति ६)।

संजम अक [सं + यम्] १ निवृत्त होना।
२ प्रयत्न करना। ३ व्रत नियम करना। ४
सक, बाधना। ५ काट्ना में करना। कर्म,

संज्ञमज्जित (गउड २८६)। वक्क. संज्ञमैत, संज्ञमयंत, संज्ञममाण (गउड ८४०, दखि १, १४८, उत १८, २६)। कक्क. संज्ञ-मोअमाण (गाट—विक्क ११२)। सक्क-संज्ञमित्ता (सूय १, १०, २)। हेक्क-संज्ञमित्त (गउड ४८७)। क्क. संज्ञमिअव्व, संज्ञमितव्व (मग. एणाया १, १—पय ६०)।

संज्ञम मव [दे] छिंताता। संज्ञमेसि (दे ८, १५ टी)।

संज्ञम पुं [संयम] १ चारिय, व्रत, विरति, हिसावि पाप-कर्मों से निवृत्ति (मग. ठा ७, धीय, हुमा, महा)। २ शुभ भनुत्तान (हुमा ७, २२)। ३ खात्ता, मरिहिया (खाया १, १—पय ६०)। ४ इन्द्रिय-निग्रह। ५ वचन। ६ नियन्त्रण, काहू (हि १, २४५)। १ संज्ञम पुं [संयम] थावक-व्रत (धीय)।

संज्ञमण न [संयमन] ऊवर बेत्तो (परमंवि १७, गा २६१, सुपा ५५३)।

संज्ञमिअ वि [दे] सगीपित, छिंयाया हुमा (दे ८, १५)।

संज्ञमिअ वि [सयमित] बांया हुमा, यड (गा ६४६, सुर ७, ४, कुम १८७)।

संज्ञय थक [स + यत्] १ साम्यक प्रयत्न करना। २ सव, वचनी तरह प्रवृत्त करना। सजयए सजए (पय ७९; उत २, ४)।

संज्ञय वि [संयत] साधु बुद्धि, बत्ती (मग. बोधमा १७, महा), 'ममावि मामाविच्छाए सजयाए' (कहू)। 'पंता बी [प्रांता] साधु को उपद्रव करनेवाली देवी मादि (बोधमा ३७ टी)। 'मंदिगा बी [मंदिगा] साधु की भृत्यक रहनेवाली देवी मादि (बोधमा १७ टी)। 'संज्ञय वि [संयत] किसी घर में बत्ती और किसी घर में चरती, थावक (मग)।

राजय पुं [संजय] नगवान् महाधोर के पास दोहा लेनेवाला एक राजा (ठा ८—पय ४३८)।

संज्ञयंत पुं [संजयन्त] एक जैन मुनि (पउम ५, २१)। 'पुर न [पुर] नगर-विशेष (हक्)।

संज्ञर पुं [संज्ञर] पवर, सुचार (पय्हु ६७)। संज्ञल थक [सं + जल] १ जलना। २ आक्रोश करना। ३ क्रुद्ध होना। सजले (सूय १, ६, ३१, उत २, २४)।

संज्ञलय वि [संज्ञलय] १ प्रतिक्षण क्रोध करनेवाला (सम ३७)। २ पुं. कपाय विशेष (कम्म १, १७)।

संज्ञलिअ पुं [संज्ञलिन] तोसरी नरक भूमि का एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ६)।

संज्ञलिअ (थप) वि [संज्ञलिन] आक्रोश-युक्त (मवि)।

संज्ञय देखो संज्ञम = सं + यत्। संजवहु (मग) (मवि)।

संज्ञय देखो संज्ञम = (दे)। सजवड (प्राक्क ६६)।

संज्ञयिअ देखो संज्ञमिअ = (दे) (पाप, मवि)।

संज्ञयिअ देखो संज्ञमिअ = संयमित (मवि)।

संज्ञा देखो संज्ञा (हे २, ८३)।

संज्ञाणय वि [संज्ञायक] विज्ञ, विद्वान्, ज्ञानकार (राज)।

संज्ञात् १ देखो संज्ञाय = संज्ञात् (सुर २, संज्ञाद् ११४, ४, १६०, प्राप्, पि २०४)।

संज्ञाय थक [सं + जन्] उत्पन्न होना। सजायड (सण)।

संज्ञाय वि [संज्ञात्] उत्पन्न (मग, उता महा, सण, पि ३३३)।

संज्ञोवणी बी [संज्ञायणी] १ मरते हुए को जीवित करनेवाली औषधि (प्राक्क ८३)। २ जीवित-वासी नरक-भूमि (सूय १, २, २, ६)।

संज्ञोवि वि [संज्ञविन्] जितानेवाला, जीवित करनेवाला (कण्)।

संज्ञुअ वि [संयुत्] सहित, संयुक्त (इ २२, निरुद्धा ४८, सुर ३, ११७, महा)। देखो संज्ञुत्।

संज्ञुअ न [संयुग] १ लदाई, युद्ध, संग्राम (पाप)। २ नगर-विशेष (राज)।

संज्ञुअ सक् [सं + युज्] जोड़ना। कर्न, 'प्रविंसिट्ठे सप्पावे जलेण सयुज्ज' (ज)टी

जहा नत्थ' (परमं १८०)। कक्क. संज्ञुज्जत्त (सम्म २३)।

संज्ञुअ न [संयुत्] खन्त विशेष (पिग)। देखो संज्ञुअ = संयुत्।

संज्ञुआ बी [संयुआ] छद्म-विशेष (पिग)।

संज्ञुअ वि [संयुत्] संयोगवाला, जुड़ा हुआ (महा, सण, पि ४०४, पिग)।

संज्ञुत्ति बी [दे] तैयारी (सुर ४, १०२; १२, १०१, स १०१, कुप २००)। देखो संज्ञत्ति।

संज्ञुद्द वि [दे] स्वप्न पुन दोहा हितने-चरनेवाला, फाकनेवाला (दे ८, ६)।

संज्ञूह पुन [संयुय] १ उचित सज्ज (ठा १०—पय ४६५)। २ सामान्य, साधारणता। ३ सजेव, समास (सूय २, २, १)। ४ ग्रन्थ-रचना पुस्तक निर्माण (मणु १४६)। ५ दृष्टिवाद के अंशों में एक मूल का नाम (मग १२८)।

संज्ञोअ सक [सं + योजय्] संयुक्त करना, सबद्ध करना, मिथल करना। संज्ञोअड, संज्ञोअड (पिंड ६३८, मग, उव, मवि)। वक्क. संज्ञोयंत (पिंड ६३६)। सक्क. संज्ञो-एऊण (पिंड ६३६)। क्क. संज्ञोएअव्व (पय)।

संज्ञोअ सक [सं + हज्] निरोक्षण करना, देखना। सक्क. संज्ञोइऊण (पु १२२)।

संज्ञोअ पुं [संयोग] सबद्ध, भेद-मिलाप, मिथल (पड, महा)।

संज्ञोअण न [संयोजन] १ जोड़ना, मिलाना (ठा २, १—पय २६)। २ वि. जोड़नेवाला। ३ कपाय-विशेष, धनदायकविषय नामक औषधि-चक्र (चित्ते १२२६, कम्म ५, ११ टी)। 'चिकरणिआ बी [चिंकरणिगी] खड्ग भादि को उसकी मूठ मादि से जोड़ने की क्रिया (ठा २, १—पय ३६)।

संज्ञोअणा बी [संयोजन] १ मिलान, मिथल (पिंड ६३६)। २ मित्रा का एक दोष, स्वाद के लिए मित्रा-प्राप्त चीजों को धारण में मिलाना (पिंड १)।

संज्ञोद्घ वि [संयोजित] मिलाया हुआ, जोड़ा हुआ (मग, महा)।

संज्ञोदय वि [सन्धृ] दृष्ट, निरोधित (भवि)।
संज्ञो ग देखो संज्ञोअ = संयोग (हे १,
२४५)।

संज्ञो गि वि [संयोगिन] संयोग युक्त संबन्धो
(संयोग ४६)।

संज्ञो गेत्तु वि [संयोजन] जोड़नेवाला
(ठा ८—पत्र ४२६)।

संज्ञोत्त (अप) देखो संज्ञोअ = स + योगेय।
सङ्ग संज्ञोत्तिवि (भवि)।

सम्भं नीचे देखो (छाया १, १—पत्र ४८)।
संज्ञेयावरण वि [संज्ञेयावरण] १ सध्या
विभाग का आवरण। २ पु. चन्द्र चाँद
(मणु १२० टी)। ३ पत्र पुन [अभ]
शक्र के सोम-लोचपाल का विमान (भग ३,
७—पत्र १७५)।

सम्भा की [संख्या] १ स भ, साम, सायबास
(कुमा, गउड, महा)। २ दिन बीर रात्रि
का सन्निपात। ३ दुगो का सन्निपात।
४ नदी विशेष। ५ ब्रह्मा की एक पत्नी (हे
१, ३०)। ६ मध्याह्न काल [तिसर] (महा)।
[गय न [यत्] १ जिस नलन म सूर्य
प्रमत्त काल में रहनेवाला हो वह नक्षत्र।
२ सूर्य जिसमें हो उससे चौदहवां या पनरहवां
पतन। ३ जिसके उदय होने पर सूर्य उदित
हो वह नक्षत्र। ४ सूर्य के पीछे के या भागे
के नक्षत्र के बाद का नक्षत्र (अप १)।
[संज्ञेयावरण देखो सम्भं संज्ञेयावरण (अप
२६८)। [पुराण पु [सुराग] साम्र के
बादल का रंग (पण २—पत्र १०६)।
[यली की [यली] एक विवाहक बन्ना का
नाम (महा)। [विगम पु [विगम] रात्रि
रात (निष् १६)। [विराग पु [विराग]
साम्र का समय (जीव ३०४)।

सम्भाअ सक [स + घट्टे] ब्याल करना
चिन्तन करना ध्यान करना। सम्भाअदि
(शी) (पि ४७६ ५५८)। वक्र सम्भायत
(सुपा ३ ६)।

सम्भाअ अक्र [सध्याय] सध्या की तरह
आचरण करना। सम्भाअद (गउड ६३२)।

सटक पु [सटक] अवयव, अवयव (बेइइ
३६६)।

सठ वि [राठ] पूर्ण मायावी (कुमा, दे ६,
१११)।

सठ (पूर्वे) देखो सठ (हे ४, ३२५)।

सठप्प देखो सठन।

सठन सब [स + स्थापय] १ रतना
स्थापना करना। २ धारयमान देना उद्देग-
रहित करना सात्वता करना। सठनइ
संवेष्ट (भवि महा)। वट्ट सठयत (भा
३६)। वट्ट. सम्पिज्जन (सुर १२, ४१)।
सठ संवेक्षण (महा) सठप्प (अप),
सठविअ (पिग)।

सठण देखो सठाण (सुज १५४)।

सठपिअ वि [संस्थापित] १ रत्ना हुआ
(हे १ ६७ भाद्र, कुमा)। २ धारयमान।
३ उद्देग रहित किया हुआ (महा)।

संठा अक्र [स + स्था] रहना, अवस्थान
करना स्थिति करना। मठाइ (पि ३ ६
५८३)।

सठाण न [संस्थान] १ आश्रित आकार
(भग, श्रीप, पत्र २७६, गउड महा ४ ३)।
२ कर्म विशेष जिससे उदय से सूर्य के मृग
या अनुम आकार होता है वह कर्म (अप
६७ कम्म १, २४ ४०)। ३ सन्निवेश
रचना (आम्र ८७)।

सठाण देखो सठन। सङ्ग सठाविअ (गाट-
वैत ७५)।

सठाण न [संस्थापन] रखना [शिरिण्य
सठाण] (अप ८८)। देखो सथावण।

सठाणवा की [संस्थापना] आश्रयन
सात्वता (हे ११, १२१)। देखो सथावणा।

सठाविअ देखो सठविअ (हे १, ६७, कुमा
आम्र)।

सठिअ वि [संस्थित] १ रहा हुआ सम्यक्
स्थित (भग उवा महा भवि)। २ न
आकार (अप)।

सठिइ की [संस्थिति] १ व्यवस्था (सुज १,
१)। २ अवस्था दशा स्थिति (अप
१३६ टी)।

सठ पु [सुण्ड, पण्ड] १ वृष वैल साढ,
[मत्तसुण्ड] अगेइ विलसेइ अ (था १२
सुर १४ १४०)। २ पुन वष प्रादि का
सहृद वृष प्रादि की निबिद्धता (छाया १,

१—अप १६, भग वप्प श्रीप, गा ८, नुप
३, ३०, महा आम्र १४५), त्रिपुनतरसेई
(गउड)। ३ पु नपुसक (हे १ २६०)।

सठास पुन [सदृश] १ वष विशेष सँवली,
विमटा (सूपा १, ४, २, ११ विपा १,
६—पत्र ६८, स ६६६)। २ ऊट-सपि,
वापि श्रीर ऊट वे भीव का भाग (भोप
२ ६ अयोध १५५)। ३ तांड पु [तुण्ड]
पनि विशेष सँवली की तरफ मुसगाता पाली
(पण १, १—पत्र १४)।

सडिअक्र [सं] [वि] मानवा का बीडा स्थान
सडिअक्र [राज दस ५, १, १२)।

सडिअ पु [शाण्डिल्य] १ देश विशेष (अप
१०३१ टी, सप्त ६७ टी)। २ एक जैन
मुनि का नाम (अप एदि ४६)। ३ एक
ब्राह्मण का नाम (महा)। देखो सडेल्ल।

सडा की [वि] मरणा, लगाम (दे ८, २)।

सडेय पु [पाण्डेय] पंड-भूत पंड, नपुसक-
[कुनकुडसदेयामवर] (श्रीप छाया १,
१ टी—पत्र १)।

सडेअ न [शाण्डिल्य] १ गोत्र विभाग। २
पुत्री उस गोत्र म उत्पन्न (ठा ७—पत्र
३६०)। देखो सडिअ।

सडर पु [स] पानी में डेर रखने के लिए
रखा जाता पापाण प्रादि (भोप ३१)।

सडेयय (अप) देखो सडेय, गामइ कुनकुड-
सडेयय (भवि)।

सडाअिअ वि [स] अनुवत अनुयात (दे
८, १७)।

सड पु [पण्ड] नपुसक (आम्र हे १ ३०
संयोग १६)।

सडो की [वि] सांडवी, ऊँची (सुपा ५८०)।

सडोइय वि [सडीअ] उपस्थापित (सुपा
३२३)।

सण वि [सह] जानकार ज्ञाता (आवा
१ ५ ६ १०)।

सणअर देखो सनकअर (राज)।
सणअ न [सानाय्य] पन्थ प्रादि से सत्कार
जाता भी वषेइ (आम्र १६)।

सणअअ अक्र [स + नहु] १ कवच धारण
करना, बखतर पहनना। २ तैयार होना।
सणअअ (पि ३३१)।

संज्ञा वि [संज्ञित] व्यापुल विद्या
दृष्टा विज्ञित (वज्र ७०)।

संज्ञा वि [संज्ञा] संज्ञा-युक्त, क्वचित्
(विद्या १, २—पत्र २३, गड ३)।

संज्ञा देखो संज्ञा (राज)।

संज्ञा की [संज्ञापना] संज्ञा, विज्ञापन
(उवा)।

संज्ञा की [संज्ञा] १ साधारण आदि का
अभिज्ञाप (सम ६; अम; पण्य १, ३—
पत्र ५५; प्राप्ति १७६)। २ मति, बुद्धि
(अम)। ३ संज्ञित, इत्यादि (वि ११, १३४
दी)। ४ आध्यात्म, नाम। ५ पूर्व की पत्नी। ६
गायत्री (हे २, ४२)। ७ विद्या, पुरीष (अ
१४२ दी)। ८ सम्यग् दर्शन (अम)। ९
सम्यग् ज्ञान। (राम १३३)। "इति वि
[संज्ञा] दृष्टी किरा दृष्टा, करणत गया दृष्टा
(वत १ १ दी)। "भूमि की [भूमि]
पुरीषोत्तरान नी जगह (अ १४२ दी, अम
१, १ दी)।

संज्ञामयि वि [संज्ञामित] अथवा विद्या
दृष्टा (पंचा १६, ३६)।

संज्ञाय वि [संज्ञा] १ साध, मात का
आदमी (पंच १०, ३६)। २ स्वजन, सगा
(अप ६५३)। देखो संज्ञाय।

संज्ञास पुं [संज्ञास] संज्ञा-रथाय, चतुर्थ
आयम (नाट—वैत ६०)।

संज्ञामि वि [संज्ञामिन्] संज्ञा-रथाय,
चतुर्थ आयम, मति, वली (नाट—वैत ८८)।

संज्ञा लक्ष [सं + नाहय] लक्ष के
लिए तैयार करना, बुद्ध-सज्ज करना।
संज्ञादि (भीष ४०)।

संज्ञाह पुं [संज्ञाह] १ मुद्र की तैयारी (वि
११, १३४)। २ कवच, बलतर (नाट—
वैत ६२)। "पट्ट पुं [पट्ट] शरीर पर
बांधने का वस्त्र-विशेष (बृह ३)।

संज्ञादि वि [संज्ञादिह] संज्ञा की तैयारी
से सम्यग् दर्शन-वाला, "संज्ञादिह्य अंशे
सदं सोचा" (आमा १, १६—पत्र २१७)।

संज्ञि वि [संज्ञिन्] १ संज्ञावाला, संज्ञा-
युक्त। २ मनवाला प्राणी (सम २, अम,
भीष)। ३ धावक, जैन भूतस्व (भीष ८)।

४ सम्यग् दर्शनवाला, सम्यक्ती, जैन (अम)।
५ न, गोत्र-विशेष, जो वासिष्ठ गोत्र की
शाखा है। ६ पुंल्लि, उम गोत्र में ऊपल
(ठा ७—पत्र १६०)।

संज्ञिभिरुत्त देखो संज्ञिभिरुत्त (अम)।

संज्ञिगास देखो संज्ञिगास (आमा १, १—
पत्र ३२)।

संज्ञिगास देखो संज्ञिगास = सतिर्ष (राज)।

संज्ञिचय देखो संज्ञिचय (राज)।

संज्ञिचिय देखो संज्ञिचिय (आमा २, १,
२, ४)।

संज्ञिउम् देखो संज्ञिउम् (गड)।

संज्ञिगाय देखो संज्ञिगाय (राज)।

संज्ञिवाह देखो संज्ञिवाह (नाट—भावती
२६)।

संज्ञिधाग देखो संज्ञिधाग (नाट—उत्तर
४४)।

संज्ञिपडि वि [संज्ञिपडि] गिरा दृष्टा
(विद्या १, ६—पत्र ६८)।

संज्ञिभ देखो संज्ञिभ (राज)।

संज्ञिय वि [संज्ञित] जिसको इत्यादि किया
गया हो वह (मुपा ८८)।

संज्ञियास पुं [संज्ञियास] समान, सदृश
(पत्र २०, १८८)। देखो संज्ञियास।

संज्ञिरुद्र वि [संज्ञिरुद्र] रुद्रा दृष्टा,
निष्पन्न (आमा २, १, ४, ४)।

संज्ञिरुद्र पुं [संज्ञिरुद्र] गडगड, रुद्रगड
(वि ५, ६४)।

संज्ञिय भक्त [संज्ञि + पत्] पत्नी,
रिक्ता। वह, संज्ञियभाषा (आमा २,
१, ३, १०)।

संज्ञिवाय पुं [संज्ञिपाठ] सज्ज (वंचा
७, १८)।

संज्ञिविदु देखो संज्ञिविदु (आमा १, १
दी—पत्र २)।

संज्ञिवेस देखो संज्ञिवेस (आमा १, ८, ६,
३, अम, गड, नाट—भावती ५६)।

संज्ञिसिञ्जा } देखो संज्ञिसिञ्जा (राज)।
संज्ञिसेञ्जा }

संज्ञिह देखो संज्ञिह (गा २५८, नाट—मुद्र
६१)।

संज्ञिहा वि [संज्ञिधायिन्] समीप-स्थाप्यो
(आमा ५२)।

संज्ञिहाण देखो संज्ञिहाण (राज)।

संज्ञिहि देखो संज्ञिहि (आमा २, १,
२, ४)।

संज्ञिहि वि [संज्ञिहि] सहायता के लिए
समीप स्थित, निकट-वर्ती (महा)। देखो
संज्ञिहि।

संज्ञिउम् देखो संज्ञिउम् (गड)।

संत देखो म = सत् (उवा, अम, महा)।

संत वि [शान्ति] १ सम-युक्त, क्रोध-रहित
(अम, आमा १, ८, ५, ४)। २ दुः-रस-
विशेष, "विणमता केव गुणा सर्वतरसा विमा
उ भावता" (सिद्धि ८८२)।

संत वि [शान्ति] यका दृष्टा (आमा १, ४,
उवा १००, ११२, विद्या १, १; अम,
वे ८, ३६)।

संत वि [संतति] १ संतान, अथवा,
सन्तानवाला, "दुष्टमोला धु हतिपया विणमता
संतति" (स ५०५, मुपा १०५)। २
अविच्छिन्न धारा, प्रवाह (उत ३६, ६; अप
पु १८२)।

संतच्छण व [संतक्षण] क्षिप्रा (सूय १,
५, १, १४)।

संतच्छिन्न वि [संतक्षित] क्षिप्ता दृष्टा
(अम १, १—पत्र १८)।

संतदु वि [संतदु] दया दृष्टा, मय-मीत
(गुर ६, २०५)।

संतति देखो संतति (स ६४४)।

संतच वि [संतत] १ निरन्तर, अविच्छिन्न।
२ विस्तीर्ण।

"अच्छिन्नीलीयमित नतिषि सुहं
दुस्त्वमेव धवर्त।

नरए नेरदयाए अहोनिधि

पञ्चमाणां १

(गुर १४, ५६)।

संतच वि [संतत] यका दृष्टा (गुर १४,
५६; गा १३६; मुपा १६, महा)।

संतस्व देखो संतदु (अम, या १८)।

संतप्य भक्त [सं + पत्] १ तपना, गरम
होना। २ पीठित होना। सतप्य (हे ४,
१४०, अ २०)। भक्ति, संतप्यसिद्ध (स

६८१) । वृ. संतपियच्च (स ६८१) ।

वृ. संतपपमाय (गुज ६) ।

संतपिअ वि [संतप] १ संताप-युक्त (गुमा ६, १५) । २ न. सताप (स २०) ।

संतमस न [संतमस] १ ग्रन्थवार, ग्रंथेरा (पाथ, गुमा २०५) । २ ग्रन्थ वृष, ग्रंथेरा कुंमा (गुर १०, १५८) ।

संतय देखो संतत्त = संतत (पाथ, भग) ।

संतर सक [सं + त्] तैरना, तैर कर पार करना । हेह, संतरसाए (कस) ।

संतरण न [संतरण] तैरना, तैर कर पार करना (मोप १८, वेद्य ७४३, गुज २२०) ।

संतस भक [सं + भ्रम] १ भ्रम-भोत होना । २ रक्षित होना । संतगे (उत २, ११) ।

संता श्री [शान्ता] सातवें जिन-भगवान् की शासन-श्रेयता (मति ६) ।

संताण पुं [संताण] १ बंध (कप्प) । २ ब्रह्मिष्ठिय धारा, प्रवाह (विसे २३६७; २३६८, गड्ड, गुमा १६८) । ३ संतु-जाल, मकड़ी आदि का जाल, 'मकसडासंताणए' (भाषा, पडि, कस) ।

संताण न [संताण] परित्राण, संरक्षण (हृह १) ।

संताणि वि [संताणि] १ ब्रह्मिष्ठिय धारा में उत्पन्न, प्रवाह-वर्ती, 'संताणिएणो न निरणो जड सताणो न मान सताणो' (विसे २३६८, धर्मसं २३५) । २ वय में उत्पन्न, परंपरा में उत्पन्न, 'देव हह भणि पतो उजाणो पासनाहसताणो । केत्तो नाम गण्हरो' (धर्मसं ३) ।

संतार वि [संतार] १ तारनेवाला, पार उतारनेवाला (पउम २, ४४) । २ पुं. संतरण, तैरना (पिग) ।

संतारिअ वि [संवारित] पार उतार हुमा (पिग) ।

संतारिम वि [संवारिम] उल्लेख बोध (भाषा २, ३, १, १३) ।

संताव सक [सं + तापय] १ गरम करना, तपाना । २ हैरान करना । संतावेंति

(गुज ६) । वृ. संताविन (गुमा २४८) ।

वृ. संताविज्जमाय (नाट—मुच्च १३७) ।

संताव पुं [संताव] १ मन वा छेद (पण्ड १, ३—पत्र ५५, गुमा, महा) । २ ताप, गरमी (पण्ड १, ३—पत्र ५५, महा) ।

संतावण न [संतापन] संताप, संतप्त करना (गुमा २३२) ।

संतावणी छी [संतापनी] नरक-बुच्छो (गुम १, ५, २, ६) ।

संतावय वि [संतापक] संताप-जनक (मवि) । संतावि वि [संतापिन्] संतप्त होनेवाला, जलनेवाला (पण्) ।

संताविय वि [संतापिन] सतप्त किया हुआ (काल) ।

संतास मभ [सं + त्रामय] भय-भोत करना, डराना । संतासइ (पिग) ।

संतास पुं [संतास] भय, डर (म ५४४) ।

संतारि वि [संतासिन्] शास-जनक (उप ७६८ टी) ।

संति छी [शान्ति] १ शोध भादि का वय, उपशम, प्रशम (भाषा १, १, ७, १, वेद्य ५६५) । २ मुक्ति, मोक्ष (भाषा १, २, ४, ४; गुम १, १३, १; डा ८—पत्र ४२५) । ३ ब्रह्मिस्मा (भाषा १, ६, ५, ३) । ४ उपश्रव निवारण (विपा १, १—पत्र ६१; गुमा ३६५) । ५ विषयोसे मन को रोकना । ६ ब्रह्म, धाराम । ७ स्थिता (उप ७२८ टी, सति १) । ८ बाह्येष्टम, ठंडाई (गुम १, ३, ४, २०) । ९ देवी-विशेष (वंचा १६, २४) । १० पुं. सोलहवें निबंदेव का नाम (सम ५३, कप्प; पडि) । 'उद्धव न [उद्धव] शान्ति के लिए भक्तक मे दिया जाता मन्त्रित पानी (पि १६२) । 'कम्म न [कर्मण] उपश्रव-निवारण के लिए किया जाता होम भादि कर्म (पण्ड १, २—पत्र ३०, गुमा २६२) । 'कम्मंत न [कर्मन्त] बड़ा शान्ति-कर्म किया जाता हो वह स्थान (भाषा २, २, २, ६) । 'गिह न [गृह] शान्ति-नर्म करने का स्थान (कप्प) । 'जल न [जल] देखो उद्धव (धर्म २) । 'जिण पुं [जिन] सोलहवें जिन देव (सति १) । 'भई छी [भती] एक थायिका का नाम

(गुमा ६२२) । 'य वि [य] शान्ति-प्रदाता (उप ७२८ टी) । 'मूरि पुं [मूरि] एक जेनाचार्य क्षीर प्रायस्कार (जी ५०) । 'सेणिय पुं [श्रेणिक] एक प्राचीन जैन मुनि (कप्प) । 'हर न [गृह] भगवान् शान्तिनाथजी का मन्दिर (पउम ६७, ५) । 'होम पुं [होम] शान्ति के लिए किया जाता होम (विपा १, ५—पत्र ६१) ।

संतिअ } वि [दे. सारक] संन्यो, सन्नय
संतिम } रखनेवाला, धर्मा-पिउसति
वटमाणे (कप्प); 'ना कप्पइ निर्गमाए वा निर्गमोए वा सामारियपिउसि सेज नासचार्ये भायाए ब्रह्मिणो कट्ट संपग्गइसए' (कस; उर, महा, सं २०६, गुमा २७८, ३२२; पण्ड १, ३—पत्र ४२) ।

संतिजाअर देखो संति-गिह (महा ६८, ८) ।

संतिण वि [संतीर्ण] पार-प्राप्त, पार उतरा हुआ, 'संतिणं सधम्म' (मजि १२) ।

संतुट्ट वि [संतुट्ठ] संतोष-प्राप्त (स्वप्न २०; महा) ।

संतुयट्ट वि [संत्यगृह] जिसने पार्वं गुमाया हो वह, जिनने करद बंदी हो वह, वेदा हुआ (आपा १, १३—पत्र १७६) ।

संतुल्लया छी [संतुल्लना] तुलना, तुल्यता, सरोचाई (सार्ध २०) ।

संतुस्स भक [सं + तुप्] १ प्रसन्न होना । २ तुम होना । संतुसइ (सिंरि ४०२) ।

संतेजाअर देखो संतिजाअर (महा ६८, १५) ।

संतो = [अन्तर] मध्य, बीच, 'भंतो संतो व मयाए' (माह ७६) ।

संतोस सक [सं + तोपय] १ प्रसन्न करना, खुशी करना । २ तुम करना । कर्म. सतोसीमदि (शो) (नाट—रत्ना ४०) ।

संतोस पुं [संतोप] दुष्टि, सोम का प्रभाव, 'हरद भण्णुवि पण्णुणे गयम्मि वि सिग्गुणे न संतोसो' (गड्ड, गुमा, पण्ड १, ५—पत्र ६३, प्रासू १७७, गुमा ५३६) ।

संतोसि छी [संतोपि] सन्तोप, गुष्टि, दुष्टि (उवा) ।

संतोसि वि [संतोपिन्] १ सन्तोप-युक्त, सोम-पहित, तिलीनी, दुष्ट (गुम १, १२,

१५: सुपा ४३६) । २ भानन्दित, सुयी (कपू) ।

संतोसिअ पुं [संतोपि क] संतोप, वृषि (उवा १६) ।

संतोसिअ वि [संतोपित] संतुष्ट किया हुआ (महा, सण) ।

संथ वि [संस्थ] संस्थित (विशे ११०१) ।

संथइ } वि [संस्तुत] १ भाच्छादित, संयदिय } परस्पर के संस्पर्श से भाच्छादित (मग, डा ४, ४) । २ पन, निबिड (भाचा २, १, १, १०) । ३ व्याप्त (उत २१, २२, प्रोष ७४७) । ४ समर्प । ५ कुत, जिसने पर्याप्त भोजन किया हो वह (कस, भाचा २, ४, २, १; दत्त ७, ३३) । ६ एकनित (भाचा २, १, १, १) ।

संथण सक [सं + स्तन्] भाज्य करना । संथण्ठी (सुम १, २, ३, ७) ।

संथर सक [सं + स्तृ] १ विद्योना करना, विद्याना । २ नित्तर पाना, पार जाना । ३ निवाह करना । ४ सक. समर्प होना । ५ कुत होना । ६ होना, विद्याना होना । सथर (मग २, १—पन १२७, उवा, कस), 'ए सपुच्छे एो सथरे उणे' (सुम १, २, २, १३; भाचा), संपरित, संपरे, संपरेजा (कप्प, दत्त ५, २, २, भाचा) । वक्क. संथर, संथरंत, संथरमाण (उवर १४२; मीष १८२, १८१; भाचा २, १, १, ६) । सक. संथरिता (मग, भाचा) ।

संथर पुं [संस्तर] निवाह (पिट ३७५; ४००) ।

संथर देखी संथार (सुर २, २४७) ।

संथरण न [संस्तरण] १ निवाह (इह १) । २ विद्योना करना (सज) ।

संथय सक [सं + स्तृ] १ स्तुति करना, स्तुता करना । २ परिचय करना । संथयेआ (सुम १, १०, ११) । क. संथयियवन् (सुपा २) ।

संथय पुं [संस्तरय] १ स्तुति, स्तुताया. 'संथयो मुदं' (निट् २, वय ३; पिट ४८४) । २ परिचय, संसर्ग (उवा; पिट ३१०, ४८४, ४८५, भावक ८८) । ३ वि. स्तुति-कर्ता (एणा १, १६ टी—पन २२०; राज) ।

संथवण न [संस्तवण] ऊपर देखी (सवोष २६; उष ७६८ टी) ।

संथवय वि [संस्तावक] स्तुति-कर्ता (एणा १, १६—पन २१३) ।

संथविअ देखी संठविअ (पउम ८३, १०) । संथार पुं [संस्त्तार] १ दर्भ—कुय आदि संथारग की शय्या, बिछोना (गुणा १, १—संथारय पन ३०, उवा, उव, भग) । २ भ्रमवरक, कमरा (भाचा २, २, ३, १) । ३ उपास्य, साधु वा वास-स्थान (वय ४) । ४ सत्सार-कर्ता (पव ७१) ।

संघाय देखी संठाव । वक्क. संघावंत (पउम १०३, २४) ।

संथायण न [संस्थापन] सान्त्वना, समायोसन (पउम ११, २०, ४९, ८६, ४७) । देखी संठावण ।

संथावणा की [संस्थापना] सत्पापन, रखना (सा २४) । देखी संठावणा ।

संथिद (शी) देखी संठिअ (नाट—मुच ३०१) ।

संथुअ वि [संस्तुत] १ सबड, सपव (सुम १, १२, २) । २ परिचित (भाचा १, २, १, १) । ३ जिसकी स्तुति की गई हो वह, स्थापित (उत १, ४६, भवि) ।

संथुइ की [संस्तुति] स्तुति, स्तुताया, प्रथना (वेय ४६६; सुपा ६५०) ।

संथुण सक [सं + स्तृ] स्तुति करना, स्तुता करना । सपुणह (उव, यणि ६) । वक्क. संथुणमाण (पउम ८३, १०) । कवड. संथुणिज्जंत, संथुव्यंत (गुग १६०; भाक ७) । सक. संथुणिज्जा (वि ४६४) ।

संथुल वि [संस्तुल] रमणीय, रम्य, सुन्दर (वाह १६) ।

संथुव्यंत देखी संथुण ।

संद भक [स्यन्द] १ करना, टपकना । सवंति (सुम १, १२, ७) ।

संद पुं [स्यन्द] १ मरज, प्रसव (से ७, ३६) । २ रय, 'रवि-संदु, ३ दुव्य कर्तों' (पर्वी १४४) ।

संद वि [सान्द] पन, निगिड (भउत्त ३७, विक २३) ।

संदंस पुं [संदंश] दक्षिण हस्त, 'द्विगविमो निवेणं कौववसा गहवि तस्त सारंतो' (कुप्र २३२) ।

संदंसण न [संदंशन] दर्शन, देखना, साक्षात्कार (उप ३५७ टी) ।

संदट्ठ वि [संदठ] जो काटा गया हो वह, जिसको दश सप्ता हो वह (हे २, ३४; कुपा ३, ८, पट) ।

संदट्ठ वि [दं] १ सजान, सायुज्य, संदट्ठय १ सबड (हे ८, १८; मउड, २३६) । २ न. सपट्ठ, सपर्व (हे ८, १८) ।

संदट्ठु वि [संदग्ध] घटित जला हुआ (सुर ६, २०४, सुपा ५१६) ।

संदण पुं [स्यण्डन] १ रप (पाभ, महा) । २ मारतवर्ष में प्रसीत उत्सवियों-काल में उत्पन्न तैलवर्षा जिनदेन (पव ७) । ३ न. क्षाण, प्रसव । ४ बहन, बहुता । ५ जन, पानी, 'जय ए नई निचोयाणा निचसादणा' (कप्प) ।

संदवम पुं [संदवं] रचना, प्रयत्न (उवर २०३, सण) ।

संदमाणिया पुं की [स्यन्मानिका, 'नी' संदमाणी] एक प्रकार का वाहन, एक तरह की पातकी (मीर, एणा १, ५—पन १०७, १, १ टी—पन ४१, मीर) ।

संदाण सक [कु] भ्रमसम्भन करना, सहारा लेना । सदाणह (हे ४, ६७) । वक्क. संदाणंत (कुपा) । कपक. संदाणिज्जंत (नाट—मातवी ११६) ।

संदाणिअ वि [संदानित] बड, निगमित (पाभ, से २, ६०, १३, ७; सुपा ३; कुप्र ६६, नाट—मातवी १६६) ।

संदापिय वि [संदापित] ऊपर देखी (स ३१६, सम्मत १६०) ।

संदान देखी संताअ=साताप (गा ८१७, ६६४, वि २७४, स्वण २७, भवि ६१; माव १७६) ।

संदान पुं [संद्राय] गहड, सपुसय (त्रिवे २८) ।

संदिट्ठ वि [संदिट्ठ] १ निगना प्रथवा जिसको संदेश दिया गया हो वह, उपदिष्ट, कथित (पाभ, डा ७२८ टी, प्रोपमा ३१;

भवि) । २ जिसको प्राप्ता हो गई हो वह; 'हरिणोगेसिराण सत्कव्ययणसंदिट्टेण' (कण्) ।
३ छँटा हुआ, छिन्नना निराशा हुआ (भावसमाधि) (राय ६७) ।

संदिद्ध वि [सं + दध्] सशय यात, सदेह-याला (पाप) ।

संदिन्न न [सं + दत्त] उक्तोस दिगो वा लगत्तार उपवास (नवोष ५८) ।

संदिप्य वि [स्यङ्गित्] दारित, उपरा हुआ (सुर २, ७६) ।

संदिर वि [स्यङ्गित्] भरनेवाला (पण्) ।

संदिस् सक [सं + दिश] १ शिष्टा देशा, समाचार पहुँचाना । २ प्राप्ता देना । ३ अनुमा देना, सम्मति देना । ४ दान के लिए साव्य करना । सवित्त (पद्, महा), सवित्तह (पठि) । कवच, संदिस्संत (पिड २३६) । प्रयो, राह, सवित्तस्यिकुण (पचा ५, ३८) ।

संदिस्सन [सं + सेन] उपदेश, कवन, 'कुलनी-इतिहसगममुहस्योपमसिदित्त' (सबोष १२) ।

संदीण पुं [सं + दी] १ क्षोप-विशेष, पक्ष या मांस प्रादि में पानी से सराबोर होना क्षीय । २ मत्स्यकाल तक रहनेवाला दीपक । ३ भुतशान । ४ क्षीय, क्षीयणीय (प्राचा १, ६, ३, ३) ।

संदीवग वि [सं + दी + व] उत्तेजक, उद्दीपक; 'कामगित्तदीवग' (रत्ना) ।

संदीवण म [सं + दी + व] १ उत्तेजना उद्दीपन (संबोष ५८, नाट—उत्तर ५६) । २ वि, उत्तेजन का कारण, उद्दीपन करनेवाला (उत्तम ८८) ।

संदीविष वि [सं + दी + पि] उत्तेजित, उद्दीपित (भवि) ।

संदुक्कल प्रक [प्र + दी + क्] जलना, सुलगना । संदुक्क (पद्) ।

संदुट्ठ वि [सं + दुट्ठ] प्रतिशय दुष्ट (संबोष ११) ।

संदुम प्रक [प्र + दी + म] जलना, सुलगना । संदुम (हे ५, १५२, कुमा) ।

संदुमिअ वि [प्र + दी + म] जला हुआ, सुलग हुआ (पाप) ।

संदेव पुं [दे] १ सीमा, मर्यादा । २ नदी-मेल, नदी-संगम (दे ८, ७) ।

संदेस पुं [सं + देश] शिष्टा, समाचार (पा ३४२; ८३३; हे ५, ४३४; मुगा ३०३; ५१६) ।

संदेह पुं [सं + देह] संशय, शंका (स्वप्न ६६; गउड, महा) ।

संदोह पुं [सं + दोह] समूह, जल्पा (पाप, गुर २, १४६; विरि १६४) ।

संघ सक [सं + घा] १ साधना, जोड़ना । २ अनुसंधान करना, जोड़ करना । ३ बाँधना, बाँधना । ४ बुद्धि करना, बढाना । ५ करना, 'भग्न व संघद रहं सो' (कुप्र १०२), संघद, सघए (प्राचा, मूप १, १४, २१, १, ११, १४, ३५) । यधि, संधिस्माधि, संधिहिंसि (पि ५३०) । वरु, संधन (से ५, २४) । वरु, संधिज्जमाण (मग) । हेह, संधिर्ध (कुप्र ३८१) ।

संघं देवो संकं (देवप्र २७०) ।

संघण क्षीन [सं + घा] १ साधा, संधि, जोड़ (धर्मसं १०१७) । २ अनुसंधान (पचा १२, ४३) । क्षी, 'णा (भावानि १०५; सुमति १६७, प्रोष ७२७) ।

संघयणा क्षी [सं + घा] साधना, जोड़ना (वग १) ।

संघय वि [सं + घ] संधान-कर्ता (दत्त ६, ५, ५) ।

संघया देखो संघ = सं + घा । सघप्राप्ती (सूप २, ६, २) ।

संघा क्षी [सं + घा] प्रतिज्ञा, नियम (था १२, उव ३३३, सम्मत १७१) ।

संघाण न [सं + घा] १ दो हाथों का संयोग-स्थान (सुर १२, ६) । २ संधि, सुलह (हम्मौर १५) । ३ मय, सुरा दारु (धर्मसं ३६) । ४ जोड़, संयोग, मिलान (प्राचा, कुमा; भवि) । ५ अचार, नौबू प्रादि का मसाला दिया साथ-विशेष (पच ४) ।

संघारण न [सं + घा] सान्त्वना, आस्वादन (स ४१६) ।

संघारिअ वि [दे] योग्य, लायक (दे ८, १) ।

संघारित वि [सं + घा] रखा हुआ, स्थापित (साया १, १—पच ६६) ।

संघाय सक [सं + घा + व] दीटना । संघायद (उत्त २०, ५६) ।

संधि पुं [सं + धि] १ धिद, विवर । २

संधान, उत्तरोत्तर पदार्थ-परिज्ञान (सूप १, १, १, २०; २१, २२; २३; २४) । ३ व्याकरण-प्रसिद्ध दो प्रकार, २—यम ११५) । ४ संघ, चोरी के लिए मोत में बिना जाला छेद (चार ६०; महा; हाय ११०) । ५ दो हाथों का संयोग-स्थान, 'यकताप्रो मन्व-संधीप्रो' (सुर ४, १६५; १२, १६६, जी १२) । ६ मत्त, भूमिप्राय, 'भद्रा विवित-संधिओ हि पुरिसा हर्षति' (स २६) । ७

वर्ष, कर्म-संतति (प्राचा, मूप १, १, १, २०) । ८ सम्यग्-ज्ञान की प्राप्ति । ९ बारिच-मोहनीय वर्ण का दायोपशम । १० भवसर, समय, प्रसंग । ११ मोलन, संयोग (प्राचा) । १२ दो पदार्थों का संयोग-स्थान (विपा १, ३—पच ३६; महा) । १३ मेल के लिए कतिपय नियमों पर मिश्रता-स्थापन, सुलह (कण्, मुमा ६, ५०) । १४ संघ का प्रकरण, कथाया, पत्रिच्छेद (भवि) । 'गिह न [सुह] दो भीतो के बीच का प्रच्छन्न स्थान (कण्) । 'च्छेद्यग, छेद्यग वि [च्छेद + क] संघ लगा कर चोरी करनेवाला (शाया १, १८—पच २३६; विपा १, ३—पच ३६) । 'पाल, वाल वि [पाल] दो राक्षसों की सुलह का रखक (कण्; प्रोप, शाया १, १—पच १६) ।

संधिअ वि [दे] दुर्गंध, दुर्गन्धवाला (दे ८, ८) ।

संधिअ वि [संहि] साधा हुआ, जोड़ा हुआ (से १, ५४, वा ५३, स २६७, संदु ३६; वजा ७०) ।

संधिअ वि [संधित] प्रवारित (गउड) ।

संधिआ देखो संधिवा (प्रोष ६२) ।

संधिर्ध देखो संघ = सं + घा ।

संधित देखो संधिअ = संहित (मग) ।

संधिविगह्नि पुं [सन्धिविगह्नि] राजा की संधि क्षीर लड़ाई के कार्य में निपुण पन्थी (कुमा) ।

सधीर सक [स + धीर्य] आशसन देना, धीरज देना । वहु. सधीरत (मुवा ४७६) ।

सधीरविय वि [सधीरित] जिसको आशसन दिया गया हो वह आशसित (गुर ४, १११) ।

सधुष धक [प्र + दीप्, स + धुश्] १ जलना मुलगना । २ सक जलाना । ३ उत्तेजित करना । सधुषइ (ह ४, १२२, हुमा) । वर्म सधुषिअइ (वजा १३०) ।

सधुषण न [सधुषण] १ मुलगना, जलना । २ प्रवृत्तन मुलगना (भवि) । ३ वि मुलगनवाला (स २४१) ।

सधुषिअ वि [सधुषित] १ जलाया हुआ, मुलगाया हुआ (मुवा ५०१) । २ जला हुआ, प्रवीण, मुलगा हुआ (पाप, महा स २७) । ३ उत्तेजित 'प्रवियेयपवणसधुषिअो वज्र सिमो मे मणम्मि कोवाणतो' (स २४१) । सधुषिअइ (शी) ऊपर देखो (नाट—पुच्छ २११) ।

सधुम देखो सटुम । सधुमइ (पद्) । सधे देखो सध = स + धा । सधेइ सधैति सधेअ (भाचा १, १, १, ५, पि ५००, सूम १ ४, १, ५) । वहु. सधैत, सधेमाण (पदम ६८, ११, वजा १४, २७ भाचा, पि ५००) ।

सन देखो सण (भाचा १, ५, ६ ४) । सनकपूर न [सनाक्षर] प्रकार प्रादि अक्षरा की प्रादिति (एवि १८७) ।

सनग्ग देखो सणग्ग । संनग्गइ (भवि) । सहु. सनग्गिऊण (महा) । हेहु. संनग्गिऊ (स ३७६) ।

सनण म [सन्नाह] इशारा करना, संज्ञा करना (उप २६०) ।

सनत देखो सनय (पहल १, ४—पत्र ७८) । सनद देखो सणद (भीप, विपा १, २ वी—पत्र २३) ।

सनय वि [सनत] नमा हुआ, धनवत (भीप वजा १५०) ।

सनय स [सं + हापय] संभाषण से सटुट करना । संनवेइ (राय १४०) ।

संह देखो संगग्ग । संमहइ (भवि), संमहइ (धर्म २०) ।

सनहण न [सनहन] सनाह (पत्रम १०, ६४) ।

सनहिय देखो सणद (मुवा २२) ।

सना देखो सणा (अ १—पत्र १६, पहल १, ३—पत्र ५५, पाषा सुर ३, ६७, पिद २४५, उप ७११ व ३) ।

सनाय वि [सनाय] पिछाना हुआ, पहिचाना हुआ, 'संनया परियणै' (महा) । देखो सणाय (वज १५३) ।

सनाह देखो सणाह = स + नाहय । सनाहेइ (भीप, वटु ११) । सहु. सनाहिचा (वटु ११) ।

सनाह देखो सणाह = सनाह (महा) ।

सनाहिय वि [सनाहित] उप्यार किया हुआ, सजाया हुआ (भीप) ।

सनाहिय देखो सणाहिय (आया १, १६—पत्र २१७) ।

सनि देखो सणि (सम २, ठा २, २—पत्र ५६, जी ४१ बम्म १ ६) ।

सनिनास देखो सनिगास (अ ६—पत्र ४५६, बम्म) ।

सनिनिट्ट वि [सनिट्ट] आसन समीप में स्थित (मुल ४८) ।

सनिक्किरुत वि [सनिक्किर] डाला हुआ, रखा हुआ (कम्म) ।

सनिगास वि [सनिगास] १ समान, तुल्य (भग २, आया १ १—पत्र २५, भीप, स ६२१) । २ पुन आवाह (पद्) । ३ पुन समीप, पास (पत्रम ३६ १५) ।

सनिगास पु [सनिगुप] सयोग, सजोग सनिगावो वटुअ सबब एण्ढा' (एवि १२८ वी) ।

सनिचय पु [सनिचय] १ निचय, समुह (भाचा) । २ समूह (भाचा १, २, ५, १) । सनिचिय वि [सनिचय] निविड़ किया हुआ (वज १५८ जीवस ११६) ।

सनिजुज सन [सनि + जुज] धन्द्धो तरह जोड़ना । वज्र. सनिजुजव (पिद ४५५) ।

सनिग्ग न [सनिग्ग] सहायवा करने के लिए समीप में आगमन निरुपवा (स ३८२) ।

सनिनाय पु [सनिनाय] प्रतिपत्ति, प्रतिपद (कम्म) ।

सनिम देखो सनिह (आया १, १—पत्र ४८, उवा, भीप १) ।

सनिमहिअ वि [सनिमहित] १ व्याप्त, पूर्ण भरा हुआ । २ पूजित, 'वपा नाम नमरी पटुवरमवणसनिमहिअ' (भीप, आया १, १ वी—पत्र ३), 'प्रविय मगहा जणुवधो गामवतसनिमहिअो' (वटु) ।

सनिय देखो सणिय (सिदि ८६० भवि) ।

सनियट्ट वि [सनिट्ट] रखा हुआ, निरत । 'यारि वि [चारिम्] प्रतिपिद वा वर्जन करनवाला (कम्म) ।

सनियास देखो सनिगास (पत्रम ३३, ११६) ।

सनिलयण न [सनिलयण] प्राप्य, आधार, 'नोमपत्त्या ससार प्रतियवति सव्वदुक्खसनि-यण' (पहल १, ५—पत्र ६४) ।

सनिबइय देखो सणिपडिअ (आया १, १—पत्र १५५) ।

सनिगाइ वि [सनिपातिम्] सयोगी, सम्मन्वी सम्बन्धरसनिगाइणो' (कम्म भीप, सम्मत १४४) ।

सनिगाइ वि [सनिगादिम्] सगत बोलने-वाला व्याजवी कहनेवाला (भग १, १—पत्र ११५) ।

सनिगाइय वि [सनिपातिक्] सनिपात योग से सम्बन्ध रखनवाला (आया १, १—पत्र ५०, वटु १६ भीप ८७) । २ भाव विशेष, धनक भावों के सयोग म बना हुआ भाव (मणु ११३ बम्म ४, ६४ ६८) । ३ पुं. सनिपात मन् सयोग (मणु ११३) ।

सनिगाइय वि [सनिपातिक्] देखो सनि-याइ, मन्धस्वरसनिगाइए' (भीप ५६) ।

सनिगाइय वि [सनिपातिक्] धिक्खत किया हुआ (आया १, १६—पत्र २२३) ।

सनिगाय पु [सनिपात] सयोग, सम्बन्ध (कम्म, भीप) ।

सनिगट्ट न [सनिनिट्ट] १ मोहला, रम्या (भीप) । २ वि. निखन पहाड वाला हो वह, अगर वे बाहर पठान आनकर पहा हुआ (वज) । ३ संहृद कीर म्भिर आसन से व्यस्त—बैठा हुआ (आया १, १—पत्र ६१, राय २७) ।

संनिवेश पुं [संनिवेश] १ नगर के बाहर का प्रदेश, जहाँ बागीर घनेरह सोग रहते हों। २ गांव, नगर आदि स्थान (भाषा १, १—पृष्ठ २६)। ३ यात्री आदि का देश, मार्ग का वास-स्थान, पड़ाव (उत्त ३०, १७)। ४ ग्राम, गांव (तिरि ३८)। ५ रचना (उप पृ १४२)।

संनिवेशणया स्त्री [संनिवेशणा] संस्थापन (उत्त २६, १)।

संनिवेशिष्ठ बि [संनिवेशिष्ठ] रचनावाला, (उप पृ १४२)।

संनिसन्न बि [संनिपण] बैठा हुआ, सम्पत्क स्थित (आपा १, १—पृष्ठ १६; कुप्र १६६; ध्रु १२; सण)।

संनिसिञ्जा } स्त्री [संनिपद्या] आसन-
संनिसिञ्जा } विशेष, पीठ आदि आसन (सम २१; उत्त १६, ३; उप)।

संनिह बि [संनिभ] समान, सदृश (प्राप् २६; सण)।

संनिहाण न [संनिधान] १ ज्ञानावरणीय आदि कर्म (भाषा)। २ कारक विशेष, अधिकरण कारक, आधार (विशे २०६६, ठा ८—पृष्ठ ४२७)। ३ साधन, निष्कृता (स ७१८; ७६१)। *संस्थ न [शास्त्र] समय, व्यास (भाषा)। *संस्थ न [शास्त्र] कर्म का स्वल्प वतनावला शास्त्र (भाषा)।

संनिहिय पुं [संनिधि] १ उपभोग के लिए स्थापित वस्तु (भाषा १, २, १, ४)। २ संपादन। ३ सुन्दर तिथि (भाषा १, २, ४, १)। ४ समीपता, निकटता (उप पृ १८६, स ६८०, कुप्र १३०)। ५ सबय, सग्रह (उत्त ६, १५; दस ३, ३; ८, २४)।

संनिहिय पुं [संनिहित] ग्रहणपत्र देवों के दक्षिण दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पृष्ठ ८५)। देवों संगिहिय (आपा १, १ वी—पृष्ठ ४)।

संनिगम देवों संनिगम, 'उवागारि स्ति करेद कुमस्स सवेज्ज(?) वरुण' (कुप्र २५, वेद्य ७८३)।

संपअ } (भाषा) देवों संपया (विप वि ४१३,
संपइ } है ४, ३३५; कुमा)।

संपइ न्न [संप्रति] १ इन समय, ऋतुन, धन (पाप, महा: जो ५०; ४६; कुमा)। २ पुं. एक प्रसिद्ध जैन राजा, सम्राट् भरोक का पीत (कुप्र २; धर्मवि ३७; पुष्प २६०)। *काल पुं [काल] वर्तमान काल (मुपा ४४६)। *कालीण वि [कालीन] वर्तमान-काल-सम्बन्धी (विगे २२२६)।

संपइण्ण वि [संप्रणी] व्याप्त (राज)।

संपउत्त बि [संप्रयुक्त] सयुक्त, संबद्ध, जोड़ा हुआ (ठा ४, १—पृष्ठ १८७; मूष २, ७, २, उवा; धीप, धर्मवि ६६५, राय १४६)।

संपज्जोण पुं [संप्रयोग] संयोग, संबन्ध (ठा ४, १—पृष्ठ १८७, स ६१४; उप ७२८ टी कुप्र ३७३ बीप)।

संपअर देखो संपगर। संपकरेद (उत्त २१, १६)।

संपक पुं [संपर्क] सम्बन्ध (मुपा २८; सम्मत १४१)।

संपक्क बि [संपर्क] सम्बन्ध, सम्बन्धी (धम्म, काप्र १७)।

संपकम्मल पुं [संस्मृत्त] तापस का एक भेद जो मिट्टी वगैरह पित्त कर राखी का प्रक्षालन करते हैं (भीप)।

संपमप्राप्तिवि बि [संप्रसाहित] बीया हुआ (धर्म ३)।

संपकस्स बि [संप्रक्षिप्त] प्रक्षिप्त, फेंका हुआ, बांसा हुआ (पंच ५, १५७)।

संपगर सक [संप्र + कृ] करना। संपगरेद (उत्त २१, १६)।

संपगाढ बि [संप्रगाढ] १ प्रत्यक्ष आसक्त (उत्त २०, ४५; मूष २, ६, २२)। २ व्याप्त (मूष १, ५, १, १७)। ३ स्थित, व्यवस्थित (सूत्र १, १२, १२)।

संपगिद्ध बि [संप्रगृह्य] अति आसक्त (पण्ड १, ४—पृष्ठ ८५)।

संपगहिअ बि [संप्रगृहीत] ज्ञान प्रकर्ष से वृद्धि, विशेष अभिमान-युक्त (दस १, ४, २)।

संपअ भक [सं + पद] १ संपन्न होना, सिद्ध होना। २ मिलना। संपज्ज (पद, महा)। पवि, संपत्तिस्स (महा)।

संपज्जिअ पुं [संप्रज्जित] सीसा नरक का नववा गरुपेन्द्रक, नरत्तावास-विशेष (वेन्द ६)।

संपट्टिअ देवों संपत्तिअ = संप्रस्थित (उत्त १४२ टी; धीप, संयोग ५५; मुपा ७७; उपपृ १५८)।

संपड मरु [सं + पद] १ प्राप्त होना, मिलना, पुत्ररातो में 'सापडु'। २ सिद्ध होना, निर्वाण होना। संपड, संपडति (वज्जा ११६; सपु १५८; वज्जा ५०)। वरु. संपडंत (सि १४, १; मुर १०, ६७)।

संपडिअ बि [दि संपन्न] लब्ध, मिला हुआ, प्राप्त (दि ८, १८, स २५६)।

संपडिअह सक [संप्रति + वृ + ह] प्रशंसा करना, सायक करना। संपडिअह (मूष २, २, ५५)।

संपडिअह सक [संप्रति + छेदय] प्रति-जागरण करना, प्रवृत्तिवश करना, भन्धी राह निरीक्षण करना। संपडिअह (उत्त २६, ४३)। क. संपडिअहिअउ (दस १, १)।

संपडिअह सक [संप्रति + पद] स्वीकार करना। संपडिअह (भा)।

संपडिअसि स्त्री [संप्रतिपत्ति] स्वीकार, अग्रोकार (विशे २६१४)।

संपडिअइअ बि [संप्रतिपादित] स्थित (उत्त २२, ४६; सुख २२, ४६)। २ स्थापित (दस २, १०)।

संपडिअय सक [संप्रति + पादय] संगान करना, सायक करना। संपडिअय (दस १, २, २०)।

संपणदिय } देवों संपणाइय (राज,
संपणाइय } कण)।

संपणा देवों संपणा (दि ८, ८)।

संपणाइय } बि [संप्रगादित] समी-
संपणाइय } चीन शब्दवाला, 'गुडिस्सदस-
पणाइय' (बीव ३, ४—पृष्ठ २२४, पत्र २२७ टी)।

संपणास सक [संप्र + नामय] प्रार्थन करना। संपणास (उत्त २३, १७)।

संपणिअअ } पुं [संप्रणिवात] प्रणाम,
संपणिवाय } समीचीन नमस्कार (पंचा ३, १८; वेद्य २३७)।

सपणुण्ण वि [सप्रनुत्त] प्रेरित, उत्तेजित, 'अस्त्वश्चानिलसपणुण्णविलोलाजालासयस-कुसुमि' (उप ४५) ।

सपणुण्ण } सक [सप्र + नुत्त] प्रेरणा
सपणोह } करना । सङ्घ. सपणुण्ठिया,
सपणोष्ठिया (दस ५, १, २०) ।

सपण्ण देखो सपन्न (छाया १, १—पत्र ६,
हुका १११ नाट—मुञ्च ६) ।

सपण्णा जो [दे] बेबर या बीबर (मिष्टान्न-
विशेष) बनान का प्रादा, गेहूँ का बहू छोटा
शिमका घृतदूर बनता है (दे =, =) ।

सपत्त वि [सप्राप्त] १ सम्पत् प्राप्त (छाया
१, १, उवा विपा १, १, महा, जो ५०) ।
२ समागत प्राया हुमा (मुपा ४१६) ।

सपत्त पुन [सपान] सुदूर पान, मुपान
(मुपा ४१६) ।

सपत्ति जो [सपत्ति] १ समृद्धि, वैभव,
सम्पदा (पाप, प्राप् ६६ १२८) । २ संसिद्धि ।
३ पूजि, सख बोहलस सपत्ती भविष्यद्
(विपा १, २—पत्र २७) ।

सपत्ति जो [सप्राप्ति] लाभ, प्राप्ति (जिह्व
८६४, मुपा २१०) ।

सपत्तिआ जो [दे] १ बाला कुमारी लक्ष्मी
(दे =, १८ बजजा ११६) । पिप्पली पत्र,
पीपल की पत्ती (दे =, १८) ।

सपरिख्यञ्ज न [दे] शीघ्र, जलती (दे = ११) ।
सपरिख्यञ्ज } वि [सप्रस्थित] १ जिसने
स्वस्थित १ प्रयाण किया हो वह प्रयात,
प्रस्थित (प्रत २१, उप ६६६, मुपा १०७
६६१, छाया १, २—पत्र ३२) । उपस्थित
'आहितावहेहि जहवि ऋक्खिअइ पनरोवररुद्धो
(१ हठो)वि । वहवि ह्म मरड निष्ठुत पुत्तिस्सो
संपत्तिए काते ॥'

(पत्रम ११, ६१) ।

सपद म [सप्राप्तम्] १ युक्त, उचित (प्राक
१२) । २ श्रुता, भव (पमि ५६) ।

सपदत्त वि [सप्रदत्त] दिया हुआ, अर्पित
(महा, प्राप) ।

संपदाण देतो सपयाण (छाया १, ८—पत्र
१५०, भाषा २, १५, ५) ।

सपदाय पु [सप्रदाय] युक्त परंपरागत उपदेश,
श्राम्नाय (संबोध ५३ धर्मस १२३७) ।

सपदाण न [सप्रदापन, सप्रदान] कारक-
विशेष, 'उत्तिष्ठा वरुणमि कत्ता चउत्थो
सपदावणे' (ठा ८—पत्र ४२७) ।

सपरि देखो सपद् = संप्रति (प्राक १२) ।

सपरि देखो सपत्ति = संपत्ति (छल्लि ६, पि
२०४) ।

सपधार देखो सपद्धार = सप्र + धारय ।
सपधारीदि (श्री) (नाट—मुञ्च २१६) ।
कर्म सपधारीयदु (श्री) (पि ५४३) ।

सपधारणा जो [सप्रधारणा] व्यवहार विशेष,
धारणा-व्यवहार (ध्व १०) ।

सपधारि वि [सप्रधारित] निश्चित निर्णोत
(सल) ।

सपधूमिय वि [सप्रधूमित] धूप वासित
धूप दिया हुआ (कस कण्, धाषा २ २,
१, १) ।

सपद्म वि [सपद्म] १ सर्वाति युक्त (भग,
महा कण्) । २ ससिद्ध (विपा १, २—पत्र
२६) ।

सपद्म देखो सपाय ।

सपपुञ्जक सक [सप्र + पुञ्ज] सत्य ज्ञान
की प्राप्त करना । सपपुञ्जकवि (पवा ७ २३) ।

सपसज्ज सक [सप्र + सज्ज] भाजित करना,
भाजना, साध-सूक्त करना । सपसज्जैद (भीष
४४) । सङ्घ सपसज्जेत्ता, सपसज्जिय
(भीष, धाषा २, १, ५, ५०) ।

सपमार सक [सप्र + मारय] मुच्छित
करना । सपमारए (भाषा १, १, २, ३) ।

सपय वि [सप्राप्त] विद्यमान वर्तमान
पाएँ सपय चिय कालमि न याहोहका
सएणा' (विसे ५१६) ।

सपय देखो सपद् (पाप महा मुपा ५६८) ।

सपयट्ट सक [सप्र + युत्त] सम्पत् प्रवृत्ति
करना । सपयट्टेज्जा (धर्मस ६३१) । वक्क
सपयट्टत्त (पंचा ८, १४) ।

सपयट्ट वि [सप्रवृत्त] सम्पत् प्रवृत्त (पुर
४, ७६) ।

सपया जो [सपद्] १ समृद्धि, संपत्ति,
सत्त्वो, विभव (उवा कुमा, सुट ३, ६८
महा प्राप् ६६) । २ वाक्को का विधाय-

स्थान (पव १) । ३ प्राप्ति, 'बोहीलामो
जिण्णधम्मसपया' (वेद्य ६३१, पव ६२) ।
६२) । ४ एक वल्लि-श्री का नाम (उप
५६७ टी) ।

सपयाण न [सप्रदान] १ सम्पत् प्रदान,
अच्छो तरह देना सपयाण (भाषा २, १५,
५ भा ६८ मुपा २६८) । २ कारक विशेष,
श्रुतुवां कारक, जिसको दान दिया जाय वह
(विसे २०६६) ।

सपयाण देखो सपदाण चउत्थो सपयाणो'
(मपु १३३) ।

सपराय १ वि [सपरायिक] सपराय-
सपराय १ सबको, सपराय में उल्लन (ठा
२, १—पत्र ३६, सूम १, ८, ८, मग
आयक २२६) ।

सपराय पु [सपराय] १ सत्कार, जगत् (सूम
१, ५, २, २३, दम २, ५) । २ क्रोध प्रादि
कपाय (ठा २, १—पत्र ३६) । ३ बाहर
कपाय, स्थूल कपाय (सूम १, ८, ८) । ४
कपाय का उद्देश्य (भीष) । ५ छुट्ट, सप्राप्त,
सबाई (छाया १, ६—पत्र १५७, पुत्र
४०० विरु ८८, दस २, ५) ।

सपरिकिञ्चि पु [सपरिकीञ्चि] रागस कथा
का एक रागा, एक लका-वर्ति (पत्रम ५,
२६०) ।

सपरिकर सक [सपरि + ईरु] सम्पत्
परीक्षा करना । सङ्घ. सपरिकरए (संबोध
२१) ।

सपरिस्मित्त } वि [सपरिस्मित्त] वैदित
सपरिस्मित्त } (मप पत्रम, ३, २२, छाया
१, १ टी—पत्र ४) ।

सपरिफुड वि [सपरिस्फुट] मुल्लट, घटित
व्यसन (पत्रम ७८, ६६) ।

सपरिउड वि [सपरिवृत्त] १ सम्पत् परि-
वृत्त परिवार-युक्त (विपा १, १—पत्र १,
उवा भीष) । २ वैदित (सूम २, २, ५५) ।

सपरी सक [सपरि + इ] पर्वणत करना,
अवध करना । सपरीद (विसे १२७७) ।

सपल (सप) मर [स + पन्] भा गिला ।
सपलद (पिप) ।

सपलगा वि [संप्रलग्न] १ सुख, मिला
हुआ । २ जो लक्ष्मी ने लिप मित्र गया हो
वह (छाया १, १८—पत्र २१६) ।

संपलत्त वि [संप्रलपित] उच्च, वषित, प्रहिपादित (छाया १, २—पत्र ८६) ।

संपल्लिय वि [संप्रललित] जिसका भच्छी तरह सावन हुआ हो वह 'सुहसपत्तिसिमा' (भोप) ।

संपल्लिअ वुं [संपल्लित] एव जैन महवि (बन्ध) ।

संपल्लिअंके वुं [संपर्यङ्क] पचासन (भग, श्रीन, बन्ध, राय १४५) ।

संपल्लित वि [संप्रदीप्त] प्रवर्धित, सुलगा हुआ (छाया १, १—पत्र ६३, पत्र २२, १६; धर्मस ६७०, सुपा २६८, महा) ।

संपल्लिमज्ज सक् [संपरि + मज्ज] प्रमा-
जित करना । बहु, संपल्लिमज्जमाण (भाषा १, ५, ५, ३) ।

संपलो सक् [संपरि + ल] जाना, गति करना । सारलित (सुम १, १, २, ७) ।

संपवेय } भक् [सम् + वेप्] बचना ।
संपवेय } संपवेय, सपववए (भाषा २, १६, १) ।

संपवेस वुं [संप्रवेश] प्रवेश, बैठ (गण्ड) ।

संपव्वय सक् [सम् + व्रज्] गमन करना, जाना । बहु, संपव्वयमाण (भाषा १, ५, ५, ३, ठा ६—पत्र ३५२) । हेह, संपव्व-
हत्ताप (कस) ।

संपसार वुं [संप्रसार] एकत्रित होना, सम-
बाय (राज) ।

संपसारग } वि [संप्रसारक] १ भिस्त-
संपसारय } रक, फैलानेवाला (सुम १, २, २, २८) । २ पयलोचनकर्ता (भाषा १, ५, ५, ५) ।

संपसारि वि [संप्रसारिन्] उभर देखो (सुम १, ६, १६) ।

सपसिद्ध वि [संप्रसिद्ध] भ्रमन्त प्रविद्ध (धर्मस ८३७) ।

संपस्स सक् [स + ह्स्] १ भच्छी तरह देखना । विचार करना । सक् संपसिसय (रत्न १, १८) ।

सपहार सक् [सम् + धारय] १ चित्तन करना । २ निर्णय करना, निश्चय करना । सपहारित (सुख १, १५) । युका, सपहारिखु

(सुम २, १, १४, २६) । संह, संपहारिकुण (स १०६) ।

संपहार वुं [संप्रधार] निश्चय, निर्णय (पत्र १६, २६, उप १०३१ टी. भवि) ।

संपहार वुं [संप्रधार] युद्ध, लड़ाई (वे ८, ४६) ।

संपहारण न [संप्रधारण] निश्चय (पत्र ४८, ६८) ।

सपहाय सक् [संप्र + धाय्] दोहना । सप-
हायेइ (भाषा २, १, ३, ३) ।

सपहिट्ट वि [संप्रहट्ट] हणित, प्रमुदित (उप ११५, ३) ।

संपा श्री [दि] बची, मेसला, बरयनी (दे ८, २) ।

संपाइअव वि [संपादितवत्] जितने सम्पा-
दन किया हो वह (हे ४, २६५, विने ६३४) ।

संपाइम वि [सपातिम] १ भ्रमर, कीट, पतंग प्रादि उड़नेवाला जंतु (भाषा, पिठ २४, सुपा ४६१, भोग ३४८) । २ जाले-
वाला, गति-बर्ता, 'तिरिच्छसपादाया या ससा पाणा' (भाषा २, १, ३, ६, २, ३, १, १४) ।

संपाइय वि [संपातित] १ आपत, भाषा हुआ । २ मिलित, मिला हुआ (भवि) ।

सपाइय वि [संपादित] साधित, सिद्ध किया हुआ, 'सपाइयइकवि' (सण) ।

संपाऊण सक् [सम् + आप्] भच्छी तरह प्राप्त करना । सपाऊणइ, संपाऊणति (उत्त २६, ५६, पि ५०५) । भवि, संपाऊणस्सामो (छाया १, १८—पत्र २४१) । प्रयो 'जेणुपाण परं वेव सिद्धि सपाऊण्जेज्जसि' (उत्त ११, ३२) ।

संपाओ भ [संप्रातर] १ अब प्रभात होव तब, प्रात काल । २ प्रति प्रभात, बड़ी सुबह । ३ हर प्रभात (ठा ३, १ टी—पत्र ११८) ।

संपागड वि [संप्रकट] प्रकट, खुला, 'सपा-
गडपडिवेली' (ठा ४, १—पत्र २०३, उव) ।

संपाड सक् [सं + पादय] १ सिद्ध करना, निष्पन्न करना । २ प्रापित वस्तु देना,

दान करना । ४ प्राप्त करना, 'देइ सो जम्मगिय, संपादेइ यत्थाभराइय' (महा), 'सपारिणि मयमो छाएँ ति' (स ६८४), संपाडेव (म ६६) । ५, संपाडेय्य (स २१४) ।

संपाडण वि [संपाटण] बर्ता, निर्माता, 'वा
को धमो तत्पुनर्देव मपाडो होज्ज' (उप १४२ टी) ।

संपाडण न [संपादन] १ निष्पादन (स ७४८) । २ बरण निर्माण (पथा ३, ३८), 'परयसंपाडणिरसिमत' (ठा ११) ।

संपाडिअ वि [संपादित] १ सिद्ध किया हुआ, निष्पादित (स २१४, सुर २, १७०) । २ प्राप्त किया हुआ (उप वृ १२४) । ३ वस्त, धारित (स २३५) ।

संपातो देखो संपाओ (ठा १, १—पत्र ११७) ।

संपाद (श्री) देखो संपाड = सं + पादय् । संपादेदि (माट—यङ्ग ६५) । कृ, संपाद-
णीअ (माट—विह ६०) ।

संपादइत्ताअ (श्री) । वि [संपपादविट्]
सपादन-कर्ता, सपादन (पि ६००) ।

संपादिअवद (श्री) देखो संपाइअव (पि ५८६) ।

संपाय वुं [संपात] सम्मकपवन, 'सतिल-
सपायककइपुणीय' (सुर ३, ११६) । २ संबन्ध, खोप, 'सारीमायासायेयुद्धसंवा-
यकलियं ति' (सुर ४, ७५, गण्ड) ३ व्यर्थ का मूठ, निर्वर्थक प्रवृत्त-मायाण (पणइ १, ५—पत्र ६२) । हाग, तागति (था ६; पथा १, ४१) । ५ भागमन (पथा ७, ७२) । ६ चलन, हिलन (उत्त १८, २३, सुख १८, २३) ।

संपाय देखो संपाओ (राज) ।

संपायग वि [संपादन] सपादन-कर्ता (उप वृ २६; महा, वेइय ६०५) ।

संपायग वि [संप्रापक] १ प्राप्त करनेवाला; 'विजिणुणसपायो होइ' (वेइय ६०५) । २ प्राप्त करनेवाला (उप वृ २६) ।

सपायण देखो संपाडण (सुर ४, ७३, सुपा २८, ३४३; वेइय ७६७) ।

संपायणा ओ [संपादना] ऊपर देखी (पचा १३, १७)।

संपाल सव [सं + पालय्] पालन करना। संपालइ (भवि)।

संपाव सक [संप्र + आप्] प्राप्त करना।

सापवेइ (भवि)। सङ्. संपप्य (संगेय १२)।

हेइ. संपाविउं (मम १; मग, सौष)।

संपाय सक [संप्र + आप्] प्राप्त करवाना। सापवेइ (उवा)।

संपावण न [संप्र, पण] प्राप्ति, लाभ (छाया १, १—पत्र २४१, गुर १४, ५७)।

संपाविअ वि [संप्राप्ति] प्राप्त, लब्ध (गुर २, २२६, मुवा १६५, मण)।

संपाविअ वि [संप्राप्ति] नोद जो से जाया गया हो वह (राज)।

संपासंग वि [दि] शीर्षे लम्बा (दि ८, ११)।

संपिण्ड वि [संपिण्डन] १ द्रव्यो का परस्पर संयोजन (पिंड २)। २ सप्तह (घोष ४०७)।

संपिण्डिअ वि [संपिण्डित] विपदाकार विषा हुआ, एवम विषा हुआ (सीन, जी ४७, मण)।

सपिण्य देवो संपेह = सत्र + ईत्। सपि-भरई (सग २, १२)।

संपिटि वि [संपिट] पिता हुआ (सूच १, ४, ८)।

संपिण्ड वि [संपिण्ड] निवर्तित, 'रज्जु-पिण्डकोय' 'देवो' 'विपुल्लो' 'गुणसिपण्ड' (पण २, ४—पत्र १३०)।

संपिदा सव [समपि + पा] काष्ठदायन करना, डबना। सङ्. संपिदिहाराण (पि ५८३)।

संपीड पुं [सपीड] शीघ्र, दबाना (गज)। देतो संपील।

संपीडिअ वि [संपीडित] दबाया हुआ (गज १४४)।

सपीणिअ वि [संपिणि] गुप्त विषा हुआ (मण)।

संपीन पुं [संपीन] शीघ्र, सङ्. (उत १२, २१)।

संपीना ओ [संपीटा] बीरा, दुःखानुभव (उत १२, १२, २२, १२, ७८)।

संपुच्छ सक [सं + प्रच्छ्] पूछना, प्रश्न करना। सपुच्छिअ (सी) (माट—विक्र २१)।

संपुच्छण ओन [संप्रच्छन, संप्रश्न] प्रश्न, पृच्छा (सूच १, ६, २१; मुवा २१)।

ओ. 'णी' (सस ३, ३)।

संपुच्छणी ओ [संपुच्छना] भङ्ग, समानर्नो (सय २१)।

संपुज्ज वि [संपूज्य] समाननीय, भादरल्योय (पत्र ३३, ४७)।

संपुड पुं [संपुट] १ जुटे हुए दो समान चंय बाजी बल्ल, दो ममान चंगो का एक दूसरे से जुड़ना 'बवाइसाउपपण्णि' (पण १), 'दवसाउ' (सपू. महा. भवि. से ७, ५६)।

२ सचय, सवृह (सूच १, ५, १, २३)।

'कलय पुं' [कलरु] दोनो तरफ जित्त बंयो पुस्तक, दिवाव को बहो के समान फिताव (पत्र ३०)।

संपुड मग [सपुटय्] जोड़ना, दोनो हिस्सो को मिलाना। संपुडइ (भवि)।

सपुडिअ वि [सपुटित] जुड़ा हुआ (छाया १, १—पत्र ६३)।

संपुण्य वि [सपूर्ण] १ पूर्ण, पूरा (उवा, मण)। २ न, दस दिनो का लगातार उपवास (संगेय १८)।

सपूअ सव [सं + पूज्य] सम्मान करना, धर्म्यर्था करना। सङ्. सपूअण (पंचा ८, ७)।

संपूजिय वि [संपूजित] धर्म्यार्थित (मण)।

संपूयण न [संपूजन] पूजन, धर्म्यर्था (सूच १, १०, ७, चर्च ६३४)।

संपूरिय वि [संपूरित] पूर्ण किया हुआ, 'संपूरियदेवता' (महा. सण)।

संपेह पुं [संपेह] दबाव (पत्र ८, २७२)।

सपेम मग [संप्र + इप्] भेजना। सपेमइ (मण भवि)।

सपेय पुं [संपेय] श्रेष्ठ, भेजना (छाया १, ८—पत्र १७७)।

सपेयम म [संपेयम] ऊपर देतो (छाया १, ८—पत्र १७७, स १७६; गज, मण)।

सपेयिय वि [संपेयित] भेजा हुआ (गुर ११, ११३)।

संपेह सक [संप्र + ईत्] देतना, निरीक्षण करना। सपेहइ, सपेहेइ (सस २, १२; पि ३२३; मग, उवा, मण)। सङ्. संपेहाय,

संपेहिचा (भावा १, २, ४, ४, १, ५, ३, २; सूच २, २, १; मग)।

संपेहा ओ [संपेक्षा] पर्यावाचन (भावा १, २, २, ६)।

सफ न [दि] कुमुद, चन्द्र-ममल (दि ८, १)।

संफाल सव [सं + पाटय्] पाड़ना, चीरना। सफालइ (भवि)।

संफाली ओ [दि] वंशित, श्रेणि (दि ८, ५)।

संफास सव [स + सृष्ट्] स्वर्ण करना, घूना, 'माइहाण सफाणे' (भावा २, १, ३, ३; २, १, ५, ५, २, १, ६, २; ५; ५)।

संफाम पुं [संपर्श] स्वर्ण (भावा, उ ४८८ टी, पत्र २ टी, हे १, ४१, पडि)।

संफासण न [संपर्शण] ऊपर देतो, 'भाणालीरियसफामणमावेतो' (पंचा १०, २८)।

संफिट्ट पुं [दि] संयोग, मेहन (भा १६)।

संकुप वि [संकुप] विचलित (माट १४)।

सकुमिय वि [संकुप] प्रमादित 'दणअवर-नियरसकुमियसिमु' (मुवा २६३)।

संय पुं [शाम्भ] १ श्रीकृष्ण यागुदेन का एक पुत्र (छाया १, ५—पत्र १००, मग १४)।

२ राजा बुधारेण के सम्य बी एक गेह (गुर १४३)।

संय पुं [शाम्भ] वज्र, दंड का भाग्य (गुर १६, २०)।

संधंध सव [सं + धन्य्] १ जोड़ना। २ भाग्य करना। भर्ष. संयमन (पेत् ७२७)।

संयध पुं [संयध] १ संयम, मंद (भवि)। २ संयोग (पत्र १, १३)। ३ भाग्य, मगई, रिहोरा (पत्र ४३)। ४ धारणा, मेहन (पत्र ३१)।

संयधिय वि [संयधिय] धर्म्य परीक्षा (उवा; मग ११०, म १३१)।

संयध पुं [संयध] ध्यानविषय, हरिण की एक चर्च (गुर १, १—पत्र ७, ६, ८, ६, मग ४३१)।

संभल पुन [संभल] १ पापेय, रास्ते में जाने का भोजन, 'पन्नाए विम परलोपसंबलो मिलेइ नग्राए' (सम्मत १५७; पाप; गुर १६, ५०; दे ६, १०८; महा: भवि, गुण ६४)। २ एक नागद्वार देव (भावय)।

संभलि देखो संभलि = शिर्भलि (भाषा २, १, १०, ४)।

संभलि पुंछी [शाल्मलि] बृष-विशेष, सेमल का पेड़ (गुर २, २३४, ८, ५७)। देखो शिर्भलि।

संवाधा देखो संवाहा (पठन २, ८६)।

संवाह सक [सं + वाध्] १ पीडा करना। २ दबाना, चप्पी करना। संवाहण (निष् ३)।

संवाह पुं [संवाध] १ नगर-विशेष, जहाँ ब्राह्मण प्रावि चारो बणों की प्रभुत बस्ती हो वह शहर (उत्त ३०, १६)। २ पीडा, 'संवाहा बहुवे पुत्रो दुस्सकमा भ्रजाणमो भ्रमासयो' (भाषा)। ३ वि. सकीण, सवर। 'सवाहो संकिण' (पाप)।

संवाहण न [संवाधन] देखो संवाहण (भाषा १, ६, ४, २)।

संवाहणा छी [संवाधना] देखो संवाहणा (बीप)।

संवाहणी छी [संवाधनी] विद्या-विशेष (पठन ७, १३७)।

संवाहा छी [संवाधा] १ पीडा (भाषा १, ५, ४, २)। २ संन-मर्दन, चप्पी (निष् ३)।

संवाहिय वि [संवाधित] १ पीडित (सुम १, ५, २, १८)। २ देखो संवाहिय (बीप)।

संयुक्त पुं [संयुक्त] १ शल (छा ४, २—पत्र २१६, गुण ५०, १६५)। २ राख का एक भागित—खरदूषण का पुत्र (पठन ४३, १८)। ३ एक गाँव का नाम (राज)। 'रुद्रा छी [विर्वा] शंख के धारित के समान भिन्ना-नर्पा (उत्त ३०, १६)। देखो संयुक्त।

संयुक्त सक [सं + युष्] सपम्पना, ज्ञान पाना। संयुक्त, संयुक्त, संयुक्त (महा:

त ४८६; सुम १, २, १, १; वै ७३)। वहु. संयुक्तमाण (भाषा १, १, २, ५)। संयुद्ध वि [संयुद्ध] शल-प्राप्त (उत्त, महा)। संयुद्धि छी [संयुद्धि] ज्ञान, बोध (धम्म ३६)।

संयुक्त पुं [संयुक्त] जल-शुक्ति, शुक्ति के भाकार वा जल-जल-विशेष (दे ८, १६; गठ)।

संयुधि छी [संयुधि] सत्य धर्म की प्राप्ति (धम्म १३६६)।

संयुद्ध सक [सं + योध्] १ सपम्पना, कुम्पना। २ सामन्तण करना। ३ विमर्ष करना। संयुद्ध, संयुद्ध (भवि, महा)। कवहु. संयुद्धिजमाण (भाषा १, १५)। क. संयुद्धिअण (छा ४, ३—पत्र २४३)।

संयुद्ध पुं [संयुध] ज्ञान, बोध, समझ (भाषा २०)।

संयुहण न [संयुधन] १ ऊपर देखो (विदे २३३२, सुख १०, १, बह्म ७७५)। २ सामन्तण (गठ)। ३ निम्नति (भाषा १, ८—पत्र १५१)।

संयुद्धि देखो संयुधि (उप ५ १७६, वै ७३)।

संयुद्धिअ वि [संयुधित] १ समझावा दृष्टा (भाति ४८)। २ वितापित (भाषा १, ८—पत्र १५१)।

संयुध वि [संयुधन्त] १ भीत, घबहाया हुआ, नस्त (उत्त १८, ७, महा; गठ)। २ गुन. प्रथम नरक वा पाषाणों नरक-नरकस्थान-विशेष (देवन्द ४)। ३ न. भय, घबराहट (महा)।

संयुधित छी [संयुधित] सन्नम, उत्तुकता (गग १६, ५—पत्र ७०६)।

संयुधिय वि [संयुधित] सन्नम से बग हुआ (भय १६, ५—पत्र ७०६)।

संयुध वि [संयुधन्त] चूणित (उत्त १६, ६१)।

संयुध सक [सं + यण्] कहना। संयु. संयुधित (पिप)।

संभगिअ वि [संभगित] ब्याप, उत्त (पिप)।

संभम सव [सं + भम्] १ प्रविशय भ्रमण करना। २ भय. भय-भोत होना, चरहाना। वहु. संभमत्त (वि २७५)।

संभम पुं [संभ्रम] १ भावर. 'संभमो भावरो पयतो व' (पाप)। २ भय, घबराहट, शोक, 'संभोहो समो तापो' (पाप, प्राप् १०५, महा)। ३ उत्तुबता (मीन)।

संभर सक [सं + भृ] १ धारण करना। २ पीपण करना। ३ संसेप करना, संकोच करना। वहु. संभरमाण (दे ७, ५१)। संभ. संभर (पत्र) (पिप)।

संभर सव [सं + भृ] स्मरण करना, याद करना। संभर, संभरिमी (महा, पि ४५५)। वहु. संभरत्त, संभरमाण (गा २६; गुण ३१७; से ७, ५१)। क. संभरणिज्ज, संभरणीय (धम्मो १८; उप ५३८ टी)।

संभरण न [संभरण] स्मरण, याद (गा २२२; भाषा १, १—पत्र ७१, वै ७, २५; उवहु १४)।

संभरण छी [संभरण] ऊपर देखो (उप ५३० टी)।

संभराविअ वि [संभरित] याद बराया हुआ (दे ८, २५; कुन ४२१)।

संभरिअ वि [संभरित] याद किया हुआ (गठ, बाह ८६२)।

संभल सक [सं + भल्] याद करना। संभल (उप ५ ११३)। कर्म. संभलज्ज (बजा ८)। वहु. संभलि (पत्र) (पिप २६७)।

संभल सक [सं + भल्] १ सुमना, सुनराती में 'सामन्तु'। २ भय. सम्भवना, सावधान होना। संभल (भवि). 'सामन्तु मह पडन् (सम्मत २१७)। सहु. संभलि (पत्र) (पिप २६८)।

संभली छी [दे. संभली] १ हठी (दे ८, ६, वय ५)। २ बुद्धी, पर-पुरुष के साथ धन्य छी का योग करानेवाली छी (कुमा)।

संभव सव [सं + भू] १ उत्पन्न होना। सामान्य होना, उत्कट रास्य होना। संभव

(वि ४७५, बाल, नवि)। वक्र समभवत् (सुपा ५६)। कृ. समभवत् (पा १२ मृषति ६५)।

समभ ५ [समभ] १ उत्पत्ति (महा, उव, हे ४, १६५)। २ समावना (मवि)। ३ वर्तमान भवसंयोगी काल में उत्पन्न होकर जिनदेव का नाम (सम ४३, पठि)। ३ एक जैन मुनि जो दूसरे कापुत्र के पूर्व-जन्म के पुत्र थे (पठम २०, १७६)। ४ कला विशेष (मोप)।

समभ ५ [दि] प्रवृत्त जरा, प्रसूति से होने-वाला दुःखापा (वे ६, ४)।

समभ (मभ) देखो सम्भम् = सम्भम् (मवि)। समभि वि [समभिन्] जिसका सम्भव हो वह (पच ५, २५ नाम ३५)।

समभिय देखो समूअ (विद्य ५५६)।

समभन् देखो सम्भ = सं + भू।

समागय न [समागय] गुजरात का एक प्राचीन नगर (राज)।

समार मय [स + भायय] मसाला से सङ्कट करना, बांति करना। संमारेड, समारेडि समारेड (छाया १, १२—पठ १७५, १७६)। संक. समारिय (विड १६३)। कृ. समारिज्ज (छाया १, १२)।

समार ५ [समार] १ समूह, जल्मा 'जल्लुम-धमसमारमामभाए बरावप राया' (उप ६५८ टी. श्रावक १३०)। २ मसाला छाव प्रादि में ऊपर गला जाता मसाला (छाया १, ११—पठ १६६)। ३ परिग्रह, द्रव्य-सम्पत्ति (पणह १ ५—पठ ६२)। ४ भवप्रयत्ना नर्त का वदन (मूय २, ७, ११)।

समारज नि [संमृज] याद किया हुआ (वि १५, ६५)।

समारि न वि [संमरिखि] याद करणा हुआ (छाया १, १—पठ ७१, गुर १५, २३२)।

संभाल मय [सं + भायय] संभावना। संभाव्य (मवि)।

संभाल ५ [संभाल] गोत्र, सम्पत्ति उन्नि मूरमि या न करणाए कान्धणामनिमित्त ममापयो वार संभाला बायो सत्त, न बरववि जार पडतो बरवि उन्नाडा' (उप २०० टी)।

संभालि वि [संभालि] संभाला हुआ (सण)।

संभाव सक [स + भायय] १ संभावना करना। २ प्रत्यक्ष नजर से देखना, 'न संभावति श्वरोहे' (मोह ६) संभावेवि (सवेम ४) सम्भावहेहि मोह २६)। नमं. संभावीप्रदि (शी) (नाट—मृच्छ २.०)। वक्र. संभावजत (नाट—शकु १३५)। संकृ. संभाविअ (नाट—शकु ६७)। कृ. संभाविज्ज, संभाविणीय (उप ७६८ टी. स ६१, म्मा २१)।

संभाज भक [लुभ] लोभ करना, भाववि करना। संभावद (ह ४, १५३, पठ)।

संभावणा जी [संभाजना] समर (स ६, १६, गडड)।

संभावि वि [संभाविन्] जिसका सम्भव हो वह (आ १४)।

संभाविज वि [संभाविन्] जिसकी संभावना की गई हो वह (नाट—विज्ज १४)।

संभाज स [स + भाय] बातचीत करना, बालाप करना। कृ. संभासणाय (सुपा ११५)।

संभास ५ [संभास] संभाषण, बातचीत (उप ५ ११२ शवोप २१ सण, कान, सुपा ११५, ५४२)।

संभासण न [संभासण] ऊपर देखो (मवि)। संभासण स्त्री [संभासण] सत्पण, कौशल (मोप)।

संभासि नि [संभास] संभाषण, 'संभासि-संभासिहे' (बाल)।

संभासिय वि [संभासिय] जिसके साथ संभाषण—बातचीत किया गया हो वह (महा)।

संभेदन न [संभेदन] भाषात (गडड)।

संभिम्य [वि [संभिम] १ परिपूर्ण (पठ संभिम] १६८)। २ रिचिद मूय कुछ बस (देड २४२)। ३ व्याप। ४ विप-कुल निज—नेदस्ता (पणह २, १—पठ ६६)। ५ सडिज (सुड १, १३)। 'सोअ वि [संभिम] १६८' संभिय विदेवारा, शरोरु बरिदि नो भाने, कन्धो नो रउरु स

से गुनने की शक्तियाला (पणह २, १—पठ ६६ मोप)।

संभिम न [दि] भाषात (गडड ६३४ टी)। संभिय वि [संभिय] १ पुत्र, 'धारसंभिय' (मूय १, ६, ३)। २ सम्भार-मुक्त, सङ्कट, 'वहुसमारसंभिय' (छाया १, १६—पठ १६६, स ६८ विसे २६३)।

समु ५ [गम्मु] १ शिर, शकर (सुपा २४०, सार्थ १३५, सपु १५०)। २ रायण का एक मुकट (पठम ५६, २)। ३ छद विदेव (विग)। 'यसिणी जी [गृहिणी] गौरी, पार्थी (सुपा ४४२)।

समुज सक [स + मुज] साथ भोजन करना, एक मण्डी में बैठकर भोजन करना। समुजइ (कम)। हेड. समुजिसा (मूय २ ७, १८, डा २, १—पठ ५६)।

संमुजणा जी [संभोजना] एकत्र भोजन-व्यवहार (पठ)।

संमुद नि [दि] दुर्जन, बल (वे ६, ७)।

संभूय वि [संभूय] १ ज्योत्स, संभाट (सुपा ४०, ५०७, महा)। २ पु. एक जैन मुनि जो प्रथम कापुत्र के पूर्व-जन्म में पुत्र थे (सम १६३, पठम २०, १७६)। ३ एक प्रसिद्ध जैन महर्षि जो स्थूलभद्र मुनि के पुत्र थे (धर्मवि ३८ सार्थ १३)। ४ व्यक्ति-यावक नाम (महा)। 'विजय पु [संभूय] एक जैन महर्षि (हृद ४४२ विग ३, ५)।

संभूय जी [संभूय] १ उत्पत्ति (पठम १७ ६८, वा ६५४ गुर ११, १३५, पठ २४४)। २ श्रेष्ठ विभूति (सार्थ १३)।

संभूय स [स + भूय] मरुत करना। संभूय (सण)।

संभाज पु [संभोग] गुग्गर भोग (सुपा ५६८, कपु)। देखो संभोग।

संभोग नि [संभोगि] छपान नामाचारी-विमानुग्रह हन करण विसे नाप सान-पाल छोडि का प्यरदर हो मर देना गापु (छोपण २, १ वा ४, ५१, ६ ५०)।

संभोग पु [संभोग] छपान नामाचारी-गापुलों का दहन मन्त्रादि-व्यवहार (मम २१, मी, कम)।

संभोगि वि [संभोगिन्] देखो संभोगिअ
(हुप्र १७२)।

संभोगिय देखो संभोगिअ (ठा ३, ३—पत्र
१३६)।

संमइ छी [संमति] १ धनुषति (मृग १, ८—
१४; विसे २२०६)। २ पुं, वायुवाय, धवन।
३ वायुवाय वा धनिधता देर (ठा ३, १—
पत्र २६२)।

संमज्ज पुं [संमार्जे] संमार्जन, साफ करना
(विसे ६२५)।

संमज्जग पुं [संमज्जरु] धानप्रत्यक्ष तापसों
की एक जाति (मीर)।

संमज्जण न [संमार्जन] साफ करना, प्रमार्जन
(धनि १५६)।

संमज्जणी छी [संमार्जनी] मज्ज (दे ६,
६७)।

संमज्जिय वि [संमार्जित] साफ किया हुआ
(पुत्रा ५४, धीय; धनि)।

संमह वि [संमुह] १ प्रमादित, लका दिया
हुआ (राय १००; धीय, पत्र १३३)। २ लुछों
भरा हुआ (जीवत १३६; पत्र १२८)।

संमहु पुं [संमह] १ पुट, लट्ठाई (हे २,
३६)। २ परस्पर संघर्ष (हे २, ३६;
कुमा)।

संमहुिअ वि [संमर्हित] सघट्ट (हे २, ३६)।

संमह सक [सं + मुह] मर्दना करना।
सह, संमर्दिता (पत्र ५, २, १६)।

संमह देखो संमहु (अ १३६ टी, पात्र; दे
१, ६३; मुग २२२; प्राह ८६)।

संमहा छी [संमर्हा] प्रशुपेयणा-विशेष, बल
के कोरी की मध्य भाग में रखकर भयना
अभि पर बैठकर जो प्रशुपेयणा—विशेष-
काण की जाय वह (धीय २६६, कीपना
१६२)।

संमय वि [संमय] १ मनुष्य। २ शमीष्ट
(उर)।

संमयिय वि [संमयित] गप्पा हुआ (धनि)।

संमा प्रक [सं + मा] समझना, धटना।
संमाइ (हुप्र २७७)।

संमाग सक [सं + मानय] १ आवर करना,
गौरव करना। समाएह, संमारोह, संमारिणित,

संमारोहो (मनि; उर। मद्रा; कप; वि
४७०)। मरि. संमारोहिति (वि ५२८)।

सं. संमारणव, संमारणन (मुग २२५;
पत्र १०५, ७६)। सं. संमारिजण,

संमारोहण, संमारिणा (मद्रा; कप)।

संमारि. संमारिजमग (वात)। ३. संमारि-
णजिज (एणा १, १ टी—पत्र ४; उर)।

संमारण पुं [संमान] आवर, गौरव (उर; हे
४, ३१६; नाट—मालि ६३)।

संमारणन न [संमानन] आवर देखो (मुग
२०८)।

संमारिण वि [संमारिण] निवृत्त मालि
विद्या गया हो वह (कप, मद्रा)।

संमिद (सी) वि [संमित] १ तुल्य, समान।
२ समान परिमाणता (मनि १८६)।

संमिल सक [सं + मिल] मिलना। संमि-
लह (मनि)।

संमिलिअ वि [संमिलिअ] मिला हुआ
(धनि)।

संमिल सक [सं + मिल] लघुचमना,
संनोचन। संमिलह (हे ४, २३२; पत्र;
भावा १५५)।

संमिरस वि [संमिथ] १ मिला हुआ, युक्त
(मद्रा)। २ उक्तों हुई छानवाला (पात्र
२, १, ८, ६)।

संमील देखो संमिल। समीवर (हे ४, २३२;
पत्र)।

संमीलिअ वि [संमीलिअ] संयुक्त (वि १२,
१)।

संमील देखो संमिथ (मुद्र २, १११; सण)।

संमुद पुं [संमुचि] आरतवर्ष में शक्य में
हीनेपता एक कुनवर पुत्र (ठा १०—पत्र
५८८)।

संमुच्छ सक [सं + मुच्छ] उन्नत
होना, 'एवासि ए लेमालं भंतेरु' धणएत-
रीपो लिणएतेषाओ संमुच्छति' (मुद्र ६)।

संमुच्छण छीन [संमुच्छन] की-पुल्ल के
धंयोग के बिना ही सुरादि की वध होतो
हीनो की क्वाति (धर्म १०१७)। छी. 'गा'
(धर्म १०३२)।

संमुच्छिअ वि [संमुच्छिअ] की-पुल्ल के
समाग के बिना उन्नत होनावा प्राणी
(पात्रा, ठा ३, ३—पत्र ३३४ सग १४६;
जी २३)।

संमुच्छिअ वि [संमुच्छिअ] उन्नत (मुद्र
६)।

संमुग्ग घा [सं + मुद्] मोह करना,
गुण होना संमुग्गह (मंयोग ५२)।

संमुत्त देखो संमुत्त (राज)।

संमुम सक [सं + मुश्] गुण क के लक्ष
करना। सं. संमुममाण (मग ८, १—
पत्र ३६५)।

संमुद वि [संमुद] सामने प्राणा हुआ (हे १,
२६; ४, ३५५; ४१५; मद्रा)। छी. 'ही'
(वाप्र ७२३)।

संमुद वि [संमुद] जड़, विपुट (पात्र, मुग
५४०)।

संमैअ पुं [संमैअ] १ पंचत किरीट जो
आचारस 'चारुनाय महा' के नाम से प्रतिष्ठ
है (खाया १, ८—पत्र १५४; कप; मद्रा)
मुग २११; ५८४; विसे १८)। २ राम का
एक मुद्र (पत्र ५६, १७)।

संमेल पुं [संमेल] वरित्त भयवा मित्रो का
जियनवाट, श्रौति-मोक्ष (पात्रा २, १,
४, १)।

संमोह पुं [संमोह] १ मूढता, भ्रमन (मद्रा;
स ३५८)। २ मूर्खता (मिवा ५२)। ३
दुःख, बट (से १, १३)। ४ क्षाणित दोष
(उप १००)।

संमोह न [संमोह] १ मिथ्यात्व का एक
भेद—रागी को देख, सगी—परिग्रही को
गुण और हिंसा को धर्म मानना (संकोष ५२)।
२ वि. संमोह-सकमी (ठा ४, ४—पत्र
२७४)। छी. 'हा, ही' (ठा ४, ४ टी—पत्र
२७४; वृह १)।

संमोहण न [संमोहन] १ मोहित करना।
२ मुच्छित करना (मुद्र २५०)।

संमोहा छी [संमोहा] धन-विशेष (विम)।

संरभ पुं [संरभ] १ हिंसा करने का साधन,
'संरभो राको' (संकोष ४१; आ ७)। २
आठोय (हुग १, २२, ६, ६२)। ३ उद्यम
(कुमा ५, ७०)। ४ क्रोध, पुस्ता (पात्र)।

संस्कृत्य वि [संस्कृत] मन्त्रो तस्य रक्षा
करेताता (आया १, १८—पत्र २४०) ।
संस्कृत्य न [संस्कृत] समीचीन रक्षण
(आया १, १४, पि ३६१) ।
संस्कृत्य देवो संस्कृत्य (उत् २६, ३१) ।
सरद्ध मक [सं + राध्] पकाना । ऊ.
संस्कृत्यव्य (कुप ३७) ।
संरुंध सक [सं + रुंध्] रोकना, घटकाणा ।
कम. सारुधियइ सारुधमइ (हे ४, २४८) ।
भवि. सारुधियइ, सारुधिमइ (हे ४, २४८) ।
सरोह पुं [सरोध] मल्लव (कुप ५१, पत्र
२३८) ।
सरोहणी क्षी [सरोहणी] घाव को कम्पने-
वाली घोषविशेष (सुग २१७) ।
सलसल सक [स + लक्ष्य] पहिचानना ।
कर्म. सलसलोमिद (शी), (नाट—वेणी ७८) ।
सलगा वि [सलग्न] लगा हुआ, झुगुन
(सुग २२६) ।
सलगिर वि [सलगिर] सयुक्त होनेवाला,
जुबनेवाला (मोप ६८) ।
सलत वि [सलपित] समापित, उक्त, कथित
(सुर ३, ६१, सुग ३२६, ३८५, महा) ।
सलपप नीचे देखो ।
सलन सक [स + लप्] समापण करना ।
सलवइ, सलवेमि (महा, पत्र १४८) । वक्र.
सलनमाण (आया १, १—पत्र १३,
कप्य) । ऊ. सलपप (राज) ।
सलन पुं [सलप] समापण, भारताप
(मृमनि ५८) ।
सलन सक [स + लापय्] बातचीत
करना । सलाविति (कप्य) ।
सलाय वैनी सलव = संताप (मोप. ते २,
३६, गडक, था ६) ।
सलपिअ वि [सलापित] १ उक्त, कथित ।
२ कहलवाया हुआ (गा १११) ।
सल्लिह वि [सल्लिह] शंयुक्त (संयोग १६) ।
सल्लिह मक [स + लिह्] १ निर्वृत्त
करना । २ शरीर भादि का शोषण करना,
कुश करना । ३ घिसना । ४ रक्षा करना ।
सल्लिहया (भाषा २, ३, २, ३) । सल्लिह
(उत् ३६, २४६, दस ८, ४, ७) । सल्लिह
सल्लिहिय (कप्य) ।

सल्लिहिय वि [सल्लिहिय] जिसने उपवर्ग
से शरीर भादि का शोषण किया हो वह
(स १३०) ।
सल्लिह वि [सल्लिह] सवेचना-युक्त (एवि
२०६) ।
सल्लिहिय वि [सल्लिहिय] जिसने इन्द्रिय तथा
वपाम भादि को काजु में बिया हो वह,
सकृत (पत्र ६) ।
सल्लिहया क्षी [सल्लिहया] उप विशेष, शरीर
भादि का सयोगन (सम ११, नव २८, पत्र
६) ।
सल्लुं सक [स + लुञ्ज्] काटना । कबहु.
सल्लुंयमाणा मुणएहि (भाषा १, ६, ३,
६) । सल्लु. सल्लुंयिआ (उत् ५, २, १४) ।
सल्लेहया क्षी [सल्लेहया] शरीर, वपाम
भादि का शोषण, प्रमथन-व्रत से शरीर-स्थाय
का मनुयान (सह ११६, सुग ६४८) ।
सुअ न [श्रुत] ग्रन्थ विशेष (एवि २०२) ।
सल्लेह क्षी [सल्लेह] ऊपर देखो (उत् ३६,
२५०, सुग ६४८) ।
सलोअ पु [सलोक] १ दर्शन, प्रवक्तोक्त
(भाषा २, १, ६, २, उत् २४, १६, पत्र
६१) । २ हटि पात हटिप्रचार । ३ वगट,
संपूर्ण लोक । ४ प्रकाश (राज) । ५ वि.
हटि प्रचारवाला, जिस पर हटि पद सजती
हो वह (उत् २४ १६) ।
सलोक सक [स + लोक] देखना । ऊ.
सलोकपिज्ज (मृम १, ४, १, ३०) ।
सलुइयर पु [सलुयतिकर] व्यतिरिक्त, व,
विपरीत प्रसंग (उव) ।
सलुय्य पुं [सलुय] १ गुणन, गुणाकार
(वव १, जीवस १५४) । २ गुणित, जिसका
गुणाकार किया गया हो वह (पत्र) ।
सलुइयर पु [सलुसर] वर्ष, साल (उव, हे
२, २१) । पल्लिहणय न [अल्लिहणयन]
वर्ष गणित, वर्ष की पूर्णता के दिन किया
जाता उत्सव (आया १, ८—पत्र १३१;
अम. प्रव) ।
सलुइयिय पु [मांसलसरिक] १ ज्योतिषी,
ज्योतिष शास्त्र का विद्वान् (स ३४, कुप ३२) ।
२ वि. सलुइयर सबी, वापिक (वर्मनि १२६,
पडि) ।

सलुइयल देखो संवच्छर (हे २, २१) ।
सलुइ सक [सं + वर्तय्] १ एक स्थान में
रखना । २ सकुचित करना । संबट्टेइ (मोप) ।
सलुइयया (भाषा १, ८, ६, ३) । सलु.
सलुइयत्ता (उत् २, ४—पत्र ८६), संवट्टित्ता
(भाषा १, ८, ६, ३) ।
सलुइ पुं [सलुवर्त] १ पीठा (उत् २६६) । २
अथ भीत लोगों का समवाय—समूह (उत्
३०, १७) । ३ वायु विशेष गुण को लहाने-
वाला वायु (पण १—पत्र २६) । ४
अपवर्तन (उत् २, ३—पत्र ६७) । ५ वेरा ।
६ जहाँ पर बहुत गाँवों के लोग एकत्रित हो
कर रहें वह स्थान, पुर्ण भादि (राज) । देखो
सलुवत्ता ।
सलुइअ वि [सलुवर्तित] लूटाना में कैना
हुआ (उत् ५ १४१) ।
सलुइय पु [सलुवर्त] वायु विशेष (सुग ४१) ।
देखो सलुइय ।
सलुइय पु [सलुवर्त] १ जहाँ पर अनेक
भाग मिलते हो वह स्थान (आया १, २—
पत्र ७६) । २ अपवर्तन (विस् २०४५) ।
सलुइय पुं [सलुवर्त] अपवर्तन (उत् २, ३—
पत्र ६७) । देखो सलुइय ।
सलुइय वि [दे सलुवर्तित] सकृत, सकथित
(दे ८, १२) ।
सलुइय वि [सलुवर्तित] १ निमेष, एकत्रित
(वव १) । २ सलुवर्त-युक्त (हि २, ३०) ।
सलुइय सक [सं + लुप्] बढना । सलुइय
(महा) ।
सलुइय देखो सलुइय (मनि ४१) ।
सलुइय वि [सलुइय] बढा हुआ (महा) ।
सलुइय वि [सलुवर्तित] बढाया हुआ
(नाट—स्ता २२) ।
सलुइय पुं [सलुवर्त] १ प्रत्य बाल (स ५,
७२, १०, २२) । २ वायु-विशेष, 'युगन-
सरिस संवत्तवार्य विगिअण' (कुप ६६) ।
३ भेष । ४ भेष का व्यभिचर विशेष । ५
वृष विशेष, बदेसवा पेडा ६ एक स्मृतिवार
गुनि (संनि १०) । देखो सलुइय = सलुवर्त ।
सलुइय देखो सलुइय (हे २, ३०) ।

संनत्तय वि [संनत्तय] १ अग्रवर्तन-कर्ता ।
२ पुं. वलदेव । ३ वडवानस (हे २, ३०,
प्राप्त) ।

संनत्तयत्त पुं [संनत्तयत्त] जलत-पुनट (स
१७४, २५८) ।

संनद्धण न [संनद्धण] १ वृद्धि, बढाव । २
वि. वृद्धि करनेवाला (भवि; स ७२७) ।

संनय सक [सं + यद्] १ योलना,
बहना । २ प्रमाणित करना, साथ साबित
करना । संनयइ, संनयज्जा (धुप्र १८७,
सूप्र १, १४, २०) । वड. संनयंत (पमंस
८८३) ।

संनय वि [संनय] प्राहुत्त, प्राच्छादित
(धुप्र ३६) ।

संनर सक [सं + नृ] १ निरोध करना,
रोकना । २ धर्म को रोकना । ३ बंध करना ।
४ बढना । ५ गोपन करना । संनरइ,
संनरसि, संनरमि (भग, भवि, सण, हाव्य
१३०, पव २३६ टी), संनरेहि (धुप्र ३११) ।
वड. संनरमाण (भग) । छाड. संनरेवि
(महा) ।

संनर पुं [संनर] १ कर्म निरोध, नूतन कर्म-
बन्ध का अटकाव (भग, पणइ १, १, नव
१) । २ भारतवर्ष में होनेवाले अठारहवें
जिनदेव (पव ४६, सम १५४) । ३ चौथे
जिनदेव के पिता का नाम (सम ५५०) ।
४ एक बौद्ध भुवि (पउम २०, २०) । ५
पशु विशेष (धुप्र १०४) । ६ धैर्य विशेष ।
७ मत्स्य की एक जाति (हे १, १७७) ।

संनरण न [संनरण] १ निरोध, अटकाव
(पवा १, ४४), प्राणवदायण संनरण'
(शु ७) । २ गोपन (गा १६६, सुपा ३०१) ।
३ हाकीवन, समेटन (गा २७-) । ४
प्रत्याख्यान, परित्याग (भीप ३७, विसे २६१२,
यावक ३३३) । ५ यावक के बारह त्रतो
का अगोचर (समस्त १५२) । ६ अग्रजन्म,
आशर परित्याग (ज पु १७६) । ७
विहाड, लग्न, शादी (पउम ४६, २३) ।
८ वि. रोकनेवाला (पव १२३) ।

संनरिअ वि [संनर] १ धातेवित, आराधित,
'एवमिण सत्तसइ शर समं सवविणं होइ'

(पणइ २, १—पण १०१) । २ सवोचित
(दे ८, १२) । ३ प्राच्छादित (वृह ३) ।

संनलण न [संनलण] भिन्न (मउड, नाट-
मालती ५७) ।

संनल्लिअ वि [संनल्लिअ] १ व्याप्य (गा ७५,
सुर ६, ७६, ८ ४३; खिप ६०) । २
युक्त, मिश्रित, मिश्रित (सुर ३, ७८, धर्मवि
१३६), छरसा वि दुभा दावाण्णेतु ङमंति
मुक्खसवत्तिमा' (वजा १४) ।

संनयहार शु [संनयहार] अग्रहार (विसे
१८५३) ।

संनय सक [सं + यत्] १ साथ में
रहना । २ रहना साथ करना । ३ सभोग
करना । सवसइ (वस) । वड. संनसमाण
(ठा ५, २—११२, ३१४; गच्छ १, ३) ।
सं. संनसिन्ता (गच्छ १, २) । हेऊ.
संनसिन्ताए (ठा २, १—पण ५६) । क.
संनसेयव्य (ज पु १६) ।

संनह सक [सं + ह] १ बहन करना ।
२ अक, सज्ज होना, उम्मार होना । वड.
संनहमाण (सुपा ४६४, एगमा १, १३—
पण १८०) । सं. संनहकुण (सण) ।

संनहण न [संनहण] १, डोना, बहन करना ।
(राज) । २ वि. बहन करनेवाला (भाषा
२, ४, २, दस ७, २५) ।

संनहणिय वि [संनहणिक] देखो संनहणिय
(उवा) ।

संनहिअ वि [संनहिअ] जो सज्ज हुआ हो
वह, उम्मार बना हुआ, आभिष प्रविश्याप्रा
अन्ते सज्जेवि संनहिमा' (तिरि ५६६,
समस्त १५७) ।

संनहिअ वि [संनहिअ] प्रमाणित करनेवाला,
सबूत देनेवाला (सुर १२, १७६) ।

संनहिअ वि [संनहिअ] १ खबर दिया
हुआ, जनाया हुआ (स २६६) । २ प्रमाणित
(स ३१५) ।

संनहिअ पुं [संनहिअ] १ पूर्वजान को खबर
संनहिअ साबित करनेवाला ज्ञान, सबूत,
प्रमाण (पमंस १४८ स ३२६, ज ७२८
टी) । २ विवाह, नाह कबह,

"इय भाभी संनहिमो तेसि पुत्तस बारणे गहमो ।
ता कीरेणं भाणियं दामसमीने समगच्छ ॥"
(सुपा २६०) ।

संनय सक [सं + वाद्य] १ खबर देना,
समाचार कहना । संनयमि, संनयहि (स
२६१, २६६) ।

संनयय पुं [सं] १ नकुल, न्योला । २ स्वेन
पत्नी (दे ८, ४८) ।

संनयस सग [सं + वासय] साथ में रहने
देना । हेऊ. संनयसेवं (पवा १०, ४८ टी) ।

संनयस पुं [संनयस] १ सहवास, साथ में
निवास (ज २२३; ठा ४, १—पण १६७;
भीप ६७, हित १७, पंवा ६, १३) । २
मैथुन के लिए स्त्री के साथ निवास (ठा ४,
१—पण १६३) ।

संनयसिअ (धर) वि [समाधासित] जिनको
आधासन दिया गया हो वह, 'ति ववाणि
एणवइ सवासित' (भवि) ।

संनहिअ सक [सं + वाहय] १ बहन
करना । २ उम्मार करना । अग मर्दन —
चप्यो करना । सवाहइ (भवि) । वड.क.
संनहिअज्ज (सुपा २००; ३४६) ।

संनहिअ पुं [संनहिअ] १ दुर्गंविशेष, जहाँ
अग्रजन्मोप धाम्य प्रादि की रक्षा के लिए
वे जाकर रखते हैं (ठा २, ४—पण ८६,
पणइ १, ४—पण ६८, भीप, कव) । २
लग्न, विवाह (सुपा २५५) । ३ निरिच्छितरत्न
प्राप्त ।

संनहिअ न [संनहिअ] १ अग-मर्दन, चप्यो
(पणइ २, ४—पण १३१, सुर ४, २४०;
या ४६४) । २ सवाधन, विनास (गा
४६४) । ३ पुं. एक राजा का नाम (उव) ।
४ वि. बहन करनेवाला (भाषा २, ४,
२, १०) ।

सवाधणा स्त्री [संनहिअ] ऊपर देखो (वण,
भीप) ।

संनहिअणिय वि [संनहिअणिक] भार-बहन
करने के काम में भाता वाहन (उवा) ।

संनहिअणिय वि [संनहिअणिक] चप्यो करनेवाला
(चार ३६) ।

संनहिअणिय वि [संनहिअणिक] जिसका अग-
मर्दन—चप्यो किया गया हो वह (कप,

सुर ४, २४३)। २ वहन किया हुआ (भवि)।

सवित्रिण्य वि [सवित्रिण्य] मच्छी तरह ध्यात (पण्ण २—पण १००)।

सवित्रिण्य सक [सवि + ईक्ष्] सम भाव से देखना, रागादि रहित हो कर देखना। बहु. सवित्रिण्यमाण (उत्त १४, ३३)।

सवित्रिण्य वि [सवित्रिण्य] सवेग युक्त, भव भोग मुक्ति का प्रतिभापी, उत्तम साधु (उत्त पचा ५, ४१ सुर ८, १६६ मोपमा ४६)।

सवित्रिण्य वि [सविचार्ण] सविचरित, सविचरित भ्रामरित (आया १, ५ टी—पण १०० आया १, ५—पण ६६)।

सवित्रिण्य सक [स + विट्] विघमान हाना। सवित्रिण्य (सूत्र १, ३, १, १८)।

सविट् सक [स + वेट्] १ वेटन करना, सपटना। २ बाधण करना। बहु. सविट्माण (आया , ३—पण ६१)।

सविट् सक [स + विट्] पैसा किया हुआ, उगावित (स ५)।

सविणीय वि [सविनीय] विनय युक्त (मोपमा ११४)।

सविन्न देवो सविन्न (सूत्र १, ३, १, १०)।

सविन्न वि [सविन्न] १ सगाव, बना हुआ (सुर ६, ८६)। २ वि मच्छा आचरण-बाना। ३ विमलुल मोक्ष (मिदि १०६३)।

सविन्नो ओ [सविन्न] संवेदन, ज्ञान (विस् १६२६, धर्म २६६)।

सविन्न सक [स + विट्] जानना, निष्कामागो न सविन्न (उत्त ७, २२)।

सविन्न वि [सविन्न] १ समुत्त (उत्तर १३३)। २ मम्यस्त। ३ दृष्ट, 'सविन्नपहे' (प्राचा १, ५, ३ ६)।

सविधा ओ [सविधा] सविधान, रचना, बनावट (चार १)।

सविधुग ल [सवि + धू] १ दूर करना। २ परिधाय करना। ३ धनवसुना, धिरनार करना। बहु. सविधुगण, सविधुगिजाण (आचा १, ८, ६, ५ सूत्र १, १६ ४ मोप)।

सविभक्त वि [सविभक्त] बंटा हुआ, 'देवगुणविभक्त भक्त (कुम १२३)।

सविभाय पु [सविभाग] १ विभाग सविभाग वि [सविभाग] १ बरना बांट (आया १, २—पण ८६, उवा मीप)। २ आदर, सत्कार (स ३३४)।

सविभाग वि [सविभागिन] दूसरे को दे कर भोजन करनेवाला (उत्त ११, ६, दस ६, २, २३)।

सविभाय सक [सवि + भावय] पचा सोचन करना, चिन्तन करना। बहु. सवि-भायिऊण (राग)।

सविभाय सक [सवि + राज्] शोभना। बहु. सविभायत (पण ७ १४६)।

सविहल देवो सवेष्ट। बहु. सविहल (वे ४२)। बहु. सविहलऊण (कुम ३१५)।

सविहल वि [सविहल] चालित (उवा)। सविहल देवो सवेष्टिअ = सवटित (कुमा)।

सविहल देवो सवेष्टिअ = (वे) (उवा १)।

सविहल पु [सविहल] गांधावे का एक उरासक (मग ८, ६—पण ३६६)।

सविहल न [सविधान] १ रचना बनावट (सुपा ५८६, धर्म १२७ मात १५१, १६३)। २ वेद प्रकार (वे १०)।

सविहल वि [सविहल] १ व्याप्त (सूत्र १, ३, १, १६)। २ परिहित, पहना हुआ 'सवि-यक्षिणवसणो' (धर्म ६)।

सवुज देवो सवुड (हे १ १३१, सवि ४ मोप)।

संवुट देवो सवुत्त (रमा ४४)।

सवुट वि [सवुट] १ सवट सकडा, धवि-वृत्त (ठा ३ १—पण १२१)। २ सवर-सुत्त सास्य प्रवृत्ति से रहित (सूत्र १, १, २, २६ पचा १४, ६ मग)। ३ निष्ठव निरोध प्राप्त (सूत्र १, २, ३, १)। ४ यावुत्त। ५ समाहित (हे १, १०७)। ६ न बनाय श्रीर हस्तिओ का निष्कण्य (पण २ ३—पण १२३)।

सवुट्ट वि [सवुट्ट] बडा हुआ (सूत्र २, १, २६, धीप)।

सवुत्त वि [सवुत्त] संगाव, बना हुआ 'पण्डया त संगाववरा सवुत्ता' (वमु

कुप ४३५, विरात १७, स्वप्न १७ धर्म ८२, उत्तर १४१, महा. सण)।

सवुट देवो सवुड (प्राह ८, १२ प्राप)।

सवुटि ओ [सवुटि] संवरण (प्राह ८, १२)।

सवुट वि [सवुट] १ तय्यार बना हुआ, समित्त 'जह इह नगरनिदो सव्ववसेणपि एइ सवुटो' (सुरा ५८५ सुर ६, १५२)। २ बह कर विनारे लगा हुआ, बह कर स्थित, सए एते मागादिपदारा सेए फलवसहेण सवु- (७७) भमाणा २ रयणशेवतेण सवु- (७७) यावि होया' (आया १, ६—पण १५७)।

सवव वि [सवव] अनुमन योग्य (विसे ३००७)।

सवेअ पु [सवग] १ भय प्राप्ति के कारण सवेग से होती लवरा—शीप्रता (गवड)। २ भव वैराग्य ससार से उदासीनता। ३ मुक्ति का प्रतिभाप मुमुक्षा (इ ६३, सम १२६, मग उव, सुर ८, १६५, सम्मत १६६, १६५, सुपा ५४१)।

सवेयण न [सवेयण] १ ज्ञान (धर्म ४४ कुम १४६)। २ वि बोध जनक। ओ. 'णा (ठा ४, २—पण २१०)।

सवयण वि [सवेयण] सवेग-जनक। ओ. 'णा (ठा ४, २—पण २१०)।

सवयण वि [सवेयण] जवर देवो (ठा ४, २—पण २१०)।

सवह सक [स + वेष्ट] चालित करना, रचना (सि ७ २६)।

सवह सक [स + वेष्ट] लगेना। साहलह (हे ४ २२२, सवि ३६)।

सवेष्ट सक [वे] संवेदना, मनन, साधुवित करना। सवेष्ट (मग १६, ६—पण ७१२)। बहु. सवेष्टेण, सवेष्टेमाण (उत्त, मग १६ ६)। साह सवेष्टेऊण (महा)।

सवेष्टिअ वि [वे] गान, गवुवित सा-ल्लिप मन्थन' (पण, दे ८, १२, मग १६, ६—पण ७१२, राय ४४)।

सवेष्टिअ वि [सवेष्टिअ] चालित (न ७, २६)।

सवेहिअ वि [सवेष्टित] सपेग हुषा (पा ६४६) ।

सवेह पुं [सवेध] सयोग, 'भद्रप्रवणसवे-
हमण्णं गयध्व' (महा), 'भद्रप्रवणसवे-
हमण्णं मोहण पमूणं ति तममेयं सोऊण'
(पमंवि ६५) ।

सस सक [संस] लिखकना, गिरना ।
सावह (हे ४, १६७, पङ्.) ।

संस सक [संस] १ बहना । २ प्रशया
कला । सावह (वेदय ७३७, भवि), ससति
(तिरि १८७) । छ. ससणिज्ज (पउम
११८, ११४) ।

सस वि [साश] भरा पुस, सावयव (पमंवि
७०६) ।

ससह वि [संशयिन्] सशय वर्ता, शका-
शील (विसे १५५७, सुर १३, ७, सुपा
१४७) ।

ससहअ वि [सशयित] सशयवाला, सदिग्ध
(पाप विसे १५५७ सम १०६, सुर १२,
१०८) ।

ससहअ न [सासयिक] मिथ्याव विशेष
(पच ४, २ आ ६ सबीय ५२, कम्म ४,
५१) ।

संसग्गा पुओ [संसर्ग] संबन्ध, लग सोहबत
(सुपा १५८, प्रासू ३१, गउठ) । ओ 'ग्गी'
(छाया १, १ टी—पच १७१, प्रासू ३३,
सुपा १७१),
'एएण चिय नेछाति

साहवो सज्जणेहि संसर्गि ।

जम्हा विभोगविहरिय

हिययस्त, न मोसव भल्ल

(सुर २, २१६) ।

ससज्ज भक [स + सज्ज] संबन्ध करना
संलग्न करना । ससज्जति (सम्मत २२०) ।

ससज्जिम वि [ससक्तिमत्] बीच में तिर
हुए जीवो से युक्त (पिंड ५३८) ।

ससट्ठ वि [ससट्ठ] १ खरिएट, विलिप्त ।
२ न खरिएट हाथ भ्रमना भाजन
से दो जाती मित्रा की हो बहण करने के

ससण न [ससन] १ कपन । २ प्रशसा ।
३ आस्थादान सुतविहीण पुण्य सुयमपक्क-

फलससणवरिण्ण' (उप ६४८ टी उवउ
१६) ।

संसणिज्ज देतो सस = संस ।

ससत्त वि [ससत्त] १ संलग्न युक्त संगठ
(छाया १, ५—पच १११, औप सं ६,
उत्त २, १६) । २ स्वापद जन्तु विशेष
(कण) ।

ससत्ति ओ [संसक्ति] समनं (सम्मत
१५६) ।

ससद पुं [सराब्द] शब्द ब्राह्म (गुर २,
११०) ।

ससरपण वि [ससर्पक] १ चलने किले
वाला । २ पु. बोटी भादि प्राणी (प्राचा
१, ८, ८, ६) ।

ससरिपअ न [दे ससर्पित] दूद बर
भवना (हे ८, १२) ।

ससमण न [ससामन] उपसम, शांति (पिंड
४५६) ।

ससय पु [सशय] सवेह, शका (हे १, १०,
भग कुमा भवि ११०, महा, भवि) ।

ससया ओ [ससत्] परिपद सभा (उत्त
१, ४७) ।

ससर ल [स + स] परिभ्रमण करना ।
बहू. ससरत, ससरमाण (प्रवि १, वै ८८,
संबोध ११, भन्तु ६७) ।

ससरण न [ससरण] स्तुति, याद (शु ७) ।

ससयण न [सश्रवण] श्रवण बुनना (सुर
१ २४२, रंभा) ।

ससह सक [स + सह] सहन करना ।
सावह (पमंवि ६८२) ।

ससा ओ [शसा] प्रशसा, क्लापा (पच ७३
टी भग) ।

ससाअ वि [दि] १ आह्व । २ वृणित । ३
पीत । ४ उद्विग्न (पङ्.) ।

ससार पु [ससार] १ नरक भादि बलि से
परिभ्रमण एक जन्म से जन्मांतर में भगन
(प्राचा ठा ४, १—पच १६८, ४, २—
पच २१६ दसवि ४ ४६, उत्त २६, १,
उत्त, गउठ जी ४४) । २ जगद, विश्व (उप
कुमा गउठ, पउम १०३, १४१) । 'वत
वि [वत्] सासारवाला ससार स्थित
जीव, प्राणी (पउम २, ६२) ।

संसारि } वि [संसारिन्] नल भादि
संसारिण } मोति में परिभ्रमण करनेवाला
जीव (जी २), 'सामारिणस्त जं पुण जीवस्त
बुहं तु फरिसमादोण' (पउम १०२, १७४) ।
संसारिय वि [संसारिक] ऊपर देखो (स
४०२, उव) ।

ससारिय वि [संसारिक] सागर से सग्न्य
रखनेवाला (पउम १०६, ४३, उव १४२
टी, स १७६, सिक्का ७१, सण, वान) ।

ससारिय वि [ससारित] एक त्वान से दूसरे
स्थान में स्थापित, ससारियामु वलपवाहासु'
(छाया १, ८—पच १३१) ।

संसाहण ओन [दि] भगुमन (हे ८, १६;
दसवि ३८८) । टी. णा (वव १) ।

ससाहण न [संरथन] कपन (सुपा ४१५) ।

ससाहिय वि [ससावित] सिद्ध किया हुआ
(सुपा १६७) ।

सति वि [शसिन्] बहनेवाला (गउठ) ।

ससिअ वि [शसित] १ श्लाघित (सुर १३,
६८) । २ कथित (उप ४ १६१) ।

ससिअ वि [सश्रित] ध्यावित (विपा १,
३—पच २८, परह १, ४—पच ७२, औप
४८ भल्ल १५१) ।

ससिच सक [स + सिच] १ पुरना,
भरना । २ बढ़ाना । ३ सिचन करना । कवहू.
ससिचमाण (प्राचा वि ५४२) । ल्ह-

ससिचियाण (प्राचा १, २, ३, ४) ।

ससिउक भक [स + सिध] मच्छी तरह
सिद्ध होना । ससिउकति (स ७६७) ।

ससिट्ठ देखो ससट्ठ (भग) । 'कटिपअ वि
[कटिपक] खरिएट हाथ भ्रमना भाजन
से दो जाती मित्रा की हो बहण करने के
नियमवाला मुनि (पणह २, १—पच १००) ।

ससित्त वि [ससित्त] सोचा हुआ (सुर ४,
१४, महा हे ४, १६५) ।

ससिद्धिअ वि [ससिद्धिक] स्वभाव सिद्ध
(हे १, ७०) ।

ससिलेस देखो ससेस (उज) ।

ससिलेसिय देखो—ससेसिय (रान) ।

ससीव सक [स + सिव] सीना, हिलाई
करना । ससीविज्जा (प्राचा २, ५, १, १) ।

संयुद्ध वि [संयुद्ध] १ विद्युद्, निर्वैद्य (गुण ५७३) । २ न. लगातार उद्योग दिन का उपयोग (संयोज ५८) ।

संयुद्ध वि [संयुद्ध] सूचना-वर्ता (रंभा) । संयुद्ध वि [संयुद्ध] संयोज से बना हुआ (निरु १५) । २ लगाती हुई भागी जिस ठंडे जल से सिली जाय वह पानी (ठा ३, ३—पत्र १५७, कप्य) । ३ तिल की घोबन (भाषा २, १, ७, म) । ४ पिष्टोदक, घाटा की घोबन (दस ५, १, ७५) ।

संयुद्ध वि [संयुद्ध] १ पत्तो से उत्पन्न होनेवाला (पहल १, ५—पत्र ८५) ।

संयुद्ध वि [सं + युद्ध] बरतना; जाय व यह वही उराला बलाह्या संयुद्धि (भग) ।

संयुद्ध वि [संयुद्ध] पत्तीना । 'य वि [ज] पत्तीने से उत्पन्न (गुण १, ७, १, भाषा) ।

संयुद्ध वि [संयुद्ध] विचन (ठा ३, १) ।

संयुद्ध वि [संयुद्ध] भागवित (गुण २२७) ।

संयुद्ध वि [संयुद्ध] सम्बन्ध, संयोग (भाषा २, १३, १) ।

संयुद्ध वि [संयुद्ध] संछेदवाना (भाषा २, १३, १) ।

संयुद्ध न [संयुद्ध] शुद्धि-करण (पिठ ५५६) । देतो संयुद्ध ।

संयुद्ध वि [संयुद्ध] मन्त्री तरह शुद्ध किया हुआ (गुण १, १५, १८) ।

संयुद्ध वि [सं + योज] योज करना । २. संयोजन (गुण १५, १८१) ।

संयुद्ध न [संयुद्ध] विरचन, गुलाब (भाषा १, ६, ५, २) । देतो संयुद्ध ।

संयुद्ध की [संयुद्ध] शोभा, की (गुण ३७) ।

संयुद्ध वि [संयुद्ध] शोभनेवाला (गुण ५८) ।

संयुद्ध देतो संयुद्धि (गुण) ।

संयुद्ध देतो संयुद्धि (नट—रिक्त २५) ।

संयुद्ध देतो संयुद्धि (पठ) ।

संयुद्ध की [संयुद्ध] संयुद्धि (यति ६) ।

संयुद्ध वि [संयुद्ध] निना हुआ (पहल १, ५—पत्र ७८) ।

संयुद्ध सक [सं + ह] १ मधुरण करना । २ निनाश करना । ३ संवरण करना, संके-सना, संयोजना । ४ से जाना । संयुद्ध (पत्र २६१, हे १, ३०; ५, २५६) । कवक-संयुद्धिमाय (छाया १, १—पत्र ३७) ।

संयुद्ध वि [संयुद्ध] संयुद्ध, संघात, 'संयुद्धो संयुद्धो निम्नरो' (पाप) ।

संयुद्ध न [संयुद्ध] संयुद्ध (गु ८७) ।

संयुद्ध देतो संयुद्ध = सं + भाग्य । ६. संयुद्धिज (छाया १, १२—पत्र १७६) ।

संयुद्ध देतो संयुद्ध (हे १, २५५, पठ) ।

संयुद्ध न [संयुद्ध] घारण, बनाये रखना, टिकाना, 'कायसंयुद्धि' (भाषा) ।

संयुद्ध देतो संयुद्ध = सं + भाग्य । ६. संयुद्धिज (छाया १, १२—पत्र १७६) ।

संयुद्ध देतो संयुद्ध (हे १, २५५, पठ) ।

संयुद्ध देतो संयुद्ध (गु २७५) ।

संयुद्ध देतो संयुद्धि (गु १२) ।

संयुद्ध वि [संयुद्ध] साय में मिलकर, एकरित होकर (छाया १, १८—पत्र ६३) ।

संयुद्ध देतो संयुद्धि = सहित (कप्य, नाट—महावी २६) ।

संयुद्ध की [संयुद्ध] १ विनिर्वा भादि काय, 'विनिर्वासंयुद्धि' (स १७) । २ भस्वित रूप से धून का उच्चारण, 'भस्वितयनुवृत्तयुद्धि' (वेद २७२) ।

संयुद्ध की [संयुद्ध] मन्त्री तरह पोषण (यति ५) ।

संयुद्ध देतो संयुद्ध = सं + भाग्य (पहल १, १—पत्र १५) ।

संयुद्ध देतो संयुद्ध (यति) ।

संयुद्ध न [संयुद्ध] सायों का एक व्यवहार (निर ३, १) ।

संयुद्ध देतो संयुद्ध, वेदयमनुवृत्तयुद्धि' (गुण १८) ।

संयुद्ध देतो संयुद्ध (यति) ।

संयुद्ध देतो संयुद्ध (यति) ।

संयुद्ध देतो संयुद्ध (यति) ।

संयुद्ध देतो संयुद्ध (यति) ।

संयुद्ध देतो संयुद्ध (यति) ।

संयुद्ध देतो संयुद्ध (यति) ।

संयुद्ध देतो संयुद्ध (यति) ।

संयुद्ध की [संयुद्ध] मत्स्य, हाट (यति ६३, गुण ६५७, राय ८६) ।

संयुद्ध देतो संयुद्ध = संयुद्ध ।

संयुद्ध वि [संयुद्ध] पत्ती (गुण १८; पत्र १५१) ।

संयुद्ध देतो संयुद्ध = संयुद्ध । संयुद्धो (स ७६५) ।

संयुद्ध देतो संयुद्ध = संयुद्ध ।

संयुद्ध देतो संयुद्ध (हे ५, २३०, प्राय, महा) ।

संयुद्ध देतो संयुद्ध (हे ५, २३०, प्राय, महा) ।

संयुद्ध देतो संयुद्ध (हे ५, २३०, प्राय, महा) ।

संयुद्ध देतो संयुद्ध (हे ५, २३०, प्राय, महा) ।

संयुद्ध देतो संयुद्ध (हे ५, २३०, प्राय, महा) ।

संयुद्ध देतो संयुद्ध (हे ५, २३०, प्राय, महा) ।

संयुद्ध देतो संयुद्ध (हे ५, २३०, प्राय, महा) ।

संयुद्ध देतो संयुद्ध (हे ५, २३०, प्राय, महा) ।

संयुद्ध देतो संयुद्ध (हे ५, २३०, प्राय, महा) ।

संयुद्ध देतो संयुद्ध (हे ५, २३०, प्राय, महा) ।

संयुद्ध देतो संयुद्ध (हे ५, २३०, प्राय, महा) ।

संयुद्ध देतो संयुद्ध (हे ५, २३०, प्राय, महा) ।

संयुद्ध देतो संयुद्ध (हे ५, २३०, प्राय, महा) ।

संयुद्ध देतो संयुद्ध (हे ५, २३०, प्राय, महा) ।

संयुद्ध देतो संयुद्ध (हे ५, २३०, प्राय, महा) ।

संयुद्ध देतो संयुद्ध (हे ५, २३०, प्राय, महा) ।

संयुद्ध देतो संयुद्ध (हे ५, २३०, प्राय, महा) ।

संयुद्ध देतो संयुद्ध (हे ५, २३०, प्राय, महा) ।

संयुद्ध देतो संयुद्ध (हे ५, २३०, प्राय, महा) ।

संयुद्ध देतो संयुद्ध (हे ५, २३०, प्राय, महा) ।

सकणो (श्री) देवो सकुण । सकणोमि
(उमि ६२ वि १४), सकणोदि (नाट—
रत्ना १०२) ।

सकय देखो सन्ध्य = सञ्चत ।

सकय वि [संस्कृत] १ सस्तर युक्त (विड
१६१) । २ क्षीन, सञ्चत भाषा (धुमा, हे
१, २८, २, ४), परमेष्ठिनमोदार् सख
(१५)भासाए भण्ड बुद्धमण (वेड्ड ४६८) ।
छो, 'या, 'मक्या पायया चैव भण्डिभो
होति वोरिण वा' (भणु १३१) ।

सकर न [शर्कर] खरड टुकडा (उव) ।

सकर देवो सकरा । पुढरीओ [धुयिरी]
दूसरी मरक भूमि (पउम १४, २) । 'प्यभा
छो [प्रभा] वही भई (ठा ४—पम
३८८, इक) ।

सकरा छो [शर्करा] १ चीनी, पदो खांड
(णाय १, १७—पन २२६, सुपा ८४, सुर
१, १४) । २ उपलब्ध, पत्थर का टुकडा,
कंकड (सूम २, ३, ३६, भणु) । ३ बाहु,
देवी (महा) । 'भ न [भ] १ गोत्र-
विशेष, जो गोत्रम गोत्र की एक शाखा है ।
२ पुत्री, उत गोत्र में उत्पन्न (ठा ७—पन
१६०) । 'भा छो [भ] दूसरी मरक भूमि
(उत १६, १४७) ।

सकार दुं [सत्कार] समान, बादर, पूजा
(भग स्वप्न ८६, भवि, हे ४, २६०) ।

सकार पु [सत्कार] १ गुणान्तरना प्राधान ।
२ स्मृति का कारण भूत एक गुण । ३ वेव ।
४ शास्त्रान्तर से उत्पन्न होती व्युत्पत्ति ।
५ गुण विशेष स्थिति-स्थापन । ६ व्याकरण
के अनुसार शब्द सिद्धि का प्रकार । ७ गर्मी
धान प्रादि समय की जाती धार्मिक क्रिया ।
८ पाक, पकाना (हे १ २८, २, ४, प्राक
२१) ।

सकार सक [सत्कारय] सत्कार करना,
सम्मान करना । सकारेड, सकारित, सकारिभो
(उवा, कप्य भग) । सक सकारिचा (भग
कप्य) । क. सकारिणज (खामा १, १ टी—
पत्र ४, उवा) ।

सकारण न [सत्कारण] उत्कार, सम्मान
(दस १०, १७) ।

सकारि वि [सत्कारिन्] सत्कार करनेवाला,
सम्मानकर्ता (यड) ।

सकारिय वि [सत्कारित] सम्मानित (सुस
२, १२, महा) ।

सकारिय वि [सत्कारित] उत्सार युक्त किया
हुमा (धर्मसं ८ ३) ।

सकाल देखो सक्षार = संस्कार (हे १,
२४४) ।

सक्षिअ देखो सक = शक्य, 'ब्रह्म पु दाव
वत्तव्ववरत्थोपिद्विद्वेषो विम सक्षिपसमणुओ
णिह ए सभामि' (पाइ ४६) ।

सक्षिअ देवो सक = शक् ।

सक्षिअ वि [शक्ति] जो समर्थ हुमा हो वह
(था २८, कुप्र ३) ।

सक्षिअ वि [स्त्रीय] निज बा, धारणीय,
'सि (१ स)क्षिपुवहि च सहा पडिसेहुवो न
थेम सया' (सुसक ७, ६) ।

सक्षिअ देखो स क्षिअ = संस्कृत ।

सक्षिरिआ छो [संस्क्रिया] सस्वार, संस्कृति
(प्राक २३) ।

सक्कुण देखो मकुण । सक्कुणदि (श्री)
(प्राक ६४), सक्कुणोमि (स २४, मोह ७) ।

समकुलि छो [शम्कुलि] १ कर्ण-विबर
नान बा धिद (णाय १, ८—पत्र १३३) ।
२ तिलपापी, एक तरह का खाद्य पदार्थ
(पण्ड २, ४—पत्र १४८, दस ४, १, ७१,
कस, विसे २६६) । 'कणु पु [कर्ण]
एक भ्रातृज । ३ उत्तम रहनेवाला मनुष्य-
जाति (इक) ।

सकख देखो सक = शक् ।

सकख न [सक्य] मेरी, बोली (उत १४,
२७) ।

सकर न [साक्ष्य] साक्षिपन, गवाही (सुपा
२७६, सवोय १७) ।

सकर अ [साक्षात्] प्रत्यक्ष, बाँधो के
साथने प्रकट (हे १, २४, पि ११४) ।

सकरय देखो सकय = संस्कृत (ज २ टी—
पत्र १०४) ।

सकरय देखो सक्करय = वासर ।

सकरय देखो सकरय (पवा ६, ४०, सुर ४,
२२१, १२, २६, पि ११४) ।

सस्त्रिअ वि [साक्षिन्] माशी, साजो, गगह
(पण्ड १, २—पत्र २६, धर्मस १२००,
भणु, था १४, स्वप्न १३१) ।

सस्त्रिअ देखो सस्त्र = सत्य, 'नादवरी-
रविस्थं यथाए पठमसोहिद इच्छोमदि'
(धमि १८८) ।

सस्त्रिअ न [साक्षिन्] गवाही, साक्ष
(थावक २६०) ।

सस्त्रिअ देखो सस्त्रि (हे १, १७४, पड,
सुर ६, ४४) ।

सग [स्वरु] देखो स = स्व (भग पण्ड
२१—पत्र ६२८ पठम ८२, ११७, उत
२०, २६, २७, सवोय ४०, वेड्ड ४६१) ।

सग देखो सत्त = सत्तु (१पण ७२, उर ४,
३, २, २३) । 'यण्ण, 'यण्ण क्षीन
[पञ्चाराह] सत्तावन पनास क्षीर सात
(कम्म ६, ६०; धु १११, कम्म २, २०) ।
'वीस क्षीम [विशक्ति] सताईस (था २८,
रण ७२, सवोय २६) । 'सयरी छो
[सत्तमि] सतहत्तर (कम्म २, ६) । 'सीह
छो [सीति] सतासी (कम्म २, १६) ।

सग देखो सत्तम (कम्म ४, ७६) ।

सग दुं [शक्र] १ एक भगवत् देश,
अफानिस्तान के उत्तर का एक म्लेच्छ देश
(सूममि ६६, पउम ६८, ६४, इक) । २
सब देश का निवासी (काल) । ३ एक
मुसलिम राजा जिसका शक सन्तु चलता
है (विचार ४६४, ४११) । 'कूल न
[कूल] एक म्लेच्छ-देश का निवासी (काल) ।

सग छो [सृज] भाता; 'सगबदणविह-
सत्ताद्विओपभो तसस भट्ट प दोसति' (थावक
१८६) ।

सगड त [शकट] १ गाड़ी (उवा, प्राचा २,
३, १६) । २ दुं, एक सायबाह-युग्म (विपा
१, १—पत्र ४, १, ४—पत्र ४०) ।
'भट्टिआ छो [भट्टिका] जैनतर ग्रन्थ-
विशेष (सुदि १६४, भणु ३६) । 'सुह न
[सुम] पुरिमताल नगर का एक प्राचीन
उद्यान (कप्य) । 'वृह पु [वृहत्] कला-
विशेष, मांडो के धाकार से सैन्य की रचना
(भीप) देखो सजड ।

सगडविभ देतो सगडविभ = स्वस्वत्वम् ।
सगडाल पुं [शक्रटाल] राजा नन्द का
मु-सिद्ध मंत्री क्षीर महर्षि स्थूलभद्र का पिता
(कुप ४४३) ।

सगडिया छी [शक्रटिका] छोटी गंडी
(भग; विपा १, १—पत्र ८; छाया १,
१—पत्र ७४) ।

सगडौ छी [शक्रटी] गंडी (छाया १, ७—
पत्र ११८) ।

सगण देवो स-गण = स-गण ।

सगण देवो सगण (कुप ४०३) ।

सगय न [दे] यथा, विधात (दे ८, ३) ।
सगार पुं [सगर] एक ब्रह्मर्षी राजा (सम
८२, उत १७, ३५) ।

सगल देवो सगल = सगल (छाया १,
१६—पत्र २१३; भग; पंच १, १३; गुर
१, ११६; पत्र २१६; सिखा ३७) ।

सगसग भक्त [सगसगाय] 'सग-सग'
भावना करता । वर. सगसगत (पत्रम
४२, ३१) ।

सगार देवो स-गार = सागार, सागर ।

सगार देवो स गार = स-नार ।

सगाम न [सकाश] पास, निज, समीप
(भीम, गुण ४५२, ४८८; महा) ।

सगुण देवो स-गुण = स-गुण ।

सगुणि देवो सगणि (पहल १, ४—पत्र
७८) ।

सगुत्त वि [सगोत्र] सभान गोत्रवाला,
एतन्मोक्षीय (बन्ध) ।

सगोह न [दे] निज, समीप (दे ८, १) ।

सगोत्त देवा सगुत्त (कुप २१७) ।

सगग पुंन [स्वर्ग] देवों का आवास-स्थान
(छाया १, ५—पत्र १०५; भग, गुण
२६१; 'वेत्तमं वेत्तिह सगं' (यु ५८) ।

'तरु पुं [तरु] बन्धुत्व (सि ११, ११) ।

'सामि पुं [स्यामिन्] रत्न (उ २६४
टी) । 'यद् धी [यद्] देशनाम, देवी
(उ ७२८ टी) ।

सगग पुं [सगं] १ शुक्ति, मोय, बल (भीम) ।
२ घट्ट, रचना (रंका) ।

सगग देवो स गग = गग ।

सगग देवो सग = स्वक (उत २०, २६;
उत) ।

सगगह देवो स-गगह = स-गगह ।

सगगह वि [दे] मुक्त, मुक्ति-प्राप्त (दे ८,
४ टी) ।

सगगह देवो स-गगह = स-गगह ।

सगगीय वि [स्वर्गीय] स्वर्ग-सम्बन्धी (विते
१८००) ।

सगगु देवो सिगगु (उ १०३१ टी) ।

सगगोत्त पुं [स्वर्गोत्त] देव, देवता
(यमा ६) ।

सगय सक [यद्] कहना । सगय (पद्) ।

सगय वि [श्लघ्य] प्रशंसनीय (सूत्र १, ३,
२, १६; विते ३३७८) ।

सधिण देवो स-धिण = स-धुण ।

सधयगु } देवो स-चयगु = स-चयगु ।
सचयगु }

सधित देवो स-धित = स धित ।

सधिय देवो सधय (सण) ।

सची देवो सई = सची (धर्मवि ६६, नाट—
गुनु ६७) । 'वर पुं [वर] द्धर (विरि
४२) ।

सचेयण देवो स-चेयण = स-चेयण ।

सय [सत्य] १ यथायं भाषण, प्रत्युपा-
वचन (उ १०—पत्र ४८६, गुण, पहल
२, ५—पत्र १४८, स्वप्न २२ प्रासु १५०;
१७७) । २ शपथ, सीमा । ३ शयन युग ।
४ सिद्धान्त (हे २, १३) । ५ वि. यथार्थ,
सच्चा, वास्तविक, 'सच्चपरस्मै' (उत
१८, ४६; या १२; उ ४, १—पत्र १६६,
कुमा) । ६ पुं. सत्य. वारिज (भाषा, उत
६, २) । ७ जिनायम, वैज सिद्धान्त (भाषा) ।

८ महोपाया का दसों दृष्टि (सय ४१) ।

९ एक बलिह-पुत्र (उ २१६) । 'उ
न [पुत्र] भारत का एक प्राचीन नगर,
जो क्षात्रजन 'आचार्य' नाम के मारवाड़ में
प्रसिद्ध है (लौ ७, सिण ७) । 'उरी छी
[पुरी] कही कार्य (रंका) । 'जिमि, 'जिमि
पुं [जिमि] भगवान् धर्मद्वेष के पास
देता थे द्रुवि पानेवाला एक मुनि जो शैश
कनुनिय का पुत्र था (भंत, भंत १४) ।

'व्यापय न [प्रवाद] धर्मा पुन-रूप (सय
२६) । 'भामा छी [भामा] श्रीकृष्ण की
एक पत्नी (भंत १५) । 'वाइ वि [वादिन्]
सत्य-नक्ता (पत्रम ११, ३१) । 'संध वि
[सन्ध] सत्य प्रतिभावाला, प्रतिभा-निर्वाहक
(उ ७ ३३३; गुण २८३) । 'सिरी छी
[श्री] पांचवें भारे की अन्तिम यात्रिका
(विचार ५३४) । 'सेण पुं [सेन] ऐश्वर्य
वर्ध में होनेवाला एक त्रिदेव (सन १५४) ।
'हामा देवो 'भामा (सि १४) । 'याइ
देवो 'वाइ (भाषा १, ८, ६, ५; १,
८, ७, ५) ।

सयइ पुं [सत्यकि] १ आगामी जान में
वारहवां तीर्थंकर होनेवाला एव साध्वी-पुत्र
(उ ६—पत्र ४५७, सम १५४; पत्र ४६) ।
२ विषय-सम्पन्न एक विद्यापद (उ ८, उर
७, १ टी) । ३ श्रीकृष्ण का सक्ती एक
व्यक्ति (रविम ४६) । 'सुय पुं [सुन]
ग्यारह द्यौं में अन्तिम रत्न पुरव (विचार
४७३) ।

सयं सर वि [सत्यकार] सत्य सांगत करने-
वाला, सैन-देन की सच्चाई के सिद्ध दिया
जाता बहाना; 'गहिमो संजममारे सचचाइ
व सिद्धी' (धर्मवि १४, भाग ६६,
रयण २४) ।

सयय सन [इष्ट] देवता । सचचरइ (हे ४,
१८१; पद्, सण) । बर्न. सचचरइइ
(कुप ६८) ।

सयय सक [सत्यापय] सत्य साबित
करना । सचचरइ (गुण २६२) । बर्न.
'अतिप्रति सचचरइ' पट्टतण देण रमणि' (सूत्र ८५) ।

सयय न [दुर्जन] धर्मलोकन, निर्दोषण
(कुमा, गुण २२६) ।

सयय वि [दुर्जन] दृष्टा (संशय २४) ।

सययय वि [दृष्ट] देगा दृष्टा, निर्मात्र
(ग २३६, ८८६; गुर ४, २२५; पाप,
महा) ।

सययय वि [दे] अतिदेव, इष्ट (दे ८,
१० भंवि) ।

सयया छी [मर्या] १ गय वचन (पहल
११—पत्र १०६) । २ श्रीकृष्ण की एव

पत्नी, सत्यमाता (कुम्भ २५८) । ३ इन्द्राणी (चउपल० श्रृणम-चरित) । 'मोस वि [मृपा] मिथ भाषा, सत्य से मिला हुआ भूत वचन 'सधामोसाणि भासइ (सम ५०) । सञ्चित देवो स श्चित = स चित्त ।

सञ्चिह्य वि [दे. सत्य] सञ्चा. यथार्थ (दे ८, १४) ।

सञ्चीसय पु [दे सञ्जीसक] याच विशेष (पउम १०२ १२३) । देवो यद्धीसक ।

सञ्चोविअ वि [दे.] रचित, निर्मित (दे ८, १८) ।

सञ्छ वि [सञ्छ] पति निर्मल (मुपा ३०) ।

सञ्छद् वि [सञ्छद्] १ स्वापोन, स्व वरा (उप ३३६ टी. मुर १४, ८५) । २ न. स्वैच्छानुसार (पाया १ ८—पत्र १५२, शीप धमि ४६, प्राप् १७) । 'गामि वि [गामिन्] इच्छानुसार गमन करनेवाला, स्वैरी । क्षी. 'णी (मुपा २३५) । 'वारि, 'यारि वि [वारिन्] स्वच्छदी इच्छानुसार विहरण करनेवाला, स्वैरी । क्षी. 'णी (स ३६, आ १६, गच्छ १, १०) ।

सञ्छर सक [छर] देलना (सहि ३६) ।

सञ्छह वि [दे सञ्छाय] सहस्र समान, कुम्भ (दे ८, ६, गा ५, ४५, ३०८, ५३३; ५००, ६८१ ७२१, मुर ३, २४६, धर्मवि ५७) ।

सञ्छाय वि [सञ्छाय] १ समान छाया-वाला मुख्य (गठक, कुम्भ २३) । २ श्रेष्ठी कान्तिवाला (कुमा) । ३ सुन्दर छायावाला । ४ कान्ति-युक्त । ५ छाया-युक्त (हे १ २४६) ।

सञ्छाह वि [सञ्छाय] जिसकी छाही सुंदर हो वह । २ छाही वाला । ३ समान छाया वाला, मुख्य सहस्र (हे १, २४६) ।

सद्धत्ता क्षी [सद्धत्ता] वनस्पति विशेष (सुप २, ३, १६) ।

सजण देखो स-जण = स्व जन ।

सजिय देखो सज्जिय (मुर १२, २१०) ।

सजुच देखो सजुच (पिम्) ।

सजोइ देखो स जोइ = स ज्योतिष ।

सजोय वि [सजोयिन्] १ मन आदि का व्यापारवाला । २ पुन. तेरहवां ग्रह-स्वयनक (पि ४११, सम २६, बन्म २, २, २०) ।

सजोणिय देखो स जोणिय = स-योनिक ।

सज्ज धक [सज्ज] १ आशक्ति करना । २ सर. श्रांतिलग्न करना । सज्जइ (उत्त २५, २०), सज्जह (छाया १, ८—पत्र १४८) ।

वट. सज्जमाण (सुप १, ७, २७, दसव २, १०, उत्त १४, ६, उवर १२) । कृ. सज्जियवज (पहल २, ५—पत्र १४६) ।

सज्ज अक [सरज्] १ तय्यार होना । २ सक तय्यार करना, सजाना । सज्जइ, सज्जैति (कुमा, छाया १, ८—पत्र १३२) । बर्म. सज्जिप्रति (बप्पू) । कबहु. सज्जिजत (बप्पू) । संह. सज्जिऊण, सज्जैठ (स ६४, महा) । कृ सज्जियवज, सज्जियवज (सत ५०, स ७०) । प्रयो, सज्ज. सज्जावेऊण (महा) ।

सज्ज पु [सज्ज] बुद्ध विशेष (छाया १, १—पत्र २५, विवे २६८२, स १११, कुमा) ।

सज्ज पु [पहज्] स्वर विशेष (कुमा) ।

सज्ज वि [सज्ज] तय्यार, प्रयुक्त (छाया १, ८—पत्र १४६, मुपा १२२, १६७, हेका ४६, विग) ।

सज्ज } स [सयस] नुरत्त, बल्दी, श्रेष्ठ, सज्ज } 'सज्जपायणुं से बन्मरुणोण पउजामि' (स १०८, सुल ८, १२ गा ५६७ अ. कव) ।

सज्जभय पु [शय्यभय] एक प्रसिद्ध वैज बहवि (सार्थ १२) ।

सज्जण देखो स जण = सज्जन ।

सज्जा देखो सेज्जा (राज) ।

सज्जिअ वि [सज्जित] सजाया हुआ, तय्यार किया हुआ (भीप, कुमा महा) ।

सज्जिअ वि [सज्जित] बनाया हुआ (दे १, १३८) ।

सज्जिअ पु [दे] १ नापित नाई । २ रजक, बौबी । ३ वि पुरस्कृत, भागे किया हुआ । ४ दीर्घ, तन्मा (दे ८, ४७) ।

सज्जिआ क्षी [सज्जिका] वार विशेष राजी वार 'कय सज्जियाकारेण मणुनिपति' (छाया १, ५—पत्र १०६) ।

सज्जीअ } देखो स-ज्जीअ = स जीव ।

सज्जीअ } देखो स-ज्जीअ = स जीव ।

सज्जीअय धन [सज्जी + भू] सज्ज होना, तय्यार होना । सज्जीअवेइ (या १४) ।

सज्जो देखो सज्ज = सयस (मुपा ३६७) ।

सज्जोक्क वि [दे] प्रत्यक्ष, नूतन, ताजा (दे ८, २) ।

सज्जक वि [साध्य] १ साधनीय, सिद्ध करने योग्य । २ वरा में करने योग्य, 'बलिमो हु इमो सत्तु ताव य सज्जो न पुरिसमारस' (मुर ८, २६, स २४) । ३ तर्कशास्त्र प्रसिद्ध मनुष्य पदार्थ, जैसे धूम से ज्ञातव्य वहि (पवा १४, ३५) । ४ पुं. साध्यवाला, पक्ष (विवे १०७७) । ५ देवगण विशेष । ६ योग विशेष । ७ मन्त्र विशेष (हे २, २६) ।

सज्जक पु [सज्ज] १ पर्वत विशेष (स ६७६) । २ वि. सहन योग्य (हे २, २६, १२४) ।

सज्जमति य पु [दे] ब्रह्मचारी (राज) ।

सज्जमनिया क्षी [दे] मणिनी, बहिन (राज) ।

सज्जमेतासि पु [सज्जमेतासि] जिसकी साधना विद्या शिष्य (मुल २, १५) ।

सज्जमल्लण वि [साध्यमान] जिसकी साधना की जाती हो वह (रयल ४०) ।

सज्जक सक [दे] ठीक करना, तन्दुरुस्त करना । सज्जमेहि, सज्जमेमि (मुप २, १५) ।

सज्जस न [साधस] भय, डर (हे २, २६, कुमा) ।

सज्जसाय वि [साध्यायिक] १ जिसमें पठन आदि स्वाध्याय हो सके ऐसा शास्त्रीय देश, काल आदि (ठा १०—पत्र ५७५) । २ न स्वाध्याय, शास्त्र पठन आदि (पत्र २६८, एदि २०७ टी) ।

सज्जसाय पु [साध्याय] शोभन अध्ययन, शास्त्र का पठन धारतन आदि (भीप, हे २, २६, कुमा, नव २६) ।

सज्जसाय वि [साधराज] सहाचल के राजा से सम्बन्ध रखनवाला, सहादिक के राजा का (पउम ५५, १७) ।

सज्जिमल्ल पु [दे] भ्राता, भाई (उप २७५, ३७७ पिठ ३२४) ।

सज्जिमल्ला क्षी [दे] मणिनी, बहिन (पिठ ३१६, उप २०७) ।

सज्जिमल्ल देखो सज्जिमल्ल (राज) ।

सट्ट पुष्पी [दे] १ सट्टा त्रिनिमय, बदला (मुपा २३३)। छी. °ट्टी (मुपा २७५ वज्जा १४२)। २ वि. सटा ह्रस्वाः 'पीणुल्लुण्ण-सट्टं' एणवट्ट' (मवि)।

सट्ट पुन [सट्टरु] १ एण तद्ध का नाटन सट्टय (बणू २मा १०) रंभ त परिलोदि धट्टमतिर्य एयम्मि सट्टे वरं (२मा १०)। २ साध विरोध (२मा ३३)।

सट्ट न [शाट्ट] शठता, धूर्तता (उप ७२८ टी गुमा २४)।

सट्ट (सी) देखो छट्ट (चार ७ प्रबो ७३ वि ४४६)।

सट्टि छी [पट्टि] १ सख्या विरोध, साठ ६०। २ साठ सख्यागाला (सम ७४ बण्य महा, वि ४४८)। 'तत, °तं न [तन्] शास्त्र विरोध, साख्य-शास्त्र (भग, लाया १, ५—पत्र १०५ भीर, बणू १६)। 'म वि [तम] साठवां (पत्रम ६०, १०)।

सट्टिक् वि [पट्टिक्] १ साठ वर्ष की सट्टिय } बमवाला (तट्ट १७, राज)। २ सट्टोअ पुन एक प्रकार का भावल (राज या १८)।

सट्ट भव [सट्ट] १ सटना। २ विवाद करना, झिगड़ होना। ३ सव गति करना, जाना। सट्ट (हे ४, २६६; प्राय, पट्ट, धावा १५५)।

सट्ट भव [शट्ट] १ सटना। २ लेद करना। ३ रोतो होना। ४ सव, जाना। सट्ट (विपा १, १—पत्र १६)।

सट्टग म [पट्टग] शिगा बल्य, व्याकरण, निरुक्त छन्द भीर ज्योतिष। 'वि वि [विट्ट] स भीगा का जानकार (भग, भीप वि ३४१)।

सट्टग म [शट्टग] विवरण, सटना (पण्ड १, १—पत्र २३, लाया १, १—पत्र ४८)।

सट्टा देखो सटा (हे १, ५०, वि ७०७)।

सट्टिअ रि [सट्ट, शट्टिअ] सट्ट ह्रस्वा, रिटोअ (विपा १, ७—पत्र ७३, भा १४, गुमा)।

सट्टिअगिअ रि [दे] १ रषिउ, बड़ाना हला। २ भेरेउ (पट्ट)।

सट्टह सक [शट्ट] १ विनाश करना। २ कृश करना। सट्टह (धावा १५५)।

सट्टह पुष्पी [श्राट्ट] १ श्रावक, जैन गृहस्थ (भीप ६३, महा)। छी 'डट्टी (मुपा ६५४)। २ वि श्रद्धेय वचनवाला, जिसका वचन श्रद्धेय हो वह (ठा ३, ३—पत्र १३६)। देखो सट्ट = श्राट्ट।

सट्टह देखो सट्ट = साधं।

सट्टहइ पु [श्राट्टिन्] वानप्रस्थ साधन की एव जाति (भीप)।

सट्टहा छी [श्रट्टा] १ सट्टा, प्रसिताप, बाह्या (विपा १, १ पत्र २)। २ धर्म धादि में विश्वास, प्रतीति। ३ श्रावक, सम्मान। ४ शुद्धि। ५ चित की प्रजता (हे १, ४१, पट्ट)। देखो सट्टा।

सट्टिह वि [श्रट्टिन्] १ यथाहु, सट्टावाल् (ठा ६—पत्र १३२ उत ५, ३१, पिक्का १३)। २ पुं. श्रावक, जैन गृहस्थ (बण्य)।

सट्टिहम वि [श्राट्टिक] देखो सट्टह = श्राट्ट (वि ३३३, राज)।

सट्टी देखो सट्ट = श्राट्ट।

सट्ट वि [शट्ट] १ धूर्त, मायावी, बपटी (कुमा उप २६४ टी भीपा ५८, भग कम्म १, ५८)। २ कुत्ति, बरू (विट्ट १३३)। ३ पुं. धतूरा। ४ मध्यस्थ पुरुष (हे १, १६६, गणि ८)।

सट्ट पुं [दे] १ पाव, जड़ान का बादगान, गुनवृत्तों में 'सट्ट' (सिरी ३८७)। २ बेरा, वाद (दे ८ ४६)। ३ स्वप्न, बुद्ध्या (दे ८, ४६ पाय)। ४ वि नियम (दे ८, ४६)।

सट्टय न [दे] कुमुम, कूय (दे ८, ३)।

सट्टा छी [सटा] १ मिह धादि की बेसय। २ जटा। ३ सती का बरा-गमूह। ४ पिता (हे १, १६६)।

सट्टाल पु [सट्टाल] मन्त्रावा विह (कुमा)।

सट्टि पु [दे सट्टिन्] विह (दे ८, १)।

सट्टिह वि [शिथिल] दोना (हे १ ८१, गुमा)।

सण पुन [साण] १ शयन स्थान (या १८—पत्र १५४ पण्ड २ ५—पत्र १४८)। २ हृत्प विष पाट, शिष्ट ह्यु रण्य धादि

बनने के बाम में लाए जाते हैं (लाया १, १—पत्र २४, पण्ड १—पत्र २२, बणू)। 'वधण म [वन्धन] सन वा पुण-वृत्त (भीप लाया १, १ टी—पत्र ६)। 'वाडिआ छी [वाटिका] सन वा बगीचा (गा ६)।

सण पु [स्वण] शब्द, भावाज (स ३७२)।

सणरुमार पु [सनाट्टमार] १ एक बरुनर्त्ती राजा (सम १५२)। २ तीसरा देवलाक (भट्ट भीप)। ३ तीसरे देवलोक का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। 'पडिसय पुन [पडिसक] एव देव विमान (सम १३)।

सणप्पय } देखो स-णप्पय = स नवद।
सणप्पय }
सणप्पकय }

सणा म [सना] सदा, हमेशा। 'तण 'यण वि [तन] सदा रहनेवाला, नियम शास्त्र (सम २, ६, ४७) 'विद्याण सणाणमो परिणापिमो दम्भमोहि धुणो' (सबोय २)। सणाण म [स्नान] नहाना, नहान, धनगहन (जवा)।

सणाह देखो स-णाह = सनाय।

सणाहि पुं [सनाभि] १ स्नान, जाति बंधू समणी सणाही यं (पाय)। २ समान, गट्ट (रंभा)।

सणि पु [शनि] १ ग्रह स्थित, शनिचर (पत्रम १७ ८२)। २ शनिवार (गुमा ५६०)।

सणिअ पुं [दे] १ सप्ती, गवाह। २ ग्राम्य, ग्रामीण (दे ८, ४७)।

सणिअ व [शनिस्] भीरे, हीम (लाया १ १६—पत्र २२६, गा १ ३, हे २, १६८ पट्ट कुमा)।

सणिचर पुं [शनिचर] ग्रह स्थित, रुनि-ग्रह (वि ८४)। 'संखन्दर पुं [संखन्दर] वर्ष स्थित (ठा ५, ३—पत्र ३४४)।

सणिचरि } पुं [शनिचरिन्] धर्मिक
सणिचरि } अनुमो की एव जाति (रह, भग ६, ७—पत्र २७६)।

सणिचर } देखो सणिचर (ग २ १—सणिचर ५४ ७३, हे १, १४६ भीप गुमा सुत्र १०, २०, २०)।

सणिद्ध देखो सणिद्ध (हे २, १०६, कुमा) ।
सणिष्पवाय पुं [राने प्रपात] जोरां से मरो
हुई पौडितर वस्तु-विशेष (छा २, ४—पत्र
८६) ।

सणेह पुं [सोह] १ प्रेम, प्रीति (धमि २७
कुमा) । २ घृन्, तैल आदि क्षिप्य रस । ३
चिकनाई, चिकनाहट (प्राप्त, हे २, १०२) ।
सण्ण देखो सण (हे १३, ७२) ।

सण्णज्ज त [सण्णाय्य] मन्त्र आदि से
सत्कारा जाता घृत आदि (प्राह १६) ।

सण्णत्तिअ वि [दे] परित्यागित (दे ८, २८) ।

सण्णत्तिअ वि [दे] १ विस्तित । २ न.
सामिष्य, मद्य वे लिए समीप-गमन (दे ८,
५०) ।

सण्णिअ वि [दे] आदं, गीला (दे ८, ५) ।

सण्णिअ देखो सन्निअ (राज) ।

सण्णुमिअ वि [दे] १ सनिहित । २ माणित,
नापा हुषा । ३ मनुवीत, अनुयय युक्त (दे ८,
५८) ।

सण्णुमिअ देखो सन्नुमिअ (दे ८, ५८ टी) ।

सण्णुमज्ज पुं [दे] यत्न देवता (दे ८, ६) ।

सण्ह वि [अण्ह] १ मद्यण, चिकना (कल्प,
श्रीप) । २ छोटा, बारीक (विपा १, ८—
पत्र ८३) । ३ न, लोहा (ह २, ७५ पङ्) ।
४ पु, वृक्ष विशेष (पण्ण १—पत्र ३१) ।
“करणां ओ [करणां] पीसन की शिला
(मग १६, ३—पत्र ७६६) । “मच्छु पु
[मत्स्य] मछली की एक जाति (विपा १,
८—पत्र ८३, पण्ण १—पत्र ५७) ।
“साह्वा ओ [अहिगन्] घाट उच्छ
लक्षणलक्षणिका का एक नाप (इक) ।

सण्ह वि [सुस] १ छोटा, बारीक (कुमा) ।
२ न, कैतव कपट । ३ अश्यात्म । ४
मलवार विशेष (हे २, ७५) । देखो सुहम,
सुहम ।

सण्हई ओ [दे] द्विती (दे ८, ६) ।

सत देखो सय = शत (ग ३) । “बलु पु
[द्रतु] इन्द्र (कल्प) । “यी ओ [प्री]
सत विशेष (पण्ण १, १—पत्र ८, ५७) ।
“दुओ ओ [द्र] एक महावदी (छा ५,
३—पत्र ३५१) । “सिया ओ [मिपज्]

मपत्र-विशेष (सम २६) । “रिसभ पुं
[श्रयम] भद्रोपाय वा इरीशर्वां धूर्त (सम
२६) । “वच्छ पुं [वत्स] पति विशेष
(पण्ण १—पत्र ५२) । “वाइया ओ
[पादिम] श्रोत्रिय जन्तु की एक जाति
(पण्ण १—पत्र ५२) ।

सत देखो सत्त = सत्तन् (पिग) । “र नि
[दशन] सतरह, १७, नौ चाणतगुणपि
हु पण्णित्तवह सतरमेसदसमेम (सिदि
१२८८, पत्र २, १८, १६) । “रसय न
[दशरात] एक सौ सतरह (पत्र २, १३) ।

सतत देखो सत्तत = स्व-सत्तय ।

सतत देखो सयय = सतत (राज) ।

ससय देखो सयय = शतक (सम १५५) ।

सतर न [सतर] दधि, दही (श्रीप ५८) ।

सति देखो सह = स्तुति (छा ४, १—पत्र
१८७, श्रीप) ।

सती देखो सट्टे = सती (कुप ६०) ।

सतीणा देखो सट्टेणा (छा ५, ३—पत्र
३५३) ।

सतेरा ओ [शतेरा] त्रिदिग् इक्क पर रहने
वाली एक विपुलुमारी देवी (छा ४, १—
पत्र १६८, इक) ।

सत्त वि [शक्त] समर्थ (हे २, २, पङ्) ।

सत्त वि [रास] रास प्रसन्न, जिसपर आनन्द
क्रिया गया हा वह (पत्र ३५, ६, पत्र
१०६ टी प्रति ८६) ।

रास देखो सस्य = सत्य (धमि १८६, पिग) ।

सत्त वि [सक्त] आसक्त, गुद, दोषुत्र (सूप
१, १, ६, रु ६, १३६, महा) ।

सत्त पुन [सत्र] १ सदास्य, जहाँ हमेशा
अन्न आदि का खन लिया जाता हो वह स्थान
(कुप १७२) । २ यज (अवि ८) । “साला
ओ [शाल] सदाव्रत-स्थान, सान क्षेत्र
(सण्ण) । “गार न [गार] वही अर्थ
(पर्ववि २६) ।

सत्त वि [दे] मत गया हुआ (पङ्) ।

सत्त पुन [सत्त्व] १ प्राणी, जीव, चेतन
(आचा मुर २, १३६, सुवा १०३, पर्वस
११८६) । २ भद्रोपाय का रूप धूर्त (सम
५१) । ३ न, नल, पराक्रम । ३ मानसिक

ऊसाह (पिठ ६३३, मणु, प्राप् ७१) । ५
वियमानता (पर्वस १०५) । ६ वनवात
सात दिनों का उपवास (संवेध ५८) ।

सत्त वि [समन] सात संस्मवाला, सात
(विपा १, १—पत्र २, पत्र, कुमा जी ३३,
५१) । “सिस्ती, “सेस्ती ओ [क्षेत्री]

जिन वैश्य, जिन विन्ध्य, जिन धामग, साधु,
साध्वी, श्रावण और श्राविका ये सात घन-
व्यय स्थान (ती ८, पु १२६, राज) । “ग न
[क] सात वा सप्तमाय (द ३५, पत्र २,
२६, २७, ६, ११) । “वत्ताल वि
[वदगारिण] संतालीस, ५७ वां (पत्रम
५७, ५८) । “वत्तालीस जीन [वत्तालि-
शान्] संतालीस, ५७ (सम ६७) । “वृक्षय
पुं [वृक्षय] वृक्ष विशेष, सतवन का पेड़,
सतीना (पाम, मे १, २३, छाया १, १६—
पत्र २११, सण्ण) । “ट्टि ओ [पट्टि] १
सक्या विशेष, सतवट, ६७ । २ सतवट सक्या
वाला (सम १०६, कम्म १, २३, ३२, २,
६) । “ट्टिभा म [पट्टिभा] सतवट प्रकार
का वृक्ष (पत्र १२—पत्र २२०) । “णउइ देखो
“णउइ (राज) । “लीमइम वि [पिशाचम]
सहस्रीसर्प, १७ वां (पत्रम ३७, ७१) । “सुतु
पुं [सुतु] यत्न (गाम) । “दस नि
[दशन] सतरह, १७ (पत्रम १६७, ५७) ।
“पण्ण देखो वण्ण (राज) । “भूम वि
[भूम] सात तलवाला आसाद (था १२) ।
“भूमिय वि [भूमिक] वही पुरोंक अर्थ
(महा) । “म वि [म] सातवा, ७ वां
(कल्प) । जी, “मा (जी २६) । “मासिअ वि
[मासिक] सात मास का (मग) ।
“मासिआ ओ [मासिकी] सात मास में
पूर्ण होनेवाली एक साधु प्रतिज्ञा अत विशेष
(सम २१) । “मिया, “मा ओ [मिता,
“मा] १ सातवों, ७ वीं (महा सत २६,
चाप ३०, कम्म ३, ६, प्राप् १२२) । २
सामने विभक्ति (वेद्य ६८२ राज) । “य
देखो “य (कम्म ६, ६६ टी) । “र वि [त]
सतरवा, ७० वां (पत्रम ७०, ७२) । “र नि
[दशन] सतरह, १७ (कम्म २, ३) । “रस
पुं [राज] सात रातदिन का समय (महा) ।
“रस नि [दशन] सतरह, १७ (मग) ।
“रस, “रसम वि [दश] सतरहवा,

(कम्म ६, १६; पउम १७, १२३; पव ४६) ।
 'रह देखो' रस = 'रसम्' (पह) 'रि' जो
 ['ति] सत्तर, ७० (सम ८१, नप्य, पड) ।
 रिसि पुं ['र्यपि] सात नवग्रो का मंडन-
 विशेष (मुग ३५४) । 'पण्य', 'पन्न पुं
 ['पणे] १ वृक्ष-विशेष, मलीना (धीर
 भाग) । २ देव-विशेष (राय ८०) । 'वज्रन-
 डिस्सप पुं ['पणावर्तंसरु] सोधर्म देवलोक
 का एक विमान (राय ५६) । 'विह' वि
 ['विष] सात प्रकार का (जो १६; प्राप्
 १०४; पि ४५१) । 'वोसइ', 'वोसा जो
 ['विशति] सदाईन, २७ (पि ४४५, भग) ।
 'सइय वि ['शति] सात सौ की सख्या-
 वाला (प्राया १, १—पत्र ६४) । 'सट्ट
 वि ['पट्ट] सट्टरत्ना, ६७वां (पउम ६७,
 ५१) । 'सट्ठि देखो' ट्टि (सम ७६) 'सत्त-
 मिया जो ['सत्तमिया] प्रविज्ञा-विशेष,
 नियम-विशेष (भत) । 'सिक्काउइय वि
 ['विश्रा] सात सिक्कातवाला (प्राया
 १, १२; धीर) । 'हत्तर वि ['सपनत]
 सत्तहत्तर, ७७ वां (पउम ७७, ११८) ।
 'हत्तरि जो ['सपनति] १ सख्या-विशेष,
 सत्तहत्तर की सख्या, ७७ । २ सत्तहत्तर सख्या-
 वाला (सम ८५, भग, का २८) । 'हा भ
 ['धा] सात प्रकार का, सत्तपिण (पि
 ४५१) । 'हुत्तर देखो' हत्तरि (भव ८) ।
 'इईस' देखो 'वोसा' (पि ४४५) ।
 'णउइ जो ['नउति] सतानवे, ६७ (सम
 ६८) । 'णउय वि ['नउत] १ सतानवेवा,
 ६७ वां (पउम ६७, १०) । २ जिसमे सता-
 नवे अधिक हो वह, 'सताणउयजोयणसए'
 (भग) । 'रह' (भग) देखो 'रह' (पिग) ।
 'वण्ण', 'वयन्न जोन ['पञ्चाशत] १
 सख्या विशेष, सतावन, ५७ । २ सतावन
 सख्यावाला (पडि, पिग, सम ७३, नव २) ।
 जो, 'ण्णा', 'सा' (पिग पि २६५, ४४७) ।
 'पयज वि ['पञ्चाश] सतावनवा, ५७वां
 (पउम ५७, ३७) । 'वोम न' ['विशति]
 १ सख्या-विशेष, सताईस । २ सदाईन की
 सख्यावाला, 'एव सतावीस भंगा लेक्क' (भग)
 । 'वीसइ जो ['विशति] बहु प्रयोग
 अर्थ (कुमा) । 'वोसइम वि ['विशतिवम]

सताईसवां, २७ वां (पउम २७, ४२) ।
 'वोसइविह वि ['विशतिविष] सताईस
 प्रमर का (पण्ण १७—पत्र ५१४) । 'वोसा
 जो, देखो 'वोस' (हे १, ४, पट्ट) । 'वोसइ
 जो ['शोति] सतावीस, ८७ (सम ६३) ।
 'वोसइम वि ['शोतिवम] सतावीस, ८७
 वां (पउम ८७, २१) ।

सत्तरा वि [सत्तरा] १ राजा, मन्त्री, मित्र
 कोरा-भंडार, देश, किला तथा सैन्य ये सात
 राज्याङ्गवाला (कुमा) । २ न. हस्ति शरीर
 के ये सात अवयव—चार पैर, सूँठ, गुच्छ
 और लिंग, 'सतगपरिहृय' (उमा १०८) ।

सत्तण्ण देखो सत्तण्ण = सत्तण्ण ।

सत्तत्थ वि [दे] भमिशाव, कुलीन (दे ८,
 १०) ।

सत्तम देखो सत्तम = सत्तम ।

सत्तर देखो सत्तर = सत्तर ।

सत्तर देखो सत्तर = सत्तर-वरात् दश ।

सत्तल न [सत्तल] पुष्प विशेष (गडड) ।

सत्तल जो [सत्तल] सता विशेष, नव-
 सत्तली १ गालिका का गाढ़ (पात्र, गा
 ६१६, पउम ५३, ७६) ।

सत्तली जो [ने. सत्तल] सता-विशेष,
 गेलालिका का गाढ़ (दे ८, ४) ।

सत्तवीसजोयण देखो सत्तावीसजोयण
 (वड) ।

सत्ता जो [सत्ता] १ वज्राव, अस्त्र (एवि
 ११६ टो) । २ भाषा के साथ लगे हुए कर्मों
 का अस्तित्व, कर्मों का स्वल्प से अग्रपचय—
 अवस्थान (कम्म २, १, २५) ।

सत्तावरी जो [शानावरी] कन्ध विशेष, 'सत्ता-
 वरी विरावी कुमारि तहो होहरी गनोई य'
 (पत्र ४, सवीष ४४, या २०) ।

सत्तावीसजोयण पु [दे] चन्द्र, चन्द्रमा (दे
 ८, २२), 'सत्तावीसजोयणकरासरो जाव
 गजवि न होई' (वाप्र १५) ।

सत्त जो [दे] १ विवाई लीन पाया वाला
 गोल कण्ड विशेष । २ घडा रचने का पलंग
 की तरह ऊँचा नष्ट-विशेष (दे ८, १) ।

सत्ति जो [मति] १ यज्ञ विशेष (कुमा) ।
 २ विशुल (पण्ड १, १—पत्र १८) । ३

सामर्थ्य (ठा ३, १—पत्र १०६; कुमा, प्राप्
 २६) । ४ विद्या विशेष (पउम ७, १४२) ।
 'म', 'मंत वि ['मन्] शक्तिवाला (ठा
 ६—पत्र ३५२, सवीष ८, उप १३६ टो) ।

सत्ति पु [सत्ति] परव, घोडा (पात्र) ।

सत्तिअ वि [सात्तिअ] सत्त्व-मुक्त, सत्त्व-
 प्रधान (सूत्रनि ६२, हम्मोर १६; स ४) ।

सत्तिअण जो [दे] भमिशाव, कुलीनता
 (दे ८, १६) ।

सत्तिवण्ण १ देखो सत्त-वण्ण (सम १५२,
 सत्तिवम ५ पि १०३, विचार १४८) ।

सत्तु १ [सत्तु] रिपु, दुश्मन, वैरी (प्राया
 १, १—पत्र, नप्य, कुपा ७) । २ वि

['जिन्] १ शत्रु की जीतनेवाला । २ पुं,
 एक राजा का नाम (प्राहु ६५) । 'रघ वि

['म] १ रिपु की मारनेवाला (प्राहु ६५) ।
 २ पुं, रामचन्द्र का एक छोटा भाई (पउम

२५, १४) । 'निहण' ['निहण] बहु प्रयोग
 अर्थ (पउम १०, ६६) । 'महण वि ['महण]

शत्रु का मर्दन करनेवाला (सम १५२) । 'सेण
 पुं ['सेन] एक घतकृद् दुनि (भत ३) ।

'हण देखो' रघ (पउम ८०, ३८) ।

सत्तु १ पुं [सत्तु] सत्तु, सत्तुमा, कुजे
 सत्तुअ १ हुए यव आदि का कण (पि

१६७, निहण १, स २५३, सुख ६, २०६,
 सुपा ४०६; महा) ।

सत्तुज न [सत्तुज] १ एक विद्यापर-नगर
 (रुह) । २ पुं, रामचन्द्रजी का एक छोटा

भाई, शत्रुघ्न (पउम ३२, ४७) ।

सत्तुजय पुं [सत्तुजय] १ काठियावाड़ मे
 पालीतला के पास का एक सुप्रसिद्ध पर्वत

जो जैनो का सन्-भेद तीर्थ है (सुख ५,
 २०३) । २ एक राजा का नाम (राज) ।

सत्तुन्दम पुं [सत्तुन्दम] एक राजा का नाम
 (पउम ३८, ४५) ।

सत्तुग देखो सत्तुग (कुप्र १२) ।

सत्तुत्तरि जो [सत्तुत्तरि] सत्तहत्तर, ७७
 (कम्म ६, ४८) ।

सत्थ वि [सत्थ] प्रशस्त, श्लाघनीय (वेदय
 ५७२) ।

स'व न [स'व] हृषिकार, श्राप्य, प्रहरण
 (प्राचा, उप, भग, प्राप् १०५) । 'कास पुं

[°कोश] शब्द—घोषार रपने वा बैला (छाया १, १३—पत्र १८०) । 'वज्रम वि [°वज्र] हविषार से मारने योग्य (छाया १, १६—पत्र १६६) 'गोवाडण न [°विपा-टन] शब्द से चोरना (छाया १, १६—पत्र २०२, भाग) ।

सत्य वि [°दे] गत, गया हुआ (दि ८, १) ।

सत्य देखो स त्थ = स्व त्थ ।

सत्य न [°रास्थ्य] स्वस्थता (छाया १, ६—पत्र १६६) ।

सत्य पु [°सार्थ] १ व्यापारी मुसाफिरों का समूह (छाया १, १५—पत्र १६३, उत ३०, १७, बृह १, भणु, सुर १, २५४) । २ प्राणि समूह (कुमा, हे १, ६७) । ३ वि. भगवत्, भगवत्पनामा (बेद्य ५७२) । 'वह, 'वाह पुत्री [°वाह] सार्थ का मुखिया संप-नायक (श्रु ५५, उवा विना १, २—पत्र ३१) । जी. 'ही (उवा, विना १, २—पत्र ३१) । 'वाहिक पु [°वाहिक] वही पूर्वोक्त भर्ष (भवि) । 'ह देखो 'वाह (धर्मवि ५१, सण) । 'हिय पु [°धिप] सार्थ-नायक (सुर २, ३२, सुपा ५६४) । 'हियह पु [°धिपति] वही भर्ष (सुपा ५६४) ।

सत्य पुन [°शाक] हिलोपदेशक ग्रन्थ, हित-रिक्तक पुस्तक, सत्य-ग्रन्थ (विसे १३८५, कुमा) । 'नाणासत्थे मुणुतोवि' (आ ४) । 'णु वि [°ज्ञ] शाक का जानकार, 'मुनि-एसत्थएण' (उप ६८९ दी उप वृ १२७) । 'गार वि [°कार] शाक प्रणेतृ (धर्मस १००१, विष्णु ११) । 'थ पु [°थ] शाक रहस्य (कुप्र ६, २०६, भवि) । 'वार देखो 'गार (स ४, धर्मस ६८२) । 'वि वि [°विद्] शाक शाता (स ३१२) ।

सत्यइअ वि [°दे] उत्तेजित (दि ८, १३) ।

सत्थर पु [°दे] निकर, समूह (दि ८, ४) ।

सत्थर १ पुन [°स्तर] शय्या, बिछौना सत्थरय [°दे ८ ४ टी सुपा ५८३, पात्र, पट, हास्य (३६ सुर ४, २४४) ।

सत्थय देखो सत्थय = सत्तव (आक्र ३३, वि ७६) ।

सत्थाम देखो सत्थाम = सत्थामम् ।

सत्थान देखो सत्थय = संस्तव (आक्र ३३) ।

सत्थि ध. श्रो [°स्ति] १ भाशीर्गद, 'सत्थि कट्ठे बजितो' (पत्रम ३५, ६२) । २ सेव, मत्स्या, मंगल । ३ पुण्य आदि वा स्वीकार (हे २, ४५, सति २१) । 'महं की [°मती] १ एक विपन्न-श्री, क्षीरसदम्भक उपाध्याय की श्री (पत्रम ११, ६) । २ एक नगरी (उप ६०२) । ३ संनिवेश विशेष (स १०३) । देखो सोत्थि ।

सत्थिय पु [°सत्ति] १ भाङ्गविक्रि विन्यास-विशेष, मंगल के लिए की जाती एक प्रकार की बाजल आदि की रचना विशेष (था २७, सुपा ५२) । २ स्वस्तिक के प्रकार का भासन-चक्र (बृह ३) । ३ एक देव विमान (वेत्थ १४०) । 'पुर न [°पुर] एक नगर वा नाम (था २७) । देखो सोत्थिय ।

सत्थिय वि [°सार्थिक] १ सार्थ-सम्बन्धी, सार्थ का मनुष्य आदि (कुप्र ६२, स १२८, सुर ६, १६६, सुपा ६५१, धर्मवि १२४) । २ पुं सार्थ का मुखिया (बृह १) ।

सत्थिय न [°सार्थिक] ऊव नाथ (स २६२) ।

सत्थिआ श्री [°शक्ति] क्षुरी (आप्र) ।

सत्थिय देखो सत्थिय = स्वस्तिक (पचा ८, २३) ।

सत्थिइ देखो सत्थिय = सार्थिक (सुर १०, २०८) ।

सत्थिइय देखो सत्थ = सार्थ (महा, भवि) ।

सत्थु वि [°शस्त्र] शक्ति कर्ता, सील देने वाला (आचा सूत्र २, ५, ४, १, १३, २) ।

सत्थुअ देखो सत्थुअ (आक्र ३३, वि ७६) ।

सदा देखो सअ = सदा (राज) ।

सदावरी देखो सयावरी = सदावरी (उत ३६, १३६) ।

सदिस (श्री) देखो सरिस = सट्टा (नाट—मुख ११३) ।

सद भक [°शन्द्य] १ भावान करना । २ एक भाष्टान करना, कुलाता । सदह (मिग) ।

सद पुन [°शब्द] १ ज्वनि भावान (हे १, २६०, २, ७६, कुमा, सम १५) 'सदाधि विष्णुस्वाणि' (सूत्र १, ४, १, ६), 'सदाध' (आचा २, ४, २, ४) । २ पु नय विशेष

(आ ७—पत्र ३६०; विसे २१८१) । ३ छन्द विशेष (मिग) । ४ नाम, ग्राह्या (महा) । ५ प्रविद्धि (श्रीव, छाया १, १ टी—पत्र ३) । 'वेहि वि [°वेधिय] शब्द के अनुसार निशाना मारनेवाला (छाया १, १८—पत्र २३६ गड) । 'गोइ पु, [°पाति] एक वृत्त वेत्ताय पर्वत (आ २, ३—पत्र ६६, ८०, ४, २—पत्र २२३, हक) ।

सदल न [°शदल] हरित, हरा घास (पात्र, छाया १, १—पत्र २४, गड) ।

सदलिय वि [°शदलिय] हरा घासवाला प्रदेश (गड) ।

सदह सक [°श्रु + धा] श्रद्धा करना, विश्वास करना, प्रतीति करना । नदहह, सदहामि (हे ४, ६, भग उवा) । भवि, सदहिल्लह (वि ५३०) । बह, सदहल, सदहमाय सदहान (नव १६, हे ४, ६, सु २३) । सक, सदहिला (उत २६, १) । क. सदहियक (उव, स ८६, कुप्र १४६) ।

सदहण देखो सदहण (हे ४, २३८, कुमा) ।

सदहणया १ श्री [°श्रद्धा] श्रद्धा, विश्वास, सदहणा प्रतीति (आ ६—पत्र ३५५, पभा) ।

सदहा देखो सदहा = श्रद्धा (सट्टि १२७) ।

सदहणन न [°श्रद्धा] श्रद्धा, विश्वास (आवक ६२, पव ११६, हे ४, २३८) ।

सदहण देखो सदह ।

सदहिय वि [°श्रद्धित] जित पर श्रद्धा की गई हो वह, विश्रुत (आ ६—पत्र ३५५, वि ३३३) ।

सदाइद (श्री) वि [°शब्दादित] भाष्टव, कुलाय हुषा (नाट—मुख २८६) ।

सदाग देखो सदाण । सदाणद (पट्ट) ।

सदाह वि [°शब्दवत्] शब्दवाता (हे २, १५६ पत्रम २०, १०, आप्र, सुर ३, ६६, पात्र, धीम) ।

सदाह न [°दे] मूत्रर (दि ८, १०, पट्ट) ।

'पुत्त पु [°पुत्त] एक जैन उपासक (उमा) । सदाव सक [°शब्दय, शब्दायय] भाष्टान करना, कुलाता । सदावेद, सदावित, सदावेति (श्रीव, भप, भग) । सदावेहि

(स्वन् १२) । कर्म, सहायीप्रति (अभि १२८) । सह.सहायिता, सहायिता (वि ५८२, महा) ।

सहाय्य वि [अद्वित, सहायित] प्रकृत, बुलाया हुआ (पन्, महा, सुर ८, १३३) ।

सहायि वि [शब्दित] १ प्रसिद्ध (चौप, शाया ११, १ टी—पत्र ३) । २ आदित (सुपा ४१३, महा) । ३ आदित, जिसको बात कही गई हो वह (कुपा ३, ३४) ।

सहायि वि [शाब्दिक] शब्द-शास्त्र का ज्ञाता (अणु २३४) ।

सहदूल पु [शार्दूल] १ श्वाश्व पशु की एक जाति, बाघ (पात्र परह १, १—पत्र ७, दे १, २४, अभि ५५) । २ छन्द विशेष (पिंग) । 'विक्रीडित' । 'विक्रीडित' । उन्नीस अक्षरों के पादवाला एक छन्द (पिंग) । 'सहदुन' [सादर] छन्द-विशेष (पिंग) ।

सह देखो सह = साथ ।

सह न [आह] १ पिठरी की तुष्टि के लिए तर्पण, पिण्ड दानादि (अणु १७ पुष्क १६७) । २ वि, यदावाला, यदाहु (उप ८६८) । देखो सहदु = याद (उप १११) । 'पञ्च पु [पञ्च] आश्विन मास का छण्ड पक्ष (दे ६, १२७) ।

सह देखो सम्म = साथ (नाट—वैत १५) ।

सहद पु [आह] अश्वि-नाचक नाम (महा) । सहद जी [स्रग्मरा] एककीस अक्षरों के बरणवाला एक छन्द (पिंग) ।

सहद पु [सहद] एक प्रकार का हथियार, कुल्, बड़ा (परह १, १—पत्र १८) । देखो सहद ।

सहद देखो सम्मत्स (अह २१, प्राप्र) ।

सहद देखो सहद (दे २, ४१, शाया १, १—पत्र ७४, प्राप् ४६, पात्र) । 'ल वि [यन्] यदावाला (बद, श्रावक १७५) । 'ल वि [ल] यही अर्थ (सबोध ८) । जी. 'लुगा (ग ४१५) ।

सहद वि [अद्विक] यदावाला (परह १, ३—पत्र ४४, वपु, प्राप् ११ टी) ।

सहद म [साधम] सहित, साथ (आचा, वरा, उत १६३) ।

सहय वि [अद्विक] यदावाला (विदे ४८२) । सधम्म वि [सधम्मन्] समान वर्गवाला (ध ७१२) ।

सधम्मिअ देखो सधम्मिअ = सधम्मिक । सधम्मिणी जी [सधम्मिणी] पत्नी (दे २, १०६, अणु) ।

सधवा देखो सधवा = सधवा ।

सनय देखो सनय = सनय ।

सन्न वि [सन्न] १ क्लान्त (पात्र) । २ भवन्त, मान (सुप १, २, १, १०) । ३ चिन्त (परह १, ३—पत्र ५५) ।

सन्नाण देखो सन्नाण = सन्नाण ।

सन्नाम सक [आ + ट] आदर करना, संमान करना । सन्नामइ सन्नामेइ (पद, हे ४, ८३) ।

सन्नामिअ वि [आह] समानित (कुपा) । सन्निअय वि [दे] परिहित, पहना हुआ (सुपा १६) ।

सन्निअ (अप) देखो सन्निअ (अपि) ।

सन्निर न [दे] पत्र-शाव भाजी (वस ५, १, ७०) ।

सन्नुम सक [आह] आच्छादन करना, ढाकना । सन्नुमइ (हे ४, २१) ।

सन्मुमिअ वि [आह] ढाक हुआ (कुपा) ।

सह देखो सह = श्रवण (कप) ।

सप देखो सप = शर् । सपइ (विने २२२७) ।

सपकर देखो सपकर = सपस ।

सपकर देखो सपकर = सपस ।

सपकरि म [सपकरि] अविशुद्ध, सामने (अत १४) ।

सपकरि जी [सपकरि] एक गहौपवि (टी ३) ।

सपजवा जी [सपजवा] पूजा (अणु ७०) ।

सपहिदिस् म [सपहिदिस्] अत्यन्त सुगुह, ठीक सामने (अत १४) ।

सपत्तिअ वि [सपत्तिअ] बाण से प्रतिव्यपित (दे १, १३५) ।

सपह देखो सपह (अपि १२६) ।

सपाग देखो सपाग = सपाग ।

सपिसहग देखो सपिसहग (पि २३२) ।

सप्य सक [सप्य] १ जाना, गमन करना । २ आश्चर्य करना । सप्यइ (शाया १५५), 'चोरविषा वि हू सप्यासप्यति न बद्धयण्य' (सुर २, २४३) । वहु. सप्यंत, सप्यमाण (गउठ, कप) । हू. सप्यणीअ (नाट—शकु १४७) ।

सप्य पुषी [सप्य] १ साँप, भुजग (उवा, सुर २, १४३, जी २१, प्राप् १६, ३८, ११२) । जी. 'प्यी (राज) । २ पुं. परलेया नखन वा अधिगता देव (सुज १०, १२, ठा २, ३—पत्र ७७) । ३ एक नरकस्थान (देवद २७) । ४ छन्द विशेष (पिंग) । 'सिर पु [शिरस] हस्त-विशेष, वह हाथ जिसकी उगलियाँ छोरे भङ्गा मिता हुआ हो और तला नीचा हो (दे ८, ७२) । 'सुगधा जी [सुगंधा] वनस्पति विशेष (परह १—पत्र ३६) ।

सप्यम देखो सप्यम = स्वप्न, सप्यम, स-अपम ।

सप्यमाण देखो सप्य = शर्, सप्य = शर् ।

सप्यरिआव } देखो सप्यरिआव = स-सप्यरिआव } परिताप ।

सप्यि न [सप्यि] दूत, यो (पात्र, पत्र ४, सुपा १३, सिरि ११८४, अणु) । 'आसन, यासन वि [आसव] लव्य-विशेषवाला, जिसका वनन भी की तरह मधुर होता है (परह २, १—पत्र १००) ।

सप्यि वि [सप्यि] १ जानेवाला, गति करने-वाला (कप) । २ रोग विशेष, हाथ में लकड़ी के सहारे न चल सकनेवाला रोग-विशेष (परह २, ५—पत्र १००) ।

सप्यिसहग देखो सप्यिसहग = सप्यिआ-चक ।

सप्या देखो सप्य = सप्य ।

सप्युरिअ देखो सप्युरिअ = सप्युरिअ ।

सप्यु न [सप्यु] बाल लुण, नया धास (दे २, ३३, प्राप्र) ।

सप्यु न [दे] कुपुट, कैरव, 'सुजय पु कुपुट महदय केरव सप्य' (पात्र) ।

सप्यु देखो सप्यु = सप्यु ।

सप्फल देखो स प्फल = स फल ।

सप्फल देखो स प्फल = सत् फल ।

सफर देखो सभर = शफर (वे २०) ।

सफर पुन [दे] मुमाफिरी, 'बडसकसवह-
खाए' (तिरि ३८२) ।

सफल देखो स फल = स फल ।

सफल सक [सफलप] सार्यन करना ।

वह. सफलत (मुपा ३७४) ।

सफलिअ वि [सफलिअ] सफल किया हुआ
(मुपा ३६६, उव) ।

स। (सप) देखो मचउ = सर्व (पिंग) ।

सबर पुं [शर] १ एक घनायें देता । २ उव
देता मे रहनेवाली एक घनायें मनुष्य-जाति,
किसत, भील (पह १, १—पत्र १४, पाप,
गड) । 'गियसण न [नियसन] तमास-
पत्र (उत्तानि ३) । देखो सघर ।

सघरी वि [शघरी] १ भिल जाति की ली
(पाया १, १—पत्र ३७, धत, गड, चेद्व
४८२) । २ कायोःसर्ग का एक दोष, हाथ से
गुल प्रवेश को डककर कायोःसर्ग करना (चेद्व
४८२) ।

सयल पुं [शयल] १ परमाधार्मिक देखो की
एक जाति (सम २८) । २ वि, कर्तुर,
चितकबरा (भावा, उप २८२, गड) । ३
न, दूषित भारिय । ४ वि, दूषित चरित्रवाला
मुनि (सम ३६) ।

सयलिय वि [शयलित] कर्तुरित (गड) ।

सयलीकरण न [शयलीकरण] सदीव करना,
भारिय की दूषित बनाना (भोष ७७८) ।

सय्य (सप) देखो सयउ = सर्व (पिंग) ।

सय्यल पुन [दे] राज विशेष, 'सरकसरसयि-
सय्यलकरासकेतु' (पठम ८, ६५, धर्मनि
५६) ।

सय्यल देखो स ययल = स-यल ।

सय्य वि [सय] १ समानप, सदस्य (पाय,
समस्त ११६) । २ समोचित, शिष्ट, 'अवय-
भार्यो' (उव ६, २, ८ सुर ६, २१५, उ
६५०) ।

सय्यन देखो स-ययन = सव भाव ।

सय्यन देखो स-ययन = स्व भाव ।

सय्यभायि वि [सय्यभायि] वारभायि,
वास्तयि (दगनि १, १३५) ।

सभ न, देखो सभा, 'सभाणि' (पावा २,
१०, २) ।

सभर पुं [शफर] मल्लय, मल्लनी (हुमा) ।
ली. री (हे १, २३६, प्राह १४) ।

सभर पु [दे] गृध पत्नी (दे ८, ३) ।

सभराइअ न [शफरायित] जिसने मल्लय की
तरफ भाषण किया हो वह (हुमा) ।

सभल देखो स-भल = स फल ।

सभा ली [सभा] १ परिपद (उग रयण
८३, धर्मवि ६) । २ गाडी के ऊपर की
छत—बकन (या १२) ।

सभाज सक [सभाजय] पुनन करना ।
हेक. सभाजइल (ली) (प्रति १६०) ।
सभाउ देखो स भाउ = स्व भाव ।

सम भक [शम] १ शाव होना, उपरान्त
होना । २ नष्ट होना । ३ वास्तक होना ।
नमह, समति (हे ४, १६७, हुमा), 'जइ
समइ सहराए पित ता कि पटोलाए' (तिरि
६६६) । वह. समेमाण (भापा १, ४,
१, ३) ।

सम सक [शमय] १ उपरान्त करना,
दबाना । २ नाश करना । वह. 'बुदुदुरि
सर्मतो' (धर्म ३) ।

सम पु [श्रम] १ परिश्रम, भाग्य । २ खेद,
यकावट (काप ८४, समस्त ७७, दे १,
१३१, उप पु ३५, सुपा ५२५, गड, सण,
हुमा) । 'जल न [जल] पलीना (पाप) ।

सम पु [शम] शान्ति, प्रशम, कोष धादि का
निह (हुमा) ।

सम वि [सम] १ समान, तुल्य, बरिखा
(सम ७५ उव हुमा, जो १२, कम ४,
४०, ६२) । २ तटस्थ, मध्यस्थ, उदासीन,
राज-द्वेष से रहित (हुमा १, १३, ६, ठ
८) । ३ स सर्व, सब (यु १२४) । ४ पुन,
एक देव विमान (सम १३, देवेद १४०) ।
५ सामायिक (सबोष ५५, विरे १४२१) ।
६ चाकार, गगन (सम २०, २—पत्र
७७५) । 'चउरस न [चउरस] सत्पान-
विशेष, चारो कोणी के समान शरीर की

भाट्टति विशेष (ठा ६—पत्र ३५७, सम
१४६, भग, वम्म १, ४०) । 'चक्राल न
[चक्राल] वृत्त, गोलाकार (गुज ४) ।
'ताल न [ताल] १ बना विशेष (मीप) ।
२ वि. समान तालवाला (ठा ७) । 'धम्मिअ
वि [धम्मिक] समान धर्मवाला (उप ५३०
टी) । 'पादपुत पुन [पादपुत] भासन-
विशेष, जिसमें दोनों पैर मिलानर प्रमीन में
लगाए जाते हैं वह भासन वग्न (ठा ५, १—
पत्र ३००) । 'वासि वि [वासि] तुल्य
दृष्टिवाला, समदर्शी (पण्ड १, २२) । 'पवभ
पुन [प्रभ] एक देव विमान (सम १३) ।
'भाउ पु [भाउ] समता (मुपा ३२०) ॥
'या ली [ता] राग द्वेष का धनान,
मध्यस्थता (उत ४, १०, पठम १४, ४०,
या २७) । 'यति पु [वर्तिन] यमराज,
जम (मुपा ४३३) । 'सरिस वि [सहरा]
धन्यत तुल्य, सहरा, (पठम ४६, ५७) ।
'सहिय वि [महित] मुक्त, सहित
(पठम १७, १०५) । 'सुद पु [शुद]
एक राजा जो छठवें कैशव का पिता था
(पठम २०, १८२) ।

समइअ वि [सामयिक] समय सबन्धी,
समय का (सम) ।

समइअ वि [समयित] सकीत (धर्मसं
५०५) ।

समइअ न [समयिक] सामयिक नामक
समय विशेष (कम्म ३, १८, ४, २१, २८) ।
समइअ देखो समइच्छिअ (हे १२, ७२) ।
समइअन वि [समतिक्रम] व्यतीत, गुजरा
हुमा (मुपा २३) ।

समइच्छि सक [समति + क्रम] १ उल्लयन
करना । २ अक्र. गुजरना, पसार होना । वह.
समइच्छमाण (धोप, कप) ।

समइच्छिअ वि [समतिक्रम] १ गुजरा
हुमा । २ उल्लयित (उव ७२८ टी, दे ८,
२०, स ५४) ।

समईअ वि [समतीत] १ गुजरा हुमा
(पठम ५, १५२) । २ पु. मृत काल (जीवस
१८१) ।

समईअ देखो समइअ = समयिक (कम्म ४,
४२) ।

समञ (प्रप) नीचे देखो (मवि) ।

समं म [समम्] साय, सह (गा १०२, १६४, २६४; उत्त १६, ३; महा; कुमा) ।

समंजस वि [समंजस] उचित, योग्य (भाषा; गड; मवि) ।

समंत^० देखो समता। 'वसिष्ठो ऋषिषु समंत-
पीणकण्वच्युरो सेभो' (गड) ।

समंत देखो सामन्त (उप ५ ३२७) ।

समंत (प्रप) देखो समर्थ = समस्त (पिंग) ।

समंतओ म [समन्ततस्] मवत, चारो
तरफ (गा ६७३; सुर २, २३८) ।

समंता } म [समन्तात्] ऊपर देखो
समंतेण } (पास, भग. विपा १, २—पत्र
२६, से ६, ५१, सुर २, २८, १३, १६५) ।

समकत वि [समाकान्त] १ जिसपर
प्राक्रमण किया गया हो वह (से ५, ५७) ।
२ मरबद्ध, रोना हुआ (ने ८, ३३) ।

समकत न [समक्ष] नजर के सामने, प्रत्यक्ष
(गा १७०, सुपा १५०, महा) । देखो
समच्छो ।

समकत्ताय } वि [समाख्यात] उच,
समविद्वत् } कथित (उप २११ टी. ६६४,
जो २५, मू १३३) ।

समगं देखो समर्थ = समकम् (पत्र २३२,
सुपा, ८७, सण) ।

समग्ग वि [समग्ग] १ सबल, समस्त (सुपा
६६) । २ पुत्र, सहित (पण्ह १, ३—पत्र
४४, कुप ७) ।

समग्गल वि [समगल] मलयिक (सिदि
८६७, सुपा १६७, ४२०) ।

समग्गल (प्रप) देखो समग्ग (पिंग) ।

समग्ग वि [समग्ग] सत्ता, भ्रत्य मूल्यवाला
(सुपा ४४४, ४४०, समस्त १४१) ।

समग्गण ॥ [समर्पण] पुनन, पूजा (सुपा ६) ।

समग्गिअ वि [समचित] वृजित (पत्रम
११६, ११) ।

समच्छ मव [सम् + आस] १ बैठना ।
२ तक. भवसम्यन करना । ३ मधीन रखना ।
वह. समन्वित (उप ६६८ टी) ।

समच्छ वि [समक्ष] प्रत्यक्ष का विषय
(सपि १५) । देखो समस्त ।

समच्छायाग वि [समाच्छादक] ढकनेवाला
(स ६६) ।

समज्ज } सब [सम् + अज्ज] पैदा
समज्जिण } करना, उपसर्जन करना । समज्जद,
समज्जिणइ (सण, पत्र १०; महा) । वक्र.

समज्जिणमाण (विपा १, १—पत्र १२) ।

सज्ज. समज्जिचि (प्रप) (सण) ।

समज्जिणिय } वि [समज्जित] उपाजित
समज्जिय } (सण, ठा ३, १—पत्र
११४, सुपा २०५, सण) ।

समज्जसायि वि [समज्जसायित] मविहित
(सुत्र १०, १) ।

समट्ट वि [समर्थ] संगत मर्थ, व्याजवी,
व्याय-युक्त (आपा १, १—पत्र ६२, उवा) ।

देखो समर्थ = समर्थ ।

समण न [शमन] १ उपराम, दवाना, शान्त
करना (सुपा ३६६) । २ पय्यापुनन (उवर
४०) । ३ एक दिन का उपवास (सूचीय
५८) । ४ वि. उपराम करनेवाला, दवाने-
वाला (उप ७८२, पथा ४, २६, सुर ४,
२११) ।

समण देखो स-मण = स-मनस ।

समण देखो सण = श्रवण (पत्रम १७,
१०७, राख) ।

समण पु [समण] सर्वत्र समान प्रवृत्तिवाला,
भुनि, साधु (मणु) ।

समण पु [अमण] १ मणवान् महावीर
(भाषा २, १५, ३) । २ बुद्धी, निर्णय भुनि
नाथ, यति, मित्र, सन्ध्याली, तापस, 'निर्णय-
सकतावसेवस्मन्मानीव पचहा समण' (पत्र
६४, मणु, प्राचा, उवा, कप्य, विपा १, १,
मण २१, सुर १०, २२४) । छी. 'जी (मग-
गच्छ १, १५) । 'सीह पुं ['सिह] १ एक
जैन भुनि जो दूसरे बसदेव के पूर्वजमीय शुरू
ने (पत्रम २०, १६२) । २ श्रेष्ठ भुनि (पण्ह
२, ५—पत्र १४८) । 'ोवासम, 'ोवासय
पुछी 'ोपासक' भावक, जैन गृहस्थ
(उवा) । छी. 'सिया (उवा, ख्या १,
१४—पत्र १८०) ।

समणतरु (प्रप) न [समनन्तरम्] अनन्तर,
बाद में, पीछे (सण) ।

समणकर देखो स-मणनत्त = स-मनस्क ।

समणुगच्छ } तक [समनु + गम्] १
समणुगम } अनुसरण करना । २ अच्छी
तरह व्याख्या करना । ३ ब्रह्म. सबद्ध होना,
जुड जाना । वक्र. समणुगच्छमाण (आपा
१, १—पत्र २८) । वक्र. समणुगमंत,
समणुगममाण (मीप, सुप २, २, ७६;
आपा १, १—पत्र १२, कप्य) ।

समणुगय वि [समनुगत] १ मरुन (स
७२०) । २ अनुविद्ध, जुडा हुआ (पथा ६,
४६) ।

समणुचिण वि [समनुचिण] भाचरित,
विहित, 'उवो समणुचिणो' (पत्रम ६,
१६४) ।

समणुजाण सक [समनु + हा] १ अनुमोदन
करना, अनुमति देना । २ अधिकार प्रदान
करना । समणुजाणइ, समणुजाणइइ, समणु-
जाणैआ (भाषा) । वक्र. समणुजाणमाण
(भाषा) ।

समणुजाय वि [समनुजात] उपपन्न, सहात
(पत्रम १००, २४, सुपा ५७८) ।

समणुनाय वि [समनुज्ञान] अनुपपन्न,
अनुमोदित (पत्रम ८, ७) ।

ससणुअ वि [समनुअ] अनुमोदन कर्ता
(भाषा १, १, ५) ।

समणुअ वि [समनोअ] १ सुन्दर, मनोहर ।
२ सुन्दर वेप आदिवाला (भाषा १, ८, १,
१) । ३ संविन्न, संवेष्ट-युक्त भुनि (भाषा १,
८, २, ६) । ४ समान समाचारीवाला—
साधोभिक भुनि (ठा १, ३—पत्र १३६;
वव १) ।

समणुअ छी [समनुअ] १ अनुमति, संमति
२ अधिकार-प्रदान (ठा २, ३—पत्र १३६) ।

समणुअय देखो समणुनाय (भाषा २, १,
१०, ४) ।

समणुपत्त वि [समनुपत्त] संप्राप्त (सुर १,
१८३, १०, १२०, सिदि ४३२, महा) ।

समणुपट्ट वि [समनुपट्ट] निरन्तर रूप से
व्याप्त (आपा १, २—पत्र ६६; मीप, उवा) ।

समणुभूअ वि [समनुभूत्त] अच्छी तरह
जिसका अनुमन किया गया हो वह (वे ६२) ।

सूत्रि २६, कुमा २ २२)। ५ वदाय, चीज, वस्तु (सम १ टी. छु ११४)। ६ सवेत्, इशारा (सूत्रि २६, पि ६, प्राप से १, १६)। ७ समीचीन परिणति, सुन्दर परिणाम = आचार, रिवाज। ८ एकवाक्यता (सूत्रि २६)। १० सामायिक, समय विशेष (विसे १४२१) 'कवेत्त, 'खिन्त न [छेत्त] कालोपलित भूमि, मनुष्य-लोक, मनुष्य-लेश (भग सम ६८)। 'ज्ज, 'ण, 'स वि [इ] समय वा ज्ञानहार (षण ३६, गा ४०५ पि २७६)।

समय देखो स मय = स मद।

समय } म [समकम्] १ पुण्यत् एक समय } साध (पव २१६ टी विसे १६६६, १६६७, मुर १, ५ महा, मउठ ११०६)। २ सह, साथ (गा ६१)।

समया देखो सम या।

समया म [समया] पाठ, मज्झिम (सुपा १८८)।

समर सक [सम्] माद करना। छ, समरणीय (वद २७, नाट. शकु ६), समरियञ्ज (रपण २८)।

समर देखो सजर (हि १, २५८, पइ.)। जी. 'री (कुमा)।

समर पुन [समर] १ युद्ध, लड़ाई (वि १३, ४७, उव ७२८ टी, कुमा)। २ छद्म विशेष (पिग)। ३ लोहवारणाला (उत्त ० अय ० १ गा २९)। 'इह पु [गिदिय] भवली-देष्ट का एक राजा (स ५)।

समर वि [समार] कामदेव संबन्धी, कामदेव का (मन्दिर प्रापि) (उव ४५४)।

समरइत्तु वि [सम्वत्] स्मरण-कर्ता (सम १५)।

समरण न [समरण] स्मृति माद (धर्मवि २० भाग ६८)।

समरसहइय पु [दे] समान उज्जवाला (दे ८, २२)।

समराइअ वि [दे] पिण्ड, पिशा हृषा (वद.)।

समरी देखो समर = शबर।

समरेत्तु देखो समरइत्तु (आ ६—वज ४४५)।

समलंर सक [समलम् + छ] विगृहित करना। समलंरदे (प्रावा २, १५, ५)। सह समलंरदेत्ता (प्रावा २, १५, ५)।

समलंकार सक [समलम् + कारय] विगृहित करना, विगृहा युक्त करना। सम-सवारदे (धीव)। सह. समलंरदेत्ता (धीव)।

समलद (भग) वि [समाल + द] विलिप्त (भवि)।

समाइअ भक [समा + ली] १ सबह होना। २ सोन होना। ३ सक प्राथय करना। समरियइ (प्राव ४७)। वहु समरिअत्त (से १२, १०)।

समरीण वि [समालीन] ग्रन्थी तरह लोन (धीव)।

समरइण वि [समवतीण] भवतीण (सुपा २२)।

समवट्ठाग न [समवात्तान] सम्पण प्रवर्त्ति (भणक १४७)।

समरट्ठि जी [समवस्थिति] ऊपर देखो कोई विंति मुणीण महावसमवट्ठि हवे चरए' (भणक १४६)।

समरत्ति देखो सम वत्ति = सम वतिव।

समयय' देखो समवे।

समयसर देखो समोसर = समय + स (प्रावा)।

समयसरण वलो समोसरण (सूत्रि ११६)।

समयसरिअ देखो समासरिअ = समवसत (धर्मवि ३०)।

समवसेय वि [समवसेय] जानने योग्य, ज्ञातव्य (सा ४)।

समवाइ वि [समवायिन्] समवाय संबन्ध का समवाय संबन्धी (विसे १६२६, धर्मस ४८७)।

समवाय पु [समवाय] १ संबध विशेष, गुण गुणी प्रादि का संबध (विसे २१०८)। २ सबध (पउम ३६, २५, धर्मस ४८६, विसे ११६)। ३ समूह समुदाय (सुम २, १, २२, धीय ४०७ अणु २७० टी पि ६ २ प्राव २, विसे १५६३ टी)। ४ एकन करना बाउं तो समसमवाय' (विसे

२५४६)। ५ जैन धम प्रथ विशेष, चौथा अंग प्रथ (सम १)।

समवे भक [सम्व + इ] १ शामिल होना। २ सबह होना। समवेद (शी) (मोह ६३), समवयति (विसे २१०६)।

समवेद (शी) वि [समवेत्] समुदित, एक-वित (मोह ७८)।

सममम भक [समसमाय] सम' 'सम्' प्रावाज करना। वहु. समसमा (भवि)।

ममसरिस देखो सम-सरिस।

समसाण देखो मसाण, 'समसाणे मुनये देवज्जे वाति तं वनसु' (मुपा ४०८)।

समसीस वि [दे] १ सदस्य हुष्य। २ निर्मर (दे ५०)। ३ न, स्था (से ३, न)।

समसीसिआ } जी [दे] स्वर्ण, बराली
समसीसी } (सुपा ७, वज्जा २४, वयू, दे ८, १३, मुर १, न वज्जा ३२ १५४, विसे ४५ सम्मत् १४५ कुप ३३४)।

समस्सअ व [समा + शि] प्राथय करना। समस्सअइ (पि ४७३)। सह. समरसइअ (पि ४७३)।

समस्सम भक [समा + श्वस्] बादवा-सन प्राप्त करना सात्वना मिलना। समस्स ख (शी) (पि ४७३)। हेह समस्ससिहुं (शी) (नाट. शकु ११६)।

समस्ससिद (शी) देखो समासार्थ (नाट—मुच्छ २५८)।

समस्सा जी [समस्सा] बाकी का प्राय जोड़ने के लिए दिया जाता श्लोक-वरण मा पद प्रादि (सिदि ६९८ कुप २७ सुपा १५२)।

समस्सास सक [समा + आसय] सात्वना करना विलास देना। समस्सासि (शी) (नाट)। वहु समस्सासअत्त (भवि २२२)। हेह समस्सासिद (शी) (नाट—मुच्छ ८१)।

समस्सास पु [समाश्वास] आरावातन (विक्र ३५)।

समस्सासण न [समाश्वासन] ऊपर देखो (मि ७५)।

समस्सिअ वि [समाश्रित] प्राथय में स्थित, प्राश्रित (स ६३५ उव पु ४७ मुर १३, २०४, महा)।

समादिअ वि [समाधिक] विरेण उवाच (भाषु १७८, महा. बुधा, गुर ४, ११६, गणु) ।

समादेवाय वि [समाधिग] १ श्रान्त, विना हृमा । २ शान्त (सणु) ।

समादिट्ट मर [समाधि + मर] वायु में रसना, धर्षण रसना । बरह. समादिट्टि-अगण (राय १३२) ।

समादिट्टाव वि [समाधिष्टानु] धन्यत, सुगो, धर्मिणं (भाषा २, २, १, १-२, ७, १, २) ।

समादिट्टिअ वि [समाधिष्टिअ] धानि (उ ७२८ टी. गुवा २०६) ।

समादिट्टिय देगो स-म-दिट्टिय = स-म-दिट्टि ।

समादिदिअ वि [समाभिन्दिअ] धान-निष्ठ सुगो विद्या हृमा (उ ५३० टी) ।

समाहिल वि [समाविह] सत्तम, गमस्त (गउर) ।

समहुच वि [दे] संगुण, धर्मिगुण (अणु २२२) ।

समा धो [समा] १ यं, बाण्ड नाव वा समय (जो ४१) । २ जान, समय (सम १७३ डा २. १—नय ४३; कण) ।

समाअम देखो समागम (अभि २०२, नाट. मानवी ३२) ।

समाइअ स [समा + गम्] १ सामने धाना । २ समावर करना, गफार करना । मंड. समाइच्छिऊण (महा) ।

समाइच्छिय वि [समागत] भारत, सपुत्र (म १७२) ।

समाइट्ट वि [समादिट्ट] करमाया हृमा (महा) ।

समाइहट्ट वि [समाविह] वेध विद्या हृमा (सि ९, २८) ।

समाइण वि [समाकीर्ण] व्याप्त (धीय; गुर ४, २४१) ।

समाइण वि [समाधीर्ण] मच्छो तरह समाइअ धापरिष्ठ (अम. उप ८१३, विचार ८६४) ।

समाउट्ट मर [समा + पुत्] नष्ट होना, नष्टना, धवीन होना । भूका. समाउट्टिय (सुध २, १, १८) ।

समाउट्ट वि [समाउत्त] विनय (वर १) । समाउत्त वि [समायुक्त] युक्त, गट्टिय (घोरा. गुवा ३०१) ।

समाउल वि [समायुत्त] १ गमिष, मिथित (राय) । २ धन्य (गुवा ३०२) । ३ मातृ, ध्यातृ (हि ४, ४८४, गुर ६, १७४) ।

समाउल्लिअ वि [समायुल्लिअ] मातृ बना हृमा (म ६६) ।

समायस पुं [समाइस] १ धाना, हृहुम (उप १०२१ टी) । २ रिगह धादि के उपरान्त में विष् हृह जोवन में बसा हृमा वह नाव विमरी निर्दोषी में बाँटी वा सौरव विद्या मया हो (सि २२२, २३०) ।

समायसग न [समाइसान] धाना, हृहुम (अभि) ।

समाओग पुं [समायेग] विपरा (उट्ट १४) ।

समाओमिय वि [समानोविअ] संगुट विद्या हृमा (अभि) ।

समाअरि स [समा + कृप] धीपना । हेर. समाकरिभिउं (सि १७२) ।

समाअरि स न [समाकर्पेग] धीपना (गुवा ४) ।

समाअर स [समा + वारय] धादान करना, दुसाला । मर. समाधारिय (मम्मस २२६) ।

समागच्छ देगो समागम = समा + गम् ।

समागन देखो समागय (गुर २, ८०) ।

समागम स [समा + गम्] १ सामने धाना । २ धावन करना । ३ जानना । समागच्छ (महा) । अरि. समागमित्तह (सि १२३) । सट्ट समागच्छिअ (सि १८१), 'विनाएण समागम' (उत २३, ११) ।

समागम पुं [समा + गम्] १ संयोग, सव्य (गउर, महा) । २ प्राप्ति (गुध १, ७, ३०) ।

समागमय न [समागमन] ऊपर देखो (महा) ।

समागय वि [समागत] धाना हृमा (सि ३६७ टी) ।

समागय वि [समागय] मवादिट्ट. धादिगिअ (वउम ३१, १२२) ।

समाज पुं [समाज] मनुष्य. संघात (पर्वति १२३) । देगो समाज = गमाय ।

समाजुत न [समायुक्त] संयोग, जोडा (राय ४०) ।

समाट्ट वि [समाकर] १ धारण, विना धारण विद्या मया हो वह (बाव, सि २२१; २८६) । २ विनये धारण विद्या हो वह; 'एवं अण्डे समाउतो' (गुर १, ६६) ।

समाग मर [सुन] भोजन करना, खाना । समाण्ड (हि ४, ११०, गुवा) ।

समाग स [सम् + आप्] समाज करना, पूरा करना । समाता (हि ४, १४३), समाणेवि (म ३७६) ।

समाग वि [समाग] १ सट्ट. सुव्य, गरिया (कण) । २ मान-विद्व, धर्षणी (म ३, ४६) । ३ पुन, एक देव-इमान (मम १५) ।

समाग वि [सम्] विद्यमान. होना हृमा (वरा; विरा १, २—नय १४) । जो. 'जी (अणु; कण) ।

समाग देगो समाग = संमान (मि ३, ४६) ।

समागअ वि [समाप] समाप्त करनेवाला (मि ३, ४६) ।

समागण न [भोजन] भोजन, खाना, 'संयोग-समापणउपगमजयणया' (स ७२) ।

समागस वि [समाहण] विपरी हृहुम दिया गया हो वह (महा) ।

समाणिअ देगो समाणिय (सि ३, २४) ।

समाणिअ वि [समानात्] जो चाया गया हो वह, धानोत्त (महा. गुवा ५८२) ।

समाणिअ वि [समाण] पूरा किया हृमा (सि ६, ६२, धारा १, ८—नय १३३; स ३०१, हृमा ६, ६५) ।

समाणिअ वि [दे] ध्यान किया हृमा, ध्यान में डाला हृमा विनिष्णु वतल में वेध समाणिअं न संलग' (स २४२) ।

समाणिअ वि [सुक्त] मसिठ, छाया हृमा (स ३१६) ।

समाणिअ जो [समानिका] छन्द-विशेष (विण) ।

समागो सक [समा + गी] से आना ।
समाणेइ [विजे १३२५] ।

समागो देखो समाग = सव ।

समाणु (अप) देखो सम (हि ४ ४१८, कुमो) ।

समादह सक [समा + दह] जलाना, मुलपाना । वहु समादहमाग (भाषा १, ६, २, १४) ।

समादा सक [समा + दा] ग्रहण करना ।

सह समादाय (भाषा १, २, ६, ३) ।

समादान न [समादान] ग्रहण (राज) ।

समादिष्ट वि [समादिष्ट] करमाया हुमा (मोह = ६६) ।

समादिस सब [समा + दिश] आना करता । सक समादिसिअ (नाट) ।

समादेस देखो समाएस (नाट—मालती ४६) ।

समाधारणया की [समाधारण] समान भाव से स्वापन (उत २६, १) ।

समाधि देखो समाहि (ठा १०—पत्र ४७३) ।

समापणा की [समापना] समाप्ति (विजे ३५६५) ।

समाभरिअ वि [समाभरित] भावरण-युक्त (पणु २५३) ।

समाय पु [समाज] १ समा परिण (उत ३०, १७ प्रष्टु ४) । २ पशु मिलन प्रयो वा समूह सघात । ३ हाथी (पट्ट) ।

समा^१ पु [समाय] सामायिक, समन विशेष (विजे १४२१) ।

समाय देखो समराय, 'एते लेव य दोसा पूरितसमाएवि इत्यियाणं' (सुप्रनि ६३, राज) ।

समाय देखो समय (अम २६, १—पत्र ६४०) ।

समायण सक [समा + कर्णय] सुनना । सक समायणिऊण (महा) ।

समायणगण न [समाकर्णन] श्रवण (गउड) ।

समायणिग वि [समाकर्णित] सुना हुमा (कात) ।

समायय सक [समा + दद] ग्रहण करना, स्वीकार करना । समाययति (उल ४, २) ।

समायय देखो समागय (अभि) ।

समायर सक [समा + यर] भावरण करना । समायरद (उवा, उव), समायरति (निता ५) । क. समायरियउ (उवा) ।

समायरिय वि [समाचरित] भाचरित (गउड) ।

समाया देखो समादा । सक. समायाय (भाषा १, ३, १, ४) ।

समायाय वि [समायाय] समागत (उप ७२८ टी) ।

समायार पु [समाचार] १ भावरण (विषा १, १—पत्र १२) । २ सदाचार (अणु १२२) । ३ वि भावरण करनेवाला (एवि ५२) ।

समार सक [समा + रचय] १ लोक करना, दुस्त्व करना । २ करना, बनाना ।

समारद (हे ४, ६५, महा) । युका. समारोष (हुमा) । वहु. समारन (पत्र ६८, ४०) ।

समार सक [समा + रम्] प्रारम्भ करना । समारद (पट्ट) ।

समार वि [समाचरित] बनाया हुमा, 'मदसगामि अरुडोदरमि' (सुर २, ६६) ।

समारभ सक [समा + रम्] १ प्रारम्भ करना । २ हिमा करना । समारभज्जा (भावा) । वहु. समारभंत, समारभमाण (भावा) । प्रयो. समारभावेज्जा (भावा) ।

समारभ पु [समारम्भ] १ पर-परिताप, हिंस (भावा पणु १, १—पत्र ५ आ ७) 'परितापकरो भवे समारभो' (सबोध ५२) । २ प्रारम्भ (कण्ठ) ।

समारचण^१ न [समारचन] १ लोक करना, समारण^२ दुस्त्व करना, 'कारेइ जिण-हणउ समारण जुएणभणपडिमाण' (पत्र ११, ३) । २ वि. विचारक, कर्ता (हुमा) ।

समारद देखो समोदत्त (सुर १, १, स ७६४) ।

समारभ^३ देखो समारभ = समा + रम् । समारद^४ समारभे रमारभेअ, समारभेअमि, समारद (सुप्र १, ८, ५, वि ४००, पट्ट) ।

समारम्भ (वि ५६०) ।

समारिय वि [समारचित] दुस्त्व किया हुमा (सुप्र ३३४) ।

समारह सक [समा + रह] भारोहण करना, चढना । समारहद (अभि, वि ४८२) । वहु. समारहत्त (गा ११) । सक. समारहिय (महा) ।

समारहण न [समारोहण] भारोहण, चढना (सुपा २५३) ।

समारह वि [समारह] चढा हुमा (महा) ।

समारोय सक [समा + रोपय] चढाना । सक. समारोयि (वि ५६०) ।

ममालहार^५ देखो समलहार = समल + समाल^६ कारय । समलकारेइ, समलक्रेइ (सोप, भावा २, १५, १८) । वहु. समालहारैआ, समालकेता (सोप, भावा २, १५, १८) ।

समालय पु [समालम्भ] आलम्बन, सहारा (सबोध ४०) ।

समालभण न [समालम्भन] प्रलंकरण, विभूषा करना, 'मगलसमालभणएण विरएमि' (अभि १२७) । देखो समालभण ।

समालत्त वि [समालपित] उक्त, कथित, 'ववणअमो समालतो' (पत्र १५, ८८) ।

समालभण न [समालभन] विवैपन, प्रवण (सुर १६, १४) । देखो समालभण

समालय सक [समा + लप्] विस्तार से कहना । समालवेज्जा (सुप्र १, १४, २४) ।

समालयणी की [समालपनी] वाय विवेच, 'वणुगेणएतमालवणियउदरं मल्लिरोससमी-ववरुडिउदरं' (सुपा ५०) ।

समालविअ देखो समालत्त (अभि) ।

समालद सक [समा + लभ्] १ विवैपन करना । २ विभूषा करना, प्रलंकार पहनना । वहु. समालदवि (अप) (अभि) ।

समालहण देखो समालभण (सुपा १०८, उत ३, १ टी, ना^७—पट्ट ७३) ।

समालय पु [समालाप] वाचकोट, समापण (पत्र ३०, ३) ।

समालिगिय वि [समालिहित] प्रालिगित, आरिक्ठ (अभि) ।

समालद वि [समारिलत्त] ऊपर देखो (अभि) ।

समालोच पुं [समालोच] विचार, विमर्श (उप ३६६)।

समालोचयण न [समालोचन] सामान्य अर्थ वा दर्शन (विंते २७६)।

समाय सक [सम् + आप्] पूरा करना। समावेद (हे ४, १४२)। वर्ये, समण्ड (हे ४, ४२२)।

समाज्जिय वि [समाज्जित] प्रसन्न किया हुआ (महा)।

समानड वर [समा + पत्] १ समुत्त भावर पटना, गिरना। २ सगना। ३ समन्य करना। समावड्ड (मवि)।

समावडण न [समापत्त] पडना, गिरना (गड्ड)।

समावडिय वि [समापत्ति] १ संमुख भावर गिरा हुआ (सुर २, ६; मुपा २०३)। २ बड (वीप)। ३ जो होने लगा हो वह, 'समावडिय जुड' (स ३३०, महा)।

समावणण वि [समापन्न] सप्राप्त (सम १३४, मा)।

समावत्ति की [समापत्ति] समाप्ति, पूर्णता, 'ते प समावत्तीए विहरंता' (मुत्त २, ७)।

समावद् सक [समा + वद्] बोलना, बहना। समावडेजा (भावा १, १५, ५४)।

समायज देखो समावणण (स ४७६, उवा, ठा २, १—पत्र ३८ दत्त ५, २, २)।

समायय देखो समावद्। समावडजा (भावा २, १५, ५)।

समानय देखो समावड। वड्ड, समावयय (दत्त ६, ३, ८)।

समाविअ वि [समापित] पूर्ण किया हुआ (गा ६१, डे ७, ४५)।

समास सक [सम् + आस] १ बैठना। २ रहना। समासद (मवि)।

समास सक [समा + अस] १ झट्टी तरह फटना। २ कर्म, समासिज्जति (एवि २२६)।

समास पु [समास] १ चलेप, संकोच (जीवस १, जो २१)। २ सामायिक, समय विशेष (विंते २७६५)। ३ व्याकरण प्रसिद्ध एक प्रक्रिया, अनेक पदों के मेल काले की रीति

(एवह २, २—पत्र ११४, मणु विंते १०३१)। ४ समीप (सं ५० वृद्ध ० पत्र)।

समासंग पु [समासङ्ग] संयोग (गा ६६१ ३)।

समासंगय वि [समासंगन] सगत, सम्बद्ध (रमा)।

समासज्ज देखो समासाद।

समासत्थ वि [समासत्थ] १ भाषणन प्राप्त (पत्रम १८, २८, ने १२, ३७, सुत्त २, ६)। २ स्वल्प बना हुआ (स १२०, सुर ६, ६६)।

समासय पु [समासय] भाषय, स्थान (पत्रम ७, १६, ४२, ३२)।

समासय वर [समा + स] धाना, भाषणन करना। समासयदि (द्वय ३१)।

समासस देखो समासस। क. समाससिअव्य (हे ११, ६५)।

समासाद (सौ) वर [समा + सादय] प्राप्त करना। समासादेहि (स्वत्त ३७)। क. समासादइद्वय (भा ३६)। संक. समासज्ज, समासिज्ज (भावा १, ८, ८, १, वि ११)।

समासादिअ वि [समासादिव] प्राप्त (वत्त १, १ डी)।

समासासिय वि [समासासित] जिसको आवाहन दिया गया हो वह (महा)।

समासि सक [समा + शि] सम्यक् भाषय करना। कर्म, समासिज्ज, समासिज्जति (एवि २२६)।

समासिज्ज देखो समासाद।

समासिय वि [समाश्रित] भाषय-प्राप्त (पत्रम ८०, ६४)।

समासिय वि [समासित] उपवेशित, बैठ गया हुआ (मवि)।

समासीण वि [समासीन] बैठा हुआ (महा)।

समाहट्टु देखो समाहर।

समाहट्ट वि [समाहट्ट] १ विजुद्ध, निर्मल, 'असमाहट्टाए वेस्साए' (भावा २, १, ६)। २ स्फोटक (रज)।

समाहय वि [समाहट्ट] भाषात-प्राप्त, आहूत (भीम, सुर ४, १२७, सण)।

समाहर वर [समा + ह] १ ग्रहण करना। २ एवमित करना। उट्ट, समाहट्टु (मुप १, ८, २६, १, १०, १५), समाहरिणि (मवि) (मवि)।

समाहजिअ वि [समाहज] आहूत, बुलाया हुआ (वर्मनि ६०)।

समाहाण न [समाधान] १ समाधि (उर ३२० डी)। २ धीगुरुय-निवृत्ति रूप स्वास्थ्य, भागतिन शक्ति, चित्त-स्वस्थता (मणु ११६, मुपा ५४८)।

समाहार पु [समाहार] १ सग्रह, 'अध्वन-समाहारो भायिज्ज एत नियलोमो' (पु ११५)। 'उदं पुं [द्वट्ट] व्याकरण-असिद्ध समास-निरोध' (वेदय ६६०)।

समाहारा की [समाहारा] १ दक्षिण वक्क पर खूनेमासी एक दिग्गमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३६, दक)। २ पत्र की बाह्यही राधि (गुज १०, १४)।

समाहि पुंकी [समाधि] १ चित्त की स्वस्थता, मनोदुःख का समापन (सम ३७, उत १६, १; सुत्त १६, १; वेदय ७७७)। २ स्वस्थता, 'साहाहि वस्सो सभते समाहि क्षिमाहि सहाहि तनेव ताणु' (उत १४, २६)। ३ वर्ये। ४ गुण ध्यान, चित्त की एकाग्रता वर्ये व्यानावस्था (सुम १, १०, १, मुपा ८६)। ५ सभता, राग भावि का समापन (ठा १० थे—पत्र ४७४)। ६ धृतज्ञान। ७ चारित्र, संयमावुट्टान (ठा ४, १—पत्र १६५)। ८ पुं. भरतसेन के सतरहवें भावी तीर्थंकर (सम १५४, पत्र ४६)। 'पडिमा की [प्रतिमा] समाधि विषयक वर्ये-विशेष (ठा ४, १)। 'पाण न [पान] शकर आदि का पानी (वत्त ४०)। 'मरण न [मरण] समाधि-युक्त मृत (पडि)।

समाहिअ वि [समाहित] १ समाधि-युक्त (सुम १, २, २, ४, सुमति १०६, उत १६, १५, पत्रम ६०, २४, भीम, महा)। २ झट्टी तरह व्यवस्थापित। ३ उपरगित (भावा १, ८, ६, ३)। ४ समापित (विंते ३५६३)। ५ शोभन, सुन्दर। ६ क्षम्योपल। ७ निर्दोष (सुध १, ३, १, १०)।

समाहित वि [समाहित] गृहीत (भावा १, ८, ५, २) ।

समाहित वि [समाख्यात] सम्यग् कथित (सूत्र १, ६, २६; भाषा २, १६, ४) ।

समाहित (अप) नीचे देखो (अवि) ।

समाहित वि [समाहित] बुलाया हुआ, आका-
रित (भाषा १०५) ।

समाहिते सक [समा + धा] स्वस्य करना,
'सुहृद्भाषणं समाहिते' (संयोग ५१) ।

समि जी [शमि] देखो समी (अणु, पाप) ।

समि वि [शमिन्, °क] १ शम-युक्त ।

समिअ वि २ पुं. साधु, पुनि (सुपा ४३६;
६४२, उप १४२ टी) ।

समिअ देखो संत = शान्त (गिरि ११०४) ।

समिअ वि [समित] सम्यक् प्रवृत्ति करने-
वाला, सावधान होकर गति आदि करनेवाला
(भा. उप ६०४, बप्प, धीप, उप, सूत्र १,
१६, २, पत्र ७२) । २ राग-आदि से रहित
(सूत्र १, ६, ४) । ३ उपपन्न (सुत्र ६) ।

४ सम्पन्न गत (सूत्र १, ६, ४) । ५ सन्तत
(ठा २, २—पत्र ५८) । ६ सम्पन्न व्यवस्थित
(सूत्र २, ५, ३१) ।

समिअ वि [सम्यक्] १ सम्पन्न प्रवृत्ति-
वाला (भग २, ५—पत्र १४०) । २ अच्छा,
सुन्दर, शान्त, समीचीन (सूत्र २, ५, ३१) ।

समिअ वि [शमित] शान्त किया हुआ
(जिने २४४८, धीप, परह २, ५—पत्र
१४८; सण) ।

समिअ वि [शमित] शम-युक्त (अग २,
५—पत्र १४०) ।

समिअ वि [समिअ] सम, राग-रूप-रहित,
'समियभावे' (परह २, ५—पत्र १४६) ।

समिअ न [साम्य] समता, रागादि का
अभाव, सम-भाव (सूत्र १, १६, ५, भाषा
१, ८, ८, १४) ।

समिअ वि [समित] प्रमाणपेत्त (छाया १,
१—पत्र ६२, भग) ।

समिअ वि [समित] गेहूँ के घाटा का बना
हुआ पत्रात-विशेष, मण्डक (विड २४५) ।

समिअ म [सम्यग्] अच्छी तरह (भाषा,
परह २, ३—पत्र १२३) ।

समिअ जी. म ऊपर देखो (अग २, ५—पत्र
१४०; भाषा १, ५, ५, ४), 'समियाए'
(भाषा १, ५, ५, ४) ।

समिअ जी [समिता] गेहूँ का घाटा (छाया
१, ८—पत्र १३२, सुख ४, ५) ।

समिअ जी [समिअ, शमिका, शमिता]
चमर आदि सब इन्तों की एक अम्यन्तर
परिपद (अग ३, १० टी—पत्र २००) ।

समिअ जी [समिति] १ सम्यक् प्रवृत्ति,
उपयोग पूर्वक गमन-मापण आदि क्रिया (अम
१०; शोषणा ३; उप. उप ६०२; रण्य ४) ।

२ समा, परिपद, 'गरिय किर देवलोवेवि
देवलोमिईनु घोणामो' (जिने १३६ टी, लुं
२५ टी) । ३ युद्ध, लड़ाई (रण्य ४) । ४

निरन्तर मिलन (अणु ४२) ।

समिअ जी [समृति] १ स्मरण । २ शास्त्र-
विशेष, मनुस्मृति आदि (गिरि ५५) ।

समिअ म वि [समित्त] गेहूँ के घाटे की
बनी हुई मरक आदि वस्तु (विड २०२) ।

समिअ म पुं [समिअरु] शीघ्रिय वस्तु की
एक जाति (उत्त ३६, १३६) ।

समिअ म सक [सम + ईक्ष] १ आलोचना
करना, गुणदोष-विचार करना । २ पर्यालोचन
करना, चिन्तन करना । ३ अच्छी तरह
देखना, निरीक्षण करना । समिक्षण (उत्त
२३, २५) । सक. समिअरु (सूत्र १, ६,
४, उत्त ६, २, महा, उपप २५) ।

समिक्षणा जी [समोक्षा] पर्यालोचना (सूत्र
१, ३, ३, १४) ।

समिअरु वि [समीक्षित] आलोचित
(धर्म ११११) ।

समिअ देखो समे ।

समिअरु न [समीक्षण] समीक्षा (अवि) ।

समिअरु देखो समिअरुअ (अवि) ।

समिअरु सक [सम + ईक्ष] चारों तरफ
से चमकना । समिअरुअ (हि २, २८) । सक.
समिअरुअ (कुमा ३, ४) ।

समिअरु देखो समिअ = समिका (अ ३,
२—पत्र १२७, भग ३, १०—पत्र ३०२) ।

समिअरु वि [समृद्ध] १ प्रतिशय संपत्तिवाला
(धीप, छाया १, १ टी—पत्र १) । २ वृद्ध,
बड़ा हुआ (प्राप् १३) ।

समिअरु जी [समृद्धि] १ प्रतिशय संपत्ति ।
२ वृद्धि (हि १, ४४, पद, कुमा, स्वप्न ६५;
प्राप् १२८) । 'ल वि [ल] समृद्धिवाला
(सुर १, ४६) ।

समिअरु पुं [समिर] पवन, वायु (सम्मत्त
१५६) ।

समिरिअरु देखो स-मिरिअरुअ = समरी-
समिरीय चिक ।

समिअरु जी [शमिला, सम्प्रा] युग-कीलक,
गाड़ी की धोतरी में दोनों धोर बाता जाता
सबकी का बोला (उप ५१३८, सुपा २५८) ।

समिअरु देखो संमिल । समिल्ल (पद) ।

समिअरु जी [समिध] काष्ठ, लकड़ी (अंत
११, पत्र ११, ७६; पिड ४४०) ।

समी जी [शमी] १ वृत्त विशेष, छोंकर का
पेड़ (सूत्र १, २, २, १६ टी, उप १०६१
टी, वजा १५०) । २ शिवा, छिमी, कली
(पाप) । ३ लय न [दे] छोंकर की पत्ती,
शमी वृक्ष का पत्र-गुट (सूत्र १, २, २, १६
टी, वृह १) ।

समीअ देखो समीय (गाठ—मासवि ५) ।

समीअरु वि [समीरुत] समान किया हुआ,
'अ किचि अणं तात तंवि समीकत' (सूत्र
१, ३, २, ८, गठ ३) ।

समीअरु वि [समीचीन] साधु, सुन्दर,
शोभन (गाठ—वैट ४०) ।

समीअरु सक [सम + ईर्य] श्रेयणा करना ।
समीअरु (भाषा १, ८, ८, १७) ।

समीअरु पुं [समीअर] पवन, वायु (पाप, गठ ३) ।

समीअरु पु [समीअर] ऊपर देखो (गठ ३) ।

समीअरु देखो समील । समील (पद) ।

समीअरु वि [समीअ] निकट, पास (पत्र
१६, ८, महा) ।

समीअरु सक [सम + ईक्ष] चाहता, वाछा
करना । सक. समीअमाण (उप ३२० टी) ।

समीअरु जी [समीहा] इच्छा, वाछा (उप
१०३१ टी) ।

समीहिय वि [समीहित] इष्ट, वाञ्छित (महा) ।

समीहिय देखो समिस्त्रिअ (वव ३) ।

समुआचार पुं [समुदाचार] समीचीन आचरण (दे २, ६४) ।

समुइअ वि [समुचित] योग्य, उचित (से १३, ६८; महा) ।

समुइअ वि [समुदित] १ परिवृत, 'गुण-समुद्रो' (उव, स २८६) । २ एवमित (विसे २६२४) ।

समुइअ वि [समुदीर्ण] उदय-प्राप्त (सुपा ६१४) ।

समुहूर देखो समुदीर । कर्म-जह बुद्धगण मोहो समुदीर किन्तु तखण' (गच्छ १, १५) ।

समुक्कस देखो समुक्करिस (उत्त २३, ८८) ।

समुक्कसिय वि [समुत्कर्तित] काट कला हुमा (सुर १४, ४५) ।

समुक्करिस पुं [समुत्कर्ष] प्रतिपद्य उत्कर्ष (उत्त २३, ८८; सुल २३, ८८) ।

समुक्कस सक [समुत् + कृप्] १ उच्छ्रित बनाना । २ भव, गर्व करना । समुक्केआ (ठा ३, १—पत्र ११७), समुक्कसि (प्राप् १६४) ।

समुक्किह वि [समुच्छ्रित] उच्छ्रित (ठा ३, १—पत्र ११७) ।

समुक्कियत न [समुत्कीर्तन] उच्चारण (सुपा १४६) ।

समुक्कअ वि [समुत्तरात] उच्चारण हुमा (गा २७६) ।

समुक्कतण सक [समुत् + दन्] उच्चारण । समुक्कणइ (गा ६८४) । वहु. समुक्कतणंत (सुपा ५४१) ।

समुक्कखणण न [समुत्तलन] उन्मूलन, उत्पादन (कुप्र १७४) ।

समुक्कियत वि [समुत्तिष्ठ] उठा कर फेंक हुमा (से ११८, ७२) ।

समुक्किय सक [समुत् + क्षिप्] उठा कर फेंकना । समुक्कियद (पि ३१६, सण) ।

समुग्ग पुं [समुद्] १ डिब्बा, संयुत (सम ६३, प्रणु. सामा १, १७ टी. धर्म १५,

भीष, परण ३६—पत्र ८३७, महा) । २ पणि-विशेष (बी २२, ठा ४, ४—पत्र २७१) ।

समुग्गद (शौ) वि [समुद्गत] समुद्भूत, समुत्पन्न (नाट—मातली ११६) ।

समुग्गम पुं [समुद्गम] समुद्भव (नाट—रत्ना १३) ।

समुग्गिअ वि [दे] प्रतीकित (दे ८, १३) ।

समुग्गिण वि [समुद्गीर्ण] उगमा हुमा, उत्तोलित, ऊपर उठाना हुमा (पत्रम १५, ७४) ।

समुग्गिर सक [समुद् + गं] ऊपर उठाना, उगमाना । वहु. समुग्गिरंत (पत्रम ६५, ४८) ।

समुग्गिअ वि [समुद्घाटित] खुला हुमा (धर्म १५) ।

समुग्गिअ वि [समुद्घातित] विनाशित (प्राप् १६५) ।

समुग्गय पुं [समुद्घात] कर्म-निर्जय विषय, जिस समय आत्मा बदना, कषाय प्रावि से परिणत होता है उस समय वह अपने प्रदेशों की बाहर कर उन प्रदेशों से वैदनीय, कषाय प्रादि कर्मों के प्रदेशों की जो निर्जय—विनाश करता है वह, ये समुद्घात सात हैं—वैदना, कषाय, मरण, वैश्रिय, शैवस, आहारक घोर केवलिक (परण ३६—पत्र ७६३; भा. भीष, विसे ३०५०) ।

समुग्गयण न [समुद्घातन] विनाश (विसे ३०५०) ।

समुग्गुह वि [समुद्घोषित] उद्घोषित (सुर ११, २६) ।

समुग्गय देखो समुग्गय (दे ३) ।

समुग्गय पुं [समुग्गय] विष्टि रक्षि, दण, समुह (मम ८, ६—पत्र २६३; मवि) ।

समुग्गय सक [समु + चर] उच्चारण करना, बोलना । समुग्गय (विद्व ६४१) ।

समुग्गलिअ वि [समुग्गलि] चला हुमा (उप प्र ४८, मवि) ।

समुग्गिण सक [समु + चि] झट्टा कला, संचय करना । समुग्गिणइ (गा १०४) ।

समुग्गिय वि [समुचित] एक क्रिया प्रादि मे प्रवृत्त (विसे ५७६) ।

समुच्छ्र सक [समुत् + छिद्] १ उन्मूलन करना, उखाड़ना । २ दूर करना । समुच्छे (सुम १, २, ३, १३) । मवि. समुच्छिहित (सुम २, ५, ४) । सहु. समुच्छिज्ञा (सुम २, ४, १०) ।

समुच्छ्रिय वि [समवच्छादित] सतत आच्छादित (पत्रम ६३, ७) ।

समुच्छ्रयी बी [दे] समार्जनी, भ्रातृ (दे ८, १७) ।

समुच्छ्रल सक [समुत् + शल्] १ उल्लसना, ऊपर उठना । २ विस्तीर्ण होना । समुच्छ्रले (गच्छ १, १५) । वहु. समुच्छ्रलत (सुर २, २३६) ।

समुच्छ्रलिअ वि [समुच्छ्रलिन] १ वल्ला हुमा । २ विस्तीर्ण (गच्छ १, ६, महा) ।

समुच्छ्राण न [समुत्सारण] दूर करना (मवि ६०) ।

समुच्छ्रिय वि [दे] १ शोधित, सतृप्त किया हुमा । २ समारवित । ३ न. प्रजलित-करण, नमन (दे ८, ४६) ।

समुच्छ्रिद (शौ) वि [समुच्छ्रित] प्रति-उन्नत (पि २८७) ।

समुच्छ्रिन्न वि [समुच्छ्रिन्न] १ क्षीण, विनष्ट (ठा ४, १ पत्र—१८७) ।

समुच्छ्रिगि वि [समुच्छ्रिगित] दोब पर बसा हुमा (हमो १५) ।

समुच्छ्रिगि वि [समुत्सुक] प्रति-उत्सुकित (सुर २, २१५, ४, १७७) ।

समुच्छ्रिद पुं [समुच्छ्रिद] सर्वथा विनाश समुच्छ्रिय पुं (ठा ८—पत्र ४२५, राज) ।

बाइ वि [वादिन्] पदाभि की प्रतिपण सर्वथा विनश्वर माननेवाला (ठा ८—पत्र ४२५, राज) ।

समुजस सक [समुद् + यम्] प्रवर्तन करना । वहु. समुजसंत (पत्रम १०२, १७६; वैद्य १५०) ।

समुजस पुं [समुजस] १ समीचीन उद्यम । २ वि. समीचीन उद्यमवाला (सिदि २४८) ।

समुजल वि [समुज्ज्वल] धरतल उज्ज्वल (पत्रम, मवि) ।

समुज्जाय वि [समुद्धान] १ निर्गत (विशे २६०६) । २ जँबा गया हुआ (कण्) ।

समुज्जोअ भव [समुद् + युत्] वमकना, प्रवासना । वड्. समुज्जोयंत (पठम ११६, १७) ।

समुज्जोअ पुं [समुद् + योत्] प्रकाश, दीप्ति (सुभा ४०, महा) ।

समुज्जोयय नक [समुद् + योत्] प्रकाशित करना । वड्. समुज्जोययंत (स ३४०) ।

समुज्जक सत्त [सम् + उज्ज्] रयाग करना । संह. समुज्जिकण (वि ८७) ।

समुद्दायक [समुद् + रथा] १ उटना । २ प्रयत्न करना । ३ ग्रहण करना । ४ उत्पन्न होना । संह. समुद्दिऊण (सण्), समुद्दाय, समुद्दिऊण (भावा १, २, २, १, १, २, १, सण्) ।

समुद्दाइ वि [समुत्थायिन्] सम्मग्ग यत्त करनेवाला (भावा) ।

समुद्दाइअ देहो समुद्दिअ (स १२५) ।

समुद्दाण न [समुत्परयान] फिर से वास करना । सुय न [क्षुत्] वैन शाल विशेष (एवि २०२) ।

समुद्दाण न [समुत्थान] १ सम्मग्ग उठाना । २ निमित्त, कारण (राज) । देहो समुत्थाण ।

समुद्दिअ वि [समुत्थिन] १ सम्मग्ग प्रयत्नशील (सुम १, १४, २२) । २ उपस्थित । ३ प्राप्त (सुम १, ३, २, ६) । ४ उठा हुआ, जो लडा हुआ हो वह (सुर १, १६) । ५ मनुष्य, निर्हत्त (सुम १, २, २, ३१) । ६ उत्पन्न (आया १, ६—पत्र १५६) । ७ भाषित (राज) ।

समुद्दिण वि [समुद्दीन] उठा हुआ (वग्ग ६२, मोह ६३) ।

समुण्णइय देहो समुत्तइय (राज) ।

समुत्त न [समुत्त] १ गोत्र-विशेष । २ पुंशे. उस गोत्र में उत्पन्न, 'समुत्ता (१ता)' (ठा ७—पत्र ३६०) । देहो समुत्त ।

समुत्तइय वि [दे] गवित (पिड ४६५) ।

समुत्तर सज [समुत् + तृ] १ पार जाना । २ मर. नीचे उतरना । ३ भवलोख

होना । समुत्तरइ (गठ ६४१, १०६६) । संह. समुत्तरेवि (सण्) (भवि) ।

समुत्तारविण वि [समुत्तारित] १ पार पहुँचाना हुआ । २ कृप आदि से बाहर निकाला हुआ (ग १०२) ।

समुत्तास सज [समुत् + त्रासत्] भवि-शय भय उपजाना । समुत्तासेदि (सौ) (वाट—मासतो ११६) ।

समुत्तिण्ण वि [समपनार्ण] भगतीछं (पठम १०६, ४२) ।

समुत्तुंग वि [समुत्तुङ्ग] भवि जँबा (भवि) ।

समुत्तुग वि [दे] गवित (गठ ७) ।

समुत्थ वि [समुत्थ] उत्पन्न (स ४८ ठा ४, ४ टी—पत्र २८३, सुर २, २२५, सुभा ४७०) ।

समुत्थइअ देहो समुत्थय = समुत् + स्थय ।

समुत्थय न [समुत्थान] उत्पत्ति (आया १, ६—पत्र १५७) ।

समुत्थय सज [समुत् + स्थय] आच्छादन करना, ढकना । हेह्. समुत्थइअ (गा १६४ अ, पि ३०६) ।

समुत्थय वि [समयस्मृत] आच्छादित (कुप १६२) ।

समुत्थल वि [समुत्थलित] उछला हुआ (स ५७८) ।

समुत्थाण न [समुत्थान] निमित्त, कारण (विशे २८२८) । देहो समुद्धान ।

समुत्थय देहो समुद्दिअ (भवि) ।

समुत्तय पुं [समुत्तय] १ समुदाय, सहति, समूह (भीष, भग, उवर १८६) । २ समुत्तति, समुत्तय (कुप २२) ।

समुत्ताआर १ देहो समुत्ताआर (स्व न समुत्ताआर ४५, नाट—सुडु ७३, भीष, स ५६५) ।

समुत्ताण न [समुत्तान] १ निजा (घोर) । २ निजा-समूह (भा) । ३ क्रिया विशेष, प्रयोग-गुहोत्त नामों की प्रकृति स्थिरादि-स्थ से व्यवस्थित करनेवाली क्रिया (सुभनि १६६) । ४ समुदाय (भाव ४) । "वर वि [चर] निजा की खोज करनेवाला (पण्ड २, १—पत्र १००) ।

समुत्ताय सज [समुत्तानय] निजा के लिए भ्रमण करना । संह. समुत्ताणेऊण (पण्ड २, १—पत्र १०१) ।

समुत्ताणिअ देहो सामुत्ताणिअ (भीष, भग ७, १—पत्र २६३) ।

समुत्ताणिआ छो [सामुत्तानिछी] क्रिया-विशेष, समुत्तान क्रिया (सुभनि १६८) ।

समुत्ताय पुं [समुत्ताय] समूह (पण्ड २७० टी, विशे ६२१) ।

समुत्ताहिअ वि [समुत्ताहत्त] प्रतिपादित, कथित (उज ३६, २१) ।

समुत्तिअ देहो समुत्तइअ = समुत्तित (सुभनि १२१ टी, सुर ७, ५६) ।

समुत्तिण्ण देहो समुत्तइअ (राज) ।

समुत्तोर सज [समुद् + ईरय] १ प्रेरणा करना । २ कर्मों की शीघ्र कर उदय में लाना, उदारीणा करना । वड्. समुत्तोरि [ईर] रेमाण (आया १, १७—पत्र २२६) । संह. समुत्तोरिऊण (उपमक्को ५) ।

समुद् पुं [समुद्] १ सागर, जलवि (पात्र, आया १, ८—पत्र १३३, भग से १, १, हे २, ८, कण् प्राप्त ६०) । २ मयकवृष्टिण का ज्येष्ठ पुत्र (भत ३) । ३ माठनं बलदेव क्षीर वातुदेव के पूर्वजन्म के धर्म-गुरु (सम १५३) । ४ वेल्लार नगर का एक राजा (पठम ५४, ३६) । ५ शारिङ्गय धुनि के शिष्य एक वैन धुनि (एवि ४६) । ६ वि. मुद्रा-साहित (हे १, २१) । "दत्त पुं [दत्त] १ चौदे वातुदेव का पूर्वजन्मीय नाम (सम १५३) । २ एक मच्छोमार का नाम (पिया १, ८—पत्र ८२) । "दत्ता छो [दत्ता] १ हरिषेण वातुदेव की पत्नी (महा ४४) । २ समुद्रतप्तमच्छोमार की भाषा (पिया १, ८) । "लिम्मा छो [लिम्मा] दोन्टिय जंतु की एक जाति (पण्ड १—पत्र ४४) । "विजय पुं [विजय] १ चौदे चक्रवर्ती राजा का पिता (सम १५२) । २ भगवान् धरिद्रुनेमि का पिता (मन १५१, कण्, प्रत) । "मुत्ता छो [मुत्ता] लक्ष्मी (सुडु १५२) । देहो समुद्र ।

समुहणवीअ न [दि समुद्रनवीन] १
प्रवृत्त, सुधा । २ चन्द्रमा (दे ८, १०) ।

समुहय सक [समुद् + द्रावय्] १
भयंकर उपद्रव करना । २ मार डालना ।

समुहवे (गच्छ २, ४) ।

समुद्हर न [दि] पानीय गृह पानी-पर (दे ८, २१) ।

समुद्राम वि [समुद्राम] प्रति उद्गम, प्रसर;
“मुद्रं समुद्रामवेष्टे” (वेद्य ६५०) ।

समुद्रिस्स सक [समुद् + दिश्] १ पाठ
को स्थिर परिचित करने के लिए उपदेश
देना । २ व्याख्या करना । ३ प्रतिज्ञा करना ।
४ आश्रय लेना । ५ प्रतिहार करना । कर्म.
समुद्रिस्स (उवा) समुद्रिस्सज्जति (भणु
३) । संक. समुद्रिस्स (आभा १, ८, २,
१, २, २, १, ४, ५) । हे. समुद्रिसिन्ध
(डा २, १—पद्य ५६) ।

समुद्रेस पु [समुद्रेश] १ पाठ को स्थिर-
परिचित करने का उपदेश (भणु ३) । २
व्याख्या, सूत्र के अर्थ का अन्वयान (नव १) ।
३ ग्रंथ का एक विभाग, ग्रन्थमय, प्रकरण,
परिच्छेद (पद्य २, १२०) । ४ भोजन,
“जल समुद्रेशकाले” (गच्छ २, ५६) ।

समुद्रेस वि [समुद्रेश] देखो समुद्रेसिय
(पिंड २३०) ।

समुद्रेशण न [समुद्रेशान] सूत्रों के अर्थ का
अन्वयान (गुवि २०६) ।

समुद्रेसिय वि [समुद्रेशिक] १ समुद्रेश-
सम्बन्धी । २ विवाह आदि के उत्तराय में
किये गये नीमन में बने हुए वे लाघ पवार्य
जिनको सप्त साधु सत्यातियों में बाँट देने का
सकल किया गया हो (पिंड २२६) ।

समुद्रर सक [समुद् + ह्] १ भुक्त करना ।
२ जोरें मन्दिर आदि को छेक करना ।
समुद्रर (प्राप् ५) । वङ्ग. समुद्ररत (गुप
५७०) । संक. समुद्ररेकण (सिक्ता ६०) ।
हे. समुद्ररत्तुं (उत्त २५, ८) ।

समुद्ररण न [समुद्ररण] १ उद्धार । २ वि.
उद्धार नरतयाता (सणु) ।

समुद्ररिज वि [समुद्रधृत्] उद्धार-श्राप
(गा ५६३, सणु) ।

समुद्राहम वि [समुद्रावित] समुत्पित,
उठा हुआ (स ५६६; ५६७) ।

समुद्राय सक [समुद् + धाय्] उठना ।
वङ्ग. समुद्रायंत (पण्ड १, ३—पद्य ५५) ।

समुद्रिज देखो समुद्ररिज (गच्छ ३, २६) ।

समुद्घुर वि [समुद्घुर] दृढ, मज्जित (उप
१४२ ठे) ।

समुद्घुषित वि [समुद्घुषित] पुषवित,
रोमाञ्जित ‘परागमे कयचकुसुम व समुद्घु-
(वपु)सियं सरोर’ (कुप २१०, स १८०,
चर्मावि ४८) ।

समुद्र पु [समुद्र] १ एक देव विमान (ध्वेन्द्र
१५३) । २. देखो समुद् (हे २, ८०) ।

समुद्र भी [समुन्नवि] समुद्रय (बापं
८२) ।

समुन्नय वि [समुन्नय] सनय, सय,
‘ज नमिवा सयलमिवा’

जिह्वस्त अर्धतलसमुन्नय ।

तेज विजण्ण दत्ता

नमिचित नाम विस्मिन्मविय’
(वेद्य ६११) ।

समुन्नय वि [समुन्नय] प्रति जँबा (पण्ड) ।

समुपेह सक [समुत्त + ईह्] १ बन्धी
तरह देखना, निरीक्षण करना । २ पर्यालोचन
करना, विचार करना । वङ्ग. समुपेहमाप
(स्रम १, १३, २३) । वङ्ग. समुपेहिया,
समुपेहियाण (स ७, ५५, महा) ।

समुप्यज सक [सपुत् + पद्] उत्पन्न
होना । समुप्यज (म, महा) । समुप्यज्जा
(कप्प) । भुक्ता, समुप्यजित्वा (भग) ।

समुप्यण पु [समुत्पन्न] उत्पन्न (वि
समुप्यज १०२, म, वहु) ।

समुप्यण न [समुत्पन्न] जँबा जाना,
ऊर्ध्व यमन, उद्भूत (गड्ड) ।

समुप्याअ वि [समुत्पादक] उत्पत्ति-करता
(वा १८८) ।

समुप्याअ सक [समुत् + पादय्] उत्पन्न
करना । समुप्याअ (उत्त २६, ७१) ।

समुप्याय पु [समुत्पाद] उत्पत्ति, प्रादुर्भाव
(सूय १, १, ३, १, आचा) ।

समुप्यजल न [दि] प्रयय, अपक्वोति । २
रज, धूवि (दे ८, ५०) ।

समुप्यित्य वि [दि] उत्पत्त, भव-भौत (गुर
१३, ५४) ।

समुप्येक [समुपेह] । वङ्ग. समुप्येक-
समुपेह [माण, समुपेहमाण (राज,
मात्ता १, ४, ५, ४) । संक. समुपेहं (दय
७, ३) । देखो समुप्येक ।

समुप्यालय वि [समुत्पादक] उवाचर लाने-
वाला, ‘वहए जयतिरिसमुप्यालय मगलतूर’
(स २२) ।

समुप्यालय वि [समुत्पादित] आस्फालित
(भवि) ।

समुप्युद सक [समा + क्रम्] आक्रमण
करना । वङ्ग. समुप्युद (वे ४, ५३) ।

समुप्योडण न [समुत्कोटन] आस्फालन
(पद्य ६, १८०) ।

समुप्यद वि [समुप्यद] प्रचंड (प्राप्
१०२) ।

समुप्यय सक [समुद् + भू] उत्पन्न होना ।
समुप्ययति (उपद २५) ।

समुप्यय पु [समुप्यय] उत्पत्ति (उव,
भवि) ।

समुप्यय वि [समुप्यय] जँबा किया हुआ
(गुपा नव, भवि) ।

समुप्यय (भणु) नीचे देखो (सणु) ।

समुप्यय वि [समुप्यय] उत्पन्न (स
५७६, गुर २, २३५, गुपा २६५) ।

समुप्याय देखो समुदाय = समुदाय (विपा
१, २—पद्य २५, पोष १८४) ।

समुप्याय देखो समुदाय = समुदाय । वङ्ग.
समुप्यायित (सूय १, १) ।

समुप्यायिअ देखो समुदायिअ (भोप ५१२) ।

समुप्याय सक समुदाय (राज) ।

समुप्यय सक [समुत् + लप्] बीतना,
कटना । समुप्यय (सणु) । वङ्ग. समुप्ययंत
(गुर २, २६) । वङ्ग. समुप्ययजित (गुर
२, २१७) ।

समुप्यय न [समुप्यय] कथन, उक्ति (वि
१२, ७४) ।

समुप्यय वि [समुप्यय] सक, कथित
(गुर २, १५१, ५, २३८, प्राप् ७) ।

समुद्रस श्रक [समुत् + लस्] वल्लित होना, विकसना। समुद्रसद [नाट—विक्र. ७१]। वक्र. समुद्रसैन (कण्, सुर २, ८५)।

समुद्रसिय वि [समुद्रसित] वल्लास प्राप्त (सण्)।

समुद्रालिय वि [समुद्रालिन्] उधाला हुमा (णाय १, १८—पत्र २३७)।

समुद्राय पुं [समुद्राय] भालाय, समायण (विवा १, ७—पत्र ७७, महा, शाय १, १६—पत्र १६६)।

समुद्रास पुं [समुद्रास] विक्रास (गउड)।

समुद्रद्व वि [समुद्रपिट] बैठा हुमा (उर २८८)।

समुद्रउत्त वि [समुद्रपयुक्त] उपयोग-युक्त, सावधान (जीवस ३६३)।

समुद्रगय वि [समुद्रगत] समीप भाया हुमा (वव ४)।

समुद्रजिय वि [समुद्रपार्जित] उपार्जित, पैसा किया हुमा (मुपा १००, सण्)।

समुद्रविय वि [समुद्रस्थित] हाजिर, उपस्थित (उप ४३५)।

समुद्रयंत देखो समुदे।

समुद्रविट्ट वि [समुद्रपिट] बैठा हुमा (उप ७५)।

समुद्रसंपन्न वि [समुद्रसंपन्न] समीप में समागत (वम ३)।

समुद्रहसिअ वि [समुद्रहसित] जिसका बूब उपहास किया गया हो वह (सण्)।

समुद्रागय वि [समुद्रागत] समीप में आगत (णाय १, १६—पत्र १६६, सण्)।

समुदे सक [समुपा + इ] १ पाय में आना। २ प्राप्त करना। समुदेद, समुदेति (यति ४२, पि ४६३)। वक्र. समुद्रयंत (स ३००)।

समुदेकप } सक [समुद्र + ईक्ष्] १ समुदेद } निरोक्षण करना। २ व्यवहार करना, काम में लाना। वक्र. समुदेकपमाग, समुदेदमाग (णाय १, १—पत्र १६; भाषा १, ५, २, ३)।

समुद्रउत्त वि [समुद्रउत्त] ऊँचा किया हुमा (वि ११, ५१)।

समुद्रव्यक्तिय वि [समुद्रवित] धुमाया हुमा, फिराया हुमा (सुर १३, ४३)।

समुद्रवह सक [समुद्र + वह] १ चारण करना। २ डोना। समुद्रवहद (मवि, सण्)। वक्र. समुद्रवहंत (सि ६, २, नाट—रत्ना ८३)।

समुद्रहण न [समुद्रहन] सम्पूर्ण वहन—डोना (उव)।

समुद्रिगय वि [समुद्रिगन्] घरबल उठे ग-वाला (भा ४६२)।

समुद्रवूढ वि [समुद्रव्यूढ] १ विवाहित (उप १२७)। २ उत्तानित, ऊँचा किया हुमा (सि ११, ६०)।

समुद्रबेलि वि [समुद्रबेलिन्] मल्लत कपाया हुमा, संचालित, 'नयनरहसमायुयविसमल-मुनेल्लकमवसर्पाय' (पउम ६४, ५२)।

समुद्ररण देखो समीसरण (पिठ २)।

समुद्रसय पुं [समुद्रसूय] १ ऊँचाई ऊँचता (सूय २, ५, ७)। २ उन्नति, उपपत्ता (सूय १, १५, ७)। ३ कर्मोंका उपपत्त (पाया)। ४ संचाल, समूह, राशि, ढग (वस ६, १७, प्रणु २०)।

समुद्रसयिय वि [समुद्रसूयित] ऊँचा किया हुमा (पउम ४०, ६)।

समुद्रससिय वि [समुद्रससित] १ उल्लास-प्राप्त, 'समुद्रससियरोमकूवा' (कण्)। २ सञ्चालास-प्राप्त (पउम ६४, ३८)। देखो समुद्रससिअ।

समुद्रसिअ वि [समुद्रसिअ] ऊँच-स्थित ऊँचा रहा हुमा (सूय १, ५, १, १५, पि ६४)।

समुद्रसिणाय सक [समुत् + ष] १ निमाण करना, बनाना। २ सत्कार करना, खंवारना जोरें मन्दिर धादि को ठोक करना। समुद्रसि राशि, समुद्रस्थिति (भाषा १.८, २, १.२)।

समुद्रसुग } देखो समुद्रसुअ (इ ४८ महा)। समुद्रसुय }

समुह देखो संमुह (हि १, २६, भा ६५६, मुया, हेवा ५१, महा, पाय)।

समुहय वि [समुद्रत] समुद्रपात प्राप्त (श्रावक ६८)।

समुहि देखो स मुहि = श्म-मुहि।

समूमण न [समूपण] त्रिद्वक—सूँठ, पीपल तथा गरिन या मिरका (उत्तनि ३)।

समूमनय देखो समुस्तसिय (पह १, ३—पत्र ४५)।

समूसस श्रक [समुत् + श्चस्] १ ऊँचा जाना। २ उल्लसित होना। ३ ऊँच-वास लेना। समूससति (पि १४३)। वक्र. समूससत, समूससमाग (भा ६०४, गउड, सि ११, १३२)।

समूससिअ न [समुच्चसित] १ नि बात (सि ११, ५६)। २ देखो समुस्तसिय (णाय १, १—पत्र १३, कण् गउड)।

समूसिअ देखो समुस्तिअ (मग श्रीप, मूष १, ५, १, ११ वी पणह १, ३—पत्र ४५)।

समूसअवि [समुत्सुक] प्रति उल्लिखित (मुपा ४७७, नाट—विक्र ६१)।

समूह पुन [समूह] समुदाय, राशि, सघात, 'संतीही य उपसन्निपि मुपगमाय समूह व' (पउम १०६, १५, प्रोष ४०७, गउड, मवि)।

समूह (भर) देखो समुह (मवि)।

समे सक [समा + इ] १ भागमन करना, भावा, संयुक्त भावा। २ जानना। ३ प्राप्त करना। ४ श्रक, सहत होना, इकट्ठा होना। समेद, समेति (मवि, विसे २२६६)। वक्र. समेसाण (भाषा १, ८, १, २)। संक्र. समिध, समेध (सूय १, १२, ११, पि ५६१, भाषा १, ६, १, १६, पत्र ३, ४५)।

समेअ } वि [समेअ] १ समागत, समायात, समेत } 'शोलवद परिणेतु गिहं समेमो महिदीप' (भा १६)। २ युक्त, सहित, तेहि समेतो ब्रह्मय यपाणि जा कितियणि मुताग' (सुर १, १६, १, ८, ८८, मुपा २५६, महा)।

समेअ देखो म-मेअ = म-मयदि।

समोअर श्रक [समा + र] १ समाता, 'समावेश होना, धन्यभावि होना। २ नीचे

उतरना । ३ जन्म-ग्रहण करना । समोभरद
(मणु २४६; उव; विसे ६४५), समोभरदि
सूप २, २, ७६; मणु ५६) ।

समोआर पुं [समयतार] अन्तर्भाव (मणु
२४६) ।

समोश्न वि [समयतीर्ण] नीचे उतरा
हुआ (सुर ७, १३४) ।

समोगाढ वि [समयगाढ] सम्यग् भयगाढ
(घोष) ।

समोच्छ्रद्धा वि [समयच्छादित]
आच्छादित, प्रतिशय ढका हुआ (सुर १०,
१५७) ।

समोणम सक [समय+सम्] सम्यग्
नमना—नीचा होना । वक्र. समोणमत
(घोष. सुर ६, २३७) ।

समोणय वि [समयतन] अति नया हुआ
(गा २८२) ।

समोत्थइव वि [समयस्थिति] आच्छादित,
(से ६, ५४) ।

समोत्थय वि [समयसृज] ऊपर देखो (उप
७७३ धी) ।

समोत्थर सक [समय + स्तृ] ? आच्छादन
करना, ढकना । २ भाकमण करना । वक्र.
समोत्थरत (शाय १, १—पत्र २५,
पत्र ३, ७८) ।

समोयार पुं [समयतार] अन्तर्भाव, समावेश
(विसे ६५६, मणु) ।

समोयारणा क्षी [समयतारणा] अन्तर्भाव
(विसे ६७३) ।

समोयारिय वि [समयतारित] अन्तर्भावित,
समावेशित (विसे ६९६) ।

समोहय वि [दि] समुत्पन्न (गठ) ।

समोलुग वि [समयसृज] योगी, योग-वस्तु
(से ३, ४७) ।

समोवअ सक [समय+पत्] ? सामने
आना । २ नीचे उतरना । वक्र. समोवययंत,
समोवयमाण (स १३६, ३३०) ।

समोवइव वि [समयपतित] नीचे उतरा
हुआ (शाय १, १६—पत्र २१३) ।

समोसद्वह वि [समयसृज] समागत,
समोसद्वह ? पयारा हुआ (सम्मत १२०,

वि ६७, मय, शाय १, १—पत्र ३६,
घोष. मुपा ११) ।

समोसर सक [समय+सृ] ? पयारना,
आगमन करना । २ नीचे गिरना । समोसरया
(घोष. वि २३५) । हेक्र. समोसरित् (घोष) ।
वक्र. समोसरंत (से २, ३६) ।

समोसर सक [समय+सृ] ? लीछे हटना ।
२ पलायन करना । समोसरद्व (घा १६६),
समोसर (हे २, १६७) । वक्र. समोसरंत
(गा १६२) ।

समोसरण पुंन [समयसरण] ? एकत्र
मिलन मेलाप, मेला (सूत्रनि ११७, शय
१३३) । २ समुदाय, समवाय, समूह,
'समोमण विचय उवचय चय य जुममे य
रासी य' (घोष ४०७) । ३ साधु समुदाय,
साधु-नमूह (पिठ २८५, २८८ धी) । ४

जहाँ पर उत्तम भाविक के प्रत्यय में अनेक साधु
सोम इकट्ठे होते हैं वह स्थान (सम २१) ।

५ परतीचिवा वा समुदाय, जैनतर दाशर्निकों
का समवाय (सूप १, १२, १) । ६ धर्म-
विचार, भागम-विचार (सूप २, २, ८३;
८२) । ७ 'सुनइताङ्ग सूत्र' के प्रथम श्रुतस्वय
का बारहवाँ अध्यायन (सूत्रनि १२०) । ८

पयारना, आगमन (उवा, घोष, विपा १,
७—पत्र ७२) । ९ तीर्थर-देव की पर्यट ।

१० जहाँ पर जिन-भगवान् उपदेश देते हैं
वह स्थान (भावम, पत्र २, १७, ती ४३) ।

'तव पुं [तपस्] तप-विशेष (सम
२७१) ।

समोसरिअ वि [समयसृज] ? लीछे हटा
हुआ (गा ६५६, पत्रम १२, ६३) । २

पलायित (से १०, ५) ।

समोसरिय वि [समयसृज] समायात,
समागत (से ७, ४१ उवा) ।

समोसरय सक [दि] टुकड़ा टुकड़ा करना ।
समोसरयित (सूप १, ५, ८) ।

समोसिअ सक [समय+सृ] लीछे होना,
नाश पाना, नष्ट होना । वक्र. समोसिअंत
(से ८, ७) ।

समोसिअ पुं [दि] ? प्रातिवेशिक, पड़ोसी
(दि ८, ४६, पाष) । २ प्रदीप । ३ वि,
वध, वध-योग्य (दि ८, ४६) ।

समोहण सक [समुद् + हन्] समुद्रयात
करना, आगम-प्रदेश की बाहर निकाल कर
उत्प्रेषण करना । समोहणइ,
समोहणित (वप, घोष, वि ४६६) । संक्र.
समोहणित्ता (मग. वप, घोष) ।

समोहय वि [समुद्गत] जिसने समुद्रयात
किया हो वह (ठा २, २—पत्र ६१) ।

समोहय वि [समयगत] ग्राधात-प्राप्त (सुर
७, २८) ।

सम्म सक [अम्] ? १ खेद पाना । २ धरना ।
सम्मइ (उत १, ३७) ।

सम्म सक [राम्] शांत होना, ठण्डा
होना । मम्मइ (बाखा १५५) ।

सम्म न [शर्मन्] सुख (हे १, ३२, हुआ) ।

सम्म वि [सम्यञ्च] ? सत्य, सत्ता (सूप
१, ८, २३, पत्र, सम्म ८७, वसु) । २

अविपरित, अविद्वि (ठा १—पत्र २७,
३, ४—पत्र १५६) । ३ प्रशंसनीय,
आपनीय (कम्म ४, १४, पत्र ६) । ४

शौनव, मुन्दर । ५ संगत, उचित, व्याजवी
(सूप २, ४, ३) । ६ न, सम्यग्-दर्शन
(कम्म ४, ६; ४५) । 'सा न [सं]'

समकित, सम्यग्-दर्शन, सत्य तत्त्व पर
अद्व (उवा, उव; पत्र ६३; जी ५०; कम्म
४, १४) । २ सत्य, परमार्थ, 'सम्मत्तवसिणो'

(आषा. सूत्र १, ८, २३) । 'दिट्ठय,
'दिट्ठि न नि [दिट्ठि] सत्य तत्त्व पर अद्व
रखनेवाला (ठा १—पत्र २७, २, २—पत्र
५६) । 'इंसण न [इंसण] सत्य तत्त्व पर

अद्व (ठा १०—पत्र ५०३) । 'दिट्ठि वि
[दिट्ठि] देखो 'दिट्ठिय (सूत्रनि २११) ।

'ज्ञान न [ज्ञान] सत्य ज्ञान, यथार्थ ज्ञान
(सम्म ८७, वसु) । 'सुय न [श्रुत] ?

सत्य शास्त्र । २ सत्य शास्त्र-ज्ञान (सुवि)
'मिच्छदिट्ठि वि [मिच्छादिट्ठि] मिच्छ
हृदयपाल, सत्य धीर अत्यंत तत्त्व पर अद्व

रखनेवाला (सम २६, ठा १—पत्र २८) ।

'वाय पु [वाद्] ? अविद्व वाद । २
हृदयवाद्, वादना जैन आग-ग्रंथ (ठा १०—
पत्र ४६१) । ३ सामायिक, सामान्य-विशेष;

'सामाद्व समद्व सम्पावाधो समास सत्तेवो'
(भाव १) ।

सम्मइ देवो सम्मुइ = सम्मति, स्वमति
(उत्त २८, १७, प्राचा) ।

सम्मइग देवो सामाइय (सवोध ४५) ।

सम्मं प्र [सम्म्यन्] पञ्चो तय्ह (प्राचा,
सूय १, १४, ११, गहा) ।

सम्मइ छो [सम्मति] ? सयत गति । २
मुन्दर बुद्धि, विशद बुद्धि (उत्त २८, १७,
सुल २८, १७, कप्य, प्राचा) । ३ पुं, एक
कुलकर पुरुष (पउम ३, ५२) ।

सम्मइ छो [सम्मति] स्वकीय बुद्धि (प्राचा) ।
सम्मइरिज वि [सम्मृत्] मञ्चो तय्ह याद
किया हुआ (मञ्चु ३५) ।

सय प्रक [सी, सय्] सोना, रागन करना ।
सयइ, सय्, सय्जा (कप्य, प्राचा १, ७,
८, १३; २, २, ३, २५, २६), सयति
(भग १३, ६—पत्र १७) । वहु. सयमाण
(प्राचा २, २, ३ २६) । हेऊ, मइत्तए
(वि ५७८) । ह. देखो सयणिज्ज,
सयणीअ ।

सय प्रक [सय्] पचना; जीर्ण होना, माफिक
माना । सयइ (प्राचा २, १, ११, १) ।

सय प्रक [स] कटना, टपकना । सयइ (सूय
२, २, ५६) ।

सय सक [सि] सेवा करना । सयति (भग
१७, ६—पत्र ६१७) ।

सय देवो स = सन्. 'वदण्णो सयाण'
(स ६६५) ।

सय देवो स = सय (सूय १, १, २, २३,
छाया १, १४—पत्र १६०, प्राचा, उग,
स्वय १६) ।

सय देवो सग = सप्तम्. 'हत्तरि छो
[सप्तति] सतहत्तर, ७७ (या २८) ।

सय ॥ [सदा] हमेशा, निरन्तर. 'मममुओ
सय करेइ वंरप' (उव) । 'पाल न [साल]
हमेशा, निरन्तर (सुग ८५) ।

सय पुन [शान] ? संस्था विशेष, सी. १०० ।
२ सी को संस्थावाला (उग, उव, या १०१,
जो २६, ८६) । ३ बहुत, भूति, मन्त्र
संस्थावाला (छाया १, १—पत्र ६५) ।
४ प्रत्ययन. ग्रंथ प्रकरण, कल्याण-विशेष,
'विवाहपन्नतीए एकासीति महाजुम्मसमा

पनता' (सम ८८) । 'कंत न [वान्त]
१ खन-विशेष । २ वि. शतकान्त खो
से बना हुआ (देवन्द २६८) । 'किंति
पुं [कीर्ति] एक भावी जिन-देव (पव ४६),
'सत्त (१५) किंति' (सम १५३) । 'मुणिअ
वि [मुणित] सीयुग (या १०, सुर ३,
२३२) । 'भो छो [धनी] ? यन्त्र-विशेष,
पापाण शिवा-विशेष (सम १३७, प्रंत, धीप) ।
२ बची, जाँचा (दे न. ५, टी) । 'जल न
[ज्यल] ? वस्त्र का विमान (देवन्द २७०) ।
देवो सयंजल । २ खन की एक जाति ।
३ वि. शतजन-रत्नो का बना हुआ (देवन्द
२६६) । ४ पुन. विद्युत्प्रम नामक वस्तुकार
पर्वत का एक शिखर (इक) । 'दुयार न
[द्वार] एक नगर (भव) । 'यणु पुं
[धनुस्] १ ऐवत वर्ष में होनेवाला एक
कुलकर पुरुष (सम १५३) । २ भारत वर्ष
में होनेवाला दसवाँ कुलकर पुरुष (ठा १०—
पत्र ५१८) । 'पदे छो [पदी] खुद जन्तु
की एक जाति (या २३) । 'पत्त देवो
'पत्त (छाया १, १—पत्र ३८) । 'पाग न
[पाक] एक सी धापिभो से बनता
एक तरह का उत्तम तेल (छाया १—
पत्र १६, ठा ३, १—पत्र ११७) । 'पुप्प
छो [पुप्पा] वनस्पति-विशेष, सीया का
गाढ़ (पण्य १—पत्र ३४, उत्तनि १) ।
'पोर न [पवैर] इधु, कल (पव १७८
टी) । 'वाहु पुं [वाहु] एक रात्रि
(पउम १०, ७४) । 'भिसया, भिसा छो
[भियप्] नक्षत्र विशेष (इक पउम २०,
३८) । 'यम वि [तम] सीया, १०० बो
(पउम १००, ६५) । 'रह पु [रथ] एक
कुलकर पुरुष (गम ५५०) । 'रिमह पु
[रुपम] यद्योपन का वेदियां छूटनें (गुज
१०, १३) । 'वदे देवो 'पदे (दे २, ६१) ।
'वत्त न [पत्र] ? पत्त, कमल (पाघ) ।
२ सी पत्तीवाला कमल, पत्र विशेष (मुभा
४६) । ३ पुं. पत्ति विशेष, जिनका दक्षिण
दिशा में बोलना अपठ्युक्त माना जाता है
(पउम ७, १७) । 'सहस्स पुन [सहस्स]
संस्था विशेष, साम (सम २, गम सुर ३,
२१, प्रायु ६, १३४) । 'सहस्सदम वि

[सहस्सतम] सावर्वा (छाया १, ८—
पत्र १३१) । 'साहस्स वि [साहस्स] ?
साव-सख्या का परिमाणवाला (छाया १,
१—पत्र ३७) । २ लाख रूपया जिसका
मूल्य हो वह (पव १११, दत्ति ३, १३) ।
'साहस्सि वि [सहस्सिन्] सबपति,
सवाधीय (ठा ५ ३१५) । 'साहस्सिय वि
[साहस्सिन्] देवो 'साहस्स (स ३६६;
पत्र) । 'साहस्सी छो [सहस्सी] लस,
साल (वि ४४७, ४४८) । 'सिहर वि
[शकर] शत बंधवाला, सी दुर्गबाला
(सुर ४, २२, १५३) । 'हा प्र [वा] सी
प्रवार से, सी दुर्गबा हो ऐसा (सुर १४,
२४२) । 'हुत्तं प्र [हृत्तस्] सी बार
(हे २, १५८, प्राप्र, पद्) । 'उ पुं
[युप्] १ एक कुलकर पुरुष का नाम
(सम १५०) । २ महिला-विशेष (कुत्र १६०,
पत्र) । 'णिय, णीज पु [नीक] एक
राजा का नाम (विया १, ५—पत्र ६०,
पंत, सी १०) ।

सयं देवो सयं = सय्य, 'समनालणा य एय'
(पचा ५, २६) ।

सय देवो सई = सट्ट (वि ८८) ।

सयं ॥ [सयम्] धाय, सुर, निज (प्राचा
१, ६, १, ६, सुर २, १८७, मग, प्रायु
७८, ग्रंथि ५६, हुमा) । 'कड वि [कुत्त]
खुद किया हुआ (भग) । 'गाह पुं [ग्राह]
१ जवरत्नो ग्रहण करने । २ विवाह-विशेष
(वि १, ३४) । ३ वि. स्वयं ग्रहण करने-
वाला (वव १) । 'पम पु [प्रम] ?
अधोत्तिक ग्रह विशेष (ठा २, १—पत्र ७८) ।
२ भारतवर्ष में प्रतीत उत्तमिणी जाल में
संलग्न चौथा कुलकर पुरुष (सम १५०) । ३
प्रापाया व संविण जाल में भारत में होनेवाला
चौथा कुलकर पुरुष (गम १५३) । ४
प्रापायो उत्तमिणी जाल में इन भारतवर्ष में
हानेवाले चौथे जिन देव (गम १५३) । ५
एक जैन मुनि जो नाशान् संनगराय से पूर्व-
जन्म में पुरुष थे (पउम २०, १७) । ६ एक
हार का नाम (पउम २६, ४) । ७ मर
नवुज (सूय ३) । ८ मन्दीयर द्वीप के मध्य
में पश्चिम दिशा म्पित एन धवन गिरि (पव

२६६ टी) । १६ न. एव नगर वा नाम,
राजा रायण के लिए बुधेर द्वारा बनाया
हुआ एक नगर (पदम ७, १४६) । १० वि.
भाप से प्रनारा करनेवाला (पदम ३६, ४) ।
"पमा छी ["प्रभा] १ प्रथम वायुदेव की
पटरानी (पदम २०, १८६) । २ एव रानी
का नाम (उप १०३१ टी) । "पह देहो "पम
(पदम ५, २२) । "सुद्ध वि ["सुद्ध] ग्रन्थ
के उपदेश के बिना ही जिसको तत्त्वज्ञान
हुआ हो वह (पद ४३) । "सु दुं ["सु] १
ब्रह्मा (पद १, २—पद २८) । २ भारत
में उत्पन्न सीसरा वायुदेव (सम ६४) । ३
सप्तर्षि जिनदेव का गणपद—सुख शिष्य
(सम १५२) । ४ जीव, प्राण, चेतन (मग
२०, २—पद ७७६) । ५ एक महा-भाग्य,
स्वयम्भूरमण समुद्र, "जहा सयंभू उदोहो
सेट्टे" (सम १, ६, २०) । ६ पुं. एक देव-
विमान (सम १२) । देखो "भू । "मुगेहिणा
छी ["मुगेहिनी] सत्त्वतो देवी (मच्छु २) ।
"भुरमण पु ["भुरमण] देखो "भूरमण
(पद २, ४—पद १३०, पदम १०२,
६१; स १०७, सुख १६, जी ३, २—पद
३६७, वेद २५५) । "मुप, "भू पुं ["भू]
१ भगवि सिद्ध सर्वज्ञ, "जय जय नाह सयंभुव"
(स ६५७, उवर १२२) । २ महा (पाप,
पदम २८, ५८; ती ७, से १४, १७) । ३
सीसरा वायुदेव (पदम ५, १५५) । ४ रावण
का एक योद्धा (पदम ५६, २७) । ५ भगवान्
विमलनाथ का प्रथम धावक (विचार ३७८) ।
६ कुच, स्तन (प्राक् ४०) । देखो "भू ।
"भूरमण पु ["भूरमण] १ समुद्र विशेष ।
२ द्वीप विशेष (जीव ३, २—पद २६७,
३७०) । ३ एक देव विमान (सम १२) ।
"भूरमणभद पु ["भूरमणभद] स्वयम्भूरमण
द्वीप का एक अधिपति देव (जीव ३, २—
पद ३६७) । "भूरमणमहाभद पु ["भूर-
मणमहाभद] वही भर्मा (जीव ३, २) ।
"भूरमणमहावर ॥ ["भूरमणमहावर]
स्वयम्भूरमण समुद्र का एक अधिपत्य देव
(जीव ३, २—पद ३६७) । "भूरमणवर
पु ["भूरमणवर] वही भक्तान्तर उक्त भर्मा
(जीव ३, २) । "वर पु ["वर] भन्या का

स्वेच्छानुसार वरण, एव प्रवार वा विवाह
जिसमें भन्या निमन्त्रित विवाहाधिकारों में से
भन्यो इच्छानुसार प्रपना पति वरण कर ले
(उव, गउड, ग्रामि ३१) । "वरी छी ["वर]
भन्यो इच्छानुसार वरण करनेवाली (पदम
१०६, १७) । "संयुद्ध वि ["संयुद्ध] स्वयं
शास्त्र-सत्य (सम १) ।
सयंजय पुं [शतञ्जय] पद्म का लेहवा
दिवस (मुज १०, १४) ।
सयंजल पुं [शतञ्जल] १ एव कुलकर-गुण्य
(सम १५०) । २ वरुण सोवपाल का विमान
(पद १, ७—पद १६८) । देखो सय-जल ।
३ ऐरवत वर्ष में उत्पन्न चौदह जिनदेव
(पद ७) ।
सयंभरी छी [शक्रभरी] देव विशेष (पुलि
१०८७३) ।
सयग देखो सयय (पद ४६, मन्म ५, १००) ।
सयगयी छी [दे] नांवा, चक्की, पीसने का
यन्त्र (दे ८, ५) ।
सयड पुं [शगट] १ गाड़ी (पदम २६,
२१), "सयडो गंतो (पाप) । २ न. नगर-
विशेष (पदम २, २७) । "सुह न ["सुर]
उद्यान-विशेष, जहाँ भगवान् श्रृंगपदेव को
केवलज्ञान उपपन्न हुआ था (पदम ५, १६) ।
सयडाड देखो सगडाड (पुप ४४८) ।
सयण देखो सयण = स्व-यन ।
सयण न [सदन] १ गृह, घर (गउड, गुपा
३६६) । २ भग्न ग्लानि, शरीर पीडा (राज) ।
सयण न [शयन] १ वसति, स्थान (भावा
१, ३, ६) । २ रम्या, विद्वाना (गउड,
कुमा का ३३) । ३ निद्रा (कुमा ८, १७)
४ स्थान, सोना (पद २, ४, उपन ३६६) ।
सययिज न [शयनीय] शय्या, बिछौना
(छाया १, १४—पद १६०, गउड) ।
सययिजग देखो स-यण = स्व-यन, "सहस्र
सययिजग भाग्या" (योगमा ३० टी) ।
सयणीअ देखो सययिज (स्वय ६२, ६८,
सुर ३, २०) ।
सयणन देखो सकुण (महा) ।
सयय देहो सयण = स गुण ।
सयत्त वि [दे] सुदित, हृष्टि (दे ८, ५) ।
सयन देखो सयन (गुपा २८२) ।

सयय वि [सतत] निरन्तर (उव, सुर १,
१३, महा) ।
सयय पु [शतक] १ वर्तमान प्रवर्तित-
काल में उत्पन्न ऐरवत वर्ष के एक जिन-देव
(सम १५३) । २ प्राणो को उत्सर्पणी में
भारतवर्ष में होनेवाले एक जिनदेव के पूर्वजन्म
नाम, जो भगवान् महावीर का धावक था
(ठा ६—पद ४५५) । ३ न, ती का
समुदाय (गा ७०६, मच्छु १०१) ।
सयर देखो सयार = सागर (विते ११८७) ।
सयरह देखो सयराह (स ७६२) ।
सयरा देखो सयरा, "सयर वहि च ईद तूरतो
कुणुणु सहील" (पदम ११५, ८) ।
सयराह १ घ [वि] १ शीघ्र, जल्दी (दे ८,
सयराह ११, कुमा, गउड, वेद ६१०) ।
२ युगात्, एक साय (विते ६१६) । ३
भस्मात् (बीप) ।
सयरि देखो सचरि = सप्तति (वि २४५,
४४६) ।
सयरी छी [शतावरी] ध्रुव विशेष, शतावर
का गाछ (पद १—पद ३१) ।
सयल न [शरुल] रंज, टुकड़ा (दे १, २८) ।
सयल वि [सरुल] १ सपूर्ण, पूरा । २ सच,
समय (गा ५३०; कुमा, गुपा १६७, ४
३६, जी १४, प्राप् १०८, १६४) । "चद
पुं ["चन्द्र] "श्रुतास्वादा का कर्ता एक जैन
मुनि (धा १६६) । "भूसण पु ["भूपण]
एक केवलज्ञानी मुनि (पदम १०२, ५७) ।
"दिस पु ["दिश] स्वयंकी वाक्य, प्रमाण-
वाक्य (ग्रन्थ ६२) ।
सयलि पु [शरुलि] मोन, मछली (दे
८, ११) ।
सयहस्थिय वि [सौरहस्थिक] १ स्व हस्त
के उत्पन्न । २ न शक्र विशेष, "महाकालोवि
नरितो मिह्मद सयहस्थिय सहृण्ये" (सिदि
४५१, ४५२) ।
सयाचार देखो स-याचार = सदाचार ।
सयाचार देखो सया चार = सदा चार ।
सयाण देखो स-याण = सा जान ।
सयालि पुं [शतालि] भारतवर्ष के भावी

झठारहवें जिनदेव का पूर्वजन्मीय नाम (पव ४६; वम १४४)। देखो भयालि।

सयालु वि [शयालु] सोने की धातवत्ता, झालसी (कुम)।

सयायरी की [सदायरी] शीन्द्रिय जलु की एक जाति (जा ३६, १३६; मुस ३६, १३६)।

सयायरी देखो सयरी = शतावरी (पत्र)।

सयास देखो सगास = सवाय (काल, घनि १२४, नाट—पुण्ड ४२)।

मयासब वि [शताश्रय, सदाश्रय] सूक्ष्म छिद्रवाला (मग)।

सय्य देखो सज्ज = सयह; 'सय्यमज्जुति सय्यं मज्जोपहीपारगो जमी ठेण' (धर्मवि १८)।

सय्यमय देखो सज्जमय (धर्मवि ३८)।

सय्ह देखो सज्म = मज्ज (हे २, १२४, पट्)।

सर सक [स] सरना लिखना। २ झललम्बन करना, माथम लेना। ३ अनुसरण करना। सरह (हे ४, २३४), सरण्जा (वर्ण २४)। क. सरणीअ (वउ २७), सरअज्ज (मुग ४१४)।

सर सक [स्य] याद करना। सरह (हे ४, ७४, पुह १२, प्राप्र)। वह. सरत (मुग ७४४), सरमाण (आया १, ६—पत्र १६४, पट्म ८, १६४; मुग ३३६)। हेह. सरि-त्तप (वि ४७८)। क. सरणीअ, सरअज्ज, सरियज्ज (वउ २७, धम्मो २०, मुग ३०७)। प्रयो. सरयति (सुम १, ५, १, १६)।

सर सक [सर] ध्यावन करना। सरह, सरनि (जिते ४६२)।

सर पुन [शर] श याण, 'मज्जे मयल्लि वरि-सयति' (आया १, १४—पत्र १६१; कुमा; मुउ १, ६४, स्वज ५५)। २ लुण विशेष, 'सो सरयणे निवोणो पट्ठिभो ठमिन्नय पच्छी' (पर्मवि ६२, पण १—पत्र ३३, (कुप्र १०१)। ३ छन्द-विशेष। ४ पौष की वर्षमा (विग)। 'पणी की [पणी] सुण-विशेष, = मुण्ड का भास (राज)। 'पच न [पत्र] मज्ज-विशेष (जिते ४१३)। 'पाय न [पाव]

पणु (मुस १, ४, २, १३) 'सण पुन [सिन] पणु (विपा १, २—पत्र २४; पाप्र: यौप)। 'सणपट्टी, 'सणवट्टिया की [सिनपट्टी, 'सिनपट्टिया] श कुयेंठि-पणुदण्ड। २ पणुप वीचने के समय हाथ की रखा के लिए बोधा जाता चर्मपट्ट—चमडे का पट्टा (विपा १, २—पत्र २४; यौप)। 'सरि न [शरि] काण-मुड (सिरि १०३२)।

सर पु [स्मर] कामदेव (कुमा, से ६, ४३)। सर वि [सर] गमन-कर्ता (वउ ६, ३, ६)।

सर पु [स्वर] १ वल्ल विशेष, 'य' से 'वो' तक के झरर (पणह २, २, विसे ४६१)। २ गीत आदि की ध्वनि, धावाज, नाद (मुग ४६; कुमा)। ३ स्वर के धनुष्य कलाकल को बतानेवाला शाब्द (सम ४६)।

सर पुन [सरम] तडाग, तलाव (से ३, ६, उवा. कय, कुमा, मुग ३११)। 'पंति की [पहकि] तडाग-यदति (अ २, ४—पत्र ८६)। 'रह न [रह] कमल, पध (प्राप्र, हे १, १२६; कुमा)। 'सरपतिया की [सरपडकि] येलि-बद रहे हुए मनेक तालाव (पणह २, ५—पत्र १४०)।

सर देखो सरय = शय (ग ७१२)। 'दिंदु पु [इंदु] शय्य श्रुत का पत्र (धुर २, ७०, १६, २४६)।

सरज की [सरय] नदी-विशेष (अ ५, १—पत्र ३०८, ती ११, कस)।

सरंग (वप) पु [सारङ्ग] छन्द विशेष (विग)।

सरेव पु [शरम] हाथ से चलनेवाले सर्प की एक जाति (पणह १, १—पत्र ८)।

सरकज सक [स + रक्ष] धञ्जो सरह रखण करना। सखलण (मुस १, १, ४, ११ टि)।

सरकज वि [सरजसक, सरस] १ शैव-धर्मो, शिव-अक, जीत, शैव (धोष २१८; जिने १०४०; उ ६७७)। २ वि. रजो-मुक्त (भाव ४)।

सरमज पुन [सदरजस] १ शुद्धि, रज, 'सगरसखेहि पाएहि' (दग ५, १, ७)। २ भस्म (पिंड ३७, धोष ३२६)।

सरम देखो सरय = शय (आया १, १८—पत्र २४१)।

सरम वि [शारक] शर-पुण से बना हुमा (शूर्प आदि) (भावा २, १, ११, ३)।

सरणिगडा (वप) की [सारङ्गिका] छन्द-विशेष (विग)।

सरहं पु [सरट] हज्जलाह, गिरगिट (आया १, ८—पत्र १३३; धोष ३२३; पुष्क २६७; दे ८, ११; उप ४ २६८; मुग १७७)।

सरह } न [शलाङ्ग, 'क' वह कल जिसमें
सरहउ } ध्वनि—गुळी म बँबी हो, कोमल
फल (पिंड ४५; भावा २, १, ८, ६; वि ८२; २५६)।

सरण पुन [शरण] १ नाण, रक्षा (भावा; सम १, प्राप् १५६; कुमा)। २ प्राण-स्वाण (भावा कुमा २, ४५)। ३ गृह, भाग्य, स्वाण; 'निवासरणप्यर्धमिच वित्तं' (सवोष ५१)। 'दय वि [दय] नाण-कर्ता (मग पवि)। 'गय वि [गत] शरणान्न (प्राप् ५)।

सरण न [स्मरण] स्मृति, याद (धोष ८; विसे ५१८, महा, उ ५६२; धोष; वि ६)।

सरण न [स्वरण] धावाज करना, ध्वनि करना (जिते ४६१)।

सरण न [सरण] गमन (राज)।

सरणि पुकी [सरणि] १ मार्ग, रास्ता (प्राप्र; मुग २, कुप्र २२), 'सरलो सरणी समग कहियो' (साय ७५)। २ शालवाल, बपारी (पउड)।

सरण्य वि [शरण्य] शरण्य-योग्य, ग्राह के लिए भाग्ययोग्य (सम १५३, पणह १, ४—पत्र ७२, मुग २६१, मज्जु १५; संगोप ४८)।

सरचित घ [दि] शोभ, जल्दी, सहसा (दे ८, २)।

सरद देखो सरय = शय (प्राप्र)।

सरज देखो सरण्य (मुग १८३)।

सरम देखो सरह = शय (मग; आया १, १—पत्र ६३, पणह १, १—पत्र ७; ग ७४२; विग)।

सरभेज वि [दे] स्मृत, माद किया हुआ (दे ८, १३)।

सरमय पुं. [शर्मक] देश-विशेष (पञ्च ६८, ६५)।

सरय पुं [शरद्] श्रुत-विशेष, शालोच—
शालिन तथा कांतिक वा महोना (परह २,
२—पञ्च ११४; गड्ड, से १, २७; गा ५३४;
स्वन् ७०; कुमा; हे १, १८)। 'पुत्र मार्गे
माण पिये पियसरेये जाव बचए सरय' (बजा
७४)। 'वंद पुं [चन्द्र] शरद प्यहु का
काद (छाया १, १—पञ्च ३१)। देखो
सर = शरद।

सरय पुं [शरक] काष्ठ-विशेष, शालिन लक्षण
बज्जे के लिए भरलिया का काष्ठ जिससे पिता
जाता है वह (छाया १, १८—पञ्च २४१)।

सरय पुन [सरक] १ मल-विशेष, शुद्ध तथा
शाली का बना हुआ दाढ़ (परह २, ५—
पञ्च १५०, सुपा ४८५; गा ५५१ का. पुत्र
१०)। २ मल-पान (बजा ७४)।

सरय देखो सर-य = स-रत।

सरय (यप) पु [सरस] धन्व-विशेष (विग)।

सरल पुं [सरल] १ ध्वज-विशेष (पण १—
पञ्च ३४)। २ श्रुत, माया-रहित (कुमा,
सण)। ३ सीधा, धनक (कुमा, गड्ड)।

सरलिय वि [सरलिय] सीधा किया हुआ
(कुमा, गड्ड)।

सरली ओ [दे] चौरिका शुद्ध कोट-विशेष,
भीगुर (दे ८, २)।

सरलीआ ओ [दे] १ जन्तु-विशेष, चाही,
जिसके शरीर में बटि होते हैं। २ एक जात
का कीड़ा (दे ८, १५)।

सरय पुं [शरप] भुवनपरिसर की एक प्रकार
(सप्त २, ३, २५)।

सरस वि [सरस] रस-युक्त (श्रीप, शंत,
गड्ड)। 'रण्य पुं [रण्य] समुद्र, सागर
(से १, ४३)।

सरसिज [न [सरसिज] कमल, पद्म
सरसिय } (हमोद ५१, रंभा)।

सरसिह न [सरसिह] कमल, पद्म (उप
७२८ टी, सम्मत ७६)।

सरसी ओ [सरसी] बड़ा तालाब—तड़ाग
(श्रीप; उप ५ ३८; सुपा ४८५)। 'रह न
[रह] कमल (सम्मत १२०; १३६)।

सरसई ओ [सरसई] १ चाणो, भारो,
भापा (पात्र, शोप)। २ चाणो की श्रृंगिणी
देवी (गुर १, १५)। ३ भीतरति नामक
इन्द्र की एक पटरानी (ठा ४, १—पञ्च
२०४, छाया २—पञ्च २५२)। ४ एक
राज-नली (विपा २, २—पञ्च ११२)। ५
एक जैन साध्वी जो सुप्रसिद्ध बालकाचार्य
की बहिन थी (कास)।

सरह पुं [शरभ] १ शिवारी पशु की एक
जाति (सुपा ६३२)। २ हरिवश का एक
राना (पञ्च २२, ६८)। ३ लदमण के
एक पुत्र का नाम (पञ्च ६१, २०)। ४
एक सामन्त मरेठा (पञ्च ८, १३२)। ५
एक यात्रर (मि ४, ६)। ६ छत्त-विशेष
(विग)।

सरह पुं [दे] १ ध्वज-विशेष, वेतस या शंत
का पंड (दे ८, ४७)। २ सिंह, पञ्चानन
(दे ८, ४७, गुर १०, २२२)।

सरह (मग) वि [इलाध्य] प्रशस्तनीय (विग)।
सरहस देखो स-रहस = स-रमन।

सरहा ओ [सरघा] मधु-मक्षिका (दे २,
१००)।

सरहि पुं ओ [शरधि] लूणीर, तीर रखने का
भाया—तरकस (मि ७०)।

सरा ओ [दे] माला (दे ८, २)।

सराग देखो स राग = स-राग।

सराछि ओ [शराछि, शराछि] पक्षी की
एक जाति (गड्ड)।

सराय पुं [शराय] मिट्टी का पात्र-विशेष,
गर्कोरा, पुत्रा (दे २, ४७, सुपा २६६)।

सरासण देखो सर-सण = शयसन।

सराह वि [दे] वर्षाद्वार, गर्व से उद्धत (दे
८, ५)।

सराहय पुं [दे] सर्व, सब (दे ८, १२)।

सरि वि [सटार] सदय, सरीखा, तुल्य
(मग, छाया १, १—पञ्च ३६, शंत ५,
हे १, १४२, कुमा)।

सरि ओ [सरिन्] नदी (से २, २६, सुपा
३५४, पुत्र ४३, मत् १२३, महा)।

'नाह पुं [नाथ] समुद्र (पर्व १०१)।
देखो सरिआ।

सरिअ वि [स्मृत] माद किया हुआ (पञ्च
३०, ५४, सुपा २२१; ४६२)।

सरिअ देखो सरि = सदय; 'सोमेमाण
सरिये संभविया पिरजता देविदा' (श्रीप)।
सरिअ न [सुतम्] धन, पर्याप्त, बस;
'बहुभाणिएण सरिये' (रण ५०)।

सरिआ ओ [सरिन्] नदी (कुमा, हे १,
१५; महा)। 'वड पुं [पति] समुद्र (से
७, ४८, ६, २)।

सरिआ ओ [दे] माला, हार (परह १,
४—पञ्च ६८, पुत्र ३; सुपा ३३४)।

सरिअर पुं वि [सटार] सदय, समान,
मरिच्छ [तुल्य (माठ ८६; प्राप्. हे १,
१४२; २, १७; कुमा)।

सरिचू वि [स्मट] स्मरण-कर्ता (ठा ९—
पञ्च ४४४)।

सरिभरी ओ [दे] समानता, सरीखाई,
गुनराती में 'सरभर'; लभो जाया दोएहुवि
सरिभरी' (महा १०)।

सरिअ देखो सरीर (पञ्च २०५)।

सरिबाय पुं [दे] भालार, वेगवाली दृष्टि
(दे ८, १२)।

सरिस वि [सटार] समान, सरीखा, तुल्य
(हे १, १४२; मग, उव, हैका ४८)।

सरिस पुं [दे] १ सह, साथ;

'का समसोसी विपसिदवाण
बडवाणएसस सरिसमिन् ।
उवसमिपसिहोपतरो

मयरहरो ईण्यो जसस ।'
(बजा १५४)।

'आसलो संगामो बलवइण तेण सरिसोवि'
(महा)। २ तुल्यता, समानता (सलि ४७)।
'अवेउरसरितेणो पतोइयं नरवरिदेण' (महा)।

सरिसरी देखो सरिभरी (महा)।

सरिसव पुं [सर्वप] सरोरो (बड, शोप
४०६, छं ४४; कुमा, कम्म ४, ७४, ७५;
७७, छाया १, ५—पञ्च १०७)।

सरिसाहुड वि [दे] समान, सदय (दे
८, ६)।

सरिसव देखो सरोसव (पञ्च २०, ६२)।

सरी श्री [दे] माता, हार (मुग २३१) ।
सरीर पुन [शरीर] देह, नाय, लु (सम
६७, उवा, कुमा, जो १२); 'कद र्थे भवे
सरोरा पण्णत्ता' (पण्ण १२); 'णाम,
'नाम पुन 'नामन्' कर्म-विशेष, शरीर
का कारण-भूत कर्म (राज, सम ६७) ।
'बंधण न [बन्धन] कर्म-विशेष (सम
६७) । 'संधायण न [संधायन] नाम
कर्म का एक भेद (सम ६७) ।
सरीर पुं [शरीरिन्] जीव, मात्मा (पजम
११२, १७) ।
सरीसव } पुं [सरीसप] १ सर्प, सर्प (बा
सरीसिव ११, सूम १, २, २, १४) । २
सर्प की तरह पेट से चलनेवाला प्राणी
(सम ६०) ।

सरुय } देहो स-नय = स्व-रूप ।
सरुव }
सरुव देहो स-रुव = स-रुव, स रूप ।
सरुवि पु [सरुविन्] जीव, मात्मा (ठा
२, १—पत्र ३८) ।
सरोअव्य देहो सर = छ, स्मृ ।
सरोय पुं [दे] १ हत । २ घर का जन-
प्रवाह, मोरी (दे ८, ४८) ।
सरोअ न [सरोज] कमल, पद्म (कुमा,
अण्ड ४२, मुग ५६, २११, पुम २६८) ।
सरोअह न [सरोअह] ऊपर देहो (प्राप्र,
कुमा, पुम २०४) ।
सरोवर न [सरोवर] बड़ा तालाब (मुग
२६०, महा) ।

सलभ देहो सलह = शलभ (राज) ।
सलली श्री [दे] देवा (दे ८, ३) ।
सलह सक [सलाय] प्रशंसा करना । सलहइ
(हे ४, ८८) । कर्म, सलहइजइ (पि १३२) ।
ऊ, सलहइज (कुमा) । देहो सलहइ ।
सलह पुं [शलभ] १ पतङ्ग (पाभ, गउड,
मुग १४२) । २ एक वणिक्-पुत्र (मुग
६१७) ।
सलहण न [शलाघन] प्रशंसा, स्तुति (मा
११४, पि १३२) ।
सलहल्य पु [दे] कुम्भी मादि का हाथ
(दे ८, ११) ।
सलहइ वि [शलाघिन्] प्रशंसित (कुमा) ।

सलहइज देहो सलह = स्तुति ।
सलाग न [शालाक्य] चित्तिता शास्त्र—
धायुर्वेद का एक अंग, जिसमें ध्वज आदि
शरीर के ऊर्ध्व भाग के सम्बन्ध में, चित्तिता
का प्रतिपादन हो वह शास्त्र (विपा १, ७—
पत्र ७५) ।
सलागा श्री [शालाका] १ सली, सलाइ
सलाया (सूम १, ४, २, १०, कण्ठ) ।
२ पक्ष-विशेष, एक प्रकार की नाप (जीवस
१३६, कम्म ४, ७३, ७५) । ३ पुरिस पु
[पुरुष] २४ जिनदेव, १२ चक्रवर्ती, २
वामुदेव । ६ प्रतिपाद्यदेव तथा ६ बलदेव दे
६३ महापुरुष (सवेष ११) ।
सलाह देहो सलह = स्तुति । सलाहइ (प्राप्र
२८) । वक्र, सलाहमाण (मा ३४६, सम
१५६) । ऊ, सलाहगिज, सलाहगिय,
सलाहणीअ (प्राप्र २८, छाया १, १६—
पत्र २०१, सुर ७, १७१, रयण ३५,
पजम ८२, ७३, पि १३२) ।
सलाहण न [शलाघन] श्लाघा, प्रशंसा
(मा ११४, उप पु १०६) ।
सलाहा श्री [शलाघा] प्रशंसा (प्राप्र, हे २,
१०१, पट्) ।
सलाहइ देहो सलहइ (कुमा) ।
सलिल पुन [सलिल] पानी, जल, 'सलिला
य सवति य वति नाया' (सूम १, १२,
७, कुमा, प्राप् ३५) । 'पिदि पु [तिथि]
वासर, समुद्र (से ६, ६) । 'नाह पुं [नाथ]
नही (पजम ६, ६६) । 'विल न [विल]
भुवि निर्जर, जमीन से बहता करना (पत्र
७, ६—पत्र १०५) । 'रासि पु [राशि]
समुद्र (पाभ) । 'वाइ पु [वाह] मेघ
(पजम ४२, ३४) । 'हर पुं [धर] बड़ी
(से ६, ६४) । 'वई, 'नवी श्री [ववी]
विजय-शिव-विशेष (राज, छाया १, ८—
पत्र १२१) । 'नस न [नसि] वैताल्य
पर्वत पर उत्तर दिशा स्थित एक मित्रावर-
नाम (इर) ।
सलिल श्री [सलिल] महानदी, बड़ी नदी
(सम १२२) ।
सलिलुच्छय नि [सलिलोच्छय] प्लावित,
दुजोया हुआ (पाभ) ।

सलिस ग्रक [स्वप्] सोना, शयन करना ।
सलिसइ (पट्) ।
सल्य देहो सल्य = स-सवण ।
सल्य पु [श्लोक] श्लाघा, प्रशंसा (सूम
१, १३, १२) । देहो सल्यो ।
सल्य देहो सल्य = स-सो ।
सल्य देहो सल्य = स-सवण ।
सल्य देहो सल्य = श्लोक (सूम १, ६,
२२) ।
सल पुन [शल्य] १ मन्त्र-विशेष, तोमर,
सोम, 'सली सल्ला पण्णत्ता' (ठा ३,
३—पत्र १४७) । २ शरीर में दुग्धा दुग्धा
काया, शीर दावि (सूम २, २, २; पंचा
६, १६, प्राप् १२०) । ३ पापानुदान, पाप-
क्षमा, 'पापाडसवसल्लो' (उव, सूम १,
१५, २४) । ४ पापानुदान से लगनेवाला
कर्म (सूम १, १५, २४, वन १) । ५ पु,
भरत का साथ दीक्षा लेनेवाले एक राजा का
(पजम ८५, २) । ६ न, छन्द विशेष (पिग) ।
'ग वि [क] शल्यवाला, शूल आदि शल्य
से पीडित (पट् २, ५—पत्र १५०) । 'ग
न [ग] परिज्ञान, जानकारी (सूम २, २,
५७) ।
सल पुली [दे] हाथ से चलनेवाले सर्प-जातीय
जन्तु की एक जाति (सूम २, ३, २५) ।
सल्य वि [शल्यन्ति] शल्य-भुक्त, जिसको
शल्य खाता हुआ हो वह (छाया १, ७—पत्र
११६) ।
सलई श्री [सलई] बुद्ध-विशेष (छाया १,
७ टी—पत्र ११६, उप १०११ टी, कुमा,
वर्माव १३०, मुग २६१) ।
सल्य देहो सल्य = शल्य क, शन्य ॥ ।
सल्य देहो स-ल्य = स-ल्य ।
सलहल पुन [शल्यहल्य] धायुर्वेद का एक
अंग, जिसमें शल्य निगलने का प्रतिपादन
किया गया हो वह शास्त्र (विपा १, ७—
७५) ।
सल श्री [शल्य] एक महीपाप (ती ५) ।
सल्य नि [शल्यन्ति] शल्य पीडित (सुर
१२, १५२; मुग २२७, महा, भवि) ।
सलह देहो सलह = सं + लिह । सलहइ
(प्राप्र ३५) ।

सल्लुद्धरण न [शाल्लुद्धरण] १ शल्य को बाहर निकालना (विआ १, ८—पत्र ८६) ।
२ शालोचना प्रायश्चित के लिए गुरु के पास दूएण निवेदन (श्रौय ७६१) ।

सल्लेहणा देखो सल्लेहणा (पारा ३५; भवि) ।
सल्लेहिण वि [सल्लेहिण] शीण, सल्लेहिणा कसाया करति मुणिएणो ए चित्तसलोहो (पारा ३६) ।

सस सक [सप्] १ शाय देना, आक्रोश करना, गाली देना । २ आह्वान करना ।
सवह (गा ३२४, ४००), सविमो, सवसु (कुमा) । कर्म, सपप् (विसे २२२७) । वक्तु, ससमाण (उव) । कवह, सप्समाण (पणह १, १—पत्र ५४) ।

सन सक [सु] उत्पन्न करना, जन्म देना ।
सवह (हे ४, २३१, पड) ।

सन देखो सो = सु । सवह, सवह (पड) ।
सन सक [सु] भरना, उपराना, चूना । सवह (विसे १३६८) ।

सस पुं [असत्] १ मान । २ क्याति, 'सवोदसी' (प्राग्) ।

सव न [शाय] रात्र, गुरात्र, मृत शरीर (पाष्, स ७६१, सण) ।

सवन्ती की [सवन्ती] नदी (उप १०३१ टो) ।
सवकी देखो सवकी (सुपा ३३७, ६०१; मूक ४६, महा, कुम १७०) ।

सवक्क देखो सवक्क = सवक्क ।

सवगीय वि [सवगीय] सवर्ग सम्बन्धी (हास्य ११०) ।

सवय देखो सवय = सवय ।

सवज्जा देखो सपज्जा (वेदम २०४, वण्) ।
सवडमुह } वि [दे] मणिमुल, समुल,
सवडमुह } 'सहसा सवडमुह चित्तमो' (महा, दे ८, २१, पउम ७२, ३२, भवि),
उपादसी नहपत्र विमाणयो बह ताण
सवडमुहो एलामनएणुमो महसा (पउम ८, ४७), 'वसड य दाहिणसि संनानयरो-
सवडमुहो' (पउम ८, १३४) ।

सवज देतो समण = थमण (घास ३६, भवि) ।

सवण पुं [अण] १ कण, कान (पाम, सुपा १२८) । २ नयन-विशेष (सम ८, १५; गुज १०, ५) । ३ न. आकर्षण, सुनना (भम, सुर १, २४६) । देखो सवन ।

सवण न [शपन] आह्वान (विसे २२२७) ।

सवग देखो सवण = सवण ।

सवण न [सज्ज] कर्म में प्रेरणा (राज) ।

सवणता } की [अणणता] १ आकर्षण,
सवणता } यवण, सुनना (अ २, १—
पत्र ४६, ६—पत्र ३५५; खाया १, १—
पत्र २६, भग, श्रौय) । २ अवग्रह-ज्ञान
(खोव १७४) ।

सवणवि [सवर्ण] समान वर्णवाला (पउम २, ३१) ।

सवणण न [साणण] सवान वर्णता (प्रवी २०) ।

सवत्त पु [सपत्त] १ कुरमन, शत्रु, विपु, (से ३, ५७; उप १०३१ टो; गड) । २ वि. निवृद्ध (श्रौय २७६) । ३ समान, बुल्य, 'सवत्तसवत्तनयणरमणिज्ज' (कुप २), 'सवमेव सत्तिवत्तं छत्तं उवरि ठियं वत्तं' (कुप ११६) ।

सवत्तिणी देखो सवत्ती, 'सवि (? व) तिणी' (पिड ११०) ।

सवत्तिणा की [सपत्तिना] नीचे देखो (उवा) ।

सवत्ती की [सपत्ती] पति की दूसरी की (उवा, कप ८७१, सवण ५७ ठा ४, ३—पत्र २४२, हेवा ४५) ।

सवन (सा) पु [अण] एक ऋषि का नाम (मोह १०६) । देखो सवण = थवण ।

सवन्न देखो सवण (हम्मो १७) ।

सवय देखो सवय = सवय, सवय ।

सवर देखो सवर (पउम ६८, ६५, इक, वण्, वि २५०) ।

सवरिआ देखो सवज्जा (नट—वेणी २६) ।

सवल देखो सवल (दे २, ५५, कुमा, हे १, १३४; रंगा) ।

सवल्लिआ की [दे] नराच का एक प्राचीन देव मन्दिर (मुण १०८६६) ।

सवह पुं [शपथ] १ आक्रोश-वचन, गाली (खाया १, १—पत्र २६, देवेन्द्र ३५) । २ योग्य, सोह (गा ३३३, महा) । ३ दिव्य, बोधोरोप को शुद्धि के लिए किया जाता प्राणि-श्रेष्ठ आदि (पउम १०१, ७) ।

सवाय पु [दे] श्वेन पत्नी (दे ८, ७) ।

सवाय } सवाय } देखो सवाय = श्व-पाक ।

सवाय देखो सवाय = स-पाद, स-बाद, स-बाध ।

सवार न [दे] सुबह, प्रभात, गुरुवाली में 'सवार' (वृह १) ।

सवास पु [दे] ब्राह्मण (दे ८, ५) ।

सवास देखो स-वास = स-वास ।

सविअ वि [शस] शाप-प्रस्त, शाकु (दे १, १३, पाम) ।

सविउ पु [सविउ] १ पूर्व, रवि (श्रौय ६६७) । २ हस्त-नक्षत्र का प्रश्रिति देय (मुग्ग १०, १२) । ३ हस्त नक्षत्र (मणु) ।
सविस्स वि [सपेक्ष] अपेक्षा रखनेवाला (भम्मत्त ७६) ।

सविज्ज देखो स-विज्ज = स-विज्ज ।

सविह्व की [अविह्व] नक्षत्र-विशेष, सविह्व नक्षत्र (यव) ।

सविण देखो सुमिण = सवण (पत्र ६८) ।

सवितु देखो सविउ (अ २, ३—पत्र ७७) ।

सविस न [दे] सुप, दाह (दे ८, ५) ।

सविह न [सविध] पाव, निकट (पाम) ।

सवउ वि [सवय] वाम, बाया (श्रौय, उव ५ १३०) ।

सवउ वि [अवय] अवय योग्य, 'सवउवल्लरहं निवाई' (भम १, १—पत्र ११) ।

सवउ न [सवे] १ सन, तबल, तमस्त । २ संपूर्ण (हे ३, ८८, ५६) । ३ ओम [तस] १ सवे में । २ सब ओर से (हे १, ३७, कुमा, आला) । ३ ओमह वि [तोमह] १ सब प्रकार से मुक्त । २ न. सब प्रकार से मुक्त (पड १) । ३ पराविशेष, कुमाशुय के ज्ञान का साधन-मृत एक चक्र (ति ६) । ४ महाशुक्र देवता में स्थित एक विमान (नव ३२) । ५ पांचपाई देवक विमान

(पत्र १६४) । ६ एक नगर का नाम (विषा १, ५—पत्र ६१) । ७ अश्वमेध का एक पारियायिक विमान (ठा १०—पत्र ५१८; शीघ्र) । ८ इष्टिवाद का एक सूत्र (सम १२८) । ९ पुं यज्ञ की एक जाति (राज) । १० देव विमान विशेष (देवेन्द्र १३६, १४१) ।
 *ओभडा की [तोभडा] प्रतिभा विशेष, एक व्रत (शीघ्र, ठा २, ३—पत्र ६४, अत २६) । *कामसमिद्ध पु [कामसमिद्ध] पत्र का छठवाँ विषय, पद्यो तिथि (सुज १०, १४) । *कामा की [कामा] विद्या विशेष, जिसकी साधना में नवें इच्छाएँ पूर्ण होती हैं (पत्र ७, १०७) । *गय वि [गत] व्यापक (अष्ट १०) । *गा की [गा] उत्तर रुक्क पर्वत पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३७) । *गुप्त पु [गुप्त] एक जैन मुनि (पत्र २०, १६) । *ज वि [ज] १ सर्व पदार्थों का जागरण । २ पुं, जित भगवान् । ३ बुद्धदेव । ४ महादेव । ५ परमेश्वर (हि २, ८३, पद, प्राप्) । *हु पुं [र्य] १ महो-राज का जनतोसनी मुहूर्त (सुज १०, १३) । २ पुन, यहसार देवलोक का एक विमान (सम १०५) । ३ अनुत्तर देवलोक का सर्पासिद्ध-नामक एक विमान (पत्र १६०) । ४ पु, सब सर्व (भावा १, ८, २५) । *हुसिद्ध पुन [र्यसिद्धि] १ महोराज का जनतोसनी मुहूर्त (सम ५१) २ एक सर्व श्रेष्ठ देव विमान, अनुत्तर देवलोक का पारिचा विमान (सम २/मग, अत, शीघ्र) । ३ पु ऐश्वर्य वर्य में उत्पन्न होनेवाले छठवें जिनदेव (पत्र ७) । *हुसिद्धा की [र्यसिद्धा] भगवान् धर्मनायकी की दोहा सिक्किा (विचार १२६) । *हुसिद्धि की [र्यसिद्धि] एक देव विमान (देवेन्द्र १३७) । *णु देखो [ज] (हि १, ५६, पद, शीघ्र) । *स देखो [ज] (सुपु १५०) । *तो देखो [ओ (पात्र) । *त्य [त्र] सब स्थान में, सब में (पउठ, प्राप् ३६, ६८) । *दसि, दरिसि वि [दरिसि] १ सब मनुष्यों को देखनेवाला । २ पुं, जिन भगवान् महान् (राज, मग, सम १, पठि) । *देप पु [दप] १ एक अश्वि जैन भाषाये

(सार्ध ८०) । २ राजा कुमारपाल के समय का एक सेठ (कुप्र १४३) । *दसि देखो [दसि (वेद्य ३५१) । *ट्टा की [ट्टा] सब काल, अतीत आदि सर्व समय (मग) । *वत्ता की [वत्ता] व्यापक सर्व-माहक (चित्ते ३४६१) । *नु देखो [ज (मग १, प्राप् १७०; महा) । *पग वि [तलक] १ व्यापक । २ पु लोभ (सुप्र १, १, २, १२) । *पभा की [प्रभा] उत्तर रुक्क पर्वत पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (राज) । *भन्त्र वि [भन्त्र] सबको खाने वाला, सर्व-भोजी, *भगिभिव सम्भमस्व (छाया १, २—पत्र ७६) । *भडा की [भद्रा] प्रतिभा विशेष, सब विशेष (पत्र २७१) । *भायविउ पु [भायविउ] प्राणामी काल में भारत वर्ष में होनेवाले बाहरवें जिन-देव (सम १५३) । *य वि [र] सब देनेवाला (पउठ २, १—पत्र ६६) । *या भ [दा] हवेया सवा (रसा) । *रयण पुं [रत्न] १ एक महानिधि (ठा ६—पत्र ४४६) । २ पुन पर्वत विशेष का एक शिखर (इक) । *रयणा की [रत्ना] ईशानदेव की वसुमित्रा नामक इच्छाणी की एक राजधानी (इक) । *रयणामय वि [रत्नमय] १ सब रत्नों का बना हुआ (पि ७०, जीव ३, ४) । २ चक्रवर्ती का एक किरण (ट्ट ६८६, टी) । *रिम्पिद्वि वि [विप्रद्वि] सर्व-सन्निपत्त सबने छोया (मग १३ ४—पत्र ६१६) । *विरइ की [विरति] पाप-कर्म से सर्वथा निवृत्ति पूर्ण समय (चित्ते २६८४) । *समय [सङ्गत] मुख्य (पउठ—पत्र ० ३२१ पर्व ११०, मा० ४४) । *सजम पु [सयम] पूर्ण समय (पय) । *सह वि [सह] सब सहन करनेवाला पूर्ण महिष्णु (पउठ १६, ७६) । *सिद्धा की [सिद्धा] पत्र की कीर्ती, नववी धीर जोहद्वी रात्रि तिथि (सुज १०, १५) । *सो भ [शस] नव धार से, सब प्रकार से (उत्त १, ४, भावा) । *सस न [स] सनत द्रव्य, सन वन (स ४५६, अमि ४० कण्ठ) । *हा म [था] सब प्रकार से, सब तरह से (म ८६७, महा प्राप् ३,

१८१) । *णं पुं [तान्द] ऐश्वर्य क्षेत्र के एक भानी जिन देव (सम १५४) । *णुभू पुं [तुभूति] १ भारत वर्ष में होनेवाले पाँचवें जिन भगवान् (सम १५३) । २ भगवान् महावीर का एक शिष्य (मग १५—पत्र ६७८) । *रहा की [रहा] विद्या विशेष (पउठ ७, १४४) । *न वि [प] सपूर्ण (मग) । *सग पु [शान] अग्नि, आग (हि ४, ३६४) ।

सव्यरुस वि [सर्वरुप] १ सन्निविराणी, सर्व से विशिष्ट (कण्ठ) । २ न, पाप (प्राव) । सव्यय वि [सर्वाङ्ग] १ सपूर्ण (ठा ४, २—पत्र २०८) । २ मह शरीर-व्यापी (राज) । *सुदर वि [सुन्दर] १ सर्व भगो में अद्भुत । २ पुन, सन्निविराणी (राज, पत्र २७१) ।

सव्यगिअ वि [सर्वाङ्गीण] सर्व भवयों सव्यगिण में व्याप्त (हि २, १५१, कुमा, से १५, ५४), 'सव्यगिणाभरण पत्तय तण्ण साण कय' (कुप्र २३५, अमि १४६) ।

सव्यण देखो सव्यण = सव्यण ।

सव्यराइअ वि [सर्वरात्रिक] सपूर्ण रात्रि से सव्यन् रात्रेवाला, सारी रात का (सुप्र २, २, ५३, कण्ठ) ।

सव्यरी की [शररी] रात्रि, रात (पात्र मा ६५३, सुपा ४६१) ।

सव्यल पु [दे. रायल] कुम्ह, बर्छा (राज, भावा) । देखो सव्यल ।

सव्यला की [दे. रायला] कुली, लोहे का एक हथियार (दे ६, ९) ।

सव्यरेमस देवा सव्यरेमस = सव्यरेम ।

सव्यय देखो सव्यय = सर्वाय ।

सव्यय देखो सव्यय = सव्यय ।

सव्ययति म [दे] सर्व, सब, सपूर्ण 'एवा-वति सव्ययति लोगति' (भावा), 'सव्ययति य लोहे ए पुत्तविणीए' (सुप्र २, १, ५), 'सव्ययति य लोगति' (सुप्र २, २, १), 'सव्ययति य सव्ययति पुत्तमाएणालमययति जावति' (उत्त कुमर) (मग १, ६—पत्र ७७) ।

सव्ययिद्धि की [सर्वयिद्धि] सपूर्ण वैभव (छाया १, ८—पत्र १३१) ।

सञ्चिवर देखो सञ्चिवर = स विवर ।

सञ्चोसहि श्री [सञ्चोपधि] १ लज्जि विशेष,
मित्रसे प्रभाव से शरीर की कफ आदि सब
बीज औपधि का नाम बरही है (परह २,
१—पत्र ६६) । २ वि. लज्जि विशेष को
प्राप्त (राज) ।

सस शक [सस] श्वासे लेना स'सवा ।
ससह (रण ६) । बकु ससन (राया १,
१—पत्र ६६, या ५४६ मुर १२, १६४
नाद—मुच्छ २२०) ।

सस प्र [शरा] खरगोश (राया १, १—पत्र
२४, ६५) । हृष पु [यिह] चन्द्रमा
(गड) । हर पु [यर] चन्द्रमा (राया
१, ११, मुर १६, ६० ह ३, ८५, कुमा,
बज्जा १६, रमा) ।

ससक पु [सशाङ्क] १ चन्द्रमा बाँध (बप्प,
मुर १६, ५५ सुपा २८, बप्प, रमा) ।
२ वृष विशेष (पत्रम ५, ४३, ८५, २) ।
धम्म पु [धर्म] विद्यावर वश का एक
राजा (पत्रम ५, ४४) ।

ससक देखो स सक्त = स शक्त ।

ससकिञ्च देखा स सकिञ्च = स शक्ति ।

ससग देखो ससक्त = सशक्त ।

ससवेयण देवो स सवेयण = त्व संवेदन ।

ससम्पन्न वि [ससाक्ष्य] साक्षीबाला (राय
१४०) ।

ससग पु [शशक] देखो सस = शश
(वज) ।

ससग पु [ससन्न] १ शुष्क दण्ड, हाथी
की गूँड़ (सुद २ बीर) । २ काष्ठ पवन ।
३ न. निवास (राज) ।

ससचा देखो स सचा = स सत्वा ।

ससरक्ख वि [सरनरक, सरख] १ रजो-
मुक्त, धूर्तीबाला (बाचा २, १, ६, ३, २,
२, ३, ३३, भाष ४) । २ पु. बीड मत का
गण्ड (मुष्ट १८, ४३, मग) ।

ससराइअ नि [दे] निष्पट, पिशा हृमा (दि
८, २०) ।

रामा श्री [राम] गहन, भगिनी (सिंह ३१७,
हे ३, ३४, कुमा) ।

ससि पु [शशिम्] १ चन्द्रमा, चाँद (सुज
२०—पत्र २६१, उव, कप्प, कुमा, पि
४८५) । २ एक विशाखा का नाम (पत्रम
५, ६४) । ३ चन्द्र नावो, वाम नावो (तिरि
३६१) । ४ एक दव-विमान (देवने १४३) ।

५ छन्द विशेष (पिंग) । ६ एक राजा का नाम
(उप) । ७ दक्षिण रुक्म पर्वत का एक कूट
(ठा ८—पत्र ४३६) । *अव पु [कान्त]
चन्द्रकान्त मणि (मज्जु ५८) । *अला बी
[कला] चन्द्र की कला, सोलहवाँ भाग
(गड) । *कन देखो अत (कुमा, सण) ।

*पभ, *पह पु [प्रम] १ धावें जिनदेव,
अवाम् चन्द्रमा । २ इक्ष्वाकु वंश का एक
राजा (पत्रम ५, ५) । *पहा बी [प्रभा]
एक रानी, कर्णरजरो की माता (पत्रम
६, ६१ कप्प) । *मणि पु [मणि]
चन्द्रबाग मणि (स ६, ६७) । *लेहा बी
[लेखा] चन्द्र की कला (सुपा ६०३) ।

*वक्क न [वक्क] साम्भूषण विशेष
(बीर) । *वेग पु [वेग] एक राजकुमार
(उप १०३१ टी) । *सेहर पु [शेखर]
महादेव, शिव (सुपा ३३) ।

ससिअ न [ससित] थास, ससि (से १२,
३२) ।

ससिण देखो ससि (कप्प) ।

ससिणिद्ध वि [सिरिगध, ससिगध] स्नेह-
द्रुत (आचा २, १, ७, ११, कप्प) ।

ससिन्ध न [ससिन्ध] बाटा बाधि से लिप्त
हाथ या बरतन बाधि का धोवन (पडि) ।

ससिरिय } देखो स सिरिय = स श्रीक ।
ससिरीय }

ससिह देखो स सिह = स श्वर, स शिख ।

ससुर पु [ससुर] ससुर पति भोर पत्नी का
पिता (पत्रम १८, ८ हेरा ३२, कुमा सुपा
३७७) ।

ससुग द्यो स ससुग = स शुक ।

ससेस देखो स सेस = स शेय ।

ससोगा } देखो स सोग = स शोक ।
ससोमिह }

ससस न [शस्य] १ लेख गत धान्य (गा
६८६, महा सुपा ३२) । २ नि. प्रशक्तीय,
रत्नाय (सुपा ३२) । देवो सास = शस्य ।

सरम्पण वि [सभ्रण] सकल, त्रिपुण (सुपा
६४५) ।

सरिसय पु [शस्यिक] कृपोवन, कृपक
(राज) ।

ससिसरिअ देखो स-सिसरिअ = स-श्रीक ।

ससिसरिखी देखो सिसिरिखी (उत्त ३६,
६८) ।

ससिसरीअ देखो स-सिसरीअ = स-श्रीक ।

ससू बी [श्वधू] साध, पति या पत्नी की
माता (प्राङ् ३८, तिरि ३५५) ।

सह धक [राज] शोभना, विराजना । सहइ
(हे ४, १००, पाष, कुमा, सुपा ४) ।

सह धक [सह] सहन करना । सहइ,
सहति (उव महा कुमा), सहइरे, सहइरे
(पि ४५८) बकु. सहत, सहमाण (महा,
पद्) । सक. सहिअ (महा) । हेह. सहिइ,
सोढुं (महा, बाचा १५५, १५७) । क.

सहिअअ, सोढअ (बाचा १५५, मुर
१४, ८०, या १८, बप्प, उप ७२८ टी वाखा
१५७) ।

सह वि [आ + क्षा] हठम करना, आदेश
करना, फरमाना । सहइ (बाचा १५५) ।

सह वि [दे] १ योग्य, लायक (दे ८, १) ।
२ सहाय, मदद-कर्ता (सूत्र १, ३, २, ६) ।

सह वि [शक] देखो स = त्व (आचा) ।
*देस पु [देरा] स्वदेश, स्वकीय देश (पिंग) ।

*समुद्ध वि [समुद्ध] १ निज से ही ज्ञान
को प्राप्त । २ पु. जिन-देव (बीर) ।

सह वि [सह] १ समर्थ, शक्तिमान् (पाम
से ५, २३) । २ सहाय, सहन-कर्ता
(आचा) । ३ पु. गुणलिक मनुष्य की एक
जाति (इक. राज) । ४ म साय, सग (स्वप्न
३४, आचा बी ४३, प्राप् ३८) । ५ गुणवत्,
एक साध (राज) । *कार पु [कार] १

आम का पत्र (कप्प) । २ साय मिलकर काम
करना । ३ नवद साहाय्य (हे १ १७७) ।

*वारि वि [वारि] १ साहाय्य-कर्ता
(पचा ११, १२) । २ कारण विशेष (विधि
११६८, व्याक २०६) । *गठ, *गय वि

[गठ] संयुक्त (परण, २२—पत्र ६३७,
उप) । *गारि, गारिअ देखो *वारि (कर्मसं
३०६, उप ४७२, उवर ७६) । *वर देखो

‘यर (कुमा) । ‘चरण न [‘चरण] सहचर, साथ रहना, भेलाव, ‘रमणविहासेहि भवउ सहचरण’ (ध्रु ८४) । ‘ज पु [‘ज] । स्वभाव (कुमा विग) । २ वि, स्वभाविक (वेदम ४३१) । ‘जाय वि [‘जाव] एक साथ उधन (एगामा १, ५—पत्र १०७) ।

‘देव पु [‘देव] १ एक पाण्डव, भांडी पुत्र (धर्मवि ८१) । २ राजगृह नगर का एक राजा (उप ६४८ टी) । ‘देवा की [‘देवा] शीघ्रवि विशेष (धर्मवि ८१) । ‘देवी की [‘देवी] १ चतुर्थ चक्रवर्ती की माता (मम १५२ महा) । २ एक महौषधि (तो ५) । ‘धम्मआरिणो की [‘धम्मचारिणो] भली, भार्या (प्रति २२) । ‘पंसुसुलिअ वि [‘पांशुक्रुडित] बाल मित्र (सुपा २५४, एगामा १, ५—पत्र १०७) । ‘य देवो [‘देव] (वेदम ४४६ राज) । ‘यर वि [‘यर] १ सहाय, माहात्म्य कर्ता । २ वयस्वत, दोस्त । ३ अनुचर (पात्र, कुप्र २, ३ भण्डु ६०, नाट—शशु ६२) । ‘यरी की [‘यरी] पत्नी, भार्या (कुप्र १५१, मे ८, ६६) । ‘यार देवो [‘यार (याम, हे १, १७७) । ‘याम वि [‘राम] राम-महित (पउम १४, ३३) । ‘य देवो [‘यार (पउम ५३, ७६) ।

सह देवो सहा = वसा (कुमा) । सहउत्थिया की [‘व] इती (वे ८, ६) । सहगुह पु [‘व] घूक, उलूक, पक्ष विशेष (वे ८, १५) ।

सहडामुह न [‘शकटामुख] वैशाख की उत्तर श्रेणि में स्थित एक विद्यावर-नगर (इव) ।

सहण ध [‘दे] सह, साथ में (सूत्र० धृणि० गा० २५७) ।

सहण न [‘सडन] १ विविधा, मर्षण । २ वि, सहिष्णु, सहन करनेवाला (स २६) ।

सहर पुत्रा [‘शफर] मत्स्य, मछली (पात्र, मउड) । को ‘री (हे १, २३६; गउड) ।

सहर वि [‘दे] माहात्म्य-कर्ता, सहाय न वत्स माया न विना न भाया, कावमि वमि (११मी) सहरा भर्ता (वि ४३) ।

सहह वि [‘सपल] फल-युक्त, सार्ध (उप १०३१ टी हे १, २३६, कुमा, खन १६) ।

सहस देखो सहस्स (भा ४४, वि ६२, ६६) । ‘किरण पुं [‘किरण] सूर्य, रवि (सम्मत ७६) । ‘कप पु [‘क्ष] १ इन्द्र (सुपा १३०) । २ रावण का एक योद्धा (पउम ५६, २६) । ३ द्रव्य-विशेष (विग) ।

सहसकार पु [‘सहसाकार] १ विचार किए बिना करना (आना) । २ आकस्मिक क्रिया, अनस्मात् करना (मम २५, ७—पत्र ६१६) । ३ वि, विचार किए बिना करनेवाला (आभा) ।

सहसत्ति ध. धकस्मात्, शीघ्र, जल्दी, तुरन्त (पात्र, प्राड ८१) ।

सहसा म [‘सहसा] भवस्मात्, शीघ्र, जल्दी (पात्र, प्रासू १५१, रवि) । ‘वितासिय म [‘यितासित] धकस्मात् की के नैव स्व-गत प्राप्ति क्रीडा (उत्त १६, ६) ।

सहस्स पुन [‘सहस्स] १ सख्या-विशेष, दस की, १००० । २ वि, हजार की सख्यावाला (सी २७, ठा ३१ टी—पत्र ११६, प्रासू ४, कुमा) । ३ प्रचुर, बहुत (कप, धामम हे २, १६८) । ‘किरण पुं [‘किरण] १ सूर्य, रवि (सुपा १७) । २ एक राजा (पउम १०, ३४) । ‘कप पु [‘क्ष] इन्द्र देवाधिपति (कप उत्त ११, २३) । ‘णयण, ‘नयण पु [‘नयन] १ दृष्ट (उप, हमीर ५, महा) । २ एक विद्याधर राज-युवार (पउम ५, ६७) । ‘पत्त ध [‘पत्र] हजार दन-वाला कमल (कप) । ‘पाग पुन [‘पाक] हजार शीपधि से बनाता एक प्रकार का तेल (एगामा १, १—पत्र १६, ठा ३१ टी—पत्र ११७) । ‘रस्सि पुं [‘रस्मि] सूर्य, रवि (एगामा १, १—पत्र १७ मग, रमण ८३) । ‘लोयण पु [‘लचन] इन्द्र (स ६२२) ।

‘सिर वि [‘शिरस्] १ प्रभुत्व मस्तक-वाला । २ पु विष्णु (हे २ १६८) । ‘पत्त देवो [‘पत्त (सि ६, ३८, गुपा ४६) । ‘सो ध [‘शस्] हजार-हजार घनेक हजार (भा १२) ‘दा ध [‘धा] मह्य प्रकार से (गुपा ५३) । ‘हुता ध [‘हृतस्] हवन-वार (प्राप्र ६ २, १५८) । दखा सहस, सहास ।

सहसंबरण म [‘सहसाप्ररण] एक उगान, आम के प्रभुत्व पेड़ोवाला वन (एगामा, १, ८—पत्र १५२, अत उवा) ।

सहस्सार पु [‘सहस्रार] १ फाँसी देवलोक (सम ३५ मग, अत) । २ छाँव देवलोक का द्वार (अ २, ३—पत्र ८५) । ३ एक ।

देम विमान (वेदम १९४) । ‘यहिसय पुन [‘यवत्सक] एक देव विमान (सम ३५) ।

सहा की [‘सभा] समिति, परिषद (कुमा, स १२६ ५१६ गुपा ३८४) । ‘सय वि [‘सह] सग्य, मदस्य (पात्र, ३ ३८५) ।

सहा देवो सहा = शाखा (गा २३०) ।

सहाअ देवो स-हाअ = स्व भाई ।

सहाअ पु [‘सहाय] साहाय्य-कर्ता (एगामा १, २—पत्र ८८, पात्र, से १, ३; खन १०९ महा मग) ।

सहाइ वि [‘साहायिण] ऊपर देखी (सिति ६७, गुपा ५६३) ।

सहाइया की [‘साहायिका] मदद करनेवाली (उवा) ।

सहार देवो सहनर = सह कार ।

सहाव देवो ॥ हान = स्व-भाव ।

सहास देवो सहस्स (मवि) । ‘हुत्तो ध [‘हृत्स्व] हजार बार (वट्ट) ।

सहामय देवो सहा सय = सभा-सव ।

सहि वि [‘सिर] निन, शीर्ष (पात्र, वर २, ६) । देवो सही ।

सहि देवो सही (कुमा) ।

सहिअ वि [‘सोड] सहन किया हुआ (सि १, ५५; घाता १५५) ।

सहिअ वि [‘सहित] १ द्रुक, समन्वित (उप; कुमा, सुपा ६१) । २ हित-युक्त (सूत्र १, २, २, २३) । ३ पु, ज्वातिलक भद्र-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७७) ।

सहिअ ॥ [‘सहस्र] द्युत-कारक, घुमा खेलेवाला (दे ६, ४२, पात्र मुता ४८८) ।

सहिअ देवो सहअ = स्व हित ।

सहिअ } वि [‘सहदय] १ गुद्वर वित्त-सहिअय } बाणा । २ पारस्वर बुद्धिवाला (हे १, २६६, दे १, १, वप ५२१) ।

सहिआ देखो सही (महा) ।

सहिज्ज वि देखो सहाअ = सहाय, 'हुवि सहिज्जा विहुरे कुवियावि सहोयरा चेव' (सुपा ४२७, महा, कुप १२) । श्री. 'ज्जी (सुपा १६ टि) ।

सहिण देखो सण्ड + सलक्षण (आचा २, ५, १, ७, स २६४, २२६, २३७) ।

सहिण्डु [वि [सहिण्डु] सहन करने की सहिर] प्रायतवाला (राज, पि ५६६) । श्री. 'री (गा ४७, पि ५६६) ।

सही श्री [सरी] सहेही, सगिनी (स्वप्न १४१, कुमा) ।

सही देखो सहि । 'वाय पु [वाइ] मिमता-सूचक वचन (सुप १, ६, २७) ।

सहीण वि [स्याधीन] स्वायत्त, स्व-वश (पठम २७, १७, उप, दस ८, ६) ।

सहु वि [सह] समर्थ, शक्तिमान् (शोध, ७७, शोधमा ६८, पवर १४२, वव ४) ।

सहु (भप) देखो संघ (सलि ३६) ।

सहुँ (भप) स [सह] साथ, सग (हे ४, ४१६, कुमा) ।

सहेज्ज देखो सहिज्ज (महा) ।

सहेर (भप) पु [शेरर] पट्टपर छन्ध का एक भेद (पिंग) ।

सहेल वि [सहेल] हेला गुप्त, भगव्यास होनेवाला, सरल, गुजरती में 'सहेल' (प्रवि ११) ।

सहोअर वि [सहोअर] १ तुल्य, सदृश (वे ६, ४) । २ पु. सगा भाई (पाम, बाल) ।

सहोअरी श्री [सहोअरी] समी बहिन (राज) ।

सहोड वि [सहोड] घोरी के गाल से गुप्त, सन्नीप (पिड ३८०, छाया १, २—पत्र ८६) ।

सहोदर देखो सहोअर (सुपा २४०, महा) ।

सहोसिअ वि [सहोसित] एक-स्थान-वासी (दे १, १४६) ।

साअहट सन् [हप] १ चाप करना, हुरि करना । २ कीचना । सामहट (ह ४, १८७, पट्ट) ।

साअहिदुअ वि [हप] सोचा हुआ (कुमा ७, ३१) ।

साअद् (श्री) देखो सागद् (प्रवि १०२; नाट—मुच्च ४, पि १८५) ।

साइ वि [शायिन्] सोनेवाला, रमन-नर्ता (सुप १, ४, १, २८, आचा, दस ४, २६) ।

साइ वि [साहि] १ आदि सहित, उत्पत्ति-युक्त (सम ६१) । २ न सत्त्वान विशेष, शरीर की आहूति विशेष जिस शरीर में नामि से नीचे के अवयव पूर्ण और नामि के ऊपर के अवयव होन हो ऐसी शरीराकृति (सम १४६, प्राणु) । ३ कर्म-विशेष, साहि-सत्त्वान की प्राप्ति का कारण मूल कर्म (कम्म १, ४०) ।

साइ न [साचि] १ सेमल का पेड़, शारमली कुप । २ सत्त्वान विशेष, देखो साइ—सादि का दूसरा और तीसरा अर्थ (बीज १ टी—पत्र ४३) ।

साइ पुखी [स्वावि] १ नम्रव विशेष (सम २६, कम्म), 'सा साई त व जल पतविसेतेण पतर गवय' (प्राग् ३६) । २ पु. भारतवर्ष में होनेवाले एक जिनदेव का पूर्वजन्मोय नाम (सम १५४) । ३ एक वैद युनि (एवि ४६) । ४ हेमवत-वर्ष के शम्भुवासी पर्वत का अष्टिष्ठाक देव (ठा २, ३—पत्र ६६, ८०) ।

साइ पुं [सादिम्] भृक्षवार (उप ७२८ टी) ।

साइ पुखी [साति] १ अन्धकी बीज के साथ खराब चीज का मिश्रण, उत्तम वस्तु के साथ होन वस्तु की मिलावट (सुप २, २, ६५) । २ अवियम्भ, अविरास । ३ असत्य वचन, झूठ (पट्ट १, २—पत्र २६) । ४ साविशय द्रव्य, अपेक्षा कृत अन्धकी बीज (राज ११४) । 'जोग पु [योग] १ मोहनीय वर्म (सग ७२) । २ अन्धकी बीज से होन चीज की मिलावट (राज ११४ टी) । 'सपयोग पु [सप्रयोग] यही अर्थ (राज ११४) ।

साइ पुंशो [दे] केगर, 'तालवले सारिठिठा अन्धनद बिह सहाइपयोहि' (दे ८, २२) ।

साइज सरु [स्वाद, सारमी + कृ] १ स्वाद लेना, खाना । २ चाहना, अभिलाष करना । ३ स्वीकार करना ग्रहण करना । ४ आसक्ति करना । ५ अनुमोदन करना । ६ उपभोग करना । साइजइ, साइजामो (आचा, कस कप—टी, भग १५—पत्र ६८०, शोध), साइजज्ज (आचा २, १, ३, २) । भवि, साइजिस्सामि (आचा) । हेक, साइजिस्सग (शोध) ।

साइज्ज न [स्वादन] प्रमिथज्ज, आसक्ति (विसे २६८५) ।

साइज्जया श्री [स्वादान] उपभोग, सेवा (ठा ३, ३ टी—पत्र १४७) ।

साइज्जिअ वि [दे] प्रसन्नचित्त (दे ८, २६) ।

साइज्जिअ वि [स्वादित] १ उग्रभुक्त (कम्म—टी) । २ उग्रभुक्त सम्बन्धी । श्री, 'या (कम्म) ।

साइम वि [स्वादिम] पान, सुपारी आदि सुपवास (ठा ४, २—पत्र २१६, आचा, उवा, शोध, सम २६) ।

साइय वि [सादिक] आदिवाला (कम्म १, ६, नव ३६) ।

साइय देखो सागय = स्वागत (सुर ११, २१७) ।

साइय न [दे] सत्कार (दे ८, २५) ।

साइयनार वि [दे] स-प्रत्यय, विशद्वत (पिडमा ४२) ।

साइरेग वि [सातिरेक] साधिक, सविशेष (सम २, भग) ।

साइसय वि [साविशय] प्रतिपद्यवता (महा, सुपा ३६७) ।

साई देखो सई = शची (इक) ।

साउ वि [स्वादु] स्वादवाला, मधुर (पिड १२८ उप ६७, से २, १८; कुमा, हे १, ५) ।

साउग वि [स्वादुक] स्वादिष्ट भोजनवाला, मधुर भोजनवाला, 'कुवादि जेपावइ साउगार' (सुप १, ७, २३) ।

साउज्ज न [साउज्ज] सहयोग, साहाय्य (अन्तु ६५) ।

साउणिज वि [शाकुनिक] १ पक्षि-पातक, पक्षियों के बच का काम करनेवाला (पण्ह १, १—पन २६, अणु १२६ टि. विपा १, ८—पन ८३)। २ शकुन-शास्त्र का ज्ञानवार (मुपा २६७, कुत्र ५)। ३ खेन पक्षी द्वारा शिकार करनेवाला (अणु १२६ टि)।

साउय देवो साउग (राज)।

साउय वि [सायुय] प्राडुवाता, प्राणी (ठा २, १—पन ३८)।

साउल वि [संकुल] व्याघ्र, भरपूर (सुर १८, १८)।

साउलय वि [साकुलत] साकुलता बुक, व्याकुल, व्यय, 'हविमसुहसाउलसो परिहिहई श्रोवि समारो' (पउम १०२, १६७)।

साउली की [दे] १ वहाजन (गा २६६)। २ वज्र, वज्र (गा ६०५)। देवो साहुली।

साउलु वु [दे] धनुष, प्रेम (हि ८, २५, वइ)।

साएज देवो साइज। साएज (अवि ११, २)।

साएय न [साकेत] अयोध्या नगरी (इक, मुपा ५५०, पि ६३)। 'पुर न [पुर] वही अर्थ (उप ७२८ टी)। 'पुरी की [पुरी] वही (पउम ५, ५)। देवो साएय।

साएया की [सापेता] अयोध्या नगरी (पउम २०, १०, एया १, ८—पन १३१)। सातवण न [सातपन] व्रत-विशेष (प्रबो ७३)।

साउ देवो साग (६९, १३०)।

साकेय ॥ [साकेत] १ नगर-विशेष, अयोध्या (हो ११)। २ वि. मृहस्प-संनयो। ३ न. प्रत्याख्यान विशेष (पव ५)।

साकेय वि [साहेत] १ संवत् का, संवत् सवन्तो। २ न. प्रत्याख्यान का एक जेद (पव ५)।

साग वु [शाक] १ वृक्ष-विशेष (पउम ४२, ७, दे १, २७)। २ सक्-सिद्ध बड़ा प्राणि, उद; 'सागो सो उक्कसिद्धं ज' (पव २५६)। ३ शाक, तरकारी (पि २-२, ३६५)।

सागडिअ वि [शाकटिक] गादीवान, गादी चला कर निवह करनेवाला (सुर १२६, २२३, स २६२, उत ५, १५, था १२)। सागय न [स्वागत] १ शोभन आगमन, अशस्त आगमन (अग)। २ अतिथि सत्कार, आदर बहुमान (मुपा २५६)। ३ कुशल (कुमा)।

सागर वु [सागर] १ समुद्र (पण्ह १, ३—पन ४४, प्राप् १३४)। २ एक राज-पुत्र (उप ६३७)। ३ राजा अथकवृत्ति का एक पुत्र (अत ३)। ४ एक वल्लि-व्यापारी (उप ६४८ टी)। ५ सातवें बन्देव तथा नायदेव के पूर्व बन्दे के पूर्व पुत्र (सम १५३)। ६ पुन. कूट-विशेष (इक)। ७ समय-परिमाण-विशेष, दस-कोटाकोटि-श्लोको-परिमित काल (नव, ६, जो ३६, पव २०५)। ८ एक देव विमान (सम २)। 'कंन पुन [कागत] एक देव विमान (सम २)। 'वंद पु [चन्द्र] १ एक जैन भाषा (काल)। २ एक व्यक्तित्वक नाम (उप, पदि, दस)। 'चित्र पुन [चित्र] कूट-विशेष (इक)। 'दत्त वु [दत्त] १ एक जैन मुनि (सम १५३)। २ तीसरे बलदेव का पूर्ववन्धीय नाम (सम १५३)। ३ एक श्रेष्ठ-पुत्र (महा)। ४ एक सार्ववाह का नाम (विपा १, ७)। ५ हरिपेण चक्रवर्ती का एक पुत्र (महा ४४)। 'दत्ता की [दत्ता] १ अणवात् धर्मतापनी की दीक्षा शिविका (सम १५१)। २ अणवात् विमलनाथनी की दीक्षा-शिविका (विचार १२६)। 'देव वु [देव] १ हरिपेण चक्रवर्ती का एक पुत्र (महा)। 'वूह वु [वूह] सैन्य की रचना विशेष (महा)। देवो सायर = सागर।

सागरिय देवो सागरिय (पिउ ५६८, पन ११२)।

सागरोवम वुन [सागरोपम] समय-परिमाण विशेष, दस-कोटाकोटि-श्लोको-परिमित काल (ठा २, ४—पव ६०, सम २, ८, ६, १०, ११, उद, पि ४४८)।

सागर वि [सागर] १ सागर-महि, ब्राह्मविवाला। २ विशेषारा को ग्रहण करने की शक्ति विशेष ग्रहण, ज्ञान (ओप, अग,

१०—पत्र ४६५) । *मार पु [कार] १
सय । २ सय-नरण (ठा १०—पत्र
४६५) । *तण वि [तन] सण्या ममय
ना (विह १६) ।

सायंदूर न [दि] नगर विशेष (दि = ५१ टी) ।
सायंदूला श्री [दि] केतकी, नेवडे का गाछ
(दि = २५) ।

सायकुभ न [शातकुभ] १ सुवर्ण, सोना ।
२ वि. सुवर्ण का बना हुआ (मुपा २०१) ।
सायग पु [सायक] बाण, तीर (मुपा
६५१) ।

सायग वि [सायक] स्वाद लेनेवाला (दस
४, २६) ।

सायगा श्री [शातना] खण्डन, छेदन
(सम ५८) ।

सायणी श्री [शायनी, स्वापनी]—मनुष्य
की दस दशमो में दसवीं—६० से १००
वर्ष की उम्रवाली—बरा (सदु १६) ।

सायत्त वि [सायत्त] स्वाधीन, स्वतन्त्र
(स २७६) ।

सायय देखो सायग (पात्र, स ५४८) ।

सायर पु [सागर] १ समुद्र (मुपा ५६,
८८, जी ४४, गड्ड, प्राप् ८७ १४४,
प्राप्, हे २, १८२) । २ ऐरवत्त वर्ष में
होनेवाले चौथे तिग देव (पक् ७) । ३ मृग-
विशेष । ४ सख्या-विशेष (प्राप्) । ५ एक
सेठ का नाम (मुपा २८०) । *मोस पु
[मोष] एक जैन मुनि जो भाठवें वनदेव
के पूर्वजन्म में हुए थे (पत्रम २०, १६३) ।
*भह पु [भट] क्वाडुवश का एक राजा
(पत्रम ४, ५) । देखो सागर = सागर ।

सायर वि [सादर] भादरयुक्त (गड्ड, सुद
२, २४५) ।

सायर देगो सागार = सागर (सम्म ६४,
पत्रम ६, ११८) ।

सार सक [प्र + ह] प्रहार करना । सारद
(हे ४, ८४) । बह. सारन (कुमा) ।

सार सक [सारय,] गाद दिनाल । सारे
(वय १) ।

सार सक [सारय,] १ ठीक करना, सुल्ल
करना । २ प्रत्यय करना, प्रसिद्ध करना ।

३ प्रेरणा करना । ४ उल्लन करना, उल्लट
बनाना । ५ सिद्ध करना । ६ धन्येय
करना खोजना । ७ सरफाना, खिसकाना,
एक स्थान में अन्य स्थान में ले जाना ।
सारद (मुपा १५४), सारति, सारयक (सूत्र
१, २, ३, २६, २, ६, ४) 'सारेहि वीण'
(स ३०६), सारेह (सूत्र १, ३, ३, ६) ।
कर्म. 'हसण सरेहि सिरि सारिज्जइ बह'
सराण हरेहि (मा ६५३, काप् ८६२) ।
बहक सारिज्जत (मुपा ५७) ।

सार सक [स्वरय,] १ बुलवाना । २
उच्चारण योग्य करना । सारति (विने
४६२) ।

सार वि [शार] १ शबल, चित्तबल (पात्र,
गड्ड १७८, ५३०) । २ पु. सार, पासा
खेले के लिए बाल आदि का चौपटल
रगविरगा सभा (मुपा १५४) ।

सार पुन [सार] १ बन, वीरल (पात्र, से
२, १, २६, मुपा २६७) । २ व्याय, व्याय-
युक्त, 'पय पु माणिलो सार जंन हिंस
किचल' (सूत्र १, १, ४, १०) । ३ बल,
पराक्रम (पात्र से ३, २७) । ४ परमाय
(भाचानि २१६) । ५ प्रवर्ष (भाचानि
२४०) । ६ फल (भाचानि २४१) । ७
परिणाम (ठा ४, ४ टी—पत्र २८१) ।
= रस, निबोध (पप्) । ६ एक देव विमान
(वेवेद १४३) । १० स्थिर ब्रह्म (से ३,
२७ गड्ड) । ११ दू. वृत्त विशेष (पण्ण
१—पत्र ३२) । १२ छंद विशेष (पिंग) ।
१३ वि श्रेष्ठ, उत्तम 'बह बदा ताण
मुण्ण साय वट्ट दमा (वम्मो ६, से २,
२६) । *कता श्री [कान्ता] पट्ट धाम
की एक भूर्विना (ठा ७—पत्र ३६३) । *य
वि [द] सार देवता (से ६, ४०) ।
*बह जी [वती] छंद विशेष (पिंग) ।
*वत वि [वन्] सारयुक्त (ठा ७—पत्र
३६४, गड्ड) । *वती देखो *वट्ट (पिंग) ।

सारइय वि [सारदिक] शब्द श्रुत का
(वत १०, २८, पण्ण १७—पत्र ३२६,
वी ५, उमा) ।

सारग वि [साङ्ग] १ साथ का बना हुआ ।
२ न. धनुष । ३ भाद्र'न, भादो (हे २,

१००, प्राप्) । ४ विष्णु का धनुष (हे २
१००; मुपा ३४८) । *पाणि पु [पाणि]
विष्णु (प्राप् २७) ।

सारंग पु [सारंग] १ सिद्ध, सुमेध (सुर १,
११, मुपा ३४८) । २ बातक पत्ती (पात्र,
से ६ ८२) । ३ हरिण, मृग (से ६, ८२,
पप्) । ४ हानी । ५ धमर । ६ छत्र । ७
राजहंस । ८ चित्र मृग, चित्तबल हरिण ।
६ वाद्य विशेष । १० शबल । ११ मयूर ।
१२ धनुष । १३ बैरा । १४ धामरण,
धतकार । १५ वज्र । १६ पत्र, कमल ।
१७ चन्दन । १८ वृक्ष । १९ वृत्त । २०
कोयल । २१ मेघ (मुपा ३४८) । *रूपक,
*रूपक (पप) पुन [रूपक] छन्द विशेष
(पिंग) ।

सारंग न [साराङ्ग] प्रधान बल, श्रेष्ठ धन्यव
(पण्ण २, ५—पत्र १५०, मुपा ३४८) ।

सारगि पु [शाङ्गिन्] विष्णु, श्रीहृण
(कुमा) ।

सारगिका श्री [सारङ्गिना] धन्य विशेष
सारगिक (पिंग) ।

सारगी श्री [सारङ्गी] १ हरिणी (पात्र) ।
२ वाद्य विशेष (मुपा १३२) ।

सारभ देखो सरभ (ठा ७—पत्र ४०) ।

सारङ्गलाण पु [सारङ्गलाण] बलवाकार
बलविशेष विशेष (पण्ण १—पत्र ३६) ।
देखो सालङ्गलाण ।

सारस्व सक [स + रश्] परिपालन
करना, अच्छी तरह रण्य करना । सारस्वद
(सुदु १३) । बह. सारस्वत, सारस्वताग
(पि ७ उमा) ।

सारस्वय न [सरक्षय] सम्भू रण्य,
शाल (पण्ण १, २—पत्र ६०, सूत्र १,
११, १८ मीप) ।

सारस्वयणा श्री [सरक्षणा] ऊपर देखो
(पि ७६) ।

सारकिस वि [सरक्षिन्] सरदाय-कता -
(पि ७६) ।

सारकिसअ वि [सरक्षित] जिसका सरदाय
दिया गया हो वह (पण्ण २, ४—पत्र
१३०) ।

सामझ देखो सामाझ (वित्ति २६२४; २६३३, २६३४; २६३६)।

सामझ } पुं [सामयिक] १ एक गृहस्थ
सामझ } का नाम (सूत्रनि १६१)। २
वि. समय-सम्बन्धी (पंच ५, १६६)। ३
विद्वान्त का जलवार (विद्वान् ६)। ४
प्राप्य प्राप्त, विद्वान्त-प्राप्य (ठा ३,
३—पत्र १५१)। ५ बौद्ध विद्वान् (वसनि
४, ३५)।

सामझ देखो सामाझ (वित्ति २७१६)।

सामझि वि [सामायिनि] सामायि-
शाला (वित्ति २७१६)।

सामंत पुन [सामन्त] १ निज, समीप, पास,
'तस्त ए भूतस्वामते' (आमा १, २—पत्र
७८, उवा, वण्य)। २ पुं अथील राजा
(महा, बाल)। ३ अपने देश के अन्तर् देश
का राजा, समीप देश का राजा (वण्य)।

सामंती स्त्री [दे] सम-भूमि (दि ८, २३)।

सामंतोऽग्निराइय न [सामन्तोपनिपातिक]
मनिय का एक भेद (राय ५५)।

सामंतोऽग्निनाइया } स्त्री [सामन्तोपनिपा-
सामंतोऽग्निनाइया } तिनी] क्रिया विशेष,
बारो तरफ से दृष्टि हुए जन-समुदाय में
होनेवाली क्रिया—बर्मे वण्य का बारण (ठा
२, १—पत्र ४०, नव १८)।

सामंतोऽग्निनाइय पुन [सामन्तोपनिपातिक]
मनिय-विशेष (ठा ४, ४—पत्र २८५)।

सामन्त देखो समन्त, संप्रिय विय वयण,
'ज स वण्णरएणमितसामवत्तं। मणियं मंसिवाते'
(पठम १०, ८४)।

सामय देखो सामय = रणमात्र (राज)।

सामग सक् [सिठ्ठ] भाविज्ञान करना।
रामगर (दि ४, १६०)।

सामग्य } न [सामय] सामयो, सक्-
सामग्या } णंता, सक्ताता (दि ६, ४७,
आवा २, १, १, ६, महा)।

सामग्या वि [सिठ्ठ] भाविज्ञान (पुमा)।

सामग्या वि [दि] १ वनित। २ भव-
सन्विष्ट। ३ पावन, रतित (दि ८, ५२)।

सामग्या स्त्री [सामग्री] १ समन्ता। २
कारण-समूह (सम्मत २२४; महा; वण्य,
रंभा)।

सामच्छ सक [दि] मन्त्रणा करना, वर्ण-
लोचन करना। संछ, सामच्छऊण (पठम
४२, ३५)।

सामच्छ न [सामर्थ्य] समर्थता, शक्ति (दि
२, २२, पुमा)।

सामच्छण देखो सामत्यण (राज)।

सामचज न [साम्राज्य] सार्वभौम राज्य,
बड़ा राज्य (उप ३५७ ठी)।

सामण } वि [आमण, 'जिक] अमण-
सामणिय } संबन्धी (राज)।

सामणिय देखो सामण्य = आमण्य (सूय १,
७, २३; दम ७, ५६)।

सामणेर पुं [आमणि] अमण का अमण,
साधु की सत्ता (सूय १, ४, २, १३)।

सामण्य न [आमण्य] अमणता, साधुपन
(अम, दम २, १, महा)।

सामण्य पुं [सामान्य] १ अणुपथी देवी
का एक दृष्टि (ठा २, ३—पत्र ८५)। २ न.
वैशेषिक दर्शन में प्रसिद्ध सत्ता पदार्थ (धर्म
२५६)। ३ वि. साधारण (भा ८६१,
६६६, नाट—रत्ना ८१)।

सामत्य देखो सामच्छ (व)। सक्, सामत्ये-
ऊण (बाल)।

सामत्य देखो सामच्छ = सामर्थ्य (दि २,
२२, पुमा; ठा ३, १—पत्र १०६, पुमा
२८२, प्राप् १४४)।

सामत्य } न [दि] पर्यालोचन, मन्त्रणा-
सानत्यण } न्याय हयमोति अत्र दम

इति सामर्थ्यं वरंति सुक्क' (पण्ह १, ३—
पत्र ४६ विड १२१, बृह १)।

सामत्त देखो सामण्य = आमण्य (अम, वण्य,
मुर १, १)।

सामत्त देखो सामण्य = सामय (उप, ठ
३२५ धर्मवि २६, वण्य १, १०, ३१)।

सामय सक् [प्रति + दक्ष] प्रतीक्षा करना,
बाट जोड़ना (दि ४, १६३, वट्)।

सामय पुं [द्रव्यावाक] वात्य-विशेष, सारा (दि
१, ७१, पुमा)।

१०—पत्र ४६५) । "नार पु [कार] १
सत्य । २ सत्य-मरण (छा १०—पत्र
४६५) । "तण वि [तन] सन्ध्या-ममय
का (विक्र १६) ।

सायंदूर न [दे] नगर-विशेष (दे ३१ टी) ।
सायंदूला धी [दे] बेलवी, बेवडे का गाछ
(दे ८, २५) ।

सायंकुंभ न [शातकुम्भ] १ सुवर्ण, सोना ।
२ वि. सुवर्ण का बना हुआ (मुवा २०१) ।

सायग पु [सायक] बाण, तीर (मुवा
६५१) ।

सायग वि [रयादक] स्वाद लेनेवाला (सम
४, २६) ।

सायणा क्षी [शातना] खरबन, छेदन
(सम ५०) ।

सायणी क्षी [शायनी, स्थापनी]—अनुप
की दस दशासो में दसवीं—६० से १००
वर्ष की सत्रवाली—दशा (सुद १६) ।

सायत्त वि [रयायत्त] स्वाधीन, स्वतन्त्र
(स २७६) ।

सायय देखो सायग (पात्र, स ५४८) ।

सायर पु [सागर] १ समुद्र (मुवा ५६,
८८, जी ४४, गड्ड, प्रासू ८७, १४४,
प्राप्र. हे २, १८२) । २ चरखत वर्ष में
होनेवाले चौथे जिन देव (पव ७) । ३ मृग-
विशेष । ४ छत्वा विशेष (प्राप्र) । ५ एक
छेद का नाम (मुवा २८०) । ६ घोम पु
[घोप] एक जैन मुनि जो आठवें जन्मदेव
के पूर्वजन्म में युव से (पव २०, १६३) ।
"भङ्ग पु [भङ्ग] इक्ष्वाकुवंश का एक राजा
(पव ५, ४) । देखो सागर = सागर ।

सायर वि [सादर] भादर-युक्त (गड्ड, नुर
२, २४५) ।

सायार देखो सागार = सागर (सम ६४;
पव ६, ११८) ।

सार स [प्र + ह] प्रहार करना । सारद
(हे ४, ८५) । सड, सारन (कुमा) ।

सार स [सारय] माद दिवाना । सारे
(पव १) ।

सार स [सारय] १ ठीक करना, दुकल
करना । २ प्रत्यात करना, प्रसिद्ध करना ।

३ प्रेरणा करना । ४ उन्नत करना, उछल
बनाना । ५ मिट करना । ६ प्रत्येक
करना, सोजना । ७ सरनाका, खिलकाना,
एक स्थान से अन्य स्थान में ले जाना ।
सारद (मुवा १५४), सारनि, सारयद (सूत्र
१, २, २, २६, २, ६, ४), 'सारहि वीण'
(स ३०६), सारह (सूत्र १, ३, ३, ६) ।
कर्म, 'साय सारेहि सिरि सारिज्जइ अह
सराण हरेहि' (गा ६५३, काप्र ८६२) ।
कचक-सारिज्जत (मुवा ५७) ।

सार स [सारय] १ कुचवाना । २
उच्चारण योग्य करना । सारति (विने
४६८) ।

सार वि [शार] १ शवल, चितकबरा (पात्र,
गड्ड १७८, ५३०) । २ पु. सार, पास,
खेलने के लिए बाठ यादि का चौपड़
रगबिगमा साचा (मुवा १५४) ।

सार पुन [सार] १ धन, शीतल (पात्र. से
२, १, २६, मुद्रा २६७) । २ न्याय, न्याय-
युक्त, 'एय छु नाणियो सार जे न हिचइ
विचल' (सूत्र १, १, ४, १०) । ३ वन,
पराक्रम (पात्र. से ३, २७) । ४ परमाय
(भाषानि २३६) । ५ प्रदप (भाषानि
२४०) । ६ फल (भाषानि २४१) । ७
परिणाम (छा ४, ४ टी—पत्र २८३) ।
८ रक्त, निबोध (बप्पू) । ९ एक देव विनाय
(देवद १४३) । १० स्थिर भरा (से ३,
२७, गड्ड) । ११ दू. वन विशेष (पण
१—पत्र ३४) । १२ छन्द विशेष (विम) ।
१३ वि. श्रेष्ठ, उत्तम, 'वह थवो वाराण
गुणाए साय तहह दया' (बम्मी ६, से २,
२६) । 'कता क्षी [कता] पड्ड साय
को एक मुहूर्ता (छा ७—पत्र २६३) । 'य
वि [दे] सार देनवाना (से ६, ४०) ।
'वडे क्षी [वडी] छन्द विशेष (विम) ।
'वत वि [वन्] सारयुक्त (छा ७—पत्र
३६४, गड्ड) । 'वती वती 'वर्ड (विम) ।

सारय वि [सादिक्] सारद खुनु का
(उत्त १०, २८, पण १७—पत्र ५२६,
वी ५, उवा) ।

सारग वि [शार्द] १ सांग का बना हुआ ।
२ न. घुनुप । ३ भादक, भादि (हे २,

१००, प्राप्र) । ४ विष्णु का घुनुप (हे २
१००; मुवा ३४८) । 'पाणि पु [पाणि]
विष्णु (प्राप्र २७) ।

सारंग पु [सारंग] १ सिह, मुनेत्र (सुद १,
१, मुवा ३४८) । २ चातक पक्षी (पात्र,
से ६, ८२) । ३ हरिण, मृग (से ६, ८२,
बप्पू) । ४ हाथी । ५ भ्रमर । ६ घन । ७
राजहंस । ८ बिन मृग, चितकबरा हरिण ।
९ वाद्य-विशेष । १० शूल । ११ मयूर ।
१२ घुनुप । १३ देवा । १४ आभरण,
भलकार । १५ वज्र । १६ पय, कमल ।
१७ चन्दन । १८ कपूर । १९ जूत । २०
कोयल । २१ मेघ (मुवा ३४८) । 'रूपक,
'रूपक (अन) पुन [रूपक] छन्द विशेष
(विम) ।

सारग न [सारग] प्रथम दल, श्रेष्ठ ब्रह्मदल
(पण २, ५—पत्र १५०, मुवा ३४८) ।

सारंगि पु [शार्दंग] विष्णु, श्रीकृष्ण
(मुवा) ।

सारंगि न [सारंगि] छन्द विशेष
सारंगि (विम) ।

सारंगि न [सारंगि] १ हरिण (पात्र) ।
२ वाद्य विशेष (मुवा १३२) ।

सारंभ देखो सरंभ (छा ७—पत्र ४०३) ।
सारकलांग पु [सारकलांग] बलमाकार
बनसति विशेष (पण १—पत्र ३६) ।
देखो साठकलांग ।

सारकल स [स + रक] परिगतन
करना, श्रद्धा वह रखना । सारकल
(सुद १३) । वड, सारकलन, सारकलमाग
(पि ७, उवा) ।

सारकलन न [सारकल] सम्मू रखण,
रक्षण (छा १, २—पत्र ६०, सूत्र १,
११, १८, पीपे) ।

सारकलनया क्षी [सारकल] ठगर देखो
(पि ७६) ।

सारस्त्रि वि [संरक्षिन्] संरक्षण-कर्ता -
(पि ७६) ।

सारस्त्रिअ वि [संरक्षिन्] विवश वराण
दिया गया हो वह (पण २, ४—पत्र
१३०) ।

सारक्षेत्रु वि [सरक्षित] संरक्षण-कर्ता
(ठा ७—पृ ३६६)।

सारग देखो सारय = स्मारक (भाषा,
श्रोग)।

सारज न [स्वाराज्य] स्वयं का राज्य (विते
१८६३)।

सारण पु [सारण] १ एक याव-कुमार
(मत ३, कुप्र १०१)। २ राक्षसाधीन एक
सामन्त राजा (पञ्च ८, ११३)। ३ राक्षस
का मन्त्री (सि १२, ६४)। ४ राक्षस का
एक समूह (सि १४, १३)। ५ न ले जाना,
प्रापण (शोध ४४८)।

सारण न [स्मारण] १ याद कराना (शोध
४४८)। २ वि. याद दिलावेना। जी.
'गिया,' 'णी' (ठा १०—पृ ४७३)।

सारणा न [स्मारणा] १ याद दिखाना (सुर
१५, २४८ बिचार २३८, काल)।

सारणि १ जी [सारणि, 'णी'] १ भालवाल,
सारणी १ नीक, कियारी (सण २६, कुप्र
५८)। २ परपरा (सम्मत ७७)।

सारथ्य न [सारथ्य] सारविपन (छाया
१, १६, पञ्च २४, ३८)।

सारदा देखो सारया (रमा)।

सारद्वि देखो सारद्वय (अभि ६६)।

सारमिथ वि [दे] स्मारित, याद कराना
हुमा (दे ८, २४)।

सारमेय पु [सारमेय] दान, द्रुता (उप
७६८ टी कुप्र १६६, सम्मत १८६, आयु
१५८)।

सारमेई जी [सारमेयी] कुत्ती, शुनी (सुर
१४, १५५)।

सारय वि [सारद] सारद मनु ना (सम
१५३, परह १, ४—पृ ६८, विते १४६६,
अभि १३, वप, धीग)।

सारय वि [सारक] १ श्रेष्ठ कलेनाला (सि
३, ४८)। २ साधक, मिष्ट बन्धेनाला (वप,
न ६, ४०)।

सारय वि [स्मारक] १ याद कलेनाला। २
याद दिखानेनाला (भा. भाषा १, ४, ४, १,
वप)।

सारय वि [स्मारत] भावस्त, खूब सोन
(भाषा १, ४, ४, १)।

सारय देखो सार-य।

सारया जी [शारदा] सरस्वती देवी (सम्मत
१४०)।

सारय देखो सार = सारय। भवि. सारविस्व
(व १)।

सारय सक [समा + रच्] साक करना,
ठीक ठाक करना, दुस्त करना। सारयइ
(हे ४, ६५), 'सारयह सयलसरणीमो' (सुर
१५, ८२)। बह. सारयैत (गङ्ग)। कबह.
सारविज्जत (सण)।

सारय सक [समा + रम्] शुरूवात करना,
प्रारम्भ करना। सारयइ (व २)।

सारयण न [समारचन] समार्जन, साक
करना (शोध ७३)।

सारयिज वि [समारचित] दुस्त किया
हुमा, साक किया हुमा (दे ८, ४६, कुमा,
शोधमा ८)।

सारस पु [सारस] १ पक्षि विशेष (कप,
मीक, स्वज ७८, कुमा, सण)। २ छन्द-
विशेष (पिग)।

सारसी जी [सारसी] १ पड़स शम को एक
बूझना (ठा ७—पृ ३६३)। मया सारस-
पक्षी। २ छन्द विशेष (पिग)।

सारसय पु [सारस्यन] १ सौत्रान्तिक देखो
की एक जाति (छाया १, ८—पृ १५३,
वि १५३)।

सारह न [सारध] मधु चन्द (पाप्र. दे ८,
२७)।

सारहि पु [सारधि] रथ हाँकनेवाला (सम
१, पाप्र, महा)।

सारहि पु [सारधि] रथ हाँकनेवाला (सम
१, पाप्र, महा)।

सारय थक [साराय] सार-रूप होना।
थक. सारायत (उप ७२८ टी)।

सारय सव [साराय] विपश्चिन्ता, बगवाना,
सोल बनाना। सव. सारविज्जत सारत
मोरपत्त तय वय' (परमि ५)।

सारि जी [शारि] १ पक्षि विशेष, मैना (पा
३५२)। २ पाला येतने ना रंग विरंगा

साँचा (पा १३८)। ३ युद्ध के लिए ज-
पर्याय (दे ७, ६१; भवि)।

सारि देखो सारी (दे) (पाप्र)।

सारिज वि [सारिक] सारवाता, 'प्रारोग-
सारिज मायुसतण सवसारिओ वम्मो' (था
१८)।

सारिज वि [सारित] विपकाया हुमा, सोल
किया हुमा ततो कुमोए निक्खिक्कण तोए
सम्म शुह वूरिक्कण उवरि वक्काए सारियाए'
(सम्मत २२६)।

सारिजा } जी [सारिजा] मैना, पक्षि-
सारिइजा } विशेष (पा ५८६, पाप्र, दे ८,
२४)।

सारिस्स न [सादश्य] समानता, सरीखाई
(हे २, १७, कुमा, परम ४२५, सपु १८०,
विते ४६६)।

सारिस्स } वि [सादश्य] समान, मरीणा,
सारिस्स } 'सारिस्स' सारिस्स विपलमा तह भेदे
किमिद्ध सारिस्स' (परम ४२५, सपु १७६,
पाप्र, हे १, ४४, कुमा पा ३०, ६४)।

सारिस्स देखो सारिस्स = सादश्य (हे २,
१७, सुर १२, १२२)।

सारिस्सिजा जी [दे] हूर्वा, हूव (दे ८,
२७)।

सारिस्स देखो सार = सारय।

सारिस्स देखो सारिस्स = सादश्य (सति २,
वक्का ११४)।

सारिस्स } न [सादश्य] समानता, सरीखाई
सारिस्स } (राज, नाट—रत्ना ७६)।

सारी जी [दे] वृत्ती, श्रवण वा मात्रा (दे ८,
२२, ६१)। २ मृत्तिका, मिट्टी (दे ८,
२२ टी)।

सारी जी [शारी] देखो सारि = शारि
'शजिनमो व'चणपुडासारीहि . हल्ली' (कुप्र
१२०)।

सारीर वि [शारीर] शरीरवा, शरीर-संज्ञो
(उप, सुर ४, ७५)।

सारयिज वि [शारीरिज] ऊपर देखो (सुर
१२, १०, सण)।

सारयिज } पु [सारयिज, 'क'] शैत साधु
सारयिज } न गगन देय को पारय बर-
वाला रमोदरूप-यन्त्रित क्षो-रहित गुरुय,

साधु प्रौर गृहस्थ के बीच की अवस्थावाला जैन पुरुष (संवेध ३१, ५४, बृह १; जव ४) ।

सार्वविज्ञ न [सारूप्य] समान रूपता (सूत्र २, ३, २, २१) ।

सारैन्द्र देखो सारिन्द्र = सादृश्य (गउड) ।
सारोहि वि [सरोहिन्] संरोहण-कर्ता (पि ७६) ।

साल पुं [साल, शाल] १ ज्योतिष महाप्रह-विशेष (छा २, ३—पत्र ७८) । २ वृक्ष-विशेष, साळू का पेड़ (सम १५२, श्रौत, कुमा) । ३ वृक्ष, पेड़ । ४ बिला, प्राकार (मुपा ५६७) । ५ एक राजा; 'साल महासाल-सालिमहो य' (पवि) । ६ पति-विशेष (पह १, १ टी—पत्र १०) । ७ पुं. एक देव-विमान (सम ३५) । 'भोट्टुय न [कोष्ठक] चैत्य-विशेष (राज) । 'वाहण, 'हण [वाहन] एक सुप्रसिद्ध राजा (विचार ५३१, हे १ २११; प्राप, पि २४४, पद; कुमा) ।

साल देखो सार = सार (मुपा ३८५, छाया १, १६—पत्र १६६) । 'इय वि [चित] सार युक्त (छाया १, १६) ।

साल न [शाला] पर, गृह, 'मायामहमालंवि ॥ कालेय समयवृक्षमं' (मुपा ३८५) ।

साल पुं [शाल] साला, बहू का भाई (मोह ८८, तिरि ६८८, मवि, नाठ—गुच्छ ३५) ।

साल पुं. देखो साला = (दे), 'जन्म सालल भगवत्', 'परितोदे उ छे कुले' (पहण १—पत्र ३७, छा ८—पत्र ५२६) । 'मं वि [वन्] शाखावाला (छाया १, १ टी—पत्र ४, श्रौत) ।

साल देखो साला = शाला । 'मिह, 'घर न [गृह] १ भित्ति-रहित घर (निबु ८) । २ पराजयग्रस्ता पर (पत्र) ।

सालइय देखो सारइय = शारदिन (छाया १, १६ पत्र १६६) ।

सालरायन न [शालरायन] १ कौशिक गेन का एक शाखा-पीठ । २ बुद्धी, उच्च योगशाला (छा ७—पत्र १६०) ।

सालझी झी [दे] शारिका, मैना (दे ८, २४) ।
सालगमी झी [दे] सीढी, नि.थंणी (दे ८, २६, कुप्र १२०) ।

सालव वि [सालम्भ] भवतम्भन युक्त, श्रायम-युक्त (गउड, राज) ।

सालमल्लण पुं [शालमल्लण] वृक्ष विशेष (मम ८, १ टी—पत्र ३६४) । देखो सारमल्लण ।

सालमिआ झी [दे] शारिका, मैना (पद) ।
सालग न [दे] १ वृक्ष की बाहरी छाल (निबु १५) । २ ताम्बी शाखा (भाव १) । ३ रस, 'भवसालग वा धंवदालग वा जोसए वा पायए वा' (भाषा २, ७, २, ७) ।

सलगन न [सारणक] गढो के समान एक तरह का काय (मवि) ।

सालभंजी देखो सालहजी (पमंवि १४७, कुमा) ।

सालस वि [सालस्] भालस्य-युक्त, भक्ती (गउड, मुपा २५१) ।

सालहजिया } झी [शालभञ्जिना,
सालहजी } 'झनी' बाण भादि की बनाई हुई तुलनी (मुपा ५३, ५४) ।

सालहिआ } झी [दे] शारिका, मैना (वाच, सालही } या २८, दे ८, २४) ।

साला झी [शाल] १ गृह, घर । २ भित्ति-रहित घर (कुमा, छा ७२८ टी) । ३ छन्द-विशेष (पिग) ।

साला झी [दे] शाखा (दे ८, २२, पह १, ३—पत्र ५४, दस ७, ३१, राय ८८) ।

सालाइय देखो सलाग (राज) ।

सालाणय वि [दे] १ स्तुत, जिसकी स्तुति की गई हो वह । २ स्तुत्य, स्तुति-योग्य (दे ८, २७) ।

सालाहण देखो सालाहण = शाल-वाहन ।

साल पुन [शालि] १ मोहि, धान, चावल (मूत्र २, २, १, का ५८२, ६६१, कुमा, गउड) । २ वनवासर वनवाति विशेष, वृक्ष-विशेष (पहण १—पत्र ३४) । 'अह पुं [अट] एक प्रसिद्ध चंद्रि-पुत्र, जिनके भगवान् महाशेखर ने नाम देया की थी (उप-पवि) । 'असेल, 'असेल पुं [दे] वान

के कणिस—वान का तीव्र भागभाग (राज, उवा) । 'रकिगआ झी [रक्षिग] धान का रक्षण करनेवाली झी, वलम-गोपी (पाप) । 'वाहण पुं [वाहन] एक सुप्रसिद्ध राजा (सम १३७) । देखो साल-वाहण । 'सच्छिय पुं [साक्षिग] मत्स्य की एक जाति (पहण १—पत्र ४७) । 'मित्य पुं [सिक्थ] मत्स्य-विशेष (भाषा ६३) ।

'सालि वि [शालिन्] शोभनेवाला (गउड, कुमा) ।

सालिआ झी [शालिग] घर का कमरा, एहिह मुवंति घरमणिमहालिपाटु (हम्प) ।
सालिआ देखो सालिआ (राज) ।

सालिगिआ } झी [शालिनिना, 'नी] १
सालिगी } शोभनेवाली, 'पीणकोशिय-
णमालिगिपहि' (मजि २६) । २ छन्द-विशेष (पिग) ।

सालिभञ्जिया झी [शालिभञ्जिना] तुलनी (पत्र १६, ३७) ।

सालिय पुं [शालि] लम्बाय, लुलाहा (जिने २९०१) ।

सालिय वि [शालमलि] शालमलि वृक्ष का, केमल के गच्छ का, 'एगं सालियापीठं बढो भायेलगो होई' (उत्तनि ३) ।

सालिम देखो सारिस = सहय (छाया १, १—पत्र १३, छा ४, ४—पत्र २६५, हम्प) ।

सालिहीपित पु [शालिहीपित] एक तीन गृहस्थ (उवा) ।

साली झी [श्याली] पत्नी-भगिनी, भाषा की बहन (दे ६, १४८) ।

सालूअ पुं [शालू] जन-बन्ध विशेष, वयन हन्ध (भाषा २, १, ८, ३, दस ५, २, १८) ।

सालअ न [दे] १ शम्भूष, शंभु । मूने यर भादि धान का धम भाग (दे ८, ५२) ।

सालूर वृक्ष [शालूर] १ नेर, फेंदर (पाप; मूर २, ७४, मुपा ६२, गार्थ १०६, मूत्र २, १) । २ छे, 'छा (१६१) । ३ न, छन्द-विशेष (पिग) ।

साव सक [श्राव्य] सुनाना। सावैत (श्रीप)। वड. सावन. सावित, सावैत (श्रीप, राज; पत्र १०, ५७)।

साव पुं [शाप] १ सपप, आक्के (श्रीप, कुमा. प्रति ६६)। २ शपय, सौम्य (प्राय, हे १, २३१)।

साव पुं [शाव] बालक, बच्चा (समु १५६, प्राठ ८५)।

साव पुं [स्याप] स्वपन, शयन, सोना (विदे १७५५)।

साव (मप) देखो सब्द = सर्व (हे ५, ४२०)।

सावइज देखो सावएज (कप्य)।

सावइजु वि [श्रावयिजु] सुनावेवाला (सुम २, २, ७६)।

सावएज न [स्थापतेय] घन, द्रव्य (कप्य)।

सावएन न [सापल्य] सपलीपन, सौतिनपन (कुप्र २५५)।

सावएक वि [सापल] सौतेली माँ की संतान (धर्मवि ५७)।

सावइजा जी [सपत्नी] सौतेली माँ, विमाता; पुत्रराती में 'सावकी', 'सावका' सुयजणणी पातल्या गहिय बापय लेहें (धर्मवि ५७)।

सावग पुंन [श्रावक] १ जैन उपासक; ब्रह्म-भक्त गृहस्थ (डा १०—पत्र ४६६, उवा; छाया १, २—पत्र ६०)। २ ब्राह्मण। ३ बुद्ध श्रावक (छाया १, १५—पत्र १६३, मणु २४), 'सभी सागएवी बमलामेला य...गहियाणुम्बवाणि सावगणि सवुत्ताणि' (भाक ३१)। ४ वि. मुनेवाला। ५ सुनाने-वाला (हे १, १७७)। 'धम्म पुं [धर्म] प्राणुत्पाप-विरमण भादि बारह व्रत, जैन गृहस्थ वा धर्म (छाया १, १५—पत्र १६१)। सावज वि [सावज] पापमुक्त, पापवाला (भग उग, श्रीप ७६२, विने ३४६६, मुर ४, ८२)।

सावण न [श्रावण] १ सुनाना (उप ७२८ टी मुपा २८८)। २ पुं मास विशेष, नावन वा महेना (पत्र ६७, ७, पत्र, हे ४, ३५७, ३६६)। ३ वि. मनेएन्द्रिय सम्बन्धी श्रावण-प्रत्यक्ष वा विषय जो बात से सुना जाय वह (धर्मस १२८)।

सावणा जी [श्रावणा] सुनाना (कुप्र ६०)। सावणी जी [स्थापनी] देखो सावणी (डा १०—पत्र ५१६)।

सावतेज देखो सावएज (छाया १, १—सावतेय) पत्र ३६, श्रीप, सुम २, १, ३६)।

सावत्त देखो सावक (दि १, २५, मवि, सिदि ४६; वण्ण)।

सावत्यिगा जी [श्रावस्तिका] एक जैन मुनि-छाया (कप्य—पु ८१)।

सावत्यी जी [श्रावस्ती] कुणाल देश की प्राचीन राजधानी (छाया १, ८—पत्र १४०; उवा)।

सावन्न (मप) देखो सामन्न = सामान्य (मवि)।

सावय देखो सावग (मप, उवा, महा), 'एयं कहेहि सुंदर सविस्तर सचसावयो दुहयं' (पत्रम ५३, २६)।

सावय पुं [श्रापय] शिकारी पशु, हिंसक जानवर (छाया १, १—पत्र ६५; बड, प्राप् १५४, महा, सण)।

सावय पुं [दे] १ शरभ, श्रापय पशु विशेष (दि ८, २३)। २ वाली की जड़ में होनेवाला एक तरह का सुद कौट (जी १६)।

सावय पुं [श्रावक] बालक, बच्चा, शिशु (भाट)।

सावरी जी [श्रावरी] विद्या-विशेष (सुप्र २, २, २७)।

सावसेस वि [सावसेय] प्रवर्धित, बाकी बचा हुआ, 'जासऊ सावसेय' (उव)।

सावहाण वि [सावधान] धनधान-युक्त, सचेत (भाट, रमा)।

साविज वि [शापिज] जिसको शाप दिया गया हो वह। २ जिसको सोगय दिया गया हो वह (छाया १, १—पत्र २६, मप १५—पत्र ६२२; स १२६)।

साविज वि [श्राविज] सुनाना हुआ (मप १५—पत्र ६२२; छाया १, १—पत्र २६; पत्रम १०२, १५; ६६, मार्थ १८)।

साविआ जी [श्राविसा] जैन गृहस्थ-धर्म पातनेवाली जी (मप छाया १, १६—पत्र २८४, वण्ण; महा)।

साविरुप वि [सापेक्ष] अपेक्षा-युक्त, अपेक्षा-वाला (धा ६, संबोध ४१)।

साविगा देखो साविआ (डा १—पत्र ४६६, छाया १, २—पत्र ६०; महा)।

साविट्री जी [श्राविट्री] १ धावण मास की पूर्णिमा। २ धावण की प्रभावस (सुज १०; ६, इक)।

सावित्री जी [सावित्री] बहमा को परनी (उप ५६७ टी, कुप्र ४०३)।

साविह पुं [श्राविध] धावप पशु विशेष, साही (हे २, ५०, न, १५)।

सावेम्प देखो साविकर (पत्रम १००, ११; उप ८७०)।

सास सक [शास] १ सना करना। २ सोख देना। ३ हुकुम करना। भूका, सासित्या (कुप्र १४)। कर्म, सासिजद, वीसद (भाट—शुष २००, कुप्र ३६६)। वड. सास, सासत (उत्त १, ३७; श्रीप, वि १६७)। ३. सासगीअ (भाट—विक्त १०४)। कवक, सासिज्जंत (वा १४६ टी)।

सास सक [कवय] कहना। सासद (वड)। कर्म, सासद (प्राठ ७७)।

सास पुं [शास] १ साव (गा १४१; १४७)। २ रोग-विशेष, दास-रोग (छाया १, १३—पत्र ६८१; उवा, विपा १, १)। 'हरा जी [धरा] जीवन धारण करनेवाली (दश-बुं हरि-पत्र २४, २)।

सास पुंन [शास्य, सस्य] १ क्षेत्र-गत वाय्य (पण्ड १, ४—पत्र ७२; स १११)। 'तासा भक्तिभाव' (पत्रम ३३, १४)। २ वृत्त धारि का फल। ३ वि. वष-योग्य (हे १, ४२)। देखो सास-शब्द।

सासन पुंन [सासन] सन की एन जाति, पुण्यवर्द्धिनी सासन-कर्म-एतौहिमस — (वण्ण)।

सासन पुं [सासन] वृष विशेष, बौधय नाम का बड़े (छाया १, १—पत्र २४)।

सास न [शासन] १ द्वादशी, बाह्य जैन ग्रंथ ग्रन्थ, भागव. निदान, शास्त्र. 'मणु-सामण्डेर पत्रम' (सुप्र १, २, १११; मणु ३८, सम्म १, विने ८६४)। २ प्रतिपादन (पंदि. उप १ ३०४)। ३ शिता, नीत

(पणु) । ४ घाता, हुकुम (पहल २, १—पत्र १०१; महा) । ५ घास, निर्वाह-साधन-जीविकसाधनविमणु मासलें बिभरिऊण मत्तोए' (कुल २३) । ६ वि. प्रतिपादक, प्रतिपादन कर्ता (सम्प १, मण २२, एदि ४८) । ७ प्रतिगाथ, जिसका प्रतिपादन किया जाय वह (पहल २—पत्र ६६) । "देवी श्री [देवी] शासन की प्रथिपायो देवी (कुमा) । सुरा श्री [सुरी] बहो प्रथे (पंचा ८, ३२) ।

सासण देवो सामायेण (कम्म २, २, ५, १४, ५, १८, २६, ५, ११, ६, ५६, पच २, ४०) ।

सामणा श्री [शासना] शिणा (पहल २, १—पत्र १००) ।

सासणायेण ॥ [शासन] भासापन (स ५६९) ।

सासय वि [शासत] नित्य, अविनश्वर (मग, पाप, मे २, ३, गुर ३, ५८, प्रामू १५१) ।

सासय धु [साधय] निज या भाधार (मे २, ३) ।

सासन धु [सर्पद] सरसो (भाषा २, १, ८, ३) । 'नालिदा श्री [नालिदा] बन्द विशेष (भाषा २, १, ८, ३) ।

सासयुल धु [दे] बरिषण्ण या वेद, बौद्ध, बिचाय, कयाद्य (दे ८, २५) ।

सासाय ग [सास्यादन] १ दुण-स्वानन-सासायेण । विशेष, द्वितीय दुण-स्वान (कम्म ४, १३, १६) । २ वि. द्वितीय दुण-स्वान में बसवान जीव (सम्प १६, छम २६) ।

सामि वि [सामिन्] खास रोगरक्षा (हेतु ५०) ।

सामिनु (सो) वि [सासिय] शासन-कर्ता, शिणा-कर्ता (समि २१४) ।

सासिद देवो सामि (सिगा १, ७—पत्र ७३) ।

सामुया देवा सामु (गुर ६, १७७, ६, २११ निर ६५६) ।

सामुर न [भाट] बटुरद (गुर ८, १६४) ।

सामुर (परा) देवा समुर = बटुर (सिं ३) ।

सासु श्री [स्यु] सामु, पति तथा पत्नी की माता (पाप, पत्र १७, ४, गा ३३६) । सासूय वि [सामूय] धनूमा-युक्त, मत्सरो (गुर ३, १६७, ज ७२८ डी) ।

सासेरा श्री [दे] यानिक नाचनेवाली, यन्त्र की बनी हुई मर्तकी (राज) ।

साह सक [कथय, शास] कहनी । साहइ, साहेइ (हे ४, २, ज ५, बाल, महा) । साहयु, साहेयु (महा) । ग्रवि, साहिस्वर, साहिस्सामो (महा, भाषा १, ४, ५, ४) । यह, साहेत, साहयंत (हेवा ३८, पाप ३०, गुर ६, १३२) । बवक साहिज्जंत, साहिप्पंत, साहियंत, साहियमाण (बंक-गुर १, १०, सुवा २०३; बंक, सुवा २६३, ज ४ ५२, बंक) । बंक, साहिरुण, साहेचा (बाल) । हेइ, साहिं (बाल, महा) । क-साहियज, साहेअज (महा, गुर १, १५४) ।

साह देवो सहाइ = आप । क. साहणीअ (पाप) ।

साह सक [साध] १ सिद्ध करना, बनाना । २ बर में करना । साहइ, साहेइ, साहेति (मग, कण, छ, प्रामू २७, महा) । यह, साहंत, साहित, साहेमाग (मि १२८, महा, गुर १३, ८२) । बगइ, साहिज्जमाग (शट) । हेइ, साहित (महा) । क. साह-गिडा, साहणीअ, साहियज (पा ३६, पत्र ३७, ३०, गुर ३, २८) ।

साह धु [दे] १ वाटुग, बाजु । २ बटुर, कन्नु । ३ बरिषर, बही की मलाई (दे ८, ५१) । ४ ग्रिज पति (समि ४७) ।

साह (परा) देवो मवउ = बरें (हे ४, ३६६, कुमा) ।

साहजग } धु [दे] गाधुर गीण (६ साहजग } ८ २७) ।

साहजगं श्री [सामाजना] नाये सिंहे (सिगा १, ४—पत्र २४) ।

साहग वि [सायक] निज करनेवाला, कामका करनेवाला (पाप १, ८ डी—पत्र १२२ बग मर ७२, कुमा ८८ बरें ७०, हि २०) ।

साहग वि [शासक, कथक] बहनेवाला (गुर १२, ३०, न ३६१) ।

साहज न [साहाय्य] सहायता, मदद (चिते २६५८, मण ६, रण १४, निरि ३६८, कुज १२) ।

साहइ सक [स + धु] सवरण करना, समेटना । साहइ (हे ४, ८२) ।

साहइअ वि [सट्ट] समेटा हुआ, सहत किया हुआ, पिरोइत (कुमा) ।

साहइट्ट म [संहट्ट] समेट कर, सट्टित कर 'साहिए जाणु' धरणिउतसि साहइट्ट' (बण), 'साहइट्ट पायं पीएग्ग' (भाषा २, ३, १, ९), विवरेण साहइट्ट य जे सिणई' (सूय १, ७, २१) ।

साहट्ट वि [साहट्ट] पुनवित (राज) ।

साहण सक [स + हण] संपात करना, सहत करना, चिरागना । साहणति (मग) ।

बमं साहणति (मग १२, ४—पत्र ५६१) । बवक, साहणंत, साहणंत (राज, ठा २, ३—पत्र ६२) । सट्ट, साहणिता (मग) ।

साहण न [साधन] १ डाय, बारण, हेतु (सिं १७०६) । २ तीय, सरसर (कुमा, गुर १०, १२२) । ३ वि. सिद्ध करनेवाला, 'जहु जीपाण पमाओ धणपयवभाणुओ होइ' (हि १३, गुर ४, ७०) । श्री, 'णा, 'णी' (हे १, ११, ४७) ।

साहणन [संइनन] संपात, धरयों का धारण में बिनबना (मग ८, ६—पत्र १६५, १२, ४—पत्र ५७) ।

साहणिय धु [साधनिक] वेना-अडि (कुमा २६२) ।

साहणिय देवो साह = गाप ।

साहण देवा साहण = साधन ।

साहण देवा साह = हवाए, गाप ।

साहणज देवो साहण = स + हण ।

साहाय्य म [सहायन] १ धरा हाय ग । २ गाधुर (पाप १, ६—पत्र १६१, उता) ।

साहियया } श्री [साहियरी] बिना-रिख, साहरी } बल हय मे दान कर करि हाग दिया करने ग साहियरी बरें ७२ (क २, १—पत्र ४०, मर १८) ।

साहस्रत दणो साहण = सं + हन् ।

साहम्मन न [साधर्म्य] १ समान धर्म, तुल्य धर्म (सम्म १५३, पिठ १३६) । २ साहस्य, समानता (विसे २५८६, शोध ४०४, पचा १४, ३५) ।

साहम्मि वि [सधर्मिन्, साधर्मिन्] समान धर्मवाला, एकधर्मी (पिठ १३६, १४६, १४७) श्री. ०णी (भावा २, १, १, १२, महा) ।

साहम्मिअ } वि [साधर्मिन्] ऊपर देखो
साहम्मिग } (शोध १५, ७७६, शोध, उत्त २६, १, कस सुपा ११२, पचा १६, २२) ।

साहय देखो साहग = सायक (उप ३६०; ॥ ४५, कात्) ।

साहय देखो साहग = शासक, कषक (सम्म १४३) ।

साहय वि [संहृत] संक्षिप्त, समेटा हुआ (पणह १, ४—पण ७८, शोध, तहु २०) ।

साहर सक [स + हृ] खबरण करना । साहरद (हे ४, ८२) ।

साहर सक [स + हृ] १ सकीब करना, संक्षेप करना, संक्षेपना, समेटना । २ स्थानान्तर में ले जाना । ३ प्रवेश करना । ४ छिपाना । ५ व्यापार रहित करना । साहरद, साहरे, साहरति (मग ५, ४—पण २१८, कष्य उव, सुम १, ८, १७, पि ७६) । साहरिज (मग ५, ४) । अवि. साहरिजिस्तमि (कष्य) । कबहु. साहरिजमाण (कष्य, शोध) । सहु साहरित्ता (कष्य) । हेहु. साहरित्तप (मग ५, ४—पण २१८) ।

साहरण न [संहरण] एक स्थान से दूसरे स्थान में ले जाना, स्थानान्तर-नयन (पिठ ६०६, ६०७) ।

साहरय वि [दं] गत माह, मोह-पहिठ (दे ८, २६) ।

साहरिअ वि [संहन] १ स्थानान्तर में नीत (सम ८६, कष्य) । २ धन्य निगत (पिठ ५२०) । ३ संतान दिया हुआ, संज्ञावित (शोध) ।

साहरिअ वि [सहृत्] संवरण-शुद्ध (हुया, पाय) ।

साहल न [साफल्य] सफलता (शोध ७३) । साहव देखो साहु = साधु, 'ग्रह वेण्डद साहवें तहि वालि' (पठम ६, ६१, ७७, ६४) ।

साहव न [साधव] साधुता, साधुपन (पठम १, ६०) ।

साहव्य न [स्वाभाव्य] स्वभावता, स्वभाव-पन (धर्मस ६६) ।

साहस न [साहस] १ बिना बिचार किया जाता काम (उव, महा) । २ पु. एक विद्या-धर नरेश, साहस गति (पठम ४७, ४७) । 'गइ पु [गहि] वही धर्म' (पठम ४७, ४४, महा) ।

साहस देखो साहस्स = साहस (राज) ।

साहसि वि [साहसिन्] साहस कर्म करने-वाला, साहसिक. 'ते धीरा साहसिणो उत्तम-सत्ता' (उप ७२८ टी. किरात १४) ।

साहसिअ वि [साहसिक्] ऊपर देखो (शोध, सुम २, २, ६२, चाव ३७, कुप्र ४६६) ।

साहसस वि [साहस्य] १ जिसका मुख्य हज़ार (घुना, ख्या भाति) हो वह वस्तु (दसमि ३, १०, उव, महा) । २ हज़ार का परिमाणवाला, 'जोयखस्यसाहस्यो विविखणो मेरुनामोषी' (जीवस १८५) । ३ म. हज़ार (जीवस १८५) । 'मल पु [मल] व्यक्ति-नामक नाम (उव) ।

साहसिसय वि [साहसिक्] १ हज़ार का परिमाणवाला (ख्या १, १—पण ३७, कष्य) । २ हज़ार आदमी के साथ लड़नेवाला मल्ल (राज) ।

साहस्सी श्री [साहसी] हज़ार, दस सौ, 'मिह्वाण अणेशोमो साहस्सीमो समगया' (उत्त २३, १६, मग २६, उवा, शोध, उत्त २२, २३, ह ३ १२३) ।

साहा श्री [श्राधा] प्रशंसा (सम ५१) ।

साहा म [स्वाहा] देवता के उद्देश ग इन्द्र-राम का मुख्य मन्त्र, साहित-सूचना शब्द (म ८—पण ४२७ शोधमा ५०) ।

सादा जो [शारा] १ एक ही भाषा के सतर्ग में उचन प्रभु भुनि की स-दान-परमाश्र, धनवान सति (कष्य) । २ कु

की डाल, डाली (भावा २, १, ७, ६, उव, शोध, प्रामु १०२) । ३ वेद का एक देश (मुल ४, ६) । 'मंग पु [मंग] शाखा का टुकड़ा, पल्लव (भावा २, १, ७, ६) । 'मय, 'मिअ, 'मिग पु [मिग] वानर, 'मन्दर (पाप, ती २, मुपा २६२, ६११) । 'उ, उ वि [यन्] १ शाखावाला, शाखा-युक्त (यम्म १२ टी, मुपा ४७४) । २ पु. वृक्ष, पेड़ (मुपा ६३८) ।

साहाणुसाहि पु [दे] शक देश का सम्राट्, बादशाह, 'पत्तो सगहूल नाम कूल, तय जे सामता ते साहिणो भएणति यो सामता-हिवई सयनरिखवद्वृजमणी सो साहाणुमाही भएणई' (वाल) ।

साहार सक [स + पारय] धक्की तरह धारण करना । साहारद (अवि) ।

साहार पु [सहकार] भ्राम का गाछ 'होसद किल साहरो साहारे भगणमि वहुते' (वजा १३०, सुपा ६३८) ।

साहार पु [दे. साधुनार] साहकार, महा-जन (धम्म १२ टी) ।

साहार पु [सहाय, सहकार] धक्का धाँधल, साहारा, भ्रमजगन, सहायता, मदद, उतार, 'परचित्तमणेल न वेससेसेण साहारे' (उव, पुष्क २२५), 'जुजोती भादारे गुणोपकारसरीसाहारे' (शोध ५८३, स ४२५, वजा १२०, सण) ।

साहार वि [साहार] भ्राम के गाछ से उपज, भ्राम-वृक्ष सम्पत्ती (कष्य) ।

साहार पु [साधारण] १ धनस्वति-साधारण, विशेष, जहाँ एक शरीर में धनत्व जोर हो वह धन-पति, धन भादि । २ कर्त्त-विशेष, जिसके उद्देश्य से माधारेण-धनपति में जन्म होय वह धर्म (धम्म २, २८, पणह १, १—पण ८, धम्म १, २७, जी ८, पणह १—पण ४२) । ३ धारण (मापु १) । ४ पु. साधारण धनस्वति-धन का जीन (पणह १—पण ४२) । ५ वि. सामान्य । ६ समान, तुल्य (पणह १—पण ४२) । ७ पुन. उतार, सहायता, मदद, 'साहारेण्डा जे बंद मिताणमि दाटिए । पणु कुणई निब' (मग ११) । 'सरीरनाम न [शरीर-

नामन्] देखो ऊपर वा दूसरा अर्थ (सम ६७)।

साधारण न [संधारण] ठीक तरह से धारण करना, टिकाना, 'अभिप्रेते पठिकप्रेते संकुचये पसारये कायसाधारणद्वारे' (भाषा १, ८, ८, १५)।

साधारण न [स्वाधारण] सहारा करना, सपकार करना (सम ५१)।

साधारण न [संहरण] सकीचन, रुमेन (विम ३०५२)।

साधारण वि [संधारित] ठीक तरह धारण किया हुआ (नवि)।

साधारण वि [स्वाभायिक] स्वभाव सिद्ध, नैसर्गिक, बुद्धरसो (गा २२५, गउड, कप, गुप्ता ५६३)।

साहि दुं [साधियन्] बुद्ध, वेद (पाप, सख, उप ५ १५३)।

साहि पु [दि] १ शक देश का सामन्त राजा, 'पसो सगङ्गत्तं नाम कुलं'। तस्य जे सामता ते साहिणो भण्णति' (भग)। २ देखो साही (दे ८, ६, से १२, ६२)।

साहि (भन) देखो सामि = स्वामिन् (पिन)।

साहिअ वि [कथित, शासित, स्वाक्यात] महा हुमा, उक्त, प्रसिद्धादित (मुपा २७६, सुर १, २०५, बाल, पाप, प्राचा)।

साहिअ वि [साधित] सिद्ध किया हुआ, निष्पादित (संत १३, मुर ६, ६६, नवि)।

साहिअ वि [साधिक] सविद्येय, साविरेय (कप, गुप्ता २७६)।

साहिअ पि [साहित] स्वहित से विरुद्ध, निज वा अहित (मुपा २७६)।

साहिकरण वि [साधिकरण] १ अधिपतरण-पुल (निद्र १०)। २ नलद बरता, नगहवा (छा ३—पत्र ३५२)।

साहिकरणपि [साधिकरणिन्] अधिपतरण-पुल, शरीर भादि अधिपतरणपाला (भग १५, १—पत्र ६६८)।

साहिकरण देखो साहिकरण (राज)।

साहिकरण देखो साहिकरणि (भा १६, १ टी—पत्र ६६६)।

साहिज देखो साहज (भंत १३, मुपा २०५; गउड, कुप्र १३)।

साहिज्ज देखो साह = कथय्।

साहिज्जमाण देखो साह = साय्।

साहिण (भन) वि [कथिन्] कहनेवाला (सण)।

साहिच न [माहित्य] असकार साध (मुपा १०३, ५४३)।

साहिपपत साहियमाण } देखो साह = कथय्।

साहिय्यंत

साहिर वि [गामिण, कथयिण] शासन करनेवाला कहनेवाला (भउड)।

साहित्य न [दि] मधु, रहद (दे ८, २७)।

साही छो [दि] १ रथ्या गुरुआ (दे ८, ६, से १२, ६२)। २ बर्तनी, मार्ग, रास्ता (पिड ३३४)। ३ राजमार्ग (से १२, ६२)। ४ विष्णुकी छोण दरवाजा (भोप ६२२)।

साहीण वि [साहीण] स्वायत्त, स्वतन्त्र (पाप, गा १६७, बाह ५३, मुर ३, ५६, प्रासू ६६)।

साहीय देखो साहिअ = साधिक, 'वेत्तीस उग्रहिनामा साहीया हृति अजयसम्माण' (कोजस २२३)।

साहु पु [साधु] १ शुनि, यति (रिसे ३९०, भाषा, मुपा ३५२)। २ सज्जन सलुक्क, 'साहवो मुक्खणा' (पाप)। ३ वि. मुन्दर, शोभन, अच्युता (भाषा, स्वय ३७, कुप्र ५४६)। 'कम्म न [कम्मन्] तज विरोध, भिदिद्वित्त सप (खोप ५८)। 'वार, 'वार पुं [वार] धम्मवाद, साधुवाद, प्रवसा (वखी ११५, छ ५, ४ टी—पत्र २८३, वउम ५६, २३, से १३, १६, महा नवि रिक्त १-६)। 'नाह पुं [नाय] येठ मुनि, धापायें (मुग ५५४)। 'वाय पुन [वाय्] प्रवसा, 'वास व साहवाय' (मिरि ३३५, स ३८५, मुग ३००)।

साहुदे छो [साधु] १ छो-साधु, अमलो, यतिनी। २ सती छो। ३ अच्यो (प्राह २८)। माहुणी छो [साधु] छो-साधु, यतिनी (बाक उव २०१५, मुग ६७, ३३२, सार्थ २६, कुप्र २१५)।

साहुलिआ } छो [दि] १ बल कपडा (दे साहुली } ८, ५२; गा ६०६ घ, कपू, पाप, मुपा २२०, २५६)। २ शरीरवल्-साड (रंगा)। ३ शाखा, डाली (दे ८, ५२, पड, पाप)। ४ धू, भी। ५ शृङ्ग, हाथ। ६ विषी, वीथन। ७ सट्टा, समान। ८ सली, गहवरी (दे ८, ५२)। ९ ममूर विच्छ (स ५२३ टि)।

साहेज देखो साहज (दे ७, ८६, मुपा १५२, गउड महा, उरय २८)।

साहेज वि [दि] मनुगहीत (दे ८, २६)।

साहेमाण देखो साह = साय्।

सिअ देखो मिअ = सिअ (ससि १७)।

मिअ वि [श्रित] साधित (दे ६, ४८, उत १३, १५, मूम १, ७, ८)।

सिअ देखो सिआ = ध्यान् (भग, धाव १२८, धर्मसं २५८; १११२, गण ५, कुप्र १५६)।

सिअ वि [सित] सीटण धारवाला (मुपा ५७५)।

सिअ वि [सियन्] मच्छी तरह प्राप्त (विसे ३५४५)।

सिअ पु [सित] १ शुल्ल वण्णं। २ वि. श्वेत, सफेद, शुल्ल (भीन, उव, नाट—विक्त ७१, मुपा ११, नवि)। ३ बड, बँपा हुमा (विसे ३०२६)। ४ न. नाम-नर्म वा एव भेद, श्वेत वण्णं वा वारण-मूल बर्म (बम्म १, ४०)। 'दिग्ग पुं [दिग्ग] बड, बादि (उव १३३ टी)। 'मिरि पुं [मिरि] वेलाय पवत् की उत्तर पेणि में मित्त एव विधावर नगर (इक)। 'अज्जाग न [धान] मवें श्रेष्ठ ध्यान, शूल ध्यान (मुपा १)। 'पकर पुं [पट] शुभ पत्र (मुपा १७१)। 'यर पुं [यर] पत्रमा (उव ७२८ टी)। 'वड पुं [पट] पाप, अज्ञान वा बाधन, सरोचो विषयको पाट्टा दबणाय विप्रती' (उव ७२८ गे)। 'वास पुं [वासन्] खेतान्दर देन (टी १५)।

मिअ (भग) देखो मिअ = की (भरि)। 'वन् वि [म] सरोचो-नगर, ध्यान (नवि)। मिअअ देखो सिअय (गा ८३३, ८६८, कउ)।

सिअंग पुं [दे] वरुण देवता (दि ८, ३१)।
सिअंवर पुं [श्वेताम्बर] जैनो का एक सम्प्र-
दाय, श्वेताम्बर जैन (सुपा ६५८)।

सिअलि पुं श्री [दे] वृक्ष-विशेष (स २५६)।
देवो सीअलि।

सिआ देवो सिआ = शिवा (से १३, ६५)।

सिआ ॥ [स्यात्] इन ग्रंथों का सूचक
शब्द—१ प्रशंसा, श्लाघा। २ श्रुतिव्य-
वस्था। ३ संशय, संदेह। ४ प्रत्यय। ५
प्रवधारण, निश्चय। ६ विवाद। ७ विचारणा
(हे २, १०७)। ८ भवेकान्त, अविनाश,
कदाचित् (सू १, १०, २३, वृह १; परए
५—पत्र २३७)। ९ बाह्य पुं [वादिन्]
जिनदेव, ब्रह्मदेव (कुमा)। १० बाय पुं
[वाद्] भवेकान्त बरान, जैन बरान (हे २,
१०७; बंठ, पद्)।

सिआ जी [सिता] १ लेख्या-विशेष, शुक्ल-
लेख्या (पत्र १५२)। २ द्राक्षा आदि का संग्रह
(राज)।

सिआल पुं [शृगाल, सुगाल] १ पशु-विशेष,
सियार, गौघड़ (छाया १, १—पत्र ६५)।
२ दैत्य-विशेष। ३ बाघुदेव। ४ निष्ठुर।
५ खल, दुर्जन (हे १, १२८; प्राप्र)।

सिअली जी [दे] डमर, देश का भीतरी या
बाहरी उपद्रव (हे ८, ३२)।

सिआली जी [शृगाली] मादा सियार (नाट,
पि ५०)।

सिआलीस बीन [पद्मत्वारिणात्] धेमा-
लोस, बालीस और छः (विसे १४६ टी)।

सिआसिअ पु [सितासित] १ बलभद्र,
बलराम। २ वि. श्वेत और कृष्ण (प्राप्र)।

सिइ पुं [शिचि] १ हथ वरुण। २ वि. हथ
वरुणाला। ३ पाउरण पुं [प्रावरण] बल-
राम, बलभद्र (कुमा)।

सिइ जी [दे. शिचि] सीजे, नि. येसि (पिठ
५७३, वय १०)।

सिउं (मप) देवो समं (भवि)।

सिउंटा जी [दे. आसिउंटा] साधारण
वनस्पति-विशेष (परए १—पत्र ३५)।

सिअर वि [सितेतर] इच्छा, काला
(पाप्र)।

सिंअल देवो संअला (अणु ४०)।

सिंअल न [दे] प्रपुर (दि ८, १०; कुप्र ६८)।

सिंअला देवो संअला (से १, १४; प्राप्र;
नाट—मुच्छ ८६)।

सिंग न [शृङ्ग] १ सपातार छन्वीस दिनों
के उपवास (संबोध ५८)। २—देवो संग =
शृङ्ग (जवा, पाप्र, राय ४३; कप्प, उप
५२७ टी, सुपा ४३२; विरु ८६, गउड,
हे १, १२०)। ३ पाइय न [नादित]
प्रधान कार्य (पंचमा ३)। ४ पाय न [पात्र]
सोम का बना हुआ पात्र (भाषा २, ६, १,
५)। ५ माल पुं [माल] वृक्ष-विशेष (राज)।
६ वेदण न [वन्दन] लतावृक्ष से नमन (वृह ३)।
७ वेर न [वेर] १ भार्द्रक, भादी। २ गुएटी,
सोठ (उत्त ३६, ६७; वस ५, १, ७०; भास
= टी, परए १—पत्र ३५)।

सिंग वि [दे] कुप्र, दुर्जन (दि ८, २८)।

सिंगय वि [दे] वरुण, जवान (दि ८ ३१)।

सिंगरीडी देवो सिंगरीडी (राज)।

सिंगा जी [दे] फली, फलिया (भास = टी)।

सिंगार पुं [शृङ्गार] १ नाट्यरस-प्रसिद्ध
रस-विशेष, 'सिंगारी एाम रवो रसबोगा-
निलासजणयो' (अणु)। २ वेप, भूपण
आदि की सजावट, भूपण आदि की शोभा
(भीप, विपा १०, २)। ३ सबङ्ग, लौह। ४
खिन्दूर। ५ चूरण, चूत। ६ काला श्वेत।
७ भार्द्रक, भादी। ८ हाथी का भूपण। ९
मलकार, भूपण (हे १, १२८; प्राप्र)। १०
वि. श्रुतिशय शोभावाता; 'ए ए ए समएत्त
आवधो महावीरस्स विपद्दोहस्स सरोरलं
ओरालं सियार वत्ताए सिलं वल्लं वल्लं
अणसंकिमविमुसिअ'..... 'चिउद' (अणु)।

सिंगार सक [शृङ्गारय] सिंगार करना,
सजावट करना। सिंगारइ (भवि)।

सिंगारि वि [शृङ्गारिन्] सिंगार करनेवाला,
शोभा करनेवाला (सिदि ८५४)।

सिंगारिअ वि [शृङ्गारित] सिंगारा हुआ,
सजाया हुआ (विदि १५८)।

सिंगारिअ वि [शृङ्गारिक] शृङ्गार-युक्त
(जवा)।

सिंगि वि [शृङ्गिन्] १ सोमवाला (सुल ८,
१३; दि ७, १६)। २ पुं. मेप, मेह। ३
पर्वत। ४ भारतवर्ष का एक सीमा-पर्वत।
५ मुनि-विशेष। ६ कुप्र (अणु १४२)।

सिंगिणा जी [दे] नौ. मैया (दि ७, ३१)।

सिंगिया जी [शृङ्गिका] पानी छिड़कने का
पात्र विशेष, पिककापो (सुपा ३२८)।

सिंगिरीडी जी [शृङ्गिरीटी] वनुरिन्द्रिय
वस्तु को एक जाति (उत्त ३६, १४८)।

सिंगी जी [शृङ्गी] देवो सिंगिया (सुपा
३२८)।

सिंगेरिवम्म न [दे] बलीक (दि ८, ३३)।

सिंय सक [शिङ्ग] लूणमा। सिणह (कुप्र
८१)। सङ्ग. सिण्ड (धर्मादि ६४)। हेङ्ग.
सिण्डे (धर्मादि ६४)।

सिंय देवो सिंह (हे १, २६, विपा १, ४—
पत्र ५५, पद्)।

सिचल देवो सिंहल (सुर १३, २६; कुप्र
१५; वि २६७)।

सिंचाढग [दे] पुंन [शृङ्गाढक] १ सिंचाढा,
सिंचाढप [पानी-फल (परए १—पत्र ३६,
भाषा २, १, ८, ५)। २ निकोण नारी
(परह १, ३—पत्र ५४, भीप, छाया १,
१ टी—पत्र ३, कप्प)। ३ पुं. राहु (सुज
२०)।

सिंचाण पुंन [शिङ्गाण] १ नासिका-मल,
रन्ध्रमा (छा ५, ३—पत्र ३४२; सम १०,
परह २, ५—पत्र १४८; भीप, कप्प; कस;
वस ८, १८; पि २६७)। २ पुं. काला
शृङ्गल-विशेष (सुज २०)।

सिंचासण देवो सिंहासण (स ११७)।

सिंचुअ पुं [दे] राहु (दि ८, ३१)।

सिच सक [सिच] सींचना, छिड़कना।
विचइ (हे ४, ६६; मरा)। भूकर, सिचिअ
(कुमा)। भवि. सिचिस्स (पि ५२६)। क.

सिंचियज्ज (सुर ७, २३५)। कक्क.
सिचंते, सिचमाण (पि ५४२, उप २११
टी; स ३४६)।

सिंचण न [सिचन] छिड़काव (सू १, ४,
१, २१; मोह ३१)।

सिंचाण पुं [दे] पक्षि-विशेष, रयेन पत्नी,
बाज, गुजराती में 'सिंचाणो' (अणु)।

'विद्योक्त' पु ['विद्योक्त'] १ सिंह को तरह पीछे की तरफ देखना । २ छन्द-विशेष (पिंग) । १ सण न ['सण'] घासन-विशेष, राजासन, राज-गद्दी (महा) । देखो सीढ़ ।

सिंहल पु ['सिंहल'] १ देश विशेष, सिंहल-द्वीप, लका द्वीप (इ. स. १३, २५, २७) । २ पुंलिंग, सिंहल-द्वीप का निवासी (श्रीप) । को. 'छी' (श्रीप, एया १, १—पृ ३७) ।

सिंहलिया को ['दे'] शिखा, चौदो (पाम) । सिंहिणी को ['सिंहिणी'] छन्द-विशेष (पिंग) । सिंहिभूय न ['सिंहिभूत'] व्रत-विशेष, वसुधैव कुटुम्बकम् का संकेतना—परित्याग (संशोध ५८) ।

सिक्ता ['सिक्ता'] धातु रेत (अणु सिक्ता २७० टी, पत्र ११२, १७, विसे १७३६) ।

सिक्क पु ['सिक्क'] होठ का घन भाग (दे १, २८) ।

सिक्का पुन ['सिक्क'] सिक्कह, सीका, छीका, रस्सी की बनी ओसनुमा एक चीज जो छत में लटकानी जाती है और उसमें चीजें रख दी जाती हैं जिनसे उसमें चींटियाँ आ जायें और उसे जिल्ली न खाए (पाम ६३, उवा, निवृ १, आवश्यक ६३ टी) ।

सिक्का पुन ['दे'] खटिया, मचिया, 'कोव-भरणमि जरिजिनसिक्कडे पडइ जरियव' (सुपा ६) ।

सिक्क देवो सिक्का (पाम ६३, आवश्यक ६३ टी, स ५८३) ।

सिक्का को ['शर्करा'] लड, टुकड़ा, 'सय-सिक्करों' (स ६६३) ।

सिक्करिअ न ['सिक्करिअ'] धनुराग से चलाने वाला (पा ३६२) ।

सिक्करिआ को ['दे'] शीकरा जहाँ का धानरूप-विशेष (सिदि ३८७) ।

सिक्कर पु ['सिक्कर'] १ धनुराग को धावान (पा ७२१, भवि, सण, नाट—मुच्छ १३६) । २ हाथी की चिल्लाहट, 'कुत्तसिणिमिनरि-बलदुत्तुसिगिस्सपउरमि' 'समरमि' (एणि १६) ।

सिक्किआ को ['सिक्किया, सिक्किया'] रस्सी की बनी हुई एक चीज जो बढने के काम में प्रयुक्त है (सिदि ४२४) ।

सिक्क सक् ['सिक्क'] सीखना, पढ़ना, अभ्यास करना । सिक्कड (पा ४७७, ५२४), सिक्कतु सिक्कह (पा ३६२, गुण ४) । भवि, सिक्कसामि (स्वप्न ६७) । वक्क, सिक्कत, सिक्कमाण (नाट—मुच्छ १४१, पि ३६७, सुपा १, १४, १) । सक्, सिक्किअ (नाट—रत्ना २१) । हेक्, सिक्किअ (पा ८६२) ।

सिक्कर देखो सिक्कान । वक्क, सिक्कयंत (पत्र ८२, ६२) । क्क, सिक्कणीअ (पत्र ३२, ५०) ।

सिक्कम वि ['सिक्क'] शिक्षा-कर्ता, दुक्कालु सिक्कम व परिणदमिह थे दुक्कय (रत्ना) ।

सिक्कम पु ['सिक्क'] नूतन लिपि (सुपनि १२८) ।

सिक्कण न ['सिक्कण'] १ अभ्यास, पाठ (कुप २३०) । २ सीख, उपदेश (सुर ८, ५१) । ३ अभ्यासन, पाठन (सिदि ७८१) ।

सिक्कण देखो सिक्काय । सिक्कवेषु (पा ७५४, ६५८) । वक्क, सिक्कयिक्कमाण (सुपा ३१५) । क्क, सिक्कयिक्कय (सुपा २०७) ।

सिक्कणअ वि ['सिक्क'] शिक्षा देनेवाला, पढ़ानेवाला, शिक्षक (प्राक् ६१) ।

सिक्कयिअ वि ['सिक्क'] १ शिक्षाया हुआ, पढ़ाया हुआ (पा ३५२) । २ न, शिक्षा देना, अभ्यास करना, अभ्यासन (सुपा २५) ।

सिक्का को ['सिक्का'] १ सजा, दण्ड (कुप ११०) । २ वेद का एक अङ्ग, वनों के उच्चारण सम्बन्धी वष विरूप, घसलों के स्वरूप को बदलनेवाला शास्त्र, 'सिक्काय-गरणद्वयकम्पडो' (धर्मवि ३८, शीप, कप्प, अर) । ३ शास्त्र और आचार सम्बन्धी शिक्षण, अभ्यास, सीख, सिक्का, उपदेश (श्रीप, गृह १, महा, कुप १६७) । 'वय न ['व्रत'] व्रत-विशेष, जैन गृहस्थ के सामायिक आदि चार व्रत (श्रीप, महा, सुपा ३४०) । 'वय न ['पद'] शिक्षा-पठन (श्रीप) ।

सिक्का (अप) को ['सिक्का'] छन्द-विशेष (पिंग) ।

सिक्काण न ['सिक्काण'] आचार-सम्बन्धी उपदेश देनेवाला शास्त्र (कप्प) ।

सिक्काय सक् ['सिक्काय'] सिक्काना, पढ़ाना, अभ्यास करना । सिक्कावेदि (पि ५५६) । भवि, सिक्कावेहिदि (श्रीप) । सक्, सिक्का-वेत्ता (श्रीप) । हेक् सिक्काविसिअ, सिक्कावेसअ; सिक्कावेड (ठा २, १—पत्र ५६ कस, पत्र १०, ४८ टी) ।

सिक्कायअ देखो सिक्कयअ (पा ३५८; प्राक् ६१) ।

सिक्कायण न ['सिक्कायण'] सिक्काना, सीख, हितोपदेश (सुल २, १६, प्राक् ६१, कप्प) । सिक्कायणा को ['सिक्कायणा'] ऊपर देखो (सुपनि १२७, उप १५० टी) ।

सिक्कायिअ वि ['सिक्कायिअ'] सिक्काया हुआ (अप, पत्र ६७, २२, एया १, १—पत्र ६०, १, १८—पत्र २३६) ।

सिक्कायि वि ['सिक्कायि'] सिक्का हुआ, जानकार, विद्वान (एया १, १४—पत्र १८७, श्रीप) ।

सिक्कर वि ['सिक्कर'] सीखने की भावतवाला, अभ्यासी (पा ६६१) ।

सिक्का को ['सिक्का'] छन्द विशेष (पिंग) ।

सिक्क देखो सिद्धि सिद्धि (नाट—किक्क ३४) ।

सिगया देखो मिन्ना (राज) ।

सिगल देखो सिआल (सण) ।

सिगाली देखो सिआली = शृगाली (बाव ११) ।

सिगम वि ['दे'] १ फात, घना हुआ (दे ८, २८, शीप २३) । २ पुन, परिपक्व, धकावट (वय ४) ।

सिग्ग पु ['सिग्ग'] वृन विशेष, सहिजना का पेड़ (दे २०, पाम) ।

सिग्ग न ['शीग्ग'] १ जल्दी, तुरंत । २ वि, शीघ्रता-युक्त, स्वरा-युक्त (पाम, स्वप्न ५४, वड, कप्प, महा, सुर १, २१०, ४, ६६, सुपा ५८०) ।

सिचय पु ['सिचय'] वध, कपडा (पाम, ना २६१; कुप ४३३) ।

सिध्दत } देखो सिच = सिच ।
सिचमाण }

सिच्छा की [स्वेच्छा] स्वच्छद (गुण ११६) ।

सिज्ज भक् [सिद्ध] पसीना होना । सिज्जद (पद् २०३) । वक्. सिज्जंत (नाट—उत्तर ६१) ।

सिज्ज' देखो सिज्जा (सम्मत १७०) ।

सिज्जंभण पु [शाय्यभण] एक सुप्रसिद्ध प्राचीन जैन महर्षि (कल्प—पु ७८, एहि) ।

सिज्जंस देखो सेज्जंस = श्यामा (कल्प, एहि, भाषा २, १५, ३) ।

मिज्जा की [शय्या] १ बिछीना (सम १५; उवा; सुभा ५३३) । २ उपायय, वस्त्रित (सोप १६७) । 'तरी, यरा की [तरी] उपायय की मालकिन (श्रोष १६७, पि १०१) । 'दाली की [पाली] बिछीना का काम करनेवाली दासी (सुभा ६४१) । देखो सेज्जा ।

सिज्जिअ (पर) वि [सुष्ट] उत्पन्न किया हुआ, बनाया हुआ (विम) ।

सिज्जिअ वि [सवेत्त] जिसको पसीमा हुआ बरसा हो वह, पसीनावाला (गा ४०७, ४८८; ७७४, बुभा) । की 'री (हे ४, २२४) ।

सिज्जूर न [दे] राज्य (दे ८, ३०) ।

सिज्जम भक् [सिध्] १ निपन्न होना, बनना । २ पनना । ३ मुक्त होना । ४ मगल होना । ५ सफ, गति करना, जाना । ६ शासन करना । सिज्जमइ (हे ४, २१७, भग, अहा) सिज्जमति (कल्प) । भूका, सिज्जमपु (भग, पि ५१६) । सति, सिज्जिमहिइ, सिज्जिमस्सति, सिज्जिमसि, सिज्जिमही (उवा, भग, पि ५२७, महा) । यह, सिज्जमत्त (पिड २२१) ।

सिज्जम देपो सिज्ज (शय) ।

सिज्जमया } की [सेधना] १ सिद्धि, मुक्ति, सिज्जमना } भोग, निवर्ण (सम १७७, उवा १११, ७६५, पव ८८, धर्माव १२१, विं ३०३०) । २ निपत्ति, साधना;

'सम्पो परोपरारं बरेइ

निपज्जमिअण्णामिअसो ।

निपस्सो निपज्ज

परोपरारो हएइ धनो ॥'

(रवप ४६) ।

सिद्ध वि [श्रेष्ठ] अति उत्तम (उप ८७६) ।

सिद्ध वि [सुष्ट] १ रचित, निर्मित (उप ७२८ टी, रमा) । २ युक्त । ३ निश्चित । ४ भूषित । ५ बद्ध, प्रचुर । ६ व्यक्त (हे १, १२८) ।

सिद्ध वि [शिष्ट] १ रचित, उक्त, उपदिष्ट (पुर १, १६५, २, १८४, जी २०; पजा १३६) । २ सज्जन, भलामानव, प्रतिष्ठित (उप ७६८ टी; कुप ६४; सिदि ४५; सुभा ४७०) । 'गार पुं [गार] भक्तमानवी, सदाचार (धर्म १) ।

सिद्धि वि [दे] जो कर रहा हुआ (पद्) ।

सिद्धि की [सुष्टि] १ विश्व-निर्माण, जगद्-रचना (सुभा १११, महा) । २ निर्माण, रचना । ३ स्वभाव । ४ जिसका निर्माण होता हो वह (हे १, १२८) । ५ सीधा रूप, अप्रतिपक्ष भग, 'चकाई जंतयोगेण सिद्धि-विशिष्टिकमेण एतस्मिन् भगताइ' (सिदि ८७८) ।

सिद्धि पुं [दे, श्रेष्ठि] नगर मेठ, नगर का मुख सहृद्धार, महाजन (कल्प, सुभा ५८०) । 'पय न [पद्] नगर मेठ की पदवी (सुभा ३४२) । देखो सेट्टि ।

सिद्धिणी जी [श्रेष्ठिनी] श्रेष्ठि-पत्नी, सेठानी (सुभा १२) ।

सिद्धी की [दे] सीढ़ी, दि.सेलि (धर्मक ७०) ।

सिद्धि वि [सिद्धि, सिद्धि] १ शय, बोया । २ श्रद्धा, जो मज्जत न हो वह । ३ मल (हे १, २१५, २५४, प्राय, बुभा; प्राय १०२, बउड) ।

सिद्धल गक [सिद्धिलय] सिध्पन करना । सिद्धलेइ, सिद्धिलि, सिद्धिलेवि (उवा यजा १०, हे ६६) सिद्धिलेहि (वेपो २४३, पि ४६८) । यह, सिद्धिलेउ (हे २, ४२) । सिद्धिलयिअ वि [सिद्धिलि] सिध्पन करना हुआ (प्राय ६१) ।

सिद्धिलिअ वि [सिद्धिलि] सिध्पन किया हुआ (बुभा; गउड, धर्म) ।

सिद्धिलेइय वि [सिद्धिलेइय] सिध्पन किया हुआ (पुर २, १६; १७३) ।

सिद्धिलेइय वि [सिद्धिलेइय] सिध्पन बना हुआ (पउम ५३, २४) ।

सिण देखो सण = शण (जी १०; सुभा १८६; गा ७६८) ।

सिणगार देखो सिंगार = शृङ्गार, 'सिणगार-चारवेसो' (सबोष ४७), 'कारिपमुत्तुंरसि-णगार' (सिदि १५८) ।

सिगा भक् [स्ना] स्नान करना, नहाना । सिगाइ (सुम १, ७, २१; प्राय २८) । बंङ्. सिगाइत्ता (सुम २, ७, १७) । हेङ्. सिगाइत्तए (मीर) ।

सिगाउ पुंकी [स्नायु] नावो-विशेष, बाटु वहन करनेवाली नावी (प्राय २८) ।

सिणाण उ [स्नान] नहान, धबगाहन (मम ३५, पोष ४६६, रपण १४) ।

सिणाव देखो सिणाय = स्नात (ठा ४, १—पव १६३, ५, ३—पय २३६) ।

सिणाय देखो सिगा । सिणापति (इम ६, ६३) । बट. सिणायंत (उवा ६, ६३; पि १३३) ।

सिणाय } वि [स्नात, 'क] १ प्रयान, सिणायाग } यैष्ठ (सुम २, २, ५६) । २ सिणायाय } बुनि गिरीय, वेदलमान प्राप्त बुनि, केरवी भगवान् (मम २५, ६, एहि १३८ टी, ठा ३, २—यम १२६, धर्मल १३५८, उत २५, १४) । ३ पुट टिण्य, बोधि वरप (सुम २, ६, २६) ।

सिणाय य [स्नपय] स्नान करना । सिणावेदि (री) (नाट—वैद्य ४६) । सिणावेदि, सिणावेदि (भाषा २, २, ३, १०, पि १३३) ।

सिणि जी [सृण] मंडरा (सुभा ५३७, गिरि १०५८) ।

सिणिगक भक् [सिद्ध] श्रेष्ठि करना । सिणिगमद (प्राय २४) । नम. सिणइ (हे ४, २२५) । बउड. सिणपंत (बुभा ७, ६०) ।

सिणिगद वि [सिणाव] १ शीति-मुक्त, मने-मुक्त (स्वप्न ५२, प्राय ६३) । २ पद, रस-मुक्त (बुभा) । ३ मयउ, मोनय । ४ बिचना । ५ न. माउ का मोड़ (हे २, १००; प्रय) ।

सिणेह देखो सणेह (भग एया १, १३—
पत्र १८१, स्वप्न १५, कुमा, प्राप् ६)।

सिणेहालु वि [स्नेहवत्] स्नेहावा (स
७६३)।

सिण्ण वि [सिन्न] स्नेह-युक्त (भा २४४)।

सिण्ण देखो सिन्न = शीण (नाट—मुच्छ
२१०)।

सिण्ह पुन [शिरन] पुबिह, पुरुष लिंग
(आश्र ६, ५, ५)।

सिण्हा छो [दे] १ दिन, आकाश से गिरता
फल क्या (दे ८, ५३)। २ धनरवाय, कुहय,
कुहासा (दे ८, ५३, पात्र)।

सिण्हालय पुन [दे] फल विशेष (मनु ६)।

सिति देखो सिद्ध = (दे) (वद १०)।

सित्त वि [सिक्त] सींचा हुआ (सुर ५, १४५,
कुमा)।

सितुंज देखो सेतुंज (सूक्त ५२)।

सित्थ न [दे] गुण, पतुष की डोरी, 'सित्थ
न असोत्तय मह मण देव दूनेह' (कुम १४,
पात्र)।

सित्थ } न [सिक्थ] १ पाय कण (पणह
सित्थय १, ३—पत्र ५५, कण, धीप,
मणु १४२)। २ नीम (दे १, ५२, पात्र,
उप ७२८ टी)। ३ धोपवि विशेष, नीली,
नील (हे २, ७७)। ४ पुन, कवल, प्रास,
'माने माने उ जा छण्णा एगसित्थेण पाए' (गच्छ ३, २८, प्रात्र)।

सित्था छो [दे] १ हाता। २ जीवा, धनुष
की डोरी (दे ८, ५३)।

सित्थि वु [दे] मल्ल, मछली (द ८, २८)।

सिद्ध वि [दे] परिपाठित, विदारित, छोरा
हुआ (दे ८, ३०)।

सिद्धि वि [सिद्ध] १ मुक्त, मोक्ष प्राप्त, निर्वाण-
प्राप्त (ठा १—पत्र २५, मग, कण, विसे
३०२७, २६, सम ८६; जी २५, सुपा
२४४, ३४२)। २ निपात्र, बना हुआ
(प्राप् १५)। ३ पत्रा हुआ (सुपा ६३३)।
४ शासन, नियम (वेदप ६७६)। ५ प्रतिष्ठित,
सम प्रत्युष्ट (वेदय ६७६, सम १)। ६
निर्दिष्ट, निर्णीत (सम १)। ७ विख्यात,
प्रसिद्ध (वेदय ६८०)। ८ शब्द विशेष,

साध्य-विलक्षण शब्द (माम ८६)। ९ सावित
किया हुआ। १० प्रतीक, ज्ञात (पचा ११,
२६)। ११ पु. विद्या, मत्र, कर्म, शिल्प
आदि में विज्ञान पुष्टता प्राप्त की हो वह
पुख्य (ठा १—पत्र २५, विसे ३०२८, वजा
६८)। १२ समय-परिमाण विशेष स्तोत्र-
विशेष (कण)। १३ न, लगातार पनरह
दिनों के उपवास (सबोच ५८)। १४ पुन.
महाहिमवत आदि धनक पर्वतों के शिखरों
का नाम (ठा ८—पत्र ४३६, ६—पत्र
४३४, इक)। १५ क्त्वर पुन [क्त्वर] नभो
परिहृताण यह वाक्य (भाव)। १६ डिया
छो [गण्डिका] सिद्ध सबन्धी एक शब्द-
प्रकरण (मग)। १७ क न [चक्र] बहन्
आदि नव पद (सिरि ३४)। १८ न [ज]
पकाया हुआ भजन (सुपा ६३३)। १९ पुन पु
[पुन] जैन साधु और गृहस्थ के बीच की
भवस्थावाला पुख्य (सबोच ३१, निवृ १)।
'मणोरम पुं [मनोरम] पल का दूसरा
दिन (सुज १०, १४)। 'राय पु [राज]
निमग्न की बारहवीं शताब्दी का गुजरात का
एक सुप्रसिद्ध राजा, जो सिद्धराज जयसिंह के
नाम से प्रसिद्ध था (कुप्र २२, वाम १५)।
'वाल पु [पाल] बारहवीं शताब्दी का
गुजरात का एक प्रसिद्ध जैन कवि (कुप्र
१७६)। 'सेण पु [सेन] एक सुप्रसिद्ध
प्राचीन जैन महाकवि और तार्किक आचार्य
(समस्त १४१)। 'सेणिया छो [श्रेणिया]
बारहवीं जैन धर्म ग्रन्थ का एक ग्रन्थ (एवि)।
'सेल पु [शील] शत्रुघ्न पर्वत, सीराट्ट
देश में पालीताना के पास का जैन महा-
शीर्ष (मुख १, ३, सिरि ५५२)। 'हेम
न [हम] आचार्य हेमचन्द्र विरचित प्रसिद्ध
व्याकरण-ग्रन्थ (मोह २)।

सिद्धत पु [सिद्धान्त] १ भाग्य शास्त्र (ज.
वह १, एवि)। २ निश्चय (स १०३)।

सिद्धत्वं पु [दे] दद, देव विशेष (दे ८,
३१)।

सिद्धत्वं वि [सिद्धार्थ] १ इतार्थ, ब्रह्म
(पत्रम ७२, ११)। २ पुं. भगवान् महावीर
से विद्या का नाम (सम १३१, कण. पत्रम
२, २१, सुर १, १०)। ३ ऐश्वर्य वर्ण के

भावी दूसरे जिन देव (सम १५४)। ४ एक
जैन मुनि जो नववें बलदेव के दोहा-गुरु से
(पत्रम २०, २०६)। ५ वृक्ष विशेष (सुपा
७७, पिड ५६१)। ६ सर्प, सरसो (मणु
२३, कुप्र ४६०, पत्र १५४, हे ४, ४२३,
उप वृ ६६)। ७ भगवान् महावीर के कान
से नील निकलनेवाला एक वणिज (वेदय
६६)। ८ एक देव-विमान (सम ३८, आचा
२, १५, २, देवेन्द्र १४५)। ९ यज्ञ विशेष
(आक)। १० पाटलिपुत्र नगर का एक राजा
(विपा १, ७—पत्र ७२)। ११ एक गाँव
का नाम (भग १५—पत्र ६६४)। १२ पुन न
[पुन] भग देश का एक प्राचीन नगर (सुर
२, ६८)। १३ व न [वन] वन विशेष
(भग)।

सिद्धत्वा छो [सिद्धार्थ] १ भगवान् भूमि
नन्दन स्वामी की माता का नाम (सम
१५१)। २ एक विद्या (पत्रम ७, १४५)।
३ भगवान् सम्भवनाथजी की बीसा शिविका
(विचार १२६)।

सिद्धत्वा छो [सिद्धार्थिका] १ मिष्ट-वस्तु-
विशेष (पणह १७—पत्र ५६३)। २ भान
रण विशेष, सोने की बड़ी (मीप)।

सिद्धय पुं [सिद्धय] १ वृक्ष विशेष, सिद्धवार
वृक्ष, सफ़ाहु का वृक्ष। २ शाल वृक्ष (हे
१, १८७)।

सिद्धा छो [सिद्धा] १ भगवान् महावीर की
शासन देशों, सिद्धादिना (संति १०)। २
प्रायश्चित्त विशेष मुक्ति स्थान, सिद्ध शिला (सम
२२)।

सिद्धाश्वा छो [सिद्धाश्विन] भगवान् महा-
वीर की शासन देशों (गण १२)।

सिद्धाययण पुन [सिद्धायतन] १ शारवत
मन्दिर—देव गृह। २ जिन मन्दिर (ठा ४,
२—पत्र २२६, इक सुर ३ १२)। ३ प्रभुन
पर्वतों के शिखरों का नाम (इक, ज ४)।

सिद्धालय छो [सिद्धालय] मुक्त-स्थान,
मिद शिला (मीप, पत्रम ११, १२१, इक)।
छो. 'या (ठा ८—पत्र ४४०, सम २२)।

सिद्धि छो [सिद्धि] १ मिद शिला, प्रायश्चित्त-
विशेष, बड़ा मुक्त जैन रहते हैं (भग, उप, आ

८—पत्र ४४०, शीप ६६) १२ मुक्ति, निर्वाण, मोक्ष (ठा १—पत्र २५ पद ४०, कुमा) । ३ कर्म-साय (सूत्र २, ५, २५, २६) । ४ अग्निना धादि योग की शक्ति (ठा १) । ५ इष्टार्थता, इष्टव्यता (ठा १—पत्र २५, बन्ध, शीप) । ६ निगति 'न ब्याद बुद्धि-योगो सञ्जतिदि स्यातेष्ट' (उप) । ७ सम्मन्य (हस्ति १, १२२) । ८ छन्द विरोध (विग) । ९ गद की [गति] मुक्ति-स्थान में गमन (बन्ध, शीप, पद) । १० गडिया की [गण्डिका] ग्रन्थ प्रकरण विरोध (मग ११, ६—पत्र ५२१) । ११ 'पुर न [पुर] नगर-विरोध (कुप २२) ।

सिन्न वि [शीर्ण] जोर, मना हुआ (मुपा ११, ३३ ७० टी) ।

सिन्न देतो सिपग = सिन्न (मुपा ११) ।

सिन्न क्षीन [सिन्ध] १ मिला हुआ हाथी घोडा आदि । २ ऐसा का समुदाय (दे १, १५०, कुमा) । जो, 'ठा मन्त्रिणे नवरे पवेडिडं मत्तुसिमाय' (गुर १२, १०४) ।

सिप देतो सिप । सिनर (पद) ।

सिप न [दे] पलात, पुमान् लुण विरोध (दे २, २८) ।

सिप ॥ [शिरप] बह-बाह, बाणेशी, चिरादि-निस्तान, बत्ता, हुनर, क्रिया-पुनरुत्था (पद १, १—पत्र ५५, उग्रा श्रमू ८०) । २ शैल्यार, अग्नि-संपात । ३ अग्नि का बीज । ४ पु तेनलाय का मणिदाता देन (ठा ५, १—पत्र २६२) । 'सिद्ध पु [सिद्ध] बत्ता में धतिपुनर (घासम) । 'जीन वि [जीन] बाणेशी, बत्ता—हुनर से जीवित-निर्वाह करनेवाला (ठा ५, १—पत्र १०३) ।

सिप्या की [सिप्पा] नदी विरोध, जो उजैन के पास से गुजरती है (म २६१, उग्रा २१८, पु ४०) ।

सिपि वि [शिरिपन्] बाणेशी, हुनरी, बिम धर्म बत्ता में हुनर (बीन मा ४) ।

सिपि की [शुक्ति] कील, चप्पा (दे २, १३८, उग्रा, पद, कुमा श्रमू ३६ वि १५२) ।

सिपिअ वि [शिरिपन्] शिली, बाणेशी (महा) ।

सिपिअ न [दे] लुण विरोध, पलात, पुमान् (पण १—पत्र ३३, मा ३२२) ।

सिपि की [दे] मुक्ती, सुई (पद) ।

सिपिअ देतो सिपिअ (मा ३३० अ. वि २११) ।

सिपि देतो सिपिअ (पत्र १२, २७) ।

सिपि देतो सिपि (पद) ।

सिपि की [शिफा] बुन का जगहार मूल (दे १, २३६) ।

सिपि स [सिम] सर्व, सब (ग्रामा) ।

सिपि देतो सोमा, 'जान सिमसिनिदाणं पत्तो मगरस बाहिदमाणे' (मुपा १६२) ।

सिमसिम ॥ पद [सिमसिमाय] 'विम सिमसिमाय' सिपि प्राधान्य करना । सिम विमायवि (वजा ८२) । वद, सिमसिमन (मा ५६१ म) ।

सिमिग देतो सुमिग (दे १, ४६ २५६) ।

सिमिअ (अन) देतो सिपिअ (अवि) ।

सिमिसिम ॥ देतो सिमसिम । वद, सिमसिमाअ ॥ सिमिसिमन, सिमिसि माअन (मा ५६० वि ५५८) ।

सिमिसिमि वि [सिमिसिमि] 'विम सिम' प्राधान्य करनेवाला (पत्र १०५, ५५) ।

सिपि स [सुन्] १ बन्नात, निर्वाण करना । २ छाटना, स्थान करना । निरद (वि २३३) निरदिम (विम ३३०६) ।

सिपि न [सिरम्] १ मत्त, माका विर (पास मुमा वद) । २ प्रधान, बंछ । ३ धम भाग (दे १, ३२) । 'व न [व] शिराण, मत्त का बलर (दे ५ ३१ कुमा पुन २६२) । 'आग, 'ताग न [आग] बले पुनो न सय (कुमा म १८२) । 'यसि की [यसि] विरिमा विरोध, निर में बल-वीर देन लामें मत्त देन धादि बल देन बाणार (विम १, १—पत्र १२२, निराअदि (विमिअन्) 'एव' (रागा १, ११—पत्र १८६) । 'मयि देता सिपि मयि (मुपा ३३३) । 'व पु [उ] नेट, बान (म बा न बीन, म २०८) । 'दूर न ।

[शुह] मकान के ऊपर की छत, चट्टानाला (दे ३, ४६) । देतो सिरि ।

सिरि देतो सिरा (जी १०) ।

'सिरय' देतो सिर = शिर्य (बन्ध, पण ५ 'सिरस' १, ४—पत्र ६८, शीप) ।

सिरसानत्त वि [शिरसायवत्, शिरस्थानवत्] मत्त पर प्रदग्निता करनेवाला, शिर पर पछिमण करता (छाया १, १—पत्र १३, बन्ध शीप) ।

सिरा की [शिरा, मिरा] १ रा मत्त, माकी (छाया १, १३—पत्र १८१, जी १०, जीन १) । २ घास, प्रवाह (कुमा उर पु १६६) ।

सिरि देतो सिरि (कुमा, जी ५०, श्रमू ५२, ८०, बन्ध १, १, वि ६८) । 'उत्त पु [पुन] मारतय में होनेवाला एक बकरा का राजा (म १५४) । 'उर न [पुर] मगर विरोध (उ ५५०) । 'पंठ पु [कण्ठ] १ शिर, महादेव (कुमा) । २ बानवीर का एक राजा (पत्र ९, ३) । 'बन पुन [पान्त] एक देन विमान (म २७) । 'वना की [पान्ता] १ एक राज-पत्नी (पत्र ५, १८७) । २ एक बुनकर-पत्नी (म १५०) । ३ एक राज-नन्या (महा) । ४ एक पुनरिणी (दर) । 'कन्द-छा पु [कन्दल] पशु विरोध, एक-मुन जानवर की एक जाति (पण १—पत्र ४६) । 'करा न [करग] १ म्हाया-मान्य, म्हाय-मीर । २ कैमना (मुपा ३६१) । 'करा य वि [करणीय] भी करण-नीय (मुपा ३६१) । 'कृद पुन [कृद] शिरात वंछ का एक शिर (राग) । 'मंठ म [मगठ] बन्द (गुर २, २६, बन्ध) । 'मला एको करण (मुपा ४२२) । 'मीन पु [मय] शान्त-नीय का एक राजा, एक सैन्यानि (पत्र ५, २६१) । 'मुन पु [मुन] एक देन मयि (बान) । 'पर न [मृद] मृद, माका (छाया १, १—पत्र २१ मृद २३) । 'परिअ वि [मुदिक] मन्त्रे मन्त्रना (वि १४२६) । 'पद पु [पद] १ एक मन्त्र देनकर्तृ और पदकर (पत्र ४६, मुपा ३६८) । २ ऐक्य धेन में होकर एक

पराहृद की प्रथिप्रापी देवी (ठा २, ३—
पत्र ७२)। ५ उत्तर हृदक पर रहनेवाली
एक दिव्यमायी देवी (ठा ८—पत्र ४३७)।
६ देव प्रतिमा-विशेष (छाया १, १ टी—पत्र
४३)। ७ भगवान् बुन्दुनाथ जी की माता
का नाम (पत्र ११)। ८ एक श्रेष्ठि-मन्या
(गुप्त १५२)। ९ एक श्रेष्ठि पत्नी (कुप्र
२२३)। १० देव, पुत्र आदि के नाम ये
पूर्व में लगाया जाता था—रघु-सूक्त रावट
(पत्र ७, कुमा, वि २८)। ११ बायीं।
१२ देव-रचना। १३ धर्म आदि गुणार्थ।
१४ प्रकार, भेद। १५ उपकरण, नाभन।
१६ बुद्धि, मर्त्य। १७ प्राधिकार। १८ प्रमा,
तेज। १९ नीति, पन्था। २० सिद्धि। २१
बुद्धि। २२ विभूति। २३ लवण, लौह।
२४ सरल बुद्धि। २५ बिल-बुद्धि। २६
भोग्य विशेष। २७ बमल, पत्र (हि २,
१०४)। देवो सिय, सिरि, सी = श्री।

सिरीस देवी सिरिम (छाया १, १—पत्र
१६०, श्रीप, कुमा)।

सिरीसिय पु [सरोचप] सर्व, साँप (सूच
१, ७, १५, वि ८१, १७७)।

सिरो देवो सिर = सिरह। धरा (श्री)
देवो हरा (वि ३४७)। मणि पु [मणि]
प्रधान, प्रणाली, मुख्य, 'प्रससिरोमछी'
(गा १७०, गुप्ता ३०१, प्राप्ता २७)। 'रह
पु' [रह] बैरा, बाल (पात्र)। 'यिअणा
छी' [यदना] गिर की कोठा (हि १,
१५६)। 'परिय देवो सिर-परिय (राज)।
'हरा श्री' [धरा] दीवा, गन्ना, बीरा (पात्र,
छाया १, ३, स. म. म. २२४)।

सिल देवो सिला (कुमा)। 'पपगट न
[प्रगट] विदुम (श्रीप)।

सिलेन देवो तिलिन (पात्र)।

सिलप पु [दे] उम्ह, गिरे हुए धन-वस्तु
का ग्रहण (दे ८, ३०)।

सिला छी [सिला] १ निव, बटान, पत्थर
(पात्र प्रा. बप्प, कुमा)। २ मोला (दे ८,
६)। ३ 'जड पु' [जतु] पिताविन,
पत्नी के लग्न होनेवाला दम्प-विशेष, जो
दवा के नाम में मोला है, सिना रस (ज
७२२ टी. परमि १४१)।

सिलाइच पु [शिलादिल] वनमोपुर का
एक प्रसिद्ध राजा (श्री १५)।

सिलागा देवो मलागा (स ८४)।

सिनाप (श्री) नीचे देवो। क. सिलचपीअ
(प्रयो १७)।

सिलाद सक [रुप] प्रसंसा करना।
क. सिलाहणिअ (रमण ११)।

सिलाहा छी [शिला] प्रसंसा (मे ८८)।

सिलिद पु [शिलिद] वायव्य-विशेष (पत्र
१५६, सवोय ४३, आ १८; दसति ६, ८)।

सिलिध पु [शिलिध] १ कुल-विशेष,
छनक कुल, मुनिस्फट कुल (छाया १, १—
पत्र २४, १—पत्र १६०, श्रीप, कुमा)।

२ पु. पर्वत-विशेष (स २५२)। 'निलय
पु' [निलय] पर्वत विशेष (स ४२४)।

सिलिय पु [दे] शिष्य, बच्चा (दे ८, ३०;
गुर ११, २०६, गुप्ता ३४)।

सिलिट्ट वि [दिलिट्ट] १ मनोम, मुन्दर,
'महार्त्तसिधमालाएमजयमुचपातकुम्भसदिय-
सिलिट्टवण' (पण्ड १, ४—पत्र ७६)।

२ संगत, युक्त (श्रीप)। ३ आसिद्धि।
४ सद्यत्। ५ स्तेवातकार-युक्त (हि २, १०६,
प्राप्ता)।

सिलिपद देवो सिलिपड (राज)।

सिलिह पु छी [रलेमन] रलेया, बफ
(हि २, ५३, १०६, वि १३६)। देवो
सेहू।

सिलिया छी [दालिसा] १ बिरेता आदि
गुण, भाववि विशेष। २ पायाल-विशेष,
शत्रु की तोहफा करने का पायाल (छाया १,
१३—पत्र १८१)।

सिलिअ देवो सिलिट्ट (कुमा ७, १५)।

सिलिअ वि [रले प दन्] रनोप नामक
रोगवाता, जिससे पैर पुला हुआ भीर बजिन
हो जाता है उस रोग में शूल (भाषा, बुद्ध १)।

सिलीमुद पु [शिलमुग] १ बाण, तीर
(पात्र, गुर ६, १४)। २ रावण का एक
योद्धा (पत्र ३६, ३६)।

सिलीस देवो मिलेस = छिप। सिलीपद
(भाषा)। सिलीति (मुद्र २, ३, ३५)।

सिलिचय पु [शिलिचय] १ देह पर्वत
(मुद्र ३)। २ पर्वत, पाहाड़ (रमा)।

सिलिच्छिय पु [शिलिच्छि] मत्स्य-विशेष
(जोब १ टी—पत्र ३६)।

सिलिह देवो सिलिह (पट्ट)।

सिलेस सक [शिलि] आसिद्धि करना,
भेंटना। सिलेस (हि ४, १६०)।

सिलेस पु [रलेप] १ वज्रपेप आदि सबान
(गुप्ता १८५)। २ आसिद्धि, भेंट (गुर
१६, २४३)। ३ ससर्ग। ४ बाह (हि २,
१०६, पट्ट)। ५ एक शब्दासकार (गुर
१, ३६, १६, २४३)।

सिलेस देवो सिलिह (पट्ट ५)।

सिलोअ १ पु [श्लोक] १ कविता, पद्य,
मिलोम। वायव्य (मुद्रा १६८; गुप्ता ५६४;
परि ३, महा)। २ यश, नीति (मूमा १,
१३, २२; हि २, १०६)। ३ कला-विशेष,
कवित्व, वायव्य कला की कला (श्रीप)।

सिलोचय देवो सिलुचय (पात्र, गुर १, ७,
राज)।

सिल पु [दे] १ कुल, घरछा, राज-विशेष
(गुप्ता ३११, कुप्र २८, बाग, विरि ४०३)।

२ पौल-विशेष, एक प्रकार का जहाज (सिरि
३=३)।

सिला देवो सिला। १ पु [नार] विगा-
वट, पत्थर गडनेवाला चिन्नी (श्री १५)।

सिलह्य न [सिलह्य] गण-अध्यक्ष-विशेष
(राज)।

सिलह्य छी [दे] शीत, पात्र (सि १२, ७)।

सिय न [शिय] १ मज्ज, बल्पाण। २
मुल (पात्र, कुमा, गण्ड)। ३ शक्ति (पट्ट
२, १—पत्र १६)। ४ दुन मुक्ति, मोक्ष
(पात्र, मज्ज ७६, सम १, कप, श्रीप,
परि)। ५ वि मज्ज-युक्त, उग्र-वदित
(बप्प, श्रीप, सम १, परि)। ६ पु. महादेव
(छाया १, १—पत्र ३६; पात्र, कुमा,
सम्मत ७६)। ७ विरि, शीर्षक, मर्हन्
(पट्ट १०६, १२)। ८ एव शक्ति, जिसने
धनराज महाशेर के पात्र सोझा सी को (ठा
८—पत्र ४३०; म. ११, ६)। ९ पर्वत
का मुन्दरे कला बन्दरे का पिता (पत्र १५२)।
१० देव-विशेष (पत्र, मज्ज)। ११ नीर
मास का सोरोत्तर नाम (गुप्ता १०, १६)।

जिनदेव (सम १५४, पव ७) । ३ घातवें बलदेव का पूर्वमन्त्रोप नाम (पउम २०, १६१) । 'चंदा खी ['चन्द्रा] १ एक पुष्करिणी (इक) । २ एक राज-पत्नी (उप ६८६ टी) । 'हुड पु ['आध्य] एक जैन मुनि (कप्प) । 'णयर न ['नगर] बैताख की दक्षिण-थेणी वा एक विद्याधरनगर (इक) । देखो 'नयर । 'निकेतण न ['निकेतन] बैताख की उत्तर-थेणी में स्थित एक विद्याधर-नगर (इक) । 'णिलय न ['निलय] बैताख पर्यंत की दक्षिण-थेणी में स्थित एक नगर (इक) । देखो 'निलय । 'णिलया खी ['निलया] एक पुष्करिणी (इक) । 'णिहुवय पुं ['कामक] विष्णु, श्रीकृष्ण (कुमा) । 'ताली खी ['ताली] वृक्ष-विशेष (इपू) । 'दत्त पुं ['दत्त] ऐरवत वर्ष में उत्पन्न पौर्वर्ष जिन-देव (पव ७) । 'दाम न ['दामय] १ शोभावाली माला (नं ५) । २ दामर-वृक्ष (शामक) । ३ पुं. एक राजा (विपा १, ६—पत्र ६४) । 'दामकंड, 'दामगंड पुन ['दामकाण्ड] १ शोभावाली मालाओं का समूह (नं ५) । २ एक देव-विमान (सम ३६) । 'दामगंड पुन ['दामगण्ड] १ शोभावाली मालाओं का दलशकार समूह (नं ५) । 'देवी खी ['देवी] १ देवी-विशेष (राज) । २ लक्ष्मी (सर्ववि १४७) । 'देवीनद्रण पुं ['देवी-मन्दन] कामदेव (सर्ववि १४७) । 'नैदण पुं ['नन्दन] १ कामदेव । २ वि. श्री से समूह (सुपा २३४, धम्म १३ टी) । 'नयर न ['नगर] दक्षिण देश वा एक शहर (कुमा) । देखो 'णयर । 'निलय पुं ['निलय] वायुदेव (पउम ३८, ३०) । देखो 'निलय । 'पट्ट पुं ['पट्ट] नगर-संग्रही का सूचक एक राज-विह (सुपा २८३) । 'पञ्चय पुं ['पर्वत] पर्वत विशेष (वज्र ६८) । 'पह पुं ['ग्राम] एक प्रसिद्ध जैन आचार्य और ग्रन्थकार (सर्ववि १५२) । 'पाल देखो 'वाल (सिरि ३४) । 'फल पुं ['फल] विन्ध-वृक्ष (कुमा) । देखो 'हल । 'मूड पुं ['भूति] भारतवर्ष में होनेवाले छहवें पञ्चमर्त्ता राजा (सम १५४) । 'म देखो

'मंत (उप प्र ३७४) । 'मई खी ['मती] १ इन्द्र-नामक विद्याधर-राज की एक पत्नी (पउम ६, ३) । २ एक राज-पत्नी (महा) । ३ एक साध्विह-भन्या (महा) । 'मंगल पुं ['मङ्गल] दक्षिण भारत का एक देश (उप ७६८ टी) । 'मत वि ['मत्] १ शोभावाला, शोभा-युक्त (कुमा) । २ पुं. तिलक वृक्ष । धरतरण वृक्ष । ४ विष्णु । ५ शिव, महादेव । ६ खान, कुला, (हैं २, १५६; पड्) । 'मलय न ['मलय] बैताख की दक्षिण-थेणी में स्थित एक विद्याधर नगर (इक) । 'महिअ पुन ['महिक] एक देव-विमान (सम २७) । 'महिआ खी ['महिता] एक पुष्करिणी (इक) । 'माल पुं ['माल] एक प्रसिद्ध बंरा (कुम १४३) । 'मालपुर न ['मालपुर] एक नगर (सी १५) । 'यंठ देखो 'कंठ (गउड) । 'यंढल देखो 'कंदला (पएह १, १—पत्र ७) । 'वड् पुं ['पति] श्रीकृष्ण, वायुदेव (समस्त ७५) । 'वच्छ पुं ['वरस] १ जिनदेव आदि महापुरुषों के हृदय का एक ऊँचा धमयवाकार विह (श्रीप, सम १५३, महा) । २ महेन्द्र देवसोक के इन्द्र का एक पारिव्यायिक विमान (ठा ८—पत्र ४३७) । ३ एक देव-विमान (सम ३६; देवेन्द्र १४०; श्रीप) । 'वन्झा खी ['वत्सा] भगवान् शैवालनाम्न की शासन-देवी (सति ६) । 'वडिसय न ['अवतंसक] सौषमे देवसोक का एक विमान (राज) । 'वण न ['वन] एक उद्यान (धत ४) । 'वण्णी खी ['पर्णी] वृक्ष-विशेष (पएह १—पत्र ३१) । 'वत्त (सप) देखो 'मंत (मयि) । 'वद्धण पुं ['वर्धन] एक राजा (पउम ५, २६) । 'वय पुं ['वद] पक्षि विशेष (दे १, ६७, ८, ५२ टी) । 'वारिसेण पुं ['वारि-पेण] ऐरवत वर्ष में होनेवाले चौबीसवें जिनदेव (पव ७) । 'वाल पुं ['पाल] १ एक प्रसिद्ध जैन राजा (सिरि ३१७) । २ राजा सिद्धराज के समय का एक जैन महाकवि (कुम २१६) । 'संमूआ खी ['समुत्ता] पक्ष की छहवीं रात (सुज १०, १४) । 'सिचय पुं ['सिचय] ऐरवत वर्ष में

उत्पन्न दूसरे जिनदेव (पव ७) । 'सेण पुं ['पेण] एक राजा (उप ६८६ टी) । 'सेल पुं ['शिल] हनुमान (पउम १७, १२०) । 'सोम पुं ['सोम] भारतवर्ष में होनेवाला सातवां पञ्चमर्त्ता राजा (सम १५४) । 'सोणणस पुन ['सोमनस] एक देव-विमान (सम २७) । 'हर न ['गृह] मंडार (धा २८) । 'हर पुं ['धर] १ भगवान् पार्थनाथ का एक मुनि-गण । २ भगवान् पार्थनाथ का एक गणधर—मुख्य शिष्य (कप्प) । ३ भारतवर्ष में प्रतीत उत्तराषिणी ऋतु में उत्पन्न सातवें जिनदेव । ४ ऐरवत वर्ष में वर्तमान प्रवर्षाणी काल में उत्पन्न बीसवें जिनदेव (पव ७; उप ६८६ टी) । ५ वायुदेव (पउम ४७, ४६; पड्) । 'हर वि । ['हर] श्री को हरण करनेवाला (कुमा) । 'हल न ['फल] विल्व फल (पाप), देखो 'कल ।

सिरिअ पुं [श्रीक, श्रीयक] स्मृतभद्र का छोटा भाई और नन्द राजा का एक भन्नी (पडि) ।

सिरिअ न [स्यैय] लच्छन्तता (नै ७३) ।

सिरिण पुं [दे] विट, लम्पट, वासुक (दे ८, ३२) ।

सिरिह पुं [दे] पक्षियों का पान-पात्र (पाप, दे ८, ३२) ।

सिरिमुह वि [दे] मय-मुल, जिसके मुह में मद हो वह (दे ८, ३२) ।

सिरिया देखो सिरी (सम १५१) ।

सिरिली खी [दे. श्रीली] बन्ध-विशेष (उत्त ३६, ६८) ।

सिरियच्छीय पुं [दे] गोपाल, गवाता (दे ८, ३३) ।

सिरियय पुं [दे] हुंव पत्ती (दे ८, ३२) ।

सिरियय देखो सिरि-यय ।

सिरिस पुं [श्रीरीप] १ वृक्ष-विशेष, सिरसा का पेड़ (सम १३२, हे १, १०१) । २ न. सिरसा का फूल (कुमा) ।

सिरी खी [श्री] १ लक्ष्मी, यमना (पाप-कुमा) । २ संपति, समृद्धि, विभव (पाप, कुमा) । ३ शोभा (श्रीक, राय, कुमा) । ४

पद्महृद की अधिष्ठात्री देवी (ठा २, ३—
पृ ७२)। ५ उत्तर हृदय पर रहनेवाली
एक विष्णुमारी देवी (ठा ८—पृ ४३७)।
६ देव प्रतिमा-विशेष (छाया १, १ टी—पृ
४३)। ७ भावार्थ कुन्नुनाम जो नी माता
का नाम (पृ ११)। ८ एक श्रेष्ठि-न्या
(कृष् १५२)। ९ एक श्रेष्ठि पत्नी (कृष्
२२१)। १० देव, गुप्त आदि के नाम के
पुं में लगाया जाता आदर्श-सूचक शब्द
(पृ ७, कुमा, पि ६८)। ११ काशी।
१२ देव-रचना। १३ धर्म आदि पुण्यार्थ।
१४ प्रकार, भेद। १५ उपकरण, साधन।
१६ बुद्धि, मतो। १७ अधिष्ठाता। १८ प्रसा,
देव। १९ कीर्ति, मरा। २० सिद्धि। २१
बुद्धि। २२ विभूति। २३ लय, संगीत।
२४ सरल बुद्धि। २५ विस्मय-वृत्ति। २६
आधिपति विशेष। २७ कर्म, पद (हि २,
१०४)। देवो सिद्ध, सिद्धि, सी = थी।

सिरीस देवी सिरिम (छाया १, १—पृ
१५०, श्रीर, कुमा)।

सिरीसिध पु [सरीसिध] सर्व, साध (मृ
१, ७, १५, पि ६१, १७७)।

सिरो देवी सिर = शिखर। "धरा (श्री)
देवो हरा (पि ३०४)। "मणि पुं [मणि]
प्रधान, मन्त्रणी, मुख्य, "मलसविमोमणी"
(मा ६७०, गुप्ता ३०१, प्रामू २७)। "रह
पुं [रह] बैरा, बाल (पाप)। "विप्रणा
श्री [वदना] पिर की घोडा (हि १,
१५६)। "वसिथ देवो सिर-नरिव (राज)।
हरा श्री [हरा] घोवा, मरा, घोड़ (पाप,
छाया १, १ स, पमि २२४)।

सिल देवी सिला (कुमा)। "पराळ न
[पराळ] विदुम (मीप)।

सिलं देवी सिलिज (पाप)।

सिल्य पुं [दे] उज्ज निरे हूँ घन बलो
का प्रहण (दि ८, ३०)।

सिला श्री [शिला] १ मिल, बटान, पत्थर
(पाप प्राय, कृष्, कुमा)। २ पोता (दन
८, ६)। "उज पुं [जतु] शिवाजि,
पर्वतों में उगलने योग्य द्रव्य-विशेष, जो
दरा से बाम में जाता है, शिवा-रस (उप
७२८ टी, पमि १४१)।

सिलाइय पुं [शिलादित्य] बलभीपुर का
एक प्रसिद्ध राजा (सी १५)।

सिलागा देवो सलागा (स ८४)।

सिन्गच (श्री) नीचे देखो। घ. सिलाचणीअ
(प्रयो ६७)।

सिलाह सक [श्यान्] प्रशंसा करना।

क. सिलाहणिज (रमण १६)।

सिलाहा श्री [शलाया] प्रशंसा (मे ८८)।

सिलिंद पुं [शिलिन्द] घान्य-विशेष (पृ
१५६, सवोष ४३, या १८, दर्शन ६, ८)।

सिलिंघ पुन [शिलिंघ] १ कुल-विशेष,
धनक बुद्ध, सुमिल्लाट बुद्ध (छाया १, १—
पृ २५, ६—पृ १६०, श्रीप, कुमा)।

२ पु. पर्वत-विशेष (स २५२)। "निलय

पुं [निलय] पर्वत विशेष (स ४२४)।

सिलिन पुं [दे] शिष्ट, बच्चा (दि ८, ३०;
सुर ११, २०६, गुप्ता ३४४)।

सिलिट्ट वि [दिलिट्ट] १ मनोम, सुन्दर,
"महाराजसिक्कमाएणमयमुकुमासकुमसठिप-

सिलिट्टकरणा" (पण्ड १, ४—पृ ७६)।

२ संगत, सुपुत्र (मीन)। ३ आसिद्धि।

४ सष्ट। ५ शैवाल-नार-मुक्त (हि २, १०६,
प्राप)।

सिलिपद्म देवो सिलिज (राज)।

मिलिह पुं श्री [श्लेष्मन्] श्लेष्मा, कफ

(हि २, ५५, १०६, पि १३६)। देवो

सेम्ह।

सिलिया श्री [मिलिहा] १ विरता आदि

सुष्ट, आधिपति विशेष। २ पापाय-विशेष,

राज की तीक्ष्ण नरते का पापाय (छाया १,
१३—पृ १८१)।

सिलिमिअ देवो सिलिट्ट (कुमा ७, १२)।

सिलिंद वि [श्लेष्मन्] १ शरीर-पद मासक

योग्यता, जिससे पैर पुनः हृषा और बलिन

हो जाता है उस राग से मुक्त (भावा, बु ११)।

सिलीमुह पुं [सिलिमुह] १ गण, तीर

(पाप, सुर ६, १४)। २ रावण का एक

सोदा (पदम २६, ३६)।

सिलीरी देवो मिलेस = छिप। विनीसद

(मरि)। सिलीमिज (मृ २, २, २५)।

सिलिथय पुं [सिलिथय] १ देव पर्वत

(सुख ३)। २ पर्वत, पहाड़ (रक्षा)।

सिलेन्धिप पुं [शिलेन्धिप] मत्स्य-विशेष
(जोव १ टी—पृ ३६)।

सिलेम्ह देवो सिलिम्ह (पृ ५)।

सिलेस सक [शिलिप्] आतिष्ठान करना,

मेटना। सिलेस (हि ५, १६८)।

सिलेम् पु [श्लेप्] १ वज्रचैप आदि मयान

(मुपनि १८५)। २ आतिष्ठान, मेट (सुर

१६, २४३)। ३ ससर्ग। ४ वाह (हि २,
१०६, पृ ५)। ५ एक शब्दाकार (सुर

१, ३६, १६, २४३)।

सिलेस देवो सिलिम्ह (पृ ५)।

सिलोअ पु [श्लोअ] १ कविता, पद्य,

सिलोअ १ वाक्य (मुद्रा १६८, मुद्रा ५६४;
अभि ३, महा)। २ यश, कीर्ति (मृ १,
१३, २२; हि २, १०६)। ३ मला-विशेष,

कवित्व, वाक्य बनाने की कला (मीप)।

सिलोअय देवो सिलुअय (पाप, सुर १, ७,
राज)।

सिल पुं [दे] १ कुल, बरछा, राज-विशेष

(कुपा ३११, कुप २८, बात, मिरि ४०३)।

२ पोत-विशेष, एक प्रकार का जहाज (मिरि
३३३)।

सिद्ध देवो सिला। "र पुं [कार] शिवा-

वद, पत्थर गढ़नेवाला शिन्धी (सी १५)।

सिलहा न [सिलहलक] गण-द्रव्य-विशेष

(राज)।

सिलहा श्री [दे] शीघ्र, जाडा (मे १२, ७)।

सिय न [शियन्] १ मज्जन, कल्याण। २

नुस (पाप कुमा, गडर)। ३ अधिना (पण्ड

२, १—पृ ६६)। ४ पुंन मुक्ति, मात्र

(पाप, सम्यत ७६; सम १, कृष्, श्रीप,

पमि)। ५ वि मज्जन-मुक्त, उदाहर-रहित

(कृष्, श्रीप, सम १, पमि)। ६ पुं, महादन

(छाया १, १—पृ ३६; पाप, कुमा;
सम्यत ७६)। ७ जिनदेव, लोचनर, प्रहृन्

(पदम १०६, १२)। ८ एक पर्वत, जिसने

मगधाल मगधीर के पास दोगा सो सो (ठा

८—पृ ४३०; सम ११, ८)। ९ पर्वत

बाबुदेव तथा बनेरस का पिता (मम १५२)।

१० देव-रिस्टेन (पद्य, मृग)। ११ पोत

मास का सोकोत्तर नाम (मुपम १०, १६)।

१२ एक देव-विमान (देवन्द १४३)। १३ छन्द-विशेष (विग)। 'कर न [कर]। छन्दो प्रवस्था की प्राप्ति। २ मुक्ति-मार्ग (सुमति ११५)। 'गइ छो [गति]। मुक्ति, मोक्ष। २ वि. युक्त, मुक्ति-प्राप्त (राज)। ३ पुं. भारतवर्ष में प्रतीत उत्तर-पिछो-काल में उत्पन्न बौद्धों जिन-देव (पृ ७)। 'तिस्थ न [तीर्थ] कारो, बनारस (हे ४, ४४२)। 'नंदा को [नन्दा] मानन्द-आनन्द की पत्नी (अन)। 'भूइ पुं [भूति]। १ एक जैन महर्षि (बण्ण)। २ बौद्धिक मत—विगबर जैन संप्रदाय का स्थापक एक मुनि (विसे २५५१)। 'रसि छो [सति] काल्पन (मुनरातो माय) मास की छहवा बटुवेंदी विधि (रुद्धि ७८ टी)। 'सेण पुं [सेन] ऐलत वर्ष में उत्पन्न एक ब्रह्म (सम १५३)।

सिचंर पुं [शिचङ्कर] पोचरे नेराव वा विना (पवम २०, १८२)।

सिचर पुं [शिचर]। १ पडा तैवार हुने सिचर पुं के पूर्व की एक अवस्था (विसे २३१६)। २ वेतम्बर नामराज का एक प्रावास-पर्वत (ह)।

सिदा छो [शिदा]। १ अगदाय नेमिनाथ जी की माता का नाम (सम १११)। २ सौषर्ग देवलीक के ह्दर की एक अन्न-महिषी (ठा ६—पत्र ४१६, छाया २—पत्र २४३)। ३ पनरखें जिनदेव की प्रवर्तनी—मुक्य साधनी (पव ६)। ४ भृगुली, मादा तिवार (प्रमु, नरगा ११८)। ५ पार्वती (पाम)।

सिवाणंदा बेको सिन-नंदा (उवा)।

सिवाशि पुं [शिवाशि] अरुत्तेन में प्रतीत उत्तर-पिछो-काल में उत्पन्न भारह्वे जिनदेव (पव ७)।

सिचिंग बेको सुमिग (हे १, ४६; प्राप. रमा, कुमा, कण्ण)।

सिचिया छो [सिचिया] गुलाबम, पाकनी, जोतो (बण्ण, श्रीप महा)।

सिचिर न [शिचिर]। १ लम्बायाव, लम्ब-निताल-स्थान, छावनी (कुमा)। २ लैय, मेरा, लखर (मुग ६)।

सिच्य सब [सीच] चीना, तांयना। सिच्यद (पद, विसे १३६८)। चिचि-स्वामि (प्रापा १, ६, ३, १)।

सिच्य बेको सिन = चिचि (प्राह २६; सीस १७)।

सिच्यज वि [स्युन] निवाइया (पव ६२)। सिच्यणी } छो [दे] सूची, सूई (दे ८, सिच्यी } २६)।

सिसे बेको सिसेस = सिस्व। सिसेद (पद)। सिचिर न [दे] दधि, दही (दे ८, ३१; पाम)।

सिचिर पु [शिचिर]। १ श्वनु-विशेष, माय तथा फागुन वा महिना (उप ७२८ टी, हे ४, ३५७)। २ माय माय वा लोकतर (सुज १०, १६)। ३ फागुन माय, 'सिचिरो फागुण-माहो' (पाम)। ४ वि. बड, ठंडा, शीतल (पाम, उप ७६८ टी)। ५ हलवा (उप ७६८ टी)। ६ न. हिम (उप ६८९ टी)। 'किण पुं [किरण] बन्द्या (पर्वति ५)। 'महीदर पुं [महीधर] हिमालय पर्वत (उप ६८९ टी)।

सिचिसिरी बेको सिचिसरिली (राज)।

सिसु पुं [शिशु] बालक, बच्चा (मुग ५८८; सम्पत् १२२), 'बा लाह पायम्बर्ग सिस्सिरी बीय पदमपहरे' (मुग १७३)। 'आल पुं [काल] बाल्य, बाल-काल (नाट—चेत ३७)। 'नाग पुं [नाग] बुद्ध कीट-विशेष, अस्सत (उत्त ५, १०)। 'पाल पुं [पाल] एक प्रसिद्ध राजा (छाया १, १६—पव २०८; सुम १, ३, १, १, उप ६४८ टी, कुम २५६)। 'यय पुं [यय] सुय-विशेष (अण १—पव ३९)। 'बाल बेको 'पाल (सुम १, ३, १, १ टी)।

सिस्स पुली [शिच्य]। १ चेला, छात्र, विवाली (छाया १, १—पव ६०, सुम ११७)। छो. 'स्सा, 'सिचणी (मा ६, छाया १, १४—पत्र १८८)।

सिस्स बेको सीस = सीप (वव ५०)।

सिस्सिरिली छो [दे] कन्द विशेष (उत्त १६, ६८)।

सिह सक [सुह]। इच्छा करना, चाहना। सिहद (हे ४, ३४, प्राह २३)। क. सिह-पिज (दे ८, ३१ टी)।

सिह पुं [दे] भुनगरिषं की एक जाति (पुम २, ३, २५)।

सिहंठ पुं [शिखण्ड] शिखा, चूला, चोटो (पाम, अमि १११)।

सिहंठइल पुं [दे]। १ बालक, शिष्य। २ दधि-सद, दही की मलाई। मयूर, मोर (दे ८, ५४)।

सिहंठहिल पुं [दे] बालक, बच्चा (पद)।

सिहंठि वि [शिखण्डि]। १ शिखापारी (भत १००, श्रीप)। २ पुं. मयूर पक्षी, मोर (पाम; उप ७२८ टी)। ३ विष्णु (मुग १४२)।

सिहण बेको सिहिण (रंभा)।

सिहर न [शिम्बर]। १ पर्वत के ऊपर का भाग, शृङ्ग (पाम, गड, मुग ४, ५६, से १, २८)। २ अग्रभाग (छाया १, ६)। ३ खयातार भटार्ईस दिनों के उपवास (संकोप ५८)। 'अय वि [चण] शिखरो से सिह (से ६, १८)।

सिहर पुं [शिचिर]। १ पहाड़, पर्वत (विम, मुग ५६)। २ वर्षावर पर्वत-विशेष (अ २, १—पत्र ६६; वम १२, ४३)। ३ पुं. दूट-विशेष (अ २, ३—पत्र ७०)। 'वइ पुं [वलि]। हिमालय पर्वत (से ८, ६३)।

सिहरिणी } छो [दे] शिखरिणी] मानिवा
सिहरिणी } काट-विशेष, दही-चोनी आदि
से बनता एक तरह का मिट्ट काट (दे १, १२४, ८, ३३, पव २, ५—पव १४८; पव ४, पमा ३३, मत, सण)।

सिहली } छो [शिखा]। १ चोटो, मस्तक
सिह्रा } पर के बालों का गुच्छा (पमा १०, ३२, पव १५३, पाम, छाया १, ५—पत्र १०८, संकोप ३१)। २ अग्नि की उजाला (पाम, कुमा, गड)।

सिहला वि [शिखावत्] शिखावाला, शिखा-युक्त (पवउ)।

सिहंठ पुं [शिखण्ड]। १ अग्नि, प्राय (पा १३, पाम, मुग ५१६)। २ मयूर, मोर (पाम, देका ४२, मा ५२, १७३)। ३ खण्ड का एक मुकट (पवम ५६, ३०)। ४ पर्वत। ५ बाह्य। ६ मुर्गा। ७ नेतु

ग्रह । ८ वृत्त । ९ परव । १० विषय-वृत्त ।
११ मन्त्र-शिक्षा-वृत्त । १२ वरुने का योग ।
१३ वि. शिक्षा-युक्त (धनु १४२) ।

सिद्धि पुं [दि] बुद्धि, पूर्ण (दि ८, २८) ।

सिद्धि वि [अवृद्धि] प्रसन्नचित्त (कुमा) ।

सिद्धि पुन [दि] स्तन, धन (दि ८, ३१;
मुर १, ६०; पाम; पद, रमा, सुभा ३२;
भवि, हम्मोर ५०; सम्मत १६१) ।

सिद्धिणी श्री [शिरिणी] छन्द-विशेष
(विण) ।

सिद्धी (मप) श्री [सिद्धी] छन्द-विशेष
(विण) ।

सी (मप) श्री [श्री] छन्द-विशेष (विण) ।
देखो सिद्धी ।

सीअ मर [सद्व] १ विपाद करना, छेद
करना । २ मचना । ३ पीछित होना, दुखी
होना । ४ फलना, फल लगना । सीमद्,
सीमति (वि ४८२, गा ८७४), 'जया सीमति
सीमद्' (वि ८२), 'सीयति य सखधंगा' (मुर
१२, २) । पद, सीअंत (पाम ५०७,
मुभा ५१०, कुन ११०) ।

सीअ न [दि] सिष्य, मोम (दि ८, ३३) ।

सीअ नि [सीय] स्वकीय, निज बा. 'सीयने-
यनेस्त्वादिहाहरणद्वयाद्', 'सीमोसिद्धा तेम-
सेत्ता' (मप १५—पन १६६) ।

सीअ देखो सिअ = सिव, 'सीमागीर्ष (प्रम) ।

सीअ पुन [शीत] १ स्पर्श-विशेष, ठंडा स्पर्श
(छा १—पन २५, पन ८६) । २ हिम,
तुहिन (शे ३, ४७) । ३ शीत काल (रात्र) ।

४ ठंड, जाड़ा (छा ४, ४—पन २८७, श्रीन,
गदर, उत २, ६) । ५ बर्ष-विशेष, शीत
सर्प । ६ बारण-भुत बर्ष (जम्म १, ४१-
४२) । ७ वि. शीतन, ठंडा (मप, प्रोप,
एया १, १ टी—पन ४) । ७ पु. प्रथम
नरक का एक नरक-स्थान (देवद ४) । ८

न. तार-विशेष, कार्यधिन तार (सीष ३८) ।

९ वि. मनुज (मू १, २, २, २२) ।
१० म. मय (पामा) । परम न [मृद]
पञ्चमी का वर्ष-निमित्त यह पर, बहो सय
मय में सयों की मनुजका होवे है (ब ३) ।

*स्वाय वि [स्वाय] सीअत धनवाचा

(श्रीन, एया १, १ टी—पन ४) । *परीसह
पुं [परीसह] शीत की सहना (उत २,
१) । *फास पुं [स्पर्श] ठंड, जाड़ा, सर्दी
(पामा) । *सीआ श्री [श्रीदा, सीता]
नदी-विशेष (इक छा ३, ४—पन १६१) ।

*लोअअ पु [लोअक] १ जन्मना । २

शीतकाल, हिम-श्रुत (शे ३, ४७) ।

सीअ देखो सीआ = सीता । *पसाय पुं
[प्रपात] ब्रह्म-विशेष, जहाँ सीता नदी पहाड़
पर से गिरती है (छा २, ३—पन ७२) ।

सीअ देखो सीआ = सीता (मुभा) ।

सीअउरय पुं [दि. शीतोररक] गुल्म-विशेष,
'पतउरसीयउरय ह्रद उदु जवासद्व ॥ बोध वे'
(मण १—पन ३२) ।

सीअन न [सद्वन] हैरानी (सम्मत ११६) ।

सीअणय म [दि] १ दुग्ध-नारी, दूध पीहने
का पात्र । २ रमरान, मसान (दि ८, ५५) ।

सीअर पुं [शीर] १ पवन से चित्त जल,
जुहार जल बल (हे १, १८४, गदर, मुभा:
सल) । २ पात्र, पवन (हे १, १८४, प्राङ
८४) ।

सीअरि वि [शोरकरि] शीकर-युक्त (गदर) ।

सीअल पुं [शीतल] १ वर्तमान प्रवर्ष-पिणी
काल के दसवें दिन-देव (सम ४३, गदर) ।
२ शृणु कुल विशेष (मुज २०) । ३ वि.
ठंडा (हे ३, १०, कुमा, गदर, रमल ५७) ।

सीअलिश्री श्री [शीतलिश्री] १ ठंडी, शीतना,
'सीममिं तेमनेच निमिचलि' (मप १५—
पन ६६६) । २ पुन-विशेष (सम) ।

सीअलि मुषी [दि] १ हिमकाल का दुश्मन ।

२ पुन-विशेष (दि ८, ५५) ।

सीआ श्री [साता] १ एक महा-नदी (मप
२०, १०२, इक) । २ द्विजानामा-नामक
पुत्रिणी, मित्र-सिन्हा (इक) । ३ सीजानागत
ब्रह्म की पवित्राणी देवी (न ४) । ४ नील
पर्वत का एक शिखर । ५ सागर-पर्वत का
एक कूट (इक) । ६ पवित्र कवच पर स्थि-
तानी दन्तुमाती देवी (छा ८—पन ३१६) ।

*मुद न [मुय] एक बर (न ४) ।

सीआ श्री [साता] १ जल-युक्त, धम-युक्त
(पन १८, २६) । २ बसुं मावदेव की

माता का नाम (पन २०, १८४, सम
१५२) । ३ साक्षान्त-पद्धति, छेत में हल
चलाने से होवी भूमि-रेखा (दे २, १०४) ।

४ द्विजानामा नामक पुत्रिणी (उत ३६,
६२; वेद्य ७२५) । ५-६ नील तथा माल-
वत् पर्वतों के शिखर-विशेष (इक) । ७ एक
दिगुमाती देवी (छा ८) ।

सीआ देखो सिविश्री (कल्प, श्रीप, सम
१५१) ।

सीआण देखो मसाण = रमरान (हे २, ८६;
ब ७) ।

सीआर देखो सिवार (एया १, १—पन
६३) ।

सीआल श्री [सतचरारिरात्] सैतालीत,
४७, (कम्प ६, २१) ।

सीआलीम श्रीन, ऊपर देवी (वि ४१५;
४४८) । श्री. 'सा' (मुज २, १—पन
५१) ।

सीआर सक [सादय] शिपिल करना,
'सीमवेद विहार' (मण १, २३) ।

सीआ श्री [दि] भरी, निम्नतर वृष्टि (हे
८, ३४) ।

सीदय वि [सस] गिर, परिष्कार (न ८५) ।

सीई श्री [दि] सीई, नि योधि (वि ६८) ।

सीउगय वि [दि] गुनाउ (दि ८, ३४) ।

सीउट्ट न [दि] हिम-नाम का दुश्मन (पद) ।

सीउण्ड न [शीतोण्ड] १ ठंडा तथा गरम ।

२ मनुज तथा प्रसिद्ध (मू १, २, २,
२२, वि १३३) ।

सीउल देवा सीउट्ट (पद) ।

सीओअ देखो साओआ । *पथाय पुं
[प्रपात] ब्रह्म-विशेष, जहाँ सीओन नदी
पहाड़ से गिरती है (न ४—पन ३००) ।

*दीय पुं [दीय] दीन विशेष (न ४—पन
३००) ।

सीओआ श्री [सीओदा] १ एक महा-नदी
(छा २, १—पन ७२, इक, सम २७;
१०२) । २ नित्य पर्वत का एक कूट (छा
६—पन ४३४) ।

सीओत्तरी श्री [दि] नाथे, छे, महना (मिदर
१६०) ।

सीत देखो शीअ = शीत (ठा ३, ४—पत्र १६१)।

सीता देखो सीआ = सीता, सीता (ठा ८—पत्र ४३६, ६—पत्र ४४४)।

सीतालीस देखो सीआलीस (गुज २, ३—पत्र ११)।

सीतोद^० देखो सीओअ^० (ठा २, ३—पत्र ७२)।

सीतोदा } देखो सीओआ (पत्र २, ४—
सीतोया } पत्र १३०, सम ८४)।

सीदण न [सदन] सिपिय, समतता (पचा १२, ४६)।

सीधु देखो सीट्ट (एमा १, १६—पत्र २०६ उवा)।

सीभर देखो सीअर (प्राप्र: कुमा: हे १, १८४, पठ)।

सीभर वि [दे] समान, तुल्य (मणु १३१)।

सीमआ जो [सीमअ] १ मर्यादा। २ भववि। ३ स्थिति। ४ क्षेत्र। ५ वेला, समय। ६ अष्टकोष, पीठा (पठ)। देखो सीमा।

सीमकर पुं [सीमकर] १ इस अक्षरपिणो काल मे उत्पन्न एक कुलहर पुष्प का नाम (पत्र ३, ५३)। २ ऐरवत क्षेत्र के भावी द्वितीय कुलहर (सम १५३)। ३ वि. मर्यादा-वर्ता (सुप २, १, १३)।

सीमंत पुं [सीमन्त] १ बालो मे बनाई हुई रेखा-विशेष (से ६, २०, गउड, उप ७२८ टी)। २ धनर काय (गउड ८४)। ३ प्राय से लगी हुई भूमि का भ्रान्त, सीमा, गांव का पर्यन्त भाग (गउड २७३; २७७, उप ७२८ टी)। ४ सीमा का भ्रान्त, हह, 'एसो थिय सीमलो गुणए दूर पुरेताए' (गउड)।

सीमंत पुं [सीमान्त] १ सीमा का अन्त भाग, गांव का पर्यन्त भाग (गउड ३६७, ४०५)। २ हह (गउड ८८६)।

सीमंत एक [दे. सीमान्तय] बेचना। संछ. सीमंतऊण (राज)।

सीमनग पुं [सीमनरु] प्रथम नरक-भूमि सीमनय } का एक नरका-वास, नरक-स्थान
(मिज १; ठा ३, १—पत्र १२६, सम ६८)।

*पम पुं [प्रम] सीमन्तर नरकावास को पूर्व तरफ स्थित एक नरकावास (देवेन्द्र २०)। *नग्गिम पुं [मधम] सीमन्तर को उत्तर तरफ स्थित एक नरकावास (देवेन्द्र २०)। *पसिट्ट पुं [पसिट्ट] सीमन्तर को दक्षिण दिशा में स्थित एक नरकावास (देवेन्द्र २१)। *पत्त पुं [पत्त] सीमन्तर को पश्चिम तरफ का एक नरकावास (देवेन्द्र २१)।

सीमंतय न [दे] सीमंत—बालों की रेखा-विशेष में पहना जाना अर्न्तवास-विशेष (दे ८, १३)।

सीमंतिज वि [सीमन्तिज] तण्डित, छिन्न (प्राप्र)।

सीमंतिणी जो [सीमन्तिनी] श्री, नारी, महिला (प्राप्र, उप ७२८ टी, समस्त १११; सुपा ७)।

सीमंधर पुं [सीमन्धर] १ आरतवर्ष में उत्पन्न एक कुलकर पुष्प (पत्र ३, ५३)। २ ऐरवत वर्ष का एक भावी कुलकर (उप १५३)। ३ पूर्व-विदेह में वर्तमान एक अर्धनृ देव (काल)। ४ एक जैन मुनि, जो भगवान् सुमतिनाथ के पूर्व जन्म मे हुए थे (पत्र २०, १७)। ५ भगवान् शीतलनाथ की का पुष्प आवक (विचार ३७८)। ६ वि. मर्यादा को पारण करनेवाला, मर्यादा का पालक (पूष २, १, १३)।

सीमा जो [सीमा] देखो सीमआ (प्राप्र, गा १६८, ७५१, कल, गउड)। *गार पुं [कार] जलबन्धु-विशेष, प्राह का एक भेद (पण्ड १, १—पत्र ७)। *धर वि [धर] मर्यादा पारक (पठि हे ३, १३४)। *ल वि [ल] सीमा के पास का, सीमा के निकट-वर्ती, 'सीमाला नरवइणो मन्वे से वेवमानवा' (सुपा २२२, ३५२, ४६३, पचवि ५६)।

सीर पुं [सीर] हल, जिससे खेत जोते हैं (पत्र ११३, १२, कुया, पठि), 'संगवयसु हासोरे' (पचवि १६)। *नारि पुं [चारिज] बलदेव, मनन्तर, राय (पत्र २०, १६३)। *पाणि पुं [पाणि] नहो (दे २, २३, कुमा)। *सीमंत पुं [सीमन्त] हल से फाबी हुई जमीन की रेखा (दे)।

सीरि पुं [सीरिज] यमदन्त, यमदेव (प्राप्र)। सीरिज वि [दे] मित्र, 'सीरिमो मित्रो' (प्राप्र)।

सील सक् [शीलय] १ ममसा करना, घादन हालना। २ पालन करना, 'सीलेज सोनमुअल' (हित १६); 'सखसील सीनह पव्वज्जमाहणे' (पा १६)। देखो सीलाय।

सील न [शील] १ वित्त का समाधान, 'सीलं वित्तमाहाणसकलं मणए एय' (उप ५६७ टी)। २ प्रत्युत्तर (प्राप्र २२; ५१; १५४, १६६, पा १६, हित १६)। ३ प्रश्रुति, स्वभाव, 'सीलं पमई' (प्राप्र); 'बतहसील' (कुमा)। ४ सदाचार, चारित्र्य, उत्तम चरित्र (कुमा, पंचा १४, १; पण्ड २, १—पत्र ६६)। ५ चरित्र, चरित्र (हे २, १८४)। ६ महिला (पण्ड २, १—पत्र ६६)। 'इ पुं [जित्] शक्ति परित्राजक का एक भेद (प्राप्र)। 'हुह वि [हिय] शील-गुण (प्राप्र ७८४)। *परिचर पुं न [परिचर] १ चारित्र्य-व्यापार। २ महिला (पण्ड २, १—पत्र ६६)। *मन, 'व वि [वत्] शील-गुण (भाषा, पत्र ७७७; पा ३६)। *जन्य न [जन] मणुवत्, जैन याचक में आलसे भोग्य महिला प्रावि पीच इत (पत्र)। *सालि वि [शालिज] शील से सीमनेवाला (सुपा २४०)।

सीलाय सक् [शीलय] सवस्तु करना। कर्म, सीलपण (पत्र १)।

सीलुट्ट न [दे] मनुष्य, सीरा, ककड़ी (दे ८, ३५; प्राप्र)।

सीव सक् [सीव] सीना, सिलाई करना, सीबना। मवि. सीविस्सामि (प्राप्र)। संछ. सीविकण (स ३१०)।

सीचणा जो [सीचणा] सीना, सिलाई (उप ५, २६८)।

सीचणी जो [दे] सूखी, सुई (गउड)। देखो सिचिचणी।

सीचणी जो [सीचणी] हल विशेष (प्राप्र सीचणी } ४५६ टी, पठि ८१, ८२, उप
१०३१ टी)।

सीविज देखो सिचिचज (से १४, २८, दे ४, ७, अध्या ३१५)।

सीस सक [शिप्] १ वष करना, हिसा करना । २ रोप करना, बाँची रखना । ३ विशेष करना । सीसइ (हि ४, २३६; पङ्.) ।

सीस सक [कयय] कहना । सीसइ (हि ४, २; भवि) ।

सीस न [सीस] घालु विशेष, सोमा (दे २, २७) ।

सीस देलो सिसस = शिष्य (हि १, ४३; कुमा, दे ४७; छाया १, ५—पत्र १०३) ।

सीस पुन [शिपे] १ मस्तक, माथा (स्वप्न ६०, प्रामू १) । २ स्तम्भक, पुच्छा (या० २, १, ८, ९) । ३ छत्र-विशेष (भिग) ।

अ न [क] शिराश्रय (बेहो ११०) ।

चड़ी ओ [घटा] सिर की हड्डी (तंदु ३८) । पंरंविअ न [प्रकुपित] सख्या-विशेष, महालाह को बीरासी लाख से गुनने पर जो सख्या लप हो वह (इक) । पहेलिअ

खीन [प्रदेलिअ] संख्या-विशेष, चौपंरहे-लिकाग को बीरासी लाख से गुनने पर जो सख्या लप हो वह (इक) । ओ. आ (ठा २, ४—पत्र ८६, सम ६०, प्रामू ६६) ।

पहेलियंग न [प्रहेलिअन] संख्या-विशेष, चूलिका को बीरासी लाख से गुनने पर जो सख्या लप हो वह (ठा २, ४—पत्र ८६, प्रामू ६६) ।

पूरग, पूरय पु [पूरक] मस्तक का आभरण (यान, तंदु ४१) ।

रूपक, रूज (मय) । पुम [रूपक] छत्र-विशेष (भिग) । पेठ पु [पेठ] गोले मयने आदि से मस्तक को लपेटना (मय ४०) ।

सीस देलो मास = शब्द ।

सीसभा न [दे, शीपेक] शिराश्रय, मस्तक का ढक्कन (दे ८, ३४, से १३, २०) ।

सीसम पुन [से] सीसम का गाछ, फिस्मा (अ १०३१ टी) ।

सीसय नि [दे] प्रनछ चँह (दे ८, ३४) ।

सीसय न [सीसक] देलो सीस = सोम (मरा) ।

सीसग थी [गिदास] गोमय का गाछ (परए १—पत्र ३१) ।

सीह देलो सिगय = रोम (चर) ।

सीह पु [सिह] १ धांपद जलु-विशेष, केसरो, मुग-राज (परए १, १—पत्र ७, प्रामू ५१; १७१) । २ दुश्-विशेष, संहिजेन का पेड (दे १, १४४, प्रामू) । ३ राशि-विशेष, मेष से पाँचवी राशि (विचार १८६) । ४ एक भुत्तर देवलोका-नामो जैन मुनि (मत्तु २) ।

५ एक जैन मुनि, जो धार्य-धर्म के शिष्य थे (वण) । ६ भवान् महावीर का शिष्य एक मुनि (मय १५—पत्र ६८५) । ७ एक विद्यापरा सामन्त राजा (पत्रम ८, १३१) ।

८ एक धर्म-मुन (मुस ५०६) । ९ एक देव-विमान (सम ३३; देवेन्द्र १४) । १० एक जैन धार्या, जो रेवलीनसन नामक प्राचाय के शिष्य थे (एदि ५१) । ११ छत्र-विशेष (भिग) । उर न [पुर] नगर-विशेष (सण) । कंन पुन [कान्त] एक देव-विमान (सम ३३) । कंदि पु [कंदि] राखर का एक मोड़ा (पत्रम ५६, २७) ।

कण पु [कण] एक धर्मार्थ (इक) । कणगी ओ [कणी] कन्द-विशेष (उत्त ३६, १००) । केसर पु [केसर] १ आसत-विशेष, जाँझ कन्धस (छाया १, १—पत्र १३) । २ मोदक-विशेष (मय ६, विच ४८२) । गइ पु [गति] समितगति तथा समितवाहन नामक इन्द्र का एक-एक लोहपात (ठा ४, १—पत्र १६८) । गिरि पु [गिरि] एक प्रसिद्ध जैन महर्षि (वर; अ १४२ टी. पंथि) । गुहा ओ [गुहा] एक चोर-गुहो (छाया १, १८—पत्र २३६) ।

वृह पु [वृह] विद्यापरा बंध का एक राजा (पत्रम ५, ४१) । जस पु [यशस] भरत चक्रवर्ती का एक वीर (पत्रम ५, ३) ।

णाय पु [नाट] सिद्ध-जैन, सिद्ध की गर्वना के तुल्य भावान (मय) । णिओलिय न [निनीडिन] १ सिह की गति । २ छत्र-विशेष (पत्र २८) । णिसाइ देलो

निसाइ (चर) । दुयार न [द्वार] राख-द्वार, राख प्रगाढ़ का मुख्य दरवाजा (पुम २४६) । दय पु [यज] १ विद्यापरा बंध का एक राजा (पत्रम ५, ४३) । २ हस्ति-चक्रवर्ती का छिटा का नाम (पत्रम ८, १८८) । दाय देलो [दाय] परए १,

३—पत्र ४५) । निओलिय, निओलिय देहो [णिओलिय (पत्र २७१; पंथ २८; छाया १, ८—पत्र १२२) । निसाइ वि

[निपादिन] सिह को तरह बैठनेवाला (मुज १०, ८ टी) । णिसाजा छी [नयपा] भरत चक्रवर्ती द्वारा प्रगाढ़ पर बतयाया हुआ जैन मन्दिर (ती ११) ।

पुच्छ न [पुच्छ] घुट वर, पीठ की चपटी (मूप्रति ७७) । पुच्छग न [पुच्छग] घुट चिह्न का तोड़ना, निप-धोख (परए २, ५—पत्र १५१) । पुच्छिय वि [पुच्छिय] १ जिवका घुट-चिह्न लोह दिया गया हो वह । २ जिवका हठादिवा से लेहर पुन-देश—निम्न तक की चमड़ी सलाह कर सिह के पुच्छ के तुल्य की जाय वह (सोप) । पुरा, पुरी छी [पुरी] नगरी-विशेष, विजय-शेख की एक राजधानी (ठा २, ३—पत्र ८०; इक) । मुह पु [मुह] १ अन्तर्ग-विशेष । २ अन्तर्ग देवताओं मनुष्य-जाति (ठा ४, १—पत्र २२६, इक) । रय पु [रय] मिह-गर्जना, सिंह-नाद, सिंह की तरह मावान (पत्रम ४४, ३५) । रय पु [रय] कपार देह के पुच्छ-बर्धन नगर का एक राजा (महा) । वाह पु [वाह] विद्यापरा-बंध का एक राजा (पत्रम ५, ४३) । वाहन पु [वाहन] राक्षस बंध का एक राजा (पत्रम ५, २६३) । वाहणा छी [वाहना] भन्निवा देहो (पत्र) । विहमगइ पु [विहमगति] समितगति तथा समितवाहन नामक इन्द्र का एक-एक लोहपात (ठा ४, १—पत्र १६८; इक) । व अ पुन [वीन] एक देव-विमान (सम ३३) । सेम पु [सेम] चोर-हँडे जिनदेव का पिता, एक राजा (मय १३१) । २ भगवान् समितगति का एक गणपति (मय १२२) । ३ राजा भेछिह का एक पुत्र (मत्तु २) । ४ राजा महादेव का एक पुत्र (मिया १, ६—पत्र ८६) । ५ ऐरावत सेन के अन्तर्ग देव जिनदेव (चर) । मोआ छी [सु म] मूह नदी (ठा २, ३—पत्र ८०) । यउ उअ न [यउठिआ] गिरागान, पि की तरह बर्धन दूर कीड़े का तरह

देखना (महा) । *मण ॥ [सिन] भासन-
विशेष, सिंहावार भासन, सिंहाङ्कित भासन,
राजसन (मग) । देखो सिह ।

सीह वि [सैह] सिंह संबन्धी । श्री. *द्वा
(छाया १, १—पत्र ३१) ।

*सीह पुं [सिह] श्रेष्ठ, उत्तम (सम १; पठि) ।

सीहंडय पुं [दे] मत्स्य, मछली (दे ८, २८) ।

सीहणही श्री [दे] १ वृष विशेष, करौंदी का
गाछ । २ करौंदी का फल (दे ८, ३२) ।

सीहपुर वि [सैहपुर] सिंहपुर संबन्धी (पत्रम
५५, ५३) ।

सीहर देखो सीअर (दे १, १८५, कुमा) ।

सीहरय पुं [दे] भासार, जोर की कृष्टि (दे
८, १२१) ।

सीहल देखो सिहल (पह १, १—पत्र
१४, इक, पत्रम ६६, ५५) ।

सीहलय पुं [दे] बल भावि जो बल देने का
मन्त्र (दे ८, ३४) ।

सीहलिआ श्री [द्] १ सिखा, चोटी । २
मवासीका, मवासी का गाछ (दे ८, ५५) ।

सीहलिपासग पुंन [दे] ऊन का बना हुआ
कंकण, जो बेसी बांधने के काम में आता
है (सुम १, ४, २, ११) ।

सीही श्री [सिही] श्री-सिंह, सिंह की मादा
(नाट) ।

सीहु पुंन [सीधु] १ मछ, दाल । २ मछ-
विशेष (पह ४, ५—पत्र १५०, दे १,
५६, पात्र, गा ४५५, गा ४३) ।

सु ॥ [सु] इन प्रयोगों का सूचक अर्थ—१
प्रशंसा, श्लाघा (विसे ३४५३, सूअरि ८८) । २
अतिशय, अत्यन्तता (श्रु १६) । ३
सभीकोनता (सट्टि १६) । ४ अतिशय
योग्यता (पिग) । ५ पूजा । ६ कष्ट,
मुश्किली । ७ अनुमति । ८ समुद्रि (पड
१२२, १२३, १२४) । ९ अनायास (ठा
५, १—पत्र २६६) ।

सुअ ग्रक [सुअ] सोना । सुअ (दे ४,
१५६, प्राक ६६, पि ४६७, उव), सुयामि
(निता १), *खरपि या सुय नीलको
(आरहि ६) । कर्म. मुपद (दे २, १७६) ।

वट. सुयंत, सुयमाण (गुर ५, २१६,
गुया ५०५, महा १७, १२, पि ४६७) ।
देह. सोरं (पि ४६७) । क. सोएवा (धप)
(हे ४, ४२८) ।

सुअ वच [श्रु] सुना । वट. सुअंत
(घाटा १५६) ।

सुअ पुं [सुव] पुत्र, लडका (गुर १, १०,
प्रासू ८६, गुमा, उव) ।

सुअ पुं [शुक्र] १ पक्षि-विशेष, सोता (पह
१, १—पत्र ८, उत ३४, उ, गुया ३१) ।

२ खल का मन्त्री (हे १२, ६३) । ३
खपलाचीन एक सामंत राजा (पत्रम ८,
१३३) । ४ एक परिव्राजक (छाया १,
५—पत्र १०५) । ५ एक धनार्थ देश
(पत्रम २७, ७) ।

सुअ वि [भुत] १ मुता हुआ, आकर्षित
(हे १, २०६, मग, ठा १—पत्र ६) । २
न. ज्ञान-विशेष, गहन-ज्ञान, राज्ञ ज्ञान (विसे
७६, ८१; ८३; ८६, ८४, १०५, १०५;
एदि, मरु) । ३ शब्द, ध्वनि, धारावाह ।

४ कार्योपशम, धृतिज्ञान के धारक बसों का
नाश विशेष । ५ आहवा, नीच, 'तै तेण
तमो तमि व सुयेइ सो वा सुय तेण' (विसे
८१) । ६ आग्रम, शास्त्र, सिद्धान्त (मग;
एदि, मरु. से ४, २७; कम्म ४ ११,
१४, २१; बह १, जी ८) । ७ अध्ययन,
साम्याय (सम ५१, से ४, २७) । ८
अवल (प्राक ७०) । 'केवलि पुं [केवलिन]
चोहव पूर्व प्रयोगों का जानकारी भुनि (राज) ।

'बसुध', राध पुं [स्कुन्व] १ अग्न शब्द
का अर्थ अत्यन्त-समूहयक महान् अश—आएइ
(सुम २, ७, ४०, विपा १, १—पत्र ३) ।

२ बाह्य अर्थ-प्रयोगों का समूह । ३ बाह्य
अर्थ-प्रयोग, दृष्टिवाद (राज) । *पाण देखो
'नाण (ठा २, १ टी—पत्र २१) । *पाणि
वि [ज्ञानिन] राज्ञ ज्ञान-चंपन, शास्त्री
का जानकारी (मग) । *गिरिसिय न
[निमित्त] मति ज्ञान का एक भेद (एदि) ।

'विदि श्री [तिथि] शुद्ध पंचमी तिथि
(खण २) । *थेर पुं [स्थिर] तृतीय
और चतुर्थ अर्थ-प्रयोगों का जानकारी भुनि (ठा
३, २) । 'देवया श्री [देवता] जैन

शास्त्री की पवित्रात्री देवी (पठि) । *देवी
श्री [देवी] वही (गुया १; गुमा) । *धम्म
पुं [धर्म] १ जैन संग्रह-ग्रन्थ (ठा २, १—
पत्र ५२) । २ शास्त्र ज्ञान (धायम) । ३
धर्मों का समूह, शास्त्राभ्यास (एदि) ।

*धर वि [धर] शास्त्र (गुया ६५२;
पह २, १—पत्र ६६) । *नाण पुंन
[ज्ञान] शास्त्रज्ञान (ठा २, १—पत्र
४६, मग) । *नाणि देखो *पाणि (धव
१०) । *निसिय देखो *गिरिसिय (ठा
२, १—पत्र ५६) । *पंचमी श्री [पञ्चमी]
वातिक मास की शुद्ध पंचमी तिथि (मदि) ।

*पुव वि [पूर्व] पहले हुआ हुआ (उप
१४२ टी) । *सागर पुं [सागर] ऐश्वर्य
शेख के एक भावी जितदेश (सम १५४) ।

सुअ वि [स्मृत] याद किया हुआ (मग) ।

सुअ पुं [सुगन्ध] १ अच्छी गन्ध, गुग्गुलु
(गा १४) । २ वि, मुगन्धी (से ८, ६२,
गुर १, २८) ।

सुअंघि वि [सुगन्धि] सुन्दर गन्धवाला (से
१, ६२, दे ८, ८) । देखो सुगन्धि ।

सुअकप्पाय वि [सुअकप्पाय] अच्छी तरह
कहा हुआ (सुम २, १, १५, १६; २०,
२६) ।

सुअच्छ वि [स्वच्छ] निर्मल, विमुक्त (मदि) ।

सुअण पुं [सुअण] सज्जन, भला भावनी
(गा २२४, पात्र, प्रासू ८, ४८, गुर २,
४६, गउठ) ।

सुअण न [स्वपन] सोना, शयन (सूक ११) ।

सुअणा श्री [दे] अतिशुद्ध, वृक्ष विशेष
(दे ८, १८) ।

सुअणु वि [सुतनु] १ सुन्दर शरीरवाला ।
२ श्री, नाथी, महिला (गा २६६, ३८४,
५६६, पि ३४६, गउठ) ।

सुअण्ण देखो सुवण्ण (प्राक ३०) ।

सुअम वि [सुआम] सुबोध (प्राक ११) ।

सुअर वि [सुअर] जो अनायास से हो सके
वह, सरल (मदि ६६) ।

सुअर पुं [शुकर] सूअर, बरह (विपा १,
७—पत्र ७५; नाट—मुच्छ २२२) ।

सुअरिअ न [सुचरित] सवाचार, सद्वर्तन (प्रमि २५३)।

सुअरिअकिय वि [स्वलंकृत] अछ्छी तरह विमुचित (छाया १, १—पत्र १६)।

सुआ झी [सुता] पुत्री, लडकी (गा ६०२, ८६३ (कुमा)।

सुआ (शी) प्रक [शी] शयन करना, सोना। सुमादि (प्राक् ६४)।

सुआ झी [सूच] यत्न का उपकरण-विशेष, धी धादि डालने की कढ़ी या बलछी (उत १२, ४१, ४४)।

सुआइअय वि [स्वाधेय] सुख से—प्रतायास से बहने योग्य (छा ५, १—पत्र २६६)।

सुआउच वि [स्वायुक्त] अछ्छी तरह ब्याल रखनेवाला (उच)।

सुइ पुं [शुचि] १ पवित्रता, निर्मलता, 'त्रिगुणधर्मविद्या मुष्टिणी य बन्ध दीक्षित सुइरिया' (सुपा १६६)। २ वि. श्वेत, सफेद (कुमा)। ३ पवित्र, निर्मल (धोप, नय, आ १२, महा, कुमा)। ४ झी. शक की एक धर्म-महिषी (हक)।

सुइ झी [शुति] १ श्वरा, भावराज, सुनता (उत ३, १, वनु, विसे १२५)। २ कर्ण, कान (गा ६४१, सुर ११, १७४, सम्मत ८४, सुपा ४६, २४७)। ३ वेद शास्त्र (वाग्, अन्तु ४, कुमा)। ४ शास्त्र, सिद्धान्त (सवा ७, प्राक् ४१)।

सुइ झी [स्मृति] स्मरण (विपा १, २—पत्र १४)।

सुइअ देखो सुइअ = सूचिक (दे १, ६६)।

सुइअ देखो सुमिअ (सुर ६, ८२, उच ७२८ टी, हे ४, ४३४)।

सुइदि झी [सुइदि] १ पुण्य। २ मङ्गल, कल्याण। ३ सत्कर्म (प्राक्, वि २०४)।

सुइयाणिया झी [दे. स्विस्मरिणी] सुवि-कर्म करनेवाली झी (सुपा ५७८)।

सुइर न [सुचिर] अत्यन्त शीघ्र बाल, बहू बाल (गा १३७, ४६०, सुपा १, १२७, महा)।

सुइल देखो सुक = शुक्ल (हे २, १०६)। सुइव्य वि [श्वस्तन] प्राणामी कल से संबंध रखनेवाला, कल होनेवाला (विड २४१)।

सुई झी [दे] बुद्धि, मति (दे ८, ३६)।

सुई झी [शुनी] शुक्ल पत्नी की भाव, मैना (सुपा ३६०)।

सुउअनुयार वि [सुअनुयार] अतिशय संयम में रहनेवाला, सुसयमी (सुपा १, १३, ७)।

सुउअनुयार वि [सुअनुयार] अतिशय सरल आचरणवाला (सुपा १, १३, ७)।

सुउमार } देखो सुकुमाल (स्वय ६०, सुउमार } कुमा)।

सुउरिस पुं [सुपुरुष] सज्जन, भला धार्मिक (प्राक्, हे १, ८, कुमा)।

सुए प्र [अस] प्राणामी बल (व ३६, हे ४१)।

सुं क न [शुलक] १ मूल्य (छाया १, ८—पत्र ११२, विपा १, ६—पत्र ६३)। २ चुनौती, चुनौती (सुपा ४४७)। ३ वर-नक्ष के पाठ से न्याय पत्रवाली को लेने योग्य धन (विपा १, ९—पत्र ६४)।

*ठाण न [स्थान] चुनौती-धर (धम्म १२ टी)। *पाळय वि [पाळक] चुनौती पर नियुक्त राज-गुरु (सुपा ४४७)। देखो सुक = शुक्ल।

सुंअ } पुंन [दे] किशोर, धार्य भादि का सुंअ } अग्र भाग (दे ८, ३८)।

सुंअलि पुंन [दे] गुण-विशेष (पण १—पत्र ३३)।

सुंअयि वि [शुक्तिव] जिसकी चुंणी दी गई हो वह (सुपा ४४७)।

सुंआणिअ पु [दे] नाव का डाढ़ लेनेवाला व्यक्ति, पतवार चलावेवाला (सिदि ३८५)।

सुंआर पु [सुत्तार] अन्वयक शब्द विशेष (सुर २, ८, गजउ)।

सुंअिअ वि [शौक्तिन] शुक्ल लेनेवाला, चुनौती पर नियुक्त पुरुष (उप पु १२०)।

सुंअ देखो सुअर = शुक्ल (सिदि १६)।

सुंआ देखो सुक = शुक्ल (हे २, ११, कुमा)।

सुंआयण न [शौद्धायन] गौरव-विशेष (सुज १०, १६)।

सुंअ सक [दे] सूचना। वक्र, सुंअंत (सिदि ६२२)।

सुंअिअ वि [दे] प्राप्त, सूना हुआ (दे ८, ३७)।

सुंअल न [दे] काला नमक, 'सुंअिअलार्थ' (कुप ४१४)।

सुंअ पुंन [शुअ] पर्व वनस्पति विशेष (पण १—पत्र ३३)।

सुंअ पुंन [शुअरु] भाजन विशेष, 'भीरासु य सुअपु य कंअपु य पयअपु य पयति' (सुप्रमि ७६)।

सुंअ झी [शुअ] सूँठ या सोठ (पमा १५; कुप ४१४, पंचा ५, १०)।

सुंअ वि [शौअ] १ मल, मद्यप, दाह पीने-वाला (हे १, १६०, प्राक् १०, सलि ६)। २ दल, कुशल (कुमा)। देखो सौंअ।

सुअ देखो सौंअ (भावा २, १, १, २, भावम)।

सुंअिअ पु [शौअिअ] कनवार, दाढ़ बेचने-वाला (प्राक् १०, सलि ६)।

सुंअिअ झी [शौअिअ] मरिचा-पान में आसक्ति (वत ५, २, ३८)।

सुअिअ देखो सुअिअ (दे ६, ७५)।

सुअिअिअ झी [सौअिअिअ] कलवार की झी (प्रवी १०६)।

सुअिअ देखो सौंअिअ (प्रवि)।

सुअ पुं [सुअ] राजा रावण का एक भागि-नेय, खरदूषण का पुत्र (पत्रम ४३, १८)।

सुअर वि [सुअर] १ मनोहर, चार, शोभन (पण १, ४, सुपा १२८, २६५, कम्प, कात्र ४८८)। २ पुं. एक सेठ का नाम (सुपा ६४३)। ३ तेरहवें त्रिनदेव का पूर्वजन्मीय नाम (सम १५१)। ४ न उप-विशेष, वेला, तीन दिनों का सप्ताह उपवास (सबोध ५८)। *बाहु पुं [बाहु] सातवें त्रिनदेव का पूर्वजन्मीय नाम (सम १५१)।

सुअरिअ देखो सुअर (हे २, १०७)।

सुअरिअ पुअिअ देखो सुअर (कुप २२२)।

सुअरी झी [सुअरी] १ उत्तम झी (प्राक् ५७, वि १८)। २ भगवान् श्रमदेव की एक पुत्री (छा ५, २—पत्र ३२६, सम ६०, पत्रम

३, १२०, वि १८) १ राख की एक पत्नी (पत्र ७४, ६) । ४ छन्द-विशेष (विग) । ५ मनोहर, रोमना: 'मुंदरी छे देवा-गुण्या गोतासलस मंडलितुत्तस घम-पणएतो' (उवा) ।

सुंदर } न [सौन्दर्य] मुन्दरता, गरीर
सुंदेरिम } का मनोहरपन (प्राय: हे १, ५७,
कुमा: सुपा ५; ६२२, घम ११ टी) ।

सुंन [शुम्भ] १ सुण-विशेष (ठा ४, ४—
पत्र २७१, सुल १०, १) । २ सुण-विशेष
की बनी हुई डोरी—रस्ती (विसे १५४) ।

सुंभ पुं [शुम्भ] १ एक गृहस्थ जो शुभा
नामक द्रष्टाणी का पूर्व-जन्म में पिता था
(छाया २, २—पत्र २५१) । २ दानव-
विशेष (पि ३६०; ३६७ ए) 'वैदेमय न
[धर्तसक] शुम्भा देवी का एक भवन
(छाया २, २) । 'सिरी की [श्री] शुम्भा
देवी की पूर्व-जन्मोय माता (छाया २, २) ।

सुंभा जी [शुम्भा] बलि नामक द्रष्टा की एक
पटरानी (छाया २, २—पत्र २५१) ।

सुंसुमा जी [सुसुमा] धन साधनाह की कन्या
का नाम (छाया १, १८—पत्र २३१) ।

सुंसुमार पुं [सुंसुमार, सिशुमार] १ जल-
चर प्राणी की एक जाति, सूँस, सोस या सुसर
(छाया १, ४, वि ११७) । २ द्रव्य-विशेष (मत्त
६६) । ३ पर्वत-विशेष । ४ न. एक भरएय
(स ८६) । देखो सु-सुमार ।

सुक देखो सुअ = सुक (सुपा २३४) । 'प्यहा
जी [प्रा] गगवान् सुविधिताय की सीता-
शिविका (विचार १२६) ।

सुकड़ पुं [सुकरि] अन्धा कवि (भा ५००,
६००; महा) ।

सुकठ वि [सुकठ] १ सुन्दर कलवावा ।
२ पुं. एक वणिज-पुत्र (आ १६) । ३ एक
चोर सेनापति (महा) ।

सुकच्छ पुं [सुकच्छ] विजय-सेन-विशेष
(ठा २, २—पत्र ८०, इक) । 'कूड पुंन
[कूट] शिखर-विशेष (द्रक, राज) ।

सुरुइ देखो सुअ (पत्र ५८) ।

सुरुइ पुं [सुरुण्य] एक राज-पुत्र (निर
१, १; पि ५२) ।

सुरुण्डा जी [सुरुण्डा] राजा धौएक की
एक पत्नी (अंत २५) ।

सुरुइ देखो सुअ (संक्षि ६) ।

सुकम्माण वि [सुसर्मन] अन्धा वर्य बरने-
वाला (हे ३, ५६; पट्ट) ।

सुअ न [सुअ] १ पुअ (पएह १, २—
पत्र २८, पाय) । २ उपपार (से १, ५६) ।

३ वि. अन्धी तरह निमित्त (राज) ।
'जापुअ 'पु, 'पुअ वि [सु] सुक
वा जालवार, उपवार की कदर बरनेवाला
(प्राइ १८; उप ७६८ टी) ।

सुअरथ वि [सुअरथ] मरपत इतरथ
(प्राइ १५५) ।

सुअर देखो सुगर (भावा १, ६, १, ८) ।

सुगाल पुं [सुगाल] राजा धौएक का एक
पुत्र (निर १, १) ।

सुगाली जी [सुगाली] राजा धौएक की
एक पत्नी (अंत २५) ।

सुगिअ देखो सुअ (हे ४, ३२६, अवि) ।

सुगिइ वि [सुगिइ] अन्धी तरह जोता हुआ
(पत्र ३, ४५) ।

सुगिइ पुं [सुगिइ] एक देव-विमान (सम
६) ।

सुगिदि वि [सुगिदि] १ पुअ-शाली । २
सकर्म-कारी (रमा) ।

सुगिल देखो सुक = सुक (हे २, १०६;
सुगिल) वि १३६) ।

सुकुमार वि [सुकुमार] १ अति कोमल ।
सुकुमाल २ सुन्दर कुमार अवस्थावाला
(महा, हे १, १०१; पि १२३; १६०) ।

सुकुमालिअ वि [सु] सुषटित, सुन्दर बना
हुआ (हे ८, ४०) ।

सुकुल पुंन [सुकुल] उत्तम कुल (मवि) ।

सुकुसुअ न [सुकुसुअ] १ सुन्दर कुल । २
वि. सुन्दर स्तनवाला (हे १, १०७, कुमा) ।

सुकुसुमिय वि [सुकुसुमिअ] जिसको धन्वी
तरह कुल भाया हो वह (सुपा १६८) ।

सुगेसल पुं [सुगेसल] १ ऐरवत-वर्ष के
एक शाही विन्दव (सम १५४, पत्र ७) ।
२ एक वैज पुत्र (पत्र २२, ३६) ।

सुगेसला जी [सुगेसला] एक राज-कन्या
(उप १०३१ टी) ।

सुहा अक [सु] सुलना । सुहा (मिसे
३:३२, पत्र ७०), सुहति (दे ८, १८
टी) ।

सुह वि [सुह] सुहा हुआ (हे २, ५;
छाया १, ६—पत्र ११४; उवा; विड २७६;
सुर ३, ६५; १०, २२३; पाटा १५६) ।

सुक [सुक] १ चुंगी, घेवने की वस्तु पर
सगता राज-कर (छाया १, १—पत्र ३७;
कुमा: आ १४; सम्मत १५६) । २ कौ-वन
विशेष । ३ वर पत से कन्या पसलती को
लेने योग्य धन । ४ जी को संभाग के लिए
दिया जाता धन । ५ मूल्य (हे २, ११) ।
देखो सुक ।

सुक पुं [सुक] १ ग्रह विशेष (ठा २, ३—
पत्र ७८; सम ३६, वज्रा १००) । २ पुंन-
एक देव-विमान (सम ३३; देवेन्द्र १४१) ।
३ न. बोध, गरीरय पातु-विशेष (ठा ३,
३—पत्र १४४; धर्मसं ६८४; वजा १००) ।

सुक पुं [सुक] १ वण-विशेष, सनेद रंग ।
२ सनेद बणमाता, रवेत (हे २, १०६;
कुमा; सम २६) । ३ न. शुभ ध्यान विशेष
(श्रीप) । ४ वि. जिसका ससार अर्थ पुण्य-
परावर्त काल से कम रह गया हो वह (पंचा
१, २) । 'उमण, 'मण [धन]
शुभ ध्यान-विशेष (सम ६, सुपा ३७; अत) ।
'पस्य पुं [पस] १ जिसने वज्र की कला
क्रमशः बढ़ती है वह प्राया महीना (सम
२६, कुमा) । २ हथ पत्ती । ३ काक, कीमा ।

४ बाला, बक पक्षी (हे २, १०६) ।
'पक्षिय वि [पक्षि] वह प्राया जिसका
ससार अर्थ पुण्य-परावर्त से कम रह गया हो
(ठा २, २—पत्र ५६) । 'लेस देखो 'लेस
(मय) । 'लेसा देहा 'लेसा (सम ११;
ठा १—पत्र २८) । 'लेस वि [लेस]

शुभ लेसवावा (पएह १०—पत्र ५११) ।
'लेसा जी [लेस] प्राया का अत्यव-
साय-विशेष, शुभवचन प्राप्त-परिणाम (पएह
२, ४—पत्र १३०) ।

सुकड देखो 'सुक (सम १२५, पत्र
सुकय १५, १००) ।

सुकय सक [शोपय] गुलाना । वज्र-
सुकवेमाण (छाया १, ६—पत्र ११४) ।

सुकाणय न [दि] जह न मे मागे वा ऊना काण, गुजरातो मे 'सुकाण' (सिरि ४२४) ।

सुकाभ न [सुकाभ] १ एक लोकान्तिक देव विमान (पव ३६७) । २ वैतालक पर्वत की दक्षिण ओरि में स्थित एक विद्यावर-नगर (इक) ।

सुक्षिप देखो सुक्ष्म (भवि) ।

सुक्षिप देखो सुक्षीअ (राज) ।

सुक्षिप } देवो सुक = शुक्ल (भग, सुक्षिप्य } मौर, हे २, १०६, पंच ५, सुक्षिप } ३३, धनु १०६), 'सुक्षिप' सुक्षिपनवरण' (गच्छ २, ४६, कण्व, सम ४१ धर्म ४५४) । औ, 'एगो सुक्षिपियाएँ एगो सबलाए वागो कर्षो' (भाष ७) ।

सुक्षीअ वि [सुक्षीअ] अन्धो तरह खरोवा हुआ सुक्षीअ वा सुक्षीअ (दश ७, ५५) ।

सुम्प देखो सुक = शुष्क । अक, सुम्पत (पा ४१४, वज्र २४६) ।

सुम्प हलो सुक = शुष्क (हे २, ५, गा २६३, मा ३१ उप ३२० टी) ।

सुम्प न [मौक्य] सुक (वण, कुमा, साध ५१, प्राप् २८, १४५) ।

सुम्पन देखो सुकन । कर्म, सुकवोप्राति (वि ३६६ ५४१) ।

सुम्पय वि [स्वाक्यात] अन्धो तरह कड़ा हुआ, प्रतिभात, लघो सुम्पयपराजणो ज ते बुधियमानि बुधिलेए प्रदवत्त, तन्निमित्त-मेतो पेविमो चालोसगाहलो हारो वि तोतु समप्यव च हारनरिडि गभी दासचैडो (महा) ।

सुम्प (पै) देखो सण्ड = दुष्प, 'सुम्पवरिखो' (भाक १२४) ।

सुग देखो सुअ = शुभ (उप ६७२, स ८६, उर ५, ७, कुज ४३८, कुमा) ।

सुगइ को [सुगति] १ अन्धो गति (उ ३, ३—पत्र १४६) । २ लग्नाई, अन्धो मार्ग (सूमानि ११५) । ३ वि, अन्धो गति को प्राप्त (भावम) ।

सुगय देखो सुअय (वण, कुमा, भौव, सुर २, ५८) ।

सुगइ को [सुगइ] पथिव विदेह का एक विजयेश्वर (इक) ।

सुगदि देखो सुअंघि (भौव) । 'पुर न [पुर] वैताल की उत्तर ओरि में स्थित एक विद्या-वर नगर (इक) ।

सुगण वि [सुगण] अन्धो तरह भिन्नवर्णा (पद) ।

सुगम वि [सुगम] १ अन्ध परित्रय से जाया वा तक केना सुख सम्प (भावमा ७५) । २ सुखीय (दश ३६३) ।

सुगय वि [सुग] १ अन्धो गतिवाला (उ ४, १—पत्र २०२, कुप १०) । २ सुख । ३ घनी । ४ सुणी (उ ४, १—पत्र २०२, राज हे १, १७७) । ५ पू, बुद्धदेव (पात्र, पव ६४) ।

सुगय वि [सोगत] बुद्ध भन. बौद्ध (सम्पत् १२०) ।

सुगर वि [सुगर] सुख-साध्य, अल्प परिश्रम से हो सके ऐसा (भाषा १, ६, १८) ।

सुगरिडि वि [सुगरिडि] कति बडा (कु १६) ।

सुगिअवि वि [सुगिअ] सुख से ग्रहण कते योग्य (पत्रम ३१, ५४) ।

सुगिअइ पु [सुगिअ] १ चैत्र मास की पूर्णिमा (उ ५, २—पत्र २१३) । २ फाल्गुन का अल्पव (दे ८, ३६) ।

सुगिर वि [सुगिर] अन्धो गाणीवाला (पद) ।

सुगिहय वि [सुगिहय] विस्वात, सुगिहय विष्णुत (स ६६, १३) ।

सुगी देखो मई = शुकी (कुमा) ।

सुगुच पु [सुगुच] एक यमी का नाम (महा) ।

सुगुरु पु [सुगुरु] उत्तम गुह (कुमा) ।

सुग न [दि] १ आत्य-कुशल (दे ८, ५६, सण) । २ वि निविज्ज, विज्ज रहित । ३ विमज्जित (दे ८, ५६) ।

सुगाइ देखो सुगाइ (सुपा १६१, स ८१) ।

सुगाय देखो सुगाय-सुगन (उ ४, १—पत्र २०२) ।

सुगाइअ अक [प्र + सु] फैला । सुगाइअ (वाला १६६) ।

सुगोव पु [सुगोव] १ नामकुमार देवो के बुद्ध भवान् के अरव-नीय का अविर्षित

(उ ५, १—पत्र ३०२) । २ भारतवर्ष में होनेवाला नववीं प्रतिवासदेव राजा (सम १५४) । ३ राक्षस वंश का एक राजा, एक लङ्का पनि (पत्रम ५, २६०) । ४ नार्ये जिनदेव के पिता का नाम (सम १५१) । ५ राजा वालि का छोटा भाई (पत्रम ६, ६, मे १, ४६, १४, ३६) । ६ एक राजा का नाम (पुर ६, २४) । ७ न. नगर विशेष (उत्त १६, १) ।

सुव (पत्र) देखो सुह = सुख (हे ४, ३६६) ।

सुवट्ट वि [सुवट्ट] अन्धो तरह घिमा हुआ (राय ८० टी) ।

सुवरा को [सुगहा] माहा-पक्षी की एक जाति जो अपना पीतला धुव सुन्दर बनाती है (मातृ १) ।

सुवोस पु [सुवाप] १ एक कुलकर-पुरुष (सम १५०) । २ एक पुरोहित का नाम (उप ७२८ टी) । ३ पुन. सनत्कुमार देवलोक का एक विमान (सम १२) । ४ नास्तिक नामक देवलोक का एक विमान (सम १७) । ५ वि, सुन्दर भ्राजानवाला (जीव ३, १; भवि) । ६ एक नगर का नाम (विपा २, ८) ।

सुवोसा की [सुवोपा] १ गीतरति नामक रागवर्ण की एक पटरानी (उ ४, १—पत्र २४) । २ गीतरतनामक रागवर्ण की एक पटरानी (उ ४, १—पत्र २०४) । ३ रागवर्ण की प्रसिद्ध यदा (पण्ड २, ५—पत्र १४६, सुपा ४५) । ४ वाय विशेष (राय ४६) ।

सुवद पु [सुवद] ऐश्वर्य बर्ष में उत्पन्न दूसरे दिन-देव (सम १५३) ।

सुचरिअ न [सुचरित] १ सदाचरण, सदा-चार (कण्व, गडर) । २ वि, सदाचरण सम्पन्न (गडर) । ३ अन्धो तरह आचरित (पत्रम ७५, १८, लाया १, १६—पत्र २०५) ।

सुचिणज वि [सुचोर्ण] १ सम्यग् आच-सुचिअ ३ रिड, 'तवसज्जो सुचिणोर्णो' (पत्रम ६, ६५, ६४, ३२, उ ४, २—पत्र २१०) । २ न. पुण्य (भौव, उवा) ।

सुचिर न [सुचिर] अत्यन्त विर बाल, सुचोर्ण काल (सुपा २०, महा, प्राप् ३२) ।

सुचोइअ वि [सुचोदित] प्रेरित (उत्त १, ४४) ।

सुच वि [शोच्य] प्रपसोस नरले योग्य, 'सुधा ते जित्वाए जिएवयए जे नरा न याएति' (धम्मवि १७) ।

सुचा देवो सुग = धु ।

सुजापिय न [सुजतिपत्त] भाशोवादि (खाया १, १—पत्र ३६) ।

सुजड पुं [सुजट] एर विद्यापर-नरेत्त (पत्रम १-२, २०) ।

सुजस पुं [सुयशस्] १ एक जिनदेव का नाम (उत्त १०३१ टी) । २ वि. यशस्वी (आ १९) ।

सुजसा जी [सुयशस्] १ बौद्धहर्ष जिन-देव की माता (सम १५१) । २ एक राज-पत्नी (उत्त १८६ टी) ।

सुजह वि [सुहान] सुख से जिसका ध्यान हो सके वह (उत्त ८, ६) ।

सुजाह वि [सुजाति] प्रशस्त जातिवाला, जात्य (महा) ।

सुजाण वि [सुर] सयाना, ब्रह्मा जानवार (सिंर ७६१, प्राप् १३, सुपा २८८) ।

सुजाय वि [सुजात] १ सुन्दर जाति में उत्पन्न, सुलोक, लालनारी (उत्त ७२८ टी) । २ ब्रह्मी तरह जन्म, सुन्दर रूप से उत्पन्न (ठा ४, २—पत्र २०८, सोप, जीव ३, ४, उवा) । ३ न. सुन्दर जन्म (मात्र) । ४ पुं. एक राज-कुमार (विपा २, ३) । ५ पुं. एक एक देव-विमान (देवेन्द्र २७२) ।

सुजाया जी [सुजाता] १ कालवाल आदि लोकपाली की पटरानियों के नाम (ठा ४, १—पत्र २०४, इक) । २ राजा अश्विक की एक पत्नी (मत्त २४) ।

सुजिद्धा जी [सुजेष्ट] एक महासती राज-कुमारो, जो बेलरान की पुत्री थी (पदि) ।

सुजुत्ति जी [सुयुक्ति] सुन्दर बुद्धि (सुपा १११) ।

सुजेष्टा देवो सुजिष्टा (राज) ।

सुजोसिअ वि [सुजुष्ट] ब्रह्मी तरह सेवित (सुम १, २, २, २६) ।

सुजोसिअ वि [सुजोपित] सुष्ठु सवित, सम्मग विनाशित (सुम १, २, २, २६) ।

सुज्ज पुं [सूर्य] १ सूरज, रवि । २ ज्ञान का वेद । ३ देव-विशेष (हे २, ६४, प्राप्) ।

४ पुं. एव देव-विमान (सम १५) । 'कंत पुन [कान्त] एव देव-विमान (सम १५) ।

'उत्तम पुन [उत्तम] देव-विमान-विशेष (सम १५) । 'उत्तम पुं [उत्तम] एक देव-विमान (सम १५) ।

'उत्तम पुन [उत्तम] एक देव-विमान (सम १५) । 'उत्तम पुं [उत्तम] देव विमान विशेष (सम १५) ।

'सिंह पुं [सिंह] एव देव विमान (सम १५) । 'सिंह पुं [सिंह] एक देव विमान का नाम (सम १५) । 'सिंहो जी [सिंहो] एक ब्राह्मण-न्या (महानि २) ।

'सिंह पुं [सिंह] एक ब्राह्मण का नाम (महानि २) । 'हास पुं [हास] तलवार की एव उत्तम जाति (पत्रम ४३, १६) । 'अ न [अ] वैतात्म्य की उत्तम-व्यक्ति में स्थित एक विद्यापर-नगर (इक) । 'वत्त पुन [वत्त] एक देव-विमान (सम १५) । देवो 'सूर, सूरिअ = सूर, सूर्य ।

सुज्जाण वि [सुहान] सुमान, सयाना, सुज (पद्म; विग) ।

सुज्जुत्तरयडिसग पुं [सूर्योत्तरायतंसरु] एक देव-विमान (सम १५) ।

सुम्भक [सुभ] सुद होना । सुम्भक (महा) । सक् सुविभक्त (सम्पत्तयो ८) ।

सुम्भका वि [उदयमान] सुमता, सोष पडता, मातृप होता, प्रसन्न वि न सुमुज्जत । सुवत-एण रति' (पत्रम १०३, २४) ।

सुम्भकया जी [सोधना] सुद्धि (उत्त ८०४) ।

सुम्भकय न [दे] १ रीत्य, बादी । २ पु. रत्नक, धोवी (दे ८, २६) ।

सुम्भकय पुं [दे] रत्नक, धोवी (दे ८, ३६) ।

सुम्भकय न [सोधन] सुद्धि, प्रशान्त (उत्त ६८५) ।

सुम्भकय वि [सुध्यायिन] शुभ ध्यान करने-वाला (संबोध ५२) ।

सुम्भकय वि [सुध्यायिन] ब्रह्मी तरह चिन्तित (राज) ।

सुद्धिअ वि [सुधियत] ॥ सम्यक् स्थित (कम्प) । २ पु. लवण सपुद्र का घविष्टाक

देव (खाया १, १६—पत्र २१७) । ३ भार्यगुह्यति भावाय का सिध्द एक जैन महर्षि (कम्प) ।

सुट्ठु, म [सुट्ठु] १ ब्रह्मा, रोमन, सुन्दर सुट्ठु (भावा, भा, स्वन् २३; सुर २, १७८) । २ प्रतिशय, भयान्त (सुर ४, २४, प्राप् १२७) ।

सुट्ठिअ देवो सुट्ठिअ (पाष) ।

सुट्ठ सक [सुट्ठ] याद करना । सुट्ठ (प्राप् ६३) ।

सुट्ठिअ वि [दे] १ यात, पका हुआ (दे ८, ३६, गड, सुपा १७६, ५१०, सुर १०, २१८) । २ सुचित दंगवाला (महा) ।

सुण सक [धु] सुनना । सुणह, सुणह (हे ४, २८, २४१, महा) । सुणउ, सुणउ, सुणउ (हे ३, १५८) । भवि, सुणित्तह, सुणित्त-स्वामी, सोच्छिद्ध, सोच्छिद्धि, सोच्छि, सोच्छिद्ध, सोच्छिद्धि, सोच्छिद्धि, सोच्छि-स्वामि, सोच्छिद्धि (वि ५११, सोप, हे ३, १७२) । कर्म, सुणित्तह, सुवज्ज, सुवज्ज, सुम्भह, सुणोपह (हे ४, २४२, कुमा, महा, पि ५२६) । वक्, सुणित्त, सुणित्त, सुणमाग, सुणोमाण (हेका १०५, सुर ११, १७, पि ५६१, विपा १, १, सुर ३, ७६) । कवह, सुम्भह, सुणित्त, सुवज्ज, सुवज्ज (सुर ११, १९६, ३, ११, २, १०, ६, ५६) । सक्, सुणित्त, सुणित्त, सुणित्त, सुणोत्ता, सोऊय, सोऊआण, सोऊआण, सोऊ, सोधा, सोधा, सुधा (समि ११६, पद्म, हे ४, २४१, पि ५८२, हे ४, २१७, २, १४६, कुमा, हे २, १५, पि ११४, १४६, ५८७) । हेक, सोऊ (कुमा) । क, सुणोयज्ज, सोऊव्व (मत्त, पएह १, १—पत्र ५, तं २, १०, गड, भवि ३८) ।

सुणह देवो सुणय ।

सुणह पुं [सुनन्द] १ एक राजवि (धम्म) । २ भगवान् वासुदेव्य को प्रथम भिक्षा-दाता गृहस्थ (सम १५१) । ३ पुन. एक देव-विमान (सम २६) । देवो सुनंद ।

सुणदा जी [सुनन्दा] १ भगवान् पार्श्वनाथ को मुख्य आश्रिका (कम्प) । २ तृतीय चक्रवर्ती

को पटरानो—सौराष्ट्र की रत्न (सम १५२, महा) । २ भूतान्त्र्य धारि हस्तो के सोवपातो की धममहिपियो के नाम (ठा ४, १—पत्र २०४, इक) ।

सुणकत्तल पु [सुनक्षत्र] १ एक जैन मुनि (समु २) । २ भवाम्बु महावीर का शिष्य एक मुनि (मा १५—पत्र १७८) ।

सुणकत्तल को [सुनक्षत्र] पक्ष की हस्तरी रात (सुज १, १४) ।

सुणा देवी सुनाय (भाषा वि २०६) ।

सुणा न [सुण] सुना (स २१) ।

सुणय १ धूरी [शुनक] १ कुम्हुर, कुता (हि सुणह १, ४२, मा ५५०, ६८०, ६९०, छाया १, १—पत्र ६५, ग १३८, १७५, सुर २, १०६, ६, २०४ या १६०, दुम १४१, रमा) । २ सुणई, सुणिआ (कुमा ६०६) । ३ सु, खल विशेष (सिग) ।

सुणिहहवा को [शुनरी] कुली, माया-कुम्हुर (वज्जा ८६) ।

सुनाय न [आनय] सुनामा (विसे २४८१) ।

सुनाविअ वि [आविअ] सुनामा हुआ (सुभा ६०२) ।

सुनासीर पु [सुनासीर] झर, देव राज (नाम, हमीर १२) ।

सुणाह देवी सुनाभ (राज) ।

सुणिअ देवी सुण ।

सुणिअ वि [श्रुत] सुना हुआ (कुमा रमण ४४) ।

सुणिअ पु [सौनिक] कलाई (सिरि १०७७) ।

सुणिअ देवी सुनिअण (राज) ।

सुणिअण देवी सुनिअणक (राज) ।

सुनिअण वि [सुनिर्मित] बाध रूप से बना हुआ (कण्) ।

सुनिअण वि [सुनिर्त] ध्वनित स्वरण (छाया १, १—पत्र २२) ।

सुनिअण वि [सुनिशान्त] मन्त्रे वरह सुना हुआ, रहमेनि भावारणोपे को सुनिअण दे मवति (भाषा १, ८, १, २, ३, २, २, १०, १३, १४) ।

सुणसुणाय सब [सुनसुणाय] 'सुन' 'सुन' धातय बनना । वरह, सुणसुणायत (महा) ।

सुण्य न [शून्य] १ निर्जन स्थान (पउड ५२४) । २ वि. रिक्त, रीता, शाली (स्वप्न ११ पउड) । ३ निष्फल, व्यर्थ मिश्रणेन (पउड ८४२, ८७२) । ४ न, उप विशेष, एकस्मिन् अत्र (सवोष ५७) । देवो सुण ।

सुण्यआर देवी सुण्यार (दे ३, १४) ।

सुण्यअ वि [शून्य-यत] शून्य किंवा सुण्यविअ } हुआ (सि ११, ४०, पउड, ग २६ ११६, ६०६) ।

सुण्यार पु [सुण्यार] सुनार, सोमी (दे ५, १६) ।

सुण् देवो सण् = सुणम (हि १, ११८, कुमा) ।

सुण् सिय वि [दे] स्वयं शीव, सोने की भास्वराता (दे ८, ३६, पउ) ।

सुण् को [सारता] नौ का गल-कम्बल (हि १, ७५, कुमा) । 'ल पु [ल] दुम, बैल (कुमा) । लचिय पु [लचिह] १ गलवाय नयभरे । २ महादेव (कुमा) ।

सुण् को [सुपा] पुन बहू (छाया १, ७—पत्र ११७, सुर ४, १८) ।

सुतणु को [सुतन्] नाची, को (सुर २, ८६) ।

सुतर ब [सुतरम्] निमित्त अर्थ के मदिरण वर सूचक ध्वन्य (विसे ८६१) ।

सुतरसिय न [सुनपसित] सुदर तप, तरावर्या का सुदर श्रुतान (राज) ।

सुतरसि वि [सुनपरित] चण्डा तपस्वी (मय ५१) ।

सुतर वि [सुतर] १ ध्वनित निर्मल । धवि अय ऊँचा । २ चण्डा तेलराता । प्रलुच भावावधाना (ह १, १७७) ।

सुतराया, को [सुतरा] १ भवाम्बु सुविधि-सुतरा } नाथजी की सामन-देवी (सवि ६) ।

२ सुधीन की पत्नी (पउड १०, ६) । ३ भाग्यपल विशेष (कुमा) ।

सुतिनिअ वि [सुतिविअ] सुख से रहन करने योग्य (ठा ५, १—पत्र २६६) ।

सुनेसअ वि [सुनेप्य] सुख से ठुट करने योग्य (छा ५, २, ३३) ।

सुन मर [सून्य] बनावना । सुतद (सुरा १३१) ।

सुत् देवो सुअ = श्रुत 'पचत्तमोहिमण-वेवस च पटोवण ममसुत्' (जीवस १४१) ।

सुत् देवो सोत्त = सोतद्व (भवि) ।

सुत् देवो सोत्त = शोध (रमा भवि) ।

सुत् वि [सुम्] घोषा शमित (ठा ५, २—पत्र ३१६, स्वप्न १०४, प्राम् ६८, या २२) ।

सुत् वि [सूक्] १ गुहाए रूप से कहा हुआ । २ न सुआयित सुन्दर वचन सुकदम्ब सुत-उजोए (सुभा ३३) ।

सुत् न [सून्] सूना, चागा, बल तनु (विवा १, ८—पत्र ८५, सुभा २८१) । २ नाटक का प्रस्ताव (मोह ४८, सुभा १) । ३ शास्त्र विशेष (मय ४४, ४—पत्र २८१, की १६) । 'आर पु [कार] पयसर (कण्) । 'कठ पु [कठ] नासण, विप्र (पत्र ४, ६२) । 'कड न [कड] द्वितीय जैन भागवत-ध्व (सुपति २) । 'त न [क] पयोपवीत (वीर) । 'धार पु [धार] देवी 'हार (सुभा १, मोह ४८) । 'कासियणिवजुति को [स्परिअरिअसुक्ति] वृत्र को व्याख्या (मणु) । 'रुई को [रुचि] शास्त्र यद्धा (वीर) । 'दार पु [धार] १ प्रदान नद, नाटक का मुख्य पात्र (प्राम् ११३) । २ गुहाए, बर्हि (कमरा १, ४८) ।

सुत्ति को [सुक्ति] शीघ्र, घोषा (हि २, १३८, दुभा) । 'मई को [मत्ती] वेदि देश को प्राचीन राजधानी (छाया १, १६—पत्र २०८) ।

सुत्ति को [सूक्ति] सुन्दर वचन, सुभायित । 'पसिगा को [प्रत्यया] एक जैन मुनि-शाखा (सु—प ७६ हि राग) ।

सुत्ति देवो सोत्तिअ = सोतिक (वध ६) ।

सुत्ति वि [सुत्ति] सुख निवद्ध (राज) ।

सुत्ति वि [सुत्ति] १ स्वयं, वडुहल । २ सुधी (सिग १२, मा ४७८ महा, वेद २६६, ज १०३१ टी) ।

सुत्ति न [सिसप्य] १ वडुहल, स्वयं । २ सुधी (सिग १२, मा ४७८, सुभा १८, १४८, स १३५, ज १०२, पमदि २२) ।

सुस्थिय देखो सुद्धिअ (सुपा ६३२) ।

सुस्थिर वि [सुस्थिर] अतिशय स्थिर, अति-
निरचल (प्राक १६; सुपा ३४८, कुमा) ।

सुथेय वि [सुस्तोक] अत्यल्प (पठम ८,
१५२) ।

सुदती श्री [सुदती] सुन्दर दातयावो (उप
७६८ टी) ।

सुदंसण पु [सुदर्शन] १ भगवान् भरनाथ
के पिता का नाम (सम १५१) । २ सीसरे
बासुदेव तथा बलदेव के धर्म-गुरु (सम १५३) ।
३ भारतवर्ष में होनेवाला पांचवां बलदेव
(सम १५४) । ४ धरणीन्द्र के हस्त-सैन्य का
अभिपति (ठा ५, १—पत्र ३०२) । ५ एक
अन्तर्द्व द्विज (संत १८) । ६ मेघ पर्वत
(सम १, ६, ६, मुज ५) । ७ एक विष्णुवात
श्रेष्ठ (पठि; वि १६) । ८ देव विरोध (ठा
२, ३—पत्र ७६) । ९ विष्णु का चक्र
(सुपा ३१०) । १० भगवान् भरनाथ का
पूर्वजमीय नाम । ११ भगवान् पार्थनाथ का
पूर्वजमीय नाम (सम १५१) । १२ पुंन.
एक देव-विमान (क्षेत्र १३६) । १३ वि.
जिसका दर्शन सुन्दर हो वह (वि १६) ।
१४ न. पवित्र चक्र पर्वत का एक शिखर
(ठा ८—पत्र ४३६) ।

सुदंसणा श्री [सुदर्शना] १ जम्बू नामक
एक वृक्ष, जिससे यह द्वीप जंबूद्वीप कहलाता
है (सम १३, पद २, ४—पत्र १३०) । २
भगवान् महावीर की उष्ट्र बहिन का नाम
(भावा २, १५, १, लप) । ३ धरण्य भादि
इन्द्रो के कालवात भादि लोकपालों की एक-
एक भगमहिणी (ठा ४, १—पत्र २०४) । ४
काल तथा महाकाल-नामक सिखाचन्द्रों की
अग्रमहिणियों के नाम (ठा ४, १—पत्र
२०४) । ५ भगवान् ऋषभदेव की दोहा-
शिविका (विचार १२६) । ६ चतुर्थ बलदेव
की माता (सम १५२) ।

सुदन्तिअ वि [मुदाक्षिण्य] तासिहयवाता
(वम्म १५, स ३१) ।

सुदंख वि [सुदक्ष] अति चतुर (सुपा
५१७) ।

सुदरिसण देखो सुवंसण (हे २, १०५,
पठम २०, १७६, १६०, पत्र १६४, इक) ।

सुदाम पुं [सुदाम] अतीत उत्तमिणी-काल
में उत्पन्न भारतवर्ष का दूसरा बुद्धपर पुरुष
(सम १५०) ।

सुदारुण [सुदारु] सुन्दर काष्ठ (गडड) ।

सुदारुण पुं [दे] चंडाल (दे ८, ३६) ।

सुदिट्ट वि [सुट्ट] सम्पन्न विलोकिता (गा
२२५) ।

सुदिप्प वर [सु+दीप्] अतिशय
चमकना । वर. सुदिप्पंत (सुपा ३५१) ।

सुदीह } वि [सुदीर्घ] अत्यन्त लम्बा (सुर
सुदीह } २, १२५, २, १६८) । 'कालीय
वि [कालिङ्ग] सुदीर्घ-काल सम्बन्धी (सुर
१५, २२०) । 'वृत्ति वि [वृत्तिन्]'
परिणाम का विचार कर कार्य करनेवाला
(सं ३२) ।

सुदुकर वि [सुदुकर] जो अत्यन्त दुःख से
बिना जा सके वह, अति मुश्किल (उप ५
१६०) ।

सुदुक्कत वि [सुदु-खार्त] अति दुःख से
पीड़ित (सुर ७, ११) ।

सुदुस्सिअ वि [सुदु-सित] अत्यन्त दुःखित
(सुपा ३०४) ।

सुदुग्ग वि [सुदुग्ग] जहाँ दुःख से गमन
किया जा सके वह (पठम ३०, ४६) ।

सुदुच्चय वि [सुदुत्स्यज] मुश्किल से जिसका
रोग हो सके वह, सहयोगी वि सुदुच्चयो
(आ १२) ।

सुदुत्तार वि [सुदुत्तार] कठिनाता से जिसको
पार किया जा सके वह (वीप, पि ३०७) ।

सुदुद्धर वि [सुदुद्धर] अति दुःख से जो
बारण किया जा सके वह (आ ४६, प्रासु
४८) ।

सुदुग्गिअर वि [सुदुग्गिअर] अति कठिनाई
से जिसका निवारण किया जा सके वह
(सुपा ६४) ।

सुदुग्गिच्छ वि [सुदुग्गिच्छ] अतिशय मुश्किल
से देखने योग्य (सुर १२, १६६) ।

सुदुग्गमेअ वि [सुदुग्गमेअ] अति दुःख से
जिसका भेदन हो सके वह (उप २५३ टी) ।

सुदुग्गमिअ श्री [दे] स्वामी श्री (दे
८, ४०) ।

सुदुहह वि [सुदुर्लभ] अत्यन्त दुर्लभ (राज) ।

सुदुसह वि [सुदु सह] अत्यन्त दुःख से
सहन करने योग्य (सुर ६, १५८) ।

सुदेव पुं [सुदेव] उत्तम देव (सुपा २५६) ।

सुद पुं [शुद्र] मनुष्य की भयम जाति, चतुर्थ
वर्ण (विपा १, ५—पत्र ६१, पठम ३,
११७, यू १३) ।

सुदय पुं [शुद्रक] एक राजा का नाम (मोह
१०५, १०६) ।

सुदिणी (पप) श्री [शुद्रा] शूद्रजातीय श्री
(पिग) ।

सुद पुं [दे] गोपाल, ग्वाहा (दे ८, ३३) ।

सुद वि [शुद्ध] १ शुक्ल, उज्ज्वल; 'वदसाह-
सुदवर्षमिरसीए सोहण लग' (सुर ४,
१०१, कुप ७०, वंशा ६, ३४) । २ पवित्र ।

३ निर्दोष । ४ केवल, किसी भी अतिमिश्र । ५
न. सेंधा नून-नामक । ६ मरिच, मिर्चा (हे १,
२६०) । ७ सगातार १८ दिनों के उपवास
(संकोप ५८) । ८ पू. छन्द-विशेष (पिग) ।

'गंधारा श्री [गंधारा] गंधार-भूमि की
एक भूच्छना (ठा ७—पत्र ३६३) । 'वृत्त
पुं [वृत्त] १ नारदवर्ष में होनेवाले चौथे
जिनदेव (सम १५४) । २ एक भगवत्-नामी

जैन बुद्धि (सु २) । ३ एक अन्तर्द्वीप । ४
उषमे रहनेवाली एक मनुष्य-जाति (इक) ।

'पक्ख पुं [पक्ष] शुक्ल पक्ष (पठम ६,
२७) । 'पप पुं [पप] पवित्र भास्वा
(कप्प) । 'पपवेस वि [प्रवेस] पवित्र

बीर प्रवेश के लिए वांछित (पग) । 'पपवेस
वि [स्मवेस] पवित्र तथा वैशोचित
(भा) । 'वाय पुं [वात] वायु विशेष,

मन्द पवन (जो ७) । 'वियड न [विजड]
उष्ण जल (वण) । 'संजा श्री [पड्जा]
पड्ज ग्राम की एक भूच्छना (ठा ७—पत्र
३६३) ।

सुद्वंत पु [सुद्वान्त] अन्त गुर (उप ७६८
टी, कुप ५४, कुम्मा २६, कप) ।

सुद्वाल वि [दे] शुद्ध-वृक्ष, शुद्ध और पवित्र
(दे ८, ३८) ।

सुद्धि श्री [शुद्धि] १ शुद्धता, निर्दोषता,
निर्मलता (सम्मत २५०, कुमा) । २ पता,

खबर, छोई हुई चीज की प्राप्ति, 'बद्धाविजह
पियाइ सुद्धीए' (सुपा ११७, कुप्र २०२,
सम्मत् १७२, कुम्मा ६)।

सुद्धेसणिअ वि [सुद्धेपणिक] निर्दोष
भाहार की चीज करनेवाला (पणह २, १—
पव १००)।

सुद्धोअण पु [सुद्धोदन] बुद्धदेव के पिता
का नाम। 'तणय पु [तनय] बुद्ध देव
(सम्म १४५)। देखो सुद्धोदण।

सुद्धोअणि पु [सौद्धोदनि] बुद्धदेव (पाम)।
सुद्धोदण देखो सुद्धोअण। 'पुत्त पु [पुत्र]
बुद्ध देव (कुप्र ४४०)।

सुधम्म पु [सुधम्म] १ भगवान् महावीर
का पट्टवर सिध्य (कुमा)। २ एक जैन मुनि
(विपा २, ४)। ३ तीसरे बलदेव के पुत्र—
एक जैन मुनि (पवम २०, २०५)। ४ एक
जैन मुनि, जो सातवें बलदेव के पूर्वजन्म में
गुरु थे (पवम २०, १६३)। ५ एक
जैनाचार्य, सह भज्जमहेत्तुरि मज्झसुपमं
व धम्मरय' (सार्थ २२)। देखो सुधम्म।

सुधा देखो छुहा = सुधा (कुमा)।

सुनद पु [सुनन्द] १ भारतवर्ष के भावी
दसवें जिनदेव के पूर्वजन्म का नाम (सम
१५४)। २ एक जैन मुनि (पवम २०,
२०)। देखो सुनद।

सुनकलस देखो सुणकलस (भग १५—पव
६७७, ६८७)।

सुनचिरी की [सुनत्तिनी] बच्छी तरह नृत्य
करनेवाली की (सुपा २८६)।

सुनयण पु [सुनयन] १ राजा रावण के
अधोतन एक विद्याधर सामन्त राजा (पवम
८, १३१)। २ वि सुदर लोचनवाला
(सम्म)।

सुनाम पु [सुनाम] भगवत्का नगरी के
राजा पचनाम का पुत्र (छाया १, १६—पव
२२४)।

सुनिउण वि [सुनिपुण] १ भयन्त गुरुन
(सम ११४)। २ भक्ति शत्रु (सुर ४,
१३६)।

सुनिण वि [सुनिण] भविष्य निश्चित
हुणवाला (सम ११४)।

सुनिग्गल वि [सुनिग्गल] चिर-स्वायी (विदे
७६६)।

सुनिन्द्य वि [सुनिन्द्य] दृढ़ निर्णयवाला
(सुपा ४६८)।

सुनिप्पकप वि [सुनिप्पकम्प] श्रय त
निबल (सुपा ६५३)।

सुनिम्मल वि [सुनिर्मल] अतिशय निर्मल
(पवम २०, ६२)।

सुनित्थिय वि [सुनिरूपित] बच्छी तरह
तलासा हुआ (सुपा १२३)।

सुनिविण वि [सुनिविण] अतिशय खिन्न
(सुर १४, १८, ८७)।

सुनिवुद्ध देखो सुणिवुद्ध (इ ४७)।

सुनिसाय वि [सुनिसात] भयन्त तीदण
(सुपा ५७०)।

सुनिसिअ वि [सुनिसित] ऊपर देखो (वस
१०, २)।

सुनिसस वि [सुनि शङ्क] बिलकुल शङ्का-
रहित (सुपा १८८)।

सुनीविआ की [सुनीविण] सुन्दर नीची—
बल ग्रन्थिवाती की (कुमा)।

सुनेत्ता की [सुनेत्ता] पाँचवें वासुदेव की
पटरानी (पवम २०, १८६)।

सुन न [शून्य] १ बिन्दी (सुर १६, १४६)।
२—देखो सुण (शसु १०, महा, नग,
भावा ३६, १भा)। 'पत्तिया की
[प्रत्ययिना, 'पत्रिना] एक जैन मुनि-
शाखा (वप्य)।

सुभयार देखो सुणयार (सुपा ५६४, धर्म्मवि
१२)।

सुभार देखो सुण्यार (सुपा ५६२)।

सुन्हा देखो सुन्हा (वा ३७ अवि)।

सुप सक् [सुज्] भावर्न करना, शोधन
करना। सुपड (भाष)।

सुपड वि [सुप्रतिष्ठ] १ न्याय-मार्ग में
स्थित। २ प्रतिज्ञा-शूर (कुमा १, २८)। ३
अतिशय प्रतिष्ठ। ४ जिसकी स्थापना विधि-
पूर्वक की गई हो वह (कुमा २, ४०)। ५
पूर्व भगवान् महावीर ॥ पाठ दोहा सेवरमुचि
पनेवाला एक गुरुन्य (वस १८)। ६ भग-
विना का जानभार पाँचवाँ २२ पुरस (विचार
४७३)। ७ भगवान् सुभार-नाथ के पिता का

नाम (सुपा ३६)। ८ मात्रपद मास का
लोकोत्तर नाम (सुज १०, १६)। ९ पान-
विशेष (राय)। १० म. एक नगर का नाम
विपा १, ६—पव ८८)। 'म पुन [मि]
एक देव विमान (भम १४, पव २६७)।

सुपडट्टिय वि [सुप्रतिष्ठित] बच्छी तरह
प्रतिष्ठा प्राप्त (भा, राय)।

सुपक्क वि [सुपक्क] बच्छी तरह पका हुआ
(प्राप् १०२, तट—सुद्ध १५७)।

सुपडाय वि [सुपटाय] सुन्दर ध्वजावाला
(कुमा)।

सुपडियुद्ध वि [सुप्रतिवुद्ध] १ सुन्दर रीति
से प्रतिबोध की प्राप्त (भाषा १, ५, २,
३)। २ पु. एक जैन महर्षि (वप्य)।

सुपडित्त वि [सुपरिदुक्क] नो बच्छी तरह
हुमा हो वह (पवम ६४, ४५)।

सुपण्हिय वि [सुप्रणिहित] सुदर प्रणि-
धानवाला (पणह २, १—पव १२३)।

सुपण्ण देखो सुपण (राज)।

सुपण्ण } पु [सुपण्ण] गहव पत्नी (मोट कुप्र
सुपण्ण } ६३)।

सुपण्ण वि [सुप्रज्ञप्त] १ सुन्दर रूप से
कथित (भाषा १, ८, १, ३)। २ सम्यक्
भाषित (वस ४, १)।

सुपम देखो सुपम (राज)।

सुपण्ड पु [सुपण्डम] १ एक विजय-शून
(ठा २, ३—पव ८०)। २ पुन. एक देव-
विमान (सम १६)।

सुपरिसम्मिय वि [सुपरिमित] सुन्दर
संस्कारवाला (छाया १, ७—पव ११६)।

सुपरिस्मित्त वि [सुपरीक्षित] बच्छी
सुपरिन्द्य वि [सुपरि] वरीदा की
गई हो वह (उव, प्राप् १५)।

सुपरिणित्तिय वि [सुपरिनिष्ठित] बच्छी
सुपरिनिष्ठिय वि [सुपरिनिष्ठित] बच्छी
सुपरिनिष्ठिय वि [सुपरिनिष्ठित] बच्छी

सुपरिण्डु वि [सुपरिण्डु] सुलट (पवम
४२, २६)।

सुपरिस्मित्त वि [सुपरिस्मित्त] अतिशय यका
हुमा (पवम १०२, ४५)।

सुपरस्स वि [सुपरस्सित्त] जिसने जोर से राने
का धारम्भ किया हो वह (छाया १, १८—
पव २४०)।

सुपचित्त वि [सुपचित्त] अत्यन्त विमुक्त (सुपा ३५४)।
 सुपचित्तिय [सुपचित्तिय] अत्यन्त पवित्र किया हुआ (सुपा ३)।
 सुपञ्च पुं [सुपञ्च] १ देव । २ न. सुन्दर पर्व (सुप ४२)।
 सुपसादय वि [सुपसादित] अन्धो तरह प्रसन्न किया हुआ (रमा)।
 सुपसिद्ध वि [सुपसिद्ध] प्रति विख्यात (रिंग)।
 सुपस्त वि [सुपस्त] सुख से खेलने योग्य (ठा ४ ३—पत्र २५३, ५, १—पत्र २६६)।
 सुपह पुं [सुपह] शुभ मार्ग (सुव, सुपा ३७७)।
 सुपहाय न [सुपहाय] नास्तिक प्रातः काल (हे २, २०४)।
 सुपानय वि [सुपापन] प्रतिशय पापी (उत् १२, १४)।
 सुपास पुं [सुपास] १ भारतवर्ष में उत्पन्न सातवें जिन भगवान् (सम ४३ बन्ध, सुपा २)। २ भगवान् महावीर के पिता का भाई (ठा १—पत्र ४५५, विचार ४७८)। ३ एक कुलकर पुरुष का नाम (सम १५०)। ४ भारतवर्ष के भावी तीसरे जिनदेव (सम १५३)। ५ ऐश्वर्य क्षेत्र में उत्पन्न एक जिनदेव (सम १५३)। ६ ऐश्वर्य क्षेत्र में प्राणपि उत्पत्तिणी काल में होनेवाले छठारहवें जिनदेव (सम १५४, पत्र ७)। ७ भारतवर्ष के भावी दूसरे जिनदेव का पूर्वजन्मीय नाम (सम १५४)।
 सुपासा भी [सुपासा] एक जैन साध्वी (ठा ६—पत्र ४५७)।
 सुपीड्य [सुपीड] अहोरात्र का पाँचवाँ मुहूर्त (सम ५१)।
 सुपुत्र पुन [सुपुत्र] एत देव विमान (सम २२)।
 सुपुत्र पुन [सुपुत्र] एत देव-विमान (सम २२)।
 सुपुत्र पुन [सुपुत्र] एक देव विमान (सम ३०)।
 सुपुत्रिष्ठ पु [सुपुत्रिष्ठ] सज्जन, साधु पुरुष (हे २, १८५, गज, प्राप्ति ३)।

सुपेसल वि [सुपेसल] प्रति मनोहर (उत् १२, १३)।
 सुप्प धक् [रप्] सोना। सुप्प (हे २, १७६)।
 सुप्प पुन [सुप्प] सूप छात्र, सिरखी का बना एक पात्र जिसमें भोज पछोटा जाता है (उत्, पण्ड १, १—पत्र ८)। 'ण्ड वि [नर] सूप के जैसे गलगाता (शाया १, ८—पत्र १३३)। 'ण्डा 'ण्डी ओ [नगा] खण की बहिन का नाम (प्रात ४२)।
 सुप्पइ देवो सुप्पइ (राज)।
 सुप्पइय देवो सुप्पइय (राज)।
 सुप्पइयण्ण } धी [सुप्रतिष्ठा] दक्षिण वचन
 सुप्पइयण्ण } पर रहनेवाली एक दिग्गुमारी
 देवी (राज इक)।
 सुप्पइत्तिय न. शीतहारक यन्त्र विशेष (भ० ७० पत्र ३६६, खो० ४०, ४६)।
 सुप्पजल वि [सुप्पजल] अत्यन्त शब्द—
 चौथा (कम्प)।
 सुप्पडिआणद वि [सुप्रत्यानन्द] उपकृत पुरुष के स्थि हुए उपकार की माननेवाला (ठा ४, ३—पत्र २४८)।
 सुप्पडिआर न [सुप्रतिहार] उपकार का बदला, प्रत्युपकार (ठा ३, १—पत्र ११७)।
 सुप्पडिबुद्ध देवो सुप्पडिबुद्ध (राज)।
 सुप्पडिलग्ग वि [सुप्रतिलग्न] अन्धो तरह तथा हुआ, अवलम्बित (सुपा ५६१)।
 सुप्पडिआण न [सुप्रणिधान] शुभ ध्यान (ठा ३, १—पत्र १२१)।
 सुप्पडिहिं देवो सुप्पडिहिं (पण्ड २, १—पत्र १०१)।
 सुप्पज वि [सुप्पज] शुद्ध बुद्धिवाला (सुप १, २, ३३)।
 सुप्पबुद्ध पुन [सुप्रबुद्ध] एक त्रैलोक्य विमान (देवद १३६ पत्र १६४)।
 सुप्पबुद्धा ओ [सुप्रबुद्ध] दक्षिण रुक्मवर रहनेवाली एक दिग्गुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३६, इक)।
 सुप्पम पुं [सुप्रम] वर्तमान अन्तर्पिणी-काल में उत्पन्न चतुर्थ वतदेव (सम ७१)। २ भागवती उत्तर्पिणी में होनेवाला चौथा वत-

देव (सम १५४)। ३ भारतवर्ष का भावी तीसरा कुलकर पुरुष (सम १५३)। ४ हरि-
 वात तथा हरिसह नामक इन्द्रों के एक-एक लोकपाल का नाम (ठा ४, १—पत्र १६७, इक)। ५ पुन. एत देव विमान (देवद १५१)। 'कन पुं [नान्त] हरिवात तथा हरिसह नामक इन्द्रों के एक-एक लोकपाल का नाम (ठा ४, १—पत्र १६७)।
 सुप्पमा ओ [सुप्रमा] १ तीसरे वतदेव की माता (सम १५२)। २ धरणी प्रादि दक्षिण-
 श्रेणि के कई इन्द्रों के लोकपालों की एक-
 एक भयमहिषी का नाम (ठा ४, १—पत्र २०४)। ३ वनवाहन नामक विद्याधर-नरेश की पत्नी (पठम ५, १३८)। ४ भगवान् अजितनाथ की दीक्षा शिविना (विचार १२६, सम १५१)।
 सुप्पभूय वि [सुप्रभूत] प्रति प्रचुर (पठम ५५, ३६)।
 सुप्पसण्ण } वि [सुप्रसन्न] अत्यन्त प्रसाद-
 सुप्पसण्ण } हुक (नाग—मासती १६१, मवि)।
 सुप्पसार वि [सुप्रसारित] सुख से पसारने योग्य (सुव २, २६)।
 सुप्पसारिय वि [सुप्रसारित] अन्धो तरह पसार हुआ (धीप)।
 सुप्पसिद्ध देवो सुप्पसिद्ध (सम १५१, वि ३५०)।
 सुप्पसुय वि [सुप्रसूत] सम्यक् उत्पन्न (भोद)।
 सुप्पहूय (मप) देवो सुप्पभूय (मवि)।
 सुप्पाडोस पु [दे] अन्धो पडोस (प्रा २७)।
 सुप्पिय वि [सुप्रिय] अत्यन्त प्रिय (उत् ११: ८, सुपा ४६५)।
 सुप्पुरिस देवो सुप्पुरिस (रपण २४)।
 सुफणि धीन [सुफणि] जिसमें तक प्रादि उबाला जाय ऐसा बटुना प्रादि पात्र (सुप १, ४ २, १०)।
 सुवपु पु [सु-वु] १ दूसरे वतदेव का पूर्वजन्मीय नाम (सम १५३)। २ भारतवर्ष का भावी सातवाँ कुलकर (सम १५३)।
 सुवभ पुन [सुवदान] एक देव विमान (सम १६)।

सुबंभण पुं [सुव्वाभण] प्रसन्न विप्र (वि २५०)।

सुनद्ध वि [सुनद्ध] अच्छी तरह बँधा हुआ (उव)।

सुनल पु [सुनल] १ सोम वंश का एक राजा (पउम ५ ११)। २ पहले बलदेव का पूर्व-कल्पीय नाम (पउम २०, १६०)।

सुनलिट्ट वि [सुनलिट्ट] प्रतिशय बलवान (धु १८)।

सुनह वि [सुनह] प्रति प्रभूत (उव)।

सुनहुल वि [सुनहुल] ऊपर देखो (बपू)।

सुनाहु पु [सुनाहु] १ एक राज-कुमार (विपा २, १—पत्र १०३)। २ की. हविमराज की एक कन्या (छाया १, ८—पत्र १४०)।

सुवुद्धि की [सुवुद्धि] १ सुन्दर प्रज्ञा (या १४)। २ पु. राम-भ्राता भरत के साथ दोहा सेनेवाला एक राजा (पउम ८५, १)। ३ एक मन्त्री (महा)।

सुवभ वि [सुवभ] १ सकेद, श्वेत (सुपा ५०६)। २ न. एक प्रकार की चाँदी (राय ७५)।

सुवभ न [सौभ्रय] सन्देश, श्वेता (सवोष ५२)।

सुविभ पुं [सुरभि] १ सुगन्ध, सुगन्ध (सम ४१, मग, छाया १, १२)। २ वि. सुगन्धी, सुगन्ध-युक्त (उत ३६, २८, भाषा १, ६, २, ३)। ३ मनोहृद, मनोज, सुन्दर (छाया १, १२—पत्र १७४)।

सुविभकल न [सुभिक्क] सुनाल (सुपा १५८)।

सुवुम्मी की [सुवुम्मी] गारी, महिला (रमा)।

सुभ पु [सुभ] १ भगवान् पार्श्वनाथ का प्रथम गणपति (ठा ८—पत्र ४२६, सम १३)।

२ भगवान् नमिनाथ का प्रथम गणपति (सम १२४)। ३ एक कुल्लत (पउम १७, ८२)। ४ न. नाम-वर्ण का एक भेद (सम ६७, वम्म १, २६)। ५ माल, कल्याण। ६ वि. मगल-जनक, मागलिक, प्रसन्न (कप, मग कम्म १ ४२, ४३)। ७ पोस पु [पोय]

भगवान् पार्श्वनाथ का द्वितीय गणपति (सम १३)। ८ पुष्पम्मा पुं [पुष्पुम्मे] राजल-

वश का एक राजा (पउम ५, २६२)। देखो

सुद = शुभ।

सुभन्न न [सुभन्न] वल्ल नामक लौकान्तिक देवों का विमान (राज)। देखो सुहंकर।

सुभग वि [सुभग] १ भानन्द-जनक (कप्प)।

२ सौभाग्य युक्त, बल्लभ, जन प्रिय (पुज्ज २०)। ३ न. पय विशेष (सुम २, २, १८; राय ८२)। ४ कर्म-विशेष (सम ६७, वम्म १, २६, ५२, धम्मस ६२० टी)।

सुभगा की [सुभगा] १ वता-विशेष (पएण १—पत्र ३३)। २ मुख्य नामक मूलेन्द्र की एक पटरानी (ठा ४, १—पत्र २०४, छाया २—पत्र २५३, इक)।

सुभग्य वि [सुभग्य] भाग्य शाली, जिसका भाग्य अच्छा हो वह (उव १०३१ टी)।

सुभद देखो सुद (नाट—मासकी १३८)।

सुभणिय वि [सुभणित] वचन कुशल (उव)।

सुभद पु [सुभद] १ दध्यापु-वरा का एक राजा (पउम २८, १३६)। २ दूसरे बामुदेव तथा बलदेव के बर्मे युद्ध (सम १५३)। ३ पुन. एक देव विमान (वेवेन्द ४५१)। ४ ५ नगर-विशेष (उव १०३१ टी)।

सुभदा की [सुभदा] १ दूसरे बलदेव की माता (सम १५२)। २ प्रथम की-रत्न, भरत

चक्रवर्ती की भग्न-महियों (सम १५२)। ३ बलि नामक इन्द्र के सोम प्रादि चारों लोक-

राजों की एक-एक भग्न-महियों का नाम (ठा ४, १—पत्र २०४)। ४ भूलात्त प्रादि

इन्द्रों के नावनाल नामक लोकपाल की एक-

एक भग्न महियों का नाम (ठा ४, १—पत्र २०४)। ५ प्रतिमा विशेष, एक स्त (ठा ४, १—पत्र २०४)। ६ राम के भाई भरत की

पत्नी (पउम २८, १३६)। ७ राजा कोटिक की की (मौप)। ८ राजा भौतिक की एक की

(स्त २३)। ९ एक सती की (पडि)। १० एक सार्धवाह-पत्नी (विपा १, २—पत्र २२)।

११ जम्बूवृक्ष विशेष, जिसमें यह द्वीप जंबू

द्वीप बट्ठाता है (इक)।

सुभय देखो सुभग (मग १२, ६—पत्र १७८)।

सुभरिय वि [सुभर] अच्छी तरह मरा हुआ,

मरपूर, परिपूर्ण (उव)।

सुभा की [सुभा] १ वैरोचन बत्तीन्द्र की एक

भग्न महियों (ठा ५, १—पत्र ३०२)। २

एक विजय-क्षेत्र (ठा २, ३—पत्र ८०)। ३ राखण की एक पत्नी (पउम ७४, ११)।

सुभामिय देखो सुशसिय (उत २०, ५१; दस ६ १ १७)।

सुभासि वि [सुभासि] सुन्दर बोलने-

वाला। की. 'री (सुपा ५६८)।

सुभिम्भ देखो मुट्ठिम्भ (उव साधं ३६)।

सुभिष पु [सुभिय] भग्न नौकर (सुपा ४६५ ६ ४, ३३४)।

सुभीम वि [सुभीम] प्रति भयकर (सुर ७, २३३)।

सुभीसण पुं [सुभीपण] राखण का एक

सुभट (पउम ५६, ११)।

सुभूम पु [सुभूम] १ भारतवर्ष में उत्पन्न

घातवा चक्रवर्ती राजा (ठा २, ४—पत्र ६६)। २ भारतवर्ष के भावी दूसरा कुलकर

पुरुष (सम १५३)। भगवान् भमरनाथ का

प्रथम आवक (विचार १७८)।

सुभूषण पु [सुभूषण] विनोषण का एक

पुन (पउम ६७, १६)।

सुभोगा की [सुभोगा] भवौलोक में रहने

वाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३७, इक)।

सुभोयण न [सुभोजन] श्रुत विशेष, एकाग्रन

तप (सवोष ५८)।

सुम न [सुम] पुण्य, फल (सम्मत १६१)।

'सर पु [शर] कामदेव (रमा)।

सुमद पु [सुमदि] १ पाचर्वा जिन भगवान्

(सम ४३)। २ ऐश्वर्य क्षेत्र में होनेवाला

बसवा कुलकर पुरुष (सम १५३)। ३ एक

वैत उपासक (महावि ४)। ४ वि. शुभ सुखि

वाला (मउड)। ५ पु. एक नैमित्तिक विद्वान्

(सुर ११, १३२)।

सुमगल पुं [सुमगल] ऐश्वर्य वर्ण में होने

वाले प्रथम जिनदेश (सम १५४)।

सुमंगला की [सुमङ्गला] १ भगवान् कप-

वर्ध की एक पत्नी (पउम ३, ११६)। २

सुवर्णोद्य राजा विजयनागर की पत्नी (पउम ५ ८२)।

सुमग्य पु [सुमार्ग] भग्नवा रास्ता (सुपा ३३०)।

झी [तरङ्गिणी] गंगा नदी (मण) । 'तरु' देखो 'अरु' (मण) । 'ताण पु' [त्राण] यवनद्वय, सुतताव (ती १५) । 'दारु न' [दारु] देवदार की सनदो (स ६३३) । 'धंसी झी' [धंसितो] विना विरोध (पञ्च ७, १३७) । 'धनु' [धनु] हनु-धनुष (कुमा. सण) । 'नई देखो' [नई] (यु ७७) । 'नाह देखो' [नाह] (सण) । 'पहु पु' [प्रभु] इन्द्र, देव-राज (मुग ५०२; उप १४२ दो. सण) । 'पुर न' [पुर] देव-पुरी, अमरावती, स्वर्ग (पञ्च ५०, १, सण) । 'पुरी झी' [पुरी] नही मर्ष (पात्र. कुमा) । 'पिअ पु' [प्रिय] एक यत्न (मंत) । 'वंदी झी' [वंदी] देवी, देव-झी (सि ६, ५०) । 'भवण न' [भवन] देव-प्रासाद (मण. सण) । 'मंति पु' [मन्त्र] रहस्य (मुपा १२६) । 'मंदिर न' [मन्दिर] १. देहरा, मन्दिर (कुप्र ४) । २. देव-विमान (सण) । 'मुनि पु' [मुनि] गारुड मुनि (पञ्च ६०, ८) । 'रमण न' [रमण] रावण का एक बगोना (पञ्च ४६, १७) । 'राय पु' [राज] इन्द्र (मुपा ४५, मिरि २४) । 'रिउ पु' [रिपु] दैत्य, दानव (पात्र) । 'लोअ पु' [लोक] स्वर्ग (महा) । 'लोहय वि' [लोहिक] स्वर्णीय (कुप्र २५८) । 'लोअ देखो' [लोअ] (पञ्च ५२, १८) । 'घइ पु' [पति] १. इन्द्र, देव-राज (पात्र. मुपा ४४; ४८, ८८, ४०२) । २. इन्द्र नामक एक विद्यावर-नरेश (पञ्च ७, २७) । 'वण पु' [वर्ण] एक देव विमान (सम १०) । 'यधू देखो' [यधू] (सि ३८७) । 'यन्त्री झी' [यन्त्री] युवाग वृद्ध (पात्र) । 'यर पु' [यर] उत्तम देश (मण) । 'यंदि पु' [यन्त्र] इन्द्र, देव-राज (या २७) । 'यहू झी' [यधू] देवाङ्गना, देवी (कुमा) । 'वारण पु' [वारण] ऐश्वर्य हवी (उप २११ दो) । 'संगीय न' [संगीत] नगर-विशेष (पञ्च ८, १८) । 'संति झी' [सरित्] भागीरथी, गङ्गा नदी (मठ. उप पु २६; मुपा ३३, २८६) । 'सिंहारि पु' [शिखरिन्] मेघ पर्वत (सण) । 'सुंदर पु' [सुन्दर] रघुचक्राल-नगर का एक

विद्यावर-नरेश (पञ्च ८, ४१) । 'सुंदरी झी' [सुन्दरी] १. देव-यधू, देवाङ्गना (मुग ११, ११५; मुपा २००) । २. एक राज-पुत्री (मुग ११, १४३) । ३. एक राज-पुत्री (सि ५३) । 'सुहि झी' [सुरभि] काम-केतु (स्यण १३) । 'सेल पु' [रील] मेघ-पर्वत (मुपा १३०) । 'हसिय पु' [हसितन्] ऐश्वर्य हवी (सि ६, ६) । 'रुह न' [रुध] वज्र (पात्र) । 'देव पु' [देव] एक प्राक्क वा नाम (उवा) । 'देवी झी' [देवी] पश्चिम वक्क पर रहनेवाली एक दिवा-कुमारी देवी (ठा-पञ्च ४३६; द्रव) । 'रि पु' [रि] रासचक्र का एक राजा. एक संका-पति (पञ्च ५, २६२) । 'लिय पु' [लिय] स्वर्ग (पात्र. मुपा १, ६, ६; मुपा ५६६) । 'हिराय पु' [विराज] इन्द्र (उप १४२ दो) । 'हिय पु' [विप] इन्द्र (सि १५, ५५) । 'हिय पु' [विपति] नही (मुपा ४६) ।

सुद झी [सुरति] सुख (पण १, ४—पञ्च ६८) ।

सुदय वि [सुरचित] अच्छी तरह किया हुआ (पण १, ४—पञ्च ६८) ।

सुरंगना झी [सुराङ्गना] देव-यधू (मुपा २४६) ।

सुरंगा झी [सुरङ्गा] सुरंग, जमीन के भीतर का मार्ग (उप पु २६, महा. मुपा ४५४) ।

सुरंगि पुंझी [दे] वृद्ध-विशेष. शिशु वृद्ध, सहजना का गाछ (दे ८, ३७) ।

सुरेण्ड पुं [दे] वरण देवता (दे ८, ३१) ।

सुरेण्ड पुं. व. [सुराण्ड] एक भारतीय देश जो याज्ञवल्क्य ब्राह्मणवाक्य के नाम से प्रसिद्ध है (छाया १, १६—पञ्च २०८, हे २, ३४, नि २०२) ।

सुरणुर वि [रनुचर] सुख से करने योग्य (ठा ५, १—पञ्च २६६) ।

सुरत देखो सुरय (पञ्च १६, ८०, संति सुद) ६. प्राक् १२) ।

सुरभि पुंझी [सुरभि] १. वक्कल शत्रु । २. झी गी, गैया (कुमा १४) । ३. वि. सुगन्ध-युक्त, सुगंधी (सम ६०, या ८६१; कण.)

कुमा १४) । ४. पुं. एक देव-विमान (देवेन्द्र १४०) । 'गंध वि' [गन्ध] सुगन्धी (भावा) । 'पुर न' [पुर] नगर-विशेष (राज) । देखो सुरहि ।

सुरमगीअ वि [सुरमगीय] मत्स्य मनोहर (मुग ३, ११२) ।

सुरम्भ वि [सुरम्भ] ऊपर देखो (बीर) ।

सुरय न [सुरत] मेढुन, झी-संभोग (मुग १३, २०, या १५५; काप ११३) ।

सुरयण न [सुरान] सुन्दर रत्न (मुग ३२७) ।

सुरयणा झी [सुरचना] सुन्दर रचना (मुग ३३) ।

सुरस वि [सुरस] १. सुन्दर रत्न (छाया १, १२—पञ्च १७४) । २. न. वृण विशेष (दे १, ५४) । 'लया झी' [लना] तुलसी-लता (दे ५, १४) ।

सुसुर पु [सुसुर] पश्चिम-विशेष, 'सुर सुर' भावान (मोप २८९) ।

सुसुर वक्क [सुसुराय] 'सुर सुर' भावान करना । वक्क. सुसुरेत (गा ७४) ।

सुद सक्क [सुभय] सुभाषित करना । सुदेह (कुमा. प्राप् ६) ।

सुद पुंन [सौरभ] सुन्दर गन्ध, वृद्ध; 'गंधोविषय सुदी मालाई मण' गुण विज्ञातो' (मत्त १२१) ।

सुद पुं [सुध] सारिचतुर का एक राजा (महा) ।

सुरहि पुंझी [सुरभि] १. वसंत ऋतु (रंभा, पात्र, कण्ठ) । २. वैश मात (गा १०००) ।

३. वृद्ध-विशेष, शतदं वृद्ध (भावा २, १, ८, ९) । ४. झी. गी, गैया (स्यण १३, धनंवि ६५; पात्र, प्राप् १६८) । ५. न. नाम कर्न का एक नंद. जिसके उदय से प्राणी के शरीर में सुगन्ध उत्पन्न होती है (मम् १, ४१) ।

६. वि. सुगन्ध युक्त (उवा. कुमा. या ११७; ३६६, सुर ३, ३६० हे २, १५५) । देखो सुरांभ ।

सुरांभ झी [सुरा] नदिया, दाह (उवा) । 'रस पुं' [रस] समुद्र-विशेष (दीव) ।

सुरिद पु [सुरेन्द्र] १. इन्द्र, देव-स्वामी (मुग २, १५३, मठ. मुपा ४४) । २. एक

सुमण } न [सुमनस.] १ दुष्ण, कूल
सुमणस } (हि १, ३२; सुभा ८६) । २ पुं.
देव, सुर (सुभा ८६; ३३४) । ३ वि. सुन्दर

मनवाला, सजन (सुभा ३३४; पठम ३६,
१३०; ७७, १७; रयण ३) । ४ लृपवा.
मानन्दित, सुखी (ठा ३, २—पत्र १३०) ।
५ पुंन. एक देव-विमान (देवेन्द्र १३६) ।
‘भद्र’ पुं [‘भद्र’] १ भगवान् महावीर के
पास दोषा लेकर भुक्ति पाने वाला एक
गृहस्थ (अंन १८) । २ धर्म्य संग्रुतिविजय के
एक शिष्य, एक जैन मुनि (वपु) ।

सुमणसा श्री [सुमनस.] बल्ली-विशेष
(पण्य १—पत्र ३३) ।

सुमणा श्री [सुमनस.] १ भगवान् चन्द्रप्रभ
की प्रथम शिष्या (सम १५२, पत्र ६) । २
भूतानन्द ब्राह्म-इन्द्रो के एक-एक लोकात्म
की एक-एक भद्र-महिषी का नाम (ठा ४,
१—पत्र २०४) । ३ राजा शैलिक की एक
पत्नी (अंत २५) । ४ एक जन्तु कुल का
नाम (हक) । ५ शक की वच्चा नामक
इन्द्राणी की एक राजधानी (हक) । ६
मालवी का कूल (हृषण ६१) ।

सुमणो देवी सुमण (उप ६ १८) ।

सुमणोहर वि [सुमनोहर] अथर्व मनोहर
(उप ६ १८) ।

सुमार सक [स्मृ] याव करता । सुमारह (हि
४, ७४) । मवि. सुमरिहसि (वि ५२२) ।
कनं. सुमरिह (हि ४, ४२६; वि ५३७) ।
बह. सुमरित (सुर ६, ६४, सुभा ४००;
पठम ७८, १६) । कवह. सुमरिजित (पठम
५, १८६, नाट—मालती ११०) । संकु.
सुमरिज, सुमरिजण (कुमा, काल) । हेकु.
सुमरेज, सुमरिचप (वि ४६४; ५७८) ।
कं. सुमरियज्ज, सुमरेयज्ज, सुमरणीज
(सुभा १५३, १८२, २१७, अमि १२०) ।

सुमार पुं [स्मार] कामदेव (नाट—वेत ८१) ।

सुमारण श्रीम [स्मरण] याव, स्मृति (कुमा,
हृष, ४२६; वपु, प्राप, सुभा ७१, १५६;
३६७, स ३३४) । श्री. ‘णा’ (स ६७०;
सुभा २२०) ।

सुमारण सक [स्मारय] याव दिवाना ।
बह. सुमारवंत (कुम २६) ।

सुमारविष वि [स्मारित] याव करावा हुआ
(सुर १४, ४८, २४३) ।

सुमारिअ देखो सुमार = स्मृ ।

सुमारिअ वि [स्मृत] यादविषा हुआ (पाद्य) ।

सुमारुया श्री [सुमारु] भगवान् महावीर
के पास दोषा लेकर भुक्ति पानेगाने राजा
शैलिक की एक पत्नी (अंत २५) ।

सुमहुर नि [सुमपुर] प्रति मधुर (विपा १,
७—पत्र ७७) ।

सुमाणस वि [सुमानस] प्रशस्त मनवाला,
सजन (पठम १८२, २७) ।

सुमाणुस पुं [सुमानुप] सजन, उत्तम मनुष्य
(सुभा २५६) ।

सुमालिह पुं [सुमालिन्] एक राज-कुमार
(पठम ६, २२०) ।

सुमिण पुंन [स्वप्न] १ स्वप्न, सपना (हे १,
४६, कुमा, महा, पवि; सुर ३, ६१; ६७) ।
२ स्वप्न के फल को बतलानेवाला शास्त्र
(स्वप्न ४६) । ‘पाठय’ वि [‘पाठक’] स्वप्न
के फल बतानेवाले शास्त्रों का ज्ञानकार
(छाया १, १—पत्र २०) । देखो सुविण ।

सुमिच पुं [सुमित्र] १ भगवान् सुविब्रज-
स्वामी का पिता—एक राजा (सम १५१) ।
२ द्वितीय चक्रवर्ती का पिता (सम १५२) ।
३ ऋषि बलदेव के पूर्व जन्म का नाम (पठम
२०, १६०) । ४ छठवें बलदेव के धर्मगुरु—
एक जैन मुनि (पठम २०, २०५) । ५ एक
वणिक् का नाम (उप ७२८ वी) । ६ ब्रह्म
मित्र, ‘सुमित्तो ब्रह्मविजयस्यो’ (सुभा २३४) ।
७ भगवान् शान्तिनाथ की प्रथम भिन्ना देवेवाले
एक गृहस्थ का नाम (सम १५१) ।

सुमिचा श्री [सुमित्रा] लक्ष्मण की माता
और राजा दशरथ की एक पत्नी (पठम २५,
४) । ‘तणय’ पु [‘तनय’] लक्ष्मण (वि ४,
१५; १४, ३२) ।

सुमिचि पुं [सोमित्रि] सुमित्रा का पुत्र—
लक्ष्मण (पठम ४५, ३६) ।

सुसुइय वि [सुसुदित] प्रति हवित (श्रीम) ।
सुसुखी देखो सुमुही (पिंम) ।

सुसुणिअ वि [सुनात] अच्छी तरह जाना
हुआ (सुभा २२२) ।

सुसुइ पुं [सुसुम] १ भगवान् नेमिनाथ के पास
दोषा लेकर भुक्ति पानेवाला एक राज-कुमार
(अंत ३) । २ राक्षस-वंश का एक राजा, एक
लंका-पति (पठम ५, २६१) । ३ न. छन्द-
विशेष (अमि २०) ।

सुमुही श्री [सुमुगी] छन्द-विशेष (विग) ।
सुमेचा श्री [सुमेधा] ऊँ लोक में रहनेवाली
एक दिग्गुप्तारी देवी (ठा ८—पत्र ४३७) ।

सुमेरु पुं [सुमेरु] मेरु-पर्वत (पाम, पठम
७५, ३८) ।

सुमेहा देखो सुमेधा (हक) ।

सुमेहा श्री [सुमेधा] सुन्दर बुद्धि (उप ६
३६८) ।

सुम्वत देखो सुण = धु ।

सुम्ह पुं. व. [सुम्ह] देश-विशेष (हि २, ७४) ।

सुर पुं [सुर] १ देव, देवता (पण्य १, ४—
पत्र ६८; कप्य जो ३३; कुमा) । २ एक
राजा का नाम (उप ७६५) । ‘अण न
[‘वन’] नन्दन वन (से ६, ८६) । ‘अरु पुं
[‘तर्क’] कल्प वृक्ष (नाट) । ‘करडि पुं
[‘करडिन्’] ऐरावत हाथी (सुभा १७६) ।
‘करि पुं [‘करिन्’] घरीमर्ष (सुभा २२१) ।
‘कुंभि पुं [‘कुंभिन्’] बही (सुभा २०१) ।
‘कुमार पुं [‘कुमार’] भगवान् बासुपुत्र का
शासन-काल (पत्र २६) । ‘कुसुम न [‘कुसुम’]
सवय, लोच (पि १४) । ‘गय पुं [‘गज’]
इन्द्र-हस्ता, ऐरावत (पाम; से २, २२) ।
‘गिरि पुं [‘गिरि’] मेरु पर्वत (सुभा २;
३१, ३५४, सण) । ‘गोह देखो ‘घर (उप
७६८ वी) । ‘गुरु पुं [‘गुरु’] १ बृहस्पति
(पाम, सुभा १७६) । २ नास्तिक मठ का
प्रवर्तक एक ब्राह्मण (मोह १०१) । ‘गोव
पुं [‘गोप’] कौट-विशेष, इन्द्रगोप (छाया
१, ६—पत्र १६०; पाम) । ‘घर न [‘गृह’]
१ देव-मन्दिर (कुम ४) । २ देव-विमान
(सण) । ‘चमू श्री [‘चमू’] देव-सेना
(सुभा ४५) । ‘चाव पुं [‘चाप’] इन्द्र-
मनुष्य (पा ५८५; ८०८; सुभा १२४) ।
‘जाल न [‘जाल’] इन्द्रजाल (राज) । ‘गई
श्री [‘नदी’] गंगा नदी (पाम) । ‘गाह पुं
[‘नाथ’] इन्द्र (पा ८६४; वे) । ‘तरंगिणि

जो [तरङ्गिणी] गंगा नदी (सण) । 'तरु
 देखो' अरु (सण) । 'ताग पुं' [त्राग]
 यवनपुत्र, सुतगान (तो १५) । 'दारु न'
 [दारु] देवदार की सारी (स ६३३) ।
 'पंसी जो' [प्यसिनी] विद्या विशेष (पत्रम
 ७, १३७) । 'धणु', 'धणुह न' [धनुष]
 इन्द्र-पुत्र (कुमा, सण) । 'नई देखो' 'णई'
 (ध ७७) । 'नाह देखो' 'णाह' (सण) ।
 'पहु पुं' [मसु] इन्द्र, देव-राज (सुहा ५०२,
 उप १४२ टी; सण) । 'पुर' [पुर] देव-
 पुरी, भ्रमरावली, स्वर्ग (पत्रम ५०, १, सण) ।
 'पुरी जो' [पुरी] बही भयं (पात्र, कुमा) ।
 'पिअ पुं' [प्रिय] एक यत्न (प्रत) । 'बंदी
 जो' [बन्दी] देवी, देव जो (से ६, ५०) ।
 'भवण न' [भयन] देव प्रासाद (सण,
 सण) । 'मति पुं' [मन्त्रिण] बुद्ध-स्वति
 (सुपा १२६) । 'मदिर न' [मन्दिर] १
 देहूय, मन्दिर (कुप्र ४) । २ देव विमान
 (सण) । 'सुणि पुं' [सुनि] नारद मुनि
 (पत्रम ६०, ८) । 'रमण न' [रमण]
 राघव का एक बगीचा (पत्रम ४६, १७) ।
 'राय पुं' [राज] इन्द्र (सुपा ४५, गिरि
 २४) । 'रिउ पुं' [रिपु] वैद्य, दानव
 (पात्र) । 'लोअ पुं' [लोक] स्वर्ग (महा) ।
 'लोइय वि' [लीकिक] स्वर्गीय (पुनक
 २५८) । 'लोअ देखो' 'लोअ' (पत्रम ५२,
 १८) । 'वह पुं' [पति] १ इन्द्र, देव-राज
 (पात्र, सुपा ४४, ४८, ८८, ४०२) । २
 इन्द्र नामक एक विद्याधर नरेश (पत्रम ७,
 २७) । 'धणु पुन' [वर्ण] देव विमान
 (सन १०) । 'वधू देखो' 'वधू' (वि ३८७) ।
 'वशी जो' [पणी] पुंनग वृक्ष (पात्र) ।
 'वर पुं' [वर] उत्तम देव (मग) । 'वरिंद
 पुं' [वरिन्द्र] इन्द्र, देव राज (आ ७७) ।
 'वहू जो' [वर्ण] देवाङ्गना, देवी (कुमा)
 'वारण पुं' [वारण] ऐरावत हस्ती (उप
 २११ टी) । 'सगीय न' [सगीत] नगर-
 विशेष (पत्रम ८, १८) । 'सरि जो'
 [सरित्] भागीरथी, गङ्गा नदी (भट्ट,
 उप ४ ३६, सुपा ३३, २८६) । 'सिहरि पुं'
 [सिधरिन्] मेघ पर्वत (सण) । 'सुंदर
 पुं' [सुन्दर] रम्यकलात-नगर का एक

विद्याधर-नरेश (पत्रम ८, ४१) । 'सुदरी
 जो' [सुन्दरी] १ देव-वधू, देवाङ्गना (पुर
 ११, ११५, सुपा २००) । २ एक राज-
 पुत्री (पुर ११, १४३) । ३ एक राज-कुमारी
 (सिरि ५३) । 'सुरहि जो' [सुरभि] काम-
 धेनु (रखण १३) । 'सेल पुं' [शील] मेघ-
 पर्वत (सुपा १३०) । 'हस्ति पुं' [हस्तिच]
 ऐरावत हाथी (से ६, ६) । 'उइह न'
 [युध] वज्र (पात्र) । 'देव पुं' [देव]
 एक आत्म का नाम (उवा) । 'देवी जो'
 [देवी] पश्चिम रुक्म पर रहनेवाली एक
 दिसा कुमारी देवी (डा८—पत्र ५३६, क्ल) ।
 'रि पुं' [रि] राससर्वश का एक राजा,
 एक सक्ता पति (पत्रम ५, २६२) । 'लिय
 पुन' [लिय] स्वर्ग (पात्र, सुपा १, ६, २,
 सुपा ५६६) । 'हिदाय पुं' [हिदाय]
 इन्द्र (उप १४२ टी) । 'हिन् पुं' [धिप]
 इन्द्र (से १५, ५१) । 'हिदय पुं' [धिपति]
 बही (सुपा ४६) ।

सुरह जो [सुरति] सुख (पणह १, ४—पत्र
 ६८) ।

सुरइय वि [सुरचित] बन्धी तरह किया
 हुआ (पणह १, ४—पत्र ६८) ।

सुरगणा जो [सुरगना] देव वधू (सुपा
 २४६) ।

सुरमा जो [सुरमा] सुरग, जमीन के भीतर
 का मार्ग (उप २ २६, महा, सुपा ४५४) ।

सुरंगि पुत्री [दे] वृष-विशेष, विष्णु वृक्ष,
 सहजना का माछ (दे ८, ३७) ।

सुरजेठ पुं [दे] बखल देवता (दे ८, ३१) ।

सुख पुं. व. [सुख] एक नारदीय देश जो
 पात्रकम् काठियावाड़ के नाम से प्रसिद्ध है
 (छाया १, १६—पत्र २०८, हे २, ३४,
 गिद २०२) ।

सुणुचर वि [सुनुचर] सुख से करने योग्य
 (डा ५ १—पत्र २६६) ।

सुरत } देखो सुरय (पत्रम १६, ८०, सखि
 सुद १, ६, प्राह १२) ।

सुरभि पुत्री [सुरभि] १ वसन्त ऋतु । २
 जो वी, गैया (कुम्मा १४) । ३ वि. सुगन्ध-
 मूल, सुगंधी (सम ६०, गा ८६१, कण,

कुम्मा १४) । ४ पुन. एक देव-विमान
 (देखें १४०) । 'गंध वि' [गन्ध] सुगन्धी
 (माषा) । 'पुर न' [पुर] नगर-विशेष
 (राज) । देखो सुरहि ।

सुरमगीअ वि [सुरमगीय] मयन्त मनोहर
 (सुर ३, ११२) ।

सुरम्य वि [सुरम्य] ऊपर देखो (वीग) ।

सुख म [सुख] मेघुन, जो सत्रीग (सुर १३,
 २०, गा १५५, वात्र ११३) ।

सुखण न [सुखन] सुन्दर रत्न (सुपा ३२७) ।

सुखरणा जो [सुखरणा] सुन्दर रचना (सुपा
 १२२) ।

सुरस वि [सुरस] १ सुन्दर रत्नमाला (छाया
 १, १२—पत्र १७४) । २ न, सुख विशेष
 (दे १, १४) । 'लगा जो' [लगा] सुगन्धी-
 मला (दे ५, १४) ।

सुसुर पुं [सुसुर] ध्वनि विशेष, 'सुर सुर'
 भावान (सोष २८६) ।

सुसुर वक [सुसुराय, 'सुर सुर'
 भावान कला । वक्. सुसुरत (गा ७४) ।

सुह सक [सुरभय] सुगन्धित करना ।
 सुहह (कुमा, प्राह ६) ।

सुह पुन [सौरभ] सुन्दर गन्ध, सुगन्ध,
 'गवोविषय सुरहो मातईह नतण' पुण
 विणासो' (भत १२१) ।

सुह पुं [सुरय] साकेतपुर का एक राजा
 (महा) ।

सुरहि पुत्री [सुरभि] १ वसन्त ऋतु (रभा,
 पात्र, कपू) । २ चैत्र मास (गा १०००) ।

३ वृष विशेष, रातहु वृक्ष (माषा २, १, ८,
 ३) । ४ जो वी, गैया (रखण ११, चर्मत्रि
 ६५, पात्र प्राह १६८) । ५ न. नाम कर्म
 का एक भद्र जिसके उदय से प्राणी के शरीर
 में सुगन्ध उत्पन्न होती है (कम्म १, ४१) ।
 ६ वि. सुगन्ध युक्त (उवा कुमा, गा ३१७,
 ३६६, सुर ३, २६०, हे २, १५५) । देखो
 सुरभि ।

सुपा जो [सुपा] यदित, दाढ़ (उवा) । 'रस
 पुं' [रस] वसुध विशेष (वीज) ।

सुरिंद पुं [सुरेन्द्र] १ इन्द्र, देव-स्वामी (सुर
 २, १५३, गवह, सुपा ४४) । २ एक

विधापर नरेरा (पठन ७, २६) । *दत्त पुं
[दत्त] एक राज-कुमार (उप ६३६) ।

सुरिंदय पुं [सुरेन्द्रक] विमानेन्द्र, देव-
विमान-विशेष (हेन्द १३०) ।

सुरी श्री [सुरी] देवी (हुमा)

सुरंगा देवो सुरंगा (पठन ८, १५८) ।

सुरंग पुं [सुरंग] देश विशेष (हे २, ११३;
पद) । *ज वि [ज] देश विशेष में उल्लस
(हुमा) ।

सुरह वि [सुरह] मलयत रोप धुक (पठन
६८, २५) ।

सुरया श्री [सुरया] एव ह्मराणी (छाया
२—पथ २५२) । देवो सुरया ।

सुरय पुं [सुरय] १ भूत-निवास के दक्षिण
दिशा का ह्मर (छा २, ३—पथ ८५) । २
न, सुन्दर स्त्री । ३ वि. सुन्दर रूपवाला
(उवा, भग) ।

सुरया श्री [सुरया] १ सुकन सभा प्रतिरूप
नामक भूतेश्वरी की एव एक भद्र महिषी
(छा ४, १—पथ २०४) । २ भूतानन्द
नामक ह्मर की एक भद्र-महिषी (ह्म) ।
३ एक विराट-कुमारी देवी (छा ४, १—पथ
१६८, ६—पथ ३६१) । ४ एक कुसकर-
पत्नी (सम १५०) । ५ सुन्दर रूपवाली
(महा) ।

सुरेस पुं [सुरेस] १ देव-पति, ह्मर । २
उत्तम देव (सुपा ६१४) ।

सुरेसर पुं [सुरेश्वर] ह्मर, देव-राज (सुपा
२७, कुप ४) ।

सुलक्षणि वि [सुलक्षणि] उत्तम लक्षण-
वाला (धर्मवि १४२) ।

सुलगा वि [सुलगा] मच्छी तरह लगा हुआ
(महा) ।

सुलह वि [सुलह] सम्मत् प्राप्त (छाया
१, १—पथ २५, उवा) ।

सुलभ वि [सुलभ] सुख के प्राप्त हो सके
सुलभ । वह (था १२, सुल २, १५, महा) ।
सुलस पुं [सुलस] पर्वत विशेष (ह्म) ।
सुलस न [दे] कुमुद रक्त यव (दे ८, ३७) ।
सुलसमजरी श्री [दे] सुलसी (दे ८, ४०,
सुलसा [पाथ]) ।

सुलसा श्री [सुलसा] १ नवर्षे जिनदेव की
प्रथम शिष्या (सम १५२) । २ भगवान्
महावीर की एव श्याविवा, जिसका माया
मायावि बाल में घोषित होया (छा ६—पथ
४५५; सम १५४) । ३ माग नामक नृपति
की श्री (धत ४) । ४ शक की एव भद्र-
महिषी, एव ह्मराणी (पठन १०२, १५६) ।
५ संखपुर के राजा सुन्दर की पत्नी (महा) ।

सुलह देवो सुलभ (स्वन् ४८; महा, ६
४६) ।

सुलाह पु [सुलभ] मच्छा नका (सुपा
४४६) ।

सुली श्री [दे] उक्ता: भाराश से गिरती
माग (दे ८, ३६) ।

सुलसुल } भग[सुलसुलाय] 'कुल' 'कुल'
सुलसुलाय } भावान् करना । सुलसुलाय
(लु ४१) । वक्. सुलसुलित, सुलसुलित
(लु ४४, महा) ।

सुलह वि [सुलह] मलयत सूबा—रूसा (सुप
१, १३, १२) ।

सुलोअ देवो सिलोज = श्लोक (धवि १६) ।

सुलोयण पु [सुलोचन] एक विधापर-नरेरा
(पठन ५, ६६) ।

सुलोच वि [सुलोच] प्रति चपल (कपु) ।

सुल न [शुल्य] शूला-श्रीत मास (दे ८,
३६, पाथ) ।

सुन भक [सुवप्] सोना । सुवद, सुवति
(हे १, १४, पद; महा, उवा) । भवि.
सुवित्त (पि ५२६) । वक्. सुवत्त, सुवमाण
(पाथ, वे १, २१, भग) । संक्ष. सुविजण
(कुप ५६) ।

सुय देवो स = स्व (हे २, ११४, पद, कुमा) ।

सुव (पथ) देवो सुअ = सुत, सुत (भवि) ।

सुवस पु [सुवस] १ मच्छा नाँस । २ वि.
सुन्दर कुल में उत्पन्न, खानदानी (हे ४,
११६) ।

सुवग्ग पुं [सुवल्ग] एक निजय क्षेत्र, जिसकी
राजधानी खड्गपुरी है (छा २, ३—पथ
८०, ह्म) ।

सुवच्छ पु [सुवत्त] १ व्यतर-देवो का
एक ह्मर (छा २, ३—पथ ८५) । २ एक

विजय-क्षेत्र, प्रान्त-विशेष, जिसकी राजधानी
कुंसा नगरी है (छा २, ३—पथ ८०, ह्म) ।

सुनच्छा श्री [सुनत्ता] १ मधोलाभ में
रहनेवाली एव विराट-कुमारी देवी (छा ८—
पथ ४३७) । २ सीमनस पर्वत पर रहनेवाली
एव देवी (ह्म) ।

सुनज पुं [सुनज] १ एव विधापर-श्वरीय
राजा (पठन ५, १६) । २ पुंन, एक देव-
निगम (सम २५) ।

सुनटि वि [सुपति] मतिशय गोल बिदा
हुमा (राज) ।

सुवण न [सुवण] शयन (धोप ८७, पथा
१, ४५, उप ७६९) ।

सुवण पुं [सुवण] १ गड्ड पत्नी (उत १४,
४७) । २ भवनपति देवो की एव जाति
(चीव) । ३ भाविः, पूर्व (गड्ड) । *हुमार
पुं [हुमार] भवनपति देवो की एक जाति
(ह्म) ।

सुवण पुं [दे] मज्जुं वल (दे ८, ३७) ।

सुवण न [सुवण] १ सोना, हेम (उवा,
महा, छाया १, १७, गड्ड) । २ पुं. भवन-
पति देवो की एक जाति (मग) । ३ सोलह
कर्म-नापक का एक बटि (मपु १५५) । ४
सुन्दर वर्ण । ५ वि. सुन्दर वर्णवाला (भग) ।
*आर, *कार पुं [कार] सोनी, सुनार (दे
महा) । *कुभ पुं [कुम्भ] प्रथम बलदेव के
बर्ष-युव एक जैन धुवि (पठन २०, २०५) ।
*कुसुम न [हुसुम] पुष्प-वृक्षिका लता
का फूल (शाय ३१) । *कूला श्री [कूला]
नदी-विशेष (सम २७, ह्म) । *गुलिया
श्री [गुलिया] एक दासी का नाम (महा) ।
*सिल श्री [शिल] एक महीपति (तो
५, राज) । *गर पुं [गर] सोने की
खान (छाया १, १७—पथ २२८) । *र
पुं [वार] सोनी (उप पु ३५१) । देवो
सुवज = सुवण ।

सुवणनिष्ठ पु [दे] विष्णु (दे ८, ४०) ।

सुवणिज वि [सौवर्णिक] सुवर्ण मय, सोने
का बना हुआ (दे १, १६०; पद, प्राक्ष
३६) ।

सुवच देवो सुवच (राज) ।

सुवन्न न [सुवर्ण] १ सोना (सं ५०; प्राप् २; कुप्र १. कुमा)। २ वि. सुन्दर अलङ्कारा (कुप्र १)। *कुमार पुं [कुमार] भवत्पति देवों की एक जाति (मग, सम ८३)। *कूलप्पमाय पुं [कूलप्रपात] एक ह्रद जहाँ से सुवर्णकला नदी बहती है (ठा २, ३—पत्र ७२)। *गार पुं [कार] सोनी (छाया १, ८—पत्र १४०; उप ५ ३५३)। *जुहिया की [युधिका] लता-विशेष (पण १७—पत्र ५२६)। *यार देखो *गार (मुपा ५६५)। देखो सुवण्ण = सुवर्ण।

सुवन्न वि [सौवर्ण] सोने का बना हुआ (कुप्र ४)।

सुवन्नालुगा की [दे] दतन करने का पात्र—लोटा आदि (कुप्र १४०)।

सुवण्ण पुं [सुवम] एक विजय क्षेत्र (ठा २, ३—पत्र ८०)।

सुवयण न [सुवचन] सुन्दर वचन (भग)।

सुवर { (भन) देखो सुमर। सुवर, सुवरेहि सुवरे } (नवि, वि २५१)।

सुवहु देखो सुवहु (प्राप)।

सुवाय पुंन [सुवात] एक देव-विमान (सम १०)।

सुवास पुं [सुवर्ष] १ सुन्दर वृष्टि (उप ८४६)। २ छन्द विशेष (विम)।

सुवासणी देखो सुवासिणी (पर्मि १२३)।

सुवासय पुं [सुवासय] एक राज-कुमार (विपा २, ४)।

सुवासिणी की [दे. सुवासिनी] जिसका पति जीवित हो बंद की (सिदि १५६)।

सुवाहा म [स्याहा] देवता की हविष आदि अर्पण का सूचक शब्द (सिदि १६७)।

सुविअज्जिअ वि [सुव्यजित] विशेष रूप से उपाजित (सदु ५६)।

सुविअद वि [सुविदग्ध] भयकत चतुर (नट—रत्ना ६)।

सुविइय वि [सुविदित] अच्छी तरह ज्ञात (उप; मुपा ४०४)।

सुविउ वि [सुविउ] अच्छा जानकार (प्रा २८)।

सुविउल वि [सुविपुल] अति विशाल (उप)। सुविकम पुं [सुविकम] भूतानन्द नामक छन्द के हस्त संघ का अग्रपति (ठा ५, १—पत्र ३०२-इक)।

सुविस्खाय वि [सुविस्खात] सुप्रसिद्ध (सुर ६, ६४)।

सुविगा की [सुकिरा, सुकी] मैना (उप ६७३; ६७५)।

सुविज्जा की [सुविजा] उत्तम विद्या (प्राप् ५३)।

सुविण देखो सुमिण (सुर ३, १०१; महा-रत्ना)। *सु वि [ज्ञ] स्वप्न-राज का जानकार (उप ५ ११६; सुर १०, ६८)।

सुविण्ड वि [सुविनट] बिलकुल नष्ट (पा ७४०)।

सुविणिच्छिय वि [सुविनिश्चित] अच्छी तरह निर्णीत (उप)।

सुविणिम्मिय वि [सुविनिर्मित] अच्छी तरह बनाया हुआ (छाया १, १—पत्र १२)।

सुविणीय वि [सुविनीत] १ अतिशय दूर किया हुआ (उप १, ४७)। २ घल्लत विनय-युक्त (उप ६, २०, ६)।

सुविउ न [सुउउ] १ अत्यन्त मोलाकार। २ सदाचार, अच्छा आचरण (सुर १, २१)।

सुविउथ वि [सुविस्तुत] अति विस्तारयुक्त (प्राप् ४००; प्राप् १२८, ३६८)।

सुविउत्थिअ वि [सुविउत्तीर्ण] ऊपर देखो (सुर १, ४५, १२, १)।

सुविधि देखो सुविहि (सम ४३)।

सुविभज्ज वि [सुविभज] जिसका विभाग अनायास ही सके बह (ठा ५, १—पत्र २६६)।

सुविभत्त वि [सुविभक्त] अच्छी तरह विभक्त (छाया १, १ टी—पत्र ५, घोष, भग)।

सुविहिअ वि [सुविस्मित] अतिशय आश्चर्यान्वित (उप २०, १३)।

सुविउकरण वि [सुविचक्षण] अति चतुर (मुपा १५०)।

सुविउयाण न [सुविज्ञान] अच्छा ज्ञान, सुन्दर जानकारी, पढाई (सदु १६)।

सुविउ वि [स्वपु] स्वप्न-शीत, सोने की आदतवाला (भोपमा १३३; डे ८, ३६)।

सुविउइय वि [सुविउचित] अच्छी तरह धटित, सुघटित (उपा २०६)।

सुविउइय वि [सुविउजित] सुशोभित (मुपा ३१०)।

सुविउइय वि [सुविउधित] अतिशय विराधित (उप)।

सुविउलस वि [सुविउलस] सुन्दर विलासवाला (सुर ३, ११४)।

सुविउइय वि [सुविउचन] सम्पूर्ण विवेचित (उप)।

सुविउच सक [सुवि + विच्] अच्छी तरह व्याख्या करना। संक्ष. सुविउचित (प) (पर्मस ३३११)।

सुविउसट्ट वि [सुविउसित] अच्छी तरह विकसित (सुर ३, ११६)।

सुविउसथ पुं [दे] व्यवहारी पुरुष (वजा ६८)।

सुविउसाय पुंन [सुविउसात] एक देव-विमान (सम ३८)।

सुविउहाणा की [सुविउधाना] विद्या-विशेष (पर्मस ७, १३७)।

सुविहि पुं [सुविधि] १ नववां जिन भगवान् (सम ८५, पर्मि)। २ पुंकी, सुन्दर अनुष्ठान (पणह २, ५ टी—पत्र १४६)। ३ द. रामचन्द्र तथा लक्ष्मण का एक दान, 'बैकमण्ड' हबइ सुविहिनामण' (पर्मस ८०, ४)।

सुविहिअ वि [सुविहिअ] सुन्दर आचरण-वाला, सदाचारी (सम १२५, भास १; उप; स १३०; साथ ११५, ३२२)।

सुवीर पुं [सुवीर] १ यदुराज का एक पौत्र (अंत)। २ पुंन एवं देव-विमान (सम १२२)।

सुवीसत्थ वि [सुविश्चरत] अच्छी तरह विरवासप्राप्त (सुर ६, १५६, मुपा २११)।

सुवुण्णा की [दे] सकेत, झरारा (दे ८, ३७)।

सुवुरिस देखो सुपुरिस (पर्मस)।

सुवे म [अस] भागामी बत (हे २, ११४, चट, कुमा)।

सुवेले पुं [सुवेले] १ पर्वत-निशेष (दे ८, ८०)। २ न. नगर-विशेष (पर्मस ५४, ४१)।

सुयो देवो सुये (पद्, प्राय) ।

सुव न [सुव] १ तवि, ताम्र (ती २) ।

२ रज्जु रत्नी । ३ जल समीप । ४ आचार ।

५ यज्ञ या वार्य (हे २, ७६) ।

सुवत देवो सुय ।

सुवत देवो सुवय (ठा २, ३—य ७८) ।

सुवत वि [सुवत्] सुव, सुवष्ट (धत २०, औप, नाट—मृच्छ २८) ।

सुव्यमाण देवो सुय ।

सुव्यय पु [सुवय] १ आरतवर्ष में उत्पन्न बौद्ध जिनदेव, मुनिबुद्ध स्वामी (ती ८, पृ ३५) । २ ऐश्वर्य वर्ष के एक भावी जिनदेव (सम १५४) । ३ छठवें जिनदेव के गणेश (१५२) । ४ एक जैन मुनि जो तीसरे बलदेव के पूर्व जन्म में पुरु थे (पञ्च २०, १६२) । ५ छठवें बलदेव के धर्म-पुत्र (पञ्च २०, २०६) । ६ भगवान् चारुनन्द का मुख्य श्रावक (कप्य) । ७ एक ज्योतिष्क महा भू (राज) । ८ एक दिवस का नाम (मावा २, १५, ५, कप्य) । ९ व एक मोक्ष (कप्य) । १० वि सुहर ब्रह्माला (पञ्च ३५) । 'सिग पु' ['गित] एक दिवस का नाम (कप्य) ।

सुव्यया को [सुवय] १ भगवान् धर्मनाथ की माता (सम १५६) । २ एक जैन साध्वी (पुर १५, २४७ महा) ।

सुविश्रा को [दे] भग्ना, माता (दे ८, ३८) ।

सुस देवो सुस, सुसद व रंजी न वरति निष्कन्ता वरहिणी न चन्वति' (बज्रा १३४, भवि) । सुसियव्य (पुर ४, २२६) ।

सुसगद वि [सुसगर] भति सगद (शङ्क १२) ।

सुसग्मिअ वि [सुसयमित] भति नियन्त्रित (रे) ।

सुवण्डिआ को [दे] शूला प्रोत भवि (दे ८, ३६) ।

सुसतय वि [सुसत] भति सुदर, 'अहो यथा कुण्ड तय सुसतय' (पञ्च ७८, ५६) ।

सुसनिविद्ध वि [सुसनिविद्ध] भच्छो तरह स्थित (सुपा १३३) ।

सुसपरिगाहिय वि [सुसपरिगहीत] ध्वज भच्छो तरह ग्रहण किया हुआ (राय ६३) ।

सुसपिण्णद वि [सुसपिण्णद] मूत्र भच्छो तरह बेंपा हुआ (राय) ।

सुसभंत वि [सुसभान्त] अतिशय व्यापृत (उत्त २०, १२१) ।

सुसभिअ वि [सुसभूत] भच्छो तरह सहित (स १८६, उप ६४८ टी) ।

सुसमय वि [सुसमत] भच्छो तरह संगति-युक्त (पुर १०, ८२) ।

सुसवुअ } वि [सुसवृत्] १ परिणत सुसवुद्ध } व्याप्त । २ भच्छो तरह पहना हुआ (छाया १, १—पञ्च १६, वि २१६) । ३ जितेन्द्रिय । ४ स्याद्वा (उत्त २, ४२) ।

सुसंहय वि [सुसहत] अतिशय सरिलट (भोर) ।

सुसज वि [सुसज] भच्छो तरह क्षयात् (सुपा १११) ।

सुसण्णप्प देवो सुसण्णप्प (राज) ।

सुसद् वि [सुसुद्ध] सुन्दर भावनावाला । २ प्रसिद्ध, विश्रुत (सुपा २६६) ।

सुसन्नप्प वि [सुसन्नप्प] सुल बोध्य (कव) ।

सुसमरय वि [सुसमर्य] सुयत्त, अतिशय सामर्थ्यवाला (पुर १, २३२) ।

सुसमदुस्समा } को [सुसमदुप्पमा] काल-सुसमदुस्समा } विशेष, अवस्थापिणी काल का तीव्रता और उत्कृष्टिणी का बीया धारा (इक, ठा २, ३—पञ्च ७६) ।

सुसमसुमा को [सुसमसुपमा] काल विशेष, अवस्थापिणी का पहला और उत्कृष्टिणी का छठवाँ धारा (इक, ठा १—पञ्च २७) ।

सुसमा को [सुपमा] १ काल विशेष, अवस्थापिणी का दूसरा और उत्कृष्टिणी का पाँचवाँ धारा (ठा २, ३—पञ्च ७६ इक) । २ कन्द विशेष (पिण्य) ।

सुसमाहर सक [सुसमा + ह] भच्छो तरह ग्रहण करना । सुसमाहरे (सुभ १, ८, २०) ।

सुसमाहिय वि [सुसमाहित] भच्छो तरह समाविष्टता (उप ५, १ ६—उत्त २०, ४) ।

सुसमिद्ध वि [सुसमृद्ध] अव्यक्त समुद्र (नाट—मृच्छ १५६) ।

सुसर पुन [सुसर] १ एक देव विमान (सम १७) । २ न, नामधेय वा एक भेद, जिसने उदय से सुन्दर स्वर की प्राप्ति हो वह धर्म (सम ६७, कम्म १, २६, ५१) । देखो सुस्सर, सुमूर ।

सुसा को [सुस] बहिन, भगिनी (सम १, ३, १, १ टी) ।

सुसा देवो सुग्ग = सुगा (हुमा) ।

सुसागय न [सुसागत] सुन्दर स्वागत (भा) ।

सुसागर पुन [सुसागर] एक देव विमान (सम २) ।

सुसाण न [श्मशान] सुवापाट, मरपट (छाया १, २—पञ्च ७६, हे २, ८६, स २६७, था १४, महा) ।

सुसामण्य न [सुसामण्य] भच्छा साधुवन (ववा) ।

सुसाय वि [सुसाय] स्वादिष्ट, सुन्दर स्वाद-वाला (पञ्च ८२, ६६, १०२, १२२) ।

सुसाल पुन [सुसाल] एक देव विमान (सम ३५) ।

सुसायग } पु [सुसायक] भच्छा श्रावक—सुसायय } जैन गृहस्थ (हुमा, पकि, इ २१) ।

सुसाहय देवो सुसाहय (पण १, ४—पञ्च ७६) ।

सुसाह पु [सुसाधु] उत्तम शुनि (पणह २, १—पञ्च १०१, उव) ।

सुसिअ वि [सुप्क] सूसा हुमा (सुपा २०४, कुप्र ११) ।

सुसिअ वि [सोपित] मुखवात हुआ (महा बज्रा १५० कुप्र १३) ।

सुसिक्खिअ वि [सुसिक्खित] भच्छो तरह शिक्षा को प्राप्त (मा २०) ।

सुसिणिद्ध वि [सुस्मग्ग] अत्यन्त स्नेह-युक्त (पुर ४, १६६) ।

सुसित्य देवो सुत्त = सौत्थ्य (सति १२) ।

सुसिन्न वि [सुसोर्ण] भति सजा हुआ (सुपा ४६६) ।

सुसिर वि [सुसिर] १ बोला, खाली । छूँछा (उप ७२८ टी कुप्र १६२) । २ पुन एक देव विमान (सम ३७) ।

सुसिलिङ्ग वि [सुसिलिङ्ग] सुसंगत, प्रति
सबद्ध (सुर १०, ८२, पचा १८, २३)।

सुसिस्स पु [सुसिप्प] उत्तम बेला (उप
५ ४०६)।

सुसीअ वि [सुसीअ] प्रति शीतल (सुमा)।

सुसीम न [सुसीम] नगर-विशेष (उप
७२८ टी)।

सुसीमा औ [सुसीमा] १ भगवान् पद्मप्रम
की माता (सम १५१)। २ कृष्ण बासुदेव
की एक पत्नी (सम १५)। ३ वसु नामक
विजय क्षेत्र की एक राजधानी (डा २,
३—पद ८०)।

सुसील न [सुसील] १ उत्तम स्वभाव (पदम
१४, ४४)। २ वि. उत्तम स्वभाववाला,
सदाचारी (प्राप् ८)। ३ वत वि [वत्]।
राजाधारी (पदम १४, ४४, प्राप् ३६)।

सुसु ५ [शिद्] बच्चा, बालक। १ भार पु
[भार] जलचर प्राणी की एक जाति,
महिषाकार भस्त्र विशेष (पि ११७)।
१ भारिका औ [भारिका] बाघ विशेष
(राम ४६)। देखो सुसुमार।

सुसुज पुन [सुसुज] एक देव विमान (सम
१५)।

सुसुमार पु [सुसुमार] जलचर जन्तु की एक
जाति (औ २०)। देखो सुसु मार।

सुसुयध वि [सुसुयध] १ मरुत गुणधी
(पदम ६, ४१, गडड)। २ पु. मरुयन्त
पुसुय (गडड)।

सुसुर देखो ससुर (बर्नवि ११४, सिदि
३३४, ३४४, ३४७, ६८८)।

सुसुहकर पु [सुसुहकर] छद्म का एक भेद
(पिग)।

सुसुपु श्न [सुसुपु] एक देव विमान (सम
१०)।

सुसेण पु [सुसेण] १ सुवीर का शत्रु (वि
४, ११, १३, ८४)। २ एक भन्नी (विषा
१, ४—पद ५४)। ३ भरत चक्रवर्ती का
मन्त्री (राज)।

सुसेणा औ [सुसेणा] एक बड़ी नदी (डा
५, ३—पद ३५१)।

सुसोह वि [सुसोम] भन्नी शोभावाला
(सुपा २७३)।

सुसोहिय वि [सुसोमित] शोभा संपन्न,
समलकुल (उप ७२८ टी)।

सुस्स धक [शुप्] सूचना। सुस्से (सुष
१, २, १, १६)। वक्र. सुस्सत (स ११६)।

सुस्समण पु [सुस्समण] उत्तम साधु (उप)।

सुस्सर वि [सुस्सर] सुन्दर आवाजवाला
(सुपा २८६)। देखो सुसर।

सुस्सरा औ [सुस्सरा] गीतरत्न तथा गीतयश
नाम के गणपतियों की एक एक भ्रमरहृषी का
नाम (डा ४, १—पद २ ४, इक)।

सुस्सरा वि [सुस्सरा] सार युक्त (भवि)।

सुस्सावग [सुस्सावग] दत्ता सुसावग (उप या १२)।

सुस्सील देखो सुसील (सुपा ११०, ५०८)।

सुसुय देखो सुसुय (राज)।

सुसुयाय धक [सुसुयाय, सुस्साय]।
सुसु धाभाज करना, सूकार करना। सह
सुसुयाइया (उप २७, ७)।

सुसु औ [अशू] साधु (इह २)।

सुसुस धक [शुशूप्] सेवा करना।
सुसुल (उप, गहा)। वक्र. सुसुसुसद,
सुसुसमाणा (कुलक ३४, भग, औप)।

दे. सुसुसिदु (श्री) (भा ३६)।

सुसुसअ वि [शुशूपक] सेवा करनेवाला
(कप्प)।

सुसुसण न [शुशूपण] सेवा, शुशूपा (कुप
२४७, रत्न २१)।

सुसुसणया औ [शुशूपणा] ऊपर देखो
सुसुसणा (उप २६, १, धीप. श्यामा
१, १३—पद १७८)।

सुसुसआ औ [शुशूपा] ऊपर देखो (सुपा
१२७)।

सुह देयो मोह = शुम्। सुहद (वज्जा १४,
पिग)।

सुह धक [सुसुरय] सुवीर बना। सुहद
(पिग), सुहदि (श्री) (भवि ८६)।

सुह देयो सुम (हे ३, २६, ३०, सुमा,
सुपा ३६०, कम्म १, ५०)। अ हि [दे]

भयनकारी (कुमा)। १ कम्मिय वि [कम्मिक]
मुख्यशाली (भवि)। २ काम वि [कम्म]
मज्ज की चाहवाला (सुपा ३२६)। ३ गर
वि [कर] मज्जल जनक (कुमा)। ४ नामा
औ [नामा] पद की पवित्री, दमकी तथा
पनरहवी रात्रि तिथि (सुज्ज १०, १५)।
५ स्थि वि [स्थिन्] १ शुभेच्छक (भग)।
२ शुभ प्रसवाता (श्यामा १, १—पद ७४)।
३ देतो अ (कुमा)।

सुह न [सुसुर] १ भगवद् भैरव, मया। २
भाराम, शान्ति (डा २ १—पद ४७, १,
१—पद ११४, भग स्वज २३ प्राप्
१३३, हे १, १७७, कुमा)। ३ निर्माण,
शुचि। ४ वि, विवेकि (विसे ३४४३,
३४४४)। ५ सुल प्रद, सुल जनक (श्यामा
१, १२—पद १७४, भावा. कम्म १,
५१)। ६ अनुकूल (श्यामा १, १२)। ७
सुखी (हे ३, १६)। ८ अ वि [व] सुल-
दायक (सुर २, ६५, सुपा ११२, कुमा)।
९ इच्छ अ वि [वत्] सुखी (पि ६००)।
१० कर वि [कर] सुल-जनक (हे १, १७७)।
११ कम्मि वि [कम्मिन्] सुलभिलाषी (भोज
११६)। १२ स्थि वि [स्थिन्] बड़ी मर्त्य
(भावा)। १३ द वि [व] सुल-दाता (हे
१०३, कुमा)। १४ दाय वि [दाय] बड़ी
(पदम १०३, १६२)। १५ स वि [स्सका]
कोमल (राम)। १६ यर देखो कर (हे १,
१७७, कुमा सुपा ३)। १७ सन्मा औ
[सन्ध्या] सुल-जनक सायकाल (कप्प)।
१८ विह वि [विह] १ सुल-जनक (भा २८,
उप; श ६७)। २ पुन एक परित शिखर (डा
२, ३—पद ८०)। ३ सग न [सगन्]
भ्रातृन विशेष, पालकी (सुर २, ६०, सुपा
२७८, कप्प)। ४ सिधिया औ [सिधिका]
सुख से बैठना, सुखी स्थिति (प्राप् ८५)।

सुहदविधा औ [दे] दूती (दे ८, ६)।

सुहकर वि [सुसुर] सुल-नारक (सिदि
३६, कुमा)।

सुहदक वि [शुभर] १ शुभ कारक (कुमा)।

२ शु. एक बलिष्ठ का नाम (उप २०७ टी)।

सुहदर वि [सुसुभर] सुवीर (गडड)।

सुहा देखो सुभग (रण ४०, गा ६; नाट—मातवि २८) ।

सुहृद् वृ [सुभट] मोदा (गुर २, २६, कुमा, भासु ७४, सण) ।

सुहृद वि [सुहृत्] मन्दी तरह हरण विधा हुमा (दम ७, ४१) ।

सुहृत्थ वि [सुहृत्] १ भण्डा हाथवाला, हाथ की सपुतावाला, हाथ से शीघ्र-शीघ्र काम करने में समर्थ (से १२, ५५) । २ दाता, दानशील (भवि) ।

सुहृत्थि पु [सुहृत्थिन्] १ कृष हस्तो (गाथा १, १—पत्र ७४, उवा) । २ एव जैन महर्षि (कथ, पठि) ।

सुहृद न [सौहार्द] १ स्नेह । २ मित्रता (भवि) ।
सुहृद न [सूक्ष्म] १ फूल, पुष्प (दलवि १, ३६) । २ देखो सहा, सुहृद = सूक्ष्म (हे २, १०१, चड) ।

सूक्ष्म पुं [सुधर्मन्] १ भगवान् महावीर का पट्टपर शिष्य (विधा १, १—पत्र १) । २ ब्राह्मण जिनदेव का प्रथम शिष्य (सम १५२) । ३ एक वक्ता का नाम (विधा १, १—पत्र ४, १, २—पत्र २१) । ४ 'सामि' पुं [स्वामिन्] भगवान् महावीर का पट्टपर शिष्य (सग) । देखो सुधर्म ।

सूक्ष्म देखो सुहृन्मा । 'वश पुं [पति] श्रुत (महा) ।

सूक्ष्ममाण वि [सुहृन्माण] जो मन्दी तरह मारा जाता हो वह (वि ५४०) ।

सूक्ष्मा जी [सुधर्मा] चर मादि श्रद्धा की वसा, देव वसा (सम १५४, सग) ।

सुहृ देखो सुहृ-अ = सुहृद, शुभ-व ।

सुहृ देखो सुभग (गड्ड, सण, हेका २७२, कुमा) ।

सुहृ वि [सुहृत्] मन्दी तरह जो मारा गया हो वह (कुप्र २२६) ।

सुहृ वि [सुभर] सुह से भरने योग्य (वस ८, २५) ।

सुहृ-अ देखो सुहाय (पद) ।

सुहृ-अ जी [दः सुहृद] पक्षि विशेष, सुपरी (से ८, ३६) ।

सुहाय पुं [दि] १ वेरया वा पर । २ चट्ट, वेरया पत्थी (दे ८, ५६) ।

सुहृ-अ जी [दि] सुप्र, मानन्द (दे ८, ३६) ।

सुहृ देखो सुभग (वज्र ६६, संधि ६) । जी. 'वी' (श्रुत ३७) ।

सुहा श्र [सु+भा] श्रद्धा सगना, न सुहा गोमर्ष साधू (कुप्र ३५२) ।

सुहा देखो सुहा = गुणा (स २८२, कुमा, सण) । *कम्मत न [कमन्ति] कृते वा बारखाना (भाषा २, २, ६) । *हार पुं [हार] देव, देवता (स ७५५) ।

सुहा श्र [सुगाय] १ सुख पाना ।

सुहा-अ २ श्र, सुखी करना । सुहा-अ, सुहाय सुहाय, सुहाय, सुहाय (भवि, गा ६१७, वि ५५८; से १२, ८६; वज्र १६४, भवि, चर) । वज्र. सुहायत (से १, २८, नाट—रत्ना ६१) ।

सुहाय देखो सहाय = स्वभाव (गा ५०८, वज्र १०) ।

सुहायण वि [सुहायण] सुख-जनक (सण, भवि) ।

सुहायव वि [सुहायक] कपर देखो (वज्र ४६४, भवि) ।

सुहासि वि [सुभाषित] १ सम्पूर्ण उक्त (पहल १, १—पत्र १) । २ न. सुन्दर वचन, सुक (स ७६१, गुप्ता ५१५) ।

सुहि वि [सुहित] सुख-पुत्र (गुप्ता ३१२, ४३१) ।

सुहि पुं [सुहृद] मित्र, दोस्त (डा ४, सुहि-अ ३—पत्र २४३, शाया १, २—पत्र ६०, उत २०, ६, गुर ४, ७६, गुप्ता १०७, ४१६, प्रवी ३६; गुर ३, १५४, भवि) ।

सुहि-अ वि [सुहित] सुखी, सुख-पुत्र (से २, ८, गा ४१८, कुप्र ४०६, उव, कुमा) ।

सुहि-अ वि [सुहित] १ सुत (से २, ८) । २ सुन्दर हितवाला (वर्मा २) ।

सुहि-अ वि [सुहित] प्रति हित (उप ७२८ टी) ।

सुहि देखो सुसिर, भवनामो सुहृ-अ जी [सुहृद] व चरणाधारि (वर्मा १२४, रत्ना) ।

सुहिरण्या } जी [सुहिरण्या, 'गिर्या']
सुहिरणिया } वनस्पति-विशेष, पुष्प-प्रधान
सुहिरजिया } पुष्प विशेष (राम ३१, रान, पहल १७—पत्र ५२६) ।

सुहिरमण वि [सुहिरमन्स] भवन्त सगना, भविष्य शरणिन्दा (गुप्ता १, ४, २, १७, रान) ।

सुहिरिया देखो सुहेदि 'सुहिरिया' प्रथम रत्न गुणो (भत १४२) ।

सुही वि [सुधी] वंश, निदान (मिरि ४०) ।

सुहृम वि [सुहृम] १ वारी, धरमन्त छोटा । २ कौट्य (हे १, ११८, २, ११३, कुमा, जी १४) । ३ पुं. भारत वर्त में एक भावी कुलकर्त पुष्प (सम १५३) । ४ एकेन्द्रिय जीव-विशेष (डा ८, कम्प ४, २, ५) । ५ न. बर्मा विशेष (सम ६७) । *संपराग, *संपराय पुंन [संपराय] १ चारित्र-विशेष (डा ४, रान ३२२) । २ वर्या गुण-स्थानक (सम २६) । देखो सण्ड, सुहृम = गुणव ।

सुहृय वि [सुहृत्] मन्दी तरह होम विधा हुमा (वा २८० टी, कथ, मीन) ।

सुहृ-अ जी [दि, सुपरेलि] सुख, मानन्द, मका (दे ८, ३६, पात्र, गा १०८, २११; २६१, २८८, ३६८, ५५६, ८६४, स ७२) ।

सुहृ-अ वि [सुलैपिन्] सुताभिनायी (गुप्ता २२७) ।

सू म. विन्दा-पुष्पक मन्थ्य (नाट) ।

सू-अ सूक [सूच्य] १ सूचना करना । २ जानना । ३ लक्ष करना । सुहृ, सूचति, सूचो (विसे १३६८; स २४८, गड्ड, पिठ ४१७) । कर्म. सूहृजद (गा ३२६) । वज्र. सूच्य, सूचयति (गड्ड, स ३६६) । कवक. सूहृजत (वेद ६०५) । क सूच्यञ्च (से १०, २८) ।

सू-अ पु [सूद] रकोडया (महा) ।

सू-अ पु [सूत] १ सारवि, रथ हविर्वाला (पात्र) । २ वि. प्रसूत, जिसने जन्म दिया हो वह, 'सु' (सु)योगीश्वर चर्या (सम १, ३, २, ११) । 'गड्ड पुंन [कुत] दूसरा जैन भग-मन्थ (सुमान २) ।

सूअ पु [सूक] धान्य आदि का तीक्ष्ण अन्न भाग (गडक, भा ५६८) ।

सूअ वि [शून] कुला द्रव्या, सूजनवाला, 'सूअ-ग्रह सूअहर्ष सूअपाय' (विपा १, ७—पत्र ७३) ।

सूअ पु [सूप] दात (पत्र ६१, टी, उवा पएह २, ३—१२३, सुपा ५७) । 'गार, 'गार, 'गार पु [कार] रसोद्व्या (स १७, कुप्र ६६ ३७, आचक ६३ टी) । 'रिणी की [कारिणी] रसोई बनानेवाली की (पत्रम ७७, १०६) ।

सूअ देखो सुत = सूत । 'गड पुन [हृत] दूसरा जैन धर्म ग्रन्थ, 'आपारो सूअगडो' (सुप्र २, १, २७ सम १) ।

सूअअ } वि [सूचक] १ सूचना करनेवाला
सूअअ } (बेणी ४५, आ ११, मुर २,
सूअग } २२६) । २ पुं पिशुन, सत्त, दुर्जन
(पएह १, २—पत्र २८) । ३ सुप्त हूत,
आसुप्त (प्राप्र) ।

सूअग } न [सूतक] सूतक, जनन और मरण
सूअय } की प्रशुद्धि (पचा १३, ३८, वच
१) ।

सूअण न [सूचन] सूचना (उव, मुर २, २३३) ।

सूअर पु [शूकर] सुप्र बराह (उवा, विपा १, ३—पत्र ५३, प्रयी ७०) । 'वल्ल पु [वल्ल] भ्रान्तकाय वनस्पति विशेष (पत्र ४, भा २०) ।

सूअरिअ वि [दे] यन्त्र वीजित (दे ८, ४१ टी) ।

सूअरिया } की [दे] यन्त्र-वीजित (मुर १३,
सूअरी } १५७, दे ८, ४१) ।

सूअल न [दे] निराध, धान्य का तीक्ष्ण अन्न भाग (दे ८, ३८) ।

सूआ की [सूया] सूचन सूचना (विड ४३७, उपप ५०, सुमनि २) । 'कर वि [कर] सूचक (उप ७६८ टी) ।

सूआ } की [सूवि] प्रसव, प्रसूति, जन्म
सूइ } (पत्रम २६, ८५, १, ६१, सुपा २३) । 'कम्म न [कम्मन] प्रसव क्रिया (मुर १०, १, सुपा ४०) । 'दर न [गृह] प्रभूति-गृह (पत्रम २६, ८५) ।

सूइ की [सूचि] देखो सूई (आचा, सम १४६, राय २७) ।

सूइअ वि [सूचित] जिसकी सूचना की गई हो वह (महा) । २ उक्त, कथित (पाप्र) । ३ व्यञ्जनादि-युक्त (खाद्य) (दस ५, १, ६८) ।

सूइअ वि [सूत] प्रसूत, जिसने जन्म दिया हो वह, 'आयी 'साण सूइअ गावि' (दस ५, १, १२) ।

सूइअ पु [सूचिक] दरजी (कुप्र ४०१) ।

सूइअ पु [दे] बणशाल (दे ८ ३६) ।

सूइय न [सुम] मित्रा, 'सिख अणरिअण अणियमूइय काऊण अण्णति' (महा) ।

सूइय वि [दे. सूप्य, सूधिक] भीजा हुआ (साय) अवि सूइय वा सुक वा' (आचा) ।

सूइया की [सूविदा] प्रभूति-अर्थ करनेवाली की (सम्मत १४५) ।

सूई की [सूची] बपटा सोने की सलाई सूई (पएह १, ३—पत्र ४४, भा ३६४, ५०२) ।

२ परिमाण विशेष, एक अणुल सम्बन्धी एक प्रवेशवाली धाँगी (अणु १५८) । ३ दो तल्लो के जोड़ने के काम में आती एक तरह की पतली कील (पत्र २७, ८२) । 'फलन न [फलक] तल्लो का वह हिस्सा, जहाँ सूची-कीलक लगाया गया हो (राय ८२) । 'सूह पु [सुप] १ पति विशेष (पएह १, १—पत्र ८) । २ द्वितीय जन्म की एक जाति (पएण १—पत्र ४४) । ३ न जहाँ सूची-कीलक तल्लो का छेद कर भीतर घुसता है उसके

समीप की जगह (राय ८२) ।

सूई की [दे] मन्त्री (दे ८ ४१) ।

सूई देखो सूइ = सुवि (सुपा २६५) ।

सूइ सक [अञ्ज, सूद] भांगना, तोड़ना, विनाश करना । सूइइ (दे ४, १०६) । कर्म, सुजिअ (पएह १, २—पत्र २६) ।

सूइण न [सूदन] १ भयन विनाश (गडक) । २ वि, विनाशक (पत्र २७१) ।

सूण वि [शून] सूना हुआ सूजन से कुला हुआ (पत्रम १०३, १४८, भा ६३६, स ३७१, ४८०) ।

सूण } की [सूना] वष-स्थान (मिर १, १,
सूणा } भा ३४, कुप्र २७६) । 'बइ पु [पनि] बसाई (दे २, ७०) ।

सूणिय वि [शुनिक] १ सूजन का रोगवाला, जिसका शरीर सूज गया हो वह । २ न. सूजन (आचा) ।

सूण पु [सून्] पुन, लठका (कुप्र ३१६) ।

सूतक देखो सूअय = सूतक (वच १) ।

सूप देखो सूअ = सूप (पएह २, ५—पत्र १४८) ।

सूभग देखो सुभग, 'सूभग इमगनाम सुसर तह दूसर जेव' (वर्मस ६२०, आचक २३) ।

सूभग देखो सोभग (विड ५०२) ।

सूमाल देखो सुडमाल (पएह १, ४—पत्र ७८, छाया १, १—पत्र ४७, १, १६—पत्र २००, कण, मुर १३, ११८ कुप्र ५५) ।

सूर सक [अञ्ज] सोडना, भांगना । सूरइ (दे ४, १०६) ।

सूर वि [शूर] १ पराक्रमी, 'वीर (आ ४, ३—पत्र २३७ कण, सुपा २२२, ४१२, प्राण ७१) । २ पु. एक राजा (सुपा ६२२) । ३ पुन. एक देव विमान (देवेन्द्र १४३) । 'सैण पु [सेन] एक भारतीय देव, जिसकी प्राचीन राजधानी मधुरा थी (विचार ४६, पत्रम ६८, ६६, टी १४, विड ६६, सप्त ६७ टी) । २ ऐतव वय के एक भावी जिन-देव (सम १५४) । ३ एक जैनार्च्य (उप ७२८ टी । ४ भवान् भाविनाम का एक पुत्र (टी १४) ।

सूर पु [सूर, सूर्य] १ सूर्य, रवि (दे २, ६४, डा २, ३—पत्र ८५, उव, सुपा २२२, ६२२, कण, कुपा) । २ सत्त्वर्षे जिन-देव का पिता (सम १५१) । ३ इक्ष्वाकु-वंश का एक राजा (पत्रम ५, ६) । ४ एक लंका-पति (पत्रम ५, २६३) । ५ एक द्रोण का नाम (सुप्र १६) । ६ एक राजा (सुपा ५५६) । ७ छन्द का एक भेद (मिग) = पुन. एक देव विमान (सम १०) । 'अँन, 'कन पु [कान्त] १ मणि विशेष (न ६, ५०, पत्रम ३, ७५, पएण १—पत्र २६, उत ७७) । २ पुन. एक देव विमान (देवेन्द्र १४४, सम १०) । 'वूड पुन [वूट] एक देव-विमान—देव-मन्त्र (सम १०) । 'उमय पुन [पञ्ज] एक देव विमान (सम १०) ।

दीव पुं [दीप] द्वोप विशेष (इव) । 'देव पुं [देव] घागामि उत्तापिणी काल में होने-वाले भारतवर्ष के दूसरे जिनदेव (सम १५३) । 'पन्नति कुं [प्रवृत्ति] एव जैन उपाङ्ग-ग्रंथ (ठा ३, २—पत्र १२९) । 'परिवेस पुं [परिवेप] मेघ भादि से होता सूर्य का बल-याकार मंडल (ग्रणु १२०) । 'पव्वय पुं [पर्वत] पर्वत-विशेष (ठा २, ३—पत्र ५०) । 'पाया छी [पात्र] सूर्य के किरण से होनेवाली रसोई (कुप्र ६६) । 'प्यभ पुन [प्रभ] एक देव-विमान (सम १०) । 'प्यभा, प्यहा छी [प्रभा] १ सूर्य की एक भ्रम महिषी (इक, छाया २—पत्र २५२) । २ प्यारहवें जिनदेव की दीप्ता-शिविका (सम १५१) । ३ प्राठवें जिनदेव की दीप्ता-शिविका (विचार १२६) । 'मल्लिया छी [मल्लिका] वनस्पति विशेष (राय ७९) । 'मालिया छी [मालिना] मानरुण विशेष (धीप) । 'लेस पुन [लेइय] एक देव विमान (सम १०) । 'वक्कय न [वक्रण] ब्राम्भपण-विशेष (धीप) । 'वर पुं [वर] १ एक द्वीप । २ एक समुद्र (सुज १६) । 'वरोभास पु [वरायभास] १ द्वीप-विशेष । २ समुद्र विशेष (सुज १६) । 'वल्ली छी [वल्ली] लता विशेष (पण १—पत्र ३३) । 'वेग पुं [वेग] एक राज-कुमार (उप १०३१ टी) । 'सिंग पुन [शृङ्ग] एक देव-विमान (सम १०) । 'सिद्ध पुन [सुद्ध] एक देव विमान (सम १०) । 'सिरो छी [श्री] सातवें कर्म्मती की छी (सम १५२) । सुभ पुं [सुभ] शनैश्चर ग्रह (हाट—मुच्छ १६२) । 'भिम पुन [भिम] एक देव विमान (सम १५ पत्र २६७) । 'वित्त पुन [वित्त] एक देव-विमान (सम १०) । देखी सुज ।

सूरग पुं [दे] प्रवीप, वीप (दि ८, ४१, पट्ट) ।

सूरगय पुं [सुराङ्गज] एक राजा (उप १०३१ टी) ।

सूरण पुं [दे. सूरण] षड विशेष, सूरज, शोल (दि ८, ४१, पण १—पत्र ३६, उत्त ३६ ६६, पचा ५, २०) ।

सूरद्धय पुं [दे] दिन, दिवस (दि ८, ४२, पट्ट) ।

सूरुलि पुछी [दे] १ मध्याह्न, दुपहर वा समय (दि ८, ५७, पट्ट) । २ नीट विशेष, मशक के समान छाड़खिना बोट (दि ८, ५७) । ३ गुण विशेष, घामली नामक गुण (दि ८, ५७, जीव ३, ४, राय) ।

सूरि पुं [सुरि] प्राचार्य (जी १, सण) ।

सूरिअ वि [भन्न] भांग इभा (कुमा) ।

सूरिअ देखी सुज (हे २, १०७, सम १६, भग. उप ७२८ टी) । 'कंत पुं [कान्त] प्रदेश-नामक राजा वा पुत्र (भग ११, ६—पत्र ३१४, कुप्र १४८) । 'कंता छी [कान्ता] प्रदेशी राजा की पत्नी (कुप्र १४६) । 'पाग पुछी [पाक] सूर्य के ताप से होनेवाली रसोई (कुप्र ७०) । 'गा (कुप्र ६८) । 'लेसा छी [लेइया] सूर्य की प्रभा (सुश ५—पत्र ७६) । 'भिम पुं [भिम] १ प्रथम देव लोकवा एक देव (राय १४, धर्मवि ६) । २ पुन. एक देव विमान । ३ न. सूर्याय देव का सिंहासन (राय १४) । 'वित्त पुं [वित्त] मेघ पर्वत (सुज ५, इक) । 'यरण पुं [यरण] मेघ पर्वत (सुज ५, इक) ।

सूरिल पुं [दे] श्वशुर पत्त (?), 'महत ने समोय्य वि साहिऊल सुरिलस समागमो चप' (स ५१०) ।

सूरिस देखी सुजरिस (हे १, ८) ।

सूरुत्तरमडिसग पुन [सुरोत्तरावतसक] एक देव विमान (सम १०) ।

सूरुलि देखी सूरुलि (पय ८० टी) ।

सूरुद पुं [सूरोद] एक समुद्र (सुज १६) ।

सूरुदय न [सूरोदय] नगर विशेष (पत्र ८, १८६) ।

सूरुदेराग पुं [सूरोपराग] सूर्य ग्रहण (पत्र) ।

सूल पुन [शूल] १ जोहे का सुतोहर काटा, रूनी (विपा १, ३—पत्र ५३ धीप) । खल विशेष, किडल (पण १—पत्र १८, कुमा) । ३ रोग विशेष (ग्राम् १०५) । ४ अबुल भादि का तीव्र भ्रम भागनाला काटा

(कुप्र ३७) । पुं. व. देश विशेष (पत्र ६८, ६५) । 'पाणि पुं [पाणि] यण-विशेष (कर्म ५) । 'धर पुं [धर] शिव, महादेव (पिंग) ।

सूलच्छ न [दे] पत्तल, छोटा तालाव (दि ८, ४२) ।

सूल्यारी छी [दे] चण्डी, पार्वती (दि ८, ४२) ।

सूला छी [शूला] शूली, सुतीरण सोह-कटव (गा ६४, उप ३३६ टी, धर्मवि १३७) । 'इय वि [चित्त, तिंग] शूनी पर चढ़ाया इभा (एगा १, ६—पत्र १५७, १६३, राय ३४) ।

सूला छी [दे] वेरगा, वारागना (दि ८, ४१) ।

सुलि वि [सुलि] १ शूल रोगवाला 'जह बिदल सुली' (वि १) । २ पु शिव, महादेव (पाम) ।

सुलिग छी [सुलिग] शूनी, निसपर बध्म को चढ़ाया जाता है (पण १, १—पत्र ८) ।

सूव पु [सूप] दाल (उना, मोघ ७१४, चाव ६, पिठ ६२४, पचा १०, ३७) । 'यार, 'हा पुं [कार] रसोइया, रसोई बमानवाला नौबर (पत्र ११३, ७, सुर १६, ३८, उप ३०२) ।

सूस घक [रुप] सूलना । सूदद, सूदति, सूददेर (हे ४, २३६ प्राङ्ग ६८, कुमा ३७५, हे ३, १४२) ।

सूसर वि [सूसर] १ सुन्दर भावाभावना (सुर १६, ४६) । २ न. तपकर्म का एक भेद जिससे सुन्दर स्वर की प्राप्ति हो वह कर्म (धर्मसे ६२०, यावक २३, कम्म २, २२) । 'परिवादिणी छी [परिवादिनी] एक वस्त्र को मोछा (पण २, ५—पत्र १४६) ।

सूसास वि [सोच्छ्वास] ऊर्ध्व श्वासावाला (हे १, १५७ कुमा) ।

सूसिय वि [सोपित] सुखाया इभा (सुर १३, २४८) ।

सूसुअ वि [सुध्रुत] १ अन्धो तरह सुना
हुआ । २ अन्धो तरह ज्ञात (वज्जा १०६) ।

३ पुं. वैद्यक ग्रन्थ-विशेष (वर्णजा १०६) ।

सूहअ } देवो सुभग (संक्षिप्त २०, हे १,
सूहय } ११३, १६२) ।

सें देवो सेअ = खेत । 'वह पुं' [पट]
खेताम्बर जैन (सम्मत १३७) ।

से म [दे] इन धर्मों का सूचक शब्द—
१ वाक्पत्र का उपन्यास । २ प्ररत (भग १,
१; उवा) । ३ प्रस्तुत वस्तु का परामर्श
(उत्त २, ४०, नं १) । ४ अनन्तरता (ठा
१०—पत्र ४६५) ।

से } मक [शी] सोना । सेह, सेमह
सेअ } (पह) ।

सेअ सक [सिच] सीचना । सेमह (हे
४, ६६) ।

सेअ पुं [दे] गणपति, गणेश (हे ८, ४२) ।

सेअ पुं [सेय] १ कर्दम, कादो, पंक (सूय
२, १, १; छाया १, १—पत्र ६३) । २
एक धर्मन मनुष्य-जाति, 'वडाता मुद्रिया
सेया दे मन्ने पावकम्मिया' (ठा ७—पत्र
३६३) ।

सेअ पु [स्वेद] पसीना (गा २७८, हे ४,
४६, कुमा) ।

सेअ पु [सेक] सिचन, सीचना (मै ६५, गा
७६६, हेका ६६, मभि ३३) ।

सेअ न [श्रेयस] १ शुभ, कल्याण (भग) ।
२ धर्म । ३ भुक्ति, मोक्ष (हे १, ३२) । ४
वि. मति प्राप्तत्व, प्रतिशय शुभ, 'इय संज-
मोवि सेमा' (पंचा ७, १४, कुमा, पत्र ६६) ।
५ पुं. महाराज का दूसरा मूर्त (सुअज १०,
११) ।

सेअ नि [सिज] सकम्प, कम्प-युक्त (भग ५,
७—पत्र २३४) ।

सेअ वि [खेत] १ शुक्ल, सफेद (छाया १,
१—पत्र ५३, मभि ३३, उप) । २ पुं.
एक दन्त, कुम्भ-दन्तियों के दक्षिण दिश
वा दन्त (उत्त २, ३—पत्र ८५) । ३ शक्र की
नट-सेना का भविष्य (हक) । ४ भ्रामल-
कला नगरी का एक राजा, जिसने भगवान्
महावीर के पास दीक्षा ली थी (ठा ८—पत्र
११७)

४३०, राय ६) । 'कंठ पुं' [कण्ठ]
भूतानन्द नामक द्धर के महिष-सैन्य का
भविष्य (ठा ५, १—पत्र ३०२, हक) ।
'पट, 'वह पुं' [पट] खेताम्बर जैन, जैन
का एक संप्रदाय (सुपा ६५१; विसं २५८५,
'धर्मसं ११०६) ।

सेअ वि [एयत्त] आगामी, भविष्य, 'पयू
एवं भवेत्ते केवली सेयनालसि वि तेसु केव
आगासपदेसु हत्य वा वाव आगाहिताए
चिदितए' (भग ५, ४—पत्र २२३, ठा
१०—पत्र ४६५, मयू २१) । 'ल पुं'
[वाल] भविष्यकाल (भग, उत्त २६, ७१) ।

सेअकर पुं [श्रेयस्कर] ज्योतिष्क ब्रह्म-विशेष
(ठा २, १—पत्र ७८) ।

सेअकार पुं [अयस्कार] अय-करण, 'अयस्'
का उच्चारण (ठा १०—पत्र ४६५) ।

सेअघर पु [अेताम्बर] १ एक जैन सप्रदाय
(सं २, सम्मत १२३, सुपा ५६६) । २ न.
सफेद वस्त्र (पठम ६६, ३०) ।

सेअंस पु [श्रेयांस] १ एक राजकुमार (धण
१५) । २ चतुर्थ कामुदेव तथा यशदेव के पूर्व
जन्म के धर्म श्रुत—एक जैन भुवि (सम
१५३, पठम २०, १७६) । देवो सेज्जस ।

सेअंस देवो सेअ = येयस् (ठा ४, ४—पत्र
२६५) ।

सेअण न [सेचन] सेक, सीचना (कुमा, मभि
४७, छाया १, १३—पत्र १८१, सुपा
३०६) । 'वह पुं' [पथ] नीक (भावा २,
१०, २) ।

सेअणय पु [सेचनक] १ राजा श्रेष्ठिक
सेअणय } का एक हाथा (उत्त २६४ वे,
छाया १, १—पत्र २५) । २ वि. सीचने-
वाला (कुमा) । देवो सेचणय ।

सेअयिय वि [सेयनीय] सेवा योग्य, 'ए
विस्सोवो सेवविस्स निवि' (सुध १, ५, १,
४) ।

सेअयिया श्री [श्रेयविस्स] देवधार्यदेव की
प्राचीन राजधानी (विचार ३०, पत्र २७३;
हक) ।

सेआ श्री [श्रेयना] सफेदपन (सुअ १, १) ।
रोआ देवो सेवा (नट—चैत ६२) ।

सेआल देवो सेवाल = सेवात (से २, ३१) ।

सेआल देवो सेअ = एयत्त-काल ।

सेआल पुं [दे] १ गाव का मुखिया । २
सामर्थ्य करनेवाला पक्ष भादि (दे ८, ५८) ।
३ कृपक, खेती करनेवाला गृहस्थ (गाम) ।

सेआली श्री [दे] दुर्गा, दूव, दूम (दे ८, २७) ।

सेआलुअ पुं [दे] मनीषी की सिद्धि के लिए
उत्प्रेष्ट वेत (दे ८, ४४) ।

सेइअ व [स्वेदिन] पसीना (मभि) ।

सेइआ } श्री [सितिका] परिमाण विशेष,
सेइआ } दो प्रसिद्धि की एक नाप (तदु २६;
उप पु ३३७, मयू १५१) ।

सेअ पुं [सेजु] १ बांध, पुल (से ६, १७;
कुप्र २२०; कुमा) । २ भालवाल, कियारी,
यावला । ३ कियारी के पानी से सीचने योग्य
क्षेत्र (भीप, छाया १, १ टी—पत्र १) ।

४ मार्ग (भीप, छाया १, १ टी—पत्र १,
कप्य ८६) । 'बंध पुं' [बंधय] पुल बांधना
(से ६, १७) । 'वह पुं' [पथ] पुलवाला
मार्ग (से ८, ३८) ।

सेअ वि [सेकट] सेक्क, सिचन करनेवाला
(कप्य ८६) ।

सेअय वि [सेयक] सेवा-कर्ता (कप्य ८६) ।

सेदूर देवो सिदूर (प्राप्र, सति ३) ।

संधय देवो सिंधय (विक ८६) ।

संभ देवो सिभ (उव, पि २६७) ।

संभिय देवो सिभिय (भग, पि २६७) ।

संवाडय पुं [दे] घटकी की भाषा (दे ८,
४३) ।

सेचणय न [सेचनक] निचन, छिद्रकाव
(मोह २७) । देवो सेअणय ।

सेचाण (भग) पु [श्येन] छन्द विशेष
(पिंग) । देवो सेण = खेत ।

सेअ न [श्रेय] शीतपन, ठंडापन (प्राप्र) ।

सेअ देवो सेअ । 'वह पुं' [पति] वसति-
स्वामी गृहस्थ (पत्र ८४) ।

सेअंभाव देवो सिअंभाव (कप्य, दसि १,
१२) ।

सेअंस पुं [श्रेयांस] १ ग्राह्य जिनदेव का
नाम (सम ८८, कप्य) । २ एक राज-पुत्र,

जिसने भगवान् धादिनाथ को हथुल से प्रथम पारणा कराया था (रूप, पुत्र २१२) । ३ मार्गशीर्ष मास का सोनोत्तर मास (सुख १०, १६) । ४ भगवान् महावीर का पिता, राजा सिद्धार्थ (भावा २, १५, ३) । देखो सिज्जस, सेजंस = येयात ।

सेजंस देखो सेजंस = येयात् (भावम्) ।

सेज्जा की [शाय्या] १ सेज, बिछौना (सि १, ५७, कुमा) । २ मवान घर, बसति, उपाश्रय (पत्र १५२, सुख १, १५) । ३ यर पु [तर] गृह-स्वामी, उपाश्रय का मानिष, साधु को रहने के लिए स्थान देनेवाला गृहस्थ (धोप ३४२, पत्र ११२, पत्रा १७, १७) । ४ पाल पु [पाल] शय्या का काम करनेवाला पानर (सुपा ५६७) । देखो सिज्जा ।

सेज्जारिअ न [दे] झटोलन, हिडोले में झूलना (दि ५, ४३) ।

सेष्टि पु [दे. अष्टिन्] गांव का मुखिया, ठेका, महान्त (दि ५, ४२, सम ५१, शाभा १, १—पत्र १६, उवा) ।

सेष्ठिय न [दे] वृण विशेष (पण १—पत्र ३३) ।

सेष्ठिया की [दि सेटिअ] सफेद मिट्टी, लकी (भावा २, १, ६, ३) ।

सेठि की [सेजि] देखो सेठी = अेणी (सुर ३, १७, ५, १६६) ।

सेठिया } देखो सेष्ठिया (वत् ५, १, १५, सेठा } जी ३) ।

सेठी की [अेणी] १ पत्नि (सम १४२, महा) । २ रात्रि (मणु) । ३ अश्वत्थ योजन कोटाकोटी की एक नाप (मणु १७३) । देखो सेजि ।

सेण पु [इयेन] १ पत्ति विशेष (पत्र ५, ७६, दे ७, ८५, नै ७५) । २ विवाधर-वश का एक राजा (पत्र ५, १५) ।

सेण देखो सेण्ण, मणुएवइणी मणो मरति मेणाई इयिमयाई (भारा ६०) ।

सेणा की [सिना] १ भगवान् सत्रवनाथजी की माता (सम १५१) । २ लक्ष्म, लैय (कुमा) । ३ एक जैन साध्वी, जो महर्षि न्यूतमत्र की बहिन थी (बप्प, पति) । ४ वह

सत्रर जिसमें ३ हाथी, ३ रत्न, ६ घोड़े और १५ प्यादे हो (पत्र ५६, २) । ५ गिय, ५गी, ५ंय पु [नी] सेना-गति, सत्रर का मुखिया, 'सेणाणिमोयि वाहे वेत्तूण जिणैसरं सुरवइत्त' (पत्र ३, ७७, कुमा ३००, पत्ति ८५, पत्र ६४, २०) । ६ 'सुह न' [सुर] वह सेना जिसमें ६ हाथी ६ रत्न, २७ घोड़े और ४५ प्यादे हो (पत्र ५६, ५) । ७ 'वइ पु' [पति] सेना का मुखिया सेना नायक (रूप पत्र ३७, २, सम २७, सुता ७५५) । ८ 'हिउइ पु' [धिपति] बड़ी पूर्वोक्त मर्य (सुपा ७३) । सेणापत्त न [सेनापत्त] सेनापतिपत्र, सेना का नेतृत्व (रूप, प्रीप) ।

सेणि की [सेणि] १ वत्ति : २ समूह (महा) । ३ कुम्भार मादि मनुष्य जाति (छाया १, १—पत्र ३७) ।

सेणिअ पु [सेणिक] १ मयघ देश का एक प्रख्यात राजा (छाया १, १—पत्र ११, ३७ डा ६—पत्र ४५५, सत्र १५४, उवा, अत्त, पत्र २, १५, कुमा) । २ एक जैन मुनि (बप्प) ।

सेणिआ की [सेणिका] एक जैन मुनि शाखा (रूप) ।

सेणिआ } की [सेनिका] छन्द का एक
सेणिआ } अेद (पिय) ।

सेणिग देखो सेणिअ (वबोच ३४) ।

सेणिग पु [सेनिक] लरकरी विपाहो (स ३८१) ।

सेणी की [अेणी] देखो सेणि (महा, छाया १, १) ।

सेण्ण देखो सिज्ज = लैय (छाया १, ८—पत्र १५६ मउड) ।

सेत्त देखो सिज्ज = सिव (कुप्र १६) ।

सेत्त (प्रप) देखो सेज = खत (पिय) ।

सेत्तुज पु [शत्रुजय] एक प्रसिद्ध पर्वत (छाया १, १६—पत्र २२६, अत्त) ।

सेद देखो सेज = लैय (दि ४, ३४, ल्वन ५६) ।

सेध देखो सेह = वेह (जीव २—पत्र १२) ।

सेज्ज देखो सिज्ज = लैय (दि १, १५०, कुमा सण १२, १०४ टि) ।

सेप्फ } देखो सेम्ह (दि २, ५५, पट्ट, कुमा, सेफ } प्राह २२) ।

सेफ पुन [शेफ] पुष्प-चिह्न, लिंग (प्राह १४) । सेमालिआ की [मेकालिका] लता विशेष (दि १, २३६, प्राह १४) ।

सेमुसी } की [शेमुसी] मेमा, बुद्धि (राज, सेमुही } उप पु ३३३, हम्मोर १५, २२) ।

सेम्ह पुकी [रलेपम्ह] बफ, वेम्हा गहई (प्राह २२, प २६७) ।

सेर बि [स्वेर] स्वच्छन्द, स्वतन्त्र, स्वंच्र (ल्वन ७७, विज ३७) ।

सेर बि [स्मेर] विपन्वर (दि २, ७८, कुमा) ।

सेर पु [दे] वेर, परिमाण विशेष (पिय) ।

सेरधी की [सेरन्धी] की विशेष, ग्राम के घर में रहकर शिला-कार्य करनेवाली स्वतन्त्र की (बप्प) ।

सेराह पु [दे] अरव की एक वलन जाति (सम्पत्त २१६) ।

सेरिअ पु [दे] भुवं वृषभ, गाड़ी का बैल (दि ५, ४४) ।

सेरिअ देखो सेरिह (सुख ५, ११, ६, ८, ४४ टी) ।

सेरिय पु की [दे] बाघ विशेष, 'करडिम-सेरियहुकन्ह' (अण) ।

सेरियय पु [दे] शुल विशेष (पण १—पत्र ३२) ।

सेरिह पु की [सैरिअ] मैसा, महिष (गा १७२, ७४२, नाट—पुण्ड १३५) । की.

'ही (पाक) ।

सेरी की [दे] १ लम्बी आकृति । २ अन्न आकृति (दि ५, ५७) । ३ रथ्या मुहत्वा (तिरि ३१८) । ४ मन्त्र निर्मित मर्तकी (राज) ।

सेरीस पुन [सेरोरा] एक गांव का नाम (ती ११) ।

सेल पु [शैल] १ पर्वत, पहाड़ (से २, ११, प्राप्र. सुर ३ २२६) । २ पावाण, पत्थर (रूप १०३१) । ३ न. पत्थरों का समूह (सि ६, ३१) । ४ 'कार पु' [कार] पत्थर धवन-वाला शिखरी, शिलावट (मणु १४६) ।

'गिन्द न' [गिहा] पर्वत में बना हुआ घर (बप्प) । ५ 'जाया की [जाया] पार्वती

(रंभा) । 'त्यंभ पु' [सुनम्भ] पापाए का खंभा (कम्म १, १८) । 'पाल, 'पाल पु' [पाल] १ धरण तथा भूतानन्द नामक इन्द्रो का एक एक सोकापाल (ठा ४, १—पत्र १६७; इक) । २ एक कैनेतर धर्मावलम्बी पुरुष (भग ७, १०—पत्र ३२३) । 'स न [स] वज्र (से ३, २७) । 'सिहर न [शिस्तर] पर्वत का: सिकर (कप्प) । 'सुआ को [सुता] पार्वती (पाप्म) ।

सेलगा पुं [शैलक] १ एक राजवि (खाया सेल्य १, ५—पत्र १०४, १११) । २ एक यक्ष (वि १५६, खाया १, ६—पत्र ११४) । 'पुर न [पुर] एक नगर (खाया १, ५) ।

सेलयय न [शैलकज] एक गोन (ठा ७—पत्र १६०, राज) ।

सेला की [शैल] वीसरी नरक-धुविधी (ठा ७—पत्र ३८८; इक) ।

सेलाइच्य पुं [शैलादित्य] वनमीपुर का एक प्रसिद्ध राजा (ठी १५) ।

सेल पुं [शैल] स्लेम-नाराक वृक्ष-विशेष (पण १—पत्र ३१) ।

सेलस पुं [दे] नित्य, जुमाही (दे ८, २१) ।

सेलेय वि [शैलेय] पर्वत में उत्पन्न, पर्वतीय (धर्मवि १४०) ।

सेलेस पुं [शैलेस] मेघ पर्वत (विसे ३०६५) ।

सेलेसी की [शैलेसी] मेघ की तरह निबल साम्यावस्था, योगी की सर्वोच्छिन्न अवस्था (विसे ३०६५, ३०६७, सुपा ६५५) ।

सेलोदाइ पुं [शैलोदायिन] एक कैनेतर धर्मावलम्बी गृहस्थ (भग ७, १०—पत्र ३२३) ।

सेह देखो सेल = शैल; 'न हु किण्णइ ताए मणं सेलं मिय सल्लियपूरेए' (वजा ११२) ।

सेह पुं [दे] १ दुग्ग-शियु । २ शर, बाण (दे ८, ५७) । ३ कुत्त, बर्छा (कुमा; हे ४, ३८७) ।

सेह पुं [शैल्य] एक राजा (खाया १, १६—पत्र २०८) ।

सेल्ला पुं [शैलयक] कुनपरिषर्प की एक जाति, जन्तु-विशेष (पण १, १—पत्र ८) ।

सेल्लि की [दे] रज्जु, रस्सी (वत २७, ७) । सेव सक [सेव] १ आराधन करना । २ आश्रय करना । ३ उपभोग करना । मेवइ, सेवए (भाषा, उव, महा) । मुका, सेवित्वा, सेवियु (भाषा) । वक्क, सेवमाण (सम ३६; भग) । ववक्क, सेविज्जंत, सेविज्जमाण (सुर १२, १३६; कप्प) । बंक्क, सेविज, सेविज (माट—मुच्छ २४५, भाषा) । क्क, सेवेयव्व (सुपा ५५७; कुमा), सेवणिय (सुपा १६७) ।

सेवग देखो सेवय (पंचा ११, ५१) ।

सेवइ देखो से = स्वेत ।

सेवण न [सेयण] १ सीना, सिलाई करना (उप ४ १२३) । २ सेवा (वत ३५, ३) ।

सेवणया पुं की [सेयना] सेवा (उत्त २६, सेवणा १, उप ८०१) ।

सेवय वि [सेवक] १ सेवा-कर्ता (कुप्र ४०२) । २ पुं, नौकर, धूय (पाय, कुप्र ४०२, सुपा ५३२) ।

सेवल न [शैवल] सेवार, सेवाल, एक प्रकार की मास जो नदियों में लगती है (पाप्म) ।

सेवा की [सेवा] १ भजन, पशुपासना, भक्ति । २ उपभोग । ३ आश्रय । ४ आराधन (हे २, ६६, कुमा) ।

सेवाइ पुं न [शैवाल] १ सेवार, सेवाल, सेवाल] धास विशेष (उप ४ १३६, पाप्म, जी ६) । २ पुं, एक तापक, जिसकी गीतम स्वामी ने प्रतिबोध किया था (हुप्र २६३) । 'ोदाइ पुं [ोदायिन] भस्माज महावीर के समय का एक भ्रजन धूय (भग ७, १०—पत्र ३२३) ।

सेवाल पुं [दे] वक्क, कावा, कांदी (दे ८, ४३, पद) ।

सेवालिय पुं [शैवालिन] एक तापक, जिसकी गीतम स्वामी ने प्रतिबोध किया था (उप १४२ टी) ।

सेवालिय वि [शैवालिक, 'व] सेवालवाता, सेवाल-गुरु; 'सेवालियभूमितले पिल्लुसमाण य वाममाममि' (सुर २, १०५) ।

सेवि वि [सेयिन] सेवा-कर्ता (वजा) ।

सेविच्च वि [सेवित्] ऊपर देखो (सम १५) ।

सेविय वि [सेवित] जिसकी सेवा की गई हो वह (काव) ।

सेव्वा देखो सेवा (हे २, ६६; प्राप्) ।

सेस पुं [शेष] १ शेष-भाग, सर्प-राज (वि २, २८) । २ छन्द का एक भेद (पिंग) । ३ वि. प्रवशिट, बाकी का (ठा ३, १ टी—पत्र ११४, दसमि १, १३५; हे १, १८२, गउइ) । 'मई, 'वई की [वती] १ सातवें बसुदेव की मत्ता (सम १५२) । २ दसिए वक्क पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३६; इक) । ३ वल्ली-विशेष (पण १—पत्र ३३) । ४ मगवाज महावीर की दौहित्री—दुनी की पुत्री (भाषा २, १५, १६) । 'व न [वत्त] अनुमान का एक भेद (पण २१२) । 'राअ पुं [राज] छन्द-विशेष (पिंग) ।

सेसव न [शैशव] बाल्यावस्था (दे ७, ७६) ।

सेसा की [सेवा] निर्माल्य (उप ७२८ टी-तिरि ५५५) ।

सेसिअ वि [शेषित] १ बाकी बचाया हुआ (या ६६१) । २ अल्प किया हुआ, खतम किया हुआ (विसे ३०२६) ।

सेसिअ वि [शेषित] सबटा किया हुआ, विपकाया हुआ (विने ३०३६) ।

सेह ब्रक [नश] पलायन करना, भागना । सेहइ (हे ४, १७८, कुमा) ।

सेह सक [शिक्षय] १ सिलाना, सीख देना । २ सजा करना । सेहति (सूय १, २, १, १६) । ववइ, सेहिज्जंत (सुपा ३४५) ।

सेह पुं [दे, सेह] कुनपरिषर्प की एक जाति, साड़ी, जिसके शरीर में ढांटे होते हैं (पण १, १—पत्र ८, पण १—पत्र ५३) ।

सेह पु [शैल] १ नव-वीसति साधु (सूय १, ३, १, ३, सम ५८, धोय १६५; ३७८, उव, वस) । २ जिसकी दीसा दी जानेवाली हो वह (पत्र १०७) । ३ शिष्य, चेता (मुल १, ११) ।

सेह पु [सेय] तिदि (उवा) ।

सेहंघ वि [सेधाम्ठ] साध-विशेष, वह साध जिसमें पत्थर पर छाया का संस्कार किया जाय (उवा; पण २, ५—पत्र १५०) ।

सोहणा स्त्री [शिक्षणा] शिखा, सजा, वदनीया.
‘वदन्वपमारण्यसेहणामो माप्रो परिगृहे नरिष’
(उप)।

सोहर पुं [सोहर १ शिखा, ‘कनसेहरा’ (पिंड
१५५ पाग)। २ द्यन्त विशेष (पिग)। ३
मस्तक-स्मित माना (कुमा)।

सोहरय पुं [दे] चक्रांत पयो (दे ८, ४३)।
सोहालिआ देखो सोभालिआ (स्वल्प ६३,
गा ४१२, कुमा, हे १, २३६)।

सोहाली स्त्री [शोफाली] लता-विशेष (दे
५, ४)।

सोहान देखो सेह = शिष्य। सोहावेह (पि
३२३)। भवि, मेहावेहिनि (प्रीप)। सङ्ग.
सोहावेचा (पि ५८२)। हेरु. सोहावेसप
(पय)। क. सोहावेयक (भल १६०)।

सोहाविअ वि [शिक्षित] सिलाया हुआ
(भग, एगमा १, १—पत्र ६०, वि ३२३)।

सोहि देखो सिद्धि (पाचा)।

सोहिअ वि [सिद्धि] १ कुटि-सम्बन्धी। २
निष्पत्ति-संबन्धी (सूत्र १, १, २, २)।

सोहिउ वि [दे] गत, गया हुआ (दे ८, १)।

सो सक [सु] १ दाक बनाना। २ पीडा
करना। ३ भयन करना। ४ धक. स्नान
करना। सोह (पद्)।

सो } सक [स्वप्] सोना, सूतना। सोह,
सोअ } सोमह (पाचा १५७, प्राक् ६६)।

सोअ सरु [सुप्] १ शोक करना। २ रुद्धि
करना। सोमह, सोएह, सोईति, सोईति (वि
१, १८, हे ३, ७०, क्षापा, प्रक १७४,
१७५, सूत्र २, २, ५५)। बङ्ग सोईत,
सोएत (उप १४६ टी. पत्रम १६८, ३५)।
कनक, सोइज्जत (सण)। क. सोअणिज्ज,
सोअणीअ, सोइयव्व (भवि १०५; सूक
४७, पत्रम ३०, ३५)। देखो सोच = शुब्।

सोअ न [शोच] १ रुद्धि, पवित्रता, निर्मलता
(आचा. श्रीप, मुर २, ६२, उप ७६८ टी.;
कुमा २८)। २ बोरो का भ्रमाव, पर-अर्थ
का ग्रहरण (सम १२०, नव २३; था ३१)।

सोअ पुं [शोक] भक्तनीस, दिलीपी (मुर
१, ५३; गवड, कुमा, महा)।

सोअ न [शोच] वान, श्वणेन्द्रिय (पाचा.
भग. श्रीप. मुर १, ५३)। ‘मिय वि [मय]
शोत्रेन्द्रिय-अन्य (ठा १०—पत्र ४७६)।

सोअ पुन [सोतस्] १ प्रवाह (पाचा,
गा ६६२)। २ छिद्र (धीप)। ३ वेग (छाया
८, ८)।

सोअण न [स्वप्न] शयन (उर)।

सोअण न [सोचन] १ शोच, दिलीपी
(सूत्र २, २, ५५, संयोग ४६)। २ रुद्धि,
प्रभावन (स ३४८)।

सोअणया } स्त्री [सोचना] १ ऊपर देखो
सोअणा } (धीप, प्रक १७४)। २
दीनता, दैन्य (ठा ४, १—पत्र १८८)।

सोअमल न [सोकुमार्य] सुकुमारता, पवि-
त्र-मलता (ह १, १०७, प्राप्, कुमा)।

सोअर पुं [सोदर] सगा भाई (प्रबो २६,
कुमा १६३, रंभा)।

सोअरा स्त्री [सोदरा] सगी बहन (कुमा)।

सोअरिअ वि [सोकरिक] १ सुकृती का
शिखार करनेवाला (विपा १, ३—पत्र ५५)।
२ शिखारी, युगया करनेवाला। ३ बचाई
(पिंड ३१४, उप. कुमा २१४)।

सोअरिअ वि [सोदर्ये] बहोवर, एक चदर
से उलपन (सूत्र १, १, १, ५)।

सोअल देखो सोअमल (संवि २)।

सोअविय स्त्री [शोच] रुद्धि, पवित्रता (सूत्र
२, १, ५७)। स्त्री. ‘या (पाचा)।

सोअअ देखो सुण = धृ।

सोआमणी } स्त्री [सोदामनी, ‘मिनी’] १
सोआमिणी } विधुव, विचली (उत्त २२,
७, पत्रम ७४, १४, स १२, महा. पाग)।
२ एक विदुषारी देखी (इक ठा ४, १—पत्र
१६८)।

सोइअ त [शोचित] चिन्ता, विचार (मुर
८, १४, गुमा २६६)। देखो सोचिय।

सोईदिव न [शोत्रेन्द्रिय] श्वणेन्द्रिय, कान
(प्री)।

सोइधिय देखो सोगधिय (इक)।

सोड वि [श्रोत] मुक्तेवाला (स ३, प्राप् २)।

सोडणिय देखो सोवणिय (सूत्र २, २, २८,
वि १३२)।

सोअमल देखो सोअमल (भवि २१३; मुर
८, १२५)।

सोई देखो मुंड (पाग)। ‘मगर पुं [मरु]
मगर की एक जाति (पण १—पत्र ४८)।

सोईा स्त्री [शुण्डा] १ गुरा, दाह (पाचा
२, १, ३, २)। २ हाथी की नाक, मुंड
(उवा)।

सोइअ पुं [शोण्डक] दाह देवनेवाला,
कनगर (भवि १८८)।

सोइडिया स्त्री [शुण्डिया] दाह का पात्र-
विशेष (ठा ८—पत्र ४१७)।

सोईर वि [शोण्डीर] १ शूर, वीर, पराक्रमी
(वप, मुर २, १३४, गुमा ६०)। २ गर्व-
युक्त, गर्वित (नहा)।

सोईर न [शोण्डीर्ये] १ पराक्रम, शूरता।
२ गर्व (हे २, ६३, पत्र)।

सोईरिम पुं स्त्री [शोण्डीरिमन्] ऊपर देखो
(गुमा २६२)।

सोदज्ज (श्री) देखो हुंवेर (वि ८४)।

सोई देखो सुक = शुण (पद्)।

सोकर देखो सुकर = सोष्य (प्राक् १०, गा
१५८, गुमा ७०, कुमा)।

सोकर देखो सुकर = शुण (पद्)।

सोग देखो सोअ = शोक (पत्रम २०, ५५;
मुर २, १४०, स २५५; प्राप् ८३, उप)।

सोगध } न [सोगन्ध] १ लगादार
सोगधिय } चौकीस दिनों के जपवाह (संयोग
५८)। २ सुगन्धित, सुगन्ध, ‘सोगधिय-
परिक्रिय तबोल’ (समस्त २२०)।

सोगधिय न [सोगन्धिक] १ रत्न-विशेष,
रत्न की एक जाति (छाया १, १—पत्र ३१;
पण १—पत्र २६; उत्त ३६, ७७, कप,
कुमा १५)। २ रत्नप्रभा मानक नरक-
प्रणियों का एक सोगन्धित-रत्न-मय काण्ड
(सम ८६)। ३ कद्दार, पानी में होनेवाला
खेत कमल (सूत्र २, ३, १८, पत्र ८२)।
४ पु. नृसक का एक भेद, भयने लिए की
मुंफनेवाला नुसक (पत्र १०८, पुष्क १२८)।

५ पु. न एक देव विमान (धेन्द्र १४२)।

६ वि. सुगन्धवाला, सुगन्धी (उवा, सम्मत्त
२२०)।

सोमधिया स्त्री [सोमधिया] नगरो विशेष
(छाया १, ५ पत्र १०५)।

सोमगह देखो सोमगह (दश २, ५)।

सोमगड देवो सुमगड (उत्तर २८, ३, पत्रम
२६, ६०, स २५०)।

सोमगह (?) धक [प्र + छ] पखरना,
केनना। सोमगह (छाया १५६)।

सोष देखो सोअ = सुष। वड सोचव,
सोचमाण (नाट—युद्ध २८१, छाया १,
१—पत्र ४७)। वड, 'सोचिऊण हणपण
भासोणमणिरवणेण सोमजिणो राया' (स
५६७)। ३. सोष (वव)।

सोचिअ वि [सोचिअ] शुद्ध किया हुआ,
प्रशालित (स १५८)।

सोच देखो सोच।

सोष | देखो सुण = सु।
सोष |

सोचिअ देखो सोचिअ (दश)।

सोजण्य } न [सोजन्य] मुनज, सज्जन,
सोजन } नमनशील (उप ७२८ टी; मुर २,
११)।

सोज देखो सोरिअ = सोरिअ (प्राक १६)।

सोमवि [सोमवि] सुवि-सोम, सोमनोय
(सुख १०, ६ टी)।

सोमय वु [वि] रज, घोषी (वाप)।
देखो सुमय।

सोडिअ देवो सोडिअ (गूर ३४)।

सोडीर वि [सोडीर] देवो सोडीर = सोडीर
(वय घोष, मोह १०४, वय, बाह ६३)।

सोडीर न [सोडीर] देवो सोडीर = सोडीर
(कुमा; से ३, ४, ५, ३, १३, ७६, ८७,
प्रा १६)।

सोड वि [सोड] वदन किया हुआ (उप २६४
टी, वापा १२७)।

सो. वय } देखो मद = मद।
सो. वय }

सोन वि [सोन] मान, रक्त बलंगना
(वाप)।

सो. न [वि. सो. न] निराक्रिया निरद
(पट १, ४—पत्र ७८, सो. १७ २०)।

सोणहिअ वि [सोणहिअ] १ धान-भातक।
२ भुक्तो से छिन्नर कलेनाला (स २५३)।

सोणर देखो सुणार (भा १६१, पि ६६,
१२२)।

सोणि छो [सोणि] बटी, कमर (वय, उप
१२६)। 'सुवग न [सूत्रक] बटी-सून
करायी (घोर)।

सोणिअ वु [शीनिअ] बहाई (दे ६, ६२)।

सोणिअ न [सोणिअ] रंजित, नून (वव,
मवि)।

सोणिअ वु [सोणिअ] रज्ज, लातो
(वि २८)।

सोणी छी [सोणी] देखो सोणि (पह १,
४—पत्र ६८, ७६)।

सोणीअ देखो सोणिअ = सोणिअ, 'मुनते
मसोणीयेण ए छणे ए पणज' (भावा १,
८, ८, ६, पि ७३)।

सोणन [सोणन] सोना, सुवर्ण (प्रा ३०,
संति २१)।

सोण देखो सुणद = सुणद (पह, भा ७२३)।

सोण देखो सुणद = सुणद (संति १५, प्रा ३७,
भा १०७, बाह ८६३)।

सोच न [सोच] नान, श्रवणेन्द्रिय (वाप,
रंभा, वि ६८)।

सोच देखो सोच = सोच (हि २, ६८, भा
५५१, से १, ५८, कुमा)।

सोचि देखो सुचि = सुचि (पह, उप ६४८
टी)।

सोचिअ वु [सोचिअ] वसाम्पावी बाहुल
(पि ४३६, नाट—युद्ध १३४, प्रा)।

सोचिअ वि [सोचिअ] १ सूत्र निर्मित सूत्र
वा बना हुआ (सोपभा ८६, सोप ७०५)।
२ सूत्र वा व्यासरी (सुपु १४६)।

सोचिअ वु [सोचिअ] १ सूत्र वस्तु-विशेष
(पह १—पत्र ४८)।

सोचिअ न [सोचिअ] १ [सोचिअ] वय
सोचिअ न [सोचिअ] १ वय वय वय
(वय, वय)।

सोचि छी [वि] नये (दे ८, ४६, वय)।

सोचि वु [सोचि] १ एव देव-विशेष
(से २ १३३)। २—देवो सवि (संति

२१, भा २४४; मवि १२८, नाट—रत्ना
१०)।

सोचिअ वु [सोचिअ] १ ज्योतिष ग्रह-
विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८)। २ न
शक विशेष, एव प्रकार की हरित वनस्पति
(पह १—पत्र ३४)। ३—देवो सविअ,
सोचिअ = स्वस्ति (पह १, ४—पत्र
६८, छाया १, १—पत्र ४४)।

सोदाम वु [सोदाम] देखो सोदामि
(वय)।

सोदामिणी देखो सोआमिणी (पत्रम २६,
८१)।

सोदामि वु [सोदामि] वन्देन्द्र दे वर-
व-
सैन्य वा मणिया (ठा ५, १—पत्र
३०२)।

सोदामिणी दवा सोआमिणी (नाट—
मातवी ८)।

सोदास वु [सोदास] एव राजा (पत्रम
२२, ८१)।

सोष (सो) देखो सडह = सोष (पि ६१ प)।

सोषार } वु व, [सोषार, 'क' वेश-
सोषारय } विशेष (पत्रम ६८, ६४, सुपा
२७५)। २ न, नगर विशेष (छाया १, १—पत्र
११)।

सोयघन वि [सोयघन] सुवर्ण मानक नवि
वा बनाया हुआ वय (गवड)।

सोभ वय [सोभ] सोभता, वयवना।
सोभवि (सुख १६) सुपा, सोभिनु, सोभेनु
(सुख १६)। नवि, सोभिवि (सुख
१६)। वर, सोभन (छाया १, १—पत्र
२५, वय, घोर)।

सोभ वय [सोभ] सोभता, सोमा-युद्ध
वरता। सोभे (म)। वर, सोभयन (पि
४६)। वर, सोभिता (वय)।

सोभय वि [सोभय] १ सोभनेता। २
सोभनेता (वय)।

सोभय देवो सोभय (सुख ४५)।

सोभय देवो सोभय = सोभय (पत्रम ७८,
२६, सन ४६)।

सोभा देखो सोभा = सोभा (नाट १०, उप
३६, ८, वय सुख ११)।

सोमिय देखो सोहिअ = सोमित (छाया १, १ टी—पत्र ३)।

सोम पु [सोम] १ चन्द्र, चाँद, एक ज्योतिष्क महाग्रह (ठा २, ३—पत्र ७७, विसे १८८३; गडह) २ भगवान् पार्वत्याय का पाँचवीं गणधर (सम १३; ठा ८—पत्र ४२६)। ३ एक प्रतिष्ठित दायिप-वंश (पत्रम ५, २)। ४ चतुर्थ बलदेव क्षीर बासुदेव का पिता (ठा ६—पत्र ४४७; पत्रम २०, १८२)। ५ एक विद्याधर नर-वर्ति, जो ज्योतिष-पुर का स्वामी था (पत्रम ७, ४३)। ६ एक सेठ का नाम (सुपा ५६७)। ७ एक ब्राह्मण का नाम (छाया १, १६—पत्र १६६)। ८ चमरेन्द्र, बलौन्द्र, सीधमैन्द्र तथा ईशानेन्द्र के एक-एक लोकपाल के नाम (ठा ४, १—पत्र २०४; भग १, ७—पत्र १६४)। ९ लता-विशेष, सोमलता। १० उसका रस। ११ म्रमृत (पद)। १२ धर्म-सुहृत्सि सूरि का एक शिष्य—जैन भुवि (कप्य)। १३ पुंन, देव-विमान विशेष (द्वेन्द्र १३३; १४३; १४५)। १४ वि, कीर्तिमान्, मराली (कप्य)। १५ इय पु [कायिक] सोम लोकपाल का आत्माकारी देव (भग ३, ७—पत्र १६५)। १६ गृहण न [ग्रहण] चन्द्र-ग्रहण (हे ४, ३६६)। १७ चंद पुं [चन्द्र] १ ऐरवत क्षेत्र में उत्पन्न सातवें जिन-देव (सम १५३)। २ प्राचायं हेमचन्द्र का दोहा समन का नाम (सुप्र २१)। ३ जस पुं [यशस्] एक राजा (सुर २, १३४)। ४ ग्राह देखो 'नाह' (राज)। ५ दच पुं [दच] १ एक ब्राह्मण का नाम (छाया १, १६—पत्र १६६)। २ एक जैन मुनि, जो भद्र-बाहु-स्वामी का शिष्य था (कप्य)। ३ भगवान् चन्द्रप्रभ स्वामी की प्रथम भिन्ना-दाता गृहस्थ (सम १५१)। ४ नाह पुं [नाथ] सीराष्ट्र देश की सुप्रसिद्ध महादेव मूर्ति (सी १५, सम्मत ७५)। ५ पपम, 'प्यह पुं [प्रभ]

१ क्षत्रियो के सोमवंश का प्रादि पुत्र, बाहु-बलि का एक पुत्र (पत्रम ५, १०; सुप्र २१२)। २ तेरहवीं शताब्दी का एक जैन आचार्य श्रीर संघकार (सुप्र ११५)। ३ चमरेन्द्र के सोम-सोमपाल का उत्पत्त-पर्वत (ठा १०—पत्र ४८२)। ४ भूइ पुं [भूति] एक ब्राह्मण का नाम (छाया १, १६—पत्र १६६)। ५ भूइय न [भूतिक] एक कुल का नाम (कप्य)। ६ य न [क] एक शोध, जो कौत्स शोध को शाखा है (ठा ७—पत्र १६०)। ७ वा, वि [प, पा] सोम-रस पीनेवाला (पद)। ८ सिरी श्री [श्री] एक ब्राह्मणी (भत)। ९ सुंदर पुं [सुन्दर] एक प्रतिष्ठित जैनार्थ्य तथा ग्रन्थकार (संति १४, कुलव ४४)। १० सूरि पुं [सूरि] एक जैनार्थ्य, भारापना प्रकरण का बर्ता एक जैनार्थ्य (भाष ७०)।

सोम वि [सोम्य] १ शरीर, धनुष (ठा ६; भग १२, ६—पत्र ५७८)। २ नरीप, रोग रहित (भग १२, ६)। ३ प्रसस्त, श्लाघ्य (कप्य)। ४ प्रिय दर्शन, निवृत्ता दर्शन प्रिय मासूम हो बह। ५ मनोहर, सुन्दर। ६ शान्त भावतिवाला (भोपमा २२, उव, सुपा १८०, ६२२)। ७ सोमा-युक्त, योगिमान् (जं २)। देखो सोम्ह।

सोमइअ वि [दे] सोने की आदतवाला (दे ८, ३६)।

सोमंगल पुं [सोमङ्गल] द्विन्द्रिय जन्तु की एक जाति (उच ३६, १२६)।

सोमणतिय वि [स्वापनान्तिक, स्वाप्नान्तिक] १ सोने के बाद किया जाता प्रतिक्रमण—प्रायश्चित्त विशेष। २ स्वप्न-विशेष में किया जाता प्रतिक्रमण (ठा ६—पत्र ७७६)।

सोमणस पुं [सोमनस] १ महाविदेह-पर्व का एक वक्षस्वर-पर्वत (ठा २, ३—पत्र ६६, सम १०२; जं ४)। २ उस पर्वत पर रहनेवाला एक महद्भिक देव (व ४)। ३ पस का आठवाँ दिन (सुज्ज १०, १४) ४ पुंन, चनकुमार नामक इन्द्र का एक पारि-यानिक विमान (ठा ८—पत्र ४३७; शीप)।

५ एक देव-विमान, छठवाँ प्रेक्षक-विमान (द्वेन्द्र १३७; १४२, गण १६४)। ६ सोम-नम-पर्वत का एक शिखर (ठा २, ३—पत्र ८०)। ७ न. मेरु-पर्वत का एक वन (ठा २, ३—पत्र ८०)।

सोमणम न [सोमनस्य] १ सुन्दर मन, सुन्दर मन (राय, कप्य)।

सोमगसा श्री [सोमनस] १ जम्बू-द्वीप विशेष, जिससे यह द्वीप जम्बूद्वीप कहलाता है (इक)। २ एक राजधानी (इक)। ३ सोमनस वन की एक गाँधी (जं ४)। ४ पस की पाँचवीं राति (सुज्ज १०, १४)।

सोमणसिय वि [सोमनस्यित] १ सवुष्ट मनवाला। २ प्रशस्त मनवाला (कप्य)।

सोमणस देखो सोमणस = सोमनस्य (कप्य; शीप)।

सोमणसिय देखो सोमणसिय (कप्य, शीप; छाया १, १—पत्र १३)।

सोमह देखो सोमह (प्राह २०, ३०)।

सोमहिंद न [दे] बरद, पेठ (दे ८, ४५)।

सोमहिङ्ग पुं [दे] पंका, काटा (दे ८, ४३)।

सोमा श्री [सोमा] १ शक के सोम प्रादि चारो लोकपालों की एक-एक पटरानी का नाम (ठा ४, १—पत्र २०४)। २ सातवें जिनदेव की प्रथम शिष्या (सम १५२, पव ६)। ३ सोम लोकपाल की राजधानी (भग ३, ७—पत्र १६५)।

सोमा श्री [सोम्या] उत्तर दिशा (ठा १०—पत्र ४७८, भग १०, १—४६३)।

सोमाण न [श्मसान] मसान, मरघट (दे ८, ४५)।

सोमाणस पु [सोमानस] सातवाँ प्रेक्षक विमान (पव १६४)।

सोमर } देखो सुकुमार (गा १८६, स सामाल } ३५६; मे ७, पद, प्राप, हे १, ७३१, कुमा, प्राह २०, ३८, भवि)।

सोमाल न [दे] माँस (दे ८, ४४)।

सोमिति पु [सोमिति] राम भ्राता लक्ष्मण (गा २५)।

सोमिति श्री [सुमित्रा] लक्ष्मण की माता। १ पुत्र पुं [पुत्र] लक्ष्मण, 'रामसोमिति-पुता' (पत्रम ३८, ५७) २ सुय पुं [सुत] वही अर्थ (पत्रम ७२, ३)।

सोमिल पुं [सोमिल] एव ब्राह्मण (अत ६)।

सोमेर्नात् देवो सोमिति = सोमिनि (सि १२, ८८)।

सोमेसर पुं [सोमेश्वर] सोराष्ट्र वा सोमनाथ महादेव (सम्मत ७५)।

सोम्म वि [सोम्य] १ रमणीय, सुन्दर (सि १, २७)। २ ठठा, शीतल (सि ४, ८)। ३ शीतल प्रहृतिवाला, शान्त स्वभाववाला (सि ५, १६, विसि १७११)। ४ भ्रिय-दर्शन, जित्मरा दर्शन भ्रिय लगे बहु। ५ जित्मरा भ्रियवाला सोम देवता हो बहु। ६ मास्वर, शान्तिवाला। ७ पुं, वृष ग्रह। ८ शुभ ग्रह। ९ वृष प्रादि तम राशि। १० उदुम्बर वृक्ष। ११ क्षीप-विशेष। १२ सोम रस पीनेवाला ब्राह्मण (प्राप्र)। देवो सोम = सोम्य।

सोजि (मय) ष [स म य] बहो (प्राप्र १२१)।

सोरट्ट पुं [सोराष्ट्र] १ एव भारतीय देश, मोरह, बाढियावाह (इह सो १५)। २ वि. सोरट्ट देश वा निवासी (पावन ६३)। ३ न. एतद्विषय (पिन)।

सोरट्टिया धी [सोराष्ट्रिया] १ एव प्रवार की मिट्टी, फिट्टिरी (पावा २, १, ६, ३, दम ५, १, ३४)। २ एव जैन भुवि शाखा (बण)।

सोररुम } न [सोरभ] गुण्य, पुष्ट (विक सोरभ ११३, पुन २२३, भवि, उप सोरभ ६८१७)।

सोरसेणी धी [सोरसेनी] सुरेन देश की प्राचीन भाषा, प्राकृत भाषा वा एक भेद (विक १७)।

सोरह देना सोरभ (गउर)।

सोरिअ न [सोर्थ] दूरता, परम्प (प्राप्र प्रा १६)।

सोरिअ न [सोरिअ] १ कुछावत देश की प्राचीन राजधानी (इ)। २ एव यज्ञ (विवा १, ८—पत्र ८२)। ३ दस पुं [दस] १ एव मन्त्रीमार वा पुन (विवा १, १—पत्र ४, विवा १, ८)। २ एव राजा (विवा १, ८—पत्र ८२)। ३ पुन न [पुन] एक मगर

(विवा १, ८)। ४ यडिसग न [यडित्सक] एक उद्यान (विवा १, ८—पत्र ८२)।

सोलभ वि. व. [सोडशान्] १ संख्या विशेष, सोलह, १६। २ मोलह सव्यावाला (मग ३५, १—पत्र ६६४, ६६७, उवा, सुर १, ३५, प्राप् ७७, पि ४४३)। ३ वि. सोलहवां, १६ वां (यन)। ४ वि [श] १ सोलहवां, १६ वां (यवा १, १६—पत्र १६६, सुर १६, २३१, पव ४६)। २ लगा तार सात दिनी के उपवास (छाया १, १—पत्र ७२)। ३ य न [क] सोलह वा समूह (उवा ११, १३)। ४ विह वि [विह] सोलह प्रवार वा (पि ४४१)।

सोलसिआ धी [सोडशिरा] रय मान विशेष, सोलह पत्तों की एक नाप (पल्ल १५२)।

सोलह देखो सोलस (नाट, भवि)।

सोलहापत्तय पुं [हे] राय (दे ८, ४६)।

सोल सन [पच] पकाया। सोलह (हे ४, ६०, छाया १५६)। बहु. सोलह (विवा १, ३—पत्र ४३)।

सोल सव [लिप] बँचना। सोलह (हे ४, १४३, पट)। १ नं सोल्लिगवर (दुया)।

सोल सव [ईर, सम + ईर] प्रेरणा करना। सोलह (पावा १५६, प्रा ६६)।

सोल न [दे] मति (दे ८, ४४)। देखो मुल्ल = मुख्य।

सोल वि [पक] पकाया हुआ (उवा, विवा १, २—पत्र २७, १, ८ पत्र ८५, ८६, धी)।

सोलिय वि [पक] १ पकाया हुआ, 'दाल-सोलिय' (धी)। २ न, पुन विशेष (धी)।

सोय देवो सुय = हय, सोयह, सोयवि (हे १, ६४, उवा, भवि वि १५२)।

सोयरम } वि [सोपयम] निविन-नारण सोययम } न या नट या बय हो मने बट्ट बर्म, बापु ययय धादि (गुग ४४२, ४४६)।

सोययिय वि [सोपयिन] उरयय-पुन, हट्ट, पुट (कय)।

सोययट्ट पुन [सोय-यट्ट] एह तरह का नैन, बाला बयट्ट (दम ३, ८ बंध)।

सोयण न [स्यपन] शयन, सोना (उवा ७, २३७)।

सोयण न [दे] १ वास-गृह, शय्या-गृह, रति-मन्दिर (दे ८, ५८, स ५०३ पाप्र)। २ स्वयं। ३ पुं. मल्ल (दे ८, ५८)।

सोयण (भर) देखो सोयण (भवि)।

सोयणिय धी [सोयनिक] १ श्वान-पालक, कुत्तो की पालनेवाला। २ कुत्तो से शिकार करनेवाला (मुप्र २, २, ४२)।

सोयणी श्री [सोयपनी] विद्या-विशेष (पि ७८)।

सोयणिय वि [सोयगं] स्वर्णनिर्मित, सोने का (महा सम्मत १७३)।

सोयणयमरिगध धी [दे] मधुमक्षिका की एक जाति, एक तरह की गृह की मक्खी (दे ८, ४६)।

सोयणियध } वि [सोयनिक] सोने का, सोयणियध } मुखण मटित (मति ७, स ४५८)। ३ पचयय पुं [पचयय] मेह परंत (पचय २, १८)।

सोयणियध धी [सोयणिय] गदगदारी। धी. 'आ, ई' (पट)।

सोयय न [दे] १ उरकार। २ वि, उरनोगय, उरभोगय (दे ८, ४३)।

सोययिध } वि [सोयनिक] १ माहूतिन सोययिध } ययन सोयनेवाला, मायय धादि स्वयि-याचर (छा ४, २ पत्र २१३, धी)। २ पुं. पयोपिण महाप्रह विशेष (छा २ १—पत्र ७८)। ३ मीरिय यनु की एक जाति (पल्ल १—पत्र ४५)।

सोययिध धी [सोययिध] १ शयिया, एह यडल्लबध (धी)। २ पुं. यिपुयय मानय बगलवार परंत का एक छिगर (इ)। ३ पुं. हचन-नरन का एक छिगर (राय)। ४ एव दर रिमान (दे २३, १४१)। देवो यययिध, यययिध = यययिध।

सोययय धी [सोययय] (मट १७, था २८, छिरि ८११ भवि)।

मा यययिध देवो सोययययय (छाया १, १—पत्र ४२)।

सोयययय देवो सोययययय = सोययययय (गुग २, २, २८)।

सोयरी की [शाम्वरी] विद्या विशेष (सूत्र २, २, २७)।

सोयवर्त्तिन वि [सोयपत्तिक] सपुत्रिक, युक्ति-युक्त (उप ७२८ टी)।

सोवाञ वि [सोपाय] उपाय साध्य (गठ ८)।

सोवाग पुं [अपाक] चाएवाल, डेम (भाषा, डा, ४, ४—पत्र २७१; उत १३, ६, उव, सुपा १७०, कुप्र २६२, उर १, १५)।

सोवागी की [आपाकी] विद्या-विशेष (सूत्र २, २, २७)।

सोयाण न [सोपान] सोडी, निसेनी, पेडी (सम १०६, गा २७८, उव, सुर १, ६२)।

सोयासिणी देवो सयासिणी (मवि)।

सोयिअ वि [स्वापित] सुवाया हुमा, रावित, 'कमलकिसलयदए सत्यरए सोयिअ लेण' (सुर १, २४४, उप १०३१ टी)।

सोयियल पुंकी [सौविदल] अन्त पुर का रसक (गठ ७)। की, °ली (मुपा ७)।

सोयीर पुं व. [सोयीर] १ देश-विशेष (पत्र २७५, सूत्र १, ५, १, १—टी)। २ न. काशिक, काजी (डा ३, ३—पत्र १४७, पात्र)। ३ न. न. विशेष, सोयीर देश में होता सुरमा (जी ४)। ४ म. विशेष (वस)।

सोयीरा की [सोयीरा] मध्यम ग्राम की एक दुर्धना (डा ७—पत्र ३६३)।

सोयन वि [दे] पतित-अन्त, जिसका दात गिर गया हो वह (दे ८, ४५)।

सोस सक [शौपय] सुजाना, शोयक करना। सोसह (मवि)। वङ्ग, सोसयंत (कप्य)।

सोस देवो सुस्स। सोसह (हे ४, ३६५)।

सोस पुं [शोप] १ शोयक (गठ ८, प्राप् ६४)। २ योग-विशेष, दाह योग (सहस्र १५)।

सोसण पु [दे] पवन, वायु (दे ८, ४५)।

सोसण न [शोपण] १ सुजाना। २ कामदेव का एक बाण (कप्य)। ३ वि. शोपण-कर्त्ता, सुजानेवाला (पत्र २८, ५, कुप्र ४७)।

सोसणया } की [शोपणा] शोपण (वज्र, सोसणा } उत ३०, ५)।

सोसणी की [दे] वटी, कमर (दे ८, ४५)। सोसविअ वि [शोपित] सुवाया हुमा (हे ३, १५०, उव)।

सोसाव देवो सोस = शोपय्। हेङ्ग. सोसावेहुं (शो) (नाट)।

सोसास वि [सोच्छवास] ऊर्ध्व श्वास युक्त (पट्)।

सोसिअ देवो सोसंविअ (हे ३, १५०, सुर ३, १८६, महा)।

सोसिअ वि [सोच्छ्रूत] ऊँचा किया हुमा (कप्य)।

सोसिह वि [शोफयत्] शोफ युक्त, सूजन रोगवाला (विपा १, ७—पत्र ७३)।

सोह व्र [शुभ] शोभना, चमकना। सोहह, सोहए सोहति (हे १, १८७, पात्र, कुमा)। वङ्ग, सोहंत, सोहमाण (कप्य, सुर ३, १११, नाट—उत्तर ८)।

सोह सक [शोभय] शोभायुक्त करना। सोहह (उव)।

सोह सक [शोभय] १ शुद्धि करना। २ शोच करना, गलेपणा करना। ३ सशोचन करना। सोहह (उव)। वङ्ग, 'सुसिप्र सविह दट्टुं सोहिणे वइम निभ' (पा १२)।

सोहमाण (उवा, विपा १, १—पत्र ७)। कवङ्ग, सोहिर्जत (उप ७२८ टी)। वङ्ग, सोहणीअ, सोहयव (छाया १, १६—पत्र २०२, नाट—शकु ६६, सुपा ६५७)।

सङ्ग, सोहइत्ता (उत २६, १)।

सोह देवो सवह = सौव (चविम ६१, प्रति ४१, नाट—मावली १३८)।

सोहंजण पु [दे. शोभाजन] वृक्ष-विशेष, सहजने का पेड़ (दे ८, ३७, कप्य)।

सोहग दवो सोमग (कप्य ३८ टी)।

सोहग पुं [शोधक] धोवी, रजक (उप पु २४१)। देवो सोहय = शोधक।

सोहग न [सोभाग] १ सुमंगल। लोक-प्रियता (धौव, प्राप् ६६)। २ पति प्रियता (सुर ३, १८१, प्राप् ८५)। ३ सुन्दर भाग्य (उप पु ४७, १०८)। ४ कप्यरुम्स पुं [कल्पवृक्ष] वृक्ष विशेष (पत्र २७६)।

शुडिया की [शुडिना] सोभाग्य-जनक मन्त्र विशेष से संकृत गोलो (सुपा ५६७)।

सोहगंजण न [सोभागजन] सोभाग्य-जनक संजन (सुपा ५६७)।

सोहग्गिअ वि [सोभागित] भाग्य शाली, सुन्दर भाग्यवाला (उप पु ४७, १०८)।

सोहण पुं [शोभन] १ एव प्रसिद्ध जैन मुनि (सम्मत ७५)। २ वि. शोभा-युक्त, सुन्दर (सुर १, १४७, ३, १८५, प्राप् १३२)। की, °णा, °णी (प्राह ४२)। ३ यर न [यर] देवाय की उत्तर क्षेपि वा एक विद्यापर-नगर (इक)।

सोहण न [शोधन] १ शुद्धि, सफाई (उप ५६७ टी, मुजज १०, ६ टी, कप्य)। २ वि. शुद्धि-जनक (आ ६)।

सोहणी की [दे] संगानैनी, काडू (दे ८, १७)।

सोहद न [सोहद] १ मित्रता। २ बन्धुता (मवि २१८, मज्ज ५०)।

सोहम्म देवो सुधम्म, सुहम्म = सुधर्म (सम १६)।

सोहम्म पु [सौधर्म] प्रथम देवलोका (सम २, राप, मणु)। ३ कप्य पुं [कल्प] पहला देवलोका, स्वर्ग-विशेष (महा)। ४ वङ्ग पुं [पति] प्रथम देवलोका का स्वामी, शक्रदेव (सुपा ५१)। ५ वडिसय पुं [पितृसक] एक देव-विमान (सम ८, २५, राप ५६)। ६ सामि पु [स्थामिन्] प्रथम देवलोका का इन्द्र (सुपा ५१)।

सोहम्म देवो सुहम्मा (महा)।

सोहम्मण देवो सोहण = शोधन, 'यएणपि गुणुपरिस उवेह सोहम्मणुएण' (कम्म ६, १ टी)।

सोहम्मिद पु [सोधमैन्ट्र] शक्र, प्रथम देव-लोका का स्वामी (महा)।

सोहम्मिय वि [सोधमिक] सौधर्म देवलोका का (सण)।

सोहय वि [शोधक] शुद्धि-कर्त्ता, सफाई करनेवाला (विठे ११६६)। देवो सोहग = शोधक।

सोहय देवो सोहग = शोधक (उप पु २१६)।

सोहल वि [सोभावन्] शोभायुक्त (सण, मवि)।

सोदा श्री [शोभा] १ दीप्ति, चमक (ये १, ४८; कुमा, सुपा ३१; रंभा) । २ छन्द-विशेष (सिग) ।

सोदाय सक [शोधय] सपा कयना । सोदावेह (स ५१६) ।

सोदायिय वि [शोधित] साफ नयमा हुमा (स ६२) ।

सोदि श्री [शुद्धि, शोधि] १ निर्मलता (छाया १, ५—यय १०५, संबोध १२) । २ झलोचना, प्राप्तवित्त (भोप ७६१, ७६७; बाबा) ।

सोदि वि [शोधिन] शुद्धि-कर्ता (भीष) ।

सोदि वि [शोभिन्] शोभनेवाला (संबोध ४८, कपू, भवि) । श्री. थी (नाट—रत्ना १३) ।

सोदि धुंछो [दि] १ भूत कान । २ भविष्य काल (दि ८, ५८) ।

सोदिअ न [दि] पिठ, घाटा, चावल आदि का धूलो (पद्) ।

सोदिअ वि [शोभित] शोभा-युक्त (सुर ३, ७२; मटा, भीष, भग) ।

सोदिअ वि [शोधित] शुद्ध किया हुआ (पणह २, १, भग) ।

सोदिह देवा सोदह (नाट—यकु १०६) ।

सोदिह वि [शोभित] शोभनेवाला (पा ५११) ।

सोदिह वि [शोभावत्] शोभा-युक्त (पा ५४७, सुर ३, ११; ८, १०८; हे २, १५६; चंड, भवि, सण) ।

सोअरिअ देलो सोअरिअ = सोदय (पठ) । सोअरिअ न [सोन्दर्य] सुन्दरता (हे १, १) ।

सोह देवो सउह = सोय (रनिम ५६; नाट—भासवी १३६) ।

*सस देवो स = स (पा २२६) ।

*ससस देवो सास = पास (पा ८५६) ।

*सिसरी देवो सिसी = थी (पा ६७७) ।

*ससेअ देवो सेअ = सेव (भनि २१०) ।

॥ इम विरिपाइअसहमहणगन्म सयापइसहसंनलणो
सततीसहो वरंरो समतो ॥

ह

ह धुं [ह] १ बंठ-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष (आप, प्राभा) । २ म, इन धर्मी का सूचक ध्वन्य—संबोधन, 'हे-मिलगु गिलाह, ये हं ह हं सखाह' (भापा २, १, ११, १; २; वि २७५) । ३ निमोग । ४ छेप, निन्दा । ५ निग्रह । ६ प्रसिद्धि । ७ वास्तुति (हे २, २१७) ।

ह देतो हा = घ. (हे १, १७) ।

हह श्री [हवि] हन, वष, मारण (बा ३७) ।

हं घ. [हम्] हा धर्मी का सूचक ध्वन्य—१ भीष (उगा) । २ मधमति (रज २१) ।

हंजय धुं [हं] सरीर-नारंग-युक्त बिना बाधा राग—सौम्य (दि ८, ६१) ।

हंज घ. हा धर्मी का सूचक ध्वन्य—१ दावी का माहाय (ह ५, २८१; कुमा, सिग) । २ तापी का धामयण (स १२२, समल १७२) ।

*हंढ देलो गंढ (हम्मीर १७) ।

*हंढण देलो भंढण (पा ६१२, वि ५८८) । हंत देवो हंता (परमंत २०२, राय २६; सण, कपू, वि २७५) ।

हंतव्य } देवो हण ।

हंता } देवो हण ।

हंता म [हन्त] इन धर्मी का सूचक ध्वन्य—१ धम्पुपन, स्वीकार (उगा, भीष मग, तंडु १४; मणु १६०; छाया १, १—पत्र ७४) । २ कोमल धामयण (मय, मणु १६०; तंडु १४; भीष) । ३ वायव का धारण । ४ प्रवक्तायण । ५ संवेगयण । ६ वेद । ७ निदेश (यय) । ८ हर्ष । ९ धनुस्त्रा (यय) । १० शय (उगा) ।

हंनु वि [हन्त] मारनेवाला (घापा, मग पयम ५१, १६०७, १६१; वि २११७) ।

हंनु देवो हन ।

हंदि घ. 'हंनु करो' इन धर्मी का सूचक ध्वन्य (हे २, ८८१; कुमा बाबा २, १, ११, १; २; वि २७५) ।

हंदि घ. इन धर्मी का सूचक ध्वन्य—१ निपाद, वेद । २ निमय । ३ वरचाताय । ४ निरवय । ५ माय । ६ 'लो', 'महण करो' (पाय हे २, १८०; पद्, कुमा) । ७ धामयण, संबोधन (विह २१०, परमंत ४४) । ८ उदर्योन (पंभा ३, १२; दगनि ३, १७) ।

हंभो देवो हंभो (सुर ११, २१३; बाबा, मूम २, २, ८१) ।

हंम देवा हास = हास (अय) ।

हंस धुं [हंस] १ परिनिमोग (छाया १, १—यय ५१ पणह १, १—यय ८, कुमा, ग्रामु १३, १६६) । २ रजक, बाबा, 'अप-बाबा हंसि हंवा बा' (मूष १, ४, २, १७) । ३ संन्यासिस्टे (मे १, २१; भीष) । ४ धूर्त, रति (मिदि ५४३) । ५ मणि स्थित, हंतामं ममक राज की एक-कति (पणह १—यय ७६) । ६ हंस का एक भेद (सिग) । ७ निर्दिष्ट राजा । ८

विष्णु । ६ परमेधर, परमात्मा । १० मत्तर ।
११ मन्त्र विशेष । १२ शरीर-स्मित वायु की
चेष्टा-विशेष । १३ मेघ पर्वत । १४ शिव,
महादेव । १५ अश्व की एक जाति । १६
शृंग । १७ अयुष्मा । १८ विशुद्ध । १९ मन्त्र-
वर्ण-विशेष (ह २, १८२) । २० पतय,
चतुरिन्द्रिय जन्तु विशेष (अणु ३४) । 'गन्ध
पुं [र्भे] रत्न की एक जाति (शाया १,
१—पत्र ३६, १७—पत्र २२६; कण्य,
उत्त ३६, ७७) । 'तूटो की [तूटो]
विद्यौष की गरी (सुर ३, १८८, ६,
१२८) । 'हीव पुं [द्वीप] द्वीप-विशेष
(पत्रम ५४, ४५) । 'लस्यण वि [लस्यण]
१ शुक्ल, सफेद (घट) । २ विशद, निर्मल
(ज २) ।

हंसय धुन [हंसक] म्रुर (पात्र, गुण
३२७) ।

हसल पुं [वे] आभूषण-विशेष (अणु) ।
देखो हासल ।

हंसी की [हंसी] १ हत पत्नी की माया
(नाम) । २ छन्द का एक भेद (विंग) ।

हंसुल्य पुं [हस] मश की एक उत्तम जाति
(सम्मत २१६) ।

हंशो म [हंशो] इन प्रयो का सूचक शब्द—
१ सचोचन, आमनत्रण (सुर २३, १, चर्मवि
५५, पत्र ५६७ टी) । २ तिरस्कार (धम्म
११ टी) । ३ प्रवर्, गर्व । ४ दण्ड, बण्ड । ५
प्रश्न (हे २, २१७) ।

हंशुन न [हंशुन] फल विशेष (मनु ५) ।

हस सक [नि + पिध्] निषेध करना,
निवारण करना । हसद (हे ४, १३४,
पङ्) । वङ् हसमाण (हुमा) ।

हस सक [दे] हसकना—१ पुकारना, आह्वान
करना । २ प्रेरणा करना । ३ छेड़ना ।
हसई (गुण १८३) । वङ् हसत (सुर
१५, २०३, गुण ५३८) । वङ् हसिउजत
(पत्र २५१) । वङ् हसिय, हसिउ,
हसिऊण (सुर २, २३१, गुण २४८;
महा) ।

हसा की [दे] हाँक—१ पुकार, पुकारना,
आह्वान । २ प्रेरणा, 'पयनो भुरम्मि कुपो न

सहइ उच्चारियं हक' (जब्बा ३८, पिप,
गुण १५१; सिरि ४१०; उप गृ ७८) ।

हकार सक [आ + मरय] पुकारना,
आह्वान करना, बुलाना । हकारह (महा,
भवि) । हकारह (गुण १८८) । कर्म,
हस्कारिज्जु (सुर १, १२६, गुण २६२) ।
वङ् हकारेत, हकारेमाग (सुर ३, ६८,
शाया १, १८—पत्र २४०) । सङ् हका
रिऊण, हकारेऊण (गुण ५, गुण २२०) ।
प्रयो, हस्कारावड (गुण ११८) ।

हकार सक [दे] ऊँचे फिलाना । कर्म, हस्का-
रिज्जति (सिरि ४२४) ।

हकार पुं [हानार] १ युगलिको के समय की
एक दण्डनीति (ठा ७—पत्र ३६८) । २
हाँकने को भावान (सुर १, २४६) ।

हकारण न [आमारण] आह्वान (स २६४,
गुण ११६) ।

हकारिअ वि [आमारित] आहूत (गुण
२६६, श्रोम ६२२ टी, महा) ।

हकिअ वि [दे] हाँका हुमा—१ खदेना
हुमा, 'हसिकमो वरी' (महा), जेण तपो
पासलाइतेणसेणवि हसिकया सम्म' (साधं
१०३) । २ आहूत (कुप १४१) । ३ प्रेरित
(गुण २६१) । ४ उलट (पङ्) ।

हकिअ वि [निपिद्ध] निवारित (कुमा) ।
हकोद्ध वि [दे] मग्नितपित (दे ८, ६०) ।
हसकुस वि [दे] उत्थापित, उठाना हुमा,
उत्थिअ (दे ८, ६०, पत्रम ११७, ५, पात्र,
स ६१४) ।

हसकुस सक [सत् + क्षिप्] १ ऊँचा करना,
उठाना । २ फैलाना । हसकुवड (हे ४, १४४),
'तणुययदेहो देवो हसकुवड व कि महासेव'
(जिसे ६६५) ।

हसकुसिअ वि [उत्थिअ] उत्थापित (कुमा) ।
हसा की [हत्या] वध, घात (गुण १५७,
चर्मवि १७) ।

हट्ट पुं [हट्ट] १ भाषण, वाजार (ग ७६४,
भवि) । २ दान (गुण ११०, १८६) । 'माई,
'मायी की [मायी] व्यभिचारिणी की,
कुवड (गुण ३०१, ३०२) ।

हट्टिया } की [हट्टिका] छोटी दान (मोह
हट्टी } ६२, गुण १८६) ।

हट्ट वि [हट्ट] १ हर्ष-युक्त, आनन्दित । २
विस्मित (उवा, विपा १, १, शीप, राय) ।
३ नीरोम, रोग-रहित, 'हट्टेण गिलाएण व
अमुगववो अमुगदिणमि नियमेण कायव्वो'
(पत्र ४—गाथा १६२) । ४ शक्तिशाली
जवान, समर्थ तलण (कम्प) । ५ हट्ट, मन-
बुत (श्रीप ७५) ।

'हट्ट देवो भट्ट (मा ६४४ म) ।

हट्टमहट्ट वि [दे] १ नीरोम । २ दण्ड, चतुर
(दे ८, ६५) । ३ स्वल्प युवा (पङ्) ।

हट्ट वि [दे, हट्ट] जिसका हरण किया गया
हो वह (दे ८, ५६, कम्प) ।

हट्टक } (मा) देखो हिअय = हट्टय (प्राक्
हट्टक } १०५, १०२, प्राप, नाट—मुच्य
६१, पि ५०, १५०) ।

हट्टप पुं [दे] १ पात्र-विशेष, द्रव्य
हट्टप } आदि का पात्र । २ सामूल पादि
का पात्र (श्रीप) । ३ आभरण का करदण्डक
(शाया १, १ टी—पत्र ५७, ५८) ।

हट्टहट्ट पुं [दे] १ अयुगा, प्रेम (दे ८, ७४,
पङ्) । २ ताप (दे ८, ७४) ।

हट्टहट्ट पुं [हट्टहट्ट] हट्ट हट्ट भावान (सिरि
७७६) ।

हट्टाहट्ट वि [दे] अत्यर्थ, अत्यन्त (विपा १,
१—पत्र ५ शाया १, १६—पत्र १६६) ।

हट्टि पु [हट्टि] काष्ठ का वन्यन-विशेष, काठ
की बेडी (शाया १, २—पत्र ८६, विपा १,
६—पत्र ६६, श्रीप, कम्म १, २३) ।

हट्ट न [दे] हाव, शल्य (दे ८, ५६, तंहु
३८, गुण ३५५; श्रु १००) ।

हट्ट पुं [हट्ट] १ बलात्कार (पात्र, पवह १,
३—पत्र ४४, दे १, १६) । २ जल में हाने-
वाली वनस्पति-विशेष, कुम्भी, जलकुम्भी,
कई, 'वायाध्वो न्ह हट्टो अट्टिअपा भवि-
स्सवि' (उत्त २२, ४४, सूत्र २, ३, १८,
पण्य —पत्र २४) ।

हण सक [हण] १ वध करना । २ जाना,
गति करना । हणद, हणिया (हुमा, भाषा) ।
भुवा, हणियु, हणीम (भाषा, हुमा) ।
भवि, हणिये (हुमा) । कर्म, हणि-
णवड, हणियण, हणण, हणद, हणमद
(हे ४, २४४, कुमा, प्राप् १६; भाषा) ।

मवि. हम्मिहिइ, हण्हिइ (हे ४, २४४) ।
वह. हणंत (भावा. कुमा) । ववह. हण्णु,
हण्णजमाण, हम्मंत, हम्ममाण (सूत्र १,
२, २, ५; भा १४, सुर १, ६६, विपा १,
२—पत्र २४, पि ५४०) । सक्क. हंता,
हंतूण, हंतूण, हत्तूण, ह्मिऊण, ह्मिऊअ
(भावा. प्राप् १४७, प्राक् ३४, नाट) ।
ह्म. ह्म, ह्मिऊ (महा. उप ५ ४८) ।
ह्. हंतव (से १, १, हे ४, २४४,
भावा) ।

हण सक [ध्रु] सुनना । हणइ (हे ४, ५८) ।
हण वि [दे] ह्म, मनिक्क (दे ८, ५६) ।
हण देखो हणण, 'हणवहणवयलमारण'
(पत्र ८, २३२) ।

*हण देखो घण = घन (गा ७१५, ८०१) ।
हणण न [हन्न] १ मारण, वध, घात (सुपा
२४५, मण) । २ विनाश (पण्ह २, ५—
पत्र १४८) । ३ वि. वध कर्त्त । औ. 'णी'
(दुप्र २२) ।

हणिअ वि [हत्] जिक्का वष किमा गया हो
बह (पा २७, कुमा. प्राप् १९, पिण) ।

हणिअ देखो हण = हन् ।

हणिअ वि [हृ] गुता हुआ (कुमा) ।

हणिइ देखो हणिण्ड (गा ६६३) ।

हणिर वि [हन्] वष करनेवाला (सुपा
६०७) ।

हणिहणि } म [अहन्] हनि १ प्रतिदिन,
हनिहनि } हेमरा (पण्ह २, ३—पत्र
१२२) । २ सर्वथा, मब तरह से (पण्ह २,
५—पत्र १४८) ।

हणु वि [दे] सायरोष, बाकी 'बचा हुआ (दे
८, ५६, सण) ।

हणु पुंकी [हनु] बिड्ड, होठ ॥ नीचे का
भाग, डुडो, डोड़ी, दाढ़ी (भावा. पण्ह १,
४—पत्र ७८) । 'अ, 'म, 'मंत, 'यंत पु'
['मणु] हनुमान, रामचन्द्रजी का ए
प्रस्तावत भगुवर, पवन तथा अन्ननामुन्दरी
का पुत्र (पत्र १, ५६, १७, १२१, ४७,
२९, हे २, १४६, कुमा. प्राप्. पत्र १६,
१५, ५६, २१) । 'रह, 'रह न ['रह]

नगर-विशेष (पत्र १, ६१, १७, ११८) ।
'व, 'वंत देखो 'म (पत्र ५७, २५, ५०,
६, उप ५ ३७६) ।

हणुया औ [हनुय] १ डुडो, डोड़ी, दाढ़ी
(भनु ५) । २ दंष्ट्र-विशेष दादा-विशेष
(उवा) ।

हणु औ [हनु] देखो हणु (पि ३६८, ३६६) ।

हणु देखो हण = हन् ।

हत्त देखो हय = हत् (पि १६४, ५६५) ।

'हत्तरि देखो सत्तरि (पि २६४) ।

हत्तु वि [हृत्] हरण-कर्त्ता (प्राक् २०) ।

हत्तूण देखो हण = हन् ।

हत्थ वि [दे] १ शीघ्र, जल्दी करनेवाला (दे
८, ५६) । २ क्रिय. जल्दी (भोप) ।

हत्थ पुन [हत्त] १ हाथ, 'अपिपत्तेण
हत्थ पत्तारिय जत्त वरहेण' (बज्जा १०६,
भावा. वय, कुमा. ई ६) । २ पुं. मत्तन-
विशेष (सम १०, १७) । ३ चौबीस भगुल
का एक परिमाण । ४ हाथों की सूँठ (हे
२, ४५, प्राप्) । ५ एक जैन मुनि (वय) ।
'कप्प न ['रूप] नगर विशेष (छाया १,
१६—पत्र २२६ पि ४६१) । 'कम्म न
['कम्म] हस्त किया. दुर्येष्ट-विशेष (सूत्र
१, ६, १७, ठा ३, ४—पत्र १६२, सम
३६; वय) । 'ताड, 'ताल पुं ['ताड]
हाथ से साज (राज. वस ४, ३ डि) । 'पहे-
ल्लिअ औन ['प्रहेल्लिअ] संस्था-विशेष,
शीघ्रप्रवर्धित को चौपासी सार से गुलने पर
को संस्था सज हो बह (हत्) । 'प्पाहुड न
['प्राहुड] हाथ से दिया हुआ उपहार (दे
८, ७३) । 'माळय न ['माळर] भामरण-
विशेष (भोप) । 'ल्लुत्तण न ['ल्लुत्तण]
हस्त-नामपा । २ कोरी (पण्ह १, ३—पत्र
४३) । 'सीस न ['सीस] नगर-विशेष
(छाया १, १६—पत्र २०८) । 'मरग न
['मरण] हाथ का गढ़ना (मण) । 'याळ
पुं ['ताळ] देखो 'ताड (वय) । 'ल्लय
पुं ['ल्लय] हाथ का उपहार, मदद (से
१, १६, सुर ४, ७६; वय) ।

हत्थर पुं [हत्थर] वनस्त्रि-विशेष
(भावा २, १०, २) ।

हत्थरु } पुन [हरान्तरु] हाथ बांधने
हत्थरु } का बाँध बाँधि ना बन्धन-विशेष
(पि ५७३, विपा १, ६—पत्र ६६) ।

हत्थरुल्लुङ्गणी औ [दे] नय-वपू, नवोदा (दे
८, ६५) ।

हत्थरु (भा) देखो हत्थ (हे ४, ४४५, पि
५२६) ।

हत्थय न [हत्त] कला-मन्त्र (वरा-
मत्तय-सूत्र ५१ पत्र ८१) ।

हत्थल पुं [दे] १ कोडा के लिए हाथ में ली
हुई चीज । २ वि. हस्त-लोचन, चञ्चल हाथ-
वाला (दे ८, ७३) ।

हत्थल वि [हत्तल] १ खराब हाथवाला ।
२ पुं. चोर, तस्कर (पण्ह १, ३—पत्र
४३) ।

हत्थल्लिअ देखो हत्थिल्लिअ (राज) ।

हत्थल्लि वि [दे] कोडा से हाथ में लिया हुआ
(दे ८, ६०) ।

हत्थल्लिअ वि [दे] हस्ताधारित, हाथ से
हत्या हुआ (दे ८, ६४) ।

हत्थली औ [दे] हस्त-चुली, हाथ में स्थित
भासन-विशेष (दे ८, ६१) ।

हत्थार न [दे] सहायता, मदद (दे ८, ६०) ।

हत्थारोह पुं [हत्थारोह] हस्तिक, हाथों
का/सहायक (विपा १, २—पत्र २३) ।

हत्थारार न [दे] सहायता, मदद (मवि) ।

हत्थाहत्थि औ [हत्थाहत्थि] हाथोहाथ,
एक हाथ से दूसरे हाथ (गा १७६) ।

हत्थाहत्थि म. ऊपर देखो (गा २२६, ५८१,
गुप्फ ४६२) ।

हत्थि पुंकी [हत्थि] १ हाथी (गा ११६,
कुमा. प्राप् १८७) । औ. 'नी (छाया १,
३—पत्र ६३) । २ पुं. नर विशेष (तो १४) ।
'आरोह पुं ['आरोह] हाथी ॥ मनास
(वर्मा १६) । 'कण्ण, 'कण्ण पुं ['रण]
२ एक धनद्वीप । २ वि. लज्जा विनासी
मुग्ध (हत् ठा ४, २—पत्र २२६) ।
'कप्प न ['कप्प] देखो हत्थ-कप्प
(राज) । 'मुल्लुत्तययत्त ['मुल्लुत्तययि]
हाथों का सार विशेष (राज) । 'णागपुत्र न
['नागपुत्र] नगर-विशेष, हस्तिनापुर (ज
६४८ टो: सण) । 'वासस पुं ['वासस]

बौद्ध साधु विशेष, हाथो को मारकर उसके मांस से जीवन-निर्वाह करने के सिद्धान्तवाला सन्यासी (श्रीप, सूत्रनि १६०) । 'नायपुर देवो' नागपुर (भवि) । 'पाल पु' 'पाल' भगवान् महावीर के समय का पावापुरो का एक राजा (कप्प) । 'पिप्पली' वनस्पति-विशेष (उत्त ३४, ११) । 'सुह पुं' 'सुह' १ एक ऋतुर्द्धी । २ वि. उसका निवासो मनुष्य (ठा ४, २—पत्र २२६, झीप) । 'रयण न' 'रत्त' उत्तम हाथो (भीप) । 'राय पुं' 'राज' उत्तम हाथो (मुपा ४२६) । 'यायय पुं' 'न्यायत' महावत (श्रीप) । 'वाल देवो' 'पाल (कप्प) । 'विजय न' 'विजय' वैताव्य की उत्तर ओरि का एक विद्याधर नगर (इक) । 'सीस न' 'शीर्ष' एक नगर, जो राजा दम्बवत् की राजधानी थी (उप ६४८ धे) । 'सुडिया देवो' 'सौडिगा (राज) । 'सौड पुं' 'सौण्ड' शीर्षजन्तु विशेष (पण्य १—पत्र ४५) । 'सौडिगा जी' 'गुण्डिका' घासतन-विशेष (ठा ५, १ दी—पत्र २६६) । हत्थिअचक्खु न 'दे' वक्क भवलोक्कन (दे ८, ६५) ।

हत्थिअग वि 'हत्थीय, हत्थय' हाथ का, हाथ-संबन्धी (पिठ ४२४) ।

हत्थिअण्डर न 'हत्तिनापुर' नगर विशेष (ठा १०—पत्र ४७७, गुर हत्थिअण्डर १०, १५५, महा, गउर, गुर हत्थिअण्डर १, ६४, नाट—शकु ७४, भव) ।

हत्थिपी देवो हत्थि ।

हत्थिमह ॥ 'दे' इन्द्र-हत्ती, पैराण हाथी (दे ८, ६३) ।

हत्थियार ॥ 'दे' हत्थियार, शस्त्र (परमं १०२२; ११०४, भवि) । २ युद्ध, लड़ाई, 'ता उट्टेहि संघं चरेहि हत्थियारं वि', 'देव, मोदतं देवेण संघं हत्थियारं च' (स ६३७; ६३८) ।

हत्थियत्तज्ज न 'हत्थिलीय' एव जैन-मुनि-कुल (कप्प) ।

हत्थियय पुं 'दे' पट-भेद (दे ८, ६३) ।

हत्थिहरिह पुं 'दे' वेप (दे ८, ६४) ।

हत्थुत्तरा जी 'हत्थोत्तरा' उत्तराफल्गुनी नक्षत्र (कप्प) ।

हत्थुल्ल देवो हत्थ (हे २, १६४, पट्) ।

हत्थोडी जी 'दे' १ हस्ताभरण, हाथ का आभूषण । २ हस्त प्रायुष्ट, हाथ से दिया जाता उपहार (दे ८, ७३) ।

हत्थलेप पुं 'दे' हस्त-बहण, पाणि ग्रहण (सिदि १३८) ।

हट् देवो हय = हय (प्राप्र, प्राक्क १२) ।

हट् पुं 'दे' वासक का मल-मूत्रादि (पिठ हट् ४७१) ।

हट्थय पुं 'दे' हास, विकास (दे ८ ६२) ।

हट्ठि भ 'हा धिक्' १ खेद । २ भुताप हट्ठि' (प्राक्क ७६; पट्, स्वप्न ६१, नाट—शकु ६६, हे २, १६२) ।

हमार (अप) वि 'असमदीय' हमाप, हयसे सम्बन्ध रखनेवाला (पिप) ।

हमिर देवो भमिर (पि १८८) ।

हम्म सक 'हम्' वष करना । हम्मह (हे ४, २४४, कुमा, संसि ३४, प्राक्क ६८) ।

हम्म सक 'हम्म' जाना । हम्मह (हे ४, १६२) ।

हम्म न 'हर्म्य' क्रीड-गृह (से ६, ४३) ।

हम्म' देवो हण = हण ।

हम्मार देवो हम्मार (पिप) ।

हम्मिअ वि 'हम्मिअ' गव, गया हुआ (स ७४३) ।

हम्मिअ न 'दे. हर्म्य' गृह, प्रासाद, महल (दे ८, ६२, पात्र, गुर ६, १५०, प्राचा २, २, १, १०) ।

हम्मोर पु 'हम्मोर' विक्रम की तेरहवीं शताब्दी का एव मुसलमान राजा (सी ५, हम्मोर २७, पिप) ।

हय वि 'हट्' जो मारा गया हो वह (श्रीप, से २, ११; महा) । 'माशोड पु' 'मरतोड' एव विद्याधर-नरेश (पत्रम १०, २०) । 'स वि 'श' निराश (पत्रम ६१, ७४, गा २८१, हे १, २०६; २, १६४, उर) ।

हय पुं 'हय' वय. घोडा (श्रीप, से २, ११; कुमा) । 'पट पुं' 'वण्ड' रत्न-विशेष, वय से बठ विजता बडा रत्न (राय ६७) ।

'पण्ण, 'वण पुं 'वण' १ एव भवन्तिय ।

२ वि. उसका निवासो मनुष्य (इक, ठा ४, २—पत्र २२६) । ३ एक प्रनार्य देश (पत्र २७४) । 'सुह पुं' 'सुह' १ एक ऋतुर्द्धी (इक) । २ एक प्रनार्य देश (पत्र २७४) ।

हय देवो हिय = हट (महा, भवि, राय ४४) ।

हय देवो हर = द्रह । 'पोंडरीय पुं' 'पुण्डरीक' पक्षि-विशेष (पण्ड १, १—पत्र ८) ।

'हय देवो भय (गा ३८०) ।

हयमार पु 'दे. हतमार' कणोर का गाछ (पाप) ।

हर सक 'ह' १ हरण करना, छीनना । २ प्रसन्न करना, छुड़ा करना । हरह (हे ४, २३४, उव, महा) । कर्म, हरिजह, होरह, हरिपण्ड, होरिपण्ड (हे ४, २५०; पाया १५७) । वक्क. हरत (पि ३६७) । कवक्क. होरत, होरमाण (गा १०५, गुर १२, १११; गुपा ६३४) । सक्क. हरिकण (महा) । हेक्क हरिउ (महा) । ह. हिज्ज, हेज्ज (पिठ ४४६, ४५३) ।

हर सक 'ग्रह' ग्रहण करना, लेना । हरह (हे ४, २०६) ।

हर सक 'हट्' भवान करना । 'हरह (से ५, ७१) ।

हर पुं 'हर' १ महादेव, शंकर (गुपा ३६३, कुमा, पट्. हे १, ५१, गा ६८७, ७६४) । २ छत्र-विशेष (पिप) । 'मेहल न' 'मेखल' कला-विशेष (सिदि ५६) । 'वह्हा जी' 'वल्भरा' गौरी, पार्वती (गुपा ५१७) ।

हर पुं 'हट्' द्रह, बडा जलाशय (से ६, ६५) ।

हर देवो घर = गृह, 'ता वष पहिय मा मग वासयं एव मग्ग हरे' (वज्जा १००, कुमा, गुपा ३६३, ह २, १४४) ।

'हर देवो घर = घृ । ह. 'हरेअज्ज (से ६, ३) ।

'हर देवो मर = मर (पत्रम १००, ५४, गुपा ४३२) ।

'हर वि 'हर' हरण-वर्ता (पण) ।

'हर वि 'घर' धारण करनेवाला (गा ११५; ३६५) ।

हरई ॥ श्री [हरित-म्री] १ हरें का गाढ़ ।
हरई ॥ २ फल विशेष, हरें (पद्, हे १,
६६, कुमा) ।

हरण न [हरण] १ छीनना (सुपा १८०; ४३६;
कुमा) । २ वि. छीननेवाला (सुप्र ११४,
पर्यवि ३) ।

हरण न [ग्रहण] स्वीकार (कुमा) ।

हरण न [स्मरण] स्मृति, याद,
‘मस्मिन्नुविमपि कर्ममनुष्यं’

न जेनु सुहृम मणुल्लो ।

ताण विमहाण हरणे रसागि,

या उणो अहं कुविमा’

(गा ६४१) ।

‘हरण देखो भरण (गा ५२७ म) ।

हरणपु पुं [हरणसु] लेन में बोधे हुए गेहें,
जो भादि के बालों पर होता चल-विन्दु
(कप्य, बहय १७१; जी ५) ।

हरद देखो हरय (मग) ।

हरपचुअ वि [दे] १ स्मृत, याद किया
हुमा । २ नाम के उद्देश से दिया हुमा (दे
८, ७५) ।

हरय पु [हृद] बड़ा जलाशय, ब्रह्म (भाषा,
मग, परह २, ५—पत्र १४६; उत १२,
४५, ४६; हे २, १२०) ।

हरहरा जी [दे] युक्त प्रसंग, योग्य अवसर,
उचित प्रस्ताव ।

‘निद्रमग व गामं महिला-

भूम व सुएण बट्ठ’ ।

नीय व काया श्रीसिद्धि

जाया भिन्नवस हहरा’

(वित्ते २०६४) ।

हरहराईय न [हरहरायित] ‘हर हर’ भावाज
(पहल १, १—पत्र ४५) ।

हराविअ वि [हारित] हराया हुमा, जिसका
परामर्श किया गया हो यह (हे ४, ४०६) ।

हरि पुं [दि हरि] शुक्र, सोता (दे ८, ५६) ।

हरि पु [हरि] १ विष्णुसुमार-देवों की बसिए
दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८४) । २
एक महादेव (ठा २, ३—पत्र ७८) । ३
इन्द्र, देव राज (कुमा, सुप्र २३, सम्मत

२२६; म्, ८६) । विष्णु, श्रीहृष्य (गा
४०६; ४११, सुपा १४३) । ५ रामचन्द्र
(से ६, ३१) । ६ सिंह-मुनेन्द्र (से ६, ३३;
कुमा, सुप्र ३४६) । ७ वानर, कन्दर (से ४,
२५, ६, २२, पर्यवि ११, सम्मत २२२) ।

८ मय, घोडा (उत १०३१ टी, तो ८, सुप्र
२३; सुख ४, ६) । ९ भारत के साथ जैन
दोहा लेनेवाला एक राजा (पत्रम ८५, ४) ।

१० ज्योतिषशास्त्र प्रसिद्ध एक योग, ‘गुह्यहरि-
विट्ठे मंडविद्याए’ (संघोष ५४) । ११
छन्द का एक भेद (विग) । १२ सूर्य, सूर्य ।

१३ भेक, मण्डक । १४ चन्द्र । १५ सूर्य ।
१६ बाण, पवन । १७ यम, जमराज । १८
हर, महादेव । १९ ब्रह्मा । २० किरण ।

२१ वर्ष-निशेध । २२ मयूर, मोर । २३
कोकिल, कोयल । २४ मनुहरि नामक एक
विद्वान् । २५ पोता रंग । २६ पिगल बर्ण ।

२७ हरा रंग । २८ वि. पीत बर्णवाला ।
२९ पिगल बर्णवाला (हे ३, १८) । ३०
हरा बर्णवाला, ‘हरिमणिसरिष्यणिमवह’

(मणु ३२) । ३१ पुन. महाहिमवत पर्वत
का एक शिखर (ठा ८—पत्र ४३६) । ३२
विष्णु भगवत का एक शिखर (ठा ६, इक) ।

३३ निषध पर्वत का एक शिखर (ठा ६—
पत्र ४५४, इक) । ३४ हरिवर्ष-लोचन का
मनुष्य-विशेष (कप्य) । ‘अंद् पु [अंद्]’

स्वनाम प्रसिद्ध एक राजा (हे २, ८६, पह,
गठक, कुमा) । ‘अंद्ण न [अंद्ण]’ १
चन्दन की एक जाति (से ७, ३७, गठक,

सुर १६, १४) । २ पु. एक तरह का कलन-
कृत् (सुपा ८७, गठक) । देखो ‘अंद्ण’ ।
‘अंण देखो ‘अंद् (वसि १७) । ‘आल

पुन [आल] १ पीत बर्णवाली उपपाशु-
विशेष, हस्ताल (खाया १, १—पत्र २४,
जी ३, पत्र १५५, कुमा, उत ३४, ८, ३६,
७३) । २ पु. पति-विशेष (हे २, १२१) ।

देखो ‘आल’ । ‘एस पुं [किरा]’ १ चञ्चल
(सोप ८६६, सुख ६, १, महा) । २ एक
पराजल भुनि (उत १२) । ‘एसवल पुं

[किराजल]’ पराजलकुलातरन एक भुनि
(उत, उत १२, १) । ‘एसिज वि
[किराय]’ १ पराजल संबन्धी । २ हरि-

केशवल नामक भुनि का (उत १२) । ‘कंसि
न [काहिसिन्]’ नगर-विशेष (तो २७) ।

‘कंत पुं [नान्त]’ विष्णुसुमार देवों की
बसिए दिशा का इन्द्र (इक) । ‘कंतपवाय,
‘कंतपवाय पुं [कान्ताप्रपात]’ एक ब्रह्म

(ठा २, ३—पत्र ७२, टी—पत्र ७५) ।
‘कंता जी [कान्ता]’ १ एक महानदी (ठा
२, ३—पत्र ७२, सम २७, इक) । २

महाहिमवान् पर्वत का एक शिखर (इक, ठा
८—पत्र ४३६) । ‘केलि पुं [केलि]’
भारतीय देश विशेष (कप्य) । ‘कंसवल देवो

‘एसजल (कुलक ३१) । ‘कंसि पुं
[केशिन्]’ एक जैन भुनि (मृ, १४०) ।
‘गीत न [गीत]’ छन्द का एक भेद (विग) ।

‘गीय पुं [गीय]’ राक्षस-वंश का एक
राजा (पत्रम ५, २६०) । ‘वंद पुं [चन्द्र]’
१ विद्याधर-वरा का एक राजा (पत्रम ५,
४४) । २ एक विद्याधर-कुमार (महा) ।

‘चंदण पुं [चन्दन]’ १ एक प्रसिद्ध जैन
भुनि (संन १८) । २ देखो ‘अंद्ण (प्राप्
१४५, स ३४६) । ‘णयर न [नगर]’

वैशाख की बसिए-अंति में स्थित एक
विद्याधर-नगर (इक) । ‘आल पुं [आल]

क्षीप-विशेष (इक) । देखो ‘आल’ । ‘दास
पुं [दास]’ एक बणिक् का नाम (पत्रम ५,
८३) । ‘धणु व [धनुपु]’ इन्द्र धनुष

(उप ५६७ टी) । ‘पुरी जी [पुरी]’ इन्द्र-
पुरी, समरावती, स्वर्ग (सुपा ६३५) । ‘भह
पु [भद्र]’ एक सुविख्यात जैन भाषावेत्ता तथा

ग्रन्थकार (बिहय ३४, उत १०६६, सुपा १) ।
‘भव पुं [भग्न]’ पाण्य विशेष, वाला चना
(था १८, पत्र १५६; संघोष ४३) । ‘मेल

आ [मेल]’ ब्रह्म-विशेष (भीग) । ‘वइ पुं
[पति]’ नानर-विशेष, सुधीव (से १, १६) ।
‘वंस पुं [वंरा]’ एक सुप्रसिद्ध क्षत्रिय-कुल

(वष्प, पत्रम ५, २) । ‘वस्त, वास पुं
[वर्ष]’ १ क्षेत्र-विशेष (मणु १६१, ठा २,
३—पत्र ६७, सम १२, पत्रम १०२, १०६,

इक) । २ पुन. महाहिमवान् पर्वत का एक
शिखर (ठा ८—पत्र ४३६) । ३ निषध पर्वत
का एक शिखर (ठा ६—पत्र ४५४, इक) ।
‘वाहण पुं [वाहन]’ १ मयुरा का एक

राजा (पठन १२, २) । २ नन्दोदर द्वीप के प्रपराध का मघिष्ठाता देव (जीव ३, ४) ।
 'सह देखो' 'सहद (राज) । 'सेण पुं' ['पेण]
 १ दशार्थ चक्रवर्ती राजा (सम ६८, १५२) ।
 २ भावार्थ नमितापजी का प्रथम ध्यायक
 (विचार ३७८) । 'सहद पुं' ['सह] १
 विष्णुकुमार-देवो की वसिष्ठ दिशा का इन्द्र
 (ठा २, ३—पत्र ८४, ६४) । माल्यवन्त
 पर्वत का एक शिखर (ठा ६—पत्र ४५४) ।

हरि पुं ['हरिन्] १ हर्य रंग, वर्ण-विशेष ।
 २ वि. हरा रंगवाला (छाया १, १६ पत्र
 २८, ८) । ३ जी. एक महा-नवी (सम २७,
 ६८, ठा २, ३—पत्र ७२) । ४ पद्म नाम
 की एक मूर्धना (ठा ७—पत्र ३६३) ।
 'पवात, 'पवाय पुं' ['प्रपात] एक ब्रह्म,
 जहाँ से हरिद नदी निगलती है (ठा २, ३—
 पत्र ७२; टी—पत्र ७५) ।

हरि' देखो 'हरि' (भाग, वि ६८, उत्त ३२,
 १०३) ।

हरिअ पुं ['हरित्] १ वर्ण-विशेष, हरा रंग ।
 २ वि. हरा वर्णवाला (श्रीक, छाया १, १
 टी—पत्र ४, १, ७—पत्र ११६, से ८,
 ४६ गा ६६५) । ३ पुं. एक कार्य मनुष्य-
 नाति (ठा १—पत्र ३५८) । ४ पुंन.
 वनस्पति-विशेष, हरा लुण, सज्जी (पण
 १—पत्र ३०, धौप, पाम, पत्र २, ५०,
 दस १०, ३) ।

हरिअ देखो 'ह्रिअ = ह्रत (कस, महा) ।
 'हरिअ देखो भरिअ = भरित (गा ६३२) ।
 हरिअग } पत्तो ['हरितक] जीरा भादि के
 हरिअय } पत्तो से बना हुआ भोज्य विशेष
 (पत्र २४६, सुज १० टी) ।

हरिआ छी ['हरिता'] द्वार, द्वार, पुण-विशेष
 (से ७, २६; ६, ३१) ।
 हरिआ देखो 'हरि (कुमा) ।
 हरिआल देखो 'हरि-आल ।
 हरिआला छी ['द. हरिताली] द्वार, द्वार
 (दे ८, ६४, पाप, धन, बण, वणु २३) ।
 हरिअस रखो 'हरि-अस ।
 हरिअदण देखो 'हरि-अदण ।
 हरिअदण न ['द. हरिअदण] नृक्ष, केसर
 (दे ८, ६५) ।

हरिअय पुं ['हरितक] कोकण देश-असिद्ध
 वृक्ष-विशेष (पण १—पत्र ३१) ।

हरिण पुं ['हरिण] १ हिरण, मृग (कुमा) ।
 २ छन्द का एक भेद (पिण) । 'च्छी छी
 ['क्षी] सुन्दर नेत्रवाली छी (कण्) । 'रि
 पुं ['रि] सिंह (उप ४ २६) । 'द्वि पुं
 ['धिप] बही (हे ३, १८०) ।

हरिण पुं ['हरिगाङ्ग] चन्द्र, चाँद (हे ३,
 १८०, कण्, सण) ।

हरिणकुम पुं ['हरिणाकुस] चौथे बलदेव के
 गुरु एक जैन मुनि (पठन २०, २०५) ।

हरिणगवेसि देखो 'हरिणगमेसि (पठन ३,
 १०५) ।

हरिणी छी ['हरिणी] १ मादा हिरण, हिरणी
 (पाप) । २ छन्द-विशेष (पिण) ।

हरिणगमेसि पुं ['हरिणगमेसिन्] शक के
 पदाति सैन्य का अधिपति देव (ठा ५, १—
 ३०२, अंत ७, द्रक) ।

हरिहा देखो 'हलिहा (पि ३७२) ।

हरिमथ पुं ['दे] काला बना, वस्त्र-विशेष
 (आ १८, पत्र १५६, सवोष ४३, दे ८, ७०
 डि) । देखो 'हरिमथ ।

हरिमिग पुं ['दे] लघुद, लट्ठी, लाठी, डबा
 (दे ८, ६३) ।

हरियंदपुर न ['हरिचन्द्रपुर] गंधर्वनगर
 (चणपत्र ० श्रवणभरिचय) ।

हरिली देखो 'हिरिली (उत्त ३६, ६८) ।

'हरिह वि ['भरवन्] भारवाला, बोलवाला
 (गा ५४५) ।

हरिस भक ['हृप्] चुशी होना । हरिसह
 (हे ४, २३३; प्राप्र, पद्) । 'हरितिअइ
 कयातावी रहन्भाणीतययवित्तो' (संकोष ४६)

हरिस सक ['हर्ष] हर्ष से रोम खटा करना,
 'लोमादिय' पिण हरिसे सुप्रागारमो मुखी'
 (मुप १, २, २, १६) ।

हरिस पुं ['हर्ष] १ मुल । २ मानन्द, प्रबोध,
 खुशी (हे २, १-२, प्राप्र, गुमा, मय) । ३
 आभूषण विशेष (धौप) । 'उर पुं ['पुर]
 एन धन गच्छ (गुवा ६५८) । 'ल वि
 ['वत्] हर्ष-मुः (प्राट ३५) ।

हरिसण पुं ['हर्षण] प्योतिष अष्टिद एक
 योग (गुवा १०८) ।

हरिसाइय वि ['हर्षित] हर्ष-प्राप्त (पठन
 ६१, ७२) ।

हरिसाल देखो सरिसाल = हर्ष-वत् ।

हरिसिअ वि ['हर्षित] हर्ष-प्राप्त, मानन्दित
 (धौप, भवि, महा, मण) ।

हरी देखो 'हिरौ (मुप १, १३, ६, मय) ।

हरोडई देखो 'हरोडई (प्राट १२, १२) ।

हरे म ['अरे] इन प्रयो का सूचक धम्मय—
 १ आशेष, निम्बा । २ समापण । ३ रति कलह
 (हे २, २०२, कुमा, से ४३०, पि ३३८) ।

हरेडगी देखो 'हरोडई (पंवा १०, २५) ।

हरेणुया जी ['हरेणुया] प्रिष्ठु, मालनांगनी
 (उत्तनि ३) ।

हरेस सक ['हरेप्] गति करना (गाट—
 वेणी ६७) ।

हल न ['हल] हल, जिससे खेत जोतते हैं
 (जवा, जौप) । 'उत्तय पुंन ['युक्तक]
 हल जोतना, 'धमुमे समयमि कयो तेण
 हलजतमो खिते' (मुवा २३७, २३६, सु
 २, ७७) । 'कुडाल, 'कुदाप पुं' ['कुदाल]
 हल के ऊपर का भाग (उवा) । 'धर पुं
 ['धर] बलदेव, राम (पण १७—पत्र
 ५२६, दे २, ५५) । 'धारण पुं ['धारण]
 बलभद्र, राम (पठन ११७, ६) । 'वाहग
 वि ['वाहृ] हलाल, हल जोतनेवाला
 (आ २३) । 'हर देखो 'धर (सम ११३;
 पत्र—पाप ४८; धौप, कुम २५७) ।

'उह पुं ['युध] बलभद्र, राम (पठन
 ३८, २३, ७६, २६) ।

'हल देखो फल = फल (गुवा ३६९, भवि;
 वि १०३) ।

हलअ (मा) देखो 'ह्रिअय = हृदय (चाह ११;
 गाट—मुच्य २१) ।

हलउत्तय देखो 'हल उत्तय ।

हलदा देखो 'हलिदा (हे १, ८८, कुमा;
 हलदी) पद्) ।

हलपप वि ['दे] बहू-भाषी, बाबाल (दे
 ८, ६१) ।

हलबोल पुं ['दे] बलनल, योग्युल, बोलाहल
 (दे ८, ६५, पाप, कुमा, मुवा ८७, १३२;
 हलि १४०; कुम ३६२, विरि ४३३, समत
 १२२) ।

हलहर देखो हल-हर = हल पर ।

हलहल देता हलहल = (हे) । (गा २१) ।

हलहल } पुन [दे] १ तुमुन, कोलाहल,
हलहलअ } शोरमुल (दे ८, ७४, से १२,
८६) । २ कौतुक, कुतूहल (दे ८, ७४,
स ७०४) । ३ त्वरा, हलहली, हलफल,
श्रीमता, 'हलहलपो सरा' (पाप्र म ७०४) ।
४ कौमुद्युक्ता उल्लंघा (गा २१; ७८०) ।

हलहलअ वि [दे] कमित, कापा हुमा
(रिंग) ।

हला म [हला] सबी का भामनल, ह सल
(हे २, १६५, स्वप्न ४०, मति २६, गुमा,
गा ४१, गुपा २४६) ।

हलाहल न [हलाहल] एक प्रकार का उग्र
जहद विप विशेष (प्राप् १८) ।

हलाहला ली [दे] बमणिना, बाहनी, जनु-
विशेष (दे ८, ६१) ।

हलि पु [हलिन्] बलराम, बलमद्र (पउम
७०, १४, कृप १०१) ।

हलिअ वि [हलिअ] हल जीवनेवाला, हपक
(हे २, १७, पाप्र, प्राप्र, गा १०७, ३१७,
१६०) ।

*हलिअ देखो फलिअ (गा ६) ।

हलिआ ली [हलिना] १ छिपलसी । २
बाहनी, जनु विशेष (कप्य) ।

हलिआर देखो हरि आल = हरि-ताल (हे
२, १२१, पद) ।

हलिह पु [हरिद्र, हारिद्र] १ वृक्ष विशेष
(हे १, २४४, गा ६३) । २ वर्ष विशेष,
पीला रंग । ३ न. नाम-कर्म का एक मेद,
जिसके उदय से जीव का शरीर हल्दी के
समान पीला होता है वह कर्म (कम्म १,
४०) । *पच पु [पच] चतुर्दिग्रय जनु
को एक जाति (पण १—पत्र ४६) ।
*मस्य पु [मस्य] मसल को एव जाति
(पण १—पत्र ४७) ।

हलिहा } ली [हरिद्रा] कौपय विशेष, हल्दी
हलिही } (हे १, ८८, २४४, गा ५८, ८०,
२४६) ।

हलीमागर पु [हलिमागर] मसल की एक
जाति (पण १—पत्र ४७) ।

हलुअ वि [लुपुअ] हलका (हे २, १२२,
स ७४५) ।

हलुर वि [दे] सपुण, सपुह (दे ८, ६२) ।
हले म [हले] हे सवि, सखी का संबोधन
(हे २, १६५, कुमा) ।

हल मक [दे] हिलना, चलना । हलति
(सदि ६८) । वड. हलंत (उवकु २१, गुपा
१४, २२३, वज्जा ४०, से ८, ४४) ।

हल पु [हल] एक अनुत्तर-नामी जैन मुनि
(अनु २ पदि) ।

हलअ न [हलअ] पय विशेष, रत्न बहार
(विक्र २१) ।

हलपविअ वि [दे] त्वरित, शीघ्र (पद) ।

हलपफल न [दे] १ हलफल हलबली,
कौमुद्युक्ता, त्वरा, शीघ्रता (हे २, १७४, स
६०२, कुमा) । २ माकुलता, अह उवचते
करिणो हलपफलए' (गुपा ६३६) । ३

वि. कम्पनशील, कापिता, चञ्चल, पात-
द्विभोवि दीवो सहसा हलपफलो जासो'
(वज्जा ६६) ।

हलपफलिअ वि [दे] १ शीघ्र, जल्दी । २
न. माकुलता, व्याकुलता (दे ८, ४६) ।
३ वि. व्याकुल (पर्मनि ५६) ।

हलफल देखो हलपफल (गा ७६) ।

हलपफलिअ देखो हलपफलिअ; 'विमलो
माह सोहण, वो हलपफलो इम' (या १२) ।

हलपवि वि [दे] हिलामा हुमा (गुर ३,
१०६) ।

हलिअ वि [दे] हिला हुमा, चलित (दे ८,
६२, भवि) ।

हलिअर वि [दे] चलन-शील, हिलनेवाला (स
५७८, कृप ३५१) ।

हलीस पु [दे] रासक, मसलानावर होकर
खियों का नाच (दे ८, ६१, भवि) ।

हलुताअ } न [दे] शीघ्रता, जल्दी, त्वरा
हलुत्ताअ } गुवासी में 'उतावत' (भवि,
गुर १५, ८८) ।

हलपफलिअ देखो हलपफलिअ (नय १२) ।

हलोहल देखो हलपफल (उप ४ ७७, या
१६, हे ४, १६६, उर ७२८ टी. मुख १८,
३७, महा, भवि) ।

हलोहलिअ देखो हलपफलिअ (सिरि ६६४;
६३४, भवि) ।

हलोहलिय पुंलो [दे] सरट, निर्गमट । ली.
*या (कप्य) ।

हव मक [भू] १ होना । २ सक. प्राप्त
करना । हवर, हवेइ, हववि (हे ४, ६०,
वप्य, उव महा ठा ३, १—पत्र १०६);
'कि हलुपुआइमममिपो नलो हवइ महलए'
(पर्मनि १७), हवेअ, हवेअ (पि ४७५) ।
वड. हवत, हवेमाण (पद) ।

*हव देखो भव = भव (उप ४६४) ।

हवण न [हवण] होम (विम १४६२) ।

हवि पुन [हविस] १ धूल, धी । २
हवनीय वस्तु (स ६, ७१४, वसनि १,
१०४) ।

हविअ वि [दे] जसिअ, चुपका हुमा (दे ५,
२२, ८, ६२) ।

हव वि [हव] हवनीय वस्तु, होम-योग्य
वस्तु (गुपा १३३) । *वह पु [वह] मगिन,
भाग (उप ५६७ टी. गुपा ४१६, गडक)
*वाह पु [वाह] वही (भाषा), पाप,
सम्मत २२८, वेणी १६२, वर ६, १५) ।

हव वि [अवांच] १ भवर, पर से भव्य,
'नो हव्वाए नो वाराए' (भाषा, सूत्र २, १,
१, ८, १०; १६, २४, २८, ३३) । २ न.
शीघ्र, जल्दी (गाथा १, १—पत्र ३१, उवा,
सम ५६, विपा १, १—पत्र ८, टी १०,
धीप, कप्य, कस) । ३ न. गृहवास (हिन-
ऊ० २-१ ६ कृए) ।

*हव देखो भव = भव्य (गा १६०, ४२०,
४७६) ।

हस मक [हस] १ हँसना, हास्य करना ।
२ मक. उपहास करना, मजाक करना ।
हसइ, हसेइ हसए, हसति, हसति, हसते,
हसिपा, हसह, हसमि, हसमि, हसामो,
हसामु हसह, हसम, हसेपु (हे १, १३६,
१४०, १४१, १४२, १४३, १४४, १४५,
१४८, कुमा) । हसेउ हसु हसु, हसेअनु,
हसेअति, हसेअने, हसेअज, हसेअजा (ह ३,
१५८, १७३, १७४; १७६) । भवि, हसिहिइ
हसिआमो, हसिहिमो, हसिहिमा, हसिहिमा,

हसित (हि ३, १६६, १६७, १६८, १६९)। कर्म, हसीयद्, हसिज्जद्, हसिज्जति (हे ३, १६०, १४२)। वक्, हसंत, हसंत, हसमाण (भीप, हे ३, १४८, १८३; (वड्)। कवक्, हसिज्जंत, हसीअत्त, हसीअमाण, हसिज्जमाण, हसीज्जमाण (हे ३, १६०, उप ५६७ टी, सुर १४, १८०)। संक्, हसिऊण, हसंऊण, हसिउआण, हसिउआणं, हसंउआण, हसंउआणं, हसिऊणं (हे ३, १४७, पि ५८४, ५८५)। हेक्, हसिउं, हसंउं (हे ३, १४७)। कृ, हसिअव्व, हसंअव्व, हण्णीअ (पणह २, ५—पण १४६, हे ३, १४७, वड्, सति ३४, माट—मूच्छ ११४)।

हस भक् [हस] हीन होना, कम होना। हसद् (पंच ३, ५४)।

हस पुं [हास] हास्य (उप १०३१ टी)।

हसण कीन [हसन] हास्य, हंसी (भा, उत ३६, २६२; पंचा २, ८)। औ, 'या (उप २७५)।

हसहस भक् [हसहसाय] १ उत्तेजित होना। २ सुलगना, 'सिगाररसकु (?) श्या मोहमर्कु कुमा हसहवेइ' (सुस १, ८)। वक्, हसहसित (वसनि ३, १५)। संक्, हसहसिऊण (राज)।

हसाय देखो हास = हास्य। हासवद्, हसवेइ (हे ३, १४६)।

हसिअ वि [हसित] १ जिसका उपहास किया गया हो वह (उव ११३)। २ न. हास्य, हंसी (उव २२४)।

हसिअ वि [हसित] हास-प्राप्त, हीन (पच ५, ५३)।

हसिर पि [हसिद्] हास्य-वर्त्त, हंसने की आदतवाला (प्राप गा १७४, उप ७२८ टी, सुर २, ७८, कुमा)। औ, 'री (गउड)।

हसिरिआ औ [दे] हास, हंसी (दे ८, ६२)।

हस भक् [हस] कम होना, नून होना, शीघ्र होना। पर, हसमाण (एाद ८२ टी)।

हस देखो हस = हस्य। हसवद् (धावा १५७)। कर्म, हसवद् (धावा १५७, हे ४, २४६)।

हसस न [हास्य] १ हंसी (भावा १, २, १, २, पच ७२, माट—मूच्छ ६२)। २ पु महाकवित्व नामक देवो का दक्षिण दिशा का द्वाद (ठा २, ३—पण ८५)। 'गय न [गत] कला-विशेष (स ६०३)। 'इद् पु [रति] इन्द्र-विशेष, महाकवित्व-निकाय का उत्तर दिशा का द्वाद (ठा २, ३—पण ८५)।

हसस वि [हस्य] १ लघु, छोटा (सुर २, १, १५, पच ५४)। २ वामन, खर्व (पाम)। ३ धल्प, थोडा (भग, पच ५, १०३, कम्म ५, ८४)। ४ पुं, एक मात्रावाला स्वर (पणह ३६—पण ८४६, विसे ३०६८)।

हसण वि [हर्षण] हर्ष-कारक 'रोमहत्सयो जुडसमहो' (विक्र ८७)।

हसिर देखो हसिर; 'अ-हसिरे सव दत्ते' (उत ११, ४, सुत ११, ४)।

हहद् २ भ [हहद्, हा] १ इन बर्णों का हहद्हा सूचक अण्य—१ शायर्व (प्रयो ७४)। २ लेद, विषय (सिरि ६१२)।

हहा पुं [हहा] १ गन्धर्व देवों की एक जाति (हे ३, १२६)। २ घ. लेद सूचक अण्य (सिरि २६८; ७६७)।

हा भ [हा] इन अर्णों का सूचक अण्य—१ विषय, छेद (सुर १, ६६, स्वप्न २०, मा २१८, ७५४, ६६०, प्रासु २०)। २ शोक, दिलीरी। ३ पीडा। ४ दुःखा, निरा (हे १, ६७, २, २१७)। 'कंद पुं [कन्द] हाहावार (पिग)। 'रव पुं [रव] बहो अर्ण (सुर २, १११)।

हा सक [हा] १ व्याप्य करना। २ गति करना। ३ शीघ्र करना, हीन करना, कम करना। हाइ (पड्)। कर्म, हायद्, हायति (भग, उत), हिज्जद् (मवि) हिज्जउ (प्रयो १०७)। कवट्, हायत्त (णाय १, १० टी—पण १०१), हीयमाण (काल)। सङ्, हाउं (उपड् १०, ११)। दिशा, दिशार्ण (भावा १, ४, ५, १ पि ५८७), हेइ, हेइा (सुर १, २, ३, १, उत १८, ३५),

हेजाण, हेजाणं (पि ५८७)। कृ, हेअ (स ५६५, पचा ६, २७, अण्डु ८, गउड)। 'हा देखो भा—औ (गउड)।

हाअ देखो हा—सक। हाअद्, हाअए (पड्)। हाअ सक [हादय] अतिसार रोग को उत्पन्न करना। हाएज्ज (पिड ६४६)।

'हाअ देखो भाअ = भाग (से ८, ८२, पड्)। 'हाअ देखो पाय = पात (से ७, ५६)। 'हाअ देखो मान = भाव (से ३, १५)।

हाउ देखो भाउ, 'मह वमए महारागविमंति हाभा गुहं भणइ' (गा ८७२)।

हांसल देखो हंसल (राज)।

हारकन्द देखो हा-कंद।

हारलि औ [हानलि] छद्म का एक भेद (पिग)।

हाडहड न [दि] तरकाज, तराण (वय १)।

हाडहडा औ [दि] भारोपणा का एक भेद, आयवित्त-विशेष (ठा ५, २—पण ३२५, निवृ २०)।

हाणि औ [हानि] क्षति, भयचय (मवि)।

हाम भ [दे] हस तरह, हस प्रकार, एवं, 'हाम सए' (प्राक् ८१)।

हायण पुं [हायन] वर्ष, सवत्सर (भीप, णाय १, १ टी—पण ५७)।

हायणी औ [हायनी] मनुष्य की दस वंशभों में छठवीं वंशवत् (ठा १०—पण ५१६, वंडु १०)।

हार सक [हारय्] १ नारा करना। २ हारना, पारान पाला। हारेइ, हारसु (उव; यहा)। वक्, हारित (पुपा १५४)।

हार पु [हार] १ माना, अठारह सर की मोती भादि की माला (वय, राय १०२, उव, कुमा, मवि)। २ हरण, ग्रहहरण (वय १)। ३ द्वीप विशेष। ४ सुगुड विशेष (जीव ३, ४—पण ३६७)। ५ हरण-वर्त्त, 'यदत्त-हार्य' (भावा १, २, ३, ५)। 'पुड पुंन [पुड] कानु-विशेष, लोहा (भावा ३, ६, १, १)। 'भद् पु [भद्] हार-द्वीप का अधिष्ठाता एक देव (जीव ३, ४—पण ३६७)। 'महाभद् पुं [महाभद्] हार-द्वीप का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३, ४)। 'महार पुं [महार] हार-सुगुड का एक

अभिष्टायक देव, 'हारसमुद्र' हारवर-हारवर-
(?हार)महावत् एष्य सो देवा महिहोमा-
(जीव ३, ४—पृथ ३६७)। 'वर' पुं 'वर'
२ हार-समुद्र का एक अभिष्टायक देव। २
दीप-विशेष। ३ समुद्र-विशेष। ४ हारवर-
समुद्र का एक अभिष्टायक देव (जीव ३, ४)।
'वरभद्र' पुं 'वरभद्र' हारवर-दीप का
एक अभिष्टायक देव (जीव ३, ४)।
'वरमहाभद्र' पुं 'वरमहाभद्र' हारवर-
दीप का एक अभिष्टायक देव (जीव ३, ४)।
'वरमहाधर' पुं 'वरमहाधर' हारवर-
समुद्र का एक अभिष्टायक देव (जीव ३, ४)।
'वरावभास' पुं 'वरावभास' १ एक दीप।
२ एक समुद्र (जीव ३, ४)। 'वरावभास-
भद्र' पुं 'वरावभासभद्र' हारवरभास-
दीप का एक अभिष्टायक देव (जीव ३, ४)।
'वरावभासमहाभद्र' पुं 'वरावभासमहाभद्र'
हारवरभास-दीप का एक अभिष्टायक
देव (जीव ३, ४)। 'वरावभासमहाधर' पुं
'वरावभासमहाधर' हारवरभास-समुद्र
का एक अभिष्टायक देव (जीव ३, ४)।
'वरावभासवर' पुं 'वरावभासवर' हार-
वरभास-समुद्र का एक अभिष्टायक देव (जीव
३, ४—पृथ ३६७)।
'हार' देखो भार (पृथ ३६१, अर्थ)।
हारः वि [हारः] नाश-कर्ता (अर्थ १११)।
हारण वि [हारण] ऊपर देखो, 'धम्मप-
कामभोगाण हारणं कारणं कुहलपाणं' (पृथ
२६२; पृथ १० टी)।
हारय देखो हार = हारय्। हारय हि ४,
३१)। अर्थ, हारयिस्स (स ५६६)।
हारविजि वि [हारित] नाशक (हुमा, पुषा
३१२)।
हारा की [दि] लिता, जन्तु-विशेष (दे ८,
६६)।
'हारा' देखो घारा (कृष्, गा ७८३)।
हारि की [हारि] १ हार, पञ्चप (रा ३
५२)। २ वज्र, वेणि (कु ३४४)। ३
धन्व-विशेष (विग)।
हारि वि [हारिन्] १ हण्य-कर्ता (विदे
३२४५; कुमा)। २ मनोहर, चित्तार्थक
(गउ)।

हारिज न [हारिज] १ भोजन-विशेष, जो
कौस भोजन की एक शाखा है। २ पुंल्लि, उस
भोजन में उत्तर (ठा ७—पृथ ३६०; खदि
४६; कृष्)। 'मालगारी की [मालगारी]
एक जैन मुनि-शाखा (कृष्)।
हारिज वि [हारित] १ हारा हुमा, चतु
आदि मे पञ्चजित (पुषा ३६६; महो भावि)।
२ खोया हुमा, उपाया हुमा (बव १; पुषा
१६६)।
हारियंद वि [हारिचन्द्र] हरिचन्द्र का,
हरिचन्द्र-कवि का बनाया हुमा (गउ)।
हारिया की [हारिता] एक जैन मुनि-शाखा
(राज)। देखो हारिज-मालगारी।
हारियायण न [हारितायन] एक भोजन
(कृष्)।
हारी की [हारी] देखो हारि = हारि (उप
पृ ५२, कु ६४४, विग)।
हारीय पुं [हारीय] १ मुनि-विशेष। २ न,
भोजन-विशेष (राज)। 'वध' पुं 'वध'
छन्द-विशेष (विग)।
हारोस पु [हारोप] १ अनाथ देश-विशेष।
२ वि, उस देश का निवासी (पण्य १—
पृथ २८)।
हाल पुं [दे- हाल] रागा सतवाहन, गणा-
समूहों का वर्ता (दे ८, ६६, २, ३६, गा
३, यजा ६४)।
हाल की [हाल] मदिरा, शालू (पाम, कु ३
४०७; रमा)।
हालाहल पुं [दे] मालाधार, माली (दे ८,
७५)।
हालाहल पुंल्लि [हाल्यहल] १ जन्तु-विशेष,
ब्रह्मर्षि, वाग्देवी (दे ६, ६०; वाघ; गा
६२)। की. 'ल्य' (दे ८, ५५)। २ नोद्विज
जन्तु-विशेष (पण्य १—पृथ ५२)। ३
पुंन, स्थावर विष-विशेष (दस ६, १, ७;
गन्ध २, ४)। ४ पुं, रावण का एक मुन
(पउम ५६, ३३)।
हालाहल की [हाल्यहल] एक प्रातोजिक-
मलमुषादिनो कुम्हारिण (कृष् १५—पृथ
६५६)।
हालिज देखो हलिज = हासिक (हि १, ६७;
प्राप)।

हालिज न [हालीय] एक जैन मुनि-गुल
(कृष्)।
हालिह पुं [हारिह] १ हल्दी के तुल्य रंग,
पीला वर्ण (पुषा १०६; ठा ५, १—पृथ
२६१)। २ वि, पीला, जिसका रंग पीला
हो वह (पण्य १—पृथ २५; सृष २, १,
१५; भग, श्रीप)। ३ पुंन, एक देव-विमान
(देवेन्द्र १३२)।
हालिया की [हालिना] देखो हलिआ
(राज)।
हालुज वि [दे] शीव, मत्त (दे ८, ६६)।
हाय सक [हायय्] १ हानि करना। २
र्याग करना। ३ परित्रय करना। ४ लोप
करना; 'अलिनासायादि हायेद' (बव १),
हायए (उत्त ५, २३; सङ्गि २१ टी)। हाव-
इज्जा (उत्त ८, ४१)। वरु, हावित (विदे
२७४६)।
हाय पुं [हाय] गुल का विकार-विशेष (पण्य
२, ४—पृथ १३२; अर्थ)।
हाव वि [दे] जवाल, हुतागो, वेग से दौड़ने-
वाला (दे ८, ७५)।
'हाव' देखो भाय = भाव; 'हैराहाये' (मच्छु
२५)।
हापन वि [हापन] हानि करनेवाला (हि २,
१७८)।
हाविर वि [दे] १ 'जंयाण, हुतागो। २
दीर्घ, लम्बा। ३ मन्दर। ४ विरल (दे ८,
७५)।
हास देखो हस = हस्य्। वरु, 'न हासमागो
वि गिरं वदन्ना' (दस ३, ५४)।
हास सक [हासय्] हँसना। हायेद (हि
३, १४६)। नर्न, हायोम, हासिज्ज (दे
३, १५२)। वरु, हासैव (मीर)। वयट,
हासिज्ज (पुषा ५७)।
हास पुं [हास] १ हास्य, हँसी (मीर, गय
२, ४२; उव, गा ११, १३२)। २ कर्न-
विशेष, जिसके उदर से हँसी भारे वह कर्म
(कर्म १, २१, २७)। ३ मल्लिकार्जुन-शरीर
रस-विशेष (पुषा १३५)। 'वर वि [कर]
हास्य-कारक (पुषा २४१)। 'कारि वि
[कारिन्] बहो (गउ)।

हास पुं [हास] शय हानि (परमंत ११६४)।

हास देवो हरिस = हर्ष (मोघ)।

हाससर देवो हास-सर (मुपा ७८)।

हामहुदय वि [हास्यकुदक] हास्य-जनन
कोतुक वर्ता (रस १०, २०)।

हासण वि [हासन] १ हास्य करानेवाला
(पत्र ७३ टी)। २ हास्य वर्ता (भाषा २,
१४, ५)।

हासा की [हासा] एन देवी (महा)।

हामासिअ } नि [हासित] हँमाया हुमा
हासिअ } (गा १२३; पद्, मुमा, हे
३, १५९)।

हासि वि [हासिन्] हास्य कर्ता (भाषा २,
१५, ५)।

हासिअ वि [हास्य] हँसने योग्य, 'बहु-
भारम पद् मा हु वि जणहासिम कुणु' (गा
६०५, हे ३, १०५)।

*हासिअ देवो भासिअ = भाषित (गट—
विक्र ६१)।

हासीअ न [दे हास्य] हास, हँसी (दे ८,
६२)।

हाहाकार देवो हाहा-कार, 'हाहकारकुहरम'
(पत्रम १७ १०)।

हाहा पु [हाहा] नचर्व देवो की एक जाति
(मुपा ५६ कुमा, धर्म्मि ४८)। २ अ
निलाप, हाहाकार, शोकध्वनि (पाम, भग
७, ६—पत्र ३०५)। *क्य न [कृत]
हाहाकार, शोक-वाद्य (छाया १, १—पत्र
१५७)। *कार पु [कार] वही (महा,
भवि, वेणी १३६)। *मूअ वि [भूत]
हाहाकार की प्राप्त (भग ७, ६—पत्र
२०५)। *ख पु [ख] हाहाकार (महा,
मुपा १३६, भवि)। *हूअ [हूअ] संस्था-
विशेष 'हाहाहूअमग' की चौरासी साल से
मुनने पर जो संस्था लम्ब हो यह (इक)।
*हूअग न [हूअअ] सख्या विशेष,
'अमम' की चौरासी साल से मुनने पर जो
सख्या लम्ब हो यह (इक)।

हि भ [हि] इन भयों का सूचक अ-व्यय—१
अवधारण, निरवध (स्वन १०)। २ हेतु,
कारण (कुमा ८, १७, कण्)। ३ एकम्,

इस तरह (गड ३२४, सण)। ४ विरोध।
५ प्रश्न। ६ संघम। ७ शोक। ८ असूया।
९ पाद-पूरण (कुमा, गड, मा २४२,
२६५, ६०२, ६४८; विग, हे २, २१७)।

हिअ वि [ह्रत] १ मगहृत, छोना हुमा
(छाया १, १६—पत्र २१५, पत्रम ५, ७३,
३०, २०, सुर ६, १७५)। २ नोट, जो
दूसरी जगह से जाया गया हो वह (पाम,
हे १, १२८)। ३ विनष्ट, स्फोटित (पिड
४१५)। ४ घाट्ट, खोंचा हुमा, 'हियहियर्'
(राय)।

हिअ न [हिव] १ मङ्गल, बत्थाण। २
उत्तारक, भसाई (उत्त १, ६, पत्रम ६५,
२१, उव, डा ४, ४ टी—पत्र २८३, प्राप्
१४)। ३ वि. हित चारक, उपचारी (उत्त
१, २८, २६, उव ३२६, ४५०, प्राप्
१४)। ४ स्थापित, निहित (भत ७८)।
*कर वि [कर] १ हितचार्क (डा ६)। २
पुं. दो उपवास (सबोध ५८)। ३ एक
वणिक का नाम (पत्रम ५, २८)। *कार वि
[कार] हित-चार्क (धू १४६)। *यर
देवो 'कर' (पत्रम ६५, २१)।

*हिअ देवो हिअय = हृदय (हे १, २६६,
कुमा, भाषा, कण्)। *इट वि [इट]
मन प्रिय (पत्रम ८५, २३)। *उङ्कायण वि
[उङ्कायन] चित्तार्पण का साधन (छाया
१, १४—पत्र १८७)। २ चित्त की स्थूल
बनानेवाला (विपा १, २—पत्र ३६)।

*हिअ न [घृत] यी (सुख १८, ४३)।

हिअउल (पत्र) देवो हिअय = हृदय (कुमा)।

हिअकर पुं [हितर] राम-पुत्र कुस के पूर्व
जन्म का नाम (पत्रम १०४, २६)।

हिअड } (भग) देवो हिअय = हृदय (हे
हिअडल } ४ ३५०, पि ५६६, सण)।

हिअय न [हृदय] १ धन्त करण, हिया, मन
(हे १, २६६ स्वन ३३ कुमा, गड, द
४६, प्राप् ४४)। २ वक्षः, छाती (से ४,
२१)। ३ पर बह (प्राप्)। *गमणोअ वि
[गमनीय] हृदयम, मनोहर (सम ६०)।
*हारि वि [हारिन्] चित्तार्पण (उव
७२८ टी)।

हिअय देवो हिअ = हित, 'कुदेहि जेहि
जणो भयाणो हिममग्गम्मि' (उव ७६८
टी)।

हिअयंगम वि [हृदयंगम] मनोहर, चित्ता-
वर्षण (दे १, १)।

हिआली यी [हृदयाली] भाव्य-समस्या-
विशेष, श्रद्धार्थ काय विशेष (वज्ज
१२४)।

हिइ ओ [ह्रति] १ मगहरण। २ न, स्था-
नाम्तर में से जाना (सति ५)।

हिएसय वि [हितैपक] हितेष्ठु हित चाहने-
वाला (उत्त ३४, २८)।

हिएसि वि [हितैपिन्] कार देवो (उत्त
१३, १५, उव ७२८ टी, मुपा ४०४,
पुष्क १०)।

हिओ म [एस] गत कल (मनि ५६,
प्राप्, पि १३४)।

हिग पुं [दे] गार, उपर्णित (दे १, ४)।

हिगु पुन [हिङ्गु] १ वृष-विशेष, हींग का
पात्र (एण १—पत्र ३४)। २ हींग, 'डाए
कोणे हिङ्ग संकामण कीणो पुने' (पिड २४०,
स २२५ चार ७)। *सिग पुं [शिय]
अन्तर देव विशेष (दसनि १, ६६)।

हिगुल पुन [हिङ्गुल] पापिव पातु विशेष,
हिङ्गल, सिगरक (एण १—पत्र २५, टी
२, जो ३, सुख ३६, ७५)।

हिगुल पुन [हिङ्गुल] ऊपर देवो (उत्त ३६,
७५, कण्)।

हिगोल पुन [दे] मृतक भोजन कितो के
मरण के उपरन्ध में हो जाओ 'मोनी,
थाइ। २ यन भादि के यात्र के उपलक्ष्य में
बिपा जाता भोजनवार (भाषा २, १,
४, १)।

हिचिअ न [दे] एक पेर से चलने की बाल-
कीड़ा (दे ८, ६८)।

हिजोर न [हिजोर] शूलक, सिकरी,
सर्किल (दे ६, ११६, गड)।

हिंड सक [हिण्ड] १ अमण करना। २
जाना, चलना। हिइइ (मुपा ३८४, महा),
हिङ्गिजा (मोघ २४४)। कर्म. हिंडिज्ज (प्राप्
४०)। वक्र. हिंडत (गा १३८)। क. हिंडि-

यव्य (उप पृ ५०; महा)। संक. हिडिय (महा)। हेक. हिडिउं (महा)।

हिडग वि [हिण्डक] १ भ्रमण करनेवाला (पंचा १८, ८)। २ चलनेवाला (भणु १२६)।

हिडण न [हिण्डन] १ परिभ्रमण, पर्यटन (पचम ६७, १८, स ४६)। २ गमन, गति (उप १०१७)। ३ वि. भ्रमण-योग (दे २, १०६)।

हिडि ओ [हिण्डि] परिभ्रमण, पर्यटन.
‘वातुदेवाणो हिडि’ राय वंशुभवाण वि।
‘शारण्येणि कह हुता न हुंते जह बम्मये’
(बनं १९)।

हिडि पु [हिण्डिन्] रायण का एक मुन्द (पचम ५६, ३३)।

हिडिअ पि [हिण्डिअ] १ पत्ता हुआ, चालित, गत (महा १४)। जहाँ पर जाया गया हो वह, ‘हिडिय भवेसं नाम’ (महा ६१)। ३ न. गति, गमन, विहार (खाया ३, ६—पत्र १६५, भोष २५४)।

हिड्डा पु [दे. हिण्डुक] कामा, जीव, जन्मान्तर माननेवाला कामा, हिन्दु (मग २०, २—पत्र ७७६)।

हिडोल न [दे.] १ खेत में पशुओं को रोक्ने की भाषा। २ खेत की रखा का कन (दे ८, ६६)।

हिडोल देवो हिडोल (स ५२१)।

हिडोलय न [दे.] १ रत्नायली, रत्नमाला। २ खेत की रखा की भाषा, खेत में पशु आदि को रोक्ने का शब्द (दे ८, ३६)।

हिडोलय देवो हिडोल (दे ८, ६६)।

हिवाल पु [हिन्वाल] गुल विशेष (उप १०३१ टी. मुसा)।

हिद स [प्रह.] स्वीकार करना, ग्रहण करना। हिद (प्राह ७०, चाला १३७)। बर्न, हिदिअ (पासा १३७)। सड. दिदिऊण (प्राह ७०, पासा १३७)।

हिदोअ सक [हिन्दोलय] झूठना। वड. हिदोलअन (पणु)।

हिदोल पु [हिन्दोल] हिरोला, झूठना, दोला (पणु)।

हिंदोल न [हिन्दोलन] झूठना, दोलन (पणु)।

हिंविअ न [दे.] एव वर से चनेने की बाल-बोडा (दे ८, ६८)।

हिंस सक [हिंस] १ बच करना। २ पीडा करना। हिंस, हिंसई (भावा, पत्र १२१)। भुव. हिंसिषु (भावा, पत्र १२१)। मवि. हिंसिस्व, हिंसिस्सति, हिंसेही (वि ११६, भावा, पत्र १२१)। वड. हिंसमाण (भावा)। क. हिम, हिंसियव्य (उप ६२५, पणु १, १—पत्र ५, २, १—पत्र १००, उप)।

हिंस वि [हिंस] १ हिंसा करनेवाला, हिंसव (उप ७, ५, पणु १, १—पत्र ५, विसे १७६३, पया १, २३, उप ६२५, स ५०)। *पपाण, *पपाण न [प्रदान] हिंसा के साधन-युत खड्ग आदि का दान (वीन, राज)।

हिंस देवो हिंसा (पणु १, १—पत्र ५)।

*पेहि वि [प्रेत्रिन्] हिंसा की देखनेवाला (डा ५, १—पत्र ३००)।

हिंसअ } वि [हिंसक] हिंसा करनेवाला
हिंसम } (मग, भोष ५५२, उत ३६, २५६; उप, कुप्र २६)।

हिंसण न [हिंसन] हिंसा, ‘अहिंसण सव्व-जियाण बम्मो’ (सत ४२)।

हिंसा ओ [हिंसा] १ बच, पाठ (उपा: महा, प्रायु १४३)। २ पथ, गमन आदि से बच की की जाती बीडा, हैरणी (डा ४, १—पत्र १८८)।

हिंसा ओ [हिंसा] बच का शब्द, ‘गयपजि हयहिंस व वणुरमो मेरि कुम्मा’ (मुसा १६४)।

हिंसिय वि [हिंसित] हिंसा-प्राप्त (राज)।

हिंसिय न [हिंसिण] बच-शब्द (पचम ६, १८०, एत ३, १ टी)।

हिंसी ओ [हिंसी] सता विशेष (पणु)।

हिंहु पु [दे.] हिंहु, हिंहुमान का निवासी (विण)।

हिंषा ओ [दे.] रजरी, रोजिन (दे ८, ६६)।

हिंषा ओ [हिंषा] रोप-रक्षेण, हिंषरी (मुसा ४८६)।

हिंकास पु [दे.] पङ्क, कावा (दे ८, ६६)।

हिंकिअ न [दे.] हेगा रत, मय रज (दे ८, ६८)।

हिंज देवो हर = ह।

हिंज देवो हा।

हिंजा } म [दे. हास] गत बल (पणु;
हिंजो } दे ८, ६७, पाम; प्रयो ११, वि १३४)।

हिंजो म [दे.] प्राणामी बल (दे ८, ६७)।

हिंहु वि [दे.] माहुल (दे ८, ६७)।

हिंहु देवो हेहु (मुस ४, २२५; महा; मुसा ६८)।

हिंहु देवो हेहु = हट (उप, सम्मत ७५)।

हिंहुहिड वि [दे.] माहुल (दे ८, ६७)।

हिंदिम देवो हेदिम (सिदि ७०८, मुस १०, ५ टी)।

हिंदिम देवो हेदिम (सम ८७)।

हिंदिन पु [हिंदिन] १ एव विद्यापद राजा (पचम १०, २८)। २ एव रासत (वेणी १७७)। ३ देरा विशेष (पचम ६८, ६५)।

हिंदिवा ओ [हिंदिम्या] एक राजसी, हिंदिम्य रासत की महिन (हि ४, १६६)।

हिंदोलय देवो हिंदोलय (दे ८, ७६)।

हिंहु वि [दे.] बामन, सर (दे ८, ६७)।

हिंदिद वि [भणित] उर, बसिब, ‘सणुणा-हणिया देमरनामा ह गुदम कि दि दे ह-हणिया’ (या ६६१)।

हिंण सक [प्रह.] ग्रहण करना। हिंणद (पाला १५७)।

हिंणय (पय) देवो हीण (विण)।

*हिंण देवो भिण (या १६१)।

हिंतअ } (प) देवो हिअअ = हदय (मग-
हितप } पद, पाप १६, वि २५४, ह ४, ३१; मुसा: प्राह १२४)।

हिंय वि [दे.] १ सजित (दे ८, ६७, पणु ६)। २ नन्द, मय-भोव (दे ८, ६७, हे २, १३६-आज. या ३६६; ७६१, मुस १६, ६१-मुसा)। ३ हिंयन, भाग हुना ‘हिंयो मरु हिंयो म पणो, भिंयं म न भिंयं भोम’ (सम १)।

हिंया ओ [दे.] मय, रतन (दे ८, ६७)।

हिदि भ [हिदि] हृदय में 'हिदि निष्कटाडय' (विसे २२०)।

हिदि वि [दे] सत्त, रिसवा हृमा, रिसवा वर गिरा हृमा (पद)।

हिम न [हिम] १ तुवार, धाकना से गिरता जल कण (पात्र, धावा, से २, ११)। २ चन्दन शीतल (से २, ११)। ३ शीत, ठंडी, जाड़ा (हृह १)। ४ बर्फ, जमा हुआ जल (कण, जो ५)। ५ धुं, छठवीं नरक-पुण्यी का पहला नरक-नगर—नरक त्पान (देवन्द १२)। ६ शत्रु विशेष, मार्गशीर्ष तथा नीच का सहोना (जय ७२८ थे)। ७ कर दु [कर] चन्द्रमा, चंद (दुवा ५१)। ८ गिरि दु [गिरि] हिमाचल पर्वत (कुमा, जवि, सण)। ९ धाम दु [धामन] बड़ी (पम् ६ थे)। १० नाग दु [नाग] बड़ी (उप ३ ३५)। ११ पर देको 'वर (पाम)। १२, 'वंत दु [वन्त] १ वर्षर पर्वत विशेष, 'हिमको म महाहिमको' (पवन १०२, १०५, उवा, कण, इके)। २ हिमाचल पर्वत (वि ३६६)। ३ राजा अक्षयकुण्डि का एक पुत्र (अत ३)। ४ एक प्राचीन जैन मुनि, जो लम्किलचार्म के शिष्य थे, 'हियललमाहमो मेरे' (एदि ५२)। ५ धाम दु [धाम] तुवार-गहन (धावा)। ६ शीतल दु [शीतल] कृष्ण पुद्गल विशेष (सुज २०)। ७ शीतल दु [शीतल] हिमालय पर्वत (उप २११ दो)। ८ गाम दु [गाम] शत्रु विशेष, हेमवत शत्रु (गा ३१०)। ९ नी की [नी] हिम समूह (दुप ३६७)। १० शील दु [शील] हिमालय पर्वत (दुवा ६३२)। ११ लय दु [लय] बड़ी धर्म (पवन १०, १३, गड १)।

हिर देको हिर = हिल (हे २, १८६, कुमा)।

हिरडी की [दे] चोत पत्नी की माया (दे ८, ६८)।

हिरण्य न [हिरण्य] १ रजत, चांदी हिरण्य (उवा, कण)। २ सुवर्ण, सोना (मावा, कण)। ३ प्रत्य, धन (सुम १, ३, २, ८)। ४ 'हर पु' [हिर] एक दैत्य (से ४, २२)। ५ गम पु [गम] १ बहा। २ प्रपन जित काना (जय १०६, १२)।

भानद्विभस्त जस्त उ

हिरण्यकुटी सचिणा पडिया।

तेणे हिरण्यकुटी

वचमि जगिज्ज उतमो।

(पत्र ३, ६८)।

हिरि भक [हिरि] सजित होना। हिरिभामि (पमि २५५)।

हिरि देको हिरि (छाया १, १६—पत्र २१७, पद)। १ म वि [मन्] सजातु शरमिन्दा (उत ११, १३, ३२, १०३, पिड ५२६)। २ 'वेर पु' [वेर] तुल-विरोध, तुल्यभाव (पात्र, उत्तमि ३)।

हिरि पु [हिरि] मातृ मातृ का शब्द (पत्र ५५)।

हिरिजि वि [हीत] सजित (हे २, १०५)।

हिरिआ की [हीना] सजना, शरम (उप ७०६, कुमा)।

हिरिय न [दे] पत्तल, लुट ललाव (दे ८, ६६)।

हिरिमंथ दु [दे] खना, धन-विशेष (दे ८, ७०)। देको हिरिमंथ।

हिरिली की [दे] कन्द-विशेष (उत ३६, ६८)।

हिरियंग पु [दे] लड्ड, लड्डी (दे ८, ६३)।

हिरि की [ही] १ सजना, शरम (मावा, हे २, १०५)। २ महापद्म हृद की प्रविष्टाणी (उवा २, ३—पत्र ७२)। ३ उत्तर अक्षक पर्वत पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ५३७)। ४ सतगुरु नामक किमुयेन्द्र की एक प्रभ महीपी (ठा ५, १—पत्र २०५)। ५ महाहिमवान् पर्वत का एक कूट (इके)। ६ देवप्रतिमा विशेष (छाया १, १ टी—पत्र ५३)।

हिरिअ देको हिरिजि (हे २, १०५)।

हिरि देको हुरे (प्राप्र)।

हिरल की [दे] डुवा, हाथ,

“बचमो मेच्छता पण्डवपावरस-

सद्धिबिहामो।”

(दुष्वी० वं०-न्यायसुदि)

आहनिहिलामो वि शासुमा।

(दुष्वी० वं० प्रथमभव, सवेतकार २०८ प्रमकुत)।

हिरल } की [दे] काडवा, वातू रेकी (दे ८, हिरल } ६९)।

हिरिय पुत्री [दे] कौट-विशेष, कौटिय जन्तु की एक जाति (पराए १—पत्र ५५)।

हिरिरी की [दे] मछली पकने का जात-विशेष (विपा १, ८—पत्र ८५)।

हिरिल्ली की [दे] लहरी, तरङ्ग (दे ८, ६७)।

हिरिहण न [दे] खेत में पशुओं की रोने की मावाज (दे ८, ६६)।

हिय देतो हय = भू। हिय (हे ४, २१८)।

हिसोहिमा की [दे] सर्पा (दे ८, ६९)।

ही भ-[ही] इन धर्मों का सूचक अर्थ— १ वित्तय, धार्य (सिदि ४७३)। २ दुःख (उप ५६७ थे)। ३ विवाद, लोह। ४ शोक, विलसीरी (पा १६; दुप ५३६, कुमा; रंभा मन ३७)। ५ वित्त (सिदि २६८)। ६ कन्दरों का अतिरेक। ७ प्रशान्त भाव का अर्थय (मणु १३६)।

ही केलाहिरि (विदे २६०३)। १ म दि [मन्] सजनाशील, सजातु (सुम १, २, ३, १८)।

ही म [ही] मनासर-विशेष, मायावीज (सिदि १२१०)।

हीण वि [हीन] १ मूल, कच, मणुण (उवा, छाया १, १५—पत्र १६०)। २ खिल, बजित, 'हय नाए कियाहीण' (हे २, १०५)। ३ प्रथम, हलना। ४ मिथ, निन्दनीय (मणु १२५, उप ७२८ थे)। ५ पु, प्रतिबन्ध विशेष (हे १, १०३)। ६ जाइल वि [जातिक] प्रथम जाति का, नीच जाति का (उप ७२८ थे)। ७ बाइ दु [वादिन] वादि विशेष (दुवा २८२)।

हीण वि [हाण] शीत (विपा १, २ टी—पत्र २८)।

हीमागदे १ (ही) अ. १ वित्तय, धार्य।

हीमादिके १ निर्वेद (हे ४, २८२, कुमा, प्राक ६६, मृच्छ २०२, २०६)।

हीयमाण देको ह्य।

हीयमाण १ न [हीयमाण] अविविधन [हीयमाण] का एक भेद, क्रमशः कम होता जाता अविविधन (ठा ६—पत्र ३००, खदि)।

हीर देवो हर = हर (हे १, ५१, कुमा, पट्)।

हीर पुं [हीर] १ विषम भंग, असमान छेद (पण १—पत्र ३७)। २ वारोव कुत्तित घृण, नन्द भादि ये होरी वारिष रेखा (लोच २, ५, धी १२)। ३ पुन, होरा, मणि-विशेष (स २०२, सिरि ११८६; नपू)। ४ छद्वय विशेष (पिग)। ५ दाढा वा म्रम भाग (स ४, १४)।

हीर पुं [हे] १ सूर की तरह सीधस मुंह वाला बाण भादि पदार्थ (दे ८, ७०, वस)। २ मत्स (दे ८, ७०)। ३ प्राप्ति, मत्स भाग (गठ)।

हीरंत देवो हर = ह।

हीरणा क्षी [दे] लाज, शरम (दे ८, ६७, पट्)।

हीरमाणा देवो हर = ह।

हील सक [हेलय] १ भवसा करना, विरत्कार करना। २ निन्दा करना। ३ बदर्थन करना, पीडना। हीलइ (उप, सुख २, १६), हीलति (दस ६, १, २, प्राप्ति २६)। वरु, हीलंत (सट् ८६)। वरु-हीलित्जंत, हीलित्जमाण (उप पृ १३३; छाया १, ८—पत्र १४४; प्राप्ति १६५)। ह, हीलित्ज (छाया १, १), हीलित्जन्त (पण २, १—पत्र १००, २, ५—पत्र १५०)।

हीलण क्षीन [हिलन] १ भवसा, विरत्कार। २ निन्दा (सुप १०५)। क्षी, 'णी' (पण २, १—पत्र १००; मीप, उप, दन ६, १, ७, सट् १००)।

हीला क्षी [हिला] ऊपर देखो (उप, उप पृ २१६; उप १४२ टी)।

हीलिज पि [हीलित] १ निन्दित। २ धमामित, विरत्कार (सुप २, १७, मीप ५२६, वस, दस ६, १, ३)। ३ पीडित, बदर्थत (भाषा २, १६, ३)।

हीसमग ॥ [दे, हेपन] हेपास, पद—पोडे का शब्द (दे ८, ६०, हे ४, २५८)।

हीही (री) म, गिरुत का हर्ष-मूषक हीहीमो १ मन्मथ (हे ४, २८३, कुमा, प्रा ६५, मोह ५१)।

हु घ [खल] इन धवों का लोचक अव्यय—

१ नियय (हे २, १६८; स १, १५; कुमा; प्रा ७८; प्राप्ति ५५)। २ ऊह, वितर्क (हे २, १६८; कुमा; प्रा ७८)। ३ संशय, संदेह (हे २, १६८, कुमा)। ४ संभावना (हे २, १६८; कुमा; प्रा ७८)। ५ वित्तय, भावय (हे २, १६८; कुमा)। ६ किन्तु, परन्तु (प्राप्ति १०१)। ७ भवि, भो, 'हु भविसद्वयमि म ति' (धर्मसं १५० टी)। ८ काय्य की शोभा (पंचा ७, ३५)। ९ पावर्तित, पाद-पूरण (पत्रम ८, १४६, कुमा)।

हु १ देखो हय = भू। हुमह, हुएह, हुति, हुज (हुहरे, हुमहरे, हुजज, हुएज, हुएहरे, हुएजहरे (पि ४७६; हे ४, ६१, पि ४५८; ४६६)। भवि, हुक्कामि, होक्कामि, हुक्क (उत्त २, १२, सुख २, १२)। वरु, हुत (हे ४, ६१, सं ३४)।

हुज देवो हुण—हु। हुमह (प्रा ६६)। वरु, हुजंत (भाषा १५७)।

हुज पि [हुत] १ होमा हुमा, हवन किया हुमा (सुप २६९, स ५५, प्रा ७६)। २ म, होम, हवन (मृम १, ७, १२; प्रा ६६)। 'वह पुं [वह] भगिन, माग (गा २११, पास, लाया १, १—पत्र ६१, गठ)। 'स पु [स] भगिन (गठ, मरु १५०, भवि, हि १३)। 'सन पु [सान] यही धर्म (मग, स ५, ५७, पास)। हुज देवो हुज—युव (प्राप्ति, कुमा, भवि, सण)।

हुजंग देवो भुजंग, 'चंदनद्विधुस हुसंगभूमिमा नि सु द्वेति' (गा ६२६)।

'हुजंग देवो सुजंग (गा ८०६; पि १८८)।

हु घ [हुम] इन धवों का लोचक अव्यय— १ दान। २ वृद्धा, प्रत्य (हे २, १६०, प्राप्ति ५५)। ३ निवारण (प्राप्ति, रमा)। ४ स्वीकार (या १२, कुम ३५२)। ५ हुटार, 'हुं छन्द, 'हुं बरति पूषा' (सुग ५४२)। ७ धनार (गिरि १३३)।

हुंन पुं [दे] भगति, प्रणाम (दे ८, ७१)।

हुंकार पुं [हुकार] १ मनुमति-प्रकाशक शब्द, हुं (विते ५६५, से १०, २४, गा ३५६; भासमानु ६)। २ 'हुं' भावान, 'हुं' ऐसा शब्द (हे ४, ४२२, नपू, सु १, २४५)। हुंनारिय न [हुंनारित] 'हुं' ऐसी की हुई भावान (स ३७७)।

हुंकरिय पुं [दे] भगति, प्रणाम (दे ८, ७१)। हुंन न [हुण्ड] १ शरीर की मारुति-विशेष, शरीर का देहव प्रदय (ठा ६—पत्र ३५७, सम ४४, १४६)। २ नर्म विशेष, जिसके उदय से शरीर का मन्त्रयम संपूर्ण बैठक—प्रमाण-मूल्य मन्त्रयमित्यत यह कर्म (मम १, ४०)। ३ वि, बैठक भगवाला (विपा १, १—पत्र ५)। 'यसपिपणी क्षी [यसपिपणी] वर्तमानहीन समय (विचार ५०३)।

हुंक्षी क्षी [दे] पटा (पास)। हुंनपट्ट पुं [दे] वानप्रस्थ वारस की एक जाति (मीर, मग ११, ६—पत्र ५१५; ५१६)।

हुंहुय मग [हुं'हुं + क] 'हुं' 'हुं' भावान करना। वरु, हुंहुयंत (विर ५६०)।

'हुंय देवो पट्टय = प्र + भू। हुंन देवो होठ (भाषा, पि ८४, ३६८)। हुंन पु [दे] १ मेघ, मेड़ा (दे ८, ७०)। २ धान, कुता (वृज २५३)।

हुंहुज पु [दे] प्रवाह (दे ८, ७०)।

हुंहुका पुंक्षी [दे, हुहुका] भाव विशेष (मीर, नपू, सण, विक ८७)। क्षी, 'का' (पास, सुपा ५०, १७५; २४२)।

हुंहुम पु [दे] वताप, पना (दे ८, ७०, पास)।

हुंहु पुंक्षी [दे] होह बाजो, वण, शं, दाव। क्षी, 'हुं' (दे ८, ७०, सुग २०६, पत्र २८), हुंहुहुं पुंक्षी (सम्यत १५१)। दपो होह।

हुंन सक [हु] होन करना। हुण (हे ४, २४२, मग ११, १—पत्र ५१६, कुमा)। नर्म, हुणद, हुणिकर, हुणिकर (हे ४, २४२, कुमा)। वरु, हुणिकरमान (सुग ६०)। वरु, हुणिकर, हुणिकर, हुणिसा (पट्, मा ११, ६—पत्र ५१६)।

हुणण न [हयन] होम (मुवा ६३) ।
हुणिअ देखो हुअ = हुत (मुवा २१७, मोह १०७) ।

हुत्त वि [दे] भूमिमुख, समुख (दे ८, ७०, हे २, १५८, गजड, भवि) ।

हुत्त देखो हुअ = हुत (हे २, ६६) ।

हुत्त देखो हुअ = भूत (गा २४५, ८६६) ।

हुमथा देखो भुमआ (गा १०५, पि १८८) ।

हुर देखो फुर = रुद्र । वक्र. 'कवीए हुरवीए' भादि (कुप ४२०) ।

हुरड पुंजी [दे] घुण भादि से कुछ कुछ पकामा हुमा बना भादि धाम्य, होला—होपहा (मुवा १८८; ४७३) ।

हुरथा म [दे] बाहर (भापा १, ८, २, १; ३, २, १, ३, २, कस) ।

हुरूडी बी [दे] विपादिका, रोम विशेष (हे ८, ७१) ।

हुल सक [क्षिप्] फँकना । हुलह (हे ४, १४३, पद्) ।

हुल ह [सृज] मार्जन-करना, साफ करना । हुलह (हे ४, १०५; पद्) ।

हुलण वि [मार्जन] सफा करनेवाला (कुना ६, ६८) ।

हुलण न [क्षेपण] फँकना (कुमा) ।

हुलिअ वि [दे] १ शीघ्र, वेगभुक्त; 'मह पणहुलिअ' (दे ८, ५६) । २ न. शीघ्र, जल्दी, घुरत (पणह १, १—पत्र १४, स ३५०, उप ७२८ दी) ।

हुलमुलि बी [दे] बपट, दम्भ (नाट—मुच्छ २२२) ।

हुलुली बी [दे] प्रसव-गरा, निवट-मलिय में प्रसव करनेवाली बी (दे ८, ७१) ।

हुल देखो फुल = फुल (भवि) ।

हुय देखो हुण = हु । हुवह (भाऊ ६६) ।

हुय देखो हय = हु । हुवि (हे ४, ६०, भाव) । भूरा, हवीम (कुमा ५, ८८) । भवि, हुविस्वि (पि ४२१) । वक्र. हुवंत, हुयमाण, हुयेमाण (पद्) । सङ्. हुविअ (नाट—पेट ५०) ।

हुय (भा) देखो हुअ = भूत (भवि) ।

हुय (पा) देना दुअ = हुत (भवि) ।

हुय देखो हुण = हु ।

हुण्वत देखो घुण्वत = घुव = पाव (से ६, ३४) ।

हुस्स देखो हुस्स = हस्स (भाचा, घीय, सम्मत १६०) ।

हुहुअ पुंन [हुहुक] देखो हूहूअ (भणु ६६; १७६) ।

हुहुअंग पुंन [हुहुनाङ्ग] देखो हूहूअंग (भणु ६६, १७६) ।

हुहुर म [हुहुर] भुवरण-शब्द-विशेष, 'हुहुर' ऐसा शब्द (हे ४, ४२३; कुमा) ।

हुअ देखो भूअ = भूत (हे ४, ६४, कुमा; था १४, १६, महा, सार्थ १०५) ।

हुअ वि [हुत] माहूत, माकारित (हे २, ६६) ।

हुअ देखो हुअ = हुत, 'मले पचसरो पुरा भावया ईसेण हूयो सयं, कोहवेण सपानुगोवि सपणुदोवि खित्तानवे' (रंभा २५) ।

हुण पुं [हुण] १ एक भनार देस । २ वि. उसका निवासी अनुष्य (पणह १, १—पत्र १४, कुमा) ।

हुण देखो हीण = हीन (हे १, १०३, पद्) ।

हुम पुं [दे] लोहार (दे ८, ७१) ।

हुसण देखो भूसण (गा ६५५, पि १८८) ।

हुहू पुं [हुहू] गण्य देखो की जाति (धर्मवि ४८, सुभा ५६) ।

हुहूअ पुन [हुहूक] सख्या-विशेष, 'हुहूअ' को बीरासी लाख से घुनने पर जो संख्या सम्य हो वह (ठा २, ४—पत्र ८६, भणु २४७) ।

हुहूअंग पुंन [हुहूकाङ्ग] सख्या-विशेष, 'भनव' की बीरासी लाख से घुनने पर जो संख्या सम्य हो वह (ठा २, ४—पत्र ८६, भणु २४७) ।

हे म [हे] इन धनो वा सुनक धन्यय—१ संतोष । २ भाता । ३ भणुआ, ईर्ष्या (हे २, २१७ डि, पि ७१, ४०२, भवि) ।

हेअ देखो हा = हा ।

'हेअ' देखो अय = अय (गा ८२७) ।

हेअंगीण न [हियङ्गीण] १ नयनीय, मकल । २ खाना पी (नाट—साहित्य २२६) ।

हेआल पु [दे] हस्त विशेष में निपेय संप

के कण की तरह किए हुए हाथ से निवारण (दे ८, ७२) ।

हेउ पुं [हेउ] १ कारण, निमित्त, 'हेउई' (राय २६; जवा; पणह २, २—पत्र ११४; वय; गजड, जो ५१, महा, पि ३५८) । २ अनुमान-वाक्य, पंचावय वाक्य (उत्त ६, ८; सुख ६, ८) । ३ अनुमान का साधन (धर्मसं ७७; ठा ४, ४ टी—पत्र २८३) । ४ प्रमाण (भणु) । 'वाय पुं [वाइ] १ बारहवाँ जैन ग्रंथ पद्य हट्टिवाद (ठा १०—पत्र ४६१) । २ तर्कवाद, बुक्तिवाद (सम्म १४०, १४२) ।

हेउअ वि [हेउफ] १ हेउवाद को माननेवाला, तर्कवादी, 'जो हेउवापपलम्मिहेउयो भ्रागमे य भ्रागमिओ' (सम्म १४२, उवर १५१) । २ हेउका, हेउ से सबध रखनेवाला । बी. 'उई' (हिंसे ५२२) ।

हेउ } देखो हा = हा ।

हेअ देखो हर = ह ।

हेट्ट बी [अधस] मोके, गुजराती में 'हेट्ट', 'गगोहेहेट्टिम' (पुर १, २०५; पि १०७; हे २, १४१, कुमा, गजड), 'हेट्टो' (महा) । बी. ठा (भीप, महा, पि १०७, ११४) । 'सुइ वि [सुइ] भगवाइ, जितने मुह गोपा किया हो वह (विवा १, ६—पत्र ६८, हे १, ६३; भवि) । 'पणि वि [अयनी] महाराष्ट्र देश का निवासी, मरहटा—मरहटा (पिट ६१६) ।

हेट्टिम } वि [अधस्तन] मोके का (सम हेट्टि) १६, ४१; भा. हे २, १६३, सम ८७, पद्; भीप) ।

हेटा बी [दे] १ पटा, समूह (मुपा ३८६; ५३०) । २ घूत भादि खेतने का स्थान, प्रसाध (धम्म १२ दी) ।

हेडिस } (भयो) देखो एरिस (पि १२१) ।

हेडिअ वि [दे] जनव, ऊँचा (पद्) ।

हेम न [हेम] १ घुणए, घोना (पाम, जं ४, भीप; संधि १७) । २ पत्तुरा । ३ गाने का परिमाण । ४ घुं. बाला घोडा । ५ वि. पडित (संधि ७) । ६ घुं. एर पिणापर राजा (पत्र १०, २१) । 'वंय पुं [वंयट्ट] १-२ विषम की वारणी । ३ के

मुप्रसिद्ध जैन भाषार्थ तथा ग्रन्थवार (दि ८, ७७, गुप्ता ६५८) । ३ विक्रम की पनरुवी शताब्दी का एक जैन मुनि (सिद्धि १३४१) ।
 *जाल न [जाल] मुखर्ण की माता (भूप) ।
 *विलय पु [विलक] विक्रम की चौदहवीं शताब्दी का एक जैनभाष्य (सिद्धि ३५०) ।
 *पुर न [पुर] एक विद्यापनगर (इक) ।
 *मय वि [मय] सत्ते का बसा हुआ (गुप्ता ८८) । *महिहर पु [महिधर] मरु पर्वत (गण्ड) । *मालिनी श्री [मालिनी] एक दिगम्बरी देवी (इक) । *व पु [वन्] फाल्गुन मास (मुन १०, १६) । *विमल पु [विमल] एक जैन भाषार्थ (कुम्भा ३३) । *भ पु [भ] चौथी नरक-भुविणी का एक नरक-स्थान (निर १, १) ।

हेमंत पु [हेमन्त] १ श्रद्धा विशेष मननिर या अगहन तथा वीस का पूष महिना (पाम भाषा बन्नु कुमा) । २ शीतकाल (इस ३, १२) ।

हेमंत वि [हेमन्त] हेमत ज्ञान में अवलम (गुज १२—पत्र २१६) ।

हेमन्तिअ वि [हेमन्तिक] ऊपर देखो (बन्नु, भूप, गा ६९, राम ३८) ।

हेमग वि [हेमक] हिम का, हिम सवन्धी (ठा ४—पत्र २८७) ।

हेमग्रह पु [हेमनर] १ वर्ष विशेष, लोक-हेमग्रह विशेष (इस सम १२, पत्र ४—पत्र २६६, ३००, ठा २, १ टी—पत्र ६७, पत्रम १०२, १०६) । २ हिमवत पर्वत का एक स्थान । ३ बृहत् विशेष (इक) । ४ वि, हिमवत पर्वत का (पत्र ७४, भूप) । ५ पु, हिमवत क्षेत्र का अग्निवाता देव (ज ४—पत्र १००) ।

हेम देवो हेम (सिद्धि १७) ।

हेर स [हे] १ देवता, त्रिशूल धरता । २ राजा, अश्वेय करता । बह, हेरत (सिद्धि) । चर हेरऊन (धर्म ३५) ।
 हेर पु [हे] १ मरिच, मेवा । २ हिमवत माघ महिने (दि ८, ७६) ।

हेरणन पु [हेरणन] १ वर्ष विशेष, एक कुम्भा १२ (इस पत्रम १०२, १०६) । २ रवि पर्वत का एक स्थान । ३ स्थान पर्वत का एक स्थान (पत्र २१८) ।

हेरणिअ पु [हेरणिअ] मुखर्णकर (पत्र २१०) ।

हेरअय देखो हेरणनय (ठा २, ३—पत्र ६७, ७६) ।

हेरिअ पु [हेरिक] गुप्त चर, जामुस (गुप्ता ४६५, ५८६) ।

हेरि वि [हेरन्] विनायक, गणेश (दि ८, ७२, पत्र ५) ।

हेमनाल सन [हे] क्रुद्ध करना, गुस्सा उठाना । हत्याकर्म (पामा १, ८—पत्र १४४) ।

हेला श्री [हेला] १ श्री की गृहकार-सकची वेष्ट विशेष (पाम) । २ अनादर (पाम ते १, ५५) । ३ अनायास, अल्प प्रयास सहसाई, सरलता (सि १, ५५, बन्नु, प्रवि ११, वि ३७५) ।

हेला श्री [हे-हेला] वेग शीघ्रता (दि ८, ७१, बन्नु, प्रवि ११, वि ३७५) ।

हेलिय पु [हेलिक] एक तरह की मछली (जोब १ टी—पत्र ३६) ।

हेलुअ न [हे] खुल खीर (दि ८, ७२) ।

हेलुवा श्री [हे] हिंस, हिंसकी (दि ८, ७२) ।

हेलि (मप) म [हेले] छापी का सामान्य, हे छवि (हे ४, ४२२, ३७८, वि १०७) ।

हेय (मयो) देखो हेय (वि ३३६) ।

हेयाग पु [हेयाग] स्वभाव, आदर (पत्र) ।

हेसमण वि [हे] उन्नत, ऊँचा (पत्र) ।

हेसा श्री [हेसा] धरन राज्य (गुप्ता २८८, या २७) ।

हेसिअ न [हेपिन] ऊपर देखो (दि ८, ६८, पत्रम ५४, २०, शीघ्र, महा भवि) ।

हेसिअ न [हे-हेपिन] उन्नत, चीलार (पत्र) ।

हेदभुअ वि [हे] दुष्-शेष के ज्ञान से रहित धीर निर्द्वन्द्व, धन विन्नायक (वव १) ।

हेदय पु [हेदय] १ एक राजा (राज) । २ *दिन पु [हेदय] एक विद्यापन राजा (पत्रम १०, २०) ।

हो देखो हय=पु । होद, हयद, होमद, होवर होडि हावर होमरे (ह ४, ६०, पत्र, बन्नु, उर, महा, वि ४२८, ४७३) । होअ, होअ, होअ, होअ, हाउ (हे ३,

१५६, १७७, भग, प्राय, वि ४६६) ।

भुका, होत्या, होहोम (बन्नु, प्राय) । भवि, होहिद, हाहिदि, होहोमि, होहिमि, होत्स, होत्सामि, होत्सद, होत्स (हे ३, १६६, १६७, १६६, प्राय, वि ५२१) ।

होसद (मप) (हे ४, ३८८) । कर्म होसद, होसद, होसद (पत्र, वि ४७६) । वहु, होव, होमाण (हे ३, १८०, ४, ३४५, ३७२, कुमा, वि ४७६) । सक, होऊण, होऊण, होअऊण, होइऊण, हजिय, होत्ता (गण्ड वि ५८५, ५८६, कुमा) ।

हो होउ, होत्ता (महा, वि ४७५, बन्नु) ।

हो होउव (बन्नु, महा, उर, प्राय १६, ६१) ।

हो म [हो] इन धर्मों का सूचक शब्द—१ विस्मय, आश्चर्य (पाम, नाट—मुग्ध ११२) ।

२ सतीधन, मानवण (सति ४७, उर ५६७ टी) ।

होउ वि [होउ] दाम-नता (गा ७२७) ।

होउ देला हु ड (विचार ५०७) ।

होउ पु [ओउ] होउ, मोठ (मावा) ।

होउ देखो हुड, 'तो ह धर्म होइयो' (गुप्ता २७७, २७८) ।

होउ पु [होउ] मोन, मोरी की बन्नु (पामा १, २—पत्र ८९, विड ३८०) ।

होण देखो हुन=हुण (पत्र २७४, विचार ४३) ।

होसिय पु [होसिय] १ मानव्यताका वा एक वर्ष, अतिहोसिय मानव्यता (भौत, मय ११, ६—पत्र ५११) । २ म, हुण-सिरेन (एण १—पत्र ३३) ।

होम पु [होम] हवन, अति में मानव्यता पुत यादि का अश्व (मनि १५६) ।

होम स [होमय] होम करना । हेर, होमिरे (टी ८) ।

होमिअ वि [होमिअ] हवन किया हुआ 'महोमिअयुद्धमहोमिअयुद्धम' (गण्ड ८) ।

होमिअ श्री [होमिअ] वद स्थित, महा-वका, वका होन (पत्र ४६) ।

होमिअ न [हे] वध, बाधा (दि ८, ७७, या ७३१) ।

होरा श्री [होरा] १ खडी या खबी से नो हूँ
रेखा (गा ४३५) । २ ज्योतिष शास्त्र मे उक्त
लग्न (मोह १०१) । ३ होराज्ञापक शास्त्र
(स ६०२) ।

होरा पुष्पी [दि] १ वाद्य-विशेष, होत वाएह
मे इत्य' (धर्मवि ४४), 'आहतं मज्जपाणं
वापावेद होरा' (सुख ३, १) । २ पक्षि-विशेष,

'होराहगिदुक्कुहसबगार्मु सउलार्गसु ।
ज खुहवसेण खडा किमिआई वेवि सम्भवि'

(सा १३) ।

३ एक तरहकी गाली, अपमान-सूचक शब्द—
मूर्ख, बेवकूफ (धाया २, ४, १, ६, ११,
दस ७, १४, १६) । 'वाय पुं' [वाद्] दुर्बचन
बोलना, गाली-प्रदान (मृग १, ६, २७) ।

होलिया श्री [होलिया] होली, कापुन माय
का पर्व-विशेष (सहि ७८ टी) ।

होस देवो हो = भू ।

हुद देवो दूह (पिंड ८४, पि ३६६ ए) ।

हुस्स देवो रहस्स = हस्स (पि ३४५) ।

हास देवो हास = हाम (एदि २०६ टी) ।

॥ इम पाइअसइमहण्यवमि हआराइसइसंकलओ मद्रुतोसइमो तरंगो

समत्तो । समतो म् सस्समत्तोए एस गंवो ॥

पसत्थी [प्रशस्तिः]

आसाइ पच्छिमाए भारह-गासे इहतिय अइ-रम्भो ।
तस्सुत्तर-दिशि-भाए पुरं पुराणं पुराणमइ-पवरं ।
चंगणं तुहणं धय-वड-सेअंचलेहिं चलिरेहिं ।
णिअ-पाय-ण्णासेणं वासेण य वास-याल-पेरंतं ।
तव्यपव्वो आसी सिट्ठी सिरिमाल-अंस-वर-रयणं ।
आवय-संपत्तीण संपत्तीए वि जेण णिअचित्ते ।
अणवज्ज-कज्ज-सज्जा धम्म मणा धम्मपत्ती से घणिअं ।
तेसि दो तणुजम्मा आवयलं लद्ध-धम्म-सक्कारा ।
सत्य-विसारय-जइणायरिएहिं विजयधम्म-सूरीहिं ।
गत्तुण सोअरेहिं तेहिं वेहिं वि तत्थ सत्थाणं ।
रण-दिट्ठ-गट्ठ-भायं संसारं सार-वज्जिअं णाउं ।
पडिअज्जिअ पव्वज्ज अणुओ पणुअ-राम विरेसो ।
जेट्ठो वण सत्थाणं णाय उज्जरणमाइ-वितयाणं ।
लंगाइ सिहलेसुं पाली-भासाइ सुगय-समयाणं ।
कलिअयाए णाए वायरणे चैय लद्ध-तित्थ-पओ ।
तत्थेय विस्सविज्जालयमि सन्नुत्तमाइ सेणीए ।
तेण य पायय-भासाहिहाण गंयस्स विकरमाणेणं ।
माणारसीइ वरिसे सिअइय हय-अंर-रयणिरयण मिए ।
कलिअयाए जाया पायय-यसु-अंर इट्ठ-परिमाणिए ।
तस्स सुभदादेवी-णामाइ सधम्मगीइ एत्थ वट्ठुं ।
आरंभं वाऊणं आरिस-मासाव आ अउम्भंसा ।
वण्णाणमणुवमेणं सो सरो तम्मि अत्थए लिहिओ ।
पार्देण-पाइआणं भासाण वट्ठु-भेअ-भिण्णाणं ।
जे वण अण पत्तट्ठा सयं तयम्भासिणो य अ-सहाया ।
जइ येयोवि ह्येज्जा तेसि मन्थेण्णेण उवयारो ।
अण्णाणेण गइए भजेण वा एत्थ णि वि जममुद्धं ।

गुजर-णामा देवो पुर्व लढो चि विक्खाओ ॥१॥
राहणपुरं ति अच्छइ सच्छाण जिण्णिद-भगवाणं ॥२॥
पडिसेहवं पिअ जं विअ-वासि-जणे अहम्माओ ॥३॥
जं पुण कयं पवितं जय-गुरु-पमुहेहिं सूरीहि ॥४॥ [कुल्यं]
णामेण विअमचदो दुक्खिण्ण-दयाइ-गुण-रुद्धिओ ॥५॥
विण्णेणे जेव कयाई विसाय हरिसाण अवयासो ॥६॥ [जुगं]
सीलइ-गुण-पहाणा पहाणदेवि त्ति अ अहेसि ॥७॥
जिट्ठो हरगोविंदो कणिट्ठओ बुद्धिदंभो ओ ॥८॥
कासीइ महेसीहिं विज्जागारम्मं संठविए ॥९॥
सहय-पययमयाणं अरुमासो काउमारद्धो ॥१०॥
एअंतिअ-अचंतिअ-सोकरं मोकरं च चाय-फलं ॥११॥
विहरइ तं पालितो वित्तालयिअओ त्ति पत्ताभिद्धो ॥१२॥ [जुगं]
वडणज्जवाण संसोहणाइ-कज्जेसु विण्ण-मणो ॥१३॥
अम्भास-परिकखाहुं पारं पत्तोप्प-नालेणं ॥१४॥
रत्तायाइ परिकखाए उत्तिण्णे उच्च-करत्ताए ॥१५॥
पायय-सद्य-सत्थज्जवावण-ऊजम्मि विणिउत्तो ॥१६॥
चिर-सालाउ अभावं आवर जोगगस्स विवुहाणं ॥१७॥
विहिओ उवकम्मो विकरमाओ एअस्स गंयस्स ॥१८॥
वरिसे भइय-मासे सिअ-सत्तमीए समत्तो ओ ॥१९॥
आयखिं साहिज्जं विज्जज्मयणाणुरत्ताए ॥२०॥
जो सइो जहिं अत्थे जत्थ गंये उ उवलद्धो ॥२१॥
तगाम्य-छाण-दंशण-पुव्वं णिउणं णिरुवेत्ता ॥२२॥
सहणग-पारं जे गया तयट्ठो ण एस समो ॥२३॥
ताणं हत्थायल-न-दाणाएवस्स णिग्गमाणं ॥२४॥
ता एत्तिअमेत्तेणं मण्णे आयास-साहल्लं ॥२५॥
तं सोहिउ पसायं पाऊण सयासया स-यण ॥२६॥

इस कोष के विषय में कतिपय सुप्रसिद्ध विद्वान् और पत्रकारों के

कुछ अभिप्राय

A few Opinions of some Savants & Journalists regarding the PRĀKRIT DICTIONARY.

Prof. Earnest Leumann (in the journal of Royal Asiatic Society, London, July, 1924).

"During recent years several scholars in India have tried to bring out a Prākṛit Dictionary. However, no one seems to have succeeded in publishing more than a small specimen. Only recently, towards the end of 1923, there has appeared a new start, which is no longer a simple specimen, but an elaborate first part, comprising no less than 260 large size pages. In this volume all words beginning with vowels are included. And, if the following parts, which are to embrace the words beginning with consonants, carries on the Dictionary in the same lines, it will be finished in about seven such parts, and will contain nearly 2000 pages. On its completion Indian philology will certainly be congratulated from all sides, and Prākṛit literature, which is so immensely rich may then be studied as it ought to be, in intimate connexion with Sanskrit lore, which has long possessed Lexicographic aids of all kinds.

The title of the forthcoming dictionary is *Paṇa sadda-mahannava*, "the great ocean of Prākṛit words." Its compiler is Pandit Hargovind Das T. Sheth, Lecturer in Prākṛit in the Calcutta University.

The meaning of the words are given both in Hindi and in Sanskrit, and each entry is furnished with references to test passages. Sometimes also the test passages are fully quoted (forming generally a verse called *Gīthā* or *Āryā*).

Comprehensiveness and accuracy are the qualities most desired in a dictionary. As to the first quality, I may mention that the texts worked up in the dictionary seem to number about 200 or more. Even in the first ten pages a full hundred titles are quoted (*Accu*, *Aji*, *Anu*=*Anuyogadrāra-ūtra*, *Anta*=*Anatkr-dasa*, *Abhi*, *Acā*=*Ācarāṅga*, *Acā*=*Ācāra-cūlikā*, *Avā*=*Avāśya*, and others). And, as to the second quality, it may be stated that in the reference mistakes are scarcely detectable. Also errors in the quoted editions are corrected, so early as the second entry of the first page we are, for *Plt* *a*=*Skt ca*, rightly referred to *Pauma-carīya* 113, 14, where the edition has by mistake *Avirābio* instead of a *Virābio*.

Consequently I may be allowed to recommend Pandit Sheth's Prākṛit Dictionary to all Sanskrit scholars as well as to Sanskrit libraries—and, what will probably do more to secure the final success of the undertaking, to the Government authorities."

Sir, George A. Grierson, K C I E, F R D, D L I T T, LL D

"I must congratulate you on the success you have achieved in compiling this excellent book. I have already been able to make use of it and have found it a help in my work."

Jainacharya Shri Vijayendra Sureshwarjee. Itihās tattva-mahodadhī

"A big dictionary named Pīṭa sadda Mahanirṇayo (पाइय-सद महनिर्णयो) is being composed and edited by Nitya Vyākaraṇa tirtha Pandit Hargovind Das Trikamchand Sheth, Prākṛit Lecturer, Calcutta University. Three of its parts have already been brought into light. On seeing these parts and the work done therein, one cannot but say that it is excellent."

We cannot help saying frankly and impartially that amidst all dictionaries of the type in existence this koṣha takes its first place. In absence of such a good Prākṛit dictionary Prākṛit scholars had great many difficulties. To remove them Pandit Hargovinddas has taken immense pains in producing this work and has put Prākṛit scholars at large to great obligation. Pandit Hargovinddas deserves all honour for such a nice work.

We are conversant with Pandit Hargovinddas's vast knowledge and originality. It gives us a great pleasure to note that these two things in him have gone a great way to make the dictionary very valuable and useful. We can without the least hesitation say that Pandit Hargovinddas can well stand in the category of high culture. x x x It is the duty of all scholars in the field of learning and specially that of Jain samaj to encourage by extending their helping hand towards such learned man rendering services to Jain literature and Jain Religion.

Dr. Geuseppe Tucci, Professor of Sanskrit, Rome University. "The Prākṛit Dictionary is very useful in my study."

Dr M. Winternitz, Professor of Prague University. "Many thanks for the first two parts of the Prākṛit Dictionary which is very useful to me."

Dr F. W. Thomas M A, F R D, Chief Librarian, India office, London. "I have myself consulted the book and found it useful. It is based upon a very large number of texts."

Prof A B Dhruva, Pro Vice-chancellor, Hindu University, Benares. "I have seen Mr Hargovinddas Sheth's Prākṛit Dictionary. It represents a genuine attempt to supply a need which has long been felt and I am sure it will receive the appreciation which it so well deserves."

Dr. Sunil Kumar Chatterji, M A D L I T T Professor of Calcutta University. (in the *Calcutta Review*, February and December, 1924). "The work is not a mere compilation of glossaries. It contains ample evidence of Pandit Sheth's wide reading in Prākṛit literature and of his vast labours in the field. It will be a very useful publication and no student of Prākṛit and of modern Indo-Aryan languages can afford to be without it. The work so far accomplished by Pandit Sheth is an extremely laborious one requiring not only great scholarship, but also great patience. Pandit Sheth, ought to receive entire support from all interested in Prākṛitic and Jain studies."

Those who have had occasion to use this work and can testify to its excellence and usefulness will be pleased to see that it has received proper appreciation from competent scholars in the domain of Prākṛit and Indian Philology both in India and Europe. The Calcutta University can well be congratulated in possessing such an erudite scholar of Prākṛit in Pandit Hargovinddas.

Dr B M Barua, M.A., D. Litt., Professor of Pali, Calcutta University I can quite understand that the task undertaken by you is a self imposed one, and you are sure to render a permanent service in the cause of Indology by completing the same. A handy and at the same time comprehensive Prākṛit dictionary has been a long felt desideratum. After going through the printed parts of your lexicon I find reasons to hope that your single-handed labour will go to remove it to a great extent. I have not seen elsewhere an attempt of this kind. What I sincerely wish is the consummation of the noble task you are engaged upon with the indefatigable zeal and unflinching devotion of a scholar like yourself who has been born and brought up in a religious tradition footing the culture of Prākṛit languages."

Dr I J S Taraporewala B.A., PH.D., Bar at law, Professor of Comparative Philology Calcutta University 'The author has already considerable reputation as a teacher of Prākṛit in the University of Calcutta and also as a deep scholar in Jaina Literature and Philosophy. For many years he has had the preparation of a Prākṛit Dictionary in contemplation that for that he set about a systematic course of reading in all the various branches of Prākṛit Literature. As a result of this enormous amount of labour the Panditji has now given us the first three volumes of his Prākṛit Dictionary. To students of Prākṛit this book will supply a greatly felt want and the work is very well done indeed for the general reader. In any case the work is an useful one and should help all earnest students.

Prof Vidyushekhhar Bhattacharya M.A. Principal Vishva Bharati, Shanti Niketan, Bolpur, (in the *Modern Review*, April, 1925)

The author hardly needs introduction to those who have acquaintance with Yasovijaya Jaina Granthamala. His present work is Prākṛit Hindi Dictionary. We extend our hearty welcome to it.

A Prākṛit Dictionary of this kind was a desideratum and every Prākṛit lover should feel thankful to Pandit Hargovindadas who has now supplied it. We have not the least doubt in saying that the students of Prākṛit will be much benefited by it. It supplies Sanskrit equivalents so far as possible quotes authorities and gives references. The words are explained in Hindi, yet the language is so simple that it can be used by any one knowing some vernacular of northern India.

Indian Antiquary, February, 1925 This is the first part of a dictionary of the Prākṛit language intended to be completed in four parts. It is a comprehensive dictionary of the Prākṛit language giving the meaning of Prākṛit words in Hindi. It provides at the same time the Sanskrit equivalents of the Prākṛit words. The dictionary as a whole contains about seventy thousand words. The author Pandit Hargovinddas T. Sheth, Lecturer, Calcutta University, has taken care to support the meanings that he gives by quotations from the original sources giving complete references. It removes one of the desiderata for a satisfactory study of the vast Prākṛit literature which still remains unexplored but inadequately by scholars Indian and European. It is likely to be of great assistance in promoting this desirable study. The author deserves to be congratulated upon the result of his labours in this good cause. The work is a monument of his learning and effort and it is to be hoped that this industry will be suitably rewarded to encourage him to go on with his work and complete it as originally projected in four parts.